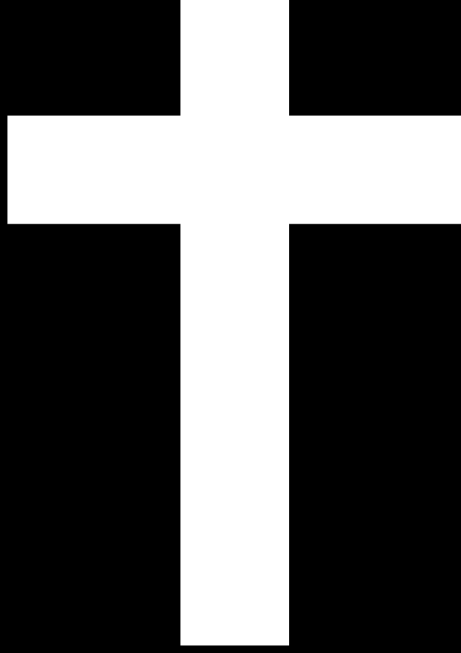


कतिबे-मुकद्दस



The Holy Bible in the Urdu language, Urdu Geo Version, Hindi
Script

किताबे-मुकद्दस

The Holy Bible in the Urdu language, Urdu Geo Version, Hindi Script

Copyright © 2019 Urdu Geo Version

Language: اردو (Urdu)

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution-Noncommercial-No Derivatives license 4.0.

You may share and redistribute this Bible translation or extracts from it in any format, provided that:

You include the above copyright and source information.

You do not sell this work for a profit.

You do not change any of the words or punctuation of the Scriptures.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.

2022-05-03

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 25 Aug 2023 from source files dated 4 May 2022
a1ee0020-7263-5fce-8289-9d7a7ac2d299

Contents

पैदाइश	1
खुर्रुज	44
अहबार	81
गिनती	106
इस्तिस्ना	137
यशुअ	169
कुजात	190
स्त	212
1 समुएल	215
2 समुएल	244
1 सलातीन	269
2 सलातीन	298
1 तवारीख	326
2 तवारीख	353
अजरा	385
नहमियाह	395
आस्तर	409
अय्यब	416
ज़बूर	441
अमसाल	523
वाइज़	546
गज़लुल-गज़लात	554
यसायाह	560
यरमियाह	608
नोहा	659
हिज़कियेल	665
दानियाल	710
होसेअ	723
योएल	731
आमूस	734
अब्दियाह	740
युनुस	741
मीकाह	743
नाहम	748
हबक्कूक	750
सफनियाह	753
हज्जी	756
ज़करियाह	758
मलाकी	766
मत्ती	769
मरकुस	803
लूका	825
यूहन्ना	862
आमाल	888
रोमियों	921
1 कुरिथियों	936
2 कुरिथियों	950
गलतियों	959
इफिसियों	964

फिलिप्पियों	969
कुलुस्सियों	973
1 थिस्सलुनीकियों	977
2 थिस्सलुनीकियों	980
1 तीमुथियुस	982
2 तीमुथियुस	986
तितुस	989
फिलेमोन	991
इबरानियों	992
याकूब	1004
1 पतरस	1008
2 पतरस	1013
1 यूहन्ना	1016
2 यूहन्ना	1020
3 यूहन्ना	1021
यहूदाह	1022
मुकाशफा	1024

पैदाइश

दुनिया की तखलीक का पहला दिन : रौशनी

¹ इब्तिदा में अल्लाह ने आसमान और ज़मीन को बनाया। ² अभी तक ज़मीन वीरान और खाली थी। वह गहरे पानी से ढकी हुई थी जिसके ऊपर अंधेरा ही अंधेरा था। अल्लाह का रह पानी के ऊपर मँडला रहा था।

³ फिर अल्लाह ने कहा, “रौशनी हो जाए” तो रौशनी पैदा हो गई। ⁴ अल्लाह ने देखा कि रौशनी अच्छी है, और उसने रौशनी को तारीकी से अलग कर दिया। ⁵ अल्लाह ने रौशनी को दिन का नाम दिया और तारीकी को रात का। शाम हुई, फिर सुबह। यों पहला दिन गुज़र गया।

दूसरा दिन : आसमान

⁶ अल्लाह ने कहा, “पानी के दरमियान एक ऐसा गुंबद पैदा हो जाए जिससे निचला पानी ऊपर के पानी से अलग हो जाए।” ⁷ ऐसा ही हुआ। अल्लाह ने एक ऐसा गुंबद बनाया जिससे निचला पानी ऊपर के पानी से अलग हो गया। ⁸ अल्लाह ने गुंबद को आसमान का नाम दिया। शाम हुई, फिर सुबह। यों दूसरा दिन गुज़र गया।

तीसरा दिन : खुशक ज़मीन और पौदे

⁹ अल्लाह ने कहा, “जो पानी आसमान के नीचे है वह एक जगह जमा हो जाए ताकि दूसरी तरफ़ खुशक जगह नज़र आए।” ऐसा ही हुआ। ¹⁰ अल्लाह ने खुशक जगह को ज़मीन का नाम दिया और जमाशुदा पानी को समुंदर का। और अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है। ¹¹ फिर उसने कहा, “ज़मीन हरियावल पैदा करे, ऐसे पौदे जो बीज रखते हों और ऐसे दरख्त जिनके फल अपनी अपनी किस्म के बीज रखते हों।” ऐसा ही हुआ। ¹² ज़मीन ने हरियावल पैदा की, ऐसे पौदे जो अपनी अपनी किस्म के बीज रखते और ऐसे दरख्त जिनके फल अपनी अपनी किस्म के बीज रखते थे। अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है। ¹³ शाम हुई, फिर सुबह। यों तीसरा दिन गुज़र गया।

चौथा दिन : सूरज, चाँद और सितारे

¹⁴ अल्लाह ने कहा, “आसमान पर रौशनियाँ पैदा हो जाएँ ताकि दिन और रात में इम्तियाज़ हो और इसी तरह मुख्तलिफ़ मौसमों, दिनों और सालों में भी। ¹⁵ आसमान की यह रौशनियाँ दुनिया को रौशन करें।” ऐसा ही हुआ। ¹⁶ अल्लाह ने दो बड़ी रौशनियाँ बनाई, सूरज जो बड़ा था दिन पर हुकूमत करने को और चाँद जो छोटा था रात पर। इनके अलावा उसने सितारों को भी बनाया। ¹⁷ उसने उन्हें आसमान पर रखा ताकि वह दुनिया को रौशन करें, ¹⁸ दिन और रात पर हुकूमत करें और रौशनी और तारीकी में इम्तियाज़ पैदा करें। अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है। ¹⁹ शाम हुई, फिर सुबह। यों चौथा दिन गुज़र गया।

पाँचवाँ दिन : पानी और हवा के जानदार

²⁰ अल्लाह ने कहा, “पानी आबी जानदारों से भर जाए और फ़िज़ा में परिदे उड़ते फ़िरें।” ²¹ अल्लाह ने बड़े बड़े समुंदरी जानवर बनाए, पानी की तमाम दीगर मखलूक़ात और हर किस्म के पर रखनेवाले जानदार भी बनाए। अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है। ²² उसने उन्हें बरकत दी और कहा, “फलो-फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ। समुंदर तुमसे भर जाए। इसी तरह परिदे ज़मीन पर तादाद में बढ़ जाएँ।” ²³ शाम हुई, फिर सुबह। यों पाँचवाँ दिन गुज़र गया।

छठा दिन : ज़मीन पर चलनेवाले जानवर और इनसान

²⁴ अल्लाह ने कहा, “ज़मीन हर किस्म के जानदार पैदा करे : मवेशी, रेंगेनेवाले और जंगली जानवर।” ऐसा ही हुआ। ²⁵ अल्लाह ने हर किस्म के मवेशी, रेंगेनेवाले और जंगली जानवर बनाए। उसने देखा कि यह अच्छा है।

²⁶ अल्लाह ने कहा, “आओ अब हम इनसान को अपनी सूरत पर बनाएँ, वह हमसे मुशाबहत रखे। वह तमाम जानवरों पर हुकूमत करे, समुंदर की मछलियों पर, हवा के परिदों पर, मवेशियों पर, जंगली जानवरों पर और ज़मीन पर के तमाम रेंगेनेवाले जानदारों पर।” ²⁷ यों अल्लाह ने इनसान को अपनी सूरत पर बनाया, अल्लाह की सूरत पर। उसने उन्हें मर्द और औरत बनाया। ²⁸ अल्लाह ने उन्हें बरकत दी और कहा, “फलो-फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ। दुनिया तुमसे भर जाए और तुम उस पर इख्तियार रखो। समुंदर की मछलियों, हवा के परिदों और ज़मीन पर के तमाम रेंगेनेवाले जानदारों पर हुकूमत करो।”

²⁹ अल्लाह ने उनसे मज़ीद कहा, “तमाम बीजदार पौदे और फलदार दरख्त तुम्हारे ही हैं। मैं उन्हें तुमको खाने के लिए देता हूँ। ³⁰ इस तरह मैं तमाम जानवरों को खाने के लिए हरियाली देता हूँ। जिसमें भी जान है वह यह खा सकता है, खाह वह ज़मीन पर चलने-फिरनेवाला जानवर, हवा का परिदा या ज़मीन पर रेंगेनेवाला क्यों न हो।” ऐसा ही हुआ। ³¹ अल्लाह ने सब पर नज़र की तो देखा कि वह बहुत अच्छा बन गया है। शाम हुई, फिर सुबह। छठा दिन गुज़र गया।

2

सातवाँ दिन : आराम

1 यों आसमानो-ज़मीन और उनकी तमाम चीज़ों की तखलीक मुकम्मल हुई। 2 सातवें दिन अल्लाह का सारा काम तकमील को पहुँचा। इससे फ़ारिग होकर उसने आराम किया। 3 अल्लाह ने सातवें दिन को बरकत दी और उसे मखसूसो-मुकद्दस किया। क्योंकि उस दिन उसने अपने तमाम तखलीकी काम से फ़ारिग होकर आराम किया।

आदम और हव्वा

4 यह आसमानो-ज़मीन की तखलीक का बयान है। जब रब ख़ुदा ने आसमानो-ज़मीन को बनाया 5 तो शुरू में झाड़ियाँ और पौदे नहीं उगते थे। वजह यह थी कि अल्लाह ने बारिश का इंतज़ाम नहीं किया था। और अभी इनसान भी पैदा नहीं हुआ था कि ज़मीन की खेतीबाड़ी करता। 6 इसकी बजाए ज़मीन में से धुंध उठकर उस की पूरी सतह को तर करती थी। 7 फिर रब ख़ुदा ने ज़मीन से मिट्टी लेकर इनसान को तश्कील दिया और उसके नथनों में जिंदगी का दम फूँका तो वह जीती जान हुआ।

8 रब ख़ुदा ने मशरिक में मुल्के-अदन में एक बाग़ लगाया। उसमें उसने उस आदमी को रखा जिसे उसने बनाया था। 9 रब ख़ुदा के हुक्म पर ज़मीन में से तरह तरह के दरख़्त फूट निकले, ऐसे दरख़्त जो देखने में दिलकश और खाने के लिए अच्छे थे। बाग़ के बीच में दो दरख़्त थे। एक का फल जिंदगी बख़्शता था जबकि दूसरे का फल अच्छे और बुरे की पहचान दिलाता था। 10 अदन में से एक दरिया निकलकर बाग़ की आबपाशी करता था। वहाँ से बहकर वह चार शाखों में तकसीम हुआ। 11-12 पहली शाख का नाम फ़ीसून है। वह मुल्के-हवीला को घेरे हुए बहती है जहाँ खालिस सोना, ग़ाल का गूँद और अक्रीके-अहमर * पाए जाते हैं। 13 दूसरी का नाम जैहून है जो कूश को घेरे हुए बहती है। 14 तीसरी का नाम दिजला है जो असूर के मशरिक को जाती है और चौथी का नाम फ़ुरात है।

15 रब ख़ुदा ने पहले आदमी को बागे-अदन में रखा ताकि वह उस की बाग़बानी और हिफ़ाज़त करे। 16 लेकिन रब ख़ुदा ने उसे आगाह किया, “तुझे हर दरख़्त का फल खाने की इजाज़त है। 17 लेकिन जिस दरख़्त का फल अच्छे और बुरे की पहचान दिलाता है उसका फल खाना मना है। अगर उसे खाए तो यक़ीनन मरेगा।”

18 रब ख़ुदा ने कहा, “अच्छा नहीं कि आदमी अकेला रहे। मैं उसके लिए एक मुनासिब मददगार बनाता हूँ।”

19 रब ख़ुदा ने मिट्टी से ज़मीन पर चलने-फिरनेवाले जानवर और हवा के परिंदे बनाए थे। अब वह उन्हें आदमी के पास ले आया ताकि मालूम हो जाए कि वह उनके क्या क्या नाम रखेगा। यों हर जानवर को आदम की तरफ़ से नाम मिल गया। 20 आदमी ने तमाम मवेशियों, परिंदों और ज़मीन पर फिरनेवाले जानदारों के नाम रखे। लेकिन उसे अपने लिए कोई मुनासिब मददगार न मिला।

21 तब रब ख़ुदा ने उसे सुला दिया। जब वह गहरी नींद सो रहा था तो उसने उस की पसलियों में से एक निकालकर उस की जगह गोशत भर दिया। 22 पसली से उसने औरत बनाई और उसे आदमी के पास ले आया। 23 उसे देखकर वह पुकार उठा, “वाह! यह तो मुझ जैसी ही है, मेरी हड्डियों में से हड्डी और मेरे गोशत में से गोशत है। इसका नाम नारी रखा जाए क्योंकि वह नर से निकाली गई है।” 24 इसलिए मर्द अपने माँ-बाप को छोड़कर अपनी बीवी के साथ पैवस्त हो जाता है, और वह दोनों एक हो जाते हैं। 25 दोनों, आदमी और औरत नंगे थे, लेकिन यह उनके लिए शर्म का बाइस नहीं था।

3

गुनाह का आगाज़

1 साँप ज़मीन पर चलने-फिरनेवाले उन तमाम जानवरों से ज़्यादा चालाक था जिनको रब ख़ुदा ने बनाया था। उसने औरत से पूछा, “क्या अल्लाह ने वाकई कहा कि बाग़ के किसी भी दरख़्त का फल न खाना?” 2 औरत ने जवाब दिया, “हरगिज़ नहीं। हम बाग़ का हर फल खा सकते हैं, 3 सिर्फ़ उस दरख़्त के फल से गुरेज़ करना है जो बाग़ के बीच में है। अल्लाह ने कहा कि उसका फल न खाओ बल्कि उसे छूना भी नहीं, वरना तुम यक़ीनन मर जाओगे।” 4 साँप ने औरत से कहा, “तुम हरगिज़ न मरोगे, 5 बल्कि अल्लाह जानता है कि जब तुम उसका फल खाओगे तो तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी और तुम अल्लाह की मानिंद हो जाओगे, तुम जो भी अच्छा और बुरा है उसे जान लोगे।”

6 औरत ने दरख़्त पर गौर किया कि खाने के लिए अच्छा और देखने में भी दिलकश है। सबसे दिलफरेब बात यह कि उससे समझ हासिल हो सकती है! यह सोचकर उसने उसका फल लेकर उसे खाया। फिर उसने अपने शौहर को भी दे दिया, क्योंकि वह उसके साथ था। उसने भी खा लिया। 7 लेकिन खाने ही उनकी आँखें खुल गईं और उनको मालूम हुआ कि हम नंगे हैं। चुनाँचे उन्होंने अंजीर के पत्ते सीकर लुंगियाँ बना लीं।

8 शाम के वक़्त जब ठंडी हवा चलने लगी तो उन्होंने रब ख़ुदा को बाग़ में चलते-फिरते सुना। वह डर के मारे दरख़्तों के पीछे छुप गए। 9 रब ख़ुदा ने पुकारकर कहा, “आदम, तू कहाँ है?” 10 आदम ने जवाब दिया, “मैंने तुझे बाग़ में चलते हुए सुना तो डर गया, क्योंकि मैं नंगा हूँ। इसलिए मैं छुप गया।” 11 उसने पूछा, “किसने तुझे बताया कि तू नंगा है? क्या तूने उस दरख़्त का फल खाया है जिसे खाने से मैंने मना किया था?” 12 आदम ने कहा, “जो औरत तूने मेरे साथ रहने के लिए दी है उसने मुझे फल दिया। इसलिए मैंने खा लिया।” 13 अब रब ख़ुदा औरत से मुखातिब हुआ, “तूने यह क्यों किया?” औरत ने जवाब दिया, “साँप ने मुझे बहकाया तो मैंने खाया।”

* 2:11-12 carnelian

14 रब खुदा ने साँप से कहा, “चूँकि तूने यह किया, इसलिए तू तमाम मवेशियों और जंगली जानवरों में लानती है। तू उम्र-भर पेट के बल रेंगेगी और खाक चाटेगी। 15 मैं तेरे और औरत के दरमियान दुश्मनी पैदा करूँगा। उस की औलाद तेरी औलाद की दुश्मन होगी। वह तेरे सर को कुचल डालेगी जबकि तू उस की एड़ी पर काटेगी।”

16 फिर रब खुदा औरत से मुखातिब हुआ और कहा, “जब तू उम्मीद से होगी तो मैं तेरी तकलीफ को बहुत बढ़ाऊँगा। जब तेरे बच्चे होंगे तो तू शदीद दर्द का शिकार होगी। तू अपने शौहर की तमन्ना करेगी लेकिन वह तुझ पर हुकूमत करेगा।” 17 आदम से उसने कहा, “तूने अपनी बीवी की बात मानी और उस दरख्त का फल खाया जिसे खाने से मैंने मना किया था। इसलिए तेरे सबब से ज़मीन पर लानत है। उससे खुराक हासिल करने के लिए तुझे उम्र-भर मेहनत-मशक्कत करनी पड़ेगी। 18 तेरे लिए वह खारदार पौदे और ऊँटकटारे पैदा करेगी, हालाँकि तू उससे अपनी खुराक भी हासिल करेगा। 19 पसीना बहा बहाकर तुझे रोटी कमाने के लिए भाग-दौड़ करनी पड़ेगी। और यह सिलसिला मौत तक जारी रहेगा। तू मेहनत करते करते दुबारा ज़मीन में लौट जाएगा, क्योंकि तू उसी से लिया गया है। तू खाक है और दुबारा खाक में मिल जाएगा।”

20 आदम ने अपनी बीवी का नाम हव्वा यानी ज़िंदगी रखा, क्योंकि बाद में वह तमाम ज़िंदों की माँ बन गई। 21 रब खुदा ने आदम और उस की बीवी के लिए खालों से लिबास बनाकर उन्हें पहनाया। 22 उसने कहा, “इनसान हमारी मानिंद हो गया है, वह अच्छे और बुरे का इल्म रखता है। अब ऐसा न हो कि वह हाथ बढ़ाकर ज़िंदगी बख़्शनेवाले दरख्त के फल से ले और उससे खाकर हमेशा तक ज़िंदा रहे।” 23 इसलिए रब खुदा ने उसे बागे-अदन से निकालकर उस ज़मीन की खेतीबाड़ी करने की ज़िम्मादारी दी जिसमें से उसे लिया गया था। 24 इनसान को खारिज करने के बाद उसने बागे-अदन के मशरिक़ में कसूबी फ़रिश्ते खड़े किए और साथ साथ एक आतिशी तलवार रखी जो इधर-उधर घूमती थी ताकि उस रास्ते की हिफ़ाज़त करे जो ज़िंदगी बख़्शनेवाले दरख्त तक पहुँचाता था।

4

काबील और हाबील

1 आदम हव्वा से हमबिसतर हुआ तो उनका पहला बेटा काबील पैदा हुआ। हव्वा ने कहा, “रब की मदद से मैंने एक मर्द हासिल किया है।” 2 बाद में काबील का भाई हाबील पैदा हुआ। हाबील भेड़-बकरियों का चरवाहा बन गया जबकि काबील खेतीबाड़ी करने लगा।

पहला क़त्ल

3 कुछ देर के बाद काबील ने रब को अपनी फ़सलों में से कुछ पेश किया। 4 हाबील ने भी नज़राना पेश किया, लेकिन उसने अपनी भेड़-बकरियों के कुछ पहलौटे उनकी चरबी समेत चढ़ाए। हाबील का नज़राना रब को पसंद आया, 5 मगर काबील का नज़राना मंज़ूर न हुआ। यह देखकर काबील बड़े गुस्से में आ गया, और उसका मुँह बिगड़ गया। 6 रब ने पूछा, “तू गुस्से में क्यों आ गया है? तेरा मुँह क्यों लटका हुआ है? 7 क्या अगर तू अच्छी नीयत रखता है तो अपनी नज़र उठाकर मेरी तरफ़ नहीं देख सकेगा? लेकिन अगर अच्छी नीयत नहीं रखता तो खबरदार! गुनाह दरवाज़े पर दबका बैठा है और तुझे चाहता है। लेकिन तेरा फ़र्ज़ है कि उस पर ग़ालिब आए।”

8 एक दिन काबील ने अपने भाई से कहा, “आओ, हम बाहर खुले मैदान में चलें।” और जब वह खुले मैदान में थे तो काबील ने अपने भाई हाबील पर हमला करके उसे मार डाला।

9 तब रब ने काबील से पूछा, “तेरा भाई हाबील कहाँ है?” काबील ने जवाब दिया, “मुझे क्या पता! क्या अपने भाई की देख-भाल करना मेरी ज़िम्मादारी है?” 10 रब ने कहा, “तूने क्या किया है? तेरे भाई का खून ज़मीन में से पुकारकर मुझसे फ़रियाद कर रहा है। 11 इसलिए तुझ पर लानत है और ज़मीन ने तुझे रद्द किया है, क्योंकि ज़मीन को मुँह खोलकर तेरे हाथ से क़त्ल किए हुए भाई का खून पीना पड़ा। 12 अब से जब तू खेतीबाड़ी करेगा तो ज़मीन अपनी पैदावार देने से इनकार करेगी। तू मफ़रूर होकर मारा मारा फिरेगा।” 13 काबील ने कहा, “मेरी सज़ा निहायत सख़्त है। मैं इसे बरदाश्त नहीं कर पाऊँगा। 14 आज तू मुझे ज़मीन की सतह से भगा रहा है और मुझे तेरे हुज़ूर से भी छुप जाना है। मैं मफ़रूर की हैसियत से मारा मारा फिरता रहूँगा, इसलिए जिसको भी पता चलेगा कि मैं कहाँ हूँ वह मुझे क़त्ल कर डालेगा।” 15 लेकिन रब ने उससे कहा, “हरगिज़ नहीं। जो काबील को क़त्ल करे उससे सात गुना बदला लिया जाएगा।” फिर रब ने उस पर एक निशान लगाया ताकि जो भी काबील को देखे वह उसे क़त्ल न कर दे। 16 इसके बाद काबील रब के हुज़ूर से चला गया और अदन के मशरिक़ की तरफ़ नोद के इलाक़े में जा बसा।

काबील का खानदान

17 काबील की बीवी हामिला हुई। बेटा पैदा हुआ जिसका नाम हनूक रखा गया। काबील ने एक शहर तामीर किया और अपने बेटे की खुशी में उसका नाम हनूक रखा। 18 हनूक का बेटा ईराद था, ईराद का बेटा महयाएल, महयाएल का बेटा मत्साएल और मत्साएल का बेटा लमक था। 19 लमक की दो बीवियाँ थीं, अदा और ज़िल्ला। 20 अदा का बेटा याबल था। उस की नसल के लोग ख़ैमों में रहते और मवेशी पालते थे। 21 याबल का भाई यूबल था। उस की नसल के लोग सरोद * और बाँसरी बजाते थे। 22 ज़िल्ला के भी बेटा पैदा हुआ जिसका नाम तूबल-काबील था। वह लोहार था। उस की नसल के लोग पीतल और लोहे की चीज़ें बनाते थे। तूबल-काबील की बहन का नाम नामा था। 23 एक दिन लमक ने अपनी बीवियों से कहा, “अदा और ज़िल्ला, मेरी बात सुनो! लमक की बीवियों, मेरे अलफ़ाज़ पर गौर करो! 24 एक

* 4:21 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : चंग। चूँकि यह साज़ बर्दे-सगीर में कम ही इस्तेमाल होता है, इसलिए मुतरज़मीन ने इसकी जगह लफ़्ज़ ‘सरोद’ इस्तेमाल किया है।

आदमी ने मुझे ज़खमी किया तो मैंने उसे मार डाला। एक लड़के ने मेरे चोट लगाई तो मैंने उसे कत्ल कर दिया। जो काबील को कत्ल करे उससे सात गुना बदला लिया जाएगा, लेकिन जो लमक को कत्ल करे उससे सततर गुना बदला लिया जाएगा।”

सेत और अनूस

²⁵ आदम और हव्वा का एक और बेटा पैदा हुआ। हव्वा ने उसका नाम सेत रखकर कहा, “अल्लाह ने मुझे हाबील की जगह जिसे काबील ने कत्ल किया एक और बेटा बख्शा है।” ²⁶ सेत के हों भी बेटा पैदा हुआ। उसने उसका नाम अनूस रखा।

उन दिनों में लोग रब का नाम लेकर इबादत करने लगे।

5

आदम से नूह तक का नसबनामा

¹ जैल में आदम का नसबनामा दर्ज है।

जब अल्लाह ने इनसान को खलक किया तो उसने उसे अपनी सूरत पर बनाया। ² उसने उन्हें मर्द और औरत पैदा किया। और जिस दिन उसने उन्हें खलक किया उसने उन्हें बरकत देकर उनका नाम आदम यानी इनसान रखा।

³ आदम की उम्र 130 साल थी जब उसका बेटा सेत पैदा हुआ। सेत सूरत के लिहाज से अपने बाप की मानिंद था, वह उससे मुशाबहत रखता था। ⁴ सेत की पैदाइश के बाद आदम मज़ीद 800 साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। ⁵ वह 930 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

⁶ सेत 105 साल का था जब उसका बेटा अनूस पैदा हुआ। ⁷ इसके बाद वह मज़ीद 807 साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। ⁸ वह 912 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

⁹ अनूस 90 बरस का था जब उसका बेटा क़ीनान पैदा हुआ। ¹⁰ इसके बाद वह मज़ीद 815 साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। ¹¹ वह 905 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

¹² क़ीनान 70 साल का था जब उसका बेटा महललेल पैदा हुआ। ¹³ इसके बाद वह मज़ीद 840 साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। ¹⁴ वह 910 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

¹⁵ महललेल 65 साल का था जब उसका बेटा यारिद पैदा हुआ। ¹⁶ इसके बाद वह मज़ीद 830 साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। ¹⁷ वह 895 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

¹⁸ यारिद 162 साल का था जब उसका बेटा हनूक पैदा हुआ। ¹⁹ इसके बाद वह मज़ीद 800 साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। ²⁰ वह 962 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

²¹ हनूक 65 साल का था जब उसका बेटा मत्सिलह पैदा हुआ। ²² इसके बाद वह मज़ीद 300 साल अल्लाह के साथ चलता रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। ²³ वह कुल 365 साल दुनिया में रहा। ²⁴ हनूक अल्लाह के साथ साथ चलता था। 365 साल की उम्र में वह गायब हुआ, क्योंकि अल्लाह ने उसे उठा लिया।

²⁵ मत्सिलह 187 साल का था जब उसका बेटा लमक पैदा हुआ। ²⁶ वह मज़ीद 782 साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे और बेटियाँ भी पैदा हुए। ²⁷ वह 969 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

²⁸ लमक 182 साल का था जब उसका बेटा पैदा हुआ। ²⁹ उसने उसका नाम नूह यानी तसल्ली रखा, क्योंकि उसने उसके बारे में कहा, “हमारा खेतीबाड़ी का काम निहायत तकलीफ़देह है, इसलिए कि अल्लाह ने ज़मीन पर लानत भेजी है। लेकिन अब हम बेटे की मारिफ़त तसल्ली पाएँगे।” ³⁰ इसके बाद वह मज़ीद 595 साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। ³¹ वह 777 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

³² नूह 500 साल का था जब उसके बेटे सिम, हाम और याफ़त पैदा हुए।

6

लोगों की ज़्यादतियाँ

¹ दुनिया में लोगों की तादाद बढ़ने लगी। उनके हों बेटियाँ पैदा हुईं। ² तब आसमानी हस्तियों ने देखा कि बनी नौ इनसान की बेटियाँ खूबसूरत हैं, और उन्होंने उनमें से कुछ चुनकर उनसे शादी की। ³ फिर रब ने कहा, “मेरी रूह हमेशा के लिए इनसान में न रहे क्योंकि वह फ़ानी मखलूक है। अब से वह 120 साल से ज़्यादा ज़िंदा नहीं रहेगा।” ⁴ उन दिनों में और बाद में भी दुनिया में देवकामत अफ़राद थे जो इनसानी औरतों और उन आसमानी हस्तियों की शादियों से पैदा हुए थे। यह देवकामत अफ़राद क़दीम ज़माने के मशहूर सूरमा थे।

⁵ रब ने देखा कि इनसान निहायत बिगड़ गया है, कि उसके तमाम खयालात लगातार बुराई की तरफ़ मायल रहते हैं। ⁶ वह पछताया कि मैंने इनसान को बनाकर दुनिया में रख दिया है, और उसे सख़्त दुख हुआ। ⁷ उसने कहा, “गो मैं ही ने इनसान को खलक किया मैं उसे रूए-ज़मीन

पर से मिटा डालूँगा। मैं न सिर्फ लोगों को बल्कि ज़मीन पर चलने-फिरने और रेंगनेवाले जानवरों और हवा के परिदों को भी हलाक कर दूँगा, क्योंकि मैं पछताता हूँ कि मैंने उनको बनाया।”

बड़े सैलाब के लिए नूह की तैयारियाँ

8 सिर्फ नूह पर रब की नज़रे-करम थी। 9 यह उस की ज़िंदगी का बयान है।

नूह रास्तबाज़ था। उस ज़माने के लोगों में सिर्फ वही बेकुसूर था। वह अल्लाह के साथ साथ चलता था। 10 नूह के तीन बेटे थे, सिम, हाम और याफ़त। 11 लेकिन दुनिया अल्लाह की नज़र में बिगड़ी हुई और जुल्मो-तशद्दुद से भरी हुई थी। 12 जहाँ भी अल्लाह देखता दुनिया खराब थी, क्योंकि तमाम जानदारों ने ज़मीन पर अपनी रविश को बिगाड़ दिया था।

13 तब अल्लाह ने नूह से कहा, “मैंने तमाम जानदारों को ख़त्म करने का फैसला किया है, क्योंकि उनके सबब से पूरी दुनिया जुल्मो-तशद्दुद से भर गई है। चुनौचे मैं उनको ज़मीन समेत तबाह कर दूँगा। 14 अब अपने लिए सरो * की लकड़ी की कश्ती बना ले। उसमें कमरे हों और उसे अंदर और बाहर तारकोल लगा। 15 उस की लंबाई 450 फुट, चौड़ाई 75 फुट और ऊँचाई 45 फुट हो। 16 कश्ती की छत को यों बनाना कि उसके नीचे 18 इंच खुला रहे। एक तरफ़ दरवाज़ा हो, और उस की तीन मनज़िलें हों। 17 मैं पानी का इतना बड़ा सैलाब लाऊँगा कि वह ज़मीन के तमाम जानदारों को हलाक कर डालेगा। ज़मीन पर सब कुछ फ़ना हो जाएगा। 18 लेकिन तेरे साथ मैं अहद बाँधूँगा जिसके तहत तू अपने बेटों, अपनी बीवी और बहुओं के साथ कश्ती में जाएगा। 19 हर किस्म के जानवर का एक नर और एक मादा भी अपने साथ कश्ती में ले जाना ताकि वह तेरे साथ जीते बचें। 20 हर किस्म के पर रखनेवाले जानवर और हर किस्म के ज़मीन पर फिरने या रेंगनेवाले जानवर दो दो होकर तेरे पास आँगे ताकि जीते बच जाँ। 21 जो भी ख़राक़ दरकार है उसे अपने और उनके लिए जमा करके कश्ती में महफूज़ कर लेना।”

22 नूह ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा अल्लाह ने उसे बताया।

7

सैलाब का अगाज़

1 फिर रब ने नूह से कहा, “अपने घराने समेत कश्ती में दाखिल हो जा, क्योंकि इस दौर के लोगों में से मैंने सिर्फ तुझे रास्तबाज़ पाया है। 2 हर किस्म के पाक जानवरों में से सात सात नरो-मादा के जोड़े जबकि नापाक जानवरों में से नरो-मादा का सिर्फ एक एक जोड़ा साथ ले जाना। 3 इसी तरह हर किस्म के पर रखनेवालों में से सात सात नरो-मादा के जोड़े भी साथ ले जाना ताकि उनकी नसलें बची रहें। 4 एक हफ़ते के बाद मैं चालीस दिन और चालीस रात मुतवातिर बारिश बरसाऊँगा। इससे मैं तमाम जानदारों को रूए-ज़मीन पर से मिटा डालूँगा, अगरचे मैं ही ने उन्हें बनाया है।”

5 नूह ने वैसा ही किया जैसा रब ने हुक्म दिया था। 6 वह 600 साल का था जब यह तूफ़ानी सैलाब ज़मीन पर आया।

7 तूफ़ानी सैलाब से बचने के लिए नूह अपने बेटों, अपनी बीवी और बहुओं के साथ कश्ती में सवार हुआ। 8 ज़मीन पर फिरनेवाले पाक और नापाक जानवर, पर रखनेवाले और तमाम रेंगनेवाले जानवर भी आए। 9 नरो-मादा की सूरत में दो दो होकर वह नूह के पास आकर कश्ती में सवार हुए। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा अल्लाह ने नूह को हुक्म दिया था। 10 एक हफ़ते के बाद तूफ़ानी सैलाब ज़मीन पर आ गया।

11 यह सब कुछ उस वक़्त हुआ जब नूह 600 साल का था। दूसरे महीने के 17वें दिन ज़मीन की गहराइयों में से तमाम चश्मे फूट निकले और आसमान पर पानी के दरिचे खुल गए। 12 चालीस दिन और चालीस रात तक मूसलाधार बारिश होती रही। 13 जब बारिश शुरू हुई तो नूह, उसके बेटे सिम, हाम और याफ़त, उस की बीवी और बहुएँ कश्ती में सवार हो चुके थे। 14 उनके साथ हर किस्म के जंगली जानवर, मवेशी, रेंगने और पर रखनेवाले जानवर थे। 15 हर किस्म के जानदार दो दो होकर नूह के पास आकर कश्ती में सवार हो चुके थे। 16 नरो-मादा आए थे। सब कुछ वैसा ही हुआ था जैसा अल्लाह ने नूह को हुक्म दिया था। फिर रब ने दरवाज़े को बंद कर दिया।

17 चालीस दिन तक तूफ़ानी सैलाब जारी रहा। पानी चढ़ा तो उसने कश्ती को ज़मीन पर से उठा लिया। 18 पानी जोर पकड़कर बहुत बढ़ गया, और कश्ती उस पर तैरने लगी। 19 आखिरकार पानी इतना ज़्यादा हो गया कि तमाम ऊँचे पहाड़ भी उसमें छुप गए, 20 बल्कि सबसे ऊँची चोटी पर पानी की गहराई 20 फुट थी। 21 ज़मीन पर रहनेवाली हर मखलूक हलाक हुई। परिदे, मवेशी, जंगली जानवर, तमाम जानदार जिनसे ज़मीन भरी हुई थी और इन्सान, सब कुछ मर गया। 22 ज़मीन पर हर जानदार मखलूक हलाक हुई। 23 यों हर मखलूक को रूए-ज़मीन पर से मिटा दिया गया। इन्सान, ज़मीन पर फिरने और रेंगनेवाले जानवर और परिदे, सब कुछ ख़त्म कर दिया गया। सिर्फ नूह और कश्ती में सवार उसके साथी बच गए।

24 सैलाब डेढ़ सौ दिन तक ज़मीन पर गालिब रहा।

8

सैलाब का इख़िताम

* 6:14 इब्रानी लफ्ज़ मतलूक है। शायद इसका मतलब सरो या देवदार की लकड़ी हो।

1 लेकिन अल्लाह को नूह और तमाम जानवर याद रहे जो कशती में थे। उसने हवा चला दी जिससे पानी कम होने लगा। 2 ज़मीन के चश्मे और आसमान पर के पानी के दरीचे बंद हो गए, और बारिश स्क गई। 3 पानी घटता गया। 150 दिन के बाद वह काफी कम हो गया था। 4 सातवें महीने के 17वें दिन कशती अरारात के एक पहाड़ पर टिक गई। 5 दसवें महीने के पहले दिन पानी इतना कम हो गया था कि पहाड़ों की चोटियाँ नज़र आने लगी थीं।

6-7 चालीस दिन के बाद नूह ने कशती की खिड़की खोलकर एक कौवा छोड़ दिया, और वह उड़कर चला गया। लेकिन जब तक ज़मीन पर पानी था वह आता जाता रहा। 8 फिर नूह ने एक कबूतर छोड़ दिया ताकि पता चले कि ज़मीन पानी से निकल आई है या नहीं। 9 लेकिन कबूतर को कहीं भी बैठने की जगह न मिली, क्योंकि अब तक पूरी ज़मीन पर पानी ही पानी था। वह कशती और नूह के पास वापस आ गया, और नूह ने अपना हाथ बढ़ाया और कबूतर को पकड़कर अपने पास कशती में रख लिया।

10 उसने एक हफ़ता और इंतज़ार करके कबूतर को दुबारा छोड़ दिया। 11 शाम के वक़्त वह लौट आया। इस दफ़ा उस की चोंच में ज़ैतून का ताज़ा पत्ता था। तब नूह को मालूम हुआ कि ज़मीन पानी से निकल आई है।

12 उसने मज़ीद एक हफ़ते के बाद कबूतर को छोड़ दिया। इस दफ़ा वह वापस न आया।

13 जब नूह 601 साल का था तो पहले महीने के पहले दिन ज़मीन की सतह पर पानी ख़त्म हो गया। तब नूह ने कशती की छत खोल दी और देखा कि ज़मीन की सतह पर पानी नहीं है। 14 दूसरे महीने के 27वें दिन ज़मीन बिलकुल खुशक हो गई।

15 फिर अल्लाह ने नूह से कहा, 16 “अपनी बीवी, बेटों और बहुओं के साथ कशती से निकल आ। 17 जितने भी जानवर साथ हैं उन्हें निकाल दे, खाह परिदे हों, खाह ज़मीन पर फिरने या रेंगनेवाले जानवर। वह दुनिया में फैल जाएँ, नसल बढ़ाएँ और तादाद में बढ़ते जाएँ।” 18 चुनौचे नूह अपने बेटों, अपनी बीवी और बहुओं समेत निकल आया। 19 तमाम जानवर और परिदे भी अपनी अपनी क्रिस्म के गुरोहों में कशती से निकले।

20 उस वक़्त नूह ने रब के लिए कुरबानगाह बनाई। उसने तमाम फिरने और उड़नेवाले पाक जानवरों में से कुछ चुनकर उन्हें ज़बह किया और कुरबानगाह पर पूरी तरह जला दिया। 21 यह कुरबानियाँ देखकर रब खुश हुआ और अपने दिल में कहा, “अब से मैं कभी ज़मीन पर इनसान की वजह से लानत नहीं भेजूँगा, क्योंकि उसका दिल बचपन ही से बुराई की तरफ़ मायल है। अब से मैं कभी इस तरह तमाम जान रखनेवाली मख़लूक़ात को स्फ़-ज़मीन पर से नहीं मिटाऊँगा। 22 दुनिया के मुकर्रर औकात जारी रहेंगे। बीज बोने और फ़सल काटने का वक़्त, ठंड और तपिश, गरमियों और सर्दियों का मौसम, दिन और रात, यह सब कुछ दुनिया के अख़ीर तक कायम रहेगा।”

9

अल्लाह का नूह के साथ अहद

1 फिर अल्लाह ने नूह और उसके बेटों को बरकत देकर कहा, “फलो-फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ। दुनिया तुमसे भर जाए। 2 ज़मीन पर फिरने और रेंगनेवाले जानवर, परिदे और मछलियाँ सब तुमसे डरेंगे। उन्हें तुम्हारे इख़्तियार में कर दिया गया है। 3 जिस तरह मैंने तुम्हारे खाने के लिए पौदों की पैदावार मुकर्रर की है उसी तरह अब से तुम्हें हर क्रिस्म के जानवर खाने की इजाज़त भी है। 4 लेकिन ख़बरदार! ऐसा गोश्त न खाना जिसमें खून है, क्योंकि खून में उस की जान है।

5 किसी की जान लेना मना है। जो ऐसा करेगा उसे अपनी जान देनी पड़ेगी, खाह वह इनसान हो या हैवान। मैं खुद इसका मुतालबा करूँगा।

6 जो भी किसी का खून बहाए उसका खून भी बहाया जाएगा। क्योंकि अल्लाह ने इनसान को अपनी सूरत पर बनाया है।

7 अब फलो-फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ। दुनिया में फैल जाओ।”

8 तब अल्लाह ने नूह और उसके बेटों से कहा, 9 “अब मैं तुम्हारे और तुम्हारी औलाद के साथ अहद कायम करता हूँ। 10 यह अहद उन तमाम जानवरों के साथ भी होगा जो कशती में से निकले हैं यानी परिदों, मवेशियों और ज़मीन पर के तमाम जानवरों के साथ। 11 मैं तुम्हारे साथ अहद बाँधकर वादा करता हूँ कि अब से ऐसा कभी नहीं होगा कि ज़मीन की तमाम ज़िंदगी सैलाब से ख़त्म कर दी जाएगी। अब से ऐसा सैलाब कभी नहीं आएगा जो पूरी ज़मीन को तबाह कर दे। 12 इस अबदी अहद का निशान जो मैं तुम्हारे और तमाम जानदारों के साथ कायम कर रहा हूँ यह है कि 13 मैं अपनी कमान बादलों में रखता हूँ। वह मेरे दुनिया के साथ अहद का निशान होगा। 14 जब कभी मेरे कहने पर आसमान पर बादल छा जाएंगे और कौसे-कुज़ह उनमें से नज़र आएगी 15 तो मैं यह अहद याद करूँगा जो तुम्हारे और तमाम जानदारों के साथ किया गया है। अब कभी भी ऐसा सैलाब नहीं आएगा जो तमाम ज़िंदगी को हलाक कर दे। 16 कौसे-कुज़ह नज़र आएगी तो मैं उसे देखकर उस दायमी अहद को याद करूँगा जो मेरे और दुनिया की तमाम जानदार मख़लूक़ात के दरमियान है। 17 यह उस अहद का निशान है जो मैंने दुनिया के तमाम जानदारों के साथ किया है।”

नूह के बेटे

18 नूह के जो बेटे उसके साथ कशती से निकले सिम, हाम और याफ़त थे। हाम कनान का बाप था। 19 दुनिया-भर के तमाम लोग इन तीनों की औलाद हैं।

20 नूह किसान था। शुरू में उसने अंगूर का बाग लगाया। 21 अंगूर से मै बनाकर उसने इतनी पी ली कि वह नशे में धुत अपने डेरे में नंगा पड़ा रहा। 22 कनान के बाप हाम ने उसे यों पड़ा हुआ देखा तो बाहर जाकर अपने दोनों भाइयों को उसके बारे में बताया। 23 यह सुनकर सिम और याफ़त ने अपने कंधों पर कपड़ा रखा। फिर वह उल्टे चलते हुए डेरे में दाखिल हुए और कपड़ा अपने बाप पर डाल दिया। उनके मुँह दूसरी तरफ मुड़े रहे ताकि बाप की बरहानगी नज़र न आए।

24 जब नूह होश में आया तो उसको पता चला कि सबसे छोटे बेटे ने क्या किया है। 25 उसने कहा, “कनान पर लानत! वह अपने भाइयों का जलीलतरीन गुलाम होगा।

26 मुबारक हो रब जो सिम का खुदा है। कनान सिम का गुलाम हो। 27 अल्लाह करे कि याफ़त की हद्द बढ़ जाएँ। याफ़त सिम के डेरों में रहे और कनान उसका गुलाम हो।”

28 सैलाब के बाद नूह मज़ीद 350 साल ज़िंदा रहा। 29 वह 950 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

10

नूह की औलाद

1 यह नूह के बेटों सिम, हाम और याफ़त का नसबनामा है। उनके बेटे सैलाब के बाद पैदा हुए।

याफ़त की नसल

2 याफ़त के बेटे ज़ुमर, माजूज़, मादी, यावान, तबल, मसक और तीरास थे। 3 ज़ुमर के बेटे अश्कनाज़, रीफ़त और तुज़रमा थे। 4 यावान के बेटे इलीसा और तरसीस थे। किती और दोदानी भी उस की औलाद हैं। 5 वह उन कौमों के आबा-ओ-अजदाद हैं जो साहिली इलाकों और जज़ीरों में फैल गईं। यह याफ़त की औलाद हैं जो अपने अपने कबीले और मुल्क में रहते हुए अपनी अपनी ज़बान बोलते हैं।

हाम की नसल

6 हाम के बेटे कूश, मिसर, फूत और कनान थे। 7 कूश के बेटे सिबा, हवीला, सबता, रामा और सबतका थे। रामा के बेटे सबा और ददान थे।

8 कूश का एक और बेटा बनाम नमरूद था। वह दुनिया में पहला ज़बरदस्त हाकिम था। 9 रब के नज़दीक वह ज़बरदस्त शिकारी था। इसलिए आज भी किसी अच्छे शिकारी के बारे में कहा जाता है, “वह नमरूद की मानिंद है जो रब के नज़दीक ज़बरदस्त शिकारी था।” 10 उस की सलतनत के पहले मरकज़ मुल्के-सिनार में बाबल, अरक, अक्काद और कलना के शहर थे। 11 उस मुल्क से निकलकर वह असूर चला गया जहाँ उसने नीनवा, रहोबोत-ईर, कलह 12 और रसन के शहर तामीर किए। बड़ा शहर रसन नीनवा और कलह के दरमियान वाके है।

13 मिसर इन कौमों का बाप था : लूदी, अनामी, लिहाबी, नफ़तूही, 14 फ़तरूसी, कसलूही (जिनसे फ़िलिस्ती निकले) और कफ़तूरी।

15 कनान का पहलौठा सैदा था। कनान ज़ैल की कौमों का बाप भी था : हिती 16 यबूसी, अमोरी, जिरजासी, 17 हिव्वी, अरकी, सीनी, 18 अरवादी, समारी और हमाती। बाद में कनानी कबीले इतने फैल गए 19 कि उनकी हद्द शिमाल में सैदा से जुनूब की तरफ़ जिरार से होकर गज्ज़ा तक और वहाँ से मशरिक की तरफ़ सदूम, अमूरा, अदमा और ज़बोईम से होकर लसा तक थीं।

20 यह सब हाम की औलाद हैं, जो उनके अपने अपने कबीले, अपनी अपनी ज़बान, अपने अपने मुल्क और अपनी अपनी कौम के मुताबिक़ दर्ज हैं।

सिम की नसल

21 सिम याफ़त का बड़ा भाई था। उसके भी बेटे पैदा हुए। सिम तमाम बनी इब्र का बाप है।

22 सिम के बेटे ऐलाम, असूर, अरफ़क्सद, लूद और अराम थे।

23 अराम के बेटे ऊज़, हल, जतर और मस थे।

24 अरफ़क्सद का बेटा सिलह और सिलह का बेटा इब्र था।

25 इब्र के हाँ दो बेटे पैदा हुए। एक का नाम फ़लज यानी तकसीम था, क्योंकि उन ऐयाम में दुनिया तकसीम हुई। फ़लज के भाई का नाम युक्रतान था।

26 युक्रतान के बेटे अलमूदाद, सलफ़, हसरमावत, इराख, 27 हदूराम, ऊज़ाल, दिक्ला, 28 ऊबाल, अबीमाएल, सबा, 29 ओफ़ीर, हवीला और यूबाब थे। यह सब युक्रतान के बेटे थे। 30 वह मेसा से लेकर सफ़ार और मशरिकी पहाड़ी इलाके तक आबाद थे।

31 यह सब सिम की औलाद हैं, जो अपने अपने कबीले, अपनी अपनी ज़बान, अपने अपने मुल्क और अपनी अपनी कौम के मुताबिक़ दर्ज हैं।

32 यह सब नूह के बेटों के कबीले हैं, जो अपनी नसलों और कौमों के मुताबिक़ दर्ज किए गए हैं। सैलाब के बाद तमाम कौमों इन्हीं से निकलकर रूए-ज़मीन पर फैल गईं।

11

बाबल का बुर्ज

1 उस वक्त तक पूरी दुनिया के लोग एक ही ज़बान बोलते थे। 2 मशरिक की तरफ बढ़ते बढ़ते वह सिनार के एक मैदान में पहुँचकर वहाँ आबाद हुए। 3 तब वह एक दूसरे से कहने लगे, “आओ, हम मिट्टी से ईंटें बनाकर उन्हें आग में खूब पकाएँ।” उन्होंने तामीरी काम के लिए पत्थर की जगह ईंटें और मसाले की जगह तारकोल इस्तेमाल किया। 4 फिर वह कहने लगे, “आओ, हम अपने लिए शहर बना लें जिसमें ऐसा बुर्ज हो जो आसमान तक पहुँच जाए फिर हमारा नाम कायम रहेगा और हम रूप-ज़मीन पर बिखर जाने से बच जाएंगे।”

5 लेकिन रब उस शहर और बुर्ज को देखने के लिए उतर आया जिसे लोग बना रहे थे। 6 रब ने कहा, “यह लोग एक ही कौम हैं और एक ही ज़बान बोलते हैं। और यह सिर्फ़ उसका आगाज़ है जो वह करना चाहते हैं। अब से जो भी वह मिलकर करना चाहेंगे उससे उन्हें रोका नहीं जा सकेगा। 7 इसलिए आओ, हम दुनिया में उतरकर उनकी ज़बान को दरहम-बरहम कर दें ताकि वह एक दूसरे की बात समझ न पाएँ।”

8 इस तरीके से रब ने उन्हें तमाम रूप-ज़मीन पर मुंतशिर कर दिया, और शहर की तामीर स्क गई। 9 इसलिए शहर का नाम बाबल यानी अबतरी ठहरा, क्योंकि रब ने वहाँ तमाम लोगों की ज़बान को दरहम-बरहम करके उन्हें तमाम रूप-ज़मीन पर मुंतशिर कर दिया।

सिम से अब्राम तक का नसबनामा

10 यह सिम का नसबनामा है :

सिम 100 साल का था जब उसका बेटा अरफ़क्सद पैदा हुआ। यह सैलाब के दो साल बाद हुआ। 11 इसके बाद वह मज़ीद 500 साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

12 अरफ़क्सद 35 साल का था जब सिलह पैदा हुआ। 13 इसके बाद वह मज़ीद 403 साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

14 सिलह 30 साल का था जब इबर पैदा हुआ। 15 इसके बाद वह मज़ीद 403 साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

16 इबर 34 साल का था जब फ़लज पैदा हुआ। 17 इसके बाद वह मज़ीद 430 साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

18 फ़लज 30 साल का था जब रऊ पैदा हुआ। 19 इसके बाद वह मज़ीद 209 साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

20 रऊ 32 साल का था जब सरूज पैदा हुआ। 21 इसके बाद वह मज़ीद 207 साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

22 सरूज 30 साल का था जब नहर पैदा हुआ। 23 इसके बाद वह मज़ीद 200 साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

24 नहर 29 साल का था जब तारह पैदा हुआ। 25 इसके बाद वह मज़ीद 119 साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

26 तारह 70 साल का था जब उसके बेटे अब्राम, नहर और हारान पैदा हुए।

27 यह तारह का नसबनामा है : अब्राम, नहर और हारान तारह के बेटे थे। लूत हारान का बेटा था। 28 अपने बाप तारह की ज़िंदगी में ही हारान कसदियों के ऊर में इंतकाल कर गया जहाँ वह पैदा भी हुआ था।

29 बाकी दोनों बेटों की शादी हुई। अब्राम की बीवी का नाम सारय था और नहर की बीवी का नाम मिलकाह। मिलकाह हारान की बेटि थी, और उस की एक बहन बनाम इस्का थी। 30 सारय बाँझ थी, इसलिए उसके बच्चे नहीं थे।

31 तारह कसदियों के ऊर से रवाना होकर मुल्के-कनान की तरफ़ सफ़र करने लगा। उसके साथ उसका बेटा अब्राम, उसका पोता लूत यानी हारान का बेटा और उस की बहू सारय थे। जब वह हारान पहुँचे तो वहाँ आबाद हो गए। 32 तारह 205 साल का था जब उसने हारान में वफ़ात पाई।

12

अब्राम की बुलाहट

1 रब ने अब्राम से कहा, “अपने वतन, अपने रिश्तेदारों और अपने बाप के घर को छोड़कर उस मुल्क में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा। 2 मैं तुझसे एक बड़ी कौम बनाऊँगा, तुझे बरकत दूँगा और तेरे नाम को बहुत बढ़ाऊँगा। तू दूसरों के लिए बरकत का बाइस होगा। 3 जो तुझे बरकत देंगे उन्हें मैं भी बरकत दूँगा। जो तुझ पर लानत करेगा उस पर मैं भी लानत करूँगा। दुनिया की तमाम कौमों तुझसे बरकत पाएँगी।”

4 अब्राम ने रब की सुनी और हारान से रवाना हुआ। लूत उसके साथ था। उस वक्त अब्राम 75 साल का था। 5 उसके साथ उस की बीवी सारय और उसका भतीजा लूत थे। वह अपने नौकर-चाकरों समेत अपनी पूरी मिलकियत भी साथ ले गया जो उसने हारान में हासिल की थी। चलते चलते वह कनान पहुँचे। 6 अब्राम उस मुल्क में से गुज़रकर सिकम के मक़ाम पर ठहर गया जहाँ मोरिह के बलूत का दरख़्त था। उस ज़माने में मुल्क में कनानी कौमों आबाद थी।

7 वहाँ रब अब्राम पर ज़ाहिर हुआ और उससे कहा, “मैं तेरी औलाद को यह मुल्क दूँगा।” इसलिए उसने वहाँ रब की ताज़ीम में कुरबानगाह बनाई जहाँ वह उस पर ज़ाहिर हुआ था। 8 वहाँ से वह उस पहाड़ी इलाके की तरफ़ गया जो बैतेल के मशरिक में है। वहाँ उसने अपना ख़ैमा लगाया। मगरिब में बैतेल था और मशरिक में अई। इस जगह पर भी उसने रब की ताज़ीम में कुरबानगाह बनाई और रब का नाम लेकर इबादत की।

9 फिर अब्राम दुबारा रवाना होकर जुनूब के दशते-नजब की तरफ़ चल पड़ा।

अब्राम मिसर में

10 उन दिनों में मुल्के-कनान में काल पड़ा। काल इतना सख्त था कि अब्राम उससे बचने की खातिर कुछ देर के लिए मिसर में जा बसा, लेकिन परदेसी की हैसियत से। 11 जब वह मिसर की सरहद के करीब आए तो उसने अपनी बीवी सारय से कहा, “मैं जानता हूँ कि तू कितनी खूबसूरत है। 12 मिसरी तुझे देखेंगे, फिर कहेंगे, ‘यह इसका शौहर है।’ नतीजे में वह मुझे मार डालेंगे और तुझे ज़िंदा छोड़ेंगे। 13 इसलिए लोगों से यह कहते रहना कि मैं अब्राम की बहन हूँ। फिर मेरे साथ अच्छा सुलूक किया जाएगा और मेरी जान तेरे सबब से बच जाएगी।”

14 जब अब्राम मिसर पहुँचा तो वाकई मिसरियों ने देखा कि सारय निहायत ही खूबसूरत है। 15 और जब फिरौन के अफसरान ने उसे देखा तो उन्होंने फिरौन के सामने सारय की तारीफ़ की। आखिरकार उसे महल में पहुँचाया गया। 16 फिरौन ने सारय की खातिर अब्राम पर एहसान करके उसे भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल, गधे-गधियाँ, नौकर-चाकर और ऊँट दिए।

17 लेकिन रब ने सारय के सबब से फिरौन और उसके घराने में सख्त किस्म के अमराज़ फैलाए। 18 आखिरकार फिरौन ने अब्राम को बुलाकर कहा, “तूने मेरे साथ क्या किया? तूने मुझे क्यों नहीं बताया कि सारय तेरी बीवी है? 19 तूने क्यों कहा कि वह मेरी बहन है? इस धोके की बिना पर मैंने उसे घर में रख लिया ताकि उससे शादी करूँ। देख, तेरी बीवी हाज़िर है। इसे लेकर यहाँ से निकल जा!” 20 फिर फिरौन ने अपने सिपाहियों को हुक्म दिया, और उन्होंने अब्राम, उस की बीवी और पूरी मिलकियत को सख्त करके मुल्क से रवाना कर दिया।

13

अब्राम और लूत अलग हो जाते हैं

1 अब्राम अपनी बीवी, लूत और तमाम जायदाद को साथ लेकर मिसर से निकला और कनान के जुनूबी इलाके दशते-नजब में वापस आया।

2 अब्राम निहायत दौलतमंद हो गया था। उसके पास बहुत-से मवेशी और सोना-चाँदी थी। 3 वहाँ से जगह बजगह चलते हुए वह आखिरकार बैतेल से होकर उस मक़ाम तक पहुँच गया जहाँ उसने शुरू में अपना डेरा लगाया था और जो बैतेल और अई के दरमियान था। 4 वहाँ जहाँ उसने कुरबानगाह बनाई थी उसने रब का नाम लेकर उस की इबादत की।

5 लूत के पास भी बहुत-सी भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और खैमे थे। 6 नतीजा यह निकला कि आखिरकार वह मिलकर न रह सके, क्योंकि इतनी जगह नहीं थी कि दोनों के रेवड़ एक ही जगह पर चर सकें। 7 अब्राम और लूत के चरवाहे आपस में झगड़ने लगे। (उस ज़माने में कनानी और फ़रिज़्ज़ी भी मुल्क में आबाद थे।) 8 तब अब्राम ने लूत से बात की, “ऐसा नहीं होना चाहिए कि तेरे और मेरे दरमियान झगड़ा हो या तेरे चरवाहों और मेरे चरवाहों के दरमियान। हम तो भाई हैं। 9 क्या ज़रूरत है कि हम मिलकर रहें जबकि तू आसानी से इस मुल्क की किसी और जगह रह सकता है। बेहतर है कि तू मुझसे अलग होकर कहीं और रहे। अगर तू बाएँ हाथ जाए तो मैं दाएँ हाथ जाऊँगा, और अगर तू दाएँ हाथ जाए तो मैं बाएँ हाथ जाऊँगा।”

10 लूत ने अपनी नज़र उठाकर देखा कि दरियाए-यरदन के पूरे इलाके में जुगर तक पानी की कसरत है। वह रब के बाग़ या मुल्के-मिसर की मानिंद था, क्योंकि उस वक़्त रब ने सदूम और अमूरा को तबाह नहीं किया था। 11 चुनौचे लूत ने दरियाए-यरदन के पूरे इलाके को चुन लिया और मशरिक की तरफ़ जा बसा। यों दोनों रिश्तेदार एक दूसरे से जुदा हो गए। 12 अब्राम मुल्के-कनान में रहा जबकि लूत यरदन के इलाके के शहरों के दरमियान आबाद हो गया। वहाँ उसने अपने खैमे सदूम के करीब लगा दिए। 13 लेकिन सदूम के बाशिंदे निहायत शरीर थे, और उनके रब के खिलाफ़ गुनाह निहायत मकरूह थे।

रब का अब्राम के साथ दुबारा वादा

14 लूत अब्राम से जुदा हुआ तो रब ने अब्राम से कहा, “अपनी नज़र उठाकर चारों तरफ़ यानी शिमाल, जुनूब, मशरिक और मगरिब की तरफ़ देख। 15 जो भी ज़मीन तुझे नज़र आए उसे मैं तुझे और तेरी औलाद को हमेशा के लिए देता हूँ। 16 मैं तेरी औलाद को खाक की तरह बेशुमार होने दूँगा। जिस तरह खाक के ज़र्रे गिने नहीं जा सकते उसी तरह तेरी औलाद भी गिनी नहीं जा सकेगी। 17 चुनौचे उठकर इस मुल्क की हर जगह चल-फिर, क्योंकि मैं इसे तुझे देता हूँ।”

18 अब्राम रवाना हुआ। चलते चलते उसने अपने डेरे हबर्न के करीब ममरे के दरख्तों के पास लगाए। वहाँ उसने रब की ताज़ीम में कुरबानगाह बनाई।

14

अब्राम लूत को छुड़ाता है

1 कनान में जंग हुई। बैरुने-मुल्क के चार बादशाहों ने कनान के पाँच बादशाहों से जंग की। बैरुने-मुल्क के बादशाह यह थे : सिनार से अमराफ़िल, इल्लासर से अरयूक, ऐलाम से किदरलाउमर और जोयम से तिदाल। 2 कनान के बादशाह यह थे : सदूम से बिरा, अमूरा से बिरशा, अदमा से सिनियाब, ज़बोईम से शिमेबर और बाला यानी जुगर का बादशाह।

3 कनान के इन पाँच बादशाहों का इत्तहाद हुआ था और वह वादीए-सिदीम में जमा हुए थे। (अब सिदीम नहीं है, क्योंकि उस की जगह बहीराए-मुरदार आ गया है।) 4 किदरलाउमर ने बारह साल तक उन पर हुक्मत की थी, लेकिन तेरहवें साल वह बागी हो गए थे।

5 अब एक साल के बाद किदरलाउमर और उसके इत्तहादी अपनी फौजों के साथ आए। पहले उन्होंने अस्तारात-करनैम में रफाइयों को, हाम में जूज़ियों को, सवी-किरियतायम में ऐमियों को 6 और होरियों को उनके पहाड़ी इलाके सईर में शिकस्त दी। यों वह एल-फ़रान तक पहुँच गए जो रेगिस्तान के किनारे पर है। 7 फिर वह वापस आए और ऐन-मिसफ़ात यानी क़ादिस पहुँचे। उन्होंने अमालीकियों के पूरे इलाके को तबाह कर दिया और हससून-तमर में आबाद अमोरियों को भी शिकस्त दी।

8 उस वक़्त सदूम, अमूरा, अदमा, ज़बोईम और बाला यानी जुगर के बादशाह उनसे लड़ने के लिए सिदीम की वादी में जमा हुए। 9 इन पाँच बादशाहों ने ऐलाम के बादशाह किदरलाउमर, जोयम के बादशाह तिदाल, सिनार के बादशाह अमराफ़िल और इल्लासर के बादशाह अरयूक का मुक़ाबला किया। 10 इस वादी में तारकोल के मुतअद्दिद गढ़े थे। जब बागी बादशाह शिकस्त खाकर भागने लगे तो सदूम और अमूरा के बादशाह इन गढ़ों में गिर गए जबकि बाक़ी तीन बादशाह बचकर पहाड़ी इलाके में फ़रार हुए। 11 फ़तहमंद बादशाह सदूम और अमूरा का तमाम माल तमाम खानेवाली चीज़ों समेत लूटकर वापस चल दिए। 12 अब्राम का भतीजा लूत सदूम में रहता था, इसलिए वह उसे भी उस की मिलकियत समेत छीनकर साथ ले गए।

13 लेकिन एक आदमी ने जो बच निकला था इब्रानी मर्द अब्राम के पास आकर उसे सब कुछ बता दिया। उस वक़्त वह ममरे के दरख्तों के पास आबाद था। ममरे अमोरी था। वह और उसके भाई इसकाल और आनेर अब्राम के इत्तहादी थे। 14 जब अब्राम को पता चला कि भतीजे को गिरफ़्तार कर लिया गया है तो उसने अपने घर में पैदा हुए तमाम जंगआज़मूदा गुलामों को जमा करके दान तक दुश्मन का ताक़्क़ुब किया। उसके साथ 318 अफ़राद थे। 15 वहाँ उसने अपने बंदों को ग़ुरोहों में तकसीम करके रात के वक़्त दुश्मन पर हमला किया। दुश्मन शिकस्त खाकर भाग गया और अब्राम ने दमिश्क के शिमाल में वाके ख़ूबा तक उसका ताक़्क़ुब किया। 16 वह उनसे लूटा हुआ तमाम माल वापस ले आया। लूत, उस की जायदाद, औरतें और बाक़ी कैदी भी दुश्मन के कब्ज़े से बच निकले।

मलिके-सिदूक, सालिम का बादशाह

17 जब अब्राम किदरलाउमर और उसके इत्तहादियों पर फ़तह पाने के बाद वापस पहुँचा तो सदूम का बादशाह उससे मिलने के लिए वादीए-सवी में आया। (इसे आजकल बादशाह की वादी कहा जाता है।) 18 सालिम का बादशाह मलिके-सिदूक भी वहाँ पहुँचा। वह अपने साथ रोटी और मै ले आया। मलिके-सिदूक अल्लाह तआला का इमाम था। 19 उसने अब्राम को बरकत देकर कहा, “अब्राम पर अल्लाह तआला की बरकत हो, जो आसमानो-ज़मीन का ख़ालिक है। 20 अल्लाह तआला मुबारक हो जिसने तेरे दुश्मनों को तेरे हाथ में कर दिया है।” अब्राम ने उसे तमाम माल का दसवाँ हिस्सा दिया।

21 सदूम के बादशाह ने अब्राम से कहा, “मुझे मेरे लोग वापस कर दें और बाक़ी चीज़ें अपने पास रख लें।” 22 लेकिन अब्राम ने उससे कहा, “मैंने रब से क़सम खाई है, अल्लाह तआला से जो आसमानो-ज़मीन का ख़ालिक है 23 कि मैं उसमें से कुछ नहीं लूँगा जो आपका है, चाहे वह धागा या जूती का तसमा ही क्यों न हो। ऐसा न हो कि आप कहें, ‘मैंने अब्राम को दौलतमंद बना दिया है।’ 24 सिवाए उस खाने के जो मेरे आदमियों ने रास्ते में खाया है मैं कुछ क़बूल नहीं करूँगा। लेकिन मेरे इत्तहादी आनेर, इसकाल और ममरे ज़रूर अपना अपना हिस्सा लें।”

15

अब्राम के साथ रब का अहद

1 इसके बाद रब रोया में अब्राम से हमकलाम हुआ, “अब्राम, मत डर। मैं ही तेरी सिपर हूँ, मैं ही तेरा बहुत बड़ा अज़्ज़ हूँ।”

2 लेकिन अब्राम ने एतराज़ किया, “ऐ रब क़ादिर-मुतलक, तू मुझे क्या देगा जबकि अभी तक मेरे हाँ कोई बच्चा नहीं है और इलियज़र दमिश्की मेरी मीरास पाएगा। 3 तूने मुझे औलाद नहीं बख़्शी, इसलिए मेरे घराने का नौकर मेरा वारिस होगा।” 4 तब अब्राम को अल्लाह से एक और कलाम मिला। “यह आदमी इलियज़र तेरा वारिस नहीं होगा बल्कि तेरा अपना ही बेटा तेरा वारिस होगा।” 5 रब ने उसे बाहर ले जाकर कहा, “आसमान की तरफ़ देख और सितारों को गिनने की कोशिश कर। तेरी औलाद इतनी ही बेशुमार होगी।”

6 अब्राम ने रब पर भरोसा रखा। इस बिना पर अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ करार दिया।

7 फिर रब ने उससे कहा, “मैं रब हूँ जो तुझे कसदियों के ऊर से यहाँ ले आया ताकि तुझे यह मुल्क मीरास में दे दूँ।” 8 अब्राम ने पूछा, “ऐ रब क़ादिर-मुतलक, मैं किस तरह जानूँ कि इस मुल्क पर क़ब्ज़ा करूँगा?” 9 जवाब में रब ने कहा, “मेरे हुज़ूर एक तीन-साला गाय, एक तीन-साला बकरी और एक तीन-साला मेंढा ले आ। एक कुम्भी और एक कबूतर का बच्चा भी ले आना।” 10 अब्राम ने ऐसा ही किया और फिर हर एक जानवर को दो हिस्सों में काटकर उनको एक दूसरे के आमने-सामने रख दिया। लेकिन परिंदों को उसने सालिम रहने दिया। 11 शिकारी परिंदे उन पर उतरने लगे, लेकिन अब्राम उन्हें भगाता रहा।

12 जब सूरज डूबने लगा तो अब्राम पर गहरी नींद तारी हुई। उस पर दहशत और अंधेरा ही अंधेरा छा गया। 13 फिर रब ने उससे कहा, “जान ले कि तेरी औलाद ऐसे मुल्क में रहेगी जो उसका नहीं होगा। वहाँ वह अजनबी और गुलाम होगी, और उस पर 400 साल तक बहुत ज़ुल्म किया जाएगा। 14 लेकिन मैं उस क़ौम की अदालत करूँगा जिसने उसे गुलाम बनाया होगा। इसके बाद वह बड़ी दौलत पाकर उस मुल्क से निकलेंगे। 15 तू खुद उम्रसिदा होकर सलामती के साथ इंतकाल करके अपने बापदादा से जा मिलेगा और दफ़नाया जाएगा। 16 तेरी औलाद की

चौथी पुश्त गैरवतन से वापस आएगी, क्योंकि उस वक्त तक मैं अमोरियों को बरदाश्त करूँगा। लेकिन आखिरकार उनके गुनाह इतने संगीन हो जाएंगे कि मैं उन्हें मुल्के-कनान से निकाल दूँगा।”

17 सूरज गुस्ब हुआ। अंधेरा छा गया। अचानक एक धुआँदार तनूर और एक भड़कती हुई मशाल नज़र आई और जानवरों के दो दो टुकड़ों के बीच में से गुज़रे।

18 उस वक्त रब ने अब्राम के साथ अहद किया। उसने कहा, “मैं यह मुल्क मिसर की सरहद से फुरात तक तेरी औलाद को दूँगा, 19 अगरचे अभी तक इसमें क्रीनी, कनिज्जी, कदमूनी, 20 हिली, फरिज्जी, रफाई, 21 अमोरी, कनानी, जिरजासी और यबूसी आबाद हैं।”

16

हाजिरा और इसमाईल

1 अब तक अब्राम की बीवी सारय के कोई बच्चा नहीं हुआ था। लेकिन उन्होंने एक मिसरी लौंडी रखी थी जिसका नाम हाजिरा था, 2 और एक दिन सारय ने अब्राम से कहा, “रब ने मुझे बच्चे पैदा करने से महसूस रखा है, इसलिए मेरी लौंडी के साथ हमबिसतर हों। शायद मुझे उस की मारिफत बच्चा मिल जाए।”

अब्राम ने सारय की बात मान ली। 3 चुनाँचे सारय ने अपनी मिसरी लौंडी हाजिरा को अपने शौहर अब्राम को दे दिया ताकि वह उस की बीवी बन जाए उस वक्त अब्राम को कनान में बसते हुए दस साल हो गए थे। 4 अब्राम हाजिरा से हमबिसतर हुआ तो वह उम्मीद से हो गई। जब हाजिरा को यह मालूम हुआ तो वह अपनी मालिकन को हकीर जानने लगी। 5 तब सारय ने अब्राम से कहा, “जो जुल्म मुझ पर किया जा रहा है वह आप ही पर आए। मैंने खुद इसे आपके बाजुओं में दे दिया था। अब जब इसे मालूम हुआ है कि उम्मीद से है तो मुझे हकीर जानने लगी है। रब मेरे और आपके दरमियान फैसला करे।” 6 अब्राम ने जवाब दिया, “देखो, यह तुम्हारी लौंडी है और तुम्हारे इख्तियार में है। जो तुम्हारा जी चाहे उसके साथ करो।”

इस पर सारय उससे इतना बुरा सुलूक करने लगी कि हाजिरा फ़रार हो गई। 7 रब के फ़रिश्ते को हाजिरा रेगिस्तान के उस चश्मे के करीब मिली जो शूर के रास्ते पर है। 8 उसने कहा, “सारय की लौंडी हाजिरा, तू कहाँ से आ रही है और कहाँ जा रही है?” हाजिरा ने जवाब दिया, “मैं अपनी मालिकन सारय से फ़रार हो रही हूँ।” 9 रब के फ़रिश्ते ने उससे कहा, “अपनी मालिकन के पास वापस चली जा और उसके ताबे रह। 10 मैं तेरी औलाद इतनी बढ़ाऊँगा कि उसे गिना नहीं जा सकेगा।” 11 रब के फ़रिश्ते ने मज़ीद कहा, “तू उम्मीद से है। एक बेटा पैदा होगा। उसका नाम इसमाईल यानी ‘अल्लाह सुनता है’ रख, क्योंकि रब ने मुसीबत में तेरी आवाज़ सुनी। 12 वह जंगली गधे की मानिंद होगा। उसका हाथ हर एक के खिलाफ़ और हर एक का हाथ उसके खिलाफ़ होगा। तो भी वह अपने तमाम भाइयों के सामने आबाद रहेगा।”

13 रब के उसके साथ बात करने के बाद हाजिरा ने उसका नाम अत्ताएल-रोई यानी ‘तू एक माबूद है जो मुझे देखता है’ रखा। उसने कहा, “क्या मैंने वाकई उसके पीछे देखा है जिसने मुझे देखा है?” 14 इसलिए उस जगह के कुएँ का नाम ‘बैर-लही-रोई’ यानी ‘उस ज़िंदा हस्ती का कुआँ जो मुझे देखता है’ पड़ गया। वह कादिस और बरद के दरमियान वाके है।

15 हाजिरा वापस गई, और उसके बेटा पैदा हुआ। अब्राम ने उसका नाम इसमाईल रखा। 16 उस वक्त अब्राम 86 साल का था।

17

अहद का निशान : खतना

1 जब अब्राम 99 साल का था तो रब उस पर ज़ाहिर हुआ। उसने कहा, “मैं अल्लाह कादिरे-मुतलक हूँ। मेरे हुज़ूर चलता रह और बेइलज़ाम हो। 2 मैं तेरे साथ अपना अहद बाँधूँगा और तेरी औलाद को बहुत ही ज़्यादा बढ़ा दूँगा।”

3 अब्राम मुँह के बल गिर गया, और अल्लाह ने उससे कहा, 4 “मेरा तेरे साथ अहद है कि तू बहुत कौमों का बाप होगा। 5 अब से तू अब्राम यानी ‘अज़ीम बाप’ नहीं कहलाएगा बल्कि तेरा नाम इब्राहीम यानी ‘बहुत कौमों का बाप’ होगा। क्योंकि मैंने तुझे बहुत कौमों का बाप बना दिया है। 6 मैं तुझे बहुत ही ज़्यादा औलाद बरख़्श दूँगा, इतनी कि कौमें बनेंगी। तुझसे बादशाह भी निकलेंगे। 7 मैं अपना अहद तेरे और तेरी औलाद के साथ नसल-दर-नसल कायम करूँगा, एक अबदी अहद जिसके मुताबिक मैं तेरा और तेरी औलाद का खुदा हूँगा। 8 तू इस वक्त मुल्के-कनान में परदेसी है, लेकिन मैं इस पूरे मुल्क को तुझे और तेरी औलाद को देता हूँ। यह हमेशा तक उनका ही रहेगा, और मैं उनका खुदा हूँगा।”

9 अल्लाह ने इब्राहीम से यह भी कहा, “तुझे और तेरी औलाद को नसल-दर-नसल मेरे अहद की शरायत पूरी करनी है। 10 इसकी एक शर्त यह है कि हर एक मर्द का खतना किया जाए। 11 अपना खतना कराओ। यह हमारे आपस के अहद का ज़ाहिरी निशान होगा। 12 लाज़िम है कि तू और तेरी औलाद नसल-दर-नसल अपने हर एक बेटे का आठवें दिन खतना करवाएँ। यह उसूल उस पर भी लागू है जो तेरे घर में रहता है लेकिन तुझसे रिश्ता नहीं रखता, चाहे वह घर में पैदा हुआ हो या किसी अजनबी से ख़रीदा गया हो। 13 घर के हर एक मर्द का खतना करना लाज़िम है, खाह वह घर में पैदा हुआ हो या किसी अजनबी से ख़रीदा गया हो। यह इस बात का निशान होगा कि मेरा तेरे साथ अहद हमेशा तक कायम रहेगा। 14 जिस मर्द का खतना न किया गया उसे उस की कौम में से मिटाया जाएगा, क्योंकि उसने मेरे अहद की शरायत पूरी न की।”

15 अल्लाह ने इब्राहीम से यह भी कहा, “अपनी बीवी सारय का नाम भी बदल देना। अब से उसका नाम सारय नहीं बल्कि सारा यानी शहजादी होगा। 16 मैं उसे बरकत बख्शूँगा और तुझे उस की मारिफत बेटा दूँगा। मैं उसे यहाँ तक बरकत दूँगा कि उससे क्रौमों बल्कि क्रौमों के बादशाह निकलेंगे।”

17 इब्राहीम मुँह के बल गिर गया। लेकिन दिल ही दिल में वह हँस पड़ा और सोचा, “यह किस तरह हो सकता है? मैं तो 100 साल का हूँ। ऐसे आदमी के हों बच्चा किस तरह पैदा हो सकता है? और सारा जैसी उम्रसीदा औरत के बच्चा किस तरह पैदा हो सकता है? उस की उम्र तो 90 साल है।” 18 उसने अल्लाह से कहा, “हाँ, इसमाईल ही तेरे सामने जीता रहे।”

19 अल्लाह ने कहा, “नहीं, तेरी बीवी सारा के हों बेटा पैदा होगा। तू उसका नाम इसहाक यानी ‘वह हँसता है’ रखना। मैं उसके और उस की औलाद के साथ अबदी अहद बाँधूँगा। 20 मैं इसमाईल के सिलसिले में भी तेरी दरखास्त पूरी करूँगा। मैं उसे भी बरकत देकर फलने फूलने दूँगा और उस की औलाद बहुत ही ज्यादा बढ़ा दूँगा। वह बारह रईसों का बाप होगा, और मैं उस की मारिफत एक बड़ी क्रौम बनाऊँगा। 21 लेकिन मेरा अहद इसहाक के साथ होगा, जो ऐन एक साल के बाद सारा के हों पैदा होगा।”

22 अल्लाह की इब्राहीम के साथ बात खत्म हुई, और वह उसके पास से आसमान पर चला गया।

23 उसी दिन इब्राहीम ने अल्लाह का हुक्म पूरा किया। उसने घर के हर एक मर्द का खतना करवाया, अपने बेटे इसमाईल का भी और उनका भी जो उसके घर में रहते लेकिन उससे रिश्ता नहीं रखते थे, चाहे वह उसके घर में पैदा हुए थे या खरीदे गए थे। 24 इब्राहीम 99 साल का था जब उसका खतना हुआ, 25 जबकि उसका बेटा इसमाईल 13 साल का था। 26 दोनों का खतना उसी दिन हुआ। 27 साथ साथ घराने के तमाम बाक़ी मर्दों का खतना भी हुआ, बशमूल उनके जिनका इब्राहीम के साथ रिश्ता नहीं था, चाहे वह घर में पैदा हुए या किसी अजनबी से खरीदे गए थे।

18

ममरे में इब्राहीम के तीन मेहमान

1 एक दिन रब ममरे के दरख्तों के पास इब्राहीम पर जाहिर हुआ। इब्राहीम अपने खैमे के दरवाज़े पर बैठा था। दिन की गरमी उरुज पर थी। 2 अचानक उसने देखा कि तीन मर्द मेरे सामने खड़े हैं। उन्हें देखते ही वह खैमे से उनसे मिलने के लिए दौड़ा और मुँह के बल गिरकर सिजदा किया। 3 उसने कहा, “मेरे आका, अगर मुझ पर आपके करम की नज़र है तो आगे न बढ़ें बल्कि कुछ देर अपने बंदे के घर ठहरें। 4 अगर इजाज़त हो तो मैं कुछ पानी ले आऊँ ताकि आप अपने पाँव धोकर दरख्त के साय में आराम कर सकें। 5 साथ साथ मैं आपके लिए थोड़ा-बहुत खाना भी ले आऊँ ताकि आप तकवियत पाकर आगे बढ़ सकें। मुझे यह करने दें, क्योंकि आप अपने खादिम के घर आ गए हैं।” उन्होंने कहा, “ठीक है। जो कुछ तूने कहा है वह कर।”

6 इब्राहीम खैमे की तरफ़ दौड़कर सारा के पास आया और कहा, “जल्दी करो! 16 किलोग्राम बेहतरीन मैदा ले और उसे गूँधकर रोटियाँ बना।” 7 फिर वह भागकर बैलों के पास पहुँचा। उनमें से उसने एक मोटा-ताज़ा बछड़ा चुन लिया जिसका गोश्त नरम था और उसे अपने नौकर को दिया जिसने जल्दी से उसे तैयार किया। 8 जब खाना तैयार था तो इब्राहीम ने उसे लेकर लस्सी और दूध के साथ अपने मेहमानों के आगे रख दिया। वह खाने लगे और इब्राहीम उनके सामने दरख्त के साय में खड़ा रहा।

9 उन्होंने पूछा, “तेरी बीवी सारा कहाँ है?” उसने जवाब दिया, “खैमे में।” 10 रब ने कहा, “ऐन एक साल के बाद मैं वापस आऊँगा तो तेरी बीवी सारा के बेटा होगा।”

सारा यह बातें सुन रही थी, क्योंकि वह उसके पीछे खैमे के दरवाज़े के पास थी। 11 दोनों मियाँ-बीवी बूढ़े हो चुके थे और सारा उस उम्र से गुज़र चुकी थी जिसमें औरतों के बच्चे पैदा होते हैं। 12 इसलिए सारा अंदर ही अंदर हँस पड़ी और सोचा, “यह कैसे हो सकता है? क्या जब मैं बुढ़ापे के बाइस घिसे-फटे लिबास की मानिंद हूँ तो जवानी के जोबन का लुत्फ़ उठाऊँ? और मेरा शौहर भी बूढ़ा है।”

13 रब ने इब्राहीम से पूछा, “सारा क्यों हँस रही है? वह क्यों कह रही है, ‘क्या वाकई मेरे हों बच्चा पैदा होगा जबकि मैं इतनी उम्रसीदा हूँ?’ 14 क्या रब के लिए कोई काम नामुमकिन है? एक साल के बाद मुकर्ररा वक़्त पर मैं वापस आऊँगा तो सारा के बेटा होगा।” 15 सारा डर गई। उसने झूट बोलकर इनकार किया, “मैं नहीं हँस रही थी।”

रब ने कहा, “नहीं, तू ज़रूर हँस रही थी।”

इब्राहीम सदूम के लिए मिन्नत करता है

16 फिर मेहमान उठकर रवाना हुए और नीचे वादी में सदूम की तरफ़ देखने लगे। इब्राहीम उन्हें स्ख़सत करने के लिए साथ साथ चल रहा था। 17 रब ने दिल में कहा, “मैं इब्राहीम से वह काम क्यों छुपाए रखूँ जो मैं करने के लिए जा रहा हूँ? 18 इसी से तो एक बड़ी और ताक़तवर क्रौम निकलेगी और इसी से मैं दुनिया की तमाम क्रौमों को बरकत दूँगा। 19 उसी को मैंने चुन लिया है ताकि वह अपनी औलाद और अपने बाद के घराने को हुक्म दे कि वह रब की राह पर चलकर रास्त और मुंसिफ़ाना काम करें। क्योंकि अगर वह ऐसा करें तो रब इब्राहीम के साथ अपना वादा पूरा करेगा।”

20 फिर रब ने कहा, “सदूम और अमूरा की बदी के बाइस लोगों की आहें बुलंद हो रही हैं, क्योंकि उनसे बहुत संगीन गुनाह सरज़द हो रहे हैं। 21 मैं उतरकर उनके पास जा रहा हूँ ताकि देखूँ कि यह इलज़ाम वाकई सच है जो मुझ तक पहुँचे हैं। अगर ऐसा नहीं है तो मैं यह जानना चाहता हूँ।”

22 दूसरे दो आदमी सदूम की तरफ़ आगे निकले जबकि रब कुछ देर के लिए वहाँ ठहरा रहा और इब्राहीम उसके सामने खड़ा रहा। 23 फिर उसने करीब आकर उससे बात की, “क्या तू रास्तबाज़ों को भी शरीरों के साथ तबाह कर देगा? 24 हो सकता है कि शहर में 50 रास्तबाज़ हों। क्या तू फिर भी शहर को बरबाद कर देगा और उसे उन 50 के सबब से मुआफ़ नहीं करेगा? 25 यह कैसे हो सकता है कि तू बेकुसूरों को शरीरों के साथ हलाक कर दे? यह तो नामुमकिन है कि तू नेक और शरीर लोगों से एक जैसा सुलूक करे। क्या लाज़िम नहीं कि पूरी दुनिया का मुंसिफ़ इनसाफ़ करे?”

26 रब ने जवाब दिया, “अगर मुझे शहर में 50 रास्तबाज़ मिल जाएँ तो उनके सबब से तमाम को मुआफ़ कर दूँगा।”

27 इब्राहीम ने कहा, “मैं मुआफ़ी चाहता हूँ कि मैंने रब से बात करने की ज़रूरत की है अगरचे मैं खाक और राख ही हूँ। 28 लेकिन हो सकता है कि सिर्फ़ 45 रास्तबाज़ उसमें हों। क्या तू फिर भी उन पाँच लोगों की कमी के सबब से पूरे शहर को तबाह करेगा?” उसने कहा, “अगर मुझे 45 भी मिल जाएँ तो उसे बरबाद नहीं करूँगा।”

29 इब्राहीम ने अपनी बात जारी रखी, “और अगर सिर्फ़ 40 नेक लोग हों तो?” रब ने कहा, “मैं उन 40 के सबब से उन्हें छोड़ दूँगा।”

30 इब्राहीम ने कहा, “रब गुस्सा न करे कि मैं एक दफ़ा और बात करूँ। शायद वहाँ सिर्फ़ 30 हों।” उसने जवाब दिया, “फिर भी उन्हें छोड़ दूँगा।”

31 इब्राहीम ने कहा, “मैं मुआफ़ी चाहता हूँ कि मैंने रब से बात करने की ज़रूरत की है। अगर सिर्फ़ 20 पाए जाएँ?” रब ने कहा, “मैं 20 के सबब से शहर को बरबाद करने से बाज़ रहूँगा।”

32 इब्राहीम ने एक आखिरी दफ़ा बात की, “रब गुस्सा न करे अगर मैं एक और बार बात करूँ। शायद उसमें सिर्फ़ 10 पाए जाएँ।” रब ने कहा, “मैं उसे उन 10 लोगों के सबब से भी बरबाद नहीं करूँगा।”

33 इन बातों के बाद रब चला गया और इब्राहीम अपने घर को लौट आया।

19

सदूम और अमूरा की तबाही

1 शाम के वक़्त यह दो फ़रिश्ते सदूम पहुँचे। लूत शहर के दरवाज़े पर बैठा था। जब उसने उन्हें देखा तो खड़े होकर उनसे मिलने गया और मुँह के बल गिरकर सिजदा किया। 2 उसने कहा, “साहबो, अपने बंदे के घर तशरीफ़ लाएँ ताकि अपने पाँव धोकर रात को ठहरें और फिर कल सुबह-सवेरे उठकर अपना सफ़र जारी रखें।” उन्होंने कहा, “कोई बात नहीं, हम चौक में रात गुज़ारेंगे।” 3 लेकिन लूत ने उन्हें बहुत मजबूर किया, और आखिरकार वह उसके साथ उसके घर आए। उसने उनके लिए खाना पकाया और बेखमीरी रोटी बनाई। फिर उन्होंने खाना खाया।

4 वह अभी सोने के लिए लेटे नहीं थे कि शहर के जवानों से लेकर बूढ़ों तक तमाम मर्दों ने लूत के घर को घेर लिया। 5 उन्होंने आवाज़ देकर लूत से कहा, “वह आदमी कहाँ है जो रात के वक़्त तेरे पास आए? उनको बाहर ले आ ताकि हम उनके साथ हरामकारी करें।”

6 लूत उनसे मिलने बाहर गया। उसने अपने पीछे दरवाज़ा बंद कर लिया 7 और कहा, “मेरे भाइयो, ऐसा मत करो, ऐसी बदकारी न करो। 8 देखो, मेरी दो कुँवारी बेटियाँ हैं। उन्हें मैं तुम्हारे पास बाहर ले आता हूँ। फिर जो जी चाहे उनके साथ करो। लेकिन इन आदमियों को छोड़ दो, क्योंकि वह मेरे मेहमान हैं।”

9 उन्होंने कहा, “रास्ते से हट जा! देखो, यह शख्स जब हमारे पास आया था तो अजनबी था, और अब यह हम पर हाकिम बनना चाहता है। अब तेरे साथ उनसे ज़्यादा बुरा सुलूक करेंगे।” वह उसे मजबूर करते करते दरवाज़े को तोड़ने के लिए आगे बढ़े। 10 लेकिन ऐन वक़्त पर अंदर के आदमी लूत को पकड़कर अंदर ले आए, फिर दरवाज़ा दुबारा बंद कर दिया। 11 उन्होंने छोटों से लेकर बड़ों तक बाहर के तमाम आदमियों को अंधा कर दिया, और वह दरवाज़े को ढूँढ़ते ढूँढ़ते थक गए।

12 दोनों आदमियों ने लूत से कहा, “क्या तेरा कोई और रिश्तेदार इस शहर में रहता है, मसलन कोई दामाद या बेटा-बेटी? सबको साथ लेकर यहाँ से चला जा, 13 क्योंकि हम यह मक़ाम तबाह करने को हैं। इसके बाशिंदों की बदी के बाइस लोगों की आहें बुलंद होकर रब के हज़ूर पहुँच गई हैं, इसलिए उसने हमें इसको तबाह करने के लिए भेजा है।”

14 लूत घर से निकला और अपने दामादों से बात की जिनका उस की बेटियों के साथ रिश्ता हो चुका था। उसने कहा, “जल्दी करो, इस जगह से निकलो, क्योंकि रब इस शहर को तबाह करने को है।” लेकिन उसके दामादों ने इसे मज़ाक़ ही समझा।

15 जब पौ फटने लगी तो दोनों आदमियों ने लूत को बहुत समझाया और कहा, “जल्दी कर! अपनी बीवी और दोनों बेटियों को साथ लेकर चला जा, वरना जब शहर को सज़ा दी जाएगी तो तू भी हलाक हो जाएगा।” 16 तो भी वह झिजकता रहा। आखिरकार दोनों ने लूत, उस की बीवी और बेटियों के हाथ पकड़कर उन्हें शहर के बाहर तक पहुँचा दिया, क्योंकि रब को लूत पर तरस आता था।

17 ज्योंही वह उन्हें बाहर ले आए उनमें से एक ने कहा, “अपनी जान बचाकर चला जा। पीछे मुड़कर न देखना। मैदान में कहीं न ठहरना बल्कि पहाड़ों में पनाह लेना, वरना तू हलाक हो जाएगा।”

18 लेकिन लूत ने उनसे कहा, “नहीं मेरे आका, ऐसा न हो। 19 तेरे बंदे को तेरी नज़रे-करम हासिल हुई है और तूने मेरी जान बचाने में बहुत मेहरबानी कर दिखाई है। लेकिन मैं पहाड़ों में पनाह नहीं ले सकता। वहाँ पहुँचने से पहले यह मुसीबत मुझ पर आन पड़ेगी और मैं हलाक हो जाऊँगा। 20 देख, करीब ही एक छोटा कसबा है। वह इतना नज़दीक है कि मैं उस तरफ़ हिजरत कर सकता हूँ। मुझे वहाँ पनाह लेने दे। वह छोटा ही है, ना? फिर मेरी जान बचेगी।”

21 उसने कहा, “चलो, ठीक है। तेरी यह दरखास्त भी मंज़ूर है। मैं यह कसबा तबाह नहीं करूँगा। 22 लेकिन भागकर वहाँ पनाह ले, क्योंकि जब तक तू वहाँ पहुँच न जाए मैं कुछ नहीं कर सकता।” इसलिए कसबे का नाम जुगर यानी छोटा है।

23 जब लूत जुगर पहुँचा तो सूरज निकला हुआ था। 24 तब रब ने आसमान से सद्म और अमूरा पर गंधक और आग बरसाई। 25 यों उसने उस पूरे मैदान को उसके शहरों, बाशियों और तमाम हरियाली समेत तबाह कर दिया। 26 लेकिन फ़रार होते वक़्त लूत की बीबी ने पीछे मुड़कर देखा तो वह फ़ौरन नमक का सतून बन गई।

27 इब्राहीम सुबह-सवेरे उठकर उस जगह वापस आया जहाँ वह कल रब के सामने खड़ा हुआ था। 28 जब उसने नीचे सद्म, अमूरा और पूरी वादी की तरफ़ नज़र की तो वहाँ से भट्टे का-सा धुआँ उठ रहा था।

29 यों अल्लाह ने इब्राहीम को याद किया जब उसने उस मैदान के शहर तबाह किए। क्योंकि वह उन्हें तबाह करने से पहले लूत को जो उनमें आबाद था वहाँ से निकाल लाया।

लूत और उस की बेटियाँ

30 लूत और उस की बेटियाँ ज्यादा देर तक जुगर में न ठहरे। वह खाना होकर पहाड़ों में आबाद हुए, क्योंकि लूत जुगर में रहने से डरता था। वहाँ उन्होंने एक ग़ार को अपना घर बना लिया।

31 एक दिन बड़ी बेटी ने छोटी से कहा, “अब्बू बूढ़ा है और यहाँ कोई मर्द है नहीं जिसके ज़रीए हमारे बच्चे पैदा हो सकें। 32 आओ, हम अब्बू को मै पिलाएँ। जब वह नशे में धुत हो तो हम उसके साथ हमबिसतर होकर अपने लिए औलाद पैदा करें ताकि हमारी नसल कायम रहे।”

33 उस रात उन्होंने अपने बाप को मै पिलाई। जब वह नशे में था तो बड़ी बेटी अंदर जाकर उसके साथ हमबिसतर हुई। चूँकि लूत होश में नहीं था इसलिए उसे कुछ भी मालूम न हुआ। 34 अगले दिन बड़ी बहन ने छोटी बहन से कहा, “पिछली रात मैं अब्बू से हमबिसतर हुई। आओ, आज रात को हम उसे दुबारा मै पिलाएँ। जब वह नशे में धुत हो तो तुम उसके साथ हमबिसतर होकर अपने लिए औलाद पैदा करना ताकि हमारी नसल कायम रहे।” 35 चुनौचे उन्होंने उस रात भी अपने बाप को मै पिलाई। जब वह नशे में था तो छोटी बेटी उठकर उसके साथ हमबिसतर हुई। इस बार भी वह होश में नहीं था, इसलिए उसे कुछ भी मालूम न हुआ।

36 यों लूत की बेटियाँ अपने बाप से उम्मीद से हुई। 37 बड़ी बेटी के हाँ बेटा पैदा हुआ। उसने उसका नाम मोआब रखा। उससे मोआबी निकले हैं। 38 छोटी बेटी के हाँ भी बेटा पैदा हुआ। उसने उसका नाम बिन-अम्मी रखा। उससे अम्मोनी निकले हैं।

20

इब्राहीम और अबीमलिक

1 इब्राहीम वहाँ से जुनब की तरफ़ दशते-नजब में चला गया और कादिस और शूर के दरमियान जा बसा। कुछ देर के लिए वह जिरार में ठहरा, लेकिन अजनबी की हैसियत से। 2 वहाँ उसने लोगों को बताया, “सारा मेरी बहन है।” इसलिए जिरार के बादशाह अबीमलिक ने किसी को भिजवा दिया कि उसे महल में ले आए।

3 लेकिन रात के वक़्त अल्लाह ख़ाब में अबीमलिक पर जाहिर हुआ और कहा, “मौत तेरे सर पर खड़ी है, क्योंकि जो औरत तू अपने घर ले आया है वह शादीशुदा है।”

4 असल में अबीमलिक अभी तक सारा के करीब नहीं गया था। उसने कहा, “मेरे आका, क्या तू एक बेक़सूर कौम को भी हलाक करेगा? 5 क्या इब्राहीम ने मुझसे नहीं कहा था कि सारा मेरी बहन है? और सारा ने उस की हाँ में हाँ मिलाई। मेरी नीयत अच्छी थी और मैंने ग़लत काम नहीं किया।” 6 अल्लाह ने कहा, “हाँ, मैं जानता हूँ कि इसमें तेरी नीयत अच्छी थी। इसलिए मैंने तुझे मेरा गुनाह करने और उसे छूने से रोक दिया। 7 अब उस औरत को उसके शौहर को वापस कर दे, क्योंकि वह नबी है और तेरे लिए दुआ करेगा। फिर तू नहीं मरेगा। लेकिन अगर तू उसे वापस नहीं करेगा तो जान ले कि तेरी और तेरे लोगों की मौत यक़ीनी है।”

8 अबीमलिक ने सुबह-सवेरे उठकर अपने तमाम कारिदों को यह सब कुछ बताया। यह सुनकर उन पर दहशत छा गई। 9 फिर अबीमलिक ने इब्राहीम को बुलाकर कहा, “आपने हमारे साथ क्या किया है? मैंने आपके साथ क्या ग़लत काम किया कि आपने मुझे और मेरी सलतनत को इतने संगीन जुर्म में फँसा दिया है? जो सुलूक आपने हमारे साथ कर दिखाया है वह किसी भी शख्स के साथ नहीं करना चाहिए। 10 आपने यह क्यों किया?”

11 इब्राहीम ने जवाब दिया, “मैंने अपने दिल में कहा कि यहाँ के लोग अल्लाह का खौफ नहीं रखते होंगे, इसलिए वह मेरी बीवी को हासिल करने के लिए मुझे कल्ल कर देंगे। 12 हकीकत में वह मेरी बहन भी है। वह मेरे बाप की बेटी है अगरचे उस की और मेरी माँ फ़रक़ हैं। यों मैं उससे शादी कर सका। 13 फिर जब अल्लाह ने होने दिया कि मैं अपने बाप के घराने से निकलकर इधर-उधर फिरूँ तो मैंने अपनी बीवी से कहा, ‘मुझ पर यह मेहरबानी कर कि जहाँ भी हम जाएँ मेरे बारे में कह देना कि वह मेरा भाई है।’”

14 फिर अबीमलिक ने इब्राहीम को भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल, गुलाम और लौडियाँ देकर उस की बीवी सारा को उसे वापस कर दिया। 15 उसने कहा, “मेरा मुल्क आपके लिए खुला है। जहाँ जी चाहे उसमें जा बसें।” 16 सारा से उसने कहा, “मैं आपके भाई को चाँदी के हज़ार सिक्के देता हूँ। इससे आप और आपके लोगों के सामने आपके साथ किए गए नारवा सुलूक का इज़ाला हो और आपको बेक़सूर करार दिया जाए।”

17-18 तब इब्राहीम ने अल्लाह से दुआ की और अल्लाह ने अबीमलिक, उस की बीवी और उस की लौडियों को शफ़ा दी, क्योंकि रब ने अबीमलिक के घराने की तमाम औरतों को सारा के सबब से बाँझ बना दिया था। लेकिन अब उनके हाँ दुबारा बच्चे पैदा होने लगे।

21

इसहाक की पैदाइश

1 तब रब ने सारा के साथ वैसा ही किया जैसा उसने फ़रमाया था। जो वादा उसने सारा के बारे में किया था उसे उसने पूरा किया। 2 वह हामिला हुई और बेटा पैदा हुआ। ऐन उस वक़्त बड़े इब्राहीम के हाँ बेटा पैदा हुआ जो अल्लाह ने मुक़र्रर करके उसे बताया था।

3 इब्राहीम ने अपने इस बेटे का नाम इसहाक यानी ‘वह हँसता है’ रखा। 4 जब इसहाक आठ दिन का था तो इब्राहीम ने उसका ख़तना कराया, जिस तरह अल्लाह ने उसे हुक्म दिया था। 5 जब इसहाक पैदा हुआ उस वक़्त इब्राहीम 100 साल का था। 6 सारा ने कहा, “अल्लाह ने मुझे हँसाया, और हर कोई जो मेरे बारे में यह सुनेगा हँसेगा। 7 इससे पहले कौन इब्राहीम से यह कहने की ज़रूरत कर सकता था कि सारा अपने बच्चों को दूध पिलाएगी? और अब मेरे हाँ बेटा पैदा हुआ है, अगरचे इब्राहीम बूढ़ा हो गया है।”

8 इसहाक बड़ा होता गया। जब उसका दूध छुड़ाया गया तो इब्राहीम ने उसके लिए बड़ी ज़ियाफ़त की।

इब्राहीम हाजिरा और इसमाईल को निकाल देता है

9 एक दिन सारा ने देखा कि मिसरी लौंडी हाजिरा का बेटा इसमाईल इसहाक का मज़ाक़ उड़ा रहा है। 10 उसने इब्राहीम से कहा, “इस लौंडी और उसके बेटे को घर से निकाल दें, क्योंकि वह मेरे बेटे इसहाक के साथ मीरास नहीं पाएगा।”

11 इब्राहीम को यह बात बहुत बुरी लगी। आखिर इसमाईल भी उसका बेटा था। 12 लेकिन अल्लाह ने उससे कहा, “जो बात सारा ने अपनी लौंडी और उसके बेटे के बारे में कही है वह तुझे बुरी न लगे। सारा की बात मान ले, क्योंकि तेरी नसल इसहाक ही से कायम रहेगी। 13 लेकिन मैं इसमाईल से भी एक क़ौम बनाऊँगा, क्योंकि वह तेरा बेटा है।”

14 इब्राहीम सुबह-सवेरे उठा। उसने रोटी और पानी की मशक़ हाजिरा के कंधों पर रखकर उसे लड़के के साथ घर से निकाल दिया। हाजिरा चलते चलते बैर-सबा के रेगिस्तान में इधर-उधर फिरने लगी। 15 फिर पानी ख़त्म हो गया। हाजिरा लड़के को किसी झाड़ी के नीचे छोड़कर 16 कोई 300 फ़ुट दूर बैठ गई। क्योंकि उसने दिल में कहा, “मैं उसे मरते नहीं देख सकती।” वह वहाँ बैठकर रोने लगी।

17 लेकिन अल्लाह ने बेटे की रोती हुई आवाज़ सुन ली। अल्लाह के फ़रिश्ते ने आसमान पर से पुकारकर हाजिरा से बात की, “हाजिरा, क्या बात है? मत डर, क्योंकि अल्लाह ने लड़के का जो वहाँ पड़ा है रोना सुन लिया है। 18 उठ, लड़के को उठाकर उसका हाथ थाम ले, क्योंकि मैं उससे एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा।”

19 फिर अल्लाह ने हाजिरा की आँखें खोल दीं, और उस की नज़र एक कुँए पर पड़ी। वह वहाँ गई और मशक़ को पानी से भरकर लड़के को पिलाया।

20 अल्लाह लड़के के साथ था। वह जवान हुआ और तीरअंदाज़ बनकर बयाबान में रहने लगा। 21 जब वह फ़ारान के रेगिस्तान में रहता था तो उस की माँ ने उसे एक मिसरी औरत से ब्याह दिया।

अबीमलिक के साथ अहद

22 उन दिनों में अबीमलिक और उसके सिपाहसालार फ़ीकुल ने इब्राहीम से कहा, “जो कुछ भी आप करते हैं अल्लाह आपके साथ है। 23 अब मुझसे अल्लाह की क़सम खाएँ कि आप मुझे और मेरी आलो-औलाद को धोका नहीं देंगे। मुझ पर और इस मुल्क पर जिसमें आप परदेसी हैं वही मेहरबानी करें जो मैंने आप पर की है।”

24 इब्राहीम ने जवाब दिया, “मैं क़सम खाता हूँ।” 25 फिर उसने अबीमलिक से शिकायत करते हुए कहा, “आपके बंदों ने हमारे एक कुँए पर क़ब्ज़ा कर लिया है।” 26 अबीमलिक ने कहा, “मुझे नहीं मालूम कि किसने ऐसा किया है। आपने भी मुझे नहीं बताया। आज मैं पहली दफ़ा यह बात सुन रहा हूँ।”

27 तब इब्राहीम ने अबीमलिक को भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल दिए, और दोनों ने एक दूसरे के साथ अहद बाँधा। 28 फिर इब्राहीम ने भेड़ के सात मादा बच्चों को अलग कर लिया। 29 अबीमलिक ने पूछा, “आपने यह क्यों किया?” 30 इब्राहीम ने जवाब दिया, “भेड़ के इन सात

बच्चों को मुझसे ले लें। यह इसके गवाह हों कि मैंने इस कुँए को खोदा है।” ³¹ इसलिए उस जगह का नाम बैर-सबा यानी ‘कसम का कुआँ’ रखा गया, क्योंकि वहाँ उन दोनों मर्दों ने कसम खाई।

³² यों उन्होंने बैर-सबा में एक दूसरे से अहद बाँधा। फिर अबीमलिक और फ्रीकुल फिलिस्तियों के मुल्क वापस चले गए। ³³ इसके बाद इब्राहीम ने बैर-सबा में झाऊ का दरख्त लगाया। वहाँ उसने रब का नाम लेकर उस की इबादत की जो अबदी खुदा है। ³⁴ इब्राहीम बहुत अरसे तक फिलिस्तियों के मुल्क में आबाद रहा, लेकिन अजनबी की हैसियत से।

22

इब्राहीम की आजमाइश

¹ कुछ अरसे के बाद अल्लाह ने इब्राहीम को आजमाया। उसने उससे कहा, “इब्राहीम!” उसने जवाब दिया, “जी, मैं हाज़िर हूँ।” ² अल्लाह ने कहा, “अपने इकलौते बेटे इसहाक को जिसे तू प्यार करता है साथ लेकर मोरियाह के इलाके में चला जा। वहाँ मैं तुझे एक पहाड़ दिखाऊँगा। उस पर अपने बेटे को कुरबान कर दे। उसे ज़बह करके कुरबानगाह पर जला देना।”

³ सुबह-सवेरे इब्राहीम उठा और अपने गधे पर ज़ीन कसा। उसने अपने साथ दो नौकरों और अपने बेटे इसहाक को लिया। फिर वह कुरबानी को जलाने के लिए लकड़ी काटकर उस जगह की तरफ़ रवाना हुआ जो अल्लाह ने उसे बताई थी। ⁴ सफ़र करते करते तीसरे दिन कुरबानी की जगह इब्राहीम को दूर से नज़र आई। ⁵ उसने नौकरों से कहा, “यहाँ गधे के पास ठहरो। मैं लड़के के साथ वहाँ जाकर परस्तिश करूँगा। फिर हम तुम्हारे पास वापस आ जाएंगे।”

⁶ इब्राहीम ने कुरबानी को जलाने के लिए लकड़ियाँ इसहाक के कंधों पर रख दीं और खुद छुरी और आग जलाने के लिए अंगारों का बरतन उठाया। दोनों चल दिए। ⁷ इसहाक बोला, “अब्बू!” इब्राहीम ने कहा, “जी बेटा।” “अब्बू, आग और लकड़ियाँ तो हमारे पास हैं, लेकिन कुरबानी के लिए भेड़ या बकरी कहाँ है?” ⁸ इब्राहीम ने जवाब दिया, “अल्लाह खुद कुरबानी के लिए जानवर मुहैया करेगा, बेटा।” वह आगे बढ़ गए।

⁹ चलते चलते वह उस मक़ाम पर पहुँचे जो अल्लाह ने उस पर ज़ाहिर किया था। इब्राहीम ने वहाँ कुरबानगाह बनाई और उस पर लकड़ियाँ तरतीब से रख दीं। फिर उसने इसहाक को बाँधकर लकड़ियों पर रख दिया ¹⁰ और छुरी पकड़ ली ताकि अपने बेटे को ज़बह करे। ¹¹ ऐन उसी वक़्त रब के फ़रिश्ते ने आसमान पर से उसे आवाज़ दी, “इब्राहीम, इब्राहीम!” इब्राहीम ने कहा, “जी, मैं हाज़िर हूँ।” ¹² फ़रिश्ते ने कहा, “अपने बेटे पर हाथ न चला, न उसके साथ कुछ कर। अब मैंने जान लिया है कि तू अल्लाह का ख़ौफ़ रखता है, क्योंकि तू अपने इकलौते बेटे को भी मुझे देने के लिए तैयार है।”

¹³ अचानक इब्राहीम को एक मेंढा नज़र आया जिसके सींग गुंजान झाड़ियों में फँसे हुए थे। इब्राहीम ने उसे ज़बह करके अपने बेटे की जगह कुरबानी के तौर पर जला दिया। ¹⁴ उसने उस मक़ाम का नाम “रब मुहैया करता है” रखा। इसलिए आज तक कहा जाता है, “रब के पहाड़ पर मुहैया किया जाता है।”

¹⁵ रब के फ़रिश्ते ने एक बार फिर आसमान पर से पुकारकर उससे बात की। ¹⁶ “रब का फ़रमान है, मेरी ज़ात की कसम, चूँकि तूने यह किया और अपने इकलौते बेटे को मुझे पेश करने के लिए तैयार था ¹⁷ इसलिए मैं तुझे बरकत दूँगा और तेरी औलाद को आसमान के सितारों और साहिल की रेत की तरह बेशुमार होने दूँगा। तेरी औलाद अपने दुश्मनों के शहरों के दरवाज़ों पर क़ब्ज़ा करेगी। ¹⁸ चूँकि तूने मेरी सुनी इसलिए तेरी औलाद से दुनिया की तमाम क़ौमें बरकत पाएँगी।”

¹⁹ इसके बाद इब्राहीम अपने नौकरों के पास वापस आया, और वह मिलकर बैर-सबा लौटे। वहाँ इब्राहीम आबाद रहा।

²⁰ इन वाक़ियात के बाद इब्राहीम को इत्तला मिली, “आपके भाई नहर की बीवी मिलकाह के हाँ भी बेटे पैदा हुए हैं।” ²¹ उसके पहलौठे ऊज़ के बाद बूज़, क़मुएल (अराम का बाप), ²² कसद, हज़ू, फ़िलदास, इदलाफ़ और बतुएल पैदा हुए हैं।” ²³ मिलकाह और नहर के हाँ यह आठ बेटे पैदा हुए। (बतुएल रिबका का बाप था)। ²⁴ नहर की हरम का नाम रूमा था। उसके हाँ भी बेटे पैदा हुए जिनके नाम तिबख़, जाहम, तख़स और माका हैं।

23

सारा की वफ़ात

¹ सारा 127 साल की उम्र में हब्रून में इंतक़ाल कर गई। ² उस ज़माने में हब्रून का नाम क़िरियत-अरबा था, और वह मुल्के-कनान में था। इब्राहीम ने उसके पास आकर मातम किया। ³ फिर वह जनाज़े के पास से उठा और हित्तियों से बात की। उसने कहा, ⁴ “मैं आपके दरमियान परदेसी और ग़ैरशहरी की हैसियत से रहता हूँ। मुझे क़ब्र के लिए ज़मीन बेचें ताकि अपनी बीवी को अपने घर से ले जाकर दफ़न कर सकूँ।” ⁵⁻⁶ हित्तियों ने जवाब दिया, “हमारे आका, हमारी बात सुनें! आप हमारे दरमियान अल्लाह के रईस हैं। अपनी बीवी को हमारी बेहतरीन क़ब्र में दफ़न करें। हममें से कोई नहीं जो आपसे अपनी क़ब्र का इनकार करेगा।”

7 इब्राहीम उठा और मुल्क के बाशिंदों यानी हितियों के सामने ताज़ीमन झुक गया। 8 उसने कहा, “अगर आप इसके लिए तैयार हैं कि मैं अपनी बीवी को अपने घर से ले जाकर दफन करूँ तो सुहर के बेटे इफरोन से मेरी सिफारिश करें 9 कि वह मुझे मकफ़ीला का गार बेच दे। वह उसका है और उसके खेत के किनारे पर है। मैं उस की पूरी कीमत देने के लिए तैयार हूँ ताकि आपके दरमियान रहते हुए मेरे पास कब्र भी हो।”

10 इफरोन हितियों की जमात में मौजूद था। इब्राहीम की दरखास्त पर उसने उन तमाम हितियों के सामने जो शहर के दरवाज़े पर जमा थे जवाब दिया, 11 “नहीं, मेरे आका! मेरी बात सुनें। मैं आपको यह खेत और उसमें मौजूद गार दे देता हूँ। सब जो हाज़िर हैं मेरे गवाह हैं, मैं यह आपको देता हूँ। अपनी बीवी को वहाँ दफन कर दें।”

12 इब्राहीम दुबारा मुल्क के बाशिंदों के सामने अदबन झुक गया। 13 उसने सबके सामने इफरोन से कहा, “मेहरबानी करके मेरी बात पर गौर करें। मैं खेत की पूरी कीमत अदा करूँगा। उसे कबूल करें ताकि वहाँ अपनी बीवी को दफन कर सकूँ।” 14-15 इफरोन ने जवाब दिया, “मेरे आका, सुनें। इस ज़मीन की कीमत सिर्फ 400 चाँदी के सिक्के है। * आपके और मेरे दरमियान यह क्या है? अपनी बीवी को दफन कर दें।”

16 इब्राहीम ने इफरोन की मतलूबा कीमत मान ली और सबके सामने चाँदी के 400 सिक्के तोलकर इफरोन को दे दिए। इसके लिए उसने उस वक़्त के राज़ बाट इस्तेमाल किए। 17 चुनौचे मकफ़ीला में इफरोन की ज़मीन इब्राहीम की मिलकियत हो गई। यह ज़मीन ममरे के मशरिक में थी। उसमें खेत, खेत का गार और खेत की हुदूद में मौजूद तमाम दरख़्त शामिल थे। 18 हितियों की पूरी जमात ने जो शहर के दरवाज़े पर जमा थी ज़मीन के इंतकाल की तसदीक की। 19 फिर इब्राहीम ने अपनी बीवी सारा को मुल्के-कनान के उस गार में दफन किया जो ममरे यानी हबर्न के मशरिक में वाके मकफ़ीला के खेत में था। 20 इस तरीके से यह खेत और उसका गार हितियों से इब्राहीम के नाम पर मुंतक़िल कर दिया गया ताकि उसके पास कब्र हो।

24

इसहाक और रिबका

1 इब्राहीम अब बहुत बूढ़ा हो गया था। रब ने उसे हर लिहाज़ से बरकत दी थी। 2 एक दिन उसने अपने घर के सबसे बुज़ुर्ग नौकर से जो उस की जायदाद का पूरा इंतज़ाम चलाता था बात की। “क़सम के लिए अपना हाथ मेरी रान के नीचे रखो। 3 रब की क़सम खाओ जो आसमानो-ज़मीन का खुदा है कि तुम इन कनानियों में से जिनके दरमियान मैं रहता हूँ मेरे बेटे के लिए बीवी नहीं लाओगे 4 बल्कि मेरे वतन में मेरे रिश्तेदारों के पास जाओगे और उन्हीं में से मेरे बेटे के लिए बीवी लाओगे।” 5 उसके नौकर ने कहा, “शायद वह औरत मेरे साथ यहाँ आना न चाहे। क्या मैं इस सूरत में आपके बेटे को उस वतन में वापस ले जाऊँ जिससे आप निकले हैं?” 6 इब्राहीम ने कहा, “ख़बरदार! उसे हरगिज़ वापस न ले जाना। 7 रब जो आसमान का खुदा है अपना फ़रिश्ता तुम्हारे आगे भेजेगा, इसलिए तुम वहाँ मेरे बेटे के लिए बीवी चुनने में ज़रूर कामयाब होगे। क्योंकि वही मुझे मेरे बाप के घर और मेरे वतन से यहाँ ले आया है, और उसी ने क़सम खाकर मुझसे वादा किया है कि मैं कनान का यह मुल्क तेरी औलाद को दूँगा। 8 अगर वहाँ की औरत यहाँ आना न चाहे तो फिर तुम अपनी क़सम से आज़ाद होगे। लेकिन किसी सूरत में भी मेरे बेटे को वहाँ वापस न ले जाना।”

9 इब्राहीम के नौकर ने अपना हाथ उस की रान के नीचे रखकर क़सम खाई कि मैं सब कुछ ऐसा ही करूँगा। 10 फिर वह अपने आका के दस ऊँटों पर कीमती तोहफ़े लादकर मसोपुतामिया की तरफ़ रवाना हुआ। चलते चलते वह नहर के शहर पहुँच गया।

11 उसने ऊँटों को शहर के बाहर कुएँ के पास बिठाया। शाम का वक़्त था जब औरतें कुएँ के पास आकर पानी भरती थीं। 12 फिर उसने दुआ की, “ऐ रब मेरे आका इब्राहीम के खुदा, मुझे आज कामयाबी बख़्श और मेरे आका इब्राहीम पर मेहरबानी कर। 13 अब मैं इस चश्मे पर खड़ा हूँ, और शहर की बेटियाँ पानी भरने के लिए आ रही हैं। 14 मैं उनमें से किसी से कहूँगा, ‘ज़रा अपना घड़ा नीचे करके मुझे पानी पिलाएँ।’ अगर वह जवाब दे, ‘पी लें, मैं आपके ऊँटों को भी पानी पिला देती हूँ,’ तो वह वही होगी जिसे तूने अपने खादिम इसहाक के लिए चुन रखा है। अगर ऐसा हुआ तो मैं जान लूँगा कि तूने मेरे आका पर मेहरबानी की है।”

15 वह अभी दुआ कर ही रहा था कि रिबका शहर से निकल आई। उसके कंधे पर घड़ा था। वह बतुएल की बेटी थी (बतुएल इब्राहीम के भाई नहर की बीवी मिलकाह का बेटा था)। 16 रिबका निहायत ख़ूबसूरत जवान लड़की थी, और वह कुंवारी भी थी। वह चश्मे तक उतरी, अपना घड़ा भरा और फिर वापस ऊपर आई।

17 इब्राहीम का नौकर दौड़कर उससे मिला। उसने कहा, “ज़रा मुझे अपने घड़े से थोड़ा-सा पानी पिलाएँ।” 18 रिबका ने कहा, “जनाब, पी लें।” जल्दी से उसने अपने घड़े को कंधे पर से उतारकर हाथ में पकड़ा ताकि वह पी सके। 19 जब वह पीने से फ़ारिग हुआ तो रिबका ने कहा, “मैं आपके ऊँटों के लिए भी पानी ले आती हूँ। वह भी पूरे तौर पर अपनी प्यास बुझाएँ।” 20 जल्दी से उसने अपने घड़े का पानी हौज़ में उंडेल दिया और फिर भागकर कुएँ से इतना पानी लाती रही कि तमाम ऊँटों की प्यास बुझ गई।

21 इतने में इब्राहीम का आदमी ख़ामोशी से उसे देखता रहा, क्योंकि वह जानना चाहता था कि क्या रब मुझे सफ़र की कामयाबी बख़्शेगा या नहीं। 22 ऊँट पानी पीने से फ़ारिग हुए तो उसने रिबका को सोने की एक नथ और दो कंगन दिए। नथ का वज़न तक्ररीबन 6 ग्राम था और कंगनों का 120 ग्राम।

23 उसने पूछा, “आप किसकी बेटी हैं? क्या उसके हाँ इतनी जगह है कि हम वहाँ रात गुज़ार सकें?”

* 23:14-15 तक्ररीबन साढ़े चार किलोग्राम चाँदी।

24 रिबका ने जवाब दिया, “मेरा बाप बतुएल है। वह नहर और मिलकाह का बेटा है। 25 हमारे पास भूसा और चारा है। रात गुजारने के लिए भी काफी जगह है।” 26 यह सुनकर इब्राहीम के नौकर ने रब को सिजदा किया। 27 उसने कहा, “मेरे आका इब्राहीम के खुदा की तमजीद हो जिसके करम और वफादारी ने मेरे आका को नहीं छोड़ा। रब ने मुझे सीधा मेरे मालिक के रिश्तेदारों तक पहुँचाया है।”

28 लड़की भागकर अपनी माँ के घर चली गई। वहाँ उसने सब कुछ बता दिया जो हुआ था। 29-30 जब रिबका के भाई लाबन ने नथ और बहन की कलाइयों में कंगनों को देखा और वह सब कुछ सुना जो इब्राहीम के नौकर ने रिबका को बताया था तो वह फौरन कुँए की तरफ दौड़ा।

इब्राहीम का नौकर अब तक ऊँटों समेत वहाँ खड़ा था। 31 लाबन ने कहा, “रब के मुबारक बंदे, मेरे साथ आएँ। आप यहाँ शहर के बाहर क्यों खड़े हैं? मैंने अपने घर में आपके लिए सब कुछ तैयार किया है। आपके ऊँटों के लिए भी काफी जगह है।” 32 वह नौकर को लेकर घर पहुँचा। ऊँटों से सामान उतारा गया, और उनको भूसा और चारा दिया गया। पानी भी लाया गया ताकि इब्राहीम का नौकर और उसके आदमी अपने पाँव धोएँ।

33 लेकिन जब खाना आ गया तो इब्राहीम के नौकर ने कहा, “इससे पहले कि मैं खाना खाऊँ लाज़िम है कि अपना मामला पेश करूँ।” लाबन ने कहा, “बताएँ अपनी बात।” 34 उसने कहा, “मैं इब्राहीम का नौकर हूँ। 35 रब ने मेरे आका को बहुत बरकत दी है। वह बहुत अमीर बन गया है। रब ने उसे कसरत से भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल, सोना-चाँदी, गुलाम और लौंडियाँ, ऊँट और गधे दिए हैं। 36 जब मेरे मालिक की बीवी बूढ़ी हो गई थी तो उसके बेटा पैदा हुआ था। इब्राहीम ने उसे अपनी पूरी मिलकियत दे दी है। 37 लेकिन मेरे आका ने मुझसे कहा, ‘कसम खाओ कि तुम इन कनानियों में से जिनके दरमियान मैं रहता हूँ मेरे बेटे के लिए बीवी नहीं लाओगे 38 बल्कि मेरे बाप के घराने और मेरे रिश्तेदारों के पास जाकर उसके लिए बीवी लाओगे।’ 39 मैंने अपने मालिक से कहा, ‘शायद वह औरत मेरे साथ आना न चाहे।’ 40 उसने कहा, ‘रब जिसके सामने मैं चलता रहा हूँ अपने फरिश्ते को तुम्हारे साथ भेजेगा और तुम्हें कामयाबी बख्शेगा। तुम्हें ज़रूर मेरे रिश्तेदारों और मेरे बाप के घराने से मेरे बेटे के लिए बीवी मिलेगी। 41 लेकिन अगर तुम मेरे रिश्तेदारों के पास जाओ और वह इनकार करें तो फिर तुम अपनी कसम से आज़ाद होगे।’ 42 आज जब मैं कुँए के पास आया तो मैंने दुआ की, ‘ऐ रब, मेरे आका के खुदा, अगर तेरी मरज़ी हो तो मुझे इस मिशन में कामयाबी बख्श जिसके लिए मैं यहाँ आया हूँ। 43 अब मैं इस कुँए के पास खड़ा हूँ। जब कोई जवान औरत शहर से निकलकर यहाँ आए तो मैं उससे कहूँगा, ‘ज़रा मुझे अपने घड़े से थोड़ा-सा पानी पिलाएँ।’ 44 अगर वह कहे, ‘पी लें, मैं आपके ऊँटों के लिए भी पानी ले आऊँगी’ तो इसका मतलब यह हो कि तूने उसे मेरे आका के बेटे के लिए चुन लिया है कि उस की बीवी बन जाए।’

45 मैं अभी दिल में यह दुआ कर रहा था कि रिबका शहर से निकल आई। उसके कंधे पर घड़ा था। वह चश्मे तक उतरी और अपना घड़ा भर लिया। मैंने उससे कहा, ‘ज़रा मुझे पानी पिलाएँ।’ 46 जवाब में उसने जल्दी से अपने घड़े को कंधे पर से उतारकर कहा, ‘पी लें, मैं आपके ऊँटों को भी पानी पिलाती हूँ।’ मैंने पानी पिया, और उसने ऊँटों को भी पानी पिलाया। 47 फिर मैंने उससे पूछा, ‘आप किसकी बेटी हैं?’ उसने जवाब दिया, ‘मेरा बाप बतुएल है। वह नहर और मिलकाह का बेटा है।’ फिर मैंने उस की नाक में नथ और उस की कलाइयों में कंगन पहना दिए। 48 तब मैंने रब को सिजदा करके अपने आका इब्राहीम के खुदा की तमजीद की जिसने मुझे सीधा मेरे मालिक की भतीजी तक पहुँचाया ताकि वह इसहाक की बीवी बन जाए।

49 अब मुझे बताएँ, क्या आप मेरे आका पर अपनी मेहरबानी और वफादारी का इज़हार करना चाहते हैं? अगर ऐसा है तो रिबका की इसहाक के साथ शादी कबूल करें। अगर आप मुत्तफ़िक़ नहीं हैं तो मुझे बताएँ ताकि मैं कोई और कदम उठा सकूँ।”

50 लाबन और बतुएल ने जवाब दिया, “यह बात रब की तरफ से है, इसलिए हम किसी तरह भी इनकार नहीं कर सकते। 51 रिबका आपके सामने है। उसे ले जाएँ। वह आपके मालिक के बेटे की बीवी बन जाए जिस तरह रब ने फ़रमाया है।” 52 यह सुनकर इब्राहीम के नौकर ने रब को सिजदा किया। 53 फिर उसने सोने और चाँदी के ज़ेवरात और महँगे मलबूसात अपने सामान में से निकालकर रिबका को दिए। रिबका के भाई और माँ को भी कीमती तोहफ़े मिले।

54 इसके बाद उसने अपने हमसफ़रों के साथ शाम का खाना खाया। वह रात को वहीं ठहरे। अगले दिन जब उठे तो नौकर ने कहा, “अब हमें इजाज़त दें ताकि अपने आका के पास लौट जाएँ।” 55 रिबका के भाई और माँ ने कहा, “रिबका कुछ दिन और हमारे हों ठहरे। फिर आप जाएँ।” 56 लेकिन उसने उनसे कहा, “अब देर न करें, क्योंकि रब ने मुझे मेरे मिशन में कामयाबी बख्शी है। मुझे इजाज़त दें ताकि अपने मालिक के पास वापस जाऊँ।” 57 उन्होंने कहा, “चलें, हम लड़की को बुलाकर उसी से पूछ लेते हैं।”

58 उन्होंने रिबका को बुलाकर उससे पूछा, “क्या तू अभी इस आदमी के साथ जाना चाहती है?” उसने कहा, “जी, मैं जाना चाहती हूँ।” 59 चुनौचे उन्होंने अपनी बहन रिबका, उस की दाया, इब्राहीम के नौकर और उसके हमसफ़रों को सख़सत कर दिया। 60 पहले उन्होंने रिबका को बरकत देकर कहा, “हमारी बहन, अल्लाह करे कि तू करोड़ों की माँ बने। तेरी औलाद अपने दुश्मनों के शहरों के दरवाज़ों पर कब्ज़ा करे।” 61 फिर रिबका और उस की नौकरानियाँ उठकर ऊँटों पर सवार हुईं और इब्राहीम के नौकर के पीछे हो लीं। चुनौचे नौकर उन्हें साथ लेकर रवाना हो गया।

62 उस वक़्त इसहाक मुल्क के जुन्बी हिस्से, दशते-नजब में रहता था। वह बैर-लही-रोई से आया था। 63 एक शाम वह निकलकर खुले मैदान में अपनी सोचों में मगन टहल रहा था कि अचानक ऊँट उस की तरफ आते हुए नज़र आए। 64 जब रिबका ने अपनी नज़र उठाकर

इसहाक को देखा तो उसने ऊँट से उतरकर ⁶⁵ नौकर से पूछा, “वह आदमी कौन है जो मैदान में हमसे मिलने आ रहा है?” नौकर ने कहा, “मेरा मालिक है।” यह सुनकर रिबका ने चादर लेकर अपने चेहरे को ढाँप लिया।

⁶⁶ नौकर ने इसहाक को सब कुछ बता दिया जो उसने किया था। ⁶⁷ फिर इसहाक रिबका को अपनी माँ सारा के डेरे में ले गया। उसने उससे शादी की, और वह उस की बीवी बन गई। इसहाक के दिल में उसके लिए बहुत मुहब्बत पैदा हुई। यों उसे अपनी माँ की मौत के बाद सुकून मिला।

25

इब्राहीम की मज़ीद औलाद

¹ इब्राहीम ने एक और शादी की। नई बीवी का नाम कतूरा था। ² कतूरा के छः बेटे पैदा हुए, ज़िमरान, युक्सान, मिदान, मिदियान, इसबाक और सूख। ³ युक्सान के दो बेटे थे, सबा और ददान। असूरी, लतूसी और लूमी ददान की औलाद हैं। ⁴ मिदियान के बेटे ऐफ़ा, इफ़र, हनूक, अबीदा और इल्दआ थे। यह सब कतूरा की औलाद थे।

⁵ इब्राहीम ने अपनी सारी मिलकियत इसहाक को दे दी। ⁶ अपनी मौत से पहले उसने अपनी दूसरी बीवियों के बेटों को तोहफ़े देकर अपने बेटे से दूर मशरिक की तरफ़ भेज दिया।

इब्राहीम की वफ़ात

⁷⁻⁸ इब्राहीम 175 साल की उम्र में फ़ौत हुआ। गरज़ वह बहुत उम्रसीदा और ज़िंदगी से आसूदा होकर इंतकाल करके अपने बापदादा से जा मिला। ⁹⁻¹⁰ उसके बेटों इसहाक और इसमाईल ने उसे मकफ़ीला के ग़ार में दफ़न किया जो ममेरे के मशरिक में है। यह वही ग़ार था जिसे खेत समेत हिती आदमी इफ़रोन बिन सुहर से खरीदा गया था। इब्राहीम और उस की बीवी सारा दोनों को उसमें दफ़न किया गया।

¹¹ इब्राहीम की वफ़ात के बाद अल्लाह ने इसहाक को बरकत दी। उस वक़्त इसहाक बैर-लही-रोई के करीब आबाद था।

इसमाईल की औलाद

¹² इब्राहीम का बेटा इसमाईल जो सारा की मिसरी लौंडी हाजिरा के हाँ पैदा हुआ उसका नसबनामा यह है। ¹³ इसमाईल के बेटे बड़े से लेकर छोटे तक यह हैं : नबायोत, कीदार, अदबियेल, मिबसाम, ¹⁴ मिशमा, दूमा, मस्सा, ¹⁵ हदद, तैमा, यतूर, नफीस और किदमा।

¹⁶ यह बेटे बारह कबीलों के बानी बन गए, और जहाँ जहाँ वह आबाद हुए उन जगहों का वही नाम पड़ गया। ¹⁷ इसमाईल 137 साल का था जब वह कूच करके अपने बापदादा से जा मिला। ¹⁸ उस की औलाद उस इलाके में आबाद थी जो हवीला और शूर के दरमियान है और जो मिसर के मशरिक में असूर की तरफ़ है। यों इसमाईल अपने तमाम भाइयों के सामने ही आबाद हुआ।

एसौ और याकूब की पैदाइश

¹⁹ यह इब्राहीम के बेटे इसहाक का बयान है।

²⁰ इसहाक 40 साल का था जब उस की रिबका से शादी हुई। रिबका लाबन की बहन और अरामी मर्द बतुएल की बेटी थी (बतुएल मसोपुतामिया का था)। ²¹ रिबका के बच्चे पैदा न हुए। लेकिन इसहाक ने अपनी बीवी के लिए दुआ की तो रब ने उस की सुनी, और रिबका उम्मीद से हुई। ²² उसके पेट में बच्चे एक दूसरे से जोर-आज़माई करने लगे तो वह रब से पूछने गई, “अगर यह मेरी हालत रहेगी तो फिर मैं यहाँ तक क्यों पहुँच गई हूँ?” ²³ रब ने उससे कहा, “तेरे अंदर दो कौमें हैं। वह तुझसे निकलकर एक दूसरी से अलग अलग हो जाएँगी। उनमें से एक ज़्यादा ताकतवर होगी, और बड़ा छोटे की खिदमत करेगा।”

²⁴ पैदाइश का वक़्त आ गया तो जुड़वाँ बेटे पैदा हुए। ²⁵ पहला बच्चा निकला तो सुर्ख-सा था, और ऐसा लग रहा था कि वह घने बालों का कोट ही पहने हुए है। इसलिए उसका नाम एसौ यानी ‘बालोंवाला’ रखा गया। ²⁶ इसके बाद दूसरा बच्चा पैदा हुआ। वह एसौ की एड़ी पकड़े हुए निकला, इसलिए उसका नाम याकूब यानी ‘एड़ी पकड़नेवाला’ रखा गया। उस वक़्त इसहाक 60 साल का था।

²⁷ लड़के जवान हुए। एसौ माहिर शिकारी बन गया और खुले मैदान में ख़ुश रहता था। उसके मुकाबले में याकूब शायस्ता था और डेरे में रहना पसंद करता था। ²⁸ इसहाक एसौ को प्यार करता था, क्योंकि वह शिकार का गोश्त पसंद करता था। लेकिन रिबका याकूब को प्यार करती थी।

²⁹ एक दिन याकूब सालन पका रहा था कि एसौ थकाहारा जंगल से आया। ³⁰ उसने कहा, “मुझे जल्दी से लाल सालन, हाँ इसी लाल सालन से कुछ खाने को दो। मैं तो बेदम हो रहा हूँ।” (इसी लिए बाद में उसका नाम अदोम यानी सुर्ख पड़ गया।) ³¹ याकूब ने कहा, “पहले मुझे पहलौंठे का हक़ बेच दो।” ³² एसौ ने कहा, “मैं तो भूक से मर रहा हूँ, पहलौंठे का हक़ मेरे किस काम का?” ³³ याकूब ने कहा, “पहले कसम खाकर मुझे यह हक़ बेच दो।” एसौ ने कसम खाकर उसे पहलौंठे का हक़ मुंतकिल कर दिया।

³⁴ तब याकूब ने उसे कुछ रोटी और दाल दे दी, और एसौ ने खाया और पिया। फिर वह उठकर चला गया। यों उसने पहलौंठे के हक़ को हकीर जाना।

26

इसहाक और रिबका जिरार में

1 उस मुल्क में दुबारा काल पड़ा, जिस तरह इब्राहीम के दिनों में भी पड़ गया था। इसहाक जिरार शहर गया जिस पर फिलिस्तिनियों के बादशाह अबीमलिक की हुकूमत थी। 2 रब ने इसहाक पर जाहिर होकर कहा, “मिसर न जा बल्कि उस मुल्क में बस जो मैं तुझे दिखाता हूँ। 3 उस मुल्क में अजनबी रह तो मैं तेरे साथ हूँगा और तुझे बरकत दूँगा। क्योंकि मैं तुझे और तेरी औलाद को यह तमाम इलाका दूँगा और वह वादा पूरा करूँगा जो मैंने कसम खाकर तेरे बाप इब्राहीम से किया था। 4 मैं तुझे इतनी औलाद दूँगा जितने आसमान पर सितारे हैं। और मैं यह तमाम मुल्क उन्हें दे दूँगा। तेरी औलाद से दुनिया की तमाम कौमों बरकत पाएँगी। 5 मैं तुझे इसलिए बरकत दूँगा कि इब्राहीम मेरे ताबे रहा और मेरी हिदायात और अहकाम पर चलता रहा।” 6 चुनौचे इसहाक जिरार में आबाद हो गया।

7 जब वहाँ के मर्दों ने रिबका के बारे में पूछा तो इसहाक ने कहा, “यह मेरी बहन है।” वह उन्हें यह बताने से डरता था कि यह मेरी बीवी है, क्योंकि उसने सोचा, “रिबका निहायत खूबसूरत है। अगर उन्हें मालूम हो जाए कि रिबका मेरी बीवी है तो वह उसे हासिल करने की खातिर मुझे कत्ल कर देंगे।”

8 काफ़ी वक़्त गुज़र गया। एक दिन फिलिस्तिनियों के बादशाह ने अपनी खिड़की में से झाँककर देखा कि इसहाक अपनी बीवी को प्यार कर रहा है। 9 उसने इसहाक को बुलाकर कहा, “वह तो आपकी बीवी है! आपने क्यों कहा कि मेरी बहन है?” इसहाक ने जवाब दिया, “मैंने सोचा कि अगर मैं बताऊँ कि यह मेरी बीवी है तो लोग मुझे कत्ल कर देंगे।”

10 अबीमलिक ने कहा, “आपने हमारे साथ कैसा सुलूक कर दिखाया! कितनी आसानी से मेरे आदमियों में से कोई आपकी बीवी से हमबिसतर हो जाता। इस तरह हम आपके सबब से एक बड़े जुर्म के कुसूरवार ठहरते।” 11 फिर अबीमलिक ने तमाम लोगों को हुक्म दिया, “जो भी इस मर्द या उस की बीवी को छेड़े उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी।”

इसहाक का फिलिस्तिनियों के साथ झगड़ा

12 इसहाक ने उस इलाके में काश्तकारी की, और उसी साल उसे सौ गुना फल मिला। यों रब ने उसे बरकत दी, 13 और वह अमीर हो गया। उस की दौलत बढ़ती गई, और वह निहायत दौलतमंद हो गया। 14 उसके पास इतनी भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और गुलाम थे कि फिलिस्ती उससे हसद करने लगे। 15 अब ऐसा हुआ कि उन्होंने उन तमाम कुओं को मिट्टी से भरकर बंद कर दिया जो उसके बाप के नौकरों ने खोदे थे।

16 आखिरकार अबीमलिक ने इसहाक से कहा, “कहीं और जाकर रहें, क्योंकि आप हमसे ज़्यादा जोरावर हो गए हैं।”

17 चुनौचे इसहाक ने वहाँ से जाकर जिरार की वादी में अपने डेरे लगाए। 18 वहाँ फिलिस्तिनियों ने इब्राहीम की मौत के बाद तमाम कुओं को मिट्टी से भर दिया था। इसहाक ने उनको दुबारा खुदवाया। उसने उनके वही नाम रखे जो उसके बाप ने रखे थे।

19 इसहाक के नौकरों को वादी में खोदते खोदते ताज़ा पानी मिल गया। 20 लेकिन जिरार के चरवाहे आकर इसहाक के चरवाहों से झगड़ने लगे। उन्होंने कहा, “यह हमारा कुआँ है!” इसलिए उसने उस कुएँ का नाम इसक यानी झगड़ा रखा। 21 इसहाक के नौकरों ने एक और कुआँ खोद लिया। लेकिन उस पर भी झगड़ा हुआ, इसलिए उसने उसका नाम सितना यानी मुखालफ़त रखा। 22 वहाँ से जाकर उसने एक तीसरा कुआँ खुदवाया। इस दफ़ा कोई झगड़ा न हुआ, इसलिए उसने उसका नाम रहोबोत यानी ‘खुली जगह’ रखा। क्योंकि उसने कहा, “रब ने हमें खुली जगह दी है, और अब हम मुल्क में फलें-फूलेंगे।”

23 वहाँ से वह बैर-सबा चला गया। 24 उसी रात रब उस पर जाहिर हुआ और कहा, “मैं तेरे बाप इब्राहीम का खुदा हूँ। मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ। मैं तुझे बरकत दूँगा और तुझे अपने खादिम इब्राहीम की खातिर बहुत औलाद दूँगा।”

25 वहाँ इसहाक ने कुरबानगाह बनाई और रब का नाम लेकर इबादत की। वहाँ उसने अपने खैमे लगाए और उसके नौकरों ने कुआँ खोद लिया।

अबीमलिक के साथ अहद

26 एक दिन अबीमलिक, उसका साथी अखूज़त और उसका सिपहसालार फ़ीकुल जिरार से उसके पास आए। 27 इसहाक ने पूछा, “आप क्यों मेरे पास आए हैं? आप तो मुझसे नफ़रत रखते हैं। क्या आपने मुझे अपने दरमियान से खारिज नहीं किया था?” 28 उन्होंने जवाब दिया, “हमने जान लिया है कि रब आपके साथ है। इसलिए हमने कहा कि हमारा आपके साथ अहद होना चाहिए। आइए हम कसम खाकर एक दूसरे से अहद बाँधें 29 कि आप हमें नुकसान नहीं पहुँचाएँगे, क्योंकि हमने भी आपको नहीं छेड़ा बल्कि आपसे सिर्फ़ अच्छा सुलूक किया और आपको सलामती के साथ रखसत किया है। और अब जाहिर है कि रब ने आपको बरकत दी है।”

30 इसहाक ने उनकी ज़ियाफ़त की, और उन्होंने खाया और पिया। 31 फिर सुबह-सवेरे उठकर उन्होंने एक दूसरे के सामने कसम खाई। इसके बाद इसहाक ने उन्हें रखसत किया और वह सलामती से रवाना हुए।

32 उसी दिन इसहाक के नौकर आए और उसे उस कुएँ के बारे में इतला दी जो उन्होंने खोदा था। उन्होंने कहा, “हमें पानी मिल गया है।”

33 उसने कुएँ का नाम सबा यानी ‘कसम’ रखा। आज तक साथवाले शहर का नाम बैर-सबा है।

एसौ की अजनबी बीवियाँ

34 जब एसौ 40 साल का था तो उसने दो हिती औरतों से शादी की, बैरी की बेटी यहूदित से और ऐलोन की बेटी बासमत से। 35 यह औरतें इसहाक और रिबका के लिए बड़े दुख का बाइस बनीं।

27

इसहाक याकूब को बरकत देता है

1 इसहाक बूढ़ा हो गया तो उस की नज़र धुंधला गई। उसने अपने बड़े बेटे को बुलाकर कहा, “बेटा।” एसौ ने जवाब दिया, “जी, मैं हाज़िर हूँ।” 2 इसहाक ने कहा, “मैं बूढ़ा हो गया हूँ और खुदा जाने कब मर जाऊँ। 3 इसलिए अपना तीर कमान लेकर जंगल में निकल जा और मेरे लिए किसी जानवर का शिकार कर। 4 उसे तैयार करके ऐसा लज़ीज़ खाना पका जो मुझे पसंद है। फिर उसे मेरे पास ले आ। मरने से पहले मैं वह खाना खाकर तुझे बरकत देना चाहता हूँ।”

5 रिबका ने इसहाक की एसौ के साथ बातचीत सुन ली थी। जब एसौ शिकार करने के लिए चला गया तो उसने याकूब से कहा, 6 “अभी अभी मैंने तुम्हारे अब्बू को एसौ से यह बात करते हुए सुना कि 7 ‘मेरे लिए किसी जानवर का शिकार करके ले आ। उसे तैयार करके मेरे लिए लज़ीज़ खाना पका। मरने से पहले मैं यह खाना खाकर तुझे रब के सामने बरकत देना चाहता हूँ।’ 8 अब सुनो, मेरे बेटे! जो कुछ मैं बताती हूँ वह करो। 9 जाकर रेवड़ में से बकरियों के दो अच्छे अच्छे बच्चे चुन लो। फिर मैं वही लज़ीज़ खाना पकाऊँगी जो तुम्हारे अब्बू को पसंद है। 10 तुम यह खाना उसके पास ले जाओगे तो वह उसे खाकर मरने से पहले तुम्हें बरकत देगा।”

11 लेकिन याकूब ने एतराज़ किया, “आप जानती हैं कि एसौ के जिस्म पर घने बाल हैं जबकि मेरे बाल कम हैं। 12 कहीं मुझे छूने से मेरे बाप को पता न चल जाए कि मैं उसे फ़रेब दे रहा हूँ। फिर मुझ पर बरकत नहीं बल्कि लानत आएगी।” 13 उस की माँ ने कहा, “तुम पर आनेवाली लानत मुझ पर आए, बेटा। बस मेरी बात मान लो। जाओ और बकरियों के वह बच्चे ले आओ।”

14 चुनौचे वह गया और उन्हें अपनी माँ के पास ले आया। रिबका ने ऐसा लज़ीज़ खाना पकाया जो याकूब के बाप को पसंद था। 15 एसौ के खास मौकों के लिए अच्छे लिबास रिबका के पास घर में थे। उसने उनमें से बेहतरीन लिबास चुनकर अपने छोटे बेटे को पहना दिया। 16 साथ साथ उसने बकरियों की खालें उसके हाथों और गरदन पर जहाँ बाल न थे लपेट दीं। 17 फिर उसने अपने बेटे याकूब को रोटी और वह लज़ीज़ खाना दिया जो उसने पकाया था।

18 याकूब ने अपने बाप के पास जाकर कहा, “अब्बू जी।” इसहाक ने कहा, “जी, बेटा। तू कौन है?” 19 उसने कहा, “मैं आपका पहलौठा एसौ हूँ। मैंने वह किया है जो आपने मुझे कहा था। अब ज़रा उठें और बैठकर मेरे शिकार का खाना खाएँ ताकि आप बाद में मुझे बरकत दें।” 20 इसहाक ने पूछा, “बेटा, तुझे यह शिकार इतनी जल्दी किस तरह मिल गया?” उसने जवाब दिया, “रब आपके खुदा ने उसे मेरे सामने से गुज़रने दिया।”

21 इसहाक ने कहा, “बेटा, मेरे करीब आ ताकि मैं तुझे छू लूँ कि तू वाकई मेरा बेटा एसौ है कि नहीं।” 22 याकूब अपने बाप के नज़दीक आया। इसहाक ने उसे छूकर कहा, “तेरी आवाज़ तो याकूब की है लेकिन तेरे हाथ एसौ के हैं।” 23 यों उसने फ़रेब खाया। चूँकि याकूब के हाथ एसौ के हाथ की मानिंद थे इसलिए उसने उसे बरकत दी। 24 तो भी उसने दुबारा पूछा, “क्या तू वाकई मेरा बेटा एसौ है?” याकूब ने जवाब दिया, “जी, मैं वही हूँ।” 25 आखिरकार इसहाक ने कहा, “शिकार का खाना मेरे पास ले आ, बेटा। उसे खाने के बाद मैं तुझे बरकत दूँगा।” याकूब खाना और मै ले आया। इसहाक ने खाया और पिया, 26 फिर कहा, “बेटा, मेरे पास आ और मुझे बोसा दे।” 27 याकूब ने पास आकर उसे बोसा दिया। इसहाक ने उसके लिबास को सूँघकर उसे बरकत दी। उसने कहा,

“मेरे बेटे की खुशबू उस खुले मैदान की खुशबू की मानिंद है जिसे रब ने बरकत दी है। 28 अल्लाह तुझे आसमान की ओस और ज़मीन की ज़रखेज़ी दे। वह तुझे कसरत का अनाज और अंगूर का रस दे। 29 कौमों तेरी खिदमत करें, और उम्मतें तेरे सामने झुक जाएँ। अपने भाइयों का हुक्मरान बन, और तेरी माँ की औलाद तेरे सामने घुटने टेके। जो तुझ पर लानत करे वह खुद लानती हो और जो तुझे बरकत दे वह खुद बरकत पाए।”

एसौ भी बरकत माँगता है

30 इसहाक की बरकत के बाद याकूब अभी सख़सत ही हुआ था कि उसका भाई एसौ शिकार करके वापस आया। 31 वह भी लज़ीज़ खाना पकाकर उसे अपने बाप के पास ले आया। उसने कहा, “अब्बू जी, उठें और मेरे शिकार का खाना खाएँ ताकि आप मुझे बरकत दें।” 32 इसहाक ने पूछा, “तू कौन है?” उसने जवाब दिया, “मैं आपका बड़ा बेटा एसौ हूँ।”

33 इसहाक घबराकर शिद्द से काँपने लगा। उसने पूछा, “फिर वह कौन था जो किसी जानवर का शिकार करके मेरे पास ले आया? तेरे आने से ज़रा पहले मैंने उस शिकार का खाना खाकर उस शख्स को बरकत दी। अब वह बरकत उसी पर रहेगी।”

34 यह सुनकर एसौ जोरदार और तलख़ चीखें मारने लगा। “अब्बू, मुझे भी बरकत दें,” उसने कहा। 35 लेकिन इसहाक ने जवाब दिया, “तेरे भाई ने आकर मुझे फ़रेब दिया। उसने तेरी बरकत तुझसे छीन ली है।” 36 एसौ ने कहा, “उसका नाम याकूब ठीक ही रखा गया है, क्योंकि अब उसने मुझे दूसरी बार धोका दिया है। पहले उसने पहलौठे का हक़ मुझसे छीन लिया और अब मेरी बरकत भी ज़बरदस्ती ले ली। क्या आपने मेरे लिए कोई बरकत महफूज़ नहीं रखी?” 37 लेकिन इसहाक ने कहा, “मैंने उसे तेरा हुक्मरान और उसके तमाम भाइयों को उसके खादिम

बना दिया है। मैंने उसे अनाज और अंगूर का रस मुहैया किया है। अब मुझे बता बेटा, क्या कुछ रह गया है जो मैं तुझे दूँ?” 38 लेकिन एसौ खामोश न हुआ बल्कि कहा, “अब्बू, क्या आपके पास वाकई सिर्फ यही बरकत थी? अब्बू, मुझे भी बरकत दें।” वह ज़ारो-कतार रोने लगा।

39 फिर इसहाक ने कहा, “तू ज़मीन की ज़रखेज़ी और आसमान की ओस से महरूम रहेगा। 40 तू सिर्फ अपनी तलवार के सहारे ज़िंदा रहेगा और अपने भाई की खिदमत करेगा। लेकिन एक दिन तू बेचैन होकर उसका जुआ अपनी गरदन पर से उतार फेंकेगा।”

याकूब की हिजरत

41 बाप की बरकत के सबब से एसौ याकूब का दुश्मन बन गया। उसने दिल में कहा, “वह दिन करीब आ गए हैं कि अब्बू इंतकाल कर जाएंगे और हम उनका मातम करेंगे। फिर मैं अपने भाई को मार डालूँगा।”

42 रिबका को अपने बड़े बेटे एसौ का यह इरादा मालूम हुआ। उसने याकूब को बुलाकर कहा, “तुम्हारा भाई बदला लेना चाहता है। वह तुम्हें क़त्ल करने का इरादा रखता है। 43 बेटा, अब मेरी सुनो, यहाँ से हिजरत कर जाओ। हारान शहर में मेरे भाई लाबन के पास चले जाओ। 44 वहाँ कुछ दिन ठहरे रहना जब तक तुम्हारे भाई का गुस्सा ठंडा न हो जाए। 45 जब उसका गुस्सा ठंडा हो जाएगा और वह तुम्हारे उसके साथ किए गए सुलूक को भूल जाएगा, तब मैं इतला दूँगी कि तुम वहाँ से वापस आ सकते हो। मैं क्यों एक ही दिन में तुम दोनों से महरूम हो जाऊँ?”

46 फिर रिबका ने इसहाक से बात की, “मैं एसौ की बीवियों के सबब से अपनी ज़िंदगी से तंग हूँ। अगर याकूब भी इस मुल्क की औरतों में से किसी से शादी करे तो बेहतर है कि मैं पहले ही मर जाऊँ।”

28

1 इसहाक ने याकूब को बुलाकर उसे बरकत दी और कहा, “लाज़िम है कि तू किसी कनानी औरत से शादी न करे। 2 अब सीधे मसोपुतामिया में अपने नाना बतुएल के घर जा और वहाँ अपने मामूँ लाबन की लड़कियों में से किसी एक से शादी कर। 3 अल्लाह कादिरे-मुतलक तुझे बरकत देकर फलने फूलने दे और तुझे इतनी औलाद दे कि तू बहुत सारी कौमों का बाप बने। 4 वह तुझे और तेरी औलाद को इब्राहीम की बरकत दे जिसे उसने यह मुल्क दिया जिसमें तू मेहमान के तौर पर रहता है। यह मुल्क तुम्हारे कब्जे में आए।” 5 यों इसहाक ने याकूब को मसोपुतामिया में लाबन के घर भेजा। लाबन अरामी मर्द बतुएल का बेटा और रिबका का भाई था।

एसौ एक और शादी करता है

6 एसौ को पता चला कि इसहाक ने याकूब को बरकत देकर मसोपुतामिया भेज दिया है ताकि वहाँ शादी करे। उसे यह भी मालूम हुआ कि इसहाक ने उसे कनानी औरत से शादी करने से मना किया है 7 और कि याकूब अपने माँ-बाप की सुनकर मसोपुतामिया चला गया है। 8 एसौ समझ गया कि कनानी औरतें मेरे बाप को मंज़ूर नहीं हैं। 9 इसलिए वह इब्राहीम के बेटे इसमाईल के पास गया और उस की बेटी महलत से शादी की। वह नबायोत की बहन थी। यों उस की बीवियों में इज़ाफ़ा हुआ।

बैतेल में याकूब का खाब

10 याकूब बैर-सबा से हारान की तरफ़ रवाना हुआ। 11 जब सूरज ग़रुब हुआ तो वह रात गुज़ारने के लिए रुक गया और वहाँ के पत्थरों में से एक को लेकर उसे अपने सिरहाने रखा और सो गया।

12 जब वह सो रहा था तो खाब में एक सीढ़ी देखी जो ज़मीन से आसमान तक पहुँचती थी। फ़रिश्ते उस पर चढ़ते और उतरते नज़र आते थे। 13 रब उसके ऊपर खड़ा था। उसने कहा, “मैं रब इब्राहीम और इसहाक का खुदा हूँ। मैं तुझे और तेरी औलाद को यह ज़मीन दूँगा जिस पर तू लेटा है। 14 तेरी औलाद ज़मीन पर खाक की तरह बेशुमार होगी, और तू चारों तरफ़ फैल जाएगा। दुनिया की तमाम क़ौमों में तेरे और तेरी औलाद के वसीले से बरकत पाएँगी। 15 मैं तेरे साथ हूँगा, तुझे महफूज़ रखूँगा और आखिरकार तुझे इस मुल्क में वापस लाऊँगा। मुमकिन ही नहीं कि मैं तेरे साथ अपना वादा पूरा करने से पहले तुझे छोड़ दूँ।”

16 तब याकूब जाग उठा। उसने कहा, “यक़ीनन रब यहाँ हाज़िर है, और मुझे मालूम नहीं था।” 17 वह डर गया और कहा, “यह कितना ख़ौफ़नाक मक़ाम है। यह तो अल्लाह ही का घर और आसमान का दरवाज़ा है।”

18 याकूब सुबह-सबरे उठा। उसने वह पत्थर लिया जो उसने अपने सिरहाने रखा था और उसे सतून की तरह खड़ा किया। फिर उसने उस पर ज़ैतून का तेल उंडेल दिया। 19 उसने मक़ाम का नाम बैतेल यानी ‘अल्लाह का घर’ रखा (पहले साथवाले शहर का नाम लुज़ था)। 20 उसने कसम खाकर कहा, “अगर रब मेरे साथ हो, सफ़र पर मेरी हिफ़ाज़त करे, मुझे खाना और कपड़ा मुहैया करे 21 और मैं सलामती से अपने बाप के घर वापस पहुँचूँ तो फिर वह मेरा खुदा होगा। 22 जहाँ यह पत्थर सतून के तौर पर खड़ा है वहाँ अल्लाह का घर होगा, और जो भी तू मुझे देगा उसका दसवाँ हिस्सा तुझे दिया करूँगा।”

29

याकूब लाबन के घर पहुँचता है

1 याकूब ने अपना सफर जारी रखा और चलते चलते मशरिकी कौमों के मुल्क में पहुँच गया। 2 वहाँ उसने खेत में कुआँ देखा जिसके इर्दगिर्द भेड़-बकरियों के तीन रेवड़ जमा थे। रेवड़ों को कुएँ का पानी पिलाया जाना था, लेकिन उसके मुँह पर बड़ा पत्थर पड़ा था। 3 वहाँ पानी पिलाने का यह तरीका था कि पहले चरवाहे तमाम रेवड़ों का इंतज़ार करते और फिर पत्थर को लुढ़काकर मुँह से हटा देते थे। पानी पिलाने के बाद वह पत्थर को दुबारा मुँह पर रख देते थे।

4 याकूब ने चरवाहों से पूछा, “मेरे भाइयो, आप कहाँ के हैं?” उन्होंने जवाब दिया, “हारान के।” 5 उसने पूछा, “क्या आप नहर के पोते लाबन को जानते हैं?” उन्होंने कहा, “जी हाँ।” 6 उसने पूछा, “क्या वह खैरियत से है?” उन्होंने कहा, “जी, वह खैरियत से है। देखो, उधर उस की बेटी राखिल रेवड़ लेकर आ रही है।” 7 याकूब ने कहा, “अभी तो शाम तक बहुत वक्त बाकी है। रेवड़ों को जमा करने का वक्त तो नहीं है। आप क्यों उन्हें पानी पिलाकर दुबारा चरने नहीं देते?” 8 उन्होंने जवाब दिया, “पहले ज़रूरी है कि तमाम रेवड़ यहाँ पहुँचें। तब ही पत्थर को लुढ़काकर एक तरफ़ हटाया जाएगा और हम रेवड़ों को पानी पिलाएँगे।”

9 याकूब अभी उनसे बात कर ही रहा था कि राखिल अपने बाप का रेवड़ लेकर आ पहुँची, क्योंकि भेड़-बकरियों को चराना उसका काम था। 10 जब याकूब ने राखिल को मामूँ लाबन के रेवड़ के साथ आते देखा तो उसने कुएँ के पास जाकर पत्थर को लुढ़काकर मुँह से हटा दिया और भेड़-बकरियों को पानी पिलाया। 11 फिर उसने उसे बोसा दिया और खूब रोने लगा। 12 उसने कहा, “मैं आपके अब्बू की बहन रिबका का बेटा हूँ।” यह सुनकर राखिल ने भागकर अपने अब्बू को इतला दी।

13 जब लाबन ने सुना कि मेरा भानजा याकूब आया है तो वह दौड़कर उससे मिलने गया और उसे गले लगाकर अपने घर ले आया। याकूब ने उसे सब कुछ बता दिया जो हुआ था। 14 लाबन ने कहा, “आप वाकई मेरे रिश्तेदार हैं।” याकूब ने वहाँ एक पूरा महीना गुज़ारा।

अपनी बीवियों के लिए याकूब की मेहनत-मशक्कत

15 फिर लाबन याकूब से कहने लगा, “बेशक आप मेरे रिश्तेदार हैं, लेकिन आपको मेरे लिए काम करने के बदले में कुछ मिलना चाहिए। मैं आपको कितने पैसे दूँ?” 16 लाबन की दो बेटियाँ थीं। बड़ी का नाम लियाह था और छोटी का राखिल। 17 लियाह की आँखें चुंधी थीं जबकि राखिल हर तरह से खूबसूरत थी। 18 याकूब को राखिल से मुहब्बत थी, इसलिए उसने कहा, “अगर मुझे आपकी छोटी बेटी राखिल मिल जाए तो आपके लिए सात साल काम करूँगा।” 19 लाबन ने कहा, “किसी और आदमी की निसबत मुझे यह ज़्यादा पसंद है कि आप ही से उस की शादी कराऊँ।”

20 पस याकूब ने राखिल को पाने के लिए सात साल तक काम किया। लेकिन उसे ऐसा लगा जैसा दो एक दिन ही गुज़रे हों क्योंकि वह राखिल को शिद्दत से प्यार करता था। 21 इसके बाद उसने लाबन से कहा, “मुद्दत पूरी हो गई है। अब मुझे अपनी बेटी से शादी करने दें।” 22 लाबन ने उस मकाम के तमाम लोगों को दावत देकर शादी की ज़ियाफ़त की। 23 लेकिन उस रात वह राखिल की बजाए लियाह को याकूब के पास ले आया, और याकूब उसी से हमबिसतर हुआ। 24 (लाबन ने लियाह को अपनी लौंडी ज़िलफ़ा दे दी थी ताकि वह उस की खिदमत करे।)

25 जब सुबह हुई तो याकूब ने देखा कि लियाह ही मेरे पास है। उसने लाबन के पास जाकर कहा, “यह आपने मेरे साथ क्या किया है? क्या मैंने राखिल के लिए काम नहीं किया? आपने मुझे धोका क्यों दिया?” 26 लाबन ने जवाब दिया, “यहाँ दस्तूर नहीं है कि छोटी बेटी की शादी बड़ी से पहले कर दी जाए। 27 एक हफ़ते के बाद शादी की स्मूमात पूरी हो जाएगी। उस वक्त तक सब्र करें। फिर मैं आपको राखिल भी दे दूँगा। शर्त यह है कि आप मज़ीद सात साल मेरे लिए काम करें।”

28 याकूब मान गया। चुनौचे जब एक हफ़ते के बाद शादी की स्मूमात पूरी हुई तो लाबन ने अपनी बेटी राखिल की शादी भी उसके साथ कर दी। 29 (लाबन ने राखिल को अपनी लौंडी बिलहाह दे दी ताकि वह उस की खिदमत करे।) 30 याकूब राखिल से भी हमबिसतर हुआ। वह लियाह की निसबत उसे ज़्यादा प्यार करता था। फिर उसने राखिल के एवज़ सात साल और लाबन की खिदमत की।

याकूब के बच्चे

31 जब रब ने देखा कि लियाह से नफ़रत की जाती है तो उसने उसे औलाद दी जबकि राखिल के हाँ बच्चे पैदा न हुए।

32 लियाह हामिला हुई और उसके बेटा पैदा हुआ। उसने कहा, “रब ने मेरी मुसीबत देखी है और अब मेरा शौहर मुझे प्यार करेगा।” उसने उसका नाम रुबिन यानी ‘देखो एक बेटा’ रखा।

33 वह दुबारा हामिला हुई। एक और बेटा पैदा हुआ। उसने कहा, “रब ने सुना कि मुझसे नफ़रत की जाती है, इसलिए उसने मुझे यह भी दिया है।” उसने उसका नाम शमौन यानी ‘रब ने सुना है’ रखा।

34 वह एक और दफ़ा हामिला हुई। तीसरा बेटा पैदा हुआ। उसने कहा, “अब आखिरकार शौहर के साथ मेरा बंधन मज़बूत हो जाएगा, क्योंकि मैंने उसके लिए तीन बेटों को जन्म दिया है।” उसने उसका नाम लावी यानी बंधन रखा।

35 वह एक बार फिर हामिला हुई। चौथा बेटा पैदा हुआ। उसने कहा, “इस दफ़ा मैं रब की तमज़ीद करूँगी।” उसने उसका नाम यहूदाह यानी तमज़ीद रखा। इसके बाद उससे और बच्चे पैदा न हुए।

30

1 लेकिन राखिल बेऔलाद ही रही, इसलिए वह अपनी बहन से हसद करने लगी। उसने याकूब से कहा, “मुझे भी औलाद दें वरना मैं मर जाऊँगी।” 2 याकूब को गुस्सा आया। उसने कहा, “क्या मैं अल्लाह हूँ जिसने तुझे औलाद से महसूस रखा है?” 3 राखिल ने कहा, “यहाँ मेरी लौंडी बिलहाह है। उसके साथ हमबिसतर हों ताकि वह मेरे लिए बच्चे को जन्म दे और मैं उस की मारिफत माँ बन जाऊँ।”

4 यों उसने अपने शौहर को बिलहाह दी, और वह उससे हमबिसतर हुआ। 5 बिलहाह हामिला हुई और बेटा पैदा हुआ। 6 राखिल ने कहा, “अल्लाह ने मेरे हक में फैसला दिया है। उसने मेरी दुआ सुनकर मुझे बेटा दे दिया है।” उसने उसका नाम दान यानी ‘किसी के हक में फैसला करनेवाला’ रखा।

7 बिलहाह दुबारा हामिला हुई और एक और बेटा पैदा हुआ। 8 राखिल ने कहा, “मैंने अपनी बहन से सख्त कुश्ती लड़ी है, लेकिन जीत गई हूँ।” उसने उसका नाम नफताली यानी ‘कुश्ती में मुझसे जीता गया’ रखा।

9 जब लियाह ने देखा कि मेरे और बच्चे पैदा नहीं हो रहे तो उसने याकूब को अपनी लौंडी ज़िलफा दे दी ताकि वह भी उस की बीवी हो। 10 ज़िलफा के भी एक बेटा पैदा हुआ। 11 लियाह ने कहा, “मैं कितनी खुशकिसमत हूँ।” चुनाँचे उसने उसका नाम जद यानी खुशकिसमती रखा।

12 फिर ज़िलफा के दूसरा बेटा पैदा हुआ। 13 लियाह ने कहा, “मैं कितनी मुबारक हूँ। अब खवातीन मुझे मुबारक कहेंगी।” उसने उसका नाम आशर यानी मुबारक रखा।

14 एक दिन अनाज की फसल की कटाई हो रही थी कि रुबिन बाहर निकलकर खेतों में चला गया। वहाँ उसे मर्दुमगयाह * मिल गए। वह उन्हें अपनी माँ लियाह के पास ले आया। यह देखकर राखिल ने लियाह से कहा, “मुझे ज़रा अपने बेटे के मर्दुमगयाह में से कुछ दे दो।”

15 लियाह ने जवाब दिया, “क्या यही काफ़ी नहीं कि तुमने मेरे शौहर को मुझसे छीन लिया है? अब मेरे बेटे के मर्दुमगयाह को भी छीनना चाहती हो।” राखिल ने कहा, “अगर तुम मुझे अपने बेटे के मर्दुमगयाह में से दो तो आज रात याकूब के साथ सो सकती हो।”

16 शाम को याकूब खेतों से वापस आ रहा था कि लियाह आगे से उससे मिलने को गई और कहा, “आज रात आपको मेरे साथ सोना है, क्योंकि मैंने अपने बेटे के मर्दुमगयाह के एवज़ आपको उजरत पर लिया है।” चुनाँचे याकूब ने लियाह के पास रात गुज़ारी।

17 उस वक़्त अल्लाह ने लियाह की दुआ सुनी और वह हामिला हुई। उसके पाँचवाँ बेटा पैदा हुआ। 18 लियाह ने कहा, “अल्लाह ने मुझे इसका अज़्र दिया है कि मैंने अपने शौहर को अपनी लौंडी दी।” उसने उसका नाम इशकार यानी अज़्र रखा।

19 इसके बाद वह एक और दफ़ा हामिला हुई। उसके छठा बेटा पैदा हुआ। 20 उसने कहा, “अल्लाह ने मुझे एक अच्छा-खासा तोहफ़ा दिया है। अब मेरा ख़ाविंद मेरे साथ रहेगा, क्योंकि मुझसे उसके छः बेटे पैदा हुए हैं।” उसने उसका नाम ज़बूलून यानी रिहाइश रखा।

21 इसके बाद बेटी पैदा हुई। उसने उसका नाम दीना रखा।

22 फिर अल्लाह ने राखिल को भी याद किया। उसने उस की दुआ सुनकर उसे औलाद बख़्शी। 23 वह हामिला हुई और एक बेटा पैदा हुआ। उसने कहा, “मुझे बेटा अता करने से अल्लाह ने मेरी इज़्ज़त बहाल कर दी है। 24 अब मुझे एक और बेटा दे।” उसने उसका नाम यूसुफ़ यानी ‘वह और दे’ रखा।

याकूब का लाबन के साथ सौदा

25 यूसुफ़ की पैदाइश के बाद याकूब ने लाबन से कहा, “अब मुझे इजाज़त दें कि मैं अपने वतन और घर को वापस जाऊँ। 26 मुझे मेरे बाल-बच्चे दें जिनके एवज़ मैंने आपकी खिदमत की है। फिर मैं चला जाऊँगा। आप तो खुद जानते हैं कि मैंने कितनी मेहनत के साथ आपके लिए काम किया है।”

27 लेकिन लाबन ने कहा, “मुझ पर मेहरबानी करें और यहीं रहें। मुझे ग़ैबदानी से पता चला है कि अब मुझे आपके सबब से बरकत दी है। 28 अपनी उजरत खुद मुक़र्रर करें तो मैं वही दिया करूँगा।”

29 याकूब ने कहा, “आप जानते हैं कि मैंने किस तरह आपके लिए काम किया, कि मेरे वसीले से आपके मवेशी कितने बढ़ गए हैं। 30 जो थोड़ा-बहुत मेरे आने से पहले आपके पास था वह अब बहुत ज़्यादा बढ़ गया है। अब मेरे काम से आपको बहुत बरकत दी है। अब वह वक़्त आ गया है कि मैं अपने घर के लिए कुछ करूँ।”

31 लाबन ने कहा, “मैं आपको क्या दूँ?” याकूब ने कहा, “मुझे कुछ न दें। मैं इस शर्त पर आपकी भेड़-बकरियों की देख-भाल जारी रखूँगा कि 32 आज मैं आपके रेवड़ में से गुज़रकर उन तमाम भेड़ों को अलग कर लूँगा जिनके जिस्म पर छोटे या बड़े धब्बे हों या जो सफ़ेद न हों। इसी तरह मैं उन तमाम बकरियों को भी अलग कर लूँगा जिनके जिस्म पर छोटे या बड़े धब्बे हों। यही मेरी उजरत होगी। 33 आइंदा जिन बकरियों के जिस्म पर छोटे या बड़े धब्बे होंगे या जिन भेड़ों का रंग सफ़ेद नहीं होगा वह मेरा अज़्र होंगी। जब कभी आप उनका मुआयना करेंगे तो आप मालूम कर सकेंगे कि मैं दियानतदार रहा हूँ। क्योंकि मेरे जानवरों के रंग से ही ज़ाहिर होगा कि मैंने आपका कुछ चुराया नहीं है।” 34 लाबन ने कहा, “ठीक है। ऐसा ही हो जैसा आपने कहा है।”

* 30:14 एक पौदा जिसके बारे में खयाल किया जाता था कि उसे खाकर बाँझ औरत भी बच्चे को जन्म देगी।

35 उसी दिन लाबन ने उन बकरों को अलग कर लिया जिनके जिस्म पर धारियाँ या धब्बे थे और उन तमाम बकरियों को जिनके जिस्म पर छोटे या बड़े धब्बे थे। जिसके भी जिस्म पर सफेद निशान था उसे उसने अलग कर लिया। इसी तरह उसने उन तमाम भेड़ों को भी अलग कर लिया जो पूरे तौर पर सफेद न थे। फिर लाबन ने उन्हें अपने बेटों के सुपुर्द कर दिया 36 जो उनके साथ याकूब से इतना दूर चले गए कि उनके दरमियान तीन दिन का फासला था। तब याकूब लाबन की बाकी भेड़-बकरियों की देख-भाल करता गया।

37 याकूब ने सफेदा, बादाम और चनार की हरी हरी शाखें लेकर उनसे कुछ छिलका यों उतार दिया कि उस पर सफेद धारियाँ नज़र आईं। 38 उसने उन्हें भेड़-बकरियों के सामने उन हौजों में गाड़ दिया जहाँ वह पानी पीते थे, क्योंकि वहाँ यह जानवर मस्त होकर मिलाप करते थे। 39 जब वह इन शाखों के सामने मिलाप करते तो जो बच्चे पैदा होते उनके जिस्म पर छोटे और बड़े धब्बे और धारियाँ होती थीं। 40 फिर याकूब ने भेड़ के बच्चों को अलग करके अपने रेवड़ों को लाबन के उन जानवरों के सामने चरने दिया जिनके जिस्म पर धारियाँ थीं और जो सफेद न थे। यों उसने अपने जाती रेवड़ों को अलग कर लिया और उन्हें लाबन के रेवड़ के साथ चरने न दिया।

41 लेकिन उसने यह शाखें सिर्फ उस वक्त हौजों में खड़ी की जब ताकतवर जानवर मस्त होकर मिलाप करते थे। 42 कमज़ोर जानवरों के साथ उसने ऐसा न किया। इसी तरह लाबन को कमज़ोर जानवर और याकूब को ताकतवर जानवर मिल गए। 43 यों याकूब बहुत अमीर बन गया। उसके पास बहुत-से रेवड़, गुलाम और लौडियाँ, ऊँट और गधे थे।

31

याकूब की हिजरत

1 एक दिन याकूब को पता चला कि लाबन के बेटे मेरे बारे में कह रहे हैं, “याकूब ने हमारे अब्बू से सब कुछ छीन लिया है। उसने यह तमाम दौलत हमारे बाप की मिलकियत से हासिल की है।” 2 याकूब ने यह भी देखा कि लाबन का मेरे साथ रवैया पहले की निसबत बिगड़ गया है। 3 फिर ख ने उससे कहा, “अपने बाप के मुल्क और अपने रिश्तेदारों के पास वापस चला जा। मैं तेरे साथ हूँगा।”

4 उस वक्त याकूब खुले मैदान में अपने रेवड़ों के पास था। उसने वहाँ से राखिल और लियाह को बुलाकर 5 उनसे कहा, “मैंने देख लिया है कि आपके बाप का मेरे साथ रवैया पहले की निसबत बिगड़ गया है। लेकिन मेरे बाप का खुदा मेरे साथ रहा है। 6 आप दोनों जानती हैं कि मैंने आपके अब्बू के लिए कितनी जाँफिशानी से काम किया है। 7 लेकिन वह मुझे फ़रेब देता रहा और मेरी उजरत दस बार बदली। ताहम अल्लाह ने उसे मुझे नुकसान पहुँचाने न दिया। 8 जब मामूँ लाबन कहते थे, ‘जिन जानवरों के जिस्म पर धब्बे हों वही आपको उजरत के तौर पर मिलेंगे’ तो तमाम भेड़-बकरियों के ऐसे बच्चे पैदा हुए जिनके जिस्मों पर धब्बे ही थे। जब उन्होंने कहा, ‘जिन जानवरों के जिस्म पर धारियाँ होंगी वही आपको उजरत के तौर पर मिलेंगे’ तो तमाम भेड़-बकरियों के ऐसे बच्चे पैदा हुए जिनके जिस्मों पर धारियाँ ही थीं। 9 यों अल्लाह ने आपके अब्बू के मवेशी छीनकर मुझे दे दिए हैं। 10 अब ऐसा हुआ कि हैवानों की मस्ती के मौसम में मैंने एक खाब देखा। उसमें जो मेंढे और बकरे भेड़-बकरियों से मिलाप कर रहे थे उनके जिस्म पर बड़े और छोटे धब्बे और धारियाँ थीं। 11 उस खाब में अल्लाह के फ़रिश्ते ने मुझसे बात की, ‘याकूब!’ मैंने कहा, ‘जी, मैं हाज़िर हूँ।’ 12 फ़रिश्ते ने कहा, ‘अपनी नज़र उठाकर उस पर गौर कर जो हो रहा है। वह तमाम मेंढे और बकरे जो भेड़-बकरियों से मिलाप कर रहे हैं उनके जिस्म पर बड़े और छोटे धब्बे और धारियाँ हैं। मैं यह खुद करवा रहा हूँ, क्योंकि मैंने वह सब कुछ देख लिया है जो लाबन ने तेरे साथ किया है। 13 मैं वह खुदा हूँ जो बैतेल में तुझ पर जाहिर हुआ था, उस जगह जहाँ तूने सतून पर तेल उंडेलकर उसे मेरे लिए मखसूस किया और मेरे हुज़ूर कसम खाई थी। अब उठ और रवाना होकर अपने वतन वापस चला जा।’”

14 राखिल और लियाह ने जवाब में याकूब से कहा, “अब हमें अपने बाप की मीरास से कुछ मिलने की उम्मीद नहीं रही। 15 उसका हमारे साथ अजनबी का-सा सुलूक है। पहले उसने हमें बेच दिया, और अब उसने वह सारे पैसे खा भी लिए हैं। 16 चुनाँचे जो भी दौलत अल्लाह ने हमारे बाप से छीन ली है वह हमारी और हमारे बच्चों की ही है। अब जो कुछ भी अल्लाह ने आपको बताया है वह करें।”

17 तब याकूब ने उठकर अपने बाल-बच्चों को ऊँटों पर बिठाया 18 और अपने तमाम मवेशी और मसोपुतामिया से हासिल किया हुआ तमाम सामान लेकर मुल्के-कनान में अपने बाप के हाँ जाने के लिए रवाना हुआ। 19 उस वक्त लाबन अपनी भेड़-बकरियों की पशम कतरने को गया हुआ था। उस की गैरमौजूदगी में राखिल ने अपने बाप के बुत चुरा लिए।

20 याकूब ने लाबन को फ़रेब देकर उसे इतला न दी कि मैं जा रहा हूँ 21 बल्कि अपनी सारी मिलकियत समेटकर फ़रार हुआ। दरियाए-फुरात को पार करके वह जिलियाद के पहाड़ी इलाके की तरफ़ सफ़र करने लगा।

लाबन याकूब का ताक़ुब करता है

22 तीन दिन गुज़र गए। फिर लाबन को बताया गया कि याकूब भाग गया है। 23 अपने रिश्तेदारों को साथ लेकर उसने उसका ताक़ुब किया। सात दिन चलते चलते उसने याकूब को आ लिया जब वह जिलियाद के पहाड़ी इलाके में पहुँच गया था। 24 लेकिन उस रात अल्लाह ने खाब में लाबन के पास आकर उससे कहा, “ख़बरदार! याकूब को बुरा-भला न कहना।”

25 जब लाबन उसके पास पहुँचा तो याकूब ने जिलियाद के पहाड़ी इलाके में अपने ख़ैमे लगाए हुए थे। लाबन ने भी अपने रिश्तेदारों के साथ वहीं अपने ख़ैमे लगाए। 26 उसने याकूब से कहा, “यह आपने क्या किया है? आप मुझे धोका देकर मेरी बेटियों को क्यों जंगी कैदियों की तरह हाँक लाए हैं? 27 आप क्यों मुझे फ़रेब देकर ख़ामोशी से भाग आए हैं? अगर आप मुझे इतला देते तो मैं आपको खुशी खुशी दफ़ और

सरोद के साथ गाते बजाते खूबसूरत करता। 28 आपने मुझे अपने नवासे-नवासियों और बेटियों को बोसा देने का मौका भी न दिया। आपकी यह हरकत बड़ी अहमकाना थी। 29 मैं आपको बहुत नुकसान पहुँचा सकता हूँ। लेकिन पिछली रात आपके अब्बू के खुदा ने मुझसे कहा, ‘खबरदार! याकूब को बुरा-भला न कहना।’ 30 ठीक है, आप इसलिए चले गए कि अपने बाप के घर वापस जाने के बड़े आरज़ूमद थे। लेकिन यह आपने क्या किया है कि मेरे बुत चुरा लाए हैं?”

31 याकूब ने जवाब दिया, “मुझे डर था कि आप अपनी बेटियों को मुझसे छीन लेंगे। 32 लेकिन अगर आपको यहाँ किसी के पास अपने बुत मिल जाएँ तो उसे सज़ाए-मौत दी जाए हमारे रिश्तेदारों की मौजूदगी में मालूम करें कि मेरे पास आपकी कोई चीज़ है कि नहीं। अगर है तो उसे ले लें।” याकूब को मालूम नहीं था कि राखिल ने बुतों को चुराया है।

33 लाबन याकूब के ख़ैमे में दाखिल हुआ और ढूँढ़ने लगा। वहाँ से निकलकर वह लियाह के ख़ैमे में और दोनों लौंडियों के ख़ैमे में गया। लेकिन उसके बुत कहीं नज़र न आए। आखिर में वह राखिल के ख़ैमे में दाखिल हुआ। 34 राखिल बुतों को ऊँटों की एक काठी के नीचे छुपाकर उस पर बैठ गई थी। लाबन टटोल टटोलकर पूरे ख़ैमे में से गुज़रा लेकिन बुत न मिले। 35 राखिल ने अपने बाप से कहा, “अब्बू, मुझसे नाराज़ न होना कि मैं आपके सामने खड़ी नहीं हो सकती। मैं ऐयामे-माहवारी के सबब से उठ नहीं सकती।” लाबन उसे छोड़कर ढूँढ़ता रहा, लेकिन कुछ न मिला।

36 फिर याकूब को गुस्सा आया और वह लाबन से झगड़ने लगा। उसने पूछा, “मुझसे क्या जुर्म सरज़द हुआ है? मैंने क्या गुनाह किया है कि आप इतनी तुंदी से मेरे ताक़ूब के लिए निकले हैं? 37 आपने टटोल टटोलकर मेरे सारे सामान की तलाशी ली है। तो आपका क्या निकला है? उसे यहाँ अपने और मेरे रिश्तेदारों के सामने रखें। फिर वह फैसला करें कि हममें से कौन हक़ पर है। 38 मैं बीस साल तक आपके साथ रहा हूँ। उस दौरान आपकी भेड़-बकरियाँ बच्चों से महरूम नहीं रही बल्कि मैंने आपका एक मेंढा भी नहीं खाया। 39 जब भी कोई भेड़ या बकरी किसी जंगली जानवर ने फाड़ डाली तो मैं उसे आपके पास न लाया बल्कि मुझे खुद उसका नुक़सान भरना पड़ा। आपका तकाज़ा था कि मैं खुद चोरी हुए माल का एवज़ाना दूँ, खाह वह दिन के वक़्त चोरी हुआ या रात को। 40 मैं दिन की शदीद गरमी के बाइस पिघल गया और रात की शदीद सर्दी के बाइस जम गया। काम इतना सख़्त था कि मैं नींद से महरूम रहा। 41 पूरे बीस साल इसी हालत में गुज़र गए। चौदह साल मैंने आपकी बेटियों के एवज़ काम किया और छः साल आपकी भेड़-बकरियों के लिए। उस दौरान आपने दस बार मेरी तनखाह बदल दी। 42 अगर मेरे बाप इसहाक़ का खुदा और मेरे दादा इब्राहीम का माबूद * मेरे साथ न होता तो आप मुझे ज़रूर ख़ाली हाथ खूबसूरत करते। लेकिन अल्लाह ने मेरी मुसीबत और मेरी सख़्त मेहनत-मशक्क़त देखी है, इसलिए उसने कल रात को मेरे हक़ में फैसला दिया।”

याकूब और लाबन के दरमियान अहद

43 तब लाबन ने याकूब से कहा, “यह बेटियाँ तो मेरी बेटियाँ हैं, और इनके बच्चे मेरे बच्चे हैं। यह भेड़-बकरियाँ भी मेरी ही हैं। लेकिन अब मैं अपनी बेटियों और उनके बच्चों के लिए कुछ नहीं कर सकता। 44 इसलिए आओ, हम एक दूसरे के साथ अहद बाँधें। इसके लिए हम यहाँ पत्थरों का ढेर लगाएँ जो अहद की गवाही देता रहे।”

45 चुनौचे याकूब ने एक पत्थर लेकर उसे सतून के तौर पर खड़ा किया। 46 उसने अपने रिश्तेदारों से कहा, “कुछ पत्थर जमा करें।” उन्होंने पत्थर जमा करके ढेर लगा दिया। फिर उन्होंने उस ढेर के पास बैठकर खाना खाया। 47 लाबन ने उसका नाम यज़र-शाहदूथा रखा जबकि याकूब ने जल-एद रखा। दोनों नामों का मतलब ‘गवाही का ढेर’ है यानी वह ढेर जो गवाही देता है। 48 लाबन ने कहा, “आज हम दोनों के दरमियान यह ढेर अहद की गवाही देता है।” इसलिए उसका नाम जल-एद रखा गया। 49 उसका एक और नाम मिसफ़ाह यानी ‘पहरेदारों का मीनार’ भी रखा गया। क्योंकि लाबन ने कहा, “रब हम पर पहरा दे जब हम एक दूसरे से अलग हो जाएंगे। 50 मेरी बेटियों से बुरा सुलूक न करना, न उनके अलावा किसी और से शादी करना। अगर मुझे पता भी न चले लेकिन ज़रूर याद रखें कि अल्लाह मेरे और आपके सामने गवाह है। 51 यहाँ यह ढेर है जो मैंने लगा दिया है और यहाँ यह सतून भी है। 52 यह ढेर और सतून दोनों इसके गवाह हैं कि न मैं यहाँ से गुज़रकर आपको नुक़सान पहुँचाऊँगा और न आप यहाँ से गुज़रकर मुझे नुक़सान पहुँचाएँगे। 53 इब्राहीम, नहर और उनके बाप का खुदा हम दोनों के दरमियान फैसला करे अगर ऐसा कोई मामला हो।” जवाब में याकूब ने इसहाक़ के माबूद की कसम खाई कि मैं यह अहद कभी नहीं तोड़ूँगा। 54 उसने पहाड़ पर एक जानवर कुरबानी के तौर पर चढ़ाया और अपने रिश्तेदारों को खाना खाने की दावत दी। उन्होंने खाना खाकर वहीं पहाड़ पर रात गुज़ारी।

55 अगले दिन सुबह-सवेरे लाबन ने अपने नवासे-नवासियों और बेटियों को बोसा देकर उन्हें बरकत दी। फिर वह अपने घर वापस चला गया।

32

याकूब इसी से मिलने के लिए तैयार हो जाता है

1 याकूब ने भी अपना सफ़र जारी रखा। रास्ते में अल्लाह के फ़रिश्ते उससे मिले। 2 उन्हें देखकर उसने कहा, “यह अल्लाह की लशकरगाह है।” उसने उस मक़ाम का नाम महनायम यानी ‘दो लशकरगाहें’ रखा।

* 31:42 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : दहशत यानी इसहाक़ का वह खुदा जिससे इन्सान दहशत खाता है।

3 याकूब ने अपने भाई एसौ के पास अपने आगे आगे कासिद भेजे। एसौ सईर यानी अदोम के मुल्क में आबाद था। 4 उन्हें एसौ को बताना था, “आपका खादिम याकूब आपको इतला देता है कि मैं परदेस में जाकर अब तक लाबन का मेहमान रहा हूँ। 5 वहाँ मुझे बैल, गधे, भेड़-बकरियाँ, गुलाम और लौंडियाँ हासिल हुए हैं। अब मैं अपने मालिक को इतला दे रहा हूँ कि वापस आ गया हूँ और आपकी नज़रे-करम का खाहिशमंद हूँ।”

6 जब कासिद वापस आए तो उन्होंने कहा, “हम आपके भाई एसौ के पास गए, और वह 400 आदमी साथ लेकर आपसे मिलने आ रहा है।”

7 याकूब घबराकर बहुत परेशान हुआ। उसने अपने साथ के तमाम लोगों, भेड़-बकरियों, गाय-बैलों और ऊँटों को दो गुरोहों में तकसीम किया। 8 खयाल यह था कि अगर एसौ आकर एक गुरोह पर हमला करे तो बाकी गुरोह शायद बच जाए। 9 फिर याकूब ने दुआ की, “ऐ मेरे दादा इब्राहिम और मेरे बाप इसहाक के खुदा, मेरी दुआ सुन! ऐ रब, तूने खुद मुझे बताया, ‘अपने मुल्क और रिश्तेदारों के पास वापस जा, और मैं तुझे कामयाबी दूँगा।’ 10 मैं उस तमाम मेहरबानी और वफादारी के लायक नहीं जो तूने अपने खादिम को दिखाई है। जब मैंने लाबन के पास जाते वक़्त दरियाए-यरदन को पार किया तो मेरे पास सिर्फ़ यह लाठी थी, और अब मेरे पास यह दो गुरोह हैं। 11 मुझे अपने भाई एसौ से बचा, क्योंकि मुझे डर है कि वह मुझ पर हमला करके बाल-बच्चों समेत सब कुछ तबाह कर देगा। 12 तूने खुद कहा था, ‘मैं तुझे कामयाबी दूँगा और तेरी औलाद इतनी बढ़ाऊँगा कि वह समुंदर की रेत की मानिंद बेशमार होगी।’”

13 याकूब ने वहाँ रात गुज़ारी। फिर उसने अपने माल में से एसौ के लिए तोहफ़े चुन लिए : 14 200 बकरियाँ, 20 बकरे, 200 भेड़ें, 20 भैंसे, 15 30 दूध देनेवाली ऊँटनियाँ बच्चों समेत, 40 गाएँ, 10 बैल, 20 गधियाँ और 10 गधे। 16 उसने उन्हें मुख्तलिफ़ रेवड़ों में तकसीम करके अपने मुख्तलिफ़ नौकरों के सुपुर्द किया और उनसे कहा, “मेरे आगे आगे चलो लेकिन हर रेवड़ के दरमियान फासला रखो।”

17 जो नौकर पहले रेवड़ लेकर आगे निकला उससे याकूब ने कहा, “मेरा भाई एसौ तुमसे मिलेगा और पछेगा, ‘तुम्हारा मालिक कौन है? तुम कहाँ जा रहे हो? तुम्हारे सामने के जानवर किसके हैं?’ 18 जवाब में तुम्हें कहना है, ‘यह आपके खादिम याकूब के हैं। यह तोहफ़ा हैं जो वह अपने मालिक एसौ को भेज रहे हैं। याकूब हमारे पीछे पीछे आ रहे हैं।’”

19 याकूब ने यही हुक्म हर एक नौकर को दिया जिसे रेवड़ लेकर उसके आगे आगे जाना था। उसने कहा, “जब तुम एसौ से मिलोगे तो उससे यही कहना है। 20 तुम्हें यह भी ज़रूर कहना है, आपके खादिम याकूब हमारे पीछे आ रहे हैं।” क्योंकि याकूब ने सोचा, ‘मैं इन तोहफ़ों से उसके साथ सुलह करूँगा। फिर जब उससे मुलाकात होगी तो शायद वह मुझे कबूल कर ले।’ 21 यों उसने यह तोहफ़े अपने आगे आगे भेज दिए। लेकिन उसने खुद खैमागाह में रात गुज़ारी।

याकूब की कुशती

22 उस रात वह उठा और अपनी दो बीवियों, दो लौंडियों और ग्यारह बेटों को लेकर दरियाए-यब्बोक को वहाँ से पार किया जहाँ कम गहराई थी। 23 फिर उसने अपना सारा सामान भी वहाँ भेज दिया। 24 लेकिन वह खुद अकेला ही पीछे रह गया।

उस वक़्त एक आदमी आया और पौ फटने तक उससे कुशती लड़ता रहा। 25 जब उसने देखा कि मैं याकूब पर गालिब नहीं आ रहा तो उसने उसके कूल्हे को छुआ, और उसका जोड़ निकल गया। 26 आदमी ने कहा, “मुझे जाने दे, क्योंकि पौ फटनेवाली है।”

याकूब ने कहा, “पहले मुझे बरकत दें, फिर ही आपको जाने दूँगा।” 27 आदमी ने पूछा, “तेरा क्या नाम है?” उसने जवाब दिया, “याकूब।” 28 आदमी ने कहा, “अब से तेरा नाम याकूब नहीं बल्कि इसराईल यानी ‘वह अल्लाह से लड़ता है’ होगा। क्योंकि तू अल्लाह और आदमियों के साथ लड़कर गालिब आया है।”

29 याकूब ने कहा, “मुझे अपना नाम बताएँ।” उसने कहा, “तू क्यों मेरा नाम जानना चाहता है?” फिर उसने याकूब को बरकत दी।

30 याकूब ने कहा, “मैंने अल्लाह को स्वरू देखा तो भी बच गया हूँ।” इसलिए उसने उस मक़ाम का नाम फ़नियेल रखा। 31 याकूब वहाँ से चला तो सूरज तुल हो रहा था। वह कूल्हे के सबब से लँगड़ाता रहा।

32 यही वजह है कि आज भी इसराईल की औलाद कूल्हे के जोड़ पर की नस को नहीं खाते, क्योंकि याकूब की इसी नस को छुआ गया था।

33

याकूब एसौ से मिलता है

1 फिर एसौ उनकी तरफ़ आता हुआ नज़र आया। उसके साथ 400 आदमी थे। उन्हें देखकर याकूब ने बच्चों को बाँटकर लियाह, राखिल और दोनों लौंडियों के हवाले कर दिया। 2 उसने दोनों लौंडियों को उनके बच्चों समेत आगे चलने दिया। फिर लियाह उसके बच्चों समेत और आखिर में राखिल और यूसुफ़ आए। 3 याकूब खुद सबसे आगे एसौ से मिलने गया। चलते चलते वह सात दफ़ा ज़मीन तक झुका। 4 लेकिन एसौ दौड़कर उससे मिलने आया और उसे गले लगाकर बोसा दिया। दोनों रो पड़े।

5 फिर एसौ ने औरतों और बच्चों को देखा। उसने पूछा, “तुम्हारे साथ यह लोग कौन हैं?” याकूब ने कहा, “यह आपके खादिम के बच्चे हैं जो अल्लाह ने अपने करम से नवाज़े हैं।”

6 दोनों लौंडियाँ अपने बच्चों समेत आकर उसके सामने झुक गईं। 7 फिर लियाह अपने बच्चों के साथ आई और आखिर में यूसुफ और राखिल आकर झुक गए।

8 एसौ ने पूछा, “जिस जानवरों के बड़े गोल से मेरी मुलाकात हुई उससे क्या मुराद है?” याकूब ने जवाब दिया, “यह तोहफा है ताकि आपका खादिम आपकी नज़र में मकबूल हो।” 9 लेकिन एसौ ने कहा, “मेरे भाई, मेरे पास बहुत कुछ है। यह अपने पास ही रखो।” 10 याकूब ने कहा, “नहीं जी, अगर मुझ पर आपके करम की नज़र है तो मेरे इस तोहफे को ज़रूर कबूल फ़रमाएँ। क्योंकि जब मैंने आपका चेहरा देखा तो वह मेरे लिए अल्लाह के चेहरे की मानिंद था, आपने मेरे साथ इस क़दर अच्छा सुलूक किया है। 11 मेहरबानी करके यह तोहफा कबूल करें जो मैं आपके लिए लाया हूँ। क्योंकि अल्लाह ने मुझ पर अपने करम का इज़हार किया है, और मेरे पास बहुत कुछ है।”

याकूब इसरार करता रहा तो आखिरकार एसौ ने उसे कबूल कर लिया। फिर एसौ कहने लगा, 12 “आओ, हम रवाना हो जाएँ। मैं तुम्हारे आगे आगे चलूँगा।” 13 याकूब ने जवाब दिया, “मेरे मालिक, आप जानते हैं कि मेरे बच्चे नाजूक हैं। मेरे पास भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और उनके दूध पीनेवाले बच्चे भी हैं। अगर मैं उन्हें एक दिन के लिए भी हद से ज्यादा हाँकूँ तो वह मर जाएंगे। 14 मेरे मालिक, मेहरबानी करके मेरे आगे आगे जाएँ। मैं आराम से उसी रफ़्तार से आपके पीछे पीछे चलता रहूँगा जिस रफ़्तार से मेरे मवेशी और मेरे बच्चे चल सकेंगे। यों हम आहिस्ता चलते हुए आपके पास सईर पहुँचेंगे।” 15 एसौ ने कहा, “क्या मैं अपने आदमियों में से कुछ आपके पास छोड़ दूँ?” लेकिन याकूब ने कहा, “क्या ज़रूरत है? सबसे अहम बात यह है कि आपने मुझे कबूल कर लिया है।”

16 उस दिन एसौ सईर के लिए और 17 याकूब सुक्कात के लिए रवाना हुआ। वहाँ उसने अपने लिए मकान बना लिया और अपने मवेशियों के लिए झोंपड़ियाँ। इसलिए उस मकाम का नाम सुक्कात यानी झोंपड़ियाँ पड़ गया।

18 फिर याकूब चलते चलते सलामती से सिकम शहर पहुँचा। यों उसका मसोपुतामिया से मुल्के-कनान तक का सफ़र इख़िताम तक पहुँच गया। उसने अपने ख़ैमे शहर के सामने लगाए। 19 उसके ख़ैमे हमोर की औलाद की ज़मीन पर लगे थे। उसने यह ज़मीन चाँदी के 100 सिक्कों के बदले ख़रीद ली। 20 वहाँ उसने कुरबानगाह बनाई जिसका नाम उसने ‘एल खुदाए-इसराईल’ रखा।

34

दीना की इसमतदरी

1 एक दिन याकूब और लियाह की बेटी दीना कनानी औरतों से मिलने के लिए घर से निकली। 2 शहर में एक आदमी बनाम सिकम रहता था। उसका वालिद हमोर उस इलाके का हुक्मरान था और हिब्वी कौम से ताल्लुक रखता था। जब सिकम ने दीना को देखा तो उसने उसे पकड़कर उस की इसमतदरी की। 3 लेकिन उसका दिल दीना से लग गया। वह उससे मुहब्बत करने लगा और प्यार से उससे बातें करता रहा। 4 उसने अपने बाप से कहा, “इस लड़की के साथ मेरी शादी करा दें।”

5 जब याकूब ने अपनी बेटी की इसमतदरी की ख़बर सुनी तो उसके बेटे मवेशियों के साथ खुले मैदान में थे। इसलिए वह उनके वापस आने तक ख़ामोश रहा।

6 सिकम का बाप हमोर शहर से निकलकर याकूब से बात करने के लिए आया। 7 जब याकूब के बेटों को दीना की इसमतदरी की ख़बर मिली तो उनके दिल रंजिश और गुस्से से भर गए कि सिकम ने याकूब की बेटी की इसमतदरी से इसराईल की इतनी बेइज्जती की है। वह सीधे खुले मैदान से वापस आए। 8 हमोर ने याकूब से कहा, “मेरे बेटे का दिल आपकी बेटी से लग गया है। मेहरबानी करके उस की शादी मेरे बेटे के साथ कर दें। 9 हमारे साथ रिश्ता बाँधें, हमारे बेटे-बेटियों के साथ शादियाँ कराएँ। 10 फिर आप हमारे साथ इस मुल्क में रह सकेंगे और पूरा मुल्क आपके लिए खुला होगा। आप जहाँ भी चाहें आबाद हो सकेंगे, तिजारत कर सकेंगे और ज़मीन ख़रीद सकेंगे।” 11 सिकम ने खुद भी दीना के बाप और भाइयों से मिन्नत की, “अगर मेरी यह दरखास्त मंज़ूर हो तो मैं जो कुछ आप कहेंगे अदा कर दूँगा। 12 जितना भी महर और तोहफे आप मुक़र्रर करें मैं दे दूँगा। सिर्फ़ मेरी यह ख़ाहिश पूरी करें कि यह लड़की मेरे अक़द में आ जाए।”

13 लेकिन दीना की इसमतदरी के सबब से याकूब के बेटों ने सिकम और उसके बाप हमोर से चालाकी करके 14 कहा, “हम ऐसा नहीं कर सकते। हम अपनी बहन की शादी किसी ऐसे आदमी से नहीं करा सकते जिसका ख़तना नहीं हुआ। इससे हमारी बेइज्जती होती है। 15 हम सिर्फ़ इस शर्त पर राज़ी होंगे कि आप अपने तमाम लड़कों और मर्दों का ख़तना करवाने से हमारी मानिंद हो जाएँ। 16 फिर आपके बेटे-बेटियों के साथ हमारी शादियाँ हो सकेंगी और हम आपके साथ एक कौम बन जाएंगे। 17 लेकिन अगर आप ख़तना कराने के लिए तैयार नहीं हैं तो हम अपनी बहन को लेकर चले जाएंगे।”

18 यह बातें हमोर और उसके बेटे सिकम को अच्छी लगीं। 19 नौजवान सिकम ने फ़ौरन उन पर अमल किया, क्योंकि वह दीना को बहुत पसंद करता था। सिकम अपने खानदान में सबसे मुअज्ज़ज़ था। 20 हमोर अपने बेटे सिकम के साथ शहर के दरवाज़े पर गया जहाँ शहर के फ़ैसले किए जाते थे। वहाँ उन्होंने बाक़ी शहरियों से बात की। 21 “यह आदमी हमसे झगड़नेवाले नहीं है, इसलिए क्यों न वह इस मुल्क में हमारे साथ रहें और हमारे दरमियान तिजारत करें? हमारे मुल्क में उनके लिए भी काफ़ी जगह है। आओ, हम उनकी बेटियों और बेटों से शादियाँ करें। 22 लेकिन यह आदमी सिर्फ़ इस शर्त पर हमारे दरमियान रहने और एक ही कौम बनने के लिए तैयार है कि हम उनकी तरह अपने

तमाम लड़कों और मर्दों का खतना कराएँ। ²³ अगर हम ऐसा करें तो उनके तमाम मवेशी और सारा माल हमारा ही होगा। चुनाँचे आओ, हम मुत्तफिक होकर फैसला कर लें ताकि वह हमारे दरमियान रहें।”

²⁴ सिकम के शहरी हमोर और सिकम के मशवरे पर राजी हुए। तमाम लड़कों और मर्दों का खतना कराया गया। ²⁵ तीन दिन के बाद जब खतने के सबब से लोगों की हालत बुरी थी तो दीना के दो भाई शमौन और लावी अपनी तलवारें लेकर शहर में दाखिल हुए। किसी को शक तक नहीं था कि क्या कुछ होगा। अंदर जाकर उन्होंने बच्चों से लेकर बूढ़ों तक तमाम मर्दों को कत्ल कर दिया ²⁶ जिनमें हमोर और उसका बेटा सिकम भी शामिल थे। फिर वह दीना को सिकम के घर से लेकर चले गए।

²⁷ इस कत्ले-आम के बाद याकूब के बाकी बेटे शहर पर टूट पड़े और उसे लूट लिया। यों उन्होंने अपनी बहन की इसमतदरी का बदला लिया। ²⁸ वह भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल, गधे और शहर के अंदर और बाहर का सब कुछ लेकर चलते बने। ²⁹ उन्होंने सारे माल पर कब्ज़ा किया, औरतों और बच्चों को कैदी बना लिया और तमाम घरों का सामान भी ले गए।

³⁰ फिर याकूब ने शमौन और लावी से कहा, “तुमने मुझे मुसीबत में डाल दिया है। अब कनानी, फरिज्जी और मुल्क के बाकी बाशिंदों में मेरी बदनामी हुई है। मेरे साथ कम आदमी हैं। अगर दूसरे मिलकर हम पर हमला करें तो हमारे पूरे खानदान का सत्यानास हो जाएगा।”

³¹ लेकिन उन्होंने कहा, “क्या यह ठीक था कि उसने हमारी बहन के साथ कसबी का-सा सुलूक किया?”

35

बैतेल में याकूब पर अल्लाह की बरकत

¹ अल्लाह ने याकूब से कहा, “उठ, बैतेल जाकर वहाँ आबाद हो। वहीं अल्लाह के लिए जो तुझ पर ज़ाहिर हुआ जब तू अपने भाई एसाई से भाग रहा था कुरबानगाह बना।” ² चुनाँचे याकूब ने अपने घरवालों और बाकी सारे साथियों से कहा, “जो भी अजनबी बुत आपके पास हैं उन्हें फेंक दें। अपने आपको पाक-साफ़ करके अपने कपड़े बदलें, ³ क्योंकि हमें यह जगह छोड़कर बैतेल जाना है। वहाँ मैं उस ख़ुदा के लिए कुरबानगाह बनाऊँगा जिसने मुसीबत के वक़्त मेरी दुआ सुनी। जहाँ भी मैं गया वहाँ वह मेरे साथ रहा है।” ⁴ यह सुनकर उन्होंने याकूब को तमाम बुत दे दिए जो उनके पास थे और तमाम बालियाँ जो उन्होंने तावीज़ के तौर पर कानों में पहन रखी थीं। उसने सब कुछ सिकम के करीब बलूत के दरख़्त के नीचे ज़मीन में दबा दिया। ⁵ फिर वह ख़ाना हुआ। इर्दगिर्द के शहरों पर अल्लाह की तरफ़ से इतना शदीद ख़ौफ़ छा गया कि उन्होंने याकूब और उसके बेटों का ताक़ुब न किया।

⁶ चलते चलते याकूब अपने लोगों समेत लूज़ पहुँच गया जो मुल्के-कनान में था। आज लूज़ का नाम बैतेल है। ⁷ याकूब ने वहाँ कुरबानगाह बनाकर मक़ाम का नाम बैतेल यानी ‘अल्लाह का घर’ रखा। क्योंकि वहाँ अल्लाह ने अपने आपको उस पर ज़ाहिर किया था जब वह अपने भाई से फ़रार हो रहा था।

⁸ वहाँ रिबका की दाया दबोरा मर गई। वह बैतेल के जुनूब में बलूत के दरख़्त के नीचे दफ़न हुई, इसलिए उसका नाम अल्लोन-बकूत यानी ‘रोने का बलूत का दरख़्त’ रखा गया।

⁹ अल्लाह याकूब पर एक दफ़ा और ज़ाहिर हुआ और उसे बरकत दी। यह मसोपुतामिया से वापस आने पर दूसरी बार हुआ। ¹⁰ अल्लाह ने उससे कहा, “अब से तेरा नाम याकूब नहीं बल्कि इसराईल होगा।” यों उसने उसका नया नाम इसराईल रखा। ¹¹ अल्लाह ने यह भी उससे कहा, “मैं अल्लाह कादिरे-मुतलक हूँ। फल-फूल और तादाद में बढ़ता जा। एक क़ौम नहीं बल्कि बहुत-सी क़ौमें तुझसे निकलेंगी। तेरी औलाद में बादशाह भी शामिल होंगे। ¹² मैं तुझे वही मुल्क दूँगा जो इब्राहीम और इसहाक को दिया है। और तेरे बाद उसे तेरी औलाद को दूँगा।”

¹³ फिर अल्लाह वहाँ से आसमान पर चला गया। ¹⁴ जहाँ अल्लाह याकूब से हमकलाम हुआ था वहाँ उसने पत्थर का सतून खड़ा किया और उस पर मैं और तेल उंडेलकर उसे मख़सूस किया। ¹⁵ उसने जगह का नाम बैतेल रखा।

राखिल की मौत

¹⁶ फिर याकूब अपने घरवालों के साथ बैतेल को छोड़कर इफ़राता की तरफ़ चल पड़ा। राखिल उम्मीद से थी, और रास्ते में बच्चे की पैदाइश का वक़्त आ गया। बच्चा बड़ी मुश्किल से पैदा हुआ। ¹⁷ जब दर्दे-ज़ह उरूज को पहुँच गया तो दाई ने उससे कहा, “मत डरो, क्योंकि एक और बेटा है।” ¹⁸ लेकिन वह दम तोड़नेवाली थी, और मरते मरते उसने उसका नाम बिन-ऊनी यानी ‘मेरी मुसीबत का बेटा’ रखा। लेकिन उसके बाप ने उसका नाम बिनयमीन यानी ‘दहने हाथ या खुशकिसमती का बेटा’ रखा। ¹⁹ राखिल फ़ौत हुई, और वह इफ़राता के रास्ते में दफ़न हुई। आजकल इफ़राता को बैत-लहम कहा जाता है। ²⁰ याकूब ने उस की कब्र पर पत्थर का सतून खड़ा किया। वह आज तक राखिल की कब्र की निशानदेही करता है।

²¹ वहाँ से याकूब ने अपना सफ़र जारी रखा और मिजदल-इदर की परली तरफ़ अपने ख़ैमे लगाए। ²² जब वह वहाँ ठहरे थे तो रुबिन याकूब की हरम बिलहाह से हमबिसतर हुआ। याकूब को मालूम हो गया।

याकूब के बेटे

याकूब के बारह बेटे थे। 23 लियाह के बेटे यह थे : उसका सबसे बड़ा बेटा रूबिन, फिर शमौन, लावी, यहूदाह, इशकार और ज़बूलून। 24 राखिल के दो बेटे थे, यूसुफ और बिनयमीन। 25 राखिल की लौंडी बिलहाह के दो बेटे थे, दान और नफ़ताली। 26 लियाह की लौंडी ज़िलफा के दो बेटे थे, जद और आशर। याकूब के यह बेटे मसोपुतामिया में पैदा हुए।

इसहाक की मौत

27 फिर याकूब अपने बाप इसहाक के पास पहुँच गया जो हबर्न के करीब ममरे में अजनबी की हैसियत से रहता था (उस वक्त हबर्न का नाम किरियत-अरबा था)। वहाँ इसहाक और उससे पहले इब्राहीम रहा करते थे। 28-29 इसहाक 180 साल का था जब वह उम्रसीदा और जिंदगी से आसूदा होकर अपने बापदादा से जा मिला। उसके बेटे एसौ और याकूब ने उसे दफन किया।

36

एसौ की औलाद

1 यह एसौ की औलाद का नसबनामा है (एसौ को अदोम भी कहा जाता है) :

2 एसौ ने तीन कनानी औरतों से शादी की : हिन्ती आदमी ऐलोन की बेटी अदा से, अना की बेटी उहलीबामा से जो हिन्ती आदमी सिबोन की नवासी थी 3 और इसमाईल की बेटी बासमत से जो नबायोत की बहन थी। 4 अदा का एक बेटा इलीफ़ज़ और बासमत का एक बेटा रऊएल पैदा हुआ। 5 उहलीबामा के तीन बेटे पैदा हुए, यऊस, यालाम और क्रोरह। एसौ के यह तमाम बेटे मुल्के-कनान में पैदा हुए।

6 बाद में एसौ दूसरे मुल्क में चला गया। उसने अपनी बीवियों, बेटे-बेटियों और घर के रहनेवालों को अपने तमाम मवेशियों और मुल्के-कनान में हासिल किए हुए माल समेत अपने साथ लिया। 7 वह इस वजह से चला गया कि दोनों भाइयों के पास इतने रेवड़ थे कि चराने की जगह कम पड़ गई। 8 चुनौचे एसौ पहाड़ी इलाके सईर में आबाद हुआ। एसौ का दूसरा नाम अदोम है।

9 यह एसौ यानी सईर के पहाड़ी इलाके में आबाद अदोमियों का नसबनामा है : 10 एसौ की बीवी अदा का एक बेटा इलीफ़ज़ था जबकि उस की बीवी बासमत का एक बेटा रऊएल था। 11 इलीफ़ज़ के बेटे तेमान, ओमर, सफ़ो, जाताम, कनज़ 12 और अमालीक थे। अमालीक इलीफ़ज़ की हरम तिमना का बेटा था। यह सब एसौ की बीवी अदा की औलाद में शामिल थे। 13 रऊएल के बेटे नहत, ज़ारह, सम्मा और मिज़्ज़ा थे। यह सब एसौ की बीवी बासमत की औलाद में शामिल थे। 14 एसौ की बीवी उहलीबामा जो अना की बेटी और सिबोन की नवासी थी के तीन बेटे यऊस, यालाम और क्रोरह थे।

15 एसौ से मुख्तलिफ़ कबीलों के सरदार निकले। उसके पहलौठे इलीफ़ज़ से यह क़बायली सरदार निकले : तेमान, ओमर, सफ़ो, कनज़, 16 क्रोरह, जाताम और अमालीक। यह सब एसौ की बीवी अदा की औलाद थे। 17 एसौ के बेटे रऊएल से यह क़बायली सरदार निकले : नहत, ज़ारह, सम्मा और मिज़्ज़ा। यह सब एसौ की बीवी बासमत की औलाद थे। 18 एसौ की बीवी उहलीबामा यानी अना की बेटी से यह क़बायली सरदार निकले : यऊस, यालाम और क्रोरह। 19 यह तमाम सरदार एसौ की औलाद हैं।

सईर की औलाद

20 मुल्के-अदोम के कुछ बाशिंदे होरी आदमी सईर की औलाद थे। उनके नाम लोतान, सोबल, सिबोन, अना, 21 दीसोन, एसर और दीसान थे। सईर के यह बेटे मुल्के-अदोम में होरी कबीलों के सरदार थे।

22 लोतान होरी और हेमाम का बाप था। (तिमना लोतान की बहन थी।) 23 सोबल के बेटे अलवान, मानहत, ऐबाल, सफ़ो और ओनाम थे। 24 सिबोन के बेटे ऐयाह और अना थे। इसी अना को गरम चश्मे मिले जब वह बयाबान में अपने बाप के गधे चरा रहा था। 25 अना का एक बेटा दीसोन और एक बेटी उहलीबामा थी। 26 दीसोन के चार बेटे हमदान, इशबान, यितरान और किरान थे। 27 एसर के तीन बेटे बिलहान, ज़ावान और अक्रान थे। 28 दीसान के दो बेटे ऊज़ और अरान थे।

29-30 यही यानी लोतान, सोबल, सिबोन, अना, दीसोन, एसर और दीसान सईर के मुल्क में होरी क़बायल के सरदार थे।

अदोम के बादशाह

31 इससे पहले कि इसराईलियों का कोई बादशाह था ज़ैल के बादशाह यके बाद दीगरे मुल्के-अदोम में हुक्मत करते थे :

32 बाला बिन बओर जो दिनहाबा शहर का था मुल्के-अदोम का पहला बादशाह था।

33 उस की मौत पर यूबाब बिन ज़ारह जो बूसरा शहर का था।

34 उस की मौत पर हुशाम जो तेमानियों के मुल्क का था।

35 उस की मौत पर हदद बिन बिदद जिसने मुल्के-मोआब में मिदियानियों को शिकस्त दी। वह अवीत का था।

36 उस की मौत पर समला जो मसरिका का था।

37 उस की मौत पर साऊल जो दरियाए-फ़ुरात पर रहोबोत शहर का था।

38 उस की मौत पर बाल-हनान बिन अकबोर।

39 उस की मौत पर हदद जो फ़ाऊ शहर का था (बीवी का नाम महेतबेल बित मतरिद बित मेज़ाहाब था)।

40-43 एसौ से अदोमी कबीलों के यह सरदार निकले : तिमाना, अलवह, यतेत, उहलीबामा, ऐला, फ्रीनोन, कनज़, तेमान, मिबसार, मजदियेल और इराम। अदोम के सरदारों की यह फ़हरिस्त उनकी मौस्सी ज़मीन की आबादियों और कबीलों के मुताबिक ही बयान की गई है। एसौ उनका बाप है।

37

यूसुफ़ के खाब

1 याक़ूब मुल्के-कनान में रहता था जहाँ पहले उसका बाप भी परदेसी था। 2 यह याक़ूब के खानदान का बयान है।

उस वक़्त याक़ूब का बेटा यूसुफ़ 17 साल का था। वह अपने भाइयों यानी बिलहाह और ज़िलफ़ा के बेटों के साथ भेड़-बकरियों की देख-भाल करता था। यूसुफ़ अपने बाप को अपने भाइयों की बुरी हरकतों की इतला दिया करता था।

3 याक़ूब यूसुफ़ को अपने तमाम बेटों की निसबत ज़्यादा प्यार करता था। वजह यह थी कि वह तब पैदा हुआ जब बाप बूढ़ा था। इसलिए याक़ूब ने उसके लिए एक खास रंगदार लिबास बनवाया। 4 जब उसके भाइयों ने देखा कि हमारा बाप यूसुफ़ को हमसे ज़्यादा प्यार करता है तो वह उससे नफ़रत करने लगे और अदब से उससे बात नहीं करते थे।

5 एक रात यूसुफ़ ने खाब देखा। जब उसने अपने भाइयों को खाब सुनाया तो वह उससे और भी नफ़रत करने लगे। 6 उसने कहा, “सुनो, मैंने खाब देखा। 7 हम सब खेत में पूले बाँध रहे थे कि मेरा पूला खड़ा हो गया। आपके पूले मेरे पूले के इर्दगिर्द जमा होकर उसके सामने झुक गए।” 8 उसके भाइयों ने कहा, “अच्छा, तू बादशाह बनकर हम पर हुकूमत करेगा?” उसके खाबों और उस की बातों के सबब से उनकी उससे नफ़रत मज़ीद बढ़ गई।

9 कुछ देर के बाद यूसुफ़ ने एक और खाब देखा। उसने अपने भाइयों से कहा, “मैंने एक और खाब देखा है। उसमें सूरज, चाँद और ग्यारह सितारे मेरे सामने झुक गए।” 10 उसने यह खाब अपने बाप को भी सुनाया तो उसने उसे डाँटा। उसने कहा, “यह कैसा खाब है जो तूने देखा! यह कैसी बात है कि मैं, तेरी माँ और तेरे भाई आकर तेरे सामने ज़मीन तक झुक जाएँ?” 11 नतीजे में उसके भाई उससे बहुत हसद करने लगे। लेकिन उसके बाप ने दिल में यह बात महफूज़ रखी।

यूसुफ़ को बेचा जाता है

12 एक दिन जब यूसुफ़ के भाई अपने बाप के रेवड़ चराने के लिए सिकम तक पहुँच गए थे 13 तो याक़ूब ने यूसुफ़ से कहा, “तेरे भाई सिकम में रेवड़ों को चरा रहे हैं। आ, मैं तुझे उनके पास भेज देता हूँ।” यूसुफ़ ने जवाब दिया, “ठीक है।” 14 याक़ूब ने कहा, “जाकर मालूम कर कि तेरे भाई और उनके साथ के रेवड़ ख़ैरियत से हैं कि नहीं। फिर वापस आकर मुझे बता देना।” चुनौचे उसके बाप ने उसे वादीए-हबस्न से भेज दिया, और यूसुफ़ सिकम पहुँच गया।

15 वहाँ वह इधर-उधर फिरता रहा। आखिरकार एक आदमी उससे मिला और पूछा, “आप क्या ढूँड रहे हैं?” 16 यूसुफ़ ने जवाब दिया, “मैं अपने भाइयों को तलाश कर रहा हूँ। मुझे बताएँ कि वह अपने जानवरों को कहाँ चरा रहे हैं।” 17 आदमी ने कहा, “वह यहाँ से चले गए हैं। मैंने उन्हें यह कहते सुना कि आओ, हम दूतैन जाएँ।” यह सुनकर यूसुफ़ अपने भाइयों के पीछे दूतैन चला गया। वहाँ उसे वह मिल गए।

18 जब यूसुफ़ अभी दूर से नज़र आया तो उसके भाइयों ने उसके पहुँचने से पहले उसे कत्ल करने का मनसूबा बनाया। 19 उन्होंने कहा, “देखो, खाब देखनेवाला आ रहा है। 20 आओ, हम उसे मार डालें और उस की लाश किसी गढे में फेंक दें। हम कहेंगे कि किसी वहशी जानवर ने उसे फाड़ खाया है। फिर पता चलेगा कि उसके खाबों की क्या हकीकत है।”

21 जब रूबिन ने उनकी बातें सुनीं तो उसने यूसुफ़ को बचाने की कोशिश की। उसने कहा, “नहीं, हम उसे कत्ल न करें। 22 उसका खून न करना। बेशक उसे इस गढे में फेंक दें जो रेगिस्तान में है, लेकिन उसे हाथ न लगाएँ।” उसने यह इसलिए कहा कि वह उसे बचाकर बाप के पास वापस पहुँचाना चाहता था।

23 ज्योंही यूसुफ़ अपने भाइयों के पास पहुँचा उन्होंने उसका रंगदार लिबास उतारकर 24 यूसुफ़ को गढे में फेंक दिया। गढा खाली था, उसमें पानी नहीं था। 25 फिर वह रोटी खाने के लिए बैठ गए। अचानक इसमाईलियों का एक काफ़िला नज़र आया। वह जिलियाद से मिसर जा रहे थे, और उनके ऊँट कीमती मसालों यानी लादन, बलसान और मुर से लदे हुए थे। 26 तब यहूदाह ने अपने भाइयों से कहा, “हमें क्या फायदा है अगर अपने भाई को कत्ल करके उसके खून को छुपा दें? 27 आओ, हम उसे इन इसमाईलियों के हाथ फ़रोख़्त कर दें। फिर कोई ज़रूरत नहीं होगी कि हम उसे हाथ लगाएँ। आखिर वह हमारा भाई है।”

उसके भाई राज़ी हुए। 28 चुनौचे जब मिदियानी ताजिर वहाँ से गुजरे तो भाइयों ने यूसुफ़ को खींचकर गढे से निकाला और चाँदी के 20 सिक्कों के एवज़ बेच डाला। इसमाईली उसे लेकर मिसर चले गए।

29 उस वक़्त रूबिन मौजूद नहीं था। जब वह गढे के पास वापस आया तो यूसुफ़ उसमें नहीं था। यह देखकर उसने पेशानी में अपने कपड़े फाड़ डाले। 30 वह अपने भाइयों के पास वापस गया और कहा, “लडका नहीं है। अब मैं किस तरह अबू के पास जाऊँ?” 31 तब उन्होंने बकरा ज़बह करके यूसुफ़ का लिबास उसके खून में डुबोया, 32 फिर रंगदार लिबास इस ख़बर के साथ अपने बाप को भिजवा दिया कि “हमें यह मिला है। इसे गौर से देखें। यह आपके बेटे का लिबास तो नहीं?”

33 याकूब ने उसे पहचान लिया और कहा, “बेशक उसी का है। किसी वहशी जानवर ने उसे फाड़ खाया है। यक्रीनन यूसुफ को फाड़ दिया गया है।” 34 याकूब ने गम के मोरे अपने कपड़े फाड़े और अपनी कमर से टाट ओढ़कर बड़ी देर तक अपने बेटे के लिए मातम करता रहा। 35 उसके तमाम बेटे-बेटियाँ उसे तसल्ली देने आए, लेकिन उसने तसल्ली पाने से इनकार किया और कहा, “मैं पाताल में उतरते हुए भी अपने बेटे के लिए मातम करूँगा।” इस हालत में वह अपने बेटे के लिए रोता रहा।

36 इतने में मिदियानी मिसर पहुँचकर यूसुफ को बेच चुके थे। मिसर के बादशाह फिरौन के एक आला अफसर फूतीफार ने उसे खरीद लिया। फूतीफार बादशाह के मुहाफिज़ों पर मुकर्रर था।

38

यहदाह और तमर

1 उन दिनों में यहदाह अपने भाइयों को छोड़कर एक आदमी के पास रहने लगा जिसका नाम हीरा था और जो अदुल्लाम शहर से था। 2 वहाँ यहदाह की मुलाकात एक कनानी औरत से हुई जिसके बाप का नाम सुअ था। उसने उससे शादी की। 3 बेटा पैदा हुआ जिसका नाम यहदाह ने एर रखा। 4 एक और बेटा पैदा हुआ जिसका नाम बीवी ने ओनान रखा। 5 उसके तीसरा बेटा भी पैदा हुआ। उसने उसका नाम सेला रखा। यहदाह कज़ीब में था जब वह पैदा हुआ।

6 यहदाह ने अपने बड़े बेटे एर की शादी एक लड़की से कराई जिसका नाम तमर था। 7 रब के नज़दीक एर शरीर था, इसलिए उसने उसे हलाक कर दिया। 8 इस पर यहदाह ने एर के छोटे भाई ओनान से कहा, “अपने बड़े भाई की बेवा के पास जाओ और उससे शादी करो ताकि तुम्हारे भाई की नसल कायम रहे।” 9 ओनान ने ऐसा किया, लेकिन वह जानता था कि जो भी बच्चे पैदा होंगे वह क़ानून के मुताबिक मेरे बड़े भाई के होंगे। इसलिए जब भी वह तमर से हमबिसतर होता तो नुतफ़ा को ज़मीन पर गिरा देता, क्योंकि वह नहीं चाहता था कि मेरी मारिफ़त मेरे भाई के बच्चे पैदा हों। 10 यह बात रब को बुरी लगी, और उसने उसे भी सज़ाए-मौत दी। 11 तब यहदाह ने अपनी बहू तमर से कहा, “अपने बाप के घर वापस चली जाओ और उस वक़्त तक बेवा रहो जब तक मेरा बेटा सेला बड़ा न हो जाए।” उसने यह इसलिए कहा कि उसे डर था कि कहीं सेला भी अपने भाइयों की तरह मर न जाए चुनौचे तमर अपने मैके चली गई।

12 काफ़ी दिनों के बाद यहदाह की बीवी जो सुअ की बेटी थी मर गई। मातम का वक़्त गुज़र गया तो यहदाह अपने अदुल्लामी दोस्त हीरा के साथ तिमनत गया जहाँ यहदाह की भेड़ों की पशम कतरा जा रही थी। 13 तमर को बताया गया, “आपका सुसर अपनी भेड़ों की पशम कतरने के लिए तिमनत जा रहा है।” 14 यह सुनकर तमर ने बेवा के कपड़े उतारकर आम कपड़े पहन लिए। फिर वह अपना मुँह चादर से लपेटकर ऐनीम शहर के दरवाज़े पर बैठ गई जो तिमनत के रास्ते में था। तमर ने यह हरकत इसलिए की कि यहदाह का बेटा सेला अब बालिग हो चुका था तो भी उस की उसके साथ शादी नहीं की गई थी।

15 जब यहदाह वहाँ से गुज़रा तो उसने उसे देखकर सोचा कि यह कसबी है, क्योंकि उसने अपना मुँह छुपाया हुआ था। 16 वह रास्ते से हटकर उसके पास गया और कहा, “ज़रा मुझे अपने हाँ आने दें।” (उसने नहीं पहचाना कि यह मेरी बहू है)। तमर ने कहा, “आप मुझे क्या देंगे?” 17 उसने जवाब दिया, “मैं आपको बकरी का बच्चा भेज दूँगा।” तमर ने कहा, “ठीक है, लेकिन उसे भेजने तक मुझे ज़मानत दें।” 18 उसने पूछा, “मैं आपको क्या दूँ?” तमर ने कहा, “अपनी मुहर और उसे गले में लटकाने की डोरी। वह लाठी भी दें जो आप पकड़े हुए हैं।” चुनौचे यहदाह उसे यह चीज़ें देकर उसके साथ हमबिसतर हुआ। नतीजे में तमर उम्मीद से हुई। 19 फिर तमर उठकर अपने घर वापस चली गई। उसने अपनी चादर उतारकर दुबारा बेवा के कपड़े पहन लिए।

20 यहदाह ने अपने दोस्त हीरा अदुल्लामी के हाथ बकरी का बच्चा भेज दिया ताकि वह चीज़ें वापस मिल जाएँ जो उसने ज़मानत के तौर पर दी थीं। लेकिन हीरा को पता न चला कि औरत कहाँ है। 21 उसने ऐनीम के बाशिंदों से पूछा, “वह कसबी कहाँ है जो यहाँ सड़क पर बैठी थी?” उन्होंने जवाब दिया, “यहाँ ऐसी कोई कसबी नहीं थी।”

22 उसने यहदाह के पास वापस जाकर कहा, “वह मुझे नहीं मिली बल्कि वहाँ के रहनेवालों ने कहा कि यहाँ कोई ऐसी कसबी थी नहीं।” 23 यहदाह ने कहा, “फिर वह ज़मानत की चीज़ें अपने पास ही रखे। उसे छोड़ दो वरना लोग हमारा मज़ाक उड़ाएँगे। हमने तो पूरी कोशिश की कि उसे बकरी का बच्चा मिल जाए, लेकिन खोज लगाने के बावजूद आपको पता न चला कि वह कहाँ है।”

24 तीन माह के बाद यहदाह को इतला दी गई, “आपकी बहू तमर ने ज़िना किया है, और अब वह हामिला है।” यहदाह ने हुक्म दिया, “उसे बाहर लाकर जला दो।” 25 तमर को जलाने के लिए बाहर लाया गया तो उसने अपने सुसर को खबर भेज दी, “यह चीज़ें देखें। यह उस आदमी की हैं जिसकी मारिफ़त मैं उम्मीद से हूँ। पता करें कि यह मुहर, उस की डोरी और यह लाठी किसकी हैं।” 26 यहदाह ने उन्हें पहचान लिया। उसने कहा, “मैं नहीं बल्कि यह औरत हक़ पर है, क्योंकि मैंने उस की अपने बेटे सेला से शादी नहीं कराई।” लेकिन बाद में यहदाह कभी भी तमर से हमबिसतर न हुआ।

27 जब जन्म देने का वक़्त आया तो मालूम हुआ कि जुड़वाँ बच्चे हैं। 28 एक बच्चे का हाथ निकला तो दाई ने उसे पकड़कर उसमें सुर्ख धागा बाँध दिया और कहा, “यह पहले पैदा हुआ।” 29 लेकिन उसने अपना हाथ वापस खींच लिया, और उसका भाई पहले पैदा हुआ। यह

देखकर दाई बोल उठी, “तू किस तरह फूट निकला है!” उसने उसका नाम फ़ारस यानी फूट रखा। 30 फिर उसका भाई पैदा हुआ जिसके हाथ में सुर्ख धागा बँधा हुआ था। उसका नाम ज़ारह यानी चमक रखा गया।

39

यूसुफ़ और फ़तीफ़ार की बीवी

1 इसमाईलियों ने यूसुफ़ को मिस्र ले जाकर बेच दिया था। मिस्र के बादशाह के एक आला अफ़सर बनाम फ़तीफ़ार ने उसे खरीद लिया। वह शाही मुहाफ़िज़ों का कप्तान था। 2 रब यूसुफ़ के साथ था। जो भी काम वह करता उसमें कामयाब रहता। वह अपने मिसरी मालिक के घर में रहता था 3 जिसने देखा कि रब यूसुफ़ के साथ है और उसे हर काम में कामयाबी देता है। 4 चुनौचे यूसुफ़ को मालिक की खास मेहरबानी हासिल हुई, और फ़तीफ़ार ने उसे अपना ज़ाती नौकर बना लिया। उसने उसे अपने घराने के इंतज़ाम पर मुक़रर किया और अपनी पूरी मिलकियत उसके सुपुर्द कर दी। 5 जिस वक़्त से फ़तीफ़ार ने अपने घराने का इंतज़ाम और पूरी मिलकियत यूसुफ़ के सुपुर्द की उस वक़्त से रब ने फ़तीफ़ार को यूसुफ़ के सबब से बरकत दी। उस की बरकत फ़तीफ़ार की हर चीज़ पर थी, खास घर में थी या खेत में। 6 फ़तीफ़ार ने अपनी हर चीज़ यूसुफ़ के हाथ में छोड़ दी। और चूँकि यूसुफ़ सब कुछ अच्छी तरह चलाता था इसलिए फ़तीफ़ार को खाना खाने के सिवा किसी भी मामले की फ़िक्र नहीं थी।

यूसुफ़ निहायत ख़ुबसूरत आदमी था। 7 कुछ देर के बाद उसके मालिक की बीवी की आँख उस पर लगी। उसने उससे कहा, “मेरे साथ हमबिसतर हो!” 8 यूसुफ़ इनकार करके कहने लगा, “मेरे मालिक को मेरे सबब से किसी मामले की फ़िक्र नहीं है। उन्होंने सब कुछ मेरे सुपुर्द कर दिया है। 9 घर के इंतज़ाम पर उनका इख़्तियार मेरे इख़्तियार से ज़्यादा नहीं है। आपके सिवा उन्होंने कोई भी चीज़ मुझसे बाज़ नहीं रखी। तो फिर मैं किस तरह इतना ग़लत काम करूँ? मैं किस तरह अल्लाह का गुनाह करूँ?”

10 मालिक की बीवी रोज़ बरोज़ यूसुफ़ के पीछे पड़ी रही कि मेरे साथ हमबिसतर हो। लेकिन वह हमेशा इनकार करता रहा।

11 एक दिन वह काम करने के लिए घर में गया। घर में और कोई नौकर नहीं था। 12 फ़तीफ़ार की बीवी ने यूसुफ़ का लिबास पकड़कर कहा, “मेरे साथ हमबिसतर हो!” यूसुफ़ भागकर बाहर चला गया लेकिन उसका लिबास पीछे औरत के हाथ में ही रह गया। 13 जब मालिक की बीवी ने देखा कि वह अपना लिबास छोड़कर भाग गया है 14 तो उसने घर के नौकरों को बुलाकर कहा, “यह देखो! मेरे मालिक इस इबरानी को हमारे पास ले आए हैं ताकि वह हमें ज़लील करे। वह मेरी इसमतदारी करने के लिए मेरे कमरे में आ गया, लेकिन मैं ऊँची आवाज़ से चीखने लगी। 15 जब मैं मदद के लिए ऊँची आवाज़ से चीखने लगी तो वह अपना लिबास छोड़कर भाग गया।” 16 उसने मालिक के आने तक यूसुफ़ का लिबास अपने पास रखा। 17 जब वह घर वापस आया तो उसने उसे यही कहानी सुनाई, “यह इबरानी गुलाम जो आप ले आए हैं मेरी तज़लील के लिए मेरे पास आया। 18 लेकिन जब मैं मदद के लिए चीखने लगी तो वह अपना लिबास छोड़कर भाग गया।”

यूसुफ़ कैदख़ाने में

19 यह सुनकर फ़तीफ़ार बड़े गुस्से में आ गया। 20 उसने यूसुफ़ को गिरफ़्तार करके उस जेल में डाल दिया जहाँ बादशाह के कैदी रखे जाते थे। वहीं वह रहा। 21 लेकिन रब यूसुफ़ के साथ था। उसने उस पर मेहरबानी की और उसे कैदख़ाने के दारोगे की नज़र में मक़बूल किया। 22 यूसुफ़ यहाँ तक मक़बूल हुआ कि दारोगे ने तमाम कैदियों को उसके सुपुर्द करके उसे पूरा इंतज़ाम चलाने की ज़िम्मादारी दी। 23 दारोगे को किसी भी मामले की जिसे उसने यूसुफ़ के सुपुर्द किया था फ़िक्र न रही, क्योंकि रब यूसुफ़ के साथ था और उसे हर काम में कामयाबी बख़्शी।

40

कैदियों के ख़ाब

1 कुछ देर के बाद यों हुआ कि मिस्र के बादशाह के सरदार साक़ी और बेकरी के इंचार्ज ने अपने मालिक का गुनाह किया। 2 फिरौन को दोनों अफ़सरों पर गुस्सा आ गया। 3 उसने उन्हें उस कैदख़ाने में डाल दिया जो शाही मुहाफ़िज़ों के कप्तान के सुपुर्द था और जिसमें यूसुफ़ था। 4 मुहाफ़िज़ों के कप्तान ने उन्हें यूसुफ़ के हवाले किया ताकि वह उनकी खिदमत करे। वहाँ वह काफ़ी देर तक रहे।

5 एक रात बादशाह के सरदार साक़ी और बेकरी के इंचार्ज ने ख़ाब देखा। दोनों का ख़ाब फ़रक़ फ़रक़ था, और उनका मतलब भी फ़रक़ फ़रक़ था। 6 जब यूसुफ़ सुबह के वक़्त उनके पास आया तो वह दबे हुए नज़र आए। 7 उसने उनसे पूछा, “आज आप क्यों इतने परेशान हैं?” 8 उन्होंने जवाब दिया, “हम दोनों ने ख़ाब देखा है, और कोई नहीं जो हमें उनका मतलब बताए।” यूसुफ़ ने कहा, “ख़ाबों की ताबीर तो अल्लाह का काम है। ज़रा मुझे अपने ख़ाब तो सुनाएँ।”

9 सरदार साक़ी ने शुरू किया, “मैंने ख़ाब में अपने सामने अंगूर की बेल देखी। 10 उस की तीन शाखें थीं। उसके पत्ते लगे, कोपलें फूट निकलीं और अंगूर पक गए। 11 मेरे हाथ में बादशाह का प्याला था, और मैंने अंगूरों को तोड़कर यों भीच दिया कि उनका रस बादशाह के प्याले में आ गया। फिर मैंने प्याला बादशाह को पेश किया।”

12 यूसुफ़ ने कहा, “तीन शाखों से मुराद तीन दिन हैं। 13 तीन दिन के बाद फिरौन आपको बहाल कर लेगा। आपको पहली ज़िम्मादारी वापस मिल जाएगी। आप पहले की तरह सरदार साक़ी की हैसियत से बादशाह का प्याला सँभालेंगे। 14 लेकिन जब आप बहाल हो जाएँ तो मेरा

खयाल करें। मेहरबानी करके बादशाह के सामने मेरा जिक्र करें ताकि मैं यहाँ से रिहा हो जाऊँ। ¹⁵ क्योंकि मुझे इबरानियों के मुल्क से इगवा करके यहाँ लाया गया है, और यहाँ भी मुझसे कोई ऐसी गलती नहीं हुई कि मुझे इस गढ़े में फेंका जाता।”

¹⁶ जब शाही बेकरी के इंचार्ज ने देखा कि सरदार साकी के खाब का अच्छा मतलब निकला तो उसने यूसुफ से कहा, “मेरा खाब भी सुनें। मैंने सर पर तीन टोकरियाँ उठा रखी थीं जो बेकरी की चीजों से भरी हुई थीं। ¹⁷ सबसे ऊपरवाली टोकरी में वह तमाम चीजें थीं जो बादशाह की मेज़ के लिए बनाई जाती हैं। लेकिन परिदे आकर उन्हें खा रहे थे।”

¹⁸ यूसुफ ने कहा, “तीन टोकरियों से मुराद तीन दिन हैं। ¹⁹ तीन दिन के बाद ही फिरौन आपको कैदखाने से निकालकर दरख्त से लटका देगा। परिदे आपकी लाश को खा जाएंगे।”

²⁰ तीन दिन के बाद बादशाह की सालगिरह थी। उसने अपने तमाम अफसरों की ज़ियाफत की। इस मौके पर उसने सरदार साकी और बेकरी के इंचार्ज को जेल से निकालकर अपने हुज़ूर लाने का हुक्म दिया। ²¹ सरदार साकी को पहलेवाली ज़िम्मादारी सौंप दी गई, ²² लेकिन बेकरी के इंचार्ज को सज़ाए-मौत देकर दरख्त से लटका दिया गया। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा यूसुफ ने कहा था।

²³ लेकिन सरदार साकी ने यूसुफ का खयाल न किया बल्कि उसे भूल ही गया।

41

बादशाह के खाब

¹ दो साल गुज़र गए कि एक रात बादशाह ने खाब देखा। वह दरियाए-नील के किनारे खड़ा था। ² अचानक दरिया में से सात खूबसूरत और मोटी गाएँ निकलकर सरकंडों में चरने लगीं। ³ उनके बाद सात और गाएँ निकल आईं। लेकिन वह बदसूरत और दुबली-पतली थीं। वह दरिया के किनारे दूसरी गायों के पास खड़ी होकर ⁴ पहली सात खूबसूरत और मोटी मोटी गायों को खा गईं। इसके बाद मिसर का बादशाह जाग उठा। ⁵ फिर वह दुबारा सो गया। इस दफ़ा उसने एक और खाब देखा। अनाज के एक पौदे पर सात मोटी मोटी और अच्छी अच्छी बालें लगी थीं। ⁶ फिर सात और बालें फूट निकलीं जो दुबली-पतली और मशरिकी हवा से झूलसी हुई थीं। ⁷ अनाज की सात दुबली-पतली बालों ने सात मोटी और खूबसूरत बालों को निगल लिया। फिर फिरौन जाग उठा तो मालूम हुआ कि मैंने खाब ही देखा है।

⁸ सुबह हुई तो वह परेशान था, इसलिए उसने मिसर के तमाम जादूगरों और आलिमों को बुलाया। उसने उन्हें अपने खाब सुनाए, लेकिन कोई भी उनकी ताबीर न कर सका।

⁹ फिर सरदार साकी ने फिरौन से कहा, “आज मुझे अपनी ख़ताएँ याद आती हैं। ¹⁰ एक दिन फिरौन अपने खादिमों से नाराज़ हुए। हुज़ूर ने मुझे और बेकरी के इंचार्ज को कैदखाने में डलवा दिया जिस पर शाही मुहाफ़िज़ों का कप्तान मुर्कर था। ¹¹ एक ही रात में हम दोनों ने मुख्तलिफ़ खाब देखे जिनका मतलब फ़रक़ फ़रक़ था। ¹² वहाँ जेल में एक इबरानी नौजवान था। वह मुहाफ़िज़ों के कप्तान का गुलाम था। हमने उसे अपने खाब सुनाए तो उसने हमें उनका मतलब बता दिया। ¹³ और जो कुछ भी उसने बताया सब कुछ वैसा ही हुआ। मुझे अपनी ज़िम्मादारी वापस मिल गई जबकि बेकरी के इंचार्ज को सज़ाए-मौत देकर दरख्त से लटका दिया गया।”

¹⁴ यह सुनकर फिरौन ने यूसुफ को बुलाया, और उसे जल्दी से कैदखाने से लाया गया। उसने शेव करवाकर अपने कपड़े बदले और सीधे बादशाह के हुज़ूर पहुँचा।

¹⁵ बादशाह ने कहा, “मैंने खाब देखा है, और यहाँ कोई नहीं जो उस की ताबीर कर सके। लेकिन सुना है कि तू खाब को सुनकर उसका मतलब बता सकता है।” ¹⁶ यूसुफ ने जवाब दिया, “यह मेरे इख्तियार में नहीं है। लेकिन अल्लाह ही बादशाह को सलामती का पैग़ाम देगा।”

¹⁷ फिरौन ने यूसुफ को अपने खाब सुनाए, “मैं खाब में दरियाए-नील के किनारे खड़ा था। ¹⁸ अचानक दरिया में से सात मोटी मोटी और खूबसूरत गाएँ निकलकर सरकंडों में चरने लगीं। ¹⁹ इसके बाद सात और गाएँ निकलीं। वह निहायत बदसूरत और दुबली-पतली थीं। मैंने इतनी बदसूरत गाएँ मिसर में कहीं भी नहीं देखीं। ²⁰ दुबली और बदसूरत गाएँ पहली मोटी गायों को खा गईं। ²¹ और निगलने के बाद भी मालूम नहीं होता था कि उन्होंने मोटी गायों को खाया है। वह पहले की तरह बदसूरत ही थीं। इसके बाद मैं जाग उठा। ²² फिर मैंने एक और खाब देखा। सात मोटी और अच्छी बालें एक ही पौदे पर लगी थीं। ²³ इसके बाद सात और बालें निकलीं जो ख़राब, दुबली-पतली और मशरिकी हवा से झूलसी हुई थीं। ²⁴ सात दुबली-पतली बालें सात अच्छी बालों को निगल गईं। मैंने यह सब कुछ अपने जादूगरों को बताया, लेकिन वह इसकी ताबीर न कर सके।”

²⁵ यूसुफ ने बादशाह से कहा, “दोनों खाबों का एक ही मतलब है। इनसे अल्लाह ने हुज़ूर पर ज़ाहिर किया है कि वह क्या कुछ करने को है। ²⁶ सात अच्छी गायों से मुराद सात साल हैं। इसी तरह सात अच्छी बालों से मुराद भी सात साल हैं। दोनों खाब एक ही बात बयान करते हैं। ²⁷ जो सात दुबली और बदसूरत गाएँ बाद में निकलें उनसे मुराद सात और साल हैं। यही सात दुबली-पतली और मशरिकी हवा से झूलसी हुई बालों का मतलब भी है। वह एक ही बात बयान करती हैं कि सात साल तक काल पड़ेगा। ²⁸ यह वही बात है जो मैंने हुज़ूर से कही कि अल्लाह ने हुज़ूर पर ज़ाहिर किया है कि वह क्या करेगा। ²⁹ सात साल आँगें जिनके दौरान मिसर के पूरे मुल्क में कसरत से पैदावार होगी। ³⁰ उसके बाद सात साल काल पड़ेगा। काल इतना शदीद होगा कि लोग भूल जाएंगे कि पहले इतनी कसरत थी। क्योंकि काल मुल्क को तबाह कर देगा। ³¹ काल की शिद्दत के बाइस अच्छे सालों की कसरत याद ही नहीं रहेगी। ³² हुज़ूर को इसलिए एक ही पैग़ाम दो मुख्तलिफ़ खाबों

की सूरत में मिला कि अल्लाह इसका पक्का इरादा रखता है, और वह जल्द ही इस पर अमल करेगा। 33 अब बादशाह किसी समझदार और दानिशमंद आदमी को मुल्के-मिसर का इंतजाम सौंपें। 34 इसके अलावा वह ऐसे आदमी मुकर्रर करें जो सात अच्छे सालों के दौरान हर फसल का पौंचवाँ हिस्सा लें। 35 वह उन अच्छे सालों के दौरान खुराक जमा करें। बादशाह उन्हें इख्तियार दें कि वह शहरों में गोदाम बनाकर अनाज को महफूज कर लें। 36 यह खुराक काल के उन सात सालों के लिए मखसूस की जाए जो मिसर में आनेवाले हैं। यों मुल्क तबाह नहीं होगा।”

यूसुफ को मिसर पर हाकिम मुकर्रर किया जाता है

37 यह मनसूबा बादशाह और उसके अफसरान को अच्छा लगा। 38 उसने उनसे कहा, “हमें इस काम के लिए यूसुफ से ज्यादा लायक आदमी नहीं मिलेगा। उसमें अल्लाह की रूह है।” 39 बादशाह ने यूसुफ से कहा, “अल्लाह ने यह सब कुछ तुझ पर ज़ाहिर किया है, इसलिए कोई भी तुझे ज्यादा समझदार और दानिशमंद नहीं है। 40 मैं तुझे अपने महल पर मुकर्रर करता हूँ। मेरी तमाम रियाया तेरे ताबे रहेगी। तेरा इख्तियार सिर्फ मेरे इख्तियार से कम होगा। 41 अब मैं तुझे पूरे मुल्के-मिसर पर हाकिम मुकर्रर करता हूँ।”

42 बादशाह ने अपनी उँगली से वह अंगूठी उतारी जिससे मुहर लगाता था और उसे यूसुफ की उँगली में पहना दिया। उसने उसे कतान का बारीक लिबास पहनाया और उसके गले में सोने का गुलबंद पहना दिया। 43 फिर उसने उसे अपने दूसरे रथ में सवार किया और लोग उसके आगे आगे पुकारते रहे, “घुटने टेको! घुटने टेको!”

यों यूसुफ पूरे मिसर का हाकिम बना। 44 फिरौन ने उससे कहा, “मैं तो बादशाह हूँ, लेकिन तेरी इजाज़त के बगैर पूरे मुल्क में कोई भी अपना हाथ या पाँव नहीं हिलाएगा।” 45-46 उसने यूसुफ का मिसरी नाम साफनत-फानेह रखा और ओन के पुजारी फोतीफिरा की बेटी आसनत के साथ उस की शादी कराई।

यूसुफ 30 साल का था जब वह मिसर के बादशाह फिरौन की खिदमत करने लगा। उसने फिरौन के हुज़ूर से निकलकर मिसर का दौरा किया।

47 सात अच्छे सालों के दौरान मुल्क में निहायत अच्छी फसलें उगीं। 48 यूसुफ ने तमाम खुराक जमा करके शहरों में महफूज कर ली। हर शहर में उसने इर्दगिर्द के खेतों की पैदावार महफूज रखी। 49 जमाशुदा अनाज समुंदर की रेत की मानिद बकसरत था। इतना अनाज था कि यूसुफ ने आखिरकार उस की पैमाइश करना छोड़ दिया।

50 काल से पहले यूसुफ और आसनत के दो बेटे पैदा हुए। 51 उसने पहले का नाम मनस्सी यानी ‘जो भुला देता है’ रखा। क्योंकि उसने कहा, “अल्लाह ने मेरी मुसीबत और मेरे बाप का घराना मेरी याददाश्त से निकाल दिया है।” 52 दूसरे का नाम उसने इफराइम यानी ‘दुगना फलदार’ रखा। क्योंकि उसने कहा, “अल्लाह ने मुझे मेरी मुसीबत के मुल्क में फलने फूलने दिया है।”

53 सात अच्छे साल जिनमें कसरत की फसलें उगीं गुजर गए। 54 फिर काल के सात साल शुरू हुए जिस तरह यूसुफ ने कहा था। तमाम दीगर ममालिक में भी काल पड़ गया, लेकिन मिसर में बाफिर खुराक पाई जाती थी। 55 जब काल ने तमाम मिसर में ज़ोर पकड़ा तो लोग चीखकर खाने के लिए बादशाह से मिन्नत करने लगे। तब फिरौन ने उनसे कहा, “यूसुफ के पास जाओ। जो कुछ वह तुम्हें बताएगा वही करो।” 56 जब काल पूरी दुनिया में फैल गया तो यूसुफ ने अनाज के गोदाम खोलकर मिसरियों को अनाज बेच दिया। क्योंकि काल के बाइस मुल्क के हालात बहुत खराब हो गए थे। 57 तमाम ममालिक से भी लोग अनाज खरीदने के लिए यूसुफ के पास आए, क्योंकि पूरी दुनिया सख्त काल की गिरिफ्त में थी।

42

यूसुफ के भाई मिसर में

1 जब याकूब को मालूम हुआ कि मिसर में अनाज है तो उसने अपने बेटों से कहा, “तुम क्यों एक दूसरे का मुँह तकते हो? 2 सुना है कि मिसर में अनाज है। वहाँ जाकर हमारे लिए कुछ खरीद लाओ ताकि हम भूके न मरें।”

3 तब यूसुफ के दस भाई अनाज खरीदने के लिए मिसर गए। 4 लेकिन याकूब ने यूसुफ के सगे भाई बिनयमीन को साथ न भेजा, क्योंकि उसने कहा, “ऐसा न हो कि उसे जानी नुकसान पहुँचे।” 5 यों याकूब के बेटे बहुत सारे और लोगों के साथ मिसर गए, क्योंकि मुल्के-कनान भी काल की गिरिफ्त में था।

6 यूसुफ मिसर के हाकिम की हैसियत से लोगों को अनाज बेचता था, इसलिए उसके भाई आकर उसके सामने मुँह के बल झुक गए। 7 जब यूसुफ ने अपने भाइयों को देखा तो उसने उन्हें पहचान लिया लेकिन ऐसा किया जैसा उनसे नावाकिफ़ हो और सख्ती से उनसे बात की, “तुम कहाँ से आए हो?” उन्होंने जवाब दिया, “हम मुल्के-कनान से अनाज खरीदने के लिए आए हैं।” 8 गो यूसुफ ने अपने भाइयों को पहचान लिया, लेकिन उन्होंने उसे न पहचाना। 9 उसे वह खाब याद आए जो उसने उनके बारे में देखे थे। उसने कहा, “तुम जासूस हो। तुम यह देखने आए हो कि हमारा मुल्क किन किन जगहों पर गैरमहफूज है।”

10 उन्होंने कहा, “जनाब, हरगिज़ नहीं। आपके गुलाम गल्ला खरीदने आए हैं। 11 हम सब एक ही मर्द के बेटे हैं। आपके खादिम शरीफ़ लोग हैं, जासूस नहीं हैं।” 12 लेकिन यूसुफ ने इसरार किया, “नहीं, तुम देखने आए हो कि हमारा मुल्क किन किन जगहों पर गैरमहफूज है।”

13 उन्होंने अर्ज़ की, “आपके खादिम कुल बारह भाई हैं। हम एक ही आदमी के बेटे हैं जो कनान में रहता है। सबसे छोटा भाई इस वक़्त हमारे बाप के पास है जबकि एक मर गया है।” 14 लेकिन यूसुफ ने अपना इलज़ाम दोहराया, “ऐसा ही है जैसा मैंने कहा है कि तुम जासूस हो।

15 मैं तुम्हारी बातें जाँच लूँगा। फिरौन की हयात की कसम, पहले तुम्हारा सबसे छोटा भाई आए, वरना तुम इस जगह से कभी नहीं जा सकोगे। 16 एक भाई को उसे लाने के लिए भेज दो। बाक़ी सब यहाँ गिरिफ़्तार रहेंगे। फिर पता चलेगा कि तुम्हारी बातें सच हैं कि नहीं। अगर नहीं तो फिरौन की हयात की कसम, इसका मतलब यह होगा कि तुम जासूस हो।”

17 यह कहकर यूसुफ़ ने उन्हें तीन दिन के लिए कैदख़ाने में डाल दिया। 18 तीसरे दिन उसने उनसे कहा, “मैं अल्लाह का ख़ौफ़ मानता हूँ, इसलिए तुमको एक शर्त पर जीता छोड़ूँगा। 19 अगर तुम वाक़ई शरीफ़ लोग हो तो ऐसा करो कि तुममें से एक यहाँ कैदख़ाने में रहे जबकि बाक़ी सब अनाज लेकर अपने भूके घरवालों के पास वापस जाएँ। 20 लेकिन लाज़िम है कि तुम अपने सबसे छोटे भाई को मेरे पास ले आओ। सिर्फ़ इससे तुम्हारी बातें सच साबित होंगी और तुम मौत से बच जाओगे।”

यूसुफ़ के भाई राज़ी हो गए। 21 वह आपस में कहने लगे, “बेशक यह हमारे अपने भाई पर जुल्म की सज़ा है। जब वह इल्तिजा कर रहा था कि मुझ पर रहम करें तो हमने उस की बड़ी मुसीबत देखकर भी उस की न सुनी। इसलिए यह मुसीबत हम पर आ गई है।” 22 और रूबिन ने कहा, “क्या मैंने नहीं कहा था कि लड़के पर जुल्म मत करो, लेकिन तुमने मेरी एक न मानी। अब उस की मौत का हिसाब-किताब किया जा रहा है।”

23 उन्हें मालूम नहीं था कि यूसुफ़ हमारी बातें समझ सकता है, क्योंकि वह मुतरज़िम की मारिफ़त उनसे बात करता था। 24 यह बातें सुनकर वह उन्हें छोड़कर रौने लगा। फिर वह सँभलकर वापस आया। उसने शमौन को चुनकर उसे उनके सामने ही बाँध लिया।

यूसुफ़ के भाई कनान वापस जाते हैं

25 यूसुफ़ ने हुक्म दिया कि मुलाज़िम उनकी बोरियाँ अनाज से भरकर हर एक भाई के पैसे उस की बोरी में वापस रख दें और उन्हें सफ़र के लिए खाना भी दें। उन्होंने ऐसा ही किया। 26 फिर यूसुफ़ के भाई अपने गधों पर अनाज लादकर खाना हो गए।

27 जब वह रात के लिए किसी जगह पर ठहरे तो एक भाई ने अपने गधे के लिए चारा निकालने की गरज़ से अपनी बोरी खोली तो देखा कि बोरी के मुँह में उसके पैसे पड़े हैं। 28 उसने अपने भाइयों से कहा, “मेरे पैसे वापस कर दिए गए हैं! वह मेरी बोरी में हैं।” यह देखकर उनके होश उड़ गए। काँपते हुए वह एक दूसरे को देखने और कहने लगे, “यह क्या है जो अल्लाह ने हमारे साथ किया है?”

29 मुल्के-कनान में अपने बाप के पास पहुँचकर उन्होंने उसे सब कुछ सुनाया जो उनके साथ हुआ था। उन्होंने कहा, 30 “उस मुल्क के मालिक ने बड़ी सख्ती से हमारे साथ बात की। उसने हमें जासूस करार दिया। 31 लेकिन हमने उससे कहा, ‘हम जासूस नहीं बल्कि शरीफ़ लोग हैं।’ 32 हम बारह भाई हैं, एक ही बाप के बेटे। एक तो मर गया जबकि सबसे छोटा भाई इस वक़्त कनान में बाप के पास है।’ 33 फिर उस मुल्क के मालिक ने हमसे कहा, ‘इससे मुझे पता चलेगा कि तुम शरीफ़ लोग हो कि एक भाई को मेरे पास छोड़ दो और अपने भूके घरवालों के लिए ख़ुराक लेकर चले जाओ।’ 34 लेकिन अपने सबसे छोटे भाई को मेरे पास ले आओ ताकि मुझे मालूम हो जाए कि तुम जासूस नहीं बल्कि शरीफ़ लोग हो। फिर मैं तुमको तुम्हारा भाई वापस कर दूँगा और तुम इस मुल्क में आज़ादी से तिज़ारत कर सकोगे।’”

35 उन्होंने अपनी बोरियों से अनाज निकाल दिया तो देखा कि हर एक की बोरी में उसके पैसे की थैली रखी हुई है। यह पैसे देखकर वह ख़ुद और उनका बाप डर गए। 36 उनके बाप ने उनसे कहा, “तुमने मुझे मेरे बच्चों से महसूम कर दिया है। यूसुफ़ नहीं रहा, शमौन भी नहीं रहा और अब तुम बिनयमीन को भी मुझसे छीनना चाहते हो। सब कुछ मेरे खिलाफ़ है।” 37 फिर रूबिन बोल उठा, “अगर मैं उसे सलामती से आपके पास वापस न पहुँचाऊँ तो आप मेरे दो बेटों को सज़ाए-मौत दे सकते हैं। उसे मेरे सुपुर्द करें तो मैं उसे वापस ले आऊँगा।” 38 लेकिन याक़ूब ने कहा, “मेरा बेटा तुम्हारे साथ जाने का नहीं। क्योंकि उसका भाई मर गया है और वह अकेला ही रह गया है। अगर उसको रास्ते में जानी नुक़सान पहुँचे तो तुम मुझ बूढ़े को ग़म के मारे पाताल में पहुँचाओगे।”

43

बिनयमीन के हमराह दूसरा सफ़र

1 काल ने ज़ोर पकड़ा। 2 जब मिसर से लाया गया अनाज ख़त्म हो गया तो याक़ूब ने कहा, “अब वापस जाकर हमारे लिए कुछ और ग़ल्ला ख़रीद लाओ।” 3 लेकिन यहूदाह ने कहा, “उस मर्द ने सख्ती से कहा था, ‘तुम सिर्फ़ इस सूरत में मेरे पास आ सकते हो कि तुम्हारा भाई साथ हो।’ 4 अगर आप हमारे भाई को साथ भेजें तो फिर हम जाकर आपके लिए ग़ल्ला ख़रीदेंगे 5 वरना नहीं। क्योंकि उस आदमी ने कहा था कि हम सिर्फ़ इस सूरत में उसके पास आ सकते हैं कि हमारा भाई साथ हो।” 6 याक़ूब ने कहा, “तुमने उसे क्यों बताया कि हमारा एक और भाई भी है? इससे तुमने मुझे बड़ी मुसीबत में डाल दिया है।” 7 उन्होंने जवाब दिया, “वह आदमी हमारे और हमारे खानदान के बारे में पूछता रहा, ‘क्या तुम्हारा बाप अब तक ज़िंदा है? क्या तुम्हारा कोई और भाई है?’ फिर हमें जवाब देना पड़ा। हमें क्या पता था कि वह हमें अपने भाई को साथ लाने को कहेगा।” 8 फिर यहूदाह ने बाप से कहा, “लड़के को मेरे साथ भेज दें तो हम अभी खाना हो जाएंगे। वरना आप, हमारे बच्चे बल्कि हम सब भूकों मर जाएंगे। 9 मैं ख़ुद उसका ज़ामिन हूँगा। आप मुझे उस की जान का ज़िम्मादार ठहरा सकते हैं। अगर मैं उसे सलामती से वापस न पहुँचाऊँ तो फिर मैं ज़िंदगी के आखिर तक कुसूरवार ठहरूँगा। 10 जितनी देर तक हम झिजकते रहे हैं उतनी देर में तो हम दो दफ़ा मिसर जाकर वापस आ सकते थे।”

11 तब उनके बाप इसराईल ने कहा, “अगर और कोई सूरत नहीं तो इस मुल्क की बेहतरीन पैदावार में से कुछ तोहफे के तौर पर लेकर उस आदमी को दे दो यानी कुछ बलसान, शहद, लादन, मुर, पिस्ता और बादाम। 12 अपने साथ दुगनी रकम लेकर जाओ, क्योंकि तुम्हें वह पैसे वापस करने हैं जो तुम्हारी बोरियों में रखे गए थे। शायद किसी से गलती हुई हो। 13 अपने भाई को लेकर सीधे वापस पहुँचना। 14 अल्लाह कादिरे-मुतलक करे कि यह आदमी तुम पर रहम करके बिनयमीन और तुम्हारे दूसरे भाई को वापस भेजे। जहाँ तक मेरा ताल्लुक है, अगर मुझे अपने बच्चों से महसूस होना है तो ऐसा ही हो।”

15 चुनौचे वह तोहफे, दुगनी रकम और बिनयमीन को साथ लेकर चल पड़े। मिसर पहुँचकर वह यूसुफ के सामने हाज़िर हुए। 16 जब यूसुफ ने बिनयमीन को उनके साथ देखा तो उसने अपने घर पर मुकर्रर मुलाज़िम से कहा, “इन आदमियों को मेरे घर ले जाओ ताकि वह दोपहर का खाना मेरे साथ खाएँ। जानवर को ज़बह करके खाना तैयार करो।”

17 मुलाज़िम ने ऐसा ही किया और भाइयों को यूसुफ के घर ले गया। 18 जब उन्हें उसके घर पहुँचाया जा रहा था तो वह डरकर सोचने लगे, “हमें उन पैसों के सबब से यहाँ लाया जा रहा है जो पहली दफा हमारी बोरियों में वापस किए गए थे। वह हम पर अचानक हमला करके हमारे गधे छीन लेंगे और हमें गुलाम बना लेंगे।”

19 इसलिए घर के दरवाज़े पर पहुँचकर उन्होंने घर पर मुकर्रर मुलाज़िम से कहा, 20 “जनाबे-आली, हमारी बात सुन लीजिए। इससे पहले हम अनाज खरीदने के लिए यहाँ आए थे। 21 लेकिन जब हम यहाँ से खाना होकर रास्ते में रात के लिए ठहरे तो हमने अपनी बोरियाँ खोलकर देखा कि हर बोरी के मुँह में हमारे पैसों की पूरी रकम पड़ी है। हम यह पैसे वापस ले आए हैं। 22 नीज़, हम मज़ीद खुराक खरीदने के लिए और पैसे ले आए हैं। खुदा जाने किसने हमारे यह पैसे हमारी बोरियों में रख दिए।”

23 मुलाज़िम ने कहा, “फिकर न करें। मत डरें। आपके और आपके बाप के खुदा ने आपके लिए आपकी बोरियों में यह खज़ाना रखा होगा। बहरहाल मुझे आपके पैसे मिल गए हैं।”

मुलाज़िम शमौन को उनके पास बाहर ले आया। 24 फिर उसने भाइयों को यूसुफ के घर में ले जाकर उन्हें पॉव धोने के लिए पानी और गधों को चारा दिया। 25 उन्होंने अपने तोहफे तैयार रखे, क्योंकि उन्हें बताया गया, “यूसुफ दोपहर का खाना आपके साथ ही खाएगा।”

26 जब यूसुफ घर पहुँचा तो वह अपने तोहफे लेकर उसके सामने आए और मुँह के बल झुक गए। 27 उसने उनसे ख़ैरियत दरियाफ़्त की और फिर कहा, “तुमने अपने बूढ़े बाप का ज़िक्र किया। क्या वह ठीक हैं? क्या वह अब तक ज़िंदा हैं?” 28 उन्होंने जवाब दिया, “जी, आपके खादिम हमारे बाप अब तक ज़िंदा हैं।” वह दुबारा मुँह के बल झुक गए।

29 जब यूसुफ ने अपने सगे भाई बिनयमीन को देखा तो उसने कहा, “क्या यह तुम्हारा सबसे छोटा भाई है जिसका तुमने ज़िक्र किया था? बेटा, अल्लाह की नज़रे-करम तुम पर हो।” 30 यूसुफ अपने भाई को देखकर इतना मुतअस्सिर हुआ कि वह रोने को था, इसलिए वह जल्दी से वहाँ से निकलकर अपने सोने के कमरे में गया और रो पड़ा। 31 फिर वह अपना मुँह धोकर वापस आया। अपने आप पर काबू पाकर उसने हुक्म दिया कि नौकर खाना ले आएँ।

32 नौकरों ने यूसुफ के लिए खाने का अलग इंतज़ाम किया और भाइयों के लिए अलग। मिसरियों के लिए भी खाने का अलग इंतज़ाम था, क्योंकि इब्रानियों के साथ खाना खाना उनकी नज़र में काबिले-नफ़रत था। 33 भाइयों को उनकी उम्र की तरतीब के मुताबिक यूसुफ के सामने बिठाया गया। यह देखकर भाई निहायत हैरान हुए। 34 नौकरों ने उन्हें यूसुफ की मेज़ पर से खाना लेकर खिलाया। लेकिन बिनयमीन को दूसरों की निसबत पाँच गुना ज़्यादा मिला। यों उन्होंने यूसुफ के साथ जी भरकर खाया और पिया।

44

गुमशुदा प्याला

1 यूसुफ ने घर पर मुकर्रर मुलाज़िम को हुक्म दिया, “उन मर्दों की बोरियाँ खुराक से इतनी भर देना जितनी वह उठाकर ले जा सकें। हर एक के पैसे उस की अपनी बोरी के मुँह में रख देना। 2 सबसे छोटे भाई की बोरी में न सिर्फ़ पैसे बल्कि मेरे चाँदी के प्याले को भी रख देना।” मुलाज़िम ने ऐसा ही किया।

3 अगली सुबह जब पौ फटने लगी तो भाइयों को उनके गधों समेत सख़सत कर दिया गया। 4 वह अभी शहर से निकलकर दूर नहीं गए थे कि यूसुफ ने अपने घर पर मुकर्रर मुलाज़िम से कहा, “जल्दी करो। उन आदमियों का ताक्कुब करो। उनके पास पहुँचकर यह पूछना, ‘आपने हमारी भलाई के जवाब में ग़लत काम क्यों किया है?’ 5 आपने मेरे मालिक का चाँदी का प्याला क्यों चुराया है? उससे वह न सिर्फ़ पीते हैं बल्कि उसे ग़ैबदानी के लिए भी इस्तेमाल करते हैं। आप एक निहायत संगीन ज़ुर्म के मुरतकिब हुए हैं।”

6 जब मुलाज़िम भाइयों के पास पहुँचा तो उसने उनसे यही बातें कीं। 7 जवाब में उन्होंने कहा, “हमारे मालिक ऐसी बातें क्यों करते हैं? कभी नहीं हो सकता कि आपके खादिम ऐसा करें। 8 आप तो जानते हैं कि हम मुल्के-कनान से वह पैसे वापस ले आए जो हमारी बोरियों में थे। तो फिर हम क्यों आपके मालिक के घर से चाँदी या सोना चुराएँगे? 9 अगर वह आपके खादिमों में से किसी के पास मिल जाए तो उसे मार डाला जाए और बाकी सब आपके गुलाम बनें।”

10 मुलाज़िम ने कहा, “ठीक है ऐसा ही होगा। लेकिन सिर्फ़ वही मेरा गुलाम बनेगा जिसने प्याला चुराया है। बाकी सब आज़ाद हैं।” 11 उन्होंने जल्दी से अपनी बोरियाँ उतारकर ज़मीन पर रख दीं। हर एक ने अपनी बोरी खोल दी। 12 मुलाज़िम बोरियों की तलाशी लेने लगा।

वह बड़े भाई से शुरू करके आखिरकार सबसे छोटे भाई तक पहुँच गया। और वहाँ बिनयमीन की बोरी में से प्याला निकला। 13 भाइयों ने यह देखकर परेशानी में अपने लिबास फाड़ लिए। वह अपने गधों को दुबारा लादकर शहर वापस आ गए।

14 जब यहदाह और उसके भाई यूसुफ के घर पहुँचे तो वह अभी वहीं था। वह उसके सामने मुँह के बल गिर गए। 15 यूसुफ ने कहा, “यह तुमने क्या किया है? क्या तुम नहीं जानते कि मुझ जैसा आदमी गैब का इल्म रखता है?” 16 यहदाह ने कहा, “जनाबे-आली, हम क्या कहें? अब हम अपने दिफ्रा में क्या कहें? अल्लाह ही ने हमें कुसूरवार ठहराया है। अब हम सब आपके गुलाम हैं, न सिर्फ वह जिसके पास से प्याला मिल गया।” 17 यूसुफ ने कहा, “अल्लाह न करे कि मैं ऐसा करूँ, बल्कि सिर्फ वही मेरा गुलाम होगा जिसके पास प्याला था। बाक़ी सब सलामती से अपने बाप के पास वापस चले जाएँ।”

यहदाह बिनयमीन की सिफारिश करता है

18 लेकिन यहदाह ने यूसुफ के करीब आकर कहा, “मेरे मालिक, मेहरबानी करके अपने बंदे को एक बात करने की इजाज़त दें। मुझ पर गुस्सा न करें अगरचे आप मिसर के बादशाह जैसे हैं। 19 जनाबे-आली, आपने हमसे पूछा, ‘क्या तुम्हारा बाप या कोई और भाई है?’ 20 हमने जवाब दिया, ‘हमारा बाप है। वह बूढ़ा है। हमारा एक छोटा भाई भी है जो उस वक़्त पैदा हुआ जब हमारा बाप उम्ररसीदा था। उस लड़के का भाई मर चुका है। उस की माँ के सिर्फ यह दो बेटे पैदा हुए। अब वह अकेला ही रह गया है। उसका बाप उसे शिद्दत से प्यार करता है।’ 21 जनाबे-आली, आपने हमें बताया, ‘उसे यहाँ ले आओ ताकि मैं खुद उसे देख सकूँ।’ 22 हमने जवाब दिया, ‘यह लड़का अपने बाप को छोड़ नहीं सकता, वरना उसका बाप मर जाएगा।’ 23 फिर आपने कहा, ‘तुम सिर्फ इस सूरत में मेरे पास आ सकोगे कि तुम्हारा सबसे छोटा भाई तुम्हारे साथ हो।’ 24 जब हम अपने बाप के पास वापस पहुँचे तो हमने उन्हें सब कुछ बताया जो आपने कहा था। 25 फिर उन्होंने हमसे कहा, ‘मिसर लौटकर कुछ गल्ला खरीद लाओ।’ 26 हमने जवाब दिया, ‘हम जा नहीं सकते। हम सिर्फ इस सूरत में उस मर्द के पास जा सकते हैं कि हमारा सबसे छोटा भाई साथ हो। हम तब ही जा सकते हैं जब वह भी हमारे साथ चले।’ 27 हमारे बाप ने हमसे कहा, ‘तुम जानते हो कि मेरी बीवी राखिल से मेरे दो बेटे पैदा हुए। 28 पहला मुझे छोड़ चुका है। किसी जंगली जानवर ने उसे फाड़ खाया होगा, क्योंकि उसी वक़्त से मैंने उसे नहीं देखा। 29 अगर इसको भी मुझे से ले जाने की वजह से जानी नुक़सान पहुँचे तो तुम मुझे बूढ़े को ग़म के मारे पाताल में पहुँचाओगे।’

30-31 यहदाह ने अपनी बात जारी रखी, “जनाबे-आली, अब अगर मैं अपने बाप के पास जाऊँ और वह देखें कि लड़का मेरे साथ नहीं है तो वह दम तोड़ देंगे। उनकी ज़िंदगी इस क़दर लड़के की ज़िंदगी पर मुनहसिर है और वह इतने बूढ़े हैं कि हम ऐसी हरकत से उन्हें कब्र तक पहुँचा देंगे। 32 न सिर्फ यह बल्कि मैंने बाप से कहा, ‘मैं खुद इसका ज़ामिन हूँगा। अगर मैं इसे सलामती से वापस न पहुँचाऊँ तो फिर मैं ज़िंदगी के आखिर तक कुसूरवार ठहरूँगा।’ 33 अब अपने खादिम की गुज़ारिश सुनें। मैं यहाँ रहकर इस लड़के की जगह गुलाम बन जाता हूँ, और वह दूसरे भाइयों के साथ वापस चला जाए। 34 अगर लड़का मेरे साथ न हुआ तो मैं किस तरह अपने बाप को मुँह दिखा सकता हूँ? मैं बरदाश्त नहीं कर सकूँगा कि वह इस मुसीबत में मुब्तला हो जाएँ।”

45

यूसुफ अपने आपको ज़ाहिर करता है

1 यह सुनकर यूसुफ अपने आप पर क़ाबू न रख सका। उसने ऊँची आवाज़ से हुक्म दिया कि तमाम मुलाज़िम कमरे से निकल जाएँ। कोई और शख्स कमरे में नहीं था जब यूसुफ ने अपने भाइयों को बताया कि वह कौन है। 2 वह इतने ज़ोर से रो पड़ा कि मिसरियों ने उस की आवाज़ सुनी और फ़िरौन के घराने को पता चल गया। 3 यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा, “मैं यूसुफ हूँ। क्या मेरा बाप अब तक ज़िंदा है?”

लेकिन उसके भाई यह सुनकर इतने घबरा गए कि वह जवाब न दे सके।

4 फिर यूसुफ ने कहा, “मेरे करीब आओ।” वह करीब आए तो उसने कहा, “मैं तुम्हारा भाई यूसुफ हूँ जिसे तुमने बोलकर मिसर भिजवाया। 5 अब मेरी बात सुनो। न घबराओ और न अपने आपको इलज़ाम दो कि हमने यूसुफ को बेच दिया। असल में अल्लाह ने खुद मुझे तुम्हारे आगे यहाँ भेज दिया ताकि हम सब बचे रहें। 6 यह काल का दूसरा साल है। पाँच और साल के दौरान न हल चलेगा, न फ़सल कटेगी। 7 अल्लाह ने मुझे तुम्हारे आगे भेजा ताकि दुनिया में तुम्हारा एक बचा-खुचा हिस्सा महफूज़ रहे और तुम्हारी जान एक बड़ी मख़लसी की मारिफ़त छूट जाए। 8 चुनौतें तुमने मुझे यहाँ नहीं भेजा बल्कि अल्लाह ने। उसने मुझे फ़िरौन का बाप, उसके पूरे घराने का मालिक और मिसर का हाकिम बना दिया है। 9 अब जल्दी से मेरे बाप के पास वापस जाकर उनसे कहो, ‘आपका बेटा यूसुफ आपको इतला देता है कि अल्लाह ने मुझे मिसर का मालिक बना दिया है। मेरे पास आ जाएँ, देर न करें।’ 10 आप जुशन के इलाके में रह सकते हैं। वहाँ आप मेरे करीब होंगे, आप, आपकी आलो-औलाद, गाय-बैल, भेड़-बकरियाँ और जो कुछ भी आपका है। 11 वहाँ मैं आपकी ज़रूरियात पूरी करूँगा, क्योंकि काल को अभी पाँच साल और लगेगे। वरना आप, आपके घरवाले और जो भी आपके हैं बदहाल हो जाएंगे।’ 12 तुम खुद और मेरा भाई बिनयमीन देख सकते हो कि मैं यूसुफ ही हूँ जो तुम्हारे साथ बात कर रहा हूँ। 13 मेरे बाप को मिसर में मेरे असरो-रसूख के बारे में इतला दो। उन्हें सब कुछ बताओ जो तुमने देखा है। फिर जल्द ही मेरे बाप को यहाँ ले आओ।”

14 यह कहकर वह अपने भाई बिनयमीन को गले लगाकर रो पड़ा। बिनयमीन भी उसके गले लगकर रोने लगा। 15 फिर यूसुफ ने रोते हुए अपने हर एक भाई को बोसा दिया। इसके बाद उसके भाई उसके साथ बातें करने लगे।

16 जब यह खबर बादशाह के महल तक पहुँची कि यूसुफ के भाई आए हैं तो फिरौन और उसके तमाम अफसरान खुश हुए। 17 उसने यूसुफ से कहा, “अपने भाइयों को बता कि अपने जानवरों पर गल्ला लादकर मुल्के-कनान वापस चले जाओ। 18 वहाँ अपने बाप और खानदानों को लेकर मेरे पास आ जाओ। मैं तुमको मिसर की सबसे अच्छी ज़मीन दे दूँगा, और तुम इस मुल्क की बेहतरीन पैदावार खा सकोगे। 19 उन्हें यह हिदायत भी दे कि अपने बाल-बच्चों के लिए मिसर से गाड़ियाँ ले जाओ और अपने बाप को भी बिठाकर यहाँ ले आओ। 20 अपने माल की ज्यादा फ़िकर न करो, क्योंकि तुम्हें मुल्के-मिसर का बेहतरीन माल मिलेगा।”

21 यूसुफ के भाइयों ने ऐसा ही किया। यूसुफ ने उन्हें बादशाह के हुक्म के मुताबिक गाड़ियाँ और सफ़र के लिए खुराक दी। 22 उसने हर एक भाई को कपड़ों का एक जोड़ा भी दिया। लेकिन बिनयमीन को उसने चाँदी के 300 सिक्के और पाँच जोड़े दिए। 23 उसने अपने बाप को दस गधे भिजवा दिए जो मिसर के बेहतरीन माल से लदे हुए थे और दस गधियाँ जो अनाज, रोटी और बाप के सफ़र के लिए खाने से लदी हुई थीं। 24 यों उसने अपने भाइयों को सख़सत करके कहा, “रास्ते में झगड़ा न करना।”

25 वह मिसर से रवाना होकर मुल्के-कनान में अपने बाप के पास पहुँचे। 26 उन्होंने उससे कहा, “यूसुफ जिंदा है! वह पूरे मिसर का हाकिम है।” लेकिन याकूब हक्का-बक्का रह गया, क्योंकि उसे यकीन न आया। 27 ताहम उन्होंने उसे सब कुछ बताया जो यूसुफ ने उनसे कहा था, और उसने खुद वह गाड़ियाँ देखीं जो यूसुफ ने उसे मिसर ले जाने के लिए भिजवा दी थीं। फिर याकूब की जान में जान आ गई, 28 और उसने कहा, “मेरा बेटा यूसुफ जिंदा है! यही काफी है। मरने से पहले मैं जाकर उससे मिलूँगा।”

46

याकूब मिसर जाता है

1 याकूब सब कुछ लेकर रवाना हुआ और बैर-सबा पहुँचा। वहाँ उसने अपने बाप इसहाक के खुदा के हुज़ूर कुरबानियाँ चढ़ाईं। 2 रात को अल्लाह रोया में उससे हमकलाम हुआ। उसने कहा, “याकूब, याकूब!” याकूब ने जवाब दिया, “जी, मैं हाज़िर हूँ।” 3 अल्लाह ने कहा, “मैं अल्लाह हूँ, तेरे बाप इसहाक का खुदा। मिसर जाने से मत डर, क्योंकि वहाँ मैं तुझसे एक बड़ी कौम बनाऊँगा। 4 मैं तेरे साथ मिसर जाऊँगा और तुझे इस मुल्क में वापस भी ले आऊँगा। जब तू मरेगा तो यूसुफ खुद तेरी आँखें बंद करेगा।”

5 इसके बाद याकूब बैर-सबा से रवाना हुआ। उसके बेटों ने उसे और अपने बाल-बच्चों को उन गाड़ियों में बिठा दिया जो मिसर के बादशाह ने भिजवाई थीं। 6 यों याकूब और उस की तमाम औलाद अपने मवेशी और कनान में हासिल किया हुआ माल लेकर मिसर चले गए। 7 याकूब के बेटे-बेटियाँ, पोते-पोतियाँ और बाक़ी औलाद सब साथ गए।

8 इसराईल की औलाद के नाम जो मिसर चली गई यह हैं :

याकूब के पहलौठे रूबिन 9 के बेटे हनूक, फ़ल्लू, हसरोन और करमी थे। 10 शमौन के बेटे यमुएल, यमीन, उहद, यकीन, सुहर और साऊल थे (साऊल कनानी औरत का बच्चा था)। 11 लावी के बेटे जैरसोन, किहात और मिरारी थे। 12 यहूदाह के बेटे एर, ओनान, सेला, फ़ारस और ज़ारह थे (एर और ओनान कनान में मर चुके थे)। फ़ारस के दो बेटे हसरोन और हमूल थे। 13 इशकार के बेटे तोला, फ़ुव्वा, योब और सिमरोन थे। 14 ज़बूलून के बेटे सरद, ऐलोन और यहलियेल थे। 15 इन बेटों की माँ लियाह थी, और वह मसोपुतामिया में पैदा हुए। इनके अलावा दीना उस की बेटी थी। कुल 33 मर्द लियाह की औलाद थे।

16 जद के बेटे सिफ़ियान, हज्जी, सूनी, इसबून, एरी, अरूदी और अरेली थे। 17 आशर के बेटे यिमना, इसवाह, इसवी और बरिया थे। आशर की बेटी सिरह थी, और बरिया के दो बेटे थे, हिबर और मलकियेल। 18 कुल 16 अफ़राद ज़िलफ़ा की औलाद थे जिसे लाबन ने अपनी बेटी लियाह को दिया था।

19 राखिल के बेटे यूसुफ़ और बिनयमीन थे। 20 यूसुफ़ के दो बेटे मनस्सी और इफ़राईम मिसर में पैदा हुए। उनकी माँ ओन के पुजारी फ़ोतीफ़रा की बेटी आसनत थी। 21 बिनयमीन के बेटे बाला, बकर, अशबेल, जीरा, नामान, इखी, रोस, मुफ़फ़ीम, हुफ़फ़ीम और अर्द थे। 22 कुल 14 मर्द राखिल की औलाद थे।

23 दान का बेटा हुशीम था। 24 नफ़ताली के बेटे यहसियेल, जूनी, यिसर और सिल्लीम थे। 25 कुल 7 मर्द बिलहाह की औलाद थे जिसे लाबन ने अपनी बेटी राखिल को दिया था।

26 याकूब की औलाद के 66 अफ़राद उसके साथ मिसर चले गए। इस तादाद में बेटों की बीवियाँ शामिल नहीं थीं। 27 जब हम याकूब, यूसुफ़ और उसके दो बेटे इनमें शामिल करते हैं तो याकूब के घराने के 70 अफ़राद मिसर गए।

याकूब और उसका खानदान मिसर में

28 याकूब ने यहूदाह को अपने आगे यूसुफ़ के पास भेजा ताकि वह जुशन में उनसे मिले। जब वह वहाँ पहुँचे 29 तो यूसुफ़ अपने रथ पर सवार होकर अपने बाप से मिलने के लिए जुशन गया। उसे देखकर वह उसके गले लगकर काफ़ी देर रोता रहा। 30 याकूब ने यूसुफ़ से कहा, “अब मैं मरने के लिए तैयार हूँ, क्योंकि मैंने खुद देखा है कि तू जिंदा है।”

31 फिर यूसुफ़ ने अपने भाइयों और अपने बाप के खानदान के बाक़ी अफ़राद से कहा, “ज़रूरी है कि मैं जाकर बादशाह को इतला दूँ कि मेरे भाई और मेरे बाप का पूरा खानदान जो कनान के रहनेवाले हैं मेरे पास आ गए हैं। 32 मैं उससे कहूँगा, ‘यह आदमी भेड़-बकरियों के चरवाहे हैं।’

वह मवेशी पालते हैं, इसलिए अपनी भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और बाकी सारा माल अपने साथ ले आए हैं।’ 33 बादशाह तुम्हें बुलाकर पूछेगा कि तुम क्या काम करते हो? 34 फिर तुमको जवाब देना है, ‘आपके खादिम बचपन से मवेशी पालते आए हैं। यह हमारे बापदादा का पेशा था और हमारा भी है।’ अगर तुम यह कहो तो तुम्हें जुशन में रहने की इजाजत मिलेगी। क्योंकि भेड़-बकरियों के चरवाहे मिसरियों की नज़र में काबिले-नफ़रत हैं।”

47

1 यूसुफ़ फिरौन के पास गया और उसे इतला देकर कहा, “मेरा बाप और भाई अपनी भेड़-बकरियों, गाय-बैलों और सारे माल समेत मुल्के-कनान से आकर जुशन में ठहरे हुए हैं।” 2 उसने अपने भाइयों में से पाँच को चुनकर फिरौन के सामने पेश किया। 3 फिरौन ने भाइयों से पूछा, “तुम क्या काम करते हो?” उन्होंने जवाब दिया, “आपके खादिम भेड़-बकरियों के चरवाहे हैं। यह हमारे बापदादा का पेशा था और हमारा भी है। 4 हम यहाँ आए हैं ताकि कुछ देर अजनबी की हैसियत से आपके पास ठहरें, क्योंकि काल ने कनान में बहुत ज़ोर पकड़ा है। वहाँ आपके खादिमों के जानवरों के लिए चरागाहें ख़त्म हो गई हैं। इसलिए हमें जुशन में रहने की इजाजत दें।”

5 बादशाह ने यूसुफ़ से कहा, “तेरा बाप और भाई तेरे पास आ गए हैं। 6 मुल्के-मिसर तेरे सामने खुला है। उन्हें बेहतरीन जगह पर आबाद कर। वह जुशन में रहें। और अगर उनमें से कुछ हैं जो ख़ास काबिलियत रखते हैं तो उन्हें मेरे मवेशियों की निगहदाशत पर रख।”

7 फिर यूसुफ़ अपने बाप याक़ूब को ले आया और फिरौन के सामने पेश किया। याक़ूब ने बादशाह को बरकत दी। 8 बादशाह ने उससे पूछा, “तुम्हारी उम्र क्या है?” 9 याक़ूब ने जवाब दिया, “मैं 130 साल से इस दुनिया का मेहमान हूँ। मेरी ज़िंदगी मुख़तसर और तकलीफ़देह थी, और मेरे बापदादा मुझसे ज़्यादा उम्ररसीदा हुए थे जब वह इस दुनिया के मेहमान थे।” 10 यह कहकर याक़ूब फिरौन को दुबारा बरकत देकर चला गया।

11 फिर यूसुफ़ ने अपने बाप और भाइयों को मिसर में आबाद किया। उसने उन्हें रामसीस के इलाके में बेहतरीन ज़मीन दी जिस तरह बादशाह ने हुक्म दिया था। 12 यूसुफ़ अपने बाप के पूरे घराने को ख़ुराक मुहैया करता रहा। हर ख़ानदान को उसके बच्चों की तादाद के मुताबिक़ ख़ुराक मिलती रही।

काल का सख़्त असर

13 काल इतना सख़्त था कि कहीं भी रोटी नहीं मिलती थी। मिसर और कनान में लोग निहाल हो गए।

14 मिसर और कनान के तमाम पैसे अनाज ख़रीदने के लिए सर्फ़ हो गए। यूसुफ़ उन्हें जमा करके फिरौन के महल में ले आया। 15 जब मिसर और कनान के पैसे ख़त्म हो गए तो मिसरियों ने यूसुफ़ के पास आकर कहा, “हमें रोटी दें! हम आपके सामने क्यों मरें? हमारे पैसे ख़त्म हो गए हैं।” 16 यूसुफ़ ने जवाब दिया, “अगर आपके पैसे ख़त्म हैं तो मुझे अपने मवेशी दें। मैं उनके एवज़ रोटी देता हूँ।” 17 चुनाँचे वह अपने घोड़े, भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और गधे यूसुफ़ के पास ले आए। इनके एवज़ उसने उन्हें ख़ुराक दी। उस साल उसने उन्हें उनके तमाम मवेशियों के एवज़ ख़ुराक मुहैया की।

18 अगले साल वह दुबारा उसके पास आए। उन्होंने कहा, “जनाबे-आली, हम यह बात आपसे नहीं छुपा सकते कि अब हम सिर्फ़ अपने आप और अपनी ज़मीन को आपको दे सकते हैं। हमारे पैसे तो ख़त्म हैं और आप हमारे मवेशी भी ले चुके हैं। 19 हम क्यों आपकी आँखों के सामने मर जाएँ? हमारी ज़मीन क्यों तबाह हो जाए? हमें रोटी दें तो हम और हमारी ज़मीन बादशाह की होगी। हम फिरौन के गुलाम होंगे। हमें बीज दें ताकि हम जीते बचें और ज़मीन तबाह न हो जाए।”

20 चुनाँचे यूसुफ़ ने फिरौन के लिए मिसर की पूरी ज़मीन ख़रीद ली। काल की सख़्ती के सबब से तमाम मिसरियों ने अपने खेत बेच दिए। इस तरीक़े से पूरा मुल्क फिरौन की मिलकियत में आ गया। 21 यूसुफ़ ने मिसर के एक सिरे से दूसरे सिरे तक के लोगों को शहरों में मुंतक़िल कर दिया। 22 सिर्फ़ पुजारियों की ज़मीन आज़ाद रही। उन्हें अपनी ज़मीन बेचने की ज़रूरत ही नहीं थी, क्योंकि उन्हें फिरौन से इतना वज़ीफ़ा मिलता था कि गुज़ारा हो जाता था।

23 यूसुफ़ ने लोगों से कहा, “गौर से सुनें। आज मैंने आपको और आपकी ज़मीन को बादशाह के लिए ख़रीद लिया है। अब यह बीज लेकर अपने खेतों में बोना। 24 आपको फिरौन को फ़सल का पाँचवाँ हिस्सा देना है। बाकी पैदावार आपकी होगी। आप इससे बीज बो सकते हैं, और यह आपके और आपके घरानों और बच्चों के खाने के लिए होगा।” 25 उन्होंने जवाब दिया, “आपने हमें बचाया है। हमारे मालिक हम पर मेहरबानी करें तो हम फिरौन के गुलाम बनेंगे।”

26 इस तरह यूसुफ़ ने मिसर में यह क़ानून नाफ़िज़ किया कि हर फ़सल का पाँचवाँ हिस्सा बादशाह का है। यह क़ानून आज तक जारी है। सिर्फ़ पुजारियों की ज़मीन बादशाह की मिलकियत में न आई।

याक़ूब की आख़िरी गुज़ारिश

27 इसराईली मिसर में जुशन के इलाके में आबाद हुए। वहाँ उन्हें ज़मीन मिली, और वह फले-फूले और तादाद में बहुत बढ़ गए।

28 याक़ूब 17 साल मिसर में रहा। वह 147 साल का था जब फ़ौत हुआ। 29 जब मरने का वक़्त करीब आया तो उसने यूसुफ़ को बुलाकर कहा, “मेहरबानी करके अपना हाथ मेरी रान के नीचे रखकर क़सम खा कि तू मुझ पर शफ़क़त और वफ़ादारी का इस तरह इज़हार करेगा कि मुझे मिसर में दफ़न नहीं करेगा। 30 जब मैं मरकर अपने बापदादा से जा मिलूँगा तो मुझे मिसर से ले जाकर मेरे बापदादा की क़ब्र में दफ़नाना।”

यूसुफ ने जवाब दिया, “ठीक है।” ³¹ याकूब ने कहा, “कसम खा कि तू ऐसा ही करेगा।” यूसुफ ने कसम खाई। तब इसराईल ने अपने बिस्तर के सिरहाने पर अल्लाह को सिजदा किया।

48

याकूब इफराईम और मनस्सी को बरकत देता है

¹ कुछ देर के बाद यूसुफ को इत्तला दी गई कि आपका बाप बीमार है। वह अपने दो बेटों मनस्सी और इफराईम को साथ लेकर याकूब से मिलने गया।

² याकूब को बताया गया, “आपका बेटा आ गया है” तो वह अपने आपको सँभालकर अपने बिस्तर पर बैठ गया। ³ उसने यूसुफ से कहा, “जब मैं कनानी शहर लूज़ में था तो अल्लाह कादिरे-मुतलक मुझ पर ज़ाहिर हुआ। उसने मुझे बरकत देकर ⁴ कहा, ‘मैं तुझे फलने फूलने दूँगा और तेरी औलाद बढ़ा दूँगा बल्कि तुझसे बहुत-सी कौम निकलने दूँगा। और मैं तेरी औलाद को यह मुल्क हमेशा के लिए दे दूँगा।’ ⁵ अब मेरी बात सुन। मैं चाहता हूँ कि तेरे बेटे जो मेरे आने से पहले मिसर में पैदा हुए मेरे बेटे हों। इफराईम और मनस्सी रुबिन और शमौन के बराबर ही मेरे बेटे हों। ⁶ अगर इनके बाद तेरे हों और बेटे पैदा हो जाएँ तो वह मेरे बेटे नहीं बल्कि तेरे ठहरेंगे। जो मीरास वह पाएँगे वह उन्हें इफराईम और मनस्सी की मीरास में से मिलेगी। ⁷ मैं यह तेरी माँ राखिल के सबब से कर रहा हूँ जो मसोपुतामिया से वापसी के वक़्त कनान में इफराता के करीब मर गई। मैंने उसे वहीं रास्ते में दफन किया” (आज इफराता को बैत-लहम कहा जाता है)।

⁸ फिर याकूब ने यूसुफ के बेटों पर नज़र डालकर पूछा, “यह कौन हैं?” ⁹ यूसुफ ने जवाब दिया, “यह मेरे बेटे हैं जो अल्लाह ने मुझे यहाँ मिसर में दिए।” याकूब ने कहा, “उन्हें मेरे करीब ले आ ताकि मैं उन्हें बरकत दूँ।” ¹⁰ बूढ़ा होने के सबब से याकूब की आँखें कमज़ोर थीं। वह अच्छी तरह देख नहीं सकता था। यूसुफ अपने बेटों को याकूब के पास ले आया तो उसने उन्हें बोसा देकर गले लगाया ¹¹ और यूसुफ से कहा, “मुझे तवक्को ही नहीं थी कि मैं कभी तेरा चेहरा देखूँगा, और अब अल्लाह ने मुझे तेरे बेटों को देखने का मौका भी दिया है।”

¹² फिर यूसुफ उन्हें याकूब की गोद में से लेकर खुद उसके सामने मुँह के बल झुक गया। ¹³ यूसुफ ने इफराईम को याकूब के बाएँ हाथ रखा और मनस्सी को उसके दाएँ हाथ। ¹⁴ लेकिन याकूब ने अपना दहना हाथ बाईं तरफ़ बढ़ाकर इफराईम के सर पर रखा अगरचे वह छोटा था। इस तरह उसने अपना बायाँ हाथ दाईं तरफ़ बढ़ाकर मनस्सी के सर पर रखा जो बड़ा था। ¹⁵ फिर उसने यूसुफ को उसके बेटों की मारिफ़त बरकत दी, “अल्लाह जिसके हुज़ूर मेरे बापदादा इब्राहीम और इसहाक चलते रहे और जो शुरू से आज तक मेरा चरवाहा रहा है इन्हें बरकत दे। ¹⁶ जिस फ़रिश्ते ने एवज़ाना देकर मुझे हर नुक़सान से बचाया है वह इन्हें बरकत दे। अल्लाह करे कि इनमें मेरा नाम और मेरे बापदादा इब्राहीम और इसहाक के नाम जीते रहें। दुनिया में इनकी औलाद की तादाद बहुत बढ़ जाए।”

¹⁷ जब यूसुफ ने देखा कि बाप ने अपना दहना हाथ छोटे बेटे इफराईम के सर पर रखा है तो यह उसे बुरा लगा, इसलिए उसने बाप का हाथ पकड़ा ताकि उसे इफराईम के सर पर से उठाकर मनस्सी के सर पर रखे। ¹⁸ उसने कहा, “अब्बू, ऐसे नहीं। दूसरा लड़का बड़ा है। उसी पर अपना दहना हाथ रखें।” ¹⁹ लेकिन बाप ने इनकार करके कहा, “मुझे पता है बेटा, मुझे पता है। वह भी एक बड़ी कौम बनेगा। फिर भी उसका छोटा भाई उससे बड़ा होगा और उससे कौमों की बड़ी तादाद निकलेगी।”

²⁰ उस दिन उसने दोनों बेटों को बरकत देकर कहा, “इसराईली तुम्हारा नाम लेकर बरकत दिया करेंगे। जब वह बरकत देंगे तो कहेंगे, ‘अल्लाह आपके साथ वैसा करे जैसा उसने इफराईम और मनस्सी के साथ किया है।’” इस तरह याकूब ने इफराईम को मनस्सी से बड़ा बना दिया। ²¹ यूसुफ से उसने कहा, “मैं तो मरनेवाला हूँ, लेकिन अल्लाह तुम्हारे साथ होगा और तुम्हें तुम्हारे बापदादा के मुल्क में वापस ले जाएगा। ²² एक बात मैं तुझे तेरे भाइयों पर तरज़ीह देता हूँ, मैं तुझे कनान में वह क़िताआ देता हूँ जो मैंने अपनी तलवार और कमान से अमोरियों से छीना था।”

49

याकूब अपने बेटों को बरकत देता है

¹ याकूब ने अपने बेटों को बुलाकर कहा, “मेरे पास जमा हो जाओ ताकि मैं तुम्हें बताऊँ कि मुस्तक़बिल में तुम्हारे साथ क्या क्या होगा। ² ऐ याकूब के बेटो, इकट्ठे होकर सुनो, अपने बाप इसराईल की बातों पर गौर करो।

³ रुबिन, तुम मेरे पहलौठे हो, मेरे ज़ोर और मेरी ताक़त का पहला फल। तुम इज्ज़त और कुव्वत के लिहाज़ से बरतर हो। ⁴ लेकिन चूँकि तुम बेकाबू सैलाब की मानिंद हो इसलिए तुम्हारी अव्वल हैसियत जाती रहे। क्योंकि तुमने मेरी हरम से हमबिसतर होकर अपने बाप की बेहुरमती की है।

⁵ शमौन और लावी दोनों भाइयों की तलवारें जुल्मो-तशद्द के हथियार रहे हैं। ⁶ मेरी जान न उनकी मजलिस में शामिल और न उनकी जमात में दाखिल हो, क्योंकि उन्होंने गुस्से में आकर दूसरों को क़त्ल किया है, उन्होंने अपनी मरज़ी से बैलों की कोंचें काटी हैं। ⁷ उनके गुस्से पर लानत हो जो इतना ज़बरदस्त है और उनके तैश पर जो इतना सख़्त है। मैं उन्हें याकूब के मुल्क में तितर-बितर करूँगा, उन्हें इसराईल में मुंतशिर कर दूँगा।

8 यहदाह, तुम्हारे भाई तुम्हारी तारीफ करेंगे। तुम अपने दुश्मनों की गरदन पकड़े रहोगे, और तुम्हारे बाप के बेटे तुम्हारे सामने झुक जाएंगे। 9 यहदाह शेरबबर का बच्चा है। मेरे बेटे, तुम अभी अभी शिकार मारकर वापस आए हो। यहदाह शेरबबर बल्कि शेरनी की तरह दबककर बैठ जाता है। कौन उसे छेड़ने की जुरत करेगा? 10 शाही असा यहदाह से दूर नहीं होगा बल्कि शाही इख्तियार उस वक्त तक उस की औलाद के पास रहेगा जब तक वह हाकिम न आए जिसके ताबे कौमें रहेंगी। 11 वह अपना जवान गधा अंगूर की बेल से और अपनी गधी का बच्चा बेहतरीन अंगूर की बेल से बाँधेगा। वह अपना लिबास मैं में और अपना कपड़ा अंगूर के खून में धोएगा। 12 उस की आँखें मैं से ज्यादा गदली और उसके दाँत दूध से ज्यादा सफेद होंगे।

13 जबलून साहिल पर आबाद होगा जहाँ बहरी जहाज़ होंगे। उस की हद सैदा तक होगी।

14 इशकार ताकतवर गधा है जो अपने ज़ीन के दो बोरों के दरमियान बैठा है। 15 जब वह देखेगा कि उस की आरामगाह अच्छी और उसका मुल्क खुशनुमा है तो वह बोझ उठाने के लिए तैयार हो जाएगा और उजरत के बगैर काम करने के लिए मजबूर किया जाएगा।

16 दान अपनी कौम का इनसाफ करेगा अगरचे वह इसराईल के कबीलों में से एक ही है। 17 दान सड़क के साँप और रास्ते के अफई की मानिंद होगा। वह घोड़े की एडियों को काटेगा तो उसका सवार पीछे गिर जाएगा।

18 ऐ रब, मैं तेरी ही नजात के इंतज़ार में हूँ!

19 जद पर डाकुओं का जत्था हमला करेगा, लेकिन वह पलटकर उसी पर हमला कर देगा।

20 आशर को गिज़ाइयतवाली खुराक हासिल होगी। वह लज़ीज़ शाही खाना मुहैया करेगा।

21 नफ़ताली आज़ाद छोड़ी हुई हिरनी है। वह खूबसूरत बातें करता है। *

22 यूसुफ़ फलदार बेल है। वह चश्मे पर लगी हुई फलदार बेल है जिसकी शाखें दीवार पर चढ़ गई हैं। 23 तीरअंदाज़ों ने उस पर तीर चलाकर उसे तंग किया और उसके पीछे पड़ गए, 24 लेकिन उस की कमान मजबूत रही, और उसके बाजू याकूब के जोरावर खुदा के सबब से ताकतवर रहे, उस चरवाहे के सबब से जो इसराईल का ज़बरदस्त सूरा है। 25 क्योंकि तेरे बाप का खुदा तेरी मदद करता है, अल्लाह कादिरे-मुतलक तुझे आसमान की बरकत, ज़मीन की गहराइयों की बरकत और औलाद की बरकत देता है। 26 तेरे बाप की बरकत कदीम पहाड़ों और अबदी पहाड़ियों की मरगूब चीज़ों से ज्यादा अज़ीम है। यह तमाम बरकत यूसुफ़ के सर पर हो, उस शख्स के चाँद पर जो अपने भाइयों पर शहज़ादा है।

27 बिनयमीन फाड़नेवाला भेडिया है। सुबह वह अपना शिकार खा जाता और रात को अपना लूटा हुआ माल तकसीम कर देता है।”

28 यह इसराईल के कुल बारह कबीले हैं। और यह वह कुछ है जो उनके बाप ने उनसे बरकत देते वक्त कहा। उसने हर एक को उस की अपनी बरकत दी।

याकूब का इंतकाल

29 फिर याकूब ने अपने बेटों को हुक्म दिया, “अब मैं कूच करके अपने बापदादा से जा मिलूँगा। मुझे मेरे बापदादा के साथ उस गार में दफ़नाना जो हिली आदमी इफ़रोन के खेत में है। 30 यानी उस गार में जो मुल्के-कनान में ममेरे के मशरिक में मकफ़ीला के खेत में है। इब्राहीम ने उसे खेत समेत अपने लोगों को दफ़नाने के लिए इफ़रोन हिली से खरीद लिया था। 31 वहाँ इब्राहीम और उस की बीवी सारा दफ़नाए गए, वहाँ इसहाक और उस की बीवी रिबका दफ़नाए गए और वहाँ मैंने लियाह को दफ़न किया। 32 वह खेत और उसका गार हिलियों से खरीदा गया था।”

33 इन हिदायात के बाद याकूब ने अपने पाँव बिस्तर पर समेट लिए और दम छोड़कर अपने बापदादा से जा मिला।

50

याकूब को दफ़न किया जाता है

1 यूसुफ़ अपने बाप के चेहरे से लिपट गया। उसने रोते हुए उसे बोसा दिया। 2 उसके मुलाज़िमों में से कुछ डाक्टर थे। उसने उन्हें हिदायत दी कि मेरे बाप इसराईल की लाश को हनूत करें ताकि वह गल न जाए। उन्होंने ऐसा ही किया। 3 इसमें 40 दिन लग गए। आम तौर पर हनूत करने के लिए इतने ही दिन लगते हैं। मिसरियों ने 70 दिन तक याकूब का मातम किया।

4 जब मातम का वक्त खत्म हुआ तो यूसुफ़ ने बादशाह के दरबारियों से कहा, “मेहरबानी करके यह ख़बर बादशाह तक पहुँचा दें 5 कि मेरे बाप ने मुझे कसम दिलाकर कहा था, ‘मैं मरनेवाला हूँ। मुझे उस कब्र में दफ़न करना जो मैंने मुल्के-कनान में अपने लिए बनवाई।’ अब मुझे इज़ाज़त दें कि मैं वहाँ जाऊँ और अपने बाप को दफ़न करके वापस आऊँ।” 6 फिरौन ने जवाब दिया, “जा, अपने बाप को दफ़न कर जिस तरह उसने तुझे कसम दिलाई थी।”

7 चुनौचे यूसुफ़ अपने बाप को दफ़नाने के लिए कनान रवाना हुआ। बादशाह के तमाम मुलाज़िम, महल के बुजुर्ग और पूरे मिसर के बुजुर्ग उसके साथ थे। 8 यूसुफ़ के घराने के अफ़राद, उसके भाई और उसके बाप के घराने के लोग भी साथ गए। सिर्फ़ उनके बच्चे, उनकी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल जुशन में रहे। 9 रथ और घुड़सवार भी साथ गए। सब मिलकर बड़ा लशकर बन गए।

* 49:21 या खूबसूरत बच्चे पैदा करती है।

10 जब वह यरदन के करीब अतद के खलियान पर पहुँचे तो उन्होंने निहायत दिलसोज़ नोहा किया। वहाँ यूसुफ़ ने सात दिन तक अपने बाप का मातम किया। 11 जब मकामी कनानियों ने अतद के खलियान पर मातम का यह नज़ारा देखा तो उन्होंने कहा, “यह तो मातम का बहुत बड़ा इंतज़ाम है जो मिसरी करवा रहे हैं।” इसलिए उस जगह का नाम अबील-मिसरीम यानी ‘मिसरियों का मातम’ पड़ गया। 12 यों याकूब के बेटों ने अपने बाप का हुक्म पूरा किया। 13 उन्होंने उसे मुल्के-कनान में ले जाकर मकफ़ीला के खेत के गार में दफ़न किया जो ममरे के मशरिक में है। यह वही खेत है जो इब्राहीम ने इफ़रोन हिली से अपने लोगों को दफ़नाने के लिए ख़रीदा था।

14 इसके बाद यूसुफ़, उसके भाई और बाक़ी तमाम लोग जो जनाज़े के लिए साथ गए थे मिसर को लौट आए।

यूसुफ़ अपने भाइयों को तसल्ली देता है

15 जब याकूब इंतक़ाल कर गया तो यूसुफ़ के भाई डर गए। उन्होंने कहा, “ख़तरा है कि अब यूसुफ़ हमारा ताक़ुब करके उस ग़लत काम का बदला ले जो हमने उसके साथ किया था। फिर क्या होगा?” 16 यह सोचकर उन्होंने यूसुफ़ को ख़बर भेजी, “आपके बाप ने मरने से पेशतर हिदायत दी 17 कि यूसुफ़ को बताना, ‘अपने भाइयों के उस ग़लत काम को मुआफ़ कर देना जो उन्होंने तुम्हारे साथ किया।’ अब हमें जो आपके बाप के ख़ुदा के पैरोकार हैं मुआफ़ कर दें।”

यह ख़बर सुनकर यूसुफ़ रो पड़ा। 18 फिर उसके भाई ख़ुद आए और उसके सामने गिर गए। उन्होंने कहा, “हम आपके खादिम हैं।” 19 लेकिन यूसुफ़ ने कहा, “मत डरो। क्या मैं अल्लाह की जगह हूँ? हरगिज़ नहीं! 20 तुमने मुझे नुक़सान पहुँचाने का इरादा किया था, लेकिन अल्लाह ने उससे भलाई पैदा की। और अब इसका मक़सद पूरा हो रहा है। बहुत-से लोग मौत से बच रहे हैं। 21 चुनौचे अब डरने की ज़रूरत नहीं है। मैं तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को ख़ुराक मुहैया करता रहूँगा।”

यों यूसुफ़ ने उन्हें तसल्ली दी और उनसे नरमी से बात की।

यूसुफ़ का इंतक़ाल

22 यूसुफ़ अपने बाप के ख़ानदान समेत मिसर में रहा। वह 110 साल ज़िंदा रहा। 23 मौत से पहले उसने न सिर्फ़ इफ़राईम के बच्चों को बल्कि उसके पोतों को भी देखा। मनस्सी के बेटे मकीर के बच्चे भी उस की मौजूदगी में पैदा होकर उस की गोद में रखे गए। *

24 फिर एक वक़्त आया कि यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा, “मैं मरनेवाला हूँ। लेकिन अल्लाह ज़रूर आपकी देख-भाल करके आपको इस मुल्क से उस मुल्क में ले जाएगा जिसका उसने इब्राहीम, इसहाक़ और याकूब से क़सम खाकर वादा किया है।” 25 फिर यूसुफ़ ने इसराईलियों को क़सम दिलाकर कहा, “अल्लाह यक़ीनन तुम्हारी देख-भाल करके वहाँ ले जाएगा। उस वक़्त मेरी हड्डियों को भी उठाकर साथ ले जाना।”

26 फिर यूसुफ़ फ़ौत हो गया। वह 110 साल का था। उसे हनूत करके मिसर में एक ताबूत में रखा गया।

* 50:23 ग़ालिबन इसका मतलब यह है कि उसने उन्हें लेपालक बनाया।

खुर्ज

याकूब का खानदान मिसर में

¹ ज़ैल में उन बेटों के नाम हैं जो अपने बाप याकूब और अपने खानदानों समेत मिसर में आए थे : ² रूबिन, शमौन, लावी, यहदाह, ³ इशकार, ज़बलून, बिनयमीन, ⁴ दान, नफ़ताली, ज़द और आशर। ⁵ उस वक़्त याकूब की औलाद की तादाद 70 थी। यूसुफ़ तो पहले ही मिसर आ चुका था।

⁶ मिसर में रहते हुए बहुत दिन गुज़र गए। इतने में यूसुफ़, उसके तमाम भाई और उस नसल के तमाम लोग मर गए। ⁷ इसराईली फले-फूले और तादाद में बहुत बढ़ गए। नतीजे में वह निहायत ही ताक़तवर हो गए। पूरा मुल्क उनसे भर गया।

इसराईलियों को दबाया जाता है

⁸ होते होते एक नया बादशाह तख़्तनशीन हुआ जो यूसुफ़ से नावाकिफ़ था। ⁹ उसने अपने लोगों से कहा, “इसराईलियों को देखो। वह तादाद और ताक़त में हमसे बढ़ गए हैं। ¹⁰ आओ, हम हिकमत से काम लें, वरना वह मज़ीद बढ़ जाएंगे। ऐसा न हो कि वह किसी जंग के मौक़े पर दुश्मन का साथ देकर हमसे लड़ें और मुल्क को छोड़ जाएँ।”

¹¹ चुनाँचे मिसरियों ने इसराईलियों पर निगरान मुकर्रर किए ताकि बेगार में उनसे काम करवाकर उन्हें दबाते रहें। उस वक़्त उन्होंने पितोम और रामसीस के शहर तामीर किए। इन शहरों में फिरौन बादशाह के बड़े बड़े गोदाम थे। ¹² लेकिन जितना इसराईलियों को दबाया गया उतना ही वह तादाद में बढ़ते और फैलते गए। आखिरकार मिसरी उनसे दहशत खाने लगे, ¹³ और वह बड़ी बेरहमी से उनसे काम करवाते रहे। ¹⁴ इसराईलियों का गुज़ारा निहायत मुश्किल हो गया। उन्हें गारा तैयार करके ईंट बनाना और खेतों में मुख़्तलिफ़ किस्म के काम करना पड़े। इसमें मिसरी उनसे बड़ी बेरहमी से पेश आते रहे।

दाइयाँ अल्लाह की राह पर चलती हैं

¹⁵ इसराईलियों की दो दाइयाँ थीं जिनके नाम सिफ़रा और फ़ुआ थे। मिसर के बादशाह ने उनसे कहा, ¹⁶ “जब इबरानी औरतें तुम्हें मदद के लिए बुलाएँ तो खबरदार रहो। अगर लड़का पैदा हो तो उसे जान से मार दो, अगर लड़की हो तो उसे जीता छोड़ दो।” ¹⁷ लेकिन दाइयाँ अल्लाह का ख़ौफ़ मानती थीं। उन्होंने मिसर के बादशाह का हुक्म न माना बल्कि लड़कों को भी जीने दिया।

¹⁸ तब मिसर के बादशाह ने उन्हें दुबारा बुलाकर पूछा, “तुमने यह क्यों किया? तुम लड़कों को क्यों जीता छोड़ देती हो?” ¹⁹ उन्होंने जवाब दिया, “इबरानी औरतें मिसरी औरतों से ज़्यादा मज़बूत हैं। बच्चे हमारे पहुँचने से पहले ही पैदा हो जाते हैं।”

²⁰ चुनाँचे अल्लाह ने दाइयाँ को बरकत दी, और इसराईली क़ौम तादाद में बढ़कर बहुत ताक़तवर हो गई। ²¹ और चूँकि दाइयाँ अल्लाह का ख़ौफ़ मानती थीं इसलिए उसने उन्हें औलाद देकर उनके खानदानों को कायम रखा।

²² आखिरकार बादशाह ने अपने तमाम हमवतनों से बात की, “जब भी इबरानियों के लड़के पैदा हों तो उन्हें दरियाए-नील में फेंक देना। सिर्फ़ लड़कियों को ज़िंदा रहने दो।”

2

मूसा की पैदाइश और बचाव

¹ उन दिनों में लावी के एक आदमी ने अपने ही क़बीले की एक औरत से शादी की। ² औरत हामिला हुई और बच्चा पैदा हुआ। माँ ने देखा कि लड़का ख़बसूरत है, इसलिए उसने उसे तीन माह तक छुपाए रखा। ³ जब वह उसे और ज़्यादा न छुपा सकी तो उसने आबी नरसल से टोकरी बनाकर उस पर तारकोल चढ़ाया। फिर उसने बच्चे को टोकरी में रखकर टोकरी को दरियाए-नील के किनारे पर उगे हुए सरकंडों में रख दिया। ⁴ बच्चे की बहन कुछ फ़ासले पर खड़ी देखती रही कि उसका क्या बनेगा।

⁵ उस वक़्त फिरौन की बेटी नहाने के लिए दरिया पर आई। उस की नौकरानियाँ दरिया के किनारे टहलने लगीं। तब उसने सरकंडों में टोकरी देखी और अपनी लौंडी को उसे लाने भेजा। ⁶ उसे खोला तो छोटा लड़का दिखाई दिया जो रो रहा था। फिरौन की बेटी को उस पर तरस आया। उसने कहा, “यह कोई इबरानी बच्चा है।”

⁷ अब बच्चे की बहन फिरौन की बेटी के पास गई और पूछा, “क्या मैं बच्चे को दूध पिलाने के लिए कोई इबरानी औरत ढूँड लाऊँ?” ⁸ फिरौन की बेटी ने कहा, “हाँ, जाओ।” लड़की चली गई और बच्चे की सगी माँ को लेकर वापस आई। ⁹ फिरौन की बेटी ने माँ से कहा, “बच्चे को ले जाओ और उसे मेरे लिए दूध पिलाया करो। मैं तुम्हें इसका मुआवज़ा दूँगी।” चुनाँचे बच्चे की माँ ने उसे दूध पिलाने के लिए ले लिया।

¹⁰ जब बच्चा बड़ा हुआ तो उस की माँ उसे फिरौन की बेटी के पास ले गई, और वह उसका बेटा बन गया। फिरौन की बेटी ने उसका नाम मूसा यानी ‘निकाला गया’ रखकर कहा, “मैं उसे पानी से निकाल लाई हूँ।”

मूसा फरार होता है

11 जब मूसा जवान हुआ तो एक दिन वह घर से निकलकर अपने लोगों के पास गया जो जबरी काम में मसरूफ थे। मूसा ने देखा कि एक मिसरी मेरे एक इबरानी भाई को मार रहा है। 12 मूसा ने चारों तरफ नज़र दौड़ाई। जब मालूम हुआ कि कोई नहीं देख रहा तो उसने मिसरी को जान से मार दिया और उसे रेत में छुपा दिया।

13 अगले दिन भी मूसा घर से निकला। इस दफा दो इबरानी मर्द आपस में लड़ रहे थे। जो गलती पर था उससे मूसा ने पूछा, “तुम अपने भाई को क्यों मार रहे हो?” 14 आदमी ने जवाब दिया, “किसने आपको हम पर हुक्मरान और काज़ी मुकर्रर किया है? क्या आप मुझे भी कत्ल करना चाहते हैं जिस तरह मिसरी को मार डाला था?” तब मूसा डर गया। उसने सोचा, “हाय, मेरा भेद खुल गया है!”

15 बादशाह को भी पता लगा तो उसने मूसा को मरवाने की कोशिश की। लेकिन मूसा मिदियान के मुल्क को भाग गया। वहाँ वह एक कुएँ के पास बैठ गया। 16 मिदियान में एक इमाम था जिसकी सात बेटियाँ थीं। यह लड़कियाँ अपनी भेड़-बकरियों को पानी पिलाने के लिए कुएँ पर आई और पानी निकालकर हौज़ भरने लगीं। 17 लेकिन कुछ चरवाहों ने आकर उन्हें भगा दिया। यह देखकर मूसा उठा और लड़कियों को चरवाहों से बचाकर उनके रेवड़ को पानी पिलाया।

18 जब लड़कियाँ अपने बाप रऊएल के पास वापस आई तो बाप ने पूछा, “आज तुम इतनी जल्दी से क्यों वापस आ गई हो?” 19 लड़कियों ने जवाब दिया, “एक मिसरी आदमी ने हमें चरवाहों से बचाया। न सिर्फ़ यह बल्कि उसने हमारे लिए पानी भी निकालकर रेवड़ को पिला दिया।” 20 रऊएल ने कहा, “वह आदमी कहाँ है? तुम उसे क्यों छोड़कर आई हो? उसे बुलाओ ताकि वह हमारे साथ खाना खाए।”

21 मूसा रऊएल के घर में ठहरने के लिए राजी हो गया। बाद में उस की शादी रऊएल की बेटी सफ़फ़रा से हुई। 22 सफ़फ़रा के बेटा पैदा हुआ तो मूसा ने कहा, “इसका नाम जैरसोम यानी ‘अजनबी मुल्क में परदेसी’ हो, क्योंकि मैं अजनबी मुल्क में परदेसी हूँ।”

23 काफ़ी अरसा गुज़र गया। इतने में मिसर का बादशाह इतकाल कर गया। इसराइली अपनी गुलामी तले कराहते और मदद के लिए पुकारते रहे, और उनकी चीखें अल्लाह तक पहुँच गईं। 24 अल्लाह ने उनकी आहें सुनीं और उस अहद को याद किया जो उसने इब्राहीम, इसहाक और याकूब से बाँधा था। 25 अल्लाह इसराइलियों की हालत देखकर उनका खयाल करने लगा।

3

जलती हुई झाड़ी

1 मूसा अपने सुसर यितरो की भेड़-बकरियों की निगहबानी करता था (मिदियान का इमाम रऊएल यितरो भी कहलाता था)। एक दिन मूसा रेवड़ को रेगिस्तान की परली जानिब ले गया और चलते चलते अल्लाह के पहाड़ होरिब यानी सीना तक पहुँच गया। 2 वहाँ रब का फ़रिशता आग के शोले में उस पर जाहिर हुआ। यह शोला एक झाड़ी में भड़क रहा था। मूसा ने देखा कि झाड़ी जल रही है लेकिन भस्म नहीं हो रही। 3 मूसा ने सोचा, “यह तो अजीब बात है। क्या वजह है कि जलती हुई झाड़ी भस्म नहीं हो रही? मैं ज़रा वहाँ जाकर यह हैरतअंगेज़ मंज़र देखूँ।”

4 जब रब ने देखा कि मूसा झाड़ी को देखने आ रहा है तो उसने उसे झाड़ी में से पुकारा, “मूसा, मूसा!” मूसा ने कहा, “जी, मैं हाज़िर हूँ।”

5 रब ने कहा, “इससे ज़्यादा करीब न आना। अपनी जूतियाँ उतार, क्योंकि तू मुक़द्दस ज़मीन पर खड़ा है। 6 मैं तेरे बाप का खुदा, इब्राहीम का खुदा, इसहाक का खुदा और याकूब का खुदा हूँ।” यह सुनकर मूसा ने अपना मुँह ढाँक लिया, क्योंकि वह अल्लाह को देखने से डरा।

7 रब ने कहा, “मैंने मिसर में अपनी क़ौम की बुरी हालत देखी और गुलामी में उनकी चीखें सुनी हैं, और मैं उनके दुखों को खूब जानता हूँ। 8 अब मैं उन्हें मिसरियों के काबू से बचाने के लिए उतर आया हूँ। मैं उन्हें मिसर से निकालकर एक अच्छे वसी मुल्क में ले जाऊँगा, एक ऐसे मुल्क में जहाँ दूध और शहद की कसरत है, गो इस वक़्त कनानी, हिती, अमोरी, फ़रिज़्जी, हिब्वी और यबूसी उसमें रहते हैं। 9 इसराइलियों की चीखें मुझ तक पहुँची हैं। मैंने देखा है कि मिसरी उन पर किस तरह का जुल्म ढा रहे हैं। 10 चुनौचे अब जा। मैं तुझे फ़िरौन के पास भेजता हूँ, क्योंकि तुझे मेरी क़ौम इसराइल को मिसर से निकालकर लाना है।”

11 लेकिन मूसा ने अल्लाह से कहा, “मैं कौन हूँ कि फ़िरौन के पास जाकर इसराइलियों को मिसर से निकाल लाऊँ?” 12 अल्लाह ने कहा, “मैं तो तेरे साथ हूँगा। और इसका सबूत कि मैं तुझे भेज रहा हूँ यह होगा कि लोगों के मिसर से निकलने के बाद तुम यहाँ आकर इस पहाड़ पर मेरी इबादत करोगे।”

13 लेकिन मूसा ने एतराज़ किया, “अगर मैं इसराइलियों के पास जाकर उन्हें बताऊँ कि तुम्हारे बापदादा के खुदा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है तो वह पछेंगे, ‘उसका नाम क्या है?’ फिर मैं उनको क्या जवाब दूँ?”

14 अल्लाह ने कहा, “मैं जो हूँ सो मैं हूँ। उनसे कहना, ‘मैं हूँ ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। 15 रब जो तुम्हारे बापदादा का खुदा, इब्राहीम का खुदा, इसहाक का खुदा और याकूब का खुदा है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।’ यह अबद तक मेरा नाम रहेगा। लोग यही नाम लेकर मुझे नसल-दर-नसल याद करेंगे।

16 अब जा और इसराइल के बुजुर्गों को जमा करके उनको बता दे कि रब तुम्हारे बापदादा इब्राहीम, इसहाक और याकूब का खुदा मुझ पर जाहिर हुआ है। वह फ़रमाता है, ‘मैंने खूब देख लिया है कि मिसर में तुम्हारे साथ क्या सुलूक हो रहा है। 17 इसलिए मैंने फैसला किया है कि तुम्हें मिसर की मुसीबत से निकालकर कनानियों, हितियों, अमोरियों, फ़रिज़्जियों, हिब्वियों और यबूसियों के मुल्क में ले जाऊँ, ऐसे मुल्क

में जहाँ दूध और शहद की कसरत है।' 18 बुजुर्ग तेरी सुनेंगे। फिर उनके साथ मिसर के बादशाह के पास जाकर उससे कहना, 'रब इबरानियों का खुदा हम पर ज़ाहिर हुआ है। इसलिए हमें इजाज़त दें कि हम तीन दिन का सफ़र करके रेगिस्तान में रब अपने खुदा के लिए कुरबानियाँ चढ़ाएँ।'

19 लेकिन मुझे मालूम है कि मिसर का बादशाह सिर्फ़ इस सूत में तुम्हें जाने देगा कि कोई ज़बरदस्ती तुम्हें ले जाए। 20 इसलिए मैं अपनी कुदरत ज़ाहिर करके अपने मोजिज़ों की मारिफ़त मिसरियों को मारूँगा। फिर वह तुम्हें जाने देगा। 21 उस वक़्त मैं मिसरियों के दिलों को तुम्हारे लिए नरम कर दूँगा। तुम्हें खाली हाथ नहीं जाना पड़ेगा। 22 तमाम इबरानी औरतें अपनी मिसरी पड़ोसनों और अपने घर में रहनेवाली मिसरी औरतों से चाँदी और सोने के ज़ेवरात और नफ़ीस कपड़े मॉगकर अपने बच्चों को पहनाएँगी। यों मिसरियों को लूट लिया जाएगा।"

4

1 मूसा ने एतराज़ किया, "लेकिन इसराईली न मेरी बात का यकीन करेंगे, न मेरी सुनेंगे। वह तो कहेंगे, 'रब तुम पर ज़ाहिर नहीं हुआ'।" 2 जवाब में रब ने मूसा से कहा, "तूने हाथ में क्या पकड़ा हुआ है?" मूसा ने कहा, "लाठी।" 3 रब ने कहा, "उसे ज़मीन पर डाल दे।" मूसा ने ऐसा किया तो लाठी साँप बन गई, और मूसा डरकर भागा। 4 रब ने कहा, "अब साँप की दुम को पकड़ ले।" मूसा ने ऐसा किया तो साँप फिर लाठी बन गया।

5 रब ने कहा, "यह देखकर लोगों को यकीन आएगा कि रब जो उनके बापदादा का खुदा, इब्राहीम का खुदा, इसहाक का खुदा और याकूब का खुदा है तुझ पर ज़ाहिर हुआ है। 6 अब अपना हाथ अपने लिबास में डाल दे।" मूसा ने ऐसा किया। जब उसने अपना हाथ निकाला तो वह बर्फ़ की मानिंद सफ़ेद हो गया था। कोढ़ जैसी बीमारी लग गई थी। 7 तब रब ने कहा, "अब अपना हाथ दुबारा अपने लिबास में डाल।" मूसा ने ऐसा किया। जब उसने अपना हाथ दुबारा निकाला तो वह फिर सेहतमंद था।

8 रब ने कहा, "अगर लोगों को पहला मोजिज़ा देखकर यकीन न आए और वह तेरी न सुनें तो शायद उन्हें दूसरा मोजिज़ा देखकर यकीन आए। 9 अगर उन्हें फिर भी यकीन न आए और वह तेरी न सुनें तो दरियाए-नील से कुछ पानी निकालकर उसे ख़ुशक ज़मीन पर उंडेल दे। यह पानी ज़मीन पर गिरते ही खून बन जाएगा।"

10 लेकिन मूसा ने कहा, "मेरे आका, मैं माज़रत चाहता हूँ, मैं अच्छी तरह बात नहीं कर सकता बल्कि मैं कभी भी यह लियाक़त नहीं रखता था। इस वक़्त भी जब मैं तुझसे बात कर रहा हूँ मेरी यही हालत है। मैं स्क़ स्क़कर बोलता हूँ।" 11 रब ने कहा, "किसने इनसान का मुँह बनाया? कौन एक को गूँगा और दूसरे को बहरा बना देता है? कौन एक को देखने की काबिलियत देता है और दूसरे को इससे महसूस रखता है? क्या मैं जो रब हूँ यह सब कुछ नहीं करता? 12 अब जा! तेरे बोलते वक़्त मैं खुद तेरे साथ हूँगा और तुझे वह कुछ सिखाऊँगा जो तुझे कहना है।"

13 लेकिन मूसा ने इल्तिजा की, "मेरे आका, मेहरबानी करके किसी और को भेज दे।"

14 तब रब मूसा से सख़्त खफ़ा हुआ। उसने कहा, "क्या तेरा लावी भाई हासून ऐसे काम के लिए हाज़िर नहीं है? मैं जानता हूँ कि वह अच्छी तरह बोल सकता है। देख, वह तुझसे मिलने के लिए निकल चुका है। तुझे देखकर वह निहायत ख़ुश होगा। 15 उसे वह कुछ बता जो उसे कहना है। तुम्हारे बोलते वक़्त मैं तेरे और उसके साथ हूँगा और तुम्हें वह कुछ सिखाऊँगा जो तुम्हें करना होगा। 16 हासून तेरी जगह क्रौम से बात करेगा जबकि तू मेरी तरह उसे वह कुछ बताएगा जो उसे कहना है। 17 लेकिन यह लाठी भी साथ ले जाना, क्योंकि इसी के ज़रीए तू यह मोजिज़े करेगा।"

मूसा मिसर को लौट जाता है

18 फिर मूसा अपने सुसर यितरो के घर वापस चला गया। उसने कहा, "मुझे ज़रा अपने अज़ीज़ों के पास वापस जाने दें जो मिसर में हैं। मैं मालूम करना चाहता हूँ कि वह अभी तक ज़िंदा हैं कि नहीं।" यितरो ने जवाब दिया, "ठीक है, सलामती से जाएँ।" 19 मूसा अभी मिदियान में था कि रब ने उससे कहा, "मिसर को वापस चला जा, क्योंकि जो आदमी तुझे क़त्ल करना चाहते थे वह मर गए हैं।" 20 चुनौचे मूसा अपनी बीवी और बेटों को गधे पर सवार करके मिसर को लौटने लगा। अल्लाह की लाठी उसके हाथ में थी।

21 रब ने उससे यह भी कहा, "मिसर जाकर फिरौन के सामने वह तमाम मोजिज़े दिखा जिनका मैंने तुझे इख़्तियार दिया है। लेकिन मेरे कहने पर वह अड़ा रहेगा। वह इसराईलियों को जाने की इजाज़त नहीं देगा। 22 उस वक़्त फिरौन को बता देना, 'रब फ़रमाता है कि इसराईल मेरा पहलौठा है। 23 मैं तुझे बता चुका हूँ कि मेरे बेटे को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत करे। अगर तू मेरे बेटे को जाने से मना करे तो मैं तेरे पहलौठे को जान से मार दूँगा'।"

24 एक दिन जब मूसा अपने खानदान के साथ रास्ते में किसी सराय में ठहरा हुआ था तो रब ने उस पर हमला करके उसे मार देने की कोशिश की। 25 यह देखकर सफ़फ़ूरा ने एक तेज़ पत्थर से अपने बेटे का खतना किया और काटे हुए हिस्से से मूसा के पैर छुए। उसने कहा, "यकीनन तू मेरे ख़ूनी दूल्हा हो।" 26 तब अल्लाह ने मूसा को छोड़ दिया। सफ़फ़ूरा ने उसे खतने के बाइस ही 'ख़ूनी दूल्हा' कहा था।

27 रब ने हासून से भी बात की, 'रेगिस्तान में मूसा से मिलने जा।' हासून चल पड़ा और अल्लाह के पहाड़ के पास मूसा से मिला। उसने उसे बोसा दिया। 28 मूसा ने हासून को सब कुछ सुना दिया जो रब ने उसे कहने के लिए भेजा था। उसने उसे उन मोजिज़ों के बारे में भी बताया जो उसे दिखाने थे।

29 फिर दोनों मिलकर मिसर गए। वहाँ पहुँचकर उन्होंने इसराइल के तमाम बुजुर्गों को जमा किया। 30 हासून ने उन्हें वह तमाम बातें सुनाई जो रब ने मूसा को बताई थीं। उसने मज़कूरा मोजिज़े भी लोगों के सामने दिखाए। 31 फिर उन्हें यक्कीन आया। और जब उन्होंने सुना कि रब को तुम्हारा खयाल है और वह तुम्हारी मुसीबत से आगाह है तो उन्होंने रब को सिजदा किया।

5

मूसा और हासून फिरौन के दरबार में

1 फिर मूसा और हासून फिरौन के पास गए। उन्होंने कहा, “रब इसराइल का खुदा फ़रमाता है, ‘मेरी कौम को रेगिस्तान में जाने दे ताकि वह मेरे लिए ईद मनाएँ।’” 2 फिरौन ने जवाब दिया, “यह रब कौन है? मैं क्यों उसका हुक्म मानकर इसराइलियों को जाने दूँ? न मैं रब को जानता हूँ, न इसराइलियों को जाने दूँगा।”

3 हासून और मूसा ने कहा, “इब्रानियों का खुदा हम पर ज़ाहिर हुआ है। इसलिए मेहरबानी करके हमें इजाज़त दें कि रेगिस्तान में तीन दिन का सफ़र करके रब अपने खुदा के हज़ूर क़ुरबानियाँ पेश करें। कहीं वह हमें किसी बीमारी या तलवार से न मारे।”

4 लेकिन मिसर के बादशाह ने इनकार किया, “मूसा और हासून, तुम लोगों को काम से क्यों रोक रहे हो? जाओ, जो काम हमने तुमको दिया है उस पर लग जाओ! 5 इसराइली वैसे भी तादाद में बहुत बढ़ गए हैं, और तुम उन्हें काम करने से रोक रहे हो।”

जवाब में फिरौन का सख़्त दबाव

6 उसी दिन फिरौन ने मिसरी निगरानों और उनके तहत के इसराइली निगरानों को हुक्म दिया, 7 “अब से इसराइलियों को ईंट बनाने के लिए भूसा मत देना, बल्कि वह खुद जाकर भूसा जमा करें। 8 तो भी वह उतनी ही ईंट बनाएँ जितनी पहले बनाते थे। वह सुस्त हो गए हैं और इसी लिए चीख रहे हैं कि हमें जाने दें ताकि अपने खुदा को क़ुरबानियाँ पेश करें। 9 उनसे और ज़्यादा सख़्त काम कराओ, उन्हें काम में लगाए रखो। उनके पास इतना वक़्त ही न हो कि वह झूटी बातों पर ध्यान दें।”

10 मिसरी निगरान और उनके तहत के इसराइली निगरानों ने लोगों के पास जाकर उनसे कहा, “फिरौन का हुक्म है कि तुम्हें भूसा न दिया जाए। 11 इसलिए खुद जाओ और भूसा ढूँडकर जमा करो। लेकिन ख़बरदार! उतनी ही ईंट बनाओ जितनी पहले बनाते थे।”

12 यह सुनकर इसराइली भूसा जमा करने के लिए पूरे मुल्क में फैल गए। 13 मिसरी निगरान यह कहकर उन पर दबाव डालते रहे कि उतनी ईंट बनाओ जितनी पहले बनाते थे। 14 जो इसराइली निगरान उन्होंने मुक़र्र किए थे उन्हें वह पीटते और कहते रहे, “तुमने कल और आज उतनी ईंट क्यों नहीं बनवाई जितनी पहले बनवाते थे?”

15 फिर इसराइली निगरान फिरौन के पास गए। उन्होंने शिकायत करके कहा, “आप अपने ख़ादिमों के साथ ऐसा सुलूक क्यों कर रहे हैं? 16 हमें भूसा नहीं दिया जा रहा और साथ साथ यह कहा गया है कि उतनी ईंट बनाओ जितनी पहले बनाते थे। नतीजे में हमें मारा पीटा भी जा रहा है हालाँकि ऐसा करने में आपके अपने लोग ग़लती पर हैं।”

17 फिरौन ने जवाब दिया, “तुम लोग सुस्त हो, तुम काम करना नहीं चाहते। इसलिए तुम यह जगह छोड़ना और रब को क़ुरबानियाँ पेश करना चाहते हो। 18 अब जाओ, काम करो। तुम्हें भूसा नहीं दिया जाएगा, लेकिन ख़बरदार! उतनी ही ईंट बनाओ जितनी पहले बनाते थे।”

19 जब इसराइली निगरानों को बताया गया कि ईंटों की मतलूबा तादाद कम न करो तो वह समझ गए कि हम फँस गए हैं। 20 फिरौन के महल से निकलकर उनकी मुलाक़ात मूसा और हासून से हुई जो उनके इंतज़ार में थे। 21 उन्होंने मूसा और हासून से कहा, “रब खुद आपकी अदालत करे। क्योंकि आपके सबब से फिरौन और उसके मुलाज़िमों को हमसे धिन आती है। आपने उन्हें हमें मार देने का मौका दे दिया है।”

मूसा की शिकायत और रब का जवाब

22 यह सुनकर मूसा रब के पास वापस आया और कहा, “ऐ आका, तूने इस कौम से ऐसा बुरा सुलूक क्यों किया? क्या तूने इसी मक़सद से मुझे यहाँ भेजा है? 23 जब से मैंने फिरौन के पास जाकर उसे तेरी मरज़ी बताई है वह इसराइली कौम से बुरा सुलूक कर रहा है। और तूने अब तक उन्हें बचाने का कोई क़दम नहीं उठाया।”

6

1 रब ने जवाब दिया, “अब तू देखेगा कि मैं फिरौन के साथ क्या कुछ करता हूँ। मेरी अज़ीम कुदरत का तज़रबा करके वह मेरे लोगों को जाने देगा बल्कि उन्हें जाने पर मजबूर करेगा।”

2 अल्लाह ने मूसा से यह भी कहा, “मैं रब हूँ। 3 मैं इब्राहीम, इसहाक और याक़ूब पर ज़ाहिर हुआ। वह मेरे नाम अल्लाह कादिरे-मुतलक * से वाकिफ़ हुए, लेकिन मैंने उन पर अपने नाम रब † का इनकिशाफ़ नहीं किया। 4 मैंने उनसे अहद करके वादा किया कि उन्हें मुल्के-कनान दूँगा जिसमें वह अजनबी के तौर पर रहते थे। 5 अब मैंने सुना है कि इसराइली किस तरह मिसरियों की गुलामी में कराह रहे हैं, और मैंने अपना अहद याद किया है। 6 चुनाँचे इसराइलियों को बताना, ‘मैं रब हूँ। मैं तुम्हें मिसरियों के जुए से आज़ाद करूँगा और उनकी गुलामी से बचाऊँगा। मैं बड़ी कुदरत के साथ तुम्हें छुड़ाऊँगा और उनकी अदालत करूँगा। 7 मैं तुम्हें अपनी कौम बनाऊँगा और तुम्हारा खुदा हूँगा। तब तुम जान लोगे

* 6:3 इब्रानी में एल-शदई। † 6:3 इब्रानी में यहवे।

कि मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ जिसने तुम्हें मिसरियों के जुए से आजाद कर दिया है। 8 मैं तुम्हें उस मुल्क में ले जाऊँगा जिसका वादा मैंने कसम खाकर इब्राहीम, इसहाक और याकूब से किया है। वह मुल्क तुम्हारी अपनी मिलकियत होगा। मैं रब हूँ।”

9 मूसा ने यह सब कुछ इसराईलियों को बता दिया, लेकिन उन्होंने उस की बात न मानी, क्योंकि वह सख्त काम के बाइस हिम्मत हार गए थे। 10 तब रब ने मूसा से कहा, 11 “जा, मिसर के बादशाह फ़िरौन को बता देना कि इसराईलियों को अपने मुल्क से जाने दे।” 12 लेकिन मूसा ने एतराज़ किया, “इसराईली मेरी बात सुनना नहीं चाहते तो फ़िरौन क्यों मेरी बात माने जबकि मैं स्क स्ककर बोलता हूँ?”

13 लेकिन रब ने मूसा और हारून को हुक्म दिया, “इसराईलियों और मिसर के बादशाह फ़िरौन से बात करके इसराईलियों को मिसर से निकालो।”

मूसा और हारून के आबा-ओ-अजदाद

14 इसराईल के आबाई घरानों के सरबराह यह थे : इसराईल के पहलौठे रूबिन के चार बेटे हनूक, फ़ल्लू, हसरोन और करमी थे। इनसे रूबिन की चार शाखें निकलीं।

15 शमौन के पाँच बेटे यमुएल, यमीन, उहद, यकीन, सुहर और साऊल थे। (साऊल कनानी औरत का बच्चा था)। इनसे शमौन की पाँच शाखें निकलीं।

16 लावी के तीन बेटे जैरसोन, किहात और मिरारी थे। (लावी 137 साल की उम्र में फ़ौत हुआ)।

17 जैरसोन के दो बेटे लिबनी और सिमई थे। इनसे जैरसोन की दो शाखें निकलीं। 18 किहात के चार बेटे अमराम, इज़हार, हबरून और उज़्जियेल थे। (किहात 133 साल की उम्र में फ़ौत हुआ)। 19 मिरारी के दो बेटे महली और मूशी थे। इन सबसे लावी की मुख्तलिफ़ शाखें निकलीं।

20 अमराम ने अपनी फूफी यूकबिद से शादी की। उनके दो बेटे हारून और मूसा पैदा हुए। (अमराम 137 साल की उम्र में फ़ौत हुआ)।

21 इज़हार के तीन बेटे कोरह, नफ़ज और ज़िकरी थे। 22 उज़्जियेल के तीन बेटे मीसाएल, इल्सफ़न और सितरी थे।

23 हारून ने इलीसिबा से शादी की। (इलीसिबा अम्मीनदाब की बेटी और नहसोन की बहन थी)। उनके चार बेटे नदब, अबीह, इलियज़र और इतमर थे। 24 कोरह के तीन बेटे अस्सीर, इलक़ाना और अबियासफ़ थे। उनसे कोरहियों की तीन शाखें निकलीं। 25 हारून के बेटे इलियज़र ने फ़ूतियेल की एक बेटी से शादी की। उनका एक बेटा फ़ीनहास था।

यह सब लावी के आबाई घरानों के सरबराह थे।

26 रब ने अमराम के दो बेटों हारून और मूसा को हुक्म दिया कि मेरी क़ौम को उसके खानदानों की तरतीब के मुताबिक़ मिसर से निकालो।

27 इन्हीं दो आदमियों ने मिसर के बादशाह फ़िरौन से बात की कि इसराईलियों को मिसर से जाने दे।

रब दुबारा मूसा से हमकलाम होता है

28 मिसर में रब ने मूसा से कहा, 29 “मैं रब हूँ। मिसर के बादशाह को वह सब कुछ बता देना जो मैं तुझे बताता हूँ।” 30 मूसा ने एतराज़ किया, “मैं तो स्क स्ककर बोलता हूँ। फ़िरौन किस तरह मेरी बात मानेगा?”

7

1 लेकिन रब ने कहा, “देख, मेरे कहने पर तू फ़िरौन के लिए अल्लाह की हैसियत रखेगा और तेरा भाई हारून तेरा पैग़ंबर होगा। 2 जो भी हुक्म मैं तुझे दूँगा उसे तू हारून को बता दे। फिर वह सब कुछ फ़िरौन को बताए ताकि वह इसराईलियों को अपने मुल्क से जाने दे। 3 लेकिन मैं फ़िरौन को अड़ जाने दूँगा। अगरचे मैं मिसर में बहुत-से निशानों और मोजिज़ों से अपनी कुदरत का मुज़ाहरा करूँगा 4 तो भी फ़िरौन तुम्हारी नहीं सुनेगा। तब मिसरियों पर मेरा हाथ भारी हो जाएगा, और मैं उनको सख्त सज़ा देकर अपनी क़ौम इसराईल को खानदानों की तरतीब के मुताबिक़ मिसर से निकाल लाऊँगा। 5 जब मैं मिसर के खिलाफ़ अपनी कुदरत का इज़हार करके इसराईलियों को वहाँ से निकालूँगा तो मिसरी जान लेंगे कि मैं रब हूँ।”

6 मूसा और हारून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने उन्हें हुक्म दिया। 7 फ़िरौन से बात करते वक़्त मूसा 80 साल का और हारून 83 साल का था।

मूसा की लाठी साँप बन जाती है

8 रब ने मूसा और हारून से कहा, 9 “जब फ़िरौन तुम्हें मोजिज़ा दिखाने को कहेगा तो मूसा हारून से कहे कि अपनी लाठी ज़मीन पर डाल दे। इस पर वह साँप बन जाएगी।”

10 मूसा और हारून ने फ़िरौन के पास जाकर ऐसा ही किया। हारून ने अपनी लाठी फ़िरौन और उसके ओहदेदारों के सामने डाल दी तो वह साँप बन गई। 11 यह देखकर फ़िरौन ने अपने आलिमों और जादूगरों को बुलाया। जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा ही किया। 12 हर एक ने अपनी लाठी ज़मीन पर फेंकी तो वह साँप बन गई। लेकिन हारून की लाठी ने उनकी लाठियों को निगल लिया।

13 ताहम फ़िरौन इससे मुतअस्सिर न हुआ। उसने मूसा और हारून की बात सुनने से इनकार किया। वैसा ही हुआ जैसा रब ने कहा था।

पानी खून में बदल जाता है

14 फिर रब ने मूसा से कहा, “फिरौन अड़ गया है। वह मेरी क्रौम को मिसर छोड़ने से रोकता है। 15 कल सुबह-सवेरे जब वह दरियाए-नील पर आया तो उससे मिलने के लिए दरिया के किनारे पर खड़े हो जाना। उस लाठी को थामे रखना जो साँप बन गई थी। 16 जब वह वहाँ पहुँचे तो उससे कहना, ‘रब इब्रानियों के खुदा ने मुझे आपको यह बताने के लिए भेजा है कि मेरी क्रौम को मेरी इबादत करने के लिए रेगिस्तान में जाने दे। लेकिन आपने अभी तक उस की नहीं सुनी। 17 चुनौचे अब आप जान लेंगे कि वह रब है। मैं इस लाठी को जो मेरे हाथ में है लेकर दरियाए-नील के पानी को मारूँगा। फिर वह खून में बदल जाएगा। 18 दरियाए-नील की मछलियाँ मर जाएँगी, दरिया से बद्बू उठेगी और मिसरी दरिया का पानी नहीं पी सकेंगे।’”

19 रब ने मूसा से कहा, “हासून को बता देना कि वह अपनी लाठी लेकर अपना हाथ उन तमाम जगहों की तरफ बढ़ाए जहाँ पानी जमा होता है। तब मिसर की तमाम नदियों, नहरों, जोहड़ों और तालाबों का पानी खून में बदल जाएगा। पूरे मुल्क में खून ही खून होगा, यहाँ तक कि लकड़ी और पत्थर के बरतनों का पानी भी खून में बदल जाएगा।”

20 चुनौचे मूसा और हासून ने फिरौन और उसके ओहदेदारों के सामने अपनी लाठी उठाकर दरियाए-नील के पानी पर मारी। इस पर दरिया का सारा पानी खून में बदल गया। 21 दरिया की मछलियाँ मर गईं, और उससे इतनी बद्बू उठने लगी कि मिसरी उसका पानी न पी सके। मिसर में चारों तरफ खून ही खून था।

22 लेकिन जादूगरों ने भी अपने जादू के ज़रीए ऐसा ही किया। इसलिए फिरौन अड़ गया और मूसा और हासून की बात न मानी। वैसा ही हुआ जैसा रब ने कहा था। 23 फिरौन पलटकर अपने घर वापस चला गया। उसे उस की परवा नहीं थी जो मूसा और हासून ने किया था। 24 लेकिन मिसरी दरिया से पानी न पी सके, और उन्होंने पीने का पानी हासिल करने के लिए दरिया के किनारे किनारे गढ़े खोदे। 25 पानी के बदल जाने के बाद सात दिन गुज़र गए।

8

मैंढक

1 फिर रब ने मूसा से कहा, “फिरौन के पास जाकर उसे बता देना कि रब फ़रमाता है, ‘मेरी क्रौम को मेरी इबादत करने के लिए जाने दे, 2 वरना मैं पूरे मिसर को मैंढकों से सज़ा दूँगा। 3 दरियाए-नील मैंढकों से इतना भर जाएगा कि वह दरिया से निकलकर तेरे महल, तेरे सोने के कमरे और तेरे बिस्तर में जा घुसेंगे। वह तेरे ओहदेदारों और तेरी रिआया के घरों में आएँगे बल्कि तेरे तनूरों और आटा गूँधने के बरतनों में भी फुदकते फिरेंगे। 4 मैंढक तुझ पर, तेरी क्रौम पर और तेरे ओहदेदारों पर चढ़ जाएँगे।’”

5 रब ने मूसा से कहा, “हासून को बता देना कि वह अपनी लाठी को हाथ में लेकर उसे दरियाओं, नहरों और जोहड़ों के ऊपर उठाए ताकि मैंढक बाहर निकलकर मिसर के मुल्क में फैल जाएँ।” 6 हासून ने मुल्के-मिसर के पानी के ऊपर अपनी लाठी उठाई तो मैंढकों के गोल पानी से निकलकर पूरे मुल्क पर छा गए। 7 लेकिन जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा ही किया। वह भी दरिया से मैंढक निकाल लाए।

8 फिरौन ने मूसा और हासून को बुलाकर कहा, “रब से दुआ करो कि वह मुझसे और मेरी क्रौम से मैंढकों को दूर करे। फिर मैं तुम्हारी क्रौम को जाने दूँगा ताकि वह रब को कुरबानियाँ पेश करें।”

9 मूसा ने जवाब दिया, “वह वक्त मुकर्रर करें जब मैं आपके ओहदेदारों और आपकी क्रौम के लिए दुआ करूँ। फिर जो मैंढक आपके पास और आपके घरों में हैं उसी वक्त ख़त्म हो जाएँगे। मैंढक सिर्फ दरिया में पाए जाएँगे।”

10 फिरौन ने कहा, “ठीक है, कल उन्हें ख़त्म करो।” मूसा ने कहा, “जैसा आप कहते हैं वैसा ही होगा। इस तरह आपको मालूम होगा कि हमारे खुदा की मानिंद कोई नहीं है। 11 मैंढक आप, आपके घरों, आपके ओहदेदारों और आपकी क्रौम को छोड़कर सिर्फ दरिया में रह जाएँगे।”

12 मूसा और हासून फिरौन के पास से चले गए, और मूसा ने रब से मिन्नत की कि वह मैंढकों के वह गोल दूर करे जो उसने फिरौन के खिलाफ़ भेजे थे। 13 रब ने उस की दुआ सुनी। घरों, सहनों और खेतों में मैंढक मर गए। 14 लोगों ने उन्हें जमा करके उनके ढेर लगा दिए। उनकी बद्बू पूरे मुल्क में फैल गई।

15 लेकिन जब फिरौन ने देखा कि मसला हल हो गया है तो वह फिर अकड़ गया और उनकी न सुनी। यों रब की बात दुस्त निकली।

जुँ

16 फिर रब ने मूसा से कहा, “हासून से कहना कि वह अपनी लाठी से ज़मीन की गर्द को मारे। जब वह ऐसा करेगा तो पूरे मिसर की गर्द जुओं में बदल जाएगी।”

17 उन्होंने ऐसा ही किया। हासून ने अपनी लाठी से ज़मीन की गर्द को मारा तो पूरे मुल्क की गर्द जुओं में बदल गई। उनके गोल जानवरों और आदमियों पर छा गए। 18 जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा करने की कोशिश की, लेकिन वह गर्द से जुँ न बना सके। जुँ आदमियों और जानवरों पर छा गई। 19 जादूगरों ने फिरौन से कहा, “अल्लाह की कुदरत ने यह किया है।” लेकिन फिरौन ने उनकी न सुनी। यों रब की बात दुस्त निकली।

काटनेवाली मक्खियाँ

20 फिर रब ने मूसा से कहा, “जब फिरौन सुबह-सवेरे दरिया पर जाए तो तू उसके रास्ते में खड़ा हो जाना। उसे कहना कि रब फ़रमाता है, ‘मेरी क़ौम को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत कर सकें।’ 21 वरना मैं तेरे और तेरे ओहदेदारों के पास, तेरी क़ौम के पास और तेरे घरों में काटनेवाली मक्खियाँ भेज दूँगा। मिसरियों के घर मक्खियों से भर जाएंगे बल्कि जिस ज़मीन पर वह खड़े हैं वह भी मक्खियों से ढाँकी जाएगी। 22 लेकिन उस वक़्त मैं अपनी क़ौम के साथ जो जुशन में रहती है फ़रक़ सुलूक करूँगा। वहाँ एक भी काटनेवाली मक्खी नहीं होगी। इस तरह तुझे पता लगेगा कि इस मुल्क में मैं ही रब हूँ। 23 मैं अपनी क़ौम और तेरी क़ौम में इम्तियाज़ करूँगा। कल ही मेरी कुदरत का इज़हार होगा।”

24 रब ने ऐसा ही किया। काटनेवाली मक्खियों के गोल फिरौन के महल, उसके ओहदेदारों के घरों और पूरे मिसर में फैल गए। मुल्क का सत्यानास हो गया।

25 फिर फिरौन ने मूसा और हासून को बुलाकर कहा, “चलो, इसी मुल्क में अपने खुदा को कुरबानियाँ पेश करो।” 26 लेकिन मूसा ने कहा, “यह मुनासिब नहीं है। जो कुरबानियाँ हम रब अपने खुदा को पेश करेंगे वह मिसरियों की नज़र में धिनौनी हैं। अगर हम यहाँ ऐसा करें तो क्या वह हमें संगसार नहीं करेंगे? 27 इसलिए लाज़िम है कि हम तीन दिन का सफ़र करके रेगिस्तान में ही रब अपने खुदा को कुरबानियाँ पेश करें जिस तरह उसने हमें हुक्म भी दिया है।”

28 फिरौन ने जवाब दिया, “ठीक है, मैं तुम्हें जाने दूँगा ताकि तुम रेगिस्तान में रब अपने खुदा को कुरबानियाँ पेश करो। लेकिन तुम्हें ज़्यादा दूर नहीं जाना है। और मेरे लिए भी दुआ करना।”

29 मूसा ने कहा, “ठीक, मैं जाते ही रब से दुआ करूँगा। कल ही मक्खियाँ फिरौन, उसके ओहदेदारों और उस की क़ौम से दूर हो जाएँगी। लेकिन हमें दुबारा फ़रेब न देना बल्कि हमें जाने देना ताकि हम रब को कुरबानियाँ पेश कर सकें।”

30 फिर मूसा फिरौन के पास से चला गया और रब से दुआ की। 31 रब ने मूसा की दुआ सुनी। काटनेवाली मक्खियाँ फिरौन, उसके ओहदेदारों और उस की क़ौम से दूर हो गईं। एक भी मक्खी न रही। 32 लेकिन फिरौन फिर अकड़ गया। उसने इसराइलियों को जाने न दिया।

9

मवेशियों में वबा

1 फिर रब ने मूसा से कहा, “फिरौन के पास जाकर उसे बता कि रब इबरानियों का खुदा फ़रमाता है, ‘मेरी क़ौम को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत कर सकें।’ 2 अगर आप इनकार करें और उन्हें रोकते रहें 3 तो रब अपनी कुदरत का इज़हार करके आपके मवेशियों में भयानक वबा फैला देगा जो आपके घोड़ों, गधों, ऊँटों, गाय-बैलों, भेड़-बकरियों और मेंढों में फैल जाएगी। 4 लेकिन रब इसराइल और मिसर के मवेशियों में इम्तियाज़ करेगा। इसराइलियों का एक भी जानवर नहीं मरेगा। 5 रब ने फ़ैसला कर लिया है कि वह कल ही ऐसा करेगा।”

6 अगले दिन रब ने ऐसा ही किया। मिसर के तमाम मवेशी मर गए, लेकिन इसराइलियों का एक भी जानवर न मरा। 7 फिरौन ने कुछ लोगों को उनके पास भेज दिया तो पता चला कि एक भी जानवर नहीं मरा। ताहम फिरौन अड़ा रहा। उसने इसराइलियों को जाने न दिया।

फोड़े-फुंसियाँ

8 फिर रब ने मूसा और हासून से कहा, “अपनी मुठियाँ किसी भट्टी की राख से भरकर फिरौन के पास जाओ। फिर मूसा फिरौन के सामने यह राख हवा में उड़ा दे। 9 यह राख बारीक धूल का बादल बन जाएगी जो पूरे मुल्क पर छा जाएगी। उसके असर से लोगों और जानवरों के जिस्मों पर फोड़े-फुंसियाँ फूट निकलेंगे।”

10 मूसा और हासून ने ऐसा ही किया। वह किसी भट्टी से राख लेकर फिरौन के सामने खड़े हो गए। मूसा ने राख को हवा में उड़ा दिया तो इनसानों और जानवरों के जिस्मों पर फोड़े-फुंसियाँ निकल आए। 11 इस मरतबा जादूगर मूसा के सामने खड़े भी न हो सके क्योंकि उनके जिस्मों पर भी फोड़े निकल आए थे। तमाम मिसरियों का यही हाल था। 12 लेकिन रब ने फिरौन को ज़िद्दी बनाए रखा, इसलिए उसने मूसा और हासून की न सुनी। यों वैसा ही हुआ जैसा रब ने मूसा को बताया था।

ओले

13 इसके बाद रब ने मूसा से कहा, “सुबह-सवेरे उठ और फिरौन के सामने खड़े होकर उसे बता कि रब इबरानियों का खुदा फ़रमाता है, ‘मेरी क़ौम को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत कर सकें।’ 14 वरना मैं अपनी तमाम आफ़तें तुझ पर, तेरे ओहदेदारों पर और तेरी क़ौम पर आने दूँगा। फिर तू जान लेगा कि तमाम दुनिया में मुझ जैसा कोई नहीं है। 15 अगर मैं चाहता तो अपनी कुदरत से ऐसी वबा फैला सकता कि तुझे और तेरी क़ौम को दुनिया से मिटा दिया जाता। 16 लेकिन मैंने तुझे इसलिए बरपा किया है कि तुझ पर अपनी कुदरत का इज़हार करूँ और यों तमाम दुनिया में मेरे नाम का प्रचार किया जाए। 17 तू अभी तक अपने आपको सरफ़राज़ करके मेरी क़ौम के खिलाफ़ है और उन्हें जाने नहीं देता। 18 इसलिए कल मैं इसी वक़्त भयानक किस्म के ओलों का तूफ़ान भेज दूँगा। मिसरी क़ौम की इब्तिदा से लेकर आज तक मिसर में ओलों का ऐसा तूफ़ान कभी नहीं आया होगा। 19 अपने बंदों को अभी भेजना ताकि वह तेरे मवेशियों को और खेतों में पड़े तेरे माल को लाकर महफूज़ कर लें। क्योंकि जो भी खुले मैदान में रहेगा वह ओलों से मर जाएगा, खाह इनसान हो या हैवान।”

20 फिरौन के कुछ ओहदेदार रब का पैगाम सुनकर डर गए और भागकर अपने जानवरों और गुलामों को घरों में ले आए। 21 लेकिन दूसरों ने रब के पैगाम की परवा न की। उनके जानवर और गुलाम बाहर खुले मैदान में रहे।

22 रब ने मूसा से कहा, “अपना हाथ आसमान की तरफ बढ़ा दे। फिर मिसर के तमाम इनसानों, जानवरों और खेतों के पौदों पर ओले पड़ेंगे।” 23 मूसा ने अपनी लाठी आसमान की तरफ उठाई तो रब ने एक ज़बरदस्त तूफ़ान भेज दिया। ओले पड़े, बिजली गिरी और बादल गरजते रहे। 24 ओले पड़ते रहे और बिजली चमकती रही। मिसरी कौम की इब्तदा से लेकर अब तक ऐसे खतरनाक ओले कभी नहीं पड़े थे। 25 इनसानों से लेकर हैवानों तक खेतों में सब कुछ बरबाद हो गया। ओलों ने खेतों में तमाम पौदे और दरख्त भी तोड़ दिए। 26 वह सिर्फ़ जुशन के इलाक़े में न पड़े जहाँ इसराईली आबाद थे।

27 तब फिरौन ने मूसा और हारून को बुलाया। उसने कहा, “इस मरतबा मैंने गुनाह किया है। रब हक़ पर है। मुझसे और मेरी कौम से गलती हुई है। 28 ओले और अल्लाह की गरजती आवाज़ें हद से ज्यादा हैं। रब से दुआ करो ताकि ओले स्क जाएँ। अब मैं तुम्हें जाने दूँगा। अब से तुम्हें यहाँ रहना नहीं पड़ेगा।”

29 मूसा ने फिरौन से कहा, “मैं शहर से निकलकर दोनों हाथ रब की तरफ़ उठाकर दुआ करूँगा। फिर गरज और ओले स्क जाएँगे और आप जान लेंगे कि पूरी दुनिया रब की है। 30 लेकिन मैं जानता हूँ कि आप और आपके ओहदेदार अभी तक रब खुदा का खौफ़ नहीं मानते।”

31 उस वक़्त सन के फूल निकल चुके थे और जौ की बालें लग गई थीं। इसलिए यह फ़सलें तबाह हो गईं। 32 लेकिन गेहूँ और एक और किस्म की गंदुम जो बाद में पकती है बरबाद न हुई।

33 मूसा फिरौन को छोड़कर शहर से निकला। उसने रब की तरफ़ अपने हाथ उठाए तो गरज, ओले और बारिश का तूफ़ान स्क गया। 34 जब फिरौन ने देखा कि तूफ़ान ख़त्म हो गया है तो वह और उसके ओहदेदार दुबारा गुनाह करके अकड़ गए। 35 फिरौन अड़ा रहा और इसराईलियों को जाने न दिया। वैसा ही हुआ जैसा रब ने मूसा से कहा था।

10

टिड्डियाँ

1 फिर रब ने मूसा से कहा, “फिरौन के पास जा, क्योंकि मैंने उसका और उसके दरबारियों का दिल सख़्त कर दिया है ताकि उनके दरमियान अपने मोजिज़ों और अपनी कुदरत का इज़हार कर सकूँ 2 और तुम अपने बेटे-बेटियों और पोते-पोतियों को सुना सको कि मैंने मिसरियों के साथ क्या सुलूक किया है और उनके दरमियान किस तरह के मोजिज़े करके अपनी कुदरत का इज़हार किया है। यों तुम जान लोगे कि मैं रब हूँ।”

3 मूसा और हारून फिरौन के पास गए। उन्होंने उससे कहा, “रब इबरानियों के खुदा का फ़रमान है, ‘तू कब तक मेरे सामने हथियार डालने से इनकार करेगा? मेरी कौम को मेरी इबादत करने के लिए जाने दे, 4 वरना मैं कल तेरे मुल्क में टिड्डियाँ लाऊँगा। 5 उनके गोल ज़मीन पर यों छा जाएँगे कि ज़मीन नज़र ही नहीं आएगी। जो कुछ ओलों ने तबाह नहीं किया उसे वह चट कर जाएँगी। बचे हुए दरख़्तों के पत्ते भी ख़त्म हो जाएँगे। 6 तेरे महल, तेरे ओहदेदारों और बाकी लोगों के घर उनसे भर जाएँगे। जब से मिसरी इस मुल्क में आबाद हुए हैं तुमने कभी टिड्डियों का ऐसा सख़्त हमला नहीं देखा होगा।’” यह कहकर मूसा पलटकर वहाँ से चला गया।

7 इस पर दरबारियों ने फिरौन से बात की, “हम कब तक इस मर्द के जाल में फँसे रहें? इसराईलियों को रब अपने खुदा की इबादत करने के लिए जाने दें। क्या आपको अभी तक मालूम नहीं कि मिसर बरबाद हो गया है?”

8 तब मूसा और हारून को फिरौन के पास बुलाया गया। उसने उनसे कहा, “जाओ, अपने खुदा की इबादत करो। लेकिन यह बताओ कि कौन कौन साथ जाएगा?” 9 मूसा ने जवाब दिया, “हमारे जवान और बूढ़े साथ जाएँगे। हम अपने बेटे-बेटियों, भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को भी साथ लेकर जाएँगे। हम सबके सब जाएँगे, क्योंकि हमें रब की ईद मनानी है।”

10 फिरौन ने तंज़न कहा, “ठीक है, जाओ और रब तुम्हारे साथ हो। नहीं, मैं किस तरह तुम सबको बाल-बच्चों समेत जाने दे सकता हूँ? तुमने कोई बुरा मनसूबा बनाया है। 11 नहीं, सिर्फ़ मर्द जाकर रब की इबादत कर सकते हैं। तुमने तो यही दरखास्त की थी।” तब मूसा और हारून को फिरौन के सामने से निकाल दिया गया।

12 फिर रब ने मूसा से कहा, “मिसर पर अपना हाथ उठा ताकि टिड्डियाँ आकर मिसर की सरज़मीन पर फैल जाएँ। जो कुछ भी खेतों में ओलों से बच गया है उसे वह खा जाएँगी।”

13 मूसा ने अपनी लाठी मिसर पर उठाई तो रब ने मशरिक से आँधी चलाई जो सारा दिन और सारी रात चलती रही और अगली सुबह तक मिसर में टिड्डियाँ पहुँचाईं। 14 बेशुमार टिड्डियाँ पूरे मुल्क पर हमला करके हर जगह बैठ गईं। इससे पहले या बाद में कभी भी टिड्डियों का इतना सख़्त हमला न हुआ था। 15 उन्होंने ज़मीन को यों ढाँक लिया कि वह काली नज़र आने लगी। जो कुछ भी ओलों से बच गया था चाहे खेतों के पौदे या दरख़्तों के फल थे उन्होंने खा लिया। मिसर में एक भी दरख़्त या पौदा न रहा जिसके पत्ते बच गए हों।

16 तब फिरौन ने मूसा और हारून को जल्दी से बुलवाया। उसने कहा, “मैंने तुम्हारे खुदा का और तुम्हारा गुनाह किया है। 17 अब एक और मरतबा मेरा गुनाह मुआफ़ करो और रब अपने खुदा से दुआ करो ताकि मौत की यह हालत मुझसे दूर हो जाए।”

18 मूसा ने महल से निकलकर रब से दुआ की। 19 जवाब में रब ने हवा का स्रज बदल दिया। उसने मगारिब से तेज़ आँधी चलाई जिसने टिट्टियों को उड़ाकर बहरे-कुलजुम में डाल दिया। मिसर में एक भी टिट्टी न रही। 20 लेकिन रब ने होने दिया कि फिरौन फिर अड़ गया। उसने इसराईलियों को जाने न दिया।

अंधेरा

21 इसके बाद रब ने मूसा से कहा, “अपना हाथ आसमान की तरफ उठा तो मिसर पर अंधेरा छा जाएगा। इतना अंधेरा होगा कि बंदा उसे छू सकेगा।” 22 मूसा ने अपना हाथ आसमान की तरफ उठाया तो तीन दिन तक मिसर पर गहरा अंधेरा छाया रहा। 23 तीन दिन तक लोग न एक दूसरे को देख सके, न कहीं जा सके। लेकिन जहाँ इसराईली रहते थे वहाँ रौशनी थी।

24 तब फिरौन ने मूसा को फिर बुलवाया और कहा, “जाओ, रब की इबादत करो! तुम अपने साथ बाल-बच्चों को भी ले जा सकते हो। सिर्फ अपनी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल पीछे छोड़ देना।” 25 मूसा ने जवाब दिया, “क्या आप ही हमें कुरबानियों के लिए जानवर देगे ताकि उन्हें रब अपने खुदा को पेश करें? 26 यकीनन नहीं। इसलिए लाज़िम है कि हम अपने जानवरों को साथ लेकर जाएँ। एक खुर भी पीछे नहीं छोड़ा जाएगा, क्योंकि अभी तक हमें मालूम नहीं कि रब की इबादत के लिए किन किन जानवरों की ज़रूरत होगी। यह उस वक़्त ही पता चलेगा जब हम मनज़िले-मक़सूद पर पहुँचेंगे। इसलिए ज़रूरी है कि हम सबको अपने साथ लेकर जाएँ।”

27 लेकिन रब की मरज़ी के मुताबिक़ फिरौन अड़ गया। उसने उन्हें जाने न दिया। 28 उसने मूसा से कहा, “दफ़ा हो जा। ख़बरदार! फिर कभी अपनी शक़्ल न दिखाना, वरना तुझे मौत के हवाले कर दिया जाएगा।” 29 मूसा ने कहा, “ठीक है, आपकी मरज़ी। मैं फिर कभी आपके सामने नहीं आऊँगा।”

11

आखिरी सज़ा का एलान

1 तब रब ने मूसा से कहा, “अब मैं फिरौन और मिसर पर आखिरी आफ़त लाने को हूँ। इसके बाद वह तुम्हें जाने देगा बल्कि तुम्हें ज़बरदस्ती निकाल देगा। 2 इसराईलियों को बता देना कि हर मर्द अपने पड़ोसी और हर औरत अपनी पड़ोसन से सोने-चाँदी की चीज़ें माँग ले।” 3 (रब ने मिसरियों के दिल इसराईलियों की तरफ़ मायल कर दिए थे। वह फिरौन के ओहदेदारों समेत खासकर मूसा की बड़ी इज़्ज़त करते थे)।

4 मूसा ने कहा, “रब फ़रमाता है, ‘आज आधी रात के वक़्त मैं मिसर में से गुज़रूँगा। 5 तब बादशाह के पहलौटे से लेकर चक्की पीसनेवाली नौकरानी के पहलौटे तक मिसरियों का हर पहलौटा मर जाएगा। चौपाइयों के पहलौटे भी मर जाएंगे। 6 मिसर की सरज़मीन पर ऐसा रोना पीटना होगा कि न माज़ी में कभी हुआ, न मुस्तक़बिल में कभी होगा। 7 लेकिन इसराईली और उनके जानवर बचे रहेंगे। कुत्ता भी उन पर नहीं भौंकेगा। इस तरह तुम जान लोगे कि रब इसराईलियों की निसबत मिसरियों से फ़रक़ सुलूक करता है।’” 8 मूसा ने यह कुछ फिरौन को बताया फिर कहा, “उस वक़्त आपके तमाम ओहदेदार आकर मेरे सामने झुक जाएंगे और मिन्नत करेंगे, ‘अपने पैरोकारों के साथ चले जाएँ।’ तब मैं चला ही जाऊँगा।” यह कहकर मूसा फिरौन के पास से चला गया। वह बड़े गुस्से में था।

9 रब ने मूसा से कहा था, “फिरौन तुम्हारी नहीं सुनेगा। क्योंकि लाज़िम है कि मैं मिसर में अपनी कुदरत का मज़ीद इज़हार करूँ।” 10 गो मूसा और हारून ने फिरौन के सामने यह तमाम मोजिज़े दिखाए, लेकिन रब ने फिरौन को ज़िद्दी बनाए रखा, इसलिए उसने इसराईलियों को मुल्क छोड़ने न दिया।

12

फ़सह की ईद

1 फिर रब ने मिसर में मूसा और हारून से कहा, 2 “अब से यह महीना तुम्हारे लिए साल का पहला महीना हो।” 3 इसराईल की पूरी जमात को बताना कि इस महीने के दसवें दिन हर खानदान का सरपरस्त अपने घराने के लिए लेला यानी भेड़ या बकरी का बच्चा हासिल करे। 4 अगर घराने के अफ़राद पूरा जानवर खाने के लिए कम हों तो वह अपने सबसे करीबी पड़ोसी के साथ मिलकर लेला हासिल करें। इतने लोग उसमें से खाएँ कि सबके लिए काफ़ी हो और पूरा जानवर खाया जाए। 5 इसके लिए एक साल का नर बच्चा चुन लेना जिसमें नुक्स न हो। वह भेड़ या बकरी का बच्चा हो सकता है।

6 महीने के 14वें दिन तक उस की देख-भाल करो। उस दिन तमाम इसराईली सूरज के गुरुब होते वक़्त अपने लेले ज़बह करें। 7 हर खानदान अपने जानवर का कुछ खून जमा करके उसे उस घर के दरवाज़े की चौखट पर लगाए जहाँ लेला खाया जाएगा। यह खून चौखट के ऊपरवाले हिस्से और दाएँ बाएँ के बाज़ुओं पर लगाया जाए। 8 लाज़िम है कि लोग जानवर को भूनकर उसी रात खाएँ। साथ ही वह कड़वा साग-पात और बेखमीरी रोटियाँ भी खाएँ। 9 लेले का गोश्त कच्चा न खाना, न उसे पानी में उबालना बल्कि पूरे जानवर को सर, पैरों और अंदरूनी हिस्सों समेत आग पर भूनना। 10 लाज़िम है कि पूरा गोश्त उसी रात खाया जाए। अगर कुछ सुबह तक बच जाए तो उसे जलाना है। 11 खाना खाते वक़्त ऐसा लिबास पहनना जैसे तुम सफ़र पर जा रहे हो। अपने जूते पहने रखना और हाथ में सफ़र के लिए लाठी लिए हुए तुम उसे जल्दी जल्दी खाना। रब के फ़सह की ईद यों मनाना।

12 मैं आज रात मिसर में से गुजरूँगा और हर पहलौठे को जान से मार दूँगा, खाह इनसान का हो या हैवान का। यों मैं जो रब हूँ मिसर के तमाम देवताओं की अदालत करूँगा। 13 लेकिन तुम्हारे घरों पर लगा हुआ खून तुम्हारा खास निशान होगा। जिस जिस घर के दरवाज़े पर मैं वह खून देखूँगा उसे छोड़ता जाऊँगा। जब मैं मिसर पर हमला करूँगा तो मोहलक वबा तुम तक नहीं पहुँचेगी। 14 आज की रात को हमेशा याद रखना। इसे नसल-दर-नसल और हर साल रब की खास ईद के तौर पर मनाना।

बेखमीरी रोटी की ईद

15 सात दिन तक बेखमीरी रोटी खाना है। पहले दिन अपने घरों से तमाम खमीर निकाल देना। अगर कोई इन सात दिनों के दौरान खमीर खाए तो उसे कौम में से मिटाया जाए। 16 इस ईद के पहले और आखिरी दिन मुकद्दस इजतिमा मुनअकिद करना। इन तमाम दिनों के दौरान काम न करना। सिर्फ एक काम की इजाज़त है और वह है अपना खाना तैयार करना। 17 बेखमीरी रोटी की ईद मनाना लाज़िम है, क्योंकि उस दिन मैं तुम्हारे मुतअद्दिद खानदानों को मिसर से निकाल लाया। इसलिए यह दिन नसल-दर-नसल हर साल याद रखना। 18 पहले महीने के 14वें दिन की शाम से लेकर 21वें दिन की शाम तक सिर्फ बेखमीरी रोटी खाना। 19 सात दिन तक तुम्हारे घरों में खमीर न पाया जाए। जो भी इस दौरान खमीर खाए उसे इसराईल की जमात में से मिटाया जाए, खाह वह इसराईली शहरी हो या अजनबी। 20 गरज़, इस ईद के दौरान खमीर न खाना। जहाँ भी तुम रहते हो वहाँ बेखमीरी रोटी ही खाना है।

पहलौठों की हलाकत

21 फिर मूसा ने तमाम इसराईली बुजुर्गों को बुलाकर उनसे कहा, “जाओ, अपने खानदानों के लिए भेड़ या बकरी के बच्चे चुनकर उन्हें फसह की ईद के लिए ज़बह करो। 22 ज़ूफे का गुच्छा लेकर उसे खून से भरे हुए बासन में डुबो देना। फिर उसे लेकर खून को चौखट के ऊपरवाले हिस्से और दाएँ बाएँ के बाजुओं पर लगा देना। सबह तक कोई अपने घर से न निकले। 23 जब रब मिसरियों को मार डालने के लिए मुल्क में से गुज़रेगा तो वह चौखट के ऊपरवाले हिस्से और दाएँ बाएँ के बाजुओं पर लगा हुआ खून देखकर उन घरों को छोड़ देगा। वह हलाक करनेवाले फ़रिश्ते को इजाज़त नहीं देगा कि वह तुम्हारे घरों में जाकर तुम्हें हलाक करे।

24 तुम अपनी औलाद समेत हमेशा इन हिदायत पर अमल करना। 25 यह रस्म उस वक़्त भी अदा करना जब तुम उस मुल्क में पहुँचोगे जो रब तुम्हें देगा। 26 और जब तुम्हारे बच्चे तुमसे पूछें कि हम यह ईद क्यों मनाते हैं 27 तो उनसे कहो, ‘यह फसह की कुरबानी है जो हम रब को पेश करते हैं। क्योंकि जब रब मिसरियों को हलाक कर रहा था तो उसने हमारे घरों को छोड़ दिया था।’

यह सुनकर इसराईलियों ने अल्लाह को सिज़दा किया। 28 फिर उन्होंने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा और हारून को बताया था।

29 आधी रात को रब ने बादशाह के पहलौठे से लेकर जेल के कैदी के पहलौठे तक मिसरियों के तमाम पहलौठों को जान से मार दिया। चौपाइयों के पहलौठे भी मर गए। 30 उस रात मिसर के हर घर में कोई न कोई मर गया। फिरौन, उसके ओहदेदार और मिसर के तमाम लोग जाग उठे और जोर जोर से रोने और चीखने लगे।

इसराईलियों की हिज़रत

31 अभी रात थी कि फिरौन ने मूसा और हारून को बुलाकर कहा, “अब तुम और बाक़ी इसराईली मेरी कौम में से निकल जाओ। अपनी दरखास्त के मुताबिक रब की इबादत करो। 32 जिस तरह तुम चाहते हो अपनी भेड़-बकरियों को भी अपने साथ ले जाओ। और मुझे भी बरकत देना।” 33 बाक़ी मिसरियों ने भी इसराईलियों पर जोर देकर कहा, “जल्दी जल्दी मुल्क से निकल जाओ, वरना हम सब मर जाएंगे।”

34 इसराईलियों के गँधे हुए आटे में खमीर नहीं था। उन्होंने उसे गँधने के बरतनों में रखकर अपने कपड़ों में लपेट लिया और सफ़र करते वक़्त अपने कंधों पर रख लिया। 35 इसराईली मूसा की हिदायत पर अमल करके अपने मिसरी पड़ोसियों के पास गए और उनसे कपड़े और सोने-चाँदी की चीज़ें माँगीं। 36 रब ने मिसरियों के दिलों को इसराईलियों की तरफ़ मायल कर दिया था, इसलिए उन्होंने उनकी हर दरखास्त पूरी की। यों इसराईलियों ने मिसरियों को लूट लिया।

37 इसराईली रामसीस से खाना होकर सुक्कात पहुँच गए। औरतों और बच्चों को छोड़कर उनके 6 लाख मर्द थे। 38 वह अपने भेड़-बकरियों और गाय-बैलों के बड़े बड़े रेवड़ भी साथ ले गए। बहुत-से ऐसे लोग भी उनके साथ निकले जो इसराईली नहीं थे। 39 रास्ते में उन्होंने उस बेखमीरी आटे से रोटियाँ बनाई जो वह साथ लेकर निकले थे। आटे में इसलिए खमीर नहीं था कि उन्हें इतनी जल्दी से मिसर से निकाल दिया गया था कि खाना तैयार करने का वक़्त ही न मिला था।

40 इसराईली 430 साल तक मिसर में रहे थे। 41 430 साल के ऐन बाद, उसी दिन रब के यह तमाम खानदान मिसर से निकले। 42 उस खास रात रब ने खुद पहरा दिया ताकि इसराईली मिसर से निकल सकें। इसलिए तमाम इसराईलियों के लिए लाज़िम है कि वह नसल-दर-नसल इस रात रब की ताज़ीम में जागते रहें, वह भी और उनके बाद की औलाद भी।

फसह की ईद की हिदायत

43 रब ने मूसा और हारून से कहा, “फसह की ईद के यह उसूल हैं :

किसी भी परदेसी को फसह की ईद का खाना खाने की इजाज़त नहीं है। 44 अगर तुमने किसी गुलाम को ख़रीदकर उसका ख़तना किया है तो वह फसह का खाना खा सकता है। 45 लेकिन ग़ैरशहरी या मज़दूर को फसह का खाना खाने की इजाज़त नहीं है। 46 यह खाना एक ही घर के अंदर खाना है। न गोशत घर से बाहर ले जाना, न लेले की किसी हड्डी को तोड़ना। 47 लाज़िम है कि इसराईल की पूरी जमात यह ईद मनाए।

48 अगर कोई परदेसी तुम्हारे साथ रहता है जो फ़सल की ईद में शिरकत करना चाहे तो लाज़िम है कि पहले उसके घराने के हर मर्द का ख़तना किया जाए। तब वह इसराईली की तरह खाने में शरीक हो सकता है। लेकिन जिसका ख़तना न हुआ उसे फ़सल का खाना खाने की इज़ाज़त नहीं है। 49 यही उसूल हर एक पर लागू होगा, खाह वह इसराईली हो या परदेसी।”

50 तमाम इसराईलियों ने वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा और हारून से कहा था। 51 उसी दिन रब तमाम इसराईलियों को खानदानों की तरतीब के मुताबिक़ मिसर से निकाल लाया।

13

यह ईद नज़ात की याद दिलाती है

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इसराईलियों के हर पहलौठे को मेरे लिए मखसूसो-मुकद्दस करना है। हर पहला नर बच्चा मेरा ही है, खाह इनसान का हो या हैवान का।” 3 फिर मूसा ने लोगों से कहा, “इस दिन को याद रखो जब तुम रब की अज़ीम कुदरत के बाइस मिसर की गुलामी से निकले। इस दिन कोई चीज़ न खाना जिसमें खमीर हो। 4 आज ही अबीब के महीने * में तुम मिसर से खाना हो रहे हो। 5 रब ने तुम्हारे बापदादा से क़सम खाकर वादा किया है कि वह तुमको कनानी, हिती, अमोरी, हिब्वी और यबूसी कौमों का मुल्क देगा, एक ऐसा मुल्क जिसमें दूध और शहद की कसरत है। जब रब तुम्हें उस मुल्क में पहुँचा देगा तो लाज़िम है कि तुम इसी महीने में यह रस्म मनाओ। 6 सात दिन बेखमीरी रोटी खाओ। सातवें दिन रब की ताज़ीम में ईद मनाओ। 7 सात दिन खमीरी रोटी न खाना। कहीं भी खमीर न पाया जाए। पूरे मुल्क में खमीर का नामो-निशान तक न हो।

8 उस दिन अपने बेटे से यह कहो, “मैं यह ईद उस काम की खुशी में मनाता हूँ जो रब ने मेरे लिए किया जब मैं मिसर से निकला।” 9 यह ईद तुम्हारे हाथ या पेशानी पर निशान की मानिंद हो जो तुम्हें याद दिलाए कि रब की शरीअत को तुम्हारे होंटों पर रहना है। क्योंकि रब तुम्हें अपनी अज़ीम कुदरत से मिसर से निकाल लाया। 10 इस दिन की याद हर साल ठीक वक़्त पर मनाना।

पहलौठों की मखसूसियत

11 रब तुम्हें कनानियों के उस मुल्क में ले जाएगा जिसका वादा उसने क़सम खाकर तुम और तुम्हारे बापदादा से किया है। 12 लाज़िम है कि वहाँ पहुँचकर तुम अपने तमाम पहलौठों को रब के लिए मखसूस करो। तुम्हारे मवेशियों के तमाम पहलौठे भी रब की मिलकियत हैं। 13 अगर तुम अपना पहलौठा गधा खुद रखना चाहो तो रब को उसके बदले भेड़ या बकरी का बच्चा पेश करो। लेकिन अगर तुम उसे रखना नहीं चाहते तो उस की गरदन तोड़ डालो। लेकिन इनसान के पहलौठों के लिए हर सूरत में एवज़ी देना है।

14 आनेवाले दिनों में जब तुम्हारा बेटा पूछे कि इसका क्या मतलब है तो उसे जवाब देना, “रब अपनी अज़ीम कुदरत से हमें मिसर की गुलामी से निकाल लाया। 15 जब फ़िरौन ने अकड़कर हमें जाने न दिया तो रब ने मिसर के तमाम इनसानों और हैवानों के पहलौठों को मार डाला। इस वजह से मैं अपने जानवरों का हर पहला बच्चा रब को क़ुरबान करता और अपने हर पहलौठे के लिए एवज़ी देता हूँ। 16 यह दस्तूर तुम्हारे हाथ और पेशानी पर निशान की मानिंद हो जो तुम्हें याद दिलाए कि रब हमें अपनी कुदरत से मिसर से निकाल लाया।”

मिसर से निकलने का रास्ता

17 जब फ़िरौन ने इसराईली कौम को जाने दिया तो अल्लाह उन्हें फ़िलिस्तिनियों के इलाके में से गुज़रनेवाले रास्ते से लेकर न गया, अगरचे उस पर चलते हुए वह जल्द ही मुल्के-कनान पहुँच जाते। बल्कि रब ने कहा, “अगर उस रास्ते पर चलेंगे तो उन्हें दूसरों से लड़ना पड़ेगा। ऐसा न हो कि वह इस वजह से अपना इरादा बदलकर मिसर लौट जाएँ।” 18 इसलिए अल्लाह उन्हें दूसरे रास्ते से लेकर गया, और वह रेगिस्तान के रास्ते से बहरे-कुलज़ुम की तरफ़ बढ़े। मिसर से निकलते वक़्त मर्द मुसल्लह थे। 19 मूसा यूसुफ़ का ताबूत भी अपने साथ ले गया, क्योंकि यूसुफ़ ने इसराईलियों को क़सम दिलाकर कहा था, “अल्लाह यकीनन तुम्हारी देख-भाल करके वहाँ ले जाएगा। उस वक़्त मेरी हड्डियों को भी उठाकर साथ ले जाना।”

20 इसराईलियों ने सुक्कात को छोड़कर एताम में अपने ख़ैमे लगाए। एताम रेगिस्तान के किनारे पर था। 21 रब उनके आगे आगे चलता गया, दिन के वक़्त बादल के सतून में ताकि उन्हें रास्ते का पता लगे और रात के वक़्त आग के सतून में ताकि उन्हें रौशनी मिले। यों वह दिन और रात सफ़र कर सकते थे। 22 दिन के वक़्त बादल का सतून और रात के वक़्त आग का सतून उनके सामने रहा। वह कभी भी अपनी जगह से न हटा।

14

इसराईल समुंदर में से गुज़रता है

1 तब रब ने मूसा से कहा, 2 “इसराईलियों को कह देना कि वह पीछे मुड़कर मिजदाल और समुंदर के बीच यानी फ़ी-हख़ीरोत के नज़दीक स्कू जाँ। वह बाल-सफ़ोन के मुकाबिल साहिल पर अपने ख़ैमे लगाएँ। 3 यह देखकर फ़िरौन समझेगा कि इसराईली रास्ता भूलकर आवारा फिर

* 13:4 मार्च ता अप्रैल।

रहे हैं और कि रेगिस्तान ने चारों तरफ उन्हें घेर रखा है। 4 फिर मैं फिरौन को दुबारा अड़ जाने दूँगा, और वह इसराइलियों का पीछा करेगा। लेकिन मैं फिरौन और उस की पूरी फौज पर अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा। मिसरी जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।” इसराइलियों ने ऐसा ही किया।

5 जब मिसर के बादशाह को इतला दी गई कि इसराइली हिजरत कर गए हैं तो उसने और उसके दरबारियों ने अपना खयाल बदलकर कहा, “हमने क्या किया है? हमने उन्हें जाने दिया है, और अब हम उनकी खिदमत से महसूस हो गए हैं।” 6 चुनौचे बादशाह ने अपना जंगी रथ तैयार करवाया और अपनी फौज को लेकर निकला। 7 वह 600 बेहतरीन किस्म के रथ और मिसर के बाकी तमाम रथों को साथ ले गया। तमाम रथों पर अफसरान मुकर्रर थे। 8 रब ने मिसर के बादशाह फिरौन को दुबारा अड़ जाने दिया था, इसलिए जब इसराइली बड़े इख्तियार के साथ निकल रहे थे तो वह उनका ताक्कुब करने लगा। 9 इसराइलियों का पीछा करते करते फिरौन के तमाम घोड़े, रथ, सवार और फौजी उनके करीब पहुँचे। इसराइली बहरे-कुलजुम के साहिल पर बाल-सफोन के मुकाबिल फ्री-हखीरोत के नज़दीक ख़ैमे लगा चुके थे।

10 जब इसराइलियों ने फिरौन और उस की फौज को अपनी तरफ बढ़ते देखा तो वह सख्त घबरा गए और मदद के लिए रब के सामने चीखने-चिल्लाने लगे। 11 उन्होंने मूसा से कहा, “क्या मिसर में कब्रों की कमी थी कि आप हमें रेगिस्तान में ले आए हैं? हमें मिसर से निकालकर आपने हमारे साथ क्या किया है? 12 क्या हमने मिसर में आपसे दरखास्त नहीं की थी कि मेहरबानी करके हमें छोड़ दें, हमें मिसरियों की खिदमत करने दें? यहाँ आकर रेगिस्तान में मर जाने की निसबत बेहतर होता कि हम मिसरियों के गुलाम रहते।”

13 लेकिन मूसा ने जवाब दिया, “मत घबराओ। आराम से खड़े रहो और देखो कि रब तुम्हें आज किस तरह बचाएगा। आज के बाद तुम इन मिसरियों को फिर कभी नहीं देखोगे। 14 रब तुम्हारे लिए लड़ेगा। तुम्हें बस, चुप रहना है।”

15 फिर रब ने मूसा से कहा, “तू मेरे सामने क्यों चीख रहा है? इसराइलियों को आगे बढ़ने का हुक्म दे। 16 अपनी लाठी को पकड़कर उसे समुंदर के ऊपर उठा तो वह दो हिस्सों में बट जाएगा। इसराइली खुश्क ज़मीन पर समुंदर में से गुज़रेंगे। 17 मैं मिसरियों को अड़े रहने दूँगा ताकि वह इसराइलियों का पीछा करें। फिर मैं फिरौन, उस की सारी फौज, उसके रथों और उसके सवारों पर अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा। 18 जब मैं फिरौन, उसके रथों और उसके सवारों पर अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा तो मिसरी जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

19 अल्लाह का फ़रिश्ता इसराइली लश्कर के आगे आगे चल रहा था। अब वह वहाँ से हटकर उनके पीछे खड़ा हो गया। बादल का सतून भी लोगों के आगे से हटकर उनके पीछे जा खड़ा हुआ। 20 इस तरह बादल मिसरियों और इसराइलियों के लश्करों के दरमियान आ गया। पूरी रात मिसरियों की तरफ अंधेरा ही अंधेरा था जबकि इसराइलियों की तरफ रौशनी थी। इसलिए मिसरी पूरी रात के दौरान इसराइलियों के करीब न आ सके।

21 मूसा ने अपना हाथ समुंदर के ऊपर उठाया तो रब ने मशरिक से तेज़ आँधी चलाई। आँधी तमाम रात चलती रही। उसने समुंदर को पीछे हटाकर उस की तह खुश्क कर दी। समुंदर दो हिस्सों में बट गया 22 तो इसराइली समुंदर में से खुश्क ज़मीन पर चलते हुए गुज़र गए। उनके दाईं और बाईं तरफ पानी दीवार की तरह खड़ा रहा।

23 जब मिसरियों को पता चला तो फिरौन के तमाम घोड़े, रथ और घुड़सवार भी उनके पीछे पीछे समुंदर में चले गए। 24 सुबह-सवेरे ही रब ने बादल और आग के सतून से मिसर की फौज पर निगाह की और उसमें अबतरी पैदा कर दी। 25 उनके रथों के पहिये निकल गए तो उन पर काबू पाना मुश्किल हो गया। मिसरियों ने कहा, “आओ, हम इसराइलियों से भाग जाएँ, क्योंकि रब उनके साथ है। वही मिसर का मुकाबला कर रहा है।”

26 तब रब ने मूसा से कहा, “अपना हाथ समुंदर के ऊपर उठा। फिर पानी वापस आकर मिसरियों, उनके रथों और घुड़सवारों को डुबो देगा।” 27 मूसा ने अपना हाथ समुंदर के ऊपर उठाया तो दिन निकलते वक़्त पानी मामूल के मुताबिक बहने लगा, और जिस तरफ मिसरी भाग रहे थे वहाँ पानी ही पानी था। यों रब ने उन्हें समुंदर में बहाकर गरक कर दिया। 28 पानी वापस आ गया। उसने रथों और घुड़सवारों को ढोंक लिया। फिरौन की पूरी फौज जो इसराइलियों का ताक्कुब कर रही थी डूबकर तबाह हो गई। उनमें से एक भी न बचा। 29 लेकिन इसराइली खुश्क ज़मीन पर समुंदर में से गुज़रे। उनके दाईं और बाईं तरफ पानी दीवार की तरह खड़ा रहा।

30 उस दिन रब ने इसराइलियों को मिसरियों से बचाया। मिसरियों की लाशें उन्हें साहिल पर नज़र आईं। 31 जब इसराइलियों ने रब की यह अज़ीम कुदरत देखी जो उसने मिसरियों पर ज़ाहिर की थी तो रब का ख़ौफ़ उन पर छा गया। वह उस पर और उसके खादिम मूसा पर एतमाद करने लगे।

15

मूसा का गीत

1 तब मूसा और इसराइलियों ने रब के लिए यह गीत गाया,

“मैं रब की तमजीद में गीत गाऊँगा, क्योंकि वह निहायत अज़ीम है। घोड़े और उसके सवार को उसने समुंदर में पटख दिया है।

2 रब मेरी कुव्वत और मेरा गीत है, वह मेरी नजात बन गया है। वही मेरा ख़ुदा है, और मैं उस की तारीफ़ करूँगा। वही मेरे बाप का ख़ुदा है, और मैं उस की ताज़ीम करूँगा।

3 रब सूरमा है, रब उसका नाम है।

4 फिरौन के रथों और फौज को उसने समुंदर में पटख दिया तो बादशाह के बेहतरीन अफसरान बहरे-कुलजुम में डूब गए।

5 गहरे पानी ने उन्हें ढाँक लिया, और वह पत्थर की तरह समुंदर की तह तक उतर गए।

6 ऐ रब, तेरे दहने हाथ का जलाल बड़ी कुदरत से जाहिर होता है। ऐ रब, तेरा दहना हाथ दुश्मन को चकनाचूर कर देता है।

7 जो तेरे खिलाफ उठ खड़े होते हैं उन्हें तू अपनी अजमत का इजहार करके ज़मीन पर पटख देता है। तेरा गज़ब उन पर आन पड़ता है तो वह आग में भूसे की तरह जल जाते हैं।

8 तूने गुस्से में आकर फूँक मारी तो पानी ढेर की सूरत में जमा हो गया। बहता पानी ठोस दीवार बन गया, समुंदर गहराई तक जम गया।

9 दुश्मन ने डींग मारकर कहा, 'मैं उनका पीछा करके उन्हें पकड़ लूँगा, मैं उनका लूटा हुआ माल तकसीम करूँगा। मेरी लालची जान उनसे सेर हो जाएगी, मैं अपनी तलवार खींचकर उन्हें हलाक करूँगा।'

10 लेकिन तूने उन पर फूँक मारी तो समुंदर ने उन्हें ढाँक लिया, और वह सीसे की तरह जोरदार मौजों में डूब गए।

11 ऐ रब, कौन-सा माबूद तेरी मानिंद है? कौन तेरी तरह जलाली और कुदूस है? कौन तेरी तरह हैरतअंगेज़ काम करता और अज़ीम मोजिज़े दिखाता है? कोई भी नहीं।

12 तूने अपना दहना हाथ उठाया तो ज़मीन हमारे दुश्मनों को निगल गई।

13 अपनी शफ़क़त से तूने एवज़ाना देकर अपनी क़ौम को छुटकारा दिया और उस की राहनुमाई की है, अपनी कुदरत से तूने उसे अपनी मुक़द्दस सुकूनतगाह तक पहुँचाया है।

14 यह सुनकर दीगर क़ौमों काँप उठी, फ़िलिस्ती डर के मारे पेचो-ताब खाने लगे।

15 अदोम के रईस सहम गए, मोआब के राहनुमाओं पर कपकपी तारी हो गई, और कनान के तमाम बाशिंदे हिम्मत हार गए।

16 दहशत और खौफ़ उन पर छा गया। तेरी अज़ीम कुदरत के बाइस वह पत्थर की तरह जम गए। ऐ रब, वह न हिले जब तक तेरी क़ौम गुज़र न गई। वह बेहिसो-हरकत रहे जब तक तेरी ख़रीदी हुई क़ौम गुज़र न गई।

17 ऐ रब, तू अपने लोगों को लेकर पौदों की तरह अपने मौरूसी पहाड़ पर लगाएगा, उस जगह पर जो तूने अपनी सुकूनत के लिए चुन ली है, जहाँ तूने अपने हाथों से अपना मक़दिस तैयार किया है।

18 रब अबद तक बादशाह है!"

19 जब फिरौन के घोड़े, रथ और घुड़सवार समुंदर में चले गए तो रब ने उन्हें समुंदर के पानी से ढाँक लिया। लेकिन इसराईली खुश्क ज़मीन पर समुंदर में से गुज़र गए। 20 तब हारून की बहन मरियम जो नबिया थी ने दफ़ लिया, और बाक़ी तमाम औरतें भी दफ़ लेकर उसके पीछे हो लीं। सब गाने और नाचने लगीं। मरियम ने यह गाकर उनकी राहनुमाई की,

21 "रब की तमज़ीद में गीत गाओ, क्योंकि वह निहायत अज़ीम है। घोड़े और उसके सवार को उसने समुंदर में पटख दिया है।"

मारा और एलीम के चश्मे

22 मूसा के कहने पर इसराईली बहरे-कुलजुम से रवाना होकर दशते-शूर में चले गए। वहाँ वह तीन दिन तक सफ़र करते रहे। इस दौरान उन्हें पानी न मिला। 23 आखिरकार वह मारा पहुँचे जहाँ पानी दस्तयाब था। लेकिन वह कड़वा था, इसलिए मक़ाम का नाम मारा यानी कड़वाहट पड़ गया। 24 यह देखकर लोग मूसा के खिलाफ़ बुड़बुड़ाकर कहने लगे, "हम क्या पिँएँ?" 25 मूसा ने मदद के लिए रब से इल्तिजा की तो उसने उसे लकड़ी का एक टुकड़ा दिखाया। जब मूसा ने यह लकड़ी पानी में डाली तो पानी की कड़वाहट ख़त्म हो गई।

मारा में रब ने अपनी क़ौम को क़वानीन दिए। वहाँ उसने उन्हें आजमाया भी। 26 उसने कहा, "ग़ौर से रब अपने खुदा की आवाज़ सुनो! जो कुछ उस की नज़र में दुस्त है वही करो। उसके अहक़ाम पर ध्यान दो और उस की तमाम हिदायत पर अमल करो। फिर मैं तुम पर वह बीमारियाँ नहीं लाऊँगा जो मिसरियों पर लाया था, क्योंकि मैं रब हूँ जो तुझे शफ़ा देता हूँ।" 27 फिर इसराईली रवाना होकर एलीम पहुँचे जहाँ 12 चश्मे और खज़ूर के 70 दरख़्त थे। वहाँ उन्होंने पानी के करीब अपने ख़ैमे लगाए।

16

मन और बटेरें

1 इसके बाद इसराईल की पूरी जमात एलीम से सफ़र करके सीन के रेगिस्तान में पहुँची जो एलीम और सीना के दरमियान है। वह मिसर से निकलने के बाद दूसरे महीने के 15वें दिन पहुँचे। 2 रेगिस्तान में तमाम लोग फिर मूसा और हारून के खिलाफ़ बुड़बुड़ाने लगे। 3 उन्होंने कहा, "काश रब हमें मिसर में ही मार डालता! वहाँ हम कम अज़ कम जी भरकर गोश्त और रोटी तो खा सकते थे। आप हमें सिर्फ़ इसलिये रेगिस्तान में ले आए हैं कि हम सब भूके मर जाएँ।"

4 तब रब ने मूसा से कहा, “मैं आसमान से तुम्हारे लिए रोटी बरसाऊंगा। हर रोज़ लोग बाहर जाकर उसी दिन की ज़रूरत के मुताबिक़ खाना जमा करें। इससे मैं उन्हें आजमाकर देखूँगा कि आया वह मेरी सुनते हैं कि नहीं।” 5 हर रोज़ वह सिर्फ़ उतना खाना जमा करें जितना कि एक दिन के लिए काफी हो। लेकिन छठे दिन जब वह खाना तैयार करेंगे तो वह अगले दिन के लिए भी काफी होगा।”

6 मूसा और हारून ने इसराइलियों से कहा, “आज शाम को तुम जान लोगे कि रब ही तुम्हें मिसर से निकाल लाया है। 7 और कल सुबह तुम रब का जलाल देखोगे। उसने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं, क्योंकि असल में तुम हमारे खिलाफ़ नहीं बल्कि रब के खिलाफ़ बुड़बुड़ा रहे हो। 8 फिर भी रब तुमको शाम के वक़्त गोश्त और सुबह के वक़्त वाफ़िर रोटी देगा, क्योंकि उसने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं। तुम्हारी शिकायतें हमारे खिलाफ़ नहीं बल्कि रब के खिलाफ़ हैं।”

9 मूसा ने हारून से कहा, “इसराइलियों को बताना, ‘रब के सामने हाज़िर हो जाओ, क्योंकि उसने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं।’” 10 जब हारून पूरी जमात के सामने बात करने लगा तो लोगों ने पलटकर रेगिस्तान की तरफ़ देखा। वहाँ रब का जलाल बादल में जाहिर हुआ। 11 रब ने मूसा से कहा, 12 “मैंने इसराइलियों की शिकायत सुन ली है। उन्हें बता, ‘आज जब सूरज ग़रब होने लगेगा तो तुम गोश्त खाओगे और कल सुबह पेट भरकर रोटी। फिर तुम जान लोगे कि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।’”

13 उसी शाम बटेरों के गोल आए जो पूरी ख़ैमागाह पर छा गए। और अगली सुबह ख़ैमे के चारों तरफ़ ओस पड़ी थी। 14 जब ओस सूख गई तो बर्फ़ के गालों जैसे पतले दाने पाले की तरह ज़मीन पर पड़े थे। 15 जब इसराइलियों ने उसे देखा तो एक दूसरे से पूछने लगे, “मन हूँ?” यानी “यह क्या है?” क्योंकि वह नहीं जानते थे कि यह क्या चीज़ है। मूसा ने उनको समझाया, “यह वह रोटी है जो रब ने तुम्हें खाने के लिए दी है। 16 रब का हुक्म है कि हर एक उतना जमा करे जितना उसके खानदान को ज़रूरत हो। अपने खानदान के हर फ़रद के लिए दो लिटर जमा करो।”

17 इसराइलियों ने ऐसा ही किया। बाज़ ने ज़्यादा और बाज़ ने कम जमा किया। 18 लेकिन जब उसे नापा गया तो हर एक आदमी के लिए काफी था। जिसने ज़्यादा जमा किया था उसके पास कुछ न बचा। लेकिन जिसने कम जमा किया था उसके पास भी काफी था। 19 मूसा ने हुक्म दिया, “अगले दिन के लिए खाना न बचाना।”

20 लेकिन लोगों ने मूसा की बात न मानी बल्कि बाज़ ने खाना बचा लिया। लेकिन अगली सुबह मालूम हुआ कि बचे हुए खाने में कीड़े पड़ गए हैं और उससे बहुत बदबू आ रही है। यह सुनकर मूसा उनसे नाराज़ हुआ।

21 हर सुबह हर कोई उतना जमा कर लेता जितनी उसे ज़रूरत होती थी। जब धूप तेज़ होती तो जो कुछ ज़मीन पर रह जाता वह पिघलकर ख़त्म हो जाता था।

22 छठे दिन जब लोग यह ख़ुराक जमा करते तो वह मिक्कदार में दुगुनी होती थी यानी हर फ़रद के लिए चार लिटर। जब जमात के बुज़ुर्गों ने मूसा के पास आकर उसे इतला दी 23 तो उसने उनसे कहा, “रब का फ़रमान है कि कल आराम का दिन है, मुक़द्दस सबत का दिन जो अल्लाह की ताज़ीम में मनाना है। आज तुम जो तनूर में पकाना चाहते हो पका लो और जो उबालना चाहते हो उबाल लो। जो बच जाए उसे कल के लिए महफूज़ रखो।”

24 लोगों ने मूसा के हुक्म के मुताबिक़ अगले दिन के लिए खाना महफूज़ कर लिया तो न खाने से बदबू आई, न उसमें कीड़े पड़े। 25 मूसा ने कहा, “आज यही बचा हुआ खाना खाओ, क्योंकि आज सबत का दिन है, रब की ताज़ीम में आराम का दिन। आज तुम्हें रेगिस्तान में कुछ नहीं मिलेगा। 26 छः दिन के दौरान यह ख़ुराक जमा करना है, लेकिन सातवाँ दिन आराम का दिन है। उस दिन ज़मीन पर खाने के लिए कुछ नहीं होगा।”

27 तो भी कुछ लोग हफ़्ते को खाना जमा करने के लिए निकले, लेकिन उन्हें कुछ न मिला। 28 तब रब ने मूसा से कहा, “तुम लोग कब तक मेरे अहक़ाम और हिदायात पर अमल करने से इनकार करोगे? 29 देखो, रब ने तुम्हारे लिए मुक़र्रर किया है कि सबत का दिन आराम का दिन है। इसलिए वह तुम्हें जुमे को दो दिन के लिए ख़ुराक देता है। हफ़्ते को सबको अपने ख़ैमों में रहना है। कोई भी अपने घर से बाहर न निकले।”

30 चुनौचे लोग सबत के दिन आराम करते थे।

31 इसराइलियों ने इस ख़ुराक का नाम ‘मन’ रखा। उसके दाने धनिये की मानिंद सफ़ेद थे, और उसका जायका शहद से बने केक की मानिंद था।

32 मूसा ने कहा, “रब फ़रमाता है, ‘दो लिटर मन एक मरतबान में रखकर उसे आनेवाली नसलों के लिए महफूज़ रखना। फिर वह देख सकेंगे कि मैं तुम्हें क्या खाना खिलाता रहा जब तुम्हें मिसर से निकाल लाया।’” 33 मूसा ने हारून से कहा, “एक मरतबान लो और उसे दो लिटर मन से भरकर रब के सामने रखो ताकि वह आनेवाली नसलों के लिए महफूज़ रहे।” 34 हारून ने ऐसा ही किया। उसने मन के इस मरतबान को अहद के संदूक के सामने रखा ताकि वह महफूज़ रहे।

35 इसराइलियों को 40 साल तक मन मिलता रहा। वह उस वक़्त तक मन खाते रहे जब तक रेगिस्तान से निकलकर कनान की सरहद पर न पहुँचे। 36 (जो पैमाना इसराइली मन के लिए इस्तेमाल करते थे वह दो लिटर का एक बरतन था जिसका नाम ओमर था।)

1 फिर इसराईल की पूरी जमात सीन के रेगिस्तान से निकली। रब जिस तरह हुक्म देता रहा वह एक जगह से दूसरी जगह सफ़र करते रहे। रफीदीम में उन्होंने ख़ैमे लगाए। वहाँ पीने के लिए पानी न मिला। 2 इसलिए वह मूसा के साथ यह कहकर झगड़ने लगे, “हमें पीने के लिए पानी दो।” मूसा ने जवाब दिया, “तुम मुझसे क्यों झगड़ रहे हो? रब को क्यों आजमा रहे हो?” 3 लेकिन लोग बहुत प्यासे थे। वह मूसा के खिलाफ़ बुड़बुड़ाने से बाज़ न आए बल्कि कहा, “आप हमें मिसर से क्यों लाए हैं? क्या इसलिए कि हम अपने बच्चों और रेवडों समेत प्यासे मर जाएँ?”

4 तब मूसा ने रब के हुज़ूर फ़रियाद की, “मैं इन लोगों के साथ क्या करूँ? हालात ज़रा भी और बिगड़ जाएँ तो वह मुझे संगसार कर देंगे।” 5 रब ने मूसा से कहा, “कुछ बुजुर्ग साथ लेकर लोगों के आगे आगे चल। वह लाठी भी साथ ले जा जिससे तूने दरियाए-नील को मारा था। 6 मैं होरिब यानी सीना पहाड़ की एक चटान पर तेरे सामने खड़ा हूँगा। लाठी से चटान को मारना तो उससे पानी निकलेगा और लोग पी सकेंगे।”

मूसा ने इसराईल के बुजुर्गों के सामने ऐसा ही किया। 7 उसने उस जगह का नाम मस्सा और मरीबा यानी ‘आज़माना और झगड़ना’ रखा, क्योंकि वहाँ इसराईली बुड़बुड़ाए और यह पूछकर रब को आजमाया कि क्या रब हमारे दरमियान है कि नहीं?

अमालीकियों की शिकस्त

8 रफीदीम वह जगह भी थी जहाँ अमालीकी इसराईलियों से लड़ने आए। 9 मूसा ने यशुअ से कहा, “लड़ने के काबिल आदमियों को चुन लो और निकलकर अमालीकियों का मुकाबला करो। कल मैं अल्लाह की लाठी पकड़े हुए पहाड़ की चोटी पर खड़ा हो जाऊँगा।”

10 यशुअ मूसा की हिदायत के मुताबिक़ अमालीकियों से लड़ने गया जबकि मूसा, हासून और हर पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए। 11 और यों हुआ कि जब मूसा के हाथ उठाए हुए थे तो इसराईली जीतते रहे, और जब वह नीचे थे तो अमालीकी जीतते रहे। 12 कुछ देर के बाद मूसा के बाजू थक गए। इसलिए हासून और हर एक चटान ले आए ताकि वह उस पर बैठ जाए। फिर उन्होंने उसके दाईं और बाईं तरफ़ खड़े होकर उसके बाजूओं को ऊपर उठाए रखा। सूरज के ग़ुस्ब होने तक उन्होंने यों मूसा की मदद की। 13 इस तरह यशुअ ने अमालीकियों से लड़ते लड़ते उन्हें शिकस्त दी।

14 तब रब ने मूसा से कहा, “यह वाक़िया यादगारी के लिए किताब में लिख ले। लाज़िम है कि यह सब कुछ यशुअ की याद में रहे, क्योंकि मैं दुनिया से अमालीकियों का नामो-निशान मिटा दूँगा।” 15 उस वक़्त मूसा ने कुरबानगाह बनाकर उसका नाम ‘रब मेरा झंडा है’ रखा। 16 उसने कहा, “रब के तख़्त के खिलाफ़ हाथ उठाया गया है, इसलिए रब की अमालीकियों से हमेशा तक जंग रहेगी।”

18

यितरो से मुलाकात

1 मूसा का सुसर यितरो अब तक मिदियान में इमाम था। जब उसने सब कुछ सुना जो अल्लाह ने मूसा और अपनी क्रौम के लिए किया है, कि वह उन्हें मिसर से निकाल लाया है 2 तो वह मूसा के पास आया। वह उस की बीवी सफ़फ़रा को अपने साथ लाया, क्योंकि मूसा ने उसे अपने बेटों समेत मैके भेज दिया था। 3 यितरो मूसा के दोनों बेटों को भी साथ लाया। पहले बेटे का नाम जैरसोम यानी ‘अजनबी मुल्क में परदेसी’ था, क्योंकि जब वह पैदा हुआ तो मूसा ने कहा था, “मैं अजनबी मुल्क में परदेसी हूँ।” 4 दूसरे बेटे का नाम इलियज़र यानी ‘मेरा खुदा मददगार है’ था, क्योंकि जब वह पैदा हुआ तो मूसा ने कहा था, “मेरे बाप के खुदा ने मेरी मदद करके मुझे फ़िरौन की तलवार से बचाया है।”

5 यितरो मूसा की बीवी और बेटे साथ लेकर उस वक़्त मूसा के पास पहुँचा जब उसने रेगिस्तान में अल्लाह के पहाड़ यानी सीना के करीब ख़ैमा लगाया हुआ था। 6 उसने मूसा को पैग़ाम भेजा था, “मैं, आपका सुसर यितरो आपकी बीवी और दो बेटों को साथ लेकर आपके पास आ रहा हूँ।”

7 मूसा अपने सुसर के इस्तक़बाल के लिए बाहर निकला, उसके सामने झुका और उसे बोसा दिया। दोनों ने एक दूसरे का हाल पूछा, फिर ख़ैमे में चले गए। 8 मूसा ने यितरो को तफ़सील से बताया कि रब ने इसराईलियों की खातिर फ़िरौन और मिसरियों के साथ क्या कुछ किया है। उसने रास्ते में पेश आई तमाम मुश्किलात का ज़िक्र भी किया कि रब ने हमें किस तरह उनसे बचाया है।

9 यितरो उन सारे अच्छे कामों के बारे में सुनकर खुश हुआ जो रब ने इसराईलियों के लिए किए थे जब उसने उन्हें मिसरियों के हाथ से बचाया था। 10 उसने कहा, “रब की तमज़ीद हो जिसने आपको मिसरियों और फ़िरौन के कब्ज़े से नज़ात दिलाई है। उसी ने क्रौम को गुलामी से छुड़ाया है! 11 अब मैंने जान लिया है कि रब तमाम माबूदों से अज़ीम है, क्योंकि उसने यह सब कुछ उन लोगों के साथ किया जिन्होंने अपने ग़ुस्र में इसराईलियों के साथ बुरा सुलूक किया था।” 12 फिर यितरो ने अल्लाह को भस्म होनेवाली कुरबानी और दीगर कई कुरबानियाँ पेश कीं। तब हासून और तमाम बुजुर्ग मूसा के सुसर यितरो के साथ अल्लाह के हुज़ूर खाना खाने बैठे।

70 बुजुर्गों को मुक़र्रर किया जाता है

13 अगले दिन मूसा लोगों का इनसाफ़ करने के लिए बैठ गया। उनकी तादाद इतनी ज़्यादा थी कि वह सुबह से लेकर शाम तक मूसा के सामने खड़े रहे। 14 जब यितरो ने यह सब कुछ देखा तो उसने पूछा, “यह क्या है जो आप लोगों के साथ कर रहे हैं? सारा दिन वह आपको घेरे रहते और आप उनकी अदालत करते रहते हैं। आप यह सब कुछ अकेले ही क्यों कर रहे हैं?”

15 मूसा ने जवाब दिया, “लोग मेरे पास आकर अल्लाह की मरजी मालूम करते हैं। 16 जब कभी कोई तनाजा या झगड़ा होता है तो दोनों पार्टियाँ मेरे पास आती हैं। मैं फैसला करके उन्हें अल्लाह के अहकाम और हिदायात बताता हूँ।”

17 मूसा के सुसर ने उससे कहा, “आपका तरीका अच्छा नहीं है। 18 काम इतना वसी है कि आप उसे अकेले नहीं सँभाल सकते। इससे आप और वह लोग जो आपके पास आते हैं बुरी तरह थक जाते हैं। 19 मेरी बात सुनें! मैं आपको एक मशवरा देता हूँ। अल्लाह उसमें आपकी मदद करे। लाज़िम है कि आप अल्लाह के सामने कौम के नुमाइंदे रहें और उनके मामलात उसके सामने पेश करें। 20 यह भी ज़रूरी है कि आप उन्हें अल्लाह के अहकाम और हिदायात सिखाएँ, कि वह किस तरह ज़िंदगी गुज़ारें और क्या क्या करें। 21 लेकिन साथ साथ कौम में से काबिले-एतमाद आदमी चुनें। वह ऐसे लोग हों जो अल्लाह का ख़ौफ़ मानते हों, रास्तदिल हों और रिश्वत से नफ़रत करते हों। उन्हें हज़ार हज़ार, सौ सौ, पचास पचास और दस दस आदमियों पर मुक़र्रर करें। 22 उन आदमियों की ज़िम्मादारी यह होगी कि वह हर वक़्त लोगों का इनसाफ़ करें। अगर कोई बहुत ही पेचीदा मामला हो तो वह फैसले के लिए आपके पास आएँ, लेकिन दीगर मामलों का फैसला वह खुद करें। यों वह काम में आपका हाथ बटाएँगे और आपका बोझ हलका हो जाएगा।

23 अगर मेरा यह मशवरा अल्लाह की मरजी के मुताबिक़ हो और आप ऐसा करें तो आप अपनी ज़िम्मादारी निभा सकेंगे और यह तमाम लोग इनसाफ़ के मिलने पर सलामती के साथ अपने अपने घर जा सकेंगे।”

24 मूसा ने अपने सुसर का मशवरा मान लिया और ऐसा ही किया। 25 उसने इसराइलियों में से काबिले-एतमाद आदमी चुने और उन्हें हज़ार हज़ार, सौ सौ, पचास पचास और दस दस आदमियों पर मुक़र्रर किया। 26 यह मर्द काज़ी बनकर मुस्तक़िल तौर पर लोगों का इनसाफ़ करने लगे। आसान मसलों का फैसला वह खुद करते और मुश्किल मामलों को मूसा के पास ले आते थे।

27 कुछ अरसे बाद मूसा ने अपने सुसर को स़ख़सत किया तो यितरो अपने वतन वापस चला गया।

19

कोहे-सीना

1 इसराइलियों को मिसर से सफ़र करते हुए दो महीने हो गए थे। तीसरे महीने के पहले ही दिन वह सीना के रेगिस्तान में पहुँचे। 2 उस दिन वह रफ़ीदीम को छोड़कर दशे-सीना में आ पहुँचे। वहाँ उन्होंने रेगिस्तान में पहाड़ के करीब डेरे डाले।

3 तब मूसा पहाड़ पर चढ़कर अल्लाह के पास गया। अल्लाह ने पहाड़ पर से मूसा को पुकारकर कहा, “याकूब के घराने बनी इसराइल को बता, 4 ‘तुमने देखा है कि मैंने मिसरियों के साथ क्या कुछ किया, और कि मैं तुमको उकाब के परो पर उठाकर यहाँ अपने पास लाया हूँ। 5 चुनौचे अगर तुम मेरी सुनो और मेरे अहद के मुताबिक़ चलो तो फिर तमाम कौमों में से मेरी ख़ास मिलकियत होगी। गो पूरी दुनिया मेरी ही है, 6 लेकिन तुम मेरे लिए मख़सूस इमामों की बादशाही और मुक़द्दस कौम होगी।’ अब जाकर यह सारी बातें इसराइलियों को बता।”

7 मूसा ने पहाड़ से उतरकर और कौम के बुजुर्गों को बुलाकर उन्हें वह तमाम बातें बताई जो कहने के लिए रब ने उसे हुक्म दिया था। 8 जवाब में पूरी कौम ने मिलकर कहा, “हम रब की हर बात पूरी करेंगे जो उसने फ़रमाई है।” मूसा ने पहाड़ पर लौटकर रब को कौम का जवाब बताया। 9 जब वह पहुँचा तो रब ने मूसा से कहा, “मैं घने बादल में तेरे पास आऊँगा ताकि लोग मुझे तुझसे हमकलाम होते हुए सुनें। फिर वह हमेशा तुझ पर भरोसा रखेंगे।” तब मूसा ने रब को वह तमाम बातें बताई जो लोगों ने की थीं।

10 रब ने मूसा से कहा, “अब लोगों के पास लौटकर आज और कल उन्हें मेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस कर। वह अपने लिबास धोकर 11 तीसरे दिन के लिए तैयार हो जाएँ, क्योंकि उस दिन रब लोगों के देखते देखते कोहे-सीना पर उतरेगा। 12 लोगों की हिफ़ाज़त के लिए चारों तरफ़ पहाड़ की हँदै मुक़र्रर कर। उन्हें ख़बरदार कर कि हृद्द को पार न करो। न पहाड़ पर चढ़ो, न उसके दामन को छुओ। जो भी उसे छुए वह ज़रूर मारा जाए। 13 और उसे हाथ से छूकर नहीं मारना है बल्कि पत्थरों या तीरों से। ख़ाह इनसान हो या हैवान, वह ज़िंदा नहीं रह सकता। जब तक नरसिंगा देर तक फूँका न जाए उस वक़्त तक लोगों को पहाड़ पर चढ़ने की इजाज़त नहीं है।”

14 मूसा ने पहाड़ से उतरकर लोगों को अल्लाह के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस किया। उन्होंने अपने लिबास भी धोए। 15 उसने उनसे कहा, “तीसरे दिन के लिए तैयार हो जाओ। मर्द औरतों से हमबिसतर न हों।”

16 तीसरे दिन सुबह पहाड़ पर घना बादल छा गया। बिजली चमकने लगी, बादल गरजने लगा और नरसिंगे की निहायत जोरदार आवाज़ सुनाई दी। ख़ैमागाह में लोग लरज़ उठे। 17 तब मूसा लोगों को अल्लाह से मिलने के लिए ख़ैमागाह से बाहर पहाड़ की तरफ़ ले गया, और वह पहाड़ के दामन में खड़े हुए। 18 सीना पहाड़ धुँए से ढका हुआ था, क्योंकि रब आग में उस पर उतर आया। पहाड़ से धुआँ इस तरह उठ रहा था जैसे किसी भट्टे से उठता है। पूरा पहाड़ शिद्दत से लरज़ने लगा। 19 नरसिंगे की आवाज़ तेज़ से तेज़तर होती गई। मूसा बोलने लगा और अल्लाह उसे ऊँची आवाज़ में जवाब देता रहा।

20 रब सीना पहाड़ की चोटी पर उतरा और मूसा को ऊपर आने के लिए कहा। मूसा ऊपर चढ़ा। 21 रब ने मूसा से कहा, “फ़ौरन नीचे उतरकर लोगों को ख़बरदार कर कि वह मुझे देखने के लिए पहाड़ की हृद्द में ज़बरदस्ती दाख़िल न हों। अगर वह ऐसा करें तो बहुत-से हलाक़ हो जाएंगे। 22 इमाम भी जो रब के हज़ूर आते हैं अपने आपको मख़सूसो-मुक़द्दस करें, वरना मेरा ग़ज़ब उन पर टूट पड़ेगा।”

23 लेकिन मूसा ने रब से कहा, “लोग पहाड़ पर नहीं आ सकते, क्योंकि तूने खुद ही हमें ख़बरदार किया कि हम पहाड़ की हँदै मुक़र्रर करके उसे मख़सूसो-मुक़द्दस करें।”

24 रब ने जवाब दिया, “तो भी उतर जा और हासून को साथ लेकर वापस आ। लेकिन इमामों और लोगों को मत आने दे। अगर वह ज़बरदस्ती मेरे पास आएँ तो मेरा गज़ब उन पर टूट पड़ेगा।”

25 मूसा ने लोगों के पास उतरकर उन्हें यह बातें बता दीं।

20

दस अहकाम

1 तब अल्लाह ने यह तमाम बातें फ़रमाई, 2 “मैं रब तेरा खुदा हूँ जो तुझे मुल्के-मिसर की गुलामी से निकाल लाया। 3 मेरे सिवा किसी और माबूद की परस्तिश न करना। 4 अपने लिए बुत न बनाना। किसी भी चीज़ की मूरत न बनाना, चाहे वह आसमान में, ज़मीन पर या समुंदर में हो। 5 न बुतों की परस्तिश, न उनकी खिदमत करना, क्योंकि मैं तेरा रब गयूर खुदा हूँ। जो मुझसे नफ़रत करते हैं उन्हें मैं तीसरी और चौथी पुश्त तक सज़ा दूँगा। 6 लेकिन जो मुझसे मुहब्बत रखते और मेरे अहकाम पूरे करते हैं उन पर मैं हज़ार पुश्तों तक मेहरबानी करूँगा।

7 रब अपने खुदा का नाम बेमक़सद या ग़लत मक़सद के लिए इस्तेमाल न करना। जो भी ऐसा करता है उसे रब सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ेगा।

8 सबत के दिन का खयाल रखना। उसे इस तरह मनाना कि वह मख़सूसो-मुक़द्दस हो। 9 हफ़ते के पहले छः दिन अपना काम-काज कर, 10 लेकिन सातवाँ दिन रब तेरे खुदा का आराम का दिन है। उस दिन किसी तरह का काम न करना। न तू, न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा नौकर, न तेरी नौकरानी और न तेरे मवेशी। जो परदेसी तेरे दरमियान रहता है वह भी काम न करे। 11 क्योंकि रब ने पहले छः दिन में आसमानो-ज़मीन, समुंदर और जो कुछ उनमें है बनाया लेकिन सातवें दिन आराम किया। इसलिए रब ने सबत के दिन को बरकत देकर मुक़र्रर किया कि वह मख़सूस और मुक़द्दस हो।

12 अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना। फिर तू उस मुल्क में जो रब तेरा खुदा तुझे देनेवाला है देर तक जीता रहेगा।

13 क़त्ल न करना।

14 ज़िना न करना।

15 चोरी न करना।

16 अपने पड़ोसी के बारे में झूटी गवाही न देना।

17 अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना। न उस की बीवी का, न उसके नौकर का, न उस की नौकरानी का, न उसके बैल और न उसके गधे का बल्कि उस की किसी भी चीज़ का लालच न करना।”

लोग घबरा जाते हैं

18 जब बाकी तमाम लोगों ने बादल की गरज और नरसिंगे की आवाज़ सुनी और बिजली की चमक और पहाड़ से उठते हुए धुएँ को देखा तो वह ख़ौफ़ के मारे काँपने लगे और पहाड़ से दूर खड़े हो गए। 19 उन्होंने मूसा से कहा, “आप ही हमसे बात करें तो हम सुनेंगे। लेकिन अल्लाह को हमसे बात न करने दें वरना हम मर जाएंगे।”

20 लेकिन मूसा ने उनसे कहा, “मत डरो, क्योंकि रब तुम्हें जाँचने के लिए आया है, ताकि उसका ख़ौफ़ तुम्हारी आँखों के सामने रहे और तुम गुनाह न करो।” 21 लोग दूर ही रहे जबकि मूसा उस गहरी तारीकी के करीब गया जहाँ अल्लाह था।

22 तब रब ने मूसा से कहा, “इसराईलियों को बता, ‘तुमने खुद देखा कि मैंने आसमान पर से तुम्हारे साथ बातें की हैं। 23 चुनाँचे मेरी परस्तिश के साथ साथ अपने लिए सोने या चाँदी के बुत न बनाओ। 24 मेरे लिए मिट्टी की कुरबानगाह बनाकर उस पर अपनी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों की भस्म होनेवाली और सलामती की कुरबानियाँ चढ़ाना। मैं तुझे वह जगहें दिखाऊँगा जहाँ मेरे नाम की ताज़ीम में कुरबानियाँ पेश करनी हैं। ऐसी तमाम जगहों पर मैं तेरे पास आकर तुझे बरकत दूँगा।

25 अगर तू मेरे लिए कुरबानगाह बनाने की खातिर पत्थर इस्तेमाल करना चाहे तो तराशे हुए पत्थर इस्तेमाल न करना। क्योंकि तू तराशने के लिए इस्तेमाल होनेवाले औज़ार से उस की बेहुरमती करेगा। 26 कुरबानगाह को सीढियों के बग़ैर बनाना है ताकि उस पर चढ़ने से तेरे लिबास के नीचे से तेरा नंगापन नज़र न आए।’

21

1 इसराईलियों को यह अहकाम बता,

इब्रानी गुलाम के हुक्क

2 ‘अगर तू इब्रानी गुलाम ख़रीद तो वह छः साल तेरा गुलाम रहे। इसके बाद लाज़िम है कि उसे आज़ाद कर दिया जाए। आज़ाद होने के लिए उसे पैसे देने की ज़रूरत नहीं होगी।

3 अगर गुलाम ग़ैरशादीशुदा हालत में मालिक के घर आया हो तो वह आज़ाद होकर अकेला ही चला जाए। अगर वह शादीशुदा हालत में आया हो तो लाज़िम है कि वह अपनी बीवी समेत आज़ाद होकर जाए। 4 अगर मालिक ने गुलाम की शादी कराई और बच्चे पैदा हुए हैं तो उस की बीवी और बच्चे मालिक की मिलकियत होंगे। छः साल के बाद जब गुलाम आज़ाद होकर जाए तो उस की बीवी और बच्चे मालिक ही के पास रहें।

5 अगर गुलाम कहे, “मैं अपने मालिक और अपने बीवी बच्चों से मुहब्बत रखता हूँ, मैं आज़ाद नहीं होना चाहता” 6 तो गुलाम का मालिक उसे अल्लाह के सामने लाए। वह उसे दरवाज़े या उस की चौखट के पास ले जाए और सुताली यानी तेज़ औज़ार से उसके कान की लौ छेद दे। तब वह ज़िंदगी-भर उसका गुलाम बना रहेगा।

7 अगर कोई अपनी बेटी को गुलामी में बेच डाले तो उसके लिए आज़ादी मिलने की शरायत मर्द से फ़रक़ है। 8 अगर उसके मालिक ने उसे मुंतख़ब किया कि वह उस की बीवी बन जाए, लेकिन बाद में वह उसे पसंद न आए तो लाज़िम है कि वह मुनासिब मुआवज़ा लेकर उसे उसके रिश्तेदारों को वापस कर दे। उसे औरत को ग़ैरमुल्कियों के हाथ बेचने का इख़्तियार नहीं है, क्योंकि उसने उसके साथ बेवफ़ा सुलूक किया है।

9 अगर लौंडी का मालिक उस की अपने बेटे के साथ शादी कराए तो औरत को बेटी के हुक्क़ हासिल होंगे।

10 अगर मालिक ने उससे शादी करके बाद में दूसरी औरत से भी शादी की तो लाज़िम है कि वह पहली को भी खाना और कपड़े देता रहे। इसके अलावा उसके साथ हमबिसतर होने का फ़र्ज़ भी अदा करना है। 11 अगर वह यह तीन फ़रायज़ अदा न करे तो उसे औरत को आज़ाद करना पड़ेगा। इस सूरत में उसे मुफ़्त आज़ाद करना होगा।

ज़ख़मी करने की सज़ा

12 जो किसी को जान-बूझकर इतना सख़्त मारता हो कि वह मर जाए तो उसे ज़रूर सज़ाए-मौत देना है। 13 लेकिन अगर उसने उसे जान-बूझकर न मारा बल्कि यह इतफ़ाक़ से हुआ और अल्लाह ने यह होने दिया, तो मारनेवाला एक ऐसी जगह पनाह ले सकता है जो मैं मुक़र्रर करूँगा। वहाँ उसे क़त्ल किए जाने की इज़ाज़त नहीं होगी। 14 लेकिन जो दीदा-दानिस्ता और चालाकी से किसी को मार डालता है उसे मेरी क़ुरबानगाह से भी छीनकर सज़ाए-मौत देना है।

15 जो अपने बाप या अपनी माँ को मारता पीटता है उसे सज़ाए-मौत दी जाए।

16 जिसने किसी को इग़वा कर लिया है उसे सज़ाए-मौत दी जाए, चाहे वह उसे गुलाम बनाकर बेच चुका हो या उसे अब तक अपने पास रखा हुआ हो।

17 जो अपने बाप या माँ पर लानत करे उसे सज़ाए-मौत दी जाए।

18 हो सकता है कि आदमी झगड़ें और एक शख्स दूसरे को पत्थर या मुक्के से इतना ज़ख़मी कर दे कि गो वह बच जाए वह बिस्तर से उठ न सकता हो। 19 अगर बाद में मरीज़ यहाँ तक शफ़ा पाए कि दुबारा उठकर लाठी के सहारे चल-फिर सके तो चोट पहुँचानेवाले को सज़ा नहीं मिलेगी। उसे सिर्फ़ उस वक़्त के लिए मुआवज़ा देना पड़ेगा जब तक मरीज़ पैसे न कमा सके। साथ ही उसे उसका पूरा इलाज़ करवाना है।

20 जो अपने गुलाम या लौंडी को लाठी से यों मारे कि वह मर जाए उसे सज़ा दी जाए। 21 लेकिन अगर गुलाम या लौंडी पिटाई के बाद एक या दो दिन ज़िंदा रहे तो मालिक को सज़ा न दी जाए। क्योंकि जो रक़म उसने उसके लिए दी थी उसका नुक़सान उसे ख़ुद उठाना पड़ेगा।

22 हो सकता है कि लोग आपस में लड़ रहे हों और लड़ते लड़ते किसी हामिला औरत से यों टकरा जाएँ कि उसका बच्चा ज़ाय़ा हो जाए। अगर कोई और नुक़सान न हुआ हो तो ज़रब पहुँचानेवाले को ज़रमाना देना पड़ेगा। औरत का शौहर यह ज़रमाना मुक़र्रर करे, और अदालत में इसकी तसदीक़ हो।

23 लेकिन अगर उस औरत को और नुक़सान भी पहुँचा हो तो फिर ज़रब पहुँचानेवाले को इस उसूल के मुताबिक़ सज़ा दी जाए कि जान के बदले जान, 24 आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत, हाथ के बदले हाथ, पाँव के बदले पाँव, 25 जलने के ज़ख़म के बदले जलने का ज़ख़म, मार के बदले मार, काट के बदले काट।

26 अगर कोई मालिक अपने गुलाम की आँख पर यों मारे कि वह ज़ाय़ा हो जाए तो उसे गुलाम को आँख के बदले आज़ाद करना पड़ेगा, चाहे गुलाम मर्द हो या औरत। 27 अगर मालिक के पीटने से गुलाम का दाँत टूट जाए तो उसे गुलाम को दाँत के बदले आज़ाद करना पड़ेगा, चाहे गुलाम मर्द हो या औरत।

नुक़सान का मुआवज़ा

28 अगर कोई बैल किसी मर्द या औरत को ऐसा मारे कि वह मर जाए तो उस बैल को संगसार किया जाए। उसका गोशत खाने की इज़ाज़त नहीं है। इस सूरत में बैल के मालिक को सज़ा न दी जाए। 29 लेकिन हो सकता है कि मालिक को पहले आगाह किया गया था कि बैल लोगों को मारता है, तो भी उसने बैल को खुला छोड़ा था जिसके नतीजे में उसने किसी को मार डाला। ऐसी सूरत में न सिर्फ़ बैल को बल्कि उसके मालिक को भी संगसार करना है। 30 लेकिन अगर फैसला किया जाए कि वह अपनी जान का फ़िधा दे तो जितना मुआवज़ा भी मुक़र्रर किया जाए उसे देना पड़ेगा।

31 सज़ा में कोई फ़रक़ नहीं है, चाहे बेटे को मारा जाए या बेटी को। 32 लेकिन अगर बैल किसी गुलाम या लौंडी को मार दे तो उसका मालिक गुलाम के मालिक को चाँदी के 30 सिक्के दे और बैल को संगसार किया जाए।

33 हो सकता है कि किसी ने अपने हौज़ को खुला रहने दिया या हौज़ बनाने के लिए गढा खोदकर उसे खुला रहने दिया और कोई बैल या गधा उसमें गिरकर मर गया। 34 ऐसी सूरत में हौज़ का मालिक मुरदा जानवर के लिए पैसे दे। वह जानवर के मालिक को उस की पूरी क़ीमत अदा करे और मुरदा जानवर ख़ुद ले ले।

35 अगर किसी का बैल किसी दूसरे के बैल को ऐसे मारे कि वह मर जाए तो दोनों मालिक ज़िंदा बैल को बेचकर उसके पैसे आपस में बराबर बाँट लें। इसी तरह वह मुरदा बैल को भी बराबर तकसीम करें। 36 लेकिन हो सकता है कि मालिक को मालूम था कि मेरा बैल दूसरे जानवरों पर हमला करता है, इसके बावजूद उसने उसे आज़ाद छोड़ दिया था। ऐसी सूरत में उसे मुरदा बैल के एवज़ उसके मालिक को नया बैल देना पड़ेगा, और वह मुरदा बैल खुद ले ले।

22

मिलकियत की हिफ़ाज़त

1 जिसने कोई बैल या भेड़ चोरी करके उसे ज़बह किया या बेच डाला है उसे हर चोरी के बैल के एवज़ पाँच बैल और हर चोरी की भेड़ के एवज़ चार भेड़ें वापस करना है।

2 हो सकता है कि कोई चोर नक़ब लगा रहा हो और लोग उसे पकड़कर यहाँ तक मारते पीटते रहें कि वह मर जाए। अगर रात के वक़्त ऐसा हुआ हो तो वह उसके खून के ज़िम्मादार नहीं ठहर सकते। 3 लेकिन अगर सूरज के तुलू होने के बाद ऐसा हुआ हो तो जिसने उसे मारा वह कातिल ठहरेगा।

चोर को हर चुराई हुई चीज़ का एवज़ाना देना है। अगर उसके पास देने के लिए कुछ न हो तो उसे गुलाम बनाकर बेचना है। जो पैसे उसे बेचने के एवज़ मिलें वह चुराई हुई चीज़ों के बदले में दिए जाएँ।

4 अगर चोरी का जानवर चोर के पास ज़िंदा पाया जाए तो उसे हर जानवर के एवज़ दो देने पड़ेंगे, चाहे वह बैल, भेड़, बकरी या गधा हो।

5 हो सकता है कि कोई अपने मवेशी को अपने खेत या अंगूर के बाग़ में छोड़कर चरने दे और होते होते वह किसी दूसरे के खेत या अंगूर के बाग़ में जाकर चरने लगे। ऐसी सूरत में लाज़िम है कि मवेशी का मालिक नुक़सान के एवज़ अपने अंगूर के बाग़ और खेत की बेहतरीन पैदावार में से दे।

6 हो सकता है कि किसी ने आग जलाई हो और वह काँटेदार झाड़ियों के ज़रीए पड़ोसी के खेत तक फैलकर उसके अनाज के पूलों को, उस की पकी हुई फ़सल को या खेत की किसी और पैदावार को बरबाद कर दे। ऐसी सूरत में जिसने आग जलाई हो उसे उस की पूरी क़ीमत अदा करनी है।

7 हो सकता है कि किसी ने कुछ पैसे या कोई और माल अपने किसी वाकिफ़कार के सुपुर्द कर दिया हो ताकि वह उसे महफूज़ रखे। अगर यह चीज़ें उसके घर से चोरी हो जाएँ और बाद में चोर को पकड़ा जाए तो चोर को उस की दुगनी क़ीमत अदा करनी पड़ेगी। 8 लेकिन अगर चोर पकड़ा न जाए तो लाज़िम है कि उस घर का मालिक जिसके सुपुर्द यह चीज़ें की गई थीं अल्लाह के हुज़ूर खड़ा हो ताकि मालूम किया जाए कि उसने खुद यह माल चोरी किया है या नहीं।

9 हो सकता है कि दो लोगों का आपस में झगड़ा हो, और दोनों किसी चीज़ के बारे में दावा करते हों कि यह मेरी है। अगर कोई क़ीमती चीज़ हो मसलन बैल, गधा, भेड़, बकरी, कपड़े या कोई खोई हुई चीज़ तो मामला अल्लाह के हुज़ूर लाया जाए। जिसे अल्लाह कुसूरवार करार दे उसे दूसरे को ज़ेरे-बहस चीज़ की दुगनी क़ीमत अदा करनी है।

10 हो सकता है कि किसी ने अपना कोई गधा, बैल, भेड़, बकरी या कोई और जानवर किसी वाकिफ़कार के सुपुर्द कर दिया ताकि वह उसे महफूज़ रखे। वहाँ जानवर मर जाए या ज़ख़मी हो जाए, या कोई उस पर क़ब्ज़ा करके उसे उस वक़्त ले जाए जब कोई न देख रहा हो। 11 यह मामला यों हल किया जाए कि जिसके सुपुर्द जानवर किया गया था वह रब के हुज़ूर क़सम खाकर कहे कि मैंने अपने वाकिफ़कार के जानवर के लालच में यह काम नहीं किया। जानवर के मालिक को यह क़बूल करना पड़ेगा, और दूसरे को इसके बदले कुछ नहीं देना होगा। 12 लेकिन अगर वाकई जानवर को चोरी किया गया है तो जिसके सुपुर्द जानवर किया गया था उसे उस की क़ीमत अदा करनी पड़ेगी। 13 अगर किसी जंगली जानवर ने उसे फाड़ डाला हो तो वह सबूत के तौर पर फाड़ी हुई लाश को ले आए। फिर उसे उस की क़ीमत अदा नहीं करनी पड़ेगी।

14 हो सकता है कि कोई अपने वाकिफ़कार से इजाज़त लेकर उसका जानवर इस्तेमाल करे। अगर जानवर को मालिक की ग़ैरमौजूदगी में चोट लगे या वह मर जाए तो उस शख्स को जिसके पास जानवर उस वक़्त था उसका मुआवज़ा देना पड़ेगा। 15 लेकिन अगर जानवर का मालिक उस वक़्त साथ था तो दूसरे को मुआवज़ा देने की ज़रूरत नहीं होगी। अगर उसने जानवर को किराए पर लिया हो तो उसका नुक़सान किराए से पूरा हो जाएगा।

लड़की को वरगलाने का जुर्म

16 अगर किसी कुँवारी की मँगनी नहीं हुई और कोई मर्द उसे वरगलाकर उससे हमबिसतर हो जाए तो वह महर देकर उससे शादी करे। 17 लेकिन अगर लड़की का बाप उस की उस मर्द के साथ शादी करने से इनकार करे, इस सूरत में भी मर्द को कुँवारी के लिए मुकर्ररा रक़म देनी पड़ेगी।

सज़ाए-मौत के लायक ज़रायम

18 जादूगरनी को जीने न देना।

19 जो शख्स किसी जानवर के साथ जिंसी ताल्लुकात रखता हो उसे सज़ाए-मौत दी जाए।

20 जो न सिर्फ़ रब को कुरबानियाँ पेश करे बल्कि दीगर माबूदों को भी उसे क्रौम से निकालकर हलाक किया जाए।

कमज़ोरों की हिफ़ाज़त के लिए अहक़ाम

21 जो परदेसी तेरे मुल्क में मेहमान है उसे न दबाना और न उससे बुरा सुलूक करना, क्योंकि तुम भी मिसर में परदेसी थे।

22 किसी बेवा या यतीम से बुरा सुलूक न करना। 23 अगर तू ऐसा करे और वह चिल्लाकर मुझसे फ़रियाद करें तो मैं ज़रूर उनकी सुनूँगा।

24 मैं बड़े गुस्से में आकर तुम्हें तलवार से मार डालूँगा। फिर तुम्हारी बीवियाँ खुद बेवाएँ और तुम्हारे बच्चे खुद यतीम बन जाएंगे।

25 अगर तूने मेरी क्रौम के किसी ग़रीब को कर्ज़ दिया है तो उससे सूद न लेना।

26 अगर तुझे किसी से उस की चादर गिरवी के तौर पर मिली हो तो उसे सूरज डूबने से पहले ही वापस कर देना है, 27 क्योंकि इसी को वह सोने के लिए इस्तेमाल करता है। वरना वह क्या चीज़ ओढ़कर सोएगा? अगर तू चादर वापस न करे और वह शख्स चिल्लाकर मुझसे फ़रियाद करे तो मैं उस की सुनूँगा, क्योंकि मैं मेहरबान हूँ।

अल्लाह से मुताल्लिक फ़रायज़

28 अल्लाह को न कोसना, न अपनी क्रौम के किसी सरदार पर लानत करना।

29 मुझे वक़्त पर अपने खेत और कोल्हूओं की पैदावार में से नज़राने पेश करना। अपने पहलौठे मुझे देना। 30 अपने बैलों, भेड़ों और बकरियों के पहलौठों को भी मुझे देना। जानवर का पहलौठा पहले सात दिन अपनी माँ के साथ रहे। आठवें दिन वह मुझे दिया जाए।

31 अपने आपको मेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस रखना। इसलिए ऐसे जानवर का गोश्त मत खाना जिसे किसी जंगली जानवर ने फाड़ डाला है। ऐसे गोश्त को कुत्तों को खाने देना।

23

अदालत में इनसाफ़ और दूसरों से मुहब्बत

1 ग़लत अफ़वाहें न फैलाना। किसी शरीर आदमी का साथ देकर झूठी गवाही देना मना है। 2 अगर अकसरियत ग़लत काम कर रही हो तो उसके पीछे न हो लेना। अदालत में गवाही देते वक़्त अकसरियत के साथ मिलकर ऐसी बात न करना जिससे ग़लत फ़ैसला किया जाए। 3 लेकिन अदालत में किसी ग़रीब की तरफ़दारी भी न करना।

4 अगर तुझे तेरे दुश्मन का बैल या गधा आवारा फिरता हुआ नज़र आए तो उसे हर सूरत में वापस कर देना। 5 अगर तुझसे नफ़रत करनेवाले का गधा बोझ तले गिर गया हो और तुझे पता लगे तो उसे न छोड़ना बल्कि ज़रूर उस की मदद करना।

6 अदालत में ग़रीब के हुक्क़ न मारना। 7 ऐसे मामले से दूर रहना जिसमें लोग झूट बोलते हैं। जो बेगुनाह और हक़ पर है उसे सज़ाए-मौत न देना, क्योंकि मैं कुसूरवार को हक़-बजानिब नहीं ठहराऊँगा। 8 रिश्वत न लेना, क्योंकि रिश्वत देखनेवाले को अंधा कर देती है और उस की बात बनने नहीं देती जो हक़ पर है।

9 जो परदेसी तेरे मुल्क में मेहमान है उस पर दबाव न डालना। तुम ऐसे लोगों की हालत से ख़ूब वाकिफ़ हो, क्योंकि तुम खुद मिसर में परदेसी रहे हो।

सबत का साल और सबत

10 छः साल तक अपनी ज़मीन में बीज बोकर उस की पैदावार जमा करना। 11 लेकिन सातवें साल ज़मीन को इस्तेमाल न करना बल्कि उसे पड़े रहने देना। जो कुछ भी उगे वह क्रौम के ग़रीब लोग खाएँ। जो उनसे बच जाए उसे जंगली जानवर खाएँ। अपने अंगूर और जैतून के बाग़ों के साथ भी ऐसा ही करना है।

12 छः दिन अपना काम-काज करना, लेकिन सातवें दिन आराम करना। फिर तेरा बैल और तेरा गधा भी आराम कर सकेंगे, तेरी लौंडी का बेटा और तेरे साथ रहनेवाला परदेसी भी ताज़ादम हो जाएंगे।

13 जो भी हिदायत मैंने दी है उस पर अमल कर। दीगर माबूदों की परस्तिश न करना। मैं तेरे मुँह से उनके नामों तक का ज़िक्र न सुनूँ।

तीन खास ईदें

14 साल में तीन दफ़ा मेरी ताज़ीम में ईद मनाना। 15 पहले, बेखमीरी रोटी की ईद मनाना। अबीब के महीने * में सात दिन तक तेरी रोटी में खमीर न हो जिस तरह मैंने हुक्म दिया है, क्योंकि इस महीने में तू मिसर से निकला। इन दिनों में कोई मेरे हुज़ूर खाली हाथ न आए। 16 दूसरे, फ़सलकटाई की ईद उस वक़्त मनाना जब तू अपने खेत में बोई हुई पहली फ़सल काटेगा। तीसरे, जमा करने की ईद फ़सल की कटाई के इख़्तिताम † पर मनाना है जब तूने अंगूर और बाकी बाग़ों के फल जमा किए होंगे। 17 यों तेरे तमाम मर्द तीन मरतबा रब कादिरे-मुतलक के हुज़ूर हाज़िर हुआ करें।

18 जब तू किसी जानवर को ज़बह करके कुरबानी के तौर पर पेश करे तो उसके खून के साथ ऐसी रोटी पेश न करना जिसमें खमीर हो। और जो जानवर तू मेरी ईदों पर चढ़ाए उनकी चरबी अगली सुबह तक बाकी न रहे।

* 23:15 मार्च ता अप्रैल। † 23:16 सितंबर ता अक्टूबर।

19 अपनी ज़मीन की पहली पैदावार का बेहतरीन हिस्सा रब अपने खुदा के घर में लाना।
भेड़ या बकरी के बच्चे को उस की माँ के दूध में न पकाना।

रब का फ़रिश्ता राहनुमाई करेगा

20 मैं तेरे आगे आगे फ़रिश्ता भेजता हूँ जो रास्ते में तेरी हिफ़ाज़त करेगा और तुझे उस जगह तक ले जाएगा जो मैंने तेरे लिए तैयार की है।

21 उस की मौजूदगी में एहतियात बरतना। उस की सुनना, और उस की खिलाफ़वरज़ी न करना। अगर तू सरकश हो जाए तो वह तुझे मुआफ़ नहीं करेगा, क्योंकि मेरा नाम उसमें हाज़िर होगा। 22 लेकिन अगर तू उस की सुने और सब कुछ करे जो मैं तुझे बताता हूँ तो मैं तेरे दुश्मनों का दुश्मन और तेरे मुखालिफ़ों का मुखालिफ़ हूँगा।

23 क्योंकि मेरा फ़रिश्ता तेरे आगे आगे चलेगा और तुझे मुल्के-कनान तक पहुँचा देगा जहाँ अमोरी, हिती, फ़रिज़्ज़ी, कनानी, हिवी और यबूसी आबाद हैं। तब मैं उन्हें रूए-ज़मीन पर से मिटा दूँगा। 24 उनके माबूदों को सिजदा न करना, न उनकी ख़िदमत करना। उनके रस्मो-रिवाज भी न अपनाना बल्कि उनके बुतों को तबाह कर देना। जिन सतूनों के सामने वह इबादत करते हैं उनको भी टुकड़े टुकड़े कर डालना। 25 रब अपने खुदा की ख़िदमत करना। फिर मैं तेरी ख़ुराक और पानी को बरकत देकर तमाम बीमारियाँ तुझसे दूर करूँगा। 26 फिर तेरे मुल्क में न किसी का बच्चा ज़ाया होगा, न कोई बाँझ होगी। साथ ही मैं तुझे तवील ज़िंदगी अता करूँगा।

27 मैं तेरे आगे आगे दहशत फैलाऊँगा। जहाँ भी तू जाएगा वहाँ मैं तमाम क़ौमों में अबतरी पैदा करूँगा। मेरे सबब से तेरे सारे दुश्मन पलटकर भाग जाएंगे। 28 मैं तेरे आगे ज़बूर भेज दूँगा जो हिवी, कनानी और हिती को मुल्क छोड़ने पर मजबूर करेंगे। 29 लेकिन जब तू वहाँ पहुँचेगा तो मैं उन्हें एक ही साल में मुल्क से नहीं निकालूँगा। वरना पूरा मुल्क वीरान हो जाएगा और जंगली जानवर फैलकर तेरे लिए नुक़सान का बाइस बन जाएंगे। 30 इसलिए मैं तेरे पहुँचने पर मुल्क के बाशिंदों को थोड़ा थोड़ा करके निकालता जाऊँगा। इतने में तेरी तादाद बढ़ेगी और तू रफ़ता रफ़ता मुल्क पर क़ब्ज़ा कर सकेगा।

31 मैं तेरी सरहदें मुक़रर करूँगा। बहरे-कुलजुम एक हद होगी और फ़िलिस्तिनियों का समुंदर दूसरी, जुनूब का रेगिस्तान एक होगी और दरियाए-फ़ुरात दूसरी। मैं मुल्क के बाशिंदों को तेरे क़ब्ज़े में कर दूँगा, और तू उन्हें अपने आगे आगे मुल्क से दूर करता जाएगा। 32 लाज़िम है कि तू उनके साथ या उनके माबूदों के साथ अहद न बाँधे। 33 उनका तेरे मुल्क में रहना मना है, वरना तू उनके सबब से मेरा गुनाह करेगा। अगर तू उनके माबूदों की इबादत करेगा तो यह तेरे लिए फ़ंदा बन जाएगा।”

24

रब इसराईल से अहद बाँधता है

1 रब ने मूसा से कहा, “तू, हासून, नदब, अबीह और इसराईल के 70 बुजुर्ग मेरे पास ऊपर आएँ। कुछ फ़ासले पर खड़े होकर मुझे सिजदा करो। 2 सिर्फ़ तू अकेला ही मेरे करीब आ, दूसरे दूर रहें। और क़ौम के बाकी लोग तेरे साथ पहाड़ पर न चढ़ें।”

3 तब मूसा ने क़ौम के पास जाकर रब की तमाम बातें और अहक़ाम पेश किए। जवाब में सबने मिलकर कहा, “हम रब की इन तमाम बातों पर अमल करेंगे।”

4 तब मूसा ने रब की तमाम बातें लिख लीं। अगले दिन वह सुबह-सवेरे उठा और पहाड़ के पास गया। उसके दामन में उसने क़ुरबानगाह बनाई। साथ ही उसने इसराईल के हर एक क़बीले के लिए एक एक पत्थर का सतून खड़ा किया। 5 फिर उसने कुछ इसराईली नौजवानों को क़ुरबानी पेश करने के लिए बुलाया ताकि वह रब की ताज़ीम में भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ चढ़ाएँ और जवान बैलों को सलामती की क़ुरबानी के तौर पर पेश करें। 6 मूसा ने क़ुरबानियों का ख़ून जमा किया। उसका आधा हिस्सा उसने बासनों में डाल दिया और आधा हिस्सा क़ुरबानगाह पर छिड़क दिया।

7 फिर उसने वह किताब ली जिसमें रब के साथ अहद की तमाम शरायत दर्ज थी और उसे क़ौम को पढ़कर सुनाया। जवाब में उन्होंने कहा, “हम रब की इन तमाम बातों पर अमल करेंगे। हम उस की सुनेंगे।” 8 इस पर मूसा ने बासनों में से खून लेकर उसे लोगों पर छिड़का और कहा, “यह खून उस अहद की तसदीक़ करता है जो रब ने तुम्हारे साथ किया है और जो उस की तमाम बातों पर मबनी है।”

9 इसके बाद मूसा, हासून, नदब, अबीह और इसराईल के 70 बुजुर्ग सीना पहाड़ पर चढ़े। 10 वहाँ उन्होंने इसराईल के खुदा को देखा। लगता था कि उसके पाँवों के नीचे संगे-लाजवर्द का-सा तख़्ता था। वह आसमान की मानिंद साफ़ो-शफ़फ़ाफ़ था। 11 अगरचे इसराईल के राहनुमाओं ने यह सब कुछ देखा तो भी रब ने उन्हें हलाक न किया, बल्कि वह अल्लाह को देखते रहे और उसके हुज़ूर अहद का खाना खाते और पीते रहे।

पत्थर की तख़्तियाँ

12 पहाड़ से उतरने के बाद रब ने मूसा से कहा, “मेरे पास पहाड़ पर आकर कुछ देर के लिए ठहरे रहना। मैं तुझे पत्थर की तख़्तियाँ दूँगा जिन पर मैंने अपनी शरीअत और अहक़ाम लिखे हैं और जो इसराईल की तालीमो-तरबियत के लिए ज़रूरी हैं।”

13 मूसा अपने मददगार यशुअ के साथ चल पड़ा और अल्लाह के पहाड़ पर चढ़ गया। 14 पहले उसने बुजुर्गों से कहा, “हमारी वापसी के इंतज़ार में यहाँ ठहरे रहो। हासून और हर तुम्हारे पास रहेंगे। कोई भी मामला हो तो लोग उन्हीं के पास जाएँ।”

मूसा रब से मिलता है

15 जब मूसा चढ़ने लगा तो पहाड़ पर बादल छा गया। 16 रब का जलाल कोहे-सीना पर उतर आया। छः दिन तक बादल उस पर छाया रहा। सातवें दिन रब ने बादल में से मूसा को बुलाया। 17 रब का जलाल इसराइलियों को भी नज़र आता था। उन्हें यों लगा जैसा कि पहाड़ की चोटी पर तेज़ आग भड़क रही हो। 18 चढ़ते चढ़ते मूसा बादल में दाखिल हुआ। वहाँ वह चालीस दिन और चालीस रात रहा।

25

मुलाकात का खैमा बनाने के लिए हदिये

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इसराइलियों को बता कि वह हदिये लाकर मुझे उठानेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करें। लेकिन सिर्फ़ उनसे हदिये क़बूल करो जो दिली खुशी से दें। 3 उनसे यह चीज़ें हदिये के तौर पर क़बूल करो : सोना, चाँदी, पीतल; 4 नीले, अरगवानी और क्रिमिज़ी रंग का धागा, बारीक कतान, बकरी के बाल, 5 मेंढों की सुर्ख रंगी हुई खालें, तख़स * की खालें, कीकर की लकड़ी, 6 शमादान के लिए जैतून का तेल, मसह करने के लिए तेल और खुशबूदार बख़र के लिए मसाले, 7 अक्रीके-अहमर और दीगर जवाहर जो इमामे-आज़म के बालापोश और सीने के कीसे में जड़े जाएंगे। 8 इन चीज़ों से लोग मेरे लिए मक़दिस बनाएँ ताकि मैं उनके दरमियान रहूँ। 9 मैं तुझे मक़दिस और उसके तमाम सामान का नमूना दिखाऊँगा, क्योंकि तुम्हें सब कुछ ऐन उसी के मुताबिक़ बनाना है।

अहद का संदूक

10-12 लोग कीकर की लकड़ी का संदूक बनाएँ। उस की लंबाई पौने चार फ़ुट हो जबकि उस की चौड़ाई और ऊँचाई सवा दो दो फ़ुट हो। पूरे संदूक पर अंदर और बाहर से ख़ालिस सोना चढ़ाना। ऊपर की सतह के इर्दगिर्द सोने की झालर लगाना। संदूक को उठाने के लिए सोने के चार कड़े ढालकर उन्हें संदूक के चारपाइयों पर लगाना। दोनों तरफ़ दो दो कड़े हों। 13 फिर कीकर की दो लकड़ियाँ संदूक को उठाने के लिए तैयार करना। उन पर सोना चढ़ाकर 14 उनको दोनों तरफ़ के कड़ों में डालना ताकि उनसे संदूक को उठाया जाए। 15 यह लकड़ियाँ संदूक के इन कड़ों में पड़ी रहें। उन्हें कभी भी दूर न किया जाए। 16 संदूक में शरीअत की वह दो तख़्तियाँ रखना जो मैं तुझे दूँगा।

17 संदूक का ढकना ख़ालिस सोने का बनाना। उस की लंबाई पौने चार फ़ुट और चौड़ाई सवा दो फ़ुट हो। उसका नाम कफ़फ़ारे का ढकना है। 18-19 सोने से घड़कर दो क़रूबी फ़रिश्ते बनाए जाएँ जो ढकने के दोनों सिरों पर खड़े हों। यह दो फ़रिश्ते और ढकना एक ही टुकड़े से बनाने हैं। 20 फ़रिश्तों के पर यों ऊपर की तरफ़ फैले हुए हों कि वह ढकने को पनाह दें। उनके मुँह एक दूसरे की तरफ़ किए हुए हों, और वह ढकने की तरफ़ देखें।

21 ढकने को संदूक पर लगा, और संदूक में शरीअत की वह दो तख़्तियाँ रख जो मैं तुझे दूँगा। 22 वहाँ ढकने के ऊपर दोनों फ़रिश्तों के दरमियान से मैं अपने आपको तुझ पर जाहिर करके तुझसे हमकलाम हूँगा और तुझे इसराइलियों के लिए तमाम अहकाम दूँगा।

मख़सूस रोटियों की मेज़

23 कीकर की लकड़ी की मेज़ बनाना। उस की लंबाई तीन फ़ुट, चौड़ाई डेढ़ फ़ुट और ऊँचाई सवा दो फ़ुट हो। 24 उस पर ख़ालिस सोना चढ़ाना, और उसके इर्दगिर्द सोने की झालर लगाना। 25 मेज़ की ऊपर की सतह पर चौखटा लगाना जिसकी ऊँचाई तीन इंच हो और जिस पर सोने की झालर लगी हो। 26 सोने के चार कड़े ढालकर उन्हें चारों कोनों पर लगाना जहाँ मेज़ के पाए लगे हैं। 27 यह कड़े मेज़ की सतह पर लगे चौखटे के नीचे लगाए जाएँ। उनमें वह लकड़ियाँ डालनी हैं जिनसे मेज़ को उठाया जाएगा। 28 यह लकड़ियाँ भी कीकर की हों और उन पर सोना चढ़ाया जाए। उनसे मेज़ को उठाना है।

29 उसके थाल, प्याले, मरतबान और मै की नज़रें पेश करने के बरतन ख़ालिस सोने से बनाना है। 30 मेज़ पर वह रोटियाँ हर वक़्त मेरे हुज़ूर पड़ी रहें जो मेरे लिए मख़सूस हैं।

शमादान

31 ख़ालिस सोने का शमादान भी बनाना। उसका पाया और डंडी घड़कर बनाना है। उस की प्यालियाँ जो फूलों और कलियों की शक़ल की होंगी पाए और डंडी के साथ एक ही टुकड़ा हों। 32 डंडी से दाईं और बाईं तरफ़ तीन तीन शाखें निकलें। 33 हर शाख़ पर तीन प्यालियाँ लगी हों जो बादाम की कलियों और फूलों की शक़ल की हों। 34 शमादान की डंडी पर भी इस किस्म की प्यालियाँ लगी हों, लेकिन तादाद में चार। 35 इनमें से तीन प्यालियाँ दाएँ बाएँ की छः शाख़ों के नीचे लगी हों। वह यों लगी हों कि हर प्याली से दो शाखें निकलें। 36 शाखें और प्यालियाँ बल्कि पूरा शमादान ख़ालिस सोने के एक ही टुकड़े से घड़कर बनाना है।

37 शमादान के लिए सात चराग़ बनाकर उन्हें यों शाख़ों पर रखना कि वह सामने की जगह रौशन करें। 38 बत्ती कतरने की कैचियाँ और जलते कोयले के लिए छोटे बरतन भी ख़ालिस सोने से बनाए जाएँ। 39 शमादान और उस सारे सामान के लिए पूरे 34 किलोग्राम ख़ालिस सोना इस्तेमाल किया जाए। 40 गौर कर कि सब कुछ ऐन उस नमूने के मुताबिक़ बनाया जाए जो मैं तुझे यहाँ पहाड़ पर दिखाता हूँ।

* 25:5 ग़ालिबन इस मतरूक इब्रानी लफ़्ज़ से मुराद कोई समुंदरी जानवर है।

26

मुलाकात का खैमा

1 मुकद्दस खैमे के लिए दस परदे बनाना। उनके लिए बारीक कतान और नीले, अरगवानी और किरमिजी रंग का धागा इस्तेमाल करना। परदों में किसी माहिर कारीगर के कढ़ाई के काम से कस्बी फरिशतों का डिजायन बनवाना। 2 हर परदे की लंबाई 42 फुट और चौड़ाई 6 फुट हो। 3 पाँच परदों के लंबे हाशिये एक दूसरे के साथ जोड़े जाएँ और इसी तरह बाकी पाँच भी। यों दो बड़े टुकड़े बन जाएंगे। 4 दोनों टुकड़ों को एक दूसरे के साथ मिलाने के लिए नीले धागे के हलके बनाना। यह हलके हर टुकड़े के 42 फुटवाले एक किनारे पर लगाए जाएँ, 5 एक टुकड़े के हाशिये पर 50 हलके और दूसरे पर भी उतने ही हलके। इन दो हाशियों के हलके एक दूसरे के आमने-सामने हों। 6 फिर सोने की 50 हुकें बनाकर उनसे आमने-सामने के हलके एक दूसरे के साथ मिलाना। यों दोनों टुकड़े जुड़कर खैमे का काम देंगे।

7 बकरी के बालों से भी 11 परदे बनाना जिन्हें कपड़ेवाले खैमे के ऊपर रखा जाए। 8 हर परदे की लंबाई 45 फुट और चौड़ाई 6 फुट हो। 9 पाँच परदों के लंबे हाशिये एक दूसरे के साथ जोड़े जाएँ और इसी तरह बाकी छः भी। इन छः परदों के छठे परदे को एक दफा तह करना। यह सामनेवाले हिस्से से लटके।

10 बकरी के बाल के इन दोनों टुकड़ों को भी मिलाना है। इसके लिए हर टुकड़े के 45 फुटवाले एक किनारे पर पचास पचास हलके लगाना। 11 फिर पीतल की 50 हुकें बनाकर उनसे दोनों हिस्से मिलाना। 12 जब बकरियों के बालों का यह खैमा कपड़े के खैमे के ऊपर लगाया जाएगा तो आधा परदा बाकी रहेगा। वह खैमे की पिछली तरफ लटका रहे। 13 खैमे के दाईं और बाईं तरफ बकरी के बालों का खैमा कपड़े के खैमे की निसबत डेढ़ डेढ़ फुट लंबा होगा। यों वह दोनों तरफ लटके हुए कपड़े के खैमे को महफूज़ रखेगा।

14 एक दूसरे के ऊपर के इन दोनों खैमों की हिफाज़त के लिए दो गिलाफ बनाने हैं। बकरी के बालों के खैमे पर मेंढों की सुर्ख रँगी हुई खालें जोड़कर रखी जाएँ और उन पर तखस की खालें मिलाकर रखी जाएँ।

15 कीकर की लकड़ी के तख्ते बनाना जो खड़े किए जाएँ ताकि खैमे की दीवारों का काम दें। 16 हर तख्ते की ऊँचाई 15 फुट हो और चौड़ाई सवा दो फुट। 17 हर तख्ते के नीचे दो दो चूलें हों। यह चूलें हर तख्ते को उसके पाइयों के साथ जोड़ेंगी ताकि तख्ता खड़ा रहे। 18 खैमे की जुनूबी दीवार के लिए 20 तख्तों की ज़रूरत है 19 और साथ ही चाँदी के 40 पाइयों की। उन पर तख्ते खड़े किए जाएंगे। हर तख्ते के नीचे दो पाए होंगे, और हर पाए में एक चूल लगेगी। 20 इसी तरह खैमे की शिमाली दीवार के लिए भी 20 तख्तों की ज़रूरत है 21 और साथ ही चाँदी के 40 पाइयों की। वह भी तख्तों को खड़ा करने के लिए हैं। हर तख्ते के नीचे दो पाए होंगे। 22 खैमे की पिछली यानी मगरिबी दीवार के लिए छः तख्ते बनाना। 23 इस दीवार को शिमाली और जुनूबी दीवारों के साथ जोड़ने के लिए कोनेवाले दो तख्ते बनाना। 24 इन दो तख्तों में नीचे से लेकर ऊपर तक कोना हो ताकि एक से शिमाली दीवार मगरिबी दीवार के साथ जुड़ जाए और दूसरे से जुनूबी दीवार मगरिबी दीवार के साथ। इनके ऊपर के सिरे कड़ों से मज़बूत किए जाएँ। 25 यों पिछले यानी मगरिबी तख्तों की पूरी तादाद 8 होगी और इनके लिए चाँदी के पाइयों की तादाद 16, हर तख्ते के नीचे दो दो पाए होंगे।

26-27 इसके अलावा कीकर की लकड़ी के शहतीर बनाना, तीनों दीवारों के लिए पाँच पाँच शहतीर। वह हर दीवार के तख्तों पर यों लगाए जाएँ कि वह उन्हें एक दूसरे के साथ मिलाएँ। 28 दरमियानी शहतीर दीवार की आधी ऊँचाई पर दीवार के एक सिरे से दूसरे सिरे तक लगाया जाए। 29 शहतीरों को तख्तों के साथ लगाने के लिए सोने के कड़े बनाकर तख्तों में लगाना। तमाम तख्तों और शहतीरों पर सोना चढ़ाना।

30 पूरे मुकद्दस खैमे को उसी नमूने के मुताबिक बनाना जो मैं तुझे पहाड़ पर दिखाता हूँ।

मुकद्दस खैमे के परदे

31 अब एक और परदा बनाना। इसके लिए भी बारीक कतान और नीले, अरगवानी और किरमिजी रंग का धागा इस्तेमाल करना। उस पर भी किसी माहिर कारीगर के कढ़ाई के काम से कस्बी फरिशतों का डिजायन बनवाना। 32 इसे सोने की हुकों से कीकर की लकड़ी के चार सतूनों से लटकाना। इन सतूनों पर सोना चढ़ाया जाए और वह चाँदी के पाइयों पर खड़े हों। 33 यह परदा मुकद्दस कमरे को मुकद्दसतरीन कमरे से अलग करेगा जिसमें अहद का संदूक पड़ा रहेगा। परदे को लटकाने के बाद उसके पीछे मुकद्दसतरीन कमरे में अहद का संदूक रखना। 34 फिर अहद के संदूक पर कफ़फ़ारे का ढकना रखना।

35 जिस मेज़ पर मेरे लिए मखसूस की गई रोटियाँ पड़ी रहती हैं वह परदे के बाहर मुकद्दस कमरे में शिमाल की तरफ रखी जाए। उसके मुकाबिल जुनूब की तरफ शमादान रखा जाए।

36 फिर खैमे के दरवाज़े के लिए भी परदा बनाया जाए। इसके लिए भी बारीक कतान और नीले, अरगवानी और किरमिजी रंग का धागा इस्तेमाल किया जाए। इस पर कढ़ाई का काम किया जाए। 37 इस परदे को सोने की हुकों से कीकर की लकड़ी के पाँच सतूनों से लटकाना। इन सतूनों पर भी सोना चढ़ाया जाए, और वह पीतल के पाइयों पर खड़े हों।

27

जानवरों को चढ़ाने की कुरबानगाह

1 कीकर की लकड़ी की कुरबानगाह बनाना। उस की ऊँचाई साढ़े चार फुट हो जबकि उस की लंबाई और चौड़ाई साढ़े सात सात फुट हो। 2 उसके ऊपर चारों कोनों में से एक एक सींग निकले। सींग और कुरबानगाह एक ही टुकड़े के हों। सब पर पीतल चढ़ाना। 3 उसका तमाम साजो-सामान और बरतन भी पीतल के हों यानी राख को उठाकर ले जाने की बालटियाँ, बेलचे, काँटे, जलते हुए कोयले के लिए बरतन और छिड़काव के कटोरे।

4 कुरबानगाह को उठाने के लिए पीतल का जंगला बनाना जो ऊपर से खुला हो। जंगले के चारों कोनों पर कड़े लगाए जाएँ। 5 कुरबानगाह की आधी ऊँचाई पर किनारा लगाना, और कुरबानगाह को जंगले में इस किनारे तक रखा जाए। 6 उसे उठाने के लिए कीकर की दो लकड़ियाँ बनाना जिन पर पीतल चढ़ाना है। 7 उनको कुरबानगाह के दोनों तरफ के कड़ों में डाल देना।

8 पूरी कुरबानगाह लकड़ी की हो, लेकिन अंदर से खोखली हो। उसे ऐन उस नमूने के मुताबिक बनाना जो मैं तुझे पहाड़ पर दिखाता हूँ।

खैमे का सहन

9 मुकद्दस खैमे के लिए सहन बनाना। उस की चारदीवारी बारीक कतान के कपड़े से बनाई जाए। चारदीवारी की लंबाई जुनूब की तरफ 150 फुट हो। 10 कपड़े को चाँदी की हुकों और पट्टियों से लकड़ी के 20 खंबों के साथ लगाया जाए। हर खंबा पीतल के पाए पर खड़ा हो। 11 चारदीवारी शिमाल की तरफ भी इसी की मानिद हो। 12 खैमे के पीछे मगरिब की तरफ चारदीवारी की चौड़ाई 75 फुट हो और कपड़ा लकड़ी के 10 खंबों के साथ लगाया जाए। यह खंबे भी पीतल के पाइयों पर खड़े हों।

13 सामने, मशरिक की तरफ जहाँ से सूरज तलू होता है चारदीवारी की चौड़ाई भी 75 फुट हो। 14-15 यहाँ चारदीवारी का दरवाज़ा हो। कपड़ा दरवाज़े के दाई तरफ साढ़े 22 फुट चौड़ा हो और उसके बाई तरफ भी उतना ही चौड़ा। उसे दोनों तरफ तीन तीन लकड़ी के खंबों के साथ लगाया जाए जो पीतल के पाइयों पर खड़े हों। 16 दरवाज़े का परदा 30 फुट चौड़ा बनाना। वह नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से बनाया जाए, और उस पर कढ़ाई का काम हो। यह कपड़ा लकड़ी के चार खंबों के साथ लगाया जाए। वह भी पीतल के पाइयों पर खड़े हों।

17 तमाम खंबे पीतल के पाइयों पर खड़े हों और कपड़ा चाँदी की हुकों और पट्टियों से हर खंबे के साथ लगाया जाए। 18 चारदीवारी की लंबाई 150 फुट, चौड़ाई 75 फुट और ऊँचाई साढ़े 7 फुट हो। खंबों के तमाम पाए पीतल के हों। 19 जो भी साजो-सामान मुकद्दस खैमे में इस्तेमाल किया जाता है वह सब पीतल का हो। खैमे और चारदीवारी की मेखें भी पीतल की हों।

शमादान का तेल

20 इसराईलियों को हुक्म देना कि वह तैरे पास कूटे हुए जैतूनों का खालिस तेल लाएँ ताकि मुकद्दस कमरे के शमादान के चराग़ा मुतवातिर जलते रहें। 21 हासून और उसके बेटे शमादान को मुलाकात के खैमे के मुकद्दस कमरे में रखें, उस परदे के सामने जिसके पीछे अहद का सन्दूक है। उसमें वह तेल डालते रहें ताकि वह रब के सामने शाम से लेकर सुबह तक जलता रहे। इसराईलियों का यह उसूल अबद तक कायम रहे।

28

इमामों के लिबास

1 अपने भाई हासून और उसके बेटों नदब, अबीह, इलियज़र और इतमर को बुला। मैंने उन्हें इसराईलियों में से चुन लिया है ताकि वह इमामों की हैसियत से मेरी खिदमत करें। 2 अपने भाई हासून के लिए मुकद्दस लिबास बनवाना जो पुरवकार और शानदार हों। 3 लिबास बनाने की ज़िम्मादारी उन तमाम लोगों को देना जो ऐसे कामों में माहिर हैं और जिनको मैंने हिकमत की रूह से भर दिया है। क्योंकि जब हासून को मखसूस किया जाएगा और वह मुकद्दस खैमे की खिदमत सरंजाम देगा तो उसे इन कपड़ों की ज़रूरत होगी।

4 उसके लिए यह लिबास बनाने हैं : सीने का कीसा, बालापोश, चोगा, बुना हुआ जेरजामा, पगड़ी और कमरबंद। यह कपड़े अपने भाई हासून और उसके बेटों के लिए बनवाने हैं ताकि वह इमाम के तौर पर खिदमत कर सकें। 5 इन कपड़ों के लिए सोना और नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग का धागा और बारीक कतान इस्तेमाल किया जाए।

हासून का बालापोश

6 बालापोश को भी सोने और नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से बनाना है। उस पर किसी माहिर कारीगर से कढ़ाई का काम करवाया जाए। 7 उस की दो पट्टियाँ हों जो कंधों पर रखकर सामने और पीछे से बालापोश के साथ लगी हों। 8 इसके अलावा एक पटका बुनना है जिससे बालापोश को बाँधा जाए और जो बालापोश के साथ एक टुकड़ा हो। उसके लिए भी सोना, नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग का धागा और बारीक कतान इस्तेमाल किया जाए।

9 फिर अक्कीके-अहमर के दो पत्थर चुनकर उन पर इसराईल के बारह बेटों के नाम कंदा करना। 10 हर जौहर पर छः छः नाम उनकी पैदाइश की तरतीब के मुताबिक कंदा किए जाएँ। 11 यह नाम उस तरह जौहरों पर कंदा किए जाएँ जिस तरह मुहर कंदा की जाती है। फिर दोनों जौहर सोने के खानों में जड़कर 12 बालापोश की दो पट्टियों पर ऐसे लगाना कि कंधों पर आ जाएँ। जब हासून मेरे हुज़ूर आएगा तो जौहरों पर के यह नाम उसके कंधों पर होंगे और मुझे इसराईलियों की याद दिलाएँगे।

13 सोने के खाने बनाना 14 और खालिस सोने की दो जंजीरें जो डोरी की तरह गुंधी हुई हों। फिर इन दो जंजीरों को सोने के खानों के साथ लगाना।

सीने का कीसा

15 सीने के लिए कीसा बनाना। उसमें वह कुरे पड़े रहें जिनकी मारिफत मेरी मरजी मालूम की जाएगी। माहिर कारीगर उसे उन्हीं चीजों से बनाए जिनसे हासून का बालापोश बनाया गया है यानी सोने और नीले, अरगवानी और किरमिजी रंग के धागे और बारीक कतान से। 16 जब कपड़े को एक दफा तह किया गया हो तो कीसे की लंबाई और चौड़ाई नौ नौ इंच हो।

17 उस पर चार कतारों में जवाहर जड़ना। हर कतार में तीन तीन जौहर हों। पहली कतार में लाल, * जबरजद † और जुमुरद। 18 दूसरी में फ़ीरोज़ा, संगे-लाजवर्द ‡ और हज्रुल-कमर। § 19 तीसरी में जरक्रोन, * अक्रीक † और याकूते-अरगवानी। ‡ 20 चौथी में पुखराज, § अक्रीके-अहमर * और यशब। † हर जौहर सोने के खाने में जड़ा हुआ हो। 21 यह बारह जवाहर इसराईल के बारह कबीलों की नुमाइंदगी करते हैं। एक एक जौहर पर एक कबीले का नाम कंदा किया जाए। यह नाम उस तरह कंदा किए जाएँ जिस तरह मुहर कंदा की जाती है।

22 सीने के कीसे पर खालिस सोने की दो जंजीरें लगाना जो डोरी की तरह गुंधी हुई हों। 23 उन्हें लगाने के लिए दो कड़े बनाकर कीसे के ऊपर के दो कोनों पर लगाना। 24 अब दोनों जंजीरें उन दो कड़ों से लगाना। 25 उनके दूसरे सिरे बालापोश की कंधोंवाली पट्टियों के दो खानों के साथ जोड़ देना, फिर सामने की तरफ लगाना। 26 कीसे के निचले दो कोनों पर भी सोने के दो कड़े लगाना। वह अंदर, बालापोश की तरफ लगे हों। 27 अब दो और कड़े बनाकर बालापोश की कंधोंवाली पट्टियों पर लगाना। यह भी सामने की तरफ लगे हों लेकिन नीचे, बालापोश के पटके के ऊपर ही। 28 सीने के कीसे के निचले कड़े नीली डोरी से बालापोश के इन निचले कड़ों के साथ बाँधे जाएँ। यों कीसा पटके के ऊपर अच्छी तरह सीने के साथ लगा रहेगा।

29 जब भी हासून मक़दिस में दाखिल होकर रब के हुज़ूर आएगा वह इसराईली कबीलों के नाम अपने दिल पर सीने के कीसे की सूत में साथ ले जाएगा। यों वह क़ौम की याद दिलाता रहेगा।

30 सीने के कीसे में दोनों कुरे बनाम ऊरीम और तुम्मीम रखे जाएँ। वह भी मक़दिस में रब के सामने आते वक़्त हासून के दिल पर हों। यों जब हासून रब के हुज़ूर होगा तो रब की मरजी पछने का वसीला हमेशा उसके दिल पर होगा।

हासून का चोगा

31 चोगा भी बुनना। वह पूरी तरह नीले धागे से बनाया जाए। चोगे को बालापोश से पहले पहना जाए। 32 उसके ग़रेबान को बुने हुए कालर से मज़बूत किया जाए ताकि वह न फटे। 33 नीले, अरगवानी और किरमिजी रंग के धागे से अनार बनाकर उन्हें चोगे के दामन में लगा देना। उनके दरमियान सोने की घंटियाँ लगाना। 34 दामन में अनार और घंटियाँ बारी बारी लगाना।

35 हासून खिदमत करते वक़्त हमेशा चोगा पहने। जब वह मक़दिस में रब के हुज़ूर आएगा और वहाँ से निकलेगा तो घंटियाँ सुनाई देंगी। फिर वह नहीं मरेगा।

माथे पर छोटी तख्ती, ज़ेरजामा और पगड़ी

36 खालिस सोने की तख्ती बनाकर उस पर यह अलफ़ाज़ कंदा करना, 'रब के लिए मखसूस-मुक़द्दस।' यह अलफ़ाज़ यों कंदा किए जाएँ जिस तरह मुहर कंदा की जाती है। 37 उसे नीली डोरी से पगड़ी के सामनेवाले हिस्से से लगाया जाए 38 ताकि वह हासून के माथे पर पड़ी रहे। जब भी वह मक़दिस में जाए तो यह तख्ती साथ हो। जब इसराईली अपने नज़राने लाकर रब के लिए मखसूस करें लेकिन किसी ग़लती के बाइस कुसूरवार हों तो उनका यह कुसूर हासून पर मुंतकिल होगा। इसलिए यह तख्ती हर वक़्त उसके माथे पर हो ताकि रब इसराईलियों को क़बूल कर ले।

39 ज़ेरजामे को बारीक कतान से बुनना और इस तरह पगड़ी भी। फिर कमरबंद बनाना। उस पर कढ़ाई का काम किया जाए।

बाक़ी लिबास

40 हासून के बेटों के लिए भी ज़ेरजामे, कमरबंद और पगड़ियाँ बनाना ताकि वह पुरवकार और शानदार नज़र आएँ। 41 यह सब अपने भाई हासून और उसके बेटों को पहनाना। उनके सरों पर तेल उंडेलकर उन्हें मसह करना। यों उन्हें उनके ओहदे पर मुक़र्रर करके मेरी खिदमत के लिए मखसूस करना।

42 उनके लिए कतान के पाजामे भी बनाना ताकि वह ज़ेरजामे के नीचे नंगे न हों। उनकी लंबाई कमर से रान तक हो। 43 जब भी हासून और उसके बेटे मुलाक़ात के ख़ैमे में दाखिल हों तो उन्हें यह पाजामे पहनने हैं। इसी तरह जब उन्हें मुक़द्दस कमरे में खिदमत करने के लिए कुरबानगाह के पास आना होता है तो वह यह पहनें, वरना वह कुसूरवार ठहरकर मर जाएंगे। यह हासून और उस की औलाद के लिए एक अबदी उसूल है।

29

इमामों की मखसूसियत

* 28:17 या एक किस्म का सुर्ख अक्रीक। याद रहे कि चूँकि क़दीम ज़माने के अकसर जवाहरात के नाम मतसूक हैं या उनका मतलब बदल गया है, इसलिए उनका मुख़्तलिफ़ तरज़ुमा हो सकता है। † 28:17 peridot ‡ 28:18 lapis lazuli § 28:18 moonstone * 28:19 hyacinth † 28:19 agate ‡ 28:19 amethyst § 28:20 topaz * 28:20 carnelian † 28:20 jasper

1 इमामों को मकदिस में मेरी खिदमत के लिए मखसूस करने का यह तरीका है :

एक जवान बैल और दो बेऐब मेंढे चुन लेना। 2 बेहतरीन मेंढे से तीन क्रिस्म की चीजें पकाना जिनमें खमीर न हो। पहले, सादा रोटी। दूसरे, रोटी जिसमें तेल डाला गया हो। तीसरे, रोटी जिस पर तेल लगाया गया हो। 3 यह चीजें टोकरी में रखकर जवान बैल और दो मेंढों के साथ रब को पेश करना। 4 फिर हासून और उसके बेटों को मुलाकात के खैमे के दरवाजे पर लाकर गुस्ल कराना। 5 इसके बाद जेरजामा, चोगा, बालापोश और सीने का कीसा लेकर हासून को पहनाना। बालापोश को उसके महारत से बुने हुए पटके के ज़रीए बाँधना। 6 उसके सर पर पगड़ी बाँधकर उस पर सोने की मुकद्दस तख्ती लगाना। 7 हासून के सर पर मसह का तेल उंडेलकर उसे मसह करना।

8 फिर उसके बेटों को आगे लाकर जेरजामा पहनाना। 9 उनके पगड़ियाँ और कमरबंद बाँधना। यों तू हासून और उसके बेटों को उनके मंसब पर मुक़र्रर करना। सिर्फ़ वह और उनकी औलाद हमेशा तक मकदिस में मेरी खिदमत करते रहें।

10 बैल को मुलाकात के खैमे के सामने लाना। हासून और उसके बेटे उसके सर पर अपने हाथ रखें। 11 उसे खैमे के दरवाजे के सामने रब के हुज़ूर ज़बह करना। 12 बैल के खून में से कुछ लेकर अपनी उँगली से कुरबानगाह के सींगों पर लगाना और बाक़ी खून कुरबानगाह के पाए पर उंडेल देना। 13 अंतड़ियों पर की तमाम चरबी, जोड़कलेजी और दोनों गुरदे उनकी चरबी समेत लेकर कुरबानगाह पर जला देना। 14 लेकिन बैल के गोशत, खाल और अंतड़ियों के गोबर को खैमागाह के बाहर जला देना। यह गुनाह की कुरबानी है।

15 इसके बाद पहले मेंढे को ले आना। हासून और उसके बेटे अपने हाथ मेंढे के सर पर रखें। 16 उसे ज़बह करके उसका खून कुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़कना। 17 मेंढे को टुकड़े टुकड़े करके उस की अंतड़ियों और पिंडलियों को धोना। फिर उन्हें सर और बाक़ी टुकड़ों के साथ मिलाकर 18 पूरे मेंढे को कुरबानगाह पर जला देना। जलनेवाली यह कुरबानी रब के लिए भस्म होनेवाली कुरबानी है, और उस की खुशबू रब को पसंद है।

19 अब दूसरे मेंढे को ले आना। हासून और उसके बेटे अपने हाथ मेंढे के सर पर रखें। 20 उसको ज़बह करना। उसके खून में से कुछ लेकर हासून और उसके बेटों के दहने कान की लौ पर लगाना। इसी तरह खून को उनके दहने हाथ और दहने पाँव के अंगूठों पर भी लगाना। बाक़ी खून कुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़कना। 21 जो खून कुरबानगाह पर पड़ा है उसमें से कुछ लेकर और मसह के तेल के साथ मिलाकर हासून और उसके कपड़ों पर छिड़कना। इसी तरह उसके बेटों और उनके कपड़ों पर भी छिड़कना। यों वह और उसके बेटे खिदमत के लिए मखसूसो-मुकद्दस हो जाएंगे।

22 इस मेंढे का खास मक़सद यह है कि हासून और उसके बेटों को मकदिस में खिदमत करने का इख्तियार और ओहदा दिया जाए। मेंढे की चरबी, दुम, अंतड़ियों पर की सारी चरबी, जोड़कलेजी, दोनों गुरदे उनकी चरबी समेत और दहनी रान अलग करनी है। 23 उस टोकरी में से जो रब के हुज़ूर यानी खैमे के दरवाजे पर पड़ी है एक सादा रोटी, एक रोटी जिसमें तेल डाला गया हो और एक रोटी जिस पर तेल लगाया गया हो निकालना। 24 मेंढे से अलग की गई चीजें और बेखमीरी रोटी की टोकरी की यह चीजें लेकर हासून और उसके बेटों के हाथों में देना, और वह उन्हें हिलानेवाली कुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाएँ। 25 फिर यह चीजें उनसे वापस लेकर भस्म होनेवाली कुरबानी के साथ कुरबानगाह पर जला देना। यह रब के लिए जलनेवाली कुरबानी है, और उस की खुशबू रब को पसंद है।

26 अब उस मेंढे का सीना लेना जिसकी मारिफ़त हासून को इमामे-आज़म का इख्तियार दिया जाता है। सीने को भी हिलानेवाली कुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाना। यह सीना कुरबानी का तेरा हिस्सा होगा। 27 यों तुझे हासून और उसके बेटों की मखसूसियत के लिए मुस्तामल मेंढे के टुकड़े मखसूसो-मुकद्दस करने हैं। उसके सीने को रब के सामने हिलानेवाली कुरबानी के तौर पर हिलाया जाए और उस की रान को उठानेवाली कुरबानी के तौर पर उठाया जाए। 28 हासून और उस की औलाद को इसराईलियों की तरफ़ से हमेशा तक यह मिलने का हक़ है। जब भी इसराईली रब को अपनी सलामती की कुरबानियाँ पेश करें तो इमामों को यह दो टुकड़े मिलेंगे।

29 जब हासून फ़ौत हो जाएगा तो उसके मुकद्दस लिबास उस की औलाद में से उस मर्द को देने हैं जिसे मसह करके हासून की जगह मुक़र्रर किया जाएगा। 30 जो बेटा उस की जगह मुक़र्रर किया जाएगा और मकदिस में खिदमत करने के लिए मुलाकात के खैमे में आएगा वह यह लिबास सात दिन तक पहने रहे।

31 जो मेंढा हासून और उसके बेटों की मखसूसियत के लिए ज़बह किया गया है उसे मुकद्दस जगह पर उबालना है। 32 फिर हासून और उसके बेटे मुलाकात के खैमे के दरवाजे पर मेंढे का गोशत और टोकरी की बेखमीरी रोटियाँ खाएँ। 33 वह यह चीजें खाएँ जिनसे उन्हें गुनाहों का कफ़फ़ारा और इमाम का ओहदा मिला है। लेकिन कोई और यह न खाए, क्योंकि यह मखसूसो-मुकद्दस है। 34 और अगर अगली सुबह तक इस गोशत या रोटी में से कुछ बच जाए तो उसे जलाया जाए। उसे खाना मना है, क्योंकि वह मुकद्दस है।

35 जब तू हासून और उसके बेटों को इमाम मुक़र्रर करेगा तो ऐन मेरी हिदायत पर अमल करना। यह तक़रीब सात दिन तक मनाई जाए। 36 इसके दौरान गुनाह की कुरबानी के तौर पर रोज़ाना एक जवान बैल ज़बह करना। इससे तू कुरबानगाह का कफ़फ़ारा देकर उसे हर तरह की नापाकी से पाक करेगा। इसके अलावा उस पर मसह का तेल उंडेलना। इससे वह मेरे लिए मखसूसो-मुकद्दस हो जाएगा। 37 सात दिन तक कुरबानगाह का कफ़फ़ारा देकर उसे पाक-साफ़ करना और उसे तेल से मखसूसो-मुकद्दस करना। फिर कुरबानगाह निहायत मुकद्दस होगी। जो भी उसे छुएगा वह भी मखसूसो-मुकद्दस हो जाएगा।

रोज़मर्रा की कुरबानियाँ

38 रोज़ाना एक एक साल के दो भेड़ के नर बच्चे कुरबानगाह पर जला देना, 39 एक को सुबह के वक़्त, दूसरे को सूरज के गुस्ब होने के ऐन बाद। 40 पहले जानवर के साथ डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा पेश किया जाए जो कूटे हुए जैतूनों के एक लिटर तेल के साथ मिलाया गया हो। मै की नज़र के तौर पर एक लिटर मै भी कुरबानगाह पर उंडेलना। 41 दूसरे जानवर के साथ भी गल्ला और मै की यह दो नज़रें पेश की जाएँ। ऐसी कुरबानी की खुशबू रब को पसंद है।

42 लाज़िम है कि आनेवाली तमाम नसलें भस्म होनेवाली यह कुरबानी बाकायदगी से मुक़द्दस ख़ैमे के दरवाज़े पर रब के हुज़ूर चढ़ाएँ। वहाँ मैं तुमसे मिला करूँगा और तुमसे हमकलाम हूँगा। 43 वहाँ मैं इसराईलियों से भी मिला करूँगा, और वह जगह मेरे जलाल से मख़सूसो-मुक़द्दस हो जाएगी। 44 यों मैं मुलाकात के ख़ैमे और कुरबानगाह को मख़सूस करूँगा और हासून और उसके बेटों को मख़सूस करूँगा ताकि वह इमामों की हैसियत से मेरी ख़िदमत करें।

45 तब मैं इसराईलियों के दरमियान रहूँगा और उनका खुदा हूँगा। 46 वह जान लेंगे कि मैं रब उनका खुदा हूँ, कि मैं उन्हें मिसर से निकाल लाया ताकि उनके दरमियान सुकूनत करूँ। मैं रब उनका खुदा हूँ।

30

बख़ूर जलाने की कुरबानगाह

1 कीकर की लकड़ी की कुरबानगाह बनाना जिस पर बख़ूर जलाया जाए। 2 वह डेढ़ फुट लंबी, इतनी ही चौड़ी और तीन फुट ऊँची हो। उसके चारों कोनों में से सींग निकलें जो कुरबानगाह के साथ एक ही टुकड़े से बनाए गए हों। 3 उस की ऊपर की सतह, उसके चार पहलुओं और उसके सींगों पर खालिस सोना चढ़ाना। ऊपर की सतह के इर्दगिर्द सोने की झालर हो। 4 सोने के दो कड़े बनाकर इन्हें उस झालर के नीचे एक दूसरे के मुकाबिल पहलुओं पर लगाना। इन कड़ों में कुरबानगाह को उठाने की लकड़ियाँ डाली जाएँगी। 5 यह लकड़ियाँ कीकर की हों, और उन पर भी सोना चढ़ाना।

6 इस कुरबानगाह को ख़ैमे के मुक़द्दस कमरे में उस परदे के सामने रखना जिसके पीछे अहद का संदूक और उसका ढकना होंगे, वह ढकना जहाँ मैं तुझसे मिला करूँगा। 7 जब हासून हर सुबह शमादान के चराग़ तैयार करे उस वक़्त वह उस पर खुशबूदार बख़ूर जलाए। 8 सूरज के गुस्ब होने के बाद भी जब वह दुबारा चराग़ों की देख-भाल करेगा तो वह साथ साथ बख़ूर जलाए। यों रब के सामने बख़ूर मुतवातिर जलता रहे। लाज़िम है कि बाद की नसलें भी इस उसूल पर कायम रहें।

9 इस कुरबानगाह पर सिर्फ़ जायज़ बख़ूर इस्तेमाल किया जाए। इस पर न तो जानवरों की कुरबानियाँ चढ़ाई जाएँ, न गल्ला या मै की नज़रें पेश की जाएँ। 10 हासून साल में एक दफ़ा उसका कफ़फ़ारा देकर उसे पाक करे। इसके लिए वह कफ़फ़ारे के दिन उस कुरबानी का कुछ खून सींगों पर लगाए। यह उसूल भी अबद तक कायम रहे। यह कुरबानगाह रब के लिए निहायत मुक़द्दस है।”

मर्दुमशुमारी के पैसे

11 रब ने मूसा से कहा, 12 “जब भी तू इसराईलियों की मर्दुमशुमारी करे तो लाज़िम है कि जिनका शुमार किया गया हो वह रब को अपनी जान का फ़िद्या दें ताकि उनमें वबा न फैले। 13 जिस जिसका शुमार किया गया हो वह चाँदी के आधे सिक्के के बराबर रकम उठानेवाली कुरबानी के तौर पर दे। सिक्के का वज़न मक़दिस के सिक्कों के बराबर हो। यानी चाँदी के सिक्के का वज़न 11 ग्राम हो, इसलिए छः ग्राम चाँदी देनी है। 14 जिसकी भी उम्र 20 साल या इससे ज़ायद हो वह रब को यह रकम उठानेवाली कुरबानी के तौर पर दे। 15 अमीर और ग़रीब दोनों इतना ही दें, क्योंकि यही नज़राना रब को पेश करने से तुम्हारी जान का कफ़फ़ारा दिया जाता है। 16 कफ़फ़ारे की यह रकम मुलाकात के ख़ैमे की ख़िदमत के लिए इस्तेमाल करना। फिर यह नज़राना रब को याद दिलाता रहेगा कि तुम्हारी जानों का कफ़फ़ारा दिया गया है।”

धोने का हौज़

17 रब ने मूसा से कहा, 18 “पीतल का ढाँचा बनाना जिस पर पीतल का हौज़ बनाकर रखना है। यह हौज़ धोने के लिए है। उसे सहन में मुलाकात के ख़ैमे और जानवरों को चढ़ाने की कुरबानगाह के दरमियान रखकर पानी से भर देना। 19 हासून और उसके बेटे अपने हाथ-पाँव धोने के लिए उसका पानी इस्तेमाल करें। 20 मुलाकात के ख़ैमे में दाखिल होने से पहले ही वह अपने आपको धोएँ वरना वह मर जाएंगे। इसी तरह जब भी वह ख़ैमे के बाहर की कुरबानगाह पर जानवरों की कुरबानियाँ चढ़ाएँ 21 तो लाज़िम है कि पहले हाथ-पाँव धो लें, वरना वह मर जाएंगे। यह उसूल हासून और उस की औलाद के लिए हमेशा तक कायम रहे।”

मसह का तेल

22 रब ने मूसा से कहा, 23 “मसह के तेल के लिए उम्दा क्रिस्म के मसाले इस्तेमाल करना। 6 किलोग्राम आबे-मुर, 3 किलोग्राम खुशबूदार दारचीनी, 3 किलोग्राम खुशबूदार बेद 24 और 6 किलोग्राम तेजपात। यह चीज़ें मक़दिस के बाटों के हिसाब से तोलकर चार लिटर जैतून के तेल में डालना। 25 सब कुछ मिलाकर खुशबूदार तेल तैयार करना। वह मुक़द्दस है और सिर्फ़ उस वक़्त इस्तेमाल किया जाए जब कोई चीज़ या शख्स मेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस किया जाए।

26 यही तेल लेकर मुलाकात का खैमा और उसका सारा सामान मसह करना यानी खैमा, अहद का संदूक, 27 मेज़ और उसका सामान, शमादान और उसका सामान, बखूर जलाने की कुरबानगाह, 28 जानवरों को चढ़ाने की कुरबानगाह और उसका सामान, धोने का हौज़ और उसका ढाँचा। 29 यों तू यह तमाम चीज़ें मखसूसो-मुकद्दस करेगा। इससे वह निहायत मुकद्दस हो जाएगी। जो भी उन्हें छुएगा वह मुकद्दस हो जाएगा।

30 हासून और उसके बेटों को भी इस तेल से मसह करना ताकि वह मुकद्दस होकर मेरे लिए इमाम का काम संरंजाम दे सकें। 31 इसराईलियों को कह दे कि यह तेल हमेशा तक मेरे लिए मखसूसो-मुकद्दस है। 32 इसलिए इसे अपने लिए इस्तेमाल न करना और न इस तरकीब से अपने लिए तेल बनाना। यह तेल मखसूसो-मुकद्दस है और तुम्हें भी इसे यों ठहराना है। 33 जो इस तरकीब से आम इस्तेमाल के लिए तेल बनाता है या किसी आम शख्स पर लगाता है उसे उस की क्रौम में से मिटा डालना है।”

बखूर की कुरबानी

34 रब ने मूसा से कहा, “बखूर इस तरकीब से बनाना है : मस्तकी, ओनिका, * बिरीजा और खालिस लुबान बराबर के हिस्सों में 35 मिलाकर खुशबूदार बखूर बनाना। इत्रसाज़ का यह काम नमकीन, खालिस और मुकद्दस हो। 36 इसमें से कुछ पीसकर पौडर बनाना और मुलाकात के खैमे में अहद के संदूक के सामने डालना जहाँ मैं तुझसे मिला करूँगा।

इस बखूर को मुकद्दसतरीन ठहराना। 37 इसी तरकीब के मुताबिक अपने लिए बखूर न बनाना। इसे रब के लिए मखसूसो-मुकद्दस ठहराना है। 38 जो भी अपने ज़ाती इस्तेमाल के लिए इस किस्म का बखूर बनाए उसे उस की क्रौम में से मिटा डालना है।”

31

बज़लियेल और उहलियाब

1 फिर रब ने मूसा से कहा, 2 “मैंने यहदाह के कबीले के बज़लियेल बिन ऊरी बिन हर को चुन लिया है ताकि वह मुकद्दस खैमे की तामीर में राहनुमाई करे। 3 मैंने उसे इलाही रूह से मामूर करके हिकमत, समझ और तामीर के हर काम के लिए दरकार इल्म दे दिया है। 4 वह नक्शे बनाकर उनके मुताबिक सोने, चाँदी और पीतल की चीज़ें बना सकता है। 5 वह जवाहर को काटकर जड़ने की काबिलियत रखता है। वह लकड़ी को तराशकर उससे मुख्तलिफ़ चीज़ें बना सकता है। वह बहुत सारे और कामों में भी महारत रखता है।

6 साथ ही मैंने दान के कबीले के उहलियाब बिन अखी-समक को मुकर्रर किया है ताकि वह हर काम में उस की मदद करे। इसके अलावा मैंने तमाम समझदार कारीगरों को महारत दी है ताकि वह सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक बना सकें जो मैंने तुझे दी हैं। 7 यानी मुलाकात का खैमा, कफ़फारे के ढकने समेत अहद का संदूक और खैमे का सारा दूसरा सामान, 8 मेज़ और उसका सामान, खालिस सोने का शमादान और उसका सामान, बखूर जलाने की कुरबानगाह, 9 जानवरों को चढ़ाने की कुरबानगाह और उसका सामान, धोने का हौज़ उस ढाँचे समेत जिस पर वह रखा जाता है, 10 वह लिबास जो हासून और उसके बेटे मक़दिस में खिदमत करने के लिए पहनते हैं, 11 मसह का तेल और मक़दिस के लिए खुशबूदार बखूर। यह सब कुछ वह वैसे ही बनाएँ जैसे मैंने तुझे हुक्म दिया है।”

सबत यानी हफ़ते का दिन

12 रब ने मूसा से कहा, 13 “इसराईलियों को बता कि हर सबत का दिन ज़रूर मनाओ। क्योंकि सबत का दिन एक नुमायों निशान है जिससे जान लिया जाएगा कि मैं रब हूँ जो तुम्हें मखसूसो-मुकद्दस करता हूँ। और यह निशान मेरे और तुम्हारे दरमियान नसल-दर-नसल कायम रहेगा। 14 सबत का दिन ज़रूर मनाना, क्योंकि वह तुम्हारे लिए मखसूसो-मुकद्दस है। जो भी उस की बेहुरमती करे वह ज़रूर जान से मारा जाए। जो भी इस दिन काम करे उसे उस की क्रौम में से मिटाया जाए। 15 छः दिन काम करना, लेकिन सातवाँ दिन आराम का दिन है। वह रब के लिए मखसूसो-मुकद्दस है।

16 इसराईलियों को हाल में और मुस्तक़बिल में सबत का दिन अबदी अहद समझकर मनाना है। 17 वह मेरे और इसराईलियों के दरमियान अबदी निशान होगा। क्योंकि रब ने छः दिन के दौरान आसमानो-ज़मीन को बनाया जबकि सातवें दिन उसने आराम किया और ताज़ादम हो गया।”

रब शरीअत की तख़्तियाँ देता है

18 यह सब कुछ मूसा को बताने के बाद रब ने उसे सीना पहाड़ पर शरीअत की दो तख़्तियाँ दीं। अल्लाह ने खुद पत्थर की इन तख़्तियों पर तमाम बातें लिखी थीं।

32

सोने का बछड़ा

* 30:34 onycha (unguis odoratus)

1 पहाड़ के दामन में लोग मूसा के इंतज़ार में रहे, लेकिन बहुत देर हो गई। एक दिन वह हासून के गिर्द जमा होकर कहने लगे, “आएँ, हमारे लिए देवता बना दें जो हमारे आगे आगे चलते हुए हमारी राहनुमाई करें। क्योंकि क्या मालूम कि उस बंदे मूसा को क्या हुआ है जो हमें मिसर से निकाल लाया।”

2 जवाब में हासून ने कहा, “आपकी बीवियाँ, बेटे और बेटियाँ अपनी सोने की बालियाँ उतारकर मेरे पास ले आएँ।” 3 सब लोग अपनी बालियाँ उतार उतारकर हासून के पास ले आए 4 तो उसने यह ज़ेवरात लेकर बछड़ा ढाल दिया। बछड़े को देखकर लोग बोल उठे, “ऐ इसराईल, यह तेरे देवता हैं जो तुझे मिसर से निकाल लाए।”

5 जब हासून ने यह देखा तो उसने बछड़े के सामने कुरबानगाह बनाकर एलान किया, “कल हम रब की ताज़ीम में ईद मनाएँगे।” 6 अगले दिन लोग सुबह-सवेरे उठे और भस्म होनेवाली कुरबानियाँ और सलामती की कुरबानियाँ चढ़ाईं। वह खाने-पीने के लिए बैठ गए और फिर उठकर रंगरलियों में अपने दिल बहलाने लगे।

मूसा अपनी कौम की शफाअत करता है

7 उस वक़्त रब ने मूसा से कहा, “पहाड़ से उतर जा। तेरे लोग जिन्हें तू मिसर से निकाल लाया बड़ी शरारतें कर रहे हैं। 8 वह कितनी जल्दी से उस रास्ते से हट गए हैं जिस पर चलने के लिए मैंने उन्हें हुक्म दिया था। उन्होंने अपने लिए ढाला हुआ बछड़ा बनाकर उसे सिजदा किया है। उन्होंने उसे कुरबानियाँ पेश करके कहा है, ‘ऐ इसराईल, यह तेरे देवता हैं। यही तुझे मिसर से निकाल लाए हैं।’” 9 अल्लाह ने मूसा से कहा, “मैंने देखा है कि यह कौम बड़ी हटधर्म है। 10 अब मुझे रोकने की कोशिश न कर। मैं उन पर अपना ग़ज़ब उंडेलकर उनको रूए-ज़मीन पर से मिटा दूँगा। उनकी जगह मैं तुझसे एक बड़ी कौम बना दूँगा।”

11 लेकिन मूसा ने कहा, “ऐ रब, तू अपनी कौम पर अपना गुस्सा क्यों उतारना चाहता है? तू खुद अपनी अज़ीम कुदरत से उसे मिसर से निकाल लाया है। 12 मिसरी क्यों कहें, ‘रब इसराईलियों को सिर्फ़ इस बुरे मक़सद से हमारे मुल्क से निकाल ले गया है कि उन्हें पहाड़ी इलाके में मार डाले और यों उन्हें रूए-ज़मीन पर से मिटाए’? अपना गुस्सा ठंडा होने दे और अपनी कौम के साथ बुरा सुलूक करने से बाज़ रह। 13 याद रख कि तूने अपने खादिमों इब्राहीम, इसहाक और याक़ूब से अपनी ही कसम खाकर कहा था, ‘मैं तुम्हारी औलाद की तादाद यों बढ़ाऊँगा कि वह आसमान के सितारों के बराबर हो जाएगी। मैं उन्हें वह मुल्क दूँगा जिसका वादा मैंने किया है, और वह उसे हमेशा के लिए मीरास में पाएँगे।’”

14 मूसा के कहने पर रब ने वह नहीं किया जिसका एलान उसने कर दिया था बल्कि वह अपनी कौम से बुरा सुलूक करने से बाज़ रहा।

बुतपरस्ती के नतायज

15 मूसा मुड़कर पहाड़ से उतरा। उसके हाथों में शरीअत की दोनों तख्तियाँ थीं। उन पर आगे पीछे लिखा गया था। 16 अल्लाह ने खुद तख्तियों को बनाकर उन पर अपने अहकाम कंदा किए थे।

17 उतरते उतरते यशुअ ने लोगों का शोर सुना और मूसा से कहा, “खैमागाह में जंग का शोर मच रहा है!” 18 मूसा ने जवाब दिया, “न तो यह फ़तहमंदों के नारे हैं, न शिकस्त खाने वालों की चीख-पुकार। मुझे गानेवालों की आवाज़ सुनाई दे रही है।”

19 जब वह खैमागाह के नज़दीक पहुँचा तो उसने लोगों को सोने के बछड़े के सामने नाचते हुए देखा। बड़े गुस्से में आकर उसने तख्तियों को ज़मीन पर पटक दिया, और वह टुकड़े टुकड़े होकर पहाड़ के दामन में गिर गईं। 20 मूसा ने इसराईलियों के बनाए हुए बछड़े को जला दिया। जो कुछ बच गया उसे उसने पीस पीसकर पौडर बना डाला और पौडर पानी पर छिड़ककर इसराईलियों को पिला दिया।

21 उसने हासून से पूछा, “इन लोगों ने तुम्हारे साथ क्या किया कि तुमने उन्हें ऐसे बड़े गुनाह में फँसा दिया?” 22 हासून ने कहा, “मेरे आका। गुस्से न हों। आप खुद जानते हैं कि यह लोग बदी पर तुले रहते हैं। 23 उन्होंने मुझसे कहा, ‘हमारे लिए देवता बना दें जो हमारे आगे आगे चलते हुए हमारी राहनुमाई करें। क्योंकि क्या मालूम कि उस बंदे मूसा को क्या हुआ है जो हमें मिसर से निकाल लाया।’ 24 इसलिए मैंने उनको बताया, ‘जिसके पास सोने के ज़ेवरात हैं वह उन्हें उतार लाए।’ जो कुछ उन्होंने मुझे दिया उसे मैंने आग में फेंक दिया तो होते होते सोने का यह बछड़ा निकल आया।”

25 मूसा ने देखा कि लोग बेकाबू हो गए हैं। क्योंकि हासून ने उन्हें बेलगाम छोड़ दिया था, और यों वह इसराईल के दुश्मनों के लिए मज़ाक का निशाना बन गए थे। 26 मूसा खैमागाह के दरवाज़े पर खड़े होकर बोला, “जो भी रब का बंदा है वह मेरे पास आए।” जवाब में लावी के कबीले के तमाम लोग उसके पास जमा हो गए। 27 फिर मूसा ने उनसे कहा, “रब इसराईल का खुदा फ़रमाता है, ‘हर एक अपनी तलवार लेकर खैमागाह में से गुज़रे। एक सिरे के दरवाज़े से शुरू करके दूसरे सिरे के दरवाज़े तक चलते चलते हर मिलनेवाले को जान से मार दो, चाहे वह तुम्हारा भाई, दोस्त या रिश्तेदार ही क्यों न हो। फिर मुड़कर मारते मारते पहले दरवाज़े पर वापस आ जाओ।’”

28 लावियों ने मूसा की हिदायत पर अमल किया तो उस दिन तक़रीबन 3,000 मर्द हलाक हुए। 29 यह देखकर मूसा ने लावियों से कहा, “आज अपने आपको मक़दिस में रब की खिदमत करने के लिए मख़सूस-मुक़द्दस करो, क्योंकि तुम अपने बेटों और भाइयों के खिलाफ़ लड़ने के लिए तैयार थे। इसलिए रब तुमको आज बरकत देगा।”

30 अगले दिन मूसा ने इसराईलियों से बात की, “तुमने निहायत संगीन गुनाह किया है। तो भी मैं अब रब के पास पहाड़ पर जा रहा हूँ। शायद मैं तुम्हारे गुनाह का कफ़फ़ारा दे सकूँ।”

31 चुनौचे मूसा ने रब के पास वापस जाकर कहा, “हाय, इस कौम ने निहायत संगीन गुनाह किया है। उन्होंने अपने लिए सोने का देवता बना लिया। 32 मेहरबानी करके उन्हें मुआफ़ कर। लेकिन अगर तू उन्हें मुआफ़ न करे तो फिर मुझे भी अपनी उस किताब में से मिटा दे जिसमें तूने अपने लोगों के नाम दर्ज किए हैं।” 33 रब ने जवाब दिया, “मैं सिर्फ़ उसको अपनी किताब में से मिटाता हूँ जो मेरा गुनाह करता है। 34 अब जा, लोगों को उस जगह ले चल जिसका जिक्र मैंने किया है। मेरा फ़रिश्ता तेरे आगे आगे चलेगा। लेकिन जब सज़ा का मुक़र्रर दिन आएगा तब मैं उन्हें सज़ा दूँगा।”

35 फिर रब ने इसराईलियों के दरमियान वबा फैलने दी, इसलिए कि उन्होंने उस बछड़े की पूजा की थी जो हासून ने बनाया था।

33

1 रब ने मूसा से कहा, “इस जगह से रवाना हो जा। उन लोगों को लेकर जिनको तू मिसर से निकाल लाया है उस मुल्क को जा जिसका वादा मैंने इब्राहीम, इसहाक और याकूब से किया है। उन्हीं से मैंने कसम खाकर कहा था, ‘मैं यह मुल्क तुम्हारी औलाद को दूँगा।’ 2 मैं तेरे आगे आगे फ़रिश्ता भेजकर कनानी, अमोरी, हिती, फ़रिज़्ज़ी, हिक्वी और यबूसी अक़वाम को उस मुल्क से निकाल दूँगा। 3 उठ, उस मुल्क को जा जहाँ दूध और शहद की कसरत है। लेकिन मैं साथ नहीं जाऊँगा। तुम इतने हटधर्म हो कि अगर मैं साथ जाऊँ तो ख़तरा है कि तुम्हें वहाँ पहुँचने से पहले ही बरबाद कर दूँ।”

4 जब इसराईलियों ने यह सख़्त अलफ़ाज़ सुने तो वह मातम करने लगे। किसी ने भी अपने ज़ेवर न पहने, 5 क्योंकि रब ने मूसा से कहा था, “इसराईलियों को बता कि तुम हटधर्म हो। अगर मैं एक लमहा भी तुम्हारे साथ चलूँ तो ख़तरा है कि मैं तुम्हें तबाह कर दूँ। अब अपने ज़ेवरात उतार डालो। फिर मैं फ़ैसला करूँगा कि तुम्हारे साथ क्या किया जाए।”

6 इन अलफ़ाज़ पर इसराईलियों ने होरिब यानी सीना पहाड़ पर अपने ज़ेवर उतार दिए।

मुलाकात का ख़ैमा

7 उस वक़्त मूसा ने ख़ैमा लेकर उसे कुछ फ़ासले पर ख़ैमागाह के बाहर लगा दिया। उसने उसका नाम ‘मुलाकात का ख़ैमा’ रखा। जो भी रब की मरज़ी दरियाफ़्त करना चाहता वह ख़ैमागाह से निकलकर वहाँ जाता। 8 जब भी मूसा ख़ैमागाह से निकलकर वहाँ जाता तो तमाम लोग अपने ख़ैमों के दरवाज़ों पर खड़े होकर मूसा के पीछे देखने लगते। उसके मुलाकात के ख़ैमे में ओझल होने तक वह उसे देखते रहते।

9 मूसा के ख़ैमे में दाख़िल होने पर बादल का सतून उतरकर ख़ैमे के दरवाज़े पर ठहर जाता। जितनी देर तक रब मूसा से बातें करता उतनी देर तक वह वहाँ ठहरा रहता। 10 जब इसराईली मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े पर बादल का सतून देखते तो वह अपने अपने ख़ैमे के दरवाज़े पर खड़े होकर सिजदा करते। 11 रब मूसा से सबूत बातें करता था, ऐसे शख्स की तरह जो अपने दोस्त से बातें करता है। इसके बाद मूसा निकलकर ख़ैमागाह को वापस चला जाता। लेकिन उसका जवान मददगार यशुअ बिन नून ख़ैमे को नहीं छोड़ता था।

मूसा रब का जलाल देखता है

12 मूसा ने रब से कहा, “देख, तू मुझसे कहता आया है कि इस कौम को कनान ले चल। लेकिन तू मेरे साथ किस को भेजेगा? तूने अब तक यह बात मुझे नहीं बताई हालाँकि तूने कहा है, ‘मैं तुझे बनाम जानता हूँ, तुझे मेरा करम हासिल हुआ है।’ 13 अगर मुझे वाकई तेरा करम हासिल है तो मुझे अपने रास्ते दिखा ताकि मैं तुझे जान लूँ और तेरा करम मुझे हासिल होता रहे। इस बात का खयाल रख कि यह कौम तेरी ही उम्मत है।”

14 रब ने जवाब दिया, “मैं खुद तेरे साथ चलूँगा और तुझे आराम दूँगा।” 15 मूसा ने कहा, “अगर तू खुद साथ नहीं चलेगा तो फिर हमें यहाँ से रवाना न करना। 16 अगर तू हमारे साथ न जाए तो किस तरह पता चलेगा कि मुझे और तेरी कौम को तेरा करम हासिल हुआ है? हम सिर्फ़ इसी वजह से दुनिया की दीगर कौमों से अलग और मुमताज़ हैं।”

17 रब ने मूसा से कहा, “मैं तेरी यह दरखास्त भी पूरी करूँगा, क्योंकि तुझे मेरा करम हासिल हुआ है और मैं तुझे बनाम जानता हूँ।”

18 फिर मूसा बोला, “बराहे-करम मुझे अपना जलाल दिखा।” 19 रब ने जवाब दिया, “मैं अपनी पूरी भलाई तेरे सामने से गुज़रने दूँगा और तेरे सामने ही अपने नाम रब का एलान करूँगा। मैं जिस पर मेहरबान होना चाहूँ उस पर मेहरबान होता हूँ, और जिस पर रहम करना चाहूँ उस पर रहम करता हूँ। 20 लेकिन तू मेरा चेहरा नहीं देख सकता, क्योंकि जो भी मेरा चेहरा देखे वह ज़िंदा नहीं रह सकता।” 21 फिर रब ने फ़रमाया, “देख, मेरे पास एक जगह है। वहाँ की चटान पर खड़ा हो जा। 22 जब मेरा जलाल वहाँ से गुज़रेगा तो मैं तुझे चटान के एक शिगाफ़ में रखूँगा और अपना हाथ तेरे ऊपर फैलाऊँगा ताकि तू मेरे गुज़रने के दौरान महफूज़ रहे। 23 इसके बाद मैं अपना हाथ हटाऊँगा और तू मेरे पीछे देख सकेगा। लेकिन मेरा चेहरा देखा नहीं जा सकता।”

34

पत्थर की नई तख़्तियाँ

1 रब ने मूसा से कहा, “अपने लिए पत्थर की दो तख़्तियाँ तराश ले जो पहली दो की मानिंद हों। फिर मैं उन पर वह अलफ़ाज़ लिखूँगा जो पहली तख़्तियों पर लिखे थे जिन्हें तूने पटख दिया था। 2 सुबह तक तैयार होकर सीना पहाड़ पर चढ़ना। चोटी पर मेरे सामने खड़ा हो जा।

3 तेरे साथ कोई भी न आए बल्कि पूरे पहाड़ पर कोई और शख्स नज़र न आए, यहाँ तक कि भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल भी पहाड़ के दामन में न चरें।”

4 चुनाँचे मूसा ने दो तख्तियाँ तराश लीं जो पहली की मानिंद थीं। फिर वह सुबह-सवेरे उठकर सीना पहाड़ पर चढ़ गया जिस तरह रब ने उसे हुक्म दिया था। उसके हाथों में पत्थर की दोनों तख्तियाँ थीं। 5 जब वह चोटी पर पहुँचा तो रब बादल में उतर आया और उसके पास खड़े होकर अपने नाम रब का एलान किया। 6 मूसा के सामने से गुज़रते हुए उसने पुकारा, “रब, रब, रहीम और मेहरबान खुदा। तहम्मल, शफ़क़त और वफ़ा से भरपूर। 7 वह हज़ारों पर अपनी शफ़क़त कायम रखता और लोगों का कुसूर, नाफ़रमानी और गुनाह मुआफ़ करता है। लेकिन वह हर एक को उस की मुनासिब सज़ा भी देता है। जब वालिदेन गुनाह करें तो उनकी औलाद को भी तीसरी और चौथी पुश्त तक सज़ा के नतायज भुगतने पड़ेंगे।”

8 मूसा ने जल्दी से झुककर सजदा किया। 9 उसने कहा, “ऐ रब, अगर मुझ पर तेरा करम हो तो हमारे साथ चल। बेशक यह क़ौम हटधर्म है, तो भी हमारा कुसूर और गुनाह मुआफ़ कर और बख़्श दे कि हम दुबारा तेरे ही बन जाएँ।”

10 तब रब ने कहा, “मैं तुम्हारे साथ अहद बाँधूँगा। तेरी क़ौम के सामने ही मैं ऐसे मोजिज़े करूँगा जो अब तक दुनिया-भर की किसी भी क़ौम में नहीं किए गए। पूरी क़ौम जिसके दरमियान तू रहता है रब का काम देखेगी और उससे डर जाएगी जो मैं तेरे साथ करूँगा। 11 जो अहक़ाम मैं आज देता हूँ उन पर अमल करता रह। मैं अमोरी, कनानी, हित्ती, फ़रिज़्जी, हिक्वी और यबूसी अक्रवाम को तेरे आगे आगे मुल्क से निकाल दूँगा। 12 ख़बरदार, जो उस मुल्क में रहते हैं जहाँ तू जा रहा है उनसे अहद न बाँधना। वरना वह तेरे दरमियान रहते हुए तुझे गुनाहों में फँसाते रहेंगे। 13 उनकी क़ुरबानगाहें ढा देना, उनके बूतों के सतून टुकड़े टुकड़े कर देना और उनकी देवी यसीरत के खंबे काट डालना।

14 किसी और माबूद की परस्तिश न करना, क्योंकि रब का नाम ग़यूर है, अल्लाह ग़ैरतमंद है। 15 ख़बरदार, उस मुल्क के बाशिंदों से अहद न करना, क्योंकि तेरे दरमियान रहते हुए भी वह अपने माबूदों की पैरवी करके ज़िना करेंगे और उन्हें क़ुरबानियाँ चढ़ाएँगे। आख़िरकार वह तुझे भी अपनी क़ुरबानियों में शिरक़त की दावत देंगे। 16 ख़तरा है कि तू उनकी बेटियों का अपने बेटों के साथ रिश्ता बाँधे। फिर जब यह अपने माबूदों की पैरवी करके ज़िना करेंगी तो उनके सबब से तेरे बेटे भी उनकी पैरवी करने लगेंगे।

17 अपने लिए देवता न ढालना।

सालाना ईदें

18 बेख़मीरी रोटी की ईद मनाना। अबीब के महीने * में सात दिन तक तेरी रोटी में ख़मीर न हो जिस तरह मैंने हुक्म दिया है। क्योंकि इस महीने में तू मिसर से निकला।

19 हर पहलौठा मेरा है। तेरे माल मवेशियों का हर पहलौठा मेरा है, चाहे बछड़ा हो या लेला। 20 लेकिन पहलौठे गधे के एवज़ भेड़ देना। अगर यह मुमकिन न हो तो उस की गरदन तोड़ डालना। अपने पहलौठे बेटों के लिए भी एवज़ी देना। कोई मेरे पास ख़ाली हाथ न आए।

21 छः दिन काम-काज करना, लेकिन सातवें दिन आराम करना। खाह हल चलाना हो या फ़सल काटनी हो तो भी सातवें दिन आराम करना।

22 गंदुम की फ़सल की कटाई की ईद † उस वक़्त मनाना जब तू गेहूँ की पहली फ़सल काटेगा। अंगूर और फल जमा करने की ईद इसराईली साल के इख़िताम पर मनानी है। 23 लाज़िम है कि तेरे तमाम मर्द साल में तीन मरतबा रब कादिरे-मुतलक़ के सामने जो इसराईल का खुदा है हाज़िर हों। 24 मैं तेरे आगे आगे क़ौमों को मुल्क से निकाल दूँगा और तेरी सरहदें बढ़ाता जाऊँगा। फिर जब तू साल में तीन मरतबा रब अपने खुदा के हुज़ूर आएगा तो कोई भी तेरे मुल्क का लालच नहीं करेगा।

25 जब तू किसी जानवर को ज़बह करके क़ुरबानी के तौर पर पेश करता है तो उसके खून के साथ ऐसी रोटी पेश न करना जिसमें ख़मीर हो। ईदे-फ़सह की क़ुरबानी से अगली सुबह तक कुछ बाक़ी न रहे।

26 अपनी ज़मीन की पहली पैदावार में से बेहतरीन हिस्सा रब अपने खुदा के घर में ले आना। बकरी या भेड़ के बच्चे को उस की माँ के दूध में न पकाना।”

मूसा के चेहरे पर चमक

27 रब ने मूसा से कहा, “यह तमाम बातें लिख ले, क्योंकि यह उस अहद की बुनियाद है जो मैंने तेरे और इसराईल के साथ बाँधा है।”

28 मूसा चालीस दिन और चालीस रात वहीं रब के हुज़ूर रहा। इस दौरान न उसने कुछ खाया न पिया। उसने पत्थर की तख्तियों पर अहद के दस अहक़ाम लिखे।

29 इसके बाद मूसा शरीअत की दोनों तख्तियों को हाथ में लिए हुए सीना पहाड़ से उतरा। उसके चेहरे की जिल्द चमक रही थी, क्योंकि उसने रब से बात की थी। लेकिन उसे खुद इसका इल्म नहीं था। 30 जब हारून और तमाम इसराईलियों ने देखा कि मूसा का चेहरा चमक रहा है तो वह उसके पास आने से डर गए। 31 लेकिन उसने उन्हें बुलाया तो हारून और जमात के तमाम सरदार उसके पास आए, और उसने उनसे बात की। 32 बाद में बाक़ी इसराईली भी आए, और मूसा ने उन्हें तमाम अहक़ाम सुनाए जो रब ने उसे कोहे-सीना पर दिए थे।

33 यह सब कुछ कहने के बाद मूसा ने अपने चेहरे पर निक्काब डाल लिया। 34 जब भी वह रब से बात करने के लिए मुलाक़ात के ख़ैमे में जाता तो निक्काब को ख़ैमे से निकलते वक़्त तक उतार लेता। और जब वह निकलकर इसराईलियों को रब से मिले हुए अहक़ाम सुनाता 35 तो

* 34:18 मार्च ता अप्रैल। † 34:22 सितंबर ता अक्टूबर।

वह देखते कि उसके चेहरे की जिल्द चमक रही है। इसके बाद मूसा दुबारा निकाब को अपने चेहरे पर डाल लेता, और वह उस वक़्त तक चेहरे पर रहता जब तक मूसा रब से बात करने के लिए मुलाकात के ख़ैमे में न जाता था।

35

सबत का दिन

1 मूसा ने इसराईल की पूरी जमात को इकट्ठा करके कहा, “रब ने तुमको यह हुक्म दिए हैं : 2 छः दिन काम-काज किया जाए, लेकिन सातवाँ दिन मखसूसो-मुकद्स हो। वह रब के लिए आराम का सबत है। जो भी इस दिन काम करे उसे सज़ाए-मौत दी जाए। 3 हफ़ते के दिन अपने तमाम घरों में आग तक न जलाना।”

मुलाकात के ख़ैमे के लिए सामान

4 मूसा ने इसराईल की पूरी जमात से कहा, “रब ने हिदायत दी है 5 कि जो कुछ तुम्हारे पास है उसमें से हदिये लाकर रब को उठानेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करो। जो भी दिली खुशी से देना चाहे वह इन चीज़ों में से कुछ दे : सोना, चाँदी, पीतल; 6 नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग का धागा, बारीक कतान, बकरी के बाल, 7 मेंढों की सुर्ख रँगी हुई खालें, तखस की खालें, कीकर की लकड़ी, 8 शमादान के लिए जैतून का तेल, मसह करने के लिए तेल और खुशबूदार बखूर के लिए मसाले, 9 अक्रीके-अहमर और दीगर जवाहर जो इमामे-आज़म के बालापोश और सीने के कीसे में जड़े जाएंगे।

10 तुममें से जितने माहिर कारीगर हैं वह आकर वह कुछ बनाएँ जो रब ने फ़रमाया 11 यानी ख़ैमा और वह गिलाफ़ जो उसके ऊपर लगाए जाएंगे, हुकें, दीवारों के तख़्ते, शहतीर, सतून और पाए, 12 अहद का संदूक, उसे उठाने की लकड़ियाँ, उसके कफ़फारे का ढकना, मुकद्सतरीन कमरे के दरवाज़े का परदा, 13 मखसूस रोटियों की मेज़, उसे उठाने की लकड़ियाँ, उसका सारा सामान और रोटियाँ, 14 शमादान और उस पर रखने के चराग उसके सामान समेत, शमादान के लिए तेल, 15 बखूर जलाने की कुरबानगाह, उसे उठाने की लकड़ियाँ, मसह का तेल, खुशबूदार बखूर, मुकद्स ख़ैमे के दरवाज़े का परदा, 16 जानवरों को चढ़ाने की कुरबानगाह, उसका पीतल का जंगला, उसे उठाने की लकड़ियाँ और बाक़ी सारा सामान, धोने का हौज़ और वह ढाँचा जिस पर हौज़ रखा जाता है, 17 चारदीवारी के परदे उनके खंबों और पाइयों समेत, सहन के दरवाज़े का परदा, 18 ख़ैमे और चारदीवारी की मेखें और रस्से, 19 और वह मुकद्स लिबास जो हासून और उसके बेटे मक़दिस में ख़िदमत करने के लिए पहनते हैं।”

20 यह सुनकर इसराईल की पूरी जमात मूसा के पास से चली गई। 21 और जो जो दिली खुशी से देना चाहता था वह मुलाकात के ख़ैमे, उसके सामान या इमामों के कपड़ों के लिए कोई हदिया लेकर वापस आया। 22 रब के हदिये के लिए मर्द और खवातीन दिली खुशी से अपने सोने के ज़ेवरात मसलन जड़ाऊ पिनें, बालियाँ और छल्ले ले आए। 23 जिस जिसके पास दरकार चीज़ों में से कुछ था वह उसे मूसा के पास ले आया यानी नीले, किरमिज़ी और अरगवानी रंग का धागा, बारीक कतान, बकरी के बाल, मेंढों की सुर्ख रँगी हुई खालें और तखस की खालें। 24 चाँदी, पीतल और कीकर की लकड़ी भी हदिये के तौर पर लाई गई। 25 और जितनी औरतें कातने में माहिर थीं वह अपनी काती हुई चीज़ें ले आईं यानी नीले, किरमिज़ी और अरगवानी रंग का धागा और बारीक कतान। 26 इसी तरह जो जो औरत बकरी के बाल कातने में माहिर थीं और दिली खुशी से मक़दिस के लिए काम करना चाहती थीं वह यह कातकर ले आईं। 27 सरदार अक्रीके-अहमर और दीगर जवाहर ले आए जो इमामे-आज़म के बालापोश और सीने के कीसे के लिए दरकार थे। 28 वह शमादान, मसह के तेल और खुशबूदार बखूर के लिए मसाले और जैतून का तेल भी ले आए।

29 यों इसराईल के तमाम मर्द और खवातीन जो दिली खुशी से रब को कुछ देना चाहते थे उस सारे काम के लिए हदिये ले आए जो रब ने मूसा की मारिफ़त करने को कहा था।

बज़लियेल और उहलियाब

30 फिर मूसा ने इसराईलियों से कहा, “रब ने यहदाह के कबीले के बज़लियेल बिन ऊरी बिन हर को चुन लिया है। 31 उसने उसे इलाही रूह से मामूर करके हिकमत, समझ और तामीर के हर काम के लिए दरकार इल्म दे दिया है। 32 वह नक्शे बनाकर उनके मुताबिक सोने, चाँदी और पीतल की चीज़ें बना सकता है। 33 वह जवाहर को काटकर जड़ने की काबिलियत रखता है। वह लकड़ी को तराशकर उससे मुख्तलिफ़ चीज़ें बना सकता है। वह बहुत सारे और कामों में भी महारत रखता है। 34 साथ ही रब ने उसे और दान के कबीले के उहलियाब बिन अख़ी-समक को दूसरों को सिखाने की काबिलियत भी दी है। 35 उसने उन्हें वह महारत और हिकमत दी है जो हर काम के लिए दरकार है यानी कारीगरी के हर काम के लिए, कढ़ाई के काम के लिए, नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से कपड़ा बनाने के लिए और बुनाई के काम के लिए। वह माहिर कारीगर हैं और नक्शे भी बना सकते हैं।

36

1 लाज़िम है कि बज़लियेल, उहलियाब और बाक़ी कारीगर जिनको रब ने मक़दिस की तामीर के लिए हिकमत और समझ दी है सब कुछ ऐन उन हिदायत के मुताबिक बनाएँ जो रब ने दी हैं।”

इसराईली दिली खुशी से देते हैं

2 मूसा ने बज़लियेल और उहलियाब को बुलाया। साथ ही उसने हर उस कारीगर को भी बुलाया जिसे रब ने मक़दिस की तामीर के लिए हिकमत और महारत दी थी और जो खुशी से आना और यह काम करना चाहता था। 3 उन्हें मूसा से तमाम हदिये मिले जो इसराईली मक़दिस की तामीर के लिए लाए थे।

इसके बाद भी लोग रोज़ बरोज़ सुबह के वक़्त हदिये लाते रहे। 4 आखिरकार तमाम कारीगर जो मक़दिस बनाने के काम में लगे थे अपना काम छोड़कर मूसा के पास आए। 5 उन्होंने कहा, “लोग हद से ज़्यादा ला रहे हैं। जिस काम का हुक्म रब ने दिया है उसके लिए इतने सामान की ज़रूरत नहीं है।” 6 तब मूसा ने पूरी ख़ैमागाह में एलान करवा दिया कि कोई मर्द या औरत मक़दिस की तामीर के लिए अब कुछ न लाए। यों उन्हें मज़ीद चीज़ें लाने से रोका गया, 7 क्योंकि काम के लिए सामान ज़रूरत से ज़्यादा हो गया था।

मुलाकात का ख़ैमा

8 जो कारीगर महारत रखते थे उन्होंने ख़ैमे को बनाया। उन्होंने बारीक कतान और नीले, अरगवानी और किरमिज़ी धागे से दस परदे बनाए। परदों पर किसी माहिर कारीगर के कढ़ाई के काम से क़रूबी फ़रिश्तों का डिज़ायन बनाया गया। 9 हर परदे की लंबाई 42 फुट और चौड़ाई 6 फुट थी। 10 पाँच परदों के लंबे हाशिये एक दूसरे के साथ जोड़े गए और इसी तरह बाकी पाँच भी। यों दो बड़े टुकड़े बन गए। 11 दोनों टुकड़ों को एक दूसरे के साथ मिलाने के लिए उन्होंने नीले धागे के हलके बनाए। यह हलके हर टुकड़े के 42 फुटवाले एक किनारे पर लगाए गए, 12 एक टुकड़े के हाशिये पर 50 हलके और दूसरे पर भी उतने ही हलके। इन दो हाशियों के हलके एक दूसरे के आमने-सामने थे। 13 फिर बज़लियेल ने सोने की 50 हुकें बनाकर उनसे आमने-सामने के हलकों को एक दूसरे के साथ मिलाया। यों दोनों टुकड़ों के जोड़ने से ख़ैमा बन गया।

14 उसने बकरी के बालों से भी 11 परदे बनाए जिन्हें कपड़ेवाले ख़ैमे के ऊपर रखना था। 15 हर परदे की लंबाई 45 फुट और चौड़ाई 6 फुट थी। 16 पाँच परदों के लंबे हाशिये एक दूसरे के साथ जोड़े गए और इस तरह बाकी छः भी। 17 इन दोनों टुकड़ों को मिलाने के लिए उसने हर टुकड़े के 45 फुटवाले एक किनारे पर पचास पचास हलके लगाए। 18 फिर पीतल की 50 हुकें बनाकर उसने दोनों हिस्से मिलाए।

19 एक दूसरे के ऊपर के दोनों ख़ैमों की हिफ़ाज़त के लिए बज़लियेल ने दो और ग़िलाफ़ बनाए। बकरी के बालों के ख़ैमे पर रखने के लिए उसने मेंढों की सुर्ख़ रँगी हुई खालें जोड़ दीं और उसके ऊपर रखने के लिए तख़स की खालें मिलाईं।

20 इसके बाद उसने कीकर की लकड़ी के तख़ते बनाए जो ख़ैमे की दीवारों का काम देते थे। 21 हर तख़ते की ऊँचाई 15 फुट थी और चौड़ाई सवा दो फुट। 22 हर तख़ते के नीचे दो दो चूल्हे थीं। इन चूल्हों से हर तख़ते को उसके पाइयों के साथ जोड़ा जाता था ताकि तख़ता खड़ा रहे। 23 ख़ैमे की जुनूबी दीवार के लिए 20 तख़ते बनाए गए 24 और साथ ही चाँदी के 40 पाए भी जिन पर तख़ते खड़े किए जाते थे। हर तख़ते के नीचे दो पाए थे, और हर पाए में एक चूल लगती थी। 25 इसी तरह ख़ैमे की शिमाली दीवार के लिए भी 20 तख़ते बनाए गए 26 और साथ ही चाँदी के 40 पाए जो तख़तों को खड़ा करने के लिए थे। हर तख़ते के नीचे दो पाए थे। 27 ख़ैमे की पिछली यानी मगरिबी दीवार के लिए छः तख़ते बनाए गए। 28 इस दीवार को शिमाली और जुनूबी दीवारों के साथ जोड़ने के लिए कोनेवाले दो तख़ते बनाए गए। 29 इन दो तख़तों में नीचे से लेकर ऊपर तक कोना था ताकि एक से शिमाली दीवार मगरिबी दीवार के साथ जुड़ जाए और दूसरे से जुनूबी दीवार मगरिबी दीवार के साथ। इनके ऊपर के सिरे कड़ों से मज़बूत किए गए। 30 यों पिछले यानी मगरिबी तख़तों की पूरी तादाद 8 थी और इनके लिए चाँदी के पाइयों की तादाद 16, हर तख़ते के नीचे दो पाए।

31-32 फिर बज़लियेल ने कीकर की लकड़ी के शहतीर बनाए, तीनों दीवारों के लिए पाँच पाँच शहतीर। वह हर दीवार के तख़तों पर यों लगाने के लिए थे कि उनसे तख़ते एक दूसरे के साथ मिलाए जाएँ। 33 दरमियानी शहतीर यों बनाया गया कि वह दीवार की आधी ऊँचाई पर दीवार के एक सिरे से दूसरे सिरे तक लग सकता था। 34 उसने तमाम तख़तों और शहतीरों पर सोना चढ़ाया। शहतीरों को तख़तों के साथ लगाने के लिए उसने सोने के कड़े बनाए जो तख़तों में लगाने थे।

मुक़द्दस ख़ैमे के परदे

35 अब बज़लियेल ने एक और परदा बनाया। उसके लिए भी बारीक कतान और नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग का धागा इस्तेमाल हुआ। उस पर भी किसी माहिर कारीगर के कढ़ाई के काम से क़रूबी फ़रिश्तों का डिज़ायन बनाया गया। 36 फिर उसने परदे को लटकाने के लिए कीकर की लकड़ी के चार सतून, सोने की हुकें और चाँदी के चार पाए बनाए। सतूनों पर सोना चढ़ाया गया।

37 बज़लियेल ने ख़ैमे के दरवाज़े के लिए भी परदा बनाया। वह भी बारीक कतान और नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग के धागे से बनाया गया, और उस पर कढ़ाई का काम किया गया। 38 इस परदे को लटकाने के लिए उसने सोने की हुकें और कीकर की लकड़ी के पाँच सतून बनाए। सतूनों के ऊपर के सिरों और पट्टियों पर सोना चढ़ाया गया जबकि उनके पाए पीतल के थे।

37

अहद का संदूक

1 बज़लियेल ने कीकर की लकड़ी का संदूक बनाया। उस की लंबाई पौने चार फुट थी जबकि उस की चौड़ाई और ऊँचाई सवा दो दो फुट थी। 2 उसने पूरे संदूक पर अंदर और बाहर से खालिस सोना चढ़ाया। ऊपर की सतह के इर्दगिर्द उसने सोने की झालर लगाई। 3 संदूक को उठाने के लिए उसने सोने के चार कड़े ढालकर उन्हें संदूक के चारपाइयों पर लगाया। दोनों तरफ़ दो दो कड़े थे। 4 फिर उसने कीकर की दो लकड़ियाँ संदूक को उठाने के लिए तैयार कीं और उन पर सोना चढ़ाया। 5 उसने इन लकड़ियों को दोनों तरफ़ के कड़ों में डाल दिया ताकि उनसे संदूक को उठाया जा सके।

6 बज़लियेल ने संदूक का ढकना खालिस सोने का बनाया। उस की लंबाई पौने चार फुट और चौड़ाई सवा दो फुट थी। 7-8 फिर उसने दो कस्बी फ़रिश्ते सोने से घड़कर बनाए जो ढकने के दोनों सिरों पर खड़े थे। यह दो फ़रिश्ते और ढकना एक ही टुकड़े से बनाए गए। 9 फ़रिश्तों के पर यों ऊपर की तरफ़ फैले हुए थे कि वह ढकने को पनाह देते थे। उनके मुँह एक दूसरे की तरफ़ किए हुए थे, और वह ढकने की तरफ़ देखते थे।

मखसूस रोटियों की मेज़

10 इसके बाद बज़लियेल ने कीकर की लकड़ी की मेज़ बनाई। उस की लंबाई तीन फुट, चौड़ाई डेढ़ फुट और ऊँचाई सवा दो फुट थी। 11 उसने उस पर खालिस सोना चढ़ाकर उसके इर्दगिर्द सोने की झालर लगाई। 12 मेज़ की ऊपर की सतह पर उसने चौखटा भी लगाया जिसकी ऊँचाई तीन इंच थी और जिस पर सोने की झालर लगी थी। 13 अब उसने सोने के चार कड़े ढालकर उन्हें चारों कोनों पर लगाया जहाँ मेज़ के पाए लगे थे। 14 यह कड़े मेज़ की सतह पर लगे चौखटे के नीचे लगाए गए। उनमें वह लकड़ियाँ डालनी थीं जिनसे मेज़ को उठाना था। 15 बज़लियेल ने यह लकड़ियाँ भी कीकर से बनाई और उन पर सोना चढ़ाया।

16 आखिरकार उसने खालिस सोने के वह थाल, प्याले, मै की नज़रें पेश करने के बरतन और मरतबान बनाए जो उस पर रखे जाते थे।

शमादान

17 फिर बज़लियेल ने खालिस सोने का शमादान बनाया। उसका पाया और डंडी घड़कर बनाए गए। उस की प्यालियाँ जो फूलों और कलियों की शकल की थीं पाए और डंडी के साथ एक ही टुकड़ा थीं। 18 डंडी से दाईं और बाईं तरफ़ तीन तीन शाखें निकलती थीं। 19 हर शाख पर तीन प्यालियाँ लगी थीं जो बादाम की कलियों और फूलों की शकल की थीं। 20 शमादान की डंडी पर भी इस क्रिस्म की प्यालियाँ लगी थीं, लेकिन तादाद में चार। 21 इनमें से तीन प्यालियाँ दाएँ बाएँ की छः शाखों के नीचे लगी थीं। वह यों लगी थीं कि हर प्याली से दो शाखें निकलती थीं। 22 शाखें और प्यालियाँ बल्कि पूरा शमादान खालिस सोने के एक ही टुकड़े से घड़कर बनाया गया।

23 बज़लियेल ने शमादान के लिए खालिस सोने के सात चराग बनाए। उसने बत्ती कतरने की कैंचियाँ और जलते कोयले के लिए छोटे बरतन भी खालिस सोने से बनाए। 24 शमादान और उसके तमाम सामान के लिए पूरे 34 किलोग्राम खालिस सोना इस्तेमाल हुआ।

बखूर जलाने की कुरबानगाह

25 बज़लियेल ने कीकर की लकड़ी की कुरबानगाह बनाई जो बखूर जलाने के लिए थी। वह डेढ़ फुट लंबी, इतनी ही चौड़ी और तीन फुट ऊँची थी। उसके चार कोनों में से सींग निकलते थे जो कुरबानगाह के साथ एक ही टुकड़े से बनाए गए थे। 26 उस की ऊपर की सतह, उसके चार पहलुओं और उसके सींगों पर खालिस सोना चढ़ाया गया। ऊपर की सतह के इर्दगिर्द बज़लियेल ने सोने की झालर बनाई। 27 सोने के दो कड़े बनाकर उसने उन्हें इस झालर के नीचे एक दूसरे के मुकाबिल पहलुओं पर लगाया। इन कड़ों में कुरबानगाह को उठाने की लकड़ियाँ डाली गईं। 28 यह लकड़ियाँ कीकर की थीं, और उन पर भी सोना चढ़ाया गया।

29 बज़लियेल ने मसह करने का मुकद्दस तेल और खुशबूदार खालिस बखूर भी बनाया। यह इत्रसाज़ का काम था।

38

जानवरों को पेश करने की कुरबानगाह

1 बज़लियेल ने कीकर की लकड़ी की एक और कुरबानगाह बनाई जो भस्म होनेवाली कुरबानियों के लिए थी। उस की ऊँचाई साढ़े चार फुट, उस की लंबाई और चौड़ाई साढ़े सात सात फुट थी। 2 उसके ऊपर चारों कोनों में से सींग निकलते थे। सींग और कुरबानगाह एक ही टुकड़े के थे, और उस पर पीतल चढ़ाया गया। 3 उसका तमाम साज़ो-सामान और बरतन भी पीतल के थे यानी राख को उठाकर ले जाने की बालटियाँ, बेलचे, काँटे, जलते हुए कोयले के लिए बरतन और छिड़काव के कटोरे।

4 कुरबानगाह को उठाने के लिए उसने पीतल का जंगला बनाया। वह ऊपर से खुला था और यों बनाया गया कि जब कुरबानगाह उसमें रखी जाए तो वह उस किनारे तक पहुँचे जो कुरबानगाह की आधी ऊँचाई पर लगी थी। 5 उसने कुरबानगाह को उठाने के लिए चार कड़े बनाकर उन्हें जंगले के चार कोनों पर लगाया। 6 फिर उसने कीकर की दो लकड़ियाँ बनाकर उन पर पीतल चढ़ाया 7 और कुरबानगाह के दोनों तरफ़ लगे इन कड़ों में डाल दीं। यों उसे उठाया जा सकता था। कुरबानगाह लकड़ी की थी लेकिन खोखली थी।

8 बज़लियेल ने धोने का हौज़ और उसका ढाँचा भी पीतल से बनाया। उसका पीतल उन औरतों के आईनों से मिला था जो मुलाकात के खैमे के दरवाज़े पर खिदमत करती थीं।

खैमे का सहन

9 फिर बज़लियेल ने सहन बनाया। उस की चारदीवारी बारीक कतान के कपड़े से बनाई गई। चारदीवारी की लंबाई जुनूब की तरफ 150 फुट थी। 10 कपड़े को लगाने के लिए चाँदी की हुकें, पट्टियाँ, लकड़ी के खंबे और उनके पाए बनाए गए। 11 चारदीवारी शिमाल की तरफ भी इसी तरह बनाई गई। 12 खैमे के पीछे मगरिब की तरफ चारदीवारी की चौड़ाई 75 फुट थी। कपड़े के अलावा उसके लिए 10 खंबे, 10 पाए और कपड़ा लगाने के लिए चाँदी की हुकें और पट्टियाँ बनाई गईं। 13 सामने, मशरिक की तरफ जहाँ से सूरज तुलू होता है चारदीवारी की चौड़ाई भी 75 फुट थी। 14-15 कपड़ा दरवाज़े के दाईं तरफ साढ़े 22 फुट चौड़ा था और उसके बाईं तरफ भी उतना ही चौड़ा। उसे दोनों तरफ तीन तीन खंबों के साथ लगाया गया जो पीतल के पाइयों पर खड़े थे। 16 चारदीवारी के तमाम परदों के लिए बारीक कतान इस्तेमाल हुआ। 17 खंबे पीतल के पाइयों पर खड़े थे, और परदे चाँदी की हुकों और पट्टियों से खंबों के साथ लगे थे। खंबों के ऊपर के सिरों पर चाँदी चढ़ाई गई थी। सहन के तमाम खंबों पर चाँदी की पट्टियाँ लगी थीं।

18 चारदीवारी के दरवाज़े का परदा नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से बनाया गया, और उस पर कढ़ाई का काम किया गया। वह 30 फुट चौड़ा और चारदीवारी के दूसरे परदों की तरह साढ़े सात फुट ऊँचा था। 19 उसके चार खंबे और पीतल के चार पाए थे। उस की हुकें और पट्टियाँ चाँदी की थीं, और खंबों के ऊपर के सिरों पर चाँदी चढ़ाई गई थी। 20 खैमे और चारदीवारी की तमाम मेखें पीतल की थीं।

खैमे का तामीरी सामान

21 ज़ैल में उस सामान की फ़हरिस्त है जो मक़दिस की तामीर के लिए इस्तेमाल हुआ। मूसा के हुक्म पर इमामे-आज़म हास्न के बेटे इतमर ने लावियों की मारिफ़त यह फ़हरिस्त तैयार की। 22 (यहदाह के कबीले के बज़लियेल बिन ऊरी बिन हर ने वह सब कुछ बनाया जो रब ने मूसा को बताया था। 23 उसके साथ दान के कबीले का उहलियाब बिन अरखी-समक था जो कारीगरी के हर काम और कढ़ाई के काम में माहिर था। वह नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से कपड़ा बनाने में भी माहिर था।)

24 उस सोने का वज़न जो लोगों के हदियों से जमा हुआ और मक़दिस की तामीर के लिए इस्तेमाल हुआ तकरीबन 1,000 किलोग्राम था (उसे मक़दिस के बाटों के हिसाब से तोला गया)।

25 तामीर के लिए चाँदी जो मर्दुमशुमारी के हिसाब से वसूल हुई, उसका वज़न तकरीबन 3,430 किलोग्राम था (उसे भी मक़दिस के बाटों के हिसाब से तोला गया)। 26 जिन मर्दों की उम्र 20 साल या इससे ज़ायद थी उन्हें चाँदी का आधा आधा सिक्का देना पड़ा। मर्दों की कुल तादाद 6,03,550 थी। 27 चूँकि दीवारों के तख्तों के पाए और मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े के सत्नों के पाए चाँदी के थे इसलिए तकरीबन पूरी चाँदी इन 100 पाइयों के लिए सर्फ़ हुई। 28 तकरीबन 30 किलोग्राम चाँदी बच गई। इससे चारदीवारी के खंबों की हुकें और पट्टियाँ बनाई गईं, और यह खंबों के ऊपर के सिरों पर भी चढ़ाई गई।

29 जो पीतल हदियों से जमा हुआ उसका वज़न तकरीबन 2,425 किलोग्राम था। 30 खैमे के दरवाज़े के पाए, जानवरों को चढ़ाने की कुरबानगाह, उसका जंगला, बरतन और साज़ो-सामान, 31 चारदीवारी के पाए, सहन के दरवाज़े के पाए और खैमे और चारदीवारी की तमाम मेखें इसी से बनाई गईं।

39

हास्न का बालापोश

1 बज़लियेल की हिदायत पर कारीगरों ने नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग का धागा लेकर मक़दिस में ख़िदमत के लिए लिबास बनाए। उन्होंने हास्न के मुक़द्दस कपड़े उन हिदायत के ऐन मुताबिक़ बनाए जो रब ने मूसा को दी थीं। 2 उन्होंने इमामे-आज़म का बालापोश बनाने के लिए सोना, नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग का धागा और बारीक कतान इस्तेमाल किया। 3 उन्होंने सोने को कूट कूटकर वर्क बनाया और फिर उसे काटकर धागे बनाए। जब नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से कपड़ा बनाया गया तो सोने का यह धागा महारत से कढ़ाई के काम में इस्तेमाल हुआ। 4 उन्होंने बालापोश के लिए दो पट्टियाँ बनाई और उन्हें बालापोश के कंधों पर रखकर सामने और पीछे से बालापोश के साथ लगाईं। 5 पटका भी बनाया गया जिससे बालापोश को बाँधा जाता था। इसके लिए भी सोना, नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग का धागा और बारीक कतान इस्तेमाल हुआ। यह उन हिदायत के ऐन मुताबिक़ हुआ जो रब ने मूसा को दी थीं। 6 फिर उन्होंने अक़ीके-अहमर के दो पत्थर चुन लिए और उन्हें सोने के खानों में जड़कर उन पर इसराईल के बारह बेटों के नाम कंदा किए। यह नाम जौहरों पर उस तरह कंदा किए गए जिस तरह मुहर कंदा की जाती है। 7 उन्होंने पत्थरों को बालापोश की दो पट्टियों पर यों लगाया कि वह हास्न के कंधों पर रब को इसराईलियों की याद दिलाते रहें। यह सब कुछ रब की दी गई हिदायत के ऐन मुताबिक़ हुआ।

सीने का कीसा

8 इसके बाद उन्होंने सीने का कीसा बनाया। यह माहिर कारीगर का काम था और उन्हीं चीज़ों से बना जिनसे हास्न का बालापोश भी बना था यानी सोने और नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से। 9 जब कपड़े को एक दफ़ा तह किया गया तो कीसे की लंबाई और चौड़ाई नौ नौ इंच थी। 10 उन्होंने उस पर चार क़तारों में जवाहर जड़े। हर क़तार में तीन तीन जौहर थे। पहली क़तार में लाल, ज़बरजद और ज़मुरद। 11 दूसरी में फ़ीरोज़ा, संगे-लाजवर्द और हज़स्त-क़मर। 12 तीसरी में ज़रकोन, अक़ीक़ और याकूते-अरगवानी।

13 चौथी में पुखराज, अक्कीके-अहमर और यशब। हर जौहर सोने के खाने में जड़ा हुआ था। 14 यह बारह जवाहर इसराईल के बारह कबीलों की नुमाइंदगी करते थे। एक एक जौहर पर एक कबीले का नाम कंदा किया गया, और यह नाम उस तरह कंदा किए गए जिस तरह मुहर कंदा की जाती है।

15 अब उन्होंने सीने के कीसे के लिए खालिस सोने की दो जंजीरें बनाई जो डोरी की तरह गुंधी हुई थीं। 16 साथ साथ उन्होंने सोने के दो खाने और दो कड़े भी बनाए। उन्होंने यह कड़े कीसे के ऊपर के दो कोनों पर लगाए। 17 फिर दोनों जंजीरें उन दो कड़ों के साथ लगाई गईं। 18 उनके दूसरे सिरे बालापोश की कंधोंवाली पट्टियों के दो खानों के साथ जोड़ दिए गए, फिर सामने की तरफ लगाए गए। 19 उन्होंने कीसे के निचले दो कोनों पर भी सोने के दो कड़े लगाए। वह अंदर, बालापोश की तरफ लगे थे। 20 अब उन्होंने दो और कड़े बनाकर बालापोश की कंधोंवाली पट्टियों पर लगाए। यह भी सामने की तरफ लगे थे लेकिन नीचे, बालापोश के पटके के ऊपर ही। 21 उन्होंने सीने के कीसे के निचले कड़े नीली डोरी से बालापोश के इन निचले कड़ों के साथ बाँधे। यों कीसा पटके के ऊपर अच्छी तरह सीने के साथ लगा रहा। यह उन हिदायात के ऐन मुताबिक हुआ जो रब ने मूसा को दी थीं।

हासून का चोगा

22 फिर कारीगरों ने चोगा बुना। वह पूरी तरह नीले धागे से बनाया गया। चोगे को बालापोश से पहले पहनना था। 23 उसके गेरेबान को बुने हुए कालर से मजबूत किया गया ताकि वह न फटे। 24 उन्होंने नीले, अरगवानी और किरमिजी रंग के धागे से अनार बनाकर उन्हें चोगे के दामन में लगा दिया। 25 उनके दरमियान खालिस सोने की घंटियाँ लगाई गईं। 26 दामन में अनार और घंटियाँ बारी बारी लगाई गईं। लाज़िम था कि हासून खिदमत करने के लिए हमेशा यह चोगा पहने। रब ने मूसा को यही हुक्म दिया था।

खिदमत के लिए दीगर लिबास

27 कारीगरों ने हासून और उसके बेटों के लिए बारीक कतान के जेरजामे बनाए। यह बुननेवाले का काम था। 28 साथ साथ उन्होंने बारीक कतान की पगड़ियाँ और बारीक कतान के पाजामे बनाए। 29 कमरबंद को बारीक कतान और नीले, अरगवानी और किरमिजी रंग के धागे से बनाया गया। कढ़ाई करनेवालों ने इस पर काम किया। सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक बनाया गया जो रब ने मूसा को दी थीं।

30 उन्होंने मुकद्दस ताज यानी खालिस सोने की तख्ती बनाई और उस पर यह अलफाज़ कंदा किए, 'रब के लिए मखसूस-मुकद्दस।' 31 फिर उन्होंने इसे नीली डोरी से पगड़ी के सामनेवाले हिस्से से लगा दिया। यह भी उन हिदायात के मुताबिक बनाया गया जो रब ने मूसा को दी थीं।

सारा सामान मूसा को दिखाया जाता है

32 आखिरकार मक़दिस का काम मुकम्मल हुआ। इसराईलियों ने सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक बनाया था जो रब ने मूसा को दी थीं। 33 वह मक़दिस की तमाम चीज़ें मूसा के पास ले आए यानी मुकद्दस खैमा और उसका सारा सामान, उस की हुकें, दीवारों के तख्ते, शहतीर, सतून और पाए, 34 खैमे पर मेंढों की सुर्ख रंगी हुई खालों का गिलाफ और तखस की खालों का गिलाफ, मुकद्दसतरीन कमरे के दरवाज़े का परदा, 35 अहद का संदूक जिसमें शरीअत की तख्तियाँ रखनी थीं, उसे उठाने की लकड़ियाँ और उसका ढकना, 36 मखसूस रोटियों की मेज़, उसका सारा सामान और रोटियाँ, 37 खालिस सोने का शमादान और उस पर रखने के चराग उसके सारे सामान समेत, शमादान के लिए तेल, 38 बखूर जलाने की सोने की कुरबानगाह, मसह का तेल, खुशबूदार बखूर, मुकद्दस खैमे के दरवाज़े का परदा, 39 जानवरों को चढ़ाने की पीतल की कुरबानगाह, उसका पीतल का जंगला, उसे उठाने की लकड़ियाँ और बाक़ी सारा सामान, धोने का हौज़ और वह ढाँचा जिस पर हौज़ रखना था, 40 चारदीवारी के परदे उनके खंबों और पाइयों समेत, सहन के दरवाज़े का परदा, चारदीवारी के रस्से और मेखें, मुलाकात के खैमे में खिदमत करने का बाक़ी सारा सामान 41 और मक़दिस में खिदमत करने के वह मुकद्दस लिबास जो हासून और उसके बेटों को पहनने थे।

42 सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक बनाया गया था जो रब ने मूसा को दी थीं। 43 मूसा ने तमाम चीज़ों का मुआयना किया और मालूम किया कि उन्होंने सब कुछ रब की हिदायात के मुताबिक बनाया था। तब उसने उन्हें बरकत दी।

40

मक़दिस को खड़ा करने की हिदायात

1 फिर रब ने मूसा से कहा, 2 "पहले महीने की पहली तारीख को मुलाकात का खैमा खड़ा करना। 3 अहद का संदूक जिसमें शरीअत की तख्तियाँ हैं मुकद्दसतरीन कमरे में रखकर उसके दरवाज़े का परदा लगाना। 4 इसके बाद मखसूस रोटियों की मेज़ मुकद्दस कमरे में लाकर उस पर तमाम ज़रूरी सामान रखना। उस कमरे में शमादान भी ले आना और उस पर उसके चराग रखना। 5 बखूर की सोने की कुरबानगाह उस परदे के सामने रखना जिसके पीछे अहद का संदूक है। फिर खैमे में दाखिल होने के दरवाज़े पर परदा लगाना। 6 जानवरों को चढ़ाने की कुरबानगाह सहन में खैमे के दरवाज़े के सामने रखी जाए। 7 खैमे और इस कुरबानगाह के दरमियान धोने का हौज़ रखकर उसमें पानी डालना। 8 सहन की चारदीवारी खड़ी करके उसके दरवाज़े का परदा लगाना।

9 फिर मसह का तेल लेकर उसे खैमे और उसके सारे सामान पर छिड़क देना। यों तू उसे मेरे लिए मखसूस करेगा और वह मुकद्दस होगा। 10 फिर जानवरों को चढ़ाने की कुरबानगाह और उसके सामान पर मसह का तेल छिड़कना। यों तू उसे मेरे लिए मखसूस करेगा और वह निहायत मुकद्दस होगा। 11 इसी तरह हौज़ और उस ढाँचे को भी मखसूस करना जिस पर हौज़ रखा गया है।

12 हासून और उसके बेटों को मुलाकात के खैमे के दरवाजे पर लाकर गुस्ल कराना। 13 फिर हासून को मुकद्दस लिबास पहनाना और उसे मसह करके मेरे लिए मखसूसो-मुकद्दस करना ताकि इमाम के तौर पर मेरी खिदमत करे। 14 उसके बेटों को लाकर उन्हें ज़ेरजामे पहना देना। 15 उन्हें उनके वालिद की तरह मसह करना ताकि वह भी इमामों के तौर पर मेरी खिदमत करें। जब उन्हें मसह किया जाएगा तो वह और बाद में उनकी औलाद हमेशा तक मक़दिस में इस खिदमत के लिए मखसूस होंगे।”

मक़दिस को खड़ा किया जाता है

16 मूसा ने सब कुछ रब की हिदायात के मुताबिक किया। 17 पहले महीने की पहली तारीख को मुकद्दस खैमा खड़ा किया गया। उन्हें मिसर से निकले पूरा एक साल हो गया था। 18 मूसा ने दीवार के तख्तों को उनके पाइयों पर खड़ा करके उनके साथ शहतीर लगाए। इसी तरह उसने सतूनों को भी खड़ा किया। 19 उसने रब की हिदायात के ऐन मुताबिक दीवारों पर कपड़े का खैमा लगाया और उस पर दूसरे गिलाफ़ रखे।

20 उसने शरीअत की दोनों तख्तियाँ लेकर अहद के संदूक में रख दीं, उठाने के लिए लकड़ियाँ संदूक के कड़ों में डाल दीं और कफ़फ़ारे का ढकना उस पर लगा दिया। 21 फिर उसने रब की हिदायात के ऐन मुताबिक संदूक को मुकद्दसतरीन कमरे में रखकर उसके दरवाजे का परदा लगा दिया। यों अहद के संदूक पर परदा पड़ा रहा। 22 मूसा ने मखसूस रोटियों की मेज़ मुकद्दस कमरे के शिमाली हिस्से में उस परदे के सामने रख दी जिसके पीछे अहद का संदूक था। 23 उसने रब की हिदायत के ऐन मुताबिक रब के लिए मखसूस की हुई रोटियाँ मेज़ पर रखीं। 24 उसी कमरे के जुनूबी हिस्से में उसने शमादान को मेज़ के मुक़ाबिल रख दिया। 25 उस पर उसने रब की हिदायत के ऐन मुताबिक रब के सामने चराग़ रख दिए। 26 उसने बख़ूर की सोने की कुरबानगाह भी उसी कमरे में रखी, उस परदे के बिल्कुल सामने जिसके पीछे अहद का संदूक था।

27 उसने उस पर रब की हिदायत के ऐन मुताबिक खुशबूदार बख़ूर जलाया।

28 फिर उसने खैमे का दरवाज़ा लगा दिया। 29 बाहर जाकर उसने जानवरों को चढ़ाने की कुरबानगाह खैमे के दरवाजे के सामने रख दी। उस पर उसने रब की हिदायत के ऐन मुताबिक भस्म होनेवाली कुरबानियाँ और ग़ल्ला की नज़रें चढ़ाईं।

30 उसने धोने के हौज़ को खैमे और उस कुरबानगाह के दरमियान रखकर उसमें पानी डाल दिया। 31 मूसा, हासून और उसके बेटे उसे अपने हाथ-पाँव धोने के लिए इस्तेमाल करते थे। 32 जब भी वह मुलाकात के खैमे में दाखिल होते या जानवरों को चढ़ाने की कुरबानगाह के पास आते तो रब की हिदायत के ऐन मुताबिक पहले गुस्ल करते।

33 आखिर में मूसा ने खैमा, कुरबानगाह और चारदीवारी खड़ी करके सहन के दरवाजे का परदा लगा दिया। यों मूसा ने मक़दिस की तामीर मुकम्मल की।

खैमे में रब का जलाल

34 फिर मुलाकात के खैमे पर बादल छा गया और मक़दिस रब के जलाल से भर गया। 35 मूसा खैमे में दाखिल न हो सका, क्योंकि बादल उस पर ठहरा हुआ था और मक़दिस रब के जलाल से भर गया था।

36 तमाम सफ़र के दौरान जब भी मक़दिस के ऊपर से बादल उठता तो इसराईली सफ़र के लिए तैयार हो जाते। 37 अगर वह न उठता तो वह उस वक़्त तक ठहरे रहते जब तक बादल उठ न जाता। 38 दिन के वक़्त बादल मक़दिस के ऊपर ठहरा रहता और रात के वक़्त वह तमाम इसराईलियों को आग की सूरत में नज़र आता था। यह सिलसिला पूरे सफ़र के दौरान जारी रहा।

अहबार

भस्म होनेवाली कुरबानी

1 रब ने मुलाकात के खैमे में से मूसा को बुलाकर कहा 2 कि इसराइलियों को इतला दे,

“अगर तुममें से कोई रब को कुरबानी पेश करना चाहे तो वह अपने गाय-बैलों या भेड़-बकरियों में से जानवर चुन ले।

3 अगर वह अपने गाय-बैलों में से भस्म होनेवाली कुरबानी चढाना चाहे तो वह बेऐब बैल चुनकर उसे मुलाकात के खैमे के दरवाजे पर पेश करे ताकि रब उसे कबूल करे। 4 कुरबानी पेश करनेवाला अपना हाथ जानवर के सर पर रखे तो यह कुरबानी मकबूल होकर उसका कफ़ारा देगी। 5 कुरबानी पेश करनेवाला बैल को वहाँ रब के सामने ज़बह करे। फिर हासून के बेटे जो इमाम हैं उसका खून रब को पेश करके उसे दरवाजे पर की कुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़कें। 6 इसके बाद कुरबानी पेश करनेवाला खाल उतारकर जानवर के टुकड़े टुकड़े करे। 7 इमाम कुरबानगाह पर आग लगाकर उस पर तरतीब से लकड़ियाँ चुनें। 8 उस पर वह जानवर के टुकड़े सर और चरबी समेत रखें। 9 लाज़िम है कि कुरबानी पेश करनेवाला पहले जानवर की अंतड़ियाँ और पिंडलियाँ धोए, फिर इमाम पूरे जानवर को कुरबानगाह पर जला दे। इस जलनेवाली कुरबानी की खुशबू रब को पसंद है।

10 अगर भस्म होनेवाली कुरबानी भेड़-बकरियों में से चुनी जाए तो वह बेऐब नर हो। 11 पेश करनेवाला उसे रब के सामने कुरबानगाह की शिमाली सिम्त में ज़बह करे। फिर हासून के बेटे जो इमाम हैं उसका खून कुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़कें। 12 इसके बाद पेश करनेवाला जानवर के टुकड़े टुकड़े करे और इमाम यह टुकड़े सर और चरबी समेत कुरबानगाह की जलती हुई लकड़ियों पर तरतीब से रखे। 13 लाज़िम है कि कुरबानी पेश करनेवाला पहले जानवर की अंतड़ियाँ और पिंडलियाँ धोए, फिर इमाम पूरे जानवर को रब को पेश करके कुरबानगाह पर जला दे। इस जलनेवाली कुरबानी की खुशबू रब को पसंद है।

14 अगर भस्म होनेवाली कुरबानी परिदा हो तो वह कुम्भी या जवान कबूतर हो। 15 इमाम उसे कुरबानगाह के पास ले आए और उसका सर मरोड़कर कुरबानगाह पर जला दे। वह उसका खून यों निकलने दे कि वह कुरबानगाह की एक तरफ़ से नीचे टपके। 16 वह उसका पोटा और जो उसमें है दूर करके कुरबानगाह की मशरिकी सिम्त में फेंक दे, वहाँ जहाँ राख फेंकी जाती है। 17 उसे पेश करते वक़्त इमाम उसके पर पकड़कर परिदे को फाड़ डाले, लेकिन यों कि वह बिल्कुल टुकड़े टुकड़े न हो जाए। फिर इमाम उसे कुरबानगाह पर जलती हुई लकड़ियों पर जला दे। इस जलनेवाली कुरबानी की खुशबू रब को पसंद है।

2

गल्ला की नज़र

1 अगर कोई रब को गल्ला की नज़र पेश करना चाहे तो वह इसके लिए बेहतरीन मैदा इस्तेमाल करे। उस पर वह जैतून का तेल उंडेले और लुबान रखकर 2 उसे हासून के बेटों के पास ले आए जो इमाम हैं। इमाम तेल से मिलाया गया मुड़ी-भर मैदा और तमाम लुबान लेकर कुरबानगाह पर जला दे। यह यादगार का हिस्सा है, और उस की खुशबू रब को पसंद है। 3 बाकी मैदा और तेल हासून और उसके बेटों का हिस्सा है। वह रब की जलनेवाली कुरबानियों में से एक निहायत मुकद्दस हिस्सा है।

4 अगर यह कुरबानी तनूर में पकाई हुई रोटी हो तो उसमें खमीर न हो। इसकी दो किस्में हो सकती हैं, रोटियाँ जो बेहतरीन मैदे और तेल से बनी हुई हों और रोटियाँ जिन पर तेल लगाया गया हो।

5 अगर यह कुरबानी तवे पर पकाई हुई रोटी हो तो वह बेहतरीन मैदे और तेल की हो। उसमें खमीर न हो। 6 चूँकि वह गल्ला की नज़र है इसलिए रोटी को टुकड़े टुकड़े करना और उस पर तेल डालना।

7 अगर यह कुरबानी कड़ाही में पकाई हुई रोटी हो तो वह बेहतरीन मैदे और तेल की हो।

8 अगर तू इन चीज़ों की बनी हुई गल्ला की नज़र रब के हुज़ूर लाना चाहे तो उसे इमाम को पेश करना। वही उसे कुरबानगाह के पास ले आए। 9 फिर इमाम यादगार का हिस्सा अलग करके उसे कुरबानगाह पर जला दे। ऐसी कुरबानी की खुशबू रब को पसंद है। 10 कुरबानी का बाकी हिस्सा हासून और उसके बेटों के लिए है। वह रब की जलनेवाली कुरबानियों में से एक निहायत मुकद्दस हिस्सा है।

11 गल्ला की जितनी नज़रें तुम रब को पेश करते हो उनमें खमीर न हो, क्योंकि लाज़िम है कि तुम रब को जलनेवाली कुरबानी पेश करते वक़्त न खमीर, न शहद जलाओ। 12 यह चीज़ें फ़सल के पहले फलों के साथ रब को पेश की जा सकती हैं, लेकिन उन्हें कुरबानगाह पर न जलाया जाए, क्योंकि वहाँ रब को उनकी खुशबू पसंद नहीं है। 13 गल्ला की हर नज़र में नमक हो, क्योंकि नमक उस अहद की नुमाइंदगी करता है जो तेरे खुदा ने तेरे साथ बाँधा है। तुझे हर कुरबानी में नमक डालना है।

14 अगर तू गल्ला की नज़र के लिए फ़सल के पहले फल पेश करना चाहे तो कुचली हुई कच्ची बालियाँ भूनकर पेश करना। 15 चूँकि वह गल्ला की नज़र है इसलिए उस पर तेल उंडेलना और लुबान रखना। 16 कुचले हुए दानों और तेल का जो हिस्सा रब का है यानी यादगार का हिस्सा उसे इमाम तमाम लुबान के साथ जला दे। यह नज़र रब के लिए जलनेवाली कुरबानी है।

3

सलामती की कुरबानी

1 अगर कोई रब को सलामती की कुरबानी पेश करने के लिए गाय या बैल चढ़ाना चाहे तो वह जानवर बेऐब हो। 2 वह अपना हाथ जानवर के सर पर रखकर उसे मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े पर ज़बह करे। हासून के बेटे जो इमाम हैं उसका खून कुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़कें। 3-4 पेश करनेवाला अंतड़ियों पर की सारी चरबी, गुरदे उस चरबी समेत जो उन पर और कमर के करीब होती है और जोड़कलेजी जलनेवाली कुरबानी के तौर पर रब को पेश करे। इन चीज़ों को गुरदों के साथ ही अलग करना है। 5 फिर हासून के बेटे यह सब कुछ भस्म होनेवाली कुरबानी के साथ कुरबानगाह की लकड़ियों पर जला दें। यह जलनेवाली कुरबानी है, और इसकी खुशबू रब को पसंद है।

6 अगर सलामती की कुरबानी के लिए भेड़-बकरियों में से जानवर चुना जाए तो वह बेऐब नर या मादा हो।

7 अगर वह भेड़ का बच्चा चढ़ाना चाहे तो वह उसे रब के सामने ले आए। 8 वह अपना हाथ उसके सर पर रखकर उसे मुलाकात के ख़ैमे के सामने ज़बह करे। हासून के बेटे उसका खून कुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़कें। 9-10 पेश करनेवाला चरबी, पूरी दुम, अंतड़ियों पर की सारी चरबी, गुरदे उस चरबी समेत जो उन पर और कमर के करीब होती है और जोड़कलेजी जलनेवाली कुरबानी के तौर पर रब को पेश करे। इन चीज़ों को गुरदों के साथ ही अलग करना है। 11 इमाम यह सब कुछ रब को पेश करके कुरबानगाह पर जला दे। यह ख़ुराक जलनेवाली कुरबानी है।

12 अगर सलामती की कुरबानी बकरी की हो 13 तो पेश करनेवाला उस पर हाथ रखकर उसे मुलाकात के ख़ैमे के सामने ज़बह करे। हासून के बेटे जानवर का खून कुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़कें। 14-15 पेश करनेवाला अंतड़ियों पर की सारी चरबी, गुरदे उस चरबी समेत जो उन पर और कमर के करीब होती है और जोड़कलेजी जलनेवाली कुरबानी के तौर पर रब को पेश करे। इन चीज़ों को गुरदों के साथ ही अलग करना है। 16 इमाम यह सब कुछ रब को पेश करके कुरबानगाह पर जला दे। यह ख़ुराक जलनेवाली कुरबानी है, और इसकी खुशबू रब को पसंद है।

सारी चरबी रब की है। 17 तुम्हारे लिए खून या चरबी खाना मना है। यह न सिर्फ़ तुम्हारे लिए मना है बल्कि तुम्हारी औलाद के लिए भी, न सिर्फ़ यहाँ बल्कि हर जगह जहाँ तुम रहते हो।”

4

गुनाह की कुरबानी

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इसराइलियों को बताना कि जो भी ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुक्म को तोड़े वह यह करे :

इमाम के लिए गुनाह की कुरबानी

3 अगर इमामे-आज़म गुनाह करे और नतीजे में पूरी क़ौम कुसूरवार ठहरे तो फिर वह रब को एक बेऐब जवान बैल लेकर गुनाह की कुरबानी के तौर पर पेश करे। 4 वह जवान बैल को मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े के पास ले आए और अपना हाथ उसके सर पर रखकर उसे रब के सामने ज़बह करे। 5 फिर वह जानवर के खून में से कुछ लेकर ख़ैमे में जाए। 6 वहाँ वह अपनी उँगली उसमें डालकर उसे सात बार रब के सामने यानी मुक़द्दसतरीन कमरे के परदे पर छिड़के। 7 फिर वह ख़ैमे के अंदर की उस कुरबानगाह के चारों सींगों पर खून लगाए जिस पर बखूर जलाया जाता है। बाक़ी खून वह बाहर ख़ैमे के दरवाज़े पर की उस कुरबानगाह के पाए पर उंडेले जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। 8 जवान बैल की सारी चरबी, अंतड़ियों पर की सारी चरबी, 9 गुरदे उस चरबी समेत जो उन पर और कमर के करीब होती है और जोड़कलेजी को गुरदों के साथ ही अलग करना है। 10 यह बिल्कुल उसी तरह किया जाए जिस तरह उस बैल के साथ किया गया जो सलामती की कुरबानी के लिए पेश किया जाता है। इमाम यह सब कुछ उस कुरबानगाह पर जला दे जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। 11 लेकिन वह उस की खाल, उसका सारा गोशत, सर और पिंडलियाँ, अंतड़ियाँ और उनका गोबर 12 ख़ैमागाह के बाहर ले जाए। यह चीज़ें उस पाक जगह पर जहाँ कुरबानियों की राख फेंकी जाती है लकड़ियों पर रखकर जला देनी हैं।

क़ौम के लिए गुनाह की कुरबानी

13 अगर इसराइल की पूरी जमात ने ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुक्म से तज़ावुज़ किया है और जमात को मालूम नहीं था तो भी वह कुसूरवार है। 14 जब लोगों को पता लगे कि हमने गुनाह किया है तो जमात मुलाकात के ख़ैमे के पास एक जवान बैल ले आए और उसे गुनाह की कुरबानी के तौर पर पेश करे। 15 जमात के बुज़ुर्ग रब के सामने अपने हाथ उसके सर पर रखें, और वह वहीं ज़बह किया जाए। 16 फिर इमामे-आज़म जानवर के खून में से कुछ लेकर मुलाकात के ख़ैमे में जाए। 17 वहाँ वह अपनी उँगली उसमें डालकर उसे सात बार रब

के सामने यानी मुकद्दसतरीन कमरे के परदे पर छिड़के। 18 फिर वह खैमे के अंदर की उस कुरबानगाह के चारों सींगों पर खून लगाए जिस पर बखूर जलाया जाता है। बाक़ी खून वह बाहर खैमे के दरवाज़े की उस कुरबानगाह के पाए पर उंडेले जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। 19 इसके बाद वह उस की तमाम चरबी निकालकर कुरबानगाह पर जला दे। 20 उस बैल के साथ वह सब कुछ करे जो उसे अपने जाती ग़ैरइरादी गुनाह के लिए करना होता है। यों वह लोगों का कफ़फ़ारा देगा और उन्हें मुआफ़ी मिल जाएगी। 21 आखिर में वह बैल को खैमागाह के बाहर ले जाकर उस तरह जला दे जिस तरह उसे अपने लिए बैल को जला देना होता है। यह जमात का गुनाह दूर करने की कुरबानी है।

कौम के राहनुमा के लिए गुनाह की कुरबानी

22 अगर कोई सरदार ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुक्म से तजाबुज़ करे और यों कुसूरवार ठहरे तो 23 जब भी उसे पता लगे कि मुझसे गुनाह हुआ है तो वह कुरबानी के लिए एक बेऐब बकरा ले आए। 24 वह अपना हाथ बकरे के सर पर रखकर उसे वहाँ ज़बह करे जहाँ भस्म होनेवाली कुरबानियाँ ज़बह की जाती हैं। यह गुनाह की कुरबानी है। 25 इमाम अपनी उँगली खून में डालकर उसे उस कुरबानगाह के चारों सींगों पर लगाए जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। बाक़ी खून वह कुरबानगाह के पाए पर उंडेले। 26 फिर वह उस की सारी चरबी कुरबानगाह पर उस तरह जला दे जिस तरह वह सलामती की कुरबानियों की चरबी जला देता है। यों इमाम उस आदमी का कफ़फ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी हासिल हो जाएगी।

आम लोगों के लिए गुनाह की कुरबानी

27 अगर कोई आम शख्स ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुक्म से तजाबुज़ करे और यों कुसूरवार ठहरे तो 28 जब भी उसे पता लगे कि मुझसे गुनाह हुआ है तो वह कुरबानी के लिए एक बेऐब बकरी ले आए। 29 वह अपना हाथ बकरी के सर पर रखकर उसे वहाँ ज़बह करे जहाँ भस्म होनेवाली कुरबानियाँ ज़बह की जाती हैं। 30 इमाम अपनी उँगली खून में डालकर उसे उस कुरबानगाह के चारों सींगों पर लगाए जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। बाक़ी खून वह कुरबानगाह के पाए पर उंडेले। 31 फिर वह उस की सारी चरबी उस तरह निकाले जिस तरह वह सलामती की कुरबानियों की चरबी निकालता है। इसके बाद वह उसे कुरबानगाह पर जला दे। ऐसी कुरबानी की खुशबू रब को पसंद है। यों इमाम उस आदमी का कफ़फ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी हासिल हो जाएगी।

32 अगर वह गुनाह की कुरबानी के लिए भेड़ का बच्चा लाना चाहे तो वह बेऐब मादा हो। 33 वह अपना हाथ उसके सर पर रखकर उसे वहाँ ज़बह करे जहाँ भस्म होनेवाली कुरबानियाँ ज़बह की जाती हैं। 34 इमाम अपनी उँगली खून में डालकर उसे उस कुरबानगाह के चारों सींगों पर लगाए जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। बाक़ी खून वह कुरबानगाह के पाए पर उंडेले। 35 फिर वह उस की तमाम चरबी उस तरह निकाले जिस तरह सलामती की कुरबानी के लिए ज़बह किए गए जवान मेंढे की चरबी निकाली जाती है। इसके बाद इमाम चरबी को कुरबानगाह पर उन कुरबानियों समेत जला दे जो रब के लिए जलाई जाती हैं। यों इमाम उस आदमी का कफ़फ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी मिल जाएगी।

5

गुनाह की कुरबानियों के बारे में ख़ास हिदायात

1 हो सकता है कि किसी ने यों गुनाह किया कि उसने कोई जुर्म देखा या वह उसके बारे में कुछ जानता है। तो भी जब गवाहों को कसम के लिए बुलाया जाता है तो वह गवाही देने के लिए सामने नहीं आता। इस सूरत में वह कुसूरवार ठहरता है।

2 हो सकता है कि किसी ने ग़ैरइरादी तौर पर किसी नापाक चीज़ को छू लिया है, खाह वह किसी जंगली जानवर, मवेशी या रेंगनेवाले जानवर की लाश क्यों न हो। इस सूरत में वह नापाक है और कुसूरवार ठहरता है।

3 हो सकता है कि किसी ने ग़ैरइरादी तौर पर किसी शख्स की नापाकी को छू लिया है यानी उस की कोई ऐसी चीज़ जिससे वह नापाक हो गया है। जब उसे मालूम हो जाता है तो वह कुसूरवार ठहरता है।

4 हो सकता है कि किसी ने बेपरवाई से कुछ करने की कसम खाई है, चाहे वह अच्छा काम था या ग़लत। जब वह जान लेता है कि उसने क्या किया है तो वह कुसूरवार ठहरता है।

5 जो इस तरह के किसी गुनाह की बिना पर कुसूरवार हो, लाज़िम है कि वह अपना गुनाह तसलीम करे। 6 फिर वह गुनाह की कुरबानी के तौर पर एक भेड़ या बकरी पेश करे। यों इमाम उसका कफ़फ़ारा देगा।

7 अगर कुसूरवार शख्स ग़ुरबत के बाइस भेड़ या बकरी न दे सके तो वह रब को दो कुम्रियाँ या दो जवान कबूतर पेश करे, एक गुनाह की कुरबानी के लिए और एक भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए। 8 वह उन्हें इमाम के पास ले आए। इमाम पहले गुनाह की कुरबानी के लिए परिदा पेश करे। वह उस की गरदन मरोड़ डाले लेकिन ऐसे कि सर जुदा न हो जाए। 9 फिर वह उसके खून में से कुछ कुरबानगाह के एक पहलू पर छिड़के। बाक़ी खून वह यों निकलने दे कि वह कुरबानगाह के पाए पर टपके। यह गुनाह की कुरबानी है। 10 फिर इमाम दूसरे परिदे को क़वायद के मुताबिक भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करे। यों इमाम उस आदमी का कफ़फ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी मिल जाएगी।

11 अगर वह शख्स ग़ुरबत के बाइस दो कुम्रियाँ या दो जवान कबूतर भी न दे सके तो फिर वह गुनाह की कुरबानी के लिए डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा पेश करे। वह उस पर न तेल उंडेले, न लुबान रखे, क्योंकि यह ग़ल्ला की नज़र नहीं बल्कि गुनाह की कुरबानी है। 12 वह उसे

इमाम के पास ले आए जो यादगार का हिस्सा यानी मुट्ठी-भर उन कुरबानियों के साथ जला दे जो रब के लिए जलाई जाती हैं। यह गुनाह की कुरबानी है। 13 यों इमाम उस आदमी का कफ़फ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी मिल जाएगी। गल्ला की नज़र की तरह बाकी मैदा इमाम का हिस्सा है।”

कुसूर की कुरबानी

14 रब ने मूसा से कहा, 15 “अगर किसी ने बेईमानी करके गैरइरादी तौर पर रब की मखसूस और मुक़द्दस चीज़ों के सिलसिले में गुनाह किया हो, ऐसा शख्स कुसूर की कुरबानी के तौर पर रब को बेऐब और कीमत के लिहाज़ से मुनासिब मेंढा या बकरा पेश करे। उस की कीमत मक़दिस की शरह के मुताबिक़ मुक़र्रर की जाए। 16 जितना नुक़सान मक़दिस को हुआ है उतना ही वह दे। इसके अलावा वह मज़ीद 20 फ़ीसद अदा करे। वह उसे इमाम को दे दे और इमाम जानवर को कुसूर की कुरबानी के तौर पर पेश करके उसका कफ़फ़ारा दे। यों उसे मुआफ़ी मिल जाएगी।

17 अगर कोई गैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुक्म से तजाबुज़ करे तो वह कुसूरवार है, और वह उसका ज़िम्मादार ठहरेगा। 18 वह कुसूर की कुरबानी के तौर पर इमाम के पास एक बेऐब और कीमत के लिहाज़ से मुनासिब मेंढा ले आए। उस की कीमत मक़दिस की शरह के मुताबिक़ मुक़र्रर की जाए। फिर इमाम यह कुरबानी उस गुनाह के लिए चढ़ाए जो कुसूरवार शख्स ने गैरइरादी तौर पर किया है। यों उसे मुआफ़ी मिल जाएगी। 19 यह कुसूर की कुरबानी है, क्योंकि वह रब का गुनाह करके कुसूरवार ठहरा है।”

6

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “हो सकता है किसी ने गुनाह करके बेईमानी की है, मसलन उसने अपने पड़ोसी की कोई चीज़ वापस नहीं की जो उसके सुपर्द की गई थी या जो उसे गिरवी के तौर पर मिली थी, या उसने उस की कोई चीज़ चोरी की, या उसने किसी से कोई चीज़ छीन ली, 3 या उसने किसी की गुमशुदा चीज़ के बारे में झूट बोला जब उसे मिल गई, या उसने कसम खाकर झूट बोला है, या इस तरह का कोई और गुनाह किया है। 4 अगर वह इस तरह का गुनाह करके कुसूरवार ठहरे तो लाज़िम है कि वह वही चीज़ वापस करे जो उसने चोरी की या छीन ली या जो उसके सुपर्द की गई या जो गुमशुदा होकर उसके पास आ गई है 5 या जिसके बारे में उसने कसम खाकर झूट बोला है। वह उसका उतना ही वापस करके 20 फ़ीसद ज़्यादा दे। और वह यह सब कुछ उस दिन वापस करे जब वह अपनी कुसूर की कुरबानी पेश करता है। 6 कुसूर की कुरबानी के तौर पर वह एक बेऐब और कीमत के लिहाज़ से मुनासिब मेंढा इमाम के पास ले आए और रब को पेश करे। उस की कीमत मक़दिस की शरह के मुताबिक़ मुक़र्रर की जाए। 7 फिर इमाम रब के सामने उसका कफ़फ़ारा देगा तो उसे मुआफ़ी मिल जाएगी।”

भस्म होनेवाली कुरबानी

8 रब ने मूसा से कहा, 9 “हारून और उसके बेटों को भस्म होनेवाली कुरबानियों के बारे में ज़ैल की हिदायात देना : भस्म होनेवाली कुरबानी पूरी रात सुबह तक कुरबानगाह की उस जगह पर रहे जहाँ आग जलती है। आग को बुझने न देना। 10 सुबह को इमाम कतान का लिबास और कतान का पाजामा पहनकर कुरबानी से बची हुई राख कुरबानगाह के पास ज़मीन पर डाले। 11 फिर वह अपने कपड़े बदलकर राख को खैमागाह के बाहर किसी पाक जगह पर छोड़ आए। 12 कुरबानगाह पर आग जलती रहे। वह कभी भी न बुझे। हर सुबह इमाम लकड़ियाँ चुनकर उस पर भस्म होनेवाली कुरबानी तरतीब से रखे और उस पर सलामती की कुरबानी की चरबी जला दे। 13 आग हमेशा जलती रहे। वह कभी न बुझने पाए।

गल्ला की नज़र

14 गल्ला की नज़र के बारे में हिदायात यह हैं : हारून के बेटे उसे कुरबानगाह के सामने रब को पेश करें। 15 फिर इमाम यादगार का हिस्सा यानी तेल से मिलाया गया मुट्ठी-भर बेहतरीन मैदा और कुरबानी का तमाम लुबान लेकर कुरबानगाह पर जला दे। इसकी खुशबू रब को पसंद है। 16 हारून और उसके बेटे कुरबानी का बाकी हिस्सा खा लें। लेकिन वह उसे मुक़द्दस जगह पर यानी मुलाकात के खैमे की चारदीवारी के अंदर खाएँ, और उसमें ख़मीर न हो। 17 उसे पकाने के लिए उसमें ख़मीर न डाला जाए। मैंने जलनेवाली कुरबानियों में से यह हिस्सा उनके लिए मुक़र्रर किया है। यह गुनाह की कुरबानी और कुसूर की कुरबानी की तरह निहायत मुक़द्दस है। 18 हारून की औलाद के तमाम मर्द उसे खाएँ। यह उसूल अबद तक कायम रहे। जो भी उसे छुएगा वह मखसूसो-मुक़द्दस हो जाएगा।”

19 रब ने मूसा से कहा, 20 “जब हारून और उसके बेटों को इमाम की ज़िम्मादारी उठाने के लिए मखसूस करके तेल से मसह किया जाएगा तो वह डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा पेश करें। उसका आधा हिस्सा सुबह को और आधा हिस्सा शाम के वक़्त पेश किया जाए। वह गल्ला की यह नज़र रोज़ाना पेश करें। 21 उसे तेल के साथ मिलाकर तवे पर पकाना है। फिर उसे टुकड़े टुकड़े करके गल्ला की नज़र के तौर पर पेश करना। उस की खुशबू रब को पसंद है। 22 यह कुरबानी हमेशा हारून की नसल का वह आदमी पेश करे जिसे मसह करके इमामे-आज़म का ओहदा दिया गया है, और वह उसे पूरे तौर पर रब के लिए जला दे। 23 इमाम की गल्ला की नज़र हमेशा पूरे तौर पर जलाना। उसे न खाना।”

गुनाह की कुरबानी

24 रब ने मूसा से कहा, 25 “हारून और उसके बेटों को गुनाह की कुरबानी के बारे में ज़ैल की हिदायात देना : गुनाह की कुरबानी को रब के सामने वहीं ज़बह करना है जहाँ भस्म होनेवाली कुरबानी ज़बह की जाती है। वह निहायत मुक़द्दस है। 26 उसे पेश करनेवाला इमाम उसे मुक़द्दस

जगह पर यानी मुलाकात के खैमे की चारदीवारी के अंदर खाए। ²⁷ जो भी इस कुरबानी के गोश्त को छू लेता है वह मखसूसो-मुकद्दस हो जाता है। अगर कुरबानी के खून के छींटे किसी लिबास पर पड़ जाएँ तो उसे मुकद्दस जगह पर धोना है। ²⁸ अगर गोश्त को हंडिया में पकाया गया हो तो उस बरतन को बाद में तोड़ देना है। अगर उसके लिए पीतल का बरतन इस्तेमाल किया गया हो तो उसे खूब मॉझकर पानी से साफ करना। ²⁹ इमामों के खानदानों में से तमाम मर्द उसे खा सकते हैं। यह खाना निहायत मुकद्दस है। ³⁰ लेकिन गुनाह की हर वह कुरबानी खाई न जाए जिसका खून मुलाकात के खैमे में इसलिए लाया गया है कि मक़दिस में किसी का कफ़ारा दिया जाए। उसे जलाना है।

7

कुसूर की कुरबानी

¹ कुसूर की कुरबानी जो निहायत मुकद्दस है उसके बारे में हिदायात यह हैं :

² कुसूर की कुरबानी वहीं जबह करनी है जहाँ भस्म होनेवाली कुरबानी जबह की जाती है। उसका खून कुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़का जाए। ³ उस की तमाम चरबी निकालकर कुरबानगाह पर चढ़ानी है यानी उस की दुम, अंतड़ियों पर की चरबी, ⁴ गुरदे उस चरबी समेत जो उन पर और कमर के करीब होती है और जोड़कलेजी। इन चीज़ों को गुरदों के साथ ही अलग करना है। ⁵ इमाम यह सब कुछ रब को कुरबानगाह पर जलनेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करे। यह कुसूर की कुरबानी है। ⁶ इमामों के खानदानों में से तमाम मर्द उसे खा सकते हैं। लेकिन उसे मुकद्दस जगह पर खाया जाए। यह निहायत मुकद्दस है।

⁷ गुनाह और कुसूर की कुरबानी के लिए एक ही उसूल है, जो इमाम कुरबानी को पेश करके कफ़ारा देता है उसको उसका गोश्त मिलता है। ⁸ इस तरह जो इमाम किसी जानवर को भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर चढ़ाता है उसी को जानवर की खाल मिलती है। ⁹ और इसी तरह तनूर में, कड़ाही में या तवे पर पकाई गई गल्ला की हर नज़र उस इमाम को मिलती है जिसने उसे पेश किया है। ¹⁰ लेकिन हारून के तमाम बेटों को गल्ला की बाक़ी नज़रें बराबर बराबर मिलती रहें, खाह उनमें तेल मिलाया गया हो या वह ख़ुश्क हों।

सलामती की कुरबानी

¹¹ सलामती की कुरबानी जो रब को पेश की जाती है उसके बारे में जैल की हिदायात हैं :

¹² अगर कोई इस कुरबानी से अपनी शुक़रगुज़ारी का इज़हार करना चाहे तो वह जानवर के साथ बेख़मीरी रोटी जिसमें तेल डाला गया हो, बेख़मीरी रोटी जिस पर तेल लगाया गया हो और रोटी जिसमें बेहतरीन मैदा और तेल मिलाया गया हो पेश करे। ¹³ इसके अलावा वह ख़मीरी रोटी भी पेश करे। ¹⁴ पेश करनेवाला कुरबानी की हर चीज़ का एक हिस्सा उठाकर रब के लिए मख़सूस करे। यह उस इमाम का हिस्सा है जो जानवर का खून कुरबानगाह पर छिड़कता है। ¹⁵ गोश्त उसी दिन खाया जाए जब जानवर को जबह किया गया हो। अगली सुबह तक कुछ नहीं बचना चाहिए।

¹⁶ इस कुरबानी का गोश्त सिर्फ़ इस सूरत में अगले दिन खाया जा सकता है जब किसी ने मन्नत मानकर या अपनी खुशी से उसे पेश किया है। ¹⁷ अगर कुछ गोश्त तीसरे दिन तक बच जाए तो उसे जलाना है। ¹⁸ अगर उसे तीसरे दिन भी खाया जाए तो रब यह कुरबानी क़बूल नहीं करेगा। उसका कोई फ़ायदा नहीं होगा बल्कि उसे नापाक करार दिया जाएगा। जो भी उससे खाएगा वह कुसूरवार ठहरेगा। ¹⁹ अगर यह गोश्त किसी नापाक चीज़ से लग जाए तो उसे नहीं खाना है बल्कि उसे जलाया जाए। अगर गोश्त पाक है तो हर शख्स जो ख़ुद पाक है उसे खा सकता है। ²⁰ लेकिन अगर नापाक शख्स रब को पेश की गई सलामती की कुरबानी का यह गोश्त खाए तो उसे उस की क़ौम में से मिटा डालना है। ²¹ हो सकता है कि किसी ने किसी नापाक चीज़ को छू लिया है चाहे वह नापाक शख्स, जानवर या कोई और धिनौनी और नापाक चीज़ हो। अगर ऐसा शख्स रब को पेश की गई सलामती की कुरबानी का गोश्त खाए तो उसे उस की क़ौम में से मिटा डालना है।”

चरबी और खून खाना मना है

²² रब ने मूसा से कहा, ²³ “इसराईलियों को बता देना कि गाय-बैल और भेड़-बकरियों की चरबी खाना तुम्हारे लिए मना है। ²⁴ तुम फ़ितरी तौर पर मरे हुए जानवरों और फाड़े हुए जानवरों की चरबी दीगर कामों के लिए इस्तेमाल कर सकते हो, लेकिन उसे खाना मना है। ²⁵ जो भी उस चरबी में से खाए जो जलाकर रब को पेश की जाती है उसे उस की क़ौम में से मिटा डालना है। ²⁶ जहाँ भी तुम रहते हो वहाँ परिदों या दीगर जानवरों का खून खाना मना है। ²⁷ जो भी खून खाए उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाए।”

कुरबानियों में से इमाम का हिस्सा

²⁸ रब ने मूसा से कहा, ²⁹ “इसराईलियों को बताना कि जो रब को सलामती की कुरबानी पेश करे वह रब के लिए एक हिस्सा मख़सूस करे। ³⁰ वह जलनेवाली यह कुरबानी अपने हाथों से रब को पेश करे। इसके लिए वह जानवर की चरबी और सीना रब के सामने पेश करे। सीना हिलानेवाली कुरबानी हो। ³¹ इमाम चरबी को कुरबानगाह पर जला दे जबकि सीना हारून और उसके बेटों का हिस्सा है। ³² कुरबानी की दहनी रान इमाम को उठानेवाली कुरबानी के तौर पर दी जाए। ³³ वह उस इमाम का हिस्सा है जो सलामती की कुरबानी का खून और चरबी चढ़ाता है।

34 इसराईलियों की सलामती की कुरबानियों में से मैंने हिलानेवाला सीना और उठानेवाली रान इमामों को दी है। यह चीजें हमेशा के लिए इसराईलियों की तरफ से इमामों का हक हैं।”

35 यह उस दिन जलनेवाली कुरबानियों में से हासून और उसके बेटों का हिस्सा बन गई जब उन्हें मकदिस में रब की खिदमत में पेश किया गया। 36 रब ने उस दिन जब उन्हें तेल से मसह किया गया हुक्म दिया था कि इसराईली यह हिस्सा हमेशा इमामों को दिया करें।

37 गरज यह हिदायात तमाम कुरबानियों के बारे में हैं यानी भस्म होनेवाली कुरबानी, गल्ला की नजर, गुनाह की कुरबानी, कुसूर की कुरबानी, इमाम को मकदिस में खिदमत के लिए मखसूस करने की कुरबानी और सलामती की कुरबानी के बारे में। 38 रब ने मूसा को यह हिदायात सीना पहाड़ पर दी, उस दिन जब उसने इसराईलियों को हुक्म दिया कि वह दशते-सीना में रब को अपनी कुरबानियाँ पेश करें।

8

हासून और उसके बेटों की मखसूसियत

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “हासून और उसके बेटों को मेरे हुज़र ले आना। नीज़ इमामों के लिबास, मसह का तेल, गुनाह की कुरबानी के लिए जवान बैल, दो मेंढे और बेखमीरी रोटियों की टोकरी ले आना। 3 फिर पूरी जमात को खैमे के दरवाज़े पर जमा करना।”

4 मूसा ने ऐसा ही किया। जब पूरी जमात इकट्ठी हो गई तो 5 उसने उनसे कहा, “अब मैं वह कुछ करता हूँ जिसका हुक्म रब ने दिया है।” 6 मूसा ने हासून और उसके बेटों को सामने लाकर गुस्ल कराया। 7 उसने हासून को कतान का ज़ेरजामा पहनाकर कमरबंद लपेटा। फिर उसने चोगा पहनाया जिस पर उसने बालापोश को महारत से बुने हुए पटके से बाँधा। 8 इसके बाद उसने सीने का कीसा लगाकर उसमें दोनों कुरे बनाम ऊरीम और तुम्मीम रखे। 9 फिर उसने हासून के सर पर पगड़ी रखी जिसके सामनेवाले हिस्से पर उसने मुकद्दस ताज यानी सोने की तरख्ती लगा दी। सब कुछ उस हुक्म के ऐन मुताबिक हुआ जो रब ने मूसा को दिया था।

10 इसके बाद मूसा ने मसह के तेल से मकदिस को और जो कुछ उसमें था मसह करके उसे मखसूसो-मुकद्दस किया। 11 उसने यह तेल सात बार जानवर चढ़ाने की कुरबानगाह और उसके सामान पर छिड़क दिया। इसी तरह उसने सात बार धोने के हौज़ और उस ढाँचे पर तेल छिड़क दिया जिस पर हौज़ रखा हुआ था। यों यह चीजें मखसूसो-मुकद्दस हुईं। 12 उसने हासून के सर पर मसह का तेल उंडेलकर उसे मसह किया। यों वह मखसूसो-मुकद्दस हुआ।

13 फिर मूसा ने हासून के बेटों को सामने लाकर उन्हें ज़ेरजामे पहनाए, कमरबंद लपेटे और उनके सरों पर पगड़ियाँ बाँधीं। सब कुछ उस हुक्म के ऐन मुताबिक हुआ जो रब ने मूसा को दिया था।

14 अब मूसा ने गुनाह की कुरबानी के लिए जवान बैल को पेश किया। हासून और उसके बेटों ने अपने हाथ उसके सर पर रखे। 15 मूसा ने उसे ज़बह करके उसके खून में से कुछ लेकर अपनी उँगली से कुरबानगाह के सींगों पर लगा दिया ताकि वह गुनाहों से पाक हो जाए। बाक़ी खून उसने कुरबानगाह के पाए पर उंडेल दिया। यों उसने उसे मखसूसो-मुकद्दस करके उसका कफ़फ़ारा दिया। 16 मूसा ने अंतड़ियों पर की तमाम चरबी, जोड़कलेजी और दोनों गुरदे उनकी चरबी समेत लेकर कुरबानगाह पर जला दिए। 17 लेकिन बैल की खाल, गोशत और अंतड़ियों के गोबर को उसने खैमागाह के बाहर ले जाकर जला दिया। सब कुछ उस हुक्म के मुताबिक हुआ जो रब ने मूसा को दिया था।

18 इसके बाद उसने भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए पहला मेंढा पेश किया। हासून और उसके बेटों ने अपने हाथ उसके सर पर रख दिए। 19 मूसा ने उसे ज़बह करके उसका खून कुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़क दिया। 20 उसने मेंढे को टुकड़े टुकड़े करके सर, टुकड़े और चरबी जला दी। 21 उसने अंतड़ियाँ और पिंडलियाँ पानी से साफ़ करके पूरे मेंढे को कुरबानगाह पर जला दिया। सब कुछ उस हुक्म के ऐन मुताबिक हुआ जो रब ने मूसा को दिया था। रब के लिए जलनेवाली यह कुरबानी भस्म होनेवाली कुरबानी थी, और उस की खुशबू रब को पसंद थी।

22 इसके बाद मूसा ने दूसरे मेंढे को पेश किया। इस कुरबानी का मकसद इमामों को मकदिस में खिदमत के लिए मखसूस करना था। हासून और उसके बेटों ने अपने हाथ मेंढे के सर पर रख दिए। 23 मूसा ने उसे ज़बह करके उसके खून में से कुछ लेकर हासून के दहने कान की लौ पर और उसके दहने हाथ और दहने पाँव के अंगूठों पर लगाया। 24 यही उसने हासून के बेटों के साथ भी किया। उसने उन्हें सामने लाकर उनके दहने कान की लौ पर और उनके दहने हाथ और दहने पाँव के अंगूठों पर खून लगाया। बाक़ी खून उसने कुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़क दिया। 25 उसने मेंढे की चरबी, दुम, अंतड़ियों पर की सारी चरबी, जोड़कलेजी, दोनों गुरदे उनकी चरबी समेत और दहनी रान अलग की। 26 फिर वह रब के सामने पड़ी बेखमीरी रोटियों की टोकरी में से एक सादा रोटी, एक रोटी जिसमें तेल डाला गया था और एक रोटी जिस पर तेल लगाया गया था लेकर चरबी और रान पर रख दी। 27 उसने यह सब कुछ हासून और उसके बेटों के हाथों पर रखकर उसे हिलानेवाली कुरबानी के तौर पर रब को पेश किया। 28 फिर उसने यह चीजें उनसे वापस लेकर कुरबानगाह पर जला दी जिस पर पहले भस्म होनेवाली कुरबानी रखी गई थी। रब के लिए जलनेवाली यह कुरबानी इमामों को मखसूस करने के लिए चढ़ाई गई, और उस की खुशबू रब को पसंद थी।

29 मूसा ने सीना भी लिया और उसे हिलानेवाली कुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाया। यह मखसूसियत के मेंढे में से मूसा का हिस्सा था। मूसा ने इसमें भी सब कुछ रब के हुक्म के ऐन मुताबिक किया।

30 फिर उसने मसह के तेल और कुरबानगाह पर के खून में से कुछ लेकर हासून, उसके बेटों और उनके कपड़ों पर छिड़क दिया। यों उसने उन्हें और उनके कपड़ों को मखसूसो-मुकद्दस किया।

31 मूसा ने उनसे कहा, “गोशत को मुलाकात के खैमे के दरवाजे पर उबालकर उसे उन रोटियों के साथ खाना जो मखसूसियत की कुरबानियों की टोकरी में पड़ी हैं। क्योंकि रब ने मुझे यही हुक्म दिया है। 32 गोशत और रोटियों का बकाया जला देना। 33 सात दिन तक मुलाकात के खैमे के दरवाजे में से न निकलना, क्योंकि मकदिस में खिदमत के लिए तुम्हारी मखसूसियत के इतने ही दिन हैं। 34 जो कुछ आज हुआ है वह रब के हुक्म के मुताबिक हुआ ताकि तुम्हारा कफ़ारा दिया जाए। 35 तुम्हें सात रात और दिन तक खैमे के दरवाजे के अंदर रहना है। रब की इस हिदायत को मानो वरना तुम मर जाओगे, क्योंकि यह हुक्म मुझे रब की तरफ से दिया गया है।”

36 हासून और उसके बेटों ने उन तमाम हिदायत पर अमल किया जो रब ने मूसा की मारिफ़त उन्हें दी थी।

9

हासून कुरबानियाँ चढ़ाता है

1 मखसूसियत के सात दिन के बाद मूसा ने आठवें दिन हासून, उसके बेटों और इसराईल के बुजुर्गों को बुलाया। 2 उसने हासून से कहा, “एक बेऐब बछड़ा और एक बेऐब मेंढा चुनकर रब को पेश कर। बछड़ा गुनाह की कुरबानी के लिए और मेंढा भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए हो। 3 फिर इसराईलियों को कह देना कि गुनाह की कुरबानी के लिए एक बकरा जबकि भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए एक बेऐब यकसाला बछड़ा और एक बेऐब यकसाला भेड़ का बच्चा पेश करो। 4 साथ ही सलामती की कुरबानी के लिए एक बैल और एक मेंढा चुनो। तेल के साथ मिलाई हुई गल्ला की नज़र भी लेकर सब कुछ रब को पेश करो। क्योंकि आज ही रब तुम पर जाहिर होगा।”

5 इसराईली मूसा की मतलूबा तमाम चीज़ें मुलाकात के खैमे के सामने ले आए। पूरी जमात करीब आकर रब के सामने खड़ी हो गई। 6 मूसा ने उनसे कहा, “तुम्हें वही करना है जिसका हुक्म रब ने तुम्हें दिया है। क्योंकि आज ही रब का जलाल तुम पर जाहिर होगा।”

7 फिर उसने हासून से कहा, “कुरबानगाह के पास जाकर गुनाह की कुरबानी और भस्म होनेवाली कुरबानी चढ़ाकर अपना और अपनी क्रौम का कफ़ारा देना। रब के हुक्म के मुताबिक क्रौम के लिए भी कुरबानी पेश करना ताकि उसका कफ़ारा दिया जाए।”

8 हासून कुरबानगाह के पास आया। उसने बछड़े को ज़बह किया। यह उसके लिए गुनाह की कुरबानी था। 9 उसके बेटे बछड़े का खून उसके पास ले आए। उसने अपनी उँगली खून में डुबोकर उसे कुरबानगाह के सींगों पर लगाया। बाक़ी खून को उसने कुरबानगाह के पाए पर उंडेल दिया। 10 फिर उसने उस की चरबी, गुरदों और जोड़कलेजी को कुरबानगाह पर जला दिया। जैसे रब ने मूसा को हुक्म दिया था वैसे ही हासून ने किया। 11 बछड़े का गोशत और खाल उसने खैमागाह के बाहर ले जाकर जला दी।

12 इसके बाद हासून ने भस्म होनेवाली कुरबानी को ज़बह किया। उसके बेटों ने उसे उसका खून दिया, और उसने उसे कुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़क दिया। 13 उन्होंने उसे कुरबानी के मुख्तलिफ़ टुकड़े सर समेत दिए, और उसने उन्हें कुरबानगाह पर जला दिया। 14 फिर उसने उस की अंतड़ियाँ और पिंडलियाँ धोकर भस्म होनेवाली कुरबानी की बाक़ी चीज़ों पर रखकर जला दी।

15 अब हासून ने क्रौम के लिए कुरबानी चढ़ाई। उसने गुनाह की कुरबानी के लिए बकरा ज़बह करके उसे पहली कुरबानी की तरह चढ़ाया। 16 उसने भस्म होनेवाली कुरबानी भी क़वायद के मुताबिक चढ़ाई। 17 उसने गल्ला की नज़र पेश की और उसमें से मुट्ठी-भर कुरबानगाह पर जला दिया। यह गल्ला की उस नज़र के अलावा थी जो सुबह को भस्म होनेवाली कुरबानी के साथ चढ़ाई गई थी। 18 फिर उसने सलामती की कुरबानी के लिए बैल और मेंढे को ज़बह किया। यह भी क्रौम के लिए थी। उसके बेटों ने उसे जानवरों का खून दिया, और उसने उसे कुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़क दिया। 19 लेकिन उन्होंने बैल और मेंढे को चरबी, दुम, अंतड़ियों पर की चरबी और जोड़कलेजी निकालकर 20 सीने के टुकड़ों पर रख दिया। हासून ने चरबी का हिस्सा कुरबानगाह पर जला दिया। 21 सीने के टुकड़े और दहनी रातें उसने हिलानेवाली कुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाई। उसने सब कुछ मूसा के हुक्म के मुताबिक ही किया।

22 तमाम कुरबानियाँ पेश करने के बाद हासून ने अपने हाथ उठाकर क्रौम को बरकत दी। फिर वह कुरबानगाह से उतरकर 23 मूसा के साथ मुलाकात के खैमे में दाख़िल हुआ। जब दोनों बाहर आए तो उन्होंने क्रौम को बरकत दी। तब रब का जलाल पूरी क्रौम पर जाहिर हुआ। 24 रब के हुज़ूर से आग निकलकर कुरबानगाह पर उतरी और भस्म होनेवाली कुरबानी और चरबी के टुकड़े भस्म कर दिए। यह देखकर लोग खुशी के नारे मारने लगे और मुँह के बल गिर गए।

10

नदब और अबीह का गुनाह

1 हासून के बेटे नदब और अबीह ने अपने अपने बख़ूरदान लेकर उनमें जलते हुए कोयले डाले। उन पर बख़ूर डालकर वह रब के सामने आए ताकि उसे पेश करें। लेकिन यह आग नाजायज़ थी। रब ने यह पेश करने का हुक्म नहीं दिया था। 2 अचानक रब के हुज़ूर से आग निकली जिसने उन्हें भस्म कर दिया। वहीं रब के सामने वह मर गए।

3 मूसा ने हासून से कहा, “अब वही हुआ है जो रब ने फ़रमाया था कि जो मेरे करीब हैं उनसे मैं अपनी कुदूसियत ज़ाहिर करूँगा, मैं तमाम क़ौम के सामने ही अपने जलाल का इज़हार करूँगा।”

हासून खामोश रहा। 4 मूसा ने हासून के चचा उज्जियेल के बेटों मीसाएल और इल्सफ़न को बुलाकर कहा, “इधर आओ और अपने रिश्तेदारों को मक़दिस के सामने से उठाकर ख़ैमागाह के बाहर ले जाओ।” 5 वह आए और मूसा के हुक्म के ऐन मुताबिक़ उन्हें उनके ज़ेरजामों समेत उठाकर ख़ैमागाह के बाहर ले गए।

6 मूसा ने हासून और उसके दीगर बेटों इलियज़र और इतमर से कहा, “मातम का इज़हार न करो। न अपने बाल बिखरने दो, न अपने कपड़े फाड़ो। वरना तुम मर जाओगे और रब पूरी ज़मात से नाराज़ हो जाएगा। लेकिन तुम्हारे रिश्तेदार और बाक़ी तमाम इसराईलीज़र इनका मातम करें जिनको रब ने आग से हलाक कर दिया है। 7 मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े के बाहर न निकलो वरना तुम मर जाओगे, क्योंकि तुम्हें रब के तेल से मसह किया गया है।” चुनौचे उन्होंने ऐसा ही किया।

इमामों के लिए हिदायत

8 रब ने हासून से कहा, 9 “जब भी तुझे या तेरे बेटों को मुलाक़ात के ख़ैमे में दाखिल होना है तो मैं या कोई और नशा-आवर चीज़ पीना मना है, वरना तुम मर जाओगे। यह उसूल आनेवाली नसलों के लिए भी अबद तक अनमिट है। 10 यह भी लाज़िम है कि तुम मुक़द्स और ग़ैरमुक़द्स चीज़ों में, पाक और नापाक चीज़ों में इम्तियाज़ करो। 11 तुम्हें इसराईलियों को तमाम पाबंदियाँ सिखानी हैं जो मैंने तुम्हें मूसा की मारिफ़त बताई हैं।”

12 मूसा ने हासून और उसके बचे हुए बेटों इलियज़र और इतमर से कहा, “गल्ला की नज़र का जो हिस्सा रब के सामने जलाया नहीं जाता उसे अपने लिए लेकर बेख़मीरी रोटी पकाना और क़ुरबानगाह के पास ही खाना। क्योंकि वह निहायत मुक़द्स है। 13 उसे मुक़द्स जगह पर खाना, क्योंकि वह रब की जलनेवाली क़ुरबानियों में से तुम्हारे और तुम्हारे बेटों का हिस्सा है। क्योंकि मुझे इसका हुक्म दिया गया है। 14 जो सीना हिलानेवाली क़ुरबानी और दहनी रान उठानेवाली क़ुरबानी के तौर पर पेश की गई है, वह तुम और तुम्हारे बेटे-बेटियाँ खा सकते हैं। उन्हें मुक़द्स जगह पर खाना है। इसराईलियों की सलामती की क़ुरबानियों में से यह टुकड़े तुम्हारा हिस्सा हैं। 15 लेकिन पहले इमाम रान और सीने को जलनेवाली क़ुरबानियों की चरबी के साथ पेश करें। वह उन्हें हिलानेवाली क़ुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाएँ। रब फ़रमाता है कि यह टुकड़े अबद तक तुम्हारे और तुम्हारे बेटों का हिस्सा हैं।”

16 मूसा ने दरियाफ़्त किया कि उस बकरे के गोश्त का क्या हुआ जो गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर चढ़ाया गया था। उसे पता चला कि वह भी जल गया था। यह सुनकर उसे हासून के बेटों इलियज़र और इतमर पर गुस्सा आया। उसने पूछा, 17 “तुमने गुनाह की क़ुरबानी का गोश्त क्यों नहीं खाया? तुम्हें उसे मुक़द्स जगह पर खाना था। यह एक निहायत मुक़द्स हिस्सा है जो रब ने तुम्हें दिया ताकि तुम ज़मात का कुसर दूर करके रब के सामने लोगों का कफ़फ़ारा दो। 18 चूँकि इस बकरे का खून मक़दिस में न लाया गया इसलिए तुम्हें उसका गोश्त मक़दिस में खाना था जिस तरह मैंने तुम्हें हुक्म दिया था।”

19 हासून ने मूसा को जवाब देकर कहा, “देखें, आज लोगों ने अपने लिए गुनाह की क़ुरबानी और भस्म होनेवाली क़ुरबानी रब को पेश की है जबकि मुझ पर यह आफ़त गुज़री है। अगर मैं आज गुनाह की क़ुरबानी से खाता तो क्या यह रब को अच्छा लगता?” 20 यह बात मूसा को अच्छी लगी।

11

पाक और नापाक जानवर

1 रब ने मूसा और हासून से कहा, 2 “इसराईलियों को बताना कि तुम्हें ज़मीन पर रहनेवाले जानवरों में से ज़ैल के जानवरों को खाने की इजाज़त है : 3 जिनके खुर या पाँव बिलकुल चिरे हुए हैं और जो जुगाली करते हैं उन्हें खाने की इजाज़त है। 4-6 ऊँट, बिज्जू या खरगोश खाना मना है। वह तुम्हारे लिए नापाक हैं, क्योंकि वह जुगाली तो करते हैं लेकिन उनके खुर या पाँव चिरे हुए नहीं हैं। 7 सुअर न खाना। वह तुम्हारे लिए नापाक है, क्योंकि उसके खुर तो चिरे हुए हैं लेकिन वह जुगाली नहीं करता। 8 न उनका गोश्त खाना, न उनकी लाशों को छूना। वह तुम्हारे लिए नापाक हैं।

9 समुंदरी और दरियाई जानवर खाने के लिए जायज़ हैं अगर उनके पर और छिलके हों। 10 लेकिन जिनके पर या छिलके नहीं हैं वह सब तुम्हारे लिए मक़रूह हैं, खाह वह बड़ी तादाद में मिलकर रहते हैं या नहीं। 11 इसलिए उनका गोश्त खाना मना है, और उनकी लाशों से भी धिन खाना है। 12 पानी में रहनेवाले तमाम जानवर जिनके पर या छिलके न हों तुम्हारे लिए मक़रूह हैं।

13 ज़ैल के परिदे तुम्हारे लिए क़ाबिले-धिन हों। इन्हें खाना मना है, क्योंकि वह मक़रूह हैं : उकाब, दढियल गिद्ध, काला गिद्ध, 14 लाल चील, हर क्रिस्म की काली चील, 15 हर क्रिस्म का कौवा, 16 उकाबी उल्लू, छोटे कानवाला उल्लू, बड़े कानवाला उल्लू, हर क्रिस्म का बाज़, 17 छोटा उल्लू, कूक, चिंघाड़नेवाला उल्लू, 18 सफ़ेद उल्लू, दशी उल्लू, मिसरी गिद्ध, 19 लकलक, हर क्रिस्म का बूतीमार, हुदहुद और चमगादड़। *

* 11:19 याद रहे कि क़दीम ज़माने के इन परिदों के अकसर नाम मतरूक हैं या उनका मतलब बदल गया है, इसलिए उनका मुख़्तलिफ़ तरज़ुमा हो सकता है।

20 तमाम पर रखनेवाले कीड़े जो चार पाँवों पर चलते हैं तुम्हारे लिए मकरूह हैं, 21 सिवाए उनके जिनकी टाँगों के दो हिस्से हैं और जो फुदकते हैं। उनको तुम खा सकते हो। 22 इस नाते से तुम मुख्तलिफ़ क्रिस्म के टिट्टे खा सकते हो। 23 बाकी सब पर रखनेवाले कीड़े जो चार पाँवों पर चलते हैं तुम्हारे लिए मकरूह हैं।

24-28 जो भी ज़ैल के जानवरों की लाशें छुए वह शाम तक नापाक रहेगा : (अलिफ़) खुर रखनेवाले तमाम जानवर सिवाए उनके जिनके खुर या पाँव पूरे तौर पर चिरे हुए हैं और जो जुगाली करते हैं, (बे) तमाम जानवर जो अपने चार पंजों पर चलते हैं। यह जानवर तुम्हारे लिए नापाक हैं, और जो भी उनकी लाशें उठाए या छुए लाज़िम है कि वह अपने कपड़े धो ले। इसके बावजूद भी वह शाम तक नापाक रहेगा।

29-30 ज़मीन पर रेंगनेवाले जानवरों में से छहूँदर, मुख्तलिफ़ क्रिस्म के चूहे और मुख्तलिफ़ क्रिस्म की छिपकलियाँ तुम्हारे लिए नापाक हैं। 31 जो भी उन्हें और उनकी लाशें छू लेता है वह शाम तक नापाक रहेगा। 32 अगर उनमें से किसी की लाश किसी चीज़ पर गिर पड़े तो वह भी नापाक हो जाएगी। इससे कोई फ़रक़ नहीं पड़ता कि वह लकड़ी, कपड़े, चमड़े या टाट की बनी हो, न इससे कोई फ़रक़ पड़ता है कि वह किस काम के लिए इस्तेमाल की जाती है। उसे हर सूरत में पानी में डुबोना है। तो भी वह शाम तक नापाक रहेगी। 33 अगर ऐसी लाश मिट्टी के बरतन में गिर जाए तो जो कुछ भी उसमें है नापाक हो जाएगा और तुम्हें उस बरतन को तोड़ना है। 34 हर खानेवाली चीज़ जिस पर ऐसे बरतन का पानी डाला गया है नापाक है। इसी तरह उस बरतन से निकली हुई हर पीनेवाली चीज़ नापाक है। 35 जिस पर भी ऐसी लाश गिर पड़े वह नापाक हो जाता है। अगर वह तनूर या चूल्हे पर गिर पड़े तो उनको तोड़ देना है। वह नापाक है और तुम्हारे लिए नापाक रहेंगे। 36 लेकिन जिस चश्मे या हौज़ में ऐसी लाश गिरे वह पाक रहता है। सिर्फ़ वह जो लाश को छू लेता है नापाक हो जाता है। 37 अगर ऐसी लाश बीजों पर गिर पड़े जिनको अभी बोना है तो वह पाक रहते हैं। 38 लेकिन अगर बीजों पर पानी डाला गया हो और फिर लाश उन पर गिर पड़े तो वह नापाक है।

39 अगर ऐसा जानवर जिसे खाने की इजाज़त है मर जाए तो जो भी उस की लाश छुए शाम तक नापाक रहेगा। 40 जो उसमें से कुछ खाए या उसे उठाकर ले जाए उसे अपने कपड़ों को धोना है। तो भी वह शाम तक नापाक रहेगा।

41 हर जानवर जो ज़मीन पर रेंगता है काबिले-धिन है। उसे खाना मना है, 42 चाहे वह अपने पेट पर चाहे चार या इससे जायद पाँवों पर चलता हो। 43 इन तमाम रेंगनेवालों से अपने आपको धिन का बाइस और नापाक न बनाना, 44 क्योंकि मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ। लाज़िम है कि तुम अपने आपको मखसूसो-मुक़द्दस रखो, क्योंकि मैं कुद्स हूँ। अपने आपको ज़मीन पर रेंगनेवाले तमाम जानवरों से नापाक न बनाना। 45 मैं रब हूँ। मैं तुम्हें मिसर से निकाल लाया हूँ ताकि तुम्हारा खुदा बनूँ। लिहाज़ा मुक़द्दस रहो, क्योंकि मैं कुद्स हूँ।

46 ज़मीन पर चलनेवाले जानवरों, परिदों, आबी जानवरों और ज़मीन पर रेंगनेवाले जानवरों के बारे में शरअ यही है। 47 लाज़िम है कि तुम नापाक और पाक में इम्तियाज़ करो, ऐसे जानवरों में जो खाने के लिए जायज़ हैं और ऐसों में जो नाजायज़ हैं।”

12

बच्चे की पैदाइश के बाद माँ पर पाबंदियाँ

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इसराईलियों को बता कि जब किसी औरत के लड़का पैदा हो तो वह माहवारी के ऐयाम की तरह सात दिन तक नापाक रहेगी। 3 आठवें दिन लड़के का खतना करवाना है। 4 फिर माँ मज़ीद 33 दिन इंतज़ार करे। इसके बाद उस की वह नापाकी दूर हो जाएगी जो खून बहने से पैदा हुई है। इस दौरान वह कोई मखसूस और मुक़द्दस चीज़ न छुए, न मक़दिस के पास जाए।

5 अगर उसके लड़की पैदा हो जाए तो वह माहवारी के ऐयाम की तरह नापाक है। यह नापाकी 14 दिन तक रहेगी। फिर वह मज़ीद 66 दिन इंतज़ार करे। इसके बाद उस की वह नापाकी दूर हो जाएगी जो खून बहने से पैदा हुई है।

6 जब लड़के या लड़की के सिलसिले में यह दिन गुज़र जाएँ तो वह मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर इमाम को ज़ैल की चीज़ें दे : भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए एक यकसाला भेड़ का बच्चा और गुनाह की कुरबानी के लिए एक जवान कबूतर या कुम्री। 7 इमाम यह जानवर रब को पेश करके उसका कफ़फ़ारा दे। फिर खून बहने के बाइस पैदा होनेवाली नापाकी दूर हो जाएगी। उसूल एक ही है, चाहे लड़का हो या लड़की।

8 अगर वह गुरबत के बाइस भेड़ का बच्चा न दे सके तो फिर वह दो कुम्रियाँ या दो जवान कबूतर ले आए, एक भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए और दूसरा गुनाह की कुरबानी के लिए। यों इमाम उसका कफ़फ़ारा दे और वह पाक हो जाएगी।”

13

जिल्दी बीमारियाँ

1 रब ने मूसा और हारून से कहा, 2 “अगर किसी की जिल्द में सूजन या पपड़ी या सफ़ेद दाग़ हो और खतरा है कि वबाई जिल्दी बीमारी हो तो उसे इमामों यानी हारून या उसके बेटों के पास ले आना है। 3 इमाम उस जगह का मुआयना करे। अगर उसके बाल सफ़ेद हो गए हों और वह जिल्द में धँसी हुई हो तो वबाई बीमारी है। जब इमाम को यह मालूम हो तो वह उसे नापाक करार दे। 4 लेकिन हो सकता है कि जिल्द की जगह सफ़ेद तो है लेकिन जिल्द में धँसी हुई नहीं है, न उसके बाल सफ़ेद हुए हैं। इस सूरत में इमाम उस शख्स को सात दिन के लिए अलहदगी में रखे। 5 सातवें दिन इमाम दुबारा उसका मुआयना करे। अगर वह देखे कि मुतअस्सिरा जगह वैसी ही है और फैली नहीं तो वह उसे मज़ीद

सात दिन अलहदगी में रखे। ⁶ सातवें दिन वह एक और मरतबा उसका मुआयना करे। अगर उस जगह का रंग दुबारा सेहतमंद जिल्द के रंग की मानिंद हो रहा हो और फैली न हो तो वह उसे पाक करार दे। इसका मतलब है कि यह मरज़ आम पपड़ी से ज्यादा नहीं है। मरीज़ अपने कपड़े धो ले तो वह पाक हो जाएगा। ⁷ लेकिन अगर इसके बाद मुतअस्सिरा जगह फैलने लगे तो वह दुबारा अपने आपको इमाम को दिखाए। ⁸ इमाम उसका मुआयना करे। अगर जगह वाकई फैल गई हो तो इमाम उसे नापाक करार दे, क्योंकि यह वबाई जिल्दी मरज़ है।

⁹ अगर किसी के जिस्म पर वबाई जिल्दी मरज़ नज़र आए तो उसे इमाम के पास लाया जाए। ¹⁰ इमाम उसका मुआयना करे। अगर मुतअस्सिरा जिल्द में सफेद सूजन हो, उसके बाल भी सफेद हो गए हों, और उसमें कच्चा गोश्त मौजूद हो ¹¹ तो इसका मतलब है कि वबाई जिल्दी बीमारी पुरानी है। इमाम उस शख्स को सात दिन के लिए अलहदगी में रखकर इंतज़ार न करे बल्कि उसे फौरन नापाक करार दे, क्योंकि यह उस की नापाकी का सबूत है। ¹² लेकिन अगर बीमारी जल्दी से फैल गई हो, यहाँ तक कि सर से लेकर पाँव तक पूरी जिल्द मुतअस्सिरा हुई हो ¹³ तो इमाम यह देखकर मरीज़ को पाक करार दे। चूँकि पूरी जिल्द सफेद हो गई है इसलिए वह पाक है। ¹⁴ लेकिन जब भी कहीं कच्चा गोश्त नज़र आए उस वक़्त वह नापाक हो जाता है। ¹⁵ इमाम यह देखकर मरीज़ को नापाक करार दे। कच्चा गोश्त हर सूरत में नापाक है, क्योंकि इसका मतलब है कि वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। ¹⁶ अगर कच्चे गोश्त का यह ज़ख़म भर जाए और मुतअस्सिरा जगह की जिल्द सफेद हो जाए तो मरीज़ इमाम के पास जाए। ¹⁷ अगर इमाम देखे कि वाकई ऐसा ही हुआ है और मुतअस्सिरा जिल्द सफेद हो गई है तो वह उसे पाक करार दे।

¹⁸ अगर किसी की जिल्द पर फोड़ा हो लेकिन वह ठीक हो जाए ¹⁹ और उस की जगह सफेद सूजन या सुरखी-मायल सफेद दाग नज़र आए तो मरीज़ अपने आपको इमाम को दिखाए। ²⁰ अगर वह उसका मुआयना करके देखे कि मुतअस्सिरा जगह जिल्द के अंदर धँसी हुई है और उसके बाल सफेद हो गए हैं तो वह मरीज़ को नापाक करार दे। क्योंकि इसका मतलब है कि जहाँ पहले फोड़ा था वहाँ वबाई जिल्दी बीमारी पैदा हो गई है। ²¹ लेकिन अगर इमाम देखे कि मुतअस्सिरा जगह के बाल सफेद नहीं हैं, वह जिल्द में धँसी हुई नज़र नहीं आती और उसका रंग दुबारा सेहतमंद जिल्द की मानिंद हो रहा है तो वह उसे सात दिन के लिए अलहदगी में रखे। ²² अगर इस दौरान बीमारी मज़ीद फैल जाए तो इमाम मरीज़ को नापाक करार दे, क्योंकि इसका मतलब है कि वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। ²³ लेकिन अगर दाग न फैले तो इसका मतलब है कि यह सिर्फ़ उस भरे हुए ज़ख़म का निशान है जो फोड़े से पैदा हुआ था। इमाम मरीज़ को पाक करार दे।

²⁴ अगर किसी की जिल्द पर जलने का ज़ख़म लग जाए और मुतअस्सिरा जगह पर सुरखी-मायल सफेद दाग या सफेद दाग पैदा हो जाए ²⁵ तो इमाम मुतअस्सिरा जगह का मुआयना करे। अगर मालूम हो जाए कि मुतअस्सिरा जगह के बाल सफेद हो गए हैं और वह जिल्द में धँसी हुई है तो इसका मतलब है कि चोट की जगह पर वबाई जिल्दी मरज़ लग गया है। इमाम उसे नापाक करार दे, क्योंकि वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। ²⁶ लेकिन अगर इमाम ने मालूम किया है कि दाग में बाल सफेद नहीं हैं, वह जिल्द में धँसा हुआ नज़र नहीं आता और उसका रंग सेहतमंद जिल्द की मानिंद हो रहा है तो वह मरीज़ को सात दिन तक अलहदगी में रखे। ²⁷ अगर वह सातवें दिन मालूम करे कि मुतअस्सिरा जगह फैल गई है तो वह उसे नापाक करार दे। क्योंकि इसका मतलब है कि वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। ²⁸ लेकिन अगर दाग फैला हुआ नज़र नहीं आता और मुतअस्सिरा जिल्द का रंग सेहतमंद जिल्द के रंग की मानिंद हो गया है तो इसका मतलब है कि यह सिर्फ़ उस भरे हुए ज़ख़म का निशान है जो जलने से पैदा हुआ था। इमाम मरीज़ को पाक करार दे।

²⁹ अगर किसी के सर या दाढ़ी की जिल्द में निशान नज़र आए ³⁰ तो इमाम मुतअस्सिरा जगह का मुआयना करे। अगर वह धँसी हुई नज़र आए और उसके बाल रंग के लिहाज़ से चमकते हुए सोने की मानिंद और बारीक हों तो इमाम मरीज़ को नापाक करार दे। इसका मतलब है कि ऐसी वबाई जिल्दी बीमारी सर या दाढ़ी की जिल्द पर लग गई है जो खारिश पैदा करती है। ³¹ लेकिन अगर इमाम ने मालूम किया कि मुतअस्सिरा जगह जिल्द में धँसी हुई नज़र नहीं आती अगरचे उसके बालों का रंग बदल गया है तो वह उसे सात दिन के लिए अलहदगी में रखे। ³² सातवें दिन इमाम जिल्द की मुतअस्सिरा जगह का मुआयना करे। अगर वह फैली हुई नज़र नहीं आती और उसके बालों का रंग चमकदार सोने की मानिंद नहीं है, साथ ही वह जगह जिल्द में धँसी हुई भी दिखाई नहीं देती, ³³ तो मरीज़ अपने बाल मुँडवाए। सिर्फ़ वह बाल रह जाएँ जो मुतअस्सिरा जगह से निकलते हैं। इमाम मरीज़ को मज़ीद सात दिन अलहदगी में रखे। ³⁴ सातवें दिन वह उसका मुआयना करे। अगर मुतअस्सिरा जगह नहीं फैली और वह जिल्द में धँसी हुई नज़र नहीं आती तो इमाम उसे पाक करार दे। वह अपने कपड़े धो ले तो वह पाक हो जाएगा। ³⁵ लेकिन अगर इसके बाद जिल्द की मुतअस्सिरा जगह फैलना शुरू हो जाए ³⁶ तो इमाम दुबारा उसका मुआयना करे। अगर वह जगह वाकई फैली हुई नज़र आए तो मरीज़ नापाक है, चाहे मुतअस्सिरा जगह के बालों का रंग चमकते सोने की मानिंद हो या न हो। ³⁷ लेकिन अगर उसके खयाल में मुतअस्सिरा जगह फैली हुई नज़र नहीं आती बल्कि उसमें से काले रंग के बाल निकल रहे हैं तो इसका मतलब है कि मरीज़ की सेहत बहाल हो गई है। इमाम उसे पाक करार दे।

³⁸ अगर किसी मर्द या औरत की जिल्द पर सफेद दाग पैदा हो जाएँ ³⁹ तो इमाम उनका मुआयना करे। अगर उनका सफेद रंग हलका-सा हो तो यह सिर्फ़ बेज़रर पपड़ी है। मरीज़ पाक है।

⁴⁰⁻⁴¹ अगर किसी मर्द का सर माथे की तरफ़ या पीछे की तरफ़ गंजा है तो वह पाक है। ⁴² लेकिन अगर उस जगह जहाँ वह गंजा है सुरखी-मायल सफेद दाग हो तो इसका मतलब है कि वहाँ वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। ⁴³ इमाम उसका मुआयना करे। अगर गंजी जगह पर सुरखी-मायल सफेद सूजन हो जो वबाई जिल्दी बीमारी की मानिंद नज़र आए ⁴⁴ तो मरीज़ को वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। इमाम उसे नापाक करार दे।

नापाक मरीज़ का सुल्क

45 वबाई जिल्दी बीमारी का मरीज़ फटे कपड़े पहने। उसके बाल बिखरे रहें। वह अपनी मूँछों को किसी कपड़े से छुपाए और पुकारता रहे, 'नापाक, नापाक।' 46 जिस वक़्त तक वबाई जिल्दी बीमारी लगी रहे वह नापाक है। वह इस दौरान ख़ैमागाह के बाहर जाकर तनहाई में रहे।

फफूँदी से निपटने का तरीका

47 हो सकता है कि ऊन या कतान के किसी लिबास पर फफूँदी लग गई है, 48 या कि फफूँदी ऊन या कतान के किसी कपड़े के टुकड़े या किसी चमड़े या चमड़े की किसी चीज़ पर लग गई है। 49 अगर फफूँदी का रंग हरा या लाल-सा हो तो वह फैलनेवाली फफूँदी है, और लाज़िम है कि उसे इमाम को दिखाया जाए। 50 इमाम उसका मुआयना करके उसे सात दिन के लिए अलहदगी में रखे। 51 सातवें दिन वह दुबारा उसका मुआयना करे। अगर फफूँदी फैल गई हो तो इसका मतलब है कि वह नुक़सानदेह है। मुतअस्सिरा चीज़ नापाक है। 52 इमाम उसे जला दे, क्योंकि यह फफूँदी नुक़सानदेह है। लाज़िम है कि उसे जला दिया जाए। 53 लेकिन अगर इन सात दिनों के बाद फफूँदी फैली हुई नज़र नहीं आती 54 तो इमाम हुक्म दे कि मुतअस्सिरा चीज़ को धुलवाया जाए। फिर वह उसे मज़ीद सात दिन के लिए अलहदगी में रखे। 55 इसके बाद वह दुबारा उसका मुआयना करे। अगर वह मालूम करे कि फफूँदी तो फैली हुई नज़र नहीं आती लेकिन उसका रंग वैसे का वैसे है तो वह नापाक है। उसे जला देना, चाहे फफूँदी मुतअस्सिरा चीज़ के सामनेवाले हिस्से या पिछले हिस्से में लगी हो। 56 लेकिन अगर मालूम हो जाए कि फफूँदी का रंग मॉद पड़ गया है तो इमाम कपड़े या चमड़े में से मुतअस्सिरा जगह फाड़कर निकाल दे। 57 तो भी हो सकता है कि फफूँदी दुबारा उसी कपड़े या चमड़े पर नज़र आए। इसका मतलब है कि वह फैल रही है और उसे जला देना लाज़िम है। 58 लेकिन अगर फफूँदी धोने के बाद गायब हो जाए तो उसे एक और दफा धोना है। फिर मुतअस्सिरा चीज़ पाक होगी।

59 इसी तरह फफूँदी से निपटना है, चाहे वह ऊन या कतान के किसी लिबास को लग गई हो, चाहे ऊन या कतान के किसी टुकड़े या चमड़े की किसी चीज़ को लग गई हो। इन्हीं उसूलों के तहत फैसला करना है कि मुतअस्सिरा चीज़ पाक है या नापाक।”

14

वबाई जिल्दी बीमारी के मरीज़ की शफ़ा पर कुरबानी

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “अगर कोई शख्स जिल्दी बीमारी से शफ़ा पाए और उसे पाक-साफ़ कराना है तो उसे इमाम के पास लाया जाए 3 जो ख़ैमागाह के बाहर जाकर उसका मुआयना करे। अगर वह देखे कि मरीज़ की सेहत वाकई बहाल हो गई है 4 तो इमाम उसके लिए दो ज़िंदा और पाक परिदे, देवदार की लकड़ी, किरमिज़ी रंग का धागा और जूफ़ा मँगवाए। 5 इमाम के हुक्म पर परिदों में से एक को ताज़ा पानी से भरे हुए मिट्टी के बरतन के ऊपर ज़बह किया जाए। 6 इमाम ज़िंदा परिदे को देवदार की लकड़ी, किरमिज़ी रंग के धागे और जूफ़ा के साथ ज़बह किए गए परिदे के उस खून में डुबो दे जो मिट्टी के बरतन के पानी में आ गया है। 7 वह पानी से मिलाया हुआ खून सात बार पाक होनेवाले शख्स पर छिड़ककर उसे पाक करार दे, फिर ज़िंदा परिदे को खुले मैदान में छोड़ दे। 8 जो अपने आपको पाक-साफ़ करा रहा है वह अपने कपड़े धोए, अपने तमाम बाल मुँडवाए और नहा ले। इसके बाद वह पाक है। अब वह ख़ैमागाह में दाखिल हो सकता है अगरचे वह मज़ीद सात दिन अपने डेरे में नहीं जा सकता। 9 सातवें दिन वह दुबारा अपने सर के बाल, अपनी दाढ़ी, अपने अबरू और बाक़ी तमाम बाल मुँडवाए। वह अपने कपड़े धोए और नहा ले। तब वह पाक है।

10 आठवें दिन वह दो भेड़ के नर बच्चे और एक यकसाला भेड़ चुन ले जो बेऐब हों। साथ ही वह गल्ला की नज़र के लिए तेल के साथ मिलाया गया साठे 4 किलोग्राम बेहतरीन मैदा और 300 मिलीलिटर तेल ले। 11 फिर जिस इमाम ने उसे पाक करार दिया वह उसे इन कुरबानियों समेत मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर रब को पेश करे। 12 भेड़ का एक नर बच्चा और 300 मिलीलिटर तेल कुसूर की कुरबानी के लिए है। इमाम उन्हें हिलानेवाली कुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाए। 13 फिर वह भेड़ के इस बच्चे को ख़ैमे के दरवाज़े पर ज़बह करे जहाँ गुनाह की कुरबानियाँ और भस्म होनेवाली कुरबानियाँ ज़बह की जाती हैं। गुनाह की कुरबानियों की तरह कुसूर की यह कुरबानी इमाम का हिस्सा है और निहायत मुक़द्दस है। 14 इमाम खून में से कुछ लेकर पाक होनेवाले के दहने कान की लौ पर और उसके दहने हाथ और दहने पाँव के अंगूठों पर लगाए। 15 अब वह 300 मिलीलिटर तेल में से कुछ लेकर अपने बाएँ हाथ की हथेली पर डाले। 16 अपने दहने हाथ के अंगूठे के साथवाली उँगली इस तेल में डुबोकर वह उसे सात बार रब के सामने छिड़के। 17 वह अपनी हथेली पर के तेल में से कुछ और लेकर पाक होनेवाले के दहने कान की लौ पर और उसके दहने हाथ और दहने पाँव के अंगूठों पर लगा दे यानी उन जगहों पर जहाँ वह कुसूर की कुरबानी का खून लगा चुका है। 18 इमाम अपनी हथेली पर का बाक़ी तेल पाक होनेवाले के सर पर डालकर रब के सामने उसका कफ़फ़ारा दे।

19 इसके बाद इमाम गुनाह की कुरबानी चढ़ाकर पाक होनेवाले का कफ़फ़ारा दे। आखिर में वह भस्म होनेवाली कुरबानी का जानवर ज़बह करे। 20 वह उसे गल्ला की नज़र के साथ कुरबानगाह पर चढ़ाकर उसका कफ़फ़ारा दे। तब वह पाक है।

21 अगर शफ़ायाब शख्स ग़ुरबत के बाइस यह कुरबानियाँ नहीं चढ़ा सकता तो फिर वह कुसूर की कुरबानी के लिए भेड़ का सिर्फ़ एक नर बच्चा ले आए। काफ़ी है कि कफ़फ़ारा देने के लिए यही रब के सामने हिलाया जाए। साथ साथ गल्ला की नज़र के लिए डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा तेल के साथ मिलाकर पेश किया जाए और 300 मिलीलिटर तेल। 22 इसके अलावा वह दो कुम्रियाँ या दो जवान कबूतर पेश करे, एक को गुनाह की कुरबानी के लिए और दूसरे को भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए। 23 आठवें दिन वह उन्हें मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर इमाम

के पास और रब के सामने ले आए ताकि वह पाक-साफ हो जाए। 24 इमाम भेड़ के बच्चे को 300 मिलीलिटर तेल समेत लेकर हिलानेवाली कुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाए। 25 वह कुसूर की कुरबानी के लिए भेड़ के बच्चे को ज़बह करे और उसके खून में से कुछ लेकर पाक होनेवाले के दहने कान की लौ पर और उसके दहने हाथ और दहने पाँव के अंगूठों पर लगाए। 26 अब वह 300 मिलीलिटर तेल में से कुछ अपने बाएँ हाथ की हथेली पर डाले 27 और अपने दहने हाथ के अंगूठे के साथवाली उँगली इस तेल में डुबोकर उसे सात बार रब के सामने छिड़क दे। 28 वह अपनी हथेली पर के तेल में से कुछ और लेकर पाक होनेवाले के दहने कान की लौ पर और उसके दहने हाथ और दहने पाँव के अंगूठों पर लगा दे यानी उन जगहों पर जहाँ वह कुसूर की कुरबानी का खून लगा चुका है। 29 अपनी हथेली पर का बाकी तेल वह पाक होनेवाले के सर पर डाल दे ताकि रब के सामने उसका कफ़फ़ारा दे। 30 इसके बाद वह शफ़ायाब शख्स की गुंजाइश के मुताबिक़ दो कुम्रियाँ या दो जवान कबूतर चढ़ाए, 31 एक को गुनाह की कुरबानी के लिए और दूसरे को भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए। साथ ही वह गल्ला की नज़र पेश करे। यों इमाम रब के सामने उसका कफ़फ़ारा देता है। 32 यह उसूल ऐसे शख्स के लिए है जो वबाई जिल्दी बीमारी से शफ़ा पा गया है लेकिन अपनी गुरबत के बाइस पाक हो जाने के लिए पूरी कुरबानी पेश नहीं कर सकता।”

घरों में फफूँदी

33 रब ने मूसा और हारून से कहा, 34 “जब तुम मुल्के-कनान में दाखिल होगे जो मैं तुम्हें दूँगा तो वहाँ ऐसे मकान होंगे जिनमें मैंने फफूँदी फैलने दी है। 35 ऐसे घर का मालिक जाकर इमाम को बताए कि मैंने अपने घर में फफूँदी जैसी कोई चीज़ देखी है। 36 तब इमाम हुक्म दे कि घर का मुआयना करने से पहले घर का पूरा सामान निकाला जाए। वरना अगर घर को नापाक करार दिया जाए तो सामान को भी नापाक करार दिया जाएगा। इसके बाद इमाम अंदर जाकर मकान का मुआयना करे। 37 वह दीवारों के साथ लगी हुई फफूँदी का मुआयना करे। अगर मुतअस्सिरा जगहें हरी या लाल-सी हों और दीवार के अंदर धँसी हुई नज़र आएँ 38 तो फिर इमाम घर से निकलकर सात दिन के लिए ताला लगाए। 39 सातवें दिन वह वापस आकर मकान का मुआयना करे। अगर फफूँदी फैली हुई नज़र आए 40 तो वह हुक्म दे कि मुतअस्सिरा पत्थरों को निकालकर आबादी के बाहर किसी नापाक जगह पर फेंका जाए। 41 नीज़ वह हुक्म दे कि अंदर की दीवारों को कुरेदा जाए और कुरेदी हुई मिट्टी को आबादी के बाहर किसी नापाक जगह पर फेंका जाए। 42 फिर लोग नए पत्थर लगाकर घर को नए गारे से पलस्तर करें। 43 लेकिन अगर इसके बावजूद फफूँदी दुबारा पैदा हो जाए 44 तो इमाम आकर दुबारा उसका मुआयना करे। अगर वह देखे कि फफूँदी घर में फैल गई है तो इसका मतलब है कि फफूँदी नुक़सानदेह है, इसलिए घर नापाक है। 45 लाज़िम है कि उसे पूरे तौर पर ढा दिया जाए और सब कुछ यानी उसके पत्थर, लकड़ी और पलस्तर को आबादी के बाहर किसी नापाक जगह पर फेंका जाए।

46 अगर इमाम ने किसी घर का मुआयना करके ताला लगा दिया है और फिर भी कोई उस घर में दाखिल हो जाए तो वह शाम तक नापाक रहेगा। 47 जो ऐसे घर में सोए या खाना खाए लाज़िम है कि वह अपने कपड़े धो ले। 48 लेकिन अगर घर को नए सिरे से पलस्तर करने के बाद इमाम आकर उसका दुबारा मुआयना करे और देखे कि फफूँदी दुबारा नहीं निकली तो इसका मतलब है कि फफूँदी ख़त्म हो गई है। वह उसे पाक करार दे। 49 उसे गुनाह से पाक-साफ़ कराने के लिए वह दो परिदे, देवदार की लकड़ी, किरमिज़ी रंग का धागा और जूफ़ा ले ले। 50 वह परिदों में से एक को ताज़ा पानी से भरे हुए मिट्टी के बरतन के ऊपर ज़बह करे। 51 इसके बाद वह देवदार की लकड़ी, जूफ़ा, किरमिज़ी रंग का धागा और ज़िंदा परिदा लेकर उस ताज़ा पानी में डुबो दे जिसके साथ ज़बह किए हुए परिदे का खून मिलाया गया है और इस पानी को सात बार घर पर छिड़क दे। 52 इन चीज़ों से वह घर को गुनाह से पाक-साफ़ करता है। 53 आखिर में वह ज़िंदा परिदे को आबादी के बाहर खुले मैदान में छोड़ दे। यों वह घर का कफ़फ़ारा देगा, और वह पाक-साफ़ हो जाएगा।

54-56 लाज़िम है कि हर किस्म की वबाई बीमारी से ऐसे निपटो जैसे बयान किया गया है, चाहे वह वबाई जिल्दी बीमारियाँ हों (मसलन खारिश, सूजन, पपड़ी या सफ़ेद दाग़), चाहे कपड़ों या घरों में फफूँदी हो। 57 इन उसूलों के तहत फ़ैसला करना है कि कोई शख्स या चीज़ पाक है या नापाक।”

15

मर्दों की नापाकी

1 रब ने मूसा और हारून से कहा, 2 “इसराइलियों को बताना कि अगर किसी मर्द को जरयान का मरज़ हो तो वह खारिज होनेवाले माए के सबब से नापाक है, 3 चाहे माए बहता रहता हो या रुक गया हो। 4 जिस चीज़ पर भी मरीज़ लेटता या बैठता है वह नापाक है। 5-6 जो भी उसके लेटने की जगह को छुए या उसके बैठने की जगह पर बैठ जाए वह अपने कपड़े धोकर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। 7 इसी तरह जो भी ऐसे मरीज़ को छुए वह अपने कपड़े धोकर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। 8 अगर मरीज़ किसी पाक शख्स पर थूके तो यही कुछ करना है और वह शख्स शाम तक नापाक रहेगा। 9 जब ऐसा मरीज़ किसी जानवर पर सवार होता है तो हर चीज़ जिस पर वह बैठ जाता है नापाक है। 10 जो भी ऐसी चीज़ छुए या उसे उठाकर ले जाए वह अपने कपड़े धोकर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। 11 जिस किसी को भी मरीज़ अपने हाथ धोए बग़ैर छुए वह अपने कपड़े धोकर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। 12 मिट्टी का जो बरतन ऐसा मरीज़ छुए उसे तोड़ दिया जाए। लकड़ी का जो बरतन वह छुए उसे ख़ूब धोया जाए।

13 जिसे इस मरज से शफा मिली है वह सात दिन इंतज़ार करे। इसके बाद वह ताज़ा पानी से अपने कपड़े धोकर नहा ले। फिर वह पाक हो जाएगा। 14 आठवें दिन वह दो कुम्रियाँ या दो जवान कबूतर लेकर मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े पर रब के सामने इमाम को दे। 15 इमाम उनमें से एक को गुनाह की कुरबानी के तौर पर और दूसरे को भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर चढ़ाए। यों वह रब के सामने उसका कफ़फ़ारा देगा।

16 अगर किसी मर्द का नुतफ़ा ख़ारिज हो जाए तो वह अपने पूरे जिस्म को धो ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। 17 हर कपड़ा या चमड़ा जिससे नुतफ़ा लग गया हो उसे धोना है। वह भी शाम तक नापाक रहेगा। 18 अगर मर्द और औरत के हमबिसतर होने पर नुतफ़ा ख़ारिज हो जाए तो लाज़िम है कि दोनों नहा लें। वह शाम तक नापाक रहेंगे।

औरतों की नापाकी

19 माहवारी के वक़्त औरत सात दिन तक नापाक है। जो भी उसे छुए वह शाम तक नापाक रहेगा। 20 इस दौरान जिस चीज़ पर भी वह लेटती या बैठती है वह नापाक है। 21-23 जो भी उसके लेटने की जगह को छुए या उसके बैठने की जगह पर बैठ जाए वह अपने कपड़े धोकर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। 24 अगर मर्द औरत से हमबिसतर हो और उसी वक़्त माहवारी के दिन शुरू हो जाएँ तो मर्द ख़ून लगने के बाइस सात दिन तक नापाक रहेगा। जिस चीज़ पर भी वह लेटता है वह नापाक हो जाएगी।

25 अगर किसी औरत को माहवारी के दिन छोड़कर किसी और वक़्त कई दिनों तक ख़ून आए या ख़ून माहवारी के दिनों के बाद भी जारी रहे तो वह माहवारी के दिनों की तरह उस वक़्त तक नापाक रहेगी जब तक ख़ून स्क न जाए। 26 जिस चीज़ पर भी वह लेटती या बैठती है वह नापाक है। 27 जो भी ऐसी चीज़ को छुए वह अपने कपड़े धोकर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। 28 ख़ून के स्क जाने पर औरत मज़ीद सात दिन इंतज़ार करे। फिर वह पाक होगी। 29 आठवें दिन वह दो कुम्रियाँ या दो जवान कबूतर लेकर मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े पर इमाम के पास आए। 30 इमाम उनमें से एक को गुनाह की कुरबानी के लिए और दूसरे को भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए चढ़ाए। यों वह रब के सामने उस की नापाकी का कफ़फ़ारा देगा।

31 लाज़िम है कि इसराईलियों को ऐसी चीज़ों से दूर रखा जाए जिनसे वह नापाक हो जाएँ। वरना मेरा वह मक़दिस जो उनके दरमियान है उनसे नापाक हो जाएगा और वह हलाक हो जाएंगे।

32 लाज़िम है कि इस किस्म के मामलों से ऐसे निपटो जैसे बयान किया गया है। इसमें वह मर्द शामिल है जो जरयान का मरीज़ है और वह जो नुतफ़ा ख़ारिज होने के बाइस नापाक है। 33 इसमें वह औरत भी शामिल है जिसके माहवारी के ऐयाम हैं और वह मर्द जो नापाक औरत से हमबिसतर हो जाता है।”

16

यौमे-कफ़फ़ारा

1 जब हास्न के दो बेटे रब के करीब आकर हलाक हुए तो इसके बाद रब मूसा से हमकलाम हुआ। 2 उसने कहा,

“अपने भाई हास्न को बताना कि वह सिर्फ़ मुकर्ररा वक़्त पर परदे के पीछे मुक़द्दसतरीन कमरे में दाख़िल होकर अहद के संदूक के ढकने के सामने खड़ा हो जाए, वरना वह मर जाएगा। क्योंकि मैं खुद उस ढकने के ऊपर बादल की सूरत में ज़ाहिर होता हूँ। 3 और जब भी वह दाख़िल हो तो गुनाह की कुरबानी के लिए एक जवान बैल और भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए एक मेंढा पेश करे। 4 पहले वह नहाकर इमाम के कतान के मुक़द्दस कपड़े पहन ले यानी जेरजामा, उसके नीचे पाजामा, फिर कमरबंद और पगड़ी। 5 इसराईल की जमात हास्न को गुनाह की कुरबानी के लिए दो बकरे और भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए एक मेंढा दे।

6 पहले हास्न अपने और अपने घराने के लिए जवान बैल को गुनाह की कुरबानी के तौर पर चढ़ाए। 7 फिर वह दोनों बकरों को मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े पर रब के सामने ले आए। 8 वहाँ वह कुरा डालकर एक को रब के लिए चुने और दूसरे को अज़ाज़ेल के लिए। 9 जो बकरा रब के लिए है उसे वह गुनाह की कुरबानी के तौर पर पेश करे। 10 दूसरा बकरा जो कुरे के ज़रीए अज़ाज़ेल के लिए चुना गया उसे ज़िंदा हालत में रब के सामने खड़ा किया जाए ताकि वह जमात का कफ़फ़ारा दे। वहाँ से उसे रेगिस्तान में अज़ाज़ेल के पास भेजा जाए।

11 लेकिन पहले हास्न जवान बैल को गुनाह की कुरबानी के तौर पर चढ़ाकर अपना और अपने घराने का कफ़फ़ारा दे। उसे ज़बह करने के बाद 12 वह बख़र की कुरबानगाह से जलते हुए कोयलों से भरा हुआ बरतन लेकर अपनी दोनों मुठ्रियाँ बारीक ख़ुशबूदार बख़र से भर ले और मुक़द्दसतरीन कमरे में दाख़िल हो जाए। 13 वहाँ वह रब के हज़ूर बख़र को जलते हुए कोयलों पर डाल दे। इससे पैदा होनेवाला धुआँ अहद के संदूक का ढकना छुपा देगा ताकि हास्न मर न जाए। 14 अब वह जवान बैल के ख़ून में से कुछ लेकर अपनी उँगली से ढकने के सामनेवाले हिस्से पर छिड़के, फिर कुछ अपनी उँगली से सात बार उसके सामने ज़मीन पर छिड़के। 15 इसके बाद वह उस बकरे को ज़बह करे जो क़ौम के लिए गुनाह की कुरबानी है। वह उसका ख़ून मुक़द्दसतरीन कमरे में ले आए और उसे बैल के ख़ून की तरह अहद के संदूक के ढकने पर और सात बार उसके सामने ज़मीन पर छिड़के। 16 यों वह मुक़द्दसतरीन कमरे का कफ़फ़ारा देगा जो इसराईलियों की नापाकियों और तमाम गुनाहों से मुतअस्सिर होता रहता है। इससे वह मुलाकात के पूरे ख़ैमे का भी कफ़फ़ारा देगा जो ख़ैमागाह के दरमियान होने के बाइस इसराईलियों की नापाकियों से मुतअस्सिर होता रहता है।

17 जितना वक्त हासून अपना, अपने घराने का और इसराईल की पूरी जमात का कफ़ारा देने के लिए मुक़द्दसतरीन कमरे में रहेगा इस दौरान किसी दूसरे को मुलाकात के ख़ैमे में ठहरने की इजाज़त नहीं है। 18 फिर वह मुक़द्दसतरीन कमरे से निकलकर ख़ैमे में रब के सामने पड़ी कुरबानगाह का कफ़ारा दे। वह बैल और बकरे के खून में से कुछ लेकर उसे कुरबानगाह के चारों सींगों पर लगाए। 19 कुछ खून वह अपनी उंगली से सात बार उस पर छिड़क दे। यों वह उसे इसराईलियों की नापाकियों से पाक करके मख़सूसो-मुक़द्दस करेगा।

20 मुक़द्दसतरीन कमरे, मुलाकात के ख़ैमे और कुरबानगाह का कफ़ारा देने के बाद हासून ज़िंदा बकरे को सामने लाए। 21 वह अपने दोनों हाथ उसके सर पर रखे और इसराईलियों के तमाम कुसूर यानी उनके तमाम जरायम और गुनाहों का इक्रार करके उन्हें बकरे के सर पर डाल दे। फिर वह उसे रेगिस्तान में भेज दे। इसके लिए वह बकरे को एक आदमी के सुपुर्द करे जिसे यह ज़िम्मादारी दी गई है। 22 बकरा अपने आप पर उनका तमाम कुसूर उठाकर किसी वीरान जगह में ले जाएगा। वहाँ साथवाला आदमी उसे छोड़ आए।

23 इसके बाद हासून मुलाकात के ख़ैमे में जाए और कतान के वह कपड़े जो उसने मुक़द्दसतरीन कमरे में दाखिल होने से पेशतर पहन लिए थे उतारकर वहीं छोड़ दे। 24 वह मुक़द्दस जगह पर नहाकर अपनी ख़िदमत के आम कपड़े पहन ले। फिर वह बाहर आकर अपने और अपनी क़ौम के लिए भस्म होनेवाली कुरबानी पेश करे ताकि अपना और अपनी क़ौम का कफ़ारा दे। 25 इसके अलावा वह गुनाह की कुरबानी की चरबी कुरबानगाह पर जला दे।

26 जो आदमी अज़ाज़ेल के लिए बकरे को रेगिस्तान में छोड़ आया है वह अपने कपड़े धोकर नहा ले। इसके बाद वह ख़ैमागाह में आ सकता है।

27 जिस बैल और बकरे को गुनाह की कुरबानी के लिए पेश किया गया और जिनका खून कफ़ारा देने के लिए मुक़द्दसतरीन कमरे में लाया गया, लाज़िम है कि उनकी खालें, गोशत और गोबर ख़ैमागाह के बाहर जला दिया जाए। 28 यह चीज़ें जलानेवाला बाद में अपने कपड़े धोकर नहा ले। फिर वह ख़ैमागाह में आ सकता है।

29 लाज़िम है कि सातवें महीने के दसवें दिन इसराईली और उनके दरमियान रहनेवाले परदेसी अपनी जान को दुख दें और काम न करें। यह उसूल तुम्हारे लिए अबद तक कायम रहे। 30 इस दिन तुम्हारा कफ़ारा दिया जाएगा ताकि तुम्हें पाक किया जाए। तब तुम रब के सामने अपने तमाम गुनाहों से पाक ठहरोगे। 31 पूरा दिन आराम करो और अपनी जान को दुख दो। यह उसूल अबद तक कायम रहे।

32 इस दिन इमामे-आज़म तुम्हारा कफ़ारा दे, वह इमाम जिसे उसके बाप की जगह मसह किया गया और इख्तियार दिया गया है। वह कतान के मुक़द्दस कपड़े पहनकर 33 मुक़द्दसतरीन कमरे, मुलाकात के ख़ैमे, कुरबानगाह, इमामों और जमात के तमाम लोगों का कफ़ारा दे।

34 लाज़िम है कि साल में एक दफ़ा इसराईलियों के तमाम गुनाहों का कफ़ारा दिया जाए। यह उसूल तुम्हारे लिए अबद तक कायम रहे।”

सब कुछ वैसे ही किया गया जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

17

कुरबानी चढ़ाने का मक़ाम

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “हासून, उसके बेटों और तमाम इसराईलियों को हिदायत देना 3-4 कि जो भी इसराईली अपनी गाय या भेड़-बकरी मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े पर रब को कुरबानी के तौर पर पेश न करे बल्कि ख़ैमागाह के अंदर या बाहर किसी और जगह पर ज़बह करे वह खून बहाने का कुसूरवार ठहरेगा। उसने खून बहाया है, और लाज़िम है कि उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाए। 5 इस हिदायत का मक़सद यह है कि इसराईली अब से अपनी कुरबानियाँ खुले मैदान में ज़बह न करें बल्कि रब को पेश करें। वह अपने जानवरों को मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े पर इमाम के पास लाकर उन्हें रब को सलामती की कुरबानी के तौर पर पेश करें। 6 इमाम उनका खून मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े पर की कुरबानगाह पर छिड़के और उनकी चरबी उस पर जला दे। ऐसी कुरबानी की खुशबू रब को पसंद है। 7 अब से इसराईली अपनी कुरबानियाँ उन बकरों के देवताओं को पेश न करें जिनकी पैरवी करके उन्होंने ज़िना किया है। यह उनके लिए और उनके बाद आनेवाली नसलों के लिए एक दायमी उसूल है।

8 लाज़िम है कि हर इसराईली और तुम्हारे दरमियान रहनेवाला परदेसी अपनी भस्म होनेवाली कुरबानी या कोई और कुरबानी 9 मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े पर लाकर रब को पेश करे। वरना उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाएगा।

खून खाना मना है

10 खून खाना बिल्कुल मना है। जो भी इसराईली या तुम्हारे दरमियान रहनेवाला परदेसी खून खाए मैं उसके खिलाफ हो जाऊँगा और उसे उस की क़ौम में से मिटा डालूँगा। 11 क्योंकि हर मखलूक के खून में उस की जान है। मैंने उसे तुम्हें दे दिया है ताकि वह कुरबानगाह पर तुम्हारा कफ़ारा दे। क्योंकि खून ही उस जान के ज़रीए जो उसमें है तुम्हारा कफ़ारा देता है। 12 इसलिए मैं कहता हूँ कि न कोई इसराईली न कोई परदेसी खून खाए।

13 अगर कोई भी इसराईली या परदेसी किसी जानवर या परिदे का शिकार करके पकड़े जिसे खाने की इजाज़त है तो वह उसे ज़बह करने के बाद उसका पूरा खून ज़मीन पर बहने दे और खून पर मिट्टी डाले। 14 क्योंकि हर मखलूक का खून उस की जान है। इसलिए मैंने इसराईलियों को कहा है कि किसी भी मखलूक का खून न खाओ। हर मखलूक का खून उस की जान है, और जो भी उसे खाए उसे क़ौम में से मिटा देना है।

15 अगर कोई भी इसराईली या परदेसी ऐसे जानवर का गोशत खाए जो फ़ितरी तौर पर मर गया या जिसे जंगली जानवरों ने फाड़ डाला हो तो वह अपने कपड़े धोकर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। 16 जो ऐसा नहीं करता उसे अपने कुसूर की सज़ा भुगतनी पड़ेगी।”

18

नाजायज़ जिंसी ताल्लुकात

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इसराईलियों को बताना कि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। 3 मिसरियों की तरह ज़िंदगी न गुज़ारना जिनमें तुम रहते थे। मुल्के-कनान के लोगों की तरह भी ज़िंदगी न गुज़ारना जिनके पास मैं तुम्हें ले जा रहा हूँ। उनके रस्मो-रिवाज न अपनाना। 4 मेरे ही अहकाम पर अमल करो और मेरी हिदायात के मुताबिक़ चलो। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। 5 मेरी हिदायात और अहकाम के मुताबिक़ चलना, क्योंकि जो यों करेगा वह जीता रहेगा। मैं रब हूँ।

6 तुममें से कोई भी अपनी करीबी रिश्तेदार से हमबिसतर न हो। मैं रब हूँ।

7 अपनी माँ से हमबिसतर न होना, वरना तेरे बाप की बेहुरमती हो जाएगी। वह तेरी माँ है, इसलिए उससे हमबिसतर न होना।

8 अपने बाप की किसी भी बीवी से हमबिसतर न होना, वरना तेरे बाप की बेहुरमती हो जाएगी।

9 अपनी बहन से हमबिसतर न होना, चाहे वह तेरे बाप या तेरी माँ की बेटी हो, चाहे वह तेरे ही घर में या कहीं और पैदा हुई हो।

10 अपनी पोती या नवासी से हमबिसतर न होना, वरना तेरी अपनी बेहुरमती हो जाएगी।

11 अपने बाप की बीवी की बेटी से हमबिसतर न होना। वह तेरी बहन है।

12 अपनी फूपी से हमबिसतर न होना। वह तेरे बाप की करीबी रिश्तेदार है।

13 अपनी खाला से हमबिसतर न होना। वह तेरी माँ की करीबी रिश्तेदार है।

14 अपने बाप के भाई की बीवी से हमबिसतर न होना, वरना तेरे बाप के भाई की बेहुरमती हो जाएगी। उस की बीवी तेरी चची है।

15 अपनी बहू से हमबिसतर न होना। वह तेरे बेटे की बीवी है।

16 अपनी भाबी से हमबिसतर न होना, वरना तेरे भाई की बेहुरमती हो जाएगी।

17 अगर तेरा जिंसी ताल्लुक किसी औरत से हो तो उस की बेटी, पोती या नवासी से हमबिसतर होना मना है, क्योंकि वह उस की करीबी रिश्तेदार है। ऐसा करना बड़ी शर्मनाक हरकत है।

18 अपनी बीवी के जीते-जी उस की बहन से शादी न करना।

19 किसी औरत से उस की माहवारी के दिनों में हमबिसतर न होना। इस दौरान वह नापाक है।

20 किसी दूसरे मर्द की बीवी से हमबिसतर न होना, वरना तू अपने आपको नापाक करेगा।

21 अपने किसी भी बच्चे को मलिक देवता को कुरबानी के तौर पर पेश करके जला देना मना है। ऐसी हरकत से तू अपने ख़ुदा के नाम को दाग लगाएगा। मैं रब हूँ।

22 मर्द दूसरे मर्द के साथ जिंसी ताल्लुकात न रखे। ऐसी हरकत काबिले-घिन है।

23 किसी जानवर से जिंसी ताल्लुकात न रखना, वरना तू नापाक हो जाएगा। औरतों के लिए भी ऐसा करना मना है। यह बड़ी शर्मनाक हरकत है।

24 ऐसी हरकतों से अपने आपको नापाक न करना। क्योंकि जो कौम में मैं तुम्हारे आगे मुल्क से निकालूँगा वह इसी तरह नापाक होती रही।

25 मुल्क ख़ुद भी नापाक हुआ। इसलिए मैंने उसे उसके कुसूर के सबब से सज़ा दी, और नतीजे में उसने अपने बाशिंदों को उगल दिया।

26 लेकिन तुम मेरी हिदायात और अहकाम के मुताबिक़ चलो। न देसी और न परदेसी ऐसी कोई धिनौनी हरकत करें। 27 क्योंकि यह तमाम काबिले-घिन बातें उनसे हुई जो तुमसे पहले इस मुल्क में रहते थे। यों मुल्क नापाक हुआ। 28 लिहाज़ा अगर तुम भी मुल्क को नापाक करोगे तो वह तुम्हें इसी तरह उगल देगा जिस तरह उसने तुमसे पहले मौजूद कौमों को उगल दिया। 29 जो भी मज़क़ूरा धिनौनी हरकतों में से एक करे उसे उस की कौम में से मिटाया जाए। 30 मेरे अहकाम के मुताबिक़ चलते रहो और ऐसे काबिले-घिन रस्मो-रिवाज न अपनाना जो तुम्हारे आने से पहले रायज थे। इनसे अपने आपको नापाक न करना। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।”

19

मुक़द्दस क़ौम के लिए हिदायात

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इसराईलियों की पूरी जमात को बताना कि मुक़द्दस रहो, क्योंकि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा कुद्दूस हूँ।

3 तुममें से हर एक अपने माँ-बाप की इज़ज़त करे। हफ़्ते के दिन काम न करना। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। 4 न बुतों की तरफ़ रुजू करना, न अपने लिए देवता ढालना। मैं ही रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

5 जब तुम रब को सलामती की कुरबानी पेश करते हो तो उसे यों चढ़ाओ कि तुम मंज़ूर हो जाओ। 6 उसका गोशत उसी दिन या अगले दिन खाया जाए। जो भी तीसरे दिन तक बच जाता है उसे जलाना है। 7 अगर कोई उसे तीसरे दिन खाए तो उसे इल्म होना चाहिए कि यह कुरबानी

नापाक है और रब को पसंद नहीं है। ⁸ ऐसे शख्स को अपने कुसूर की सजा उठानी पड़ेगी, क्योंकि उसने उस चीज़ की मुकद्दस हालत ख़त्म की है जो रब के लिए मख़सूस की गई थी। उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाए।

⁹ कटाई के वक़्त अपनी फ़सल पूरे तौर पर न काटना बल्कि खेत के किनारों पर कुछ छोड़ देना। इस तरह जो कुछ कटाई करते वक़्त खेत में बच जाए उसे छोड़ना। ¹⁰ अंगूर के बाग़ों में भी जो कुछ अंगूर तोड़ते वक़्त बच जाए उसे छोड़ देना। जो अंगूर ज़मीन पर गिर जाएँ उन्हें उठाकर न ले जाना। उन्हें ग़रीबों और परदेसियों के लिए छोड़ देना। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

¹¹ चोरी न करना, झूट न बोलना, एक दूसरे को धोका न देना।

¹² मेरे नाम की क़सम खाकर धोका न देना, वरना तुम मेरे नाम को दाग़ लगाओगे। मैं रब हूँ।

¹³ एक दूसरे को न दबाना और न लूटना। किसी की मज़दूरी उसी दिन की शाम तक दे देना और उसे अगली सुबह तक रोके न रखना।

¹⁴ बहरे को न कोसना, न अंधे के रास्ते में कोई चीज़ रखना जिससे वह ठोकर खाए। इसमें भी अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना। मैं रब हूँ।

¹⁵ अदालत में किसी की हक़तलफ़ी न करना। फ़ैसला करते वक़्त किसी की भी जानिबदारी न करना, चाहे वह ग़रीब या असरो-रसूखवाला हो। इनसाफ़ से अपने पड़ोसी की अदालत कर।

¹⁶ अपनी क़ौम में इधर उधर फिरते हुए किसी पर बुहतान न लगाना। कोई भी ऐसा काम न करना जिससे किसी की जान ख़तरे में पड़ जाए। मैं रब हूँ।

¹⁷ दिल में अपने भाई से नफ़रत न करना। अगर किसी की सरज़निश करनी है तो रूबरू करना, वरना तू उसके सबब से कुसूरवार ठहरेगा।

¹⁸ इंतक़ाम न लेना। अपनी क़ौम के किसी शख्स पर देर तक तेरा गुस्सा न रहे बल्कि अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है। मैं रब हूँ।

¹⁹ मेरी हिदायात पर अमल करो। दो मुख़्तलिफ़ किस्म के जानवरों को मिलाप न करने देना। अपने खेत में दो किस्म के बीज न बोना। ऐसा कपड़ा न पहनना जो दो मुख़्तलिफ़ किस्म के धाग़ों का बुना हुआ हो।

²⁰ अगर कोई आदमी किसी लौंडी से जिसकी मँगनी किसी और से हो चुकी हो हमबिसतर हो जाए और लौंडी को अब तक न पैसों से न वैसे ही आज़ाद किया गया हो तो मुनासिब सज़ा दी जाए। लेकिन उन्हें सज़ाए-मौत न दी जाए, क्योंकि उसे अब तक आज़ाद नहीं किया गया। ²¹ कुसूरवार आदमी मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर एक मेंढा ले आए ताकि वह रब को कुसूर की कुरबानी के तौर पर पेश किया जाए।

²² इमाम इस कुरबानी से रब के सामने उसके गुनाह का कफ़फ़ारा दे। यों उसका गुनाह मुआफ़ किया जाएगा। ²³ जब मुल्के-कनान में दाख़िल होने के बाद तुम फ़लदार दरख़्त लगाओगे तो पहले तीन साल उनका फ़ल न खाना बल्कि उसे ममनू * समझना। ²⁴ चौथे साल उनका तमाम फ़ल ख़ुशी के मुकद्दस नज़राने के तौर पर रब के लिए मख़सूस किया जाए। ²⁵ पाँचवें साल तुम उनका फ़ल खा सकते हो। यों तुम्हारी फ़सल बढ़ाई जाएगी। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

²⁶ ऐसा गोशत न खाना जिसमें खून हो। फ़ाल या शुगून न निकालना।

²⁷ अपने सर के बाल गोल शक्ल में न कटवाना, न अपनी दाढ़ी को तराशना। ²⁸ अपने आपको मुरदों के सबब से काटकर ज़ख़मी न करना, न अपनी जिल्द पर नुक़श गुदवाना। मैं रब हूँ।

²⁹ अपनी बेटी को कसबी न बनाना, वरना उस की मुकद्दस हालत जाती रहेगी और मुल्क ज़िनाकारी के बाइस हरामकारी से भर जाएगा।

³⁰ हफ़ते के दिन आराम करना और मेरे मक़दिस का एहताराम करना। मैं रब हूँ।

³¹ ऐसे लोगों के पास न जाना जो मुरदों से राबिता करते हैं, न ग़ैबदानों की तरफ़ रूजू करना, वरना तुम उनसे नापाक हो जाओगे। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

³² बूढ़े लोगों के सामने उठकर खड़ा हो जाना, बुजुर्गों की इज़ज़त करना और अपने ख़ुदा का एहताराम करना। मैं रब हूँ।

³³ जो परदेसी तुम्हारे मुल्क में तुम्हारे दरमियान रहता है उसे न दबाना। ³⁴ उसके साथ ऐसा सुलूक कर जैसा अपने हमवतनों के साथ करता है। जिस तरह तू अपने आपसे मुहब्बत रखता है उसी तरह उससे भी मुहब्बत रखना। याद रहे कि तुम ख़ुद मिसर में परदेसी थे। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

³⁵ नाइनसाफ़ी न करना। न अदालत में, न लंबाई नापते वक़्त, न तोलते वक़्त और न किसी चीज़ की मिक़दार नापते वक़्त। ³⁶ सहीह तराज़, सहीह बाट और सहीह पैमाना इस्तेमाल करना। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ जो तुम्हें मिसर से निकाल लाया हूँ।

³⁷ मेरी तमाम हिदायात और तमाम अहक़ाम मानो और उन पर अमल करो। मैं रब हूँ।”

20

जरायम की सज़ाएँ

¹ रब ने मूसा से कहा, ² “इसराईलियों को बताना कि तुममें से जो भी अपने बच्चे को मलिक देवता को कुरबानी के तौर पर पेश करे उसे सज़ाए-मौत देनी है। इसमें कोई फ़रक़ नहीं कि वह इसराईली है या परदेसी। जमात के लोग उसे संगसार करें। ³ मैं ख़ुद ऐसे शख्स के खिलाफ़

* **19:23** लफ़ज़ी तरज़ुमा : नामख़तून।

हो जाऊँगा और उसे उस की क्रौम में से मिटा डालूँगा। क्योंकि अपने बच्चों को मलिक को पेश करने से उसने मेरे मकदिस को नापाक किया और मेरे नाम को दाग लगाया है। 4 अगर जमात के लोग अपनी आँखें बंद करके ऐसे शख्स की हरकतें नज़रंदाज़ करें और उसे सज़ाए-मौत न दें 5 तो फिर मैं खुद ऐसे शख्स और उसके घराने के खिलाफ़ खड़ा हो जाऊँगा। मैं उसे और उन तमाम लोगों को क्रौम में से मिटा डालूँगा जिन्होंने उसके पीछे लगकर मलिक देवता को सिजदा करने से ज़िना किया है।

6 जो शख्स मुरदों से राबिता करने और ग़ैबदानी करनेवालों की तरफ़ रज़ू करता है मैं उसके खिलाफ़ हो जाऊँगा। उनकी पैरवी करने से वह ज़िना करता है। मैं उसे उस की क्रौम में से मिटा डालूँगा। 7 अपने आपको मेरे लिए मखसूसो-मुकद्दस रखो, क्योंकि मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ। 8 मेरी हिदायात मानो और उन पर अमल करो। मैं रब हूँ जो तुम्हें मखसूसो-मुकद्दस करता हूँ।

9 जिसने भी अपने बाप या माँ पर लानत भेजी है उसे सज़ाए-मौत दी जाए। इस हरकत से वह अपनी मौत का खुद ज़िम्मादार है।

10 अगर किसी मर्द ने किसी की बीवी के साथ ज़िना किया है तो दोनों को सज़ाए-मौत देनी है।

11 जो मर्द अपने बाप की बीवी से हमबिसतर हुआ है उसने अपने बाप की बेहुरमती की है। दोनों को सज़ाए-मौत देनी है। वह अपनी मौत के खुद ज़िम्मादार है।

12 अगर कोई मर्द अपनी बहू से हमबिसतर हुआ है तो दोनों को सज़ाए-मौत देनी है। जो कुछ उन्होंने किया है वह निहायत शर्मनाक है। वह अपनी मौत के खुद ज़िम्मादार है।

13 अगर कोई मर्द किसी दूसरे मर्द से जिंसी ताल्लुकात रखे तो दोनों को इस धिनौनी हरकत के बाइस सज़ाए-मौत देनी है। वह अपनी मौत के खुद ज़िम्मादार है।

14 अगर कोई आदमी अपनी बीवी के अलावा उस की माँ से भी शादी करे तो यह एक निहायत शर्मनाक बात है। दोनों को जला देना है ताकि तुम्हारे दरमियान कोई ऐसी खबीस बात न रहे।

15 जो मर्द किसी जानवर से जिंसी ताल्लुकात रखे उसे सज़ाए-मौत देना है। उस जानवर को भी मार दिया जाए। 16 जो औरत किसी जानवर से जिंसी ताल्लुकात रखे उसे सज़ाए-मौत देनी है। उस जानवर को भी मार दिया जाए। वह अपनी मौत के खुद ज़िम्मादार है।

17 जिस मर्द ने अपनी बहन से शादी की है उसने शर्मनाक हरकत की है, चाहे वह बाप की बेटी हो या माँ की। उन्हें इसराईली क्रौम की नज़रों से मिटाया जाए। ऐसे शख्स ने अपनी बहन की बेहुरमती की है। इसलिए उसे खुद अपने कुसूर के नतीजे बरदाश्त करने पड़ेंगे।

18 अगर कोई मर्द माहवारी के ऐयाम में किसी औरत से हमबिसतर हुआ है तो दोनों को उनकी क्रौम में से मिटाना है। क्योंकि दोनों ने औरत के खून के मंबा से परदा उठाया है।

19 अपनी ख़ाला या फूफी से हमबिसतर न होना। क्योंकि जो ऐसा करता है वह अपनी करीबी रिश्तेदार की बेहुरमती करता है। दोनों को अपने कुसूर के नतीजे बरदाश्त करने पड़ेंगे।

20 जो अपनी चची या ताई से हमबिसतर हुआ है उसने अपने चचा या ताया की बेहुरमती की है। दोनों को अपने कुसूर के नतीजे बरदाश्त करने पड़ेंगे। वह बेऔलाद मरेंगे।

21 जिसने अपनी भाबी से शादी की है उसने एक नजिस हरकत की है। उसने अपने भाई की बेहुरमती की है। वह बेऔलाद रहेंगे।

22 मेरी तमाम हिदायात और अहकाम को मानो और उन पर अमल करो। वरना जिस मुल्क में मैं तुम्हें ले जा रहा हूँ वह तुम्हें उगल देगा।

23 उन क्रौमों के रस्मो-रिवाज के मुताबिक़ जिंदगी न गुज़ारना जिन्हें मैं तुम्हारे आगे से निकाल दूँगा। मुझे इस सबब से उनसे धिन आने लगी कि वह यह सब कुछ करते थे। 24 लेकिन तुमसे मैंने कहा, 'तुम ही उनकी ज़मीन पर कब्ज़ा करोगे। मैं ही उसे तुम्हें दे दूँगा, ऐसा मुल्क जिसमें कसरत का दूध और शहद है।' मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ, जिसने तुमको दीगर क्रौमों में से चुनकर अलग कर दिया है। 25 इसलिए लाज़िम है कि तुम ज़मीन पर चलनेवाले जानवरों और परिदों में पाक और नापाक का इम्तियाज़ करो। अपने आपको नापाक जानवर खाने से काबिले-धिन न बनाना, चाहे वह ज़मीन पर चलते या रेंगते हैं, चाहे हवा में उड़ते हैं। मैं ही ने उन्हें तुम्हारे लिए नापाक करार दिया है। 26 तुम्हें मेरे लिए मखसूसो-मुकद्दस होना है, क्योंकि मैं कुद्दूस हूँ, और मैंने तुम्हें दीगर क्रौमों में से चुनकर अपने लिए अलग कर लिया है।

27 तुममें से जो मुरदों से राबिता या ग़ैबदानी करता है उसे सज़ाए-मौत देनी है, ख़ाह औरत हो या मर्द। उन्हें संगसार करना। वह अपनी मौत के खुद ज़िम्मादार हैं।”

21

इमामों के लिए हिदायात

1 रब ने मूसा से कहा, “हारून के बेटों को जो इमाम हैं बता देना कि इमाम अपने आपको किसी इसराईली की लाश के करीब जाने से नापाक न करे 2 सिवाए अपने करीबी रिश्तेदारों के यानी माँ, बाप, बेटा, बेटी, भाई 3 और जो ग़ैरशादीशुदा बहन उसके घर में रहती है। 4 वह अपनी क्रौम में किसी और के बाइस अपने आपको नापाक न करे, वरना उस की मुकद्दस हालत जाती रहेगी।

5 इमाम अपने सर को न मुँडवाएँ। वह न अपनी दाढ़ी को तराशें और न काटने से अपने आपको ज़खमी करें।

6 वह अपने खुदा के लिए मखसूसो-मुकद्दस रहें और अपने खुदा के नाम को दाग न लगाएँ। चूँकि वह रब को जलनेवाली कुरबानियाँ यानी अपने खुदा की रोटी पेश करते हैं इसलिए लाज़िम है कि वह मुकद्दस रहें। 7 इमाम जिनाकार औरत, मंदिर की कसबी या तलाकयाफ़ता औरत से शादी न करें, क्योंकि वह अपने रब के लिए मखसूसो-मुकद्दस हैं। 8 इमाम को मुकद्दस समझना, क्योंकि वह तेरे खुदा की रोटी को कुरबानगाह पर चढ़ाता है। वह तेरे लिए मुकद्दस ठहरे क्योंकि मैं रब कुद्दूस हूँ। मैं ही तुम्हें मुकद्दस करता हूँ।

9 किसी इमाम की जो बेटी जिनाकारी से अपनी मुकद्दस हालत को ख़त्म कर देती है वह अपने बाप की मुकद्दस हालत को भी ख़त्म कर देती है। उसे जला दिया जाए।

10 इमामे-आज़म के सर पर मसह का तेल उंडेला गया है और उसे इमामे-आज़म के मुकद्दस कपड़े पहनने का इख़्तियार दिया गया है। इसलिए वह रंज के आलम में अपने बालों को बिखरने न दे, न कभी अपने कपड़ों को फाड़े। 11 वह किसी लाश के करीब न जाए, चाहे वह उसके बाप या माँ की लाश क्यों न हो, वरना वह नापाक हो जाएगा। 12 जब तक कोई लाश उसके घर में पड़ी रहे वह मक़दिस को छोड़कर अपने घर न जाए, वरना वह मक़दिस को नापाक करेगा। क्योंकि उसे उसके खुदा के तेल से मखसूस किया गया है। मैं रब हूँ। 13 इमामे-आज़म को सिर्फ़ कुँवारी से शादी की इजाज़त है। 14 वह बेवा, तलाकयाफ़ता औरत, मंदिर की कसबी या जिनाकार औरत से शादी न करे बल्कि सिर्फ़ अपने कबीले की कुँवारी से, 15 वरना उस की औलाद मखसूसो-मुकद्दस नहीं होगी। क्योंकि मैं रब हूँ जो उसे अपने लिए मखसूसो-मुकद्दस करता हूँ।”

16 रब ने मूसा से यह भी कहा, 17 “हारून को बताना कि तेरी औलाद में से कोई भी जिसके जिस्म में नुक्स हो मेरे हुज़ूर आकर अपने खुदा की रोटी न चढ़ाए। यह उसूल आनेवाली नसलों के लिए भी अटल है। 18 क्योंकि कोई भी माज़ूर मेरे हुज़ूर न आए, न अंधा, न लँगड़ा, न वह जिसकी नाक चिरी हुई हो या जिसके किसी अंग में कमी बेशी हो, 19 न वह जिसका पाँव या हाथ टूटा हुआ हो, 20 न कुबड़ा, न बौना, न वह जिसकी आँख में नुक्स हो या जिसे वबाई जिल्दी बीमारी हो या जिसके खुसिये कुचले हुए हों। 21 हारून इमाम की कोई भी औलाद जिसके जिस्म में नुक्स हो मेरे हुज़ूर आकर रब को जलनेवाली कुरबानियाँ पेश न करे। चूँकि उसमें नुक्स है इसलिए वह मेरे हुज़ूर आकर अपने खुदा की रोटी न चढ़ाए। 22 उसे अल्लाह की मुकद्दस बल्कि मुकद्दसतरीन कुरबानियों में से भी इमामों का हिस्सा खाने की इजाज़त है। 23 लेकिन चूँकि उसमें नुक्स है इसलिए वह मुकद्दसतरीन कमरे के दरवाज़े के परदे के करीब न जाए, न कुरबानगाह के पास आए। वरना वह मेरी मुकद्दस चीज़ों को नापाक करेगा। क्योंकि मैं रब हूँ जो उन्हें अपने लिए मखसूसो-मुकद्दस करता हूँ।”

24 मूसा ने यह हिदायात हारून, उसके बेटों और तमाम इसराइलियों को दी।

22

कुरबानी का गोश्त खाने की हिदायात

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “हारून और उसके बेटों को बताना कि इसराइलियों की उन कुरबानियों का एहताराम करो जो तुमने मेरे लिए मखसूसो-मुकद्दस की हैं, वरना तुम मेरे नाम को दाग लगाओगे। मैं रब हूँ। 3 जो इमाम नापाक होने के बावजूद उन कुरबानियों के पास आ जाए जो इसराइलियों ने मेरे लिए मखसूसो-मुकद्दस की हैं उसे मेरे सामने से मिटाना है। यह उसूल आनेवाली नसलों के लिए भी अटल है। मैं रब हूँ।

4 हारून की औलाद में से जो भी वबाई जिल्दी बीमारी या जरयान का मरीज़ हो उसे मुकद्दस कुरबानियों में से अपना हिस्सा खाने की इजाज़त नहीं है। पहले वह पाक हो जाए। जो ऐसी कोई भी चीज़ छुए जो लाश से नापाक हो गई हो या ऐसे आदमी को छुए जिसका नुतफ़ा निकला हो वह नापाक हो जाता है। 5 वह नापाक रेंगनेवाले जानवर या नापाक शख्स को छूने से भी नापाक हो जाता है, खाह वह किसी भी सबब से नापाक क्यों न हुआ हो। 6 जो ऐसी कोई भी चीज़ छुए वह शाम तक नापाक रहेगा। इसके अलावा लाज़िम है कि वह मुकद्दस कुरबानियों में से अपना हिस्सा खाने से पहले नहा ले। 7 सूरज के ग़रब होने पर वह पाक होगा और मुकद्दस कुरबानियों में से अपना हिस्सा खा सकेगा। क्योंकि वह उस की रोज़ी है। 8 इमाम ऐसे जानवरों का गोश्त न खाए जो फ़ितरी तौर पर मर गए या जिन्हें जंगली जानवरों ने फाड़ डाला हो, वरना वह नापाक हो जाएगा। मैं रब हूँ।

9 इमाम मेरी हिदायात के मुताबिक़ चलें, वरना वह कुसूरवार बन जाएंगे और मुकद्दस चीज़ों की बेहुरमती करने के सबब से मर जाएंगे। मैं रब हूँ जो उन्हें अपने लिए मखसूसो-मुकद्दस करता हूँ।

10 सिर्फ़ इमाम के खानदान के अफ़राद मुकद्दस कुरबानियों में से खा सकते हैं। ग़ैरशहरी या मज़दूर को इजाज़त नहीं है। 11 लेकिन इमाम का गुलाम या लौंडी उसमें से खा सकते हैं, चाहे उन्हें खरीदा गया हो या वह उसके घर में पैदा हुए हों। 12 अगर इमाम की बेटी ने किसी ऐसे शख्स से शादी की है जो इमाम नहीं है तो उसे मुकद्दस कुरबानियों में से खाने की इजाज़त नहीं है। 13 लेकिन हो सकता है कि वह बेवा या तलाकयाफ़ता हो और उसके बच्चे न हों। जब वह अपने बाप के घर लौटकर वहाँ ऐसे रहेगी जैसे अपनी जवानी में तो वह अपने बाप के उस खाने में से खा सकती है जो कुरबानियों में से बाप का हिस्सा है। लेकिन जो इमाम के खानदान का फ़रद नहीं है उसे खाने की इजाज़त नहीं है।

14 जिस शख्स ने नादानिस्ता तौर पर मुकद्दस कुरबानियों में से इमाम के हिस्से से कुछ खाया है वह इमाम को सब कुछ वापस करने के अलावा 20 फ़ीसद ज़्यादा दे। 15 इमाम रब को पेश की हुई कुरबानियों की मुकद्दस हालत यों ख़त्म न करें 16 कि वह दूसरे इसराइलियों को यह मुकद्दस चीज़ें खाने दें। ऐसी हरकत से वह उनको बड़ा कुसूरवार बना देंगे। मैं रब हूँ जो उन्हें अपने लिए मखसूसो-मुकद्दस करता हूँ।”

जानवरों की कुरबानियों के बारे में हिदायात

17 रब ने मूसा से कहा, 18 “हारून, उसके बेटों और इसराइलियों को बताना कि अगर तुममें से कोई इसराइली या परदेसी रब को भस्म होनेवाली कुरबानी पेश करना चाहे तो तरीके-कार में कोई फ़रक़ नहीं है, चाहे वह यह मन्नत मानकर या वैसे ही दिली खुशी से कर रहा हो। 19 इसके लिए लाज़िम है कि तुम एक बेऐब बैल, मेंढा या बकरा पेश करो। फिर ही उसे क़बूल किया जाएगा। 20 कुरबानी के लिए कभी भी ऐसा जानवर पेश न करना जिसमें नुक्स हो, वरना तुम उसके बाइस मंज़ूर नहीं होगे। 21 अगर कोई रब को सलामती की कुरबानी पेश करना चाहे तो तरीके-कार में कोई फ़रक़ नहीं है, चाहे वह यह मन्नत मानकर या वैसे ही दिली खुशी से कर रहा हो। इसके लिए लाज़िम है कि वह गाय-बैलों या भेड़-बकरियों में से बेऐब जानवर चुने। फिर उसे क़बूल किया जाएगा। 22 रब को ऐसे जानवर पेश न करना जो अंधे हों, जिनके आज़ा टूटे या कटे हुए हों, जिनको रसौली हो या जिन्हें वबाई ज़िल्दी बीमारी लग गई हो। रब को उन्हें जलनेवाली कुरबानी के तौर पर कुरबानगाह पर पेश न करना। 23 लेकिन जिस गाय-बैल या भेड़-बकरी के किसी अज़ु में कमी बेशी हो उसे पेश किया जा सकता है। शर्त यह है कि पेश करनेवाला उसे वैसे ही दिली खुशी से चढ़ाए। अगर वह उसे अपनी मन्नत मानकर पेश करे तो वह क़बूल नहीं किया जाएगा। 24 रब को ऐसा जानवर पेश न करना जिसके खुसिये कुचले, तोड़े या कटे हुए हों। अपने मुल्क में जानवरों को इस तरह ख़सी न बनाना, 25 न ऐसे जानवर किसी ग़ैरमुल्की से ख़रीदकर अपने ख़ुदा की रोटी के तौर पर पेश करना। तुम ऐसे जानवरों के बाइस मंज़ूर नहीं होगे, क्योंकि उनमें ख़राबी और नुक्स है।”

26 रब ने मूसा से यह भी कहा, 27 “जब किसी गाय, भेड़ या बकरी का बच्चा पैदा होता है तो लाज़िम है कि वह पहले सात दिन अपनी माँ के पास रहे। आठवें दिन से पहले रब उसे जलनेवाली कुरबानी के तौर पर क़बूल नहीं करेगा। 28 किसी गाय, भेड़ या बकरी के बच्चे को उस की माँ समेत एक ही दिन ज़बह न करना। 29 जब तुम रब को सलामती की कोई कुरबानी चढ़ाना चाहते हो तो उसे यों पेश करना कि तुम मंज़ूर हो जाओ। 30 अगली सुबह तक कुछ बचा न रहे बल्कि उसे उसी दिन खाना है। मैं रब हूँ।

31 मेरे अहकाम मानो और उन पर अमल करो। मैं रब हूँ। 32 मेरे नाम को दाग़ न लगाना। लाज़िम है कि मुझे इसराइलियों के दरमियान कुद्स माना जाए। मैं रब हूँ जो तुम्हें अपने लिए मख़सूस-मुक़द्स करता हूँ। 33 मैं तुम्हें मिसर से निकाल लाया हूँ ताकि तुम्हारा ख़ुदा हूँ। मैं रब हूँ।”

23

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इसराइलियों को बताना कि यह मेरी, रब की ईदें हैं जिन पर तुम्हें लोगों को मुक़द्स इजतिमा के लिए जमा करना है।

सबत का दिन

3 हफ़ते में छः दिन काम करना, लेकिन सातवाँ दिन हर तरह से आराम का दिन है। उस दिन मुक़द्स इजतिमा हो। जहाँ भी तुम रहते हो वहाँ काम न करना। यह दिन रब के लिए मख़सूस सबत है।

फ़सह की ईद और बेख़मीरी रोटी की ईद

4 यह रब की ईदें हैं जिन पर तुम्हें लोगों को मुक़द्स इजतिमा के लिए जमा करना है।

5 फ़सह की ईद पहले महीने के चौधवें दिन शुरू होती है। उस दिन सूरज के शुरू होने पर रब की खुशी मनाई जाए। 6 अगले दिन रब की याद में बेख़मीरी रोटी की ईद शुरू होती है। सात दिन तक तुम्हारी रोटी में ख़मीर न हो। 7 इन सात दिनों के पहले दिन मुक़द्स इजतिमा हो और लोग अपना हर काम छोड़ें। 8 इन सात दिनों में रोज़ाना रब को जलनेवाली कुरबानी पेश करो। सातवें दिन भी मुक़द्स इजतिमा हो और लोग अपना हर काम छोड़ें।”

पहले पूले की ईद

9 रब ने मूसा से कहा, 10 “इसराइलियों को बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाख़िल होगे जो मैं तुम्हें दूँगा और वहाँ अनाज की फ़सल काटोगे तो तुम्हें इमाम को पहला पूला देना है। 11 इतवार को इमाम यह पूला रब के सामने हिलाए ताकि तुम मंज़ूर हो जाओ। 12 उस दिन भेड़ का एक यकसाला बेऐब बच्चा भी रब को पेश करना। उसे कुरबानगाह पर भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर चढ़ाना। 13 साथ ही गल्ला की नज़र के लिए तेल से मिलाया गया 3 किलोग्राम बेहतरीन मैदा भी पेश करना। जलनेवाली यह कुरबानी रब को पसंद है। इसके अलावा मैं की नज़र के लिए एक लिटर मै भी पेश करना। 14 पहले यह सब कुछ करो, फिर ही तुम्हें नई फ़सल के अनाज से खाने की इजाज़त होगी, खाह वह भुना हुआ हो, खाह कच्चा या रोटी की सूरत में पकाया गया हो। जहाँ भी तुम रहते हो वहाँ ऐसा ही करना है। यह उसूल अबद तक कायम रहे।

हफ़्तों की ईद यानी पंतिकुस्त

15 जिस दिन तुमने अनाज का पूला पेश किया उस दिन से पूरे सात हफ़ते गिनो। 16 पचासवें दिन यानी सातवें इतवार को रब को नए अनाज की कुरबानी चढ़ाना। 17 हर घराने की तरफ़ से रब को हिलानेवाली कुरबानी के तौर पर दो रोटियाँ पेश की जाएँ। हर रोटी के लिए 3 किलोग्राम बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। उनमें ख़मीर डालकर पकाना है। यह फ़सल की पहली पैदावार की कुरबानी है। 18 इन रोटियों के साथ एक जवान बैल, दो मेंढे और भेड़ के सात बेऐब और यकसाला बच्चे पेश करो। उन्हें रब के हुज़ूर भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर चढ़ाना। इसके अलावा गल्ला की नज़र और मै की नज़र भी पेश करनी है। जलनेवाली इस कुरबानी की खुशबू रब को पसंद है। 19 फिर गुनाह की कुरबानी के

लिए एक बकरा और सलामती की कुरबानी के लिए दो यकसाला भेड़ के बच्चे चढाओ। 20 इमाम भेड़ के यह दो बच्चे मज़कूरा रोटियों समेत हिलानेवाली कुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाए। यह रब के लिए मखसूसो-मुकद्दस हैं और कुरबानियों में से इमाम का हिस्सा है। 21 उसी दिन लोगों को मुकद्दस इजतिमा के लिए जमा करो। कोई भी काम न करना। यह उसूल अबद तक कायम रहे, और इसे हर जगह मानना है।

22 कटाई के वक़्त अपनी फ़सल पूरे तौर पर न काटना बल्कि खेत के किनारों पर कुछ छोड़ देना। इस तरह जो कुछ कटाई करते वक़्त खेत में बच जाए उसे छोड़ना। बचा हुआ अनाज गरीबों और परदेसियों के लिए छोड़ देना। मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ।”

नए साल की ईद

23 रब ने मूसा से कहा, 24 “इसराईलियों को बताना कि सातवें महीने का पहला दिन आराम का दिन है। उस दिन मुकद्दस इजतिमा हो जिस पर याद दिलाने के लिए नरसिंगा फूँका जाए। 25 कोई भी काम न करना। रब को जलनेवाली कुरबानी पेश करना।”

कफ़फ़ारा का दिन

26 रब ने मूसा से कहा, 27 “सातवें महीने का दसवाँ दिन कफ़फ़ारा का दिन है। उस दिन मुकद्दस इजतिमा हो। अपनी जान को दुख देना और रब को जलनेवाली कुरबानी पेश करना। 28 उस दिन काम न करना, क्योंकि यह कफ़फ़ारा का दिन है, जब रब तुम्हारे खुदा के सामने तुम्हारा कफ़फ़ारा दिया जाता है। 29 जो उस दिन अपनी जान को दुख नहीं देता उसे उस की कौम में से मिटाया जाए। 30 जो उस दिन काम करता है उसे मैं उस की कौम में से निकालकर हलाक करूँगा। 31 कोई भी काम न करना। यह उसूल अबद तक कायम रहे, और इसे हर जगह मानना है। 32 यह दिन आराम का खास दिन है जिसमें तुम्हें अपनी जान को दुख देना है। इसे महीने के नवें दिन की शाम से लेकर अगली शाम तक मानना।”

झोंपड़ियों की ईद

33 रब ने मूसा से कहा, 34 “इसराईलियों को बताना कि सातवें महीने के पंद्रहवें दिन झोंपड़ियों की ईद शुरू होती है। इसका दौरान सात दिन है। 35 पहले दिन मुकद्दस इजतिमा हो। इस दिन कोई काम न करना। 36 इन सात दिनों के दौरान रब को जलनेवाली कुरबानियाँ पेश करना। आठवें दिन मुकद्दस इजतिमा हो। रब को जलनेवाली कुरबानी पेश करो। इस खास इजतिमा के दिन भी काम नहीं करना है।

37 यह रब की ईदें हैं जिन पर तुम्हें मुकद्दस इजतिमा करना है ताकि रब को रोज़मर्रा की मतलूबा जलनेवाली कुरबानियाँ और मैं की नज़रें पेश की जाएँ यानी भस्म होनेवाली कुरबानियाँ, गल्ला की नज़रें, ज़बह की कुरबानियाँ और मैं की नज़रें। 38 यह कुरबानियाँ उन कुरबानियों के अलावा हैं जो सबत के दिन चढाई जाती हैं और जो तुमने हदिये के तौर पर या मन्नत मानकर या अपनी दिली खुशी से पेश की हैं।

39 चुनौचे सातवें महीने के पंद्रहवें दिन फ़सल की कटाई के इख़िताम पर रब की यह ईद यानी झोंपड़ियों की ईद मनाओ। इसे सात दिन मानना। पहला और आखिरी दिन आराम के दिन हैं। 40 पहले दिन अपने लिए दरख्तों के बेहतरीन फल, खजूर की डालियाँ और घने दरख्तों और सफ़ेदा की शाखें तोड़ना। सात दिन तक रब अपने खुदा के सामने खुशी मनाओ। 41 हर साल सातवें महीने में रब की खुशी में यह ईद मनाना। यह उसूल अबद तक कायम रहे। 42 ईद के हफ़्ते के दौरान झोंपड़ियों में रहना। तमाम मुल्क में आबाद इसराईली ऐसा करें। 43 फिर तुम्हारी औलाद जानेगी कि इसराईलियों को मिसर से निकालते वक़्त मैंने उन्हें झोंपड़ियों में बसाया। मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ।”

44 मूसा ने इसराईलियों को रब की ईदों के बारे में यह बातें बताईं।

24

रब के सामने शमादान और रोटियाँ

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इसराईलियों को हुक्म दे कि वह तेरे पास कूटे हुए जैतूनों का ख़ालिस तेल ले आएँ ताकि मुकद्दस कमरे के शमादान के चरागा मुतवातिर जलते रहें। 3 हासून उन्हें मुसलसल, शाम से लेकर सुबह तक रब के हुज़ूर सँभाले यानी वहाँ जहाँ वह मुकद्दसतरीन कमरे के परदे के सामने पड़े हैं, उस परदे के सामने जिसके पीछे अहद का संदूक है। यह उसूल अबद तक कायम रहे। 4 वह ख़ालिस सोने के शमादान पर लगे चरागों की देख-भाल यों करे कि यह हमेशा रब के सामने जलते रहें।

5 बारह रोटियाँ पकाना। हर रोटि के लिए 3 किलोग्राम बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। 6 उन्हें दो कतारों में रब के सामने ख़ालिस सोने की मेज़ पर रखना। 7 हर कतार पर ख़ालिस लुबान डालना। यह लुबान रोटि के लिए यादगारी की कुरबानी है जिसे बाद में रब के लिए जलाना है। 8 हर हफ़्ते को रब के सामने ताज़ा रोटियाँ इसी तरीक़े से मेज़ पर रखनी हैं। यह इसराईलियों के लिए अबदी अहद की लाज़िमी शर्त है। 9 मेज़ की रोटियाँ हासून और उसके बेटों का हिस्सा हैं, और वह उन्हें मुकद्दस जगह पर खाएँ, क्योंकि वह जलनेवाली कुरबानियों का मुकद्दसतरीन हिस्सा हैं। यह अबद तक उनका हक़ रहेगा।”

अल्लाह की तौहीन, ख़ूबरेजी और ज़ख़मी करने की सज़ाएँ

10-11 ख़ैमागाह में एक आदमी था जिसका बाप मिसरी और माँ इसराईली थी। माँ का नाम सलूमीत था। वह दिबरी की बेटी और दान के कबीले की थी। एक दिन यह आदमी ख़ैमागाह में किसी इसराईली से झगड़ने लगा। लड़ते लड़ते उसने रब के नाम पर कुफ़र बककर उस पर लानत भेजी। यह सुनकर लोग उसे मूसा के पास ले आए। 12 वहाँ उन्होंने उसे पहरें में बिठाकर रब की हिदायत का इंतज़ार किया।

13 तब रब ने मूसा से कहा, 14 “लानत करनेवाले को खैमागाह के बाहर ले जाओ। जिन्होंने उस की यह बातें सुनी हैं वह सब अपने हाथ उसके सर पर रखें। फिर पूरी जमात उसे संगसार करे। 15 इसराईलियों से कहना कि जो भी अपने खुदा पर लानत भेजे उसे अपने कुसूर के नतीजे बरदाश्त करने पड़ेंगे। 16 जो भी रब के नाम पर कुफ़र बके उसे सज़ाए-मौत दी जाए। पूरी जमात उसे संगसार करे। जिसने रब के नाम पर कुफ़र बका हो उसे ज़रूर सज़ाए-मौत देनी है, खाह देसी हो या परदेसी।

17 जिसने किसी को मार डाला है उसे सज़ाए-मौत दी जाए। 18 जिसने किसी के जानवर को मार डाला है वह उसका मुआवज़ा दे। जान के बदले जान दी जाए। 19 अगर किसी ने किसी को ज़खमी कर दिया है तो वही कुछ उसके साथ किया जाए जो उसने दूसरे के साथ किया है। 20 अगर दूसरे की कोई हड्डी टूट जाए तो उस की वही हड्डी तोड़ी जाए। अगर दूसरे की आँख ज़ायी हो जाए तो उस की आँख ज़ायी कर दी जाए। अगर दूसरे का दाँत टूट जाए तो उसका वही दाँत तोड़ा जाए। जो भी ज़खम उसने दूसरे को पहुँचाया वही ज़खम उसे पहुँचाया जाए। 21 जिसने किसी जानवर को मार डाला है वह उसका मुआवज़ा दे, लेकिन जिसने किसी इन्सान को मार दिया है उसे सज़ाए-मौत देनी है। 22 देसी और परदेसी के लिए तुम्हारा एक ही क़ानून हो। मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ।”

23 फिर मूसा ने इसराईलियों से बात की, और उन्होंने रब पर लानत भेजनेवाले को खैमागाह से बाहर ले जाकर उसे संगसार किया। उन्होंने वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

25

ज़मीन के लिए सबत का साल

1 रब ने सीना पहाड़ पर मूसा से कहा, 2 “इसराईलियों को बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाखिल होगे जो मैं तुम्हें दूँगा तो लाज़िम है कि रब की ताज़ीम में ज़मीन एक साल आराम करे। 3 छः साल के दौरान अपने खेतों में बीज बोना, अपने अंगूर के बागों की काँट-छाँट करना और उनकी फ़सलें जमा करना। 4 लेकिन सातवाँ साल ज़मीन के लिए आराम का साल है, रब की ताज़ीम में सबत का साल। उस साल न अपने खेतों में बीज बोना, न अपने अंगूर के बागों की काँट-छाँट करना। 5 जो अनाज खुद बख़ुद उगता है उस की कटाई न करना और जो अंगूर उस साल लगते हैं उनको तोड़कर जमा न करना, क्योंकि ज़मीन को एक साल के लिए आराम करना है। 6 अलबत्ता जो भी यह ज़मीन आराम के साल में पैदा करेगी उससे तुम अपनी रोज़ाना की ज़रूरियात पूरी कर सकते हो यानी तू, तेरे गुलाम और लौंडियाँ, तेरे मज़दूर, तेरे ग़ैरशहरी, तेरे साथ रहनेवाले परदेसी, 7 तेरे मवेशी और तेरी ज़मीन पर रहनेवाले जंगली जानवर। जो कुछ भी यह ज़मीन पैदा करती है वह खाया जा सकता है।

बहाली का साल

8 सात सबत के साल यानी 49 साल के बाद एक और काम करना है। 9 पचासवें साल के सातवें महीने के दसवें दिन यानी कफ़फ़ारा के दिन अपने मुल्क की हर जगह नरसिंगा बजाना। 10 पचासवाँ साल मख़सूसो-मुक़द्दस करो और पूरे मुल्क में एलान करो कि तमाम बाशिंदों को आज़ाद कर दिया जाए। यह बहाली का साल हो जिसमें हर शख्स को उस की मिलकियत वापस की जाए और हर गुलाम को आज़ाद किया जाए ताकि वह अपने रिश्तेदारों के पास वापस जा सके। 11 यह पचासवाँ साल बहाली का साल हो, इसलिए न अपने खेतों में बीज बोना, न खुद बख़ुद उगनेवाले अनाज की कटाई करना, और न अंगूर तोड़कर जमा करना। 12 क्योंकि यह बहाली का साल है जो तुम्हारे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस है। रोज़ाना उतनी ही पैदावार लेना कि एक दिन की ज़रूरियात पूरी हो जाएँ। 13 बहाली के साल में हर शख्स को उस की मिलकियत वापस की जाए।

14 चुनौचे जब कभी तुम अपने किसी हमवतन भाई को ज़मीन बेचते या उससे ख़रीदते हो तो उससे नाजायज़ फ़ायदा न उठाना। 15 ज़मीन की क़ीमत इस हिसाब से मुक़र्रर की जाए कि वह अगले बहाली के साल तक कितने साल फ़सलें पैदा करेगी। 16 अगर बहुत साल रह गए हों तो उस की क़ीमत ज़्यादा होगी, और अगर कम साल रह गए हों तो उस की क़ीमत कम होगी। क्योंकि उन फ़सलों की तादाद बिक रही है जो ज़मीन अगले बहाली के साल तक पैदा कर सकती है।

17 अपने हमवतन से नाजायज़ फ़ायदा न उठाना बल्कि रब अपने खुदा का ख़ौफ़ मानना, क्योंकि मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ।

18 मेरी हिदायत पर अमल करना और मेरे अहक़ाम को मानकर उनके मुताबिक़ चलना। तब तुम अपने मुल्क में महफूज़ रहोगे। 19 ज़मीन अपनी पूरी पैदावार देगी, तुम सेर हो जाओगे और महफूज़ रहोगे। 20 हो सकता है कोई पूछे, ‘हम सातवें साल में क्या खाएँगे जबकि हम बीज नहीं बोएँगे और फ़सल नहीं काटेंगे?’ 21 ज़वाब यह है कि मैं छठे साल में ज़मीन को इतनी बरकत दूँगा कि उस साल की पैदावार तीन साल के लिए काफ़ी होगी। 22 जब तुम आठवें साल बीज बोओगे तो तुम्हारे पास छठे साल की इतनी पैदावार बाकी होगी कि तुम फ़सल की कटाई तक गुज़ारा कर सकोगे।

मौस्सी ज़मीन के हुक्क

23 कोई ज़मीन भी हमेशा के लिए न बेची जाए, क्योंकि मुल्क की तमाम ज़मीन मेरी ही है। तुम मेरे हुज़ूर सिर्फ़ परदेसी और ग़ैरशहरी हो। 24 मुल्क में जहाँ भी ज़मीन बिक जाए वहाँ मौस्सी मालिक का यह हक़ माना जाए कि वह अपनी ज़मीन वापस ख़रीद सकता है।

25 अगर तेरा कोई हमवतन भाई ग़रीब होकर अपनी कुछ ज़मीन बेचने पर मजबूर हो जाए तो लाज़िम है कि उसका सबसे करीबी रिश्तेदार उसे वापस ख़रीद ले। 26 हो सकता है कि ऐसे शख्स का कोई करीबी रिश्तेदार न हो जो उस की ज़मीन वापस ख़रीद सके, लेकिन वह खुद

कुछ देर के बाद इतने पैसे जमा करता है कि वह अपनी ज़मीन वापस खरीद सकता है। ²⁷ इस सूरत में वह हिसाब करे कि खरीदनेवाले के लिए अगले बहाली के साल तक कितने साल रह गए हैं। जितना नुकसान खरीदनेवाले को ज़मीन को बहाली के साल से पहले वापस देने से पहुँचेगा उतने ही पैसे उसे देने हैं। ²⁸ लेकिन अगर उसके पास इतने पैसे न हों तो ज़मीन अगले बहाली के साल तक खरीदनेवाले के हाथ में रहेगी। फिर उसे मौस्सी मालिक को वापस दिया जाएगा।

²⁹ अगर किसी का घर फ़सीलदार शहर में है तो जब वह उसे बेचेगा तो अपना घर वापस खरीदने का हक़ सिर्फ़ एक साल तक रहेगा। ³⁰ अगर पहला मालिक उसे पहले साल के अंदर अंदर न खरीदे तो वह हमेशा के लिए खरीदनेवाले की मौस्सी मिलकियत बन जाएगा। वह बहाली के साल में भी वापस नहीं किया जाएगा।

³¹ लेकिन जो घर ऐसी आबादी में है जिसकी फ़सील न हो वह देहात में शुमार किया जाता है। उसके मौस्सी मालिक को हक़ हासिल है कि हर वक़्त अपना घर वापस खरीद सके। बहाली के साल में इस घर को लाज़िमन वापस कर देना है।

³² लेकिन लावियों को यह हक़ हासिल है कि वह अपने वह घर हर वक़्त खरीद सकते हैं जो उनके लिए मुक़रर किए हुए शहरों में हैं। ³³ अगर ऐसा घर किसी लावी के हाथ फ़रोख़्त किया जाए और वापस न खरीदा जाए तो उसे लाज़िमन बहाली के साल में वापस करना है। क्योंकि लावी के जो घर उनके मुक़ररा शहरों में होते हैं वह इसराईलियों में उनकी मौस्सी मिलकियत हैं। ³⁴ लेकिन जो ज़मीन शहरों के इर्दगिर्द मवेशी चराने के लिए मुक़रर हैं उन्हें बेचने की इजाज़त नहीं है। वह उनकी दायमी मिलकियत हैं।

गरीबों के लिए कर्ज़ा

³⁵ अगर तेरा कोई हमवतन भाई गरीब हो जाए और गुज़ारा न कर सके तो उस की मदद कर। उस तरह उस की मदद करना जिस तरह परदेसी या ग़ैरशहरी की मदद करनी होती है ताकि वह तेरे साथ रहते हुए ज़िंदगी गुज़ार सके। ³⁶ उससे किसी तरह का सूद न लेना बल्कि अपने खुदा का ख़ौफ़ मानना ताकि तेरा भाई तेरे साथ ज़िंदगी गुज़ार सके। ³⁷ अगर वह तेरा कर्ज़दार हो तो उससे सूद न लेना। इसी तरह ख़ुराक बेचते वक़्त उससे नफ़ा न लेना। ³⁸ मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ। मैं तुम्हें इसलिए मिसर से निकाल लाया कि तुम्हें मुल्के-कनान दूँ और तुम्हारा खुदा हूँ।

इसराईली गुलामों के हुक्क

³⁹ अगर तेरा कोई इसराईली भाई गरीब होकर अपने आपको तेरे हाथ बेच डाले तो उससे गुलाम का-सा काम न कराना। ⁴⁰ उसके साथ मज़दूर या ग़ैरशहरी का-सा सुलूक करना। वह तेरे लिए बहाली के साल तक काम करे। ⁴¹ फिर वह और उसके बाल-बच्चे आज़ाद होकर अपने रिश्तेदारों और मौस्सी ज़मीन के पास वापस जाएँ। ⁴² चूँकि इसराईली मेरे खादिम हैं जिन्हें मैं मिसर से निकाल लाया इसलिए उन्हें गुलामी में न बेचा जाए। ⁴³ ऐसे लोगों पर सख़्ती से हुक्मरानी न करना बल्कि अपने खुदा का ख़ौफ़ मानना।

⁴⁴ तुम पड़ोसी ममालिक से अपने लिए गुलाम और लौडियाँ हासिल कर सकते हो। ⁴⁵ जो परदेसी ग़ैरशहरी के तौर पर तुम्हारे मुल्क में आबाद हैं उन्हें भी तुम खरीद सकते हो। उनमें वह भी शामिल हैं जो तुम्हारे मुल्क में पैदा हुए हैं। वही तुम्हारी मिलकियत बनकर ⁴⁶ तुम्हारे बेटों की मीरास में आ जाएँ और वही हमेशा तुम्हारे गुलाम रहें। लेकिन अपने हमवतन भाइयों पर सख़्त हुक्मरानी न करना।

⁴⁷ अगर तेरे मुल्क में रहनेवाला कोई परदेसी या ग़ैरशहरी अमीर हो जाए जबकि तेरा कोई हमवतन भाई गरीब होकर अपने आपको उस परदेसी या ग़ैरशहरी या उसके ख़ानदान के किसी फ़रद को बेच डाले ⁴⁸ तो बिक जाने के बाद उसे आज़ादी खरीदने का हक़ हासिल है। कोई भाई, ⁴⁹ चचा, ताया, चचा या ताया का बेटा या कोई और करीबी रिश्तेदार उसे वापस खरीद सकता है। वह खुद भी अपनी आज़ादी खरीद सकता है अगर उसके पास पैसे काफ़ी हों। ⁵⁰ इस सूरत में वह अपने मालिक से मिलकर वह साल गिने जो उसके खरीदने से लेकर अगले बहाली के साल तक बाक़ी हैं। उस की आज़ादी के पैसे उस कीमत पर मबनी हों जो मज़दूर को इतने सालों के लिए दिए जाते हैं। ⁵¹⁻⁵² जितने साल बाक़ी रह गए हैं उनके मुताबिक़ उस की बिक जाने की कीमत में से पैसे वापस कर दिए जाएँ। ⁵³ उसके साथ साल बसाल मज़दूर का-सा सुलूक किया जाए। उसका मालिक उस पर सख़्त हुक्मरानी न करे। ⁵⁴ अगर वह इस तरह के किसी तरीक़े से आज़ाद न हो जाए तो उसे और उसके बच्चों को हर हालत में अगले बहाली के साल में आज़ाद कर देना है, ⁵⁵ क्योंकि इसराईली मेरे ही खादिम हैं। वह मेरे ही खादिम हैं जिन्हें मैं मिसर से निकाल लाया। मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ।

26

फ़रमाँबरदारी का अज़

¹ अपने लिए बुत न बनाना। न अपने लिए देवता के मुजस्समे या पत्थर के मख़सूस किए हुए सत्तन खड़े करना, न सिजदा करने के लिए अपने मुल्क में ऐसे पत्थर रखना जिनमें देवता की तस्वीर कंदा की गई हो। मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ। ² सबत का दिन मनाना और मेरे मक़दिस की ताज़ीम करना। मैं रब हूँ।

³ अगर तुम मेरी हिदायात पर चलो और मेरे अहक़ाम मानकर उन पर अमल करो ⁴ तो मैं वक़्त पर बारिश भेजूँगा, ज़मीन अपनी पैदावार देगी और दरख़्त अपने अपने फल लाएँगे। ⁵ कसरत के बाइस अनाज की फ़सल की कटाई अंगूर तोड़ते वक़्त तक जारी रहेगी और अंगूर की फ़सल उस वक़्त तक तोड़ी जाएगी जब तक बीज बोने का मौसम आएगा। इतनी ख़ुराक मिलेगी कि तुम कभी भूके नहीं होगे। और तुम अपने मुल्क में महफूज़ रहोगे।

6 मैं मुल्क को अमनो-अमान बख्शूँगा। तुम आराम से लेट जाओगे, क्योंकि किसी खतरे से डरने की ज़रूरत नहीं होगी। मैं वहशी जानवर मुल्क से दूर कर दूँगा, और वह तलवार की क़त्लो-गारत से बचा रहेगा। 7 तुम अपने दुश्मनों पर ग़ालिब आकर उनका ताक़्कुब करोगे, और वह तुम्हारी तलवार से मारे जाएंगे। 8 तुम्हारे पाँच आदमी सौ दुश्मनों का पीछा करेंगे, और तुम्हारे सौ आदमी उनके दस हज़ार आदमियों को भगा देंगे। तुम्हारे दुश्मन तुम्हारी तलवार से मारे जाएंगे।

9 मेरी नज़रे-करम तुम पर होगी। मैं तुम्हारी औलाद की तादाद बढ़ाऊँगा और तुम्हारे साथ अपना अहद कायम रखूँगा। 10 एक साल इतनी फ़सल होगी कि जब अगली फ़सल की कटाई होगी तो नए अनाज के लिए जगह बनाने की खातिर पुराने अनाज को फेंक देना पड़ेगा। 11 मैं तुम्हारे दरमियान अपना मसकन कायम करूँगा और तुमसे धिन नहीं खाऊँगा। 12 मैं तुममें फिर्सूँगा, और तुम मेरी कौम होगे।

13 मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ जो तुम्हें मिसर से निकाल लाया ताकि तुम्हारी गुलामी की हालत ख़त्म हो जाए। मैंने तुम्हारे जुए को तोड़ डाला, और अब तुम आज़ाद और सीधे होकर चल सकते हो।

फ़रमाँबरदार न होने की सज़ा

14 लेकिन अगर तुम मेरी नहीं सुनोगे और इन तमाम अहकाम पर नहीं चलोगे, 15 अगर तुम मेरी हिदायत को रद्द करके मेरे अहकाम से धिन खाओगे और उन पर अमल न करके मेरा अहद तोड़ोगे 16 तो मैं जवाब में तुम पर अचानक दहशत तारी कर दूँगा। जिस्म को ख़त्म करनेवाली बीमारियों और बुखार से तुम्हारी आँखें ज़ाया हो जाएँगी और तुम्हारी जान छिन जाएगी। जब तुम बीज बोओगे तो बेफ़ायदा, क्योंकि दुश्मन उस की फ़सल खा जाएगा। 17 मैं तुम्हारे खिलाफ़ हो जाऊँगा, इसलिए तुम अपने दुश्मनों के हाथ से शिकस्त खाओगे। तुमसे नफ़रत रखनेवाले तुम पर हकूमत करेंगे। उस वक़्त भी जब कोई तुम्हारा ताक़्कुब नहीं करेगा तुम भाग जाओगे।

18 अगर तुम इसके बाद भी मेरी न सुनो तो मैं तुम्हारे गुनाहों के सबब से तुम्हें सात गुना ज़्यादा सज़ा दूँगा। 19 मैं तुम्हारा सख़्त गुस्सा ख़ाक में मिला दूँगा। तुम्हारे ऊपर आसमान लोहे जैसा और तुम्हारे नीचे ज़मीन पीतल जैसी होगी। 20 जितनी भी मेहनत करोगे वह बेफ़ायदा होगी, क्योंकि तुम्हारे खेतों में फ़सलें नहीं पकेंगी और तुम्हारे दरख़्त फल नहीं लाएँगे।

21 अगर तुम फिर भी मेरी मुख़ालफ़त करोगे और मेरी नहीं सुनोगे तो मैं इन गुनाहों के जवाब में तुम्हें इससे भी सात गुना ज़्यादा सज़ा दूँगा। 22 मैं तुम्हारे खिलाफ़ जंगली जानवर भेज दूँगा जो तुम्हारे बच्चों को फाड़ खाएँगे और तुम्हारे मवेशी बरबाद कर देंगे। आखिर में तुम्हारी तादाद इतनी कम हो जाएगी कि तुम्हारी सड़कें वीरान हो जाएँगी।

23 अगर तुम फिर भी मेरी तरबियत क़बूल न करो बल्कि मेरे मुख़ालिफ़ रहो 24 तो मैं खुद तुम्हारे खिलाफ़ हो जाऊँगा। इन गुनाहों के जवाब में मैं तुम्हें सात गुना ज़्यादा सज़ा दूँगा। 25 मैं तुम पर तलवार चलाकर इसका बदला लूँगा कि तुमने मेरे अहद को तोड़ा है। जब तुम अपनी हिफ़ाज़त के लिए शहरों में भागकर जमा होगे तो मैं तुम्हारे दरमियान वबाई बीमारियाँ फैलाऊँगा और तुम्हें दुश्मनों के हाथ में दे दूँगा। 26 अनाज की इतनी कमी होगी कि दस औरतें तुम्हारी पूरी रोटी एक ही तनूर में पका सकेंगी, और वह उसे बड़ी एहतियात से तोल तोलकर तक़सीम करेंगी। तुम खाकर भी भूके रहोगे।

27 अगर तुम फिर भी मेरी नहीं सुनोगे बल्कि मेरे मुख़ालिफ़ रहोगे 28 तो मेरा गुस्सा भड़केगा और मैं तुम्हारे खिलाफ़ होकर तुम्हारे गुनाहों के जवाब में तुम्हें सात गुना ज़्यादा सज़ा दूँगा। 29 तुम मुसीबत के बाइस अपने बेटे-बेटियों का गोशत खाओगे। 30 मैं तुम्हारी ऊँची जगहों की क़ुरबानगाहें और तुम्हारी बख़ूर की क़ुरबानगाहें बरबाद कर दूँगा। मैं तुम्हारी लाशों के ढेर तुम्हारे बेजान बुतों पर लगाऊँगा और तुमसे धिन खाऊँगा। 31 मैं तुम्हारे शहरों को खंडरात में बदलकर तुम्हारे मंदिरों को बरबाद करूँगा। तुम्हारी क़ुरबानियों की खुशबू मुझे पसंद नहीं आएगी। 32 मैं तुम्हारे मुल्क का सत्यानास यों करूँगा कि जो दुश्मन उसमें आबाद हो जाएंगे उनके रोंगटे खड़े हो जाएंगे। 33 मैं तुम्हें मुख़ालिफ़ ममालिक में मुंशिर कर दूँगा, लेकिन वहाँ भी अपनी तलवार को हाथ में लिए तुम्हारा पीछा करूँगा। तुम्हारी ज़मीन वीरान होगी और तुम्हारे शहर खंडरात बन जाएंगे। 34 उस वक़्त जब तुम अपने दुश्मनों के मुल्क में रहोगे तुम्हारी ज़मीन वीरान हालत में आराम के वह साल मना सकेगी जिनसे वह महसूस रही है। 35 उन तमाम दिनों में जब वह बरबाद रहेगी उसे वह आराम मिलेगा जो उसे न मिला जब तुम मुल्क में रहते थे।

36 तुममें से जो बचकर अपने दुश्मनों के ममालिक में रहेंगे उनके दिलों पर मैं दहशत तारी करूँगा। वह हवा के झोंकों से गिरनेवाले पत्ते की आवाज़ से चौंककर भाग जाएंगे। वह फ़रार होंगे गोया कोई हाथ में तलवार लिए उनका ताक़्कुब कर रहा हो। और वह गिरकर मर जाएंगे हालाँकि कोई उनका पीछा नहीं कर रहा होगा। 37 वह एक दूसरे से टकराकर लड़खड़ाएँगे गोया कोई तलवार लेकर उनके पीछे चल रहा हो हालाँकि कोई नहीं है। चुनाँचे तुम अपने दुश्मनों का सामना नहीं कर सकोगे। 38 तुम दीगर कौमों में मुंशिर होकर हलाक हो जाओगे, और तुम्हारे दुश्मनों की ज़मीन तुम्हें हड़प कर लेगी।

39 तुममें से बाक़ी लोग अपने और अपने बापदादा के कुसूर के बाइस अपने दुश्मनों के ममालिक में गल-सड़ जाएंगे। 40 लेकिन एक वक़्त आएगा कि वह अपने और अपने बापदादा का कुसूर मान लेंगे। वह मेरे साथ अपनी बेवफ़ाई और वह मुख़ालफ़त तसलीम करेंगे 41 जिसके सबब से मैं उनके खिलाफ़ हुआ और उन्हें उनके दुश्मनों के मुल्क में धकेल दिया था। पहले उनका ख़तना सिर्फ़ ज़ाहिरी तौर पर हुआ था, लेकिन अब उनका दिल आजिज़ हो जाएगा और वह अपने कुसूर की क़ीमत अदा करेंगे। 42 फिर मैं इब्राहीम के साथ अपना अहद, इसहाक के साथ अपना

अहद और याकूब के साथ अपना अहद याद करूँगा। मैं मुल्के-कनान भी याद करूँगा। ⁴³ लेकिन पहले वह ज़मीन को छोड़ेंगे ताकि वह उनकी गैरमौजूदगी में वीरान होकर आराम के साल मनाए। यों इसराईली अपने कुसूर के नतीजे भुगतेंगे, इस सबब से कि उन्होंने मेरे अहकाम रद्द किए और मेरी हिदायात से धिन खाई। ⁴⁴ इसके बावजूद भी मैं उन्हें दुश्मनों के मुल्क में छोड़कर रद्द नहीं करूँगा, न यहाँ तक उनसे धिन खाऊँगा कि वह बिलकुल तबाह हो जाएँ। क्योंकि मैं उनके साथ अपना अहद नहीं तोड़ने का। मैं रब उनका ख़ुदा हूँ। ⁴⁵ मैं उनकी खातिर उनके बापदादा के साथ बँधा हुआ अहद याद करूँगा, उन लोगों के साथ अहद जिन्हें मैं दूसरी कौमों के देखते देखते मिसर से निकाल लाया ताकि उनका ख़ुदा हूँ। मैं रब हूँ।”

⁴⁶ रब ने मूसा को इसराईलियों के लिए यह तमाम हिदायात और अहकाम सीना पहाड़ पर दिए।

27

मखसूस की हुई चीज़ों की वापसी

¹ रब ने मूसा से कहा, ² “इसराईलियों को बताना कि अगर किसी ने मन्नत मानकर किसी को रब के लिए मखसूस किया हो तो वह उसे ज़ैल की रकम देकर आज़ाद कर सकता है (मुस्तामल सिक्के मक़दिस के सिक्कों के बराबर हों) : ³ उस आदमी के लिए जिसकी उम्र 20 और 60 साल के दरमियान है चाँदी के 50 सिक्के, ⁴ इसी उम्र की औरत के लिए चाँदी के 30 सिक्के, ⁵ उस लड़के के लिए जिसकी उम्र 5 और 20 साल के दरमियान हो चाँदी के 20 सिक्के, इसी उम्र की लड़की के लिए चाँदी के 10 सिक्के, ⁶ एक माह से लेकर 5 साल तक के लड़के के लिए चाँदी के 5 सिक्के, इसी उम्र की लड़की के लिए चाँदी के 3 सिक्के, ⁷ साठ साल से बड़े आदमी के लिए चाँदी के 15 सिक्के और इसी उम्र की औरत के लिए चाँदी के 10 सिक्के।

⁸ अगर मन्नत माननेवाला मुक़र्ररा रकम अदा न कर सके तो वह मखसूस किए हुए शख्स को इमाम के पास ले आए। फिर इमाम ऐसी रकम मुक़र्रर करे जो मन्नत माननेवाला अदा कर सके।

⁹ अगर किसी ने मन्नत मानकर ऐसा जानवर मखसूस किया जो रब की क़ुरबानियों के लिए इस्तेमाल हो सकता है तो ऐसा जानवर मखसूसो-मुक़द़स हो जाता है। ¹⁰ वह उसे बदल नहीं सकता। न वह अच्छे जानवर की जगह नाक़िस, न नाक़िस जानवर की जगह अच्छा जानवर दे। अगर वह एक जानवर दूसरे की जगह दे तो दोनों मखसूसो-मुक़द़स हो जाते हैं।

¹¹ अगर किसी ने मन्नत मानकर कोई नापाक जानवर मखसूस किया जो रब की क़ुरबानियों के लिए इस्तेमाल नहीं हो सकता तो वह उसको इमाम के पास ले आए। ¹² इमाम उस की रकम उस की अच्छी और बुरी सिफ़्तों का लिहाज़ करके मुक़र्रर करे। इस मुक़र्ररा क़ीमत में कमी बेशी नहीं हो सकती। ¹³ अगर मन्नत माननेवाला उसे वापस ख़रीदना चाहे तो वह मुक़र्ररा क़ीमत जमा 20 फ़ीसद अदा करे।

¹⁴ अगर कोई अपना घर रब के लिए मखसूसो-मुक़द़स करे तो इमाम उस की अच्छी और बुरी सिफ़्तों का लिहाज़ करके उस की रकम मुक़र्रर करे। इस मुक़र्ररा क़ीमत में कमी बेशी नहीं हो सकती। ¹⁵ अगर घर को मखसूस करनेवाला उसे वापस ख़रीदना चाहे तो वह मुक़र्ररा रकम जमा 20 फ़ीसद अदा करे।

¹⁶ अगर कोई अपनी मौसूसी ज़मीन में से कुछ रब के लिए मखसूसो-मुक़द़स करे तो उस की क़ीमत उस बीज की मिक्क़दार के मुताबिक़ मुक़र्रर की जाए जो उसमें बोना होता है। जिस खेत में 135 किलोग्राम जौ का बीज बोया जाए उस की क़ीमत चाँदी के 50 सिक्के होगी। ¹⁷ शर्त यह है कि वह अपनी ज़मीन बहाली के साल के ऐन बाद मखसूस करे। फिर उस की यही क़ीमत मुक़र्रर की जाए। ¹⁸ अगर ज़मीन का मालिक उसे बहाली के साल के कुछ देर बाद मखसूस करे तो इमाम अगले बहाली के साल तक रहनेवाले सालों के मुताबिक़ ज़मीन की क़ीमत मुक़र्रर करे। जितने कम साल बाक़ी हैं उतनी कम उस की क़ीमत होगी। ¹⁹ अगर मखसूस करनेवाला अपनी ज़मीन वापस ख़रीदना चाहे तो वह मुक़र्ररा क़ीमत जमा 20 फ़ीसद अदा करे। ²⁰ अगर मखसूस करनेवाला अपनी ज़मीन को रब से वापस ख़रीदे बग़ैर उसे किसी और को बेचे तो उसे वापस ख़रीदने का हक़ ख़त्म हो जाएगा। ²¹ अगले बहाली के साल यह ज़मीन मखसूसो-मुक़द़स रहेगी और रब की दायमी मिलकियत हो जाएगी। चुनौचे वह इमाम की मिलकियत होगी।

²² अगर कोई अपना मौसूसी खेत नहीं बल्कि अपना ख़रीदा हुआ खेत रब के लिए मखसूस करे ²³ तो इमाम अगले बहाली के साल तक रहनेवाले सालों का लिहाज़ करके उस की क़ीमत मुक़र्रर करे। खेत का मालिक उसी दिन उसके पैसे अदा करे। यह पैसे रब के लिए मखसूसो-मुक़द़स होंगे। ²⁴ बहाली के साल में यह खेत उस शख्स के पास वापस आएगा जिसने उसे बेचा था।

²⁵ वापस ख़रीदने के लिए मुस्तामल सिक्के मक़दिस के सिक्कों के बराबर हों। उसके चाँदी के सिक्कों का वज़न 11 ग्राम है।

²⁶ लेकिन कोई भी किसी मवेशी का पहलौठा रब के लिए मखसूस नहीं कर सकता। वह तो पहले से रब के लिए मखसूस है। इसमें कोई फ़रक़ नहीं कि वह गाय, बैल या भेड़ हो। ²⁷ अगर उसने कोई नापाक जानवर मखसूस किया हो तो वह उसे मुक़र्ररा क़ीमत जमा 20 फ़ीसद के लिए वापस ख़रीद सकता है। अगर वह उसे वापस न ख़रीदे तो वह मुक़र्ररा क़ीमत के लिए बेचा जाए।

²⁸ लेकिन अगर किसी ने अपनी मिलकियत में से कुछ गैरमशरूत तौर पर रब के लिए मखसूस किया है तो उसे बेचा या वापस नहीं ख़रीदा जा सकता, खाह वह इन्सान, जानवर या ज़मीन हो। जो इस तरह मखसूस किया गया हो वह रब के लिए निहायत मुक़द़स है। ²⁹ इसी तरह जिस शख्स को तबाही के लिए मखसूस किया गया है उसका फ़िघा नहीं दिया जा सकता। लाज़िम है कि उसे सज़ाए-मौत दी जाए।

³⁰ हर फसल का दसवाँ हिस्सा रब का है, चाहे वह अनाज हो या फल। वह रब के लिए मखसूसो-मुकद्दस है। ³¹ अगर कोई अपनी फसल का दसवाँ हिस्सा छुड़ाना चाहता है तो वह इसके लिए उस की मुकर्ररा कीमत जमा 20 फ्रीसद दे। ³² इसी तरह गाय-बैलों और भेड़-बकरियों का दसवाँ हिस्सा भी रब के लिए मखसूसो-मुकद्दस है, हर दसवाँ जानवर जो गल्लाबान के डंडे के नीचे से गुज़रेगा। ³³ यह जानवर चुनने से पहले उनका मुआयना न किया जाए कि कौन-से जानवर अच्छे या कमज़ोर हैं। यह भी न करना कि दसवें हिस्से के किसी जानवर के बदले कोई और जानवर दिया जाए। अगर फिर भी उसे बदला जाए तो दोनों जानवर रब के लिए मखसूसो-मुकद्दस होंगे। और उन्हें वापस खरीदा नहीं जा सकता।”

³⁴ यह वह अहकाम हैं जो रब ने सीना पहाड़ पर मूसा को इसराईलियों के लिए दिए।

गिनती

इसराईलियों की पहली मर्दमशुमारी

1 इसराईलियों को मिसर से निकले हुए एक साल से ज्यादा अरसा गुज़र गया था। अब तक वह दशते-सीना में थे। दूसरे साल के दूसरे महीने के पहले दिन रब मुलाक्रात के ख़ैमे में मूसा से हमकलाम हुआ। उसने कहा,

2 “तू और हासून तमाम इसराईलियों की मर्दमशुमारी कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक करना। उन तमाम मर्दों की फ़हरिस्त बनाना 3 जो कम अज़ कम बीस साल के और जंग लड़ने के काबिल हों। 4 इसमें हर क़बीले के एक ख़ानदान का सरपरस्त तुम्हारी मदद करे। 5 यह उनके नाम हैं :

रुबिन के क़बीले से इलीसूर बिन शदियूर,

6 शमौन के क़बीले से सलूमियेल बिन सूरीशद्दी,

7 यहदाह के क़बीले से नहसोन बिन अम्मीनदाब,

8 इशकार के क़बीले से नतनियेल बिन जुगर,

9 ज़बूलून के क़बीले से इलियाब बिन हेलोन,

10 यूसुफ़ के बेटे इफ़राईम के क़बीले से इलीसमा बिन अम्मीहूद,

यूसुफ़ के बेटे मनस्सी के क़बीले से जमलियेल बिन फ़दाहसूर,

11 बिनयमीन के क़बीले से अबिदान बिन जिदौनी,

12 दान के क़बीले से अख़ियज़र बिन अम्मीशद्दी,

13 आशर के क़बीले से फ़जियेल बिन अकरान,

14 ज़द के क़बीले से इलियासफ़ बिन दऊएल,

15 नफ़ताली के क़बीले से अख़ीरा बिन एनान।”

16 यही मर्द जमात से इस काम के लिए बुलाए गए। वह अपने क़बीलों के राहनुमा और कुंबों के सरपरस्त थे। 17 इनकी मदद से मूसा और हासून ने 18 उसी दिन पूरी जमात को इकट्ठा किया। हर इसराईली मर्द जो कम अज़ कम 20 साल का था रजिस्टर में दर्ज किया गया। रजिस्टर की तरतीब उनके कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक थी।

19 सब कुछ वैसा ही किया गया जैसा रब ने हुक्म दिया था। मूसा ने सीना के रेगिस्तान में लोगों की मर्दमशुमारी की। नतीजा यह निकला :

20-21 रुबिन के क़बीले के 46,500 मर्द,

22-23 शमौन के क़बीले के 59,300 मर्द,

24-25 ज़द के क़बीले के 45,650 मर्द,

26-27 यहदाह के क़बीले के 74,600 मर्द,

28-29 इशकार के क़बीले के 54,400 मर्द,

30-31 ज़बूलून के क़बीले के 57,400 मर्द,

32-33 यूसुफ़ के बेटे इफ़राईम के क़बीले के 40,500 मर्द,

34-35 यूसुफ़ के बेटे मनस्सी के क़बीले के 32,200 मर्द,

36-37 बिनयमीन के क़बीले के 35,400 मर्द,

38-39 दान के क़बीले के 62,700 मर्द,

40-41 आशर के क़बीले के 41,500 मर्द,

42-43 नफ़ताली के क़बीले के 53,400 मर्द।

44 मूसा, हासून और क़बीलों के बारह राहनुमाओं ने इन तमाम आदमियों को गिना। 45-46 उनकी पूरी तादाद 6,03,550 थी।

47 लेकिन लावियों की मर्दमशुमारी न हुई, 48 क्योंकि रब ने मूसा से कहा था, 49 “इसराईलियों की मर्दमशुमारी में लावियों को शामिल न करना। 50 इसके बजाए उन्हें शरीअत की सुकूनतगाह और उसका सारा सामान सँभालने की ज़िम्मादारी देना। वह सफ़र करते वक़्त यह ख़ैमा और उसका सारा सामान उठाकर ले जाएँ, उस की ख़िदमत के लिए हाज़िर रहें और स्क़ते वक़्त उसे अपने ख़ैमों से घेरे रखें। 51 रवाना होते वक़्त वही ख़ैमे को समेटें और स्क़ते वक़्त वही उसे लगाएँ। अगर कोई और उसके क़रीब आए तो उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी। 52 बाक़ी इसराईली ख़ैमागाह में अपने अपने दस्ते के मुताबिक और अपने अपने अलम के इर्दगिर्द अपने ख़ैमे लगाएँ। 53 लेकिन लावी अपने ख़ैमों से शरीअत की सुकूनतगाह को घेर लें ताकि मेरा ग़ज़ब किसी ग़लत शख्स के नज़दीक आने से इसराईलियों की जमात पर नाज़िल न हो जाए। यों लावियों को शरीअत की सुकूनतगाह को सँभालना है।”

54 इसराईलियों ने वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

2

खैमागाह में कबीलों की तरतीब

1 रब ने मूसा और हासून से कहा 2 कि इसराईली अपने खैमे कुछ फासले पर मुलाकात के खैमे के इर्दगिर्द लगाएँ। हर एक अपने अपने अलम और अपने अपने आबाई घराने के निशान के साथ खैमाज़न हो।

3 इन हिदायात के मुताबिक मकदिस के मशरिक में यहदाह का अलम था जिसके इर्दगिर्द तीन दस्ते खैमाज़न थे। पहले, यहदाह का कबीला जिसका कमाँडर नहसोन बिन अम्मीनदाब था, 4 और जिसके लशकर के 74,600 फौजी थे। 5 दूसरे, इशकार का कबीला जिसका कमाँडर नतनियेल बिन जुगर था, 6 और जिसके लशकर के 54,400 फौजी थे। 7 तीसरे, जबलून का कबीला जिसका कमाँडर इलियाब बिन हेलेन था 8 और जिसके लशकर के 57,400 फौजी थे। 9 तीनों कबीलों के फौजियों की कुल तादाद 1,86,400 थी। रवाना होते वक़्त यह आगे चलते थे।

10 मकदिस के जुनूब में रुबिन का अलम था जिसके इर्दगिर्द तीन दस्ते खैमाज़न थे। पहले, रुबिन का कबीला जिसका कमाँडर इलीसूर बिन शदियूर था, 11 और जिसके 46,500 फौजी थे। 12 दूसरे, शमौन का कबीला जिसका कमाँडर सलूमियेल बिन सूरीशद्दी था, 13 और जिसके 59,300 फौजी थे। 14 तीसरे, जद का कबीला जिसका कमाँडर इलियासफ बिन दऊएल था, 15 और जिसके 45,650 फौजी थे। 16 तीनों कबीलों के फौजियों की कुल तादाद 1,51,450 थी। रवाना होते वक़्त यह मशरिकी कबीलों के पीछे चलते थे।

17 इन जुनूबी कबीलों के बाद लावी मुलाकात का खैमा उठाकर कबीलों के ऐन बीच में चलते थे। कबीले उस तरतीब से रवाना होते थे जिस तरतीब से वह अपने खैमे लगाते थे। हर कबीला अपने अलम के पीछे चलता था।

18 मकदिस के मगरिब में इफराईम का अलम था जिसके इर्दगिर्द तीन दस्ते खैमाज़न थे। पहले, इफराईम का कबीला जिसका कमाँडर इलीसमा बिन अम्मीहद था, 19 और जिसके 40,500 फौजी थे। 20 दूसरे, मनस्सी का कबीला जिसका कमाँडर जमलियेल बिन फ़दाहसूर था, 21 और जिसके 32,200 फौजी थे। 22 तीसरे, बिनयमीन का कबीला जिसका कमाँडर अबिदान बिन जिदैनी था, 23 और जिसके 35,400 फौजी थे। 24 तीनों कबीलों के फौजियों की कुल तादाद 1,08,100 थी। रवाना होते वक़्त यह जुनूबी कबीलों के पीछे चलते थे।

25 मकदिस के शिमाल में दान का अलम था जिसके इर्दगिर्द तीन दस्ते खैमाज़न थे। पहले, दान का कबीला जिसका कमाँडर अखियज़र बिन अम्मीशद्दी था, 26 और जिसके 62,700 फौजी थे। 27 दूसरे, आशर का कबीला जिसका कमाँडर फ़जियेल बिन अकरान था, 28 और जिसके 41,500 फौजी थे। 29 तीसरे, नफ़ताली का कबीला जिसका कमाँडर अख़ीरा बिन एनान था, 30 और जिसके 53,400 फौजी थे। 31 तीनों कबीलों की कुल तादाद 1,57,600 थी। वह आखिर में अपना अलम उठाकर रवाना होते थे।

32 पूरी खैमागाह के फौजियों की कुल तादाद 6,03,550 थी। 33 सिर्फ़ लावी इस तादाद में शामिल नहीं थे, क्योंकि रब ने मूसा को हुक्म दिया था कि उनकी भरती न की जाए।

34 यों इसराईलियों ने सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक़ किया जो रब ने मूसा को दी थीं। उनके मुताबिक़ ही वह अपने झंडों के इर्दगिर्द अपने खैमे लगाते थे और उनके मुताबिक़ ही अपने कुंबों और आबाई घरानों के साथ रवाना होते थे।

3

हासून के बेटे

1 यह हासून और मूसा के खानदान का बयान है। उस वक़्त का ज़िक्र है जब रब ने सीना पहाड़ पर मूसा से बात की। 2 हासून के चार बेटे थे। बड़ा बेटा नदब था, फिर अबीहू, इलियज़र और इतमर। 3 यह इमाम थे जिनको मसह करके इस खिदमत का इख़्तियार दिया गया था। 4 लेकिन नदब और अबीहू उस वक़्त मर गए जब उन्होंने दशते-सीना में रब के हुज़ूर नाजायज़ आग पेश की। चूँकि वह बेऔलाद थे इसलिए हासून के जीते-जी सिर्फ़ इलियज़र और इतमर इमाम की खिदमत संरजाम देते थे।

लावियों की मकदिस में ज़िम्मादारी

5 रब ने मूसा से कहा, 6 “लावी के कबीले को लाकर हासून की खिदमत करने की ज़िम्मादारी दे। 7 उन्हें उसके लिए और पूरी जमात के लिए मुलाकात के खैमे की खिदमात सँभालना है। 8 वह मुलाकात के खैमे का सामान सँभालें और तमाम इसराईलियों के लिए मकदिस के फ़रायज़ अदा करें। 9 तमाम इसराईलियों में से सिर्फ़ लावियों को हासून और उसके बेटों की खिदमत के लिए मुकर्रर कर। 10 लेकिन सिर्फ़ हासून और उसके बेटों को इमाम की हैसियत हासिल है। जो भी बाकियों में से उनकी ज़िम्मादारियाँ उठाने की कोशिश करेगा उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी।”

11 रब ने मूसा से यह भी कहा, 12 “मैंने इसराईलियों में से लावियों को चुन लिया है। वह तमाम इसराईली पहलौठों के एवज़ मेरे लिए मखसूस हैं, 13 क्योंकि तमाम पहलौठे मेरे ही हैं। जिस दिन मैंने मिसर में तमाम पहलौठों को मार दिया उस दिन मैंने इसराईल के पहलौठों को अपने लिए मखसूस किया, खाह वह इनसान के थे या हैवान के। वह मेरे ही हैं। मैं रब हूँ।”

लावियों की मर्दमशुमारी

14 रब ने सीना के रेगिस्तान में मूसा से कहा, 15 “लावियों को गिनकर उनके आबाई घरानों और कुंबों के मुताबिक रजिस्टर में दर्ज करना। हर बेटे को गिनना है जो एक माह या इससे ज़ायद का है।” 16 मूसा ने ऐसा ही किया।

17 लावी के तीन बेटे जैरसोन, किहात और मिरारी थे। 18 जैरसोन के दो कुंबे उसके बेटों लिबनी और सिमई के नाम रखते थे। 19 किहात के चार कुंबे उसके बेटों अमराम, इज़हार, हबस्न और उज्जियेल के नाम रखते थे। 20 मिरारी के दो कुंबे उसके बेटों महली और मूशी के नाम रखते थे। ग़रज़ लावी के क़बीले के कुंबे उसके पोतों के नाम रखते थे।

21 जैरसोन के दो कुंबों बनाम लिबनी और सिमई 22 के 7,500 मर्द थे जो एक माह या इससे ज़ायद के थे। 23 उन्हें अपने ख़ैमे मगरिब में मक़दिस के पीछे लगाने थे। 24 उनका राहनुमा इलियासफ़ बिन लाएल था, 25 और वह ख़ैमे को सँभालते थे यानी उस की पोशिशें, ख़ैमे के दरवाज़े का परदा, 26 ख़ैमे और क़ुरबानगाह की चारदीवारी के परदे, चारदीवारी के दरवाज़े का परदा और तमाम रस्से। इन चीज़ों से मुताल्लिक सारी ख़िदमत उनकी ज़िम्मादारी थी।

27 किहात के चार कुंबों बनाम अमराम, इज़हार, हबस्न और उज्जियेल 28 के 8,600 मर्द थे जो एक माह या इससे ज़ायद के थे और जिनको मक़दिस की ख़िदमत करनी थी। 29 उन्हें अपने डेरे मक़दिस के जुनूब में डालने थे। 30 उनका राहनुमा इलीसफ़न बिन उज्जियेल था, 31 और वह यह चीज़ें सँभालते थे : अहद का संदूक, मेज़, शमादान, क़ुरबानगाहें, वह बरतन और साज़ो-सामान जो मक़दिस में इस्तेमाल होता था और मुक़द्दसतरीन कमरे का परदा। इन चीज़ों से मुताल्लिक सारी ख़िदमत उनकी ज़िम्मादारी थी। 32 हास्न इमाम का बेटा इलियज़र लावियों के तमाम राहनुमाओं पर मुक़र्रर था। वह उन तमाम लोगों का इंचार्ज था जो मक़दिस की देख-भाल करते थे।

33 मिरारी के दो कुंबों बनाम महली और मूशी 34 के 6,200 मर्द थे जो एक माह या इससे ज़ायद के थे। 35 उनका राहनुमा सूरियेल बिन अबीख़ैल था। उन्हें अपने डेरे मक़दिस के शिमाल में डालने थे, 36 और वह यह चीज़ें सँभालते थे : ख़ैमे के तख़्ते, उसके शहतीर, खंबे, पाए और इस तरह का सारा सामान। इन चीज़ों से मुताल्लिक सारी ख़िदमत उनकी ज़िम्मादारी थी। 37 वह चारदीवारी के खंबे, पाए, मेखें और रस्से भी सँभालते थे।

38 मूसा, हास्न और उनके बेटों को अपने डेरे मशरिक में मक़दिस के सामने डालने थे। उनकी ज़िम्मादारी मक़दिस में बनी इसराईल के लिए ख़िदमत करना थी। उनके अलावा जो भी मक़दिस में दाख़िल होने की कोशिश करता उसे सज़ाए-मौत देनी थी।

39 उन लावी मर्दों की कुल तादाद जो एक माह या इससे ज़ायद के थे 22,000 थी। रब के कहने पर मूसा और हास्न ने उन्हें कुंबों के मुताबिक गिनकर रजिस्टर में दर्ज किया।

लावी के क़बीले के मर्द पहलौठों के एवज़ी हैं

40 रब ने मूसा से कहा, “तमाम इसराईली पहलौठों को गिनना जो एक माह या इससे ज़ायद के हैं और उनके नाम रजिस्टर में दर्ज करना। 41 उन तमाम पहलौठों की जगह लावियों को मेरे लिए मख़सूस करना। इसी तरह इसराईलियों के मवेशियों के पहलौठों की जगह लावियों के मवेशी मेरे लिए मख़सूस करना। मैं रब हूँ।” 42 मूसा ने ऐसा ही किया जैसा रब ने उसे हुक्म दिया। उसने तमाम इसराईली पहलौठे 43 जो एक माह या इससे ज़ायद के थे गिन लिए। उनकी कुल तादाद 22,273 थी।

44 रब ने मूसा से कहा, 45 “मुझे तमाम इसराईली पहलौठों की जगह लावियों को पेश करना। इसी तरह मुझे इसराईलियों के मवेशियों की जगह लावियों के मवेशी पेश करना। लावी मेरे ही हैं। मैं रब हूँ। 46 लावियों की निसबत बाक़ी इसराईलियों के 273 पहलौठे ज़्यादा हैं। उनमें से 47 हर एक के एवज़ चाँदी के पाँच सिक्के ले जो मक़दिस के वज़न के मुताबिक हों (फ़ी सिक्का तक्करीबन 11 ग्राम)। 48 यह पैसे हास्न और उसके बेटों को देना।”

49 मूसा ने ऐसा ही किया। 50 यों उसने चाँदी के 1,365 सिक्के (तक्करीबन 16 किलोग्राम) जमा करके 51 हास्न और उसके बेटों को दिए, जिस तरह रब ने उसे हुक्म दिया था।

4

क्रिहातियों की ज़िम्मादारियाँ

1 रब ने मूसा और हास्न से कहा, 2 “लावी के क़बीले में से क्रिहातियों की मर्दमशुमारी उनके कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक करना। 3 उन तमाम मर्दों को रजिस्टर में दर्ज करना जो 30 से लेकर 50 साल के हैं और मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत करने के लिए आ सकते हैं। 4 क्रिहातियों की ख़िदमत मुक़द्दसतरीन कमरे की देख-भाल है।

5 जब ख़ैमे को सफ़र के लिए समेटना है तो हास्न और उसके बेटे दाख़िल होकर मुक़द्दसतरीन कमरे का परदा उतारें और उसे शरीअत के संदूक पर डाल दें। 6 इस पर वह तख़स की खालों का गिलाफ़ और आखिर में पूरी तरह नीले रंग का कपड़ा बिछाएँ। इसके बाद वह संदूक को उठाने की लकड़ियाँ लगाएँ।

7 वह उस मेज़ पर भी नीले रंग का कपड़ा बिछाएँ जिस पर रब को रोटी पेश की जाती है। उस पर थाल, प्याले, मै की नज़रें पेश करने के बरतन और मरतबान रखे जाएँ। जो रोटी हमेशा मेज़ पर होती है वह भी उस पर रहे। 8 हास्न और उसके बेटे इन तमाम चीज़ों पर क्रिमिज़ी रंग का कपड़ा बिछाकर आखिर में उनके ऊपर तख़स की खालों का गिलाफ़ डालें। इसके बाद वह मेज़ को उठाने की लकड़ियाँ लगाएँ।

9 वह शमादान और उसके सामान पर यानी उसके चराग, बत्ती कतरने की कैचियों, जलते कोयले के छोटे बरतनों और तेल के बरतनों पर नीले रंग का कपड़ा रखें। 10 यह सब कुछ वह तखस की खालों के गिलाफ में लपेटें और उसे उठाकर ले जाने के लिए एक चौखटे पर रखें।

11 वह बखूर जलाने की सोने की कुरबानगाह पर भी नीले रंग का कपड़ा बिछाकर उस पर तखस की खालों का गिलाफ डालें और फिर उसे उठाने की लकड़ियाँ लगाएँ। 12 वह सारा सामान जो मुकद्दस कमरे में इस्तेमाल होता है लेकर नीले रंग के कपड़े में लपेटें, उस पर तखस की खालों का गिलाफ डालें और उसे उठाकर ले जाने के लिए एक चौखटे पर रखें।

13 फिर वह जानवरों को जलाने की कुरबानगाह को राख से साफ करके उस पर अरगवानी रंग का कपड़ा बिछाएँ। 14 उस पर वह कुरबानगाह की खिदमत के लिए सारा ज़रूरी सामान रखें यानी छिड़काव के कटोरे, जलते हुए कोयले के बरतन, बेलचे और काँटे। इस सामान पर वह तखस की खालों का गिलाफ डालकर कुरबानगाह को उठाने की लकड़ियाँ लगाएँ।

15 सफ़र के लिए रवाना होते वक़्त यह सब कुछ उठाकर ले जाना किहातियों की ज़िम्मादारी है। लेकिन लाज़िम है कि पहले हासून और उसके बेटे यह तमाम मुकद्दस चीज़ें ढँपें। किहाती इनमें से कोई भी चीज़ न छुएँ वरना मर जाएंगे।

16 हासून इमाम का बेटा इलियज़र पूरे मुकद्दस ख़ैमे और उसके सामान का इंचार्ज हो। इसमें चरागों का तेल, बखूर, गल्ला की रोज़ाना नज़र और मसह का तेल भी शामिल है।”

17 रब ने मूसा और हासून से कहा, 18 “ख़बरदार रहो कि किहात के कुंभे लावी के क़बीले में से मिटने न पाएँ। 19 चुनाँचे जब वह मुकद्दसतरीन चीज़ों के पास आएँ तो हासून और उसके बेटे हर एक को उस सामान के पास ले जाएँ जो उसे उठाकर ले जाना है ताकि वह न मरें बल्कि जीते रहें। 20 किहाती एक लमहे के लिए भी मुकद्दस चीज़ें देखने के लिए अंदर न जाएँ, वरना वह मर जाएंगे।”

ज़ैरसोनियों की ज़िम्मादारियाँ

21 फिर रब ने मूसा से कहा, 22 “ज़ैरसोन की औलाद की मर्दुमशुमारी भी उनके आबाई घरानों और कुंभों के मुताबिक़ करना। 23 उन तमाम मर्दों को रजिस्टर में दर्ज करना जो 30 से लेकर 50 साल के हैं और मुलाकात के ख़ैमे में खिदमत के लिए आ सकते हैं। 24 वह यह चीज़ें उठाकर ले जाने के ज़िम्मादार हैं : 25 मुलाकात का ख़ैमा, उस की छत, छत पर रखी हुई तखस की खाल की पोशिश, ख़ैमे के दरवाज़े का परदा, 26 ख़ैमे और कुरबानगाह की चारदीवारी के परदे, चारदीवारी के दरवाज़े का परदा, उसके रस्से और उसे लगाने का बाक़ी सामान। वह उन तमाम कामों के ज़िम्मादार हैं जो इन चीज़ों से मुसलिक हैं। 27 ज़ैरसोनियों की पूरी खिदमत हासून और उसके बेटों की हिदायात के मुताबिक़ हो। ख़बरदार रहो कि वह सब कुछ ऐन हिदायात के मुताबिक़ उठाकर ले जाएँ। 28 यह सब मुलाकात के ख़ैमे में ज़ैरसोनियों की ज़िम्मादारियाँ हैं। इस काम में हासून इमाम का बेटा इतमर उन पर मुकर्रर है।”

मिरारियों की ज़िम्मादारियाँ

29 रब ने कहा, “मिरारी की औलाद की मर्दुमशुमारी भी उनके आबाई घरानों और कुंभों के मुताबिक़ करना। 30 उन तमाम मर्दों को रजिस्टर में दर्ज करना जो 30 से लेकर 50 साल के हैं और मुलाकात के ख़ैमे में खिदमत के लिए आ सकते हैं। 31 वह मुलाकात के ख़ैमे की यह चीज़ें उठाकर ले जाने के ज़िम्मादार हैं : दीवार के तख़्ते, शहतीर, खंभे और पाए, 32 फिर ख़ैमे की चारदीवारी के खंभे, पाए, मेखें, रस्से और यह चीज़ें लगाने का सामान। हर एक को तफ़सील से बताना कि वह क्या क्या उठाकर ले जाए। 33 यह सब कुछ मिरारियों की मुलाकात के ख़ैमे में ज़िम्मादारियों में शामिल है। इस काम में हासून इमाम का बेटा इतमर उन पर मुकर्रर हो।”

लावियों की मर्दुमशुमारी

34 मूसा, हासून और जमात के राहनुमाओं ने किहातियों की मर्दुमशुमारी उनके कुंभों और आबाई घरानों के मुताबिक़ की। 35-37 उन्होंने उन तमाम मर्दों को रजिस्टर में दर्ज किया जो 30 से लेकर 50 साल के थे और जो मुलाकात के ख़ैमे में खिदमत कर सकते थे। उनकी कुल तादाद 2,750 थी। मूसा और हासून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा की मारिफ़त फ़रमाया था। 38-41 फिर ज़ैरसोनियों की मर्दुमशुमारी उनके कुंभों और आबाई घरानों के मुताबिक़ हुई। खिदमत के लायक़ मर्दों की कुल तादाद 2,630 थी। मूसा और हासून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा के ज़रीए फ़रमाया था। 42-45 फिर मिरारियों की मर्दुमशुमारी उनके कुंभों और आबाई घरानों के मुताबिक़ हुई। खिदमत के लायक़ मर्दों की कुल तादाद 3,200 थी। मूसा और हासून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा के ज़रीए फ़रमाया था। 46-48 लावियों के उन मर्दों की कुल तादाद 8,580 थी जिन्हें मुलाकात के ख़ैमे में खिदमत करना और सफ़र करते वक़्त उसे उठाकर ले जाना था।

49 मूसा ने रब के हुक्म के मुताबिक़ हर एक को उस की अपनी अपनी ज़िम्मादारी सौंपी और उसे बताया कि उसे क्या क्या उठाकर ले जाना है। यों उनकी मर्दुमशुमारी रब के उस हुक्म के ऐन मुताबिक़ की गई जो उसने मूसा की मारिफ़त दिया था।

5

नापाक लोग ख़ैमागाह में नहीं रह सकते

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इसराईलियों को हुक्म दे कि हर उस शख्स को ख़ैमागाह से बाहर कर दो जिसको वबाई जिल्दी बीमारी है, जिसके ज़ख़मों से माए निकलता रहता है या जो किसी लाश को छूने से नापाक है। 3 ख़ाह मर्द हो या औरत, सबको ख़ैमागाह के बाहर भेज देना ताकि

वह खैमागाह को नापाक न करें जहाँ मैं तुम्हारे दरमियान सुकूनत करता हूँ।” 4 इसराईलियों ने वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा को कहा था। उन्होंने रब के हुक्म के ऐन मुताबिक इस तरह के तमाम लोगों को खैमागाह से बाहर कर दिया।

गलत काम का मुआवज़ा

5 रब ने मूसा से कहा, 6 “इसराईलियों को हिदायत देना कि जो भी किसी से गलत सुलूक करे वह मेरे साथ बेवफ़ाई करता है और कुसूरवार है, खाह मर्द हो या औरत। 7 लाज़िम है कि वह अपना गुनाह तसलीम करे और उसका पूरा मुआवज़ा दे बल्कि मुतअस्सिरा शख्स का नुक़सान पूरा करने के अलावा 20 फ़ीसद ज़्यादा दे। 8 लेकिन अगर वह शख्स जिसका कुसूर किया गया था मर चुका हो और उसका कोई वारिस न हो जो यह मुआवज़ा वसूल कर सके तो फिर उसे रब को देना है। इमाम को यह मुआवज़ा उस मेंढे के अलावा मिलेगा जो कुसूरवार अपने कफ़फ़ारा के लिए देगा। 9-10 नीज़ इमाम को इसराईलियों की कुरबानियों में से वह कुछ मिलना है जो उठानेवाली कुरबानी के तौर पर उसे दिया जाता है। यह हिस्सा सिर्फ़ इमामों को ही मिलना है।”

ज़िना के शक पर अल्लाह का फैसला

11 रब ने मूसा से कहा, 12 “इसराईलियों को बताना, हो सकता है कि कोई शादीशुदा औरत भटककर अपने शौहर से बेवफ़ा हो जाए और 13 किसी और से हमबिसतर होकर नापाक हो जाए। उसके शौहर ने उसे नहीं देखा, क्योंकि यह पोशीदगी में हुआ है और न किसी ने उसे पकड़ा, न इसका कोई गवाह है। 14 अगर शौहर को अपनी बीवी की वफ़ादारी पर शक हो और वह ग़ैरत खाने लगे, लेकिन यक़ीन से नहीं कह सकता कि मेरी बीवी कुसूरवार है कि नहीं 15 तो वह अपनी बीवी को इमाम के पास ले आए। साथ साथ वह अपनी बीवी के लिए कुरबानी के तौर पर जौ का डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा ले आए। इस पर न तेल उंडेला जाए, न बख़ूर डाला जाए, क्योंकि ग़ल्ला की यह नज़र ग़ैरत की नज़र है जिसका मक़सद है कि पोशीदा कुसूर जाहिर हो जाए। 16 इमाम औरत को करीब आने दे और रब के सामने खड़ा करे। 17 वह मिट्टी का बरतन मुक़द्दस पानी से भरकर उसमें मक़दिस के फ़र्श की कुछ खाक डाले। 18 फिर वह औरत को रब को पेश करके उसके बाल खुलवाए और उसके हाथों पर मैदे की नज़र रखे। इमाम के अपने हाथ में कड़वे पानी का वह बरतन हो जो लानत का बाइस है।

19 फिर वह औरत को कसम खिलाकर कहे, ‘अगर कोई और आदमी आपसे हमबिसतर नहीं हुआ है और आप नापाक नहीं हुई हैं तो इस कड़वे पानी की लानत का आप पर कोई असर न हो। 20 लेकिन अगर आप भटककर अपने शौहर से बेवफ़ा हो गई हैं और किसी और से हमबिसतर होकर नापाक हो गई हैं 21 तो रब आपको आपकी क़ौम के सामने लानती बनाए। आप बाँझ हो जाएँ और आपका पेट फूल जाए। 22 जब लानत का यह पानी आपके पेट में उतरे तो आप बाँझ हो जाएँ और आपका पेट फूल जाए।’ इस पर औरत कहे, ‘आमीन, ऐसा ही हो।’

23 फिर इमाम यह लानत लिखकर कागज़ को बरतन के पानी में यों धो दे कि उस पर लिखी हुई बातें पानी में घुल जाएँ। 24 बाद में वह औरत को यह पानी पिलाए ताकि वह उसके जिस्म में जाकर उसे लानत पहुँचाए। 25 लेकिन पहले इमाम उसके हाथों में से ग़ैरत की कुरबानी लेकर उसे ग़ल्ला की नज़र के तौर पर रब के सामने हिलाए और फिर कुरबानगाह के पास ले आए। 26 उस पर वह मुट्ठी-भर यादगारी की कुरबानी के तौर पर जलाए। इसके बाद वह औरत को पानी पिलाए। 27 अगर वह अपने शौहर से बेवफ़ा थी और नापाक हो गई है तो वह बाँझ हो जाएगी, उसका पेट फूल जाएगा और वह अपनी क़ौम के सामने लानती ठहरेगी। 28 लेकिन अगर वह पाक-साफ़ है तो उसे सज़ा नहीं दी जाएगी और वह बच्चे जन्म देने के काबिल रहेगी।

29-30 चुनाँचे ऐसा ही करना है जब शौहर ग़ैरत खाए और उसे अपनी बीवी पर ज़िना का शक हो। बीवी को कुरबानगाह के सामने खड़ा किया जाए और इमाम यह सब कुछ करे। 31 इस सूत में शौहर बेकुसूर ठहरेगा, लेकिन अगर उस की बीवी ने वाकई ज़िना किया हो तो उसे अपने गुनाह के नतीजे बरदाश्त करने पड़ेंगे।”

6

जो अपने आपको मख़सूस करते हैं

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इसराईलियों को हिदायत देना कि अगर कोई आदमी या औरत मन्नत मानकर अपने आपको एक मुकर्ररा वक़्त के लिए रब के लिए मख़सूस करे 3 तो वह मै या कोई और नशा-आवर चीज़ न पिए। न वह अंगूर या किसी और चीज़ का सिरका पिए, न अंगूर का रस। वह अंगूर या किशमिश न खाए। 4 जब तक वह मख़सूस है वह अंगूर की कोई भी पैदावार न खाए, यहाँ तक कि अंगूर के बीज या छिलके भी न खाए। 5 जब तक वह अपनी मन्नत के मुताबिक मख़सूस है वह अपने बाल न कटवाए। जितनी देर के लिए उसने अपने आपको रब के लिए मख़सूस किया है उतनी देर तक वह मुक़द्दस है। इसलिए वह अपने बाल बढ़ने दे। 6 जब तक वह मख़सूस है वह किसी लाश के करीब न जाए, 7 चाहे वह उसके बाप, माँ, भाई या बहन की लाश क्यों न हो। क्योंकि इससे वह नापाक हो जाएगा जबकि अभी तक उस की मख़सूसियत लंबे बालों की सूत में नज़र आती है। 8 वह अपनी मख़सूसियत के दौरान रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस है।

9 अगर कोई अचानक मर जाए जब मख़सूस शख्स उसके करीब हो तो उसके मख़सूस बाल नापाक हो जाएँगे। ऐसी सूत में लाज़िम है कि वह अपने आपको पाक-साफ़ करके सातवें दिन अपने सर को मुँडवाए। 10 आठवें दिन वह दो कुम्रियाँ या दो जवान कबूतर लेकर मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े पर आए और इमाम को दे। 11 इमाम इनमें से एक को गुनाह की कुरबानी के तौर पर चढ़ाए और दूसरे को भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर। यों वह उसके लिए कफ़फ़ारा देगा जो लाश के करीब होने से नापाक हो गया है। उसी दिन वह अपने सर को दुबारा मख़सूस

करे 12 और अपने आपको मुकर्रर वक्त के लिए दुबारा रब के लिए मखसूस करे। वह कुसूर की कुरबानी के तौर पर एक साल का भेड़ का बच्चा पेश करे। जितने दिन उसने पहले मखसूसियत की हालत में गुजारे हैं वह शुमार नहीं किए जा सकते क्योंकि वह मखसूसियत की हालत में नापाक हो गया था। वह दुबारा पहले दिन से शुरू करे।

13 शरीअत के मुताबिक जब मखसूस शख्स का मुकर्रर वक्त गुजर गया हो तो पहले उसे मुलाकात के खैमे के दरवाजे पर लाया जाए। 14 वहाँ वह रब को भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए भेड़ का एक बेऐब यकसाला नर बच्चा, गुनाह की कुरबानी के लिए एक बेऐब यकसाला भेड़ और सलामती की कुरबानी के लिए एक बेऐब मेंढा पेश करे। 15 इसके अलावा वह एक टोकरी में बेखमीरी रोटियाँ जिनमें बेहतरीन मैदा और तेल मिलाया गया हो और बेखमीरी रोटियाँ जिन पर तेल लगाया गया हो मुताल्लिका गल्ला की नज़र और मै की नज़र के साथ 16 रब को पेश करे। पहले इमाम गुनाह की कुरबानी और भस्म होनेवाली कुरबानी रब के हुज़ूर चढ़ाए। 17 फिर वह मेंढे को बेखमीरी रोटियों के साथ सलामती की कुरबानी के तौर पर पेश करे। इमाम गल्ला की नज़र और मै की नज़र भी चढ़ाए। 18 इस दौरान मखसूस शख्स मुलाकात के खैमे पर अपने मखसूस किए गए सर को मुँडवाकर तमाम बाल सलामती की कुरबानी की आग में फेंके।

19 फिर इमाम मेंढे का एक पका हुआ शाना और टोकरी में से दोनों क्रिस्मों की एक एक रोटी लेकर मखसूस शख्स के हाथों पर रखे। 20 इसके बाद वह यह चीज़ें वापस लेकर उन्हें हिलाने की कुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाए। यह एक मुकद्दस कुरबानी है जो इमाम का हिस्सा है। सलामती की कुरबानी का हिलाया हुआ सीना और उठाई हुई रान भी इमाम का हिस्सा हैं। कुरबानी के इख्तिताम पर मखसूस किए हुए शख्स को मै पीने की इजाज़त है।

21 जो अपने आपको रब के लिए मखसूस करता है वह ऐसा ही करे। लाज़िम है कि वह इन हिदायात के मुताबिक तमाम कुरबानियाँ पेश करे। अगर गुंजाइश हो तो वह और भी पेश कर सकता है। बहरहाल लाज़िम है कि वह अपनी मन्नत और यह हिदायात पूरी करे।”

इमाम की बरकत

22 रब ने मूसा से कहा, 23 “हारून और उसके बेटों को बता देना कि वह इसराईलियों को यों बरकत दें,

24 ‘रब तुझे बरकत दे और तेरी हिफाज़त करे।

25 रब अपने चेहरे का मेहरबान नूर तुझ पर चमकाए और तुझ पर रहम करे।

26 रब की नजरे-करम तुझ पर हो, और वह तुझे सलामती बख़्खे।’

27 यों वह मेरा नाम लेकर इसराईलियों को बरकत दें। फिर मैं उन्हें बरकत दूँगा।”

7

मक़दिस की मखसूसियत के हदिये

1 जिस दिन मक़दिस मुकम्मल हुआ उसी दिन मूसा ने उसे मखसूसो-मुकद्दस किया। इसके लिए उसने खैमे, उसके तमाम सामान, कुरबानगाह और उसके तमाम सामान पर तेल छिड़का। 2-3 फिर कबीलों के बारह सरदार मक़दिस के लिए हदिये लेकर आए। यह वही राहनुमा थे जिन्होंने मर्दुमशुमारी के वक्त मूसा की मदद की थी। उन्होंने छतवाली छः बैलगाडियाँ और बारह बैल खैमे के सामने रब को पेश किए, दो दो सरदारों की तरफ से एक बैलगाड़ी और हर एक सरदार की तरफ से एक बैल।

4 रब ने मूसा से कहा, 5 “यह तोहफे क़बूल करके मुलाकात के खैमे के काम के लिए इस्तेमाल कर। उन्हें लावियों में उनकी खिदमत की ज़रूरत के मुताबिक तकसीम करना।” 6 चुनौचे मूसा ने बैलगाडियाँ और बैल लावियों को दे दिए। 7 उसने दो बैलगाडियाँ चार बैलों समेत जैरसोनियों को 8 और चार बैलगाडियाँ आठ बैलों समेत मिरारियों को दी। मिरारी हारून इमाम के बेटे इतमर के तहत खिदमत करते थे। 9 लेकिन मूसा ने किहातियों को न बैलगाडियाँ और न बैल दिए। वजह यह थी कि जो मुकद्दस चीज़ें उनके सुपुर्द थीं वह उनको कंधों पर उठाकर ले जानी थीं।

10 बारह सरदार कुरबानगाह की मखसूसियत के मौके पर भी हदिये ले आए। उन्होंने अपने हदिये कुरबानगाह के सामने पेश किए। 11 रब ने मूसा से कहा, “सरदार बारह दिन के दौरान बारी बारी अपने हदिये पेश करें।” 12 पहले दिन यहदाह के सरदार नहसोन बिन अम्मीनदाब की बारी थी। उसके हदिये यह थे : 13 चाँदी का थाल जिसका वज़न डेढ़ किलोग्राम था और छिड़काव का चाँदी का कटोरा जिसका वज़न 800 ग्राम था। दोनों गल्ला की नज़र के लिए तेल के साथ मिलाए गए बेहतरीन मैदे से भरे हुए थे। 14 इनके अलावा नहसोन ने यह चीज़ें पेश कीं : सोने का प्याला जिसका वज़न 110 ग्राम था और जो बखूर से भरा हुआ था, 15 एक जवान बैल, एक मेंढा, भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए भेड़ का एक यकसाला बच्चा, 16 गुनाह की कुरबानी के लिए एक बकरा 17 और सलामती की कुरबानी के लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच बकरे और भेड़ के पाँच यकसाला बच्चे।

18-23 अगले ग्यारह दिन बाक़ी सरदार भी यही हदिये मक़दिस के पास ले आए। दूसरे दिन इशकार के सरदार नतनियेल बिन जुगर की बारी थी, 24-29 तीसरे दिन ज़बूलन के सरदार इलियाब बिन हेलोन की, 30-47 चौथे दिन रुबिन के सरदार इलीसूर बिन शदियूर की, पाँचवें दिन शमौन के सरदार सलूमियेल बिन सूरीशड़ी की, छठे दिन ज़द के सरदार इलियासफ़ बिन दऊएल की, 48-53 सातवें दिन इफ़राईम के सरदार इलीसमा बिन अम्मीहद की, 54-71 आठवें दिन मनस्सी के सरदार जमलियेल बिन फ़दाहसूर की, नवें दिन बिनयमीन के सरदार अबिदान बिन जिदैनी

की, दसवें दिन दान के सरदार अखियज़र बिन अम्मीशदी की, 72-83 ग्यारहवें दिन आशर के सरदार फ़जियेल बिन अकरान की और बारहवें दिन नफ़ताली के सरदार अख़ीरा बिन एनान की बारी थी।

84 इसराइल के इन सरदारों ने मिलकर कुरबानगाह की मख़सूसियत के लिए चाँदी के 12 थाल, छिड़काव के चाँदी के 12 कटोरे और सोने के 12 प्याले पेश किए। 85 हर थाल का वज़न डेढ़ किलोग्राम और छिड़काव के हर कटोरे का वज़न 800 ग्राम था। इन चीज़ों का कुल वज़न तक़रीबन 28 किलोग्राम था। 86 बख़ूर से भरे हुए सोने के प्यालों का कुल वज़न तक़रीबन डेढ़ किलोग्राम था (फ़ी प्याला 110 ग्राम)। 87 सरदारों ने मिलकर भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए 12 जवान बैल, 12 मेंढे और भेड़ के 12 यकसाला बच्चे उनकी गल्ला की नज़रों समेत पेश किए। गुनाह की कुरबानी के लिए उन्होंने 12 बकरे पेश किए 88 और सलामती की कुरबानी के लिए 24 बैल, 60 मेंढे, 60 बकरे और भेड़ के 60 यकसाला बच्चे। इन तमाम जानवरों को कुरबानगाह की मख़सूसियत के मौक़े पर चढ़ाया गया।

89 जब मूसा मुलाकात के ख़ैमे में रब के साथ बात करने के लिए दाख़िल होता था तो वह रब की आवाज़ अहद के संदूक के ढकने पर से यानी दो क़रूबी फ़रिशतों के दरमियान से सुनता था।

8

शमादान पर चराग़

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “हारून को बताना, ‘तुझे सात चराग़ों को शमादान पर यों रखना है कि वह शमादान का सामनेवाला हिस्सा रौशन करें’।”

3 हारून ने ऐसा ही किया। जिस तरह रब ने मूसा को हुक्म दिया था उसी तरह उसने चराग़ों को रख दिया ताकि वह सामनेवाला हिस्सा रौशन करें। 4 शमादान पाए से लेकर ऊपर की कलियों तक सोने के एक घड़े हुए टुकड़े का बना हुआ था। मूसा ने उसे उस नमूने के ऐन मुताबिक़ बनवाया जो रब ने उसे दिखाया था।

लावियों की मख़सूसियत

5 रब ने मूसा से कहा, 6 “लावियों को दीगर इसराइलियों से अलग करके पाक-साफ़ करना। 7 इसके लिए गुनाह से पाक करनेवाला पानी उन पर छिड़ककर उन्हें हुक्म देना कि अपने जिस्म के पूरे बाल मुँडवाओ और अपने कपड़े धोओ। यों वह पाक-साफ़ हो जाएंगे। 8 फिर वह एक जवान बैल चुनें और साथ की गल्ला की नज़र के लिए तेल के साथ मिलाया गया बेहतरीन मैदा लें। तू खुद भी एक जवान बैल चुन। वह गुनाह की कुरबानी के लिए होगा।

9 इसके बाद लावियों को मुलाकात के ख़ैमे के सामने खड़ा करके इसराइल की पूरी जमात को वहाँ जमा करना। 10 जब लावी रब के सामने खड़े हों तो बाक़ी इसराइली उनके सरों पर अपने हाथ रखें। 11 फिर हारून लावियों को रब के सामने पेश करें। उन्हें इसराइलियों की तरफ़ से हिलाई हुई कुरबानी की हैसियत से पेश किया जाए ताकि वह रब की खिदमत कर सकें। 12 फिर लावी अपने हाथ दोनों बैलों के सरों पर रखें। एक बैल को गुनाह की कुरबानी के तौर पर और दूसरे को भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर चढ़ाओ ताकि लावियों का कफ़फ़ारा दिया जाए।

13 लावियों को इस तरीक़े से हारून और उसके बेटों के सामने खड़ा करके रब को हिलाई हुई कुरबानी के तौर पर पेश करना है। 14 उन्हें बाक़ी इसराइलियों से अलग करने से वह मेरा हिस्सा बनेंगे। 15 इसके बाद ही वह मुलाकात के ख़ैमे में आकर खिदमत करें, क्योंकि अब वह खिदमत करने के लायक़ हैं। उन्हें पाक-साफ़ करके हिलाई हुई कुरबानी के तौर पर पेश करने का सबब यह है 16 कि लावी इसराइलियों में से वह हैं जो मुझे पूरे तौर पर दिए गए हैं। मैंने उन्हें इसराइलियों के तमाम पहलौठों की जगह ले लिया है। 17 क्योंकि इसराइल में हर पहलौठा मेरा है, खाह वह इनसान का हो या हैवान का। उस दिन जब मैंने मिसरियों के पहलौठों को मार दिया मैंने इसराइल के पहलौठों को अपने लिए मख़सूसो-मुक़द्दस किया। 18 इस सिलसिले में मैंने लावियों को इसराइलियों के तमाम पहलौठों की जगह लेकर 19 उन्हें हारून और उसके बेटों को दिया है। वह मुलाकात के ख़ैमे में इसराइलियों की खिदमत करें और उनके लिए कफ़फ़ारा का इंतज़ाम कायम रखें ताकि जब इसराइली मक़दिस के करीब आएँ तो उनको वबा से मारा न जाए।”

20 मूसा, हारून और इसराइलियों की पूरी जमात ने एहतियात से रब की लावियों के बारे में हिदायात पर अमल किया। 21 लावियों ने अपने आपको गुनाहों से पाक-साफ़ करके अपने कपड़ों को धोया। फिर हारून ने उन्हें रब के सामने हिलाई हुई कुरबानी के तौर पर पेश किया और उनका कफ़फ़ारा दिया ताकि वह पाक हो जाएँ। 22 इसके बाद लावी मुलाकात के ख़ैमे में आए ताकि हारून और उसके बेटों के तहत खिदमत करें। यों सब कुछ वैसा ही किया गया जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

23 रब ने मूसा से यह भी कहा, 24 “लावी 25 साल की उम्र में मुलाकात के ख़ैमे में अपनी खिदमत शुरू करें 25 और 50 साल की उम्र में रिटायर हो जाएँ। 26 इसके बाद वह मुलाकात के ख़ैमे में अपने भाइयों की मदद कर सकते हैं, लेकिन खुद खिदमत नहीं कर सकते। तुझे लावियों को इन हिदायात के मुताबिक़ उनकी अपनी अपनी जिम्मादारियाँ देनी हैं।”

9

रेगिस्तान में ईदे-फ़सह

1 इसराइलियों को मिसर से निकले एक साल हो गया था। दूसरे साल के पहले महीने में रब ने दशते-सीना में मूसा से बात की।

2 “लाज़िम है कि इसराईली ईदे-फ़सह को मुकर्ररा वक़्त पर मनाएँ, 3 यानी इस महीने के चौधवें दिन, सूरज के ग़रूब होने के ऐन बाद। उसे तमाम क़वायद के मुताबिक़ मनाना।” 4 चुनौचे मूसा ने इसराईलियों से कहा कि वह ईदे-फ़सह मनाएँ, 5 और उन्होंने ऐसा ही किया। उन्होंने ईदे-फ़सह को पहले महीने के चौधवें दिन सूरज के ग़रूब होने के ऐन बाद मनाया। उन्होंने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

6 लेकिन कुछ आदमी नापाक थे, क्योंकि उन्होंने लाश छू ली थी। इस वजह से वह उस दिन ईदे-फ़सह न मना सके। वह मूसा और हारून के पास आकर 7 कहने लगे, “हमने लाश छू ली है, इसलिए नापाक हैं। लेकिन हमें इस सबब से ईदे-फ़सह को मनाने से क्यों रोका जाए? हम भी मुकर्ररा वक़्त पर बाक़ी इसराईलियों के साथ रब की क़ुरबानी पेश करना चाहते हैं।” 8 मूसा ने जवाब दिया, “यहाँ मेरे इंतज़ार में खड़े रहो। मैं मालूम करता हूँ कि रब तुम्हारे बारे में क्या हुक्म देता है।”

9 रब ने मूसा से कहा, 10 “इसराईलियों को बता देना कि अगर तुम या तुम्हारी औलाद में से कोई ईदे-फ़सह के दौरान लाश छूने से नापाक हो या किसी दूर-दराज़ इलाक़े में सफ़र कर रहा हो, तो भी वह ईद मना सकता है। 11 ऐसा शख्स उसे ऐन एक माह के बाद मनाकर लेले के साथ बेख़मीरी रोटी और कड़वा साग-पात खाए। 12 खाने में से कुछ भी अगली सुबह तक बाक़ी न रहे। जानवर की कोई भी हड्डी न तोड़ना। मनानेवाला ईदे-फ़सह के पूरे फ़रायज़ अदा करे। 13 लेकिन जो पाक होने और सफ़र न करने के बावजूद भी ईदे-फ़सह को न मनाए उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाए, क्योंकि उसने मुकर्ररा वक़्त पर रब को क़ुरबानी पेश नहीं की। उस शख्स को अपने गुनाह का नतीजा भुगतना पड़ेगा। 14 अगर कोई परदेसी तुम्हारे दरमियान रहते हुए रब के सामने ईदे-फ़सह मनाना चाहे तो उसे इजाज़त है। शर्त यह है कि वह पूरे फ़रायज़ अदा करे। परदेसी और देसी के लिए ईदे-फ़सह मनाने के फ़रायज़ एक जैसे हैं।”

मुलाक़ात के ख़ैमे पर बादल का सतून

15 जिस दिन शरीअत के मुक़द्दस ख़ैमे को खड़ा किया गया उस दिन बादल आकर उस पर छा गया। रात के वक़्त बादल आग की सूरत में नज़र आया। 16 इसके बाद यही सूरते-हाल रही कि बादल उस पर छाया रहता और रात के दौरान आग की सूरत में नज़र आता। 17 जब भी बादल ख़ैमे पर से उठता इसराईली रवाना हो जाते। जहाँ भी बादल उतर जाता वहाँ इसराईली अपने डेरे डालते। 18 इसराईली रब के हुक्म पर रवाना होते और उसके हुक्म पर डेरे डालते। जब तक बादल मक़दिस पर छाया रहता उस वक़्त तक वह वहीं ठहरते। 19 कभी कभी बादल बड़ी देर तक ख़ैमे पर ठहरा रहता। तब इसराईली रब का हुक्म मानकर रवाना न होते। 20 कभी कभी बादल सिर्फ़ दो-चार दिन के लिए ख़ैमे पर ठहरता। फिर वह रब के हुक्म के मुताबिक़ ही ठहरते और रवाना होते थे। 21 कभी कभी बादल सिर्फ़ शाम से लेकर सुबह तक ख़ैमे पर ठहरता। जब वह सुबह के वक़्त उठता तो इसराईली भी रवाना होते थे। जब भी बादल उठता वह भी रवाना हो जाते। 22 जब तक बादल मुक़द्दस ख़ैमे पर छाया रहता उस वक़्त तक इसराईली रवाना न होते, चाहे वह दो दिन, एक माह, एक साल या इससे ज़्यादा अरसा मक़दिस पर छाया रहता। लेकिन जब वह उठता तो इसराईली भी रवाना हो जाते। 23 वह रब के हुक्म पर ख़ैमे लगाते और उसके हुक्म पर रवाना होते थे। वह वैसा ही करते थे जैसा रब मूसा की मारिफ़त फ़रमाता था।

10

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “चाँदी के दो बिगुल घड़कर बनवा ले। उन्हें जमात को जमा करने और कबीलों को रवाना करने के लिए इस्तेमाल कर। 3 जब दोनों को देर तक बजाया जाए तो पूरी जमात मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर आकर तेरे सामने जमा हो जाए। 4 लेकिन अगर एक ही बजाया जाए तो सिर्फ़ कुंभों के बुजुर्ग तेरे सामने जमा हो जाएँ। 5 अगर उनकी आवाज़ सिर्फ़ थोड़ी देर के लिए सुनाई दे तो मक़दिस के मशरिक में मौजूद कबीले रवाना हो जाएँ। 6 फिर जब उनकी आवाज़ दूसरी बार थोड़ी देर के लिए सुनाई दे तो मक़दिस के जुनूब में मौजूद कबीले रवाना हो जाएँ। जब उनकी आवाज़ थोड़ी देर के लिए सुनाई दे तो यह रवाना होने का एलान होगा। 7 इसके मुकाबले में जब उनकी आवाज़ देर तक सुनाई दे तो यह इस बात का एलान होगा कि जमात जमा हो जाए।

8 बिगुल बजाने की ज़िम्मादारी हारून के बेटों यानी इमामों को दी जाए। यह तुम्हारे और आनेवाली नसलों के लिए दायमी उसूल हो। 9 उनकी आवाज़ उस वक़्त भी थोड़ी देर के लिए सुना दो जब तुम अपने मुल्क में किसी ज़ालिम दुश्मन से जंग लड़ने के लिए निकलोगे। तब रब तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें याद करके दुश्मन से बचाएगा।

10 इसी तरह उनकी आवाज़ मक़दिस में ख़ुशी के मौकों पर सुनाई दे यानी मुकर्ररा ईदों और नए चाँद की ईदों पर। इन मौकों पर वह भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ और सलामती की क़ुरबानियाँ चढ़ाते वक़्त बजाए जाएँ। फिर तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें याद करेगा। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।”

सीना पहाड़ से रवानगी

11 इसराईलियों को मिसर से निकले एक साल से ज़ायद अरसा हो चुका था। दूसरे महीने के बीसवें दिन बादल मुलाक़ात के ख़ैमे पर से उठा। 12 फिर इसराईली मुकर्ररा तरतीब के मुताबिक़ दशते-सीना से रवाना हुए। चलते चलते बादल फ़ारान के रेगिस्तान में उतर आया।

13 उस वक़्त वह पहली दफ़ा उस तरतीब से रवाना हुए जो रब ने मूसा की मारिफ़त मुकर्रर की थी। 14 पहले यहदाह के कबीले के तीन दस्ते अपने अलम के तहत चल पड़े। तीनों का कमाँडर नहसोन बिन अम्मीनदाब था। 15 साथ चलनेवाले कबीले इशकार का कमाँडर नतनियेल बिन जुगर था। 16 जबलून का कबीला भी साथ चला जिसका कमाँडर इलियाब बिन हेलोन था। 17 इसके बाद मुलाक़ात का ख़ैमा उतारा गया।

जैरसोनी और मिरारी उसे उठाकर चल दिए। 18 इन लावियों के बाद रुबिन के कबीले के तीन दस्ते अपने अलम के तहत चलने लगे। तीनों का कमाँडर इलीसूर बिन शदियूर था। 19 साथ चलनेवाले कबीले शमौन का कमाँडर सलूमियेल बिन सूरीशदी था। 20 जद का कबीला भी साथ चला जिसका कमाँडर इलियासफ बिन दऊएल था। 21 फिर लावियों में से क्रिहाती मकदिस का सामान उठाकर रवाना हुए। लाज़िम था कि उनके अगली मनज़िल पर पहुँचने तक मुलाकात का खैमा लगा दिया गया हो। 22 इसके बाद इफ़राईम के कबीले के तीन दस्ते अपने अलम के तहत चल दिए। उनका कमाँडर इलीसमा बिन अम्मीहद था। 23 इफ़राईम के साथ चलनेवाले कबीले मनस्सी का कमाँडर जमलियेल बिन फ़दाहसूर था। 24 बिनयमीन का कबीला भी साथ चला जिसका कमाँडर अबिदान बिन जिदौनी था। 25 आखिर में दान के तीन दस्ते अक़बी मुहाफ़िज़ के तौर पर अपने अलम के तहत रवाना हुए। उनका कमाँडर अख़ियज़र बिन अम्मीशदी था। 26 दान के साथ चलनेवाले कबीले आशर का कमाँडर फ़जियेल बिन अकरान था। 27 नफ़ताली का कबीला भी साथ चला जिसका कमाँडर अख़ीरा बिन एनान था। 28 इसराईली इसी तरतीब से रवाना हुए।

मूसा होबाब को साथ चलने पर मजबूर करता है

29 मूसा ने अपने मिदियानी सुसर रऊएल यानी यितरो के बेटे होबाब से कहा, “हम उस जगह के लिए रवाना हो रहे हैं जिसका वादा रब ने हमसे किया है। हमारे साथ चलें! हम आप पर एहसान करेंगे, क्योंकि रब ने इसराईल पर एहसान करने का वादा किया है।” 30 लेकिन होबाब ने जवाब दिया, “मैं साथ नहीं जाऊँगा बल्कि अपने मुल्क और रिश्तेदारों के पास वापस चला जाऊँगा।” 31 मूसा ने कहा, “मेहरबानी करके हमें न छोड़ें। क्योंकि आप ही जानते हैं कि हम रेगिस्तान में कहाँ कहाँ अपने डेरे डाल सकते हैं। आप रेगिस्तान में हमें रास्ता दिखा सकते हैं। 32 अगर आप हमारे साथ जाएँ तो हम आपको उस एहसान में शरीक करेंगे जो रब हम पर करेगा।”

अहद के संदूक का सफ़र

33 चुनौचे उन्होंने रब के पहाड़ से रवाना होकर तीन दिन सफ़र किया। इस दौरान रब का अहद का संदूक उनके आगे आगे चला ताकि उनके लिए आराम करने की जगह मालूम करे। 34 जब कभी वह रवाना होते तो रब का बादल दिन के वक़्त उनके ऊपर रहता। 35 संदूक के रवाना होते वक़्त मूसा कहता, “ऐ रब, उठ। तेरे दुश्मन तितर-बितर हो जाएँ। तुझसे नफ़रत करनेवाले तेरे सामने से फ़रार हो जाएँ।” 36 और जब भी वह रुक जाता तो मूसा कहता, “ऐ रब, इसराईल के हज़ारों ख़ानदानों के पास वापस आ।”

11

तबएरा में रब की आग

1 एक दिन लोग ख़ूब शिकायत करने लगे। जब यह शिकायतें रब तक पहुँचीं तो उसे गुस्सा आया और उस की आग उनके दरमियान भड़क उठी। जलते जलते उसने ख़ैमागाह का एक किनारा भस्म कर दिया। 2 लोग मदद के लिए मूसा के पास आकर चिल्लाने लगे तो उसने रब से दुआ की, और आग बुझ गई। 3 उस मक़ाम का नाम तबएरा यानी जलना पड़ गया, क्योंकि रब की आग उनके दरमियान जल उठी थी।

मूसा 70 राहनुमा चुनता है

4 इसराईलियों के साथ जो अजनबी सफ़र कर रहे थे वह गोश्त खाने की शदीद आरज़ू करने लगे। तब इसराईली भी रो पड़े और कहने लगे, “कौन हमें गोश्त खिलाएगा? 5 मिसर में हम मछली मुफ़्त खा सकते थे। हाय, वहाँ के खीर, तरबूज़, गंदने, प्याज़ और लहसन कितने अच्छे थे! 6 लेकिन अब तो हमारी जान सूख गई है। यहाँ बस मन ही मन नज़र आता रहता है।”

7 मन धनिये के दानों की मानिंद था, और उसका रंग गूगल के गूँद की मानिंद था। 8-9 रात के वक़्त वह ख़ैमागाह में ओस के साथ ज़मीन पर गिरता था। सुबह के वक़्त लोग इधर उधर घुमते-फिरते हुए उसे जमा करते थे। फिर वह उसे चक्की में पीसकर या उखली में कूटकर उबालते या रोटी बनाते थे। उसका जायक़ा ऐसी रोटी का-सा था जिसमें जैतून का तेल डाला गया हो।

10 तमाम खानदान अपने अपने ख़ैमे के दरवाज़े पर रोने लगे तो रब को शदीद गुस्सा आया। उनका शोर मूसा को भी बहुत बुरा लगा। 11 उसने रब से पूछा, “तूने अपने खादिम के साथ इतना बुरा सुलूक क्यों किया? मैंने किस काम से तुझे इतना नाराज़ किया कि तूने इन तमाम लोगों का बोझ मुझ पर डाल दिया? 12 क्या मैंने हामिला होकर इस पूरी क्रौम को जन्म दिया कि तू मुझसे कहता है, ‘इसे उस तरह उठाकर ले चलना जिस तरह आया शीरख़ार बच्चे को उठाकर हर जगह साथ लिए फिरती है। इसी तरह इसे उस मुल्क में ले जाना जिसका वादा मैंने कसम खाकर इनके बापदादा से किया है।’ 13 ऐ अल्लाह, मैं इन तमाम लोगों को कहाँ से गोश्त मुहैया करूँ? वह मेरे सामने रोते रहते हैं कि हमें खाने के लिए गोश्त दो। 14 मैं अकेला इन तमाम लोगों की ज़िम्मादारी नहीं उठा सकता। यह बोझ मेरे लिए हद से ज़्यादा भारी है। 15 अगर तू इस पर इसरार करे तो फिर बेहतर है कि अभी मुझे मार दे ताकि मैं अपनी तबाही न देखूँ।”

16 जवाब में रब ने मूसा से कहा, “मेरे पास इसराईल के 70 बुजुर्ग जमा कर। सिर्फ़ ऐसे लोग चुन जिनके बारे में तुझे मालूम है कि वह लोगों के बुजुर्ग और निगहबान हैं। उन्हें मुलाकात के ख़ैमे के पास ले आ। वहाँ वह तेरे साथ खड़े हो जाएँ, 17 तो मैं उतरकर तेरे साथ हमकलाम हूँगा। उस वक़्त मैं उस रूह में से कुछ लूँगा जो मैंने तुझ पर नाज़िल किया था और उसे उन पर नाज़िल करूँगा। तब वह क्रौम का बोझ उठाने में तेरी मदद करेंगे और तू इसमें अकेला नहीं रहेगा। 18 लोगों को बताना, ‘अपने आपको मख़सूसो-मुक़द्दस करो, क्योंकि कल तुम गोश्त खाओगे।’

रब ने तुम्हारी सुनी जब तुम रो पड़े कि कौन हमें गोश्त खिलाएगा, मिसर में हमारी हालत बेहतर थी। अब रब तुम्हें गोश्त मुहैया करेगा और तुम उसे खाओगे। 19 तुम उसे न सिर्फ एक, दो या पाँच दिन खाओगे बल्कि 10 या 20 दिन से भी ज्यादा अरसे तक। 20 तुम एक पूरा महीना खूब गोश्त खाओगे, यहाँ तक कि वह तुम्हारी नाक से निकलेगा और तुम्हें उससे घिन आएगी। और यह इस सबब से होगा कि तुमने रब को जो तुम्हारे दरमियान है रद्द किया और रोते रोते उसके सामने कहा कि हम क्यों मिसर से निकले।”

21 लेकिन मूसा ने एतराज किया, “अगर कौम के पैदल चलनेवाले गिने जाएँ तो छः लाख हैं। तू किस तरह हमें एक माह तक गोश्त मुहैया करेगा? 22 क्या गाय-बैलों या भेड़-बकरियों को इतनी मिकदार में ज़बह किया जा सकता है कि काफी हो? अगर समुंदर की तमाम मछलियाँ उनके लिए पकड़ी जाएँ तो क्या काफी होंगी?”

23 रब ने कहा, “क्या रब का इख्तियार कम है? अब तू खुद देख लेगा कि मेरी बातें दुस्त हैं कि नहीं।”

24 चुनौचे मूसा ने वहाँ से निकलकर लोगों को रब की यह बातें बताईं। उसने उनके बुजुर्गों में से 70 को चुनकर उन्हें मुलाकात के ख़ैमे के इर्दगिर्द खड़ा कर दिया। 25 तब रब बादल में उतरकर मूसा से हमकलाम हुआ। जो रूह उसने मूसा पर नाज़िल किया था उसमें से उसने कुछ लेकर उन 70 बुजुर्गों पर नाज़िल किया। जब रूह उन पर आया तो वह नबुव्वत करने लगे। लेकिन ऐसा फिर कभी न हुआ।

26 अब ऐसा हुआ कि इन सत्तर बुजुर्गों में से दो ख़ैमागाह में रह गए थे। उनके नाम इलदाद और मेदाद थे। उन्हें चुना तो गया था लेकिन वह मुलाकात के ख़ैमे के पास नहीं आए थे। इसके बावजूद रूह उन पर भी नाज़िल हुआ और वह ख़ैमागाह में नबुव्वत करने लगे। 27 एक नौजवान भागकर मूसा के पास आया और कहा, “इलदाद और मेदाद ख़ैमागाह में ही नबुव्वत कर रहे हैं।”

28 यशुअ बिन नून जो जवानी से मूसा का मददगार था बोल उठा, “मूसा मेरे आका, उन्हें रोक दें!” 29 लेकिन मूसा ने जवाब दिया, “क्या तू मेरी खातिर ग़ैरत खा रहा है? काश रब के तमाम लोग नबी होते और वह उन सब पर अपना रूह नाज़िल करता!” 30 फिर मूसा और इसराईल के बुजुर्ग ख़ैमागाह में वापस आए।

31 तब रब की तरफ़ से जोरदार हवा चलने लगी जिसने समुंदर को पार करनेवाले बटेरों के गोल धकेलकर ख़ैमागाह के इर्दगिर्द ज़मीन पर फेंक दिए। उनके गोल तीन फुट ऊँचे और ख़ैमागाह के चारों तरफ़ 30 किलोमीटर तक पड़े रहे। 32 उस पूरे दिन और रात और अगले पूरे दिन लोग निकलकर बटेरों जमा करते रहे। हर एक ने कम अज़ कम दस बड़ी टोकरियाँ भर लीं। फिर उन्होंने उनका गोश्त ख़ैमे के इर्दगिर्द ज़मीन पर फैला दिया ताकि वह ख़ुश्क हो जाए।

33 लेकिन गोश्त के पहले टुकड़े अभी मुँह में थे कि रब का ग़ज़ब उन पर आन पड़ा, और उसने उनमें सख़्त वबा फैलने दी। 34 चुनौचे मक़ाम का नाम क़ब्रोट-हत्तावा यानी ‘लालच की क़ब्रें’ रखा गया, क्योंकि वहाँ उन्होंने उन लोगों को दफ़न किया जो गोश्त के लालच में आ गए थे।

35 इसके बाद इसराईली क़ब्रोट-हत्तावा से रवाना होकर हसीरात पहुँच गए। वहाँ वह ख़ैमाज़न हुए।

12

मरियम और हारून की मुखालफ़त

1 एक दिन मरियम और हारून मूसा के खिलाफ़ बातें करने लगे। वजह यह थी कि उसने कूश की एक औरत से शादी की थी। 2 उन्होंने पूछा, “क्या रब सिर्फ़ मूसा की मारिफ़त बात करता है? क्या उसने हमसे भी बात नहीं की?” रब ने उनकी यह बातें सुनीं।

3 लेकिन मूसा निहायत हलीम था। दुनिया में उस जैसा हलीम कोई नहीं था। 4 अचानक रब मूसा, हारून और मरियम से मुखातिब हुआ, “तुम तीनों बाहर निकलकर मुलाकात के ख़ैमे के पास आओ।”

तीनों वहाँ पहुँचे। 5 तब रब बादल के सत्तन में उतरकर मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े पर खड़ा हुआ। उसने हारून और मरियम को बुलाया तो दोनों आए। 6 उसने कहा, “मेरी बात सुनो। जब तुम्हारे दरमियान नबी होता है तो मैं अपने आपको रोया में उस पर जाहिर करता हूँ या ख़ाब में उससे मुखातिब होता हूँ। 7 लेकिन मेरे खादिम मूसा की ओर बात है। उसे मैंने अपने पूरे घराने पर मुकर्रर किया है। 8 उससे मैं रूबरू हमकलाम होता हूँ। उससे मैं मुअम्मों के ज़रीए नहीं बल्कि साफ़ साफ़ बात करता हूँ। वह रब की सूरत देखता है। तो फिर तुम मेरे खादिम के खिलाफ़ बातें करने से क्यों न डरे?”

9 रब का ग़ज़ब उन पर आन पड़ा, और वह चला गया। 10 जब बादल का सत्तन ख़ैमे से दूर हुआ तो मरियम की जिल्द बर्फ़ की मानिंद सफ़ेद थी। वह कोढ़ का शिकार हो गई थी। हारून उस की तरफ़ मुड़ा तो उस की हालत देखी 11 और मूसा से कहा, “मेरे आका, मेहरबानी करके हमें इस गुनाह की सज़ा न दें जो हमारी हमाक़त के बाइस सरज़द हुआ है। 12 मरियम को इस हालत में न छोड़ें। वह तो ऐसे बच्चे की मानिंद है जो मुरदा पैदा हुआ हो, जिसके ज़िस्म का आधा हिस्सा गल चुका हो।”

13 तब मूसा ने पुकारकर रब से कहा, “ऐ अल्लाह, मेहरबानी करके उसे शफ़ा दे।” 14 रब ने जवाब में मूसा से कहा, “अगर मरियम का बाप उसके मुँह पर थूकता तो क्या वह पूरे हफ़ते तक शर्म महसूस न करती? उसे एक हफ़ते के लिए ख़ैमागाह के बाहर बंद रख। इसके बाद उसे वापस लाया जा सकता है।”

15 चुनौचे मरियम को एक हफ़ते के लिए ख़ैमागाह के बाहर बंद रखा गया। लोग उस वक़्त तक सफ़र के लिए रवाना न हुए जब तक उसे वापस न लाया गया। 16 जब वह वापस आई तो इसराईली हसीरात से रवाना होकर फ़ारान के रेगिस्तान में ख़ैमाज़न हुए।

13

मुल्के-कनान में इसराईली जासूस

1 फिर रब ने मूसा से कहा, 2 “कुछ आदमी मुल्के-कनान का जायज़ा लेने के लिए भेज दे, क्योंकि मैं उसे इसराईलियों को देने को हूँ। हर कबीले में से एक राहनुमा को चुनकर भेज दे।”

3 मूसा ने रब के कहने पर उन्हें दशते-फारान से भेजा। सब इसराईली राहनुमा थे। 4 उनके नाम यह हैं :

रूबिन के कबीले से सम्मुअ बिन जक्कूर,

5 शमौन के कबीले से साफ़त बिन होरी,

6 यहदाह के कबीले से कालिब बिन यफ़ुन्ना,

7 इशकार के कबीले से इजाल बिन यूसुफ़,

8 इफ़राईम के कबीले से होसेअ बिन नून,

9 बिनयमीन के कबीले से फ़लती बिन रफ़ू,

10 ज़बूलून के कबीले से ज़दियेल बिन सोदी,

11 यूसुफ़ के बेटे मनस्सी के कबीले से जिदी बिन सूसी,

12 दान के कबीले से अम्मियेल बिन जमल्ली,

13 आशर के कबीले से सतूर बिन मीकाएल,

14 नफ़ताली के कबीले से नखबी बिन वुफ़सी,

15 जद के कबीले से जियुएल बिन माकी।

16 मूसा ने इन्हीं बारह आदमियों को मुल्क का जायज़ा लेने के लिए भेजा। उसने होसेअ का नाम यशुअ यानी ‘रब नजात है’ में बदल दिया।

17 उन्हें रखसत करने से पहले उसने कहा, “दशते-नजब से गुज़रकर पहाड़ी इलाके तक पहुँचो। 18 मालूम करो कि यह किस तरह का मुल्क है और उसके बाशिंदे कैसे हैं। क्या वह ताक़तवर हैं या कमज़ोर, तादाद में कम हैं या ज़्यादा? 19 जिस मुल्क में वह बसते हैं क्या वह अच्छा है कि नहीं? वह किस क्रिस्म के शहरों में रहते हैं? क्या उनकी चारदीवारियाँ हैं कि नहीं? 20 मुल्क की ज़मीन ज़रखेज़ है या बंजर? उसमें दरख़्त हैं कि नहीं? और ज़ुरत करके मुल्क का कुछ फल चुनकर ले आओ।” उस वक़्त पहले अंगूर पक गए थे।

21 चुनौचे इन आदमियों ने सफ़र करके दशते-सीन से रहोब तक मुल्क का जायज़ा लिया। रहोब लबो-हमात के करीब है। 22 वह दशते-नजब से गुज़रकर हब्रून पहुँचे जहाँ अनाक के बेटे अखीमान, सीसी और तलमी रहते थे। (हब्रून को मिसर के शहर जुअन से सात साल पहले तामीर किया गया था)। 23 जब वह वादीए-इसकाल तक पहुँचे तो उन्होंने एक डाली काट ली जिस पर अंगूर का गुच्छा लगा हुआ था। दो आदमियों ने यह अंगूर, कुछ अनार और कुछ अंजीर लाठी पर लटकाए और उसे उठाकर चल पड़े। 24 उस जगह का नाम उस गुच्छे के सबब से जो इसराईलियों ने वहाँ से काट लिया इसकाल यानी गुच्छा रखा गया।

25 चालीस दिन तक मुल्क का खोज लगाते लगाते वह लौट आए। 26 वह मूसा, हासून और इसराईल की पूरी जमात के पास आए जो दशते-फारान में कादिस की जगह पर इंतज़ार कर रहे थे। वहाँ उन्होंने सब कुछ बताया जो उन्होंने मालूम किया था और उन्हें वह फल दिखाए जो लेकर आए थे। 27 उन्होंने मूसा को रिपोर्ट दी, “हम उस मुल्क में गए जहाँ आपने हमें भेजा था। वाकई उस मुल्क में दूध और शहद की कसरत है। यहाँ हमारे पास उसके कुछ फल भी हैं। 28 लेकिन उसके बाशिंदे ताक़तवर हैं। उनके शहरों की फ़सीलें हैं, और वह निहायत बड़े हैं। हमने वहाँ अनाक की औलाद भी देखी। 29 अमालीकी दशते-नजब में रहते हैं जबकि हिती, यबूसी और अमोरी पहाड़ी इलाके में आबाद हैं। कनानी साहिली इलाके और दरियाए-यरदन के किनारे किनारे बसते हैं।”

30 कालिब ने मूसा के सामने जमाशुदा लोगों को इशारा किया कि वह ख़ामोश हो जाएँ। फिर उसने कहा, “आएँ, हम मुल्क में दाखिल हो जाएँ और उस पर क़ब्ज़ा कर लें, क्योंकि हम यक़ीनन यह करने के क़ाबिल हैं।” 31 लेकिन दूसरे आदमियों ने जो उसके साथ मुल्क को देखने गए थे कहा, “हम उन लोगों पर हमला नहीं कर सकते, क्योंकि वह हमसे ताक़तवर हैं।” 32 उन्होंने इसराईलियों के दरमियान उस मुल्क के बारे में ग़लत अफ़वाहें फैलाई जिसकी तफ़्तीश उन्होंने की थी। उन्होंने कहा, “जिस मुल्क में से हम गुज़रे ताकि उसका जायज़ा लें वह अपने बाशिंदों को हड़प कर लेता है। जो भी उसमें रहता है निहायत दराज़कद है। 33 हमने वहाँ देवक़ामत अफ़राद भी देखे। (अनाक के बेटे देवक़ामत के अफ़राद की औलाद थे)। उनके सामने हम अपने आपको टिढ़ी जैसा महसूस कर रहे थे, और हम उनकी नज़र में ऐसे थे भी।”

14

लोग कनान में दाखिल नहीं होना चाहते

1 उस रात तमाम लोग चीखें मार मारकर रोते रहे। 2 सब मूसा और हासून के खिलाफ़ बुड़बुड़ाने लगे। पूरी जमात ने उनसे कहा, “काश हम मिसर या इस रेगिस्तान में मर गए होते! 3 रब हमें क्यों उस मुल्क में ले जा रहा है? क्या इसलिए कि दुश्मन हमें तलवार से क़त्ल करे और हमारे बाल-बच्चों को लूट ले? क्या बेहतर नहीं होगा कि हम मिसर वापस जाएँ?” 4 उन्होंने एक दूसरे से कहा, “आओ, हम राहनुमा चुनकर मिसर वापस चले जाएँ।”

5 तब मूसा और हारून पूरी जमात के सामने मुँह के बल गिरे। 6 लेकिन यशुअ बिन नून और कालिब बिन यफुन्ना बाक्री दस जासूसों से फरक थे। परेशानी के आलम में उन्होंने अपने कपड़े फाड़कर 7 पूरी जमात से कहा, “जिस मुल्क में से हम गुजरे और जिसकी तफतीश हमने की वह निहायत ही अच्छा है। 8 अगर रब हमसे खुश है तो वह ज़रूर हमें उस मुल्क में ले जाएगा जिसमें दूध और शहद की कसरत है। वह हमें ज़रूर यह मुल्क देगा। 9 रब से बगावत मत करना। उस मुल्क के रहनेवालों से न डरें। हम उन्हें हड़प कर जाएंगे। उनकी पनाह उनसे जाती रही है जबकि रब हमारे साथ है। चुनौचे उनसे मत डरें।”

10 यह सुनकर पूरी जमात उन्हें संगसार करने के लिए तैयार हुई। लेकिन अचानक रब का जलाल मुलाकात के खैमे पर ज़ाहिर हुआ, और तमाम इसराइलियों ने उसे देखा। 11 रब ने मूसा से कहा, “यह लोग मुझे कब तक हक़ीर जानेगें? वह कब तक मुझ पर ईमान रखने से इनकार करेंगे अगरचे मैंने उनके दरमियान इतने मोजिजे किए हैं? 12 मैं उन्हें वबा से मार डालूँगा और उन्हें रूए-ज़मीन पर से मिटा दूँगा। उनकी जगह मैं तुझसे एक कौम बनाऊँगा जो उनसे बड़ी और ताकतवर होगी।”

13 लेकिन मूसा ने रब से कहा, “फिर मिसरी यह सुन लेंगे! क्योंकि तूने अपनी कुदरत से इन लोगों को मिसर से निकालकर यहाँ तक पहुँचाया है। 14 मिसरी यह बात कनान के बाशिंदों को बताएँगे। यह लोग पहले से सुन चुके हैं कि रब इस कौम के साथ है, कि तुझे रूबरू देखा जाता है, कि तेरा बादल उनके ऊपर ठहरा रहता है, और कि तू दिन के वक़्त बादल के सतून में और रात को आग के सतून में इनके आगे आगे चलता है। 15 अगर तू एकदम इस पूरी कौम को तबाह कर डाले तो बाक्री कौम में यह सुनकर कहेंगी, 16 ‘रब इन लोगों को उस मुल्क में ले जाने के काबिल नहीं था जिसका वादा उसने उनसे कसम खाकर किया था। इसी लिए उसने उन्हें रेगिस्तान में हलाक कर दिया।’ 17 ऐ रब, अब अपनी कुदरत यों ज़ाहिर कर जिस तरह तूने फरमाया है। क्योंकि तूने कहा, 18 ‘रब तहम्मूल और शफ़क़त से भरपूर है। वह गुनाह और नाफ़रमानी मुआफ़ करता है, लेकिन हर एक को उस की मुनासिब सज़ा भी देता है। जब वालिदेन गुनाह करें तो उनकी औलाद को भी तीसरी और चौथी पुश्त तक सज़ा के नतायज भुगतने पड़ेंगे।’ 19 इन लोगों का कुसूर अपनी अज़ीम शफ़क़त के मुताबिक़ मुआफ़ कर। उन्हें उस तरह मुआफ़ कर जिस तरह तू उन्हें मिसर से निकलते वक़्त अब तक मुआफ़ करता रहा है।”

20 रब ने जवाब दिया, “तेरे कहने पर मैंने उन्हें मुआफ़ कर दिया है। 21 इसके बावजूद मेरी हयात की कसम और मेरे जलाल की कसम जो पूरी दुनिया को मामूर करता है, 22 इन लोगों में से कोई भी उस मुल्क में दाख़िल नहीं होगा। उन्होंने मेरा जलाल और मेरे मोजिजे देखे हैं जो मैंने मिसर और रेगिस्तान में कर दिखाए हैं। तो भी उन्होंने दस दफ़ा मुझे आजमाया और मेरी न सुनी। 23 उनमें से एक भी उस मुल्क को नहीं देखेगा जिसका वादा मैंने कसम खाकर उनके बापदादा से किया था। जिसने भी मुझे हक़ीर जाना है वह कभी उसे नहीं देखेगा। 24 सिर्फ़ मेरा खादिम कालिब मुख़ालिफ़ है। उस की रूह फ़रक़ है। वह पूरे दिल से मेरी पैरवी करता है, इसलिए मैं उसे उस मुल्क में ले जाऊँगा जिसमें उसने सफ़र किया है। उस की औलाद मुल्क मीरास में पाएगी। 25 लेकिन फ़िलहाल अमालीकी और कनानी उस की वादियों में आबाद रहेंगे। चुनौचे कल मुड़कर वापस चलो। रेगिस्तान में बहरे-कुलजुम की तरफ़ रवाना हो जाओ।”

26 रब ने मूसा और हारून से कहा, 27 “यह शरीर जमात कब तक मेरे खिलाफ़ बुड़बुडाती रहेगी? उनके गिले-शिकवे मुझ तक पहुँच गए हैं। 28 इसलिए उन्हें बताओ, ‘रब फ़रमाता है कि मेरी हयात की कसम, मैं तुम्हारे साथ वहीं कुछ करूँगा जो तुमने मेरे सामने कहा है। 29 तुम इस रेगिस्तान में मरकर यहीं पड़े रहोगे, हर एक जो 20 साल या इससे जायद का है, जो मर्दमशुमारी में गिना गया और जो मेरे खिलाफ़ बुड़बुडाया। 30 गो मैंने हाथ उठाकर कसम खाई थी कि मैं तुझे उसमें बसाऊँगा तुममें से कोई भी उस मुल्क में दाख़िल नहीं होगा। सिर्फ़ कालिब बिन यफुन्ना और यशुअ बिन नून दाख़िल होंगे। 31 तुमने कहा था कि दुश्मन हमारे बच्चों को लूट लेंगे। लेकिन उन्हीं को मैं उस मुल्क में ले जाऊँगा जिसे तुमने रद्द किया है। 32 लेकिन तुम ख़ुद दाख़िल नहीं होगे। तुम्हारी लाशें इस रेगिस्तान में पड़ी रहेंगी। 33 तुम्हारे बच्चे 40 साल तक यहाँ रेगिस्तान में गल्लाबान होंगे। उन्हें तुम्हारी बेवफ़ाई के सबब से उस वक़्त तक तकलीफ़ उठानी पड़ेगी जब तक तुममें से आखिरी शख्स मर न गया हो। 34 तुमने चालीस दिन के दौरान उस मुल्क का जायज़ा लिया। अब तुम्हें चालीस साल तक अपने गुनाहों का नतीजा भुगतना पड़ेगा। तब तुम्हें पता चलेगा कि इसका क्या मतलब है कि मैं तुम्हारी मुख़ालफ़त करता हूँ। 35 मैं, रब ने यह बात फ़रमाई है। मैं यक़ीनन यह सब कुछ उस सारी शरीर जमात के साथ करूँगा जिसने मिलकर मेरी मुख़ालफ़त की है। इसी रेगिस्तान में वह ख़त्म हो जाएंगे, यहीं मर जाएंगे।”

36-37 जिन आदमियों को मूसा ने मुल्क का जायज़ा लेने के लिए भेजा था, रब ने उन्हें फ़ौरन मोहलक़ वबा से मार डाला, क्योंकि उनके ग़लत अफ़वाहों फैलाने से पूरी जमात बुड़बुडाने लगी थी। 38 सिर्फ़ यशुअ बिन नून और कालिब बिन यफुन्ना ज़िंदा रहे।

39 जब मूसा ने रब की यह बातें इसराइलियों को बताई तो वह ख़ूब मातम करने लगे। 40 अगली सुबह-सवेरे वह उठे और यह कहते हुए ऊँचे पहाड़ी इलाके के लिए रवाना हुए कि हमसे ग़लती हुई है, लेकिन अब हम हाज़िर हैं और उस जगह की तरफ़ जा रहे हैं जिसका ज़िक़र रब ने किया है।

41 लेकिन मूसा ने कहा, “तुम क्यों रब की खिलाफ़वर्ज़ी कर रहे हो? तुम कामयाब नहीं होगे। 42 वहाँ न जाओ, क्योंकि रब तुम्हारे साथ नहीं है। तुम दुश्मनों के हाथों शिकस्त खाओगे, 43 क्योंकि वहाँ अमालीकी और कनानी तुम्हारा सामना करेंगे। चूँकि तुमने अपना मुँह रब से फेर लिया है इसलिए वह तुम्हारे साथ नहीं होगा, और दुश्मन तुम्हें तलवार से मार डालेंगे।”

44 तो भी वह अपने गुस्से में ज़ुर्रत करके ऊँचे पहाड़ी इलाके की तरफ़ बढ़े, हालाँकि न मूसा और न अहद के संदूक ही ने खैमागाह को छोड़ा। 45 फिर उस पहाड़ी इलाके में रहनेवाले अमालीकी और कनानी उन पर आन पड़े और उन्हें मारते मारते हुरमा तक तितर-बितर कर दिया।

15

कनान में कुरबानियाँ पेश करने का तरीका

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इसराईलियों को बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाखिल होगे जो मैं तुम्हें दूँगा 3-4 तो जलनेवाली कुरबानियाँ यों पेश करना :

अगर तुम अपने गाय-बैलों या भेड़-बकरियों में से ऐसी कुरबानी पेश करना चाहो जिसकी खुशबू रब को पसंद हो तो साथ साथ डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा भी पेश करो जो एक लिटर जैतून के तेल के साथ मिलाया गया हो। इसमें कोई फ़रक़ नहीं कि यह भस्म होनेवाली कुरबानी, मन्नत की कुरबानी, दिली खुशी की कुरबानी या किसी ईद की कुरबानी हो।

5 हर भेड़ को पेश करते वक़्त एक लिटर मै भी मै की नज़र के तौर पर पेश करना। 6 जब मेंढा कुरबान किया जाए तो 3 किलोग्राम बेहतरीन मैदा भी साथ पेश करना जो सवा लिटर तेल के साथ मिलाया गया हो। 7 सवा लिटर मै भी मै की नज़र के तौर पर पेश की जाए। ऐसी कुरबानी की खुशबू रब को पसंद आएगी।

8 अगर तूरब को भस्म होनेवाली कुरबानी, मन्नत की कुरबानी या सलामती की कुरबानी के तौर पर जवान बैल पेश करना चाहे 9 तो उसके साथ साढ़े 4 किलोग्राम बेहतरीन मैदा भी पेश करना जो दो लिटर तेल के साथ मिलाया गया हो। 10 दो लिटर मै भी मै की नज़र के तौर पर पेश की जाए। ऐसी कुरबानी की खुशबू रब को पसंद है। 11 लाज़िम है कि जब भी किसी गाय, बैल, भेड़, मेंढे, बकरी या बकरे को चढ़ाया जाए तो ऐसा ही किया जाए।

12 अगर एक से जायद जानवरों को कुरबान करना है तो हर एक के लिए मुकर्रर गल्ला और मै की नज़रों भी साथ ही पेश की जाएँ।

13 लाज़िम है कि हर देसी इसराईली जलनेवाली कुरबानियाँ पेश करते वक़्त ऐसा ही करे। फिर उनकी खुशबू रब को पसंद आएगी। 14 यह भी लाज़िम है कि इसराईल में आरिज़ी या मुस्तक़िल तौर पर रहनेवाले परदेसी इन उसूलों के मुताबिक़ अपनी कुरबानियाँ चढ़ाएँ। फिर उनकी खुशबू रब को पसंद आएगी। 15 मुल्के-कनान में रहनेवाले तमाम लोगों के लिए पाबंदियाँ एक जैसी हैं, खाह वह देसी हों या परदेसी, क्योंकि रब की नज़र में परदेसी तुम्हारे बराबर है। यह तुम्हारे और तुम्हारी औलाद के लिए दायमी उसूल है। 16 तुम्हारे और तुम्हारे साथ रहनेवाले परदेसी के लिए एक ही शरीअत है।”

फ़सल के लिए शुक्रगुज़ारी की कुरबानी

17 रब ने मूसा से कहा, 18 “इसराईलियों को बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाखिल होगे जिसमें मैं तुम्हें ले जा रहा हूँ 19 और वहाँ की पैदावार खाओगे तो पहले उसका एक हिस्सा उठानेवाली कुरबानी के तौर पर रब को पेश करना। 20 फ़सल के पहले ख़ालिस आटे में से मेरे लिए एक रोटी बनाकर उठानेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करो। वह गाहने की जगह की तरफ़ से रब के लिए उठानेवाली कुरबानी होगी। 21 अपनी फ़सल के पहले ख़ालिस आटे में से यह कुरबानी पेश किया करो। यह उसूल हमेशा तक लागू रहे।

नादानिस्ता गुनाहों के लिए कुरबानियाँ

22 हो सकता है कि ग़ैरइरादी तौर पर तुमसे ग़लती हुई है और तुमने उन अहक़ाम पर पूरे तौर पर अमल नहीं किया जो रब मूसा को दे चुका है 23 या जो वह आनेवाली नसलों को देगा। 24 अगर जमात इस बात से नावाक़िफ़ थी और ग़ैरइरादी तौर पर उससे ग़लती हुई तो फिर पूरी जमात एक जवान बैल भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करे। साथ ही वह मुकर्रर गल्ला और मै की नज़रें भी पेश करे। इसकी खुशबू रब को पसंद होगी। इसके अलावा जमात गुनाह की कुरबानी के लिए एक बकरा पेश करे। 25 इमाम इसराईल की पूरी जमात का कफ़फ़ारा दे तो उन्हें मुआफ़ी मिलेगी, क्योंकि उनका गुनाह ग़ैरइरादी था और उन्होंने रब को भस्म होनेवाली कुरबानी और गुनाह की कुरबानी पेश की है। 26 इसराईलियों की पूरी जमात को परदेसियों समेत मुआफ़ी मिलेगी, क्योंकि गुनाह ग़ैरइरादी था।

27 अगर सिर्फ़ एक शख्स से ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह हुआ हो तो गुनाह की कुरबानी के लिए वह एक यकसाला बकरी पेश करे। 28 इमाम रब के सामने उस शख्स का कफ़फ़ारा दे। जब कफ़फ़ारा दे दिया गया तो उसे मुआफ़ी हासिल होगी। 29 यही उसूल परदेसी पर भी लागू है। अगर उससे ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह हुआ हो तो वह मुआफ़ी हासिल करने के लिए वही कुछ करे जो इसराईली को करना होता है।

दानिस्ता गुनाहों के लिए सज़ाए-मौत

30 लेकिन अगर कोई देसी या परदेसी जान-बूझकर गुनाह करता है तो ऐसा शख्स रब की इहानत करता है, इसलिए लाज़िम है कि उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाए। 31 उसने रब का कलाम हक़ीर जानकर उसके अहक़ाम तोड़ डाले हैं, इसलिए उसे ज़रूर क़ौम में से मिटाया जाए। वह अपने गुनाह का ज़िम्मादार है।”

32 जब इसराईली रेगिस्तान में से गुज़र रहे थे तो एक आदमी को पकड़ा गया जो हफ़ते के दिन लकड़ियाँ जमा कर रहा था। 33 जिन्होंने उसे पकड़ा था वह उसे मूसा, हारून और पूरी जमात के पास ले आए। 34 चूँकि साफ़ मालूम नहीं था कि उसके साथ क्या किया जाए इसलिए उन्होंने उसे गिरफ़्तार कर लिया।

35 फिर रब ने मूसा से कहा, “इस आदमी को ज़रूर सज़ाए-मौत दी जाए। पूरी जमात उसे ख़ैमागाह के बाहर ले जाकर संगसार करे।”

36 चुनौचे जमात ने उसे ख़ैमागाह के बाहर ले जाकर संगसार किया, जिस तरह रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

अहकाम की याद दिलानेवाले फुँदने

37 रब ने मूसा से कहा, 38 “इसराईलियों को बताना कि तुम और तुम्हारे बाद की नसलें अपने लिबास के किनारों पर फुँदने लगाएँ। हर फुँदना एक किरमिजी डोरी से लिबास के साथ लगा हो। 39 इन फुँदनों को देखकर तुम्हें रब के तमाम अहकाम याद रहेंगे और तुम उन पर अमल करोगे। फिर तुम अपने दिलों और आँखों की गलत खाहिशों के पीछे नहीं पड़ोगे बल्कि ज़िनाकारी से दूर रहोगे। 40 फिर तुम मेरे अहकाम को याद करके उन पर अमल करोगे और अपने खुदा के सामने मखसूसो-मुकद्दस रहोगे। 41 मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ जो तुम्हें मिसर से निकाल लाया ताकि तुम्हारा खुदा हूँ। मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ।”

16

क्रोरह, दातन और अबीराम की सरकशी

1-2 एक दिन क्रोरह बिन इज़हार मूसा के खिलाफ उठा। वह लावी के कबीले का किहाती था। उसके साथ रुबिन के कबीले के तीन आदमी थे, इलियाब के बेटे दातन और अबीराम और ओन बिन पलत। उनके साथ 250 और आदमी भी थे जो जमात के सरदार और असरो-रसखवाले थे, और जो कौंसल के लिए चुने गए थे। 3 वह मिलकर मूसा और हारून के पास आकर कहने लगे, “आप हमसे ज्यादाती कर रहे हैं। पूरी जमात मखसूसो-मुकद्दस है, और रब उसके दरमियान है। तो फिर आप अपने आपको क्यों रब की जमात से बढ़कर समझते हैं?”

4 यह सुनकर मूसा मुँह के बल गिरा। 5 फिर उसने क्रोरह और उसके तमाम साथियों से कहा, “कल सुबह रब ज़ाहिर करेगा कि कौन उसका बंदा और कौन मखसूसो-मुकद्दस है। उसी को वह अपने पास आने देगा। 6 ऐ क्रोरह, कल अपने तमाम साथियों के साथ बखूरदान लेकर 7 रब के सामने उनमें अंगारे और बखूर डालो। जिस आदमी को रब चुनेगा वह मखसूसो-मुकद्दस होगा। अब तुम लावी खुद ज्यादाती कर रहे हो।”

8 मूसा ने क्रोरह से बात जारी रखी, “ऐ लावी की औलाद, सुनो! 9 क्या तुम्हारी नज़र में यह कोई छोटी बात है कि रब तुम्हें इसराईली जमात के बाकी लोगों से अलग करके अपने करीब ले आया ताकि तुम रब के मुकद्दस में और जमात के सामने खड़े होकर उनकी खिदमत करो? 10 वह तुझे और तेरे साथी लावियों को अपने करीब लाया है। लेकिन अब तुम इमाम का ओहदा भी अपनाना चाहते हो। 11 अपने साथियों से मिलकर तूने हारून की नहीं बल्कि रब की मुखालफत की है। क्योंकि हारून कौन है कि तुम उसके खिलाफ बुडबुडाओ?”

12 फिर मूसा ने इलियाब के बेटों दातन और अबीराम को बुलाया। लेकिन उन्होंने कहा, “हम नहीं आएँगे। 13 आप हमें एक ऐसे मुल्क से निकाल लाए हैं जहाँ दूध और शहद की कसरत है ताकि हम रेगिस्तान में हलाक हो जाएँ। क्या यह काफी नहीं है? क्या अब आप हम पर हुक्मत भी करना चाहते हैं? 14 न आपने हमें ऐसे मुल्क में पहुँचाया जिसमें दूध और शहद की कसरत है, न हमें खेतों और अंगूर के बागों के वारिस बनाया है। क्या आप इन आदमियों की आँखें निकाल डालेंगे? नहीं, हम हरगिज़ नहीं आएँगे।”

15 तब मूसा निहायत गुस्से हुआ। उसने रब से कहा, “उनकी कुरबानी को क़बूल न कर। मैंने एक गधा तक उनसे नहीं लिया, न मैंने उनमें से किसी से बुरा सुलूक किया है।”

16 क्रोरह से उसने कहा, “कल तुम और तुम्हारे साथी रब के सामने हाज़िर हो जाओ। हारून भी आएगा। 17 हर एक अपना बखूरदान लेकर उसे रब को पेश करे।” 18 चुनाँचे हर आदमी ने अपना बखूरदान लेकर उसमें अंगारे और बखूर डाल दिया। फिर सब मूसा और हारून के साथ मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े पर खड़े हुए। 19 क्रोरह ने पूरी जमात को दरवाज़े पर मूसा और हारून के मुकाबले में जमा किया था।

अचानक पूरी जमात पर रब का जलाल ज़ाहिर हुआ। 20 रब ने मूसा और हारून से कहा, 21 “इस जमात से अलग हो जाओ ताकि मैं इसे फ़ौरन हलाक कर दूँ।” 22 मूसा और हारून मुँह के बल गिरे और बोल उठे, “ऐ अल्लाह, तू तमाम जानों का खुदा है। क्या तेरा ग़ज़ब एक ही आदमी के गुनाह के सबब से पूरी जमात पर आन पड़ेगा?”

23 तब रब ने मूसा से कहा, 24 “जमात को बता दे कि क्रोरह, दातन और अबीराम के डेरों से दूर हो जाओ।” 25 मूसा उठकर दातन और अबीराम के पास गया, और इसराईल के बुजुर्ग उसके पीछे चले। 26 उसने जमात को आगाह किया, “इन शरीरों के ख़ैमों से दूर हो जाओ! जो कुछ भी उनके पास है उसे न छुओ, वरना तुम भी उनके साथ तबाह हो जाओगे जब वह अपने गुनाहों के बाइस हलाक होंगे।” 27 तब बाकी लोग क्रोरह, दातन और अबीराम के डेरों से दूर हो गए।

दातन और अबीराम अपने बाल-बच्चों समेत अपने ख़ैमों से निकलकर बाहर खड़े थे। 28 मूसा ने कहा, “अब तुम्हें पता चलेगा कि रब ने मुझे यह सब कुछ करने के लिए भेजा है। मैं अपनी नहीं बल्कि उस की मरजी पूरी कर रहा हूँ। 29 अगर यह लोग दूसरों की तरह तबई मौत मरें तो फिर रब ने मुझे नहीं भेजा। 30 लेकिन अगर रब ऐसा काम करे जो पहले कभी नहीं हुआ और ज़मीन अपना मुँह खोलकर उन्हें और उनका पूरा माल हड़प कर ले और उन्हें जीते-जी दफ़ना दे तो इसका मतलब होगा कि इन आदमियों ने रब को हक़ीर जाना है।”

31 यह बात कहते ही उनके नीचे की ज़मीन फट गई। 32 उसने अपना मुँह खोलकर उन्हें, उनके खानदानों को, क्रोरह के तमाम लोगों को और उनका सारा सामान हड़प कर लिया। 33 वह अपनी पूरी मिलकियत समेत जीते-जी दफ़न हो गए। ज़मीन उनके ऊपर वापस आ गई। यों उन्हें जमात से निकाला गया और वह हलाक हो गए। 34 उनकी चीखें सुनकर उनके इर्दगिर्द खड़े तमाम इसराईली भाग उठे, क्योंकि उन्होंने सोचा, “ऐसा न हो कि ज़मीन हमें भी निगल ले।”

35 उसी लमहे रब की तरफ से आग उतर आई और उन 250 आदमियों को भस्म कर दिया जो बखूर पेश कर रहे थे। 36 रब ने मूसा से कहा, 37 “हासून इमाम के बेटे इलियज़र को इतला दे कि वह बखूरदानों को राख में से निकालकर रखे। उनके अंगारे वह दूर फेंके। बखूरदानों को रखने का सबब यह है कि अब वह मखसूसो-मुकद्दस हैं। 38 लोग उन आदमियों के यह बखूरदान ले लें जो अपने गुनाह के बाइस जान-बहक हो गए। वह उन्हें कूटकर उनसे चादरें बनाएँ और उन्हें जलनेवाली कुरबानियों की कुरबानगाह पर चढ़ाएँ। क्योंकि वह रब को पेश किए गए हैं, इसलिए वह मखसूसो-मुकद्दस हैं। यों वह इसराईलियों के लिए एक निशान रहेंगे।”

39 चुनौचे इलियज़र इमाम ने पीतल के यह बखूरदान जमा किए जो भस्म किए हुए आदमियों ने रब को पेश किए थे। फिर लोगों ने उन्हें कूटकर उनसे चादरें बनाई और उन्हें कुरबानगाह पर चढ़ा दिया। 40 हासून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा की मारिफ़त बताया था। मक़सद यह था कि बखूरदान इसराईलियों को याद दिलाते रहें कि सिर्फ़ हासून की औलाद ही को रब के सामने आकर बखूर जलाने की इजाज़त है। अगर कोई और ऐसा करे तो उसका हाल क्रोह और उसके साथियों का-सा होगा।

41 अगले दिन इसराईल की पूरी जमात मूसा और हासून के खिलाफ़ बुड़बुड़ाने लगी। उन्होंने कहा, “आपने रब की कौम को मार डाला है।” 42 लेकिन जब वह मूसा और हासून के मुकाबले में जमा हुए और मुलाकात के ख़ैमे का सूख किया तो अचानक उस पर बादल छा गया और रब का जलाल ज़ाहिर हुआ। 43 फिर मूसा और हासून मुलाकात के ख़ैमे के सामने आए, 44 और रब ने मूसा से कहा, 45 “इस जमात से निकल जाओ ताकि मैं इसे फ़ौरन हलाक कर दूँ।” यह सुनकर दोनों मुँह के बल गिरे। 46 मूसा ने हासून से कहा, “अपना बखूरदान लेकर उसमें कुरबानगाह के अंगारे और बखूर डालें। फिर भागकर जमात के पास चले जाएँ ताकि उनका कफ़फ़ारा दें। जल्दी करें, क्योंकि रब का ग़ज़ब उन पर टूट पड़ा है। वबा फैलने लगी है।”

47 हासून ने ऐसा ही किया। वह दौड़कर जमात के बीच में गया। लोगों में वबा शुरू हो चुकी थी, लेकिन हासून ने रब को बखूर पेश करके उनका कफ़फ़ारा दिया। 48 वह ज़िंदों और मुरदों के बीच में खड़ा हुआ तो वबा रूक गई। 49 तो भी 14,700 अफ़राद वबा से मर गए। इसमें वह शामिल नहीं हैं जो क्रोह के सबब से मर गए थे।

50 जब वबा रूक गई तो हासून मूसा के पास वापस आया जो अब तक मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े पर खड़ा था।

17

हासून की लाठी से कौपलें निकलती हैं

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इसराईलियों से बात करके उनसे 12 लाठियाँ मँगवा ले, हर कबीले के सरदार से एक लाठी। हर लाठी पर उसके मालिक का नाम लिखना। 3 लावी की लाठी पर हासून का नाम लिखना, क्योंकि हर कबीले के सरदार के लिए एक लाठी होगी। 4 फिर उनको मुलाकात के ख़ैमे में अहद के संदूक के सामने रख जहाँ मेरी तुमसे मुलाकात होती है। 5 जिस आदमी को मैंने चुन लिया है उस की लाठी से कौपलें फूट निकलेंगी। इस तरह मैं तुम्हारे खिलाफ़ इसराईलियों की बुड़बुड़ाहट ख़त्म कर दूँगा।”

6 चुनौचे मूसा ने इसराईलियों से बात की, और कबीलों के हर सरदार ने उसे अपनी लाठी दी। इन 12 लाठियों में हासून की लाठी भी शामिल थी। 7 मूसा ने उन्हें मुलाकात के ख़ैमे में अहद के संदूक के सामने रखा। 8 अगले दिन जब वह मुलाकात के ख़ैमे में दाख़िल हुआ तो उसने देखा कि लावी के कबीले के सरदार हासून की लाठी से न सिर्फ़ कौपलें फूट निकली हैं बल्कि फूल और पके हुए बादाम भी लगे हैं।

9 मूसा तमाम लाठियाँ रब के सामने से बाहर लाकर इसराईलियों के पास ले आया, और उन्होंने उनका मुआयना किया। फिर हर एक ने अपनी अपनी लाठी वापस ले ली। 10 रब ने मूसा से कहा, “हासून की लाठी अहद के संदूक के सामने रख दे। यह बागी इसराईलियों को याद दिलाएगी कि वह अपना बुड़बुड़ाना बंद करें, वरना हलाक हो जाएंगे।”

11 मूसा ने ऐसा ही किया। 12 लेकिन इसराईलियों ने मूसा से कहा, “हाय, हम मर जाएंगे। हाय, हम हलाक हो जाएंगे, हम सब हलाक हो जाएंगे। 13 जो भी रब के मक़दिस के करीब आए वह मर जाएगा। क्या हम सब ही हलाक हो जाएंगे?”

18

इमामों और लावियों की ज़िम्मादारियाँ

1 रब ने हासून से कहा, “मक़दिस तेरी, तेरे बेटों और लावी के कबीले की ज़िम्मादारी है। अगर इसमें कोई ग़लती हो जाए तो तुम कुसूरवार ठहरोगे। इसी तरह इमामों की खिदमत सिर्फ़ तेरी और तेरे बेटों की ज़िम्मादारी है। अगर इसमें कोई ग़लती हो जाए तो तू और तेरे बेटे कुसूरवार ठहरेगे। 2 अपने कबीले लावी के बाकी आदमियों को भी मेरे करीब आने दे। वह तेरे साथ मिलकर यों हिस्सा लें कि वह तेरी और तेरे बेटों की खिदमत करें जब तुम ख़ैमे के सामने अपनी ज़िम्मादारियाँ निभाओगे। 3 तेरी खिदमत और ख़ैमे में खिदमत उनकी ज़िम्मादारी है। लेकिन वह ख़ैमे के मखसूसो-मुकद्दस सामान और कुरबानगाह के करीब न जाएँ, वरना न सिर्फ़ वह बल्कि तू भी हलाक हो जाएगा। 4 यों वह तेरे साथ मिलकर मुलाकात के ख़ैमे के पूरे काम में हिस्सा लें। लेकिन किसी और को ऐसा करने की इजाज़त नहीं है। 5 सिर्फ़ तू और तेरे बेटे मक़दिस और कुरबानगाह की देख-भाल करें ताकि मेरा ग़ज़ब दुबारा इसराईलियों पर न भड़के। 6 मैं ही ने इसराईलियों में से तेरे भाइयों यानी लावियों को चुनकर तुझे तोहफ़े के तौर पर दिया है। वह रब के लिए मखसूस हैं ताकि ख़ैमे में खिदमत करें। 7 लेकिन सिर्फ़ तू और तेरे बेटे इमाम की

खिदमत सरंजाम दें। मैं तुम्हें इमाम का ओहदा तोहफे के तौर पर देता हूँ। कोई और कुरबानगाह और मुकद्दस चीजों के नज़दीक न आए, वरना उसे सजाए-मौत दी जाए।”

इमामों का हिस्सा

8 रब ने हासून से कहा, “मैंने खुद मुक़रर किया है कि तमाम उठानेवाली कुरबानियाँ तेरा हिस्सा हों। यह हमेशा तक कुरबानियों में से तेरा और तेरी औलाद का हिस्सा है। 9 तुम्हें मुक़द्दसतरीन कुरबानियों का वह हिस्सा मिलना है जो जलाया नहीं जाता। हाँ, तुझे और तेरे बेटों को वही हिस्सा मिलना है, खाह वह मुझे गल्ला की नज़रें, गुनाह की कुरबानियाँ या कुसूर की कुरबानियाँ पेश करें। 10 उसे मुक़द्दस जगह पर खाना। हर मर्द उसे खा सकता है। खयाल रख कि वह मखसूसो-मुक़द्दस है।

11 मैंने मुक़रर किया है कि तमाम हिलानेवाली कुरबानियों का उठाया हुआ हिस्सा तेरा है। यह हमेशा के लिए तेरे और तेरे बेटे-बेटियों का हिस्सा है। तेरे घराने का हर फ़रद उसे खा सकता है। शर्त यह है कि वह पाक हो। 12 जब लोग रब को अपनी फ़सलों का पहला फल पेश करेंगे तो वह तेरा ही हिस्सा होगा। मैं तुझे ज़ैतून के तेल, नई मै और अनाज का बेहतरीन हिस्सा देता हूँ। 13 फ़सलों का जो भी पहला फल वह रब को पेश करेंगे वह तेरा ही होगा। तेरे घराने का हर पाक फ़रद उसे खा सकता है। 14 इसराईल में जो भी चीज़ रब के लिए मखसूसो-मुक़द्दस की गई है वह तेरी होगी। 15 हर इन्सान और हर हैवान का जो पहलौठा रब को पेश किया जाता है वह तेरा ही है। लेकिन लाज़िम है कि तू हर इन्सान और हर नापाक जानवर के पहलौठे का फ़िघा देकर उसे छुड़ाए।

16 जब वह एक माह के हैं तो उनके एवज़ चाँदी के पाँच सिक्के देना। (हर सिक्के का वज़न मक़दिस के बाटों के मुताबिक 11 ग्राम हो)। 17 लेकिन गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के पहले बच्चों का फ़िघा यानी मुआवज़ा न देना। वह मखसूसो-मुक़द्दस है। उनका खून कुरबानगाह पर छिड़क देना और उनकी चरबी जला देना। ऐसी कुरबानी रब को पसंद होगी। 18 उनका गोशत वैसे ही तुम्हारे लिए हो, जैसे हिलानेवाली कुरबानी का सीना और दहनी रान भी तुम्हारे लिए हैं।

19 मुक़द्दस कुरबानियों में से तमाम उठानेवाली कुरबानियाँ तेरा और तेरे बेटे-बेटियों का हिस्सा हैं। मैंने उसे हमेशा के लिए तुझे दिया है। यह नमक का दायमी अहद है जो मैंने तेरे और तेरी औलाद के साथ कायम किया है।”

लावियों का हिस्सा

20 रब ने हासून से कहा, “तू मीरास में ज़मीन नहीं पाएगा। इसराईल में तुझे कोई हिस्सा नहीं दिया जाएगा, क्योंकि इसराईलियों के दरमियान मैं ही तेरा हिस्सा और तेरी मीरास हूँ। 21 अपनी पैदावार का जो दसवाँ हिस्सा इसराईली मुझे देते हैं वह मैं लावियों को देता हूँ। यह उनकी विरासत है, जो उन्हें मुलाकात के ख़ैमे में खिदमत करने के बदले में मिलती है। 22 अब से इसराईली मुलाकात के ख़ैमे के करीब न आएँ, वरना उन्हें अपनी ख़ता का नतीजा बरदाश्त करना पड़ेगा और वह हलाक हो जाएंगे। 23 सिर्फ़ लावी मुलाकात के ख़ैमे में खिदमत करें। अगर इसमें कोई गलती हो जाए तो वही कुसूरवार ठहरेंगे। यह एक दायमी उसूल है। उन्हें इसराईल में मीरास में ज़मीन नहीं मिलेगी। 24 क्योंकि मैंने उन्हें वही दसवाँ हिस्सा मीरास के तौर पर दिया है जो इसराईली मुझे उठानेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करते हैं। इस वजह से मैंने उनके बारे में कहा कि उन्हें बाकी इसराईलियों के साथ मीरास में ज़मीन नहीं मिलेगी।”

लावियों का दसवाँ हिस्सा

25 रब ने मूसा से कहा, 26 “लावियों को बताना कि तुम्हें इसराईलियों की पैदावार का दसवाँ हिस्सा मिलेगा। यह रब की तरफ़ से तुम्हारी विरासत होगी। लाज़िम है कि तुम इसका दसवाँ हिस्सा रब को उठानेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करो। 27 तुम्हारी यह कुरबानी नए अनाज या नए अंगूर के रस की कुरबानी के बराबर करार दी जाएगी। 28 इस तरह तुम भी रब को इसराईलियों की पैदावार के दसवें हिस्से में से उठानेवाली कुरबानी पेश करोगे। रब के लिए यह कुरबानी हासून इमाम को देना। 29 जो भी तुम्हें मिला है उसमें से सबसे अच्छा और मुक़द्दस हिस्सा रब को देना। 30 जब तुम इसका सबसे अच्छा हिस्सा पेश करोगे तो उसे नए अनाज या नए अंगूर के रस की कुरबानी के बराबर करार दिया जाएगा। 31 तुम अपने घरानों समेत इसका बाकी हिस्सा कहीं भी खा सकते हो, क्योंकि यह मुलाकात के ख़ैमे में तुम्हारी खिदमत का अज़्र है। 32 अगर तुमने पहले इसका बेहतरीन हिस्सा पेश किया हो तो फिर इसे खाने में तुम्हारा कोई कुसूर नहीं होगा। फिर इसराईलियों की मखसूसो-मुक़द्दस कुरबानियाँ तुमसे नापाक नहीं हो जाएँगी और तुम नहीं मरोगे।”

19

सुर्ख गाय की राख

1 रब ने मूसा और हासून से कहा, 2 “इसराईलियों को बताना कि वह तुम्हारे पास सुर्ख रंग की जवान गाय लेकर आएँ। उसमें नुक्स न हो और उस पर कभी जुआ न रखा गया हो। 3 तुम उसे इलियज़र इमाम को देना जो उसे ख़ैमे के बाहर ले जाए। वहाँ उसे उस की मौजूदगी में ज़बह किया जाए। 4 फिर इलियज़र इमाम अपनी उँगली से उसके खून से कुछ लेकर मुलाकात के ख़ैमे के सामनेवाले हिस्से की तरफ़ छिड़के। 5 उस की मौजूदगी में पूरी की पूरी गाय को जलाया जाए। उस की खाल, गोशत, खून और अंतड़ियों का गोबर भी जलाया जाए। 6 फिर वह देवदार की लकड़ी, जूफ़ा और किरमिज़ी रंग का धागा लेकर उसे जलती हुई गाय पर फेंके। 7 इसके बाद वह अपने कपड़ों को धोकर नहा ले। फिर वह ख़ैमागाह में आ सकता है लेकिन शाम तक नापाक रहेगा।

8 जिस आदमी ने गाय को जलाया वह भी अपने कपड़ों को धोकर नहा ले। वह भी शाम तक नापाक रहेगा।

9 एक दूसरा आदमी जो पाक है गाय की राख इकट्ठी करके खैमागाह के बाहर किसी पाक जगह पर डाल दे। वहाँ इसराईल की जमात उसे नापाकी दूर करने का पानी तैयार करने के लिए महफूज रखे। यह गुनाह से पाक करने के लिए इस्तेमाल होगा। 10 जिस आदमी ने राख इकट्ठी की है वह भी अपने कपड़ों को धो ले। वह भी शाम तक नापाक रहेगा। यह इसराईलियों और उनके दरमियान रहनेवाले परदेसियों के लिए दायमी उसूल हो।

लाश छूने से पाक हो जाने का तरीका

11 जो भी लाश छुए वह सात दिन तक नापाक रहेगा। 12 तीसरे और सातवें दिन वह अपने आप पर नापाकी दूर करने का पानी छिड़ककर पाक-साफ हो जाए। इसके बाद ही वह पाक होगा। लेकिन अगर वह इन दोनों दिनों में अपने आपको यों पाक न करे तो नापाक रहेगा। 13 जो भी लाश छूकर अपने आपको यों पाक नहीं करता वह रब के मक़दिस को नापाक करता है। लाज़िम है कि उसे इसराईल में से मिटाया जाए। चूँकि नापाकी दूर करने का पानी उस पर छिड़का नहीं गया इसलिए वह नापाक रहेगा।

14 अगर कोई डेरे में मर जाए तो जो भी उस वक़्त उसमें मौजूद हो या दाखिल हो जाए वह सात दिन तक नापाक रहेगा। 15 हर खुला बरतन जो ढकने से बंद न किया गया हो वह भी नापाक होगा। 16 इसी तरह जो खुले मैदान में लाश छुए वह भी सात दिन तक नापाक रहेगा, खाह वह तलवार से या तबई मौत मरा हो। जो इन्सान की कोई हड्डी या कब्र छुए वह भी सात दिन तक नापाक रहेगा।

17 नापाकी दूर करने के लिए उस सुख रंग की गाय की राख में से कुछ लेना जो गुनाह दूर करने के लिए जलाई गई थी। उसे बरतन में डालकर ताज़ा पानी में मिलाना। 18 फिर कोई पाक आदमी कुछ जूफा ले और उसे उस पानी में डुबोकर मरे हुए शख्स के खैमे, उसके सामान और उन लोगों पर छिड़के जो उसके मरते वक़्त वहाँ थे। इसी तरह वह पानी उस शख्स पर भी छिड़के जिसने तबई या गैरतबई मौत मरे हुए शख्स को, किसी इन्सान की हड्डी को या कोई कब्र छूई हो। 19 पाक आदमी यह पानी तीसरे और सातवें दिन नापाक शख्स पर छिड़के। सातवें दिन वह उसे पाक करे। जिसे पाक किया जा रहा है वह अपने कपड़े धोकर नहा ले तो वह उसी शाम पाक होगा।

20 लेकिन जो नापाक शख्स अपने आपको पाक नहीं करता उसे जमात में से मिटाना है, क्योंकि उसने रब का मक़दिस नापाक कर दिया है। नापाकी दूर करने का पानी उस पर नहीं छिड़का गया, इसलिए वह नापाक रहा है। 21 यह उनके लिए दायमी उसूल है। जिस आदमी ने नापाकी दूर करने का पानी छिड़का है वह भी अपने कपड़े धोए। बल्कि जिसने भी यह पानी छुआ है शाम तक नापाक रहेगा। 22 और नापाक शख्स जो भी चीज़ छुए वह नापाक हो जाती है। न सिर्फ़ यह बल्कि जो बाद में यह नापाक चीज़ छुए वह भी शाम तक नापाक रहेगा।”

20

चटान से पानी

1 पहले महीने में इसराईल की पूरी जमात दशते-सीन में पहुँचकर कादिस में रहने लगी। वहाँ मरियम ने वफ़ात पाई और वहीं उसे दफ़नाया गया।

2 कादिस में पानी दस्तयाब नहीं था, इसलिए लोग मूसा और हारून के मुकाबले में जमा हुए। 3 वह मूसा से यह कहकर झगड़ने लगे, “काश हम अपने भाइयों के साथ रब के सामने मर गए होते! 4 आप रब की जमात को क्यों इस रेगिस्तान में ले आए? क्या इसलिए कि हम यहाँ अपने मवेशियों समेत मर जाएँ? 5 आप हमें मिसर से निकालकर उस नाखुशगवार जगह पर क्यों ले आए हैं? यहाँ न तो अनाज, न अंजीर, अंगूर या अनार दस्तयाब हैं। पानी भी नहीं है!”

6 मूसा और हारून लोगों को छोड़कर मुलाकात के खैमे के दरवाज़े पर गए और मुँह के बल गिरे। तब रब का जलाल उन पर ज़ाहिर हुआ। 7 रब ने मूसा से कहा, 8 “अहद के संदूक के सामने पड़ी लाठी पकड़कर हारून के साथ जमात को इकट्ठा कर। उनके सामने चटान से बात करो तो वह अपना पानी देगी। यों तू चटान में से जमात के लिए पानी निकालकर उन्हें उनके मवेशियों समेत पानी पिलाएगा।”

9 मूसा ने ऐसा ही किया। उसने अहद के संदूक के सामने पड़ी लाठी उठाई 10 और हारून के साथ जमात को चटान के सामने इकट्ठा किया। मूसा ने उनसे कहा, “ऐ बगावत करनेवालो, सुनो! क्या हम इस चटान में से तुम्हारे लिए पानी निकालें?” 11 उसने लाठी को उठाकर चटान को दो मरतबा मारा तो बहुत-सा पानी फूट निकला। जमात और उनके मवेशियों ने खूब पानी पिया।

12 लेकिन रब ने मूसा और हारून से कहा, “तुम्हारा मुझ पर इतना ईमान नहीं था कि मेरी कुदूसियत को इसराईलियों के सामने कायम रखते। इसलिए तुम उस जमात को उस मुल्क में नहीं ले जाओगे जो मैं उन्हें दूँगा।”

13 यह वाक़िया मरीबा यानी ‘झगड़ना’ के पानी पर हुआ। वहाँ इसराईलियों ने रब से झगड़ा किया, और वहाँ उसने उन पर ज़ाहिर किया कि वह कुदूस है।

अदोम इसराईल को गुज़रने नहीं देता

14 कादिस से मूसा ने अदोम के बादशाह को इतला भेजी, “आपके भाई इसराईल की तरफ़ से एक गुज़ारिश है। आपको उन तमाम मुसीबतों के बारे में इल्म है जो हम पर आन पड़ी हैं। 15 हमारे बापदादा मिसर गए थे और वहाँ हम बहुत अरसे तक रहे। मिसरियों ने हमारे बापदादा और हमसे बुरा सुलूक किया। 16 लेकिन जब हमने चिल्लाकर रब से मिन्नत की तो उसने हमारी सुनी और फ़रिश्ता भेजकर हमें मिसर से निकाल

लाया। अब हम यहाँ कादिस शहर में हैं जो आपकी सरहद पर है। 17 मेहरबानी करके हमें अपने मुल्क में से गुज़रने दें। हम किसी खेत या अंगूर के बाग में नहीं जाएंगे, न किसी कुएँ का पानी पीएँगे। हम शाहराह पर ही रहेंगे। आपके मुल्क में से गुज़रते हुए हम उससे न दाईं और न बाईं तरफ हटेंगे।”

18 लेकिन अदोमियों ने जवाब दिया, “यहाँ से न गुज़रना, वरना हम निकलकर आपसे लड़ेंगे।” 19 इसराईल ने दुबारा खबर भेजी, “हम शाहराह पर रहते हुए गुज़रेंगे। अगर हमें या हमारे जानवरों को पानी की ज़रूरत हुई तो पैसे देकर खरीद लेंगे। हम पैदल ही गुज़रना चाहते हैं, और कुछ नहीं चाहते।”

20 लेकिन अदोमियों ने दुबारा इनकार किया। साथ ही उन्होंने उनके साथ लड़ने के लिए एक बड़ी और ताकतवर फौज भेजी।

21 चूँकि अदोम ने उन्हें गुज़रने की इजाज़त न दी इसलिए इसराईली मुड़कर दूसरे रास्ते से चले गए।

हारून की वफ़ात

22 इसराईल की पूरी जमात कादिस से रवाना होकर होर पहाड़ के पास पहुँची। 23 यह पहाड़ अदोम की सरहद पर वाक़े था। वहाँ रब ने मूसा और हारून से कहा, 24 “हारून अब कूच करके अपने बापदादा से जा मिलेगा। वह उस मुल्क में दाखिल नहीं होगा जो मैं इसराईलियों को दूँगा, क्योंकि तुम दोनों ने मरीबा के पानी पर मेरे हुक्म की खिलाफ़वर्ज़ी की। 25 हारून और उसके बेटे इलियज़र को लेकर होर पहाड़ पर चढ़ जा। 26 हारून के कपड़े उतारकर उसके बेटे इलियज़र को पहना देना। फिर हारून कूच करके अपने बापदादा से जा मिलेगा।”

27 मूसा ने ऐसा ही किया जैसा रब ने कहा। तीनों पूरी जमात के देखते देखते होर पहाड़ पर चढ़ गए। 28 मूसा ने हारून के कपड़े उतरवाकर उसके बेटे इलियज़र को पहना दिए। फिर हारून वहाँ पहाड़ की चोटी पर फ़ौत हुआ, और मूसा और इलियज़र नीचे उतर गए। 29 जब पूरी जमात को मालूम हुआ कि हारून इंतकाल कर गया है तो सबने 30 दिन तक उसके लिए मातम किया।

21

कनानी मुल्के-अराद पर फ़तह

1 दशते-नजब के कनानी मुल्क अराद के बादशाह को खबर मिली कि इसराईली अथारिम की तरफ बढ़ रहे हैं। उसने उन पर हमला किया और कई एक को पकड़कर कैद कर लिया। 2 तब इसराईलियों ने रब के सामने मन्नत मानकर कहा, “अगर तू हमें उन पर फ़तह देगा तो हम उन्हें उनके शहरों समेत तबाह कर देंगे।” 3 रब ने उनकी सुनी और कनानियों पर फ़तह बख़्शी। इसराईलियों ने उन्हें उनके शहरों समेत पूरी तरह तबाह कर दिया। इसलिए उस जगह का नाम हुरमा यानी तबाही पड़ गया।

पीतल का साँप

4 होर पहाड़ से रवाना होकर वह बहरे-कुलज़ुम की तरफ चल दिए ताकि अदोम के मुल्क में से गुज़रना न पड़े। लेकिन चलते चलते लोग बेसबर हो गए। 5 वह रब और मूसा के खिलाफ़ बातें करने लगे, “आप हमें मिसर से निकालकर रेगिस्तान में मरने के लिए क्यों ले आए हैं? यहाँ न रोटी दस्तयाब है न पानी। हमें इस घटिया किस्म की खुराक से धिन आती है।”

6 तब रब ने उनके दरमियान ज़हरीले साँप भेज दिए जिनके काटने से बहुत-से लोग मर गए। 7 फिर लोग मूसा के पास आए। उन्होंने कहा, “हमने रब और आपके खिलाफ़ बातें करते हुए गुनाह किया। हमारी सिफ़ारिश करें कि रब हमसे साँप दूर कर दे।”

मूसा ने उनके लिए दुआ की 8 तो रब ने मूसा से कहा, “एक साँप बनाकर उसे खंबे से लटका दे। जो भी डसा गया हो वह उसे देखकर बच जाएगा।” 9 चूनाँचे मूसा ने पीतल का एक साँप बनाया और खंबा खड़ा करके साँप को उससे लटका दिया। और ऐसा हुआ कि जिसे भी डसा गया था वह पीतल के साँप पर नज़र करके बच गया।

मोआब की तरफ़ सफ़र

10 इसराईली रवाना हुए और ओबोत में अपने ख़ैमे लगाए। 11 फिर वहाँ से कूच करके ऐये-अबारीम में डेरे डाले, उस रेगिस्तान में जो मशरिक की तरफ मोआब के सामने है। 12 वहाँ से रवाना होकर वह वादीए-ज़िरद में ख़ैमाज़न हुए। 13 जब वादीए-ज़िरद से रवाना हुए तो दरियाए-अरनोन के परले यानी जुनूबी किनारे पर ख़ैमाज़न हुए। यह दरिया रेगिस्तान में है और अमोरियों के इलाक़े से निकलता है। यह अमोरियों और मोआबियों के दरमियान की सरहद है। 14 इसका ज़िक्र किताब ‘रब की जंगें’ में भी है,

“वाहेब जो सूफ़ा में है, दरियाए-अरनोन की वादियाँ 15 और वादियों का वह ढलान जो आर शहर तक जाता है और मोआब की सरहद पर वाक़े है।”

16 वहाँ से वह बैर यानी ‘कुआँ’ पहुँचे। यह वही बैर है जहाँ रब ने मूसा से कहा, “लोगों को इकट्ठा कर तो मैं उन्हें पानी दूँगा।” 17 उस वक़्त इसराईलियों ने यह गीत गाया,

“ऐ कुएँ, फूट निकल! उसके बारे में गीत गाओ,

18 उस कुएँ के बारे में जिसे सरदारों ने खोदा, जिसे क्रौम के राहनुमाओं ने असाए-शाही और अपनी लाठियों से खोदा।”

फिर वह रेगिस्तान से मत्तना को गए, 19 मत्तना से नहलियेल को और नहलियेल से बामात को। 20 बामात से वह मोआबियों के इलाक़े की उस वादी में पहुँचे जो पिसगा पहाड़ के दामन में है। इस पहाड़ की चोटी से वादीए-यरदन का जुनूबी हिस्सा यशीमोन ख़ूब नज़र आता है।

सीहोन और ओज की शिकस्त

21 इसराइल ने अमोरियों के बादशाह सीहोन को इतला भेजी, 22 “हमें अपने मुल्क में से गुजरने दें। हम सीधे सीधे गुजर जाएंगे। न हम कोई खेत या अंगूर का बाग छेड़ेंगे, न किसी कुएँ का पानी पीएँगे। हम आपके मुल्क में से सीधे गुजरते हुए शाहराह पर ही रहेंगे।” 23 लेकिन सीहोन ने उन्हें गुजरने न दिया बल्कि अपनी फौज जमा करके इसराइल से लड़ने के लिए रेगिस्तान में चल पड़ा। यहज पहुँचकर उसने इसराइलियों से जंग की। 24 लेकिन इसराइलियों ने उसे कत्ल किया और दरियाए-अरनोन से लेकर दरियाए-यब्बोक तक यानी अम्मोनियों की सरहद तक उसके मुल्क पर कब्जा कर लिया। वह इससे आगे न जा सके क्योंकि अम्मोनियों ने अपनी सरहद की हिसारबंदी कर रखी थी। 25 इसराइली तमाम अमोरी शहरों पर कब्जा करके उनमें रहने लगे। उनमें हसबोन और उसके इर्दगिर्द की आबादियाँ शामिल थीं।

26 हसबोन अमोरी बादशाह सीहोन का दास्ल-हुकूमत था। उसने मोआब के पिछले बादशाह से लड़कर उससे यह इलाका दरियाए-अरनोन तक छीन लिया था। 27 उस वाकिये का जिक्र शायरी में यों किया गया है,

“हसबोन के पास आकर उसे अज सरे-नौ तामीर करो, सीहोन के शहर को अज सरे-नौ कायम करो।

28 हसबोन से आग निकली, सीहोन के शहर से शोला भड़का। उसने मोआब के शहर आर को जला दिया, अरनोन की बुलंदियों के मालिकों को भस्म किया।

29 ऐ मोआब, तुझ पर अफसोस! ऐ कमोस देवता की क्रौम, तू हलाक हुई है। कमोस ने अपने बेटों को मफ़र और अपनी बेटियों को अमोरी बादशाह सीहोन की कैदी बना दिया है।

30 लेकिन जब हमने अमोरियों पर तीर चलाए तो हसबोन का इलाका दीबोन तक बरबाद हुआ। हमने नुफ़ह तक सब कुछ तबाह किया, वह नुफ़ह जिसका इलाका मीदबा तक है।”

31 यों इसराइल अमोरियों के मुल्क में आबाद हुआ। 32 वहाँ से मूसा ने अपने जासूस याज़ेर शहर भेजे। वहाँ भी अमोरी रहते थे। इसराइलियों ने याज़ेर और उसके इर्दगिर्द के शहरों पर भी कब्जा किया और वहाँ के अमोरियों को निकाल दिया।

33 इसके बाद वह मुड़कर बसन की तरफ़ बढ़े। तब बसन का बादशाह ओज अपनी तमाम फौज लेकर उनसे लड़ने के लिए शहर इदरई आया। 34 उस वक़्त रब ने मूसा से कहा, “ओज से न डरना। मैं उसे, उस की तमाम फौज और उसका मुल्क तेरे हवाले कर चुका हूँ। उसके साथ वही सुलूक कर जो तूने अमोरियों के बादशाह सीहोन के साथ किया, जिसका दास्ल-हुकूमत हसबोन था।” 35 इसराइलियों ने ओज, उसके बेटों और तमाम फौज को हलाक कर दिया। कोई भी न बचा। फिर उन्होंने बसन के मुल्क पर कब्जा कर लिया।

22

बलक बिलाम को इसराइल पर लानत भेजने के लिए बुलाता है

1 इसके बाद इसराइली मोआब के मैदानों में पहुँचकर दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर यरीह के आमने-सामने खैमाज़न हुए।

2 मोआब के बादशाह बलक बिन सफ़ोर को मालूम हुआ कि इसराइलियों ने अमोरियों के साथ क्या कुछ किया है। 3 मोआबियों ने यह भी देखा कि इसराइली बहुत ज़्यादा हैं, इसलिए उन पर दहशत छा गई। 4 उन्होंने मिदियानियों के बुजुर्गों से बात की, “अब यह हुजूम उस तरह हमारे इर्दगिर्द का इलाका चट कर जाएगा जिस तरह बैल मैदान की घास चट कर जाता है।”

5 तब बलक ने अपने कासिद फ़तोर शहर को भेजे जो दरियाए-फ़ुरात पर वाके था और जहाँ बिलाम बिन बओर अपने वतन में रहता था। कासिद उसे बुलाने के लिए उसके पास पहुँचे और उसे बलक का पैगाम सुनाया, “एक क्रौम मिसर से निकल आई है जो रूए-ज़मीन पर छाकर मेरे करीब ही आबाद हुई है। 6 इसलिए आएँ और इन लोगों पर लानत भेजें, क्योंकि वह मुझसे ज़्यादा ताक़तवर हैं। फिर शायद मैं उन्हें शिकस्त देकर मुल्क से भगा सकूँ। क्योंकि मैं जानता हूँ कि जिन्हें आप बरकत देते हैं उन्हें बरकत मिलती है और जिन पर आप लानत भेजते हैं उन पर लानत आती है।”

7 यह पैगाम लेकर मोआब और मिदियान के बुजुर्ग रवाना हुए। उनके पास इनाम के पैसे थे। बिलाम के पास पहुँचकर उन्होंने उसे बलक का पैगाम सुनाया। 8 बिलाम ने कहा, “रात यहाँ गुज़रें। कल मैं आपको बता दूँगा कि रब इसके बारे में क्या फ़रमाता है।” चुनाँचे मोआबी सरदार उसके पास ठहर गए।

9 रात के वक़्त अल्लाह बिलाम पर जाहिर हुआ। उसने पूछा, “यह आदमी कौन है जो तेरे पास आए है?” 10 बिलाम ने जवाब दिया, “मोआब के बादशाह बलक बिन सफ़ोर ने मुझे पैगाम भेजा है, 11 ‘जो क्रौम मिसर से निकल आई है वह रूए-ज़मीन पर छा गई है। इसलिए आएँ और मेरे लिए उन पर लानत भेजें। फिर शायद मैं उनसे लड़कर उन्हें भगा देने में कामयाब हो जाऊँ’।” 12 रब ने बिलाम से कहा, “उनके साथ न जाना। तुझे उन पर लानत भेजने की इजाज़त नहीं है, क्योंकि उन पर मेरी बरकत है।”

13 अगली सुबह बिलाम जाग उठा तो उसने बलक के सरदारों से कहा, “अपने वतन वापस चले जाएँ, क्योंकि रब ने मुझे आपके साथ जाने की इजाज़त नहीं दी।” 14 चुनाँचे मोआबी सरदार खाली हाथ बलक के पास वापस आए। उन्होंने कहा, “बिलाम हमारे साथ आने से इनकार करता है।” 15 तब बलक ने और सरदार भेजे जो पहलेवालों की निसबत तादाद और ओहदे के लिहाज़ से ज़्यादा थे। 16 वह बिलाम के पास जाकर कहने लगे, “बलक बिन सफ़ोर कहते हैं कि कोई भी बात आपको मेरे पास आने से न रोके, 17 क्योंकि मैं आपको बड़ा इनाम दूँगा। आप जो भी कहेंगे मैं करने के लिए तैयार हूँ। आएँ तो सही और मेरे लिए उन लोगों पर लानत भेजें।”

18 लेकिन बिलाम ने जवाब दिया, “अगर बलक अपने महल को चाँदी और सोने से भरकर भी मुझे दे तो भी मैं रब अपने खुदा के फरमान की खिलाफ़रज़ी नहीं कर सकता, खाह बात छोटी हो या बड़ी। 19 आप दूसरे सरदारों की तरह रात यहाँ गुज़ारें। इतने में मैं मालूम करूँगा कि रब मुझे मज़ीद क्या कुछ बताता है।”

20 उस रात अल्लाह बिलाम पर जाहिर हुआ और कहा, “चूँकि यह आदमी तुझे बुलाने आए हैं इसलिए उनके साथ चला जा। लेकिन सिर्फ़ वही कुछ करना जो मैं तुझे बताऊँगा।”

बिलाम की गधी

21 सुबह को बिलाम ने उठकर अपनी गधी पर ज़ीन कसा और मोआबी सरदारों के साथ चल पड़ा। 22 लेकिन अल्लाह निहायत गुस्से हुआ कि वह जा रहा है, इसलिए उसका फ़रिश्ता उसका मुकाबला करने के लिए रास्ते में खड़ा हो गया। बिलाम अपनी गधी पर सवार था और उसके दो नौकर उसके साथ चल रहे थे। 23 जब गधी ने देखा कि रब का फ़रिश्ता अपने हाथ में तलवार थामे हुए रास्ते में खड़ा है तो वह रास्ते से हटकर खेत में चलने लगी। बिलाम उसे मारते मारते रास्ते पर वापस ले आया।

24 फिर वह अंगूर के दो बाग़ों के दरमियान से गुज़रने लगे। रास्ता तंग था, क्योंकि वह दोनों तरफ़ बाग़ों की चारदीवारी से बंद था। अब रब का फ़रिश्ता वहाँ खड़ा हुआ। 25 गधी यह देखकर चारदीवारी के साथ साथ चलने लगी, और बिलाम का पाँव कुचला गया। उसने उसे दुबारा मारा।

26 रब का फ़रिश्ता आगे निकला और तीसरी मरतबा रास्ते में खड़ा हो गया। अब रास्ते से हट जाने की कोई गुंजाइश नहीं थी, न दाईं तरफ़ और न बाईं तरफ़। 27 जब गधी ने रब का फ़रिश्ता देखा तो वह लेट गई। बिलाम को गुस्सा आ गया, और उसने उसे अपनी लाठी से खूब मारा।

28 तब रब ने गधी को बोलने दिया, और उसने बिलाम से कहा, “मैंने आपसे क्या ग़लत सुलूक किया है कि आप मुझे अब तीसरी दफ़ा पीट रहे हैं?” 29 बिलाम ने जवाब दिया, “तूने मुझे बेवकूफ़ बनाया है! काश मेरे हाथ में तलवार होती तो मैं अभी तुझे ज़बह कर देता!” 30 गधी ने बिलाम से कहा, “क्या मैं आपकी गधी नहीं हूँ जिस पर आप आज तक सवार होते रहे हैं? क्या मुझे कभी ऐसा करने की आदत थी?” उसने कहा, “नहीं।”

31 फिर रब ने बिलाम की आँखें खोलीं और उसने रब के फ़रिश्ते को देखा जो अब तक हाथ में तलवार थामे हुए रास्ते में खड़ा था। बिलाम ने मुँह के बल गिरकर सिजदा किया। 32 रब के फ़रिश्ते ने पूछा, “तूने तीन बार अपनी गधी को क्यों पीटा? मैं तेरे मुकाबले में आया हूँ, क्योंकि जिस तरफ़ तू बढ रहा है उसका अंजाम बुरा है। 33 गधी तीन मरतबा मुझे देखकर मेरी तरफ़ से हट गई। अगर वह न हटती तो तू उस वक़्त हलाक हो गया होता अगरचे मैं गधी को छोड़ देता।”

34 बिलाम ने रब के फ़रिश्ते से कहा, “मैंने गुनाह किया है। मुझे मालूम नहीं था कि तू मेरे मुकाबले में रास्ते में खड़ा है। लेकिन अगर मेरा सफ़र तुझे बुरा लगे तो मैं अब वापस चला जाऊँगा।” 35 रब के फ़रिश्ते ने कहा, “इन आदमियों के साथ अपना सफ़र जारी रख। लेकिन सिर्फ़ वही कुछ कहना जो मैं तुझे बताऊँगा।” चुनौचे बिलाम ने बलक के सरदारों के साथ अपना सफ़र जारी रखा।

36 जब बलक को खबर मिली कि बिलाम आ रहा है तो वह उससे मिलने के लिए मोआब के उस शहर तक गया जो मोआब की सरहद दरियाए-अरनोन पर वाके है। 37 उसने बिलाम से कहा, “क्या मैंने आपको इतला नहीं भेजी थी कि आप ज़रूर आएँ? आप क्यों नहीं आए? क्या आपने सोचा कि मैं आपको मुनासिब इनाम नहीं दे पाऊँगा?” 38 बिलाम ने जवाब दिया, “बहरहाल अब मैं पहुँच गया हूँ। लेकिन मैं सिर्फ़ वही कुछ कह सकता हूँ जो अल्लाह ने पहले ही मेरे मुँह में डाल दिया है।”

39 फिर बिलाम बलक के साथ क्रिरियत-हुसात गया। 40 वहाँ बलक ने गाय-बैल और भेड़-बकरियाँ कुरबान करके उनके गोशत में से बिलाम और उसके साथवाले सरदारों को दे दिया। 41 अगली सुबह बलक बिलाम को साथ लेकर एक ऊँची जगह पर चढ़ गया जिसका नाम बामोत-बाल था। वहाँ से इसराईली खैमागाह का किनारा नज़र आता था।

23

बिलाम की पहली बरकत

1 बिलाम ने कहा, “यहाँ मेरे लिए सात कुरबानगाहें बनाएँ। साथ साथ मेरे लिए सात बैल और सात मेंढे तैयार कर रखें।” 2 बलक ने ऐसा ही किया, और दोनों ने मिलकर हर कुरबानगाह पर एक बैल और एक मेंढा चढ़ाया। 3 फिर बिलाम ने बलक से कहा, “यहाँ अपनी कुरबानी के पास खड़े रहें। मैं कुछ फ़ासले पर जाता हूँ, शायद रब मुझसे मिलने आए। जो कुछ वह मुझ पर जाहिर करे मैं आपको बता दूँगा।”

यह कहकर वह एक ऊँचे मक़ाम पर चला गया जो हरियाली से बिलकुल महसूस था। 4 वहाँ अल्लाह बिलाम से मिला। बिलाम ने कहा, “मैंने सात कुरबानगाहें तैयार करके हर कुरबानगाह पर एक बैल और एक मेंढा कुरबान किया है।” 5 तब रब ने उसे बलक के लिए पैग़ाम दिया और कहा, “बलक के पास वापस जा और उसे यह पैग़ाम सुना।” 6 बिलाम बलक के पास वापस आया जो अब तक मोआबी सरदारों के साथ अपनी कुरबानी के पास खड़ा था। 7 बिलाम बोल उठा,

“बलक मुझे अराम से यहाँ लाया है, मोआबी बादशाह ने मुझे मशरिकी पहाड़ों से बुलाकर कहा, ‘आओ, याकूब पर मेरे लिए लानत भेजो। आओ, इसराईल को बददुआ दो।’

8 मैं किस तरह उन पर लानत भेजूँ जिन पर अल्लाह ने लानत नहीं भेजी? मैं किस तरह उन्हें बददुआ दूँ जिन्हें रब ने बददुआ नहीं दी?

9 मैं उन्हें चटानों की चोटी से देखता हूँ, पहाड़ियों से उनका मुशाहदा करता हूँ। वाकई यह एक ऐसी क्रौम है जो दूसरों से अलग रहती है। यह अपने आपको दूसरी क्रौमों से मुमताज़ समझती है।

10 कौन याकूब की औलाद को गिन सकता है जो गर्द की मानिंद बेशुमार है। कौन इसराइलियों का चौथा हिस्सा भी गिन सकता है? रब करे कि मैं रास्तबाज़ों की मौत मरूँ, कि मेरा अंजाम उनके अंजाम जैसा अच्छा हो।”

11 बलक ने बिलाम से कहा, “आपने मेरे साथ क्या किया है? मैं आपको अपने दुश्मनों पर लानत भेजने के लिए लाया और आपने उन्हें अच्छी-खासी बरकत दी है।” 12 बिलाम ने जवाब दिया, “क्या लाज़िम नहीं कि मैं वही कुछ बोलूँ जो रब ने बताने को कहा है?”

बिलाम की दूसरी बरकत

13 फिर बलक ने उससे कहा, “आएँ, हम एक और जगह जाएँ जहाँ से आप इसराइली क्रौम को देख सकेंगे, गो उनकी खैमागाह का सिर्फ़ किनारा ही नज़र आएगा। आप सबको नहीं देख सकेंगे। वही से उन पर मेरे लिए लानत भेजें।” 14 यह कहकर वह उसके साथ पिसगा की चोटी पर चढ़कर पहेरेदारों के मैदान तक पहुँच गया। वहाँ भी उसने सात कुरबानगाहें बनाकर हर एक पर एक बैल और एक मेंढा कुरबान किया। 15 बिलाम ने बलक से कहा, “यहाँ अपनी कुरबानगाह के पास खड़े रहें। मैं कुछ फासले पर जाकर रब से मिलूँगा।”

16 रब बिलाम से मिला। उसने उसे बलक के लिए पैगाम दिया और कहा, “बलक के पास वापस जा और उसे यह पैगाम सुना दे।” 17 वह वापस चला गया। बलक अब तक अपने सरदारों के साथ अपनी कुरबानी के पास खड़ा था। उसने उससे पूछा, “रब ने क्या कहा?” 18 बिलाम ने कहा, “ऐ बलक, उठो और सुनो। ऐ सफ़ोर के बेटे, मेरी बात पर गौर करो।

19 अल्लाह आदमी नहीं जो झूट बोलता है। वह इन्सान नहीं जो कोई फ़ैसला करके बाद में पछताए। क्या वह कभी अपनी बात पर अमल नहीं करता? क्या वह कभी अपनी बात पूरी नहीं करता?

20 मुझे बरकत देने को कहा गया है। उसने बरकत दी है और मैं यह बरकत रोक नहीं सकता।

21 याकूब के घराने में खराबी नज़र नहीं आती, इसराइल में दुख दिखाई नहीं देता। रब उसका खुदा उसके साथ है, और क्रौम बादशाह की खुशी में नारे लगाती है।

22 अल्लाह उन्हें मिसर से निकाल लाया, और उन्हें जंगली बैल की ताकत हासिल है।

23 याकूब के घराने के खिलाफ़ जादूगरी नाकाम है, इसराइल के खिलाफ़ ग़ैबदानी बेफ़ायदा है। अब याकूब के घराने से कहा जाएगा, ‘अल्लाह ने कैसा काम किया है!’

24 इसराइली क्रौम शेरनी की तरह उठती और शेरबबर की तरह खड़ी हो जाती है। जब तक वह अपना शिकार न खा ले वह आराम नहीं करता, जब तक वह मारे हुए लोगों का खून न पी ले वह नहीं लेटता।”

25 यह सुनकर बलक ने कहा, “अगर आप उन पर लानत भेजने से इनकार करें, कम अज़ कम उन्हें बरकत तो न दें।” 26 बिलाम ने जवाब दिया, “क्या मैंने आपको नहीं बताया था कि जो कुछ भी रब कहेगा मैं वही करूँगा?”

बिलाम की तीसरी बरकत

27 तब बलक ने बिलाम से कहा, “आएँ, मैं आपको एक और जगह ले जाऊँ। शायद अल्लाह राज़ी हो जाए कि आप मेरे लिए वहाँ से उन पर लानत भेजें।” 28 वह उसके साथ फ़ग़ूर पहाड़ पर चढ़ गया। उस की चोटी से यरदन की वादी का जुन्बी हिस्सा यशीमोन दिखाई दिया।

29 बिलाम ने उससे कहा, “मेरे लिए यहाँ सात कुरबानगाहें बनाकर सात बैल और सात मेंढे तैयार कर रखें।” 30 बलक ने ऐसा ही किया। उसने हर एक कुरबानगाह पर एक बैल और एक मेंढा कुरबान किया।

24

1 अब बिलाम को उस बात का पूरा यकीन हो गया कि रब को पसंद है कि मैं इसराइलियों को बरकत दूँ। इसलिए उसने इस मरतबा पहले की तरह जादूगरी का तरीका इस्तेमाल न किया बल्कि सीधा रेगिस्तान की तरफ़ सूख किया 2 जहाँ इसराइल अपने अपने कबीलों की तरतीब से खैमाज़न था। यह देखकर अल्लाह का रूह उस पर नाज़िल हुआ, 3 और वह बोल उठा,

“बिलाम बिन बओर का पैगाम सुनो, उसके पैगाम पर गौर करो जो साफ़ साफ़ देखता है,

4 उसका पैगाम जो अल्लाह की बातें सुन लेता है, कादिरे-मुतलक की रोया को देख लेता है और ज़मीन पर गिरकर पोशीदा बातें देखता है।

5 ऐ याकूब, तेरे ख़ैमे कितने शानदार हैं! ऐ इसराइल, तेरे घर कितने अच्छे हैं!

6 वह दूर तक फैली हुई वादियों की मानिंद, नहर के किनारे लगे बाग़ों की मानिंद, रब के लगाए हुए उद के दरख़्तों की मानिंद, पानी के किनारे लगे देवदार के दरख़्तों की मानिंद हैं।

7 उनकी बालटियों से पानी छलकता रहेगा, उनके बीज को कसरत का पानी मिलेगा। उनका बादशाह अजाज से ज्यादा ताक़तवर होगा, और उनकी सलतनत सरफ़राज़ होगी।

8 अल्लाह उन्हें मिसर से निकाल लाया, और उन्हें जंगली बैल की-सी ताक़त हासिल है। वह मुखालिफ़ क्रौमों को हड़प करके उनकी हड्डियाँ चूर चूर कर देते हैं, वह अपने तीर चलाकर उन्हें मार डालते हैं।

9 इसराईल शेरबबर या शेरनी की मानिंद है। जब वह दबककर बैठ जाए तो कोई भी उसे छेड़ने की जुरत नहीं करता। जो तुझे बरकत दे उसे बरकत मिले, और जो तुझ पर लानत भेजे उस पर लानत आए।”

10 यह सुनकर बलक आपे से बाहर हुआ। उसने ताली बजाकर अपनी हिकारत का इजहार किया और कहा, “मैंने तुझे इसलिए बुलाया था कि तू मेरे दुश्मनों पर लानत भेजे। अब तूने उन्हें तीनों बार बरकत ही दी है। 11 अब दफा हो जा! अपने घर वापस भाग जा! मैंने कहा था कि बड़ा इनाम दूंगा। लेकिन रब ने तुझे इनाम पाने से रोक दिया है।”

12 बिलाम ने जवाब दिया, “क्या मैंने उन लोगों को जिन्हें आपने मुझे बुलाने के लिए भेजा था नहीं बताया था 13 कि अगर बलक अपने महल को चाँदी और सोने से भरकर भी मुझे दे दे तो भी मैं रब की किसी बात की खिलाफ़रजी नहीं कर सकता, खाह मेरी नीयत अच्छी हो या बुरी। मैं सिर्फ़ वह कुछ कर सकता हूँ जो अल्लाह फ़रमाता है। 14 अब मैं अपने वतन वापस चला जाता हूँ। लेकिन पहले मैं आपको बता देता हूँ कि आखिरकार यह कौम आपकी कौम के साथ क्या कुछ करेगी।”

बिलाम की चौथी बरकत

15 वह बोल उठा,

“बिलाम बिन बओर का पैगाम सुनो, उसका पैगाम जो साफ़ साफ़ देखता है,

16 उसका पैगाम जो अल्लाह की बातें सुन लेता और अल्लाह तआला की मरज़ी को जानता है, जो कादिर-मुतलक की रोया को देख लेता और ज़मीन पर गिरकर पोशीदा बातें देखता है।

17 जिसे मैं देख रहा हूँ वह इस वक़्त नहीं है। जो मुझे नज़र आ रहा है वह करीब नहीं है। याक़ूब के घराने से सितारा निकलेगा, और इसराईल से असाए-शाही उठेगा जो मोआब के माथों और सेत के तमाम बेटों की खोपड़ियों को पाश पाश करेगा।

18 अदोम उसके कब्ज़े में आएगा, उसका दुश्मन सईर उस की मिलकियत बनेगा जबकि इसराईल की ताक़त बढ़ती जाएगी।

19 याक़ूब के घराने से एक हुक्मरान निकलेगा जो शहर के बचे हुआओं को हलाक कर देगा।”

बिलाम के आखिरी पैगाम

20 फिर बिलाम ने अमालीक को देखा और कहा,

“अमालीक कौमों में अक्वल था, लेकिन आखिरकार वह ख़त्म हो जाएगा।”

21 फिर उसने कीनियों को देखा और कहा,

“तेरी सुकूनतगाह मुस्तहक़म है, तेरा चटान में बना घोंसला मज़बूत है।

22 लेकिन तू तबाह हो जाएगा जब असूर तुझे गिरिफ़्तार करेगा।”

23 एक और दफ़ा उसने बात की,

“हाय, कौन ज़िंदा रह सकता है जब अल्लाह यों करेगा?

24 कितीम के साहिल से बहरी जहाज़ आएँगे जो असूर और इबर को ज़लील करेंगे, लेकिन वह खुद भी हलाक हो जाएँगे।”

25 फिर बिलाम उठकर अपने घर वापस चला गया। बलक भी वहाँ से चला गया।

25

मोआब इसराईलियों की आजमाइश करता है

1 जब इसराईली शितीम में रह रहे थे तो इसराईली मर्द मोआबी औरतों से ज़िनाक़ारी करने लगे। 2 यह ऐसा हुआ कि मोआबी औरतें अपने देवताओं को कुरबानियाँ पेश करते वक़्त इसराईलियों को शरीक होने की दावत देने लगीं। इसराईली दावत क़बूल करके कुरबानियों से खाने और देवताओं को सिजदा करने लगे। 3 इस तरीक़े से इसराईली मोआबी देवता बनाम बाल-फ़गूर की पूजा करने लगे, और रब का ग़ज़ब उन पर आन पड़ा। 4 उसने मूसा से कहा, “इस कौम के तमाम राहनुमाओं को सज़ाए-मौत देकर सूरज की रौशनी में रब के सामने लटका, वरना रब का इसराईलियों पर से ग़ज़ब नहीं टलेगा।” 5 चुनौचे मूसा ने इसराईल के काज़ियों से कहा, “लाज़िम है कि तुममें से हर एक अपने उन आदमियों को जान से मार दे जो बाल-फ़गूर देवता की पूजा में शरीक हुए हैं।”

6 मूसा और इसराईल की पूरी जमात मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर जमा होकर रोने लगे। इत्तफ़ाक़ से उसी वक़्त एक आदमी वहाँ से गुज़रा जो एक मिदियानी औरत को अपने घर ले जा रहा था। 7 यह देखकर हारून का पोता फ़ीनहास बिन इलियज़र जमात से निकला और नेज़ा पकड़कर 8 उस इसराईली के पीछे चल पड़ा। वह औरत समेत अपने ख़ैमे में दाख़िल हुआ तो फ़ीनहास ने उनके पीछे पीछे जाकर नेज़ा इतने जोर से मारा कि वह दोनों में से गुज़र गया। उस वक़्त वबा फैलने लगी थी, लेकिन फ़ीनहास के इस अमल से वह स्क़ गई। 9 तो भी 24,000 अफ़राद मर चुके थे।

10 रब ने मूसा से कहा, 11 “हारून के पोते फ़ीनहास बिन इलियज़र ने इसराईलियों पर मेरा गुस्सा ठंडा कर दिया है। मेरी ग़ैरत अपनाकर वह इसराईल में दीगर माबूदों की पूजा को बरदाश्त न कर सका। इसलिए मेरी ग़ैरत ने इसराईलियों को नेस्तो-नाबूद नहीं किया। 12 लिहाज़ा

उसे बता देना कि मैं उसके साथ सलामती का अहद कायम करता हूँ। ¹³ इस अहद के तहत उसे और उस की औलाद को अबद तक इमाम का ओहदा हासिल रहेगा, क्योंकि अपने खुदा की खातिर गैरत खाकर उसने इसराइलियों का कफ़ारा दिया।”

¹⁴ जिस आदमी को मिदियानी औरत के साथ मार दिया गया उसका नाम ज़िमरी बिन सलू था, और वह शमौन के कबीले के एक आबाई घराने का सरपरस्त था। ¹⁵ मिदियानी औरत का नाम कज़बी था, और वह सूर की बेटी थी जो मिदियानियों के एक आबाई घराने का सरपरस्त था।

¹⁶ रब ने मूसा से कहा, ¹⁷ “मिदियानियों को दुश्मन करार देकर उन्हें मार डालना। ¹⁸ क्योंकि उन्होंने अपनी चालाकियों से तुम्हारे साथ दुश्मन का-सा सलूक किया, उन्होंने तुम्हें बाल-फ़ग़ूर की पूजा करने पर उकसाया और तुम्हें अपनी बहन मिदियानी सरदार की बेटी कज़बी के ज़रीए जिसे वबा फैलते वक़्त मार दिया गया बहकाया।”

26

दूसरी मर्दमशुमारी

¹ वबा के बाद रब ने मूसा और हासून के बेटे इलियज़र से कहा,

² “पूरी इसराइली जमात की मर्दमशुमारी उनके आबाई घरानों के मुताबिक़ करना। उन तमाम मर्दों को गिनना जो 20 साल या इससे ज़ायद के हैं और जो जंग लड़ने के काबिल हैं।”

³⁻⁴ मूसा और इलियज़र ने इसराइलियों को बताया कि रब ने उन्हें क्या हुक्म दिया है। चुनौचे उन्होंने मोआब के मैदानी इलाके में यरीह के सामने, लेकिन दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर मर्दमशुमारी की। यह वह इसराइली आदमी थे जो मिसर से निकले थे।

⁵⁻⁷ इसराइल के पहलौठे रूबिन के कबीले के 43,730 मर्द थे। कबीले के चार कुंभे हनूकी, फ़ल्लुवी, हसरोनी और करमी रूबिन के बेटों हनूक, फ़ल्लू, हसरोन और करमी से निकले हुए थे। ⁸ रूबिन का बेटा फ़ल्लू इलियाब का बाप था ⁹ जिसके बेटे नमुएल, दातन और अबीराम थे।

दातन और अबीराम वही लोग थे जिन्हें जमात ने चुना था और जिन्होंने क्रोह के गुरोह समेत मूसा और हासून से झगड़ते हुए खुद रब से झगड़ा किया। ¹⁰ उस वक़्त ज़मीन ने अपना मुँह खोलकर उन्हें क्रोह समेत हड़प कर लिया था। उसके 250 साथी भी मर गए थे जब आग ने उन्हें भस्म कर दिया। यों वह सब इसराइल के लिए इब्रतअंगेज़ मिसाल बन गए थे। ¹¹ लेकिन क्रोह की पूरी नसल मिटाई नहीं गई थी।

¹²⁻¹⁴ शमौन के कबीले के 22,200 मर्द थे। कबीले के पाँच कुंभे नमुएली, यमीनी, यकीनी, ज़ारही और साऊली शमौन के बेटों नमुएल, यमीन, यकीन, ज़ारह और साऊल से निकले हुए थे।

¹⁵⁻¹⁸ जद के कबीले के 40,500 मर्द थे। कबीले के सात कुंभे सफ़ोनी, हज्जी, सूनी, उज़नी, एरी, अरूदी और अरेली जद के बेटों सफ़ोन, हज्जी, सूनी, उज़नी, एरी, अरूद और अरेली से निकले हुए थे।

¹⁹⁻²² यहदाह के कबीले के 76,500 मर्द थे। यहदाह के दो बेटे एर और ओनान मिसर आने से पहले कनान में मर गए थे। कबीले के तीन कुंभे सेलानी, फ़ारसी और ज़ारही यहदाह के बेटों सेला, फ़ारस और ज़ारह से निकले हुए थे।

फ़ारस के दो बेटों हसरोन और हमूल से दो कुंभे हसरोनी और हमूली निकले हुए थे। ²³⁻²⁵ इश्कार के कबीले के 64,300 मर्द थे। कबीले के चार कुंभे तोलई, फ़ुव्वी, यसूबी और सिमरोनी इश्कार के बेटों तोला, फ़ुव्वा, यसूब और सिमरोन से निकले हुए थे।

²⁶⁻²⁷ ज़बूलून के कबीले के 60,500 मर्द थे। कबीले के तीन कुंभे सरदी, ऐलोनी और यहलियेली ज़बूलून के बेटों सरद, ऐलोन और यहलियेल से निकले हुए थे।

²⁸ यूसुफ़ के दो बेटों मनस्सी और इफ़राईम के अलग अलग कबीले बने।

²⁹⁻³⁴ मनस्सी के कबीले के 52,700 मर्द थे। कबीले के आठ कुंभे मकीरी, जिलियादी, इयज़री, खलकी, असरियेली, सिकमी, समीदाई और हिफ़री थे। मकीरी मनस्सी के बेटे मकीर से जबकि जिलियादी मकीर के बेटे जिलियाद से निकले हुए थे। बाक़ी कुंभे जिलियाद के छः बेटों इयज़र, खलक, असरियेल, सिकम, समीदा और हिफ़र से निकले हुए थे।

हिफ़र सिलाफ़िहाद का बाप था। सिलाफ़िहाद का कोई बेटा नहीं बल्कि पाँच बेटियाँ महलाह, नुआह, हुजलाह, मिलकाह और तिरज़ा थीं।

³⁵⁻³⁷ इफ़राईम के कबीले के 32,500 मर्द थे। कबीले के चार कुंभे सूतलही, बकरी, तहनी और ईरानी थे। पहले तीन कुंभे इफ़राईम के बेटों सूतलह, बकर और तहन से जबकि ईरानी सूतलह के बेटे ईरान से निकले हुए थे।

³⁸⁻⁴¹ बिनयमीन के कबीले के 45,600 मर्द थे। कबीले के सात कुंभे बालाई, अशबेली, अखीरामी, सूफ़ामी, हफ़ामी, अरदी और नामानी थे। पहले पाँच कुंभे बिनयमीन के बेटों बाला, अशबेल, अखीराम, सूफ़ाम और हफ़ाम से जबकि अरदी और नामानी बाला के बेटों से निकले हुए थे।

⁴²⁻⁴³ दान के कबीले के 64,400 मर्द थे। सब दान के बेटे सूहाम से निकले हुए थे, इसलिए सूहामी कहलाते थे।

⁴⁴⁻⁴⁷ आशर के कबीले के 53,400 मर्द थे। कबीले के पाँच कुंभे यिमनी, इसवी, बरीई, हिबरी और मलकियेली थे। पहले तीन कुंभे आशर के बेटों यिमना, इसवी और बरिया से जबकि बाक़ी बरिया के बेटों हिबर और मलकियेल से निकले हुए थे। आशर की एक बेटी बनाम सिरह भी थी।

48-50 नफताली के कबीले के 45,400 मर्द थे। कबीले के चार कुंभे यहसियेली, जूनी, यिसरी और सिल्लीमी नफताली के बेटों यहसियेल, जूनी, यिसर और सिल्लीम से निकले हुए थे।

51 इसराईली मर्दों की कुल तादाद 6,01,730 थी।

52 रब ने मूसा से कहा, 53 “जब मुल्के-कनान को तकसीम किया जाएगा तो ज़मीन इनकी तादाद के मुताबिक देना है। 54 बड़े कबीलों को छोटे की निसबत ज्यादा ज़मीन दी जाए। हर कबीले का इलाका उस की तादाद से मुताबिकत रखे। 55-56 कुरा डालने से फैसला किया जाए कि हर कबीले को कहाँ ज़मीन मिलेगी। लेकिन हर कबीले के इलाके का रकबा इस पर मबनी हो कि कबीले के कितने अफराद हैं।”

57 लावी के कबीले के तीन कुंभे जैरसोनी, किहाती और मिरारी लावी के बेटों जैरसोन, किहात और मिरारी से निकले हुए थे। 58 इसके अलावा लिबनी, हिब्रनी, महली, मूशी और कोरही भी लावी के कुंभे थे। किहात अमराम का बाप था। 59 अमराम ने लावी औरत यूकबिद से शादी की जो मिसर में पैदा हुई थी। उनके दो बेटे हारून और मूसा और एक बेटी मरियम पैदा हुए। 60 हारून के बेटे नदब, अबीह, इलियज़र और इतमर थे। 61 लेकिन नदब और अबीह रब को बख़ूर की नाजायज़ कुरबानी पेश करने के बाइस मर गए। 62 लावियों के मर्दों की कुल तादाद 23,000 थी। इनमें वह सब शामिल थे जो एक माह या इससे जायद के थे। उन्हें दूसरे इसराईलियों से अलग गिना गया, क्योंकि उन्हें इसराईल में मीरास में ज़मीन नहीं मिलनी थी।

63 यों मूसा और इलियज़र ने मोआब के मैदानी इलाके में यरीह के सामने लेकिन दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर इसराईलियों की मर्दमशुमारी की। 64 लोगों को गिनते गिनते उन्हें मालूम हुआ कि जो लोग दशते-सीन में मूसा और हारून की पहली मर्दमशुमारी में गिने गए थे वह सब मर चुके हैं। 65 रब ने कहा था कि वह सबके सब रेगिस्तान में मर जाएंगे, और ऐसा ही हुआ था। सिर्फ़ कालिब बिन यफ़ुन्ना और यशुअ बिन नून ज़िंदा रहे।

27

सिलाफ़िहाद की बेटियाँ

1 सिलाफ़िहाद की पाँच बेटियाँ महलाह, नुआह, हुजलाह, मिलकाह और तिरज़ा थीं। सिलाफ़िहाद यूसुफ़ के बेटे मनस्सी के कुंभे का था। उसका पूरा नाम सिलाफ़िहाद बिन हिफ़र बिन जिलियाद बिन मकीर बिन मनस्सी बिन यूसुफ़ था। 2 सिलाफ़िहाद की बेटियाँ मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े पर आकर मूसा, इलियज़र इमाम और पूरी जमात के सामने खड़ी हुईं। उन्होंने कहा, 3 “हमारा बाप रेगिस्तान में फ़ौत हुआ। लेकिन वह क्रोरह के उन साथियों में से नहीं था जो रब के खिलाफ़ मुतहिद हुए थे। वह इस सबब से न मरा बल्कि अपने जाती गुनाह के बाइस। जब वह मर गया तो उसका कोई बेटा नहीं था। 4 क्या यह ठीक है कि हमारे खानदान में बेटा न होने के बाइस हमें ज़मीन न मिले और हमारे बाप का नामो-निशान मिट जाए? हमें भी हमारे बाप के दीगर रिश्तेदारों के साथ ज़मीन दें।”

5 मूसा ने उनका मामला रब के सामने पेश किया 6 तो रब ने उससे कहा, 7 “जो बात सिलाफ़िहाद की बेटियाँ कर रही हैं वह दुस्त है। उन्हें ज़रूर उनके बाप के रिश्तेदारों के साथ ज़मीन मिलनी चाहिए। उन्हें बाप का विरसा मिल जाए। 8 इसराईलियों को भी बताना कि जब भी कोई आदमी मर जाए जिसका बेटा न हो तो उस की बेटी को उस की मीरास मिल जाए। 9 अगर उस की बेटी भी न हो तो उसके भाइयों को उस की मीरास मिल जाए। 10 अगर उसके भाई भी न हों तो उसके बाप के भाइयों को उस की मीरास मिल जाए। 11 अगर यह भी न हों तो उसके सबसे करीबी रिश्तेदार को उस की मीरास मिल जाए। वह उस की जाती मिलकियत होगी। यह उसूल इसराईलियों के लिए कानूनी हैसियत रखता है। वह इसे वैसा मानें जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया है।”

यशुअ को मूसा का जा-नशीन मुकर्रर किया जाता है

12 फिर रब ने मूसा से कहा, “अबारीम के पहाड़ी सिलसिले के इस पहाड़ पर चढ़कर उस मुल्क पर निगाह डाल जो मैं इसराईलियों को दूँगा। 13 उसे देखने के बाद तू भी अपने भाई हारून की तरह कूच करके अपने बापदादा से जा मिलेगा, 14 क्योंकि तुम दोनों ने दशते-सीन में मेरे हुक्म की खिलाफ़वर्ज़ी की। उस वक़्त जब पूरी जमात ने मरीबा में मेरे खिलाफ़ गिला-शिकवा किया तो तूने चटान से पानी निकालते वक़्त लोगों के सामने मेरी कुदूसियत कायम न रखी।” (मरीबा दशते-सीन के कादिस में चरमा है।)

15 मूसा ने रब से कहा, 16 “ऐ रब, तमाम जानों के खुदा, जमात पर किसी आदमी को मुकर्रर कर 17 जो उनके आगे आगे जंग के लिए निकले और उनके आगे आगे वापस आ जाए, जो उन्हें बाहर ले जाए और वापस ले आए। वरना रब की जमात उन भेड़ों की मानिंद होगी जिनका कोई चरवाहा न हो।”

18 जवाब में रब ने मूसा से कहा, “यशुअ बिन नून को चुन ले जिसमें मेरा रूह है, और अपना हाथ उस पर रख। 19 उसे इलियज़र इमाम और पूरी जमात के सामने खड़ा करके उनके रूबरू ही उसे राहनुमाई की ज़िम्मादारी दे। 20 अपने इख्तियार में से कुछ उसे दे ताकि इसराईल की पूरी जमात उस की इताअत करे। 21 रब की मरज़ी जानने के लिए वह इलियज़र इमाम के सामने खड़ा होगा तो इलियज़र रब के सामने ऊरीम और तुम्मीम इस्तेमाल करके उस की मरज़ी दरियाफ़्त करेगा। उसी के हुक्म पर यशुअ और इसराईल की पूरी जमात ख़ैमागाह से निकलेंगे और वापस आएँगे।”

22 मूसा ने ऐसा ही किया। उसने यशुअ को चुनकर इलियज़र और पूरी जमात के सामने खड़ा किया। 23 फिर उसने उस पर अपने हाथ रखकर उसे राहनुमाई की ज़िम्मादारी सौंपी जिस तरह रब ने उसे बताया था।

28

रोज़मर्रा की कुरबानियाँ

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इसराईलियों को बताना, खयाल रखो कि तुम मुकर्रर औकात पर मुझे जलनेवाली कुरबानियाँ पेश करो। यह मेरी रोटी है और इनकी खुशबू मुझे पसंद है। 3 रब को जलनेवाली यह कुरबानी पेश करना :

रोज़ाना भेड़ के दो यकसाला बच्चे जो बेऐब हों पूरे तौर पर जला देना। 4 एक को सुबह के वक़्त पेश करना और दूसरे को सूरज के डूबने के ऐन बाद। 5 भेड़ के बच्चे के साथ गल्ला की नज़र भी पेश की जाए यानी डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा जो एक लिटर जैतून के कूटकर निकाले हुए तेल के साथ मिलाया गया हो। 6 यह रोज़मर्रा की कुरबानी है जो पूरे तौर पर जलाई जाती है और पहली दफ़ा सीना पहाड़ पर चढ़ाई गई। इस जलनेवाली कुरबानी की खुशबू रब को पसंद है। 7-8 साथ ही एक लिटर शराब भी नज़र के तौर पर कुरबानगाह पर डाली जाए। सुबह और शाम की यह कुरबानियाँ दोनों ही इस तरीके से पेश की जाएँ।

सबत यानी हफ़ते की कुरबानी

9 सबत के दिन भेड़ के दो और बच्चे चढ़ाना। वह भी बेऐब और एक साल के हों। साथ ही मै और गल्ला की नज़रें भी पेश की जाएँ। गल्ला की नज़र के लिए 3 किलोग्राम बेहतरीन मैदा तेल के साथ मिलाया जाए। 10 भस्म होनेवाली यह कुरबानी हर हफ़ते के दिन पेश करनी है। यह रोज़मर्रा की कुरबानियों के अलावा है।

हर माह के पहले दिन की कुरबानी

11 हर माह के शुरू में रब को भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर दो जवान बैल, एक मेंढा और भेड़ के सात यकसाला बच्चे पेश करना। सब बग़ैर नुक्स के हों। 12 हर जानवर के साथ गल्ला की नज़र पेश करना जिसके लिए तेल में मिलाया गया बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। हर बैल के साथ साढ़े 4 किलोग्राम, हर मेंढे के साथ 3 किलोग्राम 13 और भेड़ के हर बच्चे के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा पेश करना। भस्म होनेवाली यह कुरबानियाँ रब को पसंद हैं। 14 इन कुरबानियों के साथ मै की नज़र भी कुरबानगाह पर डालना यानी हर बैल के साथ दो लिटर, हर मेंढे के साथ सवा लिटर और भेड़ के हर बच्चे के साथ एक लिटर मै पेश करना। यह कुरबानी साल में हर महीने के पहले दिन के मौके पर पेश करनी है। 15 इस कुरबानी और रोज़मर्रा की कुरबानियों के अलावा रब को एक बकरा गुनाह की कुरबानी के तौर पर पेश करना।

फ़सह की कुरबानियाँ

16 पहले महीने के चौथवें दिन फ़सह की ईद मनाई जाए। 17 अगले दिन पूरे हफ़ते की वह ईद शुरू होती है जिसके दौरान तुम्हें सिर्फ़ बेखमीरी रोटी खानी है। 18 पहले दिन काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। 19 रब के हज़र भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर दो जवान बैल, एक मेंढा और भेड़ के सात यकसाला बच्चे पेश करना। सब बग़ैर नुक्स के हों। 20 हर जानवर के साथ गल्ला की नज़र भी पेश करना जिसके लिए तेल के साथ मिलाया गया बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। हर बैल के साथ साढ़े 4 किलोग्राम, हर मेंढे के साथ 3 किलोग्राम 21 और भेड़ के हर बच्चे के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा पेश करना। 22 गुनाह की कुरबानी के तौर पर एक बकरा भी पेश करना ताकि तुम्हारा कफ़फ़ारा दिया जाए। 23-24 इन तमाम कुरबानियों को ईद के दौरान हर रोज़ पेश करना। यह रोज़मर्रा की भस्म होनेवाली कुरबानियों के अलावा हैं। इस ख़ुराक की खुशबू रब को पसंद है। 25 सातवें दिन काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना।

फ़सल की कटाई की ईद की कुरबानियाँ

26 फ़सल की कटाई के पहले दिन की ईद पर जब तुम रब को अपनी फ़सल की पहली पैदावार पेश करते हो तो काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। 27-29 उस दिन दो जवान बैल, एक मेंढा और भेड़ के सात यकसाला बच्चे कुरबानगाह पर पूरे तौर पर जला देना। इसके साथ गल्ला और मै की वही नज़रें पेश करना जो फ़सह की ईद पर भी पेश की जाती हैं। 30 इसके अलावा रब को एक बकरा गुनाह की कुरबानी के तौर पर चढ़ाना।

31 यह तमाम कुरबानियाँ रोज़मर्रा की भस्म होनेवाली कुरबानियों और उनके साथवाली गल्ला और मै की नज़रों के अलावा हैं। वह बेऐब हों।

29

नए साल की ईद की कुरबानियाँ

1 सातवें माह के पंद्रहवें दिन भी काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। उस दिन नरसिगे फूँके जाएँ। 2 रब को भस्म होनेवाली कुरबानी पेश की जाए जिसकी खुशबू उसे पसंद हो यानी एक जवान बैल, एक मेंढा और भेड़ के सात यकसाला बच्चे। सब नुक्स के बग़ैर हों। 3 हर जानवर के साथ गल्ला की नज़र भी पेश करना जिसके लिए तेल के साथ मिलाया गया बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। बैल के साथ साढ़े 4 किलोग्राम, मेंढे के साथ 3 किलोग्राम 4 और भेड़ के हर बच्चे के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा पेश करना। 5 एक बकरा भी गुनाह

की कुरबानी के तौर पर पेश करना ताकि तुम्हारा कफ़फ़ारा दिया जाए। ⁶ यह कुरबानियाँ रोज़ाना और हर माह के पहले दिन की कुरबानियों और उनके साथ की गल्ला और मै की नज़रों के अलावा हैं। इनकी खुशबू रब को पसंद है।

कफ़फ़ारा के दिन की कुरबानियाँ

⁷ सातवें महीने के दसवें दिन मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। उस दिन काम न करना और अपनी जान को दुख देना। ⁸⁻¹¹ रब को वही कुरबानियाँ पेश करना जो इसी महीने के पहले दिन पेश की जाती हैं। सिर्फ़ एक फ़रक़ है, उस दिन एक नहीं बल्कि दो बकरे गुनाह की कुरबानी के तौर पर पेश किए जाएँ ताकि तुम्हारा कफ़फ़ारा दिया जाए। ऐसी कुरबानियाँ रब को पसंद हैं।

झोपड़ियों की ईद की कुरबानियाँ

¹² सातवें महीने के पंद्रहवें दिन भी काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। सात दिन तक रब की ताज़ीम में ईद मनाना। ¹³ ईद के पहले दिन रब को 13 जवान बैल, 2 मेंढे और 14 भेड़ के यकसाला बच्चे भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करना। इनकी खुशबू उसे पसंद है। सब नुक्स के बग़ैर हों। ¹⁴ हर जानवर के साथ गल्ला की नज़र भी पेश करना जिसके लिए तेल से मिलाया गया बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। हर बैल के साथ साढ़े 4 किलोग्राम, हर मेंढे के साथ 3 किलोग्राम ¹⁵ और भेड़ के हर बच्चे के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा पेश करना। ¹⁶ इसके अलावा एक बकरा भी गुनाह की कुरबानी के तौर पर पेश करना। यह कुरबानियाँ रोज़ाना की भस्म होनेवाली कुरबानियों और उनके साथवाली गल्ला और मै की नज़रों के अलावा हैं। ¹⁷⁻³⁴ ईद के बाक़ी छः दिन यही कुरबानियाँ पेश करनी हैं। लेकिन हर दिन एक बैल कम हो यानी दूसरे दिन 12, तीसरे दिन 11, चौथे दिन 10, पाँचवें दिन 9, छठे दिन 8 और सातवें दिन 7 बैल। हर दिन गुनाह की कुरबानी के लिए बकरा और मामूल की रोज़ाना की कुरबानियाँ भी पेश करना। ³⁵ ईद के आठवें दिन काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। ³⁶ रब को एक जवान बैल, एक मेंढा और भेड़ के सात यकसाला बच्चे भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करना। इनकी खुशबू रब को पसंद है। सब नुक्स के बग़ैर हों। ³⁷⁻³⁸ साथ ही वह तमाम कुरबानियाँ भी पेश करना जो पहले दिन पेश की जाती हैं। ³⁹ यह सब वही कुरबानियाँ हैं जो तुम्हें रब को अपनी ईदों पर पेश करनी हैं। यह उन तमाम कुरबानियों के अलावा हैं जो तुम दिली खुशी से या मन्नत मानकर देते हो, चाहे वह भस्म होनेवाली, गल्ला की, मै की या सलामती की कुरबानियाँ क्यों न हों।”

⁴⁰ मूसा ने रब की यह तमाम हिदायात इसराइलियों को बता दी।

30

मन्नत मानने के क़वायद

- ¹ फिर मूसा ने क़बीलों के सरदारों से कहा, “रब फ़रमाता है,
- ² अगर कोई आदमी रब को कुछ देने की मन्नत माने या किसी चीज़ से परहेज़ करने की क़सम खाए तो वह अपनी बात पर कायम रहकर उसे पूरा करे।
- ³ अगर कोई जवान औरत जो अब तक अपने बाप के घर में रहती है रब को कुछ देने की मन्नत माने या किसी चीज़ से परहेज़ करने की क़सम खाए ⁴ तो लाज़िम है कि वह अपनी मन्नत या क़सम की हर बात पूरी करे। शर्त यह है कि उसका बाप उसके बारे में सुनकर एतराज़ न करे। ⁵ लेकिन अगर उसका बाप यह सुनकर उसे ऐसा करने से मना करे तो उस की मन्नत या क़सम मनसूख़ है, और वह उसे पूरा करने से बरी है। रब उसे मुआफ़ करेगा, क्योंकि उसके बाप ने उसे मना किया है।
- ⁶ हो सकता है कि किसी ग़ैरशादीशुदा औरत ने मन्नत मानी या किसी चीज़ से परहेज़ करने की क़सम खाई, चाहे उसने दानिस्ता तौर पर या बेसोचे-समझे ऐसा किया। इसके बाद उस औरत ने शादी कर ली। ⁷ शादीशुदा हालत में भी लाज़िम है कि वह अपनी मन्नत या क़सम की हर बात पूरी करे। शर्त यह है कि उसका शौहर इसके बारे में सुनकर एतराज़ न करे। ⁸ लेकिन अगर उसका शौहर यह सुनकर उसे ऐसा करने से मना करे तो उस की मन्नत या क़सम मनसूख़ है, और वह उसे पूरा करने से बरी है। रब उसे मुआफ़ करेगा। ⁹ अगर किसी बेवा या तलाक़शुदा औरत ने मन्नत मानी या किसी चीज़ से परहेज़ करने की क़सम खाई तो लाज़िम है कि वह अपनी हर बात पूरी करे।
- ¹⁰ अगर किसी शादीशुदा औरत ने मन्नत मानी या किसी चीज़ से परहेज़ करने की क़सम खाई ¹¹ तो लाज़िम है कि वह अपनी हर बात पूरी करे। शर्त यह है कि उसका शौहर उसके बारे में सुनकर एतराज़ न करे। ¹² लेकिन अगर उसका शौहर उसे ऐसा करने से मना करे तो उस की मन्नत या क़सम मनसूख़ है। वह उसे पूरा करने से बरी है। रब उसे मुआफ़ करेगा, क्योंकि उसके शौहर ने उसे मना किया है। ¹³ चाहे बीवी ने कुछ देने की मन्नत मानी हो या किसी चीज़ से परहेज़ करने की क़सम खाई हो, उसके शौहर को उस की तसदीक़ या उसे मनसूख़ करने का इख़्तियार है। ¹⁴ अगर उसने अपनी बीवी की मन्नत या क़सम के बारे में सुन लिया और अगले दिन तक एतराज़ न किया तो लाज़िम है कि उस की बीवी अपनी हर बात पूरी करे। शौहर ने अगले दिन तक एतराज़ न करने से अपनी बीवी की बात की तसदीक़ की है। ¹⁵ अगर वह इसके बाद यह मन्नत या क़सम मनसूख़ करे तो उसे इस कुसूर के नतायज भुगतने पड़ेंगे।”
- ¹⁶ रब ने मूसा को यह हिदायात दी। यह ऐसी औरतों की मन्नतों या क़समों के उसूल हैं जो ग़ैरशादीशुदा हालत में अपने बाप के घर में रहती हैं या जो शादीशुदा हैं।

31

मिदियानियों से जंग

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “मिदियानियों से इसराइलियों का बदला ले। इसके बाद तू कूच करके अपने बापदादा से जा मिलेगा।”

3 चुनौचे मूसा ने इसराइलियों से कहा, “हथियारों से अपने कुछ आदमियों को लैस करो ताकि वह मिदियान से जंग करके रब का बदला लें। 4 हर कबीले के 1,000 मर्द जंग लड़ने के लिए भेजो।”

5 चुनौचे हर कबीले के 1,000 मुसल्लह मर्द यानी कुल 12,000 आदमी चुने गए। 6 तब मूसा ने उन्हें जंग लड़ने के लिए भेज दिया। उसने इलियज़र इमाम के बेटे फ़ीनहास को भी उनके साथ भेजा जिसके पास मकदिस की कुछ चीज़ें और एलान करने के बिगुल थे। 7 उन्होंने रब के हुक्म के मुताबिक मिदियानियों से जंग की और तमाम आदमियों को मौत के घाट उतार दिया। 8 इनमें मिदियानियों के पाँच बादशाह इवी, रकम, सू, हर और रबा थे। बिलाम बिन बओर को भी जान से मार दिया गया।

9 इसराइलियों ने मिदियानी औरतों और बच्चों को गिरफ़्तार करके उनके तमाम गाय-बैल, भेड़-बकरियाँ और माल लूट लिया। 10 उन्होंने उनकी तमाम आबादियों को ख़ैमागाहों समेत जलाकर राख कर दिया। 11-12 फिर वह तमाम लूटा हुआ माल कैदियों और जानवरों समेत मूसा, इलियज़र इमाम और इसराइल की पूरी जमात के पास ले आए जो ख़ैमागाह में इंतज़ार कर रहे थे। अभी तक वह मोआब के मैदानी इलाके में दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर यरीह के सामने ठहरे हुए थे। 13 मूसा, इलियज़र और जमात के तमाम सरदार उनका इस्तक़बाल करने के लिए ख़ैमागाह से निकले।

14 उन्हें देखकर मूसा को हज़ार हज़ार और सौ सौ अफ़राद पर मुक़र्रर अफ़सरान पर गुस्सा आया। 15 उसने कहा, “आपने तमाम औरतों को क्यों बचाए रखा? 16 उन्हीं ने बिलाम के मशवरे पर फ़ारू में इसराइलियों को रब से दूर कर दिया था। उन्हीं के सबब से रब की वबा उसके लोगों में फैल गई। 17 चुनौचे अब तमाम लड़कों को जान से मार दो। उन तमाम औरतों को भी मौत के घाट उतारना जो कुँवारियाँ नहीं हैं। 18 लेकिन तमाम कुँवारियों को बचाए रखना। 19 जिसने भी किसी को मार दिया या किसी लाश को छुआ है वह सात दिन तक ख़ैमागाह के बाहर रहे। तीसरे और सातवें दिन अपने आपको अपने कैदियों समेत गुनाह से पाक-साफ़ करना। 20 हर लिबास और हर चीज़ को पाक-साफ़ करना जो चमड़े, बकरियों के बालों या लकड़ी की हो।”

21 फिर इलियज़र इमाम ने जंग से वापस आनेवाले मर्दों से कहा, “जो शरीअत रब ने मूसा को दी उसके मुताबिक 22-23 जो भी चीज़ जल नहीं जाती उसे आग में से गुज़ार देना ताकि पाक-साफ़ हो जाए। उसमें सोना, चाँदी, पीतल, लोहा, टीन और सीसा शामिल है। फिर उस पर नापाकी दूर करने का पानी छिड़कना। बाक़ी तमाम चीज़ें पानी में से गुज़ार देना ताकि वह पाक-साफ़ हो जाएँ। 24 सातवें दिन अपने लिबास को धोना तो तुम पाक-साफ़ होकर ख़ैमागाह में दाख़िल हो सकते हो।”

लूटे हुए माल की तकसीम

25 रब ने मूसा से कहा, 26 “तमाम कैदियों और लूटे हुए जानवरों को गिन। इसमें इलियज़र इमाम और क़बायली कुंभों के सरपरस्त तेरी मदद करें। 27 सारा माल दो बराबर के हिस्सों में तकसीम करना, एक हिस्सा फ़ौजियों के लिए और दूसरा बाक़ी जमात के लिए हो। 28 फ़ौजियों के हिस्से के पाँच पाँच सौ कैदियों में से एक एक निकालकर रब को देना। इसी तरह पाँच पाँच सौ बैलों, गधों, भेड़ों और बकरियों में से एक एक निकालकर रब को देना। 29 उन्हें इलियज़र इमाम को देना ताकि वह उन्हें रब को उठानेवाली क़ुरबानी के तौर पर पेश करे। 30 बाक़ी जमात के हिस्से के पचास पचास कैदियों में से एक एक निकालकर रब को देना, इसी तरह पचास पचास बैलों, गधों, भेड़ों और बकरियों या दूसरे जानवरों में से भी एक एक निकालकर रब को देना। उन्हें उन लावियों को देना जो रब के मक़दिस को सँभालते हैं।”

31 मूसा और इलियज़र ने ऐसा ही किया। 32-34 उन्होंने 6,75,000 भेड़-बकरियाँ, 72,000 गाय-बैल और 61,000 गधे गिने। 35 इनके अलावा 32,000 कैदी कुँवारियाँ भी थीं। 36-40 फ़ौजियों को तमाम चीज़ों का आधा हिस्सा मिल गया यानी 3,37,500 भेड़-बकरियाँ, 36,000 गाय-बैल, 30,500 गधे और 16,000 कैदी कुँवारियाँ। इनमें से उन्होंने 675 भेड़-बकरियाँ, 72 गाय-बैल, 61 गधे और 32 लड़कियाँ रब को दीं। 41 मूसा ने रब का यह हिस्सा इलियज़र इमाम को उठानेवाली क़ुरबानी के तौर पर दे दिया, जिस तरह रब ने हुक्म दिया था। 42-47 बाक़ी जमात को भी लूटे हुए माल का आधा हिस्सा मिल गया। मूसा ने पचास पचास कैदियों और जानवरों में से एक एक निकालकर उन लावियों को दे दिया जो रब का मक़दिस सँभालते थे। उसने वैसा ही किया जैसा रब ने हुक्म दिया था।

48 फिर वह अफ़सर मूसा के पास आए जो लश्कर के हज़ार हज़ार और सौ सौ आदमियों पर मुक़र्रर थे। 49 उन्होंने उससे कहा, “आपके खादिमों ने उन फ़ौजियों को गिन लिया है जिन पर वह मुक़र्रर हैं, और हमें पता चल गया कि एक भी कम नहीं हुआ। 50 इसलिए हम रब को सोने का तमाम ज़ेवर क़ुरबान करना चाहते हैं जो हमें फ़तह पाने पर मिला था मसलन सोने के बाज़ुबंद, कंगन, मुहर लगाने की अंगूठियाँ, बालियाँ और हार। यह सब कुछ हम रब को पेश करना चाहते हैं ताकि रब के सामने हमारा कफ़फ़ारा हो जाए।”

51 मूसा और इलियज़र इमाम ने सोने की तमाम चीज़ें उनसे ले लीं। 52 जो चीज़ें उन्होंने अफ़सरान के लूटे हुए माल में से रब को उठानेवाली क़ुरबानी के तौर पर पेश कीं उनका पूरा वज़न तक़रीबन 190 किलोग्राम था। 53 सिर्फ़ अफ़सरान ने ऐसा किया। बाक़ी फ़ौजियों ने अपना लूट का माल अपने लिए रख लिया। 54 मूसा और इलियज़र अफ़सरान का यह सोना मुलाक़ात के ख़ैमे में ले आए ताकि वह रब को उस की क़ौम की याद दिलाता रहे।

32

दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर आबाद कबीले

1 रूबिन और जद के कबीलों के पास बहुत-से मवेशी थे। जब उन्होंने देखा कि याजेर और जिलियाद का इलाका मवेशी पालने के लिए अच्छा है 2 तो उन्होंने मूसा, इलियज़र इमाम और जमात के राहनुमाओं के पास आकर कहा, 3-4 “जिस इलाके को रब ने इसराईल की जमात के आगे आगे शिकस्त दी है वह मवेशी पालने के लिए अच्छा है। अतारात, दीबोन, याजेर, निमरा, हसबोन, इलियाली, सबाम, नबू और बऊन जो इसमें शामिल हैं हमारे काम आएँगे, क्योंकि आपके खादिमों के पास मवेशी हैं। 5 अगर आपकी नज़रे-करम हम पर हो तो हमें यह इलाका दिया जाए। यह हमारी मिलकियत बन जाए और हमें दरियाए-यरदन को पार करने पर मजबूर न किया जाए।”

6 मूसा ने जद और रूबिन के अफ़राद से कहा, “क्या तुम यहाँ पीछे रहकर अपने भाइयों को छोड़ना चाहते हो जब वह जंग लड़ने के लिए आगे निकलेंगे? 7 इस वक़्त जब इसराईली दरियाए-यरदन को पार करके उस मुल्क में दाख़िल होनेवाले हैं जो रब ने उन्हें दिया है तो तुम क्यों उनकी हौसलाशिकनी कर रहे हो? 8 तुम्हारे बापदादा ने भी यही कुछ किया जब मैंने उन्हें कादिस-बरनीअ से मुल्क के बारे में मालुमात हासिल करने के लिए भेजा। 9 इसकाल की वादी में पहुँचकर मुल्क की तफ़्तीश करने के बाद उन्होंने इसराईलियों की हौसलाशिकनी की ताकि वह उस मुल्क में दाख़िल न हों जो रब ने उन्हें दिया था। 10 उस दिन रब ने गुस्से में आकर कसम खाई, 11 ‘उन आदमियों में से जो मिसर से निकल आए हैं कोई उस मुल्क को नहीं देखेगा जिसका वादा मैंने कसम खाकर इब्राहीम, इसहाक और याकूब से किया था। क्योंकि उन्होंने पूरी वफ़ादारी से मेरी पैरवी न की। सिर्फ़ वह जिनकी उम्र उस वक़्त 20 साल से कम है दाख़िल होंगे। 12 बुजुर्गों में से सिर्फ़ कालिब बिन यफ़ुन्ना कनिज्ज़ी और यशुअ बिन नून मुल्क में दाख़िल होंगे, इसलिए कि उन्होंने पूरी वफ़ादारी से मेरी पैरवी की।’ 13 उस वक़्त रब का ग़ज़ब उन पर आन पड़ा, और उन्हें 40 साल तक रेगिस्तान में मारे मारे फिरना पड़ा, जब तक कि वह तमाम नसल ख़त्म न हो गई जिसने उसके नज़दीक ग़लत काम किया था। 14 अब तुम गुनाहगारों की औलाद अपने बापदादा की जगह खड़े होकर रब का इसराईल पर गुस्सा मज़ीद बढ़ा रहे हो। 15 अगर तुम उस की पैरवी से हटोगे तो वह दुबारा इन लोगों को रेगिस्तान में रहने देगा, और तुम इनकी हलाकत का बाइस बनोगे।”

16 इसके बाद रूबिन और जद के अफ़राद दुबारा मूसा के पास आए और कहा, “हम यहाँ फ़िलहाल अपने मवेशी के लिए बाड़े और अपने बाल-बच्चों के लिए शहर बनाना चाहते हैं। 17 इसके बाद हम मुसल्लह होकर इसराईलियों के आगे आगे चलेंगे और हर एक को उस की अपनी जगह तक पहुँचाएँगे। इतने में हमारे बाल-बच्चे हमारे शहरों की फ़सीलों के अंदर मुल्क के मुखालिफ़ बाशिंदों से महफूज़ रहेंगे। 18 हम उस वक़्त तक अपने घरों को नहीं लौटेंगे जब तक हर इसराईली को उस की मौस्सी ज़मीन न मिल जाए। 19 दूसरे, हम खुद उनके साथ दरियाए-यरदन के मगरिब में मीरास में कुछ नहीं पाएँगे, क्योंकि हमें अपनी मौस्सी ज़मीन दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर मिल चुकी है।”

20 यह सुनकर मूसा ने कहा, “अगर तुम ऐसा ही करोगे तो ठीक है। फिर रब के सामने जंग के लिए तैयार हो जाओ 21 और सब हथियार बाँधकर रब के सामने दरियाए-यरदन को पार करो। उस वक़्त तक न लौटो जब तक रब ने अपने तमाम दुश्मनों को अपने आगे से निकाल न दिया हो। 22 फिर जब मुल्क पर रब का क़ब्ज़ा हो गया होगा तो तुम लौट सकोगे। तब तुमने रब और अपने हमवतन भाइयों के लिए अपने फ़रायज़ अदा कर दिए होंगे, और यह इलाका रब के सामने तुम्हारा मौस्सी हक़ होगा। 23 लेकिन अगर तुम ऐसा न करो तो फिर तुम रब ही का गुनाह करोगे। यक़ीन जानो तुम्हें अपने गुनाह की सज़ा मिलेगी। 24 अब अपने बाल-बच्चों के लिए शहर और अपने मवेशियों के लिए बाड़े बना लो। लेकिन अपने वादे को ज़रूर पूरा करना।”

25 जद और रूबिन के अफ़राद ने मूसा से कहा, “हम आपके खादिम हैं, हम अपने आका के हुक्म के मुताबिक़ ही करेंगे। 26 हमारे बाल-बच्चे और मवेशी यहीं जिलियाद के शहरों में रहेंगे। 27 लेकिन आपके खादिम मुसल्लह होकर दरिया को पार करेंगे और रब के सामने जंग करेंगे। हम सब कुछ वैसा ही करेंगे जैसा हमारे आका ने हमें हुक्म दिया है।”

28 तब मूसा ने इलियज़र इमाम, यशुअ बिन नून और क़बायली कुंबों के सरपरस्तों को हिदायत दी, 29 “लाज़िम है कि जद और रूबिन के मर्द मुसल्लह होकर तुम्हारे साथ ही रब के सामने दरियाए-यरदन को पार करें और मुल्क पर क़ब्ज़ा करें। अगर वह ऐसा करें तो उन्हें मीरास में जिलियाद का इलाका दो। 30 लेकिन अगर वह ऐसा न करें तो फिर उन्हें मुल्के-कनान ही में तुम्हारे साथ मौस्सी ज़मीन मिले।”

31 जद और रूबिन के अफ़राद ने इसरार किया, “आपके खादिम सब कुछ करेंगे जो रब ने कहा है। 32 हम मुसल्लह होकर रब के सामने दरियाए-यरदन को पार करेंगे और कनान के मुल्क में दाख़िल होंगे, अगरचे हमारी मौस्सी ज़मीन यरदन के मशरिकी किनारे पर होगी।”

33 तब मूसा ने जद, रूबिन और मनस्सी के आधे कबीले को यह इलाका दिया। उसमें वह पूरा मुल्क शामिल था जिस पर पहले अमोरियों का बादशाह सीहोन और बसन का बादशाह ओज़ हुक्मत करते थे। इन शिकस्तख़ुरदा ममालिक के देहातों समेत तमाम शहर उनके हवाले किए गए।

34 जद के कबीले ने दीबोन, अतारात, अरोईर, 35 अतारात-शोफ़ान, याजेर, युगबहा, 36 बैत-निमरा और बैत-हारान के शहरों को दुबारा तामीर किया। उन्होंने उनकी फ़सीलें बनाई और अपने मवेशियों के लिए बाड़े भी। 37 रूबिन के कबीले ने हसबोन, इलियाली, किरियतायम, 38 नबू, बाल-मऊन और सिबमाह दुबारा तामीर किए। नबू और बाल-मऊन के नाम बदल गए, क्योंकि उन्होंने उन शहरों को नए नाम दिए जो उन्होंने दुबारा तामीर किए।

39 मनस्सी के बेटे मकीर की औलाद ने जिलियाद जाकर उस पर कब्जा कर लिया और उसके तमाम अमोरी बाशियों को निकाल दिया। 40 चुनौचे मूसा ने मकीरियों को जिलियाद की सरजमीन दे दी, और वह वहाँ आबाद हुए। 41 मनस्सी के एक आदमी बनाम याईर ने उस इलाके में कुछ बस्तियों पर कब्जा करके उन्हें हव्वोत-याईर यानी 'याईर की बस्तियाँ' का नाम दिया। 42 इसी तरह उस कबीले के एक और आदमी बनाम नूबह ने जाकर कनात और उसके देहातों पर कब्जा कर लिया। उसने शहर का नाम नूबह रखा।

33

इसराईल के सफ़र के मरहले

1 ज़ैल में उन जगहों के नाम हैं जहाँ जहाँ इसराईली कबीले अपने दस्तों के मुताबिक मूसा और हासून की राहनुमाई में मिसर से निकलकर खैमाज़न हुए थे। 2 रब के हुक्म पर मूसा ने हर जगह का नाम कलमबंद किया जहाँ उन्होंने अपने खैमे लगाए थे। उन जगहों के नाम यह हैं :

3 पहले महीने के पंद्रहवें दिन इसराईली रामसीस से रवाना हुए। यानी फ़सह के दिन के बाद के दिन वह बड़े इख्तियार के साथ तमाम मिसरियों के देखते देखते चले गए। 4 मिसरी उस वक़्त अपने पहलौठों को दफ़न कर रहे थे, क्योंकि रब ने पहलौठों को मारकर उनके देवताओं की अदालत की थी।

5 रामसीस से इसराईली सुक्कात पहुँच गए जहाँ उन्होंने पहली मरतबा अपने डेरे लगाए। 6 वहाँ से वह एताम पहुँचे जो रेगिस्तान के किनारे पर वाके है। 7 एताम से वह वापस मुडकर फ़ी-हख़ीरोत की तरफ बढे जो बाल-सफ़ोन के मशरिक में है। वह मिजदाल के करीब खैमाज़न हुए।

8 फिर वह फ़ी-हख़ीरोत से कूच करके समुंद्र में से गुज़र गए। इसके बाद वह तीन दिन एताम के रेगिस्तान में सफ़र करते करते मारा पहुँच गए और वहाँ अपने खैमे लगाए। 9 मारा से वह एलीम चले गए जहाँ 12 चश्मे और खजूर के 70 दरख़्त थे। वहाँ ठहरने के बाद 10 वह बहरे-कुलज़ुम के साहिल पर खैमाज़न हुए, 11 फिर दशते-सीन में पहुँच गए।

12 उनके अगले मरहले यह थे : दुफ़का, 13-37 अलूस, रफ़ीदीम जहाँ पीने का पानी दस्तयाब न था, दशते-सीना, कब्रोत-हत्तावा, हसीरात, रितमा, रिम्मोन-फ़ारस, लिबना, रिस्सा, कहीलाता, साफ़र पहाड़, हरादा, मकहीलोत, तहत, तारह, मितका, हशमूना, मौसीरोत, बनी-याक़ान, होर-हज्जिदजाद, युतबाता, अबरूना, अस्यून-जाबर, दशते-सीन में वाके कादिस और होर पहाड़ जो अदोम की सरहद पर वाके है।

38 वहाँ रब ने हासून इमाम को हुक्म दिया कि वह होर पहाड़ पर चढ़ जाए। वहीं वह पाँचवें माह के पहले दिन फ़ौत हुआ। इसराईलियों को मिसर से निकले 40 साल गुज़र चुके थे। 39 उस वक़्त हासून 123 साल का था।

40 उन दिनों में अराद के कनानी बादशाह ने सुना कि इसराईली मेरे मुल्क की तरफ बढ रहे हैं। वह कनान के जुनूब में हुक्मत करता था।

41-47 होर पहाड़ से रवाना होकर इसराईली ज़ैल की जगहों पर ठहरे : जलमूना, फ़ूनोन, ओबोत, ऐये-अबारीम जो मोआब के इलाके में था, दीबोन-जद, अलमून-दिबलातायम और नबू के करीब वाके अबारीम का पहाड़ी इलाका। 48 वहाँ से उन्होंने यरदन की वादी में उतरकर मोआब के मैदानी इलाके में अपने डेरे लगाए। अब वह दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर यरीह शहर के सामने थे। 49 उनके खैमे बैत-यसीमोत से लेकर अबील-शिन्तीम तक लगे थे।

तमाम कनानी बाशियों को निकालने का हुक्म

50 वहाँ रब ने मूसा से कहा, 51 "इसराईलियों को बताना कि जब तुम दरियाए-यरदन को पार करके मुल्के-कनान में दाखिल होगे 52 तो लाज़िम है कि तुम तमाम बाशियों को निकाल दो। उनके तराशे और ढाले हुए बुतों को तोड़ डालो और उनकी ऊँची जगहों के मंदिरों को तबाह करो। 53 मुल्क पर कब्जा करके उसमें आबाद हो जाओ, क्योंकि मैंने यह मुल्क तुम्हें दे दिया है। यह मेरी तरफ से तुम्हारी मौस्सी मिलकियत है। 54 मुल्क को मुख्तलिफ़ कबीलों और ख़ानदानों में कुरा डालकर तकसीम करना। हर ख़ानदान के अफ़राद की तादाद का लिहाज़ रखना। बड़े ख़ानदान को निसबतन ज़्यादा ज़मीन देना और छोटे ख़ानदान को निसबतन कम ज़मीन। 55 लेकिन अगर तुम मुल्क के बाशियों को नहीं निकालोगे तो बचे हुए तुम्हारी आँखों में ख़ार और तुम्हारे पहलुओं में काँटे बनकर तुम्हें उस मुल्क में तंग करेंगे जिसमें तुम आबाद होगे। 56 फिर मैं तुम्हारे साथ वह कुछ करूँगा जो उनके साथ करना चाहता हूँ।"

34

मुल्के-कनान की सरहदें

1 रब ने मूसा से कहा, 2 "इसराईलियों को बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाखिल होगे जो मैं तुम्हें मीरास में दूँगा तो उस की सरहदें यह होंगी :

3 उस की जुनूबी सरहद दशते-सीन में अदोम की सरहद के साथ साथ चलेगी। मशरिक में वह बहीराए-मुरदार के जुनूबी साहिल से शुरू होगी, फिर इन जगहों से होकर मगरिब की तरफ गुज़रेगी : 4 दर्राए-अक्रब्बीम के जुनूब में से, दशते-सीन में से, कादिस-बरनीअ के जुनूब में से हसर-अद्वार और अज़मून में से। 5 वहाँ से वह मुडकर मिसर की सरहद पर वाके वादीए-मिसर के साथ साथ बहीराए-रूम तक पहुँचेगी। 6 उस की मगरिबी सरहद बहीराए-रूम का साहिल होगा। 7 उस की शिमाली सरहद बहीराए-रूम से लेकर इन जगहों से होकर मशरिक की तरफ गुज़रेगी : होर पहाड़, 8 लबो-हमात, सिदाद, 9 ज़िफ़रून और हसर-एनान। हसर-एनान शिमाली सरहद का सबसे मशरिकी मक़ाम होगा। 10 उस की मशरिकी सरहद शिमाल में हसर-एनान से शुरू होगी। फिर वह इन जगहों से होकर जुनूब की तरफ गुज़रेगी : सिफ़ाम, 11 रिबला जो ऐन

के मशरिक में है और किन्नरत यानी गलील की झील के मशरिक में वाके पहाड़ी इलाका। ¹² इसके बाद वह दरियाए-यरदन के किनारे किनारे गुजरती हुई बहीराए-मुरदार तक पहुँचेगी। यह तुम्हारे मुल्क की सरहदें होंगी।”

¹³ मूसा ने इसराईलियों से कहा, “यह वही मुल्क है जिसे तुम्हें कुरा डालकर तकसीम करना है। रब ने हुक्म दिया है कि उसे बाक्री साढे नौ कबीलों को देना है। ¹⁴ क्योंकि अढाई कबीलों के खानदानों को उनकी मीरास मिल चुकी है यानी रुबिन और जद के पूरे कबीले और मनस्सी के आधे कबीले को। ¹⁵ उन्हें यहाँ, दरियाए-यरदन के मशरिक में यरीह के सामने ज़मीन मिल चुकी है।”

मुल्क तकसीम करने के ज़िम्मादार आदमी

¹⁶ रब ने मूसा से कहा, ¹⁷ “इलियज़र इमाम और यशुअ बिन नून लोगों के लिए मुल्क तकसीम करें। ¹⁸ हर कबीले के एक एक राहनुमा को भी चुनना ताकि वह तकसीम करने में मदद करे। जिनको तुम्हें चुनना है उनके नाम यह हैं :

- ¹⁹ यहदाह के कबीले का कालिब बिन यफुन्ना,
- ²⁰ शमौन के कबीले का समुएल बिन अम्मीहद,
- ²¹ बिनयमीन के कबीले का इलीदाद बिन किस्लोन,
- ²² दान के कबीले का बुक्की बिन युगली,
- ²³ मनस्सी के कबीले का हन्नियेल बिन अफूद,
- ²⁴ इफ़राईम के कबीले का कमुएल बिन सिफ़तान,
- ²⁵ ज़बूलून के कबीले का इलीसफ़न बिन फ़रनाक,
- ²⁶ इशकार के कबीले का फ़लतियेल बिन अज़्ज़ान,
- ²⁷ आशर के कबीले का अखीहद बिन शलूमी,
- ²⁸ नफ़ताली के कबीले का फ़िदाहेल बिन अम्मीहद।”
- ²⁹ रब ने इन्हीं आदमियों को मुल्क को इसराईलियों में तकसीम करने की ज़िम्मादारी दी।

35

लावियों के लिए शहर

¹ इसराईली अब तक मोआब के मैदानी इलाके में दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर यरीह के सामने थे। वहाँ रब ने मूसा से कहा,
² “इसराईलियों को बता दे कि वह लावियों को अपनी मिली हुई ज़मीनों में से रहने के लिए शहर दें। उन्हें शहरों के इर्दगिर्द मवेशी चराने की ज़मीन भी मिले। ³ फिर लावियों के पास रहने के लिए शहर और अपने जानवर चराने के लिए ज़मीन होगी। ⁴ चराने के लिए ज़मीन शहर के इर्दगिर्द होगी, और चारों तरफ़ का फ़ासला फ़सीलों से 1,500 फ़ुट हो। ⁵ चराने की यह ज़मीन मुरब्बा शक़ल की होगी जिसके हर पहलू का फ़ासला 3,000 फ़ुट हो। शहर इस मुरब्बा शक़ल के बीच में हो। यह रक़बा शहर के बाशिंदों के लिए हो ताकि वह अपने मवेशी चरा सकें।

गैरइरादी खूनेज़ी के लिए पनाह के शहर

⁶⁻⁷ लावियों को कुल 48 शहर देना। इनमें से छः पनाह के शहर मुक़र्रर करना। उनमें ऐसे लोग पनाह ले सकेंगे जिनके हाथों गैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो। ⁸ हर कबीला लावियों को अपने इलाके के रक़बे के मुताबिक़ शहर दे। जिस कबीले का इलाका बड़ा है उसे लावियों को ज़्यादा शहर देने हैं जबकि जिस कबीले का इलाका छोटा है वह लावियों को कम शहर दे।”

⁹ फिर रब ने मूसा से कहा, ¹⁰ “इसराईलियों को बताना कि दरियाए-यरदन को पार करने के बाद ¹¹ कुछ पनाह के शहर मुक़र्रर करना। उनमें वह शख्स पनाह ले सकेगा जिसके हाथों गैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो। ¹² वहाँ वह इंतक़ाम लेनेवाले से पनाह ले सकेगा और जमात की अदालत के सामने खड़े होने से पहले मारा नहीं जा सकेगा। ¹³ इसके लिए छः शहर चुन लो। ¹⁴ तीन दरियाए-यरदन के मशरिक में और तीन मुल्के-कनान में हों। ¹⁵ यह छः शहर हर किसी को पनाह देंगे, चाहे वह इसराईली, परदेसी या उनके दरमियान रहनेवाला गैरशहरी हो। जिससे भी गैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो वह वहाँ पनाह ले सकता है।

¹⁶⁻¹⁸ अगर किसी ने किसी को जान-बूझकर लोहे, पत्थर या लकड़ी की किसी चीज़ से मार डाला हो वह कातिल है और उसे सज़ाए-मौत देनी है। ¹⁹ मक़तूल का सबसे करीबी रिश्तेदार उसे तलाश करके मार दे। ²⁰⁻²¹ क्योंकि जो नफ़रत या दुश्मनी के बाइस जान-बूझकर किसी को यों धक्का दे, उस पर कोई चीज़ फेंक दे या उसे मुक्का मारे कि वह मर जाए वह कातिल है और उसे सज़ाए-मौत देनी है।

²² लेकिन वह कातिल नहीं है जिससे दुश्मनी के बाइस नहीं बल्कि इतफ़ाक़ से और गैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो, चाहे उसने उसे धक्का दिया, कोई चीज़ उस पर फेंक दी ²³ या कोई पत्थर उस पर गिरने दिया। ²⁴ अगर ऐसा हुआ तो लाज़िम है कि जमात इन हिदायात के मुताबिक़ उसके और इंतक़ाम लेनेवाले के दरमियान फ़ैसला करे। ²⁵ अगर मुलज़िम बेकुसूर है तो जमात उस की हिफ़ाज़त करके उसे पनाह के उस शहर में वापस ले जाए जिसमें उसने पनाह ली है। वहाँ वह मुक़द्दस तेल से मसह किए गए इमामे-आज़म की मौत तक रहे। ²⁶ लेकिन अगर यह शख्स इससे पहले पनाह के शहर से निकले तो वह महफूज़ नहीं होगा। ²⁷ अगर उसका इंतक़ाम लेनेवाले से सामना हो जाए तो इंतक़ाम लेनेवाले को उसे मार डालने की इज़ाज़त होगी। अगर वह ऐसा करे तो बेकुसूर रहेगा। ²⁸ पनाह लेनेवाला इमामे-आज़म की वफ़ात तक पनाह

के शहर में रहे। इसके बाद ही वह अपने घर वापस जा सकता है। ²⁹ यह उसूल दायमी हैं। जहाँ भी तुम रहते हो तुम्हें हमेशा इन पर अमल करना है।

³⁰ जिस पर क़त्ल का इलज़ाम लगाया गया हो उसे सिर्फ़ इस सूत में सज़ाए-मौत दी जा सकती है कि कम अज़ कम दो गवाह हों। एक गवाह काफ़ी नहीं है।

³¹ कातिल को ज़रूर सज़ाए-मौत देना। खाह वह इससे बचने के लिए कोई भी मुआवज़ा दे उसे आज़ाद न छोड़ना बल्कि सज़ाए-मौत देना।

³² उस शख्स से भी पैसे क़बूल न करना जिससे ग़ैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो और जो इस सबब से पनाह के शहर में रह रहा है। उसे इजाज़त नहीं कि वह पैसे देकर पनाह का शहर छोड़े और अपने घर वापस चला जाए। लाज़िम है कि वह इसके लिए इमामे-आज़म की वफ़ात का इंतज़ार करे।

³³ जिस मुल्क में तुम रहते हो उस की मुक़द्दस हालत को नापाक न करना। जब किसी को उसमें क़त्ल किया जाए तो वह नापाक हो जाता है। जब इस तरह खून बहता है तो मुल्क की मुक़द्दस हालत सिर्फ़ उस शख्स के खून बहने से बहाल हो जाती है जिसने यह खून बहाया है। यानी मुल्क का सिर्फ़ कातिल की मौत से ही कफ़फ़ारा दिया जा सकता है। ³⁴ उस मुल्क को नापाक न करना जिसमें तुम आबाद हो और जिसमें मैं सुकूनत करता हूँ। क्योंकि मैं रब हूँ जो इसराईलियों के दरमियान सुकूनत करता हूँ।”

36

एक कबीले की मौरूसी ज़मीन शादी से दूसरे कबीले में मुंतकिल नहीं हो सकती

¹ एक दिन जिलियाद बिन मकीर बिन मनस्सी बिन यूसुफ़ के कुंभे से निकले हुए आबाई घरानों के सरपरस्त मूसा और उन सरदारों के पास आए जो दीगर आबाई घरानों के सरपरस्त थे। ² उन्होंने कहा, “रब ने आपको हुक्म दिया था कि आप कुरा डालकर मुल्क को इसराईलियों में तकसीम करें। उस वक़्त उसने यह भी कहा था कि हमारे भाई सिलाफ़िहाद की बेटियों को उस की मौरूसी ज़मीन मिलनी है। ³ अगर वह इसराईल के किसी और कबीले के मर्दों से शादी करें तो फिर यह ज़मीन जो हमारे कबीले का मौरूसी हिस्सा है उस कबीले का मौरूसी हिस्सा बनेगी और हम उससे महरूम हो जाएंगे। फिर हमारा कबायली इलाका छोटा हो जाएगा। ⁴ और अगर हम यह ज़मीन वापस भी खरीदें तो भी वह अगले बहाली के साल में दूसरे कबीले को वापस चली जाएगी जिसमें इन औरतों ने शादी की है। इस तरह वह हमेशा के लिए हमारे हाथ से निकल जाएगी।”

⁵ मूसा ने रब के हुक्म पर इसराईलियों को बताया, “जिलियाद के मर्द हक़-बजानिब हैं। ⁶ इसलिए रब की हिदायत यह है कि सिलाफ़िहाद की बेटियों को हर आदमी से शादी करने की इजाज़त है, लेकिन सिर्फ़ इस सूत में कि वह उनके अपने कबीले का हो। ⁷ इस तरह एक कबीले की मौरूसी ज़मीन किसी दूसरे कबीले में मुंतकिल नहीं होगी। लाज़िम है कि हर कबीले का पूरा इलाका उसी के पास रहे।

⁸ जो भी बेटा मीरास में ज़मीन पाती है उसके लिए लाज़िम है कि वह अपने ही कबीले के किसी मर्द से शादी करे ताकि उस की ज़मीन कबीले के पास ही रहे। ⁹ एक कबीले की मौरूसी ज़मीन किसी दूसरे कबीले को मुंतकिल करने की इजाज़त नहीं है। लाज़िम है कि हर कबीले का पूरा मौरूसी इलाका उसी के पास रहे।”

¹⁰⁻¹¹ सिलाफ़िहाद की बेटियों महलाह, तिरज़ा, हुजलाह, मिलकाह और नुआह ने वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा को बताया था। उन्होंने अपने चचाज़ाद भाइयों से शादी की। ¹² चूँकि वह भी मनस्सी के कबीले के थे इसलिए यह मौरूसी ज़मीन सिलाफ़िहाद के कबीले के पास रही।

¹³ रब ने यह अहकाम और हिदायत इसराईलियों को मूसा की मारिफ़त दीं जब वह मोआब के मैदानी इलाके में दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर यरीह के सामने ख़ैमाज़न थे।

इस्तिस्ना

मूसा इसराईलियों से मुख़ातिब होता है

1 इस किताब में वह बातें दर्ज हैं जो मूसा ने तमाम इसराईलियों से कहीं जब वह दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर बयाबान में थे। वह यरदन की वादी में सूफ़ के करीब थे। एक तरफ़ फ़ारान शहर था और दूसरी तरफ़ तोफल, लाबन, हसीरात और दीज़हब के शहर थे। 2 अगर अदोम के पहाड़ी इलाक़े से होकर जाएं तो होरिब यानी सीना पहाड़ से कादिस-बरनीअ तक का सफ़र 11 दिन में तय किया जा सकता है।

3 इसराईलियों को मिसर से निकले 40 साल हो गए थे। इस साल के ग्यारहवें माह के पहले दिन मूसा ने उन्हें सब कुछ बताया जो रब ने उसे उन्हें बताने को कहा था। 4 उस वक़्त वह अमोरियों के बादशाह सीहोन को शिकस्त दे चुका था जिसका दास्त-हुकूमत हसबोन था। बसन के बादशाह ओज पर भी फ़तह हासिल हो चुकी थी जिसकी हुकूमत के मरकज़ अस्तारात और इदरई थे।

5 वहाँ, दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर जो मोआब के इलाक़े में था मूसा अल्लाह की शरीअत की तशरीह करने लगा। उसने कहा,

6 जब तुम होरिब यानी सीना पहाड़ के पास थे तो रब हमारे ख़ुदा ने हमसे कहा, “तुम काफी देर से यहाँ ठहरे हुए हो। 7 अब इस जगह को छोड़कर आगे मुल्के-कनान की तरफ़ बढ़ो। अमोरियों के पहाड़ी इलाक़े और उनके पड़ोस की कौमों के पास जाओ जो यरदन के मैदानी इलाक़े में आबाद हैं। पहाड़ी इलाक़े में, मगरिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े में, जुनूब के दशते-नजब में, साहिली इलाक़े में, मुल्के-कनान में और लुबनान में दरियाए-फ़ुरात तक चले जाओ। 8 मैंने तुम्हें यह मुल्क दे दिया है। अब जाकर उस पर क़ब्ज़ा कर लो। क्योंकि रब ने क़सम खाकर तुम्हारे बापदादा इब्राहीम, इसहाक और याकूब से वादा किया था कि मैं यह मुल्क तुम्हें और तुम्हारी औलाद को दूँगा।”

राहनुमा मुर्करर किए गए

9 उस वक़्त मैंने तुमसे कहा, “मैं अकेला तुम्हारी राहनुमाई करने की ज़िम्मादारी नहीं उठा सकता। 10 रब तुम्हारे ख़ुदा ने तुम्हारी तादाद इतनी बढ़ा दी है कि आज तुम आसमान के सितारों की मानिंद बेशुमार हो। 11 और रब तुम्हारे बापदादा का ख़ुदा करे कि तुम्हारी तादाद मज़ीद हजार गुना बढ़ जाए। वह तुम्हें वह बरक़त दे जिसका वादा उसने किया है। 12 लेकिन मैं अकेला ही तुम्हारा बोझ उठाने और झगड़ों को निपटाने की ज़िम्मादारी नहीं उठा सकता। 13 इसलिए अपने हर क़बीले में से कुछ ऐसे दानिशमंद और समझदार आदमी चुन लो जिनकी लियाक़त को लोग मानते हैं। फिर मैं उन्हें तुम पर मुर्करर करूँगा।”

14 यह बात तुम्हें पसंद आई। 15 तुमने अपने में से ऐसे राहनुमा चुन लिए जो दानिशमंद थे और जिनकी लियाक़त को लोग मानते थे। फिर मैंने उन्हें हजार हजार, सौ सौ और पचास पचास मर्दों पर मुर्करर किया। यों वह क़बीलों के निगहबान बन गए। 16 उस वक़्त मैंने उन काज़ियों से कहा, “अदालत करते वक़्त हर एक की बात गौर से सुनकर ग़ैरजानिबदार फ़ैसले करना, चाहे दो इसराईली फ़रीक़ एक दूसरे से झगड़ा कर रहे हों या मामला किसी इसराईली और परदेसी के दरमियान हो। 17 अदालत करते वक़्त जानिबदारी न करना। छोटे और बड़े की बात सुनकर दोनों के साथ एक जैसा सुल्क करना। किसी से मत डरना, क्योंकि अल्लाह ही ने तुम्हें अदालत करने की ज़िम्मादारी दी है। अगर किसी मामले में फ़ैसला करना तुम्हारे लिए मुश्किल हो तो उसे मुझे पेश करो। फिर मैं ही उसका फ़ैसला करूँगा।” 18 उस वक़्त मैंने तुम्हें सब कुछ बताया जो तुम्हें करना था।

मुल्के-कनान में जासूस

19 हमने वैसा ही किया जैसा रब ने हमें कहा था। हम होरिब से रवाना होकर अमोरियों के पहाड़ी इलाक़े की तरफ़ बढ़े। सफ़र करते करते हम उस वसी और हौलनाक रेगिस्तान में से गुज़र गए जिसे तुमने देख लिया है। आख़िरकार हम कादिस-बरनीअ पहुँच गए। 20 वहाँ मैंने तुमसे कहा, “तुम अमोरियों के पहाड़ी इलाक़े तक पहुँच गए हो जो रब हमारा ख़ुदा हमें देनेवाला है। 21 देख, रब तेरे ख़ुदा ने तुझे यह मुल्क दे दिया है। अब जाकर उस पर क़ब्ज़ा कर ले जिस तरह रब तेरे बापदादा के ख़ुदा ने तुझे बताया है। मत डरना और बेदिल न हो जाना!”

22 लेकिन तुम सब मेरे पास आए और कहा, “क्यों न हम जाने से पहले कुछ आदमी भेजें जो मुल्क के हालात दरियाफ़्त करें और वापस आकर हमें उस रास्ते के बारे में बताएँ जिस पर हमें जाना है और उन शहरों के बारे में इतला दें जिनके पास हम पहुँचेंगे।” 23 यह बात मुझे पसंद आई। मैंने इस काम के लिए हर क़बीले के एक आदमी को चुनकर भेज दिया। 24 जब यह बारह आदमी पहाड़ी इलाक़े में जाकर वादीए-इस्काल में पहुँचे तो उस की तफ़तीश की। 25 फिर वह मुल्क का कुछ फल लेकर लौट आए और हमें मुल्क के बारे में इतला देकर कहा, “जो मुल्क रब हमारा ख़ुदा हमें देनेवाला है वह अच्छा है।”

26 लेकिन तुम जाना नहीं चाहते थे बल्कि सरकशी करके रब अपने ख़ुदा का हुक्म न माना। 27 तुमने अपने ख़ैमों में बुड़बुड़ाते हुए कहा, “रब हमसे नफ़रत रखता है। वह हमें मिसर से निकाल लाया है ताकि हमें अमोरियों के हाथों हलाक़ करवाए। 28 हम कहाँ जाएँ? हमारे भाइयों ने हमें बेदिल कर दिया है। वह कहते हैं, ‘वहाँ के लोग हमसे ताक़तवर और दराज़क़द हैं। उनके बड़े बड़े शहरों की फ़सीलें आसमान से बातें करती हैं। वहाँ हमने अनाक की औलाद भी देखी जो देवक़ामत हैं।’”

29 मैंने कहा, “न घबराओ और न उनसे खौफ खाओ। 30 रब तुम्हारा खुदा तुम्हारे आगे आगे चलता हुआ तुम्हारे लिए लड़ेगा। तुम खुद देख चुके हो कि वह किस तरह मिसर 31 और रेगिस्तान में तुम्हारे लिए लड़ा। यहाँ भी वह ऐसा ही करेगा। तू खुद गवाह है कि बयाबान में पूरे सफ़र के दौरान रब तुझे यों उठाए फिरा जिस तरह बाप अपने बेटे को उठाए फिरता है। इस तरह चलते चलते तुम यहाँ तक पहुँच गए।” 32 इसके बावजूद तुमने रब अपने खुदा पर भरोसा न रखा। 33 तुमने यह बात नज़रंदाज़ की कि वह सफ़र के दौरान रात के वक़्त आग और दिन के वक़्त बादल की सूरत में तुम्हारे आगे आगे चलता रहा ताकि तुम्हारे लिए ख़ैमे लगाने की जगहें मालूम करे और तुम्हें रास्ता दिखाए।

34 जब रब ने तुम्हारी यह बातें सुनीं तो उसे गुस्सा आया और उसने कसम खाकर कहा, 35 “इस शरीर नसल का एक मर्द भी उस अच्छे मुल्क को नहीं देखेगा अगरचे मैंने कसम खाकर तुम्हारे बापदादा से वादा किया था कि मैं उसे उन्हें दूँगा। 36 सिर्फ़ कालिब बिन यफुन्ना उसे देखेगा। मैं उसे और उस की औलाद को वह मुल्क दूँगा जिसमें उसने सफ़र किया है, क्योंकि उसने पूरे तौर पर रब की पैरवी की।”

37 तुम्हारी वजह से रब मुझसे भी नाराज़ हुआ और कहा, “तू भी उसमें दाखिल नहीं होगा। 38 लेकिन तेरा मददगार यशुअ बिन नून दाखिल होगा। उस की हौसलाअफ़ज़ाई कर, क्योंकि वह मुल्क पर कब्ज़ा करने में इसराईल की राहनुमाई करेगा।” 39 तुमसे रब ने कहा, “तुम्हारे बच्चे जो अभी अच्छे और बुरे में इम्तियाज़ नहीं कर सकते, वही मुल्क में दाखिल होंगे, वही बच्चे जिनके बारे में तुमने कहा कि दुश्मन उन्हें मुल्के-कनान में छीन लेंगे। उन्हें मैं मुल्क दूँगा, और वह उस पर कब्ज़ा करेंगे। 40 लेकिन तुम खुद आगे न बढ़ो। पीछे मुड़कर दुबारा रेगिस्तान में बहरे-कुलज़ुम की तरफ़ सफ़र करो।”

41 तब तुमने कहा, “हमने रब का गुनाह किया है। अब हम मुल्क में जाकर लड़ेंगे, जिस तरह रब हमारे खुदा ने हमें हुक्म दिया है।” चुनाँचे यह सोचते हुए कि उस पहाड़ी इलाके पर हमला करना आसान होगा, हर एक मुसल्लह हुआ। 42 लेकिन रब ने मुझसे कहा, “उन्हें बताना कि वहाँ जंग करने के लिए न जाओ, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ नहीं हूँगा। तुम अपने दुश्मनों के हाथों शिकस्त खाओगे।”

43 मैंने तुम्हें यह बताया, लेकिन तुमने मेरी न सुनी। तुमने सरकशी करके रब का हुक्म न माना बल्कि मग़रूर होकर पहाड़ी इलाके में दाखिल हुए। 44 वहाँ के अमोरी बाशिंदे तुम्हारा सामना करने निकले। वह शहद की मक्खियों के गोल की तरह तुम पर टूट पड़े और तुम्हारा ताक़ुक़ब करके तुम्हें सईर से हुरमा तक मारते गए।

45 तब तुम वापस आकर रब के सामने ज़ारो-कतार रोने लगे। लेकिन उसने तवज्जुह न दी बल्कि तुम्हें नज़रंदाज़ किया। 46 इसके बाद तुम बहुत दिनों तक कादिस-बरनीअ में रहे।

2

रेगिस्तान में दुबारा सफ़र

1 फिर जिस तरह रब ने मुझे हुक्म दिया था हम पीछे मुड़कर रेगिस्तान में बहरे-कुलज़ुम की तरफ़ सफ़र करने लगे। काफी देर तक हम सईर यानी अदोम के पहाड़ी इलाके के किनारे किनारे फिरते रहे।

2 एक दिन रब ने मुझसे कहा, 3 “तुम बहुत देर से इस पहाड़ी इलाके के किनारे किनारे फिर रहे हो। अब शिमाल की तरफ़ सफ़र करो। 4 क्रौम को बताना, अगले दिनों में तुम सईर के मुल्क में से गुज़रोगे जहाँ तुम्हारे भाई एसौ की औलाद आबाद है। वह तुमसे डरेंगे। तो भी बड़ी एहतियात से गुज़रना। 5 उनके साथ जंग न छेड़ना, क्योंकि मैं तुम्हें उनके मुल्क का एक मुरब्बा फुट भी नहीं दूँगा। मैंने सईर का पहाड़ी इलाका एसौ और उस की औलाद को दिया है। 6 लाज़िम है कि तुम खाने और पीने की तमाम ज़रूरियात पैसे देकर खरीदो।”

7 जो भी काम तूने किया है रब ने उस पर बरकत दी है। इस वसी रेगिस्तान में पूरे सफ़र के दौरान उसने तेरी निगहबानी की। इन 40 सालों के दौरान रब तेरा खुदा तेरे साथ था, और तेरी तमाम ज़रूरियात पूरी होती रही।

8 चुनाँचे हम सईर को छोड़कर जहाँ हमारे भाई एसौ की औलाद आबाद थी दूसरे रास्ते से आगे निकले। हमने वह रास्ता छोड़ दिया जो ऐलात और अस्सून-जाबर के शहरों से बहीराए-मुरदार तक पहुँचाता है और मोआब के बयाबान की तरफ़ बढ़ने लगे। 9 वहाँ रब ने मुझसे कहा, “मोआब के बाशिंदों की मुखालफ़त न करना और न उनके साथ जंग छेड़ना, क्योंकि मैं उनके मुल्क का कोई भी हिस्सा तुझे नहीं दूँगा। मैंने आर शहर को लूत की औलाद को दिया है।”

10 पहले ऐमी वहाँ रहते थे जो अनाक की औलाद की तरह ताक़तवर, दराज़कद और तादाद में ज़्यादा थे। 11 अनाक की औलाद की तरह वह रफ़ाइयों में शुमार किए जाते थे, लेकिन मोआबी उन्हें ऐमी कहते थे।

12 इसी तरह कदीम ज़माने में होरी सईर में आबाद थे, लेकिन एसौ की औलाद ने उन्हें वहाँ से निकाल दिया था। जिस तरह इसराईलियों ने बाद में उस मुल्क में किया जो रब ने उन्हें दिया था उसी तरह एसौ की औलाद बढ़ते बढ़ते होरियों को तबाह करके उनकी जगह आबाद हुए थे।

13 रब ने कहा, “अब जाकर वादीए-ज़िरद को उबूर करो।” हमने ऐसा ही किया। 14 हमें कादिस-बरनीअ से रवाना हुए 38 साल हो गए थे। अब वह तमाम आदमी मर चुके थे जो उस वक़्त जंग करने के काबिल थे। वैसा ही हुआ था जैसा रब ने कसम खाकर कहा था। 15 रब की मुखालफ़त के बाइस आखिरकार ख़ैमागाह में उस नसल का एक मर्द भी न रहा। 16 जब वह सब मर गए थे 17 तब रब ने मुझसे कहा, 18 “आज तुम्हें आर शहर से होकर मोआब के इलाके में से गुज़रना है। 19 फिर तुम अम्मोनियों के इलाके तक पहुँचोगे। उनकी भी मुखालफ़त न करना, और न उनके साथ जंग छेड़ना, क्योंकि मैं उनके मुल्क का कोई भी हिस्सा तुम्हें नहीं दूँगा। मैंने यह मुल्क लूत की औलाद को दिया है।”

20 हकीकत में अम्मोनियों का मुल्क भी रफाइयों का मुल्क समझा जाता था जो कदीम ज़माने में वहाँ आबाद थे। अम्मोनी उन्हें ज़मज़ुमी कहते थे, 21 और वह देवक्रामत थे, ताकतवर और तादाद में ज़्यादा। वह अनाक की औलाद जैसे दराज़कद थे। जब अम्मोनी मुल्क में आए तो रब ने रफाइयों को उनके आगे आगे तबाह कर दिया। चुनौचे अम्मोनी बढ़ते बढ़ते उन्हें निकालते गए और उनकी जगह आबाद हुए, 22 बिल्कुल उसी तरह जिस तरह रब ने एसौ की औलाद के आगे आगे होरियों को तबाह कर दिया था जब वह सईर के मुल्क में आए थे। वहाँ भी वह बढ़ते बढ़ते होरियों को निकालते गए और उनकी जगह आबाद हुए। 23 इसी तरह एक और कदीम क्रौम बनाम अव्वी को भी उसके मुल्क से निकाला गया। अव्वी गज़्ज़ा तक आबाद थे, लेकिन जब कफ़तूरी कफ़तूर यानी क्रेते से आए तो उन्होंने उन्हें तबाह कर दिया और उनकी जगह आबाद हो गए।

सीहोन बादशाह से जंग

24 रब ने मूसा से कहा, “अब जाकर वादीए-अरनोन को उबूर करो। यों समझो कि मैं हसबोन के अमोरी बादशाह सीहोन को उसके मुल्क समेत तुम्हारे हवाले कर चुका हूँ। उस पर कब्ज़ा करना शुरू करो और उसके साथ जंग करने का मौका ढूँढो। 25 इसी दिन से मैं तमाम क्रौमों में तुम्हारे बारे में दहशत और खौफ़ पैदा करूँगा। वह तुम्हारी खबर सुनकर खौफ़ के मारे थरथराएँगी और काँपेंगी।”

26 मैंने दशते-कदीमात से हसबोन के बादशाह सीहोन के पास कासिद भेजे। मेरा पैगाम नफ़रत और मुखालफ़त से ख़ाली था। वह यह था, 27 “हमें अपने मुल्क में से गुज़रने दें। हम शाहराह पर ही रहेंगे और उससे न बाई, न दाई तरफ़ हटेंगे। 28 हम खाने और पीने की तमाम ज़रूरियात के लिए मुनासिब पैसे देंगे। हमें पैदल अपने मुल्क में से गुज़रने दें, 29 जिस तरह सईर के बाशिंदों एसौ की औलाद और आर के रहनेवाले मोआबियों ने हमें गुज़रने दिया। क्योंकि हमारी मनज़िल दरियाए-यरदन के मगरिब में है, वह मुल्क जो रब हमारा खुदा हमें देनेवाला है।”

30 लेकिन हसबोन के बादशाह सीहोन ने हमें गुज़रने न दिया, क्योंकि रब तुम्हारे खुदा ने उसे बे-लचक और हमारी बात से इनकार करने पर आमदा कर दिया था ताकि सीहोन हमारे काबू में आ जाए। और बाद में ऐसा ही हुआ। 31 रब ने मुझसे कहा, “यों समझ ले कि मैं सीहोन और उसके मुल्क को तैरे हवाले करने लगा हूँ। अब निकलकर उस पर कब्ज़ा करना शुरू करो।”

32 जब सीहोन अपनी सारी फ़ौज लेकर हमारा मुकाबला करने के लिए यहज़ आया 33 तो रब हमारे खुदा ने हमें पूरी फ़तह बख़्शी। हमने सीहोन, उसके बेटों और पूरी क्रौम को शिकस्त दी। 34 उस वक़्त हमने उसके तमाम शहरों पर कब्ज़ा कर लिया और उनके तमाम मर्दों, औरतों और बच्चों को मार डाला। कोई भी न बचा। 35 हमने सिर्फ़ मवेशी और शहरों का लूटा हुआ माल अपने लिए बचाए रखा।

36 वादीए-अरनोन के किनारे पर वाक़े अरोईर से लेकर जिलियाद तक हर शहर को शिकस्त माननी पड़ी। इसमें वह शहर भी शामिल था जो वादीए-अरनोन में था। रब हमारे खुदा ने उन सबको हमारे हवाले कर दिया। 37 लेकिन तुमने अम्मोनियों का मुल्क छोड़ दिया और न दरियाए-यब्बोक के इर्दगिर्द के इलाके, न उसके पहाड़ी इलाके के शहरों को छोड़ा, क्योंकि रब हमारे खुदा ने ऐसा करने से तुम्हें मना किया था।

3

बसन के बादशाह ओज की शिकस्त

1 इसके बाद हम शिमाल में बसन की तरफ़ बढ़ गए। बसन का बादशाह ओज अपनी तमाम फ़ौज के साथ निकलकर हमारा मुकाबला करने के लिए इदरई आया। 2 रब ने मुझसे कहा, “उससे मत डर। मैं उसे, उस की पूरी फ़ौज और उसका मुल्क तैरे हवाले कर चुका हूँ। उसके साथ वह कुछ कर जो तूने अमोरी बादशाह सीहोन के साथ किया जो हसबोन में हुक्मत करता था।”

3 ऐसा ही हुआ। रब हमारे खुदा की मदद से हमने बसन के बादशाह ओज और उस की तमाम क्रौम को शिकस्त दी। हमने सबको हलाक कर दिया। कोई भी न बचा। 4 उसी वक़्त हमने उसके तमाम शहरों पर कब्ज़ा कर लिया। हमने कुल 60 शहरों पर यानी अरज़ूब के सारे इलाके पर कब्ज़ा किया जिस पर ओज की हुक्मत थी। 5 इन तमाम शहरों की हिफ़ाज़त ऊँची ऊँची फ़सीलों और कुंडेवाले दरवाज़ों से की गई थी। देहात में बहुत-सी ऐसी आबादियाँ भी मिल गईं जिनकी फ़सीलें नहीं थीं। 6 हमने उनके साथ वह कुछ किया जो हमने हसबोन के बादशाह सीहोन के इलाके के साथ किया था। हमने सब कुछ रब के हवाले करके हर शहर को और तमाम मर्दों, औरतों और बच्चों को हलाक कर डाला। 7 हमने सिर्फ़ तमाम मवेशी और शहरों का लूटा हुआ माल अपने लिए बचाए रखा।

8 यों हमने उस वक़्त अमोरियों के इन दो बादशाहों से दरियाए-यरदन का मशरिकी इलाका वादीए-अरनोन से लेकर हरमून पहाड़ तक छीन लिया। 9 (सैदा के बाशिंदे हरमून को सिरयून कहते हैं जबकि अमोरियों ने उसका नाम सनीर रखा)। 10 हमने ओज बादशाह के पूरे इलाके पर कब्ज़ा कर लिया। इसमें मैदाने-मुरतफ़ा के तमाम शहर शामिल थे, नीज़ सलका और इदरई तक जिलियाद और बसन के पूरे इलाके।

11 बादशाह ओज देवक्रामत कबीले रफाई का आखिरी मर्द था। उसका लोहे का ताबूत 13 से जायद फुट लंबा और छः फुट चौड़ा था और आज तक अम्मोनियों के शहर रब्बा में देखा जा सकता है।

यरदन के मशरिक में मुल्क की तकसीम

12 जब हमने दरियाए-यरदन के मशरिकी इलाके पर कब्ज़ा किया तो मैंने रूबिन और जद के कबीलों को उसका जुनूबी हिस्सा शहरों समेत दिया। इस इलाके की जुनूबी सरहद दरियाए-अरनोन पर वाक़े शहर अरोईर है जबकि शिमाल में इसमें जिलियाद के पहाड़ी इलाके का आधा हिस्सा भी शामिल है। 13 जिलियाद का शिमाली हिस्सा और बसन का मुल्क मैंने मनस्सी के आधे कबीले को दिया।

(बसन में अरजूब का इलाका है जहाँ पहले ओज बादशाह की हुकूमत थी और जो रफाइयों यानी देवकामत अफराद का मुल्क कहलाता था। 14 मनस्सी के कबीले के एक आदमी बनाम याईर ने अरजूब पर जसूरियों और माकातियों की सरहद तक कब्ज़ा कर लिया था। उसने इस इलाके की बस्तियों को अपना नाम दिया। आज तक यही नाम हव्वोत-याईर यानी याईर की बस्तियाँ चलता है।)

15 मैंने जिलियाद का शिमाली हिस्सा मनस्सी के कुंवे मकीर को दिया 16 लेकिन जिलियाद का जुनूबी हिस्सा रुबिन और जद के कबीलों को दिया। इस हिस्से की एक सरहद जुनूब में वादीए-अरनोन के बीच में से गुज़रती है जबकि दूसरी सरहद दरियाए-यब्बोक है जिसके पार अम्मोनियों की हुकूमत है। 17 उस की मगरिबी सरहद दरियाए-यरदन है यानी किन्नरत (गलील) की झील से लेकर बहीराए-मुरदार तक जो पिसगा के पहाड़ी सिलसिले के दामन में है।

18 उस वक़्त मैंने रुबिन, जद और मनस्सी के कबीलों से कहा, “रब तुम्हारे खुदा ने तुम्हें मीरास में यह मुल्क दे दिया है। लेकिन शर्त यह है कि तुम्हारे तमाम जंग करने के क्राबिल मर्द मुसल्लह होकर तुम्हारे इसराईली भाइयों के आगे आगे दरियाए-यरदन को पार करें। 19 सिर्फ़ तुम्हारी औरतें और बच्चे पीछे रहकर उन शहरों में इंतज़ार कर सकते हैं जो मैंने तुम्हारे लिए मुकर्रर किए हैं। तुम अपने मवेशियों को भी पीछे छोड़ सकते हो, क्योंकि मुझे पता है कि तुम्हारे बहुत ज्यादा जानवर हैं। 20 अपने भाइयों के साथ चलते हुए उनकी मदद करते रहो। जब रब तुम्हारा खुदा उन्हें दरियाए-यरदन के मगरिब में वाक़े मुल्क देगा और वह तुम्हारी तरह आराम और सुकून से वहाँ आबाद हो जाएंगे तब तुम अपने मुल्क में वापस जा सकते हो।”

मूसा को यरदन पार करने की इजाज़त नहीं मिलती

21 साथ साथ मैंने यशुअ से कहा, “तूने अपनी आँखों से सब कुछ देख लिया है जो रब तुम्हारे खुदा ने इन दोनों बादशाहों सीहोन और ओज से किया। वह यही कुछ हर उस बादशाह के साथ करेगा जिसके मुल्क पर तू दरिया को पार करके हमला करेगा। 22 उनसे न डरो। तुम्हारा खुदा खुद तुम्हारे लिए जंग करेगा।”

23 उस वक़्त मैंने रब से इल्तिजा करके कहा, 24 “ऐ रब कादिरे-मुतलक, तू अपने खादिम को अपनी अज़मत और कुदरत दिखाने लगा है। क्या आसमान या ज़मीन पर कोई और खुदा है जो तेरी तरह के अज़ीम काम कर सकता है? हरगिज़ नहीं! 25 मेहरबानी करके मुझे भी दरियाए-यरदन को पार करके उस अच्छे मुल्क यानी उस बेहतरीन पहाड़ी इलाके को लुबनान तक देखने की इजाज़त दे।”

26 लेकिन तुम्हारे सबब से रब मुझसे नाराज़ था। उसने मेरी न सुनी बल्कि कहा, “बस कर! आइंदा मेरे साथ इसका ज़िक्र न करना। 27 पिसगा की चोटी पर चढ़कर चारों तरफ़ नज़र दौड़ा। वहाँ से ग़ौर से देख, क्योंकि तू खुद दरियाए-यरदन को उबर नहीं करेगा। 28 अपनी जगह यशुअ को मुकर्रर कर। उस की हौसलाअफ़ज़ाई कर और उसे मज़बूत कर, क्योंकि वही इस क़ौम को दरियाए-यरदन के मगरिब में ले जाएगा और कबीलों में उस मुल्क को तक़सीम करेगा जिसे तू पहाड़ से देखेगा।”

29 चुनौचे हम बैत-फ़गूर के करीब वादी में ठहरे।

4

फ़रमाँबरदारी की अशढ़ ज़रूरत

1 ऐ इसराईल, अब वह तमाम अहकाम ध्यान से सुन ले जो मैं तुम्हें सिखाता हूँ। उन पर अमल करो ताकि तुम ज़िंदा रहो और जाकर उस मुल्क पर कब्ज़ा करो जो रब तुम्हारे बापदादा का खुदा तुम्हें देनेवाला है। 2 जो अहकाम मैं तुम्हें सिखाता हूँ उनमें न किसी बात का इज़ाफ़ा करो और न उनसे कोई बात निकालो। रब अपने खुदा के तमाम अहकाम पर अमल करो जो मैंने तुम्हें दिए हैं। 3 तुमने खुद देखा है कि रब ने बाल-फ़गूर से क्या कुछ किया। वहाँ रब तेरे खुदा ने हर एक को हलाक कर डाला जिसने फ़गूर के बाल देवता की पूजा की। 4 लेकिन तुममें से जितने रब अपने खुदा के साथ लिपटे रहे वह सब आज तक ज़िंदा हैं।

5 मैंने तुम्हें तमाम अहकाम यों सिखा दिए हैं जिस तरह रब मेरे खुदा ने मुझे बताया। क्योंकि लाज़िम है कि तुम उस मुल्क में इनके ताबे रहो जिस पर तुम कब्ज़ा करनेवाले हो। 6 इन्हें मानो और इन पर अमल करो तो दूसरी क़ौमों को तुम्हारी दानिशमंदी और समझ नज़र आएगी। फिर वह इन तमाम अहकाम के बारे में सुनकर कहेंगी, “वाह, यह अज़ीम क़ौम कैसी दानिशमंद और समझदार है!” 7 कौन-सी अज़ीम क़ौम के माबूद इतने करीब हैं जितना हमारा खुदा हमारे करीब है? जब भी हम मदद के लिए पुकारते हैं तो रब हमारा खुदा मौजूद होता है। 8 कौन-सी अज़ीम क़ौम के पास ऐसे मुंसिफ़ाना अहकाम और हिदायात हैं जैसे मैं आज तुम्हें पूरी शरीअत सुनाकर पेश कर रहा हूँ?

9 लेकिन ख़बरदार, एहतियात करना और वह तमाम बातें न भूलना जो तेरी आँखों ने देखी हैं। वह उम्र-भर तेरे दिल में से मिट न जाएँ बल्कि उन्हें अपने बच्चों और पोते-पोतियों को भी बताते रहना। 10 वह दिन याद कर जब तू होरिब यानी सीना पहाड़ पर रब अपने खुदा के सामने हाज़िर था और उसने मुझे बताया, “क़ौम को यहाँ मेरे पास जमा कर ताकि मैं उनसे बात करूँ और वह उम्र-भर मेरा ख़ौफ़ मानें और अपने बच्चों को मेरी बातें सिखाते रहें।”

11 उस वक़्त तुम करीब आकर पहाड़ के दामन में खड़े हुए। वह जल रहा था, और उस की आग आसमान तक भड़क रही थी जबकि काले बादलों और गहरे अंधेरे ने उसे नज़रों से छुपा दिया। 12 फिर रब आग में से तुमसे हमकलाम हुआ। तुमने उस की बातें सुनीं लेकिन उस की कोई शक्ल न देखी। सिर्फ़ उस की आवाज़ सुनाई दी। 13 उसने तुम्हारे लिए अपने अहद यानी उन 10 अहकाम का एलान किया और हुक्म दिया

कि इन पर अमल करो। फिर उसने उन्हें पत्थर की दो तख्तियों पर लिख दिया। 14 रब ने मुझे हिदायत की, “उन्हें वह तमाम अहकाम सिखा जिनके मुताबिक उन्हें चलना होगा जब वह दरियाए-यरदन को पार करके कनान पर कब्ज़ा करेंगे।”

बुतपरस्ती के बारे में आगाही

15 जब रब होरिब यानी सीना पहाड़ पर तुमसे हमकलाम हुआ तो तुमने उस की कोई शक्ति न देखी। चुनौचे खबरदार रहो 16 कि तुम गलत काम करके अपने लिए किसी भी शक्ति का बुत न बनाओ। न मर्द, औरत, 17 ज़मीन पर चलनेवाले जानवर, परिदे, 18 रेंगनेवाले जानवर या मछली का बुत बनाओ। 19 जब तू आसमान की तरफ नज़र उठाकर आसमान का पूरा लश्कर देखे तो सूरज, चाँद और सितारों की परस्तिश और खिदमत करने की आजमाइश में न पड़ना। रब तेरे खुदा ने इन चीज़ों को बाकी तमाम कौमों को अता किया है, 20 लेकिन तुम्हें उसने मिसर के भडकते भट्टे से निकाला है ताकि तुम उस की अपनी कौम और उस की मीरास बन जाओ। और आज ऐसा ही हुआ है।

21 तुम्हारे सबब से रब ने मुझसे नाराज़ होकर कसम खाई कि तू दरियाए-यरदन को पार करके उस अच्छे मुल्क में दाखिल नहीं होगा जो रब तेरा खुदा तुझे मीरास में देनेवाला है। 22 मैं यही इसी मुल्क में मर जाऊँगा और दरियाए-यरदन को पार नहीं करूँगा। लेकिन तुम दरिया को पार करके उस बेहतरीन मुल्क पर कब्ज़ा करोगे। 23 हर सूरत में वह अहद याद रखना जो रब तुम्हारे खुदा ने तुम्हारे साथ बाँधा है। अपने लिए किसी भी चीज़ की मूरत न बनाना। यह रब का हुक्म है, 24 क्योंकि रब तेरा खुदा भस्म कर देनेवाली आग है, वह गयूर खुदा है।

25 तुम मुल्क में जाकर वहाँ रहोगे। तुम्हारे बच्चे और पोते-नवासे उसमें पैदा हो जाएंगे। जब इस तरह बहुत वक्त्र गुज़र जाएगा तो खतरा है कि तुम गलत काम करके किसी चीज़ की मूरत बनाओ। ऐसा कभी न करना। यह रब तुम्हारे खुदा की नज़र में बुरा है और उसे गुस्सा दिलाएगा। 26 आज आसमान और ज़मीन मेरे गवाह हैं कि अगर तुम ऐसा करो तो जल्दी से उस मुल्क में से मिट जाओगे जिस पर तुम दरियाए-यरदन को पार करके कब्ज़ा करोगे। तुम देर तक वहाँ जीते नहीं रहोगे बल्कि पूरे तौर पर हलाक हो जाओगे। 27 रब तुम्हें मुल्क से निकालकर मुख्तलिफ़ कौमों में मुंतशिर कर देगा, और वहाँ सिर्फ़ थोड़े ही अफ़राद बचे रहेंगे। 28 वहाँ तुम इनसान के हाथों से बने हुए लकड़ी और पत्थर के बुतों की खिदमत करोगे, जो न देख सकते, न सुन सकते, न खा सकते और न सूँघ सकते हैं।

29 वही तू रब अपने खुदा को तलाश करेगा, और अगर उसे पूरे दिलो-जान से ढूँढ़े तो वह तुझे मिल भी जाएगा। 30 जब तू इस तकलीफ़ में मुब्तला होगा और यह सारा कुछ तुझ पर से गुज़रेगा फिर आखिरकार रब अपने खुदा की तरफ़ रूज करके उस की सुनेगा। 31 क्योंकि रब तेरा खुदा रहीम खुदा है। वह तुझे न तर्क करेगा और न बरबाद करेगा। वह उस अहद को नहीं भूलेगा जो उसने कसम खाकर तेरे बापदादा से बाँधा था।

रब ही हमारा खुदा है

32 दुनिया में इनसान की तखलीक से लेकर आज तक माज़ी की तफ़तीश कर। आसमान के एक सिरे से दूसरे सिरे तक खोज लगा। क्या इससे पहले कभी इस तरह का मोजिज़ाना काम हुआ है? क्या किसी ने इससे पहले इस किस्म के अज़ीम काम की खबर सुनी है? 33 तूने आग में से बोलती हुई अल्लाह की आवाज़ सुनी तो भी जीता बचा! क्या किसी और कौम के साथ ऐसा हुआ है? 34 क्या किसी और माबूद ने कभी ज़ुर्रत की है कि रब की तरह पूरी कौम को एक मुल्क से निकालकर अपनी मिलकियत बनाया हो? उसने ऐसा ही तुम्हारे साथ किया। उसने तुम्हारे देखते देखते मिसरियों को आजमाया, उन्हें बड़े मोजिजे दिखाए, उनके साथ जंग की, अपनी बड़ी कुदरत और इख्तियार का इज़हार किया और हौलनाक कामों से उन पर गालिब आ गया।

35 तुझे यह सब कुछ दिखाया गया ताकि तू जान ले कि रब खुदा है। उसके सिवा कोई और नहीं है। 36 उसने तुझे नसीहत देने के लिए आसमान से अपनी आवाज़ सुनाई। ज़मीन पर उसने तुझे अपनी अज़ीम आग दिखाई जिसमें से तूने उस की बातें सुनीं। 37 उसे तेरे बापदादा से प्यार था, और उसने तुझे जो उनकी औलाद हैं चुन लिया। इसलिए वह खुद हाज़िर होकर अपनी अज़ीम कुदरत से तुझे मिसर से निकाल लाया। 38 उसने तेरे आगे से तुझसे ज़्यादा बड़ी और ताकतवर कौमों निकाल दीं ताकि तुझे उनका मुल्क मीरास में मिल जाए। आज ऐसा ही हो रहा है।

39 चुनौचे आज जान ले और ज़हन में रख कि रब आसमान और ज़मीन का खुदा है। कोई और माबूद नहीं है। 40 उसके अहकाम पर अमल कर जो मैं तुझे आज सुना रहा हूँ। फिर तू और तेरी औलाद कामयाब होंगे, और तू देर तक उस मुल्क में जीता रहेगा जो रब तुझे हमेशा के लिए दे रहा है।

यरदन के मशरिक में पनाह के शहर

41 यह कहकर मूसा ने दरियाए-यरदन के मशरिक में पनाह के तीन शहर चुन लिए। 42 उनमें वह शख्स पनाह ले सकता था जिसने दुश्मनी की बिना पर नहीं बल्कि गैरइरादी तौर पर किसी को जान से मार दिया था। ऐसे शहर में पनाह लेने के सबब से उसे बदले में क़त्ल नहीं किया जा सकता था। 43 इसके लिए रूबिन के कबीले के लिए मैदाने-मुरतफ़ा का शहर बसर, जद के कबीले के लिए जिलियाद का शहर रामात और मनस्सी के कबीले के लिए बसन का शहर जौलान चुना गया।

शरीअत का पेशलफ़ज़

44 दर्जे-ज़ैल वह शरीअत है जो मूसा ने इसराईलियों को पेश की। 45 मूसा ने यह अहकाम और हिदायात उस वक्त्र पेश कीं जब वह मिसर से निकल कर 46 दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर थे। बैत-फ़ग़ूर उनके मुक़ाबिल था, और वह अमोरी बादशाह सीहोन के मुल्क में ख़ैमाज़न थे। सीहोन की रिहाइश हसबोन में थी और उसे इसराईलियों से शिकस्त हुई थी जब वह मूसा की राहनुमाई में मिसर से निकल आए थे।

47 उसके मुल्क पर कब्जा करके उन्होंने बसन के मुल्क पर भी फतह पाई थी जिसका बादशाह ओज था। इन दोनों अमोरी बादशाहों का यह पूरा इलाका उनके हाथ में आ गया था। यह इलाका दरियाए-यरदन के मशरिक में था। 48 उस की जुनूबी सरहद दरियाए-अरनोन के किनारे पर वाक्रे शहर अरोईर थी जबकि उस की शिमाली सरहद सिरयून यानी हरमून पहाड़ थी। 49 दरियाए-यरदन का पूरा मशरिकी किनारा पिसगा के पहाड़ी सिलसिले के दामन में वाक्रे बहीराए-मुरदार तक उसमें शामिल था।

5

दस अहकाम

1 मूसा ने तमाम इसराईलियों को जमा करके कहा,

ऐ इसराईल, ध्यान से वह हिदायात और अहकाम सुन जो मैं तुम्हें आज पेश कर रहा हूँ। उन्हें सीखो और बड़ी एहतियात से उन पर अमल करो। 2 रब हमारे खुदा ने होरिब यानी सीना पहाड़ पर हमारे साथ अहद बाँधा। 3 उसने यह अहद हमारे बापदादा के साथ नहीं बल्कि हमारे ही साथ बाँधा है, जो आज इस जगह पर ज़िंदा हैं। 4 रब पहाड़ पर आग में से स्वरु होकर तुमसे हमकलाम हुआ। 5 उस वक़्त मैं तुम्हारे और रब के दरमियान खड़ा हुआ ताकि तुम्हें रब की बातें सुनाऊँ। क्योंकि तुम आग से डरते थे और इसलिए पहाड़ पर न चढ़े। उस वक़्त रब ने कहा,

6 “मैं रब तेरा खुदा हूँ जो तुझे मुल्के-मिसर की गुलामी से निकाल लाया। 7 मेरे सिवा किसी और माबूद की परस्तिश न करना।

8 अपने लिए बुत न बनाना। किसी भी चीज़ की मूरत न बनाना, चाहे वह आसमान में, ज़मीन पर या समुंदर में हो। 9 न बुतों की परस्तिश, न उनकी खिदमत करना, क्योंकि मैं तेरा रब गयूर खुदा हूँ। जो मुझसे नफरत करते हैं उन्हें मैं तीसरी और चौथी पुश्त तक सज़ा दूँगा। 10 लेकिन जो मुझसे मुहब्बत रखते और मेरे अहकाम पूरे करते हैं उन पर मैं हज़ार पुश्तों तक मेहरबानी करूँगा।

11 रब अपने खुदा का नाम बेमक़सद या ग़लत मक़सद के लिए इस्तेमाल न करना। जो भी ऐसा करता है उसे रब सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ेगा।

12 सबत के दिन का ख़याल रखना। उसे इस तरह मनाना कि वह मख़सूसो-मुक़द्दस हो, उसी तरह जिस तरह रब तेरे खुदा ने तुझे हुक्म दिया है। 13 हफ़्ते के पहले छः दिन अपना काम-काज कर, 14 लेकिन सातवाँ दिन रब तेरे खुदा का आराम का दिन है। उस दिन किसी तरह का काम न करना। न तू, न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा नौकर, न तेरी नौकरानी, न तेरा बैल, न तेरा ग़धा, न तेरा कोई और मवेशी। जो परदेसी तेरे दरमियान रहता है वह भी काम न करे। तेरे नौकर और तेरी नौकरानी को तेरी तरह आराम का मौक़ा मिलना है। 15 याद रखना कि तू मिसर में गुलाम था और कि रब तेरा खुदा ही तुझे बड़ी कुदरत और इख़्तियार से वहाँ से निकाल लाया। इसलिए उसने तुझे हुक्म दिया है कि सबत का दिन मनाना।

16 अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना जिस तरह रब तेरे खुदा ने तुझे हुक्म दिया है। फिर तू उस मुल्क में जो रब तेरा खुदा तुझे देनेवाला है खुशहाल होगा और देर तक जीता रहेगा।

17 क़त्ल न करना।

18 ज़िना न करना।

19 चोरी न करना।

20 अपने पड़ोसी के बारे में झूटी गवाही न देना।

21 अपने पड़ोसी की बीवी का लालच न करना। न उसके घर का, न उस की ज़मीन का, न उसके नौकर का, न उस की नौकरानी का, न उसके बैल और न उसके गधे का बल्कि उस की किसी भी चीज़ का लालच न करना।”

22 रब ने तुम सबको यह अहकाम दिए जब तुम सीना पहाड़ के दामन में जमा थे। वहाँ तुमने आग, बादल और गहरे अंधेरे में से उस की जोरदार आवाज़ सुनी। यही कुछ उसने कहा और बस। फिर उसने उन्हें पत्थर की दो तख्तियों पर लिखकर मुझे दे दिया।

लोग रब से डरते हैं

23 जब तुमने तारीकी से यह आवाज़ सुनी और पहाड़ की जलती हुई हालत देखी तो तुम्हारे क़बीलों के राहनुमा और बुजुर्ग मेरे पास आए।

24 उन्होंने कहा, “रब हमारे खुदा ने हम पर अपना जलाल और अज़मत ज़ाहिर की है। आज हमने आग में से उस की आवाज़ सुनी है। हमने देख लिया है कि जब अल्लाह इनसान से हमकलाम होता है तो ज़रूरी नहीं कि वह मर जाए। 25 लेकिन अब हम क्यों अपनी जान खतरे में डालें? अगर हम मज़ीद रब अपने खुदा की आवाज़ सुनें तो यह बड़ी आग हमें भस्म कर देगी और हम अपनी जान से हाथ धो बैठेंगे। 26 क्योंकि फ़ानी इनसानों में से कौन हमारी तरह ज़िंदा खुदा को आग में से बातें करते हुए सुनकर ज़िंदा रहा है? कोई भी नहीं! 27 आप ही क़रीब जाकर उन तमाम बातों को सुनें जो रब हमारा खुदा हमें बताना चाहता है। फिर लौटकर हमें वह बातें सुनाएँ। हम उन्हें सुनेंगे और उन पर अमल करेंगे।”

28 जब रब ने यह सुना तो उसने मुझसे कहा, “मैंने इन लोगों की यह बातें सुन ली हैं। वह ठीक कहते हैं। 29 काश उनकी सोच हमेशा ऐसी ही हो! काश वह हमेशा इसी तरह मेरा ख़ौफ़ मानें और मेरे अहकाम पर अमल करें! अगर वह ऐसा करेंगे तो वह और उनकी औलाद हमेशा कामयाब रहेंगे। 30 जा, उन्हें बता दे कि अपने ख़ैमों में लौट जाओ। 31 लेकिन तू यहाँ मेरे पास रह ताकि मैं तुझे तमाम क़वानीन और अहकाम दे दूँ। उनको लोगों को सिखाना ताकि वह उस मुल्क में उनके मुताबिक़ चले जो मैं उन्हें दूँगा।”

32 चुनाँचे एहतियात से उन अहकाम पर अमल करो जो रब तुम्हारे खुदा ने तुम्हें दिए हैं। उनसे न दाईं तरफ़ हटो न बाईं तरफ़। 33 हमेशा उस राह पर चलते रहो जो रब तुम्हारे खुदा ने तुम्हें बताई है। फिर तुम कामयाब होगे और उस मुल्क में देर तक जीते रहोगे जिस पर तुम क़ब्ज़ा करोगे।

6

सबसे बड़ा हुक्म

1 यह वह तमाम अहकाम हैं जो रब तुम्हारे खुदा ने मुझे तुम्हें सिखाने के लिए कहा। उस मुल्क में इन पर अमल करना जिसमें तुम जानेवाले हो ताकि उस पर कब्जा करो। 2 उम्र-भर तू, तेरे बच्चे और पोते-नवासे रब अपने खुदा का खौफ मानें और उसके उन तमाम अहकाम पर चलें जो मैं तुझे दे रहा हूँ। तब तू देर तक जीता रहेगा। 3 ऐ इसराईल, यह मेरी बातें सुन और बड़ी एहतियात से इन पर अमल कर! फिर रब तेरे खुदा का वादा पूरा हो जाएगा कि तू कामयाब रहेगा और तेरी तादाद उस मुल्क में खूब बढ़ती जाएगी जिसमें दूध और शहद की कसरत है।

4 सुन ऐ इसराईल! रब हमारा खुदा एक ही रब है। 5 रब अपने खुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान और अपनी पूरी ताकत से प्यार करना। 6 जो अहकाम मैं तुझे आज बता रहा हूँ उन्हें अपने दिल पर नक़्श कर। 7 उन्हें अपने बच्चों के जहननशीन करा। यही बातें हर वक़्त और हर जगह तेरे लबों पर हों खाह तू घर में बैठा या रास्ते पर चलता हो, लेटा हो या खड़ा हो। 8 उन्हें निशान के तौर पर और याददिहानी के लिए अपने बाज़ुओं और माथे पर लगा। 9 उन्हें अपने घरों की चौखटों और अपने शहरों के दरवाज़ों पर लिख।

10 रब तेरे खुदा का वादा पूरा होगा जो उसने कसम खाकर तेरे बापदादा इब्राहीम, इसहाक और याकूब के साथ किया कि मैं तुझे कनान में ले जाऊँगा। जो बड़े और शानदार शहर उसमें हैं वह तूने खुद नहीं बनाए। 11 जो मकान उसमें हैं वह ऐसी अच्छी चीज़ों से भरे हुए हैं जो तूने उनमें नहीं रखीं। जो कुएँ उसमें हैं उनको तूने नहीं खोदा। जो अंगूर और जैतून के बाग उसमें हैं उन्हें तूने नहीं लगाया। यह हकीकत याद रख। जब तू उस मुल्क में कसरत का खाना खाकर सेर हो जाएगा 12 तो खबरदार! रब को न भूलना जो तुझे मिसर की गुलामी से निकाल लाया।

13 रब अपने खुदा का खौफ मानना। सिर्फ उसी की इबादत करना और उसी का नाम लेकर कसम खाना। 14 दीगर माबूदों की पैरवी न करना। इसमें तमाम पड़ोसी अक्वाम के देवता भी शामिल हैं। 15 वरना रब तेरे खुदा का ग़ज़ब तुझ पर नाज़िल होकर तुझे मुल्क में से मिटा डालेगा। क्योंकि वह ग़यूर खुदा है और तेरे दरमियान ही रहता है।

16 रब अपने खुदा को उस तरह न आजमाना जिस तरह तुमने मस्सा में किया था। 17 ध्यान से रब अपने खुदा के अहकाम के मुताबिक चलो, उन तमाम हिदायात और क़वानीन पर जो उसने तुझे दिए हैं। 18 जो कुछ रब की नज़र में दुस्त और अच्छा है वह कर। फिर तू कामयाब रहेगा, तू जाकर उस अच्छे मुल्क पर कब्जा करेगा जिसका वादा रब ने तेरे बापदादा से कसम खाकर किया था। 19 तब रब की बात पूरी हो जाएगी कि तू अपने दुश्मनों को अपने आगे आगे निकाल देगा।

20 आनेवाले दिनों में तेरे बच्चे पढ़ेंगे, “रब हमारे खुदा ने आपको इन तमाम अहकाम पर अमल करने को क्यों कहा?” 21 फिर उन्हें जवाब देना, “हम मिसर के बादशाह फिरौन के गुलाम थे, लेकिन रब हमें बड़ी कुदरत का इज़हार करके मिसर से निकाल लाया। 22 हमारे देखते देखते उसने बड़े बड़े निशान और मोजिज़े किए और मिसर, फिरौन और उसके पूरे घराने पर हौलनाक मुसीबतें भेजीं। 23 उस वक़्त वह हमें वहाँ से निकाल लाया ताकि हमें लेकर वह मुल्क दे जिसका वादा उसने कसम खाकर हमारे बापदादा के साथ किया था। 24 रब हमारे खुदा ही ने हमें कहा कि इन तमाम अहकाम के मुताबिक चलो और रब अपने खुदा का खौफ मानो। क्योंकि अगर हम ऐसा करें तो फिर हम हमेशा कामयाब और ज़िंदा रहेंगे। और आज तक ऐसा ही रहा है। 25 अगर हम रब अपने खुदा के हुज़ूर रहकर एहतियात से उन तमाम बातों पर अमल करेंगे जो उसने हमें करने को कही हैं तो वह हमें रास्तबाज़ करार देगा।”

7

दूसरी कनानी कौमों को निकालना है

1 रब तेरा खुदा तुझे उस मुल्क में ले जाएगा जिस पर तू जाकर कब्जा करेगा। वह तेरे सामने से बहुत-सी कौमें भगा देगा। गो यह सात कौमें यानी हिली, जिरजासी, अमोरी, कनानी, फ़रिज़्ज़ी, हिक्वी और यबूसी तादाद और ताक़त के लिहाज़ से तुझसे बड़ी होंगी 2 तो भी रब तेरा खुदा उन्हें तेरे हवाले करेगा। जब तू उन्हें शिकस्त देगा तो उन सबको उसके लिए मखसूस करके हलाक कर देना है। न उनके साथ अहद बाँधना और न उन पर रहम करना। 3 उनमें से किसी से शादी न करना। न अपनी बेटियों का रिश्ता उनके बेटों को देना, न अपने बेटों का रिश्ता उनकी बेटियों से करना। 4 वरना वह तुम्हारे बच्चों को मेरी पैरवी से दूर करेंगे और वह मेरी नहीं बल्कि उनके देवताओं की खिदमत करेंगे। तब रब का ग़ज़ब तुम पर नाज़िल होकर जल्दी से तुम्हें हलाक कर देगा। 5 इसलिए उनकी कुरबानगाहें ढा देना। जिन पत्थरों की वह पूजा करते हैं उन्हें चकनाचूर कर देना, उनके यसीरत देवी के खंबे काट डालना और उनके बूत जला देना।

6 क्योंकि तू रब अपने खुदा के लिए मखसूसो-मुक़द्दस है। उसने दुनिया की तमाम कौमों में से तुझे चुनकर अपनी कौम और ख़ास मिलकियत बनाया। 7 रब ने क्यों तुम्हारे साथ ताल्लुक कायम किया और तुम्हें चुन लिया? क्या इस वजह से कि तुम तादाद में दीगर कौमों की निसबत ज़्यादा थे? हरगिज़ नहीं! तुम तो बहुत कम थे। 8 बल्कि वजह यह थी कि रब ने तुम्हें प्यार किया और वह वादा पूरा किया जो उसने कसम खाकर तुम्हारे बापदादा के साथ किया था। इसी लिए वह फ़िघा देकर तुम्हें बड़ी कुदरत से मिसर की गुलामी और उस मुल्क के बादशाह के हाथ से बचा लाया। 9 चुनौचे जान ले कि सिर्फ रब तेरा खुदा ही खुदा है। वह वफ़ादार खुदा है। जो उससे मुहब्बत रखते और उसके अहकाम पर अमल करते हैं उनके साथ वह अपना अहद कायम रखेगा और उन पर हज़ार पुशतों तक मेहरबानी करेगा। 10 लेकिन उससे नफ़रत करनेवालों को वह उनके स्वरू मुनासिब सज़ा देकर बरबाद करेगा। हाँ, जो उससे नफ़रत करते हैं, उनके स्वरू वह मुनासिब सज़ा देगा और झिजकेगा नहीं।

11 चुनौचे ध्यान से उन तमाम अहकाम पर अमल कर जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ ताकि तू उनके मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारे। 12 अगर तू उन पर तबज्जुह दे और एहतिyतयत से उन पर चले तो फिर रब तेरा खुदा तेरे साथ अपना अहद कायम रखेगा और तुझ पर मेहरबानी करेगा, बिल्कुल उस वादे के मुताबिक जो उसने कसम खाकर तेरे बापदादा से किया था। 13 वह तुझे प्यार करेगा और तुझे उस मुल्क में बरकत देगा जो तुझे देने का वादा उसने कसम खाकर तेरे बापदादा से किया था। तुझे बहुत औलाद बख्शने के अलावा वह तेरे खेतों को बरकत देगा, और तुझे कसरत का अनाज, अंगूर और जैतून हासिल होगा। वह तेरे रेवड़ों को भी बरकत देगा, और तेरे गाय-बैलों और भेड़-बकरियों की तादाद बढ़ती जाएगी। 14 तुझे दीगर तमाम कौमों की निसबत कहीं ज़्यादा बरकत मिलेगी। न तुझमें और न तेरे मवेशियों में बाँझपन पाया जाएगा। 15 रब हर बीमारी को तुझसे दूर रखेगा। वह तुझमें वह खतरनाक वबाएँ फैलने नहीं देगा जिनसे तू मिसर में वाकिफ़ हुआ बल्कि उन्हें उनमें फैलाएगा जो तुझसे नफ़रत रखते हैं।

16 जो भी कौमों रब तेरा खुदा तेरे हाथ में कर देगा उन्हें तबाह करना लाज़िम है। उन पर रहम की निगाह से न देखना, न उनके देवताओं की खिदमत करना, वरना तू फँस जाएगा।

17 गो तेरा दिल कहे, “यह कौमों हमसे ताक़तवर हैं। हम किस तरह इन्हें निकाल सकते हैं?” 18 तो भी उनसे न डर। वही कुछ ज़हन में रख जो रब तेरे खुदा ने फ़िरौन और पूरे मिसर के साथ किया। 19 क्योंकि तूने अपनी आँखों से रब अपने खुदा की वह बड़ी आजमानेवाली मुसीबतें और मोज़िजे, उसका वह अज़ीम इख़्तियार और कुदरत देखी जिससे वह तुझे वहाँ से निकाल लाया। वही कुछ रब तेरा खुदा उन कौमों के साथ भी करेगा जिनसे तू इस वक़्त डरता है। 20 न सिर्फ़ यह बल्कि रब तेरा खुदा उनके दरमियान ज़ंबूर भी भेजेगा ताकि वह भी तबाह हो जाएँ जो पहले हमलों से बचकर छुप गए हैं। 21 उनसे दहशत न खा, क्योंकि रब तेरा खुदा तेरे दरमियान है। वह अज़ीम खुदा है जिससे सब ख़ौफ़ खाते हैं। 22 वह रफ़ता रफ़ता उन कौमों को तेरे आगे से भगा देगा। तू उन्हें एकदम ख़त्म नहीं कर सकेगा, वरना जंगली जानवर तेज़ी से बढ़कर तुझे नुक़सान पहुँचाएँगे।

23 रब तेरा खुदा उन्हें तेरे हवाले कर देगा। वह उनमें इतनी सख़्त अफ़रा-तफ़री पैदा करेगा कि वह बरबाद हो जाएँगे। 24 वह उनके बादशाहों को भी तेरे काबू में कर देगा, और तू उनका नामो-निशान मिटा देगा। कोई भी तेरा सामना नहीं कर सकेगा बल्कि तू उन सबको बरबाद कर देगा।

25 उनके देवताओं के मुजस्समे जला देना। जो चाँदी और सोना उन पर चढ़ाया हुआ है उसका लालच न करना। उसे न लेना वरना तू फँस जाएगा। क्योंकि इन चीज़ों से रब तेरे खुदा को धिन आती है। 26 इस तरह की मक़रूह चीज़ अपने घर में न लाना, वरना तुझे भी उसके साथ अलग करके बरबाद किया जाएगा। तेरे दिल में उससे शदीद नफ़रत और धिन हो, क्योंकि उसे पूरे तौर पर बरबाद करने के लिए मख़सूस किया गया है।

8

रब को न भूलना

1 एहतिyतयत से उन तमाम अहकाम पर अमल करो जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ। क्योंकि ऐसा करने से तुम जीते रहोगे, तादाद में बढ़ोगे और जाकर उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करोगे जिसका वादा रब ने तुम्हारे बापदादा से कसम खाकर किया था।

2 वह पूरा वक़्त याद रख जब रब तेरा खुदा रेगिस्तान में 40 साल तक तेरी राहनुमाई करता रहा ताकि तुझे आजिज़ करके आजमाए और मालूम करे कि क्या तू उसके अहकाम पर चलेगा कि नहीं। 3 उसने तुझे आजिज़ करके भूके होने दिया, फिर तुझे मन खिलाया जिससे न तू और न तेरे बापदादा वाकिफ़ थे। क्योंकि वह तुझे सिखाना चाहता था कि इन्सान की ज़िंदगी सिर्फ़ रोटी पर मुनहसिर नहीं होती बल्कि हर उस बात पर जो रब के मुँह से निकलती है।

4 इन 40 सालों के दौरान तेरे कपड़े न धिसे न फटे, न तेरे पाँव सूज़े। 5 चुनौचे दिल में जान ले कि जिस तरह बाप अपने बेटे की तरबियत करता है उसी तरह रब हमारा खुदा हमारी तरबियत करता है।

6 रब अपने खुदा के अहकाम पर अमल करके उस की राहों पर चल और उसका ख़ौफ़ मान। 7 क्योंकि वह तुझे एक बेहतरीन मुल्क में ले जा रहा है जिसमें नहरें और ऐसे चश्मे हैं जो पहाड़ियों और वादियों की ज़मीन से फूट निकलते हैं। 8 उस की पैदावार अनाज, जौ, अंगूर, अंजीर, अनार, जैतून और शहद है। 9 उसमें रोटी की कमी नहीं होगी, और तू किसी चीज़ से महरूम नहीं रहेगा। उसके पथरों में लोहा पाया जाता है, और खुदाई से तू उस की पहाड़ियों से ताँबा हासिल कर सकेगा।

10 जब तू कसरत का खाना खाकर सेर हो जाएगा तो फिर रब अपने खुदा की तमज़ीद करना जिसने तुझे यह शानदार मुल्क दिया है। 11 ख़बरदार, रब अपने खुदा को न भूल और उसके उन अहकाम पर अमल करने से ग़ुरेज़ न कर जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ। 12 क्योंकि जब तू कसरत का खाना खाकर सेर हो जाएगा, तू शानदार घर बनाकर उनमें रहेगा 13 और तेरे रेवड़, सोने-चाँदी और बाक़ी तमाम माल में इज़ाफ़ा होगा 14 तो कहीं तू मग़र्र होकर रब अपने खुदा को भूल न जाए जो तुझे मिसर की गुलामी से निकाल लाया। 15 जब तू उस वसी और हौलनाक रेगिस्तान में सफ़र कर रहा था जिसमें ज़हरीले साँप और बिच्छू थे तो वही तेरी राहनुमाई करता रहा। पानी से महरूम उस इलाके में वही सख़्त पथर में से पानी निकाल लाया। 16 रेगिस्तान में वही तुझे मन खिलाता रहा, जिससे तेरे बापदादा वाकिफ़ न थे। इन मुश्किलात से वह तुझे आजिज़ करके आजमाता रहा ताकि आख़िरकार तू कामयाब हो जाए।

17 जब तुझे कामयाबी हासिल होगी तो यह न कहना कि मैंने अपनी ही कुव्वत और ताकत से यह सब कुछ हासिल किया है। 18 बल्कि रब अपने खुदा को याद करना जिसने तुझे दौलत हासिल करने की काबिलियत दी है। क्योंकि वह आज भी उसी अहद पर कायम है जो उसने तेरे बापदादा से किया था।

19 रब अपने खुदा को न भूलना, और न दीगर माबूदों के पीछे पड़कर उन्हें सिजदा और उनकी खिदमत करना। वरना मैं खुद गवाह हूँ कि तुम यक्रीनन हलाक हो जाओगे। 20 अगर तुम रब अपने खुदा की इताअत नहीं करोगे तो फिर वह तुम्हें उन क्रौमों की तरह तबाह कर देगा जो तुमसे पहले इस मुल्क में रहती थीं।

9

मुल्क मिलने का सबब इसराईल की रास्ती नहीं है

1 सुन ऐ इसराईल! आज तू दरियाए-यरदन को पार करनेवाला है। दूसरी तरफ़ तू ऐसी क्रौमों को भगा देगा जो तुझसे बड़ी और ताकतवर हैं और जिनके शानदार शहरों की फ़सीलें आसमान से बातें करती हैं। 2 वहाँ अनाकी बसते हैं जो ताकतवर और दराज़कद हैं। तू खुद जानता है कि उनके बारे में कहा जाता है, “कौन अनाकियों का सामना कर सकता है?” 3 लेकिन आज जान ले कि रब तेरा खुदा तेरे आगे आगे चलते हुए उन्हें भस्म कर देनेवाली आग की तरह हलाक करेगा। वह तेरे आगे आगे उन पर काबू पाएगा, और तू उन्हें निकालकर जल्दी मिटा देगा, जिस तरह रब ने वादा किया है।

4 जब रब तेरा खुदा उन्हें तेरे सामने से निकाल देगा तो तू यह न कहना, “मैं रास्तबाज़ हूँ, इसी लिए रब मुझे लायक समझकर यहाँ लाया और यह मुल्क मीरास में दे दिया है।” यह बात हरगिज़ दुस्त नहीं है। रब उन क्रौमों को उनकी ग़लत हरकतों की वजह से तेरे सामने से निकाल देगा। 5 तू अपनी रास्तबाज़ी और दियानतदारी की बिना पर उस मुल्क पर कब्ज़ा नहीं करेगा बल्कि रब उन्हें उनकी शरीर हरकतों के बाइस तेरे सामने से निकाल देगा। दूसरे, जो वादा उसने तेरे बापदादा इब्राहीम, इसहाक और याकूब के साथ कसम खाकर किया था उसे पूरा होना है।

6 चुनौचे जान ले कि रब तेरा खुदा तुझे तेरी रास्ती के बाइस यह अच्छा मुल्क नहीं दे रहा। हक़ीक़त तो यह है कि तू हटधर्म क्रौम है।

सोने का बछड़ा

7 याद रख और कभी न भूल कि तूने रेगिस्तान में रब अपने खुदा को किस तरह नाराज़ किया। मिसर से निकलते वक़्त से लेकर यहाँ पहुँचने तक तुम रब से सरकश रहे हो। 8 खासकर होरिब यानी सीना के दामन में तुमने रब को इतना गुस्सा दिलाया कि वह तुम्हें हलाक करने को था। 9 उस वक़्त मैं पहाड़ पर चढ़ गया था ताकि पत्थर की तख़्तियाँ यानी उस अहद की तख़्तियाँ मिल जाएँ जो रब ने तुम्हारे साथ बाँधा था। कुछ खाए पिए बग़ैर मैं 40 दिन और रात वहाँ रहा।

10-11 जो कुछ रब ने आग में से कहा था जब तुम पहाड़ के दामन में जमा थे वही कुछ उसने अपनी उँगली से दोनों तख़्तियों पर लिखकर मुझे दिया। 12 उसने मुझसे कहा, “फ़ौरन यहाँ से उतर जा। तेरी क्रौम जिसे तू मिसर से निकाल लाया बिगड़ गई है। वह कितनी जल्दी से मेरे अहक़ाम से हट गए हैं। उन्होंने अपने लिए बुत ढाल लिया है। 13 मैंने जान लिया है कि यह क्रौम कितनी ज़िद्दी है। 14 अब मुझे छोड़ दे ताकि मैं उन्हें तबाह करके उनका नामो-निशान दुनिया में से मिटा डालूँ। उनकी जगह मैं तुझसे एक क्रौम बना लूँगा जो उससे बड़ी और ताकतवर होगी।”

15 मैं मुड़कर पहाड़ से उतरा जो अब तक भड़क रहा था। मेरे हाथों में अहद की दोनों तख़्तियाँ थीं। 16 तुम्हें देखते ही मुझे मालूम हुआ कि तुमने रब अपने खुदा का गुनाह किया है। तुमने अपने लिए बछड़े का बुत ढाल लिया था। तुम कितनी जल्दी से रब की मुर्करा राह से हट गए थे।

17 तब मैंने तुम्हारे देखते देखते दोनों तख़्तियों को ज़मीन पर पटखकर टुकड़े टुकड़े कर दिया। 18 एक और बार मैं रब के सामने मुँह के बल गिरा। मैंने न कुछ खाया, न कुछ पिया। 40 दिन और रात मैं तुम्हारे तमाम गुनाहों के बाइस इसी हालत में रहा। क्योंकि जो कुछ तुमने किया था वह रब को निहायत बुरा लगा, इसलिए वह ग़ज़बनाक हो गया था। 19 वह तुमसे इतना नाराज़ था कि मैं बहुत डर गया। यों लग रहा था कि वह तुम्हें हलाक कर देगा। लेकिन इस बार भी उसने मेरी सुन ली। 20 मैंने हारून के लिए भी दुआ की, क्योंकि रब उससे भी निहायत नाराज़ था और उसे हलाक कर देना चाहता था।

21 जो बछड़ा तुमने गुनाह करके बनाया था उसे मैंने जला दिया, फिर जो कुछ बाक़ी रह गया उसे कुचल दिया और पीस पीसकर पौडर बना दिया। यह पौडर मैंने उस चश्मे में फेंक दिया जो पहाड़ पर से बह रहा था।

22 तुमने रब को तबएरा, मस्सा और क़ब्रोत-हत्तावा में भी गुस्सा दिलाया। 23 कादिस-बरनीअ में भी ऐसा ही हुआ। वहाँ से रब ने तुम्हें भेजकर कहा था, “जाओ, उस मुल्क पर कब्ज़ा करो जो मैंने तुम्हें दे दिया है।” लेकिन तुमने सरकश होकर रब अपने खुदा के हुक्म की खिलाफ़वर्ज़ी की। तुमने उस पर एतमाद न किया, न उस की सुनी। 24 जब से मैं तुम्हें जानता हूँ तुम्हारा रब के साथ रवैया बाग़ियाना ही रहा है।

25 मैं 40 दिन और रात रब के सामने ज़मीन पर मुँह के बल रहा, क्योंकि रब ने कहा था कि वह तुम्हें हलाक कर देगा। 26 मैंने उससे मिन्नत करके कहा, “ऐ रब कादिर-मुतलक, अपनी क्रौम को तबाह न कर। वह तो तेरी ही मिलकियत है जिसे तूने फ़िधा देकर अपनी अज़ीम कुदरत से बचाया और बड़े इख़्तियार के साथ मिसर से निकाल लाया। 27 अपने ख़ादिमों इब्राहीम, इसहाक और याकूब को याद कर, और इस क्रौम की ज़िद, शरीर हरकतों और गुनाह पर तवज्जुह न दे। 28 वरना मिसरी कहेंगे, ‘रब उन्हें उस मुल्क में लाने के काबिल नहीं था जिसका वादा

उसने किया था, बल्कि वह उनसे नफरत करता था। हाँ, वह उन्हें हलाक करने के लिए रेगिस्तान में ले आया।’ 29 वह तो तेरी कौम हैं, तेरी मिलकियत जिसे तू अपनी अज़ीम कुदरत और इख्तियार से मिसर से निकाल लाया।”

10

मूसा को नई तख्तियाँ मिलती हैं

1 उस वक़्त रब ने मुझसे कहा, “पत्थर की दो और तख्तियाँ तराशना जो पहली तख्तियों की मानिंद हों। उन्हें लेकर मेरे पास पहाड़ पर चढ़ आ। लकड़ी का संदूक भी बनाना। 2 फिर मैं इन तख्तियों पर दुबारा वही बातें लिखूँगा जो मैं उन तख्तियों पर लिख चुका था जो तूने तोड़ डालीं। तुम्हें उन्हें संदूक में महफूज़ रखना है।”

3 मैंने कीकर की लकड़ी का संदूक बनवाया और दो तख्तियाँ तराशीं जो पहली तख्तियों की मानिंद थीं। फिर मैं दोनों तख्तियाँ लेकर पहाड़ पर चढ़ गया। 4 रब ने उन तख्तियों पर दुबारा वह दस अहकाम लिख दिए जो वह पहली तख्तियों पर लिख चुका था। (उन्हीं अहकाम का एलान उसने पहाड़ पर आग में से किया था जब तुम उसके दामन में जमा थे।) फिर उसने यह तख्तियाँ मेरे सुपुर्द कीं। 5 मैं लौटकर उतरा और तख्तियों को उस संदूक में रखा जो मैंने बनाया था। वहाँ वह अब तक हैं। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा रब ने हुक्म दिया था।

इमामों और लावियों की खिदमत

6 (इसके बाद इसराईली बनी-याकान के कुओं से रवाना होकर मौसीरा पहुँचे। वहाँ हारून फ़ौत हुआ। उसे दफ़न करने के बाद उसका बेटा इलियज़र उस की जगह इमाम बना। 7 फिर वह आगे सफ़र करते करते जुदजूदा, फिर युतबाता पहुँचे जहाँ नहरें हैं।

8 उन दिनों में रब ने लावी के कबीले को अलग करके उसे रब के अहद के संदूक को उठाकर ले जाने, रब के हुज़ूर खिदमत करने और उसके नाम से बरकत देने की ज़िम्मादारी दी। आज तक यह उनकी ज़िम्मादारी रही है। 9 इस वजह से लावियों को दीगर कबीलों की तरह न हिस्सा न मीरास मिली। रब तेरा खुदा खुद उनकी मीरास है। उसने खुद उन्हें यह फ़रमाया है।)

10 जब मैंने दूसरी मरतबा 40 दिन और रात पहाड़ पर गुज़ारे तो रब ने इस दफ़ा भी मेरी सुनी और तुझे हलाक न करने पर आमादा हुआ। 11 उसने कहा, “जा, कौम की राहनुमाई कर ताकि वह जाकर उस मुल्क पर कब्ज़ा करें जिसका वादा मैंने क़सम खाकर उनके बापदादा से किया था।”

रब का ख़ौफ़

12 ऐ इसराईल, अब मेरी बात सुन! रब तेरा खुदा तुझसे क्या तकाज़ा करता है? सिर्फ़ यह कि तू उसका ख़ौफ़ माने, उस की तमाम राहों पर चले, उसे प्यार करे, अपने पूरे दिलो-जान से उस की खिदमत करे 13 और उसके तमाम अहकाम पर अमल करे। आज मैं उन्हें तुझे तेरी बेहतरी के लिए दे रहा हूँ।

14 पूरा आसमान, ज़मीन और जो कुछ उस पर है, सबका मालिक रब तेरा खुदा है। 15 तो भी उसने तेरे बापदादा पर ही अपनी ख़ास शफ़क़त का इज़हार करके उनसे मुहब्बत की। और उसने तुम्हें चुनकर दूसरी तमाम कौमों पर तरज़ीह दी जैसा कि आज ज़ाहिर है। 16 ख़तना उस की कौम का निशान है, लेकिन ध्यान रखो कि वह न सिर्फ़ ज़ाहिरी बल्कि बातिनी भी हो। आइंदा अड़ न जाओ।

17 क्योंकि रब तुम्हारा खुदा खुदाओं का खुदा और रब्बों का रब है। वह अज़ीम और ज़ोरावर खुदा है जिससे सब ख़ौफ़ खाते हैं। वह जानिबदारी नहीं करता और रिश्तत नहीं लेता। 18 वह यतीमों और बेवाओं का इनसाफ़ करता है। वह परदेसी से प्यार करता और उसे खुराक और पोशाक मुहैया करता है। 19 तुम भी उनके साथ मुहब्बत से पेश आओ, क्योंकि तुम भी मिसर में परदेसी थे।

20 रब अपने खुदा का ख़ौफ़ मान और उस की खिदमत कर। उससे लिपटा रह और उसी के नाम की क़सम खा। 21 वही तेरा फ़रख़ है। वह तेरा खुदा है जिसने वह तमाम अज़ीम और डरावने काम किए जो तूने खुद देखे। 22 जब तेरे बापदादा मिसर गए थे तो 70 अफ़राद थे। और अब रब तेरे खुदा ने तुझे सितारों की मानिंद बेशुमार बना दिया है।

11

रब से मुहब्बत रख और उस की सुन

1 रब अपने खुदा से प्यार कर और हमेशा उसके अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ार। 2 आज जान लो कि तुम्हारे बच्चों ने नहीं बल्कि तुम्हीं ने रब अपने खुदा से तरबियत पाई। तुमने उस की अज़मत, बड़े इख्तियार और कुदरत को देखा, 3 और तुम उन मोजिज़ों के गवाह हो जो उसने मिसर के बादशाह फ़िरौन और उसके पूरे मुल्क के सामने किए। 4 तुमने देखा कि रब ने किस तरह मिसरी फ़ौज को उसके घोड़ों और रथों समेत बहरे-क़लजुम में गरक़ कर दिया जब वह तुम्हारा ताक्कुब कर रहे थे। उसने उन्हें यों तबाह किया कि वह आज तक बहाल नहीं हुए।

5 तुम्हारे बच्चे नहीं बल्कि तुम ही गवाह हो कि यहाँ पहुँचने से पहले रब ने रेगिस्तान में तुम्हारी किस तरह देख-भाल की। 6 तुमने उसका इलियाब के बेटों दातन और अबीराम के साथ सुलूक देखा जो रुबिन के कबीले के थे। उस दिन ज़मीन ने खैमागाह के अंदर मुँह खोलकर उन्हें उनके घरानों, डेरों और तमाम जानदारों समेत हड़प कर लिया।

7 तुमने अपनी ही आँखों से रब के यह तमाम अजीम काम देखे हैं। 8 चुनौचे उन तमाम अहकाम पर अमल करते रहो जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ ताकि तुम्हें वह ताकत हासिल हो जो दरकार होगी जब तुम दरियाए-यरदन को पार करके मुल्क पर कब्ज़ा करोगे। 9 अगर तुम फ़रमाँबरदार रहो तो देर तक उस मुल्क में जीते रहोगे जिसका वादा रब ने कसम खाकर तुम्हारे बापदादा से किया था और जिसमें दूध और शहद की कसरत है।

10 क्योंकि यह मुल्क मिसर की मानिंद नहीं है जहाँ से तुम निकल आए हो। वहाँ के खेतों में तुझे बीज बोकर बड़ी मेहनत से उस की आबपाशी करनी पड़ती थी 11 जबकि जिस मुल्क पर तुम कब्ज़ा करोगे उसमें पहाड़ और वादियाँ हैं जिन्हें सिर्फ़ बारिश का पानी सेराब करता है। 12 रब तेरा खुदा खुद उस मुल्क का खयाल रखता है। रब तेरे खुदा की आँखें साल के पहले दिन से लेकर आखिर तक मुतवातिर उस पर लगी रहती हैं।

13 चुनौचे उन अहकाम के ताबे रहो जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ। रब अपने खुदा से प्यार करो और अपने पूरे दिलो-जान से उस की खिदमत करो। 14 फिर वह खरीफ़ और बहार की सालाना बारिश वक़्त पर भेजेगा। अनाज, अंगूर और जैतून की फ़सलें पकेंगी, और तू उन्हें जमा कर लेगा। 15 नीज़, अल्लाह तेरी चरागाहों में तेरे रेवड़ों के लिए घास मुहैया करेगा, और तू खाकर सेर हो जाएगा।

16 लेकिन खबरदार, कहीं तुम्हें वरगलाया न जाए। ऐसा न हो कि तुम रब की राह से हट जाओ और दीगर माबूदों को सिजदा करके उनकी खिदमत करो। 17 वरना रब का ग़ज़ब तुम पर आन पड़ेगा, और वह मुल्क में बारिश होने नहीं देगा। तुम्हारी फ़सलें नहीं पकेंगी, और तुम्हें जल्द ही उस अच्छे मुल्क में से मिटा दिया जाएगा जो रब तुम्हें दे रहा है।

18 चुनौचे मेरी यह बातें अपने दिलों पर नक्श कर लो। उन्हें निशान के तौर पर और याददिहानी के लिए अपने हाथों और माथों पर लगाओ। 19 उन्हें अपने बच्चों को सिखाओ। हर जगह और हमेशा उनके बारे में बात करो, खाह तू घर में बैठा या रास्ते पर चलता हो, लेटा हो या खड़ा हो। 20 उन्हें अपने घरों की चौखटों और अपने शहरों के दरवाज़ों पर लिख 21 ताकि जब तक ज़मीन पर आसमान कायम है तुम और तुम्हारी औलाद उस मुल्क में जीते रहें जिसका वादा रब ने कसम खाकर तुम्हारे बापदादा से किया था।

22 एहतियात से उन अहकाम की पैरवी करो जो मैं तुम्हें दे रहा हूँ। रब अपने खुदा से प्यार करो, उसके तमाम अहकाम पर अमल करो और उसके साथ लिपटे रहो। 23 फिर वह तुम्हारे आगे आगे यह तमाम क़ौमों निकाल देगा और तुम ऐसी क़ौमों की ज़मीनों पर कब्ज़ा करोगे जो तुमसे बड़ी और ताकतवर हैं। 24 तुम जहाँ भी क़दम रखोगे वह तुम्हारा ही होगा, जुनूबी रेगिस्तान से लेकर लुबनान तक, दरियाए-फ़ुरात से बहीराए-रूम तक। 25 कोई भी तुम्हारा सामना नहीं कर सकेगा। तुम उस मुल्क में जहाँ भी जाओगे वहाँ रब तुम्हारा खुदा अपने वादे के मुताबिक़ तुम्हारी दहशत और ख़ौफ़ पैदा कर देगा। 26 आज तुम खुद फ़ैसला करो। क्या तुम रब की बरकत या उस की लानत पाना चाहते हो? 27 अगर तुम रब अपने खुदा के उन अहकाम पर अमल करो जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ तो वह तुम्हें बरकत देगा। 28 लेकिन अगर तुम उनके ताबे न रहो बल्कि मेरी पेशकरदा राह से हटकर दीगर माबूदों की पैरवी करो तो वह तुम पर लानत भेजेगा।

29 जब रब तेरा खुदा तुझे उस मुल्क में ले जाएगा जिस पर तू कब्ज़ा करेगा तो लाज़िम है कि गरिज़ीम पहाड़ पर चढ़कर बरकत का एलान करे और ऐबाल पहाड़ पर लानत का। 30 यह दो पहाड़ दरियाए-यरदन के मगरिब में उन कनानियों के इलाक़े में वाक़े हैं जो वादीए-यरदन में आबाद हैं। वह मगरिब की तरफ़ जिलज़ाल शहर के सामने मोरिह के बलूत के दरख्तों के नज़दीक हैं। 31 अब तुम दरियाए-यरदन को पार करके उस मुल्क पर कब्ज़ा करनेवाले हो जो रब तुम्हारा खुदा तुम्हें दे रहा है। जब तुम उसे अपनाकर उसमें आबाद हो जाओगे 32 तो एहतियात से उन तमाम अहकाम पर अमल करते रहो जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ।

12

मुल्क में रब के अहकाम

1 ज़ैल में वह अहकाम और क़वानीन हैं जिन पर तुम्हें ध्यान से अमल करना होगा जब तुम उस मुल्क में आबाद होगे जो रब तेरे बापदादा का खुदा तुझे दे रहा है ताकि तू उस पर कब्ज़ा करे। मुल्क में रहते हुए उम्र-भर उनके ताबे रहो।

मुल्क में एक ही जगह पर मक़दिस हो

2 उन तमाम जगहों को बरबाद करो जहाँ वह क़ौमों जिन्हें तुम्हें निकालना है अपने देवताओं की पूजा करती हैं, खाह वह ऊँचे पहाड़ों, पहाड़ियों या घने दरख्तों के साथ में क्यों न हों। 3 उनकी क़ुरबानगाहों को ढा देना। जिन पत्थरों की पूजा वह करते हैं उन्हें चकनाचूर कर देना। यसीरत देवी के खंभे जला देना। उनके देवताओं के मुजस्समे काट डालना। गरज़ इन जगहों से उनका नामो-निशान मिट जाए।

4 रब अपने खुदा की परस्तिश करने के लिए उनके तरीक़े न अपनाना। 5 रब तुम्हारा खुदा क़बीलों में से अपने नाम की सुकूनत के लिए एक जगह चुन लेगा। इबादत के लिए वहाँ जाया करो, 6 और वहाँ अपनी तमाम क़ुरबानियाँ लाकर पेश करो, खाह वह भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ, ज़बह की क़ुरबानियाँ, पैदावार का दसवाँ हिस्सा, उठानेवाली क़ुरबानियाँ, मन्नत के हदिये, खुशी से पेश की गई क़ुरबानियाँ या मवेशियों के पहलौठे क्यों न हों। 7 वहाँ रब अपने खुदा के हुज़ूर अपने घरानों समेत खाना खाकर उन कामयाबियों की खुशी मनाओ जो तुझे रब तेरे खुदा की बरकत के बाइस हासिल हुई हैं।

8 उस वक्त तुम्हें वह नहीं करना जो हम करते आए हैं। आज तक हर कोई अपनी मरजी के मुताबिक इबादत करता है, 9 क्योंकि अब तक तुम आराम की उस जगह नहीं पहुँचे जो तुझे रब तेरे खुदा से मीरास में मिलनी है। 10 लेकिन जल्द ही तुम दरियाए-यरदन को पार करके उस मुल्क में आबाद हो जाओगे जो रब तुम्हारा खुदा तुम्हें मीरास में दे रहा है। उस वक्त वह तुम्हें इर्दगिर्द के दुश्मनों से बचाए रखेगा, और तुम आराम और सुकून से जिंदगी गुज़ार सकोगे। 11 तब रब तुम्हारा खुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए एक जगह चुन लेगा, और तुम्हें सब कुछ जो मैं बताऊँगा वहाँ लाकर पेश करना है, खाह वह भस्म होनेवाली कुरबानियाँ, ज़बह की कुरबानियाँ, पैदावार का दसवाँ हिस्सा, उठानेवाली कुरबानियाँ या मन्नत के खास हदिये क्यों न हों। 12 वहाँ रब के सामने तुम, तुम्हारे बेटे-बेटियाँ, तुम्हारे गुलाम और लौंडियाँ खुशी मनाएँ। अपने शहरों में आबाद लावियों को भी अपनी खुशी में शरीक करो, क्योंकि उनके पास मौस्सी ज़मीन नहीं होगी।

13 खबरदार, अपनी भस्म होनेवाली कुरबानियाँ हर जगह पर पेश न करना 14 बल्कि सिर्फ उस जगह पर जो रब कबीलों में से चुनेगा। वहीं सब कुछ यों मना जिस तरह मैं तुझे बताता हूँ।

15 लेकिन वह जानवर इसमें शामिल नहीं हैं जो तू कुरबानी के तौर पर पेश नहीं करना चाहता बल्कि सिर्फ खाना चाहता है। ऐसे जानवर तू आज़ादी से अपने तमाम शहरों में ज़बह करके उस बरकत के मुताबिक खा सकता है जो रब तेरे खुदा ने तुझे दी है। ऐसा गोशत हिरन और गज़ाल के गोशत की मानिंद है यानी पाक और नापाक दोनों ही उसे खा सकते हैं। 16 लेकिन खून न खाना। उसे पानी की तरह ज़मीन पर उंडेलकर जाया कर देना।

17 जो भी चीज़ें रब के लिए मखसूस की गई हैं उन्हें अपने शहरों में न खाना मसलन अनाज, अंगूर के रस और जैतून के तेल का दसवाँ हिस्सा, मवेशियों के पहलौठे, मन्नत के हदिये, खुशी से पेश की गई कुरबानियाँ और उठानेवाली कुरबानियाँ। 18 यह चीज़ें सिर्फ रब के हुज़ूर खाना यानी उस जगह पर जिसे वह मक़दिस के लिए चुनेगा। वहीं तू अपने बेटे-बेटियों, गुलामों, लौंडियों और अपने कबायली इलाके के लावियों के साथ जमा होकर खुशी मना कि रब ने हमारी मेहनत को बरकत दी है। 19 अपने मुल्क में लावियों की ज़रूरियात उम्र-भर पूरी करने की फ़िकर रख।

20 जब रब तेरा खुदा अपने वादे के मुताबिक तेरी सरहदें बढ़ा देगा और तू गोशत खाने की खाहिश रखेगा तो जिस तरह जी चाहे गोशत खा सकेगा। 21 अगर तेरा घर उस मक़दिस से दूर हो जिसे रब तेरा खुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा तो तू जिस तरह जी चाहे अपने शहरों में रब से मिले हुए मवेशियों को ज़बह करके खा सकता है। लेकिन ऐसा ही करना जैसा मैंने हुक्म दिया है। 22 ऐसा गोशत हिरन और गज़ाल के गोशत की मानिंद है यानी पाक और नापाक दोनों ही उसे खा सकते हैं। 23 अलबत्ता गोशत के साथ खून न खाना, क्योंकि खून जानदार की जान है। उस की जान गोशत के साथ न खाना। 24 खून न खाना बल्कि उसे ज़मीन पर उंडेलकर जाया कर देना। 25 उसे न खाना ताकि तुझे और तेरी औलाद को कामयाबी हासिल हो, क्योंकि ऐसा करने से तू रब की नज़र में सही काम करेगा।

26 लेकिन जो चीज़ें रब के लिए मखसूस-मुक़द्दस हैं या जो तुने मन्नत मानकर उसके लिए मखसूस की हैं लाज़िम है कि तू उन्हें उस जगह ले जाए जिसे रब मक़दिस के लिए चुनेगा। 27 वहीं, रब अपने खुदा की कुरबानगाह पर अपनी भस्म होनेवाली कुरबानियाँ गोशत और खून समेत चढ़ा। ज़बह की कुरबानियों का खून कुरबानगाह पर उंडेल देना, लेकिन उनका गोशत तू खा सकता है।

28 जो भी हिदायात मैं तुझे दे रहा हूँ उन्हें एहतियात से पूरा कर। फिर तू और तेरी औलाद खुशहाल रहेंगे, क्योंकि तू वह कुछ करेगा जो रब तेरे खुदा की नज़र में अच्छा और दुस्त है।

29 रब तेरा खुदा उन कौमों को मिटा देगा जिनकी तरफ़ तू बढ रहा है। तू उन्हें उनके मुल्क से निकालता जाएगा और खुद उसमें आबाद हो जाएगा। 30 लेकिन खबरदार, उनके खत्म होने के बाद भी उनके देवताओं के बारे में मालूमात हासिल न कर, वरना तू फँस जाएगा। मत कहना कि यह कौम किस तरीके से अपने देवताओं की पूजा करती है? हम भी ऐसा ही करें। 31 ऐसा मत कर! यह कौम ऐसे धिनौने तरीके से पूजा करती है जिनसे रब नफ़रत करता है। वह अपने बच्चों को भी जलाकर अपने देवताओं को पेश करते हैं।

32 कलाम की जो भी बात मैं तुम्हें पेश करता हूँ उसके ताबे रहकर उस पर अमल करो। न किसी बात का इज़ाफ़ा करना, न कोई बात निकालना।

13

देवताओं की तरफ़ ले जानेवालों से सुलूक

1 तेरे दरमियान ऐसे लोग उठ खड़े होंगे जो अपने आपको नबी या खाब देखनेवाले कहेंगे। हो सकता है कि वह किसी इलाही निशान या मोजिज़े का एलान करें 2 जो वाकई वुजूद में आए। साथ साथ वह कहें, “आ, हम दीगर माबूदों की पूजा करें, हम उनकी खिदमत करें जिनसे तू अब तक वाकिफ़ नहीं है।” 3 ऐसे लोगों की न सुन। इससे रब तुम्हारा खुदा तुम्हें आजमाकर मालूम कर रहा है कि क्या तुम वाकई अपने पूरे दिलो-जान से उससे प्यार करते हो। 4 तुम्हें रब अपने खुदा की पैरवी करना और उसी का खौफ़ मानना है। उसके अहकाम के मुताबिक़ जिंदगी गुज़ारो, उस की सुनो, उस की खिदमत करो, उसके साथ लिपटे रहो। 5 ऐसे नबियों या खाब देखनेवालों को सज़ाए-मौत देना, क्योंकि वह तुझे रब तुम्हारे खुदा से बगावत करने पर उकसाना चाहते हैं, उसी से जिसने फ़िघा देकर तुम्हें मिसर की गुलामी से बचाया और वहाँ से निकाल लाया। चूँकि वह तुझे उस राह से हटाना चाहते हैं जिसे रब तेरे खुदा ने तेरे लिए मुकर्रर किया है इसलिए लाज़िम है कि उन्हें सज़ाए-मौत दी जाए। ऐसी बुराई अपने दरमियान से मिटा देना।

6 हो सकता है कि तेरा सगा भाई, तेरा बेटा या बेटी, तेरी बीवी या तेरा करीबी दोस्त तुझे चुपके से बरगलाने की कोशिश करे कि आ, हम जाकर दीगर माबूदों की पूजा करें, ऐसे देवताओं की जिनसे न तू और न तेरे बापदादा वाकिफ़ थे। 7 खाह ईर्दगिर्द की या दूर-दराज़ की क्रौमों के देवता हों, खाह दुनिया के एक सिरे के या दूसरे सिरे के माबूद हों, 8 किसी सूत में अपनी रज़ामंदी का इज़हार न कर, न उस की सुन। उस पर रहम न कर। न उसे बचाए रख, न उसे पनाह दे 9 बल्कि उसे सज़ाए-मौत दे। और उसे संगसार करते वक़्त पहले तेरा हाथ उस पर पत्थर फेंके, फिर ही बाकी तमाम लोग हिस्सा लें। 10 उसे ज़रूर पत्थरों से सज़ाए-मौत देना, क्योंकि उसने तुझे रब तेरे खुदा से दूर करने की कोशिश की, उसी से जो तुझे मिसर की गुलामी से निकाल लाया। 11 फिर तमाम इसराईल यह सुनकर डर जाएगा और आईदा तेरे दरमियान ऐसी शरीर हरकत करने की ज़ुरत नहीं करेगा।

12 जब तू उन शहरों में रहने लगेगा जो रब तेरा खुदा तुझे दे रहा है तो शायद तुझे ख़बर मिल जाए 13 कि शरीर लोग तेरे दरमियान से उभर आए हैं जो अपने शहर के बाशिंदों को यह कहकर ग़लत राह पर लाए हैं कि आओ, हम दीगर माबूदों की पूजा करें, ऐसे माबूदों की जिनसे तुम वाकिफ़ नहीं हो। 14 लाज़िम है कि तू दरियाफ़्त करके इसकी तफ़्तीश करे और ख़ूब मालूम करे कि क्या हुआ है। अगर साबित हो जाए कि यह धिनौनी बात वाकई हुई है 15 तो फिर लाज़िम है कि तू शहर के तमाम बाशिंदों को हलाक करे। उसे रब के सुपुर्द करके सरासर तबाह करना, न सिर्फ़ उसके लोग बल्कि उसके मवेशी भी। 16 शहर का पूरा माले-गनीमत चौक में इक़ठा कर। फिर पूरे शहर को उसके माल समेत रब के लिए मख़सूस करके जला देना। उसे दुबारा कभी न तामीर किया जाए बल्कि उसके खंडरात हमेशा तक रहें।

17 पूरा शहर रब के लिए मख़सूस किया गया है, इसलिए उस की कोई भी चीज़ तेरे पास न पाई जाए। सिर्फ़ इस सूत में रब का ग़ज़ब ठंडा हो जाएगा, और वह तुझ पर रहम करके अपनी मेहरबानी का इज़हार करेगा और तेरी तादाद बढ़ाएगा, जिस तरह उसने कसम खाकर तेरे बापदादा से वादा किया है। 18 लेकिन यह सब कुछ इस पर मबनी है कि तू रब अपने खुदा की सुने और उसके उन तमाम अहक़ाम पर अमल करे जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। वही कुछ कर जो उस की नज़र में दुस्त है।

14

पाक और नापाक जानवर

1 तुम रब अपने खुदा के फ़रज़ंद हो। अपने आपको मुरदों के सबब से न ज़ख़मी करो, न अपने सर के सामनेवाले बाल मुँडवाओ। 2 क्योंकि तू रब अपने खुदा के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस क्रौम है। दुनिया की तमाम क्रौमों में से रब ने तुझे ही चुनकर अपनी मिलकियत बना लिया है।

3 कोई भी मकरूह चीज़ न खाना।

4 तुम बैल, भेड़-बकरी, 5 हिरन, ग़ज़ाल, मृग, * पहाड़ी बकरी, महात, † ग़ज़ाले-अफ़्रीका ‡ और पहाड़ी बकरी खा सकते हो। 6 जिनके खुर या पाँव बिलकुल चिरे हुए हैं और जो जुगाली करते हैं उन्हें खाने की इजाज़त है। 7 ऊँट, बिज्जू या ख़रगोश खाना मना है। वह तुम्हारे लिए नापाक हैं, क्योंकि वह जुगाली तो करते हैं लेकिन उनके खुर या पाँव चिरे हुए नहीं हैं। 8 सुअर न खाना। वह तुम्हारे लिए नापाक है, क्योंकि उसके खुर तो चिरे हुए हैं लेकिन वह जुगाली नहीं करता। न उनका गोश्त खाना, न उनकी लाशों को छूना।

9 पानी में रहनेवाले जानवर खाने के लिए जायज़ हैं अगर उनके पर और छिलके हों। 10 लेकिन जिनके पर या छिलके नहीं हैं वह तुम्हारे लिए नापाक हैं।

11 तुम हर पाक परिदा खा सकते हो। 12 लेकिन जैल के परिदे खाना मना है : उकाब, दढियल गिद्ध, काला गिद्ध, 13 लाल चील, काली चील, हर किस्म का गिद्ध, 14 हर किस्म का कौवा, 15 उकाबी उल्लू, छोटे कानवाला उल्लू, बड़े कानवाला उल्लू, हर किस्म का बाज़, 16 छोटा उल्लू, चिंघाड़नेवाला उल्लू, सफ़ेद उल्लू, 17 दशती उल्लू, मिसरी गिद्ध, कूक, 18 लकलक, हर किस्म का बूतीमार, हुदहुद और चमगादड़। §

19 तमाम पर रखनेवाले कीड़े तुम्हारे लिए नापाक हैं। उन्हें खाना मना है। 20 लेकिन तुम हर पाक परिदा खा सकते हो।

21 जो जानवर खुद बख़ुद मर जाए उसे न खाना। तू उसे अपनी आबादी में रहनेवाले किसी परदेसी को दे या किसी अजनबी को बेच सकता है और वह उसे खा सकता है। लेकिन तू उसे मत खाना, क्योंकि तू रब अपने खुदा के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस क्रौम है।

बकरी के बच्चे को उस की माँ के दूध में पकाना मना है।

अपनी पैदावार का दसवाँ हिस्सा मख़सूस करना

22 लाज़िम है कि तू हर साल अपने खेतों की पैदावार का दसवाँ हिस्सा रब के लिए अलग करे। 23 इसके लिए अपना अनाज, अंगूर का रस, जैतून का तेल और मवेशी के पहलौंठे रब अपने खुदा के हज़ूर ले आना यानी उस जगह जो वह अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा। वहाँ यह चीज़ें क़ुरबान करके खा ताकि तू उम्र-भर रब अपने खुदा का खौफ़ मानना सीखे।

* 14:5 यह हिरन के मुशाबेह होता है लेकिन फ़ितरतन मुख़तलिफ़ होता है। इसके सींग खोखले, बेशाख़ और अनझड़ होते हैं। antelope। याद रहे कि क़दीम ज़माने के इन जानवरों के अकसर नाम मतरूक हैं या उनका मतलब बदल गया है, इसलिए उनका मुख़तलिफ़ तरज़ुमा हो सकता है। † 14:5 महात। दराज़क़द हिरनों की एक नौ जिसके सींग चक्करदार होते हैं। addax। ‡ 14:5 ग़ज़ाले-अफ़्रीका। चिकारों की तीन इक़साम में से कोई जो अपने लंबे और हलकादार सींगों की वजह से मुमताज़ है। oryx। § 14:18 याद रहे कि क़दीम ज़माने के इन परिदों के अकसर नाम मतरूक हैं या उनका मतलब बदल गया है, इसलिए उनका मुख़तलिफ़ तरज़ुमा हो सकता है।

24 लेकिन हो सकता है कि जो जगह रब तेरा खुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा वह तेरे घर से हद से ज्यादा दूर हो और रब तेरे खुदा की बरकत के बाइस मजकूरा दसवाँ हिस्सा इतना ज्यादा हो कि तू उसे मकदिस तक नहीं पहुँचा सकता। 25 इस सूरत में उसे बेचकर उसके पैसे उस जगह ले जा जो रब तेरा खुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा। 26 वहाँ पहुँचकर उन पैसों से जो जी चाहे खरीदना, खाह गाय-बैल, भेड़-बकरी, मै या मै जैसी कोई और चीज़ क्यों न हो। फिर अपने घराने के साथ मिलकर रब अपने खुदा के हुज़ूर यह चीज़ें खाना और खुशी मनाना। 27 ऐसे मौकों पर उन लावियों का खयाल रखना जो तेरे कबायली इलाके में रहते हैं, क्योंकि उन्हें मीरास में ज़मीन नहीं मिलेगी।

28 हर तीसरे साल अपनी पैदावार का दसवाँ हिस्सा अपने शहरों में जमा करना। 29 उसे लावियों को देना जिनके पास मौरूसी ज़मीन नहीं है, निज़ अपने शहरों में आबाद परदेसियों, यतीमों और बेवाओं को देना। वह आएँ और खाना खाकर सेर हो जाएँ ताकि रब तेरा खुदा तेरे हर काम में बरकत दे।

15

कर्जदारों की बहाली का साल

1 हर सात साल के बाद एक दूसरे के कर्ज मुआफ़ कर देना। 2 उस वक़्त जिसने भी किसी इसराईली भाई को कर्ज दिया है वह उसे मनसूख करे। वह अपने पड़ोसी या भाई को पैसे वापस करने पर मजबूर न करे, क्योंकि रब की ताज़ीम में कर्ज मुआफ़ करने के साल का एलान किया गया है। 3 इस साल में तू सिर्फ़ ग़ैरमुल्की कर्जदारों को पैसे वापस करने पर मजबूर कर सकता है। अपने इसराईली भाई के तमाम कर्ज मुआफ़ कर देना।

4 तेरे दरमियान कोई भी गरीब नहीं होना चाहिए, क्योंकि जब तू उस मुल्क में रहेगा जो रब तेरा खुदा तुझे मीरास में देनेवाला है तो वह तुझे बहुत बरकत देगा। 5 लेकिन शर्त यह है कि तू पूरे तौर पर उस की सुने और एहतियात से उसके उन तमाम अहकाम पर अमल करे जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। 6 फिर रब तुम्हारा खुदा तुझे अपने वादे के मुताबिक़ बरकत देगा। तू किसी भी क़ौम से उधार नहीं लेगा बल्कि बहुत-सी क़ौमों को उधार देगा। कोई भी क़ौम तुझ पर हुकूमत नहीं करेगी बल्कि तू बहुत-सी क़ौमों पर हुकूमत करेगा।

7 जब तू उस मुल्क में आबाद होगा जो रब तेरा खुदा तुझे देनेवाला है तो अपने दरमियान रहनेवाले गरीब भाई से सख़्त सुल्क न करना, न कंजूस होना। 8 खुले दिल से उस की मदद कर। जितनी उसे ज़रूरत है उसे उधार के तौर पर दे। 9 खबरदार, ऐसा मत सोच कि कर्ज मुआफ़ करने का साल करीब है, इसलिए मैं उसे कुछ नहीं दूँगा। अगर तू ऐसी शरीर बात अपने दिल में सोचते हुए ज़रूरतमंद भाई को कर्ज देने से इनकार करे और वह रब के सामने तेरी शिकायत करे तो तू कुसूरवार ठहरेगा। 10 उसे ज़रूर कुछ दे बल्कि खुशी से दे। फिर रब तेरा खुदा तेरे हर काम में बरकत देगा। 11 मुल्क में हमेशा गरीब और ज़रूरतमंद लोग पाए जाएंगे, इसलिए मैं तुझे हुक्म देता हूँ कि खुले दिल से अपने गरीब और ज़रूरतमंद भाइयों की मदद कर।

गुलामों को आज़ाद करने का फ़र्ज़

12 अगर कोई इसराईली भाई या बहन अपने आपको बेचकर तेरा गुलाम बन जाए तो वह छः साल तेरी ख़िदमत करे। लेकिन लाज़िम है कि सातवें साल उसे आज़ाद कर दिया जाए। 13 आज़ाद करते वक़्त उसे खाली हाथ फ़ारिग न करना 14 बल्कि अपनी भेड़-बकरियों, अनाज, तेल और मै से उसे फ़ैयाज़ी से कुछ दे, यानी उन चीज़ों में से जिनसे रब तेरे खुदा ने तुझे बरकत दी है। 15 याद रख कि तू भी मिसर में गुलाम था और कि रब तेरे खुदा ने फ़िद्या देकर तुझे छुड़ाया। इसी लिए मैं आज तुझे यह हुक्म देता हूँ।

16 लेकिन मुमकिन है कि तेरा गुलाम तुझे छोड़ना न चाहे, क्योंकि वह तुझसे और तेरे ख़ानदान से मुहब्बत रखता है, और वह तेरे पास रहकर खुशहाल है। 17 इस सूरत में उसे दरवाज़े के पास ले जा और उसके कान की लौ चौखट के साथ लगाकर उसे सुताली यानी तेज़ औज़ार से छेद दे। तब वह ज़िंदगी-भर तेरा गुलाम बना रहेगा। अपनी लौंडी के साथ भी ऐसा ही करना।

18 अगर गुलाम तुझे छः साल के बाद छोड़ना चाहे तो बुरा न मानना। आखिर अगर उस की जगह कोई और वही काम तनखाह के लिए करता तो तेरे अख़राजात दुगुने होते। उसे आज़ाद करना तो रब तेरा खुदा तेरे हर काम में बरकत देगा।

जानवरों के पहलौठे मखसूस हैं

19 अपनी गायों और भेड़-बकरियों के नर पहलौठे रब अपने खुदा के लिए मखसूस करना। न गाय के पहलौठे को काम के लिए इस्तेमाल करना, न भेड़ के पहलौठे के बाल कतरना। 20 हर साल ऐसे बच्चे उस जगह ले जा जो रब अपने मकदिस के लिए चुनेगा। वहाँ उन्हें रब अपने खुदा के हुज़ूर अपने पूरे ख़ानदान समेत खाना।

21 अगर ऐसे जानवर में कोई खराबी हो, वह अंधा या लँगड़ा हो या उसमें कोई और नुक्स हो तो उसे रब अपने खुदा के लिए कुरबान न करना। 22 ऐसे जानवर तू घर में ज़बह करके खा सकता है। वह हिरन और गज़ाल की मानिंद हैं जिन्हें तू खा तो सकता है लेकिन कुरबानी के तौर पर पेश नहीं कर सकता। पाक और नापाक शख्स दोनों उसे खा सकते हैं। 23 लेकिन खून न खाना। उसे पानी की तरह ज़मीन पर उंडेलकर जाया कर देना।

16

फ़सह की ईद

1 अबीब के महीने * में रब अपने खुदा की ताज़ीम में फ़सह की ईद मनाना, क्योंकि इस महीने में वह तुझे रात के वक़्त मिसर से निकाल लाया। 2 उस जगह जमा हो जा जो रब अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा। उसे क़ुरबानी के लिए भेड़-बकरियाँ या गाय-बैल पेश करना। 3 गोश्त के साथ बेख़मीरी रोटी खाना। सात दिन तक यही रोटी खा, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह तूने किया जब जल्दी जल्दी मिसर से निकला। मुसीबत की यह रोटी इसलिए खा ताकि वह दिन तेरे जीते-जी याद रहे जब तू मिसर से रवाना हुआ। 4 लाज़िम है कि ईद के हफ़ते के दौरान तेरे पूरे मुल्क में ख़मीर न पाया जाए।

जो क़ुरबानी तू ईद के पहले दिन की शाम को पेश करे उसका गोश्त उसी वक़्त खा ले। अगली सुबह तक कुछ बाक़ी न रह जाए। 5 फ़सह की क़ुरबानी किसी भी शहर में जो रब तेरा खुदा तुझे देगा न चढ़ाना 6 बल्कि सिर्फ़ उस जगह जो वह अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा। मिसर से निकलते वक़्त की तरह क़ुरबानी के जानवर को सूरज डूबते वक़्त ज़बह कर। 7 फिर उसे भूनकर उस जगह खाना जो रब तेरा खुदा चुनेगा। अगली सुबह अपने घर वापस चला जा। 8 ईद के पहले छः दिन बेख़मीरी रोटी खाता रह। सातवें दिन काम न करना बल्कि रब अपने खुदा की इबादत के लिए जमा हो जाना।

फ़सल की कटाई की ईद

9 जब अनाज की फ़सल की कटाई शुरू होगी तो पहले दिन के सात हफ़ते बाद 10 फ़सल की कटाई की ईद मनाना। रब अपने खुदा को उतना पेश कर जितना जी चाहे। वह उस बरकत के मुताबिक़ हो जो उसने तुझे दी है। 11 इसके लिए भी उस जगह जमा हो जा जो रब अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा। वहाँ उसके हुज़ूर ख़ुशी मना। तेरे बाल-बच्चे, तेरे गुलाम और लौंडियाँ और तेरे शहरों में रहनेवाले लावी, परदेसी, यतीम और बेवाएँ सब तेरी ख़ुशी में शरीक हों। 12 इन अहक़ाम पर ज़रूर अमल करना और मत भूलना कि तू मिसर में गुलाम था।

झोंपड़ियों की ईद

13 अनाज गाहने और अंगूर का रस निकालने के बाद झोंपड़ियों की ईद मनाना जिसका दौरानिया सात दिन हो। 14 ईद के मौक़े पर ख़ुशी मनाना। तेरे बाल-बच्चे, तेरे गुलाम और लौंडियाँ और तेरे शहरों में बसनेवाले लावी, परदेसी, यतीम और बेवाएँ सब तेरी ख़ुशी में शरीक हों। 15 जो जगह रब तेरा खुदा मक़दिस के लिए चुनेगा वहाँ उस की ताज़ीम में सात दिन तक यह ईद मनाना। क्योंकि रब तेरा खुदा तेरी तमाम फ़सलों और मेहनत को बरकत देगा, इसलिए ख़ूब ख़ुशी मनाना।

16 इसराइल के तमाम मर्द साल में तीन मरतबा उस मक़दिस पर हाज़िर हो जाएँ जो रब तेरा खुदा चुनेगा यानी बेख़मीरी रोटी की ईद, फ़सल की कटाई की ईद और झोंपड़ियों की ईद पर। कोई भी रब के हुज़ूर ख़ाली हाथ न आए। 17 हर कोई उस बरकत के मुताबिक़ दे जो रब तेरे खुदा ने उसे दी है।

काज़ी मुक़र्रर करना

18 अपने अपने क़बायली इलाके में काज़ी और निगहबान मुक़र्रर कर। वह हर उस शहर में हों जो रब तेरा खुदा तुझे देगा। वह इनसाफ़ से लोगों की अदालत करें। 19 न किसी के हुक्क मारना, न जानिबदारी दिखाना। रिश्तत क़बूल न करना, क्योंकि रिश्तत दानिशमंदों को अंधा कर देती और रास्तबाज़ की बातें पलट देती है। 20 सिर्फ़ और सिर्फ़ इनसाफ़ के मुताबिक़ चल ताकि तू जीता रहे और उस मुल्क पर कब्ज़ा करे जो रब तेरा खुदा तुझे देगा।

बुतपरस्ती की सज़ा

21 जहाँ तू रब अपने खुदा के लिए क़ुरबानगाह बनाएगा वहाँ न यसीरत देवी की पूजा के लिए लकड़ी का खंबा 22 और न कोई ऐसा पत्थर खड़ा करना जिसकी पूजा लोग करते हैं। रब तेरा खुदा इन चीज़ों से नफ़रत रखता है।

17

1 रब अपने खुदा को नाक़िस गाय-बैल या भेड़-बकरी पेश न करना, क्योंकि वह ऐसी क़ुरबानी से नफ़रत रखता है।

2 जब तू उन शहरों में आबाद हो जाएगा जो रब तेरा खुदा तुझे देगा तो हो सकता है कि तेरे दरमियान कोई मर्द या औरत रब तेरे खुदा का अहद तोड़कर वह कुछ करे जो उसे बुरा लगे। 3 मसलन वह दीगर माबूदों को या सूरज, चाँद या सितारों के पूरे लश्कर को सिजदा करे, हालाँकि मैंने यह मना किया है। 4 जब भी तुझे इस किस्म की ख़बर मिले तो इसका पूरा खोज लगा। अगर बात दुस्त निकले और ऐसी धिनौनी हरकत वाकई इसराइल में की गई हो 5 तो कुसूरवार को शहर के बाहर ले जाकर संगसार कर देना। 6 लेकिन लाज़िम है कि पहले कम अज़ कम दो या तीन लोग गवाही दें कि उसने ऐसा ही किया है। उसे सज़ाए-मौत देने के लिए एक गवाह काफ़ी नहीं। 7 पहले गवाह उस पर पत्थर फेंकें, इसके बाद बाक़ी तमाम लोग उसे संगसार करें। यों तू अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा।

मक़दिस में आलातरीन अदालत

* 16:1 मार्च ता अप्रैल।

8 अगर तेरे शहर के काजियों के लिए किसी मुकदमे का फैसला करना मुश्किल हो तो उस मकदिस में आकर अपना मामला पेश कर जो रब तेरा खुदा चुनेगा, खाह किसी को कत्ल किया गया हो, उसे ज़ख्मी कर दिया गया हो या कोई और मसला हो। 9 लावी के कबीले के इमामों और मकदिस में खिदमत करनेवाले काजी को अपना मुकदमा पेश कर, और वह फैसला करें। 10 जो फैसला वह उस मकदिस में करेंगे जो रब चुनेगा उसे मानना पड़ेगा। जो भी हिदायत वह दें उस पर एहतियात से अमल कर। 11 शरीअत की जो भी बात वह तुझे सिखाएँ और जो भी फैसला वह दें उस पर अमल कर। जो कुछ भी वह तुझे बताएँ उससे न दाईं और न बाईं तरफ़ मुड़ना।

12 जो मकदिस में रब तेरे खुदा की खिदमत करनेवाले काजी या इमाम को हकीर जानकर उनकी नहीं सुनता उसे सज़ाए-मौत दी जाए। यों तू इसराईल से बुराई मिटा देगा। 13 फिर तमाम लोग यह सुनकर डर जाएंगे और आइंदा ऐसी गुस्ताखी करने की जुरत नहीं करेंगे।

बादशाह के बारे में उसूल

14 तू जल्द ही उस मुल्क में दाखिल होगा जो रब तेरा खुदा तुझे देनेवाला है। जब तू उस पर कब्ज़ा करके उसमें आबाद हो जाएगा तो हो सकता है कि तू एक दिन कहे, “आओ हम इर्दगिर्द की तमाम क्रौमों की तरह बादशाह मुकर्रर करें जो हम पर हुक्मत करे।” 15 अगर तू ऐसा करे तो सिर्फ़ वह शख्स मुकर्रर कर जिसे रब तेरा खुदा चुनेगा। वह परदेसी न हो बल्कि तेरा अपना इसराईली भाई हो। 16 बादशाह बहुत ज़्यादा घोड़े न रखे, न अपने लोगों को उन्हें खरीदने के लिए मिसर भेजे। क्योंकि रब ने तुझसे कहा है कि कभी वहाँ वापस न जाना। 17 तेरा बादशाह ज़्यादा बीवियाँ भी न रखे, वरना उसका दिल रब से दूर हो जाएगा। और वह हद से ज़्यादा सोना-चाँदी जमा न करे।

18 तख़्तनशीन होते वक़्त वह लावी के कबीले के इमामों के पास पड़ी इस शरीअत की नक़ल लिखवाए। 19 यह किताब उसके पास महफूज़ रहे, और वह उम्र-भर रोज़ाना इसे पढ़ता रहे ताकि रब अपने खुदा का ख़ौफ़ मानना सीखे। तब वह शरीअत की तमाम बातों की पैरवी करेगा, 20 अपने आपको अपने इसराईली भाइयों से ज़्यादा अहम नहीं समझेगा और किसी तरह भी शरीअत से हटकर काम नहीं करेगा। नतीजे में वह और उस की औलाद बहुत अरसे तक इसराईल पर हुक्मत करेंगे।

18

इमामों और लावियों का हिस्सा

1 इसराईल के हर कबीले को मीरास में उसका अपना इलाका मिलेगा सिवाए लावी के कबीले के जिसमें इमाम भी शामिल हैं। वह जलनेवाली और दीगर कुरबानियों में से अपना हिस्सा लेकर गुजारा करें। 2 उनके पास दूसरों की तरह मौस्सी ज़मीन नहीं होगी बल्कि रब खुद उनका मौस्सी हिस्सा होगा। यह उसने वादा करके कहा है।

3 जब भी किसी बैल या भेड़ को कुरबान किया जाए तो इमामों को उसका शाना, जबड़े और ओझड़ी मिलने का हक़ है। 4 अपनी फसलों का पहला फल भी उन्हें देना यानी अनाज, मै, जैतून का तेल और भेड़ों की पहली कतरी हुई ऊन। 5 क्योंकि रब ने तेरे तमाम कबीलों में से लावी के कबीले को ही मकदिस में रब के नाम में खिदमत करने के लिए चुना है। यह हमेशा के लिए उनकी और उनकी औलाद की ज़िम्मादारी रहेगी।

6 कुछ लावी मकदिस के पास नहीं बल्कि इसराईल के मुख़्तलिफ़ शहरों में रहेंगे। अगर उनमें से कोई उस जगह आना चाहे जो रब मकदिस के लिए चुनेगा 7 तो वह वहाँ के खिदमत करनेवाले लावियों की तरह मकदिस में रब अपने खुदा के नाम में खिदमत कर सकता है। 8 उसे कुरबानियों में से दूसरों के बराबर लावियों का हिस्सा मिलना है, खाह उसे खानदानी मिलकियत बेचने से पैसे मिल गए हों या नहीं।

जादूगरी मना है

9 जब तू उस मुल्क में दाखिल होगा जो रब तेरा खुदा तुझे दे रहा है तो वहाँ की रहनेवाली क्रौमों के धिनौने दस्तूर न अपनाना। 10 तेरे दरमियान कोई भी अपने बेटे या बेटी को कुरबानी के तौर पर न जलाए। न कोई ग़ैबदानी करे, न फ़ाल या शुगून निकाले या जादूगरी करे। 11 इसी तरह मंत्र पढ़ना, हाज़िरात करना, किस्मत का हाल बताना या मुरदों की रूहों से राबिता करना सख़्त मना है। 12 जो भी ऐसा करे वह रब की नज़र में क़ाबिले-धिन है। इन्हीं मक़रूह दस्तूरों की वज़ह से रब तेरा खुदा तेरे आगे से उन क्रौमों को निकाल देगा। 13 इसलिए लाज़िम है कि तू रब अपने खुदा के सामने बेक़सूर रहे।

नबी का वादा

14 जिन क्रौमों को तू निकालनेवाला है वह उनकी सुनती हैं जो फ़ाल निकालते और ग़ैबदानी करते हैं। लेकिन रब तेरे खुदा ने तुझे ऐसा करने की इजाज़त नहीं दी।

15 रब तेरा खुदा तेरे वास्ते तेरे भाइयों में से मुझ जैसे नबी को बरपा करेगा। उस की सुनना। 16 क्योंकि होरिब यानी सीना पहाड़ पर जमा होते वक़्त तूने खुद रब अपने खुदा से दरखास्त की, “न मैं मज़ीद रब अपने खुदा की आवाज़ सुनना चाहता, न यह भड़कती हुई आग देखना चाहता हूँ, वरना मर जाऊँगा।” 17 तब रब ने मुझसे कहा, “जो कुछ वह कहते हैं वह ठीक है। 18 आइंदा मैं उनमें से तुझ जैसा नबी खड़ा करूँगा। मैं अपने अलफ़ाज़ उसके मुँह में डाल दूँगा, और वह मेरी हर बात उन तक पहुँचाएगा। 19 जब वह नबी मेरे नाम में कुछ कहे तो लाज़िम है कि तू

उस की सुन। जो नहीं सुनेगा उससे मैं खुद जवाब तलब करूँगा। ²⁰ लेकिन अगर कोई नबी गुस्ताख होकर मेरे नाम में कोई बात कहे जो मैंने उसे बताने को नहीं कहा था तो उसे सज़ाए-मौत देनी है। इसी तरह उस नबी को भी हलाक कर देना है जो दीगर माबूदों के नाम में बात करे।”

²¹ शायद तैरे ज़हन में सवाल उभर आए कि हम किस तरह मालूम कर सकते हैं कि कोई कलाम वाकई रब की तरफ़ से है या नहीं। ²² जवाब यह है कि अगर नबी रब के नाम में कुछ कहे और वह पूरा न हो जाए तो मतलब है कि नबी की बात रब की तरफ़ से नहीं है बल्कि उसने गुस्ताखी करके बात की है। इस सूरत में उससे मत डरना।

19

पनाह के शहर

¹ रब तेरा खुदा उस मुल्क में आबाद कौमों को तबाह करेगा जो वह तुझे दे रहा है। जब तू उन्हें भगाकर उनके शहरों और घरों में आबाद हो जाएगा ²⁻³ तो पूरे मुल्क को तीन हिस्सों में तकसीम कर। हर हिस्से में एक मरकज़ी शहर मुक़रर कर। उन तक पहुँचानेवाले रास्ते साफ़-सुथरे रखना। इन शहरों में हर वह शख्स पनाह ले सकता है जिसके हाथ से कोई ग़ैरइरादी तौर पर हलाक हुआ है। ⁴ वह ऐसे शहर में जाकर इंतक़ाम लेनेवालों से महफूज़ रहेगा। शर्त यह है कि उसने न क़सदन और न दुश्मनी के बाइस किसी को मार दिया हो।

⁵ मसलन दो आदमी जंगल में दरख़्त काट रहे हैं। कुल्हाड़ी चलाते वक़्त एक की कुल्हाड़ी दस्ते से निकलकर उसके साथी को लग जाए और वह मर जाए। ऐसा शख्स फ़रार होकर ऐसे शहर में पनाह ले सकता है ताकि बचा रहे। ⁶ इसलिए ज़रूरी है कि ऐसे शहरों का फ़ासला ज़्यादा न हो। क्योंकि जब इंतक़ाम लेनेवाला उसका ताक़्क़ुब करेगा तो ख़तरा है कि वह तैश में उसे पकड़कर मार डाले, अगरचे भागनेवाला बेकुसूर है। जो कुछ उसने किया वह दुश्मनी के सबब से नहीं बल्कि ग़ैरइरादी तौर पर हुआ। ⁷ इसलिए लाज़िम है कि तू पनाह के तीन शहर अलग कर ले।

⁸ बाद में रब तेरा खुदा तेरी सरहदें मज़ीद बढ़ा देगा, क्योंकि यही वादा उसने क़सम खाकर तैरे बापदादा से किया है। अपने वादे के मुताबिक़ वह तुझे पूरा मुल्क देगा, ⁹ अलबत्ता शर्त यह है कि तू एहतियात से उन तमाम अहक़ाम की पैरवी करे जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। दूसरे अलफ़ाज़ में शर्त यह है कि तू रब अपने खुदा को प्यार करे और हमेशा उस की राहों में चलता रहे। अगर तू ऐसा ही करे और नतीजतन रब का वादा पूरा हो जाए तो लाज़िम है कि तू पनाह के तीन और शहर अलग कर ले। ¹⁰ वरना तैरे मुल्क में जो रब तेरा खुदा तुझे मीरास में दे रहा है बेकुसूर लोगों को जान से मारा जाएगा और तू खुद ज़िम्मादार ठहरेगा।

¹¹ लेकिन हो सकता है कोई दुश्मनी के बाइस किसी की ताक में बैठ जाए और उस पर हमला करके उसे मार डाले। अगर क़ातिल पनाह के किसी शहर में भागकर पनाह ले ¹² तो उसके शहर के बुज़ुर्ग इतला दें कि उसे वापस लाया जाए। उसे इंतक़ाम लेनेवाले के हवाले किया जाए ताकि उसे सज़ाए-मौत मिले। ¹³ उस पर रहम मत करना। लाज़िम है कि तू इसराईल में से बेकुसूर की मौत का दाग़ मिटाए ताकि तू खुशहाल रहे।

ज़मीनों की हदें

¹⁴ जब तू उस मुल्क में रहेगा जो रब तेरा खुदा तुझे मीरास में देगा ताकि तू उस पर कब्ज़ा करे तो ज़मीन की वह हदें आगे पीछे न करना जो तैरे बापदादा ने मुक़रर कीं।

अदालत में गवाह

¹⁵ तू किसी को एक ही गवाह के कहने पर कुसूरवार नहीं ठहरा सकता। जो भी जुर्म सरज़द हुआ है, कम अज़ कम दो या तीन गवाहों की ज़रूरत है। वरना तू उसे कुसूरवार नहीं ठहरा सकता।

¹⁶ अगर जिस पर इलज़ाम लगाया गया है इनकार करके दावा करे कि गवाह झूट बोल रहा है ¹⁷ तो दोनों मक़दिस में रब के हुज़ूर आकर ख़िदमत करनेवाले इमामों और क़ाज़ियों को अपना मामला पेश करें। ¹⁸ क़ाज़ी इसका खूब खोज लगाएँ। अगर बात दुस्त निकले कि गवाह ने झूट बोलकर अपने भाई पर ग़लत इलज़ाम लगाया है ¹⁹ तो उसके साथ वह कुछ किया जाए जो वह अपने भाई के लिए चाह रहा था। यों तू अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा। ²⁰ फिर तमाम बाक़ी लोग यह सुनकर डर जाएंगे और आइंदा तैरे दरमियान ऐसी ग़लत हरकत करने की ज़ुरत नहीं करेंगे। ²¹ कुसूरवार पर रहम न करना। उसूल यह हो कि जान के बदले जान, आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत, हाथ के बदले हाथ, पाँव के बदले पाँव।

20

जंग के उसूल

¹ जब तू जंग के लिए निकलकर देखता है कि दुश्मन तादाद में ज़्यादा हैं और उनके पास घोड़े और रथ भी हैं तो मत डरना। रब तेरा खुदा जो तुझे मिसर से निकाल लाया अब भी तैरे साथ है। ² जंग के लिए निकलने से पहले इमाम सामने आए और फ़ौज़ से मुख़ातिब होकर ³ कहे, “सुन ऐ इसराईल! आज तुम अपने दुश्मन से लड़ने जा रहे हो। उनके सबब से परेशान न हो। उनसे न खौफ़ खाओ, न घबराओ, ⁴ क्योंकि रब तुम्हारा खुदा खुद तुम्हारे साथ जाकर दुश्मन से लड़ेगा। वही तुम्हें फ़तह बख़्शेगा।”

5 फिर निगहबान फ़ौज से मुखातिब हों, “क्या यहाँ कोई है जिसने हाल में अपना नया घर मुकम्मल किया लेकिन उसे मखसूस करने का मौका न मिला? वह अपने घर वापस चला जाए। ऐसा न हो कि वह जंग के दौरान मारा जाए और कोई और घर को मखसूस करके उसमें बसने लगे। 6 क्या कोई है जिसने अंगूर का बाग लगाकर इस वक़्त उस की पहली फ़सल के इंतज़ार में है? वह अपने घर वापस चला जाए। ऐसा न हो कि वह जंग में मारा जाए और कोई और बाग का फ़ायदा उठाए। 7 क्या कोई है जिसकी मँगनी हुई है और जो इस वक़्त शादी के इंतज़ार में है? वह अपने घर वापस चला जाए। ऐसा न हो कि वह जंग में मारा जाए और कोई और उस की मंगेतर से शादी करे।”

8 निगहबान कहें, “क्या कोई ख़ौफ़ज़दा या परेशान है? वह अपने घर वापस चला जाए ताकि अपने साथियों को परेशान न करे।” 9 इसके बाद फ़ौजियों पर अफ़सर मुक़र्रर किए जाएँ।

10 किसी शहर पर हमला करने से पहले उसके बाशिंदों को हथियार डाल देने का मौका देना। 11 अगर वह मान जाएँ और अपने दरवाज़े खोल दें तो वह तेरे लिए बेगार में काम करके तेरी खिदमत करें। 12 लेकिन अगर वह हथियार डालने से इनकार करें और जंग छिड़ जाए तो शहर का मुहासरा कर। 13 जब रब तेरा ख़ुदा तुझे शहर पर फ़तह देगा तो उसके तमाम मर्दों को हलाक कर देना। 14 तू तमाम माले-गानीमत औरतों, बच्चों और मवेशियों समेत रख सकता है। दुश्मन की जो चीज़ें रब ने तेरे हवाले कर दी हैं उन सबको तू इस्तेमाल कर सकता है। 15 यों उन शहरों से निपटना जो तेरे अपने मुल्क से बाहर हैं।

16 लेकिन जो शहर उस मुल्क में वाके हैं जो रब तेरा ख़ुदा तुझे मीरास में दे रहा है, उनके तमाम जानदारों को हलाक कर देना। 17 उन्हें रब के सुपुर्द करके मुकम्मल तौर पर हलाक करना, जिस तरह रब तेरे ख़ुदा ने तुझे हुक्म दिया है। इसमें हिती, अमोरी, कनानी, फ़रिज़्ज़ी, हिवी और यबूसी शामिल हैं। 18 अगर तू ऐसा न करे तो वह तुम्हें रब तुम्हारे ख़ुदा का गुनाह करने पर उकसाएँगे। जो धिनौनी हरकतें वह अपने देवताओं की पूजा करते वक़्त करते हैं उन्हें वह तुम्हें भी सिखाएँगे।

19 शहर का मुहासरा करते वक़्त इर्दगिर्द के फलदार दरख़्तों को काटकर तबाह न कर देना खाह बड़ी देर भी हो जाए, वरना तू उनका फल नहीं खा सकेगा। उन्हें न काटना। क्या दरख़्त तेरे दुश्मन हैं जिनका मुहासरा करना है? हरगिज़ नहीं! 20 उन दरख़्तों की और बात है जो फल नहीं लाते। उन्हें तू काटकर मुहासरे के लिए इस्तेमाल कर सकता है जब तक शहर शिकस्त न जाए।

21

नामालूम क़त्ल का कफ़फ़ारा

1 जब तू उस मुल्क में आबाद होगा जो रब तुझे मीरास में दे रहा है ताकि तू उस पर कब्ज़ा करे तो हो सकता है कि कोई लाश खुले मैदान में कहीं पड़ी पाई जाए। अगर मालूम न हो कि किसने उसे क़त्ल किया है 2 तो पहले इर्दगिर्द के शहरों के बुजुर्ग और काज़ी आकर पता करें कि कौन-सा शहर लाश के ज़्यादा करीब है। 3 फिर उस शहर के बुजुर्ग एक जवान गाय चुन लें जो कभी काम के लिए इस्तेमाल नहीं हुई। 4 वह उसे एक ऐसी वादी में ले जाएँ जिसमें न कभी हल चलाया गया, न पौदे लगाए गए हों। वादी में ऐसी नहर हो जो पूरा साल बहती रहे। वही बुजुर्ग जवान गाय की गरदन तोड़ डालें।

5 फिर लावी के कबीले के इमाम करीब आएँ। क्योंकि रब तुम्हारे ख़ुदा ने उन्हें चुन लिया है ताकि वह खिदमत करें, रब के नाम से बरकत दें और तमाम झगड़ों और हमलों का फ़ैसला करें। 6 उनके देखते देखते शहर के बुजुर्ग अपने हाथ गाय की लाश के ऊपर धो लें। 7 साथ साथ वह कहें, “हमने इस शख्स को क़त्ल नहीं किया, न हमने देखा कि किसने यह किया। 8 ऐ रब, अपनी क़ौम इसराईल का यह कफ़फ़ारा क़बूल फ़रमा जिसे तूने फिघा देकर छुड़ाया है। अपनी क़ौम इसराईल को इस बेकुसूर के क़त्ल का कुसूरवार न ठहरा।” तब मकतूल का कफ़फ़ारा दिया जाएगा।

9 यों तू ऐसे बेकुसूर शख्स के क़त्ल का दाग़ अपने दरमियान से मिटा देगा। क्योंकि तूने वही कुछ किया होगा जो रब की नज़र में दुस्त है।

जंगी कैदी औरत से शादी

10 हो सकता है कि तू अपने दुश्मन से जंग करे और रब तुम्हारा ख़ुदा तुझे फ़तह बख़्शे। जंगी कैदियों को जमा करते वक़्त 11 तुझे उनमें से एक ख़ूबसूरत औरत नज़र आती है जिसके साथ तेरा दिल लग जाता है। तू उससे शादी कर सकता है। 12 उसे अपने घर में ले आ। वहाँ वह अपने सर के बालों को मुँडवाए, अपने नाख़ुन तराशे 13 और अपने वह कपड़े उतारे जो वह पहने हुए थी जब उसे कैद किया गया। वह पूरे एक महीने तक अपने वालिदैन के लिए मातम करे। फिर तू उसके पास जाकर उसके साथ शादी कर सकता है।

14 अगर वह तुझे किसी वक़्त पसंद न आए तो उसे जाने दे। वह वहाँ जाए जहाँ उसका जी चाहे। तुझे उसे बेचने या उससे लौंडी का-सा सुलूक करने की इजाज़त नहीं है, क्योंकि तूने उसे मजबूर करके उससे शादी की है।

पहलौठे के हुक्क

15 हो सकता है किसी मर्द की दो बीवियाँ हों। एक को वह प्यार करता है, दूसरी को नहीं। दोनों बीवियों के बेटे पैदा हुए हैं, लेकिन जिस बीवी से शौहर मुहब्बत नहीं करता उसका बेटा सबसे पहले पैदा हुआ। 16 जब बाप अपनी मिलकियत वसियत में तकसीम करता है तो लाज़िम है कि वह अपने सबसे बड़े बेटे का मौरूसी हक़ पूरा करे। उसे पहलौठे का यह हक़ उस बीवी के बेटे को मुंतकिल करने की इजाज़त नहीं जिसे

वह प्यार करता है। 17 उसे तसलीम करना है कि उस बीवी का बेटा सबसे बड़ा है, जिससे वह मुहब्बत नहीं करता। नतीजतन उसे उस बेटे को दूसरे बेटों की निसबत दुगना हिस्सा देना पड़ेगा, क्योंकि वह अपने बाप की ताकत का पहला इज़हार है। उसे पहलौठे का हक़ हासिल है।

सरकश बेटा

18 हो सकता है कि किसी का बेटा हठधर्म और सरकश हो। वह अपने वालिदैन की इताअत नहीं करता और उनके तंबीह करने और सज़ा देने पर भी उनकी नहीं सुनता। 19 इस सूरत में वालिदैन उसे पकड़कर शहर के दरवाज़े पर ले जाएँ जहाँ बुजुर्ग जमा होते हैं। 20 वह बुजुर्गों से कहें, “हमारा बेटा हठधर्म और सरकश है। वह हमारी इताअत नहीं करता बल्कि ऐयाश और शराबी है।” 21 यह सुनकर शहर के तमाम मर्द उसे संगसार करें। यों तू अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा। तमाम इसराईल यह सुनकर डर जाएगा।

सज़ाए-मौत पानेवाले को उसी दिन दफ़नाना है

22 जब तू किसी को सज़ाए-मौत देकर उस की लाश किसी लकड़ी या दरख़्त से लटकाता है 23 तो उसे अगली सुबह तक वहाँ न छोड़ना। हर सूरत में उसे उसी दिन दफ़ना देना, क्योंकि जिसे भी दरख़्त से लटकाया गया है उस पर अल्लाह की लानत है। अगर उसे उसी दिन दफ़नाया न जाए तो तू उस मुल्क को नापाक कर देगा जो रब तेरा खुदा तुझे मीरास में दे रहा है।

22

मदद करने के लिए तैयार रहना

1 अगर तुझे किसी हमवतन भाई का बैल या भेड़-बकरी भटकी हुई नज़र आए तो उसे नज़रंदाज़ न करना बल्कि मालिक के पास वापस ले जाना। 2 अगर मालिक का घर करीब न हो या तुझे मालूम न हो कि मालिक कौन है तो जानवर को अपने घर लाकर उस वक़्त तक सँभाले रखना जब तक कि मालिक उसे ढूँढ़ने न आए। फिर जानवर को उसे वापस कर देना। 3 यही कुछ कर अगर तेरे हमवतन भाई का गधा भटका हुआ नज़र आए या उसका गुमशुदा कोट या कोई और चीज़ कहीं नज़र आए। उसे नज़रंदाज़ न करना।

4 अगर तू देखे कि किसी हमवतन का गधा या बैल रास्ते में गिर गया है तो उसे नज़रंदाज़ न करना। जानवर को खड़ा करने में अपने भाई की मदद कर।

कुदरती इंतज़ाम के तहत रहना

5 औरत के लिए मर्दों के कपड़े पहनना मना है। इसी तरह मर्द के लिए औरतों के कपड़े पहनना भी मना है। जो ऐसा करता है उससे रब तेरे खुदा को घिन आती है।

6 अगर तुझे कहीं रास्ते में, किसी दरख़्त में या ज़मीन पर घोंसला नज़र आए और परिदा अपने बच्चों या अंडों पर बैठा हुआ हो तो माँ को बच्चों समेत न पकड़ना। 7 तुझे बच्चे ले जाने की इजाज़त है लेकिन माँ को छोड़ देना ताकि तू खुशहाल और देर तक जीता रहे।

8 नया मकान तामीर करते वक़्त छत पर चारों तरफ़ दीवार बनाना। वरना तू उस शख्स की मौत का ज़िम्मादार ठहरेगा जो तेरी छत पर से गिर जाए।

9 अपने अंगूर के बाग़ में दो किस्म के बीज न बोना। वरना सब कुछ मक़दिस के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस होगा, न सिर्फ़ वह फ़सल जो तुमने अंगूर के अलावा लगाई बल्कि अंगूर भी।

10 बैल और गधे को जोड़कर हल न चलाना।

11 ऐसे कपड़े न पहनना जिनमें बनते वक़्त ऊन और कतान मिलाए गए हैं।

12 अपनी चादर के चारों कोनों पर फुँदने लगाना।

इज़दिवाजी ज़िंदगी की हिफ़ाज़त

13 अगर कोई आदमी शादी करने के थोड़ी देर बाद अपनी बीवी को पसंद न करे 14 और फिर उस की बदनामी करके कहे, “इस औरत से शादी करने के बाद मुझे पता चला कि वह कुँवारी नहीं है” 15 तो जवाब में बीवी के वालिदैन शहर के दरवाज़े पर जमा होनेवाले बुजुर्गों के पास सबूत * ले आएँ कि बेटा शादी से पहले कुँवारी थी। 16 बीवी का बाप बुजुर्गों से कहे, “मैंने अपनी बेटा की शादी इस आदमी से की है, लेकिन यह उससे नफ़रत करता है। 17 अब इसने उस की बदनामी करके कहा है, ‘मुझे पता चला कि तुम्हारी बेटा कुँवारी नहीं है।’ लेकिन यहाँ सबूत है कि मेरी बेटा कुँवारी थी।” फिर वालिदैन शहर के बुजुर्गों को मज़क़ूर कपड़ा दिखाएँ।

18 तब बुजुर्ग उस आदमी को पकड़कर सज़ा दें, 19 क्योंकि उसने एक इसराईली कुँवारी की बदनामी की है। इसके अलावा उसे जुर्माने के तौर पर बीवी के बाप को चाँदी के 100 सिक्के देने पड़ेंगे। लाज़िम है कि वह शौहर के फ़रायज़ अदा करता रहे। वह उम्र-भर उसे तलाक़ नहीं दे सकेगा।

20 लेकिन अगर आदमी की बात दुस्त निकले और साबित न हो सके कि बीवी शादी से पहले कुँवारी थी 21 तो उसे बाप के घर लाया जाए। वहाँ शहर के आदमी उसे संगसार कर दें। क्योंकि अपने बाप के घर में रहते हुए बदकारी करने से उसने इसराईल में एक अहमक़ाना और बेदीन

* 22:15 यानी वह कपड़ा जिस पर नया जोड़ा सोया हुआ था।

हरकत की है। यों तू अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा। ²² अगर कोई आदमी किसी की बीबी के साथ जिना करे और वह पकड़े जाएँ तो दोनों को सज़ाए-मौत देनी है। यों तू इसराईल से बुराई मिटा देगा।

²³ अगर आबादी में किसी मर्द की मुलाकात किसी ऐसी कुँवारी से हो जिसकी किसी और के साथ मँगनी हुई है और वह उसके साथ हमबिसतर हो जाए ²⁴ तो लाज़िम है कि तुम दोनों को शहर के दरवाज़े के पास लाकर संगसार करो। वजह यह है कि लड़की ने मदद के लिए न पुकारा अगरचे उस जगह लोग आबाद थे। मर्द का जुर्म यह था कि उसने किसी और की मंगेतर की इसमतदरी की है। यों तू अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा।

²⁵ लेकिन अगर मर्द ग़ैरआबाद जगह में किसी और की मंगेतर की इसमतदरी करे तो सिर्फ़ उसी को सज़ाए-मौत दी जाए। ²⁶ लड़की को कोई सज़ा न देना, क्योंकि उसने कुछ नहीं किया जो मौत के लायक हो। ज़्यादती करनेवाले की हरकत उस शख्स के बराबर है जिसने किसी पर हमला करके उसे क़त्ल कर दिया है। ²⁷ चूँकि उसने लड़की को वहाँ पाया जहाँ लोग नहीं रहते, इसलिए अगरचे लड़की ने मदद के लिए पुकारा तो भी उसे कोई न बचा सका।

²⁸ हो सकता है कोई आदमी किसी लड़की की इसमतदरी करे जिसकी मँगनी नहीं हुई है। अगर उन्हें पकड़ा जाए ²⁹ तो वह लड़की के बाप को चाँदी के 50 सिक्के दे। लाज़िम है कि वह उसी लड़की से शादी करे, क्योंकि उसने उस की इसमतदरी की है। न सिर्फ़ यह बल्कि वह उम्र-भर उसे तलाक़ नहीं दे सकता।

³⁰ अपने बाप की बीबी से शादी करना मना है। जो कोई यह करे वह अपने बाप की बेहुरमती करता है।

23

मुक़द्दस इजतिमा में शरीक होने की शरायत

¹ जब इसराईली रब के मक़दिस के पास जमा होते हैं तो उसे हाज़िर होने की इजाज़त नहीं जो काटने या कुचलने से खोजा बन गया है। ² इसी तरह वह भी मुक़द्दस इजतिमा से दूर रहे जो नाजायज़ ताल्लुकात के नतीजे में पैदा हुआ है। उस की औलाद भी दसवीं पुश्त तक उसमें नहीं आ सकती।

³ कोई भी अम्मोनी या मोआबी मुक़द्दस इजतिमा में शरीक नहीं हो सकता। इन कौमों की औलाद दसवीं पुश्त तक भी इस जमात में हाज़िर नहीं हो सकती, ⁴ क्योंकि जब तुम मिसर से निकल आए तो वह रोटी और पानी लेकर तुमसे मिलने न आए। न सिर्फ़ यह बल्कि उन्होंने मसोपुतामिया के शहर फ़तोर में जाकर बिलाम बिन बओर को पैसे दिए ताकि वह तुझ पर लानत भेजे। ⁵ लेकिन रब तेरे खुदा ने बिलाम की न सुनी बल्कि उस की लानत बरकत में बदल दी। क्योंकि रब तेरा खुदा तुझसे प्यार करता है। ⁶ उम्र-भर कुछ न करना जिससे इन कौमों की सलामती और खुशहाली बढ़ जाए।

⁷ लेकिन अदोमियों को मक़रूह न समझना, क्योंकि वह तुम्हारे भाई हैं। इसी तरह मिसरियों को भी मक़रूह न समझना, क्योंकि तू उनके मुल्क में परदेसी मेहमान था। ⁸ उनकी तीसरी नसल के लोग रब के मुक़द्दस इजतिमा में शरीक हो सकते हैं।

खैमागाह में नापाकी

⁹ अपने दुश्मनों से जंग करते वक़्त अपनी लशकरगाह में हर नापाक चीज़ से दूर रहना। ¹⁰ मसलन अगर कोई आदमी रात के वक़्त एहतलाम के बाइस नापाक हो जाए तो वह लशकरगाह के बाहर जाकर शाम तक वहाँ ठहरे। ¹¹ दिन ढलते वक़्त वह नहा ले तो सूरज डूबने पर लशकरगाह में वापस आ सकता है।

¹² अपनी हाज़त रफ़ा करने के लिए लशकरगाह से बाहर कोई जगह मुक़र्रर कर। ¹³ जब किसी को हाज़त के लिए बैठना हो तो वह इसके लिए गढा खोदे और बाद में उसे मिट्टी से भर दे। इसलिए अपने सामान में खुदाई का कोई आला रखना ज़रूरी है।

¹⁴ रब तेरा खुदा तेरी लशकरगाह में तेरे दरमियान ही घुमता-फिरता है ताकि तू महफूज़ रहे और दुश्मन तेरे सामने शिकस्त खाए। इसलिए लाज़िम है कि तेरी लशकरगाह उसके लिए मख़सूसो-मुक़द्दस हो। ऐसा न हो कि अल्लाह वहाँ कोई शर्मनाक बात देखकर तुझसे दूर हो जाए।

फ़रार हुए गुलामों की मदद करना

¹⁵ अगर कोई गुलाम तेरे पास पनाह ले तो उसे मालिक को वापस न करना। ¹⁶ वह तेरे साथ और तेरे दरमियान ही रहे, वहाँ जहाँ वह बसना चाहे, उस शहर में जो उसे पसंद आए। उसे न दबाना।

मंदिर में इसमतफ़रोशी मना है

¹⁷ किसी देवता की खिदमत में इसमतफ़रोशी करना हर इसराईली औरत और मर्द के लिए मना है। ¹⁸ मन्नत मानते वक़्त न कसबी का अज़्र, न कुत्ते के पैसे * रब के मक़दिस में लाना, क्योंकि रब तेरे खुदा को दोनों चीज़ों से घिन है।

अपने हमवतनों से सूद न लेना

* **23:18** यक़ीन से नहीं कहा जा सकता कि 'कुत्ते के पैसे' से क्या मुराद है। ग़ालिबन इसके पीछे बुतपरस्ती का कोई दस्तूर है।

19 अगर कोई इसराईली भाई तुझसे कर्ज ले तो उससे सूद न लेना, खाह तूने उसे पैसे, खाना या कोई और चीज़ दी हो। 20 अपने इसराईली भाई से सूद न ले बल्कि सिर्फ परदेसी से। फिर जब तू मुल्क पर कब्ज़ा करके उसमें रहेगा तो रब तेरा खुदा तेरे हर काम में बरकत देगा।

अपनी मन्नत पूरी करना

21 जब तू रब अपने खुदा के हुज़ूर मन्नत माने तो उसे पूरा करने में देर न करना। रब तेरा खुदा यकीनन तुझसे इसका मुतालबा करेगा। अगर तू उसे पूरा न करे तो कुसूरवार ठहरेगा। 22 अगर तू मन्नत मानने से बाज़ रहे तो कुसूरवार नहीं ठहरेगा, 23 लेकिन अगर तू अपनी दिली खुशी से रब के हुज़ूर मन्नत माने तो हर सूरत में उसे पूरा कर।

दूसरे के बाग में से गुज़रने का रवैया

24 किसी हमवतन के अंगूर के बाग में से गुज़रते वक़्त तुझे जितना जी चाहे उसके अंगूर खाने की इजाज़त है। लेकिन अपने किसी बरतन में फल जमा न करना। 25 इसी तरह किसी हमवतन के अनाज के खेत में से गुज़रते वक़्त तुझे अपने हाथों से अनाज की बालियाँ तोड़ने की इजाज़त है। लेकिन दर्राँती इस्तेमाल न करना।

24

तलाक़ और दुबारा शादी

1 हो सकता है कोई आदमी किसी औरत से शादी करे लेकिन बाद में उसे पसंद न करे, क्योंकि उसे बीवी के बारे में किसी शर्मनाक बात का पता चल गया है। वह तलाक़नामा लिखकर उसे औरत को देता और फिर उसे घर से वापस भेज देता है। 2 इसके बाद उस औरत की शादी किसी और मर्द से हो जाती है, 3 और वह भी बाद में उसे पसंद नहीं करता। वह भी तलाक़नामा लिखकर उसे औरत को देता और फिर उसे घर से वापस भेज देता है। खाह दूसरा शौहर उसे वापस भेज दे या शौहर मर जाए, 4 औरत के पहले शौहर को उससे दुबारा शादी करने की इजाज़त नहीं है, क्योंकि वह औरत उसके लिए नापाक है। ऐसी हरकत रब की नज़र में काबिले-घिन है। उस मुल्क को यों गुनाहआलूदा न करना जो रब तेरा खुदा तुझे मीरास में दे रहा है।

मज़ीद हिदायात

5 अगर किसी आदमी ने अभी अभी शादी की हो तो तू उसे भरती करके जंग करने के लिए नहीं भेज सकता। तू उसे कोई भी ऐसी ज़िम्मादारी नहीं दे सकता, जिससे वह घर से दूर रहने पर मजबूर हो जाए। एक साल तक वह ऐसी ज़िम्मादारियों से बरी रहे ताकि घर में रहकर अपनी बीवी को खुश कर सके।

6 अगर कोई तुझसे उधार ले तो ज़मानत के तौर पर उससे न उस की छोटी चक्की, न उस की बड़ी चक्की का पाट लेना, क्योंकि ऐसा करने से तू उस की जान लेगा यानी तू वह चीज़ लेगा जिससे उसका गुज़ारा होता है।

7 अगर किसी आदमी को पकड़ा जाए जिसने अपने हमवतन को इगवा करके गुलाम बना लिया या बेच दिया है तो उसे सज़ाए-मौत देना है। यों तू अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा।

8 अगर कोई वबाई जिल्दी बीमारी तुझे लग जाए तो बड़ी एहतियात से लावी के कबीले के इमामों की तमाम हिदायात पर अमल करना। जो भी हुक्म मैंने उन्हें दिया उसे पूरा करना। 9 याद कर कि रब तेरे खुदा ने मरियम के साथ क्या किया जब तुम मिसर से निकलकर सफ़र कर रहे थे।

गरीबों के हुक्क

10 अपने हमवतन को उधार देते वक़्त उसके घर में न जाना ताकि ज़मानत की कोई चीज़ मिले 11 बल्कि बाहर ठहरकर इंतज़ार कर कि वह खुद घर से ज़मानत की चीज़ निकालकर तुझे दे। 12 अगर वह इतना ज़रूरतमंद हो कि सिर्फ अपनी चादर दे सके तो रात के वक़्त ज़मानत तेरे पास न रहे। 13 उसे सूरज डूबने तक वापस करना ताकि कर्ज़दार उसमें लिपटकर सो सके। फिर वह तुझे बरकत देगा और रब तेरा खुदा तेरा यह कदम रास्त करार देगा।

14 ज़रूरतमंद मज़दूर से ग़लत फ़ायदा न उठाना, चाहे वह इसराईली हो या परदेसी। 15 उसे रोज़ाना सूरज डूबने से पहले पहले उस की मज़दूरी दे देना, क्योंकि इससे उसका गुज़ारा होता है। कहीं वह रब के हुज़ूर तेरी शिकायत न करे और तू कुसूरवार ठहरे।

16 वालिदैन को उनके बच्चों के ज़रायम के सबब से सज़ाए-मौत न दी जाए, न बच्चों को उनके वालिदैन के ज़रायम के सबब से। अगर किसी को सज़ाए-मौत देनी हो तो उस गुनाह के सबब से जो उसने खुद किया है।

17 परदेसियों और यतीमों के हुक्क कायम रखना। उधार देते वक़्त ज़मानत के तौर पर बेवा की चादर न लेना। 18 याद रख कि तू भी मिसर में गुलाम था और कि रब तेरे खुदा ने फ़िघा देकर तुझे वहाँ से छुड़ाया। इसी वजह से मैं तुझे यह हुक्म देता हूँ।

19 अगर तू फ़सल की कटाई के वक़्त एक पूला भूलकर खेत में छोड़ आए तो उसे लाने के लिए वापस न जाना। उसे परदेसियों, यतीमों और बेवाओं के लिए वहीं छोड़ देना ताकि रब तेरा खुदा तेरे हर काम में बरकत दे। 20 जब ज़ैतून की फ़सल पक गई हो तो दरख्तों को मार मारकर एक ही बार उनमें से फल उतार। इसके बाद उन्हें न छेड़ना। बचा हुआ फल परदेसियों, यतीमों और बेवाओं के लिए छोड़ देना। 21 इसी तरह

अपने अंगूर तोड़ने के लिए एक ही बार बाग में से गुजरना। इसके बाद उसे न छेड़ना। बचा हुआ फल परदेसियों, यतीमों और बेवाओं के लिए छोड़ देना। ²² याद रख कि तू खुद मिसर में गुलाम था। इसी वजह से मैं तुझे यह हुक्म देता हूँ।

25

कोड़े लगाने की मुनासिब सज़ा

¹ अगर लोग अपना एक दूसरे के साथ झगड़ा खुद निपटा न सकें तो वह अपना मामला अदालत में पेश करें। काज़ी फैसला करे कि कौन बेक़ुस्र है और कौन मुजरिम। ² अगर मुजरिम को कोड़े लगाने की सज़ा देनी है तो उसे काज़ी के सामने ही मुँह के बल ज़मीन पर लिटाना। फिर उसे इतने कोड़े लगाए जाएँ जितनों के वह लायक है। ³ लेकिन उसको ज़्यादा से ज़्यादा 40 कोड़े लगाने हैं, वरना तैरे इसराईली भाई की सरे-आम बेइज़ज़ती हो जाएगी।

बैल का मुँह न बाँधना

⁴ जब तू फ़सल गाहने के लिए उस पर बैल चलने देता है तो उसका मुँह बाँधकर न रखना।

मरहम भाई की बीवी से शादी करने का हुक्म

⁵ अगर कोई शादीशुदा मर्द बेऔलाद मर जाए और उसका सगा भाई साथ रहे तो उसका फ़र्ज़ है कि बेवा से शादी करे। बेवा शौहर के खानदान से हटकर किसी और से शादी न करे बल्कि सिर्फ़ अपने देवर से। ⁶ पहला बेटा जो इस रिश्ते से पैदा होगा पहले शौहर के बेटे की हैसियत रखेगा। यों उसका नाम कायम रहेगा।

⁷ लेकिन अगर देवर भाबी से शादी करना न चाहे तो भाबी शहर के दरवाज़े पर जमा होनेवाले बुजुर्गों के पास जाए और उनसे कहे, “मेरा देवर मुझसे शादी करने से इनकार करता है। वह अपना फ़र्ज़ अदा करने को तैयार नहीं कि अपने भाई का नाम कायम रखे।” ⁸ फिर शहर के बुजुर्ग देवर को बुलाकर उसे समझाएँ। अगर वह इसके बावजूद भी उससे शादी करने से इनकार करे ⁹ तो उस की भाबी बुजुर्गों की मौजूदगी में उसके पास जाकर उस की एक चप्पल उतार ले। फिर वह उसके मुँह पर थूककर कहे, “उस आदमी से ऐसा सुलूक किया जाता है जो अपने भाई की नसल कायम रखने को तैयार नहीं।” ¹⁰ आइंदा इसराईल में देवर की नसल “नंगे पाँववाले की नसल” कहलाएगी।

झगड़े में नाज़ेबा हरकतें

¹¹ अगर दो आदमी लड़ रहे हों और एक की बीवी अपने शौहर को बचाने की खातिर मुखालिफ़ के अज़ुए-तनासुल को पकड़ ले ¹² तो लाज़िम है कि तू औरत का हाथ काट डाले। उस पर रहम न करना।

धोका न देना

¹³ तोलते वक़्त अपने थैले में सहीह वज़न के बाट रख, और धोका देने के लिए हलके बाट साथ न रखना। ¹⁴ इसी तरह अपने घर में अनाज की पैमाइश करने का सहीह बरतन रख, और धोका देने के लिए छोटा बरतन साथ न रखना। ¹⁵ सहीह वज़न के बाट और पैमाइश करने के सहीह बरतन इस्तेमाल करना ताकि तू देर तक उस मुल्क में जीता रहे जो रब तेरा खुदा तुझे देगा। ¹⁶ क्योंकि उसे हर धोकेबाज़ से घिन है।

अमालीकियों को सज़ा देना

¹⁷ याद रहे कि अमालीकियों ने तुझसे क्या कुछ किया जब तुम मिसर से निकलकर सफ़र कर रहे थे। ¹⁸ जब तू थकाहारा था तो वह तुझ पर हमला करके पीछे पीछे चलनेवाले तमाम कमज़ोरों को जान से मारते रहे। वह अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं मानते थे। ¹⁹ चुनौचे जब रब तेरा खुदा तुझे इर्दगिर्द के तमाम दुश्मनों से सुकून देगा और तू उस मुल्क में आबाद होगा जो वह तुझे मीरास में दे रहा है ताकि तू उस पर कब्ज़ा करे तो अमालीकियों को यों हलाक कर कि दुनिया में उनका नामो-निशान न रहे। यह बात मत भूलना।

26

ज़मीन की पहली पैदावार रब को पेश करना

¹ जब तू उस मुल्क में दाख़िल होगा जो रब तेरा खुदा तुझे मीरास में दे रहा है और तू उस पर कब्ज़ा करके उसमें आबाद हो जाएगा ² तो जो भी फ़सल तू काटेगा उसके पहले फल में से कुछ टोकरे में रखकर उस जगह ले जा जो रब तेरा खुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा। ³ वहाँ ख़िदमत करनेवाले इमाम से कह, “आज मैं रब अपने खुदा के हुज़ूर एलान करता हूँ कि उस मुल्क में पहुँच गया हूँ जिसका हमें देने का वादा रब ने क़सम खाकर हमारे बापदादा से किया था।”

⁴ तब इमाम तेरा टोकरा लेकर उसे रब तैरे खुदा की कुरबानगाह के सामने रख दे। ⁵ फिर रब अपने खुदा के हुज़ूर कह, “मेरा बाप आबारा फिरनेवाला अरामी था जो अपने लोगों को लेकर मिसर में आबाद हुआ। वहाँ पहुँचते वक़्त उनकी तादाद कम थी, लेकिन होते होते वह बड़ी और ताक़तवर क़ौम बन गए। ⁶ लेकिन मिसरियों ने हमारे साथ बुरा सुलूक किया और हमें दबाकर सख़्त गुलामी में फँसा दिया। ⁷ फिर हमने चिल्लाकर रब अपने बापदादा के खुदा से फ़रियाद की, और रब ने हमारी सुनी। उसने हमारा दुख, हमारी मुसीबत और दबी हुई हालत देखी ⁸ और बड़े इख़्तियार और कुदरत का इज़हार करके हमें मिसर से निकाल लाया। उस वक़्त उसने मिसरियों में दहशत फैलाकर बड़े मोज़िजे

दिखाए। 9 वह हमें यहाँ ले आया और यह मुल्क दिया जिसमें दूध और शहद की कसरत है। 10 ऐ रब, अब मैं तुझे उस ज़मीन का पहला फल पेश करता हूँ जो तूने हमें बख्शी है।”

अपनी पैदावार का टोकरा रब अपने खुदा के सामने रखकर उसे सिजदा करना। 11 खुशी मनाना कि रब मेरे खुदा ने मुझे और मेरे घराने को इतनी अच्छी चीज़ों से नवाज़ा है। इस खुशी में अपने दरमियान रहनेवाले लावियों और परदेसियों को भी शामिल करना।

फसल का ज़रूरतमंदों के लिए हिस्सा

12 हर तीसरे साल अपनी तमाम फसलों का दसवाँ हिस्सा लावियों, परदेसियों, यतीमों और बेवाओं को देना ताकि वह तेरे शहरों में खाना खाकर सेर हो जाएँ। 13 फिर रब अपने खुदा से कह, “मैंने वैसा ही किया है जैसा तूने मुझे हुक्म दिया। मैंने अपने घर से तेरे लिए मखसूसो-मुकद्दस हिस्सा निकालकर उसे लावियों, परदेसियों, यतीमों और बेवाओं को दिया है। मैंने सब कुछ तेरी हिदायात के ऐन मुताबिक किया है और कुछ नहीं भूला। 14 मातम करते वक़्त मैंने इस मखसूसो-मुकद्दस हिस्से से कुछ नहीं खाया। मैं इसे उठाकर घर से बाहर लाते वक़्त नापाक नहीं था। मैंने इसमें से मुरदों को भी कुछ पेश नहीं किया। मैंने रब अपने खुदा की इताअत करके वह सब कुछ किया है जो तूने मुझे करने को फ़रमाया था। 15 चुनाँचे आसमान पर अपने मक़दिस से निगाह करके अपनी क़ौम इसराईल को बरकत दे। उस मुल्क को भी बरकत दे जिसका वादा तूने क़सम खाकर हमारे बापदादा से किया और जो तूने हमें बख़्श भी दिया है, उस मुल्क को जिसमें दूध और शहद की कसरत है।”

तुम रब की क़ौम हो

16 आज रब तेरा खुदा फ़रमाता है कि इन अहकाम और हिदायात की पैरवी कर। पूरे दिलो-जान से और बड़ी एहतियात से इन पर अमल कर।

17 आज तूने एलान किया है, “रब मेरा खुदा है। मैं उस की राहों पर चलता रहूँगा, उसके अहकाम के ताबे रहूँगा और उस की सुनूँगा।”

18 और आज रब ने एलान किया है, “तू मेरी क़ौम और मेरी अपनी मिलकियत है जिस तरह मैंने तुझसे वादा किया है। अब मेरे तमाम अहकाम के मुताबिक़ जिंदगी गुज़ार। 19 जितनी भी क़ौम मैंने ख़लक की है उन सब पर मैं तुझे सरफ़राज़ करूँगा और तुझे तारीफ़, शोहरत और इज़्ज़त अता करूँगा। तू रब अपने खुदा के लिए मखसूसो-मुकद्दस क़ौम होगा जिस तरह मैंने वादा किया है।”

27

ऐबाल पहाड़ पर कुरबानगाह बनाना है

1 फिर मूसा ने बुज़ुर्गों से मिलकर क़ौम से कहा, “तमाम हिदायात के ताबे रहो जो मैं तुम्हें आज दे रहा हूँ। 2 जब तुम दरियाए-यरदन को पार करके उस मुल्क में दाखिल होगे जो रब तेरा खुदा तुझे दे रहा है तो वहाँ बड़े पत्थर खड़े करके उन पर सफेदी कर। 3 उन पर लफ़्ज़ बलफ़्ज़ पूरी शरीअत लिख। दरिया को पार करने के बाद यही कुछ कर ताकि तू उस मुल्क में दाखिल हो जो रब तेरा खुदा तुझे देगा और जिसमें दूध और शहद की कसरत है। क्योंकि रब तेरे बापदादा के खुदा ने यह देने का तुझसे वादा किया है। 4 चुनाँचे यरदन को पार करके पत्थरों को ऐबाल पहाड़ पर खड़ा करो और उन पर सफेदी कर।

5 वहाँ रब अपने खुदा के लिए कुरबानगाह बनाना। जो पत्थर तू उसके लिए इस्तेमाल करे उन्हें लोहे के किसी औज़ार से न तराशना। 6 सिर्फ़ सालिम पत्थर इस्तेमाल कर। कुरबानगाह पर रब अपने खुदा को भस्म होनेवाली कुरबानियाँ पेश कर। 7 सलामती की कुरबानियाँ भी उस पर चढ़ा। उन्हें वहाँ रब अपने खुदा के हुज़ूर खाकर खुशी मना। 8 वहाँ खड़े किए गए पत्थरों पर शरीअत के तमाम अलफ़ाज़ साफ़ साफ़ लिखे जाएँ।”

ऐबाल पहाड़ पर से लानत

9 फिर मूसा ने लावी के कबीले के इमामों से मिलकर तमाम इसराईलियों से कहा, “ऐ इसराईल, खामोशी से सुन। अब तू रब अपने खुदा की क़ौम बन गया है, 10 इसलिए उसका फ़रमाँबरदार रह और उसके उन अहकाम पर अमल कर जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ।”

11 उसी दिन मूसा ने इसराईलियों को हुक्म देकर कहा, 12 “दरियाए-यरदन को पार करने के बाद शमौन, लावी, यहदाह, इशकार, यूसुफ़ और बिनयमीन के कबीले गरिज़ीम पहाड़ पर खड़े हो जाएँ। वहाँ वह बरकत के अलफ़ाज़ बोलें। 13 बाक़ी कबीले यानी रूबिन, ज़द, आशर, ज़बूलून, दान और नफ़ताली ऐबाल पहाड़ पर खड़े होकर लानत के अलफ़ाज़ बोलें।

14 फिर लावी तमाम लोगों से मुख़ातिब होकर ऊँची आवाज़ से कहें,

15 ‘उस पर लानत जो बुत तराशकर या ढालकर चुपके से खड़ा करे। रब को कारीगर के हाथों से बनी हुई ऐसी चीज़ से घिन है।’ जवाब में सब लोग कहें, ‘आमीन!’

16 फिर लावी कहें, ‘उस पर लानत जो अपने बाप या माँ की तहकीर करे।’

सब लोग कहें, ‘आमीन!’

17 ‘उस पर लानत जो अपने पड़ोसी की ज़मीन की हुदूद आगे पीछे करे।’

सब लोग कहें, ‘आमीन!’

18 ‘उस पर लानत जो किसी अंधे की राहनुमाई करके उसे गलत रास्ते पर ले जाए।’

सब लोग कहें, 'आमीन!'

19 'उस पर लानत जो परदेसियों, यतीमों या बेवाओं के हुकूम कायम न रखे।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

20 'उस पर लानत जो अपने बाप की बीवी से हमबिसतर हो जाए, क्योंकि वह अपने बाप की बेहुरमती करता है।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

21 'उस पर लानत जो जानवर से जिंसी ताल्लुक रखे।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

22 'उस पर लानत जो अपनी सगी बहन, अपने बाप की बेटी या अपनी माँ की बेटी से हमबिसतर हो जाए।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

23 'उस पर लानत जो अपनी सास से हमबिसतर हो जाए।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

24 'उस पर लानत जो चुपके से अपने हमवतन को क़त्ल कर दे।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

25 'उस पर लानत जो पैसे लेकर किसी बेकुसूर शख्स को क़त्ल करे।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

26 'उस पर लानत जो इस शरीअत की बातें कायम न रखे, न इन पर अमल करे।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

28

फ़रमाँबरदारी की बरकतें

1 रब तेरा खुदा तुझे दुनिया की तमाम क़ौमों पर सरफ़राज़ करेगा। शर्त यह है कि तू उस की सुने और एहतियात से उसके उन तमाम अहकाम पर अमल करे जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। 2 रब अपने खुदा का फ़रमाँबरदार रह तो तुझे हर तरह की बरकत हासिल होगी। 3 रब तुझे शहर और देहात में बरकत देगा। 4 तेरी औलाद फले-फूलेगी, तेरी अच्छी-खासी फ़सलें पकेंगी, तेरे गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के बच्चे तरक्की करेंगे। 5 तेरा टोकरा फल से भरा रहेगा, और आटा गूँधने का तेरा बरतन आटे से ख़ाली नहीं होगा। 6 रब तुझे घर में आते और वहाँ से निकलते वक़्त बरकत देगा।

7 जब तेरे दुश्मन तुझ पर हमला करेंगे तो वह रब की मदद से शिकस्त खाएँगे। गो वह मिलकर तुझ पर हमला करें तो भी तू उन्हें चारों तरफ़ मुंताशिर कर देगा।

8 अल्लाह तेरे हर काम में बरकत देगा। अनाज की कसरत के सबब से तेरे गोदाम भरे रहेंगे। रब तेरा खुदा तुझे उस मुल्क में बरकत देगा जो वह तुझे देनेवाला है। 9 रब अपनी क़सम के मुताबिक़ तुझे अपनी मख़सूसो-मुक़द्दस क़ौम बनाएगा अगर तू उसके अहकाम पर अमल करे और उस की राहों पर चले। 10 फिर दुनिया की तमाम क़ौमों तुझसे ख़ौफ़ खाएँगी, क्योंकि वह देखेंगी कि तू रब की क़ौम है और उसके नाम से कहलाता है।

11 रब तुझे बहुत औलाद देगा, तेरे रेवड़ बढ़ाएगा और तुझे कसरत की फ़सलें देगा। यों वह तुझे उस मुल्क में बरकत देगा जिसका वादा उसने क़सम खाकर तेरे बापदादा से किया। 12 रब आसमान के खज़ानों को खोलकर वक़्त पर तेरी ज़मीन पर बारिश बरसाएगा। वह तेरे हर काम में बरकत देगा। तू बहुत-सी क़ौमों को उधार देगा लेकिन किसी का भी कर्ज़दार नहीं होगा। 13 रब तुझे क़ौमों की दुम नहीं बल्कि उनका सर बनाएगा। तू तरक्की करता जाएगा और ज़वाल का शिकार नहीं होगा। लेकिन शर्त यह है कि तू रब अपने खुदा के वह अहकाम मानकर उन पर अमल करे जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। 14 जो कुछ भी मैंने तुझे करने को कहा है उससे किसी तरह भी हटकर ज़िंदगी न गुज़ारना। न दीगर माबूदों की पैरवी करना, न उनकी खिदमत करना।

नाफ़रमानी की लानतें

15 लेकिन अगर तू रब अपने खुदा की न सुने और उसके उन तमाम अहकाम पर अमल न करे जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ तो हर तरह की लानत तुझ पर आएगी। 16 शहर और देहात में तुझ पर लानत होगी। 17 तेरे टोकरे और आटा गूँधने के तेरे बरतन पर लानत होगी। 18 तेरी औलाद पर, तेरे गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के बच्चों पर और तेरे खेतों पर लानत होगी। 19 घर में आते और वहाँ से निकलते वक़्त तुझ पर लानत होगी। 20 अगर तू ग़लत काम करके रब को छोड़े तो जो कुछ भी तू करे वह तुझ पर लानतें, परेशानियाँ और मुसीबतें आने देगा। तब तेरा जल्दी से सत्यानास होगा, और तू हलाक हो जाएगा।

21 रब तुझमें वबाई बीमारियाँ फैलाएगा जिनके सबब से तुझमें से कोई उस मुल्क में ज़िंदा नहीं रहेगा जिस पर तू अभी कब्ज़ा करनेवाला है। 22 रब तुझे मोहलक बीमारियों, बुखार और सूजन से मारेगा। झूलसानेवाली गरमी, काल, पतरोग और फफूँदी तेरी फ़सलें ख़त्म करेगी। ऐसी

मुसीबतों के बाइस तू तबाह हो जाएगा। 23 तेरे ऊपर आसमान पीतल जैसा सख्त होगा जबकि तेरे नीचे ज़मीन लोहे की मानिद होगी। 24 बारिश की जगह रब तेरे मुल्क पर गर्द और रेत बरसाएगा जो आसमान से तेरे मुल्क पर छाकर तुझे बरबाद कर देगी।

25 जब तू अपने दुश्मनों का सामना करे तो रब तुझे शिकस्त दिलाएगा। गो तू मिलकर उनकी तरफ़ बढ़ेगा तो भी उनसे भागकर चारों तरफ़ मुंताशिर हो जाएगा। दुनिया के तमाम ममालिक में लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे जब वह तेरी मुसीबतें देखेंगे। 26 परिदे और जंगली जानवर तेरी लाशों को खा जाएंगे, और उन्हें भगानेवाला कोई नहीं होगा। 27 रब तुझे उन्हीं फोड़ों से मारेगा जो मिसरियों को निकले थे। ऐसे जिल्दी अमराज़ फैलेंगे जिनका इलाज नहीं है। 28 तू पागलपन का शिकार हो जाएगा, रब तुझे अंधेपन और ज़हनी अबतरी में मुब्तला कर देगा। 29 दोपहर के वक़्त भी तू अंधे की तरह टटोल टटोलकर फिरेगा। जो कुछ भी तू करे उसमें नाकाम रहेगा। रोज़ बरोज़ लोग तुझे दबाते और लूटते रहेंगे, और तुझे बचानेवाला कोई नहीं होगा।

30 तेरी मँगनी किसी औरत से होगी तो कोई और आकर उस की इसमतदारी करेगा। तू अपने लिए घर बनाएगा लेकिन उसमें नहीं रहेगा। तू अपने लिए अंगूर का बाग़ लगाएगा लेकिन उसका फल नहीं खाएगा। 31 तेरे देखते देखते तेरा बैल ज़बह किया जाएगा, लेकिन तू उसका गोश्त नहीं खाएगा। तेरा गधा तुझसे छीन लिया जाएगा और वापस नहीं किया जाएगा। तेरी भेड़-बकरियाँ दुश्मन को दी जाएँगी, और उन्हें छुड़ानेवाला कोई नहीं होगा। 32 तेरे बेटे-बेटियों को किसी दूसरी क़ौम को दिया जाएगा, और तू कुछ नहीं कर सकेगा। रोज़ बरोज़ तू अपने बच्चों के इंतज़ार में उफ़क़ को तकता रहेगा, लेकिन देखते देखते तेरी आँखें धुँधला जाएँगी।

33 एक अजनबी क़ौम तेरी ज़मीन की पैदावार और तेरी मेहनत-मशक्कत की कमाई ले जाएगी। तुझे उम्र-भर जुल्म और दबाव बरदाश्त करना पड़ेगा।

34 जो हौलनाक बातें तेरी आँखें देखेंगी उनसे तू पागल हो जाएगा। 35 रब तुझे तकलीफ़देह और लाइलाज फोड़ों से मारेगा जो तल्वे से लेकर चाँदी तक पूरे जिस्म पर फैलकर तेरे घुटनों और टाँगों को मुतअस्सिर करेंगे।

36 रब तुझे और तेरे मुकर्रर किए हुए बादशाह को एक ऐसे मुल्क में ले जाएगा जिससे न तू और न तेरे बापदादा वाकिफ़ थे। वहाँ तू दीगर माबूदों यानी लकड़ी और पत्थर के बुतों की खिदमत करेगा। 37 जिस जिस क़ौम में रब तुझे हॉक देगा वहाँ तुझे देखकर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे और वह तेरा मज़ाक उड़ाएँगे। तू उनके लिए इबरतअंगेज़ मिसाल होगा।

38 तू अपने खेतों में बहुत बीज बोने के बावजूद कम ही फ़सल काटेगा, क्योंकि टिड्डे उसे खा जाएंगे। 39 तू अंगूर के बाग़ लगाकर उन पर ख़ूब मेहनत करेगा लेकिन न उनके अंगूर तोड़ेगा, न उनकी मै पिएगा, क्योंकि कीड़े उन्हें खा जाएंगे। 40 गो तेरे पूरे मुल्क में ज़ैतून के दरख़्त होंगे तो भी तू उनका तेल इस्तेमाल नहीं कर सकेगा, क्योंकि ज़ैतून खराब होकर ज़मीन पर गिर जाएंगे।

41 तेरे बेटे-बेटियाँ तो होंगे, लेकिन तू उनसे महरूम हो जाएगा। क्योंकि उन्हें गिरिफ़्तार करके किसी अजनबी मुल्क में ले जाया जाएगा। 42 टिड्डियों के गोल तेरे मुल्क के तमाम दरख़्तों और फ़सलों पर क़ब्ज़ा कर लेंगे। 43 तेरे दरमियान रहनेवाला परदेसी तुझसे बढ़कर तरक्की करता जाएगा जबकि तुझ पर ज़वाल आ जाएगा। 44 उसके पास तुझे उधार देने के लिए पैसे होंगे जबकि तेरे पास उसे उधार देने को कुछ नहीं होगा। आखिर में वह सर और तू दुम होगा।

45 यह तमाम लानतें तुझ पर आन पड़ेंगी। जब तक तू तबाह न हो जाए वह तेरा ताक्कुब करती रहेंगी, क्योंकि तूने रब अपने ख़ुदा की न सुनी और उसके अहक़ाम पर अमल न किया। 46 यों यह हमेशा तक तेरे और तेरी औलाद के लिए एक मोज़िज़ाना और इबरतअंगेज़ इलाही निशान रहेंगी।

47 चूँकि तूने दिली ख़ुशी से उस वक़्त रब अपने ख़ुदा की खिदमत न की जब तेरे पास सब कुछ था 48 इसलिए तू उन दुश्मनों की खिदमत करेगा जिन्हें रब तेरे खिलाफ़ भेजेगा। तू भूका, प्यासा, गंगा और हर चीज़ का हाजतमंद होगा, और रब तेरी गरदन पर लोहे का जुआ रखकर तुझे मुकम्मल तबाही तक ले जाएगा।

49 रब तेरे खिलाफ़ एक क़ौम खड़ी करेगा जो दूर से बल्कि दुनिया की इंतहा से आकर उकाब की तरह तुझ पर झपट्टा मारेगी। वह ऐसी ज़बान बोलेगी जिससे तू वाकिफ़ नहीं होगा। 50 वह सख्त क़ौम होगी जो न बुजुर्गों का लिहाज़ करेगी और न बच्चों पर रहम करेगी। 51 वह तेरे मवेशी और फ़सलें खा जाएगी और तू भूके मर जाएगा। तू हलाक हो जाएगा, क्योंकि तेरे लिए कुछ नहीं बचेगा, न अनाज, न मै, न तेल, न गाय-बैलों या भेड़-बकरियों के बच्चे। 52 दुश्मन तेरे मुल्क के तमाम शहरों का मुहासरा करेगा। आखिरकार जिन ऊँची और मज़बूत फ़सीलों पर तू एतमाद करेगा वह भी सब गिर पड़ेंगी। दुश्मन उस मुल्क का कोई भी शहर नहीं छोड़ेगा जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देनेवाला है।

53 जब दुश्मन तेरे शहरों का मुहासरा करेगा तो तू उनमें इतना शदीद भूका हो जाएगा कि अपने बच्चों को खा लेगा जो रब तेरे ख़ुदा ने तुझे दिए हैं। 54-55 मुहासरे के दौरान तुममें से सबसे शरीफ़ और शायस्ता आदमी भी अपने बच्चे को ज़बह करके खाएगा, क्योंकि उसके पास कोई और ख़ुराक नहीं होगी। उस की हालत इतनी बुरी होगी कि वह उसे अपने सगे भाई, बीवी या बाक़ी बच्चों के साथ तक़सीम करने के लिए तैयार नहीं होगा। 56-57 तुममें से सबसे शरीफ़ और शायस्ता औरत भी ऐसा ही करेगी, अगरचे पहले वह इतनी नाज़ुक थी कि फ़र्श को अपने तल्वे से छूने की ज़रूरत नहीं करती थी। मुहासरे के दौरान उसे इतनी शदीद भूक होगी कि जब उसके बच्चा पैदा होगा तो वह छुप छुपकर उसे खाएगी। न सिर्फ़ यह बल्कि वह पैदाइश के वक़्त बच्चे के साथ ख़ारिज हुई आलाइश भी खाएगी और उसे अपने शौहर या अपने बाक़ी बच्चों में बाँटने के लिए तैयार नहीं होगी। इतनी मुसीबत तुझ पर मुहासरे के दौरान आएगी।

58 गरज एहतियात से शरीअत की उन तमाम बातों की पैरवी कर जो इस किताब में दर्ज हैं, और रब अपने खुदा के पुरजलाल और बारोब नाम का खौफ मानना। 59 वरना वह तुझ और तेरी औलाद में सरख और लाइलाज अमराज और ऐसी दहशतनाक वबाएँ फैलाएगा जो रोकी नहीं जा सकेंगी। 60 जिन तमाम वबाओं से तू मिसर में दहशत खाता था वह अब तेरे दरमियान फैलकर तेरे साथ चिमटी रहेंगी। 61 न सिर्फ शरीअत की इस किताब में बयान की हुई बीमारियाँ और मुसीबतें तुझ पर आएँगी बल्कि रब और भी तुझ पर भेजेगा, जब तक कि तू हलाक न हो जाए।

62 अगर तू रब अपने खुदा की न सुने तो आखिरकार तुममें से बहुत कम बचे रहेंगे, गो तुम पहले सितारों जैसे बेशुमार थे। 63 जिस तरह पहले रब खुशी से तुम्हें कामयाबी देता और तुम्हारी तादाद बढ़ाता था उसी तरह अब वह तुम्हें बरबाद और तबाह करने में खुशी महसूस करेगा। तुम्हें ज़बरदस्ती उस मुल्क से निकाला जाएगा जिस पर तू इस वक़्त दाखिल होकर कब्ज़ा करनेवाला है। 64 तब रब तुझे दुनिया के एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक तमाम क़ौमों में मुंतशिर कर देगा। वहाँ तू दीगर माबूदों की पूजा करेगा, ऐसे देवताओं की जिनसे न तू और न तेरे बापदादा वाकिफ़ थे।

65 उन ममालिक में भी न तू आरामो-सुकून पाएगा, न तेरे पाँव जम जाएंगे। रब होने देगा कि तेरा दिल थरथराता रहेगा, तेरी आँखें परेशानी के बाइस धूँधला जाएँगी और तेरी जान से उम्मीद की हर किरण जाती रहेगी। 66 तेरी जान हर वक़्त खतरे में होगी और तू दिन-रात दहशत खाते हुए मरने की तवक्क़ो करेगा। 67 सुबह उठकर तू कहेगा, 'काश शाम हो!' और शाम के वक़्त, 'काश सुबह हो!' क्योंकि जो कुछ तू देखेगा उससे तेरे दिल को दहशत घेर लेगी।

68 रब तुझे जहाज़ों में बिठाकर मिसर वापस ले जाएगा अगरचे मैंने कहा था कि तू उसे दुबारा कभी नहीं देखेगा। वहाँ पहुँचकर तुम अपने दुश्मनों से बात करके अपने आपको गुलाम के तौर पर बेचने की कोशिश करोगे, लेकिन कोई भी तुम्हें ख़रीदना नहीं चाहेगा।”

29

मोआब में रब के साथ नया अहद

1 जब इसराईली मोआब में थे तो रब ने मूसा को हुक्म दिया कि इसराईलियों के साथ एक और अहद बाँधे। यह उस अहद के अलावा था जो रब होरिब यानी सीना पर उनके साथ बाँध चुका था। 2 इस सिलसिले में मूसा ने तमाम इसराईलियों को बुलाकर कहा, “तुमने खुद देखा कि रब ने मिसर के बादशाह फ़िरौन, उसके मुलाज़िमों और पूरे मुल्क के साथ क्या कुछ किया। 3 तुमने अपनी आँखों से वह बड़ी आजमाइशें, इलाही निशान और मोज़िज़े देखे जिनके ज़रीए रब ने अपनी कुदरत का इज़हार किया।

4 मगर अफ़सोस, आज तक रब ने तुम्हें न समझदार दिल अता किया, न आँखें जो देख सकें या कान जो सुन सकें। 5 रेगिस्तान में मैंने 40 साल तक तुम्हारी राहनुमाई की। इस दौरान न तुम्हारे कपड़े फटे और न तुम्हारे जूते घिसे। 6 न तुम्हारे पास रोटी थी, न मै या मै जैसी कोई और चीज़। तो भी रब ने तुम्हारी ज़रूरियात पूरी की ताकि तुम सीख लो कि वही रब तुम्हारा खुदा है।

7 फिर हम यहाँ आए तो हसबोन का बादशाह सीहोन और बसन का बादशाह ओज निकलकर हमसे लड़ने आए। लेकिन हमने उन्हें शिकस्त दी। 8 उनके मुल्क पर कब्ज़ा करके हमने उसे रूबिन, ज़द और मनस्सी के आधे कबीले को मीरास में दिया। 9 अब एहतियात से इस अहद की तमाम शरायत पूरी करो ताकि तुम हर बात में कामयाब हो।

10 इस वक़्त तुम सब रब अपने खुदा के हज़ूर खड़े हो, तुम्हारे कबीलों के सरदार, तुम्हारे बुज़ुर्ग, निगहबान, मर्द, 11 औरतें और बच्चे। तेरे दरमियान रहनेवाले परदेशी भी लकड़हारों से लेकर पानी भरनेवालों तक तेरे साथ यहाँ हाज़िर हैं। 12 तू इसलिए यहाँ जमा हुआ है कि रब अपने खुदा का वह अहद तसलीम करे जो वह आज कसम खाकर तेरे साथ बाँध रहा है। 13 इससे वह आज इसकी तसदीक़ कर रहा है कि तू उस की क़ौम और वह तेरा खुदा है यानी वही बात जिसका वादा उसने तुझसे और तेरे बापदादा इब्राहीम, इसहाक और याकूब से किया था। 14-15 लेकिन मैं यह अहद कसम खाकर न सिर्फ़ तुम्हारे साथ जो हाज़िर हो बाँध रहा हूँ बल्कि तुम्हारी आनेवाली नसलों के साथ भी।

बुतपरस्ती की सज़ा

16 तुम खुद जानते हो कि हम मिसर में किस तरह ज़िंदगी गुज़ारते थे। यह भी तुम्हें याद है कि हम किस तरह मुख़्तलिफ़ ममालिक में से गुज़रते हुए यहाँ तक पहुँचे। 17 तुमने उनके नफ़रतअंगेज़ बुत देखे जो लकड़ी, पत्थर, चाँदी और सोने के थे। 18 ध्यान दो कि यहाँ मौजूद कोई भी मर्द, औरत, कुंबा या कबीला रब अपने खुदा से हटकर दूसरी क़ौमों के देवताओं की पूजा न करे। ऐसा न हो कि तुम्हारे दरमियान कोई जड़ फूटकर ज़हरीला और कड़वा फल लाए।

19 तुम सबने वह लानतें सुनी हैं जो रब नाफ़रमानों पर भेजेगा। तो भी हो सकता है कि कोई अपने आपको रब की बरकत का वारिस समझकर कहे, 'बेशक मैं अपनी ग़लत राहों से हटने के लिए तैयार नहीं हूँ, लेकिन कोई बात नहीं। मैं महफूज़ रहूँगा।' ख़बरदार, ऐसी हरकत से वह न सिर्फ़ अपने ऊपर बल्कि पूरे मुल्क पर तबाही लाएगा। * 20 रब कभी भी उसे मुआफ़ करने पर आमादा नहीं होगा बल्कि वह उसे अपने ग़ज़ब और ग़ैरत का निशाना बनाएगा। इस किताब में दर्ज तमाम लानतें उस पर आएँगी, और रब दुनिया से उसका नामो-निशान मिटा देगा। 21 वह उसे पूरी ज़मात से अलग करके उस पर अहद की वह तमाम लानतें लाएगा जो शरीअत की इस किताब में लिखी हुई हैं।

* 29:19 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : सेराब ज़मीन खुशक ज़मीन के साथ तबाह हो जाएगी।

22 मुस्तकबिल में तुम्हारी औलाद और दूर-दराज़ ममालिक से आनेवाले मुसाफिर उन मुसीबतों और अमराज़ का असर देखेंगे जिनसे रब ने मुल्क को तबाह किया होगा। 23 चारों तरफ़ ज़मीन झुलसी हुई और गंधक और नमक से ढकी हुई नज़र आएगी। बीज उसमें बोया नहीं जाएगा, क्योंकि खुदरौ पौदों तक कुछ नहीं उगेगा। तुम्हारा मुल्क सदूम, अमूरा, अदमा और ज़बोईम की मानिंद होगा जिनको रब ने अपने गज़ब में तबाह किया। 24 तमाम कौमों पृछेंगी, 'रब ने इस मुल्क के साथ ऐसा क्यों किया? उसके सख्त गज़ब की क्या वजह थी?' 25 उन्हें जवाब मिलेगा, 'वजह यह है कि इस मुल्क के बाशिंदों ने रब अपने बापदादा के खुदा का अहद तोड़ दिया जो उसने उन्हें मिसर से निकालते वक़्त उनसे बाँधा था। 26 उन्होंने जाकर दीगर माबूदों की खिदमत की और उन्हें सिजदा किया जिनसे वह पहले वाकिफ़ नहीं थे और जो रब ने उन्हें नहीं दिए थे। 27 इसी लिए उसका गज़ब इस मुल्क पर नाज़िल हुआ और वह उस पर वह तमाम लानतें लाया जिनका ज़िक्र इस किताब में है। 28 वह इतना गुस्से हुआ कि उसने उन्हें जड़ से उखाड़कर एक अजनबी मुल्क में फेंक दिया जहाँ वह आज तक आबाद है।'

29 बहुत कुछ पोशीदा है, और सिर्फ़ रब हमारा खुदा उसका इल्म रखता है। लेकिन उसने हम पर अपनी शरीअत का इनकिशाफ़ कर दिया है। लाज़िम है कि हम और हमारी औलाद उसके फ़रमाँबरदार रहें।

30

तौबा के मुसबत नतीजे

1 मैंने तुझे बताया है कि तेरे लिए क्या कुछ बरकत का और क्या कुछ लानत का बाइस है। जब रब तेरा खुदा तुझे तेरी ग़लत हरकतों के सबब से मुख़्तलिफ़ कौमों में मुंतशिर कर देगा तो तू मेरी बातें मान जाएगा। 2 तब तू और तेरी औलाद रब अपने खुदा के पास वापस आएँगे और पूरे दिलो-जान से उस की सुनकर उन तमाम अहकाम पर अमल करेंगे जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ। 3 फिर रब तेरा खुदा तुझे बहाल करेगा और तुझ पर रहम करके तुझे उन तमाम कौमों से निकालकर जमा करेगा जिनमें उसने तुझे मुंतशिर कर दिया था। 4 हाँ, रब तेरा खुदा तुझे हर जगह से जमा करके वापस लाएगा, चाहे तू सबसे दूर मुल्क में क्यों न पड़ा हो। 5 वह तुझे तेरे बापदादा के मुल्क में लाएगा, और तू उस पर क़ब्ज़ा करेगा। फिर वह तुझे तेरे बापदादा से ज़्यादा कामयाबी बख़्शेगा, और तेरी तादाद ज़्यादा बढ़ाएगा।

6 ख़तना रब की कौम का ज़ाहिरी निशान है। लेकिन उस वक़्त रब तेरा खुदा तेरे और तेरी औलाद का बातिनी ख़तना करेगा ताकि तू उसे पूरे दिलो-जान से प्यार करे और जीता रहे। 7 जो लानतें रब तेरा खुदा तुझ पर लाया था उन्हें वह अब तेरे दुश्मनों पर आने देगा, उन पर जो तुझसे नफ़रत रखते और तुझे ईज़ा पहुँचाते हैं। 8 क्योंकि तू दुबारा रब की सुनेगा और उसके तमाम अहकाम की पैरवी करेगा जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। 9 जो कुछ भी तू करेगा उसमें रब तुझे बड़ी कामयाबी बख़्शेगा, और तुझे कसरत की औलाद, मवेशी और फ़सलें हासिल होंगी। क्योंकि जिस तरह वह तेरे बापदादा को कामयाबी देने में खुशी महसूस करता था उसी तरह वह तुझे भी कामयाबी देने में खुशी महसूस करेगा।

10 शर्त सिर्फ़ यह है कि तू रब अपने खुदा की सुने, शरीअत में दर्ज उसके अहकाम पर अमल करे और पूरे दिलो-जान से उस की तरफ़ रुज़ लाए।

11 जो अहकाम मैं आज तुझे दे रहा हूँ न वह हद से ज़्यादा मुश्किल हैं, न तेरी पहुँच से बाहर। 12 वह आसमान पर नहीं हैं कि तू कहे, 'कौन आसमान पर चढ़कर हमारे लिए यह अहकाम नीचे ले आए ताकि हम उन्हें सुन सकें और उन पर अमल कर सकें?' 13 वह समुंदर के पार भी नहीं हैं कि तू कहे, 'कौन समुंदर को पार करके हमारे लिए यह अहकाम लाएगा ताकि हम उन्हें सुन सकें और उन पर अमल कर सकें?' 14 क्योंकि यह कलाम तेरे निहायत करीब बल्कि तेरे मुँह और दिल में मौजूद है। चुनाँचे उस पर अमल करने में कोई भी स्कावट नहीं है।

ज़िंदगी या मौत का चुनाव

15 देख, आज मैं तुझे दो रास्ते पेश करता हूँ। एक ज़िंदगी और खुशहाली की तरफ़ ले जाता है जबकि दूसरा मौत और हलाकत की तरफ़। 16 आज मैं तुझे हुक्म देता हूँ कि रब अपने खुदा को प्यार कर, उस की राहों पर चल और उसके अहकाम के ताबे रह। फिर तू ज़िंदा रहकर तरक्की करेगा, और रब तेरा खुदा तुझे उस मुल्क में बरकत देगा जिसमें तू दाखिल होनेवाला है।

17 लेकिन अगर तेरा दिल इस रास्ते से हटकर नाफ़रमानी करे तो बरकत की तवक्को न कर। अगर तू आजमाइश में पड़कर दीगर माबूदों को सिजदा और उनकी खिदमत करे 18 तो तुम ज़रूर तबाह हो जाओगे। आज मैं एलान करता हूँ कि इस सूरत में तुम ज़्यादा देर तक उस मुल्क में आबाद नहीं रहोगे जिसमें तू दरियाए-यरदन को पार करके दाखिल होगा ताकि उस पर क़ब्ज़ा करे।

19 आज आसमान और ज़मीन तुम्हारे खिलाफ़ मेरे गवाह हैं कि मैंने तुम्हें ज़िंदगी और बरकतों का रास्ता और मौत और लानतों का रास्ता पेश किया है। अब ज़िंदगी का रास्ता इख्तियार कर ताकि तू और तेरी औलाद ज़िंदा रहे। 20 रब अपने खुदा को प्यार कर, उस की सुन और उससे लिपटा रह। क्योंकि वही तेरी ज़िंदगी है और वही करेगा कि तू देर तक उस मुल्क में जीता रहेगा जिसका वादा उसने क़सम खाकर तेरे बापदादा इब्राहीम, इसहाक और याकूब से किया था।"

31

यशुअ को मूसा की जगह मुकर्रर किया जाता है

1 मूसा ने जाकर तमाम इसराईलियों से मज़ीद कहा,

2 “अब मैं 120 साल का हो चुका हूँ। मेरा चलना-फिरना मुश्किल हो गया है। और वैसे भी रब ने मुझे बताया है, ‘तू दरियाए-यरदन को पार नहीं करेगा।’ 3 रब तेरा खुदा खुद तेरे आगे आगे जाकर यरदन को पार करेगा। वहीं तेरे आगे आगे इन कौमों को तबाह करेगा ताकि तू उनके मुल्क पर कब्ज़ा कर सके। दरिया को पार करते वक़्त यशुअ तेरे आगे चलेगा जिस तरह रब ने फ़रमाया है। 4 रब वहाँ के लोगों को बिलकुल उसी तरह तबाह करेगा जिस तरह वह अमोरियों को उनके बादशाहों सीहोन और ओज समेत तबाह कर चुका है। 5 रब तुम्हें उन पर गालिब आने देगा। उस वक़्त तुम्हें उनके साथ वैसा सुल्क करना है जैसा मैंने तुम्हें बताया है। 6 मज़बूत और दिलेर हो। उनसे खौफ़ न खाओ, क्योंकि रब तेरा खुदा तेरे साथ चलता है। वह तुझे कभी नहीं छोड़ेगा, तुझे कभी तर्क नहीं करेगा।”

7 इसके बाद मूसा ने तमाम इसराईलियों के सामने यशुअ को बुलाया और उससे कहा, “मज़बूत और दिलेर हो, क्योंकि तू इस कौम को उस मुल्क में ले जाएगा जिसका वादा रब ने कसम खाकर उनके बापदादा से किया था। लाज़िम है कि तू ही उसे तक़सीम करके हर कबीले को उसका मौस्सी इलाका दे। 8 रब खुद तेरे आगे आगे चलते हुए तेरे साथ होगा। वह तुझे कभी नहीं छोड़ेगा, तुझे कभी नहीं तर्क करेगा। खौफ़ न खाना, न घबराना।”

हर सात साल के बाद शरीअत की तिलावत

9 मूसा ने यह पूरी शरीअत लिखकर इसराईल के तमाम बुजुर्गों और लावी के कबीले के उन इमामों के सुपुर्द की जो सफ़र करते वक़्त अहद का संदूक उठाकर ले चलते थे। उसने उनसे कहा, 10-11 “हर सात साल के बाद इस शरीअत की तिलावत करना, यानी बहाली के साल में जब तमाम कर्ज़ मनसूख किए जाते हैं। तिलावत उस वक़्त करना है जब इसराईली झोंपड़ियों की ईद के लिए रब अपने खुदा के सामने उस जगह हाज़िर होंगे जो वह मक़दिस के लिए चुनेगा। 12 तमाम लोगों को मर्दों, औरतों, बच्चों और परदेसियों समेत वहाँ जमा करना ताकि वह सुनकर सीखें, रब तुम्हारे खुदा का खौफ़ मानें और एहतियात से इस शरीअत की बातों पर अमल करें। 13 लाज़िम है कि उनकी औलाद जो इस शरीअत से नावाक़िफ़ है इसे सुने और सीखे ताकि उम्र-भर उस मुल्क में रब तुम्हारे खुदा का खौफ़ माने जिस पर तुम दरियाए-यरदन को पार करके कब्ज़ा करोगे।”

रब मूसा को आखिरी हिदायात देता है

14 रब ने मूसा से कहा, “अब तेरी मौत करीब है। यशुअ को बुलाकर उसके साथ मुलाकात के ख़ैमे में हाज़िर हो जा। वहाँ मैं उसे उस की जिम्मादारियाँ सौंपूँगा।”

मूसा और यशुअ आकर ख़ैमे में हाज़िर हुए 15 तो रब ख़ैमे के दरवाज़े पर बादल के सतून में ज़ाहिर हुआ। 16 उसने मूसा से कहा, “तू जल्द ही मरकर अपने बापदादा से जा मिलेगा। लेकिन यह कौम मुल्क में दाखिल होने पर जिना करके उसके अजनबी देवताओं की पैरवी करने लग जाएगी। वह मुझे तर्क करके वह अहद तोड़ देगी जो मैंने उनके साथ बाँधा है। 17 फिर मेरा ग़ज़ब उन पर भड़केगा। मैं उन्हें छोड़कर अपना चेहरा उनसे छुपा लूँगा। तब उन्हें कच्चा चबा लिया जाएगा और बहुत सारी हैबतनाक मुसीबतें उन पर आएँगी। उस वक़्त वह कहेंगे, ‘क्या यह मुसीबतें इस वजह से हम पर नहीं आई कि रब हमारे साथ नहीं है?’ 18 और ऐसा ही होगा। मैं ज़रूर अपना चेहरा उनसे छुपाए रखूँगा, क्योंकि दीगर माबूदों के पीछे चलने से उन्होंने एक निहायत शरीर क़दम उठाया होगा।

19 अब ज़ैल का गीत लिखकर इसराईलियों को यों सिखाओ कि वह ज़बानी याद रहे और मेरे लिए उनके खिलाफ़ गवाही दिया करे। 20 क्योंकि मैं उन्हें उस मुल्क में ले जा रहा हूँ जिसका वादा मैंने कसम खाकर उनके बापदादा से किया था, उस मुल्क में जिसमें दूध और शहद की कसरत है। वहाँ इतनी ख़ुराक होगी कि उनकी भूक जाती रहेगी और वह मोटे हो जाएंगे। लेकिन फिर वह दीगर माबूदों के पीछे लग जाएंगे और उनकी खिदमत करेंगे। वह मुझे रद्द करेंगे और मेरा अहद तोड़ेंगे। 21 नतीजे में उन पर बहुत सारी हैबतनाक मुसीबतें आएँगी। फिर यह गीत जो उनकी औलाद को याद रहेगा उनके खिलाफ़ गवाही देगा। क्योंकि गो मैं उन्हें उस मुल्क में ले जा रहा हूँ जिसका वादा मैंने कसम खाकर उनसे किया था तो भी मैं जानता हूँ कि वह अब तक किस तरह की सोच रखते हैं।”

22 मूसा ने उसी दिन यह गीत लिखकर इसराईलियों को सिखाया।

23 फिर रब ने यशुअ बिन नून से कहा, “मज़बूत और दिलेर हो, क्योंकि तू इसराईलियों को उस मुल्क में ले जाएगा जिसका वादा मैंने कसम खाकर उनसे किया था। मैं खुद तेरे साथ हूँगा।”

24 जब मूसा ने पूरी शरीअत को किताब में लिख लिया 25 तो वह उन लावियों से मुख़ातिब हुआ जो सफ़र करते वक़्त अहद का संदूक उठाकर ले जाते थे। 26 “शरीअत की यह किताब लेकर रब अपने खुदा के अहद के संदूक के पास रखना। वहाँ वह पड़ी रहे और तेरे खिलाफ़ गवाही देती रहे। 27 क्योंकि मैं खूब जानता हूँ कि तू कितना सरकश और हटधर्म है। मेरी मौजूदगी में भी तुमने कितनी दफ़ा रब से सरकशी की। तो फिर मेरे मरने के बाद तुम क्या कुछ नहीं करोगे! 28 अब मेरे सामने अपने कबीलों के तमाम बुजुर्गों और निगहबानों को जमा करो ताकि वह खुद मेरी यह बातें सुनें और आसमान और ज़मीन उनके खिलाफ़ गवाह हों। 29 क्योंकि मुझे मालूम है कि मेरी मौत के बाद तुम ज़रूर बिगड़ जाओगे और उस रास्ते से हट जाओगे जिस पर चलने की मैंने तुम्हें ताक़ीद की है। आख़िरकार तुम पर मुसीबत आएगी, क्योंकि तुम वह कुछ करोगे जो रब को बुरा लगता है, तुम अपने हाथों के काम से उसे गुस्सा दिलाओगे।”

30 फिर मूसा ने इसराईल की तमाम जमात के सामने यह गीत शुरू से लेकर आख़िर तक पेश किया,

32

मूसा का गीत

- 1 ऐ आसमान, मेरी बात पर गौर कर! ऐ ज़मीन, मेरा गीत सुन!
- 2 मेरी तालीम बूँदा-बूँदी जैसी हो, मेरी बात शबनम की तरह ज़मीन पर पड़ जाए। वह बारिश की मानिंद हो जो हरियाली पर बरसती है।
- 3 मैं रब का नाम पुकारूँगा। हमारे खुदा की अज़मत की तमज़ीद करो!
- 4 वह चटान है, और उसका काम कामिल है। उस की तमाम राहें रास्त हैं। वह वफ़ादार खुदा है जिसमें फ़रेब नहीं है बल्कि जो आदिल और दियानतदार है।
- 5 एक टेढ़ी और कजरौ नसल ने उसका गुनाह किया। वह उसके फ़रज़ंद नहीं बल्कि दाग़ साबित हुए हैं।
- 6 ऐ मेरी अहमक और बेसमझ कौम, क्या तुम्हारा रब से ऐसा रवैया ठीक है? वह तो तुम्हारा बाप और ख़ालिक है, जिसने तुम्हें बनाया और कायम किया।
- 7 क़दीम ज़माने को याद करना, माज़ी की नसलों पर तवज्जुह देना। अपने बाप से पूछना तो वह तुझे बता देगा, अपने बुज़ुर्गों से पता करना तो वह तुझे इतला देगे।
- 8 जब अल्लाह तआला ने हर कौम को उसका अपना अपना मौस्सी इलाका देकर तमाम इनसानों को मुख़्तलिफ़ ग़ुरोहों में अलग कर दिया तो उसने कौमों की सरहदें इसराईलियों की तादाद के मुताबिक़ मुक़रर कीं।
- 9 क्योंकि रब का हिस्सा उस की कौम है, याकूब को उसने मीरास में पाया है।
- 10 यह कौम उसे रेगिस्तान में मिल गई, वीरानो-सुनसान बयाबान में जहाँ चारों तरफ़ हौलनाक आवाज़ें गूँजती थीं। उसने उसे घेरकर उस की देख-भाल की, उसे अपनी आँख की पुतली की तरह बचाए रखा।
- 11 जब उकाब अपने बच्चों को उड़ना सिखाता है तो वह उन्हें घोंसले से निकालकर उनके साथ उड़ता है। अगर वह गिर भी जाएँ तो वह हाज़िर है और उनके नीचे अपने परों को फैलाकर उन्हें ज़मीन से टकरा जाने से बचाता है। रब का इसराईल के साथ यही सुलूक था।
- 12 रब ने अकेले ही उस की राहनुमाई की। किसी अजनबी माबूद ने शिरकत न की।
- 13 उसने उसे रथ पर सवार करके मुल्क की बुलंदियों पर से गुज़रने दिया और उसे खेत का फल खिलाकर उसे चटान से शहद और सख़्त पत्थर से ज़ैतून का तेल मुहैया किया। *
- 14 उसने उसे गाय की लस्सी और भेड़-बकरी का दूध चीदा भेड़ के बच्चों समेत खिलाया और उसे बसन के मोटे-ताज़े मेंढे, बक़रे और बेहतरीन अनाज अता किया। उस वक़्त तू आला अंगूर की उम्दा मै से लुत्फ़अंदोज़ हुआ।
- 15 लेकिन जब यस्सून † मोटा हो गया तो वह दोलतियाँ झाड़ने लगा। जब वह हलक़ तक भरकर तनोमंद और फरबा हुआ तो उसने अपने खुदा और ख़ालिक को रद्द किया, उसने अपनी नजात की चटान को हक़ीर जाना।
- 16 अपने अजनबी माबूदों से उन्होंने उस की ग़ैरत को जोश दिलाया, अपने धिनौने बूतों से उसे गुस्सा दिलाया।
- 17 उन्होंने बदस्हों को कुरबानियाँ पेश कीं जो खुदा नहीं हैं, ऐसे माबूदों को जिनसे न वह और न उनके बापदादा वाकिफ़ थे, क्योंकि वह थोड़ी देर पहले वुजूद में आए थे।
- 18 तू वह चटान भूल गया जिसने तुझे पैदा किया, वही खुदा जिसने तुझे जन्म दिया।
- 19 रब ने यह देखकर उन्हें रद्द किया, क्योंकि वह अपने बेटे-बेटियों से नाराज़ था।
- 20 उसने कहा, “मैं अपना चेहरा उनसे छुपा लूँगा। फिर पता लगेगा कि मेरे बग़ैर उनका क्या अंजाम होता है। क्योंकि वह सरासर बिगड़ गए हैं, उनमें वफ़ादारी पाई नहीं जाती।
- 21 उन्होंने उस की परस्तिश से जो खुदा नहीं है मेरी ग़ैरत को जोश दिलाया, अपने बेकार बूतों से मुझे गुस्सा दिलाया है। चुनौचे मैं खुद ही उन्हें ग़ैरत दिलाऊँगा, एक ऐसी कौम के ज़रीए जो हक़ीक़त में कौम नहीं है। एक नादान कौम के ज़रीए मैं उन्हें गुस्सा दिलाऊँगा।
- 22 क्योंकि मेरे गुस्से से आग़ भड़क उठी है जो पाताल की तह तक पहुँचेगी और ज़मीन और उस की पैदावार हड़प करके पहाड़ों की बुनियादों को जला देगी।
- 23 मैं उन पर मुसीबत पर मुसीबत आने दूँगा और अपने तमाम तीर उन पर चलाऊँगा।

* 32:13 लफ़ज़ी तरज़ुमा : चूसने दिया। † 32:15 यानी इसराईल।

24 भूक के मारे उनकी ताकत जाती रहेगी, और वह बुखार और वबाई अमराज का लुकमा बनेंगे। मैं उनके खिलाफ फाड़नेवाले जानवर और ज़हरीले साँप भेज दूँगा।

25 बाहर तलवार उन्हें बेऔलाद कर देगी, और घर में दहशत फैल जाएगी। शीरखार बच्चे, नौजवान लड़के-लड़कियाँ और बुजुर्ग सब उस की गिरिफ्त में आ जाएंगे।

26 मुझे कहना चाहिए था कि मैं उन्हें चकनाचूर करके इनसानों में से उनका नामो-निशान मिटा दूँगा।

27 लेकिन अदेशा था कि दुश्मन गलत मतलब निकालकर कहे, ‘हम खुद उन पर गालिब आए, इसमें रब का हाथ नहीं है’।”

28 क्योंकि यह क्रौम बेसमझ और हिकमत से खाली है।

29 काश वह दानिशमंद होकर यह बात समझें! काश वह जान लें कि उनका क्या अंजाम है।

30 क्योंकि दुश्मन का एक आदमी किस तरह हजार इसराईलियों का ताक़ुब कर सकता है? उसके दो मर्द किस तरह दस हजार इसराईलियों को भगा सकते हैं? वजह सिर्फ़ यह है कि उनकी चटान ने उन्हें दुश्मन के हाथ बेच दिया। रब ने खुद उन्हें दुश्मन के कब्ज़े में कर दिया।

31 हमारे दुश्मन खुद मानते हैं कि इसराईल की चटान हमारी चटान जैसी नहीं है।

32 उनकी बेल तो सदूम की बेल और अमूरा के बाग़ से है, उनके अंगूर ज़हरीले और उनके गुच्छे कड़वे हैं।

33 उनकी मै साँपों का मोहलक ज़हर है।

34 रब फ़रमाता है, “क्या मैंने इन बातों पर मुहर लगाकर उन्हें अपने ख़ज़ाने में महफूज़ नहीं रखा?

35 इंतक़ाम लेना मेरा ही काम है, मैं ही बदला लूँगा। एक वक़्त आएगा कि उनका पाँव फिसलेगा। क्योंकि उनकी तबाही का दिन करीब है, उनका अंजाम जल्द ही आनेवाला है।”

36 यक़ीनन रब अपनी क्रौम का इनसाफ़ करेगा। वह अपने ख़ादिमों पर तरस खाएगा जब देखेगा कि उनकी ताकत जाती रही है और कोई नहीं बचा।

37 उस वक़्त वह पूछेगा, “अब उनके देवता कहाँ हैं, वह चटान जिसकी पनाह उन्होंने ली?

38 वह देवता कहाँ हैं जिन्होंने उनके बेहतरीन जानवर खाए और उनकी मै की नज़रें पी लीं। वह तुम्हारी मदद के लिए उठें और तुम्हें पनाह दें।

39 अब जान लो कि मैं और सिर्फ़ मैं खुदा हूँ। मेरे सिवा कोई और खुदा नहीं है। मैं ही हलाक करता और मैं ही ज़िंदा कर देता हूँ। मैं ही ज़ख़मी करता और मैं ही शफ़ा देता हूँ। कोई मेरे हाथ से नहीं बचा सकता।

40 मैं अपना हाथ आसमान की तरफ़ उठाकर एलान करता हूँ कि मेरी अबदी हयात की कसम,

41 जब मैं अपनी चमकती हुई तलवार को तेज़ करके अदालत के लिए पकड़ लूँगा तो अपने मुख़ालिफ़ों से इंतक़ाम और अपने नफ़रत करनेवालों से बदला लूँगा।

42 मेरे तीर खून पी पीकर नशे में धुत हो जाएंगे, मेरी तलवार मक़तूलों और कैदियों के खून और दुश्मन के सरदारों के सरों से सेर हो जाएगी।”

43 ऐ दीगर क्रौमो, उस की उम्मत के साथ खुशी मनाओ! क्योंकि वह अपने ख़ादिमों के खून का इंतक़ाम लेगा। वह अपने मुख़ालिफ़ों से बदला लेकर अपने मुल्क और क्रौम का कफ़फ़ारा देगा।

44 मूसा और यशुअ बिन नून ने आकर इसराईलियों को यह पूरा गीत सुनाया। 45-46 फिर मूसा ने उनसे कहा, “आज मैंने तुम्हें इन तमाम बातों से आगाह किया है। लाज़िम है कि वह तुम्हारे दिलों में बैठ जाएँ। अपनी औलाद को भी हुक्म दो कि एहतियात से इस शरीअत की तमाम बातों पर अमल करे। 47 यह ख़ाली बातें नहीं बल्कि तुम्हारी ज़िंदगी का सरचश्मा हैं। इनके मुताबिक़ चलने के बाइस तुम देर तक उस मुल्क में जीते रहोगे जिस पर तुम दरियाए-यरदन को पार करके कब्ज़ा करनेवाले हो।”

मूसा का नबू पहाड़ पर इंतक़ाल

48 उसी दिन रब ने मूसा से कहा, 49 “पहाड़ी सिलसिले अबारीम के पहाड़ नबू पर चढ़ जा जो यरीह के सामने लेकिन यरदन के मशरिक़ी किनारे पर यानी मोआब के मुल्क में है। वहाँ से कनान पर नज़र डाल, उस मुल्क पर जो मैं इसराईलियों को दे रहा हूँ। 50 इसके बाद तू वहाँ मरकर अपने बापदादा से जा मिलेगा, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह तेरा भाई हारून होर पहाड़ पर मरकर अपने बापदादा से जा मिला है।

51 क्योंकि तुम दोनों इसराईलियों के रूबरू बेवफ़ा हुए। जब तुम दशते-सीन में कादिस के करीब थे और मरीबा के चश्मे पर इसराईलियों के

सामने खड़े थे तो तुमने मेरी कुदूसियत कायम न रखी। 52 इस सबब से तू वह मुल्क सिर्फ दूर से देखेगा जो मैं इसराईलियों को दे रहा हूँ। तू खुद उसमें दाखिल नहीं होगा।”

33

मूसा कबीलों को बरकत देता है

1 मरने से पेशतर मर्दे-खुदा मूसा ने इसराईलियों को बरकत देकर 2 कहा,
“रब सीना से आया, सईर * से उसका नूर उन पर तुलू हुआ। वह कोहे-फारान से रौशनी फैलाकर रिबबोत-क्रादिस से आया, वह अपने जुनूबी इलाक़े से रवाना होकर उनकी खातिर पहाड़ी ढलानों के पास आया।

3 यक़ीनन वह क़ौमों से मुहब्बत करता है, तमाम मुक़द्दसीन तैरे हाथ में हैं। वह तैरे पाँवों के सामने झुककर तुझसे हिदायत पाते हैं।

4 मूसा ने हमें शरीअत दी यानी वह चीज़ जो याक़ूब की जमात की मौस्सी मिलकियत है।

5 इसराईल के राहनुमा अपने कबीलों समेत जमा हुए तो रब यसूसून † का बादशाह बन गया।

6 रुबिन की बरकत :

रुबिन मर न जाए बल्कि जीता रहे। वह तादाद में बढ़ जाए।

7 यहदाह की बरकत :

ऐ रब, यहदाह की पुकार सुनकर उसे दुबारा उस की क़ौम में शामिल कर। उसके हाथ उसके लिए लड़ें। मुखालिफ़ों का सामना करते वक़्त उस की मदद कर।

8 लावी की बरकत :

तेरी मरज़ी मालूम करने के कुरे बनाम ऊरीम और तुम्मीम तैरे वफ़ादार खादिम लावी के पास होते हैं। तूने उसे मस्सा में आजमाया और मरीबा में उससे लड़ा। 9 उसने तेरा कलाम सँभालकर तेरा अहद कायम रखा, यहाँ तक कि उसने न अपने माँ-बाप का, न अपने सगे भाइयों या बच्चों का लिहाज़ किया।

10 वह याक़ूब को तेरी हिदायत और इसराईल को तेरी शरीअत सिखाकर तैरे सामने बख़ूर और तेरी कुरबानगाह पर भस्म होनेवाली कुरबानियाँ चढ़ाता है।

11 ऐ रब, उस की ताक़त को बढ़ाकर उसके हाथों का काम पसंद कर। उसके मुखालिफ़ों की कमर तोड़ और उससे नफ़रत रखनेवालों को ऐसा मार कि आइंदा कभी न उठें।

12 बिनयमीन की बरकत :

बिनयमीन रब को प्यारा है। वह सलामती से उसके पास रहता है, क्योंकि रब दिन-रात उसे पनाह देता है। बिनयमीन उस की पहाड़ी ढलानों के दरमियान महफूज़ रहता है।

13 यूसुफ़ की बरकत :

रब उस की ज़मीन को बरकत दे। आसमान से क़ीमती ओस टपके और ज़मीन के नीचे से चश्मे फूट निकलें।

14 यूसुफ़ को सूरज की बेहतरीन पैदावार और हर महीने का लज़ीज़तरीन फल हासिल हो।

15 उसे क़दीम पहाड़ों और अबदी वादियों की बेहतरीन चीज़ों से नवाज़ा जाए।

16 ज़मीन के तमाम ज़ख़ीरे उसके लिए खुल जाएँ। वह उसको पसंद हो जो जलती हुई झाड़ी में सुकूनत करता था। यह तमाम बरकतें यूसुफ़ के सर पर ठहरें, उसके सर पर जो अपने भाइयों में शहज़ादा है।

17 यूसुफ़ सॉड के पहलौठे जैसा अज़ीम है, और उसके सींग जंगली बैल के सींग हैं जिनसे वह दुनिया की इतना तक सब क़ौमों को मारेगा। इफ़राईम के बेशुमार अफ़राद ऐसे ही हैं, मनस्सी के हज़ारों अफ़राद ऐसे ही हैं।

18 ज़बूलून और इशकार की बरकत :

ऐ ज़बूलून, घर से निकलते वक़्त खुशी मना। ऐ इशकार, अपने ख़ैमों में रहते हुए खुश हो।

19 वह दीगर क़ौमों को अपने पहाड़ पर आने की दावत देंगे और वहाँ रास्ती की कुरबानियाँ पेश करेंगे। वह समुंदर की कसरत और समुंदर की रेत में छुपे हुए खज़ानों को ज़ज़ब कर लेंगे।

20 जद की बरकत :

* 33:2 अदोम। † 33:5 इसराईल।

मुबारक है वह जो जद का इलाका वसी कर दे। जद शेरबबर की तरह दबककर किसी का बाजू या सर फाड़ डालने के लिए तैयार रहता है।

21 उसने अपने लिए सबसे अच्छी ज़मीन चुन ली, राहनुमा का हिस्सा उसी के लिए महफूज़ रखा गया। जब क्रौम के राहनुमा जमा हुए तो उसने रब की रास्त मरज़ी पूरी की और इसराईल के बारे में उसके फैसले अमल में लाया।

22 दान की बरकत :

दान शेरबबर का बच्चा है जो बसन से निकलकर छल्लाँग लगाता है।

23 नफ़ताली की बरकत :

नफ़ताली रब की मंजूरी से सेर है, उसे उस की पूरी बरकत हासिल है। वह गलील की झील और उसके जुनूब का इलाका मीरास में पाएगा।

24 आशर की बरकत :

आशर बेटों में सबसे मुबारक है। वह अपने भाइयों को पसंद हो। उसके पास जैतून का इतना तेल हो कि वह अपने पाँव उसमें डुबो सके।

25 तेरे शहरों के दरवाज़ों के कुंडे लोहे और पीतल के हों, तेरी ताक़त उम्र-भर कायम रहे।

26 यसूसन ‡ के खुदा की मानिंद कोई नहीं है, जो आसमान पर सवार होकर, हाँ अपने जलाल में बादलों पर बैठकर तेरी मदद करने के लिए आता है।

27 अज़ली खुदा तेरी पनाहगाह है, वह अपने अज़ली बाजू तेरे नीचे फैलाए रखता है। वह दुश्मन को तेरे सामने से भगाकर उसे हलाक करने को कहता है।

28 चुनौचे इसराईल सलामती से जिंदगी गुज़ारेगा, याकूब का चश्मा अलग और महफूज़ रहेगा। उस की ज़मीन अनाज और अंगूर की कसरत पैदा करेगी, और उसके ऊपर आसमान ज़मीन पर ओस पड़ने देगा।

29 ऐ इसराईल, तू कितना मुबारक है। कौन तेरी मानिंद है, जिसे रब ने बचाया है। वह तेरी मदद की ढाल और तेरी शान की तलवार है। तेरे दुश्मन शिकस्त खाकर तेरी खुशामद करेंगे, और तू उनकी कमरे पाँवों तले कुचलेगा।”

34

मूसा की वफ़ात

1 यह बरकत देकर मूसा मोआब का मैदानी इलाका छोड़कर यरीह के मुकाबिल नबू पहाड़ पर चढ़ गया। नबू पिसगा के पहाड़ी सिलसिले की एक चोटी था। वहाँ से रब ने उसे वह पूरा मुल्क दिखाया जो वह इसराईल को देनेवाला था यानी जिलियाद के इलाके से लेकर दान के इलाके तक, 2 नफ़ताली का पूरा इलाका, इफराईम और मनस्सी का इलाका, यहदाह का इलाका बहीराए-रूम तक, 3 जुनूब में दशते-नजब और खज़ूर के शहर यरीह की वादी से लेकर जुगर तक। 4 रब ने उससे कहा, “यह वह मुल्क है जिसका वादा मैंने कसम खाकर इब्राहीम, इसहाक और याकूब से किया। मैंने उनसे कहा था कि उनकी औलाद को यह मुल्क मिलेगा। तू उसमें दाखिल नहीं होगा, लेकिन मैं तुझे यहाँ ले आया हूँ ताकि तू उसे अपनी आँखों से देख सके।”

5 इसके बाद रब का खादिम मूसा वहीं मोआब के मुल्क में फ़ौत हुआ, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह रब ने कहा था। 6 रब ने उसे बैत-फ़गूर की किसी वादी में दफन किया, लेकिन आज तक किसी को भी मालूम नहीं कि उस की कब्र कहाँ है।

7 अपनी वफ़ात के वक़्त मूसा 120 साल का था। आखिर तक न उस की आँखें धुंधलाई, न उस की ताक़त कम हुई। 8 इसराईलियों ने मोआब के मैदानी इलाके में 30 दिन तक उसका मातम किया।

9 फिर यशुअ बिन नून मूसा की जगह खड़ा हुआ। वह हिकमत की रूह से मामूर था, क्योंकि मूसा ने अपने हाथ उस पर रख दिए थे। इसराईलियों ने उस की सुनी और वह कुछ किया जो रब ने उन्हें मूसा की मारिफ़त बताया था।

10 इसके बाद इसराईल में मूसा जैसा नबी कभी न उठा जिससे रब स्वरू बात करता था। 11 किसी और नबी ने ऐसे इलाही निशान और मोजिज़े नहीं किए जैसे मूसा ने फिरौन बादशाह, उसके मुलाज़िमों और पूरे मुल्क के सामने किए जब रब ने उसे मिसर भेजा। 12 किसी और नबी ने इस किस्म का बड़ा इख़्तियार न दिखाया, न ऐसे अज़ीम और हैबतनाक काम किए जैसे मूसा ने इसराईलियों के सामने किए।

यशुअ

रब यशुअ को राहनुमाई की ज़िम्मादारी सौंपता है

1 रब के खादिम मूसा की मौत के बाद रब मूसा के मददगार यशुअ बिन नून से हमकलाम हुआ। उसने कहा, 2 “मेरा खादिम मूसा फ़ौत हो गया है। अब उठ, इस पूरी क़ौम के साथ दरियाए-यरदन को पार करके उस मुल्क में दाखिल हो जा जो मैं इसराईलियों को देने को हूँ। 3 जिस ज़मीन पर भी तू अपना पाँव रखेगा उसे मैं मूसा के साथ किए गए वादे के मुताबिक़ तुझे दूँगा। 4 तुम्हारे मुल्क की सरहदें यह होंगी : जुनूब में नजब का रेगिस्तान, शिमाल में लुबनान, मशरिक में दरियाए-फुरात और मगरिब में बहीराए-रूम। हिती क़ौम का पूरा इलाका इसमें शामिल होगा। 5 तेरे जीते-जी कोई तेरा सामना नहीं कर सकेगा। जिस तरह मैं मूसा के साथ था, उसी तरह तेरे साथ भी हूँगा। मैं तुझे कभी नहीं छोड़ूँगा, न तुझे तर्क करूँगा।

6 मज़बूत और दिलेर हो, क्योंकि तू ही इस क़ौम को मीरास में वह मुल्क देगा जिसका मैंने उनके बापदादा से क़सम खाकर वादा किया था। 7 लेकिन ख़बरदार, मज़बूत और बहुत दिलेर हो। एहतियात से उस पूरी शरीअत पर अमल कर जो मेरे खादिम मूसा ने तुझे दी है। उससे न दाईं और न बाईं तरफ़ हटना। फिर जहाँ कहीं भी तू जाए कामयाब होगा। 8 जो बातें इस शरीअत की किताब में लिखी हैं वह तेरे मुँह से न हटें। दिन-रात उन पर ग़ौर करता रह ताकि तू एहतियात से इसकी हर बात पर अमल कर सके। फिर तू हर काम में कामयाब और ख़ुशहाल होगा।

9 मैं फिर कहता हूँ कि मज़बूत और दिलेर हो। न घबरा और न हौसला हार, क्योंकि जहाँ भी तू जाएगा वहाँ रब तेरा ख़ुदा तेरे साथ रहेगा।”

मुल्क में दाखिल होने की तैयारियाँ

10 फिर यशुअ क़ौम के निगहबानों से मुखातिब हुआ, 11 “ख़ैमागाह में हर जगह जाकर लोगों को इतला दें कि सफ़र के लिए खाने का बंदोबस्त कर लें। क्योंकि तीन दिन के बाद आप दरियाए-यरदन को पार करके उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करेंगे जो रब आपका ख़ुदा आपको विरसे में दे रहा है।”

12 फिर यशुअ स्बिन, ज़द और मनस्सी के आधे क़बीले से मुखातिब हुआ, 13 “यह बात याद रखें जो रब के खादिम मूसा ने आपसे कही थी, ‘रब तुम्हारा ख़ुदा तुमको दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर का यह इलाका देता है ताकि तुम यहाँ अमनो-अमान के साथ रह सको।’

14 अब जब हम दरियाए-यरदन को पार कर रहे हैं तो आपके बाल-बच्चे और मवेशी यहीं रह सकते हैं। लेकिन लाज़िम है कि आपके तमाम जंग करने के क़ाबिल मर्द मुसल्लह होकर अपने भाइयों के आगे आगे दरिया को पार करें। आपको उस वक़्त तक अपने भाइयों की मदद करना है 15 जब तक रब उन्हें वह आराम न दे जो आपको हासिल है और वह उस मुल्क पर क़ब्ज़ा न कर लें जो रब आपका ख़ुदा उन्हें दे रहा है। इसके बाद ही आपको अपने उस इलाके में वापस जाकर आबाद होने की इजाज़त होगी जो रब के खादिम मूसा ने आपको दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर दिया था।”

16 उन्होंने जवाब में यशुअ से कहा, “जो भी हुक्म आपने हमें दिया है वह हम मानेंगे और जहाँ भी हमें भेजेंगे वहाँ जाएंगे। 17 जिस तरह हम मूसा की हर बात मानते थे उसी तरह आपकी भी हर बात मानेंगे। लेकिन रब आपका ख़ुदा उसी तरह आपके साथ हो जिस तरह वह मूसा के साथ था। 18 जो भी आपके हुक्म की खिलाफ़रज़ी करके आपकी वह तमाम बातें न माने जो आप फ़रमाएँ उसे सज़ाए-मौत दी जाए। लेकिन मज़बूत और दिलेर हों!”

2

यरीह शहर में इसराईली जासूस

1 फिर यशुअ ने चुपके से दो जासूसों को शितीम से भेज दिया जहाँ इसराईली ख़ैमागाह थी। उसने उनसे कहा, “जाकर मुल्क का जायज़ा लें, खासकर यरीह शहर का।” वह रवाना हुए और चलते चलते एक कसबी के घर पहुँचे जिसका नाम राहब था। वहाँ वह रात के लिए ठहर गए। 2 लेकिन यरीह के बादशाह को इतला मिली कि आज शाम को कुछ इसराईली मर्द यहाँ पहुँच गए हैं जो मुल्क की जासूसी करना चाहते हैं। 3 यह सुनकर बादशाह ने राहब को ख़बर भेजी, “उन आदमियों को निकाल दो जो तुम्हारे पास आकर ठहरे हुए हैं, क्योंकि यह पूरे मुल्क की जासूसी करने के लिए आए हैं।”

4 लेकिन राहब ने दोनों आदमियों को छुपा रखा था। उसने कहा, “जी, यह आदमी मेरे पास आए तो थे लेकिन मुझे मालूम नहीं था कि कहाँ से आए हैं। 5 जब दिन ढलने लगा और शहर के दरवाज़ों को बंद करने का वक़्त आ गया तो वह चले गए। मुझे मालूम नहीं कि किस तरफ़ गए। अब जल्दी करके उनका पीछा करें। ऐन मुमकिन है कि आप उन्हें पकड़ लें।” 6 हकीकत में राहब ने उन्हें छत पर ले जाकर वहाँ पर पड़े सन के डंठलों के नीचे छुपा दिया था। 7 राहब की बात सुनकर बादशाह के आदमी वहाँ से चले गए और शहर से निकलकर जासूसों के ताक़ुकुब में उस रास्ते पर चलने लगे जो दरियाए-यरदन के उन कम-गहरे मक़ामों तक ले जाता है जहाँ उसे पैदल उबर किया जा सकता था। और ज्योंही यह आदमी निकले, शहर का दरवाज़ा उनके पीछे बंद कर दिया गया।

8 जासूसों के सो जाने से पहले राहब ने छत पर आकर 9 उनसे कहा, “मैं जानती हूँ कि रब ने यह मुल्क आपको दे दिया है। आपके बारे में सुनकर हम पर दहशत छा गई है, और मुल्क के तमाम बाशिंदे हिम्मत हार गए हैं। 10 क्योंकि हमें खबर मिली है कि आपके मिसर से निकलते वक्त रब ने बहरे-कुलजुम का पानी किस तरह आपके आगे खुशक कर दिया। यह भी हमारे सुनने में आया है कि आपने दरियाए-यरदन के मशरिक में रहनेवाले दो बादशाहों सीहोन और ओज के साथ क्या कुछ किया, कि आपने उन्हें पूरी तरह तबाह कर दिया। 11 यह सुनकर हमारी हिम्मत टूट गई। आपके सामने हम सब हौसला हार गए हैं, क्योंकि रब आपका खुदा आसमानो-जमीन का खुदा है। 12 अब रब की क्रसम खाकर मुझसे वादा करें कि आप उसी तरह मेरे खानदान पर मेहरबानी करेंगे जिस तरह कि मैंने आप पर की है। और ज़मानत के तौर पर मुझे कोई निशान दें 13 कि आप मेरे माँ-बाप, मेरे बहन-भाइयों और उनके घरवालों को ज़िंदा छोड़कर हमें मौत से बचाए रखेंगे।”

14 आदमियों ने कहा, “हम अपनी जानों को ज़मानत के तौर पर पेश करते हैं कि आप महफूज़ रहेंगे। अगर आप किसी को हमारे बारे में इतला न दें तो हम आपसे ज़रूर मेहरबानी और वफ़ादारी से पेश आएँगे जब रब हमें यह मुल्क अता फ़रमाएगा।”

15 तब राहब ने शहर से निकलने में उनकी मदद की। चूँकि उसका घर शहर की चारदीवारी से मुलहिक था इसलिए आदमी खिड़की से निकलकर रस्से के ज़रीए बाहर की ज़मीन पर उतर आए। 16 उतरने से पहले राहब ने उन्हें हिदायत की, “पहाड़ी इलाके की तरफ़ चले जाएँ। जो आपका ताक्कुब कर रहे हैं वह वहाँ आपको ढूँड नहीं सकेंगे। तीन दिन तक यानी जब तक वह वापस न आ जाएँ वहाँ छुपे रहना। इसके बाद जहाँ जाने का इरादा है चले जाना।”

17 आदमियों ने उससे कहा, “जो क्रसम आपने हमें खिलाई है हम ज़रूर उसके पाबंद रहेंगे। लेकिन शर्त यह है 18 कि आप हमारे इस मुल्क में आते वक्त किरमिज़ी रंग का यह रस्सा उस खिड़की के सामने बाँध दें जिसमें से आपने हमें उतरने दिया है। यह भी लाज़िम है कि उस वक्त आपके माँ-बाप, भाई-बहनें और तमाम घरवाले आपके घर में हों। 19 अगर कोई आपके घर में से निकले और मार दिया जाए तो यह हमारा कुसूर नहीं होगा, हम ज़िम्मादार नहीं ठहरेंगे। लेकिन अगर किसी को हाथ लगाया जाए जो आपके घर के अंदर हो तो हम ही उस की मौत के ज़िम्मादार ठहरेंगे। 20 और किसी को हमारे मामले के बारे में इतला न देना, वरना हम उस क्रसम से आज़ाद हैं जो आपने हमें खिलाई।”

21 राहब ने जवाब दिया, “ठीक है, ऐसा ही हो।” फिर उसने उन्हें सख़्त किया और वह रवाना हुए। और राहब ने अपनी खिड़की के साथ मज़क़रा रस्सा बाँध दिया।

22 जासूस चलते चलते पहाड़ी इलाके में आ गए। वहाँ वह तीन दिन रहे। इतने में उनका ताक्कुब करनेवाले पूरे रास्ते का खोज लगाकर खाली हाथ लौटे। 23 फिर दोनों जासूसों ने पहाड़ी इलाके से उतरकर दरियाए-यरदन को पार किया और यशुअ बिन नून के पास आकर सब कुछ बयान किया जो उनके साथ हुआ था। 24 उन्होंने कहा, “यक़ीनन रब ने हमें पूरा मुल्क दे दिया है। हमारे बारे में सुनकर मुल्क के तमाम बाशिंदों पर दहशत तारी हो गई है।”

3

इसराईली दरियाए-यरदन को उबूर करते हैं

1 सुबह-सवेरे उठकर यशुअ और तमाम इसराईली शिन्तीम से रवाना हुए। जब वह दरियाए-यरदन पर पहुँचे तो उसे उबूर न किया बल्कि रात के लिए किनारे पर स्क गए। 2 वह तीन दिन वहाँ रहे। फिर निगहबानों ने ख़ैमागाह में से गुज़रकर 3 लोगों को हुक्म दिया, “जब आप देखें कि लावी के क़बीले के इमाम रब आपके खुदा के अहद का संदूक उठाए हुए हैं तो अपने अपने मक़ाम से रवाना होकर उसके पीछे हो लें। 4 फिर आपको पता चलेगा कि कहाँ जाना है, क्योंकि आप पहले कभी वहाँ नहीं गए। लेकिन संदूक के तक़रीबन एक किलोमीटर पीछे रहें और ज़्यादा करीब न जाएँ।”

5 यशुअ ने लोगों को बताया, “अपने आपको मख़सूस-मुक़द्दस करें, क्योंकि कल रब आपके दरमियान हैरतअंगेज़ काम करेगा।”

6 अगले दिन यशुअ ने इमामों से कहा, “अहद का संदूक उठाकर लोगों के आगे आगे दरिया को पार करें।” चुनौचे इमाम संदूक को उठाकर आगे आगे चल दिए। 7 और रब ने यशुअ से फ़रमाया, “मैं तुझे तमाम इसराईलियों के सामने सरफ़राज़ कर दूँगा, और आज ही मैं यह काम शुरू करूँगा ताकि वह जान लें कि जिस तरह मैं मूसा के साथ था उसी तरह तेरे साथ भी हूँ। 8 अहद का संदूक उठानेवाले इमामों को बता देना, ‘जब आप दरियाए-यरदन के किनारे पहुँचेंगे तो वहाँ पानी में स्क जाएँ।’”

9 यशुअ ने इसराईलियों से कहा, “मेरे पास आएँ और रब अपने खुदा के फ़रमान सुन लें। 10 आज आप जान लेंगे कि ज़िंदा खुदा आपके दरमियान है और कि वह यक़ीनन आपके आगे आगे जाकर दूसरी क़ौमों को निकाल देगा, खाह वह कनानी, हिती, हिव्वी, फ़रिज़्ज़ी, जिरजासी, अमोरी या यबूसी हों। 11 यह यों ज़ाहिर होगा कि अहद का यह संदूक जो तमाम दुनिया के मालिक का है आपके आगे आगे दरियाए-यरदन में जाएगा। 12 अब ऐसा करें कि हर क़बीले में से एक एक आदमी को चुन लें ताकि बारह अफ़राद जमा हो जाएँ। 13 फिर इमाम तमाम दुनिया के मालिक रब के अहद का संदूक उठाकर दरिया में जाएँगे। और ज्योंही वह अपने पाँव पानी में रखेंगे तो पानी का बहाव स्क जाएगा और आनेवाला पानी ढेर बनकर खड़ा रहेगा।”

14 चुनौचे इसराईली अपने ख़ैमों को समेटकर रवाना हुए, और अहद का संदूक उठानेवाले इमाम उनके आगे आगे चल दिए। 15 फ़सल की कटाई का मौसम था, और दरिया का पानी किनारों से बाहर आ गया था। लेकिन ज्योंही संदूक को उठानेवाले इमामों ने दरिया के किनारे

पहुँचकर पानी में कदम रखा 16 तो आनेवाले पानी का बहाव स्क गया। वह उनसे दूर एक शहर के करीब ढेर बन गया जिसका नाम आदम था और जो ज़रतान के नज़दीक है। जो पानी दूसरी यानी बहीराए-मुरदार की तरफ बह रहा था वह पूरी तरह उतर गया। तब इसराइलियों ने यरीह शहर के मुकाबिल दरिया को पार किया। 17 रब का अहद का संदूक उठानेवाले इमाम दरियाए-यरदन के बीच में खुशक ज़मीन पर खड़े रहे जबकि बाकी लोग खुशक ज़मीन पर से गुज़र गए। इमाम उस वक़्त तक वहाँ खड़े रहे जब तक तमाम इसराइलियों ने खुशक ज़मीन पर चलकर दरिया को पार न कर लिया।

4

यादगार पत्थर

1 जब पूरी क़ौम ने दरियाए-यरदन को उबूर कर लिया तो रब यशुअ से हमकलाम हुआ, 2 “हर क़बीले में से एक एक आदमी को चुन ले। 3 फिर इन बारह आदमियों को हुक्म दे कि जहाँ इमाम दरियाए-यरदन के दरमियान खड़े हैं वहाँ से बारह पत्थर उठाकर उन्हें उस जगह रख दो जहाँ तुम आज रात ठहरोगे।”

4 चुनाँचे यशुअ ने उन बारह आदमियों को बुलाया जिन्हें उसने इसराइल के हर क़बीले से चुन लिया था 5 और उनसे कहा, “रब अपने खुदा के संदूक के आगे आगे चलकर दरिया के दरमियान तक जाएँ। आपमें से हर आदमी एक एक पत्थर उठाकर अपने कंधे पर रखे और बाहर ले जाए। कुल बारह पत्थर होंगे, इसराइल के हर क़बीले के लिए एक। 6 यह पत्थर आपके दरमियान एक यादगार निशान रहेंगे। आइंदा जब आपके बच्चे आपसे पूछेंगे कि इन पत्थरों का क्या मतलब है 7 तो उन्हें बताना, ‘यह हमें याद दिलाते हैं कि दरियाए-यरदन का बहाव स्क गया जब रब का अहद का संदूक उसमें से गुज़रा।’ यह पत्थर अबद तक इसराइल को याद दिलाते रहेंगे कि यहाँ क्या कुछ हुआ था।”

8 इसराइलियों ने ऐसा ही किया। उन्होंने दरियाए-यरदन के बीच में से अपने क़बीलों की तादाद के मुताबिक बारह पत्थर उठाए, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह रब ने यशुअ को फ़रमाया था। फिर उन्होंने यह पत्थर अपने साथ लेकर उस जगह रख दिए जहाँ उन्हें रात के लिए ठहरना था। 9 साथ साथ यशुअ ने उस जगह भी बारह पत्थर खड़े किए जहाँ अहद का संदूक उठानेवाले इमाम दरियाए-यरदन के दरमियान खड़े थे। यह पत्थर आज तक वहाँ पड़े हैं। 10 संदूक को उठानेवाले इमाम दरिया के दरमियान खड़े रहे जब तक लोगों ने तमाम अहकाम जो रब ने यशुअ को दिए थे पूरे न कर लिए। यों सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा मूसा ने यशुअ को फ़रमाया था।

लोग जल्दी जल्दी दरिया में से गुज़रे। 11 जब सब दूसरे किनारे पर थे तो इमाम भी रब का संदूक लेकर किनारे पर पहुँचे और दुबारा क़ौम के आगे आगे चलने लगे। 12 और जिस तरह मूसा ने फ़रमाया था, रुबिन, जद और मनस्सी के आधे क़बीले के मर्द मुसल्लह होकर बाकी इसराइली क़बीलों से पहले दरिया के दूसरे किनारे पर पहुँच गए थे। 13 तक़रीबन 40,000 मुसल्लह मर्द उस वक़्त रब के सामने यरीह के मैदान में पहुँच गए ताकि वहाँ जंग करें। 14 उस दिन रब ने यशुअ को पूरी इसराइली क़ौम के सामने सरफ़राज़ किया। उसके जीते-जी लोग उसका यों ख़ौफ़ मानते रहे जिस तरह पहले मूसा का।

15 फिर रब ने यशुअ से कहा, 16 “अहद का संदूक उठानेवाले इमामों को दरिया में से निकलने का हुक्म दे।” 17 यशुअ ने ऐसा ही किया 18 तो ज्योंही इमाम किनारे पर पहुँच गए पानी दुबारा बहकर दरिया के किनारों से बाहर आने लगा।

19 इसराइलियों ने पहले महीने के दसवें दिन * दरियाए-यरदन को उबूर किया। उन्होंने अपने ख़ैमे यरीह के मशरिक में वाके जिलजाल में खड़े किए। 20 वहाँ यशुअ ने दरिया में से चुने हुए बारह पत्थरों को खड़ा किया। 21 उसने इसराइलियों से कहा, “आइंदा जब आपके बच्चे अपने अपने बाप से पूछेंगे कि इन पत्थरों का क्या मतलब है 22 तो उन्हें बताना, ‘यह वह जगह है जहाँ इसराइली क़ौम ने खुशक ज़मीन पर दरियाए-यरदन को पार किया।’ 23 क्योंकि रब आपके खुदा ने उस वक़्त तक आपके आगे आगे दरिया का पानी खुशक कर दिया जब तक आप वहाँ से गुज़र न गए, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह बहरे-कुलज़ूम के साथ किया था जब हम उसमें से गुज़रे। 24 उसने यह काम इसलिए किया ताकि ज़मीन की तमाम क़ौमों अल्लाह की कुदरत को जान लें और आप हमेशा रब अपने खुदा का ख़ौफ़ मानें।”

5

1 यह ख़बर दरियाए-यरदन के मशरिक में आबाद तमाम अमोरी बादशाहों और साहिली इलाक़े में आबाद तमाम कनानी बादशाहों तक पहुँच गई कि रब ने इसराइलियों के सामने दरिया को उस वक़्त तक खुशक कर दिया जब तक सबने पार न कर लिया था। तब उनकी हिम्मत टूट गई और उनमें इसराइलियों का सामना करने की ज़रत न रही।

जिलजाल में ख़तना

2 उस वक़्त रब ने यशुअ से कहा, “पत्थर की छुरियाँ बनाकर पहले की तरह इसराइलियों का ख़तना करवा दे।” 3 चुनाँचे यशुअ ने पत्थर की छुरियाँ बनाकर एक जगह पर इसराइलियों का ख़तना करवाया जिसका नाम बाद में ‘ख़तना पहाड़’ रखा गया। 4 बात यह थी कि जो मर्द मिसर से निकलते वक़्त जंग करने के काबिल थे वह रेगिस्तान में चलते चलते मर चुके थे। 5 मिसर से रवाना होनेवाले इन तमाम मर्दों का ख़तना हुआ था, लेकिन जितने लड़कों की पैदाइश रेगिस्तान में हुई थी उनका ख़तना नहीं हुआ था। 6 चूँकि इसराइली रब के ताबे नहीं रहे थे इसलिए उसने क़सम खाई थी कि वह उस मुल्क को नहीं देखेंगे जिसमें दूध और शहद की कसरत है और जिसका वादा उसने क़सम खाकर उनके

* 4:19 यानी अप्रैल में।

बापदादा से किया था। नतीजे में इसराइली फ़ौरन मुल्क में दाखिल न हो सके बल्कि उन्हें उस वक्त तक रेगिस्तान में फिरना पड़ा जब तक वह तमाम मर्द मर न गए जो मिसर से निकलते वक्त जंग करने के काबिल थे। ⁷ उनकी जगह रब ने उनके बेटों को खड़ा किया था। यशुअ ने उन्हीं का खतना करवाया। उनका खतना इसलिए हुआ कि रेगिस्तान में सफ़र के दौरान उनका खतना नहीं किया गया था।

⁸ पूरी क्रौम के मर्दों का खतना होने के बाद वह उस वक्त तक खैमागाह में रहे जब तक उनके ज़ख़म ठीक नहीं हो गए थे। ⁹ और रब ने यशुअ से कहा, “आज मैंने मिसर की स्मवाई तुमसे दूर कर दी है।” * इसलिए उस जगह का नाम आज तक जिलजाल यानी लुढ़काना रहा है।

¹⁰ जब इसराइली यरीह के मैदानी इलाके में वाके जिलजाल में खैमाज़न थे तो उन्होंने फ़सह की ईद भी मनाई। महीने का चौधवाँ दिन था, ¹¹ और अगले ही दिन वह पहली दफ़ा उस मुल्क की पैदावार में से बेख़मीरी रोटी और अनाज के भुने हुए दाने खाने लगे। ¹² उसके बाद के दिन मन का सिलसिला ख़त्म हुआ और इसराइलियों के लिए यह सहूलत न रही। उस साल से वह कनान की पैदावार से खाने लगे।

फ़रिश्ते से यशुअ की मुलाकात

¹³ एक दिन यशुअ यरीह शहर के करीब था। अचानक एक आदमी उसके सामने खड़ा नज़र आया जिसके हाथ में नंगी तलवार थी। यशुअ ने उसके पास जाकर पूछा, “क्या आप हमारे साथ या हमारे दुश्मनों के साथ हैं?”

¹⁴ आदमी ने कहा, “नहीं, मैं रब के लशकर का सरदार हूँ और अभी अभी तेरे पास पहुँचा हूँ।”

यह सुनकर यशुअ ने गिरकर उसे सिजदा किया और पूछा, “मेरे आका अपने खादिम को क्या फ़रमाना चाहते हैं?”

¹⁵ रब के लशकर के सरदार ने जवाब में कहा, “अपने जूते उतार दे, क्योंकि जिस जगह पर तू खड़ा है वह मुक़द्दस है।” यशुअ ने ऐसा ही किया।

6

यरीह की तबाही

¹ उन दिनों में इसराइलियों की वजह से यरीह के दरवाज़े बंद ही रहे। न कोई बाहर निकला, न कोई अंदर गया। ² रब ने यशुअ से कहा, “मैंने यरीह को उसके बादशाह और फ़ौजी अफ़सरों समेत तेरे हाथ में कर दिया है। ³ जो इसराइली जंग के लिए तेरे साथ निकलेंगे उनके साथ शहर की फ़सील के साथ साथ चलकर एक चक्कर लगाओ और फिर खैमागाह में वापस आ जाओ। छः दिन तक ऐसा ही करो। ⁴ सात इمام एक एक नरसिंगा उठाए अहद के संदूक के आगे आगे चलें। फिर सातवें दिन शहर के गिर्द सात चक्कर लगाओ। साथ साथ इمام नरसिंगे बजाते रहें। ⁵ जब वह नरसिंगों को बजाते बजाते लंबी-सी फूँक मारेंगे तो फिर तमाम इसराइली बड़े ज़ोर से जंग का नारा लगाएँ। इस पर शहर की फ़सील गिर जाएगी और तेरे लोग हर जगह सीधे शहर में दाखिल हो सकेंगे।”

⁶ यशुअ बिन नून ने इमामों को बुलाकर उनसे कहा, “रब के अहद का संदूक उठाकर मेरे साथ चलें। और सात इمام एक एक नरसिंगा उठाए संदूक के आगे आगे चलें।” ⁷ फिर उसने बाक़ी लोगों से कहा, “आएँ, शहर की फ़सील के साथ साथ चलकर एक चक्कर लगाएँ। मुसल्लह आदमी रब के संदूक के आगे आगे चलें।”

⁸ सब कुछ यशुअ की हिदायात के मुताबिक़ हुआ। सात इمام नरसिंगे बजाते हुए रब के आगे आगे चले जबकि रब के अहद का संदूक उनके पीछे पीछे था। ⁹ मुसल्लह आदमियों में से कुछ बजानेवाले इमामों के आगे आगे और कुछ संदूक के पीछे पीछे चलने लगे। इतने में इمام नरसिंगे बजाते रहे। ¹⁰ लेकिन यशुअ ने बाक़ी लोगों को हुक्म दिया था कि उस दिन जंग का नारा न लगाएँ। उसने कहा, “जब तक मैं हुक्म न दूँ उस वक्त तक एक लफ़्ज़ भी न बोलना। जब मैं इशारा दूँगा तो फिर ही ख़ूब नारा लगाना।” ¹¹ इसी तरह रब के संदूक ने शहर की फ़सील के साथ साथ चलकर चक्कर लगाया। फिर लोगों ने खैमागाह में लौटकर वहाँ रात गुज़ारी।

¹²⁻¹³ अगले दिन यशुअ सुबह-सवेरे उठा, और इमामों और फ़ौजियों ने दूसरी मरतबा शहर का चक्कर लगाया। उनकी वही तरतीब थी। पहले कुछ मुसल्लह आदमी, फिर सात नरसिंगे बजानेवाले इمام, फिर रब के अहद का संदूक उठानेवाले इمام और आखिर में मज़ीद कुछ मुसल्लह आदमी थे। चक्कर लगाने के दौरान इمام नरसिंगे बजाते रहे। ¹⁴ इस दूसरे दिन भी वह शहर का चक्कर लगाकर खैमागाह में लौट आए। उन्होंने छः दिन तक ऐसा ही किया।

¹⁵ सातवें दिन उन्होंने सुबह-सवेरे उठकर शहर का चक्कर यों लगाया जैसे पहले छः दिनों में, लेकिन इस दफ़ा उन्होंने कुल सात चक्कर लगाए। ¹⁶ सातवें चक्कर पर इमामों ने नरसिंगों को बजाते हुए लंबी-सी फूँक मारी। तब यशुअ ने लोगों से कहा, “जंग का नारा लगाएँ, क्योंकि रब ने आपको यह शहर दे दिया है। ¹⁷ शहर को और जो कुछ उसमें है तबाह करके रब के लिए मख़सूस करना है। सिर्फ़ राहब कसबी को उन लोगों समेत बचाना है जो उसके घर में हैं। क्योंकि उसने हमारे उन जासूसों को छुपा दिया जिनको हमने यहाँ भेजा था। ¹⁸ लेकिन अल्लाह के लिए मख़सूस चीज़ों को हाथ न लगाना, क्योंकि अगर आप उनमें से कुछ ले लें तो अपने आपको तबाह करेंगे बल्कि इसराइली खैमागाह पर भी तबाही और आफ़त लाएँगे। ¹⁹ जो कुछ भी चाँदी, सोने, पीतल या लोहे से बना है वह रब के लिए मख़सूस है। उसे रब के खज़ाने में डालना है।”

* 5:9 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : लुढ़काकर दूर कर दी है।

20 जब इमामों ने लंबी फूँक मारी तो इसराइलियों ने जंग के जोरदार नारे लगाए। अचानक यरीह की फसील गिर गई, और हर शख्स अपनी अपनी जगह पर सीधा शहर में दाखिल हुआ। यों शहर इसराइल के कब्जे में आ गया। 21 जो कुछ भी शहर में था उसे उन्होंने तलवार से मारकर रब के लिए मखसूस किया, खाह मर्द या औरत, जवान या बुजुर्ग, गाय-बैल, भेड़-बकरी या गधा था।

22 जिन दो आदमियों ने मुल्क की जासूसी की थी उनसे यशुअ ने कहा, “अब अपनी कसम का वादा पूरा करें। कसबी के घर में जाकर उसे और उसके तमाम घरवालों को निकाल लाएँ।” 23 चुनौचे यह जवान आदमी गए और राहब, उसके माँ-बाप, भाइयों और बाकी रिश्तेदारों को उस की मिलकियत समेत निकालकर खैमागाह से बाहर कहीं बसा दिया। 24 फिर उन्होंने पूरे शहर को और जो कुछ उसमें था भस्म कर दिया। लेकिन चाँदी, सोने, पीतल और लोहे का तमाम माल उन्होंने रब के घर के खजाने में डाल दिया। 25 यशुअ ने सिर्फ राहब कसबी और उसके घरवालों को बचाए रखा, क्योंकि उसने उन आदमियों को छुपा दिया था जिन्हें यशुअ ने यरीह भेजा था। राहब आज तक इसराइलियों के दरमियान रहती है।

26 उस वक़्त यशुअ ने कसम खाई, “रब की लानत उस पर हो जो यरीह का शहर नए सिरे से तामीर करने की कोशिश करे। शहर की बुनियाद रखते वक़्त वह अपने पहलौठे से महरूम हो जाएगा, और उसके दरवाज़ों को खड़ा करते वक़्त वह अपने सबसे छोटे बेटे से हाथ धो बैठेगा।”

27 यों रब यशुअ के साथ था, और उस की शोहरत पूरे मुल्क में फैल गई।

7

अकन का गुनाह

1 लेकिन जहाँ तक रब के लिए मखसूस चीज़ों का ताल्लुक था इसराइलियों ने बेवफ़ाई की। यहूदाह के कबीले के एक आदमी ने उनमें से कुछ अपने लिए ले लिया। उसका नाम अकन बिन करमी बिन ज़बदी बिन ज़ारह था। तब रब का ग़ज़ब इसराइलियों पर नाज़िल हुआ।

2 यह यों जाहिर हुआ कि यशुअ ने कुछ आदमियों को यरीह से आई शहर को भेज दिया जो बैतेल के मशरिक में बैत-आवन के करीब है। उसने उनसे कहा, “उस इलाक़े में जाकर उस की जासूसी करें।” चुनौचे वह जाकर ऐसा ही करने लगे। 3 जब वापस आए तो उन्होंने यशुअ से कहा, “इसकी ज़रूरत नहीं कि तमाम लोग आई पर हमला करें। उसे शिकस्त देने के लिए दो या तीन हज़ार मर्द काफी हैं। बाकी लोगों को न भेजें वरना वह खाहमखाह थक जाएंगे, क्योंकि दुश्मन के लोग कम हैं।” 4 चुनौचे तकरीबन तीन हज़ार आदमी आई से लड़ने गए। लेकिन वह आई के मर्दों से शिकस्त खाकर फ़रार हुए, 5 और उनके 36 अफ़राद शहीद हुए। आई के आदमियों ने शहर के दरवाज़े से लेकर शबरीम तक उनका ताक़्क़ुब करके वहाँ की ढलान पर उन्हें मार डाला। तब इसराइली सख़्त घबरा गए, और उनकी हिम्मत जवाब दे गई।

6 यशुअ ने रंजिश का इज़हार करके अपने कपड़ों को फाड़ दिया और रब के संदूक के सामने मुँह के बल गिर गया। वहाँ वह शाम तक पड़ा रहा। इसराइल के बुजुर्गों ने भी ऐसा ही किया और अपने सर पर खाक डाल ली। 7 यशुअ ने कहा, “हाय, ऐ रब कादिरे-मुतलक! तूने इस क्रौम को दरियाए-यरदन में से गुज़रने क्यों दिया अगर तेरा मक़सद सिर्फ़ यह था कि हमें अमोरियों के हवाले करके हलाक करे? काश हम दरिया के मशरिकी किनारे पर रहने के लिए तैयार होते! 8 ऐ रब, अब मैं क्या कहूँ जब इसराइल अपने दुश्मनों के सामने से भाग आया है? 9 कनानी और मुल्क की बाक़ी क्रौमों यह सुनकर हमें घेर लेंगी और हमारा नामो-निशान मिटा देंगी। अगर ऐसा होगा तो फिर तू खुद अपना अज़ीम नाम कायम रखने के लिए क्या करेगा?”

10 जवाब में रब ने यशुअ से कहा, “उठकर खड़ा हो जा! तू क्यों मुँह के बल पड़ा है? 11 इसराइल ने गुनाह किया है। उन्होंने मेरे अहद की खिलाफ़वर्ज़ी की है जो मैंने उनके साथ बाँधा था। उन्होंने मखसूसशुदा चीज़ों में से कुछ ले लिया है, और चोरी करके चुपके से अपने सामान में मिला लिया है। 12 इसी लिए इसराइली अपने दुश्मनों के सामने कायम नहीं रह सकते बल्कि पीठ फेरकर भाग रहे हैं। क्योंकि इस हरकत से इसराइल ने अपने आपको भी हलाकत के लिए मखसूस कर लिया है। जब तक तुम अपने दरमियान से वह कुछ निकालकर तबाह न कर लो जो तबाही के लिए मखसूस है उस वक़्त तक मैं तुम्हारे साथ नहीं हूँगा। 13 अब उठ और लोगों को मेरे लिए मखसूसो-मुक़द्दस कर। उन्हें बता देना, ‘अपने आपको कल के लिए मखसूसो-मुक़द्दस करना, क्योंकि रब जो इसराइल का खुदा है फ़रमाता है कि ऐ इसराइल, तेरे दरमियान ऐसा माल है जो मेरे लिए मखसूस है। जब तक तुम उसे अपने दरमियान से निकाल न दो अपने दुश्मनों के सामने कायम नहीं रह सकोगे।’

14 कल सुबह को हर एक कबीला अपने आपको पेश करे। रब जाहिर करेगा कि कुसूरवार शख्स कौन-से कबीले का है। फिर उस कबीले के कुंभे बारी बारी सामने आएँ। जिस कुंभे को रब कुसूरवार ठहराएगा उसके मुख़्तलिफ़ ख़ानदान सामने आएँ। और जिस ख़ानदान को रब कुसूरवार ठहराएगा उसके मुख़्तलिफ़ अफ़राद सामने आएँ। 15 जो रब के लिए मखसूस माल के साथ पकड़ा जाएगा उसे उस की मिलकियत समेत जला देना है, क्योंकि उसने रब के अहद की खिलाफ़वर्ज़ी करके इसराइल में शर्मनाक काम किया है।”

16 अगले दिन सुबह-सवेरे यशुअ ने कबीलों को बारी बारी अपने पास आने दिया। जब यहूदाह के कबीले की बारी आई तो रब ने उसे कुसूरवार ठहराया। 17 जब उस कबीले के मुख़्तलिफ़ कुंभे सामने आए तो रब ने ज़ारह के कुंभे को कुसूरवार ठहराया। जब ज़ारह के मुख़्तलिफ़ ख़ानदान सामने आए तो रब ने ज़बदी का ख़ानदान कुसूरवार ठहराया। 18 आख़िरकार यशुअ ने उस ख़ानदान को फ़रदन फ़रदन अपने पास आने दिया, और अकन बिन करमी बिन ज़बदी बिन ज़ारह पकड़ा गया। 19 यशुअ ने उससे कहा, “बेटा, रब इसराइल के खुदा को जलाल दो और उस की सताइश करो। मुझे बता दो कि तुमने क्या किया। कोई भी बात मुझसे मत छुपाना।”

20 अकन ने जवाब दिया, “वाकई मैंने रब इसराईल के खुदा का गुनाह किया है। 21 मैंने लूटे हुए माल में से बाबल का एक शानदार चोगा, तकरीबन सवा दो किलोग्राम चाँदी और आधे किलोग्राम से जायद सोने की ईट ले ली थी। यह चीजें देखकर मैंने उनका लालच किया और उन्हें ले लिया। अब वह मेरे खैमे की ज़मीन में दबी हुई हैं। चाँदी को मैंने बाक़ी चीज़ों के नीचे छुपा दिया।”

22 यह सुनकर यशुअ ने अपने बंदों को अकन के खैमे के पास भेज दिया। वह दौड़कर वहाँ पहुँचे तो देखा कि यह माल वाक़ई खैमे की ज़मीन में छुपाया हुआ है और कि चाँदी दूसरी चीज़ों के नीचे पड़ी है। 23 वह यह सब कुछ खैमे से निकालकर यशुअ और तमाम इसराईलियों के पास ले आए और रब के सामने रख दिया। 24 फिर यशुअ और तमाम इसराईली अकन बिन ज़ारह को पकड़कर वादीए-अकूर में ले गए। उन्होंने चाँदी, लिबास, सोने की ईट, अकन के बेटे-बेटियों, गाय-बैलों, गधों, भेड़-बकरियों और उसके खैमे गरज़ उस की पूरी मिलकियत को उस वादी में पहुँचा दिया।

25 यशुअ ने कहा, “तुम यह आफ़त हम पर क्यों लाए हो? आज रब तुम पर ही आफ़त लाएगा।” फिर पूरे इसराईल ने अकन को उसके घरवालों समेत संगसार करके जला दिया। 26 अकन के ऊपर उन्होंने पत्थरों का बड़ा ढेर लगा दिया जो आज तक वहाँ मौजूद है। यही वजह है कि आज तक उसका नाम वादीए-अकूर यानी आफ़त की वादी रहा है।

इसके बाद रब का सख़्त ग़ज़ब ठंडा हो गया।

8

अई की शिकस्त

1 फिर रब ने यशुअ से कहा, “मत डर और मत घबरा बल्कि तमाम फ़ौजी अपने साथ लेकर अई शहर पर हमला कर। क्योंकि मैंने अई के बादशाह, उस की क्रौम, उसके शहर और मुल्क को तेरे हाथ में कर दिया है। 2 लाज़िम है कि तू अई और उसके बादशाह के साथ वह कुछ करे जो तूने यरीह और उसके बादशाह के साथ किया था। लेकिन इस मरतबा तुम उसका माल और मवेशी अपने पास रख सकते हो। हमला करते वक़्त शहर के पीछे घात लगा।”

3 चुनौचे यशुअ पूरे लशकर के साथ अई पर हमला करने के लिए निकला। उसने अपने सबसे अच्छे फ़ौजियों में से 30,000 को चुन लिया और उन्हें रात के वक़्त अई के खिलाफ़ भेजकर 4 हुक्म दिया, “ध्यान दें कि आप शहर के पीछे घात लगाएँ। सबके सब शहर के करीब ही तैयार रहें। 5 इतने में मैं बाक़ी मर्दों के साथ शहर के करीब आ जाऊँगा। और जब शहर के लोग पहले की तरह हमारे साथ लड़ने के लिए निकलेंगे तो हम उनके आगे आगे भाग जाएंगे। 6 वह हमारे पीछे पड़ जाएंगे और यों हम उन्हें शहर से दूर ले जाएंगे, क्योंकि वह समझेंगे कि हम इस दफ़ा भी पहले की तरह उनसे भाग रहे हैं। 7 फिर आप उस जगह से निकलें जहाँ आप घात में बैठे होंगे और शहर पर क़ब्ज़ा कर लें। रब आपका खुदा उसे आपके हाथ में कर देगा। 8 जब शहर आपके क़ब्ज़े में होगा तो उसे जला देना। वही करें जो रब ने फ़रमाया है। मेरी इन हिदायत पर ध्यान दें।”

9 यह कहकर यशुअ ने उन्हें अई की तरफ़ भेज दिया। वह रवाना होकर अई के मगरिब में घात में बैठ गए। यह जगह बैतेल और अई के दरमियान थी। लेकिन यशुअ ने यह रात बाक़ी लोगों के साथ खैमागाह में गुज़ारी। 10 अगले दिन सुबह-सवेरे यशुअ ने आदमियों को जमा करके उनका जायज़ा लिया। फिर वह इसराईल के बुजुर्गों के साथ उनके आगे आगे अई की तरफ़ चल दिया। 11 जो लशकर उसके साथ था वह चलते चलते अई के सामने पहुँच गया। उन्होंने शहर के शिमाल में अपने खैमे लगाए। उनके और शहर के दरमियान वादी थी।

12 जो शहर के मगरिब में अई और बैतेल के दरमियान घात लगाए बैठे थे वह तकरीबन 5,000 मर्द थे। 13 यों शहर के मगरिब और शिमाल में आदमी लड़ने के लिए तैयार हुए। रात के वक़्त यशुअ वादी में पहुँच गया।

14 जब अई के बादशाह ने शिमाल में इसराईलियों को देखा तो उसने जल्दी जल्दी तैयारियाँ कीं। अगले दिन सुबह-सवेरे वह अपने आदमियों के साथ शहर से निकला ताकि इसराईलियों के साथ लड़े। यह जगह वादीए-यरदन की तरफ़ थी। बादशाह को मालूम न हुआ कि इसराईली शहर के पीछे घात में बैठे हैं। 15 जब अई के मर्द निकले तो यशुअ और उसका लशकर शिकस्त का इज़हार करके रेगिस्तान की तरफ़ भागने लगे।

16 तब अई के तमाम मर्दों को इसराईलियों का ताक़्क़ुब करने के लिए बुलाया गया, और यशुअ के पीछे भागते भागते वह शहर से दूर निकल गए। 17 एक मर्द भी अई या बैतेल में न रहा बल्कि सबके सब इसराईलियों के पीछे पड़ गए। न सिर्फ़ यह बल्कि उन्होंने शहर का दरवाज़ा खुला छोड़ दिया।

18 फिर रब ने यशुअ से कहा, “जो शमशेर तेरे हाथ में है उसे अई के खिलाफ़ उठाए रख, क्योंकि मैं यह शहर तेरे हाथ में कर दूँगा।” यशुअ ने ऐसा ही किया, 19 और ज्योंही उसने अपनी शमशेर से अई की तरफ़ इशारा किया घात में बैठे आदमी जल्दी से अपनी जगह से निकल आए और दौड़ दौड़कर शहर पर झपट पड़े। उन्होंने उस पर क़ब्ज़ा करके जल्दी से उसे जला दिया।

20 जब अई के आदमियों ने मुड़कर नज़र डाली तो देखा कि शहर से धुँएँ के बादल उठ रहे हैं। लेकिन अब उनके लिए भी बचने का कोई रास्ता न रहा, क्योंकि जो इसराईली अब तक उनके आगे आगे रेगिस्तान की तरफ़ भाग रहे थे वह अचानक मुड़कर ताक़्क़ुब करनेवालों पर टूट पड़े। 21 क्योंकि जब यशुअ और उसके साथ के आदमियों ने देखा कि घात में बैठे इसराईलियों ने शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया है और कि शहर से धुँआँ उठ रहा है तो उन्होंने मुड़कर अई के आदमियों पर हमला कर दिया। 22 साथ साथ शहर में दाख़िल हुए इसराईली शहर से निकलकर

पीछे से उनसे लड़ने लगे। चुनौचे अई के आदमी बीच में फँस गए। इसराईलियों ने सबको क़त्ल कर दिया, और न कोई बचा, न कोई फ़रार हो सका। ²³ सिर्फ़ अई के बादशाह को ज़िंदा पकड़ा और यशुअ के पास लाया गया।

²⁴ अई के मर्दों का ताक़त बढ़ते बढ़ते उन सबको खुले मैदान और रेगिस्तान में तलवार से मार देने के बाद इसराईलियों ने अई शहर में वापस आकर तमाम बाशिंदों को हलाक कर दिया। ²⁵ उस दिन अई के तमाम मर्द और औरतें मारे गए, कुल 12,000 अफ़राद। ²⁶ क्योंकि यशुअ ने उस वक़्त तक अपनी शमशेर उठाए रखी जब तक अई के तमाम बाशिंदों को हलाक न कर दिया गया। ²⁷ सिर्फ़ शहर के मवेशी और लूटा हुआ माल बच गया, क्योंकि इस दफ़ा रब ने हिदायत की थी कि इसराईली उसे ले जा सकते हैं।

²⁸ यशुअ ने अई को जलाकर उसे हमेशा के लिए मलबे का ढेर बना दिया। यह मक़ाम आज तक वीरान है। ²⁹ अई के बादशाह की लाश उसने शाम तक दरख़्त से लटकाए रखी। फिर जब सूरज डूबने लगा तो यशुअ ने अपने लोगों को हुक्म दिया कि बादशाह की लाश को दरख़्त से उतार दें। तब उन्होंने उसे शहर के दरवाज़े के पास फेंककर उस पर पत्थर का बड़ा ढेर लगा दिया। यह ढेर आज तक मौजूद है।

ऐबाल पहाड़ पर अहद की तजदीद

³⁰ उस वक़्त यशुअ ने रब इसराईल के खुदा की ताज़ीम में ऐबाल पहाड़ पर कुरबानगाह बनाई ³¹ जिस तरह रब के खादिम मूसा ने इसराईलियों को हुक्म दिया था। उसने उसे मूसा की शरीअत की किताब में दर्ज हिदायात के मुताबिक़ बनाया। कुरबानगाह के पत्थर तराशे बग़ैर लगाए गए, और उन पर लोहे का आला न चलाया गया। उस पर उन्होंने रब को भस्म होनेवाली और सलामती की कुरबानियाँ पेश कीं।

³² वहाँ यशुअ ने इसराईलियों की मौजूदगी में पत्थरों पर मूसा की शरीअत दुबारा लिख दी। ³³ फिर बुजुर्गों, निगहबानों और काज़ियों के साथ मिलकर तमाम इसराईली दो गुरोहों में तक़सीम हुए। परदेसी भी उनमें शामिल थे। एक गुरोह गरिज़ीम पहाड़ के सामने खड़ा हुआ और दूसरा ऐबाल पहाड़ के सामने। दोनों गुरोह एक दूसरे के मुकाबिल खड़े रहे जबकि लावी के क़बीले के इमाम उनके दरमियान खड़े हुए। उन्होंने रब के अहद का संदूक उठा रखा था। सब कुछ उन हिदायात के ऐन मुताबिक़ हुआ जो रब के खादिम मूसा ने इसराईलियों को बरक़त देने के लिए दी थीं।

³⁴ फिर यशुअ ने शरीअत की तमाम बातों की तिलावत की, उस की बरक़ात भी और उस की लानतें भी। सब कुछ उसने वैसा ही पढ़ा जैसा कि शरीअत की किताब में दर्ज था। ³⁵ जो भी हुक्म मूसा ने दिया था उसका एक भी लफ़ज़ न रहा जिसकी तिलावत यशुअ ने तमाम इसराईलियों की पूरी जमात के सामने न की हो। और सबने यह बातें सुनीं। इसमें औरतें, बच्चे और उनके दरमियान रहनेवाले परदेसी सब शामिल थे।

9

जिबऊनी यशुअ को धोका देते हैं

¹ इन बातों की ख़बर दरियाए-यरदन के मगरिब के तमाम बादशाहों तक पहुँची, खाह वह पहाड़ी इलाक़े, मगरिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े या साहिली इलाक़े में लुबनान तक रहते थे। उनकी यह कौम थी : हिली, अमोरी, कनानी, फ़रिज़्ज़ी, हिब्वी और यबूसी। ² अब यह यशुअ और इसराईलियों से लड़ने के लिए जमा हुए।

³ लेकिन जब जिबऊन शहर के बाशिंदों को पता चला कि यशुअ ने यरीह और अई के साथ क्या किया है ⁴ तो उन्होंने एक चाल चली। अपने साथ सफ़र के लिए खाना लेकर वह यशुअ के पास चल पड़े। उनके ग़धों पर खस्ताहाल बोरियाँ और मै की ऐसी पुरानी और घिसी-फटी मशकें लदी हुई थीं जिनकी बार बार मरम्मत हुई थी। ⁵ मर्दों ने ऐसे पुराने जूते पहन रखे थे जिन पर जगह जगह पैवंद लगे हुए थे। उनके कपड़े भी घिसे-फटे थे, और सफ़र के लिए जो रोटी उनके पास थी वह ख़ुरक और टुकड़े टुकड़े हो गई थी। ⁶ ऐसी हालत में वह यशुअ के पास जिलजाल की ख़ैमागाह में पहुँच गए। उन्होंने उससे और बाक़ी इसराईली मर्दों से कहा, “हम एक दूर-दराज़ मुल्क से आए हैं। आँ, हमारे साथ मुआहदा करें।”

⁷ लेकिन इसराईलियों ने हिब्वियों से कहा, “शायद आप हमारे इलाक़े के बीच में कहीं बसते हैं। अगर ऐसा है तो हम किस तरह आपसे मुआहदा कर सकते हैं?”

⁸ वह यशुअ से बोले, “हम आपकी खिदमत के लिए हाज़िर हैं।”

यशुअ ने पूछा, “आप कौन हैं और कहाँ से आए हैं?” ⁹ उन्होंने जवाब दिया, “आपके खादिम आपके खुदा के नाम के बाइस एक निहायत दूर-दराज़ मुल्क से आए हैं। क्योंकि उस की ख़बर हम तक पहुँच गई है, और हमने वह सब कुछ सुन लिया है जो उसने मिसर में ¹⁰ और दरियाए-यरदन के मशरिफ़ में रहनेवाले दो बादशाहों के साथ किया यानी हसबोन के बादशाह सीहोन और बसन के बादशाह ओज के साथ जो अस्तारात में रहता था। ¹¹ तब हमारे बुजुर्गों बल्कि हमारे मुल्क के तमाम बाशिंदों ने हमसे कहा, ‘सफ़र के लिए खाना लेकर उनसे मिलने जाएँ। उनसे बात करें कि हम आपकी खिदमत के लिए हाज़िर हैं। आँ, हमारे साथ मुआहदा करें।’ ¹² हमारी यह रोटी अभी गरम थी जब हम इसे सफ़र के लिए अपने साथ लेकर आपसे मिलने के लिए अपने घरों से रवाना हुए। और अब आप खुद देख सकते हैं कि यह ख़ुरक और टुकड़े टुकड़े हो गई है। ¹³ और मै की इन मशकों की घिसी-फटी हालत देखें। भरते वक़्त यह नई और लचकदार थी। यही हमारे कपड़ों और जूतों की हालत भी है। सफ़र करते करते यह ख़त्म हो गए हैं।”

14 इसराईलियों ने मुसाफिरों का कुछ खाना लिया। अफसोस, उन्होंने रब से हिदायत न माँगी। 15 फिर यशुअ ने उनके साथ सुलह का मुआहदा किया और जमात के राहनुमाओं ने क्रसम खाकर उस की तसदीक की। मुआहदे में इसराईल ने वादा किया कि जिबऊनियों को जीने देगा।

16 तीन दिन गुजरे तो इसराईलियों को पता चला कि जिबऊनी हमारे करीब ही और हमारे इलाके के ऐन बीच में रहते हैं। 17 इसराईली रवाना हुए और तीसरे दिन उनके शहरों के पास पहुँचे जिनके नाम जिबऊन, कफ्रीरा, बैरोत और किरियत-यारीम थे। 18 लेकिन चूँकि जमात के राहनुमाओं ने रब इसराईल के खुदा की क्रसम खाकर उनसे वादा किया था इसलिए उन्होंने जिबऊनियों को हलाक न किया। पूरी जमात राहनुमाओं पर बुडबुडाने लगी, 19 लेकिन उन्होंने जवाब में कहा, “हमने रब इसराईल के खुदा की क्रसम खाकर उनसे वादा किया, और अब हम उन्हें छेड़ नहीं सकते। 20 चुनाँचे हम उन्हें जीने देंगे और वह क्रसम न तोड़ेंगे जो हमने उनके साथ खाई। ऐसा न हो कि अल्लाह का गज़ब हम पर नाज़िल हो जाए। 21 उन्हें जीने दो।” फिर फैसला यह हुआ कि जिबऊनी लकड़हारे और पानी भरनेवाले बनकर पूरी जमात की खिदमत करें। यों इसराईली राहनुमाओं का उनके साथ वादा कायम रहा।

22 यशुअ ने जिबऊनियों को बुलाकर कहा, “तुमने हमें धोका देकर क्यों कहा कि हम आपसे निहायत दूर रहते हैं हालाँकि तुम हमारे इलाके के बीच में ही रहते हो? 23 चुनाँचे अब तुम पर लानत हो। तुम लकड़हारे और पानी भरनेवाले बनकर हमेशा के लिए मेरे खुदा के घर की खिदमत करोगे।”

24 उन्होंने जवाब दिया, “आपके खादिमों को साफ बताया गया था कि रब आपके खुदा ने अपने खादिम मूसा को क्या हुक्म दिया था, कि उसे आपको पूरा मुल्क देना और आपके आगे आगे तमाम बाशिंदों को हलाक करना है। यह सुनकर हम बहुत डर गए कि हमारी जान नहीं बचेगी। इसी लिए हमने यह सब कुछ किया। 25 अब हम आपके हाथ में हैं। हमारे साथ वह कुछ करें जो आपको अच्छा और ठीक लगता है।”

26 चुनाँचे यशुअ ने उन्हें इसराईलियों से बचाया, और उन्होंने जिबऊनियों को हलाक न किया। 27 उसी दिन उसने जिबऊनियों को लकड़हारे और पानी भरनेवाले बना दिया ताकि वह जमात और रब की उस कुरबानगाह की खिदमत करें जिसका मक़ाम रब को अभी चुनना था। और यह लोग आज तक यही कुछ करते हैं।

10

अमोरियों की शिकस्त

1 यरूशलम के बादशाह अदूनी-सिदूक को ख़बर मिली कि यशुअ ने अई पर यों क़ब्ज़ा करके उसे मुकम्मल तौर पर तबाह कर दिया है जिस तरह उसने यरीह और उसके बादशाह के साथ भी किया था। उसे यह इतला भी दी गई कि जिबऊन के बाशिंदे इसराईलियों के साथ सुलह का मुआहदा करके उनके दरमियान रह रहे हैं। 2 यह सुनकर वह और उस की क़ौम निहायत डर गए, क्योंकि जिबऊन बड़ा शहर था। वह अहमियत के लिहाज़ से उन शहरों के बराबर था जिनके बादशाह थे, बल्कि वह अई शहर से भी बड़ा था, और उसके तमाम मर्द बेहतरीन फ़ौजी थे।

3 चुनाँचे यरूशलम के बादशाह अदूनी-सिदूक ने अपने कासिद हबस्न के बादशाह हहाम, यरमूत के बादशाह पीराम, लकीस के बादशाह यफ़ीअ और इज़लून के बादशाह दबीर के पास भेज दिए। 4 पैग़ाम यह था, “आएँ और जिबऊन पर हमला करने में मेरी मदद करें, क्योंकि उसने यशुअ और इसराईलियों के साथ सुलह का मुआहदा कर लिया है।” 5 यरूशलम, हबस्न, यरमूत, लकीस और इज़लून के यह पाँच अमोरी बादशाह मुतहिद हुए। वह अपने तमाम फ़ौजियों को लेकर चल पड़े और जिबऊन का मुहासरा करके उससे जंग करने लगे।

6 उस वक़्त यशुअ ने अपने ख़ैमे जिलजाल में लगाए थे। जिबऊन के लोगों ने उसे पैग़ाम भेज दिया, “अपने खादिमों को तर्क न करें। जल्दी से हमारे पास आकर हमें बचाएँ! हमारी मदद कीजिए, क्योंकि पहाड़ी इलाके के तमाम अमोरी बादशाह हमारे खिलाफ़ मुतहिद हो गए हैं।”

7 यह सुनकर यशुअ अपनी पूरी फ़ौज के साथ जिलजाल से निकला और जिबऊन के लिए रवाना हुआ। उसके बेहतरीन फ़ौजी भी सब उसके साथ थे। 8 रब ने यशुअ से कहा, “उनसे मत डरना, क्योंकि मैं उन्हें तेरे हाथ में कर चुका हूँ। उनमें से एक भी तेरा मुकाबला नहीं करने पाएगा।”

9 और यशुअ ने जिलजाल से सारी रात सफ़र करते करते अचानक दुश्मन पर हमला किया। 10 उस वक़्त रब ने इसराईलियों के देखते देखते दुश्मन में अबतरी पैदा कर दी, और उन्होंने जिबऊन के करीब दुश्मन को जबरदस्त शिकस्त दी। इसराईली बैत-हौरून तक पहुँचानेवाले रास्ते पर अमोरियों का ताक्कुब करते करते उन्हें अज़ीका और मक्केदा तक मौत के घाट उतारते गए। 11 और जब अमोरी इस रास्ते पर अज़ीका की तरफ़ भाग रहे थे तो रब ने आसमान से उन पर बड़े बड़े ओले बरसाए जिन्होंने इसराईलियों की निसबत ज़्यादा दुश्मनों को हलाक कर दिया।

12 उस दिन जब रब ने अमोरियों को इसराईल के हाथ में कर दिया तो यशुअ ने इसराईलियों की मौजूदगी में रब से कहा,

“ऐ सूरज, जिबऊन के ऊपर स्क़ जा!

ऐ चाँद, वादीए-ऐयालोन पर ठहर जा!”

13 तब सूरज स्क़ गया, और चाँद ने आगे हरकत न की। जब तक कि इसराईल ने अपने दुश्मनों से पूरा बदला न ले लिया उस वक़्त तक वह स्के रहे। इस बात का ज़िक्र याशर की किताब में किया गया है। सूरज आसमान के बीच में स्क़ गया और तकरीबन एक पूरे दिन के दौरान ग़ुस्ब न हुआ। 14 यह दिन मुफ़रिद था। रब ने इन्सान की इस तरह की दुआ न कभी इससे पहले, न कभी इसके बाद सुनी। क्योंकि रब खुद इसराईल के लिए लड़ रहा था। 15 इसके बाद यशुअ पूरे इसराईल समेत जिलजाल की ख़ैमागाह में लौट आया।

पाँच अमोरी बादशाहों की गिरफ्तारी

16 लेकिन पाँचों अमोरी बादशाह फरार होकर मक्केदा के एक गार में छुप गए थे। 17 यशुअ को इतला दी गई 18 तो उसने कहा, “कुछ बड़े बड़े पत्थर लुढ़काकर गार का मुँह बंद करना, और कुछ आदमी उस की पहरादारी करें। 19 लेकिन बाकी लोग न स्कें बल्कि दुश्मनों का ताक़ुब करके पीछे से उन्हें मारते जाएँ। उन्हें दुबारा अपने शहरों में दाखिल होने का मौका मत देना, क्योंकि ख आपके खुदा ने उन्हें आपके हाथ में कर दिया है।” 20 चुनौचे यशुअ और बाकी इसराईली उन्हें हलाक करते रहे, और कम ही अपने शहरों की फसील में दाखिल हो सके। 21 इसके बाद पूरी फ़ौज सहीह-सलामत यशुअ के पास मक्केदा की लशकरगाह में वापस पहुँच गई।

अब से किसी में भी इसराईलियों को धमकी देने की ज़रूरत न रही।

22 फिर यशुअ ने कहा, “गार के मुँह को खोलकर यह पाँच बादशाह मेरे पास निकाल लाएँ।” 23 लोग गार को खोलकर यरूशलम, हबर्न, यरमूत, लकीस और इजलून के बादशाहों को यशुअ के पास निकाल लाए। 24 यशुअ ने इसराईल के मर्दों को बुलाकर अपने साथ खड़े फ़ौजी अफसरों से कहा, “इधर आकर अपने पैरों को बादशाहों की गरदनों पर रख दें।” अफसरों ने ऐसा ही किया। 25 फिर यशुअ ने उनसे कहा, “न डरें और न हौसला हारें। मज़बूत और दिलेर हों। ख यही कुछ उन तमाम दुश्मनों के साथ करेगा जिनसे आप लड़ेंगे।” 26 यह कहकर उसने बादशाहों को हलाक करके उनकी लाशें पाँच दरख्तों से लटका दीं। वहाँ वह शाम तक लटकी रहीं। 27 जब सूरज डूबने लगा तो लोगों ने यशुअ के हुक्म पर लाशें उतारकर उस गार में फेंक दीं जिसमें बादशाह छुप गए थे। फिर उन्होंने गार के मुँह को बड़े बड़े पत्थरों से बंद कर दिया। यह पत्थर आज तक वहाँ पड़े हुए हैं।

मज़ीद अमोरी शहरों पर कब्ज़ा

28 उस दिन मक्केदा यशुअ के कब्ज़े में आ गया। उसने पूरे शहर को तलवार से ख के लिए मखसूस करके तबाह कर दिया। बादशाह समेत सब हलाक हुए और एक भी न बचा। शहर के बादशाह के साथ उसने वह सुलूक किया जो उसने यरीह के बादशाह के साथ किया था।

29 फिर यशुअ ने तमाम इसराईलियों के साथ वहाँ से आगे निकलकर लिबना पर हमला किया। 30 ख ने उस शहर और उसके बादशाह को भी इसराईल के हाथ में कर दिया। यशुअ ने तलवार से शहर के तमाम बाशिंदों को हलाक किया, और एक भी न बचा। बादशाह के साथ उसने वही सुलूक किया जो उसने यरीह के बादशाह के साथ किया था।

31 इसके बाद उसने तमाम इसराईलियों के साथ लिबना से आगे बढ़कर लकीस का मुहासरा किया। जब उसने उस पर हमला किया 32 तो ख ने यह शहर उसके बादशाह समेत इसराईल के हाथ में कर दिया। दूसरे दिन वह यशुअ के कब्ज़े में आ गया। शहर के सारे बाशिंदों को उसने तलवार से हलाक किया, जिस तरह कि उसने लिबना के साथ भी किया था। 33 साथ साथ यशुअ ने जज़र के बादशाह हरम और उसके लोगों को भी शिकस्त दी जो लकीस की मदद करने के लिए आए थे। उनमें से एक भी न बचा।

34 फिर यशुअ ने तमाम इसराईलियों के साथ लकीस से आगे बढ़कर इजलून का मुहासरा कर लिया। उसी दिन उन्होंने उस पर हमला करके 35 उस पर कब्ज़ा कर लिया। जिस तरह लकीस के साथ हुआ उसी तरह इजलून के साथ भी किया गया यानी शहर के तमाम बाशिंदे तलवार से हलाक हुए।

36 इसके बाद यशुअ ने तमाम इसराईलियों के साथ इजलून से आगे बढ़कर हबर्न पर हमला किया। 37 शहर पर कब्ज़ा करके उन्होंने बादशाह, ईर्दगिर्द की आबादियाँ और बाशिंदे सबके सब तहे-तेग कर दिए। कोई न बचा। इजलून की तरह उन्होंने उसे पूरे तौर पर तमाम बाशिंदों समेत ख के लिए मखसूस करके तबाह कर दिया।

38 फिर यशुअ तमाम इसराईलियों के साथ मुडकर दबीर की तरफ बढ़ गया। उस पर हमला करके 39 उसने शहर, उसके बादशाह और ईर्दगिर्द की आबादियों पर कब्ज़ा कर लिया। सबको नेस्त कर दिया गया, एक भी न बचा। यों दबीर के साथ वह कुछ हुआ जो पहले हबर्न और लिबना उसके बादशाह समेत हुआ था।

40 इस तरह यशुअ ने जुनूबी कनान के तमाम बादशाहों को शिकस्त देकर उनके पूरे मुल्क पर कब्ज़ा कर लिया यानी मुल्क के पहाड़ी इलाके पर, जुनूब के दशते-नजब पर, मगरिब के नशेबी पहाड़ी इलाके पर और वादीए-यरदन के मगरिब में वाके पहाड़ी ढलानों पर। उसने किसी को भी बचने न दिया बल्कि हर जानदार को ख के लिए मखसूस करके हलाक कर दिया। यह सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा ख इसराईल के खुदा ने हुक्म दिया था।

41 यशुअ ने उन्हें कादिस-बरनीअ से लेकर गज्जा तक और जुशन के पूरे इलाके से लेकर जिबऊन तक शिकस्त दी। 42 इन तमाम बादशाहों और उनके ममालिक पर यशुअ ने एक ही वक्त फतह पाई, क्योंकि इसराईल का खुदा इसराईल के लिए लड़ा।

43 इसके बाद यशुअ तमाम इसराईलियों के साथ जिलजाल की खैमागाह में लौट आया।

11

शिमाली इत्तहादियों पर फतह

1 जब हसूर के बादशाह याबीन को इन वाकियात की खबर मिली तो उसने मदून के बादशाह यूबाब और सिमरोन और अकशाफ के बादशाहों को पैगाम भेजे। 2 इसके अलावा उसने उन बादशाहों को पैगाम भेजे जो शिमाल में थे यानी शिमाली पहाड़ी इलाके में, वादीए-यरदन के उस हिस्से में जो किन्नरत यानी गलील के जुनूब में हैं, मगरिब के नशेबी पहाड़ी इलाके में, मगरिब में वाके नाफत-दोर में 3 और कनान के मशरिक

और मगरिब में। याबीन ने अमोरियों, हितियों, फरिजियों, पहाड़ी इलाके के यबूसियों और हरमून पहाड़ के दामन में वाके मुल्के-मिसफाह के हिब्वियों को भी पैगाम भेजे।

4 चुनौचे यह अपनी तमाम फौजों को लेकर जंग के लिए निकले। उनके आदमी समुंद्र के साहिल की रेत की मानिंद बेशुमार थे। उनके पास मुतअदिद घोड़े और रथ भी थे। 5 इन तमाम बादशाहों ने इसराईल से लड़ने के लिए मुतहिद होकर अपने खैमे मरूम के चश्मे पर लगा दिए।

6 रब ने यशुअ से कहा, “उनसे मत डरना, क्योंकि कल इसी वक्त तक मैंने उन सबको हलाक करके इसराईल के हवाले कर दिया होगा। तुझे उनके घोड़ों की कोंचों को काटना और उनके रथों को जला देना है।”

7 चुनौचे यशुअ अपने तमाम फौजियों को लेकर मरूम के चश्मे पर आया और अचानक दुश्मन पर हमला किया। 8 और रब ने दुश्मनों को इसराईलियों के हवाले कर दिया। इसराईलियों ने उन्हें शिकस्त दी और उनका ताक्कुब करते करते शिमाल में बड़े शहर सैदा और मिस्रफात-मायम तक जा पहुँचे। इसी तरह उन्होंने मशरिक में वादीए-मिसफाह तक भी उनका ताक्कुब किया। आखिर में एक भी न बचा। 9 रब की हिदायत के मुताबिक यशुअ ने दुश्मन के घोड़ों की कोंचों को कटवाकर उसके रथों को जला दिया।

शिमाली कनान पर कब्ज़ा

10 फिर यशुअ वापस आया और हसूर को अपने कब्ज़े में ले लिया। हसूर उन तमाम बादशाहतों का सदर मक़ाम था जिन्हें उन्होंने शिकस्त दी थी। इसराईलियों ने शहर के बादशाह को मार दिया 11 और शहर के हर जानदार को अल्लाह के हवाले करके हलाक कर दिया। एक भी न बचा। फिर यशुअ ने शहर को जला दिया।

12 इसी तरह यशुअ ने उन बाक़ी बादशाहों के शहरों पर भी कब्ज़ा कर लिया जो इसराईल के खिलाफ़ मुतहिद हो गए थे। हर शहर को उसने रब के खादिम मूसा के हुक्म के मुताबिक़ तबाह कर दिया। बादशाहों समेत सब कुछ नेस्त कर दिया गया। 13 लेकिन यशुअ ने सिर्फ़ हसूर को जलाया। पहाड़ियों पर के बाक़ी शहरों को उसने रहने दिया। 14 लूट का जो भी माल जानवरों समेत उनमें पाया गया उसे इसराईलियों ने अपने पास रख लिया। लेकिन तमाम बाशिंदों को उन्होंने मार डाला और एक भी न बचने दिया। 15 क्योंकि रब ने अपने खादिम मूसा को यही हुक्म दिया था, और यशुअ ने सब कुछ वैसे ही किया जैसे रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

16 यों यशुअ ने पूरे कनान पर कब्ज़ा कर लिया। इसमें पहाड़ी इलाक़ा, पूरा दशते-नजब, जुशन का पूरा इलाक़ा, मगरिब का नशेबी पहाड़ी इलाक़ा, वादीए-यरदन और इसराईल के पहाड़ उनके दामन की पहाड़ियों समेत शामिल थे। 17 अब यशुअ की पहुँच जुनूब में सईर की तरफ़ बढ़नेवाले पहाड़ खलक से लेकर लुबनान के मैदानी इलाके के शहर बाल-जद तक थी जो हरमून पहाड़ के दामन में था। यशुअ ने इन इलाकों के तमाम बादशाहों को पकड़कर मार डाला। 18 लेकिन इन बादशाहों से जंग करने में बहुत वक्त लगा, 19 क्योंकि ज़िबऊन में रहनेवाले हिब्वियों के अलावा किसी भी शहर ने इसराईलियों से सुलह न की। इसलिए इसराईल को उन सब पर जंग करके ही कब्ज़ा करना पड़ा। 20 रब ही ने उन्हें अकड़ने दिया था ताकि वह इसराईल से जंग करें और उन पर रहम न किया जाए बल्कि उन्हें पूरे तौर पर रब के हवाले करके हलाक किया जाए। लाज़िम था कि उन्हें यों नेस्तो-नाबूद किया जाए जिस तरह रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

21 उस वक्त यशुअ ने उन तमाम अनाकियों को हलाक कर दिया जो हबस्न, दबीर, अनाब और उन तमाम जगहों में रहते थे जो यहूदाह और इसराईल के पहाड़ी इलाके में थीं। उसने उन सबको उनके शहरों समेत अल्लाह के हवाले करके तबाह कर दिया। 22 इसराईल के पूरे इलाके में अनाकियों में से एक भी न बचा। सिर्फ़ गज़ज़ा, जात और अशदूद में कुछ ज़िंदा रहे।

23 गरज़ यशुअ ने पूरे मुल्क पर यों कब्ज़ा किया जिस तरह रब ने मूसा को बताया था। फिर उसने उसे कबीलों में तकसीम करके इसराईल को मीरास में दे दिया। जंग ख़त्म हुई, और मुल्क में अमनो-अमान कायम हो गया।

12

मूसा की फ़तूहात का खुलासा

1 दर्जे-ज़ैल दरियाए-यरदन के मशरिक में उन बादशाहों की फ़हरिस्त है जिन्हें इसराईलियों ने शिकस्त दी थी और जिनके इलाके पर उन्होंने कब्ज़ा किया था। यह इलाक़ा जुनूब में वादीए-अरनोन से लेकर शिमाल में हरमून पहाड़ तक था, और उसमें वादीए-यरदन का पूरा मशरिकी हिस्सा शामिल था।

2 पहले का नाम सीहोन था। वह अमोरियों का बादशाह था और उसका दास्त-हुक्मत हसबोन था। अरोईर शहर यानी वादीए-अरनोन के दरमियान से लेकर अम्मोनियों की सरहद दरियाए-यब्बोक तक सारा इलाक़ा उस की गिरिफ़्त में था। इसमें जिलियाद का आधा हिस्सा भी शामिल था। 3 इसके अलावा सीहोन का कब्ज़ा दरियाए-यरदन के पूरे मशरिकी किनारे पर किन्नरत यानी गलील की झील से लेकर बहीराए-मुरदार के पास शहर बैत-यसीमोत तक बल्कि उसके जुनूब में पहाड़ी सिलसिले पिसगा के दामन तक था।

4 दूसरा बादशाह जिसने शिकस्त खाई थी बसन का बादशाह ओज था। वह रफ़ाइयों के देवकामत कबीले में से बाक़ी रह गया था, और उस की हुक्मत के मरकज़ अस्तारात और इदरई थे। 5 शिमाल में उस की सलतनत की सरहद हरमून पहाड़ थी और मशरिक में सलका शहर। बसन का तमाम इलाक़ा जसूरियों और माकातियों की सरहद तक उसके हाथ में था और इसी तरह जिलियाद का शिमाली हिस्सा बादशाह सीहोन की सरहद तक।

6 इसराईल ने रब के खादिम मूसा की राहनुमाई में इन दो बादशाहों पर फतह पाई थी, और मूसा ने यह इलाका रुबिन, जद और मनस्सी के आधे कबीले के सुर्द किया था।

यशुअ की फुतूहात का खुलासा

7 दर्जे-जैल दरियाए-यरदन के मगरिब के उन बादशाहों की फहरिस्त है जिन्हें इसराईलियों ने यशुअ की राहनुमाई में शिकस्त दी थी और जिनकी सलतनत वादीए-लुबनान के शहर बाल-जद से लेकर सईर की तरफ बढ़नेवाले पहाड़ खलक तक थी। बाद में यशुअ ने यह सारा मुल्क इसराईल के कबीलों में तकसीम करके उन्हें मीरास में दे दिया 8 यानी पहाड़ी इलाका, मगरिब का नशेबी पहाड़ी इलाका, यरदन की वादी, उसके मगरिब में वाके पहाड़ी ढलानें, यहदाह का रेगिस्तान और दशते-नजब। पहले यह सब कुछ हितियों, अमोरियों, कनानियों, फरिज्जियों, हिवियों और यबूसियों के हाथ में था। जैल के हर शहर का अपना बादशाह था, और हर एक ने शिकस्त खाई : 9 यरीह, अई नज्द बैतेल, 10 यरूशलम, हबर्न, 11 यरमूत, लकीस, 12 इजलून, जज़र, 13 दबीर, जिदर, 14 हरमा, अराद, 15 लिबना, अदुल्लाम, 16 मक्केदा, बैतेल, 17 तप्फुअह, हिफर, 18 अफीक, लश्शरून, 19 मदून, हसूर, 20 सिमरोन-मरोन, अकशाफ, 21 तानक, मजिदो, 22 कादिस, करमिल का युक्नियाम, 23 नाफत-दोर में वाके दोर, जिलजाल का गोयम 24 और तिरज़ा। बादशाहों की कुल तादाद 31 थी।

13

कनान के बाकी इलाकों पर कब्ज़ा करने का हुक्म

1 जब यशुअ बढ़ा था तो रब ने उससे कहा, “तू बहुत बढ़ा हो चुका है, लेकिन अभी काफी कुछ बाकी रह गया है जिस पर कब्ज़ा करने की ज़रूरत है। 2-3 इसमें फिलिस्तियों के तमाम इलाके उनके शाही शहरों गज़ज़ा, अशदूद, अस्कलून, जात और अकरून समेत शामिल हैं और इसी तरह जसूर का इलाका जिसकी जुनूबी सरहद वादीए-सैहर है जो मिसर के मशरिक में है और जिसकी शिमाली सरहद अकरून है। उसे भी मुल्के-कनान का हिस्सा करार दिया जाता है। अरवियों का इलाका भी 4 जो जुनूब में है अब तक इसराईल के कब्ज़े में नहीं आया। यही बात शिमाल पर भी सादिक आती है। सैदानियों के शहर मआरा से लेकर अफीक शहर और अमोरियों की सरहद तक सब कुछ अब तक इसराईल की हुक्मत से बाहर है। 5 इसके अलावा जबलियों का मुल्क और मशरिक में पूरा लुबनान हरमून पहाड़ के दामन में बाल-जद से लेकर लबो-हमात तक बाक़ी रह गया है। 6 इसमें उन सैदानियों का तमाम इलाका भी शामिल है जो लुबनान के पहाड़ों और मिस्रफात-मायम के दरमियान के पहाड़ी इलाके में आबाद हैं। इसराईलियों के बढ़ते बढ़ते मैं खुद ही इन लोगों को उनके सामने से निकाल दूंगा। लेकिन लाज़िम है कि तू कुरा डालकर यह पूरा मुल्क मेरे हुक्म के मुताबिक इसराईलियों में तकसीम करे। 7 उसे नौ बाकी कबीलों और मनस्सी के आधे कबीले को विरासत में दे दे।”

यरदन के मशरिक में मुल्क की तकसीम

8 रब का खादिम मूसा रुबिन, जद और मनस्सी के बाकी आधे कबीले को दरियाए-यरदन का मशरिकी इलाका दे चुका था। 9-10 यों हसबोन के अमोरी बादशाह सीहोन के तमाम शहर उनके कब्ज़े में आ गए थे यानी जुनूबी वादीए-अरनोन के किनारे पर शहर अरोईर और उसी वादी के बीच के शहर से लेकर शिमाल में अम्मोनियों की सरहद तक। दीबोन और मीदबा के दरमियान का मैदान-मुरतफा भी इसमें शामिल था 11 और इसी तरह जिलियाद, जसूरियों और माकातियों का इलाका, हरमून का पहाड़ी इलाका और सलका शहर तक बसन का सारा इलाका भी।

12 पहले यह सारा इलाका बसन के बादशाह ओज के कब्ज़े में था जिसकी हुक्मत के मरकज़ अस्तारात और इदरई थे। रफाइयों के देवक्रामत कबीले से सिर्फ ओज बाक़ी रह गया था। मूसा की राहनुमाई के तहत इसराईलियों ने उस इलाके पर फतह पाकर तमाम बाशिंदों को निकाल दिया था। 13 सिर्फ जसूरी और माकाती बाक़ी रह गए थे, और यह आज तक इसराईलियों के दरमियान रहते हैं।

14 सिर्फ लावी के कबीले को कोई ज़मीन न मिली, क्योंकि उनका मौस्सी हिस्सा जलनेवाली वह कुरबानियाँ हैं जो रब इसराईल के खुदा के लिए चढ़ाई जाती हैं। रब ने यही कुछ मूसा को बताया था।

रुबिन का कबायली इलाका

15 मूसा ने रुबिन के कबीले को उसके कुंभों के मुताबिक जैल का इलाका दिया। 16 वादीए-अरनोन के किनारे पर शहर अरोईर और उसी वादी के बीच के शहर से लेकर मीदबा 17 और हसबोन तक। वहाँ के मैदान-मुरतफा पर वाके तमाम शहर भी रुबिन के सुर्द किए गए यानी दीबोन, बामात-बाल, बैत-बाल-मऊन, 18 यहज़, कदीमात, मिफात, 19 किरियतायम, सिबमाह, जिरतुस-सहर जो बहीराए-मुरदार के मशरिक में वाके पहाड़ी इलाके में है, 20 बैत-फ़ाज़, पिसगा के पहाड़ी सिलसिले पर मौजूद आबादियाँ और बैत-यसीमोत। 21 मैदान-मुरतफा के तमाम शहर रुबिन के कबीले को दिए गए यानी अमोरियों के बादशाह सीहोन की पूरी बादशाही जिसका दास्त-हुक्मत हसबोन शहर था। मूसा ने सीहोन को मार डाला था और उसके साथ पाँच मिदियानी रईसों को भी जिन्हें सीहोन ने अपने मुल्क में मुकर्रर किया था। इन रईसों के नाम इवी, रकम, सूर, हर और रबा थे। 22 जिन लोगों को उस वक्त मारा गया उनमें से बिलाम बिन बओर भी था जो गैबदान था। 23 रुबिन के कबीले की मगरिबी सरहद दरियाए-यरदन थी। यही शहर और आबादियाँ रुबिन के कबीले को उसके कुंभों के मुताबिक दी गई, और वह उस की मीरास ठहरी।

जद के कबीले का इलाका

24 मूसा ने जद के कबीले को उसके कुंभों के मुताबिक जैल का इलाका दिया। 25 याज़ेर का इलाका, जिलियाद के तमाम शहर, अम्मोनियों का आधा हिस्सा रब्बा के करीब शहर अरोईर तक 26-27 और हसबोन के बादशाह सीहोन की बादशाही का बाक़ी शिमाली हिस्सा यानी हसबोन, रामतुल-मिसफ़ाह और बतूनीम के दरमियान का इलाका और महनायम और दबीर के दरमियान का इलाका। इसके अलावा जद को वादीए-यरदन का वह मशरिकी हिस्सा भी मिल गया जो बैत-हारम, बैत-निमरा, सुक्कात और सफ़ोन पर मुश्तमिल था। यों उस की शिमाली सरहद किन्नरत यानी गलील की झील का जुनूबी किनारा था। 28 यही शहर और आबादियाँ जद के कबीले को उसके कुंभों के मुताबिक दी गईं, और वह उस की मीरास ठहरा।

मनस्सी के मशरिकी हिस्से का इलाका

29 जो इलाका मूसा ने मनस्सी के आधे हिस्से को उसके कुंभों के मुताबिक दिया था 30 वह महनायम से लेकर शिमाल में ओज बादशाह की तमाम बादशाही पर मुश्तमिल था। उसमें मुल्के-बसन और वह 60 आबादियाँ शामिल थीं जिन पर याईर ने फ़तह पाई थी। 31 जिलियाद का आधा हिस्सा ओज की हुक्मत के दो मराकिज़ अस्तारात और इदरई समेत मकीर बिन मनस्सी की औलाद को उसके कुंभों के मुताबिक दिया गया। 32 मूसा ने इन मौस्सी ज़मीनों की तकसीम उस वक़्त की थी जब वह दरियाए-यरदन के मशरिक में मोआब के मैदानी इलाके में यरीह शहर के मुकाबिल था।

33 लेकिन लावी को मूसा से कोई मौस्सी ज़मीन नहीं मिली थी, क्योंकि रब इसराईल का खुदा उनका मौस्सी हिस्सा है जिस तरह उसने उनसे वादा किया था।

14

कनान की तकसीम

1 इसराईल के बाक़ी साठे नौ कबीलों को दरियाए-यरदन के मगरिब में यानी मुल्के-कनान में ज़मीन मिल गई। इसके लिए इलियज़र इमाम, यशुअ बिन नून और कबीलों के आबाई घरानों के सरबराहों ने 2 कुरा डालकर मुक़रर किया कि हर कबीले को कौन कौन-सा इलाका मिल जाए। यों वैसा ही हुआ जिस तरह रब ने मूसा को हुक्म दिया था। 3-4 मूसा अढ़ाई कबीलों को उनकी मौस्सी ज़मीन दरियाए-यरदन के मशरिक में दे चुका था, क्योंकि यूसुफ़ की औलाद के दो कबीले मनस्सी और इफ़राईम वुजूद में आए थे। लेकिन लावियों को उनके दरमियान ज़मीन न मिली। इसराईलियों ने लावियों को ज़मीन न दी बल्कि उन्हें सिर्फ़ रिहाइश के लिए शहर और रेवड़ों के लिए चरागाहें दीं। 5 यों उन्होंने ज़मीन को उन्हीं हिदायात के मुताबिक तकसीम किया जो रब ने मूसा को दी थी।

कालिब हबस्न पाने की गुज़ारिश करता है

6 जिलजाल में यहदाह के कबीले के मर्द यशुअ के पास आए। यफ़ुन्ना कनिज्ज़ी का बेटा कालिब भी उनके साथ था। उसने यशुअ से कहा, “आपको याद है कि रब ने मर्दे-खुदा मूसा से आपके और मेरे बारे में क्या कुछ कहा जब हम कादिस-बरनीअ में थे। 7 मैं 40 साल का था जब रब के खादिम मूसा ने मुझे मुल्के-कनान का जायज़ा लेने के लिए कादिस-बरनीअ से भेज दिया। जब वापस आया तो मैंने मूसा को दियानतदारी से सब कुछ बताया जो देखा था। 8 अफ़सोस कि जो भाई मेरे साथ गए थे उन्होंने लोगों को डराया। लेकिन मैं रब अपने खुदा का वफ़ादार रहा। 9 उस दिन मूसा ने कसम खाकर मुझसे वादा किया, ‘जिस ज़मीन पर तेरे पाँव चले हैं वह हमेशा तक तेरी और तेरी औलाद की विरासत में रहेगी। क्योंकि तू रब मेरे खुदा का वफ़ादार रहा है।’ 10 और अब ऐसा ही हुआ है जिस तरह रब ने वादा किया था। उसने मुझे अब तक ज़िंदा रहने दिया है। रब को मूसा से यह बात किए 45 साल गुज़र गए हैं। उस सारे अरसे में हम रेगिस्तान में घुमते-फिरते रहे हैं। आज मैं 85 साल का हूँ, 11 और अब तक उतना ही ताक़तवर हूँ जितना कि उस वक़्त था जब मैं जासूस था। अब तक मेरी बाहर निकलने और जंग करने की वही कुव्वत कायम है। 12 अब मुझे वह पहाड़ी इलाका दे दें जिसका वादा रब ने उस दिन मुझसे किया था। आपने खुद सुना है कि अनाक़ी वहाँ बड़े क़िलाबंद शहरों में बसते हैं। लेकिन शायद रब मेरे साथ हो और मैं उन्हें निकाल दूँ जिस तरह उसने फ़रमाया है।”

13 तब यशुअ ने कालिब बिन यफ़ुन्ना को बरकत देकर उसे विरासत में हबस्न दे दिया। 14-15 पहले हबस्न किरियत-अरबा यानी अरबा का शहर कहलाता था। अरबा अनाक़ियों का सबसे बड़ा आदमी था। आज तक यह शहर कालिब की औलाद की मिलकियत रही है। वजह यह है कि कालिब रब इसराईल के खुदा का वफ़ादार रहा। फिर जंग ख़त्म हुई, और मुल्क में अमनो-अमान कायम हो गया।

15

यहदाह की सरहदें

1 जब इसराईलियों ने कुरा डालकर मुल्क को तकसीम किया तो यहदाह के कबीले को उसके कुंभों के मुताबिक कनान का जुनूबी हिस्सा मिल गया। इस इलाके की सरहद मुल्के-अदोम और इंतहाई जुनूब में सीन का रेगिस्तान था।

2 यहदाह की जुनूबी सरहद बहीराए-मुरदार के जुनूबी सिरे से शुरू होकर 3 जुनूब की तरफ़ चलती चलती दर्राए-अक्रब्बीम पहुँच गई। वहाँ से वह सीन की तरफ़ जारी हुई और कादिस-बरनीअ के जुनूब में से आगे निकलकर हसरोन तक पहुँच गई। हसरोन से वह अद्वार की तरफ़ चढ़

गई और फिर करका की तरफ मुड़ी। ⁴ इसके बाद वह अजमून से होकर मिसर की सरहद पर वाके वादीए-मिसर तक पहुँच गई जिसके साथ साथ चलती हुई वह समुंदर पर खत्म हुई। यह यहदाह की जुनूबी सरहद थी।

⁵ मशरिफ में उस की सरहद बहीराए-मुरदार के साथ साथ चलकर वहाँ खत्म हुई जहाँ दरियाए-यरदन बहीराए-मुरदार में बहता है।

यहदाह की शिमाली सरहद यहीं से शुरू होकर ⁶ बैत-हुजलाह की तरफ चढ़ गई, फिर बैत-अराबा के शिमाल में से गुजरकर रुबिन के बेटे बोहन के पत्थर तक पहुँच गई। ⁷ वहाँ से सरहद वादीए-अकूर में उतर गई और फिर दुबारा दबीर की तरफ चढ़ गई। दबीर से वह शिमाल यानी जिलजाल की तरफ जो दर्राए-अदुम्मीम के मुकाबिल है मुड़ गई (यह दर्रा वादी के जुनूब में है)। यों वह चलती चलती शिमाली सरहद ऐन-शम्स और ऐन-राजिल तक पहुँच गई। ⁸ वहाँ से वह वादीए-बिन-हिन्मू में से गुजरती हुई यबूसियों के शहर यरूशलम के जुनूब में से आगे निकल गई और फिर उस पहाड़ पर चढ़ गई जो वादीए-बिन-हिन्मू के मगरिब और मैदाने-रफाईम के शिमाली किनारे पर है। ⁹ वहाँ सरहद मुड़कर चश्मा बनाम निफतूह की तरफ बढ़ गई और फिर पहाड़ी इलाके इफरोन के शहरों के पास से गुजरकर बाला यानी किरियत-यारीम तक पहुँच गई। ¹⁰ बाला से मुड़कर यहदाह की यह सरहद मगरिब में सईर के पहाड़ी इलाके की तरफ बढ़ गई और यारीम पहाड़ यानी कसलून के शिमाली दामन के साथ साथ चलकर बैत-शम्स की तरफ उतरकर तिमनत पहुँच गई। ¹¹ वहाँ से वह अकरून के शिमाल में से गुजर गई और फिर मुड़कर सिक्करून और बाला पहाड़ की तरफ बढ़कर यबनियेल पहुँच गई। वहाँ यह शिमाली सरहद समुंदर पर खत्म हुई।

¹² समुंदर मुल्के-यहदाह की मगरिबी सरहद थी। यही वह इलाका था जो यहदाह के कबीले को उसके खानदानों के मुताबिक मिल गया।

हबस्न और दबीर पर फतह

¹³ रब के हुक्म के मुताबिक यशुअ ने कालिब बिन यफुन्ना को उसका हिस्सा यहदाह में दे दिया। वहाँ उसे हबस्न शहर मिल गया। उस वक्तर उसका नाम किरियत-अरबा था (अरबा अनाक का बाप था)। ¹⁴ हबस्न में तीन अनाकी बनाम सीसी, अखीमान और तलमी अपने घरानों समेत रहते थे। कालिब ने तीनों को हबस्न से निकाल दिया। ¹⁵ फिर वह आगे दबीर के बाशिंदों से लड़ने चला गया। दबीर का पुराना नाम किरियत-सिफर था। ¹⁶ कालिब ने कहा, “जो किरियत-सिफर पर फतह पाकर कब्जा करेगा उसके साथ मैं अपनी बेटी अकसा का रिश्ता बाँधूँगा।” ¹⁷ कालिब के भाई गुतनियेल बिन कनज़ ने शहर पर कब्जा कर लिया। चुनाँचे कालिब ने उसके साथ अपनी बेटी अकसा की शादी कर दी।

¹⁸ जब अकसा गुतनियेल के हाँ जा रही थी तो उसने उसे उभारा कि वह कालिब से कोई खेत पाने की दरखास्त करे। अचानक वह गधे से उतर गई। कालिब ने पूछा, “क्या बात है?” ¹⁹ अकसा ने जवाब दिया, “जहेज़ के लिए मुझे एक चीज़ से नवाज़ें। आपने मुझे दशते-नजब में ज़मीन दे दी है। अब मुझे चश्मे भी दे दीजिए।” चुनाँचे कालिब ने उसे अपनी मिलकियत में से ऊपर और नीचेवाले चश्मे भी दे दिए।

यहदाह के कबीले के शहर

²⁰ जो मौरूसी ज़मीन यहदाह के कबीले को उसके कुंभों के मुताबिक मिली ²¹ उसमें ज़ैल के शहर शामिल थे। जुनूब में मुल्के-अदोम की सरहद की तरफ यह शहर थे : कबज़ियेल, इदर, यज़ूर, ²² कीना, दीमूना, अदअदा, ²³ कादिस, हसूर, इतनान, ²⁴ जीफ, तलम, बालोत, ²⁵ हसूर-हदत्ता, करियोत-हसरोन यानी हसूर, ²⁶ अमाम, समा, मोलादा, ²⁷ हसार-जड़ा, हिशमोन, बैत-फलत, ²⁸ हसार-सुआल, बैर-सबा, बिजयोतियाह, ²⁹ बाला, इय्यीम, अज़म, ³⁰ इलतोलद, कसील, हरमा, ³¹ सिकलाज, मदमन्ना, सनसन्ना, ³² लबाओत, सिलहीम, ऐन और रिम्मोन। इन शहरों की तादाद ²⁹ थी। हर शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं।

³³ मगरिब के नशेबी पहाड़ी इलाके में यह शहर थे : इस्ताल, सुरआ, अस्मा, ³⁴ जनूह, ऐन-जन्नीम, तप्फुअह, ऐनाम, ³⁵ यरमूत, अदुल्लाम, सोका, अज़ीका, ³⁶ शौरेम, अदितैम और जदीरा यानी जदीरतैम। इन शहरों की तादाद ¹⁴ थी। हर शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं।

³⁷ इनके अलावा यह शहर भी थे : जनान, हदाशा, मिजदल-जद, ³⁸ दिलान, मिसफाह, युक्तियेल, ³⁹ लकीस, बसकत, इजलून, ⁴⁰ कब्बून, लहमास, कितलीस, ⁴¹ जदीरोत, बैत-दज़ून, नामा और मक्केदा। इन शहरों की तादाद ¹⁶ थी। हर शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं।

⁴² इस इलाके में यह शहर भी थे : लिबना, इतर, असन, ⁴³ यिफताह, अस्मा, नसीब, ⁴⁴ कईला, अकज़ीब और मरेसा। इन शहरों की तादाद ⁹ थी। हर शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं।

⁴⁵ इनके अलावा यह शहर भी थे : अकरून उसके गिर्दो-नवाह की आबादियों और देहातों समेत, ⁴⁶ फिर अकरून से लेकर मगरिब की तरफ अशदूद तक तमाम कसबे और आबादियाँ। ⁴⁷ अशदूद खुद भी उसके गिर्दो-नवाह की आबादियों और देहातों समेत इसमें शामिल था और इसी तरह गज़्ज़ा उसके गिर्दो-नवाह की आबादियों और देहातों समेत यानी तमाम आबादियाँ मिसर की सरहद पर वाके वादीए-मिसर और समुंदर के साहिल तक।

⁴⁸ पहाड़ी इलाके के यह शहर यहदाह के कबीले के थे : समीर, यत्तीर, सोका, ⁴⁹ दन्ना, किरियत-सन्ना यानी दबीर, ⁵⁰ अनाब, इस्तमोह, अनीम, ⁵¹ जुशन, हौलून और जिलोह। इन शहरों की तादाद ¹¹ थी, और उनके गिर्दो-नवाह की आबादियाँ भी उनके साथ गिनी जाती थीं।

⁵² इनके अलावा यह शहर भी थे : अराब, दूमा, इशआन, ⁵³ यनूम, बैत-तप्फुअह, अफ्रीका, ⁵⁴ हुमता, किरियत-अरबा यानी हबस्न और सीऊर। इन शहरों की तादाद ⁹ थी। हर शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ उसमें गिनी जाती थीं।

55 इनके अलावा यह शहर भी थे : मऊन, करमिल, जीफ, यूता, 56 यज़्रएल, युक्दियाम, ज़नूह, 57 कैन, जिबिया और तिमनत। इन शहरों की तादाद 10 थी। हर शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं।

58 इनके अलावा यह शहर भी थे : हलहल, बैत-सूर, जदूर, 59 मारात, बैत-अनोत और इलतकोन। इन शहरों की तादाद 6 थी। हर शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं।

60 फिर किरियत-बाल यानी किरियत-यारीम और रब्बा भी यहदाह के पहाड़ी इलाके में शामिल थे। हर शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं।

61 रेगिस्तान में यह शहर यहदाह के कबीले के थे : बैत-अराबा, मिदीन, सकाका, 62 निबसान, नमक का शहर और ऐन-जदी। इन शहरों की तादाद 6 थी। हर शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं।

63 लेकिन यहदाह का कबीला यबूसियों को यरूशलम से निकालने में नाकाम रहा। इसलिए उनकी औलाद आज तक यहदाह के कबीले के दरमियान रहती है।

16

इफराईम और मनस्सी की जुनूबी सरहद

1 कुरा डालने से यूसुफ की औलाद का इलाका मुकर्रर किया गया। उस की सरहद यरीह के करीब दरियाए-यरदन से शुरू हुई, शहर के मशरिक में चर्मों के पास से गुज़री और रेगिस्तान में से चलती चलती बैतेल के पहाड़ी इलाके तक पहुँची। 2 लूज़ यानी बैतेल से आगे निकलकर वह अरकियों के इलाके में अतारात पहुँची। 3 वहाँ से वह मगरिब की तरफ उतरती उतरती यफलीतियों के इलाके में दाखिल हुई जहाँ वह नशेबी बैत-हौरून में से गुज़रकर जज़र के पीछे समुंदर पर खत्म हुई। 4 यह उस इलाके की जुनूबी सरहद थी जो यूसुफ की औलाद इफराईम और मनस्सी के कबीलों को विरासत में दिया गया।

इफराईम का इलाका

5 इफराईम के कबीले को उसके कुंभों के मुताबिक यह इलाका मिल गया : उस की जुनूबी सरहद अतारात-अझर और बालाई बैत-हौरून से होकर 6-8 समुंदर पर खत्म हुई। उस की शिमाली सरहद मगरिब में समुंदर से शुरू हुई और काना नदी के साथ चलती चलती तफ़फ़ुअह तक पहुँची। वहाँ से वह शिमाल की तरफ मुड़ी और मिक्मताह तक पहुँचकर दुबारा मशरिक की तरफ चलने लगी। फिर वह तानत-सैला से होकर यानूह पहुँची। मशरिकी सरहद शिमाल में यानूह से शुरू हुई और अतारात से होकर दरियाए-यरदन के मगरिबी किनारे तक उतरी और फिर किनारे के साथ जुनूब की तरफ चलती चलती नारा और इसके बाद यरीह पहुँची। वहाँ वह दरियाए-यरदन पर खत्म हुई। यही इफराईम और उसके कुंभों की सरहदें थीं।

9 इसके अलावा कुछ शहर और उनके गिर्दो-नवाह की आबादियाँ इफराईम के लिए मुकर्रर की गईं जो मनस्सी के इलाके में थीं। 10 इफराईम के मर्दों ने जज़र में आबाद कनानियों को न निकाला। इसलिए उनकी औलाद आज तक वहाँ रहती है, अलबत्ता उसे बेगार में काम करना पड़ता है।

17

मनस्सी का इलाका

1 यूसुफ के पहलौठे मनस्सी की औलाद को दो इलाके मिल गए। दरियाए-यरदन के मशरिक में मकीर के घराने को जिलियाद और बसन दिए गए। मकीर मनस्सी का पहलौठा और जिलियाद का बाप था, और उस की औलाद माहिर फ़ौजी थी। 2 अब कुरा डालने से दरियाए-यरदन के मगरिब में वह इलाका मुकर्रर किया गया जहाँ मनस्सी के बाकी बेटों की औलाद को आबाद होना था। इनके छः कुंभे थे जिनके नाम अबियज़र, खलक, असरियेल, सिकम, हिफर और समीदा थे।

3 सिलाफ़िहाद बिन हिफर बिन जिलियाद बिन मकीर बिन मनस्सी के बेटे नहीं थे बल्कि सिर्फ़ बेटियाँ। उनके नाम महलाह, नुआह, हुजलाह, मिलकाह और तिरज़ा थे। 4 यह खवातीन इलियज़र इमाम, यशुअ बिन नून और क्रौम के बुजुर्गों के पास आई और कहने लगी, “रब ने मूसा को हुक्म दिया था कि वह हमें भी कबायली इलाके का कोई हिस्सा दे।” यशुअ ने रब का हुक्म मानकर न सिर्फ़ मनस्सी की नरीना औलाद को ज़मीन दी बल्कि उन्हें भी। 5 नतीजे में मनस्सी के कबीले को दरियाए-यरदन के मगरिब में ज़मीन के दस हिस्से मिल गए और मशरिक में जिलियाद और बसन। 6 मगरिब में न सिर्फ़ मनस्सी की नरीना औलाद के खानदानों को ज़मीन मिली बल्कि बेटियों के खानदानों को भी। इसके बरअक्स मशरिक में जिलियाद की ज़मीन सिर्फ़ नरीना औलाद में तकसीम की गई।

7 मनस्सी के कबीले के इलाके की सरहद आशर से शुरू हुई और सिकम के मशरिक में वाके मिक्मताह से होकर जुनूब की तरफ चलती हुई ऐन-तफ़फ़ुअह की आबादी तक पहुँची। 8 तफ़फ़ुअह के गिर्दो-नवाह की ज़मीन इफराईम की मिलकियत थी, लेकिन मनस्सी की सरहद पर के यह शहर मनस्सी की अपनी मिलकियत थे। 9 वहाँ से सरहद काना नदी के जुनूबी किनारे तक उतरी। फिर नदी के साथ चलती चलती वह समुंदर पर खत्म हुई। नदी के जुनूबी किनारे पर कुछ शहर इफराईम की मिलकियत थे अगरचे वह मनस्सी के इलाके में थे। 10 लेकिन मजमूई

तौर पर मनस्सी का कबायली इलाका काना नदी के शिमाल में था और इफराईम का इलाका उसके जुनूब में। दोनों कबीलों का इलाका मगरिब में समुंदर पर खतम हुआ। मनस्सी के इलाके के शिमाल में आशर का कबायली इलाका था और मशरिफ में इशकार का।

11 आशर और इशकार के इलाकों के दर्जे-जैल शहर मनस्सी की मिलकियत थे : बैत-शान, इबलियाम, दोर यानी नाफत-दोर, ऐन-दोर, तानक और मजिदो उनके गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत। 12 लेकिन मनस्सी का कबीला वहाँ के कनानियों को निकाल न सका बल्कि वह वहाँ बसते रहे। 13 बाद में भी जब इसराईल की ताकत बढ़ गई तो कनानियों को निकाला न गया बल्कि उन्हें बेगार में काम करना पड़ा।

इफराईम और मनस्सी मज्दीद ज़मीन का तकाज़ा करते हैं

14 यूसुफ के कबीले इफराईम और मनस्सी दरियाए-यरदन के मगरिब में ज़मीन पाने के बाद यशुअ के पास आए और कहने लगे, “आपने हमारे लिए कुरा डालकर ज़मीन का सिर्फ एक हिस्सा क्यों मुकर्रर किया? हम तो बहुत ज़्यादा लोग हैं, क्योंकि रब ने हमें बरकत देकर बड़ी क्रौम बनाया है।”

15 यशुअ ने जवाब दिया, “अगर आप इतने ज़्यादा हैं और आपके लिए इफराईम का पहाड़ी इलाका काफ़ी नहीं है तो फिर फ़रिज़ियों और रफ़ाइयों के पहाड़ी जंगलों में जाएँ और उन्हें काटकर काशत के काबिल बना लें।”

16 यूसुफ के कबीलों ने कहा, “पहाड़ी इलाका हमारे लिए काफ़ी नहीं है, और मैदानी इलाके में आबाद कनानियों के पास लोहे के रथ हैं, उनके पास भी जो वादीए-यज़्ज़ल में हैं और उनके पास भी जो बैत-शान और उसके गिर्दो-नवाह की आबादियों में रहते हैं।”

17 लेकिन यशुअ ने जवाब में कहा, “आप इतनी बड़ी और ताकतवर क्रौम हैं कि आपका इलाका एक ही हिस्से पर महदूद नहीं रहेगा 18 बल्कि जंगल का पहाड़ी इलाका भी आपकी मिलकियत में आएगा। उसके जंगलों को काटकर काशत के काबिल बना लें तो यह तमाम इलाका आप ही का होगा। आप बाकी इलाके पर भी कब्ज़ा करके कनानियों को निकाल देंगे अगरचे वह ताकतवर हैं और उनके पास लोहे के रथ हैं।”

18

बाक़ी सात कबीलों को ज़मीन मिलती है

1 कनान पर ग़ालिब आने के बाद इसराईल की पूरी जमात सैला शहर में जमा हुई। वहाँ उन्होंने मुलाकात का खैमा खड़ा किया।

2 अब तक सात कबीलों को ज़मीन नहीं मिली थी। 3 यशुअ ने इसराईलियों को समझाकर कहा, “आप कितनी देर तक सुस्त रहेंगे? आप कब तक उस मुल्क पर कब्ज़ा नहीं करेंगे जो रब आपके बापदादा के ख़ुदा ने आपको दे दिया है? 4 अब हर कबीले के तीन तीन आदमियों को चुन लें। उन्हें मैं मुल्क का दौरा करने के लिए भेज दूँगा ताकि वह तमाम कबायली इलाकों की फ़हरिस्त तैयार करें। इसके बाद वह मेरे पास वापस आकर 5 मुल्क को सात इलाकों में तकसीम करें। लेकिन ध्यान रखें कि जुनूब में यहदाह का इलाका और शिमाल में इफराईम और मनस्सी का इलाका है। उनकी सरहदें मत छेड़ना! 6 वह आदमी लिख लें कि सात नए कबायली इलाकों की सरहदें कहाँ कहाँ तक हैं और फिर इनकी फ़हरिस्तें पेश करें। फिर मैं रब आपके ख़ुदा के हुज़ूर मुक़द्दस कुरा डालकर हर एक की ज़मीन मुकर्रर करूँगा। 7 याद रहे कि लावियों को कोई इलाका नहीं मिलना है। उनका हिस्सा यह है कि वह रब के इमाम हैं। और ज़द, रुबिन और मनस्सी के आधे कबीले को भी मज्दीद कुछ नहीं मिलना है, क्योंकि उन्हें रब के खादिम मूसा से दरियाए-यरदन के मशरिफ़ में उनका हिस्सा मिल चुका है।”

8 तब वह आदमी रवाना होने के लिए तैयार हुए जिन्हें मुल्क का दौरा करने के लिए चुना गया था। यशुअ ने उन्हें हुक्म दिया, “पूरे मुल्क में से गुज़रकर तमाम शहरों की फ़हरिस्त बनाएँ। जब फ़हरिस्त मुकम्मल हो जाए तो उसे मेरे पास ले आएँ। फिर मैं सैला में रब के हुज़ूर आपके लिए कुरा डाल दूँगा।” 9 आदमी चले गए और पूरे मुल्क में से गुज़रकर तमाम शहरों की फ़हरिस्त बना ली। उन्होंने मुल्क को सात हिस्सों में तकसीम करके तमाम तफ़सीलात किताब में दर्ज कीं और यह किताब सैला की खैमागाह में यशुअ को दे दी। 10 फिर यशुअ ने रब के हुज़ूर कुरा डालकर यह इलाके बाक़ी सात कबीलों और उनके कुंभों में तकसीम कर दिए।

बिनयमीन का इलाका

11 जब कुरा डाला गया तो बिनयमीन के कबीले और उसके कुंभों को पहला हिस्सा मिल गया। उस की ज़मीन यहदाह और यूसुफ के कबीलों के दरमियान थी। 12 उस की शिमाली सरहद दरियाए-यरदन से शुरू हुई और यरीह के शिमाल में पहाड़ी ढलान पर चढकर पहाड़ी इलाके में से मगरिब की तरफ़ गुज़री। बैत-आवन के बयाबान को पहुँचने पर 13 वह लूज़ यानी बैतेल की तरफ़ बढ़कर शहर के जुनूब में पहाड़ी ढलान पर चलती चलती आगे निकल गई। वहाँ से वह अतारात-अद्गर और उस पहाड़ी तक पहुँची जो नशेबी बैत-हौस्न के जुनूब में है। 14 फिर वह जुनूब की तरफ़ मुड़कर मगरिबी सरहद के तौर पर किरियत-बाल यानी किरियत-यारीम के पास आई जो यहदाह के कबीले की मिलकियत थी। 15 बिनयमीन की जुनूबी सरहद किरियत-यारीम के मगरिबी किनारे से शुरू होकर निफ़तूह चश्मा तक पहुँची। 16 फिर वह उस पहाड़ के दामन पर उतर आई जो वादीए-बिन-हिन्नुम के मगरिब में और मैदाने-रफ़ाईम के शिमाल में वाके है। इसके बाद सरहद यबूसियों के शहर के जुनूब में से गुज़री और यों वादीए-हिन्नुम को पार करके ऐन-राजिल के पास आई। 17 फिर वह शिमाल की तरफ़ मुड़कर ऐन-शम्स के पास से गुज़री और दर्राए-अदुम्मीम के मुकाबिल शहर जलीलोत तक पहुँचकर रुबिन के बेटे बोहन के पत्थर के पास उतर आई। 18 वहाँ से वह उस ढलान के शिमाली स्ख़ पर से गुज़री जो वादीए-यरदन के मगरिबी किनारे पर है। फिर वह वादी में उतरकर 19 बैत-हुज़लाह की शिमाली पहाड़ी ढलान

से गुजरी और बहीराए-मुरदार के शिमाली किनारे पर खत्म हुई, वहाँ जहाँ दरियाए-यरदन उसमें बहता है। यह थी बिनयमीन की जुनूबी सरहद। 20 उस की मशरिकी सरहद दरियाए-यरदन थी। यही वह इलाका था जो बिनयमीन के कबीले को उसके कुंभों के मुताबिक दिया गया।

21 जैल के शहर इस इलाके में शामिल थे : यरीह, बैत-हुजलाह, इमक-कसीस, 22 बैत-अराबा, समरैम, बैतेल, 23 अब्बीम, फारा, उफरा, 24 कफरल्ल-अम्मोनी, उफनी और जिबा। यह कुल 12 शहर थे। हर शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं। 25 इनके अलावा यह शहर भी थे : जिबऊन, रामा, बैरोत, 26 मिसफाह, कफ्रीरा, मौजा, 27 रकम, इर्फ़एल, तराला, 28 ज़िला, अलिफ़, यबूसियों का शहर यरुशलम, जिबिया और किरियत-यारीम। इन शहरों की तादाद 14 थी। हर शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं। यह तमाम शहर बिनयमीन और उसके कुंभों की मिलकियत थे।

19

शमौन का इलाका

1 जब कुरा डाला गया तो शमौन के कबीले और उसके कुंभों को दूसरा हिस्सा मिल गया। उस की ज़मीन यहदाह के कबीले के इलाके के दरमियान थी। 2 उसे यह शहर मिल गए : बैर-सबा (सबा), मोलादा, 3 हसार-सुआल, बाला, अज़म, 4 इलतोलद, बतूल, हुरमा, 5 सिकलाज, बैत-मर्कबोत, हसार-सूसा, 6 बैत-लबाओत और सारुहन। इन शहरों की तादाद 13 थी। हर शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं। 7 इनके अलावा यह चार शहर भी शमौन के थे : ऐन, रिम्मोन, इतर और असन। हर शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं। 8 इन शहरों के गिर्दो-नवाह की तमाम आबादियाँ बालात-बैर यानी नजब के रामा तक उनके साथ गिनी जाती थीं। यह थी शमौन और उसके कुंभों की मिलकियत। 9 यह जगहें इसलिए यहदाह के कबीले के इलाके से ली गई कि यहदाह का इलाका उसके लिए बहुत ज्यादा था। यही वजह है कि शमौन का इलाका यहदाह के बीच में है।

ज़बूलून का इलाका

10-12 जब कुरा डाला गया तो ज़बूलून के कबीले और उसके कुंभों को तीसरा हिस्सा मिल गया। उस की जुनूबी सरहद युक्नियाम की नदी से शुरू हुई और फिर मशरिक की तरफ़ दबासत, मरअला और सारीद से होकर किसलोट-तबूर के इलाके तक पहुँची। इसके बाद वह मुडकर मशरिकी सरहद के तौर पर दाबरत के पास आई और चढ़ती चढ़ती यफ़ीअ पहुँची। 13 वहाँ से वह मज़ीद मशरिक की तरफ़ बढ़ती हुई जात-हिफ़र, एत-क्राज़ीन और रिम्मोन से होकर नेआ के पास आई। 14 ज़बूलून की शिमाली और मगरिबी सरहद हन्नातोन में से गुज़रती गुज़रती वादीए-इफ़ताहेल पर खत्म हुई। 15 बारह शहर उनके गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत ज़बूलून की मिलकियत में आए जिनमें कन्तात, नहलाल, सिमरोन, इदाला और बैत-लहम शामिल थे। 16 ज़बूलून के कबीले को यही कुछ उसके कुंभों के मुताबिक़ मिल गया।

इशकार का इलाका

17 जब कुरा डाला गया तो इशकार के कबीले और उसके कुंभों को चौथा हिस्सा मिल गया। 18 उसका इलाका यज़्ज़एल से लेकर शिमाल की तरफ़ फैल गया। यह शहर उसमें शामिल थे : कसूलोट, शूनीम, 19 हफ़ौरैम, शियून, अनाखरत, 20 रब्बीत, किसियोन, इबज़, 21 रैमत, ऐन-जन्नीम, ऐन-हदा और बैत-फ़स्सीस। 22 शिमाल में यह सरहद तबूर पहाड़ से शुरू हुई और शख़सूमा और बैत-शम्स से होकर दरियाए-यरदन तक उतर आई। 16 शहर उनके गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत इशकार की मिलकियत में आए। 23 उसे यह पूरा इलाका उसके कुंभों के मुताबिक़ मिल गया।

आशर का इलाका

24 जब कुरा डाला गया तो आशर के कबीले और उसके कुंभों को पाँचवाँ हिस्सा मिल गया। 25 उसके इलाके में यह शहर शामिल थे : खिलकत, हली, बतन, अकशाफ़, 26 अलम्मलिक, अमआद और मिसाल। उस की सरहद समुंदर के साथ साथ चलती हुई करमिल के पहाड़ी सिलसिले के दामन में से गुज़री और उतरती उतरती सैहर-लिबनात तक पहुँची। 27 वहाँ वह मशरिक में बैत-दज़ून की तरफ़ मुड़कर ज़बूलून के इलाके तक पहुँची और उस की मगरिबी सरहद के साथ चलती चलती शिमाल में वादीए-इफ़ताहेल तक पहुँची। आगे बढ़ती हुई वह बैत-इमक और नइयेल से होकर शिमाल की तरफ़ मुड़ी जहाँ काबूल था। 28 फिर वह इब्रून, रहोब, हम्मून और काना से होकर बड़े शहर सैदा तक पहुँची। 29 इसके बाद आशर की सरहद रामा की तरफ़ मुड़कर फ़सीलदार शहर सू के पास आई। वहाँ वह हसा की तरफ़ मुड़ी और चलती चलती अकज़ीब के करीब समुंदर पर खत्म हुई। 30 22 शहर उनके गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत आशर की मिलकियत में आए। इनमें उम्मा, अफ़ीक़ और रहोब शामिल थे। 31 आशर को उसके कुंभों के मुताबिक़ यही कुछ मिला।

नफ़ताली का इलाका

32 जब कुरा डाला गया तो नफ़ताली के कबीले और उसके कुंभों को छठा हिस्सा मिल गया। 33-34 जुनूब में उस की सरहद दरियाए-यरदन पर लक्कूम से शुरू हुई और मगरिबी की तरफ़ चलती चलती यबनियेल, अदामी-नक्रब, ऐलोन-ज़ाननीम और हलफ़ से होकर अज़नूत-तबूर तक पहुँची। वहाँ से वह मगरिबी सरहद की हैसियत से हुक्क्रोक के पास आई। नफ़ताली की जुनूबी सरहद ज़बूलून की शिमाली सरहद और

मगरिब में आशर की मशरिकी सरहद थी। दरियाए-यरदन और यहदाह * उस की मशरिकी सरहद थी। 35 जैल के फसीलदार शहर नफताली की मिलकियत में आए : सदीम, सैर, हम्मत, रक्कत, किन्नरत, 36 अदामा, रामा, हसूर, 37 कादिस, इदरई, ऐन-हसूर, 38 इरून, मिजदलेल, हुरीम, बैत-अनात और बैत-शम्स। ऐसे 19 शहर थे। हर शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ भी उसके साथ गिनी जाती थीं। 39 नफताली को यही कुछ उसके कुंभों के मुताबिक मिला।

दान का इलाका

40 जब कुरा डाला गया तो दान के कबीले और उसके कुंभों को सातवाँ हिस्सा मिला। 41 उसके इलाके में यह शहर शामिल थे : सुरआ, इस्ताल, ईर-शम्स, 42 शालब्बीन, ऐयालोन, इतला, 43 ऐलोन, तिमनत, अकरून, 44 इल्लतकिह, जिब्बतून, बालात, 45 यहूद, बनी-बरक, जात-रिम्मोन, 46 मे-यरकून और रक्कून उस इलाके समेत जो याफा के मुकाबिल है। 47 अफसोस, दान का कबीला अपने इस इलाके पर कब्जा करने में कामयाब न हुआ, इसलिए उसके मर्दों ने लशम शहर पर हमला करके उस पर फतह पाई और उसके बाशिंदों को तलवार से मार डाला। फिर वह खुद वहाँ आबाद हुए। उस वक्त लशम शहर का नाम दान में तबदील हुआ। (दान उनके कबीले का बाप था।) 48 लेकिन यशुअ के जमाने में दान के कबीले को उसके कुंभों के मुताबिक मजकूरा तमाम शहर और उनके गिर्दो-नवाह की आबादियाँ मिल गईं।

यशुअ को भी ज़मीन मिलती है

49 पूरे मुल्क को तकसीम करने के बाद इसराईलियों ने यशुअ बिन नून को भी अपने दरमियान कुछ मौस्सी ज़मीन दे दी। 50 रब के हुक्म पर उन्होंने उसे इफराईम का शहर तिमनत-सिरह दे दिया। यशुअ ने खुद इसकी दरखास्त की थी। वहाँ जाकर उसने शहर को अज़ सरे-नौ तामीर किया और उसमें आबाद हुआ।

51 गरज़ यह वह तमाम ज़मीनें हैं जो इलियज़र इमाम, यशुअ बिन नून और कबीलों के आबाई घरानों के सरबराहों ने सैला में मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े पर कुरा डालकर तकसीम की थी। यों तकसीम करने का यह काम मुकम्मल हुआ।

20

पनाह के छः शहर

1 रब ने यशुअ से कहा, 2 “इसराईलियों को हुक्म दे कि उन हिदायात के मुताबिक पनाह के शहर चुन लो जिन्हें मैं तुम्हें मूसा की मारिफ़त दे चुका हूँ। 3 इन शहरों में वह लोग फ़रार हो सकते हैं जिनसे कोई इतफ़ाक़न यानी ग़ैरइरादी तौर पर हलाक हुआ हो। यह उन्हें मरे हुए शख्स के उन रिश्तेदारों से पनाह देंगे जो बदला लेना चाहेंगे। 4 लाज़िम है कि ऐसा शख्स पनाह के शहर के पास पहुँचने पर शहर के दरवाज़े के पास बैठे बुज़ुर्गों को अपना मामला पेश करे। उस की बात सुनकर बुज़ुर्ग उसे अपने शहर में दाखिल होने की इजाज़त दें और उसे अपने दरमियान रहने के लिए जगह दे दें। 5 अब अगर बदला लेनेवाला उसके पीछे पड़कर वहाँ पहुँचे तो बुज़ुर्ग मुलज़िम को उसके हाथ में न दें, क्योंकि यह मौत ग़ैरइरादी तौर पर और नफ़रत रखे बग़ैर हुई है। 6 वह उस वक्त तक शहर में रहे जब तक मक़ामी अदालत मामले का फ़ैसला न कर दे। अगर अदालत उसे बेगुनाह करार दे तो वह उस वक्त के इमामे-आज़म की मौत तक उस शहर में रहे। इसके बाद उसे अपने उस शहर और घर को वापस जाने की इजाज़त है जिससे वह फ़रार होकर आया है।”

7 इसराईलियों ने पनाह के यह शहर चुन लिए : नफ़ताली के पहाड़ी इलाके में गलील का कादिस, इफ़राईम के पहाड़ी इलाके में सिकम और यहदाह के पहाड़ी इलाके में किरियत-अरबा यानी हबरून। 8 दरियाए-यरदन के मशरिक में उन्होंने बसर को चुन लिया जो यरीह से काफ़ी दूर मैदाने-मुरतफ़ा में है और रूबिन के कबीले की मिलकियत है। मुल्के-जिलियाद में रामात जो जद के कबीले का है और बसन में जौलान जो मनस्सी के कबीले का है चुना गया।

9 यह शहर तमाम इसराईलियों और इसराईल में रहनेवाले अजनबियों के लिए मुक़र्रर किए गए। जिससे भी ग़ैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ उसे इनमें पनाह लेने की इजाज़त थी। इनमें वह उस वक्त तक बदला लेनेवालों से महफूज़ रहता था जब तक मक़ामी अदालत फ़ैसला नहीं कर देती थी।

21

लावियों के शहर और चरागाहें

1 फिर लावी के कबीले के आबाई घरानों के सरबराह इलियज़र इमाम, यशुअ बिन नून और इसराईल के बाक़ी कबीलों के आबाई घरानों के सरबराहों के पास आए 2 जो उस वक्त सैला में जमा थे। लावियों ने कहा, “रब ने मूसा की मारिफ़त हुक्म दिया था कि हमें बसने के लिए शहर और रेवड़ों को चराने के लिए चरागाहें दी जाएँ।” 3 चुनौचे इसराईलियों ने रब की यह बात मानकर अपने इलाकों में से शहर और चरागाहें अलग करके लावियों को दे दीं।

* 19:33-34 यहाँ यहदाह का मतलब मुल्के-बसन हो सकता है जो मनस्सी के इलाके में था लेकिन जिस पर यहदाह के कबीले के मर्द याईर ने फतह पाई थी।

4 कुरा डाला गया तो लावी के घराने किहात को उसके कुंभों के मुताबिक पहला हिस्सा मिल गया। पहले हास्न के कुंभे को यहदाह, शमौन और बिनयमीन के कबीलों के 13 शहर दिए गए। 5 बाकी किहातियों को दान, इफराईम और मगरिबी मनस्सी के कबीलों के 10 शहर मिल गए।

6 जैरसोन के घराने को इशकार, आशर, नफताली और मनस्सी के कबीलों के 13 शहर दिए गए। यह मनस्सी का वह इलाका था जो दरियाए-यरदन के मशरिक में मुल्के-बसन में था।

7 मिरारी के घराने को उसके कुंभों के मुताबिक रुबिन, जद और ज़बूलन के कबीलों के 12 शहर मिल गए।

8 यों इसराईलियों ने कुरा डालकर लावियों को मजकुरा शहर और उनके गिर्दो-नवाह की चरागाहें दे दीं। वैसा ही हुआ जैसा रब ने मूसा की मारिफत हुक्म दिया था।

किहात के घराने के शहर

9-10 कुरा डालते वक़्त लावी के घराने किहात में से हास्न के कुंभे को पहला हिस्सा मिल गया। उसे यहदाह और शमौन के कबीलों के यह शहर दिए गए : 11 पहला शहर अनाक्रियों के बाप का शहर किरियत-अरबा था जो यहदाह के पहाड़ी इलाके में है और जिसका मौजूदा नाम हबस्न है। उस की चरागाहें भी दी गईं, 12 लेकिन हबस्न के इर्दगिर्द की आबादियाँ और खेत कालिब बिन यफुन्ना की मिलकियत रहे। 13 हास्न के कुंभे का यह शहर पनाह का शहर भी था जिसमें हर वह शख्स पनाह ले सकता था जिससे कोई गैरइरादी तौर पर हलाक हुआ था। इसके अलावा हास्न के कुंभे को लिबना, 14 यतीर, इस्तिमुअ, 15 हौलून, दबीर, 16 ऐन, यूत्ता और बैत-शम्स के शहर भी मिल गए। उसे यहदाह और शमौन के कबीलों के कुल 9 शहर उनकी चरागाहों समेत मिल गए। 17-18 इनके अलावा बिनयमीन के कबीले के चार शहर उस की मिलकियत में आए यानी जिबऊन, जिबा, अनतोत और अलमोन। 19 गरज़ हास्न के कुंभे को 13 शहर उनकी चरागाहों समेत मिल गए। 20 लावी के कबीले के घराने किहात के बाकी कुंभों को कुरा डालते वक़्त इफराईम के कबीले के शहर मिल गए। 21 इनमें इफराईम के पहाड़ी इलाके का शहर सिकम शामिल था जिसमें हर वह शख्स पनाह ले सकता था जिससे कोई गैरइरादी तौर पर हलाक हुआ था, फिर जज़र, 22 क्रिबज़ैम और बैत-हौस्न। इन चार शहरों की चरागाहें भी मिल गईं। 23-24 दान के कबीले ने भी उन्हें चार शहर उनकी चरागाहों समेत दिए यानी इलत्क्रिह, जिब्बतून, ऐयालोन और जात-रिम्मोन। 25 मनस्सी के मगरिबी हिस्से से उन्हें दो शहर तानक और जात-रिम्मोन उनकी चरागाहों समेत मिल गए। 26 गरज़ किहात के बाकी कुंभों को कुल 10 शहर उनकी चरागाहों समेत मिले।

जैरसोन के घराने के शहर

27 लावी के कबीले के घराने जैरसोन को मनस्सी के मशरिकी हिस्से के दो शहर उनकी चरागाहों समेत दिए गए : मुल्के-बसन में जौलान जिसमें हर वह शख्स पनाह ले सकता था जिससे कोई गैरइरादी तौर पर हलाक हुआ था, और बइस्तराह। 28-29 इशकार के कबीले ने उसे चार शहर उनकी चरागाहों समेत दिए : किसियोन, दाबरत, यरमूत और ऐन-जन्नीम। 30-31 इसी तरह उसे आशर के कबीले के भी चार शहर उनकी चरागाहों समेत दिए गए : मिसाल, अबदोन, खिलकत और रहोब। 32 नफताली के कबीले ने तीन शहर उनकी चरागाहों समेत दिए : गलील का क्रादिस जिसमें हर वह शख्स पनाह ले सकता था जिससे कोई गैरइरादी तौर पर हलाक हुआ था, फिर हम्मात-दोर और करतान। 33 गरज़ जैरसोन के घराने को 13 शहर उनकी चरागाहों समेत मिल गए।

मिरारी के घराने के शहर

34-35 अब रह गया लावी के कबीले का घराना मिरारी। उसे ज़बूलन के कबीले के चार शहर उनकी चरागाहों समेत मिल गए : युक्नियाम, करता, दिम्ना और नहलाल। 36-37 इसी तरह उसे रुबिन के कबीले के भी चार शहर उनकी चरागाहों समेत मिल गए : बसर, यहज़, कदीमात और मिफात। 38-39 जद के कबीले ने उसे चार शहर उनकी चरागाहों समेत दिए : मुल्के-जिलियाद का रामात जिसमें हर वह शख्स पनाह ले सकता था जिससे कोई गैरइरादी तौर पर हलाक हुआ था, फिर महनायम, हसबोन और याज़ेर। 40 गरज़ मिरारी के घराने को कुल 12 शहर उनकी चरागाहों समेत मिल गए।

41 इसराईल के मुख्तलिफ़ इलाकों में जो लावियों के शहर उनकी चरागाहों समेत थे उनकी कुल तादाद 48 थी। 42 हर शहर के इर्दगिर्द चरागाहें थीं।

अल्लाह ने अपना वादा पूरा किया

43 यों रब ने इसराईलियों को वह पूरा मुल्क दे दिया जिसका वादा उसने उनके बापदादा से क्रसम खाकर किया था। वह उस पर कब्ज़ा करके उसमें रहने लगे। 44 और रब ने चारों तरफ़ अमनो-अमान मुहैया किया जिस तरह उसने उनके बापदादा से क्रसम खाकर वादा किया था। उसी की मदद से इसराईली तमाम दुश्मनों पर गालिब आए थे। 45 जो अच्छे वादे रब ने इसराईल से किए थे उनमें से एक भी नामुकम्मल न रहा बल्कि सबके सब पूरे हो गए।

1 फिर यशुअ ने रूबिन, जद और मनस्सी के आधे कबीले के मर्दों को अपने पास बुलाकर 2 कहा, “जो भी हुक्म रब के खादिम मूसा ने आपको दिया था उसे आपने पूरा किया। और आपने मेरी हर बात मानी है। 3 आपने काफ़ी अरसे से आज तक अपने भाइयों को तर्क नहीं किया बल्कि बिलकुल वही कुछ किया है जो रब की मरज़ी थी। 4 अब रब आपके खुदा ने आपके भाइयों को मौऊदा मुल्क दे दिया है, और वह सलामती के साथ उसमें रह रहे हैं। इसलिए अब वक़्त आ गया है कि आप अपने घर वापस चले जाएँ, उस मुल्क में जो रब के खादिम मूसा ने आपको दरियाए-यरदन के पार दे दिया है। 5 लेकिन ख़बरदार, एहतियात से उन हिदायात पर चलते रहें जो रब के खादिम मूसा ने आपको दे दीं। रब अपने खुदा से प्यार करें, उस की तमाम राहों पर चलें, उसके अहकाम मानें, उसके साथ लिपटे रहें, और पूरे दिलो-जान से उस की ख़िदमत करें।” 6 यह कहकर यशुअ ने उन्हें बरकत देकर स्रखसत कर दिया, और वह अपने घर चले गए।

7 मनस्सी के आधे कबीले को मूसा से मुल्के-बसन में ज़मीन मिल गई थी। दूसरे हिस्से को यशुअ से ज़मीन मिल गई थी, यानी दरियाए-यरदन के मगरिब में जहाँ बाक़ी कबीले आबाद हुए थे। मनस्सी के मर्दों को स्रखसत करते वक़्त यशुअ ने उन्हें बरकत देकर 8 कहा, “आप बड़ी दौलत के साथ अपने घर लौट रहे हैं। आपको बड़े रेवड, सोना, चाँदी, लोहा और बहुत-से कपड़े मिल गए हैं। जब आप अपने घर पहुँचेंगे तो माले-गनीमत उनके साथ बाँटें जो घर में रह गए हैं।”

9 फिर रूबिन, जद और मनस्सी के आधे कबीले के मर्द बाक़ी इसराइलियों को सैला में छोड़कर मुल्के-जिलियाद की तरफ़ रवाना हुए जो दरियाए-यरदन के मशरिफ़ में है। वहाँ उनके अपने इलाके थे जिनमें उनके कबीले रब के उस हुक्म के मुताबिक़ आबाद हुए थे जो उसने मूसा की मारिफ़त दिया था।

मशरिकी कबीले कुरबानगाह बना लेते हैं

10 यह मर्द चलते चलते दरियाए-यरदन के मगरिब में एक जगह पहुँचे जिसका नाम गलीलोट था। वहाँ यानी मुल्के-कनान में ही उन्होंने एक बड़ी और शानदार कुरबानगाह बनाई। 11 इसराइलियों को ख़बर दी गई, “रूबिन, जद और मनस्सी के आधे कबीले ने कनान की सरहद पर गलीलोट में कुरबानगाह बना ली है। यह कुरबानगाह दरियाए-यरदन के मगरिब में यानी हमारे ही इलाके में है।”

12 तब इसराइल की पूरी जमात मशरिकी कबीलों से लड़ने के लिए सैला में जमा हुई। 13 लेकिन पहले उन्होंने इलियज़र इमाम के बेटे फ़ीनहास को मुल्के-जिलियाद को भेजा जहाँ रूबिन, जद और मनस्सी का आधा कबीला आबाद थे। 14 उसके साथ 10 आदमी यानी हर मगरिबी कबीले का एक नुमाइंदा था। हर एक अपने आबाई घराने और कुंभे का सरबराह था। 15 जिलियाद में पहुँचकर उन्होंने मशरिकी कबीलों से बात की। 16 “रब की पूरी जमात आपसे पूछती है कि आप इसराइल के खुदा से बेवफ़ा क्यों हो गए हैं? आपने रब से अपना मुँह फेरकर यह कुरबानगाह क्यों बनाई है? इससे आपने रब से सरकशी की है। 17 क्या यह काफ़ी नहीं था कि हमसे फ़ग़ूर के बुत की पूजा करने का गुनाह सरज़द हुआ? हम तो आज तक पूरे तौर पर उस गुनाह से पाक-साफ़ नहीं हुए गो उस वक़्त रब की जमात को वबा की सूत में सज़ा मिल गई थी। 18 तो फिर आप क्या कर रहे हैं? आप दुबारा रब से अपना मुँह फेरकर दूर हो रहे हैं। देखें, अगर आप आज रब से सरकशी करें तो कल वह इसराइल की पूरी जमात के साथ नाराज़ होगा। 19 अगर आप समझते हैं कि आपका मुल्क नापाक है और आप इसलिए उसमें रब की ख़िदमत नहीं कर सकते तो हमारे पास रब के मुल्क में आँ जहाँ रब की सुकूनतगाह है, और हमारी ज़मीनों में शरीक हो जाएँ। लेकिन रब से या हमसे सरकशी मत करना। रब हमारे खुदा की कुरबानगाह के अलावा अपने लिए कोई और कुरबानगाह न बनाएँ! 20 क्या इसराइल की पूरी जमात पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल न हुआ जब अकन बिन ज़ारह ने माले-गनीमत में से कुछ चोरी किया जो रब के लिए मख़सूस था? उसके गुनाह की सज़ा सिर्फ़ उस तक ही महदूद न रही बल्कि और भी हलाक हुए।”

21 रूबिन, जद और मनस्सी के आधे कबीले के मर्दों ने इसराइली कुंभों के सरबराहों को जवाब दिया, 22 “रब कादिरे-मुतलक खुदा, हॉ रब कादिरे-मुतलक खुदा हक़ीक़त जानता है, और इसराइल भी यह बात जान ले! न हम सरकश हुए हैं, न रब से बेवफ़ा। अगर हम झूट बोलें तो आज ही हमें मार डालें! 23 हमने यह कुरबानगाह इसलिए नहीं बनाई कि रब से दूर हो जाएँ। हम उस पर कोई भी कुरबानी चढ़ाना नहीं चाहते, न भस्म होनेवाली कुरबानियाँ, न ग़ल्ला की नज़रें और न ही सलामती की कुरबानियाँ। अगर हम झूट बोलें तो रब खुद हमारी अदालत करे। 24 हक़ीक़त में हमने यह कुरबानगाह इसलिए तामीर की कि हम डरते हैं कि मुस्तक़बिल में किसी दिन आपकी औलाद हमारी औलाद से कहे, ‘आपका रब इसराइल के खुदा के साथ क्या वास्ता है? 25 आख़िर रब ने हमारे और आपके दरमियान दरियाए-यरदन की सरहद मुक़रर की है। चुनाँचे आपको रब की इबादत करने का कोई हक़ नहीं!’ ऐसा करने से आपकी औलाद हमारी औलाद को रब की ख़िदमत करने से रोकेगी। 26 यही वजह है कि हमने यह कुरबानगाह बनाई, भस्म होनेवाली कुरबानियाँ या ज़बह की कोई और कुरबानी चढ़ाने के लिए नहीं 27 बल्कि आपको और आनेवाली नसलों को इस बात की याद दिलाने के लिए कि हमें भी रब के ख़ैमे में भस्म होनेवाली कुरबानियाँ, ज़बह की कुरबानियाँ और सलामती की कुरबानियाँ चढ़ाने का हक़ है। यह कुरबानगाह हमारे और आपके दरमियान गवाह रहेगी। अब आपकी औलाद कभी भी हमारी औलाद से नहीं कह सकेगी, ‘आपको रब की जमात के हुक्क़ हासिल नहीं।’ 28 और अगर वह किसी वक़्त यह बात करे तो हमारी औलाद कह सकेगी, ‘यह कुरबानगाह देखें जो रब की कुरबानगाह की हबह नक़ल है। हमारे बापदादा ने इसे बनाया था, लेकिन इसलिए नहीं कि हम इस पर भस्म होनेवाली कुरबानियाँ और ज़बह की कुरबानियाँ चढ़ाएँ बल्कि आपको और हमें गवाही देने के लिए कि हमें मिलकर रब की इबादत करने का हक़ है।’ 29 हालात कभी भी यहाँ तक न पहुँचें कि हम रब से सरकशी करके अपना मुँह उससे फेर लें। नहीं, हमने

यह कुरबानगाह भस्म होनेवाली कुरबानियाँ, गल्ला की नजरे और जबह की कुरबानियाँ चढ़ाने के लिए नहीं बनाई। हम सिर्फ रब अपने खुदा की सुकूनतगाह के सामने की कुरबानगाह पर ही अपनी कुरबानियाँ पेश करना चाहते हैं।”

30 जब फ़ीनहास और इसराइली जमात के कुंभों के सरबराहों ने जिलियाद में रुबिन, जद और मनस्सी के आधे कबीले की यह बातें सुनीं तो वह मुतमइन हुए। 31 फ़ीनहास ने उनसे कहा, “अब हम जानते हैं कि रब आइंदा भी हमारे दरमियान रहेगा, क्योंकि आप उससे बेवफ़ा नहीं हुए हैं। आपने इसराइलियों को रब की सज़ा से बचा लिया है।”

32 इसके बाद फ़ीनहास और बाक़ी इसराइली सरदार रुबिन, जद और मनस्सी के आधे कबीले को मुल्के-जिलियाद में छोड़कर मुल्के-कनान में लौट आए। वहाँ उन्होंने सब कुछ बताया जो हुआ था। 33 बाक़ी इसराइलियों को यह बात पसंद आई, और वह अल्लाह की तमजीद करके रुबिन और जद से जंग करने और उनका इलाका तबाह करने के इरादे से बाज़ आए। 34 रुबिन और जद के कबीलों ने नई कुरबानगाह का नाम गवाह रखा, क्योंकि उन्होंने कहा, “यह कुरबानगाह हमारे और दूसरे कबीलों के दरमियान गवाह है कि रब हमारा भी खुदा है।”

23

यशुअ की आखिरी नसीहतें

1 अब इसराइली काफ़ी देर से सलामती से अपने मुल्क में रहते थे, क्योंकि रब ने उन्हें इर्दगिर्द के दुश्मनों के हमलों से महफूज़ रखा। जब यशुअ बहुत बूढ़ा हो गया था 2 तो उसने इसराइल के तमाम बुजुर्गों, सरदारों, काज़ियों और निगहबानों को अपने पास बुलाकर कहा, “अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ। 3 आपने अपनी आँखों से देखा कि रब ने इस इलाके की तमाम कौमों के साथ क्या कुछ किया है। रब आपके खुदा ही ने आपके लिए जंग की। 4 याद रखें कि मैंने मशरिक में दरियाए-यरदन से लेकर मगरिब में समुंदर तक सारा मुल्क आपके कबीलों में तक्सीम कर दिया है। बहुत-सी कौमों पर मैंने फ़तह पाई, लेकिन चंद एक अब तक बाक़ी रह गई हैं। 5 लेकिन रब आपका खुदा आपके आगे आगे चलते हुए उन्हें भी निकालकर भगा देगा। आप उनकी ज़मीनों पर कब्ज़ा कर लेंगे जिस तरह रब आपके खुदा ने वादा किया है।

6 अब पूरी हिम्मत से हर बात पर अमल करें जो मूसा की शरीअत की किताब में लिखी हुई है। न दाईं और न बाईं तरफ़ हटें। 7 उन दीगर कौमों से रिश्ता मत बाँधना जो अब तक मुल्क में बाक़ी रह गई हैं। उनके बुतों के नाम अपनी ज़बान पर न लाना, न उनके नाम लेकर कसम खाना। न उनकी खिदमत करना, न उन्हें सिजदा करना। 8 रब अपने खुदा के साथ यों लिपटे रहना जिस तरह आज तक लिपटे रहे हैं।

9 रब ने आपके आगे आगे चलकर बड़ी बड़ी और ताकतवर कौमों निकाल दी हैं। आज तक आपके सामने कोई नहीं खड़ा रह सका। 10 आपमें से एक शख्स हजार दुश्मनों को भगा देता है, क्योंकि रब आपका खुदा खुद आपके लिए लड़ता है जिस तरह उसने वादा किया था। 11 चुनाँचे संजीदगी से ध्यान दें कि आप रब अपने खुदा से प्यार करें, क्योंकि आपकी ज़िंदगी इसी पर मुनहसिर है। 12 अगर आप उससे दूर होकर उन दीगर कौमों से लिपट जाएँ जो अब तक मुल्क में बाक़ी हैं और उनके साथ रिश्ता बाँधें 13 तो रब आपका खुदा यक़ीनन इन कौमों को आपके आगे से नहीं निकालेगा। इसके बजाए यह आपको फँसाने के लिए फंदा और जाल बनेंगे। यह यक़ीनन आपकी पीठों के लिए कोड़े और आँखों के लिए काँटे बन जाएंगे। आखिर में आप उस अच्छे मुल्क में से मिट जाएंगे जो रब आपके खुदा ने आपको दे दिया है।

14 आज मैं वहाँ जा रहा हूँ जहाँ किसी न किसी दिन दुनिया के हर शख्स को जाना होता है। लेकिन आपने पूरे दिलो-जान से जान लिया है कि जो भी वादा रब आपके खुदा ने आपके साथ किया वह पूरा हुआ है। एक भी अधूरा नहीं रह गया। 15 लेकिन जिस तरह रब ने हर वादा पूरा किया है बिल्कुल उसी तरह वह तमाम आफ़तें आप पर नाज़िल करेगा जिनके बारे में उसने आपको ख़बरदार किया है अगर आप उसके ताबे न रहें। फिर वह आपको उस अच्छे मुल्क में से मिटा देगा जो उसने आपको दे दिया है। 16 अगर आप उस अहद को तोड़ें जो उसने आपके साथ बाँधा है और दीगर माबूदों की पूजा करके उन्हें सिजदा करें तो फिर रब का पूरा ग़ज़ब आप पर नाज़िल होगा और आप जल्द ही उस अच्छे मुल्क में से मिट जाएंगे जो उसने आपको दे दिया है।”

24

अल्लाह और इसराइल के दरमियान अहद की तजदीद

1 फिर यशुअ ने इसराइल के तमाम कबीलों को सिकम शहर में जमा किया। उसने इसराइल के बुजुर्गों, सरदारों, काज़ियों और निगहबानों को बुलाया, और वह मिलकर अल्लाह के हुज़ूर हाज़िर हुए।

2 फिर यशुअ इसराइली कौम से मुखातिब हुआ। “रब इसराइल का खुदा फ़रमाता है, ‘कदीम ज़माने में तुम्हारे बापदादा दरियाए-फ़ुरात के पार बसते और दीगर माबूदों की पूजा करते थे। इब्राहीम और नहर का बाप तारह भी वहाँ आबाद था। 3 लेकिन मैं तुम्हारे बाप इब्राहीम को वहाँ से लेकर यहाँ लाया और उसे पूरे मुल्के-कनान में से गुज़रने दिया। मैंने उसे बहुत औलाद दी। मैंने उसे इसहाक़ दिया 4 और इसहाक़ को याक़ूब और एसौ। एसौ को मैंने पहाड़ी इलाका सईर अता किया, लेकिन याक़ूब अपने बेटों के साथ मिसर चला गया।

5 बाद में मैंने मूसा और हारून को मिसर भेज दिया और मुल्क पर बड़ी मुसीबतें नाज़िल करके तुम्हें वहाँ से निकाल लाया। 6 चलते चलते तुम्हारे बापदादा बहरे-कुलजुम पहुँच गए। लेकिन मिसरी अपने रथों और घुड़सवारों से उनका ताक़ुब करने लगे। 7 तुम्हारे बापदादा ने मदद

के लिए रब को पुकारा, और मैंने उनके और मिसरियों के दरमियान अंधेरा पैदा किया। मैं समुंदर उन पर चढ़ा लाया, और वह उसमें गरक हो गए। तुम्हारे बापदादा ने अपनी ही आँखों से देखा कि मैंने मिसरियों के साथ क्या कुछ किया।

तुम बड़े अरसे तक रेगिस्तान में घूमते फिरे। ⁸ आखिरकार मैंने तुम्हें उन अमोरियों के मुल्क में पहुँचाया जो दरियाए-यरदन के मशरिक में आबाद थे। गो उन्होंने तुमसे जंग की, लेकिन मैंने उन्हें तुम्हारे हाथ में कर दिया। तुम्हारे आगे आगे चलकर मैंने उन्हें नेस्तो-नाबूद कर दिया, इसलिए तुम उनके मुल्क पर कब्ज़ा कर सके। ⁹ मोआब के बादशाह बलक बिन सफोर ने भी इसराईल के साथ जंग छेड़ी। इस मकसद के तहत उसने बिलाम बिन बओर को बुलाया ताकि वह तुम पर लानत भेजे। ¹⁰ लेकिन मैं बिलाम की बात मानने के लिए तैयार नहीं था बल्कि वह तुम्हें बरकत देने पर मजबूर हुआ। यों मैंने तुम्हें उसके हाथ से महफूज रखा।

¹¹ फिर तुम दरियाए-यरदन को पार करके यरीह के पास पहुँच गए। इस शहर के बाशिदे और अमोरी, फरिज्जी, कनानी, हिती, जिरजासी, हिब्वी और यबूसी तुम्हारे खिलाफ लड़ते रहे, लेकिन मैंने उन्हें तुम्हारे कब्जे में कर दिया। ¹² मैंने तुम्हारे आगे जंबूर भेज दिए जिन्होंने अमोरियों के दो बादशाहों को मुल्क से निकाल दिया।

यह सब कुछ तुम्हारी अपनी तलवार और कमान से नहीं हुआ बल्कि मेरे ही हाथ से। ¹³ मैंने तुम्हें बीज बोने के लिए ज़मीन दी जिसे तैयार करने के लिए तुम्हें मेहनत न करनी पड़ी। मैंने तुम्हें शहर दिए जो तुम्हें तामीर करने न पड़े। उनमें रहकर तुम अंगूर और जैतून के ऐसे बागों का फल खाते हो जो तुमने नहीं लगाए थे।”

¹⁴ यशुअ ने बात जारी रखते हुए कहा, “चुनौचे रब का खोफ मानें और पूरी वफ़ादारी के साथ उस की खिदमत करें। उन बुतों को निकाल फेंकें जिनकी पूजा आपके बापदादा दरियाए-फुरात के पार और मिसर में करते रहे। अब रब ही की खिदमत करें! ¹⁵ लेकिन अगर रब की खिदमत करना आपको बुरा लगे तो आज ही फैसला करें कि किसकी खिदमत करेंगे, उन देवताओं की जिनकी पूजा आपके बापदादा ने दरियाए-फुरात के पार की या अमोरियों के देवताओं की जिनके मुल्क में आप रह रहे हैं। लेकिन जहाँ तक मेरा और मेरे खानदान का ताल्लुक है हम रब ही की खिदमत करेंगे।”

¹⁶ अवाम ने जवाब दिया, “ऐसा कभी न हो कि हम रब को तर्क करके दीगर माबूदों की पूजा करें। ¹⁷ रब हमारा खुदा ही हमारे बापदादा को मिसर की गुलामी से निकाल लाया और हमारी आँखों के सामने ऐसे अज़ीम निशान पेश किए। जब हमें बहुत कौमों में से गुज़रना पड़ा तो उसी ने हर वक़्त हमारी हिफ़ाज़त की। ¹⁸ और रब ही ने हमारे आगे आगे चलकर इस मुल्क में आबाद अमोरियों और बाक़ी कौमों को निकाल दिया। हम भी उसी की खिदमत करेंगे, क्योंकि वही हमारा खुदा है!”

¹⁹ यह सुनकर यशुअ ने कहा, “आप रब की खिदमत कर ही नहीं सकते, क्योंकि वह कुदूस और गयूर खुदा है। वह आपकी सरकशी और गुनाहों को मुआफ़ नहीं करेगा। ²⁰ बेशक वह आप पर मेहरबानी करता रहा है, लेकिन अगर आप रब को तर्क करके अज़नबी माबूदों की पूजा करें तो वह आपके खिलाफ़ होकर आप पर बलाएँ लाएगा और आपको नेस्तो-नाबूद कर देगा।”

²¹ लेकिन इसराईलियों ने इसरार किया, “जी नहीं, हम रब की खिदमत करेंगे!” ²² फिर यशुअ ने कहा, “आप खुद इसके गवाह हैं कि आपने रब की खिदमत करने का फैसला कर लिया है।” उन्होंने जवाब दिया, “जी हाँ, हम इसके गवाह हैं!” ²³ यशुअ ने कहा, “तो फिर अपने दरमियान मौजूद बुतों को तबाह कर दें और अपने दिलों को रब इसराईल के खुदा के ताबे रखें।” ²⁴ अवाम ने यशुअ से कहा, “हम रब अपने खुदा की खिदमत करेंगे और उसी की सुनेंगे।”

²⁵ उस दिन यशुअ ने इसराईलियों के लिए रब से अहद बाँधा। वहाँ सिकम में उसने उन्हें अहकाम और क़वायद देकर ²⁶ अल्लाह की शरीअत की किताब में दर्ज किए। फिर उसने एक बड़ा पत्थर लेकर उसे उस बलूत के साय में खड़ा किया जो रब के मक़दिस के पास था। ²⁷ उसने तमाम लोगों से कहा, “इस पत्थर को देखें! यह गवाह है, क्योंकि इसने सब कुछ सुन लिया है जो रब ने हमें बता दिया है। अगर आप कभी अल्लाह का इनकार करें तो यह आपके खिलाफ़ गवाही देगा।”

²⁸ फिर यशुअ ने इसराईलियों को फ़ारिग कर दिया, और हर एक अपने अपने क़बायली इलाके में चला गया।

यशुअ और इलियज़र का इंतक़ाल

²⁹ कुछ देर के बाद रब का खादिम यशुअ बिन नून फ़ौत हुआ। उस की उम्र 110 साल थी। ³⁰ उसे उस की मौरूसी ज़मीन में दफ़नाया गया, यानी तिमनत-सिरह में जो इफ़राईम के पहाड़ी इलाके में जास पहाड़ के शिमांल में है।

³¹ जब तक यशुअ और वह बुज़ुर्ग ज़िंदा रहे जिन्होंने अपनी आँखों से सब कुछ देखा था जो रब ने इसराईल के लिए किया था उस वक़्त तक इसराईल रब का वफ़ादार रहा।

³² मिसर को छोड़ते वक़्त इसराईली यूसुफ़ की हड्डियाँ अपने साथ लाए थे। अब उन्होंने उन्हें सिकम शहर की उस ज़मीन में दफ़न कर दिया जो याक़ूब ने सिकम के बाप हमोर की औलाद से चाँदी के सौ सिक्कों के बदले ख़रीद ली थी। यह ज़मीन यूसुफ़ की औलाद की विरासत में आ गई थी।

³³ इलियज़र बिन हारून भी फ़ौत हुआ। उसे जिबिया में दफ़नाया गया। इफ़राईम के पहाड़ी इलाके का यह शहर उसके बेटे फ़ीनहास को दिया गया था।

कुजात

जुन्बी कनान पर मुकम्मल काबू नहीं पाया जाता

1 यशुअ की मौत के बाद इसराईलियों ने रब से पूछा, “कौन-सा कबीला पहले निकलकर कनानियों पर हमला करे?” 2 रब ने जवाब दिया, “यहदाह का कबीला शुरू करे। मैंने मुल्क को उनके कब्जे में कर दिया है।”

3 तब यहदाह के कबीले ने अपने भाइयों शमौन के कबीले से कहा, “आएँ, हमारे साथ निकलें ताकि हम मिलकर कनानियों को उस इलाके से निकाल दें जो कुरा ने यहदाह के कबीले के लिए मुकर्रर किया है। इसके बदले हम बाद में आपकी मदद करेंगे जब आप अपने इलाके पर कब्जा करने के लिए निकलेंगे।” चुनाँचे शमौन के मर्द यहदाह के साथ निकले। 4 जब यहदाह ने दुश्मन पर हमला किया तो रब ने कनानियों और फरिज्जियों को उसके काबू में कर दिया। बज़क के पास उन्होंने उन्हें शिकस्त दी, गो उनके कुल 10,000 आदमी थे।

5 वहाँ उनका मुकाबला एक बादशाह से हुआ जिसका नाम अदूनी-बज़क था। जब उसने देखा कि कनानी और फरिज्जी हार गए हैं 6 तो वह फरार हुआ। लेकिन इसराईलियों ने उसका ताक़ुब करके उसे पकड़ लिया और उसके हाथों और पैरों के अंगूठों को काट लिया। 7 तब अदूनी-बज़क ने कहा, “मैंने खुद सत्तर बादशाहों के हाथों और पैरों के अंगूठों को कटवाया, और उन्हें मेरी मेज़ के नीचे गिरे हुए खाने के रद्दी टुकड़े जमा करने पड़े। अब अल्लाह मुझे इसका बदला दे रहा है।” उसे यरूशलम लाया गया जहाँ वह मर गया।

8 यहदाह के मर्दों ने यरूशलम पर भी हमला किया। उस पर फ़तह पाकर उन्होंने उसके बाशिंदों को तलवार से मार डाला और शहर को जला दिया। 9 इसके बाद वह आगे बढ़कर उन कनानियों से लड़ने लगे जो पहाड़ी इलाके, दशते-नजब और मगरिब के नशेबी पहाड़ी इलाके में रहते थे। 10 उन्होंने हब्रून शहर पर हमला किया जो पहले किरियत-अरबा कहलाता था। वहाँ उन्होंने सीसी, अखीमान और तलमी की फ़ौजों को शिकस्त दी। 11 फिर वह आगे दबीर के बाशिंदों से लड़ने चले गए। दबीर का पुराना नाम किरियत-सिफ़र था।

12 कालिब ने कहा, “जो किरियत-सिफ़र पर फ़तह पाकर कब्जा करेगा उसके साथ मैं अपनी बेटी अकसा का रिश्ता बाँधूँगा।” 13 कालिब के छोटे भाई गुतनियेल बिन कनज़ ने शहर पर कब्जा कर लिया। चुनाँचे कालिब ने उसके साथ अपनी बेटी अकसा की शादी कर दी। 14 जब अकसा गुतनियेल के हाँ जा रही थी तो उसने उसे उभारा कि वह कालिब से कोई खेत पाने की दरखास्त करे। अचानक वह गधे से उतर गई। कालिब ने पूछा, “क्या बात है?” 15 अकसा ने जवाब दिया, “जहेज़ के लिए मुझे एक चीज़ से नवाज़ें। आपने मुझे दशते-नजब में ज़मीन दे दी है। अब मुझे चश्मे भी दे दीजिए।” चुनाँचे कालिब ने उसे अपनी मिलकियत में से ऊपर और नीचेवाले चश्मे भी दे दिए।

16 जब यहदाह का कबीला खजूरों के शहर से रवाना हुआ था तो क़ीनी भी उनके साथ यहदाह के रेगिस्तान में आए थे। (क़ीनी मूसा के सुसर यितरो की औलाद थे)। वहाँ वह दशते-नजब में अराद शहर के करीब दूसरे लोगों के दरमियान ही आबाद हुए।

17 यहदाह का कबीला अपने भाइयों शमौन के कबीले के साथ आगे बढ़ा। उन्होंने कनानी शहर सफ़त पर हमला किया और उसे अल्लाह के लिए मख़सूस करके मुकम्मल तौर पर तबाह कर दिया। इसलिए उसका नाम हुरमा यानी अल्लाह के लिए तबाही पड़ा। 18 फिर यहदाह के फ़ौजियों ने गज्जा, अस्कलून और अकरून के शहरों पर उनके गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत फ़तह पाई। 19 रब उनके साथ था, इसलिए वह पहाड़ी इलाके पर कब्जा कर सके। लेकिन वह समुंदर के साथ के मैदानी इलाके में आबाद लोगों को निकाल न सके। वजह यह थी कि इन लोगों के पास लोहे के रथ थे। 20 मूसा के वादे के मुताबिक कालिब को हब्रून शहर मिल गया। उसने उसमें से अनाक के तीन बेटों को उनके घरानों समेत निकाल दिया।

21 लेकिन बिनयमीन का कबीला यरूशलम के रहनेवाले यबूसियों को निकाल न सका। आज तक यबूसी वहाँ बिनयमीनियों के साथ आबाद हैं।

शिमाली कनान पर मुकम्मल काबू नहीं पाया जाता

22-23 इफ़राईम और मनस्सी के कबीले बैतेल पर कब्जा करने के लिए निकले (बैतेल का पुराना नाम लूज़ था)। जब उन्होंने अपने जासूसों को शहर की तफ़तीश करने के लिए भेजा तो रब उनके साथ था। 24 उनके जासूसों की मुलाकात एक आदमी से हुई जो शहर से निकल रहा था। उन्होंने उससे कहा, “हमें शहर में दाख़िल होने का रास्ता दिखाएँ तो हम आप पर रहम करेंगे।” 25 उसने उन्हें अंदर जाने का रास्ता दिखाया, और उन्होंने उसमें घुसकर तमाम बाशिंदों को तलवार से मार डाला सिवाए मज़कूरा आदमी और उसके खानदान के। 26 बाद में वह हितियों के मुल्क में गया जहाँ उसने एक शहर तामीर करके उसका नाम लूज़ रखा। यह नाम आज तक रायज है।

27 लेकिन मनस्सी ने हर शहर के बाशिंदे न निकाले। बैत-शान, तानक, दोर, इबलियाम, मजिदो और उनके गिर्दो-नवाह की आबादियाँ रह गईं। कनानी पूरे अज़म के साथ उनमें टिके रहे। 28 बाद में जब इसराईल की ताक़त बढ़ गई तो इन कनानियों को बेगार में काम करना पड़ा। लेकिन इसराईलियों ने उस वक़्त भी उन्हें मुल्क से न निकाला।

29 इसी तरह इफ़राईम के कबीले ने भी जज़र के बाशिंदों को न निकाला, और यह कनानी उनके दरमियान आबाद रहे।

30 ज़बूलून के कबीले ने भी कितरोन और नहलाल के बाशिंदों को न निकाला बल्कि यह उनके दरमियान आबाद रहे, अलबत्ता उन्हें बेगार में काम करना पड़ा।

31 आशर के कबीले ने न अक्को के बाशिंदों को निकाला, न सैदा, अहलाब, अकज़ीब, हिलबा, अफ्रीक या रहोब के बाशिंदों को। 32 इस वजह से आशर के लोग कनानी बाशिंदों के दरमियान रहने लगे।

33 नफ़ताली के कबीले ने बैत-शम्स और बैत-अनात के बाशिंदों को न निकाला बल्कि वह भी कनानियों के दरमियान रहने लगे। लेकिन बैत-शम्स और बैत-अनात के बाशिंदों को बेगार में काम करना पड़ा।

34 दान के कबीले ने मैदानी इलाके पर कब्ज़ा करने की कोशिश तो की, लेकिन अमोरियों ने उन्हें आने न दिया बल्कि पहाड़ी इलाके तक महदूद रखा। 35 अमोरी पूरे अज़म के साथ हरिस पहाड़, ऐयालोन और सालबीम में टिके रहे। लेकिन जब इफ़राईम और मनस्सी की ताकत बढ़ गई तो अमोरियों को बेगार में काम करना पड़ा।

36 अमोरियों की सरहद दर्राए-अक्रब्बीम से लेकर सिला से परे तक थी।

2

रब का फ़रिश्ता इसराइल को मलामत करता है

1 रब का फ़रिश्ता जिलजाल से चढ़कर बोकीम पहुँचा। वहाँ उसने इसराइलियों से कहा, “मैं तुम्हें मिसर से निकालकर उस मुल्क में लाया जिसका वादा मैंने क़सम खाकर तुम्हारे बापदादा से किया था। उस वक़्त मैंने कहा कि मैं तुम्हारे साथ अपना अहद कभी नहीं तोड़ूँगा। 2 और मैंने हुक्म दिया, ‘इस मुल्क की कौमों के साथ अहद मत बाँधना बल्कि उनकी क़ुरबानगाहों को गिरा देना।’ लेकिन तुमने मेरी न सुनी। यह तुमने क्या किया? 3 इसलिए अब मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैं उन्हें तुम्हारे आगे से नहीं निकालूँगा। वह तुम्हारे पहलुओं में काँटे बनेंगे, और उनके देवता तुम्हारे लिए फंदा बने रहेंगे।”

4 रब के फ़रिश्ते की यह बात सुनकर इसराइली खूब रोए। 5 यही वजह है कि उस जगह का नाम बोकीम यानी रोनेवाले पड़ गया। फिर उन्होंने वहाँ रब के हुज़ूर क़ुरबानियाँ पेश कीं।

इसराइल बेवफ़ा हो जाता है

6 यशुअ के कौम को ख़ुश करने के बाद हर एक कबीला अपने इलाके पर कब्ज़ा करने के लिए रवाना हुआ था। 7 जब तक यशुअ और वह बुज़ुर्ग ज़िंदा रहे जिन्होंने वह अज़ीम काम देखे हुए थे जो रब ने इसराइलियों के लिए किए थे उस वक़्त तक इसराइली रब की वफ़ादारी से खिदमत करते रहे। 8 फिर रब का ख़ादिम यशुअ बिन नून इंतकाल कर गया। उस की उम्र 110 साल थी। 9 उसे तिमनत-हरिस में उस की अपनी मौस्सी ज़मीन में दफ़नाया गया। (यह शहर इफ़राईम के पहाड़ी इलाके में जास पहाड़ के शिमाल में है।)

10 जब हमअसर इसराइली सब मरकर अपने बापदादा से जा मिले तो नई नसल उभर आई जो न तो रब को जानती, न उन कामों से वाकिफ़ थी जो रब ने इसराइल के लिए किए थे। 11 उस वक़्त वह ऐसी हरकतें करने लगे जो रब को बुरी लगीं। उन्होंने बाल देवता के बुतों की पूजा करके 12 रब अपने बापदादा के ख़ुदा को तर्क कर दिया जो उन्हें मिसर से निकाल लाया था। वह गिर्दो-नवाह की कौमों के दीगर माबूदों के पीछे लग गए और उनकी पूजा भी करने लगे। इससे रब का ग़ज़ब उन पर भड़का, 13 क्योंकि उन्होंने उस की खिदमत छोड़कर बाल देवता और अस्तारात देवी की पूजा की। 14 रब यह देखकर इसराइलियों से नाराज़ हुआ और उन्हें डाकुओं के हवाले कर दिया जिन्होंने उनका माल लूटा। उसने उन्हें इर्दगिर्द के दुश्मनों के हाथ बेच डाला, और वह उनका मुकाबला करने के काबिल न रहे। 15 जब भी इसराइली लड़ने के लिए निकले तो रब का हाथ उनके खिलाफ़ था। नतीजतन वह हारते गए जिस तरह उसने क़सम खाकर फ़रमाया था।

जब वह इस तरह बड़ी मुसीबत में थे 16 तो रब उनके दरमियान काज़ी बरपा करता जो उन्हें लूटनेवालों के हाथ से बचाते। 17 लेकिन वह उनकी न सुनते बल्कि ज़िना करके दीगर माबूदों के पीछे लगे और उनकी पूजा करते रहते। गो उनके बापदादा रब के अहक़ाम के ताबे रहे थे, लेकिन वह खुद बड़ी जल्दी से उस राह से हट जाते जिस पर उनके बापदादा चले थे। 18 लेकिन जब भी वह दुश्मन के जुल्म और दबाव तले कराहने लगते तो रब को उन पर तरस आ जाता, और वह किसी काज़ी को बरपा करता और उस की मदद करके उन्हें बचाता।

जितने अरसे तक काज़ी ज़िंदा रहता उतनी देर तक इसराइली दुश्मनों के हाथ से महफूज़ रहते। 19 लेकिन उसके मरने पर वह दुबारा अपनी पुरानी राहों पर चलने लगते, बल्कि जब वह मुड़कर दीगर माबूदों की पैरवी और पूजा करने लगते तो उनकी रविश बापदादा की रविश से भी बुरी होती। वह अपनी शरीर हरकतों और हठधर्म राहों से बाज़ आने के लिए तैयार ही न होते। 20 इसलिए अल्लाह को इसराइल पर बड़ा गुस्सा आया। उसने कहा, “इस कौम ने वह अहद तोड़ दिया है जो मैंने इसके बापदादा से बाँधा था। यह मेरी नहीं सुनती, 21 इसलिए मैं उन कौमों को नहीं निकालूँगा जो यशुअ की मौत से लेकर आज तक मुल्क में रह गई हैं। यह कौमों इसमें आबाद रहेंगी, 22 और मैं उनसे इसराइलियों को आजमाकर देखूँगा कि आया वह अपने बापदादा की तरह रब की राह पर चलेंगे या नहीं।”

23 चुनौचे रब ने इन कौमों को न यशुअ के हवाले किया, न फ़ौरन निकाला बल्कि उन्हें मुल्क में ही रहने दिया।

3

अल्लाह इसराइल को कनानी कौमों से आजमाता है

1 रब ने कई एक क्रौमों को मुल्के-कनान में रहने दिया ताकि उन तमाम इसराईलियों को आजमाए जो खुद कनान की जंगों में शरीक नहीं हुए थे। 2 नीज़, वह नई नसल को जंग करना सिखाना चाहता था, क्योंकि वह जंग करने से नावाक्रिफ़ थी। ज़ैल की क्रौमें कनान में रह गई थीं : 3 फ़िलिस्ती उनके पाँच हुक्मरानों समेत, तमाम कनानी, सैदानी और लुबनान के पहाड़ी इलाके में रहनेवाले हिक्वी जो बाल-हरमून पहाड़ से लेकर लबो-हमात तक आबाद थे। 4 उनसे रब इसराईलियों को आजमाना चाहता था। वह देखना चाहता था कि क्या यह मेरे उन अहकाम पर अमल करते हैं या नहीं जो मैंने मूसा की मारिफ़त उनके बापदादा को दिए थे।

गुतनियेल काज़ी

5 चुनाँचे इसराईली कनानियों, हितियों, अमोरियों, फ़रिज़ियों, हिक्वियों और यबूसियों के दरमियान ही आबाद हो गए। 6 न सिर्फ़ यह बल्कि वह इन क्रौमों से अपने बेटे-बेटियों का रिश्ता बाँधकर उनके देवताओं की पूजा भी करने लगे। 7 इसराईलियों ने ऐसी हरकतें कीं जो रब की नज़र में बुरी थीं। रब को भूलकर उन्होंने बाल देवता और यसीरत देवी की खिदमत की।

8 तब रब का ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ, और उसने उन्हें मसोपुतामिया के बादशाह कूशन-रिसअतैम के हवाले कर दिया। इसराईली आठ साल तक कूशन के गुलाम रहे। 9 लेकिन जब उन्होंने मदद के लिए रब को पुकारा तो उसने उनके लिए एक नजातदहिदा बरपा किया। कालिब के छोटे भाई गुतनियेल बिन कनज़ ने उन्हें दुश्मन के हाथ से बचाया। 10 उस वक़्त गुतनियेल पर रब का रूह नाज़िल हुआ, और वह इसराईल का काज़ी बन गया। जब वह जंग करने के लिए निकला तो रब ने मसोपुतामिया के बादशाह कूशन-रिसअतैम को उसके हवाले कर दिया, और वह उस पर गालिब आ गया।

11 तब मुल्क में चालीस साल तक अमनो-अमान कायम रहा। लेकिन जब गुतनियेल बिन कनज़ फ़ौत हुआ 12 तो इसराईली दुबारा वह कुछ करने लगे जो रब की नज़र में बुरा था। इसलिए उसने मोआब के बादशाह इजलून को इसराईल पर गालिब आने दिया। 13 इजलून ने अम्मोनियों और अमालीकियों के साथ मिलकर इसराईलियों से जंग की और उन्हें शिकस्त दी। उसने खज़ूरों के शहर पर कब्ज़ा किया, 14 और इसराईल 18 साल तक उस की गुलामी में रहा।

अहद काज़ी की चालाकी

15 इसराईलियों ने दुबारा मदद के लिए रब को पुकारा, और दुबारा उसने उन्हें नजातदहिदा अता किया यानी बिनयमीन के कबीले का अहद बिन जीरा जो बाएँ हाथ से काम करने का आदी था। इसी शरख़ को इसराईलियों ने इजलून बादशाह के पास भेज दिया ताकि वह उसे ख़राज के पैसे अदा करे। 16 अहद ने अपने लिए एक दोधारी तलवार बना ली जो तकरीबन डेढ़ फ़ुट लंबी थी। जाते वक़्त उसने उसे अपनी कमर के दाईं तरफ़ बाँधकर अपने लिबास में छुपा लिया। 17 जब वह इजलून के दरबार में पहुँच गया तो उसने मोआब के बादशाह को ख़राज पेश किया। इजलून बहुत मोटा आदमी था। 18 फिर अहद ने उन आदमियों को ख़सत कर दिया जिन्होंने उसके साथ ख़राज उठाकर उसे दरबार तक पहुँचाया था। 19-20 अहद भी वहाँ से रवाना हुआ, लेकिन जिलजाल के बुतों के करीब वह मुड़कर इजलून के पास वापस गया।

इजलून बालाख़ाने में बैठा था जो ज़्यादा ठंडा था और उसके ज़ाती इस्तेमाल के लिए मख़सूस था। अहद ने अंदर जाकर बादशाह से कहा, “मेरी आपके लिए खुफ़िया ख़बर है।” बादशाह ने कहा, “ख़ामोश!” बाक़ी तमाम हाज़िरीन कमरे से चले गए तो अहद ने कहा, “जो ख़बर मेरे पास आपके लिए है वह अल्लाह की तरफ़ से है।” यह सुनकर इजलून ख़ड़ा होने लगा, 21 लेकिन अहद ने उसी लमहे अपने बाएँ हाथ से कमर के दाईं तरफ़ बाँधी हुई तलवार को पकड़कर उसे मियान से निकाला और इजलून के पेट में धँसा दिया। 22 तलवार इतनी धँस गई कि उसका दस्ता भी चरबी में गायब हो गया और उस की नोक टाँगों में से निकली। तलवार को उसमें छोड़कर 23 अहद ने कमरे के दरवाज़ों को बंद करके कुंडी लगाई और साथवाले कमरे में से निकलकर चला गया।

24 थोड़ी देर के बाद बादशाह के नौकरों ने आकर देखा कि दरवाज़ों पर कुंडी लगी है। उन्होंने एक दूसरे से कहा, “वह हाज़त रफ़ा कर रहे होंगे,” 25 इसलिए कुछ देर के लिए ठहरे। लेकिन दरवाज़ा न खुला। इंतज़ार करते करते वह थक गए, लेकिन बेसूद, बादशाह ने दरवाज़ा न खोला। आखिरकार उन्होंने चाबी ढूँडकर दरवाज़ों को खोल दिया और देखा कि मालिक की लाश फ़र्श पर पड़ी हुई है।

26 नौकरों के झिजकने की वजह से अहद बच निकला और जिलजाल के बुतों से गुज़रकर सईरा पहुँच गया जहाँ वह महफूज़ था। 27 वहाँ इफ़राईम के पहाड़ी इलाके में उसने नरसिंगा फूँक दिया ताकि इसराईली लड़ने के लिए जमा हो जाएँ। वह इकट्ठे हुए और उस की राहनुमाई में वादीए-यरदन में उतर गए। 28 अहद बोला, “मेरे पीछे हो लें, क्योंकि अल्लाह ने आपके दुश्मन मोआब को आपके हवाले कर दिया है।” चुनाँचे वह उसके पीछे पीछे वादी में उतर गए। पहले उन्होंने दरियाए-यरदन के कम-गहरे मक़ामों पर कब्ज़ा करके किसी को दरिया पार करने न दिया। 29 उस वक़्त उन्होंने मोआब के 10,000 ताक़तवर और जंग करने के काबिल आदमियों को मार डाला। एक भी न बचा।

30 उस दिन इसराईल ने मोआब को ज़ेर कर दिया, और 80 साल तक मुल्क में अमनो-अमान कायम रहा।

शमजर काज़ी

31 अहद के दौर के बाद इसराईल का एक और नजातदहिदा उभर आया, शमजर बिन अनात। उसने बैल के आँक़ुस से 600 फ़िलिस्तियों को मार डाला।

4

दबोरा नबिया और लशकर का सरदार बरक

1 जब अहद फौत हुआ तो इसराईली दुबारा ऐसी हरकतें करने लगे जो रब के नजदीक बुरी थीं। 2-3 इसलिए रब ने उन्हें कनान के बादशाह याबीन के हवाले कर दिया। याबीन का दास्त-हुकूमत हसूर था, और उसके पास 900 लोहे के रथ थे। उसके लशकर का सरदार सीसरा था जो हसूत-हगोयम में रहता था। याबीन ने 20 साल इसराईलियों पर बहुत जुल्म किया, इसलिए उन्होंने मदद के लिए रब को पुकारा।

4 उन दिनों में दबोरा नबिया इसराईल की काज़ी थी। उसका शौहर लफीदोत था, 5 और वह 'दबोरा के खजूर' के पास रहती थी जो इफ़राईम के पहाड़ी इलाके में रामा और बैतेल के दरमियान था। इस दरख्त के साथ में वह इसराईलियों के मामलात के फैसले किया करती थी। 6 एक दिन दबोरा ने बरक बिन अबीनुअम को बुलाया। बरक नफ़ताली के कबायली इलाके के शहर कादिस में रहता था। दबोरा ने बरक से कहा, "रब इसराईल का खुदा आपको हुक्म देता है, 'नफ़ताली और जबूलन के कबीलों में से 10,000 मर्दों को जमा करके उनके साथ तबूर पहाड़ पर चढ़ जा! 7 मैं याबीन के लशकर के सरदार सीसरा को उसके रथों और फ़ौज समेत तेरे करीब की कैसोन नदी के पास खींच लाऊंगा। वहाँ मैं उसे तेरे हाथ में कर दूँगा।' "

8 बरक ने जवाब दिया, "मैं सिर्फ़ इस सूरत में जाऊँगा कि आप भी साथ जाएँ। आपके बग़ैर मैं नहीं जाऊँगा।" 9 दबोरा ने कहा, "ठीक है, मैं ज़रूर आपके साथ जाऊँगी। लेकिन इस सूरत में आपको सीसरा पर ग़ालिब आने की इज़्ज़त हासिल नहीं होगी बल्कि एक औरत को। क्योंकि रब सीसरा को एक औरत के हवाले कर देगा।"

चुनौचे दबोरा बरक के साथ कादिस गई। 10 वहाँ बरक ने जबूलन और नफ़ताली के कबीलों को अपने पास बुला लिया। 10,000 आदमी उस की राहनुमाई में तबूर पहाड़ पर चले गए। दबोरा भी साथ गई।

11 उन दिनों में एक कीनी बनाम हिबर ने अपना ख़ैमा कादिस के करीब ऐलोन-जाननीम में लगाया हुआ था। कीनी मूसा के साले होबाब की औलाद में से था। लेकिन हिबर दूसरे कीनियों से अलग रहता था।

12 अब सीसरा को इतला दी गई कि बरक बिन अबीनुअम फ़ौज लेकर पहाड़ तबूर पर चढ़ गया है। 13 यह सुनकर वह हसूत-हगोयम से ख़ाना होकर अपने 900 रथों और बाक़ी लशकर के साथ कैसोन नदी पर पहुँच गया।

14 तब दबोरा ने बरक से बात की, "हमला के लिए तैयार हो जाँ, क्योंकि रब ने आज ही सीसरा को आपके काबू में कर दिया है। रब आपके आगे आगे चल रहा है।" चुनौचे बरक अपने 10,000 आदमियों के साथ तबूर पहाड़ से उतर आया। 15 जब उन्होंने दुश्मन पर हमला किया तो रब ने कनानियों के पूरे लशकर में रथों समेत अफ़रा-तफ़री पैदा कर दी। सीसरा अपने रथ से उतरकर पैदल ही फ़रार हो गया।

16 बरक के आदमियों ने भागनेवाले फ़ौजियों और उनके रथों का ताक्कुब करके उनको हसूत-हगोयम तक मारते गए। एक भी न बचा।

सीसरा का अंजाम

17 इतने में सीसरा पैदल चलकर कीनी आदमी हिबर की बीवी याएल के ख़ैमे के पास भाग आया था। वजह यह थी कि हसूर के बादशाह याबीन के हिबर के घराने के साथ अच्छे ताल्लुकात थे। 18 याएल ख़ैमे से निकलकर सीसरा से मिलने गई। उसने कहा, "आएँ मेरे आका, अंदर आएँ और न डरें।" चुनौचे वह अंदर आकर लेट गया, और याएल ने उस पर कम्बल डाल दिया।

19 सीसरा ने कहा, "मुझे प्यास लगी है, कुछ पानी पिला दो।" याएल ने दूध का मशकीज़ा खोलकर उसे पिला दिया और उसे दुबारा छुपा दिया। 20 सीसरा ने दरखास्त की, "दरवाज़े में खड़ी हो जाओ! अगर कोई आए और पूछे कि क्या ख़ैमे में कोई है तो बोलो कि नहीं, कोई नहीं है।"

21 यह कहकर सीसरा गहरी नींद सो गया, क्योंकि वह निहायत थका हुआ था। तब याएल ने मेख और हथोड़ा पकड़ लिया और दबे पाँव सीसरा के पास जाकर मेख को इतने जोर से उस की कनपटी में ठोक दिया कि मेख ज़मीन में धँस गई और वह मर गया।

22 कुछ देर के बाद बरक सीसरा के ताक्कुब में वहाँ से गुज़रा। याएल ख़ैमे से निकलकर उससे मिलने आई और बोली, "आएँ, मैं आपको वह आदमी दिखाती हूँ जिसे आप ढूँड रहे हैं।" बरक उसके साथ ख़ैमे में दाखिल हुआ तो क्या देखा कि सीसरा की लाश ज़मीन पर पड़ी है और मेख उस की कनपटी में से गुज़रकर ज़मीन में गड़ गई है।

23 उस दिन अल्लाह ने कनानी बादशाह याबीन को इसराईलियों के सामने ज़ेर कर दिया। 24 इसके बाद उनकी ताक़त बढ़ती गई जबकि याबीन कमज़ोर होता गया और आखिरकार इसराईलियों के हाथों तबाह हो गया।

5

दबोरा और बरक का गीत

1 फ़तह के दिन दबोरा ने बरक बिन अबीनुअम के साथ यह गीत गाया,

2 "अल्लाह की सताइश हो! क्योंकि इसराईल के सरदारों ने राहनुमाई की, और अवाम निकलने के लिए तैयार हुए।

3 ऐ बादशाहो, सुनो! ऐ हुक्मरानो, मेरी बात पर तवज्जुह दो! मैं रब की तमजीद में गीत गाऊँगी, रब इसराईल के खुदा की मद्दहसराई करूँगी।

4 ऐ रब, जब तू सईर से निकल आया और अदोम के खुले मैदान से खाना हुआ तो ज़मीन काँप उठी और आसमान से पानी टपकने लगा, बादलों से बारिश बरसने लगी।

5 कोहे-सीना के रब के हुज़ूर पहाड़ हिलने लगे, रब इसराईल के खुदा के सामने वह कपकपाने लगे।

6 शमजर बिन अनात और याएल के दिनों में सफ़र के पक्के और सीधे रास्ते खाली रहे और मुसाफ़िर उनसे हटकर बल खाते हुए छोटे छोटे रास्तों पर चलकर अपनी मनज़िल तक पहुँचते थे।

7 देहात की ज़िंदगी सूनी हो गई। गाँव में रहना मुश्किल था जब तक मैं, दबोरा जो इसराईल की माँ हूँ खड़ी न हुई।

8 शहर के दरवाज़ों पर जंग छिड़ गई जब उन्होंने नए माबूदों को चुन लिया। उस वक़्त इसराईल के 40,000 मर्दों के पास एक भी ढाल या नेज़ा न था।

9 मेरा दिल इसराईल के सरदारों के साथ है और उनके साथ जो खुशी से जंग के लिए निकले। रब की सताइश करो!

10 ऐ तुम जो सफ़ेद गधों पर कपड़े बिछाकर उन पर सवार हो, अल्लाह की तमज़ीद करो! ऐ तुम जो पैदल चल रहे हो, अल्लाह की तारीफ़ करो!

11 सुनो! जहाँ जानवरों को पानी पिलाया जाता है वहाँ लोग रब के नजातबख़्श कामों की तारीफ़ कर रहे हैं, उन नजातबख़्श कामों की जो उसने इसराईल के देहातियों की खातिर किए। तब रब के लोग शहर के दरवाज़ों के पास उतर आए।

12 ऐ दबोरा, उठें, उठें! उठें, हाँ उठें और गीत गाँ! ऐ बरक, खड़े हो जाँ! ऐ अबीनुअम के बेटे, अपने कैदियों को बाँधकर ले जाँ!

13 फिर बचे हुए फ़ौजी पहाड़ी इलाके से उतरकर क्रौम के शुरफ़ा के पास आए, रब की क्रौम सूरमाओं के साथ मेरे पास उतर आई।

14 इफ़राईम से जिसकी जड़ें अमालीक में हैं वह उतर आए, और बिनयमीन के मर्द उनके पीछे हो लिए। मकीर से हुक्मरान और ज़बूलून से सिपहसालार उतर आए।

15 इश्कार के रईस भी दबोरा के साथ थे, और उसके फ़ौजी बरक के पीछे होकर वादी में दौड़ आए। लेकिन रुबिन का कबीला अपने इलाके में रहकर सोच-बिचार में उलझा रहा।

16 तू क्यों अपने ज़ीन के दो बोरों के दरमियान बैठा रहा? क्या गल्लों के दरमियान चरवाहों की बाँसरियों की आवाज़ें सुनने के लिए? रुबिन का कबीला अपने इलाके में रहकर सोच-बिचार में उलझा रहा।

17 जिलियाद के घराने दरियाए-यरदन के मशरिक में ठहरे रहे। और दान का कबीला, वह क्यों बहरी जहाज़ों के पास रहा? आशर का कबीला भी साहिल पर बैठा रहा, वह आराम से अपनी बंदरगाहों के पास ठहरा रहा,

18 जबकि ज़बूलून और नफ़ताली अपनी जान पर खेलकर मैदान-जंग में आ गए।

19 बादशाह आए और लड़े, कनान के बादशाह मजिदो नदी पर तानक के पास इसराईल से लड़े। लेकिन वहाँ से वह चाँदी का लूटा हुआ माल वापस न लाए।

20 आसमान से सितारों ने सीसरा पर हमला किया, अपनी आसमानी राहों को छोड़कर वह उससे और उस की क्रौम से लड़ने आए।

21 कैसोन नदी उन्हें उड़ा ले गई, वह नदी जो क़दीम ज़माने से बहती है। ऐ मेरी जान, मज़बूती से आगे चलती जा!

22 उस वक़्त टापों का बड़ा शोर सुनाई दिया। दुश्मन के ज़बरदस्त घोड़े सरपट दौड़ रहे थे।

23 रब के फ़रिश्ते ने कहा, 'मीरोज़ शहर पर लानत करो, उसके बाशिंदों पर ख़ूब लानत करो! क्योंकि वह रब की मदद करने न आए, वह सूरमाओं के खिलाफ़ रब की मदद करने न आए।'

24 हिबर कीनी की बीवी मुबारक है! ख़ैमों में रहनेवाली औरतों में से वह सबसे मुबारक है!

25 जब सीसरा ने पानी माँगा तो याएल ने उसे दूध पिलाया। शानदार प्याले में लस्सी डालकर वह उसे उसके पास लाई।

26 लेकिन फिर उसने अपने हाथ से मेख और अपने दहने हाथ से मज़दूरों का हथोड़ा पकड़कर सीसरा का सर फोड़ दिया, उस की खोपड़ी टुकड़े टुकड़े करके उस की कनपटी को छेद दिया।

27 उसके पाँवों में वह तड़प उठा। वह गिरकर वहीं पड़ा रहा। हाँ, वह उसके पाँवों में गिरकर हलाक हुआ।

28 सीसरा की माँ ने खिड़की में से झाँका और दरीचे में से देखती देखती रोती रही, 'उसके रथ के पहुँचने में इतनी देर क्यों हो रही है? रथों की आवाज़ अब तक क्यों सुनाई नहीं दे रही?'

29 उस की दानिशमंद खवातीन उसे तसल्ली देती हैं और वह खुद उनकी बात दोहराती है, ³⁰ 'वह लूटा हुआ माल आपस में बाँट रहे होंगे। हर मर्द के लिए एक दो लड़कियाँ और सीसरा के लिए रंगदार लिबास होगा। हाँ, वह रंगदार लिबास और मेरी गरदन को सजाने के लिए दो नफ़ीस रंगदार कपड़े ला रहे होंगे।'

31 ऐ रब, तेरे तमाम दुश्मन सीसरा की तरह हलाक हो जाएँ! लेकिन जो तुझसे प्यार करते हैं वह पूरे जोर से तुलू होनेवाले सूरज की मानिंद हों।”

बरक की इस फ़तह के बाद इसराईल में 40 साल अमनो-अमान कायम रहा।

6

मिदियानी इसराईलियों को दबाते हैं

1 फिर इसराईली दुबारा वह कुछ करने लगे जो रब को बुरा लगा, और उसने उन्हें सात साल तक मिदियानियों के हवाले कर दिया। 2 मिदियानियों का दबाव इतना ज्यादा बढ़ गया कि इसराईलियों ने उनसे पनाह लेने के लिए पहाड़ी इलाके में शिगाफ, गार और गढियाँ बना लीं। 3 क्योंकि जब भी वह अपनी फ़सलें लगाते तो मिदियानी, अमालीकी और मशरिक के दीगर फ़ौजी उन पर हमला करके 4 मुल्क को घेर लेते और फ़सलों को ग़ज़ा शहर तक तबाह करते। वह खानेवाली कोई भी चीज़ नहीं छोड़ते थे, न कोई भेड़, न कोई बैल, और न कोई ग़धा। 5 और जब वह अपने मवेशियों और ख़ैमों के साथ पहुँचते तो टिड्डियों के दलों की मानिंद थे। इतने मर्द और ऊँट थे कि उनको गिना नहीं जा सकता था। यों वह मुल्क पर चढ़ आते थे ताकि उसे तबाह करें। 6 इसराईली मिदियान के सबब से इतने पस्तहाल हुए कि आख़िरकार मदद के लिए रब को पुकारने लगे।

7-8 तब उसने उनमें एक नबी भेज दिया जिसने कहा, “रब इसराईल का खुदा फ़रमाता है कि मैं ही तुम्हें मिसर की गुलामी से निकाल लाया। 9 मैंने तुम्हें मिसर के हाथ से और उन तमाम ज़ालिमों के हाथ से बचा लिया जो तुम्हें दबा रहे थे। मैं उन्हें तुम्हारे आगे आगे निकालता गया और उनकी ज़मीन तुम्हें दे दी। 10 उस वक़्त मैंने तुम्हें बताया, ‘मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ। जिन अमोरियों के मुल्क में तुम रह रहे हो उनके देवताओं का ख़ौफ़ मत मानना। लेकिन तुमने मेरी न सुनी।’”

रब जिदौन को बुलाता है

11 एक दिन रब का फ़रिश्ता आया और उफ़रा में बलूत के एक दरख़्त के साय में बैठ गया। यह दरख़्त अबियज़र के ख़ानदान के एक आदमी का था जिसका नाम युआस था। वहाँ अंगूर का रस निकालने का हौज़ था, और उसमें युआस का बेटा जिदौन छुपकर गंदुम झाड़ रहा था, हौज़ में इसलिए कि गंदुम मिदियानियों से महफूज़ रहे। 12 रब का फ़रिश्ता जिदौन पर ज़ाहिर हुआ और कहा, “ऐ ज़बरदस्त सूरमे, रब तेरे साथ है!”

13 जिदौन ने जवाब दिया, “नहीं जनाब, अगर रब हमारे साथ हो तो यह सब कुछ हमारे साथ क्यों हो रहा है? उसके वह तमाम मोजिज़े आज कहाँ नज़र आते हैं जिनके बारे में हमारे बापदादा हमें बताते रहे हैं? क्या वह नहीं कहते थे कि रब हमें मिसर से निकाल लाया? नहीं, जनाब। अब ऐसा नहीं है। अब रब ने हमें तर्क करके मिदियान के हवाले कर दिया है।”

14 रब ने उस की तरफ़ मुड़कर कहा, “अपनी इस ताक़त में जा और इसराईल को मिदियान के हाथ से बचा। मैं ही तुझे भेज रहा हूँ।”

15 लेकिन जिदौन ने एतराज़ किया, “ऐ रब, मैं इसराईल को किस तरह बचाऊँ? मेरा ख़ानदान मनस्सी के क़बीले का सबसे कमज़ोर ख़ानदान है, और मैं अपने बाप के घर में सबसे छोटा हूँ।”

16 रब ने जवाब दिया, “मैं तेरे साथ हूँगा, और तू मिदियानियों को यों मारेगा जैसे एक ही आदमी को।”

17 तब जिदौन ने कहा, “अगर मुझ पर तेरे करम की नज़र हो तो मुझे कोई इलाही निशान दिखा ताकि साबित हो जाए कि वाकई रब ही मेरे साथ बात कर रहा है। 18 मैं अभी जाकर कुरबानी तैयार करता हूँ और फिर वापस आकर उसे तुझे पेश करूँगा। उस वक़्त तक रवाना न हो जाना।”

रब ने कहा, “ठीक है, मैं तेरी वापसी का इंतज़ार करके ही जाऊँगा।”

19 जिदौन चला गया। उसने बकरी का बच्चा ज़बह करके तैयार किया और पूरे 16 किलोग्राम मैदे से बेखमीरी रोटी बनाई। फिर गोश्त को टोकरी में रखकर और उसका शोरबा अलग बरतन में डालकर वह सब कुछ रब के फ़रिश्ते के पास लाया और उसे बलूत के साय में पेश किया।

20 रब के फ़रिश्ते ने कहा, “गोश्त और बेखमीरी रोटी को लेकर इस पत्थर पर रख दे, फिर शोरबा उस पर उंडेल दे।” जिदौन ने ऐसा ही किया। 21 रब के फ़रिश्ते के हाथ में लाठी थी। अब उसने लाठी के सिरे से गोश्त और बेखमीरी रोटी को छू दिया। अचानक पत्थर से आग भड़क उठी और ख़ुराक भस्म हो गई। साथ साथ रब का फ़रिश्ता ओझल हो गया।

22 फिर जिदौन को यक़ीन आया कि यह वाकई रब का फ़रिश्ता था, और वह बोल उठा, “हाय रब कादिरे-मुतलक! मुझ पर अफ़सोस, क्योंकि मैंने रब के फ़रिश्ते को स्बरू देखा है।”

23 लेकिन रब उससे हमकलाम हुआ और कहा, “तेरी सलामती हो। मत डर, तू नहीं मरेगा।”

24 वही जिदौन ने रब के लिए कुरबानगाह बनाई और उसका नाम ‘रब सलामत है’ रखा। यह आज तक अबियज़र के ख़ानदान के शहर उफ़रा में मौजूद है।

जिदौन बाल की कुरबानगाह गिरा देता है

25 उसी रात रब जिदौन से हमकलाम हुआ, “अपने बाप के बैलों में से दूसरे बैल को जो सात साल का है चुन ले। फिर अपने बाप की वह कुरबानगाह गिरा दे जिस पर बाल देवता को कुरबानियाँ चढ़ाई जाती हैं, और यसीरत देवी का वह खंभा काट डाल जो साथ खड़ा है। 26 इसके बाद उसी पहाड़ी किले की चोटी पर रब अपने खुदा के लिए सहीह कुरबानगाह बना दे। यसीरत के खंबे की कटी हुई लकड़ी और बैल को उस पर रखकर मुझे भस्म होनेवाली कुरबानी पेश कर।”

27 चुनौचे जिदौन ने अपने दस नौकरों को साथ लेकर वह कुछ किया जिसका हुक्म रब ने उसे दिया था। लेकिन वह अपने खानदान और शहर के लोगों से डरता था, इसलिए उसने यह काम दिन के बजाए रात के वक़्त किया।

28 सुबह के वक़्त जब शहर के लोग उठे तो देखा कि बाल की कुरबानगाह ढा दी गई है और यसीरत देवी का साथवाला खंभा काट दिया गया है। इनकी जगह एक नई कुरबानगाह बनाई गई है जिस पर बैल को चढ़ाया गया है। 29 उन्होंने एक दूसरे से पूछा, “किसने यह किया?” जब वह इस बात की तफ़्तीश करने लगे तो किसी ने उन्हें बताया कि जिदौन बिन युआस ने यह सब कुछ किया है।

30 तब वह युआस के घर गए और तकाज़ा किया, “अपने बेटे को घर से निकाल लाएँ। लाज़िम है कि वह मर जाए, क्योंकि उसने बाल की कुरबानगाह को गिराकर साथवाला यसीरत देवी का खंभा भी काट डाला है।”

31 लेकिन युआस ने उनसे जो उसके सामने खड़े थे कहा, “क्या आप बाल के दिफ़ा में लड़ना चाहते हैं? जो भी बाल के लिए लड़ेगा उसे कल सुबह तक मार दिया जाएगा। अगर बाल वाकई खुदा है तो वह खुद अपने दिफ़ा में लड़े जब कोई उस की कुरबानगाह को ढा दे।”

32 चूँकि जिदौन ने बाल की कुरबानगाह गिरा दी थी इसलिए उसका नाम यरूबाल यानी ‘बाल उससे लड़े’ पड़ गया।

जिदौन अल्लाह से निशान माँगता है

33 कुछ देर के बाद तमाम मिदियानी, अमालीकी और दूसरी मशरिकी क्रौमें जमा हुई और दरियाए-यरदन को पार करके अपने डेरे मैदाने-यज़्रएल में लगाए। 34 फिर रब का रूह जिदौन पर नाज़िल हुआ। उसने नरसिंगा फूँककर अबियज़र के खानदान के मर्दों को अपने पीछे हो लेने के लिए बुलाया। 35 साथ साथ उसने अपने कासिदों को मनस्सी के कबीले और आशर, जबूलून और नफ़ताली के कबीलों के पास भी भेज दिया। तब वह भी आए और जिदौन के मर्दों के साथ मिलकर उसके पीछे हो लिए।

36 जिदौन ने अल्लाह से दुआ की, “अगर तू वाकई इसराईल को अपने वादे के मुताबिक मेरे ज़रीए बचाना चाहता है 37 तो मुझे यक्नीन दिला। मैं रात को ताज़ा कतरी हुई ऊन गंदुम गाहने के फ़र्श पर रख दूँगा। कल सुबह अगर सिर्फ़ ऊन पर ओस पड़ी हो और इर्दगिर्द का सारा फ़र्श खुश्क हो तो मैं जान लूँगा कि वाकई तू अपने वादे के मुताबिक इसराईल को मेरे ज़रीए बचाएगा।”

38 वही कुछ हुआ जिसकी दरखास्त जिदौन ने की थी। अगले दिन जब वह सुबह-सवेरे उठा तो ऊन ओस से तर थी। जब उसने उसे निचोड़ा तो इतना पानी था कि बरतन भर गया।

39 फिर जिदौन ने अल्लाह से कहा, “मुझसे गुस्से न हो जाना अगर मैं तुझसे एक बार फिर दरखास्त करूँ। मुझे एक आखिरी दफ़ा ऊन के ज़रीए तेरी मरज़ी जाँचने की इजाज़त दे। इस दफ़ा ऊन खुश्क रहे और इर्दगिर्द के सारे फ़र्श पर ओस पड़ी हो।” 40 उस रात अल्लाह ने ऐसा ही किया। सिर्फ़ ऊन खुश्क रही जबकि इर्दगिर्द के सारे फ़र्श पर ओस पड़ी थी।

7

अल्लाह जिदौन के साथियों को चुन लेता है

1 सुबह-सवेरे यरूबाल यानी जिदौन अपने तमाम लोगों को साथ लेकर हरोद चश्मे के पास आया। वहाँ उन्होंने अपने डेरे लगाए। मिदियानियों ने अपनी खैमागाह उनके शिमाल में मोरिह पहाड़ के दामन में लगाई हुई थी।

2 रब ने जिदौन से कहा, “तेरे पास ज़्यादा लोग हैं! मैं इस किस्म के बड़े लश्कर को मिदियानियों पर फ़तह नहीं दूँगा, वरना इसराईली मेरे सामने डींगें मारकर कहेंगे, ‘हमने अपनी ही ताक़त से अपने आपको बचाया है!’ 3 इसलिए लश्करगाह में एलान कर कि जो डर के मारे परेशान हो वह अपने घर वापस चला जाए।” जिदौन ने यों किया तो 22,000 मर्द वापस चले गए जबकि 10,000 जिदौन के पास रहे।

4 लेकिन रब ने दुबारा जिदौन से बात की, “अभी तक ज़्यादा लोग हैं! इनके साथ उतरकर चश्मे के पास जा। वहाँ मैं उन्हें जाँचकर उनको मुक़र्रर करूँगा जिन्हें तेरे साथ जाना है।” 5 चुनौचे जिदौन अपने आदमियों के साथ चश्मे के पास उतर आया। रब ने उसे हुक्म दिया, “जो भी अपना हाथ पानी से भरकर उसे कुत्ते की तरह चाट ले उसे एक तरफ़ खड़ा कर। दूसरी तरफ़ उन्हें खड़ा कर जो घुटने टेककर पानी पीते हैं।”

6 300 आदमियों ने अपना हाथ पानी से भरकर उसे चाट लिया जबकि बाक़ी सब पीने के लिए झुक गए।

7 फिर रब ने जिदौन से फ़रमाया, “मैं इन 300 चाटनेवाले आदमियों के ज़रीए इसराईल को बचाकर मिदियानियों को तेरे हवाले कर दूँगा। बाक़ी तमाम मर्दों को फ़ारिग कर। वह सब अपने अपने घर वापस चले जाएँ।” 8 चुनौचे जिदौन ने बाक़ी तमाम आदमियों को फ़ारिग कर दिया। सिर्फ़ मुक़र्ररा 300 मर्द रह गए। अब यह दूसरों की खुराक और नरसिंगे अपने पास रखकर जंग के लिए तैयार हुए। उस वक़्त मिदियानी खैमागाह इसराईलियों के नीचे वादी में थी।

मिदियानियों पर जिदौन की फ़तह

9 जब रात हुई तो रब जिदौन से हमकलाम हुआ, “उठ, मिदियानी खैमागाह के पास उतरकर उस पर हमला कर, क्योंकि मैं उसे तेरे हाथ में दे दूँगा। 10 लेकिन अगर तू इससे डरता है तो पहले अपने नौकर फूराह के साथ उतरकर 11 वह बातें सुन ले जो वहाँ के लोग कह रहे हैं। तब उन पर हमला करने की ज़रूरत बढ़ जाएगी।”

जिदौन फूराह के साथ खैमागाह के किनारे के पास उतर आया। 12 मिदियानी, अमालीकी और मशरिक के दीगर फ़ौजी टिड्डियों के दल की तरह वादी में फैले हुए थे। उनके ऊँट साहिल की रेत की तरह बेशुमार थे। 13 जिदौन दबे पाँव दुश्मन के इतने करीब पहुँच गया कि उनकी बातें सुन सकता था। ऐन उस वक़्त एक फ़ौजी दूसरे को अपना खाब सुना रहा था, “मैंने खाब में देखा कि जौ की बड़ी रोटी लुढ़कती लुढ़कती हमारी खैमागाह में उतर आई। यहाँ वह इतनी शिद्दत से खैमे से टकरा गई कि खैमा उलटकर ज़मीनबोस हो गया।” 14 दूसरे ने जवाब दिया, “इसका सिर्फ़ यह मतलब हो सकता है कि इसराईली मर्द जिदौन बिन युआस की तलवार ग़ालिब आएगी! अल्लाह उसे मिदियानियों और पूरी लशकरगाह पर फ़तह देगा।”

15 खाब और उस की ताबीर सुनकर जिदौन ने अल्लाह को सिजदा किया। फिर उसने इसराईली खैमागाह में वापस आकर एलान किया, “उठें! रब ने मिदियानी लशकरगाह को तुम्हारे हवाले कर दिया है।” 16 उसने अपने 300 मर्दों को सौ सौ के तीन गुरोहों में तक्रसीम करके हर एक को एक नरसिंगा और एक घड़ा दे दिया। हर घड़े में मशाल थी। 17-18 उसने हुक्म दिया, “जो कुछ मैं करूँगा उस पर गौर करके वही कुछ करें। पूरी खैमागाह को घेर लें और ऐन वही कुछ करें जो मैं करूँगा। जब मैं अपने सौ लोगों के साथ खैमागाह के किनारे पहुँचूँगा तो हम अपने नरसिंगों को बजा देंगे। यह सुनते ही आप भी यही कुछ करें और साथ साथ नारा लगाएँ, ‘रब के लिए और जिदौन के लिए!’”

19 तक्ररीबन आधी रात को जिदौन अपने सौ मर्दों के साथ मिदियानी खैमागाह के किनारे पहुँच गया। थोड़ी देर पहले पहरेदार बदल गए थे। अचानक इसराईलियों ने अपने नरसिंगों को बजाया और अपने घड़ों को टुकड़े टुकड़े कर दिया। 20 फ़ौरन सौ सौ के दूसरे दो गुरोहों ने भी ऐसा ही किया। अपने दहने हाथ में नरसिंगा और बाएँ हाथ में भड़कती मशाल पकड़कर वह नारा लगाते रहे, “रब के लिए और जिदौन के लिए!” 21 लेकिन वह खैमागाह में दाखिल न हुए बल्कि वही उसके इर्दगिर्द खड़े रहे। दुश्मन में बड़ी अफ़रा-तफ़री मच गई। चीखते-चिल्लाते सब भाग जाने की कोशिश करने लगे। 22 जिदौन के 300 आदमी अपने नरसिंगे बजाते रहे जबकि रब ने खैमागाह में ऐसी गड़बड़ पैदा की कि लोग एक दूसरे से लड़ने लगे। आखिरकार पूरा लशकर बैत-सिता, सरीरात और अबील-महला की सरहद तक फ़रार हुआ जो तब्बात के करीब है।

23 फिर जिदौन ने नफ़ताली, आशर और पूरे मनस्सी के मर्दों को बुला लिया, और उन्होंने मिलकर मिदियानियों का ताक्कुब किया। 24 उसने अपने कासिदों के ज़रीए इफ़राईम के पूरे पहाड़ी इलाके के बाशिंदों को भी पैग़ाम भेज दिया, “उतर आएं और मिदियानियों को भाग जाने से रोकें! बैत-बारा तक उन तमाम जगहों पर कब्ज़ा कर लें जहाँ दुश्मन दरियाए-यरदन को पा-प्यादा पार कर सकता है।”

इफ़राईमी मान गए, 25 और उन्होंने दो मिदियानी सरदारों को पकड़कर उनके सर कलम कर दिए। सरदारों के नाम ओरेब और ज़एब थे, और जहाँ उन्हें पकड़ा गया उन जगहों के नाम ‘ओरेब की चटान’ और ‘ज़एब का अंगूर का रस निकालनेवाला हौज़’ पड़ गया। इसके बाद वह दुबारा मिदियानियों का ताक्कुब करने लगे। दरियाए-यरदन को पार करने पर उनकी मुलाकात जिदौन से हुई, और उन्होंने दोनों सरदारों के सर उसके सुपुर्द कर दिए।

8

इफ़राईम नाराज़ हो जाता है

1 लेकिन इफ़राईम के मर्दों ने शिकायत की, “आपने हमसे कैसा सुल्क किया? आपने हमें क्यों नहीं बुलाया जब मिदियान से लड़ने गए?” ऐसी बातें करते करते उन्होंने जिदौन के साथ सख़्त बहस की। 2 लेकिन जिदौन ने जवाब दिया, “क्या आप मुझसे कहीं ज़्यादा कामयाब न हुए? और जो अंगूर फ़सल जमा करने के बाद इफ़राईम के बाग़ों में रह जाते हैं क्या वह मेरे छोटे ख़ानदान अबियज़र की पूरी फ़सल से ज़्यादा नहीं होते? 3 अल्लाह ने तो मिदियान के सरदारों ओरेब और ज़एब को आपके हवाले कर दिया। इसकी निसबत मुझसे क्या कामयाबी हासिल हुई है?” यह सुनकर इफ़राईम के मर्दों का गुस्सा ठंडा हो गया।

सुक्कात और फ़नुएल जिदौन की मदद नहीं करते

4 जिदौन अपने 300 मर्दों समेत दरियाए-यरदन को पार कर चुका था। दुश्मन का ताक्कुब करते करते वह थक गए थे। 5 इसलिए जिदौन ने करीब के शहर सुक्कात के बाशिंदों से गुज़ारिश की, “मेरे फ़ौजियों को कुछ रोटी दे दें। वह थक गए हैं, क्योंकि हम मिदियानी सरदार ज़िबह और ज़लमुन्ना का ताक्कुब कर रहे हैं।” 6 लेकिन सुक्कात के बुज़ुर्गों ने जवाब दिया, “हम आपके फ़ौजियों को रोटी क्यों दें? क्या आप ज़िबह और ज़लमुन्ना को पकड़ चुके हैं कि हम ऐसा करें?” 7 यह सुनकर जिदौन ने कहा, “ज्योंही रब इन दो सरदारों ज़िबह और ज़लमुन्ना को मेरे हाथ में कर देगा मैं तुमको रेगिस्तान की काँटेदार झाड़ियों और ऊँटकटारों से गाहकर तबाह कर दूँगा।”

8 वह आगे निकलकर फ़नुएल शहर पहुँच गया। वहाँ भी उसने रोटी माँगी, लेकिन फ़नुएल के बाशिंदों ने सुक्कात का-सा जवाब दिया। 9 यह सुनकर उसने कहा, “जब मैं सलामती से वापस आऊँगा तो तुम्हारा यह बुर्ज गिरा दूँगा!”

मिदियानियों पर पूरी फ़तह

10 अब जिबह और जलमुन्ना करकूर पहुँच गए थे। 15,000 अफराद उनके साथ रह गए थे, क्योंकि मशरिकी इत्हादियों के 1,20,000 तलवारों से लैस फ़ौजी हलाक हो गए थे। 11 जिदौन ने मिदियानियों के पीछे चलते हुए खानाबदोशों का वह रास्ता इस्तेमाल किया जो नूबह और युगबहा के मशरिक में है। इस तरीके से उसने उनकी लशकरगाह पर उस वक़्त हमला किया जब वह अपने आपको महफूज़ समझ रहे थे। 12 दुश्मन में अफ़रा-तफ़री पैदा हुई और जिबह और ज़लमुन्ना फ़रार हो गए। लेकिन जिदौन ने उनका ताक़्क़ुब करते करते उन्हें पकड़ लिया।

13 इसके बाद जिदौन लौटा। वह अभी हरिस के दर्रा से उतर रहा था 14 कि सुक्कात के एक जवान आदमी से मिला। जिदौन ने उसे पकड़कर मजबूर किया कि वह शहर के राहनुमाओं और बुजुर्गों की फ़हरिस्त लिखकर दे। 77 बुजुर्ग थे। 15 जिदौन उनके पास गया और कहा, “देखो, यह हैं जिबह और ज़लमुन्ना! तुमने इन्हीं की वजह से मेरा मज़ाक उड़ाकर कहा था कि हम आपके थकेहारे फ़ौजियों को रोटी क्यों दें? क्या आप जिबह और ज़लमुन्ना को पकड़ चुके हैं कि हम ऐसा करें?” 16 फिर जिदौन ने शहर के बुजुर्गों को गिरिफ़्तार करके उन्हें काँटेदार झाड़ियों और ऊँटकारों से गाहकर सबक सिखाया। 17 फिर वह फ़नुएल गया और वहाँ का बुर्ज गिराकर शहर के मर्दों को मार डाला।

18 इसके बाद जिदौन जिबह और ज़लमुन्ना से मुखातिब हुआ। उसने पूछा, “उन आदमियों का हुलिया कैसा था जिन्हें तुमने तबूर पहाड़ पर क़त्ल किया?”

उन्होंने जवाब दिया, “वह आप जैसे थे, हर एक शहज़ादा लग रहा था।”

19 जिदौन बोला, “वह मेरे सगे भाई थे। रब की हयात की क़सम, अगर तुम उनको ज़िंदा छोड़ते तो मैं तुम्हें हलाक न करता।”

20 फिर वह अपने पहलौंठे यतर से मुखातिब होकर बोला, “इनको मार डालो!” लेकिन यतर अपनी तलवार मियान से निकालने से झिजका, क्योंकि वह अभी बच्चा था और डरता था। 21 तब जिबह और ज़लमुन्ना ने कहा, “आप ही हमें मार दें! क्योंकि जैसा आदमी वैसी उस की ताक़त!” जिदौन ने खड़े होकर उन्हें तलवार से मार डाला और उनके ऊँटों की गरदनों पर लगे तावीज़ उतारकर अपने पास रखे।

जिदौन के सबब से इसराईल बुतपरस्ती में उलझ जाता है

22 इसराईलियों ने जिदौन के पास आकर कहा, “आपने हमें मिदियानियों से बचा लिया है, इसलिए हम पर हुक्मत करें, आप, आपके बाद आपका बेटा और उसके बाद आपका पोता।”

23 लेकिन जिदौन ने जवाब दिया, “न मैं आप पर हुक्मत करूँगा, न मेरा बेटा। रब ही आप पर हुक्मत करेगा। 24 मेरी सिर्फ़ एक गुज़ारिश है। हर एक मुझे अपने लूटे हुए माल में से एक एक बाली दे दे।” बात यह थी कि दुश्मन के तमाम अफ़राद ने सोने की बालियाँ पहन रखी थीं, क्योंकि वह इसमाईली थे।

25 इसराईलियों ने कहा, “हम खुशी से बाली देंगे।” एक चादर ज़मीन पर बिछाकर हर एक ने एक एक बाली उस पर फेंक दी। 26 सोने की इन बालियों का वज़न तकरीबन 20 किलोग्राम था। इसके अलावा इसराईलियों ने मुख़्तलिफ़ तावीज़, कान के आवेज़े, अरगवानी रंग के शाही लिबास और ऊँटों की गरदनों में लगी क़ीमती ज़ंजीरें भी दे दीं।

27 इस सोने से जिदौन ने एक अफ़ोद * बनाकर उसे अपने आबाई शहर उफ़रा में खड़ा किया जहाँ वह उसके और तमाम खानदान के लिए फंदा बन गया। न सिर्फ़ यह बल्कि पूरा इसराईल ज़िना करके बुत की पूजा करने लगा।

28 उस वक़्त मिदियान ने ऐसी शिकस्त खाई कि बाद में इसराईल के लिए खतरे का बाइस न रहा। और जितनी देर जिदौन ज़िंदा रहा यानी 40 साल तक मुल्क में अमनो-अमान कायम रहा।

29 जंग के बाद जिदौन बिन युआस दुबारा उफ़रा में रहने लगा। 30 उस की बहुत-सी बीवियाँ और 70 बेटे थे। 31 उस की एक दाश्ता भी थी जो सिकम शहर में रिहाइशपज़ीर थी और जिसके एक बेटा पैदा हुआ। जिदौन ने बेटे का नाम अबीमलिक रखा। 32 जिदौन उम्ररसीदा था जब फ़ौत हुआ। उसे अबियज़रियों के शहर उफ़रा में उसके बाप युआस की कब्र में दफ़नाया गया।

33 जिदौन के मरते ही इसराईली दुबारा ज़िना करके बाल के बुतों की पूजा करने लगे। वह बाल-बरीत को अपना ख़ास देवता बनाकर 34 रब अपने ख़ुदा को भूल गए जिसने उन्हें इर्दगिर्द के दुश्मनों से बचा लिया था। 35 उन्होंने यस्बाल यानी जिदौन के खानदान को भी उस एहसान के लिए कोई मेहरबानी न दिखाई जो जिदौन ने उन पर किया था।

9

अबीमलिक बादशाह बन जाता है

1 एक दिन यस्बाल यानी जिदौन का बेटा अबीमलिक अपने मामुओं और माँ के बाक़ी रिश्तेदारों से मिलने के लिए सिकम गया। उसने उनसे कहा, 2 “सिकम शहर के तमाम बाशिंदों से पूछें, क्या आप अपने आप पर जिदौन के 70 बेटों की हुक्मत ज़्यादा पसंद करेंगे या एक ही शाख्स की? याद रहे कि मैं आपका ख़ूनी रिश्तेदार हूँ!” 3 अबीमलिक के मामुओं ने सिकम के तमाम बाशिंदों के सामने यह बातें दोहराईं। सिकम के लोगों ने सोचा, “अबीमलिक हमारा भाई है” इसलिए वह उसके पीछे लग गए। 4 उन्होंने उसे बाल-बरीत देवता के मंदिर से चौंदी के 70 सिक्के भी दे दिए।

* 8:27 आम तौर पर इब्रानी में अफ़ोद का मतलब इमामे-आज़म का बालापोश था (देखिए ख़ुर्रज 28:4), लेकिन यहाँ इससे मुराद बुतपरस्ती की कोई चीज़ है।

इन पैसों से अबीमलिक ने अपने इर्दगिर्द आवारा और बदमाश आदमियों का गुरोह जमा किया। ⁵ उन्हें अपने साथ लेकर वह उफ़रा पहुँचा जहाँ बाप का खानदान रहता था। वहाँ उसने अपने तमाम भाइयों यानी जिदौन के 70 बेटों को एक ही पत्थर पर क़त्ल कर दिया। सिर्फ़ यूताम जो जिदौन का सबसे छोटा बेटा था कहीं छुपकर बच निकला। ⁶ इसके बाद सिकम और बैत-मिल्लो के तमाम लोग उस बलूत के साथ में जमा हुए जो सिकम के सतून के पास था। वहाँ उन्होंने अबीमलिक को अपना बादशाह मुक़र्रर किया।

यूताम की अबीमलिक और सिकम पर लानत

⁷ जब यूताम को इसकी इतला मिली तो वह गरिज़ीम पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया और ऊँची आवाज़ से चिल्लाया, “ऐ सिकम के बाशिंदो, सुनें मेरी बात! सुनें अगर आप चाहते हैं कि अल्लाह आपकी भी सुने। ⁸ एक दिन दरख्तों ने फ़ैसला किया कि हम पर कोई बादशाह होना चाहिए। वह उसे चुनने और मसह करने के लिए निकले। पहले उन्होंने ज़ैतून के दरख्त से बात की, ‘हमारे बादशाह बन जाँ!’ ⁹ लेकिन ज़ैतून के दरख्त ने जवाब दिया, ‘क्या मैं अपना तेल पैदा करने से बाज़ आऊँ जिसकी अल्लाह और इनसान इतनी क़दर करते हैं ताकि दरख्तों पर हुकूमत करूँ? हरगिज़ नहीं!’ ¹⁰ इसके बाद दरख्तों ने अंज़ीर के दरख्त से बात की, ‘आँ, हमारे बादशाह बन जाँ!’ ¹¹ लेकिन अंज़ीर के दरख्त ने जवाब दिया, ‘क्या मैं अपना मीठा और अच्छा फल लाने से बाज़ आऊँ ताकि दरख्तों पर हुकूमत करूँ? हरगिज़ नहीं!’ ¹² फिर दरख्तों ने अंगूर की बेल से बात की, ‘आँ, हमारे बादशाह बन जाँ!’ ¹³ लेकिन अंगूर की बेल ने जवाब दिया, ‘क्या मैं अपना रस पैदा करने से बाज़ आऊँ जिससे अल्लाह और इनसान खुश हो जाते हैं ताकि दरख्तों पर हुकूमत करूँ? हरगिज़ नहीं!’ ¹⁴ आख़िरकार दरख्त काँटेदार झाड़ी के पास आए और कहा, ‘आँ और हमारे बादशाह बन जाँ!’ ¹⁵ काँटेदार झाड़ी ने जवाब दिया, ‘अगर तुम वाकई मुझे मसह करके अपना बादशाह बनाना चाहते हो तो आओ और मेरे साथ में पनाह लो। अगर तुम ऐसा नहीं करना चाहते तो झाड़ी से आग निकलकर लुबनान के देवदार के दरख्तों को भस्म कर दे।’”

¹⁶ यूताम ने बात जारी रखकर कहा, “अब मुझे बताँ, क्या आपने वफ़ादारी और सच्चाई का इज़हार किया जब आपने अबीमलिक को अपना बादशाह बना लिया? क्या आपने जिदौन और उसके खानदान के साथ अच्छा सुलूक किया? क्या आपने उस पर शुक्रगुज़ारी का वह इज़हार किया जिसके लायक वह था? ¹⁷ मेरे बाप ने आपकी खातिर जंग की। आपको मिदियानियों से बचाने के लिए उसने अपनी जान ख़तरे में डाल दी। ¹⁸ लेकिन आज आप जिदौन के घराने के खिलाफ़ उठ खड़े हुए हैं। आपने उसके 70 बेटों को एक ही पत्थर पर ज़बह करके उस की लौंडी के बेटे अबीमलिक को सिकम का बादशाह बना लिया है, और यह सिर्फ़ इसलिए कि वह आपका रिश्तेदार है। ¹⁹ अब सुनें! अगर आपने जिदौन और उसके खानदान के साथ वफ़ादारी और सच्चाई का इज़हार किया है तो फिर अल्लाह करे कि अबीमलिक आपके लिए खुशी का बाइस हो और आप उसके लिए। ²⁰ लेकिन अगर ऐसा नहीं था तो अल्लाह करे कि अबीमलिक से आग निकलकर आप सबको भस्म कर दे जो सिकम और बैत-मिल्लो में रहते हैं! और आग आपसे निकलकर अबीमलिक को भी भस्म कर दे!” ²¹ यह कहकर यूताम ने भागकर बैर में पनाह ली, क्योंकि वह अपने भाई अबीमलिक से डरता था।

सिकम के बाशिंदे अबीमलिक के खिलाफ़ हो जाते हैं

²² अबीमलिक की इसराईल पर हुकूमत तीन साल तक रही। ²³ लेकिन फिर अल्लाह ने एक बुरी रूह भेज दी जिसने अबीमलिक और सिकम के बाशिंदों में नाइतफ़ाकी पैदा कर दी। नतीजे में सिकम के लोगों ने बगावत की। ²⁴ यों अल्लाह ने उसे इसकी सज़ा दी कि उसने अपने भाइयों यानी जिदौन के 70 बेटों को क़त्ल किया था। सिकम के बाशिंदों को भी सज़ा मिली, क्योंकि उन्होंने इसमें अबीमलिक की मदद की थी।

²⁵ उस वक़्त सिकम के लोग इर्दगिर्द की चोटियों पर चढ़कर अबीमलिक की ताक में बैठ गए। जो भी वहाँ से गुज़रा उसे उन्होंने लूट लिया। इस बात की ख़बर अबीमलिक तक पहुँच गई।

²⁶ उन दिनों में एक आदमी अपने भाइयों के साथ सिकम आया जिसका नाम जाल बिन अबद था। सिकम के लोगों से उसका अच्छा-खासा ताल्लूक बन गया, और वह उस पर एतबार करने लगे। ²⁷ अंगूर की फ़सल पक गई थी। लोग शहर से निकले और अपने बाग़ों में अंगूर तोड़कर उनसे रस निकालने लगे। फिर उन्होंने अपने देवता के मंदिर में जशन मनाया। जब वह ख़ूब खा-पी रहे थे तो अबीमलिक पर लानत करने लगे। ²⁸ जाल बिन अबद ने कहा, “सिकम का अबीमलिक के साथ क्या वास्ता कि हम उसके ताबे रहें? वह तो सिर्फ़ यरूबाल का बेटा है, जिसका नुमाइंदा ज़बूल है। उस की खिदमत मत करना बल्कि सिकम के बानी हमोर के लोगों की! हम अबीमलिक की खिदमत क्यों करें? ²⁹ काश शहर का इंतज़ाम मेरे हाथ में होता! फिर मैं अबीमलिक को जल्द ही निकाल देता। मैं उसे चैलेंज देता कि आओ, अपने फ़ौजियों को जमा करके हमसे लड़ो!”

अबीमलिक सिकम से लड़ता है

³⁰ जाल बिन अबद की बात सुनकर सिकम का सरदार ज़बूल बड़े गुस्से में आ गया। ³¹ अपने कासिदों की मारिफ़त उसने अबीमलिक को चुपके से इतला दी, “जाल बिन अबद अपने भाइयों के साथ सिकम आ गया है जहाँ वह पूरे शहर को आपके खिलाफ़ खड़े हो जाने के लिए उकसा रहा है। ³² अब ऐसा करें कि रात के वक़्त अपने फ़ौजियों समेत इधर आएँ और खेतों में ताक में रहें। ³³ सुबह-सवेरे जब सूरज तुल होगा तो शहर पर हमला करें। जब जाल अपने आदमियों के साथ आपके खिलाफ़ लड़ने आएगा तो उसके साथ वह कुछ करें जो आप मुनासिब

समझते हैं।” 34 यह सुनकर अबीमलिक रात के वक्त अपने फौजियों समेत खाना हुआ। उसने उन्हें चार गुरोहों में तकसीम किया जो सिकम को घेरकर ताक में बैठ गए।

35 सुबह के वक्त जब जाल घर से निकलकर शहर के दरवाजे में खड़ा हुआ तो अबीमलिक और उसके फौजी अपनी छुपने की जगहों से निकल आए। 36 उन्हें देखकर जाल ने ज़बूल से कहा, “देखो, लोग पहाड़ों की चोटियों से उतर रहे हैं!” ज़बूल ने जवाब दिया, “नहीं, नहीं, जो आपको आदमी लग रहे हैं वह सिर्फ पहाड़ों के साय हैं।” 37 लेकिन जाल को तसल्ली न हुई। वह दुबारा बोल उठा, “देखो, लोग दुनिया की नाफ * से उतर रहे हैं। और एक और गुरोह रम्मालों के बलूत से होकर आ रहा है।” 38 फिर ज़बूल ने उससे कहा, “अब तेरी बड़ी बड़ी बातें कहाँ रही? क्या तूने नहीं कहा था, ‘अबीमलिक कौन है कि हम उसके ताबे रहें?’ अब यह लोग आ गए हैं जिनका मज़ाक तूने उड़ाया। जा, शहर से निकलकर उनसे लड़!”

39 तब जाल सिकम के मर्दों के साथ शहर से निकला और अबीमलिक से लड़ने लगा। 40 लेकिन वह हार गया, और अबीमलिक ने शहर के दरवाजे तक उसका ताक़ुब किया। भागते भागते सिकम के बहुत-से अफ़राद रास्ते में गिरकर हलाक हो गए। 41 फिर अबीमलिक अरुमा चला गया जबकि ज़बूल ने पीछे रहकर जाल और उसके भाइयों को शहर से निकाल दिया।

42 अगले दिन सिकम के लोग शहर से निकलकर मैदान में आना चाहते थे। जब अबीमलिक को यह ख़बर मिली 43-44 तो उसने अपनी फौज को तीन गुरोहों में तकसीम किया। यह गुरोह दुबारा सिकम को घेरकर घात में बैठ गए। जब लोग शहर से निकले तो अबीमलिक अपने गुरोह के साथ छुपने की जगह से निकल आया और शहर के दरवाजे में खड़ा हो गया। बाकी दो गुरोह मैदान में मौजूद अफ़राद पर टूट पड़े और सबको हलाक कर दिया। 45 फिर अबीमलिक ने शहर पर हमला किया। लोग पूरा दिन लड़ते रहे, लेकिन आख़िरकार अबीमलिक ने शहर पर क़ब्ज़ा करके तमाम बाशिंदों को मौत के घाट उतार दिया। उसने शहर को तबाह किया और खंडरात पर नमक बिखेरकर उस की हतमी तबाही ज़ाहिर कर दी।

46 जब सिकम के बुर्ज के रहनेवालों को यह इतला मिली तो वह एल-बरीत देवता के मंदिर के तहख़ाने में छुप गए। 47 जब अबीमलिक को पता चला 48 तो वह अपने फौजियों समेत ज़लमोन पहाड़ पर चढ़ गया। वहाँ उसने कुल्हाड़ी से शाख़ काटकर अपने कंधों पर रख ली और अपने फौजियों को हुक्म दिया, “जल्दी करो! सब ऐसा ही करो।” 49 फौजियों ने भी शाख़ें काटीं और फिर अबीमलिक के पीछे लगकर मंदिर के पास वापस आए। वहाँ उन्होंने तमाम लकड़ी तहख़ाने की छत पर जमा करके उसे जला दिया। यों सिकम के बुर्ज के तकरीबन 1,000 मर्दों-खवातीन सब भस्म हो गए।

अबीमलिक की मौत

50 वहाँ से अबीमलिक तैबिज़ के खिलाफ़ बढ गया। उसने शहर का मुहासरा करके उस पर क़ब्ज़ा कर लिया। 51 लेकिन शहर के बीच में एक मज़बूत बुर्ज था। तमाम मर्दों-खवातीन उसमें फ़रार हुए और बुर्ज के दरवाज़ों पर कुंडी लगाकर छत पर चढ़ गए।

52 अबीमलिक लड़ते लड़ते बुर्ज के दरवाजे के करीब पहुँच गया। वह उसे जलाने की कोशिश करने लगा 53 तो एक औरत ने चक्की का ऊपर का पाट उसके सर पर फेंक दिया, और उस की खोपड़ी फट गई। 54 जल्दी से अबीमलिक ने अपने सिलाहबरदार को बुलाया। उसने कहा, “अपनी तलवार खींचकर मुझे मार दो! वरना लोग कहेंगे कि एक औरत ने मुझे मार डाला।” चुनौचे नौजवान ने अपनी तलवार उसके बदन में से गुज़ार दी और वह मर गया। 55 जब फौजियों ने देखा कि अबीमलिक मर गया है तो वह अपने अपने घर चले गए।

56 यों अल्लाह ने अबीमलिक को उस बदी का बदला दिया जो उसने अपने 70 भाइयों को क़त्ल करके अपने बाप के खिलाफ़ की थी। 57 और अल्लाह ने सिकम के बाशिंदों को भी उनकी शरीर हरकतों की मुनासिब सज़ा दी। यूताम बिन यरूबाल की लानत पूरी हुई।

10

तोला और याईर

1 अबीमलिक की मौत के बाद तोला बिन फुव्वा बिन दोदो इसराईल को बचाने के लिए उठा। वह इशकार के कबीले से था और इफ़राईम के पहाड़ी इलाके के शहर समीर में रिहाइशपज़ीर था। 2 तोला 23 साल इसराईल का काज़ी रहा। फिर वह फ़ौत हुआ और समीर में दफ़नाया गया।

3 उसके बाद जिलियाद का रहनेवाला याईर काज़ी बन गया। उसने 22 साल इसराईल की राहनुमाई की। 4 याईर के 30 बेटे थे। हर बेटे का एक एक गधा और जिलियाद में एक एक आबादी थी। आज तक इनका नाम ‘हव्वोत-याईर’ यानी याईर की बस्तियाँ हैं। 5 जब याईर इंतकाल कर गया तो उसे क्रामोन में दफ़नाया गया।

इसराईल दुबारा रब से दूर हो जाता है

6 याईर की मौत के बाद इसराईली दुबारा ऐसी हरकतें करने लगे जो रब को बुरी लगीं। वह कई देवताओं के पीछे लग गए जिनमें बाल देवता, अस्तारात देवी और शाम, सैदा, मोआब, अम्मोनियों और फिलिस्तिनों के देवता शामिल थे। यों वह रब की परस्तिश और खिदमत करने से बाज़ आए। 7 तब उसका ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ, और उसने उन्हें फिलिस्तिनों और अम्मोनियों के हवाले कर दिया। 8 उसी साल के दौरान इन कौमों ने जिलियाद में इसराईलियों के उस इलाके पर क़ब्ज़ा किया जिसमें पुराने ज़माने में अमोरी आबाद थे और जो दरियाए-यरदन के मशरिक

* 9:37 मतलब गालिबन कोहे-गरिज़ीम है।

में था। फिलिस्ती और अम्मोनी 18 साल तक इसराइलियों को कुचलते और दबाते रहे।⁹ न सिर्फ यह बल्कि अम्मोनियों ने दरियाए-यरदन को पार करके यहदाह, बिनयमीन और इफराईम के कबीलों पर भी हमला किया।

जब इसराइली बड़ी मुसीबत में थे¹⁰ तो आखिरकार उन्होंने मदद के लिए रब को पुकारा और इकरार किया, “हमने तेरा गुनाह किया है। अपने खुदा को तर्क करके हमने बाल के बुतों की पूजा की है।”¹¹ रब ने जवाब में कहा, “जब मिसरी, अमोरी, अम्मोनी, फिलिस्ती,¹² सैदानी, अमालीकी और माओनी तुम पर जुल्म करते थे और तुम मदद के लिए मुझे पुकारने लगे तो क्या मैंने तुम्हें न बचाया? ¹³ इसके बावजूद तुम बार बार मुझे तर्क करके दीगर माबूदों की पूजा करते रहे हो। इसलिए अब से मैं तुम्हारी मदद नहीं करूँगा। ¹⁴ जाओ, उन देवताओं के सामने चीखते-चिल्लाते रहो जिन्हें तुमने चुन लिया है! वही तुम्हें मुसीबत से निकालें।”

¹⁵ लेकिन इसराइलियों ने रब से फरियाद की, “हमसे गलती हुई है। जो कुछ भी तू मुनासिब समझता है वह हमारे साथ कर। लेकिन तू ही हमें आज बचा।”¹⁶ वह अजनबी माबूदों को अपने बीच में से निकालकर रब की दुबारा खिदमत करने लगे। तब वह इसराइल का दुख बरदाश्त न कर सका।

इफताह काजी बन जाता है

¹⁷ उन दिनों में अम्मोनी अपने फौजियों को जमा करके जिलियाद में खैमाज़न हुए। जवाब में इसराइली भी जमा हुए और मिसफाह में अपने खैमे लगाए।¹⁸ जिलियाद के राहनुमाओं ने एलान किया, “हमें ऐसे आदमी की ज़रूरत है जो हमारे आगे चलकर अम्मोनियों पर हमला करे। जो कोई ऐसा करे वह जिलियाद के तमाम बाशिंदों का सरदार बनेगा।”

11

¹ उस वक़्त जिलियाद में एक ज़बरदस्त सूमा बनाम इफताह था। बाप का नाम जिलियाद था जबकि माँ कसबी थी।² लेकिन बाप की बीवी के बेटे भी थे। जब बालिग हुए तो उन्होंने इफताह से कहा, “हम मीरास तेरे साथ नहीं बाँटेंगे, क्योंकि तू हमारा सगा भाई नहीं है।” उन्होंने उसे भगा दिया,³ और वह वहाँ से हिजरत करके मुल्के-तोब में जा बसा। वहाँ कुछ आवारा लोग उसके पीछे हो लिए जो उसके साथ इधर उधर घुमते-फिरते रहे।

⁴ जब कुछ देर के बाद अम्मोनी फौज इसराइल से लड़ने आई⁵ तो जिलियाद के बुजुर्ग इफताह को वापस लाने के लिए मुल्के-तोब में आए।⁶ उन्होंने गुज़ारिश की, “आएँ, अम्मोनियों से लड़ने में हमारी राहनुमाई करें।”⁷ लेकिन इफताह ने एतराज़ किया, “आप इस वक़्त मेरे पास क्यों आए हैं जब मुसीबत में हैं? आप ही ने मुझसे नफ़रत करके मुझे बाप के घर से निकाल दिया था।”

⁸ बुजुर्गों ने जवाब दिया, “हम इसलिए आपके पास वापस आए हैं कि आप अम्मोनियों के साथ जंग में हमारी मदद करें। अगर आप ऐसा करें तो हम आपको पूरे जिलियाद का हुक्मरान बना लेंगे।”⁹ इफताह ने पूछा, “अगर मैं आपके साथ अम्मोनियों के खिलाफ़ लड़ूँ और रब मुझे उन पर फ़तह दे तो क्या आप वाकई मुझे अपना हुक्मरान बना लेंगे?”¹⁰ उन्होंने जवाब दिया, “रब हमारा गवाह है! वही हमें सज़ा दे अगर हम अपना वादा पूरा न करें।”

¹¹ यह सुनकर इफताह जिलियाद के बुजुर्गों के साथ मिसफाह गया। वहाँ लोगों ने उसे अपना सरदार और फौज का कमांडर बना लिया। मिसफाह में उसने रब के हुज़ूर वह तमाम बातें दोहराईं जिनका फ़ैसला उसने बुजुर्गों के साथ किया था।

जंग से गुरेज़ करने की कोशिश

¹² फिर इफताह ने अम्मोनी बादशाह के पास अपने कासिदों को भेजकर पूछा, “हमारा आपसे क्या वास्ता कि आप हमसे लड़ने आए हैं?”

¹³ बादशाह ने जवाब दिया, “जब इसराइली मिसर से निकले तो उन्होंने अरनोन, यब्बोक और यरदन के दरियाओं के दरमियान का इलाका मुझसे छीन लिया। अब उसे झगडा किए बग़ैर मुझे वापस कर दो।”

¹⁴ फिर इफताह ने अपने कासिदों को दुबारा अम्मोनी बादशाह के पास भेजकर¹⁵ कहा, “इसराइल ने न तो मोआबियों से और न अम्मोनियों से ज़मीन छीनी।¹⁶ हकीकत यह है कि जब हमारी क़ौम मिसर से निकली तो वह रेगिस्तान में से गुज़रकर बहरे-कुलजूम और वहाँ से होकर कादिस पहुँच गई।¹⁷ कादिस से उन्होंने अदोम के बादशाह के पास कासिद भेजकर गुज़ारिश की, ‘हमें अपने मुल्क में से गुज़रने दें।’ लेकिन उसने इनकार किया। फिर इसराइलियों ने मोआब के बादशाह से दरखास्त की, लेकिन उसने भी अपने मुल्क में से गुज़रने की इजाज़त न दी। इस पर हमारी क़ौम कुछ देर के लिए कादिस में रही।¹⁸ आखिरकार वह रेगिस्तान में वापस जाकर अदोम और मोआब के जुनूब में चलते चलते मोआब के मशरिकी किनारे पर पहुँची, वहाँ जहाँ दरियाए-अरनोन उस की सरहद है। लेकिन वह मोआब के इलाके में दाखिल न हुए बल्कि दरिया के मशरिक में खैमाज़न हुए।¹⁹ वहाँ से इसराइलियों ने हसबोन के रहनेवाले अमोरी बादशाह सीहोन को पैगाम भिजवाया, ‘हमें अपने मुल्क में से गुज़रने दें ताकि हम अपने मुल्क में दाखिल हो सकें।’²⁰ लेकिन सीहोन को शक हुआ। उसे यक़ीन नहीं था कि वह मुल्क में से गुज़रकर आगे बढ़ेंगे। उसने न सिर्फ़ इनकार किया बल्कि अपने फौजियों को जमा करके यहज़ शहर में खैमाज़न हुआ और इसराइलियों के साथ लड़ने लगा।

²¹ लेकिन रब इसराइल के खुदा ने सीहोन और उसके तमाम फौजियों को इसराइल के हवाले कर दिया। उन्होंने उन्हें शिकस्त देकर अमोरियों के पूरे मुल्क पर कब्ज़ा कर लिया।²² यह तमाम इलाका जुनूब में दरियाए-अरनोन से लेकर शिमाल में दरियाए-यब्बोक तक और मशरिक के रेगिस्तान से लेकर मगरिब में दरियाए-यरदन तक हमारे कब्ज़े में आ गया।²³ देखें, रब इसराइल के खुदा ने अपनी क़ौम के आगे आगे

अमोरियों को निकाल दिया है। तो फिर आपका इस मुल्क पर कब्जा करने का क्या हक है? ²⁴ आप भी समझते हैं कि जिसे आपके देवता कमोस ने आपके आगे से निकाल दिया है उसके मुल्क पर कब्जा करने का आपका हक है। इसी तरह जिसे रब हमारे खुदा ने हमारे आगे निकाल दिया है उसके मुल्क पर कब्जा करने का हक हमारा है। ²⁵ क्या आप अपने आपको मोआबी बादशाह बलक बिन सफोर से बेहतर समझते हैं? उसने तो इसराईल से लड़ने बल्कि झगड़ने तक की हिम्मत न की। ²⁶ अब इसराईली 300 साल से हसबोन और अरोईर के शहरों में उनके गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत आबाद हैं और इसी तरह दरियाए-अरनोन के किनारे पर के शहरों में। आपने इस दौरान इन जगहों पर कब्जा क्यों न किया? ²⁷ चुनौचे मैंने आपसे गलत सुलूक नहीं किया बल्कि आप ही मेरे साथ गलत सुलूक कर रहे हैं। क्योंकि मुझसे जंग छेड़ना गलत है। रब जो मुंसिफ है वही आज इसराईल और अम्मोन के झगड़े का फैसला करे!”

²⁸ लेकिन अम्मोनी बादशाह ने इफताह के पैगाम पर ध्यान न दिया।

इफताह की फतह

²⁹ फिर रब का रूह इफताह पर नाज़िल हुआ, और वह जिलियाद और मनस्सी में से गुज़र गया, फिर जिलियाद के मिसफाह के पास वापस आया। वहाँ से वह अपनी फौज लेकर अम्मोनियों से लड़ने निकला।

³⁰ पहले उसने रब के सामने कसम खाई, “अगर तू मुझे अम्मोनियों पर फतह दे ³¹ और मैं सहीह-सलामत लौटूँ तो जो कुछ भी पहले मेरे घर के दरवाज़े से निकलकर मुझसे मिले वह तेरे लिए मखसूस किया जाएगा। मैं उसे भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करूँगा।”

³² फिर इफताह अम्मोनियों से लड़ने गया, और रब ने उसे उन पर फतह दी। ³³ इफताह ने अरोईर में दुश्मन को शिकस्त दी और इसी तरह मिन्नीत और अबील-करामीम तक मज़ीद बीस शहरों पर कब्जा कर लिया। यों इसराईल ने अम्मोन को जेर कर दिया।

इफताह की वापसी

³⁴ इसके बाद इफताह मिसफाह वापस चला गया। वह अभी घर के करीब था कि उस की इकलौती बेटी दफ़ बजाती और नाचती हुई घर से निकल आई। इफताह का कोई और बेटा या बेटी नहीं थी। ³⁵ अपनी बेटी को देखकर वह रंज के मारे अपने कपड़े फाड़कर चीख उठा, “हाय मेरी बेटी! तूने मुझे खाक में दबाकर तबाह कर दिया है, क्योंकि मैंने रब के सामने ऐसी कसम खाई है जो बदली नहीं जा सकती।”

³⁶ बेटी ने कहा, “अब्बू, आपने कसम खाकर रब से वादा किया है, इसलिए लाज़िम है कि मेरे साथ वह कुछ करें जिसकी कसम आपने खाई है। आखिर उसी ने आपको दुश्मन से बदला लेने की कामयाबी बख्श दी है। ³⁷ लेकिन मेरी एक गुज़ारिश है। मुझे दो माह की मोहलत दें ताकि मैं अपनी सहेलियों के साथ पहाड़ों में जाकर अपनी गैरशादीशुदा हालत पर मातम करूँ।”

³⁸ इफताह ने इजाज़त दी। फिर बेटी दो माह के लिए अपनी सहेलियों के साथ पहाड़ों में चली गई और अपनी गैरशादीशुदा हालत पर मातम किया। ³⁹ फिर वह अपने बाप के पास वापस आई, और उसने अपनी कसम का वादा पूरा किया। बेटी गैरशादीशुदा थी।

उस वक़्त से इसराईल में दस्तूर रायज है ⁴⁰ कि इसराईल की जवान औरतें सालाना चार दिन के लिए अपने घरों से निकलकर इफताह की बेटी की याद में जशन मनाती हैं।

12

इफराईम का कबीला इफताह पर हमला करता है

¹ अम्मोनियों पर फतह के बाद इफराईम के कबीले के आदमी जमा हुए और दरियाए-यरदन को पार करके इफताह के पास आए जो सफोन में था। उन्होंने शिकायत की, “आप क्यों हमें बुलाए बग़ैर अम्मोनियों से लड़ने गए? अब हम आपको आपके घर समेत जला देंगे!”

² इफताह ने एतराज़ किया, “जब मेरी और मेरी कौम का अम्मोनियों के साथ सख़्त झगड़ा छिड़ गया तो मैंने आपको बुलाया, लेकिन आपने मुझे उनके हाथ से न बचाया। ³ जब मैंने देखा कि आप मदद नहीं करेंगे तो अपनी जान खतरे में डालकर आपके बग़ैर ही अम्मोनियों से लड़ने गया। और रब ने मुझे उन पर फतह बख्शी। अब मुझे बताएँ कि आप क्यों मेरे पास आकर मुझ पर हमला करना चाहते हैं?”

⁴ इफराईमियों ने जवाब दिया, “तुम जो जिलियाद में रहते हो बस इफराईम और मनस्सी के कबीलों से निकले हुए भगोड़े हो।” तब इफताह ने जिलियाद के मर्दों को जमा किया और इफराईमियों से लड़कर उन्हें शिकस्त दी।

⁵ फिर जिलियादियों ने दरियाए-यरदन के कम-गहरे मकामों पर कब्जा कर लिया। जब कोई गुज़रना चाहता तो वह पूछते, “क्या आप इफराईमी हैं?” अगर वह इनकार करता ⁶ तो जिलियाद के मर्द कहते, “तो फिर लफ़ज़ ‘शिब्बोलेत’ * बोलें।” अगर वह इफराईमी होता तो इसके बजाए “शिब्बोलेत” कहता। फिर जिलियादी उसे पकड़कर वहीं मार डालते। उस वक़्त कुल 42,000 इफराईमी हलाक हुए।

⁷ इफताह ने छः साल इसराईल की राहनुमाई की। जब फ़ौत हुआ तो उसे जिलियाद के किसी शहर में दफनाया गया।

इबज़ान, ऐलोन और अबदोन

⁸ इफताह के बाद इबज़ान इसराईल का काज़ी बना। वह बैत-लहम में आबाद था, ⁹ और उसके 30 बेटे और 30 बेटियाँ थीं। उस की तमाम बेटियाँ शादीशुदा थीं और इस वजह से बाप के घर में नहीं रहती थीं। लेकिन उसे 30 बेटों के लिए बीवियाँ मिल गई थीं, और सब उसके घर में रहते थे। इबज़ान ने सात साल के दौरान इसराईल की राहनुमाई की। ¹⁰ फिर वह इंतकाल कर गया और बैत-लहम में दफनाया गया।

* 12:6 यानी नदी।

11 उसके बाद ऐलोन काजी बना। वह जबूलन के कबीले से था और 10 साल के दौरान इसराईल की राहनुमाई करता रहा। 12 जब वह कूच कर गया तो उसे जबूलन के ऐयालोन में दफन किया गया।

13 फिर अबदोन बिन हिल्लेल काजी बना। वह शहर फिरआतोन का था। 14 उसके 40 बेटे और 30 पोते थे जो 70 गधों पर सफर किया करते थे। अबदोन ने आठ साल के दौरान इसराईल की राहनुमाई की। 15 फिर वह भी जान-बहक हो गया, और उसे अमालीक्रियों के पहाड़ी इलाके के शहर फिरआतोन में दफनाया गया, जो उस वक्त इफराईम का हिस्सा था।

13

समसून की पैदाइश की पेशगोई

1 फिर इसराईली दुबारा ऐसी हरकतें करने लगे जो रब को बुरी लगीं। इसलिए उसने उन्हें फिलिस्तियों के हवाले कर दिया जो उन्हें 40 साल दबाते रहे। 2 उस वक्त एक आदमी सुरआ शहर में रहता था जिसका नाम मनोहा था। दान के कबीले का यह आदमी बेऔलाद था, क्योंकि उस की बीवी बॉझ थी।

3 एक दिन रब का फरिश्ता मनोहा की बीवी पर जाहिर हुआ और कहा, “गो तुझसे बच्चे पैदा नहीं हो सकते, अब तू हामिला होगी, और तेरे बेटा पैदा होगा। 4 मैं या कोई और नशा-आवर चीज़ मत पीना, न कोई नापाक चीज़ खाना। 5 क्योंकि जो बेटा पैदा होगा वह पैदाइश से ही अल्लाह के लिए मखसूस होगा। लाज़िम है कि उसके बाल कभी न काटे जाएँ। यही बच्चा इसराईल को फिलिस्तियों से बचाने लगेगा।”

6 बीवी अपने शौहर मनोहा के पास गई और उसे सब कुछ बताया, “अल्लाह का एक बंदा मेरे पास आया। वह अल्लाह का फरिश्ता लग रहा था, यहाँ तक कि मैं सख्त घबरा गई। मैंने उससे न पूछा कि वह कहाँ से है, और खुद उसने मुझे अपना नाम न बताया। 7 लेकिन उसने मुझे बताया, ‘तू हामिला होगी, और तेरे बेटा पैदा होगा। अब मैं या कोई और नशा-आवर चीज़ मत पीना, न कोई नापाक चीज़ खाना। क्योंकि बेटा पैदाइश से ही मौत तक अल्लाह के लिए मखसूस होगा’।”

8 यह सुनकर मनोहा ने रब से दुआ की, “ऐ रब, बराहे-करम मर्दे-खुदा को दुबारा हमारे पास भेज ताकि वह हमें सिखाए कि हम उस बेटे के साथ क्या करें जो पैदा होनेवाला है।” 9 अल्लाह ने उस की सुनी और अपने फरिश्ते को दुबारा उस की बीवी के पास भेज दिया। उस वक्त वह शौहर के बगैर खेत में थी। 10 फरिश्ते को देखकर वह जल्दी से मनोहा के पास आई और उसे इत्तला दी, “जो आदमी पिछले दिनों में मेरे पास आया वह दुबारा मुझ पर जाहिर हुआ है।”

11 मनोहा उठकर अपनी बीवी के पीछे पीछे फरिश्ते के पास आया। उसने पूछा, “क्या आप वही आदमी हैं जिसने पिछले दिनों में मेरी बीवी से बात की थी?” फरिश्ते ने जवाब दिया, “जी, मैं ही था।” 12 फिर मनोहा ने सवाल किया, “जब आपकी पेशगोई पूरी हो जाएगी तो हमें बेटे के तर्जे-ज़िंदगी और सुलूक के सिलसिले में किन किन बातों का खयाल करना है?”

13 रब के फरिश्ते ने जवाब दिया, “लाज़िम है कि तेरी बीवी उन तमाम चीज़ों से परहेज़ करे जिनका ज़िक्र मैंने किया। 14 वह अंगूर की कोई भी पैदावार न खाए। न वह मैं, न कोई और नशा-आवर चीज़ पीए। नापाक चीज़ें खाना भी मना है। वह मेरी हर हिदायत पर अमल करे।”

15 मनोहा ने रब के फरिश्ते से गुज़ारिश की, “मेहरबानी करके थोड़ी देर हमारे पास ठहरें ताकि हम बकरी का बच्चा ज़बह करके आपके लिए खाना तैयार कर सकें।” 16 अब तक मनोहा ने यह बात नहीं पहचानी थी कि मेहमान असल में रब का फरिश्ता है। फरिश्ते ने जवाब दिया, “खाह तू मुझे रोके भी मैं कुछ नहीं खाऊँगा। लेकिन अगर तू कुछ करना चाहे तो बकरी का बच्चा रब को भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर पेश कर।”

17 मनोहा ने उससे पूछा, “आपका क्या नाम है? क्योंकि जब आपकी यह बातें पूरी हो जाएँगी तो हम आपकी इज़्ज़त करना चाहेंगे।” 18 फरिश्ते ने सवाल किया, “तू मेरा नाम क्यों जानना चाहता है? वह तो तेरी समझ से बाहर है।” 19 फिर मनोहा ने एक बड़े पत्थर पर रब को बकरी का बच्चा और गल्ला की नज़र पेश की। तब रब ने मनोहा और उस की बीवी के देखते देखते एक हैरतअंगेज़ काम किया। 20 जब आग के शोले आसमान की तरफ़ बुलंद हुए तो रब का फरिश्ता शोले में से ऊपर चढ़कर ओझल हो गया। मनोहा और उस की बीवी मुँह के बल गिर गए।

21 जब रब का फरिश्ता दुबारा मनोहा और उस की बीवी पर जाहिर न हुआ तो मनोहा को समझ आई कि रब का फरिश्ता ही था। 22 वह पुकार उठा, “हाय, हम मर जाएंगे, क्योंकि हमने अल्लाह को देखा है!” 23 लेकिन उस की बीवी ने एतराज़ किया, “अगर रब हमें मार डालना चाहता तो वह हमारी कुरबानी कबूल न करता। फिर न वह हम पर यह सब कुछ जाहिर करता, न हमें ऐसी बातें बताता।”

24 कुछ देर के बाद मनोहा के हाँ बेटा पैदा हुआ। बीवी ने उसका नाम समसून रखा। बच्चा बड़ा होता गया, और रब ने उसे बरकत दी। 25 अल्लाह का रूह पहली बार महेने-दान में जो सुरआ और इस्ताल के दरमियान है उस पर नाज़िल हुआ।

14

समसून की फिलिस्ती औरत से शादी

1 एक दिन समसून तिमनत में फिलिस्तियों के पास ठहरा हुआ था। वहाँ उसने एक फिलिस्ती औरत देखी जो उसे पसंद आई। 2 अपने घर लौटकर उसने अपने वालिदेन को बताया, “मुझे तिमनत की एक फिलिस्ती औरत पसंद आई है। उसके साथ मेरा रिश्ता बाँधने की कोशिश

करें।” 3 उसके वालिदैन ने जवाब दिया, “क्या आपके रिश्तेदारों और क्रौम में कोई काबिले-कबूल औरत नहीं है? आपको नामखतून और बेदीन फिलिस्तिनों के पास जाकर उनमें से कोई औरत ढूँढ़ने की क्या ज़रूरत थी?” लेकिन समसून बज्रिद रहा, “उसी के साथ मेरी शादी कराएँ! वही मुझे ठीक लगती है।”

4 उसके माँ-बाप को मालूम नहीं था कि यह सब कुछ रब की तरफ से है जो फिलिस्तिनों से लड़ने का मौका तलाश कर रहा था। क्योंकि उस वक़्त फिलिस्ती इसराईल पर हुकूमत कर रहे थे।

5 चुनाँचे समसून अपने माँ-बाप समेत तिमनत के लिए रवाना हुआ। जब वह तिमनत के अंगूर के बागों के करीब पहुँचे तो समसून अपने माँ-बाप से अलग हो गया। अचानक एक जवान शेरबबर दहाड़ता हुआ उस पर टूट पड़ा। 6 तब अल्लाह का रूह इतने ज़ोर से समसून पर नाज़िल हुआ कि उसने अपने हाथों से शेर को यों फाड़ डाला, जिस तरह आम आदमी बकरी के छोटे बच्चे को फाड़ डालता है। लेकिन उसने अपने वालिदैन को इसके बारे में कुछ न बताया। 7 आगे निकलकर वह तिमनत पहुँच गया। मज़कूरा फिलिस्ती औरत से बात हुई और वह उसे ठीक लगी।

8 कुछ देर के बाद वह शादी करने के लिए दुबारा तिमनत गए। शहर पहुँचने से पहले समसून रास्ते से हटकर शेरबबर की लाश को देखने गया। वहाँ क्या देखता है कि शहद की मक्खियों ने शेर के पिंजर में अपना छत्ता बना लिया है। 9 समसून ने उसमें हाथ डालकर शहद को निकाल लिया और उसे खाते हुए चला। जब वह अपने माँ-बाप के पास पहुँचा तो उसने उन्हें भी कुछ दिया, मगर यह न बताया कि कहाँ से मिल गया है।

10 तिमनत पहुँचकर समसून का बाप दुलहन के खानदान से मिला जबकि समसून ने दूल्हे की हैसियत से ऐसी ज़ियाफ़त की जिस तरह उस ज़माने में दस्तूर था।

फिलिस्ती समसून को धोका देते हैं

11 जब दुलहन के घरवालों को पता चला कि समसून तिमनत पहुँच गया है तो उन्होंने उसके पास 30 जवान आदमी भेज दिए कि उसके साथ खुशी मनाएँ। 12 समसून ने उनसे कहा, “मैं आपसे पहेली पूछता हूँ। अगर आप ज़ियाफ़त के सात दिनों के दौरान इसका हल बता सकें तो मैं आपको कतान के 30 क्रीमती कुरते और 30 शानदार सूट दे दूँगा। 13 लेकिन अगर आप मुझे इसका सहीह मतलब न बता सकें तो आपको मुझे 30 क्रीमती कुरते और 30 शानदार सूट देने पड़ेंगे।” उन्होंने जवाब दिया, “अपनी पहेली सुनाएँ।”

14 समसून ने कहा, “खानेवाले में से खाना निकला और ज़ोरावर में से मिठास।”

तीन दिन गुज़र गए। जवान पहेली का मतलब न बता सके। 15 चौथे दिन उन्होंने दुलहन के पास जाकर उसे धमकी दी, “अपने शौहर को हमें पहेली का मतलब बताने पर उकसाओ, वरना हम तुम्हें तुम्हारे खानदान समेत जला देंगे। क्या तुम लोगों ने हमें सिर्फ़ इसलिए दावत दी कि हमें लूट लो?”

16 दुलहन समसून के पास गई और आँसू बहा बहाकर कहने लगी, “तू मुझे प्यार नहीं करता! हकीकत में तू मुझसे नफ़रत करता है। तूने मेरी क्रौम के लोगों से पहेली पूछी है लेकिन मुझे इसका मतलब नहीं बताया।” समसून ने जवाब दिया, “मैंने अपने माँ-बाप को भी इसका मतलब नहीं बताया तो तुझे क्यों बताऊँ?” 17 ज़ियाफ़त के पूरे हफ़ते के दौरान दुलहन उसके सामने रोती रही।

सातवें दिन समसून दुलहन की इल्लिजाओं से इतना तंग आ गया कि उसने उसे पहेली का हल बता दिया। तब दुलहन ने फुरती से सब कुछ फिलिस्तिनों को सुना दिया। 18 सूरज के ग़रब होने से पहले पहले शहर के मर्दों ने समसून को पहेली का मतलब बताया, “क्या कोई चीज़ शहद से ज़्यादा मीठी और शेरबबर से ज़्यादा ज़ोरावर होती है?” समसून ने यह सुनकर कहा, “आपने मेरी जवान गाय लेकर हल चलाया है, वरना आप कभी भी पहेली का हल न निकाल सकते।” 19 फिर रब का रूह उस पर नाज़िल हुआ। उसने अस्कलून शहर में जाकर 30 फिलिस्तिनों को मार डाला और उनके लिबास लेकर उन आदमियों को दे दिए जिन्होंने उसे पहेली का मतलब बता दिया था।

इसके बाद वह बड़े गुस्से में अपने माँ-बाप के घर चला गया। 20 लेकिन उस की बीवी की शादी समसून के शहबाले से कराई गई जो 30 जवान फिलिस्तिनों में से एक था।

15

समसून फिलिस्तिनों से बदला लेता है

1 कुछ दिन गुज़र गए। जब गंदुम की कटाई होने लगी तो समसून बकरी का बच्चा अपने साथ लेकर अपनी बीवी से मिलने गया। सुसर के घर पहुँचकर उसने बीवी के कमरे में जाने की दरखास्त की। लेकिन बाप ने इनकार किया। 2 उसने कहा, “यह नहीं हो सकता! मैंने बेटी की शादी आपके शहबाले से करा दी है। असल में मुझे यकीन हो गया था कि अब आप उससे सख़्त नफ़रत करते हैं। लेकिन कोई बात नहीं। उस की छोटी बहन से शादी कर लें। वह ज़्यादा ख़ूबसूरत है।”

3 समसून बोला, “इस दफ़ा मैं फिलिस्तिनों से ख़ूब बदला लूँगा, और कोई नहीं कह सकेगा कि मैं हक़ पर नहीं हूँ।” 4 वहाँ से निकलकर उसने 300 लोमड़ियों को पकड़ लिया। दो दो की दुमों को बाँधकर उसने हर जोड़े की दुमों के साथ मशाल लगा दी 5 और फिर मशालों को जलाकर लोमड़ियों को फिलिस्तिनों के अनाज के खेतों में भगा दिया। खेतों में पड़े पूरे उस अनाज समेत भस्म हुए जो अब तक काटा नहीं गया था। अंगूर और जैतून के बाग भी तबाह हो गए।

6 फिलिस्तिनों ने दरियाफ्त किया कि यह किसका काम है। पता चला कि समसून ने यह सब कुछ किया है, और कि वजह यह है कि तिमनत में उसके सुसर ने उस की बीवी को उससे छीनकर उसके शहबाले को दे दिया है। यह सुनकर फिलिस्ती तिमनत गए और समसून के सुसर को उस की बेटी समेत पकड़कर जला दिया। 7 तब समसून ने उनसे कहा, “यह तुमने क्या किया है! जब तक मैंने पूरा बदला न लिया मैं नहीं स्क्रूंगा।” 8 वह इतने जोर से उन पर टूट पड़ा कि बेशुमार फिलिस्ती हलाक हुए। फिर वह उस जगह से उतरकर ऐताम की चटान के गार में रहने लगा।

लही में समसून फिलिस्तिनों से लड़ता है

9 जवाब में फिलिस्ती फौज यहदाह के कबायली इलाके में दाखिल हुई। वहाँ वह लही शहर के पास खैमाज़न हुए। 10 यहदाह के बाशिंदों ने पूछा, “क्या वजह है कि आप हमसे लड़ने आए हैं?” फिलिस्तिनों ने जवाब दिया, “हम समसून को पकड़ने आए हैं ताकि उसके साथ वह कुछ करें जो उसने हमारे साथ किया है।”

11 तब यहदाह के 3,000 मर्द ऐताम पहाड़ के गार के पास आए और समसून से कहा, “यह आपने हमारे साथ क्या किया? आपको तो पता है कि फिलिस्ती हम पर हुकूमत करते हैं।” समसून ने जवाब दिया, “मैंने उनके साथ सिर्फ वह कुछ किया जो उन्होंने मेरे साथ किया था।”

12 यहदाह के मर्द बोले, “हम आपको बाँधकर फिलिस्तिनों के हवाले करने आए हैं।” समसून ने कहा, “ठीक है, लेकिन कसम खाएँ कि आप खुद मुझे कत्ल नहीं करेंगे।”

13 उन्होंने जवाब दिया, “हम आपको हरगिज़ कत्ल नहीं करेंगे बल्कि आपको सिर्फ बाँधकर उनके हवाले कर देंगे।” चुनौचे वह उसे दो ताज़ा ताज़ा रस्सों से बाँधकर फिलिस्तिनों के पास ले गए।

14 समसून अभी लही से दूर था कि फिलिस्ती नारे लगाते हुए उस की तरफ दौड़े आए। तब रब का रूह बड़े जोर से उस पर नाज़िल हुआ। उसके बाजूओं से बँधे हुए रस्से सन के जले हुए धागे जैसे कमज़ोर हो गए, और वह पिघलकर हाथों से गिर गए। 15 कहीं से गधे का ताज़ा जबड़ा पकड़कर उसने उसके ज़रीए हज़ार अफ़राद को मार डाला।

16 उस वक़्त उसने नारा लगाया, “गधे के जबड़े से मैंने उनके ढेर लगाए हैं! गधे के जबड़े से मैंने हज़ार मर्दों को मार डाला है!” 17 इसके बाद उसने गधे का यह जबड़ा फेंक दिया। उस जगह का नाम रामत-लही यानी जबड़ा पहाड़ी पड़ गया।

18 समसून को वहाँ बड़ी प्यास लगी। उसने रब को पुकारकर कहा, “तू ही ने अपने खादिम के हाथ से इसराईल को यह बड़ी नज़ात दिलाई है। लेकिन अब मैं प्यास से मरकर नामख़तून दुश्मन के हाथ में आ जाऊँगा।” 19 तब अल्लाह ने लही में ज़मीन को छेदा, और गढ़े से पानी फूट निकला। समसून उसका पानी पीकर दुबारा ताज़ादम हो गया। यों उस चश्मे का नाम ऐन-हक्क़ोरे यानी पुकारनेवाले का चश्मा पड़ गया। आज भी वह लही में मौजूद है।

20 फिलिस्तिनों के दौर में समसून 20 साल तक इसराईल का काज़ी रहा।

16

समसून गज़ज़ा का दरवाज़ा उठा ले जाता है

1 एक दिन समसून फिलिस्ती शहर गज़ज़ा में आया। वहाँ वह एक कसबी को देखकर उसके घर में दाखिल हुआ। 2 जब शहर के बाशिंदों को इतला मिली कि समसून शहर में है तो उन्होंने कसबी के घर को घेर लिया। साथ साथ वह रात के वक़्त शहर के दरवाज़े पर ताक में रहे। फ़ैसला यह हुआ, “रात के वक़्त हम कुछ नहीं करेंगे, जब पौ फटेगी तब उसे मार डालेंगे।”

3 समसून अब तक कसबी के घर में सो रहा था। लेकिन आधी रात को वह उठकर शहर के दरवाज़े के पास गया और दोनों किवाड़ों को कुंडे और दरवाज़े के दोनों बाजूओं समेत उखाड़कर अपने कंधों पर रख लिया। यों चलते चलते वह सब कुछ उस पहाड़ी की चोटी पर ले गया जो हबस्न के मुकाबिल है।

समसून और दलीला

4 कुछ देर के बाद समसून एक औरत की मुहब्बत में गिरिफ़्तार हो गया जो वादीए-सूरिक में रहती थी। उसका नाम दलीला था। 5 यह सुनकर फिलिस्ती सरदार उसके पास आए और कहने लगे, “समसून को उकसाएँ कि वह आपको अपनी बड़ी ताक़त का भेद बताए। हम जानना चाहते हैं कि हम किस तरह उस पर गालिब आकर उसे यों बाँध सकें कि वह हमारे कब्ज़े में रहे। अगर आप यह मालूम कर सकें तो हममें से हर एक आपको चाँदी के 1,100 सिक्के देगा।”

6 चुनौचे दलीला ने समसून से सवाल किया, “मुझे अपनी बड़ी ताक़त का भेद बताएँ। क्या आपको किसी ऐसी चीज़ से बाँधा जा सकता है जिसे आप तोड़ नहीं सकते?” 7 समसून ने जवाब दिया, “अगर मुझे जानवरों की सात ताज़ा नसों से बाँधा जाए तो फिर मैं आम आदमी जैसा कमज़ोर हो जाऊँगा।” 8 फिलिस्ती सरदारों ने दलीला को सात ताज़ा नसों मुहैया कर दीं, और उसने समसून को उनसे बाँध लिया। 9 कुछ फिलिस्ती आदमी साथवाले कमरे में छुप गए। फिर दलीला चिल्ला उठी, “समसून, फिलिस्ती आपको पकड़ने आए हैं!” यह सुनकर समसून ने नसों को यों तोड़ दिया जिस तरह डोरी टूट जाती है जब आग में से गुज़रती है। चुनौचे उस की ताक़त का पोल न खुला।

10 दलीला का मुँह लटक गया। “आपने झूट बोलकर मुझे बेवकूफ बनाया है। अब आएँ, मेहरबानी करके मुझे बताएँ कि आपको किस तरह बाँधा जा सकता है।” 11 समसून ने जवाब दिया, “अगर मुझे गैरइस्तेमालशुदा रस्सों से बाँधा जाए तो फिर ही मैं आम आदमी जैसा कमज़ोर हो

जाऊंगा।” 12 दलीला ने नए रस्से लेकर उसे उनसे बाँध लिया। इस मरतबा भी फिलिस्ती साथवाले कमरे में छुप गए थे। फिर दलीला चिल्ला उठी, “समसून, फिलिस्ती आपको पकड़ने आए हैं!” लेकिन इस बार भी समसून ने रस्सों को यों तोड़ लिया जिस तरह आम आदमी डोरी को तोड़ लेता है।

13 दलीला ने शिकायत की, “आप बार बार झूट बोलकर मेरा मज़ाक उड़ा रहे हैं। अब मुझे बताएँ कि आपको किस तरह बाँधा जा सकता है।” समसून ने जवाब दिया, “लाज़िम है कि आप मेरी सात जुल्फों को खड़ी के ताने के साथ बुनें। फिर ही आम आदमी जैसा कमज़ोर हो जाऊँगा।” 14 जब समसून सो रहा था तो दलीला ने ऐसा ही किया। उस की सात जुल्फों को ताने के साथ बुनकर उसने उसे शटल के ज़रीए खड़ी के साथ लगाया। फिर वह चिल्ला उठी, “समसून, फिलिस्ती आपको पकड़ने आए हैं!” समसून जाग उठा और अपने बालों को शटल समेत खड़ी से निकाल लिया।

15 यह देखकर दलीला ने मुँह फूलाकर मलामत की, “आप किस तरह दावा कर सकते हैं कि मुझसे मुहब्बत रखते हैं? अब आपने तीन मरतबा मेरा मज़ाक उड़ाकर मुझे अपनी बड़ी ताकत का भेद नहीं बताया।” 16 रोज़ बरोज़ वह अपनी बातों से उस की नाक में दम करती रही। आखिरकार समसून इतना तंग आ गया कि उसका जीना दूभर हो गया। 17 फिर उसने उसे खुलकर बात बताई, “मैं पैदाइश ही से अल्लाह के लिए मखसूस हूँ, इसलिए मेरे बालों को कभी नहीं काटा गया। अगर सर को मुँडवाया जाए तो मेरी ताकत जाती रहेगी और मैं हर दूसरे आदमी जैसा कमज़ोर हो जाऊँगा।”

18 दलीला ने जान लिया कि अब समसून ने मुझे पूरी हकीकत बताई है। उसने फिलिस्ती सरदारों को इतला दी, “आओ, क्योंकि इस मरतबा उसने मुझे अपने दिल की हर बात बताई है।” यह सुनकर वह मुकर्ररा चाँदी अपने साथ लेकर दलीला के पास आए।

19 दलीला ने समसून का सर अपनी गोद में रखकर उसे सुला दिया। फिर उसने एक आदमी को बुलाकर समसून की सात जुल्फों को मुँडवाया। यों वह उसे पस्त करने लगी, और उस की ताकत जाती रही। 20 फिर वह चिल्ला उठी, “समसून, फिलिस्ती आपको पकड़ने आए हैं!” समसून जाग उठा और सोचा, “मैं पहले की तरह अब भी अपने आपको बचाकर बंधन को तोड़ दूँगा।” अफ़सोस, उसे मालूम नहीं था कि रब ने उसे छोड़ दिया है। 21 फिलिस्तियों ने उसे पकड़कर उस की आँखें निकाल दीं। फिर वह उसे ग़ज़ज़ा ले गए जहाँ उसे पीतल की जंजीरों से बाँधा गया। वहाँ वह कैदखाने की चक्की पीसा करता था।

22 लेकिन होते होते उसके बाल दुबारा बढ़ने लगे।

समसून का आखिरी इंतक़ाम

23 एक दिन फिलिस्ती सरदार बड़ा जशन मनाने के लिए जमा हुए। उन्होंने अपने देवता दज़ून को जानवरों की बहुत-सी कुरबानियाँ पेश करके अपनी फ़तह की खुशी मनाई। वह बोले, “हमारे देवता ने हमारे दुश्मन समसून को हमारे हवाले कर दिया है।” 24 समसून को देखकर अवाम ने दज़ून की तमजीद करके कहा, “हमारे देवता ने हमारे दुश्मन को हमारे हवाले कर दिया है! जिसने हमारे मुल्क को तबाह किया और हममें से इतने लोगों को मार डाला वह अब हमारे क़ाबू में आ गया है!” 25 इस क्रिस्म की बातें करते करते उनकी खुशी की इंतहा न रही। तब वह चिल्लाने लगे, “समसून को बुलाओ ताकि वह हमारे दिलों को बहलाए।”

चुनाँचे उसे उनकी तफ़रीह के लिए जेल से लाया गया और दो सतूनों के दरमियान खड़ा कर दिया गया। 26 समसून उस लड़के से मुखातिब हुआ जो उसका हाथ पकड़कर उस की राहनुमाई कर रहा था, “मुझे छत को उठानेवाले सतूनों के पास ले जाओ ताकि मैं उनका सहारा लूँ।” 27 इमारत मर्दों और औरतों से भरी थी। फिलिस्ती सरदार भी सब आए हुए थे। सिर्फ़ छत पर समसून का तमाशा देखनेवाले तक़रीबन 3,000 अफ़राद थे।

28 फिर समसून ने दुआ की, “ऐ रब कादिर-मुतलक, मुझे याद कर। बस एक दफ़ा और मुझे पहले की तरह कुव्वत अता फ़रमा ताकि मैं एक ही वार से फिलिस्तियों से अपनी आँखों का बदला ले सकूँ।” 29 यह कहकर समसून ने उन दो मरकज़ी सतूनों को पकड़ लिया जिन पर छत का पूरा वज़न था। उनके दरमियान खड़े होकर उसने पूरी ताकत से ज़ोर लगाया 30 और दुआ की, “मुझे फिलिस्तियों के साथ मरने दे!” अचानक सतून हिल गए और छत धड़ाम से फिलिस्तियों के तमाम सरदारों और बाक़ी लोगों पर गिर गई। इस तरह समसून ने पहले की निसबत मरते वक़्त कहीं ज़्यादा फिलिस्तियों को मार डाला।

31 समसून के भाई और बाक़ी घरवाले आए और उस की लाश को उठाकर उसके बाप मनोहा की क़ब्र के पास ले गए। वहाँ यानी सुरआ और इस्ताल के दरमियान उन्होंने उसे दफ़नाया। समसून 20 साल इसराईल का काज़ी रहा।

17

मीकाह का बुत

1 इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े में एक आदमी रहता था जिसका नाम मीकाह था। 2 एक दिन उसने अपनी माँ से बात की, “आपके चाँदी के 1,100 सिक्के चोरी हो गए थे, ना? उस वक़्त आपने मेरे सामने ही चोर पर लानत भेजी थी। अब देखें, वह पैसे मेरे पास हैं। मैं ही चोर हूँ।” यह सुनकर माँ ने जवाब दिया, “मेरे बेटे, रब तुझे बरक़त दे!” 3 मीकाह ने उसे तमाम पैसे वापस कर दिए, और माँ ने एलान किया, “अब से यह चाँदी रब के लिए मखसूस हो! मैं आपके लिए तराशा और ढाला हुआ बुत बनवाकर चाँदी आपको वापस कर देती हूँ।”

4 चुनाँचे जब बेटे ने पैसे वापस कर दिए तो माँ ने उसके 200 सिक्के सुनार के पास ले जाकर लकड़ी का तराशा और ढाला हुआ बुत बनवाया। मीकाह ने यह बुत अपने घर में खड़ा किया, 5 क्योंकि उसका अपना मक़दिस था। उसने मज़ीद बुत और एक अफ़ोद * भी बनवाया और फिर एक बेटे को अपना इमाम बना लिया। 6 उस ज़माने में इसराईल का कोई बादशाह नहीं था बल्कि हर कोई वही कुछ करता जो उसे दुस्त लगता था।

7 उन दिनों में लावी के कबीले का एक जवान आदमी यहूदाह के कबीले के शहर बैत-लहम में आबाद था। 8 अब वह शहर को छोड़कर रिहाइश की कोई और जगह तलाश करने लगा। इफ़राईम के पहाड़ी इलाके में से सफ़र करते करते वह मीकाह के घर पहुँच गया। 9 मीकाह ने पूछा, “आप कहाँ से आए हैं?” जवान ने जवाब दिया, “मैं लावी हूँ। मैं यहूदाह के शहर बैत-लहम का रहनेवाला हूँ लेकिन रिहाइश की किसी और जगह की तलाश में हूँ।”

10 मीकाह बोला, “यहाँ मेरे पास अपना घर बनाकर मेरे बाप और इमाम बनें। तब आपको साल में चाँदी के दस सिक्के और ज़रूरत के मुताबिक कपड़े और ख़राक मिलेगी।”

11 लावी मुतफ़िह हुआ। वह वहाँ आबाद हुआ, और मीकाह ने उसके साथ बेटों का-सा सुलूक किया। 12 उसने उसे इमाम मुक़र्रर करके सोचा, 13 “अब रब मुझ पर मेहरबानी करेगा, क्योंकि लावी मेरा इमाम बन गया है।”

18

दान का कबीला ज़मीन की तलाश करता है

1 उन दिनों में इसराईल का बादशाह नहीं था। और अब तक दान के कबीले को अपना कोई क़बायली इलाका नहीं मिला था, इसलिए उसके लोग कहीं आबाद होने की तलाश में रहे। 2 उन्होंने अपने ख़ानदानों में से सुरआ और इस्ताल के पाँच तज़रबाकार फ़ौज़ियों को चुनकर उन्हें मुल्क की तफ़तीश करने के लिए भेज दिया। यह मर्द इफ़राईम के पहाड़ी इलाके में से गुज़रकर मीकाह के घर के पास पहुँच गए। जब वह वहाँ रात के लिए ठहरे हुए थे 3 तो उन्होंने देखा कि जवान लावी बैत-लहम की बोली बोलता है। उसके पास जाकर उन्होंने पूछा, “कौन आपको यहाँ लाया है? आप यहाँ क्या करते हैं? और आपका इस घर में रहने का क्या मक़सद है?” 4 लावी ने उन्हें अपनी कहानी सुनाई, “मीकाह ने मुझे नौकरी देकर अपना इमाम बना लिया है।” 5 फिर उन्होंने उससे गुज़ारिश की, “अल्लाह से दरियाफ़्त करें कि क्या हमारे सफ़र का मक़सद पूरा हो जाएगा या नहीं?” 6 लावी ने उन्हें तसल्ली दी, “सलामती से आगे बढ़ें। आपके सफ़र का मक़सद रब को कबूल है, और वह आपके साथ है।”

7 तब यह पाँच आदमी आगे निकले और सफ़र करते करते लैस पहुँच गए। उन्होंने देखा कि वहाँ के लोग सैदानियों की तरह पुरसुकून और बेफ़िक़र ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। कोई नहीं था जो उन्हें दबाता या उन पर जुल्म करता। यह भी मालूम हुआ कि अगर उन पर हमला किया जाए तो उनका इतहादी शहर सैदा उनसे इतनी दूर है कि उनकी मदद नहीं कर सकेगा, और करीब कोई इतहादी नहीं है जो उनका साथ दे। 8 वह पाँच जासूस सुरआ और इस्ताल वापस चले गए। जब वहाँ पहुँचे तो दूसरों ने पूछा, “सफ़र कैसा रहा?” 9 जासूसों ने जवाब में कहा, “आएँ, हम जंग के लिए निकलें! हमें एक बेहतरीन इलाका मिल गया है। आप क्यों झिजक रहे हैं? जल्दी करें, हम निकलें और उस मुल्क पर क़ब्ज़ा कर लें! 10 वहाँ के लोग बेफ़िक़र हैं और हमले की तक्क़ो ही नहीं करते। और ज़मीन वसी और ज़रखेज़ है, उसमें किसी भी चीज़ की कमी नहीं है। अल्लाह आपको वह मुल्क देने का इरादा रखता है।”

दान के मर्द मीकाह का बुत इमाम समेत छीन लेते हैं

11 दान के कबीले के 600 मुसल्लह आदमी सुरआ और इस्ताल से रवाना हुए। 12 रास्ते में उन्होंने अपनी लश्करगाह यहूदाह के शहर किरियत-यारीम के करीब लगाई। इसलिए यह जगह आज तक महने-दान यानी दान की ख़ैमागाह कहलाती है। 13 वहाँ से वह इफ़राईम के पहाड़ी इलाके में दाख़िल हुए और चलते चलते मीकाह के घर पहुँच गए।

14 जिन पाँच मर्दों ने लैस की तफ़तीश की थी उन्होंने अपने साथियों से कहा, “क्या आपको मालूम है कि इन घरों में एक अफ़ोद, एक तराशा और ढाला हुआ बुत और दीगर कई बुत हैं? अब सोच लें कि क्या किया जाए।”

15 पाँचों ने मीकाह के घर में दाख़िल होकर जवान लावी को सलाम किया 16 जबकि बाकी 600 मुसल्लह मर्द गेट पर खड़े रहे। 17 जब लावी बाहर खड़े मर्दों के पास गया तो इन पाँचों ने अंदर घुसकर तराशा और ढाला हुआ बुत, अफ़ोद और बाकी बुत छीन लिए। 18 यह देखकर लावी चीखने लगा, “क्या कर रहे हो!”

19 उन्होंने कहा, “चुप! कोई बात न करो बल्कि हमारे साथ जाकर हमारे बाप और इमाम बनो। हमारे साथ जाओगे तो पूरे कबीले के इमाम बनेंगे। क्या यह एक ही ख़ानदान की ख़िदमत करने से कहीं बेहतर नहीं होगा?” 20 यह सुनकर इमाम ख़ुश हुआ। वह अफ़ोद, तराशा हुआ बुत और बाकी बुतों को लेकर मुसाफ़िरों में शरीक हो गया। 21 फिर दान के मर्द रवाना हुए। उनके बाल-बच्चे, मवेशी और क़ीमती मालो-मता उनके आगे आगे थे।

* 17:5 आम तौर पर इब्रानी में अफ़ोद का मतलब इमामे-आज़म का बालापोश था (देखिए ख़ुर्रूज 28:4), लेकिन यहाँ इससे मुराद बुतपरस्ती की कोई चीज़ है।

22 जब मीकाह को बात का पता चला तो वह अपने पड़ोसियों को जमा करके उनके पीछे दौड़ा। इतने में दान के लोग घर से दूर निकल चुके थे। 23 जब वह सामने नज़र आए तो मीकाह और उसके साथियों ने चीखते-चिल्लाते उन्हें स्कने को कहा। दान के मर्दों ने पीछे देखकर मीकाह से कहा, “क्या बात है? अपने इन लोगों को बुलाकर क्यों ले आए हो?” 24 मीकाह ने जवाब दिया, “तुम लोगों ने मेरे बुतों को छीन लिया गो मैंने उन्हें खुद बनवाया है। मेरे इमाम को भी साथ ले गए हो। मेरे पास कुछ नहीं रहा तो अब तुम पूछते हो कि क्या बात है?”

25 दान के अफ़राद बोले, “खामोश! खबरदार, हमारे कुछ लोग तेज़मिज़ाज हैं। ऐसा न हो कि वह गुस्से में आकर तुमको तुम्हारे खानदान समेत मार डालें।” 26 यह कहकर उन्होंने अपना सफ़र जारी रखा। मीकाह ने जान लिया कि मैं अपने थोड़े आदमियों के साथ उनका मुकाबला नहीं कर सकूँगा, इसलिए वह मुड़कर अपने घर वापस चला गया। 27 उसके बुत दान के कब्ज़े में रहे, और इमाम भी उनमें टिक गया।

लैस पर कब्ज़ा और दान की बुतपरस्ती

फिर वह लैस के इलाके में दाखिल हुए जिसके बाशिंदे पुरसुकून और बेफ़िकर ज़िंदगी गुज़ार रहे थे। दान के फ़ौजी उन पर टूट पड़े और सबको तलवार से कत्ल करके शहर को भस्म कर दिया। 28 किसी ने भी उनकी मदद न की, क्योंकि सैदा बहुत दूर था, और करीब कोई इतहादी नहीं था जो उनका साथ देता। यह शहर बैत-रहोब की वादी में था। दान के अफ़राद शहर को अज़ सरे-नौ तामीर करके उसमें आबाद हुए। 29 और उन्होंने उसका नाम अपने कबीले के बानी के नाम पर दान रखा (दान इसराईल का बेटा था)।

30 वहाँ उन्होंने तराशा हुआ बुत रखकर पूजा के इंतज़ाम पर यूनतन मुकर्रर किया जो मूसा के बेटे जैरसोम की औलाद में से था। जब यूनतन फ़ौत हुआ तो उस की औलाद क्रौम की जिलावतनी तक दान के कबीले में यही खिदमत करती रही।

31 मीकाह का बनवाया हुआ बुत तब तक दान में रहा जब तक अल्लाह का घर सैला में था।

19

एक लावी की अपनी दाशता के साथ सुलह

1 उस ज़माने में जब इसराईल का कोई बादशाह नहीं था एक लावी ने अपने घर में दाशता रखी जो यहदाह के शहर बैत-लहम की रहनेवाली थी। आदमी इफ़राईम के पहाड़ी इलाके के किसी दूर-दराज़ कोने में आबाद था। 2 लेकिन एक दिन औरत मर्द से नाराज़ हुई और मैके वापस चली गई। चार माह के बाद 3 लावी दो गधे और अपने नौकर को लेकर बैत-लहम के लिए रवाना हुआ ताकि दाशता का गुस्सा ठंडा करके उसे वापस आने पर आमादा करे।

जब उस की मुलाकात दाशता से हुई तो वह उसे अपने बाप के घर में ले गई। उसे देखकर सुसर इतना खुश हुआ 4 कि उसने उसे जाने न दिया। दामाद को तीन दिन वहाँ ठहरना पड़ा जिस दौरान सुसर ने उस की खूब मेहमान-नवाज़ी की। 5 चौथे दिन लावी सुबह-सवेरे उठकर अपनी दाशता के साथ रवाना होने की तैयारियाँ करने लगा। लेकिन सुसर उसे रोककर बोला, “पहले थोड़ा-बहुत खाकर ताज़ादम हो जाँ, फिर चले जाना।” 6 दोनों दुबारा खाने-पीने के लिए बैठ गए।

सुसर ने कहा, “बराहे-करम एक और रात यहाँ ठहरकर अपना दिल बहलाएँ।” 7 मेहमान जाने की तैयारियाँ करने तो लगा, लेकिन सुसर ने उसे एक और रात ठहरने पर मजबूर किया। चुनौचे वह हार मानकर स्क गया।

8 पाँचवें दिन आदमी सुबह-सवेरे उठा और जाने के लिए तैयार हुआ। सुसर ने ज़ोर दिया, “पहले कुछ खाना खाकर ताज़ादम हो जाँ। आप दोपहर के वक़्त भी जा सकते हैं।” चुनौचे दोनों खाने के लिए बैठ गए।

9 दोपहर के वक़्त लावी अपनी बीवी और नौकर के साथ जाने के लिए उठा। सुसर एतराज़ करने लगा, “अब देखें, दिन ढलनेवाला है। रात ठहरकर अपना दिल बहलाएँ। बेहतर है कि आप कल सुबह-सवेरे ही उठकर घर के लिए रवाना हो जाँ।” 10-11 लेकिन अब लावी किसी भी सूरत में एक और रात ठहरना नहीं चाहता था। वह अपने गधों पर ज़ीन कसकर अपनी बीवी और नौकर के साथ रवाना हुआ।

चलते चलते दिन ढलने लगा। वह यबूस यानी यरूशलम के करीब पहुँच गए थे। शहर को देखकर नौकर ने मालिक से कहा, “आएँ, हम यबूसियों के इस शहर में जाकर वहाँ रात गुज़ारें।” 12 लेकिन लावी ने एतराज़ किया, “नहीं, यह अजनबियों का शहर है। हमें ऐसी जगह रात नहीं गुज़ारना चाहिए जो इसराईली नहीं है। बेहतर है कि हम आगे जाकर ज़िबिया की तरफ़ बढ़ें। 13 अगर हम जल्दी करें तो हो सकता है कि ज़िबिया या उससे आगे रामा तक पहुँच सकें। वहाँ आराम से रात गुज़ार सकेंगे।”

14 चुनौचे वह आगे निकले। जब सूरज गुरूब होने लगा तो वह बिनयमीन के कबीले के शहर ज़िबिया के करीब पहुँच गए 15 और रास्ते से हटकर शहर में दाखिल हुए। लेकिन कोई उनकी मेहमान-नवाज़ी नहीं करना चाहता था, इसलिए वह शहर के चौक में स्क गए।

16 फिर अंधेरे में एक बूढ़ा आदमी वहाँ से गुज़रा। असल में वह इफ़राईम के पहाड़ी इलाके का रहनेवाला था और ज़िबिया में अजनबी था, क्योंकि बाकी बाशिंदे बिनयमीनी थे। अब वह खेत में अपने काम से फ़ारिग होकर शहर में वापस आया था। 17 मुसाफ़िरोँ को चौक में देखकर उसने पूछा, “आप कहाँ से आए और कहाँ जा रहे हैं?” 18 लावी ने जवाब दिया, “हम यहदाह के बैत-लहम से आए हैं और इफ़राईम के पहाड़ी इलाके के एक दूर-दराज़ कोने तक सफ़र कर रहे हैं। वहाँ मेरा घर है और वहीं से मैं रवाना होकर बैत-लहम चला गया था। इस वक़्त मैं रब के घर जा रहा हूँ। लेकिन यहाँ ज़िबिया में कोई नहीं जो हमारी मेहमान-नवाज़ी करने के लिए तैयार हो, 19 हालाँकि हमारे पास खाने की तमाम चीज़ें मौजूद हैं। गधों के लिए भूसा और चारा है, और हमारे लिए भी काफ़ी रोटी और मै है। हमें किसी भी चीज़ की ज़रूरत नहीं है।”

20 बूढ़े ने कहा, “फिर मैं आपको अपने घर में खुशआमदीद कहता हूँ। अगर आपको कोई चीज़ दरकार हो तो मैं उसे मुहैया करूँगा। हर सूरत में चौक में रात मत गुज़ारना।” 21 वह मुसाफ़िरी को अपने घर ले गया और गधों को चारा खिलाया। मेहमानों ने अपने पाँव धोकर खाना खाया और मै पी।

जिबिया के लोगों का जुर्म

22 वह यों खाने की रिफ़ाक़त से लुत्फ़अंदोज़ हो रहे थे कि जिबिया के कुछ शरीर मर्द घर को घेरकर दरवाज़े को जोर से खटखटाने लगे। वह चिल्लाए, “उस आदमी को बाहर ला जो तेरे घर में ठहरा हुआ है ताकि हम उससे ज़्यादती करें!” 23 बूढ़ा आदमी बाहर गया ताकि उन्हें समझाए, “नहीं, भाइयो, ऐसा शैतानी अमल मत करना। यह अजनबी मेरा मेहमान है। ऐसी शर्मनाक हरकत मत करना! 24 इससे पहले मैं अपनी कुँवारी बेटी और मेहमान की दाशता को बाहर ले आता हूँ। उन्हीं से ज़्यादती करें। जो जी चाहे उनके साथ करें, लेकिन आदमी के साथ ऐसी शर्मनाक हरकत न करें।”

25 लेकिन बाहर के मर्दों ने उस की न सुनी। तब लावी अपनी दाशता को पकड़कर बाहर ले गया और उसके पीछे दरवाज़ा बंद कर दिया। शहर के आदमी पूरी रात उस की बेहुरमती करते रहे। जब पौ फटने लगी तो उन्होंने उसे फ़ारिग कर दिया। 26 सूरज के तुलू होने से पहले औरत उस घर के पास वापस आई जिसमें शौहर ठहरा हुआ था। दरवाज़े तक तो वह पहुँच गई लेकिन फिर गिरकर वहीं की वहीं पड़ी रही।

जब दिन चढ़ गया 27 तो लावी जाग उठा और सफ़र करने की तैयारियाँ करने लगा। जब दरवाज़ा खोला तो क्या देखता है कि दाशता सामने ज़मीन पर पड़ी है और हाथ दहलीज़ पर रखे हैं। 28 वह बोला, “उठो, हम चलते हैं।” लेकिन दाशता ने जवाब न दिया। यह देखकर आदमी ने उसे गधे पर लाद लिया और अपने घर चला गया।

29 जब पहुँचा तो उसने छुरी लेकर औरत की लाश को 12 टुकड़ों में काट लिया, फिर उन्हें इसराईल की हर जगह भेज दिया। 30 जिसने भी यह देखा उसने घबराकर कहा, “ऐसा जुर्म हमारे दरमियान कभी नहीं हुआ। जब से हम मिसर से निकलकर आए हैं ऐसी हरकत देखने में नहीं आई। अब लाज़िम है कि हम गौर से सोचें और एक दूसरे से मशवरा करके अगले कदम के बारे में फैसला करें।”

20

जिबिया को सज़ा देने का फैसला

1 तमाम इसराईली एक दिल होकर मिसफ़ाह में रब के हुज़ूर जमा हुए। शिमाल के दान से लेकर जुनूब के बैर-सबा तक सब आए। दरियाए-यरदन के पार जिलियाद से भी लोग आए। 2 इसराईली कबीलों के सरदार भी आए। उन्होंने मिलकर एक बड़ी फ़ौज तैयार की, तलवारों से लैस 4,00,000 मर्द जमा हुए। 3 बिनयमीनियों को इस जमात के बारे में इतला मिली।

इसराईलियों ने पूछा, “हमें बताएँ कि यह हैबतनाक जुर्म किस तरह सरज़द हुआ?” 4 मक़तूला के शौहर ने उन्हें अपनी कहानी सुनाई, “मैं अपनी दाशता के साथ जिबिया में आ ठहरा जो बिनयमीनियों के इलाके में है। हम वहाँ रात गुज़ारना चाहते थे। 5 यह देखकर शहर के मर्दों ने मेरे मेज़बान के घर को घेर लिया ताकि मुझे क़त्ल करें। मैं तो बच गया, लेकिन मेरी दाशता से इतनी ज़्यादती हुई कि वह मर गई। 6 यह देखकर मैंने उस की लाश को टुकड़े टुकड़े करके यह टुकड़े इसराईल की मीरास की हर जगह भेज दिए ताकि हर एक को मालूम हो जाए कि हमारे मुल्क में कितना धिनौना जुर्म सरज़द हुआ है। 7 इस पर आप सब यहाँ जमा हुए हैं। इसराईल के मर्दों, अब लाज़िम है कि आप एक दूसरे से मशवरा करके फैसला करें कि क्या करना चाहिए।”

8 तमाम मर्द एक दिल होकर खड़े हुए। सबका फैसला था, “हममें से कोई भी अपने घर वापस नहीं जाएगा 9 जब तक जिबिया को मुनासिब सज़ा न दी जाए। लाज़िम है कि हम फ़ौरन शहर पर हमला करें और इसके लिए कुरा डालकर रब से हिदायत लें। 10 हम यह फैसला भी करें कि कौन कौन हमारी फ़ौज के लिए खाने-पीने का बंदोबस्त कराएगा। इस काम के लिए हममें से हर दसवाँ आदमी काफ़ी है। बाकी सब लोग सीधे जिबिया से लड़ने जाएँ ताकि उस शर्मनाक जुर्म का मुनासिब बदला लें जो इसराईल में हुआ है।”

11 यों तमाम इसराईली मुत्तहिद होकर जिबिया से लड़ने के लिए गए। 12 रास्ते में उन्होंने बिनयमीन के हर कुंभे को पैग़ाम भिजवाया, “आपके दरमियान धिनौना जुर्म हुआ है। 13 अब जिबिया के इन शरीर आदमियों को हमारे हवाले करें ताकि हम उन्हें सज़ाए-मौत देकर इसराईल में से बुराई मिटा दें।”

लेकिन बिनयमीनी इसके लिए तैयार न हुए। 14 वह पूरे क़बायली इलाके से आकर जिबिया में जमा हुए ताकि इसराईलियों से लड़ें। 15 उसी दिन उन्होंने अपनी फ़ौज का बंदोबस्त किया। जिबिया के 700 तजरबाकार फ़ौजियों के अलावा तलवारों से लैस 26,000 अफ़राद थे। 16 इन फ़ौजियों में से 700 ऐसे मर्द भी थे जो अपने बाएँ हाथ से फ़लाखन चलाने की इतनी महारत रखते थे कि पत्थर बाल जैसे छोटे निशाने पर भी लग जाता था। 17 दूसरी तरफ़ इसराईल के 4,00,000 फ़ौजी खड़े हुए और हर एक के पास तलवार थी।

18 पहले इसराईली बैतल चले गए। वहाँ उन्होंने अल्लाह से दरियाफ़्त किया, “कौन-सा कबीला हमारे आगे आगे चले जब हम बिनयमीनियों पर हमला करें?” रब ने जवाब दिया, “यहदाह सबसे आगे चले।”

बिनयमीन के खिलाफ़ जंग

19 अगले दिन इसराइली रवाना हुए और ज़िबिया के करीब पहुँचकर अपनी लश्करगाह लगाई। 20 फिर वह हमला के लिए निकले और तरतीब से लड़ने के लिए खड़े हो गए। 21 यह देखकर बिनयमीनी शहर से निकले और उन पर टूट पड़े। नतीजे में 22,000 इसराइली शहीद हो गए।

22-23 इसराइली बैतेल चले गए और शाम तक रब के हुज़ूर रोते रहे। उन्होंने रब से पूछा, “क्या हम दुबारा अपने बिनयमीनी भाइयों से लड़ने जाएँ?” रब ने जवाब दिया, “हाँ, उन पर हमला करो!” यह सुनकर इसराइलियों का हौसला बढ़ गया और वह अगले दिन वहीं खड़े हो गए जहाँ पहले दिन खड़े हुए थे। 24 लेकिन जब वह शहर के करीब पहुँचे 25 तो बिनयमीनी पहले की तरह शहर से निकलकर उन पर टूट पड़े। उस दिन तलवार से लैस 18,000 इसराइली शहीद हो गए।

26 फिर इसराइल का पूरा लश्कर बैतेल चला गया। वहाँ वह शाम तक रब के हुज़ूर रोते और रोज़ा रखते रहे। उन्होंने रब को भस्म होनेवाली कुरबानियाँ और सलामती की कुरबानियाँ पेश करके 27 उससे दरियाफ्त किया कि हम क्या करें। (उस वक़्त अल्लाह के अहद का संदूक बैतेल में था 28 जहाँ फ़ीनहास बिन इलियज़र बिन हासून इमाम था।) इसराइलियों ने पूछा, “क्या हम एक और मरतबा अपने बिनयमीनी भाइयों से लड़ने जाएँ या इससे बाज़ आएँ?” रब ने जवाब दिया, “उन पर हमला करो, क्योंकि कल ही मैं उन्हें तुम्हारे हवाले कर दूँगा।”

बिनयमीन का सत्यानास

29 इस दफ़ा कुछ इसराइली ज़िबिया के इर्दगिर्द घात में बैठ गए। 30 बाक़ी अफ़राद पहले दो दिनों की-सी तरतीब के मुताबिक़ लड़ने के लिए खड़े हो गए। 31 बिनयमीनी दुबारा शहर से निकलकर उन पर टूट पड़े। जो रास्ते बैतेल और ज़िबिया की तरफ़ ले जाते हैं उन पर और खुले मैदान में उन्होंने तक़रीबन 30 इसराइलियों को मार डाला। यों लड़ते लड़ते वह शहर से दूर होते गए। 32 वह पुकारे, “अब हम उन्हें पहली दो मरतबा की तरह शिकस्त देंगे!”

लेकिन इसराइलियों ने मनसूबा बाँध लिया था, “हम उनके आगे आगे भागते हुए उन्हें शहर से दूर रास्तों पर खींच लेंगे।” 33 यों वह भागने लगे और बिनयमीनी उनके पीछे पड़ गए। लेकिन बाल-तमर के करीब इसराइली स्क़कर मुड़ गए और उनका सामना करने लगे। अब बाक़ी इसराइली जो ज़िबा के इर्दगिर्द और खुले मैदान में घात में बैठे थे अपनी छुपने की जगहों से निकल आए। 34 अचानक ज़िबिया के बिनयमीनियों को 10,000 बेहतरीन फ़ौजियों का सामना करना पड़ा, उन मर्दों का जो पूरे इसराइल से चुने गए थे। बिनयमीनी उनसे खूब लड़ने लगे, लेकिन उनकी आँखें अभी इस बात के लिए बंद थीं कि उनका अंजाम करीब आ गया है। 35 उस दिन इसराइलियों ने रब की मदद से फ़तह पाकर तलवार से लैस 25,100 बिनयमीनी फ़ौजियों को मौत के घाट उतार दिया। 36 तब बिनयमीनियों ने जान लिया कि दुश्मन हम पर ग़ालिब आ गए हैं। क्योंकि इसराइली फ़ौज ने अपने भाग जाने से उन्हें ज़िबिया से दूर खींच लिया था ताकि शहर के इर्दगिर्द घात में बैठे मर्दों को शहर पर हमला करने का मौक़ा मुहैया करें। 37 तब यह मर्द निकलकर शहर पर टूट पड़े और तलवार से तमाम बाशिंदों को मार डाला, 38-39 फिर मनसूबे के मुताबिक़ आग लगाकर धुँएँ का बड़ा बादल पैदा किया ताकि भागनेवाले इसराइलियों को इशारा मिल जाए कि वह मुड़कर बिनयमीनियों का मुक़ाबला करें।

उस वक़्त तक बिनयमीनियों ने तक़रीबन 30 इसराइलियों को मार डाला था, और उनका खयाल था कि हम उन्हें पहले की तरह शिकस्त दे रहे हैं। 40 अचानक उनके पीछे धुँएँ का बादल आसमान की तरफ़ उठने लगा। जब बिनयमीनियों ने मुड़कर देखा कि शहर के कोने कोने से धुआँ निकल रहा है 41 तो इसराइल के मर्द स्क़ गए और पलटकर उनका सामना करने लगे।

बिनयमीनी सख़्त घबरा गए, क्योंकि उन्होंने जान लिया कि हम तबाह हो गए हैं। 42-43 तब उन्होंने मशरिक़् के रेगिस्तान की तरफ़ फ़रार होने की कोशिश की। लेकिन अब वह मर्द भी उनका ताक़्क़ुब करने लगे जिन्होंने घात में बैठकर ज़िबिया पर हमला किया था। यों इसराइलियों ने मफ़्सूरों को घेरकर मार डाला। 44 उस वक़्त बिनयमीन के 18,000 तज़रबाकार फ़ौजी हलाक़ हुए। 45 जो बच गए वह रेगिस्तान की चटान रिम्मोन की तरफ़ भाग निकले। लेकिन इसराइलियों ने रास्ते में उनके 5,000 अफ़राद को मौत के घाट उतार दिया। इसके बाद उन्होंने ज़िदओम तक़ उनका ताक़्क़ुब किया। मज़ीद 2,000 बिनयमीनी हलाक़ हुए। 46 इस तरह बिनयमीन के कुल 25,000 तलवार से लैस और तज़रबाकार फ़ौजी मारे गए।

47 सिर्फ़ 600 मर्द बचकर रिम्मोन की चटान तक़ पहुँच गए। वहाँ वह चार महीने तक़ टिके रहे। 48 तब इसराइली ताक़्क़ुब करने से बाज़ आकर बिनयमीन के क़बायली इलाक़े में वापस आए। वहाँ उन्होंने जगह बजगह जाकर सब कुछ मौत के घाट उतार दिया। जो भी उन्हें मिला वह तलवार की ज़द में आ गया, खाह इन्सान था या हैवान। साथ साथ उन्होंने तमाम शहरों को आग लगा दी।

21

बिनयमीनियों को औरतें मिलती हैं

1 जब इसराइली मिसफ़ाह में जमा हुए थे तो सबने कसम खाकर कहा था, “हम कभी भी अपनी बेटियों का किसी बिनयमीनी मर्द के साथ रिश्ता नहीं बाँधेंगे।” 2 अब वह बैतेल चले गए और शाम तक़ अल्लाह के हुज़ूर बैठे रहे। रो रोक़ उन्होंने दुआ की, 3 “ऐ रब, इसराइल के ख़ुदा, हमारी क़ौम का एक पूरा क़बीला मिट गया है! यह मुसीबत इसराइल पर क्यों आई?”

4 अगले दिन वह सुबह-सवेरे उठे और कुरबानगाह बनाकर उस पर भस्म होनेवाली और सलामती की कुरबानियाँ चढ़ाई। 5 फिर वह एक दूसरे से पूछने लगे, “जब हम मिसफ्राह में रब के हुज़ूर जमा हुए तो हमारी क्रौम में से कौन कौन इजतिमा में शरीक न हुआ?” क्योंकि उस वक़्त उन्होंने कसम खाकर एलान किया था, “जिसने यहाँ रब के हुज़ूर आने से इनकार किया उसे ज़रूर सज़ाए-मौत दी जाएगी।” 6 अब इसराईलियों को बिनयमीनियों पर अफ़सोस हुआ। उन्होंने कहा, “एक पूरा कबीला मिट गया है। 7 अब हम उन थोड़े बचे-खुचे आदमियों को बीवियाँ किस तरह मुहैया कर सकते हैं? हमने तो रब के हुज़ूर कसम खाई है कि अपनी बेटियों का उनके साथ रिश्ता नहीं बाँधेंगे। 8 लेकिन हो सकता है कोई ख़ानदान मिसफ्राह के इजतिमा में न आया हो। आओ, हम पता करें।” मालूम हुआ कि यबीस-जिलियाद के बाशिंदे नहीं आए थे। 9 यह बात फ़ौजियों को गिनने से पता चली, क्योंकि गिनते वक़्त यबीस-जिलियाद का कोई भी शख्स फ़ौज में नहीं था।

10 तब उन्होंने 12,000 फ़ौजियों को चुनकर उन्हें हुक्म दिया, “यबीस-जिलियाद पर हमला करके तमाम बाशिंदों को बाल-बच्चों समेत मार डालो। 11 सिर्फ़ कुँवारियों को ज़िंदा रहने दो।”

12 फ़ौजियों ने यबीस में 400 कुँवारियाँ पाईं। वह उन्हें सैला ले आए जहाँ इसराईलियों का लश्कर ठहरा हुआ था। 13 वहाँ से उन्होंने अपने क़ासिदों को रिम्मोन की चटान के पास भेजकर बिनयमीनियों के साथ सुलह कर ली। 14 फिर बिनयमीन के 600 मर्दे रेगिस्तान से वापस आए, और उनके साथ यबीस-जिलियाद की कुँवारियों की शादी हुई। लेकिन यह सबके लिए काफ़ी नहीं थी।

15 इसराईलियों को बिनयमीन पर अफ़सोस हुआ, क्योंकि रब ने इसराईल के कबीलों में ख़ला डाल दिया था। 16 ज़मात के बुज़ुर्गों ने दुबारा पूछा, “हमें बिनयमीन के बाक़ी मर्दों के लिए कहाँ से बीवियाँ मिलेंगी? उनकी तमाम औरतें तो हलाक हो गई हैं। 17 लाज़िम है कि उन्हें उनका मौसूसी इलाका वापस मिल जाए। ऐसा न हो कि वह बिलकुल मिट जाएँ। 18 लेकिन हम अपनी बेटियों की उनके साथ शादी नहीं करा सकते, क्योंकि हमने कसम खाकर एलान किया है, ‘जो अपनी बेटी का रिश्ता बिनयमीन के किसी मर्द से बाँधेगा उस पर अल्लाह की लानत हो’।”

19 यों सोचते सोचते उन्हें आखिरकार यह तरकीब सूझी, “कुछ देर के बाद यहाँ सैला में रब की सालाना ईद मनाई जाएगी। सैला बैतेल के शिमाल में, लबूना के जुनूब में और उस रास्ते के मशरिक में है जो बैतेल से सिकम तक ले जाता है। 20 अब बिनयमीनी मर्दों के लिए हमारा मशवरा है कि ईद के दिनों में अंगूर के बाग़ों में छुपकर घात में बैठ जाएँ। 21 जब लड़कियाँ लोकनाच के लिए सैला से निकलेंगी तो फिर बाग़ों से निकलकर उन पर झपट पड़ना। हर आदमी एक लड़की को पकड़कर उसे अपने घर ले जाए। 22 जब उनके बाप और भाई हमारे पास आकर आपकी शिकायत करेंगे तो हम उनसे कहेंगे, ‘बिनयमीनियों पर तरस खाँ, क्योंकि जब हमने यबीस पर फ़तह पाई तो हम उनके लिए काफ़ी औरतें हासिल न कर सके। आप बेकुसूर हैं, क्योंकि आपने उन्हें अपनी बेटियों को इरादतन तो नहीं दिया’।” 23 बिनयमीनियों ने बुज़ुर्गों की इस हिदायत पर अमल किया। ईद के दिनों में जब लड़कियाँ नाच रही थीं तो बिनयमीनियों ने उतनी पकड़ ली कि उनकी कमी पूरी हो गई। फिर वह उन्हें अपने क़बायली इलाके में ले गए और शहरों को दुबारा तामीर करके उनमें बसने लगे। 24 बाक़ी इसराईली भी वहाँ से चले गए। हर एक अपने क़बायली इलाके में वापस चला गया। 25 उस ज़माने में इसराईल में कोई बादशाह नहीं था। हर एक वही कुछ करता जो उसे मुनासिब लगता था।

स्त

इलीमलिक मोआब चला जाता है

1-2 उन दिनों जब काजी क्रौम की राहनुमाई किया करते थे तो इसराईल में काल पड़ा। यहदाह के शहर बैत-लहम में एक इफराती आदमी रहता था जिसका नाम इलीमलिक था। काल की वजह से वह अपनी बीवी नओमी और अपने दो बेटों महलोन और किलियोन को लेकर मुल्के-मोआब में जा बसा।

3 लेकिन कुछ देर के बाद इलीमलिक फ्रौत हो गया, और नओमी अपने दो बेटों के साथ अकेली रह गई। 4 महलोन और किलियोन ने मोआब की दो औरतों से शादी कर ली। एक का नाम उरफा था और दूसरी का स्त। लेकिन तकरीबन दस साल के बाद 5 दोनों बेटे भी जान-बहक हो गए। अब नओमी का न शौहर और न बेटे ही रहे थे।

नओमी स्त के साथ वापस चली जाती है

6-7 एक दिन नओमी को मुल्के-मोआब में खबर मिली कि रब अपनी क्रौम पर रहम करके उसे दुबारा अच्छी फसलें दे रहा है। तब वह अपने वतन यहदाह के लिए रवाना हुई। उरफा और स्त भी साथ चली।

जब वह उस रास्ते पर आ गई जो यहदाह तक पहुँचाता है 8 तो नओमी ने अपनी बहुओं से कहा, “अब अपने माँ-बाप के घर वापस चली जाएँ। रब आप पर उतना रहम करे जितना आपने मरहमों और मुझे पर किया है। 9 वह आपको नए घर और नए शौहर मुहैया करके सुकून दे।”

यह कहकर उसने उन्हें बोसा दिया। दोनों रो पड़ीं 10 और एतराज किया, “हरगिज नहीं, हम आपके साथ आपकी क्रौम के पास जाएँगी।” 11 लेकिन नओमी ने इसरार किया, “बेटियो, बस करें और अपने अपने घर वापस चली जाएँ। अब मेरे साथ जाने का क्या फायदा? मुझे तो मज़ीद कोई बेटा पैदा नहीं होगा जो आपका शौहर बन सके। 12 नहीं बेटियो, वापस चली जाएँ। मैं तो इतनी बूढ़ी हो चुकी हूँ कि दुबारा शादी नहीं कर सकती। और अगर इसकी उम्मीद भी होती बल्कि मेरी शादी आज रात को होती और मेरे हाँ बेटे पैदा होते 13 तो क्या आप उनके बालिग हो जाने तक इंतज़ार कर सकती? क्या आप उस वक़्त तक किसी और से शादी करने से इनकार करती? नहीं, बेटियो। रब ने अपना हाथ मेरे खिलाफ उठाया है, तो आप इस लानत की ज़द में क्यों आएँ?”

14 तब उरफा और स्त दुबारा रो पड़ीं। उरफा ने अपनी सास को चूमकर अलविदा कहा, लेकिन स्त नओमी के साथ लिपटी रही। 15 नओमी ने उसे समझाने की कोशिश की, “देखें, उरफा अपनी क्रौम और अपने देवताओं के पास वापस चली गई है। अब आप भी ऐसा ही करें।”

16 लेकिन स्त ने जवाब दिया, “मुझे आपको छोड़कर वापस जाने पर मजबूर न कीजिए। जहाँ आप जाएँगी मैं जाऊँगी। जहाँ आप रहेंगी वहाँ मैं भी रहूँगी। आपकी क्रौम मेरी क्रौम और आपका खुदा मेरा खुदा है। 17 जहाँ आप मरेगी वहीं मैं मरूँगी और वहीं दफ़न हो जाऊँगी। सिर्फ़ मौत ही मुझे आपसे अलग कर सकती है। अगर मेरा यह वादा पूरा न हो तो अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे!”

18 नओमी ने जान लिया कि स्त का साथ जाने का पक्का इरादा है, इसलिए वह खामोश हो गई और उसे समझाने से बाज़ आई। 19 वह चल पड़ी और चलते चलते बैत-लहम पहुँच गई। जब दाखिल हुई तो पूरे शहर में हलचल मच गई। औरतें कहने लगीं, “क्या यह नओमी नहीं है?”

20 नओमी ने जवाब दिया, “अब मुझे नओमी * मत कहना बल्कि मारा, † क्योंकि कादिरे-मुतलक ने मुझे सख़्त मुसीबत में डाल दिया है।

21 यहाँ से जाते वक़्त मेरे हाथ भरे हुए थे, लेकिन अब रब मुझे खाली हाथ वापस ले आया है। चुनाँचे मुझे नओमी मत कहना। रब ने खुद मेरे खिलाफ़ गवाही दी है, कादिरे-मुतलक ने मुझे इस मुसीबत में डाला है।”

22 जब नओमी अपनी मोआबी बहु के साथ बैत-लहम पहुँची तो जौ की फसल की कटाई शुरू हो चुकी थी।

2

स्त की बोअज़ से मुलाकात

1 बैत-लहम में नओमी के मरहम शौहर का रिश्तेदार रहता था जिसका नाम बोअज़ था। वह असरो-रसूख़ रखता था, और उस की ज़मीनें थीं।

2 एक दिन स्त ने अपनी सास से कहा, “मैं खेतों में जाकर फसल की कटाई से बची हुई बालें चुन लूँ। कोई न कोई तो मुझे इसकी इजाज़त देगा।” नओमी ने जवाब दिया, “ठीक है बेटा, जाएँ।” 3 स्त किसी खेत में गई और मज़दूरों के पीछे पीछे चलती हुई बची हुई बालें चुनने लगी। उसे मालूम न था कि खेत का मालिक सुसर का रिश्तेदार बोअज़ है।

4 इतने में बोअज़ बैत-लहम से पहुँचा। उसने अपने मज़दूरों से कहा, “रब आपके साथ हो।” उन्होंने जवाब दिया, “और रब आपको भी बरकत दे!” 5 फिर बोअज़ ने मज़दूरों के इंचार्ज से पूछा, “उस जवान औरत का मालिक कौन है?” 6 आदमी ने जवाब दिया, “यह मोआबी

* 1:20 खुशगवार, खुशीवाली। † 1:20 कड़वी।

औरत नओमी के साथ मुल्के-मोआब से आई है। ⁷ इसने मुझसे मजदूरों के पीछे चलकर बची हुई बालें चुनने की इजाजत ली। यह थोड़ी देर झोंपड़ी के साय में आराम करने के सिवा सुबह से लेकर अब तक काम में लगी रही है।”

⁸ यह सुनकर बोअज़ ने स्त से बात की, “बेटी, मेरी बात सुनें! किसी और खेत में बची हुई बालें चुनने के लिए न जाएँ बल्कि यहीं मेरी नौकरानियों के साथ रहें। ⁹ खेत के उस हिस्से पर ध्यान दें जहाँ फ़सल की कटाई हो रही है और नौकरानियों के पीछे पीछे चलती रहें। मैंने आदमियों को आपको छेड़ने से मना किया है। जब भी आपको प्यास लगे तो उन बरतनों से पानी पीना जो आदमियों ने कुँएँ से भर रखे हैं।”

¹⁰ स्त मुँह के बल झुक गई और बोली, “मैं इस लायक नहीं कि आप मुझ पर इतनी मेहरबानी करें। मैं तो परदेसी हूँ। आप क्यों मेरी कदर करते हैं?” ¹¹ बोअज़ ने जवाब दिया, “मुझे वह कुछ बताया गया है जो आपने अपने शौहर की वफ़ात से लेकर आज तक अपनी सास के लिए किया है। आप अपने माँ-बाप और अपने वतन को छोड़कर एक क़ौम में बसने आई हैं जिसे पहले से नहीं जानती थीं। ¹² आप अब इसराईल के ख़ुदा के परों तले पनाह लेने आई हैं। अब वह आपको आपकी नेकी का पूरा अज़्र दे।” ¹³ स्त ने कहा, “मेरे आक्रा, अल्लाह करे कि मैं आइंदा भी आपकी मंज़ूरे-नज़र रहूँ। गो मैं आपकी नौकरानियों की हैसियत भी नहीं रखती तो भी आपने मुझसे शफ़क़त भरी बातें करके मुझे तसल्ली दी है।”

¹⁴ खाने के वक़्त बोअज़ ने स्त को बुलाकर कहा, “इधर आकर रोटी खाएँ और अपना नवाला सिरके में डुबो दें।” स्त उसके मजदूरों के साथ बैठ गई, और बोअज़ ने उसे जौ के भुने हुए दाने दे दिए। स्त ने जी भरकर खाना खाया। फिर भी कुछ बच गया। ¹⁵ जब वह काम जारी रखने के लिए उठी तो बोअज़ ने हुक्म दिया, “उसे पूलों के दरमियान भी बालें जमा करने दो, और अगर वह ऐसा करे तो उस की बेइज़्जती मत करना। ¹⁶ न सिर्फ़ यह बल्कि काम करते वक़्त इधर उधर पूलों की कुछ बालें ज़मीन पर गिरने दो। जब वह उन्हें जमा करने आए तो उसे मत झिड़कना!”

¹⁷ स्त ने खेत में शाम तक काम जारी रखा। जब उसने बालों को कूट लिया तो दानों के तकरीबन 13 किलोग्राम निकले। ¹⁸ फिर वह सब कुछ उठाकर अपने घर वापस ले आई और सास को दिखाया। साथ साथ उसने उसे वह भुने हुए दाने भी दिए जो दोपहर के खाने से बच गए थे। ¹⁹ नओमी ने पूछा, “आपने यह सब कुछ कहाँ से जमा किया? बताएँ, आप कहाँ थीं? अल्लाह उसे बरकत दे जिसने आपकी इतनी कदर की है!”

स्त ने कहा, “जिस आदमी के खेत में मैंने आज काम किया उसका नाम बोअज़ है।” ²⁰ नओमी पुकार उठी, “रब उसे बरकत दे! वह तो हमारा करीबी रिश्तेदार है, और शरीअत के मुताबिक़ उसका हक़ है कि वह हमारी मदद करे। अब मुझे मालूम हुआ है कि अल्लाह हम पर और हमारे मरहम शौहरों पर रहम करने से बाज़ नहीं आया!”

²¹ स्त बोली, “उसने मुझसे यह भी कहा कि कहीं और न जाना बल्कि कटाई के इख़िताम तक मेरे मजदूरों के पीछे पीछे बालें जमा करना।”

²² नओमी ने जवाब में कहा, “बहुत अच्छा। बेटी, ऐसा ही करें। उस की नौकरानियों के साथ रहने का यह फ़ायदा है कि आप महफूज़ रहेंगी। किसी और के खेत में जाएँ तो हो सकता है कि कोई आपको तंग करे।”

²³ चुनौचे स्त जौ और गंदुम की कटाई के पूरे मौसम में बोअज़ की नौकरानियों के पास जाती और बची हुई बालें चुनती। शाम को वह अपनी सास के घर वापस चली जाती थी।

3

स्त की शादी की कोशिशें

¹ एक दिन नओमी स्त से मुखातिब हुई, “बेटी, मैं आपके लिए घर का बंदोबस्त करना चाहती हूँ, ऐसी जगह जहाँ आपकी ज़रूरियात आइंदा भी पूरी होती रहेंगी। ² अब देखें, जिस आदमी की नौकरानियों के साथ आपने बालें चुनी हैं वह हमारा करीबी रिश्तेदार है। आज शाम को बोअज़ गाहने की जगह पर जौ फटकेगा। ³ तो सुन लें, अच्छी तरह नहाकर ख़ुशबूदार तेल लगा लें और अपना सबसे खूबसूरत लिबास पहन लें। फिर गाहने की जगह जाएँ। लेकिन उसे पता न चले कि आप आई हैं। जब वह खाने-पीने से फ़ारिग हो जाएँ ⁴ तो देख लें कि बोअज़ सोने के लिए कहाँ लेट जाता है। फिर जब वह सो जाएगा तो वहाँ जाएँ और कम्बल को उसके पैरों से उतारकर उनके पास लेट जाएँ। बाक़ी जो कुछ करना है वह आपको उसी वक़्त बताएगा।”

⁵ स्त ने जवाब दिया, “ठीक है। जो कुछ भी आपने कहा है मैं करूँगी।” ⁶ वह अपनी सास की हिदायत के मुताबिक़ तैयार हुई और शाम के वक़्त गाहने की जगह पर पहुँची। ⁷ वहाँ बोअज़ खाने-पीने और ख़ुशी मनाने के बाद जौ के ढेर के पास लेटकर सो गया। फिर स्त चुपके से उसके पास आई। उसके पैरों से कम्बल हटाकर वह उनके पास लेट गई।

⁸ आधी रात को बोअज़ घबरा गया। टटोल टटोलकर उसे पता चला कि पैरों के पास औरत पड़ी है। ⁹ उसने पूछा, “कौन है?” स्त ने जवाब दिया, “आपकी खादिमा स्त। मेरी एक गुज़ारिश है। चूँकि आप मेरे करीबी रिश्तेदार हैं इसलिए आपका हक़ है कि मेरी ज़रूरियात पूरी करें। मेहरबानी करके अपने लिबास का दामन मुझ पर बिछाकर ज़ाहिर करें कि मेरे साथ शादी करेंगे।”

¹⁰ बोअज़ बोला, “बेटी, रब आपको बरकत दे! अब आपने अपने सुसराल से वफ़ादारी का पहले की निसबत ज़्यादा इज़हार किया है, क्योंकि आप जवान आदमियों के पीछे न लगीं, खाह गरीब हों या अमीर। ¹¹ बेटी, अब फ़िकर न करें। मैं ज़रूर आपकी यह गुज़ारिश पूरी

करूँगा। आखिर तमाम मकामी लोग जान गए हैं कि आप शरीफ औरत हैं। ¹² आपकी बात सच है कि मैं आपका करीबी रिश्तेदार हूँ और यह मेरा हक है कि आपकी ज़रूरियात पूरी करूँ। लेकिन एक और आदमी है जिसका आपसे ज़्यादा करीबी रिश्ता है। ¹³ रात के लिए यहाँ ठहरें! कल मैं उस आदमी से बात करूँगा। अगर वह आपसे शादी करके रिश्तेदारी का हक अदा करना चाहे तो ठीक है। अगर नहीं तो रब की कसम, मैं यह ज़रूर करूँगा। आप सुबह के वक़्त तक यहीं लेटी रहें।”

¹⁴ चुनौचे स्त बोअज़ के पैरों के पास लेटी रही। लेकिन वह सुबह मुँह अंधेरे उठकर चली गई ताकि कोई उसे पहचान न सके, क्योंकि बोअज़ ने कहा था, “किसी को पता न चले कि कोई औरत यहाँ गाहने की जगह पर मेरे पास आई है।” ¹⁵ स्त के जाने से पहले बोअज़ बोला, “अपनी चादर बिछा दें!” फिर उसने कोई बरतन छः दफ़ा जौ के दानों से भरकर चादर में डाल दिया और उसे स्त के सर पर रख दिया। फिर वह शहर में वापस चला गया।

¹⁶ जब स्त घर पहुँची तो सास ने पूछा, “बेटी, वक़्त कैसा रहा?” स्त ने उसे सब कुछ सुनाया जो बोअज़ ने जवाब में किया था। ¹⁷ स्त बोली, “जौ के यह दाने भी उस की तरफ से हैं। वह नहीं चाहता था कि मैं खाली हाथ आपके पास वापस आऊँ।” ¹⁸ यह सुनकर नओमी ने स्त को तसल्ली दी, “बेटी, जब तक कोई नतीजा न निकले यहाँ ठहर जाएँ। अब यह आदमी आराम नहीं करेगा बल्कि आज ही मामले का हल निकालेगा।”

4

¹ बोअज़ शहर के दरवाज़े के पास जाकर बैठ गया जहाँ बुजुर्ग फ़ैसले किया करते थे। कुछ देर के बाद वह रिश्तेदार वहाँ से गुज़रा जिसका ज़िक्र बोअज़ ने स्त से किया था। बोअज़ उससे मुखातिब हुआ, “दोस्त, इधर आएँ। मेरे पास बैठ जाएँ।”

रिश्तेदार उसके पास बैठ गया ² तो बोअज़ ने शहर के दस बुजुर्गों को भी साथ बिठाया। ³ फिर उसने रिश्तेदार से बात की, “नओमी मुल्के-मोआब से वापस आकर अपने शौहर इलीमलिक की ज़मीन फ़रोख़्त करना चाहती है। ⁴ यह ज़मीन हमारे खानदान का मौससी हिस्सा है, इसलिए मैंने मुनासिब समझा कि आपको इतला दूँ ताकि आप यह ज़मीन ख़रीद लें। बैत-लहम के बुजुर्ग और साथ बैठे राहनुमा इसके गवाह होंगे। लाज़िम है कि यह ज़मीन हमारे खानदान का हिस्सा रहे, इसलिए बताएँ कि क्या आप इसे ख़रीदकर छुड़ाएँगे? आपका सबसे करीबी रिश्ता है, इसलिए यह आप ही का हक़ है। अगर आप ज़मीन ख़रीदना न चाहें तो यह मेरा हक़ बनेगा।” रिश्तेदार ने जवाब दिया, “ठीक है, मैं इसे ख़रीदकर छुड़ाऊँगा।” ⁵ फिर बोअज़ बोला, “अगर आप नओमी से ज़मीन ख़रीदें तो आपको उस की मोआबी बहू स्त से शादी करनी पड़ेगी ताकि मरहम शौहर की जगह औलाद पैदा करें जो उसका नाम रखकर यह ज़मीन सँभालें।”

⁶ यह सुनकर रिश्तेदार ने कहा, “फिर मैं इसे ख़रीदना नहीं चाहता, क्योंकि ऐसा करने से मेरी मौससी ज़मीन को नुक़सान पहुँचेगा। आप ही इसे ख़रीदकर छुड़ाएँ।”

⁷ उस ज़माने में अगर ऐसे किसी मामले में कोई ज़मीन ख़रीदने का अपना हक़ किसी दूसरे को मुतक़िल करना चाहता था तो वह अपनी चप्पल उतारकर उसे दे देता था। इस तरीक़े से फ़ैसला क़ानूनी तौर पर तय हो जाता था। ⁸ चुनौचे स्त के ज़्यादा करीबी रिश्तेदार ने अपनी चप्पल उतारकर बोअज़ को दे दी और कहा, “आप ही ज़मीन को ख़रीद लें।” ⁹ तब बोअज़ ने बुजुर्गों और बाक़ी लोगों के सामने एलान किया, “आज आप गवाह हैं कि मैंने नओमी से सब कुछ ख़रीद लिया है जो उसके मरहम शौहर इलीमलिक और उसके दो बेटों किलियोन और महलोन का था। ¹⁰ साथ ही मैंने महलोन की बेवा मोआबी औरत स्त से शादी करने का वादा किया है ताकि महलोन के नाम से बेटा पैदा हो। यों मरहम की मौससी ज़मीन खानदान से छिन नहीं जाएगी, और उसका नाम हमारे खानदान और बैत-लहम के बाशिंदों में कायम रहेगा। आज आप सब गवाह हैं!”

¹¹ बुजुर्गों और शहर के दरवाज़े पर बैठे दीगर मर्दों ने इसकी तसदीक़ की, “हम गवाह हैं! रब आपके घर में आनेवाली इस औरत को उन बरकतों से नवाज़े जिनसे उसने राखिल और लियाह को नवाज़ा, जिनसे तमाम इसराईली निकले। रब करे कि आपकी दौलत और इज़्ज़त इफ़राता यानी बैत-लहम में बढ़ती जाए। ¹² वह आप और आपकी बीवी को उतनी औलाद बख़्शे जितनी तमर और यहूदाह के बेटे फ़ारस के खानदान को बख़शी थी।”

¹³ चुनौचे स्त बोअज़ की बीवी बन गई। और रब की मरज़ी से स्त शादी के बाद हामिला हुई। जब उसके बेटा हुआ ¹⁴ तो बैत-लहम की औरतों ने नओमी से कहा, “रब की तमजीद हो! आपको यह बच्चा अता करने से उसने ऐसा शख्स मुहैया किया है जो आपका खानदान सँभालेगा। अल्लाह करे कि उस की शोहरत पूरे इसराईल में फैल जाए। ¹⁵ उससे आप ताज़ादम हो जाएँगी, और बुढ़ापे में वह आपको सहारा देगा। क्योंकि आपकी बहू जो आपको प्यार करती है और जिसकी क़दरो-कीमत सात बेटों से बढ़कर है उसी ने उसे जन्म दिया है!”

¹⁶ नओमी बच्चे को अपनी गोद में बिठाकर उसे पालने लगी। ¹⁷ पड़ोसी औरतों ने उसका नाम ओबेद यानी ख़िदमत करनेवाला रखा। उन्होंने कहा, “नओमी के हाँ बेटा पैदा हुआ है!”

ओबेद दाऊद बादशाह के बाप यस्सी का बाप था। ¹⁸ ज़ैल में फ़ारस का दाऊद तक नसबनामा है : फ़ारस, हसरोन, ¹⁹ राम, अम्मीनदाब, ²⁰ नहसोन, सलमोन, ²¹ बोअज़, ओबेद, ²² यस्सी और दाऊद।

1 समुएल

हन्ना अल्लाह से बच्चा माँगती है

1 इफ्राईम के पहाड़ी इलाके के शहर रामातायम-सोफीम यानी रामा में एक इफ्राईमी रहता था जिसका नाम इलकाना बिन यरोहाम बिन इलीह बिन तूखू बिन सूफ था। 2 इलकाना की दो बीवियाँ थीं। एक का नाम हन्ना था और दूसरी का फनिन्ना। फनिन्ना के बच्चे थे, लेकिन हन्ना बेऔलाद थी।

3 इलकाना हर साल अपने खानदान समेत सफर करके सैला के मकदिस के पास जाता ताकि वहाँ रब्बुल-अफवाज के हुजूर कुरबानी गुजराने और उस की परस्तिश करे। उन दिनों में एली इमाम के दो बेटे हुफनी और फीनहास सैला में इमाम की खिदमत अंजाम देते थे। 4 हर साल इलकाना अपनी कुरबानी पेश करने के बाद कुरबानी के गोश्त के टुकड़े फनिन्ना और उसके बेटे-बेटियों में तकसीम करता। 5 हन्ना को भी गोश्त मिलता, लेकिन जहाँ दूसरों को एक हिस्सा मिलता वहाँ उसे दो हिस्से मिलते थे। क्योंकि इलकाना उससे बहुत मुहब्बत रखता था, अगरचे अब तक रब की मरज़ी नहीं थी कि हन्ना के बच्चे पैदा हों। 6 फनिन्ना की हन्ना से दुश्मनी थी, इसलिए वह हर साल हन्ना के बाँझपन का मज़ाक उड़ाकर उसे तंग करती थी। 7 साल बसाल ऐसा ही हुआ करता था। जब भी वह रब के मकदिस के पास जाते तो फनिन्ना हन्ना को इतना तंग करती कि वह उस की बातें सुन सुनकर रो पड़ती और खा-पी न सकती। 8 फिर इलकाना पूछता, “हन्ना, तू क्यों रो रही है? तू खाना क्यों नहीं खा रही? उदास होने की क्या ज़रूरत? मैं तो हूँ। क्या यह दस बेटों से कहीं बेहतर नहीं?”

9 एक दिन जब वह सैला में थे तो हन्ना खाने-पीने के बाद दुआ करने के लिए उठी। एली इमाम रब के मकदिस के दरवाजे के पास कुरसी पर बैठा था। 10 हन्ना शदीद परेशानी के आलम में फूट फूटकर रोने लगी। रब से दुआ करते करते 11 उसने कसम खाई, “ऐ रब्बुल-अफवाज, मेरी बुरी हालत पर नज़र डालकर मुझे याद कर! अपनी खादिमा को मत भूलना बल्कि बेटा अता फरमा! अगर तू ऐसा करे तो मैं उसे तुझे वापस कर दूँगी। ऐ रब, उस की पूरी जिंदगी तैरे लिए मखसूस होगी! इसका निशान यह होगा कि उसके बाल कभी नहीं कटवाए जाएंगे।”

12 हन्ना बड़ी देर तक यों दुआ करती रही। एली उसके मुँह पर गौर करने लगा 13 तो देखा कि हन्ना के होंट तो हिल रहे हैं लेकिन आवाज़ सुनाई नहीं दे रही, क्योंकि हन्ना दिल ही दिल में दुआ कर रही थी। लेकिन एली को ऐसा लग रहा था कि वह नशे में धुत है, 14 इसलिए उसने उसे झिड़कते हुए कहा, “तू कब तक नशे में धुत रहेगी? मैं पीने से बाज़ आ!”

15 हन्ना ने जवाब दिया, “मेरे आका, ऐसी कोई बात नहीं है। मैंने न मै, न कोई और नशा-आवर चीज़ चखी है। बात यह है कि मैं बड़ी रंजीदा हूँ, इसलिए रब के हुजूर अपने दिल की आहो-जारी उंडेल दी है। * 16 यह न समझें कि मैं निकम्मी औरत हूँ, बल्कि मैं बड़े ग़म और अज़ियत में दुआ कर रही थी।”

17 यह सुनकर एली ने जवाब दिया, “सलामती से अपने घर चली जा! इसराईल का ख़ुदा तेरी दरखास्त पूरी करे।” 18 हन्ना ने कहा, “अपनी खादिमा पर आपकी नज़रे-करम हो।” फिर उसने जाकर कुछ खाया, और उसका चेहरा उदास न रहा।

समुएल की पैदाइश और बचपन

19 अगले दिन पूरा खानदान सुबह-सवेरे उठा। उन्होंने मकदिस में जाकर रब की परस्तिश की, फिर रामा वापस चले गए जहाँ उनका घर था। और रब ने हन्ना को याद करके उस की दुआ सुनी। 20 इलकाना और हन्ना के बेटा पैदा हुआ। हन्ना ने उसका नाम समुएल यानी ‘उसका नाम अल्लाह है’ रखा, क्योंकि उसने कहा, “मैंने उसे रब से माँगा।”

21 अगले साल इलकाना खानदान के साथ मामूल के मुताबिक सैला गया ताकि रब को सालाना कुरबानी पेश करे और अपनी मन्नत पूरी करे। 22 लेकिन हन्ना न गई। उसने अपने शौहर से कहा, “जब बच्चा दूध पीना छोड़ देगा तब ही मैं उसे लेकर रब के हुजूर पेश करूँगी। उस वक़्त से वह हमेशा वहीं रहेगा।” 23 इलकाना ने जवाब दिया, “वह कुछ कर जो तुझे मुनासिब लगे। बच्चे का दूध छुड़ाने तक यहाँ रह। लेकिन रब अपना कलाम कायम रखे।” चुनौचे हन्ना बच्चे के दूध छुड़ाने तक घर में रही।

24 जब समुएल ने दूध पीना छोड़ दिया तो हन्ना उसे सैला में रब के मकदिस के पास ले गई, गो बच्चा अभी छोटा था। कुरबानियों के लिए उसके पास तीन बैल, मैदे के तकरीबन 16 किलोग्राम और मै की मशक थी। 25 बैल को कुरबानगाह पर चढ़ाने के बाद इलकाना और हन्ना बच्चे को एली के पास ले गए। 26 हन्ना ने कहा, “मेरे आका, आपकी हयात की कसम, मैं वही औरत हूँ जो कुछ साल पहले यहाँ आपकी मौजूदगी में खड़ी दुआ कर रही थी। 27 उस वक़्त मैंने इलतमास की थी कि रब मुझे बेटा अता करे, और रब ने मेरी सुनी है। 28 चुनौचे अब मैं अपना वादा पूरा करके बेटे को रब को वापस कर देती हूँ। उम्र-भर वह रब के लिए मखसूस होगा।” तब उसने रब के हुजूर सिजदा किया।

* 1:15 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : अपनी जान उंडेल दी है।

2

हन्ना का गीत

1 वहाँ हन्ना ने यह गीत गाया,

“मेरा दिल रब की खुशी मनाता है, क्योंकि उसने मुझे कुव्वत अता की है। मेरा मुँह दिलेरी से अपने दुश्मनों के खिलाफ बात करता है, क्योंकि मैं तेरी नजात के बाइस बाग बाग हूँ।

2 रब जैसा कुदूस कोई नहीं है, तेरे सिवा कोई नहीं है। हमारे खुदा जैसी कोई चटान नहीं है। 3 डीगें मारने से बाज़ आओ! गुस्ताख बातें मत बको! क्योंकि रब ऐसा खुदा है जो सब कुछ जानता है, वह तमाम आमाल को तोलकर परखता है। 4 अब बड़ों की कमानें टूट गई हैं जबकि गिरनेवाले कुव्वत से कमरबस्ता हो गए हैं। 5 जो पहले सेर थे वह रोटी मिलने के लिए मजदूरी करते हैं जबकि जो पहले भूके थे वह सेर हो गए हैं। बेऔलाद औरत के सात बच्चे पैदा हुए हैं जबकि वाफिर बच्चों की माँ मुरझा रही है।

6 रब एक को मरने देता और दूसरे को ज़िंदा होने देता है। वह एक को पाताल में उतरने देता और दूसरे को वहाँ से निकल आने देता है। 7 रब ही गरीब और अमीर बना देता है, वही पस्त करता और वही सरफ़राज़ करता है। 8 वह खाक में दबे आदमी को खड़ा करता है और राख में लेटे ज़स्तरतमंद को सरफ़राज़ करता है, फिर उन्हें रईसों के साथ इज़्ज़त की कुरसी पर बिठा देता है। क्योंकि दुनिया की बुनियादे रब की हैं, और उसी ने उन पर ज़मीन रखी है।

9 वह अपने वफ़ादार पैरोकारों के पाँव महफूज़ रखेगा जबकि शरीर तारीकी में चुप हो जाएंगे। क्योंकि इनसान अपनी ताकत से कामयाब नहीं होता। 10 जो रब से लड़ने की ज़ुरत करें वह पाश पाश हो जाएंगे। रब आसमान से उनके खिलाफ़ गरजकर दुनिया की इंतहा तक सबकी अदालत करेगा। वह अपने बादशाह को तकवियत और अपने मसह किए हुए खादिम को कुव्वत अता करेगा।”

11 फिर इलकाना और हन्ना रामा में अपने घर वापस चले गए। लेकिन उनका बेटा एली इमाम के पास रहा और मक़दिस में रब की ख़िदमत करने लगा।

एली के बेटों की बेदीन ज़िंदगी

12 लेकिन एली के बेटे बदमाश थे। न वह रब को जानते थे, 13 न इमाम की हैसियत से अपने फ़रायज़ सहीह तौर पर अदा करते थे। क्योंकि जब भी कोई आदमी अपनी कुरबानी पेश करके रिफ़ाक़ती ख़ाने के लिए गोश्त उबालता तो एली के बेटे अपने नौकर को वहाँ भेज देते। यह नौकर सिंहशाखा काँटा 14 देग में डालकर गोश्त का हर वह टुकड़ा अपने मालिकों के पास ले जाता जो काँटे से लग जाता। यही उनका तमाम इसराइलियों के साथ सुलूक था जो सैला में कुरबानियाँ चढ़ाने आते थे। 15 न सिर्फ़ यह बल्कि कई बार नौकर उस वक़्त भी आ जाता जब जानवर की चरबी अभी कुरबानगाह पर जलानी होती थी। फिर वह तकाज़ा करता, “मुझे इमाम के लिए कच्चा गोश्त दे दो! उसे उबला गोश्त मंज़ूर नहीं बल्कि सिर्फ़ कच्चा गोश्त, क्योंकि वह उसे भूना चाहता है।” 16 कुरबानी पेश करनेवाला एतराज़ करता, “पहले तो रब के लिए चरबी जलाना है, इसके बाद ही जो जी चाहे ले लें।” फिर नौकर बदतमीज़ी करता, “नहीं, उसे अभी दे दो, वरना मैं ज़बरदस्ती ले लूँगा।” 17 इन जवान इमामों का यह गुनाह रब की नज़र में निहायत संगीन था, क्योंकि वह रब की कुरबानियाँ हक़ीर जानते थे।

माँ-बाप समुएल से मिलने आते हैं

18 लेकिन छोटा समुएल रब के हुज़ूर ख़िदमत करता रहा। उसे भी दूसरे इमामों की तरह कतान का बालापोश दिया गया था। 19 हर साल जब उस की माँ खाविंद के साथ कुरबानी पेश करने के लिए सैला आती तो वह नया चोगा सीकर उसे दे देती। 20 और ख़ाना होने से पहले एली समुएल के माँ-बाप को बरकत देकर इलकाना से कहता, “हन्ना ने रब से बच्चा माँग लिया और जब मिला तो उसे रब को वापस कर दिया। अब रब आपको इस बच्चे की जगह मज़ीद बच्चे दे।” इसके बाद वह अपने घर चले जाते। 21 और वाकई, रब ने हन्ना को मज़ीद तीन बेटे और दो बेटियाँ अता कीं। यह बच्चे घर में रहे, लेकिन समुएल रब के हुज़ूर ख़िदमत करते करते जवान हो गया।

एली के बेटे बाप की नहीं सुनते

22 एली उस वक़्त बहुत बूढ़ा हो चुका था। बेटों का तमाम इसराइल के साथ बुरा सुलूक उसके कानों तक पहुँच गया था, बल्कि यह भी कि बेटे उन औरतों से नाजायज़ ताल्लुकात रखते हैं जो मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े पर ख़िदमत करती हैं। 23 उसने उन्हें समझाया भी था, “आप ऐसी हरकतें क्यों कर रहे हैं? मुझे तमाम लोगों से आपके शरीर कामों की ख़बरे मिलती रहती हैं। 24 बेटो, ऐसा मत करना! जो बातें आपके बारे में रब की क्रौम में फैल गई हैं वह अच्छी नहीं। 25 देखें, अगर इनसान किसी दूसरे इनसान का गुनाह करे तो हो सकता है अल्लाह दोनों का दरमियानी बनकर कुसूरवार शख्स पर रहम करे। लेकिन अगर कोई रब का गुनाह करे तो फिर कौन उसका दरमियानी बनकर उसे बचाएगा?”

लेकिन एली के बेटों ने बाप की न सुनी, क्योंकि रब की मरज़ी थी कि उन्हें सज़ाए-मौत मिल जाए।

26 लेकिन समुएल उनसे फ़रक़ था। जितना वह बड़ा होता गया उतनी उस की रब और इनसान के सामने कबूलियत बढ़ती गई।

एली के घराने को सज़ा मिलने की पेशगोई

27 एक दिन एक नबी एली के पास आया और कहा, “रब फ़रमाता है, ‘क्या जब तेरा बाप हासून और उसका घराना मिसर के बादशाह के गुलाम थे तो मैंने अपने आपको उस पर ज़ाहिर न किया?’ 28 गो इसराईल के बारह कबीले थे लेकिन मैंने मुक़र्रर किया कि उसी के घराने के मर्द मेरे इमाम बनकर कुरबानगाह के सामने खिदमत करें, बख़ूर जलाएँ और मेरे हुज़ूर इमाम का बालापोश पहनें। साथ साथ मैंने उन्हें कुरबानगाह पर जलनेवाली कुरबानियों का एक हिस्सा मिलने का हक दे दिया। 29 तो फिर तुम लोग ज़बह और गल्ला की वह कुरबानियाँ हक़ीर क्यों जानते हो जो मुझे ही पेश की जाती हैं और जो मैंने अपनी सुकूनतगाह के लिए मुक़र्रर की थी? एली, तू अपने बेटों का मुझसे ज़्यादा एहताराम करता है। तुम तो मेरी क़ौम इसराईल की हर कुरबानी के बेहतरीन हिस्से खा खाकर मोटे हो गए हो।’

30 चुनौचे रब जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है, वादा तो मैंने किया था कि लावी के कबीले का तेरा घराना हमेशा ही इमाम की खिदमत संरजाम देगा। लेकिन अब मैं एलान करता हूँ कि ऐसा कभी नहीं होगा! क्योंकि जो मेरा एहताराम करते हैं उनका मैं एहताराम करूँगा, लेकिन जो मुझे हक़ीर जानते हैं उन्हें हक़ीर जाना जाएगा। 31 इसलिए सुन! ऐसे दिन आ रहे हैं जब मैं तेरी और तेरे घराने की ताकत यों तोड़ डालूँगा कि घर का कोई भी बुजुर्ग नहीं पाया जाएगा। 32 और तू मक़दिस में मुसीबत देखेगा हालाँकि मैं इसराईल के साथ भलाई करता रहूँगा। तेरे घर में कभी भी बुजुर्ग नहीं पाया जाएगा। 33 मैं तुममें से हर एक को तो अपनी खिदमत से निकालकर हलाक नहीं करूँगा जब तेरी आँखें धूँधली-सी पड़ जाएँगी और तेरी जान हलकान हो जाएगी। लेकिन तेरी तमाम औलाद ग़ैरतबई मौत मरेगी। 34 तेरे बेटे हुफ़नी और फ़ीनहास दोनों एक ही दिन हलाक हो जाएंगे। इस निशान से तुझे यक़ीन आएगा कि जो कुछ मैंने फ़रमाया है वह सच है।

35 तब मैं अपने लिए एक इमाम खड़ा करूँगा जो वफ़ादार रहेगा। जो भी मेरा दिल और मेरी जान चाहेगी वही वह करेगा। मैं उसके घर की मज़बूत बुनियादें रखूँगा, और वह हमेशा तक मेरे मसह किए हुए खादिम के हुज़ूर आता जाता रहेगा। 36 उस वक़्त तेरे घर के बचे हुए तमाम अफ़राद उस इमाम के सामने झुक जाएंगे और पैसे और रोटी माँगकर इलतमास करेंगे, ‘मुझे इमाम की कोई न कोई ज़िम्मादारी दें ताकि रोटी का टुकड़ा मिल जाए।’”

3

अल्लाह समुएल से हमकलाम होता है

1 छोटा समुएल एली के ज़ेरे-निगरानी रब के हुज़ूर खिदमत करता था। उन दिनों में रब की तरफ़ से बहुत कम पैग़ाम या रोयाएँ मिलती थीं। 2 एक रात एली जिसकी आँखें इतनी कमज़ोर हो गई थीं कि देखना तक़रीबन नामुमकिन था मामूल के मुताबिक़ सो गया था। 3 समुएल भी लेट गया था। वह रब के मक़दिस में सो रहा था जहाँ अहद का संदूक पड़ा था। शमादान अब तक रब के हुज़ूर जल रहा था 4-5 कि अचानक रब ने आवाज़ दी, “समुएल!” समुएल ने जवाब दिया, “जी, मैं अभी आता हूँ।” वह भागकर एली के पास गया और कहा, “जी जनाब, मैं हाज़िर हूँ। आपने मुझे बुलाया?” एली बोला, “नहीं, मैंने तुम्हें नहीं बुलाया। वापस जाकर दुबारा लेट जाओ।” चुनौचे समुएल दुबारा लेट गया।

6 लेकिन रब ने एक बार फिर आवाज़ दी, “समुएल!” लड़का दुबारा उठा और एली के पास जाकर बोला, “जी जनाब, मैं हाज़िर हूँ। आपने मुझे बुलाया?” एली ने जवाब दिया, “नहीं बेटा, मैंने तुम्हें नहीं बुलाया। दुबारा सो जाओ।”

7 उस वक़्त समुएल रब की आवाज़ नहीं पहचान सकता था, क्योंकि अभी उसे रब का कोई पैग़ाम नहीं मिला था। 8 चुनौचे रब ने तीसरी बार आवाज़ दी, “समुएल!” एक और मरतबा समुएल उठ खड़ा हुआ और एली के पास जाकर बोला, “जी जनाब, मैं हाज़िर हूँ। आपने मुझे बुलाया?” यह सुनकर एली ने जान लिया कि रब समुएल से हमकलाम हो रहा है। 9 इसलिए उसने लड़के को बताया, “अब दुबारा लेट जाओ, लेकिन अगली दफ़ा जब आवाज़ सुनाई दे तो तुम्हें कहना है, ‘ऐ रब, फ़रमा। तेरा खादिम सुन रहा है।’”

समुएल एक बार फिर अपने बिस्तर पर लेट गया। 10 रब आकर वहाँ खड़ा हुआ और पहले की तरह पुकारा, “समुएल! समुएल!” लड़के ने जवाब दिया, “ऐ रब, फ़रमा। तेरा खादिम सुन रहा है।” 11 फिर रब समुएल से हमकलाम हुआ, “देख, मैं इसराईल में इतना हौलनाक काम करूँगा कि जिसे भी इसकी ख़बर मिलेगी उसके कान बजने लगेंगे। 12 उस वक़्त मैं शुरू से लेकर आखिर तक वह तमाम बातें पूरी करूँगा जो मैंने एली और उसके घराने के बारे में की हैं। 13 मैं एली को आगाह कर चुका हूँ कि उसका घराना हमेशा तक मेरी अदालत का निशाना बना रहेगा। क्योंकि गो उसे साफ़ मालूम था कि उसके बेटे अपनी ग़लत हरकतों से मेरा ग़ज़ब अपने आप पर लाएँगे तो भी उसने उन्हें करने दिया और न रोका। 14 मैंने कसम खाई है कि एली के घराने का कुसूर न ज़बह और न गल्ला की किसी कुरबानी से दूर किया जा सकता है बल्कि इसका कफ़फ़ारा कभी भी नहीं दिया जा सकेगा!”

15 इसके बाद समुएल सुबह तक अपने बिस्तर पर लेटा रहा। फिर वह मामूल के मुताबिक़ उठा और रब के घर के दरवाज़े खोल दिए। वह एली को अपनी रोया बताने से डरता था, 16 लेकिन एली ने उसे बुलाकर कहा, “समुएल, मेरे बेटे!” समुएल ने जवाब दिया, “जी, मैं हाज़िर हूँ।” 17 एली ने पूछा, “रब ने तुम्हें क्या बताया है? कोई भी बात मुझसे मत छुपाना! अल्लाह तुम्हें सख़्त सज़ा दे अगर तुम एक लफ़्ज़ भी मुझसे पोशीदा रखो।” 18 फिर समुएल ने उसे खुलकर सब कुछ बता दिया और एक बात भी न छुपाई। एली ने कहा, “वही रब है। जो कुछ उस की नज़र में ठीक है उसे वह करे।”

19 समुएल जवान होता गया, और रब उसके साथ था। उसने समुएल की हर बात पूरी होने दी। 20 पूरे इसराईल ने दान से लेकर बैर-सबा तक जान लिया कि रब ने अपने नबी समुएल की तसदीक की है। 21 अगले सालों में भी रब सैला में अपने कलाम से समुएल पर ज़ाहिर होता रहा।

4

1 यों समुएल का कलाम सैला से निकलकर पूरे इसराईल में फैल गया।

फिलिस्ती अहद का संदूक छीन लेते हैं

एक दिन इसराईल की फिलिस्तियों के साथ जंग छिड़ गई। इसराईलियों ने लड़ने के लिए निकलकर अबन-अज़र के पास अपनी लशकरगाह लगाई जबकि फिलिस्तियों ने अफ्रीक के पास अपने डेरे डाले। 2 पहले फिलिस्तियों ने इसराईलियों पर हमला किया। लड़ते लड़ते उन्होंने इसराईल को शिकस्त दी। तक़रीबन 4,000 इसराईली मैदाने-जंग में हलाक हुए।

3 फ़ौज लशकरगाह में वापस आई तो इसराईल के बुजुर्ग सोचने लगे, “रब ने फिलिस्तियों को हम पर क्यों फ़तह पाने दी? आओ, हम रब के अहद का संदूक सैला से ले आएँ ताकि वह हमारे साथ चलकर हमें दुश्मन से बचाए।”

4 चुनौचे अहद का संदूक जिसके ऊपर रब्बूल-अफ़वाज कस्बी फ़रिश्तों के दरमियान तख़्तनशीन है सैला से लाया गया। एली के दो बेटे हुफ़नी और फ़ीनहास भी साथ आए। 5 जब अहद का संदूक लशकरगाह में पहुँचा तो इसराईली निहायत खुश होकर बुलंद आवाज़ से नारे लगाने लगे। इतना शोर मच गया कि ज़मीन हिल गई।

6 यह सुनकर फिलिस्ती चौंक उठे और एक दूसरे से पूछने लगे, “यह कैसा शोर है जो इसराईली लशकरगाह में हो रहा है?” जब पता चला कि रब के अहद का संदूक इसराईली लशकरगाह में आ गया है 7 तो वह घबराकर चिल्लाए, “उनका देवता उनकी लशकरगाह में आ गया है। हाय, हमारा सत्यानास हो गया है! पहले तो ऐसा कभी नहीं हुआ है। 8 हम पर अफ़सोस! कौन हमें इन ताक़तवर देवताओं से बचाएगा? क्योंकि इन्हीं ने रेगिस्तान में मिसरियों को हर किस्म की बला से मारकर हलाक कर दिया था। 9 भाइयो, अब दिलेर हो और मरदानगी दिखाओ, वरना हम उसी तरह इब्रानियों के गुलाम बन जाएंगे जैसे वह अब तक हमारे गुलाम थे। मरदानगी दिखाकर लड़ो!” 10 आपस में ऐसी बातें करते करते फिलिस्ती लड़ने के लिए निकले और इसराईल को शिकस्त दी। हर तरफ़ क़त्ले-आम नज़र आया, और 30,000 प्यादे इसराईली काम आए। बाकी सब फ़रार होकर अपने अपने घरों में छुप गए। 11 एली के दो बेटे हुफ़नी और फ़ीनहास भी उसी दिन हलाक हुए, और अल्लाह के अहद का संदूक फिलिस्तियों के कब्ज़े में आ गया।

एली की मौत

12 उसी दिन बिनयमीन के कबीले का एक आदमी मैदाने-जंग से भागकर सैला पहुँच गया। उसके कपड़े फटे हुए थे और सर पर खाक थी। 13-15 एली सड़क के किनारे अपनी कुरसी पर बैठा था। वह अब अंधा हो चुका था, क्योंकि उस की उम्र 98 साल थी। वह बड़ी बेचैनी से रास्ते पर ध्यान दे रहा था ताकि जंग की कोई ताज़ा ख़बर मिल जाए, क्योंकि उसे इस बात की बड़ी फ़िकर थी कि अल्लाह का संदूक लशकरगाह में है।

जब वह आदमी शहर में दाख़िल हुआ और लोगों को सारा माजरा सुनाया तो पूरा शहर चिल्लाने लगा। जब एली ने शोर सुना तो उसने पूछा, “यह क्या शोर है?” बिनयमीनी दौड़कर एली के पास आया और बोला, 16 “मै मैदाने-जंग से आया हूँ। आज ही मैं वहाँ से फ़रार हुआ।” एली ने पूछा, “बेटा, क्या हुआ?” 17 कासिद ने जवाब दिया, “इसराईली फिलिस्तियों के सामने फ़रार हुए। फ़ौज को हर तरफ़ शिकस्त माननी पड़ी, और आपके दोनों बेटे हुफ़नी और फ़ीनहास भी मारे गए हैं। अफ़सोस, अल्लाह का संदूक भी दुश्मन के कब्ज़े में आ गया है।”

18 अहद के संदूक का ज़िक्र सुनते ही एली अपनी कुरसी पर से पीछे की तरफ़ गिर गया। चूँकि वह बूढ़ा और भारी-भरकम था इसलिए उस की गरदन टूट गई और वह वहीं मक़दिस के दरवाज़े के पास ही मर गया। वह 40 साल इसराईल का काज़ी रहा था।

फ़ीनहास की बेवा की मौत

19 उस वक़्त एली की बहू यानी फ़ीनहास की बीवी का पाँव भारी था और बच्चा पैदा होनेवाला था। जब उसने सुना कि अल्लाह का संदूक दुश्मन के हाथ में आ गया है और कि सुसर और शौहर दोनों मर गए हैं तो उसे इतना सख़्त सदमा पहुँचा कि वह शदीद दर्द-ज़ह में मुब्तला हो गई। वह झुक गई, और बच्चा पैदा हुआ। 20 उस की जान निकलने लगी तो दाइयों ने उस की हौसलाअफ़ज़ाई करके कहा, “डरो मत! तुम्हारे बेटा पैदा हुआ है।” लेकिन माँ ने न जवाब दिया, न बात पर ध्यान दिया। 21-22 क्योंकि वह अल्लाह के संदूक के छिन जाने और सुसर और शौहर की मौत के बाइस निहायत बेदिल हो गई थी। उसने कहा, “बेटे का नाम यक़बोद यानी ‘जलाल कहाँ रहा’ है, क्योंकि अल्लाह के संदूक के छिन जाने से अल्लाह का जलाल इसराईल से जाता रहा है।”

5

फिलिस्तियों में अहद का संदूक

1 फिलिस्ती अल्लाह का संदूक अबन-अज़र से अशदूद शहर में ले गए। 2 वहाँ उन्होंने उसे अपने देवता दज़ून के मंदिर में बुत के करीब रख दिया। 3 अगले दिन सुबह-सवेरे जब अशदूद के बाशिंदे मंदिर में दाखिल हुए तो क्या देखते हैं कि दज़ून का मुजस्समा मुँह के बल रब के संदूक के सामने ही पड़ा है। उन्होंने दज़ून को उठाकर दुबारा उस की जगह पर खड़ा किया। 4 लेकिन अगले दिन जब सुबह-सवेरे आए तो दज़ून दुबारा मुँह के बल रब के संदूक के सामने पड़ा हुआ था। लेकिन इस मरतबा बुत का सर और हाथ टूटकर दहलीज़ पर पड़े थे। सिर्फ धड़ रह गया था। 5 यही वजह है कि आज तक दज़ून का कोई भी पुजारी या मेहमान अशदूद के मंदिर की दहलीज़ पर कदम नहीं रखता।

6 फिर रब ने अशदूद और गिर्दो-नवाह के देहातों पर सख्त दबाव डालकर बाशिंदों को परेशान कर दिया। उनमें अचानक अज़ियतनाक फोड़ों की वबा फैल गई। 7 जब अशदूद के लोगों ने इसकी वजह जान ली तो वह बोले, “लाज़िम है कि इसराईल के खुदा का संदूक हमारे पास न रहे। क्योंकि उसका हम पर और हमारे देवता दज़ून पर दबाव नाकाबिले-बरदाश्त है।”

8 उन्होंने तमाम फिलिस्ती हुक्मरानों को इकट्ठा करके पूछा, “हम इसराईल के खुदा के संदूक के साथ क्या करें?”

उन्होंने मशवरा दिया, “उसे जात शहर में ले जाएँ।” 9 लेकिन जब अहद का संदूक जात में छोड़ा गया तो रब का दबाव उस शहर पर भी आ गया। बड़ी अफ़रा-तफ़री पैदा हुई, क्योंकि छोटों से लेकर बड़ों तक सबको अज़ियतनाक फोड़े निकल आए। 10 तब उन्होंने अहद का संदूक आगे अक़रून भेज दिया।

लेकिन संदूक अभी पहुँचनेवाला था कि अक़रून के बाशिंदे चीखने लगे, “वह इसराईल के खुदा का संदूक हमारे पास लाए हैं ताकि हमें हलाक कर दें!” 11 तमाम फिलिस्ती हुक्मरानों को दुबारा बुलाया गया, और अक़रूनियों ने तकाज़ा किया कि संदूक को शहर से दूर किया जाए। वह बोले, “इसे वहाँ वापस भेजा जाए जहाँ से आया है, वरना यह हमें बल्कि पूरी कौम को हलाक कर डालेगा।” क्योंकि शहर पर रब का सख्त दबाव हावी हो गया था। मोहलक वबा के बाइस उसमें खौफ़ो-हिरास की लहर दौड़ गई। 12 जो मरने से बचा उसे कम अज़ कम फोड़े निकल आए। चारों तरफ़ लोगों की चीख-पुकार फ़िज़ा में बुलंद हुई।

6

अहद का संदूक इसराईल वापस लाया जाता है

1 अल्लाह का संदूक अब सात महीने फिलिस्तियों के पास रहा था। 2 आखिरकार उन्होंने अपने तमाम पुजारियों और रम्मालों को बुलाकर उनसे मशवरा किया, “अब हम रब के संदूक का क्या करें? हमें बताएँ कि इसे किस तरह इसके अपने मुल्क में वापस भेजें।”

3 पुजारियों और रम्मालों ने जवाब दिया, “अगर आप उसे वापस भेजें तो वैसे मत भेजना बल्कि कुसूर की कुरबानी साथ भेजना। तब आपको शफ़ा मिलेगी, और आप जान लेंगे कि वह आपको सज़ा देने से क्यों नहीं बाज़ आया।”

4 फिलिस्तियों ने पूछा, “हम उसे किस किस्म की कुसूर की कुरबानी भेजें?”

उन्होंने जवाब दिया, “फिलिस्तियों के पाँच हुक्मरान हैं, इसलिए सोने के पाँच फोड़े और पाँच चूहे बनवाएँ, क्योंकि आप सब इस एक ही वबा की ज़द में आए हुए हैं, खाह हुक्मरान हों, खाह रिआया। 5 सोने के यह फोड़े और मुल्क को तबाह करनेवाले चूहे बनाकर इसराईल के देवता का एहतराम करें। शायद वह यह देखकर आप, आपके देवताओं और मुल्क को सज़ा देने से बाज़ आए। 6 आप क्यों पुराने ज़माने के मिसरियों और उनके बादशाह की तरह अड़ जाएँ? क्योंकि उस वक़्त अल्लाह ने मिसरियों को इतनी सख्त मुसीबत में डाल दिया कि आखिरकार उन्हें इसराईलियों को जाने देना पड़ा।

7 अब बैलगाड़ी बनाकर उसके आगे दो गाएँ जोतें। ऐसी गाएँ हों जिनके दूध पीनेवाले बच्चे हों और जिन पर अब तक जुआ न रखा गया हो। गायों को बैलगाड़ी के आगे जोतें, लेकिन उनके बच्चों को साथ जाने न दें बल्कि उन्हें कहीं बंद रखें। 8 फिर रब का संदूक बैलगाड़ी पर रखा जाए और उसके साथ एक थैला जिसमें सोने की वह चीज़ें हों जो आप कुसूर की कुरबानी के तौर पर भेज रहे हैं। इसके बाद गायों को खुला छोड़ दें। 9 गौर करें कि वह कौन-सा रास्ता इस्तिथार करेंगी। अगर इसराईल के बैत-शम्स की तरफ़ चलें तो फिर मालूम होगा कि रब हम पर यह बड़ी मुसीबत लाया है। लेकिन अगर वह कहीं और चलें तो मतलब होगा कि इसराईल के देवता ने हमें सज़ा नहीं दी बल्कि सब कुछ इत्फ़ाक़ से हुआ है।”

10 फिलिस्तियों ने ऐसा ही किया। उन्होंने दो गाएँ नई बैलगाड़ी में जोतकर उनके छोटे बच्चों को कहीं बंद रखा। 11 फिर उन्होंने अहद का संदूक उस थैले समेत जिसमें सोने के चूहे और फोड़े थे बैलगाड़ी पर रखा।

12 जब गायों को छोड़ दिया गया तो वह डकराती डकराती सीधी बैत-शम्स के रास्ते पर आ गई और न दाईं, न बाईं तरफ़ हटी। फिलिस्तियों के सरदार बैत-शम्स की सरहद तक उनके पीछे चले।

13 उस वक़्त बैत-शम्स के बाशिंदे नीचे वादी में गंदम की फसल काट रहे थे। अहद का संदूक देखकर वह निहायत खुश हुए। 14 बैलगाड़ी एक खेत तक पहुँची जिसका मालिक बैत-शम्स का रहनेवाला यशुअ था। वहाँ वह एक बड़े पत्थर के पास रुक गई। लोगों ने बैलगाड़ी की लकड़ी टुकड़े टुकड़े करके उसे जला दिया और गायों को ज़बह करके रब को भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर पेश किया। 15 लावी के

कबीले के कुछ मर्दों ने रब के संदूक को बैलगाड़ी से उठाकर सोने की चीजों के थैले समेत पत्थर पर रख दिया। उस दिन बैत-शम्स के लोगों ने रब को भस्म होनेवाली और जबह की कुरबानियाँ पेश कीं।

16 यह सब कुछ देखने के बाद फिलिस्ती सरदार उसी दिन अकरून वापस चले गए। 17 फिलिस्तियों ने अपना कुसूर दूर करने के लिए हर एक शहर के लिए सोने का एक फोड़ा बना लिया था यानी अशदूद, गज्ज़ा, अस्कलून, जात और अकरून के लिए एक एक फोड़ा। 18 इसके अलावा उन्होंने हर शहर और उसके गिर्दों-नवाह की आबादियों के लिए सोने का एक एक चूहा बना लिया था। जिस बड़े पत्थर पर अहद का संदूक रखा गया वह आज तक यशुअ बैत-शम्सी के खेत में इस बात की गवाही देता है।

अहद का संदूक क्रियत-यारीम में

19 लेकिन रब ने बैत-शम्स के बाशिंदों को सज़ा दी, क्योंकि उनमें से बाज़ ने अहद के संदूक में नज़र डाली थी। उस वक़्त 70 अफ़राद हलाक हुए। रब की यह सख़्त सज़ा देखकर बैत-शम्स के लोग मातम करने लगे। 20 वह बोले, “कौन इस मुक़द्दस ख़ुदा के हुज़ूर कायम रह सकता है? यह हमारे बस की बात नहीं, लेकिन हम रब का संदूक किसके पास भेजें?” 21 आखिर में उन्होंने क्रियत-यारीम के बाशिंदों को पैगाम भेजा, “फिलिस्तियों ने रब का संदूक वापस कर दिया है। अब आँ और उसे अपने पास ले जाएँ।”

7

1 यह सुनकर क्रियत-यारीम के मर्द आए और रब का संदूक अपने शहर में ले गए। वहाँ उन्होंने उसे अबीनदाब के घर में रख दिया जो पहाड़ी पर था। अबीनदाब के बेटे इलियज़र को मख़सूस किया गया ताकि वह अहद के संदूक की पहरादारी करे।

तौबा की वजह से इसराईली फिलिस्तियों पर फ़तह पाते हैं

2 अहद का संदूक 20 साल के तवील अरसे तक क्रियत-यारीम में पड़ा रहा। इस दौरान तमाम इसराईल मातम करता रहा, क्योंकि लगता था कि रब ने उन्हें तर्क कर दिया है। 3 फिर समुएल ने तमाम इसराईलियों से कहा, “अगर आप वाकई रब के पास वापस आना चाहते हैं तो अजनबी माबूदों और अस्तारात देवी के बुत दूर कर दें। पूरे दिल के साथ रब के ताबे होकर उसी की खिदमत करें। फिर ही वह आपको फिलिस्तियों से बचाएगा।”

4 इसराईलियों ने उस की बात मान ली। वह बाल और अस्तारात के बुतों को फेंककर सिर्फ़ रब की खिदमत करने लगे। 5 तब समुएल ने एलान किया, “पूरे इसराईल को मिसफ़ाह में जमा करें तो मैं वहाँ रब से दुआ करके आपकी सिफ़ारिश करूँगा।” 6 चुनाँचे वह सब मिसफ़ाह में जमा हुए। तौबा का इज़हार करके उन्होंने कुँए से पानी निकालकर रब के हुज़ूर उंडेल दिया। साथ साथ उन्होंने पूरा दिन रोज़ा रखा और इक्रार किया, “हमने रब का गुनाह किया है।” वहाँ मिसफ़ाह में समुएल ने इसराईलियों के लिए कचहरी लगाई।

7 फिलिस्ती हुक्मरानों को पता चला कि इसराईली मिसफ़ाह में जमा हुए हैं तो वह उनसे लड़ने के लिए आए। यह सुनकर इसराईली सख़्त घबरा गए 8 और समुएल से मिन्नत की, “दुआ करते रहें! रब हमारे ख़ुदा से इतना मास करने से न स्के ताकि वह हमें फिलिस्तियों से बचाए।” 9 तब समुएल ने भेड़ का दूध पीता बच्चा चुनकर रब को भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर पेश किया। साथ साथ वह रब से इतना मास करता रहा।

और रब ने उस की सुनी। 10 समुएल अभी कुरबानी पेश कर रहा था कि फिलिस्ती वहाँ पहुँचकर इसराईलियों पर हमला करने के लिए तैयार हुए। लेकिन उस दिन रब ने जोर से कड़कती हुई आवाज़ से फिलिस्तियों को इतना दहशतज़दा कर दिया कि वह दरहम-बरहम हो गए और इसराईली आसानी से उन्हें शिकस्त दे सके। 11 इसराईलियों ने मिसफ़ाह से निकलकर बैत-कार के नीचे तक दुश्मन का ताक़्क़ुब किया। रास्ते में बहुत-से फिलिस्ती हलाक हुए।

12 इस फ़तह की याद में समुएल ने मिसफ़ाह और शेन के दरमियान एक बड़ा पत्थर नसब कर दिया। उसने पत्थर का नाम अबन-अज़र यानी ‘मदद का पत्थर’ रखा। क्योंकि उसने कहा, “यहाँ तक रब ने हमारी मदद की है।” 13 इस तरह फिलिस्तियों को मगलूब किया गया, और वह दुबारा इसराईल के इलाक़े में न घुसे। जब तक समुएल जीता रहा फिलिस्तियों पर रब का सख़्त दबाव रहा। 14 और अकरून से लेकर जात तक जितनी इसराईली आबादियाँ फिलिस्तियों के हाथ में आ गई थीं वह सब उनकी ज़मीनों समेत दुबारा इसराईल के कब्ज़े में आ गई। अमोरियों के साथ भी सुलह हो गई।

15 समुएल अपने जीते-जी इसराईल का काज़ी और राहनुमा रहा। 16 हर साल वह बैतेल, जिलजाल और मिसफ़ाह का दौरा करता, क्योंकि इन तीन जगहों पर वह इसराईलियों के लिए कचहरी लगाया करता था। 17 इसके बाद वह दुबारा रामा अपने घर वापस आ जाता जहाँ मुस्तक़िल कचहरी थी। वहाँ उसने रब के लिए कुरबानगाह भी बनाई थी।

8

इसराईल बादशाह का तकाज़ा करता है

1 जब समुएल बूढ़ा हुआ तो उसने अपने दो बेटों को इसराईल के काजी मुकर्रर किया। 2 बड़े का नाम योएल था और छोटे का अबियाह। दोनों बैर-सबा में लोगों की कचहरी लगाते थे। 3 लेकिन वह बाप के नमूने पर नहीं चलते बल्कि रिश्वत खाकर ग़लत फैसले करते थे।

4 फिर इसराईल के बुजुर्ग मिलकर समुएल के पास आए, जो रामा में था। 5 उन्होंने कहा, “देखें, आप बूढ़े हो गए हैं और आपके बेटे आपके नमूने पर नहीं चलते। अब हम पर बादशाह मुकर्रर करें ताकि वह हमारी उस तरह राहनुमाई करे जिस तरह दीगर अक्वाम में दस्तूर है।”

6 जब बुजुर्गों ने राहनुमाई के लिए बादशाह का तकाज़ा किया तो समुएल निहायत नाखुश हुआ। चुनौचे उसने रब से हिदायत माँगी। 7 रब ने जवाब दिया, “जो कुछ भी वह तुझसे माँगते हैं उन्हें दे दे। इससे वह तुझे रद्द नहीं कर रहे बल्कि मुझे, क्योंकि वह नहीं चाहते कि मैं उनका बादशाह रहूँ। 8 जब से मैं उन्हें मिसर से निकाल लाया वह मुझे छोड़कर दीगर माबूदों की खिदमत करते आए हैं। और अब वह तुझसे भी यही सुलूक कर रहे हैं। 9 उनकी बात मान ले, लेकिन संजीदगी से उन्हें उन पर हुक्मत करनेवाले बादशाह के हुक्क से आगाह कर।”

बादशाह के हुक्क

10 समुएल ने बादशाह का तकाज़ा करनेवालों को सब कुछ कह सुनाया जो रब ने उसे बताया था। 11 वह बोला, “जो बादशाह आप पर हुक्मत करेगा उसके यह हुक्क होंगे : वह आपके बेटों की भरती करके उन्हें अपने रथों और घोड़ों को सँभालने की ज़िम्मादारी देगा। उन्हें उसके रथों के आगे आगे दौड़ना पड़ेगा। 12 कुछ उस की फ़ौज के जनरल और कप्तान बनेंगे, कुछ उसके खेतों में हल चलाने और फ़सलें काटने पर मजबूर हो जाएंगे, और बाज़ को उसके हथियार और रथ का सामान बनाना पड़ेगा। 13 बादशाह आपकी बेटियों को आपसे छीन लेगा ताकि वह उसके लिए खाना पकाएँ, रोटी बनाएँ और खुशबू तैयार करें। 14 वह आपके खेतों और आपके अंगूर और जैतून के बाग़ों का बेहतरीन हिस्सा चुनकर अपने मुलाज़िमों को दे देगा। 15 बादशाह आपके अनाज और अंगूर का दसवाँ हिस्सा लेकर अपने अफ़सरों और मुलाज़िमों को दे देगा। 16 आपके नौकर-नौकरानियाँ, आपके मोटे-ताज़े बैल और गधे उसी के इस्तेमाल में आएँगे। 17 वह आपकी भेड़-बकरियों का दसवाँ हिस्सा तलब करेगा, और आप खुद उसके गुलाम होंगे।

18 तब आप पछताकर कहेंगे, ‘हमने बादशाह का तकाज़ा क्यों किया?’ लेकिन जब आप रब के हुज़ूर चीखते-चिल्लाते मदद चाहेंगे तो वह आपकी नहीं सुनेगा।”

19 लेकिन लोगों ने समुएल की बात न मानी बल्कि कहा, “नहीं, तो भी हम बादशाह चाहते हैं, 20 क्योंकि फिर ही हम दीगर क्रौमों की मानिंद होंगे। फिर हमारा बादशाह हमारी राहनुमाई करेगा और जंग में हमारे आगे आगे चलकर दुश्मन से लड़ेगा।” 21 समुएल ने रब के हुज़ूर यह बातें दोहराईं। 22 रब ने जवाब दिया, “उनका तकाज़ा पूरा कर, उन पर बादशाह मुकर्रर कर!”

फिर समुएल ने इसराईल के मर्दों से कहा, “हर एक अपने अपने शहर वापस चला जाए।”

9

साऊल बाप की गधियाँ तलाश करता है

1 बिनयमीन के क़बायली इलाक़े में एक बिनयमीनी बनाम कीस रहता था जिसका अच्छा-खासा असरो-रसूख था। बाप का नाम अबियेल बिन सरोर बिन बकोरत बिन अफ़ीख था। 2 कीस का बेटा साऊल जवान और खूबसूरत था बल्कि इसराईल में कोई और इतना खूबसूरत नहीं था। साथ साथ वह इतना लंबा था कि बाकी सब लोग सिर्फ़ उसके कंधों तक आते थे।

3 एक दिन साऊल के बाप कीस की गधियाँ गुम हो गईं। यह देखकर उसने अपने बेटे साऊल को हुक्म दिया, “नौकर को अपने साथ लेकर गधियों को ढूँड लाएँ।” 4 दोनों आदमी इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े और सलीसा के इलाक़े में से गुज़रे, लेकिन बेसूद। फिर उन्होंने सालीम के इलाक़े में खोज लगाया, लेकिन वहाँ भी गधियाँ न मिलीं। इसके बाद वह बिनयमीन के इलाक़े में घूमते फिरे, लेकिन बेफ़ायदा। 5 चलते चलते वह सूफ़ के करीब पहुँच गए। साऊल ने नौकर से कहा, “आओ, हम घर वापस चलें, ऐसा न हो कि वालिद गधियों की नहीं बल्कि हमारी फ़िकर करें।”

6 लेकिन नौकर ने कहा, “इस शहर में एक मर्दे-ख़ुदा है। लोग उस की बड़ी इज़्ज़त करते हैं, क्योंकि जो कुछ भी वह कहता है वह पूरा हो जाता है। क्यों न हम उसके पास जाएँ? शायद वह हमें बताए कि गधियों को कहाँ ढूँडना चाहिए।”

7 साऊल ने पूछा, “लेकिन हम उसे क्या दें? हमारा खाना ख़त्म हो गया है, और हमारे पास उसके लिए तोहफ़ा नहीं है।”

8 नौकर ने जवाब दिया, “कोई बात नहीं, मेरे पास चाँदी का छोटा सिक्का * है। यह मैं मर्दे-ख़ुदा को दे दूँगा ताकि बताए कि हम किस तरफ़ ढूँडें।”

9-11 साऊल ने कहा, “ठीक है, चलें।” वह शहर की तरफ़ चल पड़े ताकि मर्दे-ख़ुदा से बात करें। जब पहाड़ी ढलान पर शहर की तरफ़ चढ़ रहे थे तो कुछ लड़कियाँ पानी भरने के लिए निकलीं। आदमियों ने उनसे पूछा, “क्या ग़ैबबीन शहर में है?” (पुराने ज़माने में नबी ग़ैबबीन कहलाता था। अगर कोई अल्लाह से कुछ मालूम करना चाहता तो कहता, “आओ, हम ग़ैबबीन के पास चलें।”)

12-13 लड़कियों ने जवाब दिया, “जी, वह अभी अभी पहुँचा है, क्योंकि शहर के लोग आज पहाड़ी पर कुरबानियाँ चढ़ाकर ईद मना रहे हैं। अगर जल्दी करें तो पहाड़ी पर चढ़ने से पहले उससे मुलाक़ात हो जाएगी। उस वक़्त तक ज़ियाफ़त शुरू नहीं होगी जब तक ग़ैबबीन पहुँच

* 9:8 लफ़ज़ी तरज़ुमा : चाँदी के सिक्के की एक चौथाई

न जाए। क्योंकि उसे पहले खाने को बरकत देना है, फिर ही मेहमानों को खाना खाने की इजाजत है। अब जाएँ, क्योंकि इसी वक्त आप उससे बात कर सकते हैं।”

14 चुनौचे साऊल और नौकर शहर की तरफ बढ़े। शहर के दरवाजे पर ही समुएल से मुलाकात हो गई जो वहाँ से निकलकर कुरबानगाह की पहाड़ी पर चढ़ने को था।

समुएल साऊल की मेहमान-नवाजी करता है

15 रब समुएल को एक दिन पहले पैगाम दे चुका था, 16 “कल मैं इसी वक्त मुल्के-बिनयमीन का एक आदमी तेरे पास भेज दूँगा। उसे मसह करके मेरी कौम इसराईल पर बादशाह मुकर्रर कर। वह मेरी कौम को फिलिस्तिनों से बचाएगा। क्योंकि मैंने अपनी कौम की मुसीबत पर ध्यान दिया है, और मदद के लिए उस की चीखें मुझ तक पहुँच गई हैं।” 17 अब जब समुएल ने शहर के दरवाजे से निकलते हुए साऊल को देखा तो रब समुएल से हमकलाम हुआ, “देख, यही वह आदमी है जिसका जिक्र मैंने कल किया था। यही मेरी कौम पर हुक्मत करेगा।”

18 वहीं शहर के दरवाजे पर साऊल समुएल से मुखातिब हुआ, “मेहरबानी करके मुझे बताइए कि गैबबीन का घर कहाँ है?” 19 समुएल ने जवाब दिया, “मैं ही गैबबीन हूँ। आँ, उस पहाड़ी पर चलें जिस पर जियाफत हो रही है, क्योंकि आज आप मेरे मेहमान हैं। कल मैं सुबह-सवेरे आपको आपके दिल की बात बता दूँगा। 20 जहाँ तक तीन दिन से गुमशुदा गधियों का ताल्लुक है, उनकी फिकर न करें। वह तो मिल गई हैं। वैसे आप और आपके बाप के घराने को इसराईल की हर कीमती चीज हासिल है।” 21 साऊल ने पूछा, “यह किस तरह? मैं तो इसराईल के सबसे छोटे कबीले बिनयमीन का हूँ, और मेरा खानदान कबीले में सबसे छोटा है।”

22 समुएल साऊल को नौकर समेत उस हाल में ले गया जिसमें जियाफत हो रही थी। तकरीबन 30 मेहमान थे, लेकिन समुएल ने दोनों आदमियों को सबसे इज्जत की जगह पर बिठा दिया। 23 खानसामे को उसने हुक्म दिया, “अब गोश्त का वह टुकड़ा ले आओ जो मैंने तुम्हें देकर कहा था कि उसे अलग रखना है।” 24 खानसामे ने कुरबानी की रान लाकर उसे साऊल के सामने रख दिया। समुएल बोला, “यह आपके लिए महफूज रखा गया है। अब खाँ, क्योंकि दूसरों को दावत देते वक्त मैंने यह गोश्त आपके लिए और इस मौके के लिए अलग कर लिया था।” चुनौचे साऊल ने उस दिन समुएल के साथ खाना खाया।

25 जियाफत के बाद वह पहाड़ी से उतरकर शहर वापस आए, और समुएल अपने घर की छत पर साऊल से बातचीत करने लगा। 26 अगले दिन जब पौ फटने लगी तो समुएल ने नीचे से साऊल को जो छत पर सो रहा था आवाज दी, “उठें! मैं आपको सखसत करूँ।” साऊल जाग उठा और वह मिलकर रवाना हुए। 27 जब वह शहर के किनारे पर पहुँचे तो समुएल ने साऊल से कहा, “अपने नौकर को आगे भेजें।” जब नौकर चला गया तो समुएल बोला, “ठहर जाएँ, क्योंकि मुझे आपको अल्लाह का एक पैगाम सुनाना है।”

10

साऊल को मसह किया जाता है

1 फिर समुएल ने कुप्पी लेकर साऊल के सर पर जैतून का तेल उंडेल दिया और उसे बोसा देकर कहा, “रब ने आपको अपनी खास मिलकियत पर राहनुमा मुकर्रर किया है। 2 मेरे पास से चले जाने के बाद जब आप बिनयमीन की सरहद के शहर जिलज़ख के करीब राखिल की कब्र के पास से गुज़रेंगे तो आपकी मुलाकात दो आदमियों से होगी। वह आपसे कहेंगे, ‘जो गधियाँ आप ढूँढ़ने गए वह मिल गई हैं। और अब आपके बाप गधियों की नहीं बल्कि आपकी फिकर कर रहे हैं। वह कह रहे हैं कि मैं किस तरह अपने बेटे का पता करूँ?’

3 आप आगे जाकर तबूर के बलूत के दरख्त के पास पहुँचेंगे। वहाँ तीन आदमी आपसे मिलेंगे जो अल्लाह की इबादत करने के लिए बैतेल जा रहे होंगे। एक के पास तीन छोटी बकरियाँ, दूसरे के पास तीन रोटियाँ और तीसरे के पास मैं की मशक होगी। 4 वह आपको सलाम कहकर दो रोटियाँ देंगे। उनकी यह रोटियाँ कबूल करें।

5 इसके बाद आप अल्लाह के ज़िबिया जाएँगे जहाँ फिलिस्तिनों की चौकी है। शहर में दाखिल होते वक्त आपकी मुलाकात नबियों के एक जुलूस से होगी जो उस वक्त पहाड़ी की कुरबानगाह से उतर रहा होगा। उनके आगे आगे सितार, दफ, बाँसरियाँ और सरोद बजानेवाले चलेंगे, और वह नबुव्वत की हालत में होंगे। 6 रब का रूह आप पर भी नाज़िल होगा, और आप उनके साथ नबुव्वत करेंगे। उस वक्त आप फ़रक शरख्स में तबदील हो जाएँगे।

7 जब यह तमाम निशान वजूद में आएँगे तो वह कुछ करें जो आपके ज़हन में आ जाए, क्योंकि अल्लाह आपके साथ होगा। 8 फिर मेरे आगे जिलज़ाल चले जाएँ। मैं भी आऊँगा और वहाँ भस्म होनेवाली और सलामती की कुरबानियाँ पेश करूँगा। लेकिन आपको सात दिन मेरा इंतज़ार करना है। फिर मैं आकर आपको बता दूँगा कि आगे क्या करना है।”

9 साऊल रवाना होने के लिए समुएल के पास से मुड़ा तो अल्लाह ने उसका दिल तबदील कर दिया। जिन निशानों की भी पेशगोई समुएल ने की थी वह उसी दिन पूरी हुई। 10 जब साऊल और उसका नौकर ज़िबिया पहुँचे तो वहाँ उनकी मुलाकात मज़कूरा नबियों के जुलूस से हुई। अल्लाह का रूह साऊल पर नाज़िल हुआ, और वह उनके दरमियान नबुव्वत करने लगा। 11 कुछ लोग वहाँ थे जो बचपन से उससे वाकिफ़ थे। साऊल को यों नबियों के दरमियान नबुव्वत करते हुए देखकर वह आपस में कहने लगे, “क़ीस के बेटे के साथ क्या हुआ? क्या साऊल

को भी नबियों में शुमार किया जाता है?” 12 एक मकामी आदमी ने जवाब दिया, “कौन इनका बाप है?” बाद में यह मुहावरा बन गया, “क्या साऊल को भी नबियों में शुमार किया जाता है?”

13 नबुव्वत करने के इखिताम पर साऊल पहाड़ी पर चढ़ गया जहाँ कुरबानगाह थी। 14 जब साऊल नौकर समेत वहाँ पहुँचा तो उसके चचा ने पूछा, “आप कहाँ थे?” साऊल ने जवाब दिया, “हम गुमशुदा गधियों को ढूँढने के लिए निकले थे। लेकिन जब वह न मिली तो हम समुएल के पास गए।” 15 चचा बोला, “अच्छा? उसने आपको क्या बताया?” 16 साऊल ने जवाब दिया, “खैर, उसने कहा कि गधियाँ मिल गई हैं।” लेकिन जो कुछ समुएल ने बादशाह बनने के बारे में बताया था उसका जिक्र उसने न किया।

साऊल बादशाह बन जाता है

17 कुछ देर के बाद समुएल ने अवाम को बुलाकर मिसफाह में रब के हुजूर जमा किया। 18 उसने कहा, “रब इसराईल का खुदा फरमाता है, ‘मैं इसराईल को मिसर से निकाल लाया। मैंने तुम्हें मिसरियों और उन तमाम सलतनतों से बचाया जो तुम पर जुल्म कर रही थीं। 19 लेकिन गो मैंने तुम्हें तुम्हारी तमाम मसीबतों और तंगियों से छुटकारा दिया तो भी तुमने अपने खुदा को मुस्तरद कर दिया। क्योंकि तुमने इसरार किया कि हम पर बादशाह मुर्कर करो! अब अपने अपने कबीलों और खानदानों की तरतीब के मुताबिक रब के हुजूर खड़े हो जाओ।’”

20 यह कहकर समुएल ने तमाम कबीलों को रब के हुजूर पेश किया। कुरा डाला गया तो बिनयमीन के कबीले को चुना गया। 21 फिर समुएल ने बिनयमीन के कबीले के सारे खानदानों को रब के हुजूर पेश किया। मतरी के खानदान को चुना गया। यों कुरा डालते डालते साऊल बिन कीस को चुना गया। लेकिन जब साऊल को ढूँढा गया तो वह गायब था।

22 उन्होंने रब से दरियाफ्त किया, “क्या साऊल यहाँ पहुँच चुका है?” रब ने जवाब दिया, “वह सामान के बीच में छुप गया है।” 23 कुछ लोग दौड़कर उसे सामान में से निकालकर अवाम के पास ले आए। जब वह लोगों में खड़ा हुआ तो इतना लंबा था कि बाक़ी सब लोग सिर्फ उसके कंधों तक आते थे।

24 समुएल ने कहा, “यह आदमी देखो जिसे रब ने चुन लिया है। अवाम में उस जैसा कोई नहीं है!” तमाम लोग खुशी के मारे “बादशाह ज़िंदाबाद!” का नारा लगाते रहे। 25 समुएल ने बादशाह के हुक्क तफसील से सुनाए। उसने सब कुछ किताब में लिख दिया और उसे रब के मक़दिस में महफूज़ रखा। फिर उसने अवाम को सूखसत कर दिया।

26 साऊल भी अपने घर चला गया जो ज़िबिया में था। कुछ फ़ौजी उसके साथ चले जिनके दिलों को अल्लाह ने छू दिया था। 27 लेकिन ऐसे शरीर लोग भी थे जिन्होंने उसका मज़ाक़ उड़ाकर पूछा, “भला यह किस तरह हमें बचा सकता है?” वह उसे हक़ीर जानते थे और उसे तोहफ़े पेश करने के लिए भी तैयार न हुए। लेकिन साऊल उनकी बातें नज़रंदाज़ करके ख़ामोश ही रहा।

11

साऊल अम्मोनियों पर फ़तह पाता है

1 कुछ देर के बाद अम्मोनी बादशाह नाहस ने अपनी फ़ौज लेकर यबीस-जिलियाद का मुहासरा किया। यबीस के तमाम अफ़राद ने उससे गुज़ारिश की, “हमारे साथ मुआहदा करें तो हम आइंदा आपके ताबे रहेंगे।” 2 नाहस ने जवाब दिया, “ठीक है, लेकिन इस शर्त पर कि मैं हर एक की दहनी आँख निकालकर तमाम इसराईल की बेइज्ज़ती करूँगा!” 3 यबीस के बुजुर्गों ने दरखास्त की, “हमें एक हफ़ते की मोहलत दीजिए ताकि हम अपने कासिदों को इसराईल की हर जगह भेजें। अगर कोई हमें बचाने के लिए न आए तो हम हथियार डालकर शहर को आपके हवाले कर देंगे।”

4 कासिद साऊल के शहर ज़िबिया भी पहुँच गए। जब मकामी लोगों ने उनका पैगाम सुना तो पूरा शहर फूट फूटकर रोने लगा। 5 उस वक़्त साऊल अपने बैलों को खेतों से वापस ला रहा था। उसने पूछा, “क्या हुआ है? लोग क्यों रो रहे हैं?” उसे कासिदों का पैगाम सुनाया गया। 6 तब साऊल पर अल्लाह का रूह नाज़िल हुआ, और उसे सख़्त गुस्सा आया। 7 उसने बैलों का जोड़ा लेकर उन्हें टुकड़े टुकड़े कर दिया। फिर कासिदों को यह टुकड़े पकड़ाकर उसने उन्हें यह पैगाम देकर इसराईल की हर जगह भेज दिया, “जो साऊल और समुएल के पीछे चलकर अम्मोनियों से लड़ने नहीं जाएगा उसके बैल इसी तरह टुकड़े टुकड़े कर दिए जाएंगे।”

यह ख़बर सुनकर लोगों पर रब की दहशत तारी हो गई, और सबके सब एक दिल होकर अम्मोनियों से लड़ने के लिए निकले। 8 बज़क़ के करीब साऊल ने फ़ौज का जायज़ा लिया। यहदाह के 30,000 अफ़राद थे और बाक़ी कबीलों के 3,00,000।

9 उन्होंने यबीस-जिलियाद के कासिदों को वापस भेजकर बताया, “कल दोपहर से पहले पहले आपको बचा लिया जाएगा।” वहाँ के बाशिंदे यह ख़बर सुनकर बहुत खुश हुए। 10 उन्होंने अम्मोनियों को इतला दी, “कल हम हथियार डालकर शहर के दरवाज़े खोल देंगे। फिर वह कुछ करें जो आपको ठीक लगे।”

11 अगले दिन सुबह-सवेरे साऊल ने फ़ौज को तीन हिस्सों में तक्रसीम किया। सूरज के तुलू होने से पहले पहले उन्होंने तीन सिम्तों से दुश्मन की लशकरगाह पर हमला किया। दोपहर तक उन्होंने अम्मोनियों को मार मारकर ख़त्म कर दिया। जो थोड़े-बहुत लोग बच गए वह यों तित्तर-बित्तर हो गए कि दो भी इकट्ठे न रहे।

साऊल की दुबारा तसदीक़

12 फ़तह के बाद लोग समुएल के पास आकर कहने लगे, “वह लोग कहाँ हैं जिन्होंने एतराज़ किया कि साऊल हम पर हुक्मत करे? उन्हें ले आएँ ताकि हम उन्हें मार दें।” 13 लेकिन साऊल ने उन्हें रोक दिया। उसने कहा, “नहीं, आज तो हम किसी भी भाई को सज़ाए-मौत नहीं देंगे, क्योंकि इस दिन रब ने इसराईल को रिहाई बख़्शी है!” 14 फिर समुएल ने एलान किया, “आओ, हम जिलजाल जाकर दुबारा इसकी तसदीक करें कि साऊल हमारा बादशाह है।”

15 चुनौचे तमाम लोगों ने जिलजाल जाकर रब के हुज़ूर इसकी तसदीक की कि साऊल हमारा बादशाह है। इसके बाद उन्होंने रब के हुज़ूर सलामती की कुरबानियाँ पेश करके बड़ा जशन मनाया।

12

समुएल की अलविदाई तकरीर

1 तब समुएल तमाम इसराईल से मुखातिब हुआ, “मैंने आपकी हर बात मानकर आप पर बादशाह मुकर्रर किया है। 2 अब यही आपके आगे आगे चलकर आपकी राहनुमाई करेगा। मैं खुद बूढ़ा हूँ, और मेरे बाल सफ़ेद हो गए हैं जबकि मेरे बेटे आपके दरमियान ही रहते हैं। मैं जवानी से लेकर आज तक आपकी राहनुमाई करता आया हूँ। 3 अब मैं हाज़िर हूँ। अगर मुझसे कोई ग़लती हुई है तो रब और उसके मसह किए हुए बादशाह के सामने इसकी गवाही दें। क्या मैंने किसी का बैल या गधा लूट लिया? क्या मैंने किसी से ग़लत फ़ायदा उठाया या किसी पर जुल्म किया? क्या मैंने कभी किसी से रिश्तत लेकर ग़लत फ़ैसला किया है? अगर ऐसा हुआ तो मुझे बताएँ! फिर मैं सब कुछ वापस कर दूँगा।”

4 इजतिमा ने जवाब दिया, “न आपने हमसे ग़लत फ़ायदा उठाया, न हम पर जुल्म किया है। आपने कभी भी रिश्तत नहीं ली।” 5 समुएल बोला, “आज रब और उसका मसह किया हुआ बादशाह गवाह हैं कि आपको मुझ पर इलज़ाम लगाने का कोई सबब न मिला।” अवाम ने कहा, “जी, ऐसा ही है।” 6 समुएल ने बात जारी रखी, “रब खुद मूसा और हारून को इसराईल के राहनुमा बनाकर आपके बापदादा को मिसर से निकाल लाया। 7 अब यहाँ रब के तख़्ते-अदालत के सामने खड़े हो जाएँ तो मैं आपको उन तमाम भलाइयों की याद दिलाऊँगा जो रब ने आप और आपके बापदादा से की हैं।

8 आपका बाप याक़ूब मिसर आया। जब मिसरी उस की औलाद को दबाने लगे तो उन्होंने चीख़ते-चिल्लाते रब से मदद माँगी। तब उसने मूसा और हारून को भेज दिया ताकि वह पूरी क़ौम को मिसर से निकालकर यहाँ इस मुल्क में लाएँ। 9 लेकिन जल्द ही वह रब अपने खुदा को भूल गए, इसलिए उसने उन्हें दुश्मन के हवाले कर दिया। कभी हसूर शहर के बादशाह का कर्मोडर सीसरा उनसे लड़ा, कभी फ़िलिस्ती और कभी मोआब का बादशाह। 10 हर दफ़ा आपके बापदादा ने चीख़ते-चिल्लाते रब से मदद माँगी और इक्करा किया, ‘हमने गुनाह किया है, क्योंकि हमने रब को तर्क करके बाल और अस्तारात के बुतों की पूजा की है। लेकिन अब हमें दुश्मनों से बचा! फिर हम सिर्फ़ तेरी ही ख़िदमत करेंगे।’ 11 और हर बार रब ने किसी न किसी को भेज दिया, कभी जिदौन, कभी बरक, कभी इफ़ताह और कभी समुएल को। उन आदमियों की मारिफ़त अल्लाह ने आपको इर्दगिर्द के तमाम दुश्मनों से बचाया, और मुल्क में अमनो-अमान कायम हो गया।

12 लेकिन जब अम्मोनी बादशाह नाहस आपसे लड़ने आया तो आप मेरे पास आकर तकाज़ा करने लगे कि हमारा अपना बादशाह हो जो हम पर हुक्मत करे, हालाँकि आप जानते थे कि रब हमारा खुदा हमारा बादशाह है। 13 अब वह बादशाह देखें जिसे आप माँग रहे थे! रब ने आपकी खाहिश पूरी करके उसे आप पर मुकर्रर किया है। 14 चुनौचे रब का ख़ौफ़ मानें, उस की ख़िदमत करें और उस की सुनें। सरकश होकर उसके अहक़ाम की खिलाफ़वरज़ी मत करना। अगर आप और आपका बादशाह रब से वफ़ादार रहेंगे तो वह आपके साथ होगा। 15 लेकिन अगर आप उसके ताबे न रहें और सरकश होकर उसके अहक़ाम की खिलाफ़वरज़ी करें तो वह आपकी मुख़ालफ़त करेगा, जिस तरह उसने आपके बापदादा की भी मुख़ालफ़त की।

16 अब खड़े होकर देखें कि रब क्या करनेवाला है। वह आपकी आँखों के सामने ही बड़ा मोज़िज़ा करेगा। 17 इस वक़्त गंदुम की कटाई का मौसम है। गो इन दिनों में बारिश नहीं होती, लेकिन मैं दुआ करूँगा तो रब गरजते बादल और बारिश भेजेगा। तब आप जान लेंगे कि आपने बादशाह का तकाज़ा करते हुए रब के नज़दीक कितनी बुरी बात की है।”

18 समुएल ने पुकारकर रब से दुआ की, और उस दिन रब ने गरजते बादल और बारिश भेज दी। यह देखकर इजतिमा सख़्त घबराकर समुएल और रब से डरने लगा। 19 सबने समुएल से इलतमास की, “रब अपने खुदा से दुआ करके हमारी सिफ़ारिश करें ताकि हम मर न जाएँ। क्योंकि बादशाह का तकाज़ा करने से हमने अपने गुनाहों में इज़ाफ़ा किया है।”

20 समुएल ने लोगों को तसल्ली देकर कहा, “मत डरें। बेशक आपसे ग़लती हुई है, लेकिन आइंदा खयाल रखें कि आप रब से दूर न हो जाएँ बल्कि पूरे दिल से उस की ख़िदमत करें। 21 बेमानी बुतों के पीछे मत पड़ना। न वह फ़ायदे का बाइस हैं, न आपको बचा सकते हैं। उनकी कोई हैसियत नहीं है। 22 रब अपने अज़ीम नाम की खातिर अपनी क़ौम को नहीं छोड़ेगा, क्योंकि उसने आपको अपनी क़ौम बनाने का फ़ैसला किया है। 23 जहाँ तक मेरा ताल्लुक है, मैं इसमें रब का गुनाह नहीं करूँगा कि आपकी सिफ़ारिश करने से बाज़ आऊँ। और आइंदा भी मैं आपको अच्छे और सहीह रास्ते की तालीम देता रहूँगा। 24 लेकिन ध्यान से रब का ख़ौफ़ मानें और पूरे दिल और वफ़ादारी से उस की ख़िदमत करें। याद रहे कि उसने आपके लिए कितने अज़ीम काम किए हैं। 25 लेकिन अगर आप ग़लत काम करने पर तुले रहें तो आप अपने बादशाह समेत दुनिया में से मिट जाएंगे।”

13

फिलिस्तिनियों से जंग

1 साऊल 30 साल का था जब तख्तनशीन हुआ। दो साल हुकूमत करने के बाद 2 उसने अपनी फौज के लिए 3,000 इसराइली चुन लिए। जंग लड़ने के काबिल बाकी आदमियों को उसने फारिग कर दिया। 2,000 फौजियों की झूटी मिकमास और बैतेल के पहाड़ी इलाके में लगाई गई जहाँ साऊल खुद था। बाकी 1,000 अफराद यूनतन के पास बिनयमीन के शहर जिबिया में थे।

3 एक दिन यूनतन ने जिबिया की फिलिस्ती चौकी पर हमला करके उसे शिकस्त दी। जल्द ही यह खबर दूसरे फिलिस्तिनियों तक पहुँच गई। साऊल ने मुल्क के कोने कोने में कासिद भेज दिए, और वह नरसिंगा बजाते बजाते लोगों को यूनतन की फतह सुनाते गए। 4 तमाम इसराइल में खबर फैल गई, “साऊल ने जिबिया की फिलिस्ती चौकी को तबाह कर दिया है, और अब इसराइल फिलिस्तिनियों की खास नफरत का निशाना बन गया है।” साऊल ने तमाम मर्दों को फिलिस्तिनियों से लड़ने के लिए जिलजाल में बुलाया।

5 फिलिस्ती भी इसराइलियों से लड़ने के लिए जमा हुए। उनके 30,000 रथ, 6,000 घुड़सवार और साहिल की रेत जैसे बेशमार प्यादा फौजी थे। उन्होंने बैत-आवन के मशरिक में मिकमास के करीब अपने खैमे लगाए। 6 इसराइलियों ने देखा कि हम बड़े खतरे में आ गए हैं, और दुश्मन हम पर बहुत दबाव डाल रहा है तो परेशानी के आलम में कुछ गारों और दराइनों में और कुछ पत्थरों के दरमियान या क़ब्रों और हौज़ों में छुप गए। 7 कुछ इतने डर गए कि वह दरियाए-यरदन को पार करके ज़द और जिलियाद के इलाके में चले गए।

साऊल की बेसब्री

साऊल अब तक जिलजाल में था, लेकिन जो आदमी उसके साथ रहे थे वह खौफ के मारे थरथरा रहे थे। 8 समुएल ने साऊल को हिदायत दी थी कि सात दिन मेरा इंतज़ार करें। लेकिन सात दिन गुज़र गए, और समुएल न आया। साऊल के फौजी मुंतशिर होने लगे 9 तो साऊल ने हुक्म दिया, “भस्म होनेवाली और सलामती की कुरबानियाँ ले आओ।” फिर उसने खुद कुरबानियाँ पेश कीं।

10 वह अभी इस काम से फारिग ही हुआ था कि समुएल पहुँच गया। साऊल उसे खुशआमदीद कहने के लिए निकला। 11 लेकिन समुएल ने पूछा, “आपने क्या किया?”

साऊल ने जवाब दिया, “लोग मुंतशिर हो रहे थे, और आप वक़्त पर न आए। जब मैंने देखा कि फिलिस्ती मिकमास के करीब जमा हो रहे हैं 12 तो मैंने सोचा, ‘फिलिस्ती यहाँ जिलजाल में आकर मुझ पर हमला करने को हैं, हालाँकि मैंने अभी रब से दुआ नहीं की कि वह हम पर मेहरबानी करे।’ इसलिए मैंने ज़ुरत करके खुद कुरबानियाँ पेश कीं।”

13 समुएल बोला, “यह कैसी अहमकाना हरकत थी! आपने रब अपने खुदा का हुक्म न माना। रब तो आप और आपकी औलाद को हमेशा के लिए इसराइल पर मुक़र्रर करना चाहता था। 14 लेकिन अब आपकी बादशाहत कायम नहीं रहेगी। चूँकि आपने उस की न सुनी इसलिए रब ने किसी और को चुनकर अपनी कौम का राहनुमा मुक़र्रर किया है, एक ऐसे आदमी को जो उस की सोच रखेगा।”

15 फिर समुएल जिलजाल से चला गया।

जंग की तैयारियाँ

बचे हुए इसराइली साऊल के पीछे दुश्मन से लड़ने गए। वह जिलजाल से रवाना होकर जिबिया पहुँच गए। जब साऊल ने वहाँ फौज का जायज़ा लिया तो बस 600 अफराद रह गए थे। 16 साऊल, यूनतन और उनकी फौज बिनयमीन के शहर जिबिया में टिक गए जबकि फिलिस्ती मिकमास के पास खैमाज़न थे। 17 कुछ देर के बाद फिलिस्तिनियों के तीन दस्ते मुल्क को लूटने के लिए निकले। एक सुआल के इलाके के शहर उफ़रा की तरफ चल पड़ा, 18 दूसरा बैत-हौस्न की तरफ और तीसरा उस पहाड़ी सिलसिले की तरफ जहाँ से वादीए-ज़बोईम और रेगिस्तान देखा जा सकता है।

19 उन दिनों में पूरे मुल्के-इसराइल में लोहार नहीं था, क्योंकि फिलिस्ती नहीं चाहते थे कि इसराइली तलवारें या नेज़े बनाएँ। 20 अपने हलों, कुदालों, कुल्हाड़ियों या दर्रतियों को तेज़ करवाने के लिए तमाम इसराइलियों को फिलिस्तिनियों के पास जाना पड़ता था। 21 फिलिस्ती हलों, कुदालों, काँटों और कुल्हाड़ियों को तेज़ करने के लिए और आँकुसों की नोक ठीक करने के लिए चाँदी के सिक्के की दो तिहाई लेते थे। 22 नतीजे में उस दिन साऊल और यूनतन के सिवा किसी भी इसराइली के पास तलवार या नेज़ा नहीं था।

यूनतन फिलिस्तिनियों पर हमला करता है

23 फिलिस्तिनियों ने मिकमास के दर्रे पर क़ब्ज़ा करके वहाँ चौकी कायम की थी।

14

1 एक दिन यूनतन ने अपने जवान सिलाहबरदार से कहा, “आओ, हम परली तरफ जाएँ जहाँ फिलिस्ती फौज की चौकी है।” लेकिन उसने अपने बाप को इतला न दी।

2 साऊल उस वक़्त अनार के दरख़्त के साय में बैठा था जो जिबिया के करीब के मिजरोन में था। 600 मर्द उसके पास थे। 3 अखियाह इमाम भी साथ था जो इमाम का बालापोश पहने हुए था। अखियाह यकबोद के भाई अखीतब का बेटा था। उसका दादा फ़ीनहास और परदादा एली था, जो पुराने ज़माने में सैला में रब का इमाम था। किसी को भी मालूम न था कि यूनतन चला गया है।

4-5 फिलिस्ती चौकी तक पहुँचने के लिए यूनतन ने एक तंग रास्ता इख्तियार किया जो दो कड़ाड़ों के दरमियान से गुजरता था। पहले का नाम बोसीस था, और वह शिमाल में मिकमास के मुकाबिल था। दूसरे का नाम सना था, और वह जुनूब में जिबा के मुकाबिल था। 6 यूनतन ने अपने जवान सिलाहबरदार से कहा, “आओ, हम परली तरफ जाएँ जहाँ इन नामखतूनों की चौकी है। शायद रब हमारी मदद करे, क्योंकि उसके नज़दीक कोई फ़रक नहीं कि हम ज़्यादा हों या कम।” 7 उसका सिलाहबरदार बोला, “जो कुछ आप ठीक समझते हैं, वही करें। ज़रूर जाएँ। जो कुछ भी आप कहेंगे, मैं हाज़िर हूँ।” 8 यूनतन बोला, “ठीक है। फिर हम यों दुश्मनों की तरफ़ बढ़ते जाएंगे, कि हम उन्हें साफ़ नज़र आएँ। 9 अगर वह हमें देखकर पुकारें, ‘स्क जाओ, वरना हम तुम्हें मार देंगे!’ तो हम अपने मनसूबे से बाज़ आकर उनके पास नहीं जाएंगे। 10 लेकिन अगर वह पुकारें, ‘आओ, हमारे पास आ जाओ!’ तो हम ज़रूर उनके पास चढ़ जाएंगे। क्योंकि यह इसका निशान होगा कि रब उन्हें हमारे कब्ज़े में कर देगा।”

11 चुनौचे वह चलते चलते फिलिस्ती चौकी को नज़र आए। फिलिस्ती शोर मचाने लगे, “देखो, इसराईली अपने छुपने के बिलों से निकल रहे हैं!” 12 चौकी के फ़ौजियों ने दोनों को चैलेंज किया, “आओ, हमारे पास आओ तो हम तुम्हें सबक सिखाएँगे।” यह सुनकर यूनतन ने अपने सिलाहबरदार को आवाज़ दी, “आओ, मेरे पीछे चलो! रब ने उन्हें इसराईल के हवाले कर दिया है।” 13 दोनों अपने हाथों और पैरों के बल चढ़ते चढ़ते चौकी तक जा पहुँचे। जब यूनतन आगे आगे चलकर फिलिस्तियों के पास पहुँच गया तो वह उसके सामने गिरते गए। साथ साथ सिलाहबरदार पीछे से लोगों को मारता गया।

14 इस पहले हमले के दौरान उन्होंने तक़रीबन 20 आदमियों को मार डाला। उनकी लाशें आध एकड़ ज़मीन पर बिखरी पड़ी थीं। 15 अचानक पूरी फ़ौज में दहशत फैल गई, न सिर्फ़ लश्करगाह बल्कि खुले मैदान में भी। चौकी के मर्द और लूटनेवाले दस्ते भी थरथराने लगे। साथ साथ जलजला आया। रब ने तमाम फिलिस्ती फ़ौजियों के दिलों में दहशत पैदा की।

रब फिलिस्तियों पर फ़तह देता है

16 साऊल के जो पहरेदार जिबिया से दुश्मन की हरकतों पर गौर कर रहे थे उन्होंने अचानक देखा कि फिलिस्ती फ़ौज में हलचल मच गई है, अफ़रा-तफ़री कभी इस तरफ़, कभी उस तरफ़ बढ़ रही है। 17 साऊल ने फ़ौरन हुक्म दिया, “फ़ौजियों को गिनकर मालूम करो कि कौन चला गया है।” मालूम हुआ कि यूनतन और उसका सिलाहबरदार मौजूद नहीं हैं। 18 साऊल ने अखियाह को हुक्म दिया, “अहद का संदूक ले आएँ।” क्योंकि वह उन दिनों में इसराईली कैप में था। 19 लेकिन साऊल अभी अखियाह से बात कर रहा था कि फिलिस्ती लश्करगाह में हंगामा और शोर बहुत ज़्यादा बढ़ गया। साऊल ने इमाम से कहा, “कोई बात नहीं, रहने दें।” 20 वह अपने 600 अफ़राद को लेकर फ़ौरन दुश्मन पर टूट पड़ा। जब उन तक पहुँच गए तो मालूम हुआ कि फिलिस्ती एक दूसरे को क़त्ल कर रहे हैं, और हर तरफ़ हंगामा ही हंगामा है।

21 फिलिस्तियों ने काफ़ी इसराईलियों को अपनी फ़ौज में शामिल कर लिया था। अब यह लोग फिलिस्तियों को छोड़कर साऊल और यूनतन के पीछे हो लिए। 22 इनके अलावा जो इसराईली इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े में इधर उधर छुप गए थे, जब उन्हें ख़बर मिली कि फिलिस्ती भाग रहे हैं तो वह भी उनका ताक्क़ुब करने लगे। 23 लड़ते लड़ते मैदाने-जंग बैत-आवन तक फैल गया। इस तरह रब ने उस दिन इसराईलियों को बचा लिया।

साऊल की बेसोचे-समझे लानत

24 उस दिन इसराईली सख़्त लड़ाई के बाइस बड़ी मुसीबत में थे। इसलिए साऊल ने क़सम खाकर कहा, “उस पर लानत जो शाम से पहले खाना खाए। पहले मैं अपने दुश्मन से इंतक़ाम लूँगा, फिर ही सब खा-पी सकते हैं।” इस वजह से किसी ने रोटी को हाथ तक न लगाया। 25 पूरी फ़ौज जंगल में दाखिल हुई तो वहाँ ज़मीन पर शहद के छत्ते थे। 26 तमाम लोग जब उनके पास से गुज़रे तो देखा कि उनसे शहद टपक रहा है। लेकिन किसी ने थोड़ा भी लेकर खाने की ज़रूरत न की, क्योंकि सब साऊल की लानत से डरते थे।

27 यूनतन को लानत का इल्म न था, इसलिए उसने अपनी लाठी का सिरा किसी छत्ते में डालकर उसे चाट लिया। उस की आँखें फ़ौरन चमक उठीं, और वह ताज़ादम हो गया। 28 किसी ने देखकर यूनतन को बताया, “आपके बाप ने फ़ौज से क़सम खिलाकर एलान किया है कि उस पर लानत जो इस दिन कुछ खाए। इसी वजह से हम सब इतने निढाल हो गए हैं।” 29 यूनतन ने जवाब दिया, “मेरे बाप ने मुल्क को मुसीबत में डाल दिया है! देखो, इस थोड़े-से शहद को चखने से मेरी आँखें कितनी चमक उठीं और मैं कितना ताज़ादम हो गया। 30 बेहतर होता कि हमारे लोग दुश्मन से लूटे हुए माल में से कुछ न कुछ खा लेते। लेकिन इस हालत में हम फिलिस्तियों को किस तरह ज़्यादा नुक़सान पहुँचा सकते हैं?”

31 उस दिन इसराईली फिलिस्तियों को मिकमास से मार मारकर ऐयालोन तक पहुँच गए। लेकिन शाम के वक़्त वह निहायत निढाल हो गए थे। 32 फिर वह लूटे हुए रेवड़ों पर टूट पड़े। उन्होंने जल्दी जल्दी भेड़-बकरियों, गाय-बैलों और बछड़ों को ज़बह किया। भूक की शिद्दत की वजह से उन्होंने खून को सहीह तौर से निकलने न दिया बल्कि जानवरों को ज़मीन पर छोड़कर गोशत को खून समेत खाने लगे।

33 किसी ने साऊल को इतला दी, “देखें, लोग रब का गुनाह कर रहे हैं, क्योंकि वह गोशत खा रहे हैं जिसमें अब तक खून है।” यह सुनकर साऊल पुकार उठा, “आप रब से वफ़ादार नहीं रहे!” फिर उसने साथवाले आदमियों को हुक्म दिया, “कोई बड़ा पत्थर लुढ़काकर इधर ले आएँ! 34 फिर तमाम आदमियों के पास जाकर उन्हें बता देना, ‘अपने जानवरों को मेरे पास ले आएँ ताकि उन्हें पत्थर पर ज़बह करके खाएँ। वरना आप खूनआलूदा गोशत खाकर रब का गुनाह करेंगे।’”

सब मान गए। उस शाम वह साऊल के पास आए और अपने जानवरों को पत्थर पर ज़बह किया। ³⁵ वहाँ साऊल ने पहली दफा रब की ताज़ीम में कुरबानगाह बनाई।

³⁶ फिर उसने एलान किया, “आएँ, हम अभी इसी रात फिलिस्तिनियों का ताक़्क़ुब करके उनमें लूट-मार का सिलसिला जारी रखें ताकि एक भी न बचे।” फ़ौजियों ने जवाब दिया, “ठीक है, वह कुछ करें जो आपको मुनासिब लगे।” लेकिन इमाम बोला, “पहले हम अल्लाह से हिदायत लें।” ³⁷ चुनौचे साऊल ने अल्लाह से पूछा, “क्या हम फिलिस्तिनियों का ताक़्क़ुब जारी रखें? क्या तू उन्हें इसराइल के हवाले कर देगा?” लेकिन इस मरतबा अल्लाह ने जवाब न दिया।

³⁸ यह देखकर साऊल ने फ़ौज के तमाम राहनुमाओं को बुलाकर कहा, “किसी ने गुनाह किया है। मालूम करने की कोशिश करें कि कौन कुसूरवार है।” ³⁹ रब की हयात की कसम जो इसराइल का नजातदहिदा है, कुसूरवार को फ़ौरन सज़ाए-मौत दी जाएगी, खाह वह मेरा बेटा यूनतन क्यों न हो।” लेकिन सब ख़ामोश रहे।

⁴⁰ तब साऊल ने दुबारा एलान किया, “पूरी फ़ौज एक तरफ़ खड़ी हो जाए और यूनतन और मैं दूसरी तरफ़।” लोगों ने जवाब दिया, “जो आपको मुनासिब लगे वह करें।” ⁴¹ फिर साऊल ने रब इसराइल के खुदा से दुआ की, “ऐ रब, हमें दिखा कि कौन कुसूरवार है।”

जब कुरा डाला गया तो यूनतन और साऊल के गुरोह को कुसूरवार करार दिया गया और बाकी फ़ौज को बेकुसूर। ⁴² फिर साऊल ने हुक्म दिया, “अब कुरा डालकर पता करें कि मैं कुसूरवार हूँ या यूनतन।” जब कुरा डाला गया तो यूनतन कुसूरवार ठहरा। ⁴³ साऊल ने पूछा, “बताएँ, आपने क्या किया?” यूनतन ने जवाब दिया, “मैंने सिर्फ़ थोड़ा-सा शहद चख लिया जो मेरी लाठी के सिरे पर लगा था। लेकिन मैं मरने के लिए तैयार हूँ।” ⁴⁴ साऊल ने कहा, “यूनतन, अल्लाह मुझे सख्त सज़ा दे अगर मैं आपको इसके लिए सज़ाए-मौत न दूँ।” ⁴⁵ लेकिन फ़ौजियों ने एतराज़ किया, “यह कैसी बात है? यूनतन ही ने अपने ज़बरदस्त हमले से इसराइल को आज बचा लिया है। उसे किस तरह सज़ाए-मौत दी जा सकती है? कभी नहीं! अल्लाह की हयात की कसम, उसका एक बाल भी बीका नहीं होगा, क्योंकि आज उसने अल्लाह की मदद से फ़तह पाई है।” यों फ़ौजियों ने यूनतन को मौत से बचा लिया।

⁴⁶ तब साऊल ने फिलिस्तिनियों का ताक़्क़ुब करना छोड़ दिया और अपने घर चला गया। फिलिस्ती भी अपने मुल्क में वापस चले गए।

साऊल की जंगें

⁴⁷ जब साऊल तख़्तनशीन हुआ तो वह मुल्क के इर्दगिर्द के तमाम दुश्मनों से लड़ा। इनमें मोआब, अम्मोन, अदोम, जोबाह के बादशाह और फिलिस्ती शामिल थे। और जहाँ भी जंग छिड़ी वहाँ उसने फ़तह पाई। ⁴⁸ वह निहायत बहादुर था। उसने अमालीकियों को भी शिकस्त दी और यों इसराइल को उन तमाम दुश्मनों से बचा लिया जो बार बार मुल्क की लूट-मार करते थे।

साऊल का खानदान

⁴⁹ साऊल के तीन बेटे थे, यूनतन, इसवी और मलकीशुअ। उस की बड़ी बेटी मीरब और छोटी बेटी मीकल थी। ⁵⁰ बीवी का नाम अखीनुअम बित अखीमाज़ था। साऊल की फ़ौज का कमांडर अबिनैर था, जो साऊल के चचा नैर का बेटा था। ⁵¹ साऊल का बाप क्रीस और अबिनैर का बाप नैर सगे भाई थे जिनका बाप अबियेल था।

⁵² साऊल के जीते-जी फिलिस्तिनियों से सख्त जंग जारी रही। इसलिए जब भी कोई बहादुर और लड़ने के क़ाबिल आदमी नज़र आया तो साऊल ने उसे अपनी फ़ौज में भरती कर लिया।

15

तमाम अमालीकियों को हलाक करने का हुक्म

¹ एक दिन समुएल ने साऊल के पास आकर उससे बात की, “रब ही ने मुझे आपको मसह करके इसराइल पर मुकर्रर करने का हुक्म दिया था। अब रब का पैग़ाम सुन लें! ² रब्बुल-अफ़वाज़ फ़रमाता है, ‘मैं अमालीकियों का मेरी क़ौम के साथ सुलूक नहीं भूल सकता। उस वक़्त जब इसराइली मिसर से निकलकर कनान की तरफ़ सफ़र कर रहे थे तो अमालीकियों ने रास्ता बंद कर दिया था। ³ अब वक़्त आ गया है कि तू उन पर हमला करे। सब कुछ तबाह करके मेरे हवाले कर दे। कुछ भी बचने न दे, बल्कि तमाम मर्दों, औरतों, बच्चों शीरखारों समेत, गाय-बैलों, भेड़-बकरियों, ऊँटों और गधों को मौत के घाट उतार दे।’ ”

⁴ साऊल ने अपने फ़ौजियों को बुलाकर तलायम में उनका जायज़ा लिया। कुल 2,00,000 प्यादे फ़ौजी थे, नीज़ यहदाह के 10,000 अफ़राद। ⁵ अमालीकियों के शहर के पास पहुँचकर साऊल वादी में ताक में बैठ गया। ⁶ लेकिन पहले उसने क़ीनियों को ख़बर भेजी, “अमालीकियों से अलग होकर उनके पास से चले जाएँ, वरना आप उनके साथ हलाक हो जाएंगे। क्योंकि जब इसराइली मिसर से निकलकर रेगिस्तान में सफ़र कर रहे थे तो आपने उन पर मेहरबानी की थी।”

यह ख़बर मिलते ही क़ीनी अमालीकियों से अलग होकर चले गए। ⁷ तब साऊल ने अमालीकियों पर हमला करके उन्हें हवीला से लेकर मिसर की मशरिकी सरहद शूर तक शिकस्त दी। ⁸ पूरी क़ौम को तलवार से मारा गया, सिर्फ़ उनका बादशाह अजाज़ ज़िंदा पकड़ा गया। ⁹ साऊल और उसके फ़ौजियों ने उसे ज़िंदा छोड़ दिया। इसी तरह सबसे अच्छी भेड़-बकरियों, गाय-बैलों, मोटे-ताज़े बछड़ों और चींदा भेड़ के बच्चों

को भी छोड़ दिया गया। जो भी अच्छा था बच गया, क्योंकि इसराइलियों का दिल नहीं करता था कि तनदुस्त और मोटे-ताजे जानवरों को हलाक करें। उन्होंने सिर्फ उन तमाम कमजोर जानवरों को खत्म किया जिनकी कदरो-क्रीमत न थी।

फरमाँबरदारी कुरबानियों से अहम है

10 फिर रब समुएल से हमकलाम हुआ, 11 “मुझे दुख है कि मैंने साऊल को बादशाह बना लिया है, क्योंकि उसने मुझसे दूर होकर मेरा हुक्म नहीं माना।” समुएल को इतना गुस्सा आया कि वह पूरी रात बुलंद आवाज़ से रब से फरियाद करता रहा। 12 अगले दिन वह उठकर साऊल से मिलने गया। किसी ने उसे बताया, “साऊल करमिल चला गया। वहाँ अपने लिए यादगार खड़ा करके वह आगे जिलजाल चला गया है।” 13 जब समुएल जिलजाल पहुँचा तो साऊल ने कहा, “मुबारक हो! मैंने रब का हुक्म पूरा कर दिया है।” 14 समुएल ने पूछा, “जानवरों का यह शोर कहाँ से आ रहा है? भेड़-बकरियाँ ममया रही और गाय-बैल डकरा रहे हैं।” 15 साऊल ने जवाब दिया, “यह अमालीकियों के हाँ से लाए गए हैं। फौजियों ने सबसे अच्छे गाय-बैलों और भेड़-बकरियों को ज़िंदा छोड़ दिया ताकि उन्हें रब आपके खुदा के हज़ूर कुरबान करें। लेकिन हमने बाकी सबको रब के हवाले करके मार दिया।”

16 समुएल बोला, “खामोश! पहले वह बात सुन लें जो रब ने मुझे पिछली रात फरमाई।” साऊल ने जवाब दिया, “बताएँ।” 17 समुएल ने कहा, “जब आप तमाम कौम के राहनुमा बन गए तो एहसासे-कमतरी का शिकार थे। तो भी रब ने आपको मसह करके इसराइल का बादशाह बना दिया। 18 और उसने आपको भेजकर हुक्म दिया, ‘जा और अमालीकियों को पूरे तौर पर हलाक करके मेरे हवाले कर। उस वक्त तक इन शरीर लोगों से लड़ता रह जब तक वह सबके सब मिट न जाएँ।’ 19 अब मुझे बताएँ कि आपने रब की क्यों न सुनी? आप लूटे हुए माल पर क्यों टूट पड़े? यह तो रब के नज़दीक गुनाह है।”

20 साऊल ने एतराज़ किया, “लेकिन मैंने ज़रूर रब की सुनी। जिस मकसद के लिए रब ने मुझे भेजा वह मैंने पूरा कर दिया है, क्योंकि मैं अमालीक के बादशाह अजाज़ को गिरफ्तार करके यहाँ ले आया और बाकी सबको मौत के घाट उतारकर रब के हवाले कर दिया। 21 मेरे फौजी लूटे हुए माल में से सिर्फ सबसे अच्छी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल चुनकर ले आए, क्योंकि वह उन्हें यहाँ जिलजाल में रब आपके खुदा के हज़ूर कुरबान करना चाहते थे।”

22 लेकिन समुएल ने जवाब दिया, “रब को क्या बात ज़्यादा पसंद है, आपकी भस्म होनेवाली और ज़बह की कुरबानियाँ या यह कि आप उस की सुनते हैं? सुनना कुरबानी से कहीं बेहतर और ध्यान देना मेंढे की चरबी से कहीं उम्दा है। 23 सरकशी गैबदानी के गुनाह के बराबर है और गुस्सू बुतपरस्ती के गुनाह से कम नहीं होता। आपने रब का हुक्म रद्द किया है, इसलिए उसने आपको रद्द करके बादशाह का ओहदा आपसे छीन लिया है।”

24 तब साऊल ने इकरार किया, “मुझसे गुनाह हुआ है। मैंने आपकी हिदायत और रब के हुक्म की खिलाफ़वरज़ी की है। मैंने लोगों से डरकर उनकी बात मान ली। 25 लेकिन अब मेहरबानी करके मुझे मुआफ़ करें और मेरे साथ वापस आएँ ताकि मैं आपकी मौजूदगी में रब की परस्तिश कर सकूँ।” 26 लेकिन समुएल ने जवाब दिया, “मैं आपके साथ वापस नहीं चलूँगा। आपने रब का कलाम रद्द किया है, इसलिए रब ने आपको रद्द करके बादशाह का ओहदा आपसे छीन लिया है।”

27 समुएल मुड़कर वहाँ से चलने लगा, लेकिन साऊल ने उसके चोगे का दामन इतने जोर से पकड़ लिया कि वह फटकर उसके हाथ में रह गया। 28 समुएल बोला, “जिस तरह कपड़ा फटकर आपके हाथ में रह गया बिल्कुल उसी तरह रब ने आज ही इसराइल पर आपका इख्तियार आपसे छीनकर किसी और को दे दिया है, ऐसे शाक्स को जो आपसे कहीं बेहतर है। 29 जो इसराइल की शानो-शौकत है वह न झूट बोलता, न कभी अपनी सोच को बदलता है, क्योंकि वह इनसान नहीं कि एक बात कहकर बाद में उसे बदले।”

30 साऊल ने दुबारा मिन्नत की, “बेशक मैंने गुनाह किया है। लेकिन बराहे-करम कम अज़ कम मेरी कौम के बुजुर्गों और इसराइल के सामने तो मेरी इज़्ज़त करें। मेरे साथ वापस आएँ ताकि मैं आपकी मौजूदगी में रब आपके खुदा की परस्तिश कर सकूँ।”

31 तब समुएल मान गया और साऊल के साथ दूसरों के पास वापस आया। साऊल ने रब की परस्तिश की, 32 फिर समुएल ने एलान किया, “अमालीक के बादशाह अजाज़ को मेरे पास ले आओ!” अजाज़ इतमीनान से समुएल के पास आया, क्योंकि उसने सोचा, “बेशक मौत का खतरा टल गया है।” 33 लेकिन समुएल बोला, “तेरी तलवार से बेशुमार माँ अपने बच्चों से महसूम हो गई हैं। अब तेरी माँ भी बेऔलाद हो जाएगी।” यह कहकर समुएल ने वहीं जिलजाल में रब के हज़ूर अजाज़ को तलवार से टुकड़े टुकड़े कर दिया।

34 फिर वह रामा वापस चला गया, और साऊल अपने घर गया जो ज़िबिया में था। 35 इसके बाद समुएल जीते-जी साऊल से कभी न मिला, क्योंकि वह साऊल का मातम करता रहा। लेकिन रब को दुख था कि मैंने साऊल को इसराइल पर क्यों मुकर्रर किया।

16

नए बादशाह दाऊद को मुकर्रर किया जाता है

1 एक दिन रब समुएल से हमकलाम हुआ, “तू कब तक साऊल का मातम करेगा? मैंने तो उसे रद्द करके बादशाह का ओहदा उससे ले लिया है। अब मेंढे का सींग जैतून के तेल से भरकर बैत-लहम चला जा। वहाँ एक आदमी से मिल जिसका नाम यस्सी है। क्योंकि मैंने उसके बेटों में से एक को चुन लिया है कि वह नया बादशाह बन जाए।” 2 लेकिन समुएल ने एतराज़ किया, “मैं किस तरह जा सकता हूँ? साऊल यह सुनकर

मुझे मार डालेगा।” रब ने जवाब दिया, “एक जवान गाय अपने साथ लेकर लोगों को बता दे कि मैं इसे रब के हुज़ूर कुरबान करने के लिए आया हूँ। 3 यस्सी को दावत दे कि वह कुरबानी की ज़ियाफ़त में शरीक हो जाए। आगे मैं तुझे बताऊँगा कि क्या करना है। मैं तुझे दिखाऊँगा कि किस बेटे को मेरे लिए मसह करके चुन लेना है।”

4 समुएल मान गया। जब वह बैत-लहम पहुँच गया तो लोग चौंक उठे। लरज़ते लरज़ते शहर के बुज़ुर्ग उससे मिलने आए और पूछा, “खैरियत तो है कि आप हमारे पास आ गए हैं?” 5 समुएल ने उन्हें तसल्ली देकर कहा, “खैरियत है। मैं रब के हुज़ूर कुरबानी पेश करने के लिए आया हूँ। अपने आपको रब के लिए मखसूसो-मुक़द्दस करें और फिर मेरे साथ कुरबानी की ज़ियाफ़त में शरीक हो जाएँ।” समुएल ने यस्सी और उसके बेटों को भी दावत दी और उन्हें अपने आपको मखसूसो-मुक़द्दस करने को कहा।

6 जब यस्सी अपने बेटों समेत कुरबानी की ज़ियाफ़त के लिए आया तो समुएल की नज़र इलियाब पर पड़ी। उसने सोचा, “बेशक यह वह है जिसे रब मसह करके बादशाह बनाना चाहता है।” 7 लेकिन रब ने फ़रमाया, “इसकी शक्लो-सूरत और लंबे कद से मुतअस्सिर न हो, क्योंकि यह मुझे नामज़ूर है। मैं इनसान की नज़र से नहीं देखता। क्योंकि इनसान ज़ाहिरी सूरत पर गौर करके फ़ैसला करता है जबकि रब को हर एक का दिल साफ़ साफ़ नज़र आता है।”

8 फिर यस्सी ने अपने दूसरे बेटे अबीनदाब को बुलाकर समुएल के सामने से गुज़रने दिया। समुएल बोला, “नहीं, रब ने इसे भी नहीं चुना।” 9 इसके बाद यस्सी ने तीसरे बेटे सम्मा को पेश किया। लेकिन यह भी नहीं चुना गया था। 10 यों यस्सी ने अपने सात बेटों को एक एक करके समुएल के सामने से गुज़रने दिया। इनमें से कोई रब का चुना हुआ बादशाह न निकला। 11 आखिरकार समुएल ने पूछा, “इनके अलावा कोई और बेटा तो नहीं है?” यस्सी ने जवाब दिया, “सबसे छोटा बेटा अभी बाकी रह गया है, लेकिन वह बाहर खेतों में भेड़-बकरियों की निगरानी कर रहा है।” समुएल ने कहा, “उसे फ़ौरन बुला लें। उसके आने तक हम खाने के लिए नहीं बैठेंगे।”

12 चुनौचे यस्सी छोटे को बुलाकर अंदर ले आया। यह बेटा गोरा था। उस की आँखें ख़ूबसूरत और शक्लो-सूरत काबिले-तारीफ़ थी। रब ने समुएल को बताया, “यही है। उठकर इसे मसह कर।” 13 समुएल ने तेल से भरा हुआ मेंढे का सींग लेकर उसे दाऊद के सर पर उंडेल दिया। सब भाई मौजूद थे। उसी वक़्त रब का रूह दाऊद पर नाज़िल हुआ और उस की सारी उम्र उस पर ठहरा रहा। फिर समुएल रामा वापस चला गया।

दाऊद साऊल को बदरूह से आराम दिलाता है

14 लेकिन रब के रूह ने साऊल को छोड़ दिया था। इसके बजाए रब की तरफ़ से एक बुरी रूह उसे दहशतज़दा करने लगी। 15 एक दिन साऊल के मुलाज़िमों ने उससे कहा, “अल्लाह की तरफ़ से एक बुरी रूह आपके दिल में दहशत पैदा कर रही है। 16 हमारा आका अपने खादिमों को हुक्म दे कि वह किसी को ढूँढ़ लाएँ जो सरोद बजा सके। जब भी अल्लाह की तरफ़ से यह बुरी रूह आप पर आए तो वह अपना साज़ बजाकर आपको सुकून दिलाएगा।”

17 साऊल ने जवाब दिया, “ठीक है, ऐसा ही करो। किसी को बुला लाओ जो साज़ बजाने में माहिर हो।” 18 एक मुलाज़िम बोला, “मैंने एक आदमी को देखा है जो ख़ूब बजा सकता है। वह बैत-लहम के रहनेवाले यस्सी का बेटा है। वह न सिर्फ़ महारत से सरोद बजा सकता है बल्कि बड़ा जंगजू भी है। यह भी उस की एक ख़ूबी है कि वह हर मौक़े पर समझदारी से बात कर सकता है। और वह ख़ूबसूरत भी है। रब उसके साथ है।”

19 साऊल ने फ़ौरन अपने कासिदों को यस्सी के पास भेजकर उसे इतला दी, “अपने बेटे दाऊद को जो भेड़-बकरियों को सँभालता है मेरे पास भेज देना।” 20 यह सुनकर यस्सी ने रोटी, मै का मशकीज़ा और एक जवान बकरी गधे पर लादकर दाऊद के हवाले कर दी और उसे साऊल के दरबार में भेज दिया।

21 इस तरह दाऊद साऊल की ख़िदमत में हाज़िर हो गया। वह बादशाह को बहुत पसंद आया बल्कि साऊल को इतना प्यारा लगा कि उसे अपना सिलाहबरदार बना लिया। 22 साऊल ने यस्सी को इतला भेजी, “दाऊद मुझे बहुत पसंद आया है, इसलिए उसे मुस्तक़िल तौर पर मेरी ख़िदमत करने की इजाज़त दें।” 23 और जब भी बुरी रूह साऊल पर आती तो दाऊद अपना सरोद बजाने लगता। तब साऊल को सुकून मिलता और बुरी रूह उस पर से दूर हो जाती।

17

जाती जालूत

1 एक दिन फ़िलिस्तिनियों ने अपनी फ़ौज को यहदाह के शहर सोका के करीब जमा किया। वह इफ़स-दम्मीम में ख़ैमाज़न हुए जो सोका और अज़ीका के दरमियान है। 2 जवाब में साऊल ने अपनी फ़ौज को बुलाकर वादीए-ऐला में जमा किया। वहाँ इसराईल के मर्द जंग के लिए तरतीब से खड़े हुए। 3 यों फ़िलिस्ती एक पहाड़ी पर खड़े थे और इसराईली दूसरी पहाड़ी पर। उनके बीच में वादी थी।

4 फिर फ़िलिस्ती सफ़ों से जात शहर का पहलवान निकलकर इसराईलियों के सामने खड़ा हुआ। उसका नाम जालूत था और वह 9 फुट से ज़्यादा लंबा था। 5 उसने हिफ़ाज़त के लिए पीतल की कई चीज़ें पहन रखी थीं : सर पर खोद, धड़ पर ज़िरा-बकतर जो 57 किलोग्राम वज़नी था 6 और पिंडलियों पर बकतर। कंधों पर पीतल की शमशेर लटकी हुई थी। 7 जो नेज़ा वह पकड़कर चल रहा था उसका दस्ता खड़ी

के शहतीर जैसा मोटा और लंबा था, और उसके लोहे की नोक का वजन 7 किलोग्राम से ज्यादा था। जालूत के आगे आगे एक आदमी उस की ढाल उठाए चल रहा था।

8 जालूत इसराइली सफ़ों के सामने स्क्कर गरजा, “तुम सब क्यों लड़ने के लिए सफ़आरा हो गए हो? क्या मैं फिलिस्ती नहीं हूँ जबकि तुम सिर्फ़ साऊल के नौकर-चाकर हो? चलो, एक आदमी को चुनकर उसे यहाँ नीचे मेरे पास भेज दो। 9 अगर वह मुझसे लड़ सके और मुझे मार दे तो हम तुम्हारे गुलाम बन जाएंगे। लेकिन अगर मैं उस पर गालिब आकर उसे मार डालूँ तो तुम हमारे गुलाम बन जाओगे। 10 आज मैं इसराइली सफ़ों की बदनामी करके उन्हें चैलेंज करता हूँ कि मुझे एक आदमी दो जो मेरे साथ लड़े।” 11 जालूत की यह बातें सुनकर साऊल और तमाम इसराइली घबरा गए, और उन पर दहशत तारी हो गई।

दाऊद भाइयों से मिलने के लिए फ़ौज के पास जाता है

12 उस वक़्त दाऊद का बाप यस्सी काफ़ी बूढ़ा हो चुका था। उसके कुल 8 बेटे थे, और वह इफ़राता के इलाक़े के बैत-लहम में रहता था। 13 लेकिन उसके तीन सबसे बड़े बेटे फिलिस्तियों से लड़ने के लिए साऊल की फ़ौज में भरती हो गए थे। सबसे बड़े का नाम इलियाब, दूसरे का अबीनदाब और तीसरे का सम्मा था। 14-15 दाऊद तो सबसे छोटा भाई था। वह दूसरों की तरह पूरा वक़्त साऊल के पास न गुज़ार सका, क्योंकि उसे बाप की भेड़-बकरियों को सँभालने की ज़िम्मादारी दी गई थी। इसलिए वह आता जाता रहा। चुनाँचे वह मौजूद नहीं था 16 जब जालूत 40 दिन सुबहो-शाम इसराइलियों की सफ़ों के सामने खड़े होकर उन्हें चैलेंज करता रहा।

17 एक दिन यस्सी ने दाऊद से कहा, “बेटा, अपने भाइयों के पास कैप में जाकर उनका पता करो। भुने हुए अनाज के यह 16 किलोग्राम और यह दस रोटियाँ अपने साथ लेकर जल्दी जल्दी उधर पहुँच जाओ। 18 पनीर की यह दस टिक्कियाँ उनके कप्तान को दे देना। भाइयों का हाल मालूम करके उनकी कोई चीज़ वापस ले आओ ताकि मुझे तसल्ली हो जाए कि वह ठीक हैं। 19 वह वादीए-ऐला में साऊल और इसराइली फ़ौज के साथ फिलिस्तियों से लड़ रहे हैं।” 20 अगले दिन सुबह-सवेरे दाऊद ने रेवड़ को किसी और के सुपर्द करके सामान उठाया और यस्सी की हिदायत के मुताबिक चला गया। जब वह कैप के पास पहुँच गया तो इसराइली फ़ौजी नारे लगा लगाकर मैदाने-जंग के लिए निकल रहे थे। 21 वह लड़ने के लिए तरतीब से खड़े हो गए, और दूसरी तरफ़ फिलिस्ती सफ़ें भी तैयार हुईं। 22 यह देखकर दाऊद ने अपनी चीज़ें उस आदमी के पास छोड़ दीं जो लश्कर के सामान की निगरानी कर रहा था, फिर भागकर मैदाने-जंग में भाइयों से मिलने चला गया।

वह अभी उनका हाल पूछ ही रहा था 23 कि जाती जालूत मामूल के मुताबिक़ फिलिस्तियों की सफ़ों से निकलकर इसराइलियों के सामने वही तंज की बातें बकने लगा। दाऊद ने भी उस की बातें सुनीं। 24 जालूत को देखते ही इसराइलियों के रोंगटे खड़े हो गए, और वह भागकर 25 आपस में कहने लगे, “क्या आपने इस आदमी को हमारी तरफ़ बढ़ते हुए देखा? सुनें कि वह किस तरह हमारी बदनामी करके हमें चैलेंज कर रहा है। बादशाह ने एलान किया है कि जो शख्स इसे मार दे उसे बड़ा अज़्र मिलेगा। शहजादी से उस की शादी होगी, और आइंदा उसके बाप के खानदान को टैक्स नहीं देना पड़ेगा।”

26 दाऊद ने साथवाले फ़ौजियों से पूछा, “क्या कह रहे हैं? उस आदमी को क्या इनाम मिलेगा जो इस फिलिस्ती को मारकर हमारी क्रौम की स्सवाई दूर करेगा? यह नामख़तून फिलिस्ती कौन है कि ज़िंदा खुदा की फ़ौज की बदनामी करके उसे चैलेंज करे!” 27 लोगों ने दुबारा दाऊद को बताया कि बादशाह उस आदमी को क्या देगा जो जालूत को मार डालेगा।

28 जब दाऊद के बड़े भाई इलियाब ने दाऊद की बातें सुनीं तो उसे गुस्सा आया और वह उसे झिड़कने लगा, “तू क्यों आया है? बयाबान में अपनी चंद एक भेड़-बकरियों को किसके पास छोड़ आया है? मैं तेरी शोखी और दिल की शरारत ख़ूब जानता हूँ। तू सिर्फ़ जंग का तमाशा देखने आया है!” 29 दाऊद ने पूछा, “अब मुझसे क्या ग़लती हुई? मैंने तो सिर्फ़ सवाल पूछा।” 30 वह उससे मुड़कर किसी और के पास गया और वही बात पूछने लगा। वही जवाब मिला।

हथियार का चुनाव

31 दाऊद की यह बातें सुनकर किसी ने साऊल को इत्तला दी। साऊल ने उसे फ़ौरन बुलाया। 32 दाऊद ने बादशाह से कहा, “किसी को इस फिलिस्ती की वजह से हिम्मत नहीं हारना चाहिए। मैं उससे लड़ूँगा।” 33 साऊल बोला, “आप? आप जैसा लड़का किस तरह उसका मुकाबला कर सकता है? आप तो अभी बच्चे से हो जबकि वह तजरबाकार जंगजू है जो जवानी से हथियार इस्तेमाल करता आया है।”

34 लेकिन दाऊद ने इसरार किया, “मैं अपने बाप की भेड़-बकरियों की निगरानी करता हूँ। जब कभी कोई शेरबबर या रीछ रेवड़ का जानवर छीनकर भाग जाता 35 तो मैं उसके पीछे जाता और उसे मार मारकर भेड़ को उसके मुँह से छुड़ा लेता था। अगर शेर या रीछ जवाब में मुझ पर हमला करता तो मैं उसके सर के बालों को पकड़कर उसे मार देता था। 36 इस तरह आपके खादिम ने कई शेरों और रीछों को मार डाला है। यह नामख़तून भी उनकी तरह हलाक हो जाएगा, क्योंकि उसने ज़िंदा खुदा की फ़ौज की बदनामी करके उसे चैलेंज किया है। 37 जिस रब ने मुझे शेर और रीछ के पंजे से बचा लिया है वह मुझे इस फिलिस्ती के हाथ से भी बचाएगा।”

साऊल बोला, “ठीक है, जाएँ और रब आपके साथ हो।” 38 उसने दाऊद को अपना ज़िरा-बकतर और पीतल का खोद पहनाया। 39 फिर दाऊद ने साऊल की तलवार बंधकर चलने की कोशिश की। लेकिन उसे बहुत मुश्किल लग रहा था। उसने साऊल से कहा, “मैं यह चीज़ें पहनकर नहीं लड़ सकता, क्योंकि मैं इनका आदी नहीं हूँ।” उन्हें उतारकर 40 उसने नदी से पाँच चिकने चिकने पत्थर चुनकर उन्हें अपनी

चरवाहे की थैली में डाल लिया। फिर चरवाहे की अपनी लाठी और फ़लाखन पकड़कर वह फिलिस्ती से लड़ने के लिए इसराईली सफ़ों से निकला।

दाऊद की फ़तह

41 जालूत दाऊद की जानिब बढ़ा। ढाल को उठानेवाला उसके आगे आगे चल रहा था। 42 उसने हिकारतआमेज़ नज़रों से दाऊद का जायज़ा लिया, क्योंकि वह गोरा और ख़ूबसूरत नौजवान था। 43 वह गरजा, “क्या मैं कुत्ता हूँ कि तू लाठी लेकर मेरा मुक़ाबला करने आया है?” अपने देवताओं के नाम लेकर वह दाऊद पर लानत भेजकर 44 चिल्लाया, “इधर आ ताकि मैं तेरा गोश्त परिदों और जंगली जानवरों को खिलाऊँ।”

45 दाऊद ने जवाब दिया, “आप तलवार, नेज़ा और शमशेर लेकर मेरा मुक़ाबला करने आए हैं, लेकिन मैं रब्बुल-अफ़वाज़ का नाम लेकर आता हूँ, उसी का नाम जो इसराईली फ़ौज़ का ख़ुदा है। क्योंकि आपने उसी को चैलेंज किया है। 46 आज ही रब आपको मेरे हाथ में कर देगा, और मैं आपका सर क़लम कर दूँगा। इसी दिन मैं फिलिस्ती फ़ौज़ियों की लाशें परिदों और जंगली जानवरों को खिला दूँगा। तब तमाम दुनिया जान लेगी कि इसराईल का ख़ुदा है। 47 सब जो यहाँ मौजूद हैं जान लेंगे कि रब को हमें बचाने के लिए तलवार या नेज़े की ज़रूरत नहीं होती। वह ख़ुद ही जंग कर रहा है, और वही आपको हमारे क़ब्ज़े में कर देगा।”

48 जालूत दाऊद पर हमला करने के लिए आगे बढ़ा, और दाऊद भी उस की तरफ़ दौड़ा। 49 चलते चलते उसने अपनी थैली से पत्थर निकाला और उसे फ़लाखन में रखकर जोर से चलाया। पत्थर उड़ता उड़ता फिलिस्ती के माथे पर जा लगा। वह खोपड़ी में धँस गया, और पहलवान मुँह के बल गिर गया। 50-51 यों दाऊद फ़लाखन और पत्थर से फिलिस्ती पर ग़ालिब आया। उसके हाथ में तलवार नहीं थी। तब उसने जालूत की तरफ़ दौड़कर उसी की तलवार मियान से खींचकर फिलिस्ती का सर काट डाला।

जब फिलिस्तियों ने देखा कि हमारा पहलवान हलाक हो गया है तो वह भाग निकले। 52 इसराईल और यहूदाह के मर्द फ़तह के नारे लगा लगाकर फिलिस्तियों पर टूट पड़े। उनका ताक्कुब करते करते वह जात और अक़रून के दरवाज़ों तक पहुँच गए। जो रास्ता शौरेम से जात और अक़रून तक जाता है उस पर हर तरफ़ फिलिस्तियों की लाशें नज़र आईं। 53 फिर इसराईलियों ने वापस आकर फिलिस्तियों की छोड़ी हुई लशकरगाह को लूट लिया।

54 बाद में दाऊद जालूत का सर यरूशलम को ले आया। फिलिस्ती के हथियार उसने अपने ख़ैमे में रख लिए।

साऊल दाऊद के ख़ानदान का पता करता है

55 जब दाऊद जालूत से लड़ने गया तो साऊल ने फ़ौज़ के कमाँडर अबिनैर से पूछा, “इस जवान आदमी का बाप कौन है?” अबिनैर ने जवाब दिया, “आपकी हयात की कसम, मुझे मालूम नहीं।” 56 बादशाह बोला, “फिर पता करें!” 57 जब दाऊद फिलिस्ती का सर क़लम करके वापस आया तो अबिनैर उसे बादशाह के पास लाया। दाऊद अभी जालूत का सर उठाए फिर रहा था। 58 साऊल ने पूछा, “आपका बाप कौन है?” दाऊद ने जवाब दिया, “मैं बैत-लहम के रहनेवाले आपके खादिम यस्सी का बेटा हूँ।”

18

दाऊद और यूनतन की दोस्ती

1 इस गुफ़्तगू के बाद दाऊद की मुलाक़ात बादशाह के बेटे यूनतन से हुई। उनमें फ़ौरन गहरी दोस्ती पैदा हो गई, और यूनतन दाऊद को अपनी जान के बराबर अज़ीज़ रखने लगा। 2 उस दिन से साऊल ने दाऊद को अपने दरबार में रख लिया और उसे बाप के घर वापस जाने न दिया। 3 और यूनतन ने दाऊद से अहद बाँधा, क्योंकि वह दाऊद को अपनी जान के बराबर अज़ीज़ रखता था। 4 अहद की तसदीक के लिए यूनतन ने अपना चोगा उतारकर उसे अपने ज़िरा-बक़तर, तलवार, कमान और पेटी समेत दाऊद को दे दिया।

5 जहाँ भी साऊल ने दाऊद को लड़ने के लिए भेजा वहाँ वह कामयाब हुआ। यह देखकर साऊल ने उसे फ़ौज़ का बड़ा अफ़सर बना दिया। यह बात अवाम और साऊल के अफ़सरों को पसंद आई।

साऊल दाऊद से हसद करता है

6 जब दाऊद फिलिस्तियों को शिकस्त देने से वापस आया तो तमाम शहरों से औरतें निकलकर साऊल बादशाह से मिलने आईं। दफ़ और साज़ बजाते हुए वह ख़ुशी के गीत गा गाकर नाचने लगीं। 7 और नाचते नाचते वह गाती रही, “साऊल ने तो हज़ार हलाक किए जबकि दाऊद ने दस हज़ार।”

8 साऊल बड़े गुस्से में आ गया, क्योंकि औरतों का गीत उसे निहायत बुरा लगा। उसने सोचा, “उनकी नज़र में दाऊद ने दस हज़ार हलाक किए जबकि मैंने सिर्फ़ हज़ार। अब सिर्फ़ यह बात रह गई है कि उसे बादशाह मुक़र्र किया जाए।” 9 उस वक़्त से साऊल दाऊद को शक की नज़र से देखने लगा। 10-11 अगले दिन अल्लाह ने दुबारा साऊल पर बुरी रूह आने दी, और वह घर के अंदर वज्द की हालत में आ गया। दाऊद मामूल के मुताबिक़ साज़ बजाने लगा ताकि बादशाह को सुकून मिले। साऊल के हाथ में नेज़ा था। अचानक उसने उसे फेंककर दाऊद को दीवार के साथ छेद डालने की कोशिश की। लेकिन दाऊद एक तरफ़ हटकर बच निकला। एक और दफ़ा ऐसा हुआ, लेकिन दाऊद फिर बच गया।

12 यह देखकर साऊल दाऊद से डरने लगा, क्योंकि उसने जान लिया कि रब मुझे छोड़कर दाऊद का हामी बन गया है। 13 आखिरकार उसने दाऊद को दरबार से दूर करके हज़ार फ़ौजियों पर मुक़र्रर कर दिया। इन आदमियों के साथ दाऊद मुख़्तलिफ़ जंगों के लिए निकलता रहा। 14 और जो कुछ भी वह करता उसमें कामयाब रहता, क्योंकि रब उसके साथ था। 15 जब साऊल ने देखा कि दाऊद को कितनी ज़्यादा कामयाबी हुई है तो वह उससे मज़ीद डर गया। 16 लेकिन इसराईल और यहूदा के बाक़ी लोग दाऊद से बहुत मुहब्बत रखते थे, क्योंकि वह हर जंग में निकलते वक़्त से लेकर घर वापस आते वक़्त तक उनके आगे आगे चलता था।

दाऊद साऊल का दामाद बन जाता है

17 एक दिन साऊल ने दाऊद से बात की, “मैं अपनी बड़ी बेटी मीरब का रिश्ता आपके साथ बाँधना चाहता हूँ। लेकिन पहले साबित करें कि आप अच्छे फ़ौजी हैं, जो रब की जंगों में खूब हिस्सा ले।” लेकिन दिल ही दिल में साऊल ने सोचा, “खुद तो मैं दाऊद पर हाथ नहीं उठाऊँगा, बेहतर है कि वह फ़िलिस्तिनियों के हाथों मारा जाए।” 18 लेकिन दाऊद ने एतराज़ किया, “मैं कौन हूँ कि बादशाह का दामाद बनूँ? इसराईल में तो मेरे खानदान और आबाई कुंभे की कोई हैसियत नहीं।”

19 तो भी शादी की तैयारियों की गई। लेकिन जब मुक़र्ररा वक़्त आ गया तो साऊल ने मीरब की शादी एक और आदमी बनाम अदरियेल महलाती से करवा दी।

20 इतने में साऊल की छोटी बेटी मीकल दाऊद से मुहब्बत करने लगी। जब साऊल को इसकी ख़बर मिली तो वह खुश हुआ। 21 उसने सोचा, “अब मैं बेटी का रिश्ता उसके साथ बाँधकर उसे यों फँसा दूँगा कि वह फ़िलिस्तिनियों से लड़ते लड़ते मर जाएगा।” दाऊद से उसने कहा, “आज आपको मेरा दामाद बनने का दुबारा मौक़ा मिलेगा।”

22 फिर उसने अपने मुलाज़िमों को हुक्म दिया कि वह चुपके से दाऊद को बताएँ, “सुनें, आप बादशाह को पसंद हैं, और उसके तमाम अफ़सर भी आपको प्यार करते हैं। आप ज़रूर बादशाह की पेशकश क़बूल करके उसका दामाद बन जाएँ।” 23 लेकिन दाऊद ने एतराज़ किया, “क्या आपकी दानिस्त में बादशाह का दामाद बनना छोटी-सी बात है? मैं तो ग़रीब आदमी हूँ, और मेरी कोई हैसियत नहीं।”

24 मुलाज़िमों ने बादशाह के पास वापस जाकर उसे दाऊद के अलफ़ाज़ बताए। 25 साऊल ने उन्हें फिर दाऊद के पास भेजकर उसे इतला दी, “बादशाह महर के लिए पैसे नहीं माँगता बल्कि यह कि आप उनके दुश्मनों से बदला लेकर 100 फ़िलिस्तिनियों को क़त्ल कर दें। सबूत के तौर पर आपको उनका ख़तना करके ज़िल्द का कटा हुआ हिस्सा बादशाह के पास लाना पड़ेगा।” शर्त का मक़सद यह था कि दाऊद फ़िलिस्तिनियों के हाथों मारा जाए।

26 जब दाऊद को यह ख़बर मिली तो उसे साऊल की पेशकश पसंद आई। मुक़र्ररा वक़्त से पहले 27 उसने अपने आदमियों के साथ निकलकर 200 फ़िलिस्तिनियों को मार दिया। लाशों का ख़तना करके वह ज़िल्द के कुल 200 टुकड़े बादशाह के पास लाया ताकि बादशाह का दामाद बने। यह देखकर साऊल ने उस की शादी मीकल से करवा दी।

28 साऊल को मानना पड़ा कि रब दाऊद के साथ है और कि मेरी बेटी मीकल उसे बहुत प्यार करती है। 29 तब वह दाऊद से और भी डरने लगा। इसके बाद वह जीते-जी दाऊद का दुश्मन बना रहा। 30 उन दिनों में फ़िलिस्ती सरदार इसराईल से लड़ते रहे। लेकिन जब भी वह जंग के लिए निकले तो दाऊद साऊल के बाक़ी अफ़सरों की निसबत ज़्यादा कामयाब होता था। नतीजे में उस की शोहरत पूरे मुल्क में फैल गई।

19

यूनतन दाऊद की सिफ़ारिश करता है

1 अब साऊल ने अपने बेटे यूनतन और तमाम मुलाज़िमों को साफ़ बताया कि दाऊद को हलाक करना है। लेकिन दाऊद यूनतन को बहुत प्यारा था, 2 इसलिए उसने उसे आगाह किया, “मेरा बाप आपको मार देने के मवाक़े ढूँढ़ रहा है। कल सुबह ख़बरदार रहें। कहीं छुपकर मेरा इंतज़ार करें। 3 फिर मैं अपने बाप के साथ शहर से निकलकर आपके करीब से गुज़रूँगा। वहाँ मैं उनसे आपका मामला छेड़कर मालूम करूँगा कि वह क्या इरादा रखते हैं। जो कुछ भी वह कहेंगे मैं आपको बता दूँगा।”

4 अगली सुबह जब यूनतन ने अपने बाप से बात की तो उसने दाऊद की सिफ़ारिश करके कहा, “बादशाह अपने खादिम दाऊद का गुनाह न करें, क्योंकि उसने आपका गुनाह नहीं किया बल्कि हमेशा आपके लिए फ़ायदामंद रहा है। 5 उसी ने अपनी जान को ख़तरे में डालकर फ़िलिस्ती को मार डाला, और रब ने उसके वसीले से तमाम इसराईल को बड़ी नज़ात बख़्शी। उस वक़्त आप खुद भी सब कुछ देखकर खुश हुए। तो फिर आप गुनाह करके उस जैसे बेक़सूर आदमी को क्यों बिलावजह मरवाना चाहते हैं?”

6 यूनतन की बातें सुनकर साऊल मान गया। उसने वादा किया, “रब की हयात की क़सम, दाऊद को मारा नहीं जाएगा।” 7 बाद में यूनतन ने दाऊद को बुलाकर उसे सब कुछ बताया, फिर उसे साऊल के पास लाया। तब दाऊद पहले की तरह बादशाह की ख़िदमत करने लगा।

साऊल का दाऊद पर दूसरा हमला

8 एक बार फिर जंग छिड़ गई, और दाऊद निकलकर फ़िलिस्तिनियों से लड़ा। इस दफ़ा भी उसने उन्हें यों शिकस्त दी कि वह फ़रार हो गए। 9 लेकिन एक दिन जब साऊल अपना नेज़ा पकड़े घर में बैठा था तो अल्लाह की भेजी हुई बुरी रूह उस पर ग़ालिब आई। उस वक़्त दाऊद सरोद

बजा रहा था। ¹⁰ अचानक साऊल ने नेजे को फेंककर दाऊद को दीवार के साथ छेद डालने की कोशिश की। लेकिन वह एक तरफ हट गया और नेजा उसके करीब से गुज़रकर दीवार में धँस गया। दाऊद भाग गया और उस रात साऊल के हाथ से बच गया।

¹¹ साऊल ने फ़ौरन अपने आदमियों को दाऊद के घर के पास भेज दिया ताकि वह मकान की पहरादारी करके दाऊद को सुबह के वक़्त क़त्ल कर दें। लेकिन दाऊद की बीवी मीकल ने उसको आगाह कर दिया, “आज रात को ही यहाँ से चले जाएँ, वरना आप नहीं बचेंगे बल्कि कल सुबह ही मार दिए जाएंगे।” ¹² चुनौचे दाऊद घर की खिड़की में से निकला, और मीकल ने उतरने में उस की मदद की। तब दाऊद भागकर बच गया।

¹³ मीकल ने दाऊद की चारपाई पर ब़त रखकर उसके सर पर बकरियों के बाल लगा दिए और बाक़ी हिस्से पर कम्बल बिछा दिया। ¹⁴ जब साऊल के आदमी दाऊद को पकड़ने के लिए आए तो मीकल ने कहा, “वह बीमार है।” ¹⁵ फ़ौजियों ने साऊल को इतला दी तो उसने उन्हें हुक्म दिया, “उसे चारपाई समेत ही मेरे पास ले आओ ताकि उसे मार दूँ।”

¹⁶ जब वह दाऊद को ले जाने के लिए आए तो क्या देखते हैं कि उस की चारपाई पर ब़त पड़ा है जिसके सर पर बकरियों के बाल लगे हैं। ¹⁷ साऊल ने अपनी बेटी को बहुत झिड़का, “तूने मुझे इस तरह धोका देकर मेरे दुश्मन की फ़रार होने में मदद क्यों की? तेरी ही वजह से वह बच गया।” मीकल ने जवाब दिया, “उसने मुझे धमकी दी कि मैं तुझे क़त्ल कर दूँगा अगर तू फ़रार होने में मेरी मदद न करे।”

दाऊद रामा में समुएल के पास

¹⁸ इस तरह दाऊद बच निकला। वह रामा में समुएल के पास फ़रार हुआ और उसे सब कुछ सुनाया जो साऊल ने उसके साथ किया था। फिर दोनों मिलकर नयोत चले गए। वहाँ वह ठहरे। ¹⁹ साऊल को इतला दी गई, “दाऊद रामा के नयोत में ठहरा हुआ है।” ²⁰ उसने फ़ौरन अपने आदमियों को उसे पकड़ने के लिए भेज दिया। जब वह पहुँचे तो देखा कि नबियों का पूरा ग़ुरोह वहाँ नबुव्वत कर रहा है, और समुएल खुद उनकी राहनुमाई कर रहा है। उन्हें देखते ही अल्लाह का रूह साऊल के आदमियों पर नाज़िल हुआ, और वह भी नबुव्वत करने लगे। ²¹ साऊल को इस बात की ख़बर मिली तो उसने मज़ीद आदमियों को रामा भेज दिया। लेकिन वह भी वहाँ पहुँचते ही नबुव्वत करने लगे। साऊल ने तीसरी बार आदमियों को भेज दिया, लेकिन यही कुछ उनके साथ भी हुआ।

²² आखिर में साऊल खुद रामा के लिए रवाना हुआ। चलते चलते वह सीकू के बड़े हौज़ पर पहुँचा। वहाँ उसने लोगों से पूछा, “दाऊद और समुएल कहाँ हैं?” उन्होंने जवाब दिया, “रामा की आबादी नयोत में।”

²³ साऊल अभी नयोत नहीं पहुँचा था कि अल्लाह का रूह उस पर भी नाज़िल हुआ, और वह नबुव्वत करते करते नयोत पहुँच गया। ²⁴ वहाँ वह अपने कपड़ों को उतारकर समुएल के सामने नबुव्वत करता रहा। नबुव्वत करते करते वह ज़मीन पर लेट गया और वहाँ पूरे दिन और पूरी रात पड़ा रहा। इसी वजह से यह कौल मशहूर हुआ, “क्या साऊल को भी नबियों में शुमार किया जाता है?”

20

दाऊद और यूनतन अहद बाँधते हैं

¹ अब दाऊद रामा के नयोत से भी भाग गया। चुपके से वह यूनतन के पास आया और पूछा, “मुझसे क्या ग़लती हुई है? मेरा क्या कुसूर है? मुझसे आपके बाप के खिलाफ़ क्या जुर्म सरज़द हुआ है कि वह मुझे क़त्ल करना चाहते हैं?”

² यूनतन ने एतराज़ किया, “यह कभी नहीं हो सकता! आप नहीं मरेंगे। मेरा बाप तो मुझे हमेशा सब कुछ बता देता है, ख़ाह बात बड़ी हो या छोटी। तो फिर वह ऐसा कोई मनस्ज़बा मुझसे क्यों छुपाए? आपकी यह बात सरासर ग़लत है।”

³ लेकिन दाऊद ने क़सम खाकर इसरार किया, “ज़ाहिर है कि आपको इसके बारे में इल्म नहीं। आपके बाप को साफ़ मालूम है कि मैं आपको पसंद हूँ। ‘वह तो सोचते होंगे, यूनतन को इस बात का इल्म न हो, वरना वह दुख महसूस करेगा।’ लेकिन रब की और आपकी जान की क़सम, मैं बड़े ख़तरे में हूँ, और मौत से बचना मुश्किल ही है।”

⁴ यूनतन ने कहा, “मुझे बताएँ कि मैं क्या करूँ तो मैं उसे करूँगा।” ⁵ तब दाऊद ने अपना मनस्ज़बा पेश किया। “कल नए चाँद की ईद है, और बादशाह तवक्को करेंगे कि मैं उनकी ज़ियाफ़त में शरीक हूँ। लेकिन इस मरतबा मुझे परसों शाम तक बाहर खुले मैदान में छुपा रहने की इजाज़त दें। ⁶ अगर आपके बाप मेरा पता करें तो उन्हें कह देना, ‘दाऊद ने बड़े जोर से मुझसे अपने शहर बैत-लहम को जाने की इजाज़त माँगी। उसे बड़ी जल्दी थी, क्योंकि उसका पूरा खानदान अपनी सालाना क़ुरबानी चढ़ाना चाहता है।’ ⁷ अगर आपके बाप जवाब दें कि ठीक है तो फिर मालूम होगा कि ख़तरा टल गया है। लेकिन अगर वह बड़े गुस्से में आ जाएँ तो यकीन जानें कि वह मुझे नुक़सान पहुँचाने का इरादा रखते हैं। ⁸ बराहे-क़रम मुझ पर मेहरबानी करके याद रखें कि आपने रब के सामने अपने खादिम से अहद बाँधा है। अगर मैं वाकई कुसूरवार ठहरूँ तो आप खुद मुझे मार डालें। लेकिन किसी सूत में भी मुझे अपने बाप के हवाले न करें।”

⁹ यूनतन ने जवाब दिया, “फ़िकर न करें, मैं कभी ऐसा नहीं करूँगा। जब भी मुझे इशारा मिल जाए कि मेरा बाप आपको क़त्ल करने का इरादा रखता है तो मैं ज़रूर आपको फ़ौरन इतला दूँगा।” ¹⁰ दाऊद ने पूछा, “अगर आपके बाप गुस्से में जवाब दें तो कौन मुझे ख़बर पहुँचाएगा?”

¹¹ यूनतन ने जवाब में कहा, “आएँ हम निकलकर खुले मैदान में जाएँ।” दोनों निकले ¹² तो यूनतन ने दाऊद से कहा, “रब इसराईल के खुदा की क़सम, परसों इस वक़्त तक मैं अपने बाप से बात मालूम कर लूँगा। अगर वह आपके बारे में अच्छी सोच रखे और मैं आपको इतला

न दूँ 13 तो रब मुझे सख्त सजा दे। लेकिन अगर मुझे पता चले कि मेरा बाप आपको मार देने पर तुला हुआ है तो मैं आपको इसकी इतला भी दूँगा। इस सूरत में मैं आपको नहीं रोक्कूँगा बल्कि आपको सलामती से जाने दूँगा। रब उसी तरह आपके साथ हो जिस तरह वह पहले मेरे बाप के साथ था। 14 लेकिन दरखास्त है कि मेरे जीते-जी मुझ पर रब की-सी मेहरबानी करें ताकि मैं मर न जाऊँ। 15 मेरे खानदान पर भी हमेशा तक मेहरबानी करें। वह कभी भी आपकी मेहरबानी से महसूस न हो जाए, उस वक्त भी नहीं जब रब ने आपके तमाम दुश्मनों को रूप-जमीन पर से मिटा दिया होगा।”

16 चुनौचे यूनतन ने दाऊद से अहद बाँधकर कहा, “रब दाऊद के दुश्मनों से बदला ले।” 17 वह बोला, “कसम खाएँ कि आप यह अहद उतने पुरख्ता इरादे से कायम रखेंगे जितनी आप मुझसे मुहब्बत रखते हैं।” क्योंकि यूनतन दाऊद को अपनी जान के बराबर अजीज़ रखता था।

18 फिर यूनतन ने अपना मनसूबा पेश किया। “कल तो नए चाँद की ईद है। जल्दी से पता चलेगा कि आप नहीं आए, क्योंकि आपकी कुरसी खाली रहेगी। 19 इसलिए परसों शाम के वक्त खुले मैदान में वहाँ चले जाएँ जहाँ पहले छुप गए थे। पत्थर के ढेर के करीब बैठ जाएँ। 20 उस वक्त मैं घर से निकलकर तीन तीर पत्थर के ढेर की तरफ चलाऊँगा गोया मैं किसी चीज़ को निशाना बनाकर मशक कर रहा हूँ। 21 फिर मैं लड़के को तीरों को ले आने के लिए भेज दूँगा। अगर मैं उसे बता दूँ, ‘तीर उरली तरफ पड़े हैं, उन्हें जाकर ले आओ’ तो आप खौफ खाए बगैर छुपने की जगह से निकलकर मेरे पास आ सकेंगे। रब की हयात की कसम, इस सूरत में कोई खतरा नहीं होगा। 22 लेकिन अगर मैं लड़के को बता दूँ, ‘तीर परली तरफ पड़े हैं’ तो आपको फौरन हिजरत करनी पड़ेगी। इस सूरत में रब खुद आपको यहाँ से भेज रहा होगा। 23 लेकिन जो बातें हमने आज आपस में की हैं रब खुद हमेशा तक इनका गवाह रहे।”

साऊल की दाऊद से अलानिया दुश्मनी

24 चुनौचे दाऊद खुले मैदान में छुप गया। नए चाँद की ईद आई तो बादशाह ज़ियाफत के लिए बैठ गया। 25 मामूल के मुताबिक वह दीवार के पास बैठ गया। अबिनैर उसके साथ बैठा था और यूनतन उसके मुकाबिल। लेकिन दाऊद की जगह खाली रही।

26 उस दिन साऊल ने बात न छेड़ी, क्योंकि उसने सोचा, “दाऊद किसी वजह से नापाक हो गया होगा, इसलिए नहीं आया।”

27 लेकिन अगले दिन जब दाऊद की जगह फिर खाली रही तो साऊल ने यूनतन से पूछा, “यस्सी का बेटा न तो कल, न आज ज़ियाफत में शरीक हुआ है। क्या वजह है?” 28 यूनतन ने जवाब दिया, “दाऊद ने बड़े जोर से मुझसे बैत-लहम जाने की इजाज़त माँगी। 29 उसने कहा, ‘मेहरबानी करके मुझे जाने दें, क्योंकि मेरा खानदान एक खास कुरबानी चढ़ा रहा है, और मेरे भाई ने मुझे आने का हुक्म दिया है। अगर आपको मंज़ूर हो तो बराहे-करम मुझे अपने भाइयों के पास जाने की इजाज़त दें।’ यही वजह है कि वह बादशाह की ज़ियाफत में शरीक नहीं हुआ।”

30 यह सुनकर साऊल आपे से बाहर हो गया। वह गरजा, “हरामज़दे! मुझे खूब मालूम है कि तुने दाऊद का साथ दिया है। शर्म की बात है, तेरे लिए और तेरी माँ के लिए। 31 जब तक यस्सी का बेटा ज़िंदा है तब तक न तू और न तेरी बादशाहत कायम रहेगी। अब जा, उसे ले आ, क्योंकि उसे मरना ही है।”

32 यूनतन ने कहा, “क्यों? उसने क्या किया जो सज़ाए-मौत के लायक है?” 33 जवाब में साऊल ने अपना नेज़ा जोर से यूनतन की तरफ फेंक दिया ताकि उसे मार डाले। यह देखकर यूनतन ने जान लिया कि साऊल दाऊद को कत्ल करने का पुरख्ता इरादा रखता है। 34 बड़े गुस्से के आलम में वह खड़ा हुआ और चला गया। उस दिन उसने खाना खाने से इनकार किया। उसे बहुत दुख था कि मेरा बाप दाऊद की इतनी बेइज्जती कर रहा है।

35 अगले दिन यूनतन सुबह के वक्त घर से निकलकर खुले मैदान में उस जगह आ गया जहाँ दाऊद से मिलना था। एक लड़का उसके साथ था। 36 उसने लड़के को हुक्म दिया, “चलो, उस तरफ भागना शुरू करो जिस तरफ मैं तीरों को चलाऊँगा ताकि तुझे मालूम हो कि वह कहाँ हैं।” चुनौचे लड़का दौड़ने लगा, और यूनतन ने तीर इतने जोर से चलाया कि वह उससे आगे कहीं दूर जा गिरा। 37 जब लड़का तीर के करीब पहुँच गया तो यूनतन ने आवाज़ दी, “तीर परली तरफ है। 38 जल्दी करो, भागकर आगे निकलो और न स्को!” फिर लड़का तीर को उठाकर अपने मालिक के पास वापस आ गया। 39 वह नहीं जानता था कि इसके पीछे क्या मकसद है। सिर्फ यूनतन और दाऊद को इल्म था।

40 फिर यूनतन ने कमान और तीरों को लड़के के सुपुर्द करके उसे हुक्म दिया, “जाओ, सामान लेकर शहर में वापस चले जाओ।” 41 लड़का चला गया तो दाऊद पत्थर के ढेर के जुनूब से निकलकर यूनतन के पास आया। तीन मरतबा वह यूनतन के सामने मुँह के बल झुक गया। एक दूसरे को चूमकर दोनों खूब रोए, खासकर दाऊद। 42 फिर यूनतन बोला, “सलामती से जाएँ! और कभी वह वादे न भूलें जो हमने रब की कसम खाकर एक दूसरे से किए हैं। यह अहद आपके और मेरे और आपकी और मेरी औलाद के दरमियान हमेशा कायम रहे। रब खुद हमारा गवाह है।”

फिर दाऊद रवाना हुआ, और यूनतन शहर को वापस चला गया।

21

दाऊद नोब में अखीमलिक के पास ठहरता है

1 दाऊद नोब में अखीमलिक इमाम के पास गया। अखीमलिक काँपते हुए उससे मिलने के लिए आया और पूछा, “आप अकेले क्यों आए हैं? कोई आपके साथ नहीं।” 2 दाऊद ने जवाब दिया, “बादशाह ने मुझे एक खास जिम्मादारी दी है जिसका जिक्र तक करना मना है। किसी

को भी इसके बारे में जानना नहीं चाहिए। मैंने अपने आदमियों को हुक्म दिया है कि फुलों फुलों जगह पर मेरा इंतज़ार करें।³ अब मुझे ज़रा बताएँ कि खाने के लिए क्या मिल सकता है? मुझे पाँच रोटियाँ दे दें, या जो कुछ भी आपके पास है।”

⁴ इमाम ने जवाब दिया, “मेरे पास आम रोटी नहीं है। मैं आपको सिर्फ़ रब के लिए मखसूसशुदा रोटी दे सकता हूँ। शर्त यह है कि आपके आदमी पिछले दिनों में औरतों से हमबिसतर न हुए हों।”⁵ दाऊद ने उसे तसल्ली देकर कहा, “फ़िकर न करें। पहले की तरह हमें इस मुहिम के दौरान भी औरतों से दूर रहना पड़ा है। मेरे फ़ौजी आम मुहिमों के लिए भी अपने आपको पाक रखते हैं, तो इस दफ़ा वह कहीं ज़्यादा पाक-साफ़ हैं।”

⁶ फिर इमाम ने दाऊद को मखसूसशुदा रोटियाँ दीं यानी वह रोटियाँ जो मुलाकात के ख़ैमे में रब के हुज़ूर रखी जाती थीं और उसी दिन ताज़ा रोटियों से तबदील हुई थीं।⁷ उस वक़्त साऊल के चरवाहों का अदोमी इंचार्ज दोएग वहाँ था। वह किसी मजबूरी के बाइस रब के हुज़ूर ठहरा हुआ था। उस की मौजूदगी में⁸ दाऊद ने अख़ीमलिक से पूछा, “क्या आपके पास कोई नेज़ा या तलवार है? मुझे बादशाह की मुहिम के लिए इतनी जल्दी से निकलना पड़ा कि अपनी तलवार या कोई और हथियार साथ लाने के लिए फ़ुरसत न मिली।”

⁹ अख़ीमलिक ने जवाब दिया, “जी है। वादीए-ऐला में आपके हाथों मारे गए फ़िलिस्ती मर्द जालूत की तलवार मेरे पास है। वह एक कपड़े में लिपटी मेरे बालापोश के पीछे पड़ी है। अगर आप उसे अपने साथ ले जाना चाहें तो ले जाएँ। मेरे पास कोई और हथियार नहीं है।” दाऊद ने कहा, “इस किस्म की तलवार कहीं और नहीं मिलती। मुझे दे दें।”

दाऊद फ़िलिस्ती बादशाह के पास

¹⁰ उसी दिन दाऊद आगे निकला ताकि साऊल से बच सके। इसराईल को छोड़कर वह फ़िलिस्ती शहर जात के बादशाह अकीस के पास गया।¹¹ लेकिन अकीस के मुलाज़िमों ने बादशाह को आगाह किया, “क्या यह मुल्क का बादशाह दाऊद नहीं है? इसी के बारे में इसराईली नाचकर गीत गाते हैं, ‘साऊल ने हज़ार हलाक किए जबकि दाऊद ने दस हज़ार’।”

¹² यह सुनकर दाऊद घबरा गया और जात के बादशाह अकीस से बहुत डरने लगा।¹³ अचानक वह पागल आदमी का रूप भरकर उनके दरमियान अजीब अजीब हरकतें करने लगा। शहर के दरवाज़े के पास जाकर उसने उस पर बेतुके-से निशान लगाए और अपनी दाढ़ी पर राल टपकने दी।

¹⁴ यह देखकर अकीस ने अपने मुलाज़िमों को झिड़का, “तुम इस आदमी को मेरे पास क्यों ले आए हो? तुम खुद देख सकते हो कि यह पागल है।¹⁵ क्या मेरे पास पागलों की कमी है कि तुम इसको मेरे सामने ले आए हो ताकि इस तरह की हरकतें करे? क्या मुझे ऐसे मेहमान की ज़रूरत है?”

22

अदुल्लाम के गार और मोआब में

¹ इस तरह दाऊद जात से बच निकला और अदुल्लाम के गार में छुप गया। जब उसके भाइयों और बाप के घराने को इसकी खबर मिली तो वह बैत-लहम से आकर वहाँ उसके साथ जा मिले।² और लोग भी जल्दी से उसके गिर्द जमा हो गए, ऐसे जो किसी मुसीबत में फँसे हुए थे या अपना कर्ज़ अदा नहीं कर सकते थे और ऐसे भी जिनका दिल तलख़ी से भरा हुआ था। होते होते दाऊद तकरीबन 400 अफ़राद का राहनुमा बन गया।

³ दाऊद अदुल्लाम से रवाना होकर मुल्के-मोआब के शहर मिसफ़ाह चला गया। उसने मोआबी बादशाह से गुज़ारिश की, “मेरे माँ-बाप को उस वक़्त तक यहाँ पनाह दें जब तक मुझे पता न हो कि अल्लाह मेरे लिए क्या इरादा रखता है।”⁴ वह अपने माँ-बाप को बादशाह के पास ले आया, और वह उतनी देर तक वहाँ ठहरे जितनी देर दाऊद अपने पहाड़ी किले में रहा।

⁵ एक दिन जाद नबी ने दाऊद से कहा, “यहाँ पहाड़ी किले में मत रहें बल्कि दुबारा यहदाह के इलाके में वापस चले जाएँ।” दाऊद उस की सुनकर हारत के जंगल में जा बसा।

साऊल नोब के इमामों से बदला लेता है

⁶ साऊल को इतला दी गई कि दाऊद और उसके आदमी दुबारा यहदाह में पहुँच गए हैं। उस वक़्त साऊल अपना नेज़ा पकड़े झाऊ के उस दरख़्त के साय में बैठा था जो ज़िबिया की पहाड़ी पर था। साऊल के इर्दगिर्द उसके मुलाज़िम खड़े थे।⁷ वह पुकार उठा, “बिनयमीन के मर्दों! सुनें, क्या यस्सी का बेटा आप सबको खेत और अंगूर के बाग़ देगा? क्या वह फ़ौज में आपको हज़ार हज़ार और सौ सौ अफ़राद पर मुक़र्र करेगा? ⁸ लगता है कि आप इसकी उम्मीद रखते हैं, वरना आप यों मेरे खिलाफ़ साज़िश न करते। क्योंकि आपमें से किसी ने भी मुझे यह नहीं बताया कि मेरे अपने बेटे ने इस आदमी के साथ अहद बाँधा है। आपको मेरी फ़िकर तक नहीं, वरना मुझे इतला देते कि यूँतन ने मेरे मुलाज़िम दाऊद को उभारा है कि वह मेरी ताक में बैठ जाए। क्योंकि आज तो ऐसा ही हो रहा है।”

⁹ दोएग अदोमी साऊल के अफ़सरों के साथ वहाँ खड़ा था। अब वह बोल उठा, “मैंने यस्सी के बेटे को देखा है। उस वक़्त वह नोब में अख़ीमलिक बिन अख़ीतूब से मिलने आया। ¹⁰ अख़ीमलिक ने रब से दरियाफ़्त किया कि दाऊद का अगला कदम क्या हो। साथ साथ उसने उसे सफ़र के लिए खाना और फ़िलिस्ती मर्द जालूत की तलवार भी दी।”

11 बादशाह ने फौरन अखीमलिक बिन अखीतूब और उसके बाप के पूरे खानदान को बुलाया। सब नोब में इमाम थे। 12 जब पहुँचे तो साऊल बोला, “अखीतूब के बेटे, सुनें।” अखीमलिक ने जवाब दिया, “जी मेरे आका, हुक्म।” 13 साऊल ने इलज़ाम लगाकर कहा, “आपने यस्सी के बेटे दाऊद के साथ मेरे खिलाफ साज़िशें क्यों की हैं? बताएँ, आपने उसे रोटी और तलवार क्यों दी? आपने अल्लाह से दरियाफ्त क्यों किया कि दाऊद आगे क्या करे? आप ही की मदद से वह सरकश होकर मेरी ताक में बैठ गया है, क्योंकि आज तो ऐसा ही हो रहा है।”

14 अखीमलिक बोला, “लेकिन मेरे आका, क्या मुलाज़िमों में से कोई और आपके दामाद दाऊद जैसा वफ़ादार साबित हुआ है? वह तो आपके मुहाफ़िज़ दस्ते का कप्तान और आपके घराने का मुअज़्ज़ज़ मेंबर है। 15 और यह पहली बार नहीं था कि मैंने उसके लिए अल्लाह से हिदायत माँगी। इस मामले में बादशाह मुझ और मेरे खानदान पर इलज़ाम न लगाए। मैंने तो किसी साज़िश का ज़िक्र तक नहीं सुना।”

16 लेकिन बादशाह बोला, “अखीमलिक, तुझे और तेरे बाप के पूरे खानदान को मरना है।” 17 उसने साथ खड़े अपने मुहाफ़िज़ों को हुक्म दिया, “जाकर इमामों को मार दो, क्योंकि यह भी दाऊद के इत्हादी हैं। गो इनको मालूम था कि दाऊद मुझसे भाग रहा है तो भी इन्होंने मुझे इतला न दी।”

लेकिन मुहाफ़िज़ों ने रब के इमामों को मार डालने से इनकार किया। 18 तब बादशाह ने दोएग अदोमी को हुक्म दिया, “फिर तुम ही इमामों को मार दो।” दोएग ने उनके पास जाकर उन सबको क़त्ल कर दिया। कतान का बालापोश पहननेवाले कुल 85 आदमी उस दिन मारे गए। 19 फिर उसने जाकर इमामों के शहर नोब के तमाम बाशिंदों को मार डाला। शहर के मर्द, औरतें, बच्चे शीरखारों समेत, गाय-बैल, गधे और भेड़-बकरियाँ सब उस दिन हलाक हुए।

20 सिर्फ़ एक ही शख्स बच गया, अबियातर जो अखीमलिक बिन अखीतूब का बेटा था। वह भागकर दाऊद के पास आया 21 और उसे इतला दी कि साऊल ने रब के इमामों को क़त्ल कर दिया है। 22 दाऊद ने कहा, “उस दिन जब मैंने दोएग अदोमी को वहाँ देखा तो मुझे मालूम था कि वह ज़रूर साऊल को खबर पहुँचाएगा। यह मेरा ही कुसूर है कि आपके बाप का पूरा खानदान हलाक हो गया है। 23 अब मेरे साथ रहें और मत डरें। जो आदमी आपको क़त्ल करना चाहता है वह मुझे भी क़त्ल करना चाहता है। आप मेरे साथ रहकर महफूज़ रहेंगे।”

23

दाऊद कईला को बचाता है

1 एक दिन दाऊद को खबर मिली कि फिलिस्ती कईला शहर पर हमला करके गाहने की जगहों से अनाज लूट रहे हैं। 2 दाऊद ने रब से दरियाफ्त किया, “क्या मैं जाकर फिलिस्तियों पर हमला करूँ?” रब ने जवाब दिया, “जा, फिलिस्तियों पर हमला करके कईला को बचा।”

3 लेकिन दाऊद के आदमी एतराज़ करने लगे, “हम पहले से यहाँ यहदाह में लोगों की मुखालफ़त से डरते हैं। जब हम कईला जाकर फिलिस्तियों पर हमला करेंगे तो फिर हमारा क्या बनेगा?” 4 तब दाऊद ने रब से दुबारा हिदायत माँगी, और दुबारा उसे यही जवाब मिला, “कईला को जा! मैं फिलिस्तियों को तेरे हवाले कर दूँगा।”

5 चुनौचे दाऊद अपने आदमियों के साथ कईला चला गया। उसने फिलिस्तियों पर हमला करके उन्हें बड़ी शिकस्त दी और उनकी भेड़-बकरियों को छीनकर कईला के बाशिंदों को बचाया। 6 वहाँ कईला में अबियातर दाऊद के लोगों में शामिल हुआ। उसके पास इमाम का बालापोश था।

7 जब साऊल को खबर मिली कि दाऊद कईला शहर में ठहरा हुआ है तो उसने सोचा, “अल्लाह ने उसे मेरे हवाले कर दिया है, क्योंकि अब वह फ़सीलदार शहर में जाकर फँस गया है।” 8 वह अपनी पूरी फ़ौज को जमा करके जंग के लिए तैयारियाँ करने लगा ताकि उतरकर कईला का मुहासरा करे जिसमें दाऊद अब तक ठहरा हुआ था।

9 लेकिन दाऊद को पता चला कि साऊल उसके खिलाफ़ तैयारियाँ कर रहा है। उसने अबियातर इमाम से कहा, “इमाम का बालापोश ले आएँ ताकि हम रब से हिदायत माँगें।” 10 फिर उसने दुआ की, “ऐ रब इसराईल के खुदा, मुझे खबर मिली है कि साऊल मेरी वजह से कईला पर हमला करके उसे बरबाद करना चाहता है। 11 क्या शहर के बाशिंदे मुझे साऊल के हवाले कर देंगे? क्या साऊल वाकई आएगा? ऐ रब, इसराईल के खुदा, अपने खादिम को बता!” रब ने जवाब दिया, “हाँ, वह आएगा।” 12 फिर दाऊद ने मज़ीद दरियाफ्त किया, “क्या शहर के बुजुर्ग मुझे और मेरे लोगों को साऊल के हवाले कर देंगे?” रब ने कहा, “हाँ, वह कर देंगे।”

13 लिहाज़ा दाऊद अपने तकरीबन 600 आदमियों के साथ कईला से चला गया और इधर उधर फिरने लगा। जब साऊल को इतला मिली कि दाऊद कईला से निकलकर बच गया है तो वहाँ जाने से बाज़ आया।

यूनतन दाऊद से मिलता है

14 अब दाऊद बयाबान के पहाड़ी क़िलों और दशते-ज़ीफ़ के पहाड़ी इलाके में रहने लगा। साऊल तो मुसलसल उसका खोज लगाता रहा, लेकिन अल्लाह हमेशा दाऊद को साऊल के हाथ से बचाता रहा। 15 एक दिन जब दाऊद होरिश के करीब था तो उसे इतला मिली कि साऊल आपको हलाक करने के लिए निकला है। 16 उस वक़्त यूनतन ने दाऊद के पास आकर उस की हौसलाअफ़ज़ाई की कि वह अल्लाह पर भरोसा रखे। 17 उसने कहा, “डरें मत। मेरे बाप का हाथ आप तक नहीं पहुँचेगा। एक दिन आप ज़रूर इसराईल के बादशाह बन जाएंगे, और मेरा स्तबा आपके बाद ही आएगा। मेरा बाप भी इस हकीक़त से ख़ूब वाकिफ़ है।” 18 दोनों ने रब के हुज़ूर अहद बाँधा। फिर यूनतन अपने घर चला गया जबकि दाऊद वहाँ होरिश में ठहरा रहा।

दाऊद जीफ में बच जाता है

19 दशते-जीफ में आबाद कुछ लोग साऊल के पास आ गए जो उस वक़्त ज़िबिया में था। उन्होंने कहा, “हम जानते हैं कि दाऊद कहाँ छुप गया है। वह होरिश के पहाड़ी किलों में है, उस पहाड़ी पर जिसका नाम हकीला है और जो यशीमोन के जुनूब में है।” 20 ऐ बादशाह, जब भी आपका दिल चाहे आएँ तो हम उसे पकड़कर आपके हवाले कर देंगे।” 21 साऊल ने जवाब दिया, “रब आपको बरकत बख़्शे कि आपको मुझ पर तरस आया है। 22 अब वापस जाकर मज़ीद तैयारियाँ करें। पता करें कि वह कहाँ आता जाता है और किसने उसे वहाँ देखा है। क्योंकि मुझे बताया गया है कि वह बहुत चालाक है। 23 हर जगह का खोज लगाएँ जहाँ वह छुप जाता है। जब आपको सारी तफ़सीलात मालूम हों तो मेरे पास आएँ। फिर मैं आपके साथ वहाँ पहुँचूँगा। अगर वह वाकई वहाँ कहीं हो तो मैं उसे ज़रूर ढूँढ़ निकालूँगा, खाह मुझे पूरे यहदाह की छानबीन क्यों न करनी पड़े।”

24-25 जीफ के आदमी वापस चले गए। थोड़ी देर के बाद साऊल भी अपनी फ़ौज समेत वहाँ के लिए निकला। उस वक़्त दाऊद और उसके लोग दशते-मऊन में यशीमोन के जुनूब में थे। जब दाऊद को इतला मिली कि साऊल उसका ताक़्क़ुब कर रहा है तो वह रेगिस्तान के मज़ीद जुनूब में चला गया, वहाँ जहाँ बड़ी चटान नज़र आती है। लेकिन साऊल को पता चला और वह फ़ौरन रेगिस्तान में दाऊद के पीछे गया।

26 चलते चलते साऊल दाऊद के करीब ही पहुँच गया। आखिरकार सिर्फ़ एक पहाड़ी उनके दरमियान रह गई। साऊल पहाड़ी के एक दामन में था जबकि दाऊद अपने लोगों समेत दूसरे दामन में भागता हुआ बादशाह से बचने की कोशिश कर रहा था। साऊल अभी उन्हें घेरकर पकड़ने को था 27 कि अचानक कासिद साऊल के पास पहुँचा जिसने कहा, “जल्दी आएँ! फ़िलिस्ती हमारे मुल्क में घुस आए हैं।” 28 साऊल को दाऊद को छोड़ना पड़ा, और वह फ़िलिस्तियों से लड़ने गया। उस वक़्त से पहाड़ी का नाम “अलहदगी की चटान” पड़ गया।

29 दाऊद वहाँ से चला गया और ऐन-जदी के पहाड़ी किलों में रहने लगा।

24

दाऊद साऊल को क़त्ल करने से इनकार करता है

1 जब साऊल फ़िलिस्तियों का ताक़्क़ुब करने से वापस आया तो उसे ख़बर मिली कि दाऊद ऐन-जदी के रेगिस्तान में है। 2 वह तमाम इसराइल के 3,000 चीदा फ़ौजियों को लेकर पहाड़ी बकरियों की चटानों के लिए रवाना हुआ ताकि दाऊद को पकड़ ले।

3 चलते चलते वह भेड़ों के कुछ बाड़ों से गुज़रने लगे। वहाँ एक गार को देखकर साऊल अंदर गया ताकि अपनी हाज़त रफ़ा करे। इतफ़ाक़ से दाऊद और उसके आदमी उसी गार के पिछले हिस्से में छुपे बैठे थे। 4 दाऊद के आदमियों ने आहिस्ता से उससे कहा, “रब ने तो आपसे वादा किया था, ‘मैं तेरे दुश्मन को तेरे हवाले कर दूँगा, और तू जो जी चाहे उसके साथ कर सकेगा।’ अब यह वक़्त आ गया है!” दाऊद रेंगते रेंगते आगे साऊल के करीब पहुँच गया। चुपके से उसने साऊल के लिबास के किनारे का टुकड़ा काट लिया और फिर वापस आ गया। 5 लेकिन जब अपने लोगों के पास पहुँचा तो उसका ज़मीर उसे मलामत करने लगा। 6 उसने अपने आदमियों से कहा, “रब न करे कि मैं अपने आक्रा के साथ ऐसा सुलूक करके रब के मसह किए हुए बादशाह को हाथ लगाऊँ। क्योंकि रब ने खुद उसे मसह करके चुन लिया है।” 7 यह कहकर दाऊद ने उनको समझाया और उन्हें साऊल पर हमला करने से रोक दिया।

थोड़ी देर के बाद साऊल गार से निकलकर आगे चलने लगा। 8 जब वह कुछ फ़ासले पर था तो दाऊद भी निकला और पुकार उठा, “ऐ बादशाह सलामत, ऐ मेरे आक्रा!” साऊल ने पीछे देखा तो दाऊद मुँह के बल झुककर 9 बोला, “जब लोग आपको बताते हैं कि दाऊद आपको नुक़सान पहुँचाने पर तुला हुआ है तो आप क्यों ध्यान देते हैं?” 10 आज आप अपनी आँखों से देख सकते हैं कि यह झूट ही झूट है। गार में आप अल्लाह की मरज़ी से मेरे क़ब्ज़े में आ गए थे। मेरे लोगों ने ज़ोर दिया कि मैं आपको मार दूँ, लेकिन मैंने आपको न छेड़ा। मैं बोला, ‘मैं कभी भी बादशाह को नुक़सान नहीं पहुँचाऊँगा, क्योंकि रब ने खुद उसे मसह करके चुन लिया है।’ 11 मेरे बाप, यह देखें जो मेरे हाथ में है! आपके लिबास का यह टुकड़ा मैं काट सका, और फिर भी मैंने आपको हलाक न किया। अब जान लें कि न मैं आपको नुक़सान पहुँचाने का इरादा रखता हूँ, न मैंने आपका गुनाह किया है। फिर भी आप मेरा ताक़्क़ुब करते हुए मुझे मार डालने के दरपे हैं। 12 रब खुद फ़ैसला करे कि किससे ग़लती हो रही है, आपसे या मुझ से। वही आपसे मेरा बदला ले। लेकिन खुद मैं कभी आप पर हाथ नहीं उठाऊँगा। 13 क़दीम क़ौल यही बात बयान करता है, ‘बदकारों से बदकारी पैदा होती है।’ मेरी नीयत तो साफ़ है, इसलिए मैं कभी ऐसा नहीं करूँगा। 14 इसराइल का बादशाह किसके खिलाफ़ निकल आया है? जिसका ताक़्क़ुब आप कर रहे हैं उस की तो कोई हैसियत नहीं। वह मुरदा कुत्ता या पिस्सू ही है। 15 रब हमारा मुंसिफ़ हो। वही हम दोनों का फ़ैसला करे। वह मेरे मामले पर ध्यान दे, मेरे हक़ में बात करे और मुझे बेइलज़ाम ठहराकर आपके हाथ से बचाए।”

16 दाऊद ख़ामोश हुआ तो साऊल ने पूछा, “दाऊद मेरे बेटे, क्या आपकी आवाज़ है?” और वह फूट फूटकर रोने लगा। 17 उसने कहा, “आप मुझसे ज़्यादा रास्तबाज़ हैं। आपने मुझसे अच्छा सुलूक किया जबकि मैं आपसे बुरा सुलूक करता रहा हूँ। 18 आज आपने मेरे साथ भलाई का सबूत दिया, क्योंकि गो रब ने मुझे आपके हवाले कर दिया था तो भी आपने मुझे हलाक न किया। 19 जब किसी का दुश्मन उसके क़ब्ज़े में आ जाता है तो वह उसे जाने नहीं देता। लेकिन आपने ऐसा ही किया। रब आपको उस मेहरबानी का अज़्र दे जो आपने आज मुझ पर की है। 20 अब मैं जानता हूँ कि आप ज़रूर बादशाह बन जाएंगे, और कि आपके ज़रीए इसराइल की बादशाही कायम रहेगी। 21 चुनौचे रब की क़सम खाकर मुझसे वादा करें कि न आप मेरी औलाद को हलाक करेंगे, न मेरे आबाई घराने में से मेरा नाम मिटा देंगे।”

22 दाऊद ने कसम खाकर साऊल से वादा किया। फिर साऊल अपने घर चला गया जबकि दाऊद ने अपने लोगों के साथ एक पहाड़ी किले में पनाह ले ली।

25

समुएल की मौत

1 उन दिनों में समुएल फौत हुआ। तमाम इसराईल रामा में जनाजे के लिए जमा हुआ। उसका मातम करते हुए उन्होंने उसे उस की खानदानी कब्र में दफन किया।

नाबाल दाऊद की बेइज्जती करता है

उन दिनों में दाऊद दशते-फारान में चला गया।

2-4 मऊन में कालिब के खानदान का एक आदमी रहता था जिसका नाम नाबाल था। वह निहायत अमीर था। करमिल के करीब उस की 3,000 भेड़ें और 1,000 बकरियाँ थीं। बीबी का नाम अबीजेल था। वह जहीन भी थी और खूबसूरत भी। उसके मुकाबले में नाबाल सख्तमिजाज और कमीना था। एक दिन नाबाल अपनी भेड़ों के बाल कतरने के लिए करमिल आया।

जब दाऊद को खबर मिली 5 तो उसने 10 जवानों को भेजकर कहा, “करमिल जाकर नाबाल से मिलें और उसे मेरा सलाम दें। 6 उसे बताना, ‘अल्लाह आपको तवील जिंदगी अता करे। आप की, आपके खानदान की और आपकी तमाम मिलकियत की सलामती हो। 7 सुना है कि भेड़ों के बाल कतरने का वक़्त आ गया है। करमिल में आपके चरवाहे हमेशा हमारे साथ रहे। उस पूरे अरसे में न उन्हें हमारी तरफ से कोई नुकसान पहुँचा, न कोई चीज़ चोरी हुई। 8 अपने लोगों से खुद पूछ लें! वह इसकी तसदीक करेंगे। आज आप खुशी मना रहे हैं, इसलिए मेरे जवानों पर मेहरबानी करें। जो कुछ आप खुशी से दे सकते हैं वह उन्हें और अपने बेटे दाऊद को दे दें।’”

9 दाऊद के आदमी नाबाल के पास गए। उसे दाऊद का सलाम देकर उन्होंने उसका पैगाम दिया और फिर जवाब का इंतज़ार किया। 10 लेकिन नाबाल ने करखत लहजे में कहा, “यह दाऊद कौन है? कौन है यस्सी का बेटा? आजकल बहुत-से ऐसे गुलाम हैं जो अपने मालिक से भागे हुए हैं। 11 मैं अपनी रोटी, अपना पानी और कतरनेवालों के लिए जबह किया गया गोश्त लेकर ऐसे आवारा फिरनेवालों को क्यों दे दूँ? क्या पता है कि यह कहाँ से आए हैं।”

12 दाऊद के आदमी चले गए और दाऊद को सब कुछ बता दिया। 13 तब दाऊद ने हुक्म दिया, “अपनी तलवारें बाँध लो!” सबने अपनी तलवारें बाँध लीं। उसने भी ऐसा किया और फिर 400 अफराद के साथ करमिल के लिए रवाना हुआ। बाक़ी 200 मर्द सामान के पास रहे।

अबीजेल दाऊद का गुस्सा ठंडा करती है

14 इतने में नाबाल के एक नौकर ने उस की बीबी को इतला दी, “दाऊद ने रेगिस्तान में से अपने कासिदों को नाबाल के पास भेजा ताकि उसे मुबारकबाद दें। लेकिन उसने जवाब में गरजकर उन्हें गालियाँ दी हैं, 15 हालाँकि उन लोगों का हमारे साथ सुलूक हमेशा अच्छा रहा है। हम अकसर रेवड़ों को चराने के लिए उनके करीब फिरते रहे, तो भी उन्होंने हमें कभी नुकसान न पहुँचाया, न कोई चीज़ चोरी की। 16 जब भी हम उनके करीब थे तो वह दिन-रात चारदीवारी की तरह हमारी हिफाज़त करते रहे। 17 अब सोच लें कि क्या किया जाए! क्योंकि हमारा मालिक और उसके तमाम घरवाले बड़े ख़तरे में हैं। वह खुद इतना शरीर है कि उससे बात करने का कोई फ़ायदा नहीं।”

18 जितनी जल्दी हो सका अबीजेल ने कुछ सामान इकट्ठा किया जिसमें 200 रोटियाँ, मै की दो मशकें, खाने के लिए तैयार की गई पाँच भेड़ें, भुने हुए अनाज के साढ़े 27 किलोग्राम, किशमिश की 100 और अंजीर की 200 टिक्कियाँ शामिल थीं। सब कुछ गधों पर लादकर 19 उसने अपने नौकरों को हुक्म दिया, “मेरे आगे निकल जाओ, मैं तुम्हारे पीछे पीछे आऊँगी।” अपने शौहर को उसने कुछ न बताया। 20 जब अबीजेल पहाड़ की आड़ में उतरने लगी तो दाऊद अपने आदमियों समेत उस की तरफ बढ़ते हुए नज़र आया। फिर उनकी मुलाकात हुई। 21 दाऊद तो अभी तक बड़े गुस्से में था, क्योंकि वह सोच रहा था, “इस आदमी की मदद करने का क्या फ़ायदा था! हम रेगिस्तान में उसके रेवड़ों की हिफाज़त करते रहे और उस की कोई भी चीज़ गुम न होने दी। तो भी उसने हमारी नेकी के जवाब में हमारी बेइज्जती की है। 22 अल्लाह मुझे सख्त सज़ा दे अगर मैं कल सुबह तक उसके एक आदमी को भी जिंदा छोड़ दूँ।”

23-24 दाऊद को देखकर अबीजेल जल्दी से गधे पर से उतरकर उसके सामने मुँह के बल झुक गई। उसने कहा, “मेरे आका, मुझे ही कुसूरवार ठहराएँ। मेहरबानी करके अपनी खादिमा को बोलने दें और उस की बात सुनें। 25 मेरे मालिक उस शरीर आदमी नाबाल पर ज़्यादा ध्यान न दें। उसके नाम का मतलब अहमक है और वह है ही अहमक। अफ़सोस, मेरी उन आदमियों से मुलाकात नहीं हुई जो आपने हमारे पास भेजे थे। 26 लेकिन रब की और आपकी हयात की कसम, रब ने आपको अपने हाथों से बदला लेने और कातिल बनने से बचाया है। और अल्लाह करे कि जो भी आपसे दुश्मनी रखते और आपको नुकसान पहुँचाना चाहते हैं उन्हें नाबाल की-सी सज़ा मिल जाए। 27 अब गुज़ारिश है कि जो बरकत हमें मिली है उसमें आप भी शरीक हों। जो चीज़ें आपकी खादिमा लाई हैं उन्हें क़बूल करके उन जवानों में तक्रसीम कर दें जो मेरे आका के पीछे हो लिए हैं। 28 जो भी ग़लती हुई है अपनी खादिमा को मुआफ़ कीजिए। रब ज़रूर मेरे आका का घराना हमेशा तक कायम रखेगा, क्योंकि आप रब के दुश्मनों से लड़ते हैं। वह आपको जीते-जी ग़लतियाँ करने से बचाए रखे। 29 जब कोई आपका ताक़ुब करके आपको मार देने की कोशिश करे तो रब आपका खुदा आपकी जान जानदारों की थैली में महफूज़ रखेगा। लेकिन आपके दुश्मनों की जान वह

फलाखन के पत्थर की तरह दूर फेंककर हलाक कर देगा। 30 जब रब अपने तमाम वादे पूरे करके आपको इसराईल का बादशाह बना देगा 31 तो कोई ऐसी बात सामने नहीं आएगी जो ठोकर का बाइस हो। मेरे आक्रा का ज़मीर साफ़ होगा, क्योंकि आप बदला लेकर कातिल नहीं बने होंगे। गुज़ारिश है कि जब रब आपको कामयाबी दे तो अपनी खादिमा को भी याद करें।”

32 दाऊद बहुत खुश हुआ। “रब इसराईल के खुदा की तारीफ़ हो जिसने आज आपको मुझसे मिलने के लिए भेज दिया। 33 आपकी बसीरत मुबारक है! आप मुबारक हैं, क्योंकि आपने मुझे इस दिन अपने हाथों से बदला लेकर कातिल बनने से रोक दिया है। 34 रब इसराईल के खुदा की कसम जिसने मुझे आपको नुक़सान पहुँचाने से रोक दिया, कल सुबह नाबाल के तमाम आदमी हलाक होते अगर आप इतनी जल्दी से मुझसे मिलने न आती।”

35 दाऊद ने अबीजेल की पेशकरदा चीज़ें क़बूल करके उसे स्ख़सत किया और कहा, “सलामती से जाएँ। मैंने आपकी सुनी और आपकी बात मंज़ूर कर ली है।”

रब नाबाल को सज़ा देता है

36 जब अबीजेल अपने घर पहुँची तो देखा कि बहुत रौनक है, क्योंकि नाबाल बादशाह की-सी ज़ियाफ़त करके खुशियाँ मना रहा था। चूँकि वह नशे में धुत था इसलिए अबीजेल ने उसे उस वक़्त कुछ न बताया।

37 अगली सुबह जब नाबाल होश में आ गया तो अबीजेल ने उसे सब कुछ कह सुनाया। यह सुनते ही नाबाल को दौरा पड़ गया, और वह पत्थर-सा बन गया। 38 दस दिन के बाद रब ने उसे मरने दिया। 39 जब दाऊद को नाबाल की मौत की ख़बर मिल गई तो वह पुकारा, “रब की तारीफ़ हो जिसने मेरे लिए नाबाल से लड़कर मेरी बेइज्जती का बदला लिया है। उस की मेहरबानी है कि मैं ग़लत काम करने से बच गया हूँ जबकि नाबाल की बुराई उसके अपने सर पर आ गई है।”

अबीजेल की दाऊद से शादी

कुछ देर के बाद दाऊद ने अपने लोगों को अबीजेल के पास भेजा ताकि वह दाऊद की उसके साथ शादी की दरखास्त पेश करें। 40 चुनौचे उसके मुलाज़िम करमिल में अबीजेल के पास जाकर बोले, “दाऊद ने हमें शादी का पैग़ाम देकर भेजा है।” 41 अबीजेल खड़ी हुई, फिर मुँह के बल झुककर बोली, “मैं उनकी खिदमत में हाज़िर हूँ। मैं अपने मालिक के खादिमों के पाँव धोने तक तैयार हूँ।”

42 वह जल्दी से तैयार हुई और गधे पर बैठकर दाऊद के मुलाज़िमों के साथ रवाना हुई। पाँच नौकरानियाँ उसके साथ चली गईं। यों अबीजेल दाऊद की बीवी बन गई।

43 अब दाऊद की दो बीवियाँ थीं, क्योंकि पहले उस की शादी अखीनुअम से हुई थी जो यज़्रएल से थी। 44 जहाँ तक साऊल की बेटी मीकल का ताल्लुक था साऊल ने उसे दाऊद से लेकर उस की दुबारा शादी फ़लतियेल बिन लैस से करवाई थी जो जल्लीम का रहनेवाला था।

26

दाऊद साऊल को दूसरी बार बचने देता है

1 एक दिन दशते-ज़ीफ़ के कुछ बाशिदे दुबारा ज़िबिया में साऊल के पास आ गए। उन्होंने बादशाह को बताया, “हम जानते हैं कि दाऊद कहाँ छुप गया है। वह उस पहाड़ी पर है जो हकीला कहलाती है और यशीमोन के मुकाबिल है।” 2 यह सुनकर साऊल इसराईल के 3,000 चीदा फ़ौजियों को लेकर दशते-ज़ीफ़ में गया ताकि दाऊद को ढूँड निकाले। 3 हकीला पहाड़ी पर यशीमोन के मुकाबिल वह रुक गए। जो रास्ता पहाड़ पर से गुज़रता है उसके पास उन्होंने अपना कैप लगाया। दाऊद उस वक़्त रेगिस्तान में छुप गया था। जब उसे ख़बर मिली कि साऊल मेरा ताक़क़ूब कर रहा है 4 तो उसने अपने लोगों को मालूम करने के लिए भेजा। उन्होंने वापस आकर उसे इतला दी कि बादशाह वाकई अपनी फ़ौज समेत रेगिस्तान में पहुँच गया है। 5 यह सुनकर दाऊद खुद निकलकर चुपके से उस जगह गया जहाँ साऊल का कैप था। उसको मालूम हुआ कि साऊल और उसका कमाँडर अबिनैर बिन नैर कैप के ऐन बीच में सो रहे हैं जबकि बाक़ी आदमी दायरा बनाकर उनके इर्दगिर्द सो रहे हैं।

6 दो मर्द दाऊद के साथ थे, अखीमलिक हिती और अबीशै बिन ज़स्याह। ज़स्याह योआब का भाई था। दाऊद ने पूछा, “कौन मेरे साथ कैप में घुसकर साऊल के पास जाएगा?” अबीशै ने जवाब दिया, “मैं साथ जाऊँगा।” 7 चुनौचे दोनों रात के वक़्त कैप में घुस आए। सोए हुए फ़ौजियों और अबिनैर से गुज़रकर वह साऊल तक पहुँच गए जो ज़मीन पर लेटा सो रहा था। उसका नेज़ा सर के करीब ज़मीन में गड़ा हुआ था। 8 अबीशै ने आहिस्ता से दाऊद से कहा, “आज अल्लाह ने आपके दुश्मन को आपके कब्ज़े में कर दिया है। अगर इजाज़त हो तो मैं उसे उसके अपने नेजे से ज़मीन के साथ छेद दूँ। मैं उसे एक ही वार में मार दूँगा। दूसरे वार की ज़रूरत ही नहीं होगी।”

9 दाऊद बोला, “न करो! उसे मत मारना, क्योंकि जो रब के मसह किए हुए खादिम को हाथ लगाए वह कुसूरवार ठहरेगा। 10 रब की हयात की कसम, रब खुद साऊल की मौत मुक़र्र करेगा, खाह वह बूढ़ा होकर मर जाए, खाह जंग में लड़ते हुए। 11 रब मुझे इससे महफूज़ रखे कि मैं उसके मसह किए हुए खादिम को नुक़सान पहुँचाऊँ। नहीं, हम कुछ और करेंगे। उसका नेज़ा और पानी की सुराही पकड़ लो। आओ, हम यह चीज़ें अपने साथ लेकर यहाँ से निकल जाते हैं।” 12 चुनौचे वह दोनों चीज़ें अपने साथ लेकर चुपके से चले गए। कैप में किसी को भी पता न चला, कोई न जागा। सब सोए रहे, क्योंकि रब ने उन्हें गहरी नींद सुला दिया था।

13 दाऊद वादी को पार करके पहाड़ी पर चढ़ गया। जब साऊल से फ़ासला काफी था 14 तो दाऊद ने फ़ौज और अबिनैर को ऊँची आवाज़ से पुकारकर कहा, “ऐ अबिनैर, क्या आप मुझे जवाब नहीं देंगे?” अबिनैर पुकारा, “आप कौन हैं कि बादशाह को इस तरह की ऊँची आवाज़ दें?” 15 दाऊद ने तंज़न जवाब दिया, “क्या आप मर्द नहीं हैं? और इसराईल में कौन आप जैसा है? तो फिर आपने अपने बादशाह की सहीह हिफ़ाज़त क्यों न की जब कोई उसे क़त्ल करने के लिए कैप में घुस आया? 16 जो आपने किया वह ठीक नहीं है। रब की हयात की क़सम, आप और आपके आदमी सज़ाए-मौत के लायक़ हैं, क्योंकि आपने अपने मालिक की हिफ़ाज़त न की, गो वह रब का मसह किया हुआ बादशाह है। खुद देख लें, जो नेज़ा और पानी की सुराही बादशाह के सर के पास थे वह कहाँ हैं?”

17 तब साऊल ने दाऊद की आवाज़ पहचान ली। वह पुकारा, “मेरे बेटे दाऊद, क्या आपकी आवाज़ है?” 18 दाऊद ने जवाब दिया, “जी, बादशाह सलामत। मेरे आका, आप मेरा ताक़्क़ुब क्यों कर रहे हैं? मैं तो आपका खादिम हूँ। मैंने क्या किया? मुझसे क्या जुर्म सरज़द हुआ है? 19 गुज़ारिश है कि मेरा आका और बादशाह अपने खादिम की बात सुने। अगर रब ने आपको मेरे खिलाफ़ उकसाया हो तो वह मेरी ग़ल्ला की नज़र क़बूल करे। लेकिन अगर इनसान इसके पीछे हैं तो रब के सामने उन पर लानत! अपनी हरकतों से उन्होंने मुझे मेरी मौस्सी ज़मीन से निकाल दिया है और नतीजे में मैं रब की क़ौम में नहीं रह सकता। हकीकत में वह कह रहे हैं, ‘जाओ, दीगर माबूदों की पूजा करो!’ 20 ऐसा न हो कि मैं वतन से और रब के हज़ूर से दूर मर जाऊँ। इसराईल का बादशाह पिस्सू को ढूँड निकालने के लिए क्यों निकल आया है? वह तो पहाड़ों में मेरा शिकार तीतर के शिकार की तरह कर रहे हैं।”

21 तब साऊल ने इकरार किया, “मैंने गुनाह किया है। दाऊद मेरे बेटे, वापस आएँ। अब से मैं आपको नुक़सान पहुँचाने की कोशिश नहीं करूँगा, क्योंकि आज मेरी जान आपकी नज़र में कीमती थी। मैं बड़ी बेवकूफी कर गया हूँ, और मुझसे बड़ी ग़लती हुई है।”

22 दाऊद ने जवाब में कहा, “बादशाह का नेज़ा यहाँ मेरे पास है। आपका कोई जवान आकर उसे ले जाए। 23 रब हर उस शख्स को अज़्र देता है जो इनसाफ़ करता और वफ़ादार रहता है। आज रब ने आपको मेरे हवाले कर दिया, लेकिन मैंने उसके मसह किए हुए बादशाह को हाथ लगाने से इनकार किया। 24 और मेरी दुआ है कि जितनी कीमती आपकी जान आज मेरी नज़र में थी, उतनी कीमती मेरी जान भी रब की नज़र में हो। वही मुझे हर मुसीबत से बचाए रखे।” 25 साऊल ने जवाब दिया, “मेरे बेटे दाऊद, रब आपको बरकत दे। आइंदा आपको बड़ी कामयाबी हासिल होगी।”

इसके बाद दाऊद ने अपनी राह ली और साऊल अपने घर चला गया।

27

दाऊद दुबारा अकीस के पास

1 इस तज़रबे के बाद दाऊद सोचने लगा, “अगर मैं यहीं ठहर जाऊँ तो किसी दिन साऊल मुझे मार डालेगा। बेहतर है कि अपनी हिफ़ाज़त के लिए फ़िलिस्तिनियों के मुल्क में चला जाऊँ। तब साऊल पूरे इसराईल में मेरा खोज़ लगाने से बाज़ आएगा, और मैं महफूज़ रहूँगा।” 2 चुनौचे वह अपने 600 आदमियों को लेकर जात के बादशाह अकीस बिन माओक के पास चला गया। 3 उनके खानदान साथ थे। दाऊद की दो बीवियाँ अख़ीनुअम यज़्ज़एली और नाबाल की बेवा अबीज़ेल करमिली भी साथ थीं। अकीस ने उन्हें जात शहर में रहने की इजाज़त दी। 4 जब साऊल को ख़बर मिली कि दाऊद ने जात में पनाह ली है तो वह उसका खोज़ लगाने से बाज़ आया।

5 एक दिन दाऊद ने अकीस से बात की, “अगर आपकी नज़रे-क़रम मुझ पर है तो मुझे देहात की किसी आबादी में रहने की इजाज़त दें। क्या ज़रूरत है कि मैं यहाँ आपके साथ दास्ल-हुकूमत में रहूँ?” 6 अकीस मुतफ़िक्क़ हुआ। उस दिन उसने उसे सिक़लाज शहर दे दिया। यह शहर उस वक़्त से यहदाह के बादशाहों की मिलकियत में रहा है। 7 दाऊद एक साल और चार महीने फ़िलिस्ती मुल्क में ठहरा रहा।

8 सिक़लाज से दाऊद अपने आदमियों के साथ मुख़्तलिफ़ जगहों पर हमला करने के लिए निकलता रहा। कभी वह जसूरियों पर धावा बोलते, कभी जिरज़ियों या अमालीकियों पर। यह क़बीले क़दीम ज़माने से यहदाह के जुनूब में शूर और मिसर की सरहद तक रहते थे। 9 जब भी कोई मक़ाम दाऊद के क़ब्ज़े में आ जाता तो वह किसी भी मर्द या औरत को ज़िंदा न रहने देता लेकिन भेड़-बकरियों, गाय-बैलों, गधों, ऊँटों और कपड़ों को अपने साथ सिक़लाज ले जाता।

जब भी दाऊद किसी हमले से वापस आकर बादशाह अकीस से मिलता 10 तो वह पूछता, “आज आपने किस पर छापा मारा?” फिर दाऊद जवाब देता, “यहदाह के जुनूबी इलाके पर,” या “यरहमियेलियों के जुनूबी इलाके पर,” या “क़ीनियों के जुनूबी इलाके पर।” 11 जब भी दाऊद किसी आबादी पर हमला करता तो वह तमाम बाशिंदों को मौत के घाट उतार देता और न मर्द, न औरत को ज़िंदा छोड़कर जात लाता। क्योंकि उसने सोचा, “ऐसा न हो कि फ़िलिस्तिनियों को पता चले कि मैं असल में इसराईली आबादियों पर हमला नहीं कर रहा।”

जितना वक़्त दाऊद ने फ़िलिस्ती मुल्क में गुज़ारा वह ऐसा ही करता रहा। 12 अकीस ने दाऊद पर पूरा भरोसा किया, क्योंकि उसने सोचा, “अब दाऊद को हमेशा तक मेरी खिदमत में रहना पड़ेगा, क्योंकि ऐसी हरकतों से उस की अपनी क़ौम उससे सख़्त मुतनफ़िक्क़ हो गई है।”

28

1 उन दिनों में फ़िलिस्ती इसराईल से लड़ने के लिए अपनी फ़ौजे जमा करने लगे। अकीस ने दाऊद से भी बात की, “तवक्क़ो है कि आप अपने फ़ौजियों समेत मेरे साथ मिलकर जंग के लिए निकलेंगे।”

2 दाऊद ने जवाब दिया, “जस्स। अब आप खुद देखेंगे कि आपका खादिम क्या करने के काबिल है!” अकीस बोला, “ठीक है। पूरी जंग के दौरान आप मेरे मुहाफिज़ होंगे।”

साऊल जादूगरनी की तरफ रुजू करता है

3 उस वक़्त समुएल इंतकाल कर चुका था, और पूरे इसराईल ने उसका मातम करके उसे उसके आबाई शहर रामा में दफनाया था।

उन दिनों में इसराईल में मुरदों से राबिता करनेवाले और ग़ैबदान नहीं थे, क्योंकि साऊल ने उन्हें पूरे मुल्क से निकाल दिया था।

4 अब फिलिस्तिनों ने अपनी लशकरगाह शूनीम के पास लगाई जबकि साऊल ने तमाम इसराईलियों को जमा करके जिलबुअ के पास अपना कैप लगाया। 5 फिलिस्तिनों की बड़ी फौज देखकर वह सख़्त दहशत खाने लगा। 6 उसने रब से हिदायत हासिल करने की कोशिश की, लेकिन कोई जवाब न मिला, न खाब, न मुक़द्दस कुरा डालने से और न नबियों की मारिफ़त। 7 तब साऊल ने अपने मुलाज़िमों को हुक्म दिया, “मेरे लिए मुरदों से राबिता करनेवाली ढूँढो ताकि मैं जाकर उससे मालूमात हासिल कर लूँ।” मुलाज़िमों ने जवाब दिया, “ऐन-दोर में ऐसी औरत है।”

8 साऊल भेस बदलकर दो आदमियों के साथ ऐन-दोर के लिए रवाना हुआ।

रात के वक़्त वह जादूगरनी के पास पहुँच गया और बोला, “मुरदों से राबिता करके उस रूह को पाताल से बुला दें जिसका नाम मैं आपको बताता हूँ।” 9 जादूगरनी ने एतराज़ किया, “क्या आप मुझे मरवाना चाहते हैं? आपको पता है कि साऊल ने तमाम ग़ैबदानों और मुरदों से राबिता करनेवालों को मुल्क में से मिटा दिया है। आप मुझे क्यों फँसाना चाहते हैं?” 10 तब साऊल ने कहा, “रब की हयात की कसम, आपको यह करने के लिए सज़ा नहीं मिलेगी।” 11 औरत ने पूछा, “मैं किस को बुलाऊँ?” साऊल ने जवाब दिया, “समुएल को बुला दें।”

12 जब समुएल औरत को नज़र आया तो वह चीख उठी, “आपने मुझे क्यों धोका दिया? आप तो साऊल हैं!” 13 साऊल ने उसे तसल्ली देकर कहा, “डरें मत। बताएँ तो सही, क्या देख रही हैं?” औरत ने जवाब दिया, “मुझे एक रूह नज़र आ रही है जो चढ़ती चढ़ती ज़मीन में से निकलकर आ रही है।” 14 साऊल ने पूछा, “उस की शक्तो-सूरत कैसी है?” जादूगरनी ने कहा, “चोगे में लिपटा हुआ बूढ़ा आदमी है।”

यह सुनकर साऊल ने जान लिया कि समुएल ही है। वह मुँह के बल ज़मीन पर झुक गया। 15 समुएल बोला, “तूने मुझे पाताल से बुलवाकर क्यों मुज़तरिब कर दिया है?” साऊल ने जवाब दिया, “मैं बड़ी मुसीबत में हूँ। फिलिस्ती मुझसे लड़ रहे हैं, और अल्लाह ने मुझे तर्क कर दिया है। न वह नबियों की मारिफ़त मुझे हिदायत देता है, न खाब के ज़रीए। इसलिए मैंने आपको बुलवाया है ताकि आप मुझे बताएँ कि मैं क्या करूँ।”

16 लेकिन समुएल ने कहा, “रब खुद ही तुझे छोड़कर तेरा दुश्मन बन गया है तो फिर मुझसे दरियाफ़्त करने का क्या फ़ायदा है? 17 रब इस वक़्त तेरे साथ वह कुछ कर रहा है जिसकी पेशगोई उसने मेरी मारिफ़त की थी। उसने तेरे हाथ से बादशाही छीनकर किसी और यानी दाऊद को दे दी है। 18 जब रब ने तुझे अमालीकियों पर उसका सख़्त ग़ज़ब नाज़िल करने का हुक्म दिया था तो तूने उस की न सुनी। अब तुझे इसकी सज़ा भुगतनी पड़ेगी। 19 रब तुझे इसराईल समेत फिलिस्तिनों के हवाले कर देगा। कल ही तू और तेरे बेटे यहाँ मेरे पास पहुँचेंगे। रब तेरी पूरी फौज भी फिलिस्तिनों के कब्ज़े में कर देगा।”

20 यह सुनकर साऊल सख़्त घबरा गया, और वह गिरकर ज़मीन पर दराज़ हो गया। जिस्म की पूरी ताक़त ख़त्म हो गई थी, क्योंकि उसने पिछले पूरे दिन और रात रोज़ा रखा था।

21 जब जादूगरनी ने साऊल के पास जाकर देखा कि उसके रोंगटे खड़े हो गए हैं तो उसने कहा, “जनाब, मैंने आपका हुक्म मानकर अपनी जान खतरे में डाल दी। 22 अब ज़रा मेरी भी सुनें। मुझे इजाज़त दें कि मैं आपको कुछ खाना खिलाऊँ ताकि आप तक्रवियत पाकर वापस जा सकें।” 23 लेकिन साऊल ने इनकार किया, “मैं कुछ नहीं खाऊँगा।” तब उसके आदमियों ने औरत के साथ मिलकर उसे बहुत समझाया, और आखिरकार उसने उनकी सुनी। वह ज़मीन से उठकर चारपाई पर बैठ गया। 24 जादूगरनी के पास मोटा-ताज़ा बछड़ा था। उसे उसने जल्दी से ज़बह करवाकर तैयार किया। उसने कुछ आटा भी लेकर गूँधा और उससे बेखमीरी रोटी बनाई। 25 फिर उसने खाना साऊल और उसके मुलाज़िमों के सामने रख दिया, और उन्होंने खाया। फिर वह उसी रात दुबारा रवाना हो गए।

29

फिलिस्ती दाऊद पर शक करते हैं

1 फिलिस्तिनों ने अपनी फौजों को अफ्रीक के पास जमा किया, जबकि इसराईलियों की लशकरगाह यज़्ज़एल के चशमे के पास थी।

2 फिलिस्ती सरदार जंग के लिए निकलने लगे। उनके पीछे सौ सौ और हजार हजार सिपाहियों के गुरोह हो लिए। आखिर में दाऊद और उसके आदमी भी अकीस के साथ चलने लगे।

3 यह देखकर फिलिस्ती कमाँडरों ने पूछा, “यह इसराईली क्यों साथ जा रहे हैं?” अकीस ने जवाब दिया, “यह दाऊद है, जो पहले इसराईली बादशाह साऊल का फौजी अफसर था और अब काफ़ी देर से मेरे साथ है। जब से वह साऊल को छोड़कर मेरे पास आया है मैंने उसमें ऐब नहीं देखा।”

4 लेकिन फिलिस्ती कमांडर गुस्से से बोले, “उसे उस शहर वापस भेज दें जो आपने उसके लिए मुकर्रर किया है! कहीं ऐसा न हो कि वह हमारे साथ निकलकर अचानक हम पर ही हमला कर दे। क्या अपने मालिक से सुलह कराने का कोई बेहतर तरीका है कि वह अपने मालिक को हमारे कटे हुए सर पेश करे? 5 क्या यह वही दाऊद नहीं जिसके बारे में इसराईली नाचते हुए गाते थे, ‘साऊल ने हजार हलाक किए जबकि दाऊद ने दस हजार?’”

6 चुनौचे अकीस ने दाऊद को बुलाकर कहा, “रब की हयात की कसम, आप दियानतदार हैं, और मेरी खाहिश थी कि आप इसराईल से लड़ने के लिए मेरे साथ निकलें, क्योंकि जब से आप मेरी खिदमत करने लगे हैं मैंने आपमें ऐब नहीं देखा। लेकिन अफसोस, आप सरदारों को पसंद नहीं हैं। 7 इसलिए मेहरबानी करके सलामती से लौट जाएँ और कुछ न करें जो उन्हें बुरा लगे।”

8 दाऊद ने पूछा, “मुझसे क्या गलती हुई है? क्या आपने उस दिन से मुझमें नुक़्स पाया है जब से मैं आपकी खिदमत करने लगा हूँ? मैं अपने मालिक और बादशाह के दुश्मनों से लड़ने के लिए क्यों नहीं निकल सकता?”

9 अकीस ने जवाब दिया, “मेरे नज़दीक तो आप अल्लाह के फ़रिश्ते जैसे अच्छे हैं। लेकिन फिलिस्ती कमांडर इस बात पर बज़िद हैं कि आप इसराईल से लड़ने के लिए हमारे साथ न निकलें। 10 चुनौचे कल सुबह-सवेरे उठकर अपने आदमियों के साथ रवाना हो जाना। जब दिन चढ़े तो देर न करना बल्कि जल्दी से अपने घर चले जाना।”

11 दाऊद और उसके आदमियों ने ऐसा ही किया। अगले दिन वह सुबह-सवेरे उठकर फिलिस्ती मुल्क में वापस चले गए जबकि फिलिस्ती यज़्ज़एल के लिए रवाना हुए।

30

सिकलाज की तबाही और दाऊद का बदला

1 तीसरे दिन जब दाऊद सिकलाज पहुँचा तो देखा कि शहर का सत्यानास हो गया है। उनकी ग़ैरमौजूदगी में अमालीकियों ने दशते-नजब में आकर सिकलाज पर भी हमला किया था। शहर को जलाकर 2 वह तमाम बाशिंदों को छोटों से लेकर बड़ों तक अपने साथ ले गए थे। लेकिन कोई हलाक नहीं हुआ था बल्कि वह सबको अपने साथ ले गए थे। 3 चुनौचे जब दाऊद और उसके आदमी वापस आए तो देखा कि शहर भस्म हो गया है और तमाम बाल-बच्चे छिन गए हैं। 4 वह फूट फूटकर रोने लगे, इतने रोए कि आखिरकार रोने की सकत ही न रही। 5 दाऊद की दो बीवियों अखीनुअम यज़्ज़एली और अबीजेल करमिली को भी असीर कर लिया गया था।

6 दाऊद की जान बड़े खतरे में आ गई, क्योंकि उसके मर्द ग़म के मारे आपस में उसे संगसार करने की बातें करने लगे। क्योंकि बेटे-बेटियों के छिन जाने के बाइस सब सरख़्त रंजीदा थे। लेकिन दाऊद ने रब अपने खुदा में पनाह लेकर तकवियत पाई। 7 उसने अबियातर बिन अखीमलिक को हुक्म दिया, “कुरा डालने के लिए इमाम का बालापोश ले आएँ।” जब इमाम बालापोश ले आया 8 तो दाऊद ने रब से दरियाफ़्त किया, “क्या मैं लुटेरों का ताक्कुब करूँ? क्या मैं उनको जा लूँगा?” रब ने जवाब दिया, “उनका ताक्कुब कर! तू न सिर्फ़ उन्हें जा लेगा बल्कि अपने लोगों को बचा भी लेगा।” 9-10 तब दाऊद अपने 600 मर्दों के साथ रवाना हुआ। चलते चलते वह बसोर नदी के पास पहुँच गए। 200 अफ़राद इतने निढाल हो गए थे कि वह वहीं स्क्र गए। बाकी 400 मर्द नदी को पार करके आगे बढ़े।

11 रास्ते में उन्हें खुले मैदान में एक मिसरी आदमी मिला और उसे दाऊद के पास लाकर कुछ पानी पिलाया और कुछ रोटी, 12 अंजीर की टिक्की का टुकड़ा और किशमिश की दो टिक्कियाँ खिलाईं। तब उस की जान में जान आ गई। उसे तीन दिन और रात से न खाना, न पानी मिला था। 13 दाऊद ने पूछा, “तुम्हारा मालिक कौन है, और तुम कहाँ के हो?” उसने जवाब दिया, “मैं मिसरी गुलाम हूँ, और एक अमालीकी मेरा मालिक है। जब मैं सफ़र के दौरान बीमार हो गया तो उसने मुझे यहाँ छोड़ दिया। अब मैं तीन दिन से यहाँ पड़ा हूँ। 14 पहले हमने करेतियों यानी फिलिस्तियों के जुनूबी इलाके और फिर यहदाह के इलाके पर हमला किया था, खासकर यहदाह के जुनूबी हिस्से पर जहाँ कालिब की औलाद आबाद है। शहर सिकलाज को हमने भस्म कर दिया था।”

15 दाऊद ने सवाल किया, “क्या तुम मुझे बता सकते हो कि यह लुटेरे किस तरफ़ गए हैं?” मिसरी ने जवाब दिया, “पहले अल्लाह की कसम खाकर वादा करें कि आप मुझे न हलाक करेंगे, न मेरे मालिक के हवाले करेंगे। फिर मैं आपको उनके पास ले जाऊँगा।” 16 चुनौचे वह दाऊद को अमालीकी लुटेरों के पास ले गया। जब वहाँ पहुँचे तो देखा कि अमालीकी इधर उधर बिखरे हुए बड़ा ज़शन मना रहे हैं। वह हर तरफ़ खाना खाते और मै पीते हुए नज़र आ रहे थे, क्योंकि जो माल उन्होंने फिलिस्तियों और यहदाह के इलाके से लूट लिया था वह बहुत ज़्यादा था।

17 सुबह-सवेरे जब अभी थोड़ी रौशनी थी दाऊद ने उन पर हमला किया। लड़ते लड़ते अगले दिन की शाम हो गई। दुश्मन हार गया और सबके सब हलाक हुए। सिर्फ़ 400 जवान बच गए जो ऊँटों पर सवार होकर फ़रार हो गए। 18 दाऊद ने सब कुछ छुड़ा लिया जो अमालीकियों ने लूट लिया था। उस की दो बीवियाँ भी सहीह-सलामत मिल गईं। 19 न बच्चा न बुजुर्ग, न बेटा न बेटी, न माल या कोई और लूटी हुई चीज़ रही जो दाऊद वापस न लाया। 20 अमालीकियों के गाय-बैल और भेड़-बकरियाँ दाऊद का हिस्सा बन गईं, और उसके लोगों ने उन्हें अपने रेवड़ों के आगे आगे हाँककर कहा, “यह लूटे हुए माल में से दाऊद का हिस्सा है।”

माले-गनीमत की तकसीम

21 जब दाऊद अपने आदमियों के साथ वापस आ रहा था तो जो 200 आदमी निढाल होने के बाइस बसोर नदी से आगे न जा सके वह भी उनसे आ मिले। दाऊद ने सलाम करके उनका हाल पूछा। 22 लेकिन बाकी आदमियों में कुछ शरारती लोग बुड़बुड़ाने लगे, “यह हमारे साथ लड़ने के लिए आगे न निकले, इसलिए इन्हें लूटे हुए माल का हिस्सा पाने का हक नहीं। बस वह अपने बाल-बच्चों को लेकर चले जाएँ।”

23 लेकिन दाऊद ने इनकार किया। “नहीं, मेरे भाइयो, ऐसा मत करना! यह सब कुछ रब की तरफ से है। उसी ने हमें महफूज रखकर हमलाआवर लुटेरों पर फतह बख्शी। 24 तो फिर हम आपकी बात किस तरह मानें? जो पीछे रहकर सामान की हिफाजत कर रहा था उसे भी उतना ही मिलेगा जितना कि उसे जो दुश्मन से लड़ने गया था। हम यह सब कुछ बराबर बराबर तकसीम करेंगे।”

25 उस वक़्त से यह उसूल बन गया। दाऊद ने इसे इसराईली कानून का हिस्सा बना दिया जो आज तक जारी है। 26 सिकलाज वापस पहुँचने पर दाऊद ने लूटे हुए माल का एक हिस्सा यहदाह के बुज़ुर्गों के पास भेज दिया जो उसके दोस्त थे। साथ साथ उसने पैगाम भेजा, “आपके लिए यह तोहफा रब के दुश्मनों से लूट लिया गया है।” 27 यह तोहफे उसने ज़ैल के शहरों में भेज दिए : बैतेल, रामात-नजब, यत्तीर, 28 अरोईर, सिफ़मोत, इस्तिमुअ, 29-31 रकल, हूरमा, बोर-असान, अताक और हबरून। इसके अलावा उसने तोहफे यरहमियेलियों, क्रीनियों और बाक़ी उन तमाम शहरों को भेज दिए जिनमें वह कभी ठहरा था।

31

साऊल और उसके बेटों का अंजाम

1 इतने में फिलिस्तिनियों और इसराईलियों के दरमियान जंग छिड़ गई थी। लड़ते लड़ते इसराईली फ़रार होने लगे, लेकिन बहुत-से लोग जिलबुअ के पहाड़ी सिलसिले पर शहीद हो गए।

2 फिर फिलिस्ती साऊल और उसके बेटों यूनतन, अबीनदाब और मलकीशुअ के पास जा पहुँचे। तीनों बेटे हलाक हो गए 3 जबकि लड़ाई साऊल के इर्दगिर्द उरूज तक पहुँच गई। फिर वह तीरअंदाज़ों का निशाना बनकर बुरी तरह ज़खमी हो गया। 4 उसने अपने सिलाहबरदार को हुक्म दिया, “अपनी तलवार मियान से खींचकर मुझे मार डाल, वरना यह नामखतून मुझे छेदकर बेइज्जत करेंगे।” लेकिन सिलाहबरदार ने इनकार किया, क्योंकि वह बहुत डरा हुआ था। आखिर में साऊल अपनी तलवार लेकर खुद उस पर गिर गया।

5 जब सिलाहबरदार ने देखा कि मेरा मालिक मर गया है तो वह भी अपनी तलवार पर गिरकर मर गया। 6 यों उस दिन साऊल, उसके तीन बेटे, उसका सिलाहबरदार और उसके तमाम आदमी हलाक हो गए।

7 जब मैदाने-यज़्रएल के पार और दरियाए-यरदन के पार रहनेवाले इसराईलियों को खबर मिली कि इसराईली फ़ौज भाग गई और साऊल अपने बेटों समेत मारा गया है तो वह अपने शहरों को छोड़कर भाग निकले, और फिलिस्ती छोड़े हुए शहरों पर क़ब्ज़ा करके उनमें बसने लगे।

8 अगले दिन फिलिस्ती लाशों को लूटने के लिए दुबारा मैदाने-जंग में आ गए। जब उन्हें जिलबुअ के पहाड़ी सिलसिले पर साऊल और उसके तीनों बेटे मुरदा मिले 9 तो उन्होंने साऊल का सर काटकर उसका ज़िरा-बकतर उतार लिया और कासिदों को अपने पूरे मुल्क में भेजकर अपने बुतों के मंदिर में और अपनी क्रौम को फतह की इतला दी। 10 साऊल का ज़िरा-बकतर उन्होंने अस्तारात देवी के मंदिर में महफूज कर लिया और उस की लाश को बैत-शान की फ़सील से लटका दिया।

11 जब यबीस-जिलियाद के बाशिंदों को खबर मिली कि फिलिस्तिनियों ने साऊल की लाश के साथ क्या कुछ किया है 12 तो शहर के तमाम लड़ने के काबिल आदमी बैत-शान के लिए रवाना हुए। पूरी रात चलते हुए वह शहर के पास पहुँच गए। साऊल और उसके बेटों की लाशों को फ़सील से उतारकर वह उन्हें यबीस को ले गए। वहाँ उन्होंने लाशों को भस्म कर दिया 13 और बची हुई हड्डियों को शहर में झाऊ के दरख्त के साथ में दफ़नाया। उन्होंने रोज़ा रखकर पूरे हफ़ते तक उनका मातम किया।

2 समुएल

दाऊद को साऊल और यूनतन की मौत की खबर मिलती है

1 जब दाऊद अमालीकियों को शिकस्त देने से वापस आया तो साऊल बादशाह मर चुका था। वह अभी दो ही दिन सिकलाज में ठहरा था 2 कि एक आदमी साऊल की लशकरगाह से पहुँचा। दुख के इजहार के लिए उसने अपने कपड़ों को फाड़कर अपने सर पर खाक डाल रखी थी। दाऊद के पास आकर वह बड़े एहताराम के साथ उसके सामने झुक गया। 3 दाऊद ने पूछा, “आप कहाँ से आए हैं?” आदमी ने जवाब दिया, “मैं बाल बाल बचकर इसराईली लशकरगाह से आया हूँ।” 4 दाऊद ने पूछा, “बताएँ, हालात कैसे हैं?” उसने बताया, “हमारे बहुत-से आदमी मैदाने-जंग में काम आए। बाक़ी भाग गए हैं। साऊल और उसका बेटा यूनतन भी हलाक हो गए हैं।”

5 दाऊद ने सवाल किया, “आपको कैसे मालूम हुआ कि साऊल और यूनतन मर गए हैं?” 6 जवान ने जवाब दिया, “इतफ़ाक़ से मैं जिलबुअ के पहाड़ी सिलसिले पर से गुज़र रहा था। वहाँ मुझे साऊल नज़र आया। वह नेज़े का सहारा लेकर खड़ा था। दुश्मन के रथ और घुड़सवार तकरीबन उसे पकड़ने हीवाले थे 7 कि उसने मुड़कर मुझे देखा और अपने पास बुलाया। मैंने कहा, ‘जी, मैं हाज़िर हूँ।’ 8 उसने पूछा, ‘तुम कौन हो?’ मैंने जवाब दिया, ‘मैं अमालीकी हूँ।’ 9 फिर उसने मुझे हुक्म दिया, ‘आओ और मुझे मार डालो! क्योंकि गो मैं ज़िंदा हूँ मेरी जान निकल रही है।’ 10 चुनौचे मैंने उसे मार दिया, क्योंकि मैं जानता था कि बचने का कोई इमकान नहीं रहा था। फिर मैं उसका ताज और बाज़ूबंद लेकर अपने मालिक के पास यहाँ ले आया हूँ।”

11 यह सब कुछ सुनकर दाऊद और उसके तमाम लोगों ने ग़म के मारे अपने कपड़े फाड़ लिए। 12 शाम तक उन्होंने रो रोकर और रोज़ा रखकर साऊल, उसके बेटे यूनतन और रब के उन बाक़ी लोगों का मातम किया जो मारे गए थे।

13 दाऊद ने उस जवान से जो उनकी मौत की खबर लाया था पूछा, “आप कहाँ के हैं?” उसने जवाब दिया, “मैं अमालीकी हूँ जो अजनबी के तौर पर आपके मुल्क में रहता हूँ।” 14 दाऊद बोला, “आपने रब के मसह किए हुए बादशाह को क़त्ल करने की ज़ुरत कैसे की?” 15 उसने अपने किसी जवान को बुलाकर हुक्म दिया, “इसे मार डालो!” उसी वक़्त जवान ने अमालीकी को मार डाला। 16 दाऊद ने कहा, “आपने अपने आपको खुद मुजरिम ठहराया है, क्योंकि आपने अपने मुँह से इक़्रार किया है कि मैंने रब के मसह किए हुए बादशाह को मार दिया है।”

साऊल और यूनतन पर मातम का गीत

17 फिर दाऊद ने साऊल और यूनतन पर मातम का गीत गाया। 18 उसने हिदायत दी कि यहदाह के तमाम बाशिंदे यह गीत याद करें। गीत का नाम ‘कमान का गीत’ है और ‘याशर की किताब’ में दर्ज है। गीत यह है,

19 “हाय, ऐ इसराईल! तेरी शानो-शौकत तेरी बुलंदियों पर मारी गई है। हाय, तेरे सूरमे किस तरह गिर गए हैं!

20 जात में जाकर यह ख़बर मत सुनाना। अस्कलून की गलियों में इसका एलान मत करना, वरना फिलिस्तिनों की बेटियाँ खुशी मनाएँगी, नामख़तूनों की बेटियाँ फ़तह के नारे लगाएँगी।

21 ऐ जिलबुअ के पहाड़ो! ऐ पहाड़ी ढलानो! आइंदा तुम पर न ओस पड़े, न बारिश बरसे। क्योंकि सूरमाओं की ढाल नापाक हो गई है। अब से साऊल की ढाल तेल मलकर इस्तेमाल नहीं की जाएगी।

22 यूनतन की कमान ज़बरदस्त थी, साऊल की तलवार कभी ख़ाली हाथ न लौटी। उनके हथियारों से हमेशा दुश्मन का खून टपकता रहा, वह सूरमाओं की चरबी से चमकते रहे।

23 साऊल और यूनतन कितने प्यारे और मेहरबान थे! जीते-जी वह एक दूसरे के करीब रहे, और अब मौत भी उन्हें अलग न कर सकी। वह उक्राब से तेज़ और शेरबबर से ताक़तवर थे।

24 ऐ इसराईल की ख़वातीन! साऊल के लिए आँसू बहाएँ। क्योंकि उसी ने आपको किरमिज़ी रंग के शानदार कपड़ों से मुलबबस किया, उसी ने आपको सोने के ज़ेवरात से आरास्ता किया।

25 हाय, हमारे सूरमे लड़ते लड़ते शहीद हो गए हैं। हाय ऐ इसराईल, यूनतन मुरदा हालत में तेरी बुलंदियों पर पड़ा है।

26 ऐ यूनतन मेरे भाई, मैं तेरे बारे में कितना दुखी हूँ। तू मुझे कितना अजीज़ था। तेरी मुझसे मुहब्बत अनोखी थी, वह औरतों की मुहब्बत से भी अनोखी थी।

27 हाय, हाय! हमारे सूरमे किस तरह गिरकर शहीद हो गए हैं। जंग के हथियार तबाह हो गए हैं।”

2

दाऊद यहदाह का बादशाह बन जाता है

1 इसके बाद दाऊद ने रब से दरियाफ्त किया, “क्या मैं यहदाह के किसी शहर में वापस चला जाऊँ?” रब ने जवाब दिया, “हाँ, वापस जा।” दाऊद ने सवाल किया, “मैं किस शहर में जाऊँ?” रब ने जवाब दिया, “हबस्न में।” 2 चुनौचे दाऊद अपनी दो बीवियों अखीनुअम यज़्ज़एली और नाबाल की बेवा अबीजेल करमिली के साथ हबस्न में जा बसा।

3 दाऊद ने अपने आदमियों को भी उनके खानदानों समेत हबस्न और गिर्दो-नवाह की आबादियों में मुतक्रिल कर दिया। 4 एक दिन यहदाह के आदमी हबस्न में आए और दाऊद को मसह करके अपना बादशाह बना लिया।

जब दाऊद को खबर मिल गई कि यबीस-जिलियाद के मर्दों ने साऊल को दफना दिया है 5 तो उसने उन्हें पैगाम भेजा, “रब आपको इसके लिए बरकत दे कि आपने अपने मालिक साऊल को दफन करके उस पर मेहरबानी की है। 6 जवाब में रब आप पर अपनी मेहरबानी और वफादारी का इज़हार करे। मैं भी इस नेक अमल का अज़्र दूँगा। 7 अब मज़बूत और दिलेर हों। आपका आका साऊल तो फौत हुआ है, लेकिन यहदाह के कबीले ने मुझे उस की जगह चुन लिया है।”

इशबोसत इसराइल का बादशाह बन जाता है

8 इतने में साऊल की फौज के कर्माँडर अबिनैर बिन नैर ने साऊल के बेटे इशबोसत को महनायम शहर में ले जाकर 9 बादशाह मुकर्रर कर दिया। जिलियाद, यज़्ज़एल, आशर, इफ़राईम, बिनयमीन और तमाम इसराइल उसके कब्जे में रहे। 10 सिर्फ यहदाह का कबीला दाऊद के साथ रहा। इशबोसत 40 साल की उम्र में बादशाह बना, और उस की हुकूमत दो साल कायम रही। 11 दाऊद हबस्न में यहदाह पर साढे सात साल हुकूमत करता रहा।

इसराइल और यहदाह के दरमियान जंग

12 एक दिन अबिनैर इशबोसत बिन साऊल के मुलाज़िमों के साथ महनायम से निकलकर ज़िबऊन आया। 13 यह देखकर दाऊद की फौज योआब बिन ज़रूयाह की राहनुमाई में उनसे लड़ने के लिए निकली। दोनों फौजों की मुलाकात ज़िबऊन के तालाब पर हुई। अबिनैर की फौज तालाब की उरली तरफ़ स्क गई और योआब की फौज परली तरफ़। 14 अबिनैर ने योआब से कहा, “आओ, हमारे चंद जवान हमारे सामने एक दूसरे का मुकाबला करें।” योआब बोला, “ठीक है।” 15 चुनौचे हर फौज ने बारह जवानों को चुनकर मुकाबले के लिए पेश किया। इशबोसत और बिनयमीन के कबीले के बारह जवान दाऊद के बारह जवानों के मुकाबले में खड़े हो गए। 16 जब मुकाबला शुरू हुआ तो हर एक ने एक हाथ से अपने मुखालिफ़ के बालों को पकड़कर दूसरे हाथ से अपनी तलवार उसके पेट में घोंप दी। सबके सब एक साथ मर गए। बाद में ज़िबऊन की इस जगह का नाम खिलकत-हज़्ज़रीम पड़ गया।

17 फिर दोनों फौजों के दरमियान निहायत सख्त लड़ाई छिड़ गई। लड़ते लड़ते अबिनैर और उसके मर्द हार गए। 18 योआब के दो भाई अबीशै और असाहेल भी लड़ाई में हिस्सा ले रहे थे। असाहेल गज़ाल की तरह तेज़ दौड़ सकता था। 19 जब अबिनैर शिकस्त खाकर भागने लगा तो असाहेल सीधा उसके पीछे पड़ गया और न दाई, न बाई तरफ़ हटा। 20 अबिनैर ने पीछे देखकर पूछा, “क्या आप ही हैं, असाहेल?” उसने जवाब दिया, “जी, मैं ही हूँ।” 21 अबिनैर बोला, “दाई या बाई तरफ़ हटकर किसी और को पकड़ें! जवानों में से किसी से लड़कर उसके हथियार और ज़िरा-बकतर उतारें।”

लेकिन असाहेल उसका ताक्कुब करने से बाज़ न आया। 22 अबिनैर ने उसे आगाह किया, “खबरदार। मेरे पीछे से हट जाँ, वरना आपके मार देने पर मजबूर हो जाऊँगा। फिर आपके भाई योआब को किस तरह मुँह दिखाऊँगा?” 23 तो भी असाहेल ने पीछा न छोड़ा। यह देखकर अबिनैर ने अपने नेजे का दस्ता इतने जोर से उसके पेट में घोंप दिया कि उसका सिरा दूसरी तरफ़ निकल गया। असाहेल वहीं गिरकर जान-बहक हो गया। जिसने भी वहाँ से गुज़रकर यह देखा वह वहीं स्क गया।

24 लेकिन योआब और अबीशै अबिनैर का ताक्कुब करते रहे। जब सूरज गुरूब होने लगा तो वह एक पहाड़ी के पास पहुँच गए जिसका नाम अम्मा था। यह जियाह के मुकाबिल उस रास्ते के पास है जो मुसाफ़िर को ज़िबऊन से रेगिस्तान में पहुँचाता है। 25 बिनयमीन के कबीले के लोग वहाँ पहाड़ी पर अबिनैर के पीछे जमा होकर दुबारा लड़ने के लिए तैयार हो गए। 26 अबिनैर ने योआब को आवाज़ दी, “क्या यह ज़रूरी है कि हम हमेशा तक एक दूसरे को मौत के घाट उतारते जाएँ? क्या आपको समझ नहीं आई कि ऐसी हरकतें सिर्फ़ तलख़ी पैदा करती हैं? आप कब अपने मर्दों को हुक्म देंगे कि वह अपने इसराइली भाइयों का ताक्कुब करने से बाज़ आएँ?”

27 योआब ने जवाब दिया, “रब की हयात की कसम, अगर आप लड़ने का हुक्म न देते तो मेरे लोग आज सुबह ही अपने भाइयों का ताक्कुब करने से बाज़ आ जाते।” 28 उसने नरसिंगा बजा दिया, और उसके आदमी स्ककर दूसरों का ताक्कुब करने से बाज़ आए। यों लड़ाई खत्म हो गई।

29 उस पूरी रात के दौरान अबिनैर और उसके आदमी चलते गए। दरियाए-यरदन की वादी में से गुज़रकर उन्होंने दरिया को पार किया और फिर गहरी घाटी में से होकर महनायम पहुँच गए।

30 योआब भी अबिनैर और उसके लोगों को छोड़कर वापस चला गया। जब उसने अपने आदमियों को जमा करके गिना तो मालूम हुआ कि असाहेल के अलावा दाऊद के 19 आदमी मारे गए हैं। 31 इसके मुकाबले में अबिनैर के 360 आदमी हलाक हुए थे। सब बिनयमीन के कबीले के थे। 32 योआब और उसके साथियों ने असाहेल की लाश उठाकर उसे बैत-लहम में उसके बाप की कब्र में दफन किया। फिर उसी रात अपना सफर जारी रखकर वह पौ फटते वक़्त हबस्न पहुँच गए।

3

1 साऊल के बेटे इशबोसत और दाऊद के दरमियान यह जंग बड़ी देर तक जारी रही। लेकिन आहिस्ता आहिस्ता दाऊद जोर पकड़ता गया जबकि इशबोसत की ताकत कम होती गई।

दाऊद का खानदान हबर्न में

2 हबर्न में दाऊद के बाज बेटे पैदा हुए। पहले का नाम अमनोन था। उस की माँ अखीनुअम यज़्ज़ली थी। 3 फिर किलियाब पैदा हुआ जिसकी माँ नाबाल की बेवा अबीजेल करमिली थी। तीसरा बेटा अबीसलूम था। उस की माँ माका थी जो जसूर के बादशाह तलमी की बेटी थी। 4 चौथे का नाम अदूनियाह था। उस की माँ हज्जीत थी। पाँचवाँ बेटा सफ़तियाह था। उस की माँ अबीताल थी। 5 छठे का नाम इतरियाम था। उस की माँ इजला थी। यह छः बेटे हबर्न में पैदा हुए।

अबिनैर इशबोसत से झगड़ता है

6 जितनी देर तक इशबोसत और दाऊद के दरमियान जंग रही, उतनी देर तक अबिनैर साऊल के घराने का वफ़ादार रहा।

7 लेकिन एक दिन इशबोसत अबिनैर से नाराज़ हुआ, क्योंकि वह साऊल मरहम की एक दाश्ता से हमबिसतर हो गया था। औरत का नाम रिसफ़ा बित ऐयाह था। इशबोसत ने शिकायत की, “आपने मेरे बाप की दाश्ता से ऐसा सुलूक क्यों किया?” 8 अबिनैर बड़े गुस्से में आकर गरजा, “क्या मैं यहदाह का कुत्ता * हूँ कि आप मुझे ऐसा रवैया दिखाते हैं? आज तक मैं आपके बाप के घराने और उसके रिश्तेदारों और दोस्तों के लिए लड़ता रहा हूँ। मेरी ही वजह से आप अब तक दाऊद के हाथ से बचे रहे हैं। क्या यह इसका मुआवज़ा है? क्या एक ऐसी औरत के सबब से आप मुझे मुजरिम ठहरा रहे हैं? 9-10 अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे अगर अब से हर मुमकिन कोशिश न करूँ कि दाऊद पूरे इसराइल और यहदाह पर बादशाह बन जाए, शिमाल में दान से लेकर जुनूब में बैर-सबा तक। आखिर रब ने खुद कसम खाकर दाऊद से वादा किया है कि मैं बादशाही साऊल के घराने से छीनकर तुझे दूँगा।”

11 यह सुनकर इशबोसत अबिनैर से इतना डर गया कि मज़ीद कुछ कहने की ज़रूरत जाती रही।

अबिनैर के दाऊद से मुज़ाकरात

12 अबिनैर ने दाऊद को पैग़ाम भेजा, “मुल्क किसका है? मेरे साथ मुआहदा कर लें तो मैं पूरे इसराइल को आपके साथ मिला दूँगा।”

13 दाऊद ने जवाब दिया, “ठीक है, मैं आपके साथ मुआहदा करता हूँ। लेकिन एक ही शर्त पर, आप साऊल की बेटी मीकल को जो मेरी बीवी है मेरे घर पहुँचाएँ, वरना मैं आपसे नहीं मिलूँगा।” 14 दाऊद ने इशबोसत के पास भी कासिद भेजकर तकाज़ा किया, “मुझे मेरी बीवी मीकल जिससे शादी करने के लिए मैंने सौ फ़िलिस्तिनियों को मारा वापस कर दें।” 15 इशबोसत मान गया। उसने हुक्म दिया कि मीकल को उसके मौजूदा शौहर फ़लतियेल बिन लैस से लेकर दाऊद को भेजा जाए। 16 लेकिन फ़लतियेल उसे छोड़ना नहीं चाहता था। वह रोते रोते बहरीम तक अपनी बीवी के पीछे चलता रहा। तब अबिनैर ने उससे कहा, “अब जाओ! वापस चले जाओ!” तब वह वापस चला।

17 अबिनैर ने इसराइल के बुजुर्गों से भी बात की, “आप तो काफ़ी देर से चाहते हैं कि दाऊद आपका बादशाह बन जाए। 18 अब कदम उठाने का वक़्त आ गया है! क्योंकि रब ने दाऊद से वादा किया है, ‘अपने खादिम दाऊद से मैं अपनी कौम इसराइल को फ़िलिस्तिनियों और बाक़ी तमाम दुश्मनों के हाथ से बचाऊँगा।’” 19 यही बात अबिनैर ने बिनयमीन के बुजुर्गों के पास जाकर भी की। इसके बाद वह हबर्न में दाऊद के पास आया ताकि उसके सामने इसराइल और बिनयमीन के बुजुर्गों का फैसला पेश करे।

20 बीस आदमी अबिनैर के साथ हबर्न पहुँच गए। उनका इस्तक़बाल करके दाऊद ने ज़ियाफ़त की। 21 फिर अबिनैर ने दाऊद से कहा, “अब मुझे इजाज़त दें। मैं अपने आक्रा और बादशाह के लिए तमाम इसराइल को जमा कर लूँगा ताकि वह आपके साथ अहद बाँधकर आपको अपना बादशाह बना लें। फिर आप उस पूरे मुल्क पर हुक्मत करेंगे जिस तरह आपका दिल चाहता है।” फिर दाऊद ने अबिनैर को सलामती से सख़सत कर दिया।

अबिनैर को क़त्ल किया जाता है

22 थोड़ी देर के बाद योआब दाऊद के आदमियों के साथ किसी लड़ाई से वापस आया। उनके पास बहुत-सा लूटा हुआ माल था। लेकिन अबिनैर हबर्न में दाऊद के पास नहीं था, क्योंकि दाऊद ने उसे सलामती से सख़सत कर दिया था। 23 जब योआब अपने आदमियों के साथ शहर में दाख़िल हुआ तो उसे इत्तला दी गई, “अबिनैर बिन नैर बादशाह के पास था, और बादशाह ने उसे सलामती से सख़सत कर दिया है।” 24 योआब फ़ौरन बादशाह के पास गया और बोला, “आपने यह क्या किया है? जब अबिनैर आपके पास आया तो आपने उसे क्यों सलामती से सख़सत किया? अब उसे पकड़ने का मौक़ा जाता रहा है। 25 आप तो उसे जानते हैं। हकीकत में वह इसलिए आया कि आपको मनवाकर आपके आने जाने और बाक़ी कामों के बारे में मालूमात हासिल करे।”

26 योआब ने दरबार से निकलकर कासिदों को अबिनैर के पीछे भेज दिया। वह अभी सफ़र करते करते सीरा के हौज़ पर से गुज़र रहा था कि कासिद उसके पास पहुँच गए। उनकी दावत पर वह उनके साथ वापस गया। लेकिन बादशाह को इसका इल्म न था। 27 जब अबिनैर दुबारा हबर्न में दाख़िल होने लगा तो योआब शहर के दरवाज़े में उसका इस्तक़बाल करके उसे एक तरफ़ ले गया जैसे वह उसके साथ कोई ख़ुफ़िया

* 3:8 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : कुत्ते का सर

बात करना चाहता हो। लेकिन अचानक उसने अपनी तलवार को मियान से खींचकर अबिनैर के पेट में घोंप दिया। इस तरह योआब ने अपने भाई असाहेल का बदला लेकर अबिनैर को मार डाला।

28 जब दाऊद को इसकी इतला मिली तो उसने एलान किया, “मैं रब के सामने कसम खाता हूँ कि बेकुसूर हूँ। मेरा अबिनैर की मौत में हाथ नहीं था। इस नाते से मुझ पर और मेरी बादशाही पर कभी भी इलज़ाम न लगाया जाए, 29 क्योंकि योआब और उसके बाप का घराना कुसूरवार है। रब उसे और उसके बाप के घराने को मुनासिब सज़ा दे। अब से अबद तक उस की हर नसल में कोई न कोई हो जिसे ऐसे ज़ख़म लग जाएँ जो भर न पाएँ, किसी को कोढ़ लग जाए, किसी को बैसाखियों की मदद से चलना पड़े, कोई ग़ैरतबई मौत मर जाए, या किसी को ख़ुराक की मुसलसल कमी रहे।” 30 यों योआब और उसके भाई अबीशै ने अपने भाई असाहेल का बदला लिया। उन्होंने अबिनैर को इसलिए क़त्ल किया कि उसने असाहेल को ज़िबऊन के करीब लड़ते वक़्त मौत के घाट उतार दिया था।

दाऊद अबिनैर का मातम करता है

31-32 दाऊद ने योआब और उसके साथियों को हुक्म दिया, “अपने कपड़े फाड़ दो और टाट ओढ़कर अबिनैर का मातम करो!” जनाज़े का बंदोबस्त हबस्न में किया गया। दाऊद खुद जनाज़े के ऐन पीछे चला। क़ब्र पर बादशाह ऊँची आवाज़ से रो पड़ा, और बाकी सब लोग भी रोने लगे। 33 फिर दाऊद ने अबिनैर के बारे में मातमी गीत गाया,

34 “हाय, अबिनैर क्यों बेदीन की तरह मारा गया? तेरे हाथ बँधे हुए न थे, तेरे पाँव जंजीरों में जकड़े हुए न थे। जिस तरह कोई शरीरों के हाथ में आकर मर जाता है उसी तरह तू हलाक हुआ।”

तब तमाम लोग मज़ीद रोए। 35 दाऊद ने जनाज़े के दिन रोज़ा रखा। सबने मिन्नत की कि वह कुछ खाए, लेकिन उसने कसम खाकर कहा, “अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे अगर मैं सूरज के ग़ुरूब होने से पहले रोटी का एक टुकड़ा भी खा लूँ।” 36 बादशाह का यह रवैया लोगों को बहुत पसंद आया। वैसे भी दाऊद का हर अमल लोगों को पसंद आता था। 37 यों तमाम हाज़िरीन बल्कि तमाम इसराईलियों ने जान लिया कि बादशाह का अबिनैर को क़त्ल करने में हाथ न था। 38 दाऊद ने अपने दरबारियों से कहा, “क्या आपको समझ नहीं आई कि आज इसराईल का बड़ा सूरमा फ़ौत हुआ है? 39 मुझे अभी अभी मसह करके बादशाह बनाया गया है, इसलिए मेरी इतनी ताकत नहीं कि ज़रूयाह के इन दो बेटों योआब और अबीशै को कंट्रोल करूँ। रब उन्हें उनकी इस शरीर हरकत की मुनासिब सज़ा दे!”

4

इशबोसत को क़त्ल किया जाता है

1 जब साऊल के बेटे इशबोसत को इतला मिली कि अबिनैर को हबस्न में क़त्ल किया गया है तो वह हिम्मत हार गया, और तमाम इसराईल सख़्त घबरा गया। 2 इशबोसत के दो आदमी थे जिनके नाम बाना और रैकाब थे। जब कभी इशबोसत के फ़ौजी छापा मारने के लिए निकलते तो यह दो भाई उन पर मुक़र्रर थे। उनका बाप रिम्मोन बिनयमीन के क़बायली इलाक़े के शहर बैरोत का रहनेवाला था। बैरोत भी बिनयमीन में शुमार किया जाता है, 3 अगरचे उसके बाशिंदों को हिजरत करके जितैम में बसना पड़ा जहाँ वह आज तक परदेसी की हैसियत से रहते हैं।

4 यूनतन का एक बेटा ज़िंदा रह गया था जिसका नाम मिफ़ीबोसत था। पाँच साल की उम्र में यज़्रएल से ख़बर आई थी कि साऊल और यूनतन मारे गए हैं। तब उस की आया उसे लेकर कहीं पनाह लेने के लिए भाग गई थी। लेकिन जल्दी की वजह से मिफ़ीबोसत गिरकर लँगड़ा हो गया था। उस वक़्त से उस की दोनों टाँगें मफ़लूज़ थीं।

5 एक दिन रिम्मोन बैरोती के बेटे रैकाब और बाना दोपहर के वक़्त इशबोसत के घर गए। गरमी उरूज पर थी, इसलिए इशबोसत आराम कर रहा था। 6-7 दोनों आदमी यह बहाना पेश करके घर के अंदरूनी कमरे में गए कि हम कुछ अनाज ले जाने के लिए आए हैं। जब इशबोसत के कमरे में पहुँचे तो वह चारपाई पर लेटा सो रहा था। यह देखकर उन्होंने उसके पेट में तलवार घोंप दी और फिर उसका सर काटकर वहाँ से सलामती से निकल आए।

पूरी रात सफ़र करते करते वह दरियाए-यरदन की वादी में से गुज़रकर 8 हबस्न पहुँच गए। वहाँ उन्होंने दाऊद को इशबोसत का सर दिखाकर कहा, “यह देखें, साऊल के बेटे इशबोसत का सर। आपका दुश्मन साऊल बार बार आपको मार देने की कोशिश करता रहा, लेकिन आज रब ने उससे और उस की औलाद से आपका बदला लिया है।”

दाऊद कातिलों को सज़ा देता है

9 लेकिन दाऊद ने जवाब दिया, “रब की हयात की कसम जिसने फ़िघा देकर मुझे हर मुसीबत से बचाया है, 10 जिस आदमी ने मुझे उस वक़्त सिकलज़ा में साऊल की मौत की इतला दी वह भी समझता था कि मैं दाऊद को अच्छी ख़बर पहुँचा रहा हूँ। लेकिन मैंने उसे पकड़कर सज़ाए-मौत दे दी। यही था वह अज़्र जो उसे ऐसी ख़बर पहुँचाने के एवज़ मिला! 11 अब तुम शरीर लोगों ने इससे बढ़कर किया। तुमने बेकुसूर आदमी को उसके अपने घर में उस की अपनी चारपाई पर क़त्ल कर दिया है। तो क्या मेरा फ़र्ज़ नहीं कि तुमको इस क़त्ल की सज़ा देकर तुम्हें मुल्क में से मिटा दूँ?”

12 दाऊद ने दोनों को मार देने का हुक्म दिया। उसके मुलाज़िमों ने उन्हें मारकर उनके हाथों और पैरों को काट डाला और उनकी लाशों को हबस्न के तालाब के करीब कहीं लटका दिया। इशबोसत के सर को उन्होंने अबिनैर की क़ब्र में दफनाया।

5

दाऊद पूरे इसराईल का बादशाह बन जाता है

1 उस वक्त इसराईल के तमाम कबीले हबस्न में दाऊद के पास आए और कहा, “हम आप ही की कौम और आप ही के रिश्तेदार हैं। 2 माजी में भी जब साऊल बादशाह था तो आप ही फौजी मुहिमों में इसराईल की क्रियादत करते रहे। और रब ने आपसे वादा भी किया है कि तू मेरी कौम इसराईल का चरवाहा बनकर उस पर हुकूमत करेगा।” 3 जब इसराईल के तमाम बुजुर्ग हबस्न पहुँचे तो दाऊद बादशाह ने रब के हुजूर उनके साथ अहद बाँधा, और उन्होंने उसे मसह करके इसराईल का बादशाह बना दिया।

4 दाऊद 30 साल की उम्र में बादशाह बन गया। उस की हुकूमत 40 साल तक जारी रही। 5 पहले साढ़े सात साल वह सिर्फ यहदाह का बादशाह था और उसका दासल-हुकूमत हबस्न रहा। बाक़ी 33 साल वह यरूशलम में रहकर यहदाह और इसराईल दोनों पर हुकूमत करता रहा।

दाऊद यरूशलम पर कब्ज़ा करता है

6 बादशाह बनने के बाद दाऊद अपने फौजियों के साथ यरूशलम गया ताकि उस पर हमला करे। वहाँ अब तक यबूसी आबाद थे। दाऊद को देखकर यबूसियों ने उसका मज़ाक़ उड़ाया, “आप हमारे शहर में कभी दाखिल नहीं हो पाएँगे! आपको रोकने के लिए हमारे लँगड़े और अंधे काफ़ी हैं।” उन्हें पूरा यकीन था कि दाऊद शहर में किसी भी तरीक़े से नहीं आ सकेगा।

7 तो भी दाऊद ने सिय्यून के किले पर कब्ज़ा कर लिया जो आजकल ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है। 8 जिस दिन उन्होंने शहर पर हमला किया उसने एलान किया, “जो भी यबूसियों पर फ़तह पाना चाहे उसे पानी की सुरंग में से गुज़रकर शहर में घुसना पड़ेगा ताकि उन लँगड़ों और अंधों को मारे जिनसे मेरी जान नफ़रत करती है।” इसलिए आज तक कहा जाता है, “लँगड़ों और अंधों को घर में जाने की इजाज़त नहीं।”

9 यरूशलम पर फ़तह पाने के बाद दाऊद किले में रहने लगा। उसने उसे ‘दाऊद का शहर’ करार दिया और उसके इर्दगिर्द शहर को बढ़ाने लगा। यह तामीरी काम इर्दगिर्द के चबूतरों से शुरू हुआ और होते होते किले तक पहुँच गया।

10 यों दाऊद जोर पकड़ता गया, क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज उसके साथ था।

दाऊद की तरक्की

11 एक दिन सूर के बादशाह हीराम ने दाऊद के पास वफ़द भेजा। बढई और राज भी साथ थे। उनके पास देवदार की लकड़ी थी, और उन्होंने दाऊद के लिए महल बना दिया। 12 यों दाऊद ने जान लिया कि रब ने मुझे इसराईल का बादशाह बनाकर मेरी बादशाही अपनी कौम इसराईल की खातिर सरफ़राज़ कर दी है।

13 हबस्न से यरूशलम में मुतक़िल होने के बाद दाऊद ने मज़ीद बीवियों और दाशताओं से शादी की। नतीजे में यरूशलम में उसके कई बेटे-बेटियाँ पैदा हुए। 14 जो बेटे वहाँ पैदा हुए वह यह थे : सम्मुअ, सोबाब, नातन, सुलेमान, 15 इबहार, इलीसुअ, नफ़ज, यफ़ीअ, 16 इलीसमा, इलियदा और इलीफलत।

फिलिस्तिनों पर फ़तह

17 जब फिलिस्तिनों को इतला मिली कि दाऊद को मसह करके इसराईल का बादशाह बनाया गया है तो उन्होंने अपने फौजियों को इसराईल में भेज दिया ताकि उसे पकड़ लें। लेकिन दाऊद को पता चल गया, और उसने एक पहाड़ी किले में पनाह ले ली।

18 जब फिलिस्ती इसराईल में पहुँचकर वादीए-रफ़ाईम में फैल गए 19 तो दाऊद ने रब से दरियाफ़्त किया, “क्या मैं फिलिस्तिनों पर हमला करूँ? क्या तू मुझे उन पर फ़तह बख़्शेगा?” रब ने जवाब दिया, “हाँ, उन पर हमला कर! मैं उन्हें ज़रूर तेरे कब्ज़े में कर दूँगा।” 20 चुनौचे दाऊद अपने फौजियों को लेकर बाल-पराज़ीम गया। वहाँ उसने फिलिस्तिनों को शिकस्त दी। बाद में उसने गवाही दी, “जितने जोर से बंद के टूट जाने पर पानी उससे फूट निकलता है उतने जोर से आज रब मेरे देखते देखते दुश्मन की सफ़ों में से फूट निकला है।” चुनौचे उस जगह का नाम बाल-पराज़ीम यानी ‘फूट निकलने का मालिक’ पड़ गया। 21 फिलिस्ती अपने बुत छोड़कर भाग गए, और वह दाऊद और उसके आदमियों के कब्ज़े में आ गए।

22 एक बार फिर फिलिस्ती आकर वादीए-रफ़ाईम में फैल गए। 23 जब दाऊद ने रब से दरियाफ़्त किया तो उसने जवाब दिया, “इस मरतबा उनका सामना मत करना बल्कि उनके पीछे जाकर बका के दरख्तों के सामने उन पर हमला कर। 24 जब उन दरख्तों की चोटियों से क़दमों की चाप सुनाई दे तो ख़बरदार! यह इसका इशारा होगा कि रब खुद तेरे आगे आगे चलकर फिलिस्तिनों को मारने के लिए निकल आया है।”

25 दाऊद ने ऐसा ही किया और नतीजे में फिलिस्तिनों को शिकस्त देकर ज़िबऊन से लेकर जज़र तक उनका ताक्कुब किया।

6

दाऊद अहद का संदूक यरूशलम में ले आता है

1 एक बार फिर दाऊद ने इसराईल के चुनीदा आदमियों को जमा किया। 30,000 अफ़राद थे। 2 उनके साथ मिलकर वह यहदाह के बाला पहुँच गया ताकि अल्लाह का संदूक उठाकर यरूशलम ले जाएँ, वही संदूक जिस पर रब्बुल-अफ़वाज के नाम का ठप्पा लगा है और जहाँ वह संदूक के ऊपर क़रूबी फ़रिश्तों के दरमियान तख़्तनशीन है। 3-4 लोगों ने अल्लाह के संदूक को पहाड़ी पर वाक़े अबीनदाब के घर

से निकालकर एक नई बैलगाड़ी पर रख दिया, और अबीनदाब के दो बेटे उज्जा और अखियो उसे यरूशलम की तरफ ले जाने लगे। अखियो गाड़ी के आगे आगे 5 और दाऊद बाकी तमाम लोगों के साथ पीछे चल रहा था। सब रब के हुज़ूर पूरे ज़ोर से खुशी मनाने और गीत गाने लगे। मुख्तलिफ़ साज़ भी बजाए जा रहे थे। फ़िज़ा सितारों, सरोदों, दफ़ों, खंजरियों * और झाँझों की आवाज़ों से गूँज उठी।

6 वह गंदुम गाहने की एक जगह पर पहुँच गए जिसके मालिक का नाम नकोन था। वहाँ बैल अचानक बेकाबू हो गए। उज्जा ने जल्दी से अल्लाह का संदूक पकड़ लिया ताकि वह गिर न जाए। 7 उसी लमहे रब का ग़ज़ब उस पर नाज़िल हुआ, क्योंकि उसने अल्लाह के संदूक को छूने की ज़ुरत की थी। वहीं अल्लाह के संदूक के पास ही उज्जा गिरकर हलाक हो गया। 8 दाऊद को बड़ा रंज हुआ कि रब का ग़ज़ब उज्जा पर यों टूट पड़ा है। उस वक़्त से उस जगह का नाम परज़-उज्जा यानी ‘उज्जा पर टूट पड़ना’ है।

9 उस दिन दाऊद को रब से खौफ़ आया। उसने सोचा, “रब का संदूक किस तरह मेरे पास पहुँच सकेगा?” 10 चुनौचे उसने फ़ैसला किया कि हम रब का संदूक यरूशलम नहीं ले जाएंगे बल्कि उसे ओबेद-अदोम जाती के घर में महफूज़ रखेंगे। 11 वहाँ वह तीन माह तक पड़ा रहा।

इन तीन महीनों के दौरान रब ने ओबेद-अदोम और उसके पूरे घराने को बरकत दी। 12 एक दिन दाऊद को इतला दी गई, “जब से अल्लाह का संदूक ओबेद-अदोम के घर में है उस वक़्त से रब ने उसके घराने और उस की पूरी मिलकियत को बरकत दी है।” यह सुनकर दाऊद ओबेद-अदोम के घर गया और खुशी मनाते हुए अल्लाह के संदूक को दाऊद के शहर ले आया। 13 छः क़दमों के बाद दाऊद ने रब का संदूक उठानेवालों को रोककर एक साँड और एक मोटा-ताज़ा बछड़ा क़ुरबान किया। 14 जब जुलूस आगे निकला तो दाऊद पूरे ज़ोर के साथ रब के हुज़ूर नाचने लगा। वह कतान का बालापोश पहने हुए था। 15 खुशी के नारे लगा लगाकर और नरसिंगे फूँक फूँककर दाऊद और तमाम इसराईली रब का संदूक यरूशलम ले आए।

16 रब का संदूक दाऊद के शहर में दाख़िल हुआ तो दाऊद की बीवी मीकल बिन साऊल खिड़की में से जुलूस को देख रही थी। जब बादशाह रब के हुज़ूर कूदता और नाचता हुआ नज़र आया तो मीकल ने दिल में उसे हक़ीर जाना।

17 रब का संदूक उस तंबू के दरमियान में रखा गया जो दाऊद ने उसके लिए लगवाया था। फिर दाऊद ने रब के हुज़ूर भस्म होनेवाली और सलामती की क़ुरबानियाँ पेश कीं। 18 इसके बाद उसने कौम को रब्बुल-अफ़वाज़ के नाम से बरकत देकर 19 हर इसराईली मर्द और औरत को एक रोटी, खज़ूर की एक टिक्की और किशमिश की एक टिक्की दे दी। फिर तमाम लोग अपने अपने घरों को वापस चले गए।

20 दाऊद भी अपने घर लौटा ताकि अपने ख़ानदान को बरकत देकर सलाम करे। वह अभी महल के अंदर नहीं पहुँचा था कि मीकल निकलकर उससे मिलने आई। उसने तंज़न कहा, “वाह जी वाह। आज इसराईल का बादशाह कितनी शान के साथ लोगों को नज़र आया है! अपने लोगों की लौंडियों के सामने ही उसने अपने कपड़े उतार दिए, बिलकुल उसी तरह जिस तरह ग़ँवार करते हैं।” 21 दाऊद ने जवाब दिया, “मैं रब ही के हुज़ूर नाच रहा था, जिसने आपके बाप और उसके ख़ानदान को तर्क करके मुझे चुन लिया और इसराईल का बादशाह बना दिया है। उसी की ताज़ीम में मैं आइंदा भी नाचूँगा। 22 हों, मैं इससे भी ज़्यादा ज़लील होने के लिए तैयार हूँ। जहाँ तक लौंडियों का ताल्लुक है, वह ज़रूर मेरी इज़्ज़त करेंगी।”

23 जीते-जी मीकल बेऔलाद रही।

7

रब दाऊद से अब्दी बादशाही का वादा करता है

1 दाऊद बादशाह सूकून से अपने महल में रहने लगा, क्योंकि रब ने इर्दगिर्द के दुश्मनों को उस पर हमला करने से रोक दिया था। 2 एक दिन दाऊद ने नातन नबी से बात की, “देखें, मैं यहाँ देवदार के महल में रहता हूँ जबकि अल्लाह का संदूक अब तक तंबू में पड़ा है। यह मुनासिब नहीं है।”

3 नातन ने बादशाह की हौसलाअफ़ज़ाई की, “जो कुछ भी आप करना चाहते हैं वह करें। रब आपके साथ है।”

4 लेकिन उसी रात रब नातन से हमकलाम हुआ, 5 “मेरे ख़ादिम दाऊद के पास जाकर उसे बता दे कि रब फ़रमाता है, ‘क्या तू मेरी रिहाइश के लिए मकान तामीर करेगा? हरगिज़ नहीं!’ 6 आज तक मैं किसी मकान में नहीं रहा। जब से मैं इसराईलियों को मिसर से निकाल लाया उस वक़्त से मैं ख़ैमे में रहकर जगह बजगह फिरता रहा हूँ। 7 जिस दौरान मैं तमाम इसराईलियों के साथ इधर उधर फिरता रहा क्या मैंने इसराईल के उन राहनुमाओं से कभी इस नाते से शिकायत की जिन्हें मैंने अपनी कौम की गल्लाबानी करने का हुक्म दिया था? क्या मैंने उनमें से किसी से कहा कि तुमने मेरे लिए देवदार का घर क्यों नहीं बनाया?”

8 चुनौचे मेरे ख़ादिम दाऊद को बता दे, ‘रब्बुल-अफ़वाज़ फ़रमाता है कि मैं ही ने तुझे चरागाह में भेड़ों की गल्लाबानी करने से फ़ारिग करके अपनी कौम इसराईल का बादशाह बना दिया है। 9 जहाँ भी तूने क़दम रखा वहाँ मैं तेरे साथ रहा हूँ। तेरे देखते देखते मैंने तेरे तमाम दुश्मनों को हलाक कर दिया है। अब मैं तेरा नाम सरफ़राज़ कर दूँगा, वह दुनिया के सबसे अज़ीम आदमियों के नामों के बराबर ही होगा। 10 और मैं अपनी कौम इसराईल के लिए एक वतन मुहैया करूँगा, पौदे की तरह उन्हें यों लगा दूँगा कि वह जड़ पकड़कर महफूज़ रहेंगे और कभी बेचैन

* 6:5 इब्रानी में इससे मुराद झुनझुने जैसा कोई साज़ है।

नहीं होंगे। बेदीन कौमें उन्हें उस तरह नहीं दबाएँगी जिस तरह माज़ी में किया करती थीं, ¹¹ उस वक़्त से जब मैं कौम पर काज़ी मुकर्रर करता था। मैं तेरे दुश्मनों को तुझसे दूर रखकर तुझे अमनो-अमान अता करूँगा। आज रब फ़रमाता है कि मैं ही तेरे लिए घर बनाऊँगा।

¹² जब तू बूढ़ा होकर कूच कर जाएगा और अपने बापदादा के साथ आराम करेगा तो मैं तेरी जगह तेरे बेटों में से एक को तख़्त पर बिठा दूँगा। उस की बादशाही को मैं मज़बूत बना दूँगा। ¹³ वही मेरे नाम के लिए घर तामीर करेगा, और मैं उस की बादशाही का तख़्त अबद तक कायम रखूँगा। ¹⁴ मैं उसका बाप हूँगा, और वह मेरा बेटा होगा। जब कभी उससे ग़लती होगी तो मैं उसे यों छड़ी से सज़ा दूँगा जिस तरह इसानी बाप अपने बेटे की तरबियत करता है। ¹⁵ लेकिन मेरी नज़रे-करम कभी उससे नहीं हटेगी। उसके साथ मैं वह सुलूक नहीं करूँगा जो मैंने साऊल के साथ किया जब उसे तेरे सामने से हटा दिया। ¹⁶ तेरा घराना और तेरी बादशाही हमेशा मेरे हुज़ूर कायम रहेगी, तेरा तख़्त हमेशा मज़बूत रहेगा।”

दाऊद की शूक्रगुज़ारी

¹⁷ नातन ने दाऊद के पास जाकर उसे सब कुछ सुनाया जो रब ने उसे रोया में बताया था। ¹⁸ तब दाऊद अहद के संदूक के पास गया और रब के हुज़ूर बैठकर दुआ करने लगा,

“ऐ रब कादिरे-मुतलक, मैं कौन हूँ और मेरा खानदान क्या हैसियत रखता है कि तूने मुझे यहाँ तक पहुँचाया है? ¹⁹ और अब ऐ रब कादिरे-मुतलक, तू मुझे और भी ज़्यादा अता करने को है, क्योंकि तूने अपने खादिम के घराने के मुस्तकबिल के बारे में भी वादा किया है। क्या तू आम तौर पर इन्सान के साथ ऐसा सुलूक करता है? हरगिज़ नहीं! ²⁰ लेकिन मैं मज़ीद क्या कहूँ? ऐ रब कादिरे-मुतलक, तू तो अपने खादिम को जानता है। ²¹ तूने अपने फ़रमान की खातिर और अपनी मरज़ी के मुताबिक़ यह अज़ीम काम करके अपने खादिम को इतला दी है।

²² ऐ रब कादिरे-मुतलक, तू कितना अज़ीम है! तुझ जैसा कोई नहीं है। हमने अपने कानों से सुन लिया है कि तेरे सिवा कोई और खुदा नहीं है। ²³ दुनिया में कौन-सी कौम तेरी उम्मत इसराईल की मानिंद है? तूने इसी एक कौम का फ़िघा देकर उसे गुलामी से छुड़ाया और अपनी कौम बना लिया। तूने इसराईल के वास्ते बड़े और हैबतनाक काम करके अपने नाम की शोहरत फैला दी। हमें मिसर से रिहा करके तूने कौमों और उनके देवताओं को हमारे आगे से निकाल दिया। ²⁴ ऐ रब, तू इसराईल को हमेशा के लिए अपनी कौम बनाकर उनका खुदा बन गया है। ²⁵ चुनौचे ऐ रब कादिरे-मुतलक, जो बात तूने अपने खादिम और उसके घराने के बारे में की है उसे अबद तक कायम रख और अपना वादा पूरा कर। ²⁶ तब तेरा नाम अबद तक मशहूर रहेगा और लोग तसलीम करेंगे कि रब्बुल-अफ़वाज़ इसराईल का खुदा है। फिर तेरे खादिम दाऊद का घराना भी तेरे हुज़ूर कायम रहेगा।

²⁷ ऐ रब्बुल-अफ़वाज़, इसराईल के खुदा, तूने अपने खादिम के कान को इस बात के लिए खोल दिया है। तू ही ने फ़रमाया, ‘मैं तेरे लिए घर तामीर करूँगा।’ सिर्फ़ इसी लिए तेरे खादिम ने यों तुझसे दुआ करने की ज़रत की है। ²⁸ ऐ रब कादिरे-मुतलक, तू ही खुदा है, और तेरी ही बातों पर एतमाद किया जा सकता है। तूने अपने खादिम से इन अच्छी चीज़ों का वादा किया है। ²⁹ अब अपने खादिम के घराने को बरकत देने पर राज़ी हो ताकि वह हमेशा तक तेरे हुज़ूर कायम रहे। क्योंकि तू ही ने यह फ़रमाया है, और चूँकि तू ऐ रब कादिरे-मुतलक ने बरकत दी है इसलिए तेरे खादिम का घराना अबद तक मुबारक रहेगा।”

8

दाऊद की जंगें

¹ फिर ऐसा वक़्त आया कि दाऊद ने फ़िलिस्तियों को शिकस्त देकर उन्हें अपने ताबे कर लिया और हुकूमत की बागडोर उनके हाथों से छीन ली।

² उसने मोआबियों पर भी फ़तह पाई। मोआबी कैदियों की क़तार बनाकर उसने उन्हें ज़मीन पर लिटा दिया। फिर रस्सी का टुकड़ा लेकर उसने क़तार का नाप लिया। जितने लोग रस्सी की लंबाई में आ गए वह एक गुरोह बन गए। यों दाऊद ने लोगों को गुरोहों में तकसीम किया। फिर उसने गुरोहों के तीन हिस्से बनाकर दो हिस्सों के सर क़लम किए और एक हिस्से को ज़िंदा छोड़ दिया। लेकिन जितने कैदी छूट गए वह दाऊद के ताबे रहकर उसे ख़राज देते रहे।

³ दाऊद ने शिमाली शाम के शहर जोबाह के बादशाह हददअज़र बिन रहोब को भी हरा दिया जब हददअज़र दरियाए-फ़ुरात पर दुबारा काबू पाने के लिए निकल आया था। ⁴ दाऊद ने 1,700 घुड़सवारों और 20,000 प्यादा सिपाहियों को गिरफ़्तार कर लिया। रथों के 100 घोड़ों को उसने अपने लिए महफूज़ रखा, जबकि बाकियों की उसने कौंचें काट दी ताकि वह आइंदा जंग के लिए इस्तेमाल न हो सकें।

⁵ जब दमिश्क के अरामी बाशिंदे जोबाह के बादशाह हददअज़र की मदद करने आए तो दाऊद ने उनके 22,000 अफ़राद हलाक कर दिए। ⁶ फिर उसने दमिश्क के इलाक़े में अपनी फ़ौज़ी चौकियाँ कायम कीं। अरामी उसके ताबे हो गए और उसे ख़राज देते रहे। जहाँ भी दाऊद गया वहाँ रब ने उसे कामयाबी बख़्शी। ⁷ सोने की जो ढालें हददअज़र के अफ़सरों के पास थीं उन्हें दाऊद यस्शलम ले गया। ⁸ हददअज़र के दो शहरों बताह और बेरोती से उसने कसरत का पीतल छीन लिया।

⁹ जब हमात के बादशाह तूई को इतला मिली कि दाऊद ने हददअज़र की पूरी फ़ौज़ पर फ़तह पाई है ¹⁰ तो उसने अपने बेटे यूराम को दाऊद के पास भेजा ताकि उसे सलाम कहे। यूराम ने दाऊद को हददअज़र पर फ़तह के लिए मुबारकबाद दी, क्योंकि हददअज़र तूई का दुश्मन था, और उनके दरमियान जंग रही थी। यूराम ने दाऊद को सोने, चाँदी और पीतल के तोहफे भी पेश किए। ¹¹ दाऊद ने यह चीज़ें रब के लिए मख़सूस

कर दी। जहाँ भी वह दूसरी कौमों पर गालिब आया वहाँ की सोना-चाँदी उसने रब के लिए मखसूस कर दी। 12 यों अदोम, मोआब, अम्मोन, फिलिस्तिआ, अमालीक और जोबाह के बादशाह हददअज़र बिन रहोब की सोना-चाँदी रब को पेश की गई।

13 जब दाऊद ने नमक की वादी में अदोमियों पर फ़तह पाई तो उस की शोहरत मज़ीद फैल गई। उस जंग में दुश्मन के 18,000 अफ़राद हलाक हुए। 14 दाऊद ने अदोम के पूरे मुल्क में अपनी फ़ौजी चौकियाँ कायम की, और तमाम अदोमी दाऊद के ताबे हो गए। दाऊद जहाँ भी जाता रब उस की मदद करके उसे फ़तह बख़्शता।

दाऊद के आला अफ़सर

15 जितनी देर दाऊद पूरे इसराईल पर हुकूमत करता रहा उतनी देर तक उसने ध्यान दिया कि कौम के हर एक शख्स को इनसाफ़ मिल जाए। 16 योआब बिन ज़रूयाह फ़ौज पर मुक़र्रर था। यहसफ़त बिन अखीलूद बादशाह का मुशरिर-खास था। 17 सदोक बिन अखीतूब और अखीमलिक बिन अबियातर इमाम थे। सिरायाह मीरमुंशी था। 18 बिनायाह बिन यहोयदा दाऊद के खास दस्ते बनाम करेतीओ-फ़लेती का कप्तान था। दाऊद के बेटे इमाम थे।

9

दाऊद यूनतन के बेटे पर मेहरबानी करता है

1 एक दिन दाऊद पूछने लगा, “क्या साऊल के खानदान का कोई फ़रद बच गया है? मैं यूनतन की खातिर उस पर अपनी मेहरबानी का इज़हार करना चाहता हूँ।”

2 एक आदमी को बुलाया गया जो साऊल के घराने का मुलाज़िम था। उसका नाम जीबा था। दाऊद ने सवाल किया, “क्या आप जीबा हैं?” जीबा ने जवाब दिया, “जी, आपका खादिम हाज़िर है।” 3 बादशाह ने दरियाफ़्त किया, “क्या साऊल के खानदान का कोई फ़रद ज़िंदा रह गया है? मैं उस पर अल्लाह की मेहरबानी का इज़हार करना चाहता हूँ।” जीबा ने कहा, “यूनतन का एक बेटा अब तक ज़िंदा है। वह दोनों टाँगों से मफ़लूज है।” 4 दाऊद ने पूछा, “वह कहाँ है?” जीबा ने जवाब दिया, “वह लो-दिबार में मकीर बिन अम्मियेल के हाँ रहता है।” 5 दाऊद ने उसे फ़ौरन दरबार में बुला लिया।

6 यूनतन के जिस बेटे का ज़िक्र जीबा ने किया वह मिफ़ीबोसत था। जब उसे दाऊद के सामने लाया गया तो उसने मुँह के बल झुककर उस की इज़ज़त की। दाऊद ने कहा, “मिफ़ीबोसत!” उसने जवाब दिया, “जी, आपका खादिम हाज़िर है।” 7 दाऊद बोला, “डरें मत। आज मैं आपके बाप यूनतन के साथ किया हुआ वादा पूरा करके आप पर अपनी मेहरबानी का इज़हार करना चाहता हूँ। अब सुनें! मैं आपको आपके दादा साऊल की तमाम ज़मीनें वापस कर देता हूँ। इसके अलावा मैं चाहता हूँ कि आप रोज़ाना मेरे साथ खाना खाया करें।”

8 मिफ़ीबोसत ने दुबारा झुककर बादशाह की ताज़ीम की, “मैं कौन हूँ कि आप मुझ जैसे मुरदा कुत्ते पर ध्यान देकर ऐसी मेहरबानी फ़रमाएँ!” 9 दाऊद ने साऊल के पुराने मुलाज़िम जीबा को बुलाकर उसे हिदायत दी, “मैंने आपके मालिक के पोते को साऊल और उसके खानदान की तमाम मिलकियत दे दी है। 10 अब आपकी ज़िम्मादारी यह है कि आप अपने बेटों और नौकरों के साथ उसके खेतों को सँभालें ताकि उसका खानदान ज़मीनों की पैदावार से गुज़ारा कर सके। लेकिन मिफ़ीबोसत खुद यहाँ रहकर मेरे बेटों की तरह मेरे साथ खाना खाया करेगा।” (जीबा के 15 बेटे और 20 नौकर थे)।

11 जीबा ने जवाब दिया, “मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हूँ। जो भी हुक्म आप देंगे मैं करने के लिए तैयार हूँ।” 12-13 उस दिन से जीबा के घराने के तमाम अफ़राद मिफ़ीबोसत के मुलाज़िम हो गए। मिफ़ीबोसत खुद जो दोनों टाँगों से मफ़लूज था यरूशलम में रिहाइशपज़ीर हुआ और रोज़ाना दाऊद बादशाह के साथ खाना खाता रहा। उसका एक छोटा बेटा था जिसका नाम मीका था।

10

अम्मोनी दाऊद की बेइज़्ज़ती करते हैं

1 कुछ देर के बाद अम्मोनियों का बादशाह फ़ौत हुआ, और उसका बेटा हनून तख़्तनशीन हुआ। 2 दाऊद ने सोचा, “नाहस ने हमेशा मुझ पर मेहरबानी की थी, इसलिए अब मैं भी उसके बेटे हनून पर मेहरबानी करूँगा।” उसने बाप की वफ़ात का अफ़सोस करने के लिए हनून के पास वफ़द भेजा।

लेकिन जब दाऊद के सफ़ीर अम्मोनियों के दरबार में पहुँच गए 3 तो उस मुल्क के बुजुर्ग हनून बादशाह के कान में मनफ़ी बातें भरने लगे, “क्या दाऊद ने इन आदमियों को वाकई सिर्फ़ इसलिए भेजा है कि वह अफ़सोस करके आपके बाप का एहतराम करें? हरगिज़ नहीं! यह सिर्फ़ बहाना है। असल में यह जासूस हैं जो हमारे दास्ल-हुकूमत के बारे में मालूमात हासिल करना चाहते हैं ताकि उस पर क़ब्ज़ा कर सकें।” 4 चुनौचे हनून ने दाऊद के आदमियों को पकड़वाकर उनकी दाढ़ियों का आधा हिस्सा मुँडवा दिया और उनके लिबास को कमर से लेकर पाँव तक काटकर उतरवाया। इसी हालत में बादशाह ने उन्हें फ़ारिग कर दिया।

5 जब दाऊद को इसकी ख़बर मिली तो उसने अपने कासिदों को उनसे मिलने के लिए भेजा ताकि उन्हें बताएँ, “यरीह में उस वक़्त तक ठहरे रहें जब तक आपकी दाढ़ियाँ दुबारा बहाल न हो जाएँ।” क्योंकि वह अपनी दाढ़ियों की वजह से बड़ी शरमिंदगी महसूस कर रहे थे।

अम्मोनियों से जंग

6 अम्मोनियों को खूब मालूम था कि इस हरकत से हम दाऊद के दुश्मन बन गए हैं। इसलिए उन्होंने किराए पर कई जगहों से फ़ौजी तलब किए। बैत-रहोब और ज़ोबाह के 20,000 अरामी प्यादा सिपाही, माका का बादशाह 1,000 फ़ौजियों समेत और मुल्के-तोब के 12,000 सिपाही उनकी मदद करने आए। 7 जब दाऊद को इसका इल्म हुआ तो उसने योआब को पूरी फ़ौज के साथ उनका मुकाबला करने के लिए भेज दिया। 8 अम्मोनी अपने दास्त-हुकूमत रब्बा से निकलकर शहर के दरवाज़े के सामने ही सफ़आरा हुए जबकि उनके अरामी इत्तहादी ज़ोबाह और रहोब मुल्के-तोब और माका के मर्दों समेत कुछ फ़ासले पर खुले मैदान में खड़े हो गए।

9 जब योआब ने जान लिया कि सामने और पीछे दोनों तरफ़ से हमले का ख़तरा है तो उसने अपनी फ़ौज को दो हिस्सों में तकसीम कर दिया। सबसे अच्छे फ़ौजियों के साथ वह खुद शाम के सिपाहियों से लड़ने के लिए तैयार हुआ। 10 बाक़ी आदमियों को उसने अपने भाई अबीशै के हवाले कर दिया ताकि वह अम्मोनियों से लड़ें। 11 एक दूसरे से अलग होने से पहले योआब ने अबीशै से कहा, “अगर शाम के फ़ौजी मुझ पर गालिब आने लगे तो मेरे पास आकर मेरी मदद करना। लेकिन अगर आप अम्मोनियों पर क़ाबू न पा सकें तो मैं आकर आपकी मदद करूँगा। 12 हौसला रखें! हम दिलेरी से अपनी क़ौम और अपने खुदा के शहरों के लिए लड़ें। और अब वह कुछ होने दे जो उस की नज़र में ठीक है।”

13 योआब ने अपनी फ़ौज के साथ शाम के फ़ौजियों पर हमला किया तो वह उसके सामने से भागने लगे। 14 यह देखकर अम्मोनी अबीशै से फ़रार होकर शहर में दाख़िल हुए। फिर योआब अम्मोनियों से लड़ने से बाज़ आया और यरूशलम वापस चला गया।

शाम के खिलाफ़ जंग

15 जब शाम के फ़ौजियों को शिकस्त की बेइज़्ज़ती का एहसास हुआ तो वह दुबारा जमा हो गए। 16 हददअज़र ने दरियाए-फ़ुरात के पार मसोपुतामिया में आबाद अरामियों को बुलाया ताकि वह उस की मदद करें। फिर सब हिलाम पहुँच गए। हददअज़र की फ़ौज पर मुक़रर अफ़सर सोबक उनकी राहनुमाई कर रहा था। 17 जब दाऊद को ख़बर मिली तो उसने इसराईल के तमाम लड़ने के क़ाबिल आदमियों को जमा किया और दरियाए-यरदन को पार करके हिलाम पहुँच गया। शाम के फ़ौजी सफ़आरा होकर इसराईलियों का मुकाबला करने लगे। 18 लेकिन उन्हें दुबारा शिकस्त मानकर फ़रार होना पड़ा। इस दफ़ा उनके 700 रथवानों के अलावा 40,000 प्यादा सिपाही हलाक हुए। दाऊद ने फ़ौज के कमांडर सोबक को इतना ज़ख़मी कर दिया कि वह मैदान-जंग में हलाक हो गया।

19 जो अरामी बादशाह पहले हददअज़र के ताबे थे उन्होंने अब हार मानकर इसराईलियों से सुलह कर ली और उनके ताबे हो गए। उस वक़्त से अरामियों ने अम्मोनियों की मदद करने की फिर ज़रूरत न की।

11

दाऊद और बत-सबा

1 बहार का मौसम आ गया, वह वक़्त जब बादशाह जंग के लिए निकलते हैं। दाऊद बादशाह ने भी अपने फ़ौजियों को लड़ने के लिए भेज दिया। योआब की राहनुमाई में उसके अफ़सर और पूरी फ़ौज अम्मोनियों से लड़ने के लिए रवाना हुए। वह दुश्मन को तबाह करके दास्त-हुकूमत रब्बा का मुहासरा करने लगे। दाऊद खुद यरूशलम में रहा।

2 एक दिन वह दोपहर के वक़्त सो गया। जब शाम के वक़्त जाग उठा तो महल की छत पर टहलने लगा। अचानक उस की नज़र एक औरत पर पड़ी जो अपने सहन में नहा रही थी। औरत निहायत खूबसूरत थी। 3 दाऊद ने किसी को उसके बारे में मालूम हासिल करने के लिए भेज दिया। वापस आकर उसने इतला दी, “औरत का नाम बत-सबा है। वह इलियाम की बेटी और ऊरियाह हिती की बीवी है।” 4 तब दाऊद ने कासिदों को बत-सबा के पास भेजा ताकि उसे महल में ले आएँ। औरत आई तो दाऊद उससे हमबिसतर हुआ। फिर बत-सबा अपने घर वापस चली गई। (थोड़ी देर पहले उसने वह रस्म अदा की थी जिसका तकाज़ा शरीअत माहवारी के बाद करती है ताकि औरत दुबारा पाक-साफ़ हो जाए)।

5 कुछ देर के बाद उसे मालूम हुआ कि मेरा पाँव भारी हो गया है। उसने दाऊद को इतला दी, “मेरा पाँव भारी हो गया है।” 6 यह सुनते ही दाऊद ने योआब को पैगाम भेजा, “ऊरियाह हिती को मेरे पास भेज दें!” योआब ने उसे भेज दिया। 7 जब ऊरियाह दरबार में पहुँचा तो दाऊद ने उससे योआब और फ़ौज का हाल मालूम किया और पूछा कि जंग किस तरह चल रही है?

8 फिर उसने ऊरियाह को बताया, “अब अपने घर जाएँ और पाँव धोकर आराम करें।” ऊरियाह अभी महल से दूर नहीं गया था कि एक मुलाज़िम ने उसके पीछे भागकर उसे बादशाह की तरफ़ से तोहफ़ा दिया। 9 लेकिन ऊरियाह अपने घर न गया बल्कि रात के लिए बादशाह के मुहाफ़िज़ों के साथ ठहरा रहा जो महल के दरवाज़े के पास सोते थे।

10 दाऊद को इस बात का पता चला तो उसने अगले दिन उसे दुबारा बुलाया। उसने पूछा, “क्या बात है? आप तो बड़ी दूर से आए हैं। आप अपने घर क्यों न गए?” 11 ऊरियाह ने जवाब दिया, “अहद का संदूक और इसराईल और यहूदा के फ़ौजी झोंपड़ियों में रह रहे हैं। योआब और बादशाह के अफ़सर भी खुले मैदान में ठहरे हुए हैं तो क्या मुनासिब है कि मैं अपने घर जाकर आराम से खाऊँ पिऊँ और अपनी बीवी से हमबिसतर हो जाऊँ? हरगिज़ नहीं! आपकी हयात की कसम, मैं कभी ऐसा नहीं करूँगा।”

12 दाऊद ने उसे कहा, “एक और दिन यहाँ ठहरें। कल मैं आपको वापस जाने दूँगा।” चुनाँचे ऊरियाह एक और दिन यरूशलम में ठहरा रहा।

13 शाम के वक्त दाऊद ने उसे खाने की दावत दी। उसने उसे इतनी मै पिलाई कि ऊरियाह नशे में धुत हो गया, लेकिन इस मरतबा भी वह अपने घर न गया बल्कि दुबारा महल में मुहाफिज़ों के साथ सो गया।

दाऊद ऊरियाह को क़त्ल करवाता है

14 अगले दिन सुबह दाऊद ने योआब को खत लिखकर ऊरियाह के हाथ भेज दिया। 15 उसमें लिखा था, “ऊरियाह को सबसे अगली सफ़ में खड़ा करें, जहाँ लड़ाई सबसे सख़्त होती है। फिर अचानक पीछे की तरफ़ हटकर उसे छोड़ दें ताकि दुश्मन उसे मार दे।”

16 यह पढ़कर योआब ने ऊरियाह को एक ऐसी जगह पर खड़ा किया जिसके बारे में उसे इल्म था कि दुश्मन के सबसे ज़बरदस्त फ़ौजी वहाँ लड़ते हैं। 17 जब अम्मोनियों ने शहर से निकलकर उन पर हमला किया तो कुछ इसराईली शहीद हुए। ऊरियाह हिंती भी उनमें शामिल था।

18 योआब ने लड़ाई की पूरी रिपोर्ट भेज दी। 19 दाऊद को यह पैगाम पहुँचानेवाले को उसने बताया, “जब आप बादशाह को तफ़सील से लड़ाई का सारा सिलसिला सुनाएँगे 20 तो हो सकता है वह गुस्से होकर कहे, ‘आप शहर के इतने करीब क्यों गए? क्या आपको मालूम न था कि दुश्मन फ़सील से तीर चलाएँगे?’ 21 क्या आपको याद नहीं कि क़दीम ज़माने में जिदौन के बेटे अबीमलिक के साथ क्या हुआ? तैबिज़ शहर में एक औरत ही ने उसे मार डाला। और वजह यह थी कि वह क़िले के इतने करीब आ गया था कि औरत दीवार पर से चक्की का ऊपर का पाट उस पर फेंक सकी। शहर की फ़सील के इस क़दर करीब लड़ने की क्या ज़रूरत थी?’ अगर बादशाह आप पर ऐसे इलज़ामात लगाएँ तो जवाब में बस इतना ही कह देना, ‘ऊरियाह हिंती भी मारा गया है।’”

22 कासिद रवाना हुआ। जब यरूशलम पहुँचा तो उसने दाऊद को योआब का पूरा पैगाम सुना दिया, 23 “दुश्मन हमसे ज़्यादा ताकतवर थे। वह शहर से निकलकर खुले मैदान में हम पर टूट पड़े। लेकिन हमने उनका सामना यों किया कि वह पीछे हट गए, बल्कि हमने उनका ताक़तुब शहर के दरवाज़े तक किया। 24 लेकिन अफ़सोस कि फिर कुछ तीरअंदाज़ हम पर फ़सील पर से तीर बरसाने लगे। आपके कुछ खादिम खेत आए और ऊरियाह हिंती भी उनमें शामिल है।” 25 दाऊद ने जवाब दिया, “योआब को बता देना कि यह मामला आपको हिम्मत हारने न दे। जंग तो ऐसी ही होती है। कभी कोई यहाँ तलवार का लुक़मा हो जाता है, कभी वहाँ। पूरे अज़म के साथ शहर से जंग जारी रखकर उसे तबाह कर दें। यह कहकर योआब की हौसलाअफ़ज़ाई करें।”

26 जब बत-सबा को इतला मिली कि ऊरियाह नहीं रहा तो उसने उसका मातम किया। 27 मातम का वक़्त पूरा हुआ तो दाऊद ने उसे अपने घर बुलाकर उससे शादी कर ली। फिर उसके बेटा पैदा हुआ।

लेकिन दाऊद की यह हरकत रब को निहायत बुरी लगी।

12

नातन दाऊद को मुजरिम ठहराता है

1 रब ने नातन नबी को दाऊद के पास भेज दिया। बादशाह के पास पहुँचकर वह कहने लगा, “किसी शहर में दो आदमी रहते थे। एक अमीर था, दूसरा ग़रीब। 2 अमीर की बहुत भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल थे, 3 लेकिन ग़रीब के पास कुछ नहीं था, सिर्फ़ भेड़ की नन्ही-सी बच्ची जो उसने ख़रीद रखी थी। ग़रीब उस की परवरिश करता रहा, और वह घर में उसके बच्चों के साथ साथ बड़ी होती गई। वह उस की प्लेट से खाती, उसके प्याले से पीती और रात को उसके बाजूओं में सो जाती। गरज़ भेड़ ग़रीब के लिए बेटी की-सी हैसियत रखती थी। 4 एक दिन अमीर के हाँ मेहमान आया। जब उसके लिए खाना पकाना था तो अमीर का दिल नहीं करता था कि अपने रेवड़ में से किसी जानवर को ज़बह करे, इसलिए उसने ग़रीब आदमी से उस की नन्ही-सी भेड़ लेकर उसे मेहमान के लिए तैयार किया।”

5 यह सुनकर दाऊद को बड़ा गुस्सा आया। वह पुकारा, “रब की हयात की क़सम, जिस आदमी ने यह किया वह सज़ाए-मौत के लायक़ है। 6 लाज़िम है कि वह भेड़ की बच्ची के एवज़ ग़रीब को भेड़ के चार बच्चे दे। यही उस की मुनासिब सज़ा है, क्योंकि उसने ऐसी हरकत करके ग़रीब पर तरस न खाया।”

7 नातन ने दाऊद से कहा, “आप ही वह आदमी हैं! रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है, ‘मैंने तुझे मसह करके इसराईल का बादशाह बना दिया, और मैं ही ने तुझे साऊल से महफ़ूज़ रखा। 8 साऊल का घराना उस की बीवियों समेत मैंने तुझे दे दिया। हाँ, पूरा इसराईल और यहूदा भी तेरे तहत आ गए हैं। और अगर यह तेरे लिए कम होता तो मैं तुझे मज़ीद देने के लिए भी तैयार होता। 9 अब मुझे बता कि तूने मेरी मरज़ी को हक़ीर जानकर ऐसी हरकत क्यों की है जिससे मुझे नफ़रत है? तूने ऊरियाह हिंती को क़त्ल करवा के उस की बीवी को छीन लिया है। हाँ, तू कातिल है, क्योंकि तूने हुक़म दिया कि ऊरियाह को अम्मोनियों से लड़ते लड़ते मरवाना है। 10 चूँकि तूने मुझे हक़ीर जानकर ऊरियाह हिंती की बीवी को उससे छीन लिया इसलिए आइंदा तलवार तेरे घराने से नहीं हटेगी।’

11 रब फ़रमाता है, ‘मैं होने दूँगा कि तेरे अपने खानदान में से मुसीबत तुझ पर आएगी। तेरे देखते देखते मैं तेरी बीवियों को तुझसे छीनकर तेरे करीब के आदमी के हवाले कर दूँगा, और वह अलानिया उनसे हमबिसतर होगा। 12 तूने चुपके से गुनाह किया, लेकिन जो कुछ मैं जवाब में होने दूँगा वह अलानिया और पूरे इसराईल के देखते देखते होगा।’”

13 तब दाऊद ने इकरार किया, “मैंने रब का गुनाह किया है।” नातन ने जवाब दिया, “रब ने आपको मुआफ कर दिया है और आप नहीं मरेगे। 14 लेकिन इस हरकत से आपने रब के दुश्मनों को कुफ़र बकने का मौका फ़राहम किया है, इसलिए बत-सबा से होनेवाला बेटा मर जाएगा।”

15 तब नातन अपने घर चला गया।

दाऊद का बेटा मर जाता है

फिर रब ने बत-सबा के बेटे को छू दिया, और वह सख़्त बीमार हो गया। 16 दाऊद ने अल्लाह से इतमास की कि बच्चे को बचने दे। रोज़ा रखकर वह रात के वक़्त नंगे फ़र्श पर सोने लगा। 17 घर के बुजुर्ग उसके इर्दगिर्द खड़े कोशिश करते रहे कि वह फ़र्श से उठ जाए, लेकिन बेफ़ायदा। वह उनके साथ खाने के लिए भी तैयार नहीं था।

18 सातवें दिन बेटा फ़ौत हो गया। दाऊद के मुलाज़िमों ने उसे ख़बर पहुँचाने की ज़रूरत न की, क्योंकि उन्होंने सोचा, “जब बच्चा अभी ज़िंदा था तो हमने उसे समझाने की कोशिश की, लेकिन उसने हमारी एक भी न सुनी। अब अगर बच्चे की मौत की ख़बर दें तो ख़तरा है कि वह कोई नुक़सानदेह क़दम उठाए।”

19 लेकिन दाऊद ने देखा कि मुलाज़िम धीमी आवाज़ में एक दूसरे से बात कर रहे हैं। उसने पूछा, “क्या बेटा मर गया है?” उन्होंने जवाब दिया, “जी, वह मर गया है।”

20 यह सुनकर दाऊद फ़र्श पर से उठ गया। वह नहाया और जिस्म को खुशबूदार तेल से मलकर साफ़ कपड़े पहन लिए। फिर उसने रब के घर में जाकर उस की परस्तिश की। इसके बाद वह महल में वापस गया और खाना मँगवाकर खाया। 21 उसके मुलाज़िम हैरान हुए और बोले, “जब बच्चा ज़िंदा था तो आप रोज़ा रखकर रोते रहे। अब बच्चा जान-बहक़ हो गया है तो आप उठकर दुबारा खाना खा रहे हैं। क्या वजह है?” 22 दाऊद ने जवाब दिया, “जब तक बच्चा ज़िंदा था तो मैं रोज़ा रखकर रोता रहा। ख़याल यह था कि शायद रब मुझ पर रहम करके उसे ज़िंदा छोड़ दे। 23 लेकिन जब वह कूच कर गया है तो अब रोज़ा रखने का क्या फ़ायदा? क्या मैं इससे उसे वापस ला सकता हूँ? हरगिज़ नहीं! एक दिन मैं खुद ही उसके पास पहुँचूँगा। लेकिन उसका यहाँ मेरे पास वापस आना नामुमकिन है।”

24 फिर दाऊद ने अपनी बीवी बत-सबा के पास जाकर उसे तसल्ली दी और उससे हमबिसतर हुआ। तब उसके एक और बेटा पैदा हुआ। दाऊद ने उसका नाम सुलेमान यानी अमनपसंद रखा। यह बच्चा रब को प्यारा था, 25 इसलिए उसने नातन नबी की मारिफ़त इतला दी कि उसका नाम यदीदियाह यानी ‘रब को प्यारा’ रखा जाए।

रब्बा शहर पर फ़तह

26 अब तक योआब अम्मोनी दास्ल-हुकूमत रब्बा का मुहासरा किए हुए था। फिर वह शहर के एक हिस्से बनाम ‘शाही शहर’ पर क़ब्ज़ा करने में कामयाब हो गया। 27 उसने दाऊद को इतला दी, “मैंने रब्बा पर हमला करके उस जगह पर क़ब्ज़ा कर लिया है जहाँ पानी दस्तयाब है। 28 चुनौचे अब फ़ौज के बाक़ी अफ़राद को लाकर खुद शहर पर क़ब्ज़ा कर लें। वरना लोग समझेंगे कि मैं ही शहर का फ़ातेह हूँ।”

29 चुनौचे दाऊद फ़ौज के बाक़ी अफ़राद को लेकर रब्बा पहुँचा। जब शहर पर हमला किया तो वह उसके क़ब्ज़े में आ गया। 30 दाऊद ने हनून बादशाह का ताज उसके सर से उतारकर अपने सर पर रख लिया। सोने के इस ताज का वज़न 34 किलोग्राम था, और उसमें एक बेशक़ीमत जौहर जड़ा हुआ था। दाऊद ने शहर से बहुत-सा लूटा हुआ माल लेकर 31 उसके बाशिंदों को गुलाम बना लिया। उन्हें पत्थर काटने की आरियाँ, लोहे की कुदालें और कुल्हाड़ियाँ दी गईं ताकि वह मज़दूरी करें और भट्टों पर काम करें। यही सुलूक बाक़ी अम्मोनी शहरों के बाशिंदों के साथ भी किया गया।

जंग के इख़िताम पर दाऊद पूरी फ़ौज के साथ यरूशलम लौट आया।

13

तमर की इसमतदरी

1 दाऊद के बेटे अबीसलूम की ख़ूबसूरत बहन थी जिसका नाम तमर था। उसका सौतेला भाई अमनोन तमर से शदीद मुहब्बत करने लगा। 2 वह तमर को इतनी शिद्दत से चाहने लगा कि रंजिश के बाइस बीमार हो गया, क्योंकि तमर कुँवारी थी, और अमनोन को उसके करीब आने का कोई रास्ता नज़र न आया।

3 अमनोन का एक दोस्त था जिसका नाम यूनदब था। वह दाऊद के भाई सिमआ का बेटा था और बड़ा ज़हीन था। 4 उसने अमनोन से पूछा, “बादशाह के बेटे, क्या मसला है? रोज़ बरोज़ आप ज़्यादा बुझे हुए नज़र आ रहे हैं। क्या आप मुझे नहीं बताएँगे कि बात क्या है?” अमनोन बोला, “मैं अबीसलूम की बहन तमर से शदीद मुहब्बत करता हूँ।” 5 यूनदब ने अपने दोस्त को मशवरा दिया, “बिस्तर पर लेट जाएँ और ऐसा ज़ाहिर करें गोया बीमार हैं। जब आपके वालिद आपका हाल पूछने आएँगे तो उनसे दरखास्त करना, ‘मेरी बहन तमर आकर मुझे मरीज़ों का खाना खिलाए। वह मेरे सामने खाना तैयार करे ताकि मैं उसे देखकर उसके हाथ से खाना खाऊँ।’”

6 चुनौचे अमनोन ने बिस्तर पर लेटकर बीमार होने का बहाना किया। जब बादशाह उसका हाल पूछने आया तो अमनोन ने गुज़ारिश की, “मेरी बहन तमर मेरे पास आएँ और मेरे सामने मरीज़ों का खाना बनाकर मुझे अपने हाथ से खिलाए।”

7 दाऊद ने तमर को इतला दी, “आपका भाई अमनोन बीमार है। उसके पास जाकर उसके लिए मरीजों का खाना तैयार करें।” 8 तमर ने अमनोन के पास आकर उस की मौजूदगी में मैदा गूँधा और खाना तैयार करके पकाया। अमनोन बिस्तर पर लेटा उसे देखता रहा। 9 जब खाना पक गया तो तमर ने उसे अमनोन के पास लाकर पेश किया। लेकिन उसने खाने से इनकार कर दिया। उसने हुक्म दिया, “तमाम नौकर कमरे से बाहर निकल जाएँ!” जब सब चले गए 10 तो उसने तमर से कहा, “खाने को मेरे सोने के कमरे में ले आएँ ताकि मैं आपके हाथ से खा सकूँ।” तमर खाने को लेकर सोने के कमरे में अपने भाई के पास आई।

11 जब वह उसे खाना खिलाने लगी तो अमनोन ने उसे पकड़कर कहा, “आ मेरी बहन, मेरे साथ हमबिसतर हो!” 12 वह पुकारी, “नहीं, मेरे भाई! मेरी इसमतदरी न करें। ऐसा अमल इसराईल में मना है। ऐसी बेदीन हरकत मत करना! 13 और ऐसी बेहुरमती के बाद मैं कहाँ जाऊँ? जहाँ तक आपका ताल्लुक है इसराईल में आपकी बुरी तरह बदनामी हो जाएगी, और सब समझेंगे कि आप निहायत शरीर आदमी हैं। आप बादशाह से बात क्यों नहीं करते? यकीनन वह आपको मुझसे शादी करने से नहीं रोकेंगे।” 14 लेकिन अमनोन ने उस की न सुनी बल्कि उसे पकड़कर उस की इसमतदरी की।

15 लेकिन फिर अचानक उस की मुहब्बत सख्त नफरत में बदल गई। पहले तो वह तमर से शदीद मुहब्बत करता था, लेकिन अब वह इससे बढ़कर उससे नफरत करने लगा। उसने हुक्म दिया, “उठ, दफा हो जा!” 16 तमर ने इलतमास की, “हाय, ऐसा मत करना। अगर आप मुझे निकालेंगे तो यह पहले गुनाह से ज्यादा संगीन जुर्म होगा।” लेकिन अमनोन उस की सुनने के लिए तैयार न था। 17 उसने अपने नौकर को बुलाकर हुक्म दिया, “इस औरत को यहाँ से निकाल दो और इसके पीछे दरवाज़ा बंद करके कुंडी लगाओ!” 18 नौकर तमर को बाहर ले गया और फिर उसके पीछे दरवाज़ा बंद करके कुंडी लगा दी।

तमर एक लंबे बाजूओंवाला फ़ाक पहने हुए थी। बादशाह की तमाम कुँवारी बेटियाँ यही लिबास पहना करती थीं। 19 बड़ी रंजिश के आलम में उसने अपना यह लिबास फाड़कर अपने सर पर राख डाल ली। फिर अपना हाथ सर पर रखकर वह चीखती-चिल्लाती वहाँ से चली गई। 20 जब घर पहुँच गई तो अबीसलूम ने उससे पूछा, “मेरी बहन, क्या अमनोन ने आपसे ज्यादाती की है? अब खामोश हो जाएँ। वह तो आपका भाई है। इस मामले को हद से ज्यादा अहमियत मत देना।” उस वक़्त से तमर अकेली ही अपने भाई अबीसलूम के घर में रही।

21 जब दाऊद को इस वाकिये की खबर मिली तो उसे सख्त गुस्सा आया। 22 अबीसलूम ने अमनोन से एक भी बात न की। न उसने उस पर कोई इलज़ाम लगाया, न कोई अच्छी बात की, क्योंकि तमर की इसमतदरी की वजह से वह अपने भाई से सख्त नफरत करने लगा था।

अबीसलूम का इंतकाम

23 दो साल गुज़र गए। अबीसलूम की भेड़ें इफ़राईम के करीब के बाल-हसूर में लाई गईं ताकि उनके बाल कतरे जाएँ। इस मौक़े पर अबीसलूम ने बादशाह के तमाम बेटों को दावत दी कि वह वहाँ ज़ियाफ़त में शरीक हों। 24 वह दाऊद बादशाह के पास भी गया और कहा, “इन दिनों में मैं अपनी भेड़ों के बाल कतरा रहा हूँ। बादशाह और उनके अफ़सरों को भी मेरे साथ खुशी मनाने की दावत है।”

25 लेकिन दाऊद ने इनकार किया, “नहीं, मेरे बेटे, हम सब तो नहीं आ सकते। इतने लोग आपके लिए बोझ का बाइस बन जाएंगे।” अबीसलूम बहुत इसरार करता रहा, लेकिन दाऊद ने दावत को कबूल न किया बल्कि उसे बरकत देकर सूखसत करना चाहता था।

26 आखिरकार अबीसलूम ने दरखास्त की, “अगर आप हमारे साथ जा न सकें तो फिर कम अज़ कम मेरे भाई अमनोन को आने दें।” बादशाह ने पूछा, “खासकर अमनोन को क्यों?” 27 लेकिन अबीसलूम इतना जोर देता रहा कि दाऊद ने अमनोन को बाक़ी बेटों समेत बाल-हसूर जाने की इजाज़त दे दी।

28 ज़ियाफ़त से पहले अबीसलूम ने अपने मुलाज़िमों को हुक्म दिया, “सुनें! जब अमनोन मैं पी पीकर खुश हो जाएगा तो मैं आपको अमनोन को मारने का हुक्म दूँगा। फिर आपको उसे मार डालना है। डरें मत, क्योंकि मैं ही ने आपको यह हुक्म दिया है। मज़बूत और दिलेर हों!”

29 मुलाज़िमों ने ऐसा ही किया। उन्होंने अमनोन को मार डाला। यह देखकर बादशाह के दूसरे बेटे उठकर अपने खच्चरों पर सवार हुए और भाग गए। 30 वह अभी रास्ते में ही थे कि अफ़वाह दाऊद तक पहुँची, “अबीसलूम ने आपके तमाम बेटों को क़त्ल कर दिया है। एक भी नहीं बचा।”

31 बादशाह उठा और अपने कपड़े फाड़कर फ़र्श पर लेट गया। उसके दरबारी भी दुख में अपने कपड़े फाड़ फाड़कर उसके पास खड़े रहे।

32 फिर दाऊद का भतीजा यूदनब बोल उठा, “मेरे आका, आप न सोचें कि उन्होंने तमाम शहज़ादों को मार डाला है। सिर्फ़ अमनोन मर गया होगा, क्योंकि जब से उसने तमर की इसमतदरी की उस वक़्त से अबीसलूम का यही इरादा था। 33 लिहाज़ा इस ख़बर को इतनी अहमियत न दें कि तमाम बेटे हलाक हुए हैं। सिर्फ़ अमनोन मर गया होगा।”

34 इतने में अबीसलूम फ़रार हो गया था। फिर यस्शलम की फ़सील पर खड़े पहेरेदार ने अचानक देखा कि मग़ारिब से लोगों का बड़ा ग़ुरोह शहर की तरफ़ बढ़ रहा है। वह पहाड़ी के दामन में चले आ रहे थे। 35 तब यूदनब ने बादशाह से कहा, “लो, बादशाह के बेटे आ रहे हैं, जिस तरह आपके खादिम ने कहा था।” 36 वह अभी अपनी बात ख़त्म कर ही रहा था कि शहज़ादे अंदर आए और ख़ूब रो पड़े। बादशाह और उसके अफ़सर भी रोने लगे।

37 दाऊद बड़ी देर तक अमनोन का मातम करता रहा। लेकिन अबीसलूम ने फ़रार होकर जसूर के बादशाह तलमी बिन अम्मीहद के पास पनाह ली जो उसका नाना था। 38 वहाँ वह तीन साल तक रहा। 39 फिर एक वक़्त आ गया कि दाऊद का अमनोन के लिए दुख दूर हो गया, और उसका अबीसलूम पर गुस्सा थम गया।

14

योआब अबीसलूम की सिफारिश करता है

1 योआब बिन ज़रूयाह को मालूम हुआ कि बादशाह अपने बेटे अबीसलूम को चाहता है, ² इसलिए उसने तकुअ से एक दानिशमंद औरत को बुलाया। योआब ने उसे हिदायत दी, “मातम का रूप भरे जैसे आप देर से किसी का मातम कर रही हों। मातम के कपड़े पहनकर खुशबूदार तेल मत लगाना। ³ बादशाह के पास जाकर उससे बात करें।” फिर योआब ने औरत को लफ़्ज़ बलफ़्ज़ वह कुछ सिखाया जो उसे बादशाह को बताना था।

⁴ दाऊद के दरबार में आकर औरत ने औंधे मुँह झुककर इलतमास की, “ऐ बादशाह, मेरी मदद करें!” ⁵ दाऊद ने दरियाफ़्त किया, “क्या मसला है?” औरत ने जवाब दिया, “मैं बेवा हूँ, मेरा शौहर फ़ौत हो गया है। ⁶ और मेरे दो बेटे थे। एक दिन वह बाहर खेत में एक दूसरे से उलझ पड़े। और चूँकि कोई मौजूद नहीं था जो दोनों को अलग करता इसलिए एक ने दूसरे को मार डाला। ⁷ उस वक़्त से पूरा कुंबा मेरे खिलाफ़ उठ खड़ा हुआ है। वह तकाज़ा करते हैं कि मैं अपने बेटे को उनके हवाले करूँ। वह कहते हैं, ‘उसने अपने भाई को मार दिया है, इसलिए हम बदले में उसे सज़ाए-मौत देंगे। इस तरह वारिस भी नहीं रहेगा।’ यों वह मेरी उम्मीद की आखिरी किरण को ख़त्म करना चाहते हैं। क्योंकि अगर मेरा यह बेटा भी मर जाए तो मेरे शौहर का नाम कायम नहीं रहेगा, और उसका खानदान रूए-ज़मीन पर से मिट जाएगा।” ⁸ बादशाह ने औरत से कहा, “अपने घर चली जाएँ और फ़िकर न करें। मैं मामला हल कर दूँगा।”

⁹ लेकिन औरत ने गुज़ारिश की, “ऐ बादशाह, डर है कि लोग फिर भी मुझे मुजरिम ठहराएँगे अगर मेरे बेटे को सज़ाए-मौत न दी जाए। आप पर तो वह इलज़ाम नहीं लगाएँगे।” ¹⁰ दाऊद ने इसरार किया, “अगर कोई आपको तंग करे तो उसे मेरे पास ले आएँ। फिर वह आइंदा आपको नहीं सताएगा।” ¹¹ औरत को तसल्ली न हुई। उसने गुज़ारिश की, “ऐ बादशाह, बराहे-करम रब अपने खुदा की कसम खाएँ कि आप किसी को भी मौत का बदला नहीं लेने देंगे। वरना नुक़सान में इज़ाफ़ा होगा और मेरा दूसरा बेटा भी हलाक हो जाएगा।” दाऊद ने जवाब दिया, “रब की हयात की कसम, आपके बेटे का एक बाल भी बीका नहीं होगा।”

¹² फिर औरत असल बात पर आ गई, “मेरे आक्रा, बराहे-करम अपनी खादिमा को एक और बात करने की इज़ाज़त दें।” बादशाह बोला, “करें बात।” ¹³ तब औरत ने कहा, “आप खुद क्यों अल्लाह की कौम के खिलाफ़ ऐसा इरादा रखते हैं जिसे आपने अभी अभी ग़लत करार दिया है? आपने खुद फ़रमाया है कि यह ठीक नहीं, और यों आपने अपने आपको ही मुजरिम ठहराया है। क्योंकि आपने अपने बेटे को रद्द करके उसे वापस आने नहीं दिया। ¹⁴ बेशक हम सबको किसी वक़्त मरना है। हम सब ज़मीन पर उंडेले गए पानी की मानिंद हैं जिसे ज़मीन ज़बज कर लेती है और जो दुबारा जमा नहीं किया जा सकता। लेकिन अल्लाह हमारी ज़िंदगी को बिलावज़ह मिटा नहीं देता बल्कि ऐसे मनसूबे तैयार रखता है जिनके ज़रीए मरदूद शख्स भी उसके पास वापस आ सके और उससे दूर न रहे। ¹⁵ ऐ बादशाह मेरे आक्रा, मैं इस वक़्त इसलिए आपके हुज़ूर आई हूँ कि मेरे लोग मुझे डराने की कोशिश कर रहे हैं। मैंने सोचा, मैं बादशाह से बात करने की ज़रूरत करूँगी, शायद वह मेरी सुनें ¹⁶ और मुझे उस आदमी से बचाएँ जो मुझे और मेरे बेटे को उस मौरूसी ज़मीन से महरूम रखना चाहता है जो अल्लाह ने हमें दे दी है। ¹⁷ खयाल यह था कि अगर बादशाह मामला हल कर दें तो फिर मुझे दुबारा सुकून मिलेगा, क्योंकि आप अच्छी और बुरी बातों का इम्तियाज़ करने में अल्लाह के फ़रिश्ते जैसे हैं। रब आपका खुदा आपके साथ हो।”

¹⁸ यह सब कुछ सुनकर दाऊद बोल उठा, “अब मुझे एक बात बताएँ। इसका सही जवाब दें।” औरत ने जवाब दिया, “जी मेरे आक्रा, बात फ़रमाइए।” दाऊद ने पूछा, “क्या योआब ने आपसे यह काम करवाया?” ¹⁹ औरत पुकारी, “बादशाह की हयात की कसम, जो कुछ भी मेरे आक्रा फ़रमाते हैं वह निशाने पर लग जाता है, खाह बंदा बाई या दाई तरफ़ हटने की कोशिश क्यों न करे। जी हाँ, आपके खादिम योआब ने मुझे आपके हुज़ूर भेज दिया। उसने मुझे लफ़्ज़ बलफ़्ज़ सब कुछ बताया जो मुझे आपको अर्ज़ करना था, ²⁰ क्योंकि वह आपको यह बात बराहे-रास्त नहीं पेश करना चाहता था। लेकिन मेरे आक्रा को अल्लाह के फ़रिश्ते की-सी हिकमत हासिल है। जो कुछ भी मुल्क में वुकू में आता है उसका आपको पता चल जाता है।”

अबीसलूम की वापसी

²¹ दाऊद ने योआब को बुलाकर उससे कहा, “ठीक है, मैं आपकी दरखास्त पूरी करूँगा। जाएँ, मेरे बेटे अबीसलूम को वापस ले आएँ।” ²² योआब औंधे मुँह झुक गया और बोला, “रब बादशाह को बरकत दे! मेरे आक्रा, आज मुझे मालूम हुआ है कि मैं आपको मंज़ूर हूँ, क्योंकि आपने अपने खादिम की दरखास्त को पूरा किया है।” ²³ योआब रवाना होकर जसूर चला गया और वहाँ से अबीसलूम को वापस लाया। ²⁴ लेकिन जब वह यरूशलम पहुँचे तो बादशाह ने हुक्म दिया, “उसे अपने घर में रहने की इज़ाज़त है, लेकिन वह कभी मुझे नज़र न आए।” चुनौचे अबीसलूम अपने घर में दुबारा रहने लगा, लेकिन बादशाह से कभी मुलाकात न हो सकी।

²⁵ पूरे इसराइल में अबीसलूम जैसा ख़ूबसूरत आदमी नहीं था। सब उस की खास तारीफ़ करते थे, क्योंकि सर से लेकर पाँव तक उसमें कोई नुक़स नज़र नहीं आता था। ²⁶ साल में वह एक ही मरतबा अपने बाल कटवाता था, क्योंकि इतने में उसके बाल हद से ज्यादा वज़नी हो जाते थे। जब उन्हें तोला जाता तो उनका वज़न तकरीबन सवा दो किलोग्राम होता था। ²⁷ अबीसलूम के तीन बेटे और एक बेटी थी। बेटी का नाम तमर था और वह निहायत ख़ूबसूरत थी।

28 दो साल गुज़र गए, फिर भी अबीसलूम को बादशाह से मिलने की इजाज़त न मिली। 29 फिर उसने योआब को इतला भेजी कि वह उस की सिफ़ारिश करे। लेकिन योआब ने आने से इनकार किया। अबीसलूम ने उसे दुबारा बुलाने की कोशिश की, लेकिन इस बार भी योआब उसके पास न आया। 30 तब अबीसलूम ने अपने नौकरों को हुक्म दिया, “देखो, योआब का खेत मेरे खेत से मुल्हिक है, और उसमें जौ की फ़सल पक रही है। जाओ, उसे आग लगा दो!” नौकर गए और ऐसा ही किया।

31 जब खेत में आग लग गई तो योआब भागकर अबीसलूम के पास आया और शिकायत की, “आपके नौकरों ने मेरे खेत को आग क्यों लगाई है?” 32 अबीसलूम ने जवाब दिया, “देखें, आप नहीं आए जब मैंने आपको बुलाया। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि आप बादशाह के पास जाकर उनसे पूछें कि मुझे जसूर से क्यों लाया गया। बेहतर होता कि मैं वहीं रहता। अब बादशाह मुझसे मिलें या अगर वह अब तक मुझे कुसूरवार ठहराते हैं तो मुझे सज़ाए-मौत दें।”

33 योआब ने बादशाह के पास जाकर उसे यह पैगाम पहुँचाया। फिर दाऊद ने अपने बेटे को बुलाया। अबीसलूम अंदर आया और बादशाह के सामने औंधे मुँह झुक गया। फिर बादशाह ने अबीसलूम को बोसा दिया।

15

अबीसलूम की साज़िश

1 कुछ देर के बाद अबीसलूम ने रथ और घोड़े खरीदे और साथ साथ 50 मुहाफ़िज़ भी रखे जो उसके आगे आगे दौड़ें। 2 रोज़ाना वह सुबह-सवेरे उठकर शहर के दरवाज़े पर जाता। जब कभी कोई शख्स इस मक़सद से शहर में दाख़िल होता कि बादशाह उसके किसी मुक़दमे का फ़ैसला करे तो अबीसलूम उससे मुखातिब होकर पूछता, “आप किस शहर से हैं?” अगर वह जवाब देता, “मैं इसराइल के फुलौ कबीले से हूँ,” 3 तो अबीसलूम कहता, “बेशक आप इस मुक़दमे को जीत सकते हैं, लेकिन अफ़सोस! बादशाह का कोई भी बंदा इस पर सहीह ध्यान नहीं देगा।” 4 फिर वह बात जारी रखता, “काश मैं ही मुल्क पर आला काज़ी मुक़रर किया गया होता! फिर सब लोग अपने मुक़दमे मुझे पेश कर सकते और मैं उनका सहीह इनसाफ़ कर देता।” 5 और अगर कोई क़रीब आकर अबीसलूम के सामने झुकने लगता तो वह उसे रोककर उसको गले लगाता और बोसा देता। 6 यह उसका उन तमाम इसराइलियों के साथ सुलूक था जो अपने मुक़दमे बादशाह को पेश करने के लिए आते थे। यों उसने इसराइलियों के दिलों को अपनी तरफ़ मायल कर लिया।

7 यह सिलसिला चार साल जारी रहा। एक दिन अबीसलूम ने दाऊद से बात की, “मुझे हबस्न जाने की इजाज़त दीजिए, क्योंकि मैंने रब से ऐसी मन्नत मानी है जिसके लिए ज़रूरी है कि हबस्न जाऊँ। 8 क्योंकि जब मैं जसूर में था तो मैंने क़सम खाकर वादा किया था, ‘ऐ रब, अगर तू मुझे यरूशलम वापस लाए तो मैं हबस्न में तेरी परस्तिश करूँगा।’” 9 बादशाह ने जवाब दिया, “ठीक है। सलामती से जाएँ।”

10 लेकिन हबस्न पहुँचकर अबीसलूम ने खुफ़िया तौर पर अपने कासिदों को इसराइल के तमाम क़बायली इलाक़ों में भेज दिया। जहाँ भी वह गए उन्होंने एलान किया, “ज्योंही नरसिंगे की आवाज़ सुनाई दे आप सबको कहना है, ‘अबीसलूम हबस्न में बादशाह बन गया है!’”

11 अबीसलूम के साथ 200 मेहमान यरूशलम से हबस्न आए थे। वह बेलौस थे, और उन्हें इसके बारे में इल्म ही न था।

12 जब हबस्न में क़ुरबानियाँ चढ़ाई जा रही थीं तो अबीसलूम ने दाऊद के एक मुशीर को बुलाया जो जिलोह का रहनेवाला था। उसका नाम अख़ीतुफल जिलोनी था। वह आया और अबीसलूम के साथ मिल गया। यों अबीसलूम के पैरोकारों में इज़ाफ़ा होता गया और उस की साज़िशें ज़ोर पकड़ने लगीं।

दाऊद यरूशलम से हिज़रत करता है

13 एक कासिद ने दाऊद के पास पहुँचकर उसे इतला दी, “अबीसलूम आपके खिलाफ़ उठ खड़ा हुआ है, और तमाम इसराइल उसके पीछे लग गया है।” 14 दाऊद ने अपने मुलाज़िमों से कहा, “आओ, हम फ़ौरन हिज़रत करें, वरना अबीसलूम के क़ब्ज़े में आ जाएंगे। जल्दी करें ताकि हम फ़ौरन रवाना हो सकें, क्योंकि वह कोशिश करेगा कि जितनी जल्दी हो सके यहाँ पहुँचे। अगर हम उस वक़्त शहर से निकले न हों तो वह हम पर आफ़त लाकर शहर के बाशिंदों को मार डालेगा।” 15 बादशाह के मुलाज़िमों ने जवाब दिया, “जो भी फ़ैसला हमारे आक्रा और बादशाह करें हम हाज़िर हैं।”

16 बादशाह अपने पूरे ख़ानदान के साथ रवाना हुआ। सिर्फ़ दस दाश्ताएँ महल को सँभालने के लिए पीछे रह गईं। 17 जब दाऊद अपने तमाम लोगों के साथ शहर के आखिरी घर तक पहुँचा तो वह रुक गया। 18 उसने अपने तमाम पैरोकारों को आगे निकलने दिया, पहले शाही दस्ते करेतीओ-फ़लेती को, फिर उन 600 जाती आदमियों को जो उसके साथ जात से यहाँ आए थे और आखिर में बाक़ी तमाम लोगों को। 19 जब फ़िलिस्ती शहर जात का आदमी इत्ती दाऊद के सामने से गुज़रने लगा तो बादशाह उससे मुखातिब हुआ, “आप हमारे साथ क्यों जाएँ? नहीं, वापस चले जाएँ और नए बादशाह के साथ रहें। आप तो ग़ैरमुल्की हैं और इसलिए इसराइल में रहते हैं कि आपको जिलावतन कर दिया गया है। 20 आपको यहाँ आए थोड़ी देर हुई है, तो क्या मुनासिब है कि आपको दुबारा मेरी वजह से कभी इधर कभी इधर घूमना पड़े? क्या पता है कि मुझे कहाँ कहाँ जाना पड़े। इसलिए वापस चले जाएँ, और अपने हमवतनों को भी अपने साथ ले जाएँ। रब आप पर अपनी मेहरबानी और वफ़ादारी का इज़हार करे।”

21 लेकिन इत्ती ने एतराज किया, “मेरे आका, रब और बादशाह की हयात की कसम, मैं आपको कभी नहीं छोड़ सकता, खाह मुझे अपनी जान भी कुरबान करनी पड़े।” 22 तब दाऊद मान गया। “चलो, फिर आगे निकलें!” चुनौचे इत्ती अपने लोगों और उनके खानदानों के साथ आगे निकला। 23 आखिर में दाऊद ने वादीए-किदरोन को पार करके रेगिस्तान की तरफ़ स्रु किया। गिर्दो-नवाह के तमाम लोग बादशाह को उसके पैरोकारों समेत खाना होते हुए देखकर फूट फूटकर रोने लगे।

24 सदोक इमाम और तमाम लावी भी दाऊद के साथ शहर से निकल आए थे। लावी अहद का संदूक उठाए चल रहे थे। अब उन्होंने उसे शहर से बाहर ज़मीन पर रख दिया, और अबियातर वहाँ कुरबानियाँ चढ़ाने लगा। लोगों के शहर से निकलने के पूरे अरसे के दौरान वह कुरबानियाँ चढ़ाता रहा। 25 फिर दाऊद सदोक से मुखातिब हुआ, “अल्लाह का संदूक शहर में वापस ले जाएँ। अगर रब की नज़रे-करम मुझ पर हुई तो वह किसी दिन मुझे शहर में वापस लाकर अहद के संदूक और उस की सुकूनतगाह को दुबारा देखने की इजाज़त देगा।” 26 लेकिन अगर वह फ़रमाए कि तू मुझे पसंद नहीं है, तो मैं यह भी बरदाश्त करने के लिए तैयार हूँ। वह मेरे साथ वह कुछ करे जो उसे मुनासिब लगे।

27 जहाँ तक आपका ताल्लुक है, अपने बेटे अखीमाज़ को साथ लेकर सहीह-सलामत शहर में वापस चले जाएँ। अबियातर और उसका बेटा यूनतन भी साथ जाएँ। 28 मैं खुद रेगिस्तान में दरियाए-यरदन की उस जगह स्क जाऊँगा जहाँ हम आसानी से दरिया को पार कर सकेंगे। वहाँ आप मुझे यरूशलम के हालात के बारे में पैगाम भेज सकते हैं। मैं आपके इंतज़ार में रहूँगा।”

29 चुनौचे सदोक और अबियातर अहद का संदूक शहर में वापस ले जाकर वहीं रहे। 30 दाऊद रोते रोते जैतून के पहाड़ पर चढ़ने लगा। उसका सर ढोंपा हुआ था, और वह नंगे पाँव चल रहा था। बाकी सबके सर भी ढोंपे हुए थे, सब रोते रोते चढ़ने लगे। 31 रास्ते में दाऊद को इतला दी गई, “अखीतुफल भी अबीसलूम के साथ मिल गया है।” यह सुनकर दाऊद ने दुआ की, “ऐ रब, बख़्श दे कि अखीतुफल के मशवरे नाकाम हो जाएँ।”

32 चलते चलते दाऊद पहाड़ की चोटी पर पहुँच गया जहाँ अल्लाह की परस्तिश की जाती थी। वहाँ हसी अरकी उससे मिलने आया। उसके कपड़े फटे हुए थे, और सर पर खाक थी। 33 दाऊद ने उससे कहा, “अगर आप मेरे साथ जाएँ तो आप सिर्फ़ बोझ का बाइस बनेंगे। 34 बेहतर है कि आप लौटकर शहर में जाएँ और अबीसलूम से कहें, ‘ऐ बादशाह, मैं आपकी खिदमत में हाज़िर हूँ। पहले मैं आपके बाप की खिदमत करता था, और अब आप ही की खिदमत करूँगा।’ अगर आप ऐसा करें तो आप अखीतुफल के मशवरे नाकाम बनाने में मेरी बड़ी मदद करेंगे। 35-36 आप अकेले नहीं होंगे। दोनों इमाम सदोक और अबियातर भी यरूशलम में पीछे रह गए हैं। दरबार में जो भी मनसूबे बाँधे जाएंगे वह उन्हें बताएँ। सदोक का बेटा अखीमाज़ और अबियातर का बेटा यूनतन मुझे हर खबर पहुँचाएँगे, क्योंकि वह भी शहर में ठहरे हुए हैं।”

37 तब दाऊद का दोस्त हसी वापस चला गया। वह उस वक़्त पहुँच गया जब अबीसलूम यरूशलम में दाखिल हो रहा था।

16

जीबा मिफ़ीबोसत के बारे में झूट बोलता है

1 दाऊद अभी पहाड़ की चोटी से कुछ आगे निकल गया था कि मिफ़ीबोसत का मुलाज़िम जीबा उससे मिलने आया। उसके पास दो गधे थे जिन पर जीने कसी हुई थी। उन पर 200 रोटियाँ, किशमिश की 100 टिक्कियाँ, 100 ताज़ा फल और मै की एक मशक लदी हुई थी। 2 बादशाह ने पूछा, “आप इन चीज़ों के साथ क्या करना चाहते हैं?” जीबा ने जवाब दिया, “गधे बादशाह के खानदान के लिए हैं, वह इन पर बैठकर सफ़र करें। रोटी और फल जवानों के लिए हैं, और मै उनके लिए जो रेगिस्तान में चलते चलते थक जाएँ।” 3 बादशाह ने सवाल किया, “आपके पुराने मालिक का पोता मिफ़ीबोसत कहाँ है?” जीबा ने कहा, “वह यरूशलम में ठहरा हुआ है। वह सोचता है कि आज इसराईली मुझे बादशाह बना देंगे, क्योंकि मैं साऊल का पोता हूँ।” 4 यह सुनकर दाऊद बोला, “आज ही मिफ़ीबोसत की तमाम मिलकियत आपके नाम मुंत्किल की जाती है।” जीबा ने कहा, “मैं आपके सामने अपने घुटने टेकता हूँ। रब करे कि मैं अपने आका और बादशाह का मंज़ूरे-नज़र रहूँ।”

सिमई दाऊद को लान-तान करता है

5 जब दाऊद बादशाह बहरीम के करीब पहुँचा तो एक आदमी वहाँ से निकलकर उस पर लानतें भेजने लगा। आदमी का नाम सिमई बिन जीरा था, और वह साऊल का रिश्तेदार था। 6 वह दाऊद और उसके अफ़सरों पर पत्थर भी फेंकने लगा, अगरचे दाऊद के बाएँ और दाएँ हाथ उसके मुहाफ़िज़ और बेहतरीन फ़ौजी चल रहे थे। 7 लानत करते करते सिमई चीख रहा था, “चल, दफ़ा हो जा! कातिल! बदमाश! 8 यह तेरा ही कुसूर था कि साऊल और उसका खानदान तबाह हुए। अब रब तुझे जो साऊल की जगह तख़्तनशीन हो गया है इसकी मुनासिब सज़ा दे रहा है। उसने तेरे बेटे अबीसलूम को तेरी जगह तख़्तनशीन करके तुझे तबाह कर दिया है। कातिल को सहीह मुआवज़ा मिल गया है!”

9 अबीशै बिन ज़रूयाह बादशाह से कहने लगा, “यह कैसा मुरदा कुत्ता है जो मेरे आका बादशाह पर लानत करे? मुझे इजाज़त दें, तो मैं जाकर उसका सर कलम कर दूँ।” 10 लेकिन बादशाह ने उसे रोक दिया, “मेरा आप और आपके भाई योआब से क्या वास्ता? नहीं, उसे लानत करने दें। हो सकता है रब ने उसे यह करने का हुक्म दिया है। तो फिर हम कौन हैं कि उसे रोके।” 11 फिर दाऊद तमाम अफ़सरों से भी मुखातिब हुआ, “जबकि मेरा अपना बेटा मुझे क़त्ल करने की कोशिश कर रहा है तो साऊल का यह रिश्तेदार ऐसा क्यों न करे? इसे छोड़ दो, क्योंकि रब ने इसे यह करने का हुक्म दिया है। 12 शायद रब मेरी मुसीबत का लिहाज़ करके सिमई की लानतें बरकत में बदल दे।”

13 दाऊद और उसके लोगों ने सफ़र जारी रखा। सिमई करीब की पहाड़ी ढलान पर उसके बराबर चलते चलते उस पर लानतें भेजता और पत्थर और मिट्टी के ढेले फेंकता रहा। 14 सब थकेमोँदे दरियाए-यरदन को पहुँच गए। वहाँ दाऊद ताज़ादम हो गया।

अबीसलूम यरूशलम में

15 इतने में अबीसलूम अपने पैरोकारों के साथ यरूशलम में दाखिल हुआ था। अखीतुफल भी उनके साथ मिल गया था। 16 थोड़ी देर के बाद दाऊद का दोस्त हसी अरकी अबीसलूम के दरबार में हाज़िर होकर पुकारा, “बादशाह ज़िंदाबाद! बादशाह ज़िंदाबाद!” 17 यह सुनकर अबीसलूम ने उससे तंज़न कहा, “यह कैसी वफ़ादारी है जो आप अपने दोस्त दाऊद को दिखा रहे हैं? आप अपने दोस्त के साथ रवाना क्यों न हुए?” 18 हसी ने जवाब दिया, “नहीं, जिस आदमी को रब और तमाम इसराइलियों ने मुकर्रर किया है, वही मेरा मालिक है, और उसी की खिदमत में मैं हाज़िर रहूँगा। 19 दूसरे, अगर किसी की खिदमत करनी है तो क्या दाऊद के बेटे की खिदमत करना मुनासिब नहीं है? जिस तरह मैं आपके बाप की खिदमत करता रहा हूँ उसी तरह अब आपकी खिदमत करूँगा।”

20 फिर अबीसलूम अखीतुफल से मुखातिब हुआ, “आगे क्या करना चाहिए? मुझे अपना मशवरा पेश करें।” 21 अखीतुफल ने जवाब दिया, “आपके बाप ने अपनी कुछ दाशताओं को महल सँभालने के लिए यहाँ छोड़ दिया है। उनके साथ हमबिसतर हो जाएँ। फिर तमाम इसराइल को मालूम हो जाएगा कि आपने अपने बाप की ऐसी बेइज़्ज़ती की है कि सुलह का रास्ता बंद हो गया है। यह देखकर सब जो आपके साथ हैं मज़बूत हो जाएंगे।” 22 अबीसलूम मान गया, और महल की छत पर उसके लिए खैमा लगाया गया। उसमें वह पूरे इसराइल के देखते देखते अपने बाप की दाशताओं से हमबिसतर हुआ।

23 उस वक़्त अखीतुफल का हर मशवरा अल्लाह के फ़रमान जैसा माना जाता था। दाऊद और अबीसलूम दोनों यों ही उसके मशवरों की क़दर करते थे।

17

हसी और अखीतुफल

1 अखीतुफल ने अबीसलूम को एक और मशवरा भी दिया। “मुझे इजाज़त दें तो मैं 12,000 फ़ौजियों के साथ इसी रात दाऊद का ताक़्क़ुब करूँ। 2 मैं उस पर हमला करूँगा जब वह थकामोँदा और बेदिल है। तब वह घबरा जाएगा, और उसके तमाम फ़ौजी भाग जाएंगे। नतीजतन मैं सिर्फ़ बादशाह ही को मार दूँगा 3 और बाकी तमाम लोगों को आपके पास वापस लाऊँगा। जो आदमी आप पकड़ना चाहते हैं उस की मौत पर सब वापस आ जाएंगे। और क़ौम में अमनो-अमान कायम हो जाएगा।”

4 यह मशवरा अबीसलूम और इसराइल के तमाम बुजुर्गों को पसंद आया। 5 ताहम अबीसलूम ने कहा, “पहले हम हसी अरकी से भी मशवरा लें। कोई उसे बुला लाए।” 6 हसी आया तो अबीसलूम ने उसके सामने अखीतुफल का मनसूबा बयान करके पूछा, “आपका क्या खयाल है? क्या हमें ऐसा करना चाहिए, या आपकी कोई और राय है?”

7 हसी ने जवाब दिया, “जो मशवरा अखीतुफल ने दिया है वह इस दफ़ा ठीक नहीं। 8 आप तो अपने वालिद और उनके आदमियों से वाकिफ़ हैं। वह सब माहिर फ़ौजी हैं। वह उस रीछनी की-सी शिद्दत से लड़ेंगे जिससे उसके बच्चे छीन लिए गए हैं। यह भी ज़हन में रखना चाहिए कि आपका बाप तज़रबाकार फ़ौजी है। इमकान नहीं कि वह रात को अपने फ़ौजियों के दरमियान गुज़ारेगा। 9 ग़ालिबन वह इस वक़्त भी गहरी खाई या कहीं और छुप गया है। हो सकता है वह वहाँ से निकलकर आपके दस्तों पर हमला करे और इब्तिदा ही में आपके थोड़े-बहुत अफ़राद मर जाएँ। फिर अफ़वाह फैल जाएगी कि अबीसलूम के दस्तों में कत्ले-आम शुरू हो गया है। 10 यह सुनकर आपके तमाम अफ़राद डर के मारे बेदिल हो जाएंगे, खाह वह शेरबबर जैसे बहादुर क्यों न हों। क्योंकि तमाम इसराइल जानता है कि आपका बाप बेहतरीन फ़ौजी है और कि उसके साथी भी दिलेर हैं।

11 यह पेशे-नज़र रखकर मैं आपको एक और मशवरा देता हूँ। शिमाल में दान से लेकर जुनूब में बैर-सबा तक लड़ने के काबिल तमाम इसराइलियों को बुलाएँ। इतने जमा करें कि वह साहिल की रेत की मानिद होंगे, और आप खुद उनके आगे चलकर लड़ने के लिए निकलें। 12 फिर हम दाऊद का खोज लगाकर उस पर हमला करेंगे। हम उस तरह उस पर टूट पड़ेंगे जिस तरह ओस ज़मीन पर गिरती है। सबके सब हलाक हो जाएंगे, और न वह और न उसके आदमी बच पाएँगे। 13 अगर दाऊद किसी शहर में पनाह ले तो तमाम इसराइली फ़सील के साथ रस्से लगाकर पूरे शहर को वादी में घसीट ले जाएंगे। पत्थर पर पत्थर बाकी नहीं रहेगा!”

14 अबीसलूम और तमाम इसराइलियों ने कहा, “हसी का मशवरा अखीतुफल के मशवरे से बेहतर है।” हकीकत में अखीतुफल का मशवरा कहीं बेहतर था, लेकिन रब ने उसे नाकाम होने दिया ताकि अबीसलूम को मुसीबत में डाले।

दाऊद को अबीसलूम का मनसूबा बताया जाता है

15 हसी ने दोनों इमामों सदोक और अबियातर को वह मनसूबा बताया जो अखीतुफल ने अबीसलूम और इसराइल के बुजुर्गों को पेश किया था। साथ साथ उसने उन्हें अपने मशवरे के बारे में भी आगाह किया। 16 उसने कहा, “अब फ़ौरन दाऊद को इतला दें कि किसी सूत में भी इस रात को दरियाए-यरदन की उस जगह पर न गुज़ारें जहाँ लोग दरिया को पार करते हैं। लाज़िम है कि आप आज ही दरिया को उबूर कर लें, वरना आप तमाम साथियों समेत बरबाद हो जाएंगे।”

17 यूनतन और अखीमाज़ यरूशलम से बाहर के चश्मे ऐन-राजिल के पास इंतज़ार कर रहे थे, क्योंकि वह शहर में दाखिल होकर किसी को नज़र आने का ख़तरा मोल नहीं ले सकते थे। एक नौकरानी शहर से निकल आई और उन्हें हसी का पैगाम दे दिया ताकि वह आगे निकलकर उसे दाऊद तक पहुँचाएँ। 18 लेकिन एक जवान ने उन्हें देखा और भागकर अबीसलूम को इतला दी। दोनों जल्दी जल्दी वहाँ से चले गए और एक आदमी के घर में छुप गए जो बहरीम में रहता था। उसके सहन में कुआँ था। उसमें वह उतर गए। 19 आदमी की बीवी ने कुएँ के मुँह पर कपड़ा बिछाकर उस पर अनाज के दाने बिखेर दिए ताकि किसी को मालूम न हो कि वहाँ कुआँ है।

20 अबीसलूम के सिपाही उस घर में पहुँचे और औरत से पूछने लगे, “अखीमाज़ और यूनतन कहाँ हैं?” औरत ने जवाब दिया, “वह आगे निकल चुके हैं, क्योंकि वह नदी को पार करना चाहते थे।” सिपाही दोनों आदमियों का खोज लगाते लगाते थक गए। आखिरकार वह ख़ाली हाथ यरूशलम लौट गए।

21 जब चले गए तो अखीमाज़ और यूनतन कुएँ से निकलकर सीधे दाऊद बादशाह के पास चले गए ताकि उसे पैगाम सुनाएँ। उन्होंने कहा, “लाज़िम है कि आप दरिया को फ़ौरन पार करें!” फिर उन्होंने दाऊद को अखीतुफल का पूरा मनसूबा बताया। 22 दाऊद और उसके तमाम साथी जल्द ही ख़ाना हुए और उसी रात दरियाए-यरदन को उबूर किया। पौ फटते वक़्त एक भी पीछे नहीं रह गया था।

23 जब अखीतुफल ने देखा कि मेरा मशवरा रद्द किया गया है तो वह अपने गधे पर ज़ीन कसकर अपने वतनी शहर वापस चला गया। वहाँ उसने घर के तमाम मामलात का बंदोबस्त किया, फिर जाकर फ़ौसी ले ली। उसे उसके बाप की क़ब्र में दफनाया गया।

24 जब दाऊद महनायम पहुँच गया तो अबीसलूम इसराईली फ़ौज के साथ दरियाए-यरदन को पार करने लगा। 25 उसने अमासा को फ़ौज पर मुक़र्र किया था, क्योंकि योआब तो दाऊद के साथ था। अमासा एक इसमाईली बनाम इतरा का बेटा था। उस की माँ अबीजेल बित नाहस थी, और वह योआब की माँ ज़रूयाह की बहन थी। 26 अबीसलूम और उसके साथियों ने मुल्के-जिलियाद में पड़ाव डाला।

27 जब दाऊद महनायम पहुँचा तो तीन आदमियों ने उसका इस्तक़बाल किया। सोबी बिन नाहस अम्मोनियों के दासल-हुकूमत रब्बा से, मकीर बिन अम्मियेल लो-दिबार से और बरज़िल्ली जिलियादी राजिलीम से आए। 28 तीनों ने दाऊद और उसके लोगों को बिस्तर, बासन, मिट्टी के बरतन, गंदुम, जौ, मैदा, अनाज के भुने हुए दाने, लोबिया, मसूर, 29 शहद, दही, भेड़-बकरियाँ और गाय के दूध का पनीर मुहैया किया। क्योंकि उन्होंने सोचा, “यह लोग रेगिस्तान में चलते चलते ज़रूर भूके, प्यासे और थकेमाँदे हो गए होंगे।”

18

जंग के लिए तैयारियाँ

1 दाऊद ने अपने फ़ौजियों का मुआयना करके हज़ार हज़ार और सौ सौ अफ़राद पर आदमी मुक़र्र किए। 2 फिर उसने उन्हें तीन हिस्सों में तकसीम करके एक हिस्से पर योआब को, दूसरे पर उसके भाई अबीशै बिन ज़रूयाह को और तीसरे पर इत्ती जाती को मुक़र्र किया।

उसने फ़ौजियों को बताया, “मैं खुद भी आपके साथ लड़ने के लिए निकलूँगा।” 3 लेकिन उन्होंने एतराज़ किया, “ऐसा न करें! अगर हमें भागना भी पड़े या हमारा आधा हिस्सा मारा भी जाए तो अबीसलूम के फ़ौजियों के लिए इतना कोई फ़रक़ नहीं पड़ेगा। वह आप ही को पकड़ना चाहते हैं, क्योंकि आप उनके नज़दीक हममें से 10,000 अफ़राद से ज़्यादा अहम हैं। चुनौचे बेहतर है कि आप शहर ही में रहें और वहाँ से हमारी हिमायत करें।”

4 बादशाह ने जवाब दिया, “ठीक है, जो कुछ आपको माकूल लगता है वही करूँगा।” वह शहर के दरवाज़े पर खड़ा हुआ, और तमाम मर्द सौ सौ और हज़ार हज़ार के गुरोहों में उसके सामने से गुज़रकर बाहर निकले। 5 योआब, अबीशै और इत्ती को उसने हुक्म दिया, “मेरी खातिर जवान अबीसलूम से नरमी से पेश आना!” तमाम फ़ौजियों ने तीनों कमाँडरों से यह बात सुनी।

अबीसलूम की शिकस्त

6 दाऊद के लोग खुले मैदान में इसराईलियों से लड़ने गए। इफ़राईम के जंगल में उनकी टक्कर हुई, 7 और दाऊद के फ़ौजियों ने मुखालिफ़ों को शिकस्ते-फ़ाश दी। उनके 20,000 अफ़राद हलाक हुए। 8 लड़ाई पूरे जंगल में फैलती गई। यह जंगल इतना ख़तरनाक था कि उस दिन तलवार की निसबत ज़्यादा लोग उस की ज़द में आकर हलाक हो गए।

9 अचानक दाऊद के कुछ फ़ौजियों को अबीसलूम नज़र आया। वह खच्चर पर सवार बलूत के एक बड़े दरख़्त के साथ में से गुज़रने लगा तो उसके बाल दरख़्त की शाखों में उलझ गए। उसका खच्चर आगे निकल गया जबकि अबीसलूम वहीं आसमानो-ज़मीन के दरमियान लटका रहा। 10 जिन आदमियों ने यह देखा उनमें से एक योआब के पास गया और इतला दी, “मैंने अबीसलूम को देखा है। वह बलूत के एक दरख़्त में लटका हुआ है।”

11 योआब पुकारा, “क्या आपने उसे देखा? तो उसे वहीं क्यों न मार दिया? फिर मैं आपको इनाम के तौर पर चाँदी के दस सिक्के और एक कमरबंद दे देता।” 12 लेकिन आदमी ने एतराज़ किया, “अगर आप मुझे चाँदी के हज़ार सिक्के भी देते तो भी मैं बादशाह के बेटे को हाथ न लगाता। हमारे सुनते सुनते बादशाह ने आप, अबीशै और इत्ती को हुक्म दिया, ‘मेरी खातिर अबीसलूम को नुक़सान न पहुँचाएँ।’ 13 और अगर मैं चुपके से भी उसे क़त्ल करता तो भी इसकी ख़बर किसी न किसी वक़्त बादशाह के कानों तक पहुँचती। क्योंकि कोई भी बात बादशाह से पोशीदा नहीं रहती। अगर मुझे इस सूरत में पकड़ा जाता तो आप मेरी हिमायत न करते।”

14 योआब बोला, “मेरा वक्त मज़ीद जाया मत करो।” उसने तीन नेत्रे लेकर अबीसलूम के दिल में घोंप दिए जब वह अभी ज़िंदा हालत में दरख्त से लटका हुआ था। 15 फिर योआब के दस सिलाहबरदारों ने अबीसलूम को घेरकर उसे हलाक कर दिया।

16 तब योआब ने नरसिंगा बजा दिया, और उसके फ़ौजी दूसरों का ताक़्क़ुब करने से बाज़ आकर वापस आ गए। 17 बाकी इसराईली अपने अपने घर भाग गए। योआब के आदमियों ने अबीसलूम की लाश को एक गहरे गढ़े में फेंककर उस पर पत्थरों का बड़ा ढेर लगा दिया।

18 कुछ देर पहले अबीसलूम इस खयाल से बादशाह की वादी में अपनी याद में एक सतून खड़ा कर चुका था कि मेरा कोई बेटा नहीं है जो मेरा नाम कायम रखे। आज तक यह ‘अबीसलूम की यादगार’ कहलाता है।

दाऊद को अबीसलूम की मौत की खबर मिलती है

19 अखीमाज़ बिन सदोक ने योआब से दरखास्त की, “मुझे दौड़कर बादशाह को खुशख़बरी सुनाने दें कि रब ने उसे दुश्मनों से बचा लिया है।” 20 लेकिन योआब ने इनकार किया, “जो पैग़ाम आपको बादशाह तक पहुँचाना है वह उसके लिए खुशख़बरी नहीं है, क्योंकि उसका बेटा मर गया है। किसी और वक्त मैं ज़रूर आपको उसके पास भेज दूँगा, लेकिन आज नहीं।” 21 उसने एथोपिया के एक आदमी को हुक्म दिया, “जाएँ और बादशाह को बताएँ।” आदमी योआब के सामने औंधे मुँह झुक गया और फिर दौड़कर चला गया।

22 लेकिन अखीमाज़ खुश नहीं था। वह इसरार करता रहा, “कुछ भी हो जाए, मेहरबानी करके मुझे उसके पीछे दौड़ने दें।” एक और बार योआब ने उसे रोकने की कोशिश की, “बेटे, आप जाने के लिए क्यों तड़पते हैं? जो खबर पहुँचानी है उसके लिए आपको इनाम नहीं मिलेगा।” 23 अखीमाज़ ने जवाब दिया, “कोई बात नहीं। कुछ भी हो जाए, मैं हर सूरत में दौड़कर बादशाह के पास जाना चाहता हूँ।” तब योआब ने उसे जाने दिया। अखीमाज़ ने दरियाए-यरदन के खुले मैदान का रास्ता लिया, इसलिए वह एथोपिया के आदमी से पहले बादशाह के पास पहुँच गया।

24 उस वक्त दाऊद शहर के बाहर और अंदरवाले दरवाज़ों के दरमियान बैठा इंतज़ार कर रहा था। जब पहरेदार दरवाज़े के ऊपर की फ़सील पर चढ़ा तो उसे एक तनहा आदमी नज़र आया जो दौड़ता हुआ उनकी तरफ़ आ रहा था। 25 पहरेदार ने आवाज़ देकर बादशाह को इतला दी। दाऊद बोला, “अगर अकेला हो तो ज़रूर खुशख़बरी लेकर आ रहा होगा।” यह आदमी भागता भागता करीब आ गया, 26 लेकिन इतने में पहरेदार को एक और आदमी नज़र आया जो शहर की तरफ़ दौड़ता हुआ आ रहा था। उसने शहर के दरवाज़े के दरबान को आवाज़ दी, “एक और आदमी दौड़ता हुआ दिखाई दे रहा है। वह भी अकेला ही आ रहा है।” दाऊद ने कहा, “वह भी अच्छी खबर लेकर आ रहा है।” 27 फिर पहरेदार पुकारा, “लगता है कि पहला आदमी अखीमाज़ बिन सदोक है, क्योंकि वही यों चलता है।” दाऊद को तसल्ली हुई, “अखीमाज़ अच्छा बंदा है। वह ज़रूर अच्छी खबर लेकर आ रहा होगा।”

28 दूर से अखीमाज़ ने बादशाह को आवाज़ दी, “बादशाह की सलामती हो!” वह औंधे मुँह बादशाह के सामने झुककर बोला, “रब आपके ख़ुदा की तमज़ीद हो! उसने आपको उन लोगों से बचा लिया है जो मेरे आक्रा और बादशाह के खिलाफ़ उठ खड़े हुए थे।” 29 दाऊद ने पूछा, “और मेरा बेटा अबीसलूम? क्या वह महफूज़ है?” अखीमाज़ ने जवाब दिया, “जब योआब ने मुझे और बादशाह के दूसरे खादिम को आपके पास सख़सत किया तो उस वक्त बड़ी अफ़रा-तफ़री थी। मुझे तफ़सील से मालूम न हुआ कि क्या हो रहा है।” 30 बादशाह ने हुक्म दिया, “एक तरफ़ होकर मेरे पास खड़े हो जाएँ।” अखीमाज़ ने ऐसा ही किया।

31 फिर एथोपिया का आदमी पहुँच गया। उसने कहा, “मेरे बादशाह, मेरी खुशख़बरी सुनें! आज रब ने आपको उन सब लोगों से नज़ात दिलाई है जो आपके खिलाफ़ उठ खड़े हुए थे।” 32 बादशाह ने सवाल किया, “और मेरा बेटा अबीसलूम? क्या वह महफूज़ है?” एथोपिया के आदमी ने जवाब दिया, “मेरे आक्रा, जिस तरह उसके साथ हुआ है, उस तरह आपके तमाम दुश्मनों के साथ हो जाए, उन सबके साथ जो आपको नुक़सान पहुँचाना चाहते हैं।”

33 यह सुनकर बादशाह लरज़ उठा। शहर के दरवाज़े के ऊपर की फ़सील पर एक कमरा था। अब बादशाह रोते रोते सीढ़ियों पर चढ़ने लगा और चीखते-चिल्लाते उस कमरे में चला गया, “हाय मेरे बेटे अबीसलूम! मेरे बेटे, मेरे बेटे अबीसलूम! काश मैं ही तेरी जगह मर जाता। हाय अबीसलूम, मेरे बेटे, मेरे बेटे!”

19

योआब दाऊद को समझाता है

1 योआब को इतला दी गई, “बादशाह रोते रोते अबीसलूम का मातम कर रहा है।” 2 जब फ़ौजियों को खबर मिली कि बादशाह अपने बेटे का मातम कर रहा है तो फ़तह पाने पर उनकी सारी ख़ुशी काफ़ूर हो गई। हर तरफ़ मातम और ग़म का समौ था। 3 उस दिन दाऊद के आदमी चोरी चोरी शहर में घुस आए, ऐसे लोगों की तरह जो मैदाने-जंग से फ़रार होने पर शरमाते हुए चुपके से शहर में आ जाते हैं।

4 बादशाह अभी कमरे में बैठा था। अपने मुँह को ढाँपकर वह चीखता-चिल्लाता रहा, “हाय मेरे बेटे अबीसलूम! हाय अबीसलूम, मेरे बेटे, मेरे बेटे!” 5 तब योआब उसके पास जाकर उसे समझाने लगा, “आज आपके खादिमों ने न सिर्फ़ आपकी जान बचाई है बल्कि आपके बेटों, बेटियों, बीवियों और दाश्ताओं की जान भी। तो भी आपने उनका मुँह काला कर दिया है। 6 जो आपसे नफ़रत करते हैं उनसे आप मुहब्बत रखते हैं जबकि जो आपसे प्यार करते हैं उनसे आप नफ़रत करते हैं। आज आपने साफ़ ज़ाहिर कर दिया है कि आपके कमाँडर और दस्ते आपकी

नज़र में कोई हैसियत नहीं रखते। हाँ, आज मैंने जान लिया है कि अगर अबीसलूम जिंदा होता तो आप खुश होते, खाह हम बाकी तमाम लोग हलाक क्यों न हो जाते। 7 अब उठकर बाहर जाएँ और अपने खादिमों की हौसलाअफ़जाई करें। रब की कसम, अगर आप बाहर न निकलेंगे तो रात तक एक भी आपके साथ नहीं रहेगा। फिर आप पर ऐसी मुसीबत आएगी जो आपकी जवानी से लेकर आज तक आप पर नहीं आई है।”

8 तब दाऊद उठा और शहर के दरवाज़े के पास उतर आया। जब फ़ौजियों को बताया गया कि बादशाह शहर के दरवाज़े में बैठा है तो वह सब उसके सामने जमा हुए।

दाऊद यरूशलम वापस आता है

इतने में इसराईली अपने घर भाग गए थे। 9 इसराईल के तमाम क़बीलों में लोग आपस में बहस-मुबाहसा करने लगे, “दाऊद बादशाह ने हमें हमारे दुश्मनों से बचाया, और उसी ने हमें फ़िलिस्तिनियों के हाथ से आज़ाद कर दिया। लेकिन अबीसलूम की वजह से वह मुल्क से हिजरत कर गया है। 10 अब जब अबीसलूम जिसे हमने मसह करके बादशाह बनाया था मर गया है तो आप बादशाह को वापस लाने से क्यों झिजकते हैं?”

11 दाऊद ने सदोक और अबियातर इमामों की मारिफ़त यहदाह के बुजुर्गों को इत्तला दी, “यह बात मुझ तक पहुँच गई है कि तमाम इसराईल अपने बादशाह का इस्तक़बाल करके उसे महल में वापस लाना चाहता है। तो फिर आप क्यों देर कर रहे हैं? क्या आप मुझे वापस लाने में सबसे आखिर में आना चाहते हैं? 12 आप मेरे भाई, मेरे करीबी रिश्तेदार हैं। तो फिर आप बादशाह को वापस लाने में आखिर में क्यों आ रहे हैं?”

13 और अबीसलूम के कमाँडर अमासा को दोनों इमामों ने दाऊद का यह पैगाम पहुँचाया, “सुनें, आप मेरे भतीजे हैं, इसलिए अब से आप ही योआब की जगह मेरी फ़ौज के कमाँडर होंगे। अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे अगर मैं अपना यह वादा पूरा न करूँ।”

14 इस तरह दाऊद यहदाह के तमाम दिलों को जीत सका, और सबके सब उसके पीछे लग गए। उन्होंने उसे पैगाम भेजा, “वापस आँ, आप भी और आपके तमाम लोग भी।” 15 तब दाऊद यरूशलम वापस चलने लगा। जब वह दरियाए-यरदन तक पहुँचा तो यहदाह के लोग जिलजाल में आए ताकि उससे मिलें और उसे दरिया के दूसरे किनारे तक पहुँचाएँ।

दाऊद सिमई को मुआफ़ कर देता है

16 बिनयमीनी शहर बहरीम का सिमई बिन जीरा भी भागकर यहदाह के आदिमियों के साथ दाऊद से मिलने आया। 17 बिनयमीन के क़बीले के हजार आदमी उसके साथ थे। साऊल का पुराना नौकर जीबा भी अपने 15 बेटों और 20 नौकरों समेत उनमें शामिल था। बादशाह के यरदन के किनारे तक पहुँचने से पहले पहले 18 वह जल्दी से दरिया को उबूर करके उसके पास आए ताकि बादशाह के घराने को दरिया के दूसरे किनारे तक पहुँचाएँ और हर तरह से बादशाह को खुश रखें।

दाऊद दरिया को पार करने को था कि सिमई औंधे मुँह उसके सामने गिर गया। 19 उसने इलतमास की, “मेरे आका, मुझे मुआफ़ करें। जो ज्यादती मैंने उस दिन आपसे की जब आपको यरूशलम को छोड़ना पड़ा वह याद न करें। बराहे-करम यह बात अपने ज़हन से निकाल दें। 20 मैंने जान लिया है कि मुझसे बड़ा जुर्म सरज़द हुआ है, इसलिए आज मैं यूसुफ़ के घराने के तमाम अफ़राद से पहले ही अपने आका और बादशाह के हुज़ूर आ गया हूँ।”

21 अबीशै बिन ज़रूयाह बोला, “सिमई सज़ाए-मौत के लायक है! उसने रब के मसह किए हुए बादशाह पर लानत की है।” 22 लेकिन दाऊद ने उसे डाँटा, “मेरा आप और आपके भाई योआब के साथ क्या वास्ता? ऐसी बातों से आप इस दिन मेरे मुखालिफ़ बन गए हैं! आज तो इसराईल में किसी को सज़ाए-मौत देने का नहीं बल्कि खुशी का दिन है। देखें, इस दिन मैं दुबारा इसराईल का बादशाह बन गया हूँ!” 23 फिर बादशाह सिमई से मुखातिब हुआ, “रब की कसम, आप नहीं मरेँगे।”

मिफ़ीबोसत दाऊद से मिलने आता है

24 साऊल का पोता मिफ़ीबोसत भी बादशाह से मिलने आया। उस दिन से जब दाऊद को यरूशलम को छोड़ना पड़ा आज तक जब वह सलामती से वापस पहुँचा मिफ़ीबोसत मातम की हालत में रहा था। न उसने अपने पाँव न अपने कपड़े धोए थे, न अपनी मुँछों की काँट-छाँट की थी। 25 जब वह बादशाह से मिलने के लिए यरूशलम से निकला तो बादशाह ने उससे सवाल किया, “मिफ़ीबोसत, आप मेरे साथ क्यों नहीं गए थे?”

26 उसने जवाब दिया, “मेरे आका और बादशाह, मैं जाने के लिए तैयार था, लेकिन मेरा नौकर जीबा मुझे धोका देकर अकेला ही चला गया। मैंने तो उसे बताया था, ‘मेरे गधे पर जीन कसो ताकि मैं बादशाह के साथ खाना हो सकूँ।’ और मेरा जाने का कोई और वसीला था नहीं, क्योंकि मैं दोनों टाँगों से माज़ूर हूँ। 27 जीबा ने मुझ पर तोहमत लगाई है। लेकिन मेरे आका और बादशाह अल्लाह के फ़रिश्ते जैसे हैं। मेरे साथ वही कुछ करें जो आपको मुनासिब लगे। 28 मेरे दादा के पूरे घराने को आप हलाक कर सकते थे, लेकिन फिर भी आपने मेरी इज़ज़त करके उन मेहमानों में शामिल कर लिया जो रोज़ाना आपकी मेज़ पर खाना खाते हैं। चुनौचे मेरा क्या हक़ है कि मैं बादशाह से मज़ीद अपील करूँ।”

29 बादशाह बोला, “अब बस करें। मैंने फैसला कर लिया है कि आपकी ज़मीन आप और जीबा में बराबर तकसीम की जाएँ।” 30 मिफ़ीबोसत ने जवाब दिया, “वह सब कुछ ले ले। मेरे लिए यही काफी है कि आज मेरे आका और बादशाह सलामती से अपने महल में वापस आ पहुँचे हैं।”

दाऊद और बरज़िल्ली

31 बरज़िल्ली जिलियादी राजिलीम से आया था ताकि बादशाह के साथ दरियाए-यरदन को पार करके उसे ख़सत करे। 32 बरज़िल्ली 80 साल का था। महनायम में रहते वक़्त उसी ने दाऊद की मेहमान-नवाज़ी की थी, क्योंकि वह बहुत अमीर था। 33 अब दाऊद ने बरज़िल्ली को दावत दी, “मेरे साथ यरूशलम जाकर वहाँ रहे! मैं आपका हर तरह से ख़याल रखूँगा।”

34 लेकिन बरज़िल्ली ने इनकार किया, “मेरी ज़िंदगी के थोड़े दिन बाकी हैं, मैं क्यों यरूशलम में जा बसूँ? 35 मेरी उम्र 80 साल है। न मैं अच्छी और बुरी चीज़ों में इम्तियाज़ कर सकता, न मुझे खाने-पीने की चीज़ों का मज़ा आता है। गीत गानेवालों की आवाज़ें भी मुझसे सुनी नहीं जाती। नहीं मेरे आका और बादशाह, अगर मैं आपके साथ जाऊँ तो आपके लिए सिर्फ़ बोझ का बाइस हूँगा। 36 इसकी ज़रूरत नहीं कि आप मुझे इस क्रिस्म का मुआवज़ा दें। मैं बस आपके साथ दरियाए-यरदन को पार करूँगा 37 और फिर अगर इजाज़त हो तो वापस चला जाऊँगा। मैं अपने ही शहर में मरना चाहता हूँ, जहाँ मेरे माँ-बाप की कब्र है। लेकिन मेरा बेटा किमहाम आपकी खिदमत में हाज़िर है। वह आपके साथ चला जाए तो आप उसके लिए वह कुछ करें जो आपको मुनासिब लगे।”

38 दाऊद ने जवाब दिया, “ठीक है, किमहाम मेरे साथ जाए। और जो कुछ भी आप चाहेंगे मैं उसके लिए करूँगा। अगर कोई काम है जो मैं आपके लिए कर सकता हूँ तो मैं हाज़िर हूँ।”

39 फिर दाऊद ने अपने साथियों समेत दरिया को उबूर किया। बरज़िल्ली को बोसा देकर उसने उसे बरकत दी। बरज़िल्ली अपने शहर वापस चल पड़ा 40 जबकि दाऊद जिलजाल की तरफ़ बढ़ गया। किमहाम भी साथ गया। इसके अलावा यहदाह के सब और इसराईल के आधे लोग उसके साथ चले।

इसराईल और यहदाह आपस में झगड़ते हैं

41 रास्ते में इसराईल के मर्द बादशाह के पास आकर शिकायत करने लगे, “हमारे भाइयों यहदाह के लोगों ने आपको आपके घराने और फ़ौजियों समेत चोरी चोरी क्यों दरियाए-यरदन के मगरिबी किनारे तक पहुँचाया? यह ठीक नहीं है।”

42 यहदाह के मर्दों ने जवाब दिया, “बात यह है कि हम बादशाह के करीबी रिश्तेदार हैं। आपको यह देखकर गुस्सा क्यों आ गया है? न हमने बादशाह का खाना खाया, न उससे कोई तोहफ़ा पाया है।”

43 तो भी इसराईल के मर्दों ने एतराज़ किया, “हमारे दस कबीले हैं, इसलिए हमारा बादशाह की खिदमत करने का दस गुना ज़्यादा हक़ है। तो फिर आप हमें हकीर क्यों जानते हैं? हमने तो पहले अपने बादशाह को वापस लाने की बात की थी।” यों बहस-मुबाहसा जारी रहा, लेकिन यहदाह के मर्दों की बातें ज़्यादा सख़्त थीं।

20

सबा दाऊद के खिलाफ़ उठ खड़ा होता है

1 झगड़नेवालों में से एक बदमाश था जिसका नाम सबा बिन बिक्री था। वह बिनयमीनी था। अब उसने नरसिंगा बजाकर एलान किया, “न हमें दाऊद से मीरास में कुछ मिलेगा, न यस्सी के बेटे से कुछ मिलने की उम्मीद है। ऐ इसराईल, हर एक अपने घर वापस चला जाए!” 2 तब तमाम इसराईली दाऊद को छोड़कर सबा बिन बिक्री के पीछे लग गए। सिर्फ़ यहदाह के मर्द अपने बादशाह के साथ लिपटे रहे और उसे यरदन से लेकर यरूशलम तक पहुँचाया।

3 जब दाऊद अपने महल में दाखिल हुआ तो उसने उन दस दाशताओं का बंदोबस्त कराया जिनको उसने महल को सँभालने के लिए पीछे छोड़ दिया था। वह उन्हें एक ख़ास घर में अलग रखकर उनकी तमाम ज़रूरियात पूरी करता रहा लेकिन उनसे कभी हमबिसतर न हुआ। वह कहीं जा न सकी, और उन्हें ज़िंदगी के आखिरी लमहे तक बेवा की-सी ज़िंदगी गुज़ारनी पड़ी।

4 फिर दाऊद ने अमासा को हुक्म दिया, “यहदाह के तमाम फ़ौजियों को मेरे पास बुला लाएँ। तीन दिन के अंदर अंदर उनके साथ हाज़िर हो जाएँ।” 5 अमासा ख़ाना हुआ। लेकिन जब तीन दिन के बाद लौट न आया 6 तो दाऊद अबीशै से मुखातिब हुआ, “आखिर मैं सबा बिन बिक्री हमें अबीसलूम की निसबत ज़्यादा नुक़सान पहुँचाएगा। जल्दी करें, मेरे दस्तों को लेकर उसका ताक़्क़ुब करें। ऐसा न हो कि वह क़िलाबंद शहरों को क़ब्ज़े में ले ले और यों हमारा बड़ा नुक़सान हो जाए।” 7 तब योआब के सिपाही, बादशाह का दस्ता करेतीओ-फ़लेती और तमाम माहिर फ़ौजी यरूशलम से निकलकर सबा बिन बिक्री का ताक़्क़ुब करने लगे।

8 जब वह ज़िबऊन की बड़ी चटान के पास पहुँचे तो उनकी मुलाकात अमासा से हुई जो थोड़ी देर पहले वहाँ पहुँच गया था। योआब अपना फ़ौजी लिबास पहने हुए था, और उस पर उसने कमर में अपनी तलवार की पेटी बाँधी हुई थी। अब जब वह अमासा से मिलने गया तो उसने अपने बाएँ हाथ से तलवार को चोरी चोरी मियान से निकाल लिया। 9 उसने सलाम करके कहा, “भाई, क्या सब ठीक है?” और फिर अपने दहने हाथ से अमासा की दाढ़ी को यों पकड़ लिया जैसे उसे बोसा देना चाहता हो। 10 अमासा ने योआब के दूसरे हाथ में तलवार पर ध्यान न दिया, और अचानक योआब ने उसे इतने ज़ोर से पेट में घोंप दिया कि उस की अंतड़ियाँ फूटकर ज़मीन पर गिर गईं। तलवार को दुबारा इस्तेमाल करने की ज़रूरत ही नहीं थी, क्योंकि अमासा फ़ौरन मर गया।

फिर योआब और अबीशै सबा का ताक़्क़ुब करने के लिए आगे बढ़े। 11 योआब का एक फ़ौजी अमासा की लाश के पास खड़ा रहा और गुज़रनेवाले फ़ौजियों को आवाज़ देता रहा, “जो योआब और दाऊद के साथ है वह योआब के पीछे हो ले!” 12 लेकिन जितने वहाँ से गुज़रे

वह अमासा का खूनआलूदा और तड़पता हुआ जिस्म देखकर स्क्र गए। जब आदमी ने देखा कि लाश स्कावट का बाइस बन गई है तो उसने उसे रास्ते से हटाकर खेत में घसीट लिया और उस पर कपड़ा डाल दिया। ¹³ लाश के गायब हो जाने पर सब लोग योआब के पीछे चले गए और सबा का ताक़्क़ुब करने लगे।

¹⁴ इतने में सबा पूरे इसराईल से गुज़रते गुज़रते शिमाल के शहर अबील-बैत-माका तक पहुँच गया था। बिक्री के खानदान के तमाम मर्द भी उसके पीछे लगकर वहाँ पहुँच गए थे। ¹⁵ तब योआब और उसके फ़ौजी वहाँ पहुँचकर शहर का मुहासरा करने लगे। उन्होंने शहर की बाहरवाली दीवार के साथ साथ मिट्टी का बड़ा तोड़ा लगाया और उस पर से गुज़रकर अंदरवाली बड़ी दीवार तक पहुँच गए। वहाँ वह दीवार की तोड़-फोड़ करने लगे ताकि वह गिर जाए।

¹⁶ तब शहर की एक दानिशमंद औरत ने फ़सील से योआब के लोगों को आवाज़ दी, “सुनें! योआब को यहाँ बुला लें ताकि मैं उससे बात कर सकूँ।” ¹⁷ जब योआब दीवार के पास आया तो औरत ने सवाल किया, “क्या आप योआब हैं?” योआब ने जवाब दिया, “मैं ही हूँ।” औरत ने दरखास्त की, “ज़रा मेरी बातों पर ध्यान दें।” योआब बोला, “ठीक है, मैं सुन रहा हूँ।” ¹⁸ फिर औरत ने अपनी बात पेश की, “पुराने ज़माने में कहा जाता था कि अबील शहर से मशवरा लो तो बात बनेगी। ¹⁹ देखें, हमारा शहर इसराईल का सबसे ज़्यादा अमनपसंद और वफ़ादार शहर है। आप एक ऐसा शहर तबाह करने की कोशिश कर रहे हैं जो ‘इसराईल की माँ’ कहलाता है। आप रब की मीरास को क्यों हड़प कर लेना चाहते हैं?”

²⁰ योआब ने जवाब दिया, “अल्लाह न करे कि मैं आपके शहर को हड़प या तबाह करूँ। ²¹ मेरे आने का एक और मक़सद है। इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े का एक आदमी दाऊद बादशाह के खिलाफ़ उठ खड़ा हुआ है जिसका नाम सबा बिन बिक्री है। उसे ढूँढ़ रहे हैं। उसे हमारे हवाले करें तो हम शहर को छोड़कर चले जाएंगे।”

औरत ने कहा, “ठीक है, हम दीवार पर से उसका सर आपके पास फेंक देंगे।” ²² उसने अबील-बैत-माका के बाशिंदों से बात की और अपनी हिकमत से उन्हें कायल किया कि ऐसा ही करना चाहिए। उन्होंने सबा का सर कलम करके योआब के पास फेंक दिया। तब योआब ने नरसिंगा बजाकर शहर को छोड़ने का हुक्म दिया, और तमाम फ़ौजी अपने अपने घर वापस चले गए। योआब खुद यरूशलम में दाऊद बादशाह के पास लौट गया।

दाऊद के आला अफ़सर

²³ योआब पूरी इसराईली फ़ौज पर, बिनायाह बिन यहोयदा शाही दस्ते करेतीओ-फ़लेती पर ²⁴ और अदोराम बेगारियों पर मुक़र्रर था। यह्सफ़त बिन अखीलूद बादशाह का मुशरि-खास था। ²⁵ सिवा मीरमुंशी था और सदोक और अबियातर इमाम थे। ²⁶ ईरा याईरी दाऊद का जाती इमाम था।

21

साऊल के ज़ुर्म का कफ़फ़ारा

¹ दाऊद की हुक्मत के दौरान काल पड़ गया जो तीन साल तक जारी रहा। जब दाऊद ने इसकी वजह दरियाफ़्त की तो रब ने जवाब दिया, “काल इसलिए ख़त्म नहीं हो रहा कि साऊल ने जिबऊनियों को क़त्ल किया था।”

² तब बादशाह ने जिबऊनियों को बुला लिया ताकि उनसे बात करे। असल में वह इसराईली नहीं बल्कि अमोरियों का बचा-खुचा हिस्सा थे। मुल्के-कनान पर कब्ज़ा करते वक़्त इसराईलियों ने क़सम खाकर वादा किया था कि हम आपको हलाक नहीं करेंगे। लेकिन साऊल ने इसराईल और यहदाह के लिए जोश में आकर उन्हें हलाक करने की कोशिश की थी।

³ दाऊद ने जिबऊनियों से पूछा, “मैं उस ज़्यादती का कफ़फ़ारा किस तरह दे सकता हूँ जो आपसे हुई है? मैं आपके लिए क्या करूँ ताकि आप दुबारा उस ज़मीन को बरकत दें जो रब ने हमें मीरास में दी है?” ⁴ उन्होंने जवाब दिया, “जो साऊल ने हमारे और हमारे खानदानों के साथ किया है उसका इज़ाला सोने-चाँदी से नहीं किया जा सकता। यह भी मुनासिब नहीं कि हम इसके एवज़ किसी इसराईली को मार दें।” दाऊद ने सवाल किया, “तो फिर मैं आपके लिए क्या करूँ?” ⁵ जिबऊनियों ने कहा, “साऊल ही ने हमें हलाक करने का मनसूबा बनाया था, वही हमें तबाह करना चाहता था ताकि हम इसराईल की किसी भी जगह कायम न रह सकें। ⁶ इसलिए साऊल की औलाद में से सात मर्दों को हमारे हवाले कर दें। हम उन्हें रब के चुने हुए बादशाह साऊल के वतनी शहर जिबिया में रब के पहाड़ पर मौत के घाट उतारकर उसके हुज़ूर लटका दें।”

बादशाह ने जवाब दिया, “मैं उन्हें आपके हवाले कर दूँगा।” ⁷ यूनतन का बेटा मिफ़ीबोसत साऊल का पोता तो था, लेकिन बादशाह ने उसे न छोड़ा, क्योंकि उसने रब की क़सम खाकर यूनतन से वादा किया था कि मैं आपकी औलाद को कभी नुक़सान नहीं पहुँचाऊँगा। ⁸ चुनौचे उसने साऊल की दाशता रिसफ़ा बिन ऐयाह के दो बेटों अरमोनी और मिफ़ीबोसत को और इसके अलावा साऊल की बेटी मीरब के पाँच बेटों को चुन लिया। मीरब बरज़िल्ली महलाती के बेटे अदरियेल की बीवी थी। ⁹ इन सात आदमियों को दाऊद ने जिबऊनियों के हवाले कर दिया।

सातों आदमियों को मज़क़ूरा पहाड़ पर लाया गया। वहाँ जिबऊनियों ने उन्हें क़त्ल करके रब के हुज़ूर लटका दिया। वह सब एक ही दिन मर गए। उस वक़्त जौ की फ़सल की कटाई शुरू हुई थी।

10 तब रिसफा बित ऐयाह सातों लाशों के पास गई और पत्थर पर अपने लिए टाट का कपड़ा बिछाकर लाशों की हिफाजत करने लगी। दिन के वक़्त वह परिंदों को भगाती और रात के वक़्त जंगली जानवरों को लाशों से दूर रखती रही। वह बहार के मौसम में फ़सल की कटाई के पहले दिनों से लेकर उस वक़्त तक वहाँ ठहरी रही जब तक बारिश न हुई।

11 जब दाऊद को मालूम हुआ कि साऊल की दास्ता रिसफा ने क्या किया है 12-14 तो वह यबीस-जिलियाद के बाशिंदों के पास गया और उनसे साऊल और उसके बेटे यूनतन की हड्डियों को लेकर साऊल के बाप कीस की कब्र में दफ़नाया। (जब फ़िलिस्तिनों ने जिलबुअ के पहाड़ी इलाके में इसराइलियों को शिकस्त दी थी तो उन्होंने साऊल और यूनतन की लाशों को बैत-शान के चौक में लटका दिया था। तब यबीस-जिलियाद के आदमी चोरी चोरी वहाँ आकर लाशों को अपने पास ले गए थे।) दाऊद ने ज़िबिया में अब तक लटकी सात लाशों को भी उतारकर ज़िला में कीस की कब्र में दफ़नाया। ज़िला बिनयमीन के कबीले की आबादी है।

जब सब कुछ दाऊद के हुक्म के मुताबिक़ किया गया था तो रब ने मुल्क के लिए दुआएँ सुन लीं।

फ़िलिस्तिनों से जंगें

15 एक और बार फ़िलिस्तिनों और इसराइलियों के दरमियान जंग छिड़ गई। दाऊद अपनी फ़ौज समेत फ़िलिस्तिनों से लड़ने के लिए निकला। जब वह लड़ता लड़ता निढाल हो गया था 16 तो एक फ़िलिस्ती ने उस पर हमला किया जिसका नाम इशबी-बनोब था। यह आदमी देवकामत मर्द रफ़ा की नसल से था। उसके पास नई तलवार और इतना लंबा नेज़ा था कि सिर्फ़ उस की पीतल की नोक का वज़न तक़रीबन साढ़े 3 किलोग्राम था। 17 लेकिन अबीशै बिन ज़रूयाह दौड़कर दाऊद की मदद करने आया और फ़िलिस्ती को मार डाला। इसके बाद दाऊद के फ़ौजियों ने क्रसम खाई, “आइंदा आप लड़ने के लिए हमारे साथ नहीं निकलेंगे। ऐसा न हो कि इसराइल का चराग़ बुझ जाए।”

18 इसके बाद इसराइलियों को ज़ब के करीब भी फ़िलिस्तिनों से लड़ना पड़ा। वहाँ सिब्वकी ह्साती ने देवकामत मर्द रफ़ा की औलाद में से एक आदमी को मार डाला जिसका नाम सफ़ था।

19 ज़ब के करीब एक और लड़ाई छिड़ गई। इसके दौरान बैत-लहम के इल्हनान बिन यारे-उरज़ीम ने जाती जालूत को मौत के घाट उतार दिया। जालूत का नेज़ा खड्डी के शहतीर जैसा बड़ा था। 20 एक और दफ़ा जात के पास लड़ाई हुई। फ़िलिस्तिनों का एक फ़ौजी जो रफ़ा की नसल का था बहुत लंबा था। उसके हाथों और पैरों की छः छः उँगलियाँ यानी मिलकर 24 उँगलियाँ थीं। 21 जब वह इसराइलियों का मज़ाक़ उड़ाने लगा तो दाऊद के भाई सिमआ के बेटे यूनतन ने उसे मार डाला। 22 जात के यह देवकामत मर्द रफ़ा की औलाद थे, और वह दाऊद और उसके फ़ौजियों के हाथों हलाक़ हुए।

22

दाऊद का गीत

- 1 जिस दिन रब ने दाऊद को तमाम दुश्मनों और साऊल के हाथ से बचाया उस दिन बादशाह ने गीत गाया,
- 2 “रब मेरी चटान, मेरा क़िला और मेरा नजातदहिंदा है।
- 3 मेरा खुदा मेरी चटान है जिसमें मैं पनाह लेता हूँ। वह मेरी ढाल, मेरी नजात का पहाड़, मेरा बुलंद हिसार और मेरी पनाहगाह है। तू मेरा नजातदहिंदा है जो मुझे ज़ुल्मो-तशद्दुद से बचाता है।
- 4 मैं रब को पुकारता हूँ, उस की तमज़ीद हो! तब वह मुझे दुश्मनों से छुटकारा देता है।
- 5 मौत की मौजों ने मुझे घेर लिया, हलाक़त के सैलाब ने मेरे दिल पर दहशत तारी की।
- 6 पाताल के रस्सों ने मुझे जकड़ लिया, मौत ने मेरे रास्ते में अपने फंदे डाल दिए।
- 7 जब मैं मुसीबत में फँस गया तो मैंने रब को पुकारा। मैंने मदद के लिए अपने खुदा से फ़रियाद की तो उसने अपनी सुकूनतगाह से मेरी आवाज़ सुनी, मेरी चीखें उसके कान तक पहुँच गईं।

8 तब ज़मीन लरज़ उठी और थरथराने लगी, आसमान की बुनियादें रब के ग़ज़ब के सामने काँपने और झूलने लगीं।

9 उस की नाक से धुआँ निकल आया, उसके मुँह से भस्म करनेवाले शोले और दहकते कोयले भड़क उठे।

10 आसमान को झुकाकर वह नाज़िल हुआ। जब उतर आया तो उसके पाँवों के नीचे अंधेरा ही अंधेरा था।

11 वह कस्बूी फ़रिश्ते पर सवार हुआ और उड़कर हवा के परों पर मँडलाने लगा।

12 उसने अंधेरे को अपनी छुपने की जगह बनाया, बारिश के काले और घने बादल ख़ैमे की तरह अपने इर्दगिर्द लगाए।

13 उसके हज़ूर की तेज़ रौशनी से शोलाज़न कोयले फूट निकले।

14 रब आसमान से कड़कने लगा, अल्लाह तआला की आवाज़ गूँज उठी।

15 उसने अपने तीर चला दिए तो दुश्मन तितर-बितर हो गए। उस की बिजली इधर उधर गिरती गई तो उनमें हलचल मच गई।

16 रब ने डाँटा तो समुंदर की वादियाँ जाहिर हुईं, जब वह गुस्से में गरजा तो उसके दम के झोंकों से ज़मीन की बुनियादें नज़र आईं।

- 17 बुलंदियों पर से अपना हाथ बढाकर उसने मुझे पकड़ लिया, गहरे पानी में से खींचकर मुझे निकाल लाया।
 18 उसने मुझे मेरे ज़बरदस्त दुश्मन से बचाया, उनसे जो मुझसे नफ़रत करते हैं, जिन पर मैं ग़ालिब न आ सका।
 19 जिस दिन मैं मुसीबत में फँस गया उस दिन उन्होंने मुझ पर हमला किया, लेकिन रब मेरा सहारा बना रहा।
 20 उसने मुझे तंग जगह से निकालकर छुटकारा दिया, क्योंकि वह मुझसे खुश था।

- 21 रब मुझे मेरी रास्तबाज़ी का अज़्र देता है। मेरे हाथ साफ़ हैं, इसलिए वह मुझे बरकत देता है।
 22 क्योंकि मैं रब की राहों पर चलता रहा हूँ, मैं बदी करने से अपने खुदा से दूर नहीं हुआ।
 23 उसके तमाम अहक़ाम मेरे सामने रहे हैं, मैं उसके फ़रमानों से नहीं हटा।
 24 उसके सामने ही मैं बेइलज़ाम रहा, गुनाह करने से बाज़ रहा हूँ।
 25 इसलिए रब ने मुझे मेरी रास्तबाज़ी का अज़्र दिया, क्योंकि उस की आँखों के सामने ही मैं पाक-साफ़ साबित हुआ।

- 26 ऐ अल्लाह, जो वफ़ादार है उसके साथ तेरा सुलूक वफ़ादारी का है, जो बेइलज़ाम है उसके साथ तेरा सुलूक बेइलज़ाम है।
 27 जो पाक है उसके साथ तेरा सुलूक पाक है। लेकिन जो कज़रौ है उसके साथ तेरा सुलूक भी कज़रवी का है।
 28 तू पस्तहालों को नजात देता है, और तेरी आँखें मग़्स्रों पर लगी रहती हैं ताकि उन्हें पस्त करें।

- 29 ऐ रब, तू ही मेरा चराग़ है, रब ही मेरे अंधेरे को रौशन करता है।
 30 क्योंकि तेरे साथ मैं फ़ौजी दस्ते पर हमला कर सकता, अपने खुदा के साथ दीवार को फ़लाँग़ सकता हूँ।

- 31 अल्लाह की राह कामिल है, रब का फ़रमान ख़ालिस है। जो भी उसमें पनाह ले उस की वह ढाल है।
 32 क्योंकि रब के सिवा कौन खुदा है? हमारे खुदा के सिवा कौन चटान है?
 33 अल्लाह मुझे कुव्वत से कमरबस्ता करता, वह मेरी राह को कामिल कर देता है।
 34 वह मेरे पाँवों को हिरन की-सी फ़ुरती अता करता, मुझे मज़बूती से मेरी बुलंदियों पर खड़ा करता है।
 35 वह मेरे हाथों को जंग करने की तरबियत देता है। अब मेरे बाजू पीतल की कमान को भी तान लेते हैं।

- 36 ऐ रब, तूने मुझे अपनी नजात की ढाल बख़्श दी है, तेरी नरमी ने मुझे बड़ा बना दिया है।
 37 तू मेरे क्रदमों के लिए रास्ता बना देता है, इसलिए मेरे टख़ने नहीं डगमगाते।
 38 मैंने अपने दुश्मनों का ताक्कुब करके उन्हें कुचल दिया, मैं बाज़ न आया जब तक वह ख़त्म न हो गए।
 39 मैंने उन्हें तबाह करके यों पाश पाश कर दिया कि दुबारा उठ न सके बल्कि गिरकर मेरे पाँवों तले पड़े रहे।
 40 क्योंकि तूने मुझे जंग करने के लिए कुव्वत से कमरबस्ता कर दिया, तूने मेरे मुख़ालिफ़ों को मेरे सामने झुका दिया।
 41 तूने मेरे दुश्मनों को मेरे सामने से भगा दिया, और मैंने नफ़रत करनेवालों को तबाह कर दिया।
 42 वह मदद के लिए चीख़ते-चिल्लाते रहे, लेकिन बचानेवाला कोई नहीं था। वह रब को पुकारते रहे, लेकिन उसने जवाब न दिया।
 43 मैंने उन्हें चूर चूर करके गर्द की तरह हवा में उड़ा दिया। मैंने उन्हें ग़ली में मिट्टी की तरह पाँवों तले रौंदकर रेज़ा रेज़ा कर दिया।

44 तूने मुझे मेरी क़ौम के झगड़ों से बचाकर अक़वाम पर मेरी हुकूमत कायम रखी है। जिस क़ौम से मैं नावाकिफ़ था वह मेरी ख़िदमत करती है।

- 45 परदेसी दबककर मेरी खुशामद करते हैं। ज्योंही मैं बात करता हूँ तो वह मेरी सुनते हैं।
 46 वह हिम्मत हारकर काँपते हुए अपने क़िलों से निकल आते हैं।

- 47 रब ज़िंदा है! मेरी चटान की तमज़ीद हो! मेरे खुदा की ताज़ीम हो जो मेरी नजात की चटान है।
 48 वही खुदा है जो मेरा इंतक़ाम लेता, अक़वाम को मेरे ताबे कर देता
 49 और मुझे मेरे दुश्मनों से छुटकारा देता है। यक़ीनन तू मुझे मेरे मुख़ालिफ़ों पर सरफ़राज़ करता, मुझे ज़ालिमों से बचाए रखता है।

50 ऐ रब, इसलिए मैं अक़वाम में तेरी हम्दो-सना करूँगा, तेरे नाम की तारीफ़ में गीत गाऊँगा।

51 क्योंकि रब अपने बादशाह को बड़ी नजात देता है, वह अपने मसह किए हुए बादशाह दाऊद और उस की औलाद पर हमेशा तक मेहरबान रहेगा।”

23

दाऊद के आखिरी अलफ़ाज़

1 दर्जे-ज़ैल दाऊद के आखिरी अलफ़ाज़ हैं :

“दाऊद बिन यस्सी का फ़रमान जिसे अल्लाह ने सरफ़राज़ किया, जिसे याकूब के खुदा ने मसह करके बादशाह बना दिया था, और जिसकी तारीफ़ इसराईल के गीत करते हैं,

2 रब के रूह ने मेरी मारिफ़त बात की, उसका फ़रमान मेरी ज़बान पर था।

3 इसराईल के खुदा ने फ़रमाया, इसराईल की चटान मुझसे हमकलाम हुई, ‘जो इनसाफ़ से हुक्मत करता है, जो अल्लाह का ख़ौफ़ मानकर हुक्मरानी करता है,

4 वह सुबह की रौशनी की मानिंद है, उस तुलू-आफ़ताब की मानिंद जब बादल छाए नहीं होते। जब उस की किरणें बारिश के बाद ज़मीन पर पड़ती हैं तो पौदे फूट निकलते हैं।’

5 यकीनन मेरा घराना मज़बूती से अल्लाह के साथ है, क्योंकि उसने मेरे साथ अबदी अहद बाँधा है, ऐसा अहद जिसका हर पहलू मुनज़्जम और महफूज़ है। वह मेरी नजात तकमील तक पहुँचाएगा और मेरी हर आरजू पूरी करेगा।

6 लेकिन बेदीन ख़ारदार झाड़ियों की मानिंद हैं जो हवा के झोंकों से इधर उधर बिखर गई हैं। काँटों की वजह से कोई भी हाथ नहीं लगाता।

7 लोग उन्हें लोहे के औज़ार या नेज़े के दस्ते से जमा करके वही के वही जला देते हैं।”

दाऊद के सूरमा

8 दर्जे-ज़ैल दाऊद के सूरमाओं की फ़हरिस्त है। जो तीन अफ़सर योआब के भाई अबीशै के ऐन बाद आते थे उनमें योशेब-बशेबत तहकमूनी पहले नंबर पर आता था। एक बार उसने अपने नेज़े से 800 आदमियों को मार दिया।

9 इन तीन अफ़सरों में से दूसरी जगह पर इलियज़र बिन दोदो बिन अखूही आता था। एक जंग में जब उन्होंने फ़िलिस्तिनों को चैलेंज दिया था और इसराईली बाद में पीछे हट गए तो इलियज़र दाऊद के साथ 10 फ़िलिस्तिनों का मुकाबला करता रहा। उस दिन वह फ़िलिस्तिनों को मारते मारते इतना थक गया कि आखिरकार तलवार उठा न सका बल्कि हाथ तलवार के साथ जम गया। रब ने उस की मारिफ़त बड़ी फ़तह बख़्शी। बाक़ी दस्ते सिर्फ़ लाशों को लूटने के लिए लौट आए।

11 उसके बाद तीसरी जगह पर सम्मा बिन अजी-हरारी आता था। एक मरतबा फ़िलिस्ती लही के करीब मसूर के खेत में इसराईल के खिलाफ़ लड़ रहे थे। इसराईली फ़ौजी उनके सामने भागने लगे, 12 लेकिन सम्मा खेत के दरमियान तक बढ़ गया और वहाँ लड़ते लड़ते फ़िलिस्तिनों को शिकस्त दी। रब ने उस की मारिफ़त बड़ी फ़तह बख़्शी।

13-14 एक और जंग के दौरान दाऊद अदुल्लाम के गार के पहाड़ी क़िले में था जबकि फ़िलिस्ती फ़ौज ने वादी-ए-रफ़ाईम में अपनी लशकरगाह लगाई थी। उनके दस्तों ने बैत-लहम पर भी क़ब्ज़ा कर लिया था। फ़सल का मौसम था। दाऊद के तीस आला अफ़सरों में से तीन उससे मिलने आए। 15 दाऊद को शर्दीद प्यास लगी, और वह कहने लगा, “कौन मेरे लिए बैत-लहम के दरवाज़े पर के हौज़ से कुछ पानी लाएगा?” 16 यह सुनकर तीनों अफ़सर फ़िलिस्तिनों की लशकरगाह पर हमला करके उसमें घुस गए और लड़ते लड़ते बैत-लहम के हौज़ तक पहुँच गए। उससे कुछ पानी भरकर वह उसे दाऊद के पास ले आए। लेकिन उसने पीने से इनकार कर दिया बल्कि उसे कुरबानी के तौर पर उंडेलकर रब को पेश किया 17 और बोला, “रब न करे कि मैं यह पानी पिऊँ। अगर ऐसा करता तो उन आदमियों का खून पीता जो अपनी जान पर खेलकर पानी लाए हैं।” इसलिए वह उसे पीना नहीं चाहता था। यह इन तीन सूरमाओं के ज़बरदस्त कामों की एक मिसाल है।

18-19 योआब बिन ज़रूयाह का भाई अबीशै मज़क़ूरा तीन सूरमाओं पर मुक़र्रर था। एक दफ़ा उसने अपने नेज़े से 300 आदमियों को मार डाला। तीनों की निसबत उस की दुगनी इज़ज़त की जाती थी, लेकिन वह खुद उनमें गिना नहीं जाता था।

20 बिनायाह बिन यहोयदा भी ज़बरदस्त फ़ौजी था। वह क़बज़ियेल का रहनेवाला था, और उसने बहुत दफ़ा अपनी मरदानगी दिखाई। योआब के दो बड़े सूरमा उसके हाथों हलाक हुए। एक बार जब बहुत बर्फ़ पड़ गई तो उसने एक हौज़ में उतरकर एक शेरबबर को मार डाला जो उसमें गिर गया था। 21 एक और मौक़े पर उसका वास्ता एक देवक़ामत मिसरी से पड़ा। मिसरी के हाथ में नेज़ा था जबकि उसके पास सिर्फ़ लाठी थी। लेकिन बिनायाह ने उस पर हमला करके उसके हाथ से नेज़ा छीन लिया और उसे उसके अपने हथियार से मार डाला। 22 ऐसी बहादुरी दिखाने की बिना पर बिनायाह बिन यहोयदा मज़क़ूरा तीन आदमियों के बराबर मशहूर हुआ। 23 तीस अफ़सरों के दीगर मर्दों की निसबत उस की ज़्यादा इज़ज़त की जाती थी, लेकिन वह मज़क़ूरा तीन आदमियों में गिना नहीं जाता था। दाऊद ने उसे अपने मुहाफ़िज़ों पर मुक़र्रर किया।

24 ज़ैल के आदमी बादशाह के 30 सूरमाओं में शामिल थे।

योआब का भाई असाहेल, बैत-लहम का इल्हनान बिन दोदो, 25 सम्मा हरोदी, इलीका हरोदी, 26 खलिस फ़लती, तकुअ का ईरा बिन अक्क़ीस, 27 अनतोत का अबियज़र, मबून्नी हसाती, 28 ज़लमोन अखूही, महरी नतूफ़ाती, 29 हलिब बिन बाना नतूफ़ाती, बिनयमीनी शहर जिबिया का इत्ती बिन रीबी, 30 बिनायाह फ़िरआतोनी, नहले-जास का हिद्दी, 31 अबियलबोन अरबाती, अज़मावत बरहमी, 32-33 इलियहबा सालबूनी, बनी यसीन, यूनतन बिन सम्मा हरारी, अखियाम बिन सरार-हरारी, 34 इलीफ़लत बिन अहस्बी माकाती, इलियाम बिन अखीतुफ़ल

जिलोनी, ³⁵ हसरो करमिली, फारी अरबी, ³⁶ जोबाह का इजाल बिन नातन, बानी जादी, ³⁷ सिलक अम्मोनी, योआब बिन ज़र्याह का सिलाहबरदार नहरी बैरोती, ³⁸ ईरा इतरी, जरीब इतरी ³⁹ और ऊरियाह हिती। आदमियों की कुल तादाद 37 थी।

24

दाऊद की मर्दमशुमारी

¹ एक बार फिर रब को इसराईल पर गुस्सा आया, और उसने दाऊद को उन्हें मुसीबत में डालने पर उकसाकर उसके जहन में मर्दमशुमारी करने का खयाल डाल दिया।

² चुनौचे दाऊद ने फौज के कमांडर योआब को हुक्म दिया, “दान से लेकर बैर-सबा तक इसराईल के तमाम कबीलों में से गुजरते हुए जंग करने के काबिल मर्दों को गिन लें ताकि मालूम हो जाए कि उनकी कुल तादाद क्या है।” ³ लेकिन योआब ने एतराज़ किया, “ऐ बादशाह मेरे आका, काश रब आपका खुदा आपके देखते देखते फौजियों की तादाद सौ गुना बढ़ाए। लेकिन मेरे आका और बादशाह उनकी मर्दमशुमारी क्यों करना चाहते हैं?” ⁴ लेकिन बादशाह योआब और फौज के बड़े अफसरों के एतराज़ात के बावजूद अपनी बात पर डटा रहा। चुनौचे वह दरबार से रवाना होकर इसराईल के मर्दों की फ़हरिस्त तैयार करने लगे।

⁵ दरियाए-यरदन को उबूर करके उन्होंने अरोईर और वादीए-अरनोन के बीच के शहर में शुरू किया। वहाँ से वह जद और याज़ेर से होकर ⁶ जिलियाद और हितियों के मुल्क के शहर क़ादिस तक पहुँचे। फिर आगे बढ़ते बढ़ते वह दान और सैदा के गिर्दो-नवाह के इलाक़े ⁷ और क़िलाबंद शहर सूर और हिब्वियों और कनानियों के तमाम शहरों तक पहुँच गए। आखिरकार उन्होंने यहूदा के जुनूब की मर्दमशुमारी बैर-सबा तक की।

⁸ यों पूरे मुल्क में सफ़र करते करते वह ⁹ महीनों और 20 दिनों के बाद यरूशलम वापस आए। ⁹ योआब ने बादशाह को मर्दमशुमारी की पूरी रिपोर्ट पेश की। इसराईल में तलवार चलाने के काबिल 8 लाख अफ़राद थे जबकि यहूदा के 5 लाख मर्द थे।

¹⁰ लेकिन अब दाऊद का ज़मीर उसको मलामत करने लगा। उसने रब से दुआ की, “मुझसे संगीन गुनाह सरज़द हुआ है। ऐ रब, अब अपने खादिम का कुसूर मुआफ़ कर। मुझसे बड़ी हमाक़त हुई है।”

¹¹ अगले दिन जब दाऊद सुबह के वक़्त उठा तो उसके ग़ैबबीन जाद नबी को रब की तरफ़ से पैग़ाम मिल गया, ¹² “दाऊद के पास जाकर उसे बता देना, ‘रब तुझे तीन सज़ाएँ पेश करता है। इनमें से एक चुन ले’।” ¹³ जाद दाऊद के पास गया और उसे रब का पैग़ाम सुना दिया। उसने सवाल किया, “आप किस सज़ा को तरज़ीह देते हैं? अपने मुल्क में सात साल के दौरान काल? या यह कि आपके दुश्मन आपको भगाकर तीन माह तक आपका ताक़्क़ुब करते रहें? या यह कि आपके मुल्क में तीन दिन तक वबा फैल जाए? ध्यान से इसके बारे में सोचें ताकि मैं उसे आपका जवाब पहुँचा सकूँ जिसने मुझे भेजा है।”

¹⁴ दाऊद ने जवाब दिया, “हाय, मैं क्या कहूँ? मैं बहुत परेशान हूँ। लेकिन आदमियों के हाथ में पड़ने की निसबत बेहतर है कि मैं रब ही के हाथ में पड़ जाऊँ, क्योंकि उसका रहम अज़ीम है।”

¹⁵ तब रब ने इसराईल में वबा फैलाने दी। वह उसी सुबह शुरू हुई और तीन दिन तक लोगों को मौत के घाट उतारती गई। शिमाल में दान से लेकर जुनूब में बैर-सबा तक कुल 70,000 अफ़राद हलाक़ हुए। ¹⁶ लेकिन जब वबा का फ़रिश्ता चलते चलते यरूशलम तक पहुँच गया और उस पर हाथ उठाने लगा तो रब ने लोगों की मुसीबत को देखकर तरस खाया और तबाह करनेवाले फ़रिश्ते को हुक्म दिया, “बस कर! अब बाज़ आ।” उस वक़्त रब का फ़रिश्ता वहाँ खड़ा था जहाँ अरौनाह यबूसी अपना अनाज गाहता था।

¹⁷ जब दाऊद ने फ़रिश्ते को लोगों को मारते हुए देखा तो उसने रब से इलतमास की, “मैं ही ने गुनाह किया है, यह मेरा ही कुसूर है। इन भेड़ों से क्या ग़लती हुई है? बराहे-करम इनको छोड़कर मुझे और मेरे ख़ानदान को सज़ा दे।”

¹⁸ उसी दिन जाद दाऊद के पास आया और उससे कहा, “अरौनाह यबूसी की गाहने की जगह के पास जाकर उस पर रब की क़ुरबानगाह बना ले।” ¹⁹ चुनौचे दाऊद चढ़कर गाहने की जगह के पास आया जिस तरह रब ने जाद की मारिफ़त फ़रमाया था।

²⁰ जब अरौनाह ने बादशाह और उसके दरबारियों को अपनी तरफ़ चढ़ता हुआ देखा तो वह निकलकर बादशाह के सामने औंधे मुँह झुक गया। ²¹ उसने पूछा, “मेरे आका और बादशाह मेरे पास क्यों आ गए?” दाऊद ने जवाब दिया, “मैं आपकी गाहने की जगह ख़रीदना चाहता हूँ ताकि रब के लिए क़ुरबानगाह तामीर करूँ। क्योंकि यह करने से वबा स्क जाएगी।”

²² अरौनाह ने कहा, “मेरे आका और बादशाह, जो कुछ आपको अच्छा लगे उसे लेकर चढ़ाएँ। यह बैल भस्म होनेवाली क़ुरबानी के लिए हाज़िर हैं। और अनाज को गाहने और बैलों को जोतने का सामान क़ुरबानगाह पर रखकर जला दें।” ²³ बादशाह सलामत, मैं खुशी से आपको यह सब कुछ दे देता हूँ। दुआ है कि आप रब अपने खुदा को पसंद आएँ।”

²⁴ लेकिन बादशाह ने इनकार किया, “नहीं, मैं ज़रूर हर चीज़ की पूरी क़ीमत अदा करूँगा। मैं रब अपने खुदा को ऐसी कोई भस्म होनेवाली क़ुरबानी पेश नहीं करूँगा जो मुझे मुफ़्त में मिल जाए।”

चुनौचे दाऊद ने बैलों समेत गाहने की जगह चाँदी के 50 सिक्कों के एवज़ ख़रीद ली। ²⁵ उसने वहाँ रब की ताज़ीम में क़ुरबानगाह तामीर करके उस पर भस्म होनेवाली और सलामती की क़ुरबानियाँ चढ़ाईं। तब रब ने मुल्क के लिए दुआ सुनकर वबा को रोक दिया।

1 सलातीन

अदूनियाह की साजिश

¹ दाऊद बादशाह बहुत बूढ़ा हो चुका था। उसे हमेशा सर्दी लगती थी, और उस पर मज्जीद बिस्तर डालने से कोई फायदा न होता था। ² यह देखकर मुलाज़िमों ने बादशाह से कहा, “अगर इजाज़त हो तो हम बादशाह के लिए एक नौजवान कुँवारी ढूँढ़ लें जो आपकी खिदमत में हाज़िर रहे और आपकी देख-भाल करे। लड़की आपके साथ लेटकर आपको गरम रखे।” ³ चुनौचे वह पूरे मुल्क में किसी खूबसूरत लड़की की तलाश करने लगे। ढूँढ़ते ढूँढ़ते अबीशाग शूनीमी को चुनकर बादशाह के पास लाया गया। ⁴ अब से वह उस की खिदमत में हाज़िर होती और उस की देख-भाल करती रही। लड़की निहायत खूबसूरत थी, लेकिन बादशाह ने कभी उससे सोहबत न की।

⁵⁻⁶ उन दिनों में अदूनियाह बादशाह बनने की साजिश करने लगा। वह दाऊद की बीवी हज्जीत का बेटा था। यों वह अबीसलूम का सौतेला भाई और उसके मरने पर दाऊद का सबसे बड़ा बेटा था। शक्लो-सूरत के लिहाज़ से लोग उस की बड़ी तारीफ़ किया करते थे, और बचपन से उसके बाप ने उसे कभी नहीं डाँटा था कि तू क्या कर रहा है। अब अदूनियाह अपने आपको लोगों के सामने पेश करके एलान करने लगा, “मैं ही बादशाह बनूँगा।” इस मकसद के तहत उसने अपने लिए रथ और घोड़े खरीदकर 50 आदमियों को रख लिया ताकि वह जहाँ भी जाए उसके आगे आगे चलते रहें। ⁷ उसने योआब बिन ज़रूयाह और अबियातर इमाम से बात की तो वह उसके साथी बनकर उस की हिमायत करने के लिए तैयार हुए। ⁸ लेकिन सदोक इमाम, बिनायाह बिन यहोयदा और नातन नबी उसके साथ नहीं थे, न सिमई, रेई या दाऊद के मुहाफ़िज़।

⁹ एक दिन अदूनियाह ने ऐन-राजिल चश्मे के करीब की चटान जुहलत के पास ज़ियाफ़त की। काफ़ी भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और मोटे-ताज़े बछड़े ज़बह किए गए। अदूनियाह ने बादशाह के तमाम बेटों और यहूदाह के तमाम शाही अफसरों को दावत दी थी। ¹⁰ कुछ लोगों को जान-बूझकर इसमें शामिल नहीं किया गया था। उनमें उसका भाई सुलेमान, नातन नबी, बिनायाह और दाऊद के मुहाफ़िज़ शामिल थे।

दाऊद सुलेमान को बादशाह करार देता है

¹¹ तब नातन सुलेमान की माँ बत-सबा से मिला और बोला, “क्या यह खबर आप तक नहीं पहुँची कि हज्जीत के बेटे अदूनियाह ने अपने आपको बादशाह बना लिया है? और हमारे आक्रा दाऊद को इसका इल्म तक नहीं! ¹² आपकी और आपके बेटे सुलेमान की ज़िंदगी बड़े खतरे में है। इसलिए लाज़िम है कि आप मेरे मशवरे पर फ़ौरन अमल करें। ¹³ दाऊद बादशाह के पास जाकर उसे बता देना, ‘ऐ मेरे आक्रा और बादशाह, क्या आपने कसम खाकर मुझसे वादा नहीं किया था कि तेरा बेटा सुलेमान मेरे बाद तख़्तनशीन होगा? तो फिर अदूनियाह क्यों बादशाह बन गया है?’ ¹⁴ आपकी बादशाह से गुफ़्तगू अभी ख़त्म नहीं होगी कि मैं दाखिल होकर आपकी बात की तसदीक करूँगा।”

¹⁵ बत-सबा फ़ौरन बादशाह के पास गई जो सोने के कमरे में लेटा हुआ था। उस वक़्त तो वह बहुत उम्ररसीदा हो चुका था, और अबीशाग उस की देख-भाल कर रही थी। ¹⁶ बत-सबा कमरे में दाखिल होकर बादशाह के सामने मुँह के बल झुक गई। दाऊद ने पूछा, “क्या बात है?” ¹⁷ बत-सबा ने कहा, “मेरे आक्रा, आपने तो रब अपने खुदा की कसम खाकर मुझसे वादा किया था कि तेरा बेटा सुलेमान मेरे बाद तख़्तनशीन होगा। ¹⁸ लेकिन अब अदूनियाह बादशाह बन बैठा है और मेरे आक्रा और बादशाह को इसका इल्म तक नहीं। ¹⁹ उसने ज़ियाफ़त के लिए बहुत-से गाय-बैल, मोटे-ताज़े बछड़े और भेड़-बकरियाँ ज़बह करके तमाम शहज़ादों को दावत दी है। अबियातर इमाम और फ़ौज का कमाँडर योआब भी इनमें शामिल हैं, लेकिन आपके खादिम सुलेमान को दावत नहीं मिली। ²⁰ ऐ बादशाह मेरे आक्रा, इस वक़्त तमाम इसराईल की आँखें आप पर लगी हैं। सब आपसे यह जानने के लिए तड़पते हैं कि आपके बाद कौन तख़्तनशीन होगा। ²¹ अगर आपने जल्द ही क़दम न उठाया तो आपके कूच कर जाने के फ़ौरन बाद मैं और मेरा बेटा अदूनियाह का निशाना बनकर मुजरिम ठहरेंगे।”

²²⁻²³ बत-सबा अभी बादशाह से बात कर ही रही थी कि दाऊद को इतला दी गई कि नातन नबी आपसे मिलने आया है। नबी कमरे में दाखिल होकर बादशाह के सामने औंधे मुँह झुक गया। ²⁴ फिर उसने कहा, “मेरे आक्रा, लगता है कि आप इस हक़ में हैं कि अदूनियाह आपके बाद तख़्तनशीन हो। ²⁵ क्योंकि आज उसने ऐन-राजिल जाकर बहुत-से गाय-बैल, मोटे-ताज़े बछड़े और भेड़-बकरियों को ज़बह किया है। ज़ियाफ़त के लिए उसने तमाम शहज़ादों, तमाम फ़ौजी अफसरों और अबियातर इमाम को दावत दी है। इस वक़्त वह उसके साथ खाना खा खाकर और मैं पी पीकर नारा लगा रहे हैं, ‘अदूनियाह बादशाह ज़िंदाबाद!’ ²⁶ कुछ लोगों को जान-बूझकर दावत नहीं दी। उनमें मैं आपका खादिम, सदोक इमाम, बिनायाह बिन यहोयदा और आपका खादिम सुलेमान भी शामिल हैं। ²⁷ मेरे आक्रा, क्या आपने वाकई इसका हुक्म दिया है? क्या आपने अपने खादिमों को इतला दिए बग़ैर फ़ैसला किया है कि यह शख्स बादशाह बनेगा?”

²⁸ जवाब में दाऊद ने कहा, “बत-सबा को बुलाएँ!” वह वापस आई और बादशाह के सामने खड़ी हो गई। ²⁹ बादशाह बोला, “रब की हयात की कसम जिसने फ़िदा देकर मुझे हर मुसीबत से बचाया है, ³⁰ आपका बेटा सुलेमान मेरे बाद बादशाह होगा बल्कि आज ही मेरे तख़्त पर बैठ जाएगा। हाँ, आज ही मैं वह वादा पूरा करूँगा जो मैंने रब इसराईल के खुदा की कसम खाकर आपसे किया था।” ³¹ यह सुनकर बत-सबा औंधे मुँह झुक गई और कहा, “मेरा मालिक दाऊद बादशाह ज़िंदाबाद!”

32 फिर दाऊद ने हुक्म दिया, “सदोक इमाम, नातन नबी और बिनायाह बिन यहोयदा को बुला लाएँ।” तीनों आए 33 तो बादशाह उनसे मुखातिब हुआ, “मेरे बेटे सुलेमान को मेरे खच्चर पर बिठाएँ। फिर मेरे अफसरों को साथ लेकर उसे जैह्न चश्मे तक पहुँचा दें। 34 वहाँ सदोक और नातन उसे मसह करके इसराईल का बादशाह बना दें। नरसिंगे को बजा बजाकर नारा लगाना, ‘सुलेमान बादशाह जिंदाबाद!’ 35 इसके बाद मेरे बेटे के साथ यहाँ वापस आ जाना। वह महल में दाखिल होकर मेरे तख्त पर बैठ जाए और मेरी जगह हुक्मत करे, क्योंकि मैंने उसे इसराईल और यहूदा का हुक्मरान मुकर्रर किया है।”

36 बिनायाह बिन यहोयदा ने जवाब दिया, “आमीन, ऐसा ही हो! रब मेरे आका का खुदा इस फैसले पर अपनी बरकत दे। 37 और जिस तरह रब आपके साथ रहा उसी तरह वह सुलेमान के साथ भी हो, बल्कि वह उसके तख्त को आपके तख्त से कहीं ज्यादा सरबुलंद करे!” 38 फिर सदोक इमाम, नातन नबी, बिनायाह बिन यहोयदा और बादशाह के मुहाफिज़ करेतियों और फ़लेतियों ने सुलेमान को बादशाह के खच्चर पर बिठाकर उसे जैह्न चश्मे तक पहुँचा दिया। 39 सदोक के पास तेल से भरा मेंढे का वह सींग था जो मुकद्दस ख़ैमे में पड़ा रहता था। अब उसने यह तेल लेकर सुलेमान को मसह किया। फिर नरसिंगा बजाया गया और लोग मिलकर नारा लगाने लगे, “सुलेमान बादशाह जिंदाबाद! सुलेमान बादशाह जिंदाबाद!” 40 तमाम लोग बाँसरी बजाते और खुशी मनाते हुए सुलेमान के पीछे चलने लगे। जब वह दुबारा यरूशलम में दाखिल हुआ तो इतना शोर था कि ज़मीन लरज़ उठी।

अदूनियाह की शिकस्त

41 लोगों की यह आवाज़ें अदूनियाह और उसके मेहमानों तक भी पहुँच गईं। थोड़ी देर पहले वह खाने से फ़ारिग हुए थे। नरसिंगे की आवाज़ सुनकर योआब चौंक उठा और पूछा, “यह क्या है? शहर से इतना शोर क्यों सुनाई दे रहा है?” 42 वह अभी यह बात कर ही रहा था कि अबियातर का बेटा यूनतन पहुँच गया। योआब बोला, “हमारे पास आएँ। आप जैसे लायक आदमी अच्छी ख़बर लेकर आ रहे होंगे।”

43 यूनतन ने जवाब दिया, “अफ़सोस, ऐसा नहीं है। हमारे आका दाऊद बादशाह ने सुलेमान को बादशाह बना दिया है। 44 उसने उसे सदोक इमाम, नातन नबी, बिनायाह बिन यहोयदा और बादशाह के मुहाफिज़ करेतियों और फ़लेतियों के साथ जैह्न चश्मे के पास भेज दिया है। सुलेमान बादशाह के खच्चर पर सवार था। 45 जैह्न चश्मे के पास सदोक इमाम और नातन नबी ने उसे मसह करके बादशाह बना दिया। फिर वह खुशी मनाते हुए शहर में वापस चले गए। पूरे शहर में हलचल मच गई। यही वह शोर है जो आपको सुनाई दे रहा है। 46 अब सुलेमान तख्त पर बैठ चुका है, 47 और दरबारी हमारे आका दाऊद बादशाह को मुबारकबाद देने के लिए उसके पास पहुँच गए हैं। वह कह रहे हैं, ‘आपका खुदा करे कि सुलेमान का नाम आपके नाम से भी ज्यादा मशहूर हो जाए। उसका तख्त आपके तख्त से कहीं ज्यादा सरबुलंद हो।’ बादशाह ने अपने बिस्तर पर झुककर अल्लाह की परस्तिश की 48 और कहा, ‘रब इसराईल के खुदा की तमज़ीद हो जिसने मेरे बेटों में से एक को मेरी जगह तख्त पर बिठा दिया है। उसका शुक्र है कि मैं अपनी आँखों से यह देख सका।’”

49 यूनतन के मुँह से यह ख़बर सुनकर अदूनियाह के तमाम मेहमान घबरा गए। सब उठकर चारों तरफ़ मुंताशिर हो गए। 50 अदूनियाह सुलेमान से ख़ौफ़ खाकर मुकद्दस ख़ैमे के पास गया और कुरबानगाह के सींगों से लिपट गया। 51 किसी ने सुलेमान के पास जाकर उसे इतला दी, “अदूनियाह को सुलेमान बादशाह से ख़ौफ़ है, इसलिए वह कुरबानगाह के सींगों से लिपटे हुए कह रहा है, ‘सुलेमान बादशाह पहले क्रसम खाए कि वह मुझे मौत के घाट नहीं उतारेगा।’” 52 सुलेमान ने वादा किया, “अगर वह लायक साबित हो तो उसका एक बाल भी बीका नहीं होगा। लेकिन जब भी उसमें बढ़ी पाई जाए वह ज़रूर मरेगा।”

53 सुलेमान ने अपने लोगों को अदूनियाह के पास भेज दिया ताकि वह उसे बादशाह के पास पहुँचाएँ। अदूनियाह आया और सुलेमान के सामने औंधे मुँह झुक गया। सुलेमान बोला, “अपने घर चले जाओ!”

2

दाऊद की आखिरी हिदायत

1 जब दाऊद को महसूस हुआ कि कूच कर जाने का वक़्त करीब है तो उसने अपने बेटे सुलेमान को हिदायत की, 2 “अब मैं वहाँ जा रहा हूँ जहाँ दुनिया के हर शख्स को जाना होता है। चुनाँचे मज़बूत हों और मरदानगी दिखाएँ। 3 जो कुछ रब आपका खुदा आपसे चाहता है वह करें और उस की राहों पर चलते रहें। अल्लाह की शरीअत में दर्ज़ हर हुक्म और हिदायत पर पूरे तौर पर अमल करें। फिर जो कुछ भी करेंगे और जहाँ भी जाएंगे आपको कामयाबी नसीब होगी। 4 फिर रब मेरे साथ अपना वादा पूरा करेगा। क्योंकि उसने फ़रमाया है, ‘अगर तेरी औलाद अपने चाल-चलन पर ध्यान देकर पूरे दिलो-जान से मेरी वफ़ादार रहे तो इसराईल पर उस की हुक्मत हमेशा तक कायम रहेगी।’

5 दो एक और बातें भी हैं। आपको ख़ूब मालूम है कि योआब बिन ज़रूयाह ने मेरे साथ कैसा सुलूक किया है। इसराईल के दो कमाँडरों अबिनैर बिन नैर और अमासा बिन यतर को उसने क़त्ल किया। जब जंग नहीं थी उसने जंग का खून बहाकर अपनी पेट्टी और जूतों को बेकुसूर खून से आलूदा कर लिया है। 6 उसके साथ वह कुछ करें जो आपको मुनासिब लगे। योआब बूढ़ा तो है, लेकिन ध्यान दें कि वह तबई मौत न मरे। 7 ताहम बरज़िल्ली जिलियादी के बेटों पर मेहरबानी करें। वह आपकी मेज़ के मुस्तक़िल मेहमान रहें, क्योंकि उन्होंने मेरे साथ भी ऐसा ही सुलूक किया जब मैंने आपके भाई अबीसलूम की वजह से यरूशलम से हिज़रत की। 8 बहरीम के बिनयमीनी सिमई बिन जीरा पर भी ध्यान दें। जिस दिन मैं हिज़रत करते हुए महनायम से गुज़र रहा था तो उसने मुझ पर लानतें भेजीं। लेकिन मेरी वापसी पर वह दरियाए-यरदन पर मुझसे

मिलने आया और मैंने रब की कसम खाकर उससे वादा किया कि उसे मौत के घाट नहीं उतारूँगा।⁹ लेकिन आप उसका जुर्म नज़रंदाज़ न करें बल्कि उस की मुनासिब सज़ा दें। आप दानिशमंद हैं, इसलिए आप ज़रूर सज़ा देने का कोई न कोई तरीका ढूँड निकालेंगे। वह बूढ़ा तो है, लेकिन ध्यान दें कि वह तबई मौत न मरे।”

¹⁰ फिर दाऊद मरकर अपने बापदादा से जा मिला। उसे यरूशलम के उस हिस्से में दफन किया गया जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है।
¹¹ वह कुल 40 साल तक इसराईल का बादशाह रहा, सात साल हबर्न में और 33 साल यरूशलम में।¹² सुलेमान अपने बाप दाऊद के बाद तख्तनशीन हुआ। उस की हुकूमत मज़बूती से कायम हुई।

अदूनियाह की मौत

¹³ एक दिन दाऊद की बीवी हज्जीत का बेटा अदूनियाह सुलेमान की माँ बत-सबा के पास आया। बत-सबा ने पूछा, “क्या आप अमनपसंद इरादा रखकर आए हैं?” अदूनियाह बोला, “जी,¹⁴ बल्कि मेरी आपसे गुज़ारिश है।”

बत-सबा ने जवाब दिया, “तो फिर बताएँ!”¹⁵ अदूनियाह ने कहा, “आप तो जानती हैं कि असल में बादशाह बनने का हक मेरा था। और यह तमाम इसराईल की तबक्रो भी थी। लेकिन अब तो हालात बदल गए हैं। मेरा भाई बादशाह बन गया है, क्योंकि यही रब की मरज़ी थी।¹⁶ अब मेरी आपसे दरखास्त है। इससे इनकार न करें।” बत-सबा बोली, “बताएँ।”¹⁷ अदूनियाह ने कहा, “मैं अबीशाग शूनीमी से शादी करना चाहता हूँ। बराहे-करम सुलेमान बादशाह के सामने मेरी सिफ़ारिश करें ताकि बात बन जाए। अगर आप बात करें तो वह इनकार नहीं करेगा।”
¹⁸ बत-सबा राज़ी हुई, “चलें, ठीक है। मैं आपका यह मामला बादशाह को पेश करूँगी।”

¹⁹ चुनौचे बत-सबा सुलेमान बादशाह के पास गई ताकि उसे अदूनियाह का मामला पेश करे। जब दरबार में पहुँची तो बादशाह उठकर उससे मिलने आया और उसके सामने झुक गया। फिर वह दुबारा तख्त पर बैठ गया और हुक्म दिया कि माँ के लिए भी तख्त रखा जाए। बादशाह के दहने हाथ बैठकर²⁰ उसने अपना मामला पेश किया, “मेरी आपसे एक छोटी-सी गुज़ारिश है। इससे इनकार न करें।” बादशाह ने जवाब दिया, “अम्मी, बताएँ अपनी बात, मैं इनकार नहीं करूँगा।”²¹ बत-सबा बोली, “अपने भाई अदूनियाह को अबीशाग शूनीमी से शादी करने दें।”

²² यह सुनकर सुलेमान भड़क उठा, “अदूनियाह की अबीशाग से शादी!! यह कैसी बात है जो आप पेश कर रही हैं? अगर आप यह चाहती हैं तो क्यों न बराहे-रास्त तकाज़ा करें कि अदूनियाह मेरी जगह तख्त पर बैठ जाए। आखिर वह मेरा बड़ा भाई है, और अबियातर इमाम और योआब बिन ज़रूयाह भी उसका साथ दे रहे हैं।”²³ फिर सुलेमान बादशाह ने रब की कसम खाकर कहा, “इस दरखास्त से अदूनियाह ने अपनी मौत पर मुहर लगाई है। अल्लाह मुझे सख्त सज़ा दे अगर मैं उसे मौत के घाट न उतारूँ।²⁴ रब की कसम जिसने मेरी तसदीक करके मुझे मेरे बाप दाऊद के तख्त पर बिठा दिया और अपने वादे के मुताबिक मेरे लिए घर तामीर किया है, अदूनियाह को आज ही मरना है!”

²⁵ फिर सुलेमान बादशाह ने बिनायाह बिन यहोयदा को हुक्म दिया कि वह अदूनियाह को मौत के घाट उतार दे। चुनौचे वह निकला और उसे मार डाला।

योआब और अबियातर की सज़ा

²⁶ अबियातर इमाम से बादशाह ने कहा, “अब यहाँ से चले जाएँ। अनंतोत में अपने घर में रहें और वहाँ अपनी ज़मीन सँभालें। गो आप सज़ाए-मौत के लायक हैं तो भी मैं इस वक़्त आपको नहीं मार दूँगा, क्योंकि आप मेरे बाप दाऊद के सामने रब कादिरे-मुतलक के अहद का संदूक उठाए हर जगह उनके साथ गए। आप मेरे बाप के तमाम तकलीफ़देह और मुश्किलतरीन लमहात में शरीक रहे हैं।”²⁷ यह कहकर सुलेमान ने अबियातर का रब के हुज़ूर इमाम की खिदमत संरजाम देने का हक मनसूख कर दिया। यों रब की वह पेशगोई पूरी हुई जो उसने सैला में एली के घराने के बारे में की थी।

²⁸ योआब को जल्द ही पता चला कि अदूनियाह और अबियातर से क्या कुछ हुआ है। वह अबीसलूम की साज़िशों में तो शरीक नहीं हुआ था लेकिन बाद में अदूनियाह का साथी बन गया था। इसलिए अब वह भागकर रब के मुक़द्दस ख़ैमे में दाख़िल हुआ और कुरबानगाह के सींगों को पकड़ लिया।²⁹ सुलेमान बादशाह को इतला दी गई, “योआब भागकर रब के मुक़द्दस ख़ैमे में गया है। अब वह वहाँ कुरबानगाह के पास खड़ा है।” यह सुनकर सुलेमान ने बिनायाह बिन यहोयदा को हुक्म दिया, “जाओ, योआब को मार दो!”

³⁰ बिनायाह रब के ख़ैमे में जाकर योआब से मुखातिब हुआ, “बादशाह फ़रमाता है कि ख़ैमे से निकल आओ!” लेकिन योआब ने जवाब दिया, “नहीं, अगर मरना है तो यही मरूँगा।” बिनायाह बादशाह के पास वापस आया और उसे योआब का जवाब सुनाया।³¹ तब बादशाह ने हुक्म दिया, “चलो, उस की मरज़ी! उसे वहीं मारकर दफन कर दो ताकि मैं और मेरे बाप का घराना उन कत्लों के जवाबदेह न ठहरें जो उसने बिलावजह किए हैं।³² रब उसे उन दो आदमियों के कत्ल की सज़ा दे जो उससे कहीं ज्यादा शरीफ और अच्छे थे यानी इसराईली फ़ौज का कमांडर अबिनैर बिन नैर और यहदाह की फ़ौज का कमांडर अमासा बिन यतर। योआब ने दोनों को तलवार से मार डाला, हालाँकि मेरे बाप को इसका इल्म नहीं था।³³ योआब और उस की औलाद हमेशा तक इन कत्लों के कुसूरवार ठहरें। लेकिन रब दाऊद, उस की औलाद, घराने और तख्त को हमेशा तक सलामती अता करे।”

³⁴ तब बिनायाह ने मुक़द्दस ख़ैमे में जाकर योआब को मार दिया। उसे यहदाह के बयाबान में उस की अपनी ज़मीन में दफन दिया गया।
³⁵ योआब की जगह बादशाह ने बिनायाह बिन यहोयदा को फ़ौज का कमांडर बना दिया। अबियातर का ओहदा उसने सदोक इमाम को दे दिया।

सिमई की मौत

³⁶ इसके बाद बादशाह ने सिमई को बुलाकर उसे हुक्म दिया, “यहाँ यरूशलम में अपना घर बनाकर रहना। आइंदा आपको शहर से निकलने की इजाजत नहीं है, खाह आप कहीं भी जाना चाहें। ³⁷ यक्रीन जानें कि ज्योंही आप शहर के दरवाजे से निकलकर वादीए-किदरोन को पार करेंगे तो आपको मार दिया जाएगा। तब आप खुद अपनी मौत के ज़िम्मादार ठहरेंगे।” ³⁸ सिमई ने जवाब दिया, “ठीक है, जो कुछ मेरे आका ने फ़रमाया है मैं करूँगा।”

सिमई देर तक बादशाह के हुक्म के मुताबिक यरूशलम में रहा। ³⁹ तीन साल यों ही गुज़र गए। लेकिन एक दिन उसके दो गुलाम भाग गए। चलते चलते वह जात के बादशाह अकीस बिन माका के पास पहुँच गए। किसी ने सिमई को इतला दी, “आपके गुलाम जात में ठहरे हुए हैं।” ⁴⁰ वह फ़ौरन अपने गधे पर ज़ीन कसकर गुलामों को ढूँढ़ने के लिए जात में अकीस के पास चला गया। दोनों गुलाम अब तक वहीं थे तो सिमई उन्हें पकड़कर यरूशलम वापस ले आया।

⁴¹ सुलेमान को खबर मिली कि सिमई जात जाकर लौट आया है। ⁴² तब उसने उसे बुलाकर पूछा, “क्या मैंने आपको आगाह करके नहीं कहा था कि यक्रीन जानें कि ज्योंही आप यरूशलम से निकलेंगे आपको मार दिया जाएगा, खाह आप कहीं भी जाना चाहें। और क्या आपने जवाब में रब की कसम खाकर नहीं कहा था, ‘ठीक है, मैं ऐसा ही करूँगा?’” ⁴³ लेकिन अब आपने अपनी कसम तोड़कर मेरे हुक्म की खिलाफ़वर्ज़ी की है। यह आपने क्यों किया है?” ⁴⁴ फिर बादशाह ने कहा, “आप ख़ूब जानते हैं कि आपने मेरे बाप दाऊद के साथ कितना बुरा सुलूक किया। अब रब आपको इसकी सज़ा देगा। ⁴⁵ लेकिन सुलेमान बादशाह को वह बरकत देता रहेगा, और दाऊद का तख़्त रब के हुज़ूर अबद तक कायम रहेगा।”

⁴⁶ फिर बादशाह ने बिनायाह बिन यहोयदा को हुक्म दिया कि वह सिमई को मार दे। बिनायाह ने उसे बाहर ले जाकर तलवार से मार दिया। यों सुलेमान की इसराईल पर हुक्मत मज़बूत हो गई।

3

सुलेमान रब से हिकमत माँगता है

¹ सुलेमान फिरौन की बेटी से शादी करके मिसरी बादशाह का दामाद बन गया। शुरू में उस की बीवी शहर के उस हिस्से में रहती थी जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता था। क्योंकि उस वक़्त नया महल, रब का घर और शहर की फ़सील ज़ेरे-तामीर थे।

² उन दिनों में रब के नाम का घर तामीर नहीं हुआ था, इसलिए इसराईली अपनी कुरबानियाँ मुख़्तलिफ़ ऊँची जगहों पर चढ़ाते थे। ³ सुलेमान रब से प्यार करता था और इसलिए अपने बाप दाऊद की तमाम हिदायत के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारता था। लेकिन वह भी जानवरों की अपनी कुरबानियाँ और बख़ूर ऐसे ही मक़ामों पर रब को पेश करता था।

⁴ एक दिन बादशाह ज़िबऊन गया और वहाँ भस्म होनेवाली 1,000 कुरबानियाँ चढ़ाई, क्योंकि उस शहर की ऊँची जगह कुरबानियाँ चढ़ाने का सबसे अहम मरकज़ थी। ⁵ जब वह वहाँ ठहरा हुआ था तो रब खाब में उस पर ज़ाहिर हुआ और फ़रमाया, “तेरा दिल क्या चाहता है? मुझे बता दे तो मैं तेरी खाहिश पूरी करूँगा।”

⁶ सुलेमान ने जवाब दिया, “तू मेरे बाप दाऊद पर बड़ी मेहरबानी कर चुका है। वजह यह थी कि तेरा खादिम वफ़ादारी, इनसाफ़ और ख़लूसदिली से तेरे हुज़ूर चलता रहा। तेरी उस पर मेहरबानी आज तक जारी रही है, क्योंकि तूने उसका बेटा उस की जगह तख़्तनशीन कर दिया है। ⁷ ऐ रब मेरे खुदा, तूने अपने खादिम को मेरे बाप दाऊद की जगह तख़्त पर बिठा दिया है। लेकिन मैं अभी छोटा बच्चा हूँ जिसे अपनी ज़िम्मादारियाँ सहीह तौर पर सँभालने का तज़रबा नहीं हुआ। ⁸ तो भी तेरे खादिम को तेरी चुनी हुई क़ौम के बीच में खड़ा किया गया है, इतनी अज़ीम क़ौम के दरमियान कि उसे गिना नहीं जा सकता। ⁹ चुनाँचे मुझे सुनेवाला दिल अता फ़रमा ताकि मैं तेरी क़ौम का इनसाफ़ करूँ और सहीह और ग़लत बातों में इम्तियाज़ कर सकूँ। क्योंकि कौन तेरी इस अज़ीम क़ौम का इनसाफ़ कर सकता है?”

¹⁰ सुलेमान की यह दरखास्त रब को पसंद आई, ¹¹ इसलिए उसने जवाब दिया, “मैं खुश हूँ कि तूने न उम्र की दराज़ी, न दौलत और न अपने दुश्मनों की हलाकत बल्कि इम्तियाज़ करने की सलाहियत माँगी है ताकि सुनकर इनसाफ़ कर सके। ¹² इसलिए मैं तेरी दरखास्त पूरी करके तुझे इतना दानिशमंद और समझदार बना दूँगा कि उतना न माज़ी में कोई था, न मुस्तक़बिल में कभी कोई होगा। ¹³ बल्कि तुझे वह कुछ भी दे दूँगा जो तूने नहीं माँगा, यानी दौलत और इज़ज़त। तेरे जीते-जी कोई और बादशाह तेरे बराबर नहीं पाया जाएगा। ¹⁴ अगर तू मेरी राहों पर चलता रहे और अपने बाप दाऊद की तरह मेरे अहक़ाम के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारे तो फिर मैं तेरी उम्र दराज़ करूँगा।”

¹⁵ सुलेमान जाग उठा तो मालूम हुआ कि मैंने खाब देखा है। वह यरूशलम को वापस चला गया और रब के अहद के सन्दूक के सामने खड़ा हुआ। वहाँ उसने भस्म होनेवाली और सलामती की कुरबानियाँ पेश कीं, फिर बड़ी ज़ियाफ़त की जिसमें तमाम दरबारी शरीक हुए।

दो कसबियों के बच्चे के बारे में सुलेमान का फैसला

¹⁶ एक दिन दो कसबियाँ बादशाह के पास आईं। ¹⁷ एक बात करने लगी, “मेरे आका, हम दोनों एक ही घर में बसती हैं। कुछ देर पहले इसकी मौजूदगी में घर में मेरे बच्चा पैदा हुआ। ¹⁸ दो दिन के बाद इसके भी बच्चा हुआ। हम अकेली ही थीं, हमारे सिवा घर में कोई और नहीं था। ¹⁹ एक रात को मेरी साथी का बच्चा मर गया। माँ ने सोते में करवटें बदलते बदलते अपने बच्चे को दबा दिया था। ²⁰ रातों रात इसे मालूम

हुआ कि बेटा मर गया है। मैं अभी गहरी नींद सो रही थी। यह देखकर इसने मेरे बच्चे को उठाया और अपने मुरदे बेटे को मेरी गोद में रख दिया। फिर वह मेरे बेटे के साथ सो गई। ²¹ सुबह के वक़्त जब मैं अपने बेटे को दूध पिलाने के लिए उठी तो देखा कि उससे जान निकल गई है। लेकिन जब दिन मज़ीद चढ़ा और मैं गौर से उसे देख सकी तो क्या देखती हूँ कि यह वह बच्चा नहीं है जिसे मैंने जन्म दिया है!”

²² दूसरी औरत ने उस की बात काटकर कहा, “हरगिज़ नहीं! यह झूट है। मेरा बेटा ज़िंदा है और तेरा तो मर गया है।” पहली औरत चीख उठी, “कभी भी नहीं! ज़िंदा बच्चा मेरा और मुरदा बच्चा तेरा है।” ऐसी बातें करते करते दोनों बादशाह के सामने झगड़ती रहीं।

²³ फिर बादशाह बोला, “सीधी-सी बात यह है कि दोनों ही दावा करती हैं कि ज़िंदा बच्चा मेरा है और मुरदा बच्चा दूसरी का है। ²⁴ ठीक है, फिर मेरे पास तलवार ले आएँ!” उसके पास तलवार लाई गई। ²⁵ तब उसने हुक्म दिया, “ज़िंदा बच्चे को बराबर के दो हिस्सों में काटकर हर औरत को एक एक हिस्सा दे दें।” ²⁶ यह सुनकर बच्चे की हकीकती माँ ने जिसका दिल अपने बेटे के लिए तड़पता था बादशाह से इलतमास की, “नहीं मेरे आका, उसे मत मारें! बराहे-करम उसे इसी को दे दीजिए।”

लेकिन दूसरी औरत बोली, “ठीक है, उसे काट दें। अगर यह मेरा नहीं होगा तो कम अज़ कम तेरा भी नहीं होगा।”

²⁷ यह देखकर बादशाह ने हुक्म दिया, “स्कें! बच्चे पर तलवार मत चलाएँ बल्कि उसे पहली औरत को दे दें जो चाहती है कि ज़िंदा रहे। वही उस की माँ है।” ²⁸ जल्द ही सुलेमान के इस फैसले की खबर पूरे मुल्क में फैल गई, और लोगों पर बादशाह का ख़ौफ़ छा गया, क्योंकि उन्होंने जान लिया कि अल्लाह ने उसे इनसाफ़ करने की ख़ास हिकमत अता की है।

4

सुलेमान के सरकारी अफसरों की फ़हरिस्त

¹ अब सुलेमान पूरे इसराईल पर हुक्मत करता था। ² यह उसके आला अफसर थे :

इमामे-आज़म : अज़रियाह बिन सदोक,

³ मीरमुंशी : सीसा के बेटे इलीहरिफ़ और अखियाह,

बादशाह का मुशरि-खास : यहसफ़त बिन अखीलूद,

⁴ फ़ौज़ का कमांडर : बिनायाह बिन यहोयदा,

इमाम : सदोक और अबियातर,

⁵ ज़िलों पर मुकर्रर अफसरों का सरदार : अज़रियाह बिन नातन,

बादशाह का करीबी मुशरि : इमाम ज़बूद बिन नातन,

⁶ महल का इंचार्ज : अखीसर,

बेगारियों का इंचार्ज : अदूनिराम बिन अबदा

⁷ सुलेमान ने मुल्के-इसराईल को बारह ज़िलों में तकसीम करके हर ज़िले पर एक अफसर मुकर्रर किया था। इन अफसरों की एक ज़िम्मादारी यह थी कि दरबार की ज़रूरियात पूरी करें। हर अफसर को साल में एक माह की ज़रूरियात पूरी करनी थी। ⁸ दर्जे-ज़ैल इन अफसरों और उनके इलाकों की फ़हरिस्त है। बिन-हर : इफराईम का पहाड़ी इलाका,

⁹ बिन-दिक्कर : मकस, सालबीम, बैत-शम्स और ऐलोन-बैत-हनान,

¹⁰ बिन-हसद : अरूबोत, सोका और हिफर का इलाका,

¹¹ सुलेमान की बेटी ताफ़त का शौहर बिन-अबीनदाब : साहिली शहर दोर का पहाड़ी इलाका,

¹² बाना बिन अखीलूद : तानक, मजिदो और उस बैत-शान का पूरा इलाका जो ज़रतान के पड़ोस में यज़्ज़एल के नीचे वाके है, नीज़ बैत-शान से लेकर अबील-महला तक का पूरा इलाका बशमूल युक्मियाम,

¹³ बिन-जबर : जिलियाद में रामात का इलाका बशमूल याईर बिन मनस्सी की बस्तियाँ, फिर बसन में अरजूब का इलाका। इसमें 60 ऐसे फ़सीलदार शहर शामिल थे जिनके दरवाज़ों पर पीतल के कुंडे लगे थे,

¹⁴ अखी-नदाब बिन इदू : महनायम,

¹⁵ सुलेमान की बेटी बासमत का शौहर अखीमाज़ : नफ़ताली का कबायली इलाका,

¹⁶ बाना बिन हसी : आशर का कबायली इलाका और बालोत,

¹⁷ यहसफ़त बिन फ़रूह : इशकार का कबायली इलाका,

¹⁸ सिमई बिन ऐला : बिनयमीन का कबायली इलाका,

¹⁹ जबर बिन ऊरी जिलियाद का वह इलाका जिस पर पहले अमोरी बादशाह सीहोन और बसन के बादशाह ओज की हुक्मत थी। इस पूरे इलाके पर सिर्फ़ यही एक अफसर मुकर्रर था।

सुलेमान की हुक्मत की अज़मत

20 उस ज़माने में इसराईल और यहूदाह के लोग साहिल की रेत की मानिंद बेशुमार थे। लोगों को खाने और पीने की सब चीज़ें दस्तयाब थीं, और वह खुश थे।

21 सुलेमान दरियाए-फुरात से लेकर फिलिस्तियों के इलाके और मिसरी सरहद तक तमाम ममालिक पर हुकूमत करता था। उसके जीते-जी यह ममालिक उसके ताबे रहे और उसे खराज देते थे।

22 सुलेमान के दरबार की रोज़ाना ज़रूरियात यह थी : तक्ररीबन 5,000 किलोग्राम बारीक मैदा, तक्ररीबन 10,000 किलोग्राम आम मैदा, 23 10 मोटे-ताजे बैल, चरागाहों में पले हुए 20 आम बैल, 100 भेड़-बकरियाँ, और इसके अलावा हिरन, गज़ाल, मृग और मुख्तलिफ़ किस्म के मोटे-ताजे मृग।

24 जितने ममालिक दरियाए-फुरात के मगरिब में थे उन सब पर सुलेमान की हुकूमत थी, यानी तिफ़सह से लेकर गज़ज़ा तक। किसी भी पड़ोसी मुल्क से उसका झगड़ा नहीं था, बल्कि सबके साथ सुलह थी। 25 उसके जीते-जी पूरे यहूदाह और इसराईल में सुलह-सलामती रही। शिमाल में दान से लेकर जुनूब में बैर-सबा तक हर एक सलामती से अंगूर की अपनी बेल और अंजीर के अपने दरख्त के साथ में बैठ सकता था।

26 अपने रथों के घोड़ों के लिए सुलेमान ने 4,000 थान बनवाए। उसके 12,000 घोड़े थे। 27 बारह ज़िलों पर मुकर्रर अफ़सर बाकायदगी से सुलेमान बादशाह और उसके दरबार की ज़रूरियात पूरी करते रहे। हर एक को साल में एक माह के लिए सब कुछ मुहैया करना था। उनकी मेहनत की वजह से दरबार में कोई कमी न हुई। 28 बादशाह की हिदायत के मुताबिक वह रथों के घोड़ों और दूसरे घोड़ों के लिए दरकार जौ और भूसा बराहे-रास्त उनके थानों तक पहुँचाते थे।

29 अल्लाह ने सुलेमान को बहुत ज़्यादा हिकमत और समझ अता की। उसे साहिल की रेत जैसा वसी इल्म हासिल हुआ। 30 उस की हिकमत इसराईल के मशरिक में रहनेवाले और मिसर के आलिमों से कहीं ज़्यादा थी। 31 इस लिहाज़ से कोई भी उसके बराबर नहीं था। वह ऐतान इज़राही और महोल के बेटों हैमान, कलकूल और दरदा पर भी सबक़त ले गया था। उस की शोहरत इर्दगिर्द के तमाम ममालिक में फैल गई। 32 उसने 3,000 कहावतें और 1,005 गीत लिख दिए। 33 वह तफ़सील से मुख्तलिफ़ किस्म के पौदों के बारे में बात कर सकता था, लुबनान में देवदार के बड़े दरख्त से लेकर छोटे पौदे ज़ूफ़ा तक जो दीवार की दराइयों में उगता है। वह महारत से चौपाइयों, परिंदों, रेंगनेवाले जानवरों और मछलियों की तफ़सीलात भी बयान कर सकता था। 34 चुनाँचे तमाम ममालिक के बादशाहों ने अपने सफ़ीरों को सुलेमान के पास भेज दिया ताकि उस की हिकमत सुनें।

5

हीराम बादशाह के साथ सुलेमान का मुआहदा

1 सूर का बादशाह हीराम हमेशा दाऊद का अच्छा दोस्त रहा था। जब उसे खबर मिली कि दाऊद के बाद सुलेमान को मसह करके बादशाह बनाया गया है तो उसने अपने सफ़ीरों को उसे मुबारकबाद देने के लिए भेज दिया। 2 तब सुलेमान ने हीराम को पैगाम भेजा, 3 “आप जानते हैं कि मेरे बाप दाऊद रब अपने ख़ुदा के नाम के लिए घर तामीर करना चाहते थे। लेकिन यह उनके बस की बात नहीं थी, क्योंकि उनके जीते-जी इर्दगिर्द के ममालिक उनसे जंग करते रहे। गो रब ने दाऊद को तमाम दुश्मनों पर फ़तह बख़्शी थी, लेकिन लड़ते लड़ते वह रब का घर न बना सके। 4 अब हालात फ़रक़ हैं : रब मेरे ख़ुदा ने मुझे पूरा सुकून अता किया है। चारों तरफ़ न कोई मुख्तलिफ़ नज़र आता है, न कोई खतरा। 5 इसलिए मैं रब अपने ख़ुदा के नाम के लिए घर तामीर करना चाहता हूँ। क्योंकि मेरे बाप दाऊद के जीते-जी रब ने उनसे वादा किया था, ‘तेरे जिस बेटे को मैं तेरे बाद तख़्त पर बिठाऊँगा वही मेरे नाम के लिए घर बनाएगा।’ 6 अब गुज़ारिश है कि आपके लकड़हारे लुबनान में मेरे लिए देवदार के दरख्त काट दें। मेरे लोग उनके साथ मिलकर काम करेंगे। आपके लोगों की मज़दूरी मैं ही अदा करूँगा। जो कुछ भी आप कहेंगे मैं उन्हें दूँगा। आप तो ख़ूब जानते हैं कि हमारे हाँ सैदा के लकड़हारों जैसे माहिर नहीं हैं।”

7 जब हीराम को सुलेमान का पैगाम मिला तो वह बहुत खुश होकर बोल उठा, “आज रब की हम्द हो जिसने दाऊद को इस बड़ी क़ौम पर हुकूमत करने के लिए इतना दानिशमंद बेटा अता किया है!” 8 सुलेमान को हीराम ने जवाब भेजा, “मुझे आपका पैगाम मिल गया है, और मैं आपकी ज़रूर मदद करूँगा। देवदार और जूनीपर की जितनी लकड़ी आपको चाहिए वह मैं आपके पास पहुँचा दूँगा। 9 मेरे लोग दरख्तों के तने लुबनान के पहाड़ी इलाके से नीचे साहिल तक लाएँगे जहाँ हम उनके बेड़े बाँधकर समुंदर पर उस जगह पहुँचा देंगे जो आप मुकर्रर करेंगे। वहाँ हम तनों के रस्से खोल देंगे, और आप उन्हें ले जा सकेंगे। मुआवज़े में आप मुझे इतनी ख़ुराक मुहैया करें कि मेरे दरबार की ज़रूरियात पूरी हो जाएँ।”

10 चुनाँचे हीराम ने सुलेमान को देवदार और जूनीपर की उतनी लकड़ी मुहैया की जितनी उसे ज़रूरत थी। 11 मुआवज़े में सुलेमान उसे सालाना तक्ररीबन 32,50,000 किलोग्राम गंदुम और तक्ररीबन 4,40,000 लिटर जैतून का तेल भेजता रहा। 12 इसके अलावा सुलेमान और हीराम ने आपस में सुलह का मुआहदा किया। यों रब ने सुलेमान को हिकमत अता की जिस तरह उसने उससे वादा किया था।

रब का घर बनाने की पहली तैयारियाँ

13-14 सुलेमान बादशाह ने लुबनान में यह काम करने के लिए इसराईल में से 30,000 आदमियों की बेगार पर भरती की। उसने अदूनिराम को उन पर मुकर्रर किया। हर माह वह बारी बारी 10,000 अफ़राद को लुबनान में भेजता रहा। यों हर मज़दूर एक माह लुबनान में और दो माह

घर में रहता। ¹⁵ सुलेमान ने 80,000 आदमियों को कानों में लगाया ताकि वह पत्थर निकालें। 70,000 अफ़राद यह पत्थर यरूशलम लाते थे। ¹⁶ उन लोगों पर 3,300 निगरान मुकर्रर थे। ¹⁷ बादशाह के हुक्म पर वह कानों से बेहतरीन पत्थर के बड़े बड़े टुकड़े निकाल लाए और उन्हें तराशकर रब के घर की बुनियाद के लिए तैयार किया। ¹⁸ जबल के कारीगरों ने सुलेमान और हीराम के कारीगरों की मदद की। उन्होंने मिलकर पत्थर के बड़े बड़े टुकड़े और लकड़ी को तराशकर रब के घर की तामीर के लिए तैयार किया।

6

रब के घर की तामीर

¹ सुलेमान ने अपनी हुक्मत के चौथे साल के दूसरे महीने ज़ीब में रब के घर की तामीर शुरू की। इसराईल को मिसर से निकले 480 साल गुज़र चुके थे।

² इमारत की लंबाई 90 फुट, चौड़ाई 30 फुट और ऊँचाई 45 फुट थी। ³ सामने एक बरामदा बनाया गया जो इमारत जितना चौड़ा यानी 30 फुट और आगे की तरफ 15 फुट लंबा था। ⁴ इमारत की दीवारों में खिड़कियाँ थीं जिन पर जंगले लगे थे। ⁵ इमारत से बाहर आकर सुलेमान ने दाएँ बाएँ की दीवारों और पिछली दीवार के साथ एक ढाँचा खड़ा किया जिसकी तीन मनज़िलें थीं और जिसमें मुख्तलिफ़ कमरे थे। ⁶ निचली मनज़िल की अंदर की चौड़ाई साढ़े 7 फुट, दरमियानी मनज़िल की 9 फुट और ऊपर की मनज़िल की साढ़े 10 फुट थी। वजह यह थी कि रब के घर की बैरूनी दीवार की मोटाई मनज़िल बमनज़िल कम होती गई। इस तरीके से बैरूनी ढाँचे की दूसरी और तीसरी मनज़िल के शहतीरों के लिए रब के घर की दीवार में स़राख बनाने की ज़रूरत नहीं थी बल्कि उन्हें दीवार पर ही रखा गया। यानी दरमियानी मनज़िल की इमारतवाली दीवार निचली की दीवार की निसबत कम मोटी और ऊपरवाली मनज़िल की इमारतवाली दीवार दरमियानी मनज़िल की दीवार की निसबत कम मोटी थी। यों इस ढाँचे की छतों के शहतीरों को इमारत की दीवार तोड़कर उसमें लगाने की ज़रूरत नहीं थी बल्कि उन्हें इमारत की दीवार पर ही रखा गया।

⁷ जो पत्थर रब के घर की तामीर के लिए इस्तेमाल हुए उन्हें पत्थर की कान के अंदर ही तराशकर तैयार किया गया। इसलिए जब उन्हें ज़ेरे-तामीर इमारत के पास लाकर जोड़ा गया तो न हथौड़ों, न छैनी न लोहे के किसी और औज़ार की आवाज़ सुनाई दी।

⁸ इस ढाँचे में दाखिल होने के लिए इमारत की दहनी दीवार में दरवाज़ा बनाया गया। वहाँ से एक सीढ़ी परस्तार को दरमियानी और ऊपर की मनज़िल तक पहुँचाती थी। ⁹ यों सुलेमान ने इमारत को तकमील तक पहुँचाया। छत को देवदार के शहतीरों और तख्तों से बनाया गया। ¹⁰ जो ढाँचा इमारत के तीनों तरफ़ खड़ा किया गया उसे देवदार के शहतीरों से इमारत की बाहरवाली दीवार के साथ जोड़ा गया। उस की तीनों मनज़िलों की ऊँचाई साढ़े सात सात फुट थी।

¹¹ एक दिन रब सुलेमान से हमकलाम हुआ, ¹² “जहाँ तक मेरी सुकूनतगाह का ताल्लुक है जो तू मेरे लिए बना रहा है, अगर तू मेरे तमाम अहकाम और हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारे तो मैं तेरे लिए वह कुछ करूँगा जिसका वादा मैंने तेरे बाप दाऊद से किया है। ¹³ तब मैं इसराईल के दरमियान रहूँगा और अपनी क्रौम को कभी तर्क नहीं करूँगा।”

रब के घर का अंदरूनी हिस्सा

¹⁴ जब इमारत की दीवारें और छत मुकम्मल हुई ¹⁵ तो अंदरूनी दीवारों पर फ़र्श से लेकर छत तक देवदार के तख्ते लगाए गए। फ़र्श पर जूनीपर के तख्ते लगाए गए। ¹⁶ अब तक इमारत का एक ही कमरा था, लेकिन अब उसने देवदार के तख्तों से फ़र्श से लेकर छत तक दीवार खड़ी करके पिछले हिस्से में अलग कमरा बना दिया जिसकी लंबाई 30 फुट थी। यह मुक़द्दसतरीन कमरा बन गया। ¹⁷ जो हिस्सा सामने रह गया उसे मुक़द्दस कमरा मुकर्रर किया गया। उस की लंबाई 60 फुट थी। ¹⁸ इमारत की तमाम अंदरूनी दीवारों पर देवदार के तख्ते यों लगे थे कि कहीं भी पत्थर नज़र न आया। तख्तों पर तूँबे और फूल कंदा किए गए थे।

¹⁹ पिछले कमरे में रब के अहद का संदूक रखना था। ²⁰ इस कमरे की लंबाई 30 फुट, चौड़ाई 30 फुट और ऊँचाई 30 फुट थी। सुलेमान ने इसकी तमाम दीवारों और फ़र्श पर खालिस सोना चढ़ाया। मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने देवदार की कुरबानगाह थी। उस पर भी सोना मँढ़ा गया ²¹ बल्कि इमारत के सामनेवाले कमरे की दीवारों, छत और फ़र्श पर भी सोना मँढ़ा गया। मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े पर सोने की जंजीरें लगाई गईं। ²² चुनौचे इमारत की तमाम अंदरूनी दीवारों, छत और फ़र्श पर सोना मँढ़ा गया, और इसी तरह मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने की कुरबानगाह पर भी।

²³ फिर सुलेमान ने जैतून की लकड़ी से दो कस्बी फ़रिश्ते बनवाए जिन्हें मुक़द्दसतरीन कमरे में रखा गया। इन मुजस्समों का कद 15 फुट था। ²⁴⁻²⁵ दोनों शक्लो-सूरत में एक जैसे थे। हर एक के दो पर थे, और हर पर की लंबाई साढ़े सात सात फुट थी। चुनौचे एक पर के सिरे से दूसरे पर के सिरे तक का फ़ासला 15 फुट था। ²⁶ हर एक का कद 15 फुट था। ²⁷ उन्हें मुक़द्दसतरीन कमरे में यों एक दूसरे के साथ खड़ा किया गया कि हर फ़रिश्ते का एक पर दूसरे के पर से लगता जबकि दाईं और बाईं तरफ़ हर एक का दूसरा पर दीवार के साथ लगता था। ²⁸ इन फ़रिश्तों पर भी सोना मँढ़ा गया।

²⁹ मुक़द्दस और मुक़द्दसतरीन कमरों की दीवारों पर कस्बी फ़रिश्ते, खज़ूर के दरख़्त और फूल कंदा किए गए। ³⁰ दोनों कमरों के फ़र्श पर भी सोना मँढ़ा गया। ³¹ सुलेमान ने मुक़द्दसतरीन कमरे का दरवाज़ा जैतून की लकड़ी से बनवाया। उसके दो किवाड़ थे, और चौखट की लकड़ी के पाँच कोने थे। ³² दरवाज़े के किवाड़ों पर कस्बी फ़रिश्ते, खज़ूर के दरख़्त और फूल कंदा किए गए। इन किवाड़ों पर भी फ़रिश्तों और

खजूर के दरख्तों समेत सोना मँढा गया। ³³ सुलेमान ने इमारत में दाखिल होनेवाले दरवाजे के लिए भी जैतून की लकड़ी से चौखट बनवाई, लेकिन उस की लकड़ी के चार कोने थे। ³⁴ इस दरवाजे के दो किवाड़ जूनीपर की लकड़ी के बने हुए थे। दोनों किवाड़ दीवार तक घूम सकते थे। ³⁵ इन किवाड़ों पर भी कस्बी फरिश्ते, खजूर के दरख्त और फूल कंदा किए गए थे। फिर उन पर सोना यों मँढा गया कि वह अच्छी तरह इन बेल-बूटों के साथ लग गया।

³⁶ इमारत के सामने एक अंदरूनी सहन बनाया गया जिसकी चारदीवारी यों तामीर हुई कि पत्थर के हर तीन रद्दों के बाद देवदार के शहतीरों का एक रद्दा लगाया गया।

³⁷ रब के घर की बुनियाद सुलेमान की हुकूमत के चौथे साल के दूसरे महीने जीब * में डाली गई, ³⁸ और उस की हुकूमत के ग्यारहवें साल के आठवें महीने बूल † में इमारत मुकम्मल हुई। सब कुछ नक्शे के ऐन मुताबिक बना। इस काम पर कुल सात साल लग गए।

7

सुलेमान का महल

¹ जो महल सुलेमान ने बनवाया वह 13 साल के बाद मुकम्मल हुआ।

²⁻³ उस की एक इमारत का नाम 'लुबनान का जंगल' था। इमारत की लंबाई 150 फुट, चौड़ाई 75 फुट और ऊँचाई 45 फुट थी। निचली मनज़िल एक बड़ा हाल था जिसके देवदार की लकड़ी के 45 सतून थे। पंद्रह पंद्रह सतूनों को तीन कतारों में खड़ा किया गया था। सतूनों पर शहतीर थे जिन पर दूसरी मनज़िल के फ़र्श के लिए देवदार के तख्ते लगाए गए थे। दूसरी मनज़िल के मुख्तलिफ़ कमरे थे, और छत भी देवदार की लकड़ी से बनाई गई थी। ⁴ हाल की दोनों लंबी दीवारों में तीन तीन खिड़कियाँ थीं, और एक दीवार की खिड़कियाँ दूसरी दीवार की खिड़कियों के बिलकुल मुकाबिल थीं। ⁵ इन दीवारों के तीन तीन दरवाजे भी एक दूसरे के मुकाबिल थे। उनकी चौखटों की लकड़ी के चार चार कोने थे।

⁶ इसके अलावा सुलेमान ने सतूनों का हाल बनवाया जिसकी लंबाई 75 फुट और चौड़ाई 45 फुट थी। हाल के सामने सतूनों का बरामदा था। ⁷ उसने दीवान भी तामीर किया जो दीवाने-अदल कहलाता था। उसमें उसका तख्त था, और वहाँ वह लोगों की अदालत करता था। दीवान की चारों दीवारों पर फ़र्श से लेकर छत तक देवदार के तख्ते लगे हुए थे।

⁸ दीवान के पीछे सहन था जिसमें बादशाह का रिहाइशी महल था। महल का डिज़ायन दीवान जैसा था। उस की मिसरी बीवी फिरौन की बेटी का महल भी डिज़ायन में दीवान से मुताबिकत रखता था।

⁹ यह तमाम इमारतें बुनियादों से लेकर छत तक और बाहर से लेकर बड़े सहन तक आला किस्म के पत्थरों से बनी हुई थीं, ऐसे पत्थरों से जो चारों तरफ़ आरी से नाप के ऐन मुताबिक काटे गए थे। ¹⁰ बुनियादों के लिए उम्दा किस्म के बड़े बड़े पत्थर इस्तेमाल हुए। बाज़ की लंबाई 12 और बाज़ की 15 फुट थी। ¹¹ इन पर आला किस्म के पत्थरों की दीवारें खड़ी की गईं। दीवारों में देवदार के शहतीर भी लगाए गए। ¹² बड़े सहन की चारदीवारी यों बनाई गई कि पत्थरों के हर तीन रद्दों के बाद देवदार के शहतीरों का एक रद्दा लगाया गया था। जो अंदरूनी सहन रब के घर के इर्दगिर्द था उस की चारदीवारी भी इसी तरह ही बनाई गई, और इसी तरह रब के घर के बरामदे की दीवारें भी।

रब के घर के सामने के दो खास सतून

¹³ फिर सुलेमान बादशाह ने सूर के एक आदमी को बुलाया जिसका नाम हीराम था। ¹⁴ उस की माँ इसराईली कबीले नफ़ताली की बेवा थी जबकि उसका बाप सूर का रहनेवाला और पीतल का कारीगर था। हीराम बड़ी हिकमत, समझदारी और महारत से पीतल की हर चीज़ बना सकता था। इस किस्म का काम करने के लिए वह सुलेमान बादशाह के पास आया।

¹⁵ पहले उसने पीतल के दो सतून ढाल दिए। हर सतून की ऊँचाई 27 फुट और घेरा 18 फुट था। ¹⁶ फिर उसने हर सतून के लिए पीतल का बालाई हिस्सा ढाल दिया जिसकी ऊँचाई साढ़े 7 फुट थी। ¹⁷ हर बालाई हिस्से को एक दूसरे के साथ खूबसूरती से मिलाई गई सात जंजीरों से आरास्ता किया गया। ¹⁸⁻²⁰ इन जंजीरों के ऊपर हीराम ने हर बालाई हिस्से को पीतल के 200 अनारों से सजाया जो दो कतारों में लगाए गए। फिर बालाई हिस्से सतूनों पर लगाए गए। बालाई हिस्सों की सोसन के फूल की-सी शक्ल थी, और यह फूल 6 फुट ऊँचे थे। ²¹ हीराम ने दोनों सतून रब के घर के बरामदे के सामने खड़े किए। दहने हाथ के सतून का नाम उसने 'यकीन' और बाएँ हाथ के सतून का नाम 'बोअज़' रखा। ²² बालाई हिस्से सोसन-नुमा थे। चुनाँचे काम मुकम्मल हुआ।

पीतल का हौज़

²³ इसके बाद हीराम ने पीतल का बड़ा गोल हौज़ ढाल दिया जिसका नाम 'समुंदर' रखा गया। उस की ऊँचाई साढ़े 7 फुट, उसका मुँह 15 फुट चौड़ा और उसका घेरा तकरीबन 45 फुट था। ²⁴ हौज़ के किनारे के नीचे तूँबों की दो कतारें थीं। फ्री फुट तकरीबन 6 तूँबे थे। तूँबे और हौज़ मिलकर ढाले गए थे। ²⁵ हौज़ को बैलों के 12 मुजस्समों पर रखा गया। तीन बैलों का स्रख शिमाल की तरफ़, तीन का स्रख मग़रिब की तरफ़, तीन का स्रख जुनूब की तरफ़ और तीन का स्रख मशरिक् की तरफ़ था। उनके पिछले हिस्से हौज़ की तरफ़ थे, और हौज़ उनके कंधों पर

* 6:37 अप्रैल ता मई। † 6:38 अक्टूबर ता नवंबर।

पड़ा था। 26 हौज़ का किनारा प्याले बल्कि सोसन के फूल की तरह बाहर की तरफ मुड़ा हुआ था। उस की दीवार तकरीबन तीन इंच मोटी थी, और हौज़ में पानी के तकरीबन 44,000 लिटर समा जाते थे।

पानी के बासन उठाने की हथगाड़ियाँ

27 फिर हीराम ने पानी के बासन उठाने के लिए पीतल की हथगाड़ियाँ बनाईं। हर गाड़ी की लंबाई 6 फुट, चौड़ाई 6 फुट और ऊँचाई साढ़े 4 फुट थी। 28 हर गाड़ी का ऊपर का हिस्सा सरियों से मज़बूत किया गया फ्रेम था। 29 फ्रेम के बैस्नी पहलू शेरबबरो, बैलों और कस्बी फ़रिश्तों से सजे हुए थे। शेरों और बैलों के ऊपर और नीचे पीतल के सेहरे लगे हुए थे। 30 हर गाड़ी के चार पहिये और दो धुरे थे। यह भी पीतल के थे। चारों कोनों पर पीतल के ऐसे टुकड़े लगे थे जिन पर बासन रखे जाते थे। यह टुकड़े भी सेहरों से सजे हुए थे। 31 फ्रेम के अंदर जिस जगह बासन को रखा जाता था वह गोल थी। उस की ऊँचाई डेढ़ फुट थी, और उसका मुँह सवा दो फुट चौड़ा था। उसके बैस्नी पहलू पर चीज़ें कंदा की गई थीं। गाड़ी का फ्रेम गोल नहीं बल्कि चौरस था। 32 गाड़ी के फ्रेम के नीचे मज़कूरा चार पहिये थे जो धुरों से जुड़े थे। धुरे फ्रेम के साथ ही ढल गए थे। हर पहिया सवा दो फुट चौड़ा था। 33 पहिये रथों के पहियों की मानींद थे। उनके धुरे, किनारे, तार और नाभें सबके सब पीतल से ढाले गए थे। 34 गाड़ियों के चार कोनों पर दस्ते लगे थे जो फ्रेम के साथ मिलकर ढाले गए थे। 35-36 हर गाड़ी के ऊपर का किनारा नौ इंच ऊँचा था। कोनों पर लगे दस्ते और फ्रेम के पहलू हर जगह कस्बी फ़रिश्तों, शेरबबरो और खजूर के दरख्तों से सजे हुए थे। चारों तरफ सेहरे भी कंदा किए गए। 37 हीराम ने दसों गाड़ियों को एक ही साँचे में ढाला, इसलिए सब एक जैसी थीं।

38 हीराम ने हर गाड़ी के लिए पीतल का बासन ढाल दिया। हर बासन 6 फुट चौड़ा था, और उसमें 880 लिटर पानी समा जाता था। 39 उसने पाँच गाड़ियाँ रब के घर के दाएँ हाथ और पाँच उसके बाएँ हाथ खड़ी कीं। हौज़ बनाम समुंदर को उसने रब के घर के जुनूब-मशरिक में रख दिया।

उस सामान की फ़हरिस्त जो हीराम ने बनाया

40 हीराम ने बासन, बेलचे और छिड़काव के कटोरे भी बनाए। यों उसने रब के घर में वह सारा काम मुकम्मल किया जिसके लिए सुलेमान बादशाह ने उसे बुलाया था। उसने ज़ैल की चीज़ें बनाईं :

41 दो सतून,

सतूनों पर लगे प्यालानुमा बालाई हिस्से,

बालाई हिस्सों पर लगी जंजीरों का डिज़ायन,

42 जंजीरों के ऊपर लगे अनार (फ़ी बालाई हिस्सा 200 अदद),

43 10 हथगाड़ियाँ,

इन पर के पानी के 10 बासन,

44 हौज़ बनाम समुंदर,

इसे उठानेवाले बैल के 12 मुजस्समे,

45 बालटियाँ, बेलचे और छिड़काव के कटोरे।

यह तमाम सामान जो हीराम ने सुलेमान के हुक्म पर रब के घर के लिए बनाया पीतल से ढालकर पालिश किया गया था। 46 बादशाह ने उसे वादीए-यरदन में सुक्कात और ज़रतान के दरमियान ढलवाया। वहाँ एक फ़ौंडरी थी जहाँ हीराम ने गारे के साँचे बनाकर हर चीज़ ढाल दी।

47 इस सामान के लिए सुलेमान बादशाह ने इतना ज़्यादा पीतल इस्तेमाल किया कि उसका कुल वज़न मालूम न हो सका।

रब के घर के अंदर सोने का सामान

48 रब के घर के अंदर के लिए सुलेमान ने दर्जे-ज़ैल सामान बनवाया :

सोने की कुरबानगाह,

सोने की वह मेज़ जिस पर रब के लिए मखसूस रोटियाँ पड़ी रहती थीं,

49 ख़ालिस सोने के 10 शमादान जो मुकद्दसतरीन कमरे के सामने रखे गए, पाँच दरवाज़े के दहने हाथ और पाँच उसके बाएँ हाथ,

सोने के वह फूल जिनसे शमादान आरास्ता थे,

सोने के चराग और बत्ती को बुझाने के औज़ार,

50 ख़ालिस सोने के बासन, चराग को कतरने के औज़ार, छिड़काव के कटोरे और प्याले,

जलते हुए कोयले के लिए ख़ालिस सोने के बरतन,

मुकद्दसतरीन कमरे और बड़े हाल के दरवाज़ों के कब्ज़े।

51 रब के घर की तकमील पर सुलेमान बादशाह ने वह सोना-चाँदी और बाक़ी तमाम कीमती चीज़ें रब के घर के खज़ानों में रखवा दीं जो उसके बाप दाऊद ने रब के लिए मखसूस की थीं।

8

अहद का संदूक रब के घर में लाया जाता है

1 फिर सुलेमान ने इसराईल के तमाम बुजुर्गों और कबीलों और कुंभों के तमाम सरपरस्तों को अपने पास यरूशलम में बुलाया, क्योंकि रब के अहद का संदूक अब तक यरूशलम के उस हिस्से में था जो 'दाऊद का शहर' या सियून कहलाता है। सुलेमान चाहता था कि कौम के नुमाइंदे हाज़िर हों जब संदूक को वहाँ से रब के घर में पहुँचाया जाए। 2 चुनाँचे इसराईल के तमाम मर्द साल के सातवें महीने इतानीम * में सुलेमान बादशाह के पास यरूशलम में जमा हुए। इसी महीने में झोंपड़ियों की ईद मनाई जाती थी।

3 जब सब जमा हुए तो इमाम रब के संदूक को उठाकर 4 रब के घर में लाए। लावियों के साथ मिलकर उन्होंने मुलाकात के ख़ैमे को भी उसके तमाम मुकद्दस सामान समेत रब के घर में पहुँचाया। 5 वहाँ संदूक के सामने सुलेमान बादशाह और बाक़ी तमाम जमा हुए इसराईलियों ने इतनी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल कुरबान किए कि उनकी तादाद गिनी नहीं जा सकती थी।

6 इमामों ने रब के अहद का संदूक पिछले यानी मुकद्दसतरीन कमरे में लाकर कस्बी फ़रिशतों के परों के नीचे रख दिया। 7 फ़रिशतों के पर पूरे संदूक पर उस की उठाने की लकड़ियों समेत फैले रहे। 8 तो भी उठाने की यह लकड़ियाँ इतनी लंबी थीं कि उनके सिरे सामनेवाले यानी मुकद्दस कमरे से नज़र आते थे। लेकिन वह बाहर से देखे नहीं जा सकते थे। आज तक वह वहीं मौजूद हैं। 9 संदूक में सिर्फ पत्थर की वह दो तख्तियाँ थीं जिनको मूसा ने होरिब यानी कोहे-सीना के दामन में उसमें रख दिया था, उस वक़्त जब रब ने मिसर से निकले हुए इसराईलियों के साथ अहद बाँधा था।

10-11 जब इमाम मुकद्दस कमरे से निकलकर सहन में आए तो रब का घर एक बादल से भर गया। इमाम अपनी ख़िदमत अंजाम न दे सके, क्योंकि रब का घर उसके जलाल के बादल से मामूर हो गया था। 12 यह देखकर सुलेमान ने दुआ की, "रब ने फ़रमाया है कि मैं घने बादल के अधरे में रहूँगा। 13 यक़ीनन मैंने तेरे लिए अज़ीम सुकूनतगाह बनाई है, एक मक़ाम जो तेरी अबदी सुकूनत के लायक़ है।"

रब के घर की मख़सूसियत पर सुलेमान की तक़रीर

14 फिर बादशाह ने मुड़कर रब के घर के सामने खड़ी इसराईल की पूरी जमात की तरफ़ स़ख़ किया। उसने उन्हें बरकत देकर कहा,

15 "रब इसराईल के ख़ुदा की तारीफ़ हो जिसने वह वादा पूरा किया है जो उसने मेरे बाप दाऊद से किया था। क्योंकि उसने फ़रमाया, 16 'जिस दिन मैं अपनी कौम इसराईल को मिसर से निकाल लाया उस दिन से लेकर आज तक मैंने कभी न फ़रमाया कि इसराईली कबीलों के किसी शहर में मेरे नाम की ताज़ीम में घर बनाया जाए। लेकिन मैंने दाऊद को अपनी कौम इसराईल का बादशाह बनाया है।'

17 मेरे बाप दाऊद की बड़ी ख़ाहिश थी कि रब इसराईल के ख़ुदा के नाम की ताज़ीम में घर बनाए। 18 लेकिन रब ने एतराज़ किया, 'मैं खुश हूँ कि तू मेरे नाम की ताज़ीम में घर तामीर करना चाहता है, 19 लेकिन तू नहीं बल्कि तेरा बेटा ही उसे बनाएगा।'

20 और वाक़ई, रब ने अपना वादा पूरा किया है। मैं रब के वादे के ऐन मुताबिक़ अपने बाप दाऊद की जगह इसराईल का बादशाह बनकर तख़्त पर बैठ गया हूँ। और अब मैंने रब इसराईल के ख़ुदा के नाम की ताज़ीम में घर भी बनाया है। 21 उसमें मैंने उस संदूक के लिए मक़ाम तैयार कर रखा है जिसमें शरीअत की तख्तियाँ पड़ी हैं, उस अहद की तख्तियाँ जो रब ने हमारे बापदादा से मिसर से निकालते वक़्त बाँधा था।"

रब के घर की मख़सूसियत पर सुलेमान की दुआ

22 फिर सुलेमान इसराईल की पूरी जमात के देखते देखते रब की कुरबानगाह के सामने खड़ा हुआ। उसने अपने हाथ आसमान की तरफ़ उठाकर 23 दुआ की,

"ऐ रब इसराईल के ख़ुदा, तुझ जैसा कोई ख़ुदा नहीं है, न आसमान और न ज़मीन पर। तू अपना वह अहद कायम रखता है जिसे तूने अपनी कौम के साथ बाँधा है और अपनी मेहरबानी उन सब पर ज़ाहिर करता है जो पूरे दिल से तेरी राह पर चलते हैं। 24 तूने अपने ख़ादिम दाऊद से किया हुआ वादा पूरा किया है। जो बात तूने अपने मुँह से मेरे बाप से की वह तूने अपने हाथ से आज ही पूरी की है। 25 ऐ रब इसराईल के ख़ुदा, अब अपनी दूसरी बात भी पूरी कर जो तूने अपने ख़ादिम दाऊद से की थी। क्योंकि तूने मेरे बाप से वादा किया था, 'अगर तेरी औलाद तेरी तरह अपने चाल-चलन पर ध्यान देकर मेरे हुज़ूर चलती रहे तो इसराईल पर उस की हुकूमत हमेशा तक कायम रहेगी।' 26 ऐ इसराईल के ख़ुदा, अब बराहे-करम अपना यह वादा पूरा कर जो तूने अपने ख़ादिम मेरे बाप दाऊद से किया है।

27 लेकिन क्या अल्लाह वाक़ई ज़मीन पर सुकूनत करेगा? नहीं, तू तो बुलंदतरीन आसमान में भी समा नहीं सकता! तो फिर यह मक़ान जो मैंने बनाया है किस तरह तेरी सुकूनतगाह बन सकता है? 28 ऐ रब मेरे ख़ुदा, तो भी अपने ख़ादिम की दुआ और इल्तिज़ा सुन जब मैं आज तेरे हुज़ूर पुकारते हुए इलतमास करता हूँ 29 कि बराहे-करम दिन-रात इस इमारत की निगरानी कर! क्योंकि यह वह जगह है जिसके बारे में तूने खुद फ़रमाया, 'यहाँ मेरा नाम सुकूनत करेगा।' चुनाँचे अपने ख़ादिम की गुज़ारिश सुन जो मैं इस मक़ाम की तरफ़ स़ख़ किए हुए करता हूँ।

30 जब हम इस मक़ाम की तरफ़ स़ख़ करके दुआ करें तो अपने ख़ादिम और अपनी कौम की इल्तिज़ा सुन। आसमान पर अपने तख़्त से हमारी सुन। और जब सुनेगा तो हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर!

* 8:2 सितंबर ता अक्तूबर

31 अगर किसी पर इलजाम लगाया जाए और उसे यहाँ तेरी कुरबानगाह के सामने लाया जाए ताकि हलफ उठाकर वादा करे कि मैं बेकुसूर हूँ 32 तो बराहे-कर्म आसमान पर से सुनकर अपने खादिमों का इनसाफ कर। कुसूरवार को मुजरिम ठहराकर उसके अपने सर पर वह कुछ आने दे जो उससे सरज़द हुआ है, और बेकुसूर को बेइलजाम करार देकर उस की रास्तबाज़ी का बदला दे।

33 हो सकता है किसी वक्त तेरी क़ौम इसराईल तेरा गुनाह करे और नतीजे में दुश्मन के सामने शिकस्त खाए। अगर इसराईली आखिरकार तेरे पास लौट आएँ और तेरे नाम की तमजीद करके यहाँ इस घर में तुझसे दुआ और इलतमास करें 34 तो आसमान पर से उनकी फरियाद सुन लेना। अपनी क़ौम इसराईल का गुनाह मुआफ़ करके उन्हें दुबारा उस मुल्क में वापस लाना जो तूने उनके बापदादा को दे दिया था।

35 हो सकता है इसराईली तेरा इतना संगीन गुनाह करें कि काल पड़े और बड़ी देर तक बारिश न बरसे। अगर वह आखिरकार इस घर की तरफ़ स्रख करके तेरे नाम की तमजीद करें और तेरी सज़ा के बाइस अपना गुनाह छोड़कर लौट आएँ 36 तो आसमान पर से उनकी फरियाद सुन लेना। अपने खादिमों और अपनी क़ौम इसराईल को मुआफ़ कर, क्योंकि तू ही उन्हें अच्छी राह की तालीम देता है। तब उस मुल्क पर दुबारा बारिश बरसा दे जो तूने अपनी क़ौम को मीरास में दे दिया है।

37 हो सकता है इसराईल में काल पड़ जाए, अनाज की फ़सल किसी बीमारी, फफूँदी, टिट्टियों या कीड़ों से मुतअस्सिर हो जाए, या दुश्मन किसी शहर का मुहासरा करे। जो भी मुसीबत या बीमारी हो, 38 अगर कोई इसराईली या तेरी पूरी क़ौम उसका सबब जानकर अपने हाथों को इस घर की तरफ़ बढ़ाए और तुझसे इलतमास करे 39 तो आसमान पर अपने तख़्त से उनकी फरियाद सुन लेना। उन्हें मुआफ़ करके वह कुछ कर जो ज़रूरी है। हर एक को उस की तमाम हरकतों का बदला दे, क्योंकि सिर्फ़ तू ही हर इन्सान के दिल को जानता है। 40 फिर जितनी देर वह उस मुल्क में ज़िंदगी गुज़ारेंगे जो तूने हमारे बापदादा को दिया था उतनी देर वह तेरा ख़ौफ़ मानेंगे।

41 आइंदा परदेसी भी तेरे नाम के सबब से दूर-दराज़ ममालिक से आएँगे। अगरचे वह तेरी क़ौम इसराईल के नहीं होंगे 42 तो भी वह तेरे अज़ीम नाम, तेरी बड़ी कुदरत और तेरे ज़बरदस्त कामों के बारे में सुनकर आएँगे और इस घर की तरफ़ स्रख करके दुआ करेंगे। 43 तब आसमान पर से उनकी फरियाद सुन लेना। जो भी दरखास्त वह पेश करें वह पूरी करना ताकि दुनिया की तमाम अक़वाम तेरा नाम जानकर तेरी क़ौम इसराईल की तरह ही तेरा ख़ौफ़ मानें और जान लें कि जो इमारत मैंने तामीर की है उस पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है।

44 हो सकता है तेरी क़ौम के मर्द तेरी हिदायत के मुताबिक़ अपने दुश्मन से लड़ने के लिए निकलें। अगर वह तेरे चुने हुए शहर और उस इमारत की तरफ़ स्रख करके दुआ करें जो मैंने तेरे नाम के लिए तामीर की है 45 तो आसमान पर से उनकी दुआ और इलतमास सुनकर उनके हक़ में इनसाफ़ कायम रखना।

46 हो सकता है वह तेरा गुनाह करें, ऐसी हरकतें तो हम सबसे सरज़द होती रहती हैं, और नतीजे में तू नाराज़ होकर उन्हें दुश्मन के हवाले कर दे जो उन्हें कैद करके अपने किसी दूर-दराज़ या करीबी मुल्क में ले जाए। 47 शायद वह जिलावतनी में तौबा करके दुबारा तेरी तरफ़ रूजू करें और तुझसे इलतमास करें, 'हमने गुनाह किया है, हमसे गलती हुई है, हमने बेदीन हरकतें की हैं।' 48 अगर वह ऐसा करके दुश्मन के मुल्क में अपने पूरे दिलो-जान से दुबारा तेरी तरफ़ रूजू करें और तेरी तरफ़ से बापदादा को दिए गए मुल्क, तेरे चुने हुए शहर और उस इमारत की तरफ़ स्रख करके दुआ करें जो मैंने तेरे नाम के लिए तामीर की है 49 तो आसमान पर अपने तख़्त से उनकी दुआ और इलतमास सुन लेना। उनके हक़ में इनसाफ़ कायम करना, 50 और अपनी क़ौम के गुनाहों को मुआफ़ कर देना। जिस भी ज़ुर्म से उन्होंने तेरा गुनाह किया है वह मुआफ़ कर देना। बख़्श दे कि उन्हें गिरिफ़्तार करनेवाले उन पर रहम करें। 51 क्योंकि यह तेरी ही क़ौम के अफ़राद हैं, तेरी ही मीरास जिसे तू मिसर के भड़कते भट्टे से निकाल लाया।

52 ऐ अल्लाह, तेरी आँखें मेरी इल्तिजाओं और तेरी क़ौम इसराईल की फरियादों के लिए खुली रहें। जब भी वह मदद के लिए तुझे पुकारें तो उनकी सुन लेना! 53 क्योंकि तू, ऐ रब कादिरे-मुतलक़ ने इसराईल को दुनिया की तमाम क़ौमों से अलग करके अपनी ख़ास मिलकियत बना लिया है। हमारे बापदादा को मिसर से निकालते वक्त तूने मूसा की मारिफ़त इस हक़ीक़त का एलान किया।”

आखिरी दुआ और बरकत

54 इस दुआ के बाद सुलेमान खड़ा हुआ, क्योंकि दुआ के दौरान उसने रब की कुरबानगाह के सामने अपने घुटने टेके और अपने हाथ आसमान की तरफ़ उठाए हुए थे। 55 अब वह इसराईल की पूरी जमात के सामने खड़ा हुआ और बुलंद आवाज़ से उसे बरकत दी,

56 “रब की तमजीद हो जिसने अपने वादे के ऐन मुताबिक़ अपनी क़ौम इसराईल को आरामो-सुकून फ़राहम किया है। जितने भी ख़ूबसूरत वादे उसने अपने खादिम मूसा की मारिफ़त किए हैं वह सबके सब पूरे हो गए हैं। 57 जिस तरह रब हमारा खुदा हमारे बापदादा के साथ था उसी तरह वह हमारे साथ भी रहे। न वह हमें छोड़े, न तर्क करे 58 बल्कि हमारे दिलों को अपनी तरफ़ मायल करे ताकि हम उस की तमाम राहों पर चलें और उन तमाम अहक़ाम और हिदायत के ताबे रहें जो उसने हमारे बापदादा को दी हैं।

59 रब के हुज़ूर मेरी यह फरियाद दिन-रात रब हमारे खुदा के करीब रहे ताकि वह मेरा और अपनी क़ौम का इनसाफ़ कायम रखे और हमारी रोज़ाना ज़रूरियात पूरी करे। 60 तब तमाम अक़वाम जान लेंगी कि रब ही खुदा है और कि उसके सिवा कोई और माबूद नहीं है।

61 लेकिन लाज़िम है कि आप रब हमारे खुदा के पूरे दिल से वफ़ादार रहें। हमेशा उस की हिदायत और अहक़ाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारें, बिलकुल उसी तरह जिस तरह आप आज कर रहे हैं।”

रब के घर की मखसूसियत पर जशन

62-63 फिर बादशाह और तमाम इसराईल ने रब के हुज़ूर कुरबानियाँ पेश करके रब के घर को मखसूस किया। इस सिलसिले में सुलेमान ने 22,000 गाय-बैलों और 1,20,000 भेड़-बकरियों को सलामती की कुरबानियों के तौर पर ज़बह किया। 64 उसी दिन बादशाह ने सहन का दरमियानी हिस्सा कुरबानियाँ चढ़ाने के लिए मखसूस किया। वजह यह थी कि पीतल की कुरबानगाह इतनी कुरबानियाँ पेश करने के लिए छोटी थी, क्योंकि भस्म होनेवाली कुरबानियों और गल्ला की नज़रों की तादाद बहुत ज़्यादा थी। इसके अलावा सलामती की बेशुमार कुरबानियों की चरबी को भी जलाना था।

65 ईद 14 दिन तक मनाई गई। पहले हफ़ते में सुलेमान और तमाम इसराईल ने रब के घर की मखसूसियत मनाई और दूसरे हफ़ते में झोंपड़ियों की ईद। बहुत ज़्यादा लोग शरीक हुए। वह दूर-दराज़ इलाकों से यरूशलम आए थे, शिमाल में लबो-हमात से लेकर जुनूब में उस वादी तक जो मिसर की सरहद थी। 66 दो हफ़तों के बाद सुलेमान ने इसराईलियों को खसूस किया। बादशाह को बरकत देकर वह अपने अपने घर चले गए। सब शादमान और दिल से खुश थे कि रब ने अपने खादिम दाऊद और अपनी कौम इसराईल पर इतनी मेहरबानी की है।

9

रब सुलेमान से हमकलाम होता है

1 चुनौचे सुलेमान ने रब के घर और शाही महल को तकमील तक पहुँचाया। जो कुछ भी उसने ठान लिया था वह पूरा हुआ। 2 उस वक़्त रब दुबारा उस पर ज़ाहिर हुआ, उस तरह जिस तरह वह ज़िबऊन में उस पर ज़ाहिर हुआ था। 3 उसने सुलेमान से कहा,

“जो हुआ और इल्तिजा तूने मेरे हुज़ूर की उसे मैंने सुनकर इस इमारत को जो तूने बनाई है अपने लिए मखसूसो-मुकद्दस कर लिया है। उसमें मैं अपना नाम अबद तक कायम रखूँगा। मेरी आँखें और दिल अबद तक वहाँ हाज़िर रहेंगे। 4 जहाँ तक तेरा ताल्लुक है, अपने बाप दाऊद की तरह दियानतदारी और रास्ती से मेरे हुज़ूर चलता रह। क्योंकि अगर तू मेरे तमाम अहकाम और हिदायात की पैरवी करता रहे 5 तो मैं तेरी इसराईल पर हुकूमत हमेशा तक कायम रखूँगा। फिर मेरा वह वादा कायम रहेगा जो मैंने तेरे बाप दाऊद से किया था कि इसराईल पर तेरी औलाद की हुकूमत हमेशा तक कायम रहेगी।

6 लेकिन ख़बरदार! अगर तू या तेरी औलाद मुझसे दूर होकर मेरे दिए गए अहकाम और हिदायात के ताबे न रहे बल्कि दीगर माबूदों की तरफ़ रूजू करके उनकी खिदमत और परस्तिश करे 7 तो मैं इसराईल को उस मुल्क में से मिटा दूँगा जो मैंने उनको दे दिया था। न सिर्फ़ यह बल्कि मैं इस घर को भी रद्द कर दूँगा जो मैंने अपने नाम के लिए मखसूसो-मुकद्दस कर लिया है। उस वक़्त इसराईल तमाम अक़वाम में मज़ाक़ और लान-तान का निशाना बन जाएगा। 8 इस शानदार घर की बुरी हालत देखकर यहाँ से गुज़रनेवाले तमाम लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, और वह अपनी हिकारत का इज़हार करके पूछेंगे, ‘रब ने इस मुल्क और इस घर से ऐसा सुलूक क्यों किया?’ 9 तब लोग जवाब देंगे, ‘इसलिए कि गो रब उनका खुदा उनके बापदादा को मिसर से निकालकर यहाँ लाया तो भी यह लोग उसे तर्क करके दीगर माबूदों से चिमट गए हैं। चूँकि वह उनकी परस्तिश और खिदमत करने से बाज़ न आए इसलिए रब ने उन्हें इस सारी मुसीबत में डाल दिया है’।”

हीराम की मदद का सिला

10 रब के घर और शाही महल को तामीर करने में 20 साल सर्फ़ हुए थे। 11 उस दौरान सूर का बादशाह हीराम सुलेमान को देवदार और जूनीपर की उतनी लकड़ी और उतना सोना भेजता रहा जितना सुलेमान चाहता था। जब इमारतें तकमील तक पहुँच गईं तो सुलेमान ने हीराम को मुआवज़े में गलील के 20 शहर दे दिए। 12 लेकिन जब हीराम उनका मुआयना करने के लिए सूर से गलील आया तो वह उसे पसंद न आए। 13 उसने सवाल किया, “मेरे भाई, यह कैसे शहर हैं जो आपने मुझे दिए हैं?” और उसने उस इलाके का नाम काबूल यानी ‘कुछ भी नहीं’ रखा। यह नाम आज तक रायज है। 14 बात यह थी कि हीराम ने इसराईल के बादशाह को तकरीबन 4,000 किलोग्राम सोना भेजा था।

सुलेमान की मुख्तलिफ़ मुहिमात

15 सुलेमान ने अपने तामीरी काम के लिए बेगारी लगाए। ऐसे ही लोगों की मदद से उसने न सिर्फ़ रब का घर, अपना महल, इर्दगिर्द के चबूतरे और यरूशलम की फ़सील बनवाई बल्कि तीनों शहर हसूर, मजिदो और जज़र को भी।

16 जज़र शहर पर मिसर के बादशाह फ़िरौन ने हमला करके कब्ज़ा कर लिया था। उसके कनानी बाशिंदों को क़त्ल करके उसने पूरे शहर को जला दिया था। जब सुलेमान की फ़िरौन की बेटी से शादी हुई तो मिसरी बादशाह ने जहेज़ के तौर पर उसे यह इलाका दे दिया। 17 अब सुलेमान ने जज़र का शहर दुबारा तामीर किया। इसके अलावा उसने नशेबी बैत-हौरून, 18 बालात और रेगिस्तान के शहर तदमूर में बहुत-सा तामीरी काम कराया।

19 सुलेमान ने अपने गोदामों के लिए और अपने रथों और घोड़ों को रखने के लिए भी शहर बनवाए। जो कुछ भी वह यरूशलम, लुबनान या अपनी सलतनत की किसी और जगह बनवाना चाहता था वह उसने बनवाया।

20-21 जिन आदमियों की सुलेमान ने बेगार पर भरती की वह इसराईली नहीं थे बल्कि अमोरी, हिती, फ़रिज़्जी, हिब्वी और यबूसी यानी कनान के पहले बाशिंदों की वह औलाद थे जो बाक़ी रह गए थे। मुल्क पर कब्ज़ा करते वक़्त इसराईली इन कौमों को पूरे तौर पर मिटा न सके, और आज तक इनकी औलाद को इसराईल के लिए बेगार में काम करना पड़ता है। 22 लेकिन सुलेमान ने इसराईलियों में से किसी को भी ऐसे

काम करने पर मजबूर न किया बल्कि वह उसके फौजी, सरकारी अफसर, फौज के अफसर और रथों के फौजी बन गए, और उन्हें उसके रथों और घोड़ों पर मुकर्रर किया गया। ²³ सुलेमान के तामीरी काम पर भी 550 इसराईली मुकर्रर थे जो ज़िलों पर मुकर्रर अफसरों के ताबे थे। यह लोग तामीरी काम करनेवालों की निगरानी करते थे।

²⁴ जब फिरौन की बेटी यस्शलम के पुराने हिस्से बनाम 'दाऊद का शहर' से उस महल में मुंतकिल हुई जो सुलेमान ने उसके लिए तामीर किया था तो वह इर्दगिर्द के चबूतरे बनवाने लगा। ²⁵ सुलेमान साल में तीन बार रब को भस्म होनेवाली और सलामती की कुरबानियाँ पेश करता था। वह उन्हें रब के घर की उस कुरबानगाह पर चढ़ाता था जो उसने रब के लिए बनवाई थी। साथ साथ वह बखूर भी जलाता था। यों उसने रब के घर को तकमील तक पहुँचाया।

²⁶ इसके अलावा सुलेमान बादशाह ने बहरी जहाज़ों का बेड़ा भी बनवाया। इस काम का मरकज़ ऐलात के करीब शहर अस्यून-जाबर था। यह बंदरगाह मुल्के-अदोम में बहरे-कुलजुम के साहिल पर है। ²⁷ हीराम बादशाह ने उसे तजरबाकार मल्लाह भेजे ताकि वह सुलेमान के आदमियों के साथ मिलकर जहाज़ों को चलाएँ। ²⁸ उन्होंने ओफ्रीर तक सफ़र किया और वहाँ से तकरीबन 14,000 किलोग्राम सोना सुलेमान के पास ले आए।

10

सबा की मलिका सुलेमान से मिलती है

¹ सुलेमान की शोहरत सबा की मलिका तक पहुँच गई। जब उसने उसके बारे में सुना और यह भी कि उसने रब के नाम के लिए क्या कुछ किया है तो वह सुलेमान से मिलने के लिए रवाना हुई ताकि उसे मुश्किल पहेलियाँ पेश करके उस की दानिशमंदी जाँच ले। ² वह निहायत बड़े काफ़िले के साथ यस्शलम पहुँची जिसके ऊँट बलसान, कसरत के सोने और कीमती जवाहर से लदे हुए थे।

मलिका की सुलेमान से मुलाकात हुई तो उसने उससे वह तमाम मुश्किल सवालात पूछे जो उसके ज़हन में थे। ³ सुलेमान उसके हर सवाल का जवाब दे सका। कोई भी बात इतनी पेचीदा नहीं थी कि बादशाह उसका मतलब मलिका को बता न सकता। ⁴ सबा की मलिका सुलेमान की वसी हिकमत और उसके नए महल से बहुत मुतअस्सिर हुई। ⁵ उसने बादशाह की मेज़ों पर के मुख्तलिफ़ खाने देखे और यह कि उसके अफसर किस तरतीब से उस पर बिठाए जाते थे। उसने बैरों की खिदमत, उनकी शानदार वरदियों और साक्रियों पर भी गौर किया। जब उसने इन बातों के अलावा भस्म होनेवाली वह कुरबानियाँ भी देखीं जो सुलेमान रब के घर में चढ़ाता था तो मलिका हक्का-बक्का रह गई।

⁶ वह बोल उठी, "वाक़ई, जो कुछ मैंने अपने मुल्क में आपके शाहकारों और हिकमत के बारे में सुना था वह दुस्त है। ⁷ जब तक मैंने खुद आकर यह सब कुछ अपनी आँखों से न देखा मुझे यकीन नहीं आता था। बल्कि हकीकत में मुझे आपके बारे में आधा भी नहीं बताया गया था। आपकी हिकमत और दौलत उन रिपोर्टों से कहीं ज़्यादा है जो मुझ तक पहुँची थीं। ⁸ आपके लोग कितने मुबारक हैं! आपके अफसर कितने मुबारक हैं जो मुसलसल आपके सामने खड़े रहते और आपकी दानिश भरी बातें सुनते हैं! ⁹ रब आपके ख़ुदा की तमजीद हो जिसने आपको पसंद करके इसराईल के तख़्त पर बिठाया है। रब इसराईल से अबदी मुहब्बत रखता है, इसी लिए उसने आपको बादशाह बना दिया है ताकि इनसाफ़ और रास्तबाज़ी कायम रखें।"

¹⁰ फिर मलिका ने सुलेमान को तकरीबन 4,000 किलोग्राम सोना, बहुत ज़्यादा बलसान और जवाहर दिए। बाद में कभी भी उतना बलसान इसराईल में नहीं लाया गया जितना उस वक़्त सबा की मलिका लाई।

¹¹ हीराम के जहाज़ ओफ्रीर से न सिर्फ़ सोना लाए बल्कि उन्होंने कीमती लकड़ी और जवाहर भी बड़ी मिकदार में इसराईल तक पहुँचाए। ¹² जितनी कीमती लकड़ी उन दिनों में दरामद हुई उतनी आज तक कभी यहदाह में नहीं लाई गई। इस लकड़ी से बादशाह ने रब के घर और अपने महल के लिए कटहरे बनवाए। यह मौसीकारों के सरोद और सितार बनाने के लिए भी इस्तेमाल हुई।

¹³ सुलेमान बादशाह ने अपनी तरफ़ से सबा की मलिका को बहुत-से तोहफे दिए। नीज़, जो कुछ भी मलिका चाहती थी या उसने माँगा वह उसे दिया गया। फिर वह अपने नौकर-चाकरों और अफसरों के हमराह अपने वतन वापस चली गई।

सुलेमान की दौलत और शोहरत

¹⁴ जो सोना सुलेमान को सालाना मिलता था उसका वज़न तकरीबन 23,000 किलोग्राम था। ¹⁵ इसमें वह टैक्स शामिल नहीं थे जो उसे सौदागरों, ताजिरो, अरब बादशाहों और ज़िलों के अफसरों से मिलते थे।

¹⁶⁻¹⁷ सुलेमान बादशाह ने 200 बड़ी और 300 छोटी ढालें बनवाई। उन पर सोना मँढा गया। हर बड़ी ढाल के लिए तकरीबन 7 किलोग्राम सोना इस्तेमाल हुआ और हर छोटी ढाल के लिए तकरीबन साढ़े 3 किलोग्राम। सुलेमान ने उन्हें 'लुबनान का जंगल' नामी महल में महफूज़ रखा।

¹⁸ इनके अलावा बादशाह ने हाथीदाँत से आरास्ता एक बड़ा तख़्त बनवाया जिस पर खालिस सोना चढ़ाया गया। ¹⁹⁻²⁰ तख़्त की पुश्त का ऊपर का हिस्सा गोल था, और उसके हर बाजू के साथ शेरबबर का मुजस्समा था। तख़्त कुछ ऊँचा था, और बादशाह छः पाएवाली सीढ़ी पर चढ़कर उस पर बैठता था। दाईं और बाईं तरफ़ हर पाए पर शेरबबर का मुजस्समा था। इस किस्म का तख़्त किसी और सलतनत में नहीं पाया जाता था।

21 सुलेमान के तमाम प्याले सोने के थे, बल्कि 'लुबनान का जंगल' नामी महल में तमाम बरतन खालिस सोने के थे। कोई भी चीज़ चाँदी की नहीं थी, क्योंकि सुलेमान के ज़माने में चाँदी की कोई क़दर नहीं थी। 22 बादशाह के अपने बहरी जहाज़ थे जो हीराम के जहाज़ों के साथ मिलकर मुख़्तलिफ़ जगहों पर जाते थे। हर तीन साल के बाद वह सोने-चाँदी, हाथीदाँत, बंदरों और मोरों से लदे हुए वापस आते थे।

23 सुलेमान की दौलत और हिकमत दुनिया के तमाम बादशाहों से कहीं ज़्यादा थी। 24 पूरी दुनिया उससे मिलने की कोशिश करती रही ताकि वह हिकमत सुन ले जो अल्लाह ने उसके दिल में डाल दी थी। 25 साल बसाल जो भी सुलेमान के दरबार में आता वह कोई न कोई तोहफ़ा लाता। यों उसे सोने-चाँदी के बरतन, कीमती लिबास, हथियार, बलसान, घोड़े और ख़च्चर मिलते रहे।

26 सुलेमान के 1,400 रथ और 12,000 घोड़े थे। कुछ उसने रथों के लिए मख़सूस किए गए शहरों में और कुछ यरूशलम में अपने पास रखे। 27 बादशाह की सरगर्मियों के बाइस चाँदी पत्थर जैसी आम हो गई और देवदार की कीमती लकड़ी यहदाह के मगरिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े की अजीर-तूत की सस्ती लकड़ी जैसी आम हो गई। 28 बादशाह अपने घोड़े मिसर और कुए यानी किलिकिया से दरामद करता था। उसके ताजिर इन जगहों पर जाकर उन्हें ख़रीद लाते थे। 29 बादशाह के रथ मिसर से दरामद होते थे। हर रथ की कीमत चाँदी के 600 सिक्के और हर घोड़े की कीमत चाँदी के 150 सिक्के थी। सुलेमान के ताजिर यह घोड़े बरामद करते हुए तमाम हिती और अरामी बादशाहों तक भी पहुँचाते थे।

11

सुलेमान रब से दूर हो जाता है

1 लेकिन सुलेमान बहुत-सी ग़ैरमुल्की ख़वातीन से मुहब्बत करता था। फिरौन की बेटी के अलावा उस की शादी मोआबी, अम्मोनी, अदोमी, सैदानी और हिती औरतों से हुई। 2 इन क़ौमों के बारे में रब ने इसराइलियों को हुक्म दिया था, “न तुम इनके घरों में जाओ और न यह तुम्हारे घरों में आएँ, वरना यह तुम्हारे दिल अपने देवताओं की तरफ़ मायल कर देंगे।” तो भी सुलेमान बड़े प्यार से अपनी इन बीवियों से लिपटा रहा। 3 उस की शाही खानदानों से ताल्लुक रखनेवाली 700 बीवियाँ और 300 दाश्ताएँ थीं। इन औरतों ने आखिरकार उसका दिल रब से दूर कर दिया। 4 जब वह बूढ़ा हो गया तो उन्होंने उसका दिल दीगर माबूदों की तरफ़ मायल कर दिया। यों वह बुढ़ापे में अपने बाप दाऊद की तरह पूरे दिल से रब का वफ़ादार न रहा 5 बल्कि सैदानियों की देवी अस्तारात और अम्मोनियों के देवता मिलकूम की पूजा करने लगा। 6 गरज़ उसने ऐसा काम किया जो रब को नापसंद था। वह वफ़ादारी न रही जिससे उसके बाप दाऊद ने रब की खिदमत की थी।

7 यरूशलम के मशरिक में सुलेमान ने एक पहाड़ी पर दो मंदिर बनाए, एक मोआब के धिनौने देवता क़मोस के लिए और एक अम्मोन के धिनौने देवता मलिक यानी मिलकूम के लिए। 8 ऐसे मंदिर उसने अपनी तमाम ग़ैरमुल्की बीवियों के लिए तामीर किए ताकि वह अपने देवताओं को बख़ूर और ज़बह की क़ुरबानियाँ पेश कर सकें।

9 रब को सुलेमान पर बड़ा गुस्सा आया, क्योंकि वह इसराइल के ख़ुदा से दूर हो गया था, हालाँकि रब उस पर दो बार ज़ाहिर हुआ था। 10 गो उसने उसे दीगर माबूदों की पूजा करने से साफ़ मना किया था तो भी सुलेमान ने उसका हुक्म न माना। 11 इसलिए रब ने उससे कहा, “चूँकि तू मेरे अहद और अहक़ाम के मुताबिक़ ज़िंदगी नहीं गुज़ारता, इसलिए मैं बादशाही को तुझसे छीनकर तेरे किसी अफ़सर को दूँगा। यह बात यकीनी है। 12 लेकिन तेरे बाप दाऊद की खातिर मैं यह तेरे जीते-जी नहीं करूँगा बल्कि बादशाही को तेरे बेटे ही से छीनूँगा। 13 और मैं पूरी ममलकत उसके हाथ से नहीं लूँगा बल्कि अपने खादिम दाऊद और अपने चुने हुए शहर यरूशलम की खातिर उसके लिए एक क़बीला छोड़ दूँगा।”

सुलेमान के दुश्मन हदद और रज़ून

14 फिर रब ने अदोम के शाही खानदान में से एक आदमी बनाम हदद को बरपा किया जो सुलेमान का सख़्त मुखालिफ़ बन गया। 15 वह यों सुलेमान का दुश्मन बन गया कि चंद साल पहले जब दाऊद ने अदोम को शिकस्त दी तो उसका फ़ौजी कमांडर योआब मैदाने-जंग में पड़ी तमाम इसराइली लाशों को दफ़नाने के लिए अदोम आया। जहाँ भी गया वहाँ उसने हर अदोमी मर्द को मार डाला। 16 वह छः माह तक अपने फ़ौजियों के साथ हर जगह फिरा और तमाम अदोमी मर्दों को मारता गया। 17 हदद उस वक़्त बच गया और अपने बाप के चंद एक सरकारी अफ़सरों के साथ फ़रार होकर मिसर में पनाह ले सका।

18 रास्ते में उन्हें दश्ते-फ़ारान के मुल्के-मिदियान से गुज़रना पड़ा। वहाँ वह मज़ीद कुछ आदमियों को जमा कर सके और सफ़र करते करते मिसर पहुँच गए। हदद मिसर के बादशाह फिरौन के पास गया तो उसने उसे घर, कुछ ज़मीन और ख़ुराक मुहैया की। 19 हदद फिरौन को इतना पसंद आया कि उसने उस की शादी अपनी बीवी मलिका तहफ़नीस की बहन के साथ कराई। 20 इस बहन के बेटा पैदा हुआ जिसका नाम ज़नूबत रखा गया। तहफ़नीस ने उसे शाही महल में पाला जहाँ वह फिरौन के बेटों के साथ परवान चढ़ा।

21 एक दिन हदद को ख़बर मिली कि दाऊद और उसका कमांडर योआब फ़ौत हो गए हैं। तब उसने फिरौन से इजाज़त माँगी, “मैं अपने मुल्क लौट जाना चाहता हूँ, बराहे-क़रम मुझे जाने दें।” 22 फिरौन ने एतराज़ किया, “यहाँ क्या कमी है कि तुम अपने मुल्क वापस जाना चाहते हो?” हदद ने जवाब दिया, “मैं किसी भी चीज़ से महसूस नहीं रहा, लेकिन फिर भी मुझे जाने दीजिए।”

23 अल्लाह ने एक और आदमी को भी सुलेमान के खिलाफ बरपा किया। उसका नाम रज़ून बिन इलियदा था। पहले वह जोबाह के बादशाह हददअज़र की खिदमत अंजाम देता था, लेकिन एक दिन उसने अपने मालिक से भागकर 24 कुछ आदमियों को अपने गिर्द जमा किया और डाकुओं के जत्थे का सरगना बन गया। जब दाऊद ने जोबाह को शिकस्त दे दी तो रज़ून अपने आदमियों के साथ दमिशक गया और वहाँ आबाद होकर अपनी हुकूमत कायम कर ली। 25 होते होते वह पूरे शाम का हुक्मरान बन गया। वह इसराइलियों से नफरत करता था और सुलेमान के जीते-जी इसराइल का खास दुश्मन बना रहा। हदद की तरह वह भी इसराइल को तंग करता रहा।

यसूबियाम और अखियाह नबी

26 सुलेमान का एक सरकारी अफसर भी उसके खिलाफ उठ खड़ा हुआ। उसका नाम यसूबियाम बिन नबात था, और वह इफराईम के शहर सरीदा का था। उस की माँ सस्आ बेवा थी। 27 जब यसूबियाम बागी हुआ तो उन दिनों में सुलेमान इर्दगिर्द के चबूतरे और फसील का आखिरी हिस्सा तामीर कर रहा था। 28 उसने देखा कि यसूबियाम माहिर और मेहनती जवान है, इसलिए उसने उसे इफराईम और मनस्सी के कबीलों के तमाम बेगार में काम करनेवालों पर मुकर्रर किया।

29 एक दिन यसूबियाम शहर से निकल रहा था तो उस की मुलाकात सैला के नबी अखियाह से हुई। अखियाह नई चादर ओढ़े फिर रहा था। खुले मैदान में जहाँ कोई और नज़र न आया 30 अखियाह ने अपनी चादर को पकड़कर बारह टुकड़ों में फाड़ लिया 31 और यसूबियाम से कहा,

“चादर के दस टुकड़े अपने पास रखें! क्योंकि रब इसराइल का खुदा फरमाता है, इस वक़्त मैं इसराइल की बादशाही को सुलेमान से छीननेवाला हूँ। जब ऐसा होगा तो मैं उसके दस कबीले तैरे हवाले कर दूँगा। 32 एक ही कबीला उसके पास रहेगा, और यह भी सिर्फ़ उसके बाप दाऊद और उस शहर की खातिर जिसे मैंने तमाम कबीलों में से चुन लिया है। 33 इस तरह मैं सुलेमान को सज़ा दूँगा, क्योंकि वह और उसके लोग मुझे तर्क करके सैदानियों की देवी अस्तारात की, मोआबियों के देवता कमोस की और अम्मोनियों के देवता मिलकूम की पूजा करने लगे हैं। वह मेरी राहों पर नहीं चलते बल्कि वही कुछ करते हैं जो मुझे बिलकुल नापसंद है। जिस तरह दाऊद मेरे अहकाम और हिदायात की पैरवी करता था उस तरह उसका बेटा नहीं करता।

34 लेकिन मैं इस वक़्त पूरी बादशाही सुलेमान के हाथ से नहीं छीनूँगा। अपने खादिम दाऊद की खातिर जिसे मैंने चुन लिया और जो मेरे अहकाम और हिदायात के ताबे रहा मैं सुलेमान के जीते-जी यह नहीं करूँगा। वह खुद बादशाह रहेगा, 35 लेकिन उसके बेटे से मैं बादशाही छीनकर दस कबीले तैरे हवाले कर दूँगा। 36 सिर्फ़ एक कबीला सुलेमान के बेटे के सुपर्द रहेगा ताकि मेरे खादिम दाऊद का चराग हमेशा मेरे हुज़ूर यरूशलम में जलता रहे, उस शहर में जो मैंने अपने नाम की सुकूनत के लिए चुन लिया है। 37 लेकिन तुझे, ऐ यसूबियाम, मैं इसराइल पर बादशाह बना दूँगा। जो कुछ भी तेरा जी चाहता है उस पर तू हुकूमत करेगा। 38 उस वक़्त अगर तू मेरे खादिम दाऊद की तरह मेरी हर बात मानेगा, मेरी राहों पर चलेगा और मेरे अहकाम और हिदायात के ताबे रहकर वह कुछ करेगा जो मुझे पसंद है तो फिर मैं तेरे साथ रहूँगा। फिर मैं तेरा शाही खानदान उतना ही कायमो-दायम कर दूँगा जितना मैंने दाऊद का किया है, और इसराइल तेरे ही हवाले रहेगा।

39 यों मैं सुलेमान के गुनाह के बाइस दाऊद की औलाद को सज़ा दूँगा, अगरचे यह अबदी सज़ा नहीं होगी।”

40 इसके बाद सुलेमान ने यसूबियाम को मरवाने की कोशिश की, लेकिन यसूबियाम ने फ़रार होकर मिसर के बादशाह सीसक के पास पनाह ली। वहाँ वह सुलेमान की मौत तक रहा।

सुलेमान की मौत

41 सुलेमान की जिंदगी और हिकमत के बारे में मज़ीद बातें ‘सुलेमान के आमाल’ की किताब में बयान की गई हैं। 42 सुलेमान 40 साल पूरे इसराइल पर हुकूमत करता रहा। उसका दास्त-हुकूमत यरूशलम था। 43 जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में दफ़न किया गया जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है। फिर उसका बेटा रहूबियाम तख़्तनशीन हुआ।

12

शिमाली कबीले अलग हो जाते हैं

1 रहूबियाम सिकम गया, क्योंकि वहाँ तमाम इसराइली उसे बादशाह मुकर्रर करने के लिए जमा हो गए थे। 2 यसूबियाम बिन नबात यह ख़बर सुनते ही मिसर से जहाँ उसने सुलेमान बादशाह से भागकर पनाह ली थी इसराइल वापस आया। 3 इसराइलियों ने उसे बुलाया ताकि उसके साथ सिकम जाएँ। जब पहुँचा तो इसराइल की पूरी जमात यसूबियाम के साथ मिलकर रहूबियाम से मिलने गई। उन्होंने बादशाह से कहा, 4 “जो जुआ आपके बाप ने हम पर डाल दिया था उसे उठाना मुश्किल था, और जो वक़्त और पैसे हमें बादशाह की खिदमत में सर्फ़ करने थे वह नाकाबिले-बरदाश्त थे। अब दोनों को कम कर दें। फिर हम खुशी से आपकी खिदमत करेंगे।”

5 रहूबियाम ने जवाब दिया, “मुझे तीन दिन की मोहलत दें, फिर दुबारा मेरे पास आएँ।” चुनाँचे लोग चले गए।

6 फिर रहूबियाम बादशाह ने उन बुजुर्गों से मशवरा किया जो सुलेमान के जीते-जी बादशाह की खिदमत करते रहे थे। उसने पूछा, “आपका क्या खयाल है? मैं इन लोगों को क्या जवाब दूँ?” 7 बुजुर्गों ने जवाब दिया, “हमारा मशवरा है कि इस वक़्त उनका खादिम बनकर उनकी खिदमत करें और उन्हें नरम जवाब दें। अगर आप ऐसा करें तो वह हमेशा आपके वफ़ादार खादिम बने रहेंगे।”

8 लेकिन रहुबियाम ने बुजुर्गों का मशवरा रद्द करके उस की खिदमत में हाज़िर उन जवानों से मशवरा किया जो उसके साथ परवान चढ़े थे। 9 उसने पूछा, “मैं इस क़ौम को क्या जवाब दूँ? यह तकाज़ा कर रहे हैं कि मैं वह जुआ हलका कर दूँ जो मेरे बाप ने उन पर डाल दिया।” 10 जो जवान उसके साथ परवान चढ़े थे उन्होंने कहा, “अच्छा, यह लोग तकाज़ा कर रहे हैं कि आपके बाप का जुआ हलका किया जाए? उन्हें बता देना, ‘मेरी छोटी उँगली मेरे बाप की कमर से ज़्यादा मोटी है!’ 11 बेशक जो जुआ उसने आप पर डाल दिया उसे उठाना मुश्किल था, लेकिन मेरा जुआ और भी भारी होगा। जहाँ मेरे बाप ने आपको कोड़े लगाए वहाँ मैं आपकी बिच्छुओं से तादीब करूँगा!”

12 तीन दिन के बाद जब यरुबियाम तमाम इसराइलियों के साथ रहुबियाम का फैसला सुनने के लिए वापस आया 13 तो बादशाह ने उन्हें सख्त जवाब दिया। बुजुर्गों का मशवरा रद्द करके 14 उसने उन्हें जवानों का जवाब दिया, “बेशक जो जुआ मेरे बाप ने आप पर डाल दिया उसे उठाना मुश्किल था, लेकिन मेरा जुआ और भी भारी होगा। जहाँ मेरे बाप ने आपको कोड़े लगाए वहाँ मैं आपकी बिच्छुओं से तादीब करूँगा!” 15 यों रब की मरज़ी पूरी हुई कि रहुबियाम लोगों की बात नहीं मानेगा। क्योंकि अब रब की वह पेशगोई पूरी हुई जो सैला के नबी अखियाह ने यरुबियाम बिन नबात को बताई थी।

16 जब इसराइलियों ने देखा कि बादशाह हमारी बात सुनने के लिए तैयार नहीं है तो उन्होंने उससे कहा, “न हमें दाऊद से मीरास में कुछ मिलेगा, न यस्सी के बेटे से कुछ मिलने की उम्मीद है। ऐ इसराइल, सब अपने अपने घर वापस चलो! ऐ दाऊद, अब अपना घर खुद सँभाल लो!” यह कहकर वह सब चले गए।

17 सिर्फ़ यहदाह के कबीले के शहरों में रहनेवाले इसराइली रहुबियाम के तहत रहे। 18 फिर रहुबियाम बादशाह ने बेगारियों पर मुकर्रर अफ़सर अदनीराम को शिमाली कबीलों के पास भेज दिया, लेकिन उसे देखकर तमाम लोगों ने उसे संगसार किया। तब रहुबियाम जल्दी से अपने रथ पर सवार हुआ और भागकर यरुशलम पहुँच गया। 19 यों इसराइल के शिमाली कबीले दाऊद के शाही घराने से अलग हो गए और आज तक उस की हुकूमत नहीं मानते।

20 जब ख़बर शिमाली इसराइल में फैली कि यरुबियाम मिसर से वापस आ गया है तो लोगों ने क़ौमी इजलास मुनअक़िद करके उसे बुलाया और वहाँ उसे अपना बादशाह बना लिया। सिर्फ़ यहदाह का कबीला रहुबियाम और उसके घराने का वफ़ादार रहा।

रहुबियाम को इसराइल से जंग करने की इजाज़त नहीं मिलती

21 जब रहुबियाम यरुशलम पहुँचा तो उसने यहदाह और बिनयमीन के कबीलों के चीदा चीदा फ़ौजियों को इसराइल से जंग करने के लिए बुलाया। 1,80,000 मर्द जमा हुए ताकि रहुबियाम बिन सुलेमान के लिए इसराइल पर दुबारा क़ाबू पाएँ। 22 लेकिन ऐन उस वक़्त मर्दे-ख़ुदा समायाह को अल्लाह की तरफ़ से पैग़ाम मिला, 23 “यहदाह के बादशाह रहुबियाम बिन सुलेमान, यहदाह और बिनयमीन के तमाम अफ़राद और बाक़ी लोगों को इतला दे, 24 ‘रब फ़रमाता है कि अपने इसराइली भाइयों से जंग मत करना। हर एक अपने अपने घर वापस चला जाए, क्योंकि जो कुछ हुआ है वह मेरे हुक्म पर हुआ है’।”

तब वह रब की सुनकर अपने अपने घर वापस चले गए।

यरुबियाम के सोने के बछड़े

25 यरुबियाम इफ़राईम के पहाड़ी इलाके के शहर सिकम को मज़बूत करके वहाँ आबाद हुआ। बाद में उसने फ़नुएल शहर की भी क़िलाबंदी की और वहाँ मुंतक़िल हुआ। 26 लेकिन दिल में अंदेशा रहा कि कहीं इसराइल दुबारा दाऊद के घराने के हाथ में न आ जाए। 27 उसने सोचा, “लोग बाकायदगी से यरुशलम आते-जाते हैं ताकि वहाँ रब के घर में अपनी कुरबानियाँ पेश करें। अगर यह सिलसिला तोड़ा न जाए तो आहिस्ता आहिस्ता उनके दिल दुबारा यहदाह के बादशाह रहुबियाम की तरफ़ मायल हो जाएंगे। आख़िरकार वह मुझे क़त्ल करके रहुबियाम को अपना बादशाह बना लेंगे।”

28 अपने अफ़सरों के मशवरे पर उसने सोने के दो बछड़े बनवाए। लोगों के सामने उसने एलान किया, “हर कुरबानी के लिए यरुशलम जाना मुश्किल है! ऐ इसराइल देख, यह तेरे देवता हैं जो तुझे मिसर से निकाल लाए।” 29 एक बुत उसने जुनूबी शहर बैतेल में खड़ा किया और दूसरा शिमाली शहर दान में। 30 यों यरुबियाम ने इसराइलियों को गुनाह करने पर उकसाया। लोग दान तक सफ़र किया करते थे ताकि वहाँ के बुत की पूजा करें।

31 इसके अलावा यरुबियाम ने बहुत-सी ऊँची जगहों पर मंदिर बनवाए। उन्हें सँभालने के लिए उसने ऐसे लोग मुकर्रर किए जो लावी के कबीले के नहीं बल्कि आम लोग थे। 32 उसने एक नई ईद भी रायज की जो यहदाह में मनानेवाली झोंपड़ियों की ईद की मानिंद थी। यह ईद आठवें माह * के पंद्रहवें दिन मनाई जाती थी। बैतेल में उसने खुद कुरबानगाह पर जाकर अपने बनवाए हुए बछड़ों को कुरबानियाँ पेश कीं, और वहीं उसने अपने उन मंदिरों के इमामों को मुकर्रर किया जो उसने ऊँची जगहों पर तामीर किए थे।

नबी यरुबियाम को बुरी ख़बर पहुँचाता है

33 चुनाँचे यरुबियाम के मुकर्ररकरदा दिन यानी आठवें महीने के पंद्रहवें दिन इसराइलियों ने बैतेल में ईद मनाई। तमाम मेहमानों के सामने यरुबियाम कुरबानगाह पर चढ़ गया ताकि कुरबानियाँ पेश करे।

* 12:32 अक्तूबर ता नवंबर

13

1 वह अभी कुरबानगाह के पास खड़ा अपनी कुरबानियाँ पेश करना ही चाहता था कि एक मर्दे-खुदा आन पहुँचा। रब ने उसे यहदाह से बैतेल भेज दिया था। 2 बुलंद आवाज़ से वह कुरबानगाह से मुखातिब हुआ, “ऐ कुरबानगाह! ऐ कुरबानगाह! रब फरमाता है, ‘दाऊद के घराने से बेटा पैदा होगा जिसका नाम यूसियाह होगा। तुझ पर वह उन इमामों को कुरबान कर देगा जो ऊँची जगहों के मंदिरों में खिदमत करते और यहाँ कुरबानियाँ पेश करने के लिए आते हैं। तुझ पर इनसानों की हड्डियाँ जलाई जाएँगी।” 3 फिर मर्दे-खुदा ने इलाही निशान भी पेश किया। उसने एलान किया, “एक निशान साबित करेगा कि रब मेरी मारिफत बात कर रहा है! यह कुरबानगाह फट जाएगी, और इस पर मौजूद चरबी मिली राख ज़मीन पर बिखर जाएगी।”

4 यरुबियाम बादशाह अब तक कुरबानगाह के पास खड़ा था। जब उसने बैतेल की कुरबानगाह के खिलाफ मर्दे-खुदा की बात सुनी तो वह हाथ से उस की तरफ इशारा करके गरजा, “उसे पकड़ो!” लेकिन ज्योंही बादशाह ने अपना हाथ बढ़ाया वह सूख गया, और वह उसे वापस न खींच सका। 5 उसी लम्हे कुरबानगाह फट गई और उस पर मौजूद राख ज़मीन पर बिखर गई। बिलकुल वही कुछ हुआ जिसका एलान मर्दे-खुदा ने रब की तरफ से किया था।

6 तब बादशाह इलतमास करने लगा, “रब अपने खुदा का गुस्सा ठंडा करके मेरे लिए दुआ करें ताकि मेरा हाथ बहाल हो जाए।” मर्दे-खुदा ने उस की शफ़ाअत की तो यरुबियाम का हाथ फ़ौरन बहाल हो गया।

7 तब यरुबियाम बादशाह ने मर्दे-खुदा को दावत दी, “आएँ, मेरे घर में खाना खाकर ताज़ादम हो जाएँ। मैं आपको तोहफ़ा भी दूँगा।” 8 लेकिन उसने इनकार किया, “मैं आपके पास नहीं आऊँगा, चाहे आप मुझे अपनी मिलकियत का आधा हिस्सा क्यों न दें। मैं यहाँ न रोटी खाऊँगा, न कुछ पियूँगा। 9 क्योंकि रब ने मुझे हुक्म दिया है, ‘रास्ते में न कुछ खा और न कुछ पी। और वापस जाते वक़्त वह रास्ता न ले जिस पर से तू बैतेल पहुँचा है’।”

10 यह कहकर वह फ़रक़ रास्ता इख्तियार करके अपने घर के लिए रवाना हुआ।

नबी की नाफ़रमानी

11 बैतेल में एक बूढ़ा नबी रहता था। जब उसके बेटे उस दिन घर वापस आए तो उन्होंने उसे सब कुछ कह सुनाया जो मर्दे-खुदा ने बैतेल में किया और यरुबियाम बादशाह को बताया था। 12 बाप ने पूछा, “वह किस तरफ़ गया?” बेटों ने उसे वह रास्ता बताया जो यहदाह के मर्दे-खुदा ने लिया था। 13 बाप ने हुक्म दिया, “मेरे गधे पर जल्दी से ज़ीन कसो!” बेटों ने ऐसा किया तो वह उस पर बैठकर 14 मर्दे-खुदा को ढूँढ़ने गया।

चलते चलते मर्दे-खुदा बलूत के दरख़्त के साय में बैठा नज़र आया। बुजुर्ग ने पूछा, “क्या आप वही मर्दे-खुदा हैं जो यहदाह से बैतेल आए थे?” उसने जवाब दिया, “जी, मैं वही हूँ।” 15 बुजुर्ग नबी ने उसे दावत दी, “आएँ, मेरे साथ। मैं घर में आपको कुछ खाना खिलाता हूँ।”

16 लेकिन मर्दे-खुदा ने इनकार किया, “नहीं, न मैं आपके साथ वापस जा सकता हूँ, न मुझे यहाँ खाने-पीने की इजाज़त है। 17 क्योंकि रब ने मुझे हुक्म दिया, ‘रास्ते में न कुछ खा और न कुछ पी। और वापस जाते वक़्त वह रास्ता न ले जिस पर से तू बैतेल पहुँचा है’।”

18 बुजुर्ग नबी ने एतराज़ किया, “मैं भी आप जैसा नबी हूँ! एक फ़रिश्ते ने मुझे रब का नया पैग़ाम पहुँचाकर कहा, ‘उसे अपने साथ घर ले जाकर रोटी खिला और पानी पिला’।” बुजुर्ग झूट बोल रहा था, 19 लेकिन मर्दे-खुदा उसके साथ वापस गया और उसके घर में कुछ खाया और पिया।

20 वह अभी वहाँ बैठे खाना खा रहे थे कि बुजुर्ग पर रब का कलाम नाज़िल हुआ। 21 उसने बुलंद आवाज़ से यहदाह के मर्दे-खुदा से कहा, “रब फ़रमाता है, ‘तूने रब के कलाम की खिलाफ़वरज़ी की है! जो हुक्म रब तेरे खुदा ने तुझे दिया था वह तूने नज़रंदाज़ किया है। 22 गो उसने फ़रमाया था कि यहाँ न कुछ खा और न कुछ पी तो भी तूने वापस आकर यहाँ रोटी खाई और पानी पिया है। इसलिए मरते वक़्त तुझे तेरे बापदादा की कब्र में दफ़नाया नहीं जाएगा’।”

23 खाने के बाद बुजुर्ग के गधे पर ज़ीन कसा गया और मर्दे-खुदा को उस पर बिठाया गया। 24 वह दुबारा रवाना हुआ तो रास्ते में एक शेरबबर ने उस पर हमला करके उसे मार डाला। लेकिन उसने लाश को न छेड़ा बल्कि वह वहीं रास्ते में पड़ी रही जबकि गधा और शेर दोनों ही उसके पास खड़े रहे।

25 कुछ लोग वहाँ से गुज़रे। जब उन्होंने लाश को रास्ते में पड़े और शेरबबर को उसके पास खड़े देखा तो उन्होंने बैतेल जहाँ बुजुर्ग नबी रहता था आकर लोगों को इतला दी। 26 जब बुजुर्ग को खबर मिली तो उसने कहा, “वही मर्दे-खुदा है जिसने रब के फ़रमान की खिलाफ़वरज़ी की। अब वह कुछ हुआ है जो रब ने उसे फ़रमाया था यानी उसने उसे शेरबबर के हवाले कर दिया ताकि वह उसे फाड़कर मार डाले।” 27 बुजुर्ग ने अपने बेटों को गधे पर ज़ीन कसने का हुक्म दिया, 28 और वह उस पर बैठकर रवाना हुआ। जब वहाँ पहुँचा तो देखा कि लाश अब तक रास्ते में पड़ी है और गधा और शेर दोनों ही उसके पास खड़े हैं। शेरबबर ने न लाश को छेड़ा और न गधे को फाड़ा था।

29 बुजुर्ग नबी ने लाश को उठाकर अपने गधे पर रखा और उसे बैतेल लाया ताकि उसका मातम करके उसे वहाँ दफ़नाए। 30 उसने लाश को अपनी खानदानी कब्र में दफ़न किया, और लोगों ने “हाय, मेरे भाई” कहकर उसका मातम किया। 31 जनाज़े के बाद बुजुर्ग नबी ने अपने बेटों से कहा, “जब मैं कूच कर जाऊँगा तो मुझे मर्दे-खुदा की कब्र में दफ़नाना। मेरी हड्डियों को उस की हड्डियों के पास ही रखें। 32 क्योंकि जो बातें उसने रब के हुक्म पर बैतेल की कुरबानगाह और सामरिया के शहरों की ऊँची जगहों के मंदिरों के बारे में की हैं वह यक़ीनन पूरी हो जाएँगी।”

यसूबियाम फिर भी नाफरमान रहता है

33 इन वाकियात के बावजूद यसूबियाम अपनी शरीर हरकतों से बाज़ न आया। आम लोगों को इमाम बनाने का सिलसिला जारी रहा। जो कोई भी इमाम बनना चाहता उसे वह ऊँची जगहों के मंदिरों में खिदमत करने के लिए मखसूस करता था। 34 यसूबियाम के घराने के इस संगीन गुनाह की वजह से वह आखिरकार तबाह हुआ और स्पू-ज़मीन पर से मिट गया।

14

यसूबियाम को इलाही सज़ा मिलती है

1 एक दिन यसूबियाम का बेटा अबियाह बहुत बीमार हुआ। 2 तब यसूबियाम ने अपनी बीवी से कहा, “जाकर अपना भेस बदलें ताकि कोई न पहचाने कि आप मेरी बीवी हैं। फिर सैला जाएँ। वहाँ अखियाह नबी रहता है जिसने मुझे इतला दी थी कि मैं इस क्रौम का बादशाह बन जाऊँगा। 3 उसके पास दस रोटियाँ, कुछ बिस्कुट और शहद का मरतबान ले जाएँ। वह आदमी आपको ज़रूर बता देगा कि लड़के के साथ क्या हो जाएगा।”

4 चुनौचे यसूबियाम की बीवी अपना भेस बदलकर रवाना हुई और चलते चलते सैला में अखियाह के घर पहुँच गई। अखियाह उम्रसीदा होने के बाइस देख नहीं सकता था। 5 लेकिन रब ने उसे आगाह कर दिया, “यसूबियाम की बीवी तुझसे मिलने आ रही है ताकि अपने बीमार बेटे के बारे में मालूमात हासिल करे। लेकिन वह अपना भेस बदलकर आएगी ताकि उसे पहचाना न जाए।” फिर रब ने नबी को बताया कि उसे क्या जवाब देना है।

6 जब अखियाह ने औरत के कदमों की आहट सुनी तो बोला, “यसूबियाम की बीवी, अंदर आँ! स्पू भरने की क्या ज़रूरत? मुझे आपको बुरी ख़बर पहुँचानी है। 7 जाएँ, यसूबियाम को रब इसराईल के ख़ुदा की तरफ़ से पैग़ाम दें, ‘मैंने तुझे लोगों में से चुनकर खड़ा किया और अपनी क्रौम इसराईल पर बादशाह बना दिया। 8 मैंने बादशाही को दाऊद के घराने से छीनकर तुझे दे दिया। लेकिन अफ़सोस, तू मेरे खादिम दाऊद की तरह ज़िंदगी नहीं गुज़ारता जो मेरे अहक़ाम के ताबे रहकर पूरे दिल से मेरी पैरवी करता रहा और हमेशा वह कुछ करता था जो मुझे पसंद था। 9 जो तुझसे पहले थे उनकी निसबत तूने कहीं ज़्यादा बढ़ी की, क्योंकि तूने बुत ढालकर अपने लिए दीगर माबूद बनाए हैं और यों मुझे तैश दिलाया। चूँकि तूने अपना मुँह मुझसे फेर लिया 10 इसलिए मैं तेरे ख़ानदान को मुसीबत में डाल दूँगा। इसराईल में मैं यसूबियाम के तमाम मर्दों को हलाक कर दूँगा, खाह वह बच्चे हों या बालिग। जिस तरह गोबर को झाड़ू देकर दूर किया जाता है उसी तरह यसूबियाम के घराने का नामो-निशान मिट जाएगा। 11 तुममें से जो शहर में मरेगे उन्हें कुत्ते खा जाएंगे, और जो खुले मैदान में मरेगे उन्हें परिदे चट कर जाएंगे। क्योंकि यह रब का फ़रमान है’।”

12 फिर अखियाह ने यसूबियाम की बीवी से कहा, “आप अपने घर वापस चली जाएँ। ज्योंही आप शहर में दाखिल होंगी लड़का फ़ौत हो जाएगा। 13 पूरा इसराईल उसका मातम करके उसे दफ़न करेगा। वह आपके ख़ानदान का वाहिद फ़रद होगा जिसे सहीह तौर से दफ़नाया जाएगा। क्योंकि रब इसराईल के ख़ुदा ने सिर्फ़ उसी में कुछ पाया जो उसे पसंद था। 14 रब इसराईल पर एक बादशाह मुक़र्रर करेगा जो यसूबियाम के ख़ानदान को हलाक करेगा। आज ही से यह सिलसिला शुरू हो जाएगा। 15 रब इसराईल को भी सज़ा देगा, क्योंकि वह यसीरत देवी के खंबे बनाकर उनकी पूजा करते हैं। चूँकि वह रब को तैश दिलाते रहे हैं, इसलिए वह उन्हें मारेगा, और वह पानी में सरकंडे की तरह हिल जाएंगे। रब उन्हें इस अच्छे मुल्क से उखाड़कर दरियाए-फ़ुरात के पार मुंतशिर कर देगा। 16 यों वह इसराईल को उन गुनाहों के बाइस तर्क करेगा जो यसूबियाम ने किए और इसराईल को करने पर उकसाया है।”

17 यसूबियाम की बीवी तिरज़ा में अपने घर वापस चली गई। और घर के दरवाज़े में दाखिल होते ही उसका बेटा मर गया। 18 तमाम इसराईल ने उसे दफ़नाकर उसका मातम किया। सब कुछ वैसे हुआ जैसे रब ने अपने खादिम अखियाह नबी की मारिफ़त फ़रमाया था।

यसूबियाम की मौत

19 बाक़ी जो कुछ यसूबियाम की ज़िंदगी के बारे में लिखा है वह ‘शाहाने-इसराईल की तारीख़’ की किताब में दर्ज है। उस किताब में पढ़ा जा सकता है कि वह किस तरह हुकूमत करता था और उसने कौन कौन-सी जंगें कीं। 20 यसूबियाम 22 साल बादशाह रहा। जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसका बेटा नदब तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह रहूबियाम

21 यहूदाह में रहूबियाम बिन सुलेमान हुकूमत करता था। उस की माँ नामा अम्मोनी थी। 41 साल की उम्र में वह तख़्तनशीन हुआ और 17 साल बादशाह रहा। उसका दास्त-हुकूमत यरूशलम था, वह शहर जिसे रब ने तमाम इसराईली क़बीलों में से चुन लिया ताकि उसमें अपना नाम कायम करे।

22 लेकिन यहूदाह के बाशिंदे भी ऐसी हरकतें करते थे जो रब को नापसंद थीं। अपने गुनाहों से वह उसे तैश दिलाते रहे, क्योंकि उनके यह गुनाह उनके बापदादा के गुनाहों से कहीं ज़्यादा संगीन थे। 23 उन्होंने भी ऊँची जगहों पर मंदिर बनाए। हर ऊँची पहाड़ी पर और हर घने दरख़्त के साथ में उन्होंने मखसूस पत्थर या यसीरत देवी के खंबे खड़े किए, 24 यहाँ तक कि मंदिरों में जिस्मफ़रोश मर्द और औरतें थे। गरज़, उन्होंने उन क्रौमों के तमाम धिनौने रस्मो-रिवाज अपना लिए जिनको रब ने इसराईलियों के आगे आगे निकाल दिया था।

25 रहुबियाम बादशाह की हुकूमत के पाँचवें साल में मिसर के बादशाह सीसक ने यरूशलम पर हमला करके 26 रब के घर और शाही महल के तमाम खजाने लूट लिए। सोने की वह ढालें भी छीन ली गईं जो सुलेमान ने बनवाई थीं। 27 इनकी जगह रहुबियाम ने पीतल की ढालें बनवाईं और उन्हें उन मुहाफिज़ों के अफसरों के सुपुर्द किया जो शाही महल के दरवाज़े की पहरादारी करते थे। 28 जब भी बादशाह रब के घर में जाता तब मुहाफिज़ यह ढालें उठाकर साथ ले जाते। इसके बाद वह उन्हें पहरेदारों के कमरे में वापस ले जाते थे।

29 बाक़ी जो कुछ रहुबियाम बादशाह की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-यहूदाह की तारीख़' की किताब में दर्ज है। 30 दोनों बादशाहों रहुबियाम और यरुबियाम के जीते-जी उनके दरमियान जंग जारी रही। 31 जब रहुबियाम मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है ख़ानदानी कब्र में दफ़नाया गया। उस की माँ नामा अम्मोनी थी। फिर रहुबियाम का बेटा अबियाह तख़्तनशीन हुआ।

15

यहूदाह का बादशाह अबियाह

1 अबियाह इसराइल के बादशाह यरुबियाम बिन नबात की हुकूमत के 18वें साल में यहूदाह का बादशाह बना। 2 वह तीन साल बादशाह रहा, और उसका दास्त-हुकूमत यरूशलम था। उस की माँ माका बित अबीसलूम थी। 3 अबियाह से वही गुनाह सरज़द हुए जो उसके बाप ने किए थे, और वह पूरे दिल से रब अपने ख़ुदा का वफ़ादार न रहा। गो वह इसमें अपने परदादा दाऊद से फ़रक़ था 4 तो भी रब उसके ख़ुदा ने अबियाह का यरूशलम में चराग़ जलने दिया। दाऊद की खातिर उसने उसे जा-नशीन अता किया और यरूशलम को कायम रखा, 5 क्योंकि दाऊद ने वह कुछ किया था जो रब को पसंद था। जीते-जी वह रब के अहक़ाम के ताबे रहा, सिवाए उस जुर्म के जब उसने ऊरियाह हिती के सिलसिले में ग़लत क़दम उठाए थे।

6 रहुबियाम और यरुबियाम के दरमियान की जंग अबियाह की हुकूमत के दौरान भी जारी रही। 7 बाक़ी जो कुछ अबियाह की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-यहूदाह की तारीख़' की किताब में दर्ज है। 8 जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में दफ़न किया गया जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है। फिर उसका बेटा आसा तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह आसा

9 आसा इसराइल के बादशाह यरुबियाम के 20वें साल में यहूदाह का बादशाह बन गया। 10 उस की हुकूमत का दौरानिया 41 साल था, और उसका दास्त-हुकूमत यरूशलम था। माँ का नाम माका था, और वह अबीसलूम की बेटी थी। 11 अपने परदादा दाऊद की तरह आसा भी वह कुछ करता रहा जो रब को पसंद था। 12 उसने उन जिस्मफ़रोश मर्दों और औरतों को निकाल दिया जो मंदिरों में नाम-निहाद खिदमत करते थे और उन तमाम बुतों को तबाह कर दिया जो उसके बापदादा ने बनाए थे। 13 और गो उस की माँ बादशाह की माँ होने के बाइस बहुत असरो-रसूख रखती थी, ताहम आसा ने यह ओहदा ख़त्म कर दिया जब माँ ने यसीरत देवी का धिनौना खंबा बनवा लिया। आसा ने यह बुत कटवाकर वादीए-किदरोन में जला दिया। 14 अफ़सोस कि उसने ऊँची जगहों के मंदिरों को दूर न किया। तो भी आसा जीते-जी पूरे दिल से रब का वफ़ादार रहा। 15 सोना-चाँदी और बाक़ी जितनी चीज़ें उसके बाप और उसने रब के लिए मख़सूस की थीं उन सबको वह रब के घर में लाया।

16 यहूदाह के बादशाह आसा और इसराइल के बादशाह बाशा के दरमियान ज़िंदगी-भर जंग जारी रही। 17 एक दिन बाशा बादशाह ने यहूदाह पर हमला करके रामा शहर की क़िलाबंदी की। मक़सद यह था कि न कोई यहूदाह के मुल्क में दाख़िल हो सके, न कोई वहाँ से निकल सके। 18 जवाब में आसा ने शाम के बादशाह बिन-हदद के पास वफ़द भेजा। बिन-हदद का बाप ताबरिमोन बिन हज़यून था, और उसका दास्त-हुकूमत दमिश्क़ था। आसा ने रब के घर और शाही महल के ख़जानों का तमाम बचा हुआ सोना और चाँदी वफ़द के सुपुर्द करके दमिश्क़ के बादशाह को पैग़ाम भेजा, 19 "मेरा आपके साथ अहद है जिस तरह मेरे बाप का आपके बाप के साथ अहद था। गुज़ारिश है कि आप सोने-चाँदी का यह तोहफ़ा क़बूल करके इसराइल के बादशाह बाशा के साथ अपना अहद मनसूख़ कर दें ताकि वह मेरे मुल्क से निकल जाए।"

20 बिन-हदद मुतफ़िक़ हुआ। उसने अपने फ़ौजी अफ़सरों को इसराइल के शहरों पर हमला करने के लिए भेज दिया तो उन्होंने ऐय्यून, दान, अबील-बैत-माका, तमाम किन्नरत और नफ़ताली पर क़ब्ज़ा कर लिया। 21 जब बाशा को इसकी ख़बर मिली तो वह रामा की क़िलाबंदी करने से बाज़ आया और तिरज़ा वापस चला गया।

22 फिर आसा बादशाह ने यहूदाह के तमाम मर्दों की भरती करके उन्हें रामा भेज दिया ताकि वह उन तमाम पत्थरों और शहतीरों को उठाकर ले जाएँ जिनसे बाशा बादशाह रामा की क़िलाबंदी करना चाहता था। तमाम मर्दों को वहाँ जाना पड़ा, एक को भी छुट्टी न मिली। इस सामान से आसा ने बिनयमीन के शहर जिबा और मिसफ़ाह की क़िलाबंदी की।

23 बाक़ी जो कुछ आसा की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-यहूदाह की तारीख़' की किताब में दर्ज है। उसमें उस की कामयाबियों और उसके तामीर किए गए शहरों का ज़िक़्र है। बुढ़ापे में उसके पाँवों को बीमारी लग गई। 24 जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है ख़ानदानी कब्र में दफ़नाया गया। फिर उसका बेटा यहूसफ़त उस की जगह तख़्तनशीन हुआ।

इसराइल का बादशाह नदब

25 नदब बिन यरुबियाम यहदाह के बादशाह आसा की हुकूमत के दूसरे साल में इसराईल का बादशाह बना। उस की हुकूमत का दौरानिया दो साल था। 26 उसका तर्जे-जिंदगी रब को पसंद नहीं था, क्योंकि वह अपने बाप के नमूने पर चलता रहा। जो बदी यरुबियाम ने इसराईल को करने पर उकसाया था उससे नदब भी दूर न हुआ।

27-28 एक दिन जब नदब इसराईली फौज के साथ फिलिस्ती शहर जिब्बतून का मुहासरा किए हुए था तो इशकार के कबीले के बाशा बिन अखियाह ने उसके खिलाफ साजिश करके उसे मार डाला और खुद इसराईल का बादशाह बन गया। यह यहदाह के बादशाह आसा की हुकूमत के तीसरे साल में हुआ।

29 तख्त पर बैठते ही बाशा ने यरुबियाम के पूरे खानदान को मरवा दिया। उसने एक को भी ज़िंदा न छोड़ा। यों वह बात पूरी हुई जो रब ने सैला के रहनेवाले अपने खादिम अखियाह की मारिफत फरमाई थी। 30 क्योंकि जो गुनाह यरुबियाम ने किए और इसराईल को करने पर उकसाया था उनसे उसने रब इसराईल के खुदा को तैश दिलाया था।

31 बाक़ी जो कुछ नदब की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख' की किताब में दर्ज है।

इसराईल का बादशाह बाशा

32-33 बाशा बिन अखियाह यहदाह के बादशाह आसा की हुकूमत के तीसरे साल में इसराईल का बादशाह बना। उस की हुकूमत का दौरानिया 24 साल था, और उसका दास्त-हुकूमत तिरज़ा रहा। उसके और यहदाह के बादशाह आसा के दरमियान जिंदगी-भर जंग जारी रही। 34 लेकिन वह भी ऐसा काम करता था जो रब को नापसंद था, क्योंकि उसने यरुबियाम के नमूने पर चलकर वह गुनाह जारी रखे जो करने पर यरुबियाम ने इसराईल को उकसाया था।

16

1 एक दिन रब ने याह बिन हनानी को बाशा के पास भेजकर फरमाया, 2 “पहले तू कुछ नहीं था, लेकिन मैंने तुझे खाक में से उठाकर अपनी क्रौम इसराईल का हुक्मरान बना दिया। तो भी तूने यरुबियाम के नमूने पर चलकर मेरी क्रौम इसराईल को गुनाह करने पर उकसाया और मुझे तैश दिलाया है। 3 इसलिए मैं तेरे घराने के साथ वही कुछ करूँगा जो यरुबियाम बिन नबात के घराने के साथ किया था। बाशा की पूरी नसल हलाक हो जाएगी। 4 खानदान के जो अफ़राद शहर में मरेंगे उन्हें कुत्ते खा जाएंगे, और जो खुले मैदान में मरेंगे उन्हें परिदे चट कर जाएंगे।”

5 बाक़ी जो कुछ बाशा की हुकूमत के दौरान हुआ, जो कुछ उसने किया और जो कामयाबियाँ उसे हासिल हुई वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख' की किताब में दर्ज हैं। 6 जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे तिरज़ा में दफ़न किया गया। फिर उसका बेटा ऐला तख़्तनशीन हुआ। 7 रब की सज़ा का जो पैगाम हनानी के बेटे याह नबी ने बाशा और उसके खानदान को सुनाया उस की दो वजूहात थीं। पहले, बाशा ने यरुबियाम के खानदान की तरह वह कुछ किया जो रब को नापसंद था और उसे तैश दिलाया। दूसरे, उसने यरुबियाम के पूरे खानदान को हलाक कर दिया था।

इसराईल का बादशाह ऐला

8 ऐला बिन बाशा यहदाह के बादशाह आसा की हुकूमत के 26वें साल में इसराईल का बादशाह बना। उस की हुकूमत के दो साल के दौरान उसका दास्त-हुकूमत तिरज़ा रहा। 9 ऐला का एक अफ़सर बनाम ज़िमरी था। ज़िमरी रथों के आधे हिस्से पर मुक़र्रर था। अब वह बादशाह के खिलाफ़ साजिशें करने लगा। एक दिन ऐला तिरज़ा में महल के इंचार्ज अरज़ा के घर में बैठा मै पी रहा था। जब नशे में धुत हुआ 10 तो ज़िमरी ने अंदर जाकर उसे मार डाला। फिर वह खुद तख़्त पर बैठ गया। यह यहदाह के बादशाह आसा की हुकूमत के 27वें साल में हुआ।

11 तख़्त पर बैठते ही ज़िमरी ने बाशा के पूरे खानदान को हलाक कर दिया। उसने किसी भी मर्द को ज़िंदा न छोड़ा, खाह वह दूर का रिश्तेदार था, खाह दोस्त। 12 यों वही कुछ हुआ जो रब ने याह नबी की मारिफत बाशा को फरमाया था। 13 क्योंकि बाशा और उसके बेटे ऐला से संगीन गुनाह सरज़द हुए थे, और साथ साथ उन्होंने इसराईल को भी यह करने पर उकसाया था। अपने बातिल देवताओं से उन्होंने रब इसराईल के खुदा को तैश दिलाया था।

14 बाक़ी जो कुछ ऐला की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख' की किताब में दर्ज है।

इसराईल का बादशाह ज़िमरी

15 ज़िमरी यहदाह के बादशाह आसा की हुकूमत के 27वें साल में इसराईल का बादशाह बना। लेकिन तिरज़ा में उस की हुकूमत सिर्फ़ सात दिन तक कायम रही। उस वक़्त इसराईली फौज फिलिस्ती शहर जिब्बतून का मुहासरा कर रही थी। 16 जब फौज में ख़बर फैल गई कि ज़िमरी ने बादशाह के खिलाफ़ साजिश करके उसे क़त्ल किया है तो तमाम इसराईलियों ने लशकरगाह में आकर उसी दिन अपने कमाँडर उमरी को बादशाह बना दिया। 17 तब उमरी तमाम फौजियों के साथ जिब्बतून को छोड़कर तिरज़ा का मुहासरा करने लगा। 18 जब ज़िमरी को पता चला कि शहर दूसरों के कब्ज़े में आ गया है तो उसने महल के बर्ज़ में जाकर उसे आग लगाई। यों वह जलकर मर गया।

19 इस तरह उसे भी मुनासिब सज़ा मिल गई, क्योंकि उसने भी वह कुछ किया था जो रब को नापसंद था। यरुबियाम के नमूने पर चलकर उसने वह तमाम गुनाह किए जो यरुबियाम ने किए और इसराईल को करने पर उकसाया था। 20 जो कुछ ज़िमरी की हुकूमत के दौरान हुआ और जो साजिशें उसने की वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख' की किताब में दर्ज हैं।

इसराईल का बादशाह उमरी

21 ज़िमरी की मौत के बाद इसराईली दो फिरकों में बंट गए। एक फिरका तिबनी बिन जीनत को बादशाह बनाना चाहता था, दूसरा उमरी को। 22 लेकिन उमरी का फिरका तिबनी के फिरके की निसबत ज्यादा ताकतवर निकला। चुनौचे तिबनी मर गया और उमरी पूरी कौम पर बादशाह बन गया।

23 उमरी यहदाह के बादशाह आसा की हुकूमत के 31वें साल में इसराईल का बादशाह बना। उस की हुकूमत का दौरानिया 12 साल था। पहले छः साल दास्ल-हुकूमत तिरज़ा रहा। 24 इसके बाद उसने एक आदमी बनाम समर को चाँदी के 6,000 सिक्के देकर उससे सामरिया पहाड़ी खरीद ली और वहाँ अपना नया दास्ल-हुकूमत तामीर किया। पहले मालिक समर की याद में उसने शहर का नाम सामरिया रखा।

25 लेकिन उमरी ने भी वही कुछ किया जो रब को नापसंद था, बल्कि उसने माज़ी के बादशाहों की निसबत ज्यादा बदी की। 26 उसने यरुबियाम बिन नबात के नमूने पर चलकर वह तमाम गुनाह किए जो यरुबियाम ने किए और इसराईल को करने पर उकसाया था। नतीजे में इसराईली रब अपने खुदा को अपने बातिल देवताओं से तैश दिलाते रहे। 27 बाक़ी जो कुछ उमरी की हुकूमत के दौरान हुआ, जो कुछ उसने किया और जो कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख' की किताब में बयान की गई हैं। 28 जब उमरी मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे सामरिया में दफनाया गया। फिर उसका बेटा अखियब तख़्तनशीन हुआ।

इसराईल का बादशाह अखियब

29 अखियब बिन उमरी यहदाह के बादशाह आसा के 38वें साल में इसराईल का बादशाह बना। उस की हुकूमत का दौरानिया 22 साल था, और उसका दास्ल-हुकूमत सामरिया रहा। 30 अखियब ने भी ऐसे काम किए जो रब को नापसंद थे, बल्कि माज़ी के बादशाहों की निसबत उसके गुनाह ज्यादा संगीन थे। 31 यरुबियाम के नमूने पर चलना उसके लिए काफ़ी नहीं था बल्कि उसने इससे बढ़कर सैदा के बादशाह इतबाल की बेटी ईज़बिल से शादी भी की। नतीजे में वह उसके देवता बाल के सामने झुककर उस की पूजा करने लगा। 32 सामरिया में उसने बाल का मंदिर तामीर किया और देवता के लिए कुरबानगाह बनाकर उसमें रख दिया। 33 अखियब ने यसीरत देवी का बुत भी बनवा दिया। यों उसने अपने धिनौने कामों से माज़ी के तमाम इसराईली बादशाहों की निसबत कहीं ज्यादा रब इसराईल के खुदा को तैश दिलाया।

34 अखियब की हुकूमत के दौरान बैतेल के रहनेवाले हियेल ने यरीह शहर को नए सिरे से तामीर किया। जब उस की बुनियाद रखी गई तो उसका सबसे बड़ा बेटा अबीराम मर गया, और जब उसने शहर के दरवाज़े लगा दिए तो उसके सबसे छोटे बेटे सज़ूब को अपनी जान देनी पड़ी। यों रब की वह बात पूरी हुई जो उसने यशुअ बिन नून की मारिफ़त फ़रमाई थी।

17

कौवे इलियास नबी को खाना खिलाते हैं

1 एक दिन इलियास नबी ने जो जिलियाद के शहर तिश्बी का था अखियब बादशाह से कहा, “रब इसराईल के खुदा की क़सम जिसकी ख़िदमत मैं करता हूँ, आनेवाले सालों में न ओस, न बारिश पड़ेगी जब तक मैं न कहूँ।”

2 फिर रब ने इलियास से कहा, 3 “यहाँ से चला जा! मशरिक की तरफ़ सफ़र करके वादीए-करीत में छुप जा जिसकी नदी दरियाए-यरदन में बहती है। 4 पानी तू नदी से पी सकता है, और मैंने कौवों को तुझे वहाँ खाना खिलाने का हुक्म दिया है।” 5 इलियास रब की सुनकर रवाना हुआ और वादीए-करीत में रहने लगा जिसकी नदी दरियाए-यरदन में बहती है। 6 सुबहो-शाम कौवे उसे रोटी और गोश्त पहुँचाते रहे, और पानी वह नदी से पीता था।

इलियास सारपत की बेवा के पास

7 इस पूरे अरसे में बारिश न हुई, इसलिए नदी आहिस्ता आहिस्ता सूख गई। जब उसका पानी बिलकुल ख़त्म हो गया 8 तो रब दुबारा इलियास से हमक़लाम हुआ, 9 “यहाँ से रवाना होकर सैदा के शहर सारपत में जा बस। मैंने वहाँ की एक बेवा को तुझे खाना खिलाने का हुक्म दिया है।” 10 चुनौचे इलियास सारपत के लिए रवाना हुआ।

सफ़र करते करते वह शहर के दरवाज़े के पास पहुँच गया। वहाँ एक बेवा जलाने के लिए लकड़ियाँ चुनकर जमा कर रही थी। उसे बुलाकर इलियास ने कहा, “ज़रा किसी बरतन में पानी भरकर मुझे थोड़ा-सा पिलाएँ।”

11 वह अभी पानी लाने जा रही थी कि इलियास ने उसके पीछे आवाज़ देकर कहा, “मेरे लिए रोटी का टुकड़ा भी लाना!” 12 यह सुनकर बेवा स्क गई और बोली, “रब आपके खुदा की क़सम, मेरे पास कुछ नहीं है। बस, एक बरतन में मुट्ठी-भर मैदा और दूसरे में थोड़ा-सा तेल रह गया है। अब मैं जलाने के लिए चंद एक लकड़ियाँ चुन रही हूँ ताकि अपने और अपने बेटे के लिए आखिरी खाना पकाऊँ। इसके बाद हमारी मौत यक़ीनी है।”

13 इलियास ने उसे तसल्ली दी, “डरें मत! बेशक वह कुछ करें जो आपने कहा है। लेकिन पहले मेरे लिए छोटी-सी रोटी बनाकर मेरे पास ले आएँ। फिर जो बाक़ी रह गया हो उससे अपने और अपने बेटे के लिए रोटी बनाएँ। 14 क्योंकि रब इसराईल का खुदा फ़रमाता है, ‘जब तक रब बारिश बरसने न दे तब तक मैदे और तेल के बरतन ख़ाली नहीं होंगे।’”

15-16 औरत ने जाकर वैसा ही किया जैसा इलियास ने उसे कहा था। वाकई मैदा और तेल कभी ख़त्म न हुआ। रोज़ बरोज़ इलियास, बेवा और उसके बेटे के लिए खाना दस्तयाब रहा। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा रब ने इलियास की मारिफ़त फ़रमाया था।

17 एक दिन बेवा का बेटा बीमार हो गया। उस की तबियत बहुत खराब हुई, और होते होते उस की जान निकल गई। 18 तब बेवा इलियास से शिकायत करने लगी, “मर्दे-खुदा, मेरा आपके साथ क्या वास्ता? आप तो सिर्फ इस मकसद से यहाँ आए हैं कि रब को मेरे गुनाह की याद दिलाकर मेरे बेटे को मार डालें!”

19 इलियास ने जवाब में कहा, “अपने बेटे को मुझे दे दें।” वह लड़के को औरत की गोद में से उठाकर छत पर अपने कमरे में ले गया और वहाँ उसे चारपाई पर रखकर 20 दुआ करने लगा, “ऐ रब मेरे खुदा, तूने इस बेवा को जिसका मेहमान मैं हूँ ऐसी मुसीबत में क्यों डाल दिया है? तूने उसके बेटे को मरने क्यों दिया?” 21 वह तीन बार लाश पर दराज़ हुआ और साथ साथ रब से इलतमास करता रहा, “ऐ रब मेरे खुदा, बराहे-करम बच्चे की जान को उसमें वापस आने दे!”

22 रब ने इलियास की सुनी, और लड़के की जान उसमें वापस आई। 23 इलियास उसे उठाकर नीचे ले आया और उसे उस की माँ को वापस देकर बोला, “देखें, आपका बेटा जिंदा है!” 24 औरत ने जवाब दिया, “अब मैंने जान लिया है कि आप अल्लाह के पैगंबर हैं और कि जो कुछ आप रब की तरफ से बोलते हैं वह सच है।”

18

इलियास इसराईल वापस जाता है

1 बहुत दिन गुज़र गए। फिर काल के तीसरे साल में रब इलियास से हमकलाम हुआ, “अब जाकर अपने आपको अखियब के सामने पेश कर। मैं बारिश का सिलसिला दुबारा शुरू कर दूँगा।”

2 चुनौचे इलियास अखियब से मिलने के लिए इसराईल चला गया। उस वक़्त सामरिया काल की सख़्त गिरिफ़्त में था, 3 इसलिए अखियब ने महल के इंचार्ज अबदियाह को बुलाया। (अबदियाह रब का ख़ौफ़ मानता था। 4 जब ईज़बिल ने रब के तमाम नबियों को क़त्ल करने की कोशिश की थी तो अबदियाह ने 100 नबियों को दो ग़ारों में छुपा दिया था। हर ग़ार में 50 नबी रहते थे, और अबदियाह उन्हें खाने-पीने की चीज़ें पहुँचाता रहता था।) 5 अब अखियब ने अबदियाह को हुक्म दिया, “पूरे मुल्क में से गुज़रकर तमाम चश्मों और वादियों का मुआयना करें। शायद कहीं कुछ घास मिल जाए जो हम अपने घोड़ों और खच्चरों को खिलाकर उन्हें बचा सकें। ऐसा न हो कि हमें खाने की क़िल्लत के बाइस कुछ जानवरों को ज़बह करना पड़े।”

6 उन्होंने मुक़र्रर किया कि अखियब कहाँ जाएगा और अबदियाह कहाँ, फिर दोनों एक दूसरे से अलग हो गए। 7 चलते चलते अबदियाह को अचानक इलियास उस की तरफ़ आते हुए नज़र आया। जब अबदियाह ने उसे पहचाना तो वह मुँह के बल झुककर बोला, “मेरे आक्रा इलियास, क्या आप ही हैं?”

8 इलियास ने जवाब दिया, “जी, मैं ही हूँ। जाँएँ, अपने मालिक को इतला दें कि इलियास आ गया है।”

9 अबदियाह ने एतराज़ किया, “मुझसे क्या ग़लती हुई है कि आप मुझे अखियब से मरवाना चाहते हैं? 10 रब आपके खुदा की क़सम, बादशाह ने अपने बंदों को हर क़ौम और मुल्क में भेज दिया है ताकि आपको ढूँड निकालें। और जहाँ जवाब मिला कि इलियास यहाँ नहीं है वहाँ लोगों को क़सम खानी पड़ी कि हम इलियास का खोज लगाने में नाकाम रहे हैं। 11 और अब आप चाहते हैं कि मैं बादशाह के पास जाकर उसे बताऊँ कि इलियास यहाँ हैं? 12 ऐन मुमकिन है कि जब मैं आपको छोड़कर चला जाऊँ तो रब का रूह आपको उठाकर किसी नामालूम जगह ले जाए। अगर बादशाह मेरी यह इतला सुनकर यहाँ आए और आपको न पाए तो मुझे मार डालेगा। याद रहे कि मैं जवानी से लेकर आज तक रब का ख़ौफ़ मानता आया हूँ। 13 क्या मेरे आक्रा तक यह ख़बर नहीं पहुँची कि जब ईज़बिल रब के नबियों को क़त्ल कर रही थी तो मैंने क्या किया? मैं दो ग़ारों में पचास पचास नबियों को छुपाकर उन्हें खाने-पीने की चीज़ें पहुँचाता रहा। 14 और अब आप चाहते हैं कि मैं अखियब के पास जाकर उसे इतला दूँ कि इलियास यहाँ आ गया है? वह मुझे ज़रूर मार डालेगा।”

15 इलियास ने कहा, “रब्बुल-अफ़वाज की हयात की क़सम जिसकी ख़िदमत मैं करता हूँ, आज मैं अपने आपको ज़रूर बादशाह को पेश करूँगा।”

16 तब अबदियाह चला गया और बादशाह को इलियास की ख़बर पहुँचाई। यह सुनकर अखियब इलियास से मिलने के लिए आया।

क्या बाल हकीकी माबूद है या रब?

17 इलियास को देखते ही अखियब बोला, “ऐ इसराईल को मुसीबत में डालनेवाले, क्या आप वापस आ गए हैं?” 18 इलियास ने एतराज़ किया, “मैं तो इसराईल के लिए मुसीबत का बाइस नहीं बना बल्कि आप और आपके बाप का घराना। आप रब के अहक़ाम छोड़कर बाल के बुतों के पीछे लग गए हैं। 19 अब मैं आपको चैलेंज देता हूँ, तमाम इसराईल को बुलाकर करमिल पहाड़ पर जमा करें। साथ साथ बाल देवता के 450 नबियों को और ईज़बिल की मेज़ पर शरीक होनेवाले यसीरत देवी के 400 नबियों को भी बुलाएँ।”

20 अखियब मान गया। उसने तमाम इसराईलियों और नबियों को बुलाया। जब वह करमिल पहाड़ पर जमा हो गए 21 तो इलियास उनके सामने जा खड़ा हुआ और कहा, “आप कब तक कभी इस तरफ़, कभी उस तरफ़ लँगड़ाते रहेंगे? * अगर रब खुदा है तो सिर्फ़ उसी की पैरवी करें, लेकिन अगर बाल वाहिद खुदा है तो उसी के पीछे लग जाएँ।”

* 18:21 देखिए आयत 26।

लोग खामोश रहे। 22 इलियास ने बात जारी रखी, “रब के नबियों में से सिर्फ मैं ही बाकी रह गया हूँ। दूसरी तरफ बाल देवता के यह 450 नबी खड़े हैं। 23 अब दो बैल ले आएँ। बाल के नबी एक को पसंद करें और फिर उसे टुकड़े टुकड़े करके अपनी कुरबानगाह की लकड़ियों पर रख दें। लेकिन वह लकड़ियों को आग न लगाएँ। मैं दूसरे बैल को तैयार करके अपनी कुरबानगाह की लकड़ियों पर रख दूँगा। लेकिन मैं भी उन्हें आग नहीं लगाऊँगा। 24 फिर आप अपने देवता का नाम पुकारें जबकि मैं रब का नाम पुकारूँगा। जो माबूद कुरबानी को जलाकर जवाब देगा वही खुदा है।” तमाम लोग बोले, “आप ठीक कहते हैं।”

25 फिर इलियास ने बाल के नबियों से कहा, “शुरू करें, क्योंकि आप बहुत हैं। एक बैल को चुनकर उसे तैयार करें। लेकिन उसे आग मत लगाना बल्कि अपने देवता का नाम पुकारें ताकि वह आग भेज दे।” 26 उन्होंने बैलों में से एक को चुनकर उसे तैयार किया, फिर बाल का नाम पुकारने लगे। सुबह से लेकर दोपहर तक वह मुसलसल चीखते-चिल्लाते रहे, “ऐ बाल, हमारी सुन!” साथ साथ वह उस कुरबानगाह के इर्दगिर्द नाचते रहे † जो उन्होंने बनाई थी। लेकिन न कोई आवाज़ सुनाई दी, न किसी ने जवाब दिया।

27 दोपहर के वक्त इलियास उनका मज़ाक उड़ाने लगा, “ज़्यादा ऊँची आवाज़ से बोलें! शायद वह सोचों में गरक हो या अपनी हाजत रफ़ा करने के लिए एक तरफ़ गया हो। यह भी हो सकता है कि वह कहीं सफ़र कर रहा हो। या शायद वह गहरी नींद सो गया हो और उसे जगाने की ज़रूरत है।”

28 तब वह मज़ीद ऊँची आवाज़ से चीखने-चिल्लाने लगे। मामूल के मुताबिक वह छुरियों और नेज़ों से अपने आपको ज़खमी करने लगे, यहाँ तक कि खून बहने लगा। 29 दोपहर गुज़र गई, और वह शाम के उस वक्त तक वज्द में रहे जब गल्ला की नज़र पेश की जाती है। लेकिन कोई आवाज़ न सुनाई दी। न किसी ने जवाब दिया, न उनके तमाशे पर तवज़ूह दी।

30 फिर इलियास इसराईलियों से मुखातिब हुआ, “आएँ, सब यहाँ मेरे पास आएँ!” सब करीब आए। वहाँ रब की एक कुरबानगाह थी जो गिराई गई थी। अब इलियास ने वह दुबारा खड़ी की। 31 उसने याकूब से निकले हर कबीले के लिए एक एक पत्थर चुन लिया। (बाद में रब ने याकूब का नाम इसराईल रखा था)। 32 इन बारह पत्थरों को लेकर इलियास ने रब के नाम की ताज़ीम में कुरबानगाह बनाई। इसके इर्दगिर्द उसने इतना चौड़ा गढ़ा खोदा कि उसमें तकरीबन 15 लिटर पानी समा सकता था। 33 फिर उसने कुरबानगाह पर लकड़ियों का ढेर लगाया और बैल को टुकड़े टुकड़े करके लकड़ियों पर रख दिया। इसके बाद उसने हुक्म दिया, “चार घड़े पानी से भरकर कुरबानी और लकड़ियों पर उंडेल दें!” 34 जब उन्होंने ऐसा किया तो उसने दुबारा ऐसा करने का हुक्म दिया, फिर तीसरी बार। 35 आखिरकार इतना पानी था कि उसने चारों तरफ़ कुरबानगाह से टपककर गढ़े को भर दिया।

36 शाम के वक्त जब गल्ला की नज़र पेश की जाती है इलियास ने कुरबानगाह के पास जाकर बुलंद आवाज़ से दुआ की, “ऐ रब, ऐ इब्राहीम, इसहाक और इसराईल के खुदा, आज लोगों पर ज़ाहिर कर कि इसराईल में तू ही खुदा है और कि मैं तेरा खादिम हूँ। साबित कर कि मैंने यह सब कुछ तेरे हुक्म के मुताबिक़ किया है। 37 ऐ रब, मेरी दुआ सुन! मेरी सुन ताकि यह लोग जान लें कि तू, ऐ रब, खुदा है और कि तू ही उनके दिलों को दुबारा अपनी तरफ़ मायल कर रहा है।”

38 अचानक आसमान से रब की आग नाज़िल हुई। आग ने न सिर्फ़ कुरबानी और लकड़ी को भस्म कर दिया बल्कि कुरबानगाह के पत्थरों और उसके नीचे की मिट्टी को भी। गढ़े में पानी भी एकदम सूख गया।

39 यह देखकर इसराईली औंधे मुँह गिरकर पुकारने लगे, “रब ही खुदा है! रब ही खुदा है!” 40 फिर इलियास ने उन्हें हुक्म दिया, “बाल के नबियों को पकड़ लें। एक भी बचने न पाएँ!” लोगों ने उन्हें पकड़ लिया तो इलियास उन्हें नीचे वादीए-कैसोन में ले गया और वहाँ सबको मौत के घाट उतार दिया।

बारिश होती है

41 फिर इलियास ने अख़ियब से कहा, “अब जाकर कुछ खाएँ और पिँ, क्योंकि मूसलाधार बारिश का शोर सुनाई दे रहा है।” 42 चुनौचे अख़ियब खाने-पीने के लिए चला गया जबकि इलियास करमिल पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया। वहाँ उसने झुककर अपने सर को दोनों घुटनों के बीच में छुपा लिया। 43 अपने नौकर को उसने हुक्म दिया, “जाओ, समुंदर की तरफ़ देखो।”

नौकर गया और समुंदर की तरफ़ देखा, फिर वापस आकर इलियास को इतला दी, “कुछ भी नज़र नहीं आता।” लेकिन इलियास ने उसे दुबारा देखने के लिए भेज दिया। इस दफ़ा भी कुछ मालूम न हो सका। सात बार इलियास ने नौकर को देखने के लिए भेजा। 44 आखिरकार जब नौकर सातवीं दफ़ा गया तो उसने वापस आकर इतला दी, “एक छोटा-सा बादल समुंदर में से निकलकर ऊपर चढ़ रहा है। वह आदमी के हाथ के बराबर है।”

तब इलियास ने हुक्म दिया, “जाओ, अख़ियब को इतला दो, ‘घोड़ों को फ़ौरन रथ में जोतकर घर चले जाएँ, वरना बारिश आपको रोक लेगी।’” 45 नौकर इतला देने चला गया तो जल्द ही औंधी आई, आसमान पर काले काले बादल छा गए और मूसलाधार बारिश बरसने लगी। अख़ियब जल्दी से रथ पर सवार होकर यज़्ज़एल के लिए रवाना हो गया। 46 उस वक्त रब ने इलियास को ख़ास ताक़त दी। सफ़र के लिए कमरबस्ता होकर वह अख़ियब के रथ के आगे आगे दौड़कर उससे पहले यज़्ज़एल पहुँच गया।

† 18:26 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : लँगड़ाते हुए नाचते रहे। गालिबन बाल की ताज़ीम में एक ख़ास किस्म का रक्स। लिहाज़ा आयत 21 में इलियास का सवाल, “आप कब तक . . . लँगड़ाते रहेंगे?”

19

इलियास भाग जाता है

1 अखियब ने ईज़बिल को सब कुछ सुनाया जो इलियास ने कहा था, यह भी कि उसने बाल के नबियों को किस तरह तलवार से मार दिया था। 2 तब ईज़बिल ने कासिद को इलियास के पास भेजकर उसे इत्तला दी, “देवता मुझे सख्त सज़ा दें अगर मैं कल इस वक्त तक आपको उन नबियों की-सी सज़ा न दूँ।”

3 इलियास सख्त डर गया और अपनी जान बचाने के लिए भाग गया। चलते चलते वह यहदाह के शहर बैर-सबा तक पहुँच गया। वहाँ वह अपने नौकर को छोड़कर 4 आगे रेगिस्तान में जा निकला। एक दिन के सफ़र के बाद वह सीक की झाड़ी के पास पहुँच गया और उसके साथ में बैठकर दुआ करने लगा, “ऐ रब, मुझे मरने दे। बस अब काफी है। मेरी जान ले ले, क्योंकि मैं अपने बापदादा से बेहतर नहीं हूँ।” 5 फिर वह झाड़ी के साथ में लेटकर सो गया।

अचानक एक फ़रिश्ते ने उसे छूकर कहा, “उठ, खाना खा ले!” 6 जब उसने अपनी आँखें खोलीं तो देखा कि सिरहाने के करीब कोयलों पर बनाई गई रोटी और पानी की सुराही पड़ी है। उसने रोटी खाई, पानी पिया और दुबारा सो गया। 7 लेकिन रब का फ़रिश्ता एक बार फिर आया और उसे हाथ लगाकर कहा, “उठ, खाना खा ले, वरना आगे का लंबा सफ़र तेरे बस की बात नहीं होगी।”

8 तब इलियास ने उठकर दुबारा खाना खाया और पानी पिया। इस खुराक ने उसे इतनी तक्रवियत दी कि वह चालीस दिन और चालीस रात सफ़र करते करते अल्लाह के पहाड़ होरिब यानी सीना तक पहुँच गया। 9 वहाँ वह रात गुज़ारने के लिए एक गार में चला गया।

रब इलियास की हौसलाअफ़ज़ाई करता है

गार में रब उससे हमकलाम हुआ। उसने पूछा, “इलियास, तू यहाँ क्या कर रहा है?” 10 इलियास ने जवाब दिया, “मैंने रब, आसमानी लश्करों के ख़ुदा की ख़िदमत करने की सिर-तोड़ कोशिश की है, क्योंकि इसराइलियों ने तेरे अहद को तर्क कर दिया है। उन्होंने तेरी कुरबानगाहों को गिराकर तेरे नबियों को तलवार से क़त्ल कर दिया है। मैं अकेला ही बचा हूँ, और वह मुझे भी मार डालने के दरपै हैं।”

11 जवाब में रब ने फ़रमाया, “गार से निकलकर पहाड़ पर रब के सामने खड़ा हो जा!” फिर रब वहाँ से गुज़रा। उसके आगे आगे बड़ी और ज़बरदस्त आँधी आई जिसने पहाड़ों को चीरकर चटानों को टुकड़े टुकड़े कर दिया। लेकिन रब आँधी में नहीं था। 12 इसके बाद ज़लज़ला आया, लेकिन रब ज़लज़ले में नहीं था। 13 ज़लज़ले के बाद भड़कती हुई आग वहाँ से गुज़री, लेकिन रब आग में भी नहीं था। फिर नरम हवा की धीमी धीमी आवाज़ सुनाई दी। यह आवाज़ सुनकर इलियास ने अपने चेहरे को चादर से ढाँप लिया और निकलकर गार के मुँह पर खड़ा हो गया। एक आवाज़ उससे मुखातिब हुई, “इलियास, तू यहाँ क्या कर रहा है?” 14 इलियास ने जवाब दिया, “मैंने रब, आसमानी लश्करों के ख़ुदा की ख़िदमत करने की सिर-तोड़ कोशिश की है, क्योंकि इसराइलियों ने तेरे अहद को तर्क कर दिया है। उन्होंने तेरी कुरबानगाहों को गिराकर तेरे नबियों को तलवार से क़त्ल कर दिया है। मैं अकेला ही बचा हूँ, और वह मुझे भी मार डालने के दरपै हैं।”

15 रब ने जवाब में कहा, “रेगिस्तान में उस रास्ते से होकर वापस जा जिसने तुझे यहाँ पहुँचाया है। फिर दमिशक चला जा। वहाँ हज़ाएल को तेल से मसह करके शाम का बादशाह करार दे। 16 इसी तरह याहू बिन निमसी को मसह करके इसराइल का बादशाह करार दे और अबील-महला के रहनेवाले इलीशा बिन साफ़त को मसह करके अपना जा-नशीन मुक़र्रर कर। 17 जो हज़ाएल की तलवार से बच जाएगा उसे याहू मार देगा, और जो याहू की तलवार से बच जाएगा उसे इलीशा मार देगा। 18 लेकिन मैंने अपने लिए इसराइल में 7,000 अफ़राद को बचा लिया है, उन तमाम लोगों को जो अब तक न बाल देवता के सामने झुके, न उसके बुत को बोसा दिया है।”

इलियास इलीशा को अपना जा-नशीन मुक़र्रर करता है

19 इलियास वहाँ से चला गया। इसराइल में वापस आकर उसे इलीशा बिन साफ़त मिला जो बैलों की बारह जोड़ियों की मदद से हल चला रहा था। ख़ुद वह बारहवीं जोड़ी के साथ चल रहा था। इलियास ने उसके पास आकर अपनी चादर उसके कंधों पर डाल दी और स्के बग़ैर आगे निकल गया।

20 इलीशा फ़ौरन अपने बैलों को छोड़कर इलियास के पीछे भागा। उसने कहा, “पहले मुझे अपने माँ-बाप को बोसा देकर ख़ैरबाद कहने दीजिए। फिर मैं आपके पीछे हो लूँगा।” इलियास ने जवाब दिया, “चलें, वापस जाएँ। लेकिन वह कुछ याद रहे जो मैंने आपके साथ किया है।” 21 तब इलीशा वापस चला गया। बैलों की एक जोड़ी को लेकर उसने दोनों को ज़बह किया। हल चलाने का सामान उसने गोश्त पकाने के लिए जला दिया। जब गोश्त तैयार था तो उसने उसे लोगों में तकसीम करके उन्हें खिला दिया। इसके बाद इलीशा इलियास के पीछे होकर उस की ख़िदमत करने लगा।

20

शाम की फ़ौज सामरिया का मुहासरा करती है

1 एक दिन शाम के बादशाह बिन-हदद ने अपनी पूरी फ़ौज को जमा किया। 32 इत्तहादी बादशाह भी अपने रथों और घोड़ों को लेकर आए। इस बड़ी फ़ौज के साथ बिन-हदद ने सामरिया का मुहासरा करके इसराइल से जंग का एतान किया। 2 उसने अपने कासिदों को शहर में भेजकर

इसराईल के बादशाह अखियब को इतला दी, ³ “अब से आपका सोना, चाँदी, खवातीन और बेटे मेरे ही हैं।” ⁴ इसराईल के बादशाह ने जवाब दिया, “मेरे आक्रा और बादशाह, आपकी मरज़ी। मैं और जो कुछ मेरा है आपकी मिलकियत है।”

⁵ थोड़ी देर के बाद कासिद बिन-हदद की नई खबर लेकर आए, “मैंने आपसे सोने, चाँदी, खवातीन और बेटों का तकाज़ा किया है। ⁶ अब गौर करें! कल इस वक़्त मैं अपने मुलाज़िमों को आपके पास भेज दूँगा, और वह आपके महल और आपके अफ़सरों के घरों की तलाशी लेंगे। जो कुछ भी आपको प्यारा है उसे वह ले जाएंगे।”

⁷ तब अखियब बादशाह ने मुल्क के तमाम बुज़ुर्गों को बुलाकर उनसे बात की, “देखें यह आदमी कितना बुरा इरादा रखता है। जब उसने मेरी खवातीन, बेटों, सोने और चाँदी का तकाज़ा किया तो मैंने इनकार न किया।” ⁸ बुज़ुर्गों और बाक़ी लोगों ने मिलकर मशवरा दिया, “उस की न सुनें, और जो कुछ वह माँगता है उस पर राज़ी न हो जाएँ।” ⁹ चुनौचे बादशाह ने कासिदों से कहा, “मेरे आक्रा बादशाह को जवाब देना, जो कुछ आपने पहली मरतबा माँग लिया वह मैं आपको देने के लिए तैयार हूँ, लेकिन यह आखिरी तकाज़ा मैं पूरा नहीं कर सकता।”

जब कासिदों ने बिन-हदद को यह ख़बर पहुँचाई ¹⁰ तो उसने अखियब को फ़ौरन ख़बर भेज दी, “देवता मुझे सख़्त सज़ा दें अगर मैं सामरिया को नेस्तो-नाबूद न कर दूँ। इतना भी नहीं रहेगा कि मेरा हर फ़ौज़ी मृती-भर खाक अपने साथ वापस ले जा सके!” ¹¹ इसराईल के बादशाह ने कासिदों को जवाब दिया, “उसे बता देना कि जो अभी जंग की तैयारियाँ कर रहा है वह फ़तह के नारे न लगाए।”

¹² जब बिन-हदद को यह इतला मिली तो वह लशकरगाह में अपने इतहादी बादशाहों के साथ मै पी रहा था। उसने अपने अफ़सरों को हुक्म दिया, “हमला करने के लिए तैयारियाँ करो!” चुनौचे वह शहर पर हमला करने की तैयारियाँ करने लगे।

शाम की फ़ौज से पहली जंग

¹³ इस दौरान एक नबी अखियब बादशाह के पास आया और कहा, “रब फ़रमाता है, ‘क्या तुझे दुश्मन की यह बड़ी फ़ौज नज़र आ रही है? तो भी मैं इसे आज ही तेरे हवाले कर दूँगा। तब तू जान लेगा कि मैं ही रब हूँ।’”

¹⁴ अखियब ने सवाल किया, “रब यह किसके वसीले से करेगा?” नबी ने जवाब दिया, “रब फ़रमाता है कि ज़िलों पर मुक़र्रर अफ़सरों के जवान यह फ़तह पाएँगे।” बादशाह ने मज़ीद पूछा, “लड़ाई में कौन पहला क़दम उठाए?” नबी ने कहा, “तू ही।”

¹⁵ चुनौचे अखियब ने ज़िलों पर मुक़र्रर अफ़सरों के जवानों को बुलाया। 232 अफ़राद थे। फिर उसने बाक़ी इसराईलियों को जमा किया। 7,000 अफ़राद थे। ¹⁶⁻¹⁷ दोपहर को वह लड़ने के लिए निकले। ज़िलों पर मुक़र्रर अफ़सरों के जवान सबसे आगे थे। बिन-हदद और 32 इतहादी बादशाह लशकरगाह में बैठे नशे में धूत मै पी रहे थे कि अचानक शहर का जायज़ा लेने के लिए बिन-हदद के भेजे गए सिपाही अंदर आए और कहने लगे, “सामरिया से आदमी निकल रहे हैं।” ¹⁸ बिन-हदद ने हुक्म दिया, “हर सूरत में उन्हें ज़िंदा पकड़ें, खाह वह अमनपसंद इरादा रखते हों या ना।”

¹⁹ लेकिन उन्हें यह करने का मौक़ा न मिला, क्योंकि इसराईल के ज़िलों पर मुक़र्रर अफ़सरों और बाक़ी फ़ौजियों ने शहर से निकल कर ²⁰ फ़ौरन उन पर हमला कर दिया। और जिस भी दुश्मन का मुकाबला हुआ उसे मारा गया। तब शाम की पूरी फ़ौज भाग गई। इसराईलियों ने उनका ताक़्क़ुब किया, लेकिन शाम का बादशाह बिन-हदद घोड़े पर सवार होकर चंद एक घुड़सवारों के साथ बच निकला। ²¹ उस वक़्त इसराईल का बादशाह जंग के लिए निकला और घोड़ों और रथों को तबाह करके अरामियों को ज़बरदस्त शिकस्त दी।

शाम की फ़ौज से दूसरी जंग

²² बाद में मज़क़ूरा नबी दुबारा इसराईल के बादशाह के पास आया। वह बोला, “अब मज़बूत होकर बड़े ध्यान से सोचें कि आनेवाले दिनों में क्या क्या तैयारियाँ करनी चाहिएँ, क्योंकि अगले बहार के मौसम में शाम का बादशाह दुबारा आप पर हमला करेगा।”

²³ शाम के बादशाह को भी मशवरा दिया गया। उसके बड़े अफ़सरों ने ख़याल पेश किया, “इसराईलियों के देवता पहाड़ी देवता हैं, इसलिए वह हम पर ग़ालिब आ गए हैं। लेकिन अगर हम मैदानी इलाके में उनसे लड़ें तो हर सूरत में जीतेंगे। ²⁴ लेकिन हमारा एक और मशवरा भी है। 32 बादशाहों को हटाकर उनकी जगह अपने अफ़सरों को मुक़र्रर करें। ²⁵ फिर एक नई फ़ौज तैयार करें जो तबाहशूदा पुरानी फ़ौज जैसी ताक़तवर हो। उसके उतने ही रथ और घोड़े हों जितने पहले थे। फिर जब हम मैदानी इलाके में उनसे लड़ेंगे तो उन पर ज़स्स ग़ालिब आएँगे।”

बादशाह उनकी बात मानकर तैयारियाँ करने लगा। ²⁶ जब बहार का मौसम आया तो वह शाम के फ़ौजियों को जमा करके इसराईल से लड़ने के लिए अफ़्रीक़ शहर गया। ²⁷ इसराईली फ़ौज भी लड़ने के लिए जमा हुई। खाने-पीने की अशया का बंदोबस्त किया गया, और वह दुश्मन से लड़ने के लिए निकले। जब वहाँ पहुँचे तो उन्होंने अपने ख़ैमों को दो जगहों पर लगाया। यह दो गुरोह शाम की वसी फ़ौज के मुकाबले में बकरियों के दो छोटे रेवड़ों जैसे लग रहे थे, क्योंकि पूरा मैदान शाम के फ़ौजियों से भरा था।

²⁸ फिर मर्दे-ख़ुदा ने अखियब के पास आकर कहा, “रब फ़रमाता है, ‘शाम के लोग ख़याल करते हैं कि रब पहाड़ी देवता है इसलिए मैदानी इलाके में नाकाम रहेगा। चुनौचे मैं उनकी ज़बरदस्त फ़ौज को तेरे हवाले कर दूँगा। तब तू जान लेगा कि मैं ही रब हूँ।’”

²⁹ सात दिन तक दोनों फ़ौजें एक दूसरे के मुकाबिल सफ़आरा रही। सातवें दिन लड़ाई का आगाज़ हुआ। इसराईली इस मरतबा भी शाम की फ़ौज पर ग़ालिब आए। उस दिन उन्होंने उनके एक लाख प्यादा फ़ौजियों को मार दिया। ³⁰ बाक़ी फ़रार होकर अफ़्रीक़ शहर में घुस गए। तकर्रीबन 27,000 आदमी थे। लेकिन अचानक शहर की फ़सील उन पर गिर गई, तो वह भी हलाक हो गए।

अखियब शाम के बादशाह पर रहम करता है

बिन-हदद बादशाह भी अफ्रीक में फ़रार हुआ था। अब वह कभी इस कमरे में, कभी उसमें खिसककर छुपने की कोशिश कर रहा था। 31 फिर उसके अफ़सरों ने उसे मशवरा दिया, “सुना है कि इसराईल के बादशाह नरमदिल होते हैं। क्यों न हम टाट ओढकर और अपनी गरदनो में रस्से डालकर इसराईल के बादशाह के पास जाएँ? शायद वह आपको ज़िंदा छोड़ दे।”

32 चुनौचे बिन-हदद के अफ़सर टाट ओढकर और अपनी गरदनो में रस्से डालकर इसराईल के बादशाह के पास आए। उन्होंने कहा, “आपका खादिम बिन-हदद गुज़ारिश करता है कि मुझे ज़िंदा छोड़ दें।” अखियब ने सवाल किया, “क्या वह अब तक ज़िंदा है? वह तो मेरा भाई है!” 33 जब बिन-हदद के अफ़सरों ने जान लिया कि अखियब का रुज़ान किस तरफ़ है तो उन्होंने जल्दी से इसकी तसदीक की, “जी, बिन-हदद आपका भाई है!” अखियब ने हुक्म दिया, “जाकर उसे बुला लाएँ।”

तब बिन-हदद निकल आया, और अखियब ने उसे अपने रथ पर सवार होने की दावत दी। 34 बिन-हदद ने अखियब से कहा, “मैं आपको वह तमाम शहर वापस कर देता हूँ जो मेरे बाप ने आपके बाप से छीन लिए थे। आप हमारे दास्त-हुकूमत दमिशक में तिजारती मराकिज़ भी कायम कर सकते हैं, जिस तरह मेरे बाप ने पहले सामरिया में किया था।” अखियब बोला, “ठीक है। इसके बदले में मैं आपको रिहा कर दूँगा।” उन्होंने मुआहदा किया, फिर अखियब ने शाम के बादशाह को रिहा कर दिया।

नबी अखियब को मलामत करता है

35 उस वक़्त रब ने नबियों में से एक को हिदायत की, “जाकर अपने साथी को कह दे कि वह तुझे मारे।” नबी ने ऐसा किया, लेकिन साथी ने इनकार किया। 36 फिर नबी बोला, “चूँकि आपने रब की नहीं सुनी, इसलिए ज्योंही आप मुझसे चले जाएंगे शेरबबर आपको फाड़ डालेगा।” और ऐसा ही हुआ। जब साथी वहाँ से निकला तो शेरबबर ने उस पर हमला करके उसे फाड़ डाला।

37 नबी की मुलाकात किसी और से हुई तो उसने उससे भी कहा, “मेहरबानी करके मुझे मारें!” उस आदमी ने नबी को मार मारकर ज़ख़मी कर दिया। 38 तब नबी ने अपनी आँखों पर पट्टी बाँधी ताकि उसे पहचाना न जाए, फिर रास्ते के किनारे पर अखियब बादशाह के इंतज़ार में खड़ा हो गया।

39 जब बादशाह वहाँ से गुज़रा तो नबी चिल्लाकर उससे मुखातिब हुआ, “जनाब, मैं मैदाने-जंग में लड़ रहा था कि अचानक किसी आदमी ने मेरे पास आकर अपने कैदी को मेरे हवाले कर दिया। उसने कहा, ‘इसकी निगरानी करना। अगर यह किसी भी वजह से भाग जाए तो आपको उस की जान के एवज़ अपनी जान देनी पड़ेगी या आपको एक मन चाँदी अदा करनी पड़ेगी।’ 40 लेकिन मैं इधर उधर मसरूफ़ रहा, और इतने में कैदी गायब हो गया।” अखियब बादशाह ने जवाब दिया, “आपने खुद अपने बारे में फ़ैसला दिया है। अब आपको इसका नतीजा भुगतना पड़ेगा।”

41 फिर नबी ने जल्दी से पट्टी को अपनी आँखों पर से उतार दिया, और बादशाह ने पहचान लिया कि यह नबियों में से एक है। 42 नबी ने कहा, “रब फरमाता है, ‘मैंने मुक़रर किया था कि बिन-हदद को मेरे लिए मखसूस करके हलाक करना है, लेकिन तूने उसे रिहा कर दिया है। अब उस की जगह तू ही मरेगा, और उस की क़ौम की जगह तेरी क़ौम को नुक़सान पहुँचेगा।’”

43 इसराईल का बादशाह बड़े गुस्से और बदमिज़ाजी के आलम में सामरिया में अपने महल में चला गया।

21

ईज़बिल के हाथों नबोत का क़त्ल

1 इसके बाद एक और काबिले-ज़िक़्र बात हुई। यज़्ज़एल में सामरिया के बादशाह अखियब का एक महल था। महल की ज़मीन के साथ साथ अंगूर का बाग़ था। मालिक का नाम नबोत था। 2 एक दिन अखियब ने नबोत से बात की, “अंगूर का आपका बाग़ मेरे महल के करीब ही है। उसे मुझे दे दें, क्योंकि मैं उसमें सब्जियाँ लगाना चाहता हूँ। मुआवज़े में मैं आपको उससे अच्छा अंगूर का बाग़ दे दूँगा। लेकिन अगर आप पैसे को तरज़ीह दें तो आपको उस की पूरी रक़म अदा कर दूँगा।”

3 लेकिन नबोत ने जवाब दिया, “अल्लाह न करे कि मैं आपको वह मौरूसी ज़मीन दूँ जो मेरे बापदादा ने मेरे सुपुर्द की है!”

4 अखियब बड़े गुस्से में अपने घर वापस चला गया। वह बेज़ार था कि नबोत अपने बापदादा की मौरूसी ज़मीन बेचना नहीं चाहता। वह पलंग पर लेट गया और अपना मुँह दीवार की तरफ़ करके खाना खाने से इनकार किया। 5 उस की बीवी ईज़बिल उसके पास आई और पूछने लगी, “क्या बात है? आप क्यों इतने बेज़ार हैं कि खाना भी नहीं खाना चाहते?” 6 अखियब ने जवाब दिया, “यज़्ज़एल का रहनेवाला नबोत मुझे अंगूर का बाग़ नहीं देना चाहता। गो मैं उसे पैसे देना चाहता था बल्कि उसे इसकी जगह कोई और बाग़ देने के लिए तैयार था तो भी वह बज़िद रहा।”

7 ईज़बिल बोली, “क्या आप इसराईल के बादशाह हैं कि नहीं? अब उठें! खाएँ, पिँएँ और अपना दिल बहलाएँ। मैं ही आपको नबोत यज़्ज़एली का अंगूर का बाग़ दिला दूँगी।” 8 उसने अखियब के नाम से ख़तूत लिखकर उन पर बादशाह की मुहर लगाई और उन्हें नबोत के शहर के बुजुर्गों और शुरफ़ा को भेज दिया। 9 ख़तों में ज़ैल की ख़बर लिखी थी,

“शहर में एलान करें कि एक दिन का रोजा रखा जाए। जब लोग उस दिन जमा हो जाएंगे तो नबोत को लोगों के सामने इज्जत की कुरसी पर बिठा दें। 10 लेकिन उसके मुकाबिल दो बदमाशों को बिठा देना। इजतिमा के दौरान यह आदमी सबके सामने नबोत पर इलज़ाम लगाएँ, ‘इस शख्स ने अल्लाह और बादशाह पर लानत भेजी है! हम इसके गवाह हैं।’ फिर उसे शहर से बाहर ले जाकर संगसार करें।”

11 यज़्ज़ल के बुज़ुर्गों और शुरफ़ा ने ऐसा ही किया। 12 उन्होंने रोज़े के दिन का एलान किया। जब लोग मुकर्ररा दिन जमा हुए तो नबोत को लोगों के सामने इज्जत की कुरसी पर बिठा दिया गया। 13 फिर दो बदमाश आए और उसके मुकाबिल बैठ गए। इजतिमा के दौरान यह आदमी सबके सामने नबोत पर इलज़ाम लगाने लगे, “इस शख्स ने अल्लाह और बादशाह पर लानत भेजी है! हम इसके गवाह हैं।” तब नबोत को शहर से बाहर ले जाकर संगसार कर दिया गया। 14 फिर शहर के बुज़ुर्गों ने ईज़बिल को इत्तला दी, “नबोत मर गया है, उसे संगसार किया गया है।”

15 यह ख़बर मिलते ही ईज़बिल ने अख़ियब से बात की, “जाएँ, नबोत यज़्ज़ली के उस बाग़ पर क़ब्ज़ा करें जो वह आपको बेचने से इनकार कर रहा था। अब वह आदमी जिंदा नहीं रहा बल्कि मर गया है।”

16 यह सुनकर अख़ियब फ़ौरन नबोत के अंगूर के बाग़ पर क़ब्ज़ा करने के लिए रवाना हुआ।

इलियास अख़ियब को सज़ा सुनाता है

17 तब रब इलियास तिशबी से हमकलाम हुआ, 18 “इसराईल के बादशाह अख़ियब से जो सामरिया में रहता है मिलने जा। इस वक़्त वह नबोत के अंगूर के बाग़ में है, क्योंकि वह उस पर क़ब्ज़ा करने के लिए वहाँ पहुँचा है। 19 उसे बता देना, ‘रब फ़रमाता है कि तूने एक आदमी को बिलावजह क़त्ल करके उस की मिलकियत पर क़ब्ज़ा कर लिया है। रब फ़रमाता है कि जहाँ कुत्तों ने नबोत का खून चाटा है वहाँ वह तेरा खून भी चाटेंगे।’”

20 जब इलियास अख़ियब के पास पहुँचा तो बादशाह बोला, “मेरे दुश्मन, क्या आपने मुझे ढूँड निकाला है?” इलियास ने जवाब दिया, “जी, मैंने आपको ढूँड निकाला है, क्योंकि आपने अपने आपको बदी के हाथ में बेचकर ऐसा काम किया है जो रब को नापसंद है। 21 अब सुनें रब का फ़रमान, ‘मैं तुझे यों मुसीबत में डाल दूँगा कि तेरा नामो-निशान तक नहीं रहेगा। मैं इसराईल में से तेरे खानदान के हर मर्द को मिटा दूँगा, खाह वह बालिग हो या बच्चा। 22 तूने मुझे बड़ा तैश दिलाया और इसराईल को गुनाह करने पर उकसाया है। इसलिए मेरा तेरे घराने के साथ वही सुलूक होगा जो मैंने यस्बियाम बिन नबात और बाशा बिन अख़ियाह के साथ किया है।’ 23 ईज़बिल पर भी रब की सज़ा आएगी। रब फ़रमाता है, ‘कुत्ते यज़्ज़ल की फ़सील के पास ईज़बिल को खा जाएंगे। 24 अख़ियब के खानदान में से जो शहर में मरेगे उन्हें कुत्ते खा जाएंगे, और जो खुले मैदान में मरेगे उन्हें परिंदे चट कर जाएंगे।’”

25 और यह हकीकत है कि अख़ियब जैसा खराब शख्स कोई नहीं था। क्योंकि ईज़बिल के उकसाने पर उसने अपने आपको बदी के हाथ में बेचकर ऐसा काम किया जो रब को नापसंद था। 26 सबसे धिनौनी बात यह थी कि वह बुत्तों के पीछे लगा रहा, बिलकुल उन अमोरियों की तरह जिन्हें रब ने इसराईल से निकाल दिया था।

27 जब अख़ियब ने इलियास की यह बातें सुनीं तो उसने अपने कपड़े फाड़कर टाट ओढ़ लिया। रोज़ा रखकर वह ग़मगीन हालत में फिरता रहा। टाट उसने सोते वक़्त भी न उतारा। 28 तब रब दुबारा इलियास तिशबी से हमकलाम हुआ, 29 “क्या तूने ग़ौर किया है कि अख़ियब ने अपने आपको मेरे सामने कितना पस्त कर दिया है? चूँकि उसने अपनी आजिजी का इज़हार किया है इसलिए मैं उसके जीते-जी उसके खानदान को मज़क़ूरा मुसीबत में नहीं डालूँगा बल्कि उस वक़्त जब उसका बेटा तरख़्त पर बैठेगा।”

22

झूठे नबियों और मीकायाह का मुकाबला

1 तीन साल तक शाम और इसराईल के दरमियान सुलह रही। 2 तीसरे साल यहदाह का बादशाह यहसफ़त इसराईल के बादशाह अख़ियब से मिलने गया। 3 उस वक़्त इसराईल के बादशाह ने अपने अफ़सरों से बात की, “देखें, रामात-जिलियाद हमारा ही शहर है। तो फिर हम क्यों कुछ नहीं कर रहे? हमें उसे शाम के बादशाह के क़ब्ज़े से छुड़वाना चाहिए।” 4 उसने यहसफ़त से सवाल किया, “क्या आप मेरे साथ रामात-जिलियाद जाएंगे ताकि उस पर क़ब्ज़ा करें?” यहसफ़त ने जवाब दिया, “जी ज़रूर। हम तो भाई हैं। मेरी क़ौम को अपनी क़ौम और मेरे घोड़ों को अपने घोड़े समझें। 5 लेकिन मेहरबानी करके पहले रब की मरज़ी मालूम कर लें।”

6 इसराईल के बादशाह ने तकरीबन 400 नबियों को बुलाकर उनसे पूछा, “क्या मैं रामात-जिलियाद पर हमला करूँ या इस इरादे से बाज़ रहूँ?” नबियों ने जवाब दिया, “जी करें, क्योंकि रब उसे बादशाह के हवाले कर देगा।”

7 लेकिन यहसफ़त मुतमइन न हुआ। उसने पूछा, “क्या यहाँ रब का कोई नबी नहीं जिससे हम दरियाफ़्त कर सकें?” 8 इसराईल का बादशाह बोला, “हाँ, एक तो है जिसके ज़रीए हम रब की मरज़ी मालूम कर सकते हैं। लेकिन मैं उससे नफ़रत करता हूँ, क्योंकि वह मेरे बारे में कभी भी अच्छी पेशगोई नहीं करता। वह हमेशा बुरी पेशगोईयाँ सुनाता है। उसका नाम मीकायाह बिन इमला है।” यहसफ़त ने एतराज़ किया, “बादशाह ऐसी बात न कहे!” 9 तब इसराईल के बादशाह ने किसी मुलाज़िम को बुलाकर हुक्म दिया, “मीकायाह बिन इमला को फ़ौरन हमारे पास पहुँचा देना!”

10 अखियब और यहसफत अपने शाही लिबास पहने हुए सामरिया के दरवाजे के करीब अपने अपने तख्त पर बैठे थे। यह ऐसी खुली जगह थी जहाँ अनाज गाहा जाता था। तमाम 400 नबी वहाँ उनके सामने अपनी पेशगोइयाँ पेश कर रहे थे। 11 एक नबी बनाम सिदक्रियाह बिन कनाना ने अपने लिए लोहे के सींग बनाकर एलान किया, “रब फरमाता है कि इन सींगों से तू शाम के फौजियों को मार मारकर हलाक कर देगा।” 12 दूसरे नबी भी इस किस्म की पेशगोइयाँ कर रहे थे, “रामात-जिलियाद पर हमला करें, क्योंकि आप ज़रूर कामयाब हो जाएंगे। रब शहर को आपके हवाले कर देगा।”

13 जिस मुलाज़िम को मीकायाह को बुलाने के लिए भेजा गया था उसने रास्ते में उसे समझाया, “देखें, बाक़ी तमाम नबी मिलकर कह रहे हैं कि बादशाह को कामयाबी हासिल होगी। आप भी ऐसी ही बातें करें, आप भी फ़तह की पेशगोई करें!” 14 लेकिन मीकायाह ने एतराज़ किया, “रब की हयात की क़सम, मैं बादशाह को सिर्फ़ वही कुछ बताऊँगा जो रब मुझे फ़रमाएगा।”

15 जब मीकायाह अखियब के सामने खड़ा हुआ तो बादशाह ने पूछा, “मीकायाह, क्या हम रामात-जिलियाद पर हमला करें या मैं इस इरादे से बाज़ रहूँ?” मीकायाह ने जवाब दिया, “उस पर हमला करें, क्योंकि रब शहर को आपके हवाले करके आपको कामयाबी बख़्शेगा।”

16 बादशाह नाराज़ हुआ, “मुझे कितनी दफ़ा आपको समझाना पड़ेगा कि आप क़सम खाकर मुझे रब के नाम में सिर्फ़ वह कुछ सुनाएँ जो हकीकत है।”

17 तब मीकायाह ने जवाब में कहा, “मुझे तमाम इसराईल गल्लाबान से महसूस भेड़-बकरियों की तरह पहाड़ों पर बिखरा हुआ नज़र आया। फिर रब मुझसे हमकलाम हुआ, ‘इनका कोई मालिक नहीं है। हर एक सलामती से अपने घर वापस चला जाए।’”

18 इसराईल के बादशाह ने यहसफत से कहा, “लो, क्या मैंने आपको नहीं बताया था कि यह शख्स हमेशा मेरे बारे में बुरी पेशगोइयाँ करता है?”

19 लेकिन मीकायाह ने अपनी बात जारी रखी, “रब का फ़रमान सुनें! मैंने रब को उसके तख्त पर बैठे देखा। आसमान की पूरी फ़ौज उसके दाएँ और बाएँ हाथ खड़ी थी। 20 रब ने पूछा, ‘कौन अखियब को रामात-जिलियाद पर हमला करने पर उकसाएगा ताकि वह वहाँ जाकर मर जाए?’ एक ने यह मशवरा दिया, दूसरे ने वह। 21 अखिरकार एक रूह रब के सामने खड़ी हुई और कहने लगी, ‘मैं उसे उकसाऊँगी।’ 22 रब ने सवाल किया, ‘किस तरह?’ रूह ने जवाब दिया, ‘मैं निकलकर उसके तमाम नबियों पर यों काबू पाऊँगी कि वह झूट ही बोलेंगे।’ रब ने फ़रमाया, ‘तू कामयाब होगी। जा और यों ही कर!’ 23 ऐ बादशाह, रब ने आप पर आफ़त लाने का फैसला कर लिया है, इसलिए उसने झूटी रूह को आपके इन तमाम नबियों के मुँह में डाल दिया है।”

24 तब सिदक्रियाह बिन कनाना ने आगे बढ़कर मीकायाह के मुँह पर थप्पड़ मारा और बोला, “रब का रूह किस तरह मुझसे निकल गया ताकि तुझसे बात करे?” 25 मीकायाह ने जवाब दिया, “जिस दिन आप कभी इस कमरे में, कभी उसमें खिसककर छुपने की कोशिश करेंगे उस दिन आपको पता चलेगा।”

26 तब अखियब बादशाह ने हुक्म दिया, “मीकायाह को शहर पर मुक़र्रर अफ़सर अमून और मेरे बेटे युआस के पास वापस भेज दो! 27 उन्हें बता देना, ‘इस आदमी को जेल में डालकर मेरे सहीह-सलामत वापस आने तक कम से कम रोटी और पानी दिया करें।’” 28 मीकायाह बोला, “अगर आप सहीह-सलामत वापस आएँ तो मतलब होगा कि रब ने मेरी मारिफ़त बात नहीं की।” फिर वह साथ खड़े लोगों से मुखातिब हुआ, “तमाम लोग ध्यान दें!”

अखियब रामात के करीब मर जाता है

29 इसके बाद इसराईल का बादशाह अखियब और यहदाह का बादशाह यहसफ़त मिलकर रामात-जिलियाद पर हमला करने के लिए रवाना हुए। 30 जंग से पहले अखियब ने यहसफ़त से कहा, “मैं अपना भेस बदलकर मैदाने-जंग में जाऊँगा। लेकिन आप अपना शाही लिबास न उतारें।” चुनौचे इसराईल का बादशाह अपना भेस बदलकर मैदाने-जंग में आया। 31 शाम के बादशाह ने रथों पर मुक़र्रर अपने 32 अफ़सरों को हुक्म दिया था, “सिर्फ़ और सिर्फ़ बादशाह पर हमला करें। किसी और से मत लड़ना, खाह वह छोटा हो या बड़ा।”

32 जब लड़ाई छिड़ गई तो रथों के अफ़सर यहसफ़त पर टूट पड़े, क्योंकि उन्होंने कहा, “यकीनन यही इसराईल का बादशाह है!” लेकिन जब यहसफ़त मदद के लिए चिल्ला उठा 33 तो दुश्मनों को मालूम हुआ कि यह अखियब बादशाह नहीं है, और वह उसका ताक़ुब करने से बाज़ आए। 34 लेकिन किसी ने ख़ास निशाना बाँधे बग़ैर अपना तीर चलाया तो वह अखियब को ऐसी जगह जा लगा जहाँ ज़िरा-बक़तर का जोड़ था। बादशाह ने अपने रथबान को हुक्म दिया, “रथ को मोड़कर मुझे मैदाने-जंग से बाहर ले जाओ! मुझे चोट लग गई है।” 35 लेकिन चूँकि उस पूरे दिन शदीद किस्म की लड़ाई जारी रही, इसलिए बादशाह अपने रथ में टेक लगाकर दुश्मन के मुकाबिल खड़ा रहा। खून ज़ख़म से रथ के फ़र्श पर टपकता रहा, और शाम के वक़्त अखियब मर गया। 36 जब सूरज ग़रूब होने लगा तो इसराईली फ़ौज में बुलंद आवाज़ से एलान किया गया, “हर एक अपने शहर और अपने इलाक़े में वापस चला जाए!”

37 बादशाह की मौत के बाद उस की लाश को सामरिया लाकर दफ़नाया गया। 38 शाही रथ को सामरिया के एक तालाब के पास लाया गया जहाँ कसबियों की नहाने की जगह थी। वहाँ उसे धोया गया। कुत्ते भी आकर खून को चाटने लगे। यों रब का फ़रमान पूरा हुआ।

39 बाक़ी जो कुछ अखियब की हुक्मत के दौरान हुआ वह ‘शाहाने-इसराईल की तारीख़’ की किताब में दर्ज है। उसमें बादशाह का तामीरकरदा हाथीदाँत का महल और वह शहर बयान किए गए हैं जिनकी क़िलाबंदी उसने की। 40 जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसका बेटा अख़ज़ियाह तख़्तनशीन हुआ।

यहदाह का बादशाह यहसफ़त

41 आसा का बेटा यहसफ़त इसराईल के बादशाह अखियब की हुकूमत के चौथे साल में यहदाह का बादशाह बना। 42 उस वक़्त उस की उम्र 35 साल थी। उसका दास्त-हुकूमत यरूशलम रहा, और उस की हुकूमत का दौरानिया 25 साल था। माँ का नाम अज़ूबा बित सिलही था। 43 वह हर काम में अपने बाप आसा के नमूने पर चलता और वह कुछ करता रहा जो रब को पसंद था। लेकिन उसने भी ऊँचे मक़ामों के मंदिरों को ख़त्म न किया। ऐसी जगहों पर जानवरों को क़ुरबान करने और बख़ूर जलाने का इंतज़ाम जारी रहा। 44 यहसफ़त और इसराईल के बादशाह के दरमियान सुलह कायम रही।

45 बाक़ी जो कुछ यहसफ़त की हुकूमत के दौरान हुआ वह 'शाहाने-यहदाह की तारीख़' की किताब में दर्ज है। उस की कामयाबियाँ और जंगें सब उसमें बयान की गई हैं। 46 जो जिस्मफ़रोश मर्द और औरतें आसा के ज़माने में बच गए थे उन्हें यहसफ़त ने मुल्क में से मिटा दिया। 47 उस वक़्त मुल्के-अदोम का बादशाह न था बल्कि यहदाह का एक अफ़सर उस पर हुक्मरानी करता था।

48 यहसफ़त ने बहरी जहाज़ों का बेड़ा बनवाया ताकि वह तियारत करके ओफ़ीर से सोना लाएँ। लेकिन वह कभी इस्तेमाल न हुए बल्कि अपनी ही बंदरगाह अस्थून-जाबर में तबाह हो गए। 49 तबाह होने से पहले इसराईल के बादशाह अख़ज़ियाह बिन अखियब ने यहसफ़त से दरखास्त की थी कि इसराईल के कुछ लोग जहाज़ों पर साथ चलें। लेकिन यहसफ़त ने इनकार किया था।

50 जब यहसफ़त मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के हिस्से में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया। फिर उसका बेटा यह्राम तख़्तनशीन हुआ।

इसराईल का बादशाह अख़ज़ियाह

51 अखियब का बेटा अख़ज़ियाह यहदाह के बादशाह यहसफ़त की हुकूमत के 17वें साल में इसराईल का बादशाह बना। वह दो साल तक इसराईल पर हुक्मरान रहा। सामरिया उसका दास्त-हुकूमत था। 52 जो कुछ उसने किया वह रब को नापसंद था, क्योंकि वह अपने माँ-बाप और यरूबियाम बिन नबात के नमूने पर चलता रहा, उसी यरूबियाम के नमूने पर जिसने इसराईल को गुनाह करने पर उकसाया था। 53 अपने बाप की तरह बाल देवता की ख़िदमत और पूजा करने से उसने रब, इसराईल के ख़ुदा को तैश दिलाया।

2 सलातीन

अखज़ियाह के लिए इलियास का पैगाम

1 अखियब की मौत के बाद मोआब का मुल्क बागी होकर इसराईल के ताबे न रहा।

2 सामरिया के शाही महल के बालाखाने की एक दीवार में जंगला लगा था। एक दिन अखज़ियाह बादशाह जंगले के साथ लग गया तो वह टूट गया और बादशाह ज़मीन पर गिरकर बहुत ज़ख्मी हुआ। उसने कासिदों को फिलिस्ती शहर अकरून भेजकर कहा, “जाकर अकरून के देवता बाल-ज़बूब से पता करें कि मेरी सेहत बहाल हो जाएगी कि नहीं।” 3 तब रब के फ़रिश्ते ने इलियास तिशबी को हुक्म दिया, “उठ, सामरिया के बादशाह के कासिदों से मिलने जा। उनसे पूछ, ‘आप दरियाफ़्त करने के लिए अकरून के देवता बाल-ज़बूब के पास क्यों जा रहे हैं? क्या इसराईल में कोई ख़ुदा नहीं है?’ 4 चुनौचे रब फ़रमाता है कि ऐ अखज़ियाह, जिस बिस्तर पर तू पड़ा है उससे तू कभी नहीं उठने का। तू यक़ीनन मर जाएगा’।”

इलियास जाकर कासिदों से मिला। 5 उसका पैगाम सुनकर कासिद बादशाह के पास वापस गए। उसने पूछा, “आप इतनी जल्दी वापस क्यों आए?” 6 उन्होंने जवाब दिया, “एक आदमी हमसे मिलने आया जिसने हमें आपके पास वापस भेजकर आपको यह ख़बर पहुँचाने को कहा, ‘रब फ़रमाता है कि तू अपने बारे में दरियाफ़्त करने के लिए अपने बंदों को अकरून के देवता बाल-ज़बूब के पास क्यों भेज रहा है? क्या इसराईल में कोई ख़ुदा नहीं है?’ चूँकि तूने यह किया है इसलिए जिस बिस्तर पर तू पड़ा है उससे तू कभी नहीं उठने का। तू यक़ीनन मर जाएगा’।”

7 अखज़ियाह ने पूछा, “यह किस क्रिस्म का आदमी था जिसने आपसे मिलकर आपको यह बात बताई?” 8 उन्होंने जवाब दिया, “उसके लंबे बाल थे, और कमर में चमड़े की पेटी बँधी हुई थी।” बादशाह बोल उठा, “यह तो इलियास तिशबी था!”

आसमान से आग

9 फ़ौरन उसने एक अफ़सर को 50 फ़ौजियों समेत इलियास के पास भेज दिया। जब फ़ौजी इलियास के पास पहुँचे तो वह एक पहाड़ी की चोटी पर बैठा था। अफ़सर बोला, “ऐ मर्दे-ख़ुदा, बादशाह कहते हैं कि नीचे उतर आएँ!” 10 इलियास ने जवाब दिया, “अगर मैं मर्दे-ख़ुदा हूँ तो आसमान से आग नाज़िल होकर आप और आपके 50 फ़ौजियों को भस्म कर दे।” फ़ौरन आसमान से आग नाज़िल हुई और अफ़सर को उसके लोगों समेत भस्म कर दिया। 11 बादशाह ने एक और अफ़सर को इलियास के पास भेज दिया। उसके साथ भी 50 फ़ौजी थे। उसके पास पहुँचकर अफ़सर बोला, “ऐ मर्दे-ख़ुदा, बादशाह कहते हैं कि फ़ौरन उतर आएँ!” 12 इलियास ने दुबारा पुकारा, “अगर मैं मर्दे-ख़ुदा हूँ तो आसमान से आग नाज़िल होकर आप और आपके 50 फ़ौजियों को भस्म कर दे।” फ़ौरन आसमान से अल्लाह की आग नाज़िल हुई और अफ़सर को उसके 50 फ़ौजियों समेत भस्म कर दिया।

13 फिर बादशाह ने तीसरी बार एक अफ़सर को 50 फ़ौजियों के साथ इलियास के पास भेज दिया। लेकिन यह अफ़सर इलियास के पास ऊपर चढ़ आया और उसके सामने घुटने टेककर इलतमास करने लगा, “ऐ मर्दे-ख़ुदा, मेरी और अपने इन 50 ख़ादिमों की जानों की क़दर करें। 14 देखें, आग ने आसमान से नाज़िल होकर पहले दो अफ़सरों को उनके आदमियों समेत भस्म कर दिया है। लेकिन बराहे-क़रम हमारे साथ ऐसा न करें। मेरी जान की क़दर करें।”

15 तब रब के फ़रिश्ते ने इलियास से कहा, “इससे मत डरना बल्कि इसके साथ उतर जा!” चुनौचे इलियास उठा और अफ़सर के साथ उतरकर बादशाह के पास गया। 16 उसने बादशाह से कहा, “रब फ़रमाता है, ‘तूने अपने कासिदों को अकरून के देवता बाल-ज़बूब से दरियाफ़्त करने के लिए क्यों भेजा? क्या इसराईल में कोई ख़ुदा नहीं है?’ चूँकि तूने यह किया है इसलिए जिस बिस्तर पर तू पड़ा है उससे तू कभी नहीं उठने का। तू यक़ीनन मर जाएगा’।”

अखज़ियाह की मौत

17 वैसा ही हुआ जैसा रब ने इलियास की मारिफ़त फ़रमाया था, अखज़ियाह मर गया। चूँकि उसका बेटा नहीं था इसलिए उसका भाई यह्राम यहदाह के बादशाह यूराम बिन यहसफ़त की हुक्मत के दूसरे साल में तख़्तनशीन हुआ। 18 बाक़ी जो कुछ अखज़ियाह की हुक्मत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह ‘शाहाने-इसराईल की तारीख़’ की किताब में बयान किया गया है।

2

इलियास को आसमान पर उठा लिया जाता है

1 फिर वह दिन आया जब रब ने इलियास को आँधी में आसमान पर उठा लिया। उस दिन इलियास और इलीशा जिलजाल शहर से रवाना होकर सफ़र कर रहे थे। 2 रास्ते में इलियास इलीशा से कहने लगा, “यहीं ठहर जाएँ, क्योंकि रब ने मुझे बैतेल भेजा है।” लेकिन इलीशा ने इनकार किया, “रब और आपकी हयात की क़सम, मैं आपको नहीं छोड़ूँगा।”

चुनौचे दोनों चलते चलते बैतेल पहुँच गए। ³ नबियों का जो गुरोह वहाँ रहता था वह शहर से निकलकर उनसे मिलने आया। इलीशा से मुखातिब होकर उन्होंने पूछा, “क्या आपको मालूम है कि आज रब आपके आक्रा को आपके पास से उठा ले जाएगा?” इलीशा ने जवाब दिया, “जी, मुझे पता है। खामोश!” ⁴ दुबारा इलियास अपने साथी से कहने लगा, “इलीशा, यहीं ठहर जाँ, क्योंकि रब ने मुझे यरीह भेजा है।” इलीशा ने जवाब दिया, “रब और आपकी हयात की कसम, मैं आपको नहीं छोड़ूँगा।”

चुनौचे दोनों चलते चलते यरीह पहुँच गए। ⁵ नबियों का जो गुरोह वहाँ रहता था उसने भी इलीशा के पास आकर उससे पूछा, “क्या आपको मालूम है कि आज रब आपके आक्रा को आपके पास से उठा ले जाएगा?” इलीशा ने जवाब दिया, “जी, मुझे पता है। खामोश!”

⁶ इलियास तीसरी बार इलीशा से कहने लगा, “यहीं ठहर जाँ, क्योंकि रब ने मुझे दरियाए-यरदन के पास भेजा है।” इलीशा ने जवाब दिया, “रब और आपकी हयात की कसम, मैं आपको नहीं छोड़ूँगा।”

चुनौचे दोनों आगे बढ़े। ⁷ पचास नबी भी उनके साथ चल पड़े। जब इलियास और इलीशा दरियाए-यरदन के किनारे पर पहुँचे तो दूसरे उनसे कुछ दूर खड़े हो गए। ⁸ इलियास ने अपनी चादर उतारकर उसे लपेट लिया और उसके साथ पानी पर मारा। पानी तकसीम हुआ, और दोनों आदमी ख़ुशक ज़मीन पर चलते हुए दरिया में से गुज़र गए। ⁹ दूसरे किनारे पर पहुँचकर इलियास ने इलीशा से कहा, “मेरे आपके पास से उठा लिए जाने से पहले मुझे बताएँ कि आपके लिए क्या करूँ?” इलीशा ने जवाब दिया, “मुझे आपकी रूह का दुगना हिस्सा मीरास में मिले।” * ¹⁰ इलियास बोला, “जो दरखास्त आपने की है उसे पूरा करना मुश्किल है। अगर आप मुझे उस वक़्त देख सकेंगे जब मुझे आपके पास से उठा लिया जाएगा तो मतलब होगा कि आपकी दरखास्त पूरी हो गई है, वरना नहीं।” ¹¹ दोनों आपस में बातें करते हुए चल रहे थे कि अचानक एक आतिशी रथ नज़र आया जिसे आतिशी घोंडे खींच रहे थे। रथ ने दोनों को अलग कर दिया, और इलियास को आँधी में आसमान पर उठा लिया गया। ¹² यह देखकर इलीशा चिल्ला उठा, “हाय मेरे बाप, मेरे बाप! इसराईल के रथ और उसके घोंडे!”

इलियास इलीशा की नज़रों से ओझल हुआ तो इलीशा ने गम के मारे अपने कपड़ों को फाड़ डाला। ¹³ इलियास की चादर ज़मीन पर गिर गई थी। इलीशा उसे उठाकर दरियाए-यरदन के पास वापस चला। ¹⁴ चादर को पानी पर मारकर वह बोला, “रब और इलियास का खुदा कहाँ है?” पानी तकसीम हुआ और वह बीच में से गुज़र गया।

¹⁵ यरीह से आए नबी अब तक दरिया के मगरिबी किनारे पर खड़े थे। जब उन्होंने इलीशा को अपने पास आते हुए देखा तो पुकार उठे, “इलियास की रूह इलीशा पर ठहरी हुई है!” वह उससे मिलने गए और औंधे मुँह उसके सामने झुककर ¹⁶ बोले, “हमारे 50 ताकतवर आदमी ख़िदमत के लिए हाज़िर हैं। अगर इजाज़त हो तो हम उन्हें भेज देंगे ताकि वह आपके आक्रा को तलाश करें। हो सकता है रब के रूह ने उसे उठाकर किसी पहाड़ या वादी में रख छोड़ा हो।”

इलीशा ने मना करने की कोशिश की, “नहीं, उन्हें मत भेजना।” ¹⁷ लेकिन उन्होंने यहाँ तक इसरार किया कि आख़िरकार वह मान गया और कहा, “चलो, उन्हें भेज दें।” उन्होंने 50 आदमियों को भेज दिया जो तीन दिन तक इलियास का खोज लगाते रहे। लेकिन वह कहीं नज़र न आया। ¹⁸ हिम्मत हारकर वह यरीह वापस आए जहाँ इलीशा ठहरा हुआ था। उसने कहा, “क्या मैंने नहीं कहा था कि न जाएँ?”

इलीशा के मोजिज़े

¹⁹ एक दिन यरीह के आदमी इलीशा के पास आकर शिकायत करने लगे, “हमारे आक्रा, आप खुद देख सकते हैं कि इस शहर में अच्छा गुज़ारा होता है। लेकिन पानी ख़राब है, और नतीजे में बहुत दफ़ा बच्चे माँ के पेट में ही मर जाते हैं।”

²⁰ इलीशा ने हुक्म दिया, “एक ग़ैरइस्तेमालशुदा बरतन में नमक डालकर उसे मेरे पास ले आएँ।” जब बरतन उसके पास लाया गया ²¹ तो वह उसे लेकर शहर से निकला और चश्मे के पास गया। वहाँ उसने नमक को पानी में डाल दिया और साथ साथ कहा, “रब फ़रमाता है कि मैंने इस पानी को बहाल कर दिया है। अब से यह कभी मौत या बच्चों के ज़ाया होने का बाइस नहीं बनेगा।”

²² उसी लमहे पानी बहाल हो गया। इलीशा के कहने के मुताबिक यह आज तक ठीक रहा है।

²³ यरीह से इलीशा बैतेल को वापस चला गया। जब वह रास्ते पर चलते हुए शहर से गुज़र रहा था तो कुछ लड़के शहर से निकल आए और उसका मज़ाक उड़ाकर चिल्लाने लगे, “ओए गंजे, इधर आ! ओए गंजे, इधर आ!” ²⁴ इलीशा मुड़ गया और उन पर नज़र डालकर रब के नाम में उन पर लानत भेजी। तब दो रीछनियों जंगल से निकलकर लड़कों पर टूट पड़ीं और कुल 42 लड़कों को फाड़ डाला।

²⁵ इलियास आगे निकला और चलते चलते करमिल पहाड़ के पास आया। वहाँ से वापस आकर सामरिया पहुँच गया।

3

इसराईल का बादशाह यूराम

¹ अखियब का बेटा यूराम यहूदाह के बादशाह यहूसफ़त के 18वें साल में इसराईल का बादशाह बना। उस की हुक्मत का दौरानिया 12 साल था और उसका दास्त-हुक्मत सामरिया रहा। ² उसका चाल-चलन रब को नापसंद था, अगरचे वह अपने माँ-बाप की निसबत कुछ बेहतर था। क्योंकि उसने बाल देवता का वह सत्न दूर कर दिया जो उसके बाप ने बनवाया था। ³ तो भी वह यरूबियाम बिन नबात के उन गुनाहों के साथ लिपटा रहा जो करने पर यरूबियाम ने इसराईल को उकसाया था। वह कभी उनसे दूर न हुआ।

* **2:9** इलीशा पहलौठे का हिस्सा माँग रहा है जो दूसरे वारिसों की निसबत दुगना होता है।

मोआब के खिलाफ जंग

4 मोआब का बादशाह मेसा भेड़ें रखता था, और सालाना उसे भेड़ के एक लाख बच्चे और एक लाख मेंढे उनकी ऊन समेत इसराईल के बादशाह को खराज के तौर पर अदा करने पड़ते थे। 5 लेकिन जब अखियब फ़ौत हुआ तो मोआब का बादशाह ताबे न रहा।

6 तब यूराम बादशाह ने सामरिया से निकलकर तमाम इसराईलियों की भरती की। 7 साथ साथ उसने यहूदाह के बादशाह यहसफ़त को इत्तला दी, “मोआब का बादशाह सरकश हो गया है। क्या आप मेरे साथ उससे लड़ने जाएंगे?” यहसफ़त ने जवाब भेजा, “जी, मैं आपके साथ जाऊँगा। हम तो भाई हैं। मेरी कौम को अपनी कौम और मेरे घोड़ों को अपने घोड़े समझें। 8 हम किस रास्ते से जाएँ?” यूराम ने जवाब दिया, “हम अदोम के रेगिस्तान से होकर जाएंगे।”

9 चुनौचे इसराईल का बादशाह यहूदाह के बादशाह के साथ मिलकर रवाना हुआ। मुल्के-अदोम का बादशाह भी साथ था। अपने मनसूबे के मुताबिक उन्होंने रेगिस्तान का रास्ता इख्तियार किया। लेकिन चूँकि वह सीधे नहीं बल्कि मुतबादिल रास्ते से होकर गए इसलिए सात दिन के सफ़र के बाद उनके पास पानी न रहा, न उनके लिए, न जानवरों के लिए।

10 इसराईल का बादशाह बोला, “हाय, रब हमें इसलिए यहाँ बुला लाया है कि हम तीनों बादशाहों को मोआब के हवाले करे।”

11 लेकिन यहसफ़त ने सवाल किया, “क्या यहाँ रब का कोई नबी नहीं है जिसकी मारिफ़त हम रब की मरज़ी जान सकें?” इसराईल के बादशाह के किसी अफ़सर ने जवाब दिया, “एक तो है, इलीशा बिन साफ़त जो इलियास का करीबी शागिर्द था, वह उसके हाथों पर पानी डालने की खिदमत अंजाम दिया करता था।” 12 यहसफ़त बोला, “रब का कलाम उसके पास है।” तीनों बादशाह इलीशा के पास गए।

13 लेकिन इलीशा ने इसराईल के बादशाह से कहा, “मेरा आपके साथ क्या वास्ता? अगर कोई बात हो तो अपने माँ-बाप के नबियों के पास जाएँ।” इसराईल के बादशाह ने जवाब दिया, “नहीं, हम इसलिए यहाँ आए हैं कि रब ही हम तीनों को यहाँ बुला लाया है ताकि हमें मोआब के हवाले करे।” 14 इलीशा ने कहा, “रब्बुल-अफ़वाज की हयात की कसम जिसकी खिदमत मैं करता हूँ, अगर यहूदाह का बादशाह यहाँ मौजूद न होता तो फिर मैं आपका लिहाज़ न करता बल्कि आपकी तरफ़ देखता भी न। लेकिन मैं यहसफ़त का खयाल करता हूँ, 15 इसलिए किसी को बुलाएँ जो सरोद बजा सके।”

कोई सरोद बजाने लगा तो रब का हाथ इलीशा पर आ ठहरा, 16 और उसने एलान किया, “रब फ़रमाता है कि इस वादी में हर तरफ़ गढ़ों की खुदाई करो। 17 गो तुम न हवा और न बारिश देखोगे तो भी वादी पानी से भर जाएगी। पानी इतना होगा कि तुम, तुम्हारे रेवड़ और बाक़ी तमाम जानवर पी सकेंगे। 18 लेकिन यह रब के नज़दीक कुछ नहीं है, वह मोआब को भी तुम्हारे हवाले कर देगा। 19 तुम तमाम किलाबंद और मरकज़ी शहरों पर फ़तह पाओगे। तुम मुल्क के तमाम अच्छे दरख्तों को काटकर तमाम चशमों को बंद करोगे और तमाम अच्छे खेतों को पत्थरों से खराब करोगे।”

20 अगली सुबह तकरीबन उस वक़्त जब गल्ला की नज़र पेश की जाती है मुल्के-अदोम की तरफ़ से सैलाब आया, और नतीजे में वादी के तमाम गढ़े पानी से भर गए।

मोआब पर फ़तह

21 इतने में तमाम मोआबियों को पता चल गया था कि तीनों बादशाह हमसे लड़ने आ रहे हैं। छोटों से लेकर बड़ों तक जो भी अपनी तलवार चला सकता था उसे बुलाकर सरहद की तरफ़ भेजा गया। 22 सुबह-सवेरे जब मोआबी लड़ने के लिए तैयार हुए तो तुलू-आफ़ताब की सुर्ख़ रौशनी में वादी का पानी खून की तरह सुर्ख़ नज़र आया। 23 मोआबी चिल्लाने लगे, “यह तो खून है! तीनों बादशाहों ने आपस में लड़कर एक दूसरे को मार दिया होगा। आओ, हम उनको लूट लें!”

24 लेकिन जब वह इसराईली लश्करगाह के करीब पहुँचे तो इसराईली उन पर टूट पड़े और उन्हें मारकर भगा दिया। फिर उन्होंने उनके मुल्क में दाख़िल होकर मोआब को शिकस्त दी। 25 चलते चलते उन्होंने तमाम शहरों को बरबाद किया। जब भी वह किसी अच्छे खेत से गुज़रे तो हर सिपाही ने एक पत्थर उस पर फेंक दिया। यों तमाम खेत पत्थरों से भर गए। इसराईलियों ने तमाम चशमों को भी बंद कर दिया और हर अच्छे दरख़्त को काट डाला।

आखिर में सिर्फ़ क़ीर-हरासत कायम रहा। लेकिन फ़लाखन चलानेवाले उसका मुहासरा करके उस पर हमला करने लगे। 26 जब मोआब के बादशाह ने जान लिया कि मैं शिकस्त खा रहा हूँ तो उसने तलवारों से सैस 700 आदमियों को अपने साथ लिया और अदोम के बादशाह के करीब दुश्मन का मुहासरा तोड़कर निकलने की कोशिश की, लेकिन बेफ़ायदा। 27 फिर उसने अपने पहलौठे को जिसे उसके बाद बादशाह बनना था लेकर फ़सील पर अपने देवता के लिए क़ुरबान करके जला दिया। तब इसराईलियों पर बड़ा ग़ज़ब नाज़िल हुआ, और वह शहर को छोड़कर अपने मुल्क वापस चले गए।

4

इलीशा और बेवा का तेल

1 एक दिन एक बेवा इलीशा के पास आई जिसका शौहर जब ज़िंदा था नबियों के ग़ुरोह में शामिल था। बेवा चीखती-चिल्लाती इलीशा से मुखातिब हुई, “आप जानते हैं कि मेरा शौहर जो आपकी खिदमत करता था अल्लाह का ख़ौफ़ मानता था। अब जब वह फ़ौत हो गया है तो उसका एक साहकार आकर धमकी दे रहा है कि अगर क़र्ज़ अदा न किया गया तो मैं तेरे दो बेटों को गुलाम बनाकर ले जाऊँगा।”

2 इलीशा ने पूछा, “मैं किस तरह आपकी मदद करूँ? बताएँ, घर में आपके पास क्या है?” बेवा ने जवाब दिया, “कुछ नहीं, सिर्फ जैतून के तेल का छोटा-सा बरतन।” 3 इलीशा बोला, “जाएँ, अपनी तमाम पड़ोसनों से खाली बरतन माँगें। लेकिन ध्यान रखें कि थोड़े बरतन न हों! 4 फिर अपने बेटों के साथ घर में जाकर दरवाजे पर कुंडी लगाएँ। तेल का अपना बरतन लेकर तमाम खाली बरतनों में तेल उंडेलती जाएँ। जब एक भर जाए तो उसे एक तरफ रखकर दूसरे को भरना शुरू करें।”

5 बेवा ने जाकर ऐसा ही किया। वह अपने बेटों के साथ घर में गई और दरवाजे पर कुंडी लगाई। बेटे उसे खाली बरतन देते गए और माँ उनमें तेल उंडेलती गई। 6 बरतनों में तेल डलते डलते सब लबालब भर गए। माँ बोली, “मुझे एक और बरतन दे दो” तो एक लड़के ने जवाब दिया, “और कोई नहीं है।” तब तेल का सिलसिला रुक गया।

7 जब बेवा ने मर्दे-खुदा के पास जाकर उसे इतला दी तो इलीशा ने कहा, “अब जाकर तेल को बेच दें और कर्ज के पैसे अदा करें। जो बच जाए उसे आप और आपके बेटे अपनी ज़रूरियात पूरी करने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं।”

इलीशा शूनीम में लड़के को ज़िंदा कर देता है

8 एक दिन इलीशा शूनीम गया। वहाँ एक अमीर औरत रहती थी जिसने ज़बरदस्ती उसे अपने घर बिठाकर खाना खिलाया। बाद में जब कभी इलीशा वहाँ से गुज़रता तो वह खाने के लिए उस औरत के घर ठहर जाता। 9 एक दिन औरत ने अपने शौहर से बात की, “मैंने जान लिया है कि जो आदमी हमारे हाँ आता रहता है वह अल्लाह का मुक़द्दस पैग़म्बर है। 10 क्यों न हम उसके लिए छत पर छोटा-सा कमरा बनाकर उसमें चारपाई, मेज़, कुरसी और शमादान रखें। फिर जब भी वह हमारे पास आए तो वह उसमें ठहर सकता है।”

11 एक दिन जब इलीशा आया तो वह अपने कमरे में जाकर बिस्तर पर लेट गया। 12 उसने अपने नौकर जैहाज़ी से कहा, “शूनीमी मेज़बान को बुला लाओ।” जब वह आकर उसके सामने खड़ी हुई 13 तो इलीशा ने जैहाज़ी से कहा, “उसे बता देना कि आपने हमारे लिए बहुत तकलीफ़ उठाई है। अब हम आपके लिए क्या कुछ करें? क्या हम बादशाह या फ़ौज के कमाँडर से बात करके आपकी सिफ़ारिश करें?” औरत ने जवाब दिया, “नहीं, इसकी ज़रूरत नहीं। मैं अपने ही लोगों के दरमियान रहती हूँ।”

14 बाद में इलीशा ने जैहाज़ी से बात की, “हम उसके लिए क्या करें?” जैहाज़ी ने जवाब दिया, “एक बात तो है। उसका कोई बेटा नहीं, और उसका शौहर काफ़ी बूढ़ा है।” 15 इलीशा बोला, “उसे वापस बुलाओ।” औरत वापस आकर दरवाजे में खड़ी हो गई। इलीशा ने उससे कहा, 16 “अगले साल इसी वक़्त आपका अपना बेटा आपकी गोद में होगा।” शूनीमी औरत ने एतराज़ किया, “नहीं नहीं, मेरे आका। मर्दे-खुदा ऐसी बातें करके अपनी खादिमा को झूटी तसल्ली मत दें।”

17 लेकिन ऐसा ही हुआ। कुछ देर के बाद औरत का पॉव भारी हो गया, और ऐन एक साल के बाद उसके हाँ बेटा पैदा हुआ। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा इलीशा ने कहा था। 18 बच्चा परवान चढ़ा, और एक दिन वह घर से निकलकर खेत में अपने बाप के पास गया जो फ़सल की कटाई करनेवालों के साथ काम कर रहा था। 19 अचानक लड़का चीखने लगा, “हाय मेरा सर, हाय मेरा सर!” बाप ने किसी मुलाज़िम को बताया, “लड़के को उठाकर माँ के पास ले जाओ।” 20 नौकर उसे उठाकर ले गया, और वह अपनी माँ की गोद में बैठा रहा। लेकिन दोपहर को वह मर गया।

21 माँ लड़के की लाश को लेकर छत पर चढ़ गई। मर्दे-खुदा के कमरे में जाकर उसने उसे उसके बिस्तर पर लिटा दिया। फिर दरवाजे को बंद करके वह बाहर निकली 22 और अपने शौहर को बुलवाकर कहा, “ज़रा एक नौकर और एक गध़ी मेरे पास भेज दें। मुझे फ़ौरन मर्दे-खुदा के पास जाना है। मैं जल्द ही वापस आ जाऊँगी।” 23 शौहर ने हैरान होकर पूछा, “आज उसके पास क्यों जाना है? न तो नए चाँद की ईद है, न सबत का दिन।” बीबी ने कहा, “सब ख़ैरियत है।” 24 गध़ी पर ज़ीन कसकर उसने नौकर को हुक्म दिया, “गध़ी को तेज़ चला ताकि हम जल्दी पहुँच जाएँ। जब मैं कहूँगी तब ही रुकना है, वरना नहीं।”

25 चलते चलते वह करमिल पहाड़ के पास पहुँच गए जहाँ मर्दे-खुदा इलीशा था। उसे दूर से देखकर इलीशा जैहाज़ी से कहने लगा, “देखो, शूनीम की औरत आ रही है! 26 भागकर उसके पास जाओ और पूछो कि क्या आप, आपका शौहर और बच्चा ठीक हैं?” जैहाज़ी ने जाकर उसका हाल पूछा तो औरत ने जवाब दिया, “जी, सब ठीक है।” 27 लेकिन ज्योंही वह पहाड़ के पास पहुँच गई तो इलीशा के सामने गिरकर उसके पाँवों से चिमट गई। यह देखकर जैहाज़ी उसे हटाने के लिए करीब आया, लेकिन मर्दे-खुदा बोला, “छोड़ दो! कोई बात इसे बहुत तकलीफ़ दे रही है, लेकिन अब न वज़ह मुझसे छुपाए रखी है। उसने मुझे इसके बारे में कुछ नहीं बताया।”

28 फिर शूनीमी औरत बोल उठी, “मेरे आका, क्या मैंने आपसे बेटे की दरखास्त की थी? क्या मैंने नहीं कहा था कि मुझे ग़लत उम्मीद न दिलाएँ?” 29 तब इलीशा ने नौकर को हुक्म दिया, “जैहाज़ी, सफ़र के लिए कमरबस्ता होकर मेरी लाठी को ले लो और भागकर शूनीम पहुँचो। अगर रास्ते में किसी से मिलो तो उसे सलाम तक न करना, और अगर कोई सलाम कहे तो उसे जवाब मत देना। जब वहाँ पहुँचोगे तो मेरी लाठी लड़के के चेहरे पर रख देना।” 30 लेकिन माँ ने एतराज़ किया, “रब की और आपकी हयात की कसम, आपके बग़ैर मैं घर वापस नहीं जाऊँगी।”

चुनाँचे इलीशा भी उठा और औरत के पीछे पीछे चल पड़ा। 31 जैहाज़ी भाग भागकर उनसे पहले पहुँच गया और लाठी को लड़के के चेहरे पर रख दिया। लेकिन कुछ न हुआ। न कोई आवाज़ सुनाई दी, न कोई हरकत हुई। वह इलीशा के पास वापस आया और बोला, “लड़का अभी तक मुरदा ही है।”

32 जब इलीशा पहुँच गया तो लड़का अब तक मरदा हालत में उसके बिस्तर पर पड़ा था। 33 वह अकेला ही अंदर गया और दरवाजे पर कुंडी लगाकर रब से दुआ करने लगा। 34 फिर वह लड़के पर लेट गया, यों कि उसका मुँह बच्चे के मुँह से, उस की आँखें बच्चे की आँखों से और उसके हाथ बच्चे के हाथों से लग गए। और ज्योंही वह लड़के पर झुक गया तो उसका जिस्म गरम होने लगा। 35 इलीशा खड़ा हुआ और घर में इधर उधर फिरने लगा। फिर वह एक और मरतबा लड़के पर लेट गया। इस दफा लड़के ने सात बार छींकें मारकर अपनी आँखें खोल दीं।

36 इलीशा ने जैहाज़ी को आवाज़ देकर कहा, “शूनीमी औरत को बुला लाओ।” वह कमरे में दाखिल हुई तो इलीशा बोला, “आएँ, अपने बेटे को उठाकर ले जाएँ।” 37 वह आई और इलीशा के सामने औंधे मुँह झुक गई, फिर अपने बेटे को उठाकर कमरे से बाहर चली गई।

इलीशा ज़हरीले सालन को खाने के काबिल बना देता है

38 इलीशा जिलजाल को लौट आया। उन दिनों में मुल्क काल की गिरिफ्त में था। एक दिन जब नबियों का गुरोह उसके सामने बैठा था तो उसने अपने नौकर को हुक्म दिया, “बड़ी देग लेकर नबियों के लिए कुछ पका लो।”

39 एक आदमी बाहर निकलकर खुले मैदान में कटू ढूँढ़ने गया। कहीं एक बेल नज़र आई जिस पर कटू जैसी कोई सब्ज़ी लगी थी। इन कटुओं से अपनी चादर भरकर वह वापस आया और उन्हें काट काटकर देग में डाल दिया, हालाँकि किसी को भी मालूम नहीं था कि क्या चीज़ है।

40 सालन पककर नबियों में तकसीम हुआ। लेकिन उसे चखते ही वह चीखने लगे, “मर्दे-खुदा, सालन में ज़हर है! इसे खाकर बंदा मर जाएगा।” वह उसे बिल्कुल न खा सके। 41 इलीशा ने हुक्म दिया, “मुझे कुछ मैदा लाकर दें।” फिर उसे देग में डालकर बोला, “अब इसे लोगों को खिला दें।” अब खाना खाने के काबिल था और उन्हें नुकसान न पहुँचा सका।

100 आदमियों के लिए खाना

42 एक और मौके पर किसी आदमी ने बाल-सलीसा से आकर मर्दे-खुदा को नई फसल के जौ की 20 रोटियाँ और कुछ अनाज दे दिया। इलीशा ने जैहाज़ी को हुक्म दिया, “इसे लोगों को खिला दो।”

43 जैहाज़ी हैरान होकर बोला, “यह कैसे मुमकिन है? यह तो 100 आदमियों के लिए काफी नहीं है।” लेकिन इलीशा ने इसरार किया, “इसे लोगों में तकसीम कर दो, क्योंकि रब फ़रमाता है कि वह जी भरकर खाएँगे बल्कि कुछ बच भी जाएगा।”

44 और ऐसा ही हुआ। जब नौकर ने आदमियों में खाना तकसीम किया तो उन्होंने जी भरकर खाया, बल्कि कुछ खाना बच भी गया। वैसा ही हुआ जैसा रब ने फ़रमाया था।

5

नामान की शफ़ा

1 उस वक़्त शाम की फ़ौज़ का कमाँडर नामान था। बादशाह उस की बहुत क़दर करता था, और दूसरे भी उस की ख़ास इज़्ज़त करते थे, क्योंकि रब ने उस की मारिफ़त शाम के दुश्मनों पर फ़तह बख़्शी थी। लेकिन ज़बरदस्त फ़ौज़ी होने के बावजूद वह संगीन ज़िल्दी बीमारी का मरीज़ था। 2 नामान के घर में एक इसराईली लड़की रहती थी। किसी वक़्त जब शाम के फ़ौज़ियों ने इसराईल पर छापा मारा था तो वह उसे गिरिफ़्तार करके यहाँ ले आए थे। अब लड़की नामान की बीवी की ख़िदमत करती थी। 3 एक दिन उसने अपनी मालिकन से बात की, “काश मेरा आक्रा उस नबी से मिलने जाता जो सामरिया में रहता है। वह उसे ज़रूर शफ़ा देता।”

4 यह सुनकर नामान ने बादशाह के पास जाकर लड़की की बात दोहराई। 5 बादशाह बोला, “ज़रूर जाएँ और उस नबी से मिलें। मैं आपके हाथ इसराईल के बादशाह को सिफ़ारिश ख़त भेज दूँगा।” चुनौचे नामान ख़ाना हुआ। उसके पास तकरीबन 340 किलोग्राम चाँदी, 68 किलोग्राम सोना और 10 क़ीमती सूट थे। 6 जो ख़त वह साथ लेकर गया उसमें लिखा था, “जो आदमी आपको यह ख़त पहुँचा रहा है वह मेरा ख़ादिम नामान है। मैंने उसे आपके पास भेजा है ताकि आप उसे उस की ज़िल्दी बीमारी से शफ़ा दें।”

7 ख़त पढ़कर यूराम ने रंजिश के मारे अपने कपड़े फाड़े और पुकारा, “इस आदमी ने मरीज़ को मेरे पास भेज दिया है ताकि मैं उसे शफ़ा दूँ! क्या मैं अल्लाह हूँ कि किसी को जान से मारूँ या उसे ज़िंदा करूँ? अब ग़ौर करें और देखें कि वह किस तरह मेरे साथ झगड़ने का मौक़ा ढूँढ़ रहा है।”

8 जब इलीशा को ख़बर मिली कि बादशाह ने घबराकर अपने कपड़े फाड़ लिए हैं तो उसने यूराम को पैग़ाम भेजा, “आपने अपने कपड़े क्यों फाड़ लिए? आदमी को मेरे पास भेज दें तो वह जान लेगा कि इसराईल में नबी है।”

9 तब नामान अपने रथ पर सवार इलीशा के घर के दरवाज़े पर पहुँच गया। 10 इलीशा ख़ुद न निकला बल्कि किसी को बाहर भेजकर इतला दी, “जाकर सात बार दरियाए-यरदन में नहा लें। फिर आपके जिस्म को शफ़ा मिलेगी और आप पाक-साफ़ हो जाएंगे।”

11 यह सुनकर नामान को गुस्सा आया और वह यह कहकर चला गया, “मैंने सोचा कि वह कम अज़ कम बाहर आकर मुझसे मिलेगा। होना यह चाहिए था कि वह मेरे सामने खड़े होकर रब अपने ख़ुदा का नाम पुकारता और अपना हाथ बीमार जगह के ऊपर हिला हिलाकर मुझे

शफा देता। ¹² क्या दमिश्क के दरिया अबाना और फरफर तमाम इसराईली दरियाओं से बेहतर नहीं हैं? अगर नहाने की ज़रूरत है तो मैं क्यों न उनमें नहाकर पाक-साफ़ हो जाऊँ?”

यों बुड़बुड़ाते हुए वह बड़े गुस्से में चला गया। ¹³ लेकिन उसके मुलाज़िमों ने उसे समझाने की कोशिश की। “हमारे आक्रा, अगर नबी आपसे किसी मुश्किल काम का तकाज़ा करता तो क्या आप वह करने के लिए तैयार न होते? अब जबकि उसने सिर्फ़ यह कहा है कि नहाकर पाक-साफ़ हो जाएँ तो आपको यह ज़रूर करना चाहिए।” ¹⁴ आखिरकार नामान मान गया और यरदन की वादी में उतर गया। दरिया पर पहुँचकर उसने सात बार उसमें डुबकी लगाई और वाकई उसका जिस्म लड़के के जिस्म जैसा सेहतमंद और पाक-साफ़ हो गया।

¹⁵ तब नामान अपने तमाम मुलाज़िमों के साथ मर्दे-खुदा के पास वापस गया। उसके सामने खड़े होकर उसने कहा, “अब मैं जान गया हूँ कि इसराईल के खुदा के सिवा पूरी दुनिया में खुदा नहीं है। ज़रा अपने खादिम से तोहफ़ा कबूल करें।” ¹⁶ लेकिन इलीशा ने इनकार किया, “रब की हयात की कसम जिसकी खिदमत मैं करता हूँ, मैं कुछ नहीं लूँगा।” नामान इसरार करता रहा, तो भी वह कुछ लेने के लिए तैयार न हुआ।

¹⁷ आखिरकार नामान मान गया। उसने कहा, “ठीक है, लेकिन मुझे ज़रा एक काम करने की इजाज़त दें। मैं यहाँ से इतनी मिट्टी अपने घर ले जाना चाहता हूँ जितनी दो खच्चर उठाकर ले जा सकते हैं। क्योंकि आइंदा मैं उस पर रब को भस्म होनेवाली और ज़बह की कुरबानियाँ चढ़ाना चाहता हूँ। अब से मैं किसी और माबूद को कुरबानियाँ पेश नहीं करूँगा।” ¹⁸ लेकिन रब मुझे एक बात के लिए मुआफ़ करे। जब मेरा बादशाह पूजा करने के लिए रिम्मोन के मंदिर में जाता है तो मेरे बाजू का सहारा लेता है। यों मुझे भी उसके साथ झुक जाना पड़ता है जब वह बुत के सामने औंधे मुँह झुक जाता है। रब मेरी यह हरकत मुआफ़ कर दे।”

¹⁹ इलीशा ने जवाब दिया, “सलामती से जाएँ।”

जैहाज़ी का लालच

नामान रवाना हुआ ²⁰ तो कुछ देर के बाद इलीशा का नौकर जैहाज़ी सोचने लगा, “मेरे आक्रा ने शाम के इस बंदे नामान पर हद से ज़्यादा नरमदिली का इज़हार किया है। चाहिए तो था कि वह उसके तोहफ़े कबूल कर लेता। रब की हयात की कसम, मैं उसके पीछे दौड़कर कुछ न कुछ उससे ले लूँगा।”

²¹ चुनौचे जैहाज़ी नामान के पीछे भागा। जब नामान ने उसे देखा तो वह रथ से उतरकर जैहाज़ी से मिलने गया और पूछा, “क्या सब ख़ैरियत है?” ²² जैहाज़ी ने जवाब दिया, “जी, सब ख़ैरियत है। मेरे आक्रा ने मुझे आपको इतला देने भेजा है कि अभी अभी नबियों के गुरोह के दो जवान इफ़राईम के पहाड़ी इलाके से मेरे पास आए हैं। मेहरबानी करके उन्हें 34 किलोग्राम चाँदी और दो क्रीमती सूट दे दें।” ²³ नामान बोला, “ज़रूर, बल्कि 68 किलोग्राम चाँदी ले लें।” इस बात पर वह बज़िद रहा। उसने 68 किलोग्राम चाँदी बोरियों में लपेट ली, दो सूट चुन लिए और सब कुछ अपने दो नौकरों को दे दिया ताकि वह सामान जैहाज़ी के आगे आगे ले चलें।

²⁴ जब वह उस पहाड़ के दामन में पहुँचे जहाँ इलीशा रहता था तो जैहाज़ी ने सामान नौकरों से लेकर अपने घर में रख छोड़ा, फिर दोनों को सख़्सत कर दिया। ²⁵ फिर वह जाकर इलीशा के सामने खड़ा हो गया। इलीशा ने पूछा, “जैहाज़ी, तुम कहाँ से आए हो?” उसने जवाब दिया, “मैं कहीं नहीं गया था।”

²⁶ लेकिन इलीशा ने एतराज़ किया, “क्या मेरी रूह तुम्हारे साथ नहीं थी जब नामान अपने रथ से उतरकर तुमसे मिलने आया? क्या आज चाँदी, कपड़े, जैतून और अंगूर के बाग, भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल, नौकर और नौकरानियाँ हासिल करने का वक़्त था? ²⁷ अब नामान की जिल्दी बीमारी हमेशा तक तुम्हें और तुम्हारी औलाद को लगी रहेगी।”

जब जैहाज़ी कमरे से निकला तो जिल्दी बीमारी उसे लग चुकी थी। वह बर्फ़ की तरह सफ़ेद हो गया था।

6

कुल्हाड़ी का लोहा पानी की सतह पर तैरता है

¹ एक दिन कुछ नबी इलीशा के पास आकर शिकायत करने लगे, “जिस तंग जगह पर हम आपके पास आकर ठहरे हैं उसमें हमारे लिए रहना मुश्किल है। ² क्यों न हम दरियाए-यरदन पर जाएँ और हर आदमी वहाँ से शहतीर ले आए ताकि हम रहने की नई जगह बना सकें।” इलीशा बोला, “ठीक है, जाएँ।” ³ किसी ने गुज़ारिश की, “बराहे-करम हमारे साथ चलें।” नबी राज़ी होकर ⁴ उनके साथ रवाना हुआ।

दरियाए-यरदन के पास पहुँचते ही वह दरख़्त काटने लगे। ⁵ काटते काटते अचानक किसी की कुल्हाड़ी का लोहा पानी में गिर गया। वह चिल्ला उठा, “हाय मेरे आक्रा! यह मेरा नहीं था, मैंने तो उसे किसी से उधार लिया था।” ⁶ इलीशा ने सवाल किया, “लोहा कहाँ पानी में गिरा?” आदमी ने उसे जगह दिखाई तो नबी ने किसी दरख़्त से शाख़ काटकर पानी में फेंक दी। अचानक लोहा पानी की सतह पर आकर तैरने लगा। ⁷ इलीशा बोला, “इसे पानी से निकाल लो!” आदमी ने अपना हाथ बढ़ाकर लोहे को पकड़ लिया।

शाम के जंगी मनसूबे इलीशा के बाइस नाकाम रहते हैं

⁸ शाम और इसराईल के दरमियान जंग थी। जब कभी बादशाह अपने अफ़सरों से मशवरा करके कहता, “हम फुल्लों फुल्लों जगह अपनी लशकरगाह लगा लेंगे” ⁹ तो फ़ौरन मर्दे-खुदा इसराईल के बादशाह को आगाह करता, “फुल्लों जगह से मत गुज़रना, क्योंकि शाम के फ़ौजी वहाँ

घात में बैठे हैं।” 10 तब इसराईल का बादशाह अपने लोगों को मजकूरा जगह पर भेजता और वहाँ से गुजरने से मुहतात रहता था। ऐसा न सिर्फ एक या दो दफा बल्कि कई मरतबा हुआ।

11 आखिरकार शाम के बादशाह ने बहुत रंजीदा होकर अपने अफसरों को बुलाया और पूछा, “क्या कोई मुझे बता सकता है कि हममें से कौन इसराईल के बादशाह का साथ देता है?” 12 किसी अफसर ने जवाब दिया, “मेरे आका और बादशाह, हममें से कोई नहीं है। मसला यह है कि इसराईल का नबी इलीशा इसराईल के बादशाह को वह बातें भी बता देता है जो आप अपने सोने के कमरे में बयान करते हैं।” 13 बादशाह ने हुक्म दिया, “जाएँ, उसका पता करें ताकि हम अपने फौजियों को भेजकर उसे पकड़ लें।”

बादशाह को इतला दी गई कि इलीशा दूतैन नामी शहर में है। 14 उसने फौरन एक बड़ी फौज रथों और घोड़ों समेत वहाँ भेज दी। उन्होंने रात के वक्त पहुँचकर शहर को घेर लिया। 15 जब इलीशा का नौकर सुबह-सवेरे जाग उठा और घर से निकला तो क्या देखता है कि पूरा शहर एक बड़ी फौज से घिरा हुआ है जिसमें रथ और घोड़े भी शामिल हैं। उसने इलीशा से कहा, “हाय मेरे आका, हम क्या करें?” 16 लेकिन इलीशा ने उसे तसल्ली दी, “डरो मत! जो हमारे साथ हैं वह उनकी निसबत कहीं ज्यादा हैं जो दुश्मन के साथ हैं।” 17 फिर उसने दुआ की, “ऐ रब, नौकर की आँखें खोल ताकि वह देख सके।” रब ने इलीशा के नौकर की आँखें खोल दीं तो उसने देखा कि पहाड़ पर इलीशा के इर्दगिर्द आतिशी घोड़े और रथ फैले हुए हैं।

18 जब दुश्मन इलीशा की तरफ बढ़ने लगा तो उसने दुआ की, “ऐ रब, इनको अंधा कर दे!” रब ने इलीशा की सुनी और उन्हें अंधा कर दिया। 19 फिर इलीशा उनके पास गया और कहा, “यह रास्ता सही नहीं। आप गलत शहर के पास पहुँच गए हैं। मेरे पीछे हो लें तो मैं आपको उस आदमी के पास पहुँचा दूँगा जिसे आप ढूँढ़ रहे हैं।” यह कहकर वह उन्हें सामरिया ले गया।

20 जब वह शहर में दाखिल हुए तो इलीशा ने दुआ की, “ऐ रब, फौजियों की आँखें खोल दे ताकि वह देख सकें।” तब रब ने उनकी आँखें खोल दीं, और उन्हें मालूम हुआ कि हम सामरिया में फँस गए हैं।

21 जब इसराईल के बादशाह ने अपने दुश्मनों को देखा तो उसने इलीशा से पूछा, “मेरे बाप, क्या मैं उन्हें मार दूँ? क्या मैं उन्हें मार दूँ?” 22 लेकिन इलीशा ने मना किया, “ऐसा मत करें। क्या आप अपने जंगी कैदियों को मार देते हैं? नहीं, उन्हें खाना खिलाएँ, पानी पिलाएँ और फिर उनके मालिक के पास वापस भेज दें।”

23 चुनौचे बादशाह ने उनके लिए बड़ी ज़ियाफत का एहतमाम किया और खाने-पीने से फ़ारिग होने पर उन्हें उनके मालिक के पास वापस भेज दिया। इसके बाद इसराईल पर शाम की तरफ से लूट-मार के छापे बंद हो गए।

सामरिया का मुहासरा

24 कुछ देर के बाद शाम का बादशाह बिन-हदद अपनी पूरी फौज जमा करके इसराईल पर चढ़ आया और सामरिया का मुहासरा किया। 25 नतीजे में शहर में शदीद काल पड़ा। आखिर में गधे का सर चाँदी के 80 सिक्कों में और कबूतर की मुट्ठी-भर बीट चाँदी के 5 सिक्कों में मिलती थी।

26 एक दिन इसराईल का बादशाह यूराम शहर की फ़सील पर सैर कर रहा था तो एक औरत ने उससे इलतमास की, “ऐ मेरे आका और बादशाह, मेरी मदद कीजिए।” 27 बादशाह ने जवाब दिया, “अगर रब आपकी मदद नहीं करता तो मैं किस तरह आपकी मदद करूँ? न मैं गाहने की जगह जाकर आपको अनाज दे सकता हूँ, न अंगूर का रस निकालने की जगह जाकर आपको रस पहुँचा सकता हूँ। 28 फिर भी मुझे बताएँ, मसला क्या है?” औरत बोली, “इस औरत ने मुझसे कहा था, ‘आएँ, आज आप अपने बेटे को कुरबान करें ताकि हम उसे खा लें, तो फिर कल हम मेरे बेटे को खा लेंगे।’ 29 चुनौचे हमने मेरे बेटे को पकाकर खा लिया। अगले दिन मैंने उससे कहा, ‘अब अपने बेटे को दे दें ताकि उसे भी खा लें।’ लेकिन उसने उसे छुपाए रखा।”

30 यह सुनकर बादशाह ने रंजिश के मोरे अपने कपड़े फाड़ डाले। चूँकि वह अभी तक फ़सील पर खड़ा था इसलिए सब लोगों को नज़र आया कि कपड़ों के नीचे वह टाट पहने हुए था। 31 उसने पुकारा, “अल्लाह मुझे सख्त सज़ा दे अगर मैं इलीशा बिन साफ़त का आज ही सर कलम न करूँ!”

32 उसने एक आदमी को इलीशा के पास भेजा और खुद भी उसके पीछे चल पड़ा। इलीशा उस वक्त घर में था, और शहर के बुजुर्ग उसके पास बैठे थे। बादशाह का कासिद अभी रास्ते में था कि इलीशा बुजुर्गों से कहने लगा, “अब ध्यान करें, इस कातिल बादशाह ने किसी को मेरा सर कलम करने के लिए भेज दिया है। उसे अंदर आने न दें बल्कि दरवाज़े पर कुंडी लगाएँ। उसके पीछे पीछे उसके मालिक के कदमों की आहट भी सुनाई दे रही है।”

33 इलीशा अभी बात कर ही रहा था कि कासिद पहुँच गया और उसके पीछे बादशाह भी। बादशाह बोला, “रब ही ने हमें इस मुसीबत में फँसा दिया है। मैं मज़ीद उस की मदद के इंतज़ार में क्यों रहूँ?”

7

1 तब इलीशा बोला, “रब का फ़रमान सुनें! रब फ़रमाता है कि कल इसी वक्त शहर के दरवाज़े पर साढ़े 5 किलोग्राम बेहतरीन मैदा और 11 किलोग्राम जौ चाँदी के एक सिक्के के लिए बिकेगा।” 2 जिस अफसर के बाजू का सहारा बादशाह लेता था वह मर्दे-खुदा की बात सुनकर

बोल उठा, “यह नामुमकिन है, खाह रब आसमान के दरीचे क्यों न खोल दे।” इलीशा ने जवाब दिया, “आप अपनी आँखों से इसका मुशाहदा करेंगे, लेकिन खुद उसमें से कुछ न खाएँगे।”

शाम के फ़ौजी फ़रार हो जाते हैं

3 शहर से बाहर दरवाज़े के करीब कोढ़ के चार मरीज़ बैठे थे। अब यह आदमी एक दूसरे से कहने लगे, “हम यहाँ बैठकर मौत का इंतज़ार क्यों करें? 4 शहर में काल है। अगर उसमें जाएँ तो भूके मर जाएंगे, लेकिन यहाँ रहने से भी कोई फ़रक नहीं पड़ता। तो क्यों न हम शाम की लशकरगाह में जाकर अपने आपको उनके हवाले करें। अगर वह हमें ज़िंदा रहने दें तो अच्छा रहेगा, और अगर वह हमें क़त्ल भी कर दें तो कोई फ़रक नहीं पड़ेगा। यहाँ रहकर भी हमें मरना ही है।”

5 शाम के धुँधलके में वह रवाना हुए। लेकिन जब लशकरगाह के किनारे तक पहुँचे तो एक भी आदमी नज़र न आया। 6 क्योंकि रब ने शाम के फ़ौजियों को रथों, घोड़ों और एक बड़ी फ़ौज का शोर सुना दिया था। वह एक दूसरे से कहने लगे, “इसराईल के बादशाह ने हिली और मिसरी बादशाहों को उजरत पर बुलाया ताकि वह हम पर हमला करें!” 7 डर के मारे वह शाम के धुँधलके में फ़रार हो गए थे। उनके ख़ैमे, घोड़े, गधे बल्कि पूरी लशकरगाह पीछे रह गई थी जबकि वह अपनी जान बचाने के लिए भाग गए थे।

8 जब कोढ़ी लशकरगाह में दाखिल हुए तो उन्होंने एक ख़ैमे में जाकर जी भरकर खाना खाया और मै पी। फिर उन्होंने सोना, चाँदी और कपड़े उठाकर कहीं छुपा दिए। वह वापस आकर किसी और ख़ैमे में गए और उसका सामान जमा करके उसे भी छुपा दिया। 9 लेकिन फिर वह आपस में कहने लगे, “जो कुछ हम कर रहे हैं ठीक नहीं। आज खुशी का दिन है, और हम यह खुशख़बरी दूसरों तक नहीं पहुँचा रहे। अगर हम सुबह तक इंतज़ार करें तो कुसूरवार ठहरेंगे। आँ, हम फ़ौरन वापस जाकर बादशाह के घराने को इतला दें।”

10 चुनौचे वह शहर के दरवाज़े के पास गए और पहरेदारों को आवाज़ देकर उन्हें सब कुछ सुनाया, “हम शाम की लशकरगाह में गए तो वहाँ न कोई दिखाई दिया, न किसी की आवाज़ सुनाई दी। घोड़े और गधे बँधे हुए थे और ख़ैमे तरतीब से खड़े थे, लेकिन आदमी एक भी मौजूद नहीं था!”

11 दरवाज़े के पहरेदारों ने आवाज़ देकर दूसरों को ख़बर पहुँचाई तो शहर के अंदर बादशाह के घराने को इतला दी गई। 12 गो रात का वक़्त था तो भी बादशाह ने उठकर अपने अफ़सरों को बुलाया और कहा, “मैं आपको बताता हूँ कि शाम के फ़ौजी क्या कर रहे हैं। वह तो ख़ूब जानते हैं कि हम भूके मर रहे हैं। अब वह अपनी लशकरगाह को छोड़कर खुले मैदान में छुप गए हैं, क्योंकि वह समझते हैं कि इसराईली ख़ाली लशकरगाह को देखकर शहर से ज़रूर निकलेंगे और फिर हम उन्हें ज़िंदा पकड़कर शहर में दाखिल हो जाएंगे।”

13 लेकिन एक अफ़सर ने मशवरा दिया, “बेहतर है कि हम चंद एक आदमियों को पाँच बचे हुए घोड़ों के साथ लशकरगाह में भेजें। अगर वह पकड़े जाएँ तो कोई बात नहीं। क्योंकि अगर वह यहाँ रहें तो फिर भी उन्हें हमारे साथ मरना ही है।”

14 चुनौचे दो रथों को घोड़ों समेत तैयार किया गया, और बादशाह ने उन्हें शाम की लशकरगाह में भेज दिया। रथवानों को उसने हुक्म दिया, “जाँ और पता करें कि क्या हुआ है।” 15 वह रवाना हुए और शाम के फ़ौजियों के पीछे पीछे चलने लगे। रास्ते में हर तरफ़ कपड़े और सामान बिखरा पड़ा था, क्योंकि फ़ौजियों ने भागते भागते सब कुछ फेंककर रास्ते में छोड़ दिया था। इसराईली रथसवार दरियाए-यरदन तक पहुँचे और फिर बादशाह के पास वापस आकर सब कुछ कह सुनाया।

16 तब सामरिया के बाशिंदे शहर से निकल आए और शाम की लशकरगाह में जाकर सब कुछ लूट लिया। यों वह कुछ पूरा हुआ जो रब ने फ़रमाया था कि साढ़े 5 किलोग्राम बेहतरीन मैदा और 11 किलोग्राम जौ चाँदी के एक सिक्के के लिए बिकेगा।

17 जिस अफ़सर के बाजू का सहारा बादशाह लेता था उसे उसने दरवाज़े की निगरानी करने के लिए भेज दिया था। लेकिन जब लोग बाहर निकले तो अफ़सर उनकी ज़द में आकर उनके पैरों तले कुचला गया। यों वैसा ही हुआ जैसा मर्दे-ख़ुदा ने उस वक़्त कहा था जब बादशाह उसके घर आया था। 18 क्योंकि इलीशा ने बादशाह को बताया था, “कल इसी वक़्त शहर के दरवाज़े पर साढ़े 5 किलोग्राम बेहतरीन मैदा और 11 किलोग्राम जौ चाँदी के एक सिक्के के लिए बिकेगा।” 19 अफ़सर ने एतराज़ किया था, “यह नामुमकिन है, खाह रब आसमान के दरीचे क्यों न खोल दे।” और मर्दे-ख़ुदा ने जवाब दिया था, “आप अपनी आँखों से इसका मुशाहदा करेंगे, लेकिन खुद उसमें से कुछ नहीं खाएँगे।”

20 अब यह पेशगोई पूरी हुई, क्योंकि बेकाबू लोगों ने उसे शहर के दरवाज़े पर पाँवों तले कुचल दिया, और वह मर गया।

8

यूराम बादशाह शूनीमी औरत की ज़मीन वापस कर देता है

1 एक दिन इलीशा ने उस औरत को जिसका बेटा उसने ज़िंदा किया था मशवरा दिया, “अपने खानदान को लेकर आरिज़ी तौर पर बैरूने-मुल्क चली जाएँ, क्योंकि रब ने हुक्म दिया है कि मुल्क में सात साल तक काल होगा।” 2 शूनीम की औरत ने मर्दे-ख़ुदा की बात मान ली। अपने खानदान को लेकर वह चली गई और सात साल फ़िलिस्ती मुल्क में रही। 3 सात साल गुज़र गए तो वह उस मुल्क से वापस आई। लेकिन किसी और ने उसके घर और ज़मीन पर कब्ज़ा कर रखा था, इसलिए वह मदद के लिए बादशाह के पास गई।

4 ऐन उस वक़्त जब वह दरबार में पहुँची तो बादशाह मर्दे-ख़ुदा इलीशा के नौकर जैहाज़ी से गुफ़्तगू कर रहा था। बादशाह ने उससे दरखास्त की थी, “मुझे वह तमाम बड़े काम सुना दो जो इलीशा ने किए हैं।” 5 और अब जब जैहाज़ी सुना रहा था कि इलीशा ने मुरदा लड़के को किस

तरह ज़िंदा कर दिया तो उस की माँ अंदर आकर बादशाह से इतना मास करने लगी, “घर और ज़मीन वापस मिलने में मेरी मदद कीजिए।” उसे देखकर जैहाज़ी ने बादशाह से कहा, “मेरे आका और बादशाह, यह वही औरत है और यह उसका वही बेटा है जिसे इलीशा ने ज़िंदा कर दिया था।” ⁶ बादशाह ने औरत से सवाल किया, “क्या यह सही है?” औरत ने तसदीक में उसे दुबारा सब कुछ सुनाया। तब उसने औरत का मामला किसी दरबारी अफसर के सुपुर्द करके हुक्म दिया, “ध्यान दें कि इसे पूरी मिलकियत वापस मिल जाए! और जितने पैसे कब्ज़ा करनेवाला औरत की गैरमौजूदगी में ज़मीन की फसलों से कमा सका वह भी औरत को दे दिए जाएँ।”

बिन-हदद की मौत की पेशगोई

⁷ एक दिन इलीशा दमिश्क आया। उस वक़्त शाम का बादशाह बिन-हदद बीमार था। जब उसे इतला मिली कि मर्दे-खुदा आया है ⁸ तो उसने अपने अफसर हज़ाएल को हुक्म दिया, “मर्दे-खुदा के लिए तोहफ़ा लेकर उसे मिलने जाएँ। वह रब से दरियाफ़्त करे कि क्या मैं बीमारी से शफ़ा पाऊँगा या नहीं?”

⁹ हज़ाएल ⁴⁰ ऊँटों पर दमिश्क की बेहतरीन पैदावार लादकर इलीशा से मिलने गया। उसके पास पहुँचकर वह उसके सामने खड़ा हुआ और कहा, “आपके बेटे शाम के बादशाह बिन-हदद ने मुझे आपके पास भेजा है। वह यह जानना चाहता है कि क्या मैं अपनी बीमारी से शफ़ा पाऊँगा या नहीं?”

¹⁰ इलीशा ने जवाब दिया, “जाएँ और उसे इतला दें, ‘आप ज़रूर शफ़ा पाएँगे।’ लेकिन रब ने मुझ पर ज़ाहिर किया है कि वह हक़ीक़त में मर जाएगा।” ¹¹ इलीशा ख़ामोश हो गया और टिकटिकी बाँधकर बड़ी देर तक उसे घूरता रहा, फिर रोने लगा। ¹² हज़ाएल ने पूछा, “मेरे आका, आप क्यों रो रहे हैं?” इलीशा ने जवाब दिया, “मुझे मालूम है कि आप इसराईलियों को कितना नुक़सान पहुँचाएँगे। आप उनकी क़िलाबंद आबादियों को आग लगाकर उनके जवानों को तलवार से क़त्ल कर देंगे, उनके छोटे बच्चों को ज़मीन पर पटख देंगे और उनकी हामिला औरतों के पेट चीर डालेंगे।” ¹³ हज़ाएल बोला, “मुझ जैसे कुत्ते की क्या हैसियत है कि इतना बड़ा काम करूँ?” इलीशा ने कहा, “रब ने मुझे दिखा दिया है कि आप शाम के बादशाह बन जाएँगे।”

¹⁴ इसके बाद हज़ाएल चला गया और अपने मालिक के पास वापस आया। बादशाह ने पूछा, “इलीशा ने आपको क्या बताया?” हज़ाएल ने जवाब दिया, “उसने मुझे यक़ीन दिलाया कि आप शफ़ा पाएँगे।” ¹⁵ लेकिन अगले दिन हज़ाएल ने कम्बल लेकर पानी में भिगो दिया और उसे बादशाह के मुँह पर रख दिया। बादशाह का साँस रुक गया और वह मर गया। फिर हज़ाएल तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह यहराम

¹⁶ यहराम बिन यहसफ़त इसराईल के बादशाह यूराम की हुक्मत के पाँचवें साल में यहूदाह का बादशाह बना। शुरू में वह अपने बाप के साथ हुक्मत करता था। ¹⁷ यहराम 32 साल की उम्र में बादशाह बना, और वह यरूशलम में रहकर 8 साल तक हुक्मत करता रहा। ¹⁸ उस की शादी इसराईल के बादशाह अख़ियब की बेटी से हुई थी, और वह इसराईल के बादशाहों और ख़ासकर अख़ियब के ख़ानदान के बुरे नमूने पर चलता रहा। उसका चाल-चलन रब को नापसंद था। ¹⁹ तो भी वह अपने ख़ादिम दाऊद की खातिर यहूदाह को तबाह नहीं करना चाहता था, क्योंकि उसने दाऊद से वादा किया था कि तेरा और तेरी औलाद का चराग़ हमेशा तक जलता रहेगा।

²⁰ यहराम की हुक्मत के दौरान अदोमियों ने बगावत की और यहूदाह की हुक्मत को रद्द करके अपना बादशाह मुक़रर किया। ²¹ तब यहराम अपने तमाम रथों को लेकर सईर के करीब आया। जब जंग छिड़ गई तो अदोमियों ने उसे और उसके रथों पर मुक़रर अफसरों को घेर लिया। रात को बादशाह घेरनेवालों की सफ़ों को तोड़ने में कामयाब हो गया, लेकिन उसके फ़ौजी उसे छोड़कर अपने अपने घर भाग गए। ²² इस वजह से मुल्के-अदोम आज तक दुबारा यहूदाह की हुक्मत के तहत नहीं आया। उसी वक़्त लिबना शहर भी सरकश होकर खुदमुखतार हो गया।

²³ बाक़ी जो कुछ यहराम की हुक्मत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह ‘शाहाने-यहूदा की तारीख़’ की किताब में बयान किया गया है। ²⁴ जब यहराम मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है ख़ानदानी कब्र में दफ़नाया गया। फिर उसका बेटा अख़ज़ियाह तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह अख़ज़ियाह

²⁵ अख़ज़ियाह बिन यहराम इसराईल के बादशाह यूराम बिन अख़ियब की हुक्मत के 12वें साल में यहूदाह का बादशाह बना। ²⁶ वह 22 साल की उम्र में तख़्तनशीन हुआ और यरूशलम में रहकर एक साल बादशाह रहा। उस की माँ अतलियाह इसराईल के बादशाह उमरी की पोती थी। ²⁷ अख़ज़ियाह भी अख़ियब के ख़ानदान के बुरे नमूने पर चल पड़ा। अख़ियब के घराने की तरह उसका चाल-चलन रब को नापसंद था। वजह यह थी कि उसका रिश्ता अख़ियब के ख़ानदान के साथ बँध गया था।

²⁸ एक दिन अख़ज़ियाह बादशाह यूराम बिन अख़ियब के साथ मिलकर रामात-जिलियाद गया ताकि शाम के बादशाह हज़ाएल से लड़े। जब जंग छिड़ गई तो यूराम शाम के फ़ौजियों के हाथों ज़ख़मी हुआ ²⁹ और मैदाने-जंग को छोड़कर यज़्रएल वापस आया ताकि ज़ख़म भर जाएँ। जब वह वहाँ ठहरा हुआ था तो यहूदाह का बादशाह अख़ज़ियाह बिन यहराम उसका हाल पूछने के लिए यज़्रएल आया।

9

इलीशा याह को मसह करता है

1 एक दिन इलीशा नबी ने नबियों के गुरोह में से एक को बुलाकर कहा, “सफर के लिए कमरबस्ता होकर रामात-जिलियाद के लिए रवाना हो जाएँ। जैतून के तेल की यह कुप्पी अपने साथ ले जाएँ।” 2 वहाँ पहुँचकर याह बिन यहसफत बिन निमसी को तलाश करें। जब उससे मुलाकात हो तो उसे उसके साथियों से अलग करके किसी अंदरूनी कमरे में ले जाएँ। 3 वहाँ कुप्पी लेकर याह के सर पर तेल उंडेल दें और कहें, ‘रब फरमाता है कि मैं तुझे तेल से मसह करके इसराईल का बादशाह बना देता हूँ।’ इसके बाद देर न करें बल्कि फौरन दरवाजे को खोलकर भाग जाएँ!”

4 चुनौचे जवान नबी रामात-जिलियाद के लिए रवाना हुआ। 5 जब वहाँ पहुँचा तो फौजी अफसर मिलकर बैठे हुए थे। वह उनके करीब गया और बोला, “मेरे पास कमाँडर के लिए पैगाम है।” याह ने सवाल किया, “हममें से किसके लिए?” नबी ने जवाब दिया, “आप ही के लिए।”

6 याह खड़ा हुआ और उसके साथ घर में गया। वहाँ नबी ने याह के सर पर तेल उंडेलकर कहा, “रब इसराईल का खुदा फरमाता है, ‘मैंने तुझे मसह करके अपनी कौम का बादशाह बना दिया है।’ 7 तुझे अपने मालिक अखियब के पूरे खानदान को हलाक करना है। यों मैं उन नबियों का इंतकाम लूँगा जो मेरी खिदमत करते हुए शहीद हो गए हैं। हाँ, मैं रब के उन तमाम खादिमों का बदला लूँगा जिन्हें ईज़बिल ने क़त्ल किया है। 8 अखियब का पूरा घराना तबाह हो जाएगा। मैं उसके खानदान के हर मर्द को हलाक कर दूँगा, खाह वह बालिग हो या बच्चा। 9 मेरा अखियब के खानदान के साथ वही सुलूक होगा जो मैंने यरूबियाम बिन नबात और बाशा बिन अखियाह के खानदानों के साथ किया। 10 जहाँ तक ईज़बिल का ताल्लुक है उसे दफनाया नहीं जाएगा बल्कि कुत्ते उसे यज़्रएल की ज़मीन पर खा जाएंगे।” यह कहकर नबी दरवाज़ा खोलकर भाग गया।

11 जब याह निकलकर अपने साथी अफसरों के पास वापस आया तो उन्होंने पूछा, “क्या सब खैरियत है? यह दीवाना आपसे क्या चाहता था?” याह बोला, “खैर, आप तो इस किस्म के लोगों को जानते हैं कि किस तरह की गप्पें हॉकते हैं।” 12 लेकिन उसके साथी इस जवाब से मुतमइन न हुए, “झूट! सही बात बताएँ।” फिर याह ने उन्हें खुलकर बात बताई, “आदमी ने कहा, ‘रब फरमाता है कि मैंने तुझे मसह करके इसराईल का बादशाह बना दिया है।’”

13 यह सुनकर अफसरों ने जल्दी जल्दी अपनी चादरों को उतारकर उसके सामने सीढ़ियों पर बिछा दिया। फिर वह नरसिंगा बजा बजाकर नारा लगाने लगे, “याह बादशाह ज़िंदाबाद!”

यूराम और अखज़ियाह का अंजाम

14 याह बिन यहसफत बिन निमसी फौरन यूराम बादशाह को तख्त से उतारने के मनसूबे बाँधने लगा। यूराम उस वक़्त पूरी इसराईली फौज समेत रामात-जिलियाद के करीब दमिश्क के बादशाह हज़ाएल से लड़ रहा था। लेकिन शहर का दिफा करते करते 15 बादशाह शाम के फौजियों के हाथों ज़खमी हो गया था और मैदाने-जंग को छोड़कर यज़्रएल वापस आया था ताकि ज़खम भर जाएँ। अब याह ने अपने साथी अफसरों से कहा, “अगर आप वाकई मेरे साथ हैं तो किसी को भी शहर से निकलने न दें, वरना ख़तरा है कि कोई यज़्रएल जाकर बादशाह को इतला दे दे।” 16 फिर वह रथ पर सवार होकर यज़्रएल चला गया जहाँ यूराम आराम कर रहा था। उस वक़्त यहदाह का बादशाह अखज़ियाह भी यूराम से मिलने के लिए यज़्रएल आया हुआ था।

17 जब यज़्रएल के बुर्ज पर खड़े पहरेदार ने याह के गोल को शहर की तरफ आते हुए देखा तो उसने बादशाह को इतला दी। यूराम ने हुक्म दिया, “एक घुड़सवार को उनकी तरफ भेजकर उनसे मालूम करें कि सब खैरियत है या नहीं।” 18 घुड़सवार शहर से निकला और याह के पास आकर कहा, “बादशाह पूछते हैं कि क्या सब खैरियत है?” याह ने जवाब दिया, “इससे आपका क्या वास्ता? आएँ, मेरे पीछे हो लें।” बुर्ज पर के पहरेदार ने बादशाह को इतला दी, “कासिद उन तक पहुँच गया है, लेकिन वह वापस नहीं आ रहा।”

19 तब बादशाह ने एक और घुड़सवार को भेज दिया। याह के पास पहुँचकर उसने भी कहा, “बादशाह पूछते हैं कि क्या सब खैरियत है?” याह ने जवाब दिया, “इससे आपका क्या वास्ता? मेरे पीछे हो लें।” 20 बुर्ज पर के पहरेदार ने यह देखकर बादशाह को इतला दी, “हमारा कासिद उन तक पहुँच गया है, लेकिन यह भी वापस नहीं आ रहा। ऐसा लगता है कि उनका राहनुमा याह बिन निमसी है, क्योंकि वह अपने रथ को दीवाने की तरह चला रहा है।”

21 यूराम ने हुक्म दिया, “मेरे रथ को तैयार करो!” फिर वह और यहदाह का बादशाह अपने अपने रथ में सवार होकर याह से मिलने के लिए शहर से निकले। उनकी मुलाकात उस बाग के पास हुई जो नबोत यज़्रएली से छीन लिया गया था। 22 याह को पहचानकर यूराम ने पूछा, “याह, क्या सब खैरियत है?” याह बोला, “खैरियत कैसे हो सकती है जब तेरी माँ ईज़बिल की बुतपरस्ती और जादूगरी हर तरफ फैली हुई है?” 23 यूराम बादशाह चिल्ला उठा, “ऐ अखज़ियाह, ग़दारी!” और मुड़कर भागने लगा।

24 याह ने फौरन अपनी कमान खींचकर तीर चलाया जो सीधा यूराम के कंधों के दरमियान यों लगा कि दिल में से गुज़र गया। बादशाह एकदम अपने रथ में गिर पड़ा। 25 याह ने अपने साथवाले अफसर बिदकर से कहा, “इसकी लाश उठाकर उस बाग में फेंक दें जो नबोत यज़्रएली से छीन लिया गया था। क्योंकि वह दिन याद करें जब हम दोनों अपने रथों को इसके बाप अखियब के पीछे चला रहे थे और रब ने अखियब के बारे में एलान किया, 26 ‘यक्रीन जान कि कल नबोत और उसके बेटों का क़त्ल मुझसे छुपा न रहा। इसका मुआवज़ा मैं तुझे नबोत की इसी ज़मीन पर दूँगा।’ चुनौचे अब यूराम को उठाकर उस ज़मीन पर फेंक दें ताकि रब की बात पूरी हो जाए।”

27 जब यहूदाह के बादशाह अखज़ियाह ने यह देखा तो वह बैत-गान का रास्ता लेकर फ़रार हो गया। याह उसका ताक्कुब करते हुए चिल्लाया, “उसे भी मार दो!” इबलियाम के करीब जहाँ रास्ता ज़ूर की तरफ़ चढ़ता है अखज़ियाह अपने रथ में चलते चलते ज़ख़मी हुआ। वह बच तो निकला लेकिन मजिदो पहुँचकर मर गया। 28 उसके मुलाज़िम लाश को रथ पर रखकर यरूशलम लाए। वहाँ उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है ख़ानदानी कब्र में दफ़नाया गया। 29 अखज़ियाह यूराम बिन अख़ियब की हुक्मत के 11वें साल में यहूदाह का बादशाह बन गया था।

ईज़बिल का अंजाम

30 इसके बाद याह यज़्ज़एल चला गया। जब ईज़बिल को इतला मिली तो उसने अपनी आँखों में सुरमा लगाकर अपने बालों को खूबसूरती से सँवारा और फिर खिड़की से बाहर झाँकने लगी। 31 जब याह महल के गेट में दाख़िल हुआ तो ईज़बिल चिल्लाई, “ऐ ज़िमरी जिसने अपने मालिक को क़त्ल कर दिया है, क्या सब ख़ैरियत है?” 32 याह ने ऊपर देखकर आवाज़ दी, “कौन मेरे साथ है, कौन?” दो या तीन ख़्वाजासराओं ने खिड़की से बाहर देखकर उस पर नज़र डाली 33 तो याह ने उन्हें हुक्म दिया, “उसे नीचे फेंक दो!”

तब उन्होंने मलिका को नीचे फेंक दिया। वह इतने ज़ोर से ज़मीन पर गिरी कि खून के छींटे दीवार और घोड़ों पर पड़ गए। याह और उसके लोगों ने अपने रथों को उसके ऊपर से गुज़रने दिया। 34 फिर याह महल में दाख़िल हुआ और खाया और पिया। इसके बाद उसने हुक्म दिया, “कोई जाए और उस लानती औरत को दफ़न करे, क्योंकि वह बादशाह की बेटी थी।”

35 लेकिन जब मुलाज़िम उसे दफ़न करने के लिए बाहर निकले तो देखा कि सिर्फ़ उस की खोपड़ी, हाथ और पाँव बाकी रह गए हैं। 36 याह के पास वापस जाकर उन्होंने उसे आगाह किया। तब उसने कहा, “अब सब कुछ पूरा हुआ है जो रब ने अपने ख़ादिम इलियास तिशबी की मारिफ़त फ़रमाया था, ‘यज़्ज़एल की ज़मीन पर कुते ईज़बिल की लाश खा जाएंगे।’ 37 उस की लाश यज़्ज़एल की ज़मीन पर गोबर की तरह पड़ी रहेगी ताकि कोई यक्नीन से न कह सके कि वह कहाँ है।”

10

याह अख़ियब की औलाद को हलाक करता है

1 सामरिया में अख़ियब के 70 बेटे थे। अब याह ने ख़त लिखकर सामरिया भेज दिए। यज़्ज़एल के अफ़सरों, शहर के बुज़ुर्गों और अख़ियब के बेटों के सरपरस्तों को यह ख़त मिल गए, और उनमें ज़ैल की ख़बर लिखी थी,

2 “आपके मालिक के बेटे आपके पास हैं। आप क़िलाबंद शहर में रहते हैं, और आपके पास हथियार, रथ और घोड़े भी हैं। इसलिए मैं आपको चैलेंज देता हूँ कि यह ख़त पढ़ते ही 3 अपने मालिक के सबसे अच्छे और लायक़ बेटे को चुनकर उसे उसके बाप के तख़्त पर बिठा दें। फिर अपने मालिक के ख़ानदान के लिए लड़ें!”

4 लेकिन सामरिया के बुज़ुर्ग बेहद सहम गए और आपस में कहने लगे, “अगर दो बादशाह उसका मुक़ाबला न कर सके तो हम क्या कर सकते हैं?” 5 इसलिए महल के इंचार्ज, सामरिया पर मुक़र्रर अफ़सर, शहर के बुज़ुर्गों और अख़ियब के बेटों के सरपरस्तों ने याह को पैग़ाम भेजा, “हम आपके ख़ादिम हैं और जो कुछ आप कहेंगे हम करने के लिए तैयार हैं। हम किसी को बादशाह मुक़र्रर नहीं करेंगे। जो कुछ आप मुनासिब समझते हैं वह करें।”

6 यह पढ़कर याह ने एक और ख़त लिखकर सामरिया भेजा। उसमें लिखा था, “अगर आप वाकई मेरे साथ हैं और मेरे ताबे रहना चाहते हैं तो अपने मालिक के बेटों के सरों को काटकर क़त्ल इस वक़्त तक यज़्ज़एल में मेरे पास ले आएँ।” क्योंकि अख़ियब के 70 बेटे सामरिया के बड़ों के पास रहकर परवरिश पा रहे थे। 7 जब ख़त उनके पास पहुँच गया तो इन आदमियों ने 70 के 70 शहज़ादों को ज़बह कर दिया और उनके सरों को टोकरों में रखकर यज़्ज़एल में याह के पास भेज दिया।

8 एक कासिद ने याह के पास आकर इतला दी, “वह बादशाह के बेटों के सर लेकर आए हैं।” तब याह ने हुक्म दिया, “शहर के दरवाज़े पर उनके दो ढेर लगा दो और उन्हें सुबह तक वहीं रहने दो।” 9 अगले दिन याह सुबह के वक़्त निकला और दरवाज़े के पास खड़े होकर लोगों से मुखातिब हुआ, “यूराम की मौत के नाते से आप बेइलज़ाम हैं। मैं ही ने अपने मालिक के खिलाफ़ मनसूबे बाँधकर उसे मार डाला। लेकिन किसने इन तमाम बेटों का सर क़त्ल कर दिया? 10 चुनौचे आज जान लें कि जो कुछ भी रब ने अख़ियब और उसके ख़ानदान के बारे में फ़रमाया है वह पूरा हो जाएगा। जिसका एलान रब ने अपने ख़ादिम इलियास की मारिफ़त किया है वह उसने कर लिया है।” 11 इसके बाद याह ने यज़्ज़एल में रहनेवाले अख़ियब के बाकी तमाम रिश्तेदारों, बड़े अफ़सरों, करीबी दोस्तों और पुजारियों को हलाक कर दिया। एक भी न बचा।

12 फिर वह सामरिया के लिए रवाना हुआ। रास्ते में जब बैत-इक़द-रोईम के करीब पहुँच गया 13 तो उस की मुलाक़ात यहूदाह के बादशाह अख़ज़ियाह के चंद एक रिश्तेदारों से हुई। याह ने पूछा, “आप कौन हैं?” उन्होंने जवाब दिया, “हम अख़ज़ियाह के रिश्तेदार हैं और सामरिया का सफ़र कर रहे हैं। वहाँ हम बादशाह और मलिका के बेटों से मिलना चाहते हैं।” 14 तब याह ने हुक्म दिया, “उन्हें ज़िंदा पकड़ो!” उन्होंने उन्हें ज़िंदा पकड़कर बैत-इक़द के हौज़ के पास मार डाला। 42 आदमियों में से एक भी न बचा।

15 उस जगह को छोड़कर याह आगे निकला। चलते चलते उस की मुलाक़ात यूनदब बिन रैकाब से हुई जो उससे मिलने आ रहा था। याह ने सलाम करके कहा, “क्या आपका दिल मेरे बारे में मुख़लिस है जैसा कि मेरा दिल आपके बारे में है?” यूनदब ने जवाब दिया, “जी हाँ।” याह

बोला, “अगर ऐसा है, तो मेरे साथ हाथ मिलाएँ।” यूनदब ने उसके साथ हाथ मिलाया तो याह ने उसे अपने रथ पर सवार होने दिया। ¹⁶ फिर याह ने कहा, “आएँ मेरे साथ और मेरी रब के लिए जिद्द-जहद देखें।” चुनौचे यूनदब याह के साथ सामरिया चला गया।

¹⁷ सामरिया पहुँचकर याह ने अखियब के खानदान के जितने अफराद अब तक बच गए थे हलाक कर दिए। जिस तरह रब ने इलियास को फरमाया था उसी तरह अखियब का पूरा घराना मिट गया।

याह बाल के तमाम पुजारियों को कत्ल करता है

¹⁸ इसके बाद याह ने तमाम लोगों को जमा करके एलान किया, “अखियब ने बाल देवता की परस्तिश थोड़ी की है। मैं कहीं ज्यादा उस की पूजा करूँगा! ¹⁹ अब जाकर बाल के तमाम नबियों, खिदमतगुजारों और पुजारियों को बुला लाएँ। खयाल करें कि एक भी दूर न रहे, क्योंकि मैं बाल को बड़ी कुरबानी पेश करूँगा। जो भी आने से इनकार करे उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी।”

इस तरह याह ने बाल के खिदमतगुजारों के लिए जाल बिछा दिया ताकि वह उसमें फँसकर हलाक हो जाएँ। ²⁰⁻²¹ उसने पूरे इसराईल में कासिद भेजकर एलान किया, “बाल देवता के लिए मुक़द्दस ईद मनाएँ!” चुनौचे बाल के तमाम पुजारी आए, और एक भी इजतिमा से दूर न रहा। इतने जमा हुए कि बाल का मंदिर एक सिरे से दूसरे सिरे तक भर गया।

²² याह ने ईद के कपड़ों के इंचारज को हुक्म दिया, “बाल के तमाम पुजारियों को ईद के लिबास दे देना।” चुनौचे सबको लिबास दिए गए। ²³ फिर याह और यूनदब बिनरैकाब बाल के मंदिर में दाखिल हुए, और याह ने बाल के खिदमतगुजारों से कहा, “ध्यान दें कि यहाँ आपके साथ रब का कोई खादिम मौजूद न हो। सिर्फ बाल के पुजारी होने चाहिए।”

²⁴ दोनों आदमी सामने गए ताकि जबह की और भस्म होनेवाली कुरबानियाँ पेश करें। इतने में याह के 80 आदमी बाहर मंदिर के इर्दगिर्द खड़े हो गए। याह ने उन्हें हुक्म देकर कहा था, “खबरदार! जो पूजा करनेवालों में से किसी को बचने दे उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी।”

²⁵ ज्योंही याह भस्म होनेवाली कुरबानी को चढ़ाने से फ़ारिग हुआ तो उसने अपने मुहाफ़िज़ों और अफसरों को हुक्म दिया, “अंदर जाकर सबको मार देना। एक भी बचने न पाए।” वह दाखिल हुए अपनी तलवारों को खींचकर सबको मार डाला। लाशों को उन्होंने बाहर फेंक दिया। फिर वह मंदिर के सबसे अंदरवाले कमरे में गए ²⁶ जहाँ बूत था। उसे उन्होंने निकालकर जला दिया ²⁷ और बाल का सतून भी टुकड़े टुकड़े कर दिया। बाल का पूरा मंदिर ढा दिया गया, और वह जगह बैतुल-ख़ला बन गई। आज तक वह इसके लिए इस्तेमाल होता है।

याह की हुक्मत

²⁸ इस तरह याह ने इसराईल में बाल देवता की पूजा ख़त्म कर दी। ²⁹ तो भी वह यरूबियाम बिन नबात के उन गुनाहों से बाज़ न आया जो करने पर यरूबियाम ने इसराईल को उकसाया था। बैतेल और दान में कायम सोने के बछड़ों की पूजा ख़त्म न हुई।

³⁰ एक दिन रब ने याह से कहा, “जो कुछ मुझे पसंद है उसे तूने अच्छी तरह संरंजाम दिया है, क्योंकि तूने अखियब के घराने के साथ सब कुछ किया है जो मेरी मरज़ी थी। इस वजह से तेरी औलाद चौथी पुश्त तक इसराईल पर हुक्मत करती रहेगी।” ³¹ लेकिन याह ने पूरे दिल से रब इसराईल के खुदा की शरीअत के मुताबिक़ जिंदगी न गुजारी। वह उन गुनाहों से बाज़ आने के लिए तैयार नहीं था जो करने पर यरूबियाम ने इसराईल को उकसाया था।

³² याह की हुक्मत के दौरान रब इसराईल का इलाका छोटा करने लगा। शाम के बादशाह हज़ाएल ने इसराईल के उस पूरे इलाके पर कब्ज़ा कर लिया ³³ जो दरियाए-यरदन के मशरिफ़ में था। जद, रूबिन और मनस्सी का इलाका जिलियाद बसन से लेकर दरियाए-अरनोन पर वाके अरोईर तक शाम के बादशाह के हाथ में आ गया।

³⁴ बाक़ी जो कुछ याह की हुक्मत के दौरान हुआ, जो उसने किया और जो कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं वह ‘शाहाने-इसराईल की तारीख़’ की किताब में बयान किया गया है। ³⁵⁻³⁶ वह 28 साल सामरिया में बादशाह रहा। वहाँ वह दफन भी हुआ। जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसका बेटा यहूआख़ज़ तख़्तनशीन हुआ।

11

यहूदाह में अतलियाह की ज़ालिमाना हुक्मत

¹ जब अख़ज़ियाह की माँ अतलियाह को मालूम हुआ कि मेरा बेटा मर गया है तो वह अख़ज़ियाह की तमाम औलाद को कत्ल करने लगी। ² लेकिन अख़ज़ियाह की सगी बहन यहूसबा ने अख़ज़ियाह के छोटे बेटे युआस को चुपके से उन शहज़ादों में से निकाल लिया जिन्हें कत्ल करना था और उसे उस की दाया के साथ एक स्टोर में छुपा दिया जिसमें बिस्तर वगैरा महफूज़ रखे जाते थे। इस तरह वह बच गया। ³ बाद में युआस को रब के घर में मुंतक़िल किया गया जहाँ वह उसके साथ उन छः सालों के दौरान छुपा रहा जब अतलियाह मलिका थी।

अतलियाह का अंजाम और युआस बादशाह बन जाता है

⁴ अतलियाह की हुक्मत के सातवें साल में यहोयदा इमाम ने सौ सौ सिपाहियों पर मुकर्रर अफसरों, कारी नामी दस्तों और शाही मुहाफ़िज़ों को रब के घर में बुला लिया। वहाँ उसने क्रसम खिलाकर उनसे अहद बाँधा। फिर उसने बादशाह के बेटे युआस को पेश करके ⁵ उन्हें हिदायत की, “अगले सबत के दिन आपमें से जितने झूटी पर आएँगे वह तीन हिस्सों में तक्सीम हो जाएँ। एक हिस्सा शाही महल पर पहरा दे, ⁶ दूसरा

सूर नामी दरवाजे पर और तीसरा शाही मुहाफिजों के पीछे के दरवाजे पर। यों आप रब के घर की हिफाजत करेंगे। ⁷ दूसरे दो गुरोह जो सबत के दिन झूटी नहीं करते उन्हें रब के घर में आकर युआस बादशाह की पहरादारी करनी है। ⁸ वह उसके इर्दगिर्द दायरा बनाकर अपने हथियारों को पकड़े रखें और जहाँ भी वह जाए उसे घेरे रखें। जो भी इस दायरे में घुसने की कोशिश करे उसे मार डालना।”

⁹ सौ सौ सिपाहियों पर मुकर्रर अफसरों ने ऐसा ही किया। अगले सबत के दिन वह सब अपने फौजियों समेत यहोयदा इमाम के पास आए। वह भी आए जो झूटी पर थे और वह भी जिनकी अब छुट्टी थी। ¹⁰ इमाम ने अफसरों को दाऊद बादशाह के वह नेजे और ढालें दीं जो अब तक रब के घर में महफूज रखी हुई थीं। ¹¹ फिर मुहाफिज हथियारों को हाथ में पकड़े बादशाह के गिर्द खड़े हो गए। कुरबानगाह और रब के घर के दरमियान उनका दायरा रब के घर की जुनूबी दीवार से लेकर उस की शिमाली दीवार तक फैला हुआ था। ¹² फिर यहोयदा बादशाह के बेटे युआस को बाहर लाया और उसके सर पर ताज रखकर उसे क़वानीन की किताब दे दी। यों युआस को बादशाह बना दिया गया। उन्होंने उसे मसह करके तालियाँ बजाई और बुलंद आवाज़ से नारा लगाने लगे, “बादशाह जिंदाबाद!”

¹³ जब मुहाफिजों और बाकी लोगों का शोर अतलियाह तक पहुँचा तो वह रब के घर के सहन में उनके पास आई। ¹⁴ वहाँ पहुँचकर वह क्या देखती है कि नया बादशाह उस सतून के पास खड़ा है जहाँ बादशाह रिवाज के मुताबिक खड़ा होता है, और वह अफसरों और तुरम बजानेवालों से घिरा हुआ है। तमाम उम्मत भी साथ खड़ी तुरम बजा बजाकर खुशी मना रही है। अतलियाह रंजिश के मारे अपने कपड़े फाड़कर चीख उठी, “गढ़ारी, गढ़ारी!”

¹⁵ यहोयदा इमाम ने सौ सौ फौजियों पर मुकर्रर उन अफसरों को बुलाया जिनके सुपुर्द फौज की गई थी और उन्हें हुक्म दिया, “उसे बाहर ले जाँ, क्योंकि मुनासिब नहीं कि उसे रब के घर के पास मारा जाए। और जो भी उसके पीछे आए उसे तलवार से मार देना।”

¹⁶ वह अतलियाह को पकड़कर उस रास्ते पर ले गए जिस पर चलते हुए घोड़े महल के पास पहुँचते हैं। वहाँ उसे मार दिया गया। ¹⁷ फिर यहोयदा ने बादशाह और क्रौम के साथ मिलकर रब से अहद बाँधकर वादा किया कि हम रब की क्रौम रहेंगे। इसके अलावा बादशाह ने यहोयदा की मारिफत क्रौम से भी अहद बाँधा। ¹⁸ इसके बाद उम्मत के तमाम लोग बाल के मंदिर पर टूट पड़े और उसे ढा दिया। उस की कुरबानगाहों और बुतों को टुकड़े टुकड़े करके उन्होंने बाल के पुजारी मत्तान को कुरबानगाहों के सामने ही मार डाला।

रब के घर पर पहरेदार खड़े करने के बाद ¹⁹ यहोयदा सौ सौ फौजियों पर मुकर्रर अफसरों, कारी नामी दस्तों, महल के मुहाफिजों और बाक़ी पूरी उम्मत के हमराह जुलूस निकालकर बादशाह को रब के घर से महल में ले गया। वह मुहाफिजों के दरवाजे से होकर दाखिल हुए। बादशाह शाही तरख पर बैठ गया, ²⁰ और तमाम उम्मत खुशी मनाती रही। यों यरूशलम शहर को सुकून मिला, क्योंकि अतलियाह को महल के पास तलवार से मार दिया गया था।

यहूदाह का बादशाह युआस

²¹ युआस सात साल का था जब तख़्तनशीन हुआ।

12

¹ वह इसराईल के बादशाह याहू की हुक्मत के सातवें साल में यहूदाह का बादशाह बना, और यरूशलम में उस की हुक्मत का दौरानिया 40 साल था। उस की माँ जिबियाह बैर-सबा की रहनेवाली थी। ² जब तक यहोयदा उस की राहनुमाई करता था युआस वह कुछ करता रहा जो रब को पसंद था। ³ तो भी ऊँची जगहों के मंदिर दूर न किए गए। अवाम मामूल के मुताबिक वहाँ अपनी कुरबानियाँ पेश करते और बखूर जलाते रहे।

युआस रब के घर की मरम्मत करवाता है

⁴ एक दिन युआस ने इमामों को हुक्म दिया, “रब के लिए मखसूस जितने भी पैसे रब के घर में लाए जाते हैं उन सबको जमा करें, चाहे वह मर्दुमशुमारी के टैक्स * या किसी मन्त के ज़िम्मे में दिए गए हों, चाहे रज़ाकाराना तौर पर अदा किए गए हों। ⁵ यह तमाम पैसे इमामों के सुपुर्द किए जाएँ। इनसे आपको जहाँ भी ज़रूरत है रब के घर की दराडों की मरम्मत करवानी है।” ⁶ लेकिन युआस की हुक्मत के 23वें साल में उसने देखा कि अब तक रब के घर की दराडों की मरम्मत नहीं हुई। ⁷ तब उसने यहोयदा और बाक़ी इमामों को बुलाकर पूछा, “आप रब के घर की मरम्मत क्यों नहीं करा रहे? अब से आपको इन पैसों से आपकी अपनी ज़रूरियात पूरी करने की इजाज़त नहीं बल्कि तमाम पैसे रब के घर की मरम्मत के लिए इस्तेमाल करने हैं।”

⁸ इमाम मान गए कि अब से हम लोगों से हदिया नहीं लेंगे और कि इसके बदले हमें रब के घर की मरम्मत नहीं करवानी पड़ेगी। ⁹ फिर यहोयदा इमाम ने एक संदूक लेकर उसके ढकने में सूरख बना दिया। इस संदूक को उसने कुरबानगाह के पास रख दिया, उस दरवाजे के दहनी तरफ़ जिसमें से परस्तार रब के घर के सहन में दाखिल होते थे। जब लोग अपने हदियाजात रब के घर में पेश करते तो दरवाजे की पहरादारी करनेवाले इमाम तमाम पैसों को संदूक में डाल देते। ¹⁰ जब कभी पता चलता कि संदूक भर गया है तो बादशाह का मीरमुंशी और इमामे-आज़म आते और तमाम पैसे गिनकर थैलियों में डाल देते थे। ¹¹ फिर यह गिने हुए पैसे उन ठेकेदारों को दिए जाते जिनके सुपुर्द रब के घर की मरम्मत का काम किया गया था। इन पैसों से वह मरम्मत करनेवाले कारीगरों की उजरत अदा करते थे। इनमें बढई, इमारत पर काम करनेवाले, ¹² राज

* 12:4 देखिए ख़ुस्ज 30:11-16

और पत्थर तराशनेवाले शामिल थे। इसके अलावा उन्होंने यह पैसे दराड़ों की मरम्मत के लिए दरकार लकड़ी और तराशे हुए पत्थरों के लिए भी इस्तेमाल किए। बाकी जितने अखराजात रब के घर को बहाल करने के लिए ज़रूरी थे वह सब इन पैसों से पूरे किए गए। ¹³ लेकिन इन हदियाजात से सोने या चाँदी की चीज़ें न बनवाई गईं, न चाँदी के बासन, बत्ती कतरने के औज़ार, छिड़काव के कटोरे या तुरम। ¹⁴ यह सिर्फ और सिर्फ ठेकेदारों को दिए गए ताकि वह रब के घर की मरम्मत कर सकें। ¹⁵ ठेकेदारों से हिसाब न लिया गया जब उन्हें कारीगरों को पैसे देने थे, क्योंकि वह क्राबिले-एतमाद थे।

¹⁶ महज़ वह पैसे जो कुसूर और गुनाह की कुरबानियों के लिए मिलते थे रब के घर की मरम्मत के लिए इस्तेमाल न हुए। वह इमामों का हिस्सा रहे।

खराज मिलने पर हज़ाएल यरूशलम को छोड़ता है

¹⁷ उन दिनों में शाम के बादशाह हज़ाएल ने जात पर हमला करके उस पर कब्ज़ा कर लिया। इसके बाद वह मुड़कर यरूशलम की तरफ बढ़ने लगा ताकि उस पर भी हमला करे। ¹⁸ यह देखकर यहूदाह के बादशाह युआस ने उन तमाम हदियाजात को इकट्ठा किया जो उसके बापदादा यहसफ़त, यह्राम और अखज़ियाह ने रब के घर के लिए मखसूस किए थे। उसने वह भी जमा किए जो उसने खुद रब के घर के लिए मखसूस किए थे। यह चीज़ें उस सारे सोने के साथ मिलाकर जो रब के घर और शाही महल के खज़ानों में था उसने सब कुछ हज़ाएल को भेज दिया। तब हज़ाएल यरूशलम को छोड़कर चला गया।

युआस की मौत

¹⁹ बाकी जो कुछ युआस की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया उसका जिक्र ‘शाहाने-यहूदाह’ की किताब में किया गया है। ²⁰ एक दिन उसके अफ़सरों ने उसके खिलाफ़ साज़िश करके उसे क़त्ल कर दिया जब वह बैत-मिल्लो के पास उस रास्ते पर था जो सिल्ला की तरफ़ उतर जाता था। ²¹ कातिलों के नाम यूज़बद बिन सिमआत और यहज़बद बिन शमीर थे। युआस को यरूशलम के उस हिस्से में जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया। फिर उसका बेटा अमसियाह तख़्तनशीन हुआ।

13

इसराईल का बादशाह यहूआखज़

¹ यहूआखज़ बिन याहू यहूदाह के बादशाह युआस बिन अखज़ियाह की हुकूमत के 23वें साल में इसराईल का बादशाह बना। उस की हुकूमत का दौरानिया 17 साल था, और उसका दासल-हुकूमत सामरिया रहा। ² उसका चाल-चलन रब को नापसंद था, क्योंकि वह भी यरूबियाम बिन नबात के बुरे नमूने पर चलता रहा। उसने वह गुनाह जारी रखे जो करने पर यरूबियाम ने इसराईल को उकसाया था। उस बुतपरस्ती से वह कभी बाज़ न आया। ³ इस वजह से रब इसराईल से बहुत नाराज़ हुआ, और वह शाम के बादशाह हज़ाएल और उसके बेटे बिन-हदद के वसीले से उन्हें बार बार दबाता रहा।

⁴ लेकिन फिर यहूआखज़ ने रब का ग़ज़ब ठंडा किया, और रब ने उस की मिन्नतें सुनीं, क्योंकि उसे मालूम था कि शाम का बादशाह इसराईल पर कितना ज़ुल्म कर रहा है। ⁵ रब ने किसी को भेज दिया जिसने उन्हें शाम के ज़ुल्म से आज़ाद करवाया। इसके बाद वह पहले की तरह सुकून के साथ अपने घरों में रह सकते थे। ⁶ तो भी वह उन गुनाहों से बाज़ न आए जो करने पर यरूबियाम ने उन्हें उकसाया था बल्कि उनकी यह बुतपरस्ती जारी रही। यसीरत देवी का बुत भी सामरिया से हटाया न गया।

⁷ आखिर में यहूआखज़ के सिर्फ़ 50 घुडसवार, 10 रथ और 10,000 प्यादा सिपाही रह गए। फ़ौज का बाकी हिस्सा शाम के बादशाह ने तबाह कर दिया था। उसने इसराईली फ़ौजियों को कुचलकर यों उड़ा दिया था जिस तरह धूल अनाज को गाहते वक़्त उड़ जाती है।

⁸ बाकी जो कुछ यहूआखज़ की हुकूमत के दौरान हुआ, जो कुछ उसने किया और जो कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं वह ‘शाहाने-इसराईल की तारीख़’ की किताब में बयान की गई हैं। ⁹ जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे सामरिया में दफ़नाया गया। फिर उसका बेटा यहूआस तख़्तनशीन हुआ।

इसराईल का बादशाह यहूआस

¹⁰ यहूआस बिन यहूआखज़ यहूदाह के बादशाह युआस की हुकूमत के 37वें साल में इसराईल का बादशाह बना। ¹¹ यहूआस का चाल-चलन रब को नापसंद था। वह उन गुनाहों से बाज़ न आया जो करने पर यरूबियाम बिन नबात ने इसराईल को उकसाया था बल्कि यह बुतपरस्ती जारी रही। ¹² बाकी जो कुछ यहूआस की हुकूमत के दौरान हुआ, जो कुछ उसने किया और जो कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं वह ‘शाहाने-इसराईल की तारीख़’ की किताब में दर्ज हैं। उसमें उस की यहूदाह के बादशाह अमसियाह के साथ जंग का जिक्र भी है।

¹³ जब यहूआस मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे सामरिया में शाही क़ब्र में दफ़नाया गया। फिर यरूबियाम दुवुम तख़्त पर बैठ गया।

बिस्ते-मर्ग पर यहूआस की इलीशा से मुलाकात

¹⁴ यहूआस के दौरे-हुकूमत में इलीशा शदीद बीमार हो गया। जब वह मरने को था तो इसराईल का बादशाह यहूआस उससे मिलने गया। उसके ऊपर झुककर वह खूब रो पड़ा और चिल्लाया, “हाय, मेरे बाप, मेरे बाप। इसराईल के रथ और उसके घोड़े!” ¹⁵ इलीशा ने उसे हुक्म दिया, “एक कमान और कुछ तीर ले आएँ।” बादशाह कमान और तीर इलीशा के पास ले आया। ¹⁶ फिर इलीशा बोला, “कमान को पकड़ें।”

जब बादशाह ने कमान को पकड़ लिया तो इलीशा ने अपने हाथ उसके हाथों पर रख दिए। ¹⁷ फिर उसने हुक्म दिया, “मशरिकी खिड़की को खोल दें।” बादशाह ने उसे खोल दिया। इलीशा ने कहा, “तीर चलाएँ!” बादशाह ने तीर चलाया। इलीशा पुकारा, “यह रब का फ़तह दिलानेवाला तीर है, शाम पर फ़तह का तीर! आप अफ्रीक के पास शाम की फ़ौज को मुकम्मल तौर पर तबाह कर देंगे।”

¹⁸ फिर उसने बादशाह को हुक्म दिया, “अब बाकी तीरों को पकड़ें।” बादशाह ने उन्हें पकड़ लिया। फिर इलीशा बोला, “इनको ज़मीन पर पटख दें।” बादशाह ने तीन मरतबा तीरों को ज़मीन पर पटख दिया और फिर स्क गया। ¹⁹ यह देखकर मर्दे-खुदा गुस्से हो गया और बोला, “आपको तीरों को पॉच या छः मरतबा ज़मीन पर पटखना चाहिए था। अगर ऐसा करते तो शाम की फ़ौज को शिकस्त देकर मुकम्मल तौर पर तबाह कर देते। लेकिन अब आप उसे सिर्फ़ तीन मरतबा शिकस्त देंगे।”

²⁰ थोड़ी देर के बाद इलीशा फ़ौत हुआ और उसे दफ़न किया गया। उन दिनों में मोआबी लुटेरे हर साल मौसमे-बहार के दौरान मुल्क में घुस आते थे। ²¹ एक दिन किसी का जनाज़ा हो रहा था तो अचानक यह लुटेरे नज़र आए। मातम करनेवाले लाश को करीब की इलीशा की कब्र में फेंककर भाग गए। लेकिन ज्योंही लाश इलीशा की हड्डियों से टकराई उसमें जान आ गई और वह आदमी खड़ा हो गया।

इलीशा के आखिरी अलफ़ाज़ पूरे हो जाते हैं

²² यहूआख़ज़ के जीते-जी शाम का बादशाह हज़ाएल इसराइल को दबाता रहा। ²³ तो भी रब को अपनी कौम पर तरस आया। उसने उन पर रहम किया, क्योंकि उसे वह अहद याद रहा जो उसने इब्राहीम, इसहाक और याकूब से बाँधा था। आज तक वह उन्हें तबाह करने या अपने हज़ूर से ख़ारिज करने के लिए तैयार नहीं हुआ।

²⁴ जब शाम का बादशाह हज़ाएल फ़ौत हुआ तो उसका बेटा बिन-हदद तख़्तनशीन हुआ। ²⁵ तब यहूआस बिन यहूआख़ज़ ने बिन-हदद से वह इसराइली शहर दुबारा छीन लिए जिन पर बिन-हदद के बाप हज़ाएल ने कब्ज़ा कर लिया था। तीन बार यहूआस ने बिन-हदद को शिकस्त देकर इसराइली शहर वापस ले लिए।

14

यहूदाह का बादशाह अमसियाह

¹ अमसियाह बिन युआस इसराइल के बादशाह यहूआस बिन यहूआख़ज़ के दूसरे साल में यहूदाह का बादशाह बना। ² उस वक़्त वह 25 साल का था। वह यरूशलम में रहकर 29 साल हुक्मत करता रहा। उस की माँ यहूअदान यरूशलम की रहनेवाली थी। ³ जो कुछ अमसियाह ने किया वह रब को पसंद था, अगरचे वह उतनी वफ़ादारी से रब की पैरवी नहीं करता था जितनी उसके बाप दाऊद ने की थी। हर काम में वह अपने बाप युआस के नमूने पर चला, ⁴ लेकिन उसने भी ऊँची जगहों के मंदिरों को दूर न किया। आम लोग अब तक वहाँ कुरबानियाँ चढ़ाते और बखूर जलाते रहे।

⁵ ज्योंही अमसियाह के पाँच मज़बूती से जम गए उसने उन अफ़सरों को सज़ाए-मौत दी जिन्होंने बाप को क़त्ल कर दिया था। ⁶ लेकिन उनके बेटों को उसने जिंदा रहने दिया और यों मूसवी शरीअत के ताबे रहा जिसमें रब फ़रमाता है, “वालिदैन् को उनके बच्चों के जरायम के सबब से सज़ाए-मौत न दी जाए, न बच्चों को उनके वालिदैन् के जरायम के सबब से। अगर किसी को सज़ाए-मौत देनी हो तो उस गुनाह के सबब से जो उसने खुद किया है।”

⁷ अमसियाह ने अदोमियों को नमक की वादी में शिकस्त दी। उस वक़्त उनके 10,000 फ़ौजी उससे लड़ने आए थे। जंग के दौरान उसने सिला शहर पर कब्ज़ा कर लिया और उसका नाम युक्तियेल रखा। यह नाम आज तक रायज है।

अमसियाह इसराइल के बादशाह यहूआस से लड़ता है

⁸ इस फ़तह के बाद अमसियाह ने इसराइल के बादशाह यहूआस बिन यहूआख़ज़ को पैग़ाम भेजा, “आएँ, हम एक दूसरे का मुकाबला करें!” ⁹ लेकिन इसराइल के बादशाह यहूआस ने जवाब दिया, “लुबनान में एक काँटेदार झाड़ी ने देवदार के एक दरख़्त से बात की, ‘मेरे बेटे के साथ अपनी बेटी का रिश्ता बान्धो।’ लेकिन उसी वक़्त लुबनान के जंगली जानवरों ने उसके ऊपर से गुज़रकर उसे पाँवों तले कुचल डाला। ¹⁰ मुल्के-अदोम पर फ़तह पाने के सबब से आपका दिल मग़्सूर हो गया है। लेकिन मेरा मशवरा है कि आप अपने घर में रहकर फ़तह में हासिल हुई शोहरत का मज़ा लेने पर इकतिफ़ा करें। आप ऐसी मुसीबत को क्यों दावत देते हैं जो आप और यहूदाह की तबाही का बाइस बन जाए?”

¹¹ लेकिन अमसियाह मानने के लिए तैयार नहीं था, इसलिए यहूआस अपनी फ़ौज लेकर यहूदाह पर चढ़ आया। बैत-शम्स के पास उसका यहूदाह के बादशाह के साथ मुकाबला हुआ। ¹² इसराइल की फ़ौज ने यहूदाह की फ़ौज को शिकस्त दी, और हर एक अपने अपने घर भाग गया। ¹³ इसराइल के बादशाह यहूआस ने यहूदाह के बादशाह अमसियाह बिन युआस बिन अख़ज़ियाह को वहीं बैत-शम्स में गिरिफ़्तार कर लिया। फिर वह यरूशलम गया और शहर की फ़सील इफ़राईम नामी दरवाज़े से कोने के दरवाज़े तक गिरा दी। इस हिस्से की लंबाई तकरीबन 600 फ़ुट थी। ¹⁴ जितना भी सोना, चाँदी और कीमती सामान रब के घर और शाही महल के खज़ानों में था उसे उसने पूरे का पूरा छीन लिया। लूटा हुआ माल और बाज़ यरग़मालों को लेकर वह सामरिया वापस चला गया।

इसराइल के बादशाह यहूआस की मौत

15 बाक्री जो कुछ यहूआस की हुकूमत के दौरान हुआ, जो कुछ उसने किया और जो कामयाबियाँ उसे हासिल हुई वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख' की किताब में दर्ज हैं। उसमें उस की यहदाह के बादशाह अमसियाह के साथ जंग का जिक्र भी है। 16 जब यहूआस मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे सामरिया में इसराईल के बादशाहों की कब्र में दफनाया गया। फिर उसका बेटा यरुबियाम दुवुम तख्तनशीन हुआ।

यहदाह के बादशाह अमसियाह की मौत

17 इसराईल के बादशाह यहूआस बिन यहूआखज़ की मौत के बाद यहदाह का बादशाह अमसियाह बिन युआस मज़ीद 15 साल जीता रहा। 18 बाक्री जो कुछ अमसियाह की हुकूमत के दौरान हुआ वह 'शाहाने-यहदाह की तारीख' की किताब में दर्ज है। 19 एक दिन लोग यरूशलम में उसके खिलाफ़ साज़िश करने लगे। आखिरकार उसने फ़रार होकर लकीस में पनाह ली, लेकिन साज़िश करनेवालों ने अपने लोगों को उसके पीछे भेजा, और वह वहाँ उसे क़त्ल करने में कामयाब हो गए। 20 उस की लाश घोड़े पर उठाकर यरूशलम लाई गई जहाँ उसे शहर के उस हिस्से में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है ख़ानदानी कब्र में दफनाया गया।

21 यहदाह के तमाम लोगों ने अमसियाह के बेटे उज़्जियाह* को बाप के तख़्त पर बिठा दिया। उस की उम्र 16 साल थी 22 जब उसका बाप मरकर अपने बापदादा से जा मिला। बादशाह बनने के बाद उज़्जियाह ने ऐलात शहर पर कब्ज़ा करके उसे दुबारा यहदाह का हिस्सा बना लिया। उसने शहर में बहुत तामीरी काम करवाया।

इसराईल का बादशाह यरुबियाम दुवुम

23 यहदाह के बादशाह अमसियाह बिन युआस के 15वें साल में यरुबियाम बिन यहूआस इसराईल का बादशाह बना। उस की हुकूमत का दौरानिया 41 साल था, और उसका दास्त-हुकूमत सामरिया रहा। 24 उसका चाल-चलन रब को नापसंद था। वह उन गुनाहों से बाज़ न आया जो करने पर नबात के बेटे यरुबियाम अव्वल ने इसराईल को उकसाया था। 25 यरुबियाम दुवुम लबो-हमात से लेकर बहीराए-मुरदार तक उन तमाम इलाकों पर दुबारा कब्ज़ा कर सका जो पहले इसराईल के थे। यों वह वादा पूरा हुआ जो रब इसराईल के ख़ुदा ने अपने खादिम जात-हिफ़र के रहनेवाले नबी यूनुस बिन अमिती की मारिफ़त किया था। 26 क्योंकि रब ने इसराईल की निहायत बुरी हालत पर ध्यान दिया था। उसे मालूम था कि छोटे बड़े सब हलाक़ होनेवाले हैं और कि उन्हें छुड़ानेवाला कोई नहीं है। 27 रब ने कभी नहीं कहा था कि मैं इसराईल क़ौम का नामो-निशान मिटा दूँगा, इसलिए उसने उन्हें यरुबियाम बिन यहूआस के वसीले से नजात दिलाई।

28 बाक्री जो कुछ यरुबियाम दुवुम की हुकूमत के दौरान हुआ, जो कुछ उसने किया और जो जंगी कामयाबियाँ उसे हासिल हुई उनका जिक्र 'शाहाने-इसराईल की तारीख' की किताब में हुआ है। उसमें यह भी बयान किया गया है कि उसने किस तरह दमिश्क और हमात पर दुबारा कब्ज़ा कर लिया। 29 जब यरुबियाम मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे सामरिया में बादशाहों की कब्र में दफनाया गया। फिर उसका बेटा ज़करियाह तख्तनशीन हुआ।

15

यहदाह का बादशाह उज़्जियाह

1 उज़्जियाह बिन अमसियाह इसराईल के बादशाह यरुबियाम दुवुम की हुकूमत के 27वें साल में यहदाह का बादशाह बना। 2 उस वक़्त उस की उम्र 16 साल थी, और वह यरूशलम में रहकर 52 साल हुकूमत करता रहा। उस की माँ यकूलियाह यरूशलम की रहनेवाली थी। 3 अपने बाप अमसियाह की तरह उसका चाल-चलन रब को पसंद था, 4 लेकिन ऊँची जगहों को दूर न किया गया, और आम लोग वहाँ अपनी कुरबानियाँ चढ़ाते और बख़ूर जलाते रहे।

5 एक दिन रब ने बादशाह को सज़ा दी कि उसे कोढ़ लग गया। उज़्जियाह जीते-जी इस बीमारी से शफ़ा न पा सका, और उसे अलहदा घर में रहना पड़ा। उसके बेटे यूताम को महल पर मुक़र्रर किया गया, और वही उम्मत पर हुकूमत करने लगा।

6 बाक्री जो कुछ उज़्जियाह की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-यहदाह की तारीख' की किताब में दर्ज है। 7 जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है ख़ानदानी कब्र में दफनाया गया। फिर उसका बेटा यूताम तख्तनशीन हुआ।

इसराईल का बादशाह ज़करियाह

8 ज़करियाह बिन यरुबियाम यहदाह के बादशाह उज़्जियाह की हुकूमत के 38वें साल में इसराईल का बादशाह बना। उसका दास्त-हुकूमत भी सामरिया था, लेकिन छः माह के बाद उस की हुकूमत ख़त्म हो गई। 9 अपने बापदादा की तरह ज़करियाह का चाल-चलन भी रब को नापसंद था। वह उन गुनाहों से बाज़ न आया जो करने पर यरुबियाम बिन नबात ने इसराईल को उकसाया था। 10 सल्लूम बिन यबीस ने उसके खिलाफ़ साज़िश करके उसे सबके सामने क़त्ल किया। फिर वह उस की जगह बादशाह बन गया।

11 बाक्री जो कुछ ज़करियाह की हुकूमत के दौरान हुआ उसका जिक्र 'शाहाने-इसराईल की तारीख' की किताब में किया गया है।

12 यों रब का वह वादा पूरा हुआ जो उसने याह से किया था, "तेरी औलाद चौथी पुश्त तक इसराईल पर हुकूमत करती रहेगी।"

* 14:21 यहाँ कई जगहों पर इब्रानी में उज़्जियाह का दूसरा नाम अज़रियाह मुस्तामल है।

इसराईल का बादशाह सल्लूम

13 सल्लूम बिन यबीस यहदाह के बादशाह उज्जियाह के 39वें साल में इसराईल का बादशाह बना। वह सामरिया में रहकर सिर्फ एक माह तक तख्त पर बैठ सका। 14 फिर मनाहिम बिन जादी ने तिरज़ा से आकर सल्लूम को सामरिया में क़त्ल कर दिया। इसके बाद वह खुद तख्त पर बैठ गया।

15 बाक़ी जो कुछ सल्लूम की हुकूमत के दौरान हुआ और जो साज़िशें उसने कीं वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख़' की किताब में बयान किया गया है।

16 उस वक़्त मनाहिम ने तिरज़ा से आकर शहर तिफ़सह को उसके तमाम बाशिंदों और गिर्दो-नवाह के इलाक़े समेत तबाह किया। वजह यह थी कि उसके बाशिंदे अपने दरवाज़ों को खोलकर उसके ताबे हो जाने के लिए तैयार नहीं थे। जवाब में मनाहिम ने उनको मारा और तमाम हामिला औरतों के पेट चीर डाले।

इसराईल का बादशाह मनाहिम

17 मनाहिम बिन जादी यहदाह के बादशाह उज्जियाह की हुकूमत के 39वें साल में इसराईल का बादशाह बना। सामरिया उसका दास्त-हुकूमत था, और उस की हुकूमत का दौरानिया 10 साल था। 18 उसका चाल-चलन रब को नापसंद था, और वह जिंदगी-भर उन गुनाहों से बाज़ न आया जो करने पर यरूबियाम बिन नबात ने इसराईल को उकसाया था।

19-20 मनाहिम के दौर-हुकूमत में असूर का बादशाह पूल यानी तिग्लत-पिलेसर मुल्क से लड़ने आया। मनाहिम ने उसे 34,000 किलोग्राम चाँदी दे दी ताकि वह उस की हुकूमत मज़बूत करने में मदद करे। तब असूर का बादशाह इसराईल को छोड़कर अपने मुल्क वापस चला गया। चाँदी के यह पैसे मनाहिम ने अमीर इसराईलियों से जमा किए। हर एक को चाँदी के 50 सिक्के अदा करने पड़े।

21 बाक़ी जो कुछ मनाहिम की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख़' की किताब में दर्ज है।

22 जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसका बेटा फ़िक़हियाह तख्त पर बैठ गया।

इसराईल का बादशाह फ़िक़हियाह

23 फ़िक़हियाह बिन मनाहिम यहदाह के बादशाह उज्जियाह के 50वें साल में इसराईल का बादशाह बना। सामरिया में रहकर उस की हुकूमत का दौरानिया दो साल था। 24 फ़िक़हियाह का चाल-चलन रब को नापसंद था। वह उन गुनाहों से बाज़ न आया जो करने पर यरूबियाम बिन नबात ने इसराईल को उकसाया था।

25 एक दिन फ़ौज़ के आला अफ़सर फ़िक़ह बिन रमलियाह ने उसके खिलाफ़ साज़िश की। ज़िलियाद के 50 आदमियों को अपने साथ लेकर उसने फ़िक़हियाह को सामरिया के महल के बुर्ज में मार डाला। उस वक़्त दो और अफ़सर बनाम अरज़ूब और अरिया भी उस की ज़द में आकर मर गए। इसके बाद फ़िक़ह तख्त पर बैठ गया।

26 बाक़ी जो कुछ फ़िक़हियाह की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख़' की किताब में बयान किया गया है।

इसराईल का बादशाह फ़िक़ह

27 फ़िक़ह बिन रमलियाह यहदाह के बादशाह उज्जियाह की हुकूमत के 52वें साल में इसराईल का बादशाह बना। सामरिया में रहकर वह 20 साल तक हुकूमत करता रहा। 28 फ़िक़ह का चाल-चलन रब को नापसंद था। वह उन गुनाहों से बाज़ न आया जो करने पर यरूबियाम बिन नबात ने इसराईल को उकसाया था।

29 फ़िक़ह के दौर-हुकूमत में असूर के बादशाह तिग्लत-पिलेसर ने इसराईल पर हमला किया। ज़ैल के तमाम शहर उसके कब्ज़े में आ गए : ऐयून्, अबील-बैत-माका, यानूह, कादिस और हसूर। ज़िलियाद और गलील के इलाक़े भी नफ़ताली के पूरे क़बायली इलाक़े समेत उस की गिरिफ्त में आ गए। असूर का बादशाह इन तमाम जगहों में आबाद लोगों को गिरिफ्तार करके अपने मुल्क असूर ले गया।

30 एक दिन होसेअ बिन ऐला ने फ़िक़ह के खिलाफ़ साज़िश करके उसे मौत के घाट उतार दिया। फिर वह खुद तख्त पर बैठ गया। यह यहदाह के बादशाह यूताम बिन उज्जियाह की हुकूमत के 20वें साल में हुआ।

31 बाक़ी जो कुछ फ़िक़ह की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख़' की किताब में दर्ज है।

यहदाह का बादशाह यूताम

32 उज्जियाह का बेटा यूताम इसराईल के बादशाह फ़िक़ह की हुकूमत के दूसरे साल में यहदाह का बादशाह बना। 33 वह 25 साल की उम्र में बादशाह बना और यरूशलम में रहकर 16 साल हुकूमत करता रहा। उस की माँ यरूसा बित सदोक़ थी। 34 वह अपने बाप उज्जियाह की तरह वह कुछ करता रहा जो रब को पसंद था। 35 तो भी ऊँची जगहों के मंदिर हटाए न गए। लोग वहाँ अपनी कुरबानियाँ चढ़ाने और बख़ूर जलाने से बाज़ न आए। यूताम ने रब के घर का बालाई दरवाज़ा तामीर किया।

36 बाक़ी जो कुछ यूताम की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-यहदाह की तारीख़' की किताब में क़लमबंद है। 37 उन दिनों में रब शाम के बादशाह रज़ीन और फ़िक़ह बिन रमलियाह को यहदाह के खिलाफ़ भेजने लगा ताकि उससे लड़ें। 38 जब यूताम मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है खानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया। फिर उसका बेटा आख़ज़ तख्त पर बैठ गया।

16

यहूदाह का बादशाह आखज़

1 आखज़ बिन यूताम इसराईल के बादशाह फ़िक़ह बिन रमलियाह की हुकूमत के 17वें साल में यहूदाह का बादशाह बना। 2 उस वक़्त आखज़ 20 साल का था, और वह यरूशलम में रहकर 16 साल हुकूमत करता रहा। वह अपने बाप दाऊद के नमूने पर न चला बल्कि वह कुछ करता रहा जो रब को नापसंद था। 3 क्योंकि उसने इसराईल के बादशाहों का चाल-चलन अपनाया, यहाँ तक कि उसने अपने बेटे को कुरबानी के तौर पर जला दिया। यों वह उन कौमों के धिनौने रस्मों-रिवाज अदा करने लगा जिन्हें रब ने इसराईलियों के आगे मुल्क से निकाल दिया था। 4 आखज़ बख़ूर जलाकर अपनी कुरबानियाँ ऊँचे मक़ामों, पहाड़ियों की चोटियों और हर घने दरख़्त के साथ में चढ़ाता था।

आखज़ असूर के बादशाह से मदद लेता है

5 एक दिन शाम का बादशाह रज़ीन और इसराईल का बादशाह फ़िक़ह बिन रमलियाह यरूशलम पर हमला करने के लिए यहूदाह में घुस आए। उन्होंने शहर का मुहासरा तो किया लेकिन उस पर क़ब्ज़ा करने में नाकाम रहे। 6 उन्हीं दिनों में रज़ीन ने ऐलात पर दुबारा क़ब्ज़ा करके शाम का हिस्सा बना लिया। यहूदाह के लोगों को वहाँ से निकालकर उसने वहाँ अदोमियों को बसा दिया। यह अदोमी आज तक वहाँ आबाद हैं।

7 आखज़ ने अपने कासिदों को असूर के बादशाह तिग्लत-पिलेसर के पास भेजकर उसे इतला दी, “मैं आपका खादिम और बेटा हूँ। मेहरबानी करके आँ और मुझे शाम और इसराईल के बादशाहों से बचाएँ जो मुझ पर हमला कर रहे हैं।” 8 साथ साथ आखज़ ने वह चाँदी और सोना जमा किया जो रब के घर और शाही महल के खज़ानों में था और उसे तोहफ़े के तौर पर असूर के बादशाह को भेज दिया। 9 तिग्लत-पिलेसर राज़ी हो गया। उसने दमिश्क पर हमला करके शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया और उसके बाशिंदों को गिरफ़्तार करके क़ीर को ले गया। रज़ीन को उसने क़त्ल कर दिया।

आखज़ रब के घर की बेहुरमती करता है

10 आखज़ बादशाह असूर के बादशाह तिग्लत-पिलेसर से मिलने के लिए दमिश्क गया। वहाँ एक कुरबानगाह थी जिसका नमूना आखज़ ने बनाकर ऊरियाह इमाम को भेज दिया। साथ साथ उसने डिज़ायन की तमाम तफ़सीलात भी यरूशलम भेज दीं। 11 जब ऊरियाह को हिदायात मिलीं तो उसने उन्हीं के मुताबिक यरूशलम में एक कुरबानगाह बनाई। आखज़ के दमिश्क से वापस आने से पहले पहले उसे तैयार कर लिया गया।

12 जब बादशाह वापस आया तो उसने नई कुरबानगाह का मुआयना किया। फिर उस की सीढ़ी पर चढ़कर 13 उसने खुद कुरबानियाँ उस पर पेश कीं। भस्म होनेवाली कुरबानी और ग़ल्ला की नज़र जलाकर उसने मै की नज़र कुरबानगाह पर उड़ेल दी और सलामती की कुरबानियों का खून उस पर छिड़क दिया।

14 रब के घर और नई कुरबानगाह के दरमियान अब तक पीतल की पुरानी कुरबानगाह थी। अब आखज़ ने उसे उठाकर रब के घर के सामने से मुतक़िल करके नई कुरबानगाह के पीछे यानी शिमाल की तरफ़ रखवा दिया। 15 ऊरियाह इमाम को उसने हुक्म दिया, “अब से आपको तमाम कुरबानियों को नई कुरबानगाह पर पेश करना है। इनमें सुबहो-शाम की रोज़ाना कुरबानियाँ भी शामिल हैं और बादशाह और उम्मत की मुख़्तलिफ़ कुरबानियाँ भी, मसलन भस्म होनेवाली कुरबानियाँ और ग़ल्ला और मै की नज़रें। कुरबानियों के तमाम खून को भी सिर्फ़ नई कुरबानगाह पर छिड़कना है। आइंदा पीतल की पुरानी कुरबानगाह सिर्फ़ मेरे ज़ाती इस्तेमाल के लिए होगी जब मुझे अल्लाह से कुछ दरियाफ़्त करना होगा।”

16 ऊरियाह इमाम ने वैसा ही किया जैसा बादशाह ने उसे हुक्म दिया।

17 लेकिन आखज़ बादशाह रब के घर में मज़ीद तबदीलियाँ भी लाया। हथगाड़ियों के जिन फ़्रेमों पर बासन रखे जाते थे उन्हें तोड़कर उसने बासनों को दूर कर दिया। इसके अलावा उसने ‘समुंदर’ नामी बड़े हौज़ को पीतल के उन बैलों से उतार दिया जिन पर वह शुरू से पड़ा था और उसे पत्थर के एक चबूतरे पर रखवा दिया। 18 उसने असूर के बादशाह को ख़ुश रखने के लिए एक और काम भी किया। उसने रब के घर से वह चबूतरा दूर कर दिया जिस पर बादशाह का तख़्त रखा जाता था और वह दरवाज़ा बंद कर दिया जो बादशाह रब के घर में दाख़िल होने के लिए इस्तेमाल करता था।

19 बाकी जो कुछ आखज़ की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह ‘शाहाने-यहूदाह की तारीख़’ की किताब में दर्ज है। 20 जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया। फिर उसका बेटा हिज़क्रियाह तख़्तनशीन हुआ।

17

इसराईल का आख़िरी बादशाह होसेअ

1 होसेअ बिन ऐला यहूदाह के बादशाह आखज़ की हुकूमत के 12वें साल में इसराईल का बादशाह बना। सामरिया उसका दास्त-हुकूमत रहा, और उस की हुकूमत का दौरानिया 9 साल था। 2 होसेअ का चाल-चलन रब को नापसंद था, लेकिन इसराईल के उन बादशाहों की निसबत जो उससे पहले थे वह कुछ बेहतर था।

3 एक दिन असूर के बादशाह सल्मनसर ने इसराईल पर हमला किया। तब होसेअ शिकस्त मानकर उसके ताबे हो गया। उसे असूर को खराज अदा करना पड़ा। 4 लेकिन चंद साल के बाद वह सरकारश हो गया। उसने खराज का सालाना सिलसिला बंद करके अपने सफ़ीरों को मिसर के बादशाह सो के पास भेजा ताकि उससे मदद हासिल करे। जब असूर के बादशाह को पता चला तो उसने उसे पकड़कर जेल में डाल दिया।

सामरिया का अंजाम

5 सल्मनसर पूरे मुल्क में से गुज़रकर सामरिया तक पहुँच गया। तीन साल तक उसे शहर का मुहासरा करना पड़ा, 6 लेकिन आखिरकार वह होसेअ की हुकूमत के नवें साल में कामयाब हुआ और शहर पर कब्ज़ा करके इसराईलियों को जिलावतन कर दिया। उन्हें असूर लाकर उसने कुछ खलह के इलाके में, कुछ जौज़ान के दरियाए-खाबूर के किनारे पर और कुछ मादियों के शहरों में बसाए।

7 यह सब कुछ इसलिए हुआ कि इसराईलियों ने रब अपने खुदा का गुनाह किया था, हालाँकि वह उन्हें मिसरी बादशाह फिरौन के कब्ज़े से रिहा करके मिसर से निकाल लाया था। वह दीगर माबूदों की पूजा करते 8 और उन क्रौमों के रस्मो-रिवाज की पैरवी करते जिनको रब ने उनके आगे से निकाल दिया था। साथ साथ वह उन रस्मों से भी लिपटे रहे जो इसराईल के बादशाहों ने शुरू की थीं। 9 इसराईलियों को रब अपने खुदा के खिलाफ़ बहुत तरकीबें सूझीं जो ठीक नहीं थीं। सबसे छोटी चौकी से लेकर बड़े से बड़े किलाबंद शहर तक उन्होंने अपने तमाम शहरों की ऊँची जगहों पर मंदिर बनाए। 10 हर पहाड़ी की चोटी पर और हर घने दरख्त के साय में उन्होंने पत्थर के अपने देवताओं के सतून और यसीरत देवी के खंबे खड़े किए। 11 हर ऊँची जगह पर वह बखूर जला देते थे, बिलकुल उन अक्वाम की तरह जिन्हें रब ने उनके आगे से निकाल दिया था। गरज़ इसराईलियों से बहुत-सी ऐसी शरीर हरकतें सरज़द हुईं जिनको देखकर रब को गुस्सा आया। 12 वह बुतों की परस्तिश करते रहे अगरचे रब ने इससे मना किया था।

13 बार बार रब ने अपने नबियों और गैबबीनों को इसराईल और यहदाह के पास भेजा था ताकि उन्हें आगाह करें, “अपनी शरीर राहों से बाज़ आओ। मेरे अहकाम और क़वायद के ताबे रहो। उस पूरी शरीअत की पैरवी करो जो मैंने तुम्हारे बापदादा को अपने खादिमों यानी नबियों के वसीले से दे दी थी।”

14 लेकिन वह सुनने के लिए तैयार नहीं थे बल्कि अपने बापदादा की तरह अड़ गए, क्योंकि वह भी रब अपने खुदा पर भरोसा नहीं करते थे। 15 उन्होंने उसके अहकाम और उस अहद को रद्द किया जो उसने उनके बापदादा से बाँधा था। जब भी उसने उन्हें किसी बात से आगाह किया तो उन्होंने उसे हकीर जाना। बेकार बुतों की पैरवी करते करते वह खुद बेकार हो गए। वह गिर्दो-नवाह की क्रौमों के नमूने पर चल पड़े हालाँकि रब ने इससे मना किया था। 16 रब अपने खुदा के तमाम अहकाम को मुस्तरद करके उन्होंने अपने लिए बछड़ों के दो मुजस्समे ढाल लिए और यसीरत देवी का खंबा खड़ा कर दिया। वह सूरज, चाँद बल्कि आसमान के पूरे लशकर के सामने झुक गए और बाल देवता की परस्तिश करने लगे। 17 अपने बेटे-बेटियों को उन्होंने अपने बुतों के लिए कुरबान करके जला दिया। नुज़ूमियों से मशवरा लेना और जादूगारी करना आम हो गया। गरज़ उन्होंने अपने आपको बर्दी के हाथ में बेचकर ऐसा काम किया जो रब को नापसंद था और जो उसे गुस्सा दिलाता रहा।

18 तब रब का ग़ज़ब इसराईल पर नाज़िल हुआ, और उसने उन्हें अपने हुज़ूर से खारिज कर दिया। सिर्फ़ यहदाह का कबीला मुल्क में बाक़ी रह गया।

19 लेकिन यहदाह के अफ़राद भी रब अपने खुदा के अहकाम के ताबे रहने के लिए तैयार नहीं थे। वह भी उन बुरे रस्मो-रिवाज की पैरवी करते रहे जो इसराईल ने शुरू किए थे। 20 फिर रब ने पूरी की पूरी क्रौम को रद्द कर दिया। उन्हें तंग करके वह उन्हें लुटेरों के हवाले करता रहा, और एक दिन उसने उन्हें भी अपने हुज़ूर से खारिज कर दिया।

21 रब ने खुद इसराईल के शिमाली कबीलों को दाऊद के घराने से अलग कर दिया था, और उन्होंने यस्बियाम बिन नबात को अपना बादशाह बना लिया था। लेकिन यस्बियाम ने इसराईल को एक संगीन गुनाह करने पर उकसाकर रब की पैरवी करने से दूर किए रखा। 22 इसराईली यस्बियाम के बुरे नमूने पर चलते रहे और कभी इससे बाज़ न आए।

23 यही वजह है कि जो कुछ रब ने अपने खादिमों यानी नबियों की मारिफ़त फ़रमाया था वह पूरा हुआ। उसने उन्हें अपने हुज़ूर से खारिज कर दिया, और दुश्मन उन्हें कैदी बनाकर असूर ले गया जहाँ वह आज तक ज़िंदगी गुज़ारते हैं।

सामरिया में अजनबी क्रौमों को आबाद किया जाता है

24 असूर के बादशाह ने बाबल, कूता, अन्वा, हमात और सिफ़रवायम से लोगों को इसराईल में लाकर सामरिया के इसराईलियों से खाली किए गए शहरों में बसा दिया। यह लोग सामरिया पर कब्ज़ा करके उसके शहरों में बसने लगे। 25 लेकिन आते वक़्त वह रब की परस्तिश नहीं करते थे, इसलिए रब ने उनके दरमियान शेरबबर भेज दिए जिन्होंने कई एक को फाड़ डाला।

26 असूर के बादशाह को इतला दी गई, “जिन लोगों को आपने जिलावतन करके सामरिया के शहरों में बसा दिया है वह नहीं जानते कि उस मुल्क का देवता किन किन बातों का तकाज़ा करता है। नतीजे में उसने उनके दरमियान शेरबबर भेज दिए हैं जो उन्हें फाड़ रहे हैं। और वजह यही है कि वह उस की सही पूजा करने से वाकिफ़ नहीं हैं।” 27 यह सुनकर असूर के बादशाह ने हुक्म दिया, “सामरिया से यहाँ लाए गए इमामों में से एक को चुन लो जो अपने वतन लौटकर वहाँ दुबारा आबाद हो जाए और लोगों को सिखाए कि उस मुल्क का देवता अपनी पूजा के लिए किन किन बातों का तकाज़ा करता है।”

28 तब एक इमाम जिलावतनी से वापस आया। बैतेल में आबाद होकर उसने नए बाशिंदों को सिखाया कि रब की मुनासिब इबादत किस तरह की जाती है। 29 लेकिन साथ साथ वह अपने ज्ञाती देवताओं की पूजा भी करते रहे। शहर बशहर हर क्रौम ने अपने अपने बुत बनाकर उन तमाम ऊँची जगहों के मंदिरों में खड़े किए जो सामरिया के लोगों ने बना छोड़े थे। 30 बाबल के बाशिंदों ने सुक्कात-बनात के बुत, कृता के लोगों ने नैरगल के मुजस्समे, हमातवालों ने असीमा के बुत 31 और अक्वा के लोगों ने निबहाज और तरताक के मुजस्समे खड़े किए। सिफरवायम के बाशिंदे अपने बच्चों को अपने देवताओं अद्रम्मलिक और अनम्मलिक के लिए कुरबान करके जला देते थे। 32 गरज सब रब की परस्तिश के साथ साथ अपने देवताओं की पूजा भी करते और अपने लोगों में से मुख्तलिफ किस्म के अफराद को चुनकर पुजारी मुकरर करते थे ताकि वह ऊँची जगहों के मंदिरों को सँभालें। 33 वह रब की इबादत भी करते और साथ साथ अपने देवताओं की उन क्रौमों के रिवाजों के मुताबिक इबादत भी करते थे जिनमें से उन्हें यहाँ लाया गया था।

34 यह सिलसिला आज तक जारी है। सामरिया के बाशिंदे अपने उन पुराने रिवाजों के मुताबिक जिंदगी गुजारते हैं और सिर्फ रब की परस्तिश करने के लिए तैयार नहीं होते। वह उस की हिदायात और अहकाम की परवा नहीं करते और उस शरीअत की पैरवी नहीं करते जो रब ने याकूब की औलाद को दी थी। (रब ने याकूब का नाम इसराईल में बदल दिया था।) 35 क्योंकि रब ने इसराईल की क्रौम के साथ अहद बाँधकर उसे हुक्म दिया था,

“दूसरे किसी भी माबूद की इबादत मत करना! उनके सामने झुककर उनकी खिदमत मत करना, न उन्हें कुरबानियाँ पेश करना। 36 सिर्फ रब की परस्तिश करो जो बड़ी कुदरत और अजीम काम दिखाकर तुम्हें मिसर से निकाल लाया। सिर्फ उसी के सामने झुक जाओ, सिर्फ उसी को अपनी कुरबानियाँ पेश करो। 37 लाज़िम है कि तुम ध्यान से उन तमाम हिदायात, अहकाम और क़वायद की पैरवी करो जो मैंने तुम्हारे लिए कलमबंद कर दिए हैं। किसी और देवता की पूजा मत करना। 38 वह अहद मत भूलना जो मैंने तुम्हारे साथ बाँध लिया है, और दीगर माबूदों की परस्तिश न करो। 39 सिर्फ और सिर्फ रब अपने खुदा की इबादत करो। वही तुम्हें तुम्हारे तमाम दुश्मनों के हाथ से बचा लेगा।”

40 लेकिन लोग यह सुनने के लिए तैयार नहीं थे बल्कि अपने पुराने रस्मो-रिवाज के साथ लिपटे रहे। 41 चुनौचे रब की इबादत के साथ ही सामरिया के नए बाशिंदे अपने बुतों की पूजा करते रहे। आज तक उनकी औलाद यही कुछ करती आई है।

18

यहदाह का बादशाह हिज़क्रियाह

1 इसराईल के बादशाह होसेअ बिन ऐला की हुक्मत के तीसरे साल में हिज़क्रियाह बिन आखज़ यहदाह का बादशाह बना। 2 उस वक़्त उस की उम्र 25 साल थी, और वह यरूशलम में रहकर 29 साल हुक्मत करता रहा। उस की माँ अबी बित ज़करियाह थी। 3 अपने बाप दाऊद की तरह उसने ऐसा काम किया जो रब को पसंद था। 4 उसने ऊँची जगहों के मंदिरों को गिरा दिया, पत्थर के उन सतूनों को टुकड़े टुकड़े कर दिया जिनकी पूजा की जाती थी और यसीरत देवी के खंबों को काट डाला। पीतल का जो साँप मूसा ने बनाया था उसे भी बादशाह ने टुकड़े टुकड़े कर दिया, क्योंकि इसराईली उन ऐयाम तक उसके सामने बखूर जलाने आते थे। (साँप नखुशतान कहलाता था।)

5 हिज़क्रियाह रब इसराईल के खुदा पर भरोसा रखता था। यहदाह में न इससे पहले और न इसके बाद ऐसा बादशाह हुआ। 6 वह रब के साथ लिपटा रहा और उस की पैरवी करने से कभी भी बाज़ न आया। वह उन अहकाम पर अमल करता रहा जो रब ने मूसा को दिए थे। 7 इसलिए रब उसके साथ रहा। जब भी वह किसी मक़सद के लिए निकला तो उसे कामयाबी हासिल हुई।

चुनौचे वह असूर की हुक्मत से आज़ाद हो गया और उसके ताबे न रहा। 8 फिलिस्तियों को उसने सबसे छोटी चौकी से लेकर बड़े से बड़े किलाबंद शहर तक शिकस्त दी और उन्हें मारते मारते गज्ज़ा शहर और उसके इलाके तक पहुँच गया।

असूरी इसराईल पर क़ब्ज़ा करते हैं

9 हिज़क्रियाह की हुक्मत के चौथे साल में और इसराईल के बादशाह होसेअ की हुक्मत के सातवें साल में असूर के बादशाह सल्मनसर ने इसराईल पर हमला किया। सामरिया शहर का मुहासरा करके 10 वह तीन साल के बाद उस पर क़ब्ज़ा करने में कामयाब हुआ। यह हिज़क्रियाह की हुक्मत के छठे साल और इसराईल के बादशाह होसेअ की हुक्मत के नवें साल में हुआ। 11 असूर के बादशाह ने इसराईलियों को जिलावतन करके कुछ खलह के इलाके में, कुछ जौज़ान के दरियाए-खाबूर के किनारे पर और कुछ मादियों के शहरों में बसाए।

12 यह सब कुछ इसलिए हुआ कि वह रब अपने खुदा के ताबे न रहे बल्कि उसके उनके साथ बँधे हुए अहद को तोड़कर उन तमाम अहकाम के फ़रमाँबरदार न रहे जो रब के खादिम मूसा ने उन्हें दिए थे। न वह उनकी सुनते और न उन पर अमल करते थे।

असूरी यरूशलम का मुहासरा करते हैं

13 हिज़क्रियाह बादशाह की हुक्मत के 14वें साल में असूर के बादशाह सनहेरिब ने यहदाह के तमाम किलाबंद शहरों पर धावा बोलकर उन पर क़ब्ज़ा कर लिया। 14 जब असूर का बादशाह लकीस के आस-पास पहुँचा तो यहदाह के बादशाह हिज़क्रियाह ने उसे इतला दी, “मुझसे गलती हुई है। मुझे छोड़ दें तो जो कुछ भी आप मुझसे तलब करेंगे मैं आपको अदा करूँगा।”

तब सनहेरिब ने हिज़क्रियाह से चाँदी के तकरीबन 10,000 किलोग्राम और सोने के तकरीबन 1,000 किलोग्राम माँग लिया। 15 हिज़क्रियाह ने उसे वह तमाम चाँदी दे दी जो रब के घर और शाही महल के खज़ानों में पड़ी थी। 16 सोने का तकाज़ा पूरा करने के लिए उसने रब के घर के

दरवाजों और चौखटों पर लगा सोना उतरवाकर उसे असूर के बादशाह को भेज दिया। यह सोना उसने खुद दरवाजों और चौखटों पर चढ़वाया था।

17 फिर भी असूर का बादशाह मुतमइन न हुआ। उसने अपने सबसे आला अफसरों को बड़ी फौज के साथ लकीस से यरूशलम को भेजा (उनकी अपनी ज़बान में अफसरों के ओहदों के नाम तरतान, रब-सारिस और रबशाकी थे)। यरूशलम पहुँचकर वह उस नाले के पास रुक गए जो पानी को ऊपरवाले तालाब तक पहुँचाता है (यह तालाब उस रास्ते पर है जो धोबियों के घाट तक ले जाता है)। 18 इन तीन असूरी अफसरों ने इतला दी कि बादशाह हमसे मिलने आए, लेकिन हिज़क्रियाह ने महल के इंचार्ज इलियाकीम बिन खिलक्रियाह, मीरमुंशी शिबनाह और मुशरि-खास युआख बिन आसफ को उनके पास भेजा। 19 रबशाकी ने उनके हाथ हिज़क्रियाह को पैगाम भेजा,

“असूर के अजीम बादशाह फ़रमाते हैं, तुम्हारा भरोसा किस चीज़ पर है? 20 तुम समझते हो कि खाली बातें करना फ़ौजी हिकमते-अमली और ताकत के बराबर है। यह कैसी बात है? तुम किस पर एतमाद कर रहे हो कि मुझसे सरकश हो गए हो? 21 क्या तुम मिसर पर भरोसा करते हो? वह तो टूटा हुआ सरकंडा ही है। जो भी उस पर टेक लगाए उसका हाथ वह चीरकर ज़खमी कर देगा। यही कुछ उन सबके साथ हो जाएगा जो मिसर के बादशाह फ़िरौन पर भरोसा करें! 22 शायद तुम कहो, ‘हम रब अपने खुदा पर तबक्कुल करते हैं।’ लेकिन यह किस तरह हो सकता है? हिज़क्रियाह ने तो उस की बेहुरमती की है। क्योंकि उसने ऊँची जगहों के मंदिरों और कुरबानगाहों को ढाकर यहूदाह और यरूशलम से कहा है कि सिर्फ यरूशलम की कुरबानगाह के सामने परस्तिश करें।

23 आओ, मेरे आक्रा असूर के बादशाह से सौदा करो। मैं तुम्हें 2,000 घोड़े दूँगा बशर्ते कि तुम उनके लिए सवार मुहैया कर सको। लेकिन अफसोस, तुम्हारे पास इतने घुड़सवार हैं ही नहीं! 24 तुम मेरे आक्रा असूर के बादशाह के सबसे छोटे अफसर का भी मुकाबला नहीं कर सकते। लिहाज़ा मिसर के रथों पर भरोसा रखने का क्या फ़ायदा? 25 शायद तुम समझते हो कि मैं रब की मरज़ी के बग़ैर ही इस जगह पर हमला करने आया हूँ ताकि सब कुछ बरबाद करूँ। लेकिन ऐसा हरगिज़ नहीं है! रब ने खुद मुझे कहा कि इस मुल्क पर धावा बोलकर इसे तबाह कर दे।”

26 यह सुनकर इलियाकीम बिन खिलक्रियाह, शिबनाह और युआख ने रबशाकी की तक़रीर में दखल देकर कहा, “बराहे-करम अरामी ज़बान में अपने खादिमों के साथ गुफ़्तगू कीजिए, क्योंकि हम यह अच्छी तरह बोल लेते हैं। इब्रानी ज़बान इस्तेमाल न करें, वरना शहर की फ़सील पर खड़े लोग आपकी बातें सुन लेंगे।” 27 लेकिन रबशाकी ने जवाब दिया, “क्या तुम समझते हो कि मेरे मालिक ने यह पैगाम सिर्फ़ तुम्हें और तुम्हारे मालिक को भेजा है? हरगिज़ नहीं! वह चाहते हैं कि तमाम लोग यह बातें सुन लें। क्योंकि वह भी तुम्हारी तरह अपना फुज़्ला खाने और अपना पेशाब पीने पर मजबूर हो जाएंगे।”

28 फिर वह फ़सील की तरफ़ मुड़कर बुलंद आवाज़ से इब्रानी ज़बान में अवाम से मुखातिब हुआ, “सुनो, शहनशाह, असूर के बादशाह के फ़रमान पर ध्यान दो! 29 बादशाह फ़रमाते हैं कि हिज़क्रियाह तुम्हें धोका न दे। वह तुम्हें मेरे हाथ से बचा नहीं सकता। 30 बेशक वह तुम्हें तसल्ली दिलाने की कोशिश करके कहता है, ‘रब हमें ज़रूर छुटकारा देगा, यह शहर कभी भी असूरी बादशाह के कब्ज़े में नहीं आएगा।’ लेकिन इस किस्म की बातों से तसल्ली पाकर रब पर भरोसा मत करना। 31 हिज़क्रियाह की बातें न मानो बल्कि असूर के बादशाह की। क्योंकि वह फ़रमाते हैं, मेरे साथ सुलह करो और शहर से निकलकर मेरे पास आ जाओ। फिर तुममें से हर एक अंगूर की अपनी बेल और अंजीर के अपने दरख़्त का फल खाएगा और अपने हौज़ का पानी पीएगा। 32 फिर कुछ देर के बाद मैं तुम्हें एक ऐसे मुल्क में ले जाऊँगा जो तुम्हारे अपने मुल्क की मानिंद होगा। उसमें भी अनाज, नई मै, रोटी और अंगूर के बाग़, जैतून के दरख़्त और शहद है। गरज़, मौत की राह इख्तियार न करना बल्कि जिंदगी की राह। हिज़क्रियाह की मत सुनना। जब वह कहता है, ‘रब हमें बचाएगा’ तो वह तुम्हें धोका दे रहा है। 33 क्या दीगर अक्वाम के देवता अपने मुल्कों को शाहे-असूर से बचाने के काबिल रहे हैं? 34 हमारा और अरफ़ाद के देवता कहाँ रह गए हैं? सिफ़रवायम, हेना और इव्वा के देवता क्या कर सके? और क्या किसी देवता ने सामरिया को मेरी गिरिफ़्त से बचाया? 35 नहीं, कोई भी देवता अपना मुल्क मुझसे बचा न सका। तो फिर रब यरूशलम को किस तरह मुझसे बचाएगा?”

36 फ़सील पर खड़े लोग ख़ामोश रहे। उन्होंने कोई जवाब न दिया, क्योंकि बादशाह ने हुक्म दिया था कि जवाब में एक लफ़ज़ भी न कहें। 37 फिर महल का इंचार्ज इलियाकीम बिन खिलक्रियाह, मीरमुंशी शिबनाह और मुशरि-खास युआख बिन आसफ़ रंजिश के मारे अपने लिबास फाड़कर हिज़क्रियाह के पास वापस गए। दरबार में पहुँचकर उन्होंने बादशाह को सब कुछ कह सुनाया जो रबशाकी ने उन्हें कहा था।

19

रब हिज़क्रियाह को तसल्ली देता है

1 यह बातें सुनकर हिज़क्रियाह ने अपने कपड़े फाड़े और टाट का मातमी लिबास पहनकर रब के घर में गया। 2 साथ साथ उसने महल के इंचार्ज इलियाकीम, मीरमुंशी शिबनाह और इमामों के बुजुर्गों को आमूस के बेटे यसायाह नबी के पास भेजा। सब टाट के मातमी लिबास पहने हुए थे। 3 नबी के पास पहुँचकर उन्होंने हिज़क्रियाह का पैगाम सुनाया, “आज हम बड़ी मुसीबत में हैं। सज़ा के इस दिन असूरियों ने हमारी सख़्त बेइज़्ज़ती की है। हमारा हाल दर्दे-ज़ह में मुब्तला उस औरत का-सा है जिसके पेट से बच्चा निकलने को है, लेकिन जो इसलिए नहीं निकल सकता कि माँ की ताकत जाती रही है। 4 लेकिन शायद रब आपके खुदा ने रबशाकी की वह तमाम बातें सुनी हों जो उसके आक्रा असूर के बादशाह ने जिंदा खुदा की तौहीन में भेजी हैं। हो सकता है रब आपका खुदा उस की बातें सुनकर उसे सज़ा दे। बराहे-करम हमारे लिए जो अब तक बचे हुए हैं दुआ करें।”

5 जब हिजकियाह के अफसरों ने यसायाह को बादशाह का पैगाम पहुँचाया 6 तो नबी ने जवाब दिया, “अपने आका को बता देना कि रब फरमाता है, ‘उन धमकियों से खौफ मत खा जो असूरी बादशाह के मुलाजिमों ने मेरी इहानत करके दी है।’ 7 देख, मैं उसका इरादा बदल दूँगा। वह अफवाह सुनकर इतना मुजतरिब हो जाएगा कि अपने ही मुल्क वापस चला जाएगा। वहाँ मैं उसे तलवार से मरवा दूँगा।”

सनहेरिब की धमकियाँ और हिजकियाह की दुआ

8 रबशाकी यरूशलम को छोड़कर असूर के बादशाह के पास वापस चला गया जो उस वक्त लकीस से रवाना होकर लिबना पर चढ़ाई कर रहा था।

9 फिर सनहेरिब को इतला मिली, “एथोपिया का बादशाह तिरहाका आपसे लड़ने आ रहा है।” तब उसने अपने कासिदों को दुबारा यरूशलम भेज दिया ताकि हिजकियाह को पैगाम पहुँचाएँ, 10 “जिस देवता पर तुम भरोसा रखते हो उससे फरेब न खाओ जब वह कहता है कि यरूशलम कभी असूरी बादशाह के कब्जे में नहीं आएगा। 11 तुम तो सुन चुके हो कि असूर के बादशाहों ने जहाँ भी गए क्या कुछ किया है। हर मुल्क को उन्होंने मुकम्मल तौर पर तबाह कर दिया है। तो फिर तुम किस तरह बच जाओगे? 12 क्या जौज़ान, हारान और रसफ के देवता उनकी हिफाज़त कर पाएँ? क्या मुल्के-अदन में तिलस्सार के बाशिंदे बच सके? नहीं, कोई भी देवता उनकी मदद न कर सका जब मेरे बापदादा ने उन्हें तबाह किया। 13 ध्यान दो, अब हमात, अरफ़ाद, सिफ़रवायम शहर, हेना और इव्वा के बादशाह कहाँ हैं?”

14 खत मिलने पर हिजकियाह ने उसे पढ़ लिया और फिर रब के घर के सहन में गया। खत को रब के सामने बिछाकर 15 उसने रब से दुआ की,

“ऐ रब इसराईल के ख़ुदा जो क़रूबी फ़रिश्तों के दरमियान तख़्तनशीन है, तू अकेला ही दुनिया के तमाम ममालिक का ख़ुदा है। तू ही ने आसमानो-ज़मीन को ख़लक किया है। 16 ऐ रब, मेरी सुन! अपनी आँखें खोलकर देख! सनहेरिब की उन बातों पर ध्यान दे जो उसने इस मक़सद से हम तक पहुँचाई हैं कि ज़िंदा ख़ुदा की इहानत करे। 17 ऐ रब, यह बात सच है कि असूरी बादशाहों ने इन क़ौमों को उनके मुल्कों समेत तबाह कर दिया है। 18 वह तो उनके बुतों को आग में फेंककर भस्म कर सकते थे, क्योंकि वह ज़िंदा नहीं बल्कि सिर्फ़ इनसान के हाथों से बने हुए लकड़ी और पत्थर के बुत थे। 19 ऐ रब हमारे ख़ुदा, अब मैं तुझसे इतमास करता हूँ कि हमें असूरी बादशाह के हाथ से बचा ताकि दुनिया के तमाम ममालिक जान लें कि तू ऐ रब, वाहिद ख़ुदा है।”

असूरी की लान-तान पर अल्लाह का जवाब

20 फिर यसायाह बिन आमूस ने हिजकियाह को पैगाम भेजा, “रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि मैंने असूरी बादशाह सनहेरिब के बारे में तेरी दुआ सुनी है। 21 अब रब का उसके खिलाफ़ फ़रमान सुन,

कुँवारी सिय्यून बेटी तुझे हकीर जानती है, हाँ यरूशलम बेटी अपना सर हिला हिलाकर हिकारतआमेज़ नज़र से तेरे पीछे देखती है। 22 क्या तू नहीं जानता कि किस को गालियाँ दीं और किसकी इहानत की है? क्या तुझे नहीं मालूम कि तूने किसके खिलाफ़ आवाज़ बुलंद की है? जिसकी तरफ़ तू ग़ुर्र की नज़र से देख रहा है वह इसराईल का कुदूस है!

23 अपने कासिदों के ज़रीए तूने रब की इहानत की है। तू डींगें मारकर कहता है, ‘मैं अपने बेशुमार रथों से पहाड़ों की चोटियों और लुबनान की इतहा तक चढ़ गया हूँ। मैं देवदार के बड़े बड़े और जूनीपर के बेहतरीन दरख़्तों को काटकर लुबनान के दूरतरीन कोनों तक, उसके सबसे घने जंगल तक पहुँच गया हूँ। 24 मैंने ग़ैरमुल्कों में कुँए ख़ुदाकर उनका पानी पी लिया है। मेरे तल्वों तले मिसर की तमाम नदियाँ ख़ुशक हो गईं।’

25 ऐ असूरी बादशाह, क्या तूने नहीं सुना कि बड़ी देर से मैंने यह सब कुछ मुक़र्रर किया? क़दीम ज़माने में ही मैंने इसका मनसूबा बाँध लिया, और अब मैं इसे वुज़ूद में लाया। मेरी मरज़ी थी कि तू क़िलाबंद शहरों को खाक में मिलाकर पत्थर के ढेरों में बदल दे। 26 इसी लिए उनके बाशिंदों की ताक़त जाती रही, वह घबराए और शर्मिंदा हुए। वह घास की तरह कमज़ोर थे, छत पर उगनेवाली उस हरियाली की मानिंद जो थोड़ी देर के लिए फलती-फूलती तो है, लेकिन लू चलते वक़्त एकदम मुरझा जाती है। 27 मैं तो तुझसे ख़ूब वाकिफ़ हूँ। मुझे मालूम है कि तू कहाँ ठहरा हुआ है, और तेरा आना जाना मुझसे पोशीदा नहीं रहता। मुझे पता है कि तू मेरे खिलाफ़ कितने तैश में आ गया है। 28 तेरा तैश और ग़ुर्र देखकर मैं तेरी नाक में नकेल और तेरे मुँह में लगाम डालकर तुझे उस रास्ते पर से वापस घसीट ले जाऊँगा जिस पर से तू यहाँ आ पहुँचा है।

29 ऐ हिजकियाह, मैं इस निशान से तुझे तसल्ली दिलाऊँगा कि इस साल और आनेवाले साल तुम वह कुछ खाओगे जो खेतों में ख़ुद बख़ुद उगेगा। लेकिन तीसरे साल तुम बीज बोकर फ़सलें काटोगे और अंगूर के बाग़ लगाकर उनका फल खाओगे। 30 यहदाह के बचे हुए बाशिंदे एक बार फिर जड़ पकड़कर फल लाएँगे। 31 क्योंकि यरूशलम से क़ौम का बक़िया निकल आएगा, और कोहे-सिय्यून का बचा-खुचा हिस्सा दुबारा मुल्क में फैल जाएगा। रब्बुल-अफ़वाज़ की ग़ैरत यह कुछ संरजाम देगी।

32 जहाँ तक असूरी बादशाह का ताल्लुक है रब फ़रमाता है कि वह इस शहर में दाख़िल नहीं होगा। वह एक तीर तक उसमें नहीं चलाएगा। न वह ढाल लेकर उस पर हमला करेगा, न शहर की फ़सील के साथ मिट्टी का ढेर लगाएगा। 33 जिस रास्ते से बादशाह यहाँ आया उसी रास्ते पर से वह अपने मुल्क वापस चला जाएगा। इस शहर में वह घुसने नहीं पाएगा। यह रब का फ़रमान है। 34 क्योंकि मैं अपनी और अपने खादिम दाऊद की खातिर इस शहर का दिफ़ा करके इसे बचाऊँगा।”

35 उसी रात रब का फरिश्ता निकल आया और असूरी लशकरगाह में से गुजरकर 1,85,000 फौजियों को मार डाला। जब लोग सुबह-सवेरे उठे तो चारों तरफ लाशें ही लाशें नज़र आईं।

36 यह देखकर सनहेरिब अपने खैमे उखाड़कर अपने मुल्क वापस चला गया। नीनवा शहर पहुँचकर वह वहाँ ठहर गया। 37 एक दिन जब वह अपने देवता निसरूक के मंदिर में पूजा कर रहा था तो उसके बेटों अद्रम्मलिक और शराज़र ने उसे तलवार से कत्ल कर दिया और फ़रार होकर मुल्के-अरारात में पनाह ली। फिर उसका बेटा असहर्द्दून तख़्तनशीन हुआ।

20

अल्लाह हिज़क्रियाह को शफ़ा देता है

1 उन दिनों में हिज़क्रियाह इतना बीमार हुआ कि मरने की नौबत आ पहुँची। आमूस का बेटा यसायाह नबी उससे मिलने आया और कहा, “रब फ़रमाता है कि अपने घर का बंदोबस्त कर ले, क्योंकि तुझे मरना है। तू इस बीमारी से शफ़ा नहीं पाएगा।”

2 यह सुनकर हिज़क्रियाह ने अपना मुँह दीवार की तरफ़ फेरकर दुआ की, 3 “ऐ रब, याद कर कि मैं वफ़ादारी और खुलूसदिली से तेरे सामने चलता रहा हूँ, कि मैं वह कुछ करता आया हूँ जो तुझे पसंद है।” फिर वह फूट फूटकर रोने लगा।

4 इतने में यसायाह चला गया था। लेकिन वह अभी अंदरूनी सहन से निकला नहीं था कि उसे रब का कलाम मिला, 5 “मेरी क्रौम के राहनुमा हिज़क्रियाह के पास वापस जाकर उसे बता देना कि रब तेरे बाप दाऊद का खुदा फ़रमाता है, ‘मैंने तेरी दुआ सुन ली और तेरे आँसू देखे हैं। मैं तुझे शफ़ा दूँगा। परसों तू दुबारा रब के घर में जाएगा। 6 मैं तेरी ज़िंदगी में 15 साल का इज़ाफ़ा करूँगा। साथ साथ मैं तुझे और इस शहर को असूर के बादशाह से बचा लूँगा। मैं अपनी और अपने खादिम दाऊद की खातिर शहर का दिफ़ा करूँगा’।”

7 फिर यसायाह ने हुक्म दिया, “अंजीर की टिककी लाकर बादशाह के नासूर पर बाँध दो!” जब ऐसा किया गया तो हिज़क्रियाह को शफ़ा मिली। 8 पहले हिज़क्रियाह ने यसायाह से पूछा था, “रब मुझे कौन-सा निशान देगा जिससे मुझे यक़ीन आए कि वह मुझे शफ़ा देगा और कि मैं परसों दुबारा रब के घर की इबादत में शरीक हूँगा?” 9 यसायाह ने जवाब दिया, “रब धूपघड़ी का साया दस दर्जे आगे करेगा या दस दर्जे पीछे। इससे आप जान लेंगे कि वह अपना वादा पूरा करेगा। आप क्या चाहते हैं, क्या साया दस दर्जे आगे चले या दस दर्जे पीछे?” 10 हिज़क्रियाह ने जवाब दिया, “यह करवाना कि साया दस दर्जे आगे चले आसान काम है। नहीं, वह दस दर्जे पीछे जाए।”

11 तब यसायाह नबी ने रब से दुआ की, और रब ने आख़ज़ की बनाई हुई धूपघड़ी का साया दस दर्जे पीछे कर दिया।

हिज़क्रियाह से संगीन ग़लती होती है

12 थोड़ी देर के बाद बाबल के बादशाह मरूदक-बलदान बिन बलदान ने हिज़क्रियाह की बीमारी की ख़बर सुनकर वफ़द के हाथ ख़त और तोहफ़े भेजे। 13 हिज़क्रियाह ने वफ़द का इस्तक़बाल करके उसे वह तमाम खज़ाने दिखाए जो ज़ख़ीराख़ाने में महफूज़ रखे गए थे यानी तमाम सोना-चाँदी, बलसान का तेल और बाक़ी कीमती तेल। उसने असलिहाख़ाना और बाक़ी सब कुछ भी दिखाया जो उसके खज़ानों में था। पूरे महल और पूरे मुल्क में कोई ख़ास चीज़ न रही जो उसने उन्हें न दिखाई। 14 तब यसायाह नबी हिज़क्रियाह बादशाह के पास आया और पूछा, “इन आदमियों ने क्या कहा? कहाँ से आए हैं?” हिज़क्रियाह ने जवाब दिया, “दूर-दराज़ मुल्क बाबल से आए हैं।” 15 यसायाह बोला, “उन्होंने महल में क्या कुछ देखा?” हिज़क्रियाह ने कहा, “उन्होंने महल में सब कुछ देख लिया है। मेरे खज़ानों में कोई चीज़ न रही जो मैंने उन्हें नहीं दिखाई।”

16 तब यसायाह ने कहा, “रब का फ़रमान सुनें! 17 एक दिन आनेवाला है कि तेरे महल का तमाम माल छीन लिया जाएगा। जितने भी खज़ाने तू और तेरे बापदादा ने आज तक जमा किए हैं उन सबको दुश्मन बाबल ले जाएगा। रब फ़रमाता है कि एक भी चीज़ पीछे नहीं रहेगी। 18 तेरे बेटों में से भी बाज़ छीन लिए जाएंगे, ऐसे जो अब तक पैदा नहीं हुए। तब वह ख्वाजासरा बनकर शाहे-बाबल के महल में ख़िदमत करेंगे।”

19 हिज़क्रियाह बोला, “रब का जो पैग़ाम आपने मुझे दिया है वह ठीक है।” क्योंकि उसने सोचा, “बड़ी बात यह है कि मेरे जीते-जी अमनो-अमान होगा।”

हिज़क्रियाह की मौत

20 बाक़ी जो कुछ हिज़क्रियाह की हुक्मत के दौरान हुआ और जो कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं वह ‘शाहाने-यहूदाह की तारीख़’ की किताब में दर्ज हैं। वहाँ यह भी बयान किया गया है कि उसने किस तरह तालाब बनवाकर वह सुरंग खुदवाई जिसके ज़रीए चश्मे का पानी शहर तक पहुँचता है। 21 जब हिज़क्रियाह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसका बेटा मनस्सी तख़्तनशीन हुआ।

21

यहूदाह का बादशाह मनस्सी

1 मनस्सी 12 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में उस की हुक्मत का दौरानिया 55 साल था। उस की माँ हिफ़सीबाह थी।

2 मनस्सी का चाल-चलन रब को नापसंद था। उसने उन क्रौमों के काबिले-घिन रस्मो-रिवाज अपना लिए जिन्हें रब ने इसराईलियों के आगे से निकाल दिया था। 3 ऊँची जगहों के जिन मंदिरों को उसके बाप हिज़क्रियाह ने ढा दिया था उन्हें उसने नए सिरे से तामीर किया। उसने बाल

देवता की कुरबानगाहें बनवाई और यसीरत देवी का खंबा खड़ा किया, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह इसराईल के बादशाह अखियब ने किया था। इनके अलावा वह सूरज, चाँद बल्कि आसमान के पूरे लश्कर को सिजदा करके उनकी खिदमत करता था।⁴ उसने रब के घर में भी अपनी कुरबानगाहें खड़ी कीं, हालाँकि रब ने इस मकाम के बारे में फरमाया था, “मैं यरूशलम में अपना नाम कायम करूँगा।”⁵ लेकिन मनस्सी ने परवा न की बल्कि रब के घर के दोनों सहनों में आसमान के पूरे लश्कर के लिए कुरबानगाहें बनवाई।⁶ यहाँ तक कि उसने अपने बेटे को भी कुरबान करके जला दिया। जादूगारी और गैबदानी करने के अलावा वह मुरदों की रूहों से राबिता करनेवालों और रम्मालों से भी मशवरा करता था।

गरज उसने बहुत कुछ किया जो रब को नापसंद था और उसे तैश दिलाया।⁷ यसीरत देवी का खंबा बनवाकर उसने उसे रब के घर में खड़ा किया, हालाँकि रब ने दाऊद और उसके बेटे सुलेमान से कहा था, “इस घर और इस शहर यरूशलम में जो मैंने तमाम इसराईली कबीलों में से चुन लिया है मैं अपना नाम अबद तक कायम रखूँगा।”⁸ अगर इसराईली एहतियात से मेरे उन तमाम अहकाम की पैरवी करें जो मूसा ने शरीअत में उन्हें दिए तो मैं कभी नहीं होने दूँगा कि इसराईलियों को उस मुल्क से जिलावतन कर दिया जाए जो मैंने उनके बापदादा को अता किया था।”⁹ लेकिन लोग रब के ताबे न रहे, और मनस्सी ने उन्हें ऐसे गलत काम करने पर उकसाया जो उन कौमों से भी सरजद नहीं हुए थे जिन्हें रब ने मुल्क में दाखिल होते वक्त उनके आगे से तबाह कर दिया था।

¹⁰ आखिरकार रब ने अपने खादिमों यानी नबियों की मारिफत एलान किया, ¹¹ “यहूदाह के बादशाह मनस्सी से काबिले-घिन गुनाह सरजद हुए हैं। उस की हरकतें मुल्क में इसराईल से पहले रहनेवाले अमोरियों की निसबत कहीं ज्यादा शरीर हैं। अपने बुतों से उसने यहूदाह के बाशिंदों को गुनाह करने पर उकसाया है। ¹² चुनाँचे रब इसराईल का खुदा फरमाता है, ‘मैं यरूशलम और यहूदाह पर ऐसी आफत नाज़िल करूँगा कि जिसे भी इसकी ख़बर मिलेगी उसके कान बजने लगेंगे।’ ¹³ मैं यरूशलम को उसी नाप से नापूँगा जिससे सामरिया को नाप चुका हूँ। मैं उसे उस तराजू में रखकर तोलूँगा जिसमें अखियब का घराना तोल चुका हूँ। जिस तरह बरतन सफ़ाई करते वक्त पोंछकर उलटे रखे जाते हैं उसी तरह मैं यरूशलम का सफ़ाया कर दूँगा। ¹⁴ उस वक्त मैं अपनी मीरास का बचा-खुचा हिस्सा भी तर्क कर दूँगा। मैं उन्हें उनके दुश्मनों के हवाले कर दूँगा जो उनकी लूट-मार करेंगे। ¹⁵ और वजह यही होगी कि उनसे ऐसी हरकतें सरजद हुई हैं जो मुझे नापसंद हैं। उस दिन से लेकर जब उनके बापदादा मिसर से निकल आए आज तक वह मुझे तैश दिलाते रहे हैं।”

¹⁶ लेकिन मनस्सी ने न सिर्फ यहूदाह के बाशिंदों को बुतपरस्ती और ऐसे काम करने पर उकसाया जो रब को नापसंद थे बल्कि उसने बेशुमार बेकुसूर लोगों को क़त्ल भी किया। उनके खून से यरूशलम एक सिरे से दूसरे सिरे तक भर गया।

¹⁷ बाक़ी जो कुछ मनस्सी की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह ‘शाहाने-यहूदाह की तारीख़’ की किताब में दर्ज है। उसमें उसके गुनाहों का ज़िक्र भी किया गया है। ¹⁸ जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे उसके महल के बाग़ में दफ़नाया गया जो उज्ज़ा का बाग़ कहलाता है। फिर उसका बेटा अमून तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह अमून

¹⁹ अमून 22 साल की उम्र में बादशाह बना और दो साल तक यरूशलम में हुकूमत करता रहा। उस की माँ मसुल्लिमत बिन हर्स युतबा की रहनेवाली थी। ²⁰ अपने बाप मनस्सी की तरह अमून ऐसा गलत काम करता रहा जो रब को नापसंद था। ²¹ वह हर तरह से अपने बाप के बुरे नमूने पर चलकर उन बुतों की खिदमत और पूजा करता रहा जिनकी पूजा उसका बाप करता आया था। ²² रब अपने बापदादा के खुदा को उसने तर्क किया, और वह उस की राहों पर नहीं चलता था।

²³ एक दिन अमून के कुछ अफ़सरों ने उसके खिलाफ़ साज़िश करके उसे महल में क़त्ल कर दिया। ²⁴ लेकिन उम्मत ने तमाम साज़िश करनेवालों को मार डाला और अमून के बेटे यूसियाह को बादशाह बना दिया।

²⁵ बाक़ी जो कुछ अमून की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह ‘शाहाने-यहूदाह की तारीख़’ की किताब में बयान किया गया है। ²⁶ उसे उज्ज़ा के बाग़ में उस की अपनी क़ब्र में दफ़न किया गया। फिर उसका बेटा यूसियाह तख़्तनशीन हुआ।

22

यहूदाह का बादशाह यूसियाह

¹ यूसियाह 8 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में रहकर उस की हुकूमत का दौरानिया 31 साल था। उस की माँ यदीदा बिन अदायाह बसक़त की रहनेवाली थी। ² यूसियाह वह कुछ करता रहा जो रब को पसंद था। वह हर बात में अपने बाप दाऊद के अच्छे नमूने पर चलता रहा और उससे न दाईं, न बाईं तरफ़ हटा।

³ अपनी हुकूमत के 18वें साल में यूसियाह बादशाह ने अपने मीरमुंशी साफ़न बिन असलियाह बिन मसुल्लाम को रब के घर के पास भेजकर कहा, ⁴ “इमामे-आज़म खिलक़ियाह के पास जाकर उसे बता देना कि उन तमाम पैसों को गिन लें जो दरबानों ने लोगों से जमा किए हैं। ⁵⁻⁶ फिर पैसे उन ठेकेदारों को दे दें जो रब के घर की मरम्मत करवा रहे हैं ताकि वह कारीगरों, तामीर करनेवालों और राजों की उजरत अदा कर सकें। इन पैसों से वह दराड़ों को ठीक करने के लिए दरकार लकड़ी और तराशे हुए पत्थर भी खरीदें। ⁷ ठेकेदारों को अख़राजात का हिसाब-किताब देने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि वह काबिले-एतमाद हैं।”

रब के घर से शरीअत की किताब मिल जाती है

8 जब मीरमुंशी साफन खिलकियाह के पास पहुँचा तो इमामे-आज़म ने उसे एक किताब दिखाकर कहा, “मुझे रब के घर में शरीअत की किताब मिली है।” उसने उसे साफन को दे दिया जिसने उसे पढ़ लिया। 9 तब साफन बादशाह के पास गया और उसे इतला दी, “हमने रब के घर में जमाशुदा पैसे मरम्मत पर मुर्करर ठेकेदारों और बाकी काम करनेवालों को दे दिए हैं।” 10 फिर साफन ने बादशाह को बताया, “खिलकियाह ने मुझे एक किताब दी है।” किताब को खोलकर वह बादशाह की मौजूदगी में उस की तिलावत करने लगा।

11 किताब की बातें सुनकर बादशाह ने रंजीदा होकर अपने कपड़े फाड़ लिए। 12 उसने खिलकियाह इमाम, अखीकाम बिन साफन, अकबोर बिन मीकायाह, मीरमुंशी साफन और अपने खास खादिम असायाह को बुलाकर उन्हें हुक्म दिया, 13 “जाकर मेरी और क्रौम बल्कि तमाम यहदाह की खातिर रब से इस किताब में दर्ज बातों के बारे में दरियाफ्त करें। रब का जो गज़ब हम पर नाज़िल होनेवाला है वह निहायत सख्त है, क्योंकि हमारे बापदादा न किताब के फ़रमानों के ताबे रहे, न उन हिदायात के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारी है जो उसमें हमारे लिए दर्ज की गई हैं।”

14 चुनौचे खिलकियाह इमाम, अखीकाम, अकबोर, साफन और असायाह खुलदा नबिया को मिलने गए। खुलदा का शौहर सल्लूम बिन तिकवा बिन खर्खस रब के घर के कपड़े सँभालता था। वह यरूशलम के नए इलाके में रहते थे। 15-16 खुलदा ने उन्हें जवाब दिया,

“रब इसराईल का खुदा फ़रमाता है कि जिस आदमी ने तुम्हें भेजा है उसे बता देना, ‘रब फ़रमाता है कि मैं इस शहर और उसके बाशिंदों पर आफ़त नाज़िल करूँगा। वह तमाम बातें पूरी हो जाएँगी जो यहदाह के बादशाह ने किताब में पढ़ी हैं। 17 क्योंकि मेरी क्रौम ने मुझे तर्क करके दीगर माबूदों को कुरबानियाँ पेश की हैं और अपने हाथों से बुत बनाकर मुझे तैश दिलाया है। मेरा गज़ब इस मक़ाम पर नाज़िल हो जाएगा और कभी ख़त्म नहीं होगा।’

18 लेकिन यहदाह के बादशाह के पास जाएँ जिसने आपको रब से दरियाफ़्त करने के लिए भेजा है और उसे बता दें कि रब इसराईल का खुदा फ़रमाता है, ‘मेरी बातें सुनकर 19 तेरा दिल नरम हो गया है। जब तुझे पता चला कि मैंने इस मक़ाम और इसके बाशिंदों के बारे में फ़रमाया है कि वह लानती और तबाह हो जाएँगे तो तूने अपने आपको रब के सामने पस्त कर दिया। तूने रंजीदा होकर अपने कपड़े फाड़ लिए और मेरे हज़ूर फूट फूटकर रोया। रब फ़रमाता है कि यह देखकर मैंने तेरी सुनी है। 20 जब तू मेरे कहने पर मरकर अपने बापदादा से जा मिलेगा तो सलामती से दफ़न होगा। जो आफ़त मैं शहर पर नाज़िल करूँगा वह तू खुद नहीं देखेगा।’”

अफ़सर बादशाह के पास वापस गए और उसे खुलदा का जवाब सुना दिया।

23

यूसियाह रब से अहद बाँधता है

1 तब बादशाह यहदाह और यरूशलम के तमाम बुज़ुर्गों को बुलाकर 2 रब के घर में गया। सब लोग छोटे से लेकर बड़े तक उसके साथ गए यानी यहदाह के आदमी, यरूशलम के बाशिंदे, इमाम और नबी। वहाँ पहुँचकर जमात के सामने अहद की उस पूरी किताब की तिलावत की गई जो रब के घर में मिली थी।

3 फिर बादशाह ने सत्तन के पास खड़े होकर रब के हज़ूर अहद बाँधा और वादा किया, “हम रब की पैरवी करेंगे, हम पूरे दिलो-जान से उसके अहक़ाम और हिदायात पूरी करके इस किताब में दर्ज अहद की बातें कायम रखेंगे।” पूरी क्रौम अहद में शरीक हुई।

यूसियाह बुतपरस्ती को ख़त्म करता है

4 अब बादशाह ने इमामे-आज़म खिलकियाह, दूसरे दर्जे पर मुर्करर इमामों और दरबानों को हुक्म दिया, “रब के घर में से वह तमाम चीज़ें निकाल दें जो बाल देवता, यसीरत देवी और आसमान के पूरे लशकर की पूजा के लिए इस्तेमाल हुई हैं।” फिर उसने यह सारा सामान यरूशलम के बाहर वादीए-क्रिदरोन के खुले मैदान में जला दिया और उस की राख उठाकर बैतेल ले गया। 5 उसने उन बुतपरस्त पुजारियों को भी हटा दिया जिन्हें यहदाह के बादशाहों ने यहदाह के शहरों और यरूशलम के गिर्दो-नवाह के मंदिरों में कुरबानियाँ पेश करने के लिए मुर्करर किया था। यह पुजारी न सिर्फ़ बाल देवता को अपने नज़राने पेश करते थे बल्कि सूरज, चाँद, झुरमुटों और आसमान के पूरे लशकर को भी। 6 यसीरत देवी का खंबा यूसियाह ने रब के घर से निकालकर शहर के बाहर वादीए-क्रिदरोन में जला दिया। फिर उसने उसे पीसकर उस की राख गरीब लोगों की क़ब्रों पर बिखेर दी। 7 रब के घर के पास ऐसे मक़ान थे जो जिस्मफ़रोश मर्दों और औरतों के लिए बनाए गए थे। उनमें औरतें यसीरत देवी के लिए कपड़े भी बुनती थीं। अब बादशाह ने उनको भी गिरा दिया।

8 फिर यूसियाह तमाम इमामों को यरूशलम वापस लाया। साथ साथ उसने यहदाह के शिमाल में जिबा से लेकर ज़नूब में बैर-सबा तक ऊँची जगहों के उन तमाम मंदिरों की बेहुरमती की जहाँ इमाम पहले कुरबानियाँ पेश करते थे। यरूशलम के उस दरवाज़े के पास भी दो मंदिर थे जो शहर के सरदार यशुअ के नाम से मशहूर थे। इनको भी यूसियाह ने ढा दिया। (शहर में दाख़िल होते वक़्त यह मंदिर बाईं तरफ़ नज़र आते थे।)

9 जिन इमामों ने ऊँची जगहों पर खिदमत की थी उन्हें यरूशलम में रब के हज़ूर कुरबानियाँ पेश करने की इजाज़त नहीं थी। लेकिन वह बाकी इमामों की तरह बेख़मीरी रोटी के लिए मखसूस रोटी खा सकते थे। 10 बिन-हिन्मू की वादी की कुरबानगाह बनाम तूफ़त को भी बादशाह ने ढा दिया ताकि आइंदा कोई भी अपने बेटे या बेटी को जलाकर मलिक देवता को कुरबान न कर सके। 11 घोड़े के जो मुजस्समे यहदाह के बादशाहों ने सूरज देवता की ताज़ीम में खड़े किए थे उन्हें भी यूसियाह ने गिरा दिया और उनके रथों को जला दिया। यह घोड़े रब के घर के सहन में दरवाज़े

के साथ खड़े थे, वहाँ जहाँ दरबारी अफसर बनाम नातन-मलिक का कमरा था। 12 आख़ज बादशाह ने अपनी छत पर एक कमरा बनाया था जिसकी छत पर भी मुख्तलिफ़ बादशाहों की बनी हुई कुरबानगाहें थीं। अब यूसियाह ने इनको भी ढा दिया और उन दो कुरबानगाहों को भी जो मनस्सी ने रब के घर के दो सहनों में खड़ी की थी। इनको टुकड़े टुकड़े करके उसने मलबा वादीए-किदरोन में फेंक दिया। 13 नीज़, बादशाह ने यरूशलम के मशरिक में ऊँची जगहों के मंदिरों की बेहुरमती की। यह मंदिर हलाकत के पहाड़ के जुनूब में थे, और सुलेमान बादशाह ने उन्हें तामीर किया था। उसने उन्हें सैदा की शर्मनाक देवी अस्तारात, मोआब के मकरूह देवता कमोस और अम्मोन के काबिले-घिन देवता मिलकूम के लिए बनाया था। 14 यूसियाह ने देवताओं के लिए मखसूस किए गए सत्तनों को टुकड़े टुकड़े करके यसीरत देवी के खंबे कटवा दिए और मकामात पर इनसानी हड्डियाँ बिखेरकर उनकी बेहुरमती की।

यूसियाह बैतेल और सामरिया के मंदिरों को गिरा देता है

15-16 बैतेल में अब तक ऊँची जगह पर वह मंदिर और कुरबानगाह पड़ी थी जो यरुबियाम बिन नबात ने तामीर की थी। यरुबियाम ही ने इसराईल को गुनाह करने पर उकसाया था। जब यूसियाह ने देखा कि जिस पहाड़ पर कुरबानगाह है उस की ढलानों पर बहुत-सी क्रब्रें हैं तो उसने हुक्म दिया कि उनकी हड्डियाँ निकालकर कुरबानगाह पर जला दी जाएँ। यों कुरबानगाह की बेहुरमती बिलकुल उसी तरह हुई जिस तरह रब ने मर्दे-खुदा की मारिफ़त फ़रमाया था। इसके बाद यूसियाह ने मंदिर और कुरबानगाह को गिरा दिया। उसने यसीरत देवी का मुजस्समा कूट कूटकर आखिर में सब कुछ जला दिया।

17 फिर यूसियाह को एक और क्रब्र नज़र आई। उसने शहर के बाशिंदों से पूछा, “यह किसकी क्रब्र है?” उन्होंने जवाब दिया, “यह यहदाह के उस मर्दे-खुदा की क्रब्र है जिसने बैतेल की कुरबानगाह के बारे में ऐन वह पेशगोई की थी जो आज आपके वसीले से पूरी हुई है।” 18 यह सुनकर बादशाह ने हुक्म दिया, “इसे छोड़ दो! कोई भी इसकी हड्डियों को न छेड़े।” चुनौचे उस की और उस नबी की हड्डियाँ बच गईं जो सामरिया से उससे मिलने आया और बाद में उस की क्रब्र में दफ़नाया गया था।

19 जिस तरह यूसियाह ने बैतेल के मंदिर को तबाह किया उसी तरह उसने सामरिया के तमाम शहरों के मंदिरों के साथ किया। उन्हें ऊँची जगहों पर बनाकर इसराईल के बादशाहों ने रब को तैश दिलाया था। 20 इन मंदिरों के पुजारियों को उसने उनकी अपनी अपनी कुरबानगाहों पर सज़ाए-मौत दी और फिर इनसानी हड्डियाँ उन पर जलाकर उनकी बेहुरमती की। इसके बाद वह यरूशलम लौट गया।

फ़सह की ईद मनाई जाती है

21 यरूशलम में आकर बादशाह ने हुक्म दिया, “पूरी क्रौम रब अपने खुदा की ताज़ीम में फ़सह की ईद मनाए, जिस तरह अहद की किताब में फ़रमाया गया है।” 22 उस ज़माने से लेकर जब काज़ी इसराईल की राहनुमाई करते थे यूसियाह के दिनों तक फ़सह की ईद इस तरह नहीं मनाई गई थी। इसराईल और यहदाह के बादशाहों के ऐयाम में भी ऐसी ईद नहीं मनाई गई थी। 23 यूसियाह की हुक्मत के 18वें साल में पहली दफ़ा रब की ताज़ीम में ऐसी ईद यरूशलम में मनाई गई।

यूसियाह की फ़रमाँबरदारी

24 यूसियाह उन तमाम हिदायात के ताबे रहा जो शरीअत की उस किताब में दर्ज थीं जो खिलकियाह इमाम को रब के घर में मिली थी। चुनौचे उसने मुरदों की रूहों से राबिता करनेवालों, रम्मालों, घरेलू बुतों, दूसरे बुतों और बाक़ी तमाम मकरूह चीज़ों को ख़त्म कर दिया। 25 न यूसियाह से पहले, न उसके बाद उस जैसा कोई बादशाह हुआ जिसने उस तरह पूरे दिल, पूरी जान और पूरी ताक़त के साथ रब के पास वापस आकर मूसवी शरीअत के हर फ़रमान के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी हो। 26 तो भी रब यहदाह पर अपने गुस्से से बाज़ न आया, क्योंकि मनस्सी ने अपनी ग़लत हरकतों से उसे हद से ज्यादा तैश दिलाया था। 27 इसी लिए रब ने फ़रमाया, “जो कुछ मैंने इसराईल के साथ किया वही कुछ यहदाह के साथ भी करूँगा। मैं उसे अपने हुज़ूर से ख़ारिज कर दूँगा। अपने चुने हुए शहर यरूशलम को मैं रढ़ करूँगा और साथ साथ उस घर को भी जिसके बारे में मैंने कहा, ‘वहाँ मेरा नाम होगा’।”

28 बाक़ी जो कुछ यूसियाह की हुक्मत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह ‘शाहाने-यहदाह की तारीख़’ की किताब में बयान किया गया है।

29 यूसियाह की हुक्मत के दौरान मिसर का बादशाह निकोह फिरौन दरियाए-फ़ुरात के लिए रवाना हुआ ताकि असूर के बादशाह से लड़े। रास्ते में यूसियाह उससे लड़ने के लिए निकला। लेकिन जब मजिदो के करीब उनका एक दूसरे के साथ मुकाबला हुआ तो निकोह ने उसे मार दिया। 30 यूसियाह के मुलाज़िम उस की लाश रथ पर रखकर मजिदो से यरूशलम ले आए जहाँ उसे उस की अपनी क्रब्र में दफ़न किया गया। फिर उम्मत ने उसके बेटे यहूआख़ज़ को मसह करके बाप के तख़्त पर बिठा दिया।

यहदाह का बादशाह यहूआख़ज़

31 यहूआख़ज़ 23 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में उस की हुक्मत का दौरानिया तीन माह था। उस की माँ हमूतल बित यरमियाह लिबना की रहनेवाली थी। 32 अपने बापदादा की तरह वह भी ऐसा काम करता रहा जो रब को नापसंद था। 33 निकोह फिरौन ने मुल्के-हमात के शहर रिबला में उसे गिरिफ़्तार कर लिया, और उस की हुक्मत ख़त्म हुई। मुल्के-यहदाह को ख़राज के तौर पर तक़रीबन

3,400 किलोग्राम चाँदी और 34 किलोग्राम सोना अदा करना पड़ा। ³⁴ यहूआखज़ की जगह फिरौन ने यूसियाह के एक और बेटे को तख़्त पर बिठाया। उसके नाम इलियाक़ीम को उसने यह्यक़ीम में बदल दिया। यहूआखज़ को वह अपने साथ मिसर ले गया जहाँ वह बाद में मरा भी।

³⁵ मतल्बा चाँदी और सोने की रक़म अदा करने के लिए यह्यक़ीम ने लोगों से ख़ास टैक्स लिया। उम्मत को अपनी दौलत के मुताबिक़ पैसे देने पड़े। इस तरीक़े से यह्यक़ीम फिरौन को ख़राज अदा कर सका।

यहूदाह का बादशाह यह्यक़ीम

³⁶ यह्यक़ीम 25 साल की उम्र में बादशाह बना, और वह यरूशलम में रहकर 11 साल हुकूमत करता रहा। उस की माँ ज़बूदा बित् फ़िदायाह रूमाह की रहनेवाली थी। ³⁷ बापदादा की तरह उसका चाल-चलन भी रब को नापसंद था।

24

¹ यह्यक़ीम की हुकूमत के दौरान बाबल के बादशाह नबूकदनज़ज़र ने यहूदाह पर हमला किया। नतीजे में यह्यक़ीम उसके ताबे हो गया। लेकिन तीन साल के बाद वह सरकश हो गया। ² तब रब ने बाबल, शाम, मोआब और अम्मोन से डाकुओं के जत्थे भेज दिए ताकि उसे तबाह करें। वैसा ही हुआ जिस तरह रब ने अपने खादिमों यानी नबियों की मारिफ़त फ़रमाया था। ³ यह आफ़तें इसलिए यहूदाह पर आईं कि रब ने इनका हुक्म दिया था। वह मनस्सी के संगीन गुनाहों की वजह से यहूदाह को अपने हुज़ूर से ख़ारिज करना चाहता था। ⁴ वह यह हक़ीक़त भी नज़रंदाज़ न कर सका कि मनस्सी ने यरूशलम को बेकुसूर लोगों के खून से भर दिया था। रब यह मुआफ़ करने के लिए तैयार नहीं था।

⁵ बाक़ी जो कुछ यह्यक़ीम की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-यहूदाह की तारीख़' की किताब में दर्ज है। ⁶ जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसका बेटा यह्याकीन तख़्तनशीन हुआ। ⁷ उस वक़्त मिसर का बादशाह दुबारा अपने मुल्क से निकल न सका, क्योंकि बाबल के बादशाह ने मिसर की सरहद बनाम वादीए-मिसर से लेकर दरियाए-फ़ुरात तक का सारा इलाक़ा मिसर के कब्ज़े से छीन लिया था।

यह्याकीन की हुकूमत और यरूशलम पर बाबल का कब्ज़ा

⁸ यह्याकीन 18 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया तीन माह था। उस की माँ नहुशता बित् इलनातन यरूशलम की रहनेवाली थी। ⁹ अपने बाप की तरह यह्याकीन भी ऐसा काम करता रहा जो रब को नापसंद था।

¹⁰ उस की हुकूमत के दौरान बाबल के बादशाह नबूकदनज़ज़र की फ़ौज यरूशलम तक बढ़कर उसका मुहासरा करने लगी। ¹¹ नबूकदनज़ज़र खुद शहर के मुहासरे के दौरान पहुँच गया। ¹² तब यह्याकीन ने शिकस्त मानकर अपने आपको अपनी माँ, मुलाज़िमों, अफ़सरों और दरबारियों समेत बाबल के बादशाह के हवाले कर दिया। बादशाह ने उसे गिरिफ़्तार कर लिया।

यह नबूकदनज़ज़र की हुकूमत के आठवें साल में हुआ। ¹³ जिसका एलान रब ने पहले किया था वह अब पूरा हुआ, नबूकदनज़ज़र ने रब के घर और शाही महल के तमाम खज़ाने छीन लिए। उसने सोने का वह सारा सामान भी लूट लिया जो सुलेमान ने रब के घर के लिए बनवाया था। ¹⁴ और जितने खाते-पीते लोग यरूशलम में थे उन सबको बादशाह ने जिलावतन कर दिया। उनमें तमाम अफ़सर, फ़ौजी, दस्तकार और धातों का काम करनेवाले शामिल थे, कुल 10,000 अफ़राद। उम्मत के सिर्फ़ ग़रीब लोग पीछे रह गए। ¹⁵ नबूकदनज़ज़र यह्याकीन को भी कैदी बनाकर बाबल ले गया और उस की माँ, बीवियों, दरबारियों और मुल्क के तमाम असरो-रसूख़ रखनेवालों को भी। ¹⁶ उसने फ़ौजियों के 7,000 अफ़राद और 1,000 दस्तकारों और धातों का काम करनेवालों को जिलावतन करके बाबल में बसा दिया। यह सब माहिर और जंग करने के काबिल आदमी थे। ¹⁷ यरूशलम में बाबल के बादशाह ने यह्याकीन की जगह उसके चचा मन्तनियाह को तख़्त पर बिठाकर उसका नाम सिदक़ियाह में बदल दिया।

यहूदाह का बादशाह सिदक़ियाह

¹⁸ सिदक़ियाह 21 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया 11 साल था। उस की माँ हमूतल बित् यरमियाह लिबना शहर की रहनेवाली थी। ¹⁹ यह्यक़ीम की तरह सिदक़ियाह ऐसा काम करता रहा जो रब को नापसंद था। ²⁰ रब यरूशलम और यहूदाह के बाशिंदों से इतना नाराज़ हुआ कि आख़िर में उसने उन्हें अपने हुज़ूर से ख़ारिज कर दिया।

सिदक़ियाह का फ़रार और गिरिफ़्तारी

एक दिन सिदक़ियाह बाबल के बादशाह से सरकश हुआ,

25

¹ इसलिए शाहे-बाबल नबूकदनज़ज़र तमाम फ़ौज को अपने साथ लेकर दुबारा यरूशलम पहुँचा ताकि उस पर हमला करे।

सिदक़ियाह की हुकूमत के नवें साल में बाबल की फ़ौज यरूशलम का मुहासरा करने लगी। यह काम दसवें महीने के दसवें दिन * शुरू हुआ। पूरे शहर के इर्दगिर्द बादशाह ने पुरते बनवाए। ² सिदक़ियाह की हुकूमत के 11वें साल तक यरूशलम कायम रहा। ³ लेकिन फिर काल ने शहर में ज़ोर पकड़ा, और अवाम के लिए खाने की चीज़ें न रहीं।

* 25:1 यानी 15 जनवरी

चौथे महीने के नवें दिन † 4 बाबल के फ़ौजियों ने फ़सील में रखना डाल दिया। उसी रात सिदकियाह अपने तमाम फ़ौजियों समेत फ़रार होने में कामयाब हुआ, अगरचे शहर दुश्मन से घिरा हुआ था। वह फ़सील के उस दरवाज़े से निकले जो शाही बाग़ के साथ मुलहिक दो दीवारों के बीच में था। वह वादीए-यरदन की तरफ़ भागने लगे, 5 लेकिन बाबल की फ़ौज ने बादशाह का ताक़्क़ुब करके उसे यरीह के मैदान में पकड़ लिया। उसके फ़ौजी उससे अलग होकर चारों तरफ़ मुंतशिर हो गए, 6 और वह खुद गिरिफ़्तार हो गया।

फिर उसे रिबला में शाहे-बाबल के पास लाया गया, और वहीं सिदकियाह पर फ़ैसला सादिर किया गया। 7 सिदकियाह के देखते देखते उसके बेटों को क़त्ल किया गया। इसके बाद फ़ौजियों ने उस की आँखें निकालकर उसे पीतल की जंजीरों में जकड़ लिया और बाबल ले गए।

यरूशलम और रब के घर की तबाही

8 शाहे-बाबल नबूकदनज़र की हुकूमत के 19वें साल में बादशाह का खास अफ़सर नबूज़रादान यरूशलम पहुँचा। वह शाही मुहाफ़िज़ों पर मुक़र्रर था। पाँचवें महीने के सातवें दिन ‡ उसने आकर 9 रब के घर, शाही महल और यरूशलम के तमाम मकानों को जला दिया। हर बड़ी इमारत भस्म हो गई। 10 उसने अपने तमाम फ़ौजियों से शहर की फ़सील को भी गिरा दिया। 11 फिर नबूज़रादान ने सबको जिलावतन कर दिया जो यरूशलम और यहदाह में पीछे रह गए थे। वह भी उनमें शामिल थे जो जंग के दौरान ग़दारी करके शाहे-बाबल के पीछे लग गए थे। 12 लेकिन नबूज़रादान ने सबसे निचले तबके के बाज़ लोगों को मुल्के-यहदाह में छोड़ दिया ताकि वह अंगूर के बाग़ों और खेतों को सँभालें।

13 बाबल के फ़ौजियों ने रब के घर में जाकर पीतल के दोनों सतूनों, पानी के बासनों को उठानेवाली हथगाड़ियों और समुंदर नामी पीतल के हौज़ को तोड़ दिया और सारा पीतल उठाकर बाबल ले गए। 14 वह रब के घर की ख़िदमत संरजाम देने के लिए दरकार सामान भी ले गए यानी बालटियाँ, बेलचे, बत्ती कतरने के औज़ार, बरतन और पीतल का बाक़ी सारा सामान। 15 ख़ालिस सोने और चाँदी के बरतन भी इसमें शामिल थे यानी जलते हुए कोयले के बरतन और छिड़काव के कटोरे। शाही मुहाफ़िज़ों का अफ़सर सारा सामान उठाकर बाबल ले गया। 16 जब दोनों सतूनों, समुंदर नामी हौज़ और बासनों को उठानेवाली हथगाड़ियों का पीतल तुड़वाया गया तो वह इतना वज़नी था कि उसे तोला न जा सका। सुलेमान बादशाह ने यह चीज़ें रब के घर के लिए बनवाई थीं। 17 हर सतून की ऊँचाई 27 फ़ुट थी। उनके बालाई हिस्सों की ऊँचाई साढ़े चार फ़ुट थी, और वह पीतल की जाली और अनारों से सजे हुए थे।

18 शाही मुहाफ़िज़ों के अफ़सर नबूज़रादान ने ज़ैल के कैदियों को अलग कर दिया : इमामे-आज़म सिरायाह, उसके बाद आनेवाला इमाम सफ़नियाह, रब के घर के तीन दरबानों, 19 शहर के बचे हुए में से उस अफ़सर को जो शहर के फ़ौजियों पर मुक़र्रर था, सिदकियाह बादशाह के पाँच मुशीरों, उम्मत की भरती करनेवाले अफ़सर और शहर में मौजूद उसके 60 मर्दों को। 20 नबूज़रादान इन सबको अलग करके सूबा हमात के शहर रिबला ले गया जहाँ बाबल का बादशाह था। 21 वहाँ नबूकदनज़र ने उन्हें सज़ाए-मौत दी।

यों यहदाह के बाशिंदों को जिलावतन कर दिया गया।

जिदलियाह की हुकूमत

22 जिन लोगों को बाबल के बादशाह नबूकदनज़र ने यहदाह में पीछे छोड़ दिया था, उन पर उसने जिदलियाह बिन अख़ीक़ाम बिन साफ़न मुक़र्रर किया। 23 जब फ़ौज के बचे हुए अफ़सरों और उनके दस्तों को ख़बर मिली कि जिदलियाह को गवर्नर मुक़र्रर किया गया है तो वह मिसफ़ाह में उसके पास आए। अफ़सरों के नाम इसमाईल बिन नतनियाह, यहनान बिन करीह, सिरायाह बिन तनहूमत नतूफ़ाती और याज़नियाह बिन माकाती थे। उनके फ़ौजी भी साथ आए।

24 जिदलियाह ने क़सम खाकर उनसे वादा किया, “बाबल के अफ़सरों से मत डरना! मुल्क में रहकर बाबल के बादशाह की ख़िदमत करें तो आपकी सलामती होगी।”

25 लेकिन उस साल के सातवें महीने में इसमाईल बिन नतनियाह बिन इलीसमा ने दस साथियों के साथ मिसफ़ाह आकर धोके से जिदलियाह को क़त्ल किया। इसमाईल शाही नसल का था। जिदलियाह के अलावा उन्होंने उसके साथ रहनेवाले यहदाह और बाबल के तमाम लोगों को भी क़त्ल किया। 26 यह देखकर यहदाह के तमाम बाशिंदे छोटे से लेकर बड़े तक फ़ौजी अफ़सरों समेत हिज़रत करके मिसर चले गए, क्योंकि वह बाबल के इंतक़ाम से डरते थे।

यहयाकीन को आज़ाद किया जाता है

27 यहदाह के बादशाह यहयाकीन की जिलावतनी के 37वें साल में अवील-मस्दक बाबल का बादशाह बना। उसी साल के 12वें महीने के 27वें दिन उसने यहयाकीन को कैदख़ाने से आज़ाद कर दिया। 28 उसने उससे नरम बातें करके उसे इज्ज़त की ऐसी क़ुरसी पर बिठाया जो बाबल में जिलावतन किए गए बाक़ी बादशाहों की निसबत ज़्यादा अहम थी। 29 यहयाकीन को कैदियों के कपड़े उतारने की इज़ाज़त मिली, और उसे ज़िंदगी-भर बादशाह की मेज़ पर बाक़ायदगी से शरीक होने का शरफ़ हासिल रहा। 30 बादशाह ने मुक़र्रर किया कि यहयाकीन को उम्र-भर इतना वज़ीफ़ा मिलता रहे कि उस की रोज़मर्रा ज़रूरियात पूरी होती रहें।

† 25:3 यानी 18 जुलाई ‡ 25:8 यानी 14 अगस्त

1 तवारीख

आदम से इब्राहीम तक का नसबनामा

1 नूह तक आदम की औलाद सेत, अनूस, 2 कीनान, महललेल, यारिद, 3 हनूक, मत्सिलह, लमक, 4 और नूह थी।

नूह के तीन बेटे सिम, हाम और याफ़त थे।

5 याफ़त के बेटे ज़ुमर, माज़्ज, मादी, यावान, तबल, मसक और तीरास थे। 6 ज़ुमर के बेटे अश्कनाज़, रीफ़त और तुज़रमा थे। 7 यावान के बेटे इलीसा और तरसीस थे। किती और रोदानी भी उस की औलाद हैं।

8 हाम के बेटे कूश, मिसर, फूत और कनान थे। 9 कूश के बेटे सिबा, हवीला, सबता, रामा और सब्तका थे। रामा के बेटे सबा और ददान थे। 10 नमरूद भी कूश का बेटा था। वह ज़मीन पर पहला सूरमा था। 11 मिसर ज़ैल की क्रौमों का बाप था : लूदी, अनामी, लिहाबी, नफ़तूही, 12 फ़तरूसी, कसलूही (जिनसे फ़िलिस्ती निकले) और कफ़तूरी। 13 कनान का पहलौठा सैदा था। कनान इन क्रौमों का बाप भी था : हिती 14 यबूसी, अमोरी, जिरजासी, 15 हिब्बी, अरकी, सीनी, 16 अरवादी, समारी और हमाती।

17 सिम के बेटे ऐलाम, असूर, अरफ़क्सद, लूद और अराम थे। अराम के बेटे ऊज़, हल, जतर और मसक थे। 18 अरफ़क्सद का बेटा सिलह और सिलह का बेटा इबर था। 19 इबर के दो बेटे पैदा हुए। एक का नाम फ़लज यानी तकसीम था, क्योंकि उन ऐयाम में दुनिया तकसीम हुई। फ़लज के भाई का नाम युक्रतान था। 20 युक्रतान के बेटे अलमूदाद, सलफ, हसरमावत, इराख, 21 हदूराम, ऊज़ाल, दिक्ला, 22 ऊबाल, अबीमाएल, सबा, 23 ओफ़ीर, हवीला और यूबाब थे। यह सब उसके बेटे थे।

24 सिम का यह नसबनामा है : सिम, अरफ़क्सद, सिलह, 25 इबर, फ़लज, रऊ, 26 सरूज, नहर, तारह 27 और अब्राम यानी इब्राहीम।

इब्राहीम का नसबनामा

28 इब्राहीम के बेटे इसहाक और इसमाईल थे। 29 उनकी दर्जे-ज़ैल औलाद थी :

इसमाईल का पहलौठा नबायोत था। उसके बाकी बेटे कीदार, अदबियेल, मिबसाम, 30 मिशमा, दूमा, मस्सा, हदद, तैमा, 31 यतूर, नफ़ीस और क्रिदमा थे। सब इसमाईल के हों पैदा हुए।

32 इब्राहीम की दाशता क्रतूरा के बेटे ज़िमरान, युक्रसान, मिदान, मिदियान, इसबाक और सूख थे। युक्रसान के दो बेटे सबा और ददान पैदा हुए 33 जबकि मिदियान के बेटे ऐफा, इफ़र, हनूक, अबीदा और इल्दआ थे। सब क्रतूरा की औलाद थे।

34 इब्राहीम के बेटे इसहाक के दो बेटे पैदा हुए, एसौ और इसराईल। 35 एसौ के बेटे इलीफ़ज़, रऊएल, यऊस, यालाम और क्रोरह थे।

36 इलीफ़ज़ के बेटे तेमान, ओमर, सफ़ी, जाताम, कनज़ और अमालीक थे। अमालीक की माँ तिमना थी। 37 रऊएल के बेटे नहत, ज़ारह, सम्मा और मिज्ज़ा थे।

सईर यानी अदोम का नसबनामा

38 सईर के बेटे लोतान, सोबल, सिबोन, अना, दीसोन, एसर और दीसान थे। 39 लोतान के दो बेटे होरी और होमाम थे। (तिमना लोतान की बहन थी।) 40 सोबल के बेटे अलियान, मानहत, ऐबाल, सफ़ी और ओनाम थे। सिबोन के बेटे ऐयाह और अना थे। 41 अना के एक बेटा दीसोन पैदा हुआ। दीसोन के चार बेटे हमरान, इशबान, यितरान और किरान थे। 42 एसर के तीन बेटे बिलहान, ज़ावान और अकान थे। दीसान के दो बेटे ऊज़ और अरान थे।

अदोम के बादशाह

43 इससे पहले कि इसराईलियों का कोई बादशाह था ज़ैल के बादशाह यके बाद दीगरे मुल्के-अदोम में हुक्मत करते थे :

बाला बिन बओर जो दिनहाबा शहर का था।

44 उस की मौत पर यूबाब बिन ज़ारह जो बूसरा शहर का था।

45 उस की मौत पर हुशाम जो तेमानियों के मुल्क का था।

46 उस की मौत पर हदद बिन बिदद जिसने मुल्के-मोआब में मिदियानियों को शिकस्त दी। वह अवीत शहर का था।

47 उस की मौत पर समला जो मसरिका शहर का था।

48 उस की मौत पर साऊल जो दरियाए-फ़ुरात पर रहोबोत शहर का था।

49 उस की मौत पर बाल-हनान बिन अकबोर।

50 उस की मौत पर हदद जो फ़ाऊ शहर का था। (बीवी का नाम महेतबेल बित मतरिद बित मेज़ाहाब था।) 51 फिर हदद मर गया।

अदोमी कबीलों के सरदार तिमना, अलिया, यतेत, 52 उहलीबामा, ऐला, फ़ीनोन, 53 कनज़, तेमान, मिबसार, 54 मज्दियेल और इराम थे। यही अदोम के सरदार थे।

2

याकूब यानी इसराईल के बेटे

1 इसराईल के बारह बेटे रूबिन, शमौन, लावी, यहदाह, इशकार, ज़बूलून, 2 दान, यूसुफ, बिनयमीन, नफताली, जद और आशर थे।

यहदाह का नसबनामा

3 यहदाह की शादी कनानी औरत से हुई जो सुअ की बेटी थी। उनके तीन बेटे एर, ओनान और सेला पैदा हुए। यहदाह का पहलौठा एर रब के नजदीक शरीर था, इसलिए उसने उसे मरने दिया। 4 यहदाह के मज़ीद दो बेटे उस की बहू तमर से पैदा हुए। उनके नाम फ़ारस और ज़ारह थे। यों यहदाह के कुल पाँच बेटे थे।

5 फ़ारस के दो बेटे हसरोन और हमूल थे।

6 ज़ारह के पाँच बेटे ज़िमरी, ऐतान, हैमान, कलकूल और दारा थे। 7 करमी बिन ज़िमरी का बेटा वही अकर यानी अकन था जिसने उस लूटे हुए माल में से कुछ लिया जो रब के लिए मखसूस था। 8 ऐतान के बेटे का नाम अज़रियाह था।

9 हसरोन के तीन बेटे यरहमियेल, राम और कलूबी यानी कालिब थे।

राम की औलाद

10 राम के हों अम्मिनदाब और अम्मिनदाब के हों यहदाह के कबीले का सरदार नहसोन पैदा हुआ। 11 नहसोन सलमोन का और सलमोन बोअज़ का बाप था। 12 बोअज़ ओबेद का और ओबेद यस्सी का बाप था। 13 बड़े से लेकर छोटे तक यस्सी के बेटे इलियाब, अबीनदाब, सिमआ, 14 नतनियेल, रद्दी, 15 ओज़म और दाऊद थे। कुल सात भाई थे। 16 उनकी दो बहनें ज़रूयाह और अबीजेल थीं। ज़रूयाह के तीन बेटे अबीशै, योआब और असाहेल थे। 17 अबीजेल के एक बेटा अमासा पैदा हुआ। बाप यतर इसमाईली था।

कालिब की औलाद

18 कालिब बिन हसरोन की बीवी अज़ूबा के हों बेटी बनाम यरीओत पैदा हुई। यरीओत के बेटे यशर, सोबाब और अरदून थे। 19 अज़ूबा के वफ़ात पाने पर कालिब ने इफ़रात से शादी की। उनके बेटा हर पैदा हुआ। 20 हर ऊरी का और ऊरी बज़लियेल का बाप था।

21 60 साल की उम्र में कालिब के बाप हसरोन ने दुबारा शादी की। बीवी जिलियाद के बाप मकीर की बेटी थी। इस रिश्ते से बेटा सज़ूब पैदा हुआ। 22-23 सज़ूब का बेटा वह याईर था जिसकी जिलियाद के इलाके में 23 बस्तियाँ बनाम 'याईर की बस्तियाँ' थीं। लेकिन बाद में जसूर और शाम के फ़ौजियों ने उन पर कब्ज़ा कर लिया। उस वक़्त उन्हें कनात भी गिर्दो-नवाह के इलाके समेत हासिल हुआ। उन दिनों में कुल 60 आबादियाँ उनके हाथ में आ गईं। इनके तमाम बाशिंदे जिलियाद के बाप मकीर की औलाद थे। 24 हसरोन जिसकी बीवी अबियाह थी फ़ौत हुआ तो कालिब और इफ़राता के हों बेटा अशहर पैदा हुआ। बाद में अशहर तकुअ शहर का बानी बन गया।

यरहमियेल की औलाद

25 हसरोन के पहलौठे यरहमियेल के बेटे बड़े से लेकर छोटे तक राम, बूना, ओरन, ओज़म और अखियाह थे। 26 यरहमियेल की दूसरी बीवी अतारा का एक बेटा ओनान था।

27 यरहमियेल के पहलौठे राम के बेटे माज़, यमीन और एकर थे। 28 ओनाम के दो बेटे सम्मी और यदा थे। सम्मी के दो बेटे नदब और अबीसूर थे। 29 अबीसूर की बीवी अबीख़ैल के दो बेटे अख़बान और मोलिद पैदा हुए। 30 नदब के दो बेटे सिलद और अपफ़ायम थे। सिलद बेऔलाद मर गया, 31 लेकिन अपफ़ायम के हों बेटा यिसई पैदा हुआ। यिसई सीसान का और सीसान अख़ली का बाप था। 32 सम्मी के भाई यदा के दो बेटे यतर और यूनतन थे। यतर बेऔलाद मर गया, 33 लेकिन यूनतन के दो बेटे फ़लत और ज़ाज़ा पैदा हुए। सब यरहमियेल की औलाद थे। 34-35 सीसान के बेटे नहीं थे बल्कि बेटियाँ। एक बेटी की शादी उसने अपने मिसरी गुलाम यरखा से करवाई। उनके बेटा अन्ती पैदा हुआ। 36 अन्ती के हों नातन पैदा हुआ और नातन के ज़बद, 37 ज़बद के इफ़लाल, इफ़लाल के ओबेद, 38 ओबेद के याहू, याहू के अज़रियाह, 39 अज़रियाह के ख़लिस, ख़लिस के इलियासा, 40 इलियासा के सिसमी, सिसमी के सल्लूम, 41 सल्लूम के यकमियाह और यकमियाह के इलीसमा।

कालिब की औलाद का एक और नसबनामा

42 ज़ैल में यरहमियेल के भाई कालिब की औलाद है : उसका पहलौठा मेसा जीफ़ का बाप था और दूसरा बेटा मेरेसा हबस्न का बाप। 43 हबस्न के चार बेटे कोरह, तफ़फ़ुअह, रक़म और समा थे। 44 समा के बेटे रख़म के हों युरक़ियाम पैदा हुआ। रक़म सम्मी का बाप था, 45 सम्मी मऊन का और मऊन बैत-सूर का।

46 कालिब की दाश्ता ऐफ़ा के बेटे हारान, मौज़ा और जाज़िज़ पैदा हुए। हारान के बेटे का नाम जाज़िज़ था। 47 यहदी के बेटे रज़म, यूताम, जेसान, फ़लत, ऐफ़ा और शाफ़ थे।

48 कालिब की दूसरी दाश्ता माका के बेटे शिबर, तिर्हना, 49 शाफ़ (मदमन्ना का बाप) और सिवा (मकबेना और ज़िबिया का बाप) पैदा हुए। कालिब की एक बेटी भी थी जिसका नाम अकसा था। 50 सब कालिब की औलाद थे।

इफराता के पहलौठे हर के बेटे किरियत-यारीम का बाप सोबल, ⁵¹ बैत-लहम का बाप सलमा और बैत-जादिर का बाप खारिफ थे। ⁵² किरियत-यारीम के बाप सोबल से यह घराने निकले : हराई, मानहत का आधा हिस्सा ⁵³ और किरियत-यारीम के खानदान उत्तरी, फूती, सुमाती और मिसराई। इनसे सुरआती और इस्ताली निकले हैं।

⁵⁴ सलमा से जैल के घराने निकले : बैत-लहम के बाशिदे, नतूफाती, अतरात-बैत-योआब, मानहत का आधा हिस्सा, सुरई ⁵⁵ और याबीज़ में आबाद मुन्शियों के खानदान तिरआती, सिमआती और सूकाती। यह सब कीनी थे जो रैकाबियों के बाप हम्मत से निकले थे।

3

दाऊद बादशाह की औलाद

¹ हबस्न में दाऊद बादशाह के दर्जे-जैल बेटे पैदा हुए :

पहलौठा अमनोन था जिसकी माँ अखीनुअम यज़्ज़ली थी। दूसरा दानियाल था जिसकी माँ अबीजेल करमिली थी। ² तीसरा अबीसलूम था। उस की माँ माका थी जो जसूर के बादशाह तलमी की बेटी थी। चौथा अदूनियाह था जिसकी माँ हज्जीत थी। ³ पाँचवाँ सफ़तियाह था जिसकी माँ अबीताल थी। छठा इतरियाम था जिसकी माँ इजला थी। ⁴ दाऊद के यह छः बेटे उन साढ़े सात सालों के दौरान पैदा हुए जब हबस्न उसका दास्त-हुकूमत था।

इसके बाद वह यरूशलम में मुंतकिल हुआ और वहाँ मज़ीद 33 साल हुकूमत करता रहा। ⁵ उस दौरान उस की बीवी बत-सबा बित अम्मियेल के चार बेटे सिमआ, सोबाब, नातन और सुलेमान पैदा हुए। ⁶ मज़ीद बेटे भी पैदा हुए, इबहार, इलीसुअ, इलीफलत, ⁷ नौजा, नफ़ज, यफ़ीअ, ⁸ इलीसमा, इलियदा और इलीफलत। कुल नौ बेटे थे। ⁹ तमर उनकी बहन थी। इनके अलावा दाऊद की दाशताओं के बेटे भी थे।

¹⁰ सुलेमान के हों रहबियाम पैदा हुआ, रहबियाम के अबियाह, अबियाह के आसा, आसा के यहसफ़त, ¹¹ यहसफ़त के यह्राम, यह्राम के अखज़ियाह, अखज़ियाह के युआस, ¹² युआस के अमसियाह, अमसियाह के अज़रियाह यानी उज्जियाह, उज्जियाह के यूताम, ¹³ यूताम के आखज़, आखज़ के हिज़क्रियाह, हिज़क्रियाह के मनस्सी, ¹⁴ मनस्सी के अमून और अमून के यूसियाह।

¹⁵ यूसियाह के चार बेटे बड़े से लेकर छोटे तक यूहनान, यह्यकीम, सिदक्रियाह और सल्लूम थे।

¹⁶ यह्यकीम यह्याकीन * का और यह्याकीन सिदक्रियाह का बाप था। ¹⁷ यह्याकीन † को बाबल में जिलावतन कर दिया गया। उसके सात बेटे सियालतियेल, ¹⁸ मलकिराम, फ़िदायाह, शेनाज्ज़र, यक्रमियाह, हसमा और नदबियाह थे। ¹⁹ फ़िदायाह के दो बेटे ज़रूबाबल और सिमई थे।

ज़रूबाबल के दो बेटे मसुल्लाम और हननियाह थे। एक बेटी बनाम सलूमीत भी पैदा हुई। ²⁰ बाकी पाँच बेटों के नाम हसूबा, ओहल, बरक्रियाह, हसदियाह और यूसब-हसद थे।

²¹ हननियाह के दो बेटे फ़लतियाह और यसायाह थे। यसायाह रिफ़ायाह का बाप था, रिफ़ायाह अरनान का, अरनान अबदियाह का और अबदियाह सकनियाह का।

²² सकनियाह के बेटे का नाम समायाह था। समायाह के छः बेटे हतूश, इजाल, बरीह, नअरियाह और साफ़त थे। ²³ नअरियाह के तीन बेटे इलियूएनी, हिज़क्रियाह और अज़रीकाम पैदा हुए।

²⁴ इलियूएनी के सात बेटे ह्दावियाह, इलियासिब, फ़िलायाह, अक्कूब, यूहनान, दिलायाह और अनानी थे।

4

यहदाह की औलाद

¹ फ़ारस, हसरोन, करमी, हर और सोबल यहदाह की औलाद थे।

² रियायाह बिन सोबल के हों यहत, यहत के अखूमी और अखूमी के लाहद पैदा हुआ। यह सुरआती खानदानों के बापदादा थे।

³ ऐताम के तीन बेटे यज़्ज़ल, इसमा और इदबास थे। उनकी बहन का नाम हज़लिलफ़ोनी था।

⁴ इफ़राता का पहलौठा हर बैत-लहम का बाप था। उसके दो बेटे जदूर का बाप फ़नुएल और हसा का बाप अज़र थे।

⁵ तकुअ के बाप अशहर की दो बीवियाँ हीलाह और नारा थीं।

⁶ नारा के बेटे अखूज्ज़ाम, हिफ़र, तेमनी और हख़सतरी थे।

⁷ हीलाह के बेटे ज़रत, सुहर और इतनान थे।

⁸ कूज़ के बेटे अन्ब और हज्ज़ोबीबा थे। उससे अख़रख़ैल बिन हरूम के खानदान भी निकले।

⁹ याबीज़ की अपने भाइयों की निसबत ज़्यादा इज़ज़त थी। उस की माँ ने उसका नाम याबीज़ यानी 'वह तकलीफ़ देता है' रखा, क्योंकि उसने कहा, "पैदा होते वक़्त मुझे बड़ी तकलीफ़ हुई।" ¹⁰ याबीज़ ने बुलंद आवाज़ से इसराईल के ख़ुदा से इलतमास की, "काश तू मुझे बरकत देकर मेरा इलाका वसी कर दे। तेरा हाथ मेरे साथ हो, और मुझे नुक़सान से बचा ताकि मुझे तकलीफ़ न पहुँचे।" और अल्लाह ने उस की सुनी।

* **3:16** इब्रानी में यह्याकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है। † **3:17** इब्रानी में यह्याकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

11 सूखा के भाई कलूब महीर का और महीर इस्तून का बाप था।

12 इस्तून के बेटे बैत-रफा, फासह और तखिन्ना थे।

तखिन्ना नाहस शहर का बाप था जिसकी औलाद रैका में आबाद है। 13 कनज के बेटे गुतनियेल और सिरायाह थे। गुतनियेल के बेटों के नाम हतत और मऊनाती थे।

14 मऊनाती उफरा का बाप था।

सिरायाह योआब का बाप था जो 'वादीए-कारीगर' का बानी था। आबादी का यह नाम इसलिए पड़ गया कि उसके बाशिंदे कारीगर थे।

15 कालिब बिन यफुन्ना के बेटे ईरू, ऐला और नाम थे। ऐला का बेटा कनज था।

16 यहल्ललेल के चार बेटे जीफ्र, जीफ्रा, तीरियाह और अस्रेल थे।

17-18 अजरा के चार बेटे यतर, मरद, इफर और यलून थे। मरद की शादी मिसरी बादशाह फिरौन की बेटी बितियाह से हुई। उसके तीन बच्चे मरियम, सम्मी और इसबाह पैदा हुए। इसबाह इस्तिमुअ का बाप था। मरद की दूसरी बीवी यहदाह की थी, और उसके तीन बेटे जदूर का बाप यरद, सोका का बाप हिवर और ज़नूह का बाप यकूतियेल थे।

19 हदियाह की बीवी नहम की बहन थी। उसका एक बेटा कईला जरमी का बाप और दूसरा इस्तिमुअ माकाती था।

20 सीमून के बेटे अमनोन, रिन्ना, बिन-हनान और तीलोन थे। यिसई के बेटे ज़ोहित और बिन-ज़ोहित थे।

21 सेला बिन यहदाह की दर्जे-ज़ैल औलाद थी : लेका का बाप एर, मेरेसा का बाप लादा, बैत-अशबीअ में आबाद बारीक कतान का काम करनेवालों के खानदान, 22 योक्कीम, कोज़ीबा के बाशिंदे, और युआस और साराफ जो कदीम रिवायत के मुताबिक मोआब पर हुक्मरानी करते थे लेकिन बाद में बैत-लहम वापस आए। 23 वह नताईम और जदीरा में रहकर कुम्हार और बादशाह के मुलाज़िम थे।

शमौन की औलाद

24 शमौन के बेटे यमुएल, यमीन, यरीब, ज़ारह और साऊल थे। 25 साऊल के हाँ सल्लूम पैदा हुआ, सल्लूम के मिबसाम, मिबसाम के मिशमा, 26 मिशमा के हम्मूएल, हम्मूएल के ज़क्कूर और ज़क्कूर के सिमई। 27 सिमई के 16 बेटे और छः बेटियाँ थीं, लेकिन उसके भाइयों के कम बच्चे पैदा हुए। नतीजे में शमौन का कबीला यहदाह के कबीले की निसबत छोटा रहा।

28 ज़ैल के शहर उनके गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत शमौन का कबायली इलाका था : बैर-सबा, मोलादा, हसार-सुआल, 29 बिलहाह, अज़म, तोलद, 30 बतुएल, हरमा, सिकलाज, 31 बैत-मर्कबोत, हसार-सूसीम, बैत-बिरी और शौरैम। दाऊद की हुक्मत तक यह कबीला इन जगहों में आबाद था, 32 नीज़ ऐताम, ऐन, रिम्मोन, तोकन और असन में भी। 33 इन पाँच आबादियों के गिर्दो-नवाह के देहात भी बाल तक शामिल थे। हर मक़ाम के अपने अपने तहरीरी नसबनामे थे।

34 शमौन के खानदानों के दर्जे-ज़ैल सरपरस्त थे : मिसोबाब, यमलीक, यूशा बिन अमसियाह, 35 योएल, याह बिन यूसिबियाह बिन सिरायाह बिन असियेल, 36 इलियूएनी, याकूबा, यशूखाया, असायाह, अदियेल, यसीमियेल, बिनायाह, 37 ज़ीज़ा बिन शिफई बिन अल्लोन बिन यदायाह बिन सिमरी बिन समायाह।

38 दर्जे-बाला आदमी अपने खानदानों के सरपरस्त थे। उनके खानदान बहुत बढ़ गए, 39 इसलिए वह अपने रेवड़ों को चराने की जगहें ढूँढते ढूँढते वादी के मशरिक में जदूर तक फैल गए। 40 वहाँ उन्हें अच्छी और शादाब चरागाहें मिल गईं। इलाका खुला, पुरसुकून और आरामदेह भी था। पहले हाम की कुछ औलाद वहाँ आबाद थी, 41 लेकिन हिज़क्रियाह बादशाह के ऐयाम में शमौन के मज़क़रा सरपरस्तों ने वहाँ के रहनेवाले हामियों और मऊनियों पर हमला किया और उनके तंबुओं को तबाह करके सबको मार दिया। एक भी न बचा। फिर वह ख़ुद वहाँ आबाद हुए। अब उनके रेवड़ों के लिए काफी चरागाहें थीं। आज तक वह इसी इलाके में रहते हैं।

42 एक दिन शमौन के 500 आदमी यिसई के चार बेटों फ़लतियाह, नअरियाह, रिफ़ायाह और उज़्जियेल की राहनुमाई में सईर के पहाड़ी इलाके में घुस गए। 43 वहाँ उन्होंने उन अमालीक्रियों को हलाक कर दिया जिन्होंने बचकर वहाँ पनाह ली थी। फिर वह ख़ुद वहाँ रहने लगे। आज तक वह वहीं आबाद हैं।

5

रूबिन की औलाद

1 इसराईल का पहलौठा रूबिन था। लेकिन चूँकि उसने अपने बाप की दाश्ता से हमबिसतर होने से बाप की बेहुरमती की थी इसलिए पहलौठे का मौरूसी हक उसके भाई यूसुफ़ के बेटों को दिया गया। इसी वजह से नसबनामे में रूबिन को पहलौठे की हैसियत से बयान नहीं किया गया। 2 यहदाह दीगर भाइयों की निसबत ज़्यादा ताक़तवर था, और उससे क्रौम का बादशाह निकला। तो भी यूसुफ़ को पहलौठे का मौरूसी हक हासिल था।

3 इसराईल के पहलौठे रूबिन के चार बेटे हनूक, फ़ल्लू, हसरोन और करमी थे।

4 योएल के हाँ समायाह पैदा हुआ, समायाह के जूज, जूज के सिमई, 5 सिमई के मीकाह, मीकाह के रियायाह, रियायाह के बाल और 6 बाल के बईरा। बईरा को असूर के बादशाह तिग्लत-पिलेसर ने जिलावतन कर दिया। बईरा रूबिन के कबीले का सरपरस्त था। 7 उनके नसबनामे

में उसके भाई उनके खानदानों के मुताबिक दर्ज किए गए हैं, सरे-फहरिस्त यइयेल, फिर ज़करियाह ⁸ और बाला बिन अज़ज़ बिन समा बिन योएल।

रुबिन का कबीला अरोईर से लेकर नबू और बाल-मऊन तक के इलाके में आबाद हुआ। ⁹ मशरिक की तरफ वह उस रेगिस्तान के किनारे तक फैल गए जो दरियाए-फुरात से शुरू होता है। क्योंकि जिलियाद में उनके रेवड़ों की तादाद बहुत बढ़ गई थी।

¹⁰ साऊल के ऐयाम में उन्होंने हाजिरियों से लड़कर उन्हें हलाक कर दिया और खुद उनकी आबादियों में रहने लगे। यों जिलियाद के मशरिक का पूरा इलाका रुबिन के कबीले की मिलकियत में आ गया।

जद की औलाद

¹¹ जद का कबीला रुबिन के कबीले के पड़ोसी मुल्क बसन में सलका तक आबाद था। ¹² उसका सरबराह योएल था, फिर साफ्रम, यानी और साफ्रत। वह सब बसन में आबाद थे। ¹³ उनके भाई उनके खानदानों समेत मीकाएल, मसुल्लाम, सबा, यूरी, याकान, जीअ और इबर थे। ¹⁴ यह सात आदमी अबीखैल बिन हरी बिन यारूह बिन जिलियाद बिन मीकाएल बिन यसीसी बिन यहदू बिन बूज़ के बेटे थे। ¹⁵ अखी बिन अबदियेल बिन जूनी इन खानदानों का सरपरस्त था।

¹⁶ जद का कबीला जिलियाद और बसन के इलाकों की आबादियों में आबाद था। शासून से लेकर सरहद तक की पूरी चरागाहें भी उनके कब्जे में थीं। ¹⁷ यह तमाम खानदान यहदाह के बादशाह यूताम और इसराईल के बादशाह यरुबियाम के ज़माने में नसबनामे में दर्ज किए गए।

दरियाए-यरदन के मशरिक में कबीलों की जंग

¹⁸ रुबिन, जद और मनस्सी के आधे कबीले के 44,760 फौजी थे। सब लड़ने के काबिल और तजरबाकार आदमी थे, ऐसे लोग जो तीर चला सकते और ढाल और तलवार से लैस थे। ¹⁹ उन्होंने हाजिरियों, यतूर, नफीस और नोदब से जंग की। ²⁰ लड़ते वक्त उन्होंने अल्लाह से मदद के लिए फरियाद की, तो उसने उनकी सुनकर हाजिरियों को उनके इत्तहादियों समेत उनके हवाले कर दिया। ²¹ उन्होंने उनसे बहुत कुछ लूट लिया : 50,000 ऊँट, 2,50,000 भेड़-बकरियाँ और 2,000 गधे। साथ साथ उन्होंने 1,00,000 लोगों को कैद भी कर लिया। ²² मैदाने-जंग में बेशुमार दुश्मन मारे गए, क्योंकि जंग अल्लाह की थी। जब तक इसराईलियों को असूर में जिलावतन न कर दिया गया वह इस इलाके में आबाद रहे।

मनस्सी का आधा कबीला

²³ मनस्सी का आधा कबीला बहुत बड़ा था। उसके लोग बसन से लेकर बाल-हरमून और सनीर यानी हरमून के पहाड़ी सिलसिले तक फैल गए। ²⁴ उनके खानदानी सरपरस्त इफ़र, यिसई, इलियेल, अज़रियेल, यरमियाह, हदावियाह और यहदियेल थे। सब माहिर फौजी, मशहर आदमी और खानदानी सरबराह थे।

मशरिकी कबीलों की जिलावतनी

²⁵ लेकिन यह मशरिकी कबीले अपने बापदादा के खुदा से बेवफ़ा हो गए। वह जिना करके मुल्क के उन अक्वाम के देवताओं के पीछे लग गए जिनको अल्लाह ने उनके आगे से मिटा दिया था। ²⁶ यह देखकर इसराईल के खुदा ने असूर के बादशाह तिग्लत-पिलेसर को उनके खिलाफ़ बरपा किया जिसने रुबिन, जद और मनस्सी के आधे कबीले को जिलावतन कर दिया। वह उन्हें खलह, दरियाए-खाबूर, हारा और दरियाए-जौज़ान को ले गया जहाँ वह आज तक आबाद हैं।

6

इमामे-आज़म की नसल (लावी का कबीला)

¹ लावी के बेटे जैरसोन, किहात और मिरारी थे। ² किहात के बेटे अमराम, इज़हार, हबसून और उज़्जियेल थे।

³ अमराम के बेटे हारून और मूसा थे। बेटी का नाम मरियम था। हारून के बेटे नदब, अबीह, इलियज़र और इतमर थे।

⁴ इलियज़र के हॉ फ़ीनहास पैदा हुआ, फ़ीनहास के अबीसुअ, ⁵ अबीसुअ के बुक्की, बुक्की के उज़्ज़ी, ⁶ उज़्ज़ी के ज़रखियाह, ज़रखियाह के मिरायोत, ⁷ मिरायोत के अमरियाह, अमरियाह के अखीतूब, ⁸ अखीतूब के सदोक, सदोक के अखीमाज़, ⁹ अखीमाज़ के अज़रियाह, अज़रियाह के यूहानान ¹⁰ और यूहानान के अज़रियाह। यही अज़रियाह रब के उस घर का पहला इमामे-आज़म था जो सुलेमान ने यरूशलम में बनवाया था। ¹¹ उसके हॉ अमरियाह पैदा हुआ, अमरियाह के अखीतूब, ¹² अखीतूब के सदोक, सदोक के सल्लूम, ¹³ सल्लूम के खिलक्रियाह, खिलक्रियाह के अज़रियाह, ¹⁴ अज़रियाह के सिरायाह और सिरायाह के यहसदक। ¹⁵ जब रब ने नबूकदनेज़र के हाथ से यरूशलम और पूरे यहदाह के बाशिंदों को जिलावतन कर दिया तो यहसदक भी उनमें शामिल था।

लावी की औलाद

¹⁶ लावी के तीन बेटे जैरसोन, किहात और मिरारी थे। ¹⁷ जैरसोन के दो बेटे लिबनी और सिमई थे। ¹⁸ किहात के चार बेटे अमराम, इज़हार, हबसून और उज़्जियेल थे। ¹⁹ मिरारी के दो बेटे महली और मूशी थे।

जैल में लावी के खानदानों की फ़हरिस्त उनके बानियों के मुताबिक दर्ज है।

20 जैरसोम के हॉं लिबनी पैदा हुआ, लिबनी के यहत, यहत के ज़िम्मा, 21 ज़िम्मा के युआख, युआख के इद्, इद् के ज़ारह और ज़ारह के यतरी।

22 क्रिहात के हॉं अम्मीनदाब पैदा हुआ, अम्मीनदाब के कोरह, कोरह के अस्सीर, 23 अस्सीर के इलकाना, इलकाना के अबियासफ, अबियासफ के अस्सीर, 24 अस्सीर के तहत, तहत के ऊरियेल, ऊरियेल के उज्जियाह और उज्जियाह के साऊल। 25 इलकाना के बेटे अमासी, अखीमोत 26 और इलकाना थे। इलकाना के हॉं जूफी पैदा हुआ, जूफी के नहत, 27 नहत के इलियाब, इलियाब के यरोहाम, यरोहाम के इलकाना और इलकाना के समुएल। 28 समुएल का पहला बेटा योएल और दूसरा अबियाह था।

29 मिरारी के हॉं महली पैदा हुआ, महली के लिबनी, लिबनी के सिमई, सिमई के उज्जा, 30 उज्जा के सिमआ, सिमआ के हज्जियाह और हज्याह के असायाह।

लावी की ज़िम्मादारियाँ

31 जब अहद का संदूक यरूशलम में लाया गया ताकि आइंदा वहाँ रहे तो दाऊद बादशाह ने कुछ लावियों को रब के घर में गीत गाने की ज़िम्मादारी दी। 32 इससे पहले कि सुलेमान ने रब का घर बनवाया यह लोग अपनी खिदमत मुलाकात के खैमे के सामने सरंजाम देते थे। वह सब कुछ मुकर्रर हिदायात के मुताबिक अदा करते थे। 33 ज़ैल में उनके नाम उनके बेटों के नामों समेत दर्ज हैं।

क्रिहात के खानदान का हैमान पहला गुलूकार था। उसका पूरा नाम यह था : हैमान बिन योएल बिन समुएल 34 बिन इलकाना बिन यरोहाम बिन इलियेल बिन तूख 35 बिन सूफ बिन इलकाना बिन महत बिन अमासी 36 बिन इलकाना बिन योएल बिन अज़रियाह बिन सफनियाह 37 बिन तहत बिन अस्सीर बिन अबियासफ बिन कोरह 38 बिन इज़हार बिन क्रिहात बिन लावी बिन इसराईल।

39 हैमान के दहने हाथ आसफ खड़ा होता था। उसका पूरा नाम यह था : आसफ बिन बरकियाह बिन सिमआ 40 बिन मीकाएल बिन बासियाह बिन मलकियाह 41 बिन अद्री बिन ज़ारह बिन अदायाह 42 बिन ऐतान बिन ज़िम्मा बिन सिमई 43 बिन यहत बिन जैरसोम बिन लावी।

44 हैमान के बाएँ हाथ ऐतान खड़ा होता था। वह मिरारी के खानदान का फ़रद था। उसका पूरा नाम यह था : ऐतान बिन कीसी बिन अबदी बिन मल्लूक 45 बिन हसबियाह बिन अमसियाह बिन खिलकियाह 46 बिन अमसी बिन बानी बिन समर 47 बिन महली बिन मूशी बिन मिरारी बिन लावी।

48 दूसरे लावियों को अल्लाह की सूकूनतगाह में बाक्रीमाँदा ज़िम्मादारियाँ दी गई थीं।

49 लेकिन सिर्फ़ हासून और उस की औलाद भस्म होनेवाली कुरबानियाँ पेश करते और बखूर की कुरबानगाह पर बखूर जलाते थे। वही मुक़द्दसतरीन कमरे में हर खिदमत सरंजाम देते थे। इसराईल का कफ़फ़ारा देना उन्हीं की ज़िम्मादारी थी। वह सब कुछ ऐन उन हिदायात के मुताबिक अदा करते थे जो अल्लाह के खादिम मूसा ने उन्हें दी थीं।

50 हासून के हॉं इलियज़र पैदा हुआ, इलियज़र के फ़ीनहास, फ़ीनहास के अबीसुअ, 51 अबीसुअ के बुक्की, बुक्की के उज्ज़ी, उज्ज़ी के ज़रखियाह, 52 ज़रखियाह के मिरायोत, मिरायोत के अमरियाह, अमरियाह के अखीतूब, 53 अखीतूब के सदोक, सदोक के अखीमाज़।

लावियों की आबादियाँ

54 ज़ैल में वह आबादियाँ और चरागाहें दर्ज हैं जो लावियों को कुरा डालकर दी गईं।

कुरा डालते वक़्त पहले हासून के बेटे क्रिहात की औलाद को जगहें मिल गईं। 55 उसे यहदाह के कबीले से हबसून शहर उस की चरागाहों समेत मिल गया। 56 लेकिन गिर्दो-नवाह के खेत और देहात कालिब बिन यफ़ुन्ना को दिए गए। 57 हबसून उन शहरों में शामिल था जिनमें हर वह पनाह ले सकता था जिसके हाथों गैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो। हबसून के अलावा हासून की औलाद को ज़ैल के मक़ाम उनकी चरागाहों समेत दिए गए : लिबना, यत्तीर, इस्तिमुअ, 58 हौलून, दबीर, 59 असन, और बैत-शम्स। 60 बिनयमीन के कबीले से उन्हें ज़िबऊन, जिबा, अलमत और अनतोत उनकी चरागाहों समेत दिए गए। इस तरह हासून के खानदान को 13 शहर मिल गए।

61 क्रिहात के बाक्री खानदानों को मनस्सी के मगरिबी हिस्से के दस शहर मिल गए।

62 जैरसोम की औलाद को इशकार, आशर, नफ़ताली और मनस्सी के कबीलों के 13 शहर दिए गए। यह मनस्सी का वह इलाका था जो दरियाए-यरदन के मशरिक में मुल्के-बसन में था।

63 मिरारी की औलाद को रुबिन, जद और ज़बूलून के कबीलों के 12 शहर मिल गए।

64-65 यों इसराईलियों ने कुरा डालकर लावियों को मज़क़रा शहर दे दिए। सब यहदाह, शमौन और बिनयमीन के कबायली इलाकों में थे।

66 क्रिहात के चंद एक खानदानों को इफ़राईम के कबीले से शहर उनकी चरागाहों समेत मिल गए। 67 इनमें इफ़राईम के पहाड़ी इलाके का शहर सिकम शामिल था जिसमें हर वह पनाह ले सकता था जिससे कोई गैरइरादी तौर पर हलाक हुआ होता था, फिर जज़र, 68 युक्मियाम, बैत-हौसून, 69 ऐयालोन और जात-रिम्मोन। 70 क्रिहात के बाक्री कुंभों को मनस्सी के मगरिबी हिस्से के दो शहर आनेर और बिलाम उनकी चरागाहों समेत मिल गए।

71 जैरसोम की औलाद को ज़ैल के शहर भी उनकी चरागाहों समेत मिल गए : मनस्सी के मशरिकी हिस्से से जौलान जो बसन में है और अस्तारात। 72 इशकार के कबीले से कादिस, दाबरत, 73 रामात और आनीम। 74 आशर के कबीले से मिसाल, अब्दोन, 75 हुक्क और रहोब।

76 और नफ़ताली के कबीले से गलील का कादिस, हम्मून और किरियतायम।

77 मिरारी के बाकी खानदानों को जैल के शहर उनकी चरागाहों समेत मिल गए : जबूलन के कबीले से रिम्मोन और तबूर। 78-79 रुबिन के कबीले से रेगिस्तान का बसर, यहज़, कदीमात और मिफात (यह शहर दरियाए-यरदन के मशरिक में यरीह के मुकाबिल वाक्रे हैं)। 80 जद के कबीले से जिलियाद का रामात, महनायम, 81 हसबोन और याज़ेर।

7

इशकार की औलाद

- 1 इशकार के चार बेटे तोला, फुव्वा, यस्ब और सिमरोन थे।
- 2 तोला के पाँच बेटे उज्ज़ी, रिफायाह, यरियेल, यहमी, इबसाम और समुएल थे। सब अपने खानदानों के सरपरस्त थे। नसबनामे के मुताबिक दाऊद के ज़माने में तोला के खानदान के 22,600 अफ़राद जंग करने के काबिल थे।
- 3 उज्ज़ी का बेटा इज़्रियाह था जो अपने चार भाइयों मीकाएल, अबदियाह, योएल और यिस्सियाह के साथ खानदानी सरपरस्त था।
- 4 नसबनामे के मुताबिक उनके 36,000 अफ़राद जंग करने के काबिल थे। इनकी तादाद इसलिए ज्यादा थी कि उज्ज़ी की औलाद के बहुत बाल-बच्चे थे। 5 इशकार के कबीले के खानदानों के कुल 87,000 आदमी जंग करने के काबिल थे। सब नसबनामे में दर्ज थे।

बिनयमीन और नफ़ताली की औलाद

- 6 बिनयमीन के तीन बेटे बाला, बकर और यदियएल थे। 7 बाला के पाँच बेटे इसबून, उज्ज़ी, उज्ज़ियेल, यरीमोत और ईरी थे। सब अपने खानदानों के सरपरस्त थे। उनके नसबनामे के मुताबिक उनके 22,034 मर्द जंग करने के काबिल थे।
- 8 बकर के 9 बेटे ज़मीरा, युआस, इलियज़र, इलियुएनी, उमरी, यरीमोत, अबियाह, अनतोत और अलमत थे। 9 उनके नसबनामे में उनके सरपरस्त और 20,200 जंग करने के काबिल मर्द बयान किए गए हैं।
- 10 बिलहान बिन यदियएल के सात बेटे यऊस, बिनयमीन, अहद, कनाना, जैतान, तरसीस और अखी-सहर थे। 11 सब अपने खानदानों के सरपरस्त थे। उनके 17,200 जंग करने के काबिल मर्द थे।
- 12 सुफ़फी और हुफ़फी ईर की और हुशी अखीर की औलाद थे।
- 13 नफ़ताली के चार बेटे यहसियेल, जूनी, यिसर और सल्लूम थे। सब बिलहाह की औलाद थे।

मनस्सी की औलाद

- 14 मनस्सी की अरामी दाश्ता के दो बेटे असरियेल और जिलियाद का बाप मकीर पैदा हुए। 15 मकीर ने हुफ़फ़ियों और सुफ़फ़ियों की एक औरत से शादी की। बहन का नाम माका था। मकीर के दूसरे बेटे का नाम सिलाफ़िहाद था जिसके हाँ सिर्फ़ बेटियाँ पैदा हुईं।
- 16 मकीर की बीवी माका के मज़ीद दो बेटे फ़रस और शरस पैदा हुए। शरस के दो बेटे औलाम और रक़म थे। 17 औलाम के बेटे का नाम बिदान था। यही जिलियाद बिन मकीर बिन मनस्सी की औलाद थे।
- 18 जिलियाद की बहन मूलिकत के तीन बेटे इशहद, अबियज़र और महलाह थे। 19 समीदा के चार बेटे अखियान, सिकम, लिक्ही और अनियाम थे।

इफ़राईम की औलाद

- 20 इफ़राईम के हाँ सूतलह पैदा हुआ, सूतलह के बरद, बरद के तहत, तहत के इलियदा, इलियदा के तहत, 21 तहत के ज़बद और ज़बद के सूतलह।
- इफ़राईम के मज़ीद दो बेटे अज़र और इलियद थे। यह दो मर्द एक दिन जात गए ताकि वहाँ के रेवड़ लूट लें। लेकिन मक़ामी लोगों ने उन्हें पकड़कर मार डाला। 22 उनका बाप इफ़राईम काफी अरसे तक उनका मातम करता रहा, और उसके रिश्तेदार उससे मिलने आए ताकि उसे तसल्ली दें। 23 जब इसके बाद उस की बीवी के बेटा पैदा हुआ तो उसने उसका नाम बरिया यानी मुसीबत रखा, क्योंकि उस वक़्त खानदान मुसीबत में आ गया था। 24 इफ़राईम की बेटा सैरा ने बालाई और नशेबी बैत-हौरून और उज्ज़न-सैरा को बनवाया।
- 25 इफ़राईम के मज़ीद दो बेटे रफ़ह और रसफ़ थे। रसफ़ के हाँ तिलह पैदा हुआ, तिलह के तहन, 26 तहन के लादान, लादान के अम्मीहद, अम्मीहद के इलीसमा, 27 इलीसमा के नून, नून के यशुआ।
- 28 इफ़राईम की औलाद के इलाक़े में जैल के मक़ाम शामिल थे : बैतेल गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत, मशरिक में नारान तक, मगरिब में जज़र तक गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत, शिमाल में सिकम और ऐयाह तक गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत। 29 बैत-शान, तानक, मजिदो और दोर गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत मनस्सी की औलाद की मिलकियत बन गए। इन तमाम मक़ामों में यूसुफ़ बिन इसराईल की औलाद रहती थी।

आशर की औलाद

- 30 आशर के चार बेटे यिमना, इसवाह, इसवी और बरिया थे। उनकी बहन सिरह थी।
- 31 बरिया के बेटे हिबर और बिरज़ायत का बाप मलकियेल थे।
- 32 हिबर के तीन बेटे यफ़लीत, शूमीर और खूताम थे। उनकी बहन सुअ थी।

33 यफ़लीत के तीन बेटे फ़ासक, बिमहाल और असवात थे। 34 शूमीर के चार बेटे अख़ी, रूहजा, हुब्बा और अराम थे। 35 उसके भाई हीलम के चार बेटे सूफ़ह, इमना, सलस और अमल थे।

36 सूफ़ह के 11 बेटे सूह, हर्नफ़र, सुआल, बैरी, इमराह,

37 बसर, हद, सम्मा, सिलसा, यितरान और बईरा थे।

38 यतर के तीन बेटे यफ़ुन्ना, फ़िसफ़ाह और अरा थे।

39 उल्ला के तीन बेटे अरख, हन्नियेल और रिज़ियाह थे।

40 आशर के दर्जे-बाला तमाम अफ़राद अपने अपने ख़ानदानों के सरपरस्त थे। सब चींदा मर्द, माहिर फ़ौजी और सरदारों के सरबराह थे। नसबनामे में 26,000 जंग करने के काबिल मर्द दर्ज हैं।

8

बिनयमीन की औलाद

1 बिनयमीन के पाँच बेटे बड़े से लेकर छोटे तक बाला, अशबेल, अख़रख, 2 नूहा और रफ़ा थे।

3 बाला के बेटे अद्गर, जीरा, अबीहद, 4 अबीसुअ, नामान, अख़ूह, 5 जीरा, सफ़फ़ान और हुराम थे।

6-7 अहद के तीन बेटे नामान, अखियाह और जीरा थे। यह उन ख़ानदानों के सरपरस्त थे जो पहले जिबा में रहते थे लेकिन जिन्हें बाद में जिलावतन करके मानहत में बसाया गया। उज़्ज़ा और अख़ीहद का बाप जीरा उन्हें वहाँ लेकर गया था।

8-9 सहैरम अपनी दो बीवियों हुशीम और बारा को तलाक़ देकर मोआब चला गया। वहाँ उस की बीवी हदस के सात बेटे यूबाब, ज़िबिया, मेसा, मलकाम, 10 यऊज़, सकियाह और मिरमा पैदा हुए। सब बाद में अपने ख़ानदानों के सरपरस्त बन गए। 11 पहली बीवी हुशीम के दो बेटे अबीतूब और इलफ़ाल पैदा हुए।

12-14 इलफ़ाल के आठ बेटे इबर, मिशआम, समद, बरिया, समा, अखियो, शाशक और यरीमोत थे। समद ओनु, लूद और गिर्दो-नवाह की आबादियों का बानी था। बरिया और समा ऐयालोन के बाशिंदों के सरबराह थे। उन्हीं ने जात के बाशिंदों को निकाल दिया।

15-16 बरिया के बेटे ज़बदियाह, अराद, इदर, मीकाएल, इसफ़ाह और यूखा थे।

17 इलफ़ाल के मजीद बेटे ज़बदियाह, मसुल्लाम, हिज़की, हिबर, 18 यिस्मरी, यिज़लियाह और यूबाब थे।

19-21 सिमई के बेटे यकीम, ज़िकरी, ज़बदी, इलियैनी, ज़िल्लती, इलियेल, अदायाह, बिरायाह और सिमरात थे।

22-25 शाशक के बेटे इसफ़ान, इबर, इलियेल, अब्दोन, ज़िकरी, हनान, हननियाह, ऐलाम, अनतोतियाह, यफ़दियाह और फ़नुएल थे।

26-27 यरोहाम के बेटे सम्सरी, शहारियाह, अतलियाह, यारसियाह, इलियास और ज़िकरी थे। 28 यह तमाम ख़ानदानी सरपरस्त नसबनामे में दर्ज थे और यरूशलम में रहते थे।

जिबऊन में साऊल का ख़ानदान

29 जिबऊन का बाप यइयेल जिबऊन में रहता था। उस की बीवी का नाम माका था। 30 बड़े से लेकर छोटे तक उनके बेटे अब्दोन, सूर, कीस, बाल, नदब, 31 जदूर, अखियो, ज़कर 32 और मिक्लोट थे। मिक्लोट का बेटा सिमाह था। वह भी अपने रिश्तेदारों के साथ यरूशलम में रहते थे।

33 नैर कीस का बाप था और कीस साऊल का। साऊल के चार बेटे यूनतन, मलकीशुअ, अबीनदाब और इशबाल थे।

34 यूनतन मरीब्बाल का बाप था और मरीब्बाल मीकाह का।

35 मीकाह के चार बेटे फ़ीतून, मलिक, तारीअ और आखज़ थे।

36 आखज़ का बेटा यहूअद्दा था जिसके तीन बेटे अलमत, अज़मावत और ज़िमरी थे। ज़िमरी के हाँ मौज़ा पैदा हुआ, 37 मौज़ा के बिनआ, बिनआ के राफ़ा, राफ़ा के इलियासा और इलियासा के असील।

38 असील के छः बेटे अज़रीकाम, बोकिरू, इसमाईल, सअरियाह, अबदियाह और हनान थे। 39 असील के भाई ईशक के तीन बेटे बड़े से लेकर छोटे तक औलाम, यऊस और इलीफलत थे।

40 औलाम के बेटे तजरबाकार फ़ौजी थे जो महारत से तीर चला सकते थे। उनके बहुत-से बेटे और पोते थे, कुल 150 अफ़राद। तमाम मज़क़ूरा आदमी उनके ख़ानदानों समेत बिनयमीन की औलाद थे।

9

जिलावतनी के बाद यरूशलम के बाशिंदे

1 तमाम इसराईल शाहाने-इसराईल की किताब के नसबनामों में दर्ज हैं।

फिर यहदाह के बाशिंदों को बेवफाई के बाइस बाबल में जिलावतन कर दिया गया। ² जो लोग पहले वापस आकर दुबारा शहरों में अपनी मौरूसी ज़मीन पर रहने लगे वह इमाम, लावी, रब के घर के खिदमतगार और बाक़ी चंद एक इसराईली थे। ³ यहदाह, बिनयमीन, इफ़राईम और मनस्सी के क़बीलों के कुछ लोग यरूशलम में जा बसे।

⁴ यहदाह के क़बीले के दर्जे-ज़ैल ख़ानदानी सरपरस्त वहाँ आबाद हुए :

ऊती बिन अम्मीहद बिन उमरी बिन इमरी बिन बानी। बानी फ़ारस बिन यहदाह की औलाद में से था।

⁵ सैला के ख़ानदान का पहलौठा असायाह और उसके बेटे।

⁶ ज़ारह के ख़ानदान का यऊएल। यहदाह के इन ख़ानदानों की कुल तादाद 690 थी।

⁷⁻⁸ बिनयमीन के क़बीले के दर्जे-ज़ैल ख़ानदानी सरपरस्त यरूशलम में आबाद हुए :

सल्लू बिन मसुल्लाम बिन हदावियाह बिन सनुआह।

इबनियाह बिन यरोहाम।

ऐला बिन उज्जी बिन मिकरी।

मसुल्लाम बिन सफ़तियाह बिन रऊएल बिन इबनियाह।

⁹ नसबनामे के मुताबिक़ बिनयमीन के इन ख़ानदानों की कुल तादाद 956 थी।

¹⁰ जो इमाम जिलावतनी से वापस आकर यरूशलम में आबाद हुए वह ज़ैल में दर्ज हैं :

यदायाह, यहयरीब, यकीन, ¹¹ अल्लाह के घर का इंचार्ज अज़रियाह बिन ख़िलकियाह बिन मसुल्लाम बिन सदोक बिन मिरायोत बिन अख़ीतूब, ¹² अदायाह बिन यरोहाम बिन फ़शहर बिन मलकियाह और मासी बिन अदियेल बिन यहज़ीराह बिन मसुल्लाम बिन मसिल्लिमित बिन इम्वेर। ¹³ इमामों के इन ख़ानदानों की कुल तादाद 1,760 थी। उनके मर्द रब के घर में खिदमत संरंजाम देने के काबिल थे।

¹⁴ जो लावी जिलावतनी से वापस आकर यरूशलम में आबाद हुए वह दर्जे-ज़ैल हैं :

मिरारी के ख़ानदान का समायाह बिन हस्सूब बिन अज़रीकाम बिन हसबियाह, ¹⁵ बकबक्कर, हरस, जलाल, मतनियाह बिन मीका बिन ज़िकरी बिन आसफ़, ¹⁶ अबदियाह बिन समायाह बिन जलाल बिन यदूतून और बरकियाह बिन आसा बिन इलकाना। बरकियाह नतूफ़ातियों की आबादियों का रहनेवाला था।

¹⁷ ज़ैल के दरबान भी वापस आए : सल्लूम, अक्कूब, तलमून, अख़ीमान और उनके भाई। सल्लूम उनका इंचार्ज था। ¹⁸ आज तक उसका ख़ानदान रब के घर के मशरिक में शाही दरवाज़े की पहरादारी करता है। यह दरबान लावियों के ख़ैमों के अफ़राद थे। ¹⁹ सल्लूम बिन कोरे बिन अबियासफ़ बिन कोरह अपने भाइयों के साथ कोरह के ख़ानदान का था। जिस तरह उनके बापदादा की ज़िम्मादारी रब की ख़ैमागाह में मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े की पहरादारी करनी थी उसी तरह उनकी ज़िम्मादारी मक़दिस के दरवाज़े की पहरादारी करनी थी। ²⁰ क़दीम ज़माने में फ़ीनहास बिन इलियज़र उन पर मुकर्रर था, और रब उसके साथ था। ²¹ बाद में ज़करियाह बिन मसलमियाह मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े का दरबान था।

²² कुल 212 मर्दों को दरबान की ज़िम्मादारी दी गई थी। उनके नाम उनकी मक़ामी जगहों के नसबनामे में दर्ज थे। दाऊद और समुएल ग़ैबबीन ने उनके बापदादा को यह ज़िम्मादारी दी थी। ²³ वह और उनकी औलाद पहले रब के घर यानी मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़ों पर पहरादारी करते थे। ²⁴ यह दरबान रब के घर के चारों तरफ़ के दरवाज़ों की पहरादारी करते थे।

²⁵ लावी के अकसर लोग यरूशलम में नहीं रहते थे बल्कि बारी बारी एक हफ़ते के लिए देहात से यरूशलम आते थे ताकि वहाँ अपनी खिदमत संरंजाम दें। ²⁶ सिर्फ़ दरबानों के चार इंचार्ज मुसलसल यरूशलम में रहते थे। यह चार लावी अल्लाह के घर के कमरों और खज़ानों को भी सँभालते ²⁷ और रात को भी अल्लाह के घर के इर्दगिर्द गुज़ारते थे, क्योंकि उन्हीं को उस की हिफ़ाज़त करना और सुबह के वक़्त उसके दरवाज़ों को खोलना था।

²⁸ बाज़ दरबान इबादत का सामान सँभालते थे। जब भी उसे इस्तेमाल के लिए अंदर और बाद में दुबारा बाहर लाया जाता तो वह हर चीज़ को गिनकर चैक करते थे। ²⁹ बाज़ बाक़ी सामान और मक़दिस में मौजूद चीज़ों को सँभालते थे। रब के घर में मुस्तामल बारीक़ मैदा, मै, ज़ैतून का तेल, बखूर और बलसान के मुख़्तलिफ़ तेल भी इनमें शामिल थे। ³⁰ लेकिन बलसान के तेलों को तैयार करना इमामों की ज़िम्मादारी थी। ³¹ कोरह के ख़ानदान का लावी मत्तितियाह जो सल्लूम का पहलौठा था कुरबानी के लिए मुस्तामल रोटी बनाने का इंतज़ाम चलाता था। ³² क़िहात के ख़ानदान के बाज़ लावियों के हाथ में वह रोटियाँ बनाने का इंतज़ाम था जो हर हफ़ते के दिन को रब के लिए मख़सूस करके रब के घर के मुक़द्दस कमरे की मेज़ पर रखी जाती थी।

³³ मौसीकार भी लावी थे। उनके सरबराह बाक़ी तमाम खिदमत में हिस्सा नहीं लेते थे, क्योंकि उन्हें हर वक़्त अपनी ही खिदमत संरंजाम देने के लिए तैयार रहना पड़ता था। इसलिए वह रब के घर के कमरों में रहते थे।

³⁴ लावियों के यह तमाम ख़ानदानी सरपरस्त नसबनामे में दर्ज थे और यरूशलम में रहते थे।

जिबऊन में साऊल के ख़ानदान

35 जिबऊन का बाप यइयेल जिबऊन में रहता था। उस की बीवी का नाम माका था। 36 बड़े से लेकर छोटे तक उनके बेटे अब्दोन, सूर, क्रीस, बाल, नैर, नदब, 37 जदूर, अखियो, ज़करियाह और मिक्लोट थे। 38 मिक्लोट का बेटा सिमाह था। वह भी अपने भाइयों के मुकाबिल यरूशलम में रहते थे।

39 नैर क्रीस का बाप था और क्रीस साऊल का। साऊल के चार बेटे यूनतन, मलकीशुअ, अबीनदाब और इशबाल थे।

40 यूनतन मरीब्बाल का बाप था और मरीब्बाल मीकाह का। 41 मीकाह के चार बेटे फ्रीतून, मलिक, तहरेअ और आखज़ थे। 42 आखज़ का बेटा यारा था। यारा के तीन बेटे अलमत, अज़मावत और ज़िमरी थे। ज़िमरी के हों मौज़ा पैदा हुआ, 43 मौज़ा के बिनआ, बना के रिफ़ायाह, रिफ़ायाह के इलियासा और इलियासा के असील।

44 असील के छः बेटे अज़रीकाम, बोकिरू, इसमाईल, सअरियाह, अबदियाह और हनान थे।

10

साऊल और उसके बेटों की मौत

1 जिलबुअ के पहाड़ी सिलसिले पर फिलिस्तिनियों और इसराईलियों के दरमियान जंग छिड़ गई। लड़ते लड़ते इसराईली फ़रार होने लगे, लेकिन बहुत लोग वहीं शहीद हो गए।

2 फिर फिलिस्ती साऊल और उसके बेटों यूनतन, अबीनदाब और मलकीशुअ के पास जा पहुँचे। तीनों बेटे हलाक हो गए, 3 जबकि लड़ाई साऊल के इर्दगिर्द उरुज तक पहुँच गई। फिर वह तीरअंदाजों का निशाना बनकर ज़ख्मी हो गया। 4 उसने अपने सिलाहबरदार को हुक्म दिया, “अपनी तलवार मियान से खींचकर मुझे मार डाल! वरना यह नामखतून मुझे बेइज्जत करेंगे।” लेकिन सिलाहबरदार ने इनकार किया, क्योंकि वह बहुत डरा हुआ था। आखिर में साऊल अपनी तलवार लेकर खुद उस पर गिर गया।

5 जब सिलाहबरदार ने देखा कि मेरा मालिक मर गया है तो वह भी अपनी तलवार पर गिरकर मर गया। 6 यों उस दिन साऊल, उसके तीन बेटे और उसका तमाम घराना हलाक हो गए। 7 जब मैदाने-यज़्ज़ल के इसराईलियों को ख़बर मिली कि इसराईली फ़ौज भाग गई और साऊल अपने बेटों समेत मारा गया है तो वह अपने शहरों को छोड़कर भाग निकले, और फिलिस्ती छोड़े हुए शहरों पर क़ब्ज़ा करके उनमें बसने लगे।

8 अगले दिन फिलिस्ती लाशों को लूटने के लिए दुबारा मैदाने-जंग में आ गए। जब उन्हें जिलबुअ के पहाड़ी सिलसिले पर साऊल और उसके तीनों बेटे मुरदा मिले 9 तो उन्होंने साऊल का सर काटकर उसका ज़िरा-बकतर उतार लिया और कासिदों को अपने पूरे मुल्क में भेजकर अपने बुतों और अपनी क़ौम को फ़तह की इतला दी। 10 साऊल का ज़िरा-बकतर उन्होंने अपने देवताओं के मंदिर में महफूज़ कर लिया और उसके सर को दज़न देवता के मंदिर में लटका दिया।

11 जब यबीस-जिलियाद के बाशिंदों को ख़बर मिली कि फिलिस्तिनियों ने साऊल की लाश के साथ क्या कुछ किया है 12 तो शहर के तमाम लड़ने के क़ाबिल आदमी बैत-शान के लिए रवाना हुए। वहाँ पहुँचकर वह साऊल और उसके बेटों की लाशों को उतारकर यबीस ले गए जहाँ उन्होंने उनकी हड्डियों को यबीस के बड़े दरख्त के साय में दफनाया। उन्होंने रोज़ा रखकर पूरे हफ़ते तक उनका मातम किया।

13 साऊल को इसलिए मारा गया कि वह रब का वफ़ादार न रहा। उसने उस की हिदायात पर अमल न किया, यहाँ तक कि उसने मुरदों की रूह से राबिता करनेवाली जादूगरनी से मशवरा किया, 14 हालाँकि उसे रब से दरियाफ़्त करना चाहिए था। यही वजह है कि रब ने उसे सज़ाए-मौत देकर सलतनत को दाऊद बिन यस्सी के हवाले कर दिया।

11

दाऊद पूरे इसराईल का बादशाह बन जाता है

1 उस वक़्त तमाम इसराईल हबर्न में दाऊद के पास आया और कहा, “हम आप ही की क़ौम और आप ही के रिश्तेदार हैं। 2 माज़ी में भी जब साऊल बादशाह था तो आप ही फ़ौजी मुहिमों में इसराईल की क्रियादत करते रहे। और रब आपके खुदा ने आपसे वादा भी किया है कि तू मेरी क़ौम इसराईल का चरवाहा बनकर उस पर हुक्मत करेगा।”

3 जब इसराईल के तमाम बुज़ुर्ग हबर्न पहुँचे तो दाऊद बादशाह ने रब के हुज़ूर उनके साथ अहद बाँधा, और उन्होंने उसे मसह करके इसराईल का बादशाह बना दिया। यों रब का समुएल की मारिफ़त किया हुआ वादा पूरा हुआ।

दाऊद यरूशलम पर क़ब्ज़ा करता है

4 बादशाह बनने के बाद दाऊद तमाम इसराईलियों के साथ यरूशलम गया ताकि उस पर हमला करे। उस ज़माने में उसका नाम यबूस था, और यबूसी उसमें बसते थे। 5 दाऊद को देखकर यबूसियों ने उससे कहा, “आप हमारे शहर में कभी दाखिल नहीं हो पाएँगे!”

तो भी दाऊद ने सिथ्यून के क़िले पर क़ब्ज़ा कर लिया जो आजकल ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है। 6 यबूस पर हमला करने से पहले दाऊद ने कहा था, “जो भी यबूसियों पर हमला करने में राहनुमाई करे वह फ़ौज का कमांडर बनेगा।” तब योआब बिन ज़रूयाह ने पहले शहर पर चढ़ाई की। चुनौचे उसे कमांडर मुक़र्रर किया गया।

7 यरूशलम पर फ़तह पाने के बाद दाऊद किले में रहने लगा। उसने उसे 'दाऊद का शहर' करार दिया 8 और उसके इर्दगिर्द शहर को बढ़ाने लगा। दाऊद का यह तामीरी काम इर्दगिर्द के चबूतरों से शुरू हुआ और चारों तरफ फैलता गया जबकि योआब ने शहर का बाकी हिस्सा बहाल कर दिया। 9 यो दाऊद जोर पकड़ता गया, क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज उसके साथ था।

दाऊद के मशहूर फ़ौजी

10 दर्जे-ज़ैल दाऊद के सूरमाओं की फ़हरिस्त है। पूरे इसराईल के साथ उन्होंने मज़बूती से उस की बादशाही की हिमायत करके दाऊद को रब के फ़रमान के मुताबिक अपना बादशाह बना दिया।

11 जो तीन अफ़सर योआब के भाई अबीशै के ऐन बाद आते थे उनमें यस्बियाम हकमूनी पहले नंबर पर आता था। एक बार उसने अपने नेज़े से 300 आदमियों को मार दिया। 12 इन तीन अफ़सरों में से दूसरी जगह पर इलियज़र बिन दोदो बिन अखूही आता था। 13 यह फ़स-दम्मीम में दाऊद के साथ था जब फिलिस्ती वहाँ लड़ने के लिए जमा हो गए थे। मैदान-जंग में जौ का खेत था, और लड़ते लड़ते इसराईली फिलिस्तियों के सामने भागने लगे। 14 लेकिन इलियज़र दाऊद के साथ खेत के बीच में फिलिस्तियों का मुकाबला करता रहा। फिलिस्तियों को मारते मारते उन्होंने खेत का दिफ़ा करके रब की मदद से बड़ी फ़तह पाई।

15-16 एक और जंग के दौरान दाऊद अदुल्लाम के गार के पहाड़ी किले में था जबकि फिलिस्ती फ़ौज ने वादी-ए-रफ़ाईम में अपनी लश्करगाह लगाई थी। उनके दस्तों ने बैत-लहम पर भी कब्ज़ा कर लिया था। दाऊद के तीस आला अफ़सरों में से तीन उससे मिलने आए। 17 दाऊद को शदीद प्यास लगी, और वह कहने लगा, "कौन मेरे लिए बैत-लहम के दरवाज़े पर के हौज़ से कुछ पानी लाएगा?"

18 यह सुनकर तीनों अफ़सर फिलिस्तियों की लश्करगाह पर हमला करके उसमें घुस गए और लड़ते लड़ते बैत-लहम के हौज़ तक पहुँच गए। उससे कुछ पानी भरकर वह उसे दाऊद के पास ले आए। लेकिन उसने पीने से इनकार कर दिया बल्कि उसे कुरबानी के तौर पर उंडेलकर रब को पेश किया 19 और बोला, "अल्लाह न करे कि मैं यह पानी पिऊँ। अगर ऐसा करता तो उन आदमियों का खून पीता जो अपनी जान पर खेलकर पानी लाए हैं।" इसलिए वह उसे पीना नहीं चाहता था। यह इन तीन सूरमाओं के ज़बरदस्त कामों की एक मिसाल है।

20-21 योआब का भाई अबीशै मज़क़रा तीन सूरमाओं पर मुक़र्र था। एक दफ़ा उसने अपने नेज़े से 300 आदमियों को मार डाला। तीनों की निसबत उस की ज़्यादा इज़्ज़त की जाती थी, लेकिन वह ख़ुद इनमें गिना नहीं जाता था।

22 बिनायाह बिन यहोयदा भी ज़बरदस्त फ़ौजी था। वह क़बज़ियेल का रहनेवाला था, और उसने बहुत दफ़ा अपनी मरदानगी दिखाई। योआब के दो बड़े सूरमा उसके हाथों हलाक हुए। एक बार जब बहुत बर्फ़ पड़ गई तो उसने एक हौज़ में उतरकर एक शेरबबर को मार डाला जो उसमें गिर गया था। 23 एक और मौक़े पर उसका वास्ता एक मिसरी से पड़ा जिसका क़द साढ़े सात फुट था। मिसरी के हाथ में ख़ुड़ी के शहतीर जैसा बड़ा नेज़ा था जबकि उसके अपने पास सिर्फ़ लाठी थी। लेकिन बिनायाह ने उस पर हमला करके उसके हाथ से नेज़ा छीन लिया और उसे उसके अपने हथियार से मार डाला। 24 ऐसी बहादुरी दिखाने की बिना पर बिनायाह बिन यहोयदा मज़क़रा तीन आदमियों के बराबर मशहूर हुआ। 25 तीस अफ़सरों के दीगर मर्दों की निसबत उस की ज़्यादा इज़्ज़त की जाती थी, लेकिन वह मज़क़रा तीन आदमियों में गिना नहीं जाता था। दाऊद ने उसे अपने मुहाफ़िज़ों पर मुक़र्र किया।

26 ज़ैल के आदमी बादशाह के सूरमाओं में शामिल थे।

योआब का भाई असाहेल, बैत-लहम का इल्हनान बिन दोदो, 27 सम्मोत हरोरी, खलिस फ़ल्नी, 28 तकुअ का ईरा बिन अक्कीस, अनतोत का अबियज़र, 29 सिब्बकी हसाती, ईली अखूही, 30 महरी नतूफ़ाती, हलिद बिन बाना नतूफ़ाती, 31 बिनयमीनी शहर ज़िबिया का इती बिन रीबी, बिनायाह फ़िरआतोनी 32 नहले-जास का हरी, अबियेल अरबाती, 33 अज़मावत बहर्स्मी, इलियहबा सालबूनी, 34 हशीम जिज़नी के बेटे, यून्तन बिन शजी हरारी, 35 अखियाम बिन सकार हरारी, इलीफल बिन ऊर, 36 हिफ़र मकीराती, अखियाह फ़ल्नी, 37 हसरो करमिली, नारी बिन अज़बी, 38 नातन का भाई योएल, मिबख़ार बिन हाजिरी, 39 सिलक अम्मोनी, योआब बिन ज़रूयाह का सिलाहबरदार नहरी बैरोती, 40 ईरा इतरी, जरीब इतरी, 41 ऊरियाह हिती, ज़बद बिन अखली, 42 अदीना बिन सीज़ा (रुबिन के कबीले का यह सरदार 30 फ़ौजियों पर मुक़र्र था), 43 हनान बिन माका, यूसफ़त मितनी, 44 उज़्ज़ियाह अस्तराती, ख़ताम अरोईरी के बेटे समा और यइयेल, 45 यदियएल बिन सिमरी, उसका भाई यूखा तीसी, 46 इलियेल महावी, इलनाम के बेटे यरीबी और यूसावियाह, यितमा मोआबी, 47 इलियेल, ओबेद और यासियेल मज़ोबाई।

12

साऊल के दौरे-हुकूमत में दाऊद के पैरोकार

1 ज़ैल के आदमी सिकलाज में दाऊद के साथ मिल गए, उस वक़्त जब वह साऊल बिन कीस से छुपा रहता था। यह उन फ़ौजियों में से थे जो जंग में दाऊद के साथ मिलकर लड़ते थे 2 और बेहतरीन तीरअंदाज़ थे, क्योंकि यह न सिर्फ़ दहने बल्कि बाँएँ हाथ से भी महारत से तीर और फ़लाखन का पत्थर चला सकते थे। इन आदमियों में से दर्जे-ज़ैल बिनयमीन के कबीले और साऊल के खानदान से थे।

3 उनका राहनुमा अखियज़र, फिर युआस (दोनों समाआह ज़िबियाती के बेटे थे), यज़ियेल और फ़लत (दोनों अज़मावत के बेटे थे), बराका, याह अनतोती, 4 इसमायाह ज़िबऊनी जो दाऊद के 30 अफ़सरों का एक सूरमा और लीडर था, यरमियाह, यहज़ियेल, यूहनान, यूज़बद जदीराती, 5 इलिऊज़ी, यरीमोत, बालियाह, समरियाह और सफ़तियाह ख़रूपी।

6 क्रोरह के खानदान में से इलकाना, यिस्सियाह, अज़रेल, युअज़र और यसूबियाम दाऊद के साथ थे।

7 इनके अलावा यरोहाम जदूरी के बेटे यूईला और ज़बदियाह भी थे।

8 जद के कबीले से भी कुछ बहादुर और तजरबाकार फ़ौजी साऊल से अलग होकर दाऊद के साथ मिल गए जब वह रेगिस्तान के किले में था। यह मर्द महारत से ढाल और नेज़ा इस्तेमाल कर सकते थे। उनके चेहरे शेरबबर के चेहरों की मानिंद थे, और वह पहाड़ी इलाक़े में ग़ज़ालों की तरह तेज़ चल सकते थे।

9 उनका लीडर अज़र ज़ैल के दस आदमियों पर मुक़र्रर था : अबदियाह, इलियाब, 10 मिस्मन्ना, यरमियाह, 11 अत्ती, इलियेल, 12 यूहनान, इल्ज़बद, 13 यरमियाह और मकबन्नी।

14 जद के यह मर्द सब आला फ़ौजी अफ़सर बन गए। उनमें से सबसे कमज़ोर आदमी सौ आम फ़ौजियों का मुकाबला कर सकता था जबकि सबसे ताक़तवर आदमी हजार का मुकाबला कर सकता था। 15 इन्हीं ने बहार के मौसम में दरियाए-यरदन को पार किया, जब वह किनारों से बाहर आ गया था, और मशरिक और मगरिब की वादियों को बंद कर रखा।

16 बिनयमीन और यहदाह के कबीलों के कुछ मर्द दाऊद के पहाड़ी किले में आए। 17 दाऊद बाहर निकलकर उनसे मिलने गया और पूछा, “क्या आप सलामती से मेरे पास आए हैं? क्या आप मेरी मदद करना चाहते हैं? अगर ऐसा है तो मैं आपका अच्छा साथी रहूँगा। लेकिन अगर आप मुझे दुश्मनों के हवाले करने के लिए आए हैं हालाँकि मुझसे कोई भी जुल्म नहीं हुआ है तो हमारे बापदादा का ख़ुदा इसे देखकर आपको सज़ा दे।”

18 फिर स्हुल-कुद्स 30 अफ़सरों के राहनुमा अमासी पर नाज़िल हुआ, और उसने कहा, “ऐ दाऊद, हम तेरे ही लोग हैं। ऐ यस्सी के बेटे, हम तेरे साथ हैं। सलामती, सलामती तुझे हासिल हो, और सलामती उन्हें हासिल हो जो तेरी मदद करते हैं। क्योंकि तेरा ख़ुदा तेरी मदद करेगा।” यह सुनकर दाऊद ने उन्हें क़बूल करके अपने छापामार दस्तों पर मुक़र्रर किया।

19 मनस्सी के कबीले के कुछ मर्द भी साऊल से अलग होकर दाऊद के पास आए। उस वक़्त वह फिलिस्तिनियों के साथ मिलकर साऊल से लड़ने जा रहा था, लेकिन बाद में उसे मैदाने-जंग में आने की इजाज़त न मिली। क्योंकि फिलिस्ती सरदारों ने आपस में मशवरा करने के बाद उसे यह कहकर वापस भेज दिया कि खतरा है कि यह हमें मैदाने-जंग में छोड़कर अपने पुराने मालिक साऊल से दुबारा मिल जाए। फिर हम तबाह हो जाएंगे।

20 जब दाऊद सिकलाज वापस जा रहा था तो मनस्सी के कबीले के दर्जे-ज़ैल अफ़सर साऊल से अलग होकर उसके साथ हो लिए : अदना, यूज़बद, यदियएल, मीकाएल, यूज़बद, इलीह और ज़िल्लती। मनस्सी में हर एक को हजार हजार फ़ौजियों पर मुक़र्रर किया गया था। 21 उन्होंने लटनेवाले अमालीकी दस्तों को पकड़ने में दाऊद की मदद की, क्योंकि वह सब दिलेर और क़ाबिल फ़ौजी थे। सब उस की फ़ौज में अफ़सर बन गए।

22 रोज़ बरोज़ लोग दाऊद की मदद करने के लिए आते रहे, और होते होते उस की फ़ौज अल्लाह की फ़ौज जैसी बड़ी हो गई।

हबस्न में दाऊद की फ़ौज

23 दर्जे-ज़ैल उन तमाम फ़ौजियों की फ़हरिस्त है जो हबस्न में दाऊद के पास आए ताकि उसे साऊल की जगह बादशाह बनाएँ, जिस तरह रब ने हुक्म दिया था।

24 यहदाह के कबीले के ढाल और नेज़े से लैस 6,800 मर्द थे।

25 शमौन के कबीले के 7,100 तजरबाकार फ़ौजी थे।

26 लावी के कबीले के 4,600 मर्द थे। 27 उनमें हास्न के खानदान का सरपरस्त यहोयदा भी शामिल था जिसके साथ 3,700 आदमी थे। 28 सदोक नामी एक दिलेर और जवान फ़ौजी भी शामिल था। उसके साथ उसके अपने खानदान के 22 अफ़सर थे।

29 साऊल के कबीले बिनयमीन के भी 3,000 मर्द थे, लेकिन इस कबीले के अकसर फ़ौजी अब तक साऊल के खानदान के साथ लिपटे रहे।

30 इफ़राईम के कबीले के 20,800 फ़ौजी थे। सब अपने खानदानों में असरो-रसूख रखनेवाले थे।

31 मनस्सी के आधे कबीले के 18,000 मर्द थे। उन्हें दाऊद को बादशाह बनाने के लिए चुन लिया गया था।

32 इश्कार के कबीले के 200 अफ़सर अपने दस्तों के साथ थे। यह लोग वक़्त की ज़रूरत समझकर जानते थे कि इसराईल को क्या करना है।

33 ज़बूलून के कबीले के 50,000 तजरबाकार फ़ौजी थे। वह हर हथियार से लैस और पूरी वफ़ादारी से दाऊद के लिए लड़ने के लिए तैयार थे।

34 नफ़ताली के कबीले के 1,000 अफ़सर थे। उनके तहत ढाल और नेज़े से मुसल्लह 37,000 आदमी थे।

35 दान के कबीले के 28,600 मर्द थे जो सब लड़ने के लिए मुस्तैद थे।

36 आशर के कबीले के 40,000 मर्द थे जो सब लड़ने के लिए तैयार थे।

37 दरियाए-यरदन के मशरिक में आबाद कबीलों रूबिन, जद और मनस्सी के आधे हिस्से के 1,20,000 मर्द थे। हर एक हर किस्म के हथियार से लैस था।

38 सब तरतीब से हबस्न आए ताकि पूरे अज़म के साथ दाऊद को पूरे इसराईल का बादशाह बनाएँ। बाकी तमाम इसराईली भी मुत्तफिक थे कि दाऊद हमारा बादशाह बन जाए। 39 यह फ़ौजी तीन दिन तक दाऊद के पास रहे जिस दौरान उनके क़बायली भाई उन्हें खाने-पीने की चीज़ें मुहैया करते रहे। 40 करीब के रहनेवालों ने भी इसमें उनकी मदद की। इशकार, जबूलन और नफ़ताली तक के लोग अपने गधों, ऊँटों, खच्चरों और बैलों पर खाने की चीज़ें लाकर वहाँ पहुँचे। मैदा, अंजीर और किशमिश की टिक्कियाँ, मै, तेल, बैल और भेड़-बकरियाँ बड़ी मिक्कदार में हबस्न लाई गई, क्योंकि तमाम इसराईली खुशी मना रहे थे।

13

दाऊद अहद का संदूक यरूशलम में लाना चाहता है

1 दाऊद ने तमाम अफ़सरों से मशवरा किया। उनमें हजार हजार और सौ सौ फ़ौजियों पर मुकर्रर अफ़सर शामिल थे। 2 फिर उसने इसराईल की पूरी जमात से कहा, “अगर आपको मंज़ूर हो और रब हमारे खुदा की मरज़ी हो तो आएँ हम पूरे मुल्क के इसराईली भाइयों को दावत दें कि आकर हमारे साथ जमा हो जाएँ। वह इमाम और लावी भी शरीक हों जो अपने अपने शहरों और चरागाहों में बसते हैं। 3 फिर हम अपने खुदा के अहद का संदूक दुबारा अपने पास वापस लाएँ, क्योंकि साऊल के दौरे-हुकूमत में हम उस की फ़िकर नहीं करते थे।”

4 पूरी जमात मुत्तफिक हुई, क्योंकि यह मनसूबा सबको दुस्त लगा। 5 चुनौचे दाऊद ने पूरे इसराईल को जुनूब में मिसर के सैहर से लेकर शिमाल में लबो-हमात तक बुलाया ताकि सब मिलकर अल्लाह के अहद का संदूक किरियत-यारीम से यरूशलम ले जाएँ। 6 फिर वह उनके साथ यहदाह के बाला यानी किरियत-यारीम गया ताकि रब खुदा का संदूक उठाकर यरूशलम ले जाएँ, वही संदूक जिस पर रब के नाम का ठप्पा लगा है और जहाँ वह संदूक के ऊपर कस्बी फ़रिश्तों के दरमियान तख़्तनशीन है। 7 किरियत-यारीम पहुँचकर लोगों ने अल्लाह के संदूक को अबीनदाब के घर से निकालकर एक नई बैलगाड़ी पर रख दिया, और उज्ज़ा और अखियो उसे यरूशलम की तरफ़ ले जाने लगे। 8 दाऊद और तमाम इसराईली गाड़ी के पीछे चल पड़े। सब अल्लाह के हुज़ूर पूरे जोर से खुशी मनाने लगे। जूनीपर की लकड़ी के मुख्तलिफ़ साज़ भी बजाए जा रहे थे। फ़िज़ा सितारों, सरोदों, दफ़ों, झाँझों और तुरमों की आवाज़ों से गूँज उठी।

9 वह गंदुम गाहने की एक जगह पर पहुँच गए जिसके मालिक का नाम कैदून था। वहाँ बैल अचानक बेकाबू हो गए। उज्ज़ा ने जल्दी से अहद का संदूक पकड़ लिया ताकि वह गिर न जाए। 10 उसी लमहे रब का ग़ज़ब उस पर नाज़िल हुआ, क्योंकि उसने अहद के संदूक को छूने की ज़रत की थी। वहीँ अल्लाह के हुज़ूर उज्ज़ा गिरकर हलाक हुआ। 11 दाऊद को बड़ा रंज हुआ कि रब का ग़ज़ब उज्ज़ा पर यों टूट पड़ा है। उस वक़्त से उस जगह का नाम परज़-उज्ज़ा यानी ‘उज्ज़ा पर टूट पड़ना’ है।

12 उस दिन दाऊद को अल्लाह से ख़ौफ़ आया। उसने सोचा, “मैं किस तरह अल्लाह का संदूक अपने पास पहुँचा सकूँगा?” 13 चुनौचे उसने फैसला किया कि हम अहद का संदूक यरूशलम नहीं ले जाएंगे बल्कि उसे ओबेद-अदोम जाती के घर में महफूज़ रखेंगे। 14 वहाँ वह तीन माह तक पड़ा रहा। इन तीन महीनों के दौरान रब ने ओबेद-अदोम के घराने और उस की पूरी मिलकियत को बरकत दी।

14

दाऊद की तरक्की

1 एक दिन सूर के बादशाह हीराम ने दाऊद के पास वफ़द भेजा। राज और बढई भी साथ थे। उनके पास देवदार की लकड़ी थी ताकि दाऊद के लिए महल बनाएँ। 2 यों दाऊद ने जान लिया कि रब ने मुझे इसराईल का बादशाह बनाकर मेरी बादशाही अपनी कौम इसराईल की खातिर बहुत सरफ़राज़ कर दी है।

3 यरूशलम में जा बसने के बाद दाऊद ने मज़ीद शादियाँ कीं। नतीजे में यरूशलम में उसके कई बेटे-बेटियाँ पैदा हुए। 4 जो बेटे वहाँ पैदा हुए वह यह थे : सम्मुअ, सोबाब, नातन, सुलेमान, 5 इबहार, इलीसुअ, इल्फलत, 6 नौजा, नफ़ज, यफीअ, 7 इलीसमा, बाल-यदा और इलीफलत।

फ़िलिस्तिनों पर फ़तह

8 जब फ़िलिस्तिनों को इतला मिली कि दाऊद को मसह करके इसराईल का बादशाह बनाया गया है तो उन्होंने अपने फ़ौजियों को इसराईल में भेज दिया ताकि उसे पकड़ लें। जब दाऊद को पता चल गया तो वह उनका मुकाबला करने के लिए गया। 9 जब फ़िलिस्ती इसराईल में पहुँचकर वादीए-रफ़ाईम में फैल गए 10 तो दाऊद ने रब से दरियाफ़्त किया, “क्या मैं फ़िलिस्तिनों पर हमला करूँ? क्या तू मुझे उन पर फ़तह बख़्शेगा?” रब ने जवाब दिया, “हाँ, उन पर हमला कर! मैं उन्हें तेरे कब्ज़े में कर दूँगा।” 11 चुनौचे दाऊद अपने फ़ौजियों को लेकर बाल-पराज़ीम गया। वहाँ उसने फ़िलिस्तिनों को शिकस्त दी। बाद में उसने गवाही दी, “जितने जोर से बंद के टूट जाने पर पानी उससे फूट निकलता है उतने जोर से आज अल्लाह मेरे वसीले से दुश्मन की सफ़ों में से फूट निकला है।” चुनौचे उस जगह का नाम बाल-पराज़ीम यानी ‘फूट निकलने का मालिक’ पड़ गया। 12 फ़िलिस्ती अपने देवताओं को छोड़कर भाग गए, और दाऊद ने उन्हें जला देने का हुक्म दिया।

13 एक बार फिर फ़िलिस्ती आकर वादीए-रफ़ाईम में फैल गए। 14 इस दफ़ा जब दाऊद ने अल्लाह से दरियाफ़्त किया तो उसने जवाब दिया, “इस मरतबा उनका सामना मत करना बल्कि उनके पीछे जाकर बका के दरख्तों के सामने उन पर हमला कर। 15 जब उन दरख्तों की चोटियों से कदमों की चाप सुनाई दे तो ख़बरदार! यह इसका इशारा होगा कि अल्लाह खुद तेरे आगे आगे चलकर फ़िलिस्तिनों को मारने के

लिए निकल आया है।” 16 दाऊद ने ऐसा ही किया और नतीजे में फिलिस्तियों को शिकस्त देकर जिबऊन से लेकर जज़र तक उनका ताक्कुब किया।

17 दाऊद की शोहरत तमाम ममालिक में फैल गई। रब ने तमाम क्रौमों के दिलों में दाऊद का खौफ डाल दिया।

15

यरूशलम में अहद के संदूक के लिए तैयारियाँ

1 यरूशलम के उस हिस्से में जिसका नाम ‘दाऊद का शहर’ पड़ गया था दाऊद ने अपने लिए चंद इमारतें बनवाई। उसने अल्लाह के संदूक के लिए भी एक जगह तैयार करके वहाँ खैमा लगा दिया। 2 फिर उसने हुक्म दिया, “सिवाए लावियों के किसी को भी अल्लाह का संदूक उठाने की इजाज़त नहीं। क्योंकि रब ने इन्हीं को रब का संदूक उठाने और हमेशा के लिए उस की खिदमत करने के लिए चुन लिया है।”

3 इसके बाद दाऊद ने तमाम इसराईल को यरूशलम बुलाया ताकि वह मिलकर रब का संदूक उस जगह ले जाएँ जो उसने उसके लिए तैयार कर रखी थी। 4 बादशाह ने हास्न और बाक्री लावियों की औलाद को भी बुलाया। 5 दर्जे-जैल उन लावी सरपरस्तों की फहरिस्त है जो अपने रिश्तेदारों को लेकर आए।

क्रिहात के खानदान से ऊरियेल 120 मर्दों समेत,

6 मिरारी के खानदान से असायाह 220 मर्दों समेत,

7 जैरसोम के खानदान से योएल 130 मर्दों समेत,

8 इलीसफन के खानदान से समायाह 200 मर्दों समेत,

9 हबस्न के खानदान से इलियेल 80 मर्दों समेत,

10 उज्जियेल के खानदान से अम्मीनदाब 112 मर्दों समेत।

11 दाऊद ने दोनों इमामों सदोक और अबियातर को मजकूर छः लावी सरपरस्तों समेत अपने पास बुलाकर 12 उनसे कहा, “आप लावियों के सरबराह हैं। लाज़िम है कि आप अपने कबायली भाइयों के साथ अपने आपको मखसूसो-मुकद्दस करके रब इसराईल के खुदा के संदूक को उस जगह ले जाएँ जो मैंने उसके लिए तैयार कर रखी है। 13 पहली मरतबा जब हमने उसे यहाँ लाने की कोशिश की तो यह आप लावियों के ज़रीए न हुआ, इसलिए रब हमारे खुदा का क्रहर हम पर टूट पड़ा। उस वक़्त हमने उससे दरियाफ़्त नहीं किया था कि उसे उठाकर ले जाने का क्या मुनासिब तरीका है।” 14 तब इमामों और लावियों ने अपने आपको मखसूसो-मुकद्दस करके रब इसराईल के खुदा के संदूक को यरूशलम लाने के लिए तैयार किया। 15 फिर लावी अल्लाह के संदूक को उठाने की लकड़ियों से अपने कंधों पर यों ही रखकर चल पड़े जिस तरह मूसा ने रब के कलाम के मुताबिक़ फ़रमाया था।

16 दाऊद ने लावी सरबराहों को यह हुक्म भी दिया, “अपने कबीले में से ऐसे आदमियों को चुन लें जो साज़, सितार, सरोद और झाँझ बजाते हुए खुशी के गीत गाएँ।” 17 इस ज़िम्मादारी के लिए लावियों ने ज़ैल के आदमियों को मुक़र्रर किया : हैमान बिन योएल, उसका भाई आसफ़ बिन बरकियाह और मिरारी के खानदान का ऐतान बिन कौसायाह। 18 दूसरे मक़ाम पर उनके यह भाई आए : ज़करियाह, याज़ियेल, समीरामोत, यहियेल, उन्नी, इलियाब, बिनायाह, मासियाह, मत्तितियाह, इलीफ़लेह, मिक्नियाह, ओबेद-अदोम और यइयेल। यह दरबान थे। 19 हैमान, आसफ़ और ऐतान गुल्कार थे, और उन्हें पीतल के झाँझ बजाने की ज़िम्मादारी दी गई। 20 ज़करियाह, अज़ियेल, समीरामोत, यहियेल, उन्नी, इलियाब, मासियाह और बिनायाह को अलामूत के तर्ज़ पर सितार बजाना था। 21 मत्तितियाह, इलीफ़लेह, मिक्नियाह, ओबेद-अदोम, यइयेल और अज़ज़ियाह को शमीनीत के तर्ज़ पर सरोद बजाने के लिए चुना गया।

22 कननियाह ने लावियों की कवाइर की राहनुमाई की, क्योंकि वह इसमें माहिर था।

23-24 बरकियाह, इलकाना, ओबेद-अदोम और यहियाह अहद के संदूक के दरबान थे। सबनियाह, यूसफ़त, नतनियेल, अमासी, ज़करियाह, बिनायाह और इलियज़र को तुरम बजाकर अल्लाह के संदूक के आगे आगे चलने की ज़िम्मादारी दी गई। सातों इमाम थे।

दाऊद अहद का संदूक यरूशलम में ले आता है

25 फिर दाऊद, इसराईल के बुजुर्ग और हज़ार हज़ार फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़सर खुशी मनाते हुए निकलकर ओबेद-अदोम के घर गए ताकि रब के अहद का संदूक वहाँ से लेकर यरूशलम पहुँचाएँ। 26 जब ज़ाहिर हुआ कि अल्लाह अहद के संदूक को उठानेवाले लावियों की मदद कर रहा है तो सात जवान साँड़ों और सात मेंढों को कुरबान किया गया। 27 दाऊद बारीक कतान का लिबास पहने हुए था, और इस तरह अहद का संदूक उठानेवाले लावी, गुल्कार और कवाइर का लीडर कननियाह भी। इसके अलावा दाऊद कतान का बालापोश पहने हुए था। 28 तमाम इसराईली खुशी के नारे लगा लगाकर, नरसिंगे और तुरम फूँक फूँककर और झाँझ, सितार और सरोद बजा बजाकर रब के अहद का संदूक यरूशलम लाए।

29 रब का अहद का संदूक दाऊद के शहर में दाखिल हुआ तो दाऊद की बीवी मीकल बित साऊल खिड़की में से जुलूस को देख रही थी। जब बादशाह कूदता और नाचता हुआ नज़र आया तो मीकल ने उसे हकीर जाना।

16

1 अल्लाह का संदूक उस तंबू के दरमियान में रखा गया जो दाऊद ने उसके लिए लगवाया था। फिर उन्होंने अल्लाह के हुजूर भस्म होनेवाली और सलामती की कुरबानियाँ पेश कीं।² इसके बाद दाऊद ने क्रौम को रब के नाम से बरकत देकर³ हर इसराईली मर्द और औरत को एक रोटी, खजूर की एक टिक्की और किशमिश की एक टिक्की दे दी।⁴ उसने कुछ लावियों को रब के संदूक के सामने खिदमत करने की ज़िम्मादारी दी। उन्हें रब इसराईल के खुदा की तमजीद और हम्दो-सना करनी थी।⁵ उनका सरबराह आसफ़ झाँझ बजाता था। उसका नायब ज़करियाह था। फिर यइयेल, समीरामोत, यहियेल, मत्तितियाह, इलियाब, बिनायाह, ओबेद-अदोम और यइयेल थे जो सितार और सरोद बजाते थे।⁶ बिनायाह और यहज़ियेल इमामों की ज़िम्मादारी अल्लाह के अहद के संदूक के सामने तुरम बजाना थी।

शुक्र का गीत

7 उस दिन दाऊद ने पहली दफ़ा आसफ़ और उसके साथी लावियों के हवाले ज़ैल का गीत करके उन्हें रब की सताइश करने की ज़िम्मादारी दी।

8 “रब का शुक्र करो और उसका नाम पुकारो! अक्रवाम में उसके कामों का एलान करो।

9 साज़ बजाकर उस की मद्दहसराई करो। उसके तमाम अजायब के बारे में लोगों को बताओ।

10 उसके मुक़द्दस नाम पर फ़ख़र करो। रब के तालिब दिल से खुश हों।

11 रब और उस की कुदरत की दरियाफ़्त करो, हर वक़्त उसके चेहरे के तालिब रहो।

12 जो मोज़िज़े उसने किए उन्हें याद करो। उसके इलाही निशान और उसके मुँह के फ़ैसले दोहराते रहो।

13 तुम जो उसके खादिम इसराईल की औलाद और याक़ूब के फ़रज़ंद हो, जो उसके बरगुज़ीदा लोग हो, तुम्हें सब कुछ याद रहे!

14 वही रब हमारा खुदा है, वही पूरी दुनिया की अदालत करता है।

15 वह हमेशा अपने अहद का ख़याल रखता है, उस कलाम का जो उसने हज़ार पुश्तों के लिए फ़रमाया था।

16 यह वह अहद है जो उसने इब्राहीम से बाँधा, वह वादा जो उसने क़सम खाकर इसहाक से किया था।

17 उसने उसे याक़ूब के लिए कायम किया ताकि वह उसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारे, उसने तसदीक़ की कि यह मेरा इसराईल से अबदी अहद है।

18 साथ साथ उसने फ़रमाया, ‘मैं तुझे मुल्के-कनान दूँगा। यह तेरी मीरास का हिस्सा होगा।’

19 उस वक़्त वह तादाद में कम और थोड़े ही थे बल्कि मुल्क में अजनबी ही थे।

20 अब तक वह मुख़्तलिफ़ क़ौमों और सलतनतों में घुमते-फिरते थे।

21 लेकिन अल्लाह ने उन पर किसी को ज़ुल्म करने न दिया, और उनकी ख़ातिर उसने बादशाहों को डाँटा,

22 ‘मेरे मसह किए हुए खादिमों को मत छेड़ना, मेरे नबियों को नुक़सान मत पहुँचाना।’

23 ऐ पूरी दुनिया, रब की तमजीद में गीत गा! रोज़ बरोज़ उस की नजात की खुशख़बरी सुना।

24 क़ौमों में उसका जलाल और तमाम उम्मतों में उसके अजायब बयान करो।

25 क्योंकि रब अज़ीम और सताइश के बहुत लायक़ है। वह तमाम माबूदों से महीब है।

26 क्योंकि दीगर क़ौमों के तमाम माबूद बुत ही हैं जबकि रब ने आसमान को बनाया।

27 उसके हुज़ूर शानो-शौक़त, उस की सुकूनतगाह में कुदरत और जलाल है।

28 ऐ क़ौमों के क़बीलो, रब की तमजीद करो, रब के जलाल और कुदरत की सताइश करो।

29 रब के नाम को जलाल दो। कुरबानी लेकर उसके हुज़ूर आओ। मुक़द्दस लिबास से आरास्ता होकर रब को सिजदा करो।

30 पूरी दुनिया उसके सामने लरज़ उठे। यक़ीनन दुनिया मज़बूती से कायम है और नहीं डगमगाएगी।

31 आसमान शादमान हो, और ज़मीन जशन मनाए। क़ौमों में कहा जाए कि रब बादशाह है।

32 समुंदर और जो कुछ उसमें है खुशी से गरज उठे, मैदान और जो कुछ उसमें है बाग़ बाग़ हो।

33 फिर जंगल के दरख़्त रब के सामने शादियाना बजाएंगे, क्योंकि वह आ रहा है, वह ज़मीन की अदालत करने आ रहा है।

34 रब का शुक्र करो, क्योंकि वह भला है, और उस की शफ़क़त अबदी है।

35 उससे इलतमास करो, ‘ऐ हमारी नजात के खुदा, हमें बचा! हमें जमा करके दीगर क़ौमों के हाथ से छुड़ा। तब ही हम तेरे मुक़द्दस नाम की सताइश करेंगे और तेरे क़ाबिले-तारीफ़ कामों पर फ़ख़र करेंगे।’

36 अज़ल से अबद तक रब, इसराईल के खुदा की हम्द हो!”

तब पूरी कौम ने “आमीन” और “रब की हम्द हो” कहा।

लावियों की ज़िम्मादारियाँ

37 दाऊद ने आसफ और उसके साथी लावियों को रब के अहद के संदूक के सामने छोड़कर कहा, “आइंदा यहाँ बाकायदगी से रोज़ाना की ज़रूरी खिदमत करते जाँ।”

38 इस गुरोह में ओबेद-अदोम और मज़ीद 68 लावी शामिल थे। ओबेद-अदोम बिन यदूतून और हसा दरबान बन गए।

39 लेकिन सदोक इमाम और उसके साथी इमामों को दाऊद ने रब की उस सुकूनतगाह के पास छोड़ दिया जो ज़िबऊन की पहाड़ी पर थी।
40 क्योंकि लाज़िम था कि वह वहाँ हर सुबह और शाम को भस्म होनेवाली कुरबानियाँ पेश करें और बाक़ी तमाम हिदायात पर अमल करें जो रब की तरफ से इसराईल के लिए शरीअत में बयान की गई हैं। 41 दाऊद ने हैमान, यदूतून और मज़ीद कुछ चींदा लावियों को भी ज़िबऊन में उनके पास छोड़ दिया। वहाँ उनकी खास ज़िम्मादारी रब की हम्दो-सना करना थी, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है। 42 उनके पास तुरम, झाँझ और बाक़ी ऐसे साज़ थे जो अल्लाह की तारीफ़ में गाए जानेवाले गीतों के साथ बजाए जाते थे। यदूतून के बेटों को दरबान बनाया गया।

43 जशन के बाद सब लोग अपने अपने घर चले गए। दाऊद भी अपने घर लौटा ताकि अपने ख़ानदान को बरकत देकर सलाम करे।

17

रब दाऊद के लिए अबदी बादशाही का वादा करता है

1 दाऊद बादशाह सलामती से अपने महल में रहने लगा। एक दिन उसने नातन नबी से बात की, “देखें, मैं यहाँ देवदार के महल में रहता हूँ जबकि रब के अहद का संदूक अब तक तंबू में पड़ा है। यह मुनासिब नहीं!” 2 नातन ने बादशाह की हौसलाअफ़जाई की, “जो कुछ भी आप करना चाहते हैं वह करें। अल्लाह आपके साथ है।”

3 लेकिन उसी रात अल्लाह नातन से हमकलाम हुआ, 4 “मेरे खादिम दाऊद के पास जाकर उसे बता दे कि रब फ़रमाता है, ‘तू मेरी रिहाइश के लिए मकान तामीर नहीं करेगा। 5 आज तक मैं किसी मकान में नहीं रहा। जब से मैं इसराईलियों को मिसर से निकाल लाया उस वक़्त से मैं ख़ैमे में रहकर जगह बजगह फिरता रहा हूँ। 6 जिस दौरान मैं तमाम इसराईलियों के साथ इधर उधर फिरता रहा क्या मैंने इसराईल के उन राहनुमाओं से कभी इस नाते से शिकायत की जिन्हें मैंने अपनी कौम की गल्लाबानी करने का हुक्म दिया था? क्या मैंने उनमें से किसी से कहा कि तुमने मेरे लिए देवदार का घर क्यों नहीं बनाया?’

7 चुनाँचे मेरे खादिम दाऊद को बता दे, ‘रब्बूल-अफ़वाज़ फ़रमाता है कि मैं ही ने तुझे चरागाह में भेड़ों की गल्लाबानी करने से फ़ारिग करके अपनी कौम इसराईल का बादशाह बना दिया है। 8 जहाँ भी तूने क़दम रखा वहाँ मैं तेरे साथ रहा हूँ। तेरे देखते देखते मैंने तेरे तमाम दुश्मनों को हलाक कर दिया है। अब मैं तेरा नाम सरफ़राज़ कर दूँगा, वह दुनिया के सबसे अज़ीम आदमियों के नामों के बराबर ही होगा। 9 और मैं अपनी कौम इसराईल के लिए एक वतन मुहैया करूँगा, पौदे की तरह उन्हें यों लगा दूँगा कि वह जड़ पकड़कर महफूज़ रहेंगे और कभी बेचैन नहीं होंगे। बेदीन कौमों उन्हें उस तरह नहीं दबाएँगी जिस तरह माज़ी में किया करती थीं, 10 उस वक़्त से जब मैं कौम पर काज़ी मुक़र्रर करता था। मैं तेरे दुश्मनों को ख़ाक में मिला दूँगा। आज मैं फ़रमाता हूँ कि रब ही तेरे लिए घर बनाएगा। 11 जब तू बूढ़ा होकर कूच कर जाएगा और अपने बापदादा से जा मिलेगा तो मैं तेरी जगह तेरे बेटों में से एक को तख़्त पर बिठा दूँगा। उस की बादशाही को मैं मज़बूत बना दूँगा। 12 वही मेरे लिए घर तामीर करेगा, और मैं उसका तख़्त अबद तक कायम रखूँगा। 13 मैं उसका बाप हूँगा और वह मेरा बेटा होगा। मेरी नज़रे-करम साऊल पर न रही, लेकिन मैं उसे तेरे बेटे से कभी नहीं हटाऊँगा। 14 मैं उसे अपने घराने और अपनी बादशाही पर हमेशा कायम रखूँगा, उसका तख़्त हमेशा मज़बूत रहेगा।’”

दाऊद की शक्रगुज़ारी

15 नातन ने दाऊद के पास जाकर उसे सब कुछ सुनाया जो रब ने उसे रोया में बताया था। 16 तब दाऊद अहद के संदूक के पास गया और रब के हुज़ूर बैठकर दुआ करने लगा,

“ऐ रब ख़ुदा, मैं कौन हूँ और मेरा ख़ानदान क्या हैसियत रखता है कि तूने मुझे यहाँ तक पहुँचाया है? 17 और अब ऐ अल्लाह, तू मुझे और भी ज़्यादा अता करने को है, क्योंकि तूने अपने खादिम के घराने के मुस्तक़बिल के बारे में भी वादा किया है। ऐ रब ख़ुदा, तूने यों मुझ पर निगाह डाली है गोया कि मैं कोई बहुत अहम बंदा हूँ। 18-19 लेकिन मैं मज़ीद क्या कहूँ जब तूने यों अपने खादिम की इज़ज़त की है? ऐ रब, तू तो अपने खादिम को जानता है। तूने अपने खादिम की खातिर और अपनी मरज़ी के मुताबिक़ यह अज़ीम काम करके इन अज़ीम वादों की इतला दी है।

20 ऐ रब, तुझ जैसा कोई नहीं है। हमने अपने कानों से सुन लिया है कि तेरे सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है। 21 दुनिया में कौन-सी कौम तेरी उम्मत इसराईल की मानिंद है? तूने इसी एक कौम का फ़िघा देकर उसे गुलामी से छुड़ाया और अपनी कौम बना लिया। तूने इसराईल के वास्ते बड़े और हैबतनाक काम करके अपने नाम की शोहरत फैला दी। हमें मिसर से रिहा करके तूने कौमों को हमारे आगे से निकाल दिया। 22 ऐ रब, तू इसराईल को हमेशा के लिए अपनी कौम बनाकर उनका ख़ुदा बन गया है।

23 चुनौचे ऐ रब, जो बात तूने अपने खादिम और उसके घराने के बारे में की है उसे अबद तक कायम रख और अपना वादा पूरा कर। 24 तब वह मज़बूत रहेगा और तेरा नाम अबद तक मशहूर रहेगा। फिर लोग तसलीम करेंगे कि इसराईल का खुदा रब्बुल-अफ़वाज वाकई इसराईल का खुदा है, और तेरे खादिम दाऊद का घराना भी अबद तक तेरे हुज़ूर कायम रहेगा। 25 ऐ मेरे खुदा, तूने अपने खादिम के कान को इस बात के लिए खोल दिया है। तू ही ने फ़रमाया, “मैं तेरे लिए घर तामीर करूँगा।” सिर्फ़ इसी लिए तेरे खादिम ने यों तुझसे दुआ करने की ज़रूरत की है। 26 ऐ रब, तू ही खुदा है। तूने अपने खादिम से इन अच्छी चीज़ों का वादा किया है। 27 अब तू अपने खादिम के घराने को बरकत देने पर राज़ी हो गया है ताकि वह हमेशा तक तेरे सामने कायम रहे। क्योंकि तू ही ने उसे बरकत दी है, इसलिए वह अबद तक मुबारक रहेगा।”

18

दाऊद की जंगें

1 फिर ऐसा वक़्त आया कि दाऊद ने फिलिस्तिनियों को शिकस्त देकर उन्हें अपने ताबे कर लिया और जात शहर पर गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत क़ब्ज़ा कर लिया।

2 उसने मोआबियों पर भी फ़तह पाई, और वह उसके ताबे होकर उसे ख़राज देने लगे।

3 दाऊद ने शिमाली शाम के शहर जोबाह के बादशाह हददअज़र को भी हमात के करीब हरा दिया जब हददअज़र दरियाए-फ़ुरात पर काबू पाने के लिए निकल आया था। 4 दाऊद ने 1,000 रथों, 7,000 घुड़सवारों और 20,000 प्यादा सिपाहियों को गिरफ़्तार कर लिया। रथों के 100 घोड़ों को उसने अपने लिए महफूज़ रखा जबकि बाकियों की उसने कोंचें काट दीं ताकि वह आइंदा जंग के लिए इस्तेमाल न हो सकें।

5 जब दमिश्क के अरामी बाशिंदे जोबाह के बादशाह हददअज़र की मदद करने आए तो दाऊद ने उनके 22,000 अफ़राद हलाक कर दिए। 6 फिर उसने दमिश्क के इलाके में अपनी फ़ौज़ी चौकियाँ कायम कीं। अरामी उसके ताबे हो गए और उसे ख़राज देते रहे। जहाँ भी दाऊद गया वहाँ रब ने उसे कामयाबी बख़्शी। 7 सोने की जो ढालें हददअज़र के अफ़सरों के पास थीं उन्हें दाऊद यरूशलम ले गया। 8 हददअज़र के दो शहरों कून और तिबख़त से उसने कसरत का पीतल छीन लिया। बाद में सुलेमान ने यह पीतल रब के घर में ‘समुंदर’ नामी पीतल का हौज़, सतून और पीतल का मुख़्तलिफ़ सामान बनाने के लिए इस्तेमाल किया।

9 जब हमात के बादशाह तूई को इतला मिली कि दाऊद ने जोबाह के बादशाह हददअज़र की पूरी फ़ौज़ पर फ़तह पाई है 10 तो उसने अपने बेटे हदूराम को दाऊद के पास भेजा ताकि उसे सलाम कहे। हदूराम ने दाऊद को हददअज़र पर फ़तह के लिए मुबारकबाद दी, क्योंकि हददअज़र तूई का दुश्मन था, और उनके दरमियान जंग रही थी। हदूराम ने दाऊद को सोने, चाँदी और पीतल के बहुत-से तोहफे भी पेश किए। 11 दाऊद ने यह चीज़ें रब के लिए मख़सूस कर दीं। जहाँ भी वह दूसरी क्रौमों पर ग़ालिब आया वहाँ की सोना-चाँदी उसने रब के लिए मख़सूस कर दी। यों अदोम, मोआब, अम्मोन, फिलिस्तिन और अमालीक की सोना-चाँदी रब को पेश की गई।

12 अबीशै बिन ज़रूयाह ने नमक की वादी में अदोमियों पर फ़तह पाकर 18,000 अफ़राद हलाक कर दिए। 13 उसने अदोम के पूरे मुल्क में अपनी फ़ौज़ी चौकियाँ कायम कीं, और तमाम अदोमी दाऊद के ताबे हो गए। दाऊद जहाँ भी जाता रब उस की मदद करके उसे फ़तह बख़्शता।

दाऊद के आला अफ़सर

14 जितनी देर दाऊद पूरे इसराईल पर हुकूमत करता रहा उतनी देर तक उसने ध्यान दिया कि क्रौम के हर एक शख्स को इनसाफ़ मिल जाए। 15 योआब बिन ज़रूयाह फ़ौज़ पर मुक़र्रर था। यह्सफ़त बिन अखीलूद बादशाह का मुशरि-ख़ास था। 16 सदोक बिन अखीलूब और अबीमलिक बिन अबियातर इमाम थे। शौशा मीरमुंशी था। 17 बिनायाह बिन यहोयदा दाऊद के ख़ास दस्ते बनाम करेती और फ़लेती का कप्तान मुक़र्रर था। दाऊद के बेटे आला अफ़सर थे।

19

अम्मोनी दाऊद की बेइज़्ज़ती करते हैं

1 कुछ देर के बाद अम्मोनियों का बादशाह नाहस फ़ौत हुआ, और उसका बेटा तख़्तनशीन हुआ। 2 दाऊद ने सोचा, “नाहस ने हमेशा मुझ पर मेहरबानी की थी, इसलिए अब मैं भी उसके बेटे हनून पर मेहरबानी करूँगा।” उसने बाप की वफ़ात का अफ़सोस करने के लिए हनून के पास वफ़द भेजा।

लेकिन जब दाऊद के सफ़ीर अम्मोनियों के दरबार में पहुँच गए ताकि हनून के सामने अफ़सोस का इज़हार करें 3 तो उस मुल्क के बुजुर्ग हनून बादशाह के कान में मनफ़ी बातें भरने लगे, “क्या दाऊद ने इन आदमियों को वाकई सिर्फ़ इसलिए भेजा है कि वह अफ़सोस करके आपके बाप का एहतराम करें? हरगिज़ नहीं! यह सिर्फ़ बहाना है। असल में यह जासूस हैं जो हमारे मुल्क के बारे में मालूमात हासिल करना चाहते हैं ताकि उस पर क़ब्ज़ा कर सकें।” 4 चुनौचे हनून ने दाऊद के आदमियों को पकड़वाकर उनकी दाढियाँ मुँडवा दीं और उनके लिबास को कमर से लेकर पाँव तक काटकर उतरवाया। इसी हालत में बादशाह ने उन्हें फ़ारिग कर दिया।

5 जब दाऊद को इसकी खबर मिली तो उसने अपने कासिदों को उनसे मिलने के लिए भेजा ताकि उन्हें बताएँ, “यरीह में उस वक्त तक ठहरे रहें जब तक आपकी दाढ़ियाँ दुबारा बहाल न हो जाएँ।” क्योंकि वह अपनी दाढ़ियों की वजह से बड़ी शर्मिंदगी महसूस कर रहे थे।

अम्मोनियों से जंग

6 अम्मोनियों को खूब मालूम था कि इस हरकत से हम दाऊद के दुश्मन बन गए हैं। इसलिए हनून और अम्मोनियों ने मसोपुतामिया, अराम-माका और जोबाह को चाँदी के 34,000 किलोग्राम भेजकर किराए पर रथ और रथसवार मँगवाए। 7 यों उन्हें 32,000 रथ उनके सवारों समेत मिल गए। माका का बादशाह भी अपने दस्तों के साथ उनसे मुतहिद हुआ। मीदबा के करीब उन्होंने अपनी लश्करगाह लगाई। अम्मोनी भी अपने शहरों से निकलकर जंग के लिए जमा हुए। 8 जब दाऊद को इसका इल्म हुआ तो उसने योआब को पूरी फौज के साथ उनका मुकाबला करने के लिए भेज दिया। 9 अम्मोनी अपने दास्त-हकूमत रब्बा से निकलकर शहर के दरवाजे के सामने ही सफ़आरा हुए जबकि दूसरे ममालिक से आए हुए बादशाह कुछ फासले पर खुले मैदान में खड़े हो गए।

10 जब योआब ने जान लिया कि सामने और पीछे दोनों तरफ़ से हमले का खतरा है तो उसने अपनी फौज को दो हिस्सों में तकसीम कर दिया। सबसे अच्छे फ़ौजियों के साथ वह खुद शाम के सिपाहियों से लड़ने के लिए तैयार हुआ। 11 बाकी आदमियों को उसने अपने भाई अबीशै के हवाले कर दिया ताकि वह अम्मोनियों से लड़ें। 12 एक दूसरे से अलग होने से पहले योआब ने अबीशै से कहा, “अगर शाम के फ़ौजी मुझ पर गालिब आने लगें तो मेरे पास आकर मेरी मदद करना। लेकिन अगर आप अम्मोनियों पर काबू न पा सकें तो मैं आकर आपकी मदद करूँगा। 13 हौसला रखें! हम दिलेरी से अपनी कौम और अपने खुदा के शहरों के लिए लड़ें। और अब वह कुछ होने दे जो उस की नज़र में ठीक है।”

14 योआब ने अपनी फौज के साथ शाम के फ़ौजियों पर हमला किया तो वह उसके सामने से भागने लगे। 15 यह देखकर अम्मोनी भी उसके भाई अबीशै से फ़रार होकर शहर में दाखिल हुए। तब योआब यरूशलम वापस चला गया।

शाम के खिलाफ़ जंग

16 जब शाम के फ़ौजियों को शिकस्त की बेइज़्जती का एहसास हुआ तो उन्होंने दरियाए-फुरात के पार मसोपुतामिया में आबाद अरामियों के पास कासिद भेजे ताकि वह भी लड़ने में मदद करें। हददअज़र का कमाँडर सोफ़क उन पर मुकर्रर हुआ। 17 जब दाऊद को खबर मिली तो उसने इसराईल के तमाम लड़ने के काबिल आदमियों को जमा किया और दरियाए-यरदन को पार करके उनके मुकाबिल सफ़आरा हुआ। जब वह यों उनसे लड़ने के लिए तैयार हुआ तो अरामी उसका मुकाबला करने लगे। 18 लेकिन उन्हें दुबारा शिकस्त मानकर फ़रार होना पड़ा। इस दफ़ा उनके 7,000 रथबानों के अलावा 40,000 प्यादा सिपाही हलाक हुए। दाऊद ने फ़ौज के कमाँडर सोफ़क को भी मार डाला।

19 जो अरामी पहले हददअज़र के ताबे थे उन्होंने अब हार मानकर इसराईलियों से सुलह कर ली और उनके ताबे हो गए। उस वक्त से अरामियों ने अम्मोनियों की मदद करने की फिर ज़रत न की।

20

रब्बा शहर पर फ़तह

1 बहार का मौसम आ गया, वह वक्त जब बादशाह जंग के लिए निकलते हैं। तब योआब ने फ़ौज लेकर अम्मोनियों का मुल्क तबाह कर दिया। लड़ते लड़ते वह रब्बा तक पहुँच गया और उसका मुहासरा करने लगा। लेकिन दाऊद खुद यरूशलम में रहा। फिर योआब ने रब्बा को भी शिकस्त देकर खाक में मिला दिया। 2 दाऊद ने हनून बादशाह का ताज उसके सर से उतारकर अपने सर पर रख लिया। सोने के इस ताज का वज़न 34 किलोग्राम था, और उसमें एक बेशक्रीमत जौहर जड़ा हुआ था। दाऊद ने शहर से बहुत-सा लूटा हुआ माल लेकर 3 उसके बाशिंदों को गुलाम बना लिया। उन्हें पत्थर काटने की आरियाँ, लोहे की कुदालें और कुल्हाड़ियाँ दी गई ताकि वह मज़दूरी करें। यही सुलूक बाकी अम्मोनी शहरों के बाशिंदों के साथ भी किया गया। जंग के इख़िताम पर दाऊद पूरी फ़ौज के साथ यरूशलम लौट आया।

फ़िलिस्तिनों से जंग

4 इसके बाद इसराईलियों को जज़र के करीब फ़िलिस्तिनों से लड़ना पड़ा। वहाँ सिब्बकी हसाती ने देवकामत मर्द रफ़ा की औलाद में से एक आदमी को मार डाला जिसका नाम सफ़फी था। यों फ़िलिस्तिनों को ताबे कर लिया गया। 5 उनसे एक और लड़ाई के दौरान इल्हनान बिन याईर ने जाती जालूत के भाई लहमी को मौत के घाट उतार दिया। उसका नेज़ा खड़ी के शहतीर जैसा बड़ा था। 6 एक और दफ़ा जात के पास लड़ाई हुई। फ़िलिस्तिनों का एक फ़ौजी जो रफ़ा की नसल का था बहुत लंबा था। उसके हाथों और पैरों की छः छः उँगलियाँ यानी मिलकर 24 उँगलियाँ थीं। 7 जब वह इसराईलियों का मज़ाक उड़ाने लगा तो दाऊद के भाई सिमआ के बेटे यूनतन ने उसे मार डाला। 8 जात के यह देवकामत मर्द रफ़ा की औलाद थे, और वह दाऊद और उसके फ़ौजियों के हाथों हलाक हुए।

21

दाऊद की मर्दुमशुमारी

1 एक दिन इबलीस इसराईल के खिलाफ उठ खड़ा हुआ और दाऊद को इसराईल की मर्दमशुमारी करने पर उकसाया। 2 दाऊद ने योआब और क्रौम के बुजुर्गों को हुक्म दिया, “दान से लेकर बैर-सबा तक इसराईल के तमाम कबीलों में से गुजरते हुए जंग करने के काबिल मर्दों को गिन लें। फिर वापस आकर मुझे इतला दें ताकि मालूम हो जाए कि उनकी कुल तादाद क्या है।”

3 लेकिन योआब ने एतराज़ किया, “ऐ बादशाह मेरे आका, काश रब अपने फौजियों की तादाद सौ गुना बढ़ा दे। क्योंकि यह तो सब आपके खादिम हैं। लेकिन मेरे आका उनकी मर्दमशुमारी क्यों करना चाहते हैं? इसराईल आपके सबब से क्यों कुसूरवार ठहरे?”

4 लेकिन बादशाह योआब के एतराज़ात के बावजूद अपनी बात पर डटा रहा। चुनौचे योआब दरबार से रवाना हुआ और पूरे इसराईल में से गुजरकर उस की मर्दमशुमारी की। इसके बाद वह यरूशलम वापस आ गया। 5 वहाँ उसने दाऊद को मर्दमशुमारी की पूरी रिपोर्ट पेश की। इसराईल में 11,00,000 तलवार चलाने के काबिल अफ़राद थे जबकि यहदाह के 4,70,000 मर्द थे। 6 हालाँकि योआब ने लावी और बिनयमीन के कबीलों को मर्दमशुमारी में शामिल नहीं किया था, क्योंकि उसे यह काम करने से घिन आती थी।

7 अल्लाह को दाऊद की यह हरकत बुरी लगी, इसलिए उसने इसराईल को सज़ा दी। 8 तब दाऊद ने अल्लाह से दुआ की, “मुझसे संगीन गुनाह सरज़द हुआ है। अब अपने खादिम का कुसूर मुआफ़ कर। मुझसे बड़ी हमाक़त हुई है।” 9 तब रब दाऊद के ग़ैबबीन जाद नबी से हमकलाम हुआ, 10 “दाऊद के पास जाकर उसे बता देना, ‘रब तुझे तीन सज़ाएँ पेश करता है। इनमें से एक चुन ले’।”

11 जाद दाऊद के पास गया और उसे रब का पैग़ाम सुना दिया। उसने सवाल किया, “आप किस सज़ा को तरज़ीह देते हैं? 12 सात साल के दौरान काल? या यह कि आपके दुश्मन तीन माह तक आपको तलवार से मार मारकर आपका ताक़्क़ुब करते रहें? या यह कि रब की तलवार इसराईल में से गुज़रे? इस सूरत में रब का फ़रिश्ता मुल्क में वबा फैलाकर पूरे इसराईल का सत्यानास कर देगा।”

13 दाऊद ने जवाब दिया, “हाय मैं क्या कहूँ? मैं बहुत परेशान हूँ। लेकिन आदमियों के हाथों में पड़ जाने की निसबत बेहतर है कि हम रब ही के हाथों में पड़ जाएँ, क्योंकि उसका रहम निहायत अज़ीम है।”

14 तब रब ने इसराईल में वबा फैलाने दी। मुल्क में 70,000 अफ़राद हलाक हुए। 15 अल्लाह ने अपने फ़रिश्ते को यरूशलम को तबाह करने के लिए भी भेजा। लेकिन फ़रिश्ता अभी इसके लिए तैयार हो रहा था कि रब ने लोगों की मुसीबत को देखकर तरस खाया और तबाह करनेवाले फ़रिश्ते को हुक्म दिया, “बस कर! अब बाज़ आ।” उस वक़्त रब का फ़रिश्ता वहाँ खड़ा था जहाँ उरनान यानी अरौनाह यबूसी अपना अनाज गाहता था। 16 दाऊद ने अपनी निगाह उठाकर रब के फ़रिश्ते को आसमानो-ज़मीन के दरमियान खड़े देखा। अपनी तलवार मियान से खींचकर उसने उसे यरूशलम की तरफ़ बढ़ाया था कि दाऊद बुजुर्गों समेत मुँह के बल गिर गया। सब टाट का लिबास ओढ़े हुए थे। 17 दाऊद ने अल्लाह से इलतमास की, “मैं ही ने हुक्म दिया कि लड़ने के काबिल मर्दों को गिना जाए। मैं ही ने गुनाह किया है, यह मेरा ही कुसूर है। इन भेड़ों से क्या गलती हुई है? ऐ रब मेरे खुदा, बराहे-करम इनको छोड़कर मुझे और मेरे खानदान को सज़ा दे। अपनी क्रौम से वबा दूर कर!”

18 फिर रब के फ़रिश्ते ने जाद की मारिफ़त दाऊद को पैग़ाम भेजा, “अरौनाह यबूसी की गाहने की जगह के पास जाकर उस पर रब की कुरबानगाह बना ले।”

19 चुनौचे दाऊद चढ़कर गाहने की जगह के पास आया जिस तरह रब ने जाद की मारिफ़त फ़रमाया था। 20 उस वक़्त अरौनाह अपने चार बेटों के साथ गंदुम गाह रहा था। जब उसने पीछे देखा तो फ़रिश्ता नज़र आया। अरौनाह के बेटे भागकर छुप गए। 21 इतने में दाऊद आ पहुँचा। उसे देखते ही अरौनाह गाहने की जगह को छोड़कर उससे मिलने गया और उसके सामने औंधे मुँह झुक गया। 22 दाऊद ने उससे कहा, “मुझे अपनी गाहने की जगह दे दें ताकि मैं यहाँ रब के लिए कुरबानगाह तामीर करूँ। क्योंकि यह करने से वबा स्क जाएगी। मुझे इसकी पूरी क़ीमत बताएँ।”

23 अरौनाह ने दाऊद से कहा, “मेरे आका और बादशाह, इसे लेकर वह कुछ करें जो आपको अच्छा लगे। देखें, मैं आपको अपने बैलों को भस्म होनेवाली कुरबानियों के लिए दे देता हूँ। अनाज को गाहने का सामान कुरबानगाह पर रखकर जला दें। मेरा अनाज गल्ला की नज़र के लिए हाज़िर है। मैं खुशी से आपको यह सब कुछ दे देता हूँ।” 24 लेकिन दाऊद बादशाह ने इनकार किया, “नहीं, मैं ज़रूर हर चीज़ की पूरी क़ीमत अदा करूँगा। जो आपकी है उसे मैं लेकर रब को पेश नहीं करूँगा, न मैं ऐसी कोई भस्म होनेवाली कुरबानी चढ़ाऊँगा जो मुझे मुफ़्त में मिल जाए।”

25 चुनौचे दाऊद ने अरौनाह को उस जगह के लिए सोने के 600 सिक्के दे दिए। 26 उसने वहाँ रब की ताज़ीम में कुरबानगाह तामीर करके उस पर भस्म होनेवाली और सलामती की कुरबानियाँ चढ़ाई। जब उसने रब से इलतमास की तो रब ने उस की सुनी और जवाब में आसमान से भस्म होनेवाली कुरबानी पर आग भेज दी। 27 फिर रब ने मौत के फ़रिश्ते को हुक्म दिया, और उसने अपनी तलवार को दुबारा मियान में डाल दिया।

28 यों दाऊद ने जान लिया कि रब ने अरौनाह यबूसी की गहने की जगह पर मेरी सुनी जब मैंने यहाँ कुरबानियाँ चढ़ाई। 29 उस वक़्त रब का वह मुक़द्दस ख़ैमा जो मूसा ने रेगिस्तान में बनवाया था ज़िबऊन की पहाड़ी पर था। कुरबानियों को जलाने की कुरबानगाह भी वही थी। 30 लेकिन अब दाऊद में वहाँ जाकर रब के हुज़ूर उस की मरज़ी दरियाफ़्त करने की ज़रूरत न रही, क्योंकि रब के फ़रिश्ते की तलवार को देखकर उस पर इतनी शदीद दहशत तारी हुई कि वह जा ही नहीं सकता था।

22

1 इसलिए दाऊद ने फैसला किया, “रब हमारे खुदा का घर गाहने की इस जगह पर होगा, और यहाँ वह कुरबानगाह भी होगी जिस पर इसराईल के लिए भस्म होनेवाली कुरबानी जलाई जाती है।”

दाऊद रब का घर बनाने की तैयारियाँ करता है

2 चुनौचे उसने इसराईल में रहनेवाले परदेसियों को बुलाकर उन्हें अल्लाह के घर के लिए दरकार तराशे हुए पत्थर तैयार करने की जिम्मादारी दी। 3 इसके अलावा दाऊद ने दरवाजों के किवाड़ों की कीलों और कड़ों के लिए लोहे के बड़े ढेर लगाए। साथ साथ इतना पीतल इकट्ठा किया गया कि आखिरकार उसे तोला न जा सका। 4 इसी तरह देवदार की बहुत ज़्यादा लकड़ी यरूशलम लाई गई। सैदा और सूर के बाशिंदों ने उसे दाऊद तक पहुँचाया। 5 यह सामान जमा करने के पीछे दाऊद का यह खयाल था, “मेरा बेटा सुलेमान जवान है, और उसका अभी इतना तज़रबा नहीं है, हालाँकि जो घर रब के लिए बनवाना है उसे इतना बड़ा और शानदार होने की ज़रूरत है कि तमाम दुनिया हक्का-बक्का रहकर उस की तारीफ़ करे। इसलिए मैं खुद जहाँ तक हो सके उसे बनवाने की तैयारियाँ करूँगा।” यही वजह थी कि दाऊद ने अपनी मौत से पहले इतना सामान जमा कराया।

दाऊद सुलेमान को रब का घर बनवाने की जिम्मादारी देता है

6 फिर दाऊद ने अपने बेटे सुलेमान को बुलाकर उसे रब इसराईल के खुदा के लिए सुकूनतगाह बनवाने की जिम्मादारी देकर 7 कहा, “मेरे बेटे, मैं खुद रब अपने खुदा के नाम के लिए घर बनाना चाहता था। 8 लेकिन मुझे इजाज़त नहीं मिली, क्योंकि रब मुझसे हमकलाम हुआ, ‘तूने शदीद क्रिस्म की जंगें लड़कर बेशुमार लोगों को मार दिया है। नहीं, तू मेरे नाम के लिए घर तामीर नहीं करेगा, क्योंकि मेरे देखते देखते तू बहुत खूबरेजी का सबब बना है।’ 9 लेकिन तेरे एक बेटा पैदा होगा जो अमनपसंद होगा। उसे मैं अमनो-अमान मुहैया करूँगा, उसे चारों तरफ़ के दुश्मनों से लड़ना नहीं पड़ेगा। उसका नाम सुलेमान होगा, और उस की हुकूमत के दौरान मैं इसराईल को अमनो-अमान अता करूँगा। 10 वहीं मेरे नाम के लिए घर बनाएगा। वह मेरा बेटा होगा और मैं उसका बाप हूँगा। और मैं इसराईल पर उस की बादशाही का तरख हमेशा तक कायम रखूँगा।”

11 दाऊद ने बात जारी रखकर कहा, “मेरे बेटे, रब आपके साथ हो ताकि आपको कामयाबी हासिल हो और आप रब अपने खुदा का घर उसके वादे के मुताबिक तामीर कर सकें। 12 आपको इसराईल पर मुक़र्रर करते वक़्त रब आपको हिकमत और समझ अता करे ताकि आप रब अपने खुदा की शरीअत पर अमल कर सकें। 13 अगर आप एहतियात से उन हिदायात और अहकाम पर अमल करें जो रब ने मूसा की मारिफ़त इसराईल को दे दिए तो आपको ज़रूर कामयाबी हासिल होगी। मज़बूत और दिलेर हों। डरें मत और हिम्मत न हारें। 14 देखें, मैंने बड़ी जिद्दो-जहद के साथ रब के घर के लिए सोने के 34,00,000 किलोग्राम और चाँदी के 3,40,00,000 किलोग्राम तैयार कर रखे हैं। इसके अलावा मैंने इतना पीतल और लोहा इकट्ठा किया कि उसे तोला नहीं जा सकता, नीज़ लकड़ी और पत्थर का ढेर लगाया, अगरचे आप और भी जमा करेंगे। 15 आपकी मदद करनेवाले कारीगर बहुत हैं। उनमें पत्थर को तराशनेवाले, राज़, बढई और ऐसे कारीगर शामिल हैं जो महारत से हर क्रिस्म की चीज़ बना सकते हैं, 16 खाह वह सोने, चाँदी, पीतल या लोहे की क्यों न हो। बेशुमार ऐसे लोग तैयार खड़े हैं। अब काम शुरू करें, और रब आपके साथ हो!”

17 फिर दाऊद ने इसराईल के तमाम राहनुमाओं को अपने बेटे सुलेमान की मदद करने का हुक्म दिया। 18 उसने उनसे कहा, “रब आपका खुदा आपके साथ है। उसने आपको पड़ोसी कौमों से महफूज़ रखकर अमनो-अमान अता किया है। मुल्क के बाशिंदों को उसने मेरे हवाले कर दिया, और अब यह मुल्क रब और उस की कौम के ताबे हो गया है। 19 अब दिलो-जान से रब अपने खुदा के तालिब रहें। रब अपने खुदा के मक़दिस की तामीर शुरू करें ताकि आप जल्दी से अहद का सन्दूक और मुक़द्दस खैमे के सामान को उस घर में ला सकें जो रब के नाम की ताज़ीम में तामीर होगा।”

23

1 जब दाऊद उम्रसदीदा था तो उसने अपने बेटे सुलेमान को इसराईल का बादशाह बना दिया।

खिदमत के लिए लावियों के गुरोह

2 दाऊद ने इसराईल के तमाम राहनुमाओं को इमामों और लावियों समेत अपने पास बुला लिया। 3 तमाम उन लावियों को गिना गया जिनकी उम्र तीस साल या इससे ज़ायद थी। उनकी कुल तादाद 38,000 थी। 4 इन्हें दाऊद ने मुख्तलिफ़ जिम्मादारियाँ सौंपीं। 24,000 अफ़राद रब के घर की तामीर के निगरान, 6,000 अफ़सर और काज़ी, 5 4,000 दरबान और 4,000 ऐसे मौसीकार बन गए जिन्हें दाऊद के बनवाए हुए साज़ों को बजाकर रब की हम्दो-सना करनी थी।

6 दाऊद ने लावियों को लावी के तीन बेटों जैरसोन, किहात और मिरारी के मुताबिक तीन गुरोहों में तकसीम किया।

7 जैरसोन के दो बेटे लादान और सिमई थे। 8 लादान के तीन बेटे यहियेल, जैताम और योएल थे। 9 सिमई के तीन बेटे सलूमीत, हज़ियेल और हारान थे। यह लादान के घरानों के सरबराह थे। 10-11 सिमई के चार बेटे बड़े से लेकर छोटे तक यहत, जीज़ा, यऊस और बरिया थे।

चूँकि यऊस और बरिया के कम बेटे थे इसलिए उनकी औलाद मिलकर खिदमत के लिहाज से एक ही खानदान और गुरोह की हैसियत रखती थी।

12 क्रिहात के चार बेटे अमराम, इज़हार, हबस्न और उज्जियेल थे। 13 अमराम के दो बेटे हास्न और मूसा थे। हास्न और उस की औलाद को अलग किया गया ताकि वह हमेशा तक मुकद्दसतरीन चीजों को मखसूसो-मुकद्दस रखें, रब के हुज़ूर कुरबानियाँ पेश करें, उस की खिदमत करें और उसके नाम से लोगों को बरकत दें। 14 मर्दे-खुदा मूसा के बेटों को बाकी लावियों में शुमार किया जाता था। 15 मूसा के दो बेटे जैरसोम और इलियज़र थे। 16 जैरसोम के पहलौठे का नाम सबुएल था। 17 इलियज़र का सिर्फ़ एक बेटा रहबियाह था। लेकिन रहबियाह की बेशुमार औलाद थी। 18 इज़हार के पहलौठे का नाम सलूमीत था। 19 हबस्न के चार बेटे बड़े से लेकर छोटे तक यरियाह, अमरियाह, यहजियेल और यक्रमियाम थे। 20 उज्जियेल का पहलौठा मीकाह था। दूसरे का नाम यिस्सियाह था।

21 मिरारी के दो बेटे महली और मूशी थे। महली के दो बेटे इलियज़र और कीस थे। 22 जब इलियज़र फ़ौत हुआ तो उस की सिर्फ़ बेटियाँ थीं। इन बेटियों की शादी कीस के बेटों यानी चचाज़ाद भाइयों से हुई। 23 मूशी के तीन बेटे महली, इदर और यरीमोत थे।

24 गरज़ यह लावी के कबीले के खानदान और सरपरस्त थे। हर एक को खानदानी रजिस्टर में दर्ज किया गया था। इनमें से जो रब के घर में खिदमत करते थे हर एक की उम्र कम अज़ कम 20 साल थी।

25-27 क्योंकि दाऊद ने मरने से पहले पहले हुक्म दिया था कि जितने लावियों की उम्र कम अज़ कम 20 साल है, वह खिदमत के लिए रजिस्टर में दर्ज किए जाएँ। इस नाते से उसने कहा था,

“रब इसराईल के खुदा ने अपनी कौम को अमनो-अमान अता किया है, और अब वह हमेशा के लिए यरूशलम में सुकूनत करेगा। अब से लावियों को मुलाकात का खैमा और उसका सामान उठाकर जगह बजगह ले जाने की ज़रूरत नहीं रही। 28 अब से वह इमामों की मदद करें जब यह रब के घर में खिदमत करते हैं। वह सहनों और छोटे कमरों को सँभालें और ध्यान दें कि रब के घर के लिए मखसूसो-मुकद्दस की गई चीज़ें पाक-साफ़ रहें। उन्हें अल्लाह के घर में कई और ज़िम्मादारियाँ भी सौंपी जाएँ। 29 ज़ैल की चीज़ें सँभालना सिर्फ़ उन्हीं की ज़िम्मादारी है : मखसूसो-मुकद्दस की गई रोटियाँ, गल्ला की नज़रों के लिए मुस्तामल मैदा, बेखमीरी रोटियाँ पकाने और गूँधने का इंतज़ाम। लाज़िम है कि वही तमाम लवाज़िमात को अच्छी तरह तोलें और नापें। 30 हर सुबह और शाम को उनके गुलूकार रब की हम्दो-सना करें। 31 जब भी रब को भस्म होनेवाली कुरबानियाँ पेश की जाएँ तो लावी मदद करें, खाह सबत को, खाह नए चाँद की ईद या किसी और ईद के मौके पर हो। लाज़िम है कि वह रोज़ाना मुकर्रर तादाद के मुताबिक़ खिदमत के लिए हाज़िर हो जाएँ।”

32 इस तरह लावी पहले मुलाकात के खैमे में और बाद में रब के घर में अपनी खिदमत संरजाम देते रहे। वह रब के घर की खिदमत में अपने कबायली भाइयों यानी इमामों की मदद करते थे।

24

खिदमत के लिए इमामों के गुरोह

1 हास्न की औलाद को भी मुख्तलिफ़ गुरोहों में तक्सीम किया गया। हास्न के चार बेटे नदब, अबीह, इलियज़र और इतमर थे। 2 नदब और अबीह अपने बाप से पहले मर गए, और उनके बेटे नहीं थे। इलियज़र और इतमर इमाम बन गए। 3 दाऊद ने इमामों को खिदमत के मुख्तलिफ़ गुरोहों में तक्सीम किया। सदोक और अखीमलिक ने इसमें दाऊद की मदद की (सदोक इलियज़र की औलाद में से और अखीमलिक इतमर की औलाद में से था)। 4 इलियज़र की औलाद को 16 गुरोहों में और इतमर की औलाद को 8 गुरोहों में तक्सीम किया गया, क्योंकि इलियज़र की औलाद के इतने ही ज़्यादा खानदानी सरपरस्त थे। 5 तमाम ज़िम्मादारियाँ कुरा डालकर इन मुख्तलिफ़ गुरोहों में तक्सीम की गई, क्योंकि इलियज़र और इतमर दोनों खानदानों के बहुत सारे ऐसे अफ़सर थे जो पहले से मक़दिस में रब की खिदमत करते थे।

6 यह ज़िम्मादारियाँ तक्सीम करने के लिए इलियज़र और इतमर की औलाद बारी बारी कुरा डालते रहे। कुरा डालते वक़्त बादशाह, इसराईल के बुज़ुर्ग, सदोक इमाम, अखीमलिक बिन अबियातर और इमामों और लावियों के खानदानी सरपरस्त हाज़िर थे। मीरमुंशी समायाह बिन नतनियेल ने जो खुद लावी था खिदमत के इन गुरोहों की फ़हरिस्त ज़ैल की तरतीब से लिख ली जिस तरह वह कुरा डालने से मुकर्रर किए गए,

- 7 1. यह्यरीब,
2. यदायाह,
- 8 3. हारिम,
4. सऊरीम,
- 9 5. मलकियाह,
6. मियामीन,
- 10 7. हक्कूज़,
8. अबियाह,
- 11 9. यशुअ,
10. सकनियाह,

12 11. इलियासिब,

12. यक्रीम,

13 13. खुप्फाह,

14. यसबियाब,

14 15. बिलजा,

16. इम्मेर,

15 17. खजीर,

18. फिज्जिज,

16 19. फतहियाह,

20. यहिजकेल,

17 21. यकीन,

22. जमूल,

18 23. दिलायाह,

24. माजियाह।

19 इमामों को इसी तरतीब के मुताबिक रब के घर में आकर अपनी खिदमत संरजाम देनी थी, उन हिदायात के मुताबिक जो रब इसराईल के खुदा ने उन्हें उनके बाप हारून की मारिफत दी थी।

खिदमत के लिए लावियों के मजीद गुरोह

20 जैल के लावियों के मजीद खानदानी सरपरस्त हैं :

अमराम की औलाद में से सूबाएल,

सूबाएल की औलाद में से यहदियाह

21 रहबियाह की औलाद में से यिस्सियाह सरपरस्त था,

22 इजहार की औलाद में से सलूमीत,

सलूमीत की औलाद में से यहत,

23 हबस्न की औलाद में से बडे से लेकर छोटे तक यरियाह, अमरियाह, यहजियेल और यक्रमियाम,

24 उज्जियेल की औलाद में से मीकाह,

मीकाह की औलाद में से समीर,

25 मीकाह का भाई यिस्सियाह,

यिस्सियाह की औलाद में से जकरियाह,

26 मिरारी की औलाद में से महली और मूशी,

उसके बेटे याजियाह की औलाद,

27 मिरारी के बेटे याजियाह की औलाद में से सुहम, जक्कूर और इबरी,

28-29 महली की औलाद में से इलियज़र और कीस। इलियज़र बेऔलाद था जबकि कीस के हों यरहमियेल पैदा हुआ।

30 मूशी की औलाद में से महली, इदर और यरीमोत भी लावियों के इन मजीद खानदानी सरपरस्तों में शामिल थे।

31 इमामों की तरह उनकी जिम्मादारियाँ भी कुरा-अंदाज़ी से मुकर्रर की गईं। इस सिलसिले में सबसे छोटे भाई के खानदान के साथ और सबसे बड़े भाई के खानदान के साथ सुलूक बराबर था। इस काररवाई के लिए भी दाऊद बादशाह, सदोक, अखीमलिक और इमामों और लावियों के खानदानी सरपरस्त हाज़िर थे।

25

रब के घर में मौसीकारों के गुरोह

1 दाऊद ने फ़ौज के आला अफ़सरों के साथ आसफ़, हैमान और यदूतून की औलाद को एक खास खिदमत के लिए अलग कर दिया। उन्हें नबुव्वत की रूह में सरोद, सितार और झोंझ बजाना था। जैल के आदमियों को मुकर्रर किया गया :

2 आसफ़ के खानदान से आसफ़ के बेटे जक्कूर, यूसुफ़, नतनियाह और असेरेलाह। उनका बाप गुरोह का राहनुमा था, और वह बादशाह की हिदायात के मुताबिक नबुव्वत की रूह में साज़ बजाता था।

3 यदूतून के खानदान से यदूतून के बेटे जिदलियाह, जरी, यसायाह, सिमई, हसबियाह, और मत्तितियाह। उनका बाप गुरोह का राहनुमा था, और वह नबुव्वत की रूह में रब की हम्दो-सना करते हुए सितार बजाता था।

4 हैमान के खानदान से हैमान के बेटे बुक्कियाह, मत्तनियाह, उज्जियेल, सबुएल, यरीमोट, हननियाह, हनानी, इलियाता, जिदालती, रूमतियज़र, यसबिकाशा, मल्लूती, हौतीर और महाज़ियोत। 5 इन सबका बाप हैमान दाऊद बादशाह का ग़ैबबीन था। अल्लाह ने हैमान से वादा किया था कि मैं तेरी ताकत बढ़ा दूँगा, इसलिए उसने उसे 14 बेटे और तीन बेटियाँ अता की थीं।

6 यह सब अपने अपने बाप यानी आसफ़, यदूतून और हैमान की राहनुमाई में साज़ बजाते थे। जब कभी रब के घर में गीत गाए जाते थे तो यह मौसीकार साथ साथ झॉझ, सितार और सरोद बजाते थे। वह अपनी खिदमत बादशाह की हिदायात के मुताबिक़ सरंजाम देते थे। 7 अपने भाइयों समेत जो रब की ताज़ीम में गीत गाते थे उनकी कुल तादाद 288 थी। सबके सब माहिर थे। 8 उनकी मुख्तलिफ़ ज़िम्मादारियाँ भी कुरा के ज़रीए मुकर्रर की गईं। इसमें सबके साथ सुलूक एक जैसा था, खाह जवान थे या बूढ़े, खाह उस्ताद थे या शागिर्द।

9 कुरा डालकर 24 गुरोहों को मुकर्रर किया गया। हर गुरोह के बारह बारह आदमी थे। यों ज़ैल के आदमियों के गुरोहों ने तश्कील पाई :

1. आसफ़ के खानदान का यूसुफ़,

2. जिदलियाह,

10 3. ज़क्कूर,

11 4. ज़री,

12 5. नतनियाह,

13 6. बुक्कियाह,

14 7. यसरेलाह,

15 8. यसायाह,

16 9. मत्तनियाह,

17 10. सिमई,

18 11. अज़रेल,

19 12. हसबियाह,

20 13. सूबाएल,

21 14. मत्तितियाह,

22 15. यरीमोट,

23 16. हननियाह,

24 17. यसबिकाशा,

25 18. हनानी,

26 19. मल्लूती,

27 20. इलियाता,

28 21. हौतीर,

29 22. जिदालती,

30 23. महाज़ियोत,

31 24. रूमतियज़र।

हर गुरोह में राहनुमा के बेटे और कुछ रिश्तेदार शामिल थे।

26

रब के घर के दरबान

1 रब के घर के सहन के दरवाज़ों पर पहरादारी करने के गुरोह भी मुकर्रर किए गए। उनमें ज़ैल के आदमी शामिल थे :

कोरह के खानदान का फ़रद मसलमियाह बिन कोरे जो आसफ़ की औलाद में से था। 2 मसलमियाह के सात बेटे बड़े से लेकर छोटे तक ज़करियाह, यदियएल, ज़बदियाह, यत्रियेल, 3 ऐलाम, यूहन्नान और इलीहएनी थे।

4-5 ओबेद-अदोम भी दरबान था। अल्लाह ने उसे बरकत देकर आठ बेटे दिए थे। बड़े से लेकर छोटे तक उनके नाम समायाह, यहज़बद, युआख, सकार, नतनियेल, अम्मियेल, इशकार और फ़ऊल्लती थे। 6 समायाह बिन ओबेद-अदोम के बेटे खानदानी सरबराह थे, क्योंकि वह काफ़ी असरो-रसूख रखते थे। 7 उनके नाम उतनी, रफ़ाएल, ओबेद और इल्ज़बद थे। समायाह के रिश्तेदार इलीह और समकियाह भी गुरोह में शामिल थे, क्योंकि वह भी ख़ास हैसियत रखते थे। 8 ओबेद-अदोम से निकले यह तमाम आदमी लायक़ थे। वह अपने बेटों और रिश्तेदारों समेत कुल 62 अफ़राद थे और सब महारत से अपनी खिदमत सरंजाम देते थे।

9 मसलमियाह के बेटे और रिश्तेदार कुल 18 आदमी थे। सब लायक़ थे।

10 मिरारी के खानदान का फ़रद हूसा के चार बेटे सिमरी, खिलक्रियाह, तबलियाह और ज़करियाह थे। हूसा ने सिमरी को खिदमत के गुरोह का सरबराह बना दिया था अगरचे वह पहलौठा नहीं था। 11 दूसरे बेटे बड़े से लेकर छोटे तक खिलक्रियाह, तबलियाह और ज़करियाह थे। हूसा के कुल 13 बेटे और रिश्तेदार थे।

12 दरबानों के इन गुरोहों में खानदानी सरपरस्त और तमाम आदमी शामिल थे। बाक़ी लावियों की तरह यह भी रब के घर में अपनी खिदमत सरंजाम देते थे। 13 कुरा-अंदाजी से मुक़र्रर किया गया कि कौन-सा गुरोह सहन के किस दरवाज़े की पहरादारी करे। इस सिलसिले में बड़े और छोटे खानदानों में इम्तियाज़ न किया गया। 14 यों जब कुरा डाला गया तो मसलमियाह के खानदान का नाम मशरिकी दरवाज़े की पहरादारी करने के लिए निकला। ज़करियाह बिन मसलमियाह के खानदान का नाम शिमाली दरवाज़े की पहरादारी करने के लिए निकला। ज़करियाह अपने दाना मशवरों के लिए मशहूर था। 15 जब कुरा जुनूबी दरवाज़े की पहरादारी के लिए डाला गया तो ओबेद-अदोम का नाम निकला। उसके बेटों को गोदाम की पहरादारी करने की ज़िम्मादारी दी गई। 16 जब मगरिबी दरवाज़े और सल्कत दरवाज़े के लिए कुरा डाला गया तो सुफ़्फ़ीम और हूसा के नाम निकले। सल्कत दरवाज़ा चढ़नेवाले रास्ते पर है।

पहरादारी की खिदमत यों बाँटी गई :

17 रोज़ाना मशरिकी दरवाज़े पर छः लावी पहरा देते थे, शिमाली और जुनूबी दरवाज़ों पर चार चार अफ़राद और गोदाम पर दो। 18 रब के घर के सहन के मगरिबी दरवाज़े पर छः लावी पहरा देते थे, चार रास्ते पर और दो सहन में।

19 यह सब दरबानों के गुरोह थे। सब कोरह और मिरारी के खानदानों की औलाद थे।

खिदमत के लिए लावियों के मज़ीद गुरोह

20 दूसरे कुछ लावी अल्लाह के घर के खज़ानों और रब के लिए मख़सूस की गई चीज़ें सँभालते थे।

21-22 दो भाई ज़ैताम और योएल रब के घर के खज़ानों की पहरादारी करते थे। वह यहियेल के खानदान के सरपरस्त थे और यों लादान ज़ैरसोनी की औलाद थे। 23 अमराम, इज़हार, हबस्न और उज्जियेल के खानदानों की यह ज़िम्मादारियाँ थीं :

24 सबुएल बिन ज़ैरसोम बिन मूसा खज़ानों का निगरान था। 25 ज़ैरसोम के भाई इलियज़र का बेटा रहबियाह था। रहबियाह का बेटा यसायाह, यसायाह का बेटा यूराम, यूराम का बेटा ज़िकरी और ज़िकरी का बेटा सलूमीत था। 26 सलूमीत अपने भाइयों के साथ उन मुक़द्दस चीज़ों को सँभालता था जो दाऊद बादशाह, खानदानी सरपरस्तों, हज़ार हज़ार और सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़सरों और दूसरे आला अफ़सरों ने रब के लिए मख़सूस की थीं। 27 यह चीज़ें जंगों में लूटे हुए माल में से लेकर रब के घर को मज़बूत करने के लिए मख़सूस की गई थीं। 28 इनमें वह सामान भी शामिल था जो समुएल गैबबीन, साऊल बिन कीस, अबिनैर बिन नैर और योआब बिन ज़रूयाह ने मक़दिस के लिए मख़सूस किया था। सलूमीत और उसके भाई इन तमाम चीज़ों को सँभालते थे।

29 इज़हार के खानदान के अफ़राद यानी कननियाह और उसके बेटों को रब के घर से बाहर की ज़िम्मादारियाँ दी गईं। उन्हें निगरानों और काज़ियों की हैसियत से इसराईल पर मुक़र्रर किया गया। 30 हबस्न के खानदान के अफ़राद यानी हसबियाह और उसके भाइयों को दरियाए-यरदन के मगरिब के इलाके को सँभालने की ज़िम्मादारी दी गई। वहाँ वह रब के घर से मुताल्लिक़ कामों के अलावा बादशाह की खिदमत भी सरंजाम देते थे। इन लायक़ आदमियों की कुल तादाद 1,700 थी।

31 दाऊद बादशाह की हुकूमत के 40वें साल में नसबनामे की तहक्कीक़ की गई ताकि हबस्न के खानदान के बारे में मालूमात हासिल हो जाएँ। पता चला कि उसके कई लायक़ स्कन जिलियाद के इलाके के शहर याज़ेर में आबाद हैं। यरियाह उनका सरपरस्त था। 32 दाऊद बादशाह ने उसे रूबिन, ज़द और मनस्सी के मशरिकी इलाके को सँभालने की ज़िम्मादारी दी। यरियाह की इस खिदमत में उसके खानदान के मज़ीद 2,700 अफ़राद भी शामिल थे। सब लायक़ और अपने अपने खानदानों के सरपरस्त थे। उस इलाके में वह रब के घर से मुताल्लिक़ कामों के अलावा बादशाह की खिदमत भी सरंजाम देते थे।

27

फ़ौज के गुरोह

1 दर्जे-ज़ैल उन खानदानी सरपरस्तों, हज़ार हज़ार और सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़सरों और सरकारी अफ़सरों की फ़हरिस्त है जो बादशाह के मुलाज़िम थे।

फ़ौज 12 गुरोहों पर मुश्तमिल थी, और हर गुरोह के 24,000 अफ़राद थे। हर गुरोह की झूटी साल में एक माह के लिए लगती थी। 2 जो अफ़सर इन गुरोहों पर मुक़र्रर थे वह यह थे :

पहला माह : यूसूबियाम बिन ज़बदियेल। 3 वह फ़ारस के खानदान का था और उस गुरोह पर मुक़र्रर था जिसकी झूटी पहले महीने में होती थी।

4 दूसरा माह : दोदी अख़्ही। उसके गुरोह के आला अफ़सर का नाम मिक़लोत था।

5 तीसरा माह : यहोयदा इमाम का बेटा बिनायाह। 6 यह दाऊद के बेहतरीन दस्ते बनाम 'तीस' पर मुक़र्रर था और ख़ुद ज़बरदस्त फ़ौजी था। उसके गुरोह का आला अफ़सर उसका बेटा अम्मीज़बद था।

7 चौथा माह : योआब का भाई असाहेल। उस की मौत के बाद असाहेल का बेटा ज़बदियाह उस की जगह मुक़र्रर हुआ।

- 8 पाँचवाँ माह : समहृत इज़राखी।
 9 छठा माह : ईरा बिन अक्कीस तक्ई।
 10 सातवाँ माह : खलिस फलूनी इफराईमी।
 11 आठवाँ माह : ज़ारह के खानदान का सिब्बकी हसाती।
 12 नवाँ माह : बिनयमीन के कबीले का अबियज़र अनतोती।
 13 दसवाँ माह : ज़ारह के खानदान का महरी नतूफ़ाती।
 14 ग्यारहवाँ माह : इफराईम के कबीले का बिनायाह फिरआतोनी।
 15 बारहवाँ माह : गुतनियेल के खानदान का खलदी नतूफ़ाती।

कबीलों के सरपरस्त

- 16 ज़ैल के आदमी इसराईली कबीलों के सरपरस्त थे :
 रुबिन का कबीला : इलियज़र बिन ज़िकरी।
 शमौन का कबीला : सफ़तियाह बिन माका।
 17 लावी का कबीला : हसबियाह बिन कमुएल। हारून के खानदान का सरपरस्त सदोक था।
 18 यहदाह का कबीला : दाऊद का भाई इलीह।
 इशकार का कबीला : उमरी बिन मीकाएल।
 19 ज़बूलून का कबीला : इसमायाह बिन अबदियाह।
 नफ़ताली का कबीला : यरीमोट बिन अज़रियेल।
 20 इफराईम का कबीला : होसेअ बिन अज़ज़ियाह।
 मगरिबी मनस्सी का कबीला : योएल बिन फ़िदायाह।
 21 मशरिक्की मनस्सी का कबीला जो जिलियाद में था : यिद् बिन ज़करियाह।
 बिनयमीन का कबीला : यासियेल बिन अबिनैर।
 22 दान का कबीला : अज़रेल बिन यरोहाम।
 यह बारह लोग इसराईली कबीलों के सरबराह थे।

23 जितने इसराईली मर्दों की उम्र 20 साल या इससे कम थी उन्हें दाऊद ने शुमार नहीं किया, क्योंकि रब ने उससे वादा किया था कि मैं इसराईलियों को आसमान पर के सितारों जैसा बेशुमार बना दूँगा। 24 नीज़, योआब बिन ज़रूयाह ने मर्दमशुमारी को शुरू तो किया लेकिन उसे इख़िताम तक नहीं पहुँचाया था, क्योंकि अल्लाह का ग़ज़ब मर्दमशुमारी के बाइस इसराईल पर नाज़िल हुआ था। नतीजे में दाऊद बादशाह की तारीख़ी किताब में इसराईलियों की कुल तादाद कभी नहीं दर्ज हुई।

शाही मिलकियत के इंचार्ज

- 25 अज़मावत बिन अदियेल यरूशलम के शाही गोदामों का इंचार्ज था।
 जो गोदाम देही इलाक़े, बाक़ी शहरों, गाँवों और क़िलों में थे उनको यूनतन बिन उज़्ज़ियाह सँभालता था।
 26 अज़री बिन कलूब शाही ज़मीनों की काश्तकारी करनेवालों पर मुक़र्रर था।
 27 सिमई रामाती अंगर के बाग़ों की निगरानी करता जबकि ज़बदी शिफ़मी इन बाग़ों की मै के गोदामों का इंचार्ज था।
 28 बाल-हनान जदीरी ज़ैतून और अंजीर-तूत के उन बाग़ों पर मुक़र्रर था जो मगरिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े में थे। युआस ज़ैतून के तेल के गोदामों की निगरानी करता था।
 29 शास्न के मैदान में चरनेवाले गाय-बैल सितरी शास्नी के ज़ेरे-निगरानी थे जबकि साफ़त बिन अदली वादियों में चरनेवाले गाय-बैलों को सँभालता था। 30 ओबिल इसमाईली ऊँटों पर मुक़र्रर था, यहदियाह मरूनोती गधियों पर 31 और याज़ीज़ हाजिरी भेड़-बकरियों पर।
 यह सब शाही मिलकियत के निगरान थे।

बादशाह के करीबी मुशीर

- 32 दाऊद का समझदार और आलिम चचा यूनतन बादशाह का मुशीर था। यहियेल बिन हक़मूनी बादशाह के बेटों की तरबियत के लिए ज़िम्मादार था। 33 अख़ीतुफल दाऊद का मुशीर जबकि हसी अरकी दाऊद का दोस्त था। 34 अख़ीतुफल के बाद यहोयदा बिन बिनायाह और अबियातर बादशाह के मुशीर बन गए। योआब शाही फ़ौज का कमाँडर था।

1 दाऊद ने इसराईल के तमाम बुजुर्गों को यरूशलम बुलाया। इनमें कबीलों के सरपरस्त, फौजी डिवीज़नों पर मुकर्रर अफ़सर, हजार हजार और सौ सौ फौजियों पर मुकर्रर अफ़सर, शाही मिलकियत और रेवड़ों के इंचारज, बादशाह के बेटों की तरबियत करनेवाले अफ़सर, दरबारी, मुल्क के सूमा और बाक़ी तमाम साहबे-हैसियत शामिल थे।

2 दाऊद बादशाह उनके सामने खड़े होकर उनसे मुखातिब हुआ,

“मेरे भाइयो और मेरी कौम, मेरी बात पर ध्यान दें! काफ़ी देर से मैं एक ऐसा मकान तामीर करना चाहता था जिसमें रब के अहद का संदूक मुस्तक़िल तौर पर रखा जा सके। आखिर यह तो हमारे खुदा की चौकी है। इस मक़सद से मैं तैयारियाँ करने लगा। 3 लेकिन फिर अल्लाह मुझसे हमकलाम हुआ, ‘मेरे नाम के लिए मकान बनाना तेरा काम नहीं है, क्योंकि तूने जंगजू होते हुए बहुत खून बहाया है।’

4 रब इसराईल के खुदा ने मेरे पूरे खानदान में से मुझे चुनकर हमेशा के लिए इसराईल का बादशाह बना दिया, क्योंकि उस की मरज़ी थी कि यहदाह का कबीला हुकूमत करे। यहदाह के खानदानों में से उसने मेरे बाप के खानदान को चुन लिया, और इसी खानदान में से उसने मुझे पसंद करके पूरे इसराईल का बादशाह बना दिया। 5 रब ने मुझे बहुत बेटे अता किए हैं। उनमें से उसने मुकर्रर किया कि सुलेमान मेरे बाद तख़्त पर बैठकर रब की उम्मत पर हुकूमत करे। 6 रब ने मुझे बताया, ‘तेरा बेटा सुलेमान ही मेरा घर और उसके सहन तामीर करेगा। क्योंकि मैंने उसे चुनकर फ़रमाया है कि वह मेरा बेटा होगा और मैं उसका बाप हूँगा। 7 अगर वह आज की तरह आइंदा भी मेरे अहकाम और हिदायत पर अमल करता रहे तो मैं उस की बादशाही अबद तक कायम रखूँगा।’

8 अब मेरी हिदायत पर ध्यान दें, पूरा इसराईल यानी रब की जमात और हमारा खुदा इसके गवाह हैं। रब अपने खुदा के तमाम अहकाम के ताबे रहे! फिर आइंदा भी यह अच्छा मुल्क आपकी मिलकियत और हमेशा तक आपकी औलाद की मौस्सी ज़मीन रहेगा। 9 ऐ सुलेमान मेरे बेटे, अपने बाप के खुदा को तसलीम करके पूरे दिलो-जान और खुशी से उस की खिदमत करें। क्योंकि रब तमाम दिलों की तहकीक़ कर लेता है, और वह हमारे खयालों के तमाम मनसूबों से वाकिफ़ है। उसके तालिब रहें तो आप उसे पा लेंगे। लेकिन अगर आप उसे तर्क करें तो वह आपको हमेशा के लिए रद्द कर देगा। 10 याद रहे, रब ने आपको इसलिए चुन लिया है कि आप उसके लिए मुक़द्दस घर तामीर करें। मज़बूत रहकर इस काम में लगे रहें!”

रब के घर का नक्शा

11 फिर दाऊद ने अपने बेटे सुलेमान को रब के घर का नक्शा दे दिया जिसमें तमाम तफ़सीलात दर्ज थीं यानी उसके बरामदे, खज़ानों के कमरे, बालाखाने, अंदरूनी कमरे, वह मुक़द्दसतरीन कमरा जिसमें अहद के संदूक को उसके कफ़फ़ारे के ढकने समेत रखना था, 12 रब के घर के सहन, उसके इर्दगिर्द के कमरे और वह कमरे जिनमें रब के लिए मखसूस किए गए सामान को महफूज़ रखना था।

दाऊद ने रूह की हिदायत से यह पूरा नक्शा तैयार किया था। 13 उसने रब के घर की खिदमत के लिए दरकार इमामों और लावियों के गुरोहों को भी मुकर्रर किया, और साथ साथ रब के घर में बाक़ी तमाम ज़िम्मादारियाँ भी। इसके अलावा उसने रब के घर की खिदमत के लिए दरकार तमाम सामान की फ़हरिस्त भी तैयार की थी। 14 उसने मुकर्रर किया कि मुख्तलिफ़ चीज़ों के लिए कितना सोना और कितनी चाँदी इस्तेमाल करनी है। इनमें ज़ैल की चीज़ें शामिल थीं : 15 सोने और चाँदी के चरागदान और उनके चराग (मुख्तलिफ़ चरागदानों के वज़न फ़रक़ थे, क्योंकि हर एक का वज़न उसके मक़सद पर मुनहसिर था), 16 सोने की वह मेज़ें जिन पर रब के लिए मखसूस रोटियाँ रखनी थीं, चाँदी की मेज़ें, 17 ख़ालिस सोने के काँटे, छिड़काव के कटोरे और सुराही, सोने-चाँदी के प्याले 18 और बख़ूर जलाने की कुरबानगाह पर मँढा हुआ ख़ालिस सोना। दाऊद ने रब के रथ का नक्शा भी सुलेमान के हवाले कर दिया, यानी उन कर्बूबी फ़रिशतों का नक्शा जो अपने परों को फैलाकर रब के अहद के संदूक को ढाँप देते हैं।

19 दाऊद ने कहा, “मैंने यह तमाम तफ़सीलात वैसे ही कलमबंद कर दी हैं जैसे रब ने मुझे हिकमत और समझ अता की है।”

20 फिर वह अपने बेटे सुलेमान से मुखातिब हुआ, “मज़बूत और दिलेर हों! डरें मत और हिम्मत मत हारना, क्योंकि रब खुदा मेरा खुदा आपके साथ है। न वह आपको छोड़ेगा, न तर्क करेगा बल्कि रब के घर की तकमील तक आपकी मदद करता रहेगा। 21 खिदमत के लिए मुकर्रर इमामों और लावियों के गुरोह भी आपका सहारा बनकर रब के घर में अपनी खिदमत संरजाम देंगे। तामीर के लिए जितने भी माहिर कारीगरों की ज़रूरत है वह खिदमत के लिए तैयार खड़े हैं। बुजुर्गों से लेकर आम लोगों तक सब आपकी हर हिदायत की तामील करने के लिए मुस्तैद हैं।”

29

रब के घर की तामीर के लिए नज़राने

1 फिर दाऊद दुबारा पूरी जमात से मुखातिब हुआ, “अल्लाह ने मेरे बेटे सुलेमान को चुनकर मुकर्रर किया है कि वह अगला बादशाह बने। लेकिन वह अभी जवान और नातजरबाकार है, और यह तामीरी काम बहुत वसी है। उसे तो यह महल इनसान के लिए नहीं बनाना है बल्कि रब हमारे खुदा के लिए। 2 मैं पूरी जाँफ़िशानी से अपने खुदा के घर की तामीर के लिए सामान जमा कर चुका हूँ। इसमें सोना-चाँदी, पीतल, लोहा, लकड़ी, अक़ीक़े-अहमर, * मुख्तलिफ़ जड़े हुए जवाहर और पच्चीकारी के मुख्तलिफ़ पत्थर बड़ी मिक़दार में शामिल हैं। 3 और चूँकि मुझमें

* 29:2 carnelian

अपने खुदा का घर बनाने के लिए बोझ है इसलिए मैंने इन चीजों के अलावा अपने जाती खजानों से भी सोना और चाँदी दी है ⁴ यानी तकरीबन 1,00,000 किलोग्राम खालिस सोना और 2,35,000 किलोग्राम खालिस चाँदी। मैं चाहता हूँ कि यह कमरों की दीवारों पर चढ़ाई जाए। ⁵ कुछ कारीगरों के बाकी कामों के लिए भी इस्तेमाल हो सकता है। अब मैं आपसे पूछता हूँ, आज कौन मेरी तरह खुशी से रब के काम के लिए कुछ देने को तैयार है?”

⁶ यह सुनकर वहाँ हाज़िर खानदानी सरपरस्तों, कबीलों के बुजुर्गों, हजार हजार और सौ सौ फ़ौजियों पर मुकर्रर अफसरों और बादशाह के आला सरकारी अफसरों ने खुशी से काम के लिए हृदिये दिए। ⁷ उस दिन रब के घर के लिए तकरीबन 1,70,000 किलोग्राम सोना, सोने के 10,000 सिक्के, 3,40,000 किलोग्राम चाँदी, 6,10,000 किलोग्राम पीतल और 34,00,000 किलोग्राम लोहा जमा हुआ। ⁸ जिसके पास जवाहर थे उसने उन्हें यहियेल जैरसोनी के हवाले कर दिया जो खजानची था और जिसने उन्हें रब के घर के खजाने में महफूज़ कर लिया। ⁹ पूरी क्रौम इस फ़राखदिली को देखकर खुश हुई, क्योंकि सबने दिली खुशी और फ़ैयाज़ी से अपने हृदिये रब को पेश किए। दाऊद बादशाह भी निहायत खुश हुआ।

दाऊद की दुआ

¹⁰ इसके बाद दाऊद ने पूरी जमात के सामने रब की तमजीद करके कहा,

“ऐ रब हमारे बाप इसराईल के खुदा, अज़ल से अबद तक तेरी हम्द हो। ¹¹ ऐ रब, अज़मत, कुदरत, जलाल और शानो-शौकत तेरे ही हैं, क्योंकि जो कुछ भी आसमान और ज़मीन में है वह तेरा ही है। ऐ रब, सलतनत तेरे हाथ में है, और तू तमाम चीजों पर सरफ़राज़ है। ¹² दौलत और इज़्ज़त तुझसे मिलती है, और तू सब पर हुक्मरान है। तेरे हाथ में ताक़त और कुदरत है, और हर इनसान को तू ही ताक़तवर और मज़बूत बना सकता है। ¹³ ऐ हमारे खुदा, यह देखकर हम तेरी सताइश और तेरे जलाली नाम की तारीफ़ करते हैं।

¹⁴ मेरी और मेरी क्रौम की क्या हैसियत है कि हम इतनी फ़ैयाज़ी से यह चीज़ें दे सके? आखिर हमारी तमाम मिलकियत तेरी तरफ़ से है। जो कुछ भी हमने तुझे दे दिया वह हमें तेरे हाथ से मिला है। ¹⁵ अपने बापदादा की तरह हम भी तेरे नज़दीक परदेसी और ग़ैरशहरी हैं। दुनिया में हमारी ज़िंदगी साय की तरह आरिज़ी है, और मौत से बचने की कोई उम्मीद नहीं। ¹⁶ ऐ रब हमारे खुदा, हमने यह सारा तामीरी सामान इसलिए इक़ठा किया है कि तेरे मुक़द्दस नाम के लिए घर बनाया जाए। लेकिन हकीक़त में यह सब कुछ पहले से तेरे हाथ से हासिल हुआ है। यह पहले से तेरा ही है। ¹⁷ ऐ मेरे खुदा, मैं जानता हूँ कि तू इनसान का दिल जाँच लेता है, कि दियानतदारी तुझे पसंद है। जो कुछ भी मैंने दिया है वह मैंने खुशी से और अच्छी नीयत से दिया है। अब मुझे यह देखकर खुशी है कि यहाँ हाज़िर तेरी क्रौम ने भी इतनी फ़ैयाज़ी से तुझे हृदिये दिए हैं।

¹⁸ ऐ रब हमारे बापदादा इब्राहीम, इसहाक और इसराईल के खुदा, गुज़ारिश है कि तू हमेशा तक अपनी क्रौम के दिलों में ऐसी ही तड़प कायम रख। अता कर कि उनके दिल तेरे साथ लिपटे रहें। ¹⁹ मेरे बेटे सुलेमान की भी मदद कर ताकि वह पूरे दिलो-जान से तेरे अहक़ाम और हिदायत पर अमल करे और उस महल को तक़मील तक पहुँचा सके जिसके लिए मैंने तैयारियाँ की हैं।”

²⁰ फिर दाऊद ने पूरी जमात से कहा, “आएँ, रब अपने खुदा की सताइश करें!” चुनौचे सब रब अपने बापदादा के खुदा की तमजीद करके रब और बादशाह के सामने मुँह के बल झुक गए।

²¹ अगले दिन तमाम इसराईल के लिए भस्म होनेवाली बहुत-सी कुरबानियाँ उनकी मै की नज़रों समेत रब को पेश की गईं। इसके लिए 1,000 जवान बैलों, 1,000 मेंढों और 1,000 भेड़ के बच्चों को चढ़ाया गया। साथ साथ ज़बह की बेशुमार कुरबानियाँ भी पेश की गईं। ²² उस दिन उन्होंने रब के हुज़ूर खाते-पीते हुए बड़ी खुशी मनाई। फिर उन्होंने दुबारा इसकी तसदीक़ की कि दाऊद का बेटा सुलेमान हमारा बादशाह है। तेल से उसे मसह करके उन्होंने उसे रब के हुज़ूर बादशाह और सदोक्क़ को इमाम करार दिया।

सुलेमान की ज़बरदस्त हुक्मत

²³ यों सुलेमान अपने बाप दाऊद की जगह रब के तख़्त पर बैठ गया। उसे कामयाबी हासिल हुई, और तमाम इसराईल उसके ताबे रहा। ²⁴ तमाम आला अफ़सर, बड़े बड़े फ़ौजी और दाऊद के बाकी बेटों ने भी अपनी ताबेदारी का इज़हार किया। ²⁵ इसराईल के देखते देखते रब ने सुलेमान को बहुत सरफ़राज़ किया। उसने उस की सलतनत को ऐसी शानो-शौकत से नवाज़ा जो माज़ी में इसराईल के किसी भी बादशाह को हासिल नहीं हुई थी।

दाऊद की वफ़ात

²⁶⁻²⁷ दाऊद बिन यस्सी कुल 40 साल तक इसराईल का बादशाह रहा, 7 साल हबर्न में और 33 साल यरूशलम में। ²⁸ वह बहुत उम्ररसीदा और उम्र, दौलत और इज़्ज़त से आसूदा होकर इंतक़ाल कर गया। फिर सुलेमान तख़्तनशीन हुआ।

²⁹ बाक़ी जो कुछ दाऊद की हुक्मत के दौरान हुआ वह तीनों किताबों ‘समुएल ग़ैबबीन की तारीख़,’ ‘नातन नबी की तारीख़’ और ‘जाद ग़ैबबीन की तारीख़’ में दर्ज़ है। ³⁰ इनमें उस की हुक्मत और असरो-रसूख़ की तफ़सीलात बयान की गई हैं, नीज़ वह कुछ जो उसके साथ, इसराईल के साथ और गिर्दो-नवाह के ममालिक के साथ हुआ।

2 तवारीख

सुलेमान रब से हिकमत माँगता है

- 1 सुलेमान बिन दाऊद की हुक्मत मजबूत हो गई। रब उसका खुदा उसके साथ था, और वह उस की ताकत बढ़ाता रहा।
- 2 एक दिन सुलेमान ने तमाम इसराईल को अपने पास बुलाया। उनमें हजार हजार और सौ सौ फौजियों पर मुक़र्रर अफ़सर, काज़ी, तमाम बुज़ुर्ग और कुंभों के सरपरस्त शामिल थे। 3 फिर सुलेमान उनके साथ ज़िबऊन की उस पहाड़ी पर गया जहाँ अल्लाह का मुलाकात का ख़ैमा था, वही जो रब के खादिम मूसा ने रेगिस्तान में बनवाया था। 4 अहद का सन्दूक उसमें नहीं था, क्योंकि दाऊद ने उसे किरियत-यारीम से यरूशलम लाकर एक ख़ैमे में रख दिया था जो उसने वहाँ उसके लिए तैयार कर रखा था। 5 लेकिन पीतल की जो कुरबानगाह बज़लियेल बिन ऊरी बिन हूर ने बनाई थी वह अब तक ज़िबऊन में रब के ख़ैमे के सामने थी। अब सुलेमान और इसराईल उसके सामने जमा हुए ताकि रब की मरज़ी दरियाफ़्त करें। 6 वहाँ रब के हुज़ूर सुलेमान ने पीतल की उस कुरबानगाह पर भस्म होनेवाली 1,000 कुरबानियाँ चढ़ाई।
- 7 उसी रात रब सुलेमान पर जाहिर हुआ और फ़रमाया, “तेरा दिल क्या चाहता है? मुझे बता दे तो मैं तेरी खाहिश पूरी करूँगा।” 8 सुलेमान ने जवाब दिया, “तू मेरे बाप दाऊद पर बड़ी मेहरबानी कर चुका है, और अब तूने उस की जगह मुझे तख़्त पर बिठा दिया है। 9 तूने मुझे एक ऐसी क़ौम पर बादशाह बना दिया है जो ज़मीन की खाक की तरह बेशुमार है। चुनौचे ऐ रब खुदा, वह वादा पूरा कर जो तूने मेरे बाप दाऊद से किया है। 10 मुझे हिकमत और समझ अता फ़रमा ताकि मैं इस क़ौम की राहनुमाई कर सकूँ। क्योंकि कौन तेरी इस अज़ीम क़ौम का इनसाफ़ कर सकता है?”
- 11 अल्लाह ने सुलेमान से कहा, “मैं खुश हूँ कि तू दिल से यही कुछ चाहता है। तूने न मालो-दौलत, न इज़्ज़त, न अपने दुश्मनों की हलाकत और न उम्र की दराज़ी बल्कि हिकमत और समझ माँगी है ताकि मेरी उस क़ौम का इनसाफ़ कर सके जिस पर मैंने तुझे बादशाह बना दिया है। 12 इसलिए मैं तेरी यह दरखास्त पूरी करके तुझे हिकमत और समझ अता करूँगा। साथ साथ मैं तुझे उतना मालो-दौलत और उतनी इज़्ज़त दूँगा जितनी न माज़ी में किसी बादशाह को हासिल थी, न मुस्तक़बिल में कभी किसी को हासिल होगी।”
- 13 इसके बाद सुलेमान ज़िबऊन की उस पहाड़ी से उतरा जिस पर मुलाकात का ख़ैमा था और यरूशलम वापस चला गया जहाँ वह इसराईल पर हुक्मत करता था।

सुलेमान की दौलत

- 14 सुलेमान के 1,400 रथ और 12,000 घोड़े थे। कुछ उसने रथों के लिए मख़सूस किए गए शहरों में और कुछ यरूशलम में अपने पास रखे। 15 बादशाह की सरगर्मियों के बाइस चाँदी पत्थर जैसी आम हो गई और देवदार की कीमती लकड़ी मगरिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े की अंज़ीर-तूत की सस्ती लकड़ी जैसी आम हो गई। 16 बादशाह अपने घोड़े मिसर और कुए यानी किलिकिया से दरामद करता था। उसके ताजिर इन जगहों पर जाकर उन्हें ख़रीद लाते थे। 17 बादशाह के रथ मिसर से दरामद होते थे। हर रथ की कीमत चाँदी के 600 सिक्के और हर घोड़े की कीमत चाँदी के 150 सिक्के थी। सुलेमान के ताजिर यह घोड़े बरामद करते हुए तमाम हिती और अरामी बादशाहों तक भी पहुँचाते थे।

2

रब के घर की तामीर की तैयारियाँ

- 1 फिर सुलेमान ने रब के लिए घर और अपने लिए शाही महल बनाने का हुक्म दिया। 2 इसके लिए उसने 1,50,000 आदमियों की भरती की। 80,000 को उसने पहाड़ी कानों में लगाया ताकि वह पत्थर निकालें जबकि 70,000 अफ़राद की ज़िम्मादारी यह पत्थर यरूशलम लाना थी। इन सब पर सुलेमान ने 3,600 निगरान मुक़र्रर किए। 3 उसने सूर के बादशाह हीराम को इतला दी, “जिस तरह आप मेरे बाप दाऊद को देवदार की लकड़ी भेजते रहे जब वह अपने लिए महल बना रहे थे उसी तरह मुझे भी देवदार की लकड़ी भेजें। 4 मैं एक घर तामीर करके उसे रब अपने खुदा के नाम के लिए मख़सूस करना चाहता हूँ। क्योंकि हमें ऐसी जगह की ज़रूरत है जिसमें उसके हुज़ूर खुशबूदार बख़ूर जलाया जाए, रब के लिए मख़सूस रोटियाँ बाकायदगी से मेज़ पर रखी जाएँ और खास मौकों पर भस्म होनेवाली कुरबानियाँ पेश की जाएँ यानी हर सुबहो-शाम, सबत के दिन, नए चाँद की ईदों और रब हमारे खुदा की दीगर मुक़र्ररा ईदों पर। यह इसराईल का दायमी फ़र्ज़ है।
- 5 जिस घर को मैं बनाने को हूँ वह निहायत अज़ीम होगा, क्योंकि हमारा खुदा दीगर तमाम माबूदों से कहीं अज़ीम है। 6 लेकिन कौन उसके लिए ऐसा घर बना सकता है जो उसके लायक हो? बुलंदतरिनी आसमान भी उस की रिहाइश के लिए छोटा है। तो फिर मेरी क्या हैसियत है कि उसके लिए घर बनाऊँ? मैं सिर्फ़ ऐसी जगह बना सकता हूँ जिसमें उसके लिए कुरबानियाँ चढ़ाई जा सकें।
- 7 चुनौचे मेरे पास किसी ऐसे समझदार कारीगर को भेज दें जो महारत से सोने-चाँदी, पीतल और लोहे का काम जानता हो। वह नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग का कपड़ा बनाने और कंदाकारी का उस्ताद भी हो। ऐसा शख्स यरूशलम और यहूदा में मेरे उन कारीगरों का इंचार्ज बने जिन्हें मेरे बाप दाऊद ने काम पर लगाया है। 8 इसके अलावा मुझे लुबनान से देवदार, जूनीपर और दीगर कीमती दरख़्तों की लकड़ी

भेज दें। क्योंकि मैं जानता हूँ कि आपके लोग उम्दा किस्म के लकड़हारे हैं। मेरे आदमी आपके लोगों के साथ मिलकर काम करेंगे। 9 हमें बहुत-सी लकड़ी की ज़रूरत होगी, क्योंकि जो घर मैं बनाना चाहता हूँ वह बड़ा और शानदार होगा। 10 आपके लकड़हारों के काम के मुआवज़े में मैं 32,75,000 किलोग्राम गंदुम, 27,00,000 किलोग्राम जौ, 4,40,000 लिटर मै और 4,40,000 लिटर जैतून का तेल दूँगा।”

11 सूर के बादशाह हीराम ने खत लिखकर सुलेमान को जवाब दिया, “रब अपनी क्रौम को प्यार करता है, इसलिए उसने आपको उसका बादशाह बनाया है। 12 रब इसराईल के खुदा की हम्द हो जिसने आसमानों-ज़मीन को खलक किया है कि उसने दाऊद बादशाह को इतना दानिशमंद बेटा अता किया है। उस की तमजीद हो कि यह अक्लमंद और समझदार बेटा रब के लिए घर और अपने लिए महल तामीर करेगा। 13 मैं आपके पास एक माहिर और समझदार कारीगर को भेज देता हूँ जिसका नाम हीराम-अबी है। 14 उस की इसराईली माँ, दान के कबीले की है जबकि उसका बाप सूर का है। हीराम सोने-चाँदी, पीतल, लोहे, पत्थर और लकड़ी की चीज़ें बनाने में महारत रखता है। वह नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग का कपड़ा और कतान का बारीक कपड़ा बना सकता है। वह हर किस्म की कंदाकारी में भी माहिर है। जो भी मनसूबा उसे पेश किया जाए उसे वह पायाए-तकमील तक पहुँचा सकता है। यह आदमी आपके और आपके मुअज़्ज़ बाप दाऊद के कारीगरों के साथ मिलकर काम करेगा। 15 चुनौचे जिस गंदुम, जौ, जैतून के तेल और मै का जिक्र मेरे आका ने किया वह अपने खादिमों को भेज दें। 16 मुआवज़े में हम आपके लिए दरकार दरख्तों को लुबनान में कटवाएँगे और उनके बेड़े बाँधकर समुंद्र के ज़रीए याफ़ा शहर तक पहुँचा देंगे। वहाँ से आप उन्हें यरूशलम ले जा सकेंगे।”

17 सुलेमान ने इसराईल में आबाद तमाम गैरमुल्कियों की मर्दुमशुमारी करवाई। (उसके बाप दाऊद ने भी उनकी मर्दुमशुमारी करवाई थी।) मालूम हुआ कि इसराईल में 1,53,600 गैरमुल्की रहते हैं। 18 इनमें से उसने 80,000 को पहाड़ी कानों में लगाया ताकि वह पत्थर निकालें जबकि 70,000 अफ़राद की ज़िम्मादारी यह पत्थर यरूशलम लाना थी। इन सब पर सुलेमान ने 3,600 निगरान मुकर्रर किए।

3

रब के घर की तामीर

1 सुलेमान ने रब के घर को यरूशलम की पहाड़ी मोरियाह पर तामीर किया। उसका बाप दाऊद यह मक़ाम मुकर्रर कर चुका था। यहीं जहाँ पहले उरनान यानी अरौनाह यबूसी अपना अनाज गाहता था रब दाऊद पर ज़ाहिर हुआ था। 2 तामीर का यह काम सुलेमान की हुकूमत के चौथे साल के दूसरे माह और उसके दूसरे दिन शुरू हुआ।

3 मक़ान की लंबाई 90 फुट और चौड़ाई 30 फुट थी। 4 सामने एक बरामदा बनाया गया जो इमारत जितना चौड़ा यानी 30 फुट और 30 फुट ऊँचा था। उस की अंदरूनी दीवारों पर उसने ख़ालिस सोना चढ़ाया। 5 बड़े हाल की दीवारों पर उसने ऊपर से लेकर नीचे तक जूनीपर की लकड़ी के तख्ते लगाए, फिर तख्तों पर ख़ालिस सोना मँढवाकर उन्हें खज़ूर के दरख्तों और जंजीरों की तस्वीरों से आरास्ता किया। 6 सुलेमान ने रब के घर को जवाहर से भी सजाया। जो सोना इस्तेमाल हुआ वह परवायम से मँगवाया गया था। 7 सोना मक़ान, तमाम शहतीरों, दहलीज़ों, दीवारों और दरवाज़ों पर मँढा गया। दीवारों पर कस्बू फ़रिशतों की तस्वीरें भी कंदा की गईं।

मुक़द्दसतरीन कमरा

8 इमारत का सबसे अंदरूनी कमरा बनाम मुक़द्दसतरीन कमरा इमारत जैसा चौड़ा यानी 30 फुट था। उस की लंबाई भी 30 फुट थी। इस कमरे की तमाम दीवारों पर 20,000 किलोग्राम से ज़ायद सोना मँढा गया। 9 सोने की कीलों का वज़न तकरीबन 600 ग्राम था। बालाखानों की दीवारों पर भी सोना मँढा गया।

10 फिर सुलेमान ने कस्बू फ़रिशतों के दो मुजस्समे बनवाए जिन्हें मुक़द्दसतरीन कमरे में रखा गया। उन पर भी सोना चढ़ाया गया। 11-13 जब दोनों फ़रिशतों को एक दूसरे के साथ मुक़द्दसतरीन कमरे में खड़ा किया गया तो उनके चार परों की मिलकर लंबाई 30 फुट थी। हर एक के दो पर थे, और हर पर की लंबाई साढ़े सात सात फुट थी। उन्हें मुक़द्दसतरीन कमरे में यों एक दूसरे के साथ खड़ा किया गया कि हर फ़रिशते का एक पर दूसरे के पर से लगता जबकि दाईं और बाईं तरफ़ हर एक का दूसरा पर दीवार के साथ लगता था। वह अपने पाँवों पर खड़े बड़े हाल की तरफ़ देखते थे। 14 मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े पर सुलेमान ने बारीक कतान से बुना हुआ परदा लगवाया। वह नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग के धागे से सजा हुआ था, और उस पर कस्बू फ़रिशतों की तस्वीरें थीं।

रब के घर के दरवाज़े पर दो सतून

15 सुलेमान ने दो सतून ढलवाकर रब के घर के दरवाज़े के सामने खड़े किए। हर एक 27 फुट लंबा था, और हर एक पर एक बालाई हिस्सा रखा गया जिसकी ऊँचाई साढ़े 7 फुट थी। 16 इन बालाई हिस्सों को जंजीरों से सजाया गया जिनसे सौ अनार लटके हुए थे। 17 दोनों सतूनों को सुलेमान ने रब के घर के दरवाज़े के दाईं और बाईं तरफ़ खड़ा किया। दहने हाथ के सतून का नाम उसने ‘यकीन’ और बाएँ हाथ के सतून का नाम ‘बोअज़’ रखा।

4

कुरबानगाह और समुंद्र नामी हौज़

1 सुलेमान ने पीतल की एक कुरबानगाह भी बनवाई जिसकी लंबाई 30 फुट, चौड़ाई 30 फुट और ऊँचाई 15 फुट थी।

2 इसके बाद उसने पीतल का बड़ा गोल हौज़ ढलवाया जिसका नाम 'समुंदर' रखा गया। उस की ऊँचाई साढ़े 7 फुट, उसका मुँह 15 फुट चौड़ा और उसका घेरा तकरीबन 45 फुट था। 3 हौज़ के किनारे के नीचे बैलों की दो कतारें थीं। फ़ी फुट तकरीबन 6 बैल थे। बैल और हौज़ मिलकर ढाले गए थे। 4 हौज़ को बैलों के 12 मुजस्समों पर रखा गया। तीन बैलों का सूख शिमाल की तरफ़, तीन का सूख मगरिब की तरफ़, तीन का सूख जुनूब की तरफ़ और तीन का सूख मशरिक की तरफ़ था। उनके पिछले हिस्से हौज़ की तरफ़ थे, और हौज़ उनके कंधों पर पड़ा था। 5 हौज़ का किनारा प्याले बल्कि सोसन के फूल की तरह बाहर की तरफ़ मुड़ा हुआ था। उस की दीवार तकरीबन तीन इंच मोटी थी, और हौज़ में पानी के तकरीबन 66,000 लिटर समा जाते थे।

6 सुलेमान ने 10 बासन ढलवाए। पाँच को रब के घर के दाँए हाथ और पाँच को उसके बाएँ हाथ खड़ा किया गया। इन बासनों में गोश्त के वह टुकड़े धोए जाते जिन्हें भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर जलाना था। लेकिन 'समुंदर' नामी हौज़ इमामों के इस्तेमाल के लिए था। उसमें वह नहाते थे।

सोने के शमादान और मेजें

7 सुलेमान ने सोने के 10 शमादान मुकररा तफसीलात के मुताबिक बनवाकर रब के घर में रख दिए, पाँच को दाईं तरफ़ और पाँच को बाईं तरफ़। 8 दस मेजें भी बनाकर रब के घर में रखी गईं, पाँच को दाईं तरफ़ और पाँच को बाईं तरफ़। इन चीज़ों के अलावा सुलेमान ने छिड़काव के सोने के 100 कटोरे बनवाए।

सहन

9 फिर सुलेमान ने वह अंदरूनी सहन बनवाया जिसमें सिर्फ़ इमामों को दाखिल होने की इजाज़त थी। उसने बड़ा सहन भी उसके दरवाज़ों समेत बनवाया। दरवाज़ों के किवाड़ों पर पीतल चढ़ाया गया। 10 'समुंदर' नामी हौज़ को सहन के जुनूब-मशरिक में रखा गया।

उस सामान की फ़हरिस्त जो हीराम ने तैयार किया

11 हीराम ने बासन, बेलचे और छिड़काव के कटोरे भी बनाए। यों उसने अल्लाह के घर में वह सारा काम मुकम्मल किया जिसके लिए सुलेमान बादशाह ने उसे बुलाया था। उसने ज़ैल की चीज़ें बनाई :

12 दो सतून,

सतूनों पर लगे प्यालानुमा बालाई हिस्से,

बालाई हिस्सों पर लगी जंजीरों का डिज़ायन,

13 जंजीरों के ऊपर लगे अनार (फ़ी बालाई हिस्सा 200 अदद),

14 हथगाड़ियाँ,

इन पर के पानी के बासन,

15 हौज़ बनाम समुंदर,

इसे उठानेवाले बैल के 12 मुजस्समे,

16 बालटियाँ, बेलचे, गोश्त के काँटे।

तमाम सामान जो हीराम-अबी ने सुलेमान के हुक्म पर रब के घर के लिए बनाया पीतल से ढालकर पालिश किया गया था। 17 बादशाह ने उसे वादीए-यरदन में सुक्कात और ज़रतान के दरमियान ढलवाया। वहाँ एक फ़ौडरी थी जहाँ हीराम ने गारे से साँचे बनाकर हर चीज़ ढाल दी।

18 इस सामान के लिए सुलेमान बादशाह ने इतना ज़्यादा पीतल इस्तेमाल किया कि उसका कुल वज़न मालूम न हो सका।

रब के घर के अंदर सोने का सामान

19 अल्लाह के घर के अंदर के लिए सुलेमान ने दर्जे-ज़ैल सामान बनवाया :

सोने की कुरबानगाह,

सोने की वह मेजें जिन पर रब के लिए मखसूस रोटियाँ पड़ी रहती थीं,

20 खालिस सोने के वह शमादान और चराग जिनको क़वायद के मुताबिक मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने जलना था,

21 खालिस सोने के वह फूल जिनसे शमादान आरास्ता थे,

खालिस सोने के चराग और बत्ती को बुझाने के औज़ार,

22 चराग को कतरने के खालिस सोने के औज़ार, छिड़काव के खालिस सोने के कटोरे और प्याले,

जलते हुए कोयले के लिए खालिस सोने के बरतन,

मुक़द्दसतरीन कमरे और बड़े हाल के दरवाज़े।

5

1 रब के घर की तकमील पर सुलेमान ने वह सोना-चाँदी और बाक़ी तमाम क़ीमती चीज़ें रब के घर के खज़ानों में रखवा दीं जो उसके बाप दाऊद ने अल्लाह के लिए मखसूस की थीं।

अहद का संदूक रब के घर में लाया जाता है

2 फिर सुलेमान ने इसराईल के तमाम बुजुर्गों और कबीलों और कुंभों के तमाम सरपरस्तों को अपने पास यरूशलम में बुलाया, क्योंकि रब के अहद का संदूक अब तक यरूशलम के उस हिस्से में था जो 'दाऊद का शहर' या सिय्यून कहलाता है। सुलेमान चाहता था कि क्रौम के नुमाइंदे हाज़िर हों जब संदूक को वहाँ से रब के घर में पहुँचाया जाए। 3 चुनौचे इसराईल के तमाम मर्द साल के सातवें महीने * में बादशाह के पास यरूशलम में जमा हुए। इसी महीने में झोंपड़ियों की ईद मनाई जाती थी।

4 जब सब जमा हुए तो लावी रब के संदूक को उठाकर 5 रब के घर में लाए। इमामों के साथ मिलकर उन्होंने मुलाकात के खैमे को भी उसके तमाम मुकद्दस सामान समेत रब के घर में पहुँचाया। 6 वहाँ संदूक के सामने सुलेमान बादशाह और बाकी तमाम जमाशुदा इसराईलियों ने इतनी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल कुरबान किए कि उनकी तादाद गिनी नहीं जा सकती थी।

7 इमामों ने रब के अहद का संदूक पिछले यानी मुकद्दसतरीन कमरे में लाकर कस्बी फ़रिशतों के परों के नीचे रख दिया। 8 फ़रिशतों के पर पूरे संदूक पर उस की उठाने की लकड़ियों समेत फैले रहे। 9 तो भी उठाने की यह लकड़ियाँ इतनी लंबी थी कि उनके सिरे सामनेवाले यानी मुकद्दस कमरे से नज़र आते थे। लेकिन वह बाहर से देखे नहीं जा सकते थे। आज तक वह वहीं मौजूद हैं। 10 संदूक में सिर्फ पत्थर की वह दो तख्तियाँ थीं जिनको मूसा ने होरिब यानी कोहे-सीना के दामन में उसमें रख दिया था, उस वक़्त जब रब ने मिसर से निकले हुए इसराईलियों के साथ अहद बाँधा था। 11 फिर इमाम मुकद्दस कमरे से निकलकर सहन में आए।

जितने इमाम आए थे उन सबने अपने आपको पाक-साफ़ किया हुआ था, खाह उस वक़्त उनके गुरोह की रब के घर में झूटी थी या नहीं। 12 लावियों के तमाम गुलूकार भी हाज़िर थे। उनके राहनुमा आसफ़, हैमान और यदूतन अपने बेटों और रिश्तेदारों समेत सब बारीक कतान के लिबास पहने हुए कुरबानगाह के मशरिक में खड़े थे। वह झाँझ, सितार और सरोद बजा रहे थे, जबकि उनके साथ 120 इमाम तुरम फूँक रहे थे। 13 गानेवाले और तुरम बजानेवाले मिलकर रब की सताइश कर रहे थे। तुरमों, झाँझों और बाकी साजों के साथ उन्होंने बुलंद आवाज़ से रब की तमजीद में गीत गाया, “वह भला है, और उस की शफ़क़त अबदी है।”

तब रब का घर एक बादल से भर गया। 14 इमाम रब के घर में अपनी खिदमत अंजाम न दे सके, क्योंकि अल्लाह का घर उसके जलाल के बादल से मामूर हो गया था।

6

1 यह देखकर सुलेमान ने दुआ की, “रब ने फ़रमाया है कि मैं घने बादल के अंधरे में रहूँगा। 2 मैंने तेरे लिए अज़ीम सुकूनतगाह बनाई है, एक मक़ाम जो तेरी अबदी सुकूनत के लायक है।”

रब के घर की मख़सूसियत पर सुलेमान की तक्रीर

3 फिर बादशाह ने मुडकर रब के घर के सामने खड़ी इसराईल की पूरी जमात की तरफ़ स्ख़ किया। उसने उन्हें बरकत देकर कहा,

4 “रब इसराईल के खुदा की तारीफ़ हो जिसने वह वादा पूरा किया है जो उसने मेरे बाप दाऊद से किया था। क्योंकि उसने फ़रमाया, 5 ‘जिस दिन मैं अपनी क्रौम को मिसर से निकाल लाया उस दिन से लेकर आज तक मैंने न कभी फ़रमाया कि इसराईली कबीलों के किसी शहर में मेरे नाम की ताज़ीम में घर बनाया जाए, न किसी को मेरी क्रौम इसराईल पर हुकूमत करने के लिए मुकर्रर किया। 6 लेकिन अब मैंने यरूशलम को अपने नाम की सुकूनतगाह और दाऊद को अपनी क्रौम इसराईल का बादशाह बनाया है।’

7 मेरे बाप दाऊद की बड़ी खाहिश थी कि रब इसराईल के खुदा के नाम की ताज़ीम में घर बनाए। 8 लेकिन रब ने एतराज़ किया, ‘मैं खुश हूँ कि तू मेरे नाम की ताज़ीम में घर तामीर करना चाहता है, 9 लेकिन तू नहीं बल्कि तेरा बेटा ही उसे बनाएगा।’

10 और वाकई, रब ने अपना वादा पूरा किया है। मैं रब के वादे के ऐन मुताबिक़ अपने बाप दाऊद की जगह इसराईल का बादशाह बनकर तख़्त पर बैठ गया हूँ। और अब मैंने रब इसराईल के खुदा के नाम की ताज़ीम में घर भी बनाया है। 11 उसमें मैंने वह संदूक रख दिया है जिसमें शरीअत की तख्तियाँ पड़ी हैं, उस अहद की तख्तियाँ जो रब ने इसराईलियों से बाँधा था।”

रब के घर की मख़सूसियत पर सुलेमान की दुआ

12 फिर सुलेमान ने इसराईल की पूरी जमात के देखते देखते रब की कुरबानगाह के सामने खड़े होकर अपने हाथ आसमान की तरफ़ उठाए।

13 उसने इस मौक़े के लिए पीतल का एक चबूतरा बनवाकर उसे बैरूनी सहन के बीच में रखवा दिया था। चबूतरा साढ़े 7 फुट लंबा, साढ़े 7 फुट चौड़ा और साढ़े 4 फुट ऊँचा था। अब सुलेमान उस पर चढ़कर पूरी जमात के देखते देखते झुक गया। अपने हाथों को आसमान की तरफ़ उठाकर 14 उसने दुआ की,

“ऐ रब इसराईल के खुदा, तूझ जैसा कोई खुदा नहीं है, न आसमान और न ज़मीन पर। तू अपना वह अहद कायम रखता है जिसे तूने अपनी क्रौम के साथ बाँधा है और अपनी मेहरबानी उन सब पर जाहिर करता है जो पूरे दिल से तेरी राह पर चलते हैं। 15 तूने अपने खादिम दाऊद से किया हुआ वादा पूरा किया है। जो बात तूने अपने मुँह से मेरे बाप से की वह तूने अपने हाथ से आज ही पूरी की है। 16 ऐ रब इसराईल के खुदा, अब अपनी दूसरी बात भी पूरी कर जो तूने अपने खादिम दाऊद से की थी। क्योंकि तूने मेरे बाप से वादा किया था, ‘अगर तेरी औलाद तेरी तरह

* 5:3 सितंबर ता अक्तूबर

अपने चाल-चलन पर ध्यान देकर मेरी शरीअत के मुताबिक मेरे हुजूर चलती रहे तो इसराईल पर उस की हुक्मत हमेशा तक कायम रहेगी।' 17 ऐ रब इसराईल के खुदा, अब बराहे-करम अपना यह वादा पूरा कर जो तूने अपने खादिम दाऊद से किया है।

18 लेकिन क्या अल्लाह वाकई ज़मीन पर इनसान के दरमियान सुकूनत करेगा? नहीं, तू तो बुलंदतरीन आसमान में भी समा नहीं सकता! तो फिर यह मकान जो मैंने बनाया है किस तरह तेरी सुकूनतगाह बन सकता है? 19 ऐ रब मेरे खुदा, तो भी अपने खादिम की दुआ और इल्तिजा सुन जब मैं तेरे हुजूर पुकारते हुए इलतमास करता हूँ 20 कि बराहे-करम दिन-रात इस इमारत की निगरानी कर! क्योंकि यह वह जगह है जिसके बारे में तूने खुद फरमाया, 'यहाँ मेरा नाम सुकूनत करेगा।' चुनाँचे अपने खादिम की गुज़ारिश सुन जो मैं इस मक़ाम की तरफ़ सख़ किए हुए करता हूँ। 21 जब हम इस मक़ाम की तरफ़ सख़ करके दुआ करें तो अपने खादिम और अपनी क़ौम की इल्तिजाएँ सुन। आसमान पर अपने तख़्त से हमारी सुन। और जब सुनेगा तो हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर!

22 अगर किसी पर इलज़ाम लगाया जाए और उसे यहाँ तेरी क़ुरबानगाह के सामने लाया जाए ताकि हलफ़ उठाकर वादा करे कि मैं बेकुसूर हूँ 23 तो बराहे-करम आसमान पर से सुनकर अपने खादिमों का इनसाफ़ कर। कुसूरवार को सज़ा देकर उसके अपने सर पर वह कुछ आने दे जो उससे सरज़द हुआ है, और बेकुसूर को बेइलज़ाम करार दे और उस की रास्तबाज़ी का बदला दे।

24 हो सकता है किसी वक़्त तेरी क़ौम इसराईल तेरा गुनाह करे और नतीजे में दुश्मन के सामने शिकस्त खाए। अगर इसराईली आख़िरकार तेरे पास लौट आएँ और तेरे नाम की तमज़ीद करके यहाँ इस घर में तेरे हुजूर दुआ और इलतमास करें 25 तो आसमान पर से उनकी फ़रियाद सुन लेना। अपनी क़ौम इसराईल का गुनाह मुआफ़ करके उन्हें दुबारा उस मुल्क में वापस लाना जो तूने उन्हें और उनके बापदादा को दे दिया था।

26 हो सकता है इसराईली तेरा इतना संगीन गुनाह करें कि काल पड़े और बड़ी देर तक बारिश न बरसे। अगर वह आख़िरकार इस घर की तरफ़ सख़ करके तेरे नाम की तमज़ीद करें और तेरी सज़ा के बाइस अपना गुनाह छोड़कर लौट आएँ 27 तो आसमान पर से उनकी फ़रियाद सुन लेना। अपने खादिमों और अपनी क़ौम इसराईल को मुआफ़ कर, क्योंकि तू ही उन्हें अच्छी राह की तालीम देता है। तब उस मुल्क पर दुबारा बारिश बरसा दे जो तूने अपनी क़ौम को मीरास में दे दिया है।

28 हो सकता है इसराईल में काल पड़ जाए, अनाज की फ़सल किसी बीमारी, फफूँदी, टिट्टियों या कीड़ों से मुतअस्सिर हो जाए, या दुश्मन किसी शहर का मुहासरा करे। जो भी मुसीबत या बीमारी हो, 29 अगर कोई इसराईली या तेरी पूरी क़ौम उसका सबब जानकर अपने हाथों को इस घर की तरफ़ बढ़ाए और तुझसे इलतमास करे 30 तो आसमान पर अपने तख़्त से उनकी फ़रियाद सुन लेना। उन्हें मुआफ़ करके हर एक को उस की तमाम हरकतों का बदला दे, क्योंकि सिर्फ़ तू ही हर इनसान के दिल को जानता है। 31 फिर जितनी देर वह उस मुल्क में ज़िंदगी गुज़ारेंगे जो तूने हमारे बापदादा को दिया था उतनी देर वह तेरा ख़ौफ़ मानकर तेरी राहों पर चलते रहेंगे।

32 आइंदा परदेसी भी तेरे अज़ीम नाम, तेरी बड़ी कुदरत और तेरे ज़बरदस्त कामों के सबब से आएँगे और इस घर की तरफ़ सख़ करके दुआ करेंगे। अगरचे वह तेरी क़ौम इसराईल के नहीं होंगे 33 तो भी आसमान पर से उनकी फ़रियाद सुन लेना। जो भी दरखास्त वह पेश करें वह पूरी करना ताकि दुनिया की तमाम अक़वाम तेरा नाम जानकर तेरी क़ौम इसराईल की तरह ही तेरा ख़ौफ़ मानें और जान लें कि जो इमारत मैंने तामीर की है उस पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है।

34 हो सकता है तेरी क़ौम के मर्द तेरी हिदायत के मुताबिक़ अपने दुश्मन से लड़ने के लिए निकलें। अगर वह तेरे चुने हुए शहर और उस इमारत की तरफ़ सख़ करके दुआ करें जो मैंने तेरे नाम के लिए तामीर की है 35 तो आसमान पर से उनकी दुआ और इलतमास सुनकर उनके हक़ में इनसाफ़ कायम रखना।

36 हो सकता है वह तेरा गुनाह करें, ऐसी हरकतें तो हम सबसे सरज़द होती रहती हैं, और नतीजे में तू नाराज़ होकर उन्हें दुश्मन के हवाले कर दे जो उन्हें कैद करके किसी दूर-दराज़ या क़रीबी मुल्क में ले जाए। 37 शायद वह जिलावतनी में तौबा करके दुबारा तेरी तरफ़ रूजू करें और तुझसे इलतमास करें, 'हमने गुनाह किया है, हमसे ग़लती हुई है, हमने बेदीन हरकतें की हैं।'

38 अगर वह ऐसा करके अपनी कैद के मुल्क में अपने पूरे दिलो-जान से दुबारा तेरी तरफ़ रूजू करें और तेरी तरफ़ से बापदादा को दिए गए मुल्क, तेरे चुने हुए शहर और उस इमारत की तरफ़ सख़ करके दुआ करें जो मैंने तेरे नाम के लिए तामीर की है 39 तो आसमान पर अपने तख़्त से उनकी दुआ और इलतमास सुन लेना। उनके हक़ में इनसाफ़ कायम करना, और अपनी क़ौम के गुनाहों को मुआफ़ कर देना। 40 ऐ मेरे खुदा, तेरी आँखें और तेरे कान उन दुआओं के लिए खुले रहें जो इस जगह पर की जाती हैं।

41 ऐ रब खुदा, उठकर अपनी आरामगाह के पास आ, तू और अहद का सद्क़ जो तेरी कुदरत का इज़हार है। ऐ रब खुदा, तेरे इमाम नजात से मुल्बबस हो जाएँ, और तेरे इमानदार तेरी भलाई की खुशी मनाएँ। 42 ऐ रब खुदा, अपने मसह किए हुए खादिम को रद्द न कर बल्कि उस शफ़क़त को याद कर जो तूने अपने खादिम दाऊद पर की है।"

1 सुलेमान की इस दुआ के इच्छिताम पर आग ने आसमान पर से नाज़िल होकर भस्म होनेवाली और जबह की कुरबानियों को भस्म कर दिया। साथ साथ रब का घर उसके जलाल से यों मामूर हुआ 2 कि इमाम उसमें दाखिल न हो सके। 3 जब इसराईलियों ने देखा कि आसमान पर से आग नाज़िल हुई है और घर रब के जलाल से मामूर हो गया है तो वह मुँह के बल झुककर रब की हम्दो-सना करके गीत गाने लगे, “वह भला है, और उस की शफ़क़त अबदी है।”

4-5 फिर बादशाह और तमाम क्रौम ने रब के हुज़ूर कुरबानियाँ पेश करके अल्लाह के घर को मखसूस किया। इस सिलसिले में सुलेमान ने 22,000 गाय-बैलों और 1,20,000 भेड़-बकरियों को कुरबान किया। 6 इमाम और लावी अपनी अपनी ज़िम्मादारियों के मुताबिक़ खड़े थे। लावी उन साज़ों को बजा रहे थे जो दाऊद ने रब की सताइश करने के लिए बनवाए थे। साथ साथ वह हम्द का वह गीत गा रहे थे जो उन्होंने दाऊद से सीखा था, “उस की शफ़क़त अबदी है।” लावियों के मुकाबिल इमाम तुरम बजा रहे थे जबकि बाकी तमाम लोग खड़े थे। 7 सुलेमान ने सहन का दरमियानी हिस्सा कुरबानियाँ चढ़ाने के लिए मखसूस किया। वजह यह थी कि पीतल की कुरबानगाह इतनी कुरबानियाँ पेश करने के लिए छोटी थी, क्योंकि भस्म होनेवाली कुरबानियों और गल्ला की नज़रों की तादाद बहुत ज़्यादा थी। इसके अलावा सलामती की बेशुमार कुरबानियों की चरबी को भी जलाना था।

8-9 ईद 14 दिनों तक मनाई गई। पहले हफ़ते में सुलेमान और तमाम इसराईल ने कुरबानगाह की मखसूसियत मनाई और दूसरे हफ़ते में झोंपड़ियों की ईद। इस ईद में बहुत ज़्यादा लोग शरीक हुए। वह दूर-दराज़ इलाकों से यरूशलम आए थे, शिमाल में लबो-हमात से लेकर जुनूब में उस वादी तक जो मिसर की सरहद थी। आखिरी दिन पूरी जमात ने इच्छितामी जशन मनाया। 10 यह सातवें माह के 23वें दिन वृक्षपज़ीर हुआ। इसके बाद सुलेमान ने इसराईलियों को सख़सत किया। सब शादमान और दिल से खुश थे कि रब ने दाऊद, सुलेमान और अपनी क्रौम इसराईल पर इतनी मेहरबानी की है।

रब सुलेमान से हमकलाम होता है

11 चुनौचे सुलेमान ने रब के घर और शाही महल को तकमील तक पहुँचाया। जो कुछ भी उसने ठान लिया था वह पूरा हुआ। 12 एक रात रब उस पर जाहिर हुआ और कहा,

“मैंने तेरी दुआ को सुनकर तय कर लिया है कि यह घर वही जगह हो जहाँ तुम मुझे कुरबानियाँ पेश कर सको। 13 जब कभी मैं बारिश का सिलसिला रोक्कूँ, या फ़सलें ख़राब करने के लिए टिड़ियाँ भेजूँ या अपनी क्रौम में वबा फैलाने दूँ 14 तो अगर मेरी क्रौम जो मेरे नाम से कहलाती है अपने आपको पस्त करे और दुआ करके मेरे चेहरे की तालिब हो और अपनी शरीर राहों से बाज़ आए तो फिर मैं आसमान पर से उस की सुनकर उसके गुनाहों को मुआफ़ कर दूँगा और मुल्क को बहाल करूँगा। 15 अब से जब भी यहाँ दुआ माँगी जाए तो मेरी आँखें खुली रहेंगी और मेरे कान उस पर ध्यान देंगे। 16 क्योंकि मैंने इस घर को चुनकर मखसूसो-मुक़द्दस कर रखा है ताकि मेरा नाम हमेशा तक यहाँ कायम रहे। मेरी आँखें और दिल हमेशा इसमें हाज़िर रहेंगे। 17 जहाँ तक तेरा ताल्लुक़ है, अपने बाप दाऊद की तरह मेरे हुज़ूर चलता रह। क्योंकि अगर तू मेरे तमाम अहक़ाम और हिदायात की पैरवी करता रहे 18 तो मैं तेरी इसराईल पर हुक्मत कायम रखूँगा। फिर मेरा वह वादा कायम रहेगा जो मैंने तेरे बाप दाऊद से अहद बाँधकर किया था कि इसराईल पर तेरी औलाद की हुक्मत हमेशा तक कायम रहेगी।

19 लेकिन ख़बरदार! अगर तू मुझसे दूर होकर मेरे दिए गए अहक़ाम और हिदायात को तर्क करे बल्कि दीगर माबूदों की तरफ़ रूज़ करके उनकी खिदमत और परस्तिश करे 20 तो मैं इसराईल को जड़ से उखाड़कर उस मुल्क से निकाल दूँगा जो मैंने उनको दे दिया है। न सिर्फ़ यह बल्कि मैं इस घर को भी रद्द कर दूँगा जो मैंने अपने नाम के लिए मखसूसो-मुक़द्दस कर लिया है। उस वक़्त मैं इसराईल को तमाम अक़वाम में मज़ाक़ और लान-तान का निशाना बना दूँगा। 21 इस शानदार घर की बुरी हालत देखकर यहाँ से गुज़रनेवाले तमाम लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, और वह पछेंगे, ‘रब ने इस मुल्क और इस घर से ऐसा सुल्क क्यों किया?’ 22 तब लोग जवाब देंगे, ‘इसलिए कि गो रब उनके बापदादा का ख़ुदा उन्हें मिसर से निकालकर यहाँ लाया तो भी यह लोग उसे तर्क करके दीगर माबूदों से चिमट गए हैं। चूँकि वह उनकी परस्तिश और खिदमत करने से बाज़ न आए इसलिए उसने उन्हें इस सारी मुसीबत में डाल दिया है।’”

8

सुलेमान की मुख़्तलिफ़ मुहिमात

1 रब के घर और शाही महल को तामीर करने में 20 साल लग गए थे। 2 इसके बाद सुलेमान ने वह आबादियाँ नए सिरे से तामीर कीं जो हीराम ने उसे दे दी थीं। इनमें उसने इसराईलियों को बसा दिया।

3 एक फ़ौज़ी मुहिम के दौरान उसने हमात-ज़ोबाह पर हमला करके उस पर कब्ज़ा कर लिया। 4 इसके अलावा उसने हमात के इलाक़े में गोदाम के शहर बनाए। रेगिस्तान के शहर तदमूर में उसने बहुत-सा तामीरी काम कराया 5-6 और इसी तरह बालाई और नशेबी बैत-हौस्न और बालात में भी। इन शहरों के लिए उसने फ़सील और कुंडेवाले दरवाज़े बनवाए। सुलेमान ने अपने गोदामों के लिए और अपने रथों और घोड़ों को रखने के लिए भी शहर बनवाए।

जो कुछ भी वह यरूशलम, लुबनान या अपनी सलतनत की किसी और जगह बनवाना चाहता था वह उसने बनवाया। 7-8 जिन आदमियों की सुलेमान ने बेगार पर भरती की वह इसराईली नहीं थे बल्कि हिती, अमोरी, फरिज़्ज़ी, हिक्वी और यबूसी यानी कनान के पहले बाशिंदों की वह औलाद थे जो बाकी रह गए थे। मुल्क पर कब्ज़ा करते वक़्त इसराईली इन कौमों को पूरे तौर पर मिटा न सके, और आज तक इनकी औलाद को इसराईल के लिए बेगार में काम करना पड़ता है। 9 लेकिन सुलेमान ने इसराईलियों को ऐसे काम करने पर मजबूर न किया बल्कि वह उसके फ़ौज़ी और रथों के फ़ौज़ियों के अफ़सर बन गए, और उन्हें रथों और घोड़ों पर मुक़र्रर किया गया। 10 सुलेमान के तामीरी काम पर भी 250 इसराईली मुक़र्रर थे जो ज़िलों पर मुक़र्रर अफ़सरों के ताबे थे। यह लोग तामीरी काम करनेवालों की निगरानी करते थे।

11 फ़िरौन की बेटी यरूशलम के पुराने हिस्से बनाम 'दाऊद का शहर' से उस महल में मुंतक़िल हुई जो सुलेमान ने उसके लिए तामीर किया था, क्योंकि सुलेमान ने कहा, "लाज़िम है कि मेरी अहलिया इसराईल के बादशाह दाऊद के महल में न रहे। चूँकि रब का संदूक यहाँ से गुज़रा है, इसलिए यह जगह मुक़द्दस है।"

रब के घर में खिदमत की तरतीब

12 उस वक़्त से सुलेमान रब को रब के घर के बड़े हाल के सामने की कुरबानगाह पर भस्म होनेवाली कुरबानियाँ पेश करता था। 13 जो कुछ भी मूसा ने रोज़ाना की कुरबानियों के मुताल्लिक़ फ़रमाया था उसके मुताबिक़ बादशाह कुरबानियाँ चढ़ाता था। इनमें वह कुरबानियाँ भी शामिल थीं जो सबत के दिन, नए चँद की ईद पर और साल की तीन बड़ी ईदों पर यानी फ़सह की ईद, हफ़्तों की ईद और झोंपड़ियों की ईद पर पेश की जाती थीं। 14 सुलेमान ने इमामों के मुख़लिफ़ ग़ुरोहों को वह ज़िम्मादारियाँ सौंपीं जो उसके बाप दाऊद ने मुक़र्रर की थीं। लावियों की ज़िम्मादारियाँ भी मुक़र्रर की गईं। उनकी एक ज़िम्मादारी रब की हम्दो-सना करने में परस्तारों की राहनुमाई करनी थी। नीज़, उन्हें रोज़ाना की ज़रूरियात के मुताबिक़ इमामों की मदद करनी थी। रब के घर के दरवाज़ों की पहरादारी भी लावियों की एक खिदमत थी। हर दरवाज़े पर एक अलग ग़ुरोह की झूटी लगाई गई। यह भी मर्दे-ख़ुदा दाऊद की हिदायात के मुताबिक़ हुआ। 15 जो भी हुक्म दाऊद ने इमामों, लावियों और खज़ानों के मुताल्लिक़ दिया था वह उन्होंने पूरा किया।

16 यों सुलेमान के तमाम मनसूबे रब के घर की बुनियाद रखने से लेकर उस की तकमील तक पूरे हुए।

17 बाद में सुलेमान अस्सून-जाबर और ऐलात गया। यह शहर अदोम के साहिल पर वाके थे। 18 वहाँ हीराम बादशाह ने अपने जहाज़ और तजरबाकार मल्लाह भेजे ताकि वह सुलेमान के आदमियों के साथ मिलकर जहाज़ों को चलाएँ। उन्होंने ओफ़ीर तक सफ़र किया और वहाँ से सुलेमान के लिए तकरीबन 15,000 किलोग्राम सोना लेकर आए।

9

सबा की मलिका सुलेमान से मिलती है

1 सुलेमान की शोहरत सबा की मलिका तक पहुँच गई। जब उसने उसके बारे में सुना तो वह सुलेमान से मिलने के लिए रवाना हुई ताकि उसे मुश्किल पहेलियाँ पेश करके उस की दानिशमंदी जाँच ले। वह निहायत बड़े काफ़िले के साथ यरूशलम पहुँची जिसके ऊँट बलसान, कसरत के सोने और कीमती जवाहर से लदे हुए थे।

मलिका की सुलेमान से मुलाक़ात हुई तो उसने उससे वह तमाम मुश्किल सवालात पूछे जो उसके ज़हन में थे। 2 सुलेमान उसके हर सवाल का जवाब दे सका। कोई भी बात इतनी पेचीदा नहीं थी कि वह उसका मतलब मलिका को बता न सकता। 3 सबा की मलिका सुलेमान की हिकमत और उसके नए महल से बहुत मुतअस्सिर हुई। 4 उसने बादशाह की मेज़ों पर के मुख़लिफ़ खाने देखे और यह कि उसके अफ़सर किस तरतीब से उस पर बिठाए जाते थे। उसने बैरों की खिदमत, उनकी शानदार वरदियों और साक्रियों की शानदार वरदियों पर भी गौर किया। जब उसने इन बातों के अलावा भस्म होनेवाली वह कुरबानियाँ भी देखीं जो सुलेमान रब के घर में चढ़ाता था तो मलिका हक्का-बक्का रह गई।

5 वह बोल उठी, "वाक़ई, जो कुछ मैंने अपने मुल्क में आपके शाहकारों और हिकमत के बारे में सुना था वह दुस्त है। 6 जब तक मैंने ख़ुद आकर यह सब कुछ अपनी आँखों से न देखा मुझे यकीन नहीं आता था। लेकिन हकीकत में मुझे आपकी ज़बरदस्त हिकमत के बारे में आधा भी नहीं बताया गया था। वह उन रिपोर्टों से कहीं ज़्यादा है जो मुझ तक पहुँची थीं। 7 आपके लोग कितने मुबारक हैं! आपके अफ़सर कितने मुबारक हैं जो मुसलसल आपके सामने खड़े रहते और आपकी दानिश भरी बातें सुनते हैं! 8 रब आपके ख़ुदा की तमज़ीद हो जिसने आपको पसंद करके अपने तख़्त पर बिठाया ताकि रब अपने ख़ुदा की खातिर हुक्मत करें। आपका ख़ुदा इसराईल से मुहब्बत रखता है, और वह उसे अबद तक कायम रखना चाहता है, इसी लिए उसने आपको उनका बादशाह बना दिया है ताकि इसाफ़ और रास्तबाज़ी कायम रखें।"

9 फिर मलिका ने सुलेमान को तकरीबन 4,000 किलोग्राम सोना, बहुत ज़्यादा बलसान और जवाहर दे दिए। पहले कभी भी उतना बलसान इसराईल में नहीं लाया गया था जितना उस वक़्त सबा की मलिका लाई।

10 हीराम और सुलेमान के आदमी ओफ़ीर से न सिर्फ़ सोना लाए बल्कि उन्होंने कीमती लकड़ी और जवाहर भी इसराईल तक पहुँचाए। 11 जितनी कीमती लकड़ी उन दिनों में यहदाह में दरामद हुई उतनी पहले कभी वहाँ लाई नहीं गई थी। इस लकड़ी से बादशाह ने रब के घर और अपने महल के लिए सीढ़ियाँ बनवाईं। यह मौसीकारों के सरोद और सितार बनाने के लिए भी इस्तेमाल हुई।

12 सुलेमान बादशाह ने अपनी तरफ से सबा की मलिका को बहुत-से तोहफे दिए। यह उन चीजों से ज्यादा थे जो मलिका अपने मुल्क से उसके पास लाई थी। जो भी मलिका चाहती थी या उसने माँगा वह उसे दिया गया। फिर वह अपने नौकर-चाकरों और अफसरों के हमराह अपने वतन वापस चली गई।

सुलेमान की दौलत और शोहरत

13 जो सोना सुलेमान को सालाना मिलता था उसका वज़न तकरीबन 23,000 किलोग्राम था। 14 इसमें वह टैक्स शामिल नहीं थे जो उसे सौदागरों, ताजिरो, अरब बादशाहों और ज़िलों के अफसरों से मिलते थे। यह उसे सोना और चाँदी देते थे।

15-16 सुलेमान बादशाह ने 200 बड़ी और 300 छोटी ढालें बनवाईं। उन पर सोना मँढ़ा गया। हर बड़ी ढाल के लिए तकरीबन 7 किलोग्राम सोना इस्तेमाल हुआ और हर छोटी ढाल के लिए साढ़े 3 किलोग्राम। सुलेमान ने उन्हें 'लुबनान का जंगल' नामी महल में महफूज़ रखा।

17 इनके अलावा बादशाह ने हाथीदाँत से आरास्ता एक बड़ा तख़्त बनवाया जिस पर ख़ालिस सोना चढ़ाया गया। 18-19 उसके हर बाजू के साथ शेरबबर का मुजस्समा था। तख़्त कुछ ऊँचा था, और बादशाह छः पाएवाली सीढ़ी पर चढ़कर उस पर बैठता था। दाईं और बाईं तरफ़ हर पाए पर शेरबबर का मुजस्समा था। पाँवों के लिए सोने की चौकी बनाई गई थी। इस किस्म का तख़्त किसी और सलतनत में नहीं पाया जाता था।

20 सुलेमान के तमाम प्याले सोने के थे, बल्कि 'लुबनान का जंगल' नामी महल में तमाम बरतन ख़ालिस सोने के थे। कोई भी चीज़ चाँदी की नहीं थी, क्योंकि सुलेमान के ज़माने में चाँदी की कोई क़दर नहीं थी। 21 बादशाह के अपने बहरी जहाज़ थे जो हीराम के बंदों के साथ मिलकर मुख़्तलिफ़ जगहों पर जाते थे। हर तीन साल के बाद वह सोने-चाँदी, हाथीदाँत, बंदरों और मोरों से लदे हुए वापस आते थे।

22 सुलेमान की दौलत और हिकमत दुनिया के तमाम बादशाहों से कहीं ज्यादा थी। 23 दुनिया के तमाम बादशाह उससे मिलने की कोशिश करते रहे ताकि वह हिकमत सुन लें जो अल्लाह ने उसके दिल में डाल दी थी। 24 साल बसाल जो भी सुलेमान के दरबार में आता वह कोई न कोई तोहफ़ा लाता। यों उसे सोने-चाँदी के बरतन, कीमती लिबास, हथियार, बलसान, घोड़े और खच्चर मिलते रहे।

25 घोड़ों और रथों को रखने के लिए सुलेमान के 4,000 थान थे। उसके 12,000 घोड़े थे। कुछ उसने रथों के लिए मखसूस किए गए शहरों में और कुछ यरूशलम में अपने पास रखे। 26 सुलेमान उन तमाम बादशाहों का हुक्मरान था जो दरियाए-फ़ुरात से लेकर फ़िलिस्तिनियों के मुल्क की मिसरी सरहद तक हुक्मत करते थे। 27 बादशाह की सरगर्मियों के बाइस चाँदी पत्थर जैसी आम हो गई और देवदार की कीमती लकड़ी मगरिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े की अंजीर-तूत की सस्ती लकड़ी जैसी आम हो गई। 28 बादशाह के घोड़े मिसर और दीगर कई मुल्कों से दरामद होते थे।

सुलेमान की मौत

29 सुलेमान की ज़िंदगी के बारे में मज़ीद बातें शुरू से लेकर आखिर तक 'नातन नबी की तारीख़,' सैला के रहनेवाले नबी अख़ियाह की किताब 'अख़ियाह की नबुव्वत' और यरूबियाम बिन नबात से मुताल्लिक़ किताब 'इडू गैबबीन की रोयाएँ' में दर्ज हैं।

30 सुलेमान 40 साल के दौरान पूरे इसराईल पर हुक्मत करता रहा। उसका दास्त-हुक्मत यरूशलम था। 31 जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में दफ़न किया गया जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है। फिर उसका बेटा रहुबियाम तख़्तनशीन हुआ।

10

शिमाली क़बीले अलग हो जाते हैं

1 रहुबियाम सिकम गया, क्योंकि वहाँ तमाम इसराईली उसे बादशाह मुक़रर करने के लिए जमा हो गए थे। 2 यरूबियाम बिन नबात यह ख़बर सुनते ही मिसर से जहाँ उसने सुलेमान बादशाह से भागकर पनाह ली थी इसराईल वापस आया। 3 इसराईलियों ने उसे बुलाया ताकि उसके साथ सिकम जाएँ। जब पहुँचा तो इसराईल की पूरी जमात यरूबियाम के साथ मिलकर रहुबियाम से मिलने गई। उन्होंने बादशाह से कहा, 4 "जो जुआ आपके बाप ने हम पर डाल दिया था उसे उठाना मुश्किल था, और जो वक़्त और पैसे हमें बादशाह की ख़िदमत में सर्फ़ करने थे वह नाक़ाबिले-बरदाशत थे। अब दोनों को कम कर दें। फिर हम खुशी से आपकी ख़िदमत करेंगे।"

5 रहुबियाम ने जवाब दिया, "मुझे तीन दिन की मोहलत दें, फिर दुबारा मेरे पास आएं।" चुनौचे लोग चले गए। 6 फिर रहुबियाम बादशाह ने उन बुज़ुर्गों से मशवरा किया जो सुलेमान के जीते-जी बादशाह की ख़िदमत करते रहे थे। उसने पूछा, "आपका क्या खयाल है? मैं इन लोगों को क्या जवाब दूँ?" 7 बुज़ुर्गों ने जवाब दिया, "हमारा मशवरा है कि इस वक़्त उनसे मेहरबानी से पेश आकर उनसे अच्छा सुलूक करें और नरम जवाब दें। अगर आप ऐसा करें तो वह हमेशा आपके वफ़ादार खादिम बने रहेंगे।"

8 लेकिन रहुबियाम ने बुज़ुर्गों का मशवरा रद्द करके उस की ख़िदमत में हाज़िर उन जवानों से मशवरा किया जो उसके साथ परवान चढ़े थे। 9 उसने पूछा, "मैं इस क़ौम को क्या जवाब दूँ? यह तकाज़ा कर रहे हैं कि मैं वह जुआ हलका कर दूँ जो मेरे बाप ने उन पर डाल दिया।" 10 जो जवान उसके साथ परवान चढ़े थे उन्होंने कहा, "अच्छा, यह लोग तकाज़ा कर रहे हैं कि आपके बाप का जुआ हलका किया जाए? उन्हें बता देना, 'मेरी छोटी उँगली मेरे बाप की कमर से ज्यादा मोटी है! 11 बेशक जो जुआ उसने आप पर डाल दिया उसे उठाना मुश्किल था, लेकिन मेरा जुआ और भी भारी होगा। जहाँ मेरे बाप ने आपको कोड़े लगाए वहाँ मैं आपकी बिच्छुओं से तादीब करूँगा!'"

12 तीन दिन के बाद जब यरुबियाम तमाम इसराइलियों के साथ रहुबियाम का फैसला सुनने के लिए वापस आया 13 तो बादशाह ने उन्हें सख्त जवाब दिया। बुजुर्गों का मशवरा रद्द करके 14 उसने उन्हें जवानों का जवाब दिया, “बेशक जो जुआ मेरे बाप ने आप पर डाल दिया उसे उठाना मुश्किल था, लेकिन मेरा जुआ और भी भारी होगा। जहाँ मेरे बाप ने आपको कोड़े लगाए वहाँ मैं आपकी बिच्छुओं से तादीब करूँगा!” 15 यों रब की मरजी पूरी हुई कि रहुबियाम लोगों की बात नहीं मानेगा। क्योंकि अब रब की वह पेशगोई पूरी हुई जो सैला के नबी अखियाह ने यरुबियाम बिन नबात को बताई थी।

16 जब इसराइलियों ने देखा कि बादशाह हमारी बात सुनने के लिए तैयार नहीं है तो उन्होंने उससे कहा, “न हमें दाऊद से मीरास में कुछ मिलेगा, न यस्सी के बेटे से कुछ मिलने की उम्मीद है। ऐ इसराइल, सब अपने अपने घर वापस चलो! ऐ दाऊद, अब अपना घर खुद सँभाल लो!” यह कहकर वह सब चले गए।

17 सिर्फ यहदाह के कबीले के शहरों में रहनेवाले इसराइली रहुबियाम के तहत रहे। 18 फिर रहुबियाम बादशाह ने बेगारियों पर मुकर्रर अफसर अदनीराम को शिमाली कबीलों के पास भेज दिया, लेकिन उसे देखकर लोगों ने उसे संगसार किया। तब रहुबियाम जल्दी से अपने रथ पर सवार हुआ और भागकर यरुशलम पहुँच गया।

19 यों इसराइल के शिमाली कबीले दाऊद के शाही घराने से अलग हो गए और आज तक उस की हुक्मत नहीं मानते।

11

रहुबियाम को इसराइल से लड़ने की इजाजत नहीं मिलती

1 जब रहुबियाम यरुशलम पहुँचा तो उसने यहदाह और बिनयमीन के कबीलों के चीदा चीदा फौजियों को इसराइल से जंग करने के लिए बुलाया। 1,80,000 मर्द जमा हुए ताकि रहुबियाम के लिए इसराइल पर दुबारा काबा जाएँ। 2 लेकिन ऐन उस वक्त मर्दे-खुदा समायह को रब की तरफ से पैगाम मिला, 3 “यहदाह के बादशाह रहुबियाम बिन सुलेमान और यहदाह और बिनयमीन के तमाम अफराद को इत्तला दे, 4 ‘रब फरमाता है कि अपने भाइयों से जंग मत करना। हर एक अपने अपने घर वापस चला जाए, क्योंकि जो कुछ हुआ है वह मेरे हुक्म पर हुआ है’।”

तब वह रब की सुनकर यरुबियाम से लड़ने से बाज आए।

रहुबियाम की किलाबंदी

5 रहुबियाम का दासल-हुक्मत यरुशलम रहा। यहदाह में उसने जैल के शहरों की किलाबंदी की : 6 बैत-लहम, ऐताम, तकुअ, 7 बैत-सूर, सोका, अदुल्लाम, 8 जात, मोरेसा, जीफ, 9 अदूराईम, लकीस, अजीका, 10 सुरआ, ऐयालोन और हबस्न। यहदाह और बिनयमीन के इन किलाबंद शहरों को 11 मजबूत करके रहुबियाम ने हर शहर पर अफसर मुकर्रर किए। उनमें उसने खुराक, जैतून के तेल और मै का जखीरा कर लिया 12 और साथ साथ उनमें ढालें और नेजे भी रखे। इस तरह उसने उन्हें बहुत मजबूत बनाकर यहदाह और बिनयमीन पर अपनी हुक्मत महफूज कर ली।

इमाम और लावी यहदाह में मुंतकिल हो जाते हैं

13 गो इमाम और लावी तमाम इसराइल में बिखरे रहते थे तो भी उन्होंने रहुबियाम का साथ दिया। 14 अपनी चरागाहों और मिलकियत को छोड़कर वह यहदाह और यरुशलम में आबाद हुए, क्योंकि यरुबियाम और उसके बेटों ने उन्हें इमाम की हैसियत से रब की खिदमत करने से रोक दिया था। 15 उनकी जगह उसने अपने ज्ञाती इमाम मुकर्रर किए जो ऊँची जगहों पर के मंदिरों को सँभालते हुए बकरे के देवताओं और बछड़े के बुतों की खिदमत करते थे। 16 लावियों की तरह तमाम कबीलों के बहुत-से ऐसे लोग यहदाह में मुंतकिल हुए जो पूरे दिल से रब इसराइल के खुदा के तालिब रहे थे। वह यरुशलम आए ताकि रब अपने बापदादा के खुदा को कुरबानियाँ पेश कर सकें। 17 यहदाह की सलतनत ने ऐसे लोगों से तकवियत पाई। वह रहुबियाम बिन सुलेमान के लिए तीन साल तक मजबूती का सबब थे, क्योंकि तीन साल तक यहदाह दाऊद और सुलेमान के अच्छे नमूने पर चलता रहा।

रहुबियाम का खानदान

18 रहुबियाम की शादी महलत से हुई जो यरीमोट और अबीखैल की बेटी थी। यरीमोट दाऊद का बेटा और अबीखैल इलियाब बिन यस्सी की बेटी थी। 19 महलत के तीन बेटे यऊस, समरियाह और जहम पैदा हुए। 20 बाद में रहुबियाम की माका बित अबीसलूम से शादी हुई। इस रिश्ते से चार बेटे अबियाह, अत्ती, जीजा और सलूमीत पैदा हुए। 21 रहुबियाम की 18 बीवियाँ और 60 दाश्ताएँ थीं। इनके कुल 28 बेटे और 60 बेटियाँ पैदा हुईं। लेकिन माका बित अबीसलूम रहुबियाम को सबसे ज्यादा प्यारी थी। 22 उसने माका के पहलौठे अबियाह को उसके भाइयों का सरबराह बना दिया और मुकर्रर किया कि यह बेटा मेरे बाद बादशाह बनेगा। 23 रहुबियाम ने अपने बेटों से बड़ी समझदारी के साथ सुलूक किया, क्योंकि उसने उन्हें अलग अलग करके यहदाह और बिनयमीन के पूरे कबायली इलाके और तमाम किलाबंद शहरों में बसा दिया। साथ साथ वह उन्हें कसरत की खुराक और बीवियाँ मुहैया करता रहा।

12

मिसर की यहदाह पर फ़तह

¹ जब रहुबियाम की सलतनत जोर पकड़कर मज़बूत हो गई तो उसने तमाम इसराईल समेत रब की शरीअत को तर्क कर दिया। ² उनकी रब से बेवफ़ाई का नतीजा यह निकला कि रहुबियाम की हुकूमत के पाँचवें साल में मिसर के बादशाह सीसक ने यरूशलम पर हमला किया। ³ उस की फ़ौज बहुत बड़ी थी। 1,200 रथों के अलावा 60,000 घुड़सवार और लिबिया, सुक्कियों के मुल्क और एथोपिया के बेशुमार प्यादा सिपाही थे। ⁴ उनके बाद दीगरे यहदाह के किलाबंद शहरों पर कब्ज़ा करते करते मिसरी बादशाह यरूशलम तक पहुँच गया।

⁵ तब समायाह नबी रहुबियाम और यहदाह के उन बुजुर्गों के पास आया जिन्होंने सीसक के आगे आगे भागकर यरूशलम में पनाह ली थी। उसने उनसे कहा, “रब फ़रमाता है, ‘तुमने मुझे तर्क कर दिया है, इसलिए अब मैं तुम्हें तर्क करके सीसक के हवाले कर दूँगा’।” ⁶ यह पैग़ाम सुनकर रहुबियाम और यहदाह के बुजुर्गों ने बड़ी इंकिसारी के साथ तसलीम किया कि रब ही आदिल है। ⁷ उनकी यह आजिज़ी देखकर रब ने समायाह से कहा, “चूँकि उन्होंने बड़ी खाकसारी से अपना ग़लत रवैया तसलीम कर लिया है इसलिए मैं उन्हें तबाह नहीं करूँगा बल्कि जल्द ही उन्हें रिहा करूँगा। मेरा ग़ज़ब सीसक के ज़रीए यरूशलम पर नाज़िल नहीं होगा। ⁸ लेकिन वह इस क़ौम को ज़रूर अपने ताबे कर रखेगा। तब वह समझ लेंगे कि मेरी ख़िदमत करने और दीगर ममालिक के बादशाहों की ख़िदमत करने में क्या फ़रक है।”

⁹ मिसर के बादशाह सीसक ने यरूशलम पर हमला करते वक़्त रब के घर और शाही महल के तमाम ख़ज़ाने लूट लिए। सोने की वह ढालें भी छीन ली गईं जो सुलेमान ने बनवाई थीं। ¹⁰ इनकी जगह रहुबियाम ने पीतल की ढालें बनवाईं और उन्हें उन मुहाफ़िज़ों के अफ़सरों के सुपुर्द किया जो शाही महल के दरवाज़े की पहरादारी करते थे। ¹¹ जब भी बादशाह रब के घर में जाता तब मुहाफ़िज़ यह ढालें उठाकर साथ ले जाते। इसके बाद वह उन्हें पहरेदारों के कमरे में वापस ले जाते थे।

¹² चूँकि रहुबियाम ने बड़ी इंकिसारी से अपना ग़लत रवैया तसलीम किया इसलिए रब का उस पर ग़ज़ब ठंडा हो गया, और वह पूरे तौर पर तबाह न हुआ। दर-हकीक़त यहदाह में अब तक कुछ न कुछ पाया जाता था जो अच्छा था।

रहुबियाम की मौत

¹³ रहुबियाम की सलतनत ने दुबारा तकवियत पाई, और यरूशलम में रहकर वह अपनी हुकूमत जारी रख सका। 41 साल की उम्र में वह तख़्तनशीन हुआ था, और वह 17 साल बादशाह रहा। उसका दास्त-हुकूमत यरूशलम था, वह शहर जिसे रब ने तमाम इसराईली क़बीलों में से चुन लिया ताकि उसमें अपना नाम कायम करे। उस की माँ नामा अम्मोनी थी। ¹⁴ रहुबियाम ने अच्छी ज़िंदगी न गुज़ारी, क्योंकि वह पूरे दिल से रब का तालिब न रहा था।

¹⁵ बाक़ी जो कुछ रहुबियाम की हुकूमत के दौरान शुरू से लेकर आख़िर तक हुआ उसका समायाह नबी और ग़ैबबीन इदू की तारीख़ी किताब में बयान है। वहाँ उसके नसबनामे का ज़िक्र भी है। दोनों बादशाहों रहुबियाम और यरुबियाम के जीते-जी उनके दरमियान जंग जारी रही। ¹⁶ जब रहुबियाम मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में दफ़नाया गया जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है। फिर उसका बेटा अबियाह तख़्तनशीन हुआ।

13

यहदाह का बादशाह अबियाह

¹ अबियाह इसराईल के बादशाह यरुबियाम अब्वल की हुकूमत के 18वें साल में यहदाह का बादशाह बना। ² वह तीन साल बादशाह रहा, और उसका दास्त-हुकूमत यरूशलम था। उस की माँ माका बित ऊरियेल ज़िबिया की रहनेवाली थी।

एक दिन अबियाह और यरुबियाम के दरमियान जंग छिड़ गई। ³ 4,00,000 तजरबाकार फ़ौजियों को जमा करके अबियाह यरुबियाम से लड़ने के लिए निकला। यरुबियाम 8,00,000 तजरबाकार फ़ौजियों के साथ उसके मुकाबिल सफ़आरा हुआ। ⁴ फिर अबियाह ने इफ़राईम के पहाड़ी इलाके के पहाड़ समैरैम पर चढ़कर बुलंद आवाज़ से पुकारा,

“यरुबियाम और तमाम इसराईलियो, मेरी बात सुने! ⁵ क्या आपको नहीं मालूम कि रब इसराईल के ख़ुदा ने दाऊद से नमक का अबदी अहद बाँधकर उसे और उस की औलाद को हमेशा के लिए इसराईल की सलतनत अता की है? ⁶ तो भी सुलेमान बिन दाऊद का मुलाज़िम यरुबियाम बिन नबात अपने मालिक के खिलाफ़ उठकर बागी हो गया। ⁷ उसके इर्दगिर्द कुछ बदमाश जमा हुए और रहुबियाम बिन सुलेमान की मुख़ालफ़त करने लगे। उस वक़्त वह जवान और नातजरबाकार था, इसलिए उनका सहीह मुकाबला न कर सका।

⁸ और अब आप वाक़ई समझते हैं कि हम रब की बादशाही पर फ़तह पा सकते हैं, उसी बादशाही पर जो दाऊद की औलाद के हाथ में है। आप समझते हैं कि आपकी फ़ौज बहुत ही बड़ी है, और कि सोने के बछड़े आपके साथ हैं, वही बुत जो यरुबियाम ने आपकी पूजा के लिए तैयार कर रखे हैं। ⁹ लेकिन आपने रब के इमामों यानी हारून की औलाद को लावियों समेत मुल्क से निकालकर उनकी जगह ऐसे पुजारी ख़िदमत के लिए मुक़र्रर किए जैसे बुतपरस्त क़ौमों में पाए जाते हैं। जो भी चाहता है कि उसे मख़सूस करके इमाम बनाया जाए उसे सिर्फ़ एक जवान बैल और सात मेंढे पेश करने की ज़रूरत है। यह इन नाम-निहाद ख़ुदाओं का पुजारी बनने के लिए काफ़ी है।

10 लेकिन जहाँ तक हमारा ताल्लुक है रब ही हमारा खुदा है। हमने उसे तर्क नहीं किया। सिर्फ हासून की औलाद ही हमारे इमाम हैं। सिर्फ यह और लावी रब की खिदमत करते हैं। 11 यही सुबह-शाम उसे भस्म होनेवाली कुरबानियाँ और खुशबूदार बखूर पेश करते हैं। पाक मेज़ पर रब के लिए मखसूस रोटियाँ रखना और सोने के शमादान के चराग जलाना इन्हीं की जिम्मादारी रही है। गरज़, हम रब अपने खुदा की हिदायात पर अमल करते हैं जबकि आपने उसे तर्क कर दिया है। 12 चुनौचे अल्लाह हमारे साथ है। वही हमारा राहनुमा है, और उसके इमाम तुरम बजाकर आपसे लड़ने का एलान करेंगे। इसराईल के मर्दों, खबरदार! रब अपने बापदादा के खुदा से मत लड़ना। यह जंग आप जीत ही नहीं सकते!”

13 इतने में यरुबियाम ने चुपके से कुछ दस्तों को यहदाह की फौज के पीछे भेज दिया ताकि वहाँ ताक में बैठ जाएँ। यों उस की फौज का एक हिस्सा यहदाह की फौज के सामने और दूसरा हिस्सा उसके पीछे था। 14 अचानक यहदाह के फौजियों को पता चला कि दुश्मन सामने और पीछे से हम पर हमला कर रहा है। चीखते-चिल्लाते हुए उन्होंने रब से मदद माँगी। इमामों ने अपने तुरम बजाए 15 और यहदाह के मर्दों ने जंग का नारा लगाया। जब उनकी आवाज़ें बुलंद हुई तो अल्लाह ने यरुबियाम और तमाम इसराईलियों को शिकस्त देकर अबियाह और यहदाह की फौज के सामने से भगा दिया। 16 इसराईली फ़रार हुए, लेकिन अल्लाह ने उन्हें यहदाह के हवाले कर दिया। 17 अबियाह और उसके लोग उन्हें बड़ा नुकसान पहुँचा सके। इसराईल के 5,00,000 तजरबाकार फौजी मैदाने-जंग में मारे गए। 18 उस वक़्त इसराईल की बड़ी बेइज्जती हुई जबकि यहदाह को ताकवियत मिली। क्योंकि वह रब अपने बापदादा के खुदा पर भरोसा रखते थे।

19 अबियाह ने यरुबियाम का ताक़ुब करते करते उससे तीन शहर गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत छीन लिए, बैतेल, यसाना और इफ़रोन। 20 अबियाह के जीते-जी यरुबियाम दुबारा ताकवियत न पा सका, और थोड़ी देर के बाद रब ने उसे मार दिया। 21 उसके मुकाबले में अबियाह की ताक़त बढ़ती गई। उस की 14 बीवियों के 22 बेटे और 16 बेटियाँ पैदा हुईं।

22 बाक़ी जो कुछ अबियाह की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया और कहा, वह इडू नबी की किताब में बयान किया गया है।

14

1 जब अबियाह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरुशलम के उस हिस्से में दफ़नाया गया जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है। फिर उसका बेटा आसा तख़्तनशीन हुआ।

यहदाह का बादशाह आसा

आसा की हुकूमत के तहत मुल्क में 10 साल तक अमनो-अमान कायम रहा। 2 आसा वह कुछ करता रहा जो रब उसके खुदा के नज़दीक अच्छा और ठीक था। 3 उसने अजनबी माबूदों की कुरबानगाहों को ऊँची जगहों के मंदिरों समेत गिराकर देवताओं के लिए मखसूस किए गए सतूनों को टुकड़े टुकड़े कर दिया और यसीरत देवी के खंबे काट डाले। 4 साथ साथ उसने यहदाह के बाशिंदों को हिदायत दी कि वह रब अपने बापदादा के खुदा के तालिब हों और उसके अहकाम के ताबे रहें। 5 यहदाह के तमाम शहरों से उसने बखूर की कुरबानगाहें और ऊँची जगहों के मंदिर दूर कर दिए। चुनौचे उस की हुकूमत के दौरान बादशाही में सुकून रहा।

6 अमनो-अमान के इन सालों के दौरान आसा यहदाह में कई शहरों की किलाबंदी कर सका। जंग का खतरा नहीं था, क्योंकि रब ने उसे सुकून मुहैया किया। 7 बादशाह ने यहदाह के बाशिंदों से कहा, “आएँ, हम इन शहरों की किलाबंदी करें! हम इनके इर्दगिर्द फ़सीलें बनाकर उन्हें बुर्जी, दरवाज़ों और कुंडों से मज़बूत करें। क्योंकि अब तक मुल्क हमारे हाथ में है। चूँकि हम रब अपने खुदा के तालिब रहे हैं इसलिए उसने हमें चारों तरफ़ सुलह-सलामती मुहैया की है।” चुनौचे किलाबंदी का काम शुरू हुआ बल्कि तकमील तक पहुँच सका।

एथोपिया पर फ़तह

8 आसा की फौज में बड़ी ढालों और नेज़ों से लैस यहदाह के 3,00,000 अफ़राद थे। इसके अलावा छोटी ढालों और कमानों से मुसल्लह बिनयमीन के 2,80,000 अफ़राद थे। सब तजरबाकार फौजी थे।

9 एक दिन एथोपिया के बादशाह ज़ारह ने यहदाह पर हमला किया। उसके बेशुमार फौजी और 300 रथ थे। बढ़ते बढ़ते वह मरेसा तक पहुँच गया। 10 आसा उसका मुकाबला करने के लिए निकला। वादीए-सफ़ाता में दोनों फौजें लड़ने के लिए सफ़आरा हुईं। 11 आसा ने रब अपने खुदा से इलतमास की, “ऐ रब, सिर्फ़ तू ही बेबसों को ताक़तवरों के हमलों से महफूज़ रख सकता है। ऐ रब हमारे खुदा, हमारी मदद कर! क्योंकि हम तुझ पर भरोसा रखते हैं। तेरा ही नाम लेकर हम इस बड़ी फौज का मुकाबला करने के लिए निकले हैं। ऐ रब, तू ही हमारा खुदा है। ऐसा न होने दे कि इनसान तेरी मरज़ी की खिलाफ़रज़ी करने में कामयाब हो जाए।”

12 तब रब ने आसा और यहदाह के देखते देखते दुश्मन को शिकस्त दी। एथोपिया के फौजी फ़रार हुए, 13 और आसा ने अपने फौजियों के साथ ज़िरार तक उनका ताक़ुब किया। दुश्मन के इतने अफ़राद हलाक हुए कि उस की फौज बाद में बहाल न हो सकी। रब खुद और उस की फौज ने दुश्मन को तबाह कर दिया था। यहदाह के मर्दों ने बहुत-सा माल लूट लिया। 14 वह ज़िरार के इर्दगिर्द के शहरों पर भी क़ब्ज़ा करने में कामयाब हुए, क्योंकि मक़ामी लोगों में रब की दहशत फैल गई थी। नतीजे में इन शहरों से भी बहुत-सा माल छीन लिया गया। 15 इस मुहिम के दौरान उन्होंने गल्लाबानों की ख़ैमागाहों पर भी हमला किया और उनसे कसरत की भेड़-बकरियाँ और ऊँट लूटकर अपने साथ यरुशलम ले आए।

15

आसा रब से अहद की तजदीद करता है

1 अल्लाह का रूह अजरियाह बिन ओदीद पर नाज़िल हुआ, 2 और वह आसा से मिलने के लिए निकला और कहा, “ऐ आसा और यहदाह और बिनयमीन के तमाम बाशिंदों, मेरी बात सुनो! रब तुम्हारे साथ है अगर तुम उसी के साथ रहो। अगर तुम उसके तालिब रहो तो उसे पा लोगे। लेकिन जब भी तुम उसे तर्क करो तो वह तुम्हीं को तर्क करेगा। 3 लंबे अरसे तक इसराईली हकीकी खुदा के बगैर ज़िंदगी गुज़ारते रहे। न कोई इमाम था जो उन्हें अल्लाह की राह सिखाता, न शरीअत। 4 लेकिन जब कभी वह मुसीबत में फँस जाते तो दुबारा रब इसराईल के खुदा के पास लौट आते। वह उसे तलाश करते और नतीजे में उसे पा लेते। 5 उस ज़माने में सफ़र करना ख़तरनाक होता था, क्योंकि अमनो-अमान कहीं नहीं था। 6 एक क्रौम दूसरी क्रौम के साथ और एक शहर दूसरे के साथ लड़ता रहता था। इसके पीछे अल्लाह का हाथ था। वही उन्हें हर किस्म की मुसीबत में डालता रहा। 7 लेकिन जहाँ तक तुम्हारा ताल्लुक है, मज़बूत हो और हिम्मत न हारो। अल्लाह ज़रूर तुम्हारी मेहनत का अज़्र देगा।”

8 जब आसा ने ओदीद के बेटे अजरियाह नबी की पेशगोई सुनी तो उसका हौसला बढ़ गया, और उसने अपने पूरे इलाके के धिनौने बुतों को दूर कर दिया। इसमें यहदाह और बिनयमीन के अलावा इफ़राईम के पहाड़ी इलाके के वह शहर शामिल थे जिन पर उसने कब्ज़ा कर लिया था। साथ साथ उसने उस कुरबानगाह की मरम्मत करवाई जो रब के घर के दरवाज़े के सामने थी। 9 फिर उसने यहदाह और बिनयमीन के तमाम लोगों को यस्शलम बुलाया। उन इसराईलियों को भी दावत मिली जो इफ़राईम, मनस्सी और शमौन के कबायली इलाकों से मुतक़िल होकर यहदाह में आबाद हुए थे। क्योंकि बेशुमार लोग यह देखकर कि रब आसा का खुदा उसके साथ है इसराईल से निकलकर यहदाह में जा बसे थे।

10 आसा बादशाह की हुकूमत के 15वें साल और तीसरे महीने में सब यस्शलम में जमा हुए। 11 वहाँ उन्होंने लूटे हुए माल में से रब को 700 बैल और 7,000 भेड़-बकरियाँ कुरबान कर दीं। 12 उन्होंने अहद बाँधा, ‘हम पूरे दिलो-जान से रब अपने बापदादा के खुदा के तालिब रहेंगे। 13 और जो रब इसराईल के खुदा का तालिब नहीं रहेगा उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी, खाह वह छोटा हो या बड़ा, मर्द हो या औरत।’ 14 बुलंद आवाज़ से उन्होंने कसम खाकर रब से अपनी वफ़ादारी का एलान किया। साथ साथ तुरम और नरसिगे बजते रहे। 15 यह अहद तमाम यहदाह के लिए खुशी का बाइस था, क्योंकि उन्होंने पूरे दिल से कसम खाकर उसे बाँधा था। और चूँकि वह पूरे दिल से खुदा के तालिब थे इसलिए वह उसे पा भी सके। नतीजे में रब ने उन्हें चारों तरफ़ अमनो-अमान मुहैया किया।

16 आसा की माँ माका बादशाह की माँ होने के बाइस बहुत असरो-रसूख रखती थी। लेकिन आसा ने यह ओहदा ख़त्म कर दिया जब माँ ने यसीरत देवी का धिनौना खंबा बनवा लिया। आसा ने यह बुत कटवाकर टुकड़े टुकड़े कर दिया और वादीए-किदरोन में जला दिया। 17 अफ़सोस कि उसने इसराईल की ऊँची जगहों के मंदिरों को दूर न किया। तो भी आसा अपने जीते-जी पूरे दिल से रब का वफ़ादार रहा। 18 सोना-चाँदी और बाक़ी जितनी चीज़ें उसके बाप और उसने रब के लिए मख़सूस की थीं उन सबको वह रब के घर में लाया।

19 आसा की हुकूमत के 35वें साल तक जंग दुबारा न छिड़ी।

16

शाम के साथ आसा का मुआहदा

1 आसा की हुकूमत के 36वें साल में इसराईल के बादशाह बाशा ने यहदाह पर हमला करके रामा शहर की क़िलाबंदी की। मक़सद यह था कि न कोई यहदाह के मुल्क में दाख़िल हो सके, न कोई वहाँ से निकल सके।

2 जवाब में आसा ने शाम के बादशाह बिन-हदद के पास वफ़द भेजा जिसका दास्त-हुकूमत दमिशक़ था। उसने रब के घर और शाही महल के खज़ानों की सोना-चाँदी वफ़द के सुपुर्द करके दमिशक़ के बादशाह को पैग़ाम भेजा, 3 “मेरा आपके साथ अहद है जिस तरह मेरे बाप का आपके बाप के साथ अहद था। गुज़ारिश है कि आप सोने-चाँदी का यह तोहफ़ा क़बूल करके इसराईल के बादशाह बाशा के साथ अपना अहद मनसूख़ कर दें ताकि वह मेरे मुल्क से निकल जाए।”

4 बिन-हदद मुतफ़िक़ हुआ। उसने अपने फ़ौजी अफ़सरों को इसराईल के शहरों पर हमला करने के लिए भेज दिया तो उन्होंने ऐय्यून्, दान, अबील-मायम और नफ़ताली के उन तमाम शहरों पर क़ब्ज़ा कर लिया जिनमें शाही गोदाम थे। 5 जब बाशा को इसकी ख़बर मिली तो उसने रामा की क़िलाबंदी करने से बाज़ आकर अपनी यह मुहिम छोड़ दी।

6 फिर आसा बादशाह ने यहदाह के तमाम मर्दों की भरती करके उन्हें रामा भेज दिया ताकि वह उन तमाम पत्थरों और शहतीरों को उठाकर ले जाएँ जिनसे बाशा बादशाह रामा की क़िलाबंदी करना चाहता था। इस सामान से आसा ने जिबा और मिसफ़ाह शहरों की क़िलाबंदी की।

आसा के आखिरी साल और मौत

7 उस वक़्त हनानी ग़ैबबीन यहदाह के बादशाह आसा को मिलने आया। उसने कहा, “अफ़सोस कि आपने रब अपने खुदा पर एतमाद न किया बल्कि अराम के बादशाह पर, क्योंकि इसका बुरा नतीजा निकला है। रब शाम के बादशाह की फ़ौज को आपके हवाले करने के लिए तैयार था, लेकिन अब यह मौक़ा जाता रहा है। 8 क्या आप भूल गए हैं कि एथोपिया और लिबिया की कितनी बड़ी फ़ौज आपसे लड़ने आई थी? उनके साथ कसरत के रथ और घुड़सवार भी थे। लेकिन उस वक़्त आपने रब पर एतमाद किया, और जवाब में उसने उन्हें आपके हवाले कर दिया। 9 रब तो अपनी नज़र पूरी रूए-ज़मीन पर दौड़ाता रहता है ताकि उनकी तक़वियत करे जो पूरी वफ़ादारी से उससे लिपटे रहते हैं।

आपकी अहमकाना हरकत की वजह से आपको अब से मुतवातिर जंगें तंग करती रहेंगी।” 10 यह सुनकर आसा गुस्से से लाल-पीला हो गया। आपे से बाहर होकर उसने हुक्म दिया कि नबी को गिरफ्तार करके उसके पाँव काठ में ठोंको। उस वक़्त से आसा अपनी क्रौम के कई लोगों पर जुल्म करने लगा।

11 बाकी जो कुछ शुरू से लेकर आखिर तक आसा की हुक्मत के दौरान हुआ वह ‘शाहाने-यहदाहो-इसराईल की तारीख’ की किताब में बयान किया गया है। 12 हुक्मत के 39वें साल में उसके पाँवों को बीमारी लग गई। गो उस की बुरी हालत थी तो भी उसने रब को तलाश न किया बल्कि सिर्फ़ डाक्टरों के पीछे पड़ गया। 13 हुक्मत के 41वें साल में आसा मरकर अपने बापदादा से जा मिला। 14 उसने यरूशलम के उस हिस्से में जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है अपने लिए चटान में कब्र ताराशी थी। अब उसे इसमें दफन किया गया। जनाजे के वक़्त लोगों ने लाश को एक पलंग पर लिटा दिया जो बलसान के तेल और मुख्तलिफ़ क्रिस्म के खुशबूदार मरहमों से ढाँपा गया था। फिर उसके एहताराम में लकड़ी का ज़बरदस्त ढेर जलाया गया।

17

यहदाह का बादशाह यहसफ़त

1 आसा के बाद उसका बेटा यहसफ़त तख़्तनशीन हुआ। उसने यहदाह की ताक़त बढ़ाई ताकि वह इसराईल का मुक़ाबला कर सके। 2 यहदाह के तमाम क़िलाबंद शहरों में उसने दस्ते बिठाए। यहदाह के पूरे क़बायली इलाक़े में उसने चौकियाँ तैयार कर रखीं और इसी तरह इफ़राईम के उन शहरों में भी जो उसके बाप आसा ने इसराईल से छीन लिए थे। 3 रब यहसफ़त के साथ था, क्योंकि वह दाऊद के नमूने पर चलता था और बाल देवताओं के पीछे न लगा। 4 इसराईल के बादशाहों के बरअक्स वह अपने बाप के खुदा का तालिब रहा और उसके अहक़ाम पर अमल करता रहा। 5 इसी लिए रब ने यहदाह पर यहसफ़त की हुक्मत को ताक़तवर बना दिया। लोग तमाम यहदाह से आकर उसे तोहफ़े देते रहे, और उसे बड़ी दौलत और इज़्ज़त मिली। 6 रब की राहों पर चलते चलते उसे बड़ा हौसला हुआ और नतीजे में उसने ऊँची जगहों के मंदिरों और यसीरत देवी के खंबों को यहदाह से दूर कर दिया।

7 अपनी हुक्मत के तीसरे साल के दौरान यहसफ़त ने अपने मुलाज़िमों को यहदाह के तमाम शहरों में भेजा ताकि वह लोगों को रब की शरीअत की तालीम दें। इन अफ़सरों में बिन-ख़ैल, अबदियाह, ज़करियाह, नतनियेल और मीकायाह शामिल थे। 8 उनके साथ 9 लावी बनाम समायाह, नतनियाह, ज़बदियाह, असाहेल, समीरामोत, यहनतन, अदूनियाह, तूबियाह, और तूब-अदूनियाह थे। इमामों की तरफ़ से इलीसमा और यहराम साथ गए। 9 रब की शरीअत की किताब अपने साथ लेकर इन आदमियों ने यहदाह में शहर बशहर जाकर लोगों को तालीम दी।

10 उस वक़्त यहदाह के पड़ोसी ममालिक पर रब का ख़ौफ़ छा गया, और उन्होंने यहसफ़त से जंग करने की ज़ुरत न की। 11 ख़राज के तौर पर उसे फ़िलिस्तिनियों से हदिये और चाँदी मिलती थी, जबकि अरब उसे 7,700 मेंढे और 7,700 बकरे दिया करते थे। 12 यों यहसफ़त की ताक़त बढ़ती गई। यहदाह की कई जगहों पर उसने क़िले और शाही गोदाम के शहर तामीर किए। 13 साथ साथ उसने यहदाह के शहरों में ज़रूरियाते-ज़िंदगी के बड़े ज़ख़ीरे जमा किए और यरूशलम में तजरबाकार फ़ौजी रखे।

14 यहसफ़त की फ़ौज को कुंबों के मुताबिक़ तरतीब दिया गया था। यहदाह के क़बीले का कमाँडर अदना था। उसके तहत 3,00,000 तजरबाकार फ़ौजी थे। 15 उसके अलावा यहनान था जिसके तहत 2,80,000 अफ़राद थे 16 और अमसियाह बिन ज़िकरी जिसके तहत 2,00,000 अफ़राद थे। अमसियाह ने अपने आपको रज़ाकाराना तौर पर रब की ख़िदमत के लिए वक्फ़ कर दिया था। 17 बिनयमीन के क़बीले का कमाँडर इलियदा था जो ज़बरदस्त फ़ौजी था। उसके तहत कमान और ढालों से लैस 2,00,000 फ़ौजी थे। 18 उसके अलावा यहज़बद था जिसके 1,80,000 मुसल्लह आदमी थे।

19 सब फ़ौज में बादशाह की ख़िदमत संरजाम देते थे। उनमें वह फ़ौजी नहीं शुमार किए जाते थे जिन्हें बादशाह ने पूरे यहदाह के क़िलाबंद शहरों में रखा हुआ था।

18

झूटे नबियों और मीकायाह का मुक़ाबला

1 गरज़ यहसफ़त को बड़ी दौलत और इज़्ज़त हासिल हुई। उसने अपने पहलौठे की शादी इसराईल के बादशाह अख़ियब की बेटी से कराई।

2 कुछ साल के बाद वह अख़ियब से मिलने के लिए सामरिया गया। इसराईल के बादशाह ने यहसफ़त और उसके साथियों के लिए बहुत-सी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल ज़बह किए। फिर उसने यहसफ़त को अपने साथ रामात-जिलियाद से जंग करने पर उकसाया। 3 अख़ियब ने यहसफ़त से सवाल किया, “क्या आप मेरे साथ रामात-जिलियाद जाएंगे ताकि उस पर क़ब्ज़ा करें?” उसने जवाब दिया, “जी ज़रूर, हम तो भाई हैं, मेरी क्रौम को अपनी क्रौम समझें! हम आपके साथ मिलकर लड़ने के लिए निकलेंगे। 4 लेकिन मेहरबानी करके पहले रब की मरज़ी मालूम कर लें।”

5 इसराईल के बादशाह ने 400 नबियों को बुलाकर उनसे पूछा, “क्या हम रामात-जिलियाद पर हमला करें या मैं इस इरादे से बाज़ रहूँ?” नबियों ने जवाब दिया, “जी, करें, क्योंकि अल्लाह उसे बादशाह के हवाले कर देगा।”

6 लेकिन यह्सफत मुतमइन न हुआ। उसने पूछा, “क्या यहाँ रब का कोई नबी नहीं जिससे हम दरियाफत कर सकें?” 7 इसराईल का बादशाह बोला, “हाँ, एक तो है जिसके ज़रीए हम रब की मरज़ी मालूम कर सकते हैं। लेकिन मैं उससे नफ़रत करता हूँ, क्योंकि वह मेरे बारे में कभी भी अच्छी पेशगोई नहीं करता। वह हमेशा बुरी पेशगोइयाँ सुनाता है। उसका नाम मीकायाह बिन इमला है।” यह्सफत ने एतराज़ किया, “बादशाह ऐसी बात न कहे!” 8 तब इसराईल के बादशाह ने किसी मुलाज़िम को बुलाकर हुक्म दिया, “मीकायाह बिन इमला को फ़ौरन हमारे पास पहुँचा देना!”

9 अख़ियब और यह्सफत अपने शाही लिबास पहने हुए सामरिया के दरवाज़े के करीब अपने अपने तख़्त पर बैठे थे। यह ऐसी खुली जगह थी जहाँ अनाज गाहा जाता था। तमाम 400 नबी वहाँ उनके सामने अपनी पेशगोइयाँ पेश कर रहे थे। 10 एक नबी बनाम सिदकियाह बिन कनाना ने अपने लिए लोहे के सींग बनाकर एलान किया, “रब फ़रमाता है कि इन सींगों से तू शाम के फ़ौजियों को मार मारकर हलाक कर देगा।”

11 दूसरे नबी भी इस किस्म की पेशगोइयाँ कर रहे थे, “रामात-जिलियाद पर हमला करें, क्योंकि आप ज़रूर कामयाब हो जाएंगे। रब शहर को आपके हवाले कर देगा।”

12 जिस मुलाज़िम को मीकायाह को बुलाने के लिए भेजा गया था उसने रास्ते में उसे समझाया, “देखें, बाक़ी तमाम नबी मिलकर कह रहे हैं कि बादशाह को कामयाबी हासिल होगी। आप भी ऐसी ही बातें करें, आप भी फ़तह की पेशगोई करें!” 13 लेकिन मीकायाह ने एतराज़ किया, “रब की हयात की कसम, मैं बादशाह को सिर्फ़ वही कुछ बताऊँगा जो मेरा खुदा फ़रमाएगा।”

14 जब मीकायाह अख़ियब के सामने खड़ा हुआ तो बादशाह ने पूछा, “मीकायाह, क्या हम रामात-जिलियाद पर हमला करें या मैं इस इरादे से बाज़ रहूँ?”

मीकायाह ने जवाब दिया, “उस पर हमला करें, क्योंकि उन्हें आपके हवाले कर दिया जाएगा, और आपको कामयाबी हासिल होगी।” 15 बादशाह नाराज़ हुआ, “मुझे कितनी दफ़ा आपको समझाना पड़ेगा कि आप कसम खाकर मुझे रब के नाम में सिर्फ़ वह कुछ सुनाएँ जो हकीक़त है।”

16 तब मीकायाह ने जवाब में कहा, “मुझे तमाम इसराईल गल्लाबान से महसूस भेड़-बकरियों की तरह पहाड़ों पर बिखरा हुआ नज़र आया। फिर रब मुझसे हमकलाम हुआ, ‘इनका कोई मालिक नहीं है। हर एक सलामती से अपने घर वापस चला जाए’।”

17 इसराईल के बादशाह ने यह्सफत से कहा, “लो, क्या मैंने आपको नहीं बताया था कि यह शख्स हमेशा मेरे बारे में बुरी पेशगोइयाँ करता है?”

18 लेकिन मीकायाह ने अपनी बात जारी रखी, “रब का फ़रमान सुनें! मैंने रब को उसके तख़्त पर बैठे देखा। आसमान की पूरी फ़ौज उसके दाएँ और बाएँ हाथ खड़ी थी। 19 रब ने पूछा, ‘कौन इसराईल के बादशाह अख़ियब को रामात-जिलियाद पर हमला करने पर उकसाएगा ताकि वह वहाँ जाकर मर जाए?’ एक ने यह मशवरा दिया, दूसरे ने वह। 20 आखिरकार एक रूह रब के सामने खड़ी हुई और कहने लगी, ‘मैं उसे उकसाऊँगी’। रब ने सवाल किया, ‘किस तरह?’ 21 रूह ने जवाब दिया, ‘मैं निकलकर उसके तमाम नबियों पर यों काबू पाऊँगी कि वह झूट ही बोलेंगे’। रब ने फ़रमाया, ‘तू कामयाब होगी। जा और यों ही कर!’ 22 ऐ बादशाह, रब ने आप पर आफ़त लाने का फैसला कर लिया है, इसलिए उसने झूटी रूह को आपके इन तमाम नबियों के मुँह में डाल दिया है।”

23 तब सिदकियाह बिन कनाना ने आगे बढ़कर मीकायाह के मुँह पर थप्पड़ मारा और बोला, “रब का रूह किस तरह मुझसे निकल गया ताकि तुझसे बात करे?” 24 मीकायाह ने जवाब दिया, “जिस दिन आप कभी इस कमरे में, कभी उसमें खिसककर छुपने की कोशिश करेंगे उस दिन आपको पता चलेगा।”

25 तब अख़ियब बादशाह ने हुक्म दिया, “मीकायाह को शहर पर मुक़र्रर अफ़सर अमून और मेरे बेटे युआस के पास वापस भेज दो! 26 उन्हें बता देना, ‘इस आदमी को जेल में डालकर मेरे सहीह-सलामत वापस आने तक कम से कम रोटी और पानी दिया करें’।” 27 मीकायाह बोला, “अगर आप सहीह-सलामत वापस आएँ तो मतलब होगा कि रब ने मेरी मारिफ़त बात नहीं की।” फिर वह साथ खड़े लोगों से मुखातिब हुआ, “तमाम लोग ध्यान दें!”

अख़ियब रामात के करीब मर जाता है

28 इसके बाद इसराईल का बादशाह अख़ियब और यहदाह का बादशाह यह्सफ़त मिलकर रामात-जिलियाद पर हमला करने के लिए रवाना हुए। 29 जंग से पहले अख़ियब ने यह्सफ़त से कहा, “मैं अपना भेस बदलकर मैदाने-जंग में जाऊँगा। लेकिन आप अपना शाही लिबास न उतारें।” चुनौचे इसराईल का बादशाह अपना भेस बदलकर मैदाने-जंग में आया। 30 शाम के बादशाह ने रथों पर मुक़र्रर अपने अफ़सरों को हुक्म दिया था, “सिर्फ़ और सिर्फ़ बादशाह पर हमला करें। किसी और से मत लड़ना, खाह वह छोटा हो या बड़ा।”

31 जब लड़ाई छिड़ गई तो रथों के अफ़सर यह्सफ़त पर दूट पड़े, क्योंकि उन्होंने कहा, “यही इसराईल का बादशाह है!” लेकिन जब यह्सफ़त मदद के लिए चिल्ला उठा तो रब ने उस की सुनी। उसने उनका ध्यान यह्सफ़त से खींच लिया, 32 क्योंकि जब दुश्मनों को मालूम हुआ कि यह अख़ियब बादशाह नहीं है तो वह उसका ताक़्क़ुब करने से बाज़ आए। 33 लेकिन किसी ने खास निशाना बाँधे बग़ैर अपना तीर चलाया तो वह अख़ियब को ऐसी जगह जा लगा जहाँ ज़िरा-बक़तर का जोड़ था। बादशाह ने अपने रथबान को हुक्म दिया, “रथ को मोड़कर

मुझे मैदान-जंग से बाहर ले जाओ! मुझे चोट लग गई है।” ³⁴ लेकिन चूँकि उस पूरे दिन शदीद किस्म की लड़ाई जारी रही, इसलिए बादशाह अपने रथ में टेक लगाकर दुश्मन के मुकाबिल खड़ा रहा। जब सूरज गुस्ब होने लगा तो वह मर गया।

19

¹ लेकिन यहूदाह का बादशाह यहसफत सहीह-सलामत यरूशलम और अपने महल में पहुँचा। ² उस वक्त याहू बिन हनानी जो गैबबीन था उसे मिलने के लिए निकला और बादशाह से कहा, “क्या यह ठीक है कि आप शरीर की मदद करें? आप क्यों उनको प्यार करते हैं जो रब से नफरत करते हैं? यह देखकर रब का ग़ज़ब आप पर नाज़िल हुआ है। ³ तो भी आपमें अच्छी बातें भी पाई जाती हैं। आपने यसीरत देवी के खंबों को मुल्क से दूर करके अल्लाह के तालिब होने का पक्का इरादा कर रखा है।”

यहसफत कानूनी काररवाई की इसलाह करता है

⁴ इसके बाद यहसफत यरूशलम में रहा। लेकिन एक दिन वह दुबारा निकला। इस बार उसने जुनूब में बैर-सबा से लेकर शिमाल में इफ़राईम के पहाड़ी इलाके तक पूरे यहूदाह का दौरा किया। हर जगह वह लोगों को रब उनके बापदादा के खुदा के पास वापस लाया। ⁵ उसने यहूदाह के तमाम किलाबंद शहरों में काज़ी भी मुकर्रर किए। ⁶ उन्हें समझाते हुए उसने कहा, “अपनी रविश पर ध्यान दें! याद रहे कि आप इनसान के जवाबदेह नहीं हैं बल्कि रब के। वही आपके साथ होगा जब आप फ़ैसले करेंगे। ⁷ चुनौचे अल्लाह का खौफ़ मानकर एहतियात से लोगों का इनसाफ़ करें। क्योंकि जहाँ रब हमारा खुदा है वहाँ बेइनसाफी, जानिबदारी और रिश्वतखोरी हो ही नहीं सकती।”

⁸ यरूशलम में यहसफत ने कुछ लावियों, इमामों और खानदानी सरपरस्तों को इनसाफ़ करने की ज़िम्मादारी दी। रब की शरीअत से मुताल्लिक किसी मामले या यरूशलम के बाशिंदों के दरमियान झगड़े की सूरत में उन्हें फ़ैसला करना था। ⁹ यहसफत ने उन्हें समझाते हुए कहा, “रब का खौफ़ मानकर अपनी खिदमत को वफ़ादारी और पूरे दिल से संरजाम दें। ¹⁰ आपके भाई शहरों से आकर आपके सामने अपने झगड़े पेश करेंगे ताकि आप उनका फ़ैसला करें। आपको क़ल्ल के मुकदमों का फ़ैसला करना पड़ेगा। ऐसे मामलात भी होंगे जो रब की शरीअत, किसी हुक्म, हिदायत या उसूल से ताल्लुक रखेंगे। जो भी हो, लाज़िम है कि आप उन्हें समझाएँ ताकि वह रब का गुनाह न करें। वरना उसका ग़ज़ब आप और आपके भाइयों पर नाज़िल होगा। अगर आप यह करें तो आप बेकुसूर रहेंगे। ¹¹ इमामे-आज़म अमरियाह रब की शरीअत से ताल्लुक रखनेवाले मामलात का हतमी फ़ैसला करेगा। जो मुकदमे बादशाह से ताल्लुक रखते हैं उनका हतमी फ़ैसला यहूदाह के क़बीले का सरबराह ज़बदियाह बिन इसमाईल करेगा। अदालत का इंतज़ाम चलाने में लावी आपकी मदद करेंगे। अब हौसला रखकर अपनी खिदमत संरजाम दें। जो भी सहीह काम करेगा उसके साथ रब होगा।”

20

अम्मोनियों का यहूदाह पर हमला

¹ कुछ देर के बाद मोआबी, अम्मोनी और कुछ मऊनी यहसफत से जंग करने के लिए निकले। ² एक कासिद ने आकर बादशाह को इतला दी, “मुल्के-अदोम से एक बड़ी फ़ौज आपसे लड़ने के लिए आ रही है। वह बहीराए-मुरदार के दूसरे किनारे से बढ़ती बढ़ती इस वक्त हससून-तमर पहुँच चुकी है” (हससून ऐन-जदी का दूसरा नाम है)।

³ यह सुनकर यहसफत घबरा गया। उसने रब से राहनुमाई माँगने का फ़ैसला करके एलान किया कि तमाम यहूदाह रोज़ा रखे। ⁴ यहूदाह के तमाम शहरों से लोग यरूशलम आए ताकि मिलकर मदद के लिए रब से दुआ माँगें। ⁵ वह रब के घर के नए सहन में जमा हुए और यहसफत ने सामने आकर ⁶ दुआ की,

“ऐ रब, हमारे बापदादा के खुदा! तू ही आसमान पर तख़्तनशीन खुदा है, और तू ही दुनिया के तमाम ममालिक पर हुक्मत करता है। तेरे हाथ में कुदरत और ताकत है। कोई भी तेरा मुकाबला नहीं कर सकता। ⁷ ऐ हमारे खुदा, तूने इस मुल्क के पुराने बाशिंदों को अपनी क़ौम इसराईल के आगे से निकाल दिया। इब्राहीम तेरा दोस्त था, और उस की औलाद को तूने यह मुल्क हमेशा के लिए दे दिया। ⁸ इसमें तेरी क़ौम आबाद हुई। तेरे नाम की ताज़ीम में मक़दिस बनाकर उन्होंने कहा, ⁹ ‘जब भी आफ़त हम पर आए तो हम यहाँ तेरे हुज़ूर आ सकेंगे, चाहे जंग, वबा, काल या कोई और सज़ा हो। अगर हम उस वक्त इस घर के सामने खड़े होकर मदद के लिए तुझे पुकारें तो तू हमारी सुनकर हमें बचाएगा, क्योंकि इस इमारत पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है।’

¹⁰ अब अम्मोन, मोआब और पहाड़ी मुल्क सईर की हरकतों को देख! जब इसराईल मिसर से निकला तो तूने उसे इन क़ौमों पर हमला करने और इनके इलाके में से गुज़रने की इजाज़त न दी। इसराईल को मुतबादिल रास्ता इख़्तियार करना पड़ा, क्योंकि उसे इन्हें हलाक करने की इजाज़त न मिली। ¹¹ अब ध्यान दे कि यह बदले में क्या कर रहे हैं। यह हमें उस मौस्सी ज़मीन से निकालना चाहते हैं जो तूने हमें दी थी। ¹² ऐ हमारे खुदा, क्या तू उनकी अदालत नहीं करेगा? हम तो इस बड़ी फ़ौज के मुकाबले में बेबस हैं। इसके हमले से बचने का रास्ता हमें नज़र नहीं आता, लेकिन हमारी आँखें मदद के लिए तुझ पर लगी हैं।”

¹³ यहूदाह के तमाम मर्द, औरतें और बच्चे वहाँ रब के हुज़ूर खड़े रहे। ¹⁴ तब रब का रूह एक लावी बनाम यहज़ियेल पर नाज़िल हुआ जब वह जमात के दरमियान खड़ा था। यह आदमी आसफ़ के खानदान का था, और उसका पूरा नाम यहज़ियेल बिन ज़करियाह बिन बिनायाह बिन

यइयेल बिन मत्तनियाह था। 15 उसने कहा, “यहूदाह और यरूशलम के लोगो, मेरी बात सुनें! ऐ बादशाह, आप भी इस पर ध्यान दें। रब फरमाता है कि डरो मत, और इस बड़ी फौज को देखकर मत घबराना। क्योंकि यह जंग तुम्हारा नहीं बल्कि मेरा मामला है। 16 कल उनके मुकाबले के लिए निकलो। उस वक्त वह दरीए-सीस से होकर तुम्हारी तरफ बढ़ रहे होंगे। तुम्हारा उनसे मुकाबला उस वादी के सिरे पर होगा जहाँ यरूएल का रेगिस्तान शुरू होता है। 17 लेकिन तुम्हें लड़ने की जरूरत नहीं होगी। बस दुश्मन के आमने-सामने खड़े होकर स्क जाओ और देखो कि रब किस तरह तुम्हें छुटकारा देगा। लिहाजा मत डरो, ऐ यहूदाह और यरूशलम, और दहशत मत खाओ। कल उनका सामना करने के लिए निकलो, क्योंकि रब तुम्हारे साथ होगा।”

18 यह सुनकर यहसफ़त मुँह के बल झुक गया। यहूदाह और यरूशलम के तमाम लोगों ने भी औंधे मुँह झुककर रब की परस्तिश की। 19 फिर किहात और कोरह के खानदानों के कुछ लावी खड़े होकर बुलंद आवाज़ से रब इसराईल के खुदा की हम्दो-सना करने लगे।

अम्मोनियों पर फ़तह

20 अगले दिन सुबह-सवेरे यहूदाह की फौज तकुअ के रेगिस्तान के लिए रवाना हुई। निकलते वक्त यहसफ़त ने उनके सामने खड़े होकर कहा, “यहूदाह और यरूशलम के मर्दों, मेरी बात सुनें! रब अपने खुदा पर भरोसा रखें तो आप कायम रहेंगे। उसके नबियों की बातों का यक़ीन करें तो आपको कामयाबी हासिल होगी।” 21 लोगों से मशवरा करके यहसफ़त ने कुछ मर्दों को रब की ताज़ीम में गीत गाने के लिए मुर्कर किया। मुक़द्दस लिबास पहने हुए वह फौज के आगे आगे चलकर हम्दो-सना का यह गीत गाते रहे, “रब की सताइश करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।”

22 उस वक्त रब हमलाआवर फौज के मुखालिफ़ों को खड़ा कर चुका था। अब जब यहूदाह के मर्द हम्द के गीत गाने लगे तो वह ताक में से निकलकर बढ़ती हुई फौज पर टूट पड़े और उसे शिकस्त दी। 23 फिर अम्मोनियों और मोआबियों ने मिलकर पहाड़ी मुल्क सईर के मर्दों पर हमला किया ताकि उन्हें मुकम्मल तौर पर ख़त्म कर दें। जब यह हलाक हुए तो अम्मोनी और मोआबी एक दूसरे को मौत के घाट उतारने लगे। 24 यहूदाह के फौजियों को इसका इल्म नहीं था। चलते चलते वह उस मक़ाम तक पहुँच गए जहाँ से रेगिस्तान नज़र आता है। वहाँ वह दुश्मन को तलाश करने लगे, लेकिन लाशें ही लाशें ज़मीन पर बिखरी नज़र आईं। एक भी दुश्मन नहीं बचा था। 25 यहसफ़त और उसके लोगों के लिए सिर्फ़ दुश्मन को लूटने का काम बाक़ी रह गया था। कसरत के जानवर, किस्म किस्म का सामान, कपड़े और कई कीमती चीज़ें थीं। इतना सामान था कि वह उसे एक वक्त में उठाकर अपने साथ ले जा नहीं सकते थे। सारा माल जमा करने में तीन दिन लगे।

26 चौथे दिन वह करीब की एक वादी में जमा हुए ताकि रब की तारीफ़ करें। उस वक्त से वादी का नाम ‘तारीफ़ की वादी’ पड़ गया। 27 इसके बाद यहूदाह और यरूशलम के तमाम मर्द यहसफ़त की राहनुमाई में खुशी मनाते हुए यरूशलम वापस आए। क्योंकि रब ने उन्हें दुश्मन की शिकस्त से खुशी का सुनहरा मौक़ा अता किया था। 28 सितार, सरोद और तुरम बजाते हुए वह यरूशलम में दाख़िल हुए और रब के घर के पास जा पहुँचे। 29 जब ईर्दगिर्द के ममालिक ने सुना कि किस तरह रब इसराईल के दुश्मनों से लड़ा है तो उनमें अल्लाह की दहशत फैल गई। 30 उस वक्त से यहसफ़त सूकून से हुकूमत कर सका, क्योंकि अल्लाह ने उसे चारों तरफ़ के ममालिक के हमलों से महफूज़ रखा था।

यहसफ़त के आखिरी साल और मौत

31 यहसफ़त 35 साल की उम्र में बादशाह बना, और वह यरूशलम में रहकर 25 साल हुकूमत करता रहा। उस की माँ अज़ूबा बिन सिलही थी। 32 वह अपने बाप आसा के नमूने पर चलता और वह कुछ करता रहा जो रब को पसंद था। 33 लेकिन उसने भी ऊँचे मक़ामों के मंदिरों को ख़त्म न किया, और लोगों के दिल अपने बापदादा के खुदा की तरफ़ मायल न हुए।

34 बाक़ी जो कुछ यहसफ़त की हुकूमत के दौरान हुआ वह शुरू से लेकर आखिर तक याहू बिन हनानी की तारीख़ में बयान किया गया है। बाद में सब कुछ ‘शाहाने-इसराईल की तारीख़’ की किताब में दर्ज किया गया।

35 बाद में यहूदाह के बादशाह यहसफ़त ने इसराईल के बादशाह अखज़ियाह से इत्तहाद किया, गो उसका रवैया बेदीनी का था। 36 दोनों ने मिलकर तिजारती जहाज़ों का ऐसा बेड़ा बनवाया जो तरसीस तक पहुँच सके। जब यह जहाज़ बंदरगाह अस्यून-जाबर में तैयार हुए 37 तो मरेसा का रहनेवाला इलियज़र बिन दूदावाह ने यहसफ़त के खिलाफ़ पेशगोई की, “चूँकि आप अखज़ियाह के साथ मुत्तहिद हो गए हैं इसलिए रब आपका काम तबाह कर देगा!” और वाकई, यह जहाज़ कभी अपनी मनज़िले-मक़सूद तरसीस तक पहुँच न सके, क्योंकि वह पहले ही टुकड़े टुकड़े हो गए।

21

1 जब यहसफ़त मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है ख़ानदानी कब्र में दफ़न किया गया। फिर उसका बेटा यह्राम तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह यह्राम

2 यहसफ़त के बाक़ी बेटे अज़रियाह, यहियेल, ज़करियाह, अज़रियाह, मीकाएल और सफ़तियाह थे। 3 यहसफ़त ने उन्हें बहुत सोना-चाँदी और दीगर कीमती चीज़ें देकर यहूदाह के किलाबंद शहरों पर मुर्कर किया था। लेकिन यह्राम को उसने पहलौठा होने के बाइस अपना जा-नशीन

बनाया था। ⁴ बादशाह बनने के बाद जब यहदाह की हुकूमत मज़बूती से उसके हाथ में थी तो यहराम ने अपने तमाम भाइयों को यहदाह के कुछ राहनुमाओं समेत कत्ल कर दिया।

⁵ यहराम 32 साल की उम्र में बादशाह बना, और वह यरूशलम में रहकर 8 साल तक हुकूमत करता रहा। ⁶ उस की शादी इसराईल के बादशाह अखियब की बेटी से हुई थी, और वह इसराईल के बादशाहों और खासकर अखियब के खानदान के बुरे नमूने पर चलता रहा। उसका चाल-चलन रब को नापसंद था। ⁷ तो भी वह दाऊद के घराने को तबाह नहीं करना चाहता था, क्योंकि उसने दाऊद से अहद बाँधकर वादा किया था कि तेरा और तेरी औलाद का चराग हमेशा तक जलता रहेगा।

⁸ यहराम की हुकूमत के दौरान अदोमियों ने बगावत की और यहदाह की हुकूमत को रद्द करके अपना बादशाह मुकर्रर किया। ⁹ तब यहराम अपने अफसरों और तमाम रथों को लेकर उनके पास पहुँचा। जब जंग छिड़ गई तो अदोमियों ने उसे और उसके रथों पर मुकर्रर अफसरों को घेर लिया, लेकिन रात को बादशाह घेरनेवालों की सफ़ों को तोड़ने में कामयाब हो गया। ¹⁰ तो भी मुल्के-अदोम आज तक दुबारा यहदाह की हुकूमत के तहत नहीं आया। उसी वक़्त लिबना शहर भी सरकश होकर खुदमुखतार हो गया। यह सब कुछ इसलिए हुआ कि यहराम ने रब अपने बापदादा के खुदा को तर्क कर दिया था, ¹¹ यहाँ तक कि उसने यहदाह के पहाड़ी इलाक़े में कई ऊँची जगहों पर मंदिर बनवाए और यरूशलम के बाशिंदों को रब से बेवफ़ा हो जाने पर उकसाया। पूरे यहदाह को वह बुतपरस्ती की ग़लत राह पर ले आया।

¹² तब यहराम को इलियास नबी से ख़त मिला जिसमें लिखा था, “रब आपके बाप दाऊद का खुदा फ़रमाता है, ‘तू अपने बाप यहसफ़त और अपने दादा आसा बादशाह के अच्छे नमूने पर नहीं चला ¹³ बल्कि इसराईल के बादशाहों की ग़लत राहों पर। बिल्कुल अखियब के खानदान की तरह तू यरूशलम और पूरे यहदाह के बाशिंदों को बुतपरस्ती की राह पर लाया है। और यह तेरे लिए काफ़ी नहीं था, बल्कि तूने अपने सगे भाइयों को भी जो तुझसे बेहतर थे कत्ल कर दिया। ¹⁴ इसलिए रब तेरी कौम, तेरे बेटों और तेरी बीवियों को तेरी पूरी मिलकियत समेत बड़ी मुसीबत में डालने को है। ¹⁵ तू खुद बीमार हो जाएगा। लाइलाज मरज़ की ज़द में आकर तुझे बड़ी देर तक तकलीफ़ होगी। आखिरकार तेरी अंतड़ियाँ जिस्म से निकलेंगी।’”

¹⁶ उन दिनों में रब ने फ़िलिस्तियों और एथोपिया के पड़ोस में रहनेवाले अरब कबीलों को यहराम पर हमला करने की तहरीक दी। ¹⁷ यहदाह में घुसकर वह यरूशलम तक पहुँच गए और बादशाह के महल को लूटने में कामयाब हुए। तमाम मालो-असबाब के अलावा उन्होंने बादशाह के बेटों और बीवियों को भी छीन लिया। सिर्फ़ सबसे छोटा बेटा यहआखज़ यानी अखज़ियाह बच निकला।

¹⁸ इसके बाद रब का ग़ज़ब बादशाह पर नाज़िल हुआ। उसे लाइलाज बीमारी लग गई जिससे उस की अंतड़ियाँ मुतअस्सिर हुईं। ¹⁹ बादशाह की हालत बहुत ख़राब होती गई। दो साल के बाद अंतड़ियाँ जिस्म से निकल गईं। यहराम शदीद दर्द की हालत में कूच कर गया। जनाज़े पर उस की कौम ने उसके एहताराम में लकड़ी का बड़ा ढेर न जलाया, गो उन्होंने यह उसके बापदादा के लिए किया था।

²⁰ यहराम 32 साल की उम्र में बादशाह बना और यरूशलम में रहकर 8 साल तक हुकूमत करता रहा था। जब फ़ौत हुआ तो किसी को भी अफ़सोस न हुआ। उसे यरूशलम शहर के उस हिस्से में दफ़न तो किया गया जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है, लेकिन शाही कब्रों में नहीं।

22

यहदाह का बादशाह अखज़ियाह

¹ यरूशलम के बाशिंदों ने यहराम के सबसे छोटे बेटे अखज़ियाह को तख़्त पर बिठा दिया। बाक़ी तमाम बेटों को उन लुटेरों ने कत्ल किया था जो अरबों के साथ शाही लश्करगाह में घुस आए थे। यही वज़ह थी कि यहदाह के बादशाह यहराम का बेटा अखज़ियाह बादशाह बना। ² वह 22 साल की उम्र में तख़्तनशीन हुआ और यरूशलम में रहकर एक साल बादशाह रहा। उस की माँ अतलियाह इसराईल के बादशाह उमरी की पोती थी। ³ अखज़ियाह भी अखियब के खानदान के ग़लत नमूने पर चल पड़ा, क्योंकि उस की माँ उसे बेदीन राहों पर चलने पर उभारती रही। ⁴ बाप की वफ़ात पर वह अखियब के घराने के मशवरे पर चलने लगा। नतीजे में उसका चाल-चलन रब को नापसंद था। आखिरकार यही लोग उस की हलाक़त का सबब बन गए।

⁵ इन्हीं के मशवरे पर वह इसराईल के बादशाह यूराम बिन अखियब के साथ मिलकर शाम के बादशाह हज़ाएल से लड़ने के लिए निकला। जब रामात-जिलियाद के करीब जंग छिड़ गई तो यूराम शाम के फ़ौजियों के हाथों ज़ख़मी हुआ ⁶ और मैदाने-जंग को छोड़कर यज़्रएल वापस आया ताकि ज़ख़म भर जाएँ। जब वह वहाँ ठहरा हुआ था तो यहदाह का बादशाह अखज़ियाह बिन यहराम उसका हाल पूछने के लिए यज़्रएल आया। ⁷ लेकिन अल्लाह की मरज़ी थी कि यह मुलाक़ात अखज़ियाह की हलाक़त का बाइस बने। वहाँ पहुँचकर वह यूराम के साथ याह बिन निमसी से मिलने के लिए निकला, वही याह जिसे रब ने मसह करके अखियब के खानदान को नेस्तो-नाबूद करने के लिए मख़सूस किया था। ⁸ अखियब के खानदान की अदालत करते करते याह की मुलाक़ात यहदाह के कुछ अफ़सरों और अखज़ियाह के बाज़ रिश्तेदारों से हुई जो अखज़ियाह की खिदमत में उसके साथ आए थे। इन्हें कत्ल करके ⁹ याह अखज़ियाह को ढूँढ़ने लगा। पता चला कि वह सामरिया शहर में छुप गया है। उसे याह के पास लाया गया जिसने उसे कत्ल कर दिया। तो भी उसे इज़ज़त के साथ दफ़न किया गया, क्योंकि लोगों ने कहा, “आखिर वह यहसफ़त का पोता है जो पूरे दिल से रब का तालिब रहा।” उस वक़्त अखज़ियाह के खानदान में कोई न पाया गया जो बादशाह का काम सँभाल सकता।

अतलियाह की ज़ालिमाना हुकूमत

10 जब अखजियाह की माँ अतलियाह को मालूम हुआ कि मेरा बेटा मर गया है तो वह यहदाह के पूरे शाही खानदान को कत्ल करने लगी। 11 लेकिन अखजियाह की सगी बहन यहसबा ने अखजियाह के छोटे बेटे युआस को चुपके से उन शहजादों में से निकाल लिया जिन्हें कत्ल करना था और उसे उस की दाया के साथ एक स्टोर में छुपा दिया जिसमें बिस्तर वगैरा महफूज रखे जाते थे। वहाँ वह अतलियाह की गिरिफ्त से महफूज रहा। यहसबा यहोयदा इमाम की बीवी थी। 12 बाद में युआस को रब के घर में मुतकिल किया गया जहाँ वह उनके साथ उन छः सालों के दौरान छुपा रहा जब अतलियाह मलिका थी।

23

अतलियाह का अंजाम और युआस की हुकूमत

1 अतलियाह की हुकूमत के सातवें साल में यहोयदा ने जुरत करके सौ सौ फौजियों पर मुकरर पाँच अफसरों से अहद बाँधा। उनके नाम अजरियाह बिन यरोहाम, इसमाईल बिन यहनान, अजरियाह बिन ओबेद, मासियाह बिन अदायाह और इलीसाफ़त बिन जिकरी थे। 2 इन आदमियों ने चुपके से यहदाह के तमाम शहरों में से गुजरकर लावियों और इसराईली खानदानों के सरपरस्तों को जमा किया और फिर उनके साथ मिलकर यरूशलम आए। 3 अल्लाह के घर में पूरी जमात ने जवान बादशाह युआस के साथ अहद बाँधा।

यहोयदा उनसे मुखातिब हुआ, “हमारे बादशाह का बेटा ही हम पर हुकूमत करे, क्योंकि रब ने मुकरर किया है कि दाऊद की औलाद यह जिम्मादारी सँभाले। 4 चुनौचे अगले सबत के दिन आप इमामों और लावियों में से जितने झूटी पर आएँगे वह तीन हिस्सों में तकसीम हो जाएँ। एक हिस्सा रब के घर के दरवाज़ों पर पहरा दे, 5 दूसरा शाही महल पर और तीसरा बुनियाद नामी दरवाज़े पर। बाक़ी सब आदमी रब के घर के सहनों में जमा हो जाएँ। 6 खिदमत करनेवाले इमामों और लावियों के सिवा कोई और रब के घर में दाखिल न हो। सिर्फ यही अंदर जा सकते हैं, क्योंकि रब ने उन्हें इस खिदमत के लिए मखसूस किया है। लाज़िम है कि पूरी क्रौम रब की हिदायात पर अमल करे। 7 बाक़ी लावी बादशाह के इर्दगिर्द दायरा बनाकर अपने हथियारों को पकड़े रखें और जहाँ भी वह जाए उसे घेरे रखें। जो भी रब के घर में घुसने की कोशिश करे उसे मार डालना।”

8 लावी और यहदाह के इन तमाम मर्दों ने ऐसा ही किया। अगले सबत के दिन सब अपने बंदों समेत उसके पास आए, वह भी जिनकी झूटी थी और वह भी जिनकी अब छूटी थी। क्योंकि यहोयदा ने खिदमत करनेवालों में से किसी को भी जाने की इजाज़त नहीं दी थी। 9 इमाम ने सौ सौ फौजियों पर मुकरर अफसरों को दाऊद बादशाह के वह नेजे और छोटी और बड़ी ढालें दीं जो अब तक रब के घर में महफूज रखी हुई थीं। 10 फिर उसने फौजियों को बादशाह के इर्दगिर्द खड़ा किया। हर एक अपने हथियार पकड़े तैयार था। कुरबानगाह और रब के घर के दरमियान उनका दायरा रब के घर की जुनूबी दीवार से लेकर उस की शिमाली दीवार तक फैला हुआ था। 11 फिर वह युआस को बाहर लाए और उसके सर पर ताज रखकर उसे क़वानीन की किताब दे दी। यों युआस को बादशाह बना दिया गया। उन्होंने उसे मसह किया और बुलंद आवाज़ से नारा लगाने लगे, “बादशाह जिंदाबाद!”

12 लोगों का शोर अतलियाह तक पहुँचा, क्योंकि सब दौड़कर जमा हो रहे और बादशाह की खुशी में नारे लगा रहे थे। वह रब के घर के सहन में उनके पास आई 13 तो क्या देखती है कि नया बादशाह दरवाज़े के करीब उस सतून के पास खड़ा है जहाँ बादशाह रिवाज के मुताबिक खड़ा होता है, और वह अफसरों और तुरम बजानेवालों से घिरा हुआ है। तमाम उम्मत भी साथ खड़ी तुरम बजा बजाकर खुशी मना रही है। साथ साथ गुल्कार अपने साज़ बजाकर हम्द के गीत गाने में राहनुमाई कर रहे हैं। अतलियाह रंजिश के मारे अपने कपड़े फाड़कर चीख उठी, “ग़दारी, ग़दारी!”

14 यहोयदा इमाम ने सौ सौ फौजियों पर मुकरर उन अफसरों को बुलाया जिनके सुपुर्द फौज की गई थी और उन्हें हुक्म दिया, “उसे बाहर ले जाएँ, क्योंकि मुनासिब नहीं कि उसे रब के घर के पास मारा जाए। और जो भी उसके पीछे आए उसे तलवार से मार देना।” 15 वह अतलियाह को पकड़कर वहाँ से बाहर ले गए और उसे घोड़ों के दरवाज़े पर मार दिया जो शाही महल के पास था।

16 फिर यहोयदा ने क्रौम और बादशाह के साथ मिलकर रब से अहद बाँधकर वादा किया कि हम रब की क्रौम रहेंगे। 17 इसके बाद सब बाल के मंदिर पर टूट पड़े और उसे ढा दिया। उस की कुरबानगाहों और बुतों को टुकड़े टुकड़े करके उन्होंने बाल के पुजारी मन्तान को कुरबानगाहों के सामने ही मार डाला।

18 यहोयदा ने इमामों और लावियों को दुबारा रब के घर को सँभालने की जिम्मादारी दी। दाऊद ने उन्हें खिदमत के लिए गुरोहों में तकसीम किया था। उस की हिदायात के मुताबिक उन्हीं को खुशी मनाते और गीत गाते हुए भस्म होनेवाली कुरबानियाँ पेश करनी थीं, जिस तरह मूसा की शरीअत में लिखा है। 19 रब के घर के दरवाज़ों पर यहोयदा ने दरबान खड़े किए ताकि ऐसे लोगों को अंदर आने से रोका जाए जो किसी भी वजह से नापाक हों।

20 फिर वह सौ सौ फौजियों पर मुकरर अफसरों, असरो-रसूखवालों, क्रौम के हुक्मरानों और बाक़ी पूरी उम्मत के हमराह जुलूस निकालकर बादशाह को बालाई दरवाज़े से होकर शाही महल में ले गया। वहाँ उन्होंने बादशाह को तख्त पर बिठा दिया, 21 और तमाम उम्मत खुशी मनाती रही। यों यरूशलम शहर को सुकून मिला, क्योंकि अतलियाह को तलवार से मार दिया गया था।

24

युआस रब के घर की मरम्मत करवाता है

1 युआस 7 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया 40 साल था। उस की माँ जिबियाह बैर-सबा की रहनेवाली थी। 2 यहोयदा के जीते-जी युआस वह कुछ करता रहा जो रब को पसंद था। 3 यहोयदा ने उस की शादी दो खवातीन से कराई जिनके बेटे-बेटियाँ पैदा हुए।

4 कुछ देर के बाद युआस ने रब के घर की मरम्मत कराने का फैसला किया। 5 इमामों और लावियों को अपने पास बुलाकर उसने उन्हें हुक्म दिया, “यहूदाह के शहरों में से गुजरकर तमाम लोगों से पैसे जमा करें ताकि आप साल बसाल अपने खुदा के घर की मरम्मत करवाएँ। अब जाकर जल्दी करें।” लेकिन लावियों ने बड़ी देर लगाई।

6 तब बादशाह ने इमामे-आज़म यहोयदा को बुलाकर पूछा, “आपने लावियों से मुतालबा क्यों नहीं किया कि वह यहूदाह के शहरों और यरूशलम से रब के घर की मरम्मत के पैसे जमा करें? यह तो कोई नई बात नहीं है, क्योंकि रब का खादिम मूसा भी मुलाकात का खैमा ठीक रखने के लिए इसराईली जमात से टैक्स लेता रहा। 7 आपको खुद मालूम है कि उस बेदीन औरत अतलियाह ने अपने पैरोकारों के साथ रब के घर में नक्रब लगाकर रब के लिए मखसूस हदिये छीन लिए और बाल के अपने बुतों की खिदमत के लिए इस्तेमाल किए थे।”

8 बादशाह के हुक्म पर एक संदूक बनवाया गया जो बाहर, रब के घर के सहन के दरवाज़े पर रखा गया। 9 पूरे यहूदाह और यरूशलम में एलान किया गया कि रब के लिए वह टैक्स अदा किया जाए जिसका खुदा के खादिम मूसा ने रेगिस्तान में इसराईलियों से मुतालबा किया था। 10 यह सुनकर तमाम राहनुमा बल्कि पूरी कौम खुश हुई। अपने हदिये रब के घर के पास लाकर वह उन्हें संदूक में डालते रहे। जब कभी वह भर जाता 11 तो लावी उसे उठाकर बादशाह के अफसरों के पास ले जाते। अगर उसमें वाकई बहुत पैसे होते तो बादशाह का मीरमुंशी और इमामे-आज़म का एक अफसर आकर उसे खाली कर देते। फिर लावी उसे उस की जगह वापस रख देते थे। यह सिलसिला रोज़ाना जारी रहा, और आखिरकार बहुत बड़ी रकम इकट्ठी हो गई।

12 बादशाह और यहोयदा यह पैसे उन ठेकेदारों को दिया करते थे जो रब के घर की मरम्मत करवाते थे। यह पैसे पत्थर तराशनेवालों, बढ़इयों और उन कारीगरों की उजरत के लिए सर्फ़ हुए जो लोहे और पीतल का काम करते थे। 13 रब के घर की मरम्मत के निगरानों ने मेहनत से काम किया, और उनके ज़ेरे-निगरानी तरक्की होती गई। आखिर में रब के घर की हालत पहले की-सी हो गई थी बल्कि उन्होंने उसे मज़ीद मज़बूत बना दिया। 14 काम के इख़िताम पर ठेकेदार बाकी पैसे युआस बादशाह और यहोयदा के पास लाए। इनसे उन्होंने रब के घर की खिदमत के लिए दरकार प्याले, सोने और चाँदी के बरतन और दीगर कई चीज़ें जो कुरबानियाँ चढ़ाने के लिए इस्तेमाल होती थीं बनवाईं। यहोयदा के जीते-जी रब के घर में बाकायदगी से भस्म होनेवाली कुरबानियाँ पेश की जाती रहीं।

15 यहोयदा निहायत बूढ़ा हो गया। 130 साल की उम्र में वह फ़ौत हुआ। 16 उसे यरूशलम के उस हिस्से में शाही कब्रिस्तान में दफ़नाया गया जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है, क्योंकि उसने इसराईल में अल्लाह और उसके घर की अच्छी खिदमत की थी।

युआस बादशाह रब को तर्क करता है

17 यहोयदा की मौत के बाद यहूदाह के बुजुर्ग युआस के पास आकर मुँह के बल झुक गए। उस वक़्त से वह उनके मशवरों पर अमल करने लगा। 18 इसका एक नतीजा यह निकला कि वह उनके साथ मिलकर रब अपने बाप के खुदा के घर को छोड़कर यसीरत देवी के खंबों और बुतों की पूजा करने लगा। इस गुनाह की वजह से अल्लाह का गुज़ब यहूदाह और यरूशलम पर नाज़िल हुआ। 19 उसने अपने नबियों को लोगों के पास भेजा ताकि वह उन्हें समझाकर रब के पास वापस लाएँ। लेकिन कोई भी उनकी बात सुनने के लिए तैयार न हुआ। 20 फिर अल्लाह का रूह यहोयदा इमाम के बेटे ज़करियाह पर नाज़िल हुआ, और उसने कौम के सामने खड़े होकर कहा, “अल्लाह फ़रमाता है, ‘तुम रब के अहकाम की खिलाफ़वरज़ी क्यों करते हो? तुम्हें कामयाबी हासिल नहीं होगी। चूँकि तुमने रब को तर्क कर दिया है इसलिए उसने तुम्हें तर्क कर दिया है!’”

21 जवाब में लोगों ने ज़करियाह के खिलाफ़ साज़िश करके उसे बादशाह के हुक्म पर रब के घर के सहन में संगसार कर दिया। 22 यों युआस बादशाह ने उस मेहरबानी का ख़याल न किया जो यहोयदा ने उस पर की थी बल्कि उसे नज़रंदाज़ करके उसके बेटे को क़त्ल किया। मरते वक़्त ज़करियाह बोला, “रब ध्यान देकर मेरा बदला ले!”

23 अगले साल के आगाज़ में शाम की फ़ौज़ युआस से लड़ने आई। यहूदाह में घुसकर उन्होंने यरूशलम पर फ़तह पाई और कौम के तमाम बुजुर्गों को मार डाला। सारा लूटा हुआ माल दमिशक़ को भेजा गया जहाँ बादशाह था। 24 अगरचे शाम की फ़ौज़ यहूदाह की फ़ौज़ की निसबत बहुत छोटी थी तो भी रब ने उसे फ़तह बख़्शी। चूँकि यहूदाह ने रब अपने बापदादा के खुदा को तर्क कर दिया था इसलिए युआस को शाम के हाथों सज़ा मिली। 25 जंग के दौरान यहूदाह का बादशाह शदीद ज़ख़मी हुआ। जब दुश्मन ने मुल्क को छोड़ दिया तो युआस के अफसरों ने उसके खिलाफ़ साज़िश की। यहोयदा इमाम के बेटे के क़त्ल का इंतक़ाम लेकर उन्होंने उसे मार डाला जब वह बीमार हालत में बिस्तर पर पड़ा था। बादशाह को यरूशलम के उस हिस्से में दफ़न किया गया जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है। लेकिन शाही कब्रिस्तान में नहीं दफ़नाया गया। 26 साज़िश करनेवालों के नाम जबद और यहज़बद थे। पहले की माँ सिमआत अम्मोनी थी जबकि दूसरे की माँ सिमरीत मोआबी थी।

27 युआस के बेटों, उसके खिलाफ नबियों के फरमानों और अल्लाह के घर की मरम्मत के बारे में मज़ीद मालूमात 'शाहान की किताब' में दर्ज हैं। युआस के बाद उसका बेटा अमसियाह तख्तनशीन हुआ।

25

यहूदाह का बादशाह अमसियाह

1 अमसियाह 25 साल की उम्र में बादशाह बना और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया 29 साल था। उस की माँ यहूअदान यरूशलम की रहनेवाली थी। 2 जो कुछ अमसियाह ने किया वह रब को पसंद था, लेकिन वह पूरे दिल से रब की पैरवी नहीं करता था। 3 ज्योंही उसके पाँव मज़बूती से जम गए उसने उन अफ़सरों को सज़ाए-मौत दी जिन्होंने बाप को क़त्ल कर दिया था। 4 लेकिन उनके बेटों को उसने ज़िंदा रहने दिया और यों मूसवी शरीअत के ताबे रहा जिसमें रब फ़रमाता है, “वालिदैन को उनके बच्चों के ज़रायम के सबब से सज़ाए-मौत न दी जाए, न बच्चों को उनके वालिदैन के ज़रायम के सबब से। अगर किसी को सज़ाए-मौत देनी हो तो उस गुनाह के सबब से जो उसने ख़ुद किया है।”

अदोम से जंग

5 अमसियाह ने यहूदाह और बिनयमीन के कबीलों के तमाम मर्दों को बुलाकर उन्हें ख़ानदानों के मुताबिक़ तरतीब दिया। उसने हज़ार हज़ार और सौ सौ फ़ौजियों पर अफ़सर मुक़र्र किए। जितने भी मर्द 20 या इससे ज़ायद साल के थे उन सबकी भरती हुई। इस तरह 3,00,000 फ़ौजी जमा हुए। सब बड़ी ढालों और नेज़ों से लैस थे। 6 इसके अलावा अमसियाह ने इसराईल के 1,00,000 तजरबाकार फ़ौजियों को उजरत पर भरती किया ताकि वह जंग में मदद करें। उन्हें उसने चाँदी के तकरीबन 3,400 किलोग्राम दिए।

7 लेकिन एक मर्द-ख़ुदा ने अमसियाह के पास आकर उसे समझाया, “बादशाह सलामत, लाज़िम है कि यह इसराईली फ़ौजी आपके साथ मिलकर लड़ने के लिए न निकलें। क्योंकि रब उनके साथ नहीं है, वह इफ़राईम के किसी भी रहनेवाले के साथ नहीं है। 8 अगर आप उनके साथ मिलकर निकलें ताकि मज़बूती से दुश्मन से लड़ें तो अल्लाह आपको दुश्मन के सामने गिरा देगा। क्योंकि अल्लाह को आपकी मदद करने और आपको गिराने की कुदरत हासिल है।” 9 अमसियाह ने एतराज़ किया, “लेकिन मैं इसराईलियों को चाँदी के 3,400 किलोग्राम अदा कर चुका हूँ। इन पैसों का क्या बनेगा?” मर्द-ख़ुदा ने जवाब दिया, “रब आपको इससे कहीं ज़्यादा अता कर सकता है।” 10 चुनौचे अमसियाह ने इफ़राईम से आए हुए तमाम फ़ौजियों को फ़ारिग करके वापस भेज दिया, और वह यहूदाह से बहुत नाराज़ हुए। हर एक बड़े तैश में अपने अपने घर चला गया।

11 तो भी अमसियाह ज़रूरत करके जंग के लिए निकला। अपनी फ़ौज को नमक की वादी में ले जाकर उसने अदोमियों पर फ़तह पाई। उनके 10,000 मर्द मैदाने-जंग में मारे गए। 12 दुश्मन के मज़ीद 10,000 आदमियों को गिरिफ़्तार कर लिया गया। यहूदाह के फ़ौजियों ने कैदियों को एक ऊँची चटान की चोटी पर ले जाकर नीचे गिरा दिया। इस तरह सब पाश पाश होकर हलाक हुए।

13 इतने में फ़ारिग किए गए इसराईली फ़ौजियों ने सामरिया और बैत-हौस्न के बीच में वाक़े यहूदाह के शहरों पर हमला किया था। लड़ते लड़ते उन्होंने 3,000 मर्दों को मौत के घाट उतार दिया और बहुत-सा माल लूट लिया था।

अमसियाह की बुतपरस्ती

14 अदोमियों को शिकस्त देने के बाद अमसियाह सईर के बाशिंदों के बुतों को लूटकर अपने घर वापस लाया। वहाँ उसने उन्हें खड़ा किया और उनके सामने औंधे मुँह झुककर उन्हें क़ुरबानियाँ पेश कीं। 15 यह देखकर रब उससे बहुत नाराज़ हुआ। उसने एक नबी को उसके पास भेजा जिसने कहा, “तू इन देवताओं की तरफ़ क्यों रुजू कर रहा है? यह तो अपनी क़ौम को तुझसे नज़ात न दिला सके।” 16 अमसियाह ने नबी की बात काटकर कहा, “हमने कब से तुझे बादशाह का मुशीर बना दिया है? ख़ामोश, वरना तुझे मार दिया जाएगा।” नबी ने ख़ामोश होकर इतना ही कहा, “तुझे मालूम है कि अल्लाह ने आपको आपकी इन हरकतों की वजह से और इसलिए कि आपने मेरा मशवरा क़बूल नहीं किया तबाह करने का फैसला कर लिया है।”

अमसियाह इसराईल के बादशाह युआस से लड़ता है

17 एक दिन यहूदाह के बादशाह अमसियाह ने अपने मुशीरों से मशवरा करने के बाद युआस बिन यहूआख़ज़ बिन याह् को पैगाम भेजा, “आएँ, हम एक दूसरे का मुकाबला करें!” 18 लेकिन इसराईल के बादशाह युआस ने जवाब दिया, “लुबनान में एक काँटेदार झाड़ी ने देवदार के एक दरख़्त से बात की, ‘मेरे बेटे के साथ अपनी बेटी का रिश्ता बान्धो।’ लेकिन उसी वक़्त लुबनान के जंगली जानवरों ने उसके ऊपर से गुज़रकर उसे पाँवों तले कुचल डाला। 19 अदोम पर फ़तह पाने के सबब से आपका दिल मग़रूर होकर मज़ीद शोहरत हासिल करना चाहता है। लेकिन मेरा मशवरा है कि आप अपने घर में रहें। आप ऐसी मुसीबत को क्यों दावत देते हैं जो आप और यहूदाह की तबाही का बाइस बन जाए?” 20 लेकिन अमसियाह मानने के लिए तैयार नहीं था। अल्लाह उसे और उस की क़ौम को इसराईलियों के हवाले करना चाहता था, क्योंकि उन्होंने अदोमियों के देवताओं की तरफ़ रुजू किया था।

21 तब इसराईल का बादशाह युआस अपनी फ़ौज लेकर यहूदाह पर चढ़ आया। बैत-शम्स के पास उसका यहूदाह के बादशाह अमसियाह के साथ मुकाबला हुआ। 22 इसराईली फ़ौज ने यहूदाह की फ़ौज को शिकस्त दी, और हर एक अपने अपने घर भाग गया। 23 इसराईल के बादशाह युआस ने यहूदाह के बादशाह अमसियाह बिन युआस बिन अख़ज़ियाह को वहीं बैत-शम्स में गिरिफ़्तार कर लिया। फिर वह उसे यरूशलम लाया

और शहर की फसील इफराईम नामी दरवाजे से लेकर कोने के दरवाजे तक गिरा दी। इस हिस्से की लंबाई तकरीबन 600 फुट थी। ²⁴ जितना भी सोना, चाँदी और कीमती सामान रब के घर और शाही महल के खजानों में था उसे उसने पूरे का पूरा छीन लिया। उस वक़्त ओबेद-अदोम रब के घर के खजाने सँभालता था। युआस लूटा हुआ माल और बाज़ यरगमालों को लेकर सामरिया वापस चला गया।

अमसियाह की मौत

²⁵ इसराईल के बादशाह युआस बिन यहूआखज़ की मौत के बाद यहूदाह का बादशाह अमसियाह बिन युआस मज़ीद 15 साल जीता रहा। ²⁶ बाकी जो कुछ अमसियाह की हुकूमत के दौरान हुआ वह शुरू से लेकर आखिर तक 'शाहाने-इसराईलो-यहूदाह' की किताब में दर्ज है। ²⁷ जब से वह रब की पैरवी करने से बाज़ आया उस वक़्त से लोग यरूशलम में उसके खिलाफ़ साज़िश करने लगे। आखिरकार उसने फ़रार होकर लकीस में पनाह ली, लेकिन साज़िश करनेवालों ने अपने लोगों को उसके पीछे भेजा, और वह वहाँ उसे क़त्ल करने में कामयाब हो गए। ²⁸ उस की लाश घोड़े पर उठाकर यहूदाह के शहर यरूशलम लाई गई जहाँ उसे खानदानी क़ब्र में दफनाया गया।

26

यहूदाह का बादशाह उज़्ज़ियाह

¹ यहूदाह के तमाम लोगों ने अमसियाह की जगह उसके बेटे उज़्ज़ियाह को तख़्त पर बिठा दिया। उस की उम्र 16 साल थी ² जब उसका बाप मरकर अपने बापदादा से जा मिला। बादशाह बनने के बाद उज़्ज़ियाह ने ऐलात शहर पर क़ब्ज़ा करके उसे दुबारा यहूदाह का हिस्सा बना लिया। उसने शहर में बहुत तामीरी काम करवाया।

³ उज़्ज़ियाह 16 साल की उम्र में बादशाह बना और यरूशलम में रहकर 52 साल हुकूमत करता रहा। उस की माँ यकूलियाह यरूशलम की रहनेवाली थी। ⁴ अपने बाप अमसियाह की तरह उसका चाल-चलन रब को पसंद था। ⁵ इमामे-आज़म ज़करियाह के जीते-जी उज़्ज़ियाह रब का तालिब रहा, क्योंकि ज़करियाह उसे अल्लाह का ख़ौफ़ मानने की तालीम देता रहा। जब तक बादशाह रब का तालिब रहा उस वक़्त तक अल्लाह उसे कामयाबी बख़्शता रहा।

⁶ उज़्ज़ियाह ने फिलिस्तिनियों से जंग करके जात, यबना और अशदूद की फसीलों को ढा दिया। दीगर कई शहरों को उसने नए सिरे से तामीर किया जो अशदूद के करीब और फिलिस्तिनियों के बाकी इलाक़े में थे। ⁷ लेकिन अल्लाह ने न सिर्फ़ फिलिस्तिनियों से लड़ते वक़्त उज़्ज़ियाह की मदद की बल्कि उस वक़्त भी जब जूर-बाल में रहनेवाले अरबों और मऊनियों से जंग छिड़ गई। ⁸ अम्मोनियों को उज़्ज़ियाह को ख़राज अदा करना पड़ा, और वह इतना ताक़तवर बना कि उस की शोहरत मिसर तक फैल गई।

⁹ यरूशलम में उज़्ज़ियाह ने कोने के दरवाज़े, वादी के दरवाज़े और फसील के मोड़ पर मज़बूत बुर्ज बनवाए। ¹⁰ उसने बयाबान में भी बुर्ज तामीर किए और साथ साथ पत्थर के बेशुमार हौज़ तराशे, क्योंकि मगरिबी यहूदाह के नशेबी पहाड़ी इलाक़े और मैदानी इलाक़े में उसके बड़े बड़े रेवड़ चरते थे। बादशाह को काशतकारी का काम ख़ास पसंद था। बहुत लोग पहाड़ी इलाकों और जरखेज़ वादियों में उसके खेतों और अंगूर के बाग़ों की निगरानी करते थे।

¹¹ उज़्ज़ियाह की ताक़तवर फ़ौज थी। बादशाह के आला अफसर हननियाह की राहनुमाई में मीरमुंशी यइयेल ने अफसर मासियाह के साथ फ़ौज की भरती करके उसे तरतीब दिया था। ¹² इन दस्तों पर कुंबों के 2,600 सरपरस्त मुक़र्रर थे। ¹³ फ़ौज 3,07,500 जंग लड़ने के काबिल मर्दों पर मुश्तमिल थी। जंग में बादशाह उन पर पूरा भरोसा कर सकता था। ¹⁴ उज़्ज़ियाह ने अपने तमाम फ़ौजियों को ढालों, नेज़ों, खोदों, ज़िरा-बक़तरों, कमानों और फ़लाखन के सामान से मुसल्लह किया। ¹⁵ और यरूशलम के बुर्जों और फसील के कोनों पर उसने ऐसी मशीनें लगाएँ जो तीर चला सकती और बड़े बड़े पत्थर फेंक सकती थीं।

उज़्ज़ियाह मग़रूर हो जाता है

गरज़, अल्लाह की मदद से उज़्ज़ियाह की शोहरत दूर दूर तक फैल गई, और उस की ताक़त बढ़ती गई।

¹⁶ लेकिन इस ताक़त ने उसे मग़रूर कर दिया, और नतीजे में वह ग़लत राह पर आ गया। रब अपने ख़ुदा का बेवफ़ा होकर वह एक दिन रब के घर में घुस गया ताकि बख़ूर की कुरबानगाह पर बख़ूर जलाए। ¹⁷ लेकिन इमामे-आज़म अज़रियाह रब के मज़ीद 80 बहादुर इमामों को अपने साथ लेकर उसके पीछे पीछे गया। ¹⁸ उन्होंने बादशाह उज़्ज़ियाह का सामना करके कहा, “मुनासिब नहीं कि आप रब को बख़ूर की कुरबानी पेश करें। यह हारून की औलाद यानी इमामों की ज़िम्मादारी है जिन्हें इसके लिए मख़सूस किया गया है। मक़दिस से निकल जाएँ, क्योंकि आप अल्लाह से बेवफ़ा हो गए हैं, और आपकी यह हरकत रब ख़ुदा के सामने इज़ज़त का बाइस नहीं बनेगी।” ¹⁹ उज़्ज़ियाह बख़ूरदान को पकड़े बख़ूर को पेश करने को था कि इमामों की बातें सुनकर आग-बग़ूला हो गया। लेकिन उसी लमहे उसके माथे पर कोढ़ फूट निकला। ²⁰ यह देखकर इमामे-आज़म अज़रियाह और दीगर इमामों ने उसे जल्दी से रब के घर से निकाल दिया। उज़्ज़ियाह ने ख़ुद भी वहाँ से निकलने की जल्दी की, क्योंकि रब ही ने उसे सज़ा दी थी।

²¹ उज़्ज़ियाह जीते-जी इस बीमारी से शफ़ा न पा सका। उसे अलहदा घर में रहना पड़ा, और उसे रब के घर में दाखिल होने की इजाज़त नहीं थी। उसके बेटे यूताम को महल पर मुक़र्रर किया गया, और वही उम्मत पर हुकूमत करने लगा।

22 बाक्री जो कुछ उज्जियाह की हुकूमत के दौरान शुरू से लेकर आखिर तक हुआ वह आमूस के बेटे यसायाह नबी ने कलमबंद किया है। 23 जब उज्जियाह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे कोढ़ की वजह से दूसरे बादशाहों के साथ नहीं दफनाया गया बल्कि करीब के एक खेत में जो शाही खानदान का था। फिर उसका बेटा यूताम तख्तनशीन हुआ।

27

यहदाह का बादशाह यूताम

1 यूताम 25 साल की उम्र में बादशाह बना और यरूशलम में रहकर 16 साल तक हुकूमत करता रहा। उस की माँ यरूसा बित सदोक थी। 2 यूताम ने वह कुछ किया जो रब को पसंद था। वह अपने बाप उज्जियाह के नमूने पर चलता रहा, अगरचे उसने कभी भी बाप की तरह रब के घर में घुस जाने की कोशिश न की। लेकिन आम लोग अपनी गलत राहों से न हटे।

3 यूताम ने रब के घर का बालाई दरवाजा तामीर किया। ओफल पहाड़ी जिस पर रब का घर था उस की दीवार को उसने बहुत जगहों पर मजबूत बना दिया। 4 यहदाह के पहाड़ी इलाके में उसने शहर तामीर किए और जंगली इलाकों में किले और बुर्ज बनाए। 5 जब अम्मोनी बादशाह के साथ जंग छिड़ गई तो उसने अम्मोनियों को शिकस्त दी। तीन साल तक उन्हें उसे सालाना खराज के तौर पर तकरीबन 3,400 किलोग्राम चाँदी, 16,00,000 किलोग्राम गंदुम और 13,50,000 किलोग्राम जौ अदा करना पड़ा। 6 यों यूताम की ताकत बढ़ती गई। और वजह यह थी कि वह साबितकदमी से रब अपने खुदा के हुजूर चलता रहा।

7 बाक्री जो कुछ यूताम की हुकूमत के दौरान हुआ वह 'शाहाने-इसराईलो-यहदाह' की किताब में कलमबंद है। उसमें उस की तमाम जंगों और बाक्री कामों का जिक्र है। 8 वह 25 साल की उम्र में बादशाह बना और यरूशलम में रहकर 16 साल हुकूमत करता रहा। 9 जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है दफनाया गया। फिर उसका बेटा आखज तख्तनशीन हुआ।

28

यहदाह का बादशाह आखज

1 आखज 20 साल की उम्र में बादशाह बना और यरूशलम में रहकर 16 साल हुकूमत करता रहा। वह अपने बाप दाऊद के नमूने पर न चला बल्कि वह कुछ करता रहा जो रब को नापसंद था। 2 क्योंकि उसने इसराईल के बादशाहों का चाल-चलन अपनाया। बाल के बुत ढलवाकर 3 उसने न सिर्फ वादीए-बिन-हिन्मू में बुतों को कुरबानियाँ पेश कीं बल्कि अपने बेटों को भी कुरबानी के तौर पर जला दिया। यों वह उन क्रौमों के धिनौने रस्मो-रिवाज अदा करने लगा जिन्हें रब ने इसराईलियों के आगे मुल्क से निकाल दिया था। 4 आखज बखूर जलाकर अपनी कुरबानियाँ ऊँचे मकामों, पहाड़ियों की चोटियों और हर घने दरख्त के साथ में चढ़ाता था।

5 इसी लिए रब उसके खुदा ने उसे शाम के बादशाह के हवाले कर दिया। शाम की फौज ने उसे शिकस्त दी और यहदाह के बहुत-से लोगों को कैदी बनाकर दमिशक ले गई। आखज को इसराईल के बादशाह फिक्रह बिन रमलियाह के हवाले भी कर दिया गया जिसने उसे शदीद नुकसान पहुँचाया। 6 एक ही दिन में यहदाह के 1,20,000 तजरबाकार फौजी शहीद हुए। यह सब कुछ इसलिए हुआ कि क्रौम ने रब अपने बापदादा के खुदा को तर्क कर दिया था। 7 उस वक़्त इफराईम के कबीले के पहलवान जिकरी ने आखज के बेटे मासियाह, महल के इंचार्ज अज़रीकाम और बादशाह के बाद सबसे आला अफसर इलकाना को मार डाला। 8 इसराईलियों ने यहदाह की 2,00,000 औरतें और बच्चे छीन लिए और कसरत का माल लूटकर सामरिया ले गए।

इसराईल कैदियों को रिहा कर देता है

9 सामरिया में रब का एक नबी बनाम ओदीद रहता था। जब इसराईली फौजी मैदाने-जंग से वापस आए तो ओदीद उनसे मिलने के लिए निकला। उसने उनसे कहा, “देखें, रब आपके बापदादा का खुदा यहदाह से नाराज़ था, इसलिए उसने उन्हें आपके हवाले कर दिया। लेकिन आप लोग तैश में आकर उन पर यों टूट पड़े कि उनका कत्ले-आम आसमान तक पहुँच गया है। 10 लेकिन यह काफ़ी नहीं था। अब आप यहदाह और यरूशलम के बचे हुए लोगों को अपने गुलाम बनाना चाहते हैं। क्या आप समझते हैं कि हम उनसे अच्छे हैं? नहीं, आपसे भी रब अपने खुदा के खिलाफ गुनाह सरज़द हुए हैं। 11 चुनाँचे मेरी बात सुनें! इन कैदियों को वापस करें जो आपने अपने भाइयों से छीन लिए हैं। क्योंकि रब का सख्त ग़ज़ब आप पर नाज़िल होनेवाला है।”

12 इफराईम के कबीले के कुछ सरपरस्तों ने भी फौजियों का सामना किया। उनके नाम अज़रियाह बिन यहनान, बरकियाह बिन मसिल्लमोट, यहिज़क्रियाह बिन सल्लूम और अमासा बिन खदली थे। 13 उन्होंने कहा, “इन कैदियों को यहाँ मत ले आएँ, वरना हम रब के सामने कुसूरवार ठहरेंगे। क्या आप चाहते हैं कि हम अपने गुनाहों में इज़ाफ़ा करें? हमारा कुसूर पहले ही बहुत बड़ा है। हाँ, रब इसराईल पर सख्त गुस्से है।”

14 तब फौजियों ने अपने कैदियों को आज़ाद करके उन्हें लूटे हुए माल के साथ बुजुर्गों और पूरी जमात के हवाले कर दिया। 15 मज़कूरा चार आदमियों ने सामने आकर कैदियों को अपने पास महफूज़ रखा। लूटे हुए माल में से कपड़े निकालकर उन्होंने उन्हें उनमें तकसीम किया जो बरहना थे। इसके बाद उन्होंने तमाम कैदियों को कपड़े और जूते दे दिए, उन्हें खाना खिलाया, पानी पिलाया और उनके ज़ख़मों की मरहम-पट्टी

की। जितने थकावट की वजह से चल न सकते थे उन्हें उन्होंने गधों पर बिठाया, फिर चलते चलते सबको खजूर के शहर यरीह तक पहुँचाया जहाँ उनके अपने लोग थे। फिर वह सामरिया लौट आए।

आखज असूर के बादशाह से मदद लेता है

16 उस वक्त आखज बादशाह ने असूर के बादशाह से इतमास की, “हमारी मदद करने आँ।” 17 क्योंकि अदोमी यहदाह में घुसकर कुछ लोगों को गिरफ्तार करके अपने साथ ले गए थे। 18 साथ साथ फिलिस्ती मगरिबी यहदाह के नशेबी पहाड़ी इलाके और जुनूबी इलाके में घुस आए थे और जैल के शहरों पर कब्जा करके उनमें रहने लगे थे : बैत-शम्स, ऐयालोन, जदीरोत, नीज सोका, तिमनत और जिमजू गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत। 19 इस तरह रब ने यहदाह को आखज की वजह से जेर कर दिया, क्योंकि बादशाह ने यहदाह में बेलगाम बेराहरवी फैलने दी और रब से अपनी बेवफाई का साफ इज़हार किया था।

20 असूर के बादशाह तिग्लत-पिलेसर अपनी फौज लेकर मुल्क में आया, लेकिन आखज की मदद करने के बजाए उसने उसे तंग किया। 21 आखज ने रब के घर, शाही महल और अपने आला अफसरों के खजानों को लूटकर सारा माल असूर के बादशाह को भेज दिया, लेकिन बेफायदा। इससे उसे सही मदद न मिली।

22 गो वह उस वक्त बड़ी मुसीबत में था तो भी रब से और दूर हो गया। 23 वह शाम के देवताओं को कुरबानियाँ पेश करने लगा, क्योंकि उसका खयाल था कि इन्हीं ने मुझे शिकस्त दी है। उसने सोचा, “शाम के देवता अपने बादशाहों की मदद करते हैं! अब से मैं उन्हें कुरबानियाँ पेश करूँगा ताकि वह मेरी भी मदद करें।” लेकिन यह देवता बादशाह आखज और पूरी कौम के लिए तबाही का बाइस बन गए। 24 आखज ने हुक्म दिया कि अल्लाह के घर का सारा सामान निकालकर टुकड़े टुकड़े कर दिया जाए। फिर उसने रब के घर के दरवाजों पर ताला लगा दिया। उस की जगह उसने यरूशलम के कोने कोने में कुरबानगाहें खड़ी कर दीं। 25 साथ साथ उसने दीगर माबूदों को कुरबानियाँ पेश करने के लिए यहदाह के हर शहर की ऊँची जगहों पर मंदिर तामीर किए। ऐसी हरकतों से वह रब अपने बापदादा के खुदा को तैश दिलाता रहा।

26 बाक्री जो कुछ उस की हुक्मत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह शुरू से लेकर आखिर तक ‘शाहाने-यहदाहो-इसराईल’ की किताब में दर्ज है। 27 जब आखज मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम में दफन किया गया, लेकिन शाही कब्रिस्तान में नहीं। फिर उसका बेटा हिज़कियाह तख्तनशीन हुआ।

29

हिज़कियाह बादशाह रब के घर को दुबारा खोल देता है

1 जब हिज़कियाह बादशाह बना तो उस की उम्र 25 साल थी। यरूशलम में रहकर वह 29 साल हुक्मत करता रहा। उस की माँ अबियाह बित ज़करियाह थी।

2 अपने बाप दाऊद की तरह उसने ऐसा काम किया जो रब को पसंद था। 3 अपनी हुक्मत के पहले साल के पहले महीने में उसने रब के घर के दरवाजों को खोलकर उनकी मरम्मत करवाई। 4 लावियों और इमामों को बुलाकर उसने उन्हें रब के घर के मशरिकी सहन में जमा किया 5 और कहा,

“ऐ लावियो, मेरी बात सुनें! अपने आपको खिदमत के लिए मखसूसो-मुकद्दस करें, और रब अपने बापदादा के खुदा के घर को भी मखसूसो-मुकद्दस करें। तमाम नापाक चीज़ें मक़दिस से निकालें! 6 हमारे बापदादा बेवफा होकर वह कुछ करते गए जो रब हमारे खुदा को नापसंद था। उन्होंने उसे छोड़ दिया, अपने मुँह को रब की सुकूनतगाह से फेरकर दूसरी तरफ चल पड़े। 7 रब के घर के सामनेवाले बरामदे के दरवाजों पर उन्होंने ताला लगाकर चरागों को बुझा दिया। न इसराईल के खुदा के लिए बखूर जलाया जाता, न भस्म होनेवाली कुरबानियाँ मक़दिस में पेश की जाती थीं। 8 इसी वजह से रब का ग़ज़ब यहदाह और यरूशलम पर नाज़िल हुआ है। हमारी हालत को देखकर लोग घबरा गए, उनके रोंगटे खड़े हो गए हैं। हम दूसरों के लिए मज़ाक का निशाना बन गए हैं। आप खुद इसके गवाह हैं। 9 हमारी बेवफाई की वजह से हमारे बाप तलवार की ज़द में आकर मारे गए और हमारे बेटे-बेटियाँ और बीवियाँ हमसे छीन ली गई हैं। 10 लेकिन अब मैं रब इसराईल के खुदा के साथ अहद बाँधना चाहता हूँ ताकि उसका सख्त क्रहर हमसे टल जाए। 11 मेरे बेटो, अब सुस्ती न दिखाएँ, क्योंकि रब ने आपको चुनकर अपने खादिम बनाया है। आपको उसके हुज़ूर खड़े होकर उस की खिदमत करने और बखूर जलाने की ज़िम्मादारी दी गई है।”

12 फिर ज़ैल के लावी खिदमत के लिए तैयार हुए :

क्रिहात के खानदान का महत बिन अमासी और योएल बिन अज़रियाह,
मिरारी के खानदान का कीस बिन अबदी और अज़रियाह बिन यहल्ललेल,
ज़ैरसोन के खानदान का युआख बिन ज़िम्मा और अदन बिन युआख,

13 इलीसफ़न के खानदान का सिमरी और यइयेल,
आसफ़ के खानदान का ज़करियाह और मतनियाह,

14 हैमान के खानदान का यहियेल और सिमई,
यदूतून के खानदान का समायाह और उज्जियेल।

15 बाक़ी लावियों को बुलाकर उन्होंने अपने आपको रब की खिदमत के लिए मखसूसो-मुकद्दस किया। फिर वह बादशाह के हुक्म के मुताबिक़ रब के घर को पाक-साफ़ करने लगे। काम करते करते उन्होंने इसका खयाल किया कि सब कुछ रब की हिदायात के मुताबिक़ हो रहा हो। 16 इमाम रब के घर में दाखिल हुए और उसमें से हर नापाक चीज़ निकालकर उसे सहन में लाए। वहाँ से लावियों ने सब कुछ उठाकर शहर से बाहर वादीए-किद्रोन में फेंक दिया। 17 रब के घर की कुदूसियत बहाल करने का काम पहले महीने के पहले दिन शुरू हुआ, और एक हफ़ते के बाद वह सामनेवाले बरामदे तक पहुँच गए थे। एक और हफ़ता पूरे घर को मखसूसो-मुकद्दस करने में लग गया।

पहले महीने के 16वें दिन काम मुकम्मल हुआ। 18 हिज़क्रियाह बादशाह के पास जाकर उन्होंने कहा, “हमने रब के पूरे घर को पाक-साफ़ कर दिया है। इसमें जानवरों को जलाने की कुरबानगाह उसके सामान समेत और वह मेज़ जिस पर रब के लिए मखसूस रोटियाँ रखी जाती हैं उसके सामान समेत शामिल है। 19 और जितनी चीज़ें आख़ज ने बेवफ़ा बनकर अपनी हुक्मत के दौरान रद्द कर दी थीं उन सबको हमने ठीक करके दुबारा मखसूसो-मुकद्दस कर दिया है। अब वह रब की कुरबानगाह के सामने पड़ी हैं।”

रब के घर की दुबारा मखसूसियत

20 अगले दिन हिज़क्रियाह बादशाह सुबह-सवेरे शहर के तमाम बुजुर्गों को बुलाकर उनके साथ रब के घर के पास गया। 21 सात जवान बैल, सात मेंढे और भेड़ के सात बच्चे भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए सहन में लाए गए, नीज़ सात बकरे जिन्हें गुनाह की कुरबानी के तौर पर शाही खानदान, मक़दिस और यहूदाह के लिए पेश करना था। हिज़क्रियाह ने हास्न की औलाद यानी इमामों को हुक्म दिया कि इन जानवरों को रब की कुरबानगाह पर चढ़ाएँ। 22 पहले बैलों को ज़बह किया गया। इमामों ने उनका खून जमा करके उसे कुरबानगाह पर छिड़का। इसके बाद मेंढों को ज़बह किया गया। इस बार भी इमामों ने उनका खून कुरबानगाह पर छिड़का। भेड़ के बच्चों के खून के साथ भी यही कुछ किया गया। 23 आखिर में गुनाह की कुरबानी के लिए मखसूस बकरों को बादशाह और जमात के सामने लाया गया, और उन्होंने अपने हाथों को बकरों के सरों पर रख दिया। 24 फिर इमामों ने उन्हें ज़बह करके उनका खून गुनाह की कुरबानी के तौर पर कुरबानगाह पर छिड़का ताकि इसराईल का कफ़फ़ारा दिया जाए। क्योंकि बादशाह ने हुक्म दिया था कि भस्म होनेवाली और गुनाह की कुरबानी तमाम इसराईल के लिए पेश की जाए।

25 हिज़क्रियाह ने लावियों को झाँझ, सितार और सरोद थमाकर उन्हें रब के घर में खड़ा किया। सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक़ हुआ जो रब ने दाऊद बादशाह, उसके ग़ैबबीन जाद और नातन नबी की मारिफ़त दी थी। 26 लावी उन साज़ों के साथ खड़े हो गए जो दाऊद ने बनवाए थे, और इमाम अपने तुरमों को थामे उनके साथ खड़े हुए। 27 फिर हिज़क्रियाह ने हुक्म दिया कि भस्म होनेवाली कुरबानी कुरबानगाह पर पेश की जाए। जब इमाम यह काम करने लगे तो लावी रब की तारीफ़ में गीत गाने लगे। साथ साथ तुरम और दाऊद बादशाह के बनवाए हुए साज़ बजने लगे। 28 तमाम जमात औंधे मुँह झुक गई जबकि लावी गीत गाते और इमाम तुरम बजाते रहे। यह सिलसिला इस कुरबानी की तकमील तक जारी रहा। 29 इसके बाद हिज़क्रियाह और तमाम हाज़िरीन दुबारा मुँह के बल झुक गए। 30 बादशाह और बुजुर्गों ने लावियों को कहा, “दाऊद और आसफ़ ग़ैबबीन के ज़बूर गाकर रब की सताइश करें।” चुनौचे लावियों ने बड़ी खुशी से हम्दो-सना के गीत गाए। वह भी औंधे मुँह झुक गए।

31 फिर हिज़क्रियाह लोगों से मुखातिब हुआ, “आज आपने अपने आपको रब के लिए वक्फ़ कर दिया है। अब वह कुछ रब के घर के पास ले आएँ जो आप ज़बह और सलामती की कुरबानी के तौर पर पेश करना चाहते हैं।” तब लोग ज़बह और सलामती की अपनी कुरबानियाँ ले आए। नीज़, जिसका भी दिल चाहता था वह भस्म होनेवाली कुरबानियाँ लाया। 32 इस तरह भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए 70 बैल, 100 मेंढे और भेड़ के 200 बच्चे जमा करके रब को पेश किए गए। 33 उनके अलावा 600 बैल और 3,000 भेड़-बकरियाँ रब के घर के लिए मखसूस की गईं। 34 लेकिन इतने जानवरों की खालों को उतारने के लिए इमाम कम थे, इसलिए लावियों को उनकी मदद करनी पड़ी। इस काम के इख़िताम तक बल्कि जब तक मज़ीद इमाम खिदमत के लिए तैयार और पाक नहीं हो गए थे लावी मदद करते रहे। इमामों की निसबत ज़्यादा लावी पाक-साफ़ हो गए थे, क्योंकि उन्होंने ज़्यादा लग्न से अपने आपको रब के लिए मखसूसो-मुकद्दस किया था। 35 भस्म होनेवाली बेशुमार कुरबानियों के अलावा इमामों ने सलामती की कुरबानियों की चरबी भी जलाई। साथ साथ उन्होंने मै की नज़रें पेश कीं।

यों रब के घर में खिदमत का नए सिरे से आगाज़ हुआ। 36 हिज़क्रियाह और पूरी कौम ने खुशी मनाई कि अल्लाह ने यह सब कुछ इतनी जल्दी से हमें मुहैया किया है।

30

फ़सह की ईद के लिए दावत

1 हिज़क्रियाह ने इसराईल और यहूदाह की हर जगह अपने क़ासिदों को भेजकर लोगों को रब के घर में आने की दावत दी, क्योंकि वह उनके साथ रब इसराईल के खुदा की ताज़ीम में फ़सह की ईद मनाना चाहता था। उसने इफ़राईम और मनस्सी के क़बीलों को भी दावतनामे भेजे। 2 बादशाह ने अपने अफ़सरों और यरूशलम की पूरी जमात के साथ मिलकर फैसला किया कि हम यह ईद दूसरे महीने में मनाएँगे। 3 आम तौर पर यह पहले महीने में मनाई जाती थी, लेकिन उस वक़्त तक खिदमत के लिए तैयार इमाम काफ़ी नहीं थे। क्योंकि अब तक सब अपने आपको पाक-साफ़ न कर सके। दूसरी बात यह थी कि लोग इतनी जल्दी से यरूशलम में जमा न हो सके। 4 इन बातों के पेशे-नज़र बादशाह और तमाम हाज़िरीन इस पर मुतफ़िक़ हुए कि फ़सह की ईद मुलतवी की जाए। 5 उन्होंने फैसला किया कि हम तमाम इसराईलियों को जुनूब

में बैर-सबा से लेकर शिमाल में दान तक दावत देंगे। सब यरूशलम आएँ ताकि हम मिलकर रब इसराईल के खुदा की ताज़ीम में फ़सह की ईद मनाएँ। असल में यह ईद बड़ी देर से हिदायात के मुताबिक नहीं मनाई गई थी।

6 बादशाह के हुक्म पर कासिद इसराईल और यहदाह में से गुज़रे। हर जगह उन्होंने लोगों को बादशाह और उसके अफ़सरों के ख़त पहुँचा दिए। ख़त में लिखा था,

“ऐ इसराईलियो, रब इब्राहीम, इसहाक और इसराईल के खुदा के पास वापस आएँ! फिर वह भी आपके पास जो असूरी बादशाहों के हाथ से बच निकले हैं वापस आएगा। 7 अपने बापदादा और भाइयों की तरह न बनें जो रब अपने बापदादा के खुदा से बेवफ़ा हो गए थे। यही वजह है कि उसने उन्हें ऐसी हालत में छोड़ दिया कि जिसने भी उन्हें देखा उसके रोंगटे खड़े हो गए। आप खुद इसके गवाह हैं। 8 उनकी तरह अड़े न रहें बल्कि रब के ताबे हो जाएँ। उसके मक़दिस में आएँ, जो उसने हमेशा के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस कर दिया है। रब अपने खुदा की ख़िदमत करें ताकि आप उसके सख़्त ग़ज़ब का निशाना न रहें। 9 अगर आप रब के पास लौट आएँ तो जिन्होंने आपके भाइयों और उनके बाल-बच्चों को कैद कर लिया है वह उन पर रहम करके उन्हें इस मुल्क में वापस आने देंगे। क्योंकि रब आपका खुदा मेहरबान और रहीम है। अगर आप उसके पास वापस आएँ तो वह अपना मुँह आपसे नहीं फेरेगा।”

10 कासिद इफ़राईम और मनस्सी के पूरे क़बायली इलाके में से गुज़रे और हर शहर को यह पैग़ाम पहुँचाया। फिर चलते चलते वह ज़बूलून तक पहुँच गए। लेकिन अकसर लोग उनकी बात सुनकर हँस पड़े और उनका मज़ाक उड़ाने लगे। 11 सिर्फ़ आशर, मनस्सी और ज़बूलून के चंद एक आदमी फ़रोतनी का इज़हार करके मान गए और यरूशलम आए। 12 यहदाह में अल्लाह ने लोगों को तहरीक दी कि उन्होंने एकदिली से उस हुक्म पर अमल किया जो बादशाह और बुज़ुर्गों ने रब के फ़रमान के मुताबिक दिया था।

हिज़क्रियाह और कौम फ़सह की ईद मनाते हैं

13 दूसरे महीने में बहुत ज़्यादा लोग बेख़मीरी रोटी की ईद मनाने के लिए यरूशलम पहुँचे। 14 पहले उन्होंने शहर से बुतों की तमाम कुरबानगाहों को दूर कर दिया। बख़ूर जलाने की छोटी कुरबानगाहों को भी उन्होंने उठाकर वादीए-किदरोन में फेंक दिया। 15 दूसरे महीने के 14वें दिन फ़सह के लेलों को ज़बह किया गया। इमामों और लावियों ने शर्मिदा होकर अपने आपको ख़िदमत के लिए पाक-साफ़ कर रखा था, और अब उन्होंने भस्म होनेवाली कुरबानियों को रब के घर में पेश किया। 16 वह ख़िदमत के लिए यों खड़े हो गए जिस तरह मर्दे-ख़ुदा मूसा की शरीअत में फ़रमाया गया है। लावी कुरबानियों का खून इमामों के पास लाए जिन्होंने उसे कुरबानगाह पर छिड़का।

17 लेकिन हाज़िरिन में से बहुत-से लोगों ने अपने आपको सहीह तौर पर पाक-साफ़ नहीं किया था। उनके लिए लावियों ने फ़सह के लेलों को ज़बह किया ताकि उनकी कुरबानियों को भी रब के लिए मख़सूस किया जा सके। 18 खासकर इफ़राईम, मनस्सी, ज़बूलून और इशकार के अकसर लोगों ने अपने आपको सहीह तौर पर पाक-साफ़ नहीं किया था। चुनाँचे वह फ़सह के खाने में उस हालत में शरीक न हुए जिसका तकाज़ा शरीअत करती है। लेकिन हिज़क्रियाह ने उनकी शफ़ाअत करके दुआ की, “रब जो मेहरबान है हर एक को मुआफ़ करे 19 जो पूरे दिल से रब अपने बापदादा के खुदा का तालिब रहने का इरादा रखता है, खाह उसे मक़दिस के लिए दरकार पाकीज़गी हासिल न भी हो।” 20 रब ने हिज़क्रियाह की दुआ सुनकर लोगों को बहाल कर दिया।

21 यरूशलम में जमाशुदा इसराईलियों ने बड़ी खुशी से सात दिन तक बेख़मीरी रोटी की ईद मनाई। हर दिन लावी और इमाम अपने साज़ बजाकर बुलंद आवाज़ से रब की सताइश करते रहे। 22 लावियों ने रब की ख़िदमत करते वक़्त बड़ी समझदारी दिखाई, और हिज़क्रियाह ने इसमें उनकी हौसलाअफ़ज़ाई की।

पूरे हफ़ते के दौरान इसराईली रब को सलामती की कुरबानियाँ पेश करके कुरबानी का अपना हिस्सा खाते और रब अपने बापदादा के खुदा की तमज़ीद करते रहे।

23 इस हफ़ते के बाद पूरी जमात ने फ़ैसला किया कि ईद को मज़ीद सात दिन मनाया जाए। चुनाँचे उन्होंने खुशी से एक और हफ़ते के दौरान ईद मनाई। 24 तब यहदाह के बादशाह हिज़क्रियाह ने जमात के लिए 1,000 बैल और 7,000 भेड़-बकरियाँ पेश कीं जबकि बुज़ुर्गों ने जमात के लिए 1,000 बैल और 10,000 भेड़-बकरियाँ चढ़ाईं। इतने में मज़ीद बहुत-से इमामों ने अपने आपको रब की ख़िदमत के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस कर लिया था।

25 जितने भी आए थे खुशी मना रहे थे, खाह वह यहदाह के बाशिंदे थे, खाह इमाम, लावी, इसराईली या इसराईल और यहदाह में रहनेवाले परदेसी मेहमान। 26 यरूशलम में बड़ी शादमानी थी, क्योंकि ऐसी ईद दाऊद बादशाह के बेटे सुलेमान के ज़माने से लेकर उस वक़्त तक यरूशलम में मनाई नहीं गई थी।

27 ईद के इख़िताम पर इमामों और लावियों ने खड़े होकर कौम को बरकत दी। और अल्लाह ने उनकी सुनी, उनकी दुआ आसमान पर उस की मुक़द्दस सुकूनतगाह तक पहुँची।

31

पूरे यहदाह में बुतपरस्ती का ख़ातमा

1 ईद के बाद जमात के तमाम इसराईलियों ने यहदाह के शहरों में जाकर पत्थर के बुतों को टुकड़े टुकड़े कर दिया, यसीरत देवी के खंबों को काट डाला, ऊँची जगहों के मंदिरों को ढा दिया और गलत कुरबानगाहों को ख़त्म कर दिया। जब तक उन्होंने यह काम यहदाह, बिनयमीन, इफ़राईम और मनस्सी के पूरे इलाकों में तकमील तक नहीं पहुँचाया था उन्होंने आराम न किया। इसके बाद वह सब अपने अपने शहरों और घरों को चले गए।

रब के घर में इंतज़ाम की इसलाह

2 हिज़क्रियाह ने इमामों और लावियों को दुबारा खिदमत के वैसे ही गुरोहों में तकसीम किया जैसे पहले थे। उनकी ज़िम्मादारियाँ भस्म होनेवाली और सलामती की कुरबानियाँ चढ़ाना, रब के घर में मुख़्तलिफ़ क्रिस्म की खिदमत अंजाम देना और हम्दो-सना के गीत गाना थीं।

3 जो जानवर बादशाह अपनी मिलकियत से रब के घर को देता रहा वह भस्म होनेवाली उन कुरबानियों के लिए मुक़र्रर थे जिनको रब की शरीअत के मुताबिक़ हर सुबह-शाम, सबत के दिन, नए चाँद की ईद और दीगर ईदों पर रब के घर में पेश की जाती थीं।

4 हिज़क्रियाह ने यरूशलम के बाशिंदों को हुक्म दिया कि अपनी मिलकियत में से इमामों और लावियों को कुछ दें ताकि वह अपना वक़्त रब की शरीअत की तकमील के लिए वक़फ़ कर सकें। 5 बादशाह का यह एलान सुनते ही इसराईली फ़राख़दिली से गल्ला, अंगूर के रस, जैतून के तेल, शहद और खेतों की बाक़ी पैदावार का पहला फल रब के घर में लाए। बहुत कुछ इक़ठा हुआ, क्योंकि लोगों ने अपनी पैदावार का पूरा दसवाँ हिस्सा वहाँ पहुँचाया। 6 यहदाह के बाक़ी शहरों के बाशिंदे भी साथ रहनेवाले इसराईलियों समेत अपनी पैदावार का दसवाँ हिस्सा रब के घर में लाए। जो भी बैल, भेड़-बकरियाँ और बाक़ी चीज़ें उन्होंने रब अपने खुदा के लिए वक़फ़ की थीं वह रब के घर में पहुँचीं जहाँ लोगों ने उन्हें बड़े ढेर लगाकर इक़ठा किया। 7 चीज़ें जमा करने का यह सिलसिला तीसरे महीने में शुरू हुआ और सातवें महीने में इख़िताम को पहुँचा। 8 जब हिज़क्रियाह और उसके अफ़सरों ने आकर देखा कि कितनी चीज़ें इक़ठी हो गई हैं तो उन्होंने रब और उस की क़ौम इसराईल को मुबारक कहा।

9 जब हिज़क्रियाह ने इमामों और लावियों से इन ढेरों के बारे में पूछा 10 तो सदोक के ख़ानदान का इमामे-आज़म अज़रियाह ने जवाब दिया, “जब से लोग अपने हृदिये यहाँ ले आते हैं उस वक़्त से हम जी भरकर खा सकते हैं बल्कि काफ़ी कुछ बच भी जाता है। क्योंकि रब ने अपनी क़ौम को इतनी बरक़त दी है कि यह सब कुछ बाक़ी रह गया है।”

11 तब हिज़क्रियाह ने हुक्म दिया कि रब के घर में गोदाम बनाए जाएँ। जब ऐसा किया गया 12 तो रज़ाकाराना हृदिये, पैदावार का दसवाँ हिस्सा और रब के लिए मख़सूस किए गए अतियात उनमें रखे गए। क़ूननियाह लावी इन चीज़ों का इंचार्ज बना जबकि उसका भाई सिमई उसका मददगार मुक़र्रर हुआ। 13 इमामे-आज़म अज़रियाह रब के घर के पूरे इंतज़ाम का इंचार्ज था, इसलिए हिज़क्रियाह बादशाह ने उसके साथ मिलकर दस निगरान मुक़र्रर किए जो क़ूननियाह और सिमई के तहत खिदमत अंजाम दें। उनके नाम यहियेल, अज़ज़ियाह, नहत, असाहेल, यरीमोत, यज़बद, इलियेल, इसमाकियाह, महत और बिनायाह थे।

14 जो लावी मशरिकी दरवाज़े का दरबान था उसका नाम क़ोरे बिन यिमना था। अब उसे रब को रज़ाकाराना तौर पर दिए गए हृदिये और उसके लिए मख़सूस किए गए अतीए तकसीम करने का निगरान बनाया गया। 15 अदन, मिन्यमीन, यशुअ, समायाह, अमरियाह और सकनियाह उसके मददगार थे। उनकी ज़िम्मादारी लावियों के शहरों में रहनेवाले इमामों को उनका हिस्सा देना थी। बड़ी वफ़ादारी से वह खयाल रखते थे कि खिदमत के मुख़्तलिफ़ गुरोहों के तमाम इमामों को वह हिस्सा मिल जाए जो उनका हक़ बनता था, खाह वह बड़े थे या छोटे। 16 जो अपने गुरोह के साथ रब के घर में खिदमत करता था उसे उसका हिस्सा बराहे-रास्त मिलता था। इस सिलसिले में लावी के क़बीले के जितने मर्दों और लड़कों की उम्र तीन साल या इससे ज़ायद थी उनकी फ़हरिस्त बनाई गई। 17 इन फ़हरिस्तों में इमामों को उनके कुंबों के मुताबिक़ दर्ज किया गया। इसी तरह 20 साल या इससे ज़ायद के लावियों को उन ज़िम्मादारियों और खिदमत के मुताबिक़ जो वह अपने गुरोहों में सँभालते थे फ़हरिस्तों में दर्ज किया गया। 18 ख़ानदानों की ओरतें और बेटे-बेटियाँ छोटे बच्चों समेत भी इन फ़हरिस्तों में दर्ज थीं। चूँकि उनके मर्द वफ़ादारी से रब के घर में खिदमत करते थे, इसलिए यह दीगर अफ़राद भी मख़सूसो-मुक़द्दस समझे जाते थे। 19 जो इमाम शहरों से बाहर उन चरागाहों में रहते थे जो उन्हें हासून की औलाद की हैसियत से मिली थीं उन्हें भी हिस्सा मिलता था। हर शहर के लिए आदमी चुने गए जो इमामों के ख़ानदानों के मर्दों और फ़हरिस्त में दर्ज तमाम लावियों को वह हिस्सा दिया करें जो उनका हक़ था।

20 हिज़क्रियाह बादशाह ने हुक्म दिया कि पूरे यहदाह में ऐसा ही किया जाए। उसका काम रब के नज़दीक अच्छा, मुंसिफ़ाना और वफ़ादाराना था। 21 जो कुछ उसने अल्लाह के घर में इंतज़ाम दुबारा चलाने और शरीअत को कायम करने के सिलसिले में किया उसके लिए वह पूरे दिल से अपने खुदा का तालिब रहा। नतीजे में उसे कामयाबी हासिल हुई।

32

असूरी यहदाह में घुस आते हैं

1 हिज़क्रियाह ने वफ़ादारी से यह तमाम मनसूबे तकमील तक पहुँचाए। फिर एक दिन असूर का बादशाह सनहेरिब अपनी फ़ौज के साथ यहदाह में घुस आया और क़िलाबंद शहरों का मुहासरा करने लगा ताकि उन पर क़ब्ज़ा करे। 2 जब हिज़क्रियाह को इतला मिली कि सनहेरिब आकर यरूशलम पर हमला करने की तैयारियाँ कर रहा है 3 तो उसने अपने सरकारी और फ़ौजी अफ़सरों से मशवरा किया। खयाल यह पेश किया गया कि यरूशलम शहर के बाहर तमाम चश्मों को मलबे से बंद किया जाए। सब मुतफ़िक्क हो गए, 4 क्योंकि उन्होंने कहा, “असूर के

बादशाह को यहाँ आकर कसरत का पानी क्यों मिले?” बहुत-से आदमी जमा हुए और मिलकर चश्मों को मलबे से बंद कर दिया। उन्होंने उस ज़मीनदोज़ नाले का मुँह भी बंद कर दिया जिसके ज़रीए पानी शहर में पहुँचता था।

⁵ इसके अलावा हिज़क्रियाह ने बड़ी मेहनत से फ़सील के टूटे-फूटे हिस्सों की मरम्मत करवाकर उस पर बुर्ज बनवाए। फ़सील के बाहर उसने एक और चारदीवारी तामीर की जबकि यरूशलम के उस हिस्से के चबूतरे मज़ीद मज़बूत करवाए जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है। साथ साथ उसने बड़ी मिक्कदार में हथियार और ढालें बनवाई। ⁶ हिज़क्रियाह ने लोगों पर फ़ौजी अफ़सर मुक़र्रर किए।

फिर उसने सबको दरवाज़े के साथवाले चौक पर इक़ठा करके उनकी हौसलाअफ़ज़ाई की, ⁷ “मज़बूत और दिलेर हो! असूर के बादशाह और उस की बड़ी फ़ौज को देखकर मत डरें, क्योंकि जो ताक़त हमारे साथ है वह उसे हासिल नहीं है। ⁸ असूर के बादशाह के लिए सिर्फ़ खाकी आदमी लड़ रहे हैं जबकि रब हमारा ख़ुदा हमारे साथ है। वही हमारी मदद करके हमारे लिए लड़ेगा!” हिज़क्रियाह बादशाह के इन अलफ़ाज़ से लोगों की बड़ी हौसलाअफ़ज़ाई हुई।

असूरी यरूशलम का मुहासरा करते हैं

⁹ जब असूर का बादशाह सनहेरिब अपनी पूरी फ़ौज के साथ लकीस का मुहासरा कर रहा था तो उसने वहाँ से यरूशलम को वफ़द भेजा ताकि यहूदाह के बादशाह हिज़क्रियाह और यहूदाह के तमाम बाशिंदों को पैग़ाम पहुँचाए,

¹⁰ “शाहे-असूर सनहेरिब फ़रमाते हैं, तुम्हारा भरोसा किस चीज़ पर है कि तुम मुहासरे के वक़्त यरूशलम को छोड़ना नहीं चाहते? ¹¹ जब हिज़क्रियाह कहता है, ‘रब हमारा ख़ुदा हमें असूर के बादशाह से बचाएगा’ तो वह तुम्हें ग़लत राह पर ला रहा है। इसका सिर्फ़ यह नतीजा निकलेगा कि तुम भूके और प्यासे मर जाओगे। ¹² हिज़क्रियाह ने तो इस ख़ुदा की बेहुरमती की है। क्योंकि उसने उस की ऊँची जगहों के मंदिरों और क़ुरबानगाहों को ढाकर यहूदाह और यरूशलम से कहा है कि एक ही क़ुरबानगाह के सामने परस्तिश करें, एक ही क़ुरबानगाह पर क़ुरबानियाँ चढ़ाएँ। ¹³ क्या तुम्हें इल्म नहीं कि मैं और मेरे बापदादा ने दीगर ममालिक की तमाम क़ौमों के साथ क्या कुछ किया? क्या इन क़ौमों के देवता अपने मुल्कों को मुझसे बचाने के काबिल रहे हैं? हरगिज़ नहीं! ¹⁴ मेरे बापदादा ने इन सबको तबाह कर दिया, और कोई भी देवता अपनी क़ौम को मुझसे बचा न सका। तो फिर तुम्हारा देवता तुम्हें किस तरह मुझसे बचाएगा? ¹⁵ हिज़क्रियाह से फ़रेब न खाओ! वह इस तरह तुम्हें ग़लत राह पर न लाए। उस की बात पर एतमाद मत करना, क्योंकि अब तक किसी भी क़ौम या सलतनत का देवता अपनी क़ौम को मेरे या मेरे बापदादा के क़ब्ज़े से छुटकारा न दिला सका। तो फिर तुम्हारा देवता तुम्हें मेरे क़ब्ज़े से किस तरह बचाएगा?”

¹⁶ ऐसी बातें करते करते सनहेरिब के अफ़सर रब इसराईल के ख़ुदा और उसके खादिम हिज़क्रियाह पर कुफ़र बकते गए।

¹⁷ असूर के बादशाह ने वफ़द के हाथ ख़त भी भेजा जिसमें उसने रब इसराईल के ख़ुदा की इहानत की। ख़त में लिखा था, “जिस तरह दीगर ममालिक के देवता अपनी क़ौमों को मुझसे महफूज़ न रख सके उसी तरह हिज़क्रियाह का देवता भी अपनी क़ौम को मेरे क़ब्ज़े से नहीं बचाएगा।”

¹⁸ असूरी अफ़सरों ने बुलंद आवाज़ से इबरानी ज़बान में बादशाह का पैग़ाम फ़सील पर खड़े यरूशलम के बाशिंदों तक पहुँचाया ताकि उनमें ख़ौफ़ो-हिरास फैल जाए और यों शहर पर क़ब्ज़ा करने में आसानी हो जाए। ¹⁹ इन अफ़सरों ने यरूशलम के ख़ुदा का यों तमस्ख़ुर उड़ाया जैसा वह दुनिया की दीगर क़ौमों के देवताओं का उड़ाया करते थे, हालाँकि दीगर माबूद सिर्फ़ इंसानी हाथों की पैदावार थे।

रब सनहेरिब को सज़ा देता है

²⁰ फिर हिज़क्रियाह बादशाह और आमूस के बेटे यसायाह नबी ने चिल्लाते हुए आसमान पर तख़्तनशीन ख़ुदा से इलतमास की। ²¹ जवाब में रब ने असूरियों की लश्करगाह में एक फ़रिश्ता भेजा जिसने तमाम बेहतरीन फ़ौजियों को अफ़सरों और कमाँडरों समेत मौत के घाट उतार दिया। चुनौचे सनहेरिब शरमिंदा होकर अपने मुल्क लौट गया। वहाँ एक दिन जब वह अपने देवता के मंदिर में दाख़िल हुआ तो उसके कुछ बेटों ने उसे तलवार से क़त्ल कर दिया।

²² इस तरह रब ने हिज़क्रियाह और यरूशलम के बाशिंदों को शाहे-असूर सनहेरिब से छुटकारा दिलाया। उसने उन्हें दूसरी क़ौमों के हमलों से भी महफूज़ रखा, और चारों तरफ़ अमनो-अमान फैल गया। ²³ बेशुमार लोग यरूशलम आए ताकि रब को क़ुरबानियाँ पेश करें और हिज़क्रियाह बादशाह को क़ीमती तोहफ़े दें। उस वक़्त से तमाम क़ौमों उसका बड़ा एहतराम करने लगीं।

हिज़क्रियाह के आखिरी साल

²⁴ उन दिनों में हिज़क्रियाह इतना बीमार हुआ कि मरने की नौबत आ पहुँची। तब उसने रब से दुआ की, और रब ने उस की सुनकर एक इलाही निशान से इसकी तसदीक़ की। ²⁵ लेकिन हिज़क्रियाह मग़रूर हुआ, और उसने इस मेहरबानी का मुनासिब जवाब न दिया। नतीजे में रब उससे और यहूदाह और यरूशलम से नाराज़ हुआ। ²⁶ फिर हिज़क्रियाह और यरूशलम के बाशिंदों ने पछताकर अपना गुस्सा छोड़ दिया, इसलिए रब का ग़ज़ब हिज़क्रियाह के जीते-जी उन पर नाज़िल न हुआ।

²⁷ हिज़क्रियाह को बहुत दौलत और इज्ज़त हासिल हुई, और उसने अपनी सोने-चाँदी, जवाहर, बलसान के क़ीमती तेल, ढालों और बाक़ी क़ीमती चीज़ों के लिए ख़ास ख़ज़ाने बनवाए। ²⁸ उसने ग़ल्ला, अंगूर का रस और जैतून का तेल महफूज़ रखने के लिए गोदाम तामीर किए और अपने गाय-बैलों और भेड़-बकरियों को रखने की बहुत-सी जगहें भी बनवा लीं। ²⁹ उसके गाय-बैलों और भेड़-बकरियों में इज़ाफ़ा होता गया, और उसने कई नए शहरों की बुनियाद रखी, क्योंकि अल्लाह ने उसे निहायत ही अमीर बना दिया था। ³⁰ हिज़क्रियाह ही ने जैह्न चश्मे

का मुँह बंद करके उसका पानी सुरंग के ज़रीए मगरिब की तरफ़ यरूशलम के उस हिस्से में पहुँचाया जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है। जो भी काम उसने शुरू किया उसमें वह कामयाब रहा। ³¹ एक दिन बाबल के हुक्मरानों ने उसके पास वफ़द भेजा ताकि उस इलाही निशान के बारे में मालूमात हासिल करें जो यहदाह में हुआ था। उस वक़््त अल्लाह ने उसे अकेला छोड़ दिया ताकि उसके दिल की हक़ीक़ी हालत जाँच ले।

³² बाक़ी जो कुछ हिज़क्रियाह की हुक्मत के दौरान हुआ और जो नेक काम उसने किया वह 'आमूस के बेटे यसायाह नबी की रोया' में क़लमबंद है जो 'शाहाने-यहदाहो-इसराईल' की किताब में दर्ज़ है। ³³ जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे शाही क़ब्रिस्तान की एक ऊँची जगह पर दफ़नाया गया। जब जनाज़ा निकला तो यहदाह और यरूशलम के तमाम बाशिंदों ने उसका एहताराम किया। फिर उसका बेटा मनस्सी तख़्तनशीन हुआ।

33

यहदाह का बादशाह मनस्सी

¹ मनस्सी 12 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में उस की हुक्मत का दौरानिया 55 साल था। ² मनस्सी का चाल-चलन रब को नापसंद था। उसने उन क़ौमों के काबिले-घिन रस्मो-रिवाज अपना लिए जिन्हें रब ने इसराईलियों के आगे से निकाल दिया था। ³ ऊँची जगहों के जिन मंदिरों को उसके बाप हिज़क्रियाह ने ढा दिया था उन्हें उसने नए सिरे से तामीर किया। उसने बाल देवताओं की क़ुरबानगाहें बनवाई और यसीरत देवी के खंबे खड़े किए। इनके अलावा वह सूरज, चाँद बल्कि आसमान के पूरे लश्कर को सिजदा करके उनकी खिदमत करता था। ⁴ उसने रब के घर में भी अपनी क़ुरबानगाहें खड़ी की, हालाँकि रब ने इस मक़ाम के बारे में फ़रमाया था, "यरूशलम में मेरा नाम अबद तक कायम रहेगा।" ⁵ लेकिन मनस्सी ने परवा न की बल्कि रब के घर के दोनों सहनों में आसमान के पूरे लश्कर के लिए क़ुरबानगाहें बनवाई। ⁶ यहाँ तक कि उसने वादीए-बिन-हिन्नुम में अपने बेटों को भी क़ुरबान करके जला दिया। जादूगरी, ग़ैबदानी और अफ़सूंगरी करने के अलावा वह मुरदों की रूहों से राबिता करनेवालों और रम्मालों से भी मशवरा करता था।

गरज़ उसने बहुत कुछ किया जो रब को नापसंद था और उसे तैश दिलाया। ⁷ देवी का बुत बनवाकर उसने उसे अल्लाह के घर में खड़ा किया, हालाँकि रब ने दाऊद और उसके बेटे सुलेमान से कहा था, "इस घर और इस शहर यरूशलम में जो मैंने तमाम इसराईली क़बीलों में से चुन लिया है मैं अपना नाम अबद तक कायम रखूँगा।" ⁸ अगर इसराईली एहतियात से मेरे उन तमाम अहक़ाम और हिदायात की पैरवी करें जो मूसा ने शरीअत में उन्हें दिए तो मैं कभी नहीं होने दूँगा कि इसराईलियों को उस मुल्क से ज़िलावतन कर दिया जाए जो मैंने उनके बापदादा को अता किया था।" ⁹ लेकिन मनस्सी ने यहदाह और यरूशलम के बाशिंदों को ऐसे ग़लत काम करने पर उकसाया जो उन क़ौमों से भी सरज़द नहीं हुए थे जिन्हें रब ने मुल्क में दाख़िल होते वक़््त उनके आगे से तबाह कर दिया था।

¹⁰ गो रब ने मनस्सी और अपनी क़ौम को समझाया, लेकिन उन्होंने परवा न की। ¹¹ तब रब ने असूरी बादशाह के कमाँडरों को यहदाह पर हमला करने दिया। उन्होंने मनस्सी को पकड़कर उस की नाक में नकेल डाली और उसे पीतल की जंजीरों में जकड़कर बाबल ले गए। ¹² जब वह यों मुसीबत में फँस गया तो मनस्सी रब अपने ख़ुदा का ग़ज़ब ठंडा करने की कोशिश करने लगा और अपने आपको अपने बापदादा के ख़ुदा के हज़ूर पस्त कर दिया।

¹³ और रब ने उस की इलतमास पर ध्यान देकर उस की सुनी। उसे यरूशलम वापस लाकर उसने उस की हुक्मत बहाल कर दी। तब मनस्सी ने जान लिया कि रब ही ख़ुदा है।

¹⁴ इसके बाद उसने 'दाऊद के शहर' की बैरूनी फ़सील नए सिरे से बनवाई। यह फ़सील ज़ैह्न चश्मे के मगरिब से शुरू हुई और वादीए-क्रिद्रोन में से गुज़रकर मछली के दरवाज़े तक पहुँच गई। इस दीवार ने रब के घर की पूरी पहाड़ी बनाम ओफल का इहाता कर लिया और बहुत बुलंद थी। इसके अलावा बादशाह ने यहदाह के तमाम क़िलाबंद शहरों पर फ़ौज़ी अफ़सर मुक़रर किए। ¹⁵ उसने अजनबी माबूदों को बुत समेत रब के घर से निकाल दिया। जो क़ुरबानगाहें उसने रब के घर की पहाड़ी और बाक़ी यरूशलम में खड़ी की थीं उन्हें भी उसने ढाकर शहर से बाहर फेंक दिया। ¹⁶ फिर उसने रब की क़ुरबानगाह को नए सिरे से तामीर करके उस पर सलामती और शुक्रगुज़ारी की क़ुरबानियाँ चढ़ाई। साथ साथ उसने यहदाह के बाशिंदों से कहा कि रब इसराईल के ख़ुदा की खिदमत करें। ¹⁷ गो लोग इसके बाद भी ऊँची जगहों पर अपनी क़ुरबानियाँ पेश करते थे, लेकिन अब से वह इन्हें सिर्फ़ रब अपने ख़ुदा को पेश करते थे।

¹⁸ बाक़ी जो कुछ मनस्सी की हुक्मत के दौरान हुआ वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख़' की किताब में दर्ज़ है। वहाँ उस की अपने ख़ुदा से दुआ भी बयान की गई है और वह बातें भी जो ग़ैबबीनों ने रब इसराईल के ख़ुदा के नाम में उसे बताई थीं। ¹⁹ ग़ैबबीनों की किताब में भी मनस्सी की दुआ बयान की गई है और यह कि अल्लाह ने किस तरह उस की सुनी। वहाँ उसके तमाम गुनाहों और बेवफ़ाई का ज़िक़्र है, नीज़ उन ऊँची जगहों की फ़हरिस्त दर्ज़ है जहाँ उसने अल्लाह के ताबे हो जाने से पहले मंदिर बनाकर यसीरत देवी के खंबे और बुत खड़े किए थे। ²⁰ जब मनस्सी मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे उसके महल में दफ़न किया गया। फिर उसका बेटा अमून तख़्तनशीन हुआ।

यहदाह का बादशाह अमून

²¹ अमून 22 साल की उम्र में बादशाह बना और दो साल तक यरूशलम में हुक्मत करता रहा। ²² अपने बाप मनस्सी की तरह वह ऐसा ग़लत काम करता रहा जो रब को नापसंद था। जो बुत उसके बाप ने बनवाए थे उन्हीं की पूजा वह करता और उन्हीं को क़ुरबानियाँ पेश करता

था। ²³ लेकिन उसमें और मनस्सी में यह फरक था कि बेटे ने अपने आपको रब के सामने पस्त न किया बल्कि उसका कुसूर मज़ीद संगीन होता गया। ²⁴ एक दिन अमून के कुछ अफसरों ने उसके खिलाफ साज़िश करके उसे महल में क़त्ल कर दिया। ²⁵ लेकिन उम्मत ने तमाम साज़िश करनेवालों को मार डाला और अमून की जगह उसके बेटे यूसियाह को बादशाह बना दिया।

34

यूसियाह बादशाह बुतपरस्ती की मुखालफ़त करता है

¹ यूसियाह 8 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में रहकर उस की हुकूमत का दौरानिया 31 साल था। ² यूसियाह वह कुछ करता रहा जो रब को पसंद था। वह अपने बाप दाऊद के अच्छे नमूने पर चलता रहा और उससे न दाईं, न बाईं तरफ़ हटा।

³ अपनी हुकूमत के आठवें साल में वह अपने बाप दाऊद के ख़ुदा की मरज़ी तलाश करने लगा, गो उस वक़्त वह जवान ही था। अपनी हुकूमत के 12वें साल में वह ऊँची जगहों के मंदिरों, यसीरत देवी के खंबों और तमाम तराशे और ढाले हुए बुतों को पूरे मुल्क से दूर करने लगा। यों तमाम यरूशलम और यहदाह इन चीज़ों से पाक-साफ़ हो गया। ⁴ बादशाह के ज़ेरे-निगरानी बाल देवताओं की कुरबानगाहों को ढा दिया गया। बख़ूर की जो कुरबानगाहें उनके ऊपर थीं उन्हें उसने टुकड़े टुकड़े कर दिया। यसीरत देवी के खंबों और तराशे और ढाले हुए बुतों को ज़मीन पर पटखकर उसने उन्हें पीसकर उनकी क़ब्रों पर बिखेर दिया जिन्होंने जीते-जी उनको कुरबानियाँ पेश की थीं। ⁵ बुतपरस्त पुजारियों की हड्डियों को उनकी अपनी कुरबानगाहों पर जलाया गया। इस तरह से यूसियाह ने यरूशलम और यहदाह को पाक-साफ़ कर दिया। ⁶⁻⁷ यह उसने न सिर्फ़ यहदाह बल्कि मनस्सी, इफ़राईम, शमौन और नफ़ताली तक के शहरों में इर्दगिर्द के खंडरात समेत भी किया। उसने कुरबानगाहों को गिराकर यसीरत देवी के खंबों और बुतों को टुकड़े टुकड़े करके चकनाचूर कर दिया। तमाम इसराईल की बख़ूर की कुरबानगाहों को उसने ढा दिया। इसके बाद वह यरूशलम वापस चला गया।

रब के घर की मरम्मत

⁸ अपनी हुकूमत के 18वें साल में यूसियाह ने साफ़न बिन असलियाह, यरूशलम पर मुक़र्रर अफसर मासियाह और बादशाह के मुशरि-खास युआख़ बिन युआख़ज़ को रब अपने ख़ुदा के घर के पास भेजा ताकि उस की मरम्मत करवाएँ। उस वक़्त मुल्क और रब के घर को पाक-साफ़ करने की मुहिम जारी थी। ⁹ इमामे-आज़म ख़िलकियाह के पास जाकर उन्होंने उसे वह पैसे दिए जो लावी के दरबानों ने रब के घर में जमा किए थे। यह हदिये मनस्सी और इफ़राईम के बाशिंदों, इसराईल के तमाम बचे हुए लोगों और यहदाह, बिनयमीन और यरूशलम के रहनेवालों की तरफ़ से पेश किए गए थे।

¹⁰ अब यह पैसे उन ठेकेदारों के हवाले कर दिए गए जो रब के घर की मरम्मत करवा रहे थे। इन पैसों से ठेकेदारों ने उन कारीगरों की उज़रत अदा की जो रब के घर की मरम्मत करके उसे मज़बूत कर रहे थे। ¹¹ कारीगरों और तामीर करनेवालों ने इन पैसों से तराशे हुए पत्थर और शहतीरों की लकड़ी भी ख़रीदी। इमारतों में शहतीरों को बदलने की ज़रूरत थी, क्योंकि यहदाह के बादशाहों ने उन पर ध्यान नहीं दिया था, लिहाज़ा वह गल गए थे। ¹² इन आदमियों ने वफ़ादारी से खिदमत संरंजाम दी। चार लावी इनकी निगरानी करते थे जिनमें यहत और अबदियाह मिरारी के ख़ानदान के थे जबकि ज़करियाह और मसुल्लाम किहात के ख़ानदान के थे। जितने लावी साज़ बजाने में माहिर थे ¹³ वह मज़दूरों और तमाम दीगर कारीगरों पर मुक़र्रर थे। कुछ और लावी मुंशी, निगरान और दरबान थे।

रब के घर में शरीअत की किताब मिल जाती है

¹⁴ जब वह पैसे बाहर लाए गए जो रब के घर में जमा हुए थे तो ख़िलकियाह को शरीअत की वह किताब मिली जो रब ने मूसा की मारिफ़त दी थी। ¹⁵ उसे मीरमुंशी साफ़न को देकर उसने कहा, “मुझे रब के घर में शरीअत की किताब मिली है।” ¹⁶ तब साफ़न किताब को लेकर बादशाह के पास गया और उसे इतला दी, “जो भी ज़िम्मादारी आपके मुलाज़िमों को दी गई उन्हें वह अच्छी तरह पूरा कर रहे हैं। ¹⁷ उन्होंने रब के घर में जमाशुदा पैसे मरम्मत पर मुक़र्रर ठेकेदारों और बाक़ी काम करनेवालों को दे दिए हैं।” ¹⁸ फिर साफ़न ने बादशाह को बताया, “ख़िलकियाह ने मुझे एक किताब दी है।” किताब को खोलकर वह बादशाह की मौजूदगी में उस की तिलावत करने लगा।

¹⁹ किताब की बातें सुनकर बादशाह ने रंजीदा होकर अपने कपड़े फाड़ लिए। ²⁰ उसने ख़िलकियाह, अख़ीक़ाम बिन साफ़न, अब्दोन बिन मीकाह, मीरमुंशी साफ़न और अपने खास खादिम असायाह को बुलाकर उन्हें हुक्म दिया, ²¹ “जाकर मेरी और इसराईल और यहदाह के बचे हुए अफ़राद की खातिर रब से इस किताब में दर्ज बातों के बारे में दरियाफ़्त करें। रब का जो ग़ज़ब हम पर नाज़िल होनेवाला है वह निहायत सख़्त है, क्योंकि हमारे बापदादा न रब के फ़रमान के ताबे रहे, न उन हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी है जो किताब में दर्ज की गई हैं।”

²² चुनौचे ख़िलकियाह बादशाह के भेजे हुए चंद आदमियों के साथ खुलदा नबिया को मिलने गया। खुलदा का शौहर सल्लूम बिन तोक़हत बिन ख़सरा रब के घर के कपड़े सँभालता था। वह यरूशलम के नए इलाक़े में रहते थे। ²³⁻²⁴ खुलदा ने उन्हें जवाब दिया,

“रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि जिस आदमी ने तुम्हें भेजा है उसे बता देना, ‘रब फ़रमाता है कि मैं इस शहर और इसके बाशिंदों पर आफ़त नाज़िल करूँगा। वह तमाम लानतें पूरी हो जाएँगी जो बादशाह के हुज़ूर पड़ी गई किताब में बयान की गई हैं। ²⁵ क्योंकि मेरी क्रौम ने मुझे तर्क करके दीगर माबदों को कुरबानियाँ पेश की हैं और अपने हाथों से बुत बनाकर मुझे तैश दिलाया है। मेरा ग़ज़ब इस मक़ाम पर नाज़िल हो जाएगा और कभी ख़त्म नहीं होगा।’” ²⁶ लेकिन यहदाह के बादशाह के पास जाँ जिसने आपको रब से दरियाफ़्त करने के लिए भेजा है और

उसे बता दें कि रब इसराईल का खुदा फरमाता है, 'मेरी बातें सुनकर ²⁷ तेरा दिल नरम हो गया है। जब तुझे पता चला कि मैंने इस मकाम और इसके बाशिंदों के खिलाफ बात की है तो तूने अपने आपको अल्लाह के सामने पस्त कर दिया। तूने बड़ी इंसानी से रंजीदा होकर अपने कपड़े फाड़ लिए और मेरे हुजूर फूट फूटकर रोया। रब फरमाता है कि यह देखकर मैंने तेरी सुनी है। ²⁸ जब तू मेरे कहने पर मरकर अपने बापदादा से जा मिलेगा तो सलामती से दफन होगा। जो आफत मैं शहर और उसके बाशिंदों पर नाज़िल करूँगा वह तू खुद नहीं देखेगा'।"

अफसर बादशाह के पास वापस गए और उसे खुलदा का जवाब सुना दिया।

यूसियाह रब से अहद बाँधता है

²⁹ तब बादशाह यहदाह और यस्शलम के तमाम बुजुर्गों को बुलाकर ³⁰ रब के घर में गया। सब लोग छोटे से लेकर बड़े तक उसके साथ गए यानी यहदाह के आदमी, यस्शलम के बाशिंदे, इमाम और लावी। वहाँ पहुँचकर जमात के सामने अहद की उस पूरी किताब की तिलावत की गई जो रब के घर में मिली थी।

³¹ फिर बादशाह ने अपने सतून के पास खड़े होकर रब के हुजूर अहद बाँधा और वादा किया, "हम रब की पैरवी करेंगे, हम पूरे दिलो-जान से उसके अहकाम और हिदायात पूरी करके इस किताब में दर्ज अहद की बातें कायम रखेंगे।" ³² यूसियाह ने मुतालबा किया कि यस्शलम और यहदाह के तमाम बाशिंदे अहद में शरीक हो जाएँ। उस वक़्त से यस्शलम के बाशिंदे अपने बापदादा के खुदा के अहद के साथ लिपटे रहे।

³³ यूसियाह ने इसराईल के पूरे मुल्क से तमाम धिनौने बुतों को दूर कर दिया। इसराईल के तमाम बाशिंदों को उसने ताकीद की, "रब अपने खुदा की खिदमत करें।" चुनौचे यूसियाह के जीते-जी वह रब अपने बापदादा की राह से दूर न हुए।

35

यूसियाह फ़सह की ईद मनाता है

¹ फिर यूसियाह ने रब की ताज़ीम में फ़सह की ईद मनाई। पहले महीने के 14वें दिन फ़सह का लेला ज़बह किया गया। ² बादशाह ने इमामों को काम पर लगाकर उनकी हौसलाअफ़जाई की कि वह रब के घर में अपनी खिदमत अच्छी तरह अंजाम दें। ³ लावियों को तमाम इसराईलियों को शरीअत की तालीम देने की ज़िम्मादारी दी गई थी, और साथ साथ उन्हें रब की खिदमत के लिए मखसूस किया गया था। उनसे यूसियाह ने कहा,

"मुकद्दस संदूक को उस इमारत में रखें जो इसराईल के बादशाह दाऊद के बेटे सुलेमान ने तामीर किया। उसे अपने कंधों पर उठाकर इधर उधर ले जाने की ज़रूरत नहीं है बल्कि अब से अपना वक़्त रब अपने खुदा और उस की क़ौम इसराईल की खिदमत में सर्फ़ करें। ⁴ उन खानदानी गुरोहों के मुताबिक़ खिदमत के लिए तैयार रहें जिनकी तरतीब दाऊद बादशाह और उसके बेटे सुलेमान ने लिखकर मुक़र्रर की थी। ⁵ फिर मक़दिस में उस जगह खड़े हो जाएँ जो आपके खानदानी गुरोह के लिए मुक़र्रर है और उन खानदानों की मदद करें जो कुरबानियाँ चढ़ाने के लिए आते हैं और जिनकी खिदमत करने की ज़िम्मादारी आपको दी गई है। ⁶ अपने आपको खिदमत के लिए मखसूस करें और फ़सह के लेले ज़बह करके अपने हमवतनों के लिए इस तरह तैयार करें जिस तरह रब ने मूसा की मारिफ़त हुक्म दिया था।"

⁷ ईद की खुशी में यूसियाह ने ईद मनानेवालों को अपनी मिलकियत में से 30,000 भेड़-बकरियों के बच्चे दिए। यह जानवर फ़सह की कुरबानी के तौर पर चढ़ाए गए जबकि बादशाह की तरफ़ से 3,000 बैल दीगर कुरबानियों के लिए इस्तेमाल हुए। ⁸ इसके अलावा बादशाह के अफ़सरों ने भी अपनी खुशी से क़ौम, इमामों और लावियों को जानवर दिए। अल्लाह के घर के सबसे आला अफ़सरों खिलक्रियाह, ज़क्रियाह और यहियेल ने दीगर इमामों को फ़सह की कुरबानी के लिए 2,600 भेड़-बकरियों के बच्चे दिए, नीज़ 300 बैल। ⁹ इसी तरह लावियों के राहनुमाओं ने दीगर लावियों को फ़सह की कुरबानी के लिए 5,000 भेड़-बकरियों के बच्चे दिए, नीज़ 500 बैल। उनमें से तीन भाई बनाम कूननियाह, समायाह और नतनियेल थे जबकि दूसरों के नाम हसबियाह, यइयेल और यूज़बद थे। ¹⁰ जब हर एक खिदमत के लिए तैयार था तो इमाम अपनी अपनी जगह पर और लावी अपने अपने गुरोहों के मुताबिक़ खड़े हो गए जिस तरह बादशाह ने हिदायत दी थी। ¹¹ लावियों ने फ़सह के लेलों को ज़बह करके उनकी खालें उतारीं जबकि इमामों ने लावियों से जानवरों का खून लेकर कुरबानगाह पर छिड़का। ¹² जो कुछ भस्म होनेवाली कुरबानियों के लिए मुक़र्रर था उसे क़ौम के मुख्तलिफ़ खानदानों के लिए एक तरफ़ रख दिया गया ताकि वह उसे बाद में रब को कुरबानी के तौर पर पेश कर सकें, जिस तरह मूसा की शरीअत में लिखा है। बैलों के साथ भी ऐसा ही किया गया। ¹³ फ़सह के लेलों को हिदायत के मुताबिक़ आग पर भूना गया जबकि बाक़ी गोशत को मुख्तलिफ़ किस्म की देगों में उबाला गया। ज्योंही गोशत पक गया तो लावियों ने उसे जल्दी से हाज़िरीन में तक्रसीम किया। ¹⁴ इसके बाद उन्होंने अपने और इमामों के लिए फ़सह के लेले तैयार किए, क्योंकि हास्न की औलाद यानी इमाम भस्म होनेवाली कुरबानियों और चरबी को चढ़ाने में रात तक मसरूफ़ रहे।

¹⁵ ईद के पूरे दौरान आसफ़ के खानदान के गुल्कार अपनी अपनी जगह पर खड़े रहे, जिस तरह दाऊद, आसफ़, हैमान और बादशाह के ग़ैबबीन यदूतून ने हिदायत दी थी। दरबान भी रब के घर के दरवाज़ों पर मुसलसल खड़े रहे। उन्हें अपनी जगहों को छोड़ने की ज़रूरत भी नहीं थी, क्योंकि बाक़ी लावियों ने उनके लिए भी फ़सह के लेले तैयार कर रखे। ¹⁶ यों उस दिन यूसियाह के हुक्म पर कुरबानियों के पूरे इंतज़ाम को तरतीब दिया गया ताकि आइंदा फ़सह की ईद मनाई जाए और भस्म होनेवाली कुरबानियाँ रब की कुरबानगाह पर पेश की जाएँ।

17 यरूशलम में जमा हुए इसराइलियों ने फसह की ईद और बेखमीरी रोटी की ईद एक हफ्ते के दौरान मनाई। 18 फसह की ईद इसराइल में समुएल नबी के ज़माने से लेकर उस वक़्त तक इस तरह नहीं मनाई गई थी। इसराइल के किसी भी बादशाह ने उसे यों नहीं मनाया था जिस तरह यूसियाह ने उसे उस वक़्त इमामों, लावियों, यरूशलम और तमाम यहदाह और इसराइल से आए हुए लोगों के साथ मिलकर मनाई। 19 यूसियाह बादशाह की हुकूमत के 18वें साल में पहली दफ़ा रब की ताज़ीम में ऐसी ईद मनाई गई।

यूसियाह की मौत

20 रब के घर की बहाली की तकमील के बाद एक दिन मिसर का बादशाह निकोह दरियाए-फुरात पर के शहर करकिमीस के लिए रवाना हुआ ताकि वहाँ दुश्मन से लड़े। लेकिन रास्ते में यूसियाह उसका मुकाबला करने के लिए निकला। 21 निकोह ने अपने कासिदों को यूसियाह के पास भेजकर उसे इत्ला दी,

“ऐ यहदाह के बादशाह, मेरा आपसे क्या वास्ता? इस वक़्त मैं आप पर हमला करने के लिए नहीं निकला बल्कि उस शाही खानदान पर जिसके साथ मेरा झगड़ा है। अल्लाह ने फ़रमाया है कि मैं जल्दी करूँ। वह तो मेरे साथ है। चुनौचे उसका मुकाबला करने से बाज़ आएँ, वरना वह आपको हलाक कर देगा।”

22 लेकिन यूसियाह बाज़ न आया बल्कि लड़ने के लिए तैयार हुआ। उसने निकोह की बात न मानी गो अल्लाह ने उसे उस की मारिफ़त आगाह किया था। चुनौचे वह भेस बदलकर फ़िरौन से लड़ने के लिए मजिदो के मैदान में पहुँचा। 23 जब लड़ाई छिड़ गई तो यूसियाह तीरों से ज़ख़मी हुआ, और उसने अपने मुलाज़िमों को हुक़्म दिया, “मुझे यहाँ से ले जाओ, क्योंकि मैं सख़्त ज़ख़मी हो गया हूँ।” 24 लोगों ने उसे उसके अपने रथ पर से उठाकर उसके एक और रथ में रखा जो उसे यरूशलम ले गया। लेकिन उसने वफ़ात पाई, और उसे अपने बापदादा के खानदानी कब्रिस्तान में दफ़न किया गया। पूरे यहदाह और यरूशलम ने उसका मातम किया।

25 यरमियाह ने यूसियाह की याद में मातमी गीत लिखे, और आज तक गीत गानेवाले मर्दों-ख़वातीन यूसियाह की याद में मातमी गीत गाते हैं, यह पक्का दस्तूर बन गया है। यह गीत ‘नोहा की किताब’ में दर्ज है।

26-27 बाक़ी जो कुछ शुरू से लेकर आखिर तक यूसियाह की हुकूमत के दौरान हुआ वह ‘शाहाने-यहदाहो-इसराइल’ की किताब में बयान किया गया है। वहाँ उसके नेक कामों का ज़िक्र है और यह कि उसने किस तरह शरीअत के अहक़ाम पर अमल किया।

36

यहदाह का बादशाह यहूआख़ज़

1 उम्मत ने यूसियाह के बेटे यहूआख़ज़ को बाप के तख़्त पर बिठा दिया। 2 यहूआख़ज़ 23 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया तीन माह था। 3 फिर मिसर के बादशाह ने उसे तख़्त से उतार दिया, और मुल्के-यहदाह को तक़रीबन 3,400 किलोग्राम चाँदी और 34 किलोग्राम सोना ख़राज के तौर पर अदा करना पड़ा। 4 मिसर के बादशाह ने यहूआख़ज़ के सगे भाई इलियाक़ीम को यहदाह और यरूशलम का नया बादशाह बनाकर उसका नाम यह्यक़ीम में बदल दिया। यहूआख़ज़ को वह कैद करके अपने साथ मिसर ले गया।

यहदाह का बादशाह यह्यक़ीम

5 यह्यक़ीम 25 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में रहकर वह 11 साल तक हुकूमत करता रहा। उसका चाल-चलन रब उसके खुदा को नापसंद था। 6 एक दिन बाबल के नबूक़दनज़ज़र ने यहदाह पर हमला किया और यह्यक़ीम को पीतल की जंजीरों में जकड़कर बाबल ले गया। 7 नबूक़दनज़ज़र रब के घर की कई कीमती चीज़ें भी छीनकर अपने साथ बाबल ले गया और वहाँ अपने मंदिर में रख दीं।

8 बाक़ी जो कुछ यह्यक़ीम की हुकूमत के दौरान हुआ वह ‘शाहाने-यहदाहो-इसराइल’ की किताब में दर्ज है। वहाँ यह बयान किया गया है कि उसने कैसी धिनौनी हरकतें कीं और कि क्या कुछ उसके साथ हुआ। उसके बाद उसका बेटा यह्याकीन तख़्तनशीन हुआ।

यह्याकीन की हुकूमत

9 यह्याकीन 18 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया तीन माह और दस दिन था। उसका चाल-चलन रब को नापसंद था। 10 बहार के मौसम में नबूक़दनज़ज़र बादशाह ने हुक़्म दिया कि उसे गिरिफ़्तार करके बाबल ले जाया जाए। साथ साथ फ़ौजियों ने रब के घर की कीमती चीज़ें भी छीनकर बाबल पहुँचाईं। यह्याकीन की जगह नबूक़दनज़ज़र ने यह्याकीन के चचा सिदक्रियाह को यहदाह और यरूशलम का बादशाह बना दिया।

सिदक्रियाह बादशाह और यरूशलम की तबाही

11 सिदक्रियाह 21 साल की उम्र में तख़्तनशीन हुआ, और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया 11 साल था। 12 उसका चाल-चलन रब उसके खुदा को नापसंद था। जब यरमियाह नबी ने उसे रब की तरफ़ से आगाह किया तो उसने अपने आपको नबी के सामने पस्त न किया। 13 सिदक्रियाह को अल्लाह की क़सम खाकर नबूक़दनज़ज़र बादशाह का वफ़ादार रहने का वादा करना पड़ा। तो भी वह कुछ देर के बाद सरकश हो गया। वह अड़ गया, और उसका दिल इतना सख़्त हो गया कि वह रब इसराइल के खुदा की तरफ़ दुबारा रज़ू करने के लिए तैयार नहीं था।

14 लेकिन यहदाह के राहनुमाओं, इमामों और कौम की बेवफाई भी बढ़ती गई। पड़ोसी कौमों के धिनौने रस्मो-रिवाज अपनाकर उन्होंने रब के घर को नापाक कर दिया, गो उसने यरूशलम में यह इमारत अपने लिए मखसूस की थी।

15 बार बार रब उनके बापदादा का खुदा अपने पैगंबरों को उनके पास भेजकर उन्हें समझाता रहा, क्योंकि उसे अपनी कौम और सुकूनतगाह पर तरस आता था। 16 लेकिन लोगों ने अल्लाह के पैगंबरों का मजाक उड़ाया, उनके पैगाम हकीर जाने और नबियों को लान-तान की। आखिरकार रब का ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ, और बचने का कोई रास्ता न रहा। 17 उसने बाबल के बादशाह नबूकदनज़ज़र को उनके खिलाफ़ भेजा तो दुश्मन यहदाह के जवानों को तलवार से कत्ल करने के लिए मक़दिस में घुसने से भी न झिजके। किसी पर भी रहम न किया गया, खाह जवान मर्द या जवान खातून, खाह बुजुर्ग या उम्ररसीदा हो। रब ने सबको नबूकदनज़ज़र के हवाले कर दिया। 18 नबूकदनज़ज़र ने अल्लाह के घर की तमाम चीज़ें छीन लीं, खाह वह बड़ी थी या छोटी। वह रब के घर, बादशाह और उसके आला अफ़सरों के तमाम खज़ाने भी बाबल ले गया। 19 फ़ौजियों ने रब के घर और तमाम महलों को जलाकर यरूशलम की फ़सील को गिरा दिया। जितनी भी कीमती चीज़ें रह गई थीं वह तबाह हुईं। 20 और जो तलवार से बच गए थे उन्हें बाबल का बादशाह कैद करके अपने साथ बाबल ले गया। वहाँ उन्हें उस की और उस की औलाद की खिदमत करनी पड़ी। उनकी यह हालत उस वक़्त तक जारी रही जब तक फ़ारसी कौम की सलतनत शुरू न हुई।

21 यों वह कुछ पूरा हुआ जिसकी पेशगोई रब ने यरमियाह नबी की मारिफ़त की थी, क्योंकि ज़मीन को आखिरकार सबत का वह आराम मिल गया जो बादशाहों ने उसे नहीं दिया था। जिस तरह नबी ने कहा था, अब ज़मीन 70 साल तक तबाह और वीरान रही।

जिलावतनी से वापसी

22 फ़ारस के बादशाह ख़ोरस की हुकूमत के पहले साल में रब ने वह कुछ पूरा होने दिया जिसकी पेशगोई उसने यरमियाह की मारिफ़त की थी। उसने ख़ोरस को ज़ैल का एलान करने की तहरीक दी। यह एलान ज़बानी और तहरीरी तौर पर पूरी बादशाही में किया गया।

23 “फ़ारस का बादशाह ख़ोरस फ़रमाता है, रब आसमान के खुदा ने दुनिया के तमाम ममालिक मेरे हवाले कर दिए हैं। उसने मुझे यहदाह के शहर यरूशलम में उसके लिए घर बनाने की ज़िम्मादारी दी है। आपमें से जितने उस की कौम के हैं यरूशलम के लिए रवाना हो जाएँ। रब आपका खुदा आपके साथ हो।”

अज़रा

जिलावतनी से वापसी

¹ फ़ारस के बादशाह ख़ोरस की हुकूमत के पहले साल में रब ने वह कुछ पूरा होने दिया जिसकी पेशगोई उसने यरमियाह की मारिफ़त की थी। उसने ख़ोरस को ज़ैल का एलान करने की तहरीक दी। यह एलान ज़बानी और तहरीरी तौर पर पूरी बादशाही में किया गया।

² “फ़ारस का बादशाह ख़ोरस फ़रमाता है, रब आसमान के खुदा ने दुनिया के तमाम ममालिक मेरे हवाले कर दिए हैं। उसने मुझे यहूदाह के शहर यरूशलम में उसके लिए घर बनाने की ज़िम्मादारी दी है। ³ आपमें से जितने उस की क़ौम के हैं यरूशलम के लिए रवाना हो जाएँ ताकि वहाँ रब इसराईल के खुदा के लिए घर बनाएँ, उस खुदा के लिए जो यरूशलम में सुकूनत करता है। आपका खुदा आपके साथ हो। ⁴ जहाँ भी इसराईली क़ौम के बचे हुए लोग रहते हैं, वहाँ उनके पड़ोसियों का फ़र्ज़ है कि वह सोने-चाँदी और माल-मवेशी से उनकी मदद करें। इसके अलावा वह अपनी खुशी से यरूशलम में अल्लाह के घर के लिए हदिये भी दें।”

⁵ तब कुछ इसराईली रवाना होकर यरूशलम में रब के घर को तामीर करने की तैयारियाँ करने लगे। उनमें यहूदाह और बिनयमीन के खानदानी सरपरस्त, इमाम और लावी शामिल थे यानी जितने लोगों को अल्लाह ने तहरीक दी थी। ⁶ उनके तमाम पड़ोसियों ने उन्हें सोना-चाँदी और माल-मवेशी देकर उनकी मदद की। इसके अलावा उन्होंने अपनी खुशी से भी रब के घर के लिए हदिये दिए।

⁷ ख़ोरस बादशाह ने वह चीज़ें वापस कर दीं जो नबूक़दनज़र ने यरूशलम में रब के घर से लूटकर अपने देवता के मंदिर में रख दी थीं। ⁸ उन्हें निकालकर फ़ारस के बादशाह ने मित्रदात खज़ानची के हवाले कर दिया जिसने सब कुछ गिनकर यहूदाह के बुजुर्ग शेषबज़र को दे दिया। ⁹ जो फ़हरिस्त उसने लिखी उसमें ज़ैल की चीज़ें थीं :

सोने के 30 बासन,
चाँदी के 1,000 बासन,
29 छुरियाँ,
10 सोने के 30 प्याले,
चाँदी के 410 प्याले,
बाक़ी चीज़ें 1,000 अदद।

¹¹ सोने और चाँदी की कुल 5,400 चीज़ें थीं। शेषबज़र यह सब कुछ अपने साथ ले गया जब वह जिलावतनों के साथ बाबल से यरूशलम के लिए रवाना हुआ।

2

वापस आए हुए इसराईलियों की फ़हरिस्त

¹ ज़ैल में यहूदाह के उन लोगों की फ़हरिस्त है जो जिलावतनी से वापस आए। बाबल का बादशाह नबूक़दनज़र उन्हें कैद करके बाबल ले गया था, लेकिन अब वह यरूशलम और यहूदाह के उन शहरों में फिर जा बसे जहाँ उनके खानदान पहले रहते थे। ² उनके राहनुमा ज़रूबाबल, यशुअ, नहमियाह, सिरायाह, रालायाह, मर्दकी, बिलशान, मिसफ़ार, बिगवई, रहम और बाना थे। ज़ैल की फ़हरिस्त में वापस आए हुए खानदानों के मर्द बयान किए गए हैं।

³ परऊस का खानदान : 2,172,
⁴ सफ़तियाह का खानदान : 372,
⁵ अरख का खानदान : 775,
⁶ पख़त-मोआब का खानदान यानी यशुअ और योआब की औलाद : 2,812,
⁷ ऐलाम का खानदान : 1,254,
⁸ ज़तू का खानदान : 945,
⁹ ज़क्की का खानदान : 760,
¹⁰ बानी का खानदान : 642,
¹¹ बबी का खानदान : 623,
¹² अज़जाद का खानदान : 1,222,
¹³ अदूनिक्काम का खानदान : 666,
¹⁴ बिगवई का खानदान : 2,056,
¹⁵ अदीन का खानदान : 454,
¹⁶ अतीर का खानदान यानी हिज़क्रियाह की औलाद : 98,
¹⁷ बज़ी का खानदान : 323,

- 18 यूरा का खानदान : 112,
 19 हाशूम का खानदान : 223,
 20 जिब्बार का खानदान : 95,
 21 बैत-लहम के बाशिंदे : 123,
 22 नतूफ़ा के 56 बाशिंदे,
 23 अनतोत के बाशिंदे : 128,
 24 अज़मावत के बाशिंदे : 42,
 25 क्रिरियत-यारीम, कफ़ीरा और बैरोत के बाशिंदे : 743,
 26 रामा और जिबा के बाशिंदे : 621,
 27 मिकमास के बाशिंदे : 122,
 28 बैतेल और अई के बाशिंदे : 223,
 29 नबू के बाशिंदे : 52,
 30 मजबीस के बाशिंदे : 156,
 31 दूसरे ऐलाम के बाशिंदे : 1,254,
 32 हारिम के बाशिंदे : 320,
 33 लूद, हादीद और ओनू के बाशिंदे : 725,
 34 यरीह के बाशिंदे : 345,
 35 सनाआह के बाशिंदे : 3,630।
 36 ज़ैल के इमाम जिलावतनी से वापस आए।
 यदायाह का खानदान जो यशुअ की नसल का था : 973,
 37 इम्मेर का खानदान : 1,052,
 38 फ़शहर का खानदान : 1,247,
 39 हारिम का खानदान : 1,017।
 40 ज़ैल के लावी जिलावतनी से वापस आए। यशुअ और कदमियेल का खानदान यानी ह्दावियाह की औलाद : 74,
 41 गुलूकार : आसफ़ के खानदान के 128 आदमी,
 42 रब के घर के दरबान : सल्लूम, अतीर, तलमून, अक्कूब, खतीता और सोबी के खानदानों के 139 आदमी।
 43 रब के घर के खिदमतगारों के दर्जे-ज़ैल खानदान जिलावतनी से वापस आए।
 जीहा, हसूफ़ा, तब्बाओत, ⁴⁴करूस, सियाहा, फ़दून, ⁴⁵लिबाना, हजाबा, अक्कूब, ⁴⁶हजाब, शलमी, हनान, ⁴⁷जिदेल, जहर, रियायाह,
 48 रज़ीन, नक़्दा, जज्ज़ाम, ⁴⁹उज्ज़ा, फ़ासिह, बसी, ⁵⁰अस्रा, मऊनीम, नफ़ूसीम, ⁵¹बक्कूब, हकूफ़ा, हरहर, ⁵²बज़लूत, महीदा, हर्शा,
 53 बरकूस, सीसरा, तामह, ⁵⁴नज़ियाह और खतीफ़ा।
 55 सुलेमान के खादिमों के दर्जे-ज़ैल खानदान जिलावतनी से वापस आए।
 सूती, सूफ़िरत, फ़रूदा, ⁵⁶याला, दरकून, जिदेल, ⁵⁷सफ़तियाह, खतील, फूकिरत-ज़बायम और अमी।
 58 रब के घर के खिदमतगारों और सुलेमान के खादिमों के खानदानों में से वापस आए हुए मर्दों की तादाद 392 थी।
 59-60 वापस आए हुए खानदानों दिलायाह, तूबियाह और नक़्दा के 652 मर्द साबित न कर सके कि इसराईल की औलाद हैं, गो वह तल-मिलह, तल-हर्शा, करूब, अदून और इम्मेर के रहनेवाले थे।
 61-62 हबायाह, हक्कूज़ और बरज़िल्ली के खानदानों के कुछ इमाम भी वापस आए, लेकिन उन्हें रब के घर में खिदमत करने की इजाज़त न मिली। क्योंकि गो उन्होंने नसबनामे में अपने नाम तलाश किए उनका कहीं ज़िक्र न मिला, इसलिए उन्हें नापाक करार दिया गया। (बरज़िल्ली के खानदान के बानी ने बरज़िल्ली जिलियादी की बेटी से शादी करके अपने सुसर का नाम अपना लिया था।) ⁶³यहूदाह के गवर्नर ने हुक्म दिया कि इन तीन खानदानों के इमाम फ़िलहाल कुरबानियों का वह हिस्सा खाने में शरीक न हों जो इमामों के लिए मुकर्रर है। जब दुबारा इमामे-आज़म मुकर्रर किया जाए तो वही ऊरीम और तुम्मीम नामी कुरा डालकर मामला हल करे।
 64 कुल 42,360 इसराईली अपने वतन लौट आए, ⁶⁵नीज़ उनके 7,337 गुलाम और लौंडियाँ और 200 गुलूकार जिनमें मर्दों-खवातीन शामिल थे।
 66 इसराईलियों के पास 736 घोड़े, 245 खच्चर, ⁶⁷435 ऊँट और 6,720 गधे थे।
 68 जब वह यरूशलम में रब के घर के पास पहुँचे तो कुछ खानदानी सरपरस्तों ने अपनी खुशी से हदिये दिए ताकि अल्लाह का घर नए सिरे से उस जगह तामीर किया जा सके जहाँ पहले था। ⁶⁹हर एक ने उतना दे दिया जितना दे सका। उस वक़्त सोने के कुल 61,000 सिक्के, चाँदी के 2,800 किलोग्राम और इमामों के 100 लिबास जमा हुए।

70 इमाम, लावी, गुलूकार, रब के घर के दरबान और खिदमतगार, और अवाम के कुछ लोग अपनी अपनी आबाई आबादियों में दुबारा जा बसे। यों तमाम इसराईली दुबारा अपने अपने शहरों में रहने लगे।

3

नई कुरबानगाह पर कुरबानियाँ

1 सातवें महीने की इब्तिदा में पूरी कौम यरूशलम में जमा हुई। उस वक्त इसराईली अपनी आबादियों में दुबारा आबाद हो गए थे। 2 जमा होने का मकसद इसराईल के खुदा की कुरबानगाह को नए सिरे से तामीर करना था ताकि मर्दे-खुदा मूसा की शरीअत के मुताबिक उस पर भस्म होनेवाली कुरबानियाँ पेश की जा सकें। चुनाँचे यशुअ बिन यूसदक और ज़रूबाबल बिन सियालतियेल काम में लग गए। यशुअ के इमाम भाइयों और ज़रूबाबल के भाइयों ने उनकी मदद की। 3 गो वह मुल्क में रहनेवाली दीगर कौमों से सहमे हुए थे ताहम उन्होंने कुरबानगाह को उस की पुरानी बुनियाद पर तामीर किया और सुबह-शाम उस पर रब को भस्म होनेवाली कुरबानियाँ पेश करने लगे। 4 झोंपड़ियों की ईद उन्होंने शरीअत की हिदायत के मुताबिक मनाई। उस हफ्ते के हर दिन उन्होंने भस्म होनेवाली उतनी कुरबानियाँ चढाई जितनी ज़रूरी थी।

5 उस वक्त से इमाम भस्म होनेवाली तमाम दरकार कुरबानियाँ बाकायदगी से पेश करने लगे, नीज़ नए चाँद की ईदों और रब की बाक़ी मखसूसो-मुकद्दस ईदों की कुरबानियाँ। कौम अपनी खुशी से भी रब को कुरबानियाँ पेश करती थी। 6 गो रब के घर की बुनियाद अभी डाली नहीं गई थी तो भी इसराईली सातवें महीने के पहले दिन से रब को भस्म होनेवाली कुरबानियाँ पेश करने लगे। 7 फिर उन्होंने राजों और कारीगरों को पैसे देकर काम पर लगाया और सूर और सैदा के बाशिंदों से देवदार की लकड़ी मँगवाई। यह लकड़ी लुबनान के पहाड़ी इलाके से समुंदर तक लाई गई और वहाँ से समुंदर के रास्ते याफ़ा पहुँचाई गई। इसराईलियों ने मुआवज़े में खाने-पीने की चीज़ें और जैतून का तेल दे दिया। फ़ारस के बादशाह खोरस ने उन्हें यह करवाने की इजाज़त दी थी।

रब के घर की तामीर-नौ

8 जिलावतनी से वापस आने के दूसरे साल के दूसरे महीने में रब के घर की नए सिरे से तामीर शुरू हुई। इस काम में ज़रूबाबल बिन सियालतियेल, यशुअ बिन यूसदक, दीगर इमाम और लावी और वतन में वापस आए हुए बाक़ी तमाम इसराईली शरीक हुए। तामीरी काम की निगरानी उन लावियों के ज़िम्मे लगा दी गई जिनकी उम्र 20 साल या इससे ज़ायद थी।

9 ज़ैल के लोग मिलकर रब का घर बनानेवालों की निगरानी करते थे : यशुअ अपने बेटों और भाइयों समेत, क़दमियेल और उसके बेटे जो ह्दावियाह की औलाद थे और हनदाद के खानदान के लावी।

10 रब के घर की बुनियाद रखते वक्त इमाम अपने मुकद्दस लिबास पहने हुए साथ खड़े हो गए और तुरम बजाने लगे। आसफ़ के खानदान के लावी साथ साथ झोंझ बजाने और रब की सताइश करने लगे। सब कुछ इसराईल के बादशाह दाऊद की हिदायत के मुताबिक हुआ। 11 वह हम्दो-सना के गीत से रब की तारीफ़ करने लगे, “वह भला है, और इसराईल पर उस की शफ़क़त अबदी है!” जब हाज़िरीन ने देखा कि रब के घर की बुनियाद रखी जा रही है तो सब रब की खुशी में जोरदार नारे लगाने लगे।

12 लेकिन बहुत-से इमाम, लावी और खानदानी सरपरस्त हाज़िर थे जिन्होंने रब का पहला घर देखा हुआ था। जब उनके देखते देखते रब के नए घर की बुनियाद रखी गई तो वह बुलंद आवाज़ से रोने लगे जबकि बाक़ी बहुत सारे लोग खुशी के नारे लगा रहे थे। 13 इतना शोर था कि खुशी के नारों और रोने की आवाज़ों में इम्तियाज़ न किया जा सका। शोर दूर दूर तक सुनाई दिया।

4

रब के घर की तामीर की मुखालफ़त

1 यहूदाह और बिनयमीन के दुश्मनों को पता चला कि वतन में वापस आए हुए इसराईली रब इसराईल के खुदा के लिए घर तामीर कर रहे हैं। 2 ज़रूबाबल और खानदानी सरपरस्तों के पास आकर उन्होंने दरखास्त की, “हम भी आपके साथ मिलकर रब के घर को तामीर करना चाहते हैं। क्योंकि जब से असूर के बादशाह असर्हदून ने हमें यहाँ लाकर बसाया है उस वक्त से हम आपके खुदा के तालिब रहे और उसे कुरबानियाँ पेश करते आए हैं।” 3 लेकिन ज़रूबाबल, यशुअ और इसराईल के बाक़ी खानदानी सरपरस्तों ने इनकार किया, “नहीं, इसमें आपका हमारे साथ कोई वास्ता नहीं। हम अकेले ही रब इसराईल के खुदा के लिए घर बनाएँगे, जिस तरह फ़ारस के बादशाह खोरस ने हमें हुक्म दिया है।”

4 यह सुनकर मुल्क की दूसरी कौमों यहूदाह के लोगों की हौसलाशिकनी और उन्हें डराने की कोशिश करने लगी ताकि वह इमारत बनाने से बाज़ आएँ। 5 यहाँ तक कि वह फ़ारस के बादशाह खोरस के कुछ मुशीरों को रिश्त देकर काम रोकने में कामयाब हो गए। यों रब के घर की तामीर खोरस बादशाह के दौरे-हुक्मत से लेकर दारा बादशाह की हुक्मत तक स्की रही।

6 बाद में जब अख़स्वेस्स बादशाह की हुक्मत शुरू हुई तो इसराईल के दुश्मनों ने यहूदाह और यरूशलम के बाशिंदों पर इलज़ाम लगाकर शिकायती ख़त लिखा।

7 फिर अर्तखशस्ता बादशाह के दौरे-हुकूमत में उसे यहदाह के दुश्मनों की तरफ से शिकायती खत भेजा गया। खत के पीछे खासकर बिशलाम, मित्रदात और ताबियेल थे। पहले उसे अरामी ज़बान में लिखा गया, और बाद में उसका तरजुमा हुआ। 8 सामरिया के गवर्नर रहम और उसके मीरमुंशी शम्सी ने शहनशाह को खत लिख दिया जिसमें उन्होंने यरूशलम पर इलज़ामात लगाए। पते में लिखा था,

9 अज : रहम गवर्नर और मीरमुंशी शम्सी, नीज उनके हमखिदमत काज़ी, सफ़ीर और तरपल, सिप्पर, अरक, बाबल और सोसन यानी ऐलाम के मर्द, 10 नीज बाक़ी तमाम कौमों जिनको अज़ीम और अज़ीज़ बादशाह अशूरबनीपाल ने उठाकर सामरिया और दरियाए-फ़ुरात के बाक़ीमाँदा मगरिबी इलाक़े में बसा दिया था।

11 खत में लिखा था,

“शहनशाह अर्तखशस्ता के नाम,

अज : आपके खादिम जो दरियाए-फ़ुरात के मगरिब में रहते हैं।

12 शहनशाह को इल्म हो कि जो यहदी आपके हुज़ूर से हमारे पास यरूशलम पहुँचे हैं वह इस वक़्त उस बागी और शरीर शहर को नए सिरे से तामीर कर रहे हैं। वह फ़सील को बहाल करके बुनियादों की मरम्मत कर रहे हैं। 13 शहनशाह को इल्म हो कि अगर शहर नए सिरे से तामीर हो जाए और उस की फ़सील तकमील तक पहुँचे तो यह लोग टैक्स, ख़राज और महसूल अदा करने से इनकार कर देंगे। तब बादशाह को नुक़सान पहुँचेगा। 14 हम तो नमकहराम नहीं हैं, न शहनशाह की तौहीन बरदाश्त कर सकते हैं। इसलिए हम गुज़ारिश करते हैं 15 कि आप अपने बापदादा की तारीख़ी दस्तावेज़ात से यरूशलम के बारे में मालूमात हासिल करें, क्योंकि उनमें इस बात की तसदीक़ मिलेगी कि यह शहर माज़ी में सरकश रहा। हकीक़त में शहर को इसी लिए तबाह किया गया कि वह बादशाहों और सूबों को तंग करता रहा और क़दीम ज़माने से ही बगावत का मंबा रहा है। 16 गरज़ हम शहनशाह को इतला देते हैं कि अगर यरूशलम को दुबारा तामीर किया जाए और उस की फ़सील तकमील तक पहुँचे तो दरियाए-फ़ुरात के मगरिबी इलाक़े पर आपका काबू जाता रहेगा।”

17 शहनशाह ने जवाब में लिखा,

“मैं यह खत रहम गवर्नर, शम्सी मीरमुंशी और सामरिया और दरियाए-फ़ुरात के मगरिब में रहनेवाले उनके हमखिदमत अफ़सरों को लिख रहा हूँ।

आपको सलाम! 18 आपके खत का तरजुमा मेरी मौजूदगी में हुआ है और उसे मेरे सामने पढ़ा गया है। 19 मेरे हुक्म पर यरूशलम के बारे में मालूमात हासिल की गई हैं। मालूम हुआ कि वाक़ई यह शहर क़दीम ज़माने से बादशाहों की मुख़ालफ़त करके सरकशी और बगावत का मंबा रहा है। 20 नीज, यरूशलम ताक़तवर बादशाहों का दास्त-हुकूमत रहा है। उनकी इतनी ताक़त थी कि दरियाए-फ़ुरात के पूरे मगरिबी इलाक़े को उन्हें मुख़्तलिफ़ किस्म के टैक्स और ख़राज अदा करना पड़ा। 21 चुनौचे अब हुक्म दें कि यह आदमी शहर की तामीर करने से बाज़ आएँ। जब तक मैं खुद हुक्म न दूँ उस वक़्त तक शहर को नए सिरे से तामीर करने की इजाज़त नहीं है। 22 ध्यान दें कि इस हुक्म की तकमील में सुस्ती न की जाए, ऐसा न हो कि शहनशाह को बड़ा नुक़सान पहुँचे।”

23 ज्योंही खत की कापी रहम, शम्सी और उनके हमखिदमत अफ़सरों को पढ़कर सुनाई गई तो वह यरूशलम के लिए ख़ाना हुए और यहदियों को ज़बरदस्ती काम जारी रखने से रोक दिया।

24 चुनौचे यरूशलम में अल्लाह के घर का तामीरी काम स्क़ गया, और वह फ़ारस के बादशाह दारा की हुकूमत के दूसरे साल तक स्क़ा रहा।

5

रब के घर की तामीर दुबारा शुरू होती है

1 एक दिन दो नबी बनाम हज्जी और ज़करियाह बिन इडू उठकर इसराईल के ख़ुदा के नाम में जो उनके ऊपर था यहदाह और यरूशलम के यहदियों के सामने नबुव्वत करने लगे। 2 उनके हौसलाअफ़ज़ा अलफ़ाज़ सुनकर ज़रूबाबल बिन सियालतियेल और यशुअ बिन यूसदक़ ने फ़ैसला किया कि हम दुबारा यरूशलम में अल्लाह के घर की तामीर शुरू करेंगे। दोनों नबी इसमें उनके साथ थे और उनकी मदद करते रहे।

3 लेकिन ज्योंही काम शुरू हुआ तो दरियाए-फ़ुरात के मगरिबी इलाक़े के गवर्नर तत्नी और शतर-बोज़नी अपने हमखिदमत अफ़सरों समेत यरूशलम पहुँचे। उन्होंने पूछा, “किसने आपको यह घर बनाने और इसका ढाँचा तकमील तक पहुँचाने की इजाज़त दी? 4 इस काम के लिए ज़िम्मादार आदमियों के नाम हमें बताएँ!” 5 लेकिन उनका ख़ुदा यहदाह के बुजुर्गों की निगरानी कर रहा था, इसलिए उन्हें रोका न गया। क्योंकि लोगों ने सोचा कि पहले दारा बादशाह को इतला दी जाए। जब तक वह फ़ैसला न करे उस वक़्त तक काम रोका न जाए।

6 फिर दरियाए-फ़ुरात के मगरिबी इलाक़े के गवर्नर तत्नी, शतर-बोज़नी और उनके हमखिदमत अफ़सरों ने दारा बादशाह को ज़ैल का खत भेजा,

7 “दारा बादशाह को दिल की गहराइयों से सलाम कहते हैं! 8 शहनशाह को इल्म हो कि सूबा यहदाह में जाकर हमने देखा कि वहाँ अज़ीम ख़ुदा का घर बनाया जा रहा है। उसके लिए बड़े तराशे हुए पत्थर इस्तेमाल हो रहे हैं और दीवारों में शहतीर लगाए जा रहे हैं। लोग बड़ी ज़ाफ़िशानी से काम कर रहे हैं, और मक़ान उनकी मेहनत के बाइस तेज़ी से बन रहा है। 9 हमने बुजुर्गों से पूछा, “किसने आपको यह घर बनाने

और इसका ढाँचा तकमील तक पहुँचाने की इजाज़त दी है?’ ¹⁰ हमने उनके नाम भी मालूम किए ताकि लिखकर आपको भेज सकें। ¹¹ उन्होंने हमें जवाब दिया,

‘हम आसमानो-ज़मीन के खुदा के खादिम हैं, और हम उस घर को अज़ सरे-नौ तामीर कर रहे हैं जो बहुत साल पहले यहाँ कायम था। इसराईल के एक अज़ीम बादशाह ने उसे कदीम ज़माने में बनाकर तकमील तक पहुँचाया था। ¹² लेकिन हमारे बापदादा ने आसमान के खुदा को तैश दिलाया, और नतीजे में उसने उन्हें बाबल के बादशाह नबूकदनज़र के हवाले कर दिया जिसने रब के घर को तबाह कर दिया और कौम को कैद करके बाबल में बसा दिया। ¹³ लेकिन बाद में जब खोरस बादशाह बन गया तो उसने अपनी हुकूमत के पहले साल में हुक्म दिया कि अल्लाह के इस घर को दुबारा तामीर किया जाए। ¹⁴ साथ साथ उसने सोने-चाँदी की वह चीज़ें वापस कर दीं जो नबूकदनज़र ने यरूशलम में अल्लाह के घर से लूटकर बाबल के मंदिर में रख दी थीं। खोरस ने यह चीज़ें एक आदमी के सुपुर्द कर दीं जिसका नाम शेषबज़र था और जिसे उसने यहूदा का गवर्नर मुकर्रर किया था। ¹⁵ उसने उसे हुक्म दिया कि सामान को यरूशलम ले जाओ और रब के घर को पुरानी जगह पर अज़ सरे-नौ तामीर करके यह चीज़ें उसमें महफूज़ रखो। ¹⁶ तब शेषबज़र ने यरूशलम आकर अल्लाह के घर की बुनियाद रखी। उसी वक़्त से यह इमारत ज़ेरे-तामीर है, अगरचे यह आज तक मुकम्मल नहीं हुई।’

¹⁷ चुनौचे अगर शहनशाह को मंज़ूर हो तो वह तफ़तीश करें कि क्या बाबल के शाही दफ़्तर में कोई ऐसी दस्तावेज़ मौजूद है जो इस बात की तसदीक करे कि खोरस बादशाह ने यरूशलम में रब के घर को अज़ सरे-नौ तामीर करने का हुक्म दिया। गुज़ारिश है कि शहनशाह हमें अपना फ़ैसला पहुँचा दें।”

6

दारा बादशाह यहूदियों की मदद करता है

¹ तब दारा बादशाह ने हुक्म दिया कि बाबल के खज़ाने के दफ़्तर में तफ़तीश की जाए। इसका खोज लगाते लगाते ² आखिरकार मादी शहर इक्बताना के किले में तूमार मिल गया जिसमें लिखा था,

³ “खोरस बादशाह की हुकूमत के पहले साल में शहनशाह ने हुक्म दिया कि यरूशलम में अल्लाह के घर को उस की पुरानी जगह पर नए सिरे से तामीर किया जाए ताकि वहाँ दुबारा कुरबानियाँ पेश की जा सकें। उस की बुनियाद रखने के बाद उस की ऊँचाई 90 और चौड़ाई 90 फुट हो। ⁴ दीवारों को यों बनाया जाए कि तराशे हुए पत्थरों के हर तीन रद्दों के बाद देवदार के शहतीरों का एक रद्दा लगाया जाए। अखराजात शाही खज़ाने से पूरे किए जाएँ। ⁵ नीज़ सोने-चाँदी की जो चीज़ें नबूकदनज़र यरूशलम के इस घर से निकालकर बाबल लाया वह वापस पहुँचाई जाएँ। हर चीज़ अल्लाह के घर में उस की अपनी जगह पर वापस रख दी जाए।”

⁶ यह ख़बर पढ़कर दारा ने दरियाए-फ़ुरात के मगरिबी इलाक़े के गवर्नर तत्तनी, शतर-बोज़नी और उनके हमखिदमत अफ़सरों को ज़ैल का जवाब भेज दिया,

“अल्लाह के इस घर की तामीर में मुदाख़लत मत करना! ⁷ लोगों को काम जारी रखने दें। यहूदियों का गवर्नर और उनके बुजुर्ग अल्लाह का यह घर उस की पुरानी जगह पर तामीर करें।

⁸ न सिर्फ़ यह बल्कि मैं हुक्म देता हूँ कि आप इस काम में बुजुर्गों की मदद करें। तामीर के तमाम अखराजात वक़्त पर मुहैया करें ताकि काम न स्के। यह पैसे शाही खज़ाने यानी दरियाए-फ़ुरात के मगरिबी इलाक़े से जमा किए गए टैक्सों में से अदा किए जाएँ। ⁹ रोज़ बरोज़ इमामों को भस्म होनेवाली कुरबानियों के लिए दरकार तमाम चीज़ें मुहैया करते रहें, खाह वह जवान बैल, मेंढे, भेड़ के बच्चे, गंदुम, नमक, मै या जैतून का तेल क्यों न माँगें। इसमें सुस्ती न करें ¹⁰ ताकि वह आसमान के खुदा को पसंदीदा कुरबानियाँ पेश करके शहनशाह और उसके बेटों की सलामती के लिए दुआ कर सकें।

¹¹ इसके अलावा मैं हुक्म देता हूँ कि जो भी इस फ़रमान की खिलाफ़वरज़ी करे उसके घर से शहतीर निकालकर खड़ा किया जाए और उसे उस पर मसलूब किया जाए। साथ साथ उसके घर को मलबे का ढेर बनाया जाए। ¹² जिस खुदा ने वहाँ अपना नाम बसाया है वह हर बादशाह और कौम को हलाक करे जो मेरे इस हुक्म की खिलाफ़वरज़ी करके यरूशलम के घर को तबाह करने की ज़ुरत करे। मैं, दारा ने यह हुक्म दिया है। इसे हर तरह से पूरा किया जाए।”

रब के घर की मख़सूसियत

¹³ दरियाए-फ़ुरात के मगरिबी इलाक़े के गवर्नर तत्तनी, शतर-बोज़नी और उनके हमखिदमत अफ़सरों ने हर तरह से दारा बादशाह के हुक्म की तामील की। ¹⁴ चुनौचे यहूदी बुजुर्ग रब के घर पर काम जारी रख सके। दोनों नबी हज्जी और ज़करियाह बिन इडू अपनी नबुव्वतों से उनकी हौसलाअफ़ज़ाई करते रहे, और यों सारा काम इसराईल के खुदा और फ़ारस के बादशाहों खोरस, दारा और अर्तख़स्ता के हुक्म के मुताबिक़ ही मुकम्मल हुआ।

¹⁵ रब का घर दारा बादशाह की हुकूमत के छठे साल में तकमील तक पहुँचा। अदार के महीने का तीसरा दिन * था। ¹⁶ इसराईलियों ने इमामों, लावियों और जिलावतनी से वापस आए हुए इसराईलियों समेत बड़ी खुशी से रब के घर की मख़सूसियत की ईद मनाई। ¹⁷ उन्होंने

* 6:15 12 मार्च।

100 बैल, 200 मेंढे और भेड़ के 400 बच्चे कुरबान किए। पूरे इसराईल के लिए गुनाह की कुरबानी भी पेश की गई, और इसके लिए फ़ी कबीला एक बकरा यानी मिलकर 12 बकरे चढ़ाए गए। 18 फिर इमामों और लावियों को रब के घर की खिदमत के मुख्तलिफ़ गुरोहों में तकसीम किया गया, जिस तरह मूसा की शरीअत हिदायत देती है।

इसराईली फ़सह की ईद मनाते हैं

19 पहले महीने के 14वें दिन † जिलावतनी से वापस आए हुए इसराईलियों ने फ़सह की ईद मनाई। 20 तमाम इमामों और लावियों ने अपने आपको पाक-साफ़ कर रखा था। सबके सब पाक थे। लावियों ने फ़सह के लेले जिलावतनी से वापस आए हुए इसराईलियों, उनके भाइयों यानी इमामों और अपने लिए ज़बह किए। 21 लेकिन न सिर्फ़ जिलावतनी से वापस आए हुए इसराईली इस खाने में शरीक हुए बल्कि मुल्क के वह तमाम लोग भी जो ग़ैरयहूदी कौमों की नापाक राहों से अलग होकर उनके साथ रब इसराईल के खुदा के तालिब हुए थे। 22 उन्होंने सात दिन बड़ी खुशी से बेख़मीरी रोटी की ईद मनाई। रब ने उनके दिलों को खुशी से भर दिया था, क्योंकि उसने फ़ारस के बादशाह का दिल उनकी तरफ़ मायल कर दिया था ताकि उन्हें इसराईल के खुदा के घर को तामीर करने में मदद मिले।

7

अज़रा इमाम को यरूशलम भेजा जाता है

1 इन वाकियात के काफी अरसे बाद एक आदमी बनाम अज़रा बाबल को छोड़कर यरूशलम आया। उस वक़्त फ़ारस के बादशाह अर्तख़शस्ता की हुकूमत थी। आदमी का पूरा नाम अज़रा बिन सिरायाह बिन अज़रियाह बिन ख़िलकियाह 2 बिन सल्लूम बिन सदोक बिन अख़ीतूब 3 बिन अमरियाह बिन अज़रियाह बिन मिरायोत 4 बिन ज़रखियाह बिन उज्ज़ी बिन बुक्की 5 बिन अबीसुअ बिन फ़ीनहास बिन इलियज़र बिन हारून था। (हारून इमामे-आज़म था)।

6 अज़रा पाक नविशतों का उस्ताद और उस शरीअत का आलिम था जो रब इसराईल के खुदा ने मूसा की मारिफ़त दी थी। जब अज़रा बाबल से यरूशलम के लिए रवाना हुआ तो शहनशाह ने उस की हर ख़ाहिश पूरी की, क्योंकि रब उसके खुदा का शफ़ीक़ हाथ उस पर था। 7 कई इसराईली उसके साथ गए। इमाम, लावी, गुलूकार और रब के घर के दरबान और खिदमतगार भी उनमें शामिल थे। यह अर्तख़शस्ता बादशाह की हुकूमत के सातवें साल में हुआ। 8-9 काफ़िला पहले महीने के पहले दिन * बाबल से रवाना हुआ और पाँचवें महीने के पहले दिन † सहीह-सलामत यरूशलम पहुँचा, क्योंकि अल्लाह का शफ़ीक़ हाथ अज़रा पर था। 10 वज़ह यह थी कि अज़रा ने अपने आपको रब की शरीअत की तफ़तीश करने, उसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने और इसराईलियों को उसके अहक़ाम और हिदायात की तालीम देने के लिए वक्फ़ किया था।

शहनशाह अज़रा को मुखतारनामा देता है

11 अर्तख़शस्ता बादशाह ने अज़रा इमाम को ज़ैल का मुखतारनामा दे दिया, उसी अज़रा को जो पाक नविशतों का उस्ताद और उन अहक़ाम और हिदायात का आलिम था जो रब ने इसराईल को दी थीं। मुखतारनामे में लिखा था,

12 “अज़ : शहनशाह अर्तख़शस्ता

अज़रा इमाम को जो आसमान के खुदा की शरीअत का आलिम है, सलाम! 13 मैं हुक्म देता हूँ कि अगर मेरी सलतनत में मौजूद कोई भी इसराईली आपके साथ यरूशलम जाकर वहाँ रहना चाहे तो वह जा सकता है। इसमें इमाम और लावी भी शामिल हैं, 14 शहनशाह और उसके सात मुशीर आपको यहदाह और यरूशलम भेज रहे हैं ताकि आप अल्लाह की उस शरीअत की रौशनी में जो आपके हाथ में है यहदाह और यरूशलम का हाल जाँच लें। 15 जो सोना-चाँदी शहनशाह और उसके मुशीरों ने अपनी खुशी से यरूशलम में सुकूनत करनेवाले इसराईल के खुदा के लिए कुरबान की है उसे अपने साथ ले जाएँ। 16 नीज़, जितनी भी सोना-चाँदी आपको सूबा बाबल से मिल जाएगी और जितने भी हदिये कौम और इमाम अपनी खुशी से अपने खुदा के घर के लिए जमा करें उन्हें अपने साथ ले जाएँ। 17 उन पैसों से बैल, मेंढे, भेड़ के बच्चे और उनकी कुरबानियों के लिए दरकार गल्ला और मै की नज़रें ख़रीद लें, और उन्हें यरूशलम में अपने खुदा के घर की कुरबानगाह पर कुरबान करें। 18 जो पैसे बच जाएँ उनको आप और आपके भाई वैसे खर्च कर सकते हैं जैसे आपको मुनासिब लगे। शर्त यह है कि आपके खुदा की मरज़ी के मुताबिक़ हो। 19 यरूशलम में अपने खुदा को वह तमाम चीज़ें पहुँचाएँ जो आपको रब के घर में खिदमत के लिए दी जाएँगी। 20 बाक़ी जो कुछ भी आपको अपने खुदा के घर के लिए ख़रीदना पड़े उसके पैसे शाही खज़ाना अदा करेगा।

21 मैं, अर्तख़शस्ता बादशाह दरियाए-फ़ुरात के मगरिब में रहनेवाले तमाम ख़जानचियों को हुक्म देता हूँ कि हर तरह से अज़रा इमाम की माली मदद करें। जो भी आसमान के खुदा की शरीअत का यह उस्ताद माँगे वह उसे दिया जाए। 22 उसे 3,400 किलोग्राम चाँदी, 16,000 किलोग्राम गंदुम, 2,200 लिटर मै और 2,200 लिटर जैतून का तेल तक देना। नमक उसे उतना मिले जितना वह चाहे। 23 ध्यान से सब कुछ मुहैया करें जो आसमान का खुदा अपने घर के लिए माँगे। ऐसा न हो कि शहनशाह और उसके बेटों की सलतनत उसके गज़ब का निशाना बन जाए। 24 नीज़, आपको इल्म हो कि आपको अल्लाह के इस घर में खिदमत करनेवाले किसी शख्स से भी ख़राज या किसी किस्म का टैक्स लेने की इजाज़त नहीं है, खाह वह इमाम, लावी, गुलूकार, रब के घर का दरबान या उसका खिदमतगार हो।

† 6:19 21 अप्रैल। * 7:8-9 8 अप्रैल। † 7:8-9 4 अगस्त।

25 ऐ अज़रा, जो हिकमत आपके खुदा ने आपको अता की है उसके मुताबिक मजिस्ट्रेट और काज़ी मुक़र्रर करें जो आपकी कौम के उन लोगों का इनसाफ़ करें जो दरियाए-फ़ुरात के मगरिब में रहते हैं। जितने भी आपके खुदा के अहकाम जानते हैं वह इसमें शामिल हैं। और जितने इन अहकाम से वाकिफ़ नहीं हैं उन्हें आपको तालीम देनी है। 26 जो भी आपके खुदा की शरीअत और शहनशाह के क़ानून की खिलाफ़वरज़ी करे उसे सख़्ती से सज़ा दी जाए। जुर्म की संजीदगी का लिहाज़ करके उसे या तो सज़ाए-मौत दी जाए या जिलावतन किया जाए, उस की मिलकियत ज़ब्त की जाए या उसे जेल में डाला जाए।”

अज़रा की सताइश

27 रब हमारे बापदादा के खुदा की तमजीद हो जिसने शहनशाह के दिल को यरूशलम में रब के घर को शानदार बनाने की तहरीक दी है। 28 उसी ने शहनशाह, उसके मुशीरों और तमाम असरो-रसूख रखनेवाले अफ़सरों के दिलों को मेरी तरफ़ मायल कर दिया है। चूँकि रब मेरे खुदा का शफ़ीक़ हाथ मुझ पर था इसलिए मेरा हौसला बढ गया, और मैंने इसराईल के ख़ानदानी सरपरस्तों को अपने साथ इसराईल वापस जाने के लिए जमा किया।

8

अज़रा के साथ जिलावतनी से वापस आनेवालों की फ़हरिस्त

1 दर्जे-ज़ैल उन ख़ानदानी सरपरस्तों की फ़हरिस्त है जो अर्तख़शस्ता बादशाह की हुकूमत के दौरान मेरे साथ बाबल से यरूशलम के लिए रवाना हुए। हर ख़ानदान के मर्दों की तादाद भी दर्ज है :

- 2-3 फ़ीनहास के ख़ानदान का ज़ैरसोम,
इतमर के ख़ानदान का दानियाल,
दाऊद के ख़ानदान का हतूश बिन सकनियाह,
परऊस के ख़ानदान का ज़करियाह। 150 मर्द उसके साथ नसबनामे में दर्ज थे।
- 4 परख़त-मोआब के ख़ानदान का इलीहएनी बिन ज़रखियाह 200 मर्दों के साथ,
- 5 ज़तू के ख़ानदान का सकनियाह बिन यहज़ियेल 300 मर्दों के साथ,
- 6 अर्दीन के ख़ानदान का अबद बिन यूनतन 50 मर्दों के साथ,
- 7 ऐलाम के ख़ानदान का यसायाह बिन अतलियाह 70 मर्दों के साथ,
- 8 सफ़तियाह के ख़ानदान का ज़बदियाह बिन मीकाएल 80 मर्दों के साथ,
- 9 योआब के ख़ानदान का अबदियाह बिन यहियेल 218 मर्दों के साथ,
- 10 बानी के ख़ानदान का सलूमीत बिन यूसिफ़ियाह 160 मर्दों के साथ,
- 11 बबी के ख़ानदान का ज़करियाह बिन बबी 28 मर्दों के साथ,
- 12 अज़ज़ाद के ख़ानदान का यूहनान बिन हक्कातान 110 मर्दों के साथ,
- 13 अदूनिकाम के ख़ानदान के आखिरी लोग इलीफ़लत, यइयेल और समायाह 60 मर्दों के साथ,
- 14 बिगवई का ख़ानदान का ऊती और ज़बूद 70 मर्दों के साथ।

15 मैं यानी अज़रा ने मज़क़ूरा लोगों को उस नहर के पास जमा किया जो अहावा की तरफ़ बहती है। वहाँ हम ख़ैमे लगाकर तीन दिन ठहरे रहे। इस दौरान मुझे पता चला कि गो आम लोग और इमाम आ गए हैं लेकिन एक भी लावी हाज़िर नहीं है। 16 चुनौचे मैंने इलियज़र, अरियेल, समायाह, इलनातन, यरीब, इलनातन, नातन, ज़करियाह और मसुल्लाम को अपने पास बुला लिया। यह सब ख़ानदानी सरपरस्त थे जबकि शरीअत के दो उस्ताद बनाम यूयारीब और इलनातन भी साथ थे। 17 मैंने उन्हें लावियों की आबादी कासिफ़ियाह के बुज़ुर्ग इदू के पास भेजकर वह कुछ बताया जो उन्हें इदू, उसके भाइयों और रब के घर के ख़िदमतगारों को बताना था ताकि वह हमारे खुदा के घर के लिए ख़िदमतगार भेजें।

18 अल्लाह का शफ़ीक़ हाथ हम पर था, इसलिए उन्होंने हमें महली बिन लावी बिन इसराईल के ख़ानदान का समझदार आदमी सरिबियाह भेज दिया। सरिबियाह अपने बेटों और भाइयों के साथ पहुँचा। कुल 18 मर्द थे। 19 इनके अलावा मिरारी के ख़ानदान के हसबियाह और यसायाह को भी उनके बेटों और भाइयों के साथ हमारे पास भेजा गया। कुल 20 मर्द थे। 20 उनके साथ रब के घर के 220 ख़िदमतगार थे। इनके तमाम नाम नसबनामे में दर्ज थे। दाऊद और उसके मुलाज़िमों ने उनके बापदादा को लावियों की ख़िदमत करने की ज़िम्मादारी दी थी।

यरूशलम के लिए रवानगी की तैयारियाँ

21 वहीं अहावा की नहर के पास ही मैंने एलान किया कि हम सब रोज़ा रखकर अपने आपको अपने खुदा के सामने पस्त करें और दुआ करें कि वह हमें हमारे बाल-बच्चों और सामान के साथ सलामती से यरूशलम पहुँचाए। 22 क्योंकि हमारे साथ फ़ौजी और घुड़सवार नहीं थे जो हमें रास्ते में डाकुओं से महफूज़ रखते। बात यह थी कि मैं शहनशाह से यह माँगने से शर्म महसूस कर रहा था, क्योंकि हमने उसे बताया था,

“हमारे खुदा का शफ़ीक हाथ हर एक पर ठहरता है जो उसका तालिब रहता है। लेकिन जो भी उसे तर्क करे उस पर उसका सख्त ग़ज़ब नाज़िल होता है।” ²³ चुनौतें हमने रोज़ा रखकर अपने खुदा से इतना मास की कि वह हमारी हिफ़ाज़त करे, और उसने हमारी सुनी।

²⁴ फिर मैंने इमामों के 12 राहनुमाओं को चुन लिया, नीज़ सरिबियाह, हसबियाह और मज़ीद 10 लावियों को। ²⁵ उनकी मौजूदगी में मैंने सोना-चाँदी और बाक़ी तमाम सामान तोल लिया जो शहनशाह, उसके मुशीरों और अफ़सरों और वहाँ के तमाम इसराईलियों ने हमारे खुदा के घर के लिए अता किया था।

²⁶ मैंने तोलकर ज़ैल का सामान उनके हवाले कर दिया : तकरीबन 22,000 किलोग्राम चाँदी, चाँदी का कुछ सामान जिसका कुल वज़न तकरीबन 3,400 किलोग्राम था, 3,400 किलोग्राम सोना, ²⁷ सोने के 20 प्याले जिनका कुल वज़न तकरीबन साढ़े 8 किलोग्राम था, और पीतल के दो पालिश किए हुए प्याले जो सोने के प्यालों जैसे कीमती थे।

²⁸ मैंने आदमियों से कहा, “आप और यह तमाम चीज़ें रब के लिए मखसूस हैं। लोगों ने अपनी खुशी से यह सोना-चाँदी रब आपके बापदादा के खुदा के लिए क़ुरबान की है। ²⁹ सब कुछ एहतियात से महफूज़ रखें, और जब आप यरूशलम पहुँचेंगे तो इसे रब के घर के खज़ाने तक पहुँचाकर राहनुमा इमामों, लावियों और खानदानी सरपरस्तों की मौजूदगी में दुबारा तोलना।”

³⁰ फिर इमामों और लावियों ने सोना-चाँदी और बाक़ी सामान लेकर उसे यरूशलम में हमारे खुदा के घर में पहुँचाने के लिए महफूज़ रखा।

यरूशलम तक सफ़र

³¹ हम पहले महीने के 12वें दिन * अहावा नहर से यरूशलम के लिए रवाना हुए। अल्लाह का शफ़ीक हाथ हम पर था, और उसने हमें रास्ते में दुश्मनों और डाकुओं से महफूज़ रखा। ³² हम यरूशलम पहुँचे तो पहले तीन दिन आराम किया। ³³ चौथे दिन हमने अपने खुदा के घर में सोना-चाँदी और बाक़ी मखसूस सामान तोलकर इमाम मरीमोट बिन ऊरियाह के हवाले कर दिया। उस वक़्त इलियज़र बिन फ़ीनहास और दो लावी बनाम यज़बद बिन यशुअ और नौअदियाह बिन बिन्नुई उसके साथ थे। ³⁴ हर चीज़ गिनी और तोली गई, फिर उसका पूरा वज़न फ़हरिस्त में दर्ज किया गया।

³⁵ इसके बाद जिलावतनी से वापस आए हुए तमाम लोगों ने इसराईल के खुदा को भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ पेश कीं। इस नाते से उन्होंने पूरे इसराईल के लिए 12 बैल, 96 मेंढे, भेड़ के 77 बच्चे और गुनाह की क़ुरबानी के 12 बकरे क़ुरबान किए।

³⁶ मुसाफ़िरों ने दरियाए-फ़ुरात के मगरिबी इलाके के गवर्नरों और हाकिमों को शहनशाह की हिदायात पहुँचाई। इनको पढ़कर उन्होंने इसराईली क़ौम और अल्लाह के घर की हिमायत की।

9

गैरयहूदी बीवियों पर अफ़सोस

¹⁻² कुछ देर बाद क़ौम के राहनुमा मेरे पास आए और कहने लगे, “क़ौम के आम लोगों, इमामों और लावियों ने अपने आपको मुल्क की दीगर क़ौमों से अलग नहीं रखा, गो यह धिनौने रस्मो-रिवाज के पैरोकार हैं। उनकी औरतों से शादी करके उन्होंने अपने बेटों की भी शादी उनकी बेटियों से कराई है। यों अल्लाह की मुक़द्दस क़ौम कनानियों, हितियों, फ़रिज़्जियों, यबूसियों, अम्मोनियों, मोआबियों, मिसरियों और अमोरियों से आलूदा हो गई है। और बुज़ुर्गों और अफ़सरों ने इस बेवफ़ाई में पहल की है।”

³ यह सुनकर मैंने रंजीदा होकर अपने कपड़ों को फाड़ लिया और सर और दाढ़ी के बाल नोच नोचकर नंगे फ़र्श पर बैठ गया। ⁴ वहाँ मैं शाम की क़ुरबानी तक बेहिसो-हरकत बैठा रहा। इतने में बहुत-से लोग मेरे इर्दगिर्द जमा हो गए। वह जिलावतनी से वापस आए हुए लोगों की बेवफ़ाई के बाइस थरथरा रहे थे, क्योंकि वह इसराईल के खुदा के जवाब से निहायत ख़ौफ़ज़दा थे। ⁵ शाम की क़ुरबानी के वक़्त मैं वहाँ से उठ खड़ा हुआ जहाँ मैं तौबा की हालत में बैठा हुआ था। वही फटे हुए कपड़े पहने हुए मैं घुटने टेककर झुक गया और अपने हाथों को आसमान की तरफ उठाए हुए रब अपने खुदा से दुआ करने लगा,

⁶ “ऐ मेरे खुदा, मैं निहायत शर्मिंदा हूँ। अपना मुँह तेरी तरफ उठाने की मुझमें ज़ुरत नहीं रही। क्योंकि हमारे गुनाहों का इतना बड़ा ढेर लग गया है कि वह हमसे ऊँचा है, बल्कि हमारा कुसूर आसमान तक पहुँच गया है। ⁷ हमारे बापदादा के ज़माने से लेकर आज तक हमारा कुसूर संजीदा रहा है। इसी वजह से हम बार बार परदेसी हुक्मरानों के कब्ज़े में आए हैं जिन्होंने हमें और हमारे बादशाहों और इमामों को क़त्ल किया, गिरफ़्तार किया, लूट लिया और हमारी बेहुरमती की। बल्कि आज तक हमारी हालत यही रही है।

⁸ लेकिन इस वक़्त रब हमारे खुदा ने थोड़ी देर के लिए हम पर मेहरबानी की है। हमारी क़ौम के बचे-खुचे हिस्से को उसने रिहाई देकर अपने मुक़द्दस मक़ाम पर महफूज़ रखा है। यों हमारे खुदा ने हमारी आँखों में दुबारा चमक पैदा की और हमें कुछ सुकून मुहैया किया है, गो हम अब तक गुलामी में हैं। ⁹ बेशक हम गुलाम हैं, तो भी अल्लाह ने हमें तर्क नहीं किया बल्कि फ़ारस के बादशाह को हम पर मेहरबानी करने की तहरीक दी है। उसने हमें अज़ सरे-नौ ज़िंदगी अता की है ताकि हम अपने खुदा का घर दुबारा तामीर और उसके खंडरात बहाल कर सकें। अल्लाह ने हमें यहदाह और यरूशलम में एक महफूज़ चारदीवारी से घेर रखा है।

* 8:31 19 अप्रैल।

10 लेकिन ऐ हमारे खुदा, अब हम क्या कहें? अपनी इन हरकतों के बाद हम क्या जवाब दें? हमने तेरे उन अहकाम को नज़रंदाज़ किया है 11 जो तूने अपने खादिमों यानी नबियों की मारिफ़त दिए थे।

तूने फ़रमाया, 'जिस मुल्क में तुम दाखिल हो रहे हो ताकि उस पर कब्ज़ा करो वह उसमें रहनेवाली क्रौमों के धिनौने रस्मो-रिवाज के सबब से नापाक है। मुल्क एक सिरे से दूसरे सिरे तक उनकी नापाकी से भर गया है। 12 लिहाज़ा अपनी बेटियों की उनके बेटों के साथ शादी मत करवाना, न अपने बेटों का उनकी बेटियों के साथ रिश्ता बाँधना। कुछ न करो जिससे उनकी सलामती और कामयाबी बढ़ती जाए। तब ही तुम ताकतवर होकर मुल्क की अच्छी पैदावार खाओगे, और तुम्हारी औलाद हमेशा तक मुल्क की अच्छी चीज़ें विरासत में पाती रहेगी।'

13 अब हम अपनी शरीर हरकतों और बड़े कुसूर की सज़ा भुगत रहे हैं, गो ऐ अल्लाह, तूने हमें इतनी सख़्त सज़ा नहीं दी जितनी हमें मिलनी चाहिए थी। तूने हमारा यह बचा-खुचा हिस्सा ज़िंदा छोड़ा है। 14 तो क्या यह ठीक है कि हम तेरे अहकाम की खिलाफ़वरज़ी करके ऐसी क्रौमों से रिश्ता बाँधें जो इस किस्म की धिनौनी हरकतें करती हैं? हरगिज़ नहीं! क्या इसका यह नतीजा नहीं निकलेगा कि तेरा ग़ज़ब हम पर नाज़िल होकर सब कुछ तबाह कर देगा और यह बचा-खुचा हिस्सा भी ख़त्म हो जाएगा? 15 ऐ रब इसराईल के खुदा, तू ही आदिल है। आज हम बचे हुए हिस्से की हैसियत से तेरे हुज़ूर खड़े हैं। हम कुसूरवार हैं और तेरे सामने कायम नहीं रह सकते।"

10

बुतपरस्त बीवियों को तलाक़

1 जब अज़रा इस तरह दुआ कर रहा और अल्लाह के घर के सामने पड़े हुए और रोते हुए क्रौम के कुसूर का इक़रार कर रहा था तो उसके इर्दगिर्द इसराईली मर्दों, औरतों और बच्चों का बड़ा हुज़ूम जमा हो गया। वह भी फूट फूटकर रोने लगे।

2 फिर ऐलाम के खानदान के सकनियाह बिन यहियेल ने अज़रा से कहा,

"वाकई हमने पड़ोसी क्रौमों की औरतों से शादी करके अपने खुदा से बेवफ़ाई की है। तो भी अब तक इसराईल के लिए उम्मीद की किरण बाक़ी है। 3 आँ, हम अपने खुदा से अहद बाँधकर वादा करें कि हम उन तमाम औरतों को उनके बच्चों समेत वापस भेज देंगे। जो भी मशवरा आप और अल्लाह के अहकाम का ख़ौफ़ माननेवाले दीगर लोग हमें देंगे वह हम करेंगे। सब कुछ शरीअत के मुताबिक़ किया जाए। 4 अब उठें! क्योंकि यह मामला दुस्त करना आप ही का फ़र्ज़ है। हम आपके साथ हैं, इसलिए हौसला रखें और वह कुछ करें जो ज़रूरी है।"

5 तब अज़रा उठा और राहनुमा इमामों, लावियों और तमाम क्रौम को कसम खिलाई कि हम सकनियाह के मशवरे पर अमल करेंगे। 6 फिर अज़रा अल्लाह के घर के सामने से चला गया और यहूनान बिन इलियासिब के कमरे में दाखिल हुआ। वहाँ उसने पूरी रात कुछ खाए पिए बग़ैर गुज़ारी। अब तक वह जिलावतनी से वापस आए हुए लोगों की बेवफ़ाई पर मातम कर रहा था।

7-8 सरकारी अफ़सरों और बुजुर्गों ने फैसला किया कि यरूशलम और पूरे यहूदाह में एलान किया जाए, "लाज़िम है कि जितने भी इसराईली जिलावतनी से वापस आए हैं वह सब तीन दिन के अंदर अंदर यरूशलम में जमा हो जाएँ। जो भी इस दौरान हाज़िर न हो उसे जिलावतनों की जमात से ख़ारिज कर दिया जाएगा और उस की तमाम मिलकियत ज़ब्त हो जाएगी।" 9 तब यहूदाह और बिनयमीन के कबीलों के तमाम आदमी तीन दिन के अंदर अंदर यरूशलम पहुँचे। नवें महीने के बीसवें दिन * सब लोग अल्लाह के घर के सहन में जमा हुए। सब मामले की संजीदगी और मौसम के सबब से काँप रहे थे, क्योंकि बारिश हो रही थी।

10 अज़रा इमाम खड़े होकर कहने लगा, "आप अल्लाह से बेवफ़ा हो गए हैं। ग़ैरयहूदी औरतों से रिश्ता बाँधने से आपने इसराईल के कुसूर में इज़ाफ़ा कर दिया है। 11 अब रब अपने बापदादा के खुदा के हुज़ूर अपने गुनाहों का इक़रार करके उस की मरज़ी पूरी करें। पड़ोसी क्रौमों और अपनी परदेसी बीवियों से अलग हो जाएँ।"

12 पूरी जमात ने बुलंद आवाज़ से जवाब दिया, "आप ठीक कहते हैं! लाज़िम है कि हम आपकी हिदायत पर अमल करें। 13 लेकिन यह कोई ऐसा मामला नहीं है जो एक या दो दिन में दुस्त किया जा सके। क्योंकि हम बहुत लोग हैं और हमसे संजीदा गुनाह सरज़द हुआ है। नीज़, इस वक़्त बरसात का मौसम है, और हम ज़्यादा देर तक बाहर नहीं ठहर सकते। 14 बेहतर है कि हमारे बुजुर्ग पूरी जमात की नुमाइंदगी करें। फिर जितने भी आदमियों की ग़ैरयहूदी बीवियाँ हैं वह एक मुक़र्रर दिन मक़ामी बुजुर्गों और काज़ियों को साथ लेकर यहाँ आएँ और मामला दुस्त करें। और लाज़िम है कि यह सिलसिला उस वक़्त तक जारी रहे जब तक रब का ग़ज़ब ठंडा न हो जाए।"

15 तमाम लोग मुतफ़िक़ हुए, सिर्फ़ यूनतन बिन असाहेल और यहज़ियाह बिन तिक़वा ने फैसले की मुख़ालफ़त की जबकि मसुल्लाम और सब्बती लावी उनके हक़ में थे। 16-17 तो भी इसराईलियों ने मनसूबे पर अमल किया। अज़रा इमाम ने चंद एक खानदानी सरपरस्तों के नाम लेकर उन्हें यह ज़िम्मादारी दी कि जहाँ भी किसी यहूदी मर्द की ग़ैरयहूदी औरत से शादी हुई है वहाँ वह पूरे मामले की तहक़ीक़ करें। उनका काम दसवें महीने के पहले दिन † शुरू हुआ और पहले महीने के पहले दिन ‡ तकमील तक पहुँचा।

18-19 दर्जे-ज़ैल उन आदमियों की फ़हरिस्त है जिन्होंने ग़ैरयहूदी औरतों से शादी की थी। उन्होंने कसम खाकर वादा किया कि हम अपनी बीवियों से अलग हो जाएंगे। साथ साथ हर एक ने कुसूर की कुरबानी के तौर पर मेंढा कुरबान किया।

इमामों में से कुसूरवार :

* 10:9 19 सितंबर। † 10:16-17 29 दिसंबर। ‡ 10:16-17 27 मार्च।

यशुअ बिन यूसदक और उसके भाई मासियाह, इलियज़र, यरीब और जिदलियाह,

20 इम्मेर के खानदान का हनानी और ज़बदियाह,

21 हारिम के खानदान का मासियाह, इलियास, समायाह, यहियेल और उज़्जियाह,

22 फ़शहर के खानदान का इलियूऐनी, मासियाह, इसमाईल, नतनियेल, यूज़बद और इलियासा।

23 लावियों में से कुसूरवार :

यूज़बद, सिमई, किलायाह यानी कलीता, फ़तहियाह, यहदाह और इलियज़र।

24 गुलूकारों में से कुसूरवार :

इलियासिब।

रब के घर के दरबानों में से कुसूरवार :

सल्लूम, तलम और ऊरी।

25 बाक़ी कुसूरवार इसराईली :

परऊस के खानदान का रमियाह, यज़्जियाह, मलकियाह, मियामीन, इलियज़र, मलकियाह और बिनायाह।

26 ऐलाम के खानदान का मत्तनियाह, ज़करियाह, यहियेल, अबदी, यरीमोट और इलियास,

27 ज़तू के खानदान का इलियूऐनी, इलियासिब, मत्तनियाह, यरीमोट, ज़बद और अज़ीज़ा।

28 बबी के खानदान का यूहनान, हननियाह, ज़ब्बी और अतली।

29 बानी के खानदान का मसुल्लाम, मल्लूक, अदायाह, यसूब, सियाल और यरीमोट।

30 परखत-मोआब के खानदान का अदना, किलाल, बिनायाह, मासियाह, मत्तनियाह, बज़लियेल, बिन्नुई और मनस्सी।

31 हारिम के खानदान का इलियज़र, यिस्सियाह, मलकियाह, समायाह, शमौन, 32 बिनयमीन, मल्लूक और समरियाह।

33 हाशूम के खानदान का मत्तनी, मत्तताह, ज़बद, इलीफलत, यरेमी, मनस्सी और सिमई।

34 बानी के खानदान का मादी, अमराम, ऊएल, 35 बिनायाह, बदियाह, कलूही, 36 बनियाह, मरीमोट, इलियासिब, 37 मत्तनियाह, मत्तनी और यासी।

38 बिन्नुई के खानदान का सिमई, 39 सलमियाह, नातन, अदायाह, 40 मक्नदबी, सासी, सारी, 41 अज़रेल, सलमियाह, समरियाह,

42 सल्लूम, अमरियाह और यूसुफ़।

43 नबू के खानदान का यइयेल, मत्तितियाह, ज़बद, ज़बीना, यड़ी, योएल और बिनायाह।

44 इन तमाम आदमियों की ग़ैरयहूदी औरतों से शादी हुई थी, और उनके हों बच्चे पैदा हुए थे।

नहमियाह

नहमियाह यरूशलम के लिए दुआ करता है

1 जेल में नहमियाह बिन हकलियाह की रिपोर्ट दर्ज है।

मैं अर्तखशस्ता बादशाह की हुकूमत के 20वें साल किसलेव के महीने में सोसन के किले में था 2 कि एक दिन मेरा भाई हनानी मुझसे मिलने आया। उसके साथ यहदाह के चंद एक आदमी थे। मैंने उनसे पूछा, “जो यहूदी बचकर जिलावतनी से यहदाह वापस गए हैं उनका क्या हाल है? और यरूशलम शहर का क्या हाल है?” 3 उन्होंने जवाब दिया, “जो यहूदी बचकर जिलावतनी से यहदाह वापस गए हैं उनका बहुत बुरा और ज़िल्लतआमेज़ हाल है। यरूशलम की फ़सील अब तक ज़मीनबोस है, और उसके तमाम दरवाज़े राख हो गए हैं।”

4 यह सुनकर मैं बैठकर रोने लगा। कई दिन मैं रोज़ा रखकर मातम करता और आसमान के खुदा से दुआ करता रहा,

5 “ऐ रब, आसमान के खुदा, तू कितना अज़ीम और महीब खुदा है! जो तुझे प्यार और तेरे अहकाम की पैरवी करते हैं उनके साथ तू अपना अहद कायम रखता और उन पर मेहरबानी करता है। 6 मेरी बात सुनकर ध्यान दे कि तेरा खादिम किस तरह तुझसे इलतमास कर रहा है। दिन-रात मैं इसराइलियों के लिए जो तेरे खादिम हैं दुआ करता हूँ। मैं इक्करार करता हूँ कि हमने तेरा गुनाह किया है। इसमें मैं और मेरे बाप का घराना भी शामिल है। 7 हमने तेरे खिलाफ़ निहायत शरीर कदम उठाए हैं, क्योंकि जो अहकाम और हिदायात तूने अपने खादिम मूसा को दी थीं हम उनके ताबे न रहे। 8 लेकिन अब वह कुछ याद कर जो तूने अपने खादिम को फ़रमाया, ‘अगर तुम बेवफ़ा हो जाओ तो मैं तुम्हें मुख्तलिफ़ क़ौमों में मुतशिर कर दूँगा, 9 लेकिन अगर तुम मेरे पास वापस आकर दुबारा मेरे अहकाम के ताबे हो जाओ तो मैं तुम्हें तुम्हारे वतन में वापस लाऊँगा, खाह तुम ज़मीन की इंतहा तक क्यों न पहुँच गए हो। मैं तुम्हें उस जगह वापस लाऊँगा जिसे मैंने चुन लिया है ताकि मेरा नाम वहाँ सुकूनत करे।’ 10 ऐ रब, यह लोग तो तेरे अपने खादिम हैं, तेरी अपनी क़ौम जिसे तूने अपनी अज़ीम कुदरत और क़वी हाथ से फ़िद्या देकर छुड़ाया है। 11 ऐ रब, अपने खादिम और उन तमाम खादिमों की इलतमास सुन जो पूरे दिल से तेरे नाम का ख़ौफ़ मानते हैं। जब तेरा खादिम आज शहनशाह के पास होगा तो उसे कामयाबी अता कर। बख़्श दे कि वह मुझ पर रहम करे।”

मैंने यह इसलिए कहा कि मैं शहनशाह का साक़ी था।

2

नहमियाह को यरूशलम जाने की इज़ाज़त मिलती है

1 चार महीने गुज़र गए। नीसान के महीने के एक दिन जब मैं शहनशाह अर्तखशस्ता को मैं पिला रहा था तो मेरी मायूसी उसे नज़र आई। पहले उसने मुझे कभी उदास नहीं देखा था, 2 इसलिए उसने पूछा, “आप इतने ग़मगीन क्यों दिखाई दे रहे हैं? आप बीमार तो नहीं लगते बल्कि कोई बात आपके दिल को तंग कर रही है।”

मैं सख़्त घबरा गया 3 और कहा, “शहनशाह अबद तक जीता रहे! मैं किस तरह खुश हो सकता हूँ? जिस शहर में मेरे बापदादा को दफ़नाया गया है वह मलबे का ढेर है, और उसके दरवाज़े राख हो गए हैं।”

4 शहनशाह ने पूछा, “तो फिर मैं किस तरह आपकी मदद करूँ?” ख़ामोशी से आसमान के खुदा से दुआ करके 5 मैंने शहनशाह से कहा, “अगर बात आपको मंज़ूर हो और आप अपने खादिम से खुश हों तो फिर बराहे-करम मुझे यहदाह के उस शहर भेज दीजिए जिसमें मेरे बापदादा दफ़न हुए हैं ताकि मैं उसे दुबारा तामीर करूँ।”

6 उस वक़्त मलिका भी साथ बैठी थी। शहनशाह ने सवाल किया, “सफ़र के लिए कितना वक़्त दरकार है? आप कब तक वापस आ सकते हैं?” मैंने उसे बताया कि मैं कब तक वापस आऊँगा तो वह मुत्तफ़ि़क़ हुआ। 7 फिर मैंने गुज़ारिश की, “अगर बात आपको मंज़ूर हो तो मुझे दरियाए-फ़ुरात के मगरिबी इलाक़े के गवर्नरों के लिए ख़त दीजिए ताकि वह मुझे अपने इलाक़ों में से गुज़रने दें और मैं सलामती से यहदाह तक पहुँच सकूँ। 8 इसके अलावा शाही जंगलात के निगरान आसफ़ के लिए ख़त लिखवाँ ताकि वह मुझे लकड़ी दे। जब मैं रब के घर के साथवाले किले के दरवाज़े, फ़सील और अपना घर बनाऊँगा तो मुझे शहतीरों की ज़रूरत होगी।” अल्लाह का शफ़ीक़ हाथ मुझ पर था, इसलिए शहनशाह ने मुझे यह ख़त दे दिए।

9 शहनशाह ने फ़ौजी अफ़सर और घुड़सवार भी मेरे साथ भेजे। यों ख़ाना होकर मैं दरियाए-फ़ुरात के मगरिबी इलाक़े के गवर्नरों के पास पहुँचा और उन्हें शहनशाह के ख़त दिए। 10 जब गवर्नर संबल्लत हौरूनी और अम्मोनी अफ़सर तूबियाह को मालूम हुआ कि कोई इसराइलियों की बहबूदी के लिए आ गया है तो वह निहायत नाख़ुश हुए।

नहमियाह फ़सील का मुआयना करता है

11 सफ़र करते करते मैं यरूशलम पहुँच गया। तीन दिन के बाद 12 मैं रात के वक़्त शहर से निकला। मेरे साथ चंद एक आदमी थे, और हमारे पास सिर्फ़ वही जानवर था जिस पर मैं सवार था। अब तक मैंने किसी को भी उस बोझ के बारे में नहीं बताया था जो मेरे खुदा ने मेरे

दिल पर यरूशलम के लिए डाल दिया था। ¹³ चुनौचे मैं अंधेरे में वादी के दरवाजे से शहर से निकला और जुनूब की तरफ अजदहे के चश्मे से होकर कचरे के दरवाजे तक पहुँचा। हर जगह मैंने गिरी हुई फसील और भस्म हुए दरवाजों का मुआयना किया। ¹⁴ फिर मैं शिमाल यानी चश्मे के दरवाजे और शाही तालाब की तरफ बढ़ा, लेकिन मलबे की कसरत की वजह से मेरे जानवर को गुजरने का रास्ता न मिला, ¹⁵ इसलिए मैं वादीए-किद्रोन में से गुजरा। अब तक अंधेरा ही अंधेरा था। वहाँ भी मैं फसील का मुआयना करता गया। फिर मैं मुडा और वादी के दरवाजे में से दुबारा शहर में दाखिल हुआ।

फसील को तामीर करने का फैसला

¹⁶ यरूशलम के अफसरों को मालूम नहीं था कि मैं कहाँ गया और क्या कर रहा था। अब तक मैंने न उन्हें और न इमामों या दीगर उन लोगों को अपने मनसूबे से आगाह किया था जिन्हें तामीर का यह काम करना था। ¹⁷ लेकिन अब मैं उनसे मुखातिब हुआ, “आपको खुद हमारी मुसीबत नज़र आती है। यरूशलम मलबे का ढेर बन गया है, और उसके दरवाजे राख हो गए हैं। आँ, हम फसील को नए सिरे से तामीर करें ताकि हम दूसरों के मज़ाक का निशाना न बने रहें।” ¹⁸ मैंने उन्हें बताया कि अल्लाह का शफ़ीक़ हाथ किस तरह मुझ पर रहा था और कि शहनशाह ने मुझसे किस किस्म का वादा किया था। यह सुनकर उन्होंने जवाब दिया, “ठीक है, आँ हम तामीर का काम शुरू करें!” चुनौचे वह इस अच्छे काम में लग गए।

¹⁹ जब संबल्लत हौस्नी, अम्मोनी अफसर तूबियाह और जशम अरबी को इसकी ख़बर मिली तो उन्होंने हमारा मज़ाक़ उड़ाकर हिकारतआमेज़ लहजे में कहा, “यह तुम लोग क्या कर रहे हो? क्या तुम शहनशाह से ग़दारी करना चाहते हो?” ²⁰ मैंने जवाब दिया, “आसमान का खुदा हमें कामयाबी अता करेगा। हम जो उसके खादिम हैं तामीर का काम शुरू करेंगे। जहाँ तक यरूशलम का ताल्लुक है, न आज और न माज़ी में आपका कभी कोई हिस्सा या हक़ था।”

3

फसील की तामीर-नौ

¹ इमामे-आज़म इलियासिब बाकी इमामों के साथ मिलकर तामीरी काम में लग गया। उन्होंने भेड़ के दरवाजे को नए सिरे से बना दिया और उसे मख़सूस करके उसके किवाड़ लगा दिए। उन्होंने फसील के साथवाले हिस्से को भी मिया बुर्ज और हननेल के बुर्ज तक बनाकर मख़सूस किया।

² यरीह के आदमियों ने फसील के अगले हिस्से को खड़ा किया जबकि ज़क्कूर बिन इमरी ने उनके हिस्से से मुलहिक हिस्से को तामीर किया।

³ मछली का दरवाज़ा सनाआह के खानदान की ज़िम्मादारी थी। उसे शहतीरों से बनाकर उन्होंने किवाड़, चटखनियाँ और कुंडे लगा दिए।

⁴ अगले हिस्से की मरम्मत मरीमोत बिन ऊरियाह बिन हक्कूज़ ने की।

अगला हिस्सा मसुल्लाम बिन बरकियाह बिन मशेज़बेल की ज़िम्मादारी थी।

सदोक बिन बाना ने अगले हिस्से को तामीर किया।

⁵ अगला हिस्सा तकुअ के बाशिंदों ने बनाया। लेकिन शहर के बड़े लोग अपने बुज़ुर्गों के तहत काम करने के लिए तैयार न थे।

⁶ यसाना का दरवाज़ा योयदा बिन फ़ासिह और मसुल्लाम बिन बसूदियाह की ज़िम्मादारी थी। उसे शहतीरों से बनाकर उन्होंने किवाड़, चटखनियाँ और कुंडे लगा दिए।

⁷ अगला हिस्सा मलतियाह जिबऊनी और यदून मस्नोती ने खड़ा किया। यह लोग जिबऊन और मिसफ़ाह के थे, वही मिसफ़ाह जहाँ दरियाए-फ़ुरात के मगरिबी इलाके के गवर्नर का दास्ल-हुकूमत था।

⁸ अगले हिस्से की मरम्मत एक सुनार बनाम उज़्जियेल बिन हरहियाह के हाथ में थी।

अगले हिस्से पर एक इत्रसाज़ बनाम हननियाह मुकर्रर था। इन लोगों ने फसील की मरम्मत ‘मोटी दीवार’ तक की।

⁹ अगले हिस्से को रिफ़ायाह बिन हूर ने खड़ा किया। यह आदमी ज़िले यरूशलम के आधे हिस्से का अफसर था।

¹⁰ यदायाह बिन हस्मफ़ ने अगले हिस्से की मरम्मत की जो उसके घर के मुक़ाबिल था।

अगले हिस्से को हतूश बिन हसब्नियाह ने तामीर किया।

¹¹ अगले हिस्से को तनूरों के बुर्ज तक मलकियाह बिन हारिम और हस्सूब बिन परखत-मोआब ने खड़ा किया।

¹² अगला हिस्सा सल्लूम बिन हल्लूहेश की ज़िम्मादारी थी। यह आदमी ज़िले यरूशलम के दूसरे आधे हिस्से का अफसर था। उस की बेटियों ने उस की मदद की।

¹³ हनून ने ज़नूह के बाशिंदों समेत वादी के दरवाजे को तामीर किया। शहतीरों से उसे बनाकर उन्होंने किवाड़, चटखनियाँ और कुंडे लगाए। इसके अलावा उन्होंने फसील को वहाँ से कचरे के दरवाजे तक खड़ा किया। इस हिस्से का फ़ासला तक्रीबन 1,500 फुट यानी आधा किलोमीटर था।

¹⁴ कचरे का दरवाज़ा मलकियाह बिन रैकाब की ज़िम्मादारी थी। यह आदमी ज़िले बैत-करम का अफसर था। उसने उसे बनाकर किवाड़, चटखनियाँ और कुंडे लगाए।

15 चश्मे के दरवाजे की तामीर सल्लून बिन कुलहोज़ा के हाथ में थी जो ज़िले मिसफ़ाह का अफ़सर था। उसने दरवाजे पर छत बनाकर उसके किवाड़, चटरखनियाँ और कुंडे लगा दिए। साथ साथ उसने फ़सील के उस हिस्से की मरम्मत की जो शाही बाग़ के पासवाले तालाब से गुज़रता है। यह वही तालाब है जिसमें पानी नाले के ज़रीए पहुँचता है। सल्लून ने फ़सील को उस सीढ़ी तक तामीर किया जो यरूशलम के उस हिस्से से उतरती है जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है।

16 अगला हिस्सा नहमियाह बिन अज़बुक की ज़िम्मादारी थी जो ज़िले बैत-सूर के आधे हिस्से का अफ़सर था। फ़सील का यह हिस्सा दाऊद बादशाह के कब्रिस्तान के मुक़ाबिल था और मसनूई तालाब और सूरमाओं के कमरों पर ख़त्म हुआ।

17 ज़ैल के लावियों ने अगले हिस्सों को खड़ा किया : पहले रहम बिन बानी का हिस्सा था।

ज़िले क़ईला के आधे हिस्से के अफ़सर हसबियाह ने अगले हिस्से की मरम्मत की।

18 अगले हिस्से को लावियों ने बिन्नुई बिन हनदाद के ज़ेरे-निगरानी खड़ा किया जो ज़िले क़ईला के दूसरे आधे हिस्से पर मुक़र्रर था।

19 अगला हिस्सा मिसफ़ाह के सरदार अज़र बिन यशुअ की ज़िम्मादारी थी। यह हिस्सा फ़सील के उस मोड़ पर था जहाँ रास्ता असलाखाने की तरफ़ चढ़ता है।

20 अगले हिस्से को बारूक बिन ज़ब्बी ने बड़ी मेहनत से तामीर किया। यह हिस्सा फ़सील के मोड़ से शुरू होकर इमामे-आज़म इलियासिब के घर के दरवाजे पर ख़त्म हुआ।

21 अगला हिस्सा मरीमोत बिन ऊरियाह बिन हक्कूज़ की ज़िम्मादारी थी और इलियासिब के घर के दरवाजे से शुरू होकर उसके कोने पर ख़त्म हुआ।

22 ज़ैल के हिस्से उन इमामों ने तामीर किए जो शहर के गिर्दो-नवाह में रहते थे।

23 अगले हिस्से की तामीर बिनयमीन और हस्सूब के ज़ेरे-निगरानी थी। यह हिस्सा उनके घरों के सामने था।

अज़रियाह बिन मासियाह बिन अननियाह ने अगले हिस्से की मरम्मत की। यह हिस्सा उसके घर के पास ही था।

24 अगला हिस्सा बिन्नुई बिन हनदाद की ज़िम्मादारी थी। यह अज़रियाह के घर से शुरू हुआ और मुड़ते मुड़ते कोने पर ख़त्म हुआ।

25 अगला हिस्सा फ़ालाल बिन ऊज़ी की ज़िम्मादारी थी। यह हिस्सा मोड़ से शुरू हुआ, और ऊपर का जो बुर्ज शाही महल से उस जगह निकलता है जहाँ मुहाफ़िज़ों का सहन है वह भी इसमें शामिल था।

अगला हिस्सा फ़िदायाह बिन परऊस 26 और ओफल पहाड़ी पर रहनेवाले रब के घर के खिदमतगारों के ज़िम्मे था। यह हिस्सा पानी के दरवाजे और वहाँ से निकले हुए बुर्ज पर ख़त्म हुआ।

27 अगला हिस्सा इस बुर्ज से लेकर ओफल पहाड़ी की दीवार तक था। तकुअ के बाशिंदों ने उसे तामीर किया।

28 घोड़े के दरवाजे से आगे इमामों ने फ़सील की मरम्मत की। हर एक ने अपने घर के सामने का हिस्सा खड़ा किया।

29 उनके बाद सदोक बिन इम्मेर का हिस्सा आया। यह भी उसके घर के मुक़ाबिल था।

अगला हिस्सा समायाह बिन सकनियाह ने खड़ा किया। यह आदमी मशरिकी दरवाजे का पहरेदार था।

30 अगला हिस्सा हननियाह बिन सलमियाह और सलफ़ के छोटे बेटे हनून के ज़िम्मे था।

अगला हिस्सा मसुल्लाम बिन बरकियाह ने तामीर किया जो उसके घर के मुक़ाबिल था।

31 एक सुनार बनाम मलकियाह ने अगले हिस्से की मरम्मत की। यह हिस्सा रब के घर के खिदमतगारों और ताजिरों के उस मकान पर ख़त्म हुआ जो पहरे के दरवाजे के सामने था। फ़सील के कोने पर बाके बालाखाना भी इसमें शामिल था।

32 आखिरी हिस्सा भेड़ के दरवाजे पर ख़त्म हुआ। सुनारों और ताजिरों ने उसे खड़ा किया।

4

संबल्लत यहूदियों का मज़ाक़ उड़ाता है

1 जब संबल्लत को पता चला कि हम फ़सील को दुबारा तामीर कर रहे हैं तो वह आग-बगूला हो गया। हमारा मज़ाक़ उड़ा उड़ाकर 2 उसने अपने हमखिदमत अफ़सरों और सामरिया के फ़ौजियों की मौजूदगी में कहा, "यह ज़ईफ़ यहूदी क्या कर रहे हैं? क्या यह वाकई यरूशलम की किलाबंदी करना चाहते हैं? क्या यह समझते हैं कि चंद एक कुरबानियाँ पेश करके हम फ़सील को आज ही खड़ा करेंगे? वह इन जले हुए पत्थरों और मलबे के इस ढेर से किस तरह नई दीवार बना सकते हैं?" 3 अम्मोनी अफ़सर तूबियाह उसके साथ खड़ा था। वह बोला, "उन्हें करने दो! दीवार इतनी कमज़ोर होगी कि अगर लोमड़ी भी उस पर छल्लाँ लगाए तो गिर जाएगी।"

4 ऐ हमारे खुदा, हमारी सुन, क्योंकि लोग हमें हक़ीर जानते हैं। जिन बातों से उन्होंने हमें ज़लील किया है वह उनकी ज़िल्लत का बाइस बन जाएँ। बख़्श दे कि लोग उन्हें लूट लें और उन्हें कैद करके जिलावतन कर दें। 5 उनका कुसूर नज़रंदाज़ न कर बल्कि उनके गुनाह तुझे याद रहें। क्योंकि उन्होंने फ़सील को तामीर करनेवालों को ज़लील करने से तुझे तैश दिलाया है।

6 मुख़ालफ़त के बावजूद हम फ़सील की मरम्मत करते रहे, और होते होते पूरी दीवार की आधी ऊँचाई खड़ी हुई, क्योंकि लोग पूरी लग्न से काम कर रहे थे।

दुश्मन के हमलों की मुदाफ़अत

7 जब संबल्लत, तुबियाह, अरबों, अम्मोनियों और अशदू के बाशियों को इतला मिली कि यरूशलम की फसील की तामीर में तरक्की हो रही है बल्कि जो हिस्से अब तक खड़े न हो सके थे वह भी बंद होने लगे हैं तो वह बड़े गुस्से में आ गए। 8 सब मुतहिद होकर यरूशलम पर हमला करने और उसमें गड़बड़ पैदा करने की साजिशें करने लगे। 9 लेकिन हमने अपने खुदा से इतमास करके पहरेदार लगाए जो हमें दिन-रात उनसे बचाए रखें।

10 उस वक्त यहदाह के लोग कराहने लगे, “मजदूरों की ताकत खत्म हो रही है, और अभी तक मलबे के बड़े ढेर बाक़ी हैं। फसील को बनाना हमारे बस की बात नहीं है।”

11 दूसरी तरफ दुश्मन कह रहे थे, “हम अचानक उन पर टूट पड़ेंगे। उनको उस वक्त पता चलेगा जब हम उनके बीच में होंगे। तब हम उन्हें मार देंगे और काम स्क जाएगा।”

12 जो यहूदी उनके करीब रहते थे वह बार बार हमारे पास आकर हमें इतला देते रहे, “दुश्मन चारों तरफ से आप पर हमला करने के लिए तैयार खड़ा है।”

13 तब मैंने लोगों को फसील के पीछे एक जगह खड़ा कर दिया जहाँ दीवार सबसे नीची थी, और वह तलवारों, नेत्रों और कमानों से लैस अपने खानदानों के मुताबिक खुले मैदान में खड़े हो गए। 14 लोगों का जायज़ा लेकर मैं खड़ा हुआ और कहने लगा, “उन्से मत डरें! रब को याद करें जो अज़ीम और महीब है। ज़हन में रखें कि हम अपने भाइयों, बेटों बेटियों, बीवियों और घरों के लिए लड़ रहे हैं।”

15 जब हमारे दुश्मनों को मालूम हुआ कि उनकी साजिशों की ख़बर हम तक पहुँच गई है और कि अल्लाह ने उनके मनसूबे को नाकाम होने दिया तो हम सब अपनी अपनी जगह पर दुबारा तामीर के काम में लग गए। 16 लेकिन उस दिन से मेरे जवानों का सिर्फ़ आधा हिस्सा तामीरी काम में लगा रहा। बाक़ी लोग नेत्रों, ढालों, कमानों और ज़िरा-बकतर से लैस पहरा देते रहे। अफसर यहदाह के उन तमाम लोगों के पीछे खड़े रहे 17 जो दीवार को तामीर कर रहे थे। सामान उठानेवाले एक हाथ से हथियार पकड़े काम करते थे। 18 और जो भी दीवार को खड़ा कर रहा था उस की तलवार कमर में बँधी रहती थी। जिस आदमी को तुरम बजाकर खतरे का एलान करना था वह हमेशा मेरे साथ रहा। 19 मैंने शुरफ़ा, बुजुर्गों और बाक़ी लोगों से कहा, “यह काम बहुत ही बड़ा और वसी है, इसलिए हम एक दूसरे से दूर और बिखरे हुए काम कर रहे हैं। 20 ज्योंही आपको तुरम की आवाज़ सुनाई दे तो भागकर आवाज़ की तरफ चले आएँ। हमारा खुदा हमारे लिए लड़ेगा।”

21 हम पौ फटने से लेकर उस वक्त तक काम में मसरूफ़ रहते जब तक सितारे नज़र न आते, और हर वक्त आदमियों का आधा हिस्सा नेत्रे पकड़े पहरा देता था। 22 उस वक्त मैंने सबको यह हुक्म भी दिया, “हर आदमी अपने मददगारों के साथ रात का वक्त यरूशलम में गुज़ारे। फिर आप रात के वक्त पहरादारी में भी मदद करेंगे और दिन के वक्त तामीरी काम में भी।” 23 उन तमाम दिनों के दौरान न मैं, न मेरे भाइयों, न मेरे जवानों और न मेरे पहरेदारों ने कभी अपने कपड़े उतारे। नीज़, हर एक अपना हथियार पकड़े रहा।

5

गरीबों का कर्ज़ा मनसूख

1 कुछ देर बाद कुछ मर्दों-खवातीन मेरे पास आकर अपने यहूदी भाइयों की शिकायत करने लगे। 2 बाज़ ने कहा, “हमारे बहुत ज़्यादा बेटे-बेटियाँ हैं, इसलिए हमें मज़ीद अनाज मिलना चाहिए, वरना हम ज़िंदा नहीं रहेंगे।” 3 दूसरों ने शिकायत की, “काल के दौरान हमें अपने खेतों, अंगूर के बागों और घरों को गिरवी रखना पड़ा ताकि अनाज मिल जाए।” 4 कुछ और बोले, “हमें अपने खेतों और अंगूर के बागों पर बादशाह का टैक्स अदा करने के लिए उधार लेना पड़ा। 5 हम भी दूसरों की तरह यहूदी कौम के हैं, और हमारे बच्चे उनसे कम हैसियत नहीं रखते। तो भी हमें अपने बच्चों को गुलामी में बेचना पड़ता है ताकि गुज़ारा हो सके। हमारी कुछ बेटियाँ लौंडियाँ बन चुकी हैं। लेकिन हम खुद बेबस हैं, क्योंकि हमारे खेत और अंगूर के बाग दूसरों के कब्ज़े में हैं।”

6 उनका वावैला और शिकायतें सुनकर मुझे बड़ा गुस्सा आया। 7 बहुत सोच-बिचार के बाद मैंने शुरफ़ा और अफसरों पर इलज़ाम लगाया, “आप अपने हमवतन भाइयों से गैरमुनासिब सूद ले रहे हैं!” मैंने उनसे निपटने के लिए एक बड़ी जमात इकट्ठी करके 8 कहा, “हमारे कई हमवतन भाइयों को गैरयहूदियों को बेचा गया था। जहाँ तक मुमकिन था हमने उन्हें वापस खरीदकर आज़ाद करने की कोशिश की। और अब आप खुद अपने हमवतन भाइयों को बेच रहे हैं। क्या हम अब उन्हें दुबारा वापस खरीदें?” वह ख़ामोश रहे और कोई जवाब न दे सके।

9 मैंने बात जारी रखी, “आपका यह सुलूक ठीक नहीं। आपको हमारे खुदा का ख़ौफ़ मानकर ज़िंदगी गुज़ारना चाहिए ताकि हम अपने गैरयहूदी दुश्मनों की लान-तान का निशाना न बनें। 10 मैं, मेरे भाइयों और मुलाज़िमों ने भी दूसरों को उधार के तौर पर पैसे और अनाज दिया है। लेकिन आएँ, हम उनसे सूद न लें! 11 आज ही अपने कर्ज़दारों को उनके खेत, घर और अंगूर और ज़ैतून के बाग वापस कर दें। जितना सूद आपने लगाया था उसे भी वापस कर दें, खाह उसे पैसों, अनाज, ताज़ा मै या ज़ैतून के तेल की सूरत में अदा करना हो।” 12 उन्होंने जवाब दिया, “हम उसे वापस कर देंगे और आइंदा उनसे कुछ नहीं माँगे। जो कुछ आपने कहा वह हम करेंगे।”

तब मैंने इमामों को अपने पास बुलाया ताकि शुरफ़ा और बुजुर्ग उनकी मौजूदगी में कस्म खाएँ कि हम ऐसा ही करेंगे। 13 फिर मैंने अपने लिबास की तहें झाड़ झाड़कर कहा, “जो भी अपनी कस्म तोड़े उसे अल्लाह इसी तरह झाड़कर उसके घर और मिलकियत से महरूम कर दे!”

तमाम जमाशुदा लोग बोले, “आमीन, ऐसा ही हो!” और रब की तारीफ़ करने लगे। सबने अपने वादे पूरे किए।

नहमियाह का अच्छा नमूना

14 मैं कुल बारह साल सूबा यहूदाह का गवर्नर रहा यानी अर्तखशस्ता बादशाह की हुकूमत के 20वें साल से उसके 32वें साल तक। इस पूरे अरसे में न मैंने और न मेरे भाइयों ने वह आमदनी ली जो हमारे लिए मुकर्रर की गई थी। 15 असल में माजी के गवर्नरों ने कौम पर बड़ा बोझ डाल दिया था। उन्होंने रियाया से न सिर्फ़ रोटी और मैं बल्कि फ़ी दिन चाँदी के 40 सिक्के भी लिए थे। उनके अफ़सरों ने भी आम लोगों से ग़लत फ़ायदा उठाया था। लेकिन चूँकि मैं अल्लाह का ख़ौफ़ मानता था, इसलिए मैंने उनसे ऐसा सलूक न किया। 16 मेरी पूरी ताक़त फ़सील की तकमील में सर्फ़ हुई, और मेरे तमाम मुलाज़िम भी इस काम में शरीक रहे। हममें से किसी ने भी ज़मीन न ख़रीदी। 17 मैंने कुछ न माँगा हालाँकि मुझे रोज़ाना यहूदाह के 150 अफ़सरों की मेहमान-नवाज़ी करनी पड़ती थी। उनमें वह तमाम मेहमान शामिल नहीं हैं जो गाहे बगाहे पड़ोसी ममालिक से आते रहे। 18 रोज़ाना एक बैल, छः बेहतरीन भेड़-बकरियाँ और बहुत-से परिदे मेरे लिए ज़बह करके तैयार किए जाते, और दस दिन के बाद हमें कई क्रिस्म की बहुत-सी मैं ख़रीदनी पड़ती थी। इन अख़राजात के बावजूद मैंने गवर्नर के लिए मुकर्ररा वज़ीफ़ा न माँगा, क्योंकि कौम पर बोझ वैसे भी बहुत ज़्यादा था।

19 ऐ मेरे ख़ुदा, जो कुछ मैंने इस कौम के लिए किया है उसके बाइस मुझ पर मेहरबानी कर।

6

नहमियाह के खिलाफ़ साज़िश

1 संबल्लत, तूबियाह, ज़शम अरबी और हमारे बाकी दुश्मनों को पता चला कि मैंने फ़सील को तकमील तक पहुँचाया है और दीवार में कहीं भी ख़ाली जगह नज़र नहीं आती। सिर्फ़ दरवाज़ों के किवाड़ अब तक लगाए नहीं गए थे। 2 तब संबल्लत और ज़शम ने मुझे पैग़ाम भेजा, “हम वादीए-ओनू के शहर कफ़ीरीम में आपसे मिलना चाहते हैं।” लेकिन मुझे मालूम था कि वह मुझे नुक़सान पहुँचाना चाहते हैं। 3 इसलिए मैंने कासिदों के हाथ जवाब भेजा, “मैं इस वक़्त एक बड़ा काम तकमील तक पहुँचा रहा हूँ, इसलिए मैं आ नहीं सकता। अगर मैं आपसे मिलने आऊँ तो पूरा काम स्क़ जाएगा।”

4 चार दफ़ा उन्होंने मुझे यही पैग़ाम भेजा और हर बार मैंने वही जवाब दिया। 5 पाँचवें मरतबा जब संबल्लत ने अपने मुलाज़िम को मेरे पास भेजा तो उसके हाथ में एक खुला ख़त था। 6 ख़त में लिखा था, “पड़ोसी ममालिक में अफ़वाह फैल गई है कि आप और बाक़ी यहूदी बगावत की तैयारियाँ कर रहे हैं। ज़शम ने इस बात की तसदीक़ की है। लोग कहते हैं कि इसी वजह से आप फ़सील बना रहे हैं। इन रिपोर्टों के मुताबिक़ आप उनके बादशाह बनेंगे। 7 कहा जाता है कि आपने नबियों को मुकर्रर किया है जो यरूशलम में एलान करें कि आप यहूदाह के बादशाह हैं। बेशक़ ऐसी अफ़वाहें शहनशाह तक भी पहुँचेंगी। इसलिए आइए, हम मिलकर एक दूसरे से मशवरा करें कि क्या करना चाहिए।”

8 मैंने उसे जवाब भेजा, “जो कुछ आप कह रहे हैं वह झूठ ही झूठ है। कुछ नहीं हो रहा, बल्कि आपने फ़रज़ी कहानी घड़ ली है!” 9 असल में दुश्मन हमें डराना चाहते थे। उन्होंने सोचा, “अगर हम ऐसी बातें कहें तो वह हिम्मत हारकर काम से बाज़ आएँगे।” लेकिन अब मैंने ज़्यादा अज़म के साथ काम जारी रखा।

10 एक दिन मैं समायाह बिन दिलायाह बिन महेतबेल से मिलने गया जो ताला लगाकर घर में बैठा था। उसने मुझसे कहा, “आइए, हम अल्लाह के घर में जमा हो जाएँ और दरवाज़ों को अपने पीछे बंद करके कुंडी लगाएँ। क्योंकि लोग इसी रात आपको क़त्ल करने के लिए आएँगे।”

11 मैंने एतराज़ किया, “क्या यह ठीक़ है कि मुझ जैसा आदमी भाग जाए? या क्या मुझ जैसा शरख़्स जो इमाम नहीं है रब के घर में दाख़िल होकर ज़िंदा रह सकता है? हरगिज़ नहीं! मैं ऐसा नहीं करूँगा!” 12 मैंने जान लिया कि समायाह की यह बात अल्लाह की तरफ़ से नहीं है। संबल्लत और तूबियाह ने उसे रिश्वत दी थी, इसी लिए उसने मेरे बारे में ऐसी पेशगोई की थी। 13 इससे वह मुझे डराकर गुनाह करने पर उकसाना चाहते थे ताकि वह मेरी बदनामी करके मुझे मज़ाक़ का निशाना बना सकें।

14 ऐ मेरे ख़ुदा, तूबियाह और संबल्लत की यह बुरी हरकतें मत भूलना! नौअदियाह नबिया और बाक़ी उन नबियों को याद रख जिन्होंने मुझे डराने की कोशिश की है।

फ़सील की तकमील

15 फ़सील इलूल के महीने के 25वें दिन * यानी 52 दिनों में मुकम्मल हुई। 16 जब हमारे दुश्मनों को यह ख़बर मिली तो पड़ोसी ममालिक सहम गए, और वह एहसासे-कमतरी का शिकार हो गए। उन्होंने जान लिया कि अल्लाह ने ख़ुद यह काम तकमील तक पहुँचाया है।

17 उन 52 दिनों के दौरान यहूदाह के शरफ़ा तूबियाह को ख़त भेजते रहे और उससे जवाब मिलते रहे थे। 18 असल में यहूदाह के बहुत-से लोगों ने क़सम खाकर उस की मदद करने का वादा किया था। वजह यह थी कि वह सकनियाह बिन अरख़ का दामाद था, और उसके बेटे यूहनान की शादी मसुल्लाम बिन बरकियाह की बेटी से हुई थी। 19 तूबियाह के यह मददगार मेरे सामने उसके नेक़ कामों की तारीफ़ करते रहे और साथ साथ मेरी हर बात उसे बताते रहे। फिर तूबियाह मुझे ख़त भेजता ताकि मैं डरकर काम से बाज़ आऊँ।

* 6:15 2 अक्टूबर।

7

1 फ़सील की तकमील पर मैंने दरवाज़ों के किवाड़ लगवाए। फिर रब के घर के दरबान, गुलूकार और ख़िदमतगुज़ार लावी मुक़र्रर किए गए। 2 मैंने दो आदमियों को यरूशलम के हुक्मरान बनाया। एक मेरा भाई हनानी और दूसरा क़िले का कमांडर हननियाह था। हननियाह को मैंने इसलिए चुन लिया कि वह वफ़ादार था और अकसर लोगों की निसबत अल्लाह का ज़्यादा ख़ौफ़ मानता था। 3 मैंने दोनों से कहा, “यरूशलम के दरवाज़े दोपहर के वक़्त जब धूप की शिद्दत है खुले न रहें, और पहरा देते वक़्त भी उन्हें बंद करके कुंडे लगाएँ। यरूशलम के आदमियों को पहरादारी के लिए मुक़र्रर करें जिनमें से कुछ फ़सील पर और कुछ अपने घरों के सामने ही पहरा दें।”

जिलावतनी से वापस आए हुआ की फ़हरिस्त

4 गो यरूशलम शहर बड़ा और वसी था, लेकिन उसमें आबादी थोड़ी थी। ढाए गए मकान अब तक दुबारा तामीर नहीं हुए थे। 5 चुनौचे मेरे ख़ुदा ने मेरे दिल को शुरफ़ा, अफ़सरों और अवाम को इक़ठा करने की तहरीक दी ताकि ख़ानदानों की रजिस्ट्री तैयार करूँ। इस सिलसिले में मुझे एक किताब मिल गई जिसमें उन लोगों की फ़हरिस्त दर्ज थी जो हमसे पहले जिलावतनी से वापस आए थे। उसमें लिखा था,

6 “ज़ैल में यहदाह के उन लोगों की फ़हरिस्त है जो जिलावतनी से वापस आए। बाबल का बादशाह नबूकदनज़र उन्हें कैद करके बाबल ले गया था, लेकिन अब वह यरूशलम और यहदाह के उन शहरों में फिर जा बसे जहाँ पहले रहते थे।

7 उनके राहनुमा ज़रूबाबल, यशुअ, नहमियाह, अज़रियाह, रामियाह, नहमानी, मर्दकी, बिलशान, मिस्फ़रत, बिगवई, नहम और बाना थे। ज़ैल की फ़हरिस्त में वापस आए हुए ख़ानदानों के मर्द बयान किए गए हैं।

8 परऊस का ख़ानदान : 2,172,

9 सफ़तियाह का ख़ानदान : 372,

10 अरख का ख़ानदान : 652,

11 पख़त-मोआब का ख़ानदान यानी यशुअ और योआब की औलाद : 2,818,

12 ऐलाम का ख़ानदान : 1,254,

13 ज़तू का ख़ानदान : 845,

14 ज़क्की का ख़ानदान : 760,

15 बिन्नूई का ख़ानदान : 648,

16 बबी का ख़ानदान : 628,

17 अज़जाद का ख़ानदान : 2,322,

18 अदूनिकाम का ख़ानदान : 667,

19 बिगवई का ख़ानदान : 2,067,

20 अदीन का ख़ानदान : 655,

21 अतीर का ख़ानदान यानी हिज़क्रियाह की औलाद : 98,

22 हाशूम का ख़ानदान : 328,

23 बज़ी का ख़ानदान : 324,

24 ख़ारिफ़ का ख़ानदान : 112,

25 जिबऊन का ख़ानदान : 95,

26 बैत-लहम और नतूफ़ा के बाशिंदे : 188,

27 अनतोत के बाशिंदे : 128,

28 बैत-अज़मावत के बाशिंदे : 42,

29 किरियत-यारीम, कफ़ीरा और बैरोत के बाशिंदे : 743,

30 रामा और जिबा के बाशिंदे : 621,

31 मिकमास के बाशिंदे : 122,

32 बैतेल और अई के बाशिंदे : 123,

33 दूसरे नबू के बाशिंदे : 52,

34 दूसरे ऐलाम के बाशिंदे : 1,254,

35 हारिम के बाशिंदे : 320,

36 यरीह के बाशिंदे : 345,

37 लूद, हादीद और ओनू के बाशिंदे : 721,

38 सनाआह के बाशिंदे : 3,930।

39 ज़ैल के इमाम जिलावतनी से वापस आए।

यदायाह का ख़ानदान जो यशुअ की नसल का था : 973,

- 40 इम्मेर का खानदान : 1,052,
 41 फ़शहर का खानदान : 1,247,
 42 हारिम का खानदान : 1,017।
 43 ज़ैल के लावी जिलावतनी से वापस आए।
 यशुअ और कदमियेल का खानदान यानी हदावियाह की औलाद : 74,
 44 गुलूकार : आसफ़ के खानदान के 148 आदमी,
 45 रब के घर के दरबान : सल्लूम, अतीर, तलमून, अक्कूब, खतीता और सोबी के खानदानों के 138 आदमी।
 46 रब के घर के खिदमतगारों के दर्जे-ज़ैल खानदान जिलावतनी से वापस आए।
 जीहा, हसूफ़ा, तब्बाओत, 47 क़रूस, सिया, फ़दून, 48 लिबाना, हजाबा, शलमी, 49 हनान, जिदेल, जहर, 50 रियायाह, रज़ीन, नकूदा,
 51 जज़ज़ाम, उज़्ज़ा, फ़ासिह, 52 बसी, मऊनीम, नफूसीम, 53 बकबूक, हकूफ़ा, हरहर, 54 बज़लूत, महीदा, हर्शा, 55 बरकूस, सीसरा, तामह,
 56 नज़ियाह और खतीफ़ा।
 57 सुलेमान के खादिमों के दर्जे-ज़ैल खानदान जिलावतनी से वापस आए।
 सूती, सुफ़िरत, फ़रूदा, 58 याला, दरकून, जिदेल, 59 सफ़तियाह, खतील, फ़किरत-ज़बायम और अमून।
 60 रब के घर के खिदमतगारों और सुलेमान के खादिमों के खानदानों में से वापस आए हुए मर्दों की तादाद 392 थी।

61-62 वापस आए हुए खानदानों में से दिलायाह, तूबियाह और नकूदा के 642 मर्द साबित न कर सके कि इसराईल की औलाद हैं, गो वह तल-मिलह, तल-हर्शा, क़रूस, अहून और इम्मेर के रहनेवाले थे।

63-64 हबायाह, हक्कूज़ और बरज़िल्ली के खानदानों के कुछ इमाम भी वापस आए, लेकिन उन्हें रब के घर में खिदमत करने की इजाज़त न मिली। क्योंकि गो उन्होंने नसबनामे में अपने नाम तलाश किए लेकिन उनका कहीं ज़िक्र न मिला, इसलिए उन्हें नापाक करार दिया गया। (बरज़िल्ली के खानदान के बानी ने बरज़िल्ली जिलियादी की बेटी से शादी करके अपने सुसर का नाम अपना लिया था।) 65 यहूदाह के गवर्नर ने हुक्म दिया कि इन तीन खानदानों के इमाम फ़िलहाल कुरबानियों का वह हिस्सा खाने में शरीक न हों जो इमामों के लिए मुकर्रर है। जब दुबारा इमामे-आज़म मुकर्रर किया जाए तो वही ऊरीम और तुम्मीम नामी क़ुरा डालकर मामला हल करे।

66 कुल 42,360 इसराईली अपने वतन लौट आए, 67 नीज़ उनके 7,337 गुलाम और लौडियाँ और 245 गुलूकार जिनमें मर्दों-खवातीन शामिल थे।

68 इसराईलियों के पास 736 घोड़े, 245 खच्चर, 69 435 ऊँट और 6,720 गधे थे।

70 कुछ खानदानी सरपरस्तों ने रब के घर की तामिर-नौ के लिए अपनी खुशी से हदिये दिए। गवर्नर ने सोने के 1,000 सिक्के, 50 कटोरे और इमामों के 530 लिबास दिए। 71 कुछ खानदानी सरपरस्तों ने खजाने में सोने के 20,000 सिक्के और चाँदी के 1,200 किलोग्राम डाल दिए। 72 बाक़ी लोगों ने सोने के 20,000 सिक्के, चाँदी के 1,100 किलोग्राम और इमामों के 67 लिबास अता किए।

73 इमाम, लावी, रब के घर के दरबान और खिदमतगार, गुलूकार और अवाम के कुछ लोग अपनी अपनी आबाई आबादियों में दुबारा जा बसे। यों तमाम इसराईली दुबारा अपने अपने शहरों में रहने लगे।”

अज़रा शरीअत की तिलावत करता है

सातवें महीने यानी अक्तूबर में जब इसराईली अपने अपने शहरों में दुबारा आबाद हो गए थे

8

1 तो सब लोग मिलकर पानी के दरवाज़े के चौक में जमा हो गए। उन्होंने शरीअत के आलिम अज़रा से दरखास्त की कि वह शरीअत ले आएँ जो रब ने मूसा की मारिफ़त इसराईली कौम को दे दी थी। 2 चुनाँचे अज़रा ने हाज़िरीन के सामने शरीअत की तिलावत की। सातवें महीने का पहला दिन * था। न सिर्फ़ मर्द बल्कि औरतें और शरीअत की बातें समझने के काबिल तमाम बच्चे भी जमा हुए थे। 3 सुबह-सवेरे से लेकर दोपहर तक अज़रा पानी के दरवाज़े के चौक में पढ़ता रहा, और तमाम जमात ध्यान से शरीअत की बातें सुनती रही।

4 अज़रा लकड़ी के एक चबूतरे पर खड़ा था जो खासकर इस मौक़े के लिए बनाया गया था। उसके दाएँ हाथ मत्तिवियाह, समा, अनायाह, ऊरियाह, खिलकियाह और मासियाह खड़े थे। उसके बाएँ हाथ फ़िदायाह, मीसाएल, मलकियाह, हाशूम, हस्बदाना, ज़करियाह और मसुल्लाम खड़े थे।

5 चूँकि अज़रा ऊँची जगह पर खड़ा था इसलिए वह सबको नज़र आया। चुनाँचे जब उसने किताब को खोल दिया तो सब लोग खड़े हो गए।

6 अज़रा ने रब अज़ीम खुदा की सताइश की, और सबने अपने हाथ उठाकर जवाब में कहा, “आमीन, आमीन।” फिर उन्होंने झुककर रब को सिजदा किया।

* 8:2 8 अक्तूबर।

7 कुछ लावी हाज़िर थे जिन्होंने लोगों के लिए शरीअत की तशरीह की। उनके नाम यशुअ, बानी, सरिबियाह, यमीन, अक्कूब, सब्बती, ह्दियाह, मासियाह, क्लीता, अज़रियाह, यूज़बद, हनान और फ़िलायाह थे। हाज़िरीन अब तक खड़े थे। 8 शरीअत की तिलावत के साथ साथ मज़क़रा लावी क़दम बक़दम उस की तशरीह यों करते गए कि लोग उसे अच्छी तरह समझ सके।

9 शरीअत की बातें सुन सुनकर वह रोने लगे। लेकिन नहमियाह गवर्नर, शरीअत के आलिम अज़रा इमाम और शरीअत की तशरीह करनेवाले लावियों ने उन्हें तसल्ली देकर कहा, “उदास न हों और मत रोएँ! आज रब आपके ख़ुदा के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस ईद है। 10 अब जाएँ, उम्दा खाना खाकर और पीने की मीठी चीज़ें पीकर खुशी मनाएँ। जो अपने लिए कुछ तैयार न कर सकें उन्हें अपनी खुशी में शरीक करें। यह दिन हमारे रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस है। उदास न हों, क्योंकि रब की खुशी आपकी पनाहगाह है।”

11 लावियों ने भी तमाम लोगों को सुकून दिलाकर कहा, “उदास न हों, क्योंकि यह दिन रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस है।”

12 फिर सब अपने अपने घर चले गए। वहाँ उन्होंने बड़ी खुशी से खा-पीकर जशन मनाया। साथ साथ उन्होंने दूसरों को भी अपनी खुशी में शरीक किया। उनकी बड़ी खुशी का सबब यह था कि अब उन्हें उन बातों की समझ आई थी जो उन्हें सुनाई गई थी।

झोंपड़ियों की ईद

13 अगले दिन † खानदानी सरपरस्त, इमाम और लावी दुबारा शरीअत के आलिम अज़रा के पास जमा हुए ताकि शरीअत की मज़ीद तालीम पाएँ। 14 जब वह शरीअत का मुतालआ कर रहे थे तो उन्हें पता चला कि रब ने मूसा की मारिफ़त हुक्म दिया था कि इसराईली सातवें महीने की ईद के दौरान झोंपड़ियों में रहें। 15 चुनाँचे उन्होंने यस्शलम और बाकी तमाम शहरों में एलान किया, “पहाड़ों पर से ज़ैतून, आस, ‡ खज़ूर और बाक़ी सायादार दरख़्तों की शाखें तोड़कर अपने घर ले जाएँ। वहाँ उनसे झोंपड़ियाँ बनाएँ, जिस तरह शरीअत ने हिदायत दी है।”

16 लोगों ने ऐसा ही किया। वह घरों से निकले और दरख़्तों की शाखें तोड़कर ले आए। उनसे उन्होंने अपने घरों की छतों पर और सहनों में झोंपड़ियाँ बना लीं। बाज़ ने अपनी झोंपड़ियों को रब के घर के सहनों, पानी के दरवाज़े के चौक और इफ़राईम के दरवाज़े के चौक में भी बनाया। 17 जितने भी जिलावतनी से वापस आए थे वह सब झोंपड़ियाँ बनाकर उनमें रहने लगे। यशुअ बिन नून के ज़माने से लेकर उस वक़्त तक यह ईद इस तरह नहीं मनाई गई थी। सब निहायत ही खुश थे। 18 ईद के हर दिन अज़रा ने अल्लाह की शरीअत की तिलावत की। सात दिन इसराईलियों ने ईद मनाई, और आठवें दिन सब लोग इजतिमा के लिए इकट्ठे हुए, बिल्कुल उन हिदायत के मुताबिक़ जो शरीअत में दी गई हैं।

9

इसराईली अपने गुनाहों का इकरार करते हैं

1 उसी महीने के 24वें दिन * इसराईली रोज़ा रखने के लिए जमा हुए। टाट के लिबास पहने हुए और सर पर खाक डालकर वह यस्शलम आए। 2 अब वह तमाम ग़ैरयहूदियों से अलग होकर उन गुनाहों का इकरार करने के लिए हाज़िर हुए जो उनसे और उनके बापदादा से सरज़द हुए थे। 3 तीन घंटे वह खड़े रहे, और उस दौरान रब उनके ख़ुदा की शरीअत की तिलावत की गई। फिर वह रब अपने ख़ुदा के सामने मुँह के बल झुककर मज़ीद तीन घंटे अपने गुनाहों का इकरार करते रहे।

4 यशुअ, बानी, क़दमियेल, सबनियाह, बुन्नी, सरिबियाह, बानी और कनानी जो लावी थे एक चबूतरे पर खड़े हुए और बुलंद आवाज़ से रब अपने ख़ुदा से दुआ की।

5 फिर यशुअ, क़दमियेल, बानी, हसब्नियाह, सरिबियाह, ह्दियाह, सबनियाह और फ़तहियाह जो लावी थे बोल उठे, “खड़े होकर रब अपने ख़ुदा की जो अज़ल से अबद तक है सताइश करें!”

उन्होंने दुआ की,

“तेरे जलाली नाम की तमज़ीद हो, जो हर मुबारकबादी और तारीफ़ से कहीं बढ़कर है। 6 ऐ रब, तू ही वाहिद ख़ुदा है! तूने आसमान को एक सिरे से दूसरे सिरे तक उसके लश्कर समेत खलक किया। ज़मीन और जो कुछ उस पर है, समुंदर और जो कुछ उसमें है सब कुछ तू ही ने बनाया है। तूने सबको ज़िंदगी बख़्शी है, और आसमानी लश्कर तुझे सिजदा करता है।

7 तू ही रब और वह ख़ुदा है जिसने अब्राम को चुन लिया और कसदियों के शहर ऊर से बाहर लाकर इब्राहीम का नाम रखा। 8 तूने उसका दिल वफ़ादार पाया और उससे अहद बाँधकर वादा किया, “मैं तेरी औलाद को कनानियों, हितियों, अमोरियों, फ़रिज़ियों, यबूसियों और जिरज़सियों का मुल्क अता करूँगा।” और तू अपने वादे पर पूरा उतरा, क्योंकि तू काबिले-एतमाद और आदिल है।

9 तूने हमारे बापदादा के मिसर में बुरे हाल पर ध्यान दिया, और बहरे-कुलज़ुम के किनारे पर मदद के लिए उनकी चीखें सुनीं। 10 तूने इलाही निशानों और मोजिज़ों से फ़िरौन, उसके अफ़सरों और उसके मुल्क की क़ौम को सज़ा दी, क्योंकि तू जानता था कि मिसरी हमारे बापदादा से कैसा गुस्ताख़ाना सुलूक करते रहे हैं। यों तेरा नाम मशहूर हुआ और आज तक याद रहा है। 11 क़ौम के देखते देखते तूने समुंदर को दो हिस्सों में

† 8:13 9 अक्तूबर। ‡ 8:15 myrtle। * 9:1 31 अक्तूबर।

तकसीम कर दिया, और वह खुशक ज़मीन पर चलकर उसमें से गुजर सके। लेकिन उनका ताक़तुब करनेवालों को तूने मुतलातिम पानी में फेंक दिया, और वह पत्थरों की तरह समुंदर की गहराइयों में डूब गए।

12 दिन के वक़्त तूने बादल के सतून से और रात के वक़्त आग के सतून से अपनी क़ौम की राहनुमाई की। यों वह रास्ता अंधेरे में भी रौशन रहा जिस पर उन्हें चलना था। 13 तू कोहे-सीना पर उतर आया और आसमान से उनसे हमकलाम हुआ। तूने उन्हें साफ़ हिदायात और काबिले-एतमाद अहकाम दिए, ऐसे क़वायद जो अच्छे हैं। 14 तूने उन्हें सबत के दिन के बारे में आगाह किया, उस दिन के बारे में जो तेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस है। अपने खादिम मूसा की मारिफ़त तूने उन्हें अहकाम और हिदायात दीं। 15 जब वह भूके थे तो तूने उन्हें आसमान से रोटी खिलाई, और जब प्यासे थे तो तूने उन्हें चटान से पानी पिलाया। तूने हुक्म दिया, 'जाओ, मुल्क में दाखिल होकर उस पर कब्ज़ा कर लो, क्योंकि मैंने हाथ उठाकर क़सम खाई है कि तुम्हें यह मुल्क दूँगा।'

16 अफ़सोस, हमारे बापदादा मग़सूर और ज़िद्दी हो गए। वह तेरे अहकाम के ताबे न रहे। 17 उन्होंने तेरी सुनने से इनकार किया और वह मोज़िज़ात याद न रखे जो तूने उनके दरमियान किए थे। वह यहाँ तक अड़ गए कि उन्होंने एक राहनुमा को मुक़र्रर किया जो उन्हें मिसर की गुलामी में वापस ले जाए। लेकिन तू मुआफ़ करनेवाला खुदा है जो मेहरबान और रहीम, तहम्मूल और शफ़क़त से भरपूर है। तूने उन्हें तर्क न किया, 18 उस वक़्त भी नहीं जब उन्होंने अपने लिए सोने का बछड़ा ढालकर कहा, 'यह तेरा खुदा है जो तुझे मिसर से निकाल लाया।' इस किस्म का संजीदा कुफ़र वह बकते रहे। 19 लेकिन तू बहुत रहमदिल है, इसलिए तूने उन्हें रेगिस्तान में न छोड़ा। दिन के वक़्त बादल का सतून उनकी राहनुमाई करता रहा, और रात के वक़्त आग का सतून वह रास्ता रौशन करता रहा जिस पर उन्हें चलना था। 20 न सिर्फ़ यह बल्कि तूने उन्हें अपना नेक रूह अता किया जो उन्हें तालीम दे। जब उन्हें भूक और प्यास थी तो तू उन्हें मन खिलाने और पानी पिलाने से बाज़ न आया। 21 चालीस साल वह रेगिस्तान में फिरते रहे, और उस पूरे अरसे में तू उनकी ज़रूरियात को पूरा करता रहा। उन्हें कोई भी कमी नहीं थी। न उनके कपड़े घिसकर फटे और न उनके पाँव सूजे।

22 तूने ममालिक और क़ौमों उनके हवाले कर दीं, मुख़्तलिफ़ इलाक़े यके बाद दीगरे उनके कब्ज़े में आए। यों वह सीहोन बादशाह के मुल्क हसबोन और ओज बादशाह के मुल्क बसन पर फ़तह पा सके। 23 उनकी औलाद तेरी मरज़ी से आसमान पर के सितारों जैसी बेशुमार हुई, और तू उन्हें उस मुल्क में लाया जिसका वादा तूने उनके बापदादा से किया था। 24 वह मुल्क में दाखिल होकर उसके मालिक बन गए। तूने कनान के बाशिंदों को उनके आगे ज़ोर कर दिया। मुल्क के बादशाह और क़ौमों उनके कब्ज़े में आ गई, और वह अपनी मरज़ी के मुताबिक़ उनसे निपट सके। 25 क़िलाबंद शहर और ज़रखेज़ ज़मीनें तेरी क़ौम के काबू में आ गई, नीज़ हर किस्म की अच्छी चीज़ों से भरे घर, तैयारशुदा हौज़, अंगूर के बाग़ और कसरत के ज़ैतून और दीगर फलदार दरख़्त। वह जी भरकर खाना खाकर मोटे हो गए और तेरी बरकतों से लुफ़अंदोज़ होते रहे।

26 इसके बावजूद वह ताबे न रहे बल्कि सरकश हुए। उन्होंने अपना मुँह तेरी शरीअत से फेर लिया। और जब तेरे नबी उन्हें समझा समझाकर तेरे पास वापस लाना चाहते थे तो उन्होंने बड़े कुफ़र बककर उन्हें क़त्ल कर दिया। 27 यह देखकर तूने उन्हें उनके दुश्मनों के हवाले कर दिया जो उन्हें तंग करते रहे। जब वह मुसीबत में फँस गए तो वह चीखें मार मारकर तुझसे फ़रियाद करने लगे। और तूने आसमान पर से उनकी सुनी। बड़ा तरस खाकर तूने उनके पास ऐसे लोगों को भेज दिया जिन्होंने उन्हें दुश्मनों के हाथ से छुड़ाया। 28 लेकिन ज्योंही इसराइलियों को सूकून मिलता वह दुबारा ऐसी हरकतें करने लगते जो तुझे नापसंद थीं। नतीजे में तू उन्हें दुबारा उनके दुश्मनों के हाथ में छोड़ देता। जब वह उनकी हुक्मत के तहत पिसने लगते तो वह एक बार फिर चिल्ला चिल्लाकर तुझसे इलतमास करने लगते। इस बार भी तू आसमान पर से उनकी सुनता। हाँ, तू इतना रहमदिल है कि तू उन्हें बार बार छुटकारा देता रहा! 29 तू उन्हें समझाता रहा ताकि वह दुबारा तेरी शरीअत की तरफ़ रूजू करें, लेकिन वह मग़सूर थे और तेरे अहकाम के ताबे न हुए। उन्होंने तेरी हिदायात की खिलाफ़वरज़ी की, हालाँकि इन्हीं पर चलने से इनसान को ज़िंदगी हासिल होती है। लेकिन उन्होंने परवा न की बल्कि अपना मुँह तुझसे फेरकर अड़ गए और सुनने के लिए तैयार न हुए।

30 उनकी हरकतों के बावजूद तू बहुत सालों तक सब्र करता रहा। तेरा रूह उन्हें नबियों के ज़रीए समझाता रहा, लेकिन उन्होंने ध्यान न दिया। तब तूने उन्हें ग़ैरक़ौमों के हवाले कर दिया। 31 ताहम तेरा रहम से भरा दिल उन्हें तर्क करके तबाह नहीं करना चाहता था। तू कितना मेहरबान और रहीम खुदा है!

32 ऐ हमारे खुदा, ऐ अज़ीम, क़वी और महीब खुदा जो अपना अहद और अपनी शफ़क़त कायम रखता है, इस वक़्त हमारी मुसीबत पर ध्यान दे और उसे कम न समझ! क्योंकि हमारे बादशाह, बुजुर्ग, इमाम और नबी बल्कि हमारे बापदादा और पूरी क़ौम असूरी बादशाहों के पहले हमलों से लेकर आज तक सख़्त मुसीबत बरदाश्त करते रहे हैं। 33 हक़ीक़त तो यह है कि जो भी मुसीबत हम पर आई है उसमें तू रास्त साबित हुआ है। तू वफ़ादार रहा है, गो हम कुसूरवार ठहरे हैं। 34 हमारे बादशाह और बुजुर्ग, हमारे इमाम और बापदादा, उन सबने तेरी शरीअत की पैरवी

न की। जो अहकाम और तंबीह तूने उन्हें दी उस पर उन्होंने ध्यान ही न दिया। ³⁵ तूने उन्हें उनकी अपनी बादशाही, कसरत की अच्छी चीजों और एक वसी और ज़रखेज़ मुल्क से नवाज़ा था। तो भी वह तेरी खिदमत करने के लिए तैयार न थे और अपनी ग़लत राहों से बाज़ न आए।

³⁶ इसका अंजाम यह हुआ है कि आज हम उस मुल्क में गुलाम हैं जो तूने हमारे बापदादा को अता किया था ताकि वह उस की पैदावार और दौलत से लुत्फ़अंदोज़ हो जाएँ। ³⁷ मुल्क की वाफ़िर पैदावार उन बादशाहों तक पहुँचती है जिन्हें तूने हमारे गुनाहों की वजह से हम पर मुकर्रर किया है। अब वही हम पर और हमारे मवेशियों पर हुक्मत करते हैं। उन्हीं की मरज़ी चलती है। चुनौचे हम बड़ी मुसीबत में फँसे हैं।

क्रौम का अहदनामा

³⁸ यह तमाम बातें मदे-नज़र रखकर हम अहद बाँधकर उसे क़लमबंद कर रहे हैं। हमारे बुज़ुर्ग, लावी और इमाम दस्तख़त करके अहदनामे पर मुहर लगा रहे हैं।”

10

¹ ज़ैल के लोगों ने दस्तख़त किए।

गवर्नर नहमियाह बिन हकलियाह, सिदक्रियाह, ² सिरायाह, अज़रियाह, यरमियाह, ³ फ़शहर, अमरियाह, मलकियाह, ⁴ हतूश, सबनियाह, मल्लूक, ⁵ हारिम, मरीमोत, अबदियाह, ⁶ दानियाल, जिन्नतून, बारूक, ⁷ मसुल्लाम, अबियाह, मियामीन, ⁸ माज़ियाह, बिलजी और समायाह। सिरायाह से लेकर समायाह तक इमाम थे।

⁹ फिर ज़ैल के लावियों ने दस्तख़त किए।

यशुअ बिन अज़नियाह, हनदाद के ख़ानदान का बिन्नूई, क़दमियेल, ¹⁰ उनके भाई सबनियाह, हदियाह, क़लीता, फ़िलायाह, हनान, ¹¹ मीका, र्होब, हसबियाह, ¹² ज़क्कूर, सरिबियाह, सबनियाह, ¹³ हदियाह, बानी और बनीनू।

¹⁴ इनके बाद ज़ैल के क्रौमी बुज़ुर्गों ने दस्तख़त किए।

परऊस, पख़त-मोआब, ऐलाम, ज़नु, बानी ¹⁵ बुन्नी, अज़जाद, बबी, ¹⁶ अदूनियाह, बिगवई, अदीन, ¹⁷ अतीर, हिज़क्रियाह, अज़ज़ूर, ¹⁸ हदियाह, हाशूम, बज़ी, ¹⁹ ख़ारिफ़, अनतोत, नेबी, ²⁰ मगफ़ियास, मसुल्लाम, हिज़ीर ²¹ मशेज़बेल, सदोक, यदू, ²² फ़लतियाह, हनान, अनायाह, ²³ होसेअ, हननियाह, हस्सूब, ²⁴ हल्लूहेश, फ़िलहा, सोबेक, ²⁵ र्हम, हसब्नाह, मासियाह, ²⁶ अखियाह, हनान, अनान, ²⁷ मल्लूक, हारिम और बाना।

²⁸ क्रौम के बाक़ी लोग भी अहद में शरीक हुए यानी बाक़ी इमाम, लावी, रब के घर के दरबान और खिदमतगार, गुल्कार, नीज़ सब जो ग़ैरयहूदी क्रौमों से अलग हो गए थे ताकि रब की शरीअत की पैरवी करें। उनकी बीवियाँ और वह बेटे-बेटियाँ भी शरीक हुए जो अहद को समझ सकते थे। ²⁹ अपने बुज़ुर्ग भाइयों के साथ मिलकर उन्होंने क़सम खाकर वादा किया, “हम उस शरीअत की पैरवी करेंगे जो अल्लाह ने हमें अपने खादिम मूसा की मारिफ़त दी है। हम एहतियात से रब अपने आका के तमाम अहकाम और हिदायात पर अमल करेंगे।”

³⁰ नीज़, उन्होंने क़सम खाकर वादा किया,

“हम अपने बेटे-बेटियों की शादी ग़ैरयहूदियों से नहीं कराएँगे।

³¹ जब ग़ैरयहूदी हमें सबत के दिन या रब के लिए मख़सूस किसी और दिन अनाज या कोई और माल बेचने की कोशिश करें तो हम कुछ नहीं ख़रीदेंगे।

हर सातवें साल हम ज़मीन की खेतीबाड़ी नहीं करेंगे और तमाम कर्ज़े मनसूख़ करेंगे।

³² हम सालाना रब के घर की खिदमत के लिए चाँदी का छोटा सिक्का * देंगे। इस खिदमत में ज़ैल की चीज़ें शामिल हैं : ³³ अल्लाह के लिए मख़सूस रोटी, ग़ल्ला की नज़र और भस्म होनेवाली वह कुरबानियाँ जो रोज़ाना पेश की जाती हैं, सबत के दिन, नए चाँद की ईद और बाक़ी ईदों पर पेश की जानेवाली कुरबानियाँ, ख़ास मुक़दस कुरबानियाँ, इसराईल का कफ़ारा देनेवाली गुनाह की कुरबानियाँ, और हमारे ख़ुदा के घर का हर काम।

³⁴ हमने कुरा डालकर मुकर्रर किया है कि इमामों, लावियों और बाक़ी क्रौम के कौन कौन-से खानदान साल में किन किन मुकर्ररा मौक़ों पर रब के घर में लकड़ी पहुँचाएँ। यह लकड़ी हमारे ख़ुदा की कुरबानगाह पर कुरबानियाँ जलाने के लिए इस्तेमाल की जाएगी, जिस तरह शरीअत में लिखा है।

³⁵ हम सालाना अपने खेतों और दरख़्तों का पहला फल रब के घर में पहुँचाएँगे।

³⁶ जिस तरह शरीअत में दर्ज है, हम अपने पहलौठों को रब के घर में लाकर अल्लाह के लिए मख़सूस करेंगे। गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के पहले बच्चे हम खिदमतगुज़ार इमामों को कुरबान करने के लिए देंगे। ³⁷ उन्हें हम साल के पहले ग़ल्ला से गूँधा हुआ आटा, अपने दरख़्तों का पहला फल, अपनी नई मै और ज़ैतून के नए तेल का पहला हिस्सा देकर रब के घर के गोदामों में पहुँचाएँगे।

देहात में हम लावियों को अपनी फसलों का दसवाँ हिस्सा देंगे, क्योंकि वही देहात में यह हिस्सा जमा करते हैं। ³⁸ दसवाँ हिस्सा मिलते वक़्त कोई इमाम यानी हास्न के खानदान का कोई मर्द लावियों के साथ होगा, और लावी माल का दसवाँ हिस्सा हमारे ख़ुदा के घर के गोदामों

* **10:32** चाँदी के तक़रीबन 4 ग्राम।

में पहुँचाएँगे। ³⁹ आम लोग और लावी वहाँ गल्ला, नई मै और जैतून का तेल लाएँगे। इन कमरों में मक़दिस की खिदमत के लिए दरकार तमाम सामान महफूज़ रखा जाएगा। इसके अलावा वहाँ इमामों, दरबानों और गुलूकारों के कमरे होंगे। हम अपने खुदा के घर में तमाम फ़रायज़ सरंजाम देने में ग़फलत नहीं बरतेंगे।”

11

यरूशलम और यहूदाह के बाशिंदे

¹ क़ौम के बुजुर्ग यरूशलम में आबाद हुए थे। फ़ैसला किया गया कि बाक़ी लोगों के हर दसवें ख़ानदान को मुक़द्दस शहर यरूशलम में बसना है। यह ख़ानदान क़ुरा डालकर मुक़र्रर किए गए। बाक़ी ख़ानदानों को उनकी मक़ामी जगहों में रहने की इजाज़त थी। ² लेकिन जितने लोग अपनी खुशी से यरूशलम जा बसे उन्हें दूसरों ने मुबारकबाद दी।

³ ज़ैल में सूबे के उन बुजुर्गों की फ़हरिस्त है जो यरूशलम में आबाद हुए। (अकसर लोग यहूदाह के बाक़ी शहरों और देहात में अपनी मौसूसी ज़मीन पर बसते थे। इनमें आम इसराईली, इमाम, लावी, रब के घर के खिदमतगार और सुलेमान के ख़ादिमों की औलाद शामिल थे। ⁴ लेकिन यहूदाह और बिनयमीन के चंद एक लोग यरूशलम में जा बसे।)

यहूदाह का क़बीला :

फ़ारस के ख़ानदान का अतायाह बिन उज्जियाह बिन ज़करियाह बिन अमरियाह बिन सफ़तियाह बिन महललेल,

⁵ सिलोनी के ख़ानदान का मासियाह बिन बारूक बिन कुलहोज़ा बिन हज़ायाह बिन अदायाह बिन यूयारीब बिन ज़करियाह।

⁶ फ़ारस के ख़ानदान के 468 असरो-रसूख़ रखनेवाले आदमी अपने ख़ानदानों समेत यरूशलम में रिहाइशपज़ीर थे।

⁷ बिनयमीन का क़बीला :

सल्लू बिन मसुल्लाम बिन योएद बिन फ़िदायाह बिन कौलायाह बिन मासियाह बिन ईतियेल बिन यसायाह।

⁸ सल्लू के साथ जब्बी और सल्ली थे। कुल 928 आदमी थे। ⁹ इन पर योएल बिन ज़िकरी मुक़र्रर था जबकि यहूदाह बिन सनुआह शहर की इंतज़ामिया में दूसरे नंबर पर आता था।

¹⁰ यरूशलम में ज़ैल के इमाम रहते थे।

यदायाह, यूयारीब, यकीन ¹¹ और सिरायाह बिन खिलकियाह बिन मसुल्लाम बिन सदोक बिन मिरायोत बिन अखीतूब। सिरायाह अल्लाह के घर का मुन्तज़िम था।

¹² इन इमामों के 822 भाई रब के घर में खिदमत करते थे।

नीज़, अदायाह बिन यरोहाम बिन फिल्लियाह बिन अमसी बिन ज़करियाह बिन फ़शहर बिन मलकियाह। ¹³ उसके साथ 242 भाई थे जो अपने अपने ख़ानदानों के सरपरस्त थे।

इनके अलावा अमशसी बिन अज़रेल बिन अख़ज़ी बिन मसिल्लमोत बिन इम्मेर। ¹⁴ उसके साथ 128 असरो-रसूख़ रखनेवाले भाई थे। ज़बदियेल बिन हज्जदूलीम उनका इंचार्ज था।

¹⁵ ज़ैल के लावी यरूशलम में रिहाइशपज़ीर थे। समायाह बिन हस्सूब बिन अज़रीक्राम बिन हसबियाह बिन बुन्नी,

¹⁶ नीज़ सब्बती और यूज़बद जो अल्लाह के घर से बाहर के काम पर मुक़र्रर थे,

¹⁷ नीज़ शुक्रगुज़ारी का राहनुमा मत्तनियाह बिन मीका बिन ज़बदी बिन आसफ़ था जो दुआ करते वक़्त हम्दो-सना की राहनुमाई करता था, नीज़ उसका मददगार मत्तनियाह का भाई बक़बूकियाह,

और आखिर में अबदा बिन सम्मुअ बिन जलाल बिन यदूतून।

¹⁸ लावियों के कुल 284 मर्द मुक़द्दस शहर में रहते थे।

¹⁹ रब के घर के दरबानों के दर्जे-ज़ैल मर्द यरूशलम में रहते थे।

अक्कूब और तलमून अपने भाइयों समेत दरवाज़ों के पहरेदार थे। कुल 172 मर्द थे।

²⁰ क़ौम के बाक़ी लोग, इमाम और लावी यरूशलम से बाहर यहूदाह के दूसरे शहरों में आबाद थे। हर एक अपनी आबाई ज़मीन पर रहता था।

²¹ रब के घर के खिदमतगार ओफल पहाड़ी पर बसते थे। जीहा और जिसफ़ा उन पर मुक़र्रर थे।

²² यरूशलम में रहनेवाले लावियों का निगरान उज्ज़ी बिन बानी बिन हसबियाह बिन मत्तनियाह बिन मीका था। वह आसफ़ के ख़ानदान का था, उस ख़ानदान का जिसके गुलूकार अल्लाह के घर में खिदमत करते थे। ²³ बादशाह ने मुक़र्रर किया था कि आसफ़ के ख़ानदान के किन किन आदमियों को किस किस दिन रब के घर में गीत गाने की खिदमत करनी है।

²⁴ फ़तहियाह बिन मशेज़बेल इसराईली मामलों में फ़ारस के बादशाह की नुमाइंदगी करता था। वह ज़ारह बिन यहूदाह के ख़ानदान का था।

²⁵ यहूदाह के क़बीले के अफ़राद ज़ैल के शहरों में आबाद थे।

क्रियत-अरबा, दीबोन और क़बज़ियेल गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत, ²⁶ यशुअ, मोलादा, बैत-फलत, ²⁷ हसार-सुआल, बैर-सबा गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत, ²⁸ सिकलाज, मक़नाह गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत, ²⁹ ऐन-रिम्मोन, सुरआ, यरमूत, ³⁰ ज़नूह,

अदुल्लाम गिर्दो-नवाह की हवेलियों समेत, लकीस गिर्दो-नवाह के खेतों समेत और अजीका गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत। गरज़, वह जुनूब में बैर-सबा से लेकर शिमाल में वादीए-हिन्नूम तक आबाद थे।

³¹ बिनयमीन के कबीले की रिहाइश ज़ैल के मक़ामों में थी।

जिबा, मिकमास, ऐयाह, बैतेल गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत, ³² अनतोत, नोब, अननियाह, ³³ हसूर, रामा, जितैम, ³⁴ हादीद, ज़बोईम, नबल्लात, ³⁵ लूद, ओनू और कारीगरों की वादी।

³⁶ लावी कबीले के कुछ खानदान जो पहले यहदाह में रहते थे अब बिनयमीन के कबायली इलाके में आबाद हुए।

12

इमामों और लावियों की फ़हरिस्त

¹ दर्जे-ज़ैल उन इमामों और लावियों की फ़हरिस्त है जो ज़रूबाबल बिन सियालतियेल और यशुअ के साथ जिलावतनी से वापस आए।

इमाम :

सिरायाह, यरमियाह, अज़रा, ² अमरियाह, मल्लूक, हतूश, ³ सकनियाह, रहम, मरीमोत, ⁴ इदू, जिन्नतून, अबियाह, ⁵ मियामीन, मुअदियाह, बिलजा, ⁶ समायाह, यूयारीब, यदायाह, ⁷ सल्लू, अमूक, खिलक्रियाह, और यदायाह। यह यशुअ के ज़माने में इमामों और उनके भाइयों के राहनुमा थे।

⁸ लावी :

यशुअ, बिन्नुई, कदमियेल, सरिबियाह, यहदाह और मत्तनियाह। मत्तनियाह अपने भाइयों के साथ रब के घर में हम्दो-सना के गीत गाने में राहनुमाई करता था। ⁹ बकबूक्रियाह और उन्नी अपने भाइयों के साथ इबादत के दौरान उनके मुक़ाबिल खड़े होते थे।

¹⁰ इमामे-आज़म यशुअ की औलाद :

यशुअ यूयक्रीम का बाप था, यूयक्रीम इलियासिब का, इलियासिब योयदा का, ¹¹ योयदा यूनतन का, यूनतन यदू का।

¹² जब यूयक्रीम इमामे-आज़म था तो ज़ैल के इमाम अपने खानदानों के सरपरस्त थे।

सिरायाह के खानदान का मिरायाह,

यरमियाह के खानदान का हननियाह,

¹³ अज़रा के खानदान का मसुल्लाम,

अमरियाह के खानदान का यूहनान,

¹⁴ मल्लूक के खानदान का यूनतन,

सबनियाह के खानदान का यूसुफ,

¹⁵ हारिम के खानदान का अदना,

मिरायोत के खानदान का खिलकी,

¹⁶ इदू के खानदान का ज़करियाह,

जिन्नतून के खानदान का मसुल्लाम,

¹⁷ अबियाह के खानदान का ज़िकरी,

मिन्यमीन के खानदान का एक आदमी,

मुअदियाह के खानदान का फिलती,

¹⁸ बिलजा के खानदान का सम्मुअ,

समायाह के खानदान का यहनतन,

¹⁹ यूयारीब के खानदान का मत्तनी,

यदायाह के खानदान का उज़्ज़ी,

²⁰ सल्लू के खानदान का कल्लू,

अमूक के खानदान का इबर,

²¹ खिलक्रियाह के खानदान का हसबियाह,

यदायाह के खानदान का नतनियेल।

²² जब इलियासिब, योयदा, यूहनान और यदू इमामे-आज़म थे तो लावी के सरपरस्तों की फ़हरिस्त तैयार की गई और इसी तरह फ़ारस के बादशाह दारा के ज़माने में इमामों के खानदानी सरपरस्तों की फ़हरिस्त।

²³ लावी के खानदानी सरपरस्तों के नाम इमामे-आज़म यूहनान बिन इलियासिब के ज़माने तक तारीख़ की किताब में दर्ज किए गए।

24-25 लावी के खानदानी सरपरस्त हसबियाह, सरिबियाह, यशुअ, बिन्नुई और कदमियेल खिदमत के उन गुरोहों की राहनुमाई करते थे जो रब के घर में हम्दो-सना के गीत गाते थे। उनके मुकाबिल मत्तनियाह, बकबूकियाह और अबदियाह अपने गुरोहों के साथ खड़े होते थे। गीत गाते वक्त कभी यह गुरोह और कभी उसके मुकाबिल का गुरोह गाता था। सब कुछ उस तरीक़ा से हुआ जो मर्दे-खुदा दाऊद ने मुकर्रर की थी।

मसुल्लाम, तलमून और अक्कूब दरबान थे जो रब के घर के दरवाज़ों के साथ वाके गोदामों की पहरादारी करते थे।

26 यह आदमी इमामे-आज़म यूयकीम बिन यशुअ बिन यूसदक, नहमियाह गवर्नर और शरीअत के आलिम अज़रा इमाम के ज़माने में अपनी खिदमत संरजाम देते थे।

फ़सील की मख़सूसियत

27 फ़सील की मख़सूसियत के लिए पूरे मुल्क के लावियों को यरूशलम बुलाया गया ताकि वह खुशी मनाने में मदद करके हम्दो-सना के गीत गाएँ और झाँझ, सितार और सरोद बजाएँ। 28 गुल्कार यरूशलम के गिर्दो-नवाह से, नतूफ़ातियों के देहात, 29 बैत-जिलजाल और जिबा और अज़मावत के इलाक़े से आए। क्योंकि गुल्कारों ने अपनी अपनी आबादियाँ यरूशलम के इर्दगिर्द बनाई थीं। 30 पहले इमामों और लावियों ने अपने आपको जशन के लिए पाक-साफ़ किया, फिर उन्होंने आम लोगों, दरवाज़ों और फ़सील को भी पाक-साफ़ कर दिया।

31 इसके बाद मैंने यहदाह के क़बीले के बुजुर्गों को फ़सील पर चढ़ने दिया और गुल्कारों को शुक्रगुज़ारी के दो बड़े गुरोहों में तकसीम किया। पहला गुरोह फ़सील पर चलते चलते जुनूब में वाके कचरे के दरवाज़े की तरफ़ बढ़ गया। 32 इन गुल्कारों के पीछे हसायाह यहदाह के आधे बुजुर्गों के साथ चला 33 जबकि इनके पीछे अज़रियाह, अज़रा, मसुल्लाम, 34 यहदाह, बिनयमीन, समायाह और यरमियाह चले। 35 आखिरी गुरोह इमाम थे जो तुरम बजाते रहे। इनके पीछे ज़ैल के मौसीकार आए : ज़करियाह बिन यूनतन बिन समायाह बिन मत्तनियाह बिन मीकायाह बिन ज़कूर बिन आसफ़ 36 और उसके भाई समायाह, अज़रेल, मिलली, जिलली, माई, नतनियेल, यहदाह और हनानी। यह आदमी मर्दे-खुदा दाऊद के साज़ बजाते रहे। शरीअत के आलिम अज़रा ने जुलूस की राहनुमाई की। 37 चरमे के दरवाज़े के पास आकर वह सीधे उस सीढ़ी पर चढ़ गए जो यरूशलम के उस हिस्से तक पहुँचाती है जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है। फिर दाऊद के महल के पीछे से गुज़रकर वह शहर के मगरिब में वाके पानी के दरवाज़े तक पहुँच गए।

38 शुक्रगुज़ारी का दूसरा गुरोह फ़सील पर चलते चलते शिमाल में वाके तनूरों के बुर्ज और 'मोटी दीवार' की तरफ़ बढ़ गया, और मैं बाक़ी लोगों के साथ उसके पीछे हो लिया। 39 हम इफ़राईम के दरवाज़े, यसाना के दरवाज़े, मछली के दरवाज़े, हननेल के बुर्ज, मिया बुर्ज और भेड के दरवाज़े से होकर मुहाफ़िज़ों के दरवाज़े तक पहुँच गए जहाँ हम रुक गए।

40 फिर शुक्रगुज़ारी के दोनों गुरोह रब के घर के पास खड़े हो गए। मैं भी बुजुर्गों के आधे हिस्से 41 और ज़ैल के तुरम बजानेवाले इमामों के साथ रब के घर के सहन में खड़ा हुआ : इलियाक़ीम, मासियाह, मिन्यमीन, मीकायाह, इलियूएनी, ज़करियाह और हननियाह। 42 मासियाह, समायाह, इलियज़र, उज़्ज़ी, यूहानान, मलकियाह, ऐलाम और अज़र भी हमारे साथ थे। गुल्कार इज़रियाह की राहनुमाई में हम्दो-सना के गीत गाते रहे।

43 उस दिन जबह की बड़ी बड़ी कुरबानियाँ पेश की गईं, क्योंकि अल्लाह ने हम सबको बाल-बच्चों समेत बड़ी खुशी दिलाई थी। खुशियों का इतना शोर मच गया कि उस की आवाज़ दूर-दराज़ इलाक़ों तक पहुँच गई।

रब के घर के गोदामों की ज़िम्मादारी

44 उस वक्त कुछ आदमियों को उन गोदामों के निगरान बनाया गया जिनमें हदिये, फ़सलों का पहला फल और पैदावार का दसवाँ हिस्सा महफूज़ रखा जाता था। उनमें शहरों की फ़सलों का वह हिस्सा जमा करना था जो शरीअत ने इमामों और लावियों के लिए मुकर्रर किया था। क्योंकि यहदाह के बाशिंदे खिदमत करनेवाले इमामों और लावियों से खुश थे 45 जो अपने खुदा की खिदमत तहारत के रस्मो-रिवाज समेत अच्छी तरह अंजाम देते थे। रब के घर के गुल्कार और दरबान भी दाऊद और उसके बेटे सुलेमान की हिदायात के मुताबिक़ ही खिदमत करते थे। 46 क्योंकि दाऊद और आसफ़ के ज़माने से ही गुल्कारों के लीडर अल्लाह की हम्दो-सना के गीतों में राहनुमाई करते थे।

47 चुनौचे ज़रूबाबल और नहमियाह के दिनों में तमाम इसराईल रब के घर के गुल्कारों और दरबानों की रोज़ाना ज़रूरियात पूरी करता था। लावियों को वह हिस्सा दिया जाता जो उनके लिए मख़सूस था, और लावी उसमें से इमामों को वह हिस्सा दिया करते थे जो उनके लिए मख़सूस था।

13

मोआबियों और अम्मोनियों से अलहदगी

1 उस दिन क़ौम के सामने मूसा की शरीअत की तिलावत की गई। पढ़ते पढ़ते मालूम हुआ कि अम्मोनियों और मोआबियों को कभी भी अल्लाह की क़ौम में शरीक होने की इजाज़त नहीं। 2 वजह यह है कि इन क़ौमों ने मिसर से निकलते वक्त इसराईलियों को खाना खिलाने और पानी पिलाने से इनकार किया था। न सिर्फ़ यह बल्कि उन्होंने बिलाम को पैसे दिए थे ताकि वह इसराईली क़ौम पर लानत भेजे, अगरचे हमारे खुदा ने लानत को बरकत में तबदील किया। 3 जब हाज़िरीन ने यह हुक्म सुना तो उन्होंने तमाम ग़ैरयहूदियों को जमात से खारिज कर दिया।

रब के घर के इंतज़ाम की इसलाह

4 इस वाकिये से पहले रब के घर के गोदामों पर मुकर्रर इमाम इलियासिब ने अपने रिश्तेदार तूबियाह 5 के लिए एक बड़ा कमरा खाली कर दिया था जिसमें पहले गल्ला की नज़रें, बखूर और कुछ आलात रखे जाते थे। नीज़, गल्ला, नई मै और जैतून के तेल का जो दसवाँ हिस्सा लावियों, गुलूकारों और दरबानों के लिए मुकर्रर था वह भी उस कमरे में रखा जाता था और साथ साथ इमामों के लिए मुकर्रर हिस्सा भी। 6 उस वक्त मैं यरूशलम में नहीं था, क्योंकि बाबल के बादशाह अर्तखशस्ता की हुक्मत के 32वें साल में मैं उसके दरबार में वापस आ गया था। कुछ देर बाद मैं शहनशाह से इजाज़त लेकर दुबारा यरूशलम के लिए रवाना हुआ। 7 वहाँ पहुँचकर मुझे पता चला कि इलियासिब ने कितनी बुरी हरकत की है, कि उसने अपने रिश्तेदार तूबियाह के लिए रब के घर के सहन में कमरा खाली कर दिया है। 8 यह बात मुझे निहायत ही बुरी लगी, और मैंने तूबियाह का सारा सामान कमरे से निकालकर फेंक दिया। 9 फिर मैंने हुक्म दिया कि कमरे नए सिरे से पाक-साफ़ कर दिए जाएँ। जब ऐसा हुआ तो मैंने रब के घर का सामान, गल्ला की नज़रें और बखूर दुबारा वहाँ रख दिया।

10 मुझे यह भी मालूम हुआ कि लावी और गुलूकार रब के घर में अपनी खिदमत को छोड़कर अपने खेतों में काम कर रहे हैं। वजह यह थी कि उन्हें वह हिस्सा नहीं मिल रहा था जो उनका हक था। 11 तब मैंने ज़िम्मादार अफ़सरों को झिड़ककर कहा, “आप अल्लाह के घर का इंतज़ाम इतनी बेपरवाई से क्यों चला रहे हैं?” मैंने लावियों और गुलूकारों को वापस बुलाकर दुबारा उनकी ज़िम्मादारियों पर लगाया। 12 यह देखकर तमाम यहदाह गल्ला, नई मै और जैतून के तेल का दसवाँ हिस्सा गोदामों में लाने लगा। 13 गोदामों की निगरानी मैंने सलमियाह इमाम, सदोक् मुंशी और फ़िदायाह लावी के सुपुर्द करके हनान बिन ज़क्कूर बिन मत्तनियाह को उनका मददगार मुकर्रर किया, क्योंकि चारों को काबिले-एतमाद समझा जाता था। उन्हीं को इमामों और लावियों में उनके मुकर्रर हिस्से तकसीम करने की ज़िम्मादारी दी गई।

14 ऐ मेरे ख़ुदा, इस काम के बाइस मुझे याद कर! वह सब कुछ न भूल जो मैंने वफ़ादारी से अपने ख़ुदा के घर और उसके इंतज़ाम के लिए किया है।

सबत की बहाली

15 उस वक्त मैंने यहदाह में कुछ लोगों को देखा जो सबत के दिन अंगूर का रस निचोड़कर मै बना रहे थे। दूसरे गल्ला लाकर मै, अंगूर, अंजीर और दीगर मुख़्तलिफ़ किस्म की पैदावार के साथ गधों पर लाद रहे और यरूशलम पहुँचा रहे थे। यह सब कुछ सबत के दिन हो रहा था। मैंने उन्हें तंबीह की कि सबत के दिन ख़ुराक फ़रोख़्त न करना। 16 सूर के कुछ आदमी भी जो यरूशलम में रहते थे सबत के दिन मछली और दीगर कई चीज़ें यरूशलम में लाकर यहदाह के लोगों को बेचते थे। 17 यह देखकर मैंने यहदाह के शरफ़ा को डाँटकर कहा, “यह कितनी बुरी बात है! आप तो सबत के दिन की बेहुरमती कर रहे हैं। 18 जब आपके बापदादा ने ऐसा किया तो अल्लाह यह सारी आफ़त हम पर और इस शहर पर लाया। अब आप सबत के दिन की बेहुरमती करने से अल्लाह का इसराईल पर ग़ज़ब मज़ीद बढ़ा रहे हैं।”

19 मैंने हुक्म दिया कि जुमे को यरूशलम के दरवाज़े शाम के उस वक्त बंद किए जाएँ जब दरवाज़े सायों में डूब जाएँ, और कि वह सबत के पूरे दिन बंद रहें। सबत के इख़िताम तक उन्हें खेलने की इजाज़त नहीं थी। मैंने अपने कुछ लोगों को दरवाज़ों पर खड़ा भी किया ताकि कोई भी अपना सामान सबत के दिन शहर में न लाए। 20 यह देखकर ताजिरी और बेचनेवालों ने कई मरतबा सबत की रात शहर से बाहर गुज़ारी और वहाँ अपना माल बेचने की कोशिश की। 21 तब मैंने उन्हें तंबीह की, “आप सबत की रात क्यों फ़सील के पास गुज़ारते हैं? अगर आप दुबारा ऐसा करें तो आपको हवालाए-पुलिस किया जाएगा।” उस वक्त से वह सबत के दिन आने से बाज़ आए। 22 लावियों को मैंने हुक्म दिया कि अपने आपको पाक-साफ़ करके शहर के दरवाज़ों की पहरादारी करें ताकि अब से सबत का दिन मख़सूसो-मुक़द्दस रहे।

ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे इस नेकी के बाइस याद करके अपनी अज़ीम शफ़क़त के मुताबिक़ मुझ पर मेहरबानी कर।

ग़ैरयहूदियों से रिश्ता बाँधना मना है

23 उस वक्त मुझे यह भी मालूम हुआ कि बहुत-से यहूदी मर्दों की शादी अशदूद, अम्मोन और मोआब की औरतों से हुई है। 24 उनके आधे बच्चे सिर्फ़ अशदूद की ज़बान या कोई और ग़ैरमुल्की ज़बान बोल लेते थे। हमारी ज़बान से वह नावाक़िफ़ ही थे। 25 तब मैंने उन्हें झिड़का और उन पर लानत भेजी। बाज़ एक के बाल नोच नोचकर मैंने उनकी पिटाई की। मैंने उन्हें अल्लाह की क़सम खिलाने पर मजबूर किया कि हम अपने बेटे-बेटियों की शादी ग़ैरमुल्कियों से नहीं कराएँगे। 26 मैंने कहा, “इसराईल के बादशाह सुलेमान को याद करें। ऐसी ही शादियों ने उसे गुनाह करने पर उकसाया। उस वक्त उसके बराबर कोई बादशाह नहीं था। अल्लाह उसे प्यार करता था और उसे पूरे इसराईल का बादशाह बनाया। लेकिन उसे भी ग़ैरमुल्की बीवियों की तरफ़ से गुनाह करने पर उकसाया गया। 27 अब आपके बारे में भी यही कुछ सुनना पड़ता है! आपसे भी यही बड़ा गुनाह सरज़द हो रहा है। ग़ैरमुल्की औरतों से शादी करने से आप हमारे ख़ुदा से बेवफ़ा हो गए हैं।”

28 इमामे-आज़म इलियासिब के बेटे योयदा के एक बेटे की शादी संबल्लत हौरूनी की बेटि से हुई थी, इसलिए मैंने बेटे को यरूशलम से भगा दिया।

29 ऐ मेरे ख़ुदा, उन्हें याद कर, क्योंकि उन्होंने इमाम के ओहदे और इमामों और लावियों के अहद की बेहुरमती की है।

30 चुनौचे मैंने इमामों और लावियों को हर ग़ैरमुल्की चीज़ से पाक-साफ़ करके उन्हें उनकी खिदमत और मुख़्तलिफ़ ज़िम्मादारियों के लिए हिदायात दीं।

31 नीज़, मैंने ध्यान दिया कि फ़सल की पहली पैदावार और क़ुरबानियों को जलाने की लकड़ी वक्त पर रब के घर में पहुँचाई जाए।

ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे याद करके मुझ पर मेहरबानी कर!।

आस्तर

अखस्वेस्स जशन मनाता है

1 अखस्वेस्स बादशाह की सलतनत भारत से लेकर एथोपिया तक 127 सबों पर मुश्तमिल थी। 2 जिन वाकियात का जिक्र है वह उस वक़्त हुए जब वह सोसन शहर के किले से हुक्मत करता था। 3 अपनी हुक्मत के तीसरे साल में उसने अपने तमाम बुजुर्गों और अफसरों की ज़ियाफ़त की। फ़ारस और मादी के फ़ौजी अफसर और सबों के शुरफ़ा और रईस सब शरीक हुए। 4 शहनशाह ने पूरे 180 दिन तक अपनी सलतनत की ज़बरदस्त दौलत और अपनी कुव्वत की शानो-शौकत का मुज़ाहरा किया।

5 इसके बाद उसने सोसन के किले में रहनेवाले तमाम लोगों की छोटे से लेकर बड़े तक ज़ियाफ़त की। यह जशन सात दिन तक शाही बाग़ के सहन में मनाया गया। 6 मरमर * के सतूनों के दरमियान कतान के सफ़ेद और किरमिज़ी रंग के क्रीमती परदे लटकाए गए थे, और वह सफ़ेद और अरगवानी रंग की डोरियों के ज़रीए सतूनों में लगे चाँदी के छल्लों के साथ बंधे हुए थे। मेहमानों के लिए सोने और चाँदी के सोफ़े पच्चीकारी के ऐसे फ़र्श पर रखे हुए थे जिसमें मरमर के अलावा मज़ीद तीन क्रीमती पत्थर इस्तेमाल हुए थे। 7 मै सोने के प्यालों में पिलाई गई। हर प्याला फ़रक़ और लासानी था, और बादशाह की फ़ैयाज़ी के मुताबिक़ शाही मै की कसरत थी। 8 हर कोई जितनी जी चाहे पी सकता था, क्योंकि बादशाह ने हुक्म दिया था कि साक़ी मेहमानों की हर ख़ाहिश पूरी करें।

वशती मलिका की बरतरफ़ी

9 इस दौरान वशती मलिका ने महल के अंदर खवातीन की ज़ियाफ़त की। 10 सातवें दिन जब बादशाह का दिल मै पी पीकर बहल गया था तो उसने उन सात ख्वाजासराओं को बुलाया जो ख़ास उस की ख़िदमत करते थे। उनके नाम महमान, बिज़्ज़ता, ख़रबूना, बिगता, अबग़ता, ज़ितार और कर्क़स थे। 11 उसने हुक्म दिया, “वशती मलिका को शाही ताज पहनाकर मेरे हुज़ूर ले आओ ताकि शुरफ़ा और बाक़ी मेहमानों को उस की ख़ूबसूरती मालूम हो जाए।” क्योंकि वशती निहायत ख़ूबसूरत थी। 12 लेकिन जब ख्वाजासरा मलिका के पास गए तो उसने आने से इनकार कर दिया।

यह सुनकर बादशाह आग-बग़ूला हो गया 13 और दानाओं से बात की जो औकात के आलिम थे, क्योंकि दस्तूर यह था कि बादशाह कानूनी मामलों में उलमा से मशवरा करे। 14 आलिमों के नाम कारशीना, सितार, अदमाता, तरसीस, मरस, मरसिना और ममूकान थे। फ़ारस और मादी के यह सात शुरफ़ा आज़ादी से बादशाह के हुज़ूर आ सकते थे और सलतनत में सबसे आला ओहदा रखते थे।

15 अखस्वेस्स ने पूछा, “कानून के लिहाज़ से वशती मलिका के साथ क्या सुलूक किया जाए? क्योंकि उसने ख्वाजासराओं के हाथ भेजे हुए शाही हुक्म को नहीं माना।”

16 ममूकान ने बादशाह और दीगर शुरफ़ा की मौजूदगी में जवाब दिया, “वशती मलिका ने इससे न सिर्फ़ बादशाह का बल्कि उसके तमाम शुरफ़ा और सलतनत के तमाम सबों में रहनेवाली कौमों का भी गुनाह किया है। 17 क्योंकि जो कुछ उसने किया है वह तमाम खवातीन को मालूम हो जाएगा। फिर वह अपने शौहरों को हक़ीर जानकर कहेंगी, ‘गो बादशाह ने वशती मलिका को अपने हुज़ूर आने का हुक्म दिया तो भी उसने उसके हुज़ूर आने से इनकार किया।’ 18 आज ही फ़ारस और मादी के शुरफ़ा की बीवियाँ मलिका की यह बात सुनकर अपने शौहरों से ऐसा ही सुलूक करेंगी। तब हम ज़िल्लत और गुस्से के जाल में उलझ जाएंगे। 19 अगर बादशाह को मंज़ूर हो तो वह एलान करें कि वशती मलिका को फिर कभी अखस्वेस्स बादशाह के हुज़ूर आने की इज़ाज़त नहीं। और लाज़िम है कि यह एलान फ़ारस और मादी के क़वानीन में दर्ज किया जाए ताकि उसे मनसूख़ न किया जा सके। फिर बादशाह किसी और को मलिका का ओहदा दें, ऐसी औरत को जो ज़्यादा लायक़ हो। 20 जब एलान पूरी सलतनत में किया जाएगा तो तमाम औरतें अपने शौहरों की इज़्ज़त करेंगी, खाह वह छोटे हों या बड़े।”

21 यह बात बादशाह और उसके शुरफ़ा को पसंद आई। ममूकान के मशवरे के मुताबिक़ 22 अखस्वेस्स ने सलतनत के तमाम सबों में ख़त भेजे। हर सबे को उसके अपने तर्ज़े-तहरीर में और हर कौम को उस की अपनी ज़बान में ख़त मिल गया कि हर मर्द अपने घर का सरपरस्त है और कि हर ख़ानदान में शौहर की ज़बान बोली जाए।

2

नई मलिका की तलाश

1 बाद में जब बादशाह का गुस्सा ठंडा हो गया तो मलिका उसे दुबारा याद आने लगी। जो कुछ वशती ने किया था और जो फ़ैसला उसके बारे में हुआ था वह भी उसके ज़हन में घूमता रहा। 2 फिर उसके मुलाज़िमों ने ख़याल पेश किया, “क्यों न पूरी सलतनत में शहनशाह के लिए ख़ूबसूरत कुँवारियाँ तलाश की जाएँ? 3 बादशाह अपनी सलतनत के हर सबे में अफसर मुक़रर करें जो यह ख़ूबसूरत कुँवारियाँ चुनकर सोसन के किले के ज़नानख़ाने में लाएँ। उन्हें ज़नानख़ाने के इंचार्ज हैजा ख्वाजासरा की निगरानी में दे दिया जाए और उनकी ख़ूबसूरती बढ़ाने के लिए

* 1:6 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : संगे-जरीहत, alabaster।

रंग निखारने का हर ज़रूरी तरीका इस्तेमाल किया जाए। ⁴ फिर जो लड़की बादशाह को सबसे ज्यादा पसंद आए वह वशती की जगह मलिका बन जाए।”

यह मनसूबा बादशाह को अच्छा लगा, और उसने ऐसा ही किया।

⁵ उस वक़्त सोसन के किले में बिनयमीन के कबीले का एक यहूदी रहता था जिसका नाम मर्दकी बिन याईर बिन सिमई बिन क्रीस था। ⁶ मर्दकी का खानदान उन इसराईलियों में शामिल था जिनको बाबल का बादशाह नबूकदनेज़र यहूदाह के बादशाह यह्याकीन * के साथ जिलावतन करके अपने साथ ले गया था। ⁷ मर्दकी के चचा की एक निहायत खूबसूरत बेटी बनाम हदस्साह थी जो आस्तर भी कहलाती थी। उसके वालिदैन् के मरने पर मर्दकी ने उसे लेकर अपनी बेटी की हैसियत से पाल लिया था।

⁸ जब बादशाह का हुक्म सादिर हुआ तो बहुत-सी लड़कियों को सोसन के किले में लाकर ज़नानखाने के इंचार्ज हैजा के सुपुर्द कर दिया गया। आस्तर भी उन लड़कियों में शामिल थी। ⁹ वह हैजा को पसंद आई बल्कि उसे उस की ख़ास मेहरबानी हासिल हुई। ख्वाजासरा ने जल्दी जल्दी बनाव-सिंगार का सिलसिला शुरू किया, खाने-पीने का मुनासिब इंतज़ाम करवाया और शाही महल की सात चुनीदा नौकरानियाँ आस्तर के हवाले कर दीं। रिहाइश के लिए आस्तर और उस की लड़कियों को ज़नानखाने के सबसे अच्छे कमरे दिए गए।

¹⁰ आस्तर ने किसी को नहीं बताया था कि मैं यहूदी औरत हूँ, क्योंकि मर्दकी ने उसे हुक्म दिया था कि इसके बारे में खामोश रहे। ¹¹ हर दिन मर्दकी ज़नानखाने के सहन से गुज़रता ताकि आस्तर के हाल का पता करे और यह कि उसके साथ क्या क्या हो रहा है।

¹²⁻¹³ अखस्वेस्स बादशाह से मिलने से पहले हर कुँवारी को बारह महीनों का मुकर्ररा बनाव-सिंगार करवाना था, छः माह मुर के तेल से और छः माह बलसान के तेल और रंग निखारने के दीगर तरीकों से। जब उसे बादशाह के महल में जाना था तो ज़नानखाने की जो भी चीज़ वह अपने साथ लेना चाहती उसे दी जाती।

¹⁴ शाम के वक़्त वह महल में जाती और अगले दिन उसे सुबह के वक़्त दूसरे ज़नानखाने में लाया जाता जहाँ बादशाह की दाशताएँ शाशजज़ ख्वाजासरा की निगरानी में रहती थीं। इसके बाद वह फिर कभी बादशाह के पास न आती। उसे सिर्फ़ इसी सूरत में वापस लाया जाता कि वह बादशाह को ख़ास पसंद आती और वह उसका नाम लेकर उसे बुलाता।

आस्तर मलिका बन जाती है

¹⁵ होते होते आस्तर बित अबीख़ैल की बारी आई (अबीख़ैल मर्दकी का चचा था, और मर्दकी ने उस की बेटी को लेपालक बना लिया था)। जब आस्तर से पूछा गया कि आप ज़नानखाने की क्या चीज़ें अपने साथ ले जाना चाहती हैं तो उसने सिर्फ़ वह कुछ ले लिया जो हैजा ख्वाजासरा ने उसके लिए चुना। और जिसने भी उसे देखा उसने उसे सराहा। ¹⁶ चुनौचे उसे बादशाह की हुक्मत के सातवें साल के दसवें महीने बनाम तेबत में अखस्वेस्स के पास महल में लाया गया।

¹⁷ बादशाह को आस्तर दूसरी लड़कियों की निसबत कहीं ज़्यादा प्यारी लगी। दीगर तमाम कुँवारियों की निसबत उसे उस की ख़ास कबूलियत और मेहरबानी हासिल हुई। चुनौचे बादशाह ने उसके सर पर ताज रखकर उसे वशती की जगह मलिका बना दिया। ¹⁸ इस मौक़े की ख़ुशी में उसने आस्तर के एज़ाज़ में बड़ी ज़ियाफ़त की। तमाम शुरफ़ा और अफ़सरों को दावत दी गई। साथ साथ सबों में कुछ टैक्सों की मुआफ़ी का एलान किया गया और फ़ैयाज़ी से तोहफ़े तकसीम किए गए।

मर्दकी बादशाह को बचाता है

¹⁹ जब कुँवारियों को एक बार फिर जमा किया गया तो मर्दकी शाही सहन के दरवाज़े में बैठा था। ²⁰ आस्तर ने अब तक किसी को नहीं बताया था कि मैं यहूदी हूँ, क्योंकि मर्दकी ने यह बताने से मना किया था। पहले की तरह जब वह उसके घर में रहती थी अब भी आस्तर उस की हर बात मानती थी।

²¹ एक दिन जब मर्दकी शाही सहन के दरवाज़े में बैठा था तो दो ख्वाजासरा बनाम बिगतान और तरश गुस्से में आकर अखस्वेस्स को क़त्ल करने की साज़िशें करने लगे। दोनों शाही कमरों के पहरेदार थे। ²² मर्दकी को पता चला तो उसने आस्तर को ख़बर पहुँचाई जिसने मर्दकी का नाम लेकर बादशाह को इतला दी। ²³ मामले की तफ़्तीश की गई तो दुस्स्त साबित हुआ, और दोनों मुलाज़िमों को फाँसी दे दी गई। यह वाक़िया बादशाह की मौजूदगी में उस किताब में दर्ज किया गया जिसमें रोज़ाना उस की हुक्मत के अहम वाक़ियात लिखे जाते थे।

3

हामान यहूदी क्रौम को हलाक करना चाहता है

¹ कुछ देर के बाद बादशाह ने हामान बिन हम्मदाता अजाजी को सरफ़राज़ करके दरबार में सबसे आला ओहदा दिया। ² जब कभी हामान आ मौजूद होता तो शाही सहन के दरवाज़े के तमाम शाही अफ़सर मुँह के बल झुक जाते, क्योंकि बादशाह ने ऐसा करने का हुक्म दिया था। लेकिन मर्दकी ऐसा नहीं करता था।

³ यह देखकर दीगर शाही मुलाज़िमों ने उससे पूछा, “आप बादशाह के हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी क्यों कर रहे हैं?”

* **2:6** इब्रानी में यह्याकीन का मुतरादिफ यक़ूनियाह मुस्तामल है।

† **2:19** शाही सहन के दरवाज़े में शाही इंतज़ामिया थी, इसलिए ऐन मुमकिन है कि मर्दकी शाही मुलाज़िम हो।

4 उसने जवाब दिया, “मैं तो यहूदी हूँ।” रोज़ बरोज़ दूसरे उसे समझाते रहे, लेकिन वह न माना। आखिरकार उन्होंने हामान को इतला दी, क्योंकि वह देखना चाहते थे कि क्या वह मर्दकी का जवाब कबूल करेगा या नहीं।

5 जब हामान ने खुद देखा कि मर्दकी मेरे सामने मुँह के बल नहीं झुकता तो वह आग-बगूला हो गया। 6 वह फौरन मर्दकी को कत्ल करने के मनसूबे बनाने लगा। लेकिन यह उसके लिए काफी नहीं था। चूँकि उसे बताया गया था कि मर्दकी यहूदी है इसलिए वह फ़ारसी सलतनत में रहनेवाले तमाम यहूदियों को हलाक करने का रास्ता ढूँढ़ने लगा।

7 चुनौचे अख़स्वेस्स बादशाह की हुकूमत के 12वें साल के पहले महीने नीसान * में हामान की मौजूदगी में कुरा डाला गया। कुरा डालने से हामान यहूदियों को कत्ल करने की सबसे मुबारक तारीख़ मालूम करना चाहता था। (कुरा के लिए ‘पूर’ कहा जाता था।) इस तरीके से 12वें महीने अदार का 13वाँ दिन † निकला। 8 तब हामान ने बादशाह से बात की, “आपकी सलतनत के तमाम सूबों में एक क्रौम बिखरी हुई है जो अपने आपको दीगर क्रौमों से अलग रखती है। उसके क़वानीन दूसरी तमाम क्रौमों से मुख़्तलिफ़ हैं, और उसके अफ़राद बादशाह के क़वानीन को नहीं मानते। मुनासिब नहीं कि बादशाह उन्हें बरदाश्त करें।

9 अगर बादशाह को मंज़ूर हो तो एलान करें कि इस क्रौम को हलाक कर दिया जाए। तब मैं शाही खज़ानों में 3,35,000 किलोग्राम चाँदी जमा करा दूँगा।”

10 बादशाह ने अपनी उँगली से वह अंगूठी उतारी जो शाही मुहर लगाने के लिए इस्तेमाल होती थी और उसे यहूदियों के दुश्मन हामान बिन हम्मदाता अजाजी को देकर 11 कहा, “चाँदी और क्रौम आप ही की हैं, उसके साथ वह कुछ करें जो आपको अच्छा लगे।”

12 पहले महीने के 13वें दिन ‡ हामान ने शाही मुहरि़रों को बुलाया ताकि वह उस की तमाम हिदायत के मुताबिक़ ख़त लिखकर बादशाह के गवर्नरों, सूबों के दीगर हाकिमों और तमाम क्रौमों के बुजुर्गों को भेजें। यह ख़त हर क्रौम के अपने तर्ज़े-तहरीर और अपनी ज़बान में क़लमबंद हुए। उन्हें बादशाह का नाम लेकर लिखा गया, फिर शाही अंगूठी की मुहर उन पर लगाई गई। उनमें ज़ैल का एलान किया गया।

13 “एक ही दिन में तमाम यहूदियों को हलाक और पूरे तौर पर तबाह करना है, खाह छोटे हों या बड़े, बच्चे हों या औरतें। साथ साथ उनकी मिलकियत भी ज़ब्त कर ली जाए।” इसके लिए 12वें महीने अदार का 13वाँ दिन § मुकर्रर किया गया।

यह एलान तेज़रौ कासिदों के ज़रीए सलतनत के तमाम सूबों में पहुँचाया गया 14 ताकि उस की तसदीक़ क़ानूनी तौर पर की जाए और तमाम क्रौमों मुकर्ररा दिन के लिए तैयार हों।

15 बादशाह के हुक़म पर कासिद चल निकले। यह एलान सोसन के क़िले में भी किया गया। फिर बादशाह और हामान खाने-पीने के लिए बैठ गए। लेकिन पूरे शहर में हलचल मच गई।

4

मर्दकी आस्तर से मदद माँगता है

1 जब मर्दकी को मालूम हुआ कि क्या हुआ है तो उसने रंजिश से अपने कपड़ों को फाड़कर टाट का लिबास पहन लिया और सर पर राख डाल ली। फिर वह निकलकर बुलंद आवाज़ से गिर्याओ-ज़ारी करते करते शहर में से गुज़रा। 2 वह शाही सहन के दरवाज़े तक पहुँच गया लेकिन दाख़िल न हुआ, क्योंकि मातमी कपड़े पहनकर दाख़िल होने की इजाज़त नहीं थी। 3 सलतनत के तमाम सूबों में जहाँ जहाँ बादशाह का एलान पहुँचा वहाँ यहूदी ख़ूब मातम करने और रोज़ा रखकर रोने और गिर्याओ-ज़ारी करने लगे। बहुत-से लोग टाट का लिबास पहनकर राख में लेट गए।

4 जब आस्तर की नौकरानियों और ख़्वाजासराओं ने आकर उसे इतला दी तो वह सख़्त घबरा गई। उसने मर्दकी को कपड़े भेज दिए जो वह अपने मातमी कपड़ों के बदले पहन ले, लेकिन उसने उन्हें कबूल न किया। 5 तब आस्तर ने हताक ख़्वाजासरा को मर्दकी के पास भेजा ताकि वह मालूम करे कि क्या हुआ है, मर्दकी ऐसी हरकतें क्यों कर रहा है। (बादशाह ने हताक को आस्तर की खिदमत करने की ज़िम्मादारी दी थी।)

6 हताक शाही सहन के दरवाज़े से निकलकर मर्दकी के पास आया जो अब तक साथवाले चौक में था। 7 मर्दकी ने उसे हामान का पूरा मनसूबा सुनाकर यह भी बताया कि हामान ने यहूदियों को हलाक करने के लिए शाही खज़ाने को कितने पैसे देने का वादा किया है। 8 इसके अलावा मर्दकी ने ख़्वाजासरा को उस शाही फ़रमान की कापी दी जो सोसन में सादिर हुआ था और जिसमें यहूदियों को नेस्तो-नाबूद करने का एलान किया गया था। उसने गुज़ारिश की, “यह एलान आस्तर को दिखाकर उन्हें तमाम हालात से बा-ख़बर कर दें। उन्हें हिदायत दें कि बादशाह के हुज़ूर जाएँ और उससे इल्तिज़ा करके अपनी क्रौम की सिफ़ारिश करें।”

9 हताक वापस आया और मर्दकी की बातों की ख़बर दी। 10 यह सुनकर आस्तर ने उसे दुबारा मर्दकी के पास भेजा ताकि उसे बताए, 11 “बादशाह के तमाम मुलाज़िम बल्कि सूबों के तमाम बाशिंदे जानते हैं कि जो भी बुलाए बग़ैर महल के अंदरूनी सहन में बादशाह के पास आए उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी, खाह वह मर्द हो या औरत। वह सिर्फ़ इस सूत में बच जाएगा कि बादशाह सोने का अपना असा उस की तरफ़ बढ़ाए। बात यह भी है कि बादशाह को मुझे बुलाए 30 दिन हो गए हैं।”

* 3:7 अप्रैल ता मई। † 3:7 7 मार्च, 473 क म। ‡ 3:12 17 अप्रैल। § 3:13 7 मार्च।

12 आस्तर का पैगाम सुनकर 13 मर्दकी ने जवाब वापस भेजा, “यह न सोचना कि मैं शाही महल में रहती हूँ, इसलिए गो दीगर तमाम यहूदी हलाक हो जाएँ मैं बच जाऊँगी। 14 अगर आप इस वक्त खामोश रहेंगी तो यहूदी कहीं और से रिहाई और छुटकारा पा लेंगे जबकि आप और आपके बाप का घराना हलाक हो जाएंगे। क्या पता है, शायद आप इसी लिए मलिका बन गई हैं कि ऐसे मौके पर यहूदियों की मदद करें।”

15 आस्तर ने मर्दकी को जवाब भेजा, 16 “ठीक है, फिर जाएँ और सोसन में रहनेवाले तमाम यहूदियों को जमा करें। मेरे लिए रोज़ा रखकर तीन दिन और तीन रात न कुछ खाएँ, न पिऊँ। मैं भी अपनी नौकरानियों के साथ मिलकर रोज़ा रखूँगी। इसके बाद बादशाह के पास जाऊँगी, गो यह क़ानून के खिलाफ़ है। अगर मरना है तो मर ही जाऊँगी।”

17 तब मर्दकी चला गया और वैसा ही किया जैसा आस्तर ने उसे हिदायत की थी।

5

आस्तर बादशाह और हामान को दावत देती है

1 तीसरे दिन आस्तर मलिका अपना शाही लिबास पहने हुए महल के अंदरूनी सहन में दाखिल हुई। यह सहन उस हाल के सामने था जिसमें तख़्त लगा था। उस वक्त बादशाह दरवाज़े के मुक़ाबिल अपने तख़्त पर बैठा था। 2 आस्तर को सहन में खड़ी देखकर वह खुश हुआ और सोने के शाही असा को उस की तरफ़ बढ़ा दिया। तब आस्तर करीब आई और असा के सिरे को छू दिया। 3 बादशाह ने उससे पूछा, “आस्तर मलिका, क्या बात है? आप क्या चाहती हैं? मैं उसे देने के लिए तैयार हूँ, खाह सलतनत का आधा हिस्सा क्यों न हो।”

4 आस्तर ने जवाब दिया, “मैंने आज के लिए ज़ियाफ़त की तैयारियाँ की हैं। अगर बादशाह को मंज़ूर हो तो वह हामान को अपने साथ लेकर उसमें शिरकत करें।”

5 बादशाह ने अपने मुलाज़िमों को हुक्म दिया, “जल्दी करो! हामान को बुलाओ ताकि हम आस्तर की खाहिश पूरी कर सकें।” चुनौचे बादशाह और हामान आस्तर की तैयारशुदा ज़ियाफ़त में शरीक हुए। 6 मैं पी पीकर बादशाह ने आस्तर से पूछा, “अब मुझे बताएँ, आप क्या चाहती हैं? वह आपको दिया जाएगा। अपनी दरखास्त पेश करें, क्योंकि मैं सलतनत के आधे हिस्से तक आपको देने के लिए तैयार हूँ।”

7 आस्तर ने जवाब दिया, “मेरी दरखास्त और आरजू यह है, 8 अगर बादशाह मुझसे खुश हों और उन्हें मेरी गुज़ारिश और दरखास्त पूरी करना मंज़ूर हो तो वह कल एक बार फिर हामान के साथ एक ज़ियाफ़त में शिरकत करें जो मैं आपके लिए तैयार करूँ। फिर मैं बादशाह को जवाब दूँगी।”

मर्दकी को क़त्ल करने के लिए हामान की तैयारियाँ

9 उस दिन जब हामान महल से निकला तो वह बड़ा खुश और ज़िंदादिल था। लेकिन फिर उस की नज़र मर्दकी पर पड़ गई जो शाही सहन के दरवाज़े के पास बैठा था। न वह खड़ा हुआ, न हामान को देखकर काँप गया। हामान लाल-पीला हो गया, 10 लेकिन अपने आप पर क़ाबू रखकर वह चला गया।

घर पहुँचकर वह अपने दोस्तों और अपनी बीवी ज़रिश को अपने पास बुलाकर 11 उनके सामने अपनी ज़बरदस्त दौलत और मुतअद्दिद बेटों पर शेखी मारने लगा। उसने उन्हें उन सारे मौकों की फ़हरिस्त सुनाई जिन पर बादशाह ने उस की इज़ज़त की थी और फ़ख़र किया कि बादशाह ने मुझे तमाम बाकी शुरफ़ा और अफ़सरों से ज़्यादा ऊँचा ओहदा दिया है। 12 हामान ने कहा, “न सिर्फ़ यह, बल्कि आज आस्तर मलिका ने ऐसी ज़ियाफ़त की जिसमें बादशाह के अलावा सिर्फ़ मैं ही शरीक था। और मुझे मलिका से कल के लिए भी दावत मिली है कि बादशाह के साथ ज़ियाफ़त में शिरकत करूँ। 13 लेकिन जब तक मर्दकी यहूदी शाही महल के सहन के दरवाज़े पर बैठा नज़र आता है मैं चैन का साँस नहीं लूँगा।”

14 उस की बीवी ज़रिश और बाक़ी अज़ीज़ों ने मशवरा दिया, “सूली बनवाएँ जिसकी ऊँचाई 75 फ़ुट हो। फिर कल सुबह-सवेरे बादशाह के पास जाकर गुज़ारिश करें कि मर्दकी को उससे लटकाया जाए। इसके बाद आप तसल्ली से बादशाह के साथ जाकर ज़ियाफ़त के मजे ले सकते हैं।” यह मनसूबा हामान को अच्छा लगा, और उसने सूली तैयार करवाई।

6

बादशाह मर्दकी की इज़ज़त करता है

1 उस रात बादशाह को नींद न आई, इसलिए उसने हुक्म दिया कि वह किताब लाई जाए जिसमें रोज़ाना हुक्मत के अहम वाक़ियात लिखे जाते हैं। उसमें से पढ़ा गया 2 तो इसका भी ज़िक्र हुआ कि मर्दकी ने किस तरह बादशाह को दोनों ख़्वाजासराओं बिगटाना और तरश के हाथ से बचाया था, कि जब शाही कमरों के इन पहरेदारों ने अख़स्वेस्स को क़त्ल करने की साज़िश की तो मर्दकी ने बादशाह को इतला दी थी। 3 जब यह वाक़िया पढ़ा गया तो बादशाह ने पूछा, “इसके एवज़ मर्दकी को क्या एज़ाज़ दिया गया?” मुलाज़िमों ने जवाब दिया, “कुछ भी नहीं दिया गया।”

4 उसी लमहे हामान महल के बैरूनी सहन में आ पहुँचा था ताकि बादशाह से मर्दकी को उस सूली से लटकाने की इज़ाज़त माँगे जो उसने उसके लिए बनवाई थी। बादशाह ने सवाल किया, “बाहर सहन में कौन है?” 5 मुलाज़िमों ने जवाब दिया, “हामान है।” बादशाह ने हुक्म दिया, “उसे अंदर आने दो।”

6 हामान दाखिल हुआ तो बादशाह ने उससे पूछा, “उस आदमी के लिए क्या किया जाए जिसकी बादशाह खास इज्जत करना चाहे?” हामान ने सोचा, “वह मेरी ही बात कर रहा है! क्योंकि मेरी निसबत कौन है जिसकी बादशाह ज्यादा इज्जत करना चाहता है?” 7 चुनौचे उसने जवाब दिया, “जिस आदमी की बादशाह खास इज्जत करना चाहें 8 उसके लिए शाही लिबास चुना जाए जो बादशाह खुद पहन चुके हों। एक घोड़ा भी लाया जाए जिसका सर शाही सजावट से सजा हुआ हो और जिस पर बादशाह खुद सवार हो चुके हों। 9 यह लिबास और घोड़ा बादशाह के आलातरिन अफसरों में से एक के सुपुर्द किया जाए। वही उस शख्स को जिसकी बादशाह खास इज्जत करना चाहते हैं कपड़े पहनाए और उसे घोड़े पर बिठाकर शहर के चौक में से गुजारे। साथ साथ वह उसके आगे आगे चलकर एलान करे, ‘यही उसके साथ किया जाता है जिसकी इज्जत बादशाह करना चाहते हैं’।”

10 अखस्वेस्स ने हामान से कहा, “फिर जल्दी करें, मर्दकी यहूदी शाही सहन के दरवाजे के पास बैठा है। शाही लिबास और घोड़ा मँगवाकर उसके साथ ऐसा ही सुलूक करें। जो भी करने का मशवरा आपने दिया वही कुछ करें, और ध्यान दें कि इसमें किसी भी चीज़ की कमी न हो!”

11 हामान को ऐसा ही करना पड़ा। शाही लिबास को चुनकर उसने उसे मर्दकी को पहना दिया। फिर उसे बादशाह के अपने घोड़े पर बिठाकर उसने उसे शहर के चौक में से गुजारा। साथ साथ वह उसके आगे आगे चलकर एलान करता रहा, “यही उस शख्स के साथ किया जाता है जिसकी इज्जत बादशाह करना चाहता है।” 12 फिर मर्दकी शाही सहन के दरवाजे के पास वापस आया।

लेकिन हामान उदास होकर जल्दी से अपने घर चला गया। शर्म के मारे उसने मुँह पर कपड़ा डाल लिया था। 13 उसने अपनी बीवी ज़रिश और अपने दोस्तों को सब कुछ सुनाया जो उसके साथ हुआ था। तब उसके मुशीरों और बीवी ने उससे कहा, “आपका बेड़ा गरक हो गया है, क्योंकि मर्दकी यहूदी है और आप उसके सामने शिकस्त खाने लगे हैं। आप उसका मुकाबला नहीं कर सकेंगे।”

14 वह अभी उससे बात कर ही रहे थे कि बादशाह के ख्वाजासरा पहुँच गए और उसे लेकर जल्दी जल्दी आस्तर के पास पहुँचाया। ज़ियाफ़त तैयार थी।

7

हामान का सत्यानास

1 चुनौचे बादशाह और हामान आस्तर मलिका की ज़ियाफ़त में शरीक हुए। 2 मै पीते वक़्त बादशाह ने पहले दिन की तरह अब भी पूछा, “आस्तर मलिका, अब बताएँ, आप क्या चाहती हैं? वह आपको दिया जाएगा। अपनी दरखास्त पेश करें, क्योंकि मैं सलतनत के आधे हिस्से तक आपको देने के लिए तैयार हूँ।”

3 मलिका ने जवाब दिया, “अगर बादशाह मुझसे खुश हों और उन्हें मेरी बात मंज़ूर हो तो मेरी गुज़ारिश पूरी करें कि मेरी और मेरी कौम की जान बची रहे। 4 क्योंकि मुझे और मेरी कौम को उनके हाथ बेच डाला गया है जो हमें तबाह और हलाक करके नेस्तो-नाबूद करना चाहते हैं। अगर हम बिककर गुलाम और लौंडियाँ बन जाते तो मैं ख़ामोश रहती। ऐसी कोई मुसीबत बादशाह को तंग करने के लिए काफ़ी न होती।”

5 यह सुनकर अखस्वेस्स ने आस्तर से सवाल किया, “कौन ऐसी हरकत करने की ज़रूरत करता है? वह कहाँ है?” 6 आस्तर ने जवाब दिया, “हमारा दुश्मन और मुखालिफ़ यह शरीर आदमी हामान है!”

तब हामान बादशाह और मलिका से दहशत खाने लगा। 7 बादशाह आग-बगूला होकर खड़ा हो गया और मै को छोड़कर महल के बाग़ में टहलने लगा। हामान पीछे रहकर आस्तर से इलतिजा करने लगा, “मेरी जान बचाएँ” क्योंकि उसे अंदाज़ा हो गया था कि बादशाह ने मुझे सज़ाए-मौत देने का फैसला कर लिया है।

8 जब बादशाह वापस आया तो क्या देखता है कि हामान उस सोफ़े पर गिर गया है जिस पर आस्तर टेक लगाए बैठी है। बादशाह गरजा, “क्या यह आदमी यही महल में मेरे हुज़ूर मलिका की इसमतरदी करना चाहता है?” ज्योंही बादशाह ने यह अलफ़ाज़ कहे मुलाज़िम्ओं ने हामान के मुँह पर कपड़ा डाल दिया। 9 बादशाह का ख्वाजासरा ख़रबूनाह बोल उठा, “हामान ने अपने घर के करीब सूली तैयार करवाई है जिसकी ऊँचाई 75 फुट है। वह मर्दकी के लिए बनवाई गई है, उस शख्स के लिए जिसने बादशाह की जान बचाई।” बादशाह ने हुक्म दिया, “हामान को उससे लटका दो।”

10 चुनौचे हामान को उसी सूली से लटका दिया गया जो उसने मर्दकी के लिए बनवाई थी। तब बादशाह का गुस्सा ठंडा हो गया।

8

अखस्वेस्स यहूदियों की मदद करता है

1 उसी दिन अखस्वेस्स ने आस्तर मलिका को यहूदियों के दुश्मन हामान का घर दे दिया। फिर मर्दकी को बादशाह के सामने लाया गया, क्योंकि आस्तर ने उसे बता दिया था कि वह मेरा रिश्तेदार है। 2 बादशाह ने अपनी उँगली से वह अंगूठी उतारी जो मुहर लगाने के लिए इस्तेमाल होती थी और जिसे उसने हामान से वापस ले लिया था। अब उसने उसे मर्दकी के हवाले कर दिया। उस वक़्त आस्तर ने उसे हामान की मिलकियत का निगरान भी बना दिया।

3 एक बार फिर आस्तर बादशाह के सामने गिर गई और रो रोकर इलतमास करने लगी, “जो शरीर मनसूबा हामान अजाजी ने यहूदियों के खिलाफ़ बाँध लिया है उसे रोक दें।” 4 बादशाह ने सोने का अपना असा आस्तर की तरफ़ बढ़ाया, तो वह उठकर उसके सामने खड़ी हो गई।

5 उसने कहा, “अगर बादशाह को बात अच्छी और मुनासिब लगे, अगर मुझे उनकी मेहरबानी हासिल हो और वह मुझसे खुश हों तो वह हामान बिन हम्मदाता अजाजी के उस फ़रमान को मनसूख करें जिसके मुताबिक सलतनत के तमाम सूबों में रहनेवाले यहूदियों को हलाक करना है।

6 अगर मेरी क़ौम और नसल मुसीबत में फँसकर हलाक हो जाए तो मैं यह किस तरह बरदाश्त करूँगी?”

7 तब अखस्वेस्स ने आस्तर और मर्दकी यहूदी से कहा, “मैंने आस्तर को हामान का घर दे दिया। उसे खुद मैंने यहूदियों पर हमला करने की वजह से फाँसी दी है। 8 लेकिन जो भी फ़रमान बादशाह के नाम में सादिर हुआ है और जिस पर उस की अंगूठी की मुहर लगी है उसे मनसूख नहीं किया जा सकता। लेकिन आप एक और काम कर सकते हैं। मेरे नाम में एक और फ़रमान जारी करें जिस पर मेरी मुहर लगी हो। उसे अपनी तसल्ली के मुताबिक यों लिखें कि यहूदी महफूज़ हो जाएँ।”

9 उसी वक़्त बादशाह के मुहर्रिर बुलाए गए। तीसरे महीने सीवान का 23वाँ दिन * था। उन्होंने मर्दकी की तमाम हिदायात के मुताबिक फ़रमान लिख दिया जिसे यहूदियों और तमाम 127 सूबों के गवर्नरों, हाकिमों और रईसों को भेजना था। भारत से लेकर एथोपिया तक यह फ़रमान हर सूबे के अपने तर्ज़े-तहरीर और हर क़ौम की अपनी ज़बान में कलमबंद था। यहूदी क़ौम को भी उसके अपने तर्ज़े-तहरीर और उस की अपनी ज़बान में फ़रमान मिल गया। 10 मर्दकी ने यह फ़रमान बादशाह के नाम में लिखकर उस पर शाही मुहर लगाई। फिर उसने उसे शाही डाक के तेज़रफ़्तार घोड़ों पर सवार कासिदों के हवाले कर दिया। फ़रमान में लिखा था,

11 “बादशाह हर शहर के यहूदियों को अपने दिफा के लिए जमा होने की इजाज़त देते हैं। अगर मुख्तलिफ़ क़ौमों और सूबों के दुश्मन उन पर हमला करें तो यहूदियों को उन्हें बाल-बच्चों समेत तबाह करने और हलाक करके नेस्तो-नाबूद करने की इजाज़त है। नीज़, वह उनकी मिलकियत पर कब्ज़ा कर सकते हैं। 12 एक ही दिन यानी 12वें महीने अदार के 13वें दिन † यहूदियों को बादशाह के तमाम सूबों में यह कुछ करने की इजाज़त है।”

13 हर सूबे में फ़रमान की कानूनी तसदीक करनी थी और हर क़ौम को इसकी खबर पहुँचानी थी ताकि मुकर्रर दिन यहूदी अपने दुश्मनों से इंतक़ाम लेने के लिए तैयार हों। 14 बादशाह के हुक्म पर तेज़रौ कासिद शाही डाक के बेहतरीन घोड़ों पर सवार होकर चल पड़े। फ़रमान का एलान सोसन के क़िले में भी हुआ।

15 मर्दकी क़िरमिज़ी और सफ़ेद रंग का शाही लिबास, नफ़ीस कतान और अरगवानी रंग की चादर और सर पर सोने का बड़ा ताज पहने हुए महल से निकला। तब सोसन के बाशिंदे नारे लगा लगाकर खुशी मनाने लगे। 16 यहूदियों के लिए आबो-ताब, खुशीओ-शादमानी और इज़्ज़तो-जलाल का ज़माना शुरू हुआ। 17 हर सूबे और हर शहर में जहाँ भी बादशाह का नया फ़रमान पहुँच गया, वहाँ यहूदियों ने खुशी के नारे लगा लगाकर एक दूसरे की ज़ियाफ़त की और जशन मनाया। उस वक़्त दूसरी क़ौमों के बहुत-से लोग यहूदी बन गए, क्योंकि उन पर यहूदियों का ख़ौफ़ छा गया था।

9

यहूदी बदला लेते हैं

1 फिर 12वें महीने अदार का 13वाँ दिन * आ गया जब बादशाह के फ़रमान पर अमल करना था। दुश्मनों ने उस दिन यहूदियों पर गालिब आने की उम्मीद रखी थी, लेकिन अब इसके उलट हुआ, यहूदी खुद उन पर गालिब आए जो उनसे नफ़रत रखते थे। 2 सलतनत के तमाम सूबों में वह अपने अपने शहरों में जमा हुए ताकि उन पर हमला करें जो उन्हें नुक़सान पहुँचाना चाहते थे। कोई उनका मुकाबला न कर सका, क्योंकि दीगर तमाम क़ौमों के लोग उनसे डर गए थे। 3 साथ साथ सूबों के शुरफ़ा, गवर्नरों, हाकिमों और दीगर शाही अफ़सरों ने यहूदियों की मदद की, क्योंकि मर्दकी का ख़ौफ़ उन पर तारी हो गया था, 4 और दरबार में उसके ऊँचे ओहदे और उसके बढ़ते हुए असरो-रसूख की खबर तमाम सूबों में फैल गई थी।

5 उस दिन यहूदियों ने अपने दुश्मनों को तलवार से मार डाला और हलाक करके नेस्तो-नाबूद कर दिया। जो भी उनसे नफ़रत रखता था उसके साथ उन्होंने जो जी चाहा सलूक किया। 6 सोसन के क़िले में उन्होंने 500 आदमियों को मार डाला, 7-10 नीज़ यहूदियों के दुश्मन हामान के 10 बेटों को भी। उनके नाम परशंदाता, दलफून, असपाता, पोरता, अदलियाह, अरीदाता, परमशता, अरीसी, अरिदी और वैज़ाता थे। लेकिन यहूदियों ने उनका माल न लूटा।

11 उसी दिन बादशाह को इत्तला दी गई कि सोसन के क़िले में कितने अफ़राद हलाक हुए थे। 12 तब उसने आस्तर मलिका से कहा, “सिर्फ़ यहाँ सोसन के क़िले में यहूदियों ने हामान के 10 बेटों के अलावा 500 आदमियों को मौत के घाट उतार दिया है। तो फिर उन्होंने दीगर सूबों में क्या कुछ न किया होगा! अब मुझे बताएँ, आप मज़ीद क्या चाहती हैं? वह आपको दिया जाएगा। अपनी दरखास्त पेश करें, क्योंकि वह पूरी की जाएगी।” 13 आस्तर ने जवाब दिया, “अगर बादशाह को मंज़ूर हो तो सोसन के यहूदियों को इजाज़त दी जाए कि वह आज की तरह कल भी अपने दुश्मनों पर हमला करें। और हामान के 10 बेटों की लाशें सूली से लटकाई जाएँ।”

* 8:9 25 जून। † 8:12 7 मार्च। * 9:1 7 मार्च।

14 बादशाह ने इजाजत दी तो सोसन में इसका एलान किया गया। तब हामान के 10 बेटों को सूली से लटका दिया गया, 15 और अगले दिन यानी महीने के 14वें दिन † शहर के यहूदी दुबारा जमा हुए। इस बार उन्होंने 300 आदमियों को कत्ल किया। लेकिन उन्होंने किसी का माल न लूटा।

16-17 सलतनत के सबों के बाक़ी यहूदी भी महीने के 13वें दिन ‡ अपने दिफ़ा के लिए जमा हुए थे। उन्होंने 75,000 दुश्मनों को कत्ल किया लेकिन किसी का माल न लूटा था। अब वह दुबारा चैन का सौँस लेकर आराम से ज़िंदगी गुज़ार सकते थे। अगले दिन उन्होंने एक दूसरे की ज़ियाफ़त करके खुशी का बड़ा ज़शन मनाया। 18 सोसन के यहूदियों ने महीने के 13वें और 14वें दिन जमा होकर अपने दुश्मनों पर हमला किया था, इसलिए उन्होंने 15वें दिन खुशी का बड़ा ज़शन मनाया। 19 यही वजह है कि देहात और खुले शहरों में रहनेवाले यहूदी आज तक 12वें महीने के 14वें दिन § ज़शन मनाते हुए एक दूसरे की ज़ियाफ़त करते और एक दूसरे को तोहफ़े देते हैं।

ईदे-पूरीम की इब्तिदा

20 जो कुछ उस वक़्त हुआ था उसे मर्दकी ने क़लमबंद कर दिया। साथ साथ उसने फ़ारसी सलतनत के करीबी और दूर-दराज़ के तमाम सबों में आबाद यहूदियों को ख़त लिख दिए 21 जिनमें उसने एलान किया, “अब से सालाना अदर महीने के 14वें और 15वें दिन ज़शन मनाना है। 22 खुशी मनाते हुए एक दूसरे की ज़ियाफ़त करना, एक दूसरे को तोहफ़े देना और ग़रीबों में ख़ैरात तकसीम करना, क्योंकि इन दिनों के दौरान आपको अपने दुश्मनों से सुकून हासिल हुआ है, आपका दुख़ सुख़ में और आपका मातम शादमानी में बदल गया।”

23 मर्दकी की इन हिदायत के मुताबिक़ इन दो दिनों का ज़शन दस्तूर बन गया।

24-26 ईद का नाम ‘पूरीम’ पड़ गया, क्योंकि जब यहूदियों का दुश्मन हामान बिन हम्मदाता अजाजी उन सबको हलाक़ करने का मनसूबा बाँध रहा था तो उसने यहूदियों को मारने का सबसे मुबारक दिन मालूम करने के लिए कुरा बनाम पूर डाल दिया। जब अख़स्वेस्स को सब कुछ मालूम हुआ तो उसने हुक्म दिया कि हामान को वह सज़ा दी जाए जिसकी तैयारियाँ उसने यहूदियों के लिए की थीं। तब उसे उसके बेटों समेत फाँसी से लटकाया गया।

चूँकि यहूदी इस तज़रबे से गुज़रे थे और मर्दकी ने हिदायत दी थी 27 इसलिए वह मुत्तफ़िक़ हुए कि हम सालाना इसी वक़्त यह दो दिन ऐन हिदायत के मुताबिक़ मनाएँगे। यह दस्तूर न सिर्फ़ हमारा फ़र्ज़ है, बल्कि हमारी औलाद और उन ग़ैरयहूदियों का भी जो यहूदी मज़हब में शरीक हो जाएंगे। 28 लाज़िम है कि जो कुछ हुआ है हर नसल और हर ख़ानदान उसे याद करके मनाता रहे, खाह वह किसी भी सूबे या शहर में क्यों न हो। ज़रूरी है कि यहूदी पूरीम की ईद मनाने का दस्तूर कभी न भूलें, कि उस की याद उनकी औलाद में से कभी भी मिट न जाए।

29 मलिका आस्तर बित अबीख़ैल और मर्दकी यहूदी ने पूरे इख़्तियार के साथ पूरीम की ईद के बारे में एक और ख़त लिख दिया ताकि उस की तसदीक़ हो जाए। 30 यह ख़त फ़ारसी सलतनत के 127 सबों में आबाद तमाम यहूदियों को भेजा गया। सलामती की दुआ और अपनी वफ़ादारी का इज़हार करने के बाद 31 मलिका और मर्दकी ने उन्हें दुबारा हिदायत की, “जिस तरह हमने फ़रमाया है, यह ईद लाज़िमन मुतैयिन औकात के ऐन मुताबिक़ मनानी है। इसे मनाने के लिए यों मुत्तफ़िक़ हो जाएँ जिस तरह आपने अपने और अपनी औलाद के लिए रोज़ा रखने और मातम करने के दिन मुक़रर किए हैं।” 32 अपने इस फ़रमान से आस्तर ने पूरीम की ईद और उसे मनाने के क़वायद की तसदीक़ की, और यह तारीख़ी किताब में दर्ज किया गया।

10

मर्दकी अपनी क़ौम का सहारा बना रहता है

1 बादशाह ने पूरी सलतनत के तमाम ममालिक पर साहिली इलाक़ों तक टैक्स लगाया। 2 उस की तमाम ज़बरदस्त कामयाबियों का बयान ‘शाहाने-मादीओ-फ़ारस की तारीख़’ की किताब में किया गया है। वहाँ इसका भी पूरा ज़िक़्र है कि उसने मर्दकी को किस ऊँचे ओहदे पर फ़ायज़ किया था। 3 मर्दकी बादशाह के बाद सलतनत का सबसे आला अफ़सर था। यहूदियों में वह मुअज़्ज़ज़ था, और वह उस की बड़ी क़दर करते थे, क्योंकि वह अपनी क़ौम की बहबूदी का तालिब रहता और तमाम यहूदियों के हक़ में बात करता था।

अय्यूब

अय्यूब की दीनदारी

1 मुल्के-ऊज़ में एक बेइलज़ाम आदमी रहता था जिसका नाम अय्यूब था। वह सीधी राह पर चलता, अल्लाह का खौफ़ मानता और हर बुराई से दूर रहता था। 2 उसके सात बेटे और तीन बेटियाँ पैदा हुईं। 3 साथ साथ उसके बहुत माल-मवेशी थे : 7,000 भेड़-बकरियाँ, 3,000 ऊँट, बैलों की 500 जोड़ियाँ और 500 गधियाँ। उसके बेशुमार नौकर-नौकरानियाँ भी थे। गरज़ मशरिक के तमाम बाशिंदों में इस आदमी की हैसियत सबसे बड़ी थी।

4 उसके बेटों का दस्तूर था कि बारी बारी अपने घरों में ज़ियाफ़त करें। इसके लिए वह अपनी तीन बहनों को भी अपने साथ खाने और पीने की दावत देते थे। 5 हर दफ़ा जब ज़ियाफ़त के दिन इख़िताम तक पहुँचते तो अय्यूब अपने बच्चों को बुलाकर उन्हें पाक-साफ़ कर देता और सुबह-सवेरे उठकर हर एक के लिए भस्म होनेवाली एक एक कुरबानी पेश करता। क्योंकि वह कहता था, “हो सकता है मेरे बच्चों ने गुनाह करके दिल में अल्लाह पर लानत की हो।” चुनाँचे अय्यूब हर ज़ियाफ़त के बाद ऐसा ही करता था।

अय्यूब के किरदार पर इलज़ाम

6 एक दिन फ़रिश्ते * अपने आपको रब के हुज़ूर पेश करने आए। इबलीस भी उनके दरमियान मौजूद था। 7 रब ने इबलीस से पूछा, “तू कहाँ से आया है?” इबलीस ने जवाब दिया, “मैं दुनिया में इधर उधर घुमता-फिरता रहा।”

8 रब बोला, “क्या तूने मेरे बंदे अय्यूब पर तवज़ुह दी? दुनिया में उस जैसा कोई और नहीं। क्योंकि वह बेइलज़ाम है, वह सीधी राह पर चलता, अल्लाह का खौफ़ मानता और हर बुराई से दूर रहता है।”

9 इबलीस ने रब को जवाब दिया, “बेशक, लेकिन क्या अय्यूब यों ही अल्लाह का खौफ़ मानता है? 10 तूने तो उस के, उसके घराने के और उस की तमाम मिलकियत के इर्दगिर्द हिफ़ाज़ती बाड़ लगाई है। और जो कुछ उसके हाथ ने किया उस पर तूने बरकत दी, नतीजे में उस की भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल पूरे मुल्क में फैल गए हैं। 11 लेकिन वह क्या करेगा अगर तू अपना हाथ ज़रा बढ़ाकर सब कुछ तबाह करे जो उसे हासिल है। तब वह तेरे मुँह पर ही तुझ पर लानत करेगा।”

12 रब ने इबलीस से कहा, “ठीक है, जो कुछ भी उसका है वह तेरे हाथ में है। लेकिन उसके बदन को हाथ न लगाना।” इबलीस रब के हुज़ूर से चला गया।

13 एक दिन अय्यूब के बेटे-बेटियाँ मामूल के मुताबिक ज़ियाफ़त कर रहे थे। वह बड़े भाई के घर में खाना खा रहे और मै पी रहे थे। 14 अचानक एक कासिद अय्यूब के पास पहुँचकर कहने लगा, “बैल खेत में हल चला रहे थे और गधियाँ साथवाली ज़मीन पर चर रही थीं 15 कि सबा के लोगों ने हम पर हमला करके सब कुछ छीन लिया। उन्होंने तमाम मुलाज़िमों को तलवार से मार डाला, सिर्फ़ मैं ही आपको यह बताने के लिए बच निकला हूँ।”

16 वह अभी बात कर ही रहा था कि एक और कासिद पहुँचा जिसने इतला दी, “अल्लाह की आग ने आसमान से गिरकर आपकी तमाम भेड़-बकरियों और मुलाज़िमों को भस्म कर दिया। सिर्फ़ मैं ही आपको यह बताने के लिए बच निकला हूँ।”

17 वह अभी बात कर ही रहा था कि तीसरा कासिद पहुँचा। वह बोला, “बाबल के कसदियों ने तीन गुरोहों में तकसीम होकर हमारे ऊँटों पर हमला किया और सब कुछ छीन लिया। तमाम मुलाज़िमों को उन्होंने तलवार से मार डाला, सिर्फ़ मैं ही आपको यह बताने के लिए बच निकला हूँ।”

18 वह अभी बात कर ही रहा था कि चौथा कासिद पहुँचा। उसने कहा, “आपके बेटे-बेटियाँ अपने बड़े भाई के घर में खाना खा रहे और मै पी रहे थे 19 कि अचानक रेगिस्तान की जानिब से एक जोरदार आँधी आई जो घर के चारों कोनों से यों टकराई कि वह जवानों पर गिर पड़ा। सबके सब हलाक हो गए। सिर्फ़ मैं ही आपको यह बताने के लिए बच निकला हूँ।”

20 यह सब कुछ सुनकर अय्यूब उठा। अपना लिबास फाड़कर उसने अपने सर के बाल मुँडवाए। फिर उसने ज़मीन पर गिरकर औंधे मुँह रब को सिजदा किया। 21 वह बोला, “मैं नंगी हालत में माँ के पेट से निकला और नंगी हालत में कूच कर जाऊँगा। रब ने दिया, रब ने लिया, रब का नाम मुबारक हो!”

22 इस सारे मामले में अय्यूब ने न गुनाह किया, न अल्लाह के बारे में कुफ़र बका।

2

अय्यूब पर बीमारी का हमला

* 1:6 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : अल्लाह के फ़रज़ंद।

1 एक दिन फ़रिश्ते * दुबारा अपने आपको रब के हुज़ूर पेश करने आए। इबलीस भी उनके दरमियान मौजूद था। 2 रब ने इबलीस से पूछा, “तू कहाँ से आया है?” इबलीस ने जवाब दिया, “मैं दुनिया में इधर उधर घुमता-फिरता रहा।” 3 रब बोला, “क्या तूने मेरे बंदे अय्यूब पर तबज्जुह दी? ज़मीन पर उस जैसा कोई और नहीं। वह बेइलज़ाम है, वह सीधी राह पर चलता, अल्लाह का ख़ौफ़ मानता और हर बुराई से दूर रहता है। अभी तक वह अपने बेइलज़ाम किरदार पर कायम है हालाँकि तूने मुझे उसे बिलावजह तबाह करने पर उकसाया।”

4 इबलीस ने जवाब दिया, “खाल का बदला खाल ही होता है! इन्सान अपनी जान को बचाने के लिए अपना सब कुछ दे देता है। 5 लेकिन वह क्या करेगा अगर तू अपना हाथ ज़रा बढ़ाकर उसका जिस्म † छू दे? तब वह तेरे मुँह पर ही तुझ पर लानत करेगा।”

6 रब ने इबलीस से कहा, “ठीक है, वह तेरे हाथ में है। लेकिन उस की जान को मत छेड़ना।” 7 इबलीस रब के हुज़ूर से चला गया और अय्यूब को सताने लगा। चाँद से लेकर तल्वे तक अय्यूब के पूरे जिस्म पर बदतरीन किस्म के फोड़े निकल आए। 8 तब अय्यूब राख में बैठ गया और ठीकरे से अपनी जिल्द को खुरचने लगा।

9 उस की बीवी बोली, “क्या तू अब तक अपने बेइलज़ाम किरदार पर कायम है? अल्लाह पर लानत करके दम छोड़ दे!” 10 लेकिन उसने जवाब दिया, “तू अहमक औरत की-सी बातें कर रही है। अल्लाह की तरफ़ से भलाई तो हम कबूल करते हैं, तो क्या मुनासिब नहीं कि उसके हाथ से मुसीबत भी कबूल करें?” इस सारे मामले में अय्यूब ने अपने मुँह से गुनाह न किया।

अय्यूब के तीन दोस्त

11 अय्यूब के तीन दोस्त थे। उनके नाम इलीफ़ज़ तेमानी, बिलदद सूखी और ज़ूफ़र नामाती थे। जब उन्हें इतला मिली कि अय्यूब पर यह तमाम आफ़त आ गई है तो हर एक अपने घर से रवाना हुआ। उन्होंने मिलकर फैसला किया कि इकट्ठे अफ़सोस करने और अय्यूब को तसल्ली देने जाएंगे। 12 जब उन्होंने दूर से अपनी नज़र उठाकर अय्यूब को देखा तो उस की इतनी बुरी हालत थी कि वह पहचाना नहीं जाता था। तब वह ज़ारो-कतार रोने लगे। अपने कपड़े फाड़कर उन्होंने अपने सरों पर खाक डाली। 13 फिर वह उसके साथ ज़मीन पर बैठ गए। सात दिन और सात रात वह इसी हालत में रहे। इस पूरे अरसे में उन्होंने अय्यूब से एक भी बात न की, क्योंकि उन्होंने देखा कि वह शदीद दर्द का शिकार है।

3

अय्यूब की आहो-ज़ारी

1 तब अय्यूब बोल उठा और अपने जन्म दिन पर लानत करने लगा। 2 उसने कहा,

3 “वह दिन मिट जाए जब मैंने जन्म लिया, वह रात जिसने कहा, ‘पेट में लड़का पैदा हुआ है!’ 4 वह दिन अंधेरा ही अंधेरा हो जाए, एक किरण भी उसे रौशन न करे। अल्लाह भी जो बुलंदियों पर है उसका खयाल न करे। 5 तारीकी और घना अंधेरा उस पर कब्ज़ा करे, काले काले बादल उस पर छाए रहें, हाँ वह रौशनी से महसूस होकर सख़्त दहशतज़दा हो जाए। 6 घना अंधेरा उस रात को छीन ले जब मैं माँ के पेट में पैदा हुआ। उसे न साल, न किसी महीने के दिनों में शुमार किया जाए। 7 वह रात बाँझ रहे, उसमें ख़ुशी का नारा न लगाया जाए। 8 जो दिनों पर लानत भेजते और लिवियातान अज़दहे को तहरीक में लाने के काबिल होते हैं वही उस रात पर लानत करें। 9 उस रात के धूँधलके में टिमटिमानेवाले सितारे बुझ जाएँ, फ़जर का इंतज़ार करना बेफ़ायदा ही रहे बल्कि वह रात तुलूए-सुबह की पलकें * भी न देखे। 10 क्योंकि उसने मेरी माँ को मुझे जन्म देने से न रोका, वरना यह तमाम मुसीबत मेरी आँखों से छुपी रहती।

11 मैं पैदाइश के वक़्त क्यों मर न गया, माँ के पेट से निकलते वक़्त जान क्यों न दे दी? 12 माँ के घुटनों ने मुझे ख़ुशआमदीद क्यों कहा, उस की छातियों ने मुझे दूध क्यों पिलाया? 13 अगर यह न होता तो इस वक़्त मैं सुकून से लेटा रहता, आराम से सोया होता। 14 मैं उन्हीं के साथ होता जो पहले बादशाह और दुनिया के मुशीर थे, जिन्होंने खंडरात अज़ सरे-नौ तामीर किए। 15 मैं उनके साथ होता जो पहले हुक्मरान थे और अपने घरों को सोने-चाँदी से भर लेते थे। 16 मुझे ज़ाया हो जानेवाले बच्चे की तरह क्यों न ज़मीन में दबा दिया गया? मुझे उस बच्चे की तरह क्यों न दफ़नाया गया जिसने कभी रौशनी न देखी? 17 उस जगह बेदीन अपनी बेलगाम हरकतों से बाज़ आते और वह आराम करते हैं जो तगो-दौ करते करते थक गए थे। 18 वहाँ कैदी इतमीनान से रहते हैं, उन्हें उस ज़ालिम की आवाज़ नहीं सुननी पड़ती जो उन्हें जीते-जी हाँकता रहा। 19 उस जगह छोटे और बड़े सब बराबर होते हैं, गुलाम अपने मालिक से आज्ञाद रहता है।

20 अल्लाह मुसीबतज़दों को रौशनी और शिकस्तादिलों को ज़िंदगी क्यों अता करता है? 21 वह तो मौत के इंतज़ार में रहते हैं लेकिन बेफ़ायदा। वह खोद खोदकर उसे यों तलाश करते हैं जिस तरह किसी पोशीदा खज़ाने को। 22 अगर उन्हें कब्र नसीब हो तो वह बाग़ बाग़ होकर ज़शन मनाते हैं। 23 अल्लाह उसको ज़िंदा क्यों रखता जिसकी नज़रों से रास्ता ओझल हो गया है और जिसके चारों तरफ़ उसने बाड़ लगाई है। 24 क्योंकि जब मुझे रोटी खानी है तो हाय हाय करता हूँ, मेरी आँहें पानी की तरह मुँह से फूट निकलती हैं। 25 जिस चीज़ से मैं डरता था वह मुझ पर आई, जिससे मैं ख़ौफ़ खाता था उससे मेरा वास्ता पड़ा। 26 न मुझे इतमीनान हुआ, न सुकून या आराम बल्कि मुझ पर बेचैनी गालिब आई।”

* 2:1 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : अल्लाह के फ़रज़ंद।

† 2:5 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : गोश्त-पोस्त और हड्डियाँ।

* 3:9 पलकों से मुराद पहली किरणें हैं।

4

इलीफ़ज़ का एतराज़ : इनसान अल्लाह के हुज़ूर रास्त नहीं ठहर सकता

1 यह कुछ सुनकर इलीफ़ज़ तेमानी ने जवाब दिया,

2 “क्या तुझसे बात करने का कोई फ़ायदा है? तू तो यह बरदाश्त नहीं कर सकता। लेकिन दूसरी तरफ़ कौन अपने अलफ़ाज़ रोक सकता है? 3 ज़रा सोच ले, तूने खुद बहुतों को तरबियत दी, कई लोगों के थकेमोंदे हाथों को तक्रवियत दी है। 4 तेरे अलफ़ाज़ ने ठोकर खानेवाले को दुबारा खड़ा किया, डगमगाते हुए घुटने तूने मज़बूत किए। 5 लेकिन अब जब मुसीबत तुझ पर आ गई तो तू उसे बरदाश्त नहीं कर सकता, अब जब खुद उस की ज़द में आ गया तो तेरे रोंगटे खड़े हो गए हैं। 6 क्या तेरा एतमाद इस पर मुनहसिर नहीं है कि तू अल्लाह का ख़ौफ़ माने, तेरी उम्मीद इस पर नहीं कि तू बेइलज़ाम राहों पर चले?

7 सोच ले, क्या कभी कोई बेगुनाह हलाक हुआ है? हरगिज़ नहीं! जो सीधी राह पर चलते हैं वह कभी रूए-ज़मीन पर से मिट नहीं गए।

8 जहाँ तक मैंने देखा, जो नाइनसाफी का हल चलाए और नुक़सान का बीज बोए वह इसकी फ़सल काटता है। 9 ऐसे लोग अल्लाह की एक फूँक से तबाह, उसके क्रहर के एक झोंके से हलाक हो जाते हैं। 10 शेरबबर की दहाड़ें ख़ामोश हो गई, जवान शेर के दाँत झड़ गए हैं। 11 शिकार न मिलने की वजह से शेर हलाक हो जाता और शेरनी के बच्चे परागंदा हो जाते हैं।

12 एक बार एक बात चोरी-छुपे मेरे पास पहुँची, उसके चंद अलफ़ाज़ मेरे कान तक पहुँच गए। 13 रात को ऐसी रोयाँ पेश आई जो उस वक़्त देखी जाती हैं जब इनसान गहरी नींद सोया होता है। इनसे मैं परेशानकुन ख़यालात में मुब्तला हुआ। 14 मुझ पर दहशत और थरथराहट ग़ालिब आई, मेरी तमाम हड्डियाँ लरज़ उठीं। 15 फिर मेरे चेहरे के सामने से हवा का झोंका गुज़र गया और मेरे तमाम रोंगटे खड़े हो गए। 16 एक हस्ती मेरे सामने खड़ी हुई जिसे मैं पहचान न सका, एक शक्ल मेरी आँखों के सामने दिखाई दी। ख़ामोशी थी, फिर एक आवाज़ ने फ़रमाया, 17 ‘क्या इनसान अल्लाह के हुज़ूर रास्तबाज़ ठहर सकता है, क्या इनसान अपने ख़ालिक के सामने पाक-साफ़ ठहर सकता है?’ 18 देख, अल्लाह अपने ख़ादिमों पर भरोसा नहीं करता, अपने फ़रिश्तों को वह अहमक ठहराता है। 19 तो फिर वह इनसान पर क्यों भरोसा रखे जो मिट्टी के घर में रहता, ऐसे मकान में जिसकी बुनियाद ख़ाक पर ही रखी गई है। उसे पतंगे की तरह कुचला जाता है। 20 सुबह को वह ज़िंदा है लेकिन शाम तक पाश पाश हो जाता, अबद तक हलाक हो जाता है, और कोई भी ध्यान नहीं देता। 21 उसके ख़ैमे के रस्से ढीले करो तो वह हिकमत हासिल किए बग़ैर इंतकाल कर जाता है।

5

अल्लाह की तादीब तसलीम कर

1 बेशक आवाज़ दे, लेकिन कौन जवाब देगा? कोई नहीं! मुक़द्दसीन में से तू किसकी तरफ़ रूजू कर सकता है? 2 क्योंकि अहमक की रंजीदगी उसे मार डालती, सादालौह की सरगरमी उसे मौत के घाट उतार देती है। 3 मैंने खुद एक अहमक को जड़ पकड़ते देखा, लेकिन मैंने फ़ौरन ही उसके घर पर लानत भेजी। 4 उसके फ़रज़ंद नजात से दूर रहते। उन्हें शहर के दरवाज़े में रौंदा जाता है, और बचानेवाला कोई नहीं। 5 भूके उस की फ़सल खा जाते, काँटेदार बाड़ों में महफूज़ माल भी छीन लेते हैं। प्यासे अफ़राद हाँपते हुए उस की दौलत के पीछे पड़ जाते हैं। 6 क्योंकि बुराई ख़ाक से नहीं निकलती और दुख-दर्द मिट्टी से नहीं फूटता 7 बल्कि इनसान खुद इसका बाइस है, दुख-दर्द उस की विरासत में ही पाया जाता है। यह इतना यक़ीनी है जितना यह कि आग की चिंगारियाँ ऊपर की तरफ़ उड़ती हैं।

8 लेकिन अगर मैं तेरी जगह होता तो अल्लाह से दरियाफ़्त करता, उसे ही अपना मामला पेश करता। 9 वही इतने अज़ीम काम करता है कि कोई उनकी तह तक नहीं पहुँच सकता, इतने मोजिज़े कि कोई उन्हें गिन नहीं सकता। 10 वही रूए-ज़मीन को बारिश अता करता, खुले मैदान पर पानी बरसा देता है। 11 पस्तहालों को वह सरफ़राज़ करता और मातम करनेवालों को उठाकर महफूज़ मक़ाम पर रख देता है। 12 वह चालाकों के मनसूबे तोड़ देता है ताकि उनके हाथ नाकाम रहें। 13 वह दानिशमंदों को उनकी अपनी चालाकी के फंदे में फँसा देता है तो होशियारों की साज़िशें अचानक ही ख़त्म हो जाती हैं। 14 दिन के वक़्त उन पर अंधेरा छा जाता, और दोपहर के वक़्त भी वह टटोल टटोलकर फिरते हैं। 15 अल्लाह ज़स्ूरतमंदों को उनके मुँह की तलवार और ज़बरदस्त के क़ब्ज़े से बचा लेता है। 16 यों पस्तहालों को उम्मीद दी जाती और नाइनसाफी का मुँह बंद किया जाता है।

17 मुबारक है वह इनसान जिसकी मलामत अल्लाह करता है! चुनाँचे कादिरे-मुतलक की तादीब को हक़ीर न जान। 18 क्योंकि वह ज़ख़मी करता लेकिन मरहम-पट्टी भी लगा देता है, वह ज़रब लगाता लेकिन अपने हाथों से शफ़ा भी बख़्शता है। 19 वह तुझे छः मुसीबतों से छुड़ाएगा, और अगर इसके बाद भी कोई आए तो तुझे नुक़सान नहीं पहुँचेगा। 20 अगर काल पड़े तो वह फिघा देकर तुझे मौत से बचाएगा, जंग में तुझे तलवार की ज़द में आने नहीं देगा। 21 तू ज़बान के कोड़ों से महफूज़ रहेगा, और जब तबाही आए तो डरने की ज़रूरत नहीं होगी। 22 तू तबाही और काल की हँसी उड़ाएगा, ज़मीन के वहशी जानवरों से ख़ौफ़ नहीं खाएगा। 23 क्योंकि तेरा खुले मैदान के पत्थरों के साथ अहद होगा, इसलिए उसके जंगली जानवर तेरे साथ सलामती से ज़िंदगी गुज़ारेंगे। 24 तू जान लेगा कि तेरा ख़ैमा महफूज़ है। जब तू अपने घर का मुआयना करे तो मालूम होगा कि कुछ गुम नहीं हुआ। 25 तू देखेगा कि तेरी औलाद बढ़ती जाएगी, तेरे फ़रज़ंद ज़मीन पर घास की तरह फैलते जाएंगे। 26 तू वक़्त पर जमाशुदा पूलों की तरह उम्ररसीदा होकर क़ब्र में उतरेगा।

27 हमने तहकीक करके मालूम किया है कि ऐसा ही है। चुनाँचे हमारी बात सुनकर उसे अपना ले!”

6

अय्यूब का जवाब : साबित करो कि मुझसे क्या गलती हुई है

1 तब अय्यूब ने जवाब देकर कहा,

2 “काश मेरी रंजीदगी का वज़न किया जा सके और मेरी मुसीबत तराजू में तोली जा सके! 3 क्योंकि वह समुंदर की रेत से ज़्यादा भारी हो गई है। इसी लिए मेरी बातें बेतुकी-सी लग रही हैं। 4 क्योंकि कादिरे-मुतलक के तीर मुझमें गड़ गए हैं, मेरी रूह उनका ज़हर पी रही है। हाँ, अल्लाह के हौलनाक हमले मेरे खिलाफ़ सफ़आरा हैं। 5 क्या जंगली गधा ढीनचूँ ढीनचूँ करता है जब उसे घास दस्तयाब हो? या क्या बैल डकराता है जब उसे चारा हासिल हो? 6 क्या फीका खाना नमक के बग़ैर खाया जाता, या अंडे की सफेदी * में जायका है? 7 ऐसी चीज़ को मैं छूता भी नहीं, ऐसी खुराक से मुझे घिन ही आती है।

8 काश मेरी गुज़ारिश पूरी हो जाए, अल्लाह मेरी आरजू पूरी करे! 9 काश वह मुझे कुचल देने के लिए तैयार हो जाए, वह अपना हाथ बढ़ाकर मुझे हलाक करे। 10 फिर मुझे कम अज़ कम तसल्ली होती बल्कि मैं मुस्तक़िल दर्द के मारे पेचो-ताब खाने के बावजूद खुशी मनाता कि मैंने कुदूस खुदा के फ़रमानों का इनकार नहीं किया।

11 मेरी इतनी ताक़त नहीं कि मज़ीद इंतज़ार करूँ, मेरा क्या अच्छा अंजाम है कि सब करूँ? 12 क्या मैं पत्थरों जैसा ताक़तवर हूँ? क्या मेरा जिस्म पीतल जैसा मज़बूत है? 13 नहीं, मुझसे हर सहारा छीन लिया गया है, मेरे साथ ऐसा सुलूक हुआ है कि कामयाबी का इमकान ही नहीं रहा।

14 जो अपने दोस्त पर मेहरबानी करने से इनकार करे वह अल्लाह का ख़ौफ़ तर्क करता है। 15 मेरे भाइयों ने वादी की उन नदियों जैसी बेवफ़ाई की है जो बरसात के मौसम में अपने किनारों से बाहर आ जाती हैं। 16 उस वक़्त वह बर्फ़ से भरकर गदली हो जाती हैं, 17 लेकिन उरूज तक पहुँचते ही वह सूख जाती, तपती गरमी में ओझल हो जाती हैं। 18 तब काफ़िले अपनी राहों से हट जाते हैं ताकि पानी मिल जाए, लेकिन बेफ़ायदा। वह रेगिस्तान में पहुँचकर तबाह हो जाते हैं। 19 तैमा के काफ़िले इस पानी की तलाश में रहते, सबा के सफ़र करनेवाले ताज़िर उस पर उम्मीद रखते हैं, 20 लेकिन बेसूद। जिस पर उन्होंने एतमाद किया वह उन्हें मायूस कर देता है। जब वहाँ पहुँचते हैं तो शर्मिंदा हो जाते हैं।

21 तुम भी इतने ही बेकार साबित हुए हो। तुम हौलनाक बात देखकर दहशतज़दा हो गए हो। 22 क्या मैंने कहा, ‘मुझे तोहफ़ा दे दो, अपनी दौलत में से मेरी खातिर रिश्तत दो, 23 मुझे दुश्मन के हाथ से छुड़ाओ, फ़िघा देकर ज़ालिम के कब्ज़े से बचाओ’?

24 मुझे साफ़ हिदायत दो तो मैं मानकर ख़ामोश हो जाऊँगा। मुझे बताओ कि किस बात में मुझसे गलती हुई है। 25 सीधी राह की बातें कितनी तकलीफ़देह हो सकती हैं! लेकिन तुम्हारी मलामत से मुझे किस किस की तरबियत हासिल होगी? 26 क्या तुम समझते हो कि खाली अलफ़ाज़ मामले को हल करेंगे, गो तुम मायूसी में मुब्तला आदमी की बात नज़रंदाज़ करते हो? 27 क्या तुम यतीम के लिए भी कुरा डालते, अपने दोस्त के लिए भी सौदाबाज़ी करते हो?

28 लेकिन अब खुद फैसला करो, मुझ पर नज़र डालकर सोच लो। अल्लाह की कसम, मैं तुम्हारे स्वरू झूट नहीं बोलता। 29 अपनी गलती तसलीम करो ताकि नाइनसाफ़ी न हो। अपनी गलती मान लो, क्योंकि अब तक मैं हक़ पर हूँ। 30 क्या मेरी ज़बान झूट बोलती है? क्या मैं फ़रेबदेह बातें पहचान नहीं सकता?

7

अल्लाह मुझे क्यों नहीं छोड़ता?

1 इनसान दुनिया में सख़्त खिदमत करने पर मजबूर होता है, जीते-जी वह मज़दूर की-सी ज़िंदगी गुज़ारता है। 2 गुलाम की तरह वह शाम के साय का आरज़ूमंद होता, मज़दूर की तरह मज़दूरी के इंतज़ार में रहता है। 3 मुझे भी बेमानी महीने और मुसीबत की रातें नसीब हुई हैं। 4 जब बिस्तर पर लेट जाता तो सोचता हूँ कि कब उठ सकता हूँ? लेकिन लगता है कि रात कभी ख़त्म नहीं होगी, और मैं फ़जर तक बेचैनी से करवटें बदलता रहता हूँ। 5 मेरे जिस्म की हर जगह कीड़े और खुरंड फैल गए हैं, मेरी सुकड़ी हुई जिल्द में पीप पड़ गई है। 6 मेरे दिन जूलाहे की नाल * से कहीं ज़्यादा तेज़ी से गुज़र गए हैं। वह अपने अंजाम तक पहुँच गए हैं, धागा ख़त्म हो गया है।

7 ऐ अल्लाह, ख़याल रख कि मेरी ज़िंदगी दम-भर की ही है! मेरी आँखें आइंदा कभी खुशहाली नहीं देखेंगी। 8 जो मुझे इस वक़्त देखे वह आइंदा मुझे नहीं देखेगा। तू मेरी तरफ़ देखेगा, लेकिन मैं हूँगा नहीं। 9 जिस तरह बादल ओझल होकर ख़त्म हो जाता है उसी तरह पाताल में उतरनेवाला वापस नहीं आता। 10 वह दुबारा अपने घर वापस नहीं आएगा, और उसका मक़ाम उसे नहीं जानता।

11 चुनाँचे मैं वह कुछ रोक नहीं सकता जो मेरे मुँह से निकलना चाहता है। मैं रंजीदा हालत में बात करूँगा, अपने दिल की तलख़ी का इज़हार करके आहो-ज़ारी करूँगा। 12 ऐ अल्लाह, क्या मैं समुंदर या समुंदरी अज़दहा हूँ कि तूने मुझे नज़रबंद कर रखा है? 13 जब मैं कहता हूँ, ‘मेरा बिस्तर मुझे तसल्ली दे, सोने से मेरा गम हलका हो जाए’ 14 तो तू मुझे हौलनाक ख़ाबों से हिम्मत हारने देता, रोयाओं से मुझे दहशत खिलाता

* 6:6 या ख़त्मी का रस। * 7:6 यानी शटल।

है। 15 मेरी इतनी बुरी हालत हो गई है कि सोचता हूँ, काश कोई मेरा गला घूँटकर मुझे मार डाले, काश मैं ज़िंदा न रहूँ बल्कि दम छोड़ूँ। 16 मैंने ज़िंदगी को रद्द कर दिया है, अब मैं ज़्यादा देर तक ज़िंदा नहीं रहूँगा। मुझे छोड़, क्योंकि मेरे दिन दम-भर के ही हैं।

17 इनसान क्या है कि तू उस की इतनी कदर करे, उस पर इतना ध्यान दे? 18 वह इतना अहम तो नहीं है कि तू हर सुबह उसका मुआयना करे, हर लमहा उस की जाँच-पड़ताल करे। 19 क्या तू मुझे तकने से कभी नहीं बाज़ आएगा? क्या तू मुझे इतना सुकून भी नहीं देगा कि पल-भर के लिए थूक निगलूँ? 20 ऐ इनसान के पहरेदार, अगर मुझसे गलती हुई भी तो इससे मैंने तेरा क्या नुकसान किया? तूने मुझे अपने गज़ब का निशाना क्यों बनाया? मैं तेरे लिए बोझ क्यों बन गया हूँ? 21 तू मेरा जुर्म मुआफ़ क्यों नहीं करता, मेरा कुसूर दरगुज़र क्यों नहीं करता? क्योंकि जल्द ही मैं खाक हो जाऊँगा। अगर तू मुझे तलाश भी करे तो नहीं मिलूँगा, क्योंकि मैं हूँगा नहीं।”

8

बिलदद का जवाब : अपने गुनाह से तौबा कर!

1 तब बिलदद सूखी ने जवाब देकर कहा,

2 “तू कब तक इस किस्म की बातें करेगा? कब तक तेरे मुँह से आँधी के झोंके निकलेंगे? 3 क्या अल्लाह इनसाफ़ का खून कर सकता, क्या कादिर-मुतलक रास्ती को आगे पीछे कर सकता है? 4 तेरे बेटों ने उसका गुनाह किया है, इसलिए उसने उन्हें उनके जुर्म के कब्जे में छोड़ दिया। 5 अब तेरे लिए लाज़िम है कि तू अल्लाह का तालिब हो और कादिर-मुतलक से इल्तिजा करे, 6 कि तू पाक हो और सीधी राह पर चले। फिर वह अब भी तेरी खातिर जोश में आकर तेरी रास्तबाज़ी की सुकूनतगाह को बहाल करेगा। 7 तब तेरा मुस्तकबिल निहायत अज़ीम होगा, खाह तेरी इब्तिदाई हालत कितनी पस्त क्यों न हो।

8 गुज़श्ता नसल से ज़रा पूछ ले, उस पर ध्यान दे जो उनके बापदादा ने तहक़ीकात के बाद मालूम किया। 9 क्योंकि हम खुद कल ही पैदा हुए और कुछ नहीं जानते, ज़मीन पर हमारे दिन साय जैसे आरिज़ी हैं। 10 लेकिन यह तुझे तालीम देकर बात बता सकते हैं, यह तुझे अपने दिल में जमाशुदा इल्म पेश कर सकते हैं। 11 क्या आबी नरसल वहाँ उगता है जहाँ दलदल नहीं? क्या सरकंडा वहाँ फलता-फूलता है जहाँ पानी नहीं? 12 उस की कोंपलें अभी निकल रही हैं और उसे तोड़ा नहीं गया कि अगर पानी न मिले तो बाक़ी हरियाली से पहले ही सूख जाता है। 13 यह है उनका अंजाम जो अल्लाह को भूल जाते हैं, इसी तरह बेदीन की उम्मीद जाती रहती है। 14 जिस पर वह एतमाद करता है वह निहायत ही नाज़ुक है, जिस पर उसका भरोसा है वह मकड़ी के जाले जैसा कमज़ोर है। 15 जब वह जाले पर टेक लगाए तो खड़ा नहीं रहता, जब उसे पकड़ ले तो कायम नहीं रहता।

16 बेदीन धूप में शादाब बेल की मानिंद है। उस की कोंपलें चारों तरफ़ फैल जाती, 17 उस की जड़ें पत्थर के ढेर पर छाकर उनमें टिक जाती हैं। 18 लेकिन अगर उसे उखाड़ा जाए तो जिस जगह पहले उग रही थी वह उसका इनकार करके कहेगी, ‘मैंने तुझे कभी देखा भी नहीं।’ 19 यह है उस की राह की नाम-निहाद खुशी! जहाँ पहले था वहाँ दीगर पौदे ज़मीन से फूट निकलेंगे।

20 यक़ीनन अल्लाह बेइलज़ाम आदमी को मुस्तरद नहीं करता, यक़ीनन वह शरीर आदमी के हाथ मज़बूत नहीं करता। 21 वह एक बार फिर तुझे ऐसी खुशी बख़्शेगा कि तू हँस उठेगा और शादमानी के नारे लगाएगा। 22 जो तुझसे नफ़रत करते हैं वह शर्म से मुलबबस हो जाएंगे, और बेदीनों के ख़ैमे नेस्तो-नाबूद होंगे।”

9

अय्यूब का जवाब : सालिस के बग़ैर मैं रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता

1 अय्यूब ने जवाब देकर कहा,

2 “मैं ख़ूब जानता हूँ कि तेरी बात दुस्त है। लेकिन अल्लाह के हुज़ूर इनसान किस तरह रास्तबाज़ ठहर सकता है? 3 अगर वह अदालत में अल्लाह के साथ लड़ना चाहे तो उसके हज़ार सवालात पर एक का भी जवाब नहीं दे सकेगा। 4 अल्लाह का दिल दानिशमंद और उस की कुदरत अज़ीम है। कौन कभी उससे बहस-मुबाहसा करके कामयाब रहा है?

5 अल्लाह पहाड़ों को खिसका देता है, और उन्हें पता ही नहीं चलता। वह गुस्से में आकर उन्हें उलटा देता है। 6 वह ज़मीन को हिला देता है तो वह लरज़कर अपनी जगह से हट जाती है, उसके बुनियादी सतून काँप उठते हैं। 7 वह सूरज को हुक्म देता है तो तुलू नहीं होता, सितारों पर मुहर लगाता है तो उनकी चमक-दमक बंद हो जाती है।

8 अल्लाह ही आसमान को ख़ैमे की तरह तान देता, वही समुंदरी अज़दहे की पीठ को पाँवों तले कुचल देता है। 9 वही दुब्बे-अकबर, जौज़े, खोशाए-परवीन और जुनबी सितारों के झरमुटों का खालिक है। 10 वह इतने अज़ीम काम करता है कि कोई उनकी तह तक नहीं पहुँच सकता, इतने मोजिज़े करता है कि कोई उन्हें गिन नहीं सकता। 11 जब वह मेरे सामने से गुज़रे तो मैं उसे नहीं देखता, जब वह मेरे करीब से फिरे तो मुझे मालूम नहीं होता। 12 अगर वह कुछ छीन ले तो कौन उसे रोकेगा? कौन उससे कहेगा, ‘तू क्या कर रहा है?’ 13 अल्लाह तो अपना गज़ब नाज़िल करने से बाज़ नहीं आता। उसके रोब तले रहब अज़दहे के मददगार भी दबक गए।

14 तो फिर मैं किस तरह उसे जवाब दूँ, किस तरह उससे बात करने के मुनासिब अलफ़ाज़ चुन लूँ? 15 अगर मैं हक़ पर होता भी तो अपना दिफ़ा न कर सकता। इस मुख़ालिफ़ से मैं इल्तिज़ा करने के अलावा और कुछ नहीं कर सकता। 16 अगर वह मेरी चीखों का जवाब देता भी तो मुझे यक़ीन न आता कि वह मेरी बात पर ध्यान देगा।

17 थोड़ी-सी ग़लती के जवाब में वह मुझे पाश पाश करता, बिलावज़ह मुझे बार बार ज़ख़मी करता है। 18 वह मुझे साँस भी नहीं लेने देता बल्कि कड़वे ज़हर से सेर कर देता है। 19 जहाँ ताक़त की बात है तो वही क़वी है, जहाँ इनसाफ़ की बात है तो कौन उसे पेशी के लिए बुला सकता है? 20 गो मैं बेगुनाह हूँ तो भी मेरा अपना मुँह मुझे कुसूरवार ठहराएगा, गो बेइलज़ाम हूँ तो भी वह मुझे मुजरिम करार देगा।

21 जो कुछ भी हो, मैं बेइलज़ाम हूँ! मैं अपनी जान की परवा ही नहीं करता, अपनी ज़िंदगी हक़ीर जानता हूँ। 22 ख़ैर, एक ही बात है, इसलिए मैं कहता हूँ, 'अल्लाह बेइलज़ाम और बेदीन दोनों को ही हलाक कर देता है।' 23 जब कभी अचानक कोई आफ़त इनसान को मौत के घाट उतारे तो अल्लाह बेगुनाह की परेशानी पर हँसता है। 24 अगर कोई मुल्क बेदीन के हवाले किया जाए तो अल्लाह उसके काज़ियों की आँखें बंद कर देता है। अगर यह उस की तरफ़ से नहीं तो फिर किसकी तरफ़ से है?

25 मेरे दिन दौड़नेवाले आदमी से कहीं ज़्यादा तेज़ी से बीत गए, ख़ुशी देखे बग़ैर भाग निकले हैं। 26 वह सरकंडे के बहरी जहाज़ों की तरह गुज़र गए हैं, उस उकाब की तरह जो अपने शिकार पर झपट्टा मारता है। 27 अगर मैं कहूँ, 'आओ मैं अपनी आँहें भूल जाऊँ, अपने चेहरे की उदासी दूर करके ख़ुशी का इज़हार करूँ' 28 तो फिर भी मैं उन तमाम तकालीफ़ से डरता हूँ जो मुझे बरदाश्त करनी हैं। क्योंकि मैं जानता हूँ कि तू मुझे बेगुनाह नहीं ठहराता।

29 जो कुछ भी हो मुझे कुसूरवार ही करार दिया गया है, चुनौचे इसका क्या फ़ायदा कि मैं बेमानी तगो-दौ में मसरूफ़ रहूँ? 30 गो मैं साबुन से नहा लूँ और अपने हाथ सोडे * से धो लूँ 31 ताहम तू मुझे गढ़े की कीचड़ में यों धँसने देता है कि मुझे अपने कपड़ों से घिन आती है।

32 अल्लाह तो मुझ जैसा इनसान नहीं कि मैं जवाब में उससे कहूँ, 'आओ हम अदालत में जाकर एक दूसरे का मुकाबला करें।' 33 काश हमारे दरमियान सालिस हो जो हम दोनों पर हाथ रखे, 34 जो मेरी पीठ पर से अल्लाह का डंडा हटाए ताकि उसका ख़ौफ़ मुझे दहशतज़दा न करे। 35 तब मैं अल्लाह से ख़ौफ़ खाए बग़ैर बोलता, क्योंकि फ़ितरी तौर पर मैं ऐसा नहीं हूँ।

10

मुझे अपनी जान से घिन आती है

1 मुझे अपनी जान से घिन आती है। मैं आज़ादी से आहो-ज़ारी करूँगा, खुले तौर पर अपना दिली ग़म बयान करूँगा। 2 मैं अल्लाह से कहूँगा कि मुझे मुजरिम न ठहरा बल्कि बता कि तेरा मुझ पर क्या इलज़ाम है। 3 क्या तू जुल्म करके मुझे रद्द करने में ख़ुशी महसूस करता है हालाँकि तेरे अपने ही हाथों ने मुझे बनाया? साथ साथ तू बेदीनों के मनसूबों पर अपनी मंज़ूरी का नूर चमकाता है। क्या यह तुझे अच्छा लगता है? 4 क्या तेरी आँखें इनसानी हैं? क्या तू सिर्फ़ इनसान की-सी नज़र से देखता है? 5 क्या तेरे दिन और साल फ़ानी इनसान जैसे महदूद हैं? हरगिज़ नहीं! 6 तो फिर क्या ज़रूरत है कि तू मेरे कुसूर की तलाश और मेरे गुनाह की तहक़ीक़ करता रहे? 7 तू तो जानता है कि मैं बेकुसूर हूँ और कि तेरे हाथ से कोई बचा नहीं सकता।

8 तेरे अपने हाथों ने मुझे तश्कील देकर बनाया। और अब तूने मुडकर मुझे तबाह कर दिया है। 9 ज़रा इसका खयाल रख कि तूने मुझे मिट्टी से बनाया। अब तू मुझे दुबारा खाक में तबदील कर रहा है। 10 तूने खुद मुझे दूध की तरह उंडेलकर पनीर की तरह जमने दिया। 11 तू ही ने मुझे जिल्द और गोश्त-पोस्त से मुलबबस किया, हड्डियों और नसों से तैयार किया। 12 तू ही ने मुझे ज़िंदगी और अपनी मेहरबानी से नवाज़ा, और तेरी देख-भाल ने मेरी रूह को महफूज़ रखा।

13 लेकिन एक बात तूने अपने दिल में छुपाए रखी, हों मुझे तेरा इरादा मालूम हो गया है। 14 वह यह है कि 'अगर अय्यूब गुनाह करे तो मैं उस की पहरादारी करूँगा। मैं उसे उसके कुसूर से बरी नहीं करूँगा।'

15 अगर मैं कुसूरवार हूँ तो मुझ पर अफ़सोस! और अगर मैं बेगुनाह भी हूँ ताहम मैं अपना सर उठाने की ज़रूरत नहीं करता, क्योंकि मैं शर्म खा खाकर सेर हो गया हूँ। मुझे ख़ूब मुसीबत पिलाई गई है। 16 और अगर मैं खड़ा भी हो जाऊँ तो तू शेरबबर की तरह मेरा शिकार करता और मुझ पर दुबारा अपनी मोजिज़ाना कुदरत का इज़हार करता है। 17 तू मेरे खिलाफ़ नए गवाहों को खड़ा करता और मुझ पर अपने गज़ब में इज़ाफ़ा करता है, तेरे लश्कर सफ़-दर-सफ़ मुझ पर हमला करते हैं। 18 तू मुझे मेरी माँ के पेट से क्यों निकाल लाया? बेहतर होता कि मैं उसी वक़्त मर जाता और किसी को नज़र न आता। 19 यों होता जैसा मैं कभी ज़िंदा ही न था, मुझे सीधा माँ के पेट से कब्र में पहुँचाया जाता। 20 क्या मेरे दिन थोड़े नहीं हैं? मुझे तनहा छोड़! मुझसे अपना मुँह फेर ले ताकि मैं चंद एक लमहों के लिए ख़ुश हो सकूँ, 21 क्योंकि जल्द ही मुझे कूच करके वहाँ जाना है जहाँ से कोई वापस नहीं आता, उस मुल्क में जिसमें तारीकी और घने साय रहते हैं। 22 वह मुल्क अंधेरा ही अंधेरा और काला ही काला है, उसमें घने साय और बेतरतीबी है। वहाँ रौशनी भी अंधेरा ही है।"

* 9:30 लफ़ज़ी मतलब : कलियाब, लाई (lye)।

11

जूफ़र का जवाब : तौबा कर

1 फिर जूफ़र नामाती ने जवाब देकर कहा,

2 “क्या इन तमाम बातों का जवाब नहीं देना चाहिए? क्या यह आदमी अपनी खाली बातों की बिना पर ही रास्तबाज़ ठहरेगा? 3 क्या तेरी बेमानी बातें लोगों के मुँह यों बंद करेंगी कि तू आज़ादी से लान-तान करता जाए और कोई तुझे शरमिंदा न कर सके? 4 अल्लाह से तू कहता है, ‘मेरी तालीम पाक है, और तेरी नज़र में मैं पाक-साफ़ हूँ।’

5 काश अल्लाह खुद तेरे साथ हमकलाम हो, वह अपने होंटों को खोलकर तुझसे बात करे! 6 काश वह तेरे लिए हिकमत के भेद खोले, क्योंकि वह इनसान की समझ के नज़दीक मोजिज़े से हैं। तब तू जान लेता कि अल्लाह तेरे गुनाह का काफी हिस्सा दरगुज़र कर रहा है।

7 क्या तू अल्लाह का राज़ खोल सकता है? क्या तू कादिरे-मुतलक के कामिल इल्म तक पहुँच सकता है? 8 वह तो आसमान से बुलंद है, चुनौचे तू क्या कर सकता है? वह पाताल से गहरा है, चुनौचे तू क्या जान सकता है? 9 उस की लंबाई ज़मीन से बड़ी और चौड़ाई समुंदर से ज्यादा है।

10 अगर वह कहीं से गुज़रकर किसी को गिरिफ़्तार करे या अदालत में उसका हिसाब करे तो कौन उसे रोकेंगा? 11 क्योंकि वह फ़रेबदेह आदमियों को जान लेता है, जब भी उसे बुराई नज़र आए तो वह उस पर ख़ूब ध्यान देता है। 12 अक्ल से खाली आदमी किस तरह समझ पा सकता है? यह उतना ही नामुमकिन है जितना यह कि जंगली गधे से इनसान पैदा हो।

13 ऐ अय्यूब, अपना दिल पूरे ध्यान से अल्लाह की तरफ़ मायल कर और अपने हाथ उस की तरफ़ उठा! 14 अगर तेरे हाथ गुनाह में मुलव्वस हों तो उसे दूर कर और अपने ख़ैमे में बुराई बसने न दे! 15 तब तू बेइलज़ाम हालत में अपना चेहरा उठा सकेगा, तू मज़बूती से खड़ा रहेगा और डरेगा नहीं। 16 तू अपना दुख-दर्द भूल जाएगा, और वह सिर्फ़ गुज़रे सैलाब की तरह याद रहेगा। 17 तेरी ज़िंदगी दोपहर की तरह चमकदार, तेरी तारीकी सुबह की मानिंद रौशन हो जाएगी। 18 चूँकि उम्मीद होगी इसलिए तू महफूज़ होगा और सलामती से लेट जाएगा। 19 तू आराम करेगा, और कोई तुझे दहशतज़दा नहीं करेगा बल्कि बहुत लोग तेरी नज़रे-इनायत हासिल करने की कोशिश करेंगे। 20 लेकिन बेदीनों की आँखें नाकाम हो जाएँगी, और वह बच नहीं सकेंगे। उनकी उम्मीद मायूसकुन होगी।” *

12

अय्यूब का जवाब : मैं मज़ाक़ का निशाना बन गया हूँ

1 अय्यूब ने जवाब देकर कहा,

2 “लगता है कि तुम ही वाहिद दानिशमंद हो, कि हिकमत तुम्हारे साथ ही मर जाएगी। 3 लेकिन मुझे समझ है, इस नाते से मैं तुमसे अदना नहीं हूँ। वैसे भी कौन ऐसी बातें नहीं जानता? 4 मैं तो अपने दोस्तों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गया हूँ, मैं जिसकी दुआएँ अल्लाह सुनता था। हाँ, मैं जो बेगुनाह और बेइलज़ाम हूँ दूसरों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गया हूँ! 5 जो सुकून से ज़िंदगी गुज़ारता है वह मुसीबतज़दा को हकीर जानता है। वह कहता है, ‘आओ, हम उसे ठोकर मारें जिसके पाँव डगमगाने लगे हैं।’ 6 ग़ारतग़रों के ख़ैमों में आरामो-सुकून है, और अल्लाह को तैश दिलानेवाले हिफ़ाज़त से रहते हैं, गो वह अल्लाह के हाथ में हैं।

7 ताहम तुम कहते हो कि जानवरों से पूछ ले तो वह तुझे सहीह बात सिखाएँगे। परिदों से पता कर तो वह तुझे दुस्त जवाब देंगे। 8 ज़मीन से बात कर तो वह तुझे तालीम देगी, बल्कि समुंदर की मछलियाँ भी तुझे इसका मफ़हम सुनाएँगी। 9 इनमें से एक भी नहीं जो न जानता हो कि रब के हाथ ने यह सब कुछ किया है। 10 उसी के हाथ में हर जानदार की जान, तमाम इनसानों का दम है। 11 कान तो अलफ़ाज़ की यों जाँच-पड़ताल करता है जिस तरह ज़बान खानों में इम्तियाज़ करती है। 12 और हिकमत उनमें पाई जाती है जो उम्ररसीदा हैं, समझ मुतअदिद दिन गुज़रने के बाद ही आती है।

13 हिकमत और कुदरत अल्लाह की है, वही मसलहत और समझ का मालिक है। 14 जो कुछ वह ढा दे वह दुबारा तामीर नहीं होगा, जिसे वह गिरिफ़्तार करे उसे आज़ाद नहीं किया जाएगा। 15 जब वह पानी रोके तो काल पड़ता है, जब उसे खुला छोड़े तो वह मुल्क में तबाही मचा देता है।

16 उसके पास कुव्वत और दानाई है। भटकने और भटकानेवाला दोनों ही उसके हाथ में हैं। 17 मुशीरों को वह नंगे पाँव अपने साथ ले जाता है, काज़ियों को अहमक़ साबित करता है। 18 वह बादशाहों का पटका खोलकर उनकी कमरों में रस्सा बाँधता है। 19 इमामों को वह नंगे पाँव अपने साथ ले जाता है, मज़बूती से खड़े आदमियों को तबाह करता है। 20 काबिले-एतमाद अफ़राद से वह बोलने की काबिलियत और बुजुर्गों से इम्तियाज़ करने की लियाक़त छीन लेता है। 21 वह शुरफ़ा पर अपनी हिकारत का इज़हार करके ज़ोरावरों का पटका खोल देता है।

22 वह अंधेरे के पोशीदा भेद खोल देता और गहरी तारीकी को रौशनी में लाता है। 23 वह कौमों को बड़ा भी बनाता और तबाह भी करता है, उम्मतों को मुंतशिर भी करता और उनकी कियादत भी करता है। 24 वह मुल्क के राहनुमाओं को अक्ल से महरूम करके उन्हें ऐसे बयाबान में

* 11:20 या उनकी वाहिद उम्मीद इसमें होगी कि दम छोड़ें।

आवारा फिरने देता है जहाँ रास्ता ही नहीं। ²⁵ तब वह अंधेरे में रौशनी के बगैर टटोल टटोलकर घूमते हैं। अल्लाह ही उन्हें नशे में धुत शराबियों की तरह भटकने देता है।

13

¹ यह सब कुछ मैंने अपनी आँखों से देखा, अपने कानों से सुनकर समझ लिया है। ² इल्म के लिहाज से मैं तुम्हारे बराबर हूँ। इस नाते से मैं तुमसे कम नहीं हूँ। ³ लेकिन मैं कादिर-मुतलक से ही बात करना चाहता हूँ, अल्लाह के साथ ही मुबाहसा करने की आरजू रखता हूँ।

⁴ जहाँ तक तुम्हारा ताल्लुक है, तुम सब फ़रेबदेह लेप लगानेवाले और बेकार डाक्टर हो। ⁵ काश तुम सरासर खामोश रहते! ऐसा करने से तुम्हारी हिकमत कहीं ज्यादा ज़ाहिर होती। ⁶ मुबाहसे में ज़रा मेरा मौक़िफ़ सुनो, अदालत में मेरे बयानात पर गौर करो!

⁷ क्या तुम अल्लाह की खातिर कजरौ बातें पेश करते हो, क्या उसी की खातिर झूट बोलते हो? ⁸ क्या तुम उस की जानिबदारी करना चाहते हो, अल्लाह के हक़ में लड़ना चाहते हो? ⁹ सोच लो, अगर वह तुम्हारी जाँच करे तो क्या तुम्हारी बात बनेगी? क्या तुम उसे यों धोका दे सकते हो जिस तरह इनसान को धोका दिया जाता है?

¹⁰ अगर तुम खुफ़िया तौर पर भी जानिबदारी दिखाओ तो वह तुम्हें ज़रूर सख़्त सज़ा देगा। ¹¹ क्या उसका रोब तुम्हें ख़ौफ़ज़दा नहीं करेगा? क्या तुम उससे सख़्त दहशत नहीं खाओगे? ¹² फिर जिन कहावतों की याद तुम दिलाते रहते हो वह राख की अमसाल साबित होंगी, पता चलेगा कि तुम्हारी बातें मिट्टी के अलफ़ाज़ हैं।

¹³ ख़ामोश होकर मुझसे बाज़ आओ! जो कुछ भी मेरे साथ हो जाए, मैं बात करना चाहता हूँ। ¹⁴ मैं अपने आपको ख़तरे में डालने के लिए तैयार हूँ, मैं अपनी जान पर खेलूँगा। ¹⁵ शायद वह मुझे मार डाले। कोई बात नहीं, क्योंकि मेरी उम्मीद जाती रही है। जो कुछ भी हो मैं उसी के सामने अपनी राहों का दिफ़ा करूँगा। ¹⁶ और इसमें मैं पनाह लेता हूँ कि बेदीन उसके हुज़ूर आने की ज़रूरत नहीं करता।

¹⁷ ध्यान से मेरे अलफ़ाज़ सुनो, अपने कान मेरे बयानात पर धरो। ¹⁸ तुम्हें पता चलेगा कि मैंने एहतियात और तरतीब से अपना मामला तैयार किया है। मुझे साफ़ मालूम है कि मैं हक़ पर हूँ! ¹⁹ अगर कोई मुझे मुजरिम साबित कर सके तो मैं चुप हो जाऊँगा, दम छोड़ने तक ख़ामोश रहूँगा।

अय्युब की मायूसी में दुआ

²⁰ ऐ अल्लाह, मेरी सिर्फ़ दो दरखास्तें मंज़ूर कर ताकि मुझे तुझसे छुप जाने की ज़रूरत न हो। ²¹ पहले, अपना हाथ मुझसे दूर कर ताकि तेरा ख़ौफ़ मुझे दहशतज़दा न करे। ²² दूसरे, इसके बाद मुझे बुला ताकि मैं जवाब दूँ, या मुझे पहले बोलने दे और तू ही इसका जवाब दे।

²³ मुझसे कितने गुनाह और ग़लतियाँ हुई हैं? मुझ पर मेरा ज़ुर्म और मेरा गुनाह ज़ाहिर कर! ²⁴ तू अपना चेहरा मुझसे छुपाए क्यों रखता है? तू मुझे क्यों अपना दुश्मन समझता है? ²⁵ क्या तू हवा के झोंकों के उड़ाए हुए पत्ते को दहशत खिलाना चाहता, ख़ुशक भूसे का ताक्कुब करना चाहता है?

²⁶ यह तेरा ही फ़ैसला है कि मैं तलख़ तज़रबों से गुज़रूँ, तेरी ही मरज़ी है कि मैं अपनी जवानी के गुनाहों की सज़ा पाऊँ। * ²⁷ तू मेरे पाँवों को काठ में ठोंककर मेरी तमाम राहों की पहरादारी करता है। तू मेरे हर एक नक्शे-क़दम पर ध्यान देता है, ²⁸ गो मैं मै की घिसी-फटी मशक और कीड़ों का ख़राब किया हुआ लिबास हूँ।

14

¹ औरत से पैदा हुआ इनसान चंद एक दिन ज़िंदा रहता है, और उस की ज़िंदगी बेचैनी से भरी रहती है। ² फूल की तरह वह चंद लमहों के लिए फूट निकलता, फिर मुरझा जाता है। साय की तरह वह थोड़ी देर के बाद ओझल हो जाता और कायम नहीं रहता। ³ क्या तू वाकई एक ऐसी मख़लूक का इतने गौर से मुआयना करना चाहता है? मैं कौन हूँ कि तू मुझे पेशी के लिए अपने हुज़ूर लाए?

⁴ कौन नापाक चीज़ को पाक-साफ़ कर सकता है? कोई नहीं! ⁵ इनसान की उम्र तो मुक़र्रर हुई है, उसके महीनों की तादाद तुझे मालूम है, क्योंकि तू ही ने उसके दिनों की वह हद बाँधी है जिससे आगे वह बढ़ नहीं सकता। ⁶ चुनाँचे अपनी निगाह उससे फेर ले और उसे छोड़ दे ताकि वह मज़दूर की तरह अपने थोड़े दिनों से कुछ मज़ा ले सके।

⁷ अगर दरख़्त को काटा जाए तो उसे थोड़ी-बहुत उम्मीद बाकी रहती है, क्योंकि ऐन मुमकिन है कि मुठ से कोंपलें फूट निकलें और उस की नई शाखें उगती जाएँ। ⁸ बेशक उस की जड़ें पुरानी हो जाएँ और उसका मुठ मिट्टी में ख़त्म होने लगे, ⁹ लेकिन पानी की खुशबू सूँघते ही वह कोंपलें निकालने लगेगा, और पनीरी की-सी टहनियाँ उससे फूटने लगेंगी।

¹⁰ लेकिन इनसान फ़रक़ है। मरते वक़्त उस की हर तरह की ताक़त जाती रहती है, दम छोड़ते वक़्त उसका नामो-निशान तक नहीं रहता। ¹¹ वह उस झील की मानिंद है जिसका पानी ओझल हो जाए, उस नदी की मानिंद जो सुकड़कर ख़ुशक हो जाए। ¹² वफ़ात पानेवाले का यही हाल है। वह लेट जाता और कभी नहीं उठेगा। जब तक आसमान कायम है न वह जाग उठेगा, न उसे जगाया जाएगा।

¹³ काश तू मुझे पाताल में छुपा देता, मुझे वहाँ उस वक़्त तक पोशीदा रखता जब तक तेरा क़हर ठंडा न हो जाता! काश तू एक वक़्त मुक़र्रर करे जब तू मेरा दुबारा खयाल करेगा। ¹⁴ (क्योंकि अगर इनसान मर जाए तो क्या वह दुबारा ज़िंदा हो जाएगा?) फिर मैं अपनी सख़्त खिदमत

* **13:26** लफ़्ज़ी तरज़ुमा : मीरास में पाऊँ।

के तमाम दिन बरदाशत करता, उस वक्त तक इंतज़ार करता जब तक मेरी सबुकदोशी न हो जाती। 15 तब तू मुझे आवाज़ देता और मैं जवाब देता, तू अपने हाथों के काम का आरज़ूमंद होता। 16 उस वक्त भी तू मेरे हर कदम का शुमार करता, लेकिन न सिर्फ़ इस मकसद से कि मेरे गुनाहों पर ध्यान दे। 17 तू मेरे जरायम थैले में बाँधकर उस पर मुहर लगा देता, मेरी हर ग़लती को ढाँक देता।

18 लेकिन अफ़सोस! जिस तरह पहाड़ गिरकर चूर चूर हो जाता और चटान खिसक जाती है, 19 जिस तरह बहता पानी पत्थर को रगड़ रगड़कर ख़त्म करता और सैलाब मिट्टी को बहा ले जाता है उसी तरह तू इनसान की उम्मीद ख़ाक में मिला देता है। 20 तू मुकम्मल तौर पर उस पर ग़ालिब आ जाता तो वह कूच कर जाता है, तू उसका चेहरा बिगाड़कर उसे फ़ारिग कर देता है। 21 अगर उसके बच्चों को सरफ़राज़ किया जाए तो उसे पता नहीं चलता, अगर उन्हें पस्त किया जाए तो यह भी उसके इल्म में नहीं आता। 22 वह सिर्फ़ अपने ही जिस्म का दर्द महसूस करता और अपने लिए ही मातम करता है।”

15

इलीफ़ज़ का जवाब : अय्यूब कुफ़र बक रहा है

1 तब इलीफ़ज़ तेमानी ने जवाब देकर कहा,

2 “क्या दानिशमंद को जवाब में बेहदा खयालात पेश करने चाहिए? क्या उसे अपना पेट तपती मशरिकी हवा से भरना चाहिए? 3 क्या मुनासिब है कि वह फ़ज़ूल बहस-मुबाहसा करे, ऐसी बातें करे जो बेफ़ायदा हैं? हरगिज़ नहीं!

4 लेकिन तेरा ख़ैया इससे कहीं बुरा है। तू अल्लाह का ख़ौफ़ छोड़कर उसके हुज़ूर ग़ौरो-ख़ौज़ करने का फ़र्ज़ हकीर जानता है। 5 तेरा कुसूर ही तेरे मुँह को ऐसी बातें करने की तहरीक दे रहा है, इसी लिए तूने चालाकों की ज़बान अपना ली है। 6 मुझे तुझे कुसूरवार ठहराने की ज़रूरत ही नहीं, क्योंकि तेरा अपना ही मुँह तुझे मुजरिम ठहराता है, तेरे अपने ही होंट तेरे खिलाफ़ गवाही देते हैं।

7 क्या तू सबसे पहले पैदा हुआ इनसान है? क्या तूने पहाड़ों से पहले ही जन्म लिया? 8 जब अल्लाह की मजलिस मुनअक़िद हो जाए तो क्या तू भी उनकी बातें सुनता है? क्या सिर्फ़ तुझे ही हिकमत हासिल है? 9 तू क्या जानता है जो हम नहीं जानते? तुझे किस बात की समझ आई है जिसका इल्म हम नहीं रखते? 10 हमारे दरमियान भी उम्रसिदा बुजुर्ग हैं, ऐसे आदमी जो तेरे वालिद से भी बूढ़े हैं।

11 ऐ अय्यूब, क्या तेरी नज़र में अल्लाह की तसल्ली देनेवाली बातों की कोई अहमियत नहीं? क्या तू इसकी क़दर नहीं कर सकता कि नरमी से तुझसे बात की जा रही है? 12 तेरे दिल के जज़बात तुझे यों उड़ाकर क्यों ले जाएँ, तेरी आँखें क्यों इतनी चमक उठें 13 कि आखिरकार तू अपना गुस्सा अल्लाह पर उतारकर ऐसी बातें अपने मुँह से उगल दे?

14 भला इनसान क्या है कि पाक-साफ़ ठहरे? औरत से पैदा हुई मखलूक क्या है कि रास्तबाज़ साबित हो? कुछ भी नहीं! 15 अल्लाह तो अपने मुक़द्दस ख़ादिमों पर भी भरोसा नहीं रखता, बल्कि आसमान भी उस की नज़र में पाक नहीं है। 16 तो फिर वह इनसान पर भरोसा क्यों रखे जो क़ाबिले-धिन और बिगड़ा हुआ है, जो बुराई को पानी की तरह पी लेता है।

17 मेरी बात सुन, मैं तुझे कुछ सुनाना चाहता हूँ। मैं तुझे वह कुछ बयान करूँगा जो मुझ पर ज़ाहिर हुआ है, 18 वह कुछ जो दानिशमंदों ने पेश किया और जो उन्हें अपने बापदादा से मिला था। उनसे कुछ छुपाया नहीं गया था। 19 (बापदादा से मुराद वह वाहिद लोग हैं जिन्हें उस वक्त मुल्क दिया गया जब कोई भी परदेसी उनमें नहीं फिरता था)।

20 वह कहते थे, बेदीन अपने तमाम दिन डर के मारे तड़पता रहता, और जितने भी साल ज़ालिम के लिए महफूज़ रखे गए हैं उतने ही साल वह पेचो-ताब खाता रहता है। 21 दहशतनाक आवाज़ें उसके कानों में गूँजती रहती हैं, और अमनो-अमान के वक्त ही तबाही मचानेवाला उस पर टूट पड़ता है। 22 उसे अंधेरे से बचने की उम्मीद ही नहीं, क्योंकि उसे तलवार के लिए तैयार रखा गया है।

23 वह मारा मारा फिरता है, आखिरकार वह गिद्धों की खोराक बनेगा। उसे ख़ुद इल्म है कि तारीकी का दिन करीब ही है। 24 तंगी और मुसीबत उसे दहशत खिलाती, हमलाआवर बादशाह की तरह उस पर ग़ालिब आती हैं। 25 और वजह क्या है? यह कि उसने अपना हाथ अल्लाह के खिलाफ़ उठाया, कादिर-मुतलक के सामने तकब्बुर दिखाया है। 26 अपनी मोटी और मज़बूत ढाल की पनाह में अकड़कर वह तेज़ी से अल्लाह पर हमला करता है।

27 गो इस वक्त उसका चेहरा चरबी से चमकता और उस की कमर मोटी है, 28 लेकिन आइंदा वह तबाहशुदा शहरों में बसेगा, ऐसे मकानों में जो सबके छोड़े हुए हैं और जो जल्द ही पत्थर के ढेर बन जाएंगे। 29 वह अमीर नहीं होगा, उस की दौलत कायम नहीं रहेगी, उस की जायदाद मुल्क में फैली नहीं रहेगी।

30 वह तारीकी से नहीं बचेगा। शोला उस की कोंपलों को मुरझाने देगा, और अल्लाह उसे अपने मुँह की एक फूँक से उड़ाकर तबाह कर देगा। 31 वह धोके पर भरोसा न करे, वरना वह भटक जाएगा और उसका अज़्र धोका ही होगा। 32 वक्त से पहले ही उसे इसका पूरा मुआवज़ा मिलेगा, उस की कोंपल कभी नहीं फले-फूलेगी।

33 वह अंगूर की उस बेल की मानिंद होगा जिसका फल कच्ची हालत में ही गिर जाए, जैतून के उस दरख़्त की मानिंद जिसके तमाम फूल झड़ जाएँ। 34 क्योंकि बेदीनों का जत्था बंजर रहेगा, और आग रिश्वतख़ोरों के खैमों को भस्म करेगी। 35 उनके पाँव दुख-दर्द से भारी हो जाते, और वह बुराई को जन्म देते हैं। उनका पेट धोका ही पैदा करता है।”

16

अय्यूब का जवाब : मैं बेगुनाह हूँ

1 अय्यूब ने जवाब देकर कहा,

2 “इस तरह की मैंने बहुत-सी बातें सुनी हैं, तुम्हारी तसल्ली सिर्फ दुख-दर्द का बाइस है। 3 क्या तुम्हारी लफ्फाज़ी कभी खत्म नहीं होगी? तुझे क्या चीज़ बेचैन कर रही है कि तू मुझे जवाब देने पर मजबूर है? 4 अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो मैं भी तुम्हारी जैसी बातें कर सकता। फिर मैं भी तुम्हारे खिलाफ पुरअलफ़ाज़ तकरीरें पेश करके तौबा तौबा कह सकता। 5 लेकिन मैं ऐसा न करता। मैं तुम्हें अपनी बातों से तकवियत देता, अफ़सोस के इज़हार से तुम्हें तसकीन देता। 6 लेकिन मेरे साथ ऐसा सुलूक नहीं हो रहा। अगर मैं बोलूँ तो मुझे सुकून नहीं मिलता, अगर चुप रहूँ तो मेरा दर्द दूर नहीं होता।

7 लेकिन अब अल्लाह ने मुझे थका दिया है, उसने मेरे पूरे घराने को तबाह कर दिया है। 8 उसने मुझे सुकड़ने दिया है, और यह बात मेरे खिलाफ़ गवाह बन गई है। मेरी दुबली-पतली हालत खड़ी होकर मेरे खिलाफ़ गवाही देती है। 9 अल्लाह का ग़ज़ब मुझे फाड़ रहा है, वह मेरा दुश्मन और मेरा मुखालिफ़ बन गया है जो मेरे खिलाफ़ दाँत पीस पीसकर मुझे अपनी आँखों से छेद रहा है। * 10 लोग गला फाड़कर मेरा मज़ाक़ उड़ाते, मेरे गाल पर थपड़ मारकर मेरी बेइज़्जती करते हैं। सबके सब मेरे खिलाफ़ मुतहिद हो गए हैं। 11 अल्लाह ने मुझे शरीरों के हवाले कर दिया, मुझे बेदीनों के चंगुल में फँसा दिया है। 12 मैं सुकून से ज़िंदगी गुज़ार रहा था कि उसने मुझे पाश पाश कर दिया, मुझे गले से पकड़कर ज़मीन पर पटख़ दिया। उसने मुझे अपना निशाना बना लिया, 13 फिर उसके तीरअंदाज़ों ने मुझे घेर लिया। उसने बेरहमी से मेरे गुरदों को चीर डाला, मेरा पित ज़मीन पर उंडेल दिया। 14 बार बार वह मेरी किलाबंदी में रखना डालता रहा, पहलवान की तरह मुझ पर हमला करता रहा।

15 मैंने टाँके लगाकर अपनी जिल्द के साथ टाट का लिबास जोड़ लिया है, अपनी शानो-शौकत खाक में मिलाई है। 16 रो रोकर मेरा चेहरा सूज गया है, मेरी पलकों पर घना अंधेरा छा गया है। 17 लेकिन वजह क्या है? मेरे हाथ तो जुल्म से बरी रहे, मेरी दुआ पाक-साफ़ रही है।

18 ऐ ज़मीन, मेरे खून को मत ढाँपना! मेरी आहो-ज़ारी कभी आराम की जगह न पाए बल्कि गूँजती रहे। 19 अब भी मेरा गवाह आसमान पर है, मेरे हक़ में गवाही देनेवाला बुलंदियों पर है। 20 मेरी आहो-ज़ारी मेरा तरजुमान है, मैं बेखाबी से अल्लाह के इंतज़ार में रहता हूँ। 21 मेरी आहें अल्लाह के सामने फ़ानी इनसान के हक़ में बात करेंगी, उस तरह जिस तरह कोई अपने दोस्त के हक़ में बात करे। 22 क्योंकि थोड़े ही सालों के बाद मैं उस रास्ते पर रवाना हो जाऊँगा जिससे वापस नहीं आऊँगा।

17

अल्लाह से इत्तिजा

1 मेरी सह शिकस्ता हो गई, मेरे दिन बुझ गए हैं। कब्रिस्तान ही मेरे इंतज़ार में है। 2 मेरे चारों तरफ़ मज़ाक़ ही मज़ाक़ सुनाई देता, मेरी आँखें लोगों का हठधर्म रवैया देखते देखते थक गई हैं। 3 ऐ अल्लाह, मेरी ज़मानत मेरे अपने हाथों से कबूल फ़रमा, क्योंकि और कोई नहीं जो उसे दे। 4 उनके ज़हनों को तूने बंद कर दिया, इसलिए तो उनसे इज़्जत नहीं पाएगा। 5 वह उस आदमी की मानिंद है जो अपने दोस्तों को ज़ियाफ़त की दावत दे, हालाँकि उसके अपने बच्चे भूके मर रहे हों।

6 अल्लाह ने मुझे मज़ाक़ का यों निशाना बनाया है कि मैं क्रौमों में इब्रतअंगेज़ मिसाल बन गया हूँ। मुझे देखते ही लोग मेरे मुँह पर थकते हैं। 7 मेरी आँखें ग़म खा खाकर धुँधला गई हैं, मेरे आज्ञा यहाँ तक सूख गए कि साया ही रह गया है। 8 यह देखकर सीधी राह पर चलनेवालों के रोंगटे खड़े हो जाते और बेगुनाह बेदीनों के खिलाफ़ मुश्तइल हो जाते हैं। 9 रास्तबाज़ अपनी राह पर कायम रहते, और जिनके हाथ पाक हैं वह तकवियत पाते हैं। 10 लेकिन जहाँ तक तुम सबका ताल्लुक है, आओ दुबारा मुझ पर हमला करो! मुझे तुममें एक भी दाना आदमी नहीं मिलेगा।

11 मेरे दिन गुज़र गए हैं। मेरे वह मनस्खे और दिल की आरजुएँ खाक में मिल गई हैं 12 जिनसे रात दिन में बदल गई और रौशनी अंधेरे को दूर करके करीब आई थी। 13 अगर मैं सिर्फ़ इतनी ही उम्मीद रखूँ कि पाताल मेरा घर होगा तो यह कैसी उम्मीद होगी? अगर मैं अपना बिस्तर तारीकी में बिछाकर 14 कब्र से कहूँ, ‘तू मेरा बाप है’ और कीड़े से, ‘ऐ मेरी अम्मी, ऐ मेरी बहन’ 15 तो फिर यह कैसी उम्मीद होगी? कौन कहेगा, ‘मुझे तेरे लिए उम्मीद नज़र आती है’? 16 तब मेरी उम्मीद मेरे साथ पाताल में उतरेगी, और हम मिलकर खाक में धँस जाएंगे।”

18

बिलदद : अल्लाह बेदीनों को सज़ा देता है

1 बिलदद सूखी ने जवाब देकर कहा,

2 “तू कब तक ऐसी बातें करेगा? इनसे बाज़ आकर होश में आ! तब ही हम सही बात कर सकेंगे। 3 तू हमें डंगर जैसे अहमक़ क्यों समझता है? 4 गो तू आग-बग़ला होकर अपने आपको फाड़ रहा है, लेकिन क्या तेरे बाइस ज़मीन को वीरान होना चाहिए और चटानों को अपनी जगह से खिसकना चाहिए? हरगिज़ नहीं!

* 16:9 लफ्ज़ी तरजुमा : अपनी आँखें मेरे खिलाफ़ तेज़ करता है।

5 यक्रीनन बेदीन का चराग बुझ जाएगा, उस की आग का शोला आइंदा नहीं चमकेगा। 6 उसके खैमे में रौशनी अंधेरा हो जाएगी, उसके ऊपर की शमा बुझ जाएगी। 7 उसके लंबे कदम स्क स्ककर आगे बढ़ेंगे, और उसका अपना मनसूबा उसे पटख देगा।

8 उसके अपने पाँव उसे जाल में फँसा देते हैं, वह दाम पर ही चलता-फिरता है। 9 फंदा उस की एड़ी पकड़ लेता, कमंद उसे जकड़ लेती है। 10 उसे फँसाने का रस्सा ज़मीन में छुपा हुआ है, रास्ते में फंदा बिछा है।

11 वह ऐसी चीज़ों से घिरा रहता है जो उसे कदम बकदम दहशत खिलाती और उस की नाक में दम करती हैं। 12 आफत उसे हड़प कर लेना चाहती है, तबाही तैयार खड़ी है ताकि उसे गिरते वक़्त ही पकड़ ले। 13 बीमारी उस की जिल्द को खा जाती, मौत का पहलौठा उसके आज्ञा को निगल लेता है। 14 उसे उसके खैमे की हिफाज़त से छीन लिया जाता और घसीटकर दहशतों के बादशाह के सामने लाया जाता है।

15 उसके खैमे में आग बसती, उसके घर पर गंधक बिखर जाती है। 16 नीचे उस की जड़ें सूख जाती, ऊपर उस की शाखें मुरझा जाती हैं। 17 ज़मीन पर से उस की याद मिट जाती है, कहीं भी उसका नामो-निशान नहीं रहता।

18 उसे रौशनी से तारीकी में धकेला जाता, दुनिया से भगाकर खारिज किया जाता है। 19 क्रौम में उस की न औलाद न नसल रहेगी, जहाँ पहले रहता था वहाँ कोई नहीं बचेगा। 20 उसका अंजाम देखकर मगरिब के बाशिंदों के रोंगटे खड़े हो जाते और मशरिक के बाशिंदे दहशतज़दा हो जाते हैं। 21 यही है बेदीन के घर का अंजाम, उसी के मक़ाम का जो अल्लाह को नहीं जानता।”

19

अय्यूब : मैं जानता हूँ कि मेरा नजातदहिंदा ज़िंदा है

1 तब अय्यूब ने जवाब में कहा,

2 “तुम कब तक मुझ पर तशद्दु करना चाहते हो, कब तक मुझे अलफ़ाज़ से टुकड़े टुकड़े करना चाहते हो? 3 अब तुमने दस बार मुझे मलामत की है, तुमने शर्म किए बग़ैर मेरे साथ बदसलूकी की है। 4 अगर यह बात सही भी हो कि मैं ग़लत राह पर आ गया हूँ तो मुझे ही इसका नतीजा भुगतना है। 5 लेकिन चूँकि तुम मुझ पर अपनी सबक़त दिखाना चाहते और मेरी स्सवाई मुझे डॉटने के लिए इस्तेमाल कर रहे हो 6 तो फिर जान लो, अल्लाह ने खुद मुझे ग़लत राह पर लाकर अपने दाम से घेर लिया है।

7 गो मैं चीख़कर कहूँ, ‘मुझ पर जुल्म हो रहा है,’ लेकिन जवाब कोई नहीं मिलता। गो मैं मदद के लिए पुकारूँ, लेकिन इनसाफ़ नहीं पाता। 8 उसने मेरे रास्ते में ऐसी दीवार खड़ी कर दी कि मैं गुज़र नहीं सकता, उसने मेरी राहों पर अंधेरा ही छा जाने दिया है। 9 उसने मेरी इज़्ज़त मुझसे छीनकर मेरे सर से ताज उतार दिया है। 10 चारों तरफ़ से उसने मुझे ढा दिया तो मैं तबाह हुआ। उसने मेरी उम्मीद को दरख़्त की तरह जड़ से उखाड़ दिया है। 11 उसका क़हर मेरे खिलाफ़ भड़क उठा है, और वह मुझे अपने दुश्मनों में शुमार करता है। 12 उसके दस्ते मिलकर मुझ पर हमला करने आए हैं। उन्होंने मेरी फ़सील के साथ मिट्टी का ढेर लगाया है ताकि उसमें रखना डालें। उन्होंने चारों तरफ़ से मेरे खैमे का मुहासरा किया है।

13 मेरे भाइयों को उसने मुझसे दूर कर दिया, और मेरे जाननेवालों ने मेरा हुक्का-पानी बंद कर दिया है। 14 मेरे रिश्तेदारों ने मुझे तर्क कर दिया, मेरे करीबी दोस्त मुझे भूल गए हैं। 15 मेरे दामनगीर और नौकरानियाँ मुझे अजनबी समझते हैं। उनकी नज़र में मैं अजनबी हूँ। 16 मैं अपने नौकर को बुलाता हूँ तो वह जवाब नहीं देता। गो मैं अपने मुँह से उससे इल्तिजा करूँ तो भी वह नहीं आता।

17 मेरी बीवी मेरी जान से घिन खाती है, मेरे सगे भाई मुझे मक़रूह समझते हैं। 18 यहाँ तक कि छोटे बच्चे भी मुझे हकीर जानते हैं। अगर मैं उठने की कोशिश करूँ तो वह अपना मुँह दूसरी तरफ़ फेर लेते हैं। 19 मेरे दिली दोस्त मुझे कराहियत की निगाह से देखते हैं, जो मुझे प्यारे थे वह मेरे मुखालिफ़ हो गए हैं। 20 मेरी जिल्द सुकड़कर मेरी हड्डियों के साथ जा लगी है। मैं मौत से बाल बाल बच गया हूँ। *

21 मेरे दोस्तों, मुझ पर तरस खाओ, मुझ पर तरस खाओ। क्योंकि अल्लाह ही के हाथ ने मुझे मारा है। 22 तुम क्यों अल्लाह की तरह मेरे पीछे पड़ गए हो, क्यों मेरा गोश्त खा खाकर सेर नहीं होते?

23 काश मेरी बातें कलमबंद हो जाएँ! काश वह यादगार पर कंदा की जाएँ, 24 लोहे की छैनी और सीसे से हमेशा के लिए पत्थर में नक्श की जाएँ! 25 लेकिन मैं जानता हूँ कि मेरा छुड़ानेवाला ज़िंदा है और आखिरकार मेरे हक़ में ज़मीन पर खड़ा हो जाएगा, 26 गो मेरी जिल्द यों उतारी भी गई हो। लेकिन मेरी आरजू है कि जिस्म में होते हुए अल्लाह को देखूँ, 27 कि मैं खुद ही उसे देखूँ, न कि अजनबी बल्कि अपनी ही आँखों से उस पर निगाह करूँ। इस आरजू की शिद्दत से मेरा दिल तबाह हो रहा है।

28 तुम कहते हो, ‘हम कितनी सरज़्ती से अय्यूब का ताक्कुब करेंगे’ और ‘मसले की जड़ तो उसी में पिनहाँ है।’ 29 लेकिन तुम्हें खुद तलवार से डरना चाहिए, क्योंकि तुम्हारा गुस्सा तलवार की सज़ा के लायक़ है, तुम्हें जानना चाहिए कि अदालत आनेवाली है।”

20

ज़ूफ़र : ग़लत काम की मुंसिफ़ाना सज़ा दी जाएगी

1 तब ज़ूफ़र नामाती ने जवाब देकर कहा,

* 19:20 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : ‘मेरे दाँतों की जिल्द ही बच गई है।’ मतलब मुबहम-सा है।

2 “यक्रीनन मेरे मुजतरिब खयालात और वह एहसासात जो मेरे अंदर से उभर रहे हैं मुझे जवाब देने पर मजबूर कर रहे हैं। 3 मुझे ऐसी नसीहत सुननी पड़ी जो मेरी बेइज्जती का बाइस थी, लेकिन मेरी समझ मुझे जवाब देने की तहरीक दे रही है।

4 क्या तुझे मालूम नहीं कि कदीम ज़माने से यानी जब से इनसान को ज़मीन पर रखा गया 5 शरीर का फ़तहमंद नारा आरिज़ी और बेदीन की खुशी पल-भर की साबित हुई है? 6 गो उसका कदो-कामत आसमान तक पहुँचे और उसका सर बादलों को छुए 7 ताहम वह अपने फुज्जे की तरह अबद तक तबाह हो जाएगा। जिन्होंने उसे पहले देखा था वह पूछेंगे, ‘अब वह कहाँ है?’

8 वह खाब की तरह उड़ जाता और आइंदा कहीं नहीं पाया जाएगा, उसे रात की रोया की तरह भुला दिया जाता है। 9 जिस आँख ने उसे देखा वह उसे आइंदा कभी नहीं देखेगी। उसका घर दुबारा उसका मुशाहदा नहीं करेगा। 10 उस की औलाद को गरीबों से भीक माँगनी पड़ेगी, उसके अपने हाथों को दौलत वापस देनी पड़ेगी। 11 जवानी की जिस ताकत से उस की हड्डियाँ भरी हैं वह उसके साथ ही खाक में मिल जाएगी।

12 बुराई बेदीन के मुँह में मीठी है। वह उसे अपनी ज़बान तले छुपाए रखता, 13 उसे महफूज़ रखकर जाने नहीं देता। 14 लेकिन उस की खुराक पेट में आकर खराब हो जाती बल्कि साँप का ज़हर बन जाती है। 15 जो दौलत उसने निगल ली उसे वह उगल देगा, अल्लाह ही यह चीज़ें उसके पेट से खारिज करेगा। 16 उसने साँप का ज़हर चूस लिया, और साँप ही की ज़बान उसे मार डालेगी। 17 वह नदियों से लुफ़अंदोज़ नहीं होगा, शहद और बालाई की नहरों से मज़ा नहीं लेगा। 18 जो कुछ उसने हासिल किया उसे वह हज़म नहीं करेगा बल्कि सब कुछ वापस करेगा। जो दौलत उसने अपने कारोबार से कमाई उससे वह लुफ़ नहीं उठाएगा। 19 क्योंकि उसने पस्तहालों पर जुल्म करके उन्हें तर्क किया है, उसने ऐसे घरों को छीन लिया है जिन्हें उसने तामीर नहीं किया था। 20 उसने पेट में कभी सुकून महसूस नहीं किया बल्कि जो कुछ भी चाहता था उसे बचने नहीं दिया। 21 जब वह खाना खाता है तो कुछ नहीं बचता, इसलिए उस की खुशहाली कायम नहीं रहेगी। 22 ज्योंही उसे कसरत की चीज़ें हासिल होंगी वह मुसीबत में फँस जाएगा। तब दुख-दर्द का पूरा जोर उस पर आएगा। 23 काश अल्लाह बेदीन का पेट भरकर अपना भड़कता क्रहर उस पर नाज़िल करे, काश वह अपना ग़ज़ब उस पर बरसाए।

24 गो वह लोहे के हथियार से भाग जाए, लेकिन पीतल का तीर उसे चीर डालेगा। 25 जब वह उसे अपनी पीठ से निकाले तो तीर की नोक उसके कलेजे में से निकलेगी। उसे दहशतनाक वाकियात पेश आएँगे। 26 गहरी तारीकी उसके खज़ानों की ताक में बैठी रहेगी। ऐसी आग जो इनसानों ने नहीं लगाई उसे भस्म करेगी। उसके खैमे के जितने लोग बच निकले उन्हें वह खा जाएगी। 27 आसमान उसे मुजरिम ठहराएगा, ज़मीन उसके खिलाफ़ गवाही देने के लिए खड़ी हो जाएगी। 28 सैलाब उसका घर उड़ा ले जाएगा, ग़ज़ब के दिन शिदत से बहता हुआ पानी उस पर से गुज़रेगा। 29 यह है वह अज़्र जो अल्लाह बेदीनों को देगा, वह विरासत जिसे अल्लाह ने उनके लिए मुकर्रर की है।”

21

अय्युब : बहुत दफ़ा बेदीनों को सज़ा नहीं मिलती

1 फिर अय्युब ने जवाब में कहा,

2 “ध्यान से मेरे अलफ़ाज़ सुनो! यही करने से मुझे तसल्ली दो! 3 जब तक मैं अपनी बात पेश न करूँ मुझे बरदाश्त करो, इसके बाद अगर चाहो तो मेरा मज़ाक़ उड़ाओ। 4 क्या मैं किसी इनसान से एहतजाज कर रहा हूँ? हरगिज़ नहीं! तो फिर क्या अजब कि मेरी रूह इतनी तंग आ गई है। 5 मुझ पर नज़र डालो तो तुम्हारे रोंगटे खड़े हो जाएंगे और तुम हैरानी से अपना हाथ मुँह पर रखोगे।

6 जब कभी मुझे वह खयाल याद आता है जो मैं पेश करना चाहता हूँ तो मैं दहशतज़दा हो जाता हूँ, मेरे जिस्म पर थरथराहट तारी हो जाती है। 7 खयाल यह है कि बेदीन क्यों जीते रहते हैं? न सिर्फ़ वह उम्रसीदा हो जाते बल्कि उनकी ताकत बढ़ती रहती है।

8 उनके बच्चे उनके सामने कायम हो जाते, उनकी औलाद उनकी आँखों के सामने मज़बूत हो जाती है। 9 उनके घर महफूज़ हैं। न कोई चीज़ उन्हें डराती, न अल्लाह की सज़ा उन पर नाज़िल होती है। 10 उनका सौंड नसल बढ़ाने में कभी नाकाम नहीं होता, उनकी गाय वक़्त पर जन्म देती, और उसके बच्चे कभी ज़ाया नहीं होते।

11 वह अपने बच्चों को बाहर खेलने के लिए भेजते हैं तो वह भेड़-बकरियों के रेवड़ की तरह घर से निकलते हैं। उनके लड़के कूदते फाँदते नज़र आते हैं। 12 वह दफ़ और सरोद बजाकर गीत गाते और बाँसरी की सुरीली आवाज़ निकालकर अपना दिल बहलाते हैं। 13 उनकी ज़िंदगी खुशहाल रहती है, वह हर दिन से पूरा लुफ़ उठाते और आखिरकार बड़े सुकून से पाताल में उतर जाते हैं।

14 और यह वह लोग हैं जो अल्लाह से कहते हैं, ‘हमसे दूर हो जा, हम तेरी राहों को जानना नहीं चाहते। 15 कादिरे-मुतलक कौन है कि हम उस की खिदमत करें? उससे दुआ करने से हमें क्या फ़ायदा होगा?’ 16 क्या उनकी खुशहाली उनके अपने हाथ में नहीं होती? क्या बेदीनों के मनसूबे अल्लाह से दूर नहीं रहते?

17 ऐसा लगता है कि बेदीनों का चराग़ कभी नहीं बुझता। क्या उन पर कभी मुसीबत आती है? क्या अल्लाह कभी क्रहर में आकर उन पर वह तबाही नाज़िल करता है जो उनका मुनासिब हिस्सा है? 18 क्या हवा के झोंके कभी उन्हें भूसे की तरह और आँधी कभी उन्हें तूड़ी की तरह उड़ा ले जाती है? अफ़सोस, ऐसा नहीं होता। 19 शायद तुम कहो, ‘अल्लाह उन्हें सज़ा देने के बजाए उनके बच्चों को सज़ा देगा।’ लेकिन मैं कहता हूँ कि उसे बाप को ही सज़ा देनी चाहिए ताकि वह अपने गुनाहों का नतीजा खूब जान ले। 20 उस की अपनी ही आँखें उस की तबाही देखें, वह खुद कादिरे-मुतलक के ग़ज़ब का प्याला पी ले। 21 क्योंकि जब उस की ज़िंदगी के मुकर्रर दिन इख़िताम तक पहुँचें तो उसे क्या परवा होगी कि मेरे बाद घरवालों के साथ क्या होगा।

22 लेकिन कौन अल्लाह को इल्म सिखा सकता है? वह तो बुलंदियों पर रहनेवालों की भी अदालत करता है। 23 एक शख्स वफात पाते वक्त खूब तनदुस्त होता है। जीते-जी वह बड़े सुकून और इतमीनान से ज़िंदगी गुज़ार सका। 24 उसके बरतन दूध से भरे रहे, उस की हड्डियों का गूदा तरो-ताज़ा रहा। 25 दूसरा शख्स शिकस्ता हालत में मर जाता है और उसे कभी खुशहाली का लुत्फ नसीब नहीं हुआ। 26 अब दोनों मिलकर खाक में पड़े रहते हैं, दोनों कीड़े-मकोड़ों से ढँपे रहते हैं।

27 सुनो, मैं तुम्हारे खयालात और उन साज़िशों से वाकिफ़ हूँ जिनसे तुम मुझ पर जुल्म करना चाहते हो। 28 क्योंकि तुम कहते हो, 'रईस का घर कहाँ है? वह खैमा किधर गया जिसमें बेदीन बसते थे? वह अपने गुनाहों के सबब से ही तबाह हो गए हैं।' 29 लेकिन उनसे पूछ लो जो इधर उधर सफ़र करते रहते हैं। तुम्हें उनकी गवाही तसलीम करनी चाहिए 30 कि आफत के दिन शरीर को सहीह-सलामत छोड़ा जाता है, कि ग़ज़ब के दिन उसे रिहाई मिलती है।

31 कौन उसके स्वरू उसके चाल-चलन की मलामत करता, कौन उसे उसके ग़लत काम का मुनासिब अज़्र देता है? 32 लोग उसके जनाज़े में शरीक होकर उसे कब्र तक ले जाते हैं। उस की कब्र पर चौकीदार लगाया जाता है। 33 वादी की मिट्टी के ढेले उसे मीठे लगते हैं। जनाज़े के पीछे पीछे तमाम दुनिया, उसके आगे आगे अनगिनत हुज़ूम चलता है। 34 चुनौचे तुम मुझे अबस बातों से क्यों तसल्ली दे रहे हो? तुम्हारे जवाबों में तुम्हारी बेवफ़ाई ही नज़र आती है।”

22

इलीफ़ज़ : अय्यूब शरीर है

1 फिर इलीफ़ज़ तेमानी ने जवाब देकर कहा,

2 “क्या अल्लाह इनसान से फ़ायदा उठा सकता है? हरगिज़ नहीं! उसके लिए दानिशमंद भी फ़ायदे का बाइस नहीं। 3 अगर तू रास्तबाज़ हो भी तो क्या वह इससे अपने लिए नफ़ा उठा सकता है? हरगिज़ नहीं! अगर तू बेइलज़ाम ज़िंदगी गुज़ारे तो क्या उसे कुछ हासिल होता है? 4 अल्लाह तुझे तेरी खुदातरस ज़िंदगी के सबब से मलामत नहीं कर रहा। यह न सोच कि वह इसी लिए अदालत में तुझसे जवाब तलब कर रहा है। 5 नहीं, वजह तेरी बड़ी बदकारी, तेरे लामहदद गुनाह हैं।

6 जब तेरे भाइयों ने तुझसे क़र्ज़ लिया तो तूने बिलावजह वह चीज़ें अपना ली होंगी जो उन्होंने तुझे ज़मानत के तौर पर दी थीं, तूने उन्हें उनके कपड़ों से महस्म कर दिया होगा। 7 तूने थकेमौदों को पानी पिलाने से और भूके मरनेवालों को खाना खिलाने से इनकार किया होगा। 8 बेशक तेरा रवैया इस खयाल पर मबनी था कि पूरा मुल्क ताक़तवरों की मिलकियत है, कि सिर्फ़ बड़े लोग उसमें रह सकते हैं। 9 तूने बेवाओं को खाली हाथ मोड़ दिया होगा, यतीमों की ताक़त पाश पाश की होगी। 10 इसी लिए तू फंदों से घिरा रहता है, अचानक ही तुझे दहशतनाक वाकियत डराते हैं। 11 यही वजह है कि तुझ पर ऐसा अंधेरा छा गया है कि तू देख नहीं सकता, कि सैलाब ने तुझे डुबो दिया है।

12 क्या अल्लाह आसमान की बुलंदियों पर नहीं होता? वह तो सितारों पर नज़र डालता है, खाह वह कितने ही ऊँचे क्यों न हों। 13 तो भी तू कहता है, ‘अल्लाह क्या जानता है? क्या वह काले बादलों में से देखकर अदालत कर सकता है? 14 वह घने बादलों में छुपा रहता है, इसलिए जब वह आसमान के गुंबद पर चलता है तो उसे कुछ नज़र नहीं आता।’ 15 क्या तू उस क़दीम राह से बाज़ नहीं आएगा जिस पर बदकार चलते रहे हैं? 16 वह तो अपने मुर्क़रा वक्त से पहले ही सुकड़ गए, उनकी बुनियादे सैलाब से ही उड़ा ली गईं। 17 उन्होंने अल्लाह से कहा, ‘हमसे दूर हो जा,’ और ‘क्रादिर-मुतलक हमारे लिए क्या कुछ कर सकता है?’ 18 लेकिन अल्लाह ही ने उनके घरों को भरपूर खुशहाली से नवाज़ा, गो बेदीनों के बुरे मनसूबे उससे दूर ही दूर रहते हैं। 19 रास्तबाज़ उनकी तबाही देखकर ख़ुश हुए, बेकुसूरों ने उनकी हँसी उड़ाकर कहा, 20 ‘लो, यह देखो, उनकी जायदाद किस तरह मिट गई, उनकी दौलत किस तरह भस्म हो गई है!’

21 ऐ अय्यूब, अल्लाह से सुलह करके सलामती हासिल कर, तब ही तू खुशहाली पाएगा। 22 अल्लाह के मुँह की हिदायत अपना ले, उसके फ़रमान अपने दिल में महफूज़ रख। 23 अगर तू क्रादिर-मुतलक के पास वापस आए तो बहाल हो जाएगा, और तेरे खैमे से बदी दूर ही रहेगी। 24 सोने को खाक के बराबर, ओफ़ीर का खालिस सोना वादी के पत्थर के बराबर समझ ले 25 तो क्रादिर-मुतलक खुद तेरा सोना होगा, वही तेरे लिए चाँदी का ढेर होगा। 26 तब तू क्रादिर-मुतलक से लुत्फ़अंदाज़ होगा और अल्लाह के हुज़ूर अपना सर उठा सकेगा। 27 तू उससे इल्तिज़ा करेगा तो वह तेरी सुनेगा और तू अपनी मन्तें बढ़ा सकेगा। 28 जो कुछ भी तू करने का इरादा रखे उसमें तुझे कामयाबी होगी, तेरी राहों पर रौशनी चमकेगी। 29 क्योंकि जो शेख़ी बघारता है उसे अल्लाह पस्त करता जबकि जो पस्तहाल है उसे वह नज़ात देता है। 30 वह बेकुसूर को छुड़ाता है, चुनौचे अगर तेरे हाथ पाक हों तो वह तुझे छुड़ाएगा।”

23

अय्यूब : काश मैं अल्लाह को कहीं पाता

1 अय्यूब ने जवाब में कहा,

2 “बेशक आज मेरी शिकायत सरकशी का इज़हार है, हालाँकि मैं अपनी आहों पर काबू पाने की कोशिश कर रहा हूँ।

3 काश मैं उसे पाने का इल्म रखूँ ताकि उस की सुकूनतगाह तक पहुँच सकूँ। 4 फिर मैं अपना मामला तरतीबवार उसके सामने पेश करता, मैं अपना मुँह दलायल से भर लेता। 5 तब मुझे उसके जवाबों का पता चलता, मैं उसके बयानात पर गौर कर सकता। 6 क्या वह अपनी अज़ीम कुव्वत मुझसे लड़ने पर सर्फ़ करता? हरगिज़ नहीं! वह यक़ीनन मुझ पर तवज्जुह देता। 7 अगर मैं वहाँ उसके हुज़ूर आ सकता तो दियानतदार आदमी की तरह उसके साथ मुकदमा लड़ता। तब मैं हमेशा के लिए अपने मुसिफ़ से बच निकलता!

8 लेकिन अफ़सोस, अगर मैं मशरिक की तरफ़ जाऊँ तो वह वहाँ नहीं होता, मगरिब की जानिब बढ़ूँ तो वहाँ भी नहीं मिलता। 9 शिमाल मैं उसे ढूँढ़ूँ तो वह दिखाई नहीं देता, जुनूब की तरफ़ स्रख करूँ तो वहाँ भी पोशीदा रहता है। 10 क्योंकि वह मेरी राह को जानता है। अगर वह मेरी जाँच-पड़ताल करता तो मैं ख़ालिस सोना साबित होता। 11 मेरे क़दम उस की राह में रहे हैं, मैं राह से न बाई, न दाई तरफ़ हटा बल्कि सीधा उस पर चलता रहा। 12 मैं उसके होंटों के फ़रमान से बाज़ नहीं आया बल्कि अपने दिल में ही उसके मुँह की बातें महफूज़ रखी हैं।

13 अगर वह फैसला करे तो कौन उसे रोक सकता है? जो कुछ भी वह करना चाहे उसे अमल में लाता है। 14 जो भी मनसूबा उसने मेरे लिए बाँधा उसे वह ज़रूर पूरा करेगा। और उसके ज़हन में मज़ीद बहुत-से ऐसे मनसूबे हैं। 15 इसी लिए मैं उसके हुज़ूर दहशतज़दा हूँ। जब भी मैं इन बातों पर ध्यान दूँ तो उससे डरता हूँ। 16 अल्लाह ने खुद मुझे शिकस्तादिल किया, कादिरे-मुतलक ही ने मुझे दहशत खिलाई है। 17 क्योंकि न मैं तारीकी से तबाह हो रहा हूँ, न इसलिए कि घने अंधेरे ने मेरे चेहरे को ढाँप दिया है।

24

ज़मीन पर कितनी नाइनसाफ़ी पाई जाती है

1 कादिरे-मुतलक अदालत के औकात क्यों नहीं मुक़रर करता? जो उसे जानते हैं वह ऐसे दिन क्यों नहीं देखते? 2 बेदीन अपनी ज़मीनों की हद्द को आगे पीछे करते और दूसरों के रेवड़ लूटकर अपनी चरागाहों में ले जाते हैं। 3 वह यतीमों का गधा हाँककर ले जाते और इस शर्त पर बेवा को कर्ज़ देते हैं कि वह उन्हें ज़मानत के तौर पर अपना बैल दे। 4 वह ज़स्सरतमंदों को रास्ते से हटाते हैं, चुनाँचे मुल्क के गरीबों को सरासर छुप जाना पड़ता है।

5 ज़स्सरतमंद बयाबान में जंगली गधों की तरह काम करने के लिए निकलते हैं। ख़ुराक का खोज लगा लगाकर वह इधर उधर घुमते-फिरते हैं बल्कि रेगिस्तान ही उन्हें उनके बच्चों के लिए खाना मुहैया करता है। 6 जो खेत उनके अपने नहीं हैं उनमें वह फ़सल काटते हैं, और बेदीनों के अंगूर के बागों में जाकर वह दो-चार अंगूर चुन लेते हैं जो फ़सल चुनने के बाद बाकी रह गए थे। 7 कपड़ों से महस्म रहकर वह रात को बरहना हालत में गुज़ारते हैं। सर्दियों में उनके पास कम्बल तक नहीं होता। 8 पहाड़ों की बारिश से वह भीग जाते और पनाहगाह न होने के बाइस पत्थरों के साथ लिपट जाते हैं।

9 बेदीन बाप से महस्म बच्चे को माँ की गोद से छीन लेते हैं बल्कि इस शर्त पर मुसीबतज़दा को कर्ज़ देते हैं कि वह उन्हें ज़मानत के तौर पर अपना शीरख़ार बच्चा दे। 10 गरीब बरहना हालत में और कपड़े पहने बग़ैर फिरते हैं, वह भूके होते हुए पूले उठाए चलते हैं। 11 ज़ैतून के जो दरख़्त बेदीनों ने सफ़-दर-सफ़ लगाए थे उनके दरमियान गरीब ज़ैतून का तेल निकालते हैं। प्यासी हालत में वह शरीरों के हौज़ों में अंगूर को पाँवों तले कुचलकर उसका रस निकालते हैं। 12 शहर से मरनेवालों की आहें निकलती हैं और ज़ख़मी लोग मदद के लिए चीख़ते-चिल्लाते हैं। इसके बावजूद अल्लाह किसी को भी मुजरिम नहीं ठहराता।

13 यह बेदीन उनमें से हैं जो नूर से सरकश हो गए हैं। न वह उस की राहों से वाकिफ़ हैं, न उनमें रहते हैं। 14 सुबह-सवेरे क़ातिल उठता है ताकि मुसीबतज़दा और ज़स्सरतमंद को क़त्ल करे। रात को चोर चक्कर काटता है। 15 ज़िनाकार की आँखें शाम के धुँधलके के इंतज़ार में रहती हैं, यह सोचकर कि उस वक़्त मैं किसी को नज़र नहीं आऊँगा। निकलते वक़्त वह अपने मुँह को ढाँप लेता है। 16 डाकू अंधेरे में घरों में नक़ब लगाते जबकि दिन के वक़्त वह छुपकर अपने पीछे कुंडी लगा लेते हैं। नूर को वह जानते ही नहीं। 17 गहरी तारीकी ही उनकी सुबह होती है, क्योंकि उनकी घने अंधेरे की दहशतों से दोस्ती हो गई है।

18 लेकिन बेदीन पानी की सतह पर झाग हैं, मुल्क में उनका हिस्सा मलऊन है और उनके अंगूर के बागों की तरफ़ कोई रूजू नहीं करता। 19 जिस तरह काल और झुलसती गरमी बर्फ़ का पानी छीन लेती हैं उसी तरह पाताल गुनाहगारों को छीन लेता है। 20 माँ का रहम उन्हें भूल जाता, कीड़ा उन्हें चूस लेता और उनकी याद जाती रहती है। यक़ीनन बेदीनी लकड़ी की तरह टूट जाती है। 21 बेदीन बाँझ औरत पर ज़ुल्म और बेवाओं से बदसलूकी करते हैं, 22 लेकिन अल्लाह ज़बरदस्तों को अपनी क़ुदरत से घसीटकर ले जाता है। वह मज़बूती से खड़े भी हों तो भी कोई यक़ीन नहीं कि ज़िंदा रहेंगे। 23 अल्लाह उन्हें हिफ़ाज़त से आराम करने देता है, लेकिन उस की आँखें उनकी राहों की पहरादारी करती रहती हैं। 24 लमहा-भर के लिए वह सरफ़राज़ होते, लेकिन फिर नेस्तो-नाबूद हो जाते हैं। उन्हें खाक में मिलाकर सबकी तरह जमा किया जाता है, वह गंदम की कटी हुई बालों की तरह मुरझा जाते हैं।

25 क्या ऐसा नहीं है? अगर कोई मुतफ़िक़ नहीं तो वह साबित करे कि मैं ग़लती पर हूँ, वह दिखाए कि मेरे दलायल बातिल हैं।”

25

बिलदद : अल्लाह के सामने कोई रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता

1 फिर बिलदद सूखी ने जवाब देकर कहा,

2 “अल्लाह की हुकूमत दहशतनाक है। वही अपनी बुलंदियों पर सलामती कायम रखता है। 3 क्या कोई उसके दस्तों की तादाद गिन सकता है? उसका नूर किस पर नहीं चमकता? 4 तो फिर इनसान अल्लाह के सामने किस तरह रास्तबाज़ ठहर सकता है? जो औरत से पैदा हुआ वह किस तरह पाक-साफ़ साबित हो सकता है? 5 उस की नज़र में न चाँद पुरनूर है, न सितारे पाक हैं। 6 तो फिर इनसान किस तरह पाक ठहर सकता है जो कीड़ा ही है? आदमज़ाद तो मकोड़ा ही है।”

26

अय्यूब : तूने मुझे कितने अच्छे मशवरे दिए हैं!

1 अय्यूब ने जवाब देकर कहा,

2 “वाह जी वाह! तूने क्या खूब उसे सहारा दिया जो बेबस है, क्या खूब उस बाजू को मज़बूत कर दिया जो बेताक़त है! 3 तूने उसे कितने अच्छे मशवरे दिए जो हिकमत से महसूस है, अपनी समझ की कितनी गहरी बातें उस पर जाहिर की हैं। 4 तूने किसकी मदद से यह कुछ पेश किया है? किसने तेरी रूह में वह बातें डालीं जो तेरे मुँह से निकल आई हैं?”

कौन अल्लाह की अज़मत का अंदाज़ा लगा सकता है?

5 अल्लाह के सामने वह तमाम मुरदा अरवाह जो पानी और उसमें रहनेवालों के नीचे बसती हैं डर के मारे तड़प उठती हैं। 6 हाँ, उसके सामने पाताल बरहना और उस की गहराइयाँ बेनिकाब हैं।

7 अल्लाह ही ने शिमाल को वीरानो-सुनसान जगह के ऊपर तान लिया, उसी ने ज़मीन को यों लगा दिया कि वह किसी चीज़ से लटकी हुई नहीं है। 8 उसने अपने बादलों में पानी लपेट लिया, लेकिन वह बोझ तले न फटे। 9 उसने अपना तख़्त नज़रों से छुपाकर अपना बादल उस पर छा जाने दिया। 10 उसने पानी की सतह पर दायरा बनाया जो रौशनी और अंधेरे के दरमियान हद बन गया।

11 आसमान के सतून लरज़ उठे। उस की धमकी पर वह दहशतज़दा हुए। 12 अपनी कुदरत से अल्लाह ने समुंदर को थमा दिया, अपनी हिकमत से रहब अज़दहे को टुकड़े टुकड़े कर दिया। 13 उसके रूह ने आसमान को साफ़ किया, उसके हाथ ने फ़रार होनेवाले साँप को छेद डाला। 14 लेकिन ऐसे काम उस की राहों के किनारे पर ही किए जाते हैं। जो कुछ हम उसके बारे में सुनते हैं वह धीमी धीमी आवाज़ से हमारे कान तक पहुँचता है। तो फिर कौन उस की कुदरत की कड़कती आवाज़ समझ सकता है?”

27

मैं बेकुसूर हूँ

1 फिर अय्यूब ने अपनी बात जारी रखी,

2 “अल्लाह की हयात की कसम जिसने मेरा इनसाफ़ करने से इनकार किया, कादिरे-मुतलक की कसम जिसने मेरी ज़िंदगी तलख़ कर दी है, 3 मेरे जीते-जी, हाँ जब तक अल्लाह का दम मेरी नाक में है 4 मेरे होंट झूट नहीं बोलेंगे, मेरी ज़बान धोका बयान नहीं करेगी। 5 मैं कभी तसलीम नहीं करूँगा कि तुम्हारी बात दुस्त है। मैं बेइलज़ाम हूँ और मरते दम तक इसके उलट नहीं कहूँगा। 6 मैं इसरार करता हूँ कि रास्तबाज़ हूँ और इससे कभी बाज़ नहीं आऊँगा। मेरा दिल मेरे किसी भी दिन के बारे में मुझे मलामत नहीं करता।

7 अल्लाह करे कि मेरे दुश्मन के साथ वही सुलूक किया जाए जो बेदीनों के साथ किया जाएगा, कि मेरे मुखालिफ़ का वह अंजाम हो जो बदकारों को पेश आएगा। 8 क्योंकि उस वक़्त शरीर की क्या उम्मीद रहेगी जब उसे इस ज़िंदगी से मुँकते किया जाएगा, जब अल्लाह उस की जान उससे तलब करेगा? 9 क्या अल्लाह उस की चीखें सुनेगा जब वह मुसीबत में फँसकर मदद के लिए पुकारेगा? 10 या क्या वह कादिरे-मुतलक से लुफ़अंदोज़ होगा और हर वक़्त अल्लाह को पुकारेगा?

11 अब मैं तुम्हें अल्लाह की कुदरत के बारे में तालीम दूँगा, कादिरे-मुतलक का इरादा तुमसे नहीं छुपाऊँगा। 12 देखो, तुम सबने इसका मुशाहदा किया है। तो फिर इस किस्म की बातें क्यों करते हो?

बेदीन ज़िंदा नहीं रहेगा

13 बेदीन अल्लाह से क्या अज़ पाएगा, ज़ालिम को कादिरे-मुतलक से मीरास में क्या मिलेगा? 14 गो उसके बच्चे मुतअद्दि हों, लेकिन आखिरकार वह तलवार की ज़द में आएँगे। उस की औलाद भूकी रहेगी। 15 जो बच जाएँ उन्हें मोहलक बीमारी से कब्र में पहुँचाया जाएगा, और उनकी बेवाएँ मातम नहीं कर पाएँगी। 16 बेशक वह खाक की तरह चाँदी का ढेर लगाएँ और मिट्टी की तरह नफ़ीस कपड़ों का तोड़ा इक़श करे, 17 लेकिन जो कपड़े वह जमा करे उन्हें रास्तबाज़ पहन लेगा, और जो चाँदी वह इक़टी करे उसे बेकुसूर तकसीम करेगा। 18 जो घर बेदीन बना ले वह घोंसले की मानिंद है, उस आरिज़ी झोंपड़ी की मानिंद जो चौकीदार अपने लिए बना लेता है। 19 वह अमीर हालत में सो जाता है, लेकिन आखिरी दफ़ा। जब अपनी आँखें खोल लेता तो तमाम दौलत जाती रही है। 20 उस पर हौलनाक वाक़ियात का सैलाब टूट पड़ता, उसे रात के वक़्त आँधी छीन लेती है। 21 मशरिकी लू उसे उड़ा ले जाती, उसे उठाकर उसके मक़ाम से दूर फेंक देती है। 22 बेरहमी से वह उस पर यों झपट्टा मारती रहती है कि उसे बार बार भागना पड़ता है। 23 वह तालियाँ बजाकर अपनी हिक़ारत का इज़हार करती, अपनी जगह से आवाज़े कसती है।

28

हिकमत कहाँ पाई जाती है?

1 यक्रीन चाँदी की कानें होती हैं और ऐसी जगहें जहाँ सोना खालिस किया जाता है। 2 लोहा ज़मीन से निकाला जाता और लोग पत्थर पिघलाकर तौबा बना लेते हैं। 3 इनसान अंधेरे को खत्म करके ज़मीन की गहरी गहरी जगहों तक कच्ची धात का खोज लगाता है, खाह वह कितने अंधेरे में क्यों न हो। 4 एक अजनबी क्रौम सुरंग लगाती है। जब रस्सों से लटके हुए काम करते और इनसानों से दूर कान में झूमते हैं तो ज़मीन पर गुजरनेवालों को उनकी याद ही नहीं रहती। 5 ज़मीन की सतह पर खुराक पैदा होती है जबकि उस की गहराइयाँ यों तबदील हो जाती हैं जैसे उसमें आग लगी हो। 6 पत्थरों से संगे-लाजवर्द निकाला जाता है जिसमें सोने के ज़र्रे भी पाए जाते हैं।

7 यह ऐसे रास्ते हैं जो कोई भी शिकारी परिदा नहीं जानता, जो किसी भी बाज़ ने नहीं देखा। 8 जंगल के रोबदार जानवरों में से कोई भी इन राहों पर नहीं चला, किसी भी शेरबबर ने इन पर कदम नहीं रखा। 9 इनसान संगे-चक्रमाक पर हाथ लगाकर पहाड़ों को जड़ से उलटा देता है। 10 वह पत्थर में सुरंग लगाकर हर किस्म की कीमती चीज़ देख लेता 11 और ज़मीनदोज़ नदियों को बंद करके पोशीदा चीज़ें रौशनी में लाता है।

12 लेकिन हिकमत कहाँ पाई जाती है, समझ कहाँ से मिलती है? 13 इनसान उस तक जानेवाली राह नहीं जानता, क्योंकि उसे मुल्के-हयात में पाया नहीं जाता। 14 समुंदर कहता है, 'हिकमत मेरे पास नहीं है,' और उस की गहराइयाँ बयान करती हैं, 'यहाँ भी नहीं है।'

15 हिकमत को न खालिस सोने, न चाँदी से खरीदा जा सकता है। 16 उसे पाने के लिए न ओफ़ीर का सोना, न बेशकीमत अक्रीके-अहमर * या संगे-लाजवर्द † काफी हैं। 17 सोना और शीशा उसका मुकाबला नहीं कर सकते, न वह सोने के ज़ेवरात के एवज़ मिल सकती है। 18 उस की निसबत मूँगा और बिल्लौर की क्या कदर है? हिकमत से भरी थैली मोतियों से कहीं ज़्यादा कीमती है। 19 एथोपिया का ज़बरजद ‡ उसका मुकाबला नहीं कर सकता, उसे खालिस सोने के लिए खरीदा नहीं जा सकता।

20 हिकमत कहाँ से आती, समझ कहाँ से मिल सकती है? 21 वह तमाम जानदारों से पोशीदा रहती बल्कि परिदों से भी छुपी रहती है। 22 पाताल और मौत उसके बारे में कहते हैं, 'हमने उसके बारे में सिर्फ़ अफ़वाहें सुनी हैं।'

23 लेकिन अल्लाह उस तक जानेवाली राह को जानता है, उसे मालूम है कि कहाँ मिल सकती है। 24 क्योंकि उसी ने ज़मीन की हृद तक देखा, आसमान तले सब कुछ पर नज़र डाली 25 ताकि हवा का वज़न मुकर्रर करे और पानी की पैमाइश करके उस की हृद मुतैयिन करे। 26 उसी ने बारिश के लिए फ़रमान जारी किया और बादल की कड़कती बिजली के लिए रास्ता तैयार किया। 27 उसी वक़्त उसने हिकमत को देखकर उस की जाँच-पड़ताल की। उसने उसे कायम भी किया और उस की तह तक तहक़ीक़ भी की। 28 इनसान से उसने कहा, 'सुनो, अल्लाह का ख़ौफ़ मानना ही हिकमत और बुराई से दूर रहना ही समझ है।'

29

काश मेरी ज़िंदगी पहले की तरह हो

1 अय्यूब ने अपनी बात जारी रखकर कहा,

2 "काश मैं दुबारा माज़ी के वह दिन गुज़ार सकूँ जब अल्लाह मेरी देख-भाल करता था, 3 जब उस की शमा मेरे सर के ऊपर चमकती रही और मैं उस की रौशनी की मदद से अंधेरे में चलता था। 4 उस वक़्त मेरी जवानी उरूज पर थी और मेरा ख़ैमा अल्लाह के साथ में रहता था। 5 कादिर-मुतलक मेरे साथ था, और मैं अपने बेटों से घिरा रहता था। 6 कसरत के बाइस मेरे कदम दही से धोए रहते और चटान से तेल की नदियाँ फूटकर निकलती थीं।

7 जब कभी मैं शहर के दरवाज़े से निकलकर चौक में अपनी कुरसी पर बैठ जाता 8 तो जवान आदमी मुझे देखकर पीछे हटकर छुप जाते, बुजुर्ग उठकर खड़े रहते, 9 रईस बोलने से बाज़ आकर मुँह पर हाथ रखते, 10 शुरफ़ा की आवाज़ दब जाती और उनकी ज़बान तालू से चिपक जाती थी।

11 जिस कान ने मेरी बातें सुनीं उसने मुझे मुबारक कहा, जिस आँख ने मुझे देखा उसने मेरे हक़ में गवाही दी। 12 क्योंकि जो मुसीबत में आकर आवाज़ देता उसे मैं बचाता, बेसहारा यतीम को छुटकारा देता था। 13 तबाह होनेवाले मुझे बरकत देते थे। मेरे बाइस बेवाओं के दिलों से खुशी के नारे उभर आते थे। 14 मैं रास्तबाज़ी से मुलबबस और रास्तबाज़ी मुझसे मुलबबस रहती थी, इनसाफ़ मेरा चोगा और पगड़ी था।

15 अंधों के लिए मैं आँखें, लँगडों के लिए पाँव बना रहता था। 16 मैं ग़रीबों का बाप था, और जब कभी अजनबी को मुक़दमा लड़ना पड़ा तो मैं ग़ौर से उसके मामले का मुआयना करता था ताकि उसका हक़ मारा न जाए। 17 मैंने बेदीन का जबड़ा तोड़कर उसके दाँतों में से शिकार छुड़ाया।

18 उस वक़्त मेरा ख़याल था, 'मैं अपने ही घर में वफ़ात पाऊँगा, सीमुरग़ की तरह अपनी ज़िंदगी के दिनों में इज़ाफ़ा करूँगा। 19 मेरी जड़ें पानी तक फैली और मेरी शाखें ओस से तर रहेंगी। 20 मेरी इज्ज़त हर वक़्त ताज़ा रहेगी, और मेरे हाथ की कमान को नई तकवियत मिलती रहेगी।'

21 लोग मेरी सुनकर खामोशी से मेरे मशवरों के इंतज़ार में रहते थे। 22 मेरे बात करने पर वह जवाब में कुछ न कहते बल्कि मेरे अलफ़ाज़ हलकी-सी बूँदा-बूँदी की तरह उन पर टपकते रहते। 23 जिस तरह इनसान शिद्दत से बारिश के इंतज़ार में रहता है उसी तरह वह मेरे इंतज़ार में

* 28:16 carnelian † 28:16 lapis lazuli ‡ 28:19 peridot

रहते थे। वह मुँह पसारकर बहार की बारिश की तरह मेरे अलफाज़ को जज़ब कर लेते थे। ²⁴ जब मैं उनसे बात करते वक़्त मुसकराता तो उन्हें यक़ीन नहीं आता था, मेरी उन पर मेहरबानी उनके नज़दीक निहायत क़ीमती थी। ²⁵ मैं उनकी राह उनके लिए चुनकर उनकी क्रियादत्त करता, उनके दरमियान यों बसता था जिस तरह बादशाह अपने दस्तों के दरमियान। मैं उस की मानिंद था जो मातम करनेवालों को तसल्ली देता है।

30

मुझे रद्द किया गया है

¹ लेकिन अब वह मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं, हालाँकि उनकी उम्र मुझसे कम है और मैं उनके बापों को अपनी भेड़-बकरियों की देख-भाल करनेवाले कुत्तों के साथ काम पर लगाने के भी लायक़ नहीं समझता था। ² मेरे लिए उनके हाथों की मदद का क्या फ़ायदा था? उनकी पूरी ताक़त तो जाती रही थी। ³ ख़ुराक की कमी और शदीद भूक के मारे वह खुश्क़ ज़मीन की थोड़ी-बहुत पैदावार कतर कतरकर खाते हैं। हर वक़्त वह तबाही और वीरानी के दामन में रहते हैं। ⁴ वह झाड़ियों से ख़त्मी का फल तोड़कर खाते, झाड़ियों * की जड़ें आग तापने के लिए इकट्ठी करते हैं। ⁵ उन्हें आबादियों से ख़ारिज किया गया है, और लोग 'चोर चोर' चिल्लाकर उन्हें भगा देते हैं। ⁶ उन्हें घाटियों की ढलानों पर बसना पड़ता, वह ज़मीन के ग़ारों में और पत्थरों के दरमियान ही रहते हैं। ⁷ झाड़ियों के दरमियान वह आवाज़ें देते और मिलकर ऊँटकटारों तले दबक जाते हैं। ⁸ इन कमीने और बेनाम लोगों को मार मारकर मुल्क से भगा दिया गया है।

⁹ और अब मैं इन्हीं का निशाना बन गया हूँ। अपने गीतों में वह मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं, मेरी बुरी हालत उनके लिए मज़हकाखेज़ मिसाल बन गई है। ¹⁰ वह घिन खाकर मुझसे दूर रहते और मेरे मुँह पर थूकने से नहीं स्कुते। ¹¹ चूँकि अल्लाह ने मेरी क़मान की ताँत खोलकर मेरी स्सवाई की है, इसलिए वह मेरी मौजूदगी में बेलगाम हो गए हैं। ¹² मेरे दहने हाथ हुज़ूम खड़े होकर मुझे ठोकर खिलाते और मेरी फ़सील के साथ मिट्टी के ढेर लगाते हैं ताकि उसमें रखना डालकर मुझे तबाह करें। ¹³ वह मेरी क़िलाबंदियों ढाकर मुझे खाक में मिलाने में कामयाब हो जाते हैं। किसी और की मदद दरकार ही नहीं। ¹⁴ वह रखने में दाख़िल होते और ज़ौक-दर-ज़ौक तबाहशुदा फ़सील में से गुज़रकर आगे बढ़ते हैं। ¹⁵ हौलनाक वाक़ियात मेरे ख़िलाफ़ खड़े हो गए हैं, और वह तेज़ हवा की तरह मेरे वक्रार को उड़ा ले जा रहे हैं। मेरी सलामती बादल की तरह ओझल हो गई है।

¹⁶ और अब मेरी जान निकल रही है, मैं मुसीबत के दिनों के काबू में आ गया हूँ। ¹⁷ रात को मेरी हड्डियों को छेदा जाता है, कतरनेवाला दर्द मुझे कभी नहीं छोड़ता। ¹⁸ अल्लाह बड़े ज़ोर से मेरा कपड़ा पकड़कर ग़रेबान की तरह मुझे अपनी सख़्त गिरिफ़्त में रखता है। ¹⁹ उसने मुझे कीचड़ में फेंक दिया है, और देखने में मैं खाक और मिट्टी ही बन गया हूँ। ²⁰ मैं तुझे पुकारता, लेकिन तू ज़वाब नहीं देता। मैं खड़ा हो जाता, लेकिन तू मुझे घूरता ही रहता है। ²¹ तू मेरे साथ अपना सुलूक बदलकर मुझ पर ज़ुल्म करने लगा, अपने हाथ के पूरे ज़ोर से मुझे सताने लगा है। ²² तू मुझे उड़ाकर हवा पर सवार होने देता, गरजते तूफ़ान में घुलने देता है। ²³ हाँ, अब मैं जानता हूँ कि तू मुझे मौत के हवाले करेगा, उस घर में पहुँचाएगा जहाँ एक दिन तमाम जानदार जमा हो जाते हैं।

²⁴ यक़ीनन मैंने कभी भी अपना हाथ किसी ज़रूरतमंद के ख़िलाफ़ नहीं उठाया जब उसने अपनी मुसीबत में आवाज़ दी। ²⁵ बल्कि जब किसी का बुरा हाल था तो मैं हमदर्दी से रोने लगा, ग़रीबों की हालत देखकर मेरा दिल ग़म खाने लगा। ²⁶ ताहम मुझ पर मुसीबत आई, अगरचे मैं भलाई की उम्मीद रख सकता था। मुझ पर घना अंधेरा छा गया, हालाँकि मैं रौशनी की तवक्क़ो कर सकता था। ²⁷ मेरे अंदर सब कुछ मुज़तरिब है और कभी आराम नहीं कर सकता, मेरा वास्ता तकलीफ़देह दिनों से पड़ता है। ²⁸ मैं मातमी लिबास में फिरता हूँ और कोई मुझे तसल्ली नहीं देता, हालाँकि मैं जमात में खड़े होकर मदद के लिए आवाज़ देता हूँ। ²⁹ मैं गीदड़ों का भाई और उकाबी उल्लुओं का साथी बन गया हूँ। ³⁰ मेरी जिल्द काली हो गई, मेरी हड्डियाँ तपती गरमी के सबब से झुलस गई हैं। ³¹ अब मेरा सरोद सिर्फ़ मातम करने और मेरी बाँसरी सिर्फ़ रोनेवालों के लिए इस्तेमाल होती है।

31

मेरी आखिरी बात : मैं बेगुनाह हूँ

¹ मैंने अपनी आँखों से अहद बाँधा है। तो फिर मैं किस तरह किसी कुँवारी पर नज़र डाल सकता हूँ? ² क्योंकि इनसान को आसमान पर रहनेवाले ख़ुदा की तरफ़ से क्या नसीब है, उसे बुलंदियों पर बसनेवाले कादिर-मुतलक़ से क्या विरासत पाना है? ³ क्या ऐसा नहीं है कि नारास्त शख्स के लिए आफ़त और बदकार के लिए तबाही मुक़र्रर है? ⁴ मेरी राहें तो अल्लाह को नज़र आती हैं, वह मेरा हर क़दम गिन लेता है।

⁵ न मैं कभी धोके से चला, न मेरे पाँवों ने कभी फ़रेब देने के लिए फुरती की। अगर इसमें ज़रा भी शक़ हो ⁶ तो अल्लाह मुझे इससाफ़ के तराजू में तोल ले, अल्लाह मेरी बेइलज़ाम हालत मालूम करे। ⁷ अगर मेरे क़दम सहीह राह से हट गए, मेरी आँखें मेरे दिल को ग़लत राह पर ले गई या मेरे हाथ दाग़दार हुए ⁸ तो फिर जो बीज मैंने बोया उस की पैदावार कोई और खाए, जो फ़सलें मैंने लगाई उन्हें उखाड़ा जाए।

⁹ अगर मेरा दिल किसी औरत से नाजायज़ ताल्लुकात रखने पर उकसाया गया और मैं इस मक़सद से अपने पड़ोसी के दरवाज़े पर ताक लगाए बैठा ¹⁰ तो फिर अल्लाह करे कि मेरी बीवी किसी और आदमी की गंदम पीसे, कि कोई और उस पर झुक जाए। ¹¹ क्योंकि ऐसी हरकत

* **30:4** यानी झाड़ी बनाम broom, सीक़ किस्म की झाड़ी जिसके फूल ज़रद होते हैं।

शर्मनाक होती, ऐसा जुर्म सज़ा के लायक होता है। 12 ऐसे गुनाह की आग पाताल तक सब कुछ भस्म कर देती है। अगर वह मुझसे सरज़द होता तो मेरी तमाम फ़सल जड़ों तक राख कर देता।

13 अगर मेरा नौकर-नौकरानियों के साथ झगड़ा था और मैंने उनका हक़ मारा 14 तो मैं क्या करूँ जब अल्लाह अदालत में खड़ा हो जाए? जब वह मेरी पूछ-गछ करे तो मैं उसे क्या जवाब दूँ? 15 क्योंकि जिसने मुझे मेरी माँ के पेट में बनाया उसने उन्हें भी बनाया। एक ही ने उन्हें भी और मुझे भी रहम में तश्कील दिया।

16 क्या मैंने पस्तहालों की ज़रूरियात पूरी करने से इनकार किया या बेवा की आँखों को बुझने दिया? हरगिज़ नहीं! 17 क्या मैंने अपनी रोटी अकेले ही खाई और यतीम को उसमें शरीक न किया? 18 हरगिज़ नहीं, बल्कि अपनी जवानी से लेकर मैंने उसका बाप बनकर उस की परवरिश की, अपनी पैदाइश से ही बेवा की राहनुमाई की। 19 जब कभी मैंने देखा कि कोई कपड़ों की कमी के बाइस हलाक हो रहा है, कि किसी गरीब के पास कम्बल तक नहीं 20 तो मैंने उसे अपनी भेड़ों की कुछ ऊन दी ताकि वह गरम हो सके। ऐसे लोग मुझे दुआ देते थे। 21 मैंने कभी भी यतीमों के खिलाफ़ हाथ नहीं उठाया, उस वक़्त भी नहीं जब शहर के दरवाज़े में बैठे बुजुर्ग मेरे हक़ में थे। 22 अगर ऐसा न था तो अल्लाह करे कि मेरा शाना कंधे से निकलकर गिर जाए, कि मेरा बाजू जोड़ से फाड़ा जाए! 23 ऐसी हरकतें मेरे लिए नामुमकिन थीं, क्योंकि अगर मैं ऐसा करता तो मैं अल्लाह से दहशत खाता रहता, मैं उससे डर के मारे कायम न रह सकता।

24 क्या मैंने सोने पर अपना पूरा भरोसा रखा या खालिस सोने से कहा, 'तुझ पर ही मेरा एतमाद है'? हरगिज़ नहीं! 25 क्या मैं इसलिए खुश था कि मेरी दौलत ज़्यादा है और मेरे हाथ ने बहुत कुछ हासिल किया है? हरगिज़ नहीं! 26 क्या सूरज की चमक-दमक और चाँद की पुरवकार रविश देखकर 27 मेरे दिल को कभी चुपके से ग़लत राह पर लाया गया? क्या मैंने कभी उनका एहताराम किया? * 28 हरगिज़ नहीं, क्योंकि यह भी सज़ा के लायक जुर्म है। अगर मैं ऐसा करता तो बुलंदियों पर रहनेवाले खुदा का इनकार करता।

29 क्या मैं कभी खुश हुआ जब मुझसे नफ़रत करनेवाला तबाह हुआ? क्या मैं बाग़ बाग़ हुआ जब उस पर मुसीबत आई? हरगिज़ नहीं! 30 मैंने अपने मुँह को इजाज़त न दी कि गुनाह करके उस की जान पर लानत भेजे। 31 बल्कि मेरे ख़ैमे के आदमियों को तसलीम करना पड़ा, 'कोई नहीं है जो अय्यूब के गोशत से सेर न हुआ।' 32 अजनबी को बाहर गली में रात गुज़ारनी नहीं पड़ती थी बल्कि मेरा दरवाज़ा मुसाफ़िरों के लिए खुला रहता था। 33 क्या मैंने कभी आदम की तरह अपना गुनाह छुपाकर अपना कुसूर दिल में पोशीदा रखा, 34 इसलिए कि हुज़ूम से डरता और अपने रिश्तेदारों से दहशत खाता था? हरगिज़ नहीं! मैंने कभी भी ऐसा काम न किया जिसके बाइस मुझे डर के मारे चुप रहना पड़ता और घर से निकल नहीं सकता था।

35 काश कोई मेरी सुने! देखो, यहाँ मेरी बात पर मेरे दस्तख़त हैं, अब कादिरे-मुतलक मुझे जवाब दे। काश मेरे मुखालिफ़ लिखकर मुझे वह इलज़ामात बताएँ जो उन्होंने मुझ पर लगाए हैं! 36 अगर इलज़ामात का कागज़ मिलता तो मैं उसे उठाकर अपने कंधे पर रखता, उसे पगड़ी की तरह अपने सर पर बाँध लेता। 37 मैं अल्लाह को अपने कदमों का पूरा हिसाब-किताब देकर रईस की तरह उसके करीब पहुँचता।

38 क्या मेरी ज़मीन ने मदद के लिए पुकारकर मुझ पर इलज़ाम लगाया है? क्या उस की रेघारयाँ मेरे सबब से मिलकर रो पड़ी हैं? 39 क्या मैंने उस की पैदावार अज़्र दिए बग़ैर खाई, उस पर मेहनत-मशक्कत करनेवालों के लिए आहें भरने का बाइस बन गया? हरगिज़ नहीं! 40 अगर मैं इसमें कुसूरवार ठहरूँ तो गंदुम के बजाए ख़ारदार झाड़ियाँ और जौ के बजाए धतूरा † उगे।" यों अय्यूब की बातें इख़िताम को पहुँच गई।

32

चौथे साथी इलीह की तक़रीर

1 तब मज़क़ूरा तीनों आदमी अय्यूब को जवाब देने से बाज़ आए, क्योंकि वह अब तक समझता था कि मैं रास्तबाज़ हूँ। 2 यह देखकर इलीह बिन बरकेल गुस्से हो गया। बूज़ शहर के रहनेवाले इस आदमी का खानदान राम था। एक तरफ़ तो वह अय्यूब से ख़फ़ा था, क्योंकि यह अपने आपको अल्लाह के सामने रास्तबाज़ ठहराता था। 3 दूसरी तरफ़ वह तीनों दोस्तों से भी नाराज़ था, क्योंकि न वह अय्यूब को सहीह जवाब दे सके, न साबित कर सके कि मुजरिम है। 4 इलीह ने अब तक अय्यूब से बात नहीं की थी। जब तक दूसरों ने बात पूरी नहीं की थी वह ख़ामोश रहा, क्योंकि वह बुजुर्ग थे। 5 लेकिन अब जब उसने देखा कि तीनों आदमी मज़ीद कोई जवाब नहीं दे सकते तो वह भड़क उठा 6 और जवाब में कहा,

"मैं कमउम्र हूँ जबकि आप सब उम्रसीदा हैं, इसलिए मैं कुछ शरमीला था, मैं आपको अपनी राय बताने से डरता था। 7 मैंने सोचा, चलो वह बोलें जिनके ज़्यादा दिन गुजरे हैं, वह तालीम दें जिन्हें मुतअद्दिद सालों का तजरबा हासिल है।

8 लेकिन जो रूह इनसान में है यानी जो दम कादिरे-मुतलक ने उसमें फूँक दिया वही इनसान को समझ अता करता है। 9 न सिर्फ़ बूढ़े लोग दानिशमंद हैं, न सिर्फ़ वह इनसाफ़ समझते हैं जिनके बाल सफ़ेद हैं। 10 चुनाँचे मैं गुज़ारिश करता हूँ कि ज़रा मेरी बात सुनें, मुझे भी अपनी राय पेश करने दीजिए।

11 मैं आपके अलफ़ाज़ के इंतज़ार में रहा। जब आप मौजूज़ जवाब तलाश कर रहे थे तो मैं आपकी दानिशमंद बातों पर गौर करता रहा। 12 मैंने आप पर पूरी तवज्जुह दी, लेकिन आपमें से कोई अय्यूब को ग़लत साबित न कर सका, कोई उसके दलायल का मुनासिब जवाब न दे पाया।

* 31:27 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : हाथ से उन्हें बोसा दिया। † 31:40 एक बदबूदार पौदा।

13 अब ऐसा न हो कि आप कहें, 'हमने अय्यूब में हिकमत पाई है, इनसान उसे शिकस्त देकर भगा नहीं सकता बल्कि सिर्फ अल्लाह ही।' 14 क्योंकि अय्यूब ने अपने दलायल की तरतीब से मेरा मुकाबला नहीं किया, और जब मैं जवाब दूँगा तो आपकी बातें नहीं दोहराऊँगा।

15 आप घबराकर जवाब देने से बाज़ आए हैं, अब आप कुछ नहीं कह सकते। 16 क्या मैं मज़ीद इंतज़ार करूँ, गो आप खामोश हो गए हैं, आप स्ककर मज़ीद जवाब नहीं दे सकते? 17 मैं भी जवाब देने में हिस्सा लेना चाहता हूँ, मैं भी अपनी राय पेश करूँगा। 18 क्योंकि मेरे अंदर से अलफ़ाज़ छलक रहे हैं, मेरी रूह मेरे अंदर मुझे मजबूर कर रही है।

19 हकीकत में मैं अंदर से उस नई मै की मानिंद हूँ जो बंद रखी गई हो, मैं नई मै से भरी हुई नई मशकों की तरह फटने को हूँ। 20 मुझे बोलना है ताकि आराम पाऊँ, लाज़िम ही है कि मैं अपने होंटों को खोलकर जवाब दूँ। 21 यक़ीनन न मैं किसी की जानिबदारी, न किसी की चापलूसी करूँगा। 22 क्योंकि मैं खुशामद कर ही नहीं सकता, वरना मेरा ख़ालिक मुझे जल्द ही उड़ा ले जाएगा।

33

अल्लाह कई तरीकों से इनसान से हमकलाम होता है

1 ऐ अय्यूब, मेरी तक्ररि सुनें, मेरी तमाम बातों पर कान धरे! 2 अब मैं अपना मुँह खोल देता हूँ, मेरी ज़बान बोलती है। 3 मेरे अलफ़ाज़ सीधी राह पर चलनेवाले दिल से उभर आते हैं, मेरे होंट दियातदारी से वह कुछ बयान करते हैं जो मैं जानता हूँ। 4 अल्लाह के रूह ने मुझे बनाया, कादिरे-मुतलक के दम ने मुझे ज़िंदगी बख़्शी।

5 अगर आप इस काबिल हों तो मुझे जवाब दें और अपनी बातें तरतीब से पेश करके मेरा मुकाबला करें। 6 अल्लाह की नज़र में मैं तो आपके बराबर हूँ, मुझे भी मिट्टी से लेकर तश्कील दिया गया है। 7 चुनाँचे मुझे आपके लिए दहशत का बाइस नहीं होना चाहिए, मेरी तरफ़ से आप पर भारी बोझ नहीं आएगा।

8 आपने मेरे सुनते ही कहा बल्कि आपके अलफ़ाज़ अभी तक मेरे कानों में गूँज रहे हैं, 9 'मैं पाक हूँ, मुझसे जुर्म सरज़द नहीं हुआ, मैं बेगुनाह हूँ, मेरा कोई कुसूर नहीं। 10 तो भी अल्लाह मुझसे झगड़ने के मवाक़े ढूँढता और मुझे अपना दुश्मन समझता है। 11 वह मेरे पाँवों को काठ में डालकर मेरी तमाम राहों की पहरादारी करता है।'

12 लेकिन आपकी यह बात दुस्त नहीं, क्योंकि अल्लाह इनसान से आला है। 13 आप उससे झगड़कर क्यों कहते हैं, 'वह मेरी किसी भी बात का जवाब नहीं देता'? 14 शायद इनसान को अल्लाह नज़र न आए, लेकिन वह ज़रूर कभी इस तरीके, कभी उस तरीके से उससे हमकलाम होता है।

15 कभी वह खाब या रात की रोया में उससे बात करता है। जब लोग बिस्तर पर लेटकर गहरी नींद सो जाते हैं 16 तो अल्लाह उनके कान खोलकर अपनी नसीहतों से उन्हें दहशतज़दा कर देता है। 17 यों वह इनसान को ग़लत काम करने और मग़रूर होने से बाज़ रखकर 18 उस की जान गढे में उतरने और दरियाए-मौत को उबूर करने से रोक देता है।

19 कभी अल्लाह इनसान की बिस्तर पर दर्द के ज़रीए तरबियत करता है। तब उस की हड्डियों में लगातार जंग होती है। 20 उस की जान को ख़ुराक से घिन आती बल्कि उसे लज़ीज़तरीन खाने से भी नफ़रत होती है। 21 उसका गोश्त-पोस्त सुकड़कर ग़ायब हो जाता है जबकि जो हड्डियाँ पहले छुपी हुई थीं वह नुमायाँ तौर पर नज़र आती हैं। 22 उस की जान गढे के करीब, उस की ज़िंदगी हलाक करनेवालों के नज़दीक पहुँचती है।

23 लेकिन अगर कोई फ़रिश्ता, हज़ारों में से कोई सालिस उसके पास हो जो इनसान को सीधी राह दिखाए 24 और उस पर तरस खाकर कहे, 'उसे गढे में उतरने से छुड़ा, मुझे फ़िद्या मिल गया है, 25 अब उसका जिस्म जवानी की निसबत ज़्यादा तरो-ताज़ा हो जाए और वह दुबारा जवानी की-सी ताकत पाए' 26 तो फिर वह शख्स अल्लाह से इल्तिजा करेगा, और अल्लाह उस पर मेहरबान होगा। तब वह बड़ी ख़ुशी से अल्लाह का चेहरा तकता रहेगा। इसी तरह अल्लाह इनसान की रास्तबाज़ी बहाल करता है।

27 ऐसा शख्स लोगों के सामने गाएगा और कहेगा, 'मैंने गुनाह करके सीधी राह टेढ़ी-मेढ़ी कर दी, और मुझे कोई फ़ायदा न हुआ। 28 लेकिन उसने फ़िद्या देकर मेरी जान को मौत के गढे में उतरने से छुड़ाया। अब मेरी ज़िंदगी नूर से लुत्फ़अंदोज़ होगी।'

29 अल्लाह इनसान के साथ यह सब कुछ दो-चार मरतबा करता है 30 ताकि उस की जान गढे से वापस आए और वह ज़िंदगी के नूर से रौशन हो जाए।

31 ऐ अय्यूब, ध्यान से मेरी बात सुनें, ख़ामोश हो जाएँ ताकि मैं बात करूँ। 32 अगर आप जवाब में कुछ बताना चाहें तो बताएँ। बोलें, क्योंकि मैं आपको रास्तबाज़ ठहराने की आरज़ू रखता हूँ। 33 लेकिन अगर आप कुछ बयान नहीं कर सकते तो मेरी सुनें, चुप रहें ताकि मैं आपको हिकमत की तालीम दूँ।"

34

अल्लाह हर एक को मुनासिब अज़्र देता है

1 फिर इलीह ने बात जारी रखकर कहा,

2 “ऐ दानिशमंदो, मेरे अलफाज सुनें! ऐ आलिमो, मुझ पर कान धरे! 3 क्योंकि कान यों अलफाज की जाँच-पड़ताल करता है जिस तरह ज़बान खुराक को चख लेती है। 4 आएँ, हम अपने लिए वह कुछ चुन लें जो दुस्त है, आपस में जान लें कि क्या कुछ अच्छा है। 5 अय्यूब ने कहा है, ‘गो मैं बेगुनाह हूँ तो भी अल्लाह ने मुझे मेरे हुकूक से महसूस कर रखा है। 6 जो फैसला मेरे बारे में किया गया है उसे मैं झूट करार देता हूँ। गो मैं बेकुसूर हूँ तो भी तीर ने मुझे यों ज़खमी कर दिया कि उसका इलाज मुमकिन ही नहीं।’ 7 अब मुझे बताएँ, क्या कोई अय्यूब जैसा बुरा है? वह तो कुफ़र की बातें पानी की तरह पीते, 8 बदकारों की सोहबत में चलते और बेदीनों के साथ अपना वक्त गुज़ारते हैं। 9 क्योंकि वह दावा करते हैं कि अल्लाह से लुत्फ़अंदोज़ होना इनसान के लिए बेफ़ायदा है।

10 चुनौचे ऐ समझदार मर्दों, मेरी बात सुनें! यह कैसे हो सकता है कि अल्लाह शरीर काम करे? यह तो मुमकिन ही नहीं कि कादिरे-मुतलक नाइनसाफी करे। 11 यकीनन वह इनसान को उसके आमाल का मुनासिब अज़्र देकर उस पर वह कुछ लाता है जिसका तक्राज़ा उसका चाल-चलन करता है। 12 यकीनन अल्लाह बेदीन हरकतें नहीं करता, कादिरे-मुतलक इनसाफ़ का खून नहीं करता। 13 किसने ज़मीन को अल्लाह के हवाले किया? किसने उसे पूरी दुनिया पर इख्तियार दिया? कोई नहीं! 14 अगर वह कभी इरादा करे कि अपनी रूह और अपना दम इनसान से वापस ले 15 तो तमाम लोग दम छोड़कर दुबारा खाक हो जाएंगे।

16 ऐ अय्यूब, अगर आपको समझ है तो सुनें, मेरी बातों पर ध्यान दें। 17 जो इनसाफ़ से नफ़रत करे क्या वह हुकूमत कर सकता है? क्या आप उसे मुजरिम ठहराना चाहते हैं जो रास्तबाज़ और कादिरे-मुतलक है, 18 जो बादशाह से कह सकता है, ‘ऐ बदमाश!’ और शुरफ़ा से, ‘ऐ बेदीनो!’? 19 वह तो न रईसों की जानिबदारी करता, न ओहदेदारों को पस्तहालों पर तरजीह देता है, क्योंकि सब ही को उसके हाथों ने बनाया है। 20 वह पल-भर में, आधी रात ही मर जाते हैं। शुरफ़ा को हिलाया जाता है तो वह कूच कर जाते हैं, ताक़तवरों को बग़ैर किसी तगो-दौ के हटाया जाता है।

21 क्योंकि अल्लाह की आँखें इनसान की राहों पर लगी रहती हैं, आदमज़ाद का हर कदम उसे नज़र आता है। 22 कहीं इतनी तारीकी या घना अंधेरा नहीं होता कि बदकार उसमें छुप सके। 23 और अल्लाह किसी भी इनसान को उस वक्त से आगाह नहीं करता जब उसे इलाही तख़्ते-अदालत के सामने आना है। 24 उसे तहकीकात की ज़रूरत ही नहीं बल्कि वह ज़ोरावरों को पाश पाश करके दूसरों को उनकी जगह खड़ा कर देता है। 25 वह तो उनकी हरकतों से वाकिफ़ है और उन्हें रात के वक्त यों तहो-बाला कर सकता है कि चूर चूर हो जाएँ। 26 उनकी बेदीनी के जवाब में वह उन्हें सबकी नज़रों के सामने पटख देता है। 27 उस की पैरवी से हटने और उस की राहों का लिहाज़ न करने का यही नतीजा है। 28 क्योंकि उनकी हरकतों के बाइस पस्तहालों की चीखें अल्लाह के सामने और मुसीबतज़दों की इल्लिजाएँ उसके कान तक पहुँचीं। 29 लेकिन अगर वह ख़ामोश भी रहे तो कौन उसे मुजरिम करार दे सकता है? अगर वह अपने चेहरे को छुपाए रखे तो कौन उसे देख सकता है? वह तो क़ौम पर बल्कि हर फ़रद पर हुकूमत करता है 30 ताकि शरीर हुकूमत न करे और क़ौम फ़ैस न जाए।

31 बेहतर है कि आप अल्लाह से कहें, ‘मुझे ग़लत राह पर लाया गया है, आइंदा मैं दुबारा बुरा काम नहीं करूँगा। 32 जो कुछ मुझे नज़र नहीं आता वह मुझे सिखा, अगर मुझसे नाइनसाफी हुई है तो आइंदा ऐसा नहीं करूँगा।’ 33 क्या अल्लाह को आपको वह अज़्र देना चाहिए जो आपकी नज़र में मुनासिब है, गो आपने उसे रद्द कर दिया है? लाज़िम है कि आप खुद ही फैसला करें, न कि मैं। लेकिन ज़रा वह कुछ पेश करें जो कुछ आप सहीह समझते हैं। 34 समझदार लोग बल्कि हर दानिशमंद जो मेरी बात सुने फ़रमाएगा, 35 ‘अय्यूब इल्म के साथ बात नहीं कर रहा, उसके अलफाज़ फ़हम से खाली हैं। 36 काश अय्यूब की पूरी जाँच-पड़ताल की जाए, क्योंकि वह शरीरों के-से जवाब पेश करता, 37 वह अपने गुनाह में इज़ाफ़ा करके हमारे स्वरूप अपने ज़ुर्म पर शक डालता और अल्लाह पर मुतअद्दिद इलज़ामात लगाता है।’”

35

अपने आपको रास्तबाज़ मत ठहराना

1 फिर इलीह ने अपनी बात जारी रखी,

2 “आप कहते हैं, ‘मैं अल्लाह से ज़्यादा रास्तबाज़ हूँ।’ क्या आप यह बात दुस्त समझते हैं 3 या यह कि ‘मुझे क्या फ़ायदा है, गुनाह न करने से मुझे क्या नफ़ा होता है?’ 4 मैं आपको और साथी दोस्तों को इसका जवाब बताता हूँ।

5 अपनी निगाह आसमान की तरफ़ उठाएँ, बुलंदियों के बादलों पर गौर करें। 6 अगर आपने गुनाह किया तो अल्लाह को क्या नुक़सान पहुँचा है? गो आपसे मुतअद्दिद ज़रायम भी सरज़द हुए हों ताहम वह मुतअस्सिर नहीं होगा। 7 रास्तबाज़ ज़िंदगी गुज़ारने से आप उसे क्या दे सकते हैं? आपके हाथों से अल्लाह को क्या हासिल हो सकता है? कुछ भी नहीं! 8 आपके हमजिंस इनसान ही आपकी बेदीनी से मुतअस्सिर होते हैं, और आदमज़ाद ही आपकी रास्तबाज़ी से फ़ायदा उठाते हैं।

9 जब लोगों पर सरख़ जुल्म होता है तो वह चीखते-चिल्लाते और बड़ों की ज़्यादती के बाइस मदद के लिए आवाज़ देते हैं। 10 लेकिन कोई नहीं कहता, ‘अल्लाह, मेरा ख़ालिक कहाँ है? वह कहाँ है जो रात के दौरान नग़मे अता करता, 11 जो हमें ज़मीन पर चलनेवाले जानवरों की निसबत ज़्यादा तालीम देता, हमें परिदों से ज़्यादा दानिशमंद बनाता है?’ 12 उनकी चीखों के बावजूद अल्लाह जवाब नहीं देता, क्योंकि वह घमंडी और बुरे हैं।

13 यक़ीनन अल्लाह ऐसी बातिल फ़रियाद नहीं सुनता, कादिरे-मुतलक उस पर ध्यान ही नहीं देता। 14 तो फिर वह आप पर क्यों तवज्जुह दे जब आप दावा करते हैं, 'मैं उसे नहीं देख सकता,' और 'मेरा मामला उसके सामने ही है, मैं अब तक उसका इंतज़ार कर रहा हूँ'? 15 वह आपकी क्यों सुने जब आप कहते हैं, 'अल्लाह का ग़ज़ब कभी सज़ा नहीं देता, उसे बुराई की परवा ही नहीं'? 16 जब अय्यूब मुँह खोलता है तो बेमानी बातें निकलती हैं। जो मुतअद्दिद अलफ़ाज़ वह पेश करता है वह इल्म से ख़ाली है।”

36

अल्लाह कितना अज़ीम है

1 इलीह ने अपनी बात जारी रखी,

2 “थोड़ी देर के लिए सब्र करके मुझे इसकी तशरीह करने दें, क्योंकि मज़ीद बहुत कुछ है जो अल्लाह के हक़ में कहना है। 3 मैं दूर दूर तक फ़िस्सा ताकि वह इल्म हासिल करूँ जिससे मेरे ख़ालिक की रास्ती साबित हो जाए। 4 यक़ीनन जो कुछ मैं कहूँगा वह फ़रेबदेह नहीं होगा। एक ऐसा आदमी आपके सामने खड़ा है जिसने खुलूसदिली से अपना इल्म हासिल किया है।

5 गो अल्लाह अज़ीम कुदरत का मालिक है ताहम वह खुलूसदिलों को रद्द नहीं करता। 6 वह बेदीन को ज़्यादा देर तक जीने नहीं देता, लेकिन मुसीबतज़दों का इनसाफ़ करता है। 7 वह अपनी आँखों को रास्तबाज़ों से नहीं फेरता बल्कि उन्हें बादशाहों के साथ तख़्तनशीन करके बुलंदियों पर सरफ़राज़ करता है।

8 फिर अगर उन्हें जंजीरों में जकड़ा जाए, उन्हें मुसीबत के रस्सों में गिरिफ़्तार किया जाए 9 तो वह उन पर ज़ाहिर करता है कि उनसे क्या कुछ सरज़द हुआ है, वह उन्हें उनके ज़रायम पेश करके उन्हें दिखाता है कि उनका तकब्बुर का रवैया है। 10 वह उनके कानों को तरबियत के लिए खोलकर उन्हें हुक्म देता है कि अपनी नाइनसाफ़ी से बाज़ आकर वापस आओ। 11 अगर वह मानकर उस की खिदमत करने लगें तो फिर वह जीते-जी अपने दिन खुशहाली में और अपने साल सुकून से गुज़ारेंगे। 12 लेकिन अगर न मानें तो उन्हें दरियाए-मौत को उबूर करना पड़ेगा, वह इल्म से महसूम रहकर मर जाएंगे।

13 बेदीन अपनी हरकतों से अपने आप पर इलाही ग़ज़ब लाते हैं। अल्लाह उन्हें बाँध भी ले, लेकिन वह मदद के लिए नहीं पुकारते। 14 ज़वानी में ही उनकी जान निकल जाती, उनकी ज़िंदगी मुक़द्दस फ़रिशतों के हाथों ख़त्म हो जाती है। 15 लेकिन अल्लाह मुसीबतज़दा को उस की मुसीबत के ज़रीए नज़ात देता, उस पर होनेवाले जुल्म की मारिफ़त उसका कान खोल देता है।

16 वह आपको भी मुसीबत के मुँह से निकलने की तरगीब दिलाकर एक ऐसी खुली जगह पर लाना चाहता है जहाँ स्कावट नहीं है, जहाँ आपकी मेज़ उम्दा खानों से भरी रहेगी। 17 लेकिन इस वक़्त आप अदालत का वह प्याला पीकर सेर हो गए हैं जो बेदीनों के नसीब में है, इस वक़्त अदालत और इनसाफ़ ने आपको अपनी सख़्त गिरिफ़्त में ले लिया है। 18 ख़बरदार कि यह बात आपको कुफ़र बकने पर न उकसाए, ऐसा न हो कि तावान की बड़ी रकम आपको ग़लत राह पर ले जाए। 19 क्या आपकी दौलत आपका दिफ़ा करके आपको मुसीबत से बचाएगी? या क्या आपकी सिर-तोड़ कोशिशें यह सरंजाम दे सकती हैं? हरगिज़ नहीं! 20 रात की आरज़ू न करें, उस वक़्त की जब कौमों जहाँ भी हों नेस्तो-नाबूद हो जाती हैं। 21 ख़बरदार रहें कि नाइनसाफ़ी की तरफ़ रूज़ न करें, क्योंकि आपको इसी लिए मुसीबत से आजमाया जा रहा है।

22 अल्लाह अपनी कुदरत में सरफ़राज़ है। कौन उस जैसा उस्ताद है? 23 किसने मुक़र्रर किया कि उसे किस राह पर चलना है? कौन कह सकता है, 'तूने ग़लत काम किया'? कोई नहीं! 24 उसके काम की तमज़ीद करना न भूलें, उस सारे काम की जिसकी लोगों ने अपने गीतों में हम्दो-सना की है। 25 हर शख्स ने यह काम देख लिया, इनसान ने दूर दूर से उसका मुलाहज़ा किया है।

26 अल्लाह अज़ीम है और हम उसे नहीं जानते, उसके सालों की तादाद मालूम नहीं कर सकते। 27 क्योंकि वह पानी के कतरे ऊपर खींचकर धुंध से बारिश निकाल लेता है, 28 वह बारिश जो बादल ज़मीन पर बरसा देते और जिसकी बौछाड़ें इनसान पर पड़ती हैं। 29 कौन समझ सकता है कि बादल किस तरह छा जाते, कि अल्लाह के मसकन से बिजलियाँ किस तरह कड़कती हैं? 30 वह अपने इर्दगिर्द रौशनी फैलाकर समुंदर की जड़ों तक सब कुछ रौशन करता है। 31 यों वह बादलों से कौमों की परवरिश करता, उन्हें कसरत की खुराक मुहैया करता है। 32 वह अपनी मुठियों को बादल की बिजलियों से भरकर हुक्म देता है कि क्या चीज़ अपना निशाना बनाएँ। 33 उसके बादलों की गरजती आवाज़ उसके ग़ज़ब का एलान करती, नाइनसाफ़ी पर उसके शदीद कहर को ज़ाहिर करती है।

37

1 यह सोचकर मेरा दिल लरज़कर अपनी जगह से उछल पड़ता है। 2 सुनें और उस की ग़ज़बनाक आवाज़ पर गौर करें, उस गुराती आवाज़ पर जो उसके मुँह से निकलती है। 3 आसमान तले हर मक़ाम पर बल्कि ज़मीन की इंतहा तक वह अपनी बिजली चमकने देता है। 4 इसके बाद कड़कती आवाज़ सुनाई देती, अल्लाह की रोबदार आवाज़ गरज उठती है। और जब उस की आवाज़ सुनाई देती है तो वह बिजलियों को नहीं रोकता।

5 अल्लाह अनोखे तरीक़े से अपनी आवाज़ गरजने देता है। साथ साथ वह ऐसे अज़ीम काम करता है जो हमारी समझ से बाहर हैं। 6 क्योंकि वह बर्फ़ को फ़रमाता है, 'ज़मीन पर पड़ जा' और मूसलाधार बारिश को, 'अपना पूरा जोर दिखा।' 7 यों वह हर इनसान को उसके घर में रहने

पर मजबूर करता है ताकि सब जान लें कि अल्लाह काम में मसरूफ़ है। 8 तब जंगली जानवर भी अपने भटों में छुप जाते, अपने घरों में पनाह लेते हैं।

9 तूफ़ान अपने कमरे से निकल आता, शिमाली हवा मुल्क में ठंड फैला देती है। 10 अल्लाह फूँक मारता तो पानी जम जाता, उस की सतह दूर दूर तक मुंजमिद हो जाती है। 11 अल्लाह बादलों को नमी से बोझिल करके उनके ज़रीए दूर तक अपनी बिजली चमकाता है। 12 उस की हिदायत पर वह मँडलाते हुए उसका हर हुक्म तकमील तक पहुँचाते हैं। 13 यों वह उन्हें लोगों की तरबियत करने, अपनी ज़मीन को बरकत देने या अपनी शफ़क़त दिखाने के लिए भेज देता है।

14 ऐ अय्यूब, मेरी इस बात पर ध्यान दें, स्क्रकर अल्लाह के अज़ीम कामों पर गौर करें। 15 क्या आपको मालूम है कि अल्लाह अपने कामों को कैसे तरतीब देता है, कि वह अपने बादलों से बिजली किस तरह चमकने देता है? 16 क्या आप बादलों की नक़लो-हरकत जानते हैं? क्या आपको उसके अनोखे कामों की समझ आती है जो कामिल इल्म रखता है? 17 जब ज़मीन जुनूबी लू की ज़द में आकर चुप हो जाती और आपके कपड़े तपने लगते हैं 18 तो क्या आप अल्लाह के साथ मिलकर आसमान को ठोंक ठोंककर पीतल के आइने की मानिंद सख़्त बना सकते हैं? हरगिज़ नहीं!

19 हमें बताएँ कि अल्लाह से क्या कहें! अफ़सोस, अंधेरे के बाइस हम अपने खयालात को तरतीब नहीं दे सकते। 20 अगर मैं अपनी बात पेश करूँ तो क्या उसे कुछ मालूम हो जाएगा जिसका पहले इल्म न था? क्या कोई भी कुछ बयान कर सकता है जो उसे पहले मालूम न हो? कभी नहीं! 21 एक वक़्त धूप नज़र नहीं आती और बादल ज़मीन पर साया डालते हैं, फिर हवा चलने लगती और मौसम साफ़ हो जाता है। 22 शिमाल से सुनहरी चमक करीब आती और अल्लाह रोबदार शानो-शौकत से घिरा हुआ आ पहुँचता है। 23 हम तो कादिरे-मुतलक तक नहीं पहुँच सकते। उस की कुदरत आला और रास्ती जोरावर है, वह कभी इनसाफ़ का खून नहीं करता। 24 इसलिए आदमज़ाद उससे डरते और दिल के दानिशमंद उसका ख़ौफ़ मानते हैं।”

38

अल्लाह का जवाब

1 फिर अल्लाह खुद अय्यूब से हमकलाम हुआ। तूफ़ान में से उसने उसे जवाब दिया,

2 “यह कौन है जो समझ से खाली बातें करने से मेरे मनसूबे के सहीह मतलब पर परदा डालता है? 3 मर्द की तरह कमरबस्ता हो जा! मैं तुझसे सवाल करता हूँ, और तू मुझे तालीम दे।

4 तू कहाँ था जब मैंने ज़मीन की बुनियाद रखी? अगर तुझे इसका इल्म हो तो मुझे बता! 5 किसने उस की लंबाई और चौड़ाई मुक़र्रर की? क्या तुझे मालूम है? किसने नापकर उस की पैमाइश की? 6 उसके सतून किस चीज़ पर लगाए गए? किसने उसके कोने का बुनियादी पत्थर रखा, 7 उस वक़्त जब सुबह के सितारे मिलकर शादियाना बजा रहे, तमाम फ़रिश्ते ख़ुशी के नारे लगा रहे थे?

8 जब समुंदर रहम से फूट निकला तो किसने दरवाज़े बंद करके उस पर काबू पाया? 9 उस वक़्त मैंने बादलों को उसका लिबास बनाया और उसे घने अंधेरे में यों लपेटा जिस तरह नौज़ाद को पोतड़ों में लपेटा जाता है। 10 उस की हूदूद मुक़र्रर करके मैंने उसे रोकने के दरवाज़े और कुंडे लगाए। 11 मैं बोला, ‘तुझे यहाँ तक आना है, इससे आगे न बढ़ना, तेरी रोबदार लहरों को यहीं स्कना है।’

12 क्या तूने कभी सुबह को हुक्म दिया या उसे तुलू होने की जगह दिखाई 13 ताकि वह ज़मीन के किनारों को पकड़कर बेदीनों को उससे झाड़ दे? 14 उस की रौशनी में ज़मीन यों तश्कील पाती है जिस तरह मिट्टी जिस पर मुहर लगाई जाए। सब कुछ रंगदार लिबास पहने नज़र आता है। 15 तब बेदीनों की रौशनी रोकी जाती, उनका उठाया हुआ बाजू तोड़ा जाता है।

16 क्या तू समुंदर के सरचश्मों तक पहुँचकर उस की गहराइयों में से गुज़रा है? 17 क्या मौत के दरवाज़े तुझ पर ज़ाहिर हुए, तुझे घने अंधेरे के दरवाज़े नज़र आए हैं? 18 क्या तुझे ज़मीन के वसी मैदानों की पूरी समझ आई है? मुझे बता अगर यह सब कुछ जानता है!

19 रौशनी के मंबा तक ले जानेवाला रास्ता कहाँ है? अंधेरे की रिहाइशगाह कहाँ है? 20 क्या तू उन्हें उनके मक़ामों तक पहुँचा सकता है? क्या तू उनके घरों तक ले जानेवाली राहों से वाकिफ़ है? 21 बेशक तू इसका इल्म रखता है, क्योंकि तू उस वक़्त जन्म ले चुका था जब यह पैदा हुए। तू तो क़दीम ज़माने से ही ज़िंदा है!

22 क्या तू वहाँ तक पहुँच गया है जहाँ बर्फ़ के ज़ख़ीरे जमा होते हैं? क्या तूने ओलों के गोदामों को देख लिया है? 23 मैं उन्हें मुसीबत के वक़्त के लिए महफूज़ रखता हूँ, ऐसे दिनों के लिए जब लड़ाई और जंग छिड़ जाए। 24 मुझे बता, उस जगह तक किस तरह पहुँचना है जहाँ रौशनी तकसीम होती है, या उस जगह जहाँ से मशरिकी हवा निकलकर ज़मीन पर बिखर जाती है?

25 किसने मूसलाधार बारिश के लिए रास्ता और गरजते तूफ़ान के लिए राह बनाई 26 ताकि इनसान से खाली ज़मीन और ग़ैरआबाद रेगिस्तान की आबपाशी हो जाए, 27 ताकि वीरानो-सुनसान बयाबान की प्यास बुझ जाए और उससे हरियाली फूट निकले? 28 क्या बारिश का बाप है? कौन शबनम के क़तरों का वालिद है?

29 बर्फ़ किस माँ के पेट से पैदा हुई? जो पाला आसमान से आकर ज़मीन पर पड़ता है किसने उसे जन्म दिया? 30 जब पानी पत्थर की तरह सख़्त हो जाए बल्कि गहरे समुंदर की सतह भी जम जाए तो कौन यह सरंजाम देता है? 31 क्या तू खोशाए-परवीन को बाँध सकता या जौजे की जंजीरों को खोल सकता है? 32 क्या तू करवा सकता है कि सितारों के मुख़लिफ़ झुरमुट उनके मुक़र्रर औकात के मुताबिक़ निकल आएँ?

क्या तू दुब्बे-अकबर की उसके बच्चों समेत कियादत करने के काबिल है? 33 क्या तू आसमान के कवानीन जानता या उस की ज़मीन पर हुकूमत मुतैयिन करता है?

34 क्या जब तू बुलंद आवाज़ से बादलों को हुकम दे तो वह तुझ पर मूसलाधार बारिश बरसाते हैं? 35 क्या तू बादल की बिजली ज़मीन पर भेज सकता है? क्या वह तेरे पास आकर कहती है, 'मैं खिदमत के लिए हाज़िर हूँ'? 36 किसने मिसर के लकलक को हिकमत दी, मुरग को समझ अता की? 37 किस को इतनी दानाई हासिल है कि वह बादलों को गिन सके? कौन आसमान के इन घड़ों को उस वक़्त उंडेल सकता है 38 जब मिट्टी ढाले हुए लोहे की तरह सख़्त हो जाए और ढेले एक दूसरे के साथ चिपक जाएँ? कोई नहीं!

39 क्या तू ही शेरनी के लिए शिकार करता या शेरों को सेर करता है 40 जब वह अपनी छुपने की जगहों में दबक जाएँ या गुंजान जंगल में कहीं ताक लगाए बैठे हों? 41 कौन कौवे को ख़ुराक मुहैया करता है जब उसके बच्चे भूक के बाइस अल्लाह को आवाज़ दें और मारे मारे फ़िरें?

39

1 क्या तुझे मालूम है कि पहाड़ी बकरियों के बच्चे कब पैदा होते हैं? जब हिरनी अपना बच्चा जन्म देती है तो क्या तू इसको मुलाहज़ा करता है? 2 क्या तू वह महीने गिनता रहता है जब बच्चे हिरनियों के पेट में हों? क्या तू जानता है कि किस वक़्त बच्चे जन्म देती हैं? 3 उस दिन वह दबक जाती, बच्चे निकल आते और दर्द-ज़ह ख़त्म हो जाता है। 4 उनके बच्चे ताक़तवर होकर खुले मैदान में फलते-फूलते, फिर एक दिन चले जाते हैं और अपनी माँ के पास वापस नहीं आते।

5 किसने जंगली गधे को खुला छोड़ दिया? किसने उसके रस्से खोल दिए? 6 मैं ही ने बयाबान उसका घर बना दिया, मैं ही ने मुकर्रर किया कि बंजर ज़मीन उस की रिहाइशग़ाह हो। 7 वह शहर का शोर-शराबा देखकर हँस उठता, और उसे हाँकनेवाले की आवाज़ सुननी नहीं पड़ती। 8 वह चरने के लिए पहाड़ी इलाक़े में इधर उधर घूमता और हरियाली का खोज लगाता रहता है।

9 क्या जंगली बैल तेरी खिदमत करने के लिए तैयार होगा? क्या वह कभी रात को तेरी चरनी के पास गुज़ारेगा? 10 क्या तू उसे बाँधकर हल चला सकता है? क्या वह वादी में तेरे पीछे चलकर सुहागा फेरेगा? 11 क्या तू उस की बड़ी ताक़त देखकर उस पर एतमाद करेगा? क्या तू अपना सख़्त काम उसके सुपुर्द करेगा? 12 क्या तू भरोसा कर सकता है कि वह तेरा अनाज जमा करके गाहने की जगह पर ले आए? हरगिज़ नहीं!

13 शूतुरमुरग़ खुशी से अपने परों को फड़फड़ाता है। लेकिन क्या उसका शाहपर लकलक या बाज़ के शाहपर की मानिंद है? 14 वह तो अपने अंडे ज़मीन पर अकेले छोड़ता है, और वह मिट्टी ही पर पकते हैं। 15 शूतुरमुरग़ को खयाल तक नहीं आता कि कोई उन्हें पाँवों तले कुचल सकता या कोई जंगली जानवर उन्हें रौंद सकता है। 16 लगता नहीं कि उसके अपने बच्चे हैं, क्योंकि उसका उनके साथ सुलूक इतना सख़्त है। अगर उस की मेहनत नाकाम निकले तो उसे परवा ही नहीं, 17 क्योंकि अल्लाह ने उसे हिकमत से महसूस रखकर उसे समझ से न नवाज़ा। 18 तो भी वह इतनी तेज़ी से उछलकर भाग जाता है कि घोड़े और घुड़सवार की दौड़ देखकर हँसने लगता है।

19 क्या तू घोड़े को उस की ताक़त देकर उस की गरदन को अयाल से आरास्ता करता है? 20 क्या तू ही उसे टिड्डी की तरह फलॉंगने देता है? जब वह ज़ोर से अपने नथनों को फूलाकर आवाज़ निकालता है तो कितना रोबदार लगता है! 21 वह वादी में सुम मार मारकर अपनी ताक़त की खुशी मनाता, फिर भागकर मैदाने-जंग में आ जाता है। 22 वह ख़ौफ़ का मज़ाक़ उड़ाता और किसी से भी नहीं डरता, तलवार के स्वरु भी पीछे नहीं हटता। 23 उसके ऊपर तरकश खड़खड़ाता, नेज़ा और शमशेर चमकती है। 24 वह बड़ा शोर मचाकर इतनी तेज़ी और जोशो-खुरोश से दुश्मन पर हमला करता है कि बिगुल बजते वक़्त भी रोका नहीं जाता। 25 जब भी बिगुल बजे वह ज़ोर से हिनहिनाता और दूर ही से मैदाने-जंग, कर्माँडरों का शोर और जंग के नारे सुँघ लेता है।

26 क्या बाज़ तेरी ही हिकमत के ज़रीए हवा में उड़कर अपने परों को ज़ुनूब की जानिब फैला देता है? 27 क्या उकाब तेरे ही हुकम पर बुलंदियों पर मँडलाता और ऊँची ऊँची जगहों पर अपना घोंसला बना लेता है? 28 वह चटान पर रहता, उसके टूटे-फूटे किनारों और किलाबंद जगहों पर बसेरा करता है। 29 वहाँ से वह अपने शिकार का खोज लगाता है, उस की आँखें दूर दूर तक देखती हैं। 30 उसके बच्चे खून के लालच में रहते, और जहाँ भी लाश हो वहाँ वह हाज़िर होता है।”

40

अय्यूब रब को जवाब नहीं दे सकता

1 रब ने अय्यूब से पूछा,

2 “क्या मलामत करनेवाला अदालत में कादिरे-मुतलक से झगड़ना चाहता है? अल्लाह की सरज़निश करनेवाला उसे जवाब दे!”

3 तब अय्यूब ने जवाब देकर रब से कहा,

4 “मैं तो नालायक हूँ, मैं किस तरह तुझे जवाब दूँ? मैं अपने मुँह पर हाथ रखकर खामोश रहूँगा। 5 एक बार मैंने बात की और इसके बाद मज़ीद एक दफ़ा, लेकिन अब से मैं जवाब में कुछ नहीं कहूँगा।”

अल्लाह का जवाब : क्या तुझे मेरी जैसी कुदरत हासिल है?

6 तब अल्लाह तूफान में से अय्यूब से हमकलाम हुआ,

7 “मर्द की तरह कमरबस्ता हो जा! मैं तुझसे सवाल करूँ और तू मुझे तालीम दे। 8 क्या तू वाकई मेरा इनसाफ़ मनसूख करके मुझे मुजरिम ठहराना चाहता है ताकि खुद रास्तबाज़ ठहरे? 9 क्या तेरा बाज़ू अल्लाह के बाज़ू जैसा जोरावर है? क्या तेरी आवाज़ उस की आवाज़ की तरह कड़कती है। 10 आ, अपने आपको शानो-शौकत से आरास्ता कर, इज्जतो-जलाल से मुलब्स हो जा! 11 बयकवक्त अपना शदीद कहर मुख्तलिफ़ जगहों पर नाज़िल कर, हर मग़सूर को अपना निशाना बनाकर उसे खाक में मिला दे। 12 हर मुतकब्बिर पर गौर करके उसे पस्त कर। जहाँ भी बेदीन हो वहीं उसे कुचल दे। 13 उन सबको मिट्टी में छुपा दे, उन्हें रस्सों में जकड़कर किसी खुफ़िया जगह गिरिफ़्तार कर। 14 तब ही मैं तेरी तारीफ़ करके मान जाऊँगा कि तेरा दहना हाथ तुझे नजात दे सकता है।

अल्लाह की कुदरत और हिकमत की दो मिसालें

15 बहेमोत * पर गौर कर जिसे मैंने तुझे खलक करते वक़्त बनाया और जो बैल की तरह घास खाता है। 16 उस की कमर में कितनी ताक़त, उसके पेट के पट्टों में कितनी कुव्वत है। 17 वह अपनी दम को देवदार के दरख़्त की तरह लटकने देता है, उस की रानों की नसें मज़बूती से एक दूसरी से जुड़ी हुई हैं। 18 उस की हड्डियाँ पीतल के-से पायप, लोहे के-से सरीए हैं। 19 वह अल्लाह के कामों में से अब्वल है, उसके ख़ालिक ही ने उसे उस की तलवार दी। 20 पहाड़ियाँ उसे अपनी पैदावार पेश करती, खुले मैदान के तमाम जानवर वहाँ खेलते कूदते हैं। 21 वह काँटेदार झाड़ियों के नीचे आराम करता, सरकंडों और दलदल में छुपा रहता है। 22 खारदार झाड़ियाँ उस पर साया डालती और नदी के सफ़ेदा के दरख़्त उसे घेरे रखते हैं। 23 जब दरिया सैलाब की सूरत इख़्तियार करे तो वह नहीं भागता। गो दरियाए-यरदन उसके मुँह पर फूट पड़े तो भी वह अपने आपको महफूज़ समझता है। 24 क्या कोई उस की आँखों में उँगलियाँ डालकर उसे पकड़ सकता है? अगर उसे फंदे में पकड़ा भी जाए तो क्या कोई उस की नाक को छेद सकता है? हरगिज़ नहीं!

41

1 क्या तू लिवियातान * अज़दहे को मछली के काँटे से पकड़ सकता या उस की ज़बान को रस्से से बाँध सकता है? 2 क्या तू उस की नाक छेदकर उसमें से रस्सा गुज़ार सकता या उसके जबड़े को काँटे से चीर सकता है? 3 क्या वह कभी तुझसे बार बार रहम माँगेगा या नरम नरम अलफ़ाज़ से तेरी खुशामद करेगा? 4 क्या वह कभी तेरे साथ अहद करेगा कि तू उसे अपना गुलाम बनाए रखे? हरगिज़ नहीं! 5 क्या तू परिंदे की तरह उसके साथ खेल सकता या उसे बाँधकर अपनी लड़कियों को दे सकता है ताकि वह उसके साथ खेलें? 6 क्या सौदागर कभी उसका सौदा करेंगे या उसे ताजिरो में तकसीम करेंगे? कभी नहीं! 7 क्या तू उस की खाल को भालों से या उसके सर को हारपूनों से भर सकता है? 8 एक दफ़ा उसे हाथ लगाया तो यह लड़ाई तुझे हमेशा याद रहेगी, और तू आइंदा ऐसी हरकत कभी नहीं करेगा!

9 यक़ीनन उस पर काबू पाने की हर उम्मीद फ़रेबदेह साबित होगी, क्योंकि उसे देखते ही इनसान गिर जाता है। 10 कोई इतना बेधड़क नहीं है कि उसे मुश्तइल करे। तो फिर कौन मेरा सामना कर सकता है? 11 किसने मुझे कुछ दिया है कि मैं उसका मुआवज़ा दूँ। आसमान तले हर चीज़ मेरी ही है!

12 मैं तुझे उसके आज्ञा के बयान से महसूस नहीं रखूँगा, कि वह कितना बड़ा, ताक़तवर और खूबसूरत है। 13 कौन उस की खाल † उतार सकता, कौन उसके ज़िरा-बक़तर की दो तहों के अंदर तक पहुँच सकता है? 14 कौन उसके मुँह का दरवाज़ा खोलने की ज़रूरत करे? उसके हौलनाक दाँत देखकर इनसान के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। 15 उस की पीठ पर एक दूसरी से खूब जुड़ी हुई ढालों की कतारें होती हैं। 16 वह इतनी मज़बूती से एक दूसरी से लगी होती है कि उनके दरमियान से हवा भी नहीं गुज़र सकती, 17 बल्कि यों एक दूसरी से चिमटी और लिपटी रहती हैं कि उन्हें एक दूसरी से अलग नहीं किया जा सकता।

18 जब छीकें मारे तो बिजली चमक उठती है। उस की आँखें तुलूए-सुबह की पलकों की मानिंद हैं। 19 उसके मुँह से मशालें और चिंगारियाँ खारिज होती हैं, 20 उसके नथनों से धुआँ यों निकलता है जिस तरह भड़कती और दहकती आग पर रखी गई देग से। 21 जब फूँक मारे तो कोयले दहक उठते और उसके मुँह से शोले निकलते हैं।

22 उस की गरदन में इतनी ताक़त है कि जहाँ भी जाए वहाँ उसके आगे आगे मायूसी फैल जाती है। 23 उसके गोशत-पोस्त की तहें एक दूसरी से खूब जुड़ी हुई हैं, वह ढाले हुए लोहे की तरह मज़बूत और बे-लचक हैं। 24 उसका दिल पत्थर जैसा सख़्त, चक्की के निचले पाट जैसा मुस्तहक़म है।

25 जब उठे तो जोरावर डर जाते और दहशत खाकर पीछे हट जाते हैं। 26 हथियारों का उस पर कोई असर नहीं होता, खाह कोई तलवार, नेज़े, बरछी या तीर से उस पर हमला क्यों न करे। 27 वह लोहे को भूसा और पीतल को गली सड़ी लकड़ी समझता है। 28 तीर उसे नहीं भगा सकते, और अगर फ़लाखन के पत्थर उस पर चलाओ तो उनका असर भूसे के बराबर है। 29 डंडा उसे तिनका-सा लगता है, और वह शमशेर का शोर-शराबा सुनकर हँस उठता है। 30 उसके पेट पर तेज़ ठीकरे से लगे हैं, और जिस तरह अनाज पर गाहने का आला चलाया जाता है उसी तरह वह कीचड़ पर चलता है। 31 जब समुंदर की गहराइयों में से गुज़रे तो पानी उबलती देग की तरह खौलने लगता है। वह मरहम के मुख्तलिफ़ अजज़ा को मिला मिलाकर तैयार करनेवाले अन्तार की तरह समुंदर को हरकत में लाता है। 32 अपने पीछे वह चमकता-दमकता रास्ता छोड़ता

* 40:15 साइंसदान मुत्तफ़िक़ नहीं कि यह कौन-सा जानवर था।

* 41:1 साइंसदान मुत्तफ़िक़ नहीं कि यह कौन-सा जानवर था।

† 41:13 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : बैरूनी लिबास।

है। तब लगता है कि समुंदर की गहराइयों के सफेद बाल हैं। ³³ दुनिया में उस जैसा कोई मखलूक नहीं, ऐसा बनाया गया है कि कभी न डरे। ³⁴ जो भी आला हो उस पर वह हिकारत की निगाह से देखता है, वह तमाम रोबदार जानवरों का बादशाह है।”

42

अय्यूब की आखिरी बात

¹ तब अय्यूब ने जवाब में रब से कहा,

² “मैंने जान लिया है कि तू सब कुछ कर पाता है, कि तेरा कोई भी मनसूबा रोका नहीं जा सकता। ³ तूने फरमाया, ‘यह कौन है जो समझ से खाली बातें करने से मेरे मनसूबे के सहीह मतलब पर परदा डालता है?’ यक़ीनन मैंने ऐसी बातें बयान कीं जो मेरी समझ से बाहर हैं, ऐसी बातें जो इतनी अनोखी हैं कि मैं उनका इल्म रख ही नहीं सकता। ⁴ तूने फरमाया, ‘सुन मेरी बात तो मैं बोलूँगा। मैं तुझसे सवाल करता हूँ, और तू मुझे तालीम दे।’ ⁵ पहले मैंने तेरे बारे में सिर्फ सुना था, लेकिन अब मेरी अपनी आँखों ने तुझे देखा है। ⁶ इसलिए मैं अपनी बातें मुस्तरद करता, अपने आप पर खाक और राख डालकर तौबा करता हूँ।”

अय्यूब अपने दोस्तों की शफ़ाअत करता है

⁷ अय्यूब से यह तमाम बातें कहने के बाद रब इलीफ़ज़ तेमानी से हमकलाम हुआ, “मैं तुझसे और तेरे दो दोस्तों से गुस्से हूँ, क्योंकि गो मेरे बंदे अय्यूब ने मेरे बारे में दुस्त बातें कीं मगर तुमने ऐसा नहीं किया। ⁸ चुनौचे अब सात जवान बैल और सात मेंढे लेकर मेरे बंदे अय्यूब के पास जाओ और अपनी खातिर भस्म होनेवाली कुरबानी पेश करो। लाज़िम है कि अय्यूब तुम्हारी शफ़ाअत करे, वरना मैं तुम्हें तुम्हारी हमाक़त का पूरा अज़्र दूँगा। लेकिन उस की शफ़ाअत पर मैं तुम्हें मुआफ़ करूँगा, क्योंकि मेरे बंदे अय्यूब ने मेरे बारे में वह कुछ बयान किया जो सहीह है जबकि तुमने ऐसा नहीं किया।”

⁹ इलीफ़ज़ तेमानी, बिलदद सूखी और ज़ूफ़र नामाती ने वह कुछ किया जो रब ने उन्हें करने को कहा था तो रब ने अय्यूब की सुनी।

¹⁰ और जब अय्यूब ने दोस्तों की शफ़ाअत की तो रब ने उसे इतनी बरक़त दी कि आखिरकार उसे पहले की निसबत दुगनी दौलत हासिल हुई। ¹¹ तब उसके तमाम भाई-बहनें और पुराने जाननेवाले उसके पास आए और घर में उसके साथ खाना खाकर उस आफ़त पर अफ़सोस किया जो रब अय्यूब पर लाया था। हर एक ने उसे तसल्ली देकर उसे एक सिक्का और सोने का एक छल्ला दे दिया।

¹² अब से रब ने अय्यूब को पहले की निसबत कहीं ज्यादा बरक़त दी। उसे 14,000 बकरियाँ, 6,000 ऊँट, बैलों की 1,000 जोड़ियाँ और 1,000 गधियाँ हासिल हुईं। ¹³ नीज़, उसके मज़ीद सात बटे और तीन बेटियाँ पैदा हुईं। ¹⁴ उसने बेटियों के यह नाम रखे : पहली का नाम यमीमा, दूसरी का कसियह और तीसरी का करन-हप्पूक। ¹⁵ तमाम मुल्क में अय्यूब की बेटियों जैसी ख़ूबसूरत ख़वातीन पाई नहीं जाती थीं। अय्यूब ने उन्हें भी मीरास में मिलकियत दी, ऐसी मिलकियत जो उनके भाइयों के दरमियान ही थी।

¹⁶ अय्यूब मज़ीद 140 साल ज़िंदा रहा, इसलिए वह अपनी औलाद को चौथी पुश्त तक देख सका। ¹⁷ फिर वह दराज़ ज़िंदगी से आसूदा होकर इंतकाल कर गया।

जबूर पहली किताब : 1-41

1

दो राहें

- 1 मुबारक है वह जो न बेदीनों के मशवरे पर चलता, न गुनाहगारों की राह पर कदम रखता, और न तानाज़नों के साथ बैठता है
- 2 बल्कि रब की शरीअत से लुत्फ़अंदोज़ होता और दिन-रात उसी पर गौरो-खौज़ करता रहता है।
- 3 वह नहरों के किनारे पर लगे दरख़्त की मानिंद है। वक़्त पर वह फल लाता, और उसके पत्ते नहीं मुरझाते। जो कुछ भी करे उसमें वह कामयाब है।

- 4 बेदीनों का यह हाल नहीं होता। वह भूसे की मानिंद हैं जिसे हवा उड़ा ले जाती है।
- 5 इसलिए बेदीन अदालत में कायम नहीं रहेंगे, और गुनाहगार का रास्तबाज़ों की मजलिस में मक़ाम नहीं होगा।
- 6 क्योंकि रब रास्तबाज़ों की राह की पहरादारी करता है जबकि बेदीनों की राह तबाह हो जाएगी।

2

अल्लाह का मसीह

- 1 अक़वाम क्यों तैश में आ गई हैं? उम्मतें क्यों बेकार साज़िशें कर रही हैं?
- 2 दुनिया के बादशाह उठ खड़े हुए, हुक्मरान रब और उसके मसीह के खिलाफ जमा हो गए हैं।
- 3 वह कहते हैं, “आओ, हम उनकी जंजीरों को तोड़कर आज़ाद हो जाएँ, उनके रस्सों को दूर तक फेंक दें।”
- 4 लेकिन जो आसमान पर तख़्तनशीन है वह हँसता है, रब उनका मज़ाक उड़ाता है।
- 5 फिर वह गुस्से से उन्हें डाँटता, अपना शदीद ग़ज़ब उन पर नाज़िल करके उन्हें डराता है।
- 6 वह फ़रमाता है, “मैंने खुद अपने बादशाह को अपने मुक़द्दस पहाड़ सिय्यून पर मुक़र्रर किया है!”
- 7 आओ, मैं रब का फ़रमान सुनाऊँ। उसने मुझसे कहा, “तू मेरा बेटा है, आज मैं तेरा बाप बन गया हूँ।
- 8 मुझसे माँग तो मैं तुझे मीरास में तमाम अक़वाम अता करूँगा, दुनिया की इतहा तक सब कुछ बख़्श दूँगा।
- 9 तू उन्हें लोहे के शाही असा से पाश पाश करेगा, उन्हें मिट्टी के बरतनों की तरह चकनाचूर करेगा।”
- 10 चुनौचे ऐ बादशाहो, समझ से काम लो! ऐ दुनिया के हुक्मरानो, तरबियत क़बूल करो!
- 11 खौफ़ करते हुए रब की खिदमत करो, लरज़ते हुए खुशी मनाओ।
- 12 बेटे को बोसा दो, ऐसा न हो कि वह गुस्से हो जाए और तुम रास्ते में ही हलाक हो जाओ। क्योंकि वह एकदम तैश में आ जाता है। मुबारक है वह सब जो उसमें पनाह लेते हैं।

3

सुबह को मदद के लिए दुआ

- 1 दाऊद का जबूर। उस वक़्त जब उसे अपने बेटे अबीसलूम से भागना पड़ा।
- ऐ रब, मेरे दुश्मन कितने ज़्यादा हैं, कितने लोग मेरे खिलाफ उठ खड़े हुए हैं!
- 2 मेरे बारे में बहुतेरे कह रहे हैं, “अल्लाह इसे छुटकारा नहीं देगा।” (सिलाह) *
- 3 लेकिन तू ऐ रब, चारों तरफ़ मेरी हिफ़ाज़त करनेवाली ढाल है। तू मेरी इज़ज़त है जो मेरे सर को उठाए रखता है।
- 4 मैं बुलंद आवाज़ से रब को पुकारता हूँ, और वह अपने मुक़द्दस पहाड़ से मेरी सुनता है। (सिलाह)
- 5 मैं आराम से लेटकर सो गया, फिर जाग उठा, क्योंकि रब खुद मुझे सँभाले रखता है।
- 6 उन हज़ारों से मैं नहीं डरता जो मुझे घेरे रखते हैं।
- 7 ऐ रब, उठ! ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे रिहा कर! क्योंकि तूने मेरे तमाम दुश्मनों के मुँह पर थप्पड़ मारा, तूने बेदीनों के दाँतों को तोड़ दिया है।
- 8 रब के पास नजात है। तेरी बरक़त तेरी क़ौम पर आए। (सिलाह)

* 3:2 सिलाह ग़ालिबन गाने बजाने के बारे में कोई हिदायत है। मुफ़सिरीन में इसके मतलब के बारे में इत्फ़ाके-राय नहीं होती।

4

शाम को मदद के लिए दुआ

1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तारदार साजों के साथ गाना है।

ऐ मेरी रास्ती के खुदा, मेरी सुन जब मैं तुझे पुकारता हूँ। ऐ तू जो मुसीबत में मेरी मखलसी रहा है मुझ पर मेहरबानी करके मेरी इल्तिजा सुन!

2 ऐ आदमजादो, मेरी इज्जत कब तक खाक में मिलाई जाती रहेगी? तुम कब तक बातिल चीजों से लिपटे रहोगे, कब तक झूट की तलाश में रहोगे? (सिलाह)

3 जान लो कि रब ने ईमानदार को अपने लिए अलग कर रखा है। रब मेरी सुनेगा जब मैं उसे पुकारूँगा।

4 गुस्से में आते वक़्त गुनाह मत करना। अपने बिस्तर पर लेटकर मामले पर सोच-बिचार करो, लेकिन दिल में, खामोशी से। (सिलाह)

5 रास्ती की कुरबानियाँ पेश करो, और रब पर भरोसा रखो।

6 बहुतेरे शक कर रहे हैं, “कौन हमारे हालात ठीक करेगा?” ऐ रब, अपने चेहरे का नूर हम पर चमका!

7 तूने मेरे दिल को खुशी से भर दिया है, ऐसी खुशी से जो उनके पास भी नहीं होती जिनके पास कसरत का अनाज और अंगूर है।

8 मैं आराम से लेटकर सो जाता हूँ, क्योंकि तू ही ऐ रब मुझे हिफाज़त से बसने देता है।

5

हिफाज़त के लिए दुआ

1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। इसे बाँसरी के साथ गाना है।

ऐ रब, मेरी बातें सुन, मेरी आहों पर ध्यान दे!

2 ऐ मेरे बादशाह, मेरे खुदा, मदद के लिए मेरी चीखें सुन, क्योंकि मैं तुझी से दुआ करता हूँ।

3 ऐ रब, सुबह को तू मेरी आवाज़ सुनता है, सुबह को मैं तुझे सब कुछ तरतीब से पेश करके जवाब का इंतज़ार करने लगता हूँ।

4 क्योंकि तू ऐसा खुदा नहीं है जो बेदीनी से खुश हो। जो बुरा है वह तेरे हुज़ूर नहीं ठहर सकता।

5 मग़स्स तेरे हुज़ूर खड़े नहीं हो सकते, बदकार से तू नफ़रत करता है।

6 झूट बोलनेवालों को तू तबाह करता, खूनख़ार और धोकेबाज़ से रब धिन खाता है।

7 लेकिन मुझ पर तूने बड़ी मेहरबानी की है, इसलिए मैं तेरे घर में दाखिल हो सकता, मैं तेरा खौफ़ मानकर तेरी मुक़द्दस सुकूनतगाह के सामने सिजदा करता हूँ।

8 ऐ रब, अपनी रास्त राह पर मेरी राहनुमाई कर ताकि मेरे दुश्मन मुझ पर गालिब न आएँ। अपनी राह को मेरे आगे हमवार कर।

9 क्योंकि उनके मुँह से एक भी काबिले-एतमाद बात नहीं निकलती। उनका दिल तबाही से भरा रहता, उनका गला खुली कब्र है, और उनकी ज़बान चिकनी-चुपड़ी बातें उगलती रहती है।

10 ऐ रब, उन्हें उनके ग़लत काम का अज़्र दे। उनकी साज़िशें उनकी अपनी तबाही का बाइस बनें। उन्हें उनके मुतअद्दिद गुनाहों के बाइस निकालकर मुंतशिर कर दे, क्योंकि वह तुझसे सरकश हो गए हैं।

11 लेकिन जो तुझमें पनाह लेते हैं वह सब खुश हों, वह अबद तक शादियाना बजाएँ, क्योंकि तू उन्हें महफूज़ रखता है। तेरे नाम को प्यार करनेवाले तेरा जशन मनाएँ।

12 क्योंकि तू ऐ रब, रास्तबाज़ को बरकत देता है, तू अपनी मेहरबानी की ढाल से उस की चारों तरफ़ हिफाज़त करता है।

6

मुसीबत में दुआ (तौबा का पहला जबूर)

1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तारदार साजों के साथ गाना है।

ऐ रब, गुस्से में मुझे सज़ा न दे, तैश में मुझे तंबीह न कर।

2 ऐ रब, मुझ पर रहम कर, क्योंकि मैं निढाल हूँ। ऐ रब, मुझे शफ़ा दे, क्योंकि मेरे आज्ञा दहशतज़दा हैं।

3 मेरी जान निहायत खौफ़ज़दा है। ऐ रब, तू कब तक देर करेगा?

4 ऐ रब, वापस आकर मेरी जान को बचा। अपनी शफ़क़त की खातिर मुझे छुटकारा दे।

- 5 क्योंकि मुरदा तुझे याद नहीं करता। पाताल में कौन तेरी सताइश करेगा?
- 6 मैं कराहते कराहते थक गया हूँ। पूरी रात रोने से बिस्तर भीग गया है, मेरे आँसुओं से पलंग गल गया है।
- 7 गम के मोरे मेरी आँखें सूज गई हैं, मेरे मुखालिफों के हमलों से वह ज़ाया होती जा रही हैं।
- 8 ऐ बदकारो, मुझसे दूर हो जाओ, क्योंकि रब ने मेरी आहो-बुका सुनी है।
- 9 रब ने मेरी इल्तिजाओं को सुन लिया है, मेरी दुआ रब को कबूल है।
- 10 मेरे तमाम दुश्मनों की स्सवाई हो जाएगी, और वह सख्त घबरा जाएंगे। वह मुड़कर अचानक ही शरमिंदा हो जाएंगे।

7

इनसाफ़ के लिए दुआ

- 1 दाऊद का वह मातमी गीत जो उसने कूश बिनयमीनी की बातों पर रब की तमजीद में गाया।
ऐ रब मेरे खुदा, मैं तुझमें पनाह लेता हूँ। मुझे उन सबसे बचाकर छुटकारा दे जो मेरा ताक्कुब कर रहे हैं,
2 वरना वह शेरबबर की तरह मुझे फाड़कर टुकड़े टुकड़े कर देंगे, और बचानेवाला कोई नहीं होगा।
- 3 ऐ रब मेरे खुदा, अगर मुझसे यह कुछ सरज़द हुआ और मेरे हाथ कुसूरवार हों,
4 अगर मैंने उससे बुरा सुलूक किया जिसका मेरे साथ झगडा नहीं था या अपने दुश्मन को खाहमखाह लूट लिया हो
5 तो फिर मेरा दुश्मन मेरे पीछे पड़कर मुझे पकड़ ले। वह मेरी जान को मिट्टी में कुचल दे, मेरी इज्जत को खाक में मिलाए। (सिलाह)
- 6 ऐ रब, उठ और अपना गज़ब दिखा! मेरे दुश्मनों के तैश के खिलाफ़ खड़ा हो जा। मेरी मदद करने के लिए जाग उठ! तूने खुद अदालत का हुक्म दिया है।
7 अक्रवाम तेरे इर्दगिर्द जमा हो जाएँ जब तू उनके ऊपर बुलंदियों पर तख़्तनशीन हो जाए।
8 रब अक्रवाम की अदालत करता है। ऐ रब, मेरी रास्तबाज़ी और बेगुनाही का लिहाज़ करके मेरा इनसाफ़ कर।
9 ऐ रास्त खुदा, जो दिल की गहराइयों को तह तक जाँच लेता है, बेदीनों की शरारतें ख़त्म कर और रास्तबाज़ को कायम रख।
- 10 अल्लाह मेरी ढाल है। जो दिल से सीधी राह पर चलते हैं उन्हें वह रिहाई देता है।
11 अल्लाह आदिल मुंसिफ़ है, ऐसा खुदा जो रोज़ाना लोगों की सरज़निश करता है।
- 12 यक्रीन इस वक़्त भी दुश्मन अपनी तलवार को तेज़ कर रहा, अपनी कमान को तानकर निशाना बाँध रहा है।
13 लेकिन जो मोहलक हथियार और जलते हुए तीर उसने तैयार कर रखे हैं उनकी ज़द में वह खुद ही आ जाएगा।
14 देख, बुराई का बीज उसमें उग आया है। अब वह शरारत से हामिला होकर फिरता और झूट के बच्चे जन्म देता है।
15 लेकिन जो गढा उसने दूसरों को फँसाने के लिए खोद खोदकर तैयार किया उसमें खुद गिर पड़ा है।
16 वह खुद अपनी शरारत की ज़द में आया, उसका जुल्म उसके अपने सर पर नाज़िल होगा।
- 17 मैं रब की सताइश करूँगा, क्योंकि वह रास्त है। मैं रब तआला के नाम की तारीफ़ में गीत गाऊँगा।

8

मखलूक़ात का ताज

- 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : गितीत।
ऐ रब हमारे आका, तेरा नाम पूरी दुनिया में कितना शानदार है! तूने आसमान पर ही अपना जलाल ज़ाहिर कर दिया है।
2 अपने मुखालिफ़ों के जवाब में तूने छोटे बच्चों और शीरखारों की ज़बान को तैयार किया है ताकि वह तेरी कुव्वत से दुश्मन और कीनापरवर को ख़त्म करें।
- 3 जब मैं तेरे आसमान का मुलाहज़ा करता हूँ जो तेरी उँगलियों का काम है, चाँद और सितारों पर गौर करता हूँ जिनको तूने अपनी अपनी जगह पर कायम किया
4 तो इनसान कौन है कि तू उसे याद करे या आदमज़ाद कि तू उसका खयाल रखे?

- 5 तूने उसे फरिश्तों से कुछ ही कम बनाया, * तूने उसे जलाल और इज्जत का ताज पहनाया।
- 6 तूने उसे अपने हाथों के कामों पर मुकर्रर किया, सब कुछ उसके पाँवों के नीचे कर दिया,
- 7 खाह भेड़-बकरियाँ हों खाह गाय-बैल, जंगली जानवर,
- 8 परिदे, मछलियाँ या समुंदरी राहों पर चलनेवाले बाकी तमाम जानवर।

9 ऐ रब हमारे आका, पूरी दुनिया में तेरा नाम कितना शानदार है!

9

अल्लाह की कुदरत और इनसाफ़

- 1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तर्ज : अलामूत-लब्बीन।
- ऐ रब, मैं पूरे दिल से तेरी सताइश करूँगा, तेरे तमाम मोजिजात का बयान करूँगा।
- 2 मैं शादमान होकर तेरी खुशी मनाऊँगा। ऐ अल्लाह तआला, मैं तेरे नाम की तमजीद में गीत गाऊँगा।
- 3 जब मेरे दुश्मन पीछे हट जाएंगे तो वह ठोकर खाकर तेरे हुजूर तबाह हो जाएंगे।
- 4 क्योंकि तूने मेरा इनसाफ़ किया है, तू तख़्त पर बैठकर रास्त मुसिफ़ साबित हुआ है।
- 5 तूने अक्रवाम को मलामत करके बेदीनों को हलाक कर दिया, उनका नामो-निशान हमेशा के लिए मिटा दिया है।
- 6 दुश्मन तबाह हो गया, अबद तक मलबे का ढेर बन गया है। तूने शहरों को जड़ से उखाड़ दिया है, और उनकी याद तक बाकी नहीं रहेगी।
- 7 लेकिन रब हमेशा तक तख़्तनशीन रहेगा, और उसने अपने तख़्त को अदालत करने के लिए खड़ा किया है।
- 8 वह रास्ती से दुनिया की अदालत करेगा, इनसाफ़ से उम्मतों का फैसला करेगा।
- 9 रब मजलूमों की पनाहगाह है, एक किला जिसमें वह मुसीबत के वक़्त महफूज़ रहते हैं।
- 10 ऐ रब, जो तेरा नाम जानते वह तुझ पर भरोसा रखते हैं। क्योंकि जो तेरे तालिब हैं उन्हें तूने कभी तर्क नहीं किया।
- 11 रब की तमजीद में गीत गाओ जो सिय्यून पहाड़ पर तख़्तनशीन है, उम्मतों में वह कुछ सुनाओ जो उसने किया है।
- 12 क्योंकि जो मकतूलों का इंतक़ाम लेता है वह मुसीबतजदों की चीखें नज़रंदाज़ नहीं करता।
- 13 ऐ रब, मुझ पर रहम कर! मेरी उस तकलीफ़ पर गौर कर जो नफ़रत करनेवाले मुझे पहुँचा रहे हैं। मुझे मौत के दरवाज़ों में से निकालकर उठा ले
- 14 ताकि मैं सिय्यून बेटी के दरवाज़ों में तेरी सताइश करके वह कुछ सुनाऊँ जो तूने मेरे लिए किया है, ताकि मैं तेरी नजात की खुशी मनाऊँ।
- 15 अक्रवाम उस गढे में खुद गिर गई है जो उन्होंने दूसरों को पकड़ने के लिए खोदा था। उनके अपने पाँव उस जाल में फँस गए हैं जो उन्होंने दूसरों को फँसाने के लिए बिछा दिया था।
- 16 रब ने इनसाफ़ करके अपना इज़हार किया तो बेदीन अपने हाथ के फंदे में उलझ गया। (हिग्गायून का तर्ज। सिलाह)
- 17 बेदीन पाताल में उतरेंगे, जो उम्मतें अल्लाह को भूल गई हैं वह सब वहाँ जाएँगी।
- 18 क्योंकि वह ज़रूरतमंदों को हमेशा तक नहीं भूलेगा, मुसीबतजदों की उम्मीद अबद तक जाती नहीं रहेगी।
- 19 ऐ रब, उठ खड़ा हो ताकि इनसान गालिब न आए। बख़्श दे कि तेरे हुजूर अक्रवाम की अदालत की जाए।
- 20 ऐ रब, उन्हें दहशतजदा कर ताकि अक्रवाम जान लें कि इनसान ही हैं। (सिलाह)

10

इनसाफ़ के लिए दुआ

- 1 ऐ रब, तू इतना दूर क्यों खड़ा है? मुसीबत के वक़्त तू अपने आपको पोशीदा क्यों रखता है?
- 2 बेदीन तकब्बुर से मुसीबतजदों के पीछे लग गए हैं, और अब बेचारे उनके जालों में उलझने लगे हैं।
- 3 क्योंकि बेदीन अपनी दिली आरज़ुओं पर शेखी मारता है, और नाजायज़ नफ़ा कमानेवाला लानत करके रब को हकीर जानता है।

* 8:5 एक और मुमकिन तरज़ुमा : तूने उसे थोड़ी देर के लिए फरिश्तों से कम कर दिया (देखिए इब्रानियों 2:7,9)।

4 बेदीन गुस्से से फूलकर कहता है, “अल्लाह मुझसे जवाबतलबी नहीं करेगा।” उसके तमाम खयालात इस बात पर मबनी हैं कि कोई खुदा नहीं है।

5 जो कुछ भी करे उसमें वह कामयाब है। तेरी अदालतें उसे बुलदियों में कहीं दूर लगती हैं जबकि वह अपने तमाम मुखालिफों के खिलाफ फुंकारता है।

6 दिल में वह सोचता है, “मैं कभी नहीं डगमगाऊंगा, नसल-दर-नसल मुसीबत के पंजों से बचा रहूंगा।”

7 उसका मुँह लानतों, फरेब और जुल्म से भरा रहता, उस की ज़बान नुकसान और आफत पहुँचाने के लिए तैयार रहती है।

8 वह आबादियों के करीब ताक में बैठकर चुपके से बेगुनाहों को मार डालता है, उस की आँखें बदकिस्मतों की घात में रहती हैं।

9 जंगल में बैठे शेरबबर की तरह ताक में रहकर वह मुसीबतज़दा पर हमला करने का मौका ढूँढ़ता है। जब उसे पकड़ ले तो उसे अपने जाल में घसीटकर ले जाता है।

10 उसके शिकार पाश पाश होकर झुक जाते हैं, बेचारे उस की ज़बरदस्त ताकत की ज़द में आकर गिर जाते हैं।

11 तब वह दिल में कहता है, “अल्लाह भूल गया है, उसने अपना चेहरा छुपा लिया है, उसे यह कभी नज़र नहीं आएगा।”

12 ऐ रब, उठ! ऐ अल्लाह, अपना हाथ उठाकर नाचारों की मदद कर और उन्हें न भूल।

13 बेदीन अल्लाह की तहकीर क्यों करे, वह दिल में क्यों कहे, “अल्लाह मुझसे जवाब तलब नहीं करेगा”?

14 ऐ अल्लाह, हकीकत में तू यह सब कुछ देखता है। तू हमारी तकलीफ और परेशानी पर ध्यान देकर मुनासिब जवाब देगा। नाचार अपना मामला तुझ पर छोड़ देता है, क्योंकि तू यतीमों का मददगार है।

15 शरीर और बेदीन आदमी का बाजू तोड़ दे! उससे उस की शरारतों की जवाबतलबी कर ताकि उसका पूरा असर मिट जाए।

16 रब अबद तक बादशाह है। उसके मुल्क से दीगर अक्रवाम गायब हो गई हैं।

17 ऐ रब, तूने नाचारों की आरजू सुन ली है। तू उनके दिलों को मज़बूत करेगा और उन पर ध्यान देकर

18 यतीमों और मज़लूमों का इनसाफ करेगा ताकि आइंदा कोई भी इनसान मुल्क में दहशत न फैलाए।

11

रब पर भरोसा

1 दाऊद का ज़बूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।

मैंने रब में पनाह ली है। तो फिर तुम किस तरह मुझसे कहते हो, “चल, परिदे की तरह फड़फड़ाकर पहाड़ों में भाग जा”?

2 क्योंकि देखो, बेदीन कमान तानकर तीर को ताँत पर लगा चुके हैं। अब वह अंधेरे में बैठकर इस इंतज़ार में हैं कि दिल से सीधी राह पर चलनेवालों पर चलाएँ।

3 रास्तबाज़ क्या करे? उन्होंने तो बुनियाद को ही तबाह कर दिया है।

4 लेकिन रब अपनी मुकद्दस सुकूनतगाह में है, रब का तख्त आसमान पर है। वहाँ से वह देखता है, वहाँ से उस की आँखें आदमज़ादों को परखती हैं।

5 रब रास्तबाज़ को परखता तो है, लेकिन बेदीन और ज़ालिम से नफरत ही करता है।

6 बेदीनों पर वह जलते हुए कोयले और शोलाज़न गंधक बरसा देगा। झुलसनेवाली आँधी उनका हिस्सा होगी।

7 क्योंकि रब रास्त है, और उसे इनसाफ प्यारा है। सिर्फ सीधी राह पर चलनेवाले उसका चेहरा देखेंगे।

12

मदद के लिए दुआ

1 दाऊद का ज़बूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तर्ज : शमीनीत।

ऐ रब, मदद फ़रमा! क्योंकि ईमानदार खत्म हो गए हैं। दियानतदार इनसानों में से मिट गए हैं।

2 आपस में सब झूट बोलते हैं। उनकी ज़बान पर चिकनी-चुपड़ी बातें होती हैं जबकि दिल में कुछ और ही होता है।

3 रब तमाम चिकनी-चुपड़ी और शेखीबाज़ ज़बानों को काट डाले!

4 वह उन सबको मिटा दे जो कहते हैं, “हम अपनी लायक ज़बान के बाइस ताकतवर हैं। हमारे होंट हमें सहारा देते हैं तो कौन हमारा मालिक होगा? कोई नहीं!”

5 लेकिन रब फ़रमाता है, “नाचारों पर तुम्हारे जुल्म की ख़बर और ज़स्सरतमंदों की कराहती आवाज़ें मेरे सामने आई हैं। अब मैं उठकर उन्हें उनसे छुटकारा दूँगा जो उनके खिलाफ फुंकारते हैं।”

- 6 रब के फ़रमान पाक हैं, वह भट्टी में सात बार साफ़ की गई चाँदी की मानिंद ख़ालिस हैं।
- 7 ऐ रब, तू ही उन्हें महफूज़ रखेगा, तू ही उन्हें अबद तक इस नसल से बचाए रखेगा,
- 8 गो बेदीन आज़ादी से इधर उधर फिरते हैं, और इनसानों के दरमियान कमीनापन का राज है।

13

मदद के लिए दुआ

- 1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।
- ऐ रब, कब तक? क्या तू मुझे अबद तक भूला रहेगा? तू कब तक अपना चेहरा मुझसे छुपाए रखेगा?
- 2 मेरी जान कब तक परेशानियों में मुब्तला रहे, मेरा दिल कब तक रोज़ बरोज़ दुख उठाता रहे? मेरा दुश्मन कब तक मुझ पर ग़ालिब रहेगा?
- 3 ऐ रब मेरे खुदा, मुझ पर नज़र डालकर मेरी सुन! मेरी आँखों को रौशन कर, वरना मैं मौत की नींद सो जाऊँगा।
- 4 तब मेरा दुश्मन कहेगा, “मैं उस पर ग़ालिब आ गया हूँ!” और मेरे मुखालिफ़ शადियाना बजाएंगे कि मैं हिल गया हूँ।
- 5 लेकिन मैं तेरी शफ़क़त पर भरोसा रखता हूँ, मेरा दिल तेरी नज़ात देखकर खुशी मनाएगा।
- 6 मैं रब की तमज़ीद में गीत गाऊँगा, क्योंकि उसने मुझ पर एहसान किया है।

14

बेदीन की हमाक़त

- 1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।
- अहमक़ दिल में कहता है, “अल्लाह है ही नहीं!” ऐसे लोग बदचलन हैं, उनकी हरकतें काबिले-घिन हैं। एक भी नहीं है जो अच्छा काम करे।
- 2 रब ने आसमान से इनसान पर नज़र डाली ताकि देखे कि क्या कोई समझदार है? क्या कोई अल्लाह का तालिब है?
- 3 अफ़सोस, सब सहीह राह से भटक गए, सबके सब बिगड़ गए हैं। कोई नहीं जो भलाई करता हो, एक भी नहीं।
- 4 क्या जो बदी करके मेरी क़ौम को रोटी की तरह खा लेते हैं उनमें से एक को भी समझ नहीं आती? वह तो रब को पुकारते ही नहीं।
- 5 तब उन पर सख़्त दहशत छा गई, क्योंकि अल्लाह रास्तबाज़ की नसल के साथ है।
- 6 तुम नाचार के मनसूबों को ख़ाक़ में मिलाना चाहते हो, लेकिन रब खुद उस की पनाहगाह है।
- 7 काश कोहे-सियून से इसराईल की नज़ात निकले! जब रब अपनी क़ौम को बहाल करेगा तो याक़ूब खुशी के नारे लगाएगा, इसराईल बाग़ बाग़ होगा।

15

कौन अल्लाह के हुज़ूर कायम रह सकता है?

- 1 दाऊद का जबूर।
- ऐ रब, कौन तेरे ख़ैमे में ठहर सकता है? किस को तेरे मुक़द्दस पहाड़ पर रहने की इजाज़त है?
- 2 वह जिसका चाल-चलन बेगुनाह है, जो रास्तबाज़ ज़िंदगी गुज़ारकर दिल से सच बोलता है।
- 3 ऐसा शख्स अपनी ज़बान से किसी पर तोहमत नहीं लगाता। न वह अपने पड़ोसी पर ज़्यादती करता, न उस की बेइज्जती करता है।
- 4 वह मरदूद को हक़ीर जानता लेकिन खुदातरस की इज्जत करता है। जो वादा उसने कसम खाकर किया उसे पूरा करता है, ख़ाह उसे कितना ही नुक़सान क्यों न पहुँचे।
- 5 वह सूद लिए बग़ैर उधार देता है और उस की रिश्वत क़बूल नहीं करता जो बेगुनाह का हक़ मारना चाहता है। ऐसा शख्स कभी डॉवॉडोल नहीं होगा।

16

एतमाद की दुआ

- 1 दाऊद का एक सुनहरा जबूर।
- ऐ अल्लाह, मुझे महफूज़ रख, क्योंकि तुझमें मैं पनाह लेता हूँ।

2 मैंने रब से कहा, “तू मेरा आका है, तू ही मेरी खुशहाली का वाहिद सरचश्मा है।”
 3 मुल्क में जो मुकद्दसीन हैं वही मेरे सूरमे हैं, उन्हीं को मैं पसंद करता हूँ।
 4 लेकिन जो दीगर माबूदों के पीछे भागे रहते हैं उनकी तकलीफ बढ़ती जाएगी। न मैं उनकी खून की कुरबानियों को पेश करूँगा, न उनके नामों का जिक्र तक करूँगा।

5 ऐ रब, तू मेरी मीरास और मेरा हिस्सा है। मेरा नसीब तेरे हाथ में है।
 6 जब कुरा डाला गया तो मुझे खुशगवार ज़मीन मिल गई। यकीनन मेरी मीरास मुझे बहुत पसंद है।
 7 मैं रब की सताइश करूँगा जिसने मुझे मशवरा दिया है। रात को भी मेरा दिल मेरी हिदायत करता है।
 8 रब हर वक़्त मेरी आँखों के सामने रहता है। वह मेरे दहने हाथ रहता है, इसलिए मैं नहीं डगमगाऊँगा।
 9 इसलिए मेरा दिल शादमान है, मेरी जान खुशी के नारे लगाती है। हाँ, मेरा बदन पुरसुकून ज़िंदगी गुज़ारेगा।
 10 क्योंकि तू मेरी जान को पाताल में नहीं छोड़ेगा, और न अपने मुकद्दस को गलने-सड़ने की नौबत तक पहुँचने देगा।
 11 तू मुझे ज़िंदगी की राह से आगाह करता है। तेरे हुज़ूर से भरपूर खुशियाँ, तेरे दहने हाथ से अबदी मसरतें हासिल होती हैं।

17

बेगुनाह शख्स की दुआ

1 दाऊद की दुआ।
 ऐ रब, इनसाफ़ के लिए मेरी फ़रियाद सुन, मेरी आहो-ज़ारी पर ध्यान दे। मेरी दुआ पर गौर कर, क्योंकि वह फ़रेबदेह होंटों से नहीं निकलती।
 2 तेरे हुज़ूर मेरा इनसाफ़ किया जाए, तेरी आँखें उन बातों का मुशाहदा करें जो सच हैं।
 3 तूने मेरे दिल को जाँच लिया, रात को मेरा मुआयना किया है। तूने मुझे भट्टी में डाल दिया ताकि नापाक चीज़ें दूर करे, गो ऐसी कोई चीज़ नहीं मिली। क्योंकि मैंने पूरा इरादा कर लिया है कि मेरे मुँह से बुरी बात नहीं निकलेगी।
 4 जो कुछ भी दूसरे करते हैं मैंने खुद तेरे मुँह के फ़रमान के ताबे रहकर अपने आपको ज़ालिमों की राहों से दूर रखा है।
 5 मैं कदम बक़दम तेरी राहों में रहा, मेरे पाँव कभी न डगमगाए।
 6 ऐ अल्लाह, मैं तुझे पुकारता हूँ, क्योंकि तू मेरी सुनेगा। कान लगाकर मेरी दुआ को सुन।
 7 तू जो अपने दहने हाथ से उन्हें रिहाई देता है जो अपने मुखालिफ़ों से तुझमें पनाह लेते हैं, मोज़िज़ाना तौर पर अपनी शफ़क़त का इज़हार कर।
 8 आँख की पुतली की तरह मेरी हिफ़ाज़त कर, अपने परों के साथ मैं मुझे छुपा ले।
 9 उन बेदीनों से मुझे महफूज़ रख जो मुझ पर तबाहकुन हमले कर रहे हैं, उन दुश्मनों से जो मुझे घेरकर मार डालने की कोशिश कर रहे हैं।
 10 वह सरकश हो गए हैं, उनके मुँह घमंड की बातें करते हैं।
 11 जिधर भी हम कदम उठाएँ वहाँ वह भी पहुँच जाते हैं। अब उन्होंने हमें घेर लिया है, वह घूर घूरकर हमें ज़मीन पर पटखने का मौक़ा ढूँड रहे हैं।
 12 वह उस शेरबबर की मानिंद हैं जो शिकार को फाड़ने के लिए तड़पता है, उस जवान शेर की मानिंद जो ताक में बैठा है।
 13 ऐ रब, उठ और उनका सामना कर, उन्हें ज़मीन पर पटख दे! अपनी तलवार से मेरी जान को बेदीनों से बचा।
 14 ऐ रब, अपने हाथ से मुझे इनसे छुटकारा दे। उन्हें तो इस दुनिया में अपना हिस्सा मिल चुका है। क्योंकि तूने उनके पेट को अपने माल से भर दिया, बल्कि उनके बेटे भी सेर हो गए हैं और इतना बाक़ी है कि वह अपनी औलाद के लिए भी काफ़ी कुछ छोड़ जाएंगे।
 15 लेकिन मैं खुद रास्तबाज़ साबित होकर तेरे चेहरे का मुशाहदा करूँगा, मैं जागकर तेरी सूरत से सेर हो जाऊँगा।

18

दाऊद का फ़तह का गीत

1 रब के खादिम दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। दाऊद ने रब के लिए यह गीत गाया जब रब ने उसे तमाम दुश्मनों और साऊल से बचाया। वह बोला,
 ऐ रब मेरी कुव्वत, मैं तुझे प्यार करता हूँ।
 2 रब मेरी चटान, मेरा क़िला और मेरा नजातदहिदा है। मेरा खुदा मेरी चटान है जिसमें मैं पनाह लेता हूँ। वह मेरी ढाल, मेरी नजात का पहाड़, मेरा बुलंद हिसार है।
 3 मैं रब को पुकारता हूँ, उस की तमज़ीद हो! तब वह मुझे दुश्मनों से छुटकारा देता है।

4 मौत के रस्सों ने मुझे घेर लिया, हलाकत के सैलाब ने मेरे दिल पर दहशत तारी की।
 5 पाताल के रस्सों ने मुझे जकड़ लिया, मौत ने मेरे रास्ते में अपने फंदे डाल दिए।
 6 जब मैं मुसीबत में फँस गया तो मैंने रब को पुकारा। मैंने मदद के लिए अपने खुदा से फरियाद की तो उसने अपनी सुकूनतगाह से मेरी आवाज़ सुनी, मेरी चीखें उसके कान तक पहुँच गईं।

7 तब ज़मीन लरज़ उठी और थरथराने लगी, पहाड़ों की बुनियादें रब के गज़ब के सामने काँपने और झूलने लगीं।
 8 उस की नाक से धुआँ निकल आया, उसके मुँह से भस्म करनेवाले शोले और दहकते कोयले भड़क उठे।
 9 आसमान को झुकाकर वह नाज़िल हुआ। जब उतर आया तो उसके पाँवों के नीचे अंधेरा ही अंधेरा था।
 10 वह क़स्बी फ़रिश्ते पर सवार हुआ और उड़कर हवा के परों पर मँडलाने लगा।
 11 उसने अंधेरे को अपनी छुपने की जगह बनाया, बारिश के काले और घने बादल ख़ैमे की तरह अपने गिर्दीगिर्द लगाए।
 12 उसके हज़ूर की तेज़ रौशनी से उसके बादल ओले और शोलाज़न कोयले लेकर निकल आए।
 13 रब आसमान से कड़कने लगा, अल्लाह तआला की आवाज़ गूँज उठी। तब ओले और शोलाज़न कोयले बरसने लगे।
 14 उसने अपने तीर चलाए तो दुश्मन तितर-बितर हो गए। उस की तेज़ बिजली इधर उधर गिरती गई तो उनमें हलचल मच गई।
 15 ऐ रब, तूने डाँटा तो समुंदर की वादियाँ ज़ाहिर हुईं, जब तू गुस्से में गरजा तो तेरे दम के झोंकों से ज़मीन की बुनियादें नज़र आईं।

16 बुलंदियों पर से अपना हाथ बढ़ाकर उसने मुझे पकड़ लिया, मुझे गहरे पानी में से खींचकर निकाल लाया।
 17 उसने मुझे मेरे ज़बरदस्त दुश्मन से बचाया, उनसे जो मुझसे नफ़रत करते हैं, जिन पर मैं ग़ालिब न आ सका।
 18 जिस दिन मैं मुसीबत में फँस गया उस दिन उन्होंने मुझ पर हमला किया, लेकिन रब मेरा सहारा बना रहा।
 19 उसने मुझे तंग जगह से निकालकर छुटकारा दिया, क्योंकि वह मुझसे खुश था।
 20 रब मुझे मेरी रास्तबाज़ी का अज़्र देता है। मेरे हाथ साफ़ हैं, इसलिए वह मुझे बरकत देता है।
 21 क्योंकि मैं रब की राहों पर चलता रहा हूँ, मैं बदी करने से अपने खुदा से दूर नहीं हुआ।
 22 उसके तमाम अहक़ाम मेरे सामने रहे हैं, मैंने उसके फ़रमानों को रद्द नहीं किया।
 23 उसके सामने ही मैं बेइलज़ाम रहा, गुनाह करने से बाज़ रहा हूँ।
 24 इसलिए रब ने मुझे मेरी रास्तबाज़ी का अज़्र दिया, क्योंकि उस की आँखों के सामने ही मैं पाक-साफ़ साबित हुआ।

25 ऐ अल्लाह, जो वफ़ादार है उसके साथ तेरा सुलूक वफ़ादारी का है, जो बेइलज़ाम है उसके साथ तेरा सुलूक बेइलज़ाम है।
 26 जो पाक है उसके साथ तेरा सुलूक पाक है। लेकिन जो कज़रौ है उसके साथ तेरा सुलूक भी कज़रवी का है।
 27 क्योंकि तू पस्तहालों को नजात देता और मग़्सूर आँखों को पस्त करता है।

28 ऐ रब, तू ही मेरा चराग़ जलाता, मेरा खुदा ही मेरे अंधेरे को रौशन करता है।
 29 क्योंकि तेरे साथ मैं फ़ौजी दस्ते पर हमला कर सकता, अपने खुदा के साथ दीवार को फ़लाँग सकता हूँ।
 30 अल्लाह की राह कामिल है, रब का फ़रमान ख़ालिस है। जो भी उसमें पनाह ले उस की वह ढाल है।
 31 क्योंकि रब के सिवा कौन खुदा है? हमारे खुदा के सिवा कौन चटान है?
 32 अल्लाह मुझे कुव्वत से कमरबस्ता करता, वह मेरी राह को कामिल कर देता है।
 33 वह मेरे पाँवों को हिरन की-सी फुरती अता करता, मुझे मज़बूती से मेरी बुलंदियों पर खड़ा करता है।
 34 वह मेरे हाथों को जंग करने की तरबियत देता है। अब मेरे बाजू पीतल की कमान को भी तान लेते हैं।

35 ऐ रब, तूने मुझे अपनी नजात की ढाल बख़्श दी है। तेरे दहने हाथ ने मुझे कायम रखा, तेरी नरमी ने मुझे बड़ा बना दिया है।
 36 तू मेरे क़दमों के लिए रास्ता बना देता है, इसलिए मेरे टखने नहीं डगमगाते।
 37 मैंने अपने दुश्मनों का ताक़ुक़ करके उन्हें पकड़ लिया, मैं बाज़ न आया जब तक वह ख़त्म न हो गए।
 38 मैंने उन्हें यों पाश पाश कर दिया कि दुबारा उठ न सके बल्कि गिरकर मेरे पाँवों तले पड़े रहे।
 39 क्योंकि तूने मुझे जंग करने के लिए कुव्वत से कमरबस्ता कर दिया, तूने मेरे मुखालिफ़ों को मेरे सामने झुका दिया।
 40 तूने मेरे दुश्मनों को मेरे सामने से भगा दिया, और मैंने नफ़रत करनेवालों को तबाह कर दिया।
 41 वह मदद के लिए चीखते-चिल्लाते रहे, लेकिन बचानेवाला कोई नहीं था। वह रब को पुकारते रहे, लेकिन उसने जवाब न दिया।
 42 मैंने उन्हें चूर चूर करके गर्द की तरह हवा में उड़ा दिया। मैंने उन्हें कचरे की तरह गली में फेंक दिया।

- 43 तूने मुझे कौम के झगड़ों से बचाकर अक़वाम का सरदार बना दिया है। जिस कौम से मैं नावाक़िफ़ था वह मेरी ख़िदमत करती है।
 44 ज्योंही मैं बात करता हूँ तो लोग मेरी सुनते हैं। परदेसी दबककर मेरी ख़ुशामद करते हैं।
 45 वह हिम्मत हारकर काँपते हुए अपने क़िलों से निकल आते हैं।
- 46 रब ज़िंदा है! मेरी चटान की तमज़ीद हो! मेरी नज़ात के ख़ुदा की ताज़ीम हो!
 47 वही ख़ुदा है जो मेरा इंतक़ाम लेता, अक़वाम को मेरे ताबे कर देता
 48 और मुझे मेरे दुश्मनों से छुटकारा देता है। यकीनन तू मुझे मेरे मुखालिफ़ों पर सरफ़राज़ करता, मुझे ज़ालिमों से बचाए रखता है।
 49 ऐ रब, इसलिए मैं अक़वाम में तेरी हम्दो-सना करूँगा, तेरे नाम की तारीफ़ में गीत गाऊँगा।
 50 क्योंकि रब अपने बादशाह को बड़ी नज़ात देता है, वह अपने मसह किए हुए बादशाह दाऊद और उस की औलाद पर हमेशा तक मेहरबान रहेगा।

19

मखलूक़ात में अल्लाह का जलाल

- 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
 आसमान अल्लाह के जलाल का एलान करते हैं, आसमानी गुंबद उसके हाथों का काम बयान करता है।
 2 एक दिन दूसरे को इतला देता, एक रात दूसरी को खबर पहुँचाती है,
 3 लेकिन ज़बान से नहीं। गो उनकी आवाज़ सुनाई नहीं देती,
 4 तो भी उनकी आवाज़ निकलकर पूरी दुनिया में सुनाई देती, उनके अलफ़ाज़ दुनिया की इंतहा तक पहुँच जाते हैं। वहाँ अल्लाह ने आफ़ताब के लिए ख़ैमा लगाया है।
 5 जिस तरह दूल्हा अपनी ख़ाबगाह से निकलता है उसी तरह सूरज निकलकर पहलवान की तरह अपनी दौड़ दौड़ने पर ख़ुशी मनाता है।
 6 आसमान के एक सिरे से चढ़कर उसका चक्कर दूसरे सिरे तक लगता है। उस की तपती गरमी से कोई भी चीज़ पोशीदा नहीं रहती।
- 7 रब की शरीअत कामिल है, उससे जान में जान आ जाती है। रब के अहक़ाम काबिले-एतमाद हैं, उनसे सादालौह दानिशमंद हो जाता है।
 8 रब की हिदायात बा-इनसाफ़ हैं, उनसे दिल बाग़ बाग़ हो जाता है। रब के अहक़ाम पाक हैं, उनसे आँखें चमक उठती हैं।
 9 रब का ख़ौफ़ पाक है और अबद तक कायम रहेगा। रब के फ़रमान सच्चे और सबके सब रास्त हैं।
 10 वह सोने बल्कि ख़ालिस सोने के ढेर से ज़्यादा मरगूब हैं। वह शहद बल्कि छत्ते के ताज़ा शहद से ज़्यादा मीठे हैं।
- 11 उनसे तेरे खादिम को आगाह किया जाता है, उन पर अमल करने से बड़ा अज़्र मिलता है।
 12 जो ख़ताएँ बेख़बरी में सरज़द हुईं कौन उन्हें जानता है? मेरे पोशीदा गुनाहों को मुआफ़ कर!
 13 अपने खादिम को गुस्ताखों से महफूज़ रख ताकि वह मुझ पर हुकूमत न करें। तब मैं बेइलज़ाम होकर संगीन गुनाह से पाक रहूँगा।
 14 ऐ रब, बख़्श दे कि मेरे मुँह की बातें और मेरे दिल की सोच-बिचार तुझे पसंद आए। तू ही मेरी चटान और मेरा छुड़ानेवाला है।

20

फ़तह के लिए दुआ

- 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
 मुसीबत के दिन रब तेरी सुने, याक़ूब के ख़ुदा का नाम तुझे महफूज़ रखे।
 2 वह मक़दिस से तेरी मदद भेजे, वह सिय्यून से तेरा सहारा बने।
 3 वह तेरी गल्ला की नज़रें याद करे, तेरी भस्म होनेवाली कुरबानियाँ क़बूल फ़रमाए। (सिलाह)
 4 वह तेरे दिल की आरज़ू पूरी करे, तेरे तमाम मनसूबों को कामयाबी बख़्शे।
 5 तब हम तेरी नज़ात की ख़ुशी मनाएँगे, हम अपने ख़ुदा के नाम में फ़तह का झंडा गाड़ेंगे। रब तेरी तमाम गुज़ारिशें पूरी करे।
- 6 अब मैंने जान लिया है कि रब अपने मसह किए हुए बादशाह की मदद करता है। वह अपने मुक़द्दस आसमान से उस की सुनकर अपने दहने हाथ की कुदरत से उसे छुटकारा देगा।
 7 बाज़ अपने रथों पर, बाज़ अपने घोड़ों पर फ़ख़र करते हैं, लेकिन हम रब अपने ख़ुदा के नाम पर फ़ख़र करेंगे।
 8 हमारे दुश्मन झुककर गिर जाएंगे, लेकिन हम उठकर मज़बूती से खड़े रहेंगे।

9 ऐ रब, हमारी मदद फरमा! बादशाह हमारी सुने जब हम मदद के लिए पुकारें।

21

बादशाह के लिए अल्लाह की मदद

1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।

ऐ रब, बादशाह तेरी कुव्वत देखकर शादमान है, वह तेरी नजात की कितनी बड़ी खुशी मनाता है।

2 तूने उस की दिली खाहिश पूरी की और इनकार न किया जब उस की आरजू ने होंटों पर अलफ़ाज़ का रूप धारा। (सिलाह)

3 क्योंकि तू अच्छी अच्छी बरकतें अपने साथ लेकर उससे मिलने आया, तूने उसे ख़ालिस सोने का ताज पहनाया।

4 उसने तुझसे ज़िंदगी पाने की आरजू की तो तूने उसे उम्र की दराज़ी बख़्शी, मज़ीद इतने दिन कि उनकी इंतहा नहीं।

5 तेरी नजात से उसे बड़ी इज़्ज़त हासिल हुई, तूने उसे शानो-शौकत से आरास्ता किया।

6 क्योंकि तू उसे अबद तक बरकत देता, उसे अपने चेहरे के हुज़ूर लाकर निहायत खुश कर देता है।

7 क्योंकि बादशाह रब पर एतमाद करता है, अल्लाह तआला की शफ़क़त उसे डगमगाने से बचाएगी।

8 तेरे दुश्मन तेरे कब्ज़े में आ जाएंगे, जो तुझसे नफरत करते हैं उन्हें तेरा दहना हाथ पकड़ लेगा।

9 जब तू उन पर जाहिर होगा तो वह भड़कती भट्टी की-सी मुसीबत में फँस जाएंगे। रब अपने ग़ज़ब में उन्हें हड़प कर लेगा, और आग उन्हें खा जाएगी।

10 तू उनकी औलाद को रूप-ज़मीन पर से मिटा डालेगा, इनसानों में उनका नामो-निशान तक नहीं रहेगा।

11 गो वह तेरे खिलाफ़ साज़िशें करते हैं तो भी उनके बुरे मनसूबे नाकाम रहेंगे।

12 क्योंकि तू उन्हें भगाकर उनके चेहरों को अपने तीरों का निशाना बना देगा।

13 ऐ रब, उठ और अपनी कुदरत का इज़हार कर ताकि हम तेरी कुदरत की तमज़ीद में साज़ बजाकर गीत गाएँ।

22

रास्तबाज़ का दुख

1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तर्ज : तुलूए-सुबह की हिरनी।

ऐ मेरे खुदा, ऐ मेरे खुदा, तूने मुझे क्यों तर्क कर दिया है? मैं चीख रहा हूँ, लेकिन मेरी नजात नज़र नहीं आती।

2 ऐ मेरे खुदा, दिन को मैं चिल्लाता हूँ, लेकिन तू जवाब नहीं देता। रात को पुकारता हूँ, लेकिन आराम नहीं पाता।

3 लेकिन तू कुदूस है, तू जो इसराईल की मदहसराई पर तख़्तनशीन होता है।

4 तुझ पर हमारे बापदादा ने भरोसा रखा, और जब भरोसा रखा तो तूने उन्हें रिहाई दी।

5 जब उन्होंने मदद के लिए तुझे पुकारा तो बचने का रास्ता खुल गया। जब उन्होंने तुझ पर एतमाद किया तो शर्मिदा न हुए।

6 लेकिन मैं कीड़ा हूँ, मुझे इनसान नहीं समझा जाता। लोग मेरी बेइज़्ज़ती करते, मुझे हकीर जानते हैं।

7 सब मुझे देखकर मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं। वह मुँह बनाकर तौबा तौबा करते और कहते हैं,

8 “उसने अपना मामला रब के सुपुर्द किया है। अब रब ही उसे बचाए। वही उसे छुटकारा दे, क्योंकि वही उससे खुश है।”

9 यक़ीनन तू मुझे माँ के पेट से निकाल लाया। मैं अभी माँ का दूध पीता था कि तूने मेरे दिल में भरोसा पैदा किया।

10 ज्योंही मैं पैदा हुआ मुझे तुझ पर छोड़ दिया गया। माँ के पेट से ही तू मेरा खुदा रहा है।

11 मुझसे दूर न रह। क्योंकि मुसीबत ने मेरा दामन पकड़ लिया है, और कोई नहीं जो मेरी मदद करे।

12 मुतअदिद बैलों ने मुझे घेर लिया, बसन के ताक़तवर साँड़ चारों तरफ़ जमा हो गए हैं।

13 मेरे खिलाफ़ उन्होंने अपने मुँह खोल दिए हैं, उस दहाड़ते हुए शेरबबर की तरह जो शिकार को फाड़ने के जोश में आ गया है।

14 मुझे पानी की तरह ज़मीन पर उंडेला गया है, मेरी तमाम हड्डियाँ अलग अलग हो गई हैं, जिस्म के अंदर मेरा दिल मोम की तरह पिघल गया है।

15 मेरी ताक़त ठीकरे की तरह ख़ुश्क़ हो गई, मेरी ज़बान तालू से चिपक गई है। हाँ, तूने मुझे मौत की खाक में लिटा दिया है।

16 कुत्तों ने मुझे घेर रखा, शरीरों के जत्थे ने मेरा इहाता किया है। उन्होंने मेरे हाथों और पाँवों को छेद डाला है।

17 मैं अपनी हड्डियों को गिन सकता हूँ। लोग घूर घूरकर मेरी मुसीबत से खुश होते हैं।

18 वह आपस में मेरे कपड़े बाँट लेते और मेरे लिबास पर कुरा डालते हैं।

19 लेकिन तू ऐ रब, दूर न रह! ऐ मेरी कुव्वत, मेरी मदद करने के लिए जल्दी कर!

20 मेरी जान को तलवार से बचा, मेरी जिंदगी को कुत्ते के पंजे से छुड़ा।

21 शेर के मुँह से मुझे मखलसी दे, जंगली बैलों के सींगों से रिहाई अता कर।

ऐ रब, तूने मेरी सुनी है!

22 मैं अपने भाइयों के सामने तेरे नाम का एलान करूँगा, जमात के दरमियान तेरी मदद कराई करूँगा।

23 तुम जो रब का खौफ मानते हो, उस की तमजीद करो! ऐ याकूब की तमाम औलाद, उसका एहताराम करो! ऐ इसराईल के तमाम फरजंदो, उससे खौफ खाओ!

24 क्योंकि न उसने मुसीबतजदा का दुख हकीर जाना, न उस की तकलीफ से धिन खाई। उसने अपना मुँह उससे न छुपाया बल्कि उस की सुनी जब वह मदद के लिए चीखने-चिल्लाने लगा।

25 ऐ खुदा, बड़े इजतिमा में मैं तेरी सताइश करूँगा, खुदातरसों के सामने अपनी मन्नत पूरी करूँगा।

26 नाचार जी भरकर खाँगे, रब के तालिब उस की हम्दो-सना करेंगे। तुम्हारे दिल अबद तक जिंदा रहें!

27 लोग दुनिया की इंतहा तक रब को याद करके उस की तरफ रूजू करेंगे। गैरअकवाम के तमाम खानदान उसे सिजदा करेंगे।

28 क्योंकि रब को ही बादशाही का इख्तियार हासिल है, वही अकवाम पर हुकूमत करता है।

29 दुनिया के तमाम बड़े लोग उसके हुजूर खाँगे और सिजदा करेंगे। खाक में उतरनेवाले सब उसके सामने झुक जाएंगे, वह सब जो अपनी जिंदगी को खुद कायम नहीं रख सकते।

30 उसके फरजंद उस की खिदमत करेंगे। एक आनेवाली नसल को रब के बारे में सुनाया जाएगा।

31 हाँ, वह आकर उस की रास्ती एक कौम को सुनाएँगे जो अभी पैदा नहीं हुई, क्योंकि उसने यह कुछ किया है।

23

अच्छा चरवाहा

1 दाऊद का जबूर।

रब मेरा चरवाहा है, मुझे कमी न होगी।

2 वह मुझे शादाब चरागाहों में चराता और पुरसकून चशमों के पास ले जाता है।

3 वह मेरी जान को ताजादम करता और अपने नाम की खातिर रास्ती की राहों पर मेरी क्रियादत करता है।

4 गो मैं तारीकतरीन वादी में से गुजरूँ मैं मुसीबत से नहीं डरूँगा, क्योंकि तू मेरे साथ है, तेरी लाठी और तेरा असा मुझे तसल्ली देते हैं।

5 तू मेरे दुश्मनों के स्वरू मेरे सामने मेज़ बिछाकर मेरे सर को तेल से तरो-ताजा करता है। मेरा प्याला तेरी बरकत से छलक उठता है।

6 यकीनन भलाई और शफकत उम्र-भर मेरे साथ साथ रहेंगी, और मैं जीते-जी रब के घर में सुकूनत करूँगा।

24

बादशाह का इस्तकबाल

1 दाऊद का जबूर।

जमीन और जो कुछ उस पर है रब का है, दुनिया और उसके बाशिंदे उसी के हैं।² क्योंकि उसने जमीन की बुनियाद समुंदरों पर रखी और उसे दरियाओं पर कायम किया।

3 किस को रब के पहाड़ पर चढ़ने की इजाजत है? कौन उसके मुकद्दस मकाम में खड़ा हो सकता है?

4 वह जिसके हाथ पाक और दिल साफ हैं, जो न फरेब का इरादा रखता, न कसम खाकर झूट बोलता है।

5 वह रब से बरकत पाएगा, उसे अपनी नजात के खुदा से रास्ती मिलेगी।

6 यह होगा उन लोगों का हाल जो अल्लाह की मरजी दरियाफ्त करते, जो तेरे चेहरे के तालिब होते हैं, ऐ याकूब के खुदा। (सिलाह)

7 ऐ फाटको, खुल जाओ! ऐ कदीम दरवाज़ो, पूरे तौर पर खुल जाओ ताकि जलाल का बादशाह दाखिल हो जाए।

8 जलाल का बादशाह कौन है? रब जो कवी और कादिर है, रब जो जंग में जोरावर है।

9 ऐ फाटको, खुल जाओ! ऐ कदीम दरवाज़ो, पूरे तौर पर खुल जाओ ताकि जलाल का बादशाह दाखिल हो जाए।

10 जलाल का बादशाह कौन है? रब्बुल-अफवाज, वही जलाल का बादशाह है। (सिलाह)

25

मुआफ़ी और राहनुमाई के लिए दुआ

1 दाऊद का जबूर।

ऐ रब, मैं तेरा आरज़ूमंद हूँ।

2 ऐ मेरे खुदा, तुझ पर मैं भरोसा रखता हूँ। मुझे शर्मिंदा न होने दे कि मेरे दुश्मन मुझ पर शादियाना बजाएँ।

3 क्योंकि जो भी तुझ पर उम्मीद रखे वह शर्मिंदा नहीं होगा जबकि जो बिलावजह बेवफ़ा होते हैं वही शर्मिंदा हो जाएंगे।

4 ऐ रब, अपनी राहें मुझे दिखा, मुझे अपने रास्तों की तालीम दे।

5 अपनी सच्चाई के मुताबिक मेरी राहनुमाई कर, मुझे तालीम दे। क्योंकि तू मेरी नजात का खुदा है। दिन-भर मैं तेरे इंतज़ार में रहता हूँ।

6 ऐ रब, अपना वह रहम और मेहरबानी याद कर जो तू कदीम ज़माने से करता आया है।

7 ऐ रब, मेरी जवानी के गुनाहों और मेरी बेवफ़ा हरकतों को याद न कर बल्कि अपनी भलाई की खातिर और अपनी शफ़क़त के मुताबिक मेरा खयाल रख।

8 रब भला और आदिल है, इसलिए वह गुनाहगारों को सहीह राह पर चलने की तलक़ीन करता है।

9 वह फ़रोतनों की इनसाफ़ की राह पर राहनुमाई करता, हलीमों को अपनी राह की तालीम देता है।

10 जो रब के अहद और अहक़ाम के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारे उन्हें रब मेहरबानी और वफ़ादारी की राहों पर ले चलता है।

11 ऐ रब, मेरा क़सूर संगीन है, लेकिन अपने नाम की खातिर उसे मुआफ़ कर।

12 रब का ख़ौफ़ माननेवाला कहाँ है? रब खुद उसे उस राह की तालीम देगा जो उसे चुनना है।

13 तब वह खुशहाल रहेगा, और उस की औलाद मुल्क को मीरास में पाएगी।

14 जो रब का ख़ौफ़ मानें उन्हें वह अपने हमराज़ बनाकर अपने अहद की तालीम देता है।

15 मेरी आँखें रब को तकती रहती हैं, क्योंकि वही मेरे पाँवों को जाल से निकाल लेता है।

16 मेरी तरफ़ मायल हो जा, मुझ पर मेहरबानी कर! क्योंकि मैं तनहा और मुसीबतज़दा हूँ।

17 मेरे दिल की परेशानियाँ दूर कर, मुझे मेरी तकालीफ़ से रिहाई दे।

18 मेरी मुसीबत और तंगी पर नज़र डालकर मेरी ख़ताओं को मुआफ़ कर।

19 देख, मेरे दुश्मन कितने ज़्यादा हैं, वह कितना जुल्म करके मुझसे नफ़रत करते हैं।

20 मेरी जान को महफूज़ रख, मुझे बचा! मुझे शर्मिंदा न होने दे, क्योंकि मैं तुझमें पनाह लेता हूँ।

21 बेगुनाही और दियानतदारी मेरी पहरादारी करें, क्योंकि मैं तेरे इंतज़ार में रहता हूँ।

22 ऐ अल्लाह, फ़िघा देकर इसराईल को उस की तमाम तकालीफ़ से आज़ाद कर!

26

बेगुनाह का इकरार और इल्तिजा

1 दाऊद का जबूर।

ऐ रब, मेरा इनसाफ़ कर, क्योंकि मेरा चाल-चलन बेकुसूर है। मैंने रब पर भरोसा रखा है, और मैं डाँवाँडोल नहीं हो जाऊँगा।

2 ऐ रब, मुझे जाँच ले, मुझे आजमाकर दिल की तह तक मेरा मुआयना कर।

3 क्योंकि तेरी शफ़क़त मेरी आँखों के सामने रही है, मैं तेरी सच्ची राह पर चलता रहा हूँ।

4 न मैं धोकेबाज़ों की मजलिस में बैठता, न चालाक लोगों से रिफ़ाक़त रखता हूँ।

5 मुझे शरीरों के इजतिमाओं से नफ़रत है, बेदीनों के साथ मैं बैठता भी नहीं।

6 ऐ रब, मैं अपने हाथ धोकर अपनी बेगुनाही का इज़हार करता हूँ। मैं तेरी क़ुरबानगाह के गिर्द फिरकर

7 बुलंद आवाज़ से तेरी हम्दो-सना करता, तेरे तमाम मोज़िज़ात का एलान करता हूँ।

8 ऐ रब, तेरी सुकूनतगाह मुझे प्यारी है, जिस जगह तेरा जलाल ठहरता है वह मुझे अज़ीज़ है।

9 मेरी जान को मुझसे छीनकर मुझे गुनाहगारों में शामिल न कर! मेरी ज़िंदगी को मिटाकर मुझे खूनखारों में शुमार न कर,

10 ऐसे लोगों में जिनके हाथ शर्मनाक हरकतों से आलूदा हैं, जो हर वक़्त रिश्वत खाते हैं।

11 क्योंकि मैं बेगुनाह ज़िंदगी गुज़ारता हूँ। फ़िघा देकर मुझे छुटकारा दे! मुझ पर मेहरबानी कर!

12 मेरे पाँव हमवार ज़मीन पर कायम हो गए हैं, और मैं इजतिमाओं में रब की सताइश करूँगा।

27

अल्लाह से रिफ़ाक़त

1 दाऊद का जबूर।

रब मेरी रौशनी और मेरी नजात है, मैं किससे डरूँ? रब मेरी जान की पनाहगाह है, मैं किससे दहशत खाऊँ?

2 जब शरीर मुझ पर हमला करें ताकि मुझे हड़प कर लें, जब मेरे मुखालिफ़ और दुश्मन मुझ पर टूट पड़ें तो वह ठोकर खाकर गिर जाएंगे।

3 गो फ़ौज मुझे घेर ले मेरा दिल ख़ौफ़ नहीं खाएगा, गो मेरे खिलाफ़ जंग छिड़ जाए मेरा भरोसा कायम रहेगा।

4 रब से मेरी एक गुज़ारिश है, मैं एक ही बात चाहता हूँ। यह कि जीते-जी रब के घर में रहकर उस की शफ़क़त से लुत्फ़अंदोज़ हो सकूँ, कि उस की सुकूनतगाह में ठहरकर महवे-खयाल रह सकूँ।

5 क्योंकि मुसीबत के दिन वह मुझे अपनी सुकूनतगाह में पनाह देगा, मुझे अपने ख़ैमे में छुपा लेगा, मुझे उठाकर ऊँची चटान पर रखेगा।

6 अब मैं अपने दुश्मनों पर सरबुलंद हूँगा, अगरचे उन्होंने मुझे घेर रखा है। मैं उसके ख़ैमे में खुशी के नारे लगाकर कुरबानियाँ पेश करूँगा, साज़ बजाकर रब की मदहसराई करूँगा।

7 ऐ रब, मेरी आवाज़ सुन जब मैं तुझे पुकारूँ, मुझ पर मेहरबानी करके मेरी सुन।

8 मेरा दिल तुझे याद दिलाता है कि तूने खुद फ़रमाया, “मेरे चेहरे के तालिब रहो!” ऐ रब, मैं तेरे ही चेहरे का तालिब रहा हूँ।

9 अपने चेहरे को मुझसे छुपाए न रख, अपने खादिम को गुस्से से अपने हुज़ूर से न निकाल। क्योंकि तू ही मेरा सहारा रहा है। ऐ मेरी नजात के खुदा, मुझे न छोड़, मुझे तर्क न कर।

10 क्योंकि मेरे माँ-बाप ने मुझे तर्क कर दिया है, लेकिन रब मुझे क़बूल करके अपने घर में लाएगा।

11 ऐ रब, मुझे अपनी राह की तरबियत दे, हमवार रास्ते पर मेरी राहनुमाई कर ताकि अपने दुश्मनों से महफूज़ रहूँ।

12 मुझे मुखालिफ़ों के लालच में न आने दे, क्योंकि झूठे गवाह मेरे खिलाफ़ उठ खड़े हुए हैं जो तशद्दुद करने के लिए तैयार हैं।

13 लेकिन मेरा पूरा ईमान यह है कि मैं जिंदों के मुल्क में रहकर रब की भलाई देखूँगा।

14 रब के इंतज़ार में रह! मज़बूत और दिलेर हो, और रब के इंतज़ार में रह!

28

मदद के लिए दुआ और जवाब के लिए शक्रगुज़ारी

1 दाऊद का जबूर।

ऐ रब, मैं तुझे पुकारता हूँ। ऐ मेरी चटान, ख़ामोशी से अपना मुँह मुझसे न फेर। क्योंकि अगर तू चुप रहे तो मैं मौत के गढ़े में उतरनेवालों की मानिंद हो जाऊँगा।

2 मेरी इल्तिजाएँ सुन जब मैं चीखते-चिल्लाते तुझसे मदद माँगता हूँ, जब मैं अपने हाथ तेरी सुकूनतगाह के मुकद्दसतरीन कमरे की तरफ़ उठाता हूँ।

3 मुझे उन बेदीनों के साथ घसीटकर सज़ा न दे जो ग़लत काम करते हैं, जो अपने पड़ोसियों से बज़ाहिर दोस्ताना बातें करते, लेकिन दिल में उनके खिलाफ़ बुरे मनसूबे बाँधते हैं।

4 उन्हें उनकी हरकतों और बुरे कामों का बदला दे। जो कुछ उनके हाथों से सरज़द हुआ है उस की पूरी सज़ा दे। उन्हें उतना ही नुक़सान पहुँचा दे जितना उन्होंने दूसरों को पहुँचाया है।

5 क्योंकि न वह रब के आमाल पर, न उसके हाथों के काम पर तवज्जुह देते हैं। अल्लाह उन्हें ढा देगा और दुबारा कभी तामीर नहीं करेगा।

6 रब की तमज़ीद हो, क्योंकि उसने मेरी इल्तिजा सुन ली।

7 रब मेरी कुव्वत और मेरी ढाल है। उस पर मेरे दिल ने भरोसा रखा, उससे मुझे मदद मिली है। मेरा दिल शादियाना बजाता है, मैं गीत गाकर उस की सताइश करता हूँ।

8 रब अपनी क़ौम की कुव्वत और अपने मसह किए हुए खादिम का नजातबख़्श क़िला है।

9 ऐ रब, अपनी क़ौम को नजात दे! अपनी मीरास को बरकत दे! उनकी ग़ल्लाबानी करके उन्हें हमेशा तक उठाए रख।

29

रब के जलाल की तमजीद

1 दाऊद का जबूर।

ऐ अल्लाह के फ़रज़ंदो, रब की तमजीद करो! रब के जलाल और कुदरत की सताइश करो!

2 रब के नाम को जलाल दो। मुक़द्दस लिबास से आरास्ता होकर रब को सिजदा करो।

3 रब की आवाज़ समुंदर के ऊपर गूँजती है। जलाल का खुदा गरजता है, रब गहरे पानी के ऊपर गरजता है।

4 रब की आवाज़ ज़ोरदार है, रब की आवाज़ पुरजलाल है।

5 रब की आवाज़ देवदार के दरख्तों को तोड़ डालती है, रब लुबनान के देवदार के दरख्तों को टुकड़े टुकड़े कर देता है।

6 वह लुबनान को बछड़े और कोहे-सिरयून * को जंगली बैल के बच्चे की तरह कूदने फाँदने देता है।

7 रब की आवाज़ आग के शोले भड़का देती है।

8 रब की आवाज़ रेगिस्तान को हिला देती है, रब दशते-कादिस को काँपने देता है।

9 रब की आवाज़ सुनकर हिरनी दर्द-ज़ह में मुब्तला हो जाती और जंगलों के पत्ते झड़ जाते हैं। लेकिन उस की सुकूनतगाह में सब पुकारते हैं, “जलाल!”

10 रब सैलाब के ऊपर तख़्तनशीन है, रब बादशाह की हैसियत से अबद तक तख़्तनशीन है।

11 रब अपनी क्रौम को तक्रवियत देगा, रब अपने लोगों को सलामती की बरकत देगा।

30

मौत से छुटकारे पर शक्रगुजारी

1 दाऊद का जबूर। रब के घर की मखसूसियत के मौके पर गीत।

ऐ रब, मैं तेरी सताइश करता हूँ, क्योंकि तूने मुझे गहराइयों में से खींच निकाला। तूने मेरे दुश्मनों को मुझ पर बगलें बजाने का मौका नहीं दिया।

2 ऐ रब मेरे खुदा, मैंने चीखते-चिल्लाते हुए तुझसे मदद माँगी, और तूने मुझे शफ़ा दी।

3 ऐ रब, तू मेरी जान को पाताल से निकाल लाया, तूने मेरी जान को मौत के गढ़े में उतरने से बचाया है।

4 ऐ ईमानदारो, साज़ बजाकर रब की तारीफ़ में गीत गाओ। उसके मुक़द्दस नाम की हम्दो-सना करो।

5 क्योंकि वह लमहा-भर के लिए गुस्से होता, लेकिन ज़िंदगी-भर के लिए मेहरबानी करता है। गो शाम को रोना पड़े, लेकिन सुबह को हम खुशी मनाएंगे।

6 जब हालात पुरसुकून थे तो मैं बोला, “मैं कभी नहीं डगमगाऊँगा।”

7 ऐ रब, जब तू मुझसे खुश था तो तूने मुझे मज़बूत पहाड़ पर रख दिया। लेकिन जब तूने अपना चेहरा मुझसे छुपा लिया तो मैं सख़्त घबरा गया।

8 ऐ रब, मैंने तुझे पुकारा, हाँ खुदावंद से मैंने इल्तिजा की,

9 “क्या फ़ायदा है अगर मैं हलाक होकर मौत के गढ़े में उतर जाऊँ? क्या खाक तेरी सताइश करेगी? क्या वह लोगों को तेरी वफ़ादारी के बारे में बताएगी?”

10 ऐ रब, मेरी सुन, मुझ पर मेहरबानी कर। ऐ रब, मेरी मदद करने के लिए आ!”

11 तूने मेरा मातम खुशी के नाच में बदल दिया, तूने मेरे मातमी कपड़े उतारकर मुझे शादमानी से मुलब्स किया।

12 क्योंकि तू चाहता है कि मेरी जान ख़ामोश न हो बल्कि गीत गाकर तेरी तमजीद करती रहे। ऐ रब मेरे खुदा, मैं अबद तक तेरी हम्दो-सना करूँगा।

31

हिफ़ाज़त के लिए दुआ

1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।

ऐ रब, मैंने तुझमें पनाह ली है। मुझे कभी शर्मिंदा न होने दे बल्कि अपनी रास्ती के मुताबिक़ मुझे बचा!

2 अपना कान मेरी तरफ़ झुका, जल्द ही मुझे छुटकारा दे। चटान का मेरा बुर्ज हो, पहाड़ का क़िला जिसमें मैं पनाह लेकर नजात पा सकूँ।

3 क्योंकि तू मेरी चटान, मेरा क़िला है, अपने नाम की खातिर मेरी राहनुमाई, मेरी क्रियादत कर।

* 29:6 सिरयून हरमूत का दूसरा नाम है।

- 4 मुझे उस जाल से निकाल दे जो मुझे पकड़ने के लिए चुपके से बिछाया गया है। क्योंकि तू ही मेरी पनाहगाह है।
 5 मैं अपनी रूह तेरे हाथों में सौंपता हूँ। ऐ रब, ऐ वफादार खुदा, तूने फिदा देकर मुझे छुड़ाया है!
- 6 मैं उनसे नफरत रखता हूँ जो बेकार बुतों से लिपटे रहते हैं। मैं तो रब पर भरोसा रखता हूँ।
 7 मैं बाग बाग हूँगा और तेरी शफ़क़त की खुशी मनाऊँगा, क्योंकि तूने मेरी मुसीबत देखकर मेरी जान की परेशानी का खयाल किया है।
 8 तूने मुझे दुश्मन के हवाले नहीं किया बल्कि मेरे पाँवों को खुले मैदान में कायम कर दिया है।
- 9 ऐ रब, मुझ पर मेहरबानी कर, क्योंकि मैं मुसीबत में हूँ। ग़म के मारे मेरी आँखें सूज गई हैं, मेरी जान और जिस्म गल रहे हैं।
 10 मेरी ज़िंदगी दुख की चक्की में पिस रही है, मेरे साल आहें भरते भरते ज़ाया हो रहे हैं। मेरे कुसूर की वजह से मेरी ताक़त जवाब दे गई, मेरी हड्डियाँ गलने-सड़ने लगी हैं।
 11 मैं अपने दुश्मनों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गया हूँ बल्कि मेरे हमसाय भी मुझे लान-तान करते, मेरे जाननेवाले मुझसे दहशत खाते हैं। गली में जो भी मुझे देखे मुझसे भाग जाता है।
 12 मैं मुरदों की मानिंद उनकी याददाश्त से मिट गया हूँ, मुझे ठीकरे की तरह फेंक दिया गया है।
 13 बहुतों की अफ़वाहें मुझ तक पहुँच गई हैं, चारों तरफ़ से हौलनाक ख़बरें मिल रही हैं। वह मिलकर मेरे खिलाफ़ साज़िशें कर रहे, मुझे क़त्ल करने के मनसूबे बाँध रहे हैं।
- 14 लेकिन मैं ऐ रब, तुझ पर भरोसा रखता हूँ। मैं कहता हूँ, “तू मेरा खुदा है!”
 15 मेरी तकदीर * तेरे हाथ में है। मुझे मेरे दुश्मनों के हाथ से बचा, उनसे जो मेरे पीछे पड़ गए हैं।
 16 अपने चेहरे का नूर अपने खादिम पर चमका, अपनी मेहरबानी से मुझे नजात दे।
 17 ऐ रब, मुझे शर्मिंदा न होने दे, क्योंकि मैंने तुझे पुकारा है। मेरे बजाए बेदीनों के मुँह काले हो जाएँ, वह पाताल में उतरकर चुप हो जाएँ।
 18 उनके फ़रेबदेह होंट बंद हो जाएँ, क्योंकि वह तकब्बुर और हिकारत से रास्तबाज़ के खिलाफ़ कुफ़र बकते हैं।
- 19 तेरी भलाई कितनी अज़ीम है! तू उसे उनके लिए तैयार रखता है जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं, उसे उन्हें दिखाता है जो इनसानों के सामने से तुझमें पनाह लेते हैं।
 20 तू उन्हें अपने चेहरे की आड़ में लोगों के हमलों से छुपा लेता, उन्हें ख़ैमे में लाकर इलज़ामतराश ज़बानों से महफूज़ रखता है।
 21 रब की तमज़ीद हो, क्योंकि जब शहर का मुहासरा हो रहा था तो उसने मोज़िज़ाना तौर पर मुझ पर मेहरबानी की।
 22 उस वक़्त मैं घबराकर बोला, “हाय, मैं तेरे हुज़ूर से मुंक्ते हो गया हूँ!” लेकिन जब मैंने चीखते-चिल्लाते हुए तुझसे मदद माँगी तो तूने मेरी इल्तिज़ा सुन ली।
- 23 ऐ रब के तमाम ईमानदारो, उससे मुहब्बत रखो! रब वफादारों को महफूज़ रखता, लेकिन मग़सूरों को उनके रवय्ये का पूरा अज़्र देगा।
 24 चुनौचे मज़बूत और दिलेर हो, तुम सब जो रब के इंतज़ार में हो।

32

मुआफी की बरक़त (तौबा का दूसरा जबूर)

- 1 दाऊद का ज़बूर। हिकमत का गीत।
 मुबारक है वह जिसके जरायम मुआफ़ किए गए, जिसके गुनाह ढँपे गए हैं।
 2 मुबारक है वह जिसका गुनाह रब हिसाब में नहीं लाएगा और जिसकी रूह में फ़रेब नहीं है।
- 3 जब मैं चुप रहा तो दिन-भर आहें भरने से मेरी हड्डियाँ गलने लगीं।
 4 क्योंकि दिन-रात मैं तेरे हाथ के बोझ तले पिसता रहा, मेरी ताक़त गोया मौसमे-गरमा की झुलसती तपिश में जाती रही। (सिलाह)
 5 तब मैंने तेरे सामने अपना गुनाह तसलीम किया, मैं अपना गुनाह छुपाने से बाज़ आया। मैं बोला, “मैं रब के सामने अपने जरायम का इक़्रार करूँगा।” तब तूने मेरे गुनाह को मुआफ़ कर दिया। (सिलाह)

6 इसलिए तमाम ईमानदार उस वक़्त तुझसे दुआ करें जब तू मिल सकता है। यकीनन जब बड़ा सैलाब आए तो उन तक नहीं पहुँचेगा।

* 31:15 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : मेरे औकात।

- 7 तू मेरी छुपने की जगह है, तू मुझे परेशानी से महफूज रखता, मुझे नजात के नगमों से घेर लेता है। (सिलाह)
 8 “मैं तुझे तालीम दूँगा, तुझे वह राह दिखाऊँगा जिस पर तुझे जाना है। मैं तुझे मशवरा देकर तेरी देख-भाल करूँगा।
 9 नासमझ घोड़े या खच्चर की मानिंद न हो, जिन पर काबू पाने के लिए लगाम और दहाने की ज़रूरत है, वरना वह तेरे पास नहीं आएँगे।”
 10 बेदीन की मुतअद्दिद परेशानियाँ होती हैं, लेकिन जो रब पर भरोसा रखे उसे वह अपनी शफ़क़त से घेरे रखता है।
 11 ऐ रास्तबाज़ो, रब की खुशी में जशन मनाओ! ऐ तमाम दियानतदारो, शादमानी के नारे लगाओ!

33

अल्लाह की हुक्मत और मदद की तारीफ़

- 1 ऐ रास्तबाज़ो, रब की खुशी मनाओ! क्योंकि मुनासिब है कि सीधी राह पर चलनेवाले उस की सताइश करें।
 2 सरोद बजाकर रब की हम्दो-सना करो। उस की तमजीद में दस तारोंवाला साज़ बजाओ।
 3 उस की तमजीद में नया गीत गाओ, महारत से साज़ बजाकर खुशी के नारे लगाओ।
 4 क्योंकि रब का कलाम सच्चा है, और वह हर काम वफ़ादारी से करता है।
 5 उसे रास्तबाज़ी और इनसाफ़ प्यारे हैं, दुनिया रब की शफ़क़त से भरी हुई है।
 6 रब के कहने पर आसमान खलक हुआ, उसके मुँह के दम से सितारों का पूरा लश्कर वुजूद में आया।
 7 वह समुंदर के पानी का बड़ा ढेर जमा करता, पानी की गहराइयों को गोदामों में महफूज रखता है।
 8 कुल दुनिया रब का ख़ौफ़ माने, ज़मीन के तमाम बाशिंदे उससे दहशत खाएँ।
 9 क्योंकि उसने फ़रमाया तो फ़ौरन वुजूद में आया, उसने हुक्म दिया तो उसी वक़्त कायम हुआ।
 10 रब अक्रवाम का मनसूबा नाकाम होने देता, वह उम्मतों के इरादों को शिकस्त देता है।
 11 लेकिन रब का मनसूबा हमेशा तक कामयाब रहता, उसके दिल के इरादे पुश्त-दर-पुश्त कायम रहते हैं।
 12 मुबारक है वह क़ौम जिसका ख़ुदा रब है, वह क़ौम जिसे उसने चुनकर अपनी मीरास बना लिया है।
 13 रब आसमान से नज़र डालकर तमाम इनसानों का मुलाहज़ा करता है।
 14 अपने तख़्त से वह ज़मीन के तमाम बाशिंदों का मुआयना करता है।
 15 जिसने उन सबके दिलों को तश्कील दिया वह उनके तमाम कामों पर ध्यान देता है।
 16 बादशाह की बड़ी फ़ौज उसे नहीं छुड़ाती, और सूरमे की बड़ी ताक़त उसे नहीं बचाती।
 17 घोड़ा भी मदद नहीं कर सकता। जो उस पर उम्मीद रखे वह धोका खाएगा। उस की बड़ी ताक़त छुटकारा नहीं देती।
 18 यक़ीनन रब की आँख उन पर लगी रहती है जो उसका ख़ौफ़ मानते और उस की मेहरबानी के इंतज़ार में रहते हैं,
 19 कि वह उनकी जान मौत से बचाए और काल में महफूज रखे।
 20 हमारी जान रब के इंतज़ार में है। वही हमारा सहारा, हमारी ढाल है।
 21 हमारा दिल उसमें खुश है, क्योंकि हम उसके मुक़द्दस नाम पर भरोसा रखते हैं।
 22 ऐ रब, तेरी मेहरबानी हम पर रहे, क्योंकि हम तुझ पर उम्मीद रखते हैं।

34

अल्लाह की हिफ़ाज़त

- 1 दाऊद का यह जबूर उस वक़्त से मुताल्लिक है जब उसने फ़िलिस्ती बादशाह अबीमलिक के सामने पागल बनने का रूप भर लिया। यह देखकर बादशाह ने उसे भगा दिया। चले जाने के बाद दाऊद ने यह गीत गाया।
 हर वक़्त मैं रब की तमजीद करूँगा, उस की हम्दो-सना हमेशा ही मेरे होंटों पर रहेगी।
 2 मेरी जान रब पर फ़ख़र करेगी। मुसीबतज़दा यह सुनकर खुश हो जाएँ।
 3 आओ, मेरे साथ रब की ताज़ीम करो। आओ, हम मिलकर उसका नाम सरबुलंद करें।
 4 मैंने रब को तलाश किया तो उसने मेरी सुनी। जिन चीज़ों से मैं दहशत खा रहा था उन सबसे उसने मुझे रिहाई दी।
 5 जिनकी आँखें उस पर लगी रहीं वह खुशी से चमकेंगे, और उनके मुँह शरमिदा नहीं होंगे।

- 6 इस नाचार ने पुकारा तो रब ने उस की सुनी, उसने उसे उस की तमाम मुसीबतों से नजात दी।
- 7 जो रब का खौफ मानें उनके इर्दगिर्द उसका फरिश्ता खैमाज़न होकर उनको बचाए रखता है।
- 8 रब की भलाई का तजरबा करो। मुबारक है वह जो उसमें पनाह ले।
- 9 ऐ रब के मुकद्दसीन, उसका खौफ मानो, क्योंकि जो उसका खौफ मानें उन्हें कमी नहीं।
- 10 जवान शेरबबर कभी ज़रूरतमंद और भूके होते हैं, लेकिन रब के तालिबों को किसी भी अच्छी चीज़ की कमी नहीं होगी।
- 11 ऐ बच्चो, आओ, मेरी बातें सुनो! मैं तुम्हें रब के खौफ की तालीम दूंगा।
- 12 कौन मज़े से ज़िंदगी गुज़ारना और अच्छे दिन देखना चाहता है?
- 13 वह अपनी ज़बान को शरीर बातें करने से रोके और अपने होंटों को झूट बोलने से।
- 14 वह बुराई से मुँह फेरकर नेक काम करे, सुलह-सलामती का तालिब होकर उसके पीछे लगा रहे।
- 15 रब की आँखें रास्तबाज़ों पर लगी रहती हैं, और उसके कान उनकी इल्तिजाओं की तरफ मायल हैं।
- 16 लेकिन रब का चेहरा उनके खिलाफ है जो ग़लत काम करते हैं। उनका ज़मीन पर नामो-निशान तक नहीं रहेगा।
- 17 जब रास्तबाज़ फ़रियाद करें तो रब उनकी सुनता, वह उन्हें उनकी तमाम मुसीबत से छुटकारा देता है।
- 18 रब शिकस्तादिलों के करीब होता है, वह उन्हें रिहाई देता है जिनकी रूह को खाक में कुचला गया हो।
- 19 रास्तबाज़ की मुतअदिद तकालीफ़ होती हैं, लेकिन रब उसे उन सबसे बचा लेता है।
- 20 वह उस की तमाम हड्डियों की हिफ़ाज़त करता है, एक भी नहीं तोड़ी जाएगी।
- 21 बुराई बेदीन को मार डालेगी, और जो रास्तबाज़ से नफ़रत करे उसे मुनासिब अज़्र मिलेगा।
- 22 लेकिन रब अपने खादिमों की जान का फ़िधा देगा। जो भी उसमें पनाह ले उसे सज़ा नहीं मिलेगी।

35

शरीरों के हमलों से रिहाई के लिए दुआ

- 1 दाऊद का ज़बूर।
- ऐ रब, उनसे झगड़ जो मेरे साथ झगड़ते हैं, उनसे लड़ जो मेरे साथ लड़ते हैं।
- 2 लंबी और छोटी ढाल पकड़ ले और उठकर मेरी मदद करने आ।
- 3 नेज़े और बरछी को निकालकर उन्हें रोक दे जो मेरा ताक़्कुब कर रहे हैं! मेरी जान से फ़रमा, “मैं तेरी नजात हूँ!”
- 4 जो मेरी जान के लिए कोशिशें हैं उनका मुँह काला हो जाए, वह स्सवा हो जाएँ। जो मुझे मुसीबत में डालने के मनसूबे बाँध रहे हैं वह पीछे हटकर शर्मिंदा हों।
- 5 वह हवा में भूसे की तरह उड़ जाएँ जब रब का फ़रिश्ता उन्हें भगा दे।
- 6 उनका रास्ता तारीक और फिसलना हो जब रब का फ़रिश्ता उनके पीछे पड़ जाए।
- 7 क्योंकि उन्होंने बेसबब और चुपके से मेरे रास्ते में जाल बिछाया, बिलावजह मुझे पकड़ने का गढ़ा खोदा है।
- 8 इसलिए तब़ाही अचानक ही उन पर आ पड़े, पहले उन्हें पता ही न चले। जो जाल उन्होंने चुपके से बिछाया उसमें वह खुद उलझ जाएँ, जिस गढ़े को उन्होंने खोदा उसमें वह खुद गिरकर तबाह हो जाएँ।
- 9 तब मेरी जान रब की खुशी मनाएगी और उस की नजात के बाइस शादमान होगी।
- 10 मेरे तमाम आज्ञा कह उठेंगे, “ऐ रब, कौन तेरी मानिंद है? कोई भी नहीं! क्योंकि तू ही मुसीबतज़दा को ज़बरदस्त आदमी से छुटकारा देता, तू ही नाचार और गरीब को लूटनेवाले के हाथ से बचा लेता है।”
- 11 ज़ालिम गवाह मेरे खिलाफ उठ खड़े हो रहे हैं। वह ऐसी बातों के बारे में मेरी पूछ-गछ कर रहे हैं जिनसे मैं वाकिफ़ ही नहीं।
- 12 वह मेरी नेकी के एवज़ मुझे नुक़सान पहुँचा रहे हैं। अब मेरी जान तने-तनहा है।
- 13 जब वह बीमार हुए तो मैंने टाट ओढ़कर और रोज़ा रखकर अपनी जान को दुख दिया। काश मेरी दुआ मेरी गोद में वापस आए!
- 14 मैंने यों मातम किया जैसे मेरा कोई दोस्त या भाई हो। मैं मातमी लिबास पहनकर यों खाक में झुक गया जैसे अपनी माँ का जनाज़ा हो।
- 15 लेकिन जब मैं खुद ठोकर खाने लगा तो वह खुश होकर मेरे खिलाफ़ जमा हुए। वह मुझ पर हमला करने के लिए इकट्ठे हुए, और मुझे मालूम ही नहीं था। वह मुझे फाड़ते रहे और बाज़ न आए।
- 16 मुसलसल कुफ़र बक बककर वह मेरा मज़ाक़ उड़ाते, मेरे खिलाफ़ दाँत पीसते थे।
- 17 ऐ रब, तू कब तक ख़ामोशी से देखता रहेगा? मेरी जान को उनकी तबाहक़ुन हरकतों से बचा, मेरी ज़िंदगी को जवान शेरों से छुटकारा दे।
- 18 तब मैं बड़ी जमात में तेरी सताइश और बड़े हुज़ूम में तेरी तारीफ़ करूँगा।

- 19 उन्हें मुझ पर बगलें बजाने न दे जो बेसबब मेरे दुश्मन हैं। उन्हें मुझ पर नाक-भौं चढ़ाने न दे जो बिलावजह मुझसे कीना रखते हैं।
- 20 क्योंकि वह खैर और सलामती की बातें नहीं करते बल्कि उनके खिलाफ फरेबदेह मनसूबे बाँधते हैं जो अमन और सुकून से मुल्क में रहते हैं।
- 21 वह मुँह फाड़कर कहते हैं, “लो जी, हमने अपनी आँखों से उस की हरकतें देखी हैं!”
- 22 ऐ रब, तुझे सब कुछ नज़र आया है। खामोश न रह! ऐ रब, मुझसे दूर न हो।
- 23 ऐ रब मेरे खुदा, जाग उठ! मेरे दिफ़ा में उठकर उनसे लड़!
- 24 ऐ रब मेरे खुदा, अपनी रास्ती के मुताबिक मेरा इनसाफ़ कर। उन्हें मुझ पर बगलें बजाने न दे।
- 25 वह दिल में न सोचें, “लो जी, हमारा इरादा पूरा हुआ है!” वह न बोलें, “हमने उसे हड़प कर लिया है।”
- 26 जो मेरा नुकसान देखकर खुश हुए उन सबका मुँह काला हो जाए, वह शर्मिंदा हो जाएँ। जो मुझे दबाकर अपने आप पर फ़ख़र करते हैं वह शर्मिंदगी और स्सवाई से मुल्बस हो जाएँ।
- 27 लेकिन जो मेरे इनसाफ़ के आरजूमंद हैं वह खुश हों और शादियाना बजाएँ। वह कहें, “रब की बड़ी तारीफ़ हो, जो अपने खादिम की खैरियत चाहता है।”
- 28 तब मेरी ज़बान तेरी रास्ती बयान करेगी, वह सारा दिन तेरी तमजीद करती रहेगी।

36

अल्लाह की मेहरबानी की तारीफ़

- 1 रब के खादिम दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।
- बदकारी बेदीन के दिल ही में उससे बात करती है। उस की आँखों के सामने अल्लाह का खौफ़ नहीं होता,
- 2 क्योंकि उस की नज़र में यह बात फ़ख़र का बाइस है कि उसे कुसूरवार पाया गया, कि वह नफ़रत करता है।
- 3 उसके मुँह से शरारत और फ़रेब निकलता है, वह समझदार होने और नेक काम करने से बाज़ आया है।
- 4 अपने बिस्तर पर भी वह शरारत के मनसूबे बाँधता है। वह मज़बूती से बुरी राह पर खड़ा रहता और बुराई को मुस्तरद नहीं करता।
- 5 ऐ रब, तेरी शफ़क़त आसमान तक, तेरी वफ़ादारी बादलों तक पहुँचती है।
- 6 तेरी रास्ती बुलंदतरीन पहाड़ों की मानिंद, तेरा इनसाफ़ समुंदर की गहराइयों जैसा है। ऐ रब, तू इनसानो-हैवान की मदद करता है।
- 7 ऐ अल्लाह, तेरी शफ़क़त कितनी बेशकीमत है! आदमज़ाद तेरे परो के साथ में पनाह लेते हैं।
- 8 वह तेरे घर के उम्दा खाने से तरो-ताज़ा हो जाते हैं, और तू उन्हें अपनी खुशियों की नदी में से पिलाता है।
- 9 क्योंकि ज़िंदगी का सरचश्मा तेरे ही पास है, और हम तेरे नूर में रहकर नूर का मुशाहदा करते हैं।
- 10 अपनी शफ़क़त उन पर फैलाए रख जो तुझे जानते हैं, अपनी रास्ती उन पर जो दिल से दियातदार हैं।
- 11 मगरूरों का पाँव मुझ तक न पहुँचे, बेदीनों का हाथ मुझे बेघर न बनाए।
- 12 देखो, बदकार गिर गए हैं! उन्हें ज़मीन पर पटख़ दिया गया है, और वह दुबारा कभी नहीं उठेंगे।

37

बेदीनों की बज़ाहिर खुशहाली

- 1 दाऊद का जबूर।
- शरीरों के बाइस बेचैन न हो जा, बदकारों पर रशक न कर।
- 2 क्योंकि वह घास की तरह जल्द ही मुरझा जाएंगे, हरियाली की तरह जल्द ही सूख जाएंगे।
- 3 रब पर भरोसा रखकर भलाई कर, मुल्क में रहकर वफ़ादारी की परवरिश कर।
- 4 रब से लुत्फ़अंदोज़ हो तो जो तेरा दिल चाहे वह तुझे देगा।
- 5 अपनी राह रब के सुपुर्द कर। उस पर भरोसा रख तो वह तुझे कामयाबी बख़शेगा।
- 6 तब वह तेरी रास्तबाज़ी सूरज की तरह तुलू होने देगा और तेरा इनसाफ़ दोपहर की रौशनी की तरह चमकने देगा।
- 7 रब के हुज़ूर चुप होकर सब्र से उसका इंतज़ार कर। बेकरार न हो अगर साज़िशें करनेवाला कामयाब हो।
- 8 ख़फ़ा होने से बाज़ आ, गुस्से को छोड़ दे। रंजीदा न हो, वरना बुरा ही नतीजा निकलेगा।
- 9 क्योंकि शरीर मिट जाएंगे जबकि रब से उम्मीद रखनेवाले मुल्क को मीरास में पाएँगे।
- 10 मज़ीद थोड़ी देर सब्र कर तो बेदीन का नामो-निशान मिट जाएगा। तू उसका खोज लगाएगा, लेकिन कहीं नहीं पाएगा।
- 11 लेकिन हलीम मुल्क को मीरास में पाकर बड़े अमन और सुकून से लुत्फ़अंदोज़ होंगे।

- 12 बेशक बेदीन दाँत पीस पीसकर रास्तबाज़ के खिलाफ़ साज़िशें करता रहे।
 13 लेकिन रब उस पर हँसता है, क्योंकि वह जानता है कि उसका अंजाम करीब ही है।
 14 बेदीनों ने तलवार को खींचा और कमान को तान लिया है ताकि नाचारों और ज़रूरतमंदों को गिरा दें और सीधी राह पर चलनेवालों को कत्ल करें।
 15 लेकिन उनकी तलवार उनके अपने दिल में घोंपी जाएगी, उनकी कमान टूट जाएगी।
- 16 रास्तबाज़ को जो थोड़ा-बहुत हासिल है वह बहुत बेदीनों की दौलत से बेहतर है।
 17 क्योंकि बेदीनों का बाज़ू टूट जाएगा जबकि रब रास्तबाज़ों को सँभालता है।
 18 रब बेइलज़ामों के दिन जानता है, और उनकी मौसूसी मिलकियत हमेशा के लिए कायम रहेगी।
 19 मुसीबत के वक़्त वह शर्मसार नहीं होंगे, काल भी पड़े तो सेर होंगे।
 20 लेकिन बेदीन हलाक हो जाएंगे, और रब के दुश्मन चरागाहों की शान की तरह नेस्त हो जाएंगे, धुँएँ की तरह गायब हो जाएंगे।
 21 बेदीन कर्ज़ लेता और उसे नहीं उतारता, लेकिन रास्तबाज़ मेहरबान है और फ़ैयाज़ी से देता है।
 22 क्योंकि जिन्हें रब बरकत दे वह मुल्क को मीरास में पाएँगे, लेकिन जिन पर वह लानत भेजे उनका नामो-निशान तक नहीं रहेगा।
 23 अगर किसी के पाँव जम जाएँ तो यह रब की तरफ़ से है। ऐसे शख्स की राह को वह पसंद करता है।
 24 अगर गिर भी जाए तो पड़ा नहीं रहेगा, क्योंकि रब उसके हाथ का सहारा बना रहेगा।
- 25 मैं जवान था और अब बूढ़ा हो गया हूँ। लेकिन मैंने कभी नहीं देखा कि रास्तबाज़ को तर्क किया गया या उसके बच्चों को भीक माँगनी पड़ी।
 26 वह हमेशा मेहरबान और कर्ज़ देने के लिए तैयार है। उस की औलाद बरकत का बाइस होगी।
- 27 बुराई से बाज़ आकर भलाई कर। तब तू हमेशा के लिए मुल्क में आबाद रहेगा,
 28 क्योंकि रब को इनसाफ़ प्यारा है, और वह अपने ईमानदारों को कभी तर्क नहीं करेगा। वह अबद तक महफूज़ रहेंगे जबकि बेदीनों की औलाद का नामो-निशान तक नहीं रहेगा।
 29 रास्तबाज़ मुल्क को मीरास में पाकर उसमें हमेशा बसेंगे।
 30 रास्तबाज़ का मुँह हिकमत बयान करता और उस की ज़बान से इनसाफ़ निकलता है।
 31 अल्लाह की शरीअत उसके दिल में है, और उसके कदम कभी नहीं डगमगाएँगे।
 32 बेदीन रास्तबाज़ की ताक में बैठकर उसे मार डालने का मौक़ा ढूँढता है।
 33 लेकिन रब रास्तबाज़ को उसके हाथ में नहीं छोड़ेगा, वह उसे अदालत में मुजरिम नहीं ठहरने देगा।
 34 रब के इंतज़ार में रह और उस की राह पर चलता रह। तब वह तुझे सरफ़राज़ करके मुल्क का वारिस बनाएगा, और तू बेदीनों की हलाकत देखेगा।
- 35 मैंने एक बेदीन और ज़ालिम आदमी को देखा जो फलते-फूलते देवदार के दरख़्त की तरह आसमान से बातें करने लगा।
 36 लेकिन थोड़ी देर के बाद जब मैं दुबारा वहाँ से गुज़रा तो वह था नहीं। मैंने उसका खोज लगाया, लेकिन कहीं न मिला।
 37 बेइलज़ाम पर ध्यान दे और दियानतदार पर ग़ौर कर, क्योंकि आखिरकार उसे अमन और सुकून हासिल होगा।
 38 लेकिन मुजरिम मिलकर तबाह हो जाएंगे, और बेदीनों को आखिरकार रूए-ज़मीन पर से मिटाया जाएगा।
 39 रास्तबाज़ों की नजात रब की तरफ़ से है, मुसीबत के वक़्त वही उनका क़िला है।
 40 रब ही उनकी मदद करके उन्हें छुटकारा देगा, वही उन्हें बेदीनों से बचाकर नजात देगा। क्योंकि उन्होंने उसमें पनाह ली है।

38

सज़ा से बचने की इल्तिज़ा (तौबा का तीसरा जबूर)

- 1 दाऊद का जबूर। याददाश्त के लिए।
 ऐ रब, अपने ग़ज़ब में मुझे सज़ा न दे, कहर में मुझे तंबीह न कर!
 2 क्योंकि तेरे तीर मेरे जिस्म में लग गए हैं, तेरा हाथ मुझ पर भारी है।
 3 तेरी लानत के बाइस मेरा पूरा जिस्म बीमार है, मेरे गुनाह के बाइस मेरी तमाम हड्डियाँ गलने लगी हैं।
 4 क्योंकि मैं अपने गुनाहों के सैलाब में डूब गया हूँ, वह नाकाबिले-बरदाश्त बोझ बन गए हैं।
 5 मेरी हमाक़त के बाइस मेरे ज़ख़मों से बदबू आने लगी, वह गलने लगे हैं।
 6 मैं कुबड़ा बनकर खाक में दब गया हूँ, पूरा दिन मातमी लिबास पहने फिरता हूँ।

- 7 मेरी कमर में शदीद सोझिश है, पूरा जिस्म बीमार है।
 8 मैं निढाल और पाश पाश हो गया हूँ। दिल के अज़ाब के बाइस मैं चीखता-चिल्लाता हूँ।
 9 ऐ रब, मेरी तमाम आरजू तेरे सामने है, मेरी आहें तुझसे पोशीदा नहीं रहती।
 10 मेरा दिल जोर से धड़कता, मेरी ताकत जवाब दे गई बल्कि मेरी आँखों की रौशनी भी जाती रही है।
 11 मेरे दोस्त और साथी मेरी मुसीबत देखकर मुझसे गुरेज़ करते, मेरे करीब के रिश्तेदार दूर खड़े रहते हैं।
 12 मेरे जानी दुश्मन फंदे बिछा रहे हैं, जो मुझे नुकसान पहुँचाना चाहते हैं वह धमकियाँ दे रहे और सारा सारा दिन फरेबदेह मनसूबे बाँध रहे हैं।
 13 और मैं? मैं तो गोया बहरा हूँ, मैं नहीं सुनता। मैं गूँगे की मानिंद हूँ जो अपना मुँह नहीं खोलता।
 14 मैं ऐसा शख्स बन गया हूँ जो न सुनता, न जवाब में एतराज़ करता है।
 15 क्योंकि ऐ रब, मैं तेरे इंतज़ार में हूँ। ऐ रब मेरे खुदा, तू ही मेरी सुनेगा।
 16 मैं बोला, “ऐसा न हो कि वह मेरा नुकसान देखकर बगलें बजाएँ, वह मेरे पाँवों के डगमगाने पर मुझे दबाकर अपने आप पर फ़ख़र करें।”
 17 क्योंकि मैं लड़खड़ाने को हूँ, मेरी अज़ियत मुतवातिर मेरे सामने रहती है।
 18 चुनौचे मैं अपना कुसूर तसलीम करता हूँ, मैं अपने गुनाह के बाइस गमगीन हूँ।
 19 मेरे दुश्मन ज़िंदा और ताकतवर हैं, और जो बिलावजह मुझसे नफ़रत करते हैं वह बहुत हैं।
 20 वह नेकी के बदले बदी करते हैं। वह इसलिए मेरे दुश्मन हैं कि मैं भलाई के पीछे लगा रहता हूँ।
 21 ऐ रब, मुझे तर्क न कर! ऐ अल्लाह, मुझसे दूर न रह!
 22 ऐ रब मेरी नज़ात, मेरी मदद करने में जल्दी कर!

39

इनसान के फ़ानी होने के पेशे-नज़र इल्तिजा

- 1 दाऊद का जबूर। यदूतून के लिए। मौसीकी के राहनुमा के लिए।
 मैं बोला, “मैं अपनी राहों पर ध्यान दूँगा ताकि अपनी ज़बान से गुनाह न करूँ। जब तक बेदीन मेरे सामने रहे उस वक़्त तक अपने मुँह को लगाम दिए रहूँगा।”
 2 मैं चुप-चाप हो गया और अच्छी चीज़ों से दूर रहकर ख़ामोश रहा। तब मेरी अज़ियत बढ़ गई।
 3 मेरा दिल परेशानी से तपने लगा, मेरे कराहते कराहते मेरे अंदर बेचैनी की आग-सी भड़क उठी। तब बात ज़बान पर आ गई,
 4 “ऐ रब, मुझे मेरा अंजाम और मेरी उम्र की हद दिखा ताकि मैं जान लूँ कि कितना फ़ानी हूँ।
 5 देख, मेरी ज़िंदगी का दौरानिया तेरे सामने लमहा-भर का है। मेरी पूरी उम्र तेरे नज़दीक कुछ भी नहीं है। हर इनसान दम-भर का ही है, ख़ाह वह कितनी ही मज़बूती से खड़ा क्यों न हो। (सिलाह)
 6 जब वह इधर उधर घूमे फिरे तो साया ही है। उसका शोर-शराबा बातिल है, और गो वह दौलत जमा करने में मसरूफ़ रहे तो भी उसे मालूम नहीं कि बाद में किसके कब्ज़े में आएगी।”
 7 चुनौचे ऐ रब, मैं किसके इंतज़ार में रहूँ? तू ही मेरी वाहिद उम्मीद है!
 8 मेरे तमाम गुनाहों से मुझे छुटकारा दे। अहमक़ को मेरी स्सवाई करने न दे।
 9 मैं ख़ामोश हो गया हूँ और कभी अपना मुँह नहीं खोलता, क्योंकि यह सब कुछ तेरे ही हाथ से हुआ है।
 10 अपना अज़ाब मुझसे दूर कर! तेरे हाथ की ज़रबों से मैं हलाक हो रहा हूँ।
 11 जब तू इनसान को उसके कुसूर की मुनासिब सज़ा देकर उसको तंबीह करता है तो उस की ख़ूबसूरती कीड़ा लगे कपड़े की तरह जाती रहती है। हर इनसान दम-भर का ही है। (सिलाह)
 12 ऐ रब, मेरी दुआ सुन और मदद के लिए मेरी आहों पर तवज्जुह दे। मेरे आँसुओं को देखकर ख़ामोश न रह। क्योंकि मैं तेरे हुज़ूर रहनेवाला परदेसी, अपने तमाम बापदादा की तरह तेरे हुज़ूर बसनेवाला ग़ैरशहरी हूँ।
 13 मुझसे बाज़ आ ताकि मैं कूच करके नेस्त हो जाने से पहले एक बार फिर हश्शाश-बश्शाश हो जाऊँ।

40

शुक्र और दरखास्त

- 1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।
मैं सन्न से रब के इंतज़ार में रहा तो वह मेरी तरफ़ मायल हुआ और मदद के लिए मेरी चीखों पर तबज्जुह दी।
- 2 वह मुझे तबाही के गढ़े से खींच लाया, दलदल और कीचड़ से निकाल लाया। उसने मेरे पाँवों को चटान पर रख दिया, और अब मैं मजबूती से चल-फिर सकता हूँ।
- 3 उसने मेरे मुँह में नया गीत डाल दिया, हमारे खुदा की हम्दो-सना का गीत उभरने दिया। बहुत-से लोग यह देखेंगे और खौफ़ खाकर रब पर भरोसा रखेंगे।
- 4 मुबारक है वह जो रब पर पूरा भरोसा रखता है, जो तंग करनेवालों और फ़रेब में उलझे हुआ की तरफ़ सख़ नहीं करता।
- 5 ऐ रब मेरे खुदा, बार बार तूने हमें अपने मोजिजे दिखाए, जगह बजगह अपने मनसूबे वुजूद में लाकर हमारी मदद की। तुझ जैसा कोई नहीं है। तेरे अज़ीम काम बेशुमार हैं, मैं उनकी पूरी फ़हरिस्त बता भी नहीं सकता।
- 6 तू कुरबानियाँ और नज़रें नहीं चाहता था, लेकिन तूने मेरे कानों को खोल दिया। तूने भस्म होनेवाली कुरबानियों और गुनाह की कुरबानियों का तकाज़ा न किया।
- 7 फिर मैं बोल उठा, “मैं हाज़िर हूँ जिस तरह मेरे बारे में कलामे-मुक़द्दस * में लिखा है।
- 8 ऐ मेरे खुदा, मैं खुशी से तेरी मरज़ी पूरी करता हूँ, तेरी शरीअत मेरे दिल में टिक गई है।”
- 9 मैंने बड़े इजतिमा में रास्ती की खुशख़बरी सुनाई है। ऐ रब, यकीनन तू जानता है कि मैंने अपने होंटों को बंद न रखा।
- 10 मैंने तेरी रास्ती अपने दिल में छुपाए न रखी बल्कि तेरी वफ़ादारी और नजात बयान की। मैंने बड़े इजतिमा में तेरी शफ़क़त और सदाक़त की एक बात भी पोशीदा न रखी।
- 11 ऐ रब, तू मुझे अपने रहम से महसूस नहीं रखेगा, तेरी मेहरबानी और वफ़ादारी मुसलसल मेरी निगहबानी करेंगी।
- 12 क्योंकि बेशुमार तकलीफ़ों ने मुझे घेर रखा है, मेरे गुनाहों ने आख़िरकार मुझे आ पकड़ा है। अब मैं नज़र भी नहीं उठा सकता। वह मेरे सर के बालों से ज़्यादा हैं, इसलिए मैं हिम्मत हार गया हूँ।
- 13 ऐ रब, मेहरबानी करके मुझे बचा! ऐ रब, मेरी मदद करने में जल्दी कर!
- 14 मेरे जानी दुश्मन सब शर्मिदा हो जाएँ, उनकी सख़्त स्सवाई हो जाए। जो मेरी मुसीबत देखने से लुप्त उठाते हैं वह पीछे हट जाएँ, उनका मुँह काला हो जाए।
- 15 जो मेरी मुसीबत देखकर कहकहा लगाते हैं वह शर्म के मारे तबाह हो जाएँ।
- 16 लेकिन तेरे तालिब शादमान होकर तेरी खुशी मनाएँ। जिन्हें तेरी नजात प्यारी है वह हमेशा कहें, “रब अज़ीम है!”
- 17 मैं नाचार और ज़रूरतमंद हूँ, लेकिन रब मेरा ख़याल रखता है। तू ही मेरा सहारा और मेरा नजातदहिदा है। ऐ मेरे खुदा, देर न कर!

41

मरीज़ की दुआ

- 1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।
मुबारक है वह जो पस्तहाल का ख़याल रखता है। मुसीबत के दिन रब उसे छुटकारा देगा।
- 2 रब उस की हिफ़ाज़त करके उस की ज़िंदगी को महफूज़ रखेगा, वह मुल्क में उसे बरक़त देकर उसे उसके दुश्मनों के लालच के हवाले नहीं करेगा।
- 3 बीमारी के वक़्त रब उसको बिस्तर पर सँभालेगा। तू उस की सेहत पूरी तरह बहाल करेगा।
- 4 मैं बोला, “ऐ रब, मुझ पर रहम कर! मुझे शफ़ा दे, क्योंकि मैंने तेरा ही गुनाह किया है।”
- 5 मेरे दुश्मन मेरे बारे में ग़लत बातें करके कहते हैं, “वह कब मरेगा? उसका नामो-निशान कब मिटेगा?”
- 6 जब कभी कोई मुझसे मिलने आए तो उसका दिल झूट बोलता है। पसे-परदा वह ऐसी नुक़सानदेह मालूमात जमा करता है जिन्हें बाद में बाहर जाकर गलियों में फैला सके।
- 7 मुझसे नफ़रत करनेवाले सब आपस में मेरे खिलाफ़ फुसफुसाते हैं। वह मेरे खिलाफ़ बुरे मनसूबे बाँधकर कहते हैं,

* 40:7 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : किताब के तूमार में।

- 8 “उसे मोहलक मरज लग गया है। वह कभी अपने बिस्तर पर से दुबारा नहीं उठेगा।”
- 9 मेरा दोस्त भी मेरे खिलाफ उठ खड़ा हुआ है। जिस पर मैं एतमाद करता था और जो मेरी रोटी खाता था, उसने मुझ पर लात उठाई है।
- 10 लेकिन तू ऐ रब, मुझ पर मेहरबानी कर! मुझे दुबारा उठा खड़ा कर ताकि उन्हें उनके सुलूक का बदला दे सकूँ।
- 11 इससे मैं जानता हूँ कि तू मुझसे खुश है कि मेरा दुश्मन मुझ पर फ़तह के नारे नहीं लगाता।
- 12 तूने मुझे मेरी दियानतदारी के बाइस कायम रखा और हमेशा के लिए अपने हुज़ूर खड़ा किया है।
- 13 रब की हम्द हो जो इसराईल का खुदा है। अज़ल से अबद तक उस की तमज़ीद हो। आमीन, फिर आमीन।

दूसरी किताब 42-72

42

परदेस में अल्लाह का आरज़ूमंद

- 1 कोरह की औलाद का जबूर। हिकमत का गीत। मौसीकी के राहनुमा के लिए।
ऐ अल्लाह, जिस तरह हिरनी नदियों के ताज़ा पानी के लिए तड़पती है उसी तरह मेरी जान तेरे लिए तड़पती है।
- 2 मेरी जान खुदा, हाँ जिंदा खुदा की प्यासी है। मैं कब जाकर अल्लाह का चेहरा देखूँगा?
- 3 दिन-रात मेरे आँसू मेरी गिज़ा रहे हैं। क्योंकि पूरा दिन मुझसे कहा जाता है, “तेरा खुदा कहाँ है?”
- 4 पहले हालात याद करके मैं अपने सामने अपने दिल की आहो-ज़ारी उंडेल देता हूँ। * कितना मज़ा आता था जब हमारा जुलूस निकलता था, जब मैं हुज़ूम के बीच में खुशी और शुक्रगुज़ारी के नारे लगाते हुए अल्लाह की सुकूनतगाह की जानिब बढ़ता जाता था। कितना शोर मच जाता था जब हम जशन मनाते हुए घुमते-फिरते थे।
- 5 ऐ मेरी जान, तू गम क्यों खा रही है, बेचैनी से क्यों तड़प रही है? अल्लाह के इंतज़ार में रह, क्योंकि मैं दुबारा उस की सताइश करूँगा जो मेरा खुदा है और मेरे देखते देखते मुझे नज़ात देता है।
- 6 मेरी जान गम के मारे पिघल रही है। इसलिए मैं तुझे यरदन के मुल्क, हरमून के पहाड़ी सिलसिले और कोहे-मिसआर से याद करता हूँ।
- 7 जब से तेरे आबशारों की आवाज़ बुलंद हुई तो एक सैलाब दूसरे को पुकारने लगा है। तेरी तमाम मौजें और लहरें मुझ पर से गुज़र गई हैं।
- 8 दिन के वक़्त रब अपनी शफ़क़त भेजेगा, और रात के वक़्त उसका गीत मेरे साथ होगा, मैं अपनी हयात के खुदा से दुआ करूँगा।
- 9 मैं अल्लाह अपनी चटान से कहूँगा, “तू मुझे क्यों भूल गया है? मैं अपने दुश्मन के जुल्म के बाइस क्यों मातमी लिबास पहने फिर्सूँ?”
- 10 मेरे दुश्मनों की लान-तान से मेरी हड्डियाँ टूट रही हैं, क्योंकि पूरा दिन वह कहते हैं, “तेरा खुदा कहाँ है?”
- 11 ऐ मेरी जान, तू गम क्यों खा रही है, बेचैनी से क्यों तड़प रही है? अल्लाह के इंतज़ार में रह, क्योंकि मैं दुबारा उस की सताइश करूँगा जो मेरा खुदा है और मेरे देखते देखते मुझे नज़ात देता है।

43

- 1 ऐ अल्लाह, मेरा इनसाफ़ कर! मेरे लिए ग़ैरईमानदार कौम से लड़, मुझे धोकेबाज़ और शरीर आदमियों से बचा।
- 2 क्योंकि तू मेरी पनाह का खुदा है। तूने मुझे क्यों रद्द किया है? मैं अपने दुश्मन के जुल्म के बाइस क्यों मातमी लिबास पहने फिर्सूँ?
- 3 अपनी रौशनी और सच्चाई को भेज ताकि वह मेरी राहनुमाई करके मुझे तेरे मुक़द्दस पहाड़ और तेरी सुकूनतगाह के पास पहुँचाएँ।
- 4 तब मैं अल्लाह की कुरबानगाह के पास आऊँगा, उस खुदा के पास जो मेरी खुशी और फ़रहत है। ऐ अल्लाह मेरे खुदा, वहाँ मैं सरोद बजाकर तेरी सताइश करूँगा।
- 5 ऐ मेरी जान, तू गम क्यों खा रही है, बेचैनी से क्यों तड़प रही है? अल्लाह के इंतज़ार में रह, क्योंकि मैं दुबारा उस की सताइश करूँगा जो मेरा खुदा है और मेरे देखते देखते मुझे नज़ात देता है।

44

क्या अल्लाह ने अपनी कौम को रद्द किया है?

* 42:4 लफज़ी तरज़ुमा : अपनी जान उंडेल देता हूँ।

- 1 क्रोरह की औलाद का जबूर। हिकमत का गीत। मौसीकी के राहनुमा के लिए।
ऐ अल्लाह, जो कुछ तूने हमारे बापदादा के ऐयाम में यानी क़दीम ज़माने में किया वह हमने अपने कानों से उनसे सुना है।
- 2 तूने खुद अपने हाथ से दीगर कौमों को निकालकर हमारे बापदादा को मुल्क में पौंदे की तरह लगा दिया। तूने खुद दीगर उम्मतों को शिकस्त देकर हमारे बापदादा को मुल्क में फलने फूलने दिया।
- 3 उन्होंने अपनी ही तलवार के ज़रीए मुल्क पर कब्ज़ा नहीं किया, अपने ही बाजू से फ़तह नहीं पाई बल्कि तेरे दहने हाथ, तेरे बाजू और तेरे चेहरे के नूर ने यह सब कुछ किया। क्योंकि वह तुझे पसंद थे।
- 4 तू मेरा बादशाह, मेरा खुदा है। तेरे ही हुक्म पर याकूब को मदद हासिल होती है।
- 5 तेरी मदद से हम अपने दुश्मनों को ज़मीन पर पटख देते, तेरा नाम लेकर अपने मुखालिफ़ों को कुचल देते हैं।
- 6 क्योंकि मैं अपनी कमान पर एतमाद नहीं करता, और मेरी तलवार मुझे नहीं बचाएगी
- 7 बल्कि तू ही हमें दुश्मन से बचाता, तू ही उन्हें शरमिंदा होने देता है जो हमसे नफ़रत करते हैं।
- 8 पूरा दिन हम अल्लाह पर फ़ख़र करते हैं, और हम हमेशा तक तेरे नाम की तमजीद करेंगे। (सिलाह)
- 9 लेकिन अब तूने हमें रद्द कर दिया, हमें शरमिंदा होने दिया है। जब हमारी फ़ौजें लड़ने के लिए निकलती हैं तो तू उनका साथ नहीं देता।
- 10 तूने हमें दुश्मन के सामने पसपा होने दिया, और जो हमसे नफ़रत करते हैं उन्होंने हमें लूट लिया है।
- 11 तूने हमें भेड़-बकरियों की तरह कस्साब के हाथ में छोड़ दिया, हमें मुख्तलिफ़ कौमों में मुंतशिर कर दिया है।
- 12 तूने अपनी कौम को ख़फ़ीफ़-सी रक़म के लिए बेच डाला, उसे फ़रोख़्त करने से नफ़ा हासिल न हुआ।
- 13 यह तेरी तरफ़ से हुआ कि हमारे पड़ोसी हमें स्सवा करते, गिर्दों-नवाह के लोग हमें लान-तान करते हैं।
- 14 हम अक्रवाम में इबरतअंगेज़ मिसाल बन गए हैं। लोग हमें देखकर तौबा तौबा कहते हैं।
- 15 दिन-भर मेरी स्सवाई मेरी आँखों के सामने रहती है। मेरा चेहरा शर्मसार ही रहता है,
- 16 क्योंकि मुझे उनकी गालियाँ और कुफ़र सुनना पड़ता है, दुश्मन और इंतक़ाम लेने पर तुले हुए को बरदाश्त करना पड़ता है।
- 17 यह सब कुछ हम पर आ गया है, हालाँकि न हम तुझे भूल गए और न तेरे अहद से बेवफ़ा हुए हैं।
- 18 न हमारा दिल बागी हो गया, न हमारे क़दम तेरी राह से भटक गए हैं।
- 19 ताहम तूने हमें चूर चूर करके गीदड़ों के दरमियान छोड़ दिया, तूने हमें गहरी तारीकी में डूबने दिया है।
- 20 अगर हम अपने खुदा का नाम भूलकर अपने हाथ किसी और माबूद की तरफ़ उठाते
- 21 तो क्या अल्लाह को यह बात मालूम न हो जाती? ज़रूर! वह तो दिल के राज़ों से वाकिफ़ होता है।
- 22 लेकिन तेरी खातिर हमें दिन-भर मौत का सामना करना पड़ता है, लोग हमें जबह होनेवाली भेड़ों के बराबर समझते हैं।
- 23 ऐ रब, जाग उठ! तू क्यों सोया हुआ है? हमें हमेशा के लिए रद्द न कर बल्कि हमारी मदद करने के लिए खड़ा हो जा।
- 24 तू अपना चेहरा हमसे पोशीदा क्यों रखता है, हमारी मुसीबत और हम पर होनेवाले जुल्म को नज़रंदाज़ क्यों करता है?
- 25 हमारी जान खाक में दब गई, हमारा बदन मिट्टी से चिमट गया है।
- 26 उठकर हमारी मदद कर! अपनी शफ़क़त की खातिर फ़िघा देकर हमें छुड़ा!

45

बादशाह की शादी

- 1 क्रोरह की औलाद का जबूर। हिकमत और मुहब्बत का गीत। तर्ज़ : सोसन के फूल। मौसीकी के राहनुमा के लिए।
मेरे दिल से ख़ूबसूरत गीत छलक रहा है, मैं उसे बादशाह को पेश करूँगा। मेरी ज़बान माहिर कातिब के कलम की मानिंद हो!
- 2 तू आदमियों में सबसे ख़ूबसूरत है! तेरे होंट शफ़क़त से मसह किए हुए हैं, इसलिए अल्लाह ने तुझे अबदी बरक़त दी है।
- 3 ऐ सूरमे, अपनी तलवार से कमरबस्ता हो, अपनी शानो-शौक़त से मुलब्बस हो जा!
- 4 ग़लबा और कामयाबी हासिल कर। सच्चाई, इंकिसारी और रास्ती की खातिर लड़ने के लिए निकल आ। तेरा दहना हाथ तुझे हैरतअंगेज़ काम दिखाए।
- 5 तेरे तेज़ तीर बादशाह के दुश्मनों के दिलों को छेद डालें। कौमों तेरे पाँवों में गिर जाएँ।
- 6 ऐ अल्लाह, तेरा तख़्त अज़ल से अबद तक कायमो-दायम रहेगा, और इनसाफ़ का शाही असा तेरी बादशाही पर हुक्मत करेगा।
- 7 तूने रास्तबाज़ी से मुहब्बत और बेदीनी से नफ़रत की, इसलिए अल्लाह तेरे खुदा ने तुझे खुशी के तेल से मसह करके तुझे तेरे साथियों से कहीं ज़्यादा सरफ़राज़ कर दिया।

- 8 मुर, ऊद और अमलतास की बेशकीमत खुशबू तेरे तमाम कपड़ों से फैलती है। हाथीदाँत के महलों में तारदार मौसीकी तेरा दिल बहलाती है।
- 9 बादशाहों की बेटीयाँ तेरे जेवरात से सजी फिरती हैं। मलिका ओफ़ीर का सोना पहने हुए तेरे दहने हाथ खड़ी है।
- 10 ऐ बेटी, सुन मेरी बात! गौर कर और कान लगा। अपनी कौम और अपने बाप का घर भूल जा।
- 11 बादशाह तेरे हुस्न का आरज़ूमंद है, क्योंकि वह तेरा आका है। चुनौचे झुककर उसका एहतराम कर।
- 12 सूर की बेटी तोहफ़ा लेकर आएगी, कौम के अमीर तेरी नज़रे-करम हासिल करने की कोशिश करेंगे।
- 13 बादशाह की बेटी कितनी शानदार चीज़ों से आरास्ता है। उसका लिबास सोने के धागों से बुना हुआ है।
- 14 उसे नफ़ीस रंगदार कपड़े पहने बादशाह के पास लाया जाता है। जो कुँवारी सहेलियाँ उसके पीछे चलती हैं उन्हें भी तेरे सामने लाया जाता है।
- 15 लोग शादमान होकर और खुशी मनाते हुए उन्हें वहाँ पहुँचाते हैं, और वह शाही महल में दाखिल होती हैं।
- 16 ऐ बादशाह, तेरे बेटे तेरे बापदादा की जगह खड़े हो जाएंगे, और तू उन्हें रईस बनाकर पूरी दुनिया में ज़िम्मादारियाँ देगा।
- 17 पुश्त-दर-पुश्त मैं तेरे नाम की तमजीद करूँगा, इसलिए कौमों हमेशा तक तेरी सताइश करेंगी।

46

अल्लाह हमारी कुव्वत है

- 1 क्रोरह की औलाद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। गीत का तर्ज : कुँवारियाँ।
अल्लाह हमारी पनाहगाह और कुव्वत है। मुसीबत के वक़्त वह हमारा मज़बूत सहारा साबित हुआ है।
- 2 इसलिए हम ख़ौफ़ नहीं खाएँगे, गो ज़मीन लरज़ उठे और पहाड़ झूमकर समुंदर की गहराइयों में गिर जाएँ,
3 गो समुंदर शोर मचाकर ठाठें मारे और पहाड़ उस की दहाड़ों से काँप उठें। (सिलाह)
- 4 दरिया की शाखें अल्लाह के शहर को खुश करती हैं, उस शहर को जो अल्लाह तआला की मुक़द्दस सुकूनतगाह है।
- 5 अल्लाह उसके बीच में है, इसलिए शहर नहीं डगमगाएगा। सुबह-सवेरे ही अल्लाह उस की मदद करेगा।
- 6 कौमों शोर मचाने, सलतनतें लड़खड़ाने लगीं। अल्लाह ने आवाज़ दी तो ज़मीन लरज़ उठी।
- 7 रब्बुल-अफ़वाज़ हमारे साथ है, याक़ूब का खुदा हमारा किला है। (सिलाह)
- 8 आओ, रब के अज़ीम कामों पर नज़र डालो! उसी ने ज़मीन पर हौलनाक तबाही नाज़िल की है।
- 9 वही दुनिया की इतहा तक जंगें रोक देता, वही कमान को तोड़ देता, नेज़े को टुकड़े टुकड़े करता और ढाल को जला देता है।
- 10 वह फ़रमाता है, “अपनी हरकतों से बाज़ आओ! जान लो कि मैं खुदा हूँ। मैं अक्रवाम में सरबुलंद और दुनिया में सरफ़राज़ हूँगा।”
- 11 रब्बुल-अफ़वाज़ हमारे साथ है। याक़ूब का खुदा हमारा किला है। (सिलाह)

47

अल्लाह तमाम कौमों का बादशाह है

- 1 क्रोरह की औलाद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।
ऐ तमाम कौमो, ताली बजाओ! खुशी के नारे लगाकर अल्लाह की मद्दहसराई करो!
- 2 क्योंकि रब तआला पुरजलाल है, वह पूरी दुनिया का अज़ीम बादशाह है।
- 3 उसने कौमों को हमारे तहत कर दिया, उम्मतों को हमारे पाँवों तले रख दिया।
- 4 उसने हमारे लिए हमारी मीरास को चुन लिया, उसी को जो उसके प्यारे बंदे याक़ूब के लिए फ़ख़र का बाइस था। (सिलाह)
- 5 अल्लाह ने सऊद फ़रमाया तो साथ साथ खुशी का नारा बुलंद हुआ, रब बुलंदी पर चढ़ गया तो साथ साथ नरसिंगा बजता रहा।
- 6 मद्दहसराई करो, अल्लाह की मद्दहसराई करो! मद्दहसराई करो, हमारे बादशाह की मद्दहसराई करो!
- 7 क्योंकि अल्लाह पूरी दुनिया का बादशाह है। हिकमत का गीत गाकर उस की सताइश करो।
- 8 अल्लाह कौमों पर हुकूमत करता है, अल्लाह अपने मुक़द्दस तख़्त पर बैठा है।

9 दीगर क्रौमों के शुरफा इब्राहीम के खुदा की क्रौम के साथ जमा हो गए हैं, क्योंकि वह दुनिया के हुक्मरानों का मालिक है। वह निहायत ही सरबुलंद है।

48

अल्लाह का शहर यरूशलम

1 गीत। क्रौरह की औलाद का जबूर।

रब अज़ीम और बड़ी तारीफ़ के लायक है। उसका मुक़द्दस पहाड़ हमारे खुदा के शहर में है।

2 कोहे-सिय्यून की बुलंदी खूबसूरत है, पूरी दुनिया उससे खुश होती है। कोहे-सिय्यून दूरतरीन शिमाल का इलाही पहाड़ ही है, वह अज़ीम बादशाह का शहर है।

3 अल्लाह उसके महलों में है, वह उस की पनाहगाह साबित हुआ है।

4 क्योंकि देखो, बादशाह जमा होकर यरूशलम से लड़ने आए।

5 लेकिन उसे देखते ही वह हैरान हुए, वह दहशत खाकर भाग गए।

6 वहाँ उन पर कपकपी तारी हुई, और वह दर्द-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह पेचो-ताब खाने लगे।

7 जिस तरह मशरिकी आँधी तरसीस के शानदार जहाज़ों को टुकड़े टुकड़े कर देती है उसी तरह तूने उन्हें तबाह कर दिया।

8 जो कुछ हमने सुना है वह हमारे देखते देखते रब्बुल-अफ़वाज हमारे खुदा के शहर पर सादिक आया है, अल्लाह उसे अबद तक कायम रखेगा। (सिलाह)

9 ऐ अल्लाह, हमने तेरी सुकूनतगाह में तेरी शफ़क़त पर गौरो-ख़ौज़ किया है।

10 ऐ अल्लाह, तेरा नाम इस लायक है कि तेरी तारीफ़ दुनिया की इंतहा तक की जाए। तेरा दहना हाथ रास्ती से भरा रहता है।

11 कोहे-सिय्यून शादमान हो, यहदाह की बेटियाँ * तेरे मुंसिफ़ाना फैसलों के बाइस खुशी मनाएँ।

12 सिय्यून के इर्दगिर्द घूमो फ़िरो, उस की फ़सील के साथ साथ चलकर उसके बुर्ज गिन लो।

13 उस की क़िलाबंदी पर खूब ध्यान दो, उसके महलों का मुआयना करो ताकि आनेवाली नसल को सब कुछ सुना सको।

14 यक्कीनन अल्लाह हमारा खुदा हमेशा तक ऐसा ही है। वह अबद तक हमारी राहनुमाई करेगा।

49

अमीरों की शान सराब ही है

1 क्रौरह की औलाद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।

ऐ तमाम क्रौमो, सुनो! दुनिया के तमाम बाशिंदो, ध्यान दो!

2 छोटे और बड़े, अमीर और गरीब सब तवज्जुह दें।

3 मेरा मुँह हिकमत बयान करेगा और मेरे दिल का गौरो-ख़ौज़ समझ अता करेगा।

4 मैं अपना कान एक कहावत की तरफ़ झुकाऊँगा, सरोद बजाकर अपनी पहेली का हल बताऊँगा।

5 मैं ख़ौफ़ क्यों खाऊँ जब मुसीबत के दिन आएँ और मक्कारों का बुरा काम मुझे घेर ले?

6 ऐसे लोग अपनी मिलकियत पर एतमाद और अपनी बड़ी दौलत पर फ़ख़र करते हैं।

7 कोई भी फ़िघा देकर अपने भाई की जान को नहीं छुड़ा सकता। वह अल्लाह को इस किस्म का तावान नहीं दे सकता।

8 क्योंकि इतनी बड़ी रकम देना उसके बस की बात नहीं। आखिरकार उसे हमेशा के लिए ऐसी कोशिशों से बाज़ आना पड़ेगा।

9 चुनाँचे कोई भी हमेशा के लिए ज़िंदा नहीं रह सकता, आखिरकार हर एक मौत के गढ़े में उतरेगा।

10 क्योंकि हर एक देख सकता है कि दानिशमंद भी वफ़ात पाते और अहमक और नासमझ भी मिलकर हलाक हो जाते हैं। सबको अपनी दौलत दूसरों के लिए छोड़नी पड़ती है।

11 उनकी कब्रें अबद तक उनके घर बनी रहेंगी, पुश्त-दर-पुश्त वह उनमें बसे रहेंगे, गो उन्हें ज़मीनें हासिल थीं जो उनके नाम पर थीं।

12 इनसान अपनी शानो-शौकत के बावजूद कायम नहीं रहता, उसे जानवरों की तरह हलाक होना है।

13 यह उन सबकी तकदीर है जो अपने आप पर एतमाद रखते हैं, और उन सबका अंजाम जो उनकी बातें पसंद करते हैं। (सिलाह)

* 48:11 यहाँ यहदाह की बेटियों से मुराद उसके शहर भी हो सकते हैं।

14 उन्हें भेड़-बकरियों की तरह पाताल में लाया जाएगा, और मौत उन्हें चराएगी। क्योंकि सुबह के वक्त दियानतदार उन पर हुक्मत करेंगे। तब उनकी शक्लो-सूरत धिसे-फटे कपड़े की तरह गल-सड़ जाएगी, पाताल ही उनकी रिहाइशगाह होगा।

15 लेकिन अल्लाह मेरी जान का फिदा देगा, वह मुझे पकड़कर पाताल की गिरिफ्त से छुड़ाएगा। (सिलाह)

16 मत घबरा जब कोई अमीर हो जाए, जब उसके घर की शानो-शौकत बढ़ती जाए।

17 मरते वक्त तो वह अपने साथ कुछ नहीं ले जाएगा, उस की शानो-शौकत उसके साथ पाताल में नहीं उतरेगी।

18 बेशक वह जीते-जी अपने आपको मुबारक कहेगा, और दूसरे भी खाते-पीते आदमी की तारीफ करेंगे।

19 फिर भी वह आखिरकार अपने बापदादा की नसल के पास उतरेगा, उनके पास जो दुबारा कभी रौशनी नहीं देखेंगे।

20 जो इनसान अपनी शानो-शौकत के बावजूद नासमझ है, उसे जानवरों की तरह हलाक होना है।

50

सहीह इबादत

1 आसफ का जबूर।

रब कादिर-मुतलक खुदा बोल उठा है, उसने तुलूए-सुबह से लेकर गुरूबे-आफ़ताब तक पूरी दुनिया को बुलाया है।

2 अल्लाह का नूर सिय्यून से चमक उठा है, उस पहाड़ से जो कामिल हुस्र का इज़हार है।

3 हमारा खुदा आ रहा है, वह खामोश नहीं रहेगा। उसके आगे आगे सब कुछ भस्म हो रहा है, उसके इर्दगिर्द तेज़ आँधी चल रही है।

4 वह आसमानो-ज़मीन को आवाज़ देता है, “अब मैं अपनी क्रौम की अदालत करूँगा।

5 मेरे ईमानदारों को मेरे हुज़ूर जमा करो, उन्हें जिन्होंने कुरबानियाँ पेश करके मेरे साथ अहद बाँधा है।”

6 आसमान उस की रास्ती का एलान करेंगे, क्योंकि अल्लाह खुद इनसाफ करनेवाला है। (सिलाह)

7 “ऐ मेरी क्रौम, सुन! मुझे बात करने दे। ऐ इसराईल, मैं तेरे खिलाफ़ गवाही दूँगा। मैं अल्लाह तेरा खुदा हूँ।

8 मैं तुझे तेरी ज़बह की कुरबानियों के बाइस मलामत नहीं कर रहा। तेरी भस्म होनेवाली कुरबानियाँ तो मुसलसल मेरे सामने हैं।

9 न मैं तेरे घर से बैल लूँगा, न तेरे बाड़ों से बकरे।

10 क्योंकि जंगल के तमाम जानदार मेरे ही हैं, हज़ारों पहाड़ियों पर बसनेवाले जानवर मेरे ही हैं।

11 मैं पहाड़ों के हर परिदे को जानता हूँ, और जो भी मैदानों में हरकत करता है वह मेरा है।

12 अगर मुझे भूक लगती तो मैं तुझे न बताता, क्योंकि ज़मीन और जो कुछ उस पर है मेरा है।

13 क्या तू समझता है कि मैं सौँडों का गोश्त खाना या बकरों का खून पीना चाहता हूँ?

14 अल्लाह को शुक़गुज़ारी की कुरबानी पेश कर, और वह मन्नत पूरी कर जो तूने अल्लाह तआला के हुज़ूर मानी है।

15 मुसीबत के दिन मुझे पुकार। तब मैं तुझे नजात दूँगा और तू मेरी तमजीद करेगा।”

16 लेकिन बेदीन से अल्लाह फ़रमाता है, “मेरे अहकाम सुनाने और मेरे अहद का ज़िक्र करने का तेरा क्या हक़ है?

17 तू तो तरबियत से नफ़रत करता और मेरे फ़रमान कचरे की तरह अपने पीछे फेंक देता है।

18 किसी चोर को देखते ही तू उसका साथ देता है, तू ज़िनाकारों से रिफ़ाक़त रखता है।

19 तू अपने मुँह को बुरे काम के लिए इस्तेमाल करता, अपनी ज़बान को धोका देने के लिए तैयार रखता है।

20 तू दूसरों के पास बैठकर अपने भाई के खिलाफ़ बोलता है, अपनी ही माँ के बेटे पर तोहमत लगाता है।

21 यह कुछ तूने किया है, और मैं खामोश रहा। तब तू समझा कि मैं बिलकुल तुझ जैसा हूँ। लेकिन मैं तुझे मलामत करूँगा, तेरे सामने ही मामला तरतीब से सुनाऊँगा।

22 तुम जो अल्लाह को भूले हुए हो, बात समझ लो, वरना मैं तुम्हें फाड़ डालूँगा। उस वक्त कोई नहीं होगा जो तुम्हें बचाए।

23 जो शुक़गुज़ारी की कुरबानी पेश करे वह मेरी ताज़ीम करता है। जो मुसम्मम इरादे से ऐसी राह पर चले उसे मैं अल्लाह की नजात दिखाऊँगा।”

51

मुझ जैसे गुनाहगार पर रहम कर! (तौबा का चौथा जबूर)

1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। यह गीत उस वक्त से मुताल्लिक है जब दाऊद के बत-सबा के साथ जिना करने के बाद नातन नबी उसके पास आया।

ऐ अल्लाह, अपनी शफकत के मुताबिक मुझ पर मेहरबानी कर, अपने बड़े रहम के मुताबिक मेरी सरकशी के दाग मिटा दे।

2 मुझे धो दे ताकि मेरा कुसूर दूर हो जाए, जो गुनाह मुझसे सरजद हुआ है उससे मुझे पाक कर।

3 क्योंकि मैं अपनी सरकशी को मानता हूँ, और मेरा गुनाह हमेशा मेरे सामने रहता है।

4 मैंने तेरे, सिर्फ तेरे ही खिलाफ गुनाह किया, मैंने वह कुछ किया जो तेरी नज़र में बुरा है। क्योंकि लाज़िम है कि तू बोलते वक्त रास्त ठहरे और अदालत करते वक्त पाकीज़ा साबित हो जाए।

5 यक़ीनन मैं गुनाहआलूदा हालत में पैदा हुआ। ज्योंही मैं माँ के पेट में वुजूद में आया तो गुनाहगार था।

6 यक़ीनन तू बातिन की सच्चाई पसंद करता और पोशीदगी में मुझे हिकमत की तालीम देता है।

7 ज़ूफ़ा लेकर मुझसे गुनाह दूर कर ताकि पाक-साफ़ हो जाऊँ। मुझे धो दे ताकि बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ेद हो जाऊँ।

8 मुझे दुबारा खुशी और शादमानी सुनने दे ताकि जिन हड्डियों को तूने कुचल दिया वह शादियाना बजाएँ।

9 अपने चेहरे को मेरे गुनाहों से फेर ले, मेरा तमाम कुसूर मिटा दे।

10 ऐ अल्लाह, मेरे अंदर पाक दिल पैदा कर, मुझमें नए सिरे से साबितकदम रूह कायम कर।

11 मुझे अपने हुज़ूर से खारिज न कर, न अपने मुक़द्दस रूह को मुझसे दूर कर।

12 मुझे दुबारा अपनी नजात की खुशी दिला, मुझे मुस्तैद रूह अता करके सँभाले रख।

13 तब मैं उन्हें तेरी राहों की तालीम दूँगा जो तुझसे बेवफ़ा हो गए हैं, और गुनाहगार तेरे पास वापस आएँगे।

14 ऐ अल्लाह, मेरी नजात के ख़ुदा, क़त्ल का कुसूर मुझसे दूर करके मुझे बचा। तब मेरी ज़बान तेरी रास्ती की हम्दो-सना करेगी।

15 ऐ रब, मेरे होंटों को खोल ताकि मेरा मुँह तेरी सताइश करे।

16 क्योंकि तू ज़बह की कुरबानी नहीं चाहता, वरना मैं वह पेश करता। भस्म होनेवाली कुरबानियाँ तुझे पसंद नहीं।

17 अल्लाह को मंज़ूर कुरबानी शिकस्ता रूह है। ऐ अल्लाह, तू शिकस्ता और कुचले हुए दिल को हकीर नहीं जानेगा।

18 अपनी मेहरबानी का इज़हार करके सिय्यून को खुशहाली बख़्श, यरूशलम की फ़सील तामीर कर।

19 तब तुझे हमारी सहीह कुरबानियाँ, हमारी भस्म होनेवाली और मुकम्मल कुरबानियाँ पसंद आएँगी। तब तेरी कुरबानगाह पर बैल चढ़ाए जाएँगे।

52

ज़ुल्म के बावुजूद तसल्ली

1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। हिकमत का यह गीत उस वक्त से मुताल्लिक है जब दोएग अदोमी साऊल बादशाह के पास गया और उसे बताया, “दाऊद अखीमलिक इमाम के घर में गया है।”

ऐ सूरमे, तू अपनी बदी पर क्यों फ़ख़र करता है? अल्लाह की शफकत दिन-भर कायम रहती है।

2 ऐ धोकेबाज़, तेरी ज़बान तेज़ उस्तरे की तरह चलती हुई तबाही के मनसूबे बाँधती है।

3 तुझे भलाई की निसबत बुराई ज़्यादा प्यारी है, सच बोलने की निसबत झूट ज़्यादा पसंद है। (सिलाह)

4 ऐ फ़रेबदेह ज़बान, तू हर तबाहकुन बात से प्यार करती है।

5 लेकिन अल्लाह तुझे हमेशा के लिए ख़ाक में मिलाएगा। वह तुझे मार मारकर तेरे ख़ैमे से निकाल देगा, तुझे जड़ से उखाड़कर ज़िंदों के मुल्क से खारिज कर देगा। (सिलाह)

6 रास्तबाज़ यह देखकर खौफ़ खाएँगे। वह उस पर हँसकर कहेंगे,

7 “लो, यह वह आदमी है जिसने अल्लाह में पनाह न ली बल्कि अपनी बड़ी दौलत पर एतमाद किया, जो अपने तबाहकुन मनसूबों से ताक़तवर हो गया था।”

8 लेकिन मैं अल्लाह के घर में ज़ैतून के फलते-फूलते दरख़्त की मानिंद हूँ। मैं हमेशा के लिए अल्लाह की शफकत पर भरोसा रखूँगा।

9 मैं अबद तक उसके लिए तेरी सताइश करूँगा जो तूने किया है। मैं तेरे इमानदारों के सामने ही तेरे नाम के इंतज़ार में रहूँगा, क्योंकि वह भला है।

53

बेदीन की हमाकत

- 1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। हिकमत का गीत। तर्ज : महलत।
अहमक दिल में कहता है, “अल्लाह है ही नहीं!” ऐसे लोग बदचलन हैं, उनकी हरकतें काबिले-घिन हैं। एक भी नहीं है जो अच्छा काम करे।
- 2 अल्लाह ने आसमान से इनसान पर नज़र डाली ताकि देखे कि क्या कोई समझदार है? क्या कोई अल्लाह का तालिब है?
- 3 अफ़सोस, सब सहीह राह से भटक गए, सबके सब बिगड़ गए हैं। कोई नहीं जो भलाई करता हो, एक भी नहीं।
- 4 क्या जो बदी करके मेरी क़ौम को रोटी की तरह खा लेते हैं उन्हें समझ नहीं आती? वह तो अल्लाह को पुकारते ही नहीं।
- 5 तब उन पर सख़्त दहशत वहाँ छा गई जहाँ पहले दहशत का सबब नहीं था। जिन्होंने तुझे घेर रखा था अल्लाह ने उनकी हड्डियाँ बिखेर दीं। तूने उनको स्सवा किया, क्योंकि अल्लाह ने उन्हें रद्द किया है।
- 6 काश कोहे-सियून से इसराईल की नजात निकले! जब रब अपनी क़ौम को बहाल करेगा तो याक़ूब खुशी के नारे लगाएगा, इसराईल बाग़ बाग़ होगा।

54

खतरे में फँसे हुए शख्स की इल्तिजा

- 1 दाऊद का जबूर। हिकमत का यह गीत तारदार साज़ों के साथ गाना है। यह उस वक़्त से मुताल्लिक है जब ज़ीफ़ के बाशिंदों ने साऊल के पास जाकर कहा, “दाऊद हमारे पास छुपा हुआ है।”
ऐ अल्लाह, अपने नाम के ज़रीए से मुझे छुटकारा दे! अपनी कुदरत के ज़रीए से मेरा इनसाफ़ कर!
- 2 ऐ अल्लाह, मेरी इल्तिजा सुन, मेरे मुँह के अलफ़ाज़ पर ध्यान दे।
- 3 क्योंकि परदेसी मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए हैं, ज़ालिम जो अल्लाह का लिहाज़ नहीं करते मेरी जान लेने के दरपै हैं। (सिलाह)
- 4 लेकिन अल्लाह मेरा सहारा है, रब मेरी ज़िंदगी कायम रखता है।
- 5 वह मेरे दुश्मनों की शरारत उन पर वापस लाएगा। चुनौचे अपनी वफ़ादारी दिखाकर उन्हें तबाह कर दे!
- 6 मैं तुझे रज़ाकाराना क़ुरबानी पेश करूँगा। ऐ रब, मैं तेरे नाम की सताइश करूँगा, क्योंकि वह भला है।
- 7 क्योंकि उसने मुझे सारी मुसीबत से रिहाई दी, और अब मैं अपने दुश्मनों की शिकस्त देखकर खुश हूँगा।

55

झूठे भाइयों पर शिकायत

- 1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। हिकमत का यह गीत तारदार साज़ों के साथ गाना है।
ऐ अल्लाह, मेरी दुआ पर ध्यान दे, अपने आपको मेरी इल्तिजा से छुपाए न रख।
- 2 मुझ पर ग़ौर कर, मेरी सुन। मैं बेचैनी से इधर उधर घूमते हुए आहें भर रहा हूँ।
- 3 क्योंकि दुश्मन शोर मचा रहा, बेदीन मुझे तंग कर रहा है। वह मुझ पर आफ़त लाने पर तुले हुए हैं, गुस्से में मेरी मुखालफ़त कर रहे हैं।
- 4 मेरा दिल मेरे अंदर तड़प रहा है, मौत की दहशत मुझ पर छा गई है।
- 5 ख़ौफ़ और लरज़िश मुझ पर तारी हुई, हैबत मुझ पर ग़ालिब आ गई है।
- 6 मैं बोला, “काश मेरे कबूतर के-से पर हों ताकि उड़कर आरामो-सुकून पा सकूँ!
- 7 तब मैं दूर तक भागकर रेगिस्तान में बसेरा करता,
- 8 मैं जल्दी से कहीं पनाह लेता जहाँ तेज़ आँधी और तूफ़ान से महफूज़ रहता।” (सिलाह)
- 9 ऐ रब, उनमें अबतरी पैदा कर, उनकी ज़बान में इख़िलाफ़ डाल! क्योंकि मुझे शहर में हर तरफ़ जुल्म और झगड़े नज़र आते हैं।
- 10 दिन-रात वह फ़सील पर चक्कर काटते हैं, और शहर फ़साद और ख़राबी से भरा रहता है।
- 11 उसके बीच में तबाही की हुकूमत है, और जुल्म और फ़रेब उसके चौक को नहीं छोड़ते।

12 अगर कोई दुश्मन मेरी स्सवाई करता तो काबिले-बरदाशत होता। अगर मुझसे नफरत करनेवाला मुझे दबाकर अपने आपको सरफराज करता तो मैं उससे छुप जाता।

13 लेकिन तू ही ने यह किया, तू जो मुझ जैसा है, जो मेरा करीबी दोस्त और हमराज है।

14 मेरी तेरे साथ कितनी अच्छी रिफाकत थी जब हम हुजूम के साथ अल्लाह के घर की तरफ चलते गए!

15 मौत अचानक ही उन्हें अपनी गिरिफ्त में ले ले। ज़िंदा ही वह पाताल में उतर जाएँ, क्योंकि बुराई ने उनमें अपना घर बना लिया है।

16 लेकिन मैं पुकारकर अल्लाह से मदद माँगता हूँ, और रब मुझे नजात देगा।

17 मैं हर वक्त आहो-जारी करता और कराहता रहता हूँ, खाह सुबह हो, खाह दोपहर या शाम। और वह मेरी सुनेगा।

18 वह फिघा देकर मेरी जान को उनसे छुड़ाएगा जो मेरे खिलाफ लड़ रहे हैं। गो उनकी तादाद बड़ी है वह मुझे आरामो-सुकून देगा।

19 अल्लाह जो अज़ल से तख्तनशीन है मेरी सुनकर उन्हें मुनासिब जवाब देगा। (सिलाह) क्योंकि न वह तबदील हो जाएंगे, न कभी अल्लाह का खौफ मानेंगे।

20 उस शख्स ने अपना हाथ अपने दोस्तों के खिलाफ उठाया, उसने अपना अहद तोड़ लिया है।

21 उस की ज़बान पर मक्खन की-सी चिकनी-चुपड़ी बातें और दिल में जंग है। उसके तेल से ज़्यादा नरम अलफ़ाज़ हकीकत में खींची हुई तलवारें हैं।

22 अपना बोझ रब पर डाल तो वह तुझे सँभालेगा। वह रास्तबाज़ को कभी डगमगाने नहीं देगा।

23 लेकिन ऐ अल्लाह, तू उन्हें तबाही के गढ़े में उतरने देगा। खूनखार और धोकेबाज़ आधी उम्र भी नहीं पाएँगे बल्कि जल्दी मरेंगे। लेकिन मैं तुझ पर भरोसा रखता हूँ।

56

मुसीबत में भरोसा

1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तर्ज : दूर-दराज़ जज़ीरों का कबूतर। यह सुनहरा गीत उस वक्त से मुताल्लिक है जब फ़िलिस्तिनियों ने उसे जात में पकड़ लिया।

ऐ अल्लाह, मुझ पर मेहरबानी कर! क्योंकि लोग मुझे तंग कर रहे हैं, लड़नेवाला दिन-भर मुझे सता रहा है।

2 दिन-भर मेरे दुश्मन मेरे पीछे लगे हैं, क्योंकि वह बहुत हैं और गुस्से से मुझसे लड़ रहे हैं।

3 लेकिन जब खौफ़ मुझे अपनी गिरिफ्त में ले ले तो मैं तुझ पर ही भरोसा रखता हूँ।

4 अल्लाह के कलाम पर मेरा फ़ख़र है, अल्लाह पर मेरा भरोसा है। मैं डरूँगा नहीं, क्योंकि फ़ानी इन्सान मुझे क्या नुकसान पहुँचा सकता है?

5 दिन-भर वह मेरे अलफ़ाज़ को तोड़-मरोड़कर ग़लत मानी निकालते, अपने तमाम मनसूबों से मुझे जरूर पहुँचाना चाहते हैं।

6 वह हमलाआवर होकर ताक में बैठ जाते और मेरे हर क़दम पर गौर करते हैं। क्योंकि वह मुझे मार डालने पर तुले हुए हैं।

7 जो ऐसी शरीर हरकतें करते हैं, क्या उन्हें बचना चाहिए? हरगिज़ नहीं! ऐ अल्लाह, अक्रवाम को गुस्से में खाक में मिला दे।

8 जितने भी दिन मैं बेघर फिरा हूँ उनका तूने पूरा हिसाब रखा है। ऐ अल्लाह, मेरे आँसू अपने मशकीज़े में डाल ले! क्या वह पहले से तेरी किताब में कलमबंद नहीं हैं? ज़रूर!

9 फिर जब मैं तुझे पुकारूँगा तो मेरे दुश्मन मुझसे बाज़ आएँगे। यह मैंने जान लिया है कि अल्लाह मेरे साथ है!

10 अल्लाह के कलाम पर मेरा फ़ख़र है, रब के कलाम पर मेरा फ़ख़र है।

11 अल्लाह पर मेरा भरोसा है। मैं डरूँगा नहीं, क्योंकि फ़ानी इन्सान मुझे क्या नुकसान पहुँचा सकता है?

12 ऐ अल्लाह, तेरे हुज़ूर मैंने मन्नतें मानी हैं, और अब मैं तुझे शक्रगुज़ारी की कुरबानियाँ पेश करूँगा।

13 क्योंकि तूने मेरी जान को मौत से बचाया और मेरे पाँवों को ठोकर खाने से महफूज़ रखा ताकि ज़िंदगी की रौशनी में अल्लाह के हुज़ूर चलूँ।

57

आज़माइश में अल्लाह पर एतमाद

1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तर्ज : तबाह न कर। यह सुनहरा गीत उस वक़्त से मुताल्लिक है जब वह साऊल से भागकर गार में छुप गया।

ऐ अल्लाह, मुझ पर मेहरबानी कर, मुझ पर मेहरबानी कर! क्योंकि मेरी जान तुझमें पनाह लेती है। जब तक आफ़त मुझ पर से गुज़र न जाए मैं तेरे परों के साय में पनाह लूँगा।

2 मैं अल्लाह तआला को पुकारता हूँ, अल्लाह से जो मेरा मामला ठीक करेगा।

3 वह आसमान से मदद भेजकर मुझे छुटकारा देगा और उनकी स्सवाई करेगा जो मुझे तंग कर रहे हैं। (सिलाह) अल्लाह अपना करम और वफ़ादारी भेजेगा।

4 मैं इनसान को हड़प करनेवाले शेरबबरों के बीच में लेटा हुआ हूँ, उनके दरमियान जिनके दाँत नेजे और तीर हैं और जिनकी ज़बान तेज़ तलवार है।

5 ऐ अल्लाह, आसमान पर सरबुलंद हो जा! तेरा जलाल पूरी दुनिया पर छा जाए!

6 उन्होंने मेरे कदमों के आगे फंदा बिछा दिया, और मेरी जान खाक में दब गई है। उन्होंने मेरे सामने गढा खोद लिया, लेकिन वह खुद उसमें गिर गए हैं। (सिलाह)

7 ऐ अल्लाह, मेरा दिल मज़बूत, मेरा दिल साबितकदम है। मैं साज़ बजाकर तेरी मद्दहसराई करूँगा।

8 ऐ मेरी जान, जाग उठ! ऐ सितार और सरोद, जाग उठो! आओ, मैं तुलू-सुबह को जगाऊँ।

9 ऐ रब, कौमों में मैं तेरी सताइश, उम्मतों में तेरी मद्दहसराई करूँगा।

10 क्योंकि तेरी अज़ीम शफ़क़त आसमान जितनी बुलंद है, तेरी वफ़ादारी बादलों तक पहुँचती है।

11 ऐ अल्लाह, आसमान पर सरफ़राज़ हो! तेरा जलाल पूरी दुनिया पर छा जाए।

58

इंतक़ाम की दुआ

1 दाऊद का सुनहरा गीत। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तर्ज : तबाह न कर।

ऐ हुक्मरानो, क्या तुम वाकई मुंसिफ़ाना फैसला करते, क्या दियानतदारी से आदमज़ादों की अदालत करते हो?

2 हरगिज़ नहीं, तुम दिल में बदी करते और मुल्क में अपने ज़ालिम हाथों के लिए रास्ता बनाते हो।

3 बेदीन पैदाइश से ही सहीह राह से दूर हो गए हैं, झूट बोलनेवाले माँ के पेट से ही भटक गए हैं।

4 वह साँप की तरह ज़हर उगलते हैं, उस बहरे नाग की तरह जो अपने कानों को बंद कर रखता है

5 ताकि न जादूगर की आवाज़ सुने, न माहिर सपेरे के मंत्र।

6 ऐ अल्लाह, उनके मुँह के दाँत तोड़ डाल! ऐ रब, जवान शेरबबरों के जबड़े को पाश पाश कर!

7 वह उस पानी की तरह ज़ाया हो जाएँ जो बहकर गायब हो जाता है। उनके चलाए हुए तीर बेअसर रहें।

8 वह धूप में घोंगे की मानिंद हों जो चलता चलता पिघल जाता है। उनका अंजाम उस बच्चे का-सा हो जो माँ के पेट में ज़ाया होकर कभी सूरज नहीं देखेगा।

9 इससे पहले कि तुम्हारी देगें काँटेदार टहनियों की आग महसूस करें अल्लाह उन सबको आँधी में उड़ाकर ले जाएगा।

10 आखिरकार दुश्मन को सज़ा मिलेगी। यह देखकर रास्तबाज़ ख़ुश होगा, और वह अपने पाँवों को बेदीनों के खून में धो लेगा।

11 तब लोग कहेंगे, “वाकई रास्तबाज़ को अज़्र मिलता है, वाकई अल्लाह है जो दुनिया में लोगों की अदालत करता है!”

59

दुश्मन के दरमियान दुआ

1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तर्ज : तबाह न कर। यह सुनहरा गीत उस वक़्त से मुताल्लिक है जब साऊल ने अपने आदमियों को दाऊद के घर की पहरादारी करने के लिए भेजा ताकि जब मौक़ा मिले उसे क़त्ल करें।

ऐ मेरे खुदा, मुझे मेरे दुश्मनों से बचा। उनसे मेरी हिफ़ाज़त कर जो मेरे खिलाफ़ उठे हैं।

2 मुझे बदकारों से छुटकारा दे, खूनख़ारों से रिहा कर।

3 देख, वह मेरी ताक में बैठे हैं। ऐ रब, ज़बरदस्त आदमी मुझ पर हमलाआवर हैं, हालाँकि मुझसे न ख़ता हुई न गुनाह।

4 मैं बेकसूर हूँ, ताहम वह दौड़ दौड़कर मुझसे लड़ने की तैयारियाँ कर रहे हैं। चुनौचे जाग उठ, मेरी मदद करने आ, जो कुछ हो रहा है उस पर नज़र डाल।

5 ऐ रब, लश्करों और इसराईल के खुदा, दीगर तमाम क्रौमों को सज़ा देने के लिए जाग उठ! उन सब पर करम न फ़रमा जो शरीर और ग़द्गार हैं। (सिलाह)

6 हर शाम को वह वापस आ जाते और कुत्तों की तरह भौंकते हुए शहर की गलियों में घुमते-फिरते हैं।

7 देख, उनके मुँह से राल टपक रही है, उनके होंटों से तलवारें निकल रही हैं। क्योंकि वह समझते हैं, “कौन सुनेगा?”

8 लेकिन तू ऐ रब, उन पर हँसता है, तू तमाम क्रौमों का मज़ाक़ उड़ाता है।

9 ऐ मेरी कुव्वत, मेरी आँखें तुझ पर लगी रहेंगी, क्योंकि अल्लाह मेरा क़िला है।

10 मेरा खुदा अपनी मेहरबानी के साथ मुझसे मिलने आएगा, अल्लाह बख़्श देगा कि मैं अपने दुश्मनों की शिकस्त देखकर खुश हूँगा।

11 ऐ अल्लाह हमारी ढाल, उन्हें हलाक न कर, वरना मेरी क्रौम तेरा काम भूल जाएगी। अपनी कुदरत का इज़हार यों कर कि वह इधर उधर लड़खड़ाकर गिर जाएँ।

12 जो कुछ भी उनके मुँह से निकलता है वह गुनाह है, वह लानतें और झूट ही सुनाते हैं। चुनौचे उन्हें उनके तकब्बुर के जाल में फँसने दे।

13 गुस्से में उन्हें तबाह कर! उन्हें यों तबाह कर कि उनका नामो-निशान तक न रहे। तब लोग दुनिया की इंतहा तक जान लेंगे कि अल्लाह याक़ूब की औलाद पर हुकूमत करता है। (सिलाह)

14 हर शाम को वह वापस आ जाते और कुत्तों की तरह भौंकते हुए शहर की गलियों में घुमते-फिरते हैं।

15 वह इधर उधर ग़श्त लगाकर खाने की चीज़ें ढूँढते हैं। अगर पेट न भरे तो गुराते रहते हैं।

16 लेकिन मैं तेरी कुदरत की मदहसराई करूँगा, सुबह को खुशी के नारे लगाकर तेरी शफ़क़त की सताइश करूँगा। क्योंकि तू मेरा क़िला और मुसीबत के वक़्त मेरी पनाहगाह है।

17 ऐ मेरी कुव्वत, मैं तेरी मदहसराई करूँगा, क्योंकि अल्लाह मेरा क़िला और मेरा मेहरबान खुदा है।

60

मरदूद क्रौम की दुआ

1 दाऊद का जबूर। तर्ज : अहद का सोसन। तालीम के लिए यह सुनहरा गीत उस वक़्त से मुताल्लिक है जब दाऊद ने मसोपुतामिया के अरामियों और जोबाह के अरामियों से जंग की। वापसी पर योआब ने नमक की वादी में 12,000 अदोमियों को मार डाला।

ऐ अल्लाह, तूने हमें रद्द किया, हमारी क़िलाबंदी में रखना डाल दिया है। लेकिन अब अपने ग़ज़ब से बाज़ आकर हमें बहाल कर।

2 तूने ज़मीन को ऐसे झटके दिए कि उसमें दराड़ें पड़ गईं। अब उसके शिगाफ़ों को शफ़ा दे, क्योंकि वह अभी तक थरथरा रही है।

3 तूने अपनी क्रौम को तलख़ तज़रबों से दोचार होने दिया, हमें ऐसी तेज़ मै पिला दी कि हम डगमगाने लगे हैं।

4 लेकिन जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं उनके लिए तूने झंडा गाड़ दिया जिसके इर्दगिर्द वह जमा होकर तीरों से पनाह ले सकते हैं। (सिलाह)

5 अपने दहने हाथ से मदद करके मेरी सुन ताकि जो तुझे प्यारे हैं वह नज़ात पाएँ।

6 अल्लाह ने अपने मक़दिस में फ़रमाया है, “मैं फ़तह मनाते हुए सिकम को तक़सीम करूँगा और वादीए-सुककात को नापकर बाँट दूँगा।

7 जिलियाद मेरा है और मनस्सी मेरा है। इफ़राईम मेरा ख़ोद और यहदाह मेरा शाही असा है।

8 मोआब मेरा गुस्ल का बरतन है, और अदोम पर मैं अपना जूता फेंक दूँगा। ऐ फ़िलिस्ती मुल्क, मुझे देखकर ज़ोरदार नारे लगा!”

9 कौन मुझे क़िलाबंद शहर में लाएगा? कौन मेरी राहनुमाई करके मुझे अदोम तक पहुँचाएगा?

10 ऐ अल्लाह, तू ही यह कर सकता है, गो तूने हमें रद्द किया है। ऐ अल्लाह, तू हमारी फ़ौजों का साथ नहीं देता जब वह लड़ने के लिए निकलती हैं।

11 मुसीबत में हमें सहारा दे, क्योंकि इस वक़्त इनसानी मदद बेकार है।

12 अल्लाह के साथ हम ज़बरदस्त काम करेंगे, क्योंकि वही हमारे दुश्मनों को कुचल देगा।

61

दूर से दरखास्त

- 1 दाऊद का जबूर। मौसीक्री के राहनुमा के लिए। तारदार साज के साथ गाना है।
ऐ अल्लाह, मेरी आहो-जारी सुन, मेरी दुआ पर तवज्जुह दे।
- 2 मैं तुझे दुनिया की इंतहा से पुकार रहा हूँ, क्योंकि मेरा दिल निढाल हो गया है। मेरी राहनुमाई करके मुझे उस चटान पर पहुँचा दे जो मुझसे बुलंद है।
- 3 क्योंकि तू मेरी पनाहगाह रहा है, एक मज़बूत बुर्ज जिसमें मैं दुश्मन से महफूज़ हूँ।
- 4 मैं हमेशा के लिए तेरे ख़ैमे में रहना, तेरे परों तले पनाह लेना चाहता हूँ। (सिलाह)
- 5 क्योंकि ऐ अल्लाह, तूने मेरी मन्नतों पर ध्यान दिया, तूने मुझे वह मीरास बख्शी जो उन सबको मिलती है जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं।
- 6 बादशाह को उम्र की दराज़ी बख्श दे। वह पुश्त-दर-पुश्त जीता रहे।
- 7 वह हमेशा तक अल्लाह के हुज़ूर तख़्तनशीन रहे। शफ़क़त और वफ़ादारी उस की हिफ़ाज़त करें।
- 8 तब मैं हमेशा तक तेरे नाम की मद्दहसराई करूँगा, रोज़ बरोज़ अपनी मन्नतें पूरी करूँगा।

62

खामोशी से अल्लाह का इंतज़ार कर

- 1 दाऊद का जबूर। मौसीक्री के राहनुमा के लिए। यदतून के लिए।
मेरी जान खामोशी से अल्लाह ही के इंतज़ार में है। उसी से मुझे मदद मिलती है।
- 2 वही मेरी चटान, मेरी नजात और मेरा क़िला है, इसलिए मैं ज़्यादा नहीं डगमगाऊँगा।
- 3 तुम कब तक उस पर हमला करोगे जो पहले ही झुकी हुई दीवार की मानिंद है? तुम सब कब तक उसे क़त्ल करने पर तुले रहोगे जो पहले ही गिरनेवाली चारदीवारी जैसा है?
- 4 उनके मनसूबों का एक ही मक़सद है, कि उसे उसके ऊँचे ओहदे से उतारें। उन्हें झूट से मज़ा आता है। मुँह से वह बरक़त देते, लेकिन अंदर ही अंदर लानत करते हैं। (सिलाह)
- 5 लेकिन तू ऐ मेरी जान, खामोशी से अल्लाह ही के इंतज़ार में रह। क्योंकि उसी से मुझे उम्मीद है।
- 6 सिर्फ़ वही मेरी जान की चटान, मेरी नजात और मेरा क़िला है, इसलिए मैं नहीं डगमगाऊँगा।
- 7 मेरी नजात और इज़्ज़त अल्लाह पर मबनी है, वही मेरी महफूज़ चटान है। अल्लाह में मैं पनाह लेता हूँ।
- 8 ऐ उम्मत, हर वक़्त उस पर भरोसा रख! उसके हुज़ूर अपने दिल का रंजो-अलम पानी की तरह उंडेल दे। अल्लाह ही हमारी पनाहगाह है। (सिलाह)
- 9 इनसान दम-भर का ही है, और बड़े लोग फ़रेब ही हैं। अगर उन्हें तराज़ू में तोला जाए तो मिलकर उनका वज़न एक फूँक से भी कम है।
- 10 जुल्म पर एतमाद न करो, चोरी करने पर फ़ज़ूल उम्मीद न रखो। और अगर दौलत बढ़ जाए तो तुम्हारा दिल उससे लिपट न जाए।
- 11 अल्लाह ने एक बात फ़रमाई बल्कि दो बार मैंने सुनी है कि अल्लाह ही कादिर है।
- 12 ऐ रब, यक़ीनन तू मेहरबान है, क्योंकि तू हर एक को उसके आमाल का बदला देता है।

63

अल्लाह के लिए आरज़ू

- 1 दाऊद का जबूर। यह उस वक़्त से मुताल्लिक है जब वह यहदाह के रेगिस्तान में था।
ऐ अल्लाह, तू मेरा खुदा है जिसे मैं ढूँडता हूँ। मेरी जान तेरी प्यासी है, मेरा पूरा जिस्म तेरे लिए तरसता है। मैं उस ख़ुशक और निढाल मुल्क की मानिंद हूँ जिसमें पानी नहीं है।
- 2 चुनौचे मैं मक़दिस में तुझे देखने के इंतज़ार में रहा ताकि तेरी कुदरत और जलाल का मुशाहदा करूँ।
- 3 क्योंकि तेरी शफ़क़त ज़िंदगी से कहीं बेहतर है, मेरे होंट तेरी मद्दहसराई करेंगे।
- 4 चुनौचे मैं जीते-जी तेरी सताइश करूँगा, तेरा नाम लेकर अपने हाथ उठाऊँगा।

- 5 मेरी जान उम्दा गिजा से सेर हो जाएगी, मेरा मुँह खुशी के नारे लगाकर तेरी हम्दो-सना करेगा।
- 6 बिस्तर पर मैं तुझे याद करता, पूरी रात के दौरान तेरे बारे में सोचता रहता हूँ।
- 7 क्योंकि तू मेरी मदद करने आया, और मैं तेरे परों के साय में खुशी के नारे लगाता हूँ।
- 8 मेरी जान तेरे साथ लिपटी रहती, और तेरा दहना हाथ मुझे सँभालता है।
- 9 लेकिन जो मेरी जान लेने पर तुले हुए हैं वह तबाह हो जाएंगे, वह ज़मीन की गहराइयों में उतर जाएंगे।
- 10 उन्हें तलवार के हवाले किया जाएगा, और वह गीदड़ों की खुराक बन जाएंगे।
- 11 लेकिन बादशाह अल्लाह की खुशी मनाएगा। जो भी अल्लाह की क्रसम खाता है वह फ़ख़र करेगा, क्योंकि झूट बोलनेवालों के मुँह बंद हो जाएंगे।

64

शरीअत के पोशीदा हमलों से हिफ़ाज़त की दुआ

- 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।
ऐ अल्लाह, सुन जब मैं अपनी आहो-ज़ारी पेश करता हूँ। मेरी ज़िंदगी दुश्मन की दहशत से महफूज़ रख।
- 2 मुझे बदमाशों की साज़िशों से छुपाए रख, उनकी हलचल से जो ग़लत काम करते हैं।
- 3 वह अपनी ज़बान को तलवार की तरह तेज़ करते और अपने ज़हरीले अलफ़ाज़ को तीरों की तरह तैयार रखते हैं।
- 4 ताकि ताक में बैठकर उन्हें बेक़सूर पर चलाएँ। वह अचानक और बेबाकी से उन्हें उस पर बरसा देते हैं।
- 5 वह बुरा काम करने में एक दूसरे की हौसलाअफ़ज़ाई करते, एक दूसरे से मशवरा लेते हैं कि हम अपने फंदे किस तरह छुपाकर लगाएँ? वह कहते हैं, “यह किसी को भी नज़र नहीं आएँगे।”
- 6 वह बड़ी बारीकी से बुरे मनसूबों की तैयारियाँ करते, फिर कहते हैं, “चलो, बात बन गई है, मनसूबा सोच-बिचार के बाद तैयार हुआ है।” यकीनन इनसान के बातिन और दिल की तह तक पहुँचना मुश्किल ही है।
- 7 लेकिन अल्लाह उन पर तीर बरसाएगा, और अचानक ही वह ज़खमी हो जाएंगे।
- 8 वह अपनी ही ज़बान से ठोकर खाकर गिर जाएंगे। जो भी उन्हें देखेगा वह “तौबा तौबा” कहेगा।
- 9 तब तमाम लोग ख़ौफ़ खाकर कहेंगे, “अल्लाह ही ने यह किया!” उन्हें समझ आएगी कि यह उसी का काम है।
- 10 रास्तबाज़ अल्लाह की खुशी मनाकर उसमें पनाह लेगा, और जो दिल से दियानतदार हैं वह सब फ़ख़र करेंगे।

65

रूहानी और जिस्मानी बरकतों के लिए शुक्रगुज़ारी

- 1 दाऊद का ज़बूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए गीत।
ऐ अल्लाह, तू ही इस लायक है कि इनसान कोहे-सिय्यून पर ख़ामोशी से तेरे इंतज़ार में रहे, तेरी तमजीद करे और तेरे हुज़ूर अपनी मन्नतें पूरी करे।
- 2 तू दुआओं को सुनता है, इसलिए तमाम इनसान तेरे हुज़ूर आते हैं।
- 3 गुनाह मुझ पर गालिब आ गए हैं, तू ही हमारी सरकश हरकतों को मुआफ़ कर।
- 4 मुबारक है वह जिसे तू चुनकर करीब आने देता है, जो तेरी बारगाहों में बस सकता है। बख़्श दे कि हम तेरे घर, तेरी मुक़द्दस सुकूनतगाह की अच्छी चीज़ों से सेर हो जाएँ।
- 5 ऐ हमारी नजात के ख़ुदा, हैबतनाक कामों से अपनी रास्ती कायम करके हमारी सुन! क्योंकि तू ज़मीन की तमाम हद्द और दूर-दराज़ समुंदरों तक सबकी उम्मीद है।
- 6 तू अपनी कुदरत से पहाड़ों की मज़बूत बुनियादें डालता और कुव्वत से कमरबस्ता रहता है।
- 7 तू मुतलातिम समुंदरों को थमा देता है, तू उनकी गरजती लहरों और उम्मतों का शोर-शराबा ख़त्म कर देता है।
- 8 दुनिया की इंतहा के बाशिंदे तेरे निशानात से ख़ौफ़ खाते हैं, और तू तुलू-सुबह और गुरुबे-आफ़ताब को खुशी मनाने देता है।

9 तू ज़मीन की देख-भाल करके उसे पानी की कसरत और जरखेज़ी से नवाज़ता है, चुनौचे अल्लाह की नदी पानी से भरी रहती है। ज़मीन को यों तैयार करके तू इनसान को अनाज की अच्छी फ़सल मुहैया करता है।

10 तू खेत की रेघारियों को शराबोर करके उसके ढेलों को हमवार करता है। तू बारिश की बौछाड़ों से ज़मीन को नरम करके उस की फ़सलों को बरकत देता है।

11 तू साल को अपनी भलाई का ताज पहना देता है, और तेरे नक्शे-क़दम तेल की फ़रावानी से टपकते हैं।

12 बयाबान की चरागाहें तेल * की कसरत से टपकती हैं, और पहाड़ियाँ भरपूर खुशी से मुलब्स हो जाती हैं।

13 सबज़ाज़ार भेड़-बकरियों से आरास्ता हैं, वादियाँ अनाज से ढकी हुई हैं। सब खुशी के नारे लगा रहे हैं, सब गीत गा रहे हैं!

66

अल्लाह की मोज़िज़ाना मदद की तारीफ़

1 मौसीकी के राहनुमा के लिए। जबूर। गीत।

ऐ सारी ज़मीन, खुशी के नारे लगाकर अल्लाह की मद्दहसराई कर!

2 उसके नाम के जलाल की तमज़ीद करो, उस की सताइश उरूज तक ले जाओ!

3 अल्लाह से कहो, “तेरे काम कितने पुरजलाल हैं। तेरी बड़ी कुदरत के सामने तेरे दुश्मन दबककर तेरी खुशामद करने लगते हैं।

4 तमाम दुनिया तुझे सिजदा करे! वह तेरी तारीफ़ में गीत गाए, तेरे नाम की सताइश करे।” (सिलाह)

5 आओ, अल्लाह के काम देखो! आदमज़ाद की खातिर उसने कितने पुरजलाल मोज़िज़े किए हैं!

6 उसने समुंदर को खुशक ज़मीन में बदल दिया। जहाँ पहले पानी का तेज़ बहाव था वहाँ से लोग पैदल ही गुज़रे। चुनौचे आओ, हम उस की खुशी मनाएँ।

7 अपनी कुदरत से वह अबद तक हुकूमत करता है। उस की आँखें कौमों पर लगी रहती हैं ताकि सरकश उसके खिलाफ़ न उठें। (सिलाह)

8 ऐ उम्मतो, हमारे खुदा की हम्द करो। उस की सताइश दूर तक सुनाई दे।

9 क्योंकि वह हमारी ज़िंदगी कायम रखता, हमारे पाँवों को डगमगाने नहीं देता।

10 क्योंकि ऐ अल्लाह, तूने हमें आजमाया। जिस तरह चाँदी को पिघलाकर साफ़ किया जाता है उसी तरह तूने हमें पाक-साफ़ कर दिया है।

11 तूने हमें जाल में फँसा दिया, हमारी कमर पर अज़ियतनाक बोझ डाल दिया।

12 तूने लोगों के रथों को हमारे सरों पर से गुज़रने दिया, और हम आग और पानी की ज़द में आ गए। लेकिन फिर तूने हमें मुसीबत से निकालकर फ़रावानी की जगह पहुँचाया।

13 मैं भस्म होनेवाली कुरबानियाँ लेकर तेरे घर में आऊँगा और तेरे हुज़ूर अपनी मन्नतें पूरी करूँगा,

14 वह मन्नतें जो मेरे मुँह ने मुसीबत के वक़्त मानी थीं।

15 भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर मैं तुझे मोटी-ताज़ी भेड़ें और मेंढों का धुआँ पेश करूँगा, साथ साथ बैल और बकरे भी चढाऊँगा। (सिलाह)

16 ऐ अल्लाह का खौफ़ माननेवालो, आओ और सुनो! जो कुछ अल्लाह ने मेरी जान के लिए किया वह तुम्हें सुनाऊँगा।

17 मैंने अपने मुँह से उसे पुकारा, लेकिन मेरी ज़बान उस की तारीफ़ करने के लिए तैयार थी।

18 अगर मैं दिल में गुनाह की परवरिश करता तो रब मेरी न सुनता।

19 लेकिन यक़ीनन रब ने मेरी सुनी, उसने मेरी इल्तिजा पर तवज्जुह दी।

20 अल्लाह की हम्द हो, जिसने न मेरी दुआ रद्द की, न अपनी शफ़क़त मुझसे बाज़ रखी।

67

तमाम कौमों अल्लाह की तारीफ़ करें

1 जबूर। तारदार साज़ों के साथ गाना है। मौसीकी के राहनुमा के लिए।

अल्लाह हम पर मेहरबानी करे और हमें बरकत दे। वह अपने चेहरे का नूर हम पर चमकाए (सिलाह)

2 ताकि ज़मीन पर तेरी राह और तमाम कौमों में तेरी नज़ात मालूम हो जाए।

* 65:12 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : ‘चरबी,’ जो फ़रावानी का निशान था।

- 3 ऐ अल्लाह, क्रौमें तेरी सताइश करें, तमाम क्रौमें तेरी सताइश करें।
- 4 उम्मतें शादमान होकर खुशी के नारे लगाएँ, क्योंकि तू इनसाफ़ से क्रौमों की अदालत करेगा और ज़मीन पर उम्मतों की क्रियादत करेगा। (सिलाह)
- 5 ऐ अल्लाह, क्रौमें तेरी सताइश करें, तमाम क्रौमें तेरी सताइश करें।
- 6 ज़मीन अपनी फ़सलें देती है। अल्लाह हमारा खुदा हमें बरकत दे!
- 7 अल्लाह हमें बरकत दे, और दुनिया की इंतहाएँ सब उसका ख़ौफ़ मानें।

68

अल्लाह की फ़तह

- 1 दाऊद का जबूर। मौसीक्री के राहनुमा के लिए गीत।
अल्लाह उठे तो उसके दुश्मन तित्तर-बित्तर हो जाएंगे, उससे नफ़रत करनेवाले उसके सामने से भाग जाएंगे।
- 2 वह धुएँ की तरह बिखर जाएंगे। जिस तरह मोम आग के सामने पिघल जाता है उसी तरह बेदीन अल्लाह के हुज़ूर हलाक हो जाएंगे।
- 3 लेकिन रास्तबाज़ खुशो-ख़ुर्रम होंगे, वह अल्लाह के हुज़ूर ज़शन मनाकर फूले न समाएँगे।
- 4 अल्लाह की ताज़ीम में गीत गाओ, उसके नाम की मद्दहसराई करो! जो रथ पर सवार बयाबान में से गुज़र रहा है उसके लिए रास्ता तैयार करो। रब उसका नाम है, उसके हुज़ूर खुशी मनाओ!
- 5 अल्लाह अपनी मुक़द्दस सुकूनतगाह में यतीमों का बाप और बेवाओं का हामी है।
- 6 अल्लाह बेघरों को घरों में बसा देता और कैदियों को कैद से निकालकर खुशहाली अता करता है। लेकिन जो सरकश हैं वह झुलसे हुए मुल्क में रहेंगे।
- 7 ऐ अल्लाह, जब तू अपनी क्रौम के आगे आगे निकला, जब तू रेगिस्तान में कदम बक़दम आगे बढ़ा (सिलाह)
- 8 तो ज़मीन लरज़ उठी और आसमान से बारिश टपकने लगी। हाँ, अल्लाह के हुज़ूर जो कोहे-सीना और इसराईल का खुदा है ऐसा ही हुआ।
- 9 ऐ अल्लाह, तूने कसरत की बारिश बरसने दी। जब कभी तेरा मौसी मुल्क निढाल हुआ तो तूने उसे ताज़ादम किया।
- 10 यों तेरी क्रौम उसमें आबाद हुई। ऐ अल्लाह, अपनी भलाई से तूने उसे ज़स्सरतमंदों के लिए तैयार किया।
- 11 रब फ़रमान सादिर करता है तो खुशख़बरी सुनानेवाली औरतों का बड़ा लशकर निकलता है,
- 12 “फ़ौजों के बादशाह भाग रहे हैं। वह भाग रहे हैं और औरतें लूट का माल तकसीम कर रही हैं।
- 13 तुम क्यों अपने ज़ीन के दो बोरों के दरमियान बैठे रहते हो? देखो, कबूतर के परों पर चाँदी और उसके शाहपरों पर पीला सोना चढ़ाया गया है।”
- 14 जब कादिरे-मुतलक ने वहाँ के बादशाहों को मुंतशिर कर दिया तो कोहे-ज़लमोन पर बर्फ़ पड़ी।
- 15 कोहे-बसन इलाही पहाड़ है, कोहे-बसन की मुतअद्दिद चोटियाँ हैं।
- 16 ऐ पहाड़ की मुतअद्दिद चोटियों, तुम उस पहाड़ को क्यों रशक की निगाह से देखती हो जिसे अल्लाह ने अपनी सुकूनतगाह के लिए पसंद किया है? यक़ीनन रब वहाँ हमेशा के लिए सुकूनत करेगा।
- 17 अल्लाह के बेशुमार रथ और अनगिनत फ़ौजी हैं। खुदावंद उनके दरमियान है, सीना का खुदा मक़दिस में है।
- 18 तूने बुलंदी पर चढ़कर कैदियों का हुज़ूम गिरिफ़्तार कर लिया, तुझे इनसानों से तोहफ़े मिले, उनसे भी जो सरकश हो गए थे। यों ही रब खुदा वहाँ सुकूनतपज़ीर हुआ।
- 19 रब की तमजीद हो जो रोज़ बरोज़ हमारा बोझ उठाए चलता है। अल्लाह हमारी नजात है। (सिलाह)
- 20 हमारा खुदा वह खुदा है जो हमें बार बार नजात देता है, रब कादिरे-मुतलक हमें बार बार मौत से बचने के रास्ते मुहैया करता है।
- 21 यक़ीनन अल्लाह अपने दुश्मनों के सरों को कुचल देगा। जो अपने गुनाहों से बाज़ नहीं आता उस की खोपड़ी वह पाश पाश करेगा।
- 22 रब ने फ़रमाया, “मैं उन्हें बसन से वापस लाऊँगा, समुंदर की गहराइयों से वापस पहुँचाऊँगा।
- 23 तब तू अपने पाँवों को दुश्मन के खून में धो लेगा, और तेरे कुत्ते उसे चाट लेंगे।”

24 ऐ अल्लाह, तेरे जुलूस नज़र आ गए हैं, मेरे खुदा और बादशाह के जुलूस मक़दिस में दाख़िल होते हुए नज़र आ गए हैं।
 25 आगे गुलूकार, फिर साज़ बजानेवाले चल रहे हैं। उनके आस-पास कुँवारियाँ दफ़ बजाते हुए फिर रही हैं।
 26 “जमातों में अल्लाह की सताइश करो! जितने भी इसराईल के सरचश्मे से निकले हुए हो रब की तमज़ीद करो!”
 27 वहाँ सबसे छोटा भाई बिनयमीन आगे चल रहा है, फिर यहदाह के बुजुर्गों का पुरशोर हुज़ूम ज़बूलून और नफ़ताली के बुजुर्गों के साथ चल रहा है।

28 ऐ अल्लाह, अपनी कुदरत बरूप-कार ला! ऐ अल्लाह, जो कुदरत तूने पहले भी हमारी खातिर दिखाई उसे दुबारा दिखा!
 29 उसे यरूशलम के ऊपर अपनी सुकूनतगाह से दिखा। तब बादशाह तेरे हुज़ूर तोहफ़े लाएँगे।
 30 सरकंडों में छुपे हुए दरिदे को मलामत कर! सौँडों का जो गोल बछड़ों जैसी कौमों में रहता है उसे डाँट! उन्हें कुचल दे जो चाँदी को प्यार करते हैं। उन कौमों को मुंताशिर कर जो जंग करने से लुत्फ़अंदोज़ होती हैं।
 31 मिसर से सफ़ीर आएँगे, एथोपिया अपने हाथ अल्लाह की तरफ़ उठाएगा।
 32 ऐ दुनिया की सलतनतो, अल्लाह की ताज़ीम में गीत गाओ! रब की मद्दहसराई करो (सिलाह)
 33 जो अपने रथ पर सवार होकर क़दीम ज़माने के बुलंदतरिन आसमानों में से गुज़रता है। सुनो उस की आवाज़ जो ज़ोर से गरज रहा है।
 34 अल्लाह की कुदरत को तसलीम करो! उस की अज़मत इसराईल पर छाई रहती और उस की कुदरत आसमान पर है।
 35 ऐ अल्लाह, तू अपने मक़दिस से ज़ाहिर होते वक़्त कितना महीब है। इसराईल का खुदा ही कौम को कुव्वत और ताक़त अता करता है। अल्लाह की तमज़ीद हो!

69

आज़माइश से नज़ात की दुआ

1 दाऊद का ज़बूर। तर्ज़ : सोसन के फूल। मौसीक्री के राहनुमा के लिए।
 ऐ अल्लाह, मुझे बचा! क्योंकि पानी मेरे गले तक पहुँच गया है।
 2 मैं गहरी दलदल में धँस गया हूँ, कहीं पाँव जमाने की जगह नहीं मिलती। मैं पानी की गहराइयों में आ गया हूँ, सैलाब मुझ पर गालिब आ गया है।
 3 मैं चिल्लाते चिल्लाते थक गया हूँ। मेरा गला बैठ गया है। अपने खुदा का इंतज़ार करते करते मेरी आँखें धुँधला गईं।
 4 जो बिलावजह मुझसे कीना रखते हैं वह मेरे सर के बालों से ज्यादा हैं, जो बेसबब मेरे दुश्मन हैं और मुझे तबाह करना चाहते हैं वह ताक़तवर हैं। जो कुछ मैंने नहीं लूटा उसे मुझसे तलब किया जाता है।
 5 ऐ अल्लाह, तू मेरी हमाक़त से वाकिफ़ है, मेरा कुसूर तुझसे पोशीदा नहीं है।
 6 ऐ क़ादिर-मुतलक रब्बुल-अफ़वाज़, जो तेरे इंतज़ार में रहते हैं वह मेरे बाइस शरमिंदा न हों। ऐ इसराईल के खुदा, मेरे बाइस तेरे तालिब की स्सवाई न हो।
 7 क्योंकि तेरी खातिर मैं शरमिंदगी बरदाश्त कर रहा हूँ, तेरी खातिर मेरा चेहरा शर्मसार ही रहता है।
 8 मैं अपने सगे भाइयों के नज़दीक अजनबी और अपनी माँ के बेटों के नज़दीक परदेसी बन गया हूँ।
 9 क्योंकि तेरे घर की ग़ैरत मुझे खा गई है, जो तुझे गालियाँ देते हैं उनकी गालियाँ मुझ पर आ गई हैं।
 10 जब मैं रोज़ा रखकर रोता था तो लोग मेरा मज़ाक़ उड़ाते थे।
 11 जब मातमी लिबास पहने फिरता था तो उनके लिए इबरतअंगेज़ मिसाल बन गया।
 12 जो बुजुर्ग शहर के दरवाज़े पर बैठे हैं वह मेरे बारे में गप्पें हाँकते हैं। शराबी मुझे अपने तंज़ भरे गीतों का निशाना बनाते हैं।
 13 लेकिन ऐ रब, मेरी तुझसे दुआ है कि मैं तुझे दुबारा मंज़ूर हो जाऊँ। ऐ अल्लाह, अपनी अज़ीम शफ़क़त के मुताबिक़ मेरी सुन, अपनी यक़ीनी नज़ात के मुताबिक़ मुझे बचा।
 14 मुझे दलदल से निकाल ताकि गरक़ न हो जाऊँ। मुझे उनसे छुटकारा दे जो मुझसे नफ़रत करते हैं। पानी की गहराइयों से मुझे बचा।
 15 सैलाब मुझ पर गालिब न आए, समुंदर की गहराई मुझे हडप न कर ले, गढ़ा मेरे ऊपर अपना मुँह बंद न कर ले।
 16 ऐ रब, मेरी सुन, क्योंकि तेरी शफ़क़त भली है। अपने अज़ीम रहम के मुताबिक़ मेरी तरफ़ रज़ू कर।
 17 अपना चेहरा अपने खादिम से छुपाए न रख, क्योंकि मैं मुसीबत में हूँ। जल्दी से मेरी सुन!
 18 करीब आकर मेरी जान का फ़िघा दे, मेरे दुश्मनों के सबब से एवज़ाना देकर मुझे छुड़ा।

- 19 तू मेरी स्सवाई, मेरी शरमिंदगी और तजलील से वाकिफ है। तेरी आँखें मेरे तमाम दुश्मनों पर लगी रहती हैं।
 20 उनके तानों से मेरा दिल टूट गया है, मैं बीमार पड़ गया हूँ। मैं हमदर्दी के इंतजार में रहा, लेकिन बेफायदा। मैंने तवक्को की कि कोई मुझे दिलासा दे, लेकिन एक भी न मिला।
 21 उन्होंने मेरी खुराक में कड़वा ज़हर मिलाया, मुझे सिरका पिलाया जब प्यासा था।
 22 उनकी मेज़ उनके लिए फंदा और उनके साथियों के लिए जाल बन जाए।
 23 उनकी आँखें तारीक हो जाएँ ताकि वह देख न सके। उनकी कमर हमेशा तक डगमगाती रहे।
 24 अपना पूरा गुस्सा उन पर उतार, तेरा सख्त गज़ब उन पर आ पड़े।
 25 उनकी रिहाइशगाह सुनसान हो जाए और कोई उनके खैमों में आबाद न हो,
 26 क्योंकि जिसे तू ही ने सज़ा दी उसे वह सताते हैं, जिसे तू ही ने ज़खमी किया उसका दुख दूसरों को सुनाकर खुश होते हैं।
 27 उनके कुसूर का सख्ती से हिसाब-किताब कर, वह तेरे सामने रास्तबाज़ न ठहरें।
 28 उन्हें किताबे-हयात से मिटाया जाए, उनका नाम रास्तबाज़ों की फ़हरिस्त में दर्ज न हो।
 29 हाय, मैं मुसीबत में फँसा हुआ हूँ, मुझे बहुत दर्द है। ऐ अल्लाह, तेरी नजात मुझे महफूज़ रखे।
 30 मैं अल्लाह के नाम की मदहसराई करूँगा, शक्रगुज़ारी से उस की ताज़ीम करूँगा।
 31 यह रब को बैल या सींग और खुर रखनेवाले साँड से कहीं ज़्यादा पसंद आएगा।
 32 हलीम अल्लाह का काम देखकर खुश हो जाएंगे। ऐ अल्लाह के तालिबो, तसल्ली पाओ!
 33 क्योंकि रब मुहताजों की सुनता और अपने कैदियों को हकीर नहीं जानता।
 34 आसमानो-ज़मीन उस की तमजीद करें, समुंदर और जो कुछ उसमें हरकत करता है उस की सताइश करे।
 35 क्योंकि अल्लाह सिय्यून को नजात देकर यहूदाह के शहरों को तामीर करेगा, और उसके खादिम उन पर कब्ज़ा करके उनमें आबाद हो जाएंगे।
 36 उनकी औलाद मुल्क को मीरास में पाएंगी, और उसके नाम से मुहब्बत रखनेवाले उसमें बसे रहेंगे।

70

दुश्मन से नजात की दुआ

- 1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। याददाश्त के लिए।
 ऐ अल्लाह, जल्दी से आकर मुझे बचा! ऐ रब, मेरी मदद करने में जल्दी कर!
 2 मेरे जानी दुश्मन शरमिदा हो जाएँ, उनकी सख्त स्सवाई हो जाए। जो मेरी मुसीबत देखने से लुप्त उठाते हैं वह पीछे हट जाएँ, उनका मुँह काला हो जाए।
 3 जो मेरी मुसीबत देखकर कहकहा लगाते हैं वह शर्म के मारे पुश्त दिखाएँ।
 4 लेकिन तेरे तालिब शादमान होकर तेरी खुशी मनाएँ। जिन्हें तेरी नजात प्यारी है वह हमेशा कहें, “अल्लाह अज़ीम है!”
 5 लेकिन मैं नाचार और मुहताज हूँ। ऐ अल्लाह, जल्दी से मेरे पास आ! तू ही मेरा सहारा और मेरा नजातदहिदा है। ऐ रब, देर न कर!

71

हिफाज़त के लिए दुआ

- 1 ऐ रब, मैंने तुझमें पनाह ली है। मुझे कभी शरमिदा न होने दे।
 2 अपनी रास्ती से मुझे बचाकर छुटकारा दे। अपना कान मेरी तरफ झुकाकर मुझे नजात दे।
 3 मेरे लिए चटान पर महफूज़ घर हो जिसमें मैं हर वक्त पनाह ले सकूँ। तूने फ़रमाया है कि मुझे नजात देगा, क्योंकि तू ही मेरी चटान और मेरा किला है।
 4 ऐ मेरे खुदा, मुझे बेदीन के हाथ से बचा, उसके कब्ज़े से जो बेइनसाफ़ और ज़ालिम है।
 5 क्योंकि तू ही मेरी उम्मीद है। ऐ रब कादिर-मुतलक, तू मेरी जवानी ही से मेरा भरोसा रहा है।
 6 पैदाइश से ही मैंने तुझ पर तकिया किया है, माँ के पेट से तूने मुझे संभाला है। मैं हमेशा तेरी हम्दो-सना करूँगा।
 7 बहुतों के नज़दीक मैं बदशगूनी हूँ, लेकिन तू मेरी मज़बूत पनाहगाह है।

8 दिन-भर मेरा मुँह तेरी तमजीद और ताज़ीम से लबरेज़ रहता है।

9 बुढ़ापे में मुझे रद्द न कर, ताक़त के ख़त्म होने पर मुझे तर्क न कर।

10 क्योंकि मेरे दुश्मन मेरे बारे में बातें कर रहे हैं, जो मेरी जान की ताक़ लगाए बैठे हैं वह एक दूसरे से सलाह-मशवरा कर रहे हैं।

11 वह कहते हैं, “अल्लाह ने उसे तर्क कर दिया है। उसके पीछे पड़कर उसे पकड़ो, क्योंकि कोई नहीं जो उसे बचाए।”

12 ऐ अल्लाह, मुझसे दूर न हो। ऐ मेरे ख़ुदा, मेरी मदद करने में जल्दी कर।

13 मेरे हरीफ़ शर्मिदा होकर फ़ना हो जाएँ, जो मुझे नुक़सान पहुँचाने के दरपै हैं वह लान-तान और स्सवाई तले दब जाएँ।

14 लेकिन मैं हमेशा तेरे इंतज़ार में रहूँगा, हमेशा तेरी सताइश करता रहूँगा।

15 मेरा मुँह तेरी रास्ती सुनाता रहेगा, सारा दिन तेरे नजातबख़्श कामों का ज़िक्र करता रहेगा, गो मैं उनकी पूरी तादाद गिन भी नहीं सकता।

16 मैं रब कादिरे-मुतलक के अज़ीम काम सुनाते हुए आऊँगा, मैं तेरी, सिर्फ़ तेरी ही रास्ती याद करूँगा।

17 ऐ अल्लाह, तू मेरी ज़वानी से मुझे तालीम देता रहा है, और आज तक मैं तेरे मोजिजात का एलान करता आया हूँ।

18 ऐ अल्लाह, खाह मैं बूढ़ा हो जाऊँ और मेरे बाल सफ़ेद हो जाएँ मुझे तर्क न कर जब तक मैं आनेवाली पुश्त के तमाम लोगों को तेरी कुव्वत और कुदरत के बारे में बता न लूँ।

19 ऐ अल्लाह, तेरी रास्ती आसमान से बातें करती है। ऐ अल्लाह, तुझ जैसा कौन है जिसने इतने अज़ीम काम किए हैं?

20 तूने मुझे मुतअदिद तलख़ तजरबों में से गुज़रने दिया है, लेकिन तू मुझे दुबारा ज़िंदा भी करेगा, तू मुझे ज़मीन की गहराइयों में से वापस लाएगा।

21 मेरा स्तबा बढ़ा दे, मुझे दुबारा तसल्ली दे।

22 ऐ मेरे ख़ुदा, मैं सितार बजाकर तेरी सताइश और तेरी वफ़ादारी की तमजीद करूँगा। ऐ इसराईल के कुदूस, मैं सरोद बजाकर तेरी तारीफ़ में गीत गाऊँगा।

23 जब मैं तेरी मद्दहसराई करूँगा तो मेरे होंट खुशी के नारे लगाएँगे, और मेरी जान जिसे तूने फ़िघा देकर छुड़ाया है शादियाना बजाएगी।

24 मेरी ज़बान भी दिन-भर तेरी रास्ती बयान करेगी, क्योंकि जो मुझे नुक़सान पहुँचाना चाहते थे वह शर्मसार और स्सवा हो गए हैं।

72

सलामती का बादशाह

1 सुलेमान का जबूर।

ऐ अल्लाह, बादशाह को अपना इनसाफ़ अता कर, बादशाह के बेटे को अपनी रास्ती बख़्श दे

2 ताकि वह रास्ती से तेरी क़ौम और इनसाफ़ से तेरे मुसीबतज़दों की अदालत करे।

3 पहाड़ क़ौम को सलामती और पहाड़ियाँ रास्ती पहुँचाएँ।

4 वह क़ौम के मुसीबतज़दों का इनसाफ़ करे और मुहताजों की मदद करके ज़ालिमों को कुचल दे।

5 तब लोग पुश्त-दर-पुश्त तेरा ख़ौफ़ मानेंगे जब तक सूरज चमके और चाँद रौशनी दे।

6 वह कटी हुई घास के खेत पर बरसनेवाली बारिश की तरह उतर आए, ज़मीन को तर करनेवाली बौछाड़ों की तरह नाज़िल हो जाए।

7 उसके दौरे-हुकूमत में रास्तबाज़ फले-फूलेगा, और जब तक चाँद नेस्त न हो जाए सलामती का ग़लबा होगा।

8 वह एक समुंदर से दूसरे समुंदर तक और दरियाए-फ़ुरात से दुनिया की इंतहा तक हुकूमत करे।

9 रेगिस्तान के बाशिंदे उसके सामने झुक जाएँ, उसके दुश्मन खाक चाटें।

10 तरसीस और साहिली इलाकों के बादशाह उसे ख़राज पहुँचाएँ, सबा और सिबा उसे बाज पेश करें।

11 तमाम बादशाह उसे सिजदा करें, सब अक़वाम उस की ख़िदमत करें।

12 क्योंकि जो ज़स्सरतमंद मदद के लिए पुकारे उसे वह छुटकारा देगा, जो मुसीबत में है और जिसकी मदद कोई नहीं करता उसे वह रिहाई देगा।

13 वह पस्तहालों और गरीबों पर तरस खाएगा, मुहताजों की जान को बचाएगा।

14 वह एवज़ाना देकर उन्हें जुल्मो-तशद्दुद से छुड़ाएगा, क्योंकि उनका खून उस की नज़र में क़ीमती है।

15 बादशाह ज़िंदाबाद! सबा का सोना उसे दिया जाए। लोग हमेशा उसके लिए दुआ करें, दिन-भर उसके लिए बरकत चाहें।

16 मुल्क में अनाज की कसरत हो, पहाड़ों की चोटियों पर भी उस की फसलें लहलहाएँ। उसका फल लुबनान के फल जैसा उम्दा हो, शहरों के बाशिंदे हरियाली की तरह फलें-फूलें।

17 बादशाह का नाम अबद तक कायम रहे, जब तक सूरज चमके उसका नाम फले-फूले। तमाम अकवाम उससे बरकत पाएँ, और वह उसे मुबारक कहें।

18 रब खुदा की तमजीद हो जो इसराईल का खुदा है। सिर्फ वही मोजिजे करता है!

19 उसके जलाली नाम की अबद तक तमजीद हो, पूरी दुनिया उसके जलाल से भर जाए। आमीन, फिर आमीन।

20 यहाँ दाऊद बिन यस्सी की दुआँ खत्म होती हैं।

तीसरी किताब 73-89

73

बेदीनों की कामयाबी के बावजूद तसल्ली

1 आसफ़ का जबूर।

यक्रीनन अल्लाह इसराईल पर मेहरबान है, उन पर जिनके दिल पाक हैं।

2 लेकिन मैं फिसलने को था, मेरे कदम लगाजिश खाने को थे।

3 क्योंकि शेखीबाजों को देखकर मैं बेचैन हो गया, इसलिए कि बेदीन इतने खुशहाल हैं।

4 मरते वक़्त उनको कोई तकलीफ़ नहीं होती, और उनके जिस्म मोटे-ताजे रहते हैं।

5 आम लोगों के मसायल से उनका वास्ता नहीं पड़ता। जिस दर्दो-करब में दूसरे मुब्तला रहते हैं उससे वह आज़ाद होते हैं।

6 इसलिए उनके गले में तकब्बुर का हार है, वह जुल्म का लिबास पहने फिरते हैं।

7 चरबी के बाइस उनकी आँखें उभर आई हैं। उनके दिल बेलगाम वहमों की गिरिफ़्त में रहते हैं।

8 वह मज़ाक़ उड़ाकर बुरी बातें करते हैं, अपने गुस्से में जुल्म की धमकियाँ देते हैं।

9 वह समझते हैं कि जो कुछ हमारे मुँह से निकलता है वह आसमान से है, जो बात हमारी ज़बान पर आ जाती है वह पूरी ज़मीन के लिए अहमियत रखती है।

10 चुनौचे अवाम उनकी तरफ़ रूजू होते हैं, क्योंकि उनके हाँ कसरत का पानी पिया जाता है।

11 वह कहते हैं, “अल्लाह को क्या पता है? अल्लाह तआला को इल्म ही नहीं।”

12 देखो, यही है बेदीनों का हाल। वह हमेशा सुकून से रहते, हमेशा अपनी दौलत में इज़ाफ़ा करते हैं।

13 यक्रीनन मैंने बेफ़ायदा अपना दिल पाक रखा और अबस अपने हाथ ग़लत काम करने से बाज़ रखे।

14 क्योंकि दिन-भर मैं दर्दो-करब में मुब्तला रहता हूँ, हर सुबह मुझे सज़ा दी जाती है।

15 अगर मैं कहता, “मैं भी उनकी तरह बोलूँगा,” तो तेरे फ़रज़ंदों की नसल से ग़दारी करता।

16 मैं सोच-बिचार में पड़ गया ताकि बात समझूँ, लेकिन सोचते सोचते थक गया, अज़ियत में सिर्फ़ इज़ाफ़ा हुआ।

17 तब मैं अल्लाह के मक़दिस में दाख़िल होकर समझ गया कि उनका अंजाम क्या होगा।

18 यक्रीनन तू उन्हें फिसलनी जगह पर रखेगा, उन्हें फ़रेब में फँसाकर ज़मीन पर पटख देगा।

19 अचानक ही वह तबाह हो जाएंगे, दहशतनाक मुसीबत में फँसकर मुकम्मल तौर पर फ़ना हो जाएंगे।

20 ऐ रब, जिस तरह खाब जाग उठते वक़्त ग़ैरहक़ीक़ी साबित होता है उसी तरह तू उठते वक़्त उन्हें वहम करार देकर हक़ीर जानेगा।

21 जब मेरे दिल में तलख़ी पैदा हुई और मेरे बातिन में सख़्त दर्द था

22 तो मैं अहमक़ था। मैं कुछ नहीं समझता था बल्कि तेरे सामने मवेशी की मानिंद था।

23 तो भी मैं हमेशा तेरे साथ लिपटा रहूँगा, क्योंकि तू मेरा दहना हाथ थामे रखता है।

24 तू अपने मशवरे से मेरी क्रियादत करके आख़िर में इज़ज़त के साथ मेरा ख़ैरमक़दम करेगा।

25 जब तू मेरे साथ है तो मुझे आसमान पर क्या कमी होगी? जब तू मेरे साथ है तो मैं ज़मीन की कोई भी चीज़ नहीं चाहूँगा।

26 खाह मेरा जिस्म और मेरा दिल ज़वाब दे जाएँ, लेकिन अल्लाह हमेशा तक मेरे दिल की चटान और मेरी मीरास है।

27 यक्रीनन जो तुझसे दूर हैं वह हलाक हो जाएंगे, जो तुझसे बेवफ़ा हैं उन्हें तू तबाह कर देगा।

28 लेकिन मेरे लिए अल्लाह की कुरबत सब कुछ है। मैंने रब कादिरे-मुतलक को अपनी पनाहगाह बनाया है, और मैं लोगों को तेरे तमाम काम सुनाऊंगा।

74

रब के घर की बेहुरमती पर अफसोस

1 आसफ़ का जबूर। हिकमत का गीत।

ऐ अल्लाह, तूने हमें हमेशा के लिए क्यों रद्द किया है? अपनी चरागाह की भेड़ों पर तेरा कहर क्यों भड़कता रहता है?

2 अपनी जमात को याद कर जिसे तूने क़दीम ज़माने में ख़रीदा और एवज़ाना देकर छुड़ाया ताकि तेरी मीरास का क़बीला हो। कोहे-सियून को याद कर जिस पर तू सुकूनतपज़ीर रहा है।

3 अपने कदम इन दायमी खंडरात की तरफ़ बढ़ा। दुश्मन ने मक़दिस में सब कुछ तबाह कर दिया है।

4 तेरे मुखालिफ़ों ने गरजते हुए तेरी जलसागाह में अपने निशान गाड़ दिए हैं।

5 उन्होंने गुंजान जंगल में लकड़हारों की तरह अपने कुल्हाड़े चलाए,

6 अपने कुल्हाड़ों और कुदालों से उस की तमाम कंदाकारी को टुकड़े टुकड़े कर दिया है।

7 उन्होंने तेरे मक़दिस को भस्म कर दिया, फ़र्श तक तेरे नाम की सुकूनतगाह की बेहुरमती की है।

8 अपने दिल में वह बोले, “आओ, हम उन सबको खाक में मिलाएँ!” उन्होंने मुल्क में अल्लाह की हर इबादतगाह नज़रे-आतिश कर दी है।

9 अब हम पर कोई इलाही निशान ज़ाहिर नहीं होता। न कोई नबी हमारे पास रह गया, न कोई और मौजूद है जो जानता हो कि ऐसे हालात कब तक रहेंगे।

10 ऐ अल्लाह, हरीफ़ कब तक लान-तान करेगा, दुश्मन कब तक तेरे नाम की तकफ़ीर करेगा?

11 तू अपना हाथ क्यों हटाता, अपना दहना हाथ दूर क्यों रखता है? उसे अपनी चादर से निकालकर उन्हें तबाह कर दे!

12 अल्लाह क़दीम ज़माने से मेरा बादशाह है, वही दुनिया में नजातबख़्श काम अंजाम देता है।

13 तू ही ने अपनी कुदरत से समुंदर को चीरकर पानी में अज़दहाओं के सरों को तोड़ डाला।

14 तू ही ने लिबियातान के सरों को चूर चूर करके उसे जंगली जानवरों को खिला दिया।

15 एक जगह तूने चश्मे और नदियाँ फूटने दीं, दूसरी जगह कभी न सूखनेवाले दरिया सूखने दिए।

16 दिन भी तेरा है, रात भी तेरी ही है। चाँद और सूरज तेरे ही हाथ से क़ायम हुए।

17 तू ही ने ज़मीन की हृदय मुक़रर की, तू ही ने गरमियों और सर्दियों के मौसम बनाए।

18 ऐ रब, दुश्मन की लान-तान याद कर। खयाल कर कि अहमक़ कौम तेरे नाम पर कुफ़र बकती है।

19 अपने कबूतर की जान को वहशी जानवरों के हवाले न कर, हमेशा तक अपने मुसीबतज़दों की ज़िंदगी को न भूल।

20 अपने अहद का लिहाज़ कर, क्योंकि मुल्क के तारीक़ कोने जुल्म के मैदानों से भर गए हैं।

21 होने न दे कि मज़लूमों को शर्मिंदा होकर पीछे हटना पड़े बल्कि बख़्श दे कि मुसीबतज़दा और ग़रीब तेरे नाम पर फ़ख़र कर सकें।

22 ऐ अल्लाह, उठकर अदालत में अपने मामले का दिफ़ा कर। याद रहे कि अहमक़ दिन-भर तुझे लान-तान करता है।

23 अपने दुश्मनों के नारे न भूल बल्कि अपने मुखालिफ़ों का मुसलसल बढ़ता हुआ शोर-शराबा याद कर।

75

अल्लाह मग़सूरों की अदालत करता है

1 आसफ़ का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : तबाह न कर।

ऐ अल्लाह, तेरा शुक्र हो, तेरा शुक्र! तेरा नाम उनके करीब है जो तेरे मोजिज़े बयान करते हैं।

2 अल्लाह फ़रमाता है, “जब मेरा वक़्त आएगा तो मैं इनसाफ़ से अदालत करूँगा।

3 गो ज़मीन अपने बाशिंदों समेत डगमगाने लगे, लेकिन मैं ही ने उसके सतूनों को मज़बूत कर दिया है। (सिलाह)

4 शेख़ीबाज़ों से मैंने कहा, ‘डींगें मत मारो,’ और बेदीनों से, ‘अपने आप पर फ़ख़र मत करो।’ *

5 न अपनी ताक़त पर शेख़ी मारो, † न अकड़कर कुफ़र बको।”

6 क्योंकि सरफ़राज़ी न मशरिक़ से, न मग़रिब से और न बयाबान से आती है

* 75:4 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : सींग मत उठाओ। † 75:5 लफ़्ज़ी मतलब : न अपना सींग उठाओ।

- 7 बल्कि अल्लाह से जो मुंसिफ है। वही एक को पस्त कर देता है और दूसरे को सरफराज़।
 8 क्योंकि रब के हाथ में झागदार और मसालेदार मै का प्याला है जिसे वह लोगों को पिला देता है। यक्रीनन दुनिया के तमाम बेदीनों को इसे आखिरी कतरे तक पीना है।
 9 लेकिन मैं हमेशा अल्लाह के अज़ीम काम सुनाऊंगा, हमेशा याकूब के खुदा की मदहसराई करूँगा।
 10 अल्लाह फरमाता है, “मैं तमाम बेदीनों की कमर तोड़ दूँगा जबकि रास्तबाज़ सरफराज़ होगा।” ‡

76

अल्लाह मुंसिफ है

- 1 आसफ़ का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तारदार साज़ों के साथ गाना है।
 अल्लाह यहदाह में मशहर है, उसका नाम इसराईल में अज़ीम है।
 2 उसने अपनी माँद सालिम * में और अपना भट कोहे-सिय्यून पर बना लिया है।
 3 वहाँ उसने जलते हुए तीरों को तोड़ डाला और ढाल, तलवार और जंग के हथियारों को चूर चूर कर दिया है। (सिलाह)
 4 ऐ अल्लाह, तू दरख्शाँ है, तू शिकार के पहाड़ों से आया हुआ अज़ीमुश-शान सूरमा है।
 5 बहादुरों को लूट लिया गया है, वह मौत की नींद सो गए हैं। फ़ौजियों में से एक भी हाथ नहीं उठा सकता।
 6 ऐ याकूब के खुदा, तेरे डाँटने पर घोड़े और रथबान बेहिसो-हरकत हो गए हैं।
 7 तू ही महीब है। जब तू झिड़के तो कौन तेरे हुज़ूर कायम रहेगा?
 8 तूने आसमान से फ़ैसले का एलान किया। ज़मीन सहमकर चुप हो गई
 9 जब अल्लाह अदालत करने के लिए उठा, जब वह तमाम मुसीबतज़दों को नजात देने के लिए आया। (सिलाह)
 10 क्योंकि इनसान का तैश भी तेरी तमज़ीद का बाइस है। उसके तैश का आखिरी नतीजा तेरा जलाल ही है। †
 11 रब अपने खुदा के हुज़ूर मन्नतें मानकर उन्हें पूरा करो। जितने भी उसके इर्दगिर्द हैं वह पुरजलाल खुदा के हुज़ूर हदिये लाएँ।
 12 वह हुक्मरानों को शिकस्ता रूह कर देता है, उसी से दुनिया के बादशाह दहशत खाते हैं।

77

अल्लाह के अज़ीम कामों से तसल्ली मिलती है

- 1 आसफ़ का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। यदूतून के लिए।
 मैं अल्लाह से फ़रियाद करके मदद के लिए चिल्लाता हूँ, मैं अल्लाह को पुकारता हूँ कि मुझ पर ध्यान दे।
 2 अपनी मुसीबत में मैंने रब को तलाश किया। रात के वक़्त मेरे हाथ बिलानागा उस की तरफ उठे रहे। मेरी जान ने तसल्ली पाने से इनकार किया।
 3 मैं अल्लाह को याद करता हूँ तो आहें भरने लगता हूँ, मैं सोच-बिचार में पड़ जाता हूँ तो रूह निढाल हो जाती है। (सिलाह)
 4 तू मेरी आँखों को बंद होने नहीं देता। मैं इतना बेचैन हूँ कि बोल भी नहीं सकता।
 5 मैं क़दीम ज़माने पर गौर करता हूँ, उन सालों पर जो बड़ी देर हुए गुज़र गए हैं।
 6 रात को मैं अपना गीत याद करता हूँ। मेरा दिल महवे-खयाल रहता और मेरी रूह तफ़तीश करती रहती है।
 7 “क्या रब हमेशा के लिए रड़ करेगा, क्या आइंदा हमें कभी पसंद नहीं करेगा?
 8 क्या उस की शफ़क़त हमेशा के लिए जाती रही है? क्या उसके वादे अब से जवाब दे गए हैं?
 9 क्या अल्लाह मेहरबानी करना भूल गया है? क्या उसने गुस्से में अपना रहम बाज़ रखा है?” (सिलाह)
 10 मैं बोला, “इससे मुझे दुख है कि अल्लाह तआला का दहना हाथ बदल गया है।”
 11 मैं रब के काम याद करूँगा, हाँ क़दीम ज़माने के तेरे मोज़िज़े याद करूँगा।

‡ 75:10 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : बेदीनों के तमाम सीगों को काट डालूँगा जबकि रास्तबाज़ों का सीग सरफराज़ हो जाएगा।
 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : तू बचे हुए तैश से कमरबस्ता हो जाता है।

* 76:2 सालिम से मुराद यरूशलम है।

† 76:10

- 12 जो कुछ तूने किया उसके हर पहलू पर गौरो-खोज करूँगा, तेरे अजीम कामों में महवे-खयाल रहूँगा।
- 13 ऐ अल्लाह, तेरी राह कुदूस है। कौन-सा माबूद हमारे खुदा जैसा अजीम है?
- 14 तू ही मोजिजे करनेवाला खुदा है। अकवाम के दरमियान तूने अपनी कुदरत का इज़हार किया है।
- 15 बड़ी कुव्वत से तूने एवज़ाना देकर अपनी क़ौम, याकूब और यूसुफ़ की औलाद को रिहा कर दिया है। (सिलाह)
- 16 ऐ अल्लाह, पानी ने तुझे देखा, पानी ने तुझे देखा तो तड़पने लगा, गहराइयों तक लरज़ने लगा।
- 17 मूसलाधार बारिश बरसी, बादल गरज उठे और तेरे तीर इधर उधर चलने लगे।
- 18 आँधी में तेरी आवाज़ कड़कती रही, दुनिया बिजलियों से रौशन हुई, ज़मीन काँपती काँपती उछल पड़ी।
- 19 तेरी राह समुंदर में से, तेरा रास्ता गहरे पानी में से गुज़रा, तो भी तेरे नक्शे-कदम किसी को नज़र न आए।
- 20 मूसा और हारून के हाथ से तूने रेवड़ की तरह अपनी क़ौम की राहनुमाई की।

78

इसराईल की तारीख में इलाही सज़ा और रहम

- 1 आसफ़ का जबूर। हिकमत का गीत।
- ऐ मेरी क़ौम, मेरी हिदायत पर ध्यान दे, मेरे मुँह की बातों पर कान लगा।
- 2 मैं तमसीलों में बात करूँगा, क़दीम ज़माने के मुअम्मे बयान करूँगा।
- 3 जो कुछ हमने सुन लिया और हमें मालूम हुआ है, जो कुछ हमारे बापदादा ने हमें सुनाया है
- 4 उसे हम उनकी औलाद से नहीं छुपाएँगे। हम आनेवाली पुश्त को रब के काबिले-तारीफ़ काम बताएँगे, उस की कुदरत और मोजिज़ात बयान करेंगे।
- 5 क्योंकि उसने याकूब की औलाद को शरीअत दी, इसराईल में अहकाम कायम किए। उसने फ़रमाया कि हमारे बापदादा यह अहकाम अपनी औलाद को सिखाएँ
- 6 ताकि आनेवाली पुश्त भी उन्हें अपनाए, वह बच्चे जो अभी पैदा नहीं हुए थे। फिर उन्हें भी अपने बच्चों को सुनाना था।
- 7 क्योंकि अल्लाह की मरज़ी है कि इस तरह हर पुश्त अल्लाह पर एतमाद रखकर उसके अजीम काम न भूले बल्कि उसके अहकाम पर अमल करें।
- 8 वह नहीं चाहता कि वह अपने बापदादा की मानिंद हों जो जिद्दी और सरकश नसल थे, ऐसी नसल जिसका दिल साबितकदम नहीं था और जिसकी रूह वफ़ादारी से अल्लाह से लिपटी न रही।
- 9 चुनौचे इफ़राईम के मर्द गो कमानों से लैस थे जंग के वक्रत फ़रार हुए।
- 10 वह अल्लाह के अहद के वफ़ादार न रहे, उस की शरीअत पर अमल करने के लिए तैयार नहीं थे।
- 11 जो कुछ उसने किया था, जो मोजिजे उसने उन्हें दिखाए थे, इफ़राईमी वह सब कुछ भूल गए।
- 12 मुल्के-मिसर के इलाके ज़ुअन में उसने उनके बापदादा के देखते देखते मोजिजे किए थे।
- 13 समुंदर को चीरकर उसने उन्हें उसमें से गुज़रने दिया, और दोनों तरफ़ पानी मज़बूत दीवार की तरह खड़ा रहा।
- 14 दिन को उसने बादल के ज़रीए और रात-भर चमकदार आग से उनकी क्रियादत की।
- 15 रेगिस्तान में उसने पत्थरों को चाक करके उन्हें समुंदर की-सी कसरत का पानी पिलाया।
- 16 उसने होने दिया कि चटान से नदियाँ फूट निकलें और पानी दरियाओं की तरह बहने लगे।
- 17 लेकिन वह उसका गुनाह करने से बाज़ न आए बल्कि रेगिस्तान में अल्लाह तआला से सरकश रहे।
- 18 जान-बूझकर उन्होंने अल्लाह को आजमाकर वह ख़ुराक माँगी जिसका लालच करते थे।
- 19 अल्लाह के खिलाफ़ कुफ़र बककर वह बोले, “क्या अल्लाह रेगिस्तान में हमारे लिए मेज़ बिछा सकता है?”
- 20 बेशक जब उसने चटान को मारा तो पानी फूट निकला और नदियाँ बहने लगीं। लेकिन क्या वह रोटी भी दे सकता है, अपनी क़ौम को गोश्त भी मुहैया कर सकता है? यह तो नामुमकिन है।”
- 21 यह सुनकर रब तैश में आ गया। याकूब के खिलाफ़ आग भड़क उठी, और उसका ग़ज़ब इसराईल पर नाज़िल हुआ।
- 22 क्यों? इसलिए कि उन्हें अल्लाह पर यकीन नहीं था, वह उस की नज़ात पर भरोसा नहीं रखते थे।
- 23 इसके बावजूद अल्लाह ने उनके ऊपर बादलों को हुक्म देकर आसमान के दरवाज़े खोल दिए।
- 24 उसने खाने के लिए उन पर मन बरसाया, उन्हें आसमान से रोटी खिलाई।
- 25 हर एक ने फ़रिश्तों की यह रोटी खाई बल्कि अल्लाह ने इतना खाना भेजा कि उनके पेट भर गए।
- 26 फिर उसने आसमान पर मशरिकी हवा चलाई और अपनी कुदरत से जुनूबी हवा पहुँचाई।

- 27 उसने गर्द की तरह उन पर गोशत बरसाया, समुंदर की रेत जैसे बेशुमार परिदे उन पर गिरने दिए।
 28 खैमागाह के बीच में ही वह गिर पड़े, उनके घरों के इर्दगिर्द ही ज़मीन पर आ गिरे।
 29 तब वह खा खाकर खूब सेर हो गए, क्योंकि जिसका लालच वह करते थे वह अल्लाह ने उन्हें मुहैया किया था।
 30 लेकिन उनका लालच अभी पूरा नहीं हुआ था और गोशत अभी उनके मुँह में था
 31 कि अल्लाह का गज़ब उन पर नाज़िल हुआ। कौम के खाते-पीते लोग हलाक हुए, इसराईल के जवान खाक में मिल गए।
- 32 इन तमाम बातों के बावजूद वह अपने गुनाहों में इज़ाफ़ा करते गए और उसके मोजिज़ात पर ईमान न लाए।
 33 इसलिए उसने उनके दिन नाकामी में गुज़रने दिए, और उनके साल दहशत की हालत में इख़ितामपज़ीर हुए।
 34 जब कभी अल्लाह ने उनमें क़त्लो-ग़ारत होने दी तो वह उसे ढूँढ़ने लगे, वह मुड़कर अल्लाह को तलाश करने लगे।
 35 तब उन्हें याद आया कि अल्लाह हमारी चटान, अल्लाह तआला हमारा छुड़ानेवाला है।
 36 लेकिन वह मुँह से उसे धोका देते, ज़बान से उसे झूट पेश करते थे।
 37 न उनके दिल साबितक़दमी से उसके साथ लिपटे रहे, न वह उसके अहद के वफ़ादार रहे।
- 38 तो भी अल्लाह रहमदिल रहा। उसने उन्हें तबाह न किया बल्कि उनका कुसूर मुआफ़ करता रहा। बार बार वह अपने ग़ज़ब से बाज़ आया, बार बार अपना पूरा क्रहर उन पर उतारने से गुरेज़ किया।
 39 क्योंकि उसे याद रहा कि वह फ़ानी इन्सान हैं, हवा का एक झोंका जो गुज़रकर कभी वापस नहीं आता।
- 40 रेगिस्तान में वह कितनी दफ़ा उससे सरकश हुए, कितनी मरतबा उसे दुख पहुँचाया।
 41 बार बार उन्होंने अल्लाह को आज़माया, बार बार इसराईल के कुदूस को रंजीदा किया।
 42 उन्हें उस की कुदरत याद न रही, वह दिन जब उसने फ़िघा देकर उन्हें दुश्मन से छुड़ाया,
- 43 वह दिन जब उसने मिसर में अपने इलाही निशान दिखाए, जुअन के इलाक़े में अपने मोजिज़े किए।
 44 उसने उनकी नहरों का पानी खून में बदल दिया, और वह अपनी नदियों का पानी पी न सके।
 45 उसने उनके दरमियान जुओं के गोल भेजे जो उन्हें खा गई, मेंढक जो उन पर तबाही लाए।
 46 उनकी पैदावार उसने जवान टिट्टियों के हवाले की, उनकी मेहनत का फल बालिग टिट्टियों के सुपुर्द किया।
 47 उनकी अंगूर की बेलें उसने ओलों से, उनके अंजीर-तूत के दरख़्त सैलाब से तबाह कर दिए।
 48 उनके मवेशी उसने ओलों के हवाले किए, उनके रेवड़ बिजली के सुपुर्द किए।
 49 उसने उन पर अपना शोलाज़न ग़ज़ब नाज़िल किया। क्रहर, खफ़गी और मुसीबत यानी तबाही लानेवाले फ़रिश्तों का पूरा दस्ता उन पर हमलाआवर हुआ।
- 50 उसने अपने ग़ज़ब के लिए रास्ता तैयार करके उन्हें मौत से न बचाया बल्कि मोहलक वबा की ज़द में आने दिया।
 51 मिसर में उसने तमाम पहलौठों को मार डाला और हाम के खैमों में मरदानगी का पहला फल तमाम कर दिया।
 52 फिर वह अपनी कौम को भेड़-बकरियों की तरह मिसर से बाहर लाकर रेगिस्तान में रेवड़ की तरह लिए फिरा।
 53 वह हिफ़ाज़त से उनकी कियादत करता रहा। उन्हें कोई डर नहीं था जबकि उनके दुश्मन समुंदर में डूब गए।
 54 यों अल्लाह ने उन्हें मुक़द्दस मुल्क तक पहुँचाया, उस पहाड़ तक जिसे उसके दहने हाथ ने हासिल किया था।
 55 उनके आगे आगे वह दीगर कौमों में निकालता गया। उनकी ज़मीन उसने तक्रसीम करके इसराईलियों को मीरास में दी, और उनके खैमों में उसने इसराईली क़बीले बसाए।
- 56 इसके बावजूद वह अल्लाह तआला को आज़माने से बाज़ न आए बल्कि उससे सरकश हुए और उसके अहक़ाम के ताबे न रहे।
 57 अपने बापदादा की तरह वह ग़द़ार बनकर बेवफ़ा हुए। वह ढीली कमान की तरह नाकाम हो गए।
 58 उन्होंने ऊँची जगहों की ग़लत कुरबानगाहों से अल्लाह को गुस्सा दिलाया और अपने बुतों से उसे रंजीदा किया।
 59 जब अल्लाह को ख़बर मिली तो वह ग़ज़बनाक हुआ और इसराईल को मुक़म्मल तौर पर मुस्तरद कर दिया।
 60 उसने सैला में अपनी सुकूनतगाह छोड़ दी, वह खैमा जिसमें वह इन्सान के दरमियान सुकूनत करता था।
 61 अहद का सन्दूक उस की कुदरत और जलाल का निशान था, लेकिन उसने उसे दुश्मन के हवाले करके जिलावतनी में जाने दिया।
 62 अपनी कौम को उसने तलवार की ज़द में आने दिया, क्योंकि वह अपनी मौरूसी मिलकियत से निहायत नाराज़ था।
 63 कौम के जवान नज़रे-आतिश हुए, और उस की कुँवारियों के लिए शादी के गीत गाए न गए।
 64 उसके इमाम तलवार से क़त्ल हुए, और उस की बेवाओं ने मातम न किया।

- 65 तब रब जाग उठा, उस आदमी की तरह जिसकी नींद उचाट हो गई हो, उस सूरमे की मानिंद जिससे नशे का असर उतर गया हो।
 66 उसने अपने दुश्मनों को मार मारकर भगा दिया और उन्हें हमेशा के लिए शर्मिदा कर दिया।
 67 उस वक़्त उसने यूसुफ का खैमा रद्द किया और इफ़राईम के कबीले को न चुना
 68 बल्कि यहूदाह के कबीले और कोहे-सियून को चुन लिया जो उसे प्यारा था।
 69 उसने अपना मक़दिस बुलंदियों की मानिंद बनाया, ज़मीन की मानिंद जिसे उसने हमेशा के लिए क़ायम किया है।
 70 उसने अपने खादिम दाऊद को चुनकर भेड़-बकरियों के बाड़ों से बुलाया।
 71 हाँ, उसने उसे भेड़ों * की देख-भाल से बुलाया ताकि वह उस की कौम याक़ूब, उस की मीरास इसराईल की गल्लाबानी करे।
 72 दाऊद ने खुलूसदिली से उनकी गल्लाबानी की, बड़ी महारत से उसने उनकी राहनुमाई की।

79

जंग की मुसीबत में कौम की दुआ

1 आसफ़ का जबूर।

ऐ अल्लाह, अजनबी कौमों तेरी मौरूसी ज़मीन में घुस आई हैं। उन्होंने तेरी मुक़द्दस सुकूनतगाह की बेहुरमती करके यरूशलम को मलबे का ढेर बना दिया है।

2 उन्होंने तेरे खादिमों की लाशें परिदों को और तेरे ईमानदारों का गोश्त जंगली जानवरों को खिला दिया है।

3 यरूशलम के चारों तरफ़ उन्होंने खून की नदियाँ बहाई, और कोई बाक़ी न रहा जो मुरदों को दफ़नाता।

4 हमारे पड़ोसियों ने हमें मज़ाक़ का निशाना बना लिया है, इर्दगिर्द की कौमों हमारी हँसी उड़ाती और लान-तान करती हैं।

5 ऐ रब, कब तक? क्या तू हमेशा तक गुस्से होगा? तेरी ग़ैरत कब तक आग की तरह भड़कती रहेगी?

6 अपना ग़ज़ब उन अक़वाम पर नाज़िल कर जो तुझे तसलीम नहीं करती, उन सलतनतों पर जो तेरे नाम को नहीं पुकारती।

7 क्योंकि उन्होंने याक़ूब को हडप करके उस की रिहाइशगाह तबाह कर दी है।

8 हमें उन गुनाहों के कुसूरवार न ठहरा जो हमारे बापदादा से सरज़द हुए। हम पर रहम करने में जल्दी कर, क्योंकि हम बहुत पस्तहाल हो गए हैं।

9 ऐ हमारी नजात के खुदा, हमारी मदद कर ताकि तेरे नाम को जलाल मिले। हमें बचा, अपने नाम की खातिर हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर।

10 दीगर अक़वाम क्यों कहें, “उनका खुदा कहाँ है?” हमारे देखते देखते उन्हें दिखा कि तू अपने खादिमों के खून का बदला लेता है।

11 कैदियों की आँहें तुझ तक पहुँचीं, जो मरने को हैं उन्हें अपनी अज़ीम कुदरत से महफूज़ रख।

12 ऐ रब, जो लान-तान हमारे पड़ोसियों ने तुझ पर बरसाई है उसे सात गुना उनके सरों पर वापस ला।

13 तब हम जो तेरी कौम और तेरी चरागाह की भेड़ें हैं अबद तक तेरी सताइश करेंगे, पुश्त-दर-पुश्त तेरी हम्दो-सना करेंगे।

80

अंगूर की बेल की बहाली के लिए दुआ

1 आसफ़ का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : अहद के सोसन।

ऐ इसराईल के गल्लाबान, हम पर ध्यान दे! तू जो यूसुफ़ की रेवड की तरह राहनुमाई करता है, हम पर तवज्जुह कर! तू जो कसूबी फ़रिशतों के दरमियान तख़्तनशीन है, अपना नूर चमका!

2 इफ़राईम, बिनयमीन और मनस्सी के सामने अपनी कुदरत को हरकत में ला। हमें बचाने आ!

3 ऐ अल्लाह, हमें बहाल कर। अपने चेहरे का नूर चमका तो हम नजात पाएँगे।

4 ऐ रब, लशक़रों के खुदा, तेरा ग़ज़ब कब तक भड़कता रहेगा, हालाँकि तेरी कौम तुझसे इल्तिजा कर रही है?

5 तूने उन्हें आँसुओं की रोटी खिलाई और आँसुओं का प्याला ख़ूब पिलाया।

6 तूने हमें पड़ोसियों के झगड़ों का निशाना बनाया। हमारे दुश्मन हमारा मज़ाक़ उड़ाते हैं।

7 ऐ लशक़रों के खुदा, हमें बहाल कर। अपने चेहरे का नूर चमका तो हम नजात पाएँगे।

* 78:71 इब्रानी मतन से मुराद वह भेड़ है जो अभी अपने बच्चों को दूध पिलाती है।

8 अंगूर की जो बेल मिसर में उग रही थी उसे तू उखाड़कर मुल्के-कनान लाया। तूने वहाँ की अकवाम को भगाकर यह बेल उनकी जगह लगाई।

9 तूने उसके लिए ज़मीन तैयार की तो वह जड़ पकड़कर पूरे मुल्क में फैल गई।

10 उसका साया पहाड़ों पर छा गया, और उस की शाखों ने देवदार के अज़ीम दरख्तों को ढाँक लिया।

11 उस की टहनियाँ मगरिब में समुंदर तक फैल गई, उस की डालियाँ मशरिक में दरियाए-फुरात तक पहुँच गई।

12 तूने उस की चारदीवारी क्यों गिरा दी? अब हर गुज़रनेवाला उसके अंगूर तोड़ लेता है।

13 जंगल के सुअर उसे खा खाकर तबाह करते, खुले मैदान के जानवर वहाँ चरते हैं।

14 ऐ लशकरो के खुदा, हमारी तरफ़ दुबारा रूजू फरमा! आसमान से नज़र डालकर हालात पर ध्यान दे। इस बेल की देख-भाल कर।

15 उसे महफूज़ रख जिसे तेरे दहने हाथ ने ज़मीन में लगाया, उस बेटे को जिसे तूने अपने लिए पाला है।

16 इस वक़्त वह कटकर नज़रे-आतिश हुआ है। तेरे चेहरे की डाँट-डपट से लोग हलाक हो जाते हैं।

17 तेरा हाथ अपने दहने हाथ के बंदे को पनाह दे, उस आदमज़ाद को जिसे तूने अपने लिए पाला था।

18 तब हम तुझसे दूर नहीं हो जाएंगे। बख़्श दे कि हमारी जान में जान आए तो हम तेरा नाम पुकारेंगे।

19 ऐ रब, लशकरो के खुदा, हमें बहाल कर। अपने चेहरे का नूर चमका तो हम नजात पाएँगे।

81

हकीक़ी इबादत क्या है?

1 आसफ़ का जबूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : ग़ितीत।

अल्लाह हमारी कुव्वत है। उस की खुशी में शादियाना बजाओ, याक़ूब के खुदा की ताज़ीम में खुशी के नारे लगाओ।

2 गीत गाना शुरू करो। दफ़ बजाओ, सरोद और सितार की सुरीली आवाज़ निकालो।

3 नए चाँद के दिन नरसिंगा फूँको, पूरे चाँद के जिस दिन हमारी ईद होती है उसे फूँको।

4 क्योंकि यह इसराईल का फ़र्ज़ है, यह याक़ूब के खुदा का फ़रमान है।

5 जब यूसुफ़ मिसर के खिलाफ़ निकला तो अल्लाह ने खुद यह मुक़रर किया।

मैंने एक ज़बान सुनी, जो मैं अब तक नहीं जानता था,

6 “मैंने उसके कंधे पर से बोझ उतारा और उसके हाथ भारी टोकरी उठाने से आज़ाद किए।

7 मुसीबत में तूने आवाज़ दी तो मैंने तुझे बचाया। गरजते बादल में से मैंने तुझे जवाब दिया और तुझे मरीबा के पानी पर आजमाया। (सिलाह)

8 ऐ मेरी कौम, सुन, तो मैं तुझे आगाह करूँगा। ऐ इसराईल, काश तू मेरी सुने!

9 तेरे दरमियान कोई और खुदा न हो, किसी अज़नबी माबूद को सिजदा न कर।

10 मैं ही रब तेरा खुदा हूँ जो तुझे मुल्के-मिसर से निकाल लाया। अपना मुँह खूब खोल तो मैं उसे भर दूँगा।

11 लेकिन मेरी कौम ने मेरी न सुनी, इसराईल मेरी बात मानने के लिए तैयार न था।

12 चुनौचे मैंने उन्हें उनके दिलों की ज़िद के हवाले कर दिया, और वह अपने जाती मशवरों के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने लगे।

13 काश मेरी कौम सुने, इसराईल मेरी राहों पर चले!

14 तब मैं जल्दी से उसके दुश्मनों को ज़ेर करता, अपना हाथ उसके मुखालिफ़ों के खिलाफ़ उठाता।

15 तब रब से नफ़रत करनेवाले दबककर उस की खुशामद करते, उनकी शिकस्त अबदी होती।

16 लेकिन इसराईल को मैं बेहतरीन गंदुम खिलाता, मैं चटान में से शहद निकालकर उसे सेर करता।”

82

सबसे आला मुसिफ़

1 आसफ़ का जबूर।

अल्लाह इलाही मजलिस में खड़ा है, माबूदों के दरमियान वह अदालत करता है,

2 “तुम कब तक अदालत में ग़लत फैसले करके बेदीनों की जानिबदारी करोगे? (सिलाह)

3 पस्तहालों और यतीमों का इनसाफ़ करो, मुसीबतज़दों और ज़रूरतमंदों के हुकूक कायम रखो।

4 पस्तहालों और गरीबों को बचाकर बेदीनों के हाथ से छुड़ाओ।”

5 लेकिन वह कुछ नहीं जानते, उन्हें समझ ही नहीं आती। वह तारीकी में टटोल टटोलकर घुमते-फिरते हैं जबकि ज़मीन की तमाम बुनियादें झूमने लगी हैं।

6 बेशक मैंने कहा, “तुम खुदा हो, सब अल्लाह तआला के फ़रज़ंद हो।

7 लेकिन तुम फ़ानी इन्सान की तरह मर जाओगे, तुम दीगर हुक्मरानों की तरह गिर जाओगे।”

8 ऐ अल्लाह, उठकर ज़मीन की अदालत कर! क्योंकि तमाम अक़वाम तेरी ही मौस्सी मिलकियत हैं।

83

क्रौम के दुश्मनों के खिलाफ़ दुआ

1 गीत। आसफ़ का जबूर।

ऐ अल्लाह, ख़ामोश न रह! ऐ अल्लाह, चुप न रह!

2 देख, तेरे दुश्मन शोर मचा रहे हैं, तुझसे नफ़रत करनेवाले अपना सर तेरे खिलाफ़ उठा रहे हैं।

3 तेरी क्रौम के खिलाफ़ वह चालाक मनसूबे बाँध रहे हैं, जो तेरी आड़ में छुप गए हैं उनके खिलाफ़ साजिशें कर रहे हैं।

4 वह कहते हैं, “आओ, हम उन्हें मिटा दें ताकि क्रौम नेस्त हो जाए और इसराईल का नामो-निशान बाक़ी न रहे।”

5 क्योंकि वह आपस में सलाह-मशवरा करने के बाद दिली तौर पर मुतहिद हो गए हैं, उन्होंने तेरे ही खिलाफ़ अहद बाँधा है।

6 उनमें अदोम के ख़ैमे, इसमाईली, मोआब, हाजिरी,

7 जबाल, अम्मोन, अमालीक, फिलिस्तिया और सू के बाशिदे शामिल हो गए हैं।

8 असूर भी उनमें शरीक होकर लूत की औलाद को सहारा दे रहा है। (सिलाह)

9 उनके साथ वही सुलूक कर जो तूने मिदियानियों से यानी कैसोन नदी पर सीसरा और याबीन से किया।

10 क्योंकि वह ऐन-दोर के पास हलाक होकर खेत में गोबर बन गए।

11 उनके शुरफ़ा के साथ वही बरताव कर जो तूने औरैब और ज़एब से किया। उनके तमाम सरदार ज़िबह और ज़लमुन्ना की मानिंद बन जाएँ,

12 जिन्होंने कहा, “आओ, हम अल्लाह की चरागाहों पर कब्ज़ा करें।”

13 ऐ मेरे खुदा, उन्हें लुढ़कबूटी और हवा में उड़ते हुए भूसे की मानिंद बना दे।

14 जिस तरह आग पूरे जंगल में फैल जाती और एक ही शोला पहाड़ों को झुलसा देता है,

15 उसी तरह अपनी आँधी से उनका ताक़ूब कर, अपने तूफ़ान से उनको दहशतज़दा कर दे।

16 ऐ रब, उनका मुँह काला कर ताकि वह तेरा नाम तलाश करें।

17 वह हमेशा तक शर्मिंदा और हवासबाख़्ता रहें, वह शर्मसार होकर हलाक हो जाएँ।

18 तब ही वह जान लेंगे कि तू ही जिसका नाम रब है अल्लाह तआला यानी पूरी दुनिया का मालिक है।

84

रब के घर पर खुशी

1 क्रौरह खानदान का जबूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : गितीत।

ऐ रब्बुल-अफ़वाज़, तेरी सुकूनतगाह कितनी प्यारी है!

2 मेरी जान रब की बारगाहों के लिए तड़पती हुई निढाल है। मेरा दिल बल्कि पूरा जिस्म ज़िंदा खुदा को ज़ोर से पुकार रहा है।

3 ऐ रब्बुल-अफ़वाज़, ऐ मेरे बादशाह और खुदा, तेरी कुरबानगाहों के पास परिदे को भी घर मिल गया, अबाबील को भी अपने बच्चों को पालने का घोंसला मिल गया है।

4 मुबारक हैं वह जो तेरे घर में बसते हैं, वह हमेशा ही तेरी सताइश करेंगे। (सिलाह)

5 मुबारक हैं वह जो तुझमें अपनी ताक़त पाते, जो दिल से तेरी राहों में चलते हैं।

6 वह बुका की खुशक वादी * में से गुज़रते हुए उसे शादाब जगह बना लेते हैं, और बारिशें उसे बरकतों से ढाँप देती हैं।

7 वह क़दम बक़दम तकवियत पाते हुए आगे बढ़ते, सब कोहे-सिय्यून पर अल्लाह के सामने हाज़िर हो जाते हैं।

8 ऐ रब, ऐ लशकरोँ के खुदा, मेरी दुआ सुन! ऐ याक़ूब के खुदा, ध्यान दे! (सिलाह)

* 84:6 या रोनेवाली यानी अँसुओं की वादी।

9 ऐ अल्लाह, हमारी ढाल पर करम की निगाह डाल। अपने मसह किए हुए खादिम के चेहरे पर नज़र कर।

10 तेरी बारगाहों में एक दिन किसी और जगह पर हजार दिनों से बेहतर है। मुझे अपने खुदा के घर के दरवाज़े पर हाज़िर रहना बेदीनों के घरों में बसने से कहीं ज्यादा पसंद है।

11 क्योंकि रब खुदा आफताब और ढाल है, वही हमें फ़ज़ल और इज़्ज़त से नवाज़ता है। जो दियानतदारी से चलें उन्हें वह किसी भी अच्छी चीज़ से महसूस नहीं रखता।

12 ऐ रब्बुल-अफ़वाज़, मुबारक है वह जो तुझ पर भरोसा रखता है!

85

नए सिरे से बरकत पाने के लिए दुआ

1 क्रौरह की औलाद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।

ऐ रब, पहले तूने अपने मुल्क को पसंद किया, पहले याकूब को बहाल किया।

2 पहले तूने अपनी कौम का कुसूर मुआफ़ किया, उसका तमाम गुनाह ढाँप दिया। (सिलाह)

3 जो ग़ज़ब हम पर नाज़िल हो रहा था उसका सिलसिला तूने रोक दिया, जो कहर हमारे खिलाफ़ भड़क रहा था उसे छोड़ दिया।

4 ऐ हमारी नजात के खुदा, हमें दुबारा बहाल कर। हमसे नाराज़ होने से बाज़ आ।

5 क्या तू हमेशा तक हमसे गुस्से रहेगा? क्या तू अपना कहर पुश्त-दर-पुश्त कायम रखेगा?

6 क्या तू दुबारा हमारी जान को ताज़ादम नहीं करेगा ताकि तेरी कौम तुझसे खुश हो जाए?

7 ऐ रब, अपनी शफ़क़त हम पर ज़ाहिर कर, अपनी नजात हमें अता फ़रमा।

8 मैं वह कुछ सुनूँगा जो खुदा रब फ़रमाएगा। क्योंकि वह अपनी कौम और अपने ईमानदारों से सलामती का वादा करेगा, अलबत्ता लाज़िम है कि वह दुबारा हमाक़त में उलझ न जाएँ।

9 यक़ीनन उस की नजात उनके करीब है जो उसका ख़ौफ़ मानते हैं ताकि जलाल हमारे मुल्क में सुकूनत करे।

10 शफ़क़त और वफ़ादारी एक दूसरे के गले लग गए हैं, रास्ती और सलामती ने एक दूसरे को बोसा दिया है।

11 सच्चाई ज़मीन से फूट निकलेगी और रास्ती आसमान से ज़मीन पर नज़र डालेगी।

12 अल्लाह ज़रूर वह कुछ देगा जो अच्छा है, हमारी ज़मीन ज़रूर अपनी फ़सलें पैदा करेगी।

13 रास्ती उसके आगे आगे चलकर उसके क़दमों के लिए रास्ता तैयार करेगी।

86

मुसीबत में दुआ

1 दाऊद की दुआ।

ऐ रब, अपना कान झुकाकर मेरी सुन, क्योंकि मैं मुसीबतज़दा और मुहताज हूँ।

2 मेरी जान को महफूज़ रख, क्योंकि मैं ईमानदार हूँ। अपने खादिम को बचा जो तुझ पर भरोसा रखता है। तू ही मेरा खुदा है!

3 ऐ रब, मुझ पर मेहरबानी कर, क्योंकि दिन-भर मैं तुझे पुकारता हूँ।

4 अपने खादिम की जान को खुश कर, क्योंकि मैं तेरा आरज़ूमंद हूँ।

5 क्योंकि तू ऐ रब भला है, तू मुआफ़ करने के लिए तैयार है। जो भी तुझे पुकारते हैं उन पर तू बड़ी शफ़क़त करता है।

6 ऐ रब, मेरी दुआ सुन, मेरी इल्तिजाओं पर तवज्जुह कर।

7 मुसीबत के दिन मैं तुझे पुकारता हूँ, क्योंकि तू मेरी सुनता है।

8 ऐ रब, माबूदों में से कोई तेरी मानिद नहीं है। जो कुछ तू करता है कोई और नहीं कर सकता।

9 ऐ रब, जितनी भी क़ौमों तूने बनाई वह आकर तेरे हुज़ूर सिजदा करेंगी और तेरे नाम को जलाल देंगी।

10 क्योंकि तू ही अज़ीम है और मोज़िज़े करता है। तू ही खुदा है।

11 ऐ रब, मुझे अपनी राह सिखा ताकि तेरी वफ़ादारी में चलूँ। बरख़्श दे कि मैं पूरे दिल से तेरा ख़ौफ़ मानूँ।

12 ऐ रब मेरे खुदा, मैं पूरे दिल से तेरा शुक्र करूँगा, हमेशा तक तेरे नाम की ताज़ीम करूँगा।

13 क्योंकि तेरी मुझ पर शफ़क़त अज़ीम है, तूने मेरी जान को पाताल की गहराइयों से छुड़ाया है।

- 14 ऐ अल्लाह, मगसूर मेरे खिलाफ उठ खड़े हुए हैं, ज़ालिमों का जत्था मेरी जान लेने के दरपै है। यह लोग तेरा लिहाज़ नहीं करते।
 15 लेकिन तू, ऐ रब, रहीम और मेहरबान खुदा है। तू तहम्मूल, शफ़क़त और वफ़ा से भरपूर है।
 16 मेरी तरफ़ रूजू फ़रमा, मुझ पर मेहरबानी कर! अपने खादिम को अपनी कुव्वत अता कर, अपनी खादिमा के बेटे को बचा।
 17 मुझे अपनी मेहरबानी का कोई निशान दिखा। मुझसे नफ़रत करनेवाले यह देखकर शर्मिदा हो जाएँ कि तू रब ने मेरी मदद करके मुझे तसल्ली दी है।

87

सिय्यून अक़वाम की माँ है

- 1 क्रोरह की औलाद का ज़बूर। गीत।
 उस की बुनियाद मुक़द्दस पहाड़ों पर रखी गई है।
 2 रब सिय्यून के दरवाज़ों को याक़ूब की दीगर आबादियों से कहीं ज़्यादा प्यार करता है।
 3 ऐ अल्लाह के शहर, तेरे बारे में शानदार बातें सुनाई जाती हैं। (सिलाह)
 4 रब फ़रमाता है, “मैं मिस्र और बाबल को उन लोगों में शुमार करूँगा जो मुझे जानते हैं।” फिलिस्तिया, सूर और एथोपिया के बारे में भी कहा जाएगा, “इनकी पैदाइश यहीं हुई है।”
 5 लेकिन सिय्यून के बारे में कहा जाएगा, “हर एक बाशिंदा उसमें पैदा हुआ है। अल्लाह तआला खुद उसे कायम रखेगा।”
 6 जब रब अक़वाम को किताब में दर्ज करेगा तो वह साथ साथ यह भी लिखेगा, “यह सिय्यून में पैदा हुई हैं।” (सिलाह)
 7 और लोग नाचते हुए गाएँगे, “मेरे तमाम चश्मे तुझमें हैं।”

88

तर्क किए गए शख्स के लिए दुआ

- 1 क्रोरह की औलाद का ज़बूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तर्ज : महलत लअन्नोत। हैमान इज़राही का हिकमत का गीत।
 ऐ रब, ऐ मेरी नजात के खुदा, दिन-रात मैं तेरे हुज़ूर चीखता-चिल्लाता हूँ।
 2 मेरी दुआ तेरे हुज़ूर पहुँचे, अपना कान मेरी चीखों की तरफ़ झुका।
 3 क्योंकि मेरी जान दुख से भरी है, और मेरी टाँगें कब्र में लटकी हुई हैं।
 4 मुझे उनमें शुमार किया जाता है जो पाताल में उतर रहे हैं। मैं उस मर्द की मानिंद हूँ जिसकी तमाम ताक़त जाती रही है।
 5 मुझे मुरदों में तनहा छोड़ा गया है, कब्र में उन मकतूलों की तरह जिनका तू अब खयाल नहीं रखता और जो तेरे हाथ के सहारे से मुंक्ते हो गए हैं।
 6 तूने मुझे सबसे गहरे गढ़े में, तारीक़तरीन गहराइयों में डाल दिया है।
 7 तेरे ग़ज़ब का पूरा बोझ मुझ पर आ पड़ा है, तूने मुझे अपनी तमाम मौजों के नीचे दबा दिया है। (सिलाह)
 8 तूने मेरे करीबी दोस्तों को मुझसे दूर कर दिया है, और अब वह मुझसे घिन खाते हैं। मैं फँसा हुआ हूँ और निकल नहीं सकता।
 9 मेरी आँखें ग़म के मारे पज़मुरदा हो गई हैं। ऐ रब, दिन-भर मैं तुझे पुकारता, अपने हाथ तेरी तरफ़ उठाए रखता हूँ।
 10 क्या तू मुरदों के लिए मोजिज़े करेगा? क्या पाताल के बाशिंदे उठकर तेरी तमजीद करेंगे? (सिलाह)
 11 क्या लोग कब्र में तेरी शफ़क़त या पाताल में तेरी वफ़ा बयान करेंगे?
 12 क्या तारीकी में तेरे मोजिज़े या मुल्के-फ़रामोश में तेरी रास्ती मालूम हो जाएगी?
 13 लेकिन ऐ रब, मैं मदद के लिए तुझे पुकारता हूँ, मेरी दुआ सुबह-सवेरे तेरे सामने आ जाती है।
 14 ऐ रब, तू मेरी जान को क्यों रद्द करता, अपने चेहरे को मुझसे पोशीदा क्यों रखता है?
 15 मैं मुसीबतज़दा और जवानी से मौत के करीब रहा हूँ। तेरे दहशतनाक हमले बरदाश्त करते करते मैं जान से हाथ धो बैठा हूँ।
 16 तेरा भडकता कहर मुझ पर से गुज़र गया, तेरे हौलनाक कामों ने मुझे नाबूद कर दिया है।
 17 दिन-भर वह मुझे सैलाब की तरह घेरे रखते हैं, हर तरफ़ से मुझ पर हमलाआवर होते हैं।
 18 तूने मेरे दोस्तों और पड़ोसियों को मुझसे दूर कर रखा है। तारीकी ही मेरी करीबी दोस्त बन गई है।

89

इसराईल की मुसीबत और दाऊद से वादा

- 1 ऐतान इजराही का हिकमत का गीत।
- मैं अबद तक रब की मेहरबानियों की मद्दहसराई करूँगा, पुश्त-दर-पुश्त मुँह से तेरी वफ़ा का एलान करूँगा।
- 2 क्योंकि मैं बोला, “तेरी शफ़क़त हमेशा तक कायम है, तूने अपनी वफ़ा की मज़बूत बुनियाद आसमान पर ही रखी है।”
- 3 तूने फ़रमाया, “मैंने अपने चुने हुए बंदे से अहद बाँधा, अपने खादिम दाऊद से कसम खाकर वादा किया है,
- 4 ‘मैं तेरी नसल को हमेशा तक कायम रखूँगा, तेरा तख़्त हमेशा तक मज़बूत रखूँगा’।” (सिलाह)
- 5 ऐ रब, आसमान तेरे मोज़िज़ों की सताइश करेंगे, मुक़द्दसीन की जमात में ही तेरी वफ़ादारी की तमज़ीद करेंगे।
- 6 क्योंकि बादलों में कौन रब की मानिंद है? इलाही हस्तियों में से कौन रब की मानिंद है?
- 7 जो भी मुक़द्दसीन की मजलिस में शामिल हैं वह अल्लाह से ख़ौफ़ खाते हैं। जो भी उसके इर्दगिर्द होते हैं उन पर उस की अज़मत और रोब छाया रहता है।
- 8 ऐ रब, ऐ लश्क़रों के ख़ुदा, कौन तेरी मानिंद है? ऐ रब, तू क़वी और अपनी वफ़ा से घिरा रहता है।
- 9 तू ठाठें मारते हुए समुंदर पर हुकूमत करता है। जब वह मौज़ज़न हो तो तू उसे थमा देता है।
- 10 तूने समुंदरी अज़दहे रहब को कुचल दिया, और वह मक़तूल की मानिंद बन गया। अपने क़वी बाज़ू से तूने अपने दुश्मनों को तित्तर-बित्तर कर दिया।
- 11 आसमानो-ज़मीन तेरे ही हैं। दुनिया और जो कुछ उसमें है तूने कायम किया।
- 12 तूने शिमालो-जून्ब को खलक किया। तबूर और हरमून तेरे नाम की खुशी में नारे लगाते हैं।
- 13 तेरा बाज़ू क़वी और तेरा हाथ ताक़तवर है। तेरा दहना हाथ अज़ीम काम करने के लिए तैयार है।
- 14 रास्ती और इनसाफ़ तेरे तख़्त की बुनियाद हैं। शफ़क़त और वफ़ा तेरे आगे आगे चलती हैं।
- 15 मुबारक है वह क़ौम जो तेरी खुशी के नारे लगा सके। ऐ रब, वह तेरे चेहरे के नूर में चलेंगे।
- 16 रोज़ाना वह तेरे नाम की खुशी मनाएँगे और तेरी रास्ती से सरफ़राज़ होंगे।
- 17 क्योंकि तू ही उनकी ताक़त की शान है, और तू अपने करम से हमें सरफ़राज़ करेगा।
- 18 क्योंकि हमारी ढाल रब ही की है, हमारा बादशाह इसराईल के कुद्दूस ही का है।
- 19 माज़ी में तू रोया में अपने ईमानदारों से हमकलाम हुआ। उस वक़्त तूने फ़रमाया, “मैंने एक सूरमे को ताक़त से नवाज़ा है, क़ौम में से एक को चुनकर सरफ़राज़ किया है।
- 20 मैंने अपने खादिम दाऊद को पा लिया और उसे अपने मुक़द्दस तेल से मसह किया है।
- 21 मेरा हाथ उसे कायम रखेगा, मेरा बाज़ू उसे तक्रवियत देगा।
- 22 दुश्मन उस पर ग़ालिब नहीं आएगा, शरीर उसे ख़ाक़ में नहीं मिलाएँगे।
- 23 उसके आगे आगे मैं उसके दुश्मनों को पाश पाश करूँगा। जो उससे नफ़रत रखते हैं उन्हें ज़मीन पर पटख़ दूँगा।
- 24 मेरी वफ़ा और मेरी शफ़क़त उसके साथ रहेंगी, मेरे नाम से वह सरफ़राज़ होगा।
- 25 मैं उसके हाथ को समुंदर पर और उसके दहने हाथ को दरियाओं पर हुकूमत करने दूँगा।
- 26 वह मुझे पुकारकर कहेगा, ‘तू मेरा बाप, मेरा ख़ुदा और मेरी नज़ात की चटान है।’
- 27 मैं उसे अपना पहलौठा और दुनिया का सबसे आला बादशाह बनाऊँगा।
- 28 मैं उसे हमेशा तक अपनी शफ़क़त से नवाज़ता रहूँगा, मेरा उसके साथ अहद क़भी तमाम नहीं होगा।
- 29 मैं उस की नसल हमेशा तक कायम रखूँगा, जब तक आसमान कायम है उसका तख़्त कायम रखूँगा।
- 30 अगर उसके बेटे मेरी शरीअत तर्क करके मेरे अहक़ाम पर अमल न करें,
- 31 अगर वह मेरे फ़रमानों की बेहुरमती करके मेरी हिदायत के मुताबिक़ ज़िंदगी न गुज़ारें
- 32 तो मैं लाठी लेकर उनकी तादीब करूँगा और मोहलक वबाओं से उनके गुनाहों की सज़ा दूँगा।
- 33 लेकिन मैं उसे अपनी शफ़क़त से महरूम नहीं करूँगा, अपनी वफ़ा का इनकार नहीं करूँगा।
- 34 न मैं अपने अहद की बेहुरमती करूँगा, न वह कुछ तबदील करूँगा जो मैंने फ़रमाया है।
- 35 मैंने एक बार सदा के लिए अपनी कुद्दूसियत की क़सम खाकर वादा किया है, और मैं दाऊद को क़भी धोका नहीं दूँगा।
- 36 उस की नसल अबद तक कायम रहेगी, उसका तख़्त आफ़ताब की तरह मेरे सामने खड़ा रहेगा।

37 चाँद की तरह वह हमेशा तक बरकरार रहेगा, और जो गवाह बादलों में है वह वफादार है।” (सिलाह)

38 लेकिन अब तूने अपने मसह किए हुए खादिम को ठुकराकर रद्द किया, तू उससे गज़बनाक हो गया है।

39 तूने अपने खादिम का अहद नामंजूर किया और उसका ताज खाक में मिलाकर उस की बेहुरमती की है।

40 तूने उस की तमाम फ़सीलें ढाकर उसके किलों को मलबे के ढेर बना दिया है।

41 जो भी वहाँ से गुज़रे वह उसे लूट लेता है। वह अपने पड़ोसियों के लिए मज़ाक का निशाना बन गया है।

42 तूने उसके मुखालिफ़ों का दहना हाथ सरफ़राज़ किया, उसके तमाम दुश्मनों को खुश कर दिया है।

43 तूने उस की तलवार की तेज़ी बेअसर करके उसे जंग में फ़तह पाने से रोक दिया है।

44 तूने उस की शान ख़त्म करके उसका तख़्त ज़मीन पर पटख़ दिया है।

45 तूने उस की जवानी के दिन मुख़तसर करके उसे ससवाई की चादर में लपेटा है। (सिलाह)

46 ऐ रब, कब तक? क्या तू अपने आपको हमेशा तक छुपाए रखेगा? क्या तेरा क़हर अबद तक आग की तरह भड़कता रहेगा?

47 याद रहे कि मेरी ज़िंदगी कितनी मुख़तसर है, कि तूने तमाम इन्सान कितने फ़ानी खलक किए हैं।

48 कौन है जिसका मौत से वास्ता न पड़े, कौन है जो हमेशा ज़िंदा रहे? कौन अपनी जान को मौत के कब्ज़े से बचाए रख सकता है? (सिलाह)

49 ऐ रब, तेरी वह पुरानी मेहरबानियाँ कहाँ हैं जिनका वादा तूने अपनी वफ़ा की कसम खाकर दाऊद से किया?

50 ऐ रब, अपने खादिमों की खज़ालत याद कर। मेरा सीना मुतअद्दिद कौमों की लान-तान से दुखता है,

51 क्योंकि ऐ रब, तेरे दुश्मनों ने मुझे लान-तान की, उन्होंने तेरे मसह किए हुए खादिम को हर क़दम पर लान-तान की है!

52 अबद तक रब की हम्द हो! आमीन, फिर आमीन।

चौथी किताब 90-106

90

फ़ानी इन्सान अल्लाह में पनाह ले

1 मर्दे-ख़ुदा मूसा की दुआ।

ऐ रब, पुश्त-दर-पुश्त तू हमारी पनाहगाह रहा है।

2 इससे पहले कि पहाड़ पैदा हुए और तू ज़मीन और दुनिया को वुजूद में लाया तू ही था। ऐ अल्लाह, तू अज़ल से अबद तक है।

3 तू इन्सान को दुबारा खाक होने देता है। तू फ़रमाता है, ‘ऐ आदमज़ादो, दुबारा खाक में मिल जाओ!’

4 क्योंकि तेरी नज़र में हज़ार साल कल के गुज़रे हुए दिन के बराबर या रात के एक पहर की मानिंद हैं।

5 तू लोगों को सैलाब की तरह बहा ले जाता है, वह नींद और उस घास की मानिंद हैं जो सुबह को फूट निकलती है।

6 वह सुबह को फूट निकलती और उगती है, लेकिन शाम को मुरझाकर सूख जाती है।

7 क्योंकि हम तेरे ग़ज़ब से फ़ना हो जाते और तेरे क़हर से हवासबाख़्ता हो जाते हैं।

8 तूने हमारी ख़ताओं को अपने सामने रखा, हमारे पोशीदा गुनाहों को अपने चेहरे के नूर में लाया है।

9 चुनौचे हमारे तमाम दिन तेरे क़हर के तहत घटते घटते ख़त्म हो जाते हैं। जब हम अपने सालों के इख़िताम पर पहुँचते हैं तो ज़िंदगी सर्द आह के बराबर ही होती है।

10 हमारी उम्र 70 साल या अगर ज़्यादा ताक़त हो तो 80 साल तक पहुँचती है, और जो दिन फ़ख़र का बाइस थे वह भी तकलीफ़देह और बेकार हैं। जल्द ही वह गुज़र जाते हैं, और हम परिदों की तरह उड़कर चले जाते हैं।

11 कौन तेरे ग़ज़ब की पूरी शिद्दत जानता है? कौन समझता है कि तेरा क़हर हमारी ख़ुदातरसी की कमी के मुताबिक़ ही है?

12 चुनौचे हमें हमारे दिनों का सहीह हिसाब करना सिखा ताकि हमारे दिल दानिशमंद हो जाएँ।

13 ऐ रब, दुबारा हमारी तरफ़ रूज़ फ़रमा! तू कब तक दूर रहेगा? अपने खादिमों पर तरस खा!

14 सुबह को हमें अपनी शफ़क़त से सेर कर! तब हम ज़िंदगी-भर बाग़ बाग़ होंगे और खुशी मनाएँगे।

15 हमें उतने ही दिन खुशी दिला जितने तूने हमें पस्त किया है, उतने ही साल जितने हमें दुख सहना पड़ा है।

16 अपने खादिमों पर अपने काम और उनकी औलाद पर अपनी अज़मत ज़ाहिर कर।

17 रब हमारा ख़ुदा हमें अपनी मेहरबानी दिखाए। हमारे हाथों का काम मज़बूत कर, हाँ हमारे हाथों का काम मज़बूत कर!

91

अल्लाह की पनाह में

- 1 जो अल्लाह तआला की पनाह में रहे वह कादिर-मुतलक के साय में सुकूनत करेगा।
- 2 मैं कहूँगा, “ऐ रब, तू मेरी पनाह और मेरा किला है, मेरा खुदा जिस पर मैं भरोसा रखता हूँ।”
- 3 क्योंकि वह तुझे चिड़ीमार के फंदे और मोहलक मरज़ से छुड़ाएगा।
- 4 वह तुझे अपने शाहपरो के नीचे ढाँप लेगा, और तू उसके परो तले पनाह ले सकेगा। उस की वफ़ादारी तेरी ढाल और पुशता रहेगी।
- 5 रात की दहशतों से खौफ़ मत खा, न उस तीर से जो दिन के वक़्त चले।
- 6 उस मोहलक मरज़ से दहशत मत खा जो तारीकी में घूमे फिरे, न उस वबाई बीमारी से जो दोपहर के वक़्त तबाही फैलाए।
- 7 गो तेरे साथ खड़े हज़ार अफ़राद हलाक हो जाएँ और तेरे दहने हाथ दस हज़ार मर जाएँ, लेकिन तू उस की ज़द में नहीं आएगा।
- 8 तू अपनी आँखों से इसका मुलाहज़ा करेगा, तू खुद बेदीनों की सज़ा देखेगा।
- 9 क्योंकि तूने कहा है, “रब मेरी पनाहगाह है,” तू अल्लाह तआला के साय में छुप गया है।
- 10 इसलिए तेरा किसी बला से वास्ता नहीं पड़ेगा, कोई आफ़त भी तेरे ख़ैमे के करीब फटकने नहीं पाएगी।
- 11 क्योंकि वह अपने फ़रिश्तों को हर राह पर तेरी हिफ़ाज़त करने का हुक्म देगा,
- 12 और वह तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे ताकि तेरे पाँवों को पत्थर से ठेस न लगे।
- 13 तू शेरबबरों और ज़हरीले साँपों पर क़दम रखेगा, तू जवान शेरों और अज़दहाओं को कुचल देगा।
- 14 रब फ़रमाता है, “चूँकि वह मुझसे लिपटा रहता है इसलिए मैं उसे बचाऊँगा। चूँकि वह मेरा नाम जानता है इसलिए मैं उसे महफूज़ रखूँगा।
- 15 वह मुझे पुकारेगा तो मैं उस की सुनूँगा। मुसीबत में मैं उसके साथ हूँगा। मैं उसे छुड़ाकर उस की इज़्ज़त करूँगा।
- 16 मैं उसे उम्र की दराज़ी बख़्शूँगा और उस पर अपनी नज़ात ज़ाहिर करूँगा।”

92

अल्लाह की सताइश करने की खुशी

- 1 जबूर। सबत के लिए गीत।
- रब का शुक्र करना भला है। ऐ अल्लाह तआला, तेरे नाम की मद्दहसराई करना भला है।
- 2 सुबह को तेरी शफ़क़त और रात को तेरी वफ़ा का एलान करना भला है,
- 3 ख़ासकर जब साथ साथ दस तारोंवाला साज़, सितार और सरोद बजते हैं।
- 4 क्योंकि ऐ रब, तूने मुझे अपने कामों से खुश किया है, और तेरे हाथों के काम देखकर मैं खुशी के नारे लगाता हूँ।
- 5 ऐ रब, तेरे काम कितने अज़ीम, तेरे खयालात कितने गहरे हैं।
- 6 नादान यह नहीं जानता, अहमक़ को इसकी समझ नहीं आती।
- 7 गो बेदीन घास की तरह फूट निकलते और बदकार सब फलते-फूलते हैं, लेकिन आखिरकार वह हमेशा के लिए हलाक हो जाएंगे।
- 8 मगर तू, ऐ रब, अबद तक सरबुलंद रहेगा।
- 9 क्योंकि तेरे दुश्मन, ऐ रब, तेरे दुश्मन यक़ीनन तबाह हो जाएंगे, बदकार सब तितर-बितर हो जाएंगे।
- 10 तूने मुझे जंगली बैल की-सी ताक़त देकर ताज़ा तेल से मसह किया है।
- 11 मेरी आँख अपने दुश्मनों की शिकस्त से और मेरे कान उन शरीरों के अंजाम से लुत्फ़अंदोज़ हुए हैं जो मेरे खिलाफ़ उठ खड़े हुए हैं।
- 12 रास्तबाज़ खज़ूर के दरख़्त की तरह फले-फूलेगा, वह लुबनान के देवदार के दरख़्त की तरह बढ़ेगा।
- 13 जो पौदे रब की सुकूनतगाह में लगाए गए हैं वह हमारे खुदा की बारगाहों में फलें-फूलेंगे।
- 14 वह बुढापे में भी फल लाएँगे और तरो-ताज़ा और हरे-भरे रहेंगे।
- 15 उस वक़्त भी वह एलान करेंगे, “रब रास्त है। वह मेरी चटान है, और उसमें नारास्ती नहीं होती।”

93

अल्लाह अबदी बादशाह है

1 रब बादशाह है, वह जलाल से मुलब्स है। रब जलाल से मुलब्स और कुदरत से कमरबस्ता है। यकीनन दुनिया मजबूत बुनियाद पर कायम है, और वह नहीं डगमगाएगी।

2 तेरा तख्त कदीम ज़माने से कायम है, तू अज़ल से मौजूद है।

3 ऐ रब, सैलाब गरज उठे, सैलाब शोर मचाकर गरज उठे, सैलाब ठाठें मारकर गरज उठे।

4 लेकिन एक है जो गहरे पानी के शोर से ज़्यादा ज़ोरावर, जो समुंदर की ठाठों से ज़्यादा ताकतवर है। रब जो बुलंदियों पर रहता है कहीं ज़्यादा अज़ीम है।

5 ऐ रब, तेरे अहकाम हर तरह से काबिले-एतमाद हैं। तेरा घर हमेशा तक कुदूसियत से आरास्ता रहेगा।

94

क़ौम पर जुल्म करनेवालों से रिहाई के लिए दुआ

1 ऐ रब, ऐ इंतक़ाम लेनेवाले ख़ुदा! ऐ इंतक़ाम लेनेवाले ख़ुदा, अपना नूर चमका।

2 ऐ दुनिया के मुंसिफ़, उठकर मग़सूरों को उनके आमाल की मुनासिब सज़ा दे।

3 ऐ रब, बेदीन कब तक, हाँ कब तक फ़तह के नारे लगाएँगे?

4 वह कुफ़र की बातें उगलते रहते, तमाम बदकार शेखी मारते रहते हैं।

5 ऐ रब, वह तेरी क़ौम को कुचल रहे, तेरी मौसूमी मिलकियत पर जुल्म कर रहे हैं।

6 बेवाओं और अजनबियों को वह मौत के घाट उतार रहे, यतीमों को क़त्ल कर रहे हैं।

7 वह कहते हैं, “यह रब को नज़र नहीं आता, याक़ूब का ख़ुदा ध्यान ही नहीं देता।”

8 ऐ क़ौम के नादानो, ध्यान दो! ऐ अहमक़ो, तुम्हें कब समझ आएगी?

9 जिसने कान बनाया, क्या वह नहीं सुनता? जिसने आँख को तश्कील दिया क्या वह नहीं देखता?

10 जो अक़वाम को तंबीह करता और इनसान को तालीम देता है क्या वह सज़ा नहीं देता?

11 रब इनसान के ख़यालात जानता है, वह जानता है कि वह दम-भर के ही है।

12 ऐ रब, मुबारक है वह जिसे तू तरबियत देता है, जिसे तू अपनी शरीअत की तालीम देता है

13 ताकि वह मुसीबत के दिनों से आराम पाए और उस वक़्त तक सुकून से ज़िंदगी गुज़ारे जब तक बेदीनों के लिए गढ़ा तैयार न हो।

14 क्योंकि रब अपनी क़ौम को रद्द नहीं करेगा, वह अपनी मौसूमी मिलकियत को तर्क नहीं करेगा।

15 फ़ैसले दुबारा इनसाफ़ पर मबनी होंगे, और तमाम दियानतदार दिल उस की पैरवी करेंगे।

16 कौन शरीरों के सामने मेरा दिफ़ा करेगा? कौन मेरे लिए बदकारों का सामना करेगा?

17 अगर रब मेरा सहारा न होता तो मेरी जान जल्द ही ख़ामोशी के मुल्क में जा बसती।

18 ऐ रब, जब मैं बोला, “मेरा पाँव डगमगाने लगा है” तो तेरी शफ़क़त ने मुझे सँभाला।

19 जब तशवीशनाक ख़यालात मुझे बेचैन करने लगे तो तेरी तसल्लियों ने मेरी जान को ताज़ादम किया।

20 ऐ अल्लाह, क्या तबाही की हुकूमत तेरे साथ मुतहिद हो सकती है, ऐसी हुकूमत जो अपने फ़रमानों से जुल्म करती है? हरगिज़ नहीं!

21 वह रास्तबाज़ की जान लेने के लिए आपस में मिल जाते और बेक़सूरों को क़ातिल ठहराते हैं।

22 लेकिन रब मेरा क़िला बन गया है, और मेरा ख़ुदा मेरी पनाह की चटान साबित हुआ है।

23 वह उनकी नाइनसाफ़ी उन पर वापस आने देगा और उनकी शरीर हरकतों के जवाब में उन्हें तबाह करेगा। रब हमारा ख़ुदा उन्हें नेस्त करेगा।

95

परस्तिश और फ़रमाँबरदारी की दावत

1 आओ, हम शादियाना बजाकर रब की मद्दहसराई करें, ख़ुशी के नारे लगाकर अपनी नज़ात की चटान की तमज़ीद करें!

2 आओ, हम शुक्रगुज़ारी के साथ उसके हुज़ूर आएँ, गीत गाकर उस की सताइश करें।

3 क्योंकि रब अज़ीम ख़ुदा और तमाम माबूदों पर अज़ीम बादशाह है।

- 4 उसके हाथ में ज़मीन की गहराइयाँ हैं, और पहाड़ की बुलंदियाँ भी उसी की हैं।
- 5 समुंदर उसका है, क्योंकि उसने उसे खलक किया। खुशकी उस की है, क्योंकि उसके हाथों ने उसे तश्कील दिया।
- 6 आओ हम सिजदा करें और रब अपने खालिक के सामने झुककर घुटने टेकें।
- 7 क्योंकि वह हमारा खुदा है और हम उस की चरागाह की क्रीम और उसके हाथ की भेड़ें हैं। अगर तुम आज उस की आवाज़ सुनो
- 8 “तो अपने दिलों को सख्त न करो जिस तरह मरीबा में हुआ, जिस तरह रेगिस्तान में मस्सा में हुआ।
- 9 वहाँ तुम्हारे बापदादा ने मुझे आजमाया और जाँचा, हालाँकि उन्होंने मेरे काम देख लिए थे।
- 10 चालीस साल मैं उस नसल से धिन खाता रहा। मैं बोला, ‘उन्के दिल हमेशा सहीह राह से हट जाते हैं, और वह मेरी राहें नहीं जानते।’
- 11 अपने ग़ज़ब में मैंने कसम खाई, ‘यह कभी उस मुल्क में दाखिल नहीं होंगे जहाँ मैं उन्हें सुकून देता।’”

96

दुनिया का खालिक और मुंसिफ़

- 1 रब की तमज़ीद में नया गीत गाओ, ऐ पूरी दुनिया, रब की मद्दहसराई करो।
- 2 रब की तमज़ीद में गीत गाओ, उसके नाम की सताइश करो, रोज़ बरोज़ उस की नजात की खुशखबरी सुनाओ।
- 3 क्रीमों में उसका जलाल और तमाम उम्मतों में उसके अजायब बयान करो।
- 4 क्योंकि रब अज़ीम और सताइश के बहुत लायक है। वह तमाम माबूदों से महीब है।
- 5 क्योंकि दीगर क्रीमों के तमाम माबूद बूत ही हैं जबकि रब ने आसमान को बनाया।
- 6 उसके हुज़ूर शानो-शौकत, उसके मक़दिस में कुदरत और जलाल है।
- 7 ऐ क्रीमों के कबीलो, रब की तमज़ीद करो, रब के जलाल और कुदरत की सताइश करो।
- 8 रब के नाम को जलाल दो। कुरबानी लेकर उस की बारगाहों में दाखिल हो जाओ।
- 9 मुक़द्दस लिबास से आरास्ता होकर रब को सिजदा करो। पूरी दुनिया उसके सामने लरज़ उठे।
- 10 क्रीमों में एलान करो, “रब ही बादशाह है! यकीनन दुनिया मज़बूती से कायम है और नहीं डगमगाएगी। वह इनसाफ़ से क्रीमों की अदालत करेगा।”
- 11 आसमान खुश हो, ज़मीन जशन मनाए! समुंदर और जो कुछ उसमें है खुशी से गरज़ उठे।
- 12 मैदान और जो कुछ उसमें है बाग बाग हो। फिर जंगल के दरख़्त शादियाना बजाएंगे।
- 13 वह रब के सामने शादियाना बजाएंगे, क्योंकि वह आ रहा है, वह दुनिया की अदालत करने आ रहा है। वह इनसाफ़ से दुनिया की अदालत करेगा और अपनी सदाक़त से अक़वाम का फ़ैसला करेगा।

97

अल्लाह की सलतनत पर खुशी

- 1 रब बादशाह है! ज़मीन जशन मनाए, साहिली इलाक़े दूर दूर तक खुश हों।
- 2 वह बादलों और गहरे अधीरे से घिरा रहता है, रास्ती और इनसाफ़ उसके तख़्त की बुनियाद हैं।
- 3 आग उसके आगे आगे भड़ककर चारों तरफ़ उसके दुश्मनों को भस्म कर देती है।
- 4 उस की कड़कती बिजलियों ने दुनिया को रौशन कर दिया तो ज़मीन यह देखकर पेचो-ताब खाने लगी।
- 5 रब के आगे आगे, हॉ पूरी दुनिया के मालिक के आगे आगे पहाड़ मोम की तरह पिघल गए।
- 6 आसमानों ने उस की रास्ती का एलान किया, और तमाम क्रीमों ने उसका जलाल देखा।
- 7 तमाम बुतपरस्त, हॉ सब जो बुतों पर फ़ख़र करते हैं शरमिंदा हों। ऐ तमाम माबूदो, उसे सिजदा करो!
- 8 कोहे-सियून् सुनकर खुश हुआ। ऐ रब, तेरे फ़ैसलों के बाइस यहदाह की बेटियाँ * बाग बाग हुई।
- 9 क्योंकि तू ऐ रब, पूरी दुनिया पर सबसे आला है, तू तमाम माबूदों से सरबुलंद है।
- 10 तुम जो रब से मुहब्बत रखते हो, बुराई से नफ़रत करो! रब अपने इमानदारों की जान को महफूज़ रखता है, वह उन्हें बेदीनों के कब्ज़े से छुड़ाता है।
- 11 रास्तबाज़ के लिए नूर का और दिल के दियानतदारों के लिए शादमानी का बीज बोया गया है।
- 12 ऐ रास्तबाज़ो, रब से खुश हो, उसके मुक़द्दस नाम की सताइश करो।

* 97:8 एक और मुमकिन तरज़ुमा : यहदाह की आबादियाँ।

98

पूरी दुनिया का शाही मुंसिफ

- 1 रब की तमजीद में नया गीत गाओ, क्योंकि उसने मोजिजे किए हैं। अपने दहने हाथ और मुकद्दस बाजू से उसने नजात दी है।
- 2 रब ने अपनी नजात का एलान किया और अपनी रास्ती कौमों के रूबू ज़ाहिर की है।
- 3 उसने इसराईल के लिए अपनी शफ़क़त और वफ़ा याद की है। दुनिया की इंतहाओं ने सब हमारे खुदा की नजात देखी है।
- 4 ऐ पूरी दुनिया, नारे लगाकर रब की मद्हसराई करो! आपे में न समाओ और जशन मनाकर हम्द के गीत गाओ!
- 5 सरोद बजाकर रब की मद्हसराई करो, सरोद और गीत से उस की सताइश करो।
- 6 तुरम और नरसिंगा फूँककर रब बादशाह के हुज़ूर खुशी के नारे लगाओ!
- 7 समुंदर और जो कुछ उसमें है, दुनिया और उसके बाशिंदे खुशी से गरज उठें।
- 8 दरिया तालियाँ बजाएँ, पहाड़ मिलकर खुशी मनाएँ,
- 9 वह रब के सामने खुशी मनाएँ। क्योंकि वह ज़मीन की अदालत करने आ रहा है। वह इनसाफ़ से दुनिया की अदालत करेगा, रास्ती से कौमों का फ़ैसला करेगा।

99

कुद्दूस खुदा

- 1 रब बादशाह है, अक़वाम लरज़ उठें! वह कस्बी फ़रिशतों के दरमियान तख़्तनशीन है, दुनिया डगमगाए!
- 2 कोहे-सियूँ पर रब अज़ीम है, तमाम अक़वाम पर सरबुलंद है।
- 3 वह तेरे अज़ीम और पुरजलाल नाम की सताइश करें, क्योंकि वह कुद्दूस है।
- 4 वह बादशाह की कुदरत की तमजीद करें जो इनसाफ़ से प्यार करता है। ऐ अल्लाह, तू ही ने अदल कायम किया, तू ही ने याक़ूब में इनसाफ़ और रास्ती पैदा की है।
- 5 रब हमारे खुदा की ताज़ीम करो, उसके पाँवों की चौकी के सामने सिजदा करो, क्योंकि वह कुद्दूस है।
- 6 मूसा और हारून उसके इमामों में से थे। समुएल भी उनमें से था जो उसका नाम पुकारते थे। उन्होंने रब को पुकारा, और उसने उनकी सुनी।
- 7 वह बादल के सतून में से उनसे हमकलाम हुआ, और वह उन अहकाम और फ़रमानों के ताबे रहे जो उसने उन्हें दिए थे।
- 8 ऐ रब हमारे खुदा, तूने उनकी सुनी। तू जो अल्लाह है उन्हें मुआफ़ करता रहा, अलबत्ता उन्हें उनकी बुरी हरकतों की सज़ा भी देता रहा।
- 9 रब हमारे खुदा की ताज़ीम करो और उसके मुकद्दस पहाड़ पर सिजदा करो, क्योंकि रब हमारा खुदा कुद्दूस है।

100

अल्लाह की सताइश करो!

- 1 शक्रगुजारी की कुरबानी के लिए जबूर।
- ऐ पूरी दुनिया, खुशी के नारे लगाकर रब की मद्हसराई करो!
- 2 खुशी से रब की इबादत करो, जशन मनाते हुए उसके हुज़ूर आओ!
- 3 जान लो कि रब ही खुदा है। उसी ने हमें ख़लक़ किया, और हम उसके हैं, उस की कौम और उस की चरागाह की भेड़ें।
- 4 शक्र करते हुए उसके दरवाज़ों में दाख़िल हो, सताइश करते हुए उस की बारगाहों में हाज़िर हो। उसका शक्र करो, उसके नाम की तमजीद करो!
- 5 क्योंकि रब भला है। उस की शफ़क़त अबदी है, और उस की वफ़ादारी पुश्त-दर-पुश्त कायम है।

101

बादशाह की हुकूमत कैसी होनी चाहिए?

- 1 दाऊद का जबूर।
- मैं शफ़क़त और इनसाफ़ का गीत गाऊँगा। ऐ रब, मैं तेरी मद्हसराई करूँगा।
- 2 मैं बड़ी एहतियात से बेइलज़ाम राह पर चलूँगा। लेकिन तू कब मेरे पास आएगा? मैं खुलूसदिली से अपने घर में ज़िंदगी गुज़ारूँगा।
- 3 मैं शरारत की बात अपने सामने नहीं रखता और बुरी हरकतों से नफ़रत करता हूँ। ऐसी चीज़ें मेरे साथ लिपट न जाएँ।

- 4 झूटा दिल मुझसे दूर रहे। मैं बुराई को जानना ही नहीं चाहता।
 5 जो चुपके से अपने पड़ोसी पर तोहमत लगाए उसे मैं खामोश कराऊँगा, जिसकी आँखें मगासर और दिल मुतकब्बिर हो उसे बरदाश्त नहीं करूँगा।
 6 मेरी आँखें मुल्क के वफादारों पर लगी रहती हैं ताकि वह मेरे साथ रहें। जो बेइलजाम राह पर चले वही मेरी खिदमत करे।
 7 धोकेबाज़ मेरे घर में न ठहरे, झूट बोलनेवाला मेरी मौजूदगी में क़ायम न रहे।
 8 हर सुबह को मैं मुल्क के तमाम बेदीनों को खामोश कराऊँगा ताकि तमाम बदकारों को रब के शहर में से मिटाया जाए।

102

सिय्यून की बहाली के लिए दुआ (तौबा का पाँचवाँ जबूर)

- 1 मुसीबतजदा की दुआ, उस वक़्त जब वह निढाल होकर रब के सामने अपनी आहो-ज़ारी उंडेल देता है।
 ऐ रब, मेरी दुआ सुन! मदद के लिए मेरी आहें तेरे हुज़ूर पहुँचें।
 2 जब मैं मुसीबत में हूँ तो अपना चेहरा मुझसे छुपाए न रख बल्कि अपना कान मेरी तरफ़ झुका। जब मैं पुकारूँ तो जल्द ही मेरी सुन।
 3 क्योंकि मेरे दिन धुँएँ की तरह गायब हो रहे हैं, मेरी हड्डियाँ कोयलों की तरह दहक रही हैं।
 4 मेरा दिल घास की तरह झुलसकर सूख गया है, और मैं रोटी खाना भी भूल गया हूँ।
 5 आहो-ज़ारी करते करते मेरा जिस्म सुकड़ गया है, जिल्द और हड्डियाँ ही रह गई हैं।
 6 मैं रेगिस्तान में दशती उल्लू और खंडरात में छोटे उल्लू की मानिंद हूँ।
 7 मैं बिस्तर पर जागता रहता हूँ, छत पर तनहा परिदे की मानिंद हूँ।
 8 दिन-भर मेरे दुश्मन मुझे लान-तान करते हैं। जो मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं वह मेरा नाम लेकर लानत करते हैं।
 9 राख मेरी रोटी है, और जो कुछ पीता हूँ उसमें मेरे आँसू मिले होते हैं।
 10 क्योंकि मुझ पर तेरी लानत और तेरा ग़ज़ब नाज़िल हुआ है। तूने मुझे उठाकर ज़मीन पर पटख दिया है।
 11 मेरे दिन शाम के ढलनेवाले साय की मानिंद हैं। मैं घास की तरह सूख रहा हूँ।
 12 लेकिन तू ऐ रब अबद तक तख़्तनशीन है, तेरा नाम पुश्त-दर-पुश्त क़ायम रहता है।
 13 अब आ, कोहे-सिय्यून पर रहम कर। क्योंकि उस पर मेहरबानी करने का वक़्त आ गया है, मुक़र्रा वक़्त आ गया है।
 14 क्योंकि तेरे खादिमों को उसका एक एक पत्थर प्यारा है, और वह उसके मलबे पर तरस खाते हैं।
 15 तब ही कौमें रब के नाम से डरेगी, और दुनिया के तमाम बादशाह तेरे जलाल का खौफ़ खाएँगे।
 16 क्योंकि रब सिय्यून को अज़ सरे-नौ तामीर करेगा, वह अपने पूरे जलाल के साथ ज़ाहिर हो जाएगा।
 17 मुफ़लिसों की दुआ पर वह ध्यान देगा और उनकी फ़रियादों को हक़ीर नहीं जानेगा।
 18 आनेवाली नसल के लिए यह क़लमबंद हो जाए ताकि जो कौम अभी पैदा नहीं हुई वह रब की सताइश करे।
 19 क्योंकि रब ने अपने मक़दिस की बुलंदियों से झाँका है, उसने आसमान से ज़मीन पर नज़र डाली है
 20 ताकि कैदियों की आहो-ज़ारी सुने और मरनेवालों की जंजीरें खोले।
 21 क्योंकि उस की मरज़ी है कि वह कोहे-सिय्यून पर रब के नाम का ए़लान करें और यरूशलम में उस की सताइश करें,
 22 कि कौमें और सलतनतें मिलकर जमा हो जाएँ और रब की इबादत करें।
 23 रास्ते में ही अल्लाह ने मेरी ताक़त तोड़कर मेरे दिन मुख़तसर कर दिए हैं।
 24 मैं बोला, “ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे ज़िंदों के मुल्क से दूर न कर, मेरी ज़िंदगी तो अधूरी रह गई है। लेकिन तेरे साल पुश्त-दर-पुश्त क़ायम रहते हैं।
 25 तूने क़दीम ज़माने में ज़मीन की बुनियाद रखी, और तेरे ही हाथों ने आसमानों को बनाया।
 26 यह तो तबाह हो जाएँगे, लेकिन तू क़ायम रहेगा। यह सब कपड़े की तरह घिस फट जाएँगे। तू उन्हें पुराने लिबास की तरह बदल देगा, और वह जाते रहेंगे।
 27 लेकिन तू वही का वही रहता है, और तेरी ज़िंदगी कभी ख़त्म नहीं होती।
 28 तेरे खादिमों के फ़रजंद तेरे हुज़ूर बसते रहेंगे, और उनकी औलाद तेरे सामने क़ायम रहेगी।”

103

रब की शफ़क़त की सताइश

- 1 दाऊद का जबूर।
ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर! मेरा रगो-रेशा उसके कुदूस नाम की हम्द करे!
- 2 ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर और जो कुछ उसने तेरे लिए किया है उसे भूल न जा।
- 3 क्योंकि वह तेरे तमाम गुनाहों को मुआफ़ करता, तुझे तमाम बीमारियों से शफ़ा देता है।
- 4 वह एवज़ाना देकर तेरी जान को मौत के गढे से छुड़ा लेता, तेरे सर को अपनी शफ़क़त और रहमत के ताज से आरास्ता करता है।
- 5 वह तेरी ज़िंदगी को अच्छी चीज़ों से सेर करता है, और तू दुबारा जवान होकर उकाब की-सी तकवियत पाता है।
- 6 रब तमाम मज़लूमों के लिए रास्ती और इनसाफ़ कायम करता है।
- 7 उसने अपनी राहें मूसा पर और अपने अज़ीम काम इसराईलियों पर ज़ाहिर किए।
- 8 रब रहीम और मेहरबान है, वह तहम्मूल और शफ़क़त से भरपूर है।
- 9 न वह हमेशा डाँटता रहेगा, न अबद तक नाराज़ रहेगा।
- 10 न वह हमारी ख़ताओं के मुताबिक़ सज़ा देता, न हमारे गुनाहों का मुनासिब अज़्र देता है।
- 11 क्योंकि जितना बलुंद आसमान है, उतनी ही अज़ीम उस की शफ़क़त उन पर है जो उसका ख़ौफ़ मानते हैं।
- 12 जितनी दूर मशरिक़ मगरिब से है उतना ही उसने हमारे कुसूर हमसे दूर कर दिए हैं।
- 13 जिस तरह बाप अपने बच्चों पर तरस खाता है उसी तरह रब उन पर तरस खाता है जो उसका ख़ौफ़ मानते हैं।
- 14 क्योंकि वह हमारी साख़्त जानता है, उसे याद है कि हम ख़ाक़ ही हैं।
- 15 इनसान के दिन घास की मानिंद हैं, और वह जंगली फूल की तरह ही फलता-फूलता है।
- 16 जब उस पर से हवा गुज़रे तो वह नहीं रहता, और उसके नामो-निशान का भी पता नहीं चलता।
- 17 लेकिन जो रब का ख़ौफ़ मानें उन पर वह हमेशा तक मेहरबानी करेगा, वह अपनी रास्ती उनके पोतों और नवासों पर भी ज़ाहिर करेगा।
- 18 शर्त यह है कि वह उसके अहद के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़रें और ध्यान से उसके अहक़ाम पर अमल करें।
- 19 रब ने आसमान पर अपना तख़्त कायम किया है, और उस की बादशाही सब पर हुक्मत करती है।
- 20 ऐ रब के फ़रिशतो, उसके ताक़तवर सूरमाओ, जो उसके फ़रमान पूरे करते हो ताकि उसका कलाम माना जाए, रब की सताइश करो!
- 21 ऐ तमाम लशक़रो, तुम सब जो उसके खादिम हो और उस की मरज़ी पूरी करते हो, रब की सताइश करो!
- 22 तुम सब जिन्हें उसने बनाया, रब की सताइश करो! उस की सलतनत की हर जगह पर उस की तमज़ीद करो। ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर!

104

खालिक की हम्दो-सना

- 1 ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर! ऐ रब मेरे ख़ुदा, तू निहायत ही अज़ीम है, तू जाहो-जलाल से आरास्ता है।
- 2 तेरी चादर नूर है जिसे तू ओढे रहता है। तू आसमान को ख़ैमे की तरह तानकर
- 3 अपना बालाख़ाना उसके पानी के बीच में तामीर करता है। बादल तेरा रथ है, और तू हवा के परों पर सवार होता है।
- 4 तू हवाओं को अपने कासिद और आग के शोलों को अपने खादिम बना देता है।
- 5 तूने ज़मीन को मज़बूत बुनियाद पर रखा ताकि वह कभी न डगमगाए।
- 6 सैलाब ने उसे लिबास की तरह ढाँप दिया, और पानी पहाड़ों के ऊपर ही खड़ा हुआ।
- 7 लेकिन तेरे डाँटने पर पानी फ़रार हुआ, तेरी गरजती आवाज़ सुनकर वह एकदम भाग गया।
- 8 तब पहाड़ ऊँचे हुए और वादियाँ उन जगहों पर उतर आईं जो तूने उनके लिए मुकर्रर की थीं।
- 9 तूने एक हद बाँधी जिससे पानी बढ़ नहीं सकता। आइंदा वह कभी पूरी ज़मीन को नहीं ढाँकने का।
- 10 तू वादियों में चश्मे फूटने देता है, और वह पहाड़ों में से बह निकलते हैं।
- 11 बहते बहते वह खुले मैदान के तमाम जानवरों को पानी पिलाते हैं। जंगली गधे आकर अपनी प्यास बुझाते हैं।
- 12 परिदे उनके किनारों पर बसेरा करते, और उनकी चहचहाती आवाज़ें घने बेल-बूटों में से सुनाई देती हैं।
- 13 तू अपने बालाख़ाने से पहाड़ों को तर करता है, और ज़मीन तेरे हाथ से सेर होकर हर तरह का फल लाती है।
- 14 तू जानवरों के लिए घास फूटने और इनसान के लिए पौदे उगने देता है ताकि वह ज़मीन की काशतकारी करके रोटी हासिल करे।
- 15 तेरी मैं इनसान का दिल ख़ुश करती, तेरा तेल उसका चेहरा रौशन कर देता, तेरी रोटी उसका दिल मज़बूत करती है।

- 16 रब के दरख्त यानी लुबनान में उसके लगाए हुए देवदार के दरख्त सेराब रहते हैं।
 17 परिदे उनमें अपने घोंसले बना लेते हैं, और लकलक जूनीपर के दरख्त में अपना आशियाना।
 18 पहाड़ों की बुलंदियों पर पहाड़ी बकरों का राज है, चटानों में बिज्जू पनाह लेते हैं।
 19 तूने साल को महीनों में तकसीम करने के लिए चाँद बनाया, और सूरज को गुरुब होने के औकात मालूम हैं।
 20 तू अंधेरा फैलने देता है तो दिन ढल जाता है और जंगली जानवर हरकत में आ जाते हैं।
 21 जवान शेरबबर दहाड़कर शिकार के पीछे पड़ जाते और अल्लाह से अपनी खुराक का मुतालबा करते हैं।
 22 फिर सूरज तुलू होने लगता है, और वह खिसककर अपने भटों में छुप जाते हैं।
 23 उस वक़्त इनसान घर से निकलकर अपने काम में लग जाता और शाम तक मसरूफ़ रहता है।
- 24 ऐ रब, तेरे अनगिनत काम कितने अज़ीम हैं! तूने हर एक को हिकमत से बनाया, और ज़मीन तेरी मख़लूक़ात से भरी पड़ी है।
- 25 समुंदर को देखो, वह कितना बड़ा और वसी है। उसमें बेशुमार जानदार हैं, बड़े भी और छोटे भी।
 26 उस की सतह पर जहाज़ इधर उधर सफ़र करते हैं, उस की गहराइयों में लिवियातान फिरता है, वह अज़दहा जिसे तूने उसमें उछलने कूदने के लिए तश्कील दिया था।
 27 सब तेरे इंतज़ार में रहते हैं कि तू उन्हें वक़्त पर खाना मुहैया करे।
 28 तू उनमें खुराक तकसीम करता है तो वह उसे इक़्ठा करते हैं। तू अपनी मुड़ी खोलता है तो वह अच्छी चीज़ों से सेर हो जाते हैं।
 29 जब तू अपना चेहरा छुपा लेता है तो उनके हवास गुम हो जाते हैं। जब तू उनका दम निकाल लेता है तो वह नेस्त होकर दुबारा खाक में मिल जाते हैं।
 30 तू अपना दम भेज देता है तो वह पैदा हो जाते हैं। तू ही रूए-ज़मीन को बहाल करता है।
- 31 रब का जलाल अबद तक कायम रहे! रब अपने काम की खुशी मनाए!
 32 वह ज़मीन पर नज़र डालता है तो वह लरज़ उठती है। वह पहाड़ों को छू देता है तो वह धुआँ छोड़ते हैं।
 33 मैं उम्र-भर रब की तमज़ीद में गीत गाऊँगा, जब तक ज़िंदा हूँ अपने खुदा की मद्हसराई करूँगा।
 34 मेरी बात उसे पसंद आए! मैं रब से कितना खुश हूँ!
 35 गुनाहगार ज़मीन से मिट जाएँ और बेदीन नेस्तो-नाबूद हो जाएँ। ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर! रब की हम्द हो!

105

माज़ी में रब की नज़ात की हम्द

- 1 रब का शुक्र करो और उसका नाम पुकारो! अक़वाम में उसके कामों का एलान करो।
 2 साज़ बजाकर उस की मद्हसराई करो। उसके तमाम अजायब के बारे में लोगों को बताओ।
 3 उसके मुक़द्दस नाम पर फ़ख़र करो। रब के तालिब दिल से खुश हों।
 4 रब और उस की कुदरत की दरियाफ़्त करो, हर वक़्त उसके चेहरे के तालिब रहो।
 5 जो मोजिज़े उसने किए उन्हें याद करो। उसके इलाही निशान और उसके मुँह के फ़ैसले दोहराते रहो।
 6 तुम जो उसके खादिम इब्राहीम की औलाद और याकूब के फ़रज़द हो, जो उसके बरगुज़ीदा लोग हो, तुम्हें सब कुछ याद रहे!
 7 वही रब हमारा खुदा है, वही पूरी दुनिया की अदालत करता है।
 8 वह हमेशा अपने अहद का खयाल रखता है, उस कलाम का जो उसने हज़ार पुश्तों के लिए फ़रमाया था।
 9 यह वह अहद है जो उसने इब्राहीम से बाँधा, वह वादा जो उसने क़सम खाकर इसहाक़ से किया था।
 10 उसने उसे याकूब के लिए कायम किया ताकि वह उसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारे, उसने तसदीक़ की कि यह मेरा इसराईल से अबदी अहद है।
 11 साथ साथ उसने फ़रमाया, “मैं तुझे मुल्के-कनान दूँगा। यह तेरी मीरास का हिस्सा होगा।”
- 12 उस वक़्त वह तादाद में कम और थोड़े ही थे बल्कि मुल्क में अज़नबी ही थे।
 13 अब तक वह मुख़्तलिफ़ क़ौमों और सलतनतों में घुमते-फिरते थे।
 14 लेकिन अल्लाह ने उन पर किसी को ज़ुल्म करने न दिया, और उनकी खातिर उसने बादशाहों को डाँटा,
 15 “मेरे मसह किए हुए खादिमों को मत छेड़ना, मेरे नबियों को नुक़सान मत पहुँचाना।”

16 फिर अल्लाह ने मुल्के-कनान में काल पड़ने दिया और खुराक का हर जखीरा खत्म किया।
 17 लेकिन उसने उनके आगे आगे एक आदमी को मिसर भेजा यानी यूसुफ को जो गुलाम बनकर फरोख्त हुआ।
 18 उसके पाँव और गरदन जंजीरों में जकड़े रहे
 19 जब तक वह कुछ पूरा न हुआ जिसकी पेशगोई यूसुफ ने की थी, जब तक रब के फरमान ने उस की तसदीक न की।
 20 तब मिसरी बादशाह ने अपने बंदों को भेजकर उसे रिहाई दी, कौमों के हुक्मरान ने उसे आजाद किया।
 21 उसने उसे अपने घराने पर निगरान और अपनी तमाम मिलकियत पर हुक्मरान मुकर्रर किया।
 22 यूसुफ को फिरौन के रईसों को अपनी मरज़ी के मुताबिक चलाने और मिसरी बुजुर्गों को हिकमत की तालीम देने की ज़िम्मादारी भी दी गई।

23 फिर याकूब का खानदान मिसर आया, और इसराईल हाम के मुल्क में अजनबी की हैसियत से बसने लगा।
 24 वहाँ अल्लाह ने अपनी कौम को बहुत फलने फूलने दिया, उसने उसे उसके दुश्मनों से ज़्यादा ताकतवर बना दिया।
 25 साथ साथ उसने मिसरियों का रवैया बदल दिया, तो वह उस की कौम इसराईल से नफरत करके रब के खादिमों से चालाकियाँ करने लगे।

26 तब अल्लाह ने अपने खादिम मूसा और अपने चुने हुए बंदे हारून को मिसर में भेजा।
 27 मुल्के-हाम में आकर उन्होंने उनके दरमियान अल्लाह के इलाही निशान और मोजिज़े दिखाए।
 28 अल्लाह के हुक्म पर मिसर पर तारीकी छा गई, मुल्क में अंधेरा हो गया। लेकिन उन्होंने उसके फरमान न माने।
 29 उसने उनका पानी खून में बदलकर उनकी मछलियों को मरवा दिया।
 30 मिसर के मुल्क पर मेंढकों के गोल छा गए जो उनके हुक्मरानों के अंदरूनी कमरों तक पहुँच गए।
 31 अल्लाह के हुक्म पर मिसर के पूरे इलाके में मक्खियों और जुओं के गोल फैल गए।
 32 बारिश की बजाए उसने उनके मुल्क पर ओले और दहकते शोले बरसाए।
 33 उसने उनकी अंगूर की बेलें और अंजीर के दरख्त तबाह कर दिए, उनके इलाके के दरख्त तोड़ डाले।
 34 उसके हुक्म पर अनगिनत टिट्टियाँ अपने बच्चों समेत मुल्क पर हमलाआवर हुईं।
 35 वह उनके मुल्क की तमाम हरियाली और उनके खेतों की तमाम पैदावार चट कर गई।
 36 फिर अल्लाह ने मिसर में तमाम पहलौठों को मार डाला, उनकी मरदानगी का पहला फल तमाम हुआ।
 37 इसके बाद वह इसराईल को चाँदी और सोने से नवाज़कर मिसर से निकाल लाया। उस वक़्त उसके कबीलों में ठोकर खानेवाला एक भी नहीं था।
 38 मिसर खुश था जब वह रवाना हुए, क्योंकि उन पर इसराईल की दहशत छा गई थी।
 39 दिन को अल्लाह ने उनके ऊपर बादल कम्बल की तरह बिछा दिया, रात को आग मुहैया की ताकि रौशनी हो।
 40 जब उन्होंने खुराक माँगी तो उसने उन्हें बटेर पहुँचाकर आसमानी रोटी से सेर किया।
 41 उसने चटान को चाक किया तो पानी फूट निकला, और रेगिस्तान में पानी की नदियाँ बहने लगीं।

42 क्योंकि उसने उस मुकद्दस वादे का खयाल रखा जो उसने अपने खादिम इब्राहीम से किया था।
 43 चुनौचे वह अपनी चुनी हुई कौम को मिसर से निकाल लाया, और वह खुशी और शादमानी के नारे लगाकर निकल आए।
 44 उसने उन्हें दीगर अक़वाम के ममालिक दिए, और उन्होंने दीगर उम्मतों की मेहनत के फल पर कब्ज़ा किया।
 45 क्योंकि वह चाहता था कि वह उसके अहकाम और हिदायात के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारे। रब की हम्द हो।

106

अल्लाह का फ़ज़ल और इसराईल की सरकशी

1 रब की हम्द हो! रब का शुक्र करो, क्योंकि वह भला है, और उस की शफ़क़त अबदी है।
 2 कौन रब के तमाम अज़ीम काम सुना सकता, कौन उस की मुनासिब तमज़ीद कर सकता है?
 3 मुबारक हैं वह जो इनसाफ़ कायम रखते, जो हर वक़्त रास्त काम करते हैं।
 4 ऐ रब, अपनी कौम पर मेहरबानी करते वक़्त मेरा खयाल रख, नजात देते वक़्त मेरी भी मदद कर
 5 ताकि मैं तेरे चुने हुए लोगों की खुशहाली देख सकूँ और तेरी कौम की खुशी में शरीक होकर तेरी मीरास के साथ सताइश कर सकूँ।

6 हमने अपने बापदादा की तरह गुनाह किया है, हमसे नाइनसाफी और बेदीनी सरजद हुई है।

7 जब हमारे बापदादा मिसर में थे तो उन्हें तेरे मोजिजों की समझ न आई और तेरी मुतअदिद मेहरबानियाँ याद न रहीं बल्कि वह समुंदर यानी बहरे-कुलजुम पर सरकश हुए।

8 तो भी उसने उन्हें अपने नाम की खातिर बचाया, क्योंकि वह अपनी कुदरत का इजहार करना चाहता था।

9 उसने बहरे-कुलजुम को झिड़का तो वह खुशक हो गया। उसने उन्हें समुंदर की गहराइयों में से यों गुजरने दिया जिस तरह रेगिस्तान में से।

10 उसने उन्हें नफरत करनेवाले के हाथ से छुड़ाया और एवजाना देकर दुश्मन के हाथ से रिहा किया।

11 उनके मुखालिफ़ पानी में डूब गए। एक भी न बचा।

12 तब उन्होंने अल्लाह के फ़रमानों पर ईमान लाकर उस की मद्दहसराई की।

13 लेकिन जल्द ही वह उसके काम भूल गए। वह उस की मरज़ी का इंतज़ार करने के लिए तैयार न थे।

14 रेगिस्तान में शदीद लालच में आकर उन्होंने वहीं बयाबान में अल्लाह को आजमाया।

15 तब उसने उनकी दरखास्त पूरी की, लेकिन साथ साथ मोहलक वबा भी उनमें फैला दी।

16 खैमागाह में वह मूसा और रब के मुकद्दस इमाम हारून से हसद करने लगे।

17 तब ज़मीन खुल गई, और उसने दातन को हड़प कर लिया, अबीराम के जत्थे को अपने अंदर दफन कर लिया।

18 आग उनके जत्थे में भड़क उठी, और बेदीन नज़रे-आतिश हुए।

19 वह कोहे-होरिब यानी सीना के दामन में बछड़े का बुत ढालकर उसके सामने औंधे मुँह हो गए।

20 उन्होंने अल्लाह को जलाल देने के बजाए घास खानेवाले बैल की पूजा की।

21 वह अल्लाह को भूल गए, हालाँकि उसी ने उन्हें छुड़ाया था, उसी ने मिसर में अज़ीम काम किए थे।

22 जो मोजिज़े हाम के मुल्क में हुए और जो जलाली वाक़ियात बहरे-कुलजुम पर पेश आए थे वह सब अल्लाह के हाथ से हुए थे।

23 चुनौचे अल्लाह ने फ़रमाया कि मैं उन्हें नेस्तो-नाबूद करूँगा। लेकिन उसका चुना हुआ खादिम मूसा रखने में खड़ा हो गया ताकि उसके गज़ब को इसराईलियों को मिटाने से रोके। सिर्फ़ इस वजह से अल्लाह अपने इरादे से बाज़ आया।

24 फिर उन्होंने कनान के खुशगवार मुल्क को हक़ीर जाना। उन्हें यकीन नहीं था कि अल्लाह अपना वादा पूरा करेगा।

25 वह अपने ख़ैमों में बुड़बुड़ाने लगे और रब की आवाज़ सुनने के लिए तैयार न हुए।

26 तब उसने अपना हाथ उनके खिलाफ़ उठाया ताकि उन्हें वहीं रेगिस्तान में हलाक करे

27 और उनकी औलाद को दीगर अक़वाम में फ़ैककर मुख्तलिफ़ ममालिक में मुंतशिर कर दे।

28 वह बाल-फ़गूर देवता से लिपट गए और मुरदों के लिए पेश की गई कुरबानियों का गोश्त खाने लगे।

29 उन्होंने अपनी हरकतों से रब को तैश दिलाया तो उनमें मोहलक बीमारी फैल गई।

30 लेकिन फ़ीनहास ने उठकर उनकी अदालत की। तब वबा स्क गई।

31 इसी बिना पर अल्लाह ने उसे पुश्त-दर-पुश्त और अबद तक रास्तबाज़ करार दिया।

32 मरीबा के चश्मे पर भी उन्होंने रब को गुस्सा दिलाया। उन्हीं के बाइस मूसा का बुरा हाल हुआ।

33 क्योंकि उन्होंने उसके दिल में इतनी तलख़ी पैदा की कि उसके मुँह से बेजा बातें निकलीं।

34 जो दीगर क़ौमों मुल्क में थीं उन्हें उन्होंने नेस्त न किया, हालाँकि रब ने उन्हें यह करने को कहा था।

35 न सिर्फ़ यह बल्कि वह ग़ैरक़ौमों से रिश्ता बाँधकर उनमें घुल मिल गए और उनके रस्मो-रिवाज अपना लिए।

36 वह उनके बुतों की पूजा करने में लग गए, और यह उनके लिए फंदे का बाइस बन गए।

37 वह अपने बेटे-बेटियों को बदरूहों के हज़ूर कुरबान करने से भी न कतराए।

38 हाँ, उन्होंने अपने बेटे-बेटियों को कनान के देवताओं के हज़ूर पेश करके उनका मासूम खून बहाया। इससे मुल्क की बेहुरमती हुई।

39 वह अपनी ग़लत हरकतों से नापाक और अपने ज़िनाकाराना कामों से अल्लाह से बेवफ़ा हुए।

40 तब अल्लाह अपनी क़ौम से सख़्त नाराज़ हुआ, और उसे अपनी मौसूसी मिलकियत से घिन आने लगी।

41 उसने उन्हें दीगर क़ौमों के हवाले किया, और जो उनसे नफरत करते थे वह उन पर हुक्मत करने लगे।

42 उनके दुश्मनों ने उन पर जुल्म करके उनको अपना मुती बना लिया।

43 अल्लाह बार बार उन्हें छुड़ाता रहा, हालाँकि वह अपने सरकश मनसूबों पर तुले रहे और अपने कुसूर में डूबते गए।

44 लेकिन उसने मदद के लिए उनकी आहें सुनकर उनकी मुसीबत पर ध्यान दिया।

45 उसने उनके साथ अपना अहद याद किया, और वह अपनी बड़ी शफ़क़त के बाइस पछताया।

46 उसने होने दिया कि जिसने भी उन्हें गिरिफ़्तार किया उसने उन पर तरस खाया।

47 ऐ रब हमारे खुदा, हमें बचा! हमें दीगर कौमों से निकालकर जमा कर। तब ही हम तेरे मुक़द्दस नाम की सताइश करेंगे और तेरे काबिले-तारीफ़ कामों पर फ़ख़र करेंगे।

48 अज़ल से अबद तक रब, इसराईल के खुदा की हम्द हो। तमाम कौम कहे, “आमीन! रब की हम्द हो!”

पाँचवीं किताब 107-15

107

नजातयाफ़ता की शुक़गुज़ारी

1 रब का शुक़ करो, क्योंकि वह भला है, और उस की शफ़क़त अबदी है।

2 रब के नजातयाफ़ता जिनको उसने एवज़ाना देकर दुश्मन के कब्ज़े से छुड़ाया है सब यह कहें।

3 उसने उन्हें मशरिक से मगरिब तक और शिमाल से जुनूब तक दीगर ममालिक से इक़ठा किया है।

4 बाज़ रेगिस्तान में सहीह रास्ता भूलकर वीरान रास्ते पर मारे मारे फिरे, और कहीं भी आबादी न मिली।

5 भूक और प्यास के मारे उनकी जान निढाल हो गई।

6 तब उन्होंने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा, और उसने उन्हें उनकी तमाम परेशानियों से छुटकारा दिया।

7 उसने उन्हें सहीह राह पर लाकर ऐसी आबादी तक पहुँचाया जहाँ रह सकते थे।

8 वह रब का शुक़ करें कि उसने अपनी शफ़क़त और अपने मोजिज़े इनसान पर ज़ाहिर किए हैं।

9 क्योंकि वह प्यासी जान को आसूदा करता और भूकी जान को कसरत की अच्छी चीज़ों से सेर करता है।

10 दूसरे जंजीरों और मुसीबत में जकड़े हुए अंधेरे और गहरी तारीकी में बसते थे,

11 क्योंकि वह अल्लाह के फ़रमानों से सरकश हुए थे, उन्होंने अल्लाह तआला का फ़ैसला हक़ीर जाना था।

12 इसलिए अल्लाह ने उनके दिल को तकलीफ़ में मुब्तला करके पस्त कर दिया। जब वह ठोकर खाकर गिर गए और मदद करनेवाला कोई न रहा था

13 तो उन्होंने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा, और उसने उन्हें उनकी तमाम परेशानियों से छुटकारा दिया।

14 वह उन्हें अंधेरे और गहरी तारीकी से निकाल लाया और उनकी जंजीरें तोड़ डालीं।

15 वह रब का शुक़ करें कि उसने अपनी शफ़क़त और अपने मोजिज़े इनसान पर ज़ाहिर किए हैं।

16 क्योंकि उसने पीतल के दरवाज़े तोड़ डाले, लोहे के कुंडे टुकड़े टुकड़े कर दिए हैं।

17 कुछ लोग अहमक़ थे, वह अपने सरकश चाल-चलन और गुनाहों के बाइस परेशानियों में मुब्तला हुए।

18 उन्हें हर ख़ुराक से धिन आने लगी, और वह मौत के दरवाज़ों के करीब पहुँचे।

19 तब उन्होंने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा, और उसने उन्हें उनकी तमाम परेशानियों से छुटकारा दिया।

20 उसने अपना कलाम भेजकर उन्हें शफ़ा दी और उन्हें मौत के गढ़े से बचाया।

21 वह रब का शुक़ करें कि उसने अपनी शफ़क़त और मोजिज़े इनसान पर ज़ाहिर किए हैं।

22 वह शुक़गुज़ारी की कुरबानियाँ पेश करें और ख़ुशी के नारे लगाकर उसके कामों का चर्चा करें।

23 बाज़ बहरी जहाज़ में बैठ गए और तिजारत के सिलसिले में समुंदर पर सफ़र करते करते दूर-दराज़ इलाकों तक पहुँचे।

24 उन्होंने रब के अज़ीम काम और समुंदर की गहराइयों में उसके मोजिज़े देखे हैं।

25 क्योंकि रब ने हुक्म दिया तो आँधी चली जो समुंदर की मौजें बुलंदियों पर लाई।

26 वह आसमान तक चढ़ी और गहराइयों तक उतरी। परेशानी के बाइस मल्लाहों की हिम्मत जवाब दे गई।

27 वह शराब में धुत आदमी की तरह लड़खड़ाते और डगमगाते रहे। उनकी तमाम हिकमत नाकाम साबित हुई।

28 तब उन्होंने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा, और उसने उन्हें तमाम परेशानियों से छुटकारा दिया।

29 उसने समुंदर को थमा दिया और ख़ामोशी फैल गई, लहरें साकित हो गईं।

30 मुसाफ़िर पुरसूकन हालात देखकर ख़ुश हुए, और अल्लाह ने उन्हें मनज़िले-मक़सूद तक पहुँचाया।

- 31 वह रब का शुक्र करें कि उसने अपनी शफकत और अपने मोजिजे इनसान पर जाहिर किए हैं।
 32 वह क्रौम की जमात में उस की ताज़ीम करें, बुजुर्गों की मजलिस में उस की हम्द करें।
 33 कई जगहों पर वह दरियाओं को रेगिस्तान में और चश्मों को प्यासी ज़मीन में बदल देता है।
 34 बाशियों की बुराई देखकर वह ज़रखेज़ ज़मीन को कल्लर के बयाबान में बदल देता है।
 35 दूसरी जगहों पर वह रेगिस्तान को झील में और प्यासी ज़मीन को चश्मों में बदल देता है।
 36 वहाँ वह भूकों को बसा देता है ताकि आबादियाँ क़ायम करें।
 37 तब वह खेत और अंगूर के बाग लगाते हैं जो खूब फल लाते हैं।
 38 अल्लाह उन्हें बरकत देता है तो उनकी तादाद बहुत बढ़ जाती है। वह उनके रेवड़ों को भी कम होने नहीं देता।
 39 जब कभी उनकी तादाद कम हो जाती और वह मुसीबत और दुख के बोझ तले खाक में दब जाते हैं
 40 तो वह शरफ़ा पर अपनी हिक़ारत उंडेल देता और उन्हें रेगिस्तान में भगाकर सहीह रास्ते से दूर फिरने देता है।
 41 लेकिन मुहताज को वह मुसीबत की दलदल से निकालकर सरफ़राज़ करता और उसके ख़ानदानों को भेड़-बकरियों की तरह बढ़ा देता है।
 42 सीधी राह पर चलनेवाले यह देखकर खुश होंगे, लेकिन बेइन्साफ़ का मुँह बंद किया जाएगा।
 43 कौन दानिशमंद है? वह इस पर ध्यान दे, वह रब की मेहरबानियों पर गौर करे।

108

जंग में रब पर उम्मीद

- 1 दाऊद का जबूर। गीत।
 ऐ अल्लाह, मेरा दिल मज़बूत है। मैं साज़ बजाकर तेरी मद्हसराई करूँगा। ऐ मेरी जान, जाग उठ!
 2 ऐ सितार और सरोद, जाग उठो! मैं तुलू-सुबह को जगाऊँगा।
 3 ऐ रब, मैं क्रौमों में तेरी सताइश, उम्मतों में तेरी मद्हसराई करूँगा।
 4 क्योंकि तेरी शफक़त आसमान से कहीं बुलंद है, तेरी वफ़ादारी बादलों तक पहुँचती है।
 5 ऐ अल्लाह, आसमान पर सरफ़राज़ हो! तेरा जलाल पूरी दुनिया पर छा जाए।
 6 अपने दहने हाथ से मदद करके मेरी सुन ताकि जो तुझे प्यारे हैं नजात पाएँ।
 7 अल्लाह ने अपने मक़दिस में फ़रमाया है, “मैं फ़तह मनाते हुए सिक़म को तक्कसीम करूँगा और वादीए-सुक़कात को नापकर बाँट दूँगा।
 8 जिलियाद मेरा है और मनस्सी मेरा है। इफ़राईम मेरा ख़ोद और यहूदाह मेरा शाही असा है।
 9 मोआब मेरा गुस्ल का बरतन है, और अदोम पर मैं अपना जूता फेंक दूँगा। मैं फ़िलिस्ती मुल्क पर जोरदार नारे लगाऊँगा!”
 10 कौन मुझे किलाबंद शहर में लाएगा? कौन मेरी राहनुमाई करके मुझे अदोम तक पहुँचाएगा?
 11 ऐ अल्लाह, तू ही यह कर सकता है, गो तूने हमें रद्द किया है। ऐ अल्लाह, तू हमारी फ़ौजों का साथ नहीं देता जब वह लड़ने के लिए निकलती हैं।
 12 मुसीबत में हमें सहारा दे, क्योंकि इस वक़्त इनसानी मदद बेकार है।
 13 अल्लाह के साथ हम ज़बरदस्त काम करेंगे, क्योंकि वही हमारे दुश्मनों को कुचल देगा।

109

बेरहम मुख़ालिफ़ के सामने अल्लाह से दुआ

- 1 दाऊद का जबूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए।
 ऐ अल्लाह मेरे फ़ख़र, ख़ामोश न रह!
 2 क्योंकि उन्होंने अपना बेदीन और फ़रेबदेह मुँह मेरे ख़िलाफ़ खोलकर झूठी ज़बान से मेरे साथ बात की है।
 3 वह मुझे नफ़रत के अलफ़ाज़ से घेरकर बिलावजह मुझसे लड़े हैं।
 4 मेरी मुहब्बत के जवाब में वह मुझ पर अपनी दुश्मनी का इज़हार करते हैं। लेकिन दुआ ही मेरा सहारा है।
 5 मेरी नेकी के एवज़ वह मुझे नुक़सान पहुँचाते और मेरे प्यार के बदले मुझसे नफ़रत करते हैं।

6 ऐ अल्लाह, किसी बेदीन को मुकर्रर कर जो मेरे दुश्मन के खिलाफ गवाही दे, कोई मुखालिफ उसके दहने हाथ खड़ा हो जाए जो उस पर इलज़ाम लगाए।

7 मुकदमे में उसे मुजरिम ठहराया जाए। उस की दुआँ भी उसके गुनाहों में शुमार की जाएँ।

8 उस की ज़िंदगी मुखतसर हो, कोई और उस की ज़िम्मादारी उठाए।

9 उस की औलाद यतीम और उस की बीवी बेवा बन जाए।

10 उसके बच्चे आवारा फिरें और भीक माँगने पर मजबूर हो जाएँ। उन्हें उनके तबाहशुदा घरों से निकलकर इधर उधर रोटी ढूँडनी पड़े।

11 जिससे उसने क़र्ज़ा लिया था वह उसके तमाम माल पर क़ब्ज़ा करे, और अजनबी उस की मेहनत का फल लूट लें।

12 कोई न हो जो उस पर मेहरबानी करे या उसके यतीमों पर रहम करे।

13 उस की औलाद को मिटाया जाए, अगली पुश्त में उनका नामो-निशान तक न रहे।

14 रब उसके बापदादा की नाइनसाफ़ी का लिहाज़ करे, और वह उस की माँ की खता भी दरगुज़र न करे।

15 उनका बुरा किरदार रब के सामने रहे, और वह उनकी याद रूप-ज़मीन पर से मिटा डाले।

16 क्योंकि उसको कभी मेहरबानी करने का खयाल न आया बल्कि वह मुसीबतज़दा, मुहताज़ और शिकस्तादिल का ताक्कुब करता रहा ताकि उसे मार डाले।

17 उसे लानत करने का शौक था, चुनौचे लानत उसी पर आए! उसे बरकत देना पसंद नहीं था, चुनौचे बरकत उससे दूर रहे।

18 उसने लानत चादर की तरह ओढ़ ली, चुनौचे लानत पानी की तरह उसके जिस्म में और तेल की तरह उस की हड्डियों में सरायत कर जाए।

19 वह कपड़े की तरह उससे लिपटी रहे, पटके की तरह हमेशा उससे कमरबस्ता रहे।

20 रब मेरे मुखालिफों को और उन्हें जो मेरे खिलाफ बुरी बातें करते हैं यही सज़ा दे।

21 लेकिन तू ऐ रब कादिर-मुतलक़, अपने नाम की खातिर मेरे साथ मेहरबानी का सुलूक कर। मुझे बचा, क्योंकि तेरी ही शफ़क़त तसल्लीबख़्श है।

22 क्योंकि मैं मुसीबतज़दा और ज़स्सरतमंद हूँ। मेरा दिल मेरे अंदर मजसूह है।

23 शाम के ढलते साय की तरह मैं ख़त्म होनेवाला हूँ। मुझे टिट्टी की तरह झाड़कर दूर कर दिया गया है।

24 रोज़ा रखते रखते मेरे घुटने डगमगाने लगे और मेरा जिस्म सूख गया है।

25 मैं अपने दुश्मनों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गया हूँ। मुझे देखकर वह सर हिलाकर “तौबा तौबा” कहते हैं।

26 ऐ रब मेरे खुदा, मेरी मदद कर! अपनी शफ़क़त का इज़हार करके मुझे छुड़ा!

27 उन्हें पता चले कि यह तेरे हाथ से पेश आया है, कि तू रब ही ने यह सब कुछ किया है।

28 जब वह लानत करें तो मुझे बरकत दे! जब वह मेरे खिलाफ उठें तो बख़्श दे कि शर्मिदा हो जाएँ जबकि तेरा खादिम खुश हो।

29 मेरे मुखालिफ़ स्सवाई से मुलब्बस हो जाएँ, उन्हें शर्मिदगी की चादर ओढ़नी पड़े।

30 मैं ज़ोर से रब की सताइश कसूँगा, बहुतों के दरमियान उस की हम्द कसूँगा।

31 क्योंकि वह मुहताज़ के दहने हाथ खड़ा रहता है ताकि उसे उनसे बचाए जो उसे मुजरिम ठहराते हैं।

110

अबदी बादशाह और इमाम

1 दाऊद का जबूर।

रब ने मेरे रब से कहा, “मेरे दहने हाथ बैठ, जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँवों की चौकी न बना दूँ।”

2 रब सियून से तेरी सलतनत की सरहदें बढ़ाकर कहेगा, “आस-पास के दुश्मनों पर हुक्मत कर!”

3 जिस दिन तू अपनी फ़ौज को खड़ा करेगा तेरी क़ौम खुशी से तेरे पीछे हो लेगी। तू मुकद्दस शानो-शौकत से आरास्ता होकर तुलूए-सुबह के बातिन से अपनी जवानी की ओस पाएगा।

4 रब ने कसम खाई है और इससे पछताएगा नहीं, “तू अबद तक इमाम है, ऐसा इमाम जैसा मलिके-सिद्क़ था।”

5 रब तेरे दहने हाथ पर रहेगा और अपने ग़ज़ब के दिन दीगर बादशाहों को चूर चूर करेगा।

6 वह क़ौमों में अदालत करके मैदान को लाशों से भर देगा और दूर तक सरों को पाश पाश करेगा।

7 रास्ते में वह नदी से पानी पी लेगा, इसलिए अपना सर उठाए फिरेगा।

111

अल्लाह के फ़ज़ल की तमजीद

- 1 रब की हम्द हो! मैं पूरे दिल से दियानतदारों की मजलिस और जमात में रब का शुक्र करूँगा।
- 2 रब के काम अज़ीम हैं। जो उनसे लुत्फ़अंदोज़ होते हैं वह उनका ख़ूब मुतालाआ करते हैं।
- 3 उसका काम शानदार और जलाली है, उस की रास्ती अबद तक कायम रहती है।
- 4 वह अपने मोजिज़े याद कराता है। रब मेहरबान और रहीम है।
- 5 जो उसका ख़ौफ़ मानते हैं उन्हें उसने ख़ुराक मुहैया की है। वह हमेशा तक अपने अहद का खयाल रखेगा।
- 6 उसने अपनी क़ौम को अपने ज़बरदस्त कामों का एलान करके कहा, “मैं तुम्हें ग़ैरक़ौमों की मीरास अता करूँगा।”
- 7 जो भी काम उसके हाथ करें वह सच्चे और रास्त हैं। उसके तमाम अहकाम काबिले-एतमाद हैं।
- 8 वह अज़ल से अबद तक कायम हैं, और उन पर सच्चाई और दियानतदारी से अमल करना है।
- 9 उसने अपनी क़ौम का फ़िघा भेजकर उसे छुड़ाया है। उसने फ़रमाया, “मेरा क़ौम के साथ अहद अबद तक कायम रहे।” उसका नाम कुदूस और पुरजलाल है।
- 10 हिकमत इससे शुरू होती है कि हम रब का ख़ौफ़ मानें। जो भी उसके अहकाम पर अमल करे उसे अच्छी समझ हासिल होगी। उस की हम्द हमेशा तक कायम रहेगी।

112

अल्लाह के ख़ौफ़ की तारीफ़

- 1 रब की हम्द हो! मुबारक है वह जो अल्लाह का ख़ौफ़ मानता और उसके अहकाम से बहुत लुत्फ़अंदोज़ होता है।
- 2 उसके फ़रज़ंद मुल्क में ताक़तवर होंगे, और दियानतदार की नसल को बरकत मिलेगी।
- 3 दौलत और खुशहाली उसके घर में रहेगी, और उस की रास्तबाज़ी अबद तक कायम रहेगी।
- 4 अंधेरे में चलते वक़््त दियानतदारों पर रौशनी चमकती है। वह रास्तबाज़, मेहरबान और रहीम है।
- 5 मेहरबानी करना और क़र्ज़ देना बा-बरकत है। जो अपने मामलों को इनसाफ़ से हल करे वह अच्छा करेगा,
- 6 क्योंकि वह अबद तक नहीं डगमगाएगा। रास्तबाज़ हमेशा ही याद रहेगा।
- 7 वह बुरी ख़बर मिलने से नहीं डरता। उसका दिल मज़बूत है, और वह रब पर भरोसा रखता है।
- 8 उसका दिल मुस्तहक़म है। वह सहमा हुआ नहीं रहता, क्योंकि वह जानता है कि एक दिन मैं अपने दुश्मनों की शिकस्त देखकर खुश हूँगा।
- 9 वह फ़ैयाज़ी से ज़रूरतमंदों में ख़ैरात बिखेर देता है। उस की रास्तबाज़ी हमेशा कायम रहेगी, और उसे इज़्ज़त के साथ सरफ़राज़ किया जाएगा।
- 10 बेदीन यह देखकर नाराज़ हो जाएगा, वह दाँत पीस पीसकर नेस्त हो जाएगा। जो कुछ बेदीन चाहते हैं वह जाता रहेगा।

113

अल्लाह की अज़मत और मेहरबानी

- 1 रब की हम्द हो! ऐ रब के ख़ादिमो, रब के नाम की सताइश करो, रब के नाम की तारीफ़ करो।
- 2 रब के नाम की अब से अबद तक तमजीद हो।
- 3 तुलूए-सुबह से ग़ुस्बे-आफ़ताब तक रब के नाम की हम्द हो।
- 4 रब तमाम अक़वाम से सरबुलंद है, उसका जलाल आसमान से अज़ीम है।
- 5 कौन रब हमारे खुदा की मारिन्द है जो बुलंदियों पर तख़्तनशीन है
- 6 और आसमानो-ज़मीन को देखने के लिए नीचे झुकता है?
- 7 पस्तहाल को वह खाक में से उठाकर पाँवों पर खड़ा करता, मुहताज को राख से निकालकर सरफ़राज़ करता है।
- 8 वह उसे शरफ़ा के साथ, अपनी क़ौम के शरफ़ा के साथ बिठा देता है।
- 9 बाँझ को वह औलाद अता करता है ताकि वह घर में खुशी से ज़िंदगी गुज़ार सके। रब की हम्द हो!

114

मिसर में अल्लाह के मोजिज़ात

- 1 जब इसराईल मिसर से रवाना हुआ और याक़ूब का घराना अज़नबी ज़बान बोलनेवाली क़ौम से निकल आया

- 2 तो यहूदाह अल्लाह का मक़दिस बन गया और इसराईल उस की बादशाही।
- 3 यह देखकर समुंदर भाग गया और दरियाए-यरदन पीछे हट गया।
- 4 पहाड़ मेंढों की तरह कूदने और पहाड़ियाँ जवान भेड़-बकरियों की तरह फाँदने लगीं।
- 5 ऐ समुंदर, क्या हुआ कि तू भाग गया है? ऐ यरदन, क्या हुआ कि तू पीछे हट गया है?
- 6 ऐ पहाड़ो, क्या हुआ कि तुम मेंढों की तरह कूदने लगे हो? ऐ पहाड़ियो, क्या हुआ कि तुम जवान भेड़-बकरियों की तरह फाँदने लगी हो?
- 7 ऐ ज़मीन, रब के हुज़ूर, याक़ूब के खुदा के हुज़ूर लरज़ उठ,
- 8 उसके सामने थरथरा जिसने चटान को जोहड़ में और सख़्त पत्थर को चश्मे में बदल दिया।

115

अल्लाह ही की हम्द हो

- 1 ऐ रब, हमारी ही इज़्जत की खातिर काम न कर बल्कि इसलिए कि तेरे नाम को जलाल मिले, इसलिए कि तू मेहरबान और वफ़ादार खुदा है।
- 2 दीगर अक़वाम क्यों कहें, “उनका खुदा कहाँ है?”
- 3 हमारा खुदा तो आसमान पर है, और जो जी चाहे करता है।
- 4 उनके बुत सोने-चाँदी के हैं, इनसान के हाथ ने उन्हें बनाया है।
- 5 उनके मुँह हैं लेकिन वह बोल नहीं सकते। उनकी आँखें हैं लेकिन वह देख नहीं सकते।
- 6 उनके कान हैं लेकिन वह सुन नहीं सकते, उनकी नाक है लेकिन वह सूँघ नहीं सकते।
- 7 उनके हाथ हैं, लेकिन वह छू नहीं सकते। उनके पाँव हैं, लेकिन वह चल नहीं सकते। उनके गले से आवाज़ नहीं निकलती।
- 8 जो बुत बनाते हैं वह उनकी मानिंद हो जाएँ, जो उन पर भरोसा रखते हैं वह उन जैसे बेहिसो-हरकत हो जाएँ।
- 9 ऐ इसराईल, रब पर भरोसा रख! वही तेरा सहारा और तेरी ढाल है।
- 10 ऐ हासून के घराने, रब पर भरोसा रख! वही तेरा सहारा और तेरी ढाल है।
- 11 ऐ रब का ख़ौफ़ माननेवालो, रब पर भरोसा रखो! वही तुम्हारा सहारा और तुम्हारी ढाल है।
- 12 रब ने हमारा खयाल किया है, और वह हमें बरकत देगा। वह इसराईल के घराने को बरकत देगा, वह हासून के घराने को बरकत देगा।
- 13 वह रब का ख़ौफ़ माननेवालों को बरकत देगा, खाह छोटे हों या बड़े।
- 14 रब तुम्हारी तादाद में इज़ाफ़ा करे, तुम्हारी भी और तुम्हारी औलाद की भी।
- 15 रब जो आसमानो-ज़मीन का ख़ालिक है तुम्हें बरकत से मालामाल करे।
- 16 आसमान तो रब का है, लेकिन ज़मीन को उसने आदमज़ादों को बख़्श दिया है।
- 17 ऐ रब, मुरदे तेरी सताइश नहीं करते, ख़ामोशी के मुल्क में उतरनेवालों में से कोई भी तेरी तमज़ीद नहीं करता।
- 18 लेकिन हम रब की सताइश अब से अबद तक करेंगे। रब की हम्द हो!

116

मौत से नजात पर शक्रगुज़ारी

- 1 मैं रब से मुहब्बत रखता हूँ, क्योंकि उसने मेरी आवाज़ और मेरी इल्तिजा सुनी है।
- 2 उसने अपना कान मेरी तरफ़ झुकाया है, इसलिए मैं उम्र-भर उसे पुकारूँगा।
- 3 मौत ने मुझे अपनी जंजीरों में जकड़ लिया, और पाताल की परेशानियाँ मुझ पर ग़ालिब आईं। मैं मुसीबत और दुख में फँस गया।
- 4 तब मैंने रब का नाम पुकारा, “ऐ रब, मेहरबानी करके मुझे बचा!”
- 5 रब मेहरबान और रास्त है, हमारा खुदा रहीम है।
- 6 रब सादा लोगों की हिफ़ाज़त करता है। जब मैं पस्तहाल था तो उसने मुझे बचाया।
- 7 ऐ मेरी जान, अपनी आरामगाह के पास वापस आ, क्योंकि रब ने तेरे साथ भलाई की है।
- 8 क्योंकि ऐ रब, तूने मेरी जान को मौत से, मेरी आँखों को आँसू बहाने से और मेरे पाँवों को फिसलने से बचाया है।
- 9 अब मैं ज़िंदों की ज़मीन में रहकर रब के हुज़ूर चलूँगा।
- 10 मैं ईमान लाया और इसलिए बोला, “मैं शदीद मुसीबत में फँस गया हूँ।”

- 11 मैं सख्त घबरा गया और बोला, “तमाम इनसान दरोगागो हैं।”
- 12 जो भलाइयाँ रब ने मेरे साथ की हैं उन सबके एवज़ मैं क्या दूँ?
- 13 मैं नजात का प्याला उठाकर रब का नाम पुकारूँगा।
- 14 मैं रब के हुज़ूर उस की सारी क़ौम के सामने ही अपनी मन्नतें पूरी करूँगा।
- 15 रब की निगाह में उसके ईमानदारों की मौत गिराँक़दर है।
- 16 ऐ रब, यकीनन मैं तेरा खादिम, हाँ तेरा खादिम और तेरी खादिमा का बेटा हूँ। तूने मेरी जंजीरों को तोड़ डाला है।
- 17 मैं तुझे शुक्रगुज़ारी की कुरबानी पेश करके तेरा नाम पुकारूँगा।
- 18 मैं रब के हुज़ूर उस की सारी क़ौम के सामने ही अपनी मन्नतें पूरी करूँगा।
- 19 मैं रब के घर की बारगाहों में, ऐ यरूशलम तेरे बीच में ही उन्हें पूरा करूँगा। रब की हम्द हो।

117

तमाम अक़वाम अल्लाह की हम्द करें

- 1 ऐ तमाम अक़वाम, रब की तमज़ीद करो! ऐ तमाम उम्मतो, उस की मद्दहसराई करो!
- 2 क्योंकि उस की हम पर शफ़क़त अज़ीम है, और रब की वफ़ादारी अबदी है। रब की हम्द हो!

118

अल्लाह की मदद पर शुक्रगुज़ारी

- 1 रब का शुक्र करो, क्योंकि वह भला है, और उस की शफ़क़त अबदी है।
- 2 इसराईल कहे, “उस की शफ़क़त अबदी है।”
- 3 हासन का घराना कहे, “उस की शफ़क़त अबदी है।”
- 4 रब का ख़ौफ़ माननेवाले कहें, “उस की शफ़क़त अबदी है।”
- 5 मुसीबत में मैंने रब को पुकारा तो रब ने मेरी सुनकर मेरे पाँवों को खुले मैदान में कायम कर दिया है।
- 6 रब मेरे हक़ में है, इसलिए मैं नहीं डरूँगा। इनसान मेरा क्या बिगाड़ सकता है?
- 7 रब मेरे हक़ में है और मेरा सहारा है, इसलिए मैं उनकी शिकस्त देखकर खुश हूँगा जो मुझसे नफ़रत करते हैं।
- 8 रब में पनाह लेना इनसान पर एतमाद करने से कहीं बेहतर है।
- 9 रब में पनाह लेना शूरफ़ा पर एतमाद करने से कहीं बेहतर है।
- 10 तमाम अक़वाम ने मुझे घेर लिया, लेकिन मैंने अल्लाह का नाम लेकर उन्हें भगा दिया।
- 11 उन्होंने मुझे घेर लिया, हाँ चारों तरफ़ से घेर लिया, लेकिन मैंने अल्लाह का नाम लेकर उन्हें भगा दिया।
- 12 वह शहद की मक्खियों की तरह चारों तरफ़ से मुझ पर हमलाआवर हुए, लेकिन काँटेदार झाड़ियों की आग की तरह जल्द ही बुझ गए। मैंने रब का नाम लेकर उन्हें भगा दिया।
- 13 दुश्मन ने मुझे धक्का देकर गिराने की कोशिश की, लेकिन रब ने मेरी मदद की।
- 14 रब मेरी कुव्वत और मेरा गीत है, वह मेरी नजात बन गया है।
- 15 खुशी और फ़तह के नारे रास्तबाज़ों के ख़ैमों में गूँजते हैं, “रब का दहना हाथ ज़बरदस्त काम करता है!
- 16 रब का दहना हाथ सरफ़राज़ करता है, रब का दहना हाथ ज़बरदस्त काम करता है!”
- 17 मैं नहीं मरूँगा बल्कि ज़िंदा रहकर रब के काम बयान करूँगा।
- 18 गो रब ने मेरी सख्त तादीब की है, उसने मुझे मौत के हवाले नहीं किया।
- 19 रास्ती के दरवाज़े मेरे लिए खोल दो ताकि मैं उनमें दाखिल होकर रब का शुक्र करूँ।
- 20 यह रब का दरवाज़ा है, इसी में रास्तबाज़ दाखिल होते हैं।
- 21 मैं तेरा शुक्र करता हूँ, क्योंकि तूने मेरी सुनकर मुझे बचाया है।
- 22 जिस पत्थर को मकान बनानेवालों ने रद्द किया वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया।

- 23 यह रब ने किया और देखने में कितना हैरतअंगेज़ है।
 24 इसी दिन रब ने अपनी कुदरत दिखाई है। आओ, हम शादियाना बजाकर उस की खुशी मनाएँ।
 25 ऐ रब, मेहरबानी करके हमें बचा! ऐ रब, मेहरबानी करके कामयाबी अता फ़रमा!
- 26 मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है। रब की सुकूनतगाह से हम तुम्हें बरकत देते हैं।
 27 रब ही खुदा है, और उसने हमें रौशनी बरख़्शी है। आओ, ईद की कुरबानी रस्सियों से कुरबानगाह के सींगों के साथ बान्धो।
- 28 तू मेरा खुदा है, और मैं तेरा शुक्र करता हूँ। ऐ मेरे खुदा, मैं तेरी ताज़ीम करता हूँ।
 29 रब की सताइश करो, क्योंकि वह भला है और उस की शफ़क़त अबदी है।

119

अल्लाह के कलाम की शान

1

- 1 मुबारक हैं वह जिनका चाल-चलन बेइलज़ाम है, जो रब की शरीअत के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते हैं।
 2 मुबारक हैं वह जो उसके अहकाम पर अमल करते और पूरे दिल से उसके तालिब रहते हैं,
 3 जो बदी नहीं करते बल्कि उस की राहों पर चलते हैं।
 4 तूने हमें अपने अहकाम दिए हैं, और तू चाहता है कि हम हर लिहाज़ से उनके ताबे रहें।
 5 काश मेरी राहें इतनी पुख़्ता हों कि मैं साबितक़दमी से तेरे अहकाम पर अमल करूँ!
 6 तब मैं शर्मिदा नहीं हूँगा, क्योंकि मेरी आँखें तेरे तमाम अहकाम पर लगी रहेंगी।
 7 जितना मैं तेरे बा-इनसाफ़ फैसलों के बारे में सीखूँगा उतना ही दियानतदार दिल से तेरी सताइश करूँगा।
 8 तेरे अहकाम पर मैं हर वक़्त अमल करूँगा। मुझे पूरी तरह तर्क न कर!

2

- 9 नौजवान अपनी राह को किस तरह पाक रखे? इस तरह कि तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारे।
 10 मैं पूरे दिल से तेरा तालिब रहा हूँ। मुझे अपने अहकाम से भटकने न दे।
 11 मैंने तेरा कलाम अपने दिल में महफूज़ रखा है ताकि तेरा गुनाह न करूँ।
 12 ऐ रब, तेरी हम्द हो! मुझे अपने अहकाम सिखा।
 13 अपने होंटों से मैं दूसरों को तेरे मुँह की तमाम हिदायात सुनाता हूँ।
 14 मैं तेरे अहकाम की राह से उतना लुफ़अंदोज़ होता हूँ जितना कि हर तरह की दौलत से।
 15 मैं तेरी हिदायात में महवे-खयाल रहूँगा और तेरी राहों को तकता रहूँगा।
 16 मैं तेरे फ़रमानों से लुफ़अंदोज़ होता हूँ और तेरा कलाम नहीं भूलता।

3

- 17 अपने खादिम से भलाई कर ताकि मैं ज़िंदा रहूँ और तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारूँ।
 18 मेरी आँखों को खोल ताकि तेरी शरीअत के अजायब देखूँ।
 19 दुनिया में मैं परदेसी ही हूँ। अपने अहकाम मुझसे छुपाए न रख!
 20 मेरी जान हर वक़्त तेरी हिदायात की आरजू करते करते निढाल हो रही है।
 21 तू मगरूरों को डाँटता है। उन पर लानत जो तेरे अहकाम से भटक जाते हैं!
 22 मुझे लोगों की तौहीन और तहकीर से रिहाई दे, क्योंकि मैं तेरे अहकाम के ताबे रहा हूँ।
 23 गो बुजुर्ग मेरे खिलाफ़ मनसूबे बाँधने के लिए बैठ गए हैं, तेरा खादिम तेरे अहकाम में महवे-खयाल रहता है।
 24 तेरे अहकाम से ही मैं लुफ़ उठाता हूँ, वही मेरे मुशीर हैं।

4

- 25 मेरी जान खाक में दब गई है। अपने कलाम के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।
 26 मैंने अपनी राहें बयान कीं तो तूने मेरी सुनी। मुझे अपने अहकाम सिखा।
 27 मुझे अपने अहकाम की राह समझने के काबिल बना ताकि तेरे अजायब में महवे-खयाल रहूँ।
 28 मेरी जान दुख के मारे निढाल हो गई है। मुझे अपने कलाम के मुताबिक़ तकवियत दे।
 29 फ़रेब की राह मुझसे दूर रख और मुझे अपनी शरीअत से नवाज़।

- 30 मैंने वफ़ा की राह इख्तियार करके तेरे आईन अपने सामने रखे हैं।
 31 मैं तेरे अहकाम से लिपटा रहता हूँ। ऐ रब, मुझे शर्मिंदा न होने दे।
 32 मैं तेरे फ़रमानों की राह पर दौड़ता हूँ, क्योंकि तूने मेरे दिल को कुशादगी बख़्शी है।

5

- 33 ऐ रब, मुझे अपने आईन की राह सिखा तो मैं उम्र-भर उन पर अमल करूँगा।
 34 मुझे समझ अता कर ताकि तेरी शरीअत के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारूँ और पूरे दिल से उसके ताबे रहूँ।
 35 अपने अहकाम की राह पर मेरी राहनुमाई कर, क्योंकि यही मैं पसंद करता हूँ।
 36 मेरे दिल को लालच में आने न दे बल्कि उसे अपने फ़रमानों की तरफ़ मायल कर।
 37 मेरी आँखों को बातिल चीज़ों से फेर ले, और मुझे अपनी राहों पर सँभालकर मेरी जान को ताज़ादम कर।
 38 जो वादा तूने अपने खादिम से किया वह पूरा कर ताकि लोग तेरा ख़ौफ़ मानें।
 39 जिस म्स्वाई से मुझे ख़ौफ़ है उसका खतरा दूर कर, क्योंकि तेरे अहकाम अच्छे हैं।
 40 मैं तेरी हिदायात का शदीद आरज़ूमंद हूँ, अपनी रास्ती से मेरी जान को ताज़ादम कर।

6

- 41 ऐ रब, तेरी शफ़क़त और वह नजात जिसका वादा तूने किया है मुझ तक पहुँचे
 42 ताकि मैं बेइज़्ज़ती करनेवाले को जवाब दे सकूँ। क्योंकि मैं तेरे कलाम पर भरोसा रखता हूँ।
 43 मेरे मुँह से सच्चाई का कलाम न छीन, क्योंकि मैं तेरे फ़रमानों के इंतज़ार में हूँ।
 44 मैं हर वक़्त तेरी शरीअत की पैरवी करूँगा, अब से अबद तक उसमें कायम रहूँगा।
 45 मैं खुले मैदान में चलता फिरूँगा, क्योंकि तेरे आईन का तालिब रहता हूँ।
 46 मैं शर्म किए बग़ैर बादशाहों के सामने तेरे अहकाम बयान करूँगा।
 47 मैं तेरे फ़रमानों से लुफ़अंदोज़ होता हूँ, वह मुझे प्यारे हैं।
 48 मैं अपने हाथ तेरे फ़रमानों की तरफ़ उठाऊँगा, क्योंकि वह मुझे प्यारे हैं। मैं तेरी हिदायात में महवे-खयाल रहूँगा।

7

- 49 उस बात का खयाल रख जो तूने अपने खादिम से की और जिससे तूने मुझे उम्मीद दिलाई है।
 50 मुसीबत में यही तसल्ली का बाइस रहा है कि तेरा कलाम मेरी जान को ताज़ादम करता है।
 51 मग़रूर मेरा हृद से ज़्यादा मज़ाक़ उड़ाते हैं, लेकिन मैं तेरी शरीअत से दूर नहीं होता।
 52 ऐ रब, मैं तेरे क़दीम फ़रमान याद करता हूँ तो मुझे तसल्ली मिलती है।
 53 बेदीनों को देखकर मैं आग-बग़ूला हो जाता हूँ, क्योंकि उन्होंने तेरी शरीअत को तर्क किया है।
 54 जिस घर में मैं परदेसी हूँ उसमें मैं तेरे अहकाम के गीत गाता रहता हूँ।
 55 ऐ रब, रात को मैं तेरा नाम याद करता हूँ, तेरी शरीअत पर अमल करता रहता हूँ।
 56 यह तेरी बख़्शिश है कि मैं तेरे आईन की पैरवी करता हूँ।

8

- 57 रब मेरी मीरास है। मैंने तेरे फ़रमानों पर अमल करने का वादा किया है।
 58 मैं पूरे दिल से तेरी शफ़क़त का तालिब रहा हूँ। अपने वादे के मुताबिक़ मुझ पर मेहरबानी कर।
 59 मैंने अपनी राहों पर ध्यान देकर तेरे अहकाम की तरफ़ क़दम बढ़ाए हैं।
 60 मैं नहीं झिजकता बल्कि भागकर तेरे अहकाम पर अमल करने की कोशिश करता हूँ।
 61 बेदीनों के रस्सों ने मुझे जकड़ लिया है, लेकिन मैं तेरी शरीअत नहीं भूलता।
 62 आधी रात को मैं जाग उठता हूँ ताकि तेरे रास्त फ़रमानों के लिए तेरा शुक्र करूँ।
 63 मैं उन सबका साथी हूँ जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं, उन सबका दोस्त जो तेरी हिदायात पर अमल करते हैं।
 64 ऐ रब, दुनिया तेरी शफ़क़त से मामूर है। मुझे अपने अहकाम सिखा!

9

- 65 ऐ रब, तूने अपने कलाम के मुताबिक़ अपने खादिम से भलाई की है।
 66 मुझे सहीह इम्तियाज़ और इरफ़ान सिखा, क्योंकि मैं तेरे अहकाम पर ईमान रखता हूँ।
 67 इससे पहले कि मुझे पस्त किया गया मैं आवारा फिरता था, लेकिन अब मैं तेरे कलाम के ताबे रहता हूँ।
 68 तू भला है और भलाई करता है। मुझे अपने आईन सिखा!
 69 मग़रूरों ने झूट बोलकर मुझ पर कीचड़ उछाली है, लेकिन मैं पूरे दिल से तेरी हिदायात की फ़रमाँबरदारी करता हूँ।

- 70 उनके दिल अकड़कर बेहिस हो गए हैं, लेकिन मैं तेरी शरीअत से लुत्फअंदोज होता हूँ।
 71 मेरे लिए अच्छा था कि मुझे पस्त किया गया, क्योंकि इस तरह मैंने तेरे अहकाम सीख लिए।
 72 जो शरीअत तेरे मुँह से सादिर हुई है वह मुझे सोने-चाँदी के हज़ारों सिक्कों से ज़्यादा पसंद है।

10

- 73 तेरे हाथों ने मुझे बनाकर मज़बूत बुनियाद पर रख दिया है। मुझे समझ अता फ़रमा ताकि तेरे अहकाम सीख लूँ।
 74 जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं वह मुझे देखकर खुश हो जाएँ, क्योंकि मैं तेरे कलाम के इंतज़ार में रहता हूँ।
 75 ऐ रब, मैंने जान लिया है कि तेरे फ़ैसले रास्त हैं। यह भी तेरी वफ़ादारी का इज़हार है कि तूने मुझे पस्त किया है।
 76 तेरी शफ़क़त मुझे तसल्ली दे, जिस तरह तूने अपने खादिम से वादा किया है।
 77 मुझ पर अपने रहम का इज़हार कर ताकि मेरी जान में जान आए, क्योंकि मैं तेरी शरीअत से लुत्फअंदोज होता हूँ।
 78 जो मग़स्स मुझे झूट से पस्त कर रहे हैं वह शर्मिंदा हो जाएँ। लेकिन मैं तेरे फ़रमानों में महवे-खयाल रहूँगा।
 79 काश जो तेरा ख़ौफ़ मानते और तेरे अहकाम जानते हैं वह मेरे पास वापस आएँ।
 80 मेरा दिल तेरे आईन की पैरवी करने में बेइलज़ाम रहे ताकि मेरी स्सवाई न हो जाए।

11

- 81 मेरी जान तेरी नजात की आरजू करते करते निढाल हो रही है, मैं तेरे कलाम के इंतज़ार में हूँ।
 82 मेरी आँखें तेरे वादे की राह देखते देखते धुँधला रही हैं। तू मुझे कब तसल्ली देगा?
 83 मैं धुँएँ में सुकड़ी हुई मशक की मानिंद हूँ लेकिन तेरे फ़रमानों को नहीं भूलता।
 84 तेरे खादिम को मज़ीद कितनी देर इंतज़ार करना पड़ेगा? तू मेरा ताक्कुब करनेवालों की अदालत कब करेगा?
 85 जो मग़स्स तेरी शरीअत के ताबे नहीं होते उन्होंने मुझे फ़ैसाने के लिए गढे खोद लिए हैं।
 86 तेरे तमाम अहकाम पुरवफ़ा हैं। मेरी मदद कर, क्योंकि वह झूट का सहारा लेकर मेरा ताक्कुब कर रहे हैं।
 87 वह मुझे रूए-ज़मीन पर से मिटाने के करीब ही हैं, लेकिन मैंने तेरे आईन को तर्क नहीं किया।
 88 अपनी शफ़क़त का इज़हार करके मेरी जान को ताज़ादम कर ताकि तेरे मुँह के फ़रमानों पर अमल करूँ।

12

- 89 ऐ रब, तेरा कलाम अबद तक आसमान पर कायमो-दायम है।
 90 तेरी वफ़ादारी पुश्त-दर-पुश्त रहती है। तूने ज़मीन की बुनियाद रखी, और वह वहीं की वहीं बरकरार रहती है।
 91 आज तक आसमानो-ज़मीन तेरे फ़रमानों को पूरा करने के लिए हाज़िर रहते हैं, क्योंकि तमाम चीज़ें तेरी ख़िदमत करने के लिए बनाई गई हैं।
 92 अगर तेरी शरीअत मेरी खुशी न होती तो मैं अपनी मुसीबत में हलाक हो गया होता।
 93 मैं तेरी हिदायात कभी नहीं भूलूँगा, क्योंकि उन्हीं के ज़रीए तू मेरी जान को ताज़ादम करता है।
 94 मैं तेरा ही हूँ, मुझे बचा! क्योंकि मैं तेरे अहकाम का तालिब रहा हूँ।
 95 बेदीन मेरी ताक में बैठ गए हैं ताकि मुझे मार डालें, लेकिन मैं तेरे आईन पर ध्यान देता रहूँगा।
 96 मैंने देखा है कि हर कामिल चीज़ की हद होती है, लेकिन तेरे फ़रमान की कोई हद नहीं होती।

13

- 97 तेरी शरीअत मुझे कितनी प्यारी है! दिन-भर मैं उसमें महवे-खयाल रहता हूँ।
 98 तेरा फ़रमान मुझे मेरे दुश्मनों से ज़्यादा दानिशमंद बना देता है, क्योंकि वह हमेशा तक मेरा ख़ज़ाना है।
 99 मुझे अपने तमाम उस्तादों से ज़्यादा समझ हासिल है, क्योंकि मैं तेरे आईन में महवे-खयाल रहता हूँ।
 100 मुझे बुज़ुर्गों से ज़्यादा समझ हासिल है, क्योंकि मैं वफ़ादारी से तेरे अहकाम की पैरवी करता हूँ।
 101 मैंने हर बुरी राह पर क़दम रखने से गुरेज़ किया है ताकि तेरे कलाम से लिपटा रहूँ।
 102 मैं तेरे फ़रमानों से दूर नहीं हुआ, क्योंकि तू ही ने मुझे तालीम दी है।
 103 तेरा कलाम कितना लज़ीज़ है, वह मेरे मुँह में शहद से ज़्यादा मीठा है।
 104 तेरे अहकाम से मुझे समझ हासिल होती है, इसलिए मैं झूट की हर राह से नफ़रत करता हूँ।

14

- 105 तेरा कलाम मेरे पाँवों के लिए चराग़ है जो मेरी राह को रौशन करता है।
 106 मैंने क़सम खाई है कि तेरे रास्त फ़रमानों की पैरवी करूँगा, और मैं यह वादा पूरा भी करूँगा।
 107 मुझे बहुत पस्त किया गया है। ऐ रब, अपने कलाम के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।
 108 ऐ रब, मेरे मुँह की रज़ाकाराना कुरबानियों को पसंद कर और मुझे अपने आईन सिखा!

- 109 मेरी जान हमेशा खतरे में है, लेकिन मैं तेरी शरीअत नहीं भूलता।
 110 बेदीनों ने मेरे लिए फंदा तैयार कर रखा है, लेकिन मैं तेरे फ़रमानों से नहीं भटका।
 111 तेरे अहकाम मेरी अबदी मीरास बन गए हैं, क्योंकि उनसे मेरा दिल खुशी से उछलता है।
 112 मैंने अपना दिल तेरे अहकाम पर अमल करने की तरफ़ मायल किया है, क्योंकि इसका अज़्र अबदी है।

15

- 113 मैं दो दिलों से नफ़रत लेकिन तेरी शरीअत से मुहब्बत करता हूँ।
 114 तू मेरी पनाहगाह और मेरी ढाल है, मैं तेरे कलाम के इंतज़ार में रहता हूँ।
 115 ऐ बदकारो, मुझसे दूर हो जाओ, क्योंकि मैं अपने खुदा के अहकाम से लिपटा रहूँगा।
 116 अपने फ़रमान के मुताबिक मुझे सँभाल ताकि ज़िंदा रहूँ। मेरी आस टूटने न दे ताकि शर्मिंदा न हो जाऊँ।
 117 मेरा सहारा बन ताकि बचकर हर वक़्त तेरे आईन का लिहाज़ रखूँ।
 118 तू उन सबको रद्द करता है जो तेरे अहकाम से भटके फिरते हैं, क्योंकि उनकी धोकेबाज़ी फ़रेब ही है।
 119 तू ज़मीन के तमाम बेदीनों को नापाक चाँदी से ख़ारिज की हुई मैल की तरह फेंककर नेस्त कर देता है, इसलिए तेरे फ़रमान मुझे प्यारे हैं।
 120 मेरा जिस्म तुझसे दहशत खाकर थरथराता है, और मैं तेरे फैसलों से डरता हूँ।

16

- 121 मैंने रास्त और बा-इनसाफ़ काम किया है, चुनाँचे मुझे उनके हवाले न कर जो मुझ पर जुल्म करते हैं।
 122 अपने ख़ादिम की ख़ुशहाली का ज़ामिन बनकर मग़स्रों को मुझ पर जुल्म करने न दे।
 123 मेरी आँखें तेरी नजात और तेरे रास्त वादे की राह देखते देखते रह गई हैं।
 124 अपने ख़ादिम से तेरा सुलूक तेरी शफ़क़त के मुताबिक़ हो। मुझे अपने अहकाम सिखा।
 125 मैं तेरा ही ख़ादिम हूँ। मुझे फ़हम अता फ़रमा ताकि तेरे आईन की पूरी समझ आए।
 126 अब वक़्त आ गया है कि रब क़दम उठाए, क्योंकि लोगों ने तेरी शरीअत को तोड़ डाला है।
 127 इसलिए मैं तेरे अहकाम को सोने बल्कि ख़ालिस सोने से ज़्यादा प्यार करता हूँ।
 128 इसलिए मैं एहतियात से तेरे तमाम आईन के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारता हूँ। मैं हर फ़रेबदेह राह से नफ़रत करता हूँ।

17

- 129 तेरे अहकाम ताज्जुबअंगेज़ हैं, इसलिए मेरी जान उन पर अमल करती है।
 130 तेरे कलाम का इनकिशाफ़ रौशनी बख़्शता और सादालौह को समझ अता करता है।
 131 मैं तेरे फ़रमानों के लिए इतना प्यासा हूँ कि मुँह खोलकर हाँप रहा हूँ।
 132 मेरी तरफ़ रूजू फ़रमा और मुझ पर वही मेहरबानी कर जो तू उन सब पर करता है जो तेरे नाम से प्यार करते हैं।
 133 अपने कलाम से मेरे क़दम मज़बूत कर, किसी भी गुनाह को मुझ पर हुकूमत न करने दे।
 134 फ़िघा देकर मुझे इन्सान के जुल्म से छुटकारा दे ताकि मैं तेरे अहकाम के ताबे रहूँ।
 135 अपने चेहरे का नूर अपने ख़ादिम पर चमका और मुझे अपने अहकाम सिखा।
 136 मेरी आँखों से आँसुओं की नदियाँ बह रही हैं, क्योंकि लोग तेरी शरीअत के ताबे नहीं रहते।

18

- 137 ऐ रब, तू रास्त है, और तेरे फैसले दुस्त हैं।
 138 तूने रास्ती और बड़ी वफ़ादारी के साथ अपने फ़रमान जारी किए हैं।
 139 मेरी जान ग़ैरत के बाइस तबाह हो गई है, क्योंकि मेरे दुश्मन तेरे फ़रमान भूल गए हैं।
 140 तेरा कलाम आजमाकर पाक-साफ़ साबित हुआ है, तेरा ख़ादिम उसे प्यार करता है।
 141 मुझे ज़लील और हक़ीर जाना जाता है, लेकिन मैं तेरे आईन नहीं भूलता।
 142 तेरी रास्ती अबदी है, और तेरी शरीअत सच्चाई है।
 143 मुसीबत और परेशानी मुझ पर ग़ालिब आ गई हैं, लेकिन मैं तेरे अहकाम से लुत्फ़अंदोज़ होता हूँ।
 144 तेरे अहकाम अबद तक रास्त हैं। मुझे समझ अता फ़रमा ताकि मैं जीता रहूँ।

19

- 145 मैं पूरे दिल से पुकारता हूँ, “ऐ रब, मेरी सुन! मैं तेरे आईन के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारूँगा।”
 146 मैं पुकारता हूँ, “मुझे बचा! मैं तेरे अहकाम की पैरवी करूँगा।”
 147 पौ फटने से पहले पहले मैं उठकर मदद के लिए पुकारता हूँ। मैं तेरे कलाम के इंतज़ार में हूँ।

- 148 रात के वक़्त ही मेरी आँखें खुल जाती हैं ताकि तेरे कलाम पर गौरो-खौज़ करूँ।
 149 अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मेरी आवाज़ सुन! ऐ रब, अपने फ़रमानों के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।
 150 जो चालाकी से मेरा ताक़्क़ुब कर रहे हैं वह करीब पहुँच गए हैं। लेकिन वह तेरी शरीअत से इंतहाई दूर हैं।
 151 ऐ रब, तू करीब ही है, और तेरे अहकाम सच्चाई हैं।
 152 बड़ी देर पहले मुझे तेरे फ़रमानों से मालूम हुआ है कि तूने उन्हें हमेशा के लिए कायम रखा है।

20

- 153 मेरी मुसीबत का ख़याल करके मुझे बचा! क्योंकि मैं तेरी शरीअत नहीं भूलता।
 154 अदालत में मेरे हक़ में लड़कर मेरा एवज़ाना दे ताकि मेरी जान छूट जाए। अपने वादे के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।
 155 नजात बेदीनों से बहुत दूर है, क्योंकि वह तेरे अहकाम के तालिब नहीं होते।
 156 ऐ रब, तू मुतअद्दि तरीकों से अपने रहम का इज़हार करता है। अपने आईन के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।
 157 मेरा ताक़्क़ुब करनेवालों और मेरे दुश्मनों की बड़ी तादाद है, लेकिन मैं तेरे अहकाम से दूर नहीं हुआ।
 158 बेवफ़ाओं को देखकर मुझे घिन आती है, क्योंकि वह तेरे कलाम के मुताबिक़ जिंदगी नहीं गुज़ारते।
 159 देख, मुझे तेरे अहकाम से प्यार है। ऐ रब, अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।
 160 तेरे कलाम का लुब्बे-लुबाब सच्चाई है, तेरे तमाम रास्त फ़रमान अबद तक कायम हैं।

21

- 161 सरदार बिलावजह मेरा पीछा करते हैं, लेकिन मेरा दिल तेरे कलाम से ही डरता है।
 162 मैं तेरे कलाम की खुशी उस की तरह मनाता हूँ जिसे कसरत का माले-ग़नीमत मिल गया हो।
 163 मैं झूट से नफ़रत करता बल्कि घिन खाता हूँ, लेकिन तेरी शरीअत मुझे प्यारी है।
 164 मैं दिन में सात बार तेरी सताइश करता हूँ, क्योंकि तेरे अहकाम रास्त हैं।
 165 जिन्हें शरीअत प्यारी है उन्हें बड़ा सुकून हासिल है, वह किसी भी चीज़ से ठोकर खाकर नहीं गिरेंगे।
 166 ऐ रब, मैं तेरी नजात के इंतज़ार में रहते हुए तेरे अहकाम की पैरवी करता हूँ।
 167 मेरी जान तेरे फ़रमानों से लिपटी रहती है, वह उसे निहायत प्यारे हैं।
 168 मैं तेरे आईन और हिदायात की पैरवी करता हूँ, क्योंकि मेरी तमाम राहें तेरे सामने हैं।

22

- 169 ऐ रब, मेरी आँहें तेरे सामने आएँ, मुझे अपने कलाम के मुताबिक़ समझ अता फ़रमा।
 170 मेरी इल्तिजाएँ तेरे सामने आएँ, मुझे अपने कलाम के मुताबिक़ छुड़ा!
 171 मेरे होंटों से हम्दो-सना फूट निकले, क्योंकि तू मुझे अपने अहकाम सिखाता है।
 172 मेरी ज़बान तेरे कलाम की मद्दहसराई करे, क्योंकि तेरे तमाम फ़रमान रास्त हैं।
 173 तेरा हाथ मेरी मदद करने के लिए तैयार रहे, क्योंकि मैंने तेरे अहकाम इख्तियार किए हैं।
 174 ऐ रब, मैं तेरी नजात का आरज़ुमंद हूँ, तेरी शरीअत से लुत्फ़अंदोज़ होता हूँ।
 175 मेरी जान जिंदा रहे ताकि तेरी सताइश कर सके। तेरे आईन मेरी मदद करें।
 176 मैं भटकी हुई भेड़ की तरह आवारा फिर रहा हूँ। अपने खादिम को तलाश कर, क्योंकि मैं तेरे अहकाम नहीं भूलता।

120

तोहमत लगानेवालों से रिहाई के लिए दुआ

- 1 ज़ियारत का गीत।
 मुसीबत में मैंने रब को पुकारा, और उसने मेरी सुनी।
 2 ऐ रब, मेरी जान को झूटे होंटों और फ़रेबदेह ज़बान से बचा।
 3 ऐ फ़रेबदेह ज़बान, वह तेरे साथ किया करे, मज़ीद तुझे क्या दे?
 4 वह तुझ पर जंगजू के तेज़ तीर और दहकते कोयले बरसाए!
 5 मुझ पर अफ़सोस! मुझे अजनबी मुल्क मसक में, कीदार के ख़ैमों के पास रहना पड़ता है।
 6 इतनी देर से अमन के दुश्मनों के पास रहने से मेरी जान तंग आ गई है।
 7 मैं तो अमन चाहता हूँ, लेकिन जब कभी बोलूँ तो वह जंग करने पर तुले होते हैं।

121

इनसान का वफादार मुहाफिज़

- 1 ज़ियारत का गीत।
मैं अपनी आँखों को पहाड़ों की तरफ उठाता हूँ। मेरी मदद कहाँ से आती है?
- 2 मेरी मदद रब से आती है, जो आसमानो-ज़मीन का खालिक है।
- 3 वह तेरा पाँव फिसलने नहीं देगा। तेरा मुहाफिज़ ऊँघने का नहीं।
- 4 यक्रीनन इसराईल का मुहाफिज़ न ऊँघता है, न सोता है।
- 5 रब तेरा मुहाफिज़ है, रब तेरे दहने हाथ पर सायबान है।
- 6 न दिन को सूरज, न रात को चाँद तुझे जरूर पहुँचाएगा।
- 7 रब तुझे हर नुकसान से बचाएगा, वह तेरी जान को महफूज़ रखेगा।
- 8 रब अब से अबद तक तेरे आने जाने की पहरादारी करेगा।

122

यरूशलम पर बरकत

- 1 दाऊद का ज़ियारत का गीत।
मैं उनसे खुश हुआ जिन्होंने मुझसे कहा, “आओ, हम रब के घर चलें।”
- 2 ऐ यरूशलम, अब हमारे पाँव तेरे दरवाज़ों में खड़े हैं।
- 3 यरूशलम शहर यों बनाया गया है कि उसके तमाम हिस्से मज़बूती से एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं।
- 4 वहाँ कबीले, हाँ रब के कबीले हाज़िर होते हैं ताकि रब के नाम की सताइश करें जिस तरह इसराईल को फ़रमाया गया है।
- 5 क्योंकि वहाँ तख़्ते-अदालत करने के लिए लगाए गए हैं, वहाँ दाऊद के घराने के तख़्त हैं।
- 6 यरूशलम के लिए सलामती माँगो! “जो तुझसे प्यार करते हैं वह सुकून पाएँ।
- 7 तेरी फ़सील में सलामती और तेरे महलों में सुकून हो।”
- 8 अपने भाइयों और हमसायों की खातिर मैं कहूँगा, “तेरे अंदर सलामती हो!”
- 9 रब हमारे खुदा के घर की खातिर मैं तेरी खुशहाली का तालिब रहूँगा।

123

अल्लाह हम पर मेहरबानी करे

- 1 ज़ियारत का गीत।
मैं अपनी आँखों को तेरी तरफ उठाता हूँ, तेरी तरफ जो आसमान पर तख़्तनशीन है।
- 2 जिस तरह गुलाम की आँखें अपने मालिक के हाथ की तरफ और लौंडी की आँखें अपनी मालिकन के हाथ की तरफ लगी रहती हैं उसी तरह हमारी आँखें रब अपने खुदा पर लगी रहती हैं, जब तक वह हम पर मेहरबानी न करे।
- 3 ऐ रब, हम पर मेहरबानी कर, हम पर मेहरबानी कर! क्योंकि हम हद से ज़्यादा हिकारत का निशाना बन गए हैं।
- 4 सुकून से ज़िंदगी गुज़ारनेवालों की लान-तान और मगरूरों की तहकीर से हमारी जान दूँभर हो गई है।

124

मुसीबत में अल्लाह हमारा सहारा है

- 1 दाऊद का ज़ियारत का गीत।
इसराईल कहे, “अगर रब हमारे साथ न होता,
- 2 अगर रब हमारे साथ न होता जब लोग हमारे खिलाफ उठे
- 3 और आग-बगूला होकर अपना पूरा गुस्सा हम पर उतारा, तो वह हमें ज़िंदा हड़प कर लेते।
- 4 फिर सैलाब हम पर टूट पड़ता, नदी का तेज़ धारा हम पर गालिब आ जाता
- 5 और मुतलातिम पानी हम पर से गुज़र जाता।”
- 6 रब की हम्द हो जिसने हमें उनके दाँतों के हवाले न किया, वरना वह हमें फाड़ खाते।
- 7 हमारी जान उस चिड़िया की तरह छूट गई है जो चिड़ीमार के फंदे से निकलकर उड़ गई है। फंदा टूट गया है, और हम बच निकले हैं।
- 8 रब का नाम, हाँ उसी का नाम हमारा सहारा है जो आसमानो-ज़मीन का खालिक है।

125

चारों तरफ़ से क्रौम की हिफ़ाज़त

1 ज़ियारत का गीत।

जो रब पर भरोसा रखते हैं वह कोहे-सिय्यून की मानिंद हैं जो कभी नहीं डगमगाता बल्कि अबद तक कायम रहता है।

2 जिस तरह यस्शलम पहाड़ों से घिरा रहता है उसी तरह रब अपनी क्रौम को अब से अबद तक चारों तरफ़ से महफूज़ रखता है।

3 क्योंकि बेदीनों की रास्तबाज़ों की मीरास पर हुक्मत नहीं रहेगी, ऐसा न हो कि रास्तबाज़ बदकारी करने की आजमाइश में पड़ जाएँ।

4 ऐ रब, उनसे भलाई कर जो नेक हैं, जो दिल से सीधी राह पर चलते हैं।

5 लेकिन जो भटककर अपनी टेढ़ी-मेढ़ी राहों पर चलते हैं उन्हें रब बदकारों के साथ खारिज कर दे। इसराईल की सलामती हो!

126

रब अपने क़ैदियों को रिहाई देता है

1 ज़ियारत का गीत।

जब रब ने सिय्यून को बहाल किया तो ऐसा लग रहा था कि हम खाब देख रहे हैं।

2 तब हमारा मुँह हँसी-खुशी से भर गया, और हमारी ज़बान शादमानी के नारे लगाने से रुक न सकी। तब दीगर क्रौमों में कहा गया, “रब ने उनके लिए ज़बरदस्त काम किया है।”

3 रब ने वाकई हमारे लिए ज़बरदस्त काम किया है। हम कितने खुश थे, कितने खुश!

4 ऐ रब, हमें बहाल कर। जिस तरह मौसमे-बरसात में दशते-नजब के खुशक नाले पानी से भर जाते हैं उसी तरह हमें बहाल कर।

5 जो ऑसू बहा बहाकर बीज बोएँ वह खुशी के नारे लगाकर फसल काटेंगे।

6 वह रोते हुए बीज बोने के लिए निकलेंगे, लेकिन जब फसल पक जाए तो खुशी के नारे लगाकर पूले उठाए अपने घर लौटेंगे।

127

अल्लाह ही हमारा घर तामीर करता है

1 सुलेमान का ज़ियारत का गीत।

अगर रब घर को तामीर न करे तो उस पर काम करनेवालों की मेहनत अबस है। अगर रब शहर की पहरादारी न करे तो इनसानी पहरेदारों की निगहबानी अबस है।

2 यह भी अबस है कि तुम सुबह-सवेरे उठो और पूरे दिन मेहनत-मशक्कत के साथ रोज़ी कमाकर रात गए सो जाओ। क्योंकि जो अल्लाह को प्यारे हैं उन्हें वह उनकी ज़रूरियात उनके सोते में पूरी कर देता है।

3 बच्चे ऐसी नेमत हैं जो हम मीरास में रब से पाते हैं, औलाद एक अज़्र है जो वही हमें देता है।

4 जवानी में पैदा हुए बेटे सूरे के हाथ में तीरों की मानिंद हैं।

5 मुबारक है वह आदमी जिसका तरक़श उनसे भरा है। जब वह शहर के दरवाज़े पर अपने दुश्मनों से झगड़ेगा तो शर्मिदा नहीं होगा।

128

जिस खानदान को अल्लाह बरकत देता है

1 ज़ियारत का गीत।

मुबारक है वह जो रब का खौफ़ मानकर उस की राहों पर चलता है।

2 यकीनन तू अपनी मेहनत का फल खाएगा। मुबारक हो, क्योंकि तू कामयाब होगा।

3 घर में तेरी बीवी अंगूर की फलदार बेल की मानिंद होगी, और तेरे बेटे मेज़ के इर्दगिर्द बैठकर ज़ैतून की ताज़ा शाखों * की मानिंद होंगे।

4 जो आदमी रब का खौफ़ माने उसे ऐसी ही बरकत मिलेगी।

5 रब तुझे कोहे-सिय्यून से बरकत दे। वह करे कि तू जीते-जी यस्शलम की खुशहाली देखे,

6 कि तू अपने पोतों-नवासों को भी देखे। इसराईल की सलामती हो!

129

मदद के लिए इसराईल की दुआ

* 128:3 इससे मुराद है पैबंदकारी के लिए दरख़्त से काटी गई टहनियाँ।

1 ज़ियारत का गीत।

इसराईल कहे, “मेरी जवानी से ही मेरे दुश्मन बार बार मुझ पर हमलाआवर हुए हैं।

2 मेरी जवानी से ही वह बार बार मुझ पर हमलाआवर हुए हैं। तो भी वह मुझ पर गालिब न आए।”

3 हल चलानेवालों ने मेरी पीठ पर हल चलाकर उस पर अपनी लंबी लंबी रेघारयाँ बनाई हैं।

4 रब रास्त है। उसने बेदीनों के रस्से काटकर मुझे आज़ाद कर दिया है।

5 अल्लाह करे कि जितने भी सिय्यून से नफ़रत रखें वह शर्मिंदा होकर पीछे हट जाएँ।

6 वह छतों पर की घास की मानिंद हों जो सहीह तौर पर बढ़ने से पहले ही मुरझा जाती है

7 और जिससे न फ़सल काटनेवाला अपना हाथ, न पूले बाँधनेवाला अपना बाजू भर सके।

8 जो भी उनसे गुज़रे वह न कहे, “रब तुम्हें बरकत दे।”

हम रब का नाम लेकर तुम्हें बरकत देते हैं!

130

बड़ी मुसीबत से रिहाई की दुआ (तौबा का छटा जबूर)

1 ज़ियारत का गीत।

ऐ रब, मैं तुझे गहराइयों से पुकारता हूँ।

2 ऐ रब, मेरी आवाज़ सुन! कान लगाकर मेरी इल्तिजाओं पर ध्यान दे!

3 ऐ रब, अगर तू हमारे गुनाहों का हिसाब करे तो कौन कायम रहेगा? कोई भी नहीं!

4 लेकिन तुझसे मुआफ़ी हासिल होती है ताकि तेरा ख़ौफ़ माना जाए।

5 मैं रब के इंतज़ार में हूँ, मेरी जान शिदत से इंतज़ार करती है। मैं उसके कलाम से उम्मीद रखता हूँ।

6 पहरेदार जिस शिदत से पौ फटने के इंतज़ार में रहते हैं, मेरी जान उससे भी ज़्यादा शिदत के साथ, हाँ ज़्यादा शिदत के साथ रब की मुंतज़िर रहती है।

7 ऐ इसराईल, रब की राह देखता रह! क्योंकि रब के पास शफ़क़त और फ़िघा का ठोस बंदोबस्त है।

8 वह इसराईल के तमाम गुनाहों का फ़िघा देकर उसे नज़ात देगा।

131

बच्चे का-सा ईमान

1 ज़ियारत का गीत।

ऐ रब, न मेरा दिल घमंडी है, न मेरी आँखें मग़सूर हैं। जो बातें इतनी अज़ीम और हैरानकुन हैं कि मैं उनसे निपट नहीं सकता उन्हें मैं नहीं छेड़ता।

2 यक़ीनन मैंने अपनी जान को राहत और सुकून दिलाया है, और अब वह माँ की गोद में बैठे छोटे बच्चे की मानिंद है, हाँ मेरी जान छोटे बच्चे * की मानिंद है।

3 ऐ इसराईल, अब से अबद तक रब के इंतज़ार में रह!

132

दाऊद का घराना और सिय्यून पर मक़दिस

1 ज़ियारत का गीत।

ऐ रब, दाऊद का खयाल रख, उस की तमाम मुसीबतों को याद कर।

2 उसने क़सम खाकर रब से वादा किया और याक़ूब के क़वी ख़ुदा के हुज़ूर मन्नत मानी,

3 “न मैं अपने घर में दाखिल हूँगा, न बिस्तर पर लेटूँगा,

4 न मैं अपनी आँखों को सोने दूँगा, न अपने पपोटों को ऊँघने दूँगा

5 जब तक रब के लिए मक़ाम और याक़ूब के सूरमे के लिए सुकूनतगाह न मिले।”

6 हमने इफ़राता में अहद के संदूक की ख़बर सुनी और यार के खुले मैदान में उसे पा लिया।

* 131:2 जिस बच्चे ने माँ का दूध पीना छोड़ दिया है।

- 7 आओ, हम उस की सुकूनतगाह में दाखिल होकर उसके पाँवों की चौकी के सामने सिजदा करें।
- 8 ऐ रब, उठकर अपनी आरामगाह के पास आ, तू और अहद का संदूक जो तेरी कुदरत का इज़हार है।
- 9 तेरे इमाम रास्ती से मुलबबस हो जाएँ, और तेरे ईमानदार खुशी के नारे लगाएँ।
- 10 ऐ अल्लाह, अपने खादिम दाऊद की खातिर अपने मसह किए हुए बंदे के चेहरे को रद्द न कर।
- 11 रब ने कसम खाकर दाऊद से वादा किया है, और वह उससे कभी नहीं फिरेगा, “मैं तेरी औलाद में से एक को तेरे तख्त पर बिठाऊँगा।
- 12 अगर तेरे बेटे मेरे अहद के वफ़ादार रहें और उन अहकाम की पैरवी करें जो मैं उन्हें सिखाऊँगा तो उनके बेटे भी हमेशा तक तेरे तख्त पर बैठेंगे।”
- 13 क्योंकि रब ने कोहे-सियून को चुन लिया है, और वही वहाँ सुकूनत करने का आरज़ूमंद था।
- 14 उसने फ़रमाया, “यह हमेशा तक मेरी आरामगाह है, और यहाँ मैं सुकूनत करूँगा, क्योंकि मैं इसका आरज़ूमंद हूँ।
- 15 मैं सियून की खुराक को कसरत की बरकत देकर उसके गरीबों को रोटी से सेर करूँगा।
- 16 मैं उसके इमामों को नजात से मुलबबस करूँगा, और उसके ईमानदार खुशी से ज़ोरदार नारे लगाएँगे।
- 17 यहाँ मैं दाऊद की ताक़त बढ़ा दूँगा, * और यहाँ मैंने अपने मसह किए हुए खादिम के लिए चराग़ तैयार कर रखा है।
- 18 मैं उसके दुश्मनों को शरमिंदगी से मुलबबस करूँगा जबकि उसके सर का ताज चमकता रहेगा।”

133

भाइयों की यगांगत की बरकत

- 1 दाऊद का ज़बूर। ज़ियारत का गीत।
- जब भाई मिलकर और यगांगत से रहते हैं यह कितना अच्छा और प्यारा है।
- 2 यह उस नफ़ीस तेल की मानिंद है जो हारून इमाम के सर पर उंडेला जाता है और टपक टपककर उस की दाढ़ी और लिबास के ग़रेबान पर आ जाता है।
- 3 यह उस ओस की मानिंद है जो कोहे-हरमून से सियून के पहाड़ों पर पड़ती है। क्योंकि रब ने फ़रमाया है, “वही हमेशा तक बरकत और ज़िंदगी मिलेगी।”

134

रब के घर में रात की सताइश

- 1 ज़ियारत का गीत।
- आओ, रब की सताइश करो, ऐ रब के तमाम खादिमो जो रात के वक़्त रब के घर में खड़े हो।
- 2 मक़दिस में अपने हाथ उठाकर रब की तमजीद करो!
- 3 रब सियून से तुझे बरकत दे, आसमानो-ज़मीन का ख़ालिक तुझे बरकत दे।

135

अल्लाह की परस्तिश

- 1 रब की हम्द हो! रब के नाम की सताइश करो! उस की तमजीद करो, ऐ रब के तमाम खादिमो,
- 2 जो रब के घर में, हमारे खुदा की बारगाहों में खड़े हो।
- 3 रब की हम्द करो, क्योंकि रब भला है। उसके नाम की मद्हसराई करो, क्योंकि वह प्यारा है।
- 4 क्योंकि रब ने याकूब को अपने लिए चुन लिया, इसराईल को अपनी मिलकियत बना लिया है।
- 5 हाँ, मैंने जान लिया है कि रब अज़ीम है, कि हमारा रब दीगर तमाम माबूदों से ज़्यादा अज़ीम है।
- 6 रब जो जी चाहे करता है, खाह आसमान पर हो या ज़मीन पर, खाह समुंदरों में हो या गहराइयों में कहीं भी हो।
- 7 वह ज़मीन की इंतहा से बादल चढ़ने देता और बिजली बारिश के लिए पैदा करता है, वह हवा अपने गोदामों से निकाल लाता है।
- 8 मिसर में उसने इनसानो-हैवान के तमाम पहलौठों को मार डाला।
- 9 ऐ मिसर, उसने अपने इलाही निशान और मौजिज़ात तेरे दरमियान ही किए। तब फिरौन और उसके तमाम मुलाज़िम उनका निशाना बन गए।

* 132:17 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : मैं दाऊद का सींग फूटने दूँगा।

- 10 उसने मुतअद्दिद कौमों को शिकस्त देकर ताकतवर बादशाहों को मौत के घाट उतार दिया।
- 11 अमोरियों का बादशाह सीहोन, बसन का बादशाह ओज और मुल्के-कनान की तमाम सलतनतें न रहीं।
- 12 उसने उनका मुल्क इसराईल को देकर फरमाया कि आइंदा यह मेरी कौम की मौस्सी मिलकियत होगा।
- 13 ऐ रब, तेरा नाम अबदी है। ऐ रब, तुझे पुश्त-दर-पुश्त याद किया जाएगा।
- 14 क्योंकि रब अपनी कौम का इनसाफ करके अपने खादिमों पर तरस खाएगा।
- 15 दीगर कौमों के बुत सोने-चाँदी के हैं, इनसान के हाथ ने उन्हें बनाया।
- 16 उनके मुँह हैं लेकिन वह बोल नहीं सकते, उनकी आँखें हैं लेकिन वह देख नहीं सकते।
- 17 उनके कान हैं लेकिन वह सुन नहीं सकते, उनके मुँह में साँस ही नहीं होती।
- 18 जो बुत बनाते हैं वह उनकी मानिंद हो जाएँ, जो उन पर भरोसा रखते हैं वह उन जैसे बेहिसो-हरकत हो जाएँ।
- 19 ऐ इसराईल के घराने, रब की सताइश कर। ऐ हास्न के घराने, रब की तमजीद कर।
- 20 ऐ लावी के घराने, रब की हम्दो-सना कर। ऐ रब का खौफ माननेवालो, रब की सताइश करो।
- 21 सिय्यून से रब की हम्द हो। उस की हम्द हो जो यरूशलम में सुकूनत करता है। रब की हम्द हो!

136

तखलीक और कौम की तारीख में अल्लाह के मोजिजे

- 1 रब का शुक्र करो, क्योंकि वह भला है, और उस की शफकत अबदी है।
- 2 खुदाओं के खुदा का शुक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 3 मालिकों के मालिक का शुक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 4 जो अकेला ही अजीम मोजिजे करता है उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 5 जिसने हिकमत के साथ आसमान बनाया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 6 जिसने ज़मीन को मज़बूती से पानी के ऊपर लगा दिया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 7 जिसने आसमान की रौशनियों को खलक किया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 8 जिसने सूरज को दिन के वक़्त हुक्मत करने के लिए बनाया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 9 जिसने चाँद और सितारों को रात के वक़्त हुक्मत करने के लिए बनाया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 10 जिसने मिसर में पहलौठों को मार डाला उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 11 जो इसराईल को मिसरियों में से निकाल लाया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 12 जिसने उस वक़्त बड़ी ताक़त और कुदरत का इज़हार किया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 13 जिसने बहरे-कुलजुम को दो हिस्सों में तक्सीम कर दिया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 14 जिसने इसराईल को उसके बीच में से गुज़रने दिया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 15 जिसने फिरौन और उस की फ़ौज को बहरे-कुलजुम में बहाकर गरक कर दिया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 16 जिसने रेगिस्तान में अपनी कौम की क्रियादत की उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 17 जिसने बड़े बादशाहों को शिकस्त दी उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 18 जिसने ताक़तवर बादशाहों को मार डाला उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 19 जिसने अमोरियों के बादशाह सीहोन को मौत के घाट उतारा उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 20 जिसने बसन के बादशाह ओज को हलाक कर दिया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 21 जिसने उनका मुल्क इसराईल को मीरास में दिया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 22 जिसने उनका मुल्क अपने खादिम इसराईल की मौस्सी मिलकियत बनाया उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 23 जिसने हमारा खयाल किया जब हम खाक में दब गए थे उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 24 जिसने हमें उनके कब्जे से छुड़ाया जो हम पर ज़ुल्म कर रहे थे उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 25 जो तमाम जानदारों को खुराक मुहैया करता है उसका शुक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 26 आसमान के खुदा का शुक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।

137

बाबल में जिलावतनों की आहो-ज़ारी

- 1 जब सिय्यून की याद आई तो हम बाबल की नहरों के किनारे ही बैठकर रो पड़े।
- 2 हमने वहाँ के सफ़ेदा के दरख्तों से अपने सरोद लटका दिए,
- 3 क्योंकि जिन्होंने हमें गिरिफ़्तार किया था उन्होंने हमें वहाँ गीत गाने को कहा, और जो हमारा मज़ाक़ उड़ाते हैं उन्होंने खुशी का मुतालबा किया, “हमें सिय्यून का कोई गीत सुनाओ!”
- 4 लेकिन हम अज़नबी मुल्क में किस तरह रब का गीत गाएँ?
- 5 ऐ यरूशलम, अगर मैं तुझे भूल जाऊँ तो मेरा दहना हाथ सूख जाए।
- 6 अगर मैं तुझे याद न करूँ और यरूशलम को अपनी अज़ीमतरनीन खुशी से ज़्यादा कीमती न समझूँ तो मेरी ज़बान तालू से चिपक जाए।
- 7 ऐ रब, वह कुछ याद कर जो अदोमियों ने उस दिन किया जब यरूशलम दुश्मन के कब्ज़े में आया। उस वक़्त वह बोले, “उसे ढा दो! बुनियादों तक उसे गिरा दो!”
- 8 ऐ बाबल बेटी जो तबाह करने पर तुली हुई है, मुबारक है वह जो तुझे उसका बदला दे जो तूने हमारे साथ किया है।
- 9 मुबारक है वह जो तेरे बच्चों को पकड़कर पत्थर पर पटख दे।

138

अल्लाह की मदद के लिए शुक़गुज़ारी

- 1 दाऊद का जबूर।
- ऐ रब, मैं पूरे दिल से तेरी सताइश करूँगा, माबूदों के सामने ही तेरी तमजीद करूँगा।
- 2 मैं तेरी मुक़द्दस सुकूनतगाह की तरफ़ सूख करके सिजदा करूँगा, तेरी मेहरबानी और वफ़ादारी के बाइस तेरा शुक़ करूँगा। क्योंकि तूने अपने नाम और कलाम को तमाम चीज़ों पर सरफ़राज़ किया है।
- 3 जिस दिन मैंने तुझे पुकारा तूने मेरी सुनकर मेरी जान को बड़ी तकवियत दी।
- 4 ऐ रब, दुनिया के तमाम हुक्मरान तेरे मुँह के फ़रमान सुनकर तेरा शुक़ करें।
- 5 वह रब की राहों की मद्दहसराई करें, क्योंकि रब का जलाल अज़ीम है।
- 6 क्योंकि गो रब बुलंदियों पर है वह पस्तहाल का खयाल करता और मगरूरों को दूर से ही पहचान लेता है।
- 7 जब कभी मुसीबत मेरा दामन नहीं छोड़ती तो तू मेरी जान को ताज़ादम करता है, तू अपना दहना हाथ बढ़ाकर मुझे मेरे दुश्मनों के तैश से बचाता है।
- 8 रब मेरी खातिर बदला लेगा। ऐ रब, तेरी शफ़क़त अबदी है। उन्हें न छोड़ जिनको तेरे हाथों ने बनाया है!

139

अल्लाह सब कुछ जानता और हर जगह मौजूद है

- 1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।
- ऐ रब, तू मेरा मुआयना करता और मुझे खूब जानता है।
- 2 मेरा उठना बैठना तुझे मालूम है, और तू दूर से ही मेरी सोच समझता है।
- 3 तू मुझे जाँचता है, खाह मैं रास्ते में हूँ या आराम करूँ। तू मेरी तमाम राहों से वाकिफ़ है।
- 4 क्योंकि जब भी कोई बात मेरी ज़बान पर आए तू ऐ रब पहले ही उसका पूरा इल्म रखता है।
- 5 तू मुझे चारों तरफ़ से घेरे रखता है, तेरा हाथ मेरे ऊपर ही रहता है।
- 6 इसका इल्म इतना हैरानकुन और अज़ीम है कि मैं इसे समझ नहीं सकता।
- 7 मैं तेरे रूह से कहाँ भाग जाऊँ, तेरे चेहरे से कहाँ फ़रार हो जाऊँ?
- 8 अगर आसमान पर चढ़ जाऊँ तो तू वहाँ मौजूद है, अगर उतरकर अपना बिस्तर पाताल में बिछाऊँ तो तू वहाँ भी है।
- 9 गो मैं तुलूए-सुबह के परो पर उड़कर समुंदर की दूरतरीन हद पर जा बसूँ,
- 10 वहाँ भी तेरा हाथ मेरी क्रियादत करेगा, वहाँ भी तेरा दहना हाथ मुझे थामे रखेगा।
- 11 अगर मैं कहूँ, “तारीकी मुझे छुपा दे, और मेरे इर्दगिर्द की रौशनी रात में बदल जाए,” तो भी कोई फ़रक़ नहीं पड़ेगा।

- 12 तेरे सामने तारीकी भी तारीक नहीं होती, तेरे हुज़ूर रात दिन की तरह रौशन होती है बल्कि रौशनी और अंधेरा एक जैसे होते हैं।
- 13 क्योंकि तूने मेरा बातिन बनाया है, तूने मुझे माँ के पेट में तश्कील दिया है।
- 14 मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि मुझे जलाली और मोजिज़ाना तौर से बनाया गया है। तेरे काम हैरतअंगेज़ हैं, और मेरी जान यह ख़ूब जानती है।
- 15 मेरा ढाँचा तुझसे छुपा नहीं था जब मुझे पोशीदगी में बनाया गया, जब मुझे ज़मीन की गहराइयों में तश्कील दिया गया।
- 16 तेरी आँखों ने मुझे उस वक़्त देखा जब मेरे जिस्म की शक़ल अभी नामुकम्मल थी। जितने भी दिन मेरे लिए मुकर्रर थे वह सब तेरी किताब में उस वक़्त दर्ज थे, जब एक भी नहीं गुज़रा था।
- 17 ऐ अल्लाह, तेरे खयालात समझना मेरे लिए कितना मुश्किल है! उनकी कुल तादाद कितनी अज़ीम है।
- 18 अगर मैं उन्हें गिन सकता तो वह रेत से ज़्यादा होते। मैं जाग उठता हूँ तो तेरे ही साथ होता हूँ।
- 19 ऐ अल्लाह, काश तू बेदीन को मार डाले, कि खूनख़ार मुझसे दूर हो जाएँ।
- 20 वह फ़रेब से तेरा ज़िक्र करते हैं, हाँ तेरे मुखालिफ़ झूट बोलते हैं।
- 21 ऐ रब, क्या मैं उनसे नफ़रत न करूँ जो तुझसे नफ़रत करते हैं? क्या मैं उनसे घिन न खाऊँ जो तेरे खिलाफ़ उठे हैं?
- 22 यक़ीनन मैं उनसे सख़्त नफ़रत करता हूँ। वह मेरे दुश्मन बन गए हैं।
- 23 ऐ अल्लाह, मेरा मुआयना करके मेरे दिल का हाल जान ले, मुझे जाँचकर मेरे बेचैन खयालात को जान ले।
- 24 मैं नुकसानदेह राह पर तो नहीं चल रहा? अबदी राह पर मेरी कियादत कर!

140

दुश्मन से रिहाई की दुआ

- 1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।
- ऐ रब, मुझे शरीरों से छुड़ा और ज़ालिमों से महफूज़ रख।
- 2 दिल में वह बुरे मनसूबे बाँधते, रोज़ाना जंग छेड़ते हैं।
- 3 उनकी ज़बान साँप की ज़बान जैसी तेज़ है, और उनके होंटों में साँप का ज़हर है। (सिलाह)
- 4 ऐ रब, मुझे बेदीन के हाथों से महफूज़ रख, ज़ालिम से मुझे बचाए रख, उनसे जो मेरे पाँवों को ठोकर खिलाने के मनसूबे बाँध रहे हैं।
- 5 मग़सूरों ने मेरे रास्ते में फंदा और रस्से छुपाए हैं, उन्होंने जाल बिछाकर रास्ते के किनारे किनारे मुझे पकड़ने के फंदे लगाए हैं। (सिलाह)
- 6 मैं रब से कहता हूँ, “तू ही मेरा खुदा है, मेरी इल्तिजाओं की आवाज़ सुन!”
- 7 ऐ रब क़ादिर-मुतलक़, ऐ मेरी क़वी नज़ात! जंग के दिन तू अपनी ढाल से मेरे सर की हिफाज़त करता है।
- 8 ऐ रब, बेदीन का लालच पूरा न कर। उसका इरादा कामयाब होने न दे, ऐसा न हो कि यह लोग सरफ़राज़ हो जाएँ। (सिलाह)
- 9 उन्होंने मुझे घेर लिया है, लेकिन जो आफ़त उनके होंट मुझ पर लाना चाहते हैं वह उनके अपने सरों पर आएँ!
- 10 दहकते कोयले उन पर बरसें, और उन्हें आग में, अथाह गढ़ों में फेंका जाए ताकि आइंदा कभी न उठें।
- 11 तोहमत लगानेवाला मुल्क में क़ायम न रहे, और बुराई ज़ालिम को मार मारकर उसका पीछा करे।
- 12 मैं जानता हूँ कि रब अदालत में मुसीबतज़दा का दिफ़ा करेगा। वही ज़रूरतमंद का इनसाफ़ करेगा।
- 13 यक़ीनन रास्तबाज़ तेरे नाम की सताइश करेंगे, और दियानतदार तेरे हुज़ूर बसेंगे।

141

हिफाज़त की गुज़ारिश

- 1 दाऊद का जबूर।
- ऐ रब, मैं तुझे पुकार रहा हूँ, मेरे पास आने में जल्दी कर! जब मैं तुझे आवाज़ देता हूँ तो मेरी फ़रियाद पर ध्यान दे!
- 2 मेरी दुआ तेरे हुज़ूर बख़्श की कुरबानी की तरह क़बूल हो, मेरे तेरी तरफ़ उठाए हुए हाथ शाम की ग़ल्ला की नज़र की तरह मंज़ूर हों।
- 3 ऐ रब, मेरे मुँह पर पहरा बिठा, मेरे होंटों के दरवाज़े की निगहबानी कर।
- 4 मेरे दिल को ग़लत बात की तरफ़ मायल न होने दे, ऐसा न हो कि मैं बदकारों के साथ मिलकर बुरे काम में मुलव्वस हो जाऊँ और उनके लज़ीज़ खानों में शिरकत करूँ।

5 रास्तबाज़ शफ़क़त से मुझे मारे और मुझे तंबीह करे। मेरा सर इससे इनकार नहीं करेगा, क्योंकि यह उसके लिए शफ़ाबख़्श तेल की मानिंद होगा। लेकिन मैं हर वक़्त शरीरों की हरकतों के खिलाफ़ दुआ करता हूँ।

6 जब वह गिरकर उस चटान के हाथ में आएँगे जो उनका मुंसिफ़ है तो वह मेरी बातों पर ध्यान देंगे, और उन्हें समझ आएगी कि वह कितनी प्यारी हैं।

7 ऐ अल्लाह, हमारी हड्डियाँ उस ज़मीन की मानिंद हैं जिस पर किसी ने इतने जोर से हल चलाया है कि ढेले उड़कर इधर उधर बिखर गए हैं। हमारी हड्डियाँ पाताल के मुँह तक बिखर गई हैं।

8 ऐ रब क़ादिर-मुतलक़, मेरी आँखें तुझ पर लगी रहती हैं, और मैं तुझमें पनाह लेता हूँ। मुझे मौत के हवाले न कर।

9 मुझे उस जाल से महफूज़ रख जो उन्होंने मुझे पकड़ने के लिए बिछाया है। मुझे बदकारों के फंदों से बचाए रख।

10 बेदीन मिलकर उनके अपने जालों में उलझ जाएँ जबकि मैं बचकर आगे निकलूँ।

142

सख़्त मुसीबत में मदद की पुकार

1 हिकमत का गीत। दुआ जो दाऊद ने की जब वह गार में था।

मैं मदद के लिए चीख़ता-चिल्लाता रब को पुकारता हूँ, मैं जोरदार आवाज़ से रब से इल्तिजा करता हूँ।

2 मैं अपनी आहो-ज़ारी उसके सामने उंडेल देता, अपनी तमाम मुसीबत उसके हुज़ूर पेश करता हूँ।

3 जब मेरी रूह मेरे अंदर निढाल हो जाती है तो तू ही मेरी राह जानता है। जिस रास्ते में मैं चलता हूँ उसमें लोगों ने फंदा छुपाया है।

4 मैं दहनी तरफ़ नज़र डालकर देखता हूँ, लेकिन कोई नहीं है जो मेरा खयाल करे। मैं बच नहीं सकता, कोई नहीं है जो मेरी जान की फ़िकर करे।

5 ऐ रब, मैं मदद के लिए तुझे पुकारता हूँ। मैं कहता हूँ, “तू मेरी पनाहगाह और ज़िंदों के मुल्क में मेरा मौस्सी हिस्सा है।”

6 मेरी चीखों पर ध्यान दे, क्योंकि मैं बहुत पस्त हो गया हूँ। मुझे उनसे छुड़ा जो मेरा पीछा कर रहे हैं, क्योंकि मैं उन पर क़ाबू नहीं पा सकता।

7 मेरी जान को क़ैदख़ाने से निकाल ला ताकि तेरे नाम की सताइश क़रूँ। जब तू मेरे साथ भलाई करेगा तो रास्तबाज़ मेरे इर्दगिर्द जमा हो जाएंगे।

143

बचाव और क्रियादत की गुज़ारिश (तौबा का सातवाँ जबूर)

1 दाऊद का जबूर।

ऐ रब, मेरी दुआ सुन, मेरी इल्तिजाओं पर ध्यान दे। अपनी वफ़ादारी और रास्ती की खातिर मेरी सुन!

2 अपने खादिम को अपनी अदालत में न ला, क्योंकि तेरे हुज़ूर कोई भी जानदार रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता।

3 क्योंकि दुश्मन ने मेरी जान का पीछा करके उसे ख़ाक में कुचल दिया है। उसने मुझे उन लोगों की तरह तारीकी में बसा दिया है जो बड़े अरसे से मुरदा हैं।

4 मेरे अंदर मेरी रूह निढाल है, मेरे अंदर मेरा दिल दहशत के मारे बेहिसो-हरकत हो गया है।

5 मैं क़दीम ज़माने के दिन याद करता और तेरे कामों पर ग़ौरो-ख़ौज़ करता हूँ। जो कुछ तेरे हाथों ने किया उसमें मैं महवे-खयाल रहता हूँ।

6 मैं अपने हाथ तेरी तरफ़ उठाता हूँ, मेरी जान ख़ुशक ज़मीन की तरह तेरी प्यासी है। (सिलाह)

7 ऐ रब, मेरी सुनने में जल्दी कर। मेरी जान तो ख़त्म होनेवाली है। अपना चेहरा मुझसे छुपाए न रख, वरना मैं गढे में उतरनेवालों की मानिंद हो जाऊंगा।

8 सुबह के वक़्त मुझे अपनी शफ़क़त की ख़बर सुना, क्योंकि मैं तुझ पर भरोसा रखता हूँ। मुझे वह राह दिखा जिस पर मुझे जाना है, क्योंकि मैं तेरा ही आरज़ूमंद हूँ।

9 ऐ रब, मुझे मेरे दुश्मनों से छुड़ा, क्योंकि मैं तुझमें पनाह लेता हूँ।

10 मुझे अपनी मरज़ी पूरी करना सिखा, क्योंकि तू मेरा खुदा है। तेरा नेक रूह हमवार ज़मीन पर मेरी राहनुमाई करे।

11 ऐ रब, अपने नाम की खातिर मेरी जान को ताज़ादम कर। अपनी रास्ती से मेरी जान को मुसीबत से बचा।

12 अपनी शफ़क़त से मेरे दुश्मनों को हलाक कर। जो भी मुझे तंग कर रहे हैं उन्हें तबाह कर! क्योंकि मैं तेरा खादिम हूँ।

144

नजात और खुशहाली की दुआ

1 दाऊद का जबूर।

रब मेरी चटान की हम्द हो, जो मेरे हाथों को लड़ने और मेरी उँगलियों को जंग करने की तरबियत देता है।

2 वह मेरी शफ़क़त, मेरा क़िला, मेरा नजातदहिदा और मेरी ढाल है। उसी में मैं पनाह लेता हूँ, और वही दीगर अक्रवाम को मेरे ताबे कर देता है।

3 ऐ रब, इनसान कौन है कि तू उसका खयाल रखे? आदमज़ाद कौन है कि तू उसका लिहाज़ करे?

4 इनसान दम-भर का ही है, उसके दिन तेज़ी से गुज़रनेवाले साय की मानिंद हैं।

5 ऐ रब, अपने आसमान को झुकाकर उतर आ! पहाड़ों को छू ताकि वह धुआँ छोड़ें।

6 बिजली भेजकर उन्हें मुंतशिर कर, अपने तीर चलाकर उन्हें दरहम-बरहम कर।

7 अपना हाथ बुलंदियों से नीचे बढा और मुझे छुड़ाकर पानी की गहराइयों और परदेसियों के हाथ से बचा,

8 जिनका मुँह झूट बोलता और दहना हाथ फ़रेब देता है।

9 ऐ अल्लाह, मैं तेरी तमजीद में नया गीत गाऊंगा, दस तारों का सितार बजाकर तेरी मद्हसराई करूँगा।

10 क्योंकि तू बादशाहों को नजात देता और अपने खादिम दाऊद को मोहलक तलवार से बचाता है।

11 मुझे छुड़ाकर परदेसियों के हाथ से बचा, जिनका मुँह झूट बोलता और दहना हाथ फ़रेब देता है।

12 हमारे बेटे जवानी में फलने फूलनेवाले पौदों की मानिंद हों, हमारी बेटियाँ महल को सजाने के लिए तराशे हुए कोने के सतून की मानिंद हों।

13 हमारे गोदाम भरे रहें और हर किस्म की खुराक मुहैया करें। हमारी भेड़-बकरियाँ हमारे मैदानों में हज़ारों बल्कि बेशुमार बच्चे जन्म दें।

14 हमारे गाय-बैल मोटे-ताजे हों, और न कोई जाया हो जाए, न किसी को नुक़सान पहुँचे। हमारे चौकों में आहो-ज़ारी की आवाज़ सुनाई न दे।

15 मुबारक है वह क़ौम जिस पर यह सब कुछ सादिक़ आता है, मुबारक है वह क़ौम जिसका खुदा रब है!

145

अल्लाह की अबदी शफ़क़त

1 दाऊद का जबूर। हम्दो-सना का गीत।

ऐ मेरे खुदा, मैं तेरी ताज़ीम करूँगा। ऐ बादशाह, मैं हमेशा तक तेरे नाम की सताइश करूँगा।

2 रोज़ाना मैं तेरी तमजीद करूँगा, हमेशा तक तेरे नाम की हम्द करूँगा।

3 रब अज़ीम और बड़ी तारीफ़ के लायक़ है। उस की अज़मत इनसान की समझ से बाहर है।

4 एक पुश्त अगली पुश्त के सामने वह कुछ सराहे जो तूने किया है, वह दूसरों को तेरे ज़बरदस्त काम सुनाएँ।

5 मैं तेरे शानदार जलाल की अज़मत और तेरे मोजिज़ों में महबे-खयाल रहूँगा।

6 लोग तेरे हैबतनाक कामों की कुदरत पेश करें, और मैं भी तेरी अज़मत बयान करूँगा।

7 वह जोश से तेरी बड़ी भलाई को सराहें और खुशी से तेरी रास्ती की मद्हसराई करें।

8 रब मेहरबान और रहीम है। वह तहम्मूल और शफ़क़त से भरपूर है।

9 रब सबके साथ भलाई करता है, वह अपनी तमाम मखलूकात पर रहम करता है।

10 ऐ रब, तेरी तमाम मखलूकात तेरा शुक्र करें। तेरे ईमानदार तेरी तमजीद करें।

11 वह तेरी बादशाही के जलाल पर फ़ख़र करें और तेरी कुदरत बयान करें

12 ताकि आदमज़ाद तेरे क़वी कामों और तेरी बादशाही की जलाली शानो-शौक़त से आगाह हो जाएँ।

13 तेरी बादशाही की कोई इंतहा नहीं, और तेरी सलतनत पुश्त-दर-पुश्त हमेशा तक कायम रहेगी।

14 रब तमाम गिरनेवालों का सहारा है। जो भी दब जाए उसे वह उठा खड़ा करता है।

15 सबकी आँखें तेरे इंतज़ार में रहती हैं, और तू हर एक को वक़्त पर उसका खाना मुहैया करता है।

- 16 तू अपनी मुट्ठी खोलकर हर जानदार की खाहिश पूरी करता है।
- 17 रब अपनी तमाम राहों में रास्त और अपने तमाम कामों में वफ़ादार है।
- 18 रब उन सबके करीब है जो उसे पुकारते हैं, जो दियानतदारी से उसे पुकारते हैं।
- 19 जो उसका ख़ौफ़ मानें उनकी आरजू वह पूरी करता है। वह उनकी फ़रियादें सुनकर उनकी मदद करता है।
- 20 रब उन सबको महफूज़ रखता है जो उसे प्यार करते हैं, लेकिन बेदीनों को वह हलाक करता है।
- 21 मेरा मुँह रब की तारीफ़ बयान करे, तमाम मखलूक़ात हमेशा तक उसके मुक़द्दस नाम की सताइश करें।

146

अल्लाह की अबदी वफ़ादारी

- 1 रब की हम्द हो! ऐ मेरी जान, रब की हम्द कर।
- 2 जीते-जी मैं रब की सताइश करूँगा, उम्र-भर अपने ख़ुदा की मद्दहसराई करूँगा।
- 3 शूरफ़ा पर भरोसा न रखो, न आदमज़ाद पर जो नजात नहीं दे सकता।
- 4 जब उस की रूह निकल जाए तो वह दुबारा खाक में मिल जाता है, उसी वक़्त उसके मनसूबे अधूरे रह जाते हैं।
- 5 मुबारक है वह जिसका सहारा याकूब का ख़ुदा है, जो रब अपने ख़ुदा के इंतज़ार में रहता है।
- 6 क्योंकि उसने आसमानो-ज़मीन, समुंदर और जो कुछ उनमें है बनाया है। वह हमेशा तक वफ़ादार है।
- 7 वह मज़लूमों का इन्साफ़ करता और भूकों को रोटी खिलाता है। रब कैदियों को आज़ाद करता है।
- 8 रब अंधों की आँखें बहाल करता और खाक में दबे हुएों को उठा खड़ा करता है, रब रास्तबाज़ को प्यार करता है।
- 9 रब परदेसियों की देख-भाल करता, यतीमों और बेवाओं को कायम रखता है। लेकिन वह बेदीनों की राह को टेढ़ा बनाकर कामयाब होने नहीं देता।
- 10 रब अबद तक हुक्मत करेगा। ऐ सिय्यून, तेरा ख़ुदा पुश्त-दर-पुश्त बादशाह रहेगा। रब की हम्द हो।

147

कायनात और तारीख में रब का बंदोबस्त

- 1 रब की हम्द हो! अपने ख़ुदा की मद्दहसराई करना कितना भला है, उस की तमजीद करना कितना प्यारा और ख़ूबसूरत है।
- 2 रब यरूशलम को तामीर करता और इसराईल के मुंतशिर जिलावतनों को जमा करता है।
- 3 वह दिलशिकस्तों को शफ़ा देकर उनके ज़ख़मों पर मरहम-पट्टी लगाता है।
- 4 वह सितारों की तादाद गिन लेता और हर एक का नाम लेकर उन्हें बुलाता है।
- 5 हमारा रब अज़ीम है, और उस की कुदरत ज़बरदस्त है। उस की हिकमत की कोई इंतहा नहीं।
- 6 रब मुसीबतज़दों को उठा खड़ा करता लेकिन बदकारों को खाक में मिला देता है।
- 7 रब की तमजीद में शुक्र का गीत गाओ, हमारे ख़ुदा की ख़ुशी में सरोद बजाओ।
- 8 क्योंकि वह आसमान पर बादल छाने देता, ज़मीन को बारिश मुहैया करता और पहाड़ों पर घास फूटने देता है।
- 9 वह मवेशी को चारा और कौवे के बच्चों को वह कुछ खिलाता है जो वह शोर मचाकर माँगते हैं।
- 10 न वह घोड़े की ताक़त से लुत्फ़अंदोज़ होता, न आदमी की मज़बूत टाँगों से ख़ुश होता है।
- 11 रब उन्हीं से ख़ुश होता है जो उसका ख़ौफ़ मानते और उस की शफ़क़त के इंतज़ार में रहते हैं।
- 12 ऐ यरूशलम, रब की मद्दहसराई कर! ऐ सिय्यून, अपने ख़ुदा की हम्द कर!
- 13 क्योंकि उसने तेरे दरवाज़ों के कुंडे मज़बूत करके तेरे दरमियान बसनेवाली औलाद को बरक़त दी है।
- 14 वही तेरे इलाक़े में अमन और सुकून कायम रखता और तुझे बेहतरीन गंदुम से सेर करता है।
- 15 वह अपना फ़रमान ज़मीन पर भेजता है तो उसका कलाम तेज़ी से पहुँचता है।
- 16 वह उन जैसी बर्फ़ मुहैया करता और पाला राख की तरह चारों तरफ़ बिखेर देता है।
- 17 वह अपने ओले कंकरो की तरह ज़मीन पर फेंक देता है। कौन उस की शदीद सर्दी बरदाश्त कर सकता है?

18 वह एक बार फिर अपना फ़रमान भेजता है तो बर्फ पिघल जाती है। वह अपनी हवा चलने देता है तो पानी टपकने लगता है।

19 उसने याकूब को अपना कलाम सुनाया, इसराईल पर अपने अहकाम और आईन ज़ाहिर किए हैं।

20 ऐसा सुलूक उसने किसी और क़ौम से नहीं किया। दीगर अक़वाम तो तेरे अहकाम नहीं जानतीं। रब की हम्द हो!

148

आसमानो-ज़मीन पर अल्लाह की तमज़ीद

1 रब की हम्द हो! आसमान से रब की सताइश करो, बुलंदियों पर उस की तमज़ीद करो!

2 ऐ उसके तमाम फ़रिश्ते, उस की हम्द करो! ऐ उसके तमाम लश्करो, उस की तारीफ़ करो!

3 ऐ सूरज और चाँद, उस की हम्द करो! ऐ तमाम चमकदार सितारो, उस की सताइश करो!

4 ऐ बुलंदतरीन आसमानो और आसमान के ऊपर के पानी, उस की हम्द करो!

5 वह रब के नाम की सताइश करें, क्योंकि उसने फ़रमाया तो वह वुजूद में आए।

6 उसने नाक्राबिले-मनसूख़ फ़रमान जारी करके उन्हें हमेशा के लिए कायम किया है।

7 ऐ समुंदर के अज़दहाओ और तमाम गहराइयो, ज़मीन से रब की तमज़ीद करो!

8 ऐ आग, ओलो, बर्फ़, धुंध और उसके हुक्म पर चलनेवाली आँधियो, उस की हम्द करो!

9 ऐ पहाड़ो और पहाड़ियो, फलदार दरखतो और तमाम देवदारो, उस की तारीफ़ करो!

10 ऐ जंगली जानवरो, मवीशियो, रेंगनेवाली मखलूक़ात और परिंदो, उस की हम्द करो!

11 ऐ ज़मीन के बादशाहो और तमाम क़ौमो, सरदारो और ज़मीन के तमाम हुक्मरानो, उस की तमज़ीद करो!

12 ऐ नौजवानो और कुँवारियो, बुज़ुर्गो और बच्चो, उस की हम्द करो!

13 सब रब के नाम की सताइश करें, क्योंकि सिर्फ़ उसी का नाम अज़ीम है, उस की अज़मत आसमानो-ज़मीन से आला है।

14 उसने अपनी क़ौम को सरफ़राज़ करके * अपने तमाम ईमानदारों की शोहरत बढ़ाई है, यानी इसराईलियों की शोहरत, उस क़ौम की जो उसके करीब रहती है। रब की हम्द हो!

149

सिय्यून रब की हम्द करे!

1 रब की हम्द हो! रब की तमज़ीद में नया गीत गाओ, ईमानदारों की जमात में उस की तारीफ़ करो।

2 इसराईल अपने ख़ालिक से खुश हो, सिय्यून के फ़रज़द अपने बादशाह की खुशी मनाएँ।

3 वह नाचकर उसके नाम की सताइश करें, दफ़ और सरोद से उस की मद्हसराई करें।

4 क्योंकि रब अपनी क़ौम से खुश है। वह मुसीबतज़दों को अपनी नजात की शानो-शौकत से आरास्ता करता है।

5 ईमानदार इस शानो-शौकत के बाइस खुशी मनाएँ, वह अपने बिस्तरों पर शादमानी के नारे लगाएँ।

6 उनके मुँह में अल्लाह की हम्दो-सना और उनके हाथों में दोधारी तलवार हो

7 ताकि दीगर अक़वाम से इंतक़ाम लें और उम्मतों को सज़ा दें।

8 वह उनके बादशाहों को जंजीरों में और उनके शूरफ़ा को बेड़ियों में जकड़ लेंगे

9 ताकि उन्हें वह सज़ा दें जिसका फ़ैसला क़लमबंद हो चुका है। यह इज़्ज़त अल्लाह के तमाम ईमानदारों को हासिल है। रब की हम्द हो!

150

रब की हम्दो-सना

1 रब की हम्द हो! अल्लाह के मक़दिस में उस की सताइश करो। उस की क़ुदरत के बने हुए आसमानी गुंबद में उस की तमज़ीद करो।

2 उसके अज़ीम कामों के बाइस उस की हम्द करो। उस की ज़बरदस्त अज़मत के बाइस उस की सताइश करो।

3 नरसिंगा फूँककर उस की हम्द करो, सितार और सरोद बजाकर उस की तमज़ीद करो।

4 दफ़ और लोकनाच से उस की हम्द करो। तारदार साज़ और बाँसरी बजाकर उस की सताइश करो।

5 झाँझों की झंकारती आवाज़ से उस की हम्द करो, गूँजती झाँझ से उस की तारीफ़ करो।

* 148:14 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : अपनी क़ौम का सींग बुलंद करके।

6 जिसमें भी साँस है वह रब की सताइश करे। रब की हम्द हो!।

अमसाल

किताब का मकसद

1 जेल में इसराईल के बादशाह सुलेमान बिन दाऊद की अमसाल कलमबंद हैं।

2 इनसे तू हिकमत और तरबियत हासिल करेगा, बसीरत के अलफाज समझने के काबिल हो जाएगा, 3 और दानाई दिलानेवाली तरबियत, रास्ती, इनसाफ और दियानतदारी अपनाएगा। 4 यह अमसाल सादालौह को होशियारी और नौजवान को इल्म और तमीज़ सिखाती है। 5 जो दाना है वह सुनकर अपने इल्म में इजाफा करे, जो समझदार है वह राहनुमाई करने का फ़न सीख ले। 6 तब वह अमसाल और तमसीलें, दानिशमंदों की बातें और उनके मुअम्मे समझ लेगा।

7 हिकमत इससे शुरू होती है कि हम रब का ख़ौफ़ मानें। सिर्फ़ अहमक हिकमत और तरबियत को हक़ीर जानते हैं।

गलत साथियों से ख़बरदार

8 मेरे बेटे, अपने बाप की तरबियत के ताबे रह, और अपनी माँ की हिदायत मुस्तरद न कर। 9 क्योंकि यह तेरे सर पर दिलकश सेहरा और तेरे गले में गुलबंद हैं। 10 मेरे बेटे, जब ख़ताकार तुझे फुसलाने की कोशिश करें तो उनके पीछे न हो ले। 11 उनकी बात न मान जब वह कहें, “आ, हमारे साथ चल! हम ताक में बैठकर किसी को कत्ल करें, बिलावजह किसी बेक़सूर की घात लगाएँ। 12 हम उन्हें पाताल की तरह ज़िंदा निगल लें, उन्हें मौत के गढ़े में उतरनेवालों की तरह एकदम हड़प कर लें। 13 हम हर किस्म की क्रीमती चीज़ हासिल करेंगे, अपने घरों को लूट के माल से भर लेंगे। 14 आ, ज़ुरत करके हममें शरीक हो जा, हम लूट का तमाम माल बराबर तकसीम करेंगे।”

15 मेरे बेटे, उनके साथ मत जाना, अपना पाँव उनकी राहों पर रखने से रोक लेना। 16 क्योंकि उनके पाँव गलत काम के पीछे दौड़ते, खून बहाने के लिए भागते हैं। 17 जब चिड़ीमार अपना जाल लगाकर उस पर परिदों को फाँसने के लिए रोटी के टुकड़े बिखेर देता है तो परिदों की नज़र में यह बेमक़सद है। 18 यह लोग भी एक दिन फँस जाएंगे। जब ताक में बैठ जाते हैं तो अपने आपको तबाह करते हैं, जब दूसरों की घात लगाते हैं तो अपनी ही जान को नुक़सान पहुँचाते हैं। 19 यही उन सबका अंजाम है जो नारवा नफ़ा के पीछे भागते हैं। नाजायज़ नफ़ा अपने मालिक की जान छीन लेता है।

हिकमत की पुकार

20 हिकमत गली में ज़ोर से आवाज़ देती, चौकों में बुलंद आवाज़ से पुकारती है। 21 जहाँ सबसे ज़्यादा शोर-शराबा है वहाँ वह चिल्ला चिल्लाकर बोलती, शहर के दरवाज़ों पर ही अपनी तकरीर करती है, 22 “ऐ सादालौह लोगो, तुम कब तक अपनी सादालौही से मुहब्बत रखोगे? मज़ाक उड़ानेवाले कब तक अपने मज़ाक से लुत्फ़ उठाएँगे, अहमक कब तक इल्म से नफ़रत करेंगे? 23 आओ, मेरी सरज़निश पर ध्यान दो। तब मैं अपनी रूह का चश्मा तुम पर फूटने दूँगी, तुम्हें अपनी बातें सुनाऊँगी।

24 लेकिन जब मैंने आवाज़ दी तो तुमने इनकार किया, जब मैंने अपना हाथ तुम्हारी तरफ़ बढ़ाया तो किसी ने भी तबज्जुह न दी। 25 तुमने मेरे किसी मशवरे की परवा न की, मेरी मलामत तुम्हारे नज़दीक काबिले-क़बूल नहीं थी। 26 इसलिए जब तुम पर आफ़त आएगी तो मैं कहक़हा लगाऊँगी, जब तुम हौलनाक मुसीबत में फँस जाओगे तो तुम्हारा मज़ाक उड़ाऊँगी। 27 उस वक़्त तुम पर दहशतनाक आँधी टूट पड़ेगी, आफ़त तूफ़ान की तरह तुम पर आएगी, और तुम मुसीबत और तकलीफ़ के सैलाब में डूब जाओगे। 28 तब वह मुझे आवाज़ देंगे, लेकिन मैं उनकी नहीं सुनूँगी, वह मुझे ढूँढ़ेंगे पर पाएँगे नहीं।

29 क्योंकि वह इल्म से नफ़रत करके रब का ख़ौफ़ मानने के लिए तैयार नहीं थे। 30 मेरा मशवरा उन्हें क़बूल नहीं था बल्कि वह मेरी हर सरज़निश को हक़ीर जानते थे। 31 चुनौचे अब वह अपने चाल-चलन का फल खाएँ, अपने मनसूबों की फ़सल खा खाकर सेर हो जाएँ।

32 क्योंकि सहीह राह से दूर होने का अमल सादालौह को मार डालता है, और अहमकों की बेपरवाई उन्हें तबाह करती है। 33 लेकिन जो मेरी सुने वह सुकून से बसेगा, हौलनाक मुसीबत उसे परेशान नहीं करेगी।”

2

हिकमत की अहमियत

1 मेरे बेटे, मेरी बात क़बूल करके मेरे अहक़ाम अपने दिल में महफूज़ रख। 2 अपना कान हिकमत पर धर, अपना दिल समझ की तरफ़ मायल कर। 3 बसीरत के लिए आवाज़ दे, चिल्लाकर समझ माँग। 4 उसे यों तलाश कर गोया चाँदी हो, उसका यों खोज लगा गोया पोशीदा खजाना हो। 5 अगर तू ऐसा करे तो तुझे रब के ख़ौफ़ की समझ आएगी और अल्लाह का इफ़ान हासिल होगा। 6 क्योंकि रब ही हिकमत अता करता, उसी के मुँह से इफ़ान और समझ निकलती है। 7 वह सीधी राह पर चलनेवालों को कामयाबी फ़राहम करता और बेइलज़ाम ज़िंदगी

गुजारनेवालों की ढाल बना रहता है। ⁸ क्योंकि वह इनसाफ पसंदों की राहों की पहरादारी करता है। जहाँ भी उसके ईमानदार चलते हैं वहाँ वह उनकी हिफाज़त करता है।

⁹ तब तुझे रास्ती, इनसाफ, दियानतदारी और हर अच्छी राह की समझ आएगी। ¹⁰ क्योंकि तेरे दिल में हिकमत दाखिल हो जाएगी, और इल्मो-इरफ़ान तेरी जान को प्यारा हो जाएगा। ¹¹ तमीज़ तेरी हिफाज़त और समझ तेरी चौकीदारी करेगी। ¹² हिकमत तुझे गलत राह और कजरौ बातें करनेवाले से बचाए रखेगी। ¹³ ऐसे लोग सीधी राह को छोड़ देते हैं ताकि तारीक रास्तों पर चलें, ¹⁴ वह बुरी हरकतें करने से खुश हो जाते हैं, गलत काम की कजरवी देखकर जशन मनाते हैं। ¹⁵ उनकी राहें टेढ़ी हैं, और वह जहाँ भी चलें आवारा फिरते हैं।

¹⁶ हिकमत तुझे नाजायज़ औरत से छुड़ाती है, उस अजनबी औरत से जो चिकनी-चुपड़ी बातें करती, ¹⁷ जो अपने जीवनसाथी को तर्क करके अपने खुदा का अहद भूल जाती है। ¹⁸ क्योंकि उसके घर में दाखिल होने का अंजाम मौत, उस की राहों की मनज़िले-मकसूद पाताल है। ¹⁹ जो भी उसके पास जाए वह वापस नहीं आएगा, वह ज़िंदगीबख़्श राहों पर दुबारा नहीं पहुँचेगा।

²⁰ चुनौचे अच्छे लोगों की राह पर चल-फिर, ध्यान दे कि तेरे कदम रास्तबाज़ों के रास्ते पर रहें। ²¹ क्योंकि सीधी राह पर चलनेवाले मुल्क में आबाद होंगे, आखिरकार बेइलज़ाम ही उसमें बाक़ी रहेंगे। ²² लेकिन बेदीन मुल्क से मिट जाएंगे, और बेवफ़ाओं को उखाड़कर मुल्क से ख़ारिज कर दिया जाएगा।

3

अल्लाह के ख़ौफ़ और हिकमत की बरकत

¹ मेरे बेटे, मेरी हिदायत मत भूलना। मेरे अहकाम तेरे दिल में महफूज़ रहें। ² क्योंकि इन्हीं से तेरी ज़िंदगी के दिनों और सालों में इज़ाफ़ा होगा और तेरी खुशहाली बढ़ेगी। ³ शफ़क़त और वफ़ा तेरा दामन न छोड़ें। उन्हें अपने गले से बाँधना, अपने दिल की तख़्ती पर कंदा करना। ⁴ तब तुझे अल्लाह और इनसान के सामने मेहरबानी और कबूलियत हासिल होगी।

⁵ पूरे दिल से रब पर भरोसा रख, और अपनी अक्ल पर तकिया न कर। ⁶ जहाँ भी तू चले सिर्फ़ उसी को जान ले, फिर वह खुद तेरी राहों को हमवार करेगा। ⁷ अपने आपको दानिशमंद मत समझना बल्कि रब का ख़ौफ़ मानकर बुराई से दूर रह। ⁸ इससे तेरा बदन सेहत पाएगा और तेरी हड्डियाँ तरो-ताज़ा हो जाएँगी। ⁹ अपनी मिलकियत और अपनी तमाम पैदावार के पहले फल से रब का एहताराम कर, ¹⁰ फिर तेरे गोदाम अनाज से भर जाएंगे और तेरे बरतन में से छलक उठेंगे।

¹¹ मेरे बेटे, रब की तरबियत को रद्द न कर, जब वह तुझे डाँटे तो रंजीदा न हो। ¹² क्योंकि जो रब को प्यारा है उस की वह तादीब करता है, जिस तरह बाप उस बेटे को तंबीह करता है जो उसे पसंद है।

हकीक़ी दौलत

¹³ मुबारक है वह जो हिकमत पाता है, जिसे समझ हासिल होती है। ¹⁴ क्योंकि हिकमत चाँदी से कहीं ज़्यादा सूदमंद है, और उससे सोने से कहीं ज़्यादा कीमती चीज़ें हासिल होती हैं। ¹⁵ हिकमत मोतियों से ज़्यादा नफ़ीस है, तेरे तमाम ख़ज़ाने उसका मुकाबला नहीं कर सकते। ¹⁶ उसके दहने हाथ में उम्र की दराज़ी और बाएँ हाथ में दौलत और इज्ज़त है। ¹⁷ उस की राहें खुशगवार, उसके तमाम रास्ते पुरअमन हैं। ¹⁸ जो उसका दामन पकड़ ले उसके लिए वह ज़िंदगी का दरख़्त है। मुबारक है वह जो उससे लिपटा रहे। ¹⁹ रब ने हिकमत के वसीले से ही ज़मीन की बुनियाद रखी, समझ के ज़रीए ही आसमान को मज़बूती से लगाया। ²⁰ उसके इरफ़ान से ही गहराइयों का पानी फूट निकला और आसमान से शबनम टपककर ज़मीन पर पड़ती है।

²¹ मेरे बेटे, दानाई और तमीज़ अपने पास महफूज़ रख और उन्हें अपनी नज़र से दूर न होने दे। ²² उनसे तेरी जान तरो-ताज़ा और तेरा गला आरास्ता रहेगा। ²³ तब तू चलते वक़्त महफूज़ रहेगा, और तेरा पाँव ठोकर नहीं खाएगा। ²⁴ तू पाँव फैलाकर सो सकेगा, कोई सदमा तुझे नहीं पहुँचेगा बल्कि तू लेटकर गहरी नींद सोएगा। ²⁵ नागहाँ आफ़त से मत डरना, न उस तबाही से जो बेदीन पर गालिब आती है, ²⁶ क्योंकि रब पर तेरा एतमाद है, वही तेरे पाँवों को फँस जाने से महफूज़ रखेगा।

दूसरों की मदद करने की नसीहत

²⁷ अगर कोई ज़रूरतमंद हो और तू उस की मदद कर सके तो उसके साथ भलाई करने से इनकार न कर। ²⁸ अगर तू आज कुछ दे सके तो अपने पड़ोसी से मत कहना, “कल आना तो मैं आपको कुछ दे दूँगा।” ²⁹ जो पड़ोसी बेफ़िकर तेरे साथ रहता है उसके खिलाफ़ बुरे मनसूबे मत बाँधना। ³⁰ जिसने तुझे नुक़सान नहीं पहुँचाया अदालत में उस पर बेबुनियाद इलज़ाम न लगाना।

³¹ न ज़ालिम से हसद कर, न उस की कोई राह इख़्तियार कर। ³² क्योंकि बुरी राह पर चलनेवाले से रब घिन खाता है जबकि सीधी राह पर चलनेवालों को वह अपने राज़ों से आगाह करता है। ³³ बेदीन के घर पर रब की लानत आती जबकि रास्तबाज़ के घर को वह बरकत देता है। ³⁴ मज़ाक़ उड़ानेवालों का वह मज़ाक़ उड़ाता, लेकिन फ़रोतनों पर मेहरबानी करता है। ³⁵ दानिशमंद मीरास में इज्ज़त पाएँगे जबकि अहमक के नसीब में शरमिंदगी होगी।

4

बाप की नसीहत

1 ऐ बेटो, बाप की नसीहत सुनो, ध्यान दो ताकि तुम सीखकर समझ हासिल कर सको। 2 मैं तुम्हें अच्छी तालीम देता हूँ, इसलिए मेरी हिदायत को तर्क न करो। 3 मैं अभी अपने बाप के घर में नाजूक लड़का था, अपनी माँ का वाहिद बच्चा, 4 तो मेरे बाप ने मुझे तालीम देकर कहा,

“पूरे दिल से मेरे अलफ़ाज़ अपना ले और हर वक़्त मेरे अहक़ाम पर अमल कर तो तू जीता रहेगा। 5 हिकमत हासिल कर, समझ अपना ले! यह चीज़ें मत भूलना, मेरे मुँह के अलफ़ाज़ से दूर न होना। 6 हिकमत तर्क न कर तो वह तुझे महफूज़ रखेगी। उससे मुहब्बत रख तो वह तेरी देख-भाल करेगी। 7 हिकमत इससे शुरू होती है कि तू हिकमत अपना ले। समझ हासिल करने के लिए बाक़ी तमाम मिलकियत क़ुरबान करने के लिए तैयार हो। 8 उसे अज़ीज़ रख तो वह तुझे सरफ़राज़ करेगी, उसे गले लगा तो वह तुझे इज़्ज़त बख़्शेगी। 9 तब वह तेरे सर को ख़ूबसूरत सेहरे से आरास्ता करेगी और तुझे शानदार ताज़ से नवाज़ेगी।”

10 मेरे बेटे, मेरी सुन! मेरी बातें अपना ले तो तेरी उम्र दराज़ होगी। 11 मैं तुझे हिकमत की राह पर चलने की हिदायत देता, तुझे सीधी राहों पर फिरने देता हूँ। 12 जब तू चलेगा तो तेरे क़दमों को किसी भी चीज़ से रोका नहीं जाएगा, और दौड़ते वक़्त तू ठोकर नहीं खाएगा। 13 तरबियत का दामन थामे रह! उसे न छोड़ बल्कि महफूज़ रख, क्योंकि वह तेरी ज़िंदगी है।

14 बेदीनों की राह पर क़दम न रख, शरीरों के रास्ते पर मत जा। 15 उससे गुरेज़ कर, उस पर सफ़र न कर बल्कि उससे कतराकर आगे निकल जा। 16 क्योंकि जब तक उनसे बुरा काम सरज़द न हो जाए वह सो ही नहीं सकते, जब तक उन्होंने किसी को ठोकर खिलाकर खाक में मिला न दिया हो वह नींद से महरूम रहते हैं। 17 वह बेदीनी की रोटी खते और जुल्म की मै पीते हैं। 18 लेकिन रास्तबाज़ की राह तुलूए-सुबह की पहली रौशनी की मानिंद है जो दिन के उरूज तक बढ़ती रहती है। 19 इसके मुक़ाबले में बेदीन का रास्ता गहरी तारीकी की मानिंद है, उन्हें पता ही नहीं चलता कि किस चीज़ से ठोकर खाकर गिर गए हैं।

20 मेरे बेटे, मेरी बातों पर ध्यान दे, मेरे अलफ़ाज़ पर कान धर। 21 उन्हें अपनी नज़र से ओझल न होने दे बल्कि अपने दिल में महफूज़ रख। 22 क्योंकि जो यह बातें अपनाएँ वह ज़िंदगी और पूरे जिस्म के लिए शफ़ा पाते हैं। 23 तमाम चीज़ों से पहले अपने दिल की हिफ़ाज़त कर, क्योंकि यही ज़िंदगी का सरचश्मा है। 24 अपने मुँह से झूट और अपने होंटों से कजगोई दूर कर। 25 ध्यान दे कि तेरी आँखें सीधा आगे की तरफ़ देखें, कि तेरी नज़र उस रास्ते पर लगी रहे जो सीधा है। 26 अपने पाँवों का रास्ता चलने के क़ाबिल बना दे, ध्यान दे कि तेरी राहें मज़बूत हैं। 27 न दाईं, न बाईं तरफ़ मुड़ बल्कि अपने पाँवों को ग़लत क़दम उठाने से बाज़ रख।

5

ज़िनाकारी से खबरदार

1 मेरे बेटे, मेरी हिकमत पर ध्यान दे, मेरी समझ की बातों पर कान धर। 2 फिर तू तमीज़ का दामन थामे रहेगा, और तेरे होंट इल्मो-इरफ़ान महफूज़ रखेंगे। 3 क्योंकि ज़िनाकार औरत के होंटों से शहद टपकता है, उस की बातें तेल की तरह चिकनी-चुपड़ी होती हैं। 4 लेकिन अंजाम में वह ज़हर जैसी कड़वी और दोधारी तलवार जैसी तेज़ साबित होती है। 5 उसके पाँव मौत की तरफ़ उतरते, उसके क़दम पाताल की जानिब बढ़ते जाते हैं। 6 उसके रास्ते कभी इधर कभी उधर फिरते हैं ताकि तू ज़िंदगी की राह पर तवज्जुह न दे और उस की आवाग़ी को जान न ले।

7 चुनाँचे मेरे बेटो, मेरी सुनो और मेरे मुँह की बातों से दूर न हो जाओ। 8 अपने रास्ते उससे दूर रख, उसके घर के दरवाज़े के करीब भी न जा। 9 ऐसा न हो कि तू अपनी ताक़त किसी और के लिए सर्फ़ करे और अपने साल ज़ालिम के लिए ज़ाया करे। 10 ऐसा न हो कि परदेसी तेरी मिलकियत से सेर हो जाएँ, कि जो कुछ तूने मेहनत-मशक्क़त से हासिल किया वह किसी और के घर में आए। 11 तब आखिरकार तेरा बदन और गोशत घुल जाएंगे, और तू आहें भर भरकर 12 कहेगा, “हाय, मैंने क्यों तरबियत से नफ़रत की, मेरे दिल ने क्यों सरज़निश को हक़ीर जाना? 13 हिदायत करनेवालों की मैंने न सुनी, अपने उस्तादों की बातों पर कान न धरा। 14 जमात के दरमियान ही रहते हुए मुझ पर ऐसी आफ़त आई कि मैं तबाही के दहाने तक पहुँच गया हूँ।”

15 अपने ही हौज़ का पानी और अपने ही कुएँ से फूटनेवाला पानी पी ले। 16 क्या मुनासिब है कि तेरे चश्मे गलियों में और तेरी नदियाँ चौकों में बह निकलें? 17 जो पानी तेरा अपना है वह तुझ तक महदूद रहे, अजनबी उसमें शरीक न हो जाए। 18 तेरा चश्मा मुबारक हो। हाँ, अपनी बीवी से खुश रह। 19 वही तेरी मनमोहन हिरनी और दिलसबा ग़ज़ाल * है। उसी का प्यार तुझे तरो-ताज़ा करे, उसी की मुहब्बत तुझे हमेशा मस्त रखे।

20 मेरे बेटे, तू अजनबी औरत से क्यों मस्त हो जाए, किसी दूसरे की बीवी से क्यों लिपट जाए? 21 खयाल रख, इन्सान की राहें रब को साफ़ दिखाई देती हैं, जहाँ भी वह चले उस पर वह तवज्जुह देता है। 22 बेदीन की अपनी ही हरकतें उसे फँसा देती हैं, वह अपने ही गुनाह के रस्सों में जकड़ा रहता है। 23 वह तरबियत की कमी के सबब से हलाक हो जाएगा, अपनी बड़ी हमाक़त के बाइस डगमगाते हुए अपने अंजाम को पहुँचेगा।

* 5:19 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : पहाड़ी बकरी।

6

ज़मानत देने, काहिली और झूट से खबरदार

1 मेरे बेटे, क्या तू अपने पड़ोसी का ज़ामिन बना है? क्या तूने हाथ मिलाकर वादा किया है कि मैं किसी दूसरे का ज़िम्मादार ठहरूँगा? 2 क्या तू अपने वादे से बँधा हुआ, अपने मुँह के अलफ़ाज़ से फँसा हुआ है? 3 ऐसा करने से तू अपने पड़ोसी के हाथ में आ गया है, इसलिए अपनी जान को छुड़ाने के लिए उसके सामने औंधे मुँह होकर उसे अपनी मिन्नत-समाजत से तंग कर। 4 अपनी आँखों को सोने न दे, अपने पपोटों को ऊँघने न दे जब तक तू इस ज़िम्मादारी से फ़ारिग न हो जाए। 5 जिस तरह गज़ाल शिकारी के हाथ से और परिदा चिड़ीमार के हाथ से छूट जाता है उसी तरह सिर-तोड़ कोशिश कर ताकि तेरी जान छूट जाए।

6 ऐ काहिल, चियूँटी के पास जाकर उस की राहों पर गौर कर! उसके नमूने से हिकमत सीख ले। 7 उस पर न सरदार, न अफ़सर या हुक्मरान मुक़रर है, 8 तो भी वह गरमियों में सर्दियों के लिए खाने का ज़ख़ीरा कर रखती, फ़सल के दिनों में ख़ूब ख़ुराक इकट्ठी करती है। 9 ऐ काहिल, तू मज़ीद कब तक सोया रहेगा, कब जाग उठेगा? 10 तू कहता है, “मुझे थोड़ी देर सोने दे, थोड़ी देर ऊँघने दे, थोड़ी देर हाथ पर हाथ धरे बैठने दे ताकि आराम कर सकूँ।” 11 लेकिन खबरदार, जल्द ही ग़ुरबत राहज़न की तरह तुझ पर आएगी, मुफ़लिसी हथियार से लेस डाकू की तरह तुझ पर टूट पड़ेगी।

12 बदमाश और कमीना किस तरह पहचाना जाता है? वह मुँह में झूट लिए फिरता है, 13 अपनी आँखों, पाँवों और उँगलियों से इशारा करके तुझे फ़रेब के जाल में फँसाने की कोशिश करता है। 14 उसके दिल में कज़ी है, और वह हर वक़्त बुरे मनसूबे बाँधने में लगा रहता है। जहाँ भी जाए वहाँ झगड़े छिड़ जाते हैं। 15 लेकिन ऐसे शख्स पर अचानक ही आफ़त आएगी। एक ही लमहे में वह पाश पाश हो जाएगा। तब उसका इलाज़ नामुमकिन होगा।

16 रब छः चीज़ों से नफ़रत बल्कि सात चीज़ों से घिन खाता है,

17 वह आँखें जो गुस्से से देखती हैं, वह ज़बान जो झूट बोलती है, वह हाथ जो बेगुनाहों को क़त्ल करते हैं, 18 वह दिल जो बुरे मनसूबे बाँधता है, वह पाँव जो दूसरों को नुक़सान पहुँचाने के लिए भागते हैं, 19 वह गवाह जो अदालत में झूट बोलता और वह जो भाइयों में झगड़ा पैदा करता है।

ज़िना करने से खबरदार

20 मेरे बेटे, अपने बाप के हुक्म से लिपटा रह, और अपनी माँ की हिदायत नज़रंदाज़ न कर। 21 उन्हें यों अपने दिल के साथ बाँधे रख कि कभी दूर न हो जाएँ। उन्हें हार की तरह अपने गले में डाल ले। 22 चलते वक़्त वह तेरी राहनुमाई करें, आराम करते वक़्त तेरी पहरादारी करें, जागते वक़्त तुझसे हमकलाम हों। 23 क्योंकि बाप का हुक्म चराग और माँ की हिदायत रौशनी है, तरबियत की डॉट-डपट ज़िंदगीबख़्श राह है। 24 यों तू बदकार औरत और दूसरे की ज़िनाकार बीवी की चिकनी-चुपड़ी बातों से महफूज़ रहेगा। 25 दिल में उसके हुस्न का लालच न कर, ऐसा न हो कि वह पलक मार मारकर तुझे पकड़ ले। 26 क्योंकि गो कसबी आदमी को उसके पैसे से महरूम करती है, लेकिन दूसरे की ज़िनाकार बीवी उस की कीमती जान का शिकार करती है।

27 क्या इन्सान अपनी झोली में भड़कती आग यों उठाकर फिर सकता है कि उसके कपड़े न जलें? 28 या क्या कोई दहकते कोयलों पर यों फिर सकता है कि उसके पाँव झुलस न जाएँ? 29 इसी तरह जो किसी दूसरे की बीवी से हमबिसतर हो जाए उसका अंजाम बुरा है, जो भी दूसरे की बीवी को छेड़े उसे सज़ा मिलेगी। 30 जो भूक के मारे अपना पेट भरने के लिए चोरी करे उसे लोग हद से ज़्यादा हक़ीर नहीं जानते, 31 हालाँकि उसे चोरी किए हुए माल को सात गुना वापस करना है और उसके घर की दौलत जाती रहेगी। 32 लेकिन जो किसी दूसरे की बीवी के साथ ज़िना करे वह बेअक़ल है। जो अपनी जान को तबाह करना चाहे वही ऐसा करता है। 33 उस की पिटाई और बेइज़्ज़ती की जाएगी, और उस की शर्मिंदगी कभी नहीं मिटेगी। 34 क्योंकि शौहर ग़ैरत खाकर और तैश में आकर बेरहमी से बदला लेगा। 35 न वह कोई मुआवज़ा कबूल करेगा, न रिश्तत लेगा, खाह कितनी ज़्यादा क्यों न हो।

7

बेवफ़ा बीवी

1 मेरे बेटे, मेरे अलफ़ाज़ की पैरवी कर, मेरे अहक़ाम अपने अंदर महफूज़ रख। 2 मेरे अहक़ाम के ताबे रह तो जीता रहेगा। अपनी आँख की पुतली की तरह मेरी हिदायत की हिफ़ाज़त कर। 3 उन्हें अपनी उँगली के साथ बाँध, अपने दिल की तख़्ती पर कंदा कर। 4 हिकमत से कह, “तू मेरी बहन है,” और समझ से, “तू मेरी करीबी रिश्तेदार है।” 5 यही तुझे ज़िनाकार औरत से महफूज़ रखेगी, दूसरे की उस बीवी से जो अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से तुझे फ़ुसलाने की कोशिश करती है।

6 एक दिन मैंने अपने घर की खिड़की * में से बाहर झाँका 7 तो क्या देखता हूँ कि वहाँ कुछ सादालौह नौजवान खड़े हैं। उनमें से एक बेअक़ल जवान नज़र आया। 8 वह गली में से गुज़रकर ज़िनाकार औरत के कोने की तरफ़ टहलने लगा। चलते चलते वह उस रास्ते पर आ गया जो औरत के घर तक ले जाता है। 9 शाम का धुँधलका था, दिन ढलने और रात का अंधेरा छाने लगा था। 10 तब एक औरत कसबी का लिबास

* 7:6 लफ़ज़ी तरज़ुमा : घर की खिड़की के जंगले।

पहने हुए चालाकी से उससे मिलने आई। 11 यह औरत इतनी बेलगाम और खुदसर है कि उसके पाँव उसके घर में नहीं टिकते। 12 कभी वह गली में, कभी चौकों में होती है, हर कोने पर वह ताक में बैठी रहती है।

13 अब उसने नौजवान को पकड़कर उसे बोसा दिया। बेहया नज़र उस पर डालकर उसने कहा, 14 “मुझे सलामती की कुरबानियाँ पेश करनी थीं, और आज ही मैंने अपनी मन्नतें पूरी कीं। 15 इसलिए मैं निकलकर तुझसे मिलने आई, मैंने तेरा पता किया और अब तू मुझे मिल गया है। 16 मैंने अपने बिस्तर पर मिसर के रंगीन कम्बल बिछाए, 17 उस पर मुर, ऊद और दारचीनी की खुशबू छिड़की है। 18 आओ, हम सबह तक मुहब्बत का प्याला तह तक पी लें, हम इश्कबाज़ी से लुत्फ़अंदोज़ हों! 19 क्योंकि मेरा खाविंद घर में नहीं है, वह लंबे सफ़र के लिए ख़ाना हुआ है। 20 वह बटवे में पैसे डालकर चला गया है और पूरे चाँद तक वापस नहीं आएगा।”

21 ऐसी बातें करते करते औरत ने नौजवान को तरगीब देकर अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से वरगलाया। 22 नौजवान सीधा उसके पीछे यों हो लिया जिस तरह बैल ज़बह होने के लिए जाता या हिरन उछलकर फंदे में फँस जाता है। 23 क्योंकि एक वक़्त आएगा कि तीर उसका दिल चीर डालेगा। लेकिन फ़िलहाल उस की हालत उस चिड़िया की मानिंद है जो उड़कर जाल में आ जाती और ख़याल तक नहीं करती कि मेरी जान ख़तरे में है।

24 चुनौचे मेरे बेटो, मेरी सुनो, मेरे मुँह की बातों पर ध्यान दो! 25 तेरा दिल भटककर उस तरफ़ स़ख़ न करे जहाँ ज़िनाकार औरत फिरती है, ऐसा न हो कि तू आवारा होकर उस की राहों में उलझ जाए। 26 क्योंकि उनकी तादाद बड़ी है जिन्हें उसने गिराकर मौत के घाट उतारा है, उसने मुतअदिद लोगों को मार डाला है। 27 उसका घर पाताल का रास्ता है जो लोगों को मौत की कोठड़ियों तक पहुँचाता है।

8

हिकमत की दावत और वादा

1 सुनो! क्या हिकमत आवाज़ नहीं देती? हाँ, समझ ऊँची आवाज़ से एलान करती है। 2 वह बुलंदियों पर खड़ी है, उस जगह जहाँ तमाम रास्ते एक दूसरे से मिलते हैं। 3 शहर के दरवाज़ों पर जहाँ लोग निकलते और दाखिल होते हैं वहाँ हिकमत जोरदार आवाज़ से पुकारती है,

4 “ऐ मर्दो, मैं तुम्हीं को पुकारती हूँ, तमाम इनसानों को आवाज़ देती हूँ।

5 ऐ सादालौहो, होशियारी सीख लो! ऐ अहमको, समझ अपना लो!

6 सुनो, क्योंकि मैं शराफ़त की बातें करती हूँ, और मेरे होंट सच्चाई पेश करते हैं।

7 मेरा मुँह सच बोलता है, क्योंकि मेरे होंट बेदीनी से धिन खाते हैं।

8 जो भी बात मेरे मुँह से निकले वह रास्त है, एक भी पेचदार या टेढ़ी नहीं है।

9 समझदार जानता है कि मेरी बातें सब दुस्त हैं, इल्म रखनेवाले को मालूम है कि वह सही हैं।

10 चाँदी की जगह मेरी तरबियत और ख़ालिस सोने के बजाए इल्मो-इरफ़ान अपना लो।

11 क्योंकि हिकमत मोतियों से कहीं बेहतर है, कोई भी ख़ज़ाना उसका मुकाबला नहीं कर सकता।

12 मैं जो हिकमत हूँ होशियारी के साथ बसती हूँ, और मैं तमीज़ का इल्म रखती हूँ।

13 जो रब का ख़ौफ़ मानता है वह बुराई से नफ़रत करता है। मुझे गुस्सा, तकब्बुर, ग़लत चाल-चलन और टेढ़ी बातों से नफ़रत है।

14 मेरे पास अच्छा मशवरा और कामयाबी है। मेरा दूसरा नाम समझ है, और मुझे कुव्वत हासिल है।

15 मेरे वसीले से बादशाह सलतनत और हुक्मरान रास्त फैसले करते हैं।

16 मेरे ज़रीए रईस और शुरफ़ा बल्कि तमाम आदिल मुंसिफ़ हुक्मत करते हैं।

17 जो मुझे प्यार करते हैं उन्हें मैं प्यार करती हूँ, और जो मुझे ढूँढते हैं वह मुझे पा लेते हैं।

18 मेरे पास इज़्ज़तो-दौलत, शानदार माल और रास्ती है।

19 मेरा फल सोने बल्कि ख़ालिस सोने से कहीं बेहतर है, मेरी पैदावार ख़ालिस चाँदी पर सबक़त रखती है।

20 मैं रास्ती की राह पर ही चलती हूँ, वहीं जहाँ इनसाफ़ है।

21 जो मुझसे मुहब्बत रखते हैं उन्हें मैं मीरास में दौलत मुहैया करती हूँ। उनके गोदाम भरे रहते हैं।

हिकमत का तख़लीक़ में हिस्सा

22 जब रब तख़लीक़ का सिलसिला अमल में लाया तो पहले उसने मुझे ही बनाया। क़दीम ज़माने में मैं उसके दीगर कामों से पहले ही वुजूद में आई।

23 मुझे अज़ल से मुर्कर किया गया, इब्तिदा ही से जब दुनिया अभी पैदा नहीं हुई थी।

24 न समुंदर की गहराइयाँ, न कसरत से फूटनेवाले चश्मे थे जब मैंने जन्म लिया।

25 न पहाड़ अपनी अपनी जगह पर कायम हुए थे, न पहाड़ियाँ थीं जब मैं पैदा हुई।

- 26 उस वक़्त अल्लाह ने न ज़मीन, न उसके मैदान, और न दुनिया के पहले ढेले बनाए थे।
 27 जब उसने आसमान को उस की जगह पर लगाया और समुंदर की गहराइयों पर ज़मीन का इलाका मुकर्रर किया तो मैं साथ थी।
 28 जब उसने आसमान पर बादलों और गहराइयों में सरचश्मों का इंतज़ाम मज़बूत किया तो मैं साथ थी।
 29 जब उसने समुंदर की हँदें मुकर्रर की और हुक्म दिया कि पानी उनसे तजावुज़ न करे, जब उसने ज़मीन की बुनियादें अपनी अपनी जगह पर रखीं
 30 तो मैं माहिर कारीगर की हैसियत से उसके साथ थी। रोज़ बरोज़ मैं लुफ़ का बाइस थी, हर वक़्त उसके हुज़ूर रंगरलियाँ मनाती रही।
 31 मैं उस की ज़मीन की सतह पर रंगरलियाँ मनाती और इनसान से लुफ़अंदोज़ होती रही।
- 32 चुनौचे मेरे बेटो, मेरी सुनो, क्योंकि मुबारक हैं वह जो मेरी राहों पर चलते हैं।
 33 मेरी तरबियत मानकर दानिशमंद बन जाओ, उसे नज़रंदाज़ मत करना।
 34 मुबारक है वह जो मेरी सुने, जो रोज़ बरोज़ मेरे दरवाज़े पर चौकस खड़ा रहे, रोज़ाना मेरी चौखट पर हाज़िर रहे।
 35 क्योंकि जो मुझे पाए वह ज़िंदगी और रब की मंजूरी पाता है।
 36 लेकिन जो मुझे पाने से कासिर रहे वह अपनी जान पर जुल्म करता है, जो भी मुझसे नफ़रत करे उसे मौत प्यारी है।”

9

हिकमत की ज़ियाफ़त

- 1 हिकमत ने अपना घर तामीर करके अपने लिए सात सतून तराश लिए हैं।
 2 अपने जानवरों को ज़बह करने और अपनी मै तैयार करने के बाद उसने अपनी मेज़ बिछाई है। 3 अब उसने अपनी नौकरानियों को भेजा है, और खुद भी लोगों को शहर की बुलंदियों से ज़ियाफ़त करने की दावत देती है,
 4 “जो सादालौह है, वह मेरे पास आए।” नासमझ लोगों से वह कहती है, 5 “आओ, मेरी रोटी खाओ, वह मै पियो जो मैंने तैयार कर रखी है। 6 अपनी सादालौह राहों से बाज़ आओ तो जीते रहोगे, समझ की राह पर चल पड़ो।”

7 जो लान-तान करनेवाले को तालीम दे उस की अपनी स्सवाई हो जाएगी, और जो बेदीन को डाँटे उसे नुक़सान पहुँचेगा। 8 लान-तान करनेवाले की मलामत न कर वरना वह तुझसे नफ़रत करेगा। दानिशमंद की मलामत कर तो वह तुझसे मुहब्बत करेगा। 9 दानिशमंद को हिदायत दे तो उस की हिकमत मज़ीद बढ़ेगी, रास्तबाज़ को तालीम दे तो वह अपने इल्म में इज़ाफ़ा करेगा।

10 रब का ख़ौफ़ मानने से ही हिकमत शुरू होती है, क़दूस खुदा को जानने से ही समझ हासिल होती है। 11 मुझसे ही तेरी उम्र के दिनों और सालों में इज़ाफ़ा होगा। 12 अगर तू दानिशमंद हो तो खुद इससे फ़ायदा उठाएगा, अगर लान-तान करनेवाला हो तो तुझे ही इसका नुक़सान झेलना पड़ेगा।

हमाक़त बीबी की ज़ियाफ़त

- 13 हमाक़त बीबी बेलगाम और नासमझ है, वह कुछ नहीं जानती। 14 उसका घर शहर की बुलंदी पर वाके है। दरवाज़े के पास कुरसी पर बैठी 15 वह गुज़रनेवालों को जो सीधी राह पर चलते हैं ऊँची आवाज़ से दावत देती है, 16 “जो सादालौह है वह मेरे पास आए।”
 जो नासमझ हैं उनसे वह कहती है, 17 “चोरी का पानी मीठा और पोशीदगी में खाई गई रोटी लज़ीज़ होती है।”
 18 लेकिन उन्हें मालूम नहीं कि हमाक़त बीबी के घर में सिर्फ़ मुरदों की रूहें बसती हैं, कि उसके मेहमान पाताल की गहराइयों में रहते हैं।

10

सुलेमान की हिकमत भरी हिदायत

- 1 ज़ैल में सुलेमान की अमसाल कलामबंद हैं।

ज़िंदगीबख़्श बातें

- दानिशमंद बेटा अपने बाप को खुशी दिलाता जबकि अहमक बेटा अपनी माँ को दुख पहुँचाता है।
 2 खज़ानों का कोई फ़ायदा नहीं अगर वह बेदीन तरीक़ों से जमा हो गए हों, लेकिन रास्तबाज़ी मौत से बचाए रखती है।
 3 रब रास्तबाज़ को भूके मरने नहीं देता, लेकिन बेदीनों का लालच रोक देता है।
 4 ढीले हाथ ग़ुरबत और मेहनती हाथ दौलत की तरफ़ ले जाते हैं।
 5 जो गरमियों में फ़सल जमा करता है वह दानिशमंद बेटा है जबकि जो फ़सल की कटाई के वक़्त सोया रहता है वह वालिदैन के लिए शर्म का बाइस है।
 6 रास्तबाज़ का सर बरकत के ताज से आरास्ता रहता है जबकि बेदीनों के मुँह पर जुल्म का परदा पड़ा रहता है।
 7 लोग रास्तबाज़ को याद करके उसे मुबारक कहते हैं, लेकिन बेदीन का नाम सड़कर मिट जाएगा।

- 8 जो दिल से दानिशमंद है वह अहकाम कबूल करता है, लेकिन बकवासी तबाह हो जाएगा।
- 9 जिसका चाल-चलन बेइलज़ाम है वह सुकून से ज़िंदगी गुज़ारता है, लेकिन जो टेढ़ा रास्ता इस्तिथार करे उसे पकड़ा जाएगा।
- 10 आँख मारनेवाला दुख पहुँचाता है, और बकवासी तबाह हो जाएगा।
- 11 रास्तबाज़ का मुँह ज़िंदगी का सरचश्मा है, लेकिन बेदीन के मुँह पर जुल्म का परदा पड़ा रहता है।
- 12 नफ़रत झगड़े छेड़ती रहती जबकि मुहब्बत तमाम ख़ताओं पर परदा डाल देती है।
- 13 समझदार के होंटों पर हिकमत पाई जाती है, लेकिन नासमझ सिर्फ़ डंडे का पैगाम समझता है।
- 14 दानिशमंद अपना इल्म महफूज़ रखते हैं, लेकिन अहमक का मुँह जल्द ही तबाही की तरफ़ ले जाता है।
- 15 अमीर की दौलत किलाबंद शहर है जिसमें वह महफूज़ है जबकि ग़रीब की ग़ुरबत उस की तबाही का बाइस है।
- 16 जो कुछ रास्तबाज़ कमा लेता है वह ज़िंदगी का बाइस है, लेकिन बेदीन अपनी रोज़ी गुनाह करने के लिए इस्तेमाल करता है।
- 17 जो तरबियत कबूल करे वह दूसरों को ज़िंदगी की राह पर लाता है, जो नसीहत नज़रंदाज़ करे वह दूसरों को सही राह से दूर ले जाता है।
- 18 जो अपनी नफ़रत छुपाए रखे वह झूट बोलता है, जो दूसरों के बारे में ग़लत ख़बरें फैलाए वह अहमक है।
- 19 जहाँ बहुत बातें की जाती हैं वहाँ गुनाह भी आ मौजूद होता है, जो अपनी ज़बान को काबू में रखे वह दानिशमंद है।
- 20 रास्तबाज़ की ज़बान उम्दा चाँदी है जबकि बेदीन के दिल की कोई कदर नहीं।
- 21 रास्तबाज़ की ज़बान बहुते की परवरिश करती है, * लेकिन अहमक अपनी बेअक्ली के बाइस हलाक हो जाते हैं।
- 22 ख की बरकत दौलत का बाइस है, हमारी अपनी मेहनत-मशक्कत इसमें इज़ाफ़ा नहीं करती।
- 23 अहमक ग़लत काम से अपना दिल बहलाता, लेकिन समझदार हिकमत से लुफ़अंदोज़ होता है।
- 24 जिस चीज़ से बेदीन दहशत खाता है वही उस पर आएगी, लेकिन रास्तबाज़ की आरजू पूरी हो जाएगी।
- 25 जब तूफ़ान आते हैं तो बेदीन का नामो-निशान मिट जाता जबकि रास्तबाज़ हमेशा तक कायम रहता है।
- 26 जिस तरह दौलत सिरके से और आँखें धुएँ से तंग आ जाती हैं उसी तरह वह तंग आ जाता है जो सुस्त आदमी से काम करवाता है।
- 27 जो ख की ख़ौफ़ माने उस की ज़िंदगी के दिनों में इज़ाफ़ा होता है जबकि बेदीन की ज़िंदगी वक़्त से पहले ही ख़त्म हो जाती है।
- 28 रास्तबाज़ आखिरकार खुशी मनाएँगे, क्योंकि उनकी उम्मीद बर आएगी। लेकिन बेदीनों की उम्मीद जाती रहेगी।
- 29 ख की राह बेइलज़ाम शाख्स के लिए पनाहगाह, लेकिन बदकार के लिए तबाही का बाइस है।
- 30 रास्तबाज़ कभी डॉक्टर नहीं होगा, लेकिन बेदीन मुल्क में आबाद नहीं रहेंगे।
- 31 रास्तबाज़ का मुँह हिकमत का फल लाता रहता है, लेकिन कजगो ज़बान को काट डाला जाएगा।
- 32 रास्तबाज़ के होंट जानते हैं कि अल्लाह को क्या पसंद है, लेकिन बेदीन का मुँह टेढ़ी बातें ही जानता है।

11

- 1 ख ग़लत तराजू से घिन खाता है, वह सही तराजू ही से खुश होता है।
- 2 जहाँ तकबुर है वहाँ बदनामी भी करीब ही रहती है, लेकिन जो हलीम है उसके दामन में हिकमत रहती है।
- 3 सीधी राह पर चलनेवालों की दियानतदारी उनकी राहनुमाई करती जबकि बेवफ़ाओं की नमकहरामी उन्हें तबाह करती है।
- 4 ग़ज़ब के दिन दौलत का कोई फ़ायदा नहीं जबकि रास्तबाज़ी लोगों की जान को छुड़ाती है।
- 5 बेइलज़ाम की रास्तबाज़ी उसका रास्ता हमवार बना देती है जबकि बेदीन की बुरी हरकतें उसे गिरा देती हैं।
- 6 सीधी राह पर चलनेवालों की रास्तबाज़ी उन्हें छुड़ा देती जबकि बेवफ़ाओं का लालच उन्हें फँसा देता है।
- 7 दम तोड़ते वक़्त बेदीन की सारी उम्मीद जाती रहती है, जिस दौलत की तवक्को उसने की वह जाती रहती है।
- 8 रास्तबाज़ की जान मुसीबत से छूट जाती है, और उस की जगह बेदीन फँस जाता है।
- 9 काफ़िर अपने मुँह से अपने पड़ोसी को तबाह करता है, लेकिन रास्तबाज़ों का इल्म उन्हें छुड़ाता है।
- 10 जब रास्तबाज़ कामयाब हों तो पूरा शहर जशन मनाता है, जब बेदीन हलाक हों तो खुशी के नारे बुलंद हो जाते हैं।
- 11 सीधी राह पर चलनेवालों की बरकत से शहर तरक्की करता है, लेकिन बेदीन के मुँह से वह मिसमार हो जाता है।
- 12 नासमझ आदमी अपने पड़ोसी को हकीर जानता है जबकि समझदार आदमी खामोश रहता है।
- 13 तोहमत लगानेवाला दूसरों के राज़ फ़ाश करता है, लेकिन काबिले-एतमाद शाख्स वह भेद पोशीदा रखता है जो उसके सुपुर्द किया गया हो।
- 14 जहाँ क्रियादत की कमी है वहाँ क्रौम का तनज्जुल यकीनी है, जहाँ मुशीरों की कसरत है वहाँ क्रौम फ़तहयाब रहेगी।
- 15 जो अज़नबी का ज़ामिन हो जाए उसे यकीनन नुक़सान पहुँचेगा, जो ज़ामिन बनने से इनकार करे वह महफूज़ रहेगा।
- 16 नेक औरत इज़्ज़त से और ज़ालिम आदमी दौलत से लिपटे रहते हैं।
- 17 शफ़ीक़ का अच्छा सुलूक उसी के लिए फ़ायदामंद है जबकि ज़ालिम का बुरा सुलूक उसी के लिए नुक़सानदेह है।
- 18 जो कुछ बेदीन कमाता है वह फ़रेबदेह है, लेकिन जो रास्ती का बीज बोए उसका अज़्र यकीनी है।

* 10:21 लफ़्ज़ी तरजुमा : रास्तबाज़ के होंट बहुते की चराते हैं।

- 19 रास्तबाज़ी का फल ज़िंदगी है जबकि बुराई के पीछे भागनेवाले का अंजाम मौत है।
- 20 रब कजदिलों से धिन खाता है, वह बेइलज़ाम राह पर चलनेवालों ही से खुश होता है।
- 21 यक्रीन करो, बदकार सज़ा से नहीं बचेगा जबकि रास्तबाज़ों के फ़रज़ंद छूट जाएंगे।
- 22 जिस तरह सुअर की थूथनी में सोने का छल्ला खटकता है उसी तरह खूबसूरत औरत की बेतमीज़ी खटकती है।
- 23 अल्लाह रास्तबाज़ों की आरजू अच्छी चीज़ों से पूरी करता है, लेकिन उसका ग़ज़ब बेदीनों की उम्मीद पर नाज़िल होता है।
- 24 एक आदमी की दौलत में इज़ाफ़ा होता है, गो वह फ़ैयाज़दिली से तकसीम करता है। दूसरे की ग़ुरबत में इज़ाफ़ा होता है, गो वह हद से ज्यादा कंजूस है।
- 25 फ़ैयाज़दिल खुशहाल रहेगा, जो दूसरों को तरो-ताज़ा करे वह खुद ताज़ादम रहेगा।
- 26 लोग गंदम के ज़खीराअंदोज़ पर लानत भेजते हैं, लेकिन जो गंदम को बाज़ार में आने देता है उसके सर पर बरकत आती है।
- 27 जो भलाई की तलाश में रहे वह अल्लाह की मंज़ूरी चाहता है, लेकिन जो बुराई की तलाश में रहे वह खुद बुराई के फंदे में फँस जाएगा।
- 28 जो अपनी दौलत पर भरोसा रखे वह गिर जाएगा, लेकिन रास्तबाज़ हरे-भरे पत्तों की तरह फलें-फूलेंगे।
- 29 जो अपने घर में गड़बड़ पैदा करे वह मीरास में हवा ही पाएगा। अहमक दानिशमंद का नौकर बनेगा।
- 30 रास्तबाज़ का फल ज़िंदगी का दरख़्त है, और दानिशमंद आदमी जानें जीतता है।
- 31 रास्तबाज़ को ज़मीन पर ही अज़्र मिलता है। तो फिर बेदीन और गुनाहगार सज़ा क्यों न पाएँ?

12

- 1 जिसे इल्मो-इरफ़ान प्यारा है उसे तरबियत भी प्यारी है, जिसे नसीहत से नफ़रत है वह बेअक्ल है।
- 2 रब अच्छे आदमी से खुश होता है जबकि वह साज़िश करनेवाले को कुसूरवार ठहराता है।
- 3 इनसान बेदीनी की बुनियाद पर कायम नहीं रह सकता जबकि रास्तबाज़ की जड़ें उखाड़ी नहीं जा सकती।
- 4 सुघड़ बीवी अपने शौहर का ताज है, लेकिन जो शौहर की स्सवाई का बाइस है वह उस की हड्डियों में सड़ाहट की मानिंद है।
- 5 रास्तबाज़ के खयालात मुसिफ़ाना हैं जबकि बेदीनों के मनसूबे फ़रेबदेह हैं।
- 6 बेदीनों के अलफ़ाज़ लोगों को क़त्ल करने की ताक में रहते हैं जबकि सीधी राह पर चलनेवालों की बातें लोगों को छुड़ा लेती हैं।
- 7 बेदीनों को खाक में यों मिलाया जाता है कि उनका नामो-निशान तक नहीं रहता, लेकिन रास्तबाज़ का घर कायम रहता है।
- 8 किसी की जितनी अक्ल-समझ है उतना ही लोग उस की तारीफ़ करते हैं, लेकिन जिसके ज़हन में फ़ुतूर है उसे हकीर जाना जाता है।
- 9 निचले तबके का जो आदमी अपनी ज़िम्मादारियाँ अदा करता है वह उस आदमी से कहीं बेहतर है जो नख़रा बघारता है गो उसके पास रोटी भी नहीं है।
- 10 रास्तबाज़ अपने मवेशी का भी खयाल करता है जबकि बेदीन का दिल ज़ालिम ही ज़ालिम है।
- 11 जो अपनी ज़मीन की खेतीबाड़ी करे उसके पास कसरत का खाना होगा, लेकिन जो फ़ज़ूल चीज़ों के पीछे पड़ जाए वह नासमझ है।
- 12 बेदीन दूसरों को जाल में फँसाने से अपना दिल बहलाता है, लेकिन रास्तबाज़ की जड़ फलदार होती है।
- 13 शरीर अपनी ग़लत बातों के जाल में उलझ जाता जबकि रास्तबाज़ मुसीबत से बच जाता है।
- 14 इनसान अपने मुँह के फल से खूब सेर हो जाता है, और जो काम उसके हाथों ने किया उसका अज़्र उसे ज़रूर मिलेगा।
- 15 अहमक की नज़र में उस की अपनी राह ठीक है, लेकिन दानिशमंद दूसरों के मशवरे पर ध्यान देता है।
- 16 अहमक एकदम अपनी नाराज़ी का इज़हार करता है, लेकिन दाना अपनी बदनामी छुपाए रखता है।
- 17 दियातदार गवाह खुले तौर पर सच्चाई बयान करता है जबकि झूठा गवाह धोका ही धोका पेश करता है।
- 18 गप्पें हॉकनेवाले की बातें तलवार की तरह ज़ख़मी कर देती हैं जबकि दानिशमंद की ज़बान शफ़ा देती है।
- 19 सच्चे होंट हमेशा तक कायम रहते हैं जबकि झूठी ज़बान एक ही लमहे के बाद ख़त्म हो जाती है।
- 20 बुरे मनसूबे बाँधनेवाले का दिल धोके से भरा रहता जबकि सलामती के मशवरे देनेवाले का दिल खुशी से छलकता है।
- 21 कोई भी आफ़त रास्तबाज़ पर नहीं आएगी जबकि दुख तकलीफ़ बेदीनों का दामन कभी नहीं छोड़ेगी।
- 22 रब फ़रेबदेह होंटों से धिन खाता है, लेकिन जो वफ़ादारी से ज़िंदगी गुज़ारते हैं उनसे वह खुश होता है।
- 23 समझदार अपना इल्म छुपाए रखता जबकि अहमक अपने दिल की हमाक़त बुलंद आवाज़ से सबको पेश करता है।
- 24 जिसके हाथ मेहनती हैं वह हुकूमत करेगा, लेकिन जिसके हाथ ढीले हैं उसे बेगार में काम करना पड़ेगा।
- 25 जिसके दिल में पेशानी है वह दबा रहता है, लेकिन कोई भी अच्छी बात उसे खुशी दिलाती है।
- 26 रास्तबाज़ अपनी चरागाह मालूम कर लेता है, लेकिन बेदीनों की राह उन्हें आवारा फिरने देती है।
- 27 ढीला आदमी अपना शिकार नहीं पकड़ सकता जबकि मेहनती शख्स कसरत का माल हासिल कर लेता है।
- 28 रास्ती की राह में ज़िंदगी है, लेकिन ग़लत राह मौत तक पहुँचाती है।

13

- 1 दानिशमंद बेटा अपने बाप की तरबियत कबूल करता है, लेकिन तानाज़न परवा ही नहीं करता अगर कोई उसे डाँटे।
- 2 इनसान अपने मुँह के अच्छे फल से खूब सेर हो जाता है, लेकिन बेवफ़ा के दिल में जुल्म का लालच रहता है।
- 3 जो अपनी ज़बान काबू में रखे वह अपनी ज़िंदगी महफूज़ रखता है, जो अपनी ज़बान को बेलगाम छोड़ दे वह तबाह हो जाएगा।
- 4 काहिल आदमी लालच करता है, लेकिन उसे कुछ नहीं मिलता जबकि मेहनती शख्स की आरज़ू पूरी हो जाती है।
- 5 रास्तबाज़ झूट से नफ़रत करता है, लेकिन बेदीन शर्म और स्सवाई का बाइस है।
- 6 रास्ती बेइलज़ाम की हिफ़ाज़त करती जबकि बेदीनी गुनाहगार को तबाह कर देती है।
- 7 कुछ लोग अमीर का रूप भरकर फिरते हैं गो गरीब हैं। दूसरे गरीब का रूप भरकर फिरते हैं गो अमीरतरीन हैं।
- 8 कभी अमीर को अपनी जान छुड़ाने के लिए ऐसा तावान देना पड़ता है कि तमाम दौलत जाती रहती है, लेकिन गरीब की जान इस क्रिस्म की धमकी से बची रहती है।
- 9 रास्तबाज़ की रौशनी चमकती रहती * जबकि बेदीन का चराग़ बुझ जाता है।
- 10 मग़सूरों में हमेशा झगड़ा होता है जबकि दानिशमंद सलाह-मशवरे के मुताबिक़ ही चलते हैं।
- 11 जल्दबाज़ी से हासिलशुदा दौलत जल्द ही ख़त्म हो जाती है जबकि जो रफ़ता रफ़ता अपना माल जमा करे वह उसे बढ़ाता रहेगा।
- 12 जो उम्मीद वक़्त पर पूरी न हो जाए वह दिल को बीमार कर देती है, लेकिन जो आरज़ू पूरी हो जाए वह ज़िंदगी का दरख़्त है।
- 13 जो अच्छी हिदायत को हक़ीर जाने उसे नुक़सान पहुँचेगा, लेकिन जो हुक्म माने उसे अज़्र मिलेगा।
- 14 दानिशमंद की हिदायत ज़िंदगी का सरचश्मा है जो इनसान को मोहलक फंदों से बचाए रखती है।
- 15 अच्छी समझ मंज़ूरी अता करती है, लेकिन बेवफ़ा की राह अबदी तबाही का बाइस है।
- 16 ज़हीन हर काम सोच-समझकर करता, लेकिन अहमक़ तमाम नज़रों के सामने ही अपनी हमाक़त की नुमाइश करता है।
- 17 बेदीन कासिद मुसीबत में फँस जाता जबकि वफ़ादार कासिद शफ़ा का बाइस है।
- 18 जो तरबियत की परवा न करे उसे ग़ुरबत और शरमिंदगी हासिल होगी, लेकिन जो दूसरे की नसीहत मान जाए उसका एहताराम किया जाएगा।
- 19 जो आरज़ू पूरी हो जाए वह दिल को तरो-ताज़ा करती है, लेकिन अहमक़ बुराई से दरेग करने से घिन खाता है।
- 20 जो दानिशमंदों के साथ चले वह खुद दानिशमंद हो जाएगा, लेकिन जो अहमक़ों के साथ चले उसे नुक़सान पहुँचेगा।
- 21 मुसीबत गुनाहगार का पीछा करती है जबकि रास्तबाज़ों का अज़्र खुशहाली है।
- 22 नेक आदमी के बेटे और पोते उस की मीरास पाएँगे, लेकिन गुनाहगार की दौलत रास्तबाज़ के लिए महफूज़ रखी जाएगी।
- 23 गरीब का खेत कसरत की फ़सलें मुहैया कर सकता है, लेकिन जहाँ इनसाफ़ नहीं वहाँ सब कुछ छीन लिया जाता है।
- 24 जो अपने बेटे को तंबीह नहीं करता वह उससे नफ़रत करता है। जो उससे मुहब्बत रखे वह वक़्त पर उस की तरबियत करता है।
- 25 रास्तबाज़ जी भरकर खाना खाता है, लेकिन बेदीन का पेट ख़ाली रहता है।

14

- 1 हिकमत बीबी अपना घर तामीर करती है, लेकिन हमाक़त बीबी अपने ही हाथों से उसे ढा देती है।
- 2 जो सीधी राह पर चलता है वह अल्लाह का ख़ौफ़ मानता है, लेकिन जो ग़लत राह पर चलता है वह उसे हक़ीर जानता है।
- 3 अहमक़ की बातों से वह डंडा निकलता है जो उसे उसके तकब्बुर की सज़ा देता है, लेकिन दानिशमंद के होंट उसे महफूज़ रखते हैं।
- 4 जहाँ बैल नहीं वहाँ चरनी ख़ाली रहती है, बैल की ताक़त ही से कसरत की फ़सलें पैदा होती हैं।
- 5 वफ़ादार गवाह झूट नहीं बोलता, लेकिन झूटे गवाह के मुँह से झूट निकलता है।
- 6 तानाज़न हिकमत को ढूँढ़ता है, लेकिन बेफ़ायदा। समझदार के इल्म में आसानी से इज़ाफ़ा होता है।
- 7 अहमक़ से दूर रह, क्योंकि तू उस की बातों में इल्म नहीं पाएगा।
- 8 ज़हीन की हिकमत इसमें है कि वह सोच-समझकर अपनी राह पर चले, लेकिन अहमक़ की हमाक़त सरासर धोका ही है।
- 9 अहमक़ अपने कुसूर का मज़ाक़ उड़ाते हैं, लेकिन सीधी राह पर चलनेवाले रब को मंज़ूर हैं।
- 10 हर दिल की अपनी ही तलख़ी होती है जिससे सिर्फ़ वही वाकिफ़ है, और उस की खुशी में भी कोई और शरीक नहीं हो सकता।
- 11 बेदीन का घर तबाह हो जाएगा, लेकिन सीधी राह पर चलनेवाले का ख़ैमा फले-फूलेगा।
- 12 ऐसी राह भी होती है जो देखने में ठीक तो लगती है गो उसका अंजाम मौत है।
- 13 दिल हँसते वक़्त भी रंजीदा हो सकता है, और खुशी के इख़िताम पर दुख ही बाक़ी रह जाता है।
- 14 जिसका दिल बेवफ़ा है वह जी भरकर अपने चाल-चलन का कड़वा फल खाएगा जबकि नेक आदमी अपने आमाल के मीठे फल से सेर हो जाएगा।
- 15 सादालौह हर एक की बात मान लेता है जबकि ज़हीन आदमी अपना हर क़दम सोच-समझकर उठाता है।

* 13:9 लफ़ज़ी तरज़ुमा : खुशी मनाती।

- 16 दानिशमंद डरते डरते गलत काम से दरेग करता है, लेकिन अहमक खुदएतमाद है और एकदम मुश्तइल हो जाता है।
- 17 गुसीला आदमी अहमकाना हरकतें करता है, और लोग साज़िश शख्स से नफ़रत करते हैं।
- 18 सादालौह मीरास में हमाक़त पाता है जबकि ज़हीन आदमी का सर इल्म के ताज से आरास्ता रहता है।
- 19 शरीरों को नेकों के सामने झुकना पड़ेगा, और बेदीनों को रास्तबाज़ के दरवाज़े पर औंधे मुँह होना पड़ेगा।
- 20 गरीब के हमसाय भी उससे नफ़रत करते हैं जबकि अमीर के बेशुमार दोस्त होते हैं।
- 21 जो अपने पड़ोसी को हक़ीर जाने वह गुनाह करता है। मुबारक है वह जो ज़रूरतमंद पर तरस खाता है।
- 22 बुरे मनसूबे बाँधनेवाले सब आवारा फिरते हैं। लेकिन अच्छे मनसूबे बाँधनेवाले शफ़क़त और वफ़ा पाएँगे।
- 23 मेहनत-मशक्क़त करने में हमेशा फ़ायदा होता है, जबकि ख़ाली बातें करने से लोग गरीब हो जाते हैं।
- 24 दानिशमंदों का अज़्र दौलत का ताज है जबकि अहमकों का अज़्र हमाक़त ही है।
- 25 सच्चा गवाह जानें बचाता है जबकि झूठा गवाह फ़रेबदेह है।
- 26 जो रब का ख़ौफ़ माने उसके पास महफूज़ क़िला है जिसमें उस की औलाद भी पनाह ले सकती है।
- 27 रब का ख़ौफ़ ज़िंदगी का सरचश्मा है जो इन्सान को मोहलक फंदों से बचाए रखता है।
- 28 जितनी आबादी मुल्क में है उतनी ही बादशाह की शानो-शौकत है। रिआया की कमी हुक्मरान के तनज़्ज़ुल का बाइस है।
- 29 तहम्मूल करनेवाला बड़ी समझदारी का मालिक है, लेकिन गुसीला आदमी अपनी हमाक़त का इज़हार करता है।
- 30 पुरसुकून दिल जिस्म को ज़िंदगी दिलाता जबकि हसद हड्डियों को गलने देता है।
- 31 जो पस्तहाल पर ज़ुल्म करे वह उसके ख़ालिक की तहक़ीर करता है जबकि जो ज़रूरतमंद पर तरस खाए वह अल्लाह का एहताराम करता है।
- 32 बेदीन की बुराई उसे खाक में मिला देती है, लेकिन रास्तबाज़ मरते वक़्त भी अल्लाह में पनाह लेता है।
- 33 हिकमत समझदार के दिल में आराम करती है, और वह अहमकों के दरमियान भी ज़ाहिर हो जाती है।
- 34 रास्ती से हर क़ौम सरफ़राज़ होती है जबकि गुनाह से उम्मतें स्सवा हो जाती हैं।
- 35 बादशाह दानिशमंद मुलाज़िम से खुश होता है, लेकिन शर्मनाक काम करनेवाला मुलाज़िम उसके गुस्से का निशाना बन जाता है।

15

- 1 नरम जवाब गुस्सा ठंडा करता, लेकिन तुरश बात तैश दिलाती है।
- 2 दानिशमंदों की ज़बान इल्मो-इरफ़ान फैलाती है जबकि अहमक का मुँह हमाक़त का जोर से उबलनेवाला चश्मा है।
- 3 रब की आँखें हर जगह मौजूद हैं, वह बुरे और भले सब पर ध्यान देती हैं।
- 4 नरम ज़बान ज़िंदगी का दरख़्त है जबकि फ़रेबदेह ज़बान शिकस्तादिल कर देती है।
- 5 अहमक अपने बाप की तरबियत को हक़ीर जानता है, लेकिन जो नसीहत माने वह दानिशमंद है।
- 6 रास्तबाज़ के घर में बड़ा खज़ाना होता है, लेकिन जो कुछ बेदीन हासिल करता है वह तबाही का बाइस है।
- 7 दानिशमंदों के होंट इल्मो-इरफ़ान का बीज बिखेर देते हैं, लेकिन अहमकों का दिल ऐसा नहीं करता।
- 8 रब बेदीनों की कुरबानी से घिन खाता, लेकिन सीधी राह पर चलनेवालों की दुआ से खुश होता है।
- 9 रब बेदीन की राह से घिन खाता, लेकिन रास्ती का पीछा करनेवाले से प्यार करता है।
- 10 जो सहीह राह को तर्क करे उस की सख़्त तादीब की जाएगी, जो नसीहत से नफ़रत करे वह मर जाएगा।
- 11 पाताल और आलमे-अरवाह रब को साफ़ नज़र आते हैं। तो फिर इन्सानों के दिल उसे क्यों न साफ़ दिखाई दें?
- 12 तानाज़न को दूसरों की नसीहत पसंद नहीं आती, इसलिए वह दानिशमंदों के पास नहीं जाता।
- 13 जिसका दिल खुश है उसका चेहरा खुला रहता है, लेकिन जिसका दिल पोरेशान है उस की रूह शिकस्ता रहती है।
- 14 समझदार का दिल इल्मो-इरफ़ान की तलाश में रहता, लेकिन अहमक हमाक़त की चरागाह में चरता रहता है।
- 15 मुसीबतज़दा के तमाम दिन बुरे हैं, लेकिन जिसका दिल खुश है वह रोज़ाना जशन मनाता है।
- 16 जो गरीब रब का ख़ौफ़ मानता है उसका हाल उस करोड़पति से कहीं बेहतर है जो बड़ी बेचैनी से ज़िंदगी गुज़ारता है।
- 17 जहाँ मुहब्बत है वहाँ सबज़ी का सालन बहुत है, जहाँ नफ़रत है वहाँ मोटे-ताज़े बछड़े की ज़ियाफ़त भी बेफ़ायदा है।
- 18 गुसीला आदमी झगड़े छेड़ता रहता जबकि तहम्मूल करनेवाला लोगों के गुस्से को ठंडा कर देता है।
- 19 काहिल का रास्ता काँटेदार बाड़ की मानिंद है, लेकिन दियातदारों की राह पक्की सड़क ही है।
- 20 दानिशमंद बेटा अपने बाप के लिए खुशी का बाइस है, लेकिन अहमक अपनी माँ को हक़ीर जानता है।
- 21 नासमझ आदमी हमाक़त से लुत्फ़अंदोज़ होता, लेकिन समझदार आदमी सीधी राह पर चलता है।
- 22 जहाँ सलाह-मशवरा नहीं होता वहाँ मनसूबे नाकाम रह जाते हैं, जहाँ बहुत-से मुशीर होते हैं वहाँ कामयाबी होती है।
- 23 इन्सान मौज़ूँ जवाब देने से खुश हो जाता है, वक़्त पर मुनासिब बात कितनी अच्छी होती है।
- 24 ज़िंदगी की राह चढ़ती रहती है ताकि समझदार उस पर चलते हुए पाताल में उतरने से बच जाए।

- 25 रब मुतकब्बिर का घर ढा देता, लेकिन बेवा की ज़मीन की हुदूद महफूज़ रखता है।
 26 रब बुरे मनसूबों से धिन खाता है, और मेहरबान अलफ़ाज़ उसके नज़दीक पाक हैं।
 27 जो नाजायज़ नफ़ा कमाए वह अपने घर पर आफ़त लाता है, लेकिन जो रिश्वत से नफ़रत रखे वह जीता रहेगा।
 28 रास्तबाज़ का दिल सोच-समझकर ज़वाब देता है, लेकिन बेदीन का मुँह ज़ोर से उबलनेवाला चश्मा है जिससे बुरी बातें निकलती रहती हैं।
 29 रब बेदीनों से दूर रहता, लेकिन रास्तबाज़ की दुआ सुनता है।
 30 चमकती आँखें दिल को खुशी दिलाती हैं, अच्छी ख़बर पूरे जिस्म को तरो-ताज़ा कर देती है।
 31 जो ज़िंदगीबख़्श नसीहत पर ध्यान दे वह दानिशमंदों के दरमियान ही सुकूनत करेगा।
 32 जो तरबियत की परवा न करे वह अपने आपको हक़ीर जानता है, लेकिन जो नसीहत पर ध्यान दे उस की समझ में इज़ाफ़ा होता है।
 33 रब का ख़ौफ़ ही वह तरबियत है जिससे इनसान हिकमत सीखता है। पहले फ़रोतनी अपना ले, क्योंकि यही इज़्ज़त पाने का पहला क़दम है।

16

- 1 इनसान दिल में मनसूबे बाँधता है, लेकिन ज़बान का ज़वाब रब की तरफ़ से आता है।
 2 इनसान की नज़र में उस की तमाम राहें पाक-साफ़ हैं, लेकिन रब ही रूहों की जाँच-पड़ताल करता है।
 3 जो कुछ भी तू करना चाहे उसे रब के सुपुर्द कर। तब ही तेरे मनसूबे कामयाब होंगे।
 4 रब ने सब कुछ अपने ही मकासिद पूरे करने के लिए बनाया है। वह दिन भी पहले से मुक़र्रर है जब बेदीन पर आफ़त आएगी।
 5 रब हर मग़्सूर दिल से धिन खाता है। यक़ीनन वह सज़ा से नहीं बचेगा।
 6 शफ़क़त और वफ़ादारी गुनाह का कफ़फ़ारा देती हैं। रब का ख़ौफ़ मानने से इनसान बुराई से दूर रहता है।
 7 अगर रब किसी इनसान की राहों से खुश हो तो वह उसके दुश्मनों को भी उससे सुलह कराने देता है।
 8 इनसाफ़ से थोड़ा-बहुत कमना नाइनसाफ़ी से बहुत दौलत जमा करने से कहीं बेहतर है।
 9 इनसान अपने दिल में मनसूबे बाँधता रहता है, लेकिन रब ही मुक़र्रर करता है कि वह आख़िरकार किस राह पर चल पड़े।
 10 बादशाह के होंट गोया इलाही फैसले पेश करते हैं, उसका मुँह अदालत करते वक़्त बेवफ़ा नहीं होता।
 11 रब दुस्स्त तराजू का मालिक है, उसी ने तमाम बाटों का इंतज़ाम कायम किया।
 12 बादशाह बेदीनी से धिन खाता है, क्योंकि उसका तख़्त रास्तबाज़ी की बुनियाद पर मज़बूत रहता है।
 13 बादशाह रास्तबाज़ होंटों से खुश होता और साफ़ बात करनेवाले से मुहब्बत रखता है।
 14 बादशाह का गुस्सा मौत का पेशख़ैमा है, लेकिन दानिशमंद उसे ठंडा करने के तरीक़े जानता है।
 15 जब बादशाह का चेहरा खिल उठे तो मतलब ज़िंदगी है। उस की मंज़ूरी मौसमे-बहार के तरो-ताज़ा करनेवाले बादल की मानिंद है।
 16 हिकमत का हुसूल सोने से कहीं बेहतर और समझ पाना चाँदी से कहीं बढ़कर है।
 17 दियानतदार की मज़बूत राह बुरे काम से दूर रहती है, जो अपनी राह की पहरादारी करे वह अपनी जान बचाए रखता है।
 18 तबाही से पहले गुस्सूर और गिरने से पहले तकब्बुर आता है।
 19 फ़रोतनी से ज़रूरतमंदों के दरमियान बसना घमंडियों के लूटे हुए माल में शरीक होने से कहीं बेहतर है।
 20 जो कलाम पर ध्यान दे वह खुशहाल होगा, मुबारक है वह जो रब पर भरोसा रखे।
 21 जो दिल से दानिशमंद है उसे समझदार करार दिया जाता है, और मीठे अलफ़ाज़ तालीम में इज़ाफ़ा करते हैं।
 22 फ़हम अपने मालिक के लिए ज़िंदगी का सरचश्मा है, लेकिन अहमक की अपनी ही हमाक़त उसे सज़ा देती है।
 23 दानिशमंद का दिल समझ की बातें ज़बान पर लाता और तालीम देने में होंटों का सहारा बनता है।
 24 मेहरबान अलफ़ाज़ ख़ालिस शहद हैं, वह जान के लिए शीरी और पूरे जिस्म को तरो-ताज़ा कर देते हैं।
 25 ऐसी राह भी होती है जो देखने में तो ठीक लगती है गो उसका अंजाम मौत है।
 26 मज़दूर का ख़ाली पेट उसे काम करने पर मजबूर करता, उस की भूक उसे हॉकती रहती है।
 27 शरीर कुरेद कुरेदकर ग़लत काम निकाल लेता, उसके होंटों पर झुलसानेवाली आग़ रहती है।
 28 कजरौ आदमी झगड़े छेड़ता रहता, और तोहमत लगानेवाला दिली दोस्तों में भी रखना डालता है।
 29 ज़ालिम अपने पड़ोसी को वरगलाकर ग़लत राह पर ले जाता है।
 30 जो आँख मारे वह ग़लत मनसूबे बाँध रहा है, जो अपने होंट चबाए वह ग़लत काम करने पर तुला हुआ है।
 31 सफ़ेद बाल एक शानदार ताज हैं जो रास्तबाज़ ज़िंदगी गुज़ारने से हासिल होते हैं।
 32 तहम्मूल करनेवाला सूरे से सबक़त लेता है, जो अपने आपको काबू में रखे वह शहर को शिकस्त देनेवाले से बरतर है।
 33 इनसान तो कुरा डालता है, लेकिन उसका हर फैसला रब की तरफ़ से है।

17

1 जिस घर में रोटी का बासी टुकड़ा सुकून के साथ खाया जाए वह उस घर से कहीं बेहतर है जिसमें लड़ाई-झगड़ा है, खाह उसमें कितनी शानदार ज़ियाफत क्यों न हो रही हो।

2 समझदार मुलाज़िम मालिक के उस बेटे पर काबू पाएगा जो शर्म का बाइस है, और जब भाइयों में मौरूसी मिलकियत तकसीम की जाए तो उसे भी हिस्सा मिलेगा।

3 सोना-चाँदी कुठाली में पिघलाकर पाक-साफ़ की जाती है, लेकिन रब ही दिल की जाँच-पड़ताल करता है।

4 बदकार शरीर होंटों पर ध्यान और धोकेबाज़ तबाहक़ून ज़बान पर तबज्जुह देता है।

5 जो गरीब का मज़ाक़ उड़ाए वह उसके खालिक की तहकीर करता है, जो दूसरे की मुसीबत देखकर खुश हो जाए वह सज़ा से नहीं बचेगा।

6 पोते बूढ़ों का ताज और वालिदैन अपने बच्चों के ज़ेवर हैं।

7 अहमक के लिए बड़ी बड़ी बातें करना मौज़ू नहीं, लेकिन शरीफ़ होंटों पर फ़रेब कहीं ज़्यादा ग़ैरमुनासिब है।

8 रिश्त देनेवाले की नज़र में रिश्त जादू की मानिंद है। जिस दरवाज़े पर भी खटखटाए वह खुल जाता है।

9 जो दूसरे की ग़लती को दरगुज़र करे वह मुहब्बत को फ़रोग देता है, लेकिन जो माज़ी की ग़लतियाँ दोहराता रहे वह करीबी दोस्तों में निफ़ाक़ पैदा करता है।

10 अगर समझदार को डाँटा जाए तो वह ख़ूब सीख लेता है, लेकिन अगर अहमक को सौ बार मारा जाए तो भी वह इतना नहीं सीखता।

11 शरीर सरकशी पर तूला रहता है, लेकिन उसके खिलाफ़ ज़ालिम कासिद भेजा जाएगा।

12 जो अहमक अपनी हमाक़त में उलझा हुआ हो उससे दरेग कर, क्योंकि उससे मिलने से बेहतर यह है कि तेरा उस रीछनी से वास्ता पड़े जिसके बच्चे उससे छीन लिए गए हों।

13 जो भलाई के एवज़ बुराई करे उसके घर से बुराई कभी दूर नहीं होगी।

14 लड़ाई-झगड़ा छेड़ना बंद में रखना डालने के बराबर है। इससे पहले कि मुक़दमाबाज़ी शुरू हो उससे बाज़ आ।

15 जो बेदीन को बेकुसूर और रास्तबाज़ को मुजरिम ठहराए उससे रब घिन खाता है।

16 अहमक के हाथ में पैसों का क्या फ़ायदा है? क्या वह हिकमत खरीद सकता है जबकि उसमें अक्ल नहीं? हरगिज़ नहीं!

17 पड़ोसी वह है जो हर वक़्त मुहब्बत रखता है, भाई वह है जो मुसीबत में सहारा देने के लिए पैदा हुआ है।

18 जो हाथ मिलाकर अपने पड़ोसी का ज़ामिन होने का वादा करे वह नासमझ है।

19 जो लड़ाई-झगड़े से मुहब्बत रखे वह गुनाह से मुहब्बत रखता है, जो अपना दरवाज़ा हद से ज़्यादा बड़ा बनाए वह तबाही को दाख़िल होने की दावत देता है।

20 जिसका दिल टेढ़ा है वह खुशहाली नहीं पाएगा, और जिसकी ज़बान चालाक है वह मुसीबत में उलझ जाएगा।

21 जिसके हाँ अहमक बेटा पैदा हो जाए उसे दुख पहुँचता है, और अक्ल से ख़ाली बेटा बाप के लिए खुशी का बाइस नहीं होता।

22 खुशबाश दिल पूरे जिस्म को शफ़ा देता है, लेकिन शिकस्ता रूह हड्डियों को खुशक कर देती है।

23 बेदीन चुपके से रिश्त लेकर इनसाफ़ की राहों को बिगाड़ देता है।

24 समझदार अपनी नज़र के सामने हिकमत रखता है, लेकिन अहमक की नज़रें दुनिया की इंतहा तक आवारा फिरती हैं।

25 अहमक बेटा बाप के लिए रंज का बाइस और माँ के लिए तलखी का सबब है।

26 बेकुसूर पर ज़ुरमाना लगाना ग़लत है, और शरीफ़ को उस की दियानतदारी के सबब से कोड़े लगाना बुरा है।

27 जो अपनी ज़बान को काबू में रखे वह इल्मो-इरफ़ान का मालिक है, जो ठंडे दिल से बात करे वह समझदार है।

28 अगर अहमक ख़ामोश रहे तो वह भी दानिशमंद लगता है। जब तक वह बात न करे लोग उसे समझदार करार देते हैं।

18

1 जो दूसरों से अलग हो जाए वह अपने ज़ाती मकासिद पूरे करना चाहता और समझ की हर बात पर झगड़ने लगता है।

2 अहमक समझ से लुफ़्फ़ांदोज़ नहीं होता बल्कि सिर्फ़ अपने दिल की बातें दूसरों पर ज़ाहिर करने से।

3 जहाँ बेदीन आए वहाँ हिक़ारत भी आ मौजूद होती, और जहाँ स्सवाई हो वहाँ तानाज़नी भी होती है।

4 इनसान के अलफ़ाज़ गहरा पानी हैं, हिकमत का सरचश्मा बहती हुई नदी है।

5 बेदीन की जानिबदारी करके रास्तबाज़ का हक़ मारना ग़लत है।

6 अहमक के होंट लड़ाई-झगड़ा पैदा करते हैं, उसका मुँह ज़ोर से पिटाई का मुतालबा करता है।

7 अहमक का मुँह उस की तबाही का बाइस है, उसके होंट ऐसा फंदा हैं जिसमें उस की अपनी जान उलझ जाती है।

8 तोहमत लगानेवाले की बातें लज़ीज़ खाने के लुक़मों की मानिंद हैं, वह दिल की तह तक उतर जाती हैं।

9 जो अपने काम में ज़रा भी ढीला हो जाए, उसे याद रहे कि ढीलेपन का भाई तबाही है।

10 रब का नाम मज़बूत बुर्ज़ है जिसमें रास्तबाज़ भागकर महफूज़ रहता है।

- 11 अमीर समझता है कि मेरी दौलत मेरा किलाबंद शहर और मेरी ऊँची चारदीवारी है जिसमें मैं महफूज हूँ।
- 12 तबाह होने से पहले इनसान का दिल मग़रूर हो जाता है, इज्जत मिलने से पहले लाज़िम है कि वह फ़रोतन हो जाए।
- 13 दूसरे की बात सुनने से पहले जवाब देना हमाक़त है। जो ऐसा करे उस की स्सवाई हो जाएगी।
- 14 बीमार होते वक़्त इनसान की रूह जिस्म की परवरिश करती है, लेकिन अगर रूह शिकस्ता हो तो फिर कौन उसको सहारा देगा?
- 15 समझदार का दिल इल्म अपनाता और दानिशमंद का कान इरफ़ान का खोज लगाता रहता है।
- 16 तोहफ़ा रास्ता खोलकर देनेवाले को बड़ों तक पहुँचा देता है।
- 17 जो अदालत में पहले अपना मौक़िफ़ पेश करे वह उस वक़्त तक हक़-बजानिब लगता है जब तक दूसरा फ़रीक़ सामने आकर उस की हर बात की तहकीक़ न करे।
- 18 कुरा डालने से झगड़े ख़त्म हो जाते और बड़ों का एक दूसरे से लड़ने का खतरा दूर हो जाता है।
- 19 जिस भाई को एक दफ़ा मायूस कर दिया जाए उसे दुबारा जीत लेना किलाबंद शहर पर फ़तह पाने से ज़्यादा दुश्वार है। झगड़े हल करना बुर्ज के कुंडे तोड़ने की तरह मुश्किल है।
- 20 इनसान अपने मुँह के फल से सेर हो जाएगा, वह अपने होंटों की पैदावार को जी भरकर खाएगा।
- 21 ज़बान का ज़िंदगी और मौत पर इख़्तियार है, जो उसे प्यार करे वह उसका फल भी खाएगा।
- 22 जिसे बीवी मिली उसे अच्छी नेमत मिली, और उसे रब की मंज़ूरी हासिल हुई।
- 23 गरीब मिन्नत करते करते अपना मामला पेश करता है, लेकिन अमीर का जवाब सख़्त होता है।
- 24 कई दोस्त तुझे तबाह करते हैं, लेकिन ऐसे भी हैं जो तुझसे भाई से ज़्यादा लिपटे रहते हैं।

19

- 1 जो गरीब बेइलज़ाम ज़िंदगी गुज़ारे वह टेढ़ी बातें करनेवाले अहमक़ से कहीं बेहतर है।
- 2 अगर इल्म साथ न हो तो सरग़रमी का कोई फ़ायदा नहीं। जल्दबाज़ ग़लत राह पर आता रहता है।
- 3 गो इनसान की अपनी हमाक़त उसे भटका देती है तो भी उसका दिल रब से नाराज़ होता है।
- 4 दौलतमंद के दोस्तों में इज़ाफ़ा होता है, लेकिन गरीब का एक दोस्त भी उससे अलग हो जाता है।
- 5 झूठा गवाह सज़ा से नहीं बचेगा, झूटी गवाही दे उस की जान नहीं छूटेगी।
- 6 मुतअदिद लोग बड़े आदमी की खुशामद करते हैं, और हर एक उस आदमी का दोस्त है जो तोहफ़े देता है।
- 7 गरीब के तमाम भाई उससे नफ़रत करते हैं, तो फिर उसके दोस्त उससे क्यों दूर न रहें। वह बातें करते करते उनका पीछा करता है, लेकिन वह ग़ायब हो जाते हैं।
- 8 जो हिकमत अपना ले वह अपनी जान से मुहब्बत रखता है, जो समझ की परवरिश करे उसे कामयाबी होगी।
- 9 झूठा गवाह सज़ा से नहीं बचेगा, झूटी गवाही देनेवाला तबाह हो जाएगा।
- 10 अहमक़ के लिए ऐशो-इशरत से ज़िंदगी गुज़ारना मौज़ू नहीं, लेकिन गुलाम की हुक़्मरानों पर हुक़्मत कहीं ज़्यादा ग़ैरमुनासिब है।
- 11 इनसान की हिकमत उसे तहम्मूल सिखाती है, और दूसरों के ज़रायम से दरगुज़र करना उसका फ़ख़र है।
- 12 बादशाह का तैश जवान शेरबबर की दहाड़ों की मानिंद है जबकि उस की मंज़ूरी घास पर शबनम की तरह तरो-ताज़ा करती है।
- 13 अहमक़ बेटा बाप की तबाही और झगडालू बीवी मुसलसल टपकनेवाली छत है।
- 14 मौस्सी घर और मिलकियत बापदादा की तरफ़ से मिलती है, लेकिन समझदार बीवी रब की तरफ़ से है।
- 15 सुस्त होने से इनसान गहरी नींद सो जाता है, लेकिन ढीला शख्स भूके मरेगा।
- 16 जो वफ़ादारी से हुक़्म पर अमल करे वह अपनी जान महफूज रखता है, लेकिन जो अपनी राहों की परवा न करे वह मर जाएगा।
- 17 जो गरीब पर मेहरबानी करे वह रब को उधार देता है, वही उसे अज़्र देगा।
- 18 जब तक उम्मीद की किरण बाक़ी हो अपने बेटे की तादीब कर, लेकिन इतने जोश में न आ कि वह मर जाए।
- 19 जो हद से ज़्यादा तैश में आए उसे ज़रमाना देना पड़ेगा। उसे बचाने की कोशिश मत कर वरना उसका तैश और बढ़ेगा।
- 20 अच्छा मशवरा अपना और तरबियत क़बूल कर ताकि आइंदा दानिशमंद हो।
- 21 इनसान दिल में मुतअदिद मनसूबे बाँधता रहता है, लेकिन रब का इरादा हमेशा पूरा हो जाता है।
- 22 इनसान का लालच उस की स्सवाई का बाइस है, और गरीब दरोगो से बेहतर है।
- 23 रब का ख़ौफ़ ज़िंदगी का मंबा है। खुदातरस आदमी सेर होकर सुकून से सो जाता और मुसीबत से महफूज रहता है।
- 24 काहिल अपना हाथ खाने के बरतन में डालकर उसे मुँह तक नहीं ला सकता।
- 25 तानाज़न को मार तो सादालौह सबक़ सीखेगा, समझदार को डॉट तो उसके इल्म में इज़ाफ़ा होगा।
- 26 जो अपने बाप पर जुल्म करे और अपनी माँ को निकाल दे वह वालिदैन के लिए शर्म और स्सवाई का बाइस है।
- 27 मेरे बेटे, तरबियत पर ध्यान देने से बाज़ न आ, वरना तू इल्मो-इरफ़ान की राह से भटक जाएगा।

28 शरीर गवाह इनसाफ का मज़ाक उड़ाता है, और बेदीन का मुँह आफत की ख़बरें फैलाता है।

29 तानाज़न के लिए सज़ा और अहमक की पीठ के लिए कोड़ा तैयार है।

20

1 मैं तानाज़न का बाप और शराब शोर-शराबा की मॉँ है। जो यह पी पीकर डगमगाने लगे वह दानिशमंद नहीं।

2 बादशाह का कहर जवान शेरबबर की दहाड़ों की मानिंद है, जो उसे तैश दिलाए वह अपनी जान पर खेलता है।

3 लड़ाई-झगड़े से बाज़ रहना इज़्ज़त का तुरीए-इम्तियाज़ है जबकि हर अहमक झगड़ने के लिए तैयार रहता है।

4 काहिल वक्रत पर हल नहीं चलाता, चुनौचे जब वह फ़सल पकते वक्रत अपने खेत पर निगाह करे तो कुछ नज़र नहीं आया।

5 इनसान के दिल का मनसूबा गहरे पानी की मानिंद है, लेकिन समझदार आदमी उसे निकालकर अमल में लाता है।

6 बहुत-से लोग अपनी वफ़ादारी पर फ़ख़र करते हैं, लेकिन काबिले-एतमाद शख्स कहाँ पाया जाता है?

7 जो रास्तबाज़ बेइलज़ाम ज़िंदगी गुज़ारे उस की औलाद मुबारक है।

8 जब बादशाह तख्ते-अदालत पर बैठ जाए तो वह अपनी आँखों से सब कुछ छानकर हर ग़लत बात एक तरफ़ कर लेता है।

9 कौन कह सकता है, “मैंने अपने दिल को पाक-साफ़ कर रखा है, मैं अपने गुनाह से पाक हो गया हूँ”?

10 ग़लत बाट और ग़लत पैमाइश, रब दोनों से धिन खाता है।

11 लड़के का किरदार उसके सुलूक से मालूम होता है। इससे पता चलता है कि उसका चाल-चलन पाक और रास्त है या नहीं।

12 सुननेवाले कान और देखनेवाली आँखें दोनों ही रब ने बनाई हैं।

13 नींद को प्यार न कर वरना गरीब हो जाएगा। अपनी आँखों को खुला रख तो जी भरकर खाना खाएगा।

14 गाहक दुकानदार से कहता है, “यह कैसी नाकिस चीज़ है!” लेकिन फिर जाकर दूसरों के सामने अपने सौदे पर शेखी मारता है।

15 सोना और कसरत के मोती पाए जा सकते हैं, लेकिन समझदार होंट उनसे कहीं ज़्यादा कीमती हैं।

16 ज़मानत का वह लिबास वापस न कर जो किसी ने परदेसी का ज़ामिन बनकर दिया है। अगर वह अजनबी का ज़ामिन हो तो उस ज़मानत पर ज़रूर क़ब्ज़ा कर जो उसने दी थी।

17 धोके से हासिल की हुई रोटी आदमी को मीठी लगती है, लेकिन उसका अंजाम कंकरों से भरा मुँह है।

18 मनसूबे सलाह-मशवरे से मज़बूत हो जाते हैं, और जंग करने से पहले दूसरों की हिदायात पर ध्यान दे।

19 अगर तू बुहतान लगानेवाले को हमराज़ बनाए तो वह इधर उधर फिरकर बात फैलाएगा। चुनौचे बातूनी से गुरेज़ कर।

20 जो अपने बाप या मॉँ पर लानत करे उसका चराग़ घने अंधेरे में बुझ जाएगा।

21 जो मीरास शुरू में बड़ी जल्दी से मिल जाए वह आखिर में बरकत का बाइस नहीं होगी।

22 मत कहना, “मैं ग़लत काम का इंतक़ाम लूँगा।” रब के इंतज़ार में रह तो वही तेरी मदद करेगा।

23 रब झूठे बाटों से धिन खाता है, और ग़लत तराजू उसे अच्छा नहीं लगता।

24 रब हर एक के क़दम मुक़र्रर करता है। तो फिर इनसान किस तरह अपनी राह समझ सकता है?

25 इनसान अपने लिए फंदा तैयार करता है जब वह जल्दबाज़ी से मन्नत मानता और बाद में ही मन्नत के नतायज पर गौर करने लगता है।

26 दानिशमंद बादशाह बेदीनों को छान छानकर उड़ा लेता है, हाँ वह गाहने का आला ही उन पर से गुज़रने देता है।

27 आदमज़ाद की रूह रब का चराग़ है जो इनसान के बातिन की तह तक सब कुछ की तहकीक़ करता है।

28 शफ़क़त और वफ़ा बादशाह को महफूज़ रखती हैं, शफ़क़त से वह अपना तख़्त मुस्तहक़म कर लेता है।

29 नौजवानों का फ़ख़र उनकी ताक़त और बुजुर्गों की शान उनके सफ़ेद बाल हैं।

30 ज़ख़म और चोटें बुराई को दूर कर देती हैं, ज़रबें बातिन की तह तक सब कुछ साफ़ कर देती हैं।

21

1 बादशाह का दिल रब के हाथ में नहर की मानिंद है। वह जिधर चाहे उसका स़ख़ फेर देता है।

2 हर आदमी की राह उस की अपनी नज़र में ठीक लगती है, लेकिन रब ही दिलों की जाँच-पड़ताल करता है।

3 रास्तबाज़ी और इनसाफ़ करना रब को ज़बह की कुरबानियों से कहीं ज़्यादा पसंद है।

4 मग़स्स आँखें और मुतकब्बिर दिल जो बेदीनों का चराग़ है गुनाह हैं।

5 मेहनती शख्स के मनसूबे नफ़ा का बाइस हैं, लेकिन जल्दबाज़ी ग़ुरबत तक पहुँचा देती है।

6 फ़रेबदेह ज़बान से जमा किया हुआ खज़ाना बिखर जानेवाला धुआँ और मोहलक़ फंदा है।

7 बेदीनों का जुल्म ही उन्हें घसीटकर ले जाता है, क्योंकि वह इनसाफ़ करने से इनकार करते हैं।

8 कुसूरवार की राह पेचदार है जबकि पाक शख्स सीधी राह पर चलता है।

9 झगड़ालू बीवी के साथ एक ही घर में रहने की निसबत छत के किसी कोने में गुज़ारा करना बेहतर है।

10 बेदीन ग़लत काम करने के लालच में रहता है और अपने किसी भी पड़ोसी पर तरस नहीं खाता।

- 11 तानाज़न पर ज़ुरमाना लगा तो सादालौह सबक सीखेगा, दानिशमंद को तालीम दे तो उसके इल्म में इज़ाफ़ा होगा।
- 12 अल्लाह जो रास्त है बेदीन के घर को ध्यान में रखता है, वही बेदीन को खाक में मिला देता है।
- 13 जो कान में उँगली डालकर गरीब की मदद के लिए चीखें नहीं सुनता वह भी एक दिन चीखें मारेगा, और उस की भी सुनी नहीं जाएगी।
- 14 पोशीदगी में सिला देने से दूसरे का गुस्सा ठंडा हो जाता, किसी की जेब गरम करने से उसका सख्त तैश दूर हो जाता है।
- 15 जब इनसाफ़ किया जाए तो रास्तबाज़ खुश हो जाता, लेकिन बदकार दहशत खाने लगता है।
- 16 जो समझ की राह से भटक जाए वह एक दिन मुरदों की जमात में आराम करेगा।
- 17 जो ऐशो-इशरत की ज़िंदगी पसंद करे वह गरीब हो जाएगा, जिसे मै और तेल प्यारा हो वह अमीर नहीं हो जाएगा।
- 18 जब रास्तबाज़ का फ़िधा देना है तो बेदीन को दिया जाएगा, और दियानतदार की जगह बेवफ़ा को दिया जाएगा।
- 19 झगड़ालू और तंग करनेवाली बीवी के साथ बसने की निसबत रेगिस्तान में गुज़ारा करना बेहतर है।
- 20 दानिशमंद के घर में उम्दा खज़ाना और तेल होता है, लेकिन अहमक अपना सारा माल हड़प कर लेता है।
- 21 जो इनसाफ़ और शफ़क़त का ताक़्क़ुब करता रहे वह ज़िंदगी, रास्ती और इज़्ज़त पाएगा।
- 22 दानिशमंद आदमी ताक़तवर फ़ौजियों के शहर पर हमला करके वह क़िलाबंदी ढा देता है जिस पर उनका पूरा एतमाद था।
- 23 जो अपने मुँह और ज़बान की पहरादारी करे वह अपनी जान को मुसीबत से बचाए रखता है।
- 24 मग़स्तर और घमंडी का नाम 'तानाज़न' है, हर काम वह बेहद तकब्बुर के साथ करता है।
- 25 काहिल का लालच उसे मौत के घाट उतार देता है, क्योंकि उसके हाथ काम करने से इनकार करते हैं।
- 26 लालची पूरा दिन लालच करता रहता है, लेकिन रास्तबाज़ फ़ैयाज़दिली से देता है।
- 27 बेदीनों की कुरबानी काबिले-धिन है, खासकर जब उसे बुरे मक़सद से पेश किया जाए।
- 28 झूठा गवाह तबाह हो जाएगा, लेकिन जो दूसरे की ध्यान से सुने उस की बात हमेशा तक कायम रहेगी।
- 29 बेदीन आदमी गुस्ताख़ अंदाज़ से पेश आता है, लेकिन सीधी राह पर चलनेवाला सोच-समझकर अपनी राह पर चलता है।
- 30 किसी की भी हिक़मत, समझ या मनसूबा रब का सामना नहीं कर सकता।
- 31 घोड़े को जंग के दिन के लिए तैयार तो किया जाता है, लेकिन फ़तह रब के हाथ में है।

22

- 1 नेक नाम बड़ी दौलत से कीमती, और मंज़ूरे-नज़र होना सोने-चाँदी से बेहतर है।
- 2 अमीर और गरीब एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं, रब उन सबका ख़ालिक है।
- 3 ज़हीन आदमी ख़तरा पहले से भाँपकर छुप जाता है, जबकि सादालौह आगे बढ़कर उस की लपेट में आ जाता है।
- 4 फ़रोतनी और रब का ख़ौफ़ मानने का फल दौलत, एहतराम और ज़िंदगी है।
- 5 बेदीन की राह में काँटे और फंदे होते हैं। जो अपनी जान महफूज़ रखना चाहे वह उनसे दूर रहता है।
- 6 छोटे बच्चे को सही राह पर चलने की तरबियत कर तो वह बूढ़ा होकर भी उससे नहीं हटेगा।
- 7 अमीर गरीब पर हुकूमत करता, और कर्ज़दार कर्ज़खाह का गुलाम होता है।
- 8 जो नाइनसाफ़ी का बीज बोए वह आफ़त की फ़सल काटेगा, तब उस की ज़्यादती की लाठी टूट जाएगी।
- 9 फ़ैयाज़दिल को बरक़त मिलेगी, क्योंकि वह पस्तहाल को अपने खाने में शरीक करता है।
- 10 तानाज़न को भगा दे तो लड़ाई-झगड़ा घर से निकल जाएगा, तू तू मैं मैं और एक दूसरे की बेइज़्ज़ती करने का सिलसिला ख़त्म हो जाएगा।
- 11 जो दिल की पाकीज़गी को प्यार करे और मेहरबान ज़बान का मालिक हो वह बादशाह का दोस्त बनेगा।
- 12 रब की आँखें इल्मो-इरफ़ान की देख-भाल करती हैं, लेकिन वह बेवफ़ा की बातों को तबाह होने देता है।
- 13 काहिल कहता है, “गली में शेर है, अगर बाहर जाऊँ तो मुझे किसी चौक में फाड़ खाएगा।”
- 14 ज़िनाकार औरत का मुँह गहरा गढ़ा है। जिससे रब नाराज़ हो वह उसमें गिर जाता है।
- 15 बच्चे के दिल में हमाक़त टिकती है, लेकिन तरबियत की छड़ी उसे भगा देती है।
- 16 एक पस्तहाल पर ज़ुल्म करता है ताकि दौलत पाए, दूसरा अमीर को तोहफ़े देता है लेकिन गरीब हो जाता है।

दानिशमंदों की 30 कहावतें

17 कान लगाकर दानाओं की बातों पर ध्यान दे, दिल से मेरी तालीम अपना ले! 18 क्योंकि अच्छा है कि तू उन्हें अपने दिल में महफूज़ रखे, वह सब तेरे होंटों पर मुस्तैद रहें। 19 आज मैं तुझे, हाँ तुझे ही तालीम दे रहा हूँ ताकि तेरा भरोसा रब पर रहे। 20 मैंने तेरे लिए 30 कहावतें कलमबंद की हैं, ऐसी बातें जो मशवरों और इल्म से भरी हुई हैं। 21 क्योंकि मैं तुझे सच्चाई की काबिले-एतमाद बातें सिखाना चाहता हूँ ताकि तू उन्हें काबिले-एतमाद जवाब दे सके जिन्होंने तुझे भेजा है।

22 पस्तहाल को इसलिए न लूट कि वह पस्तहाल है, मुसीबतजदा को अदालत में मत कुचलना। 23 क्योंकि रब खुद उनका दिफा करके उन्हें लूट लेगा जो उन्हें लूट रहे हैं।

-2-

24 गुसीले शख्स का दोस्त न बन, न उससे ज्यादा ताल्लुक रख जो जल्दी से आग-बगूला हो जाता है। 25 ऐसा न हो कि तू उसका चाल-चलन अपनाकर अपनी जान के लिए फंदा लगाए।

-3-

26 कभी हाथ मिलाकर वादा न कर कि मैं दूसरे के कर्जे का ज़ामिन हूँगा। 27 कर्जदार के पैसे वापस न करने पर अगर तू भी पैसे अदा न कर सके तो तेरी चारपाई भी तेरे नीचे से छीन ली जाएगी।

-4-

28 ज़मीन की जो हद्द तेरे बापदादा ने मुकर्रर की उन्हें आगे पीछे मत करना।

-5-

29 क्या तुझे ऐसा आदमी नज़र आता है जो अपने काम में माहिर है? वह निचले तबके के लोगों की खिदमत नहीं करेगा बल्कि बादशाहों की।

23

-6-

1 अगर तू किसी हुक्मरान के खाने में शरीक हो जाए तो खूब ध्यान दे कि तू किसके हुज़ूर है। 2 अगर तू पेटू हो तो अपने गले पर छुरी रख। 3 उस की उम्दा चीज़ों का लालच मत कर, क्योंकि यह खाना फ़रेबदेह है।

-7-

4 अपनी पूरी ताकत अमीर बनने में सर्फ़ न कर, अपनी हिकमत ऐसी कोशिशों से ज़ाया मत कर। 5 एक नज़र दौलत पर डाल तो वह ओझल हो जाती है, और पर लगाकर उकाब की तरह आसमान की तरफ उड़ जाती है।

-8-

6 जलनेवाले की रोटी मत खा, उसके लज़ीज़ खानों का लालच न कर। 7 क्योंकि यह गले में बाल की तरह होगा। वह तुझसे कहेगा, “खाओ, पियो!” लेकिन उसका दिल तेरे साथ नहीं है। 8 जो लुकमा तूने खा लिया उससे तुझे कै आएगी, और तेरी उससे दोस्ताना बातें ज़ाया हो जाएंगी।

-9-

9 अहमक से बात न कर, क्योंकि वह तेरी दानिशमंद बातें हक़ीर जानेगा।

-10-

10 ज़मीन की जो हद्द क़दीम ज़माने में मुकर्रर हुई उन्हें आगे पीछे मत करना, और यतीमों के खेतों पर कब्ज़ा न कर। 11 क्योंकि उनका छुड़ानेवाला क़वी है, वह उनके हक़ में खुद तेरे खिलाफ़ लड़ेगा।

-11-

12 अपना दिल तरबियत के हवाले कर और अपने कान इल्म की बातों पर लगा।

-12-

13 बच्चे को तरबियत से महस्म न रख, छड़ी से उसे सज़ा देने से वह नहीं मरेगा। 14 छड़ी से उसे सज़ा दे तो उस की जान मौत से छूट जाएगी।

-13-

15 मेरे बेटे, अगर तेरा दिल दानिशमंद हो तो मेरा दिल भी खुश होगा। 16 मैं अंदर ही अंदर खुशी मनाऊँगा जब तेरे होंट दियातदार बातें करेंगे।

-14-

17 तेरा दिल गुनाहगारों को देखकर कुढ़ता न रहे बल्कि पूरे दिन रब का खौफ़ रखने में सरग़रम रहे। 18 क्योंकि तेरी उम्मीद जाती नहीं रहेगी बल्कि तेरा मुस्तक़बिल यक़ीनन अच्छा होगा।

-15-

19 मेरे बेटे, सुनकर दानिशमंद हो जा और सहीह राह पर अपने दिल की राहनुमाई कर। 20 शराबी और पेटू से दरेग कर, 21 क्योंकि शराबी और पेटू गरीब हो जाएंगे, और काहिली उन्हें चीथड़े पहनाएगी।

-16-

- 22 अपने बाप की सुन जिसने तुझे पैदा किया, और अपनी माँ को हक़ीर न जान जब बूढ़ी हो जाए।
 23 सच्चाई ख़रीद ले और कभी फ़रोख़्त न कर, उसमें शामिल हिकमत, तरबियत और समझ अपना ले।
 24 रास्तबाज़ का बाप बड़ी ख़ुशी मनाता है, और दानिशमंद बेटे का वालिद उससे लुत्फ़अंदोज़ होता है।
 25 चुनाँचे अपने माँ-बाप के लिए ख़ुशी का बाइस हो, ऐसी ज़िंदगी गुज़ार कि तेरी माँ ज़शन मना सके।

-17-

- 26 मेरे बेटे, अपना दिल मेरे हवाले कर, तेरी आँखें मेरी राहें पसंद करें। 27 क्योंकि कसबी गहरा गढा और ज़िनाकार औरत तंग कुआँ है,
 28 डाकू की तरह वह ताक लगाए बैठकर मर्दों में बेवफ़ाओं का इज़ाफ़ा करती है।

-18-

- 29 कौन आहें भरता है? कौन हाय हाय करता और लड़ाई-झगड़े में मुलव्वस रहता है? किस को बिलावजह चोटें लगती, किसकी आँखें धुँधली-सी रहती हैं? 30 वह जो रात गए तक मै पीने और मसालेदार मै से मज़ा लेने में मसरूफ़ रहता है। 31 मै को तकता न रह, खाह उसका सुख़ रंग कितनी ख़ूबसूरती से प्याले में क्यों न चमके, खाह उसे बड़े मज़े से क्यों न पिया जाए। 32 अंजामकार वह तुझे साँप की तरह काटेगी, नाग की तरह डसेगी। 33 तेरी आँखें अजीबो-ग़रीब मंज़र देखेंगी और तेरा दिल बेतुकी बातें हकलाएगा। 34 तू समुंदर के बीच में लेटनेवाले की मानिंद होगा, उस जैसा जो मस्तूल पर चढ़कर लेट गया हो। 35 तू कहेगा, “मेरी पिटाई हुई लेकिन दर्द महसूस न हुआ, मुझे मारा गया लेकिन मालूम न हुआ। मैं कब जाग उठूँगा ताकि दुबारा शराब की तरफ़ स्रख़ कर सकूँ?”

24

-19-

- 1 शरीरों से हसद न कर, न उनसे सोहबत रखने की आरजू रख, 2 क्योंकि उनका दिल जुल्म करने पर तुला रहता है, उनके होंट दूसरों को दुख पहुँचाते हैं।

-20-

- 3 हिकमत घर को तामीर करती, समझ उसे मज़बूत बुनियाद पर खड़ा कर देती, 4 और इल्मो-इरफ़ान उसके कमरों को बेशक़ीमत और मनमोहन चीज़ों से भर देता है।

-21-

- 5 दानिशमंद को ताकत हासिल होती और इल्म रखनेवाले की कुव्वत बढ़ती रहती है, 6 क्योंकि जंग करने के लिए हिदायत और फ़तह पाने के लिए मुतअद्दिद मुशीरों की ज़रूरत होती है।

-22-

- 7 हिकमत इतनी बुलंदो-बाला है कि अहमक उसे पा नहीं सकता। जब बुजुर्ग शहर के दरवाज़े में फ़ैसला करने के लिए जमा होते हैं तो वह कुछ नहीं कह सकता।

-23-

- 8 बुरे मनसूबे बाँधनेवाला साज़िश़ी कहलाता है। 9 अहमक की चालाकियाँ गुनाह हैं, और लोग तानाज़न से धिन खाते हैं।

-24-

- 10 अगर तू मुसीबत के दिन हिम्मत हारकर ढीला हो जाए तो तेरी ताकत जाती रहेगी।

-25-

- 11 जिन्हें मौत के हवाले किया जा रहा है उन्हें छुड़ा, जो कसाई की तरफ़ डगमगाते हुए जा रहे हैं उन्हें रोक दे। 12 शायद तू कहे, “हमें तो इसके बारे में इल्म नहीं था।” लेकिन यकीन जान, जो दिल की जाँच-पड़ताल करता है वह बात समझता है, जो तेरी जान की देख-भाल करता है उसे मालूम है। वह इन्सान को उसके आमाल का बदला देता है।

-26-

- 13 मेरे बेटे, शहद खा क्योंकि वह अच्छा है, छत्ते का ख़ालिस शहद मीठा है। 14 जान ले कि हिकमत इसी तरह तेरी जान के लिए मीठी है। अगर तू उसे पाए तो तेरी उम्मीद जाती नहीं रहेगी बल्कि तेरा मुस्तक़बिल अच्छा होगा।

-27-

- 15 ऐ बेदीन, रास्तबाज़ के घर की ताक लगाए मत बैठना, उस की रिहाइशगाह तबाह न कर। 16 क्योंकि गो रास्तबाज़ सात बार गिर जाए तो भी हर बार दुबारा उठ खड़ा होगा जबकि बेदीन एक बार ठोकर खाकर मुसीबत में फँसा रहेगा।

-28-

- 17 अगर तेरा दुश्मन गिर जाए तो ख़ुश न हो, अगर वह ठोकर खाए तो तेरा दिल ज़शन न मनाए। 18 ऐसा न हो कि रब यह देखकर तेरा रवैया पसंद न करे और अपना गुस्सा दुश्मन पर उतारने से बाज़ आए।

-29-

19 बदकारों को देखकर मुश्तइल न हो जा, बेदीनों के बाइस कुढता न रह। 20 क्योंकि शरीरों का कोई मुस्तकबिल नहीं, बेदीनों का चराग बुझ जाएगा।

-30-

21 मेरे बेटे, रब और बादशाह का खौफ मान, और सरकशों में शरीक न हो। 22 क्योंकि अचानक ही उन पर आफत आएगी, किसी को पता ही नहीं चलेगा जब दोनों उन पर हमला करके उन्हें तबाह कर देंगे।

दानिशमंदों की मज़ीद कहावतें

23 ज़ैल में दानिशमंदों की मज़ीद कहावतें कलमबंद हैं।

अदालत में जानिबदारी दिखाना बुरी बात है। 24 जो कुसूरवार से कहे, “तू बेकुसूर है” उस पर कौमें लानत भेजेंगी, उस की सरज़निश उम्मतें करेंगी। 25 लेकिन जो कुसूरवार को मुजरिम ठहराए वह खुशहाल होगा, उसे कसरत की बरकत मिलेगी।

26 सच्चा जवाब दोस्त के बोसे की मानिंद है।

27 पहले बाहर का काम मुकम्मल करके अपने खेतों को तैयार कर, फिर ही अपना घर तामीर कर।

28 बिलावजह अपने पड़ोसी के खिलाफ़ गवाही मत दे। या क्या तू अपने होंटों से धोका देना चाहता है?

29 मत कहना, “जिस तरह उसने मेरे साथ किया उसी तरह मैं उसके साथ करूँगा, मैं उसके हर फ़ेल का मुनासिब जवाब दूँगा।”

30 एक दिन मैं सुस्त और नासमझ आदमी के खेत और अंगूर के बाग में से गुज़रा। 31 हर जगह काँटेदार झाड़ियाँ फैली हुई थीं, खुदरौ पौदे पूरी ज़मीन पर छा गए थे। उस की चारदीवारी भी गिर गई थी। 32 यह देखकर मैंने दिल से ध्यान दिया और सबक सीख लिया,

33 अगर तू कहे, “मुझे थोड़ी देर सोने दे, थोड़ी देर ऊँघने दे, थोड़ी देर हाथ पर हाथ धरे बैठने दे ताकि मैं आराम कर सकूँ” 34 तो खबरदार, जल्द ही गुरबत राहज़न की तरह तुझ पर आएगी, मुफ़लिसी हथियार से लेस डाकू की तरह तुझ पर आ पड़ेगी।

25

सुलेमान की मज़ीद कहावतें

1 ज़ैल में सुलेमान की मज़ीद कहावतें दर्ज हैं जिन्हें यहदाह के बादशाह हिज़क्रियाह के लोगों ने जमा किया।

2 अल्लाह का जलाल इसमें जाहिर होता है कि वह मामला पोशीदा रखता है, बादशाह का जलाल इसमें कि वह मामले की तहक़ीक़ करता है।

3 जितना आसमान बुलंद और ज़मीन गहरी है उतना ही बादशाहों के दिल का खोज नहीं लगाया जा सकता।

4 चाँदी से मैल दूर करो तो सुनार बरतन बनाने में कामयाब हो जाएगा, 5 बेदीन को बादशाह के हुज़ूर से दूर करो तो उसका तख़्त रास्ती की बुनियाद पर कायम रहेगा।

6 बादशाह के हुज़ूर अपने आप पर फ़ख़र न कर, न इज़्ज़त की उस जगह पर खड़ा हो जा जो बुज़ुर्गों के लिए मख़सूस है। 7 इससे पहले कि शुरफ़ा के सामने ही तेरी बेइज़्ज़ती हो जाए बेहतर है कि तू पीछे खड़ा हो जा और बाद में कोई तुझसे कहे, “यहाँ सामने आ जाँ।”

जो कुछ तेरी आँखों ने देखा उसे अदालत में पेश करने में 8 जल्दबाज़ी न कर, क्योंकि तू क्या करेगा अगर तेरा पड़ोसी तेरे मामले को झुटलाकर तुझे शरमिंदा करे?

9 अदालत में अपने पड़ोसी से लड़ते वक़्त वह बात बयान न कर जो किसी ने पोशीदगी में तेरे सुपुर्द की, 10 ऐसा न हो कि सुननेवाला तेरी बेइज़्ज़ती करे। तब तेरी बदनामी कभी नहीं मिटेगी।

11 वक़्त पर मौजूबत चाँदी के बरतन में सोने के सेब की मानिंद है। 12 दानिशमंद की नसीहत क़बूल करनेवाले के लिए सोने की बाली और ख़ालिस सोने के गुलबंद की मानिंद है।

13 काबिले-एतमाद कासिद भेजनेवाले के लिए फ़सल काटते वक़्त बर्फ़ की ठंडक जैसा है, इस तरह वह अपने मालिक की जान को तरो-ताज़ा कर देता है।

14 जो शेखी मारकर तोहफ़ों का वादा करे लेकिन कुछ न दे वह उन तूफ़ानी बादलों की मानिंद है जो बरसे बग़ैर गुज़र जाते हैं।

15 हुक्मरान को तहम्मूल से कायल किया जा सकता, और नरम ज़बान हड्डियाँ तोड़ने के काबिल है।

16 अगर शहद मिल जाए तो ज़रूरत से ज़्यादा मत खा, हद से ज़्यादा खाने से तुझे कै आएगी।

17 अपने पड़ोसी के घर में बार बार जाने से अपने क़दमों को रोक, वरना वह तंग आकर तुझसे नफ़रत करने लगेगा।

18 जो अपने पड़ोसी के खिलाफ़ झूठी गवाही दे वह हथौड़े, तलवार और तेज़ तीर जैसा नुक़सानदेह है।

19 मुसीबत के वक़्त बेवफ़ा पर एतबार करना ख़राब दाँत या डगमगाते पाँवों की तरह तकलीफ़देह है।

20 दुखते दिल के लिए गीत गाना उतना ही ग़ैरमौजूब है जितना सर्दियों के मौसम में कमीस उतारना या सोड़े पर सिरका डालना।

21 अगर तेरा दुश्मन भूका हो तो उसे खाना खिला, अगर प्यासा हो तो पानी पिला। 22 क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सर पर जलते हुए कोयलों का ढेर लगाएगा, और रब तुझे अज़ देगा।

23 जिस तरह काले बादल लानेवाली हवा बारिश पैदा करती है उसी तरह बातूनी की चुपके से की गई बातों से लोगों के मुँह बिगड़ जाते हैं।

24 झगड़ालू बीवी के साथ एक ही घर में रहने की निसबत छत के किसी कोने में गुज़ारा करना बेहतर है।

25 दूर-दराज़ मुल्क की खुशखबरी प्यासे गले में ठंडा पानी है।

26 जो रास्तबाज़ बेदीन के सामने डगमगाने लगे, वह गदला चश्मा और आलूदा कुआँ है।

27 ज़्यादा शहद खाना अच्छा नहीं, और न ही ज़्यादा अपनी इज़्ज़त की फ़िकर करना।

28 जो अपने आप पर काबू न पा सके वह उस शहर की मानिंद है जिसकी फ़सील ढा दी गई है।

26

1 अहमक की इज़्ज़त करना उतना ही ग़ैरमौजू है जितना मौसमे-गरमा में बर्फ़ या फ़सल काटते वक़्त बारिश।

2 बिलावजह भेजी हुई लानत फड़फड़ाती चिड़िया या उड़ती हुई अबाबील की तरह ओझल होकर बेअसर रह जाती है।

3 घोड़े को छड़ी से, गधे को लगाम से और अहमक की पीठ को लाठी से तरबियत दे।

4 जब अहमक अहमकाना बातें करे तो उसे जवाब न दे, वरना तू उसी के बराबर हो जाएगा।

5 जब अहमक अहमकाना बातें करे तो उसे जवाब दे, वरना वह अपनी नज़र में दानिशमंद ठहरेगा।

6 जो अहमक के हाथ पैगाम भेजे वह उस की मानिंद है जो अपने पाँवों पर कुल्हाड़ी मारकर अपने आपसे ज़्यादाती करता है। *

7 अहमक के मुँह में हिकमत की बात मफ़लूज़ की बेहरकत लटकती टाँगों की तरह बेकार है।

8 अहमक का एहतराम करना फ़लाखन के साथ पत्थर बाँधने के बराबर है।

9 अहमक के मुँह में हिकमत की बात नशे में धुत शराबी के हाथ में काँटेदार झाड़ी की मानिंद है।

10 जो अहमक या हर किसी गुज़रनेवाले को काम पर लगाए वह सबको ज़ख़मी करनेवाले तीरअंदाज़ की मानिंद है।

11 जो अहमक अपनी हमाक़त दोहराए वह अपनी कै के पास वापस आनेवाले कुत्ते की मानिंद है।

12 क्या कोई दिखाई देता है जो अपने आपको दानिशमंद समझता है? उस की निसबत अहमक के सुधरने की ज़्यादा उम्मीद है।

13 काहिल कहता है, “रास्ते में शेर है, हाँ चौकों में शेर फिर रहा है!”

14 जिस तरह दरवाज़ा क़ब्ज़े पर घूमता है उसी तरह काहिल अपने बिस्तर पर करवटें बदलता है।

15 जब काहिल अपना हाथ खाने के बरतन में डाल दे तो वह इतना सुस्त है कि उसे मुँह तक वापस नहीं ला सकता।

16 काहिल अपनी नज़र में हिकमत से जवाब देनेवाले सात आदमियों से कहीं ज़्यादा दानिशमंद है।

17 जो गुज़रते वक़्त दूसरों के झगड़े में मुदाख़लत करे वह उस आदमी की मानिंद है जो कुत्ते को कानों से पकड़ ले।

18-19 जो अपने पड़ोसी को फ़रेब देकर बाद में कहे, “मैं सिर्फ़ मज़ाक़ कर रहा था” वह उस दीवाने की मानिंद है जो लोगों पर जलते हुए और मोहलक तीर बरसाता है।

20 लकड़ी के ख़त्म होने पर आग़ बुझ जाती है, तोहमत लगानेवाले के चले जाने पर झगड़ा बंद हो जाता है।

21 अंगारों में कोयले और आग़ में लकड़ी डाल तो आग़ भड़क उठेगी। झगड़ालू को कहीं भी खड़ा कर तो लोग मुश्तइल हो जाएंगे।

22 तोहमत लगानेवाले की बातें लज़ीज़ खाने के लुकमों जैसी हैं, वह दिल की तह तक उतर जाती हैं।

23 जलनेवाले हॉट और शरीर दिल मिट्टी के उस बरतन की मानिंद हैं जिसे चमकदार बनाया गया हो।

24 नफ़रत करनेवाला अपने हॉटों से अपना असली रूप छुपा लेता है, लेकिन उसका दिल फ़रेब से भरा रहता है। 25 जब वह मेहरबान बातें करे तो उस पर यकीन न कर, क्योंकि उसके दिल में सात मकरूह बातें हैं। 26 गो उस की नफ़रत फ़िलहाल फ़रेब से छुपी रहे, लेकिन एक दिन उसका ग़लत किरदार पूरी जमात के सामने ज़ाहिर हो जाएगा।

27 जो दूसरों को फँसाने के लिए गढ़ा खोदे वह उसमें खुद गिर जाएगा, जो पत्थर लुढ़काकर दूसरों पर फेंकना चाहे उस पर ही पत्थर वापस लुढ़क आएगा।

28 झूठी ज़बान उनसे नफ़रत करती है जिन्हें वह कुचल देती है, खुशामद करनेवाला मुँह तबाही मचा देता है।

27

1 उस पर शेखी न मार जो तू कल करेगा, तुझे क्या मालूम कि कल का दिन क्या कुछ फ़राहम करेगा?

2 तेरा अपना मुँह और अपने हॉट तेरी तारीफ़ न करें बल्कि वह जो तुझसे वाकिफ़ भी न हो।

3 पत्थर भारी और रेत वज़नी है, लेकिन जो अहमक तुझे तंग करे वह ज़्यादा नाकाबिले-बरदाश्त है।

4 गुस्सा ज़ालिम होता और तैश सैलाब की तरह इनसान पर आ जाता है, लेकिन कौन हसद का मुकाबला कर सकता है?

5 खुली मलामत छुपी हुई मुहब्बत से बेहतर है।

* 26:6 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : ज़्यादाती का प्याला पीता है।

- 6 प्यार करनेवाले की जरबें वफा का सबूत हैं, लेकिन नफरत करनेवाले के मुतअद्दिद बोसों से खबरदार रह।
 7 जो सेर है वह शहद को भी पाँवों तले रौंद देता है, लेकिन भूके को कड़वी चीज़ें भी मीठी लगती हैं।
 8 जो आदमी अपने घर से निकलकर मारा मारा फिरे वह उस परिदे की मानिंद है जो अपने घोंसले से भागकर कभी इधर कभी इधर फड़फड़ाता रहता है।
 9 तेल और बखूर दिल को खुश करते हैं, लेकिन दोस्त अपने अच्छे मशवरों से खुशी दिलाता है।
 10 अपने दोस्तों को कभी न छोड़, न अपने ज्ञाती दोस्तों को न अपने बाप के दोस्तों को। तब तुझे मुसीबत के दिन अपने भाई से मदद नहीं माँगनी पड़ेगी। क्योंकि करीब का पड़ोसी दूर के भाई से बेहतर है।
 11 मेरे बेटे, दानिशमंद बनकर मेरे दिल को खुश कर ताकि मैं अपने हक़ीर जाननेवाले को जवाब दे सकूँ।
 12 ज़हीन आदमी खतरा पहले से भाँपकर छुप जाता है, जबकि सादालौह आगे बढ़कर उस की लपेट में आ जाता है।
 13 ज़मानत का वह लिबास वापस न कर जो किसी ने परदेसी का ज़ामिन बनकर दिया है। अगर वह अजनबी औरत का ज़ामिन हो तो उस ज़मानत पर ज़रूर क़ब्ज़ा कर जो उसने दी थी।
 14 जो सुबह-सवेरे बुलंद आवाज़ से अपने पड़ोसी को बरकत दे उस की बरकत लानत ठहराई जाएगी।
 15 झगड़ालू बीवी मूसलाधार बारिश के बाइस मुसलसल टपकनेवाली छत की मानिंद है। 16 उसे रोकना हवा को रोकने या तेल को पकड़ने के बराबर है।
 17 लोहा लोहे को और इनसान इनसान के ज़हन को तेज़ करता है।
 18 जो अंजीर के दरख़्त की देख-भाल करे वह उसका फल खाएगा, जो अपने मालिक की वफादारी से खिदमत करे उसका एहताराम किया जाएगा।
 19 जिस तरह पानी चेहरे को मुनअकिस करता है उसी तरह इनसान का दिल इनसान को मुनअकिस करता है।
 20 न मौत और न पाताल कभी सेर होते हैं, न इनसान की आँखें।
 21 सोना और चाँदी कुठाली में पिघलाकर पाक-साफ़ कर, लेकिन इनसान का किरदार इससे मालूम कर कि लोग उस की कितनी कदर करते हैं।
 22 अगर अहमक को अनाज की तरह ओखली और मूसल से कूटा भी जाए तो भी उस की हमाक़त दूर नहीं हो जाएगी।
 23 एहतियात से अपनी भेड़-बकरियों की हालत पर ध्यान दे, अपने रेवड़ों पर खूब तवज्जुह दे। 24 क्योंकि कोई भी दौलत हमेशा तक कायम नहीं रहती, कोई भी ताज नसल-दर-नसल बरकरार नहीं रहता। 25 खुले मैदान में घास काटकर जमा कर ताकि नई घास उग सके, चारा पहाड़ों से भी इकट्ठा कर। 26 तब तू भेड़ों की ऊन से कपड़े बना सकेगा, बकरों की फ़रोख़्त से खेत ख़रीद सकेगा, 27 और बकरियाँ इतना दूध देंगी कि तेरे, तेरे ख़ानदान और तेरे नौकर-चाकरों के लिए काफी होगा।

28

- 1 बेदीन फ़रार हो जाता है हालाँकि ताक्कुब करनेवाला कोई नहीं होता, लेकिन रास्तबाज़ अपने आपको जवान शेरबबर की तरह महफूज़ समझता है।
 2 मुल्क की ख़ताकारी के सबब से उस की हुकूमत की यगांगत कायम नहीं रहेगी, लेकिन समझदार और दानिशमंद आदमी उसे बड़ी देर तक कायम रखेगा।
 3 जो ग़रीब ग़रीबों पर जुल्म करे वह उस मूसलाधार बारिश की मानिंद है जो सैलाब लाकर फ़सलों को तबाह कर देती है।
 4 जिसने शरीअत को तर्क किया वह बेदीन की तारीफ़ करता है, लेकिन जो शरीअत के ताबे रहता है वह उस की मुखालफ़त करता है।
 5 शरीर इनसाफ़ नहीं समझते, लेकिन रब के तालिब सब कुछ समझते हैं।
 6 बेइलज़ाम ज़िंदगी गुज़ारनेवाला ग़रीब टेढ़ी राहों पर चलनेवाले अमीर से बेहतर है।
 7 जो शरीअत की पैरवी करे वह समझदार बेटा है, लेकिन ऐयाशों का साथी अपने बाप की बेइज्ज़ती करता है।
 8 जो अपनी दौलत नाजायज़ सूद से बढ़ाए वह उसे किसी और के लिए जमा कर रहा है, ऐसे शख्स के लिए जो ग़रीबों पर रहम करेगा।
 9 जो अपने कान में उँगली डाले ताकि शरीअत की बातें न सुने उस की दुआएँ भी क़ाबिले-घिन हैं।
 10 जो सीधी राह पर चलनेवालों को ग़लत राह पर लाए वह अपने ही गढ़े में गिर जाएगा, लेकिन बेइलज़ाम अच्छी मीरास पाएँगे।
 11 अमीर अपने आपको दानिशमंद समझता है, लेकिन जो ज़रूरतमंद समझदार है वह उसका असली किरदार मालूम कर लेता है।
 12 जब रास्तबाज़ फ़तहयाब हों तो मुल्क की शानो-शौकत बढ़ जाती है, लेकिन जब बेदीन उठ खड़े हों तो लोग छुप जाते हैं।
 13 जो अपने गुनाह छुपाए वह नाकाम रहेगा, लेकिन जो उन्हें तसलीम करके तर्क करे वह रहम पाएगा।
 14 मुबारक है वह जो हर वक़्त रब का ख़ौफ़ माने, लेकिन जो अपना दिल सख़्त करे वह मुसीबत में फँस जाएगा।
 15 पस्तहाल क़ौम पर हुकूमत करनेवाला बेदीन गुराँते हुए शेरबबर और हमलाआवर रीछ की मानिंद है।
 16 जहाँ नासमझ हुक्मरान है वहाँ जुल्म होता है, लेकिन जिसे ग़लत नफ़ा से नफ़रत हो उस की उम्र दराज़ होगी।
 17 जो किसी को क़त्ल करे वह मौत तक अपने कुसूर के नीचे दबा हुआ मारा मारा फिरेगा। ऐसे शख्स का सहारा न बन!

- 18 जो बेइलजाम जिंदगी गुजारे वह बचा रहेगा, लेकिन जो टेढ़ी राह पर चले वह अचानक ही गिर जाएगा।
 19 जो अपनी ज़मीन की खेतीबाड़ी करे वह जी भरकर रोटी खाएगा, लेकिन जो फ़ज़ूल चीज़ों के पीछे पड़ जाए वह ग़ुरबत से सेर हो जाएगा।
 20 काबिले-एतमाद आदमी को कसरत की बरकतें हासिल होंगी, लेकिन जो भाग भागकर दौलत जमा करने में मसरूफ़ रहे वह सज़ा से नहीं बचेगा।
 21 जानिबदारी बुरी बात है, लेकिन इनसान रोटी का टुकड़ा हासिल करने के लिए मुजरिम बन जाता है।
 22 लालची भाग भागकर दौलत जमा करता है, उसे मालूम ही नहीं कि इसका अंजाम ग़ुरबत ही है।
 23 आखिरकार नसीहत देनेवाला चापलूसी करनेवाले से ज़्यादा मंज़ूर होता है।
 24 जो अपने बाप या माँ को लूटकर कहे, “यह जुर्म नहीं है” वह मोहलक कातिल का शरीके-कार होता है।
 25 लालची झगड़ों का मंबा रहता है, लेकिन जो रब पर भरोसा रखे वह ख़ुशहाल रहेगा।
 26 जो अपने दिल पर भरोसा रखे वह बेवकूफ़ है, लेकिन जो हिकमत की राह पर चले वह महफूज़ रहेगा।
 27 गरीबों को देनेवाला ज़स्सरतमंद नहीं होगा, लेकिन जो अपनी आँखें बंद करके उन्हें नज़रंदाज़ करे उस पर बहुत लानतें आएँगी।
 28 जब बेदीन उठ खड़े हों तो लोग छुप जाते हैं, लेकिन जब हलाक हो जाएँ तो रास्तबाज़ों की तादाद बढ़ जाती है।

29

- 1 जो मुतअद्दिद नसीहतों के बावजूद हटधर्म रहे वह अचानक ही बरबाद हो जाएगा, और शफ़ा का इमकान ही नहीं होगा।
 2 जब रास्तबाज़ बहुत हैं तो कौम ख़ुश होती, लेकिन जब बेदीन हुकूमत करे तो कौम आहें भरती है।
 3 जिसे हिकमत प्यारी हो वह अपने बाप को ख़ुशी दिलाता है, लेकिन कसबियों का साथी अपनी दौलत उड़ा देता है।
 4 बादशाह इनसाफ़ से मुल्क को मुस्तहकम करता, लेकिन हद से ज़्यादा टैक्स लेने से उसे तबाह करता है।
 5 जो अपने पड़ोसी की चापलूसी करे वह उसके कदमों के आगे जाल बिछाता है।
 6 शरीर जुर्म करते वक़्त अपने आपको फँसा देता, लेकिन रास्तबाज़ ख़ुशी मनाकर शादमान रहता है।
 7 रास्तबाज़ पस्तहालों के हुकूम का खयाल रखता है, लेकिन बेदीन परवा ही नहीं करता।
 8 तानाज़न शहर में अफ़रा-तफ़री मचा देते जबकि दानिशमंद गुस्सा ठंडा कर देते हैं।
 9 जब दानिशमंद आदमी अदालत में अहमक से लड़े तो अहमक तैश में आ जाता या क्रहक्रहा लगाता है, सुकून का इमकान ही नहीं होता।
 10 खूनख़ार आदमी बेइलजाम शख्स से नफ़रत करता, लेकिन सीधी राह पर चलनेवाला उस की बेहतरी चाहता है।
 11 अहमक अपना पूरा गुस्सा उतारता, लेकिन दानिशमंद उसे रोककर काबू में रखता है।
 12 जो हुक्मरान झूट पर ध्यान दे उसके तमाम मुलाज़िम बेदीन होंगे।
 13 जब गरीब और ज़ालिम की मुलाकात होती है तो दोनों की आँखों को रौशन करनेवाला रब ही है।
 14 जो बादशाह दियातदारी से ज़स्सरतमंद की अदालत करे उसका तख़्त हमेशा तक कायम रहेगा।
 15 छड़ी और नसीहत हिकमत पैदा करती हैं। जिसे बेलगाम छोड़ा जाए वह अपनी माँ के लिए शर्मिंदगी का बाइस होगा।
 16 जब बेदीन फलें-फूलें तो गुनाह भी फलता-फूलता है, लेकिन रास्तबाज़ उनकी शिकस्त के गवाह होंगे।
 17 अपने बेटे की तरबियत कर तो वह तुझे सुकून और ख़ुशी दिलाएगा।
 18 जहाँ रोया नहीं वहाँ कौम बेलगाम हो जाती है, लेकिन मुबारक है वह जो शरीअत के ताबे रहता है।
 19 नौकर सिर्फ़ अलफ़ाज़ से नहीं सुधरता। अगर वह बात समझे भी तो भी ध्यान नहीं देगा।
 20 क्या कोई दिखाई देता है जो बात करने में जल्दबाज़ है? उस की निसबत अहमक के सुधरने की ज़्यादा उम्मीद है।
 21 जो गुलाम जवानी से नाज़ो-नेमत में पलकर बिगड़ जाए उसका बुरा अंजाम होगा।
 22 ग़ज़बआलूद आदमी झगड़े छेड़ता रहता है, गुसीले शख्स से मुतअद्दिद गुनाह सरज़द होते हैं।
 23 तकब्बुर अपने मालिक को पस्त कर देगा जबकि फ़रोतन शख्स इज़ज़त पाएगा।
 24 जो चोर का साथी हो वह अपनी जान से नफ़रत रखता है। गो उससे हलफ़ उठवाया जाए कि चोरी के बारे में गवाही दे तो भी कुछ नहीं बताता बल्कि हलफ़ की लानत की ज़द में आ जाता है।
 25 जो इनसान से ख़ौफ़ खाए वह फंदे में फँस जाएगा, लेकिन जो रब का ख़ौफ़ माने वह महफूज़ रहेगा।
 26 बहुत लोग हुक्मरान की मंजूरी के तालिब रहते हैं, लेकिन इनसाफ़ रब ही की तरफ़ से मिलता है।
 27 रास्तबाज़ बदकार से और बेदीन सीधी राह पर चलनेवाले से घिन खाता है।

30

अज़ूर की कहावतें

- 1 ज़ैल में अज़ूर बिन याका की कहावतें हैं। वह मस्सा का रहनेवाला था। उसने फ़रमाया,

ऐ अल्लाह, मैं थक गया हूँ, ऐ अल्लाह, मैं थक गया हूँ, यह मेरे बस की बात नहीं रही। ² यकीनन मैं इनसानों में सबसे ज़्यादा नादान हूँ, मुझे इनसान की समझ हासिल नहीं। ³ न मैंने हिकमत सीखी, न कुदूस खुदा के बारे में इल्म रखता हूँ।

⁴ कौन आसमान पर चढ़कर वापस उतर आया? किसने हवा को अपने हाथों में जमा किया? किसने गहरे पानी को चादर में लपेट लिया? किसने ज़मीन की हुद्द को अपनी अपनी जगह पर कायम किया है? उसका नाम क्या है, उसके बेटे का क्या नाम है? अगर तुझे मालूम हो तो मुझे बता!

⁵ अल्लाह की हर बात आज़मूदा है, जो उसमें पनाह ले उसके लिए वह ढाल है।

⁶ उस की बातों में इज़ाफ़ा मत कर, वरना वह तुझे डँटिगा और तू झूटा ठहरेगा।

⁷ ऐ रब, मैं तुझसे दो चीज़ें माँगता हूँ, मेरे मरने से पहले इनसे इनकार न कर। ⁸ पहले, दरोगागोई और झूट मुझसे दूर रख। दूसरे, न गुरबत न दौलत मुझे दे बल्कि उतनी ही रोटी जितनी मेरा हक है, ⁹ ऐसा न हो कि मैं दौलत के बाइस सेर होकर तेरा इनकार करूँ और कहूँ, “रब कौन है?” ऐसा भी न हो कि मैं गुरबत के बाइस चोरी करके अपने खुदा के नाम की बेहुरमती करूँ।

¹⁰ मालिक के सामने मुलाज़िम पर तोहमत न लगा, ऐसा न हो कि वह तुझ पर लानत भेजे और तुझे इसका बुरा नतीजा भुगतना पड़े।

¹¹ ऐसी नसल भी है जो अपने बाप पर लानत करती और अपनी माँ को बरकत नहीं देती।

¹² ऐसी नसल भी है जो अपनी नज़र में पाक-साफ़ है, गो उस की गिलाज़त दूर नहीं हुई।

¹³ ऐसी नसल भी है जिसकी आँखें बड़े तकब्बुर से देखती हैं, जो अपनी पलकें बड़े घमंड से मारती है।

¹⁴ ऐसी नसल भी है जिसके दाँत तलवारों और जबड़े छुरियाँ हैं ताकि दुनिया के मुसीबतज़दों को खा जाएँ, मुआशरे के ज़रूरतमंदों को हड़प कर लें।

¹⁵ जोंक की दो बेटियाँ हैं, चूसने के दो आज़ा जो चीखते रहते हैं, “और दो, और दो।”

तीन चीज़ें हैं जो कभी सेर नहीं होती बल्कि चार हैं जो कभी नहीं कहती, “अब बस करो, अब काफ़ी है,” ¹⁶ पाताल, बाँझ का रहम, ज़मीन जिसकी प्यास कभी नहीं बुझती और आग जो कभी नहीं कहती, “अब बस करो, अब काफ़ी है।”

¹⁷ जो आँख बाप का मज़ाक उड़ाए और माँ की हिदायत को हकीर जाने उसे वादी के कौवे अपनी चोंचों से निकालेंगे और गिट्ट के बच्चे खा जाएंगे।

¹⁸ तीन बातें मुझे हैरतज़दा करती हैं बल्कि चार हैं जिनकी मुझे समझ नहीं आती, ¹⁹ आसमान की बुलंदियों पर उकाब की राह, चटान पर साँप की राह, समुंदर के बीच में जहाज़ की राह और वह राह जो मर्द कुँवारी के साथ चलता है।

²⁰ ज़िनाकार औरत की यह राह है, वह खा लेती और फिर अपना मुँह पोंछकर कहती है, “मुझसे कोई ग़लती नहीं हुई।”

²¹ ज़मीन तीन चीज़ों से लरज़ उठती है बल्कि चार चीज़ें बरदाशत नहीं कर सकती, ²² वह गुलाम जो बादशाह बन जाए, वह अहमक जो जी भरकर खाना खा सके, ²³ वह नफ़रतअंगेज़ * औरत जिसकी शादी हो जाए और वह नौकरानी जो अपनी मालिकन की मिलकियत पर कब्ज़ा करे।

²⁴ ज़मीन की चार मख़लूक़ात निहायत ही दानिशमंद हैं हालाँकि छोटी हैं। ²⁵ चिर्युँटियाँ कमज़ोर नसल हैं लेकिन गरमियों के मौसम में सर्दियों के लिए ख़ुराक जमा करती हैं, ²⁶ बिज्जू कमज़ोर नसल हैं लेकिन चटानों में ही अपने घर बना लेते हैं, ²⁷ टिड्डियों का बादशाह नहीं होता ताहम सब परे बाँधकर निकलती हैं, ²⁸ छिपकलियाँ गो हाथ से पकड़ी जाती हैं, ताहम शाही महलों में पाई जाती हैं।

²⁹ तीन बल्कि चार जानदार पुरवकार अंदाज़ में चलते हैं। ³⁰ पहले, शेरबबर जो जानवरों में ज़ोरावर है और किसी से भी पीछे नहीं हटता, ³¹ दूसरे, मुरगा जो अकड़कर चलता है, तीसरे, बकरा और चौथे अपनी फ़ौज के साथ चलनेवाला बादशाह।

³² अगर तूने मग़स्स होकर हमाक़त की या बुरे मनसूबे बाँधे तो अपने मुँह पर हाथ रखकर ख़ामोश हो जा, ³³ क्योंकि दूध बिलोने से मक्खन, नाक को मरोड़ने † से खून और किसी को गुस्सा दिलाने से लड़ाई-झगड़ा पैदा होता है।

31

लमुएल की कहावतें

¹ ज़ैल में मस्सा के बादशाह लमुएल की कहावतें हैं। उस की माँ ने उसे यह तालीम दी,

² ऐ मेरे बेटे, मेरे पेट के फल, जो मेरी मन्नतों से पैदा हुआ, मैं तुझे क्या बताऊँ? ³ अपनी पूरी ताक़त औरतों पर ज़ाया न कर, उन पर जो बादशाहों की तबाही का बाइस हैं।

* **30:23** लफ़्ज़ी तरज़ुमा : जिससे नफ़रत की जाती है। † **30:33** लफ़्ज़ी तरज़ुमा : दबाव डालने।

4 ऐलमुएल, बादशाहों के लिए मै पीना मुनासिब नहीं, हुक्मरानों के लिए शराब की आरजू रखना मौजूद नहीं। 5 ऐसा न हो कि वह पी पीकर कवानीन भूल जाएँ और तमाम मज़लूमों का हक मारें। 6 शराब उन्हें पिला जो तबाह होनेवाले हैं, मै उन्हें पिला जो ग़म खाते हैं, 7 ऐसे ही पी पीकर अपनी ग़ुरबत और मुसीबत भूल जाएँ।

8 अपना मुँह उनके लिए खोल जो बोल नहीं सकते, उनके हक में जो ज़रूरतमंद हैं। 9 अपना मुँह खोलकर इन्साफ़ से अदालत कर और मुसीबतज़दा और ग़रीबों के हुक्क़ महफूज़ रख।

सुघड़ बीवी की तारीफ़

10 सुघड़ बीवी कौन पा सकता है? ऐसी औरत मोतियों से कहीं ज़्यादा बेशक़ीमत है। 11 उस पर उसके शौहर को पूरा एतमाद है, और वह नफ़ा से महसूस नहीं रहेगा। 12 उम्र-भर वह उसे नुक़सान नहीं पहुँचाएगी बल्कि बरक़त का बाइस होगी।

13 वह ऊन और सन चुनकर बड़ी मेहनत से धागा बना लेती है। 14 तिजारती जहाज़ों की तरह वह दूर-दराज़ इलाक़ों से अपनी रोटी ले आती है।

15 वह पौ फटने से पहले ही जाग उठती है ताकि अपने घरवालों के लिए खाना और अपनी नौकरानियों के लिए उनका हिस्सा तैयार करे। 16 सोच-बिचार के बाद वह खेत खरीद लेती, अपने कमाए हुए पैसों से अंगूर का बाग लगा लेती है।

17 ताक़त से कमरबस्ता होकर वह अपने बाज़ुओं को मज़बूत करती है। 18 वह महसूस करती है, “मेरा कारोबार फ़ायदामंद है,” इसलिए उसका चराग रात के वक़्त भी नहीं बुझता। 19 उसके हाथ हर वक़्त ऊन और कतान कातने में मसरूफ़ रहते हैं। 20 वह अपनी मुठी मुसीबतज़दों और ग़रीबों के लिए खोलकर उनकी मदद करती है। 21 जब बर्फ़ पड़े तो उसे घरवालों के बारे में कोई डर नहीं, क्योंकि सब गरम गरम कपड़े पहने हुए हैं। 22 अपने बिस्तर के लिए वह अच्छे कम्बल बना लेती, और खुद वह बारीक कतान और अरगवानी रंग के लिबास पहने फिरती है।

23 शहर के दरवाज़े में बैठे मुल्क के बुजुर्ग उसके शौहर से खूब वाकिफ़ हैं, और जब कभी कोई फ़ैसला करना हो तो वह भी शूरा में शरीक होता है।

24 बीवी कपड़ों की सिलाई करके उन्हें फ़रोख़्त करती है, सौदागर उसके कमरबंद खरीद लेते हैं।

25 वह ताक़त और वक़ार से मुल्बस रहती और हँसकर आनेवाले दिनों का सामना करती है। 26 वह हिकमत से बात करती, और उस की ज़बान पर शफ़ीक़ तालीम रहती है। 27 वह सुस्ती की रोटी नहीं खाती बल्कि अपने घर में हर मामले की देख-भाल करती है।

28 उसके बेटे खड़े होकर उसे मुबारक कहते हैं, उसका शौहर भी उस की तारीफ़ करके कहता है, 29 “बहुत-सी औरतें सुघड़ साबित हुई हैं, लेकिन तू उन सब पर सबक़त रखती है!”

30 दिलफ़रेबी, धोका और हुस्र पल-भर का है, लेकिन जो औरत अल्लाह का ख़ौफ़ माने वह काबिले-तारीफ़ है। 31 उसे उस की मेहनत का अज़ दो! शहर के दरवाज़ों में उसके काम उस की सताइश करें!।

वाइज़

हर दुनियावी चीज़ बातिल है

1 ज़ैल में वाइज़ के अलफ़ाज़ कलमबंद हैं, उसके जो दाऊद का बेटा और यरूशलम में बादशाह है,
2 वाइज़ फ़रमाता है, “बातिल ही बातिल, बातिल ही बातिल, सब कुछ बातिल ही बातिल है!” 3 सूरज तले जो मेहनत-मशक्कत इनसान करे उसका क्या फ़ायदा है? कुछ नहीं! 4 एक पुश्त आती और दूसरी जाती है, लेकिन ज़मीन हमेशा तक कायम रहती है। 5 सूरज तुलू और ग़रूब हो जाता है, फिर सूरत से उसी जगह वापस चला जाता है जहाँ से दुबारा तुलू होता है। 6 हवा जुनूब की तरफ़ चलती, फिर मुड़कर शिमाल की तरफ़ चलने लगती है। यों चक्कर काट काटकर वह बार बार नुक़ताए-आगाज़ पर वापस आती है। 7 तमाम दरिया समुंदर में जा मिलते हैं, तो भी समुंदर की सतह वही रहती है, क्योंकि दरियाओं का पानी मुसलसल उन सरचश्मों के पास वापस आता है जहाँ से वह निकला है। 8 इनसान बातें करते करते थक जाता है और सहीह तौर से कुछ बयान नहीं कर सकता। आँख कभी इतना नहीं देखती कि कहे, “अब बस करो, काफ़ी है।” कान कभी इतना नहीं सुनता कि और न सुनना चाहे। 9 जो कुछ पेश आया वही दुबारा पेश आएगा, जो कुछ किया गया वही दुबारा किया जाएगा। सूरज तले कोई भी बात नई नहीं। 10 क्या कोई बात है जिसके बारे में कहा जा सके, “देखो, यह नई है”? हरगिज़ नहीं, यह भी हमसे बहुत देर पहले ही मौजूद थी। 11 जो पहले ज़िंदा थे उन्हें कोई याद नहीं करता, और जो आनेवाले हैं उन्हें भी वह याद नहीं करेंगे जो उनके बाद आएंगे।

हिकमत हासिल करना बातिल है

12 मैं जो वाइज़ हूँ यरूशलम में इसराईल का बादशाह था। 13 मैंने अपनी पूरी ज़हनी ताक़त इस पर लगाई कि जो कुछ आसमान तले किया जाता है उस की हिकमत के ज़रीए तफ़तीशो-तहक़ीक़ करूँ। यह काम ना-गवार है गो अल्लाह ने खुद इनसान को इसमें मेहनत-मशक्कत करने की ज़िम्मादारी दी है।

14 मैंने तमाम कामों का मुलाहज़ा किया जो सूरज तले होते हैं, तो नतीजा यह निकला कि सब कुछ बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है। 15 जो पेचदार है वह सीधा नहीं हो सकता, जिसकी कमी है उसे गिना नहीं जा सकता।

16 मैंने दिल में कहा, “हिकमत में मैंने इतना इज़ाफ़ा किया और इतनी तरक्की की कि उन सबसे सबक़त ले गया जो मुझसे पहले यरूशलम पर हुकूमत करते थे। मेरे दिल ने बहुत हिकमत और इल्म अपना लिया है।” 17 मैंने अपनी पूरी ज़हनी ताक़त इस पर लगाई कि हिकमत समझूँ, नीज़ कि मुझे दीवानगी और हमाक़त की समझ भी आए। लेकिन मुझे मालूम हुआ कि यह भी हवा को पकड़ने के बराबर है। 18 क्योंकि जहाँ हिकमत बहुत है वहाँ रंजीदगी भी बहुत है। जो इल्मो-इरफ़ान में इज़ाफ़ा करे, वह दुख में इज़ाफ़ा करता है।

2

दुनिया की खुशियाँ बातिल हैं

1 मैंने अपने आपसे कहा, “आ, खुशी को आजमाकर अच्छी चीज़ों का तज़रबा कर!” लेकिन यह भी बातिल ही निकला। 2 मैं बोला, “हँसना बेहदा है, और खुशी से क्या हासिल होता है?” 3 मैंने दिल में अपना जिस्म मैं से तरो-ताज़ा करने और हमाक़त अपनाने के तरीक़े ढूँड निकाले। इसके पीछे भी मेरी हिकमत मालूम करने की कोशिश थी, क्योंकि मैं देखना चाहता था कि जब तक इनसान आसमान तले जीता रहे उसके लिए क्या कुछ करना मुफ़ीद है।

4 मैंने बड़े बड़े काम अंजाम दिए, अपने लिए मकान तामीर किए, ताकिस्तान लगाए, 5 मुतअद्दिद बाग़ और पार्क लगाकर उनमें मुख़्तलिफ़ किस्म के फलदार दरख़्त लगाए। 6 फलने फूलनेवाले जंगल की आबपाशी के लिए मैंने तालाब बनवाए। 7 मैंने गुलाम और लौंडियाँ ख़रीद लीं। ऐसे गुलाम भी बहुत थे जो घर में पैदा हुए थे। मुझे उतने गाय-बैल और भेड़-बकरियाँ मिलीं जितनी मुझसे पहले यरूशलम में किसी को हासिल न थी। 8 मैंने अपने लिए सोना-चाँदी और बादशाहों और सबों के खज़ाने जमा किए। मैंने गुल्कार मर्दों-खवातीन हासिल किए, साथ साथ कसरत की ऐसी चीज़ें जिनसे इनसान अपना दिल बहलाता है।

9 यों मैंने बहुत तरक्की करके उन सब पर सबक़त हासिल की जो मुझसे पहले यरूशलम में थे। और हर काम में मेरी हिकमत मेरे दिल में कायम रही। 10 जो कुछ भी मेरी आँखें चाहती थीं वह मैंने उनके लिए मुहैया किया, मैंने अपने दिल से किसी भी खुशी का इनकार न किया। मेरे दिल ने मेरे हर काम से लुफ़ उठाया, और यह मेरी तमाम मेहनत-मशक्कत का अज़्र रहा।

11 लेकिन जब मैंने अपने हाथों के तमाम कामों का जायज़ा लिया, उस मेहनत-मशक्कत का जो मैंने की थी तो नतीजा यही निकला कि सब कुछ बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है। सूरज तले किसी भी काम का फ़ायदा नहीं होता।

सबका एक ही अंजाम है

12 फिर मैं हिकमत, बेहुदगी और हमाकत पर गौर करने लगा। मैंने सोचा, जो आदमी बादशाह की वफात पर तख्तनशीन होगा वह क्या करेगा? वही कुछ जो पहले भी किया जा चुका है!

13 मैंने देखा कि जिस तरह रौशनी अंधेरे से बेहतर है उसी तरह हिकमत हमाकत से बेहतर है। 14 दानिशमंद के सर में आँखें हैं जबकि अहमक अंधेरे ही में चलता है। लेकिन मैंने यह भी जान लिया कि दोनों का एक ही अंजाम है। 15 मैंने दिल में कहा, “अहमक का-सा अंजाम मेरा भी होगा। तो फिर इतनी ज्यादा हिकमत हासिल करने का क्या फायदा है? यह भी बातिल है।” 16 क्योंकि अहमक की तरह दानिशमंद की याद भी हमेशा तक नहीं रहेगी। आनेवाले दिनों में सबकी याद मिट जाएगी। अहमक की तरह दानिशमंद को भी मरना ही है!

17 यों सोचते सोचते मैं ज़िंदगी से नफरत करने लगा। जो भी काम सूरज तले किया जाता है वह मुझे बुरा लगा, क्योंकि सब कुछ बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है। 18 सूरज तले मैंने जो कुछ भी मेहनत-मशक्कत से हासिल किया था उससे मुझे नफरत हो गई, क्योंकि मुझे यह सब कुछ उसके लिए छोड़ना है जो मेरे बाद मेरी जगह आएगा। 19 और क्या मालूम कि वह दानिशमंद या अहमक होगा? लेकिन जो भी हो, वह उन तमाम चीज़ों का मालिक होगा जो हासिल करने के लिए मैंने सूरज तले अपनी पूरी ताकत और हिकमत सर्फ की है। यह भी बातिल है।

20 तब मेरा दिल मायूस होकर हिम्मत हारने लगा, क्योंकि जो भी मेहनत-मशक्कत मैंने सूरज तले की थी वह बेकार-सी लगी। 21 क्योंकि खाह इनसान अपना काम हिकमत, इल्म और महारत से क्यों न करे, आखिरकार उसे सब कुछ किसी के लिए छोड़ना है जिसने उसके लिए एक उँगली भी नहीं हिलाई। यह भी बातिल और बड़ी मुसीबत है। 22 क्योंकि आखिर में इनसान के लिए क्या कुछ कायम रहता है, जबकि उसने सूरज तले इतनी मेहनत-मशक्कत और कोशिशों के साथ सब कुछ हासिल कर लिया है? 23 उसके तमाम दिन दुख और रंजीदगी से भरे रहते हैं, रात को भी उसका दिल आराम नहीं पाता। यह भी बातिल ही है।

24 इनसान के लिए सबसे अच्छी बात यह है कि खाए पिए और अपनी मेहनत-मशक्कत के फल से लुत्फअंदोज़ हो। लेकिन मैंने यह भी जान लिया कि अल्लाह ही यह सब कुछ मुहैया करता है। 25 क्योंकि उसके बगैर कौन खाकर खुश हो सकता है? कोई नहीं! 26 जो इनसान अल्लाह को मंज़ूर हो उसे वह हिकमत, इल्मो-इरफ़ान और खुशी अता करता है, लेकिन गुनाहगार को वह जमा करने और ज़ख़ीरा करने की ज़िम्मादारी देता है ताकि बाद में यह दौलत अल्लाह को मंज़ूर शरक्स के हवाले की जाए। यह भी बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है।

3

हर बात का अपना वक़्त है

1 हर चीज़ की अपनी घड़ी होती, आसमान तले हर मामले का अपना वक़्त होता है,

2 जन्म लेने और मरने का,

पौदा लगाने और उखाड़ने का,

3 मार देने और शफ़ा देने का,

ढा देने और तामीर करने का,

4 रोने और हँसने का,

आहें भरने और रक्स करने का,

5 पत्थर फेंकने और पत्थर जमा करने का,

गले मिलने और इससे बाज़ रहने का,

6 तलाश करने और खो देने का,

महफूज़ रखने और फेंकने का,

7 फाड़ने और सीकर जोड़ने का,

खामोश रहने और बोलने का,

8 प्यार करने और नफरत करने का,

जंग लड़ने और सलामती से ज़िंदगी गुज़ारने का,

9 चुनाँचे क्या फायदा है कि काम करनेवाला मेहनत-मशक्कत करे?

10 मैंने वह तकलीफ़देह काम-काज देखा जो अल्लाह ने इनसान के सुपुर्द किया ताकि वह उसमें उलझा रहे। 11 उसने हर चीज़ को यों बनाया है कि वह अपने वक़्त के लिए खूबसूरत और मुनासिब हो। उसने इनसान के दिल में जाविदानी भी डाली है, गो वह शुरू से लेकर आखिर तक उस काम की तह तक नहीं पहुँच सकता जो अल्लाह ने किया है। 12 मैंने जान लिया कि इनसान के लिए इससे बेहतर कुछ नहीं है कि वह खुश रहे और जीते-जी ज़िंदगी का मज़ा ले। 13 क्योंकि अगर कोई खाए पिए और तमाम मेहनत-मशक्कत के साथ साथ खुशहाल भी हो तो यह अल्लाह की बख़्शिश है।

14 मुझे समझ आई कि जो कुछ अल्लाह करे वह अबद तक कायम रहेगा। उसमें न इज़ाफ़ा हो सकता है न कमी। अल्लाह यह सब कुछ इसलिए करता है कि इनसान उसका ख़ौफ़ माने। 15 जो हाल में पेश आ रहा है वह माज़ी में पेश आ चुका है, और जो मुस्तक़बिल में पेश आएगा वह भी पेश आ चुका है। हाँ, जो कुछ गुज़र चुका है उसे अल्लाह दुबारा वापस लाता है।

इनसान फ़ानी है

16 मैंने सूरज तले मज़ीद देखा, जहाँ अदालत करनी है वहाँ नाइनसाफ़ी है, जहाँ इनसाफ़ करना है वहाँ बेदीनी है। 17 लेकिन मैं दिल में बोला, “अल्लाह रास्तबाज़ और बेदीन दोनों की अदालत करेगा, क्योंकि हर मामले और काम का अपना वक़्त होता है।”

18 मैंने यह भी सोचा, “जहाँ तक इनसानों का ताल्लुक है अल्लाह उनकी जाँच-पड़ताल करता है ताकि उन्हें पता चले कि वह जानवरों की मानिंद हैं। 19 क्योंकि इनसानो-हैवान का एक ही अंजाम है। दोनों दम छोड़ते, दोनों में एक-सा दम है, इसलिए इनसान को हैवान की निसबत ज़्यादा फ़ायदा हासिल नहीं होता। सब कुछ बातिल ही है। 20 सब कुछ एक ही जगह चला जाता है, सब कुछ खाक से बना है और सब कुछ दुबारा खाक में मिल जाएगा। 21 कौन यकीन से कह सकता है कि इनसान की रूह ऊपर की तरफ़ जाती और हैवान की रूह नीचे ज़मीन में उतरती है?”

22 गरज़ मैंने जान लिया कि इनसान के लिए इससे बेहतर कुछ नहीं है कि वह अपने कामों में खुश रहे, यही उसके नसीब में है। क्योंकि कौन उसे वह देखने के काबिल बनाएगा जो उसके बाद पेश आएगा? कोई नहीं!

4

मुरदों का हाल बेहतर है

1 मैंने एक बार फिर नज़र डाली तो मुझे वह तमाम ज़ुल्म नज़र आया जो सूरज तले होता है। मज़लूमों के आँसू बहते हैं, और तसल्ली देनेवाला कोई नहीं होता। ज़ालिम उनसे ज़्यादाती करते हैं, और तसल्ली देनेवाला कोई नहीं होता। 2 यह देखकर मैंने मुरदों को मुबारक कहा, हालाँकि वह अरसे से वफ़ात पा चुके थे। मैंने कहा, “वह हाल के ज़िंदा लोगों से कहीं मुबारक हैं। 3 लेकिन इनसे ज़्यादा मुबारक वह है जो अब तक वुजूद में नहीं आया, जिसने वह तमाम बुराइयाँ नहीं देखी जो सूरज तले होती हैं।”

गुरबत में सुकून बेहतर है

4 मैंने यह भी देखा कि सब लोग इसलिए मेहनत-मशक्कत और महारत से काम करते हैं कि एक दूसरे से हसद करते हैं। यह भी बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है। 5 एक तरफ़ तो अहमक हाथ पर हाथ धरे बैठने के बाइस अपने आपको तबाही तक पहुँचाता है। 6 लेकिन दूसरी तरफ़ अगर कोई मुठ्ठी-भर रोज़ी कमाकर सुकून के साथ ज़िंदगी गुज़ार सके तो यह इससे बेहतर है कि दोनों मुठ्ठियाँ सिर-तोड़ मेहनत और हवा को पकड़ने की कोशिशों के बाद ही भरें।

तनहाई की निसबत मिलकर रहना बेहतर है

7 मैंने सूरज तले मज़ीद कुछ देखा जो बातिल है। 8 एक आदमी अकेला ही था। न उसके बेटा था, न भाई। वह बेहद मेहनत-मशक्कत करता रहा, लेकिन उस की आँखें कभी अपनी दौलत से मुतमइन न थीं। सवाल यह रहा, “मैं इतनी सिर-तोड़ कोशिश किसके लिए कर रहा हूँ? मैं अपनी जान को ज़िंदगी के मजे लेने से क्यों महरूम रख रहा हूँ?” यह भी बातिल और ना-गवार मामला है।

9 दो एक से बेहतर हैं, क्योंकि उन्हें अपने काम-काज का अच्छा अज़्र मिलेगा। 10 अगर एक गिर जाए तो उसका साथी उसे दुबारा खड़ा करेगा। लेकिन उस पर अफ़सोस जो गिर जाए और कोई साथी न हो जो उसे दुबारा खड़ा करे। 11 नीज़, जब दो सर्दियों के मौसम में मिलकर बिस्तर पर लेट जाएँ तो वह गरम रहते हैं। जो तनहा है वह किस तरह गरम हो जाएगा? 12 एक शख्स पर काबू पाया जा सकता है जबकि दो मिलकर अपना दिफ़ा कर सकते हैं। तीन लड़ियोंवाली रस्सी जल्दी से नहीं टूटती।

कौम की कबूलियत फ़ज़ूल है

13 जो लड़का गरीब लेकिन दानिशमंद है वह उस बुज़ुर्ग लेकिन अहमक बादशाह से कहीं बेहतर है जो तंबीह मानने से इनकार करे। 14 क्योंकि गो वह बड़े बादशाह की हुकूमत के दौरान गुरबत में पैदा हुआ था तो भी वह जेल से निकलकर बादशाह बन गया। 15 लेकिन फिर मैंने देखा कि सूरज तले तमाम लोग एक और लड़के के पीछे हो लिए जिसे पहले की जगह तख़्तनशीन होना था। 16 उन तमाम लोगों की इंतहा नहीं थी जिनकी क्रियादत वह करता था। तो भी जो बाद में आएँगे वह उससे खुश नहीं होंगे। यह भी बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है।

5

अल्लाह का ख़ौफ़ मानना

1 अल्लाह के घर में जाते वक़्त अपने कदमों का खयाल रख और सुनने के लिए तैयार रह। यह अहमकों की कुरबानियों से कहीं बेहतर है, क्योंकि वह जानते ही नहीं कि ग़लत काम कर रहे हैं।

2 बोलने में जल्दबाजी न कर, तेरा दिल अल्लाह के हुज़ूर कुछ बयान करने में जल्दी न करे। अल्लाह आसमान पर है जबकि तू ज़मीन पर ही है। लिहाज़ा बेहतर है कि तू कम बातें करे। 3 क्योंकि जिस तरह हृदय से ज़्यादा मेहनत-मशक्कत से ख़ाब आने लगते हैं उसी तरह बहुत बातें करने से आदमी की हमाकत जाहिर होती है।

4 अगर तू अल्लाह के हुज़ूर मन्नत माने तो उसे पूरा करने में देर मत कर। वह अहमक़ों से खुश नहीं होता, चुनौतियों अपनी मन्नत पूरी कर। 5 मन्नत न मानना मन्नत मानकर उसे पूरा न करने से बेहतर है।

6 अपने मुँह को इजाज़त न दे कि वह तुझे गुनाह में फँसाए, और अल्लाह के पैगंबर के सामने न कह, “मुझसे ग़ैरइरादी ग़लती हुई है।” क्या ज़रूरत है कि अल्लाह तेरी बात से नाराज़ होकर तेरी मेहनत का काम तबाह करे?

7 जहाँ बहुत ख़ाब देखे जाते हैं वहाँ फ़ज़ूल बातें और बेशुमार अलफ़ाज़ होते हैं। चुनौतियों अल्लाह का ख़ौफ़ मान!

ज़ालिमों का जुल्म

8 क्या तुझे सूबे में ऐसे लोग नज़र आते हैं जो ग़रीबों पर जुल्म करते, उनका हक़ मारते और उन्हें इनसाफ़ से महसूस रखते हैं? ताज़्जुब न कर, क्योंकि एक सरकारी मुलाज़िम दूसरे की निगहबानी करता है, और उन पर मज़ीद मुलाज़िम मुक़र्रर होते हैं। 9 चुनौतियों मुल्क के लिए हर लिहाज़ से फ़ायदा इसमें है कि ऐसा बादशाह उस पर हुकूमत करे जो काश्तकारी की फ़िकर करता है।

दौलत ख़ुशहाली की ज़मानत नहीं दे सकती

10 जिसे पैसे प्यारे हों वह कभी मुतमइन नहीं होगा, खाह उसके पास कितने ही पैसे क्यों न हों। जो ज़रदोस्त हो वह कभी आसूदा नहीं होगा, खाह उसके पास कितनी ही दौलत क्यों न हो। यह भी बातिल ही है। 11 जितना माल में इज़ाफ़ा हो उतना ही उनकी तादाद बढ़ती है जो उसे खा जाते हैं। उसके मालिक को उसका क्या फ़ायदा है सिवाए इसके कि वह उसे देख देखकर मज़ा ले? 12 काम-काज करनेवाले की नींद मीठी होती है, खाह उसने कम या ज़्यादा खाना खाया हो, लेकिन अमीर की दौलत उसे सोने नहीं देती।

13 मुझे सूरज तले एक निहायत बुरी बात नज़र आई। जो दौलत किसी ने अपने लिए महफूज़ रखी वह उसके लिए नुक़सान का बाइस बन गई। 14 क्योंकि जब यह दौलत किसी मुसीबत के बाइस तबाह हो गई और आदमी के हाँ बेटा पैदा हुआ तो उसके हाथ में कुछ नहीं था। 15 माँ के पेट से निकलते वक़्त वह नंगा था, और इसी तरह कूच करके चला भी जाएगा। उस की मेहनत का कोई फल नहीं होगा जिसे वह अपने साथ ले जा सके।

16 यह भी बहुत बुरी बात है कि जिस तरह इन्सान आया उसी तरह कूच करके चला भी जाता है। उसे क्या फ़ायदा हुआ है कि उसने हवा के लिए मेहनत-मशक्कत की हो? 17 जीते-जी वह हर दिन तारीकी में खाना खाते हुए गुज़ारता, ज़िंदगी-भर वह बड़ी रंजीदगी, बीमारी और गुस्से में मुब्तला रहता है।

18 तब मैंने जान लिया कि इन्सान के लिए अच्छा और मुनासिब है कि वह जितने दिन अल्लाह ने उसे दिए हैं खाए पिए और सूरज तले अपनी मेहनत-मशक्कत के फल का मज़ा ले, क्योंकि यही उसके नसीब में है। 19 क्योंकि जब अल्लाह किसी शख्स को मालो-मता अता करके उसे इस क़ाबिल बनाए कि उसका मज़ा ले सके, अपना नसीब कबूल कर सके और मेहनत-मशक्कत के साथ साथ खुश भी हो सके तो यह अल्लाह की बख़्शिश है। 20 ऐसे शख्स को ज़िंदगी के दिनों पर ग़ौरो-ख़ौज़ करने का कम ही वक़्त मिलता है, क्योंकि अल्लाह उसे दिल में ख़ुशी दिलाकर मसरूफ़ रखता है।

6

1 मुझे सूरज तले एक और बुरी बात नज़र आई जो इन्सान को अपने बोझ तले दबाए रखती है।

2 अल्लाह किसी आदमी को मालो-मता और इज़्ज़त अता करता है। गरज़ उसके पास सब कुछ है जो उसका दिल चाहे। लेकिन अल्लाह उसे इन चीज़ों से लुफ़ उठाने नहीं देता बल्कि कोई अजनबी उसका मज़ा लेता है। यह बातिल और एक बड़ी मुसीबत है। 3 हो सकता है कि किसी आदमी के सौ बच्चे पैदा हों और वह उम्रसीदा भी हो जाए, लेकिन खाह वह कितना बूढ़ा क्यों न हो जाए, अगर अपनी ख़ुशहाली का मज़ा न ले सके और आखिरकार सहीह स्मूमात के साथ दफ़नाया न जाए तो इसका क्या फ़ायदा? मैं कहता हूँ कि उस की निसबत माँ के पेट में जाया हो गए बच्चे का हाल बेहतर है। 4 बेशक ऐसे बच्चे का आना बेमानी है, और वह अंधेरे में ही कूच करके चला जाता बल्कि उसका नाम तक अंधेरे में छुपा रहता है। 5 लेकिन गो उसने न कभी सूरज देखा, न उसे कभी मालूम हुआ कि ऐसी चीज़ है ताहम उसे मज़कूरा आदमी से कहीं ज़्यादा आरामो-सुकून हासिल है। 6 और अगर वह दो हज़ार साल तक जीता रहे, लेकिन अपनी ख़ुशहाली से लुफ़ अंदोज़ न हो सके तो क्या फ़ायदा है? सबको तो एक ही जगह जाना है।

7 इन्सान की तमाम मेहनत-मशक्कत का यह मक़सद है कि पेट भर जाए, तो भी उस की भूक कभी नहीं मिटती। 8 दानिशमंद को क्या हासिल है जिसके बाइस वह अहमक़ से बरतर है? इसका क्या फ़ायदा है कि ग़रीब आदमी ज़िंदों के साथ मुनासिब सुलूक करने का फ़न सीख ले? 9 दूर-दराज़ चीज़ों के आरज़ूमंद रहने की निसबत बेहतर यह है कि इन्सान उन चीज़ों से लुफ़ उठाए जो आँखों के सामने ही हैं। यह भी बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है।

अल्लाह का मुकाबला कोई नहीं कर सकता

10 जो कुछ भी पेश आता है उसका नाम पहले ही रखा गया है, जो भी इन्सान वुजूद में आता है वह पहले ही मालूम था। कोई भी इन्सान उसका मुकाबला नहीं कर सकता जो उससे ताकतवर है। 11 क्योंकि जितनी भी बातें इन्सान करे उतना ही ज़्यादा मालूम होगा कि बातिल हैं। इन्सान के लिए इसका क्या फायदा?

12 किस को मालूम है कि उन थोड़े और बेकार दिनों के दौरान जो साय की तरह गुजर जाते हैं इन्सान के लिए क्या कुछ फायदामंद है? कौन उसे बता सकता है कि उसके चले जाने पर सूरज तले क्या कुछ पेश आएगा?

7

अच्छा क्या है?

1 अच्छा नाम खुशबूदार तेल से और मौत का दिन पैदाइश के दिन से बेहतर है।

2 ज़ियाफत करनेवालों के घर में जाने की निसबत मातम करनेवालों के घर में जाना बेहतर है, क्योंकि हर इन्सान का अंजाम मौत ही है। जो ज़िंदा हैं वह इस बात पर खूब ध्यान दें। 3 दुख हँसी से बेहतर है, उतरा हुआ चेहरा दिल की बेहतरी का बाइस है। 4 दानिशमंद का दिल मातम करनेवालों के घर में ठहरता जबकि अहमक का दिल ऐशो-इशरत करनेवालों के घर में टिक जाता है।

5 अहमकों के गीत सुनने की निसबत दानिशमंद की झिड़कियों पर ध्यान देना बेहतर है। 6 अहमक के कहकहे देगची तले चटखनेवाले काँटों की आग की मानिंद हैं। यह भी बातिल ही है।

7 नारवा नफ़ा दानिशमंद को अहमक बना देता, रिश्वत दिल को बिगाड़ देती है।

8 किसी मामले का अंजाम उस की इब्तिदा से बेहतर है, सब्र करना मग़रूर होने से बेहतर है।

9 गुस्सा करने में जल्दी न कर, क्योंकि गुस्सा अहमकों की गोद में ही आराम करता है।

10 यह न पूछ कि आज की निसबत पुराना ज़माना बेहतर क्यों था, क्योंकि यह हिकमत की बात नहीं।

11 अगर हिकमत के अलावा मीरास में मिलकियत भी मिल जाए तो यह अच्छी बात है, यह उनके लिए सूदमंद है जो सूरज देखते हैं।

12 क्योंकि हिकमत पैसों की तरह पनाह देती है, लेकिन हिकमत का खास फायदा यह है कि वह अपने मालिक की जान बचाए रखती है।

13 अल्लाह के काम का मुलाहज़ा कर। जो कुछ उसने पेचदार बनाया कौन उसे सुलझा सकता है?

14 खुशी के दिन खुश हो, लेकिन मुसीबत के दिन खयाल रख कि अल्लाह ने यह दिन भी बनाया और वह भी इसलिए कि इन्सान अपने मुस्तक़बिल के बारे में कुछ मालूम न कर सके।

इंतहापसंदों से दरेग कर

15 अपनी अबस ज़िंदगी के दौरान मैंने दो बातें देखी हैं। एक तरफ़ रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़ी के बावजूद तबाह हो जाता जबकि दूसरी तरफ़ बेदीन अपनी बेदीनी के बावजूद उम्ररसीदा हो जाता है। 16 न हद से ज़्यादा रास्तबाज़ी दिखा, न हद से ज़्यादा दानिशमंदी। अपने आपको तबाह करने की क्या ज़रूरत है? 17 न हद से ज़्यादा बेदीनी, न हद से ज़्यादा हमाक़त दिखा। मुक़र्ररा वक़्त से पहले मरने की क्या ज़रूरत है? 18 अच्छा है कि तू यह बात थामे रखे और दूसरी भी न छोड़े। जो अल्लाह का ख़ौफ़ माने वह दोनों ख़तरों से बच निकलेगा।

19 हिकमत दानिशमंद को शहर के दस हुक्मरानों से ज़्यादा ताकतवर बना देती है। 20 दुनिया में कोई भी इन्सान इतना रास्तबाज़ नहीं कि हमेशा अच्छा काम करे और कभी गुनाह न करे।

21 लोगों की हर बात पर ध्यान न दे, ऐसा न हो कि तू नौकर की लानत भी सुन ले जो वह तुझ पर करता है। 22 क्योंकि दिल में तू जानता है कि तूने खुद मुतअद्दिद बार दूसरों पर लानत भेजी है।

कौन दानिशमंद है?

23 हिकमत के ज़रीए मैंने इन तमाम बातों की जाँच-पड़ताल की। मैं बोला, “मैं दानिशमंद बनना चाहता हूँ,” लेकिन हिकमत मुझसे दूर रही। 24 जो कुछ मौजूद है वह दूर और निहायत गहरा है। कौन उस की तह तक पहुँच सकता है? 25 चुनौचे मैं सख़ बदलकर पूरे ध्यान से इसकी तहक़ीको-तफ़तीश करने लगा कि हिकमत और मुख्तलिफ़ बातों के सहीह नतायज क्या हैं। नीज़, मैं बेदीनी की हमाक़त और बेहुदगी की दीवानगी मालूम करना चाहता था।

26 मुझे मालूम हुआ कि मौत से कहीं तलख़ वह औरत है जो फंदा है, जिसका दिल जाल और हाथ जंजीरें हैं। जो आदमी अल्लाह को मंज़ूर हो वह बच निकलेगा, लेकिन गुनाहगार उसके जाल में उलझ जाएगा।

27 वाइज़ फ़रमाता है, “यह सब कुछ मुझे मालूम हुआ जब मैंने मुख्तलिफ़ बातें एक दूसरे के साथ मुंसलिफ़ की ताकि सहीह नतायज तक पहुँचूँ। 28 लेकिन जिसे मैं ढूँडता रहा वह न मिला। हज़ार अफ़राद में से मुझे सिर्फ़ एक ही दियानतदार मर्द मिला, लेकिन एक भी दियानतदार औरत नहीं।” *

29 मुझे सिर्फ़ इतना ही मालूम हुआ कि गो अल्लाह ने इन्सानों को दियानतदार बनाया, लेकिन वह कई किस्म की चालाकियाँ ढूँड निकालते हैं।”

* 7:28 ‘दियानतदार’ इज़ाफ़ा है ताकि आयत का जो ग़ालिबन मतलब है वह साफ़ हो जाए।

8

1 कौन दानिशमंद की मानिंद है? कौन बातों की सहीह तशरीह करने का इल्म रखता है? हिकमत इनसान का चेहरा रौशन और उसके मुँह का सख्त अंदाज नरम कर देती है।

हुक्मरान का इख्तियार

2 मैं कहता हूँ, बादशाह के हुक्म पर चल, क्योंकि तूने अल्लाह के सामने हलफ उठाया है। 3 बादशाह के हुजूर से दूर होने में जल्दबाज़ी न कर। किसी बुरे मामले में मुब्तला न हो जा, क्योंकि उसी की मरज़ी चलती है। 4 बादशाह के फ़रमान के पीछे उसका इख्तियार है, इसलिए कौन उससे पूछे, “तू क्या कर रहा है?” 5 जो उसके हुक्म पर चले उसका किसी बुरे मामले से वास्ता नहीं पड़ेगा, क्योंकि दानिशमंद दिल मुनासिब वक़्त और इनसाफ़ की राह जानता है।

6 क्योंकि हर मामले के लिए मुनासिब वक़्त और इनसाफ़ की राह होती है। लेकिन मुसीबत इनसान को दबाए रखती है, 7 क्योंकि वह नहीं जानता कि मुस्तक़बिल कैसा होगा। कोई उसे यह नहीं बता सकता है। 8 कोई भी इनसान हवा को बंद रखने के काबिल नहीं। * इसी तरह किसी को भी अपनी मौत का दिन मुक़र्रर करने का इख्तियार नहीं। यह उतना यकीनी है जितना यह कि फ़ौजियों को जंग के दौरान फ़ारिग नहीं किया जाता और बेदीनी बेदीन को नहीं बचाती।

9 मैंने यह सब कुछ देखा जब पूरे दिल से उन तमाम बातों पर ध्यान दिया जो सूरज तले होती हैं, जहाँ इस वक़्त एक आदमी दूसरे को नुक़सान पहुँचाने का इख्तियार रखता है।

दुनिया में नाइनसाफ़ी

10 फिर मैंने देखा कि बेदीनों को इज़्ज़त के साथ दफ़नाया गया। यह लोग मक़दिस के पास आते-जाते थे! लेकिन जो रास्तबाज़ थे उनकी याद शहर में मिट गई। यह भी बातिल ही है।

11 मुजरिमों को जल्दी से सज़ा नहीं दी जाती, इसलिए लोगों के दिल बुरे काम करने के मनसूबों से भर जाते हैं। 12 गुनाहगार से सौ गुनाह सरज़द होते हैं, तो भी उम्रसिदा हो जाता है।

बेशक मैं यह भी जानता हूँ कि ख़ुदातरस लोगों की ख़ैर होगी, उनकी जो अल्लाह के चेहरे से डरते हैं। 13 बेदीन की ख़ैर नहीं होगी, क्योंकि वह अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं मानता। उस की ज़िंदगी के दिन ज़्यादा नहीं बल्कि साय जैसे आरिज़ी होंगे। 14 तो भी एक और बात दुनिया में पेश आती है जो बातिल है, रास्तबाज़ों को वह सज़ा मिलती है जो बेदीनों को मिलनी चाहिए, और बेदीनों को वह अज़्र मिलता है जो रास्तबाज़ों को मिलना चाहिए। यह देखकर मैं बोला, “यह भी बातिल ही है।”

15 चुनौचे मैंने खुशी की तारीफ़ की, क्योंकि सूरज तले इनसान के लिए इससे बेहतर कुछ नहीं है कि वह खाए पिए और खुश रहे। फिर मेहनत-मशक्कत करते वक़्त खुशी उतने ही दिन उसके साथ रहेगी जितने अल्लाह ने सूरज तले उसके लिए मुक़र्रर किए हैं।

जो कुछ अल्लाह करता है वह नाकाबिले-फ़हम है

16 मैंने अपनी पूरी ज़हनी ताक़त इस पर लगाई कि हिकमत जान लूँ और ज़मीन पर इनसान की मेहनतों का मुआयना कर लूँ, ऐसी मेहनतें कि उसे दिन-रात नींद नहीं आती। 17 तब मैंने अल्लाह का सारा काम देखकर जान लिया कि इनसान उस तमाम काम की तह तक नहीं पहुँच सकता जो सूरज तले होता है। खाह वह उस की कितनी तहक़ीक़ क्यों न करे तो भी वह तह तक नहीं पहुँच सकता। हो सकता है कोई दानिशमंद दावा करे, “मुझे इसकी पूरी समझ आई है,” लेकिन ऐसा नहीं है, वह तह तक नहीं पहुँच सकता।

9

1 इन तमाम बातों पर मैंने दिल से गौर किया। इनके मुआयने के बाद मैंने नतीजा निकाला कि रास्तबाज़ और दानिशमंद और जो कुछ वह करें अल्लाह के हाथ में हैं। खाह मुहब्बत हो खाह नफ़रत, इसकी भी समझ इनसान को नहीं आती, दोनों की जड़ें उससे पहले माज़ी में हैं। 2 सबके नसीब में एक ही अंजाम है, रास्तबाज़ और बेदीन के, नेक और बद के, पाक और नापाक के, कुरबानियाँ पेश करनेवाले के और उसके जो कुछ नहीं पेश करता। अच्छे शख्स और गुनाहगार का एक ही अंजाम है, हलफ़ उठानेवाले और इससे डरकर गुरेज़ करनेवाले की एक ही मनज़िल है।

3 सूरज तले हर काम की यही मुसीबत है कि हर एक के नसीब में एक ही अंजाम है। इनसान का मुलाहज़ा कर। उसका दिल बुराई से भरा रहता बल्कि उम्र-भर उसके दिल में बेहदगी रहती है। लेकिन आखिरकार उसे मुरदों में ही जा मिलना है।

4 जो अब तक ज़िंदों में शरीक है उसे उम्मीद है। क्योंकि ज़िंदा कुत्ते का हाल मुरदा शेर से बेहतर है। 5 कम अज़्र कम जो ज़िंदा हैं वह जानते हैं कि हम मरेंगे। लेकिन मुरदे कुछ नहीं जानते, उन्हें मज़ीद कोई अज़्र नहीं मिलना है। उनकी यादें भी मिट जाती हैं। 6 उनकी मुहब्बत, नफ़रत और ग़ैरत सब कुछ बड़ी देर से जाती रही है। अब वह कभी भी उन कामों में हिस्सा नहीं लेंगे जो सूरज तले होते हैं।

ज़िंदगी के मज़े ले!

* 8:8 एक और मुमकिन तरज़ुमा : कोई भी इनसान अपनी जान को निकलने से नहीं रोक सकता।

7 चुनौचे जाकर अपना खाना खुशी के साथ खा, अपनी मै जिंदादिली से पी, क्योंकि अल्लाह काफी देर से तेरे कामों से खुश है। 8 तेरे कपड़े हर वक्त सफेद * हों, तेरा सर तेल से महसूम न रहे। 9 अपने जीवनसाथी के साथ जो तुझे प्यारा है जिंदगी के मजे लेता रह। सूरज तले की बातिल जिंदगी के जितने दिन अल्लाह ने तुझे बख्श दिए हैं उन्हें इसी तरह गुज़ार! क्योंकि जिंदगी में और सूरज तले तेरी मेहनत-मशक्कत में यही कुछ तेरे नसीब में है। 10 जिस काम को भी हाथ लगाए उसे पूरे जोशो-खुरोश से कर, क्योंकि पाताल में जहाँ तू जा रहा है न कोई काम है, न मनसूबा, न इल्म और न हिकमत।

दुनिया में हिकमत की कदर नहीं की जाती

11 मैंने सूरज तले मज़ीद कुछ देखा। यक़ीनी बात नहीं कि मुकाबले में सबसे तेज़ दौड़नेवाला जीत जाए, कि जंग में पहलवान फ़तह पाए, कि दानिशमंद को ख़ुराक हासिल हो, कि समझदार को दौलत मिले या कि आलिम मंजूरी पाए। नहीं, सब कुछ मौक़े और इत्तफ़ाक़ पर मुनहसिर होता है। 12 नीज़, कोई भी इनसान नहीं जानता कि मुसीबत का वक़्त कब उस पर आएगा। जिस तरह मछलियाँ ज़ालिम जाल में उलझ जाती या परिदे फंदे में फँस जाते हैं उसी तरह इनसान मुसीबत में फँस जाता है। मुसीबत अचानक ही उस पर आ जाती है।

13 सूरज तले मैंने हिकमत की एक और मिसाल देखी जो मुझे अहम लगी।

14 कहीं कोई छोटा शहर था जिसमें थोड़े-से अफ़राद बसते थे। एक दिन एक ताक़तवर बादशाह उससे लड़ने आया। उसने उसका मुहासरा किया और इस मक़सद से उसके इर्दगिर्द बड़े बड़े बुर्ज खड़े किए। 15 शहर में एक आदमी रहता था जो दानिशमंद अलबन्ता ग़रीब था। इस शख्स ने अपनी हिकमत से शहर को बचा लिया। लेकिन बाद में किसी ने भी ग़रीब को याद न किया। 16 यह देखकर मैं बोला, “हिकमत ताक़त से बेहतर है,” लेकिन ग़रीब की हिकमत हक़ीर जानी जाती है। कोई भी उस की बातों पर ध्यान नहीं देता। 17 दानिशमंद की जो बातें आराम से सुनी जाएँ वह अहमकों के दरमियान रहनेवाले हुक्मरान के जोरदार एलानात से कहीं बेहतर हैं। 18 हिकमत जंग के हथियारों से बेहतर है, लेकिन एक ही गुनाहगार बहुत कुछ जो अच्छा है तबाह करता है।

10

मुख्तलिफ़ हिदायत

1 मरी हुई मक्खियाँ खुशबूदार तेल ख़राब करती हैं, और हिकमत और इज़्ज़त की निसबत थोड़ी-सी हमाक़त का ज़्यादा असर होता है।

2 दानिशमंद का दिल सही राह चुन लेता है जबकि अहमक का दिल ग़लत राह पर आ जाता है। 3 रास्ते पर चलते वक़्त भी अहमक समझ से ख़ाली है, जिससे भी मिले उसे बताता है कि वह बेवकूफ़ है। *

4 अगर हुक्मरान तुझसे नाराज़ हो जाए तो अपनी जगह मत छोड़, क्योंकि पुरसूक़न रवैया बड़ी बड़ी ग़लतियाँ दूर कर देता है।

5 मुझे सूरज तले एक ऐसी बुरी बात नज़र आई जो अकसर हुक्मरानों से सरज़द होती है। 6 अहमक को बड़े ओहदों पर फ़ायज़ किया जाता है जबकि अमीर छोटे ओहदों पर ही रहते हैं। 7 मैंने गुलामों को घोड़े पर सवार और हुक्मरानों को गुलामों की तरह पैदल चलते देखा है।

8 जो ग़ढा खोदे वह खुद उसमें गिर सकता है, जो दीवार गिरा दे हो सकता है कि सॉप उसे डसे। 9 जो कान से पत्थर निकाले उसे चोट लग सकती है, जो लकड़ी चीर डाले वह ज़ख़मी हो जाने के ख़तरे में है।

10 अगर कुल्हाड़ी कुंद हो और कोई उसे तेज़ न करे तो ज़्यादा ताक़त दरकार है। लिहाज़ा हिकमत को सही तौर से अमल में ला, तब ही कामयाबी हासिल होगी।

11 अगर इससे पहले कि सपेरा सॉप पर काबू पाए वह उसे डसे तो फिर सपेरा होने का क्या फ़ायदा?

12 दानिशमंद अपने मुँह की बातों से दूसरों की मेहरबानी हासिल करता है, लेकिन अहमक के अपने ही होंट उसे हड़प कर लेते हैं।

13 उसका बयान अहमकाना बातों से शुरू और ख़तरनाक बेवकूफ़ियों से ख़त्म होता है। 14 ऐसा शख्स बातें करने से बाज़ नहीं आता, गो इनसान मुस्तक़बिल के बारे में कुछ नहीं जानता। कौन उसे बता सकता है कि उसके बाद क्या कुछ होगा? 15 अहमक का काम उसे थका देता है, और वह शहर का रास्ता भी नहीं जानता।

16 उस मुल्क पर अफ़सोस जिसका बादशाह बच्चा है और जिसके बुजुर्ग़ सुबह ही ज़ियाफ़त करने लगते हैं। 17 मुबारक है वह मुल्क जिसका बादशाह शरीफ़ है और जिसके बुजुर्ग़ नशे में धुत नहीं रहते बल्कि मुनासिब वक़्त पर और नज़मो-ज़ब्त के साथ खाना खाते हैं।

18 जो सुस्त है उसके घर के शहतीर झुकने लगते हैं, जिसके हाथ ढीले हैं उस की छत से पानी टपकने लगता है।

19 ज़ियाफ़त करने से हँसी-खुशी और मै पीने से जिंदादिली पैदा होती है, लेकिन पैसा ही सब कुछ मुहैया करता है।

20 खयालों में भी बादशाह पर लानत न कर, अपने सोने के कमरे में भी अमीर पर लानत न भेज, ऐसा न हो कि कोई परिदा तेरे अलफ़ाज़ लेकर उस तक पहुँचाए।

11

मेहनत का फ़ायदा

* 9:8 यानी खुशी मनाने के कपड़े। * 10:3 इब्रानी ज़ूमानी है। दूसरा मतलब ‘कि मैं बेवकूफ़ हूँ’ हो सकता है।

1 अपनी रोटी पानी पर फेंककर जाने दे तो मुतअद्दिद दिनों के बाद वह तुझे फिर मिल जाएगी। 2 अपनी मिलकियत सात बल्कि आठ मुख्तलिफ़ कामों में लगा दे, क्योंकि तुझे क्या मालूम कि मुल्क किस किस मुसीबत से दोचार होगा।

3 अगर बादल पानी से भरे हों तो ज़मीन पर बारिश ज़रूर होगी। दरख्त जुनूब या शिमाल की तरफ़ गिर जाए तो उसी तरफ़ पड़ा रहेगा।

4 जो हर वक़्त हवा का सूख देखता रहे वह कभी बीज नहीं बोएगा। जो बादलों को तकता रहे वह कभी फ़सल की कटाई नहीं करेगा।

5 जिस तरह न तुझे हवा के चक्कर मालूम हैं, न यह कि माँ के पेट में बच्चा किस तरह तश्कील पाता है उसी तरह तू अल्लाह का काम नहीं समझ सकता, जो सब कुछ अमल में लाता है।

6 सुबह के वक़्त अपना बीज बो और शाम को भी काम में लगा रह, क्योंकि क्या मालूम कि किस काम में कामयाबी होगी, इसमें, उसमें या दोनों में।

अपनी जवानी से लुफ़अंदोज़ हो

7 रौशनी कितनी भली है, और सूरज आँखों के लिए कितना खुशगवार है। 8 जितने भी साल इनसान ज़िंदा रहे उतने साल वह खुशबाश रहे। साथ साथ उसे याद रहे कि तारीक़ दिन भी आनेवाले हैं, और कि उनकी बड़ी तादाद होगी। जो कुछ आनेवाला है वह बातिल ही है।

9 ऐ नौजवान, जब तक तू जवान है खुश रह और जवानी के मजे लेता रह। जो कुछ तेरा दिल चाहे और तेरी आँखों को पसंद आए वह कर, लेकिन याद रहे कि जो कुछ भी तू करे उसका जवाब अल्लाह तुझसे तलब करेगा। 10 चुनाँचे अपने दिल से रंजीदगी और अपने जिस्म से दुख-दर्द दूर रख, क्योंकि जवानी और काले बाल दम-भर के ही हैं।

12

1 जवानी में ही अपने ख़ालिक को याद रख, इससे पहले कि मुसीबत के दिन आएँ, वह साल करीब आएँ जिनके बारे में तू कहेगा, “यह मुझे पसंद नहीं।” 2 उसे याद रख इससे पहले कि रौशनी तेरे लिए ख़त्म हो जाए, सूरज, चाँद और सितारे अंधेरे हो जाएँ और बारिश के बाद बादल लौट आएँ। 3 उसे याद रख, इससे पहले कि घर के पहरेदार थरथराने लगें, ताक़तवर आदमी कुबड़े हो जाएँ, गंदम पीसनेवाली नौकरानियाँ कम होने के बाइस काम करना छोड़ दें और खिड़कियों में से देखनेवाली ख़वातीन धुँधला जाएँ। 4 उसे याद रख, इससे पहले कि गली में पहुँचानेवाला दरवाज़ा बंद हो जाए और चक्की की आवाज़ आहिस्ता हो जाए। जब चिड़ियाँ चहचहाने लगेंगी तो तू जाग उठेगा, लेकिन तमाम गीतों की आवाज़ दबी-सी सुनाई देगी। 5 उसे याद रख, इससे पहले कि तू ऊँची जगहों और गलियों के ख़तरों से डरने लगे। गो बादाम का फूल खिल जाए, टिट्टी बोझ तले दब जाए और करीर का फूल फूट निकले, लेकिन तू कूच करके अपने अबदी घर में चला जाएगा, और मातम करनेवाले गलियों में घूमते फिरेंगे।

6 अल्लाह को याद रख, इससे पहले कि चाँदी का रस्सा टूट जाए, सोने का बरतन टुकड़े टुकड़े हो जाए, चश्मे के पास घड़ा पाश पाश हो जाए और कुँए का पानी निकालनेवाला पहिया टूटकर उसमें गिर जाए। 7 तब तेरी खाक दुबारा उस खाक में मिल जाएगी जिससे निकल आई और तेरी रूह उस ख़ुदा के पास लौट जाएगी जिसने उसे बरख़्शा था।

8 वाइज़ फ़रमाता है, “बातिल ही बातिल! सब कुछ बातिल ही बातिल है!”

खातमा

9 दानिशमंद होने के अलावा वाइज़ क्रौम को इल्मो-इरफ़ान की तालीम देता रहा। उसने मुतअद्दिद अमसाल को सहीह वज़न देकर उनकी जाँच-पड़ताल की और उन्हें तरतीबवार जमा किया। 10 वाइज़ की कोशिश थी कि मुनासिब अलफ़ाज़ इस्तेमाल करे और दियानतदारी से सच्ची बातें लिखे।

11 दानिशमंदों के अलफ़ाज़ आँकुस की मानिंद हैं, तरतीब से जमाशुदा अमसाल लकड़ी में मज़बूती से ठोंकी गई कीलों जैसी हैं। यह एक ही गल्लाबान की दी हुई हैं।

12 मेरे बेटे, इसके अलावा ख़बरदार रह। किताबें लिखने का सिलसिला कभी ख़त्म नहीं हो जाएगा, और हद से ज़्यादा कुतुबबीनी से जिस्म थक जाता है।

13 आओ, इख़िताम पर हम तमाम तालीम के ख़ुलासे पर ध्यान दें। रब का ख़ौफ़ मान और उसके अहक़ाम की पैरवी कर। यह हर इनसान का फ़र्ज़ है। 14 क्योंकि अल्लाह हर काम को ख़ाह वह छुपा ही हो, ख़ाह बुरा या भला हो अदालत में लाएगा।

गज़लुल-गज़लात

तू मेरा बादशाह है

1 सुलेमान की गज़लुल-गज़लात।

2 वह मुझे अपने मुँह से बोसे दे, क्योंकि तेरी मुहब्बत मैं से कहीं ज्यादा राहतबख्श है।

3 तेरी इत्र की खुशबू कितनी मनमोहन है, तेरा नाम छिड़का गया महकदार तेल ही है। इसलिए कुंवारीयाँ तुझे प्यार करती हैं।

4 आ, मुझे खींचकर अपने साथ ले जा! आ, हम दौड़कर चले जाएँ! बादशाह मुझे अपने कमरों में ले जाए, और हम बाग बाग होकर तेरी खुशी मनाएँ। हम मैं की निसबत तेरे प्यार की ज्यादा तारीफ करें। मुनासिब है कि लोग तुझसे मुहब्बत करें।

मुझे हक़ीर न जानो

5 ऐ यरूशलम की बेटियो, मैं स्याहफ़ाम लेकिन मनमोहन हूँ, मैं कीदार के ख़ैमों जैसी, सुलेमान के ख़ैमों के परदों जैसी ख़ूबसूरत हूँ।⁶ इसलिए मुझे हक़ीर न जानो कि मैं स्याहफ़ाम हूँ, कि मेरी ज़िल्द धूप से झुलस गई है। मेरे सगे भाई मुझसे नाराज़ थे, इसलिए उन्होंने मुझे अंगूर के बाग़ों की देख-भाल करने की ज़िम्मादारी दी, अंगूर के अपने ज़ाती बाग़ की देख-भाल मैं कर न सकी।

तू कहाँ है?

7 ऐ तू जो मेरी जान का प्यारा है, मुझे बता कि भेड़-बकरियाँ कहाँ चरा रहा है? तू उन्हें दोपहर के वक़्त कहाँ आराम करने बिठाता है? मैं क्यों निक्काबपोश की तरह तेरे साथियों के रेवड़ों के पास ठहरी रहूँ?

8 क्या तू नहीं जानती, तू जो औरतों में सबसे ख़ूबसूरत है? फिर घर से निकलकर खोज लगा कि मेरी भेड़-बकरियाँ किस तरफ़ चली गई हैं, अपने मेमनों को गल्लाबानों के ख़ैमों के पास चरा।

तू कितनी ख़ूबसूरत है

9 मेरी महबूबा, मैं तुझे किस चीज़ से तशबीह दूँ? तू फिरौन का शानदार रथ खींचनेवाली घोड़ी है!

10 तेरे गाल बालियों से कितने आरास्ता, तेरी गरदन मोती के गुलबंद से कितनी दिलफ़रेब लगती है।

11 हम तेरे लिए सोने का ऐसा हार बनवा लेंगे जिसमें चाँदी के मोती लगे होंगे।

12 जितनी देर बादशाह ज़ियाफ़त में शरीक था मेरे बालछड़ की खुशबू चारों तरफ़ फैलती रही।

13 मेरा महबूब गोया मुर की डिबिया है, जो मेरी छातियों के दरमियान पड़ी रहती है।

14 मेरा महबूब मेरे लिए मेहँदी के फूलों का गुच्छा है, जो ऐन-जदी के अंगूर के बाग़ों से लाया गया है।

15 मेरी महबूबा, तू कितनी ख़ूबसूरत है, कितनी हसीन! तेरी आँखें कबूतर ही हैं।

16 मेरे महबूब, तू कितना ख़ूबसूरत है, कितना दिलस्बा! सायादार हरियाली हमारा बिस्तर¹⁷ और देवदार के दरख़्त हमारे घर के शहतीर हैं। ज़ूनीपर के दरख़्त तरख़्तों का काम देते हैं।

2

तू लासानी है

1 मैं मैदाने-शास्न का फूल और वादियों की सोसन हूँ।

2 लड़कियों के दरमियान मेरी महबूबा काँटेदार पौदों में सोसन की मानिंद है।

3 जवान आदमियों में मेरा महबूब जंगल में सेब के दरख़्त की मानिंद है। मैं उसके साय में बैठने की कितनी आरज़ूमंद हूँ, उसका फल मुझे कितना मीठा लगता है।

मैं इश्क के मारे बीमार हो गई हूँ

4 वह मुझे मैकदे * में लाया है, मेरे ऊपर उसका झंडा मुहब्बत है।

5 किशमिश की टिक्कियों से मुझे तरो-ताज़ा करो, सेबों से मुझे तकवियत दो, क्योंकि मैं इश्क के मारे बीमार हो गई हूँ।

6 उसका बायाँ बाजू मेरे सर के नीचे होता और दहना बाजू मुझे गले लगाता है।

7 ऐ यस्शलम की बेटियों, गज़ालों और खुले मैदान की हिरनियों की कसम खाओ कि जब तक मुहब्बत खुद न चाहे तुम उसे न जगाओगी, न बेदार करोगी।

बहार आ गई है

8 सुनो, मेरा महबूब आ रहा है। वह देखो, वह पहाड़ों पर फलौंगता और टीलों पर से उछलता-कूदता आ रहा है।

9 मेरा महबूब गज़ाल या जवान हिरन की मानिंद है। अब वह हमारे घर की दीवार के सामने स्क्कर खिड़कियों में से झाँक रहा, जंगले में से तक रहा है।

10 वह मुझसे कहता है, “ऐ मेरी खूबसूरत महबूबा, उठकर मेरे साथ चल!

11 देख, सर्दियों का मौसम गुज़र गया है, बारिशें भी खत्म हो गई हैं।

12 ज़मीन से फूल फूट निकले हैं और गीत का वक्रत आ गया है, कबूतरों की गूँ गूँ हमारे मुल्क में सुनाई देती है।

13 अंजीर के दरख्तों पर पहली फ़सल का फल पक रहा है, और अंगूर की बेलों के फूल खुशबू फैला रहे हैं। चुनौचे आ मेरी हसीन महबूबा, उठकर आ जा!

14 ऐ मेरी कबूतरी, चटान की दराइयों में छुपी न रह, पहाड़ी पत्थरों में पोशीदा न रह बल्कि मुझे अपनी शकल दिखा, मुझे अपनी आवाज़ सुनने दे, क्योंकि तेरी आवाज़ शीरी, तेरी शकल खूबसूरत है।”

15 हमारे लिए लोमड़ियों को पकड़ लो, उन छोटी लोमड़ियों को जो अंगूर के बागों को तबाह करती हैं। क्योंकि हमारी बेलों से फूल फूट निकले हैं।

16 मेरा महबूब मेरा ही है, और मैं उसी की हूँ, उसी की जो सोसनों में चरता है।

17 ऐ मेरे महबूब, इससे पहले कि शाम की हवा चले और साय लंबे होकर फ़रार हो जाएँ गज़ाल या जवान हिरन की तरह संगलाख पहाड़ों का स्रख कर!

3

रात को महबूब की आरजू

1 रात को जब मैं बिस्तर पर लेटी थी तो मैंने उसे ढूँडा जो मेरी जान का प्यारा है, मैंने उसे ढूँडा लेकिन न पाया।

2 मैं बोली, “अब मैं उठकर शहर में घूमती, उस की गलियों और चौकों में फिरकर उसे तलाश करती हूँ जो मेरी जान का प्यारा है।” मैं ढूँडती रही लेकिन वह न मिला।

3 जो चौकीदार शहर में गश्त करते हैं उन्होंने मुझे देखा। मैंने पूछा, “क्या आपने उसे देखा है जो मेरी जान का प्यारा है?”

4 आगे निकलते ही मुझे वह मिल गया जो मेरी जान का प्यारा है। मैंने उसे पकड़ लिया। अब मैं उसे नहीं छोड़ूँगी जब तक उसे अपनी माँ के घर में न ले जाऊँ, उसके कमरे में न पहुँचाऊँ जिसने मुझे जन्म दिया था।

5 ऐ यस्शलम की बेटियों, गज़ालों और खुले मैदान की हिरनियों की कसम खाओ कि जब तक मुहब्बत खुद न चाहे तुम उसे न जगाओगी, न बेदार करोगी।

दूल्हा अपने लोगों के साथ आता है

6 यह कौन है जो धुएँ के सतून की तरह सीधा हमारे पास चला आ रहा है? उससे चारों तरफ़ मुर, बख़ूर और ताजिर की तमाम खुशबुएँ फैल रही हैं।

7 यह तो सुलेमान की पालकी है जो इसराईल के 60 पहलवानों से घिरी हुई है।

8 सब तलवार से लैस और तजरबाकार फ़ौजी हैं। हर एक ने अपनी तलवार को रात के हौलनाक ख़तरों का सामना करने के लिए तैयार कर रखा है।

9 सुलेमान बादशाह ने खुद यह पालकी लुबनान के देवदार की लकड़ी से बनवाई।

* 2:4 मैकदे से मुराद गालिबन महल का वह हिस्सा है जिसमें बादशाह ज़ियाफ़त करता था।

10 उसने उसके पाए चाँदी से, पुश्त सोने से, और निशस्त अरगवानी रंग के कपड़े से बनवाई। यरूशलम की बेटियों ने बड़े प्यार से उसका अंदरूनी हिस्सा मुरस्साकारी से आरास्ता किया है।

11 ऐ सिय्यून की बेटियो, निकल आओ और सुलेमान बादशाह को देखो। उसके सर पर वह ताज है जो उस की माँ ने उस की शादी के दिन उसके सर पर पहनाया, उस दिन जब उसका दिल बाग बाग हुआ।

4

तू कितनी हसीन है!

1 मेरी महबूबा, तू कितनी खूबसूरत, कितनी हसीन है! निकाब के पीछे तेरी आँखों की झलक कबूतरों की मानिंद है। तेरे बाल उन बकरियों की मानिंद हैं जो उछलती-कूदती कोहे-जिलियाद से उतरती हैं।

2 तेरे दाँत अभी अभी कतरी और नहलाई हुई भेड़ों जैसे सफ़ेद हैं। हर दाँत का जुड़वाँ है, एक भी गुम नहीं हुआ।

3 तेरे होंट किरमिजी रंग का डोरा हैं, तेरा मुँह कितना प्यारा है। निकाब के पीछे तेरे गालों की झलक अनार के टुकड़ों की मानिंद दिखाई देती है।

4 तेरी गरदन दाऊद के बुर्ज जैसी दिलरूबा है। जिस तरह इस गोल और मज़बूत बुर्ज से पहलवानों की हजार ढालें लटकी हैं उस तरह तेरी गरदन भी ज़ेवरात से आरास्ता है।

5 तेरी छातियाँ सोसनों में चरनेवाले गज़ाल के जुड़वाँ बच्चों की मानिंद हैं।

6 इससे पहले कि शाम की हवा चले और साय लंबे होकर फ़रार हो जाएँ मैं मुर के पहाड़ और बख़ूर की पहाड़ी के पास चलूँगा।

7 मेरी महबूबा, तेरा हुस्न कामिल है, तुझमें कोई नुक्स नहीं है।

दुलहन का जादू

8 आ मेरी दुलहन, लुबनान से मेरे साथ आ! हम कोहे-अमाना की चोटी से, सनीर और हरमून की चोटियों से उतरें, शेरों की माँदों और चीतों के पहाड़ों से उतरें।

9 मेरी बहन, मेरी दुलहन, तूने मेरा दिल चुरा लिया है, अपनी आँखों की एक ही नज़र से, अपने गुलबंद के एक ही जौहर से तूने मेरा दिल चुरा लिया है।

10 मेरी बहन, मेरी दुलहन, तेरी मुहब्बत कितनी मनमोहन है! तेरा प्यार मैं से कहीं ज़्यादा पसंदीदा है। बलसान की कोई भी खुशबू तेरी महक का मुकाबला नहीं कर सकती।

11 मेरी दुलहन, जिस तरह शहद छत्ते से टपकता है उसी तरह तेरे होंटों से मिठास टपकती है। दूध और शहद तेरी ज़बान तले रहते हैं। तेरे कपड़ों की खुशबू सूँघकर लुबनान की खुशबू याद आती है।

दुलहन नफ़ीस बाग है

12 मेरी बहन, मेरी दुलहन, तू एक बाग है जिसकी चारदीवारी किसी और को अंदर आने नहीं देती, एक बंद किया गया चश्मा जिस पर मुहर लगी है।

13 बाग में अनार के दरख्त लगे हैं जिन पर लज़ीज़ फल पक रहा है। मेहँदी के पौदे भी उग रहे हैं।

14 बालछड़, जाफ़रान, खुशबूदार बेद, दारचीनी, बख़ूर की हर किस्म का दरख्त, मुर, ऊद और हर किस्म का बलसान बाग में फलता-फूलता है।

15 तू बाग का उबलता चश्मा है, एक ऐसा मंबा जिसका ताज़ा पानी लुबनान से बहकर आता है।

16 ऐ शिमाली हवा, जाग उठ! ऐ जुनूबी हवा, आ! मेरे बाग में से गुज़र जा ताकि वहाँ से चारों तरफ़ बलसान की खुशबू फैल जाए। मेरा महबूब अपने बाग में आकर उसके लज़ीज़ फलों से खाए।

5

1 मेरी बहन, मेरी दुलहन, अब मैं अपने बाग में दाखिल हो गया हूँ। मैंने अपना मुर अपने बलसान समेत चुन लिया, अपना छत्ता शहद समेत खा लिया, अपनी मैं अपने दूध समेत पी ली है। खाओ, मेरे दोस्तो, खाओ और पियो, मुहब्बत से सरशार हो जाओ!

रात को महबूब की तलाश

2 मैं सो रही थी, लेकिन मेरा दिल बेदार रहा। सुन! मेरा महबूब दस्तक दे रहा है,

“ऐ मेरी बहन, मेरी साथी, मेरे लिए दरवाज़ा खोल दे! ऐ मेरी कबूतरी, मेरी कामिल साथी, मेरा सर ओस से तर हो गया है, मेरी जुल्फें रात की शबनम से भीगी गई हैं।”

3 “मैं अपना लिबास उतार चुकी हूँ, अब मैं किस तरह उसे दुबारा पहन लूँ? मैं अपने पाँव धो चुकी हूँ, अब मैं उन्हें किस तरह दुबारा मैला करूँ?”

4 मेरे महबूब ने अपना हाथ दीवार के सूराख में से अंदर डाल दिया। तब मेरा दिल तड़प उठा।

5 मैं उठी ताकि अपने महबूब के लिए दरवाज़ा खोलूँ। मेरे हाथ मुर से, मेरी उँगलियाँ मुर की खुशबू से टपक रही थीं जब मैं कुंडी खोलने आई।

6 मैंने अपने महबूब के लिए दरवाज़ा खोल दिया, लेकिन वह मुड़कर चला गया था। मुझे सख्त सदमा हुआ। मैंने उसे तलाश किया लेकिन न मिला। मैंने उसे आवाज़ दी, लेकिन जवाब न मिला।

7 जो चौकीदार शहर में गश्त करते हैं उनसे मेरा वास्ता पड़ा, उन्होंने मेरी पिटाई करके मुझे ज़खमी कर दिया। फ़सील के चौकीदारों ने मेरी चादर भी छीन ली।

8 ऐ यरूशलम की बेटियो, कसम खाओ कि अगर मेरा महबूब मिला तो उसे इतला दोगी, मैं मुहब्बत के मारे बीमार हो गई हूँ।

9 तू जो औरतों में सबसे हसीन है, हमें बता, तेरे महबूब की क्या खासियत है जो दूसरों में नहीं है? तेरा महबूब दूसरों से किस तरह सबक़त रखता है कि तू हमें ऐसी कसम खिलाना चाहती है?

10 मेरे महबूब की जिल्द गुलाबी और सफ़ेद है। हज़ारों के साथ उसका मुकाबला करो तो उसका आला किरदार नुमायाँ तौर पर नज़र आएगा।

11 उसका सर खालिस सोने का है, उसके बाल खज़ूर के फूलदार गुच्छों * की मानिंद और कौवे की तरह स्याह हैं।

12 उस की आँखें नदियों के किनारे के कबूतरों की मानिंद हैं, जो दूध में नहलाए और कसरत के पानी के पास बैठे हैं।

13 उसके गाल बलसान की क्यारी की मानिंद, उसके होंट मुर से टपकते सोसन के फूलों जैसे हैं।

14 उसके बाजू सोने की सलाखें हैं जिनमें पुखराज † जड़े हुए हैं, उसका जिस्म हाथीदाँत का शाहकार है जिसमें संगे-लाजवर्द ‡ के पत्थर लगे हैं।

15 उस की रानें मरमर के सतून हैं जो खालिस सोने के पाइयों पर लगे हैं। उसका हुलिया लुबनान और देवदार के दरख्तों जैसा उमदा है।

16 उसका मुँह मिठास ही है, गरज़ वह हर लिहाज़ से पसंदीदा है।

ऐ यरूशलम की बेटियो, यह है मेरा महबूब, मेरा दोस्त।

6

1 ऐ तू जो औरतों में सबसे खूबसूरत है, तेरा महबूब किधर चला गया है? उसने कौन-सी सिम्ट इख्तियार की ताकि हम तेरे साथ उसका खोज लगाएँ?

2 मेरा महबूब यहाँ से उतरकर अपने बाग में चला गया है, वह बलसान की क्यारियों के पास गया है ताकि बागों में चरे और सोसन के फूल चुने।

3 मैं अपने महबूब की ही हूँ, और वह मेरा ही है, वह जो सोसनों में चरता है।

तू कितनी खूबसूरत है

4 मेरी महबूबा, तू तिरज़ा शहर जैसी हसीन, यरूशलम जैसी खूबसूरत और अलमबरदार दस्तों जैसी रोबदार है।

5 अपनी नज़रों को मुझसे हटा ले, क्योंकि वह मुझमें उलझन पैदा कर रही है।

तेरे बाल उन बकरियों की मानिंद हैं जो उछलती-कूदती कोहे-जिलियाद से उतरती हैं।

6 तेरे दाँत अभी अभी नहलाई हुई भेड़ों जैसे सफ़ेद हैं। हर दाँत का जुड़वाँ है, एक भी गुम नहीं हुआ।

7 निकाब के पीछे तेरे गालों की झलक अनार के टुकड़ों की मानिंद दिखाई देती है।

8 गो बादशाह की 60 बीवियाँ, 80 दाश्ताएँ और बेशुमार कुँवारियाँ हों 9 लेकिन मेरी कबूतरी, मेरी कामिल साथी लासानी है। वह अपनी माँ की वाहिद बेटी है, जिसने उसे जन्म दिया उस की पाक लाडली है। बेटियों ने उसे देखकर उसे मुबारक कहा, रानियों और दाश्ताओं ने उस की तारीफ की,

* 5:11 इब्रानी लफ्ज़ का मतलब मुहम-सा है। † 5:14 topas ‡ 5:14 lapis lazuli

10 “यह कौन है जो तुलूए-सुबह की तरह चमक उठी, जो चाँद जैसी खूबसूरत, आफताब जैसी पाक और अलमबरदार दस्तों जैसी रोबदार है?”

महबूबा के लिए आरजू

11 मैं अखरोट के बाग में उतर आया ताकि वादी में फूटनेवाले पौदों का मुआयना करूँ। मैं यह भी मालूम करना चाहता था कि क्या अंगूर की कोपलें निकल आई या अनार के फूल लग गए हैं।

12 लेकिन चलते चलते न जाने क्या हुआ, मेरी आरजू ने मुझे मेरी शरीफ़ कौम के रथों के पास पहुँचाया।

महबूबा की दिलकशी

13 ऐ शूलम्मीत, लौट आ, लौट आ! मुड़कर लौट आ ताकि हम तुझ पर नज़र करें।

तुम शूलम्मीत को क्यों देखना चाहती हो? हम लशकरगाह का लोकनाच देखना चाहती हैं!

7

1 ऐ रईस की बेटी, जूतों में चलने का तेरा अंदाज़ कितना मनमोहन है! तेरी खुशबूज़ा रानें माहिर कारीगर के ज़ेवरात की मानिंद हैं।

2 तेरी नाफ़ प्याला है जो मैं से कभी नहीं महसूस रहती। तेरा जिस्म गंदुम का ढेर है जिसका इहाता सोसन के फूलों से किया गया है।

3 तेरी छातियाँ गज़ाल के जुड़वाँ बच्चों की मानिंद हैं।

4 तेरी गरदन हाथीदाँत का मीनार, तेरी आँखें हसबोन शहर के तालाब हैं, वह जो बत-रब्बीम के दरवाज़े के पास हैं। तेरी नाक मीनारे-लुबनान की मानिंद है जिसका मुँह दमिश्क की तरफ़ है।

5 तेरा सर कोहे-करमिल की मानिंद है, तेरे खुले बाल अरगवान की तरह कीमती और दिलकश हैं। बादशाह तेरी जुल्फों की जंजीरों में जकड़ा रहता है।

महबूबा के लिए आरजू

6 ऐ खुशियों से लबरेज़ मुहब्बत, तू कितनी हसीन है, कितनी दिलस्बा!

7 तेरा कदो-कामत खज़ूर के दरख्त सा, तेरी छातियाँ अंगूर के गुच्छों जैसी हैं।

8 मैं बोला, “मैं खज़ूर के दरख्त पर चढ़कर उसके फूलदार गुच्छों * पर हाथ लगाऊँगा।” तेरी छातियाँ अंगूर के गुच्छों की मानिंद हों, तेरे साँस की खुशबू सेबों की खुशबू जैसी हो।

9 तेरा मुँह बेहतरीन मैं हो, ऐसी मैं जो सीधी मेरे महबूब के मुँह में जाकर नरमी से होंटों और दाँतों में से गुज़र जाए।

महबूब के लिए आरजू

10 मैं अपने महबूब की ही हूँ, और वह मुझे चाहता है।

11 आ, मेरे महबूब, हम शहर से निकलकर देहात में रात गुज़ारें।

12 आ, हम सुबह-सवेरे अंगूर के बागों में जाकर मालूम करें कि क्या बेलों से कोपलें निकल आई हैं और फूल लगे हैं, कि क्या अनार के दरख्त खिल रहे हैं। वहाँ मैं तुझ पर अपनी मुहब्बत का इज़हार करूँगी।

13 मर्दुमगयाह † की खुशबू फैल रही, और हमारे दरवाज़े पर हर किस्म का लज़ीज़ फल है, नई फसल का भी और गुज़री का भी। क्योंकि मैंने यह चीज़ें तेरे लिए, अपने महबूब के लिए महफूज़ रखी हैं।

8

काश हम अकेले हों

1 काश तू मेरा सगा भाई * होता, तब अगर बाहर तुझसे मुलाकात होती तो मैं तुझे बोसा देती और कोई न होता जो यह देखकर मुझे हकीर जानता।

2 मैं तेरी राहनुमाई करके तुझे अपनी माँ के घर में ले जाती, उसके घर में जिसने मुझे तालीम दी। वहाँ मैं तुझे मसालेदार मैं और अपने अनारों का रस पिलाती।

3 उसका बायाँ बाजू मेरे सर के नीचे होता और दायाँ बाजू मुझे गले लगाता है।

4 ऐ यरूशलम की बेटीयो, कसम खाओ कि जब तक मुहब्बत खुद न चाहे तुम उसे न जगाओगी, न बेदार करोगी।

महबूब की आखिरी बात

* 7:8 इब्रानी लफ़्ज़ का मतलब मुहबम-सा है। † 7:13 एक पौदा जिसके बारे में सोचा जाता था कि उसे खाकर बाँझ औरत भी बच्चे को जन्म देगी।

* 8:1 लफ़्ज़ी तरज़ुमा

: मेरा भाई होता, जिसे मेरी माँ ने दूध पिलाया होता।

5 यह कौन है जो अपने महबूब का सहारा लेकर रेगिस्तान से चढ़ी आ रही है?

सेब के दरख्त तले मैंने तुझे जगा दिया, वहाँ जहाँ तेरी माँ ने तुझे जन्म दिया, जहाँ उसने दर्द-ज़ह में मुब्तला होकर तुझे पैदा किया।

6 मुझे मुहर की तरह अपने दिल पर, अपने बाजू पर लगाए रख! क्योंकि मुहब्बत मौत जैसी ताक़तवर, और उस की सरगर्मी पाताल जैसी बे-लचक है। वह दहकती आग, रब का भड़कता शोला है।

7 पानी का बड़ा सैलाब भी मुहब्बत को बुझा नहीं सकता, बड़े दरिया भी उसे बहाकर ले जा नहीं सकते। और अगर कोई मुहब्बत को पाने के लिए अपने घर की तमाम दौलत पेश भी करे तो भी उसे जवाब में हकीर ही जाना जाएगा।

महबूबा की आखिरी बात

8 हमारी छोटी बहन की छातियाँ नहीं हैं। हम अपनी बहन के लिए क्या करें अगर कोई उससे रिश्ता बाँधने आए?

9 अगर वह दीवार हो तो हम उस पर चाँदी का क़िलाबंद इंतज़ाम बनाएँगे। अगर वह दरवाज़ा हो तो हम उसे देवदार के तख़्ते से महफूज़ रखेंगे।

10 मैं दीवार हूँ, और मेरी छातियाँ मज़बूत मीनार हैं। अब मैं उस की नज़र में ऐसी ख़ातून बन गई हूँ जिसे सलामती हासिल हुई है।

सुलेमान से ज़्यादा दौलतमंद

11 बाल-हामून में सुलेमान का अंगूर का बाग़ था। इस बाग़ को उसने पहरेदारों के हवाले कर दिया। हर एक को उस की फ़सल के लिए चाँदी के हज़ार सिक्के देने थे।

12 लेकिन मेरा अपना अंगूर का बाग़ मेरे सामने ही मौजूद है। ऐ सुलेमान, चाँदी के हज़ार सिक्के तेरे लिए हैं, और 200 सिक्के उनके लिए जो उस की फ़सल की पहरादारी करते हैं।

मुझे ही पुकार

13 ऐ बाग़ में बसनेवाली, मेरे साथी तेरी आवाज़ पर तवज्जुह दे रहे हैं। मुझे ही अपनी आवाज़ सुनने दे।

14 ऐ मेरे महबूब, ग़ज़ाल या जवान हिरन की तरह बलसान के पहाड़ों की जानिब भाग जा!।

यसायाह

1 जेल में वह रोयाँ दर्ज हैं जो यसायाह बिन आमूस ने यहदाह और यस्शलम के बारे में देखीं और जो उन सालों में मुंक्षिफ हुई जब उज्जियाह, यूताम, आखज़ और हिज़कियाह यहदाह के बादशाह थे।

इसराईली अपने आका को जानने से इनकार करते हैं

2 ऐ आसमान, मेरी बात सुन! ऐ ज़मीन, मेरे अलफ़ाज़ पर कान धर! क्योंकि रब ने फ़रमाया है,

“जिन बच्चों की परवरिश मैंने की है और जो मेरे ज़ेरे-निगरानी परवान चढ़े हैं, उन्होंने मुझसे रिश्ता तोड़ लिया है। 3 बैल अपने मालिक को जानता और गधा अपने आका की चरनी को पहचानता है, लेकिन इसराईल इतना नहीं जानता, मेरी क्रौम समझ से खाली है।”

4 ऐ गुनाहगार क्रौम, तुझ पर अफ़सोस! ऐ संगीन कुसूर में फँसी हुई उम्मत, तुझ पर अफ़सोस! शरीर नसल, बदचलन बच्चे! उन्होंने रब को तर्क कर दिया है। हाँ, उन्होंने इसराईल के कुदूस को हक़ीर जानकर रद्द किया, अपना मुँह उससे फेर लिया है। 5 अब तुम्हें मज़ीद कहाँ पीटा जाए? तुम्हारी ज़िद तो मज़ीद बढ़ती जा रही है गो पूरा सर ज़ख़मी और पूरा दिल बीमार है। 6 चाँद से लेकर तल्वे तक पूरा जिस्म मजसूह है, हर जगह चोटें, घाव और ताज़ा ताज़ा ज़रबें लगी हैं। और न उन्हें साफ़ किया गया, न उनकी मरहम-पट्टी की गई है।

7 तुम्हारा मुल्क वीरानो-सुनसान हो गया है, तुम्हारे शहर भस्म हो गए हैं। तुम्हारे देखते देखते परदेसी तुम्हारे खेतों को लूट रहे हैं, उन्हें यों उजाड़ रहे हैं जिस तरह परदेसी ही कर सकते हैं। 8 सिर्फ़ यस्शलम ही बाकी रह गया है, सिय्यून बेटी अंगूर के बाग में झोंपड़ी की तरह अकेली रह गई है। अब दुश्मन से घिरा हुआ यह शहर ख़ीरे के खेत में लगे छप्पर की मानिंद है। 9 अगर रब्बुल-अफ़वाज़ हममें से चंद एक को ज़िंदा न छोड़ता तो हम सदूम की तरह मिट जाते, हमारा अमूरा की तरह सत्यानास हो जाता।

10 ऐ सदूम के सरदारो, रब का फ़रमान सुन लो! ऐ अमूरा के लोगो, हमारे ख़ुदा की हिदायत पर ध्यान दो! 11 रब फ़रमाता है, “अगर तुम बेशुमार कुरबानियाँ पेश करो तो मुझे क्या? मैं तो भस्म होनेवाले मेंढों और मोटे-ताज़े बछड़ों की चरबी से उकता गया हूँ। बैलों, लेलों और बक़रों का जो खून मुझे पेश किया जाता है वह मुझे पसंद नहीं। 12 किसने तुमसे तकाज़ा किया कि मेरे हज़ूर आते वक़्त मेरी बारगाहों को पाँवों तले रौंदो? 13 स्क जाओ! अपनी बेमानी कुरबानियाँ मत पेश करो! तुम्हारे बख़ूर से मुझे घिन आती है। नए चाँद की ईद और सबत का दिन मत मनाओ, लोगों को इबादत के लिए जमा न करो! मैं तुम्हारे बेदीन इजतिमा बरदाश्त ही नहीं कर सकता। 14 जब तुम नए चाँद की ईद और बाक़ी तकरीबात मनाते हो तो मेरे दिल में नफ़रत पैदा होती है। यह मेरे लिए भारी बोझ बन गई है जिनसे मैं तंग आ गया हूँ।

15 बेशक अपने हाथों को दुआ के लिए उठाते जाओ, मैं ध्यान नहीं दूँगा। गो तुम बहुत ज़्यादा नमाज़ भी पढ़ो, मैं तुम्हारी नहीं सुनूँगा, क्योंकि तुम्हारे हाथ खूनआलूदा हैं। 16 पहले नहाकर अपने आपको पाक-साफ़ करो। अपनी शरीर हरकतों से बाज़ आओ ताकि वह मुझे नज़र न आएँ। अपनी ग़लत राहों को छोड़कर 17 नेक काम करना सीख लो। इनसाफ़ के तालिब रहो, मज़लूमों का सहारा बनो, यतीमों का इनसाफ़ करो और बेवाओं के हक़ में लड़ो!”

अल्लाह अपनी क्रौम की अदालत करता है

18 रब फ़रमाता है, “आओ हम अदालत में जाकर एक दूसरे से मुकदमा लड़ें। अगर तुम्हारे गुनाहों का रंग किरमिज़ी हो जाए तो क्या वह दुबारा बर्फ़ जैसे उजले हो जाएंगे? अगर उनका रंग अरग़वानी हो जाए तो क्या वह दुबारा ऊन जैसे सफ़ेद हो जाएंगे? 19 अगर तुम सुनने के लिए तैयार हो तो मुल्क की बेहतरीन पैदावार से लुफ़अंदोज़ होगे। 20 लेकिन अगर इनकार करके सरकश हो जाओ तो तलवार की ज़द में आकर मर जाओगे। इस बात का यकीन करो, क्योंकि रब ने यह कुछ फ़रमाया है।”

21 यह कैसे हो गया है कि जो शहर पहले इतना वफ़ादार था वह अब कसबी बन गया है? पहले यस्शलम इनसाफ़ से मामूर था, और रास्ती उसमें सुकूनत करती थी। लेकिन अब हर तरफ़ कातिल ही कातिल हैं! 22 ऐ यस्शलम, तेरी ख़ालिस चाँदी ख़ाम चाँदी में बदल गई है, तेरी बेहतरीन मैं में पानी मिलाया गया है। 23 तेरे बुजुर्ग हटधर्म और चोरों के यार हैं। यह रिश्वतखोर सब लोगों के पीछे पड़े रहते हैं ताकि चाय-पानी मिल जाए। न वह परवा करते हैं कि यतीमों को इनसाफ़ मिले, न बेवाओं की फ़रियाद उन तक पहुँचती है।

24 इसलिए कादिरे-मुतलक रब्बुल-अफ़वाज़ जो इसराईल का ज़बरदस्त सूरमा है फ़रमाता है, “आओ, मैं अपने मुखालिफ़ों और दुश्मनों से इंतक़ाम लेकर सुकून पाऊँ। 25 मैं तेरे खिलाफ़ हाथ उठाऊँगा और ख़ाम चाँदी की तरह तुझे पोटाश के साथ पिघलाकर तमाम मैल से पाक-साफ़ कर दूँगा। 26 मैं तुझे दुबारा क़दीम ज़माने के-से काज़ी और इन्तिदा के-से मुशीर अता करूँगा। फिर यस्शलम दुबारा दास्त-इनसाफ़ और वफ़ादार शहर कहलाएगा।”

27 अल्लाह सिय्यून की अदालत करके उसका फ़िघा देगा, जो उसमें तौबा करेंगे उनका वह इनसाफ़ करके उन्हें छुड़ाएगा। 28 लेकिन बागी और गुनाहगार सबके सब पाश पाश हो जाएंगे, रब को तर्क करनेवाले हलाक हो जाएंगे।

29 बलूत के जिन दरख़्तों की पूजा से तुम लुफ़अंदोज़ होते हो उनके बाइस तुम शर्मसार होगे, और जिन बाग़ों को तुमने अपनी बुतपरस्ती के लिए चुन लिया है उनके बाइस तुम्हें शर्म आएगी। 30 तुम उस बलूत के दरख़्त की मानिंद होगे जिसके पत्ते मुरझा गए हों, तुम्हारी हालत उस

बाग की-सी होगी जिसमें पानी नायाब हो। ³¹ ज़बरदस्त आदमी फूस और उस की गलत हरकतें चिंगारी जैसी होंगी। दोनों मिलकर यों भड़क उठेंगे कि कोई भी बुझा नहीं सकेगा।

2

यरूशलम अबदी अमनो-अमान का मरकज होगा

¹ यसायाह बिन आमूस ने यहदाह और यरूशलम के बारे में जेल की रोया देखी,

² आखिरी ऐयाम में रब के घर का पहाड़ मज़बूती से कायम होगा। सबसे बड़ा यह पहाड़ दीगर तमाम बुलंदियों से कहीं ज़्यादा सरफ़राज़ होगा। तब तमाम क्रौमों जौक-दर-जौक उसके पास पहुँचेंगी, ³ और बेशुमार उम्मतें आकर कहेंगी, “आओ, हम रब के पहाड़ पर चढ़कर याकूब के खुदा के घर के पास जाएँ ताकि वह हमें अपनी मरज़ी की तालीम दे और हम उस की राहों पर चलें।”

क्योंकि सिय्यून पहाड़ से रब की हिदायत निकलेगी, और यरूशलम से उसका कलाम सादिर होगा। ⁴ रब बैनुल-अक़वामी झगड़ों को निपटाएगा और बेशुमार क्रौमों का इनसाफ़ करेगा। तब वह अपनी तलवारों को कूटकर फाले बनाएँगी और अपने नेज़ों को काँट-छाँट के औज़ार में तबदील करेंगी। अब से न एक क्रौम दूसरी पर हमला करेगी, न लोग जंग करने की तरबियत हासिल करेंगे।

⁵ ऐ याकूब के घराने, आओ हम रब के नूर में चलें!

अल्लाह की हैबतनाक अदालत

⁶ ऐ अल्लाह, तूने अपनी क्रौम, याकूब के घराने को तर्क कर दिया है। और क्या अजब! क्योंकि वह मशरिकी जादूगरी से भर गए हैं। फ़िलिस्तिनियों की तरह हमारे लोग भी किस्मत का हाल पूछते हैं, वह परदेसियों के साथ बग़लगीर रहते हैं। ⁷ इसराईल सोने-चाँदी से भर गया है, उसके खज़ानों की हद ही नहीं रही। हर तरफ़ घोड़े ही घोड़े नज़र आते हैं, और उनके रथ गिने नहीं जा सकते। ⁸ लेकिन साथ साथ उनका मुल्क बुतों से भी भर गया है। जो चीज़ें उनके हाथों ने बनाई उनके सामने वह झुक जाते हैं, जो कुछ उनकी उँगलियों ने तश्कील दिया उसे वह सिजदा करते हैं। ⁹ चुनौचे अब उन्हें खुद झुकाया जाएगा, उन्हें पस्त किया जाएगा। ऐ रब, उन्हें मुआफ़ न कर!

¹⁰ चटानों में घुस जाओ! खाक में छुप जाओ! क्योंकि रब का दहशतअंगेज़ और शानदार जलाल आने को है। ¹¹ तब इनसान की मग़स्स आँखों को नीचा किया जाएगा, मर्दों का तकब्बुर खाक में मिलाया जाएगा। उस दिन सिर्फ़ रब ही सरफ़राज़ होगा। ¹² क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज़ ने एक खास दिन ठहराया है जिसमें सब कुछ जो मग़स्स, बुलंद या सरफ़राज़ हो ज़ेर किया जाएगा। ¹³ लुबनान में देवदार के तमाम बुलंदो-बाला दरख़्त, बसन के कुल बलूत, ¹⁴ तमाम आली पहाड़ और ऊँची पहाड़ियाँ, ¹⁵ हर अज़ीम बुर्ज और क़िलाबंद दीवार, ¹⁶ समुंदर का हर अज़ीम तिज़ारती और शानदार जहाज़ ज़ेर हो जाएगा। ¹⁷ चुनौचे इनसान का गुस्स खाक में मिलाया जाएगा और मर्दों का तकब्बुर नीचा कर दिया जाएगा। उस दिन सिर्फ़ रब ही सरफ़राज़ होगा, ¹⁸ और बुत सबके सब फ़ना हो जाएंगे।

¹⁹ जब रब ज़मीन को दहशतज़दा करने के लिए उठ खड़ा होगा तो लोग मिट्टी के गढ़ों में खिसक जाएंगे। रब की महीब और शानदार तजल्ली को देखकर वह चटानों के गारों में छुप जाएंगे। ²⁰ उस दिन इनसान सोने-चाँदी के उन बुतों को फेंक देगा जिन्हें उसने सिजदा करने के लिए बना लिया था। उन्हें चूहों और चमगादड़ों के आगे फेंककर ²¹ वह चटानों के शिगाफ़ों और दराइों में घुस जाएंगे ताकि रब की महीब और शानदार तजल्ली से बच जाएँ जब वह ज़मीन को दहशतज़दा करने के लिए उठ खड़ा होगा। ²² चुनौचे इनसान पर एतमाद करने से बाज़ आओ जिसकी ज़िंदगी दम-भर की है। उस की क़दर ही क्या है?

3

यहदाह की तबाही

¹ कादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज़ यरूशलम और यहदाह से सब कुछ छीनने को है जिस पर लोग इनहिसार करते हैं। रोटी का हर लुक़मा और पानी का हर कतरा, ² सूरमे और फ़ौजी, काज़ी और नबी, किस्मत का हाल बतानेवाले और बुज़ुर्ग, ³ फ़ौजी अफ़सर और असरो-रसूखवाले, मुशीर, जादूगर और मंत्र फूँकनेवाले, सबके सब छीन लिए जाएंगे। ⁴ मैं लड़के उन पर मुकर्रर करूँगा, और मुतलब्विनमिज़ाज़ ज़ालिम उन पर हुकूमत करेंगे। ⁵ अवाम एक दूसरे पर जुल्म करेंगे, और हर एक अपने पड़ोसी को दबाएगा। नौजवान बुज़ुर्गों पर और कमीने, इज़्ज़तदारों पर हमला करेंगे।

⁶ तब कोई अपने बाप के घर में अपने भाई को पकड़कर उससे कहेगा, “तेरे पास अब तक चादर है, इसलिए आ, हमारा सरबराह बन जा! खंडरात के इस ढेर को सँभालने की ज़िम्मादारी उठा ले!”

⁷ लेकिन वह चीखकर इनकार करेगा, “नहीं, मैं तुम्हारा मुआलजा कर ही नहीं सकता! मेरे घर में न रोटी है, न चादर। मुझे अवाम का सरबराह मत बनाना!”

⁸ यरूशलम डगमगा रहा है, यहदाह धड़ाम से गिर गया है। और वजह यह है कि वह अपनी बातों और हरकतों से रब की मुखालफ़त करते हैं। उसके जलाली हुज़ूर ही में वह सरकशी का इज़हार करते हैं। ⁹ उनकी जानिबदारी उनके खिलाफ़ गवाही देती है। और वह सदूम के बाशिंदों

की तरह अलानिया अपने गुनाहों पर फ़ख़र करते हैं, वह उन्हें छुपाने की कोशिश ही नहीं करते। उन पर अफ़सोस! वह तो अपने आपको मुसीबत में डाल रहे हैं।

10 रास्तबाज़ों को मुबारकबाद दो, क्योंकि वह अपने आमाल के अच्छे फल से लुफ़्फ़ांदोज़ होंगे। 11 लेकिन बेदीनों पर अफ़सोस! उनका अंजाम बुरा होगा, क्योंकि उन्हें ग़लत काम की मुनासिब सज़ा मिलेगी।

12 हाय, मेरी क़ौम! मुतलव्विनमिज़ाज तुझ पर जुल्म करते और औरतें तुझ पर हुकूमत करती हैं।

ऐ मेरी क़ौम, तेरे राहनुमा तुझे गुमराह कर रहे हैं, वह तुझे उलझाकर सहीह राह से भटका रहे हैं।

रब अपनी क़ौम की अदालत करता है

13 रब अदालत में मुकदमा लड़ने के लिए खड़ा हुआ है, वह क़ौमों की अदालत करने के लिए उठा है। 14 रब अपनी क़ौम के बुज़ुर्गों और रईसों का फैसला करने के लिए सामने आकर फरमाता है, “तुम ही अंगूर के बाग में चरते हुए सब कुछ खा गए हो, तुम्हारे घर ज़रूरतमंदों के लूटे हुए माल से भरे पड़े हैं। 15 यह तुमने कैसी गुस्ताख़ी कर दिखाई? यह मेरी ही क़ौम है जिसे तुम कुचल रहे हो। तुम मुसीबतज़दों के चेहरों को चक्की में पीस रहे हो।” कादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज यों फरमाता है।

यरूशलम की ख़वातीन की अदालत

16 रब ने फ़रमाया, “सिय्यून की बेटियाँ कितनी मगरूर हैं। जब आँख मार मारकर चलती हैं तो अपनी गरदनो को कितनी शोख़ी से इधर उधर घुमाती हैं। और जब मटक मटककर कदम उठाती हैं तो पाँवों पर बँधे हुए घुंघरू बोलते हैं टन टन, टन टन।”

17 जवाब में रब उनके सरों पर फोड़े पैदा करके उनके माथों को गंजा होने देगा। 18 उस दिन रब उनका तमाम सिंगार उतार देगा : उनके घुंघरू, सूरज और चाँद के ज़ेवरात, 19 आवेज़े, कड़े, दोपट्टे, 20 सजीली टोपियाँ, पायल, खुशबू की बोतलें, तावीज़, 21 अंगूठियाँ, नथ, 22 शानदार कपड़े, चादरें, बटवे, 23 आईने, नफ़ीस लिबास, सरबंद और शाल। 24 खुशबू की बजाए बदबू होगी, कमरबंद के बजाए रस्सी, सुलझे हुए बालों के बजाए गंजापन, शानदार लिबास के बजाए टाट, ख़ूबसूरती की बजाए शरमिंदगी।

25 हाय, यरूशलम! तेरे मर्द तलवार की ज़द में आकर मरेगे, तेरे सूरमे लड़ते लड़ते शहीद हो जाएंगे। 26 शहर के दरवाज़े आहें भर भरकर मातम करेंगे, सिय्यून बेटी तनहा रहकर खाक में बैठ जाएगी।

4

1 तब सात औरतें एक ही मर्द से लिपटकर कहेंगी, “हमसे शादी करें! बेशक हम खुद ही रोज़मर्रा की ज़रूरियात पूरी करेंगी, खाह खाना हो या कपड़ा। लेकिन हम आपके नाम से कहलाएँ ताकि हमारी शरमिंदगी दूर हो जाए।”

यरूशलम की बहाली

2 उस दिन जो कुछ रब फूटने देगा वह शानदार और जलाली होगा, मुल्क की पैदावार बचे हुए इसराईलियों के लिए फ़ख़र और आबो-ताब का बाइस होगी। 3 तब जो भी सिय्यून में बाकी रह गए होंगे वह मुक़द्दस कहलाएँगे। यरूशलम के जिन बाशिनदों के नाम ज़िंदों की फ़हरिस्त में दर्ज किए गए हैं वह बचकर मुक़द्दस कहलाएँगे। 4 रब सिय्यून की फुज़्ज़ला से लतपत बेटियों को धोकर पाक-साफ़ करेगा, वह अदालत और तबाही की रूह से यरूशलम की ख़ूबेज़ी के धब्बे दूर कर देगा। 5 फिर रब होने देगा कि दिन को बादल सिय्यून के पूरे पहाड़ और उस पर जमा होनेवालों पर साया डाले जबकि रात को धुआँ और दहकती आग की चमक-दमक उस पर छाई रहे। यों उस पूरे शानदार इलाक़े पर सायबान होगा 6 जो उसे झुलसती धूप से महफूज़ रखेगा और तूफ़ान और बारिश से पनाह देगा।

5

बेफल अंगूर का बाग

1 आओ, मैं अपने महबूब के लिए गीत गाऊँ, एक गीत जो उसके अंगूर के बाग के बारे में है।

मेरे प्यारे का बाग था। अंगूर का यह बाग ज़रखेज़ पहाड़ी पर था। 2 उसने गोडी करते करते उसमें से तमाम पत्थर निकाल दिए, फिर बेहतरीन अंगूर की कलमें लगाई। बीच में उसने मीनार खड़ा किया ताकि उस की सहीह चौकीदारी कर सके। साथ साथ उसने अंगूर का रस निकालने के लिए पत्थर में हौज़ तराश लिया। फिर वह पहली फ़सल का इंतज़ार करने लगा। बड़ी उम्मीद थी कि अच्छे मीठे अंगूर मिलेंगे। लेकिन अफ़सोस! जब फ़सल पक गई तो छोटे और खट्टे अंगूर ही निकले थे।

3 “ऐ यरूशलम और यहदाह के बाशिनदो, अब खुद फैसला करो कि मैं उस बाग के साथ क्या करूँ। 4 क्या मैंने बाग के लिए हर मुमकिन कोशिश नहीं की थी? क्या मुनासिब नहीं था कि मैं अच्छी फ़सल की उम्मीद रखूँ? क्या वजह है कि सिर्फ़ छोटे और खट्टे अंगूर निकले?”

5 पता है कि मैं अपने बाग के साथ क्या करूँगा? मैं उस की काँटेदार बाड़ को ख़त्म करूँगा और उस की चारदीवारी गिरा दूँगा। उसमें जानवर घुस आएँगे और चरकर सब कुछ तबाह करेंगे, सब कुछ पाँवों तले रौंद डालेंगे!

6 मैं उस की ज़मीन बंजर बना दूँगा। न उस की बेलों की काँट-छाँट होगी, न गोडी की जाएगी। वहाँ काँटेदार और ख़ुदरौ पौदे उगेंगे। न सिर्फ़ यह बल्कि मैं बादलों को भी उस पर बरसने से रोक दूँगा।”

7 सुनो, इसराईली क्रौम अंगूर का बाग है जिसका मालिक रब्बुल-अफवाज है। यहदाह के लोग उसके लगाए हुए पौदे हैं जिनसे वह लुफ्फांदोज होना चाहता है। वह उम्मीद रखता था कि इसाफ की फसल पैदा होगी, लेकिन अफसोस! उन्होंने गैरकानूनी हरकतें कीं। रास्ती की तबक्को थी, लेकिन मजलूमों की चीखें ही सुनाई दीं।

लोगों की गैरकानूनी हरकतें

8 तुम पर अफसोस जो यके बाद दीगरे घरों और खेतों को अपनाते जा रहे हो। आखिरकार दीगर तमाम लोगों को निकलना पड़ेगा और तुम मुल्क में अकेले ही रहोगे। 9 रब्बुल-अफवाज ने मेरी मौजूदगी में ही क्रसम खाई है, “यक्रीनन यह मुतअदिद मकान वीरानो-सुनसान हो जाएंगे, इन बड़े और आलीशान घरों में कोई नहीं बसेगा। 10 दस एकड़ * जमीन के अंगूरों से मैं के सिर्फ 22 लिटर बनेंगे, और बीज के 160 किलोग्राम से गल्ला के सिर्फ 16 किलोग्राम पैदा होंगे।”

11 तुम पर अफसोस जो सुबह-सवेरे उठकर शराब के पीछे पड़ जाते और रात-भर मैं पी पीकर मस्त हो जाते हो। 12 तुम्हारी ज़ियाफतों में कितनी रौनक होती है! तुम्हारे मेहमान मैं पी पीकर सरोद, सितार, दफ और बाँसरी की सुरीली आवाजों से अपना दिल बहलाते हैं। लेकिन अफसोस, तुम्हें खयाल तक नहीं आता कि रब क्या कर रहा है। जो कुछ रब के हाथों हो रहा है उसका तुम लिहाज़ ही नहीं करते। 13 इसी लिए मेरी क्रौम जिलावतन हो जाएगी, क्योंकि वह समझ से खाली है। उसके बड़े अफसर भूके मरेंगे, और अवाम प्यास के मारे सूख जाएंगे। 14 पाताल ने अपना मुँह फाड़कर खोला है ताकि क्रौम की तमाम शानो-शौकत, शोर-शराबा, हंगामा और शादमान अफराद उसके गले में उतर जाएँ। 15 इनसान को पस्त करके खाक में मिलाया जाएगा, और मगरूर की आँखें नीची हो जाएँगी।

16 लेकिन रब्बुल-अफवाज की अदालत उस की अज़मत दिखाएगी, और कुदूस खुदा की रास्ती ज़ाहिर करेगी कि वह कुदूस है। 17 उन दिनों में लेले और मोटी-ताज़ी भेड़ें जिलावतनों के खंडरात में यों चरेंगी जिस तरह अपनी चरागाहों में।

18 तुम पर अफसोस जो अपने कुसूर को धोकेबाज़ रस्सों के साथ अपने पीछे खींचते और अपने गुनाह को बैलगाड़ी की तरह अपने पीछे घसीटते हो। 19 तुम कहते हो, “अल्लाह जल्दी जल्दी अपना काम निपटाए ताकि हम इसका मुआयना करें। जो मनसूबा इसराईल का कुदूस रखता है वह जल्दी सामने आए ताकि हम उसे जान लें।”

20 तुम पर अफसोस जो बुराई को भुला और भलाई को बुरा करार देते हो, जो कहते हो कि तारीकी रौशनी और रौशनी तारीकी है, कि कड़वाहट मीठी और मिठास कड़वी है।

21 तुम पर अफसोस जो अपनी नज़र में दानिशमंद हो और अपने आपको होशियार समझते हो।

22 तुम पर अफसोस जो मैं पीने में पहलवान हो और शराब मिलाने में अपनी बहादुरी दिखाते हो।

23 तुम रिश्त ख़ाकर मुजरिमों को बरी करते और बेकुसूरों के हुक्म मारते हो। 24 अब तुम्हें इसकी सज़ा भुगतनी पड़ेगी। जिस तरह भूसा आग की लपेट में आकर राख हो जाता और सूखी घास आग के शोले में चुरमुर हो जाती है उसी तरह तुम खत्म हो जाओगे। तुम्हारी जड़ें सड़ जाएँगी और तुम्हारे फूल गर्द की तरह उड़ जाएंगे, क्योंकि तुमने रब्बुल-अफवाज की शरीअत को रद्द किया है, तुमने इसराईल के कुदूस का फ़रमान हकीर जाना है।

असूरी फ़ौज का हमला

25 यही वजह है कि रब का ग़ज़ब उस की क्रौम पर नाज़िल हुआ है, कि उसने अपना हाथ बढ़ाकर उन पर हमला किया है। पहाड़ लरज़ रहे और गलियों में लाशें कचरे की तरह बिखरी हुई हैं। ताहम उसका गुस्सा ठंडा नहीं होगा बल्कि उसका हाथ मारने के लिए उठा ही रहेगा।

26 वह एक दूर-दराज़ क्रौम के लिए फ़ौजी झंडा गाड़कर उसे अपनी क्रौम के खिलाफ़ खड़ा करेगा, वह सीटी बजाकर उसे दुनिया की इतहा से बुलाएगा। वह देखो, दुश्मन भागते हुए आ रहे हैं! 27 उनमें से कोई नहीं जो थकामौदा हो या लड़खड़ाकर चले। कोई नहीं ऊँघता या सोया हुआ है। किसी का भी पटका ढीला नहीं, किसी का भी तसमा टूटा नहीं। 28 उनके तीर तेज़ और कमान तने हुए हैं। उनके घोड़ों के खुर चक्रमाक़ जैसे, उनके रथों के पहिये आँधी जैसे हैं। 29 वह शेरनी की तरह गरजते हैं बल्कि जवान शेरबबर की तरह दहाड़ते और गुराते हुए अपना शिकार छीनकर वहाँ ले जाते हैं जहाँ उसे कोई नहीं बचा सकता।

30 उस दिन दुश्मन गुराते और मुतलातिम समुंदर का-सा शोर मचाते हुए इसराईल पर टूट पड़ेंगे। जहाँ भी देखो वहाँ अंधेरा ही अंधेरा और मुसीबत ही मुसीबत। बादल छा जाने के सबब से रौशनी तारीक हो जाएगी।

6

यसायाह की बुलाहट

1 जिस साल उज्जियाह बादशाह ने वफ़ात पाई उस साल मैंने रब को आला और जलाली तख़्त पर बैठे देखा। उसके लिबास के दामन से रब का घर भर गया। 2 सराफ़ीम फ़रिश्ते उसके ऊपर खड़े थे। हर एक के छः पर थे। दो से वह अपने मुँह को और दो से अपने पाँवों को ढाँप लेते थे

* 5:10 लफ़्ज़ी मतलब : जितनी ज़मीन पर बैलों की दस जोड़ियाँ एक दिन में हल चला सकती हैं।

जबकि दो से वह उड़ते थे।³ बुलंद आवाज़ से वह एक दूसरे को पुकार रहे थे, “कुद्स, कुद्स, कुद्स है रब्बुल-अफवाज। तमाम दुनिया उसके जलाल से मामूर है।”

⁴ उनकी आवाज़ों से दहलीज़ें * हिल गईं और रब का घर धुँएँ से भर गया। ⁵ मैं चिल्ला उठा, “मुझ पर अफ़सोस, मैं बरबाद हो गया हूँ! क्योंकि गो मेरे हॉट नापाक हैं, और जिस क्रौम के दरमियान रहता हूँ उसके हॉट भी नजिस हैं तो भी मैंने अपनी आँखों से बादशाह रब्बुल-अफवाज को देखा है।”

⁶ तब सराफ़ीम फ़रिश्तों में से एक उड़ता हुआ मेरे पास आया। उसके हाथ में दमकता कोयला था जो उसने चिमटे से कुरबानगाह से लिया था। ⁷ इससे उसने मेरे मुँह को छूकर फ़रमाया, “देख, कोयले ने तेरे होंटों को छू दिया है। अब तेरा कुसूर दूर हो गया, तेरे गुनाह का कफ़फ़ारा दिया गया है।”

⁸ फिर मैंने रब की आवाज़ सुनी। उसने पूछा, “मैं किस को भेजूँ? कौन हमारी तरफ़ से जाए?” मैं बोला, “मैं हाज़िर हूँ। मुझे ही भेज दे।”

⁹ तब रब ने फ़रमाया, “जा, इस क्रौम को बता, ‘अपने कानों से सुनो मगर कुछ न समझना। अपनी आँखों से देखो, मगर कुछ न जानना!’

¹⁰ इस क्रौम के दिल को बेहिस कर दे, उनके कानों और आँखों को बंद कर। ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें, अपने कानों से सुनें, मेरी तरफ़ रूजू करें और शफ़ा पाएँ।”

¹¹ मैंने सवाल किया, “ऐ रब, कब तक?” उसने जवाब दिया, “उस वक़्त तक कि मुल्क के शहर वीरानो-सुनसान, उसके घर ग़ैरआबाद और उसके खेत बंजर न हों। ¹² पहले लाज़िम है कि रब लोगों को दूर दूर तक भगा दे, कि पूरा मुल्क तने-तनहा और बेकस रह जाए। ¹³ अगर क्रौम का दसवाँ हिस्सा मुल्क में बाक़ी भी रहे लेकिन उसे भी जला दिया जाएगा। वह किसी बलूत या दीगर लंबे-चौड़े दरख़्त की तरह यों कट जाएगा कि मुठ ही बाक़ी रहेगा। ताहम यह मुठ एक मुक़द्दस बीज होगा जिससे नए सिरे से ज़िंदगी फूट निकलेगी।”

7

अल्लाह आख़ज को तसल्ली देता है

¹ जब आख़ज बिन यूताम बिन उज़्जियाह, यहूदाह का बादशाह था तो शाम का बादशाह रज़ीन और इसराईल का बादशाह फ़िक़ह बिन रमलियाह यरूशलम के साथ लड़ने के लिए निकले। लेकिन वह शहर पर क़ब्ज़ा करने में नाकाम रहे। ² जब दाऊद के शाही घराने को इतला मिली कि शाम की फ़ौज ने इफ़राईम के इलाक़े में अपनी लश्करगाह लगाई है तो आख़ज बादशाह और उस की क्रौम लरज़ उठे। उनके दिल आँधी के झोंकों से हिलनेवाले दरख़्तों की तरह थरथराने लगे।

³ तब रब यसायाह से हमकलाम हुआ, “अपने बेटे शयार-याशूब * को अपने साथ लेकर आख़ज बादशाह से मिलने के लिए निकल जा। वह उस नाले के सिरे के पास स्का हुआ है जो पानी को ऊपरवाले तालाब तक पहुँचाता है (यह तालाब उस रास्ते पर है जो धोबियों के घाट तक ले जाता है)। ⁴ उसे बता कि मुहतात रहकर सुकून का दामन मत छोड़। मत डर। तेरा दिल रज़ीन, शाम और बिन रमलियाह का तैश देखकर हिम्मत न हारे। यह बस जली हुई लकड़ी के दो बचे हुए टुकड़े हैं जो अब तक कुछ धुआँ छोड़ रहे हैं। ⁵ बेशक शाम और इसराईल के बादशाहों ने तेरे खिलाफ़ बुरे मनसूबे बाँधे हैं, और वह कहते हैं, ⁶ ‘आओ हम यहूदाह पर हमला करें। हम वहाँ दहशत फैलाकर उस पर फ़तह पाएँ और फिर ताबियेल के बेटे को उसका बादशाह बनाएँ।’ ⁷ लेकिन रब कादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि उनका मनसूबा नाकाम हो जाएगा। बात नहीं बनेगी! ⁸ क्योंकि शाम का सर दमिशक़ और दमिशक़ का सर महज़ रज़ीन है। जहाँ तक मुल्के-इसराईल का ताल्लुक़ है, 65 साल के अंदर अंदर वह चकनाचूर हो जाएगा, और क्रौम नेस्तो-नाबूद हो जाएगी। ⁹ इसराईल का सर सामरिया और सामरिया का सर महज़ रमलियाह का बेटा है।

अगर ईमान में कायम न रहो, तो खुद कायम नहीं रहोगे।”

रब आख़ज को निशान देता है

¹⁰ रब आख़ज बादशाह से एक बार फिर हमकलाम हुआ, ¹¹ “इसकी तसदीक़ के लिए रब अपने खुदा से कोई इलाही निशान माँग ले, खाह आसमान पर हो या पाताल में।”

¹² लेकिन आख़ज ने इनकार किया, “नहीं, मैं निशान माँगकर रब को नहीं आज़माऊँगा।”

¹³ तब यसायाह ने कहा, “फिर मेरी बात सुनो, ऐ दाऊद के ख़ानदान! क्या यह काफ़ी नहीं कि तुम इनसान को थका दो? क्या लाज़िम है कि अल्लाह को भी थकाने पर मुसिर रहो? ¹⁴ चलो, फिर रब अपनी ही तरफ़ से तुम्हें निशान देगा। निशान यह होगा कि कुँवारी उम्मीद से हो जाएगी। जब बेटा पैदा होगा तो उसका नाम इम्मानुएल † रखेगी। ¹⁵ जिस वक़्त बच्चा इतना बड़ा होगा कि ग़लत काम रद्द करने और अच्छा काम चुनने का इल्म रखेगा उस वक़्त से बालाई और शहद खाएगा। ¹⁶ क्योंकि इससे पहले कि लड़का ग़लत काम रद्द करने और अच्छा काम चुनने का इल्म रखे वह मुल्क वीरानो-सुनसान हो जाएगा जिसके दोनों बादशाहों से तू दहशत खाता है।

यहूदाह भी तबाह हो जाएगा

* **6:4** लफ़्ज़ी मतलब : दहलीज़ों में घूमनेवाली दरवाज़ों की चूल्हें।
‘अल्लाह हमारे साथ है।’

* **7:3** शयार-याशूब से मुराद है ‘एक बचा-खुचा हिस्सा वापस आएगा।’

† **7:14** इम्मानुएल से मुराद है

17 रब तुझे भी तेरे आबाई खानदान और कौम समेत बड़ी मुसीबत में डालेगा। क्योंकि वह असूर के बादशाह को तुम्हारे खिलाफ भेजेगा। उस वक़्त तुम्हें ऐसे मुश्किल दिनों का सामना करना पड़ेगा कि इसराईल के यहूदाह से अलग हो जाने से लेकर आज तक नहीं गुजरे।”

18 उस दिन रब सीटी बजाकर दुश्मन को बुलाएगा। कुछ मक्खियों के गोल की तरह दरियाए-नील की दूर-दराज़ शाखों से आएँगे, और कुछ शहद की मक्खियों की तरह असूर से रवाना होकर मुल्क पर धावा बोल देंगे। 19 हर जगह वह टिक जाएँगे, गहरी घाटियों और चटानों की दराइयों में, तमाम काँटेदार झाड़ियों में और हर जोहड़ के पास। 20 उस दिन कादिरे-मुतलक दरियाए-फ़ुरात के परली तरफ़ एक उस्तरा किराए पर लेकर तुम पर चलाएगा। यानी असूर के बादशाह के ज़रीए वह तुम्हारे सर और टाँगों को मुँडवाएगा। हाँ, वह तुम्हारी दाढ़ी-मूँछ का भी सफ़ाया करेगा।

21 उस दिन जो आदमी एक जवान गाय और दो भेड़-बकरियाँ रख सके वह खुशकिसमत होगा। 22 तो भी वह इतना दूध देगी कि वह बालाई खाता रहेगा। हाँ, जो भी मुल्क में बाकी रह गया होगा वह बालाई और शहद खाएगा।

23 उस दिन जहाँ जहाँ हाल में अंगूर के हज़ार पौदे चाँदी के हज़ार सिक्कों के लिए बिकते हैं वहाँ काँटेदार झाड़ियाँ और ऊँटकटारे ही उगेगे। 24 पूरा मुल्क काँटेदार झाड़ियों और ऊँटकटारों के सबब से इतना जंगली होगा कि लोग तीर और कमान लेकर उसमें शिकार खेलने के लिए जाएँगे। 25 जिन बुलंदियों पर इस वक़्त खेतीबाड़ी की जाती है वहाँ लोग काँटेदार पौदों और ऊँटकटारों की वजह से जा नहीं सकेंगे। गाय-बैल उन पर चरेंगे, और भेड़-बकरियाँ सब कुछ पाँवों तले रौंदेंगी।

8

जल्द ही लूट-खसोट

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, “एक बड़ा तख़्ता लेकर उस पर साफ़ अलफ़ाज़ में लिख दे, ‘जल्द ही लूट-खसोट, सुरअत से गारतगरी’।” 2 मैंने ऊरियाह इमाम और ज़करियाह बिन यबरकियाह की मौजूदगी में ऐसा ही लिख दिया, क्योंकि दोनों मोतबर गवाह थे।

3 उस वक़्त जब मैं अपनी बीवी नबिया के पास गया तो वह उम्मीद से हुई। बेटा पैदा हुआ, और रब ने मुझे हुक्म दिया, “इसका नाम ‘जल्द ही लूट-खसोट, सुरअत से गारतगरी’ रख। 4 क्योंकि इससे पहले कि लड़का ‘अब्बू’ या ‘अम्मी’ कह सके दमिशक की दौलत और सामरिया का मालो-असबाब छीन लिया गया होगा, असूर के बादशाह ने सब कुछ लूट लिया होगा।”

शिलोख का पानी रद्द करने का बुरा अंजाम

5 एक बार फिर रब मुझसे हमकलाम हुआ, 6 “यह लोग यरूशलम में आराम से बहनेवाले शिलोख नाले का पानी मुस्तरद करके रज़ीन और फ़िक्रह बिन रमलियाह से खुश हैं। 7 इसलिए रब उन पर दरियाए-फ़ुरात का ज़बरदस्त सैलाब लाएगा, असूर का बादशाह अपनी तमाम शानो-शौकत के साथ उन पर टूट पड़ेगा। उस की तमाम दरियाई शाखें अपने किनारों से निकल कर 8 सैलाब की सूरत में यहूदाह पर से गुज़रेंगी। ऐ इम्मानुएल, पानी परिदे की तरह अपने परों को फैलाकर तेरे पूरे मुल्क को ढाँप लेगा, और लोग गले तक उसमें डूब जाएँगे।”

9 ऐ कौमो, बेशक जंग के नारे लगाओ। तुम फिर भी चकनाचूर हो जाओगी। ऐ दूर-दराज़ ममालिक के तमाम बाशिंदे, ध्यान दो! बेशक जंग के लिए तैयारियाँ करो। तुम फिर भी पाश पाश हो जाओगे। क्योंकि जंग के लिए तैयारियाँ करने के बावजूद भी तुम्हें कुचला जाएगा। 10 जो भी मनसूबा तुम बान्धो, बात नहीं बनेगी। आपस में जो भी फ़ैसला करो, तुम नाकाम हो जाओगे, क्योंकि अल्लाह हमारे साथ है। *

रब नबी को कौम के बारे में आगाह करता है

11 जिस वक़्त रब ने मुझे मज़बूती से पकड़ लिया उस वक़्त उसने मुझे इस कौम की राहों पर चलने से ख़बरदार किया। उसने फ़रमाया, 12 “हर बात को साज़िश मत समझना जो यह कौम साज़िश समझती है। जिससे यह लोग डरते हैं उससे न डरना, न दहशत खाना 13 बल्कि रब्बुल-अफ़वाज से डरो। उसी से दहशत खाओ और उसी को कुदूस मानो। 14 तब वह इसराईल और यहूदाह का मकदिस होगा, एक ऐसा पत्थर जो ठोकर का बाइस बनेगा, एक चटान जो ठेस लगने का सबब होगी। यरूशलम के बाशिंदे उसके फंदे और जाल में उलझ जाएँगे। 15 उनमें से बहुत सारे ठोकर खाएँगे। वह गिरकर पाश पाश हो जाएँगे और फंदे में फँसकर पकड़े जाएँगे।”

रब का कलाम शागिर्दों के हवाले करना है

16 मुझे मुकाशफ़े को लिफाफे में डालकर महफूज़ रखना है, अपने शागिर्दों के दरमियान ही अल्लाह की हिदायत पर मुहर लगानी है। 17 मैं खुद रब के इंतज़ार में रहूँगा जिसने अपने चेहरे को याकूब के घराने से छुपा लिया है। उसी से मैं उम्मीद रखूँगा।

18 अब मैं हाज़िर हूँ, मैं और वह बच्चे जो अल्लाह ने मुझे दिए हैं, हम इसराईल में इलाही और मोज़िज़ाना निशान हैं जिनसे रब्बुल-अफ़वाज जो कोहे-सिय्यून पर सुकूनत करता है लोगों को आगाह कर रहा है।

19 लोग तुम्हें मशवरा देते हैं, “जाओ, मुरदों से राबिता करनेवालों और किस्मत का हाल बतानेवालों से पता करो, उनसे जो बारीक आवाज़ें निकालते और बुडबुडाते हुए जवाब देते हैं।” लेकिन उनसे कहो, “क्या मुनासिब नहीं कि कौम अपने खुदा से मशवरा करे? हम जिंदों की खातिर मर्दों से बात क्यों करें?”

* 8:10 इब्रानी में ‘इम्मानुएल’ लिखा है, देखिए 7:14 का फुटनोट।

20 अल्लाह की हिदायत और मुकाशफा की तरफ रुजू करो! जो इनकार करे उस पर सुबह की रौशनी कभी नहीं चमकेगी। 21 ऐसे लोग मायूस और फाकाकश हालत में मुल्क में मारे मारे फिरेंगे। और जब भूके मरने को होंगे तो झुँझलाकर अपने बादशाह और अपने खुदा पर लानत करेंगे। वह ऊपर आसमान 22 और नीचे ज़मीन की तरफ देखेंगे, लेकिन जहाँ भी नज़र पड़े वहाँ मुसीबत, अंधेरा और हौलनाक तारीकी ही दिखाई देगी। उन्हें तारीकी ही तारीकी में डाल दिया जाएगा।

9

अनेवाले मसीह की रौशनी

1 लेकिन मुसीबतजदा तारीकी में नहीं रहेंगे। गो पहले जबूलन का इलाका और नफताली का इलाका पस्त हुआ है, लेकिन आइंदा झील के साथ का रास्ता, दरियाए-यरदन के पार, गैरयहूदियों का गलील सरफराज होगा।

2 अंधेरे में चलनेवाली कौम ने एक तेज़ रौशनी देखी, मौत के साथ में डूबे हुए मुल्क के बाशिंदों पर रौशनी चमकी। 3 तूने कौम को बढ़ाकर उसे बड़ी खुशी दिलाई है। तेरे हज़ूर वह यों खुशी मनाते हैं जिस तरह फसल काटते और लूट का माल बाँटते वक्रत मनाई जाती है। 4 तूने अपनी कौम को उस दिन की तरह छुटकारा दिया जब तूने मिदियान को शिकस्त दी थी। उसे दबानेवाला जुआ टूट गया, और उस पर जुल्म करनेवाले की लाठी टुकड़े टुकड़े हो गई है। 5 ज़मीन पर जोर से मारे गए फ़ौजी जूते और खून में लतपत फ़ौजी वरदियाँ सब हवालाए-आतिश होकर भस्म हो जाएँगी।

6 क्योंकि हमारे हों बच्चा पैदा हुआ, हमें बेटा बरखा गया है। उसके कंधों पर हुकूमत का इख्तियार ठहरा रहेगा। वह अनोखा मुशीर, कवी खुदा, अबदी बाप और सुलह-सलामती का शहज़ादा कहलाएगा। 7 उस की हुकूमत जोर पकड़ती जाएगी, और अमनो-अमान की इंतहा नहीं होगी। वह दाऊद के तख्त पर बैठकर उस की सलतनत पर हुकूमत करेगा, वह उसे अदलो-इनसाफ़ से मज़बूत करके अब से अबद तक कायम रखेगा। रब्बुल-अफ़वाज की गैरत ही इसे अंजाम देगी।

रब का ग़ज़ब नाज़िल होगा

8 रब ने याक़ूब के खिलाफ पैग़ाम भेजा, और वह इसराईल पर नाज़िल हो गया है। 9 इसराईल और सामरिया के तमाम बाशिंदे इसे जल्द ही जान जाएंगे, हालाँकि वह इस वक्रत बड़ी शेखी मारकर कहते हैं, 10 “बेशक हमारी ईंटों की दीवारें गिर गई हैं, लेकिन हम उन्हें तराशे हुए पत्थरों से दुबारा तामीर कर लेंगे। बेशक हमारे अंजीर-तूत के दरख्त कट गए हैं, लेकिन कोई बात नहीं, हम उनकी जगह देवदार के दरख्त लगा लेंगे।” 11 लेकिन रब इसराईल के दुश्मन रज़ीन को तकवियत देकर उसके खिलाफ़ भेजेगा बल्कि इसराईल के तमाम दुश्मनों को उस पर हमला करने के लिए उभारेगा। 12 शाम के फ़ौजी मशरिफ़ से और फ़िलिस्ती मगरिब से मुँह फाड़कर इसराईल को हड़प कर लेंगे। ताहम रब का ग़ज़ब ठंडा नहीं होगा बल्कि उसका हाथ मारने के लिए उठा ही रहेगा।

13 क्योंकि इसके बावजूद भी लोग सज़ा देनेवाले के पास वापस नहीं आएँगे और रब्बुल-अफ़वाज के तालिब नहीं होंगे। 14 नतीजे में रब एक ही दिन में इसराईल का न सिर्फ़ सर बल्कि उस की दुम भी काटेगा, न सिर्फ़ खज़ूर की शानदार शाख बल्कि मामूली-सा सरकंडा भी तोड़ेगा। 15 बुजुर्ग और असरो-रसूखवाले इसराईल का सर है जबकि झूटी तालीम देनेवाले नबी उस की दुम हैं। 16 क्योंकि कौम के राहनुमा लोगों को ग़लत राह पर ले गए हैं, और जिनकी राहनुमाई वह कर रहे हैं उनके दिमाग में फुत्तूर आ गया है। 17 इसलिए रब न कौम के जवानों से खुश होगा, न यतीमों और बेवाओं पर रहम करेगा। क्योंकि सबके सब बेदीन और शरीर हैं, हर मुँह कुफ़र बकता है। ताहम रब का ग़ज़ब ठंडा नहीं होगा बल्कि उसका हाथ मारने के लिए उठा ही रहेगा।

18 क्योंकि उनकी बेदीनी की भड़कती हुई आग काँटेदार झाड़ियाँ और ऊँटकटारे भस्म कर देती है, बल्कि गुंजान जंगल भी उस की ज़द में आकर धुँएँ के काले बादल छोड़ता है। 19 रब्बुल-अफ़वाज के ग़ज़ब से मुल्क झुलस जाएगा और उसके बाशिंदे आग का लुकमा बन जाएंगे। यहाँ तक कि कोई भी अपने भाई पर तरस नहीं खाएगा। 20 और गो हर एक दाई तरफ़ मुड़कर सब कुछ हड़प कर जाए तो भी भूका रहेगा, गो बाई तरफ़ स्रख करके सब कुछ निगल जाए तो भी सेर नहीं होगा। हर एक अपने पड़ोसी को खाएगा, 21 मनस्सी इफ़राईम को और इफ़राईम मनस्सी को। और दोनों मिलकर यहूदाह पर हमला करेंगे। ताहम रब का ग़ज़ब ठंडा नहीं होगा बल्कि उसका हाथ मारने के लिए उठा ही रहेगा।

10

1 तुम पर अफ़सोस जो ग़लत कवानीन सादिर करते और ज़ालिम फ़तवे देते हो 2 ताकि गरीबों का हक़ मारो और मज़लूमों के हुकूक पामाल करो। बेवाएँ तुम्हारा शिकार होती हैं, और तुम यतीमों को लूट लेते हो। 3 लेकिन अदालत के दिन तुम क्या करोगे, जब दूर दूर से ज़बरदस्त तूफ़ान तुम पर आन पड़ेगा तो तुम मदद के लिए किसके पास भागोगे और अपना मालो-दौलत कहाँ महफूज़ रख छोड़ोगे? 4 जो झुककर कैदी न बने वह गिरकर हलाक हो जाएगा। ताहम रब का ग़ज़ब ठंडा नहीं होगा बल्कि उसका हाथ मारने के लिए उठा ही रहेगा।

असूर की भी अदालत होगी

5 असूर पर अफ़सोस जो मेरे ग़ज़ब का आला है, जिसके हाथ में मेरे क्रहर की लाठी है। 6 मैं उसे एक बेदीन कौम के खिलाफ़ भेज रहा हूँ, एक कौम के खिलाफ़ जो मुझे गुस्सा दिलाती है। मैंने असूर को हुक्म दिया है कि उसे लूटकर गली की कीचड़ की तरह पामाल कर।

7 लेकिन उसका अपना इरादा फ़रक़ है। वह ऐसी सोच नहीं रखता बल्कि सब कुछ तबाह करने पर तुला हुआ है, बहुत कौमों को नेस्तो-नाबूद करने पर आमादा है। 8 वह फ़ख़र करता है, “मेरे तमाम अफ़सर तो बादशाह हैं। 9 फिर हमारी फ़तूहात पर गौर करो। करकिमीस, कलनो, अरफ़ाद, हमात, दमिश्क और सामरिया जैसे तमाम शहर यके बाद दीगरे मेरे कब्ज़े में आ गए हैं। 10 मैंने कई सलतनतों पर काबू पा लिया है जिनके बुत यरूशलम और सामरिया के बुतों से कहीं बेहतर थे। 11 सामरिया और उसके बुतों को मैं बरबाद कर चुका हूँ, और अब मैं यरूशलम और उसके बुतों के साथ भी ऐसा ही करूँगा!”

12 लेकिन कोहे-सियून् पर और यरूशलम में अपने तमाम मकासिद पूरे करने के बाद रब फ़रमाएगा, “मैं शाहे-असूर को भी सज़ा दूँगा, क्योंकि उसके मग़सूर दिल से कितना बुरा काम उभर आया है, और उस की आँखें कितने ग़ुरूर से देखती हैं। 13 वह शेखी मारकर कहता है, ‘मैंने अपने ही ज़ोरे-बाजू और हिकमत से यह सब कुछ कर लिया है, क्योंकि मैं समझदार हूँ। मैंने कौमों की हदूद ख़त्म करके उनके खज़ानों को लूट लिया और ज़बरदस्त सौंड की तरह उनके बादशाहों को मार मारकर खाक में मिला दिया है। 14 जिस तरह कोई अपना हाथ घोंसले में डालकर अंडे निकाल लेता है उसी तरह मैंने कौमों की दौलत छीन ली है। आम आदमी परिदों को भगाकर उनके छोड़े हुए अंडे इकट्ठे कर लेता है जबकि मैंने यही सुलूक दुनिया के तमाम ममालिक के साथ किया। जब मैं उन्हें अपने कब्ज़े में लाया तो एक ने भी अपने परो को फड़फड़ाने या चोंच खोलकर चीं चीं करने की ज़रूरत न की।”

15 लेकिन क्या कुल्हाड़ी उसके सामने शेखी बघारती जो उसे चलाता है? क्या आरी उसके सामने अपने आप पर फ़ख़र करती जो उसे इस्तेमाल करता है? यह उतना ही नामुमकिन है जितना यह कि लाठी पकड़नेवाले को घुमाए या डंडा आदमी को उठाए।

16 चुनौचे कादिरे-मुतलक रब्बुल-अफ़वाज असूर के मोटे-ताज़े फ़ौजियों में एक मरज़ फैला देगा जो उनके जिस्मों को रफ़ता रफ़ता ज़ाया करेगा। असूर की शानो-शौकत के नीचे एक भड़कती हुई आग लगाई जाएगी। 17 उस वक़्त इसराईल का नूर आग और इसराईल का कुद्स शोला बनकर असूर की काँटेदार झाड़ियों और ऊँटकटारों को एक ही दिन में भस्म कर देगा। 18 वह उसके शानदार जंगलों और बागों को मुकम्मल तौर पर तबाह कर देगा, और वह मरीज़ की तरह घुल घुलकर ज़ायल हो जाएंगे। 19 जंगलों के इतने कम दरख़्त बचेंगे कि बच्चा भी उन्हें गिनकर किताब में दर्ज कर सकेगा।

इसराईल का छोटा-सा हिस्सा बच जाएगा

20 उस दिन से इसराईल का बक़िया यानी याकूब के घराने का बचा-खुचा हिस्सा उस पर मज़ीद इनहिसार नहीं करेगा जो उसे मारता रहा था, बल्कि वह पूरी वफ़ादारी से इसराईल के कुद्स, रब पर भरोसा रखेगा। 21 बक़िया वापस आएगा, याकूब का बचा-खुचा हिस्सा क़वी खुदा के हज़ूर लौट आएगा। 22 ऐ इसराईल, गो तू साहिल पर की रेत जैसा बेशुमार क्यों न हो तो भी सिर्फ़ एक बचा हुआ हिस्सा वापस आएगा। तेरे बरबाद होने का फ़ैसला हो चुका है, और इनसाफ़ का सैलाब मुल्क पर आनेवाला है। 23 क्योंकि इसका अटल फ़ैसला हो चुका है कि कादिरे-मुतलक रब्बुल-अफ़वाज पूरे मुल्क पर हलाकत लाने को है।

24 इसलिए कादिरे-मुतलक रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “ऐ सियून् में बसनेवाली मेरी कौम, असूर से मत डरना जो लाठी से तुझे मारता है और तेरे खिलाफ़ लाठी यों उठाता है जिस तरह पहले मिसर किया करता था। 25 मेरा तुझ पर गुस्सा जल्द ही ठंडा हो जाएगा और मेरा ग़ज़ब असूरियों पर नाज़िल होकर उन्हें ख़त्म करेगा।” 26 जिस तरह रब्बुल-अफ़वाज ने मिदियानियों को मारा जब जिदौन ने ओरेब की चटान पर उन्हें शिकस्त दी उसी तरह वह असूरियों को भी कोड़े से मारेगा। और जिस तरह रब ने अपनी लाठी मूसा के ज़रीए समुंदर के ऊपर उठाई और नतीजे में मिसर की फ़ौज उसमें डूब गई बिल्कुल उसी तरह वह असूरियों के साथ भी करेगा। 27 उस दिन असूर का बोझ तेरे कंधों पर से उतर जाएगा, और उसका जुआ तेरी गरदन पर से दूर होकर टूट जाएगा।

यरूशलम की तरफ़ फ़ातेह की तरक्की

फ़ातेह ने यशीमोन की तरफ़ से चढ़कर 28 ऐयात पर हमला किया है। उसने मिजरोन में से गुज़रकर मिकमास में अपना लश्करी सामान छोड़ रखा है। 29 दर्रे को पार करके वह कहते हैं, “आज हम रात को जिबा में गुज़ारेंगे।” रामा थरथरा रहा और साऊल का शहर ज़िबिया भाग गया है। 30 ऐ जल्लीम बेटी, जोर से चीखें मार! ऐ लैसा, ध्यान दे! ऐ अनतोत, उसे जवाब दे! 31 मदमीना फ़रार हो गया और जेबीम के बाशिंदों ने दूसरी जगहों में पनाह ली है। 32 आज ही फ़ातेह नोब के पास स्क्रकर सियून् बेटी के पहाड़ यानी कोहे-यरूशलम के ऊपर हाथ हिलाएगा। *

33 देखो, कादिरे-मुतलक रब्बुल-अफ़वाज बड़े जोर से शाखों को तोड़नेवाला है। तब ऊँचे ऊँचे दरख़्त कटकर गिर जाएंगे, और जो सरफ़राज़ हैं उन्हें खाक में मिलाया जाएगा। 34 वह कुल्हाड़ी लेकर घने जंगल को काट डालेगा बल्कि लुबनान भी ज़ोरावर के हाथों गिर जाएगा।

11

मसीह की पुरअमन सलतनत

1 यस्सी * के मुह में से कौपल फूट निकलेगी, और उस की बची हुई जड़ों से शाख़ निकलकर फल लाएगी। 2 रब का रूह उस पर ठहरेगा यानी हिकमत और समझ का रूह, मशवरत और कुव्वत का रूह, इरफ़ान और रब के ख़ौफ़ का रूह। 3 रब का ख़ौफ़ उसे अज़ीज़ होगा। न

* 10:32 एक और मुमकिन तरज़ुमा : आज ही फ़ातेह नोब के पास स्क्रकर कोहे-यरूशलम के ऊपर हाथ हिलाएगा ताकि उसे बड़ा बनाए।

* 11:1 यस्सी से मुराद हज़रत दाऊद की नसल है (यस्सी हज़रत दाऊद का बाप था)।

वह दिखावे की बिना पर फैसला करेगा, न सुनी-सुनाई बातों की बिना पर फ़तवा देगा ⁴ बल्कि इनसाफ़ से बेबसों की अदालत करेगा और ग़ैरजानिबदारी से मुल्क के मुसीबतज़दों का फैसला करेगा। अपने कलाम की लाठी से वह ज़मीन को मारेगा और अपने मुँह की फूँक से बेदीन को हलाक करेगा। ⁵ वह रास्तबाज़ी के पटके और वफ़ादारी के ज़ेरजामे से मुलबबस रहेगा।

⁶ भेड़िया उस वक़्त भेड़ के बच्चे के पास ठहरेगा, और चीता भेड़ के बच्चे के पास आराम करेगा। बछड़ा, जवान शेरबबर और मोटा-ताज़ा बैल मिलकर रहेंगे, और छोटा लड़का उन्हें हाँककर सँभालेगा। ⁷ गाय रीछ के साथ चरेगी, और उनके बच्चे एक दूसरे के साथ आराम करेंगे। शेरबबर बैल की तरह भूसा खाएगा। ⁸ शीरखार बच्चा नाग की बाँबी के करीब खेलेगा, और जवान बच्चा अपना हाथ ज़हरीले साँप के बिल में डालेगा।

⁹ मेरे तमाम मुक़द्दस पहाड़ पर न ग़लत और न तबाहक़ुन काम किया जाएगा। क्योंकि मुल्क रब के इरफ़ान से यों मामूर होगा जिस तरह समुंदर पानी से भरा रहता है। ¹⁰ उस दिन यस्सी † की जड़ से फूटी हुई कोंपल उम्मतों के लिए झंडा होगा। क्रौंम उस की तालिब होंगी, और उस की सुकूनतगाह जलाली होगी।

रब अपनी क्रौंम को वापस लाएगा

¹¹ उस दिन रब एक बार फिर अपना हाथ बढ़ाएगा ताकि अपनी क्रौंम का वह बचा-खुचा हिस्सा दुबारा हासिल करे जो असूर, शिमाली और जुनूबी मिसर, एथोपिया, ऐलाम, बाबल, हमात और साहिली इलाकों में मुंतशिर होगा। ¹² वह क्रौंमों के लिए झंडा गाड़कर इसराईल के जिलावतनों को इक़ठा करेगा। हाँ, वह यहदाह के बिखरे अफ़राद को दुनिया के चारों कोनों से लाकर जमा करेगा। ¹³ तब इसराईल का हसद ख़त्म हो जाएगा, और यहदाह के दुश्मन नेस्तो-नाबूद हो जाएंगे। न इसराईल यहदाह से हसद करेगा, न यहदाह इसराईल से दुश्मनी रखेगा। ¹⁴ फिर दोनों मगरिब में फ़िलिस्ती मुल्क पर झपट पड़ेंगे और मिलकर मशरिक के बाशिंदों को लूट लेंगे। अदोम और मोआब उनके क़ब्ज़े में आएँगे, और अम्मोन उनके ताबे हो जाएगा। ¹⁵ रब बहरे-कुलज़ुम को ख़ुश करेगा और साथ साथ दरियाए-फ़ुरात के ऊपर हाथ हिलाकर उस पर जोरदार हवा चलाएगा। तब दरिया सात ऐसी नहरों में बट जाएगा जो पैदल ही पार की जा सकेंगी। ¹⁶ एक ऐसा रास्ता बनेगा जो रब के बचे हुए अफ़राद को असूर से इसराईल तक पहुँचाएगा, बिल्कुल उस रास्ते की तरह जिसने इसराईलियों को मिसर से निकलते वक़्त इसराईल तक पहुँचाया था।

12

बचे हुआ की हम्दो-सना

¹ उस दिन तुम गीत गाओगे,

“ऐ रब, मैं तेरी सताइश कर्ँगा! यकीनन तू मुझसे नाराज़ था, लेकिन अब तेरा ग़ज़ब मुझ पर से दूर हो जाए और तू मुझे तसल्ली दे।

² अल्लाह मेरी नजात है। उस पर भरोसा रखकर मैं दहशत नहीं खाऊँगा। क्योंकि रब खुदा मेरी कुव्वत और मेरा गीत है, वह मेरी नजात बन गया है।”

³ तुम शादमानी से नजात के चशमों से पानी भरोगे।

⁴ उस दिन तुम कहोगे, “रब की सताइश करो! उसका नाम लेकर उसे पुकारो! जो कुछ उसने किया है दुनिया को बताओ, उसके नाम की अज़मत का एलान करो।

⁵ रब की तमज़ीद का गीत गाओ, क्योंकि उसने ज़बरदस्त काम किया है, और इसका इल्म पूरी दुनिया तक पहुँचे।

⁶ ऐ यस्शलम की रहनेवाली, शादियाना बजाकर खुशी के नारे लगा! क्योंकि इसराईल का कुदूस अज़ीम है, और वह तेरे दरमियान ही सुकूनत करता है।”

13

बाबल के खिलाफ़ एलान

¹ दर्जे-ज़ैल बाबल के बारे में वह एलान है जो यसायाह बिन आमूस ने रोया में देखा।

² नंगे पहाड़ पर झंडा गाड़ दो। उन्हें बलंद आवाज़ दो, हाथ हिलाकर उन्हें शुरफ़ा के दरवाज़ों में दाखिल होने का हुक्म दो। ³ मैंने अपने मुक़द्दसीन को काम पर लगा दिया है, मैंने अपने सूरमाओं को जो मेरी अज़मत की खुशी मनाते हैं बुला लिया है ताकि मेरे ग़ज़ब का आलाए-कार बनें।

⁴ सुनो! पहाड़ों पर बड़े हुज़ूम का शोर मच रहा है। सुनो! मुतअदिद ममालिक और जमा होनेवाली क्रौंमों का गुल-गपाड़ा सुनाई दे रहा है। रब्बुल-अफ़वाज़ जंग के लिए फ़ौज़ जमा कर रहा है। ⁵ उसके फ़ौज़ी दूर-दराज़ इलाकों बल्कि आसमान की इंतहा से आ रहे हैं। क्योंकि रब अपने ग़ज़ब के आलात के साथ आ रहा है ताकि तमाम मुल्क को बरबाद कर दे।

† 11:10 यस्सी से मुराद हज़रत दाऊद की नसल है (यस्सी हज़रत दाऊद का बाप था)।

6 वावैला करो, क्योंकि रब का दिन करीब ही है, वह दिन जब कादिरे-मुतलक की तरफ से तबाही मचेगी। 7 तब तमाम हाथ बेहिसो-हरकत हो जाएंगे, और हर एक का दिल हिम्मत हार देगा। 8 दहशत उन पर छा जाएगी, और वह जान-कनी और दर्द-ज़ह की-सी गिरिफ्त में आकर जन्म देनेवाली औरत की तरह तड़पेंगे। एक दूसरे को डर के मारे घूर घूरकर उनके चेहरे आग की तरह तमतमा रहे होंगे।

9 देखो, रब का बेरहम दिन आ रहा है जब उसका क्रहर और शदीद गज़ब नाज़िल होगा। उस वक़्त मुल्क तबाह हो जाएगा और गुनाहगार को उसमें से मिटा दिया जाएगा। 10 आसमान के सितारे और उनके झुरमुट नहीं चमकेंगे, सूरज तुलू होते वक़्त तारीक ही रहेगा, और चाँद की रौशनी ख़त्म होगी।

11 मैं दुनिया को उस की बदकारी का अज़ और बेदीनों को उनके गुनाहों की सज़ा दूँगा, मैं शोखों का घमंड ख़त्म कर दूँगा और ज़ालिमों का गुस्सा खाक में मिला दूँगा। 12 लोग ख़ालिस सोने से कहीं ज़्यादा नायाब होंगे, इनसान ओफ़ीर के कीमती सोने की निसबत कहीं ज़्यादा कमयाब होगा।

13 क्योंकि आसमान रब्बुल-अफ़वाज के क्रहर के सामने काँप उठेगा, उसके शदीद गज़ब के नाज़िल होने पर ज़मीन लरज़कर अपनी जगह से खिसक जाएगी। 14 बाबल के तमाम बाशिंदे शिकारी के सामने दौड़नेवाले गज़ाल और चरवाहे से महसूम भेड़-बकरियों की तरह इधर उधर भागकर अपने मुल्क और अपनी क़ौम में वापस आने की कोशिश करेंगे। 15 जो भी दुश्मन के काबू में आया उसे छोड़ा जाएगा, जिसे भी पकड़ा जाएगा उसे तलवार से मारा जाएगा। 16 उनके देखते देखते दुश्मन उनके बच्चों को ज़मीन पर पटख देगा और उनके घरों को लूटकर उनकी औरतों की इसमतदारी करेगा।

17 मैं मादियों को उन पर चढ़ा लाऊँगा, ऐसे लोगों को जिन्हें रिश्तत से नहीं आजमाया जा सकता, जो सोने-चाँदी की परवा ही नहीं करते। 18 उनके तीर नौजवानों को मार देंगे। न वह शीरखारों पर तरस खाएँगे, न बच्चों पर रहम करेंगे।

बाबल जंगली जानवरों का घर बन जाएगा

19 अल्लाह बाबल को जो तमाम ममालिक का ताज और बाबलियों का ख़ास फ़ख़र है रूए-ज़मीन पर से मिटा डालेगा। उस दिन वह सदूम और अमूरा की तरह तबाह हो जाएगा। 20 आइंदा उसे कभी दुबारा बसाया नहीं जाएगा, नसल-दर-नसल वह वीरान ही रहेगा। न बहू अपना तंबू वहाँ लगाएगा, और न गल्लाबान अपने रेवड़ उसमें ठहराएगा। 21 सिर्फ़ रेगिस्तान के जानवर खंडरात में जा बसेंगे। शहर के घर उनकी आवाज़ों से गूँज उठेंगे, उकाबी उल्लू वहाँ ठहरेंगे, और बकरानुमा जिन उसमें रक्स करेंगे। 22 जंगली कुत्ते उसके महलों में रोएँगे, और गीदड़ ऐशो-इशरत के कसरों में अपनी दर्द भरी आवाज़ें निकालेंगे। बाबल का खातमा करीब ही है, अब देर नहीं लगेगी।

14

इसराइली वापस आएँगे

1 क्योंकि रब याकूब पर तरस खाएगा, वह दुबारा इसराइलियों को चुनकर उन्हें उनके अपने मुल्क में बसा देगा। परदेसी भी उनके साथ मिल जाएंगे, वह याकूब के घराने से मुंसलिक हो जाएंगे। 2 दीगर क़ौमों इसराइलियों को लेकर उनके वतन में वापस पहुँचा देंगी। तब इसराइल का घराना इन परदेसियों को विरसे में पाएगा, और यह रब के मुल्क में उनके नौकर-नौकरानियाँ बनकर उनकी ख़िदमत करेंगे। जिन्होंने उन्हें जिलावतन किया था उन्हीं को वह जिलावतन किए रखेंगे, जिन्होंने उन पर जुल्म किया था उन्हीं पर वह हुकूमत करेंगे। 3 जिस दिन रब तुझे मुसीबत, बेचैनी और ज़ालिमाना गुलामी से आराम देगा 4 उस दिन तू बाबल के बादशाह पर तंज़ का गीत गाएगा,

बाबल पर तंज़ का गीत

“यह कैसी बात है? ज़ालिम नेस्तो-नाबूद और उसके हमले ख़त्म हो गए हैं। 5 रब ने बेदीनों की लाठी तोड़कर हुक्मरानों का वह शाही असा टुकड़े टुकड़े कर दिया है 6 जो तैश में आकर क़ौमों को मुसलसल मारता रहा और गुस्से से उन पर हुकूमत करता, बेरहमी से उनके पीछे पड़ा रहा। 7 अब पूरी दुनिया को आरामो-सुकून हासिल हुआ है, अब हर तरफ़ खुशी के नारे सुनाई दे रहे हैं। 8 जूनीपर के दरख़्त और लुबनान के देवदार भी तेरे अंजाम पर खुश होकर कहते हैं, ‘शुक्र है! जब से तू गिरा दिया गया कोई यहाँ चढ़कर हमें काटने नहीं आता।’

9 पाताल तेरे उतरने के बाइस हिल गया है। तेरे इंतज़ार में वह मुरदा रूहों को हरकत में ला रहा है। वहाँ दुनिया के तमाम रईस और अक्रवाम के तमाम बादशाह अपने तख़्तों से खड़े होकर तेरा इस्तक़बाल करेंगे। 10 सब मिलकर तुझसे कहेंगे, ‘अब तू भी हम जैसा कमज़ोर हो गया है, तू भी हमारे बराबर हो गया है!’ 11 तेरी तमाम शानो-शौकत पाताल में उतर गई है, तेरे सितार ख़ामोश हो गए हैं। अब कीड़े तेरा गद्दा और केंचुए तेरा कम्बल होंगे।

12 ऐ सिताराए-सुबह, ऐ इब्ने-सहर, तू आसमान से किस तरह गिर गया है! जिसने दीगर ममालिक को शिकस्त दी थी वह अब खुद पाश पाश हो गया है। 13 दिल में तूने कहा, ‘मैं आसमान पर चढ़कर अपना तख़्त अल्लाह के सितारों के ऊपर लगा लूँगा, मैं इंतहाई शिमांल में उस पहाड़ पर जहाँ देवता जमा होते हैं तख़्तनशीन हूँगा। 14 मैं बादलों की बुलंदियों पर चढ़कर कादिरे-मुतलक के बिलकुल बराबर हो जाऊँगा।’ 15 लेकिन तुझे तो पाताल में उतारा जाएगा, उसके सबसे गहरे गढ़े में गिराया जाएगा।

16 जो भी तुझ पर नज़र डालेगा वह ग़ौर से देखकर पछेगा, ‘क्या यही वह आदमी है जिसने ज़मीन को हिला दिया, जिसके सामने दीगर ममालिक काँप उठे?’ 17 क्या इसी ने दुनिया को वीरान कर दिया और उसके शहरों को ढाकर कैदियों को घर वापस जाने की इजाज़त न दी?’

18 दीगर ममालिक के तमाम बादशाह बड़ी इज्जत के साथ अपने अपने मकबरों में पड़े हुए हैं। 19 लेकिन तुझे अपनी कब्र से दूर किसी बेकार कौंपल की तरह फेंक दिया जाएगा। तुझे मकतूलों से ढाँका जाएगा, उनसे जिनको तलवार से छेदा गया है, जो पथरीले गढों में उतर गए हैं। तू पाँवों तले रौंदी हुई लाश जैसा होगा, 20 और तदफ्रीन के वक्त तू दीगर बादशाहों से जा नहीं मिलेगा। क्योंकि तूने अपने मुल्क को तबाह और अपनी कौम को हलाक कर दिया है। चुनौचे अब से अबद तक इन बेदीनों की औलाद का जिक्र तक नहीं किया जाएगा। 21 इस आदमी के बेटों को फाँसी देने की जगह तैयार करो! क्योंकि उनके बापदादा का कुसूर इतना संगीन है कि उन्हें मरना ही है। ऐसा न हो कि वह दुबारा उठकर दुनिया पर कब्ज़ा कर लें, कि रूप-जमीन उनके शहरों से भर जाए।”

रब के हाथों बाबल का अंजाम

22 रब्बुल-अफवाज फरमाता है, “मैं उनके खिलाफ यों उठूँगा कि बाबल का नामो-निशान तक नहीं रहेगा। मैं उस की औलाद को रूप-जमीन पर से मिटा दूँगा, और एक भी नहीं बचने का। 23 बाबल खारपुशत का मसकन और दलदल का इलाका बन जाएगा, क्योंकि मैं खुद उसमें तबाही का झाड़ू फेर दूँगा।” यह रब्बुल-अफवाज का फरमान है।

असूरी फौज की तबाही

24 रब्बुल-अफवाज ने क्रसम खाकर फरमाया है, “यकीनन सब कुछ मेरे मनसूबे के मुताबिक ही होगा, मेरा इरादा जरूर पूरा हो जाएगा। 25 मैं असूर को अपने मुल्क में चकनाचूर कर दूँगा और उसे अपने पहाड़ों पर कुचल डालूँगा। तब उसका जुआ मेरी कौम पर से दूर हो जाएगा, और उसका बोझ उसके कंधों पर से उतर जाएगा।” 26 पूरी दुनिया के बारे में यह मनसूबा अटल है, और रब अपना हाथ तमाम कौमों के खिलाफ बढ़ा चुका है। 27 रब्बुल-अफवाज ने फैसला कर लिया है, तो कौन इसे मनसूख करेगा? उसने अपना हाथ बढ़ा दिया है, तो कौन उसे रोकेंगा?

फिलिस्तिनों का अंजाम करीब है

28 जैल का कलाम उस साल नाजिल हुआ जब आखिज बादशाह ने वफात पाई।

29 ऐ तमाम फिलिस्ती मुल्क, इस पर खुशी मत मना कि हमें मारनेवाली लाठी टूट गई है। क्योंकि साँप की बची हुई जड़ से ज़हरीला साँप फूट निकलेगा, और उसका फल शोलाफिशों उड़नअज़दहा होगा। 30 तब जरूरतमंदों को चरागाह मिलेगी, और गरीब महफूज जगह पर आराम करेंगे। लेकिन तेरी जड़ को मैं काल से मार दूँगा, और जो बच जाएँ उन्हें भी हलाक कर दूँगा।

31 ऐ शहर के दरवाज़े, वावैला कर! ऐ शहर, जोर से चीखें मार! ऐ फिलिस्तिनो, हिम्मत हारकर लड़खड़ाते जाओ। क्योंकि शिमाल से तुम्हारी तरफ धुआँ बढ़ रहा है, और उस की सफों में पीछे रहनेवाला कोई नहीं है। 32 तो फिर हमारे पास भेजे हुए कासिदों को हम क्या जवाब दें? यह कि रब ने सिय्यून को कायम रखा है, कि उस की कौम के मज़लूम उसी में पनाह लेंगे।

15

मोआब के अंजाम का एलान

1 मोआब के बारे में रब का फरमान :

एक ही रात में मोआब का शहर आर तबाह हो गया है। एक ही रात में मोआब का शहर कीर बरबाद हो गया है। 2 अब दीबोन के बाशिंदे मातम करने के लिए अपने मंदिर और पहाड़ी कुरबानागहों की तरफ चढ़ रहे हैं। मोआब अपने शहरों नबू और मीदबा पर वावैला कर रहा है। हर सर मुंडा हुआ और हर दाढ़ी कट गई है। 3 गलियों में वह टाट से मुलबबस फिर रहे हैं, छतों पर और चौकों में सब रो रोकर आहो-बुका कर रहे हैं। 4 हसबोन और इलियाली मदद के लिए पुकार रहे हैं, और उनकी आवाज़ें यहज तक सुनाई दे रही हैं। इसलिए मोआब के मुसल्लह मर्द जंग के नारे लगा रहे हैं, गो वह अंदर ही अंदर काँप रहे हैं।

5 मेरा दिल मोआब को देखकर रो रहा है। उसके मुहाजिरीन भागकर ज़ुगर और इजलत-शलीशियाह तक पहुँच रहे हैं। लोग रो रोकर लूहीत की तरफ चढ़ रहे हैं, वह होरोनायम तक जानेवाले रास्ते पर चलते हुए अपनी तबाही पर गिर्याओ-ज़ारी कर रहे हैं। 6 निमरीम का पानी सूख गया है, घास झुलस गई है, तमाम हरियाली खत्म हो गई है, सबज़ाज़ारों का नामो-निशान तक नहीं रहा। 7 इसलिए लोग अपना सारा जमाशुदा सामान समेटकर वादीए-सफेदा को उबूर कर रहे हैं। 8 चीखें मोआब की हृदूद तक गूँज रही हैं, हाय हाय की आवाज़ें इजलायम और बैर-एलीम तक सुनाई दे रही हैं। 9 लेकिन गो दीमोन की नहर खून से सुर्ख हो गई है, ताहम मैं उस पर मज़ीद मुसीबत लाऊँगा। मैं शेरबबर भेजूँगा जो उन पर भी धावा बोलेंगे जो मोआब से बच निकले होंगे और उन पर भी जो मुल्क में पीछे रह गए होंगे।

16

मोआब इसराइलियों से मदद माँगेगा

1 मुल्क का जो हुक्मरान रेगिस्तान के पार सिला में है उस की तरफ से सिय्यून बेटा के पहाड़ पर मेंढा भेज दो। 2 मोआब की बेटियाँ घोंसले से भगाए हुए परिदों की तरह दरियाए-अरनोन के पायाब मकामों पर इधर उधर फड़फड़ा रही हैं। 3 “हमें कोई मशवरा दे, कोई फैसला पेश

कर। हम पर साया डाल ताकि दोपहर की तपती धूप हम पर न पड़े बल्कि रात जैसा अंधेरा हो। मफ़्सूरों को छुपा दे, दुश्मन को पनाहगुज़ीनों के बारे में इतला न दे। ⁴ मोआबी मुहाजिरों को अपने पास ठहरने दे, मोआबी मफ़्सूरों के लिए पनाहगाह हो ताकि वह हलाकू के हाथ से बच जाएँ।”

लेकिन ज़ालिम का अंजाम आनेवाला है। तबाही का सिलसिला ख़त्म हो जाएगा, और कुचलनेवाला मुल्क से गायब हो जाएगा। ⁵ तब अल्लाह अपने फ़ज़ल से दाऊद के घराने के लिए तख़्त कायम करेगा। और जो उस पर बैठेगा वह वफ़ादारी से हुक्मत करेगा। वह इनसाफ़ का तालिब रहकर अदालत करेगा और रास्ती कायम रखने में माहिर होगा।

मोआब की मुनासिब सज़ा पर अफ़सोस

⁶ हमने मोआब के तकब्बुर के बारे में सुना है, क्योंकि वह हद से ज़्यादा मुतकब्बिर, मग़रूर, घमंडी और शोखचश्म है। लेकिन उस की डींगें अबस हैं।

⁷ इसलिए मोआबी अपने आप पर आहो-ज़ारी कर रहे, सब मिलकर आहें भर रहे हैं। वह सिसक सिसककर क़ीर-हरासत की किशमिश की टिक्वियाँ याद कर रहे हैं, उनका निहायत बुरा हाल हो गया है। ⁸ हसबोन के बाग़ मुरझा गए, सिबमाह के अंगूर ख़त्म हो गए हैं। पहले तो उनकी अनोखी बेलें याज़ेर बल्कि रेगिस्तान तक फैली हुई थीं, उनकी कोंपलें समुंदर को भी पार करती थीं। लेकिन अब ग़ैरक़ौम हुक्मरानों ने यह उम्दा बेलें तोड़ डाली हैं। ⁹ इसलिए मैं याज़ेर के साथ मिलकर सिबमाह के अंगूरों के लिए आहो-ज़ारी कर रहा हूँ। ऐ हसबोन, ऐ इलियाली, तुम्हारी हालत देखकर मेरे बेहद आँसू बह रहे हैं। क्योंकि जब तुम्हारा फल पक गया और तुम्हारी फ़सल तैयार हुई तब जंग के नारे तुम्हारे इलाके में गूँज उठे। ¹⁰ अब खुशीओ-शादमानी बाग़ों से गायब हो गई है, अंगूर के बाग़ों में गीत और खुशी के नारे बंद हो गए हैं। कोई नहीं रहा जो हौज़ों में अंगूर को रौंदकर रस निकाले, क्योंकि मैंने फ़सल की खुशियाँ ख़त्म कर दी हैं।

¹¹ मेरा दिल सरोद के मातमी सूर निकालकर मोआब के लिए नोहा कर रहा है, मेरी जान क़ीर-हरासत के लिए आहें भर रही है। ¹² जब मोआब अपनी पहाड़ी कुरबानगाह के सामने हाज़िर होकर सिजदा करता है तो बेकार मेहनत करता है। जब वह पूजा करने के लिए अपने मंदिर में दाखिल होता है तो फ़ायदा कोई नहीं होता।

¹³ रब ने माज़ी में इन बातों का एलान किया। ¹⁴ लेकिन अब वह मज़ीद फ़रमाता है, “तीन साल के अंदर अंदर * मोआब की तमाम शानो-शौकत और धूमधाम जाती रहेगी। जो थोड़े-बहुत बचेंगे, वह निहायत ही कम होंगे।”

17

शाम और इसराइल की तबाही

¹ दमिश्क़ शहर के बारे में अल्लाह का फ़रमान :

“दमिश्क़ मिट जाएगा, मलबे का ढेर ही रह जाएगा। ² अरोईर के शहर भी वीरानो-सुनसान हो जाएंगे। तब रेवड़ ही उनकी गलियों में चरेंगे और आराम करेंगे। कोई नहीं होगा जो उन्हें भगाए। ³ इसराइल के क़िलाबंद शहर नेस्तो-नाबूद हो जाएंगे, और दमिश्क़ की सलतनत जाती रहेगी। शाम के जो लोग बच निकलेंगे उनका और इसराइल की शानो-शौकत का एक ही अंजाम होगा।” यह है रब्बूल-अफ़वाज का फ़रमान।

⁴ “उस दिन याक़ूब की शानो-शौकत कम और उसका मोटा-ताज़ा जिस्म लागर होता जाएगा। ⁵ फ़सल की कटाई की-सी हालत होगी। जिस तरह काटनेवाला एक हाथ से गंदुम के डंठल को पकड़कर दूसरे से बालों को काटता है उसी तरह इसराइलियों को काटा जाएगा। और जिस तरह वादीए-रफ़ाईम में ग़रीब लोग फ़सल काटनेवालों के पीछे पीछे चलकर बची हुई बालियों को चुनते हैं उसी तरह इसराइल के बचे हुए लोगों को चुना जाएगा। ⁶ ताहम कुछ न कुछ बचा रहेगा, उन दो-चार ज़ैतूनों की तरह जो चुनते वक़्त दरख़्त की चोटी पर रह जाते हैं। दरख़्त को डंडे से झाड़ने के बावजूद कहीं न कहीं चंद एक लगे रहेंगे।” यह है रब, इसराइल के ख़ुदा का फ़रमान।

⁷ तब इनसान अपनी नज़र अपने ख़ालिक की तरफ़ उठाएगा, और उस की आँखें इसराइल के कुदूस की तरफ़ देखेंगी। ⁸ आइंदा न वह अपने हाथों से बनी हुई कुरबानगाहों को तकेगा, न अपनी उँगलियों से बने हुए यसीरत देवी के खंबों और बखूर की कुरबानगाहों पर ध्यान देगा।

⁹ उस वक़्त इसराइली अपने क़िलाबंद शहरों को यों छोड़ेंगे जिस तरह कनानियों ने अपने जंगलों और पहाड़ों की चोटियों को इसराइलियों के आगे आगे छोड़ा था। सब कुछ वीरानो-सुनसान होगा। ¹⁰ अफ़सोस, तू अपनी नजात के ख़ुदा को भूल गया है। तुझे वह चटान याद न रही जिस पर तू पनाह ले सकता है। चुनाँचे अपने प्यारे देवताओं के बाग़ लगाता जा, और उनमें परदेसी अंगूर की कलमें लगाता जा। ¹¹ शायद ही वह लगाते वक़्त तेज़ी से उगने लगें, शायद ही उनके फूल उसी सुबह खिलने लगें। तो भी तेरी मेहनत अबस है। तू कभी भी उनके फल से लुफ़अंदोज़ नहीं होगा बल्कि महज़ बीमारी और लाइलाज दर्द की फ़सल काटेगा।

दीगर क़ौमों के बेकार हमले

¹² बेशुमार क़ौमों का शोर-शराबा सुनो जो तूफ़ानी समुंदर की-सी ठाठें मार रही हैं। उम्मों का गुल-गपाड़ा सुनो जो थपेड़े मारनेवाली मौज़ों की तरह गरज रही हैं। ¹³ क्योंकि ग़ैरक़ौम पहाड़नुमा लहरों की तरह मुतलातिम हैं। लेकिन रब उन्हें डॉटेगा तो वह दूर दूर भाग जाएँगी। जिस तरह पहाड़ों पर भूसा हवा के झोंकों से उड़ जाता और लुढ़कबूटी आँधी में चक्कर खाने लगती है उसी तरह वह फ़रार हो जाएँगी। ¹⁴ शाम

* 16:14 लफ़ज़ी तरज़ुमा : मज़दूर के-से तीन साल के अंदर अंदर।

को इसराईल सख्त घबरा जाएगा, लेकिन पौ फटने से पहले पहले उसके दुश्मन मर गए होंगे। यही हमें लूटनेवालों का नसीब, हमारी गारतगरी करनेवालों का अंजाम होगा।

18

एथोपिया की अदालत

1 फड़फड़ाते बादवानों * के मुल्क पर अफसोस! एथोपिया पर अफसोस जहाँ कूश के दरिया बहते हैं, 2 और जो अपने कासिदों को आबी नरसल की कश्तियों में बिठाकर समुंदरी सफ़रों पर भेजता है। ऐ तेज़रौ कासिदो, लंबे कद और चिकनी-चुपड़ी जिल्दवाली क्रौम के पास जाओ। उस क्रौम के पास पहुँचो जिससे दीगर क्रौमों दूर-दराज़ इलाकों तक डरती हैं, जो ज़बरदस्ती सब कुछ पाँवों तले कुचल देती है, और जिसका मुल्क दरियाओं से बटा हुआ है।

3 ऐ दुनिया के तमाम बाशिंदो, ज़मीन के तमाम बसनेवालो! जब पहाड़ों पर झंडा गाढ़ा जाए तो उस पर ध्यान दो! जब नरसिंगा बजाया जाए तो उस पर गौर करो! 4 क्योंकि रब मुझसे हमकलाम हुआ है, “मैं अपनी सुकूनतगाह से खामोशी से देखता रहूँगा। लेकिन मेरी यह खामोशी दोपहर की चिलचिलाती धूप या मौसमे-गरमा में धुंध के बादल की मानिंद होगी।” 5 क्योंकि अंगूर की फ़सल के पकने से पहले ही रब अपना हाथ बढ़ा देगा। फूलों के ख़त्म होने पर जब अंगूर पक रहे होंगे वह कोपलों को छुरी से काटेगा, फैलती हुई शाखों को तोड़ तोड़कर उनकी काँट-छाँट करेगा। 6 यही एथोपिया की हालत होगी। उस की लाशों को पहाड़ों के शिकारी परिदों और जंगली जानवरों के हवाले किया जाएगा। मौसमे-गरमा के दौरान शिकारी परिदे उन्हें खाते जाएंगे, और सर्दियों में जंगली जानवर लाशों से सेर हो जाएंगे।

7 उस वक़्त लंबे कद और चिकनी-चुपड़ी जिल्दवाली यह क्रौम रब्बुल-अफ़वाज के हज़ूर तोहफ़ा लाएंगी। हाँ, जिन लोगों से दीगर क्रौमों दूर-दराज़ इलाकों तक डरती हैं और जो ज़बरदस्ती सब कुछ पाँवों तले कुचल देते हैं वह दरियाओं से बटे हुए अपने मुल्क से आकर अपना तोहफ़ा सिय्यून पहाड़ पर पेश करेंगे, वहाँ जहाँ रब्बुल-अफ़वाज का नाम सुकूनत करता है।

19

मिसर की अदालत

1 मिसर के बारे में अल्लाह का फ़रमान :

रब तेज़रौ बादल पर सवार होकर मिसर आ रहा है। उसके सामने मिसर के बुत थरथरा रहे हैं और मिसर की हिम्मत टूट गई है। 2 “मैं मिसरियों को एक दूसरे के साथ लड़ने पर उकसा दूँगा। भाई भाई के साथ, पड़ोसी पड़ोसी के साथ, शहर शहर के साथ, और बादशाही बादशाही के साथ जंग करेगी। 3 मिसर की रूह मुज़तरिब हो जाएगी, और मैं उनके मनसूबों को दरहम-बरहम कर दूँगा। गो वह बुतों, मुरदों की रूहों, उनसे राबिता करनेवालों और किस्मत का हाल बतानेवालों से मशवरा करेंगे, 4 लेकिन मैं उन्हें एक ज़ालिम मालिक के हवाले कर दूँगा, और एक सख्त बादशाह उन पर हुकूमत करेगा।” यह है कादिरे-मुतलक रब्बुल-अफ़वाज का फ़रमान।

5 दरियाए-नील का पानी ख़त्म हो जाएगा, वह बिलकुल सूख जाएगा। 6 मिसर की नहरों से बदबू फैलेगी बल्कि मिसर के नाले घटते घटते ख़ुशक हो जाएंगे। नरसल और सरकंडे मुरझा जाएंगे। 7 दरियाए-नील के दहाने तक जितनी भी हरियाली और फ़सलें किनारे पर उगती हैं वह सब पज़मुरदा हो जाएँगी और हवा में बिखरकर गायब हो जाएँगी। 8 मछरे आहो-ज़ारी करेंगे, दरिया में काँटा और जाल डालनेवाले घटते जाएंगे। 9 सन के रेशों से धागा बनानेवालों को शर्म आएगी, और जूलाहों का रंग फ़क पड़ जाएगा। 10 कपड़ा बनानेवाले सख्त मायूस होंगे, तमाम मज़दूर दिल-बरदाशता होंगे।

11 जुअन के अफ़सर नासमझ ही हैं, फिरौन के दाना मुशीर उसे अहमक़ाना मशवरे दे रहे हैं। तुम मिसरी बादशाह के सामने किस तरह दावा कर सकते हो, “मैं दानिशमंदों के हलके में शामिल और क़दीम बादशाहों का वारिस हूँ”? 12 ऐ फिरौन, अब तेरे दानिशमंद कहाँ हैं? वह मालूम करके तुझे बताएँ कि रब्बुल-अफ़वाज मिसर के साथ क्या कुछ करने का इरादा रखता है। 13 जुअन के अफ़सर अहमक़ बन बैठे हैं, मेंफ़िस के बुजुर्गों ने धोका खाया है। उसके कबायली सरदारों के फ़रेब से मिसर डगमगाने लगा है। 14 क्योंकि रब ने उनमें अबतरी की रूह डाल दी है। जिस तरह नशे में धुत शराबी अपनी कै में लड़खड़ाता रहता है उसी तरह मिसर उनके मशवरों से डौँवाँडोल हो गया है, खाह वह क्या कुछ क्यों न करे। 15 उस की कोई बात नहीं बनती, खाह सर हो या दुम, कोपल हो या तना।

16 मिसरी उस दिन औरतों जैसे कमज़ोर होंगे। जब रब्बुल-अफ़वाज उन्हें मारने के लिए अपना हाथ उठाएगा तो वह घबराकर काँप उठेंगे। 17 मुल्के-यहूदाह मिसरियों के लिए शर्म का बाइस बनेगा। जब भी उसका ज़िक्र होगा तो वह दहशत खाएँगे, क्योंकि उन्हें वह मनसूबा याद आएगा जो रब ने उनके खिलाफ़ बाँधा है।

मिसर, असूर और इसराईल मिलकर इबादत करेंगे

* 18:1 एक और मुमकिन तरज़ुमा : फड़फड़ाती टिट्टियों।

18 उस दिन मिसर के पाँच शहर कनान की ज़बान अपनाकर रब्बुल-अफ़वाज के नाम पर कसम खाएँगे। उनमें से एक 'तबाही का शहर' कहलाएगा। *

19 उस दिन मुल्के-मिसर के बीच में रब के लिए कुरबानगाह मखसूस की जाएगी, और उस की सरहद पर रब की याद में सतून खड़ा किया जाएगा। 20 यह दोनों रब्बुल-अफ़वाज की हुजूरी की निशानदेही करेंगे और गवाही देंगे कि वह मौजूद है। चुनाँचे जब उन पर जुल्म किया जाएगा तो वह चिल्लाकर उससे फरियाद करेंगे, और रब उनके पास नजातदहिदा भेज देगा जो उनकी खातिर लड़कर उन्हें बचाएगा। 21 यों रब अपने आपको मिसरियों पर जाहिर करेगा। उस दिन वह रब को जान लेंगे, और जबह और गल्ला की कुरबानियाँ चढ़ाकर उस की परस्तिश करेंगे। वह रब के लिए मन्नतें मानकर उनको पूरा करेंगे। 22 रब मिसर को मारेगा भी और उसे शफ़ा भी देगा। मिसरी रब की तरफ़ रूजू करेंगे तो वह उनकी इल्तिजाओं के जवाब में उन्हें शफ़ा देगा।

23 उस दिन एक पक्की सड़क मिसर को असूर के साथ मुंसलिक कर देगी। असूरी और मिसरी आजादी से एक दूसरे के मुल्क में आएँगे, और दोनों मिलकर अल्लाह की इबादत करेंगे। 24 उस दिन इसराईल भी मिसर और असूर के इत्हाद में शरीक होकर तमाम दुनिया के लिए बरकत का बाइस होगा। 25 क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज उन्हें बरकत देकर फ़रमाएगा, "मेरी क्रौम मिसर पर बरकत हो, मेरे हाथों से बने मुल्क असूर पर मेरी बरकत हो, मेरी मीरास इसराईल पर बरकत हो।"

20

यसायाह की बरहनगी और मिसर और एथोपिया का अंजाम

1 एक दिन असूरी बादशाह सरज़ून ने अपने कमाँडर को अशदूद से लड़ने भेजा। जब असूरियों ने उस फ़िलिस्ती शहर पर हमला किया तो वह उनके कब्ज़े में आ गया।

2 तीन साल पहले रब यसायाह बिन आमूस से हमकलाम हुआ था, "जा, टाट का जो लिबास तू पहने रहा है उतार। अपने जूतों को भी उतार।" नबी ने ऐसा ही किया और इसी हालत में फिरता रहा था। 3 जब अशदूद असूरियों के कब्ज़े में आ गया तो रब ने फ़रमाया, "मेरे खादिम यसायाह को बरहना और नंगे पाँव फिरते तीन साल हो गए हैं। इससे उसने अलामती तौर पर इसकी निशानदेही की है कि मिसर और एथोपिया का क्या अंजाम होगा। 4 शाहे-असूर मिसरी कैदियों और एथोपिया के जिलावतनों को इसी हालत में अपने आगे आगे हँकेगा। नौजवान और बुजुर्ग सब बरहना और नंगे पाँव फिरेंगे, वह कमर से लेकर पाँव तक बरहना होंगे। मिसर कितना शर्मिदा होगा।

5 यह देखकर फ़िलिस्ती दहशत खाएँगे। उन्हें शर्म आएगी, क्योंकि वह एथोपिया से उम्मीद रखते और अपने मिसरी इत्हादी पर फ़ख़र करते थे। 6 उस वक़्त इस साहिली इलाके के बाशिंदे कहेंगे, "देखो उन लोगों की हालत जिनसे हम उम्मीद रखते थे। उन्हीं के पास हम भागकर आए ताकि मदद और असूरी बादशाह से छुटकारा मिल जाए। अगर उनके साथ ऐसा हुआ तो हम किस तरह बचेंगे?"

21

बाबल की तबाही का एलान

1 दलदल के इलाके * के बारे में अल्लाह का फ़रमान :

जिस तरह दशते-नजब में तूफ़ान के तेज़ झोंके बार बार आ पड़ते हैं उसी तरह आफ़त बयाबान से आएगी, दुश्मन दहशतनाक मुल्क से आकर तुझ पर टूट पड़ेगा। 2 रब ने हौलनाक रोया में मुझ पर जाहिर किया है कि नमकहराम और हलाकू हरकत में आ गए हैं। ऐ ऐलाम चल, बाबल पर हमला कर! ऐ मादी उठ, शहर का मुहासरा कर! मैं होने दूँगा कि बाबल के मज़लूमों की आहें बंद हो जाएँगी।

3 इसलिए मेरी कमर शिदत से लरज़ने लगी है। दर्दे-ज़ह में मुब्तला औरत की-सी घबराहट मेरी अंतडियों को मरोड़ रही है। जो कुछ मैंने सुना है उससे मैं तड़प उठा हूँ, और जो कुछ मैंने देखा है, उससे मैं हवासबाख़्ता हो गया हूँ। 4 मेरा दिल धड़क रहा है, कपकपी मुझ पर तारी हो गई है। पहले शाम का धुँधलका मुझे प्यारा लगता था, लेकिन अब रोया को देखकर वह मेरे लिए दहशत का बाइस बन गया है।

5 ताहम बाबल में लोग मेज़ लगाकर कालीन बिछा रहे हैं। बेपरवाई से वह खाना खा रहे और मैं पी रहे हूँ। ऐ अफ़सरो, उठो! अपनी ढालों पर तेल लगाकर लड़ने के लिए तैयार हो जाओ!

6 रब ने मुझे हुक्म दिया, "जाकर पहरेदार खड़ा कर दे जो तुझे हर नज़र आनेवाली चीज़ की इतला दे। 7 ज्योंही दो घोड़ोंवाले रथ या गधों और ऊँटों पर सवार आदमी दिखाई दें तो खबरदार! पहरेदार पूरी तवज्जुह दे।"

8 तब पहरेदार शेरबबर की तरह पुकार उठा, "मेरे आका, रोज़ बरोज़ मैं पूरी वफ़ादारी से अपनी बुर्जी पर खड़ा रहा हूँ, और रातों मैं तैयार रहकर यहाँ पहरादारी करता आया हूँ। 9 अब वह देखो! दो घोड़ोंवाला रथ आ रहा है जिस पर आदमी सवार है। अब वह जवाब में कह रहा है, 'बाबल गिर गया, वह गिर गया है! उसके तमाम बुत चकनाचूर होकर ज़मीन पर बिखर गए हैं'।"

10 ऐ गाहने की जगह पर कुचली हुई † मेरी क्रौम! जो कुछ इसराईल के खुदा, रब्बुल-अफ़वाज ने मुझे फ़रमाया है उसे मैंने तुम्हें सुना दिया है।

* 19:18 गालिबन इससे मुराद सूरज का शहर यानी Heliopolis है।

* 21:1 यानी बाबल।

† 21:10 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : गाही गई।

अदोम की हालत : सुबह होने में कितनी देर है?

11 अदोम के बारे में रब का फ़रमान :

सईर के पहाड़ी इलाके से कोई मुझे आवाज़ देता है, “ऐ पहरदार, सुबह होने में कितनी देर बाक़ी है? ऐ पहरदार, सुबह होने में कितनी देर बाक़ी है?” 12 पहरदार जवाब देता है, “सुबह होनेवाली है, लेकिन रात भी। अगर आप मज़ीद पूछना चाहें तो दुबारा आकर पूछ लें।”

मुल्के-अरब का अंजाम

13 मुल्के-अरब ‡ के बारे में रब का फ़रमान : ऐ ददानियों के काफ़िलो, मुल्के-अरब के जंगल में रात गुज़ारो। 14 ऐ मुल्के-तैमा के बाशिंदो, पानी लेकर प्यासों से मिलने जाओ! पनाहगुज़ीनों के पास जाकर उन्हें रोटी खिलाओ! 15 क्योंकि वह तलवार से लैस दुश्मन से भाग रहे हैं, ऐसे लोगों से जो तलवार थामे और कमान ताने उनसे सख़्त लड़ाई लड़े हैं।

16 क्योंकि रब ने मुझसे फ़रमाया, “एक साल के अंदर अंदर S कीदार की तमाम शानो-शौकत ख़त्म हो जाएगी। 17 कीदार के ज़बरदस्त तीरअंदाज़ों में से थोड़े ही बच पाएंगे।” यह रब, इसराईल के ख़ुदा का फ़रमान है।

22

यरूशलम का अंजाम

1 रोया की वादी यरूशलम के बारे में रब का फ़रमान :

क्या हुआ है? सब छतों पर क्यों चढ़ गए हैं? 2 हर तरफ़ शोर-शराबा मच रहा है, पूरा शहर बग़लें बजा रहा है। यह कैसी बात है? तेरे मक़तूल न तलवार से, न मैदाने-जंग में मरे। 3 क्योंकि तेरे तमाम लीडर मिलकर फ़रार हुए और फिर तीर चलाए बग़ैर पकड़े गए। बाक़ी जितने लोग तुझमें थे वह भी दूर दूर भागना चाहते थे, लेकिन उन्हें भी कैद किया गया।

4 इसलिए मैंने कहा, “अपना मुँह मुझसे फेरकर मुझे ज़ार ज़ार रोने दो। मुझे तसल्ली देने पर बज़िद न रहो जबकि मेरी कौम तबाह हो रही है।” 5 क्योंकि कादिरे-मुतलक रब्बुल-अफ़वाज रोया की वादी पर हौलनाक दिन लाया है। हर तरफ़ घबराहट, कुचले हुए लोग और अबतरी नज़र आती है। शहर की चारदीवारी टूटने लगी है, पहाड़ों में चीखें गूँज रही हैं।

6 ऐलाम के फ़ौजी अपने तरक़श उठाकर रथों, आदमियों और घोड़ों के साथ आ गए हैं। क़ीर के मर्द भी अपनी ढालें गिलाफ़ से निकालकर तुझसे लड़ने के लिए निकल आए हैं। 7 यरूशलम के गिर्दों-नवाह की बेहतरीन वादियाँ दुश्मन के रथों से भर गई हैं, और उसके घुड़सवार शहर के दरवाज़े पर हमला करने के लिए उसके सामने खड़े हो गए हैं। 8 जो भी बंदोबस्त यहूदाह ने अपने तहफ़फ़ुज़ के लिए कर लिया था वह ख़त्म हो गया है।

उस दिन तुम लोगों ने क्या किया? तुम ‘जंगलघर’ नामी सिलाहख़ाने में जाकर असला का मुआयना करने लगे। 9-11 तुमने उन मुतअद्दिद दराइनों का जायज़ा लिया जो दाऊद के शहर की फ़सील में पड़ गई थीं। उसे मज़बूत करने के लिए तुमने यरूशलम के मकानों को गिनकर उनमें से कुछ गिरा दिए। साथ साथ तुमने निचले तालाब का पानी जमा किया। ऊपर के पुराने तालाब से निकलनेवाला पानी जमा करने के लिए तुमने अंदरूनी और बैरूनी फ़सील के दरमियान एक और तालाब बना लिया। लेकिन अफ़सोस, तुम उस की परवा नहीं करते जो यह सारा सिलसिला अमल में लाया। उस पर तुम तवज्जुह ही नहीं देते जिसने बड़ी देर पहले इसे तश्कील दिया था।

12 उस वक़्त कादिरे-मुतलक रब्बुल-अफ़वाज ने हुक्म दिया कि गिर्याओ-ज़ारी करो, अपने बालों को मुँडवाकर टाट का लिबास पहन लो। 13 लेकिन क्या हुआ? तमाम लोग शादियाना बजाकर खुशी मना रहे हैं। हर तरफ़ बैलों और भेड़-बकरियों को ज़बह किया जा रहा है। सब गोश्त और मै से लुत्फ़अंदोज़ होकर कह रहे हैं, “आओ, हम खाएँ पिँ, क्योंकि कल तो मर ही जाना है।”

14 लेकिन रब्बुल-अफ़वाज ने मेरी मौजूदगी में ही ज़ाहिर किया है कि यक़ीनन यह कुसूर तुम्हारे मरते दम तक मुआफ़ नहीं किया जाएगा।

* यह कादिरे-मुतलक रब्बुल-अफ़वाज का फ़रमान है।

रब शिबनाह की जगह इलियाक़ीम को महल का निगरान मुक़र्रर करेगा

15 कादिरे-मुतलक रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “उस निगरान शिबनाह के पास चल जो महल का इंचार्ज है। उसे पैग़ाम पहुँचा दे, 16 तू यहाँ क्या कर रहा है? किसने तुझे यहाँ अपने लिए मक़बरा तराशने की इजाज़त दी? तू कौन है कि बुलंदी पर अपने लिए मज़ार बनवाए, चटान में आरामगाह खुदवाए? 17 ऐ मर्द, ख़बरदार! रब तुझे ज़ोर से दूर दूर तक फेंकनेवाला है। वह तुझे पकड़ लेगा 18 और मरोड़ मरोड़कर ग़ेद की तरह एक वसी मुल्क में फेंक देगा। वहीं तू मरेगा, वहीं तेरे शानदार रथ पड़े रहेंगे। क्योंकि तू अपने मालिक के घराने के लिए शर्म का बाइस बना है। 19 मैं तुझे बरतरफ़ करूँगा, और तू ज़बरदस्ती अपने ओहदे और मंसब से फ़ारिग़ कर दिया जाएगा।

20 उस दिन मैं अपने ख़ादिम इलियाक़ीम बिन ख़िलकियाह को बुलाऊँगा। 21 मैं उसे तेरा ही सरकारी लिबास और कमरबंद पहनाकर तेरा इख़्तियार उसे दे दूँगा। उस वक़्त वह यहूदाह के घराने और यरूशलम के तमाम बाशिंदों का बाप बनेगा। 22 मैं उसके कंधे पर दाऊद के घराने की चाबी रख दूँगा। जो दरवाज़ा वह खोलेंगा उसे कोई बंद नहीं कर सकेगा, और जो दरवाज़ा वह बंद करेगा उसे कोई खोल नहीं सकेगा। 23 वह

‡ 21:13 या बयान। S 21:16 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : मज़दूर के-से एक साल के अंदर अंदर।

* 22:14 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : यक़ीनन इस कुसूर का कफ़ारा तुम्हारे मरते दम तक नहीं दिया जाएगा।

खूँटी की मानिंद होगा जिसको मैं ज़ोर से ठोंककर मज़बूत दीवार में लगा दूँगा। उससे उसके बाप के घराने को शराफ़त का ऊँचा मक़ाम हासिल होगा।

24 लेकिन फिर आबाई घराने का पूरा बोझ उसके साथ लटक जाएगा। तमाम औलाद और रिश्तेदार, तमाम छोटे बरतन प्यालों से लेकर मरतबानों तक उसके साथ लटक जाएंगे। 25 रब्बुल-अफ़वाज़ फ़रमाता है कि उस वक़्त मज़बूत दीवार में लगी यह खूँटी निकल जाएगी। उसे तोड़ा जाएगा तो वह गिर जाएगी, और उसके साथ लटका सारा सामान टूट जाएगा।” यह रब का फ़रमान है।

23

सूर और सैदा की तबाही

1 सूर के बारे में अल्लाह का फ़रमान :

ऐ तरसीस के उम्दा जहाज़ो, * वावैला करो! क्योंकि सूर तबाह हो गया है, वहाँ टिकने की जगह तक नहीं रही। जज़ीराए-कुबस्स से वापस आते वक़्त उन्हें इतला दी गई। 2 ऐ साहिली इलाक़े में बसनेवालो, आहो-ज़ारी करो! ऐ सैदा के ताजिरो, मातम करो! तेरे कासिद समुंदर को पार करते थे, 3 वह गहरे पानी पर सफ़र करते हुए मिसर † का ग़ल्ला तुझ तक पहुँचाते थे, क्योंकि तू ही दरियाए-नील की फ़सल से नफ़ा कमाता था। यों तू तमाम क्रौमों का तिजारती मरकज़ बना।

4 लेकिन अब शर्मसार हो, ऐ सैदा, क्योंकि समुंदर का किलाबंद शहर सूर कहता है, “हाय, सब कुछ तबाह हो गया है। अब ऐसा लगता है कि मैंने न कभी दर्दे-ज़ह में मुब्तला होकर बच्चे जन्म दिए, न कभी बेटे-बेटियाँ पाले।”

5 जब यह ख़बर मिसर तक पहुँचेगी तो वहाँ के बाशिंदे तड़प उठेंगे।

6 चुनौचे समुंदर को पार करके तरसीस तक पहुँचो! ऐ साहिली इलाक़े के बाशिंदो, गिर्याओ-ज़ारी करो! 7 क्या यह वाकई तुम्हारा वह शहर है जिसकी रंगरलियाँ मशहर थीं, वह कदीम शहर जिसके पाँव उसे दूर-दराज़ इलाकों तक ले गए ताकि वहाँ नई आबादियाँ कायम करे? 8 किसने सूर के खिलाफ़ यह मनसूबा बाँधा? यह शहर तो पहले बादशाहों को तख़्त पर बिठाया करता था, और उसके सौदागर रईस थे, उसके ताजिर दुनिया के शुरफ़ा में गिने जाते थे। 9 रब्बुल-अफ़वाज़ ने यह मनसूबा बाँधा ताकि तमाम शानो-शौकत का घमंड पस्त और दुनिया के तमाम ओहदेदार ज़ेर हो जाएँ।

10 ऐ तरसीस बेटी, अब से अपनी ज़मीन की खेतीबाड़ी कर, उन किसानों की तरह काश्तकारी कर जो दरियाए-नील के किनारे अपनी फ़सलें लगाते हैं, क्योंकि तेरी बंदरगाह जाती रही है। 11 रब ने अपने हाथ को समुंदर के ऊपर उठाकर ममालिक को हिला दिया। उसने हुक्म दिया है कि कनान ‡ के किले बरबाद हो जाएँ। 12 उसने फ़रमाया, “ऐ सैदा बेटी, अब से तेरी रंगरलियाँ बंद रहेंगी। ऐ कुँवारी जिसकी इसमतदारी हुई है, उठ और समुंदर को पार करके कुबस्स में पनाह ले। लेकिन वहाँ भी तू आराम नहीं कर पाएगी।”

13 मुल्के-बाबल पर नज़र डालो। यह क्रौम तो नेस्तो-नाबूद हो गई, उसका मुल्क जंगली जानवरों का घर बन गया है। असूरियों ने बुर्ज बनाकर उसे घेर लिया और उसके किलों को ढा दिया। मलबे का ढेर ही रह गया है।

14 ऐ तरसीस के उम्दा जहाज़ो, हाय हाय करो, क्योंकि तुम्हारा किला तबाह हो गया है!

15 तब सूर इनसान की याद से उतर जाएगा। लेकिन 70 साल यानी एक बादशाह की मुद्तुल-उम्र के बाद सूर उस तरह बहाल हो जाएगा जिस तरह गीत में कसबी के बारे में गाया जाता है,

16 “ऐ फ़रामोश कसबी, चल! अपना सरोद पकड़कर गलियों में फिर! सरोद को खूब बजा, कई एक गीत गा ताकि लोग तुझे याद करें।”

17 क्योंकि 70 साल के बाद रब सूर को बहाल करेगा। कसबी दुबारा पैसे कमाएगी, दुनिया के तमाम ममालिक उसके गाहक बनेंगे।

18 लेकिन जो पैसे वह कमाएगी वह रब के लिए मखसूस होंगे। वह ज़ख़ीरा करने के लिए जमा नहीं होंगे बल्कि रब के हुज़ूर ठहरनेवालों को दिए जाएंगे ताकि जी भरकर खा सकें और शानदार कपड़े पहन सकें।

24

रब तमाम दुनिया की अदालत करता है

1 देखो, रब दुनिया को वीरानो-सुनसान कर देगा, रूप-ज़मीन को उलट-पलट करके उसके बाशिंदों को मुंतशिर कर देगा। 2 किसी को भी छोड़ा नहीं जाएगा, खाह इमाम हो या आम शख्स, मालिक या नौकर, मालिकन या नौकरानी, बेचनेवाला या खरीदार, उधार लेने या देनेवाला, कर्ज़दार या कर्ज़वाह। 3 ज़मीन मुकम्मल तौर पर उजड़ जाएगी, उसे सरासर लूटा जाएगा। रब ही ने यह सब कुछ फ़रमाया है। 4 ज़मीन सूख सूखकर सुकड़ जाएगी, दुनिया ख़ुशक होकर मुरझा जाएगी। उसके बड़े बड़े लोग भी निढाल हो जाएंगे। 5 ज़मीन के अपने बाशिंदों ने उस की बेहुरमती की है, क्योंकि वह शरीअत के ताबे न रहे बल्कि उसके अहक़ाम को तबदील करके अल्लाह के साथ का अबदी अहद तोड़ दिया है।

* 23:1 ‘तरसीस का जहाज़’ न सिर्फ़ मुल्के-तरसीस के जहाज़ के लिए बल्कि हर उम्दा किस्म के तिजारती जहाज़ के लिए इस्तेमाल होता था। देखिए आयत 14। † 23:3 इब्रानी में ‘सैहर’ मुस्तामल है जो दरियाए-नील की एक शाख़ है। ‡ 23:11 कनान से मुराद लुबनान यानी कदीम ज़माने का Phoenicia है।

6 इसी लिए ज़मीन लानत का लुकमा बन गई है, उस पर बसनेवाले अपनी सज़ा भुगत रहे हैं। इसी लिए दुनिया के बाशिंदे भस्म हो रहे हैं और कम ही बाक़ी रह गए हैं। 7 अंगूर का ताज़ा रस सूखकर ख़त्म हो रहा, अंगूर की बेलें मुरझा रही हैं। जो पहले खुशबाश थे वह अन्हें भरने लगे हैं। 8 दफ़ों की खुशकुन आवाज़ें बंद, रंगरलियाँ मनानेवालों का शोर बंद, सरोदों के सुरीले नगमे बंद हो गए हैं। 9 अब लोग गीत गा गाकर मै नहीं पीते बल्कि शराब उन्हें कड़वी ही लगती है। 10 वीरानो-सुनसान शहर तबाह हो गया है, हर घर के दरवाज़े पर कुंडी लगी है ताकि अंदर घुसनेवालों से महफूज़ रहे। 11 गलियों में लोग गिर्याओ-जारी कर रहे हैं कि मै ख़त्म है। हर खुशी दूर हो गई है, हर शादमानी ज़मीन से गायब है। 12 शहर में मलबे के ढेर ही रह गए हैं, उसके दरवाज़े टुकड़े टुकड़े हो गए हैं।

13 क्योंकि मुल्क के दरमियान और अक़वाम के बीच में यही सूरते-हाल होगी कि चंद एक ही बच पाएँगे, बिलकुल उन दो-चार ज़ैतूनों की मानिंद जो दरख़्त को झाड़ने के बावुजूद उस पर रह जाते हैं, या उन दो-चार अंगूरों की तरह जो फ़सल चुनने के बावुजूद बेलों पर लगे रहते हैं। 14 लेकिन यह चंद एक ही पुकारकर खुशी के नारे लगाएँगे। मगरिब से वह रब की अज़मत की सताइश करेंगे। 15 चुनौचे मशरिक में रब को जलाल दो, जज़ीरों में इसराईल के खुदा के नाम की ताज़ीम करो। 16 हमें दुनिया की इंतहा से गीत सुनाई दे रहे हैं, “रास्त खुदा की तारीफ़ हो!” लेकिन मै बोल उठा, “हाय, मै घुल घुलकर मर रहा हूँ, मै घुल घुलकर मर रहा हूँ! मुझ पर अफ़सोस, क्योंकि बेवफ़ा अपनी बेवफ़ाई दिखा रहे हैं, बेवफ़ा खुले तौर पर अपनी बेवफ़ाई दिखा रहे हैं!” 17 ऐ दुनिया के बाशिंदो, तुम दहशतनाक मुसीबत, ग़ड्डों और फंदों में फँस जाओगे। 18 तब जो हौलनाक आवाज़ों से भागकर बच जाए वह गढ़े में गिर जाएगा, और जो गढ़े से निकल जाए वह फंदे में फँस जाएगा। क्योंकि आसमान के दरिचे खुल रहे और ज़मीन की बुनियादें हिल रही हैं। 19 ज़मीन कड़क से फ़ट रही है। वह डगमगा रही, झूम रही, 20 नशे में आए शराबी की तरह लड़खड़ा रही और कच्ची झोंपड़ी की तरह झूल रही है। आखिरकार वह अपनी बेवफ़ाई के बोझ तले इतने धड़ाम से गिरेगी कि आइंदा कभी नहीं उठने की।

21 उस दिन रब आसमान के लश्कर और ज़मीन के बादशाहों से जवाब तलब करेगा। 22 तब वह गिरिफ़्तार होकर गढ़े में जमा होंगे, उन्हें कैदख़ाने में डालकर मुतअदिद दिनों के बाद सज़ा मिलेगी। 23 उस वक़्त चाँद नादिम होगा और सूरज शर्म खाएगा, क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज कोहे-सियून पर तख़्तनशीन होगा। वहाँ यस्शलम में वह बड़ी शानो-शौकत के साथ अपने बुजुर्गों के सामने हुक्मत करेगा।

25

नजात के लिए अल्लाह की तारीफ़

1 ऐ रब, तू मेरा खुदा है, मै तेरी ताज़ीम और तेरे नाम की तारीफ़ करूँगा। क्योंकि तूने बड़ी वफ़ादारी से अनोखा काम करके क़दीम ज़माने में बँधे हुए मनसूबों को पूरा किया है।

2 तूने शहर को मलबे का ढेर बनाकर हमलों से महफूज़ आबादी को खंडरात में तबदील कर दिया। ग़ैरमुल्कियों का क़िलाबंद महल यों खाक में मिलाया गया कि आइंदा कभी शहर नहीं कहलाएगा, कभी अज़ सरे-नौ तामीर नहीं होगा।

3 यह देखकर एक जोरावर कौम तेरी ताज़ीम करेगी, ज़बरदस्त अक़वाम के शहर तेरा खौफ़ मानेंगे। 4 क्योंकि तू पस्तहालों के लिए क़िला और मुसीबतज़दा गरीबों के लिए पनाहगाह साबित हुआ है। तेरी आड़ में इन्सान तूफ़ान और गरमी की शिद्दत से महफूज़ रहता है। गो ज़बरदस्तों की फूँके बारिश की बौछाड़ 5 या रेगिस्तान में तपिश जैसी क्यों न हों, ताहम तू ग़ैरमुल्कियों की गरज को रोक देता है। जिस तरह बादल के साय से झुलसती गरमी जाती रहती है, उसी तरह ज़बरदस्तों की शेखी को तू बंद कर देता है।

यस्शलम में बैनुल-अक़वामी ज़ियाफ़त

6 यही कोहे-सियून पर रब्बुल-अफ़वाज तमाम अक़वाम की ज़बरदस्त ज़ियाफ़त करेगा। बेहतरीन किस्म की क़दीम और साफ़-शफ़फ़ाफ़ मै पी जाएगी, उम्दा और लज़ीज़तरीन खाना खाया जाएगा।

7 इसी पहाड़ पर वह तमाम उम्मतों पर का निक्काब उतारेगा और तमाम अक़वाम पर का परदा हटा देगा। 8 मौत इलाही फ़तह का लुकमा होकर अबद तक नेस्तो-नाबूद रहेगी। तब रब कादिरे-मुतलक हर चेहरे के आँसू पोंछकर तमाम दुनिया में से अपनी कौम की स्सवाई दूर करेगा। रब ही ने यह सब कुछ फ़रमाया है। 9 उस दिन लोग कहेंगे, “यही हमारा खुदा है जिसकी नजात के इंतज़ार में हम रहे। यही है रब जिससे हम उम्मीद रखते रहे। आओ, हम शादियाना बजाकर उस की नजात की खुशी मनाएँ।”

रब मोआब के क़िलों को ढा देगा

10 रब का हाथ इस पहाड़ पर ठहरा रहेगा। लेकिन मोआब को वह यों रौंदेगा जिस तरह भूसा गोबर में मिलाने के लिए रौंदा जाता है। 11 और गो मोआब हाथ फैलाकर उसमें तैरने की कोशिश करे तो भी रब उसका गुस्सा गोबर में दबाए रखेगा, चाहे वह कितनी महारत से हाथ-पाँव मारने की कोशिश क्यों न करे। 12 ऐ मोआब, वह तेरी बुलंद और क़िलाबंद दीवारों को गिराएगा, उन्हें ढाकर खाक में मिलाएगा।

26

हमारा खुदा मज़बूत चटान है

1 उस दिन मुल्के-यहूदाह में गीत गाया जाएगा,

“हमारा शहर मजबूत है, क्योंकि हम अल्लाह की नजात देनेवाली चारदीवारी और पुश्तों से घिरे हुए हैं।

2 शहर के दरवाजों को खोलो ताकि रास्त कौम दाखिल हो, वह कौम जो वफादार रही है।

3 ऐ रब, जिसका इरादा मजबूत है उसे तू महफूज रखता है। उसे पूरी सलामती हासिल है, क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है।

4 रब पर अबद तक एतमाद रखो! क्योंकि रब खुदा अबदी चटान है।

5 वह बुलंदियों पर रहनेवालों को जेर और ऊँचे शहर को नीचा करके खाक में मिला देता है।

6 ज़रूरतमंद और पस्तहाल उसे पाँवों तले कुचल देते हैं।”

दुआ

7 ऐ अल्लाह, रास्तबाज़ की राह हमवार है, क्योंकि तू उसका रास्ता चलने के काबिल बना देता है।

8 ऐ रब, हम तेरे इंतज़ार में रहते हैं, उस वक़्त भी जब तू हमारी अदालत करता है। हम तेरे नाम और तेरी तमज़ीद के आरज़ूमंद रहते हैं।

9 रात के वक़्त मेरी रूह तेरे लिए तड़पती, मेरा दिल तेरा तालिब रहता है। क्योंकि दुनिया के बाशिंदे उस वक़्त इनसाफ़ का मतलब सीखते हैं जब तू दुनिया की अदालत करता है।

10 अफ़सोस, जब बेदीन पर रहम किया जाता है तो वह इनसाफ़ का मतलब नहीं सीखता बल्कि इनसाफ़ के मुल्क में भी ग़लत काम करने से बाज़ नहीं रहता, वहाँ भी रब की अज़मत का लिहाज़ नहीं करता।

11 ऐ रब, गो तेरा हाथ उन्हें मारने के लिए उठा हुआ है तो भी वह ध्यान नहीं देते। लेकिन एक दिन उनकी आँखें खुल जाएँगी, और वह तेरी अपनी कौम के लिए ग़ैरत को देखकर शर्मिंदा हो जाएंगे। तब तू अपनी भस्म करनेवाली आग उन पर नाज़िल करेगा।

12 ऐ रब, तू हमें अमनो-अमान मुहैया करता है बल्कि हमारी तमाम कामयाबियाँ तेरे ही हाथ से हासिल हुई हैं।

13 ऐ रब हमारे खुदा, गो तेरे सिवा दीगर मालिक हम पर हुकूमत करते आए हैं तो भी हम तेरे ही फ़ज़ल से तेरे नाम को याद कर पाए। 14 अब यह लोग मर गए हैं और आइंदा कभी ज़िंदा नहीं होंगे, उनकी रूहें कूच कर गई हैं और आइंदा कभी वापस नहीं आएँगी। क्योंकि तूने उन्हें सज़ा देकर हलाक कर दिया, उनका नामो-निशान मिटा डाला है।

15 ऐ रब, तूने अपनी कौम को फ़रोग दिया है। तूने अपनी कौम को बड़ा बनाकर अपने जलाल का इज़हार किया है। तेरे हाथ से उस की सरहँदें चारों तरफ़ बढ़ गई हैं।

16 ऐ रब, वह मुसीबत में फँसकर तुझे तलाश करने लगे, तेरी तादीब के बाइस मंत्र फूँकने लगे।

17 ऐ रब, तेरे हुज़ूर हम दर्द-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह तड़पते और चीखते-चिल्लाते रहे। 18 जनने का दर्द महसूस करके हम पेचो-ताब खा रहे थे। लेकिन अफ़सोस, हवा ही पैदा हुई। न हमने मुल्क को नजात दी, न दुनिया के नए बाशिंदे पैदा हुए।

19 लेकिन तेरे मुरदे दुबारा ज़िंदा होंगे, उनकी लाशें एक दिन जी उठेंगी। ऐ खाक में बसनेवालो, जाग उठो और खुशी के नारे लगाओ! क्योंकि तेरी ओस नूरों की शबनम है, और ज़मीन मुरदा रूहों को जन्म देगी।

रब इसराइल के दुश्मनों से बदला लेगा

20 ऐ मेरी कौम, जा और थोड़ी देर के लिए अपने कमरों में छुपकर कुंडी लगा ले। जब तक रब का ग़ज़ब ठंडा न हो वहाँ ठहरी रह।

21 क्योंकि देख, रब अपनी सुकूनतगाह से निकलने को है ताकि दुनिया के बाशिंदों को सज़ा दे। तब ज़मीन अपने आप पर बहाया हुआ खून फ़ाश करेगी और अपने मकतूलों को मज़ीद छुपाए नहीं रखेगी।

27

1 उस दिन रब उस भागने और पेचो-ताब खानेवाले साँप को सज़ा देगा जो लिवियातान कहलाता है। अपनी सख़्त, अज़ीम और ताक़तवर तलवार से वह समुंदर के अज़दहे को मार डालेगा।

अंगूर के बाग़ का नया गीत

2 उस दिन कहा जाएगा,

“अंगूर का कितना ख़ूबसूरत बाग़ है! उस की तारीफ़ में गीत गाओ! 3 मैं, रब खुद ही उसे सँभालता, उसे मुसलसल पानी देता रहता हूँ। दिन-रात मैं उस की पहरादारी करता हूँ ताकि कोई उसे नुक़सान न पहुँचाए।

4 अब मेरा गुस्सा ठंडा हो गया है। लेकिन अगर बाग़ में ऊँटकटारे और खारदार झाड़ियाँ मिल जाएँ तो मैं उनसे निपट लूँगा, मैं उनसे जंग करके सबको जला दूँगा। 5 लेकिन अगर वह मान जाएँ तो मेरे पास आकर पनाह लें। वह मेरे साथ सुलह करें, हों मेरे साथ सुलह करें।”

सज़ा के बावजूद इसराइल पर रहम

6 एक वक्रत आया कि याकूब जड़ पकड़ेगा। इसराइल को फूल लग जाएंगे, उस की कोंपलें निकलेंगी और दुनिया उसके फल से भर जाएगी। 7 क्या रब ने अपनी क्रौम को यों मारा जिस तरह उसने इसराइल को मारनेवालों को मारा है? हरगिज़ नहीं! या क्या इसराइल को यों क़त्ल किया गया जिस तरह उसके क़ातिलों को क़त्ल किया गया है? 8 नहीं, बल्कि तूने उसे डराकर और भगाकर उससे जवाब तलब किया, तूने उसके खिलाफ़ मशरिक से तेज़ आँधी भेजकर उसे अपने हुज़ूर से निकाल दिया।

9 इस तरह याकूब के कुसूर का कफ़ारा दिया जाएगा। और जब इसराइल का गुनाह दूर हो जाएगा तो नतीजे में वह तमाम ग़लत क़ुरबानगाहों को चूने के पत्थरों की तरह चकनाचूर करेगा। न यसीरत देवी के खंबे, न बख़ूर जलाने की ग़लत क़ुरबानगाहें खड़ी रहेंगी। 10 क्योंकि क़िलाबंद शहर तनहा रह गया है। लोगों ने उसे वीरान छोड़कर रेगिस्तान की तरह तर्क कर दिया है। अब से उसमें बछड़े ही चरेंगे। वही उस की गलियों में आराम करके उस की टहनियों को चबा लेंगे। 11 तब उस की शाखें सूख जाएँगी और औरतें उन्हें तोड़ तोड़कर जलाएँगी। क्योंकि यह क्रौम समझ से खाली है, लिहाज़ा उसका ख़ालिक उस पर तरस नहीं खाएगा, जिसने उसे तश्कील दिया वह उस पर मेहरबानी नहीं करेगा।

12 उस दिन तुम इसराइली ग़ल्ला जैसे होगे, और रब तुम्हारी बालियों को दरियाए-फ़ुरात से लेकर मिसर की शिमाली सरहद पर वाके वादीए-मिसर तक काटेगा। फिर वह तुम्हें गाहकर दाना बदाना तमाम ग़ल्ला इक़ठा करेगा। 13 उस दिन नरसिंगा बुलंद आवाज़ से बजेगा। तब असूर में तबाह होनेवाले और मिसर में भगाए हुए लोग वापस आकर यरूशलम के मुक़द्दस पहाड़ पर रब को सिजदा करेंगे।

28

मग़रूर शहर सामरिया मुरझानेवाला फूल है

1 सामरिया पर अफ़सोस जो इसराइली शराबियों का शानदार ताज है। उस शहर पर अफ़सोस जो इसराइल की शानो-शौकत था लेकिन अब मुरझानेवाला फूल है। उस आबादी पर अफ़सोस जो नशे में धुत लोगों की ज़रखेज़ वादी के ऊपर तख़्तनशीन है। 2 देखो, रब एक ज़बरदस्त सूरमा भेजेगा जो ओलों के तूफ़ान, तबाहक़ुन आँधी और सैलाब पैदा करनेवाली मूसलाधार बारिश की तरह सामरिया पर टूट पड़ेगा और जोर से उसे ज़मीन पर पटख़ देगा। 3 तब इसराइली शराबियों का शानदार ताज सामरिया पाँवों तले रौंदा जाएगा। 4 तब यह मुरझानेवाला फूल जो ज़रखेज़ वादी के ऊपर तख़्तनशीन है और उस की शानो-शौकत ख़त्म हो जाएगी। उसका हाल फ़सल से पहले पकनेवाले अंजीर जैसा होगा। क्योंकि ज्योंही कोई उसे देखे वह उसे तोड़कर हड़प कर लेगा।

5 उस दिन रब्बुल-अफ़वाज़ खुद इसराइल का शानदार ताज होगा, वह अपनी क्रौम के बचे हुआँ का जलाली सेहरा होगा। 6 वह अदालत करनेवाले को इनसाफ़ की रूह दिलाएगा और शहर के दरवाज़े पर दुश्मन को पीछे धकेलनेवालों के लिए ताक़त का बाइस होगा।

यरूशलम के मत्वाले नबी

7 लेकिन यह लोग भी मैं के असर से डगमगा रहे और शराब पी पीकर लड़खड़ा रहे हैं। इमाम और नबी नशे में डूब रहे हैं। मैं पीने से उनके दिमाग़ों में ख़लल आ गया है, शराब पी पीकर वह चक्कर खा रहे हैं। रोया देखते वक्रत वह डूमते, फ़ैसले करते वक्रत झूलते हैं। 8 तमाम मेज़ों उनकी कै से गंदी हैं, उनकी ग़िलाज़त हर तरफ़ नज़र आती है।

9 वह आपस में कहते हैं, “यह शख्स हमारे साथ इस किस्म की बातें क्यों करता है? हमें तालीम देते और इलाही पैग़ाम का मतलब सुनाते वक्रत वह हमें यों समझाता है गोया हम छोटे बच्चे हों जिनका दूध अभी अभी छुड़ाया गया हो। 10 क्योंकि यह कहता है, ‘सब लासव सब लासव, क़व लाक़व क़व लाक़व, थोड़ा-सा इस तरफ़ थोड़ा-सा उस तरफ़’।”

11 चुनौचे अब अल्लाह हक़लाते हुए होंटों और ग़ैरज़बानों की मारिफ़त इस क्रौम से बात करेगा। 12 गो उसने उनसे फ़रमाया था, “यह आराम की जगह है। थकेमाँदों को आराम दो, क्योंकि यहीं वह सुकून पाएँगे।” लेकिन वह सुनने के लिए तैयार नहीं थे। 13 इसलिए आइंदा रब उनसे इन्हीं अलफ़ाज़ से हमक़लाम होगा, “सब लासव सब लासव, क़व लाक़व क़व लाक़व, थोड़ा-सा इस तरफ़, थोड़ा-सा उस तरफ़।” क्योंकि लाज़िम है कि वह चलकर ठोकर खाएँ, और धड़ाम से अपनी पुश्त पर गिर जाएँ, कि वह ज़ख़मी हो जाएँ और फंदे में फँसकर गिरिफ़्तार हो जाएँ।

अल्लाह का वाज़िह पैग़ाम

14 चुनौचे अब रब का क़लाम सुन लो, ऐ मज़ाक़ उड़ानेवालो, जो यरूशलम में बसनेवाली इस क्रौम पर हुकूमत करते हो। 15 तुम शेखी मारकर कहते हो, “हमने मौत से अहद बाँधा और पाताल से मुआहदा किया है। इसलिए जब सज़ा का सैलाब हम पर से गुज़रे तो हमें नुक़सान नहीं पहुँचाएगा। क्योंकि हमने झूट में पनाह ली और धोके में छुप गए हैं।” 16 इसके जवाब में रब कादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, “देखो, मैं सिय्यून में एक पत्थर रख देता हूँ, कोने का एक आज़मूदा और क़ीमती पत्थर जो मज़बूत बुनियाद पर लगा है। जो ईमान लाएगा वह कभी नहीं हिलेगा। 17 इनसाफ़ मेरा फ़ीता और रास्ती मेरी साहल की डोरी होगी। इनसे मैं सब कुछ परखूँगा।

ओले उस झूट का सफ़ाया करेंगे जिसमें तुमने पनाह ली है, और सैलाब तुम्हारी छुपने की जगह उड़ाकर अपने साथ बहा ले जाएगा। 18 तब तुम्हारा मौत के साथ अहद मनसूख़ हो जाएगा, और तुम्हारा पाताल के साथ मुआहदा कायम नहीं रहेगा। सज़ा का सैलाब तुम पर से गुज़रकर तुम्हें पामाल करेगा। 19 वह सुबह बसुबह और दिन-रात गुज़रेगा, और जब भी गुज़रेगा तो तुम्हें अपने साथ बहा ले जाएगा। उस वक्रत लोग

दहशतजड़ा होकर कलाम का मतलब समझेंगे।” 20 चारपाई इतनी छोटी होगी कि तुम पॉव फैलाकर सो नहीं सकोगे। बिस्तर की चौड़ाई इतनी कम होगी कि तुम उसे लपेटकर आराम नहीं कर सकोगे।

21 क्योंकि रब उठकर यों तुम पर झपट पड़ेगा जिस तरह पराज़ीम पहाड़ के पास फिलिस्तिनियों पर झपट पड़ा। जिस तरह वादीए-जिबऊन में अमोरियों पर टूट पड़ा उसी तरह वह तुम पर टूट पड़ेगा। और जो काम वह करेगा वह अजीब होगा, जो कदम वह उठाएगा वह मामूल से हटकर होगा। 22 चुनौचे अपनी तानाज़नी से बाज़ आओ, वरना तुम्हारी जंजीरें मज़ीद ज़ोर से कस दी जाएंगी। क्योंकि मुझे कादिरे-मुतलक रब्बुल-अफ़वाज से पैगाम मिला है कि तमाम दुनिया की तबाही मुतैयिन है।

माहिर किसान की तमसील

23 गौर से मेरी बात सुनो! ध्यान से उस पर कान धरो जो मैं कह रहा हूँ! 24 जब किसान खेत को बीज बोने के लिए तैयार करता है तो क्या वह पूरा दिन हल चलाता रहता है? क्या वह अपना पूरा वक़्त ज़मीन खोदने और ढेले तोड़ने में सर्फ़ करता है? 25 हरगिज़ नहीं! जब पूरे खेत की सतह हमवार और तैयार है तो वह अपनी अपनी जगह पर स्याह ज़ीरा और सफ़ेद ज़ीरा, गंदुम, बाजरा और जो का बीज बोता है। आखिर में वह किनारे पर चारे का बीज बोता है। 26 किसान को ख़ूब मालूम है कि क्या क्या करना होता है, क्योंकि उसके खुदा ने उसे तालीम देकर सहीह तरीका सिखाया। 27 चुनौचे स्याह ज़ीरा और सफ़ेद ज़ीरा को अनाज की तरह गाहा नहीं जाता। दाने निकालने के लिए उन पर वज़नी चीज़ नहीं चलाई जाती बल्कि उन्हें डंडे से मारा जाता है। 28 और क्या अनाज को गाह गाहकर पीसा जाता है? हरगिज़ नहीं! किसान उसे हद से ज़्यादा नहीं गाहता। गो उसके घोड़े कोई वज़नी चीज़ खींचते हुए बालियों पर से गुज़रते हैं ताकि दाने निकलें ताहम किसान ध्यान देता है कि दाने पिस न जाएँ। 29 उसे यह इल्म भी रब्बुल-अफ़वाज से मिला है जो ज़बरदस्त मशवरों और कामिल हिकमत का मंबा है।

29

यरूशलम खबरदार रहे

1 ऐ अरियेल, अरियेल, * तुझ पर अफ़सोस! ऐ शहर जिसमें दाऊद खैमाज़न था, तुझ पर अफ़सोस! चलो, साल बसाल अपने तहवार मनाते रहो। 2 लेकिन मैं अरियेल को यों घेरकर तंग करूँगा कि उसमें आहो-ज़ारी सुनाई देगी। तब यरूशलम मेरे नज़दीक सहीह मानों में अरियेल साबित होगा। 3 क्योंकि मैं तुझे हर तरफ़ से पुशताबंदी से घेरकर बंद रखूँगा, तेरे मुहासरे का पूरा बंदोबस्त करूँगा। 4 तब तू इतना पस्त होगा कि खाक में से बोलेंगा, तेरी दबी दबी आवाज़ गर्द में से निकलेगी। जिस तरह मुरदा रूह ज़मीन के अंदर से सरगोशी करती है उसी तरह तेरी धीमी धीमी आवाज़ ज़मीन में से निकलेगी।

5 लेकिन अचानक तेरे मुतअदिद दुश्मन बारीक धूल की तरह उड़ जाएंगे, जालिमों का गोल हवा में भूसे की तरह तितर-बितर हो जाएगा। क्योंकि अचानक, एक ही लमहे में 6 रब्बुल-अफ़वाज उन पर टूट पड़ेगा। वह बिजली की कड़कती आवाज़ें, ज़लज़ला, बड़ा शोर, तेज़ आँधी, तूफ़ान और भस्म करनेवाली आग के शोले अपने साथ लेकर शहर की मदद करने आएगा। 7 तब अरियेल से लड़नेवाली तमाम कौमों के गोल खाब जैसे लगेंगे। जो यरूशलम पर हमला करके उसका मुहासरा कर रहे और उसे तंग कर रहे थे वह रात में रोया जैसे गैरहकीकी लगेंगे। 8 तुम्हारे दुश्मन उस भूके आदमी की मानिंद होंगे जो खाब में देखता है कि मैं खाना खा रहा हूँ, लेकिन फिर जागकर जान लेता है कि मैं वैसे का वैसे भूका हूँ। तुम्हारे मुखालिफ़ उस प्यासे आदमी की मानिंद होंगे जो खाब में देखता है कि मैं पानी पी रहा हूँ, लेकिन फिर जागकर जान लेता है कि मैं वैसे का वैसे निढाल और प्यासा हूँ। यही उन तमाम बैनुल-अक़वामी गोलों का हाल होगा जो कोहे-सियून से जंग करेंगे।

अल्लाह का कलाम कौम की समझ से बाहर है

9 हैरतज़दा होकर हक्का-बक्का रह जाओ! अंधे होकर नाबीना हो जाओ! मत्वाले हो जाओ, लेकिन मैं से नहीं। लड़खड़ाते जाओ, लेकिन शराब से नहीं। 10 क्योंकि रब ने तुम्हें गहरी नींद सुला दिया है, उसने तुम्हारी आँखों यानी नबियों को बंद किया और तुम्हारे सरों यानी रोया देखनेवालों पर परदा डाल दिया है।

11 इसलिए जो भी कलाम नाज़िल हुआ है वह तुम्हारे लिए सर-बमुहर किताब ही है। अगर उसे किसी पढ़े-लिखे आदमी को दिया जाए ताकि पढ़े तो वह जवाब देगा, “यह पढ़ा नहीं जा सकता, क्योंकि इस पर मुहर है।” 12 और अगर उसे किसी अनपढ़ आदमी को दिया जाए तो वह कहेगा, “मैं अनपढ़ हूँ।”

13 रब फ़रमाता है, “यह कौम मेरे हज़ूर आकर अपनी ज़बान और होंटों से तो मेरा एहताराम करती है, लेकिन उसका दिल मुझसे दूर है। उनकी खुदातरसी सिर्फ़ इनसान ही के रटे-रटाए अहकाम पर मबनी है। 14 इसलिए आइंदा भी मेरा इस कौम के साथ सुलूक हैरतअगेज़ होगा। हाँ, मेरा सुलूक अजीबो-गरीब होगा। तब उसके दानिशमंदों की दानिश जाती रहेगी, और उसके समझदारों की समझ गायब हो जाएगी।”

15 उन पर अफ़सोस जो अपना मनसूबा ज़मीन की गहराइयों में दबाकर रब से छुपाने की कोशिश करते हैं, जो तारीकी में अपने काम करके कहते हैं, “कौन हमें देख लेगा, कौन हमें पहचान लेगा?” 16 तुम्हारी कजरवी पर लानत! क्या कुम्हार को उसके गोरे के बराबर समझा जाता

* 29:1 मुराद है यरूशलम। अरियेल का एक मतलब ‘अल्लाह का शेरबबर’ और दूसरा ‘भस्म होनेवाली कुरबानियों की कुरबानगाह’ है। यहाँ दोनों मतलब मुमकिन हैं।

है? क्या बनी हुई चीज़ बनानेवाले के बारे में कहती है, “उसने मुझे नहीं बनाया”? या क्या जिसको तश्कील दिया गया है वह तश्कील देनेवाले के बारे में कहता है, “वह कुछ नहीं समझता”? हरगिज़ नहीं!

बड़ी तबदीलियाँ आनेवाली हैं

17 थोड़ी ही देर के बाद लुबनान का जंगल फलते-फूलते बाग में तबदील होगा जबकि फलता-फूलता बाग जंगल-सा लगेगा। 18 उस दिन बहरे किताब की तिलावत सुनेंगे, और अंधों की आँखें अंधेरे और तारीकी में से निकलकर देख सकेंगी। 19 एक बार फिर फ़रोतन रब की खुशी मनाएँगे, और मुहताज इसराईल के कुदूस के बाइस शादियाना बजाएँगे। 20 जालिम का नामो-निशान नहीं रहेगा, तानाज़न खत्म हो जाएँगे, और दूसरों की ताक में बैठनेवाले सबके सब रूप-ज़मीन पर से मिट जाएँगे। 21 यही उनका अंजाम होगा जो अदालत में दूसरों को कुसूरवार ठहराते, शहर के दरवाज़े में अदालत करनेवाले काज़ी को फँसाने की कोशिश करते और झूटी गवाहियों से बेकुसूर का हक मारते हैं।

22 चुनौचे रब जिसने पहले इब्राहीम का भी फ़िघा देकर उसे छुड़ाया था याकूब के घराने से फ़रमाता है, “अब से याकूब शर्मिंदा नहीं होगा, अब से इसराईलियों का रंग फ़क नहीं पड़ जाएगा। 23 जब वह अपने दरमियान अपने बच्चों को जो मेरे हाथों का काम हैं देखेंगे तो वह मेरे नाम को मुकद्दस मानेंगे। वह याकूब के कुदूस को मुकद्दस जानेंगे और इसराईल के खुदा का ख़ौफ़ मानेंगे। 24 उस वक़्त जिनकी रूह आवारा है वह समझ हासिल करेंगे, और बुडबुडानेवाले तालीम क़बूल करेंगे।”

30

मिसर के वादे बेकार हैं

1 रब फ़रमाता है, “ऐ ज़िद्दी बच्चो, तुम पर अफ़सोस! क्योंकि तुम मेरे बग़ैर मनसूबे बाँधते और मेरे रूह के बग़ैर मुआहदे कर लेते हो। गुनाहों में इज़ाफ़ा करते करते 2 तुमने मुझसे मशवरा लिए बग़ैर मिसर की तरफ़ रूज़ किया ताकि फिरौन की आड़ में पनाह लो और मिसर के साथ में हिफ़ाज़त पाओ। 3 लेकिन ख़बरदार! फिरौन का तहफ़फ़ुज़ तुम्हारे लिए शर्म का बाइस बनेगा, मिसर के साथ में पनाह लेने से तुम्हारी रूस्वाइ हो जाएगी। 4 क्योंकि गो उसके अफ़सर जुअन में हैं और उसके एलची हनीस तक पहुँच गए हैं 5 तो भी सब इस क्रौम से शर्मिंदा हो जाएँगे, क्योंकि इसके साथ मुआहदा बेकार होगा। इससे न मदद और न फ़ायदा हासिल होगा बल्कि यह शर्म और ख़जालत का बाइस ही होगी।”

6 दशते-नजब के जानवरों के बारे में रब का फ़रमान :

यहदाह के सफ़ीर एक तकलीफ़देह और पेशानकुन मुल्क में से गुज़र रहे हैं जिसमें शेरबबर, शेरनी, ज़हरीले और उड़नसाँप बसते हैं। उनके गधे और ऊँट यहदाह की दौलत और ख़जानों से लदे हुए हैं, और वह सब कुछ मिसर के पास पहुँचा रहे हैं, गो इस क्रौम का कोई फ़ायदा नहीं।

7 मिसर की मदद फ़ज़ल ही है! इसलिए मैंने मिसर का नाम ‘रहब अज़दहा जिसका मुँह बंद कर दिया गया है’ रखा है।

8 अब दूसरों के पास जाकर सब कुछ तख्ते पर लिख। उसे किताब की सूरत में कलमबंद कर ताकि मेरे अलफ़ाज़ आनेवाले दिनों में हमेशा तक गवाही दें। 9 क्योंकि यह क्रौम सरकश है, यह लोग धोकेबाज़ बच्चे हैं जो रब की हिदायात को मानने के लिए तैयार ही नहीं। 10 ग़ैबबीनों को वह कहते हैं, “रोया से बाज़ आओ।” और रोया देखनेवालों को वह हुक्म देते हैं, “हमें सच्ची रोया मत बताना बल्कि हमारी खुशामद करनेवाली बातें। फ़रेबदेह रोया देखकर हमारे आगे बयान करो! 11 सहीह रास्ते से हट जाओ, सीधी राह को छोड़ दो। हमारे सामने इसराईल के कुदूस का ज़िक्र करने से बाज़ आओ!”

12 जवाब में इसराईल का कुदूस फ़रमाता है, “तुमने यह कलाम रढ़ करके जुल्म और चालाकी पर भरोसा बल्कि पूरा एतमाद किया है।

13 अब यह गुनाह तुम्हारे लिए उस ऊँची दीवार की मानिंद होगा जिसमें दराड़ें पड़ गई हैं। दराड़ें फैलती हैं और दीवार बैठी जाती है। फिर अचानक एक ही लमहे में वह धड़ाम से ज़मीनबोस हो जाती है। 14 वह टुकड़े टुकड़े हो जाती है, बिलकुल मिट्टी के उस बरतन की तरह जो बेरहमी से चकनाचूर किया जाता है और जिसका एक टुकड़ा भी आग से कोयले उठाकर ले जाने या हौज़ से थोड़ा-बहुत पानी निकालने के काबिल नहीं रह जाता।”

सब्र के साथ रब पर भरोसा रखो

15 रब कादिरे-मुतलक़ जो इसराईल का कुदूस है फ़रमाता है, “वापस आकर सुकून पाओ, तब ही तुम्हें नजात मिलेगी। ख़ामोश रहकर मुझ पर भरोसा रखो, तब ही तुम्हें तकवियत मिलेगी। लेकिन तुम इसके लिए तैयार ही नहीं थे।

16 चूँकि तुम जवाब में बोले, ‘हरगिज़ नहीं, हम अपने घोड़ों पर सवार होकर भागेंगे’ इसलिए तुम भाग जाओगे। चूँकि तुमने कहा, ‘हम तेज़ घोड़ों पर सवार होकर बच निकलेंगे’ इसलिए तुम्हारा ताक़ुक़ करनेवाले कहीं ज़्यादा तेज़ होंगे। 17 तुम्हारे हज़ार मर्द एक ही आदमी की धमकी पर भाग जाएँगे। और जब दुश्मन के पाँच अफ़राद तुम्हें धमकाएँगे तो तुम सबके सब फ़रार हो जाओगे। आख़िरकार जो बचेंगे वह पहाड़ की चोटी पर परचम के डंडे की तरह तनहा रह जाएँगे, पहाड़ी पर झंडे की तरह अकेले होंगे।”

18 लेकिन रब तुम्हें मेहरबानी दिखाने के इंतज़ार में है, वह तुम पर रहम करने के लिए उठ खड़ा हुआ है। क्योंकि रब इनसाफ़ का खुदा है। मुबारक हैं वह जो उसके इंतज़ार में रहते हैं।

19 ऐ सियून् के बाशिंदो जो यरूशलम में रहते हो, आइंदा तुम नहीं रोओगे। जब तुम फ़रियाद करोगे तो वह ज़रूर तुम पर मेहरबानी करेगा। तुम्हारी सुनते ही वह जवाब देगा। 20 गो माज़ी में रब ने तुम्हें तंगी की रोटी खिलाई और जुल्म का पानी पिलाया, लेकिन अब तेरा उस्ताद छुपा

नहीं रहेगा बल्कि तेरी अपनी ही आँखें उसे देखेंगी। ²¹ अगर दाई या बाई तरफ मुड़ना है तो तुम्हें पीछे से हिदायत मिलेगी, “यही रास्ता सही है, इसी पर चलो!” तुम्हारे अपने कान यह सुनेंगे। ²² उस वक़्त तुम चाँदी और सोने से सजे हुए अपने बुतों की बेहुरमती करोगे। तुम “उफ़, गंदी चीज़!” कहकर उन्हें नापाक कचरे की तरह बाहर फेंकोगे।

²³ बीज बोते वक़्त रब तेरे खेतों पर बारिश भेजकर बेहतरीन फ़सलें पकने देगा, गिज़ाईयतबख़्श ख़ुराक मुहैया करेगा। उस दिन तेरी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल वसी चरागाहों में चरेंगे। ²⁴ खेतीबाड़ी के लिए मुस्तामल बैलों और गधों को छाज और दोशाखे के ज़रीए साफ़ की गई बेहतरीन ख़ुराक मिलेगी। ²⁵ उस दिन जब दुश्मन हलाक हो जाएगा और उसके बुर्ज गिर जाएंगे तो हर ऊँचे पहाड़ से नहरें और हर बलुंदी से नाले बहेंगे। ²⁶ चाँद सूरज की मानिंद चमकेगा जबकि सूरज की रौशनी सात गुना ज्यादा तेज़ होगी। एक दिन की रौशनी सात आम दिनों की रौशनी के बराबर होगी। उस दिन रब अपनी क़ौम के ज़ख़मों पर मरहम-पट्टी करके उसे शफ़ा देगा।

रब असूरियों की अदालत करता है

²⁷ वह देखो, रब का नाम दूर-दराज़ इलाक़े से आ रहा है। वह ग़ैज़ो-ग़ज़ब से और बड़े रोब के साथ करीब पहुँच रहा है। उसके होंट कहर से हिल रहे हैं, उस की ज़बान के आगे आगे सब कुछ राख हो रहा है। ²⁸ उसका दम किनारों से बाहर आनेवाली नदी है जो सब कुछ गले तक डुबो देती है। वह अक्रवाम को हलाकत की छलनी में छान छानकर उनके मुँह में दहाना डालता है ताकि वह भटककर तबाहक़ुन राह पर आएँ।

²⁹ लेकिन तुम गीत गाओगे, ऐसे गीत जैसे मुक़द्दस ईद की रात गाए जाते हैं। इतनी रौनक होगी कि तुम्हारे दिल फूले न समाएँगे। तुम्हारी खुशी उन जायरीन की मानिंद होगी जो बाँसरी बजाते हुए रब के पहाड़ पर चढ़ते और इसराईल की चटान के हज़र आते हैं।

³⁰ तब रब अपनी बारोब आवाज़ से लोगों पर अपनी कुदरत का इज़हार करेगा। उसका सख़्त ग़ज़ब और भस्म करनेवाली आग नाज़िल होगी, साथ साथ बारिश की तेज़ बौछाड़ और ओलों का तूफ़ान उन पर टूट पड़ेगा। ³¹ रब की आवाज़ असूर को पाश पाश कर देगी, उस की लाठी उसे मारती रहेगी। ³² और ज्यों-ज्यों रब सज़ा के लठ से असूर को ज़रब लगाएगा त्यों-त्यों दफ़ और सरोद बजेंगे। अपने जोरावर बाज़ू से वह असूर से लड़ेगा। ³³ क्योंकि बड़ी देर से वह ग़द्दा तैयार है जहाँ असूरी बादशाह की लाश को जलाना है। उसे गहरा और चौड़ा बनाया गया है, और उसमें लकड़ी का बड़ा ढेर है। रब का दम ही उसे गंधक की तरह जलाएगा।

31

मिसर की मदद बेकार है

¹ उन पर अफ़सोस जो मदद के लिए मिसर जाते हैं। उनकी पूरी उम्मीद घोड़ों से है, और वह अपने मुतअद्दिद रथों और ताकतवर घुड़सवारों पर एतमाद रखते हैं। अफ़सोस, न वह इसराईल के कुद्दूस की तरफ़ नज़र उठाते, न रब की मरज़ी दरियाफ़्त करते हैं। ² लेकिन अल्लाह भी दाना है। वह तुम पर आफ़त लाएगा और अपना फ़रमान मनसूख़ नहीं करेगा बल्कि शरीरों के घर और उनके मुआविनों के खिलाफ़ उठ खड़ा होगा। ³ मिसरी तो खुदा नहीं बल्कि इनसान हैं। और उनके घोड़े आलमे-अरवाह के नहीं बल्कि फ़ानी दुनिया के हैं। जहाँ भी रब अपना हाथ बढ़ाए वहाँ मदद करनेवाले मदद मिलनेवालों समेत ठोकर खाकर गिर जाते हैं, सब मिलकर हलाक हो जाते हैं।

⁴ रब मुझसे हमकलाम हुआ, “सिय्यून पर उतरते वक़्त मैं उस जवान शेरबबर की तरह हूँगा जो बकरी मारकर उसके ऊपर खड़ा गुरीता है। गो मुतअद्दिद गल्लाबानों को उसे भगाने के लिए बुलाया जाए तो भी वह उनकी चीखों से दहशत नहीं खाता, न उनके शोर-शराबा से डरकर दबक जाता है। रब्बूल-अफ़वाज़ इसी तरह ही कोहे-सिय्यून पर उतरकर लड़ेगा। ⁵ रब्बूल-अफ़वाज़ पर फैलाए हुए परिदे की तरह यरूशलम को पनाह देगा, वह उसे महफूज़ रखकर छुटकारा देगा, उसे सज़ा देने के बजाए रिहा करेगा।”

⁶ ऐ इसराईलियो, जिससे तुम सरकश होकर इतने दूर हो गए हो उसके पास वापस आ जाओ। ⁷ अब तक तुम अपने हाथों से बने हुए सोने-चाँदी के बुतों की पूजा करते हो, अब तक तुम इस गुनाह में मुलव्वस हो। लेकिन वह दिन आनेवाला है जब हर एक अपने बुतों को रद्द करेगा।

⁸ “असूर तलवार की ज़द में आकर गिर जाएगा। लेकिन यह किसी मर्द की तलवार नहीं होगी। जो तलवार असूर को खा जाएगी वह फ़ानी इनसान की नहीं होगी। असूर तलवार के आगे आगे भागेगा, और उसके जवानों को बेगार में काम करना पड़ेगा। ⁹ उस की चटान डर के मारे जाती रहेगी, उसके अफ़सर लश्करी झंडे को देखकर दहशत खाएँगे।” यह रब का फ़रमान है जिसकी आग सिय्यून में भड़कती और जिसका तनूर यरूशलम में तपता है।

32

रास्त बादशाह की आमद

¹ एक बादशाह आनेवाला है जो इनसाफ़ से हुकूमत करेगा। उसके अफ़सर भी सदाक़त से हुक्मरानी करेंगे। ² हर एक आँधी और तूफ़ान से पनाह देगा, हर एक रेगिस्तान में नदियों की तरह तरो-ताज़ा करेगा, हर एक तपती धूप में बड़ी चटान का-सा साया देगा।

³ तब देखनेवालों की आँखें अंधी नहीं रहेंगी, और सुननेवालों के कान ध्यान देंगे। ⁴ जल्दबाज़ों के दिल समझदार हो जाएंगे, और हक्लों की ज़बान रवानी से साफ़ बात करेगी। ⁵ उस वक़्त न अहमक़ शरीफ़ कहलाएगा, न बदमाश को मुमताज़ करार दिया जाएगा। ⁶ क्योंकि अहमक़ हमाक़त बयान करता है, और उसका ज़हन शरीर मनसूबे बाँधता है। वह बेदीन हरकतें करके रब के बारे में कुफ़र बकता है। भूके को वह भूका

छोड़ता और प्यासे को पानी पीने से रोकता है। ⁷ बदमाश के तरीके-कार शरीर हैं। वह जरूरतमंद को झूट से तबाह करने के मनसूबे बाँधता रहता है, खाह गरीब हक़ पर क्यों न हो। ⁸ उसके मुकाबले में शरीफ़ आदमी शरीफ़ मनसूबे बाँधता और शरीफ़ काम करने में साबितकदम रहता है।

बेपरवा ज़िंदगी ख़त्म होनेवाली है

⁹ ऐ बेपरवा औरतो, उठकर मेरी बात सुनो! ऐ बेटियों जो अपने आपको महफूज़ समझती हो, मेरे अलफ़ाज़ पर ध्यान दो! ¹⁰ एक साल और चंद एक दिनों के बाद तुम जो अपने आपको महफूज़ समझती हो काँप उठोगी। क्योंकि अंगूर की फ़सल ज़ाया हो जाएगी, और फल की फ़सल पकने नहीं पाएगी। ¹¹ ऐ बेपरवा औरतो, लरज़ उठो! ऐ बेटियों जो अपने आपको महफूज़ समझती हो, थरथराओ! अपने अच्छे कपड़ों को उतारकर टाट के लिबास पहन लो। ¹² अपने सीनों को पीट पीटकर अपने खुशगवार खेतों और अंगूर के फलदार बाग़ों पर मातम करो। ¹³ मेरी क़ौम की ज़मीन पर आहो-ज़ारी करो, क्योंकि उस पर ख़ारदार झाड़ियाँ छा गई हैं। रंगरलियाँ मनानेवाले शहर के तमाम खुशबाश घरों पर ग़म खाओ। ¹⁴ महल वीरान होगा, रौनकदार शहर सुनसान होगा। क़िला और बुर्ज हमेशा के लिए ग़ार बनेंगे जहाँ जंगली गधे अपने दिल बहलाएँगे और भेड़-बकरियाँ चरेंगी।

अल्लाह के रूह से बहाली

¹⁵ जब तक अल्लाह अपना रूह हम पर नाज़िल न करे उस वक़्त तक हालात ऐसे ही रहेंगे। लेकिन फिर रेगिस्तान बाग़ में तबदील हो जाएगा, और बाग़ के फलदार दरख़्त जंगल जैसे घने हो जाएंगे। ¹⁶ तब इनसाफ़ रेगिस्तान में बसेगा, और सदाक़त फलते-फूलते बाग़ में सुकूनत करेगी। ¹⁷ इनसाफ़ का फल अमनो-अमान होगा, और सदाक़त का असर अबदी सुकून और हिफाज़त होगी।

¹⁸ मेरी क़ौम पुरसूकन और महफूज़ आबादियों में बसेगी, उसके घर आरामदेह और पुरअमन होंगे। ¹⁹ गो जंगल तबाह और शहर ज़मीनबोस क्यों न हो, ²⁰ लेकिन तुम मुबारक हो जो हर नदी के पास बीज बो सकोगे और आज़ादी से अपने गाय-बैलों और गधों को चरा सकोगे।

33

या रब, मदद!

¹ तुझ पर अफ़सोस, जो दूसरों को बरबाद करने के बावजूद बरबाद नहीं हुआ। तुझ पर अफ़सोस, जो दूसरों से बेवफ़ा था, हालाँकि तेरे साथ बेवफ़ाई नहीं हुई। लेकिन तेरी बारी भी आएगी। बरबादी का काम तकमील तक पहुँचाने पर तू खुद बरबाद हो जाएगा। बेवफ़ाई का काम तकमील तक पहुँचाने पर तेरे साथ भी बेवफ़ाई की जाएगी।

² ऐ रब, हम पर मेहरबानी कर! हम तुझसे उम्मीद रखते हैं। हर सुबह हमारी ताक़त बन, मुसीबत के वक़्त हमारी रिहाई का बाइस हो।

³ तेरी गरजती आवाज़ सुनकर क़ौमों में भाग जाती हैं, तेरे उठ खड़े होने पर वह चारों तरफ़ बिखर जाती हैं। ⁴ ऐ क़ौमो, जो माल तुमने लूट लिया वह दूसरे छीन लेंगे। जिस तरह टिट्टियों के गोल फ़सलों पर झपटकर सब कुछ चट कर जाते हैं उसी तरह दूसरे तुम्हारी पूरी मिलकियत पर टूट पड़ेंगे।

⁵ रब सरफ़राज़ है और बुलंदियों पर सुकूनत करता है। वही सिय्यून को इनसाफ़ और सदाक़त से मालामाल करेगा। ⁶ उन दिनों में वह तेरी हिफाज़त की ज़मानत होगा। तुझे नजात, हिकमत और दानाई का ज़ख़ीरा हासिल होगा, और रब का ख़ौफ़ तेरा खजाना होगा।

दुश्मन से धोका, रब से रिहाई

⁷ सुनो, उनके सूरमे गलियों में चीख रहे हैं, अमन के सफ़ीर तलख़ आहें भर रहे हैं। ⁸ सड़कें वीरानो-सुनसान हैं, और मुसाफ़िर उन पर नज़र ही नहीं आते। मुआहदे को तोड़ा गया है, लोगों ने उसके गवाहों को रद्द करके इनसान को हक़ीर जाना है। ⁹ ज़मीन ख़ुशक होकर मुरझा गई है, लुबनान कुमलाकर शरमिंदा हो गया है। शास्त्र का मैदान बेशज़र बयाबान-सा बन गया है, बसन और करमिल अपने पत्ते झाड़ रहे हैं।

¹⁰ लेकिन रब फ़रमाता है, “अब मैं उठ खड़ा हूँगा, अब मैं सरफ़राज़ होकर अपनी कुव्वत का इज़हार करूँगा। ¹¹ तुम उम्मीद से हो, लेकिन पेट में सूखी घास ही है, और जन्म देते वक़्त भूसा ही पैदा होगा। जब तुम फूँक मारोगे तो तुम्हारा दम आग बनकर तुम्हीं को राख कर देगा। ¹² अक़वाम यों भस्म हो जाएँगी कि चूना ही रह जाएगा, वह ख़ारदार झाड़ियों की तरह कटकर जल जाएँगी। ¹³ ऐ दूर-दराज़ इलाकों के बाशिंदो, वह कुछ सुनो जो मैंने किया है। ऐ करीब के बसनेवालो, मेरी कुदरत जान लो।”

¹⁴ सिय्यून में गुनाहगार घबरा गए हैं, बेदीन पेशानी के आलम में थरथराते हुए चिल्ला रहे हैं, “हममें से कौन भस्म करनेवाली इस आग के सामने ज़िंदा रह सकता है? हममें से कौन हमेशा तक भड़कनेवाली इस अंगीठी के करीब कायम रह सकता है?” ¹⁵ लेकिन वह शाख्स कायम रहेगा जो रास्त ज़िंदगी गुज़ारे और सच्चाई बोले, जो ग़ैरक़ानूनी नफ़ा और रिश्वत लेने से इनकार करे, जो कातिलाना साज़िशों और ग़लत काम से गुरेज़ करे। ¹⁶ वही बुलंदियों पर बसेगा और पहाड़ के क़िले में महफूज़ रहेगा। उसे रोटी मिलती रहेगी, और पानी की कभी कमी न होगी।

पुरजलाल बादशाह का मुल्क

¹⁷ तेरी आँखें बादशाह और उस की पूरी ख़ूबसूरती का मुशाहदा करेंगी, वह एक वसी और दूर दूर तक फैला हुआ मुल्क देखेगी। ¹⁸ तब तू गुज़रे हुए हौलनाक वक़्त पर ग़ौरो-ख़ौज़ करके पूछेगा, “दुश्मन के बड़े अफ़सर किधर हैं? टैक्स लेनेवाला कहाँ गायब हुआ? वह अफ़सर

किधर है जो बुर्जों का हिसाब-किताब करता था?” 19 आइंदा तुझे यह गुस्ताख कौम नज़र नहीं आएगी, यह लोग जो नाकाबिले-फ़हम ज़बान बोलते और हकलाते हुए ऐसी बातें करते हैं जो समझ में नहीं आती।

20 हमारी ईदों के शहर सिय्यून पर नज़र डाल! तेरी आँखें यरूशलम को देखेंगी। उस वक़्त वह महफूज़ सुकूनतगाह होगा, एक ख़ैमा जो आइंदा कभी नहीं हटेगा, जिसकी मेखें कभी नहीं निकलेंगी, और जिसका एक रस्सा भी नहीं टूटेगा।

21 वहाँ रब ही हमारा जोरावर आका होगा, और शहर दरियाओं का मक़ाम होगा, ऐसी चौड़ी नदियों का मक़ाम जिन पर न चप्पूवाली कशती, न शानदार जहाज़ चलेगा। 22 क्योंकि रब ही हमारा काज़ी, रब ही हमारा सरदार और रब ही हमारा बादशाह है। वही हमें छुटकारा देगा।

23 दुश्मन का बेड़ा गरक होनेवाला है। बादबान के रस्से ढीले हैं, और न वह मस्तूल को मज़बूत रखने, न बादबान को फैलाए रखने में मदद देते हैं। उस वक़्त कसरत का लूटा हुआ माल बटेगा, बल्कि इतना माल होगा कि लँगड़े भी लूटने में शिरकत करेंगे। 24 सिय्यून का कोई भी फ़रद नहीं कहेगा, “मैं कमज़ोर हूँ,” क्योंकि उसके बाशिंदों के गुनाह बख़्शे गए होंगे।

34

अदोम पर अदालत का एलान

1 ऐ क्रौमो, करीब आकर सुन लो! ऐ उम्मतो, ध्यान दो! दुनिया और जो भी उसमें है कान लगाए, ज़मीन और जो कुछ उसमें से फूट निकला है तवज्जुह दे! 2 क्योंकि रब को तमाम उम्मतों पर गुस्सा आ गया है, और उसका ग़ज़ब उनके तमाम लशकरों पर नाज़िल हो रहा है। वह उन्हें मुकम्मल तौर पर तबाह करेगा, इन्हें सफ़ाक के हवाले करेगा। 3 उनके मकतूलों को बाहर फेंका जाएगा, और लाशों की बदबू चारों तरफ़ फैलेगी। पहाड़ उनके खून से शराबोर होंगे। 4 तमाम सितारे गल जाएंगे, और आसमान को तूमार की तरह लपेटा जाएगा। सितारों का पूरा लशकर अंगूर के मुरझाए हुए पत्तों की तरह झड़ जाएगा, वह अंजीर के दरख़्त की सूखी हरियाली की तरह गिर जाएगा।

5 क्योंकि आसमान पर मेरी तलवार खून पी पीकर मस्त हो गई है। देखो, अब वह अदोम पर नाज़िल हो रही है ताकि उस की अदालत करे, उस क्रौम की जिसकी मुकम्मल तबाही का फ़ैसला मैं कर चुका हूँ। 6 रब की तलवार खूनआलूदा हो गई है, और उससे चरबी टपकती है। भेड़-बकरियों का खून और मेंढों के गुरदों की चरबी उस पर लगी है, क्योंकि रब बसरा शहर में कुरबानी की ईद और मुल्के-अदोम में क़त्ले-आम का तहवार मनाएगा। 7 उस वक़्त जंगली बैल उनके साथ गिर जाएंगे, और बछड़े ताकतवर साँड़ों समेत ख़त्म हो जाएंगे। उनकी ज़मीन खून से मस्त और ख़ाक चरबी से शराबोर होगी।

8 क्योंकि वह दिन आ गया है जब रब बदला लेगा, वह साल जब वह अदोम से इसराईल का इंतक़ाम लेगा। 9 अदोम की नदियों में तारकोल ही बहेगा, और गंधक ज़मीन को ढाँपेगी। मुल्क भड़कती हुई राल से भर जाएगा, 10 जिसकी आग न दिन और न रात बुझेगी बल्कि हमेशा तक धुआँ छोड़ती रहेगी। मुल्क नसल-दर-नसल वीरानो-सुनसान रहेगा, यहाँ तक कि मुसाफ़िर भी हमेशा तक उसमें से गुज़रने से गुरेज़ करेंगे। 11 दशती उल्लू और खारपुशत उस पर कब्ज़ा करेंगे, चिंघाड़नेवाले उल्लू और कौवे उसमें बसेरा करेंगे। क्योंकि रब फीते और साहल से अदोम का पूरा मुल्क नाप नापकर उजाड़ और वीरानी के हवाले करेगा। 12 उसके शुरफ़ा का नामो-निशान तक नहीं रहेगा। कुछ नहीं रहेगा जो बादशाही कहलाए, मुल्क के तमाम रईस जाते रहेंगे। 13 काँटेदार पौदे उसके महलों पर छा जाएंगे, खुदरौ पौदे और ऊँटकटारे उसके क़िलाबंद शहरों में फैल जाएंगे। मुल्क गीदड़ और उकाबी उल्लू का घर बनेगा। 14 वहाँ रेगिस्तान के जानवर जंगली कुत्तों से मिलेंगे, और बकरानुमा जिन एक दूसरे से मुलाकात करेंगे। लीलीत नामी आसेब भी उसमें ठहरेगा, वहाँ उसे भी आरामगाह मिलेगी। 15 मादा साँप उसके साय में बिल बनाकर उसमें अपने अंडे देगी और उन्हें सेकर पालेगी। शिकारी परिंदे भी दो दो होकर वहाँ जमा होंगे।

16 रब की किताब में पढ़कर इसकी तहक़ीक़ करो! अदोम में यह तमाम चीज़ें मिल जाएँगी। मुल्क एक से भी महसूस नहीं रहेगा बल्कि सब मिलकर उसमें पाई जाएँगी। क्योंकि रब ही के मुँह ने इसका हुक्म दिया है, और उसी का रुह इन्हें इक़ठा करेगा। 17 वही सारी ज़मीन की पैमाइश करेगा और फिर क़ुरा डालकर मज़क़ूरा जानदारों में तकसीम करेगा। तब मुल्क अबद तक उनकी मिलकियत में आएगा, और वह नसल-दर-नसल उसमें आबाद होंगे।

35

कौम की रिहाई

1 रेगिस्तान और प्यासी ज़मीन बाग़ बाग़ होंगे, बयाबान खुशी मनाकर खिल उठेगा। उसके फूल सोसन की तरह 2 फूट निकलेंगे, और वह जोर से शादियाना बजाकर खुशी के नारे लगाएगा। उसे लुबनान की शान, करमिल और शास्न का पूरा हुप्पो-जमाल दिया जाएगा। लोग रब का जलाल और हमारे खुदा की शानो-शौकत देखेंगे।

3 निढाल हाथों को तकवियत दो, डॉवाँडोल घुटनों को मज़बूत करो! 4 धड़कते हुए दिलों से कहो, “हौसला रखो, मत डरो। देखो, तुम्हारा खुदा इंतक़ाम लेने के लिए आ रहा है। वह हर एक को जज़ा-ओ-सज़ा देकर तुम्हें बचाने के लिए आ रहा है।”

5 तब अंधों की आँखों को और बहरों के कानों को खोला जाएगा।

6 लँगड़े हिरन की-सी छल्लोंगे लगाएँगे, और गूँगे खुशी के नारे लगाएँगे। रेगिस्तान में चश्मे फूट निकलेंगे, और बयाबान में से नदियाँ गुज़रेंगी।

7 झूलसती हुई रेत की जगह जोहड़ बनेगा, और प्यासी ज़मीन की जगह पानी के सोते फूट निकलेंगे। जहाँ पहले गीदड़ आराम करते थे वहाँ हरी घास, सरकंडे और आबी नरसल की नशो-नुमा होगी।

8 मुल्क में से शाहराह गुज़रेगी जो 'शाहराहे-मुकद्दस' कहलाएगी। नापाक लोग उस पर सफ़र नहीं करेंगे, क्योंकि वह सहीह राह पर चलनेवालों के लिए मख़सूस है। अहमक उस पर भटकने नहीं पाएँगे।

9 उस पर न शेरबबर होगा, न कोई और वहशी जानवर आएगा या पाया जाएगा। सिर्फ़ वह उस पर चलेंगे जिन्हें अल्लाह ने एवज़ाना देकर छुड़ा लिया है।

10 जितनों को रब ने फ़िद्या देकर रिहा किया है वह वापस आएँगे और गीत गाते हुए सिय्यून में दाखिल होंगे। उनके सर पर अबदी खुशी का ताज होगा, और वह इतने मस्रूर और शादमान होंगे कि मातम और गिर्याओ-ज़ारी उनके आगे आगे भाग जाएँगी।

36

असूरी यरूशलम का मुहासरा करते हैं

1 हिज़क्रियाह बादशाह की हुक्मत के 14वें साल में असूर के बादशाह सनहेरिब ने यहूदाह के तमाम क़िलाबंद शहरों पर धावा बोलकर उन पर कब्ज़ा कर लिया। 2 फिर उसने अपने आला अफ़सर रबशाकी को बड़ी फ़ौज के साथ लकीस से यरूशलम को भेजा। यरूशलम पहुँचकर रबशाकी उस नाले के पास रुक गया जो पानी को ऊपरवाले तालाब तक पहुँचाता है (यह तालाब उस रास्ते पर है जो धोबियों के घाट तक ले जाता है)। 3 यह देखकर महल का इंचार्ज इलियाक्रीम बिन खिलक्रियाह, मीरमुंशी शिबनाह और मुशरि-खास युआख़ बिन आसफ़ शहर से निकलकर उससे मिलने आए। 4 रबशाकी ने उनके हाथ हिज़क्रियाह को पैगाम भेजा,

“असूर के अज़ीम बादशाह फ़रमाते हैं, तुम्हारा भरोसा किस चीज़ पर है? 5 तुम समझते हो कि ख़ाली बातें करना फ़ौजी हिकमते-अमली और ताकत के बराबर है। यह कैसी बात है? तुम किस पर एतमाद कर रहे हो कि मुझसे सरकश हो गए हो? 6 क्या तुम मिसर पर भरोसा करते हो? वह तो टूटा हुआ सरकंडा ही है। जो भी उस पर टेक लगाए उसका हाथ वह चीरकर ज़ख़मी कर देगा। यही कुछ उन सबके साथ हो जाएगा जो मिसर के बादशाह फ़िरौन पर भरोसा करें! 7 शायद तुम कहो, ‘हम रब अपने खुदा पर तवक्कुल करते हैं।’ लेकिन यह किस तरह हो सकता है? हिज़क्रियाह ने तो उस की बेहुरमती की है। क्योंकि उसने ऊँची जगहों के मंदिरों और कुरबानगाहों को ढाकर यहूदाह और यरूशलम से कहा है कि सिर्फ़ यरूशलम की कुरबानगाह के सामने परस्तिश करें। 8 आओ, मेरे आका असूर के बादशाह से सौदा करो। मैं तुम्हें 2,000 घोड़े दूँगा बशर्ते कि तुम उनके लिए सवार मुहैया कर सको। लेकिन अफ़सोस, तुम्हारे पास इतने घुड़सवार हैं ही नहीं! 9 तुम मेरे आका असूर के बादशाह के सबसे छोटे अफ़सर का भी मुकाबला नहीं कर सकते। लिहाज़ा मिसर के रथों पर भरोसा रखने का क्या फ़ायदा? 10 शायद तुम समझते हो कि मैं रब की मरज़ी के बग़ैर ही इस मुल्क पर हमला करने आया हूँ ताकि सब कुछ बरबाद करूँ। लेकिन ऐसा हरगिज़ नहीं है! रब ने खुद मुझे कहा कि इस मुल्क पर धावा बोलकर इसे तबाह कर दे।”

11 यह सुनकर इलियाक्रीम, शिबनाह और युआख़ ने रबशाकी की तक्ररीर में दख़ल देकर कहा, “बराहे-करम अरामी ज़बान में अपने खादिमों के साथ गुफ़्तगू कीजिए, क्योंकि हम यह अच्छी तरह बोल लेते हैं। इब्रानी ज़बान इस्तेमाल न करें, वरना शहर की फ़सील पर खड़े लोग आपकी बातें सुन लेंगे।” 12 लेकिन रबशाकी ने जवाब दिया, “क्या तुम समझते हो कि मेरे मालिक ने यह पैगाम सिर्फ़ तुम्हें और तुम्हारे मालिक को भेजा है? हरगिज़ नहीं! वह चाहते हैं कि तमाम लोग यह बातें सुन लें। क्योंकि वह भी तुम्हारी तरह अपना फुज़्ला खाने और अपना पेशाब पीने पर मजबूर हो जाएँगे।”

13 फिर वह फ़सील की तरफ़ मुड़कर बुलंद आवाज़ से इब्रानी ज़बान में अवाम से मुखातिब हुआ, “सुनो! शहनशाह, असूर के बादशाह के फ़रमान पर ध्यान दो! 14 बादशाह फ़रमाते हैं कि हिज़क्रियाह तुम्हें धोका न दे। वह तुम्हें बचा नहीं सकता। 15 बेशक वह तुम्हें तसल्ली दिलाने की कोशिश करके कहता है, ‘रब हमें ज़रूर छुटकारा देगा, यह शहर कभी भी असूरी बादशाह के कब्ज़े में नहीं आएगा।’ लेकिन इस किस्म की बातों से तसल्ली पाकर रब पर भरोसा मत करना। 16 हिज़क्रियाह की बातें न मानो बल्कि असूर के बादशाह की। क्योंकि वह फ़रमाते हैं, मेरे साथ सुलह करो और शहर से निकलकर मेरे पास आ जाओ। फिर तुममें से हर एक अंगूर की अपनी बेल और अंजीर के अपने दरख़्त का फल खाएगा और अपने हौज़ का पानी पीएगा। 17 फिर कुछ देर के बाद मैं तुम्हें एक ऐसे मुल्क में ले जाऊँगा जो तुम्हारे अपने मुल्क की मानिंद होगा। उसमें भी अनाज और नई मै, रोटी और अंगूर के बाग़ हैं। 18 हिज़क्रियाह की मत सुनना। जब वह कहता है, ‘रब हमें बचाएगा’ तो वह तुम्हें धोका दे रहा है। क्या दीगर अक़वाम के देवता अपने मुल्कों को शाहे-असूर से बचाने के काबिल रहे हैं? 19 हमात और अरफ़ाद के देवता कहाँ रह गए हैं? सिफ़रवायम के देवता क्या कर सके? और क्या किसी देवता ने सामरिया को मेरी गिरिफ़्त से बचाया? 20 नहीं, कोई भी देवता अपना मुल्क मुझसे बचा न सका। तो फिर रब यरूशलम को किस तरह मुझसे बचाएगा?”

21 फ़सील पर खड़े लोग खामोश रहे। उन्होंने कोई जवाब न दिया, क्योंकि बादशाह ने हुक्म दिया था कि जवाब में एक लफ़्ज़ भी न कहें। 22 फिर महल का इंचार्ज इलियाक़ीम बिन ख़िलक़ियाह, मीरमुंशी शिबनाह और मुशरि-खास युआख़ बिन आसफ़ रंजिश के मारे अपने लिबास फाड़कर हिज़क़ियाह के पास वापस गए। दरबार में पहुँचकर उन्होंने बादशाह को सब कुछ कह सुनाया जो रबशाक़ी ने उन्हें कहा था।

37

रब हिज़क़ियाह को तसल्ली देता है

1 यह बातें सुनकर हिज़क़ियाह ने अपने कपड़े फाड़े और टाट का मातमी लिबास पहनकर रब के घर में गया। 2 साथ साथ उसने महल के इंचार्ज इलियाक़ीम, मीरमुंशी शिबनाह और इमामों के बुजुर्गों को आमूस के बेटे यसायाह नबी के पास भेजा। सब टाट के मातमी लिबास पहने हुए थे। 3 नबी के पास पहुँचकर उन्होंने हिज़क़ियाह का पैग़ाम सुनाया, “आज हम बड़ी मुसीबत में हैं। सज़ा के इस दिन अस्सीरियों ने हमारी सख़्त बेइज़्ज़ती की है। हमारा हाल दर्द-ज़ह में मुब्तला उस औरत का-सा है जिसके पेट से बच्चा निकलने को है, लेकिन जो इसलिए नहीं निकल सकता कि माँ की ताक़त जाती रही है। 4 लेकिन शायद रब आपके ख़ुदा ने रबशाक़ी की वह बातें सुनी हों जो उसके आका अस्ूर के बादशाह ने ज़िंदा ख़ुदा की तौहीन में भेजी हैं। हो सकता है रब आपका ख़ुदा उस की बातें सुनकर उसे सज़ा दे। बराहे-करम हमारे लिए जो अब तक बचे हुए हैं दुआ करें।”

5 जब हिज़क़ियाह के अफ़सरों ने यसायाह को बादशाह का पैग़ाम पहुँचाया 6 तो नबी ने जवाब दिया, “अपने आका को बता देना कि रब फ़रमाता है, ‘उन धमकियों से ख़ौफ़ मत खा जो अस्सी बादशाह के मुलाज़िमों ने मेरी इहानत करके दी हैं। 7 देख, मैं उसका इरादा बदल दूँगा। वह अफ़वाह सुनकर इतना मुज़तरिब हो जाएगा कि अपने ही मुल्क को वापस चला जाएगा। वहाँ मैं उसे तलवार से मरवा दूँगा।’”

सनहेरिब की धमकियाँ और हिज़क़ियाह की दुआ

8 रबशाक़ी यरूशलम को छोड़कर अस्ूर के बादशाह के पास वापस चला गया जो उस वक़्त लकीस से ख़ाना होकर लिबना पर चढ़ाई कर रहा था।

9 फिर सनहेरिब को इतला मिली, “एथोपिया का बादशाह तिरहाका आपसे लड़ने आ रहा है।” तब उसने अपने कासिदों को दुबारा यरूशलम भेज दिया ताकि हिज़क़ियाह को पैग़ाम पहुँचाएँ, 10 “जिस देवता पर तुम भरोसा रखते हो उससे फ़रेब न खाओ जब वह कहता है कि यरूशलम अस्सी बादशाह के कब्ज़े में कभी नहीं आएगा। 11 तुम तो सुन चुके हो कि अस्ूर के बादशाहों ने जहाँ भी गए क्या कुछ किया है। हर मुल्क को उन्होंने मुक़म्मल तौर पर तबाह कर दिया है। तो फिर तुम किस तरह बच जाओगे? 12 क्या जौज़ान, हारान और रसफ़ के देवता उनकी हिफ़ाज़त कर पाएँ? क्या मुल्के-अदन में तिलस्सार के बाशिंदे बच सके? नहीं, कोई भी देवता उनकी मदद न कर सका जब मेरे बापदादा ने उन्हें तबाह किया। 13 ध्यान दो, अब हमारा, अरफ़ाद, सिफ़रवायम शहर, हेना और इव्वा के बादशाह कहाँ हैं?”

14 ख़त मिलने पर हिज़क़ियाह ने उसे पढ़ लिया और फिर रब के घर के सहन में गया। ख़त को रब के सामने बिछाकर 15 उसने रब से दुआ की,

16 “ऐ रब्बुल-अफ़वाज़ इसराईल के ख़ुदा जो क़रूबी फ़रिश्तों के दरमियान तख़्तनशीन है, तू अकेला ही दुनिया के तमाम ममालिक का ख़ुदा है। तू ही ने आसमानो-ज़मीन को ख़लक़ किया है। 17 ऐ रब, मेरी सुन! अपनी आँखें खोलकर देख! सनहेरिब की उन तमाम बातों पर ध्यान दे जो उसने इस मक़सद से हम तक पहुँचाई हैं कि ज़िंदा ख़ुदा की इहानत करे। 18 ऐ रब, यह बात सच है कि अस्सी बादशाहों ने इन तमाम क़ौमों को उनके मुल्कों समेत तबाह कर दिया है। 19 वह तो उनके बुतों को आग में फेंककर भस्म कर सकते थे, क्योंकि वह ज़िंदा नहीं बल्कि सिर्फ़ इनसान के हाथों से बने हुए लकड़ी और पत्थर के बुत थे। 20 ऐ रब हमारे ख़ुदा, अब मैं तुझसे इतमास करता हूँ कि हमें अस्सी बादशाह के हाथ से बचा ताकि दुनिया के तमाम ममालिक जान लें कि तू ऐ रब, वाहिद ख़ुदा है।”

अस्सी की लान-तान पर अल्लाह का जवाब

21 फिर यसायाह बिन आमूस ने हिज़क़ियाह को पैग़ाम भेजा, “रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि मैंने अस्सी बादशाह सनहेरिब के बारे में तेरी दुआ सुनी है। 22 अब रब का उसके खिलाफ़ फ़रमान सुन,

कुँवारी सिय्यून बेटी तुझे हकीर जानती है, हाँ यरूशलम बेटी अपना सर हिला हिलाकर हिक़ारतआमेज़ नज़र से तेरे पीछे देखती है। 23 क्या तू नहीं जानता कि किस को गालियाँ दीं और किसकी इहानत की है? क्या तुझे नहीं मालूम कि तूने किसके खिलाफ़ आवाज़ बुलंद की है? जिसकी तरफ़ तू गुस्से की नज़र से देख रहा है वह इसराईल का कुदूस है!

24 अपने कासिदों के ज़रीए तूने रब की इहानत की है। तू डींगें मारकर कहता है, ‘मैं अपने बेशुमार रथों से पहाड़ों की चोटियों और लुबनान की इतहा तक चढ़ गया हूँ। मैं देवदार के बड़े बड़े और जूनीपर के बेहतरीन दरख़्तों को काटकर लुबनान की दूरतरीन बुलंदियों तक, उसके सबसे घने जंगल तक पहुँच गया हूँ। 25 मैंने ग़ैरमुल्कों में कुँए ख़ुदवाकर उनका पानी पी लिया है। मेरे तल्वों तले मिसर की तमाम नदियाँ ख़ुशक हो गईं।’

26 ऐ अस्सी बादशाह, क्या तूने नहीं सुना कि बड़ी देर से मैंने यह सब कुछ मुक़र्रर किया? क़दीम ज़माने में ही मैंने इसका मनसूबा बाँध लिया, और अब मैं इसे वुजूद में लाया। मेरी मरज़ी थी कि तू क़िलाबंद शहरों को ख़ाक में मिलाकर पत्थर के ढेरों में बदल दे। 27 इसी लिए

उनके बाशिंदों की ताकत जाती रही, वह घबराए और शर्मिंदा हुए। वह घास की तरह कमजोर थे, छत पर उगनेवाली उस हरियाली की मानिंद जो थोड़ी देर के लिए फलती-फूलती तो है, लेकिन लू चलते वक़्त एकदम मुरझा जाती है। 28 मैं तो तुझसे खूब वाकिफ़ हूँ। मुझे मालूम है कि तू कहाँ ठहरा हुआ है, और तेरा आना जाना मुझसे पोशीदा नहीं रहता। मुझे पता है कि तू मेरे खिलाफ़ कितने तैश में आ गया है। 29 तेरा तैश और गुस्सा देखकर मैं तेरी नाक में नकेल और तेरे मुँह में लगाम डालकर तुझे उस रास्ते पर से वापस घसीट ले जाऊँगा जिस पर से तू यहाँ आ पहुँचा है।

30 ऐ हिज़क्रियाह, मैं तुझे इस निशान से तसल्ली दिलाऊँगा कि इस साल और आनेवाले साल तुम वह कुछ खाओगे जो खेतों में खुद बख़ुद उगेगा। लेकिन तीसरे साल तुम बीज बोकर फसलें काटोगे और अंगूर के बाग़ लगाकर उनका फल खाओगे। 31 यहदाह के बचे हुए बाशिंदे एक बार फिर जड़ पकड़कर फल लाएँगे। 32 क्योंकि यरूशलम से क्रौम का बक़िया निकल आएगा, और कोहे-सियून का बचा-खुचा हिस्सा दुबारा मुल्क में फैल जाएगा। रब्बुल-अफ़वाज की ग़ैरत यह कुछ सरंजाम देगी।

33 जहाँ तक असूरी बादशाह का ताल्लुक है रब फ़रमाता है कि वह इस शहर में दाखिल नहीं होगा। वह एक तीर तक उसमें नहीं चलाएगा। न वह ढाल लेकर उस पर हमला करेगा, न शहर की फसील के साथ मिट्टी का ढेर लगाएगा। 34 जिस रास्ते से बादशाह यहाँ आया उसी रास्ते पर से वह अपने मुल्क वापस चला जाएगा। इस शहर में वह घुसने नहीं पाएगा। यह रब का फ़रमान है। 35 क्योंकि मैं अपनी और अपने खादिम दाऊद की खातिर इस शहर का दिफा करके उसे बचाऊँगा।”

36 उसी रात रब का फ़रिश्ता निकल आया और असूरी लश्करगाह में से गुज़रकर 1,85,000 फ़ौजियों को मार डाला। जब लोग सुबह-सवेरे उठे तो चारों तरफ़ लाशें ही लाशें नज़र आईं।

37 यह देखकर सनहेरिब अपने ख़ैमे उखाड़कर अपने मुल्क वापस चला गया। नीनवा शहर पहुँचकर वह वहाँ ठहर गया। 38 एक दिन जब वह अपने देवता निसरूक के मंदिर में पूजा कर रहा था तो उसके बेटों अद्रम्मलिक और शराज़र ने उसे तलवार से क़त्ल कर दिया और फ़रार होकर मुल्के-अरारात में पनाह ली। फिर उसका बेटा असर्हदून तख़्तनशीन हुआ।

38

अल्लाह हिज़क्रियाह को शफ़ा देता है

1 उन दिनों में हिज़क्रियाह इतना बीमार हुआ कि मरने की नौबत आ पहुँची। आमूस का बेटा यसायाह नबी उससे मिलने आया और कहा, “रब फ़रमाता है कि अपने घर का बंदोबस्त कर ले, क्योंकि तुझे मरना है। तू इस बीमारी से शफ़ा नहीं पाएगा।”

2 यह सुनकर हिज़क्रियाह ने अपना मुँह दीवार की तरफ़ फेरकर दुआ की, 3 “ऐ रब, याद कर कि मैं वफ़ादारी और खुलूसदिली से तेरे सामने चलता रहा हूँ, कि मैं वह कुछ करता आया हूँ जो तुझे पसंद है।” फिर वह फूट फूटकर रोने लगा।

4 तब यसायाह नबी को रब का कलाम मिला, 5 “हिज़क्रियाह के पास जाकर उसे बता देना कि रब तेरे बाप दाऊद का ख़ुदा फ़रमाता है, “मैंने तेरी दुआ सुन ली और तेरे आँसू देखे हैं। मैं तेरी ज़िंदगी में 15 साल का इज़ाफ़ा करूँगा। 6 साथ साथ मैं तुझे और इस शहर को असूर के बादशाह से बचा लूँगा। मैं ही इस शहर का दिफा करूँगा।”

7 यह पैग़ाम हिज़क्रियाह को सुनाकर यसायाह ने मज़ीद कहा, “रब तुझे एक निशान देगा जिससे तू जान लेगा कि वह अपना वादा पूरा करेगा। 8 मेरे कहने पर आख़ज़ की बनाई हुई धूपघड़ी का साया दस दर्जे पीछे जाएगा।” और ऐसा ही हुआ। साया दस दर्जे पीछे हट गया।

शफ़ा पाने पर हिज़क्रियाह का गीत

9 यहदाह के बादशाह हिज़क्रियाह ने शफ़ा पाने पर ज़ैल का गीत कलमबंद किया,

10 “मैं बोला, क्या मुझे ज़िंदगी के उरूज पर पाताल के दरवाज़ों में दाखिल होना है? बाकीमाँदा साल मुझसे छीन लिए गए हैं।

11 मैं बोला, आइंदा मैं रब को ज़िंदों के मुल्क में नहीं देखूँगा। अब से मैं पाताल के बाशिंदों के साथ रहकर इस दुनिया के लोगों पर नज़र नहीं डालूँगा।

12 मेरे घर को गल्लाबानों के ख़ैमे की तरह उतारा गया है, वह मेरे ऊपर से छीन लिया गया है। मैंने अपनी ज़िंदगी को ज़ूलाहे की तरह इख़िताम तक बुन लिया है। अब उसने मुझे काटकर तौत के धागों से अलग कर दिया है। एक दिन के अंदर अंदर तूने मुझे ख़त्म किया।

13 सुबह तक मैं चीखकर फ़रियाद करता रहा, लेकिन उसने शेरबबर की तरह मेरी तमाम हड्डियाँ तोड़ दीं। एक दिन के अंदर अंदर तूने मुझे ख़त्म किया।

14 मैं बेजान होकर अबामील या बुलबुल की तरह चीं चीं करने लगा, गूँ गूँ करके कबूतर की-सी आहें भरने लगा। मेरी आँखें निढाल होकर आसमान की तरफ़ तकती रहीं। ऐ रब, मुझ पर ज़ुल्म हो रहा है। मेरी मदद के लिए आ!

15 लेकिन मैं क्या कहूँ? उसने ख़ुद मुझसे हमकलाम होकर यह किया है। मैं तलखियों से मगलूब होकर ज़िंदगी के आखिर तक दबी हुई हालत में फिरूँगा।

16 ऐ रब, इन्हीं चीज़ों के सबब से इनसान ज़िंदा रहता है, मेरी रूह की ज़िंदगी भी इन्हीं पर मबनी है। तू मुझे बहाल करके जीने देगा।

17 यक्रीनन यह तलख तजरबा मेरी बरकत का बाइस बन गया। तेरी मुहब्बत ने मेरी जान को कब्र से महफूज रखा, तूने मेरे तमाम गुनाहों को अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया है।

18 क्योंकि पाताल तेरी हम्दो-सना नहीं करता, और मौत तेरी सताइश में गीत नहीं गाती, ज़मीन की गहराइयों में उतरे हुए तेरी वफ़ादारी के इंतज़ार में नहीं रहते।

19 नहीं, जो ज़िंदा है वही तेरी तारीफ़ करता, वही तेरी तमजीद करता है, जिस तरह मैं आज कर रहा हूँ। पुश्त-दर-पुश्त बाप अपने बच्चों को तेरी वफ़ादारी के बारे में बताते हैं।

20 रब मुझे बचाने के लिए तैयार था। आओ, हम उम्र-भर रब के घर में तारदार साज़ बजाएँ।”

इलाज का तरीक़े-कार

21 यसायाह ने हिदायत दी थी, “अंजीर की टिककी लाकर बादशाह के नासूर पर बाँध दो! तब उसे शफ़ा मिलेगी।” 22 पहले हिज़क्रियाह ने पूछा था, “रब कौन-सा निशान देगा जिससे मुझे यक्रीन आए कि मैं दुबारा रब के घर की इबादत में शरीक हूँगा?”

39

हिज़क्रियाह से संगीन ग़लती होती है

1 थोड़ी देर के बाद बाबल के बादशाह मरूदक-बलदान बिन बलदान ने हिज़क्रियाह की बीमारी और शफ़ा की ख़बर सुनकर वफ़द के हाथ ख़त और तोहफ़े भेजे। 2 हिज़क्रियाह ने खुशी से वफ़द का इस्तक़बाल करके उसे वह तमाम खज़ाने दिखाए जो ज़ख़ीराख़ाने में महफूज रखे गए थे यानी तमाम सोना-चाँदी, बलसान का तेल और बाक़ी कीमती तेल। उसने पूरा असलिहाख़ाना और बाक़ी सब कुछ भी दिखाया जो उसके खज़ानों में था। पूरे महल और पूरे मुल्क में कोई ख़ास चीज़ न रही जो उसने उन्हें न दिखाई।

3 तब यसायाह नबी हिज़क्रियाह बादशाह के पास आया और पूछा, “इन आदमियों ने क्या कहा? कहाँ से आए हैं?” हिज़क्रियाह ने जवाब दिया, “दूर-दराज़ मुल्क बाबल से मेरे पास आए हैं।” 4 यसायाह बोला, “उन्होंने महल में क्या कुछ देखा?” हिज़क्रियाह ने कहा, “उन्होंने महल में सब कुछ देख लिया है। मेरे खज़ानों में कोई चीज़ न रही जो मैंने उन्हें नहीं दिखाई।”

5 तब यसायाह ने कहा, “रब्बुल-अफ़वाज़ का फ़रमान सुनें! 6 एक दिन आनेवाला है कि तेरे महल का तमाम माल छीन लिया जाएगा। जितने भी खज़ाने तू और तेरे बापदादा ने आज तक जमा किए हैं उन सबको दुश्मन बाबल ले जाएगा। रब फ़रमाता है कि एक भी चीज़ पीछे नहीं रहेगी। 7 तेरे बेटों में से भी बाज़ छीन लिए जाएंगे, ऐसे जो अब तक पैदा नहीं हुए। तब वह ख़्वाजासरा बनकर शाहे-बाबल के महल में ख़िदमत करेंगे।”

8 हिज़क्रियाह बोला, “रब का जो पैग़ाम आपने मुझे दिया है वह ठीक है।” क्योंकि उसने सोचा, “बड़ी बात यह है कि मेरे जीते-जी अमनो-अमान होगा।”

40

अल्लाह की क़ौम को तसल्ली

1 तुम्हारा रब फ़रमाता है, “तसल्ली दो, मेरी क़ौम को तसल्ली दो! 2 नरमी से यरूशलम से बात करो, बुलंद आवाज़ से उसे बताओ कि तेरी गुलामी के दिन पूरे हो गए हैं, तेरा क़सूर मुआफ़ हो गया है। क्योंकि तुझे रब के हाथ से तमाम गुनाहों की दुगनी सज़ा मिल गई है।”

3 एक आवाज़ पुकार रही है, “रेगिस्तान में रब की राह तैयार करो! बयाबान में हमारे ख़ुदा का रास्ता सीधा बनाओ। 4 लाज़िम है कि हर वादी भर दी जाए, ज़रूरी है कि हर पहाड़ और बुलंद जगह मैदान बन जाए। जो टेढ़ा है उसे सीधा किया जाए, जो नाहमवार है उसे हमवार किया जाए। 5 तब अल्लाह का जलाल ज़ाहिर हो जाएगा, और तमाम इनसान मिलकर उसे देखेंगे। यह रब के अपने मुँह का फ़रमान है।”

6 एक आवाज़ ने कहा, “ज़ोर से आवाज़ दे!” मैंने पूछा, “मैं क्या कहूँ?” “यह कि तमाम इनसान घास ही हैं, उनकी तमाम शानो-शौकत जंगली फूल की मानिंद है। 7 जब रब का साँस उन पर से गुज़रे तो घास मुरझा जाती और फूल गिर जाता है, क्योंकि इनसान घास ही है। 8 घास तो मुरझा जाती और फूल गिर जाता है, लेकिन हमारे ख़ुदा का कलाम अबद तक कायम रहता है।”

9 ऐ सियून्, ऐ खुशख़बरी के पैग़ंबर, बुलंदियों पर चढ़ जा! ऐ यरूशलम, ऐ खुशख़बरी के पैग़ंबर, ज़ोर से आवाज़ दे! पुकारकर कह और ख़ौफ़ मत खा। यहदाह के शहरों को बता, “वह देखो, तुम्हारा ख़ुदा!”

10 देखो, रब कादिरे-मुतलक़ बड़ी कुदरत के साथ आ रहा है, वह बड़ी ताक़त के साथ हुक्म करेगा। देखो, उसका अज़्र उसके पास है, और उसका इनाम उसके आगे आगे चलता है। 11 वह चरवाहे की तरह अपने गल्ले की गल्लाबानी करेगा। वह भेड़ के बच्चों को अपने बाज़ुओं में महफूज रखकर सीने के साथ लगाए फ़िरेगा और उनकी माओं को बड़े ध्यान से अपने साथ ले चलेगा।

अल्लाह की नाकाबिले-बयान अज़मत

12 किसने अपने हाथ से दुनिया का पानी नाप लिया है? किसने अपने हाथ से आसमान की पैमाइश की है? किसने ज़मीन की मिट्टी की मिक्कदार मालूम की या तराजू से पहाड़ों का कुल वज़न मुतैयिन किया है? 13 किसने रब के रूह की तहकीक़ कर पाई? क्या उसका कोई मुशरि

है जो उसे तालीम दे? 14 क्या उसे किसी से मशवरा लेने की जरूरत है ताकि उसे समझ आकर रास्त राह की तालीम मिल जाए? हरगिज़ नहीं! क्या किसी ने कभी उसे इल्मो-इरफ़ान या समझदार ज़िंदगी गुज़ारने का फ़न सिखाया है? हरगिज़ नहीं!

15 यक़ीनन तमाम अक़वाम रब के नज़दीक बालटी के एक क़तरे या तराजू में गर्द की मानिंद हैं। ज़ज़ीरों को वह रेत के ज़र्रों की तरह उठा लेता है। 16 खाह लुबनान के तमाम दरख़्त और जानवर रब के लिए क़ुरबान क्यों न होते तो भी मुनासिब क़ुरबानी के लिए काफ़ी न होते। 17 उसके सामने तमाम अक़वाम कुछ भी नहीं हैं। उस की नज़र में वह हेच और नाचीज़ हैं।

18 अल्लाह का मुवाज़ना किससे हो सकता है? उसका मुकाबला किस तस्वीर या मुजस्समे से हो सकता है? 19 बुत तो यों बनता है कि पहले दस्तकार उसे ढाल देता है, फिर सुनार उस पर सोना चढ़ाकर उसे चाँदी की ज़ंजीरों से सजा देता है। 20 जो ग़ुरबत के बाइस यह नहीं करवा सकता वह कम अज़ कम कोई ऐसी लकड़ी चुन लेता है जो गल-सड़ नहीं जाती। फिर वह किसी माहिर दस्तकार से बुत को यों बनवाता है कि वह अपनी जगह से न हिले।

21 क्या तुमको मालूम नहीं? क्या तुमने बात नहीं सुनी? क्या तुम्हें इब्तिदा से सुनाया नहीं गया? क्या तुम्हें दुनिया के क्रियाम से लेकर आज तक समझ नहीं आई? 22 रब रूए-ज़मीन के ऊपर बुलंदियों पर तख़्तनशीन है जहाँ से इनसान टिट्टियों जैसे लगते हैं। वह आसमान को परदे की तरह तानकर और हर तरफ़ खींचकर रहने के काबिल ख़ैमा बना देता है। 23 वह सरदारों को नाचीज़ और दुनिया के काज़ियों को हेच बना देता है। 24 वह नए पौदों की मानिंद हैं जिनकी पनीरी अभी अभी लगी है, बीज अभी अभी बोए गए हैं, पौदों ने अभी अभी जड़ पकड़ी है कि रब उन पर फूँक मारता है और वह मुरझा जाते हैं। तब आँधी उन्हें भूसे की तरह उड़ा ले जाती है।

25 कुदूस खुदा फ़रमाता है, “तुम मेरा मुवाज़ना किससे करना चाहते हो? कौन मेरे बराबर है?” 26 अपनी नज़र उठाकर आसमान की तरफ़ देखो। किसने यह सब कुछ ख़लक किया? वह जो आसमानी लश्कर की पूरी तादाद बाहर लाकर हर एक को नाम लेकर बुलाता है। उस की कुदरत और ज़बरदस्त ताक़त इतनी अज़ीम है कि एक भी दूर नहीं रहता।

27 ऐ याक़ूब की क्रौम, तू क्यों कहती है कि मेरी राह रब की नज़र से छुपी रहती है? ऐ इसराईल, तू क्यों शिकायत करता है कि मेरा मामला मेरे खुदा के इल्म में नहीं आता?

28 क्या तुझे मालूम नहीं, क्या तूने नहीं सुना कि रब लाज़वाल खुदा और दुनिया की इंतहा तक का ख़ालिक है? वह कभी नहीं थकता, कभी निढाल नहीं होता। कोई भी उस की समझ की गहराइयों तक नहीं पहुँच सकता। 29 वह थकेमौदों को ताज़गी और बेबसों को तक्रवियत देता है। 30 गो नौज़वान थककर निढाल हो जाएँ और जवान आदमी ठोकर खाकर गिर जाएँ, 31 लेकिन रब से उम्मीद रखनेवाले नई ताक़त पाएँगे और उकाब के-से पर फैलाकर बुलंदियों तक उड़ेंगे। न वह दौड़ते हुए थकेंगे, न चलते हुए निढाल हो जाएँगे।

41

दुश्मन के हमले रब ही की तरफ़ से हैं

1 “ऐ ज़ज़ीरो, ख़ामोश रहकर मेरी बात सुनो! अक़वाम अज़ सरे-नौ तक्रवियत पाएँ और मेरे हुज़ूर आएँ, फिर बात करें। आओ, हम एक दूसरे से मिलकर अदालत में हाज़िर हो जाएँ!

2 कौन उस आदमी को जगाकर मशरिक से लाया है जिसके दामन में इनसाफ़ है? कौन दीगर क्रौमों को इस शरख़ के हवाले करके बादशाहों को खाक में मिलाता है? उस की तलवार से वह गर्द हो जाते हैं, उस की कमान से लोग हवा में भूसे की तरह उड़कर बिखर जाते हैं। 3 वह उनका ताक़ुब करके सहीह-सलामत आगे निकलता है, भागते हुए उसके पाँव रास्ते को नहीं छूते। 4 किसने यह सब कुछ किया, किसने यह अंजाम दिया? उसी ने जो इब्तिदा ही से नसलों को बुलाता आया है। मैं, रब अब्वल हूँ, और आखिर में आनेवालों के साथ भी मैं वही हूँ।”

5 ज़ज़ीर यह देखकर डर गए, दुनिया के दूर-दराज़ इलाक़े काँप उठे हैं। वह करीब आते हुए 6 एक दूसरे को सहारा देकर कहते हैं, “हौसला रख!” 7 दस्तकार सुनार की हौसलाअफ़ज़ाई करता है, और जो बुत की नाहमवारियों को हथौड़े से ठीक करता है वह अहरन पर काम करनेवाले की हिम्मत बढ़ाता और टाँके का मुआयना करके कहता है, “अब ठीक है!” फिर मिलकर बुत को कीलों से मज़बूत करते हैं ताकि हिले न।

मत डरना, क्योंकि मैं तेरा खुदा हूँ

8 “लेकिन तू मेरे खादिम इसराईल, तू फ़रक़ है। ऐ याक़ूब की क्रौम, मैंने तुझे चुन लिया, और तू मेरे दोस्त इब्राहीम की औलाद है। 9 मैं तुझे पकड़कर दुनिया की इंतहा से लाया, उसके दूर-दराज़ कोनों से बुलाया। मैंने फ़रमाया, ‘तू मेरा खादिम है।’ मैंने तुझे रद्द नहीं किया बल्कि तुझे चुन लिया है। 10 चुनौचे मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ। दहशत मत खा, क्योंकि मैं तेरा खुदा हूँ। मैं तुझे मज़बूत करता, तेरी मदद करता, तुझे अपने दहने हाथ के इनसाफ़ से कायम रखता हूँ। 11 देख, जितने भी तेरे खिलाफ़ तैश में आ गए हैं वह सब शरमिंदा हो जाएँगे, उनका मुँह काला हो जाएगा। तुझसे झगड़नेवाले हेच ही साबित होकर हलाक़ हो जाएँगे। 12 तब तू अपने मुखालिफ़ों का पता करेगा लेकिन उनका नामो-निशान तक नहीं मिलेगा। तुझसे लड़नेवाले ख़त्म ही होंगे, ऐसा ही लगेगा कि वह कभी थे नहीं। 13 क्योंकि मैं रब तेरा खुदा हूँ। मैं तेरे दहने हाथ को पकड़कर तुझे बताता हूँ, ‘मत डरना, मैं ही तेरी मदद करता हूँ।’

14 ऐ कीड़े याकूब मत डर, ऐ छोटी कौम इसराईल खौफ मत खा। क्योंकि मैं ही तेरी मदद करूँगा, और जो एवज़ाना देकर तुझे छुड़ा रहा है वह इसराईल का कुदूस है।” यह है रब का फ़रमान। 15 “मेरे हाथ से तू गाहने का नया और मुतअद्दिद तेज़ नोके रखनेवाला आला बनेगा। तब तू पहाड़ों को गाहकर रेज़ा रेज़ा कर देगा, और पहाड़ियाँ भूसे की मानिंद हो जाएँगी। 16 तू उन्हें उछाल उछालकर उड़ाएगा तो हवा उन्हें ले जाएगी, आँधी उन्हें दूर तक बिखेर देगी। लेकिन तू रब की खुशी मनाएगा और इसराईल के कुदूस पर फ़ख़र करेगा।

अल्लाह रेगिस्तान में पानी मुहैया करता है

17 गरीब और ज़रूरतमंद पानी की तलाश में हैं, लेकिन बेफ़ायदा, उनकी ज़बानें प्यास के मोरे खुश्क हो गई हैं। लेकिन मैं, रब उनकी सुनूँगा, मैं जो इसराईल का खुदा हूँ उन्हें तर्क नहीं करूँगा। 18 मैं बंजर बुलंदियों पर नदियाँ जारी करूँगा और वादियों में चश्मे फूटने दूँगा। मैं रेगिस्तान को जोहड़ में और सूखी सूखी ज़मीन को पानी के स्रोतों में बदल दूँगा। 19 मेरे हाथ से रेगिस्तान में देवदार, कीकर, मेहँदी और जैतून के दरख़्त लगेंगे, बयाबान में जूनीपर, सनोबर और सरो के दरख़्त मिलकर उगेंगे। 20 मैं यह इसलिए करूँगा कि लोग ध्यान देकर जान लें कि रब के हाथ ने यह सब कुछ किया है, कि इसराईल के कुदूस ने यह पैदा किया है।”

देवता बेकार हैं

21 रब जो याकूब का बादशाह है फ़रमाता है, “आओ, अदालत में अपना मामला पेश करो, अपने दलायल बयान करो। 22 आओ, अपने बुतों को ले आओ ताकि वह हमें बताएँ कि क्या क्या पेश आना है। माज़ी में क्या क्या हुआ? बताओ, ताकि हम ध्यान दें। या हमें मुस्तक़बिल की बातें सुनाओ, 23 वह कुछ जो आनेवाले दिनों में होगा, ताकि हमें मालूम हो जाए कि तुम देवता हो। कम अज़ कम कुछ न कुछ करो, खाह अच्छा हो या बुरा, ताकि हम घबराकर डर जाएँ। 24 तुम तो कुछ भी नहीं हो, और तुम्हारा काम भी बेकार है। जो तुम्हें चुन लेता है वह क़ाबिले-घिन है।

25 अब मैंने शिमाल से एक आदमी को जगा दिया है, और वह मेरा नाम लेकर मशरिक़ से आ रहा है। यह शख्स हुक्मरानों को मिट्टी की तरह कुचल देता है, उन्हें गोरे को नरम करनेवाले कुम्हार की तरह रौंद देता है। 26 किसने इब्तिदा से इसका एलान किया ताकि हमें इल्म हो? किसने पहले से इसकी पेशगोई की ताकि हम कहें, ‘उसने बिलकुल सहीह कहा है’? कोई नहीं था जिसने पहले से इसका एलान करके इसकी पेशगोई की। कोई नहीं था जिसने तुम्हारे मुँह से इसके बारे में एक लफ़्ज़ भी सुना। 27 किसने सिय्यून को पहले बता दिया, ‘वह देखो, तेरा सहारा आने को है!’ मैं ही ने यह फ़रमाया, मैं ही ने यरूशलम को खुशख़बरी का पैग़ंबर अता किया।

28 लेकिन जब मैं अपने इर्दगिर्द देखता हूँ तो कोई नहीं है जो मुझे मशवरा दे, कोई नहीं जो मेरे सवाल का जवाब दे। 29 देखो, यह सब धोका ही धोका है। उनके काम हेच और उनके ढाले हुए मुजस्समे ख़ाली हवा ही हैं।

42

अल्लाह का पैग़ंबर अक़वाम के लिए मशाले-राह है

1 देखो, मेरा खादिम जिसे मैं कायम रखता हूँ, मेरा बरगुज़ीदा जो मुझे पसंद है। मैं अपने रूह को उस पर डालूँगा, और वह अक़वाम में इनसाफ़ कायम करेगा। 2 वह न तो चीखेगा, न चिल्लाएगा, गलियों में उस की आवाज़ सुनाई नहीं देगी। 3 न वह कुचले हुए सरकंडे को तोड़ेगा, न बुझती हुई बत्ती को बुझाएगा। वफ़ादारी से वह इनसाफ़ कायम करेगा। 4 और जब तक उसने दुनिया में इनसाफ़ कायम न कर लिया हो तब तक न उस की बत्ती बुझेगी, न उसे कुचला जाएगा। जज़ीर उस की हिदायत से उम्मीद रखेंगे।”

5 रब खुदा ने आसमान को खलक करके खैमे की तरह ज़मीन के ऊपर तान लिया। उसी ने ज़मीन को और जो कुछ उसमें से फूट निकलता है तश्कील दिया, और उसी ने रूए-ज़मीन पर बसने और चलनेवालों में दम फूँककर जान डाली। अब यही खुदा अपने खादिम से फ़रमाता है, 6 “मैं, रब ने इनसाफ़ से तुझे बुलाया है। मैं तेरे हाथ को पकड़कर तुझे महफूज़ रखूँगा। क्योंकि मैं तुझे कौम का अहद और दीगर अक़वाम की रौशनी बना दूँगा 7 ताकि तू अंधों की आँखें खोले, कैदियों को कोठड़ी से रिहा करे और तारीकी की कैद में बसनेवालों को छुटकारा दे। 8 मैं रब हूँ, यही मेरा नाम है! मैं बरदाश्त नहीं करूँगा कि जो जलाल मुझे मिलना है वह किसी और को दे दिया जाए, कि लोग बुतों की तमज़ीद करें जबकि उन्हें मेरी तमज़ीद करनी चाहिए। 9 देखो, जिसकी भी पेशगोई मैंने की थी वह वुकू में आया है। अब मैं नई बातों का एलान करता हूँ। इससे पहले कि वह वुजूद में आएँ मैं उन्हें तुम्हें सुना देता हूँ।”

रब की तमज़ीद में गीत गाओ!

10 रब की तमज़ीद में गीत गाओ, दुनिया की इंतहा तक उस की मद्दहसराई करो! ऐ समुंदर के मुसाफ़िरो और जो कुछ उसमें है, उस की सताइश करो! ऐ जज़ीरो, अपने बाशिंदों समेत उस की तारीफ़ करो! 11 बयाबान और उसके क़सबे खुशी के नारे लगाएँ, जिन आबादियों में कीदार बसता है वह शादमान हों। सिला के बाशिंदे बाग़ बाग़ होकर पहाड़ों की चोटियों पर ज़ोर से शादियाना बजाएँ। 12 सब रब को जलाल दें और जज़ीरों तक उस की तारीफ़ फैलाएँ।

13 रब सूरमे की तरह लड़ने के लिए निकलेगा, फ़ौजी की तरह जोश में आएगा और जंग के नारे लगा लगाकर अपने दुश्मनों पर गालिब आएगा।

14 वह फरमाता है, “मैं बड़ी देर से खामोश रहा हूँ। मैं चुप रहा और अपने आपको रोकता रहा। लेकिन अब मैं दर्द-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह कराहता हूँ। मेरा साँस फूल जाता और मैं बेताबी से हाँपता रहता हूँ। 15 मैं पहाड़ों और पहाड़ियों को तबाह करके उनकी तमाम हरियाली झुलसा दूँगा। दरिया खुश्क ज़मीन बन जाएंगे, और जोहड़ सूख जाएंगे। 16 मैं अंधों को ऐसी राहों पर ले चलूँगा जिनसे वह वाकिफ़ नहीं होंगे, गैरमानूस रास्तों पर उनकी राहनुमाई करूँगा। उनके आगे मैं अंधेरे को रौशन और नाहमवार ज़मीन को हमवार करूँगा। यह सब कुछ मैं सरंजाम दूँगा, एक बात भी अधूरी नहीं रह जाएगी।

17 लेकिन जो बुतों पर भरोसा रखकर उनसे कहते हैं, ‘तुम हमारे देवता हो’ वह सख़्त शर्म खाकर पीछे हट जाएंगे।

सज़ा का सबब अंधापन है

18 ऐ बहरो, सुनो! ऐ अंधो, नज़र उठाओ ताकि देख सको! 19 कौन मेरे खादिम जैसा अंधा है? कौन मेरे पैगंबर जैसा बहरा है, उस जैसा जिसे मैं भेज रहा हूँ? गो मैंने उसके साथ अहद बाँधा तो भी रब के खादिम जैसा अंधा और नाबीना कोई नहीं है। 20 गो तूने बहुत कुछ देखा है तूने तवज्जुह नहीं दी, गो तेरे कान हर बात सुन लेते हैं तू सुनता नहीं।” 21 रब ने अपनी रास्ती की खातिर अपनी शरीअत की अज़मत और जलाल को बढ़ाया है, क्योंकि यह उस की मरज़ी थी। 22 लेकिन अब उस की क़ौम को ग़ारत किया गया, सब कुछ लूट लिया गया है। सबके सब ग़दों में जकड़े या जेलों में छुपाए हुए हैं। वह लूट का माल बन गए हैं, और कोई नहीं है जो उन्हें बचाए। उन्हें छीन लिया गया है, और कोई नहीं है जो कहे, “उन्हें वापस करो!”

23 काश तुममें से कोई ध्यान दे, कोई आइंदा के लिए तवज्जुह दे। 24 सोच लो! किसने इजाज़त दी कि याकूब की औलाद को ग़ारत किया जाए? किसने इसराईल को लुटेरों के हवाले कर दिया? क्या यह रब की तरफ़ से नहीं हुआ, जिसके खिलाफ़ हमने गुनाह किया है? लोग तो उस की राहों पर चलना ही नहीं चाहते थे, वह उस की शरीअत के ताबे रहने के लिए तैयार ही न थे। 25 इसी वजह से उसने उन पर अपना सख़्त ग़ज़ब नाज़िल किया, उन्हें शदीद जंग की ज़द में आने दिया। लेकिन अफ़सोस, गो आग ने क़ौम को घेरकर झुलसा दिया ताहम उसे समझ नहीं आई, गो वह भस्म हुई तो भी उसने दिल से सबक नहीं सीखा।

43

रब क़ौम को वतन में वापस लाएगा

1 लेकिन अब रब जिसने तुझे ऐ याकूब खलक किया और तुझे ऐ इसराईल तश्कील दिया फ़रमाता है, “ख़ौफ़ मत खा, क्योंकि मैंने एवज़ाना देकर तुझे छुड़ाया है, मैंने तेरा नाम लेकर तुझे बुलाया है, तू मेरा ही है। 2 पानी की गहराइयों में से गुज़रते वक़्त मैं तेरे साथ हूँगा, दरियाओं को पार करते वक़्त तू नहीं डूबेगा। आग में से गुज़रते वक़्त न तू झुलस जाएगा, न शोलों से भस्म हो जाएगा। 3 क्योंकि मैं रब तेरा खुदा हूँ, मैं इसराईल का कुदूस और तेरा नजातदहिदा हूँ। तुझे छुड़ाने के लिए मैं एवज़ाना के तौर पर मिसर देता, तेरी जगह एथोपिया और सिबा अदा करता हूँ। 4 तू मेरी नज़र में क़ीमती और अज़ीज़ है, तू मुझे प्यारा है, इसलिए मैं तेरे बदले में लोग और तेरी जान के एवज़ क़ौमों में अदा करता हूँ।

5 चुनौचे मत डरना, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ। मैं तेरी औलाद को मशरिक और मगरिब से जमा करके वापस लाऊँगा। 6 शिमाल को मैं हुक्म दूँगा, ‘मुझे दो!’ और जुनूब को, ‘उन्हें मत रोकना!’ मेरे बेटे-बेटियों को दुनिया की इंतहा से वापस ले आओ, 7 उन सबको जो मेरा नाम रखते हैं और जिन्हें मैंने अपने जलाल की खातिर खलक किया, जिन्हें मैंने तश्कील देकर बनाया है।”

8 उस क़ौम को निकाल लाओ जो आँखें रखने के बावजूद देख नहीं सकती, जो कान रखने के बावजूद सुन नहीं सकती। 9 तमाम गैरक़ौमों जमा हो जाएँ, तमाम उम्मतें इकट्ठी हो जाएँ। उनमें से कौन इसकी पेशगोई कर सकता, कौन माज़ी की बातें सुना सकता है? वह अपने गवाहों को पेश करें जो उन्हें दुस्त साबित करें, ताकि लोग सुनकर कहें, “उनकी बात बिल्कुल सही है।” 10 लेकिन रब फ़रमाता है, “ऐ इसराईली क़ौम, तुम ही मेरे गवाह हो, तुम ही मेरे खादिम हो जिसे मैंने चुन लिया ताकि तुम जान लो, मुझ पर ईमान लाओ और पहचान लो कि मैं ही हूँ। न मुझसे पहले कोई खुदा वुजूद में आया, न मेरे बाद कोई आएगा। 11 मैं, सिर्फ़ मैं रब हूँ, और मेरे सिवा कोई और नजातदहिदा नहीं है। 12 मैं ही ने इसका एलान करके तुम्हें छुटकारा दिया, मैं ही तुम्हें अपना कलाम पहुँचाता रहा। और यह तुम्हारे दरमियान के किसी अजनबी माबूद से कभी नहीं हुआ बल्कि सिर्फ़ मुझी से। तुम ही मेरे गवाह हो कि मैं ही खुदा हूँ।” यह रब का फ़रमान है। 13 “अज़ल से मैं वही हूँ। कोई नहीं है जो मेरे हाथ से छुड़ा सके। जब मैं कुछ अमल में लाता हूँ तो कौन इसे बदल सकता है?”

14 रब जो तुम्हारा छुड़ानेवाला और इसराईल का कुदूस है फ़रमाता है, “तुम्हारी खातिर मैं बाबल के खिलाफ़ फ़ौज भेजकर तमाम कुंडे तुड़वा दूँगा। तब बाबल की शादमानी गिर्याओ-ज़ारी में बदल जाएगी। 15 मैं रब हूँ, तुम्हारा कुदूस जो इसराईल का खालिक और तुम्हारा बादशाह है।”

16 रब फ़रमाता है, “मैं ही ने समुंदर में से गुज़रने की राह और गहरे पानी में से रास्ता बना दिया। 17 मेरे कहने पर मिसर की फ़ौज अपने सूरमाओं, रथों और घोड़ों समेत लड़ने के लिए निकल आई। अब वह मिलकर समुंदर की तह में पड़े हुए हैं और दुबारा कभी नहीं उठेंगे। वह बत्ती की तरह बुझ गए। 18 लेकिन माज़ी की बातें छोड़ दो, जो कुछ गुज़र गया है उस पर ध्यान न दो। 19 क्योंकि देखो, मैं एक नया काम वुजूद में ला रहा हूँ जो अभी फूट निकलने को है। क्या यह तुम्हें नज़र नहीं आ रहा? मैं रेगिस्तान में रास्ता और बयाबान में नहरें बना रहा हूँ।

20 जंगली जानवर, गीदड़ और उकाबी उल्लू मेरा एहतराम करेंगे, क्योंकि मैं रेगिस्तान में पानी मुहैया करूँगा, बयाबान में नहरें बनाऊँगा ताकि अपनी बरगुज़ीदा कौम को पानी पिलाऊँ। 21 जो कौम मैंने अपने लिए तश्कील दी है वह मेरे काम सुनाकर मेरी तमजीद करे।

रब इसराईल के गुनाहों से तंग आ गया है

22 ऐ याकूब की औलाद, ऐ इसराईल, बात यह नहीं कि तूने मुझसे फ़रियाद की, कि तू मेरी मरज़ी दरियाफ़्त करने के लिए कोशिश रहा। 23 क्योंकि न तूने मेरे लिए अपनी भेड़-बकरियाँ भस्म की, न अपनी ज़बह की कुरबानियों से मेरा एहतराम किया। न मैंने गल्ला की नज़रों से तुझ पर बोझ डाला, न बख़र की कुरबानी से तंग किया। 24 तूने न मेरे लिए कीमती मसाला खरीदा, न मुझे अपनी कुरबानियों की चरबी से खुश किया। इसके बरअक्स तूने अपने गुनाहों से मुझ पर बोझ डाला और अपनी बुरी हरकतों से मुझे तंग किया। 25 ताहम मैं, हाँ मैं ही अपनी खातिर तेरे ज़रायम को मिटा देता और तेरे गुनाहों को ज़हन से निकाल देता हूँ।

26 जा, कचहरी में मेरे खिलाफ़ मुकदमा दायर कर! आ, हम दोनों अदालत में हाज़िर हो जाएँ! अपना मामला पेश कर ताकि तू बेकसूर साबित हो। 27 शुरू में तेरे ख़ानदान के बानी ने गुनाह किया, और उस वक़्त से लेकर आज तक तेरे नुमाइंदे मुझसे बेवफ़ा होते आए हैं। 28 इसलिए मैं मक़दिस के बुजुर्गों को यों रसवा करूँगा कि उनकी मुक़द्दस हालत जाती रहेगी, मैं याकूब की औलाद इसराईल को मुकम्मल तबाही और लान-तान के लिए मख़सूस करूँगा।

44

रब की कौम के लिए नई ज़िंदगी

1 लेकिन अब सुन, ऐ याकूब मेरे खादिम! मेरी बात पर तवज्जुह दे, ऐ इसराईल जिसे मैंने चुन लिया है। 2 रब जिसने तुझे बनाया और माँ के पेट से ही तश्कील देकर तेरी मदद करता आया है वह फ़रमाता है, ‘ऐ याकूब मेरे खादिम, मत डर! ऐ यसूरून जिसे मैंने चुन लिया है, ख़ौफ़ न खा। 3 क्योंकि मैं प्यासी ज़मीन पर पानी डालूँगा और ख़ुशकी पर नदियाँ बहने दूँगा। मैं अपना रूह तेरी औलाद पर नाज़िल करूँगा, अपनी बरकत तेरे बच्चों को बख़्शूँगा। 4 तब वह पानी के दरमियान की हरियाली की तरह फूट निकलेंगे, नहरों पर सफ़ेदा के दरख़्तों की तरह फलें-फूलेंगे।’

5 एक कहेगा, ‘मैं रब का हूँ,’ दूसरा याकूब का नाम लेकर पुकारेगा और तीसरा अपने हाथ पर ‘रब का बंदा’ लिखकर इसराईल का एज़ाज़ी नाम रखेगा।”

6 रब्बुल-अफ़वाज़ जो इसराईल का बादशाह और छुड़ानेवाला है फ़रमाता है, ‘मैं अब्बल और आख़िर हूँ। मेरे सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है। 7 कौन मेरी मानिंद है? वह आवाज़ देकर बताए और अपने दलायल पेश करे। वह तरतीब से सब कुछ सुनाए जो उस क़दीम वक़्त से हुआ है जब मैंने अपनी कौम को कायम किया। वह आनेवाली बातों का एलान करके बताए कि आइंदा क्या कुछ पेश आएगा।

8 घबराकर दहशतज़दा न हो। क्या मैंने बहुत देर पहले तुझे इतला नहीं दी थी कि यह कुछ पेश आएगा? तुम ख़ुद मेरे गवाह हो। क्या मेरे सिवा कोई और ख़ुदा है? हरगिज़ नहीं! और कोई चटान नहीं है, मैं किसी और को नहीं जानता।”

ख़ुदसाख़्ता देवता

9 बुत बनानेवाले सब हेच ही हैं, और जो चीज़ें उन्हें प्यारी लगती हैं वह बेफ़ायदा हैं। उनके गवाह न देख और न जान सकते हैं, लिहाज़ा आख़िरकार शर्मिंदा हो जाएंगे।

10 यह किस तरह के लोग हैं जो अपने लिए देवता बनाते और बेफ़ायदा बुत ढाल लेते हैं? 11 उनके तमाम साथी शर्मिंदा हो जाएंगे। आख़िर बुत बनानेवाले इन्सान ही तो हैं। आओ, वह सब जमा होकर ख़ुदा के हुज़ूर खड़े हो जाएँ। क्योंकि वह दहशत खाकर सख़्त शर्मिंदा हो जाएंगे।

12 लोहार औज़ार लेकर उसे जलते हुए कोयलों में इस्तेमाल करता है। फिर वह अपने हथौड़े से ठोंक ठोंककर बुत को तश्कील देता है। पूरे ज़ोर से काम करते करते वह ताक़त के जवाब देने तक भूका हो जाता, पानी न पीने की वजह से निढाल हो जाता है। 13 जब बुत को लकड़ी से बनाना है तो कारीगर फ़ीते से नापकर पेंसिल से लकड़ी पर खाका खींचता है। परकार भी काम आ जाता है। फिर कारीगर लकड़ी को छुरी से तराश तराशकर आदमी की शक़ल बनाता है। यों शानदार आदमी का मुजस्समा किसी के घर में लगने के लिए तैयार हो जाता है।

14 कारीगर बुत बनाने के लिए देवदार का दरख़्त काट लेता है। कभी कभी वह बलूत या किसी और क्रिस्म का दरख़्त चुनकर उसे जंगल के दीगर दरख़्तों के बीच में उगने देता है। या वह सनोबर * का दरख़्त लगाता है, और बारिश उसे फलने फूलने देती है। 15 ध्यान दो कि इन्सान लकड़ी को ईंधन के लिए भी इस्तेमाल करता, कुछ लेकर आग तापता, कुछ जलाकर रोटी पकाता है। बाक़ी हिस्से से वह बुत बनाकर उसे सिजदा करता, देवता का मुजस्समा तैयार करके उसके सामने झुक जाता है। 16 वह लकड़ी का आधा हिस्सा जलाकर उस पर अपना गोशत भूनता, फिर जी भरकर खाना खाता है। साथ साथ वह आग सेंककर कहता है, “वाह, आग की गरमी कितनी अच्छी लग रही है, अब गरमी महसूस हो रही है।” 17 लेकिन बाक़ी लकड़ी से वह अपने लिए देवता का बुत बनाता है जिसके सामने वह झुककर पूजा करता है। उससे वह इलतमास करता है, “मुझे बचा, क्योंकि तू मेरा देवता है।”

* 44:14 शायद इब्रानी लफ़्ज़ से मुराद सनोबर नहीं बल्कि laurel हो, एक छोटा सदाबहार काफ़ूरी दरख़्त।

18 यह लोग कुछ नहीं जानते, कुछ नहीं समझते। उनकी आँखों और दिलों पर परदा पड़ा है, इसलिए न वह देख सकते, न समझ सकते हैं। 19 वह इस पर गौर नहीं करते, उन्हें फ़हम और समझ तक नहीं कि सोचें, “मैंने लकड़ी का आधा हिस्सा आग में झोंककर उसके कोयलों पर रोटी पकाई और गोश्त भून लिया। यह चीज़ें खाने के बाद मैं बाकी लकड़ी से काबिले-धिन बुत क्यों बनाऊँ, लकड़ी के टुकड़े के सामने क्यों झुक जाऊँ?” 20 जो यों राख में मुलव्वस हो जाए उसने धोका खाया, उसके दिल ने उसे फ़रेब दिया है। वह अपनी जान छुड़ाकर नहीं मान सकता कि जो बुत मैं दहने हाथ में थामे हुए हूँ वह झूट है।

रब अपनी क़ौम को आज़ाद करता है

21 “ऐ याकूब की औलाद, ऐ इसराईल, याद रख कि तू मेरा खादिम है। मैंने तुझे तश्कील दिया, तू मेरा ही खादिम है। ऐ इसराईल, मैं तुझे कभी नहीं भूलूँगा। 22 मैंने तेरे जरायम और गुनाहों को मिटा डाला है, वह धूप में धुंध या तेज़ हवा से बिखरे बादलों की तरह ओझल हो गए हैं। अब मेरे पास वापस आ, क्योंकि मैंने एवज़ाना देकर तुझे छुड़ाया है।”

23 ऐ आसमान, खुशी के नारे लगा, क्योंकि रब ने सब कुछ किया है। ऐ ज़मीन की गहराइयों, शादियाना बजाओ! ऐ पहाड़ों और जंगलों, अपने तमाम दरख्तों समेत खुशी के गीत गाओ, क्योंकि रब ने एवज़ाना देकर याकूब को छुड़ाया है, इसराईल में उसने अपना जलाल ज़ाहिर किया है।

24 रब तेरा छुड़ानेवाला जिसने तुझे माँ के पेट से ही तश्कील दिया फ़रमाता है, “मैं रब हूँ। मैं ही सब कुछ वुजूद में लाया, मैंने अकेले ही आसमान को ज़मीन के ऊपर तान लिया और ज़मीन को बिछाया। 25 मैं ही किस्मत का हाल बतानेवालों के अजीबो-ग़रीब निशान नाकाम होने देता, फ़ाल खोलनेवालों को अहमक साबित करता और दानाओं को पीछे हटाकर उनके इल्म की हमाक़त ज़ाहिर करता हूँ। 26 मैं ही अपने खादिम का कलाम पूरा होने देता और अपने पैग़म्बरों का मनसूबा तकमील तक पहुँचाता हूँ, मैं ही यस्शलम के बारे में फ़रमाता हूँ, ‘वह दुबारा आबाद हो जाएगा,’ और यहदाह के शहरों के बारे में, ‘वह नए सिरे से तामीर हो जाएंगे, मैं उनके खंडरात दुबारा खड़े करूँगा।’ 27 मैं ही गहरे समुंदर को हुक्म देता हूँ, ‘सूख जा, मैं तेरी गहराइयों को खुशक करता हूँ।’ 28 और मैं ही ने खोरस के बारे में फ़रमाया, ‘यह मेरा गल्लाबान है! यही मेरी मरज़ी पूरी करके कहेगा कि यस्शलम दुबारा तामीर किया जाए, रब के घर की बुनियाद नए सिरे से रखी जाए!’”

45

खोरस रब का आलाए-कार है

1 रब अपने मसह किए हुए खादिम खोरस से फ़रमाता है, “मैंने तेरे दहने हाथ को पकड़ लिया है, इसलिए जहाँ भी तू जाए वहाँ कौमों तेरे ताबे हो जाएँगी, बादशाहों की ताक़त जाती रहेगी, दरवाज़े खुल जाएंगे और शहर के दरवाज़े बंद नहीं रहेंगे। 2 मैं खुद तेरे आगे आगे जाकर किलाबदियों को ज़मीनबोस कर दूँगा। मैं पीतल के दरवाज़े टुकड़े टुकड़े करके तमाम कुंडे तुड़वा दूँगा। 3 मैं तुझे अंधेरे में छुपे खज़ाने और पोशीदा मालो-दौलत अता करूँगा ताकि तू जान ले कि मैं रब हूँ जो तेरा नाम लेकर तुझे बुलाता है, कि मैं इसराईल का खुदा हूँ। 4 गो तू मुझे नहीं जानता था, लेकिन अपने खादिम याकूब की खातिर मैंने तेरा नाम लेकर तुझे बुलाया, अपने बरगुज़ीदा इसराईल के वास्ते तुझे एज़ाज़ी नाम से नवाज़ा है।

5 मैं ही रब हूँ, और मेरे सिवा कोई और खुदा नहीं है। गो तू मुझे नहीं जानता था तो भी मैं तुझे कमरबस्ता करता हूँ 6 ताकि मशरिक से मगरिब तक इनसान जान लें कि मेरे सिवा कोई और नहीं है। मैं ही रब हूँ, और मेरे सिवा कोई और नहीं है। 7 मैं ही रौशनी को तश्कील देता और अंधेरे को वुजूद में लाता हूँ, मैं ही अच्छे और बुरे हालात पैदा करता, मैं रब ही यह सब कुछ करता हूँ। 8 ऐ आसमान, रास्ती की बूँदा-बौंदी से ज़मीन को तरो-ताज़ा कर! ऐ बादलो, सदाक़त बरसाओ! ज़मीन खुलकर नजात का फल लाए और रास्ती का पौदा फूटने दे। मैं रब ही उसे वुजूद में लाया हूँ।”

अपने खालिक पर इलज़ाम लगानेवाले पर अफ़सोस

9 उस पर अफ़सोस जो अपने खालिक से झगड़ा करता है, गो वह मिट्टी के टूटे-फूटे बरतनों का ठीकरा ही है। क्या गारा कुम्हार से पूछता है, “तू क्या बना रहा है?” क्या तेरी बनाई हुई कोई चीज़ तेरे बारे में शिकायत करती है, “उस की कोई ताक़त नहीं?” 10 उस पर अफ़सोस जो बाप से सवाल करे, “तू क्यों बाप बन रहा है?” या औरत से, “तू क्यों बच्चा जन्म दे रही है?”

11 रब जो इसराईल का कुदूस और उसे तश्कील देनेवाला है फ़रमाता है, “तुम किस तरह मेरे बच्चों के बारे में मेरी पूछ-गछ कर सकते हो? जो कुछ मेरे हाथों ने बनाया उसके बारे में तुम कैसे मुझे हुक्म दे सकते हो? 12 मैं ही ने ज़मीन को बनाकर इनसान को उस पर खलक़ किया। मेरे अपने हाथों ने आसमान को ख़ैमे की तरह उसके ऊपर तान लिया और मैं ही ने उसके सितारों के पूरे लशकर को तरतीब दिया। 13 मैं ही ने खोरस को इनसाफ़ से जगा दिया, और मैं ही उसके तमाम रास्ते सीधे बना देता हूँ। वह मेरे शहर को नए सिरे से तामीर करेगा और मेरे जिलावतनों को आज़ाद करेगा। और यह सब कुछ मुफ़्त में होगा, न वह पैसे लेगा, न तोहफ़े।” यह रब्बुल-अफ़वाज़ का फ़रमान है।

रब वाहिद खुदा है

14 रब फरमाता है, “मिसर की दौलत, एथोपिया का तिजारती माल और सिबा के दराज़कद अफ़राद तेरे मातहत होकर तेरी मिलकियत बन जाएंगे। वह तेरे पीछे चलेंगे, जंजीरों में जकड़े तेरे ताबे हो जाएंगे। तेरे सामने झुककर वह इलतमास करके कहेंगे, ‘यक़ीनन अल्लाह तेरे साथ है। उसके सिवा कोई और ख़ुदा है नहीं।’” 15 ऐ इसराईल के ख़ुदा और नजातदहिदा, यक़ीनन तू अपने आपको छुपाए रखनेवाला ख़ुदा है। 16 बुत बनानेवाले सब शरमिंदा हो जाएंगे। उनके मुँह काले हो जाएंगे, और वह मिलकर शर्मसार हालत में चले जाएंगे। 17 लेकिन इसराईल को छुटकारा मिलेगा, रब उसे अबदी नजात देगा। तब तुम्हारी स्सवाई कभी नहीं होगी, तुम हमेशा तक शरमिंदा होने से महफूज़ रहोगे।

18 क्योंकि रब फरमाता है, “मैं ही रब हूँ, और मेरे सिवा कोई और नहीं है! जो यह फरमाता है वह ख़ुदा है, जिसने आसमान को खलक किया और ज़मीन को तश्कील देकर महफूज़ बुनियाद पर रखा। और ज़मीन सुनसान बयाबान न रही बल्कि उसने उसे बसने के काबिल बना दिया ताकि जानदार उसमें रह सकें। 19 मैंने पोशीदगी में या दुनिया के किसी तारीक कोने से बात नहीं की। मैंने याक़ूब की औलाद से यह भी नहीं कहा, ‘बेशक मुझे तलाश करो, लेकिन तुम मुझे नहीं पाओगे।’ नहीं, मैं रब ही हूँ, जो इनसाफ़ बयान करता, सच्चाई का एलान करता है।

20 तुम जो दीगर अक्रवाम से बच निकले हो आओ, जमा हो जाओ। मिलकर मेरे हुज़ूर हाज़िर हो जाओ! जो लकड़ी के बुत उठाकर अपने साथ लिए फिरते हैं वह कुछ नहीं जानते! जो देवता छुटकारा नहीं दे सकते उनसे वह क्यों इल्तिजा करते हैं? 21 आओ, अपना मामला सुनाओ, अपने दलायल पेश करो! बेशक पहले एक दूसरे से मशवरा करो। किसने बड़ी देर पहले यह कुछ सुनाया था? क्या मैं, रब ने तवील अरसा पहले इसका एलान नहीं किया था? क्योंकि मेरे सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है। मैं रास्त ख़ुदा और नजातदहिदा हूँ। मेरे सिवा कोई और नहीं है।

22 ऐ ज़मीन की इंतहाओ, सब मेरी तरफ़ रूज़ करके नजात पाओ! क्योंकि मैं ही ख़ुदा हूँ, मेरे सिवा कोई और नहीं है। 23 मैंने अपने नाम की क़सम खाकर फरमाया है, और मेरा फरमान रास्त है, वह कभी मनसूख नहीं होगा। फरमान यह है कि मेरे सामने हर घुटना झुकेगा और हर ज़बान मेरी क़सम खा कर 24 कहेगी, ‘रब ही रास्ती और कुव्वत का मंवा है!’”

जो पहले तैश में आकर रब की मुखालफ़त करते थे वह भी सब शरमिंदा होकर उसके हुज़ूर आएंगे। 25 लेकिन इसराईल की तमाम औलाद रब में रास्तबाज़ ठहरकर उस पर फ़ख़र करेगी।

46

देवता मदद नहीं कर सकते

1 बाबल के देवता बेल और नबू झुककर गिर गए हैं, और लादू जानवर उनके बुतों को उठाए फिर रहे हैं। तुम्हारे जो बुत उठाए जा सकते हैं थकेहारे जानवरों का बोझ बन गए हैं। 2 क्योंकि दोनों देवता झुककर गिर गए हैं। वह बोझ बनने से बच न सके, और अब ख़ुद जिलावतनी में जा रहे हैं।

3 “ऐ याक़ूब के घराने, सुनो! ऐ इसराईल के घराने के बचे हुए अफ़राद, ध्यान दो! माँ के पेट से ही तुम मेरे लिए बोझ रहे हो, पैदाइश से पहले ही मैं तुम्हें उठाए फिर रहा हूँ। 4 तुम्हारे बूढ़े होने तक मैं वही रहूँगा, तुम्हारे बाल के सफ़ेद हो जाने तक तुम्हें उठाए फिरूँगा। यह इब्तिदा से मेरा ही काम रहा है, और आइंदा भी मैं तुझे उठाए फिरूँगा, आइंदा भी तेरा सहारा बनकर तुझे बचाए रखूँगा।

5 तुम मेरा मुकाबला किससे करोगे, मुझे किसके बराबर ठहराओगे? तुम मेरा मुवाज़ना किससे करोगे जो मेरी मानिंद हो? 6 लोग बुत बनवाने के लिए बटवे से कसरत का सोना निकालते और चाँदी तराजू में तोलते हैं। फिर वह सुनार को बुत बनाने का ठेका देते हैं। जब तैयार हो जाए तो वह झुककर मुँह के बल उस की पूजा करते हैं। 7 वह उसे अपने कंधों पर रखकर इधर उधर लिए फिरते हैं, फिर उसे दुबारा उस की जगह पर रख देते हैं। वहाँ वह खड़ा रहता है और ज़रा भी नहीं हिलता। लोग चिल्लाकर उससे फ़रियाद करते हैं, लेकिन वह जवाब नहीं देता, दुआगो को मुसीबत से नहीं बचाता।

8 ऐ बेवफ़ा लोगो, इसका खयाल रखो! मरदानगी दिखाकर संजीदगी से इस पर ध्यान दो! 9 जो कुछ अज़ल से पेश आया है उसे याद रखो। क्योंकि मैं ही रब हूँ, और मेरे सिवा कोई और नहीं। मैं ही रब हूँ, और मेरी मानिंद कोई नहीं।

10 मैं इब्तिदा से अंजाम का एलान, क़दीम ज़माने से आनेवाली बातों की पेशगोई करता आया हूँ। अब मैं फरमाता हूँ कि मेरा मनसूबा अटल है, मैं अपनी मरज़ी हर लिहाज़ से पूरी करूँगा। 11 मशरिक से मैं शिकारी परिदा बुला रहा हूँ, दूर-दराज़ मुल्क से एक ऐसा आदमी जो मेरा मनसूबा पूरा करे। ध्यान दो, जो कुछ मैंने फरमाया वह तकमील तक पहुँचाऊँगा, जो मनसूबा मैंने बाँधा वह पूरा करूँगा।

12 ऐ ज़िद्दी लोगो जो रास्ती से कहीं दूर हो, मेरी सुनो! 13 मैं अपनी रास्ती करीब ही लाया हूँ, वह दूर नहीं है। मेरी नजात के आने में देर नहीं होगी। मैं सिय्यून को नजात दूँगा, इसराईल को अपनी शानो-शौकत से नवाज़ूँगा।

47

रब बाबल को सज़ा देगा

1 ऐ कुँवारी बाबल बेटी, उतर जा! ख़ाक में बैठ जा! ऐ बाबलियों की बेटी, ज़मीन पर बैठ जा जहाँ तख़्त नहीं है! अब से लोग तुझसे नहीं कहेंगे, ‘ऐ मेरी नाज़-परवर्दा, ऐ मेरी लाडली!’

2 अब चक्की लेकर आटा पीस! अपना निकाब हटा, अपने लिबास का दामन उठा, अपनी टाँगों को उरियाँ करके नदियाँ पार कर। 3 तेरी बरहनगी सब पर जाहिर होगी, सब तेरी शर्मसार हालत देखेंगे। क्योंकि मैं बदला लेकर किसी को नहीं छोड़ूँगा।”

4 जिसने एवजाना देकर हमें छुड़ाया है वही यह फरमाता है, वह जिसका नाम रब्बुल-अफवाज है और जो इसराईल का कुदूस है।

5 “ऐ बाबलियों की बेटी, चुपके से बैठ जा! तारीकी में छुप जा! आइंदा तू ‘ममालिक की मलिका’ नहीं कहलाएगी।

6 जब मुझे अपनी क्रौम पर गुस्सा आया तो मैंने उसे यों म्स्वा किया कि उस की मुकद्दस हालत जाती रही, गो वह मेरा मौस्सी हिस्सा थी। उस वक़्त मैंने उन्हें तेरे हवाले कर दिया, लेकिन तूने उन पर रहम न किया बल्कि बूढ़ों की गरदन पर भी अपना भारी जुआ रख दिया। 7 तू बोली, ‘मैं अबद तक मलिका ही रहूँगी!’ तूने संजीदगी से ध्यान न दिया, न इसके अंजाम पर गौर किया।

8 अब सुन, ऐ ऐयाश, तू जो अपने आपको महफूज़ समझकर कहती है, ‘मैं ही हूँ, मेरे सिवा कोई और नहीं है। मैं न कभी बेवा, न कभी बेऔलाद हूँगी।’ 9 मैं फरमाता हूँ कि एक ही दिन और एक ही लमहे में तू बेऔलाद भी बनेगी और बेवा भी। तेरे सारे ज़बरदस्त जादूमंत्र के बावजूद यह आफ़त पूरे जोर से तुझ पर आएगी।

10 तूने अपनी बदकारी पर एतमाद करके सोचा, ‘कोई नहीं मुझे देखता।’ लेकिन तेरी ‘हिक्मत’ और ‘इल्म’ तुझे ग़लत राह पर लाया है। उनकी बिना पर तूने दिल में कहा, ‘मैं ही हूँ, मेरे सिवा कोई और नहीं है।’ 11 अब तुझ पर ऐसी आफ़त आएगी जिसे तेरे जादूमंत्र दूर करने नहीं पाएँगे, तू ऐसी मुसीबत में फँस जाएगी जिससे निपट नहीं सकेगी। अचानक ही तुझ पर तबाही नाज़िल होगी, और तू उसके लिए तैयार ही नहीं होगी। 12 अब खड़ी हो जा, अपने जादू-टोने का पूरा खज़ाना खोलकर सब कुछ इस्तेमाल में ला जो तूने जवानी से बड़ी मेहनत-मशक्कत के साथ अपना लिया है। शायद फ़ायदा हो, शायद तू लोगों को डराकर भगा सके।

13 लेकिन दूसरों के बेशुमार मशवरे बेकार हैं, उन्होंने तुझे सिर्फ़ थका दिया है। अब तेरे नज़मी खड़े हो जाएँ, जो सितारों को देख देखकर हर महीने पेशगोइयाँ करते हैं वह सामने आकर तुझे उससे बचाएँ जो तुझ पर आनेवाला है। 14 यकीनन वह आग में जलनेवाला भूसा ही हैं जो अपनी जान को शोलों से बचा नहीं सकते। और यह कोयलों की आग नहीं होगी जिसके सामने इनसान बैठकर आग ताप सके।

15 यही उन सबका हाल है जिन पर तूने मेहनत की है और जो तेरी जवानी से तेरे साथ तिजारत करते रहे हैं। हर एक लड़खड़ाते हुए अपनी अपनी राह इख्तियार करेगा, और एक भी नहीं होगा जो तुझे बचाए।

48

रब अपने नाम की खातिर इसराईल को बचाएगा

1 ऐ याकूब के घराने, सुनो! तुम जो इसराईल कहलाते और यहदाह के कबीले के हो, ध्यान दो! तुम जो रब के नाम की क़सम खाकर इसराईल के खुदा को याद करते हो, अगरचे तुम्हारी बात न सच्चाई, न इनसाफ़ पर मबनी है, गौर करो! 2 हाँ तवज्जुह दो, तुम जो मुकद्दस शहर के लोग कहलाते और इसराईल के खुदा पर एतमाद करते हो, सुनो कि अल्लाह जिसका नाम रब्बुल-अफ़वाज है क्या फरमाता है।

3 जो कुछ पेश आया है उसका एलान मैंने बड़ी देर पहले किया। मेरे ही मुँह से उस की पेशगोई सादिर हुई, मैं ही ने उस की इत्तला दी। फिर अचानक ही मैं उसे अमल में लाया और वह वक़ूपज़ीर हुआ। 4 मैं जानता था कि तू कितना ज़िद्दी है। तेरे गले की नसें लोहे जैसी बे-लचक और तेरी पेशानी पीतल जैसी सख्त है। 5 यह जानकर मैंने बड़ी देर पहले इन बातों की पेशगोई की। उनके पेश आने से पहले मैंने तुझे उनकी ख़बर दी ताकि तू दावा न कर सके, ‘मेरे बुत ने यह कुछ किया, मेरे तराशे और ढाले गए देवता ने इसका हुक्म दिया।’ 6 अब जब तूने यह सुन लिया है तो सब कुछ पर गौर कर। तू क्यों इन बातों को मानने के लिए तैयार नहीं?

अब से मैं तुझे नई नई बातें बताऊँगा, ऐसी पोशीदा बातें जो तुझे अब तक मालूम न थीं। 7 यह किसी क़दीम ज़माने में वुजूद में नहीं आई बल्कि अभी अभी आज ही तेरे इल्म में आई हैं। क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि तू कहे, ‘मुझे पहले से इसका इल्म था।’ 8 चुनौचे न यह बातें तेरे कान तक पहुँची हैं, न तू इनका इल्म रखता है, बल्कि क़दीम ज़माने से ही तेरा कान यह सुन नहीं सकता था। क्योंकि मैं जानता था कि तू सरासर बेवफ़ा है, कि पैदाइश से ही नमकहराम कहलाता है। 9 तो भी मैं अपने नाम की खातिर अपना ग़ज़ब नाज़िल करने से बाज़ रहता, अपनी तमज़ीद की खातिर अपने आपको तुझे नेस्तो-नाबूद करने से रोके रखता हूँ। 10 देख, मैंने तुझे पाक-साफ़ कर दिया है, लेकिन चाँदी को साफ़ करने की कुठाली में नहीं बल्कि मुसीबत की भट्टी में। उसी में मैंने तुझे आजमाया है। 11 अपनी खातिर, हाँ अपनी ही खातिर मैं यह सब कुछ करता हूँ, ऐसा न हो कि मेरे नाम की बेहुरमती हो जाए। क्योंकि मैं इजाज़त नहीं दूँगा कि किसी और को वह जलाल दिया जाए जिसका सिर्फ़ मैं हक़दार हूँ।

रब इसराईल का नजातदहिदा है

12 ऐ याकूब की औलाद, मेरी सुन! ऐ मेरे बरगुज़ीदा इसराईल, ध्यान दे! मैं ही वही हूँ। मैं ही अब्वलो-आखिर हूँ। 13 मेरे ही हाथ ने ज़मीन की बुनियाद रखी, मेरे ही दहने हाथ ने आसमान को ख़ैमे की तरह तान लिया। जब मैं आवाज़ देता हूँ तो सब मिलकर खड़े हो जाते हैं। 14 आओ, सब जमा होकर सुनो! बुतों में से किसने इसकी पेशगोई की? किसी ने नहीं! जिस आदमी को रब प्यार करता है वह बाबल के खिलाफ़ उस की मरज़ी पूरी करेगा, बाबलियों पर उस की कुव्वत का इज़हार करेगा। 15 मैं, हाँ मैं ही ने यह फरमाया। मैं ही उसे बुलाकर यहाँ लाया हूँ, इसलिए वह ज़रूर कामयाब होगा। 16 मेरे क़रीब आकर सुनो! शुरू से मैंने अलानिया बात की, जब से यह पेश आया मैं हाज़िर हूँ।”

और अब रब कादिरे-मुतलक और उसके रूह ने मुझे भेजा है।

17 रब जो तेरा छुड़ानेवाला और इसराईल का कुदूस है फ़रमाता है, “मैं रब तेरा खुदा हूँ। मैं तुझे वह कुछ सिखाता हूँ जो मुफ़ीद है और तुझे उन राहों पर चलने देता हूँ जिन पर तुझे चलना है। 18 काश तू मेरे अहकाम पर ध्यान देता! तब तेरी सलामती बहते दरिया जैसी और तेरी रास्तबाज़ी समुंदर की मौजों जैसी होती। 19 तेरी औलाद रेत की मानिंद होती, तेरे पेट का फल रेत के ज़रों जैसा अनगिनत होता। इसका इमकान ही न होता कि तेरा नामो-निशान मेरे सामने से मिट जाए।”

20 बाबल से निकल जाओ! बाबलियों के बीच में से हिजरत करो! खुशी के नारे लगा लगाकर एलान करो, दुनिया की इंतहा तक खुशखबरी फैलाते जाओ कि रब ने एवज़ाना देकर अपने खादिम याकूब को छुड़ाया है। 21 उन्हें प्यास न लगी जब उसने उन्हें रेगिस्तान में से गुज़रने दिया। उसके हुक्म पर पत्थर में से पानी बह निकला। जब उसने चटान को चीर डाला तो पानी फूट निकला।

22 लेकिन रब फ़रमाता है कि बेदीन सलामती नहीं पाएँगे।

49

रब का पैगंबर अक्रवाम का नूर है

1 ऐ जज़ीरो, सुनो! ऐ दूर-दराज़ कौमो, ध्यान दो! रब ने मुझे पैदाइश से पहले ही बुलाया, मेरी माँ के पेट से ही मेरे नाम को याद करता आया है। 2 उसने मेरे मुँह को तेज़ तलवार बनाकर मुझे अपने हाथ के साय में छुपाए रखा, मुझे तेज़ तीर बनाकर अपने तरकश में पोशीदा रखा है। 3 वह मुझसे हमकलाम हुआ, “तू मेरा खादिम इसराईल है, जिसके ज़रीए मैं अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा।”

4 मैं तो बोला था, “मेरी मेहनत-मशक्कत बेसूद थी, मैंने अपनी ताकत बेफ़ायदा और बेमकसद जाया कर दी है। ताहम मेरा हक अल्लाह के हाथ में है, मेरा खुदा ही मुझे अज़ देगा।”

5 लेकिन अब रब मुझसे हमकलाम हुआ है, वह जो माँ के पेट से ही मुझे इस मकसद से तश्कील देता आया है कि मैं उस की ख़िदमत करके याकूब की औलाद को उसके पास वापस लाऊँ और इसराईल को उसके हुज़ूर जमा करूँ। रब ही के हुज़ूर मेरा एहताराम किया जाएगा, मेरा खुदा ही मेरी कुव्वत होगा। 6 वही फ़रमाता है, “तू मेरी ख़िदमत करके न सिर्फ़ याकूब के कबीले बहाल करेगा और उन्हें वापस लाएगा जिन्हें मैंने महफूज़ रखा है बल्कि तू इससे कहीं बढ़कर करेगा। क्योंकि मैं तुझे दीगर अक्रवाम की रौशनी बना दूँगा ताकि तू मेरी नजात को दुनिया की इंतहा तक पहुँचाए।”

7 रब जो इसराईल का छुड़ानेवाला और उसका कुदूस है उससे हमकलाम हुआ है जिसे लोग हक़ीर जानते हैं, जिससे दीगर अक्रवाम घिन खाते हैं और जो हुक्मरानों का गुलाम है। उससे रब फ़रमाता है, “तुझे देखते ही बादशाह खड़े हो जाएंगे और रईस मुँह के बल झुक जाएंगे। यह रब की खातिर ही पेश आएगा जो वफ़ादार है और इसराईल के कुदूस के बाइस ही बुकूपज़ीर होगा जिसने तुझे चुन लिया है।”

8 रब फ़रमाता है, “क़बूलियत के वक़्त मैं तेरी सुनूँगा, नजात के दिन तेरी मदद करूँगा। तब मैं तुझे महफूज़ रखकर मुक़र्रर करूँगा कि तू मेरे और कौम के दरमियान अहद बने, कि तू मुल्क बहाल करके तबाहशुदा मौस्सी ज़मीन को नए सिरे से तक्सीम करे, 9 कि तू कैदियों को कहे, ‘निकल आओ’ और तारीकी में बसनेवालों को, ‘रौशनी में आ जाओ!’ तब मेरी भेड़ें रास्तों के किनारे किनारे चरेंगी, और तमाम बंजर बुलंदियों पर भी उनकी हरी हरी चरागाहें होंगी। 10 न उन्हें भूक सताएगी न प्यास। न तपती गरमी, न धूप उन्हें झुलसाएगी। क्योंकि जो उन पर तरस खाता है वह उनकी क्रियादत करके उन्हें चश्मों के पास ले जाएगा। 11 मैं पहाड़ों को हमवार रास्तों में तबदील कर दूँगा जबकि मेरी शाहराहें ऊँची हो जाएँगी। 12 तब वह दूर-दराज़ इलाकों से आएँगे, कुछ शिमाल से, कुछ मगरिब से, और कुछ मिसर के जुनूबी शहर असवान से भी।”

13 ऐ आसमान, खुशी के नारे लगा! ऐ ज़मीन, बाग़ बाग़ हो जा! ऐ पहाड़ो, शादमानी के गीत गाओ! क्योंकि रब ने अपनी कौम को तसल्ल्ती दी है, उसे अपने मुसीबतज़दा लोगों पर तरस आया है।

रब अपनी कौम को कभी नहीं भूलेगा

14 लेकिन सिय्यून कहती है, “रब ने मुझे तर्क कर दिया है, कादिरे-मुतलक मुझे भूल गया है।”

15 “यह कैसे हो सकता है? क्या माँ अपने शीरखार को भूल सकती है? जिस बच्चे को उसने जन्म दिया, क्या वह उस पर तरस नहीं खाएगी? शायद वह भूल जाए, लेकिन मैं तुझे कभी नहीं भूँऊँगा! 16 देख, मैंने तुझे अपनी दोनों हथेलियों में कंदा कर दिया है, तेरी ज़मीनबोस दीवारें हमेशा मेरे सामने हैं।

17 जो तुझे नए सिरे से तामीर करना चाहते हैं वह दौड़कर वापस आ रहे हैं जबकि जिन लोगों ने तुझे ढाकर तबाह किया वह तुझसे निकल रहे हैं। 18 ऐ सिय्यून बेटी, नज़र उठाकर चारों तरफ़ देख! यह सब जमा होकर तेरे पास आ रहे हैं। मेरी हयात की कसम, यह सब तेरे ज़ेवरात बनेंगे जिनसे तू अपने आपको दुलहन की तरह आरास्ता करेगी।” यह रब का फ़रमान है।

19 “फ़िलहाल तेरे मुल्क में चारों तरफ़ खंडरात, उजाड़ और तबाही नज़र आती है, लेकिन आइंदा वह अपने बाशिंदों की कसरत के बाइस छोटा होगा। और जिन्होंने तुझे हडप कर लिया था वह दूर रहेंगे। 20 पहले तू बेऔलाद थी, लेकिन अब तेरे इतने बच्चे होंगे कि वह तेरे पास आकर कहेंगे, ‘मेरे लिए जगह कम है, मुझे और ज़मीन दें ताकि मैं आराम से ज़िंदगी गुज़ार सकूँ।’ तू अपने कानों से यह सुनेगी।

21 तब तू हैरान होकर दिल में सोचेगी, 'किसने यह बच्चे मेरे लिए पैदा किए? मैं तो बच्चों से महरूम और बेऔलाद थी, मुझे जिलावतन करके हटाया गया था। किसने इनको पाला? मुझे तो तनहा ही छोड़ दिया गया था। तो फिर यह कहाँ से आ गए हैं?'"

22 रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है, "देख, मैं दीगर कौमों को हाथ से इशारा देकर उनके सामने अपना झंडा गाड़ दूँगा। तब वह तेरे बेटों को उठाकर अपने बाजूओं में वापस ले आएँगे और तेरी बेटियों को कंधे पर बिठाकर तेरे पास पहुँचाएँगे। 23 बादशाह तेरे बच्चों की देख-भाल करेंगे, और रानियाँ उनकी दाइयाँ होंगी। वह मुँह के बल झुककर तेरे पाँवों की खाक चाटेंगे। तब तू जान लेगी कि मैं ही रब हूँ, कि जो भी मुझसे उम्मीद रखे वह कभी शर्मिंदा नहीं होगा।"

24 क्या सूरे का लूटा हुआ माल उसके हाथ से छीना जा सकता है? या क्या ज़ालिम के कैदी उसके कब्जे से छूट सकते हैं? मुश्किल ही से। 25 लेकिन रब फ़रमाता है, "यकीनन सूरे का कैदी उसके हाथ से छीन लिया जाएगा और ज़ालिम का लूटा हुआ माल उसके कब्जे से छूट जाएगा। जो तुझसे झगड़े उसके साथ मैं खुद झगड़ूँगा, मैं ही तेरे बच्चों को नजात दूँगा। 26 जिन्होंने तुझ पर जुल्म किया उन्हें मैं उनका अपना गोश्त खिलाऊँगा, उनका अपना खून यों पिलाऊँगा कि वह उसे नई मैं की तरह पी पीकर मस्त हो जाएँगे। तब तमाम इनसान जान लेंगे कि मैं रब तेरा नजातदहिदा, तेरा छुड़ानेवाला और याकूब का ज़बरदस्त सूरेमा हूँ।"

50

तुम अपने ज़ाती गुनाहों की सज़ा भुगत रहे हो

1 रब फ़रमाता है, "आओ, मुझे वह तलाक़नामा दिखाओ जो मैंने देकर तुम्हारी माँ को छोड़ दिया था। वह कहाँ है? या मुझे वह कर्ज़खाह दिखाओ जिसके हवाले मैंने तुम्हें अपना कर्ज़ उतारने के लिए किया। वह कहाँ है? देखो, तुम्हें अपने ही गुनाहों के सबब से फ़रोख्त किया गया, तुम्हारे अपने ही गुनाहों के सबब से तुम्हारी माँ को फ़ारिग कर दिया गया।

2 जब मैं आया तो कोई नहीं था। क्या वजह? जब मैंने आवाज़ दी तो जवाब देनेवाला कोई नहीं था। क्यों? क्या मैं फ़िघा देकर तुम्हें छुड़ाने के काबिल न था? क्या मेरी इतनी ताकत नहीं कि तुम्हें बचा सकूँ? मेरी तो एक ही धमकी से समुंदर खुश्क हो जाता और दरिया रेगिस्तान बन जाते हैं। तब उनकी मछलियाँ पानी से महरूम होकर गल जाती हैं, और उनकी बदबू चारों तरफ फैल जाती है। 3 मैं ही आसमान को तारीकी का जामा पहनाता, मैं ही उसे टाट के मातमी लिबास में लपेट देता हूँ।"

रब के पैगंबर की स्सवाई

4 रब कादिरे-मुतलक ने मुझे शागिर्द की-सी ज़बान अता की ताकि मैं वह कलाम जान लूँ जिससे थकामोंदा तकवियत पाए। सुबह बसुबह वह मेरे कान को जगा देता है ताकि मैं शागिर्द की तरह सुन सकूँ। 5 रब कादिरे-मुतलक ने मेरे कान को खोल दिया, और न मैं सरकश हुआ, न पीछे हट गया। 6 मैंने मारनेवालों को अपनी पीठ और बाल नोचनेवालों को अपने गाल पेश किए। मैंने अपना चेहरा उनकी गालियों और थूक से न छुपाया।

7 लेकिन रब कादिरे-मुतलक मेरी मदद करता है, इसलिए मेरी स्सवाई नहीं होगी। चुनाँचे मैंने अपना मुँह चक्रमाक की तरह सख्त कर लिया है, क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं शर्मिंदा नहीं हो जाऊँगा। 8 जो मुझे रास्त ठहराता है वह करीब ही है। तो फिर कौन मेरे साथ झगड़ेगा? आओ, हम मिलकर अदालत में खड़े हो जाएँ। कौन मुझ पर इलज़ाम लगाने की ज़ुरत करेगा? वह आकर मेरा सामना करे! 9 रब कादिरे-मुतलक ही मेरी मदद करता है। तो फिर कौन मुझे मुजरिम ठहराएगा? यह तो सब पुराने कपड़े की तरह घिसकर फटेंगे, कीड़े उन्हें खा जाएंगे।

10 तुममें से कौन रब का खौफ़ मानता और उसके खादिम की सुनता है? जब उसे रौशनी के बग़ैर अंधेरे में चलना पड़े तो वह रब के नाम पर भरोसा रखे और अपने खुदा पर इनहिसार करे। 11 लेकिन तुम बाकी लोग जो आग लगाकर अपने आपको जलते हुए तीरों से लैस करते हो, अपनी ही आग के शोलों में चले जाओ! खुद उन तीरों की ज़द में आओ जो तुमने दूसरों के लिए जलाए हैं! मेरे हाथ से तुम्हें यही अज़्र मिलेगा, तुम सख्त अज़ियत का शिकार होकर ज़मीन पर तड़पते रहोगे।

51

रब अपनी कौम को तसल्ली देता है

1 "तुम जो रास्ती के पीछे लगे रहते, जो रब के तालिब हो, मेरी बात सुनो! उस चटान पर ध्यान दो जिसमें से तुम्हें तराशकर निकाला गया है, उस कान पर गौर करो जिसमें से तुम्हें खोदा गया है। 2 यानी अपने बाप इब्राहीम और अपनी माँ सारा पर तवज्जुह दो, जिसने दर्दे-ज़ह की तकलीफ़ उठाकर तुम्हें जन्म दिया। इब्राहीम बेऔलाद था जब मैंने उसे बुलाया, लेकिन फिर मैंने उसे बरकत देकर बहुत औलाद बख़शी।"

3 यकीनन रब सिय्यून को तसल्ली देगा। वह उसके तमाम खंडरात को तशफ़फ़ी देकर उसके रेगिस्तान को बागे-अदन में और उस की बंजर ज़मीन को रब के बाग में बदल देगा। तब उसमें खुशीओ-श़ादमानी पाई जाएगी, हर तरफ़ शक्रगुज़ारी और गीतों की आवाज़ें सुनाई देंगी।

4 "ऐ मेरी कौम, मुझ पर ध्यान दे! ऐ मेरी उम्मत, मुझ पर गौर कर! क्योंकि हिदायत मुझसे सादिर होगी, और मेरा इनसाफ़ कौमों की रौशनी बनेगा। 5 मेरी रास्ती करीब ही है, मेरी नजात रास्ते में है, और मेरा जोरावर बाजू कौमों में इनसाफ़ कायम करेगा। जज़ीर मुझसे उम्मीद रखेंगे, वह मेरी कुदरत देखने के इंतज़ार में रहेंगे। 6 अपनी आँखें आसमान की तरफ उठाओ! नीचे ज़मीन पर नज़र डालो! आसमान धुँएँ की तरह

बिखर जाएगा, ज़मीन पुराने कपड़े की तरह धिसे-फटेगी और उसके बाशिंदे मच्छरों की तरह मर जाएंगे। लेकिन मेरी नजात अबद तक कायम रहेगी, और मेरी रास्ती कभी खत्म नहीं होगी।

7 ऐ सहीह राह को जाननेवालो, ऐ क्रौम जिसके दिल में मेरी शरीअत है, मेरी बात सुनो! जब लोग तुम्हारी बेइज्जती करते हैं तो उनसे मत डरना, जब वह तुम्हें गालियाँ देते हैं तो मत घबराना। 8 क्योंकि किरम उन्हें कपड़े की तरह खा जाएगा, कीड़ा उन्हें ऊन की तरह हज़म करेगा। लेकिन मेरी रास्ती अबद तक कायम रहेगी, मेरी नजात पुश्त-दर-पुश्त बरकरार रहेगी।”

रब की रिहाई

9 ऐ रब के बाजू, उठ! जाग उठ और कुव्वत का जामा पहन ले! यों अमल में आ जिस तरह क़दीम ज़माने में आया था, जब तूने मुतअद्दिद नसलों पहले रब को टुकड़े टुकड़े कर दिया, समुंदरी अज़दहे को छेद डाला। 10 क्योंकि तू ही ने समुंदर को खुशक किया, तू ही ने गहराइयों की तह पर रास्ता बनाया ताकि वह जिन्हें तूने एवज़ाना देकर छुड़ाया था उसमें से गुज़र सकें।

11 जिन्हें रब ने फ़िघा देकर छुड़ाया है वह वापस आएँगे। वह शादियाना बजाकर सियून में दाखिल होंगे, और हर एक का सर अबदी खुशी के ताज से आरास्ता होगा। क्योंकि खुशी और शादमानी उन पर ग़ालिब आकर तमाम ग़म और आहो-ज़ारी भगा देगी।

12 “मैं, सिर्फ़ मैं ही तुझे तसल्ली देता हूँ। तो फिर तू फ़ानी इन्सान से क्यों डरती है, जो घास की तरह मुरझाकर खत्म हो जाता है? 13 तू रब अपने ख़ालिक को क्यों भूल गई है, जिसने आसमान को ख़ैमे की तरह तान लिया और ज़मीन की बुनियाद रखी? जब ज़ालिम तुझे तबाह करने पर तुला रहता है तो तू उसके तैश से पूरे दिन क्यों ख़ौफ़ खाती रहती है? अब उसका तैश कहाँ रहा? 14 जो जंजीरों में जकड़ा हुआ है वह जल्द ही आज़ाद हो जाएगा। न वह मरकर कब्र में उतरेगा, न रोटी से महरूम रहेगा। 15 क्योंकि मैं रब तेरा खुदा हूँ जो समुंदर को यों हरकत में लाता है कि वह मुतलातिम होकर गरजने लगता है। रब्बुल-अफ़वाज़ मेरा नाम है। 16 मैंने अपने अलफ़ाज़ तेरे मुँह में डालकर तुझे अपने हाथ के साथ में छुपाए रखा है ताकि नए सिरे से आसमान को तानूँ, ज़मीन की बुनियादें रखूँ और सियून को बताऊँ, ‘तू मेरी क्रौम है’।”

ऐ यरूशलम, जाग उठ!

17 ऐ यरूशलम, उठ! जाग उठ! ऐ शहर जिसने रब के हाथ से उसका ग़ज़ब भरा प्याला पी लिया है, खड़ी हो जा! अब तूने लड़खड़ा देनेवाले प्याले को आखिरी कतरे तक चाट लिया है। 18 जितने भी बेटे तूने जन्म दिए उनमें से एक भी नहीं रहा जो तेरी राहनुमाई करे। जितने भी बेटे तूने पाले उनमें से एक भी नहीं जो तेरा हाथ पकड़कर तेरे साथ चले। 19 तुझ पर दो आफ़तें आई यानी बरबादीओ-तबाही, काल और तलवार। लेकिन किसने हमदर्दी का इज़हार किया? किसने तुझे तसल्ली दी? 20 तेरे बेटे ग़श खाकर गिर गए हैं। हर गली में वह जाल में फँसे हुए ग़ज़ाल * की तरह ज़मीन पर तड़प रहे हैं। क्योंकि रब का ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ है, वह इलाही डॉट-डपट का निशाना बन गए हैं।

21 चुनौचे मेरी बात सुन, ऐ मुसीबतज़दा क्रौम, ऐ नशे में मत्वाली उम्मत, गो तू मैं के असर से नहीं डगमगा रही। 22 रब तेरा आका जो तेरा खुदा है और अपनी क्रौम के लिए लड़ता है वह फ़रमाता है, “देख, मैंने तेरे हाथ से वह प्याला दूर कर दिया जो तेरे लड़खड़ाने का सबब बना। आइंदा तू मेरा ग़ज़ब भरा प्याला नहीं पीएगी। 23 अब मैं इसे उनको पकड़ा दूँगा जिन्होंने तुझे अज़ियत पहुँचाई है, जिन्होंने तुझसे कहा, ‘औंधे मुँह झुक जा ताकि हम तुझ पर से गुज़रें।’ उस वक़्त तेरी पीठ खाक में धँसकर दूसरों के लिए रास्ता बन गई थी।”

52

जंजीरों को तोड़!

1 ऐ सियून, उठ, जाग उठ! अपनी ताकत से मुलबबस हो जा! ऐ मुक़द्दस शहर यरूशलम, अपने शानदार कपड़े से आरास्ता हो जा! आइंदा कभी भी ग़ैरमख़तून या नापाक शख्स तुझमें दाखिल नहीं होगा। 2 ऐ यरूशलम, अपने आपसे गर्द झाड़कर खड़ी हो जा और तख़्त पर बैठ जा। ऐ गिरिफ़्तार की हुई सियून बेटी, अपनी गरदन की जंजीरों को खोलकर उनसे आज़ाद हो जा! 3 क्योंकि रब फ़रमाता है, “तुम्हें मुफ़्त में बेचा गया, और अब तुम्हें पैसे दिए बग़ैर छुड़ाया जाएगा।”

4 क्योंकि रब कादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, “क़दीम ज़माने में मेरी क्रौम मिसर चली गई ताकि वहाँ परदेस में रहे। बाद में असूर ने बिलावजह उस पर ज़ुल्म किया है।” 5 रब फ़रमाता है, “अब जो ज़्यादती मेरी क्रौम से हो रही है उसका मेरे साथ क्या वास्ता है?” रब फ़रमाता है, “मेरी क्रौम तो मुफ़्त में छीन ली गई है, और उस पर हुकूमत करनेवाले शेख़ी मारकर पूरा दिन मेरे नाम पर कुफ़र बकते हैं। 6 चुनौचे मेरी क्रौम मेरे नाम को जान लेगी, उस दिन वह पहचान लेगी कि मैं ही वही हूँ जो फ़रमाता है, ‘मैं हाज़िर हूँ!’”

7 उसके क़दम कितने प्यारे हैं जो पहाड़ों पर चलते हुए खुशख़बरी सुनाता है। क्योंकि वह अमनो-अमान, खुशी का पैग़ाम और नजात का एलान करेगा, वह सियून से कहेगा, “तेरा खुदा बादशाह है!” 8 सुन! तेरे पहरदार आवाज़ बुलंद कर रहे हैं, वह मिलकर खुशी के नारे लगा रहे हैं। क्योंकि जब रब कोहे-सियून पर वापस आएगा तो वह अपनी आँखों से इसका मुशाहदा करेंगे।

9 ऐ यरूशलम के खंडरात, शादियाना बजाओ, खुशी के गीत गाओ! क्योंकि रब ने अपनी क्रौम को तसल्ली दी है, उसने एवज़ाना देकर यरूशलम को छुड़ाया है। 10 रब अपनी मुक़द्दस कुदरत तमाम अक़वाम पर जाहिर करेगा, दुनिया की इंतहा तक सब हमारे खुदा की नजात देखेंगे।

* 51:20 ग़ज़ाले-अफ़्रीका, oryx।

11 जाओ, चले जाओ! वहाँ से निकल जाओ! किसी भी नापाक चीज़ को न छूना। जो रब का सामान उठाए चल रहे हैं वह वहाँ से निकलकर पाक-साफ रहें। 12 लेकिन लाज़िम नहीं कि तुम भागकर रवाना हो जाओ। तुम्हें अचानक फ़रार होने की ज़रूरत नहीं होगी, क्योंकि रब तुम्हारे आगे भी चलेगा और तुम्हारे पीछे भी। यों इसराईल का ख़ुदा दोनों तरफ़ से तुम्हारी हिफ़ाज़त करेगा।

रब का पैगंबर हमारे गुनाहों को उठाएगा

13 देखो, मेरा ख़ादिम कामयाब होगा। वह सरबुलंद, मुमताज़ और बहुत सरफ़राज़ होगा। 14 तुझे देखकर बहुतों के रोंगटे खड़े हो गए। क्योंकि उस की शकल इतनी ख़राब थी, उस की सूरत किसी भी इंसान से कहीं ज़्यादा बिगड़ी हुई थी। 15 लेकिन अब बहुत-सी कौमों उसे देखकर हक्का-बक्का हो जाएँगी, बादशाह दम बख़ुद रह जाएँगे। क्योंकि जो कुछ उन्हें नहीं बताया गया उसे वह देखेंगे, और जो कुछ उन्होंने नहीं सुना उस की उन्हें समझ आएगी।

53

1 लेकिन कौन हमारे पैगाम पर ईमान लाया? और रब की कुदरत किस पर ज़ाहिर हुई? 2 उसके सामने वह कोंपल की तरह फूट निकला, उस ताज़ा और मुलायम शिगूफ़े की तरह जो ख़ुशक ज़मीन में छुपी हुई जड़ से निकलकर फलने फूलने लगती है। न वह ख़बसूरत था, न शानदार। हमने उसे देखा तो उस की शकलो-सूरत में कुछ नहीं था जो हमें पसंद आता। 3 उसे हकीर और मरदूद समझा जाता था। दुख और बीमारियाँ उस की साथी रहीं, और लोग यहाँ तक उस की तहकीर करते थे कि उसे देखकर अपना मुँह फेर लेते थे। हम उस की कुछ क़दर नहीं करते थे।

4 लेकिन उसने हमारी ही बीमारियाँ उठा लीं, हमारा ही दुख भुगत लिया। तो भी हम समझे कि यह उस की मुनासिब सज़ा है, कि अल्लाह ने ख़ुद उसे मारकर खाक में मिला दिया है। 5 लेकिन उसे हमारे ही ज़रायम के सबब से छेदा गया, हमारे ही गुनाहों की खातिर कुचला गया। उसे सज़ा मिली ताकि हमें सलामती हासिल हो, और उसी के ज़ख़मों से हमें शफ़ा मिली। 6 हम सब भेड़-बकरियों की तरह आवारा फिर रहे थे, हर एक ने अपनी अपनी राह इख़्तियार की। लेकिन रब ने उसे हम सबके कुसूर का निशाना बनाया।

7 उस पर ज़ुल्म हुआ, लेकिन उसने सब कुछ बरदाश्त किया और अपना मुँह न खोला, उस भेड़ की तरह जिसे ज़बह करने के लिए ले जाते हैं। जिस तरह लेला बाल कतरनेवालों के सामने खामोश रहता है उसी तरह उसने अपना मुँह न खोला। 8 उसे ज़ुल्म और अदालत के हाथ से छीन लिया गया। उस के दौर के लोग—किस ने ध्यान दिया कि उसका ज़िंदों के मुल्क से ताल्लुक कट गया, कि वह मेरी कौम के जुर्म के सबब से सज़ा का निशाना बन गया? 9 मुकर्रर यह हुआ कि उस की क़ब्र बेदीनों के पास हो, कि वह मरते वक़्त एक अमीर के पास दफ़नाया जाए, गो न उसने तशद्दुद किया, न उसके मुँह में फ़रेब था।

10 रब ही की मरज़ी थी कि उसे कुचले, उसे दुख पहुँचाए। लेकिन जब वह अपनी जान को कुसूर की कुरबानी के तौर पर देगा तो वह अपने फ़रज़ंदों को देखेगा, अपने दिनों में इज़ाफ़ा करेगा। हाँ, वह रब की मरज़ी को पूरा करने में कामयाब होगा। 11 इतनी तकलीफ़ बरदाश्त करने के बाद उसे फल नज़र आएगा, और वह सेर हो जाएगा। अपने इल्म से मेरा रास्त ख़ादिम बहुतों का इन्साफ़ कायम करेगा, क्योंकि वह उनके गुनाहों को अपने ऊपर उठाकर दूर कर देगा।

12 इसलिए मैं उसे बड़ों में हिस्सा दूँगा, और वह जोरावरों के साथ लूट का माल तकसीम करेगा। क्योंकि उसने अपनी जान को मौत के हवाले कर दिया, और उसे मुजरिमों में शुमार किया गया। हाँ, उसने बहुतों का गुनाह उठाकर दूर कर दिया और मुजरिमों की शफ़ाअत की।

54

रब ने यरूशलम को दुबारा क़बूल कर लिया है

1 रब फ़रमाता है, “ख़ुशी के नारे लगा, तू जो बेऔलाद है, जो बच्चे को जन्म ही नहीं दे सकती। बुलंद आवाज़ से शादियाना बजा, तू जिसे पैदाइश का दर्द न हुआ। क्योंकि अब तर्क की हुई औरत के बच्चे शादीशुदा औरत के बच्चों से ज़्यादा हैं। 2 अपने ख़ैमे को बड़ा बना, उसके परदे हर तरफ़ बिछा! बचत मत करना! ख़ैमे के रस्से लंबे लंबे करके मेखें मज़बूती से ज़मीन में ठोंक दे। 3 क्योंकि तू तेज़ी से दाई और बाई तरफ़ फैल जाएगी, और तेरी औलाद दीगर कौमों पर क़ब्ज़ा करके तबाहशुदा शहरों को अज़ सरे-नौ आबाद करेगी।

4 मत डरना, तेरी स्सवाई नहीं होगी। शर्मसार न हो, तेरी बेहुरमती नहीं होगी। अब तू अपनी जवानी की शरमिंदगी भूल जाएगी, तेरे ज़हन से बेवा होने की ज़िल्लत उतर जाएगी। 5 क्योंकि तेरा ख़ालिक तेरा शौहर है, रब्बुल-अफ़वाज़ उसका नाम है, और तेरा छुड़ानेवाला इसराईल का कुदूस है, जो पूरी दुनिया का ख़ुदा कहलाता है।”

6 तेरा ख़ुदा फ़रमाता है, “तू मतरूका और दिल से मज़रूह बीवी की मानिंद है, उस औरत की मानिंद जिसके शौहर ने उसे रद्द किया, गो उस की शादी उस वक़्त हुई जब कुँवारी ही थी। लेकिन अब मैं, रब ने तुझे बुलाया है। 7 एक ही लमहे के लिए मैंने तुझे तर्क किया, लेकिन अब बड़े रहम से तुझे जमा करूँगा। 8 मैंने अपने ग़ज़ब का पूरा जोर तुझ पर नाज़िल करके पल-भर के लिए अपना चेहरा तुझसे छुपा लिया, लेकिन अब अबदी शफ़क़त से तुझ पर रहम करूँगा।” रब तेरा छुड़ानेवाला यह फ़रमाता है।

9 “बड़े सैलाब के बाद मैंने नूह से कसम खाई थी कि आइंदा सैलाब कभी पूरी ज़मीन पर नहीं आएगा। इसी तरह अब मैं कसम खाकर वादा करता हूँ कि आइंदा न मैं कभी तुझसे नाराज़ हूँगा, न तुझे मलामत करूँगा। 10 गो पहाड़ हट जाएँ और पहाड़ियाँ जुंबिश खाएँ, लेकिन मेरी शफ़क़त तुझ पर से कभी नहीं हटेगी, मेरा सलामती का अहद कभी नहीं हिलेगा।” यह रब का फ़रमान है जो तुझ पर तरस खाता है।

नया शहर यरूशलम

11 “बेचारी बेटी यरूशलम! शदीद तूफ़ान तुझ पर से गुज़र गए हैं, और कोई नहीं है जो तुझे तसल्ली दे। देख, मैं तेरी दीवारों के पत्थर मज़बूत चूने से जोड़ दूँगा और तेरी बुनियादों को संगे-लाजवर्द * से रख दूँगा। 12 मैं तेरी दीवारों को याक़ूत, तेरे दरवाज़ों को आबे-बहर † और तेरी तमाम फ़सील को क़ीमती ज़वाहर से तामीर करूँगा। 13 तेरे तमाम फ़रज़ंद रब से तालीम पाएँगे, और तेरी औलाद की सलामती अज़ीम होगी। 14 तुझे इनसाफ़ की मज़बूत बुनियाद पर रखा जाएगा, चुनौतियों के जुल्म से दूर रह, क्योंकि डरने की ज़रूरत नहीं होगी। दहशतज़दा न हो, क्योंकि दहशत खाने का सबब तेरे करीब नहीं आएगा। 15 अगर कोई तुझ पर हमला करे भी तो यह मेरी तरफ़ से नहीं होगा, इसलिए हर हमलाआवर शिकस्त खाएगा।

16 देख, मैं ही उस लोहार का ख़ालिक हूँ जो हवा देकर कोयलों को दहका देता है ताकि काम के लिए मौज़ू हथियार बना ले। और मैं ही ने तबाह करनेवाले को ख़लक किया ताकि वह बरबादी का काम अंजाम दे। 17 चुनौतियों को भी हथियार तुझ पर हमला करने के लिए तैयार हो जाए वह नाकाम होगा, और जो भी ज़बान तुझ पर इलज़ाम लगाए उसे तू मुजरिम साबित करेगी। यही रब के ख़ादिमों का मौरूसी हिस्सा है, मैं ही उनकी रास्तबाज़ी बरकरार रखूँगा।” रब खुद यह फ़रमाता है।

55

रब के पास आओ ताकि ज़िंदगी पाओ

1 “क्या तुम प्यासे हो? आओ, सब पानी के पास आओ! क्या तुम्हारे पास पैसे नहीं? इधर आओ, सौदा ख़रीदकर खाना खाओ। यहाँ की मैं और दूध मुफ़्त है। आओ, उसे पैसे दिए बग़ैर ख़रीदो। 2 उस पर पैसे क्यों ख़र्च करते हो जो रोटी नहीं है? जो सेर नहीं करता उसके लिए मेहनत-मशक्क़त क्यों करते हो? सुनो, सुनो मेरी बात! फिर तुम अच्छी ख़ुराक खाओगे, बेहतरीन खाने से लुत्फ़अंदोज़ होगे। 3 कान लगाकर मेरे पास आओ! सुनो तो जीते रहोगे।

मैं तुम्हारे साथ अबदी अहद बाँधूँगा, तुम्हें उन अनमिट मेहरबानियों से नवाज़ूँगा जिनका वादा दाऊद से किया था। 4 देख, मैंने मुक़र्रर किया कि वह अक़वाम के सामने मेरा ग़वाह हो, कि अक़वाम का रईस और हुक्मरान हो। 5 देख, तू ऐसी क़ौम को बुलाएगा जिसे तू नहीं जानता, और तुझसे नावाकिफ़ क़ौम रब तेरे ख़ुदा की ख़ातिर तेरे पास दौड़ी चली आएगी। क्योंकि जो इसराईल का कुदूस है उसने तुझे शानो-शौक़त अता की है।”

मेरा कलाम बेतासीर नहीं रहता

6 अभी रब को तलाश करो जबकि उसे पाया जा सकता है। अभी उसे पुकारो जबकि वह करीब ही है। 7 बेदीन अपनी बुरी राह और शरीर अपने बुरे खयालात छोड़े। वह रब के पास वापस आए तो वह उस पर रहम करेगा। वह हमारे ख़ुदा के पास वापस आए, क्योंकि वह फ़राख़दिली से मुआफ़ कर देता है।

8 क्योंकि रब फ़रमाता है, “मेरे खयालात और तुम्हारे खयालात में और मेरी राहों और तुम्हारी राहों में बड़ा फ़रक़ है। 9 जितना आसमान ज़मीन से ऊँचा है उतनी ही मेरी राहें तुम्हारी राहों और मेरे खयालात तुम्हारे खयालात से बलंद हैं।

10 बारिश और बर्फ़ पर ग़ौर करो! ज़मीन पर पड़ने के बाद यह ख़ाली हाथ वापस नहीं आती बल्कि ज़मीन को यों सेराब करती है कि पौदे फूटने और फलने फूलने लगते हैं बल्कि पकते पकते बीज बोनेवाले को बीज और भूके को रोटी मुहैया करते हैं। 11 मेरे मुँह से निकला हुआ कलाम भी ऐसा ही है। वह ख़ाली हाथ वापस नहीं आएगा बल्कि मेरी मरज़ी पूरी करेगा और उसमें कामयाब होगा जिसके लिए मैंने उसे भेजा था।

12 क्योंकि तुम खुशी से निकलोगे, तुम्हें सलामती से लाया जाएगा। पहाड़ और पहाड़ियाँ तुम्हारे आने पर बाग़ बाग़ होकर शादियाना बजाएँगी, और मैदान के तमाम दरख़्त तालियाँ बजाएँगे। 13 कौंटेदार झाड़ी की बजाए जूनीपर का दरख़्त उगेगा, और बिच्छूबूटी की बजाए मेहँदी फले-फूलेगी। यों रब के नाम को जलाल मिलेगा, और उस की कुदरत का अबदी और अनमिट निशान कायम होगा।”

56

हर शख्स अल्लाह की क़ौम में शामिल हो सकता है

1 रब फ़रमाता है, “इनसाफ़ को कायम रखो और वह कुछ किया करो जो रास्त है, क्योंकि मेरी नज़ात करीब ही है, और मेरी रास्ती ज़ाहिर होने को है। 2 मुबारक है वह जो यों रास्ती से लिपटा रहे। मुबारक है वह जो सबत के दिन की बेहुरमती न करे बल्कि उसे मनाए, जो हर बुरे काम से ग़ुरेज़ करे।”

* 54:11 lapis lazuli † 54:12 beryl

3 जो परदेसी रब का पैरोकार हो गया है वह न कहे कि बेशक रब मुझे अपनी कौम से अलग कर रखेगा। ख्वाजासरा भी न सोचे कि हाय, मैं सूखा हुआ दरख्त ही हूँ!

4 क्योंकि रब फ़रमाता है, “जो ख्वाजासरा मेरे सबत के दिन मनाएँ, ऐसे कदम उठाएँ जो मुझे पसंद हों और मेरे अहद के साथ लिपटे रहें वह बेफ़िकर रहें। 5 क्योंकि मैं उन्हें अपने घर और उस की चारदीवारी में ऐसी यादगार और ऐसा नाम अता करूँगा जो बेटे-बेटियाँ मिलने से कहीं बेहतर होगा। और जो नाम मैं उन्हें दूँगा वह अबदी होगा, वह कभी नहीं मिटने का।

6 वह परदेसी भी बेफ़िकर रहें जो रब के पैरोकार बनकर उस की ख़िदमत करना चाहते, जो रब का नाम अज़ीज़ रखकर उस की इबादत करते, जो सबत के दिन की बेहुरमती नहीं करते बल्कि उसे मनाते और जो मेरे अहद के साथ लिपटे रहते हैं। 7 क्योंकि मैं उन्हें अपने मुक़द्दस पहाड़ के पास लाकर अपने दुआ के घर में खुशी दिलाऊँगा। जब वह मेरी कुरबानगाह पर अपनी भस्म होनेवाली और ज़बह की कुरबानियाँ चढ़ाएँ तो वह मुझे पसंद आएँगी। क्योंकि मेरा घर तमाम कौमों के लिए दुआ का घर कहलाएगा।”

8 रब कादिरे-मुतलक जो इसराईल की बिखरी हुई कौम जमा कर रहा है फ़रमाता है, “उनमें जो इकट्ठे हो चुके हैं मैं और भी जमा कर दूँगा।”

कौम के राहनुमा सुस्त और लालची कुत्ते हैं

9 ऐ मैदान के तमाम हैवानो, आओ! ऐ जंगल के तमाम जानवरो, आकर खाओ! 10 इसराईल के पहरेदार अंधे हैं, सबके सब कुछ भी नहीं जानते। सबके सब बहरे कुत्ते हैं जो भौंक ही नहीं सकते। फ़र्श पर लेटे हुए वह अच्छे अच्छे खाब देखते रहते हैं। ऊँघना उन्हें कितना पसंद है! 11 लेकिन यह कुत्ते लालची भी हैं और कभी सेर नहीं होते, हालाँकि गल्लाबान कहलाते हैं। वह समझ से खाली हैं, और हर एक अपनी अपनी राह पर ध्यान देकर अपने ही नफ़ा की तलाश में रहता है। 12 हर एक आवाज़ देता है, “आओ, मैं ले आता हूँ! आओ, हम जी भरकर शराब पी लें। और कल भी आज की तरह हो बल्कि इससे भी ज़्यादा रौनक हो!”

57

रब बेदीनों की अदालत करता है

1 रास्तबाज़ हलाक हो जाता है, लेकिन किसी को परवा नहीं। दियानतदार दुनिया से छीन लिए जाते हैं, लेकिन कोई ध्यान नहीं देता। कोई नहीं समझता कि रास्तबाज़ को बुराई से बचने के लिए छीन लिया जाता है। 2 क्योंकि उस की मनज़िले-मक़सूद सलामती है। सीधी राह पर चलनेवाले मरते वक़्त पाँव फैलाकर आराम करते हैं।

3 “लेकिन ऐ जादूगरनी की औलाद, ज़िनाकार और फ़हशाशी के बच्चो, इधर आओ! 4 तुम किसका मज़ाक उड़ा रहे हो, किस पर ज़बान चलाकर मुँह चिड़ाते हो? तुम मुजरिमों और धोकेबाज़ों के ही बच्चे हो!

5 तुम बलूत बल्कि हर घने दरख़्त के साय में मस्ती में आ जाते हो, वादियों और चटानों के शिगाफ़ों में अपने बच्चों को ज़बह करते हो। 6 वादियों के रगड़े हुए पत्थर तेरा हिस्सा और तेरा मुक़द्दर बन गए हैं। क्योंकि उन्हीं को तूने मै और गल्ला की नज़रें पेश कीं। इसके मद्दे-नज़र मैं अपना फ़ैसला क्यों बदलूँ? 7 तूने अपना बिस्तर ऊँचे पहाड़ पर लगाया, उस पर चढ़कर अपनी कुरबानियाँ पेश कीं। 8 अपने घर के दरवाज़े और चौखट के पीछे तूने अपनी बुतपरस्ती के निशान लगाए। मुझे तर्क करके तू अपना बिस्तर बिछाकर उस पर लेट गई। तूने उसे इतना बड़ा बना दिया कि दूसरे भी उस पर लेट सकें। फिर तूने इसमतफ़रोशी के पैसे मुक़र्रर किए। उनकी सोहबत तुझे कितनी प्यारी थी, उनकी बरहन्गी से तू कितना लुत्फ़ उठाती थी! 9 तू कसरत का तेल और खुशबूदार क्रीम लेकर मलिक देवता के पास गई। तूने अपने कासिदों को दूर दूर बल्कि पाताल तक भेज दिया। 10 गो तू सफ़र करते करते बहुत थक गई तो भी तूने कभी न कहा, ‘फ़ज़ूल है!’ अब तक तुझे तकवियत मिलती रही, इसलिए तू निढाल न हुई।

11 तुझे किससे इतना खौफ़ो-हिरास था कि तूने झूट बोलकर न मुझे याद किया, न परवा की? ऐसा ही है ना, तू इसलिए मेरा खौफ़ नहीं मानती कि मैं ख़ामोश और छुपा रहा।

12 लेकिन मैं लोगों पर तेरी नाम-निहाद रास्तबाज़ी और तेरे काम ज़ाहिर करूँगा। यकीनन यह तेरे लिए मुफ़ीद नहीं होंगे। 13 आ, मदद के लिए आवाज़ दे! देखते हैं कि तेरे बुतों का मजमुआ तुझे बचा सकेगा कि नहीं। लेकिन ऐसा नहीं होगा बल्कि उन्हें हवा उठा ले जाएगी, एक फूँक उन्हें उड़ा देगी।

लेकिन जो मुझ पर भरोसा रखे वह मुल्क को मीरास में पाएगा, मुक़द्दस पहाड़ उस की मौस्सी मिलकियत बनेगा।”

रब अपनी कौम की मदद करेगा

14 अल्लाह फ़रमाता है, “रास्ता बनाओ, रास्ता बनाओ! उसे साफ़-सुथरा करके हर स्कावट दूर करो ताकि मेरी कौम आ सके।” 15 क्योंकि जो अज़ीम और सरबुलंद है, जो अबद तक तख़्तनशीन और जिसका नाम कुद्दूस है वह फ़रमाता है, “मैं न सिर्फ़ बुलंदियों के मक़दिस में बल्कि शिकस्ताहाल और फ़रोतन रूह के साथ भी सुकूनत करता हूँ ताकि फ़रोतन की रूह और शिकस्ताहाल के दिल को नई ज़िंदगी बख़्शूँ। 16 क्योंकि मैं हमेशा तक उनके साथ नहीं झगड़ूँगा, अबद तक नाराज़ नहीं रहूँगा। वरना उनकी रूह मेरे हुज़ूर निढाल हो जाती, उन लोगों की जान जिन्हें मैंने खुद ख़लक किया। 17 मैं इसराईल का नाजायज़ मनाफ़े देखकर तैश में आया और उसे सज़ा देकर अपना मुँह छुपाए रखा। तो भी वह अपने

दिल की बरगश्ता राहों पर चलता रहा। 18 लेकिन गो मैं उसके चाल-चलन से वाकिफ हूँ मैं उसे फिर भी शफा दूँगा, उस की राहनुमाई करके उसे दुबारा तसल्ली दूँगा। और उसके जितने लोग मातम कर रहे हैं 19 उनके लिए मैं होंटों का फल पैदा करूँगा।” क्योंकि रब फरमाता है, “उनकी सलामती हो जो दूर हैं और उनकी जो करीब हैं। मैं ही उन्हें शफा दूँगा।”

20 लेकिन बेदीन मुतलातिम समुंदर की मानिंद हैं जो थम नहीं सकता और जिसकी लहरें गंद और कीचड़ उछालती रहती हैं। 21 मेरा खुदा फरमाता है, “बेदीन सलामती नहीं पाएँगे।

58

रब को पसंदीदा रोज़ा

1 गला फाड़कर आवाज़ दे, स्क स्ककर बात न कर! नरसिंगे की-सी बुलंद आवाज़ के साथ मेरी क्रौम को उस की सरकशी सुना, याकूब के घराने को उसके गुनाहों की फ़हरिस्त बयान कर। 2 रोज़ बरोज़ वह मेरी मरज़ी दरियाफ़्त करते हैं। हाँ, वह मेरी राहों को जानने के शौक़ीन हैं, उस क्रौम की मानिंद जिसने अपने खुदा के अहकाम को तर्क नहीं किया बल्कि रास्तबाज़ है। चुनाँचे वह मुझसे मुंसिफ़ाना फ़ैसले माँगकर ज़ाहिरन अल्लाह की क़ुरबत से लुफ़अंदोज़ होते हैं। 3 वह शिकायत करते हैं, ‘जब हम रोज़ा रखते हैं तो तू तवज्जुह क्यों नहीं देता? जब हम अपने आपको खाकसार बनाकर इंकिसारी का इज़हार करते हैं तो तू ध्यान क्यों नहीं देता?’

सुनो! रोज़ा रखते वक़्त तुम अपना कारोबार मामूल के मुताबिक़ चलाकर अपने मज़दूरों को दबाए रखते हो। 4 न सिर्फ़ यह बल्कि तुम रोज़ा रखने के साथ साथ झगड़ते और लड़ते भी हो। तुम एक दूसरे को शरारत के मुक़े मारने से भी नहीं चूकते। यह कैसी बात है? अगर तुम यों रोज़ा रखो तो इसकी तवक्क़ो नहीं कर सकते कि तुम्हारी बात आसमान तक पहुँचे। 5 क्या मुझे इस किस्म का रोज़ा पसंद है? क्या यह काफी है कि बंदा अपने आपको कुछ देर के लिए खाकसार बनाकर इंकिसारी का इज़हार करे? कि वह अपने सर को आबी नरसल की तरह झुकाकर टाट और राख में लेट जाए? क्या तुम वाकई समझते हो कि यह रोज़ा है, कि ऐसा वक़्त रब को पसंद है?

6 यह किस तरह हो सकता है? जो रोज़ा मैं पसंद करता हूँ वह फ़रक़ है। हकीकी रोज़ा यह है कि तू बेइनसाफ़ी की जंजीरों में जकड़े हुआ को रिहा करे, मज़लूमों का जुआ हटाए, कुचले हुआ को आज़ाद करे, हर जुए को तोड़े, 7 भूके को अपने खाने में शरीक करे, बेघर मुसीबतज़दा को पनाह दे, बरहना को कपड़े पहनाए और अपने रिश्तेदार की मदद करने से ग़ुरेज़ न करे!

8 अगर तू ऐसा करे तो तू सुबह की पहली किरणों की तरह चमक उठेगा, और तेरे ज़ख़म जल्द ही भरेंगे। तब तेरी रास्तबाज़ी तेरे आगे आगे चलेगी, और रब का जलाल तेरे पीछे तेरी हिफ़ाज़त करेगा। 9 तब तू फ़रियाद करेगा और रब जवाब देगा। जब तू मदद के लिए पुकारेगा तो वह फ़रमाएगा, ‘मैं हाज़िर हूँ।’

अपने दरमियान दूसरों पर जुआ डालने, उँगलियाँ उठाने और दूसरों की बदनामी करने का सिलसिला ख़त्म कर! 10 भूके को अपनी रोटी दे और मज़लूमों की ज़रूरियात पूरी कर! फिर तेरी रौशनी अंधेरे में चमक उठेगी और तेरी रात दोपहर की तरह रौशन होगी। 11 रब हमेशा तेरी क्रियादत करेगा, वह झुलसते हुए इलाक़ों में भी तेरी जान की ज़रूरियात पूरी करेगा और तेरे आज़ा को तकवियत देगा। तब तू सेराब बाग़ की मानिंद होगा, उस चश्मे की मानिंद जिसका पानी कभी ख़त्म नहीं होता। 12 तेरे लोग कदीम खंडरात को नए सिरे से तामीर करेंगे। जो बुनियादें गुज़री नसलों ने रखी थीं उन्हें तू दुबारा रखेगा। तब तू ‘रखने को बंद करनेवाला’ और ‘गलियों को दुबारा रहने के काबिल बनानेवाला’ कहलाएगा।

13 सबत के दिन अपने पैरों को काम करने से रोक। मेरे मुक़द्दस दिन के दौरान कारोबार मत करना बल्कि उसे ‘राहतबख़्श’ और ‘मुअज़्ज़ज़’ करार दे। उस दिन न मामूल की राहों पर चल, न अपने कारोबार चला, न खाली गप्पें हॉक। यों तू सबत का सहीह एहताराम करेगा। 14 तब रब तेरी राहत का मंबा होगा, और मैं तुझे रथ में बिठाकर मुल्क की बुलंदियों पर से गुज़रने दूँगा, तुझे तेरे बाप याकूब की मीरास में से सेर करूँगा।” रब के मुँह ने यह फ़रमाया है।

59

तुम्हारे कुसूर ने तुम्हें रब से दूर कर दिया है

1 यकीनन रब का बाज़ू छोटा नहीं कि वह बचा न सके, उसका कान बहरा नहीं कि सुन न सके। 2 हकीकत में तुम्हारे बुरे कामों ने तुम्हें उससे अलग कर दिया, तुम्हारे गुनाहों ने उसका चेहरा तुमसे छुपाए रखा, इसलिए वह तुम्हारी नहीं सुनता। 3 क्योंकि तुम्हारे हाथ खूनआलदा, तुम्हारी उँगलियाँ गुनाह से नापाक हैं। तुम्हारे होंट झूट बोलते और तुम्हारी ज़बान शरीर बातें फुसफुसाती है। 4 अदालत में कोई मुंसिफ़ाना मुकदमा नहीं चलाता, कोई सच्चे दलायल पेश नहीं करता। लोग सच्चाई से खाली बातों पर एतबार करके झूट बोलते हैं, वह बदकारी से हामिला होकर बेदीनी को जन्म देते हैं। 5-6 वह ज़हरीले साँपों के अंडों पर बैठ जाते हैं ताकि बच्चे निकलें। जो उनके अंडे खाए वह मर जाता है, और अगर उनके अंडे दबाए तो ज़हरीला साँप निकल आता है। यह लोग मकड़ी के जाले तान लेते हैं, ऐसा कपड़ा जो पहनने के लिए बेकार है। अपने हाथों के बनाए हुए इस कपड़े से वह अपने आपको ढाँप नहीं सकते। उनके आमाल बुरे ही हैं, उनके हाथ तशद्दुद ही करते हैं। 7 जहाँ भी गलत काम करने का मौका मिले वहाँ उनके पाँव भागकर पहुँच जाते हैं। वह बेकुसूर को कत्ल करने के लिए तैयार रहते हैं। उनके खयालात शरीर

ही हैं, अपने पीछे वह तबाही-ओ-बरबादी छोड़ जाते हैं। 8 न वह सलामती की राह जानते हैं, न उनके रास्तों में इनसाफ पाया जाता है। क्योंकि उन्होंने उन्हें टेढ़ा-मेढ़ा बना रखा है, और जो भी उन पर चले वह सलामती को नहीं जानता।

तौबा की दुआ

9 इसी लिए इनसाफ हमसे दूर है, रास्ती हम तक पहुँचती नहीं। हम रौशनी के इंतज़ार में रहते हैं, लेकिन अफ़सोस, अंधेरा ही अंधेरा नज़र आता है। हम आबो-ताब की उम्मीद रखते हैं, लेकिन अफ़सोस, जहाँ भी चलते हैं वहाँ घनी तारीकी छाई रहती है। 10 हम अंधों की तरह दीवार को हाथ से छू छूकर रास्ता मालूम करते हैं, आँखों से महसूस लोगों की तरह टटोल टटोलकर आगे बढ़ते हैं। दोपहर के वक़्त भी हम ठोकर खा खाकर यों फिरते हैं जैसे धुँधलका हो। गो हम तनआवर लोगों के दरमियान रहते हैं, लेकिन खुद मुरदों की मानिंद हैं। 11 हम सब निढाल हालत में रीछों की तरह गुरति, कबूतरों की मानिंद गूँ गूँ करते हैं। हम इनसाफ के इंतज़ार में रहते हैं, लेकिन बेसूद। हम नजात की उम्मीद रखते हैं, लेकिन वह हमसे दूर ही रहती है।

12 क्योंकि हमारे मुतअद्दि जरायम तेरे सामने हैं, और हमारे गुनाह हमारे खिलाफ गवाही देते हैं। हमें मुतवातिर अपने जरायम का एहसास है, हम अपने गुनाहों से खूब वाकिफ़ हैं। 13 हम मानते हैं कि रब से बेवफ़ा रहे बल्कि उसका इनकार भी किया है। हमने अपना मुँह अपने खुदा से फेरकर जुल्म और धोके की बातें फैलाई हैं। हमारे दिलों में झूट का बीज बढ़ते बढ़ते मुँह में से निकला। 14 नतीजे में इनसाफ पीछे हट गया, और रास्ती दूर खड़ी रहती है। सच्चाई चौक में ठोकर खाकर गिर गई है, और दियानतदारी दाखिल ही नहीं हो सकती। 15 चुनौचे सच्चाई कहीं भी पाई नहीं जाती, और गलत काम से गुरेज़ करनेवाले को लूटा जाता है।

रब का जवाब

यह सब कुछ रब को नज़र आया, और वह नाखुश था कि इनसाफ नहीं है। 16 उसने देखा कि कोई नहीं है, वह हैरान हुआ कि मुदाखलत करनेवाला कोई नहीं है। तब उसके ज़ोरावर बाज़ू ने उस की मदद की, और उस की रास्ती ने उसको सहारा दिया। 17 रास्ती के ज़िरा-बकतर से मुलब्स होकर उसने सर पर नजात का ख़ोद रखा, इंतक़ाम का लिबास पहनकर उसने ग़ैरत की चादर ओढ़ ली। 18 हर एक को वह उसका मुनासिब मुआवज़ा देगा। वह मुखालिफ़ों पर अपना ग़ज़ब नाज़िल करेगा और दुश्मनों से बदला लेगा बल्कि जज़ीरों को भी उनकी हरकतों का अज़ देगा। 19 तब इनसान मगरिब में रब के नाम का ख़ौफ़ मानेंगे और मशरिक में उसे जलाल देंगे। क्योंकि वह रब की फूँक से चलाए हुए जोरदार सैलाब की तरह उन पर टूट पड़ेगा।

20 रब फ़रमाता है, “छुड़ानेवाला कोहे-सिय्यून पर आएगा। वह याकूब के उन फ़रजंदों के पास आएगा जो अपने गुनाहों को छोड़कर वापस आएँगे।”

21 रब फ़रमाता है, “जहाँ तक मेरा ताल्लुक है, उनके साथ मेरा यह अहद है : मेरा रूह जो तुझ पर ठहरा हुआ है और मेरे अलफ़ाज़ जो मैंने तेरे मुँह में डाले हैं वह अब से अबद तक न तेरे मुँह से, न तेरी औलाद के मुँह से और न तेरी औलाद की औलाद से हटेंगे।” यह रब का फ़रमान है।

60

अक़वाम यरूशलम के नूर के पास आएँगी

1 “उठ, खड़ी होकर चमक उठ! क्योंकि तेरा नूर आ गया है, और रब का जलाल तुझ पर तुलू हुआ है। 2 क्योंकि गो ज़मीन पर तारीकी छाई हुई है और अक़वाम घने अंधेरे में रहती हैं, लेकिन तुझ पर रब का नूर तुलू हो रहा है, और उसका जलाल तुझ पर ज़ाहिर हो रहा है। 3 अक़वाम तेरे नूर के पास और बादशाह उस चमकती-दमकती रौशनी के पास आएँगे जो तुझ पर तुलू होगी।

4 अपनी नज़र उठाकर चारों तरफ़ देख! सबके सब जमा होकर तेरे पास आ रहे हैं। तेरे बेटे दूर दूर से पहुँच रहे हैं, और तेरी बेटियों को गोद में उठाकर करीब लाया जा रहा है। 5 उस वक़्त तू यह देखकर चमक उठेगी। तेरा दिल खुशी के मारे तेज़ी से धड़कने लगेगा और कुशादा हो जाएगा। क्योंकि समुंदर के खज़ाने तेरे पास लाए जाएँगे, अक़वाम की दौलत तेरे पास पहुँचेगी। 6 ऊँटों का गोल बल्कि मिदियान और ऐफ़ा के जवान ऊँट तेरे मुल्क को ढाँप देंगे। वह सोने और बख़ूर से लदे हुए और रब की हम्दो-सना करते हुए मुल्के-सबा से आएँगे। 7 क्रीदार की तमाम भेड़-बकरियाँ तेरे हवाले की जाएँगी, और नबायत के मेंढे तेरी खिदमत के लिए हाज़िर होंगे। उन्हें मेरी कुरबानगाह पर चढ़ाया जाएगा और मैं उन्हें पसंद करूँगा। यों मैं अपने जलाल के घर को शानो-शौकत से आरास्ता करूँगा।

8 यह कौन हैं जो बादलों की तरह और काबूक के पास वापस आनेवाले कबूतरों की मानिंद उड़कर आ रहे हैं? 9 यह तरसीस के ज़बरदस्त बहरी जहाज़ हैं जो तेरे पास पहुँच रहे हैं। क्योंकि जज़ीर मुझसे उम्मीद रखते हैं। यह जहाज़ तेरे बेटों को उनकी सोने-चाँदी समेत दूर-दराज़ इलाकों से लेकर आ रहे हैं। यों रब तेरे खुदा के नाम और इसराईल के कुदूस की ताज़ीम होगी जिसने तुझे शानो-शौकत से नवाज़ा है।

10 परदेसी तेरी दीवारों अज़ सरे-नौ तामीर करेंगे, और उनके बादशाह तेरी खिदमत करेंगे। क्योंकि गो मैंने अपने ग़ज़ब में तुझे सज़ा दी, लेकिन अब मैं अपने फ़ज़ल से तुझ पर रहम करूँगा। 11 तेरी फ़सील के दरवाज़े हमेशा खुले रहेंगे। उन्हें न दिन को बंद किया जाएगा, न रात को ताकि

अक्रवाम का मालो-दौलत और उनके गिरिफ्तार किए गए बादशाहों को शहर के अंदर लाया जा सके। ¹² क्योंकि जो क्रौम या सलतनत तेरी खिदमत करने से इनकार करे वह बरबाद हो जाएगी, उसे पूरे तौर पर तबाह किया जाएगा।

¹³ लुबनान की शानो-शौकत तेरे सामने हाज़िर होगी। जूनीपर, सनोबर और सरो के दरख्त मिलकर तेरे पास आएंगे ताकि मेरे मक़दिस को आरास्ता करें। यों मैं अपने पाँवों की चौकी को जलाल दूँगा। ¹⁴ तुझ पर जुल्म करनेवालों के बेटे झुक झुककर तेरे हुज़ूर आएंगे, तेरी तहक़ीर करनेवाले तेरे पाँवों के सामने औंधे मुँह हो जाएंगे। वह तुझे 'रब का शहर' और 'इसराईल के कुदूस का सिय्यून' करार देंगे। ¹⁵ पहले तुझे तर्क किया गया था, लोग तुझसे नफ़रत रखते थे, और तुझमें से कोई नहीं गुज़रता था। लेकिन अब मैं तुझे अबदी फ़रख़ का बाइस बना दूँगा, और तमाम नसलें तुझे देखकर खुश होंगी।

¹⁶ तू अक्रवाम का दूध पीएंगी, और बादशाह तुझे दूध पिलाएंगे। तब तू जान लेगी कि मैं रब तेरा नजातदहिदा हूँ, कि मैं जो याक़ूब का ज़बरदस्त सूरमा हूँ तेरा छुड़ानेवाला हूँ।

¹⁷ मैं तेरे पीतल को सोने में, तेरे लोहे को चाँदी में, तेरी लकड़ी को पीतल में और तेरे पत्थर को लोहे में बदलूँगा। मैं सलामती को तेरी मुहाफ़िज़ और रास्ती को तेरी निगरान बनाऊँगा। ¹⁸ अब से तेरे मुल्क में न तशद्दु का ज़िक्र होगा, न बरबादीओ-तबाही का। अब से तेरी चारदीवारी 'नजात' और तेरे दरवाज़े 'हम्दो-सना' कहलाएंगे।

¹⁹ आइंदा तुझे न दिन के वक़्त सूरज, न रात के वक़्त चाँद की ज़रूरत होगी, क्योंकि रब ही तेरी अबदी रौशनी होगा, तेरा खुदा ही तेरी आबो-ताब होगा। ²⁰ आइंदा तेरा सूरज कभी ग़रूब नहीं होगा, तेरा चाँद कभी नहीं घटेगा। क्योंकि रब तेरा अबदी नूर होगा, और मातम के तेरे दिन ख़त्म हो जाएंगे।

²¹ तब तेरी क्रौम के तमाम अफ़राद रास्तबाज़ होंगे, और मुल्क हमेशा तक उनकी मिलकियत रहेगा। क्योंकि वह मेरे हाथ से लगाई हुई पनीरी होंगे, मेरे हाथ का काम जिससे मैं अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा। ²² तब सबसे छोटे ख़ानदान की तादाद बढ़कर हज़ार अफ़राद पर मुश्तमिल होगी, सबसे कमज़ोर कुंबा ताक़तवर क्रौम बनेगा। मुकर्रर वक़्त पर मैं, रब यह सब कुछ तेज़ी से अंजाम दूँगा।”

61

मातम का वक़्त ख़त्म है

¹ रब कादिरे-मुतलक का रूह मुझ पर है, क्योंकि रब ने मुझे तेल से मसह करके ग़रीबों को खुशख़बरी सुनाने का इख़्तियार दिया है। उसने मुझे शिकस्तादिलों की मरहम-पट्टी करने के लिए और यह एलान करने के लिए भेजा है कि कैदियों को रिहाई मिलेगी और जंजीरों में जकड़े हुए आज़ाद हो जाएंगे, ² कि बहाली का साल और हमारे खुदा के इंतक़ाम का दिन आ गया है। उसने मुझे भेजा है कि मैं तमाम मातम करनेवालों को तसल्ली दूँ ³ और सिय्यून के सोगवारों को दिलासा देकर राख के बजाए शानदार ताज़, मातम के बजाए खुशी का तेल और शिकस्ता रूह के बजाए हम्दो-सना का लिबास मुहैया करूँ।

तब वह 'रास्ती के दरख्त' कहलाएंगे, ऐसे पौदे जो रब ने अपना जलाल ज़ाहिर करने के लिए लगाए हैं। ⁴ वह क़दीम खंडरात को अज़ सरे-नौ तामीर करके देर से बरबाद हुए मक़ामों को बहाल करेंगे। वह उन तबाहशुदा शहरों को दुबारा कायम करेंगे जो नसल-दर-नसल वीरानो-सुनसान रहे हैं। ⁵ ग़ैरमुल्की खड़े होकर तुम्हारी भेड़-बकरियों की गल्लाबानी करेंगे, परदेसी तुम्हारे खेतों और बाग़ों में काम करेंगे। ⁶ उस वक़्त तुम 'रब के इमाम' कहलाओगे, लोग तुम्हें 'हमारे खुदा के खादिम' करार देंगे।

तुम अक्रवाम की दौलत से लुत्फ़अंदोज़ होगे, उनकी शानो-शौकत अपनाकर उस पर फ़रख़ करोगे। ⁷ तुम्हारी शरमिंदगी नहीं रहेगी बल्कि तुम इज्ज़त का दुगना हिस्सा पाओगे, तुम्हारी रसवाई नहीं रहेगी बल्कि तुम शानदार हिस्सा मिलने के बाइस शादियाना बजाओगे। क्योंकि तुम्हें वतन में दुगना हिस्सा मिलेगा, और अबदी खुशी तुम्हारी मीरास होगी।

⁸ क्योंकि रब फ़रमाता है, “मुझे इनसाफ़ पसंद है। मैं ग़ारतगरी और कज़रवी से नफ़रत रखता हूँ। मैं अपने लोगों को वफ़ादारी से उनका अज़ दूँगा, मैं उनके साथ अबदी अहद बाँधूँगा। ⁹ उनकी नसल अक्रवाम में और उनकी औलाद दीगर उम्मतों में मशहूर होगी। जो भी उन्हें देखे वह जान लेगा कि रब ने उन्हें बरकत दी है।”

¹⁰ मैं रब से निहायत ही शादमान हूँ, मेरी जान अपने खुदा की तारीफ़ में खुशी के गीत गाती है। क्योंकि जिस तरह दूल्हा अपना सर इमाम की-सी पगड़ी से सजाता और दुलहन अपने आपको अपने जेवरात से आरास्ता करती है उसी तरह अल्लाह ने मुझे नजात का लिबास पहनाकर रास्ती की चादर में लपेटा है। ¹¹ क्योंकि जिस तरह ज़मीन अपनी हरियाली को निकलने देती और बाग़ अपने बीजों को फूटने देता है उसी तरह रब कादिरे-मुतलक अक्रवाम के सामने अपनी रास्ती और सताइश फूटने देगा।

62

यस्शलम की बहाली

¹ सिय्यून की खातिर मैं ख़ामोश नहीं रहूँगा, यस्शलम की खातिर तब तक आराम नहीं करूँगा जब तक उस की रास्ती तुलूए-सुबह की तरह न चमके और उस की नजात मशाल की तरह न भड़के।

2 अक्रवाम तेरी रास्ती देखेंगी, तमाम बादशाह तेरी शानो-शौकत का मुशाहदा करेंगे। उस वक्त तुझे नया नाम मिलेगा, ऐसा नाम जो रब का अपना मुँह मुतैयिन करेगा। 3 तू रब के हाथ में शानदार ताज और अपने खुदा के हाथ में शाही कुलाह होगी। 4 आइंदा लोग तुझे न कभी 'मतस्क' न तेरे मुल्क को 'वीरानो-सुनसान' करार देंगे बल्कि तू मेरा लुत्फ और तेरा मुल्क ब्याही कहलाएगा। क्योंकि रब तुझसे लुत्फअंदोज होगा, और तेरा मुल्क शादीशुदा होगा। 5 जिस तरह जवान आदमी कुँवारी से शादी करता है उसी तरह तेरे फ़रज़ंद तुझे ब्याह लेंगे। और जिस तरह दूल्हा दुलहन के बाइस खुशी मनाता है उसी तरह तेरा खुदा तेरे सबब से खुशी मनाएगा।

6 ऐ यरूशलम, मैंने तेरी फ़सील पर पहरेदार लगाए हैं जो दिन-रात आवाज़ दें। उन्हें एक लमहे के लिए भी ख़ामोश रहने की इजाज़त नहीं है। ऐ रब को याद दिलानेवालो, उस वक्त तक न खुद आराम करो, 7 न रब को आराम करने दो जब तक वह यरूशलम को अज़ सरे-नौ कायम न कर ले। जब पूरी दुनिया शहर की तारीफ़ करेगी तब ही तुम सुकून का साँस ले सकते हो। 8 रब ने अपने दाँए हाथ और ज़ोरावर बाजू की कसम खाकर वादा किया है, "आइंदा न मैं तेरा ग़ल्ला तेरे दुश्मनों को खिलाऊँगा, न बड़ी मेहनत से बनाई गई तेरी मैं को अजनबियों को पिलाऊँगा। 9 क्योंकि आइंदा फ़सल की कटाई करनेवाले ही रब की सताइश करते हुए उसे खाएँगे, और अंगूर चुननेवाले ही मेरे मक़दिस के सहनों में आकर उनका रस पीएँगे।"

10 दाखिल हो जाओ, शहर के दरवाज़ों में दाखिल हो जाओ! क्रौम के लिए रास्ता तैयार करो! रास्ता बनाओ, रास्ता बनाओ! उसे पथरों से साफ़ करो! तमाम अक्रवाम के ऊपर झंडा गाड़ दो!

11 क्योंकि रब ने दुनिया की इंतहा तक एलान किया है, "सियून बेटी को बताओ कि देख, तेरी नज़ात आनेवाली है। देख, उसका अज़ उसके पास है, उसका इनाम उसके आगे आगे चल रहा है।" 12 तब वह 'मुक़द्दस क्रौम' और 'वह क्रौम जिसे रब ने एवज़ाना देकर छुड़ाया है' कहलाएँगे। ऐ यरूशलम बेटी, तू 'मरगूब' और 'ग़ैरमतस्क' शहर' कहलाएँगी।

63

अल्लाह अपनी क्रौम की अदालत करता है

1 यह कौन है जो अदोम से आ रहा है, जो सुर्ख सुर्ख कपड़े पहने बसरा शहर से पहुँच रहा है? यह कौन है जो रोब से मुलब्स बड़ी ताकत के साथ आगे बढ़ रहा है? "मैं ही हूँ, वह जो इनसाफ़ से बोलता, जो बड़ी कुदरत से तुझे बचाता है।"

2 तेरे कपड़े क्यों इतने लाल हैं? लगता है कि तेरा लिबास हौज़ में अंगूर कुचलने से सुर्ख हो गया है।

3 "मैं अंगूरों को अकेला ही कुचलता रहा हूँ, अक्रवाम में से कोई मेरे साथ नहीं था। मैंने गुस्से में आकर उन्हें कुचला, तैश में उन्हें रौंदा। उनके खून की छींटें मेरे कपड़ों पर पड़ गई, मेरा सारा लिबास आलूदा हुआ। 4 क्योंकि मेरा दिल इंतक़ाम लेने पर तुला हुआ था, अपनी क्रौम का एवज़ाना देने का साल आ गया था। 5 मैंने अपने इर्दगिर्द नज़र दौड़ाई, लेकिन कोई नहीं था जो मेरी मदद करता। मैं हैरान था कि किसी ने भी मेरा साथ न दिया। चुनौचे मेरे अपने बाजू ने मेरी मदद की, और मेरे तैश ने मुझे सहारा दिया। 6 गुस्से में आकर मैंने अक्रवाम को पामाल किया, तैश में उन्हें मदहोश करके उनका खून ज़मीन पर गिरा दिया।"

रब की तमजीद

7 मैं रब की मेहरबानियाँ सुनाऊँगा, उसके काबिले-तारीफ़ कामों की तमजीद करूँगा। जो कुछ रब ने हमारे लिए किया, जो मुतअदिद भलाईयाँ उसने अपने रहम और बड़े फ़ज़ल से इसराईल को दिखाई हैं उनकी सताइश करूँगा।

8 उसने फ़रमाया, "यक़ीनन यह मेरी क्रौम के हैं, ऐसे फ़रज़ंद जो बेवफ़ा नहीं होंगे।" यह कहकर वह उनका नज़ातदहिदा बन गया, 9 वह उनकी तमाम मुसीबत में शरीक हुआ, और उसके हुज़ूर के फ़रिश्ते ने उन्हें छुटकारा दिया। वह उन्हें प्यार करता, उन पर तरस खाता था, इसलिए उसने एवज़ाना देकर उन्हें छुड़ाया। हाँ, क़दीम ज़माने से आज तक वह उन्हें उठाए फिरता रहा।

10 लेकिन वह सरकश हुए, उन्होंने उसके कुदूस रूह को दुख पहुँचाया। तब वह मुड़कर उनका दुश्मन बन गया। खुद वह उनसे लड़ने लगा।

11 फिर उस की क्रौम को वह क़दीम ज़माना याद आया जब मूसा अपनी क्रौम के दरमियान था, और वह पुकार उठे, "वह कहाँ है जो अपनी भेड़-बकरियों को उनके गल्लाबानों समेत समुंदर में से निकाल लाया? वह कहाँ है जिसने अपने रूहल-कुदूस को उनके दरमियान नाज़िल किया, 12 जिसकी जलाली कुदरत मूसा के दाँए हाथ हाज़िर रही ताकि उसको सहारा दे? वह कहाँ है जिसने पानी को इसराईलियों के सामने तकसीम करके अपने लिए अबदी शोहरत पैदा की 13 और उन्हें गहराइयों में से गुज़रने दिया? उस वक्त वह खुले मैदान में चलनेवाले घोड़े की तरह आराम से गुज़रे और कहीं भी ठोकर न खाई। 14 जिस तरह गाय-बैल आराम के लिए वादी में उतरते हैं उसी तरह उन्हें रब के रूह से आराम और सुकून हासिल हुआ।"

इसी तरह तूने अपनी क्रौम की राहनुमाई की ताकि तेरे नाम को जलाल मिले।

तौबा की दुआ

15 ऐ अल्लाह, आसमान से हम पर नज़र डाल, बुलंदियों पर अपनी मुक़द्दस और शानदार सुकूनतगाह से देख! इस वक्त तेरी ग़ैरत और कुदरत कहाँ है? हम तेरी नरमी और मेहरबानियों से महसूस रह गए हैं! 16 तू तो हमारा बाप है। क्योंकि इब्राहीम हमें नहीं जानता और इसराईल

हमें नहीं पहचानता, लेकिन तू, रब हमारा बाप है, कदीम ज़माने से ही तेरा नाम 'हमारा छुड़ानेवाला' है। 17 ऐ रब, तू हमें अपनी राहों से क्यों भटकने देता है? तूने हमारे दिलों को इतना सख्त क्यों कर दिया कि हम तेरा खौफ नहीं मान सकते? हमारी खातिर वापस आ! क्योंकि हम तेरे खादिम, तेरी मौससी मिलकियत के कबीले हैं। 18 तेरा मकदिस थोड़ी ही देर के लिए तेरी कौम की मिलकियत रहा, लेकिन अब हमारे मुखालिफों ने उसे पाँवों तले रौंद डाला है। 19 लगता है कि हम कभी तेरी हुकूमत के तहत नहीं रहे, कि हम पर कभी तेरे नाम का ठप्पा नहीं लगा था।

64

1 काश तू आसमान को फाड़कर उतर आए, कि पहाड़ तेरे सामने थरथराएँ। 2 काश तू डालियों को भड़का देनेवाली आग या पानी को एकदम उबालनेवाली आतिश की तरह नाज़िल हो ताकि तेरे दुश्मन तेरा नाम जान लें और कौमों तेरे सामने लरज़ उठें! 3 क्योंकि कदीम ज़माने में जब तू खौफनाक और गैरमुतवक्क़े काम किया करता था तो यों ही नाज़िल हुआ, और पहाड़ यों ही तेरे सामने काँपने लगे। 4 कदीम ज़माने से ही किसी ने तेरे सिवा किसी और खुदा को न देखा न सुना है। सिर्फ तू ही ऐसा खुदा है जो उनकी मदद करता है जो तेरे इंतज़ार में रहते हैं।

5 तू उनसे मिलता है जो खुशी से रास्त काम करते, जो तेरी राहों पर चलते हुए तुझे याद करते हैं! अफ़सोस, तू हमसे नाराज़ हुआ, क्योंकि हम शुरू से तेरा गुनाह करके तुझसे बेवफ़ा रहे हैं। तो फिर हम किस तरह बच जाएंगे? 6 हम सब नापाक हो गए हैं, हमारे तमाम नाम-निहाद रास्त काम गंदे चीथड़ों की मानिंद हैं। हम सब पत्तों की तरह मुरझा गए हैं, और हमारे गुनाह हमें हवा के झोंकों की तरह उड़ाकर ले जा रहे हैं।

7 कोई नहीं जो तेरा नाम पुकारे या तुझसे लिपटने की कोशिश करे। क्योंकि तूने अपना चेहरा हमसे छुपाकर हमें हमारे कुसूरों के हवाले छोड़ दिया है।

8 ऐ रब, ताहम तू ही हमारा बाप, हमारा कुम्हार है। हम सब मिट्टी ही हैं जिसे तेरे हाथ ने तश्कील दिया है। 9 ऐ रब, हद से ज़्यादा हमसे नाराज़ न हो! हमारे गुनाह तुझे हमेशा तक याद न रहें। ज़रा इसका लिहाज़ कर कि हम सब तेरी कौम हैं। 10 तेरे मुक़द्दस शहर वीरान हो गए हैं, यहाँ तक कि सिय्यून भी बयाबान ही है, यस्शलम वीरानो-सुनसान है। 11 हमारा मुक़द्दस और शानदार घर जहाँ हमारे बापदादा तेरी सताइश करते थे नज़रे-आतिश हो गया है, जो कुछ भी हम अज़ीज़ रखते थे वह खंडर बन गया है।

12 ऐ रब, क्या तू इन वाकियात के बावजूद भी अपने आपको हमसे दूर रखेगा? क्या तू ख़ामोश रहकर हमें हद से ज़्यादा पस्त होने देगा?

65

रब का ग़ज़ब कौम पर नाज़िल होगा

1 “जो मेरे बारे में दरियाफ़्त नहीं करते थे उन्हें मैंने मुझे ढूँढ़ने का मौका दिया। जो मुझे तलाश नहीं करते थे उन्हें मैंने मुझे पाने का मौका दिया। मैं बोला, ‘मैं हाज़िर हूँ, मैं हाज़िर हूँ!’ हालाँकि जिस कौम से मैं मुखातिब हुआ वह मेरा नाम नहीं पुकारती थी।

2 दिन-भर मैंने अपने हाथ फैलाए रखे ताकि एक सरकश कौम का इस्तक़बाल करूँ, हालाँकि यह लोग ग़लत राह पर चलते और अपने कजरौ ख़यालात के पीछे पड़े रहते हैं। 3 यह मुतवातिर और मेरे स्वर ही मुझे नाराज़ करते हैं। क्योंकि यह बागों में कुरबानियाँ चढ़ाकर ईंटों की कुरबानगाहों पर बख़ूर जलाते हैं। 4 यह क़ब्रिस्तान में बैठकर ख़ुफ़िया ग़ारों में रात गुज़ारते हैं। यह सुअर का गोश्त खाते हैं, उनकी देगों में काबिले-घिन शोरबा होता है। 5 साथ साथ यह एक दूसरे से कहते हैं, ‘मुझसे दूर रहो, करीब मत आना! क्योंकि मैं तेरी निसबत कहीं ज़्यादा मुक़द्दस हूँ।’

इस किस्म के लोग मेरी नाक में धुँएँ की मानिंद हैं, एक आग जो दिन-भर जलती रहती है। 6 देखो, यह बात मेरे सामने ही कलमबंद हुई है कि मैं ख़ामोश नहीं रहूँगा बल्कि पूरा पूरा अज़्र दूँगा। मैं उनकी झोली उनके अज़्र से भर दूँगा।” 7 रब फ़रमाता है, “उन्हें न सिर्फ़ उनके अपने गुनाहों की सज़ा मिलेगी बल्कि बापदादा के गुनाहों की भी। चूँकि उन्होंने पहाड़ों पर बख़ूर की कुरबानियाँ चढ़ाकर मेरी तहक़ीर की इसलिए मैं उनकी झोली उनकी हरकतों के मुआवज़े से भर दूँगा।”

मौत न चुनो बल्कि हयात!

8 रब फ़रमाता है, “जब तक अंगूर में थोड़ा-सा रस बाक़ी हो लोग कहते हैं, ‘उसे जाया मत करना, क्योंकि अब तक उसमें कुछ न कुछ है जो बरकत का बाइस है।’ मैं इसराईल के साथ भी ऐसा ही करूँगा। क्योंकि अपने खादिमों की खातिर मैं सबको नेस्त नहीं करूँगा। 9 मैं याक़ूब और यहूदाह को ऐसी औलाद बख़्श दूँगा जो मेरे पहाड़ों को मीरास में पाएगी। तब पहाड़ मेरे बरगुज़ीदों की मिलकियत होंगे, और मेरे खादिम उन पर बसेंगे। 10 वादीए-शास्न में भेड़-बकरियाँ चरेंगी, वादीए-अकूर में गाय-बैल आराम करेंगे। यह सब कुछ मेरी उस कौम को दस्तयाब होगा जो मेरी तालिब रहेगी।

11 लेकिन तुम जो रब को तर्क करके मेरे मुक़द्दस पहाड़ को भूल गए हो, ख़बरदार! गो इस वक़्त तुम खुशकिसमती के देवता ज़द के लिए मेज़ बिछाते और तकदीर के देवता मनात के लिए मै का बरतन भर देते हो, 12 लेकिन तुम्हारी तकदीर और है। मैंने तुम्हारे लिए तलवार की तकदीर मुक़र्रर की है। तुम सबको कसाई के सामने झुकना पड़ेगा, क्योंकि जब मैंने तुम्हें बुलाया तो तुमने जवाब न दिया। जब मैं तुमसे हमकलाम हुआ तो तुमने न सुना बल्कि वह कुछ किया जो मुझे बुरा लगा। तुमने वह कुछ इख़्तियार किया जो मुझे नापसंद है।”

13 इसलिए रब कादिरे-मुतलक फरमाता है, “मेरे खादिम खाना खाएंगे, लेकिन तुम भूके रहोगे। मेरे खादिम पानी पिएंगे, लेकिन तुम प्यासे रहोगे। मेरे खादिम मसस्स होंगे, लेकिन तुम शर्मसार होंगे। 14 मेरे खादिम खुशी के मारे शादियाना बजाएंगे, लेकिन तुम रंजीदा होकर रो पड़ोगे, तुम मायूस होकर वावैला करोगे। 15 आखिरकार तुम्हारा नाम ही मेरे बरगुजीदों के पास बाक़ी रहेगा, और वह भी सिर्फ़ लानत के तौर पर इस्तेमाल होगा। क़सम खाते वक़्त वह कहेंगे, ‘रब कादिरे-मुतलक तुम्हें इसी तरह क़त्ल करे।’ लेकिन मेरे खादिमों का एक और नाम रखा जाएगा। 16 मुल्क में जो भी अपने लिए बरक़त माँगे या क़सम खाए वह वफ़ादार खुदा का नाम लेगा। क्योंकि गुज़री मुसीबतों की यादें मिट जाएंगी, वह मेरी आँखों से छुप जाएंगी।

नए ज़माने का आगाज़

17 क्योंकि मैं नया आसमान और नई ज़मीन खलक करूँगा। तब गुज़री चीज़ें याद नहीं आएंगी, उनका खयाल तक नहीं आएगा।

18 चुनौचे खुशो-खुर्रम हो! जो कुछ मैं खलक करूँगा उस की हमेशा तक खुशी मनाओ! क्योंकि देखो, मैं यरूशलम को शादमानी का बाइस और उसके बाशिंदों को खुशी का सबब बनाऊँगा। 19 मैं खुद भी यरूशलम की खुशी मनाऊँगा और अपनी क़ौम से लुत्फ़अंदोज़ हूँगा।

आइंदा उसमें रोना और वावैला सुनाई नहीं देगा। 20 वहाँ कोई भी पैदाइश के थोड़े दिनों बाद फ़ौत नहीं होगा, कोई भी वक़्त से पहले नहीं मरेगा। जो सौ साल का होगा उसे जवान समझा जाएगा, और जो सौ साल की उम्र से पहले ही फ़ौत हो जाए उसे मलऊन समझा जाएगा।

21 लोग घर बनाकर उनमें बसेंगे, वह अंगूर के बाग़ लगाकर उनका फल खाएंगे। 22 आइंदा ऐसा नहीं होगा कि घर बनाने के बाद कोई और उसमें बसे, कि बाग़ लगाने के बाद कोई और उसका फल खाए। क्योंकि मेरी क़ौम की उम्र दरख़्तों जैसी दराज़ होगी, और मेरे बरगुजीदा अपने हाथों के काम से लुत्फ़अंदोज़ होंगे। 23 न उनकी मेहनत-मशक्क़त रायग़ों जाएगी, न उनके बच्चे अचानक तशद्दुद का निशाना बनकर मरेंगे। क्योंकि वह रब की मुबारक नसल होंगे, वह खुद और उनकी औलाद भी। 24 इससे पहले कि वह आवाज़ दें मैं जवाब दूँगा, वह अभी बोल रहे होंगे कि मैं उनकी सुनूँगा।”

25 रब फ़रमाता है, “भेड़िया और लेला मिलकर चरेंगे, शेरबबर बैल की तरह भूसा खाएगा, और साँप की खुराक खाक़ ही होगी। मेरे पूरे मुक़द्दस पहाड़ पर न ग़लत काम किया जाएगा, न किसी को नुक़सान पहुँचेगा।”

66

दो मालिकों की खिदमत करना नामुमकिन है

1 रब फ़रमाता है, “आसमान मेरा तख़्त है और ज़मीन मेरे पाँवों की चौकी, तो फिर वह घर कहाँ है जो तुम मेरे लिए बनाओगे? वह जगह कहाँ है जहाँ मैं आराम करूँगा?” 2 रब फ़रमाता है, “मेरे हाथ ने यह सब कुछ बनाया, तब ही यह सब कुछ वुजूद में आया। और मैं उसी का खयाल रखता हूँ जो मुसीबतज़दा और शिक़स्तादिल है, जो मेरे क़लाम के सामने काँपता है।

3 लेकिन बैल को ज़बह करनेवाला कातिल के बराबर और लेले को कुरबान करनेवाला कुत्ते की गरदन तोड़नेवाले के बराबर है। ग़ल्ला की नज़र पेश करनेवाला सुअर का खून चढ़ानेवाले से बेहतर नहीं, और बख़ूर जलानेवाला बुतपरस्त की मानिंद है। इन लोगों ने अपनी ग़लत राहों को इख़्तियार किया है, और इनकी जान अपनी धिनौनी चीज़ों से लुत्फ़अंदोज़ होती है। 4 जवाब में मैं भी उनसे बदसलूकी की राह इख़्तियार करूँगा, मैं उन पर वह कुछ नाज़िल करूँगा जिससे वह दहशत खाते हैं। क्योंकि जब मैंने उन्हें आवाज़ दी तो किसी ने जवाब न दिया, जब मैं बोला तो उन्होंने न सुना बल्कि वही कुछ करते रहे जो मुझे बुरा लगा, वही करने पर तुले रहे जो मुझे नापसंद है।”

यरूशलम के साथ खुशी मनाओ

5 ऐ रब के क़लाम के सामने लरज़नेवालो, उसका फ़रमान सुनो! “तुम्हारे अपने भाई तुमसे नफ़रत करते और मेरे नाम के बाइस तुम्हें रद्द करते हैं। वह मज़ाक़ उड़ाकर कहते हैं, ‘रब अपने जलाल का इज़हार करे ताकि हम तुम्हारी खुशी का मुशाहदा कर सकें।’ लेकिन वह शर्मिंदा हो जाएंगे।

6 सुनो! शहर में शोरो-गौगा हो रहा है। सुनो! रब के घर से हलचल की आवाज़ सुनाई दे रही है। सुनो! रब अपने दुश्मनों को उनकी मुनासिब सज़ा दे रहा है।

7 दर्दे-ज़ह में मुब्तला होने से पहले ही यरूशलम ने बच्चा जन्म दिया, ज़चचगी की ईज़ा से पहले ही उसके बेटा पैदा हुआ। 8 किसने कभी ऐसी बात सुनी है? किसने कभी इस किस्म का मामला देखा है? क्या कोई मुल्क एक ही दिन के अंदर अंदर पैदा हो सकता है? क्या कोई क़ौम एक ही लमहे में जन्म ले सकती है? लेकिन सिय्यून के साथ ऐसा ही हुआ है। दर्दे-ज़ह अभी शुरू ही होना था कि उसके बच्चे पैदा हुए।” 9 रब फ़रमाता है, “क्या मैं बच्चे को यहाँ तक लाऊँ कि वह माँ के पेट से निकलनेवाला हो और फिर उसे जन्म लेने न दूँ? हरगिज़ नहीं!” तेरा खुदा फ़रमाता है, “क्या मैं जो बच्चे को पैदा होने देता हूँ बच्चे को रोक दूँ? कभी नहीं!”

10 “ऐ यरूशलम को प्यार करनेवालो, सब उसके साथ खुशी मनाओ! ऐ शहर पर मातम करनेवालो, सब उसके साथ शादियाना बजाओ!

11 क्योंकि अब तुम उस की तसल्ली दिलानेवाली छाती से जी भरकर दूध पियोगे, तुम उसके शानदार दूध की कसरत से लुत्फ़अंदोज़ होगे।”

12 क्योंकि रब फ़रमाता है, “मैं यरूशलम में सलामती का दरिया बहने दूँगा और उस पर अक़वाम की शानो-शौक़त का सैलाब आने दूँगा। तब

वह तुम्हें अपना दूध पिलाकर उठाए फिरेगी, तुम्हें गोद में बिठाकर प्यार करेगी। 13 मैं तुम्हें माँ की-सी तसल्ली दूँगा, और तुम यरूशलम को देखकर तसल्ली पाओगे। 14 इन बातों का मुशाहदा करके तुम्हारा दिल खुश होगा और तुम ताज़ा हरियाली की तरह फलो-फूलोगे।”

उस वक़्त ज़ाहिर हो जाएगा कि रब का हाथ उसके खादिमों के साथ है जबकि उसके दुश्मन उसके ग़ज़ब का निशाना बनेंगे। 15 रब आग की सूरत में आ रहा है, आँधी जैसे रथों के साथ नाज़िल हो रहा है ताकि दहकते कोयलों से अपना गुस्सा ठंडा करे और शोला-अफ़शों आग से मलामत करे। 16 क्योंकि रब आग और अपनी तलवार के ज़रीए तमाम इनसानों की अदालत करके अपने हाथ से मुतअदिद लोगों को हलाक करेगा।

17 रब फ़रमाता है, “जो अपने आपको बुतों के बागों के लिए मख़सूस और पाक-साफ़ करते हैं और दरमियान के राहनुमा की पैरवी करके सुअर, चूहे और दीगर धिनौनी चीज़ें खाते हैं वह मिलकर हलाक हो जाएंगे।

दीगर अक़वाम भी रब की परस्तिश करेंगी

18 चुनौचे मैं जो उनके आमाल और खयालात से वाकिफ़ हूँ तमाम अक़वाम और अलग अलग ज़बानें बोलनेवालों को जमा करने के लिए नाज़िल हो रहा हूँ। तब वह आकर मेरे जलाल का मुशाहदा करेंगे। 19 मैं उनके दरमियान इलाही निशान कायम करके बचे हुआँ में से कुछ दीगर अक़वाम के पास भेज दूँगा। वह तरसीस, लिबिया, तीर चलाने की माहिर कौम लुदिया, तूबल, यूनान और उन दूर-दराज़ जज़ीरों के पास जाएंगे जिन्होंने न मेरे बारे में सुना, न मेरे जलाल का मुशाहदा किया है। इन अक़वाम में वह मेरे जलाल का एलान करेंगे।

20 फिर वह तमाम अक़वाम में रहनेवाले तुम्हारे भाइयों को घोड़ों, रथों, गाड़ियों, खच्चरों और ऊँटों पर सवार करके यरूशलम ले आएँगे। यहाँ मेरे मुक़द्दस पहाड़ पर वह उन्हें ग़ल्ला की नज़र के तौर पर पेश करेंगे। क्योंकि रब फ़रमाता है कि जिस तरह इसराईली अपनी ग़ल्ला की नज़रें पाक बरतनों में रखकर रब के घर में ले आते हैं उसी तरह वह तुम्हारे इसराईली भाइयों को यहाँ पेश करेंगे। 21 उनमें से मैं बाज़ को इमाम और लावी का ओहदा दूँगा।” यह रब का फ़रमान है।

22 रब फ़रमाता है, “जितने यक़ीन के साथ मेरा बनाया हुआ नया आसमान और नई ज़मीन मेरे सामने कायम रहेगा उतने यक़ीन के साथ तुम्हारी नसल और तुम्हारा नाम अबद तक कायम रहेगा। 23 उस वक़्त तमाम इनसान मेरे पास आकर मुझे सिजदा करेंगे। हर नए चाँद और हर सबत को वह बाकायदगी से आते रहेंगे।” यह रब का फ़रमान है। 24 “तब वह शहर से निकलकर उनकी लाशों पर नज़र डालेंगे जो मुझसे सरकश हुए थे। क्योंकि न उन्हें खानेवाले कीड़े कभी मरेंगे, न उन्हें जलानेवाली आग कभी बुझेगी। तमाम इनसान उनसे धिन खाँएंगे।”

यरमियाह

रब का नबी यरमियाह

¹ जैल में यरमियाह बिन खिलकियाह के पैगामात कलमबंद किए गए हैं। (बिनयमीन के कबायली इलाके के शहर अनतोत में कुछ इमाम रहते थे, और यरमियाह का वालिद उनमें से था)। ² रब का फ़रमान पहली बार यहूदाह के बादशाह यूसियाह बिन अमून की हुकूमत के 13वें साल में यरमियाह पर नाज़िल हुआ, ³ और यरमियाह को यह पैगामात यह्यक्रीम बिन यूसियाह के दौरे-हुकूमत से लेकर सिदकियाह बिन यूसियाह की हुकूमत के 11वें साल के पाँचवें महीने * तक मिलते रहे। उस वक़्त यरूशलम के बाशिंदों को जिलावतन कर दिया गया।

यरमियाह की बुलाहट

⁴ एक दिन रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, ⁵ “मैं तुझे माँ के पेट में तश्कील देने से पहले ही जानता था, तेरी पैदाइश से पहले ही मैंने तुझे मखसूसो-मुकद्दस करके अक्वाम के लिए नबी मुर्करर किया।”

⁶ मैंने एतराज़ किया, “ऐ रब कादिरे-मुतलक, अफ़सोस! मैं तेरा कलाम सुनाने का सहीह इल्म नहीं रखता, मैं तो बच्चा ही हूँ।” ⁷ लेकिन रब ने मुझसे फ़रमाया, “मत कह ‘मैं बच्चा ही हूँ।’ क्योंकि जिनके पास भी मैं तुझे भेजूँगा उनके पास तू जाएगा, और जो कुछ भी मैं तुझे सुनाने को कहूँगा उसे तू सुनाएगा। ⁸ लोगों से मत डरना, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ, मैं तुझे बचाए रखूँगा।” यह रब का फ़रमान है।

⁹ फिर रब ने अपना हाथ बढ़ाकर मेरे होंटों को छू दिया और फ़रमाया, “देख, मैंने अपने अलफ़ाज़ को तेरे मुँह में डाल दिया है। ¹⁰ आज मैं तुझे क्रौमों और सलतनतों पर मुर्करर कर देता हूँ। कहीं तुझे उन्हें जड़ से उखाड़कर गिरा देना, कहीं बरबाद करके ढा देना और कहीं तामीर करके पौदे की तरह लगा देना है।”

बादाम की शाख और उबलती देग की रोया

¹¹ रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, “ऐ यरमियाह, तुझे क्या नज़र आ रहा है?” मैंने जवाब दिया, “बादाम की एक शाख, उस दरख्त की जो ‘देखनेवाला’ कहलाता है।” ¹² रब ने फ़रमाया, “तूने सहीह देखा है। इसका मतलब है कि मैं अपने कलाम की देख-भाल कर रहा हूँ, मैं ध्यान दे रहा हूँ कि वह पूरा हो जाए।”

¹³ फिर रब का कलाम दुबारा मुझ पर नाज़िल हुआ, “तुझे क्या नज़र आ रहा है?” मैंने जवाब दिया, “शिमाल में देग दिखाई दे रही है। जो कुछ उसमें है वह उबल रहा है, और उसका मुँह हमारी तरफ़ झुका हुआ है।” ¹⁴ तब रब ने मुझसे कहा, “इसी तरह शिमाल से मुल्क के तमाम बाशिंदों पर आफ़त टूट पड़ेगी।” ¹⁵ क्योंकि रब फ़रमाता है, “मैं शिमाली ममालिक के तमाम घरानों को बुला लूँगा, और हर एक आकर अपना तख़्त यरूशलम के दरवाज़ों के सामने ही खड़ा करेगा। हाँ, वह उस की पूरी फ़सील को घेरकर उस पर बल्कि यहूदाह के तमाम शहरों पर छापा मारेगा। ¹⁶ यों मैं अपनी क्रौम पर फ़ैसले सादिर करके उनके ग़लत कामों की सज़ा दूँगा। क्योंकि उन्होंने मुझे तर्क करके अजनबी माबूदों के लिए बख़ूर जलाया और अपने हाथों से बने हुए बुतों को सिजदा किया है।

¹⁷ चुनौचे कमरबस्ता हो जा! उठकर उन्हें सब कुछ सुना दे जो मैं फ़रमाऊँगा। उनसे दहशत मत खाना, वरना मैं तुझे उनके सामने ही दहशतज़दा कर दूँगा। ¹⁸ देख, आज मैंने तुझे किलाबंद शहर, लोहे के सतून और पीतल की चारदीवारी जैसा मज़बूत बना दिया है ताकि तू पूरे मुल्क का सामना कर सके, खाह यहूदाह के बादशाह, अफ़सर, इमाम या अवांम तुझ पर हमला क्यों न करें। ¹⁹ तुझसे लड़ने के बावजूद वह तुझ पर ग़ालिब नहीं आएँगे, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ, मैं ही तुझे बचाए रखूँगा।” यह रब का फ़रमान है।

2

अल्लाह की जवान इसराईल के लिए फ़िकर

¹ रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, ² “जा, ज़ोर से यरूशलम के कान में पुकार कि रब फ़रमाता है, ‘मुझे तेरी जवानी की वफ़ादारी ख़ूब याद है। जब तेरी शादी करीब आई तो तू मुझे कितना प्यार करती थी, यहाँ तक कि तू रेगिस्तान में भी जहाँ खेतीबाड़ी नामुमकिन थी मेरे पीछे पीछे चलती रही। ³ उस वक़्त इसराईल रब के लिए मखसूसो-मुकद्दस था, वह उस की फ़सल का पहला फल था। जिसने भी उसमें से कुछ खाया वह मुजरिम ठहरा, और उस पर आफ़त नाज़िल हुई। यह रब का फ़रमान है।”

इसराईल के बापदादा के गुनाह

⁴ ऐ याकूब की औलाद, रब का कलाम सुनो! ऐ इसराईल के तमाम घरानो, ध्यान दो! ⁵ रब फ़रमाता है, “तुम्हारे बापदादा ने मुझमें कौन-सी नाइनसाफी पाई कि मुझसे इतने दूर हो गए? हेच बुतों के पीछे होकर वह खुद हेच हो गए। ⁶ उन्होंने पूछा तक नहीं कि रब कहाँ है जो हमें मिस्र से निकाल लाया और रेगिस्तान में सहीह राह दिखाई, गो वह इलाका वीरानो-सुनसान था। हर तरफ़ घाटियों, पानी की सख़्त कमी और

* 1:3 जुलाई ता अगस्त।

तारीकी का सामना करना पड़ा। न कोई उसमें से गुजरता, न कोई वहाँ रहता है।⁷ मैं तो तुम्हें बागों से भरे मुल्क में लाया ताकि तुम उसके फल और अच्छी पैदावार से लुफ्तअंदोज हो सको। लेकिन तुमने क्या किया? मेरे मुल्क में दाखिल होते ही तुमने उसे नापाक कर दिया, और मैं अपनी मौस्सी मिलकियत से धिन खाने लगा।⁸ न इमामों ने पछा कि रब कहाँ है, न शरीअत को अमल में लानेवाले मुझे जानते थे। क्रौम के गल्लाबान मुझसे बेवफ़ा हुए, और नबी बेफ़ायदा बुतों के पीछे लगकर बाल देवता के पैगामात सुनाने लगे।”

रब का अपनी क्रौम के खिलाफ़ मुकदमा

⁹ रब फ़रमाता है, “इसी वजह से मैं आइंदा भी अदालत में तुम्हारे साथ लड़ूँगा। हाँ, न सिर्फ़ तुम्हारे साथ बल्कि तुम्हारी आनेवाली नसलों के साथ भी।¹⁰ जाओ, समुंदर को पार करके जज़ीराए-कुबस्स की तफ़तीश करो! अपने क़ासिदों को मुल्के-क़ीदार में भेजकर ग़ौर से दरियाफ़्त करो कि क्या वहाँ कभी यहाँ का-सा काम हुआ है? ¹¹ क्या किसी क्रौम ने कभी अपने देवताओं को तबदील किया, गो वह हकीकत में ख़ुदा नहीं है? हरगिज़ नहीं! लेकिन मेरी क्रौम अपनी शानो-शौकत के ख़ुदा को छोड़कर बेफ़ायदा बुतों की पूजा करने लगी है।” ¹² रब फ़रमाता है, “ऐ आसमान, यह देखकर हैबतज़दा हो जा, तेरे रोंगटे खड़े हो जाएँ, हक्का-बक्का रह जा! ¹³ क्योंकि मेरी क्रौम से दो संगीन जुर्म सरज़द हुए हैं। एक, उन्होंने मुझे तर्क किया, गो मैं ज़िंदगी के पानी का सरचश्मा हूँ। दूसरे, उन्होंने अपने ज़ाती हौज़ बनाए हैं जो दराडों की वजह से भर ही नहीं सकते।

इसराईल की बेवफ़ाई के नतायज

¹⁴ क्या इसराईल इब्तिदा से ही गुलाम है? क्या उसके वालिदैन् गुलाम थे कि वह अब तक गुलाम है? हरगिज़ नहीं! तो फिर वह क्यों दूसरों का लूटा हुआ माल बन गया है? ¹⁵ जवान शेरबबर दहाड़ते हुए उस पर टूट पड़े हैं, गरजते गरजते उन्होंने मुल्के-इसराईल को बरबाद कर दिया है। उसके शहर नज़रे-आतिश होकर वीरानो-सुनसान हो गए हैं। ¹⁶ साथ साथ मेंफ़िस और तहफ़नहीस के लोग भी तेरे सर को मुँडवा रहे हैं।

¹⁷ ऐ इसराईली क्रौम, क्या यह तेरे ग़लत काम का नतीजा नहीं? क्योंकि तूने रब अपने ख़ुदा को उस वक़्त तर्क किया जब वह तेरी राहनुमाई कर रहा था। ¹⁸ अब मुझे बता कि मिसर को जाकर दरियाए-नील का पानी पीने का क्या फ़ायदा? मुल्के-असूर में जाकर दरियाए-फ़ुरात का पानी पीने से क्या हासिल? ¹⁹ तेरा ग़लत काम तुझे सज़ा दे रहा है, तेरी बेवफ़ा हरकतें ही तेरी सरज़निश कर रही हैं। चुनौचे जान ले और ध्यान दे कि रब अपने ख़ुदा को छोड़कर उसका ख़ौफ़ न मानने का फल कितना बुरा और कड़वा है।” यह क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज का फ़रमान है।

²⁰ “क्योंकि शुरू से ही तू अपने जुए और रस्सों को तोड़कर कहती रही, ‘मैं तेरी ख़िदमत नहीं करूँगी!’ तू हर बुलंदी पर और हर घने दरख़्त के साथ में लेटकर इसमतफ़रोशी करती रही। ²¹ पहले तू अंगूर की मख़सूस और क़ाबिले-एतमाद नसल की पनीरी थी जिसे मैंने ख़ुद ज़मीन में लगाया। तो यह क्या हुआ कि तू बिगड़कर जंगली * बेल बन गई? ²² अब तेरे कुसूर का दाग़ उतर नहीं सकता, खाह तू कितना खारी सोडा और साबुन क्यों न इस्तेमाल करे।” यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।

²³ “तू किस तरह यह कहने की ज़रूरत कर सकती है कि मैंने अपने आपको आलूदा नहीं किया, मैं बाल देवताओं के पीछे नहीं गई। वादी में अपनी हरकतों पर तो ग़ौर कर! जान ले कि तुझसे क्या कुछ सरज़द हुआ है। तू बेमक़सद इधर उधर भागनेवाली ऊँटनी है। ²⁴ बल्कि तू रेगिस्तान में रहने की आदी ग़धी ही है जो शहवत के मारे हाँपती है। मस्ती के इस आलम में कौन उस पर काबू पा सकता है? जो भी उससे मिलना चाहे उसे ज़्यादा जिद्दो-जहद की ज़रूरत नहीं, क्योंकि मस्ती के मौसम में वह हर एक के लिए हाज़िर है। ²⁵ ऐ इसराईल, इतना न दौड़ कि तेरे जूते घिसकर फट जाएँ और तेरा गला ख़ुश्क़ हो जाए। लेकिन अफ़सोस, तू बज़िद है, ‘नहीं, मुझे छोड़ दे! मैं अजनबी माबूदों को प्यार करती हूँ, और लाज़िम है कि मैं उनके पीछे भागती जाऊँ।’

²⁶ सुनो! इसराईली क्रौम के तमाम अफ़राद उनके बादशाहों, अफ़सरों, इमामों और नबियों समेत शरमिदा हो जाएंगे। वह पकड़े हुए चोर की-सी शर्म महसूस करेंगे। ²⁷ यह लोग लकड़ी के बुत से कहते हैं, ‘तू मेरा बाप है’ और पत्थर के देवता से, ‘तूने मुझे जन्म दिया।’ लेकिन गो यह मेरी तरफ़ रूज़ नहीं करते बल्कि अपना मुँह मुझसे फेरकर चलते हैं तो भी ज्योंही कोई आफ़त उन पर आ जाए तो यह मुझसे इल्तिजा करने लगते हैं कि आकर हमें बचा! ²⁸ अब यह बुत कहाँ हैं जो तूने अपने लिए बनाए? वही खड़े होकर दिखाएँ कि तुझे मुसीबत से बचा सकते हैं। ऐ यहदाह, आखिर जितने तेरे शहर हैं उतने तेरे देवता भी हैं।” ²⁹ रब फ़रमाता है, “तुम मुझ पर क्यों इलज़ाम लगाते हो? तुम तो सब मुझसे बेवफ़ा हो गए हो। ³⁰ मैंने तुम्हारे बच्चों को सज़ा दी, लेकिन बेफ़ायदा। वह मेरी तरबियत क़बूल नहीं करते। बल्कि तुमने फाड़नेवाले शेरबबर की तरह अपने नबियों पर टूटकर उन्हें तलवार से क़त्ल किया।

³¹ ऐ मौज़दा नसल, रब के कलाम पर ध्यान दो! क्या मैं इसराईल के लिए रेगिस्तान या तारीक़तरीन इलाके की मानिंद था? मेरी क्रौम क्यों कहती है, ‘अब हम आज़ादी से इधर उधर फिर सकते हैं, आइंदा हम तेरे हुज़ूर नहीं आएँगे?’ ³² क्या कुँवारी कभी अपने ज़ेवरात को भूल सकती है, या दुलहन अपना उरूसी लिबास? हरगिज़ नहीं! लेकिन मेरी क्रौम बेशुमार दिनों से मुझे भूल गई है।

* **2:21** लफ़ज़ी तरज़ुमा : अजनबी।

33 तू इश्क ढूँढ़ने में कितनी माहिर है! बदकार औरतें भी तुझसे बहुत कुछ सीख लेती हैं। 34 तेरे लिबास का दामन बेगुनाह गरीबों के खून से आलूदा है, गो तूने उन्हें नक्रबजनी जैसा गलत काम करते वक़्त न पकड़ा। इस सब कुछ के बावजूद भी 35 तू बज़िद है कि मैं बेकुसूर हूँ, अल्लाह का मुझ पर गुस्सा ठंडा हो गया है। लेकिन मैं तेरी अदालत करूँगा, इसलिए कि तू कहती है, ‘मुझसे गुनाह सरज़द नहीं हुआ।’

36 तू कभी इधर, कभी इधर जाकर इतनी आसानी से अपना स्रब क्यों बदलती है? यक़ीन कर कि जिस तरह तू अपने इत्तहादी असूर से मायूस होकर शर्मिदा हुई है उसी तरह तू नए इत्तहादी मिसर से भी नादिम हो जाएगी। 37 तू उस जगह से भी अपने हाथों को सर पर रखकर निकलेगी। क्योंकि रब ने उन्हें रद्द किया है जिन पर तू भरोसा रखती है। उनसे तुझे मदद हासिल नहीं होगी।”

3

इसराईल की रब से बेवफ़ाई

1 रब फ़रमाता है, “अगर कोई अपनी बीवी को तलाक़ दे और अलग होने के बाद बीवी की किसी और से शादी हो जाए तो क्या पहले शौहर को उससे दुबारा शादी करने की इजाज़त है? हरगिज़ नहीं, बल्कि ऐसी हरकत से पूरे मुल्क की बेहुरमती हो जाती है। देख, यही तेरी हालत है। तूने मुतअद्दिद आशिकों से ज़िना किया है, और अब तू मेरे पास वापस आना चाहती है। यह कैसी बात है?

2 अपनी नज़र बंजर पहाड़ियों की तरफ़ उठाकर देख! क्या कोई जगह है जहाँ ज़िना करने से तेरी बेहुरमती नहीं हुई? रेगिस्तान में तनहा बैठनेवाले बड़ू की तरह तू रास्तों के किनारे पर अपने आशिकों की ताक में बैठी रही है। अपनी इसमतफ़रोशी और बदकारी से तूने मुल्क की बेहुरमती की है। 3 इसी वजह से बहार में बरसात का मौसम रोका गया और बारिश नहीं पड़ी। लेकिन अफ़सोस, तू कसबी की-सी पेशानी रखती है, तू शर्म खाने के लिए तैयार ही नहीं। 4 इस वक़्त भी तू चीखती-चिल्लाती आवाज़ देती है, ‘ऐ मेरे बाप, जो मेरी जवानी से मेरा दोस्त है, 5 क्या तू हमेशा तक मेरे साथ नाराज़ रहेगा? क्या तेरा क्रहर कभी ठंडा नहीं होगा?’ यही तेरे अपने अलफ़ाज़ हैं, लेकिन साथ साथ तू ग़लत काम करने की हर मुमकिन कोशिश करती रहती है।”

6 यूसियाह बादशाह की हुक्मत के दौरान रब मुझसे हमकलाम हुआ, “क्या तूने वह कुछ देखा जो बेवफ़ा इसराईल ने किया है? उसने हर बुलंदी पर और हर घने दरख़्त के साय में ज़िना किया है। 7 मैंने सोचा कि यह सब कुछ करने के बाद वह मेरे पास वापस आएगी। लेकिन अफ़सोस, ऐसा न हुआ। उस की ग़द्ग़र बहन यहदाह भी इन तमाम वाक़ियात की गवाह थी। 8 बेवफ़ा इसराईल की ज़िनाकारी नाक्राबिले-बरदाशत थी, इसलिए मैंने उसे घर से निकालकर तलाक़नामा दे दिया। फिर भी मैंने देखा कि उस की ग़द्ग़र बहन यहदाह ने ख़ौफ़ न खाया बल्कि खुद निकलकर ज़िना करने लगी। 9 इसराईल को इस जुर्म की संजीदगी महसूस न हुई बल्कि उसने पत्थर और लकड़ी के बुतों के साथ ज़िना करके मुल्क की बेहुरमती की। 10 इसके बावजूद उस की बेवफ़ा बहन यहदाह पूरे दिल से नहीं बल्कि सिर्फ़ ज़ाहिरी तौर पर मेरे पास वापस आई।” यह रब का फ़रमान है।

मेरे पास लौट आ

11 रब मुझसे हमकलाम हुआ, “बेवफ़ा इसराईल ग़द्ग़र यहदाह की निसबत ज़्यादा रास्तबाज़ है। 12 जा, शिमांल की तरफ़ देखकर बुलंद आवाज़ से एलान कर, ‘ऐ बेवफ़ा इसराईल, रब फ़रमाता है कि वापस आ! आइंदा मैं गुस्से से तेरी तरफ़ नहीं देखूँगा, क्योंकि मैं मेहरबान हूँ। मैं हमेशा तक नाराज़ नहीं रहूँगा। यह रब का फ़रमान है।

13 लेकिन लाज़िम है कि तू अपना कुसूर तसलीम करे। इकरार कर कि मैं रब अपने ख़ुदा से सरकश हुई। मैं इधर उधर घूमकर हर घने दरख़्त के साय में अजनबी माबूदों की पूजा करती रही, मैंने रब की न सुनी।” यह रब का फ़रमान है। 14 रब फ़रमाता है, “ऐ बेवफ़ा बच्चो, वापस आओ, क्योंकि मैं तुम्हारा मालिक हूँ। मैं तुम्हें हर जगह से निकालकर सियून् में वापस लाऊँगा। किसी शहर से मैं एक को निकाल लाऊँगा, और किसी खानदान से दो अफ़राद को।

15 तब मैं तुम्हें ऐसे गल्लाबानों से नवाज़ूँगा जो मेरी सोच रखेंगे और जो समझ और अक्ल के साथ तुम्हारी गल्लाबानी करेंगे। 16 फिर तुम्हारी तादाद बहुत बढ़ेगी और तुम चारों तरफ़ फैल जाओगे।” रब फ़रमाता है, “उन दिनों में रब के अहद के संदूक का ज़िक्र नहीं किया जाएगा। न उसका खयाल आएगा, न उसे याद किया जाएगा। न उस की कमी महसूस होगी, न उसे दुबारा बनाया जाएगा। 17 क्योंकि उस वक़्त यरूशलम ‘रब का तख़्त’ कहलाएगा, और उसमें तमाम अक्रवाम रब के नाम की ताज़ीम में जमा हो जाएँगी। तब वह अपने शरीर और ज़िद्दी दिलों के मुताबिक़ ज़िंदगी नहीं गुज़ारेंगी। 18 तब यहदाह का घराना इसराईल के घराने के पास आएगा, और वह मिलकर शिमांली मुल्क से उस मुल्क में वापस आएँगे जो मैंने तुम्हारे बापदादा को मीरास में दिया था।

19 मैंने सोचा, काश मैं तेरे साथ बेटों का-सा सुलूक करके तुझे एक खुशगवार मुल्क दे सकूँ, एक ऐसी मीरास जो दीगर अक्रवाम की निसबत कहीं शानदार हो। मैं समझा कि तुम मुझे अपना बाप ठहराकर अपना मुँह मुझसे नहीं फेरोगे। 20 लेकिन ऐ इसराईली कौम, तू मुझसे बेवफ़ा रही है, बिलकुल उस औरत की तरह जो अपने शौहर से बेवफ़ा हो गई है।” यह रब का फ़रमान है।

21 “सुनो! बंजर बुलंदियों पर चीखें और इल्लिजाएँ सुनाई दे रही हैं। इसराईली रो रहे हैं, इसलिए कि वह ग़लत राह इख्तियार करके रब अपने ख़ुदा को भूल गए हैं। 22 ऐ बेवफ़ा बच्चो, वापस आओ ताकि मैं तुम्हारे बेवफ़ा दिलों को शफा दे सकूँ।”

“ऐ रब, हम हाज़िर हैं। हम तेरे पास आते हैं, क्योंकि तू ही रब हमारा खुदा है।²³ वाकई, पहाड़ियों और पहाड़ों पर बुतपरस्ती का तमाशा फरेब ही है। यकीनन रब हमारा खुदा इसराईल की नजात है।²⁴ हमारी जवानी से लेकर आज तक शर्मनाक देवता हमारे बापदादा की मेहनत का फल खाते आए हैं, खाह उनकी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल थे, खाह उनके बेटे-बेटियाँ।²⁵ आओ, हम अपनी शर्म के बिस्तर पर लेट जाएँ और अपनी बेइज्जती की रज़ाई में छुप जाएँ। क्योंकि हमने अपने बापदादा समेत रब अपने खुदा का गुनाह किया है। अपनी जवानी से लेकर आज तक हमने रब अपने खुदा की नहीं सुनी।”

4

तौबा करो

¹ रब फ़रमाता है, “ऐ इसराईल, अगर तू वापस आना चाहे तो मेरे पास वापस आ! अगर तू अपने धिनौने बुतों को मेरे हुज़ूर से दूर करके आवारा न फिरे² और रब की हयात की क़सम खाते वक़्त दियानतदारी, इनसाफ़ और सदाक़त से अपना वादा पूरा करे तो ग़ैरअक़वाम मुझसे बरक़त पाकर मुझ पर फ़ख़र करेंगी।”

³ रब यहूदाह और यरूशलम के बाशिंदों से फ़रमाता है, “अपने दिलों की ग़ैरमुस्तामल ज़मीन पर हल चलाकर उसे क़ाबिले-काशत बनाओ! अपने बीज काँटेदार झाड़ियों में बोकर जाया मत करना।⁴ ऐ यहूदाह और यरूशलम के बाशिंदो, अपने आपको रब के लिए मख़सूस करके अपना ख़तना कराओ यानी अपने दिलों का ख़तना कराओ, वरना मेरा क़हर तुम्हारे ग़लत कामों के बाइस कभी न बुझनेवाली आग की तरह तुझ पर नाज़िल होगा।

शिमाल से आफ़त का ए़लान

⁵ यहूदाह में ए़लान करो और यरूशलम को इतला दो, ‘मुल्क-भर में नरसिंगा बजाओ!’ ग़ला फाड़कर चिल्लाओ, ‘इकट्टे हो जाओ! आओ, हम क़िलाबंद शहरों में पनाह लें!’⁶ झंडा गाड़ दो ताकि लोग उसे देखकर सियून् में पनाह लें। महफूज़ मक़ाम में भाग जाओ और कहीं न स्को, क्योंकि मैं शिमाल की तरफ़ से आफ़त ला रहा हूँ, सब कुछ धड़ाम से गिर जाएगा।

⁷ शेरबबर जंगल में अपनी छुपने की जगह से निकल आया, क़ौमों को हलाक करनेवाला अपने मक़ाम से रवाना हो चुका है ताकि तेरे मुल्क को तबाह करे। तेरे शहर बरबाद हो जाएंगे, और उनमें कोई नहीं रहेगा।

⁸ चुनौचे टाट का लिबास पहनकर आहो-ज़ारी करो, क्योंकि रब का सख़्त ग़ज़ब अब तक हम पर नाज़िल हो रहा है।”

⁹ रब फ़रमाता है, “उस दिन बादशाह और उसके अफ़सर हिम्मत हारेंगे, इमामों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे और नबी ख़ौफ़ से सुन होकर रह जाएंगे।”

¹⁰ तब मैं बोल उठा, “हाय, हाय! ऐ रब कादिरे-मुतलक, तूने इस क़ौम और यरूशलम को कितना सख़्त फ़रेब दिया जब तूने फ़रमाया, तुम्हें अमनो-अमान हासिल होगा हालाँकि हमारे ग़लों पर तलवार फिरने को है।”¹¹ उस वक़्त इस क़ौम और यरूशलम को इतला दी जाएगी, “रेगिस्तान के बंजर टीलों से सब कुछ झुलसानेवाली लू मेरी क़ौम के पास आ रही है। और यह गंदुम को फटककर भूसे से अलग करनेवाली मुफ़ीद हवा नहीं होगी¹² बल्कि आँधी जैसी तेज़ हवा मेरी तरफ़ से आएगी। क्योंकि अब मैं उन पर अपने फ़ैसले सादिर करूँगा।”

¹³ देखो, दुश्मन तूफ़ानी बादलों की तरह आगे बढ़ रहा है! उसके रथ आँधी जैसे, और उसके घोड़े उकाब से तेज़ हैं। हाय, हम पर अफ़सोस! हमारा अंजाम आ गया है।

¹⁴ ऐ यरूशलम, अपने दिल को धोकर बुराई से साफ़ कर ताकि तुझे छुटकारा मिले। तू अंदर ही अंदर कब तक अपने शरीर मनसूबे बाँधती रहेगी?

¹⁵ सुनो! दान से बुरी ख़बरें आ रही हैं, इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े से आफ़त का पैग़ाम पहुँच रहा है।¹⁶ ग़ैरअक़वाम को इतला दो और यरूशलम के बारे में ए़लान करो, “मुहासरा करनेवाले फ़ौजी दूर-दराज़ मुल्क से आ रहे हैं! वह जंग के नारे लगा लगाकर यहूदाह के शहरों पर टूट पड़ेंगे।¹⁷ तब वह खेतों की चौकीदारी करनेवालों की तरह यरूशलम को घेर लेंगे। क्योंकि यह शहर मुझसे सरकश हो गया है।” यह रब का फ़रमान है।¹⁸ “यह तेरे अपने ही चाल-चलन और हरकतों का नतीजा है। हाय, तेरी बेदीनी का अंजाम कितना तलख़ और दिलख़राश है!”

यरमियाह का अपनी क़ौम के लिए दुख

¹⁹ हाय, मेरी तड़पती जान, मेरी तड़पती जान! मैं दर्द के मारे पेचो-ताब खा रहा हूँ। हाय, मेरा दिल! वह बेकाबू होकर धड़क रहा है। मैं ख़ामोश नहीं रह सकता, क्योंकि नरसिंगे की आवाज़ और जंग के नारे मेरे कान तक पहुँच गए हैं।²⁰ यके बाद दीग़रे शिकस्तों की ख़बरें मिल रही हैं, चारों तरफ़ मुल्क की तबाही हुई है। अचानक ही मेरे तंबू बरबाद है, एक ही लमहे में मेरे ख़ैमे ख़त्म हो गए हैं।²¹ मुझे कब तक जंग का झंडा देखना पड़ेगा, कब तक नरसिंगे की आवाज़ सुननी पड़ेगी?

²² “मेरी क़ौम अहमक़ है और मुझे नहीं जानती। वह बेवुकूफ़ और नासमझ बच्चे हैं। गो वह ग़लत काम करने में बहुत तेज़ हैं, लेकिन भलाई करना उनकी समझ से बाहर है।”

²³ मैंने मुल्क पर नज़र डाली तो वीरानो-सुनसान था। जब आसमान की तरफ़ देखा तो अंधेरा था।²⁴ मेरी निगाह पहाड़ों पर पड़ी तो थरथरा रहे थे, तमाम पहाड़ियाँ हिचकोले खा रही थीं।²⁵ कहीं कोई शख्स नज़र न आया, तमाम परिदे भी उड़कर जा चुके थे।²⁶ मैंने मुल्क पर

नज़र दौड़ाई तो क्या देखता हूँ कि ज़रखेज़ ज़मीन रेगिस्तान बन गई है। रब और उसके शदीद ग़ज़ब के सामने उसके तमाम शहर नेस्तो-नाबूद हो गए हैं। 27 क्योंकि रब फ़रमाता है, “पूरा मुल्क बरबाद हो जाएगा, अगरचे मैं उसे पूरे तौर पर ख़त्म नहीं करूँगा। 28 ज़मीन मातम करेगी और आसमान तारीक हो जाएगा, क्योंकि मैं यह फ़रमा चुका हूँ, और मेरा इरादा अटल है। न मैं यह करने से पछताऊँगा, न इससे बाज़ आऊँगा।”

29 घुड़सवारों और तीर चलानेवालों का शोर-शराबा सुनकर लोग तमाम शहरों से निकलकर जंगलों और चटानों में खिसक जाएंगे। तमाम शहर वीरानो-सुनसान होंगे, किसी में भी लोग नहीं बसेंगे।

30 तो फिर तू क्या कर रही है, तू जिसे खाक में मिला दिया गया है? अब किरमिज़ी लिबास और सोने के ज़ेवरात पहनने की क्या ज़रूरत है? इस वक़्त अपनी आँखों को सुरमे से सजाने और अपने आपको आरास्ता करने का कोई फ़ायदा नहीं। तेरे आशिक़ तो तुझे हक़ीर जानते बल्कि तुझे जान से मारने के दरपै हैं। 31 क्योंकि मुझे दर्द-ज़ह में मुब्तला औरत की आवाज़, पहली बार जन्म देनेवाली की आहो-ज़ारी सुनाई दे रही है। सिय्यून बेटी कराह रही है, वह अपने हाथ फैलाए हुए कह रही है, “हाय, मुझ पर अफ़सोस! मेरी जान क्रातिलों के हाथ में आकर निकल रही है।”

5

अब मुआफ़ी नामुमकिन है

1 “यस्शलम की गलियों में घूमो फ़िरो! हर जगह का मुलाहज़ा करके पता करो कि क्या हो रहा है। उसके चौकों की तफ़तीश भी करो। अगर तुम्हें एक भी शख्स मिल जाए जो इसाफ़ करे और दियानतदारी का तालिब रहे तो मैं शहर को मुआफ़ कर दूँगा। 2 वह रब की हयात की कसम खाते वक़्त भी झूट बोलते हैं।”

3 ऐ रब, तेरी आँखें दियानतदारी देखना चाहती हैं। तूने उन्हें मारा, लेकिन उन्हें दुख न हुआ। तूने उन्हें कुचल डाला, लेकिन वह तरबियत पाने के लिए तैयार नहीं। उन्होंने अपने चेहरे को पत्थर से कहीं ज़्यादा सख़्त बनाकर तौबा करने से इनकार किया है। 4 मैंने सोचा, “सिर्फ़ ग़रीब लोग ऐसे हैं। यह इसलिए अहमकाना हरकतें कर रहे हैं कि रब की राह और अपने खुदा की शरीअत से वाकिफ़ नहीं हैं। 5 आओ, मैं बुजुर्गों के पास जाकर उनसे बात करता हूँ। वह तो ज़रूर रब की राह और अल्लाह की शरीअत को जानते होंगे।” लेकिन अफ़सोस, सबके सबने अपने जुए और रस्से तोड़ डाले हैं।

6 इसलिए शेरबबर जंगल से निकलकर उन पर हमला करेगा, भेड़िया बयाबान से आकर उन्हें बरबाद करेगा, चीता उनके शहरों के करीब ताक में बैठकर हर निकलनेवाले को फाड़ डालेगा। क्योंकि वह बार बार सरकश हुए हैं, मुतअदिद दफ़ा उन्होंने अपनी बेवफ़ाई का इज़हार किया है।

7 “मैं तुझे कैसे मुआफ़ करूँ? तेरी औलाद ने मुझे तर्क करके उनकी कसम खाई है जो खुदा नहीं हैं। गो मैंने उनकी हर ज़रूरत पूरी की तो भी उन्होंने ज़िना किया, चकले के सामने उनकी लंबी क़तारें लगी रहीं। 8 यह लोग मोटे-ताज़े घोड़े हैं जो मस्ती में आ गए हैं। हर एक हिनहिनाता हुआ अपने पड़ोसी की बीवी को आँख मारता है।” 9 रब फ़रमाता है, “क्या मैं जवाब में उन्हें सज़ा न दूँ? क्या मैं ऐसी क़ौम से इंतक़ाम न लूँ? 10 जाओ, उसके अंगूर के बाग़ों पर टूट पड़ो और सब कुछ बरबाद कर दो। लेकिन उन्हें मुकम्मल तौर पर ख़त्म मत करना। बेलों की शाखों को दूर करो, क्योंकि वह रब के लोग नहीं हैं।”

रब अपनी क़ौम से जवाब तलब करेगा

11 क्योंकि रब फ़रमाता है, “इसराईल और यहूदाह के बाशिंदे हर तरह से मुझसे बेवफ़ा रहे हैं। 12 उन्होंने रब का इनकार करके कहा है, वह कुछ नहीं करेगा। हम पर मुसीबत नहीं आएगी। हमें न तलवार, न काल से नुक़सान पहुँचेगा। 13 नबियों की क्या हैसियत है? वह तो बकवास ही करते हैं, और रब का कलाम उनमें नहीं है। बल्कि उन्हीं के साथ ऐसा किया जाएगा।”

14 इसलिए रब लशक़रों का खुदा फ़रमाता है, “ऐ यर्मियाह, चूँकि लोग ऐसी बातें कर रहे हैं इसलिए तेरे मुँह में मेरे अलफ़ाज़ आग बनकर इस क़ौम को लकड़ी की तरह भस्म कर देंगे।” 15 रब फ़रमाता है, “ऐ इसराईल, मैं दूर की क़ौम को तेरे खिलाफ़ भेजूँगा, ऐसी पुख़्ता और क़दीम क़ौम जिसकी ज़बान तू नहीं जानता और जिसकी बातें तू नहीं समझता। 16 उनके तरकश खुली क़ब्रें हैं, सबके सब ज़बरदस्त सुरमे हैं। 17 वह सब कुछ हड़प कर लेंगे: तेरी फ़सलें, तेरी ख़ुराक, तेरे बेटे-बेटियाँ, तेरी भेड़-बकरियाँ, तेरे गाय-बैल, तेरी अंगूर की बेलें और तेरे अंजीर के दरख़्त। जिन क़िलाबंद शहरों पर तुम भरोसा रखते हो उन्हें वह तलवार से खाक में मिला देंगे।

18 फिर भी मैं उस वक़्त तुम्हें मुकम्मल तौर पर बरबाद नहीं करूँगा।” यह रब का फ़रमान है। 19 “ऐ यर्मियाह, अगर लोग तुझसे पूछें, रब हमारे खुदा ने यह सब कुछ हमारे साथ क्यों किया? तो उन्हें बता, तुम मुझे तर्क करके अपने वतन में अजनबी माबूदों की खिदमत करते रहे हो, इसलिए तुम वतन से दूर मुल्क में अजनबियों की खिदमत करोगे।

20 इसराईल में एलान करो और यहूदाह को इतला दो 21 कि ऐ बेवक़ूफ़ और नासमझ क़ौम, सुनो! लेकिन अफ़सोस, उनकी आँखें तो हैं लेकिन वह देख नहीं सकते, उनके कान तो हैं लेकिन वह सुन नहीं सकते।” 22 रब फ़रमाता है, “क्या तुम्हें मेरा ख़ौफ़ नहीं मानना चाहिए, मेरे हुज़ूर नहीं काँपना चाहिए? सोच लो! मैं ही ने रेत से समुंदर की सरहद मुक़र्रर की, एक ऐसी बाड़ बनाई जिस पर से वह कभी नहीं गुज़र सकता। गो वह जोर से लहरें मारे तो भी नाकाम रहता है, गो उस की मौज़ें ख़ूब गरजें तो भी मुक़र्ररा हद से आगे नहीं बढ़ सकती।

23 लेकिन अफसोस, इस कौम का दिल ज़िद्दी और सरकश है। यह लोग सही राह से हटकर अपनी ही राहों पर चल पड़े हैं। 24 वह दिल में कभी नहीं कहते, आओ, हम सब अपने खुदा का खौफ मानें। क्योंकि वही हमें वक्त पर खिज़ाँ और बहार के मौसम में बारिश मुहैया करता है, वही इसकी ज़मानत देता है कि हमारी फसलें बाक़ायदगी से पक जाएँ। 25 अब तुम्हारे ग़लत कामों ने तुम्हें इन नेमतों से महसूस कर दिया, तुम्हारे गुनाहों ने तुम्हें इन अच्छी चीज़ों से रोक रखा है।

26 क्योंकि मेरी कौम में ऐसे बेदीन अफ़राद पाए जाते हैं जो दूसरों की ताक लगाए रहते हैं। जिस तरह शिकारी परिदे पकड़ने के लिए झुककर छुप जाता है, उसी तरह वह दूसरों की घात में बैठ जाते हैं। वह फंदे लगाकर लोगों को उनमें फँसाते हैं। 27 और जिस तरह शिकारी अपने पिंजरे को चिड़ियों से भर देता है उसी तरह इन शरीर लोगों के घर फ़रेब से भरे रहते हैं। अपनी चालों से वह अमीर, ताक़तवर 28 और मोटे-ताज़े हो गए हैं। उनके ग़लत कामों की हद नहीं रहती। वह इनसाफ़ करते ही नहीं। न वह यतीमों की मदद करते हैं ताकि उन्हें वह कुछ मिल जाए जो उनका हक़ है, न ग़रीबों के हुक्क कायम रखते हैं।” 29 अब फ़रमाता है, “अब मुझे बताओ, क्या मुझे उन्हें इसकी सज़ा नहीं देनी चाहिए? क्या मुझे इस किस्म की हरकतें करनेवाली कौम से बदला नहीं लेना चाहिए?”

30 जो कुछ मुल्क में हुआ है वह हौलनाक और काबिले-घिन है। 31 क्योंकि नबी झूठी पेशगोइयाँ सुनाते और इमाम अपनी ही मरज़ी से हुक्मत करते हैं। और मेरी कौम उनका यह रवैया अज़ीज़ रखती है। लेकिन मुझे बताओ, जब यह सब कुछ ख़त्म हो जाएगा तो फिर तुम क्या करोगे?

6

यरूशलम दुश्मनों से घिरा हुआ है

1 ऐ बिनयमीन की औलाद, यरूशलम से निकलकर कहीं और पनाह लो! तबूअ में नरसिंगा फूँको! बैत-करम में भागने का ऐसा इशारा खड़ा कर जो सबको नज़र आए! क्योंकि शिमाल से आफ़त नाज़िल हो रही है, सब कुछ धड़ाम से गिर जाएगा।

2 सिय्यून बेटी कितनी मनमोहन और नाज़ुक है। लेकिन मैं उसे हलाक कर दूँगा, 3 और चरवाहे अपने रेवड़ों को लेकर उस पर टूट पड़ेंगे। वह अपने खैमों को उसके इर्दगिर्द लगा लेंगे, और हर एक का रेवड़ चर चरकर अपना हिस्सा खा जाएगा।

4 वह कहेंगे, ‘आओ, हम उससे लड़ने के लिए तैयार हो जाएँ। आओ, हम दोपहर के वक्त हमला करें! लेकिन अफ़सोस, दिन ढल रहा है, और शाम के साथ लंबे होते जा रहे हैं। 5 कोई बात नहीं, रात के वक्त ही हम उस पर छापा मारेंगे, उसी वक्त हम उसके बुर्जों को गिरा देंगे।’”

6 रब्बूल-अफ़वाज़ फ़रमाता है, “दरख़्तों को काटो, मिट्टी के ढेरों से यरूशलम का घेराव करो! शहर को सज़ा देनी है, क्योंकि उसमें जुल्म ही जुल्म पाया जाता है। 7 जिस तरह कुँए से ताज़ा पानी निकलता रहता है उसी तरह यरूशलम की बदी भी ताज़ा ताज़ा उससे निकलती रहती है। जुल्मो-तशद्दुद की आवाज़ें उसमें गूँजती रहती हैं, उस की बीमार हालत और ज़ख़म लगातार मेरे सामने रहते हैं।

8 ऐ यरूशलम, मेरी तरबियत को क़बूल कर, वरना मैं तंग आकर तुझसे अपना मुँह फेर लूँगा, मैं तुझे तबाह कर दूँगा और तू ग़ैरआबाद हो जाएगी।”

9 रब्बूल-अफ़वाज़ फ़रमाता है, “जिस तरह अंगूर चुनने के बाद ग़रीब लोग तमाम बचा-खुचा फल तोड़ लेते हैं उसी तरह इसराईल का बचा-खुचा हिस्सा भी एहतियात से तोड़ लिया जाएगा। चुननेवाले की तरह दुबारा अपने हाथ को अंगूर की शाखों पर से गुज़रने दे।”

10 ऐ सब, मैं किससे बात करूँ, किस को आगाह करूँ? कौन सुनेगा? देख, उनके कान नामख़तून हैं, इसलिए वह सुन ही नहीं सकते। सब का कलाम उन्हें मज़हकाखेज़ लगता है, वह उन्हें नापसंद है। 11 इसलिए मैं सब के ग़ज़ब से भरा हुआ हूँ, मैं उसे बरदाश्त करते करते इतना थक गया हूँ कि उसे मज़ीद नहीं रोक सकता।

“उसे गलियों में खेलनेवाले बच्चों और जमाशुदा नौजवानों पर नाज़िल कर, क्योंकि सबको गिरफ़्तार किया जाएगा, खाह आदमी हो या औरत, बुज़ुर्ग हो या उम्रसीदा। 12 उनके घरों को खेतों और बग़ीचों समेत दूसरों के हवाले किया जाएगा, क्योंकि मैं अपना हाथ मुल्क के बाशिंदों के खिलाफ़ बढ़ाऊँगा।” यह सब का फ़रमान है। 13 “छोटे से लेकर बड़े तक सब ग़लत नफ़ा के पीछे पड़े हैं, नबी से लेकर इमाम तक सब धोकेबाज़ हैं। 14 वह मेरी कौम के ज़ख़म पर आरिज़ी मरहम-पट्टी लगाकर कहते हैं, अब सब कुछ ठीक हो गया है, अब सलामती का दौर आ गया है हालाँकि सलामती है ही नहीं। 15 ऐसा धिनौना रवैया उनके लिए शर्म का बाइस होना चाहिए, लेकिन वह शर्म नहीं करते बल्कि सरासर बेशर्म हैं। इसलिए जब सब कुछ गिर जाएगा तो यह लोग भी गिर जाएंगे। जब मैं इन पर सज़ा नाज़िल करूँगा तो यह ठोकर खाकर खाक में मिल जाएंगे।” यह सब का फ़रमान है।

सही रास्ते की तलाश में रहो

16 अब फ़रमाता है, “रास्तों के पास खड़े होकर उनका मुआयना करो! कदीम राहों की तफ़तीश करके पता करो कि उनमें से कौन-सी अच्छी है, फिर उस पर चलो। तब तुम्हारी जान को सुकून मिलेगा। लेकिन अफ़सोस, तुम इनकार करके कहते हो, नहीं, हम यह राह इख़्तियार नहीं करेंगे! 17 देखो, मैंने तुम पर पहेरेदार मुकर्रर किए और कहा, ‘जब नरसिंगा फूँका जाएगा तो ध्यान दो!’ लेकिन तुमने इनकार किया, ‘नहीं, हम तबज़ुह नहीं देंगे।’

18 चुनौचे ऐ क्रौमो, सुनो! ऐ जमात, जान ले कि उनके साथ क्या कुछ किया जाएगा। 19 ऐ जमीन, ध्यान दे कि मैं इस क्रौम पर क्या आफत नाज़िल करूँगा। और यह उनके अपने मनसूबों का फल होगा, क्योंकि उन्होंने मेरी बातों पर तवज्जुह न दी बल्कि मेरी शरीअत को रद्द कर दिया। 20 मुझे सब के बखूर या दूर-दराज़ ममालिक के क्रीमती मसालों की क्या परवा! तुम्हारी भस्म होनेवाली कुरबानियाँ मुझे पसंद नहीं, तुम्हारी ज़बह की कुरबानियों से मैं लुत्फ़अंदोज़ नहीं होता।” 21 रब फ़रमाता है, “मैं इस क्रौम के रास्ते में ऐसी स्कावटें खड़ी कर दूँगा जिनसे बाप और बेटा ठोकर खाकर गिर जाएंगे। पड़ोसी और दोस्त मिलकर हलाक हो जाएंगे।”

शिमाल से दुश्मन का हमला

22 रब फ़रमाता है, “शिमाली मुल्क से फ़ौज आ रही है, दुनिया की इंतहा से एक अज़ीम क्रौम को जगाया जा रहा है। 23 उसके ज़ालिम और बेरहम फ़ौजी कमान और शमशेर से लैस हैं। सुनो उनका शोर! सुतलातिम समुंदर की-सी आवाज़ सुनाई दे रही है। ऐ सिय्यून बेटी, वह घोड़ों पर सफ़आरा होकर तुझ पर हमला करने आ रहे हैं।”

24 उनके बारे में इतला पाकर हमारे हाथ हिम्मत हार गए हैं। हम पर खौफ़ तारी हो गया है, हमें दर्दे-ज़ह में मुब्तला औरत का-सा दर्द हो रहा है। 25 शहर से निकलकर खेत में या सड़क पर मत चलना, क्योंकि वहाँ दुश्मन तलवार थामे खड़ा है, चारों तरफ़ दहशत ही दहशत फैल गई है।

26 ऐ मेरी क्रौम, टाट का लिबास पहनकर राख में लोट-पोट हो जा। यों मातम कर जिस तरह इकलौता बेटा मर गया हो। जोर से वावैला कर, क्योंकि अचानक ही हलाकू हम पर छापा मारेगा।

यर्मियाह क्रौम को आजमाता है

27 रब मुझसे हमकलाम हुआ, “मैंने तुझे धातों को जाँचने की ज़िम्मादारी दी है, और मेरी क्रौम वह धात है जिसका चाल-चलन तुझे मालूम करके परखना है।” 28 ऐ रब, यह तमाम लोग बदतरीन किस्म के सरकश हैं। तोहमत लगाना इनकी रोज़ी बन गया है। यह पीतल और लोहा ही हैं, सबके सब तबाही का बाइस हैं। 29 धौकनी ख़ूब हवा दे रही है ताकि सीसा आग में पिघलकर चाँदी से अलग हो जाए। लेकिन अफ़सोस, सारी मेहनत रायगों है। सीसा यानी बेदीनों को अलग नहीं किया जा सकता, ख़ालिस चाँदी बाक़ी नहीं रहती। 30 चुनौचे उन्हें ‘रड़ी चाँदी’ करार दिया जाता है, क्योंकि रब ने उन्हें रद्द कर दिया है।

7

रब के घर के बारे में पैग़ाम

1 रब यर्मियाह से हमकलाम हुआ, 2 “रब के घर के सहन के दरवाज़े पर खड़ा होकर एलान कर कि ऐ यहूदाह के तमाम बाशिंदो, रब का कलाम सुनो! जितने भी रब की परस्तिश करने के लिए इन दरवाज़ों में दाख़िल होते हैं वह सब तवज्जुह दें! 3 रब्बुल-अफ़वाज़ जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है कि अपनी ज़िंदगी और चाल-चलन दुस्त करो तो मैं आइंदा भी तुम्हें इस मक़ाम पर बसने दूँगा। 4 उनके फ़रेबदेह अलफ़ाज़ पर एतमाद मत करो जो कहते हैं, ‘यहाँ हम महफूज़ हैं क्योंकि यह रब का घर, रब का घर, रब का घर है।’ 5 सुनो, शर्त तो यह है कि तुम अपनी ज़िंदगी और चाल-चलन दुस्त करो और एक दूसरे के साथ इनसाफ़ का सुलूक करो, 6 कि तुम परदेसी, यतीम और बेवा पर जुल्म न करो, इस जगह बेकुसूर का ख़ून न बहाओ और अजनबी माबूदों के पीछे लगकर अपने आपको नुक़सान न पहुँचाओ। 7 अगर तुम ऐसा करो तो मैं आइंदा भी तुम्हें इस जगह बसने दूँगा, उस मुल्क में जो मैंने तुम्हारे बापदादा को हमेशा के लिए बरख़्श दिया था।

8 लेकिन अफ़सोस, तुम फ़रेबदेह अलफ़ाज़ पर भरोसा रखते हो जो फ़ज़ूल ही हैं। 9 तुम चोर, क्रातिल और ज़िनाकार हो। नीज़ तुम झूठी क़सम खाते, बाल देवता के हुज़ूर बख़र जलाते और अजनबी माबूदों के पीछे लग जाते हो, ऐसे देवताओं के पीछे जिनसे तुम पहले वाकिफ़ नहीं थे। 10 लेकिन साथ साथ तुम यहाँ मेरे हुज़ूर भी आते हो। जिस मक़ान पर मेरे ही नाम का ठप्पा लगा है उसी में तुम खड़े होकर कहते हो, ‘हम महफूज़ हैं।’ तुम रब के घर में इबादत करने के साथ साथ किस तरह यह तमाम धिनौनी हरकतें जारी रख सकते हो?”

11 रब फ़रमाता है, “क्या तुम्हारे नज़दीक यह मक़ान जिस पर मेरे ही नाम का ठप्पा लगा है डाकुओं का अड्डा बन गया है? ख़बरदार! यह सब कुछ मुझे भी नज़र आता है। 12 सैला शहर का चक्कर लगाओ जहाँ मैंने पहले अपना नाम बसाया था। मालूम करो कि मैंने अपनी क्रौम इसराईल की बेदीनी के सबब से उस शहर के साथ क्या किया।” 13 रब फ़रमाता है, “तुम यह शरीर हरकतें करते रहे, और मैं बार बार तुमसे हमकलाम होता रहा, लेकिन तुमने मेरी न सुनी। मैं तुम्हें बुलाता रहा, लेकिन तुम जवाब देने के लिए तैयार न हुए। 14 इसलिए अब मैं इस घर के साथ वह कुछ करूँगा जो मैंने सैला के साथ किया था, गो इस पर मेरे ही नाम का ठप्पा लगा है, यह वह मक़ान है जिस पर तुम एतमाद रखते हो और जिसे मैंने तुम्हें और तुम्हारे बापदादा को अता किया था। 15 मैं तुम्हें अपने हुज़ूर से निकाल दूँगा, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह मैंने तुम्हारे तमाम भाइयों यानी इसराईल * की औलाद को निकाल दिया था।

लोगों की नाफ़रमानी

* 7:15 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : इफ़राईम।

16 ऐ यरमियाह, इस कौम के लिए दुआ मत कर। इसके लिए न इल्लिजा कर, न मिन्नत। इन लोगों की खातिर मुझे तंग न कर, क्योंकि मैं तेरी नहीं सुनूँगा। 17 क्या तुझे वह कुछ नज़र नहीं आ रहा जो यह यहदाह के शहरों और यरूशलम की गलियों में कर रहे हैं? 18 और सब इसमें मुलव्वस हैं। बच्चे लकड़ी चुनकर ढेर बनाते हैं, फिर बाप उसे आग लगाते हैं जबकि औरतें आटा गूँध गूँधकर आग पर आसमान की मलिका नामी देवी के लिए टिककियों पकाती हैं। मुझे तंग करने के लिए वह अजनबी माबूदों को मैं की नज़रें भी पेश करते हैं।

19 लेकिन हकीकत में यह मुझे उतना तंग नहीं कर रहे जितना अपने आपको। ऐसी हरकतों से वह अपनी ही स्सवाई कर रहे हैं।” 20 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है, “मेरा कहर और गज़ब इस मकाम पर, इनसानो-हैवान पर, खुले मैदान के दरख्तों पर और ज़मीन की पैदावार पर नाज़िल होगा। सब कुछ नज़रे-आतिश हो जाएगा, और कोई उसे बुझा नहीं सकेगा।”

21 रब्बुल-अफवाज जो इसराईल का खुदा है फरमाता है, “भस्म होनेवाली कुरबानियों को मुझे पेश न करो, बल्कि उनका गोशत दीगर कुरबानियों समेत खुद खा लो। 22 क्योंकि जिस दिन मैं तुम्हारे बापदादा को मिसर से निकाल लाया उस दिन मैंने उन्हें भस्म होनेवाली कुरबानियाँ और दीगर कुरबानियाँ चढ़ाने का हुक्म न दिया। 23 मैंने उन्हें सिर्फ यह हुक्म दिया कि मेरी सुनो! तब ही मैं तुम्हारा खुदा हूँगा और तुम मेरी कौम होगे। पूरे तौर पर उस राह पर चलते रहो जो मैं तुम्हें दिखाता हूँ। तब ही तुम्हारी खैर होगी। 24 लेकिन उन्होंने मेरी न सुनी, न ध्यान दिया बल्कि अपने शरीर दिल की ज़िद के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारने लगे। उन्होंने मेरी तरफ़ रूजू न किया बल्कि अपना मुँह मुझसे फेर लिया। 25 जब से तुम्हारे बापदादा मिसर से निकल आए आज तक मैं रोज़ बरोज़ और बार बार अपने खादिमों यानी नबियों को तुम्हारे पास भेजता रहा। 26 तो भी उन्होंने न मेरी सुनी, न तवज्जुह दी। वह बज़िद रहे बल्कि अपने बापदादा की निसबत ज़्यादा बुरे थे।

27 ऐ यरमियाह, तू उन्हें यह तमाम बातें बताएगा, लेकिन वह तेरी नहीं सुनेंगे। तू उन्हें बुलाएगा, लेकिन वह जवाब नहीं देंगे। 28 तब तू उन्हें बताएगा, ‘इस कौम ने न रब अपने खुदा की आवाज़ सुनी, न उस की तरबियत कबूल की। दियानतदारी खत्म होकर उनके मुँह से मिट गई है।’

वादीए-बिन-हिन्नूम में काबिले-धिन स्सूम

29 अपने बालों को काटकर फेंक दे! जा, बंजर टीलों पर मातम का गीत गा, क्योंकि यह नसल रब के गज़ब का निशाना बन गई है, और उसने इसे रद्द करके छोड़ दिया है।”

30 क्योंकि रब फरमाता है, “जो कुछ यहदाह के बाशिंदों ने किया वह मुझे बहुत बुरा लगता है। उन्होंने अपने धिनौने बुतों को मेरे नाम के लिए मखसूस घर में रखकर उस की बेहुरमती की है। 31 साथ साथ उन्होंने वादीए-बिन-हिन्नूम में वाके तूफ़त की ऊँची जगहें तामीर की ताकि अपने बेटे-बेटियों को जलाकर कुरबान करें। मैंने कभी भी ऐसी रस्म अदा करने का हुक्म नहीं दिया बल्कि इसका खयाल मेरे ज़हन में आया तक नहीं।

32 चुनौचे रब का कलाम सुनो! वह दिन आनेवाले हैं जब यह मकाम ‘तूफ़त’ या ‘वादीए-बिन-हिन्नूम’ नहीं कहलाएगा बल्कि ‘कत्लो-गारत की वादी।’ उस वक़्त लोग तूफ़त में इतनी लाशें दफनाएँगे कि आखिरकार खाली जगह नहीं रहेगी। 33 तब इस कौम की लाशें परिदों और जंगली जानवरों की खुराक बन जाएगी, और कोई नहीं होगा जो उन्हें भगा दे। 34 मैं यहदाह के शहरों और यरूशलम की गलियों में खुशीओ-शादमानी की आवाज़ें खत्म कर दूँगा, दूल्हा दुलहन की आवाज़ें बंद हो जाएँगी। क्योंकि मुल्क वीरानो-सुनसान हो जाएगा।”

8

1 रब फरमाता है, “उस वक़्त दुश्मन कब्रों को खोलकर यहदाह के बादशाहों, अफसरों, इमामों, नबियों और यरूशलम के आम बाशिंदों की हड्डियों को निकालेगा 2 और ज़मीन पर बिखेर देगा। वहाँ वह उनके सामने पड़ी रहेंगी जो उन्हें प्यारे थे यानी सूरज, चाँद और सितारों के तमाम लश्कर के सामने। क्योंकि वह उन्हीं की खिदमत करते, उन्हीं के पीछे चलते, उन्हीं के तालिब रहते, और उन्हीं को सिजदा करते थे। उनकी हड्डियाँ दुबारा न इकट्ठी की जाएँगी, न दफ़न की जाएँगी बल्कि खेत में गोबर की तरह बिखरी पड़ी रहेंगी। 3 और जहाँ भी मैं इस शरीर कौम के बचे हुआँ को मुंतिशर करूँगा वहाँ वह सब कहेंगे कि काश हम भी ज़िंदा न रहें बल्कि मर जाएँ।” यह रब्बुल-अफवाज का फरमान है।

कौम तबाहकुन राह से हटने के लिए तैयार नहीं

4 “उन्हें बता, रब फरमाता है कि जब कोई गिर जाता है तो क्या दुबारा उठने की कोशिश नहीं करता? ज़रूर। और जब कोई सहीह रास्ते से दूर हो जाता है तो क्या वह दुबारा वापस आ जाने की कोशिश नहीं करता? बेशक। 5 तो फिर यरूशलम के यह लोग सहीह राह से बार बार क्यों भटक जाते हैं? यह फरेब के साथ लिपटे रहते और वापस आने से इनकार ही करते हैं। 6 मैंने ध्यान देकर देखा है कि यह झूट ही बोलते हैं। कोई भी पछताकर नहीं कहता, ‘यह कैसा ग़लत काम है जो मैंने किया!’ जिस तरह जंग में घोड़े दुश्मन पर टूट पड़ते हैं उसी तरह हर एक सीधा अपनी ग़लत राह पर दौड़ता रहता है। 7 फ़िज़ा में उड़नेवाले लकलक पर गौर करो जिसे आने जाने के मुक़ररा औकात खूब मालूम होते हैं। फ़ाख़्ता, अबाबील और बुलबुल पर भी ध्यान दो जो सर्दियों के मौसम में कहीं और होते हैं, गरमियों के मौसम में कहीं और। वह मुक़ररा औकात से कभी नहीं हटते। लेकिन अफ़सोस, मेरी कौम रब की शरीअत नहीं जानती।

8 तुम किस तरह कह सकते हो, ‘हम दानिशमंद हैं, क्योंकि हमारे पास रब की शरीअत है’? हकीकत में कातिबों के फ़रेबदेह कलम ने इसे तोड़-मरोड़कर बयान किया है। 9 सुनो, दानिशमंदों की स्सवाई हो जाएगी, वह दहशतज़दा होकर पकड़े जाएँगे। देखो, रब का कलाम रद्द करने के बाद उनकी अपनी हिकमत कहाँ रही?

10 इसलिए मैं उनकी बीवियों को परदेसियों के हवाले कर दूँगा और उनके खेतों को ऐसे लोगों के सुपुर्द जो उन्हें निकाल देंगे। क्योंकि छोटे से लेकर बड़े तक सबके सब नाजायज़ नफ़ा के पीछे पड़े हैं, नबियों से लेकर इमामों तक सब धोकेबाज़ हैं। 11 वह मेरी क़ौम के ज़ख़म पर आरिज़ी मरहम-पट्टी लगाकर कहते हैं, ‘अब सब कुछ ठीक हो गया है, अब सलामती का दौर आ गया है’ हालाँकि सलामती है ही नहीं।

12 गो ऐसा धिनौना रवैया उनके लिए शर्म का बाइस होना चाहिए, लेकिन वह शर्म नहीं करते बल्कि सरासर बेशर्म हैं। इसलिए जब सब कुछ गिर जाएगा तो यह लोग भी गिर जाएंगे। जब मैं इन पर सज़ा नाज़िल करूँगा तो यह ठोकर खाकर खाक में मिल जाएंगे।” यह रब का फ़रमान है।

13 रब फ़रमाता है, “मैं उनकी पूरी फ़सल छीन लूँगा। अंगूर की बेल पर एक दाना भी नहीं रहेगा, अंजीर के तमाम दरख़्त फल से महसूम हो जाएंगे बल्कि तमाम पत्ते भी झड़ जाएंगे। जो कुछ भी मैंने उन्हें अता किया था वह उनसे छीन लिया जाएगा।

14 तब तुम कहोगे, ‘हम यहाँ क्यों बैठे रहें? आओ, हम क़िलाबंद शहरों में पनाह लेकर वहीं हलाक हो जाएँ। हमने रब अपने खुदा का गुनाह किया है, और अब हम इसका नतीजा भुगत रहे हैं। क्योंकि उसी ने हमें हलाकत के हवाले करके हमें ज़हरीला पानी पिला दिया है। 15 हम सलामती के इंतज़ार में रहे, लेकिन हालात ठीक न हुए। हम शफ़ा पाने की उम्मीद रखते थे, लेकिन इसके बजाए हम पर दहशत छा गई। 16 सुनो! दुश्मन के घोड़े नथने फुला रहे हैं। दान से उनका शोर हम तक पहुँच रहा है। उनके हिनहिनाने से पूरा मुल्क थरथरा रहा है, क्योंकि आते वक़्त यह पूरे मुल्क को उसके शहरों और बाशिंदों समेत हड़प कर लेंगे।”

अपनी क़ौम पर यर्मियाह का नोहा

17 रब फ़रमाता है, “मैं तुम्हारे खिलाफ़ अफ़ई भेज दूँगा, ऐसे ज़हरीले साँप जिनके खिलाफ़ हर जादूमंत्र बेअसर रहेगा। यह तुम्हें काटेगा।” 18 लाइलाज ग़म मुझ पर हावी हो गया, मेरा दिल निढाल हो गया है। 19 सुनो! मेरी क़ौम दूर-दराज़ मुल्क से चीख़ चीख़कर मदद के लिए आवाज़ दे रही है। लोग पूछते हैं, “क्या रब सिय्यून में नहीं है, क्या यरूशलम का बादशाह अब से वहाँ सुकूनत नहीं करता?” “सुनो, उन्होंने अपने मुजस्समों और बेकार अजनबी बुतों की पूजा करके मुझे क्यों तैश दिलाया?”

20 लोग आहें भर भरकर कहते हैं, “फ़सल कट गई है, फल चुना गया है, लेकिन अब तक हमें नजात हासिल नहीं हुई।”

21 मेरी क़ौम की मुकम्मल तबाही देखकर मेरा दिल टूट गया है। मैं मातम कर रहा हूँ, क्योंकि उस की हालत इतनी बुरी है कि मेरे रोंगटे खड़े हो गए हैं। 22 क्या जिलियाद में मरहम नहीं? क्या वहाँ डाक्टर नहीं मिलता? मुझे बताओ, मेरी क़ौम का ज़ख़म क्यों नहीं भरता?

9

1 काश मेरा सर पानी का मंबा और मेरी आँखें आँसुओं का चश्मा हों ताकि मैं दिन-रात अपनी क़ौम के मकतूलों पर आहो-ज़ारी कर सकूँ।

धोकेबाज़ों की क़ौम

2 काश रेगिस्तान में कहीं मुसाफ़िरों के लिए सराय हो ताकि मैं अपनी क़ौम को छोड़कर वहाँ चला जाऊँ। क्योंकि सब ज़िनाकार, सब ग़द़ारों का जत्था है।

3 रब फ़रमाता है, “वह अपनी ज़बान से झूट के तीर चलाते हैं, और मुल्क में उनकी ताक़त दियानतदारी पर मबनी नहीं होती। नीज़, वह बदतर होते जा रहे हैं। मुझे तो वह जानते ही नहीं। 4 हर एक अपने पड़ोसी से ख़बरदार रहे, और अपने किसी भी भाई पर भरोसा मत रखना। क्योंकि हर भाई चालाकी करने में माहिर है, और हर पड़ोसी तोहमत लगाने पर तुला रहता है। 5 हर एक अपने पड़ोसी को धोका देता है, कोई भी सच नहीं बोलता। उन्होंने अपनी ज़बान को झूट बोलना सिखाया है, और अब वह ग़लत काम करते करते थक गए हैं। 6 ऐ यर्मियाह, तू फ़रेब से घिरा रहता है, और यह लोग फ़रेब के बाइस ही मुझे जानने से इनकार करते हैं।”

7 इसलिए रब्बूल-अफ़वाज़ फ़रमाता है, “देखो, मैं उन्हें ख़ाम चाँदी की तरह पिघलाकर आज़माऊँगा, क्योंकि मैं अपनी क़ौम, अपनी बेटी के साथ और क्या कर सकता हूँ? 8 उनकी ज़बानें मोहलक तीर हैं। उनके मुँह पड़ोसी से सुलह-सलामती की बातें करते हैं जबकि अंदर ही अंदर वह उस की ताक में बैठे हैं।” 9 रब फ़रमाता है, “क्या मुझे उन्हें इसकी सज़ा नहीं देनी चाहिए? क्या मुझे ऐसी क़ौम से बदला नहीं लेना चाहिए?”

नोहा करो!

10 मैं पहाड़ों के बारे में आहो-ज़ारी करूँगा, बयाबान की चरागाहों पर मातम का गीत गाऊँगा। क्योंकि वह यों तबाह हो गए हैं कि न कोई उनमें से गुज़रता, न रेवड़ों की आवाज़ें उनमें सुनाई देती हैं। परिदे और जानवर सब भागकर चले गए हैं। 11 “यरूशलम को मैं मलबे का ढेर बना दूँगा, और आइंदा गीदड़ उसमें जा बसेंगे। यहूदाह के शहरों को मैं वीरानो-सुनसान कर दूँगा। एक भी उनमें नहीं बसेगा।”

12 कौन इतना दानिशमंद है कि यह समझ सके? किस को रब से इतनी हिदायत मिली है कि वह बयान कर सके कि मुल्क क्यों बरबाद हो गया है? वह क्यों रेगिस्तान जैसा बन गया है, इतना वीरान कि उसमें से कोई नहीं गुज़रता?

13 रब ने फ़रमाया, “वजह यह है कि उन्होंने मेरी शरीअत को तर्क किया, वह हिदायत जो मैंने खुद उन्हें दी थी। न उन्होंने मेरी सुनी, न मेरी शरीअत की पैरवी की। 14 इसके बजाए वह अपने ज़िद्दी दिलों की पैरवी करके बाल देवताओं के पीछे लग गए हैं। उन्होंने वही कुछ किया जो उनके बापदादा ने उन्हें सिखाया था।”

15 इसलिए रब्बुल-अफवाज जो इसराईल का खुदा है फरमाता है, “देखो, मैं इस कौम को कड़वा खाना खिलाकर जहरीला पानी पिला दूँगा। 16 मैं उन्हें ऐसी कौमों में मुंतशिर कर दूँगा जिनसे न वह और न उनके बापदादा वाकिफ थे। मेरी तलवार उस वक़्त तक उनके पीछे पड़ी रहेगी जब तक हलाक न हो जाएँ।” 17 रब्बुल-अफवाज फरमाता है, “ध्यान देकर गिर्या करनेवाली औरतों को बुलाओ। जो जनाज़ों पर वावैला करती हैं उनमें से सबसे माहिर औरतों को बुलाओ।

18 वह जल्द आकर हम पर आहो-जारी करें ताकि हमारी आँखों से आँसू बह निकलें, हमारी पलकों से पानी खूब टपकने लगे।

19 क्योंकि सियून से गिर्या की आवाज़ें बुलंद हो रही हैं, ‘हाय, हमारे साथ कैसी ज़्यादाती हुई है, हमारी कैसी स्सवाई हुई है! हम मुल्क को छोड़ने पर मजबूर हैं, क्योंकि दुश्मन ने हमारे घरों को ढा दिया है।’

20 ऐ औरतो, रब का पैगाम सुनो। अपने कानों को उस की हर बात पर धरो! अपनी बेटियों को नोहा करने की तालीम दो, एक दूसरी को मातम का यह गीत सिखाओ,

21 “मौत फलॉगकर हमारी खिड़कियों में से घुस आई और हमारे किलों में दाखिल हुई है। अब वह बच्चों को गलियों में से और नौजवानों को चौकों में से मिटा डालने जा रही है।”

22 रब फरमाता है, “नाशें खेतों में गोबर की तरह इधर उधर बिखरी पड़ी रहेंगी। जिस तरह कटा हुआ गंदुम फसल काटनेवाले के पीछे इधर उधर पड़ा रहता है उसी तरह लाशें इधर उधर पड़ी रहेंगी। लेकिन उन्हें इकट्ठा करनेवाला कोई नहीं होगा।”

23 रब फरमाता है, “न दानिशमंद अपनी हिकमत पर फखर करे, न जोरावर अपने जोर पर या अमीर अपनी दौलत पर। 24 फखर करनेवाला फखर करे कि उसे समझ हासिल है, कि वह रब को जानता है और कि मैं रब हूँ जो दुनिया में मेहरबानी, इनसाफ और रास्ती को अमल में लाता हूँ। क्योंकि यही चीज़ें मुझे पसंद हैं।”

25 रब फरमाता है, “ऐसा वक़्त आ रहा है जब मैं उन सबको सज़ा दूँगा जिनका सिर्फ़ जिस्मानी ख़तना हुआ है। 26 इनमें मिसर, यहूदाह, अदोम, अम्मोन, मोआब और वह शामिल हैं जो रेगिस्तान के किनारे किनारे रहते हैं। क्योंकि गो यह तमाम अक्रवाम ज़ाहिरी तौर पर ख़तना की रस्म अदा करती हैं, लेकिन उनका ख़तना बातिनी तौर पर नहीं हुआ। ध्यान दो कि इसराईल की भी यही हालत है।”

10

बुत बेफ़ायदा हैं

1 ऐ इसराईल के घराने, रब का पैगाम सुन! 2 रब फरमाता है, “दीगर अक्रवाम की बुतपरस्ती मत अपनाना। यह लोग इल्मे-नुज़ूम से मुस्तक़बिल जान लेने की कोशिश करते करते परेशान हो जाते हैं, लेकिन तुम उनकी बातों से परेशान न हो जाओ। 3 क्योंकि दीगर कौमों के रस्मो-रिवाज फ़ज़ूल ही हैं। जंगल में दरख़्त कट जाता है, फिर कारीगर उसे अपने औज़ार से तश्कील देता है। 4 लोग उसे अपनी सोना-चाँदी से सजाकर कीलों से कहीं लगा देते हैं ताकि हिले न। 5 बुत उन पुतलों की मानिंद हैं जो ख़ीरे के खेत में खड़े किए जाते हैं ताकि परिदों को भगा दें। न वह बोल सकते, न चल सकते हैं, इसलिए लोग उन्हें उठाकर अपने साथ ले जाते हैं। उनसे मत डरना, क्योंकि न वह नुक़सान का बाइस हैं, न भलाई का।”

6 ऐ रब, तुझ जैसा कोई नहीं है, तू अज़ीम है, तेरे नाम की अज़मत जोरदार तरीक़े से ज़ाहिर हुई है। 7 ऐ अक्रवाम के बादशाह, कौन तेरा ख़ौफ़ नहीं मानेगा? क्योंकि तू इस लायक है। अक्रवाम के तमाम दानिशमंदों और उनके तमाम ममालिक में तुझ जैसा कोई नहीं है। 8 सब अहमक और बेवुकूफ़ साबित हुए हैं, क्योंकि उनकी तरबियत लकड़ी के बेकार बुतों से हासिल हुई है। 9 तरसीस से चाँदी की चादरें और ऊफ़ाज़ से सोना लाया जाता है। उनसे कारीगर और सुनार बुत बना देते हैं जिसे किरमिज़ी और अरगवानी रंग के कपड़े पहनाए जाते हैं। सब कुछ माहिर उस्तादों के हाथ से बनाया जाता है।

10 लेकिन रब ही हक़ीकी खुदा है। वही ज़िंदा खुदा और अबदी बादशाह है। जब वह नाराज़ हो जाता है तो ज़मीन लरज़ने लगती है। अक्रवाम उसका कहर बरदाश्त नहीं कर सकती।

11 बुतपरस्तों को बताओ कि देवताओं ने न आसमान को बनाया और न ज़मीन को, उनका नामो-निशान तो आसमानो-ज़मीन से मिट जाएगा। 12 देखो, अल्लाह ही ने अपनी कुदरत से ज़मीन को खलक किया, उसी ने अपनी हिकमत से दुनिया की बुनियाद रखी, और उसी ने अपनी समझ के मुताबिक आसमान को ख़ैमे की तरह तान लिया। 13 उसके हुक्म पर आसमान पर पानी के ज़ख़ीरे गरजने लगते हैं। वह दुनिया की इंतहा से बादल चढ़ने देता, बारिश के साथ बिजली कड़कने देता और अपने गोदामों से हवा निकलने देता है।

14 तमाम इनसान अहमक और समझ से ख़ाली हैं। हर सुनार अपने बुतों के बाइस शर्मिंदा हुआ है। उसके बुत धोका ही है, उनमें दम नहीं। 15 वह फ़ज़ूल और मज़हकाखेज़ हैं। अदालत के वक़्त वह नेस्त हो जाएंगे। 16 अल्लाह जो याकूब का मौरूसी हिस्सा है इनकी मानिंद नहीं है। वह सबका ख़ालिक है, और इसराईली कौम उसका मौरूसी हिस्सा है। रब्बुल-अफवाज ही उसका नाम है।

आनेवाली ज़िलावतनी

17 ऐ मुहासराशुदा शहर, अपना सामान समेटकर मुल्क से निकलने की तैयारियाँ कर ले। 18 क्योंकि रब फरमाता है, “इस बार मैं मुल्क के बाशिंदों को बाहर फेंक दूँगा। मैं उन्हें तंग करूँगा ताकि उन्हें पकड़ा जाए।”

19 हाय, मेरा बेड़ा गरक हो गया है! हाय, मेरा ज़खम भर नहीं सकता। पहले मैंने सोचा कि यह ऐसी बीमारी है जिसे मुझे बरदाश्त ही करना है। 20 लेकिन अब मेरा खैमा तबाह हो गया है, उसके तमाम रस्से टूट गए हैं। मेरे बेटे मेरे पास से चले गए हैं, एक भी नहीं रहा। कोई नहीं है जो मेरा खैमा दुबारा लगाए, जो उसके परदे नए सिरे से लटकाए। 21 क्योंकि कौम के गल्लाबान अहमक हो गए हैं, उन्होंने रब को तलाश नहीं किया। इसलिए वह कामयाब नहीं रहे, और उनका पूरा रेवड़ तितर-बितर हो गया है।

22 सुनो! एक खबर पहुँच रही है, शिमाली मुल्क से शोरो-गौगा सुनाई दे रहा है। यहदाह के शहर उस की ज़द में आकर बरबाद हो जाएंगे। आइंदा गीदड़ ही उनमें बसेंगे।

23 ऐ रब, मैंने जान लिया है कि इनसान की राह उसके अपने हाथ में नहीं होती। अपनी मरज़ी से न वह चलता, न कदम उठाता है। 24 ऐ रब, मेरी तंबीह कर, लेकिन मुनासिब हद तक। तैश में आकर मेरी तंबीह न कर, वरना मैं भस्म हो जाऊँगा। 25 अपना गज़ब उन अक़वाम पर नाज़िल कर जो तुझे नहीं जानतीं, उन उम्मतों पर जो तेरा नाम लेकर तुझे नहीं पुकारतीं। क्योंकि उन्होंने याकूब को हड़प कर लिया है। उन्होंने उसे मुकम्मल तौर पर निगलकर उस की चरागाह को तबाह कर दिया है।

11

कौम की अहदशिकनी

1 रब यरमियाह से हमकलाम हुआ, 2 “यस्शलम और यहदाह के बाशिंदों से कह कि उस अहद की शरायत पर ध्यान दो जो मैंने तुम्हारे साथ बाँधा था। 3 रब जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है कि उस पर लानत जो उस अहद की शरायत पूरी न करे 4 जो मैंने तुम्हारे बापदादा से बाँधा था जब उन्हें मिसर से निकाल लाया, उस मक़ाम से जो लोहा पिघलानेवाली भट्ठी की मानिंद था। उस वक़्त मैं बोला, ‘मेरी सुनो और मेरे हर हुक्म पर अमल करो तो तुम मेरी कौम होगे और मैं तुम्हारा खुदा हूँगा। 5 फिर मैं वह वादा पूरा करूँगा जो मैंने क़सम खाकर तुम्हारे बापदादा से किया था, मैं तुम्हें वह मुल्क दूँगा जिसमें दूध और शहद की कसरत है।’ आज तुम उसी मुल्क में रह रहे हो।”

मैं, यरमियाह ने जवाब दिया, “ऐ रब, आमीन, ऐसा ही हो!”

6 तब रब ने मुझे हुक्म दिया कि यहदाह के शहरों और यस्शलम की गलियों में फिरकर यह तमाम बातें सुना दे। एलान कर, “अहद की शरायत पर ध्यान देकर उन पर अमल करो। 7 तुम्हारे बापदादा को मिसर से निकालते वक़्त मैंने उन्हें आगाह किया कि मेरी सुनो। आज तक मैं बार बार यही बात दोहराता रहा, 8 लेकिन उन्होंने न मेरी सुनी, न ध्यान दिया बल्कि हर एक अपने शरीर दिल की ज़िद के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारता रहा। अहद की जिन बातों पर मैंने उन्हें अमल करने का हुक्म दिया था उन पर उन्होंने अमल न किया। नतीजे में मैं उन पर वह तमाम लानतें लाया जो अहद में बयान की गई हैं।”

9 रब मज़ीद मुझसे हमकलाम हुआ, “यहदाह और यस्शलम के बाशिंदों ने मेरे खिलाफ़ साज़िश की है। 10 उनसे वही गुनाह सरज़द हुए हैं जो उनके बापदादा ने किए थे। क्योंकि यह भी मेरी बातें सुनने के लिए तैयार नहीं हैं, यह भी अजनबी माबूदों के पीछे हो लिए हैं ताकि उनकी ख़िदमत करें। इसराईल और यहदाह ने मिलकर वह अहद तोड़ा है जो मैंने उनके बापदादा से बाँधा था।

11 इसलिए रब फ़रमाता है कि मैं उन पर ऐसी आफ़त नाज़िल करूँगा जिससे वह बच नहीं सकेंगे। तब वह मदद के लिए मुझसे फ़रियाद करेंगे, लेकिन मैं उनकी नहीं सुनूँगा। 12 फिर यहदाह और यस्शलम के बाशिंदे अपने शहरों से निकलकर चीखते-चिल्लाते उन देवताओं से मिन्नत करेंगे जिनके सामने बख़ूर जलाते रहे हैं। लेकिन अब जब वह मुसीबत में मुब्तला होंगे तो यह उन्हें नहीं बचाएँगे। 13 ऐ यहदाह, तेरे देवता तेरे शहरों जैसे बेशमार हो गए हैं। शर्मनाक देवता बाल के लिए बख़ूर जलाने की इतनी कुरबानगाहें खड़ी की गई हैं जितनी यस्शलम में गलियाँ होती हैं। 14 ऐ यरमियाह, इस कौम के लिए दुआ मत करना! इसके लिए न मिन्नत कर, न समाजत। क्योंकि जब आफ़त उन पर आएगी और वह चिल्लाकर मुझसे फ़रियाद करेंगे तो मैं उनकी नहीं सुनूँगा।

15 मेरी प्यारी कौम मेरे घर में क्यों हाज़िर होती है? वह तो अपनी बेशमार साज़िशों से बाज़ ही नहीं आती। क्या आनेवाली आफ़त कुरबानी का मुक़द्दस गोशत पेश करने से स्क़ जाएगी? अगर ऐसा होता तो तू खुशी मना सकती।

16 रब ने तेरा नाम ‘जैतून का फलता-फूलता दरख़्त जिसका ख़ूबसूरत फल है’ रखा, लेकिन अब वह ज़बरदस्त आँधी का शोर मचाकर दरख़्त को आग लगाएगा। तब उस की तमाम डालियाँ भस्म हो जाएँगी। 17 ऐ इसराईल और यहदाह, रब्बूल-अफ़वाज ने खुद तुम्हें ज़मीन में लगाया। लेकिन अब उसने तुम पर आफ़त लाने का फ़ैसला किया है। क्यों? तुम्हारे ग़लत काम की वजह से, और इसलिए कि तुमने बाल देवता को बख़ूर की कुरबानियाँ पेश करके मुझे तैश दिलाया है।”

यरमियाह के लिए जान का खतरा

18 रब ने मुझे इतला दी तो मुझे मालूम हुआ। हाँ, उस वक़्त तू ही ने मुझे उनके मनसूबों से आगाह किया। 19 पहले मैं उस भूले-भाले भेड़ के बच्चे की मानिंद था जिसे क़साई के पास लाया जा रहा हो। मुझे क्या पता था कि यह मेरे खिलाफ़ साज़िशें कर रहे हैं। आपस में वह कह रहे थे, “आओ, हम दरख़्त को फल समेत ख़त्म करें, आओ हम उसे ज़िंदों के मुल्क में से मिटाएँ ताकि उसका नामो-निशान तक याद न रहे।”

20 ऐ रब्बूल-अफ़वाज, तू आदिल मुंसिफ़ है जो लोगों के सबसे गहरे खयालात और राज़ जाँच लेता है। अब बख़्श दे कि मैं अपनी आँखों से वह इंतक़ाम देखूँ जो तू मेरे मुख़ालिफ़ों से लेगा। क्योंकि मैंने अपना मामला तेरे ही सुपुर्द कर दिया है।

21 रब फरमाता है, “अनतोत के आदमी तुझे कल्ल करना चाहते हैं। वह कहते हैं, ‘रब का नाम लेकर नबुव्वत मत करना, वरना तू हमारे हाथों मार दिया जाएगा’।” 22 चूँकि यह लोग ऐसी बातें करते हैं इसलिए रब्बुल-अफ़वाज फरमाता है, “मैं उन्हें सज़ा दूँगा! उनके जवान आदमी तलवार से और उनके बेटे-बेटियाँ काल से हलाक हो जाएंगे। 23 उनमें से एक भी नहीं बचेगा। क्योंकि जिस साल उनकी सज़ा नाज़िल होगी, उस वक़्त मैं अनतोत के आदमियों पर सख़्त आफ़त लाऊँगा।”

12

बेदीनों को इतनी कामयाबी क्यों हासिल होती है?

1 ऐ रब, तू हमेशा हक़ पर है, लिहाज़ा अदालत में तुझसे शिकायत करने का क्या फ़ायदा? ताहम मैं अपना मामला तुझे पेश करना चाहता हूँ। बेदीनों को इतनी कामयाबी क्यों हासिल होती है? ग़द्दर इतने सुकून से ज़िंदगी क्यों गुज़ारते हैं? 2 तूने उन्हें ज़मीन में लगा दिया, और अब वह जड़ पकड़कर ख़ूब उगने लगे बल्कि फल भी ला रहे हैं। गो तेरा नाम उनकी ज़बान पर रहता है, लेकिन उनका दिल तुझसे दूर है। 3 लेकिन ऐ रब, तू मुझे जानता है। तू मेरा मुलाहज़ा करके मेरे दिल को परखता रहता है। गुज़ारिश है कि तू उन्हें भेड़ों की तरह घसीटकर ज़बह करने के लिए ले जा। उन्हें कल्लो-ग़ारत के दिन के लिए मख़सूस कर!

4 मुल्क कब तक काल की गिरिफ़्त में रहेगा? खेतों में हरियाली कब तक मुरझाई हुई नज़र आएगी? बाशिंदों की बुराई के बाइस जानवर और परिदे गायब हो गए हैं। क्योंकि लोग कहते हैं, “अल्लाह को नहीं मालूम कि हमारे साथ क्या हो जाएगा।”

5 रब मुझसे हमकलाम हुआ, “पैदल चलनेवालों से दौड़ का मुकाबला करना तुझे थका देता है, तो फिर तू किस तरह घोड़ों का मुकाबला करेगा? तू अपने आपको सिर्फ़ वहाँ महफूज़ समझता है जहाँ चारों तरफ़ अमनो-अमान फैला हुआ है, तो फिर तू दरियाए-यरदन के गुंजान जंगल से किस तरह निपटेगा? 6 क्योंकि तेरे सगे भाई, हाँ तेरे बाप का घर भी तुझसे बेवफ़ा हो गया है। यह भी बुलंद आवाज़ से तेरे पीछे तुझे गालियाँ देते हैं। उन पर एतमाद मत करना, खाह वह तेरे साथ अच्छी बातें क्यों न करें।

अल्लाह अपने मुल्क पर मातम करता है

7 मैंने अपने घर इसराईल को तर्क कर दिया है। जो मेरी मौस्सी मिलकियत थी उसे मैंने रद्द किया है। मैंने अपने लख्ते-जिगर को उसके दुश्मनों के हवाले कर दिया है। 8 क्योंकि मेरी क़ौम जो मेरी मौस्सी मिलकियत है मेरे साथ बुरा सुलूक करती है। जंगल में शेरबबर की तरह वह मेरे खिलाफ़ दहाड़ती है, इसलिए मैं उससे नफ़रत करता हूँ। 9 अब मेरी मौस्सी मिलकियत उस रंगीन शिकारी परिदे की मानिंद है जिसे दीगर शिकारी परिदों ने घेर रखा है। जाओ, तमाम दरिदों को इक़ठा करो ताकि वह आकर उसे खा जाएँ। 10 मुतअद्दिद गल्लाबानों ने मेरे अंगूर के बाग़ को ख़राब कर दिया है। मेरे प्यारे खेत को उन्होंने पाँवों तले रौंदकर रेगिस्तान में बदल दिया है। 11 अब वह बंजर ज़मीन बनकर उजाड़ हालत में मेरे सामने मातम करता है। पूरा मुल्क वीरानो-सुनसान है, लेकिन कोई परवा नहीं करता।

12 तबाहकुन फ़ौजी बयाबान की बंजर बुलंदियों पर से उतरकर करीब पहुँच रहे हैं। क्योंकि रब की तलवार मुल्क के एक सिरे से दूसरे सिरे तक सब कुछ खा जाएगी। कोई भी नहीं बचेगा।

13 इस क़ौम ने गंदम का बीज बोया, लेकिन काँटों की फ़सल पक गई। ख़ूब मेहनत-मशक्कत करने के बावजूद भी कुछ हासिल न हुआ, क्योंकि रब का सख़्त ग़ज़ब क़ौम पर नाज़िल हो रहा है। चुनौचे अब स्सवाई की फ़सल काटो!”

अल्लाह का पड़ोसी ममालिक के लिए पैग़ाम

14 रब फरमाता है, “मैं उन तमाम शरीर पड़ोसी ममालिक को जड़ से उखाड़ दूँगा जो मेरी क़ौम इसराईल की मिलकियत को छीनने की कोशिश कर रहे हैं, वह मिलकियत जो मैंने ख़ुद उन्हें मीरास में दी थी। साथ साथ मैं यहदाह को भी जड़ से उनके दरमियान से निकाल दूँगा। 15 लेकिन बाद में मैं उन पर तरस खाकर हर एक को फिर उस की अपनी मौस्सी ज़मीन और अपने मुल्क में पहुँचा दूँगा। 16 पहले उन दीगर क़ौमों ने मेरी क़ौम को बाल देवता की क़सम खाने का तर्ज़ सिखाया। लेकिन अब अगर वह मेरी क़ौम की राहें अच्छी तरह सीखकर मेरे ही नाम और मेरी ही हयात की क़सम खाएँ तो मेरी क़ौम के दरमियान रहकर अज़ सरे-नौ कायम हो जाएँगी। 17 लेकिन जो क़ौम मेरी नहीं सुनेगी उसे मैं हतमी तौर पर जड़ से उखाड़कर नेस्त कर दूँगा।” यह रब का फ़रमान है।

13

गली सड़ी लँगोटी

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, “जा, कतान की लँगोटी खरीदकर उसे बाँध ले। लेकिन वह भीग न जाए।” 2 मैंने ऐसा ही किया। लँगोटी खरीदकर मैंने उसे बाँध लिया। 3 तब रब का कलाम दुबारा मुझ पर नाज़िल हुआ, 4 “अब वह लँगोटी ले जो तूने खरीदकर बाँध ली है। दरियाए-फुरात के पास जाकर उसे किसी चटान की दराड़ में छुपा दे।” 5 चुनौचे मैं रवाना होकर दरियाए-फुरात के किनारे पहुँच गया। वहाँ मैंने लँगोटी को कहीं छुपा दिया जिस तरह रब ने हुक्म दिया था। 6 बहुत दिन गुज़र गए। फिर रब मुझसे एक बार फिर हमकलाम हुआ, “उठ, दरियाए-फुरात के पास जाकर वह लँगोटी निकाल ला जो मैंने तुझे वहाँ छुपाने को कहा था।” 7 चुनौचे मैं रवाना होकर दरियाए-फुरात के पास

पहुँच गया। वहाँ मैंने खोदकर लँगोटी को उस जगह से निकाल लिया जहाँ मैंने उसे छुपा दिया था। लेकिन अफसोस, वह गल-सड़ गई थी, बिलकुल बेकार हो गई थी।

8 तब रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, 9 “जिस तरह यह कपड़ा ज़मीन में दबकर गल-सड़ गया उसी तरह मैं यहदाह और यरूशलम का बड़ा घमंड खाक में मिला दूँगा। 10 यह खराब लोग मेरी बातें सुनने के लिए तैयार नहीं बल्कि अपने शरीर दिल की ज़िद के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारते हैं। अजनबी माबूदों के पीछे लगकर यह उन्हीं की खिदमत और पूजा करते हैं। लेकिन इनका अंजाम लँगोटी की मानिंद ही होगा। यह बेकार हो जाएंगे। 11 क्योंकि जिस तरह लँगोटी आदमी की कमर के साथ लिपटी रहती है उसी तरह मैंने पूरे इसराईल और पूरे यहदाह को अपने साथ लिपटने का मौका फ़राहम किया ताकि वह मेरी क़ौम और मेरी शोहरत, तारीफ़ और इज़्ज़त का बाइस बन जाएँ। लेकिन अफसोस, वह सुनने के लिए तैयार नहीं थे।” यह रब का फ़रमान है।

मैं के घड़े भरे हुए हैं

12 “उन्हें बता दे कि रब इसराईल का खुदा फ़रमाता है, ‘हर घड़े को मैं से भरना है।’ वह जवाब में कहेंगे, ‘हम तो खुद जानते हैं कि हर घड़े को मैं से भरना है।’ 13 तब उन्हें इसका मतलब बता। ‘रब फ़रमाता है कि इस मुल्क के तमाम बाशिंदे घड़े हैं जिन्हें मैं से भर दूँगा। दाऊद के तख़्त पर बैठनेवाले बादशाह, इमाम, नबी और यरूशलम के तमाम रहनेवाले सबके सब भर भरकर नशे में धुत हो जाएंगे। 14 तब मैं उन्हें एक दूसरे के साथ टकरा दूँगा, और बाप बेटों के साथ मिलकर टुकड़े टुकड़े हो जाएंगे। न मैं तरस खाऊँगा, न उन पर रहम करूँगा बल्कि हमदर्दी दिखाएँ बग़ैर उन्हें तबाह करूँगा।’” यह रब का फ़रमान है।

कैद की हैबतनाक हालत

15 ध्यान से सुनो! मगरूर न हो, क्योंकि रब ने खुद फ़रमाया है। 16 इससे पहले कि तारीकी फैल जाए और तुम्हारे पाँव धुँधलेपन में पहाड़ों के साथ ठोकर खाएँ, रब अपने खुदा को जलाल दो! क्योंकि उस वक़्त गो तुम रौशनी के इंतज़ार में रहोगे, लेकिन अल्लाह अंधेरे को मज़ीद बढ़ाएगा, गहरी तारीकी तुम पर छा जाएगी। 17 लेकिन अगर तुम न सुनो तो मैं तुम्हारे तकबुर को देखकर पोशीदगी में गिर्याओ-ज़ारी करूँगा। मैं ज़ार ज़ार रोकूँगा, मेरी आँखों से आँसू ज़ोर से टपकेंगे, क्योंकि दुश्मन रब के रेवड़ को पकड़कर जिलावतन कर देगा।

18 बादशाह और उस की माँ को इतला दे, “अपने तख़्तों से उतरकर ज़मीन पर बैठ जाओ, क्योंकि तुम्हारी शान का ताज तुम्हारे सरों से गिर गया है।” 19 दशते-नजब के शहर बंद किए जाएंगे, और उन्हें खोलनेवाला कोई नहीं होगा। पूरे यहदाह को जिलावतन कर दिया जाएगा, एक भी नहीं बचेगा।

20 ऐ यरूशलम, अपनी नज़र उठाकर उन्हें देख जो शिमाल से आ रहे हैं। अब वह रेवड़ कहाँ रहा जो तेरे सुपुर्द किया गया, तेरी शानदार भेड़-बकरियाँ किधर हैं? 21 तू उस दिन क्या कहेगी जब रब उन्हें तुझे पर मुक़र्र करेगा जिन्हें तूने अपने करीबी दोस्त बनाया था? जन्म देनेवाली औरत का-सा दर्द तुझे पर गालिब आएगा। 22 और अगर तेरे दिल में सवाल उभर आए कि मेरे साथ यह क्यों हो रहा है तो सुन! यह तेरे संगीन गुनाहों की वजह से हो रहा है। इन्हीं की वजह से तेरे कपड़े उतारे गए हैं और तेरी इसमतदरी हुई है।

23 क्या काला आदमी अपनी जिल्द का रंग या चीता अपनी खाल के धब्बे बदल सकता है? हरगिज़ नहीं! तुम भी बदल नहीं सकते। तुम ग़लत काम के इतने आदी हो गए हो कि सही काम कर ही नहीं सकते।

24 “जिस तरह भूसा रेगिस्तान की तेज़ हवा में उड़कर तितर-बितर हो जाता है उसी तरह मैं तेरे बाशिंदों को मुंतशिर कर दूँगा।” 25 रब फ़रमाता है, “यही तेरा अंजाम होगा, मैंने खुद मुक़र्र किया है कि तुझे यह अज़्र मिलना है। क्योंकि तूने मुझे भूलकर झूट पर भरोसा रखा है। 26 मैं खुद तेरे कपड़े उतारूँगा ताकि तेरी बरहन्गी सबको नज़र आए। 27 मैंने पहाड़ी और मैदानी इलाक़ों में तेरी धिनौनी हरकतों पर खूब ध्यान दिया है। तेरी ज़िनाकारी, तेरा मस्ताना हिनहिनाना, तेरी बेशर्म इसमतफ़रोशी, सब कुछ मुझे नज़र आता है। ऐ यरूशलम, तुझे पर अफसोस! तू पाक-साफ़ हो जाने के लिए तैयार नहीं। मज़ीद कितनी देर लगेगी?”

14

काल के दौरान रब का पैग़ाम

1 काल के दौरान रब यर्मियाह से हमकलाम हुआ,

2 “यहदाह मातम कर रहा है, उसके दरवाज़ों की हालत क़ाबिले-रहम है। लोग सोगवार हालत में फ़र्श पर बैठे हैं, और यरूशलम की चीखें आसमान तक बुलंद हो रही हैं। 3 अमीर अपने नौकरों को पानी भरने भेजते हैं, लेकिन हौज़ों के पास पहुँचकर पता चलता है कि पानी नहीं है, इसलिए वह ख़ाली हाथ वापस आ जाते हैं। शर्मिंदगी और नदामत के मारे वह अपने सरों को ढाँप लेते हैं। 4 बारिश न होने की वजह से ज़मीन में दराड़ें पड़ गई हैं। खेतों में काम करनेवाले भी शर्म के मारे अपने सरों को ढाँप लेते हैं। 5 घास नहीं है, इसलिए हिरनी अपने नौमौलूद बच्चे को छोड़ देती है। 6 जंगली गधे बंजर टीलों पर खड़े गीदड़ों की तरह हॉपते हैं। हरियाली न मिलने की वजह से वह बेजान हो रहे हैं।”

7 ऐ रब, हमारे गुनाह हमारे खिलाफ़ गवाही दे रहे हैं। तो भी अपने नाम की खातिर हम पर रहम कर। हम मानते हैं कि बुरी तरह बेवफ़ा हो गए हैं, हमने तेरा ही गुनाह किया है। 8 ऐ अल्लाह, तू इसराईल की उम्मीद है, तू ही मुसीबत के वक़्त उसे छुटकारा देता है। तो फिर हमारे साथ तेरा सुलूक मुल्क में अजनबी का-सा क्यों है? तू रात को कभी इधर कभी इधर उठरनेवाले मुसाफ़िर जैसा क्यों है? 9 तू क्यों उस आदमी की

मानिंद है जो अचानक दम बखुद हो जाता है, उस सूरे की मानिंद जो बेबस होकर बचा नहीं सकता। ऐ रब, तू तो हमारे दरमियान ही रहता है, और हम पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है। हमें तर्क न कर!

इस क्रौम के लिए दुआ मत करना

10 लेकिन रब इस क्रौम के बारे में फ़रमाता है, “यह लोग आवारा फिरने के शौक्रीन हैं, यह अपने पाँवों को रोक ही नहीं सकते। मैं उनसे नाखुश हूँ। अब मुझे उनके ग़लत काम याद रहेंगे, अब मैं उनके गुनाहों की सज़ा दूँगा।” 11 रब मज़ीद मुझसे हमकलाम हुआ, “इस क्रौम की बहबूदी के लिए दुआ मत करना। 12 गो यह रोज़ा भी रखें तो भी मैं इनकी इल्तिजाओं पर ध्यान नहीं दूँगा। गो यह भस्म होनेवाली और ग़ल्ला की कुरबानियाँ पेश भी करें तो भी मैं इनसे खुश नहीं हूँगा बल्कि इन्हें काल, तलवार और बीमारियों से नेस्तो-नाबूद कर दूँगा।”

13 यह सुनकर मैंने एतराज़ किया, “ऐ रब कादिरे-मुतलक़, नबी इन्हें बताते आए हैं, ‘न क़त्लो-ग़ारत का ख़तरा होगा, न काल पड़ेगा बल्कि मैं यही तुम्हारे लिए अमनो-अमान का पक्का बंदोबस्त कर लूँगा’।”

14 रब ने जवाब दिया, “नबी मेरा नाम लेकर झूठी पेशगोइयाँ बयान कर रहे हैं। मैंने न उन्हें भेजा, न उन्हें कोई ज़िम्मादारी दी और न उनसे हमकलाम हुआ। यह तुम्हें झूठी रोयाएँ, फ़ज़ूल पेशगोइयाँ और अपने दिल के वहम सुनाते रहे हैं।” 15 चुनौचे रब फ़रमाता है, “यह नबी तलवार और काल की ज़द में आकर मर जाएंगे। क्योंकि गो मैंने उन्हें नहीं भेजा तो भी यह मेरे नाम में नबुव्वत करके कहते हैं कि मुल्क में न क़त्लो-ग़ारत का ख़तरा होगा, न काल पड़ेगा। 16 और जिन लोगों को वह अपनी नबुव्वतें सुनाते रहे हैं वह तलवार और काल का शिकार बन जाएंगे, उनकी लाशें यरूशलम की गलियों में फेंक दी जाएँगी। उन्हें दफ़नानेवाला कोई नहीं होगा, न उनको, न उनकी बीवियों को और न उनके बेटे-बेटियों को। यों मैं उन पर उनकी अपनी बदकारी नाज़िल करूँगा।

ऐ रब, हमें मुआफ़ कर!

17 ऐ यर्मियाह, उन्हें यह कलाम सुना, ‘दिन-रात मेरे आँसू बह रहे हैं। वह स्क नहीं सकते, क्योंकि मेरी क्रौम, मेरी कुँवारी बेटी को गहरी चोट लग गई है, ऐसा ज़ख़म जो भर नहीं सकता। 18 देहात में जाकर मुझे वह सब नज़र आते हैं जो तलवार से क़त्ल किए गए हैं। जब मैं शहर में वापस आता हूँ तो चारों तरफ़ काल के बुरे असरात दिखाई देते हैं। नबी और इमाम मुल्क में मारे मारे फिर रहे हैं, और उन्हें मालूम नहीं कि क्या करें’।”

19 ऐ रब, क्या तूने यहूदाह को सरासर रद्द किया है? क्या तुझे सिय्यून से इतनी घिन आती है? तूने हमें इतनी बार क्यों मारा कि हमारा इलाज नामुमकिन हो गया है? हम अमनो-अमान के इंतज़ार में रहे, लेकिन हालात ठीक न हुए। हम शफ़ा पाने की उम्मीद रखते थे, लेकिन इसके बजाए हम पर दहशत छा गई।

20 ऐ रब, हम अपनी बेदीनी और अपने बापदादा का कुसूर तसलीम करते हैं। हमने तेरा ही गुनाह किया है। 21 अपने नाम की खातिर हमें हकीर न जान, अपने जलाली तख़्त की बेहुरमती होने न दे! हमारे साथ अपना अहद याद कर, उसे मनसूख न कर। 22 क्या दीगर अक़वाम के देवताओं में से कोई है जो बारिश बरसा सके? या क्या आसमान खुद ही बारिशें ज़मीन पर भेज देता है? हरगिज़ नहीं, बल्कि तू ही यह सब कुछ करता है, ऐ रब हमारे खुदा। इसी लिए हम तुझ पर उम्मीद रखते हैं। तू ही ने यह सारा इंतज़ाम कायम किया है।

15

सज़ा ज़रूर आएगी, क्योंकि देर हो गई है

1 फिर रब मुझसे हमकलाम हुआ, “अब से मेरा दिल इस क्रौम की तरफ़ मायल नहीं होगा, खाह मूसा और समुएल मेरे सामने आकर उनकी शफ़ाअत क्यों न करें। उन्हें मेरे हुज़ूर से निकाल दे, वह चले जाएँ! 2 अगर वह तुझसे पूछें, ‘हम किधर जाएँ?’ तो उन्हें जवाब दे, ‘रब फ़रमाता है कि जिसे मरना है वह मरे, जिसे तलवार की ज़द में आना है वह तलवार का लुक़मा बने, जिसे भूके मरना है वह भूके मरे, जिसे कैद में जाना है वह कैद हो जाए’।” 3 रब फ़रमाता है, “मैं उन्हें चार किस्म की सज़ा दूँगा। एक, तलवार उन्हें क़त्ल करेगी। दूसरे, कुत्ते उनकी लाशें घसीटकर ले जाएंगे। तीसरे और चौथे, परिदे और दरिदे उन्हें खा खाकर ख़त्म कर देंगे। 4 जब मैं अपनी क्रौम से निपट लूँगा तो दुनिया के तमाम ममालिक उस की हालत देखकर काँप उठेंगे। उनके रोंगटे खड़े हो जाएंगे जब वह यहूदाह के बादशाह मनस्सी बिन हिज़क़ियाह की उन शरीर हरकतों का अंजाम देखेंगे जो उसने यरूशलम में की हैं।

5 ऐ यरूशलम, कौन तुझ पर तरस खाएगा, कौन हमददी का इज़हार करेगा? कौन तेरे घर आकर तेरा हाल पूछेगा?” 6 रब फ़रमाता है, “तूने मुझे रद्द किया, अपना मुँह मुझसे फेर लिया है। अब मैं अपना हाथ तेरे खिलाफ़ बढ़ाकर तुझे तबाह कर दूँगा। क्योंकि मैं हमददी दिखाते दिखाते तंग आ गया हूँ।

7 जिस तरह गंदम को हवा में उछालकर भूसे से अलग किया जाता है उसी तरह मैं उन्हें मुल्क के दरवाज़ों के सामने फटकूँगा। चूँकि मेरी क्रौम ने अपने ग़लत रास्तों को तर्क न किया इसलिए मैं उसे बेऔलाद बनाकर बरबाद कर दूँगा। 8 उस की बेवाएँ समुंदर की रेत जैसी बेशुमार होंगी। दोपहर के वक़्त ही मैं नौजवानों की माओं पर तबाही नाज़िल करूँगा, अचानक ही उन पर पेचो-ताब और दहशत छा जाएगी। 9 सात बच्चों की माँ निढाल होकर जान से हाथ धो बैठेगी। दिन के वक़्त ही उसका सूरज डूब जाएगा, उसका फ़ख़र और इज्ज़त जाती रहेगी। जो लोग बच जाएंगे उन्हें मैं दुश्मन के आगे आगे तलवार से मार डालूँगा।” यह रब का फ़रमान है।

यर्मियाह रब से शिकायत करता है

10 ऐ मेरी माँ, मुझ पर अफसोस! अफसोस कि तूने मुझ जैसे शख्स को जन्म दिया जिसके साथ पूरा मुल्क झगड़ता और लड़ता है। गो मैंने न उधार दिया न लिया तो भी सब मुझ पर लानत करते हैं। 11 रब ने जवाब दिया, “यक्रीनन मैं तुझे मजबूत करके अपना अच्छा मकसद पूरा करूँगा। यक्रीनन मैं होने दूँगा कि मुसीबत के वक़्त दुश्मन तुझसे मिन्नत करे।

12 क्योंकि कोई उस लोहे को तोड़ नहीं सकेगा जो शिमाल से आया, हाँ लोहे और पीतल का वह सरिया तोड़ा नहीं जाएगा। 13 मैं तेरे खजाने दुश्मन को मुफ्त में दूँगा। तुझे तमाम गुनाहों का अज़्र मिलेगा जब वह पूरे मुल्क में तेरी दौलत लूटने आया। 14 तब मैं तुझे दुश्मन के ज़रीए एक मुल्क में पहुँचा दूँगा जिससे तू नावाकिफ़ है। क्योंकि मेरे ग़ज़ब की भड़कती आग तुझे भस्म कर देगी।”

15 ऐ रब, तू सब कुछ जानता है। मुझे याद कर, मेरा खयाल कर, ताक़्क़ुब करनेवालों से मेरा इंतक़ाम ले! उन्हें यहाँ तक बरदाश्त न कर कि आखिरकार मेरा सफ़ाया हो जाए। इसे ध्यान में रख कि मेरी स्सवाई तेरी ही खातिर हो रही है। 16 ऐ रब, लश्क़रों के ख़ुदा, जब भी तेरा कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ तो मैंने उसे हज़म किया, और मेरा दिल उससे खुशो-ख़ुरम हुआ। क्योंकि मुझ पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है। 17 जब दीगर लोग रंगरलियों में अपने दिल बहलाते थे तो मैं कभी उनके साथ न बैठा, कभी उनकी बातों से लुत्फ़अंदोज़ न हुआ। नहीं, तेरा हाथ मुझ पर था, इसलिए मैं दूसरों से दूर ही बैठा रहा। क्योंकि तूने मेरे दिल को क़ौम पर क़हर से भर दिया था। 18 क्या वजह है कि मेरा दर्द कभी ख़त्म नहीं होता, कि मेरा ज़ख़म लाइलाज है और कभी नहीं भरता? तू मेरे लिए फ़रेबदेह चश्मा बन गया है, ऐसी नदी जिसके पानी पर एतमाद नहीं किया जा सकता।

19 रब जवाब में फ़रमाता है, “अगर तू मेरे पास वापस आए तो मैं तुझे वापस आने दूँगा, और तू दुबारा मेरे सामने हाज़िर हो सकेगा। और अगर तू फ़ज़ूल बातें न करे बल्कि मेरे लायक़ अलफ़ाज़ बोले तो मेरा तरज़ुमान होगा। लाज़िम है कि लोग तेरी तरफ़ रूजू करें, लेकिन ख़बरदार, कभी उनकी तरफ़ रूजू न कर!” 20 रब फ़रमाता है, “मैं तुझे पीतल की मजबूत दीवार बना दूँगा ताकि तू इस क़ौम का सामना कर सके। यह तुझसे लड़ेंगे लेकिन तुझ पर ग़ालिब नहीं आएँगे, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ, मैं तेरी मदद करके तुझे बचाए रखूँगा। 21 मैं तुझे बेदीनों के हाथ से बचाऊँगा और फ़िधा देकर ज़ालिमों की गिरिफ़्त से छुड़ाऊँगा।”

16

यर्मियाह को शादी करने की इजाज़त नहीं

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2 “इस मक़ाम में न तेरी शादी हो, न तेरे बेटे-बेटियाँ पैदा हो जाएँ।” 3 क्योंकि रब यहाँ पैदा होनेवाले बेटे-बेटियों और उनके माँ-बाप के बारे में फ़रमाता है, 4 “वह मोहलक बीमारियों से मरकर खेतों में गोबर की तरह पड़े रहेंगे। न कोई उन पर मातम करेगा, न उन्हें दफ़नाएगा, क्योंकि वह तलवार और काल से हलाक हो जाएँगे, और उनकी लाशें परिदों और दरिदों की ख़ुराक बन जाएँगी।”

5 रब फ़रमाता है, “ऐसे घर में मत जाना जिसमें कोई फ़ौत हो गया है। * उसमें न मातम करने के लिए, न अफ़सोस करने के लिए दाख़िल होना। क्योंकि अब से मैं इस क़ौम पर अपनी सलामती, मेहरबानी और रहम का इज़हार नहीं करूँगा।” यह रब का फ़रमान है। 6 “इस मुल्क के बाशिंदे मर जाएँगे, खाह बड़े हों या छोटे। और न कोई उन्हें दफ़नाएगा, न मातम करेगा। कोई नहीं होगा जो ग़म के मारे अपनी ज़िल्द को काटे या अपने सर को मुँडवाए। 7 किसी का बाप या माँ भी इंतक़ाल कर जाए तो भी लोग मातम करनेवाले घर में नहीं जाएँगे, न तसल्ली देने के लिए जनाजे के खाने-पीने में शरीक होंगे। 8 ऐसे घर में भी दाख़िल न होना जहाँ लोग ज़ियाफ़त कर रहे हैं। उनके साथ खाने-पीने के लिए मत बैठना।” 9 क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है, “तुम्हारे जीते-जी, हाँ तुम्हारे देखते देखते मैं यहाँ ख़ुशीओ-शादमानी की आवाज़ें बंद कर दूँगा। अब से दूल्हा दुलहन की आवाज़ें ख़ामोश हो जाएँगी।

10 जब तू इस क़ौम को यह सब कुछ बताएगा तो लोग पूछेंगे, ‘रब इतनी बड़ी आफ़त हम पर लाने पर क्यों तुला हुआ है? हमसे क्या जुर्म हुआ है? हमने रब अपने ख़ुदा का क्या गुनाह किया है?’ 11 उन्हें जवाब दे, ‘वजह यह है कि तुम्हारे बापदादा ने मुझे तर्क कर दिया। वह मेरी शरीअत के ताबे न रहे बल्कि मुझे छोड़कर अजनबी माबूदों के पीछे लग गए और उन्हीं की खिदमत और पूजा करने लगे। 12 लेकिन तुम अपने बापदादा की निसबत कहीं ज़्यादा ग़लत काम करते हो। देखो, मेरी कोई नहीं सुनता बल्कि हर एक अपने शरीर दिल की ज़िद के मुताबिक़ ज़िदगी गुज़ारता है। 13 इसलिए मैं तुम्हें इस मुल्क से निकालकर एक ऐसे मुल्क में फेंक दूँगा जिससे न तुम और न तुम्हारे बापदादा वाकिफ़ थे। वहाँ तुम दिन-रात अजनबी माबूदों की खिदमत करोगे, क्योंकि उस वक़्त मैं तुम पर रहम नहीं करूँगा।’”

जिलावतनी से वापसी

14 लेकिन रब यह भी फ़रमाता है, “ऐसा वक़्त आनेवाला है कि लोग क़सम खाते वक़्त नहीं कहेंगे, ‘रब की हयात की क़सम जो इसराईलियों को मिसर से निकाल लाया।’ 15 इसके बजाए वह कहेंगे, ‘रब की हयात की क़सम जो इसराईलियों को शिमाली मुल्क और उन दीगर ममालिक से निकाल लाया जिनमें उसने उन्हें मुंतशिर कर दिया था।’ क्योंकि मैं उन्हें उस मुल्क में वापस लाऊँगा जो मैंने उनके बापदादा को दिया था।”

आनेवाली सज़ा

* 16:5 लफ़ज़ी तरज़ुमा : जिसमें जनाजे का खाना खिलाया जा रहा है।

16 लेकिन मौजूदा हाल के बारे में रब फरमाता है, “मैं बहुत-से माहीगीर भेज दूँगा जो जाल डालकर उन्हें पकड़ेंगे। इसके बाद मैं मुतअद्दिद शिकारी भेज दूँगा जो उनका ताक़्क़ुब करके उन्हें हर जगह पकड़ेंगे, खाह वह किसी पहाड़ या टीले पर छुप गए हों, खाह चटानों की किसी दराड़ में। 17 क्योंकि उनकी तमाम हरकतें मुझे नज़र आती हैं। मेरे सामने वह छुप नहीं सकते, और उनका कुसूर मेरे सामने पोशीदा नहीं है। 18 अब मैं उन्हें उनके गुनाहों की दुगुनी सज़ा दूँगा, क्योंकि उन्होंने अपने बेजान बुतों और धिनौनी चीज़ों से मेरी मौरूसी ज़मीन को भरकर मेरे मुल्क की बेहुरमती की है।”

यरमियाह का रब पर एतमाद

19 ऐ रब, तू मेरी कुव्वत और मेरा क़िला है, मुसीबत के दिन मैं तुझमें पनाह लेता हूँ। दुनिया की इतहा से अक़वाम तेरे पास आकर कहेंगी, “हमारे बापदादा को मीरास में झूट ही मिला, ऐसे बेकार बुत जो उनकी मदद न कर सके। 20 इनसान किस तरह अपने लिए खुदा बना सकता है? उसके बुत तो खुदा नहीं हैं।”

21 रब फरमाता है, “चुनाँचे इस बार मैं उन्हें सहीह पहचान अता करूँगा। वह मेरी कुव्वत और ताक़त को पहचान लेंगे, और वह जान लेंगे कि मेरा नाम रब है।

17

यहदाह का गुनाह और उस की सज़ा

1 ऐ यहदाह के लोगो, तुम्हारा गुनाह तुम्हारी ज़िंदगियों का अनमिट हिस्सा बन गया है। उसे हीर की नोक रखनेवाले लोहे के आले से तुम्हारे दिलों की तख्तियों और तुम्हारी कुरबानगाहों के सींगों पर कंदा किया गया है। 2 न सिर्फ़ तुम बल्कि तुम्हारे बच्चे भी अपनी कुरबानगाहों और असीरत देवी के खंबों को याद करते हैं, खाह वह घने दरख्तों के साथ में या ऊँची जगहों पर क्यों न हों। 3 ऐ मेरे पहाड़ जो देहात से घिरा हुआ है, तेरे पूरे मुल्क पर गुनाह का असर है, इसलिए मैं होने दूँगा कि सब कुछ लूट लिया जाएगा। तेरा माल, तेरे खज़ाने और तेरी ऊँची जगहों की कुरबानगाहें सब छीन ली जाएँगी।

4 अपने कुसूर के सबब से तुझे अपनी मौरूसी मिलकियत छोड़नी पड़ेगी, वह मिलकियत जो तुझे मेरी तरफ़ से मिली थी। मैं तुझे तेरे दुश्मनों का गुलाम बना दूँगा, और तू एक नामालूम मुल्क में बसेगा। क्योंकि तुम लोगों ने मुझे तैश दिलाया है, और अब तुम पर मेरा ग़ज़ब कभी न बुझनेवाली आग की तरह भड़कता रहेगा।”

मुख्तलिफ़ फ़रमान

5 रब फरमाता है, “उस पर लानत जिसका दिल रब से दूर होकर सिर्फ़ इनसान और उसी की ताक़त पर भरोसा रखता है। 6 वह रेगिस्तान में झाड़ी की मानिंद होगा, उसे किसी भी अच्छी चीज़ का तज़रबा नहीं होगा बल्कि वह बयाबान के ऐसे पथरीले और कल्लरवाले इलाक़ों में बसेगा जहाँ कोई और नहीं रहता। 7 लेकिन मुबारक है वह जो रब पर भरोसा रखता है, जिसका एतमाद उसी पर है। 8 वह पानी के किनारे पर लगे उस दरख़्त की मानिंद है जिसकी जड़ें नहर तक फैली हुई हैं। झुलसानेवाली गरमी भी आए तो उसे डर नहीं, बल्कि उसके पत्ते हरे-भरे रहते हैं। काल भी पड़े तो वह पोरेशान नहीं होता बल्कि वक़्त पर फल लाता रहता है।

9 दिल हद से ज़्यादा फ़रेबदेह है, और उसका इलाज नामुमकिन है। कौन उसका सहीह इल्म रखता है? 10 मैं, रब ही दिल की तफ़्तीश करता हूँ। मैं हर एक की बातिनी हालत जाँचकर उसे उसके चाल-चलन और अमल का मुनासिब अज़्र देता हूँ।

11 जिस शख्स ने ग़लत तरीक़े से दौलत जमा की है वह उस तीतर की मानिंद है जो किसी दूसरे के अंडों पर बैठ जाता है। क्योंकि ज़िंदगी के उरूज पर उसे सब कुछ छोड़ना पड़ेगा, और आखिरकार उस की हमाक़त सब पर जाहिर हो जाएगी।”

12 हमारा मक़दिस अल्लाह का जलाली तख़्त है जो अज़ल से अज़ीम है। 13 ऐ रब, तू ही इसराईल की उम्मीद है। तुझे तर्क करनेवाले सब शर्मिंदा हो जाएंगे। तुझसे दूर होनेवाले खाक में मिलाए जाएंगे, क्योंकि उन्होंने रब को छोड़ दिया है जो ज़िंदगी के पानी का सरचश्मा है।

मदद के लिए यरमियाह की दरखास्त

14 ऐ रब, तू ही मुझे शफ़ा दे तो मुझे शफ़ा मिलेगी। तू ही मुझे बचा तो मैं बचूँगा। क्योंकि तू ही मेरा फ़ख़र है। 15 लोग मुझसे पूछते रहते हैं, “रब का जो कलाम तूने पेश किया वह कहाँ है? उसे पूरा होने दे!” 16 ऐ अल्लाह, तूने मुझे अपनी क़ौम का गल्लाबान बनाया है, और मैंने यह ज़िम्मादारी कभी नहीं छोड़ी। मैंने कभी खाहिश नहीं रखी कि मुसीबत का दिन आए। तू यह सब कुछ जानता है, जो भी बात मेरे मुँह से निकली है वह तेरे सामने है। 17 अब मेरे लिए दहशत का बाइस न बन! मुसीबत के दिन मैं तुझमें ही पनाह लेता हूँ। 18 मेरा ताक़्क़ुब करनेवाले शर्मिंदा हो जाएँ, लेकिन मेरी स्सवाई न हो। उन पर दहशत छा जाए, लेकिन मैं इससे बचा रहूँ। उन पर मुसीबत का दिन नाज़िल कर, उनको दो बार कुचलकर खाक में मिला दे।

सबत का दिन मनाओ

19 रब मुझसे हमकलाम हुआ, “शहर के अवामी दरवाजे में खड़ा हो जा, जिसे यहूदाह के बादशाह इस्तेमाल करते हैं जब शहर में आते और उससे निकलते हैं। इसी तरह यरूशलम के दीगर दरवाजों में भी खड़ा हो जा। 20 वहाँ लोगों से कह, ‘ऐ दरवाजों में से गुजरनेवालो, रब का कलाम सुनो! ऐ यहूदाह के बादशाहो और यहूदाह और यरूशलम के तमाम बाशिंदो, मेरी तरफ़ कान लगाओ!

21 रब फ़रमाता है कि अपनी जान ख़तरे में न डालो बल्कि ध्यान दो कि तुम सबत के दिन मालो-असबाब शहर में न लाओ और उसे उठाकर शहर के दरवाजों में दाखिल न हो। 22 न सबत के दिन बोझ उठाकर अपने घर से कहीं और ले जाओ, न कोई और काम करो, बल्कि उसे इस तरह मनाना कि मख़सूसो-मुक़द्दस हो। मैंने तुम्हारे बापदादा को यह करने का हुक्म दिया था, 23 लेकिन उन्होंने मेरी न सुनी, न तवज्जुह दी बल्कि अपने मौक़िफ़ पर अड़े रहे और न मेरी सुनी, न मेरी तरबियत क़बूल की।

24 रब फ़रमाता है कि अगर तुम वाकई मेरी सुनो और सबत के दिन अपना मालो-असबाब इस शहर में न लाओ बल्कि आराम करने से यह दिन मख़सूसो-मुक़द्दस मानो 25 तो फिर आइंदा भी दाऊद की नसल के बादशाह और सरदार इस शहर के दरवाजों में से गुज़रेंगे। तब वह घोड़ों और रथों पर सवार होकर अपने अफ़सरों और यहूदाह और यरूशलम के बाशिंदों के साथ शहर में आते-जाते रहेंगे। अगर तुम सबत को मानो तो यह शहर हमेशा तक आबाद रहेगा। 26 फिर पूरे मुल्क से लोग यहाँ आएँगे। यहूदाह के शहरों और यरूशलम के गिर्दो-नवाह के देहात से, बिनयमीन के कबायली इलाके से, मगरिब के नशेबी पहाड़ी इलाके से, पहाड़ी इलाके से और दशते-नजब से सब अपनी कुरबानियाँ लाकर रब के घर में पेश करेंगे। उनकी तमाम भस्म होनेवाली कुरबानियाँ, ज़बह, गल्ला, बखूर और सलामती की कुरबानियाँ रब के घर में चढ़ाई जाएँगी। 27 लेकिन अगर तुम मेरी न सुनो और सबत का दिन मख़सूसो-मुक़द्दस न मानो तो फिर तुम्हें सख़्त सज़ा मिलेगी। अगर तुम सबत के दिन अपना मालो-असबाब शहर में लाओ तो मैं इन्हीं दरवाजों में एक न बुझनेवाली आग लगा दूँगा जो जलती जलती यरूशलम के महलों को भस्म कर देगी।”

18

अल्लाह अज़ीम कुम्हार है

1 रब यरमियाह से हमकलाम हुआ, 2 “उठ और कुम्हार के घर में जा! वहाँ मैं तुझसे हमकलाम हूँगा।” 3 चुनौचे मैं कुम्हार के घर में पहुँच गया। उस वक़्त वह चाक पर काम कर रहा था। 4 लेकिन मिट्टी का जो बरतन वह अपने हाथों से तश्कील दे रहा था वह ख़राब हो गया। यह देखकर कुम्हार ने उसी मिट्टी से नया बरतन बना दिया जो उसे ज़्यादा पसंद था।

5 तब रब मुझसे हमकलाम हुआ, 6 “ऐ इसराईल, क्या मैं तुम्हारे साथ वैसा सुल्क नहीं कर सकता जैसा कुम्हार अपने बरतन से करता है? जिस तरह मिट्टी कुम्हार के हाथ में तश्कील पाती है उसी तरह तुम मेरे हाथ में तश्कील पाते हो।” यह रब का फ़रमान है। 7 “कभी मैं एलान करता हूँ कि किसी क्रौम या सलतनत को जड़ से उखाड़ दूँगा, उसे गिराकर तबाह कर दूँगा। 8 लेकिन कई बार यह क्रौम अपनी ग़लत राह को तर्क कर देती है। इस सूरत में मैं पछताकर उस पर वह आफ़त नहीं लाता जो मैंने लाने को कहा था। 9 कभी मैं किसी क्रौम या सलतनत को पनीरी की तरह लगाने और तामीर करने का एलान भी करता हूँ। 10 लेकिन अफ़सोस, कई दफ़ा यह क्रौम मेरी नहीं सुनती बल्कि ऐसा काम करने लगती है जो मुझे नापसंद है। इस सूरत में मैं पछताकर उस पर वह मेहरबानी नहीं करता जिसका एलान मैंने किया था।

11 अब यहूदाह और यरूशलम के बाशिंदों से मुख़ातिब होकर कह, ‘रब फ़रमाता है कि मैं तुम पर आफ़त लाने की तैयारियाँ कर रहा हूँ, मैंने तुम्हारे खिलाफ़ मनसूबा बाँध लिया है। चुनौचे हर एक अपनी ग़लत राह से हटकर वापस आए, हर एक अपना चाल-चलन और अपना रवैया दुस्त करे।’ 12 लेकिन अफ़सोस, यह एतराज़ करेंगे, ‘दफ़ा करो! हम अपने ही मनसूबे जारी रखेंगे। हर एक अपने शरीर दिल की ज़िद के मुताबिक़ ही ज़िंदगी गुज़रेगा।’”

क्रौम रब को भूल गई है

13 इसलिए रब फ़रमाता है, “दीगर अक़वाम से दरियाफ़्त करो कि उनमें कभी ऐसी बात सुनने में आई है। कुँवारी इसराईल से निहायत धिनौना जुर्म हुआ है! 14 क्या लुबनान की पथरीली चोटियों की बर्फ़ कभी पिघलकर ख़त्म हो जाती है? क्या दूर-दराज़ चश्मों से बहनेवाला बर्फ़ीला पानी कभी थम जाता है? 15 लेकिन मेरी क्रौम मुझे भूल गई है। यह लोग बातिल बुतों के सामने बखूर जलाते हैं, उन चीज़ों के सामने जिनके बाइस वह ठोकर खाकर क़दीम राहों से हट गए हैं और अब कच्चे रास्तों पर चल रहे हैं। 16 इसलिए उनका मुल्क वीरान हो जाएगा, एक ऐसी जगह जिसे दूसरे अपने मज़ाक़ का निशाना बनाएँगे। जो भी गुज़रे उसके रोंगटे खड़े हो जाएँगे, वह अफ़सोस से अपना सर हिलाएगा। 17 दुश्मन आएगा तो मैं अपनी क्रौम को उसके आगे आगे मुंताशिर करूँगा। जिस तरह गर्द मशरिक़ी हवा के तेज़ झोंकों से उड़कर बिखर जाती है उसी तरह वह तित्तर-बित्तर हो जाएँगे। जब आफ़त उन पर नाज़िल होगी तो मैं उनकी तरफ़ रूजू नहीं करूँगा बल्कि अपना मुँह उनसे फेर लूँगा।”

यरमियाह के खिलाफ़ साज़िश

18 यह सुनकर लोग आपस में कहने लगे, “आओ, हम यरमियाह के खिलाफ़ मनसूबे बाँधें, क्योंकि उस की बातें सहीह नहीं हैं। न इमाम शरीअत की हिदायत से, न दानिशमंद अच्छे मशवरों से, और न नबी अल्लाह के कलाम से महसूस हो जाएगा। आओ, हम ज़बानी उस पर हमला करें और उस की बातों पर ध्यान न दें, खाह वह कुछ भी क्यों न कहे।”

19 ऐ रब, मुझ पर तवज्जुह दे और उस पर गौर कर जो मेरे मुखालिफ कह रहे हैं। 20 क्या इनसान को नेक काम के बदले में बुरा काम करना चाहिए? क्योंकि उन्होंने मुझे फँसाने के लिए गढ़ा खोदकर तैयार कर रखा है। याद कर कि मैंने तेरे हुजूर खड़े होकर उनके लिए शफाअत की ताकि तेरा ग़ज़ब उन पर नाज़िल न हो। 21 अब होने दे कि उनके बच्चे भूके मर जाएँ और वह खुद तलवार की ज़द में आएँ। उनकी बीवियाँ बेऔलाद और शौहरों से महसूम हो जाएँ। उनके आदमियों को मौत के घाट उतारा जाए, उनके नौजवान जंग में लड़ते लड़ते हलाक हो जाएँ। 22 अचानक उन पर जंगी दस्ते ला ताकि उनके घरों से चीखों की आवाज़ें बुलंद हों। क्योंकि उन्होंने मुझे पकड़ने के लिए गढ़ा खोदा है, उन्होंने मेरे पाँवों को फँसाने के लिए मेरे रास्ते में फंदे छुपा रखे हैं।

23 ऐ रब, तू उनकी मुझे क़त्ल करने की तमाम साज़िशें जानता है। उनका कुसूर मुआफ़ न कर, और उनके गुनाहों को न मिटा बल्कि उन्हें हमेशा याद कर। होने दे कि वह ठोकर खाकर तेरे सामने गिर जाएँ। जब तेरा ग़ज़ब नाज़िल होगा तो उनसे भी निपट ले।

19

कौम मिट्टी के टूटे हुए बरतन की मानिंद होगी

1 रब ने हुक्म दिया, “कुम्हार के पास जाकर मिट्टी का बरतन खरीद ले। फिर अवाम के कुछ बुजुर्गों और चंद एक बुजुर्ग इमामों को अपने साथ लेकर 2 शहर से निकल जा। वादीए-बिन-हिन्नूम में चला जा जो शहर के दरवाज़े बनाम ‘ठीकरे का दरवाज़ा’ के सामने है। वहाँ वह कलाम सुना जो मैं तुझे सुनाने को कहूँगा। 3 उन्हें बता,

‘ऐ यहूदाह के बादशाहो और यरूशलम के बाशिंदो, रब का कलाम सुनो! रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है कि मैं इस मक़ाम पर ऐसी आफ़त नाज़िल करूँगा कि जिसे भी इसकी ख़बर मिलेगी उसके कान बजेंगे। 4 क्योंकि उन्होंने मुझे तर्क करके इस मक़ाम को अजनबी माबूदों के हवाले कर दिया है। जिन बुतों से न उनके बापदादा और न यहूदाह के बादशाह कभी वाकिफ़ थे उनके हुजूर उन्होंने कुरबानियाँ पेश कीं। नीज़, उन्होंने इस जगह को बेकुसूरों के खून से भर दिया है। 5 उन्होंने ऊँची जगहों पर बाल देवता के लिए कुरबानगाहें तामीर की ताकि अपने बेटों को उन पर जलाकर उसे पेश करें। मैंने यह करने का कभी हुक्म नहीं दिया था। न मैंने कभी इसका ज़िक्र किया, न कभी मेरे ज़हन में इसका खयाल तक आया।

6 चुनाँचे ख़बरदार! रब फ़रमाता है कि ऐसा वक़्त आनेवाला है जब यह वादी “तूफ़त” या “बिन-हिन्नूम” नहीं कहलाएगी बल्कि “वादीए-क़त्लो-ग़ारत।” 7 इस जगह मैं यहूदाह और यरूशलम के मनसूबे खाक में मिला दूँगा। मैं होने दूँगा कि उनके दुश्मन उन्हें मौत के घाट उतारें, कि जो उन्हें जान से मारना चाहें वह इसमें कामयाब हो जाएँ। तब मैं उनकी लाशों को परिदों और दरिदों को खिला दूँगा। 8 मैं इस शहर को हौलनाक तरीक़े से तबाह करूँगा। तब दूसरे उसे अपने मज़ाक़ का निशाना बनाएँगे। जो भी गुज़रे उसके रोंगटे खड़े हो जाएंगे। उस की तबाहशुदा हालत देखकर वह “तौबा तौबा” कहेगा। 9 जब उनका जानी दुश्मन शहर का मुहासरा करेगा तो इतना सख़्त काल पड़ेगा कि बाशिंदे अपने बच्चों और एक दूसरे को खा जाएंगे।’

10 फिर साथवालों की मौजूदगी में मिट्टी के बरतन को ज़मीन पर पटख दे। 11 साथ साथ उन्हें बता, ‘रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है कि जिस तरह मिट्टी का बरतन पाश पाश हो गया है और उस की मरम्मत नामुमकिन है उसी तरह मैं इस कौम और शहर को भी पाश पाश कर दूँगा। उस वक़्त लाशों को तूफ़त में दफनाया जाएगा, क्योंकि कहीं और जगह नहीं मिलेगी। 12 इस शहर और इसके बाशिंदों के साथ मैं यही सलूक करूँगा। मैं इस शहर को तूफ़त की मानिंद बना दूँगा। यह रब का फ़रमान है। 13 यरूशलम के घर यहूदाह के शाही महलों समेत तूफ़त की तरह नापाक हो जाएंगे। हाँ, वह तमाम घर नापाक हो जाएंगे जिनकी छतों पर तमाम आसमानी लश्कर के लिए बखूर जलाया जाता और अजनबी माबूदों को मैं की नज़रें पेश की जाती थीं।’

14 इसके बाद यरमियाह वादीए-तूफ़त से वापस आया जहाँ रब ने उसे नबुव्वत करने के लिए भेजा था। फिर वह रब के घर के सहन में खड़े होकर तमाम लोगों से मुखातिब हुआ, 15 “रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है कि सुनो! मैं इस शहर और यहूदाह के दीगर शहरों पर वह तमाम मुसीबत लाने को हूँ जिसका एलान मैंने किया है। क्योंकि तुम अड़ गए हो और मेरी बातें सुनने के लिए तैयार ही नहीं।”

20

यरमियाह फ़शहर इमाम से टकरा जाता है

1 उस वक़्त एक इमाम रब के घर में था जिसका नाम फ़शहर बिन इम्मेर था। वह रब के घर का आला अफ़सर था। जब यरमियाह की यह पेशगोइयाँ उसके कानों तक पहुँच गईं 2 तो उसने यरमियाह नबी की पिटाई करवाकर उसके पाँव काठ में ठोंक दिए। यह काठ रब के घर से मुल्हिक शहर के ऊपरवाले दरवाज़े बनाम बिनयमीन में था।

3 अगले दिन फ़शहर ने उसे आज़ाद कर दिया। तब यरमियाह ने उससे कहा, “रब ने आपका एक नया नाम रखा है। अब से आपका नाम फ़शहर नहीं है बल्कि ‘चारों तरफ़ दहशत ही दहशत।’ 4 क्योंकि रब फ़रमाता है, ‘मैं होने दूँगा कि तू अपने लिए और अपने तमाम दोस्तों के लिए दहशत की अलामत बनेगा। क्योंकि तू अपनी आँखों से अपने दोस्तों की क़त्लो-ग़ारत देखेगा। मैं यहूदाह के तमाम बाशिंदों को बाबल के बादशाह के कब्जे में कर दूँगा जो बाज़ को मुल्के-बाबल में ले जाएगा और बाज़ को मौत के घाट उतार देगा। 5 मैं इस शहर की सारी दौलत

दुश्मन के हवाले कर दूँगा, और वह इसकी तमाम पैदावार, कीमती चीजें और शाही खजाने लूटकर मुल्के-बाबल ले जाएगा। ⁶ ऐ फ़शहर, तू भी अपने घरवालों समेत मुल्के-बाबल में जिलावतन होगा। वहाँ तू मरकर दफ़नाया जाएगा। और न सिर्फ़ तू बल्कि तेरे वह सारे दोस्त भी जिन्हें तूने झूटी पेशगोइयाँ सुनाई हैं।”

यरमियाह की रब से शिकायत

⁷ ऐ रब, तूने मुझे मनवाया, और मैं मान गया। तू मुझे अपने काबू में लाकर मुझ पर गालिब आया। अब मैं पूरा दिन मज़ाक का निशाना बना रहता हूँ। हर एक मेरी हँसी उड़ाता रहता है। ⁸ क्योंकि जब भी मैं अपना मुँह खोलता हूँ तो मुझे चिल्लाकर ‘ज़ुल्मो-तबाही’ का नारा लगाना पड़ता है। चुनौचे मैं रब के कलाम के बाइस पूरा दिन गालियों और मज़ाक का निशाना बना रहता हूँ। ⁹ लेकिन अगर मैं कहूँ, “आइंदा मैं न रब का ज़िक्र करूँगा, न उसका नाम लेकर बोलूँगा” तो फिर उसका कलाम आग की तरह मेरे दिल में भड़कने लगता है। और यह आग मेरी हड्डियों में बंद रहती और कभी नहीं निकलती। मैं इसे बरदाश्त करते करते थक गया हूँ, यह मेरे बस की बात नहीं रही। ¹⁰ मुतअद्दिद लोगों की सरगोशियाँ मेरे कानों तक पहुँचती हैं। वह कहते हैं, “चारों तरफ़ दहशत ही दहशत? यह क्या कह रहा है? उस की रपट लिखवाओ! आओ, हम उस की रिपोर्ट करें।” मेरे तमाम नाम-निहाद दोस्त इस इंतज़ार में हैं कि मैं फिसल जाऊँ। वह कहते हैं, “शायद वह धोका खाकर फँस जाए और हम उस पर गालिब आकर उससे इंतक़ाम ले सकें।”

¹¹ लेकिन रब ज़बरदस्त सूरे की तरह मेरे साथ है, इसलिए मेरा ताक़तवर करनेवाले मुझ पर गालिब नहीं आएँगे बल्कि खुद ठोकर खाकर गिर जाएँगे। उनके मुँह काले हो जाएँगे, क्योंकि वह नाकाम हो जाएँगे। उनकी स्सवाई हमेशा ही याद रहेगी और कभी नहीं मिटेगी। ¹² ऐ रब्बूल-अफ़वाज़, तू रास्तबाज़ का मुआयना करके दिल और ज़हन को परखता है। अब बख़्श दे कि मैं अपनी आँखों से वह इंतक़ाम देखूँ जो तू मेरे मुखालिफ़ों से लेगा। क्योंकि मैंने अपना मामला तेरे ही सुपुर्द कर दिया है। ¹³ रब की मदहसराई करो! रब की तमज़ीद करो! क्योंकि उसने ज़रूरतमंद की जान को शरीरों के हाथ से बचा लिया है।

मैं क्यों पैदा हुआ?

¹⁴ उस दिन पर लानत जब मैं पैदा हुआ! वह दिन मुबारक न हो जब मेरी माँ ने मुझे जन्म दिया। ¹⁵ उस आदमी पर लानत जिसने मेरे बाप को बड़ी खुशी दिलाकर इतला दी कि तेरे बेटा पैदा हुआ है! ¹⁶ वह उन शहरों की मानिंद हो जिनको रब ने बेरहमी से खाक में मिला दिया। अल्लाह करे कि सुबह के वक़्त उसे चीखें सुनाई दें और दोपहर के वक़्त जंग के नारे। ¹⁷ क्योंकि उसे मुझे उसी वक़्त मार डालना चाहिए था जब मैं अभी माँ के पेट में था। फिर मेरी माँ मेरी कब्र बन जाती, उसका पाँव हमेशा तक भारी रहता। ¹⁸ मैं क्यों माँ के पेट में से निकला? क्या सिर्फ़ इसलिए कि मुसीबत और ग़म देखूँ और ज़िंदगी के इख़िताम तक स्सवाई की ज़िंदगी गुज़ारूँ?

21

बाबल की फ़ौज यरुशलम पर फ़तह पाएगी

¹ एक दिन सिदक्रियाह बादशाह ने फ़शहर बिन मलक्रियाह और मासियाह के बेटे सफ़नियाह इमाम को यरमियाह के पास भेज दिया। उसके पास पहुँचकर उन्होंने कहा, ² “बाबल का बादशाह नबूकदनज़र हम पर हमला कर रहा है। शायद जिस तरह रब ने माज़ी में कई बार किया इस दफ़ा भी हमारी मदद करके नबूकदनज़र को मोज़िज़ाना तौर पर यरुशलम को छोड़ने पर मजबूर करे। रब से इसके बारे में दरियाफ़्त करें।”

तब रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ, ³ और उसने दोनों आदमियों से कहा, “सिदक्रियाह को बताओ कि ⁴ रब जो इसराइल का खुदा है फ़रमाता है, ‘बेशक शहर से निकलकर बाबल की मुहासरा करनेवाली फ़ौज और उसके बादशाह से लड़ो। लेकिन मैं तुम्हें पीछे धकेलकर शहर में पनाह लेने पर मजबूर करूँगा। वहाँ उसके बीच में ही तुम अपने हथियारों समेत जमा हो जाओगे। ⁵ मैं खुद अपना हाथ बढ़ाकर बड़ी कुदरत से तुम्हारे साथ लड़ूँगा, मैं अपने गुस्से और तैश का पूरा इज़हार करूँगा, मेरा सख़्त ग़ज़ब तुम पर नाज़िल होगा। ⁶ शहर के बाशिंदे मेरे हाथ से हलाक हो जाएँगे, खाह इनसान हों या हैवान। मोहलक वबा उन्हें मौत के घाट उतार देगी।’ ⁷ रब फ़रमाता है, ‘इसके बाद मैं यहदाह के बादशाह सिदक्रियाह को उसके अफ़सरों और बाकी बाशिंदों समेत बाबल के बादशाह नबूकदनज़र के हवाले कर दूँगा। वबा, तलवार और काल से बचनेवाले सब अपने जानी दुश्मन के काबू में आ जाएँगे। तब नबूकदनज़र बेरहमी से उन्हें तलवार से मार देगा। न उसे उन पर तरस आएगा, न वह हमदर्दी का इज़हार करेगा।’

⁸ इस क्रौम को बता कि रब फ़रमाता है, ‘मैं तुम्हें अपनी जान को बचाने का मौक़ा फ़राहम करता हूँ। इससे फ़ायदा उठाओ, वरना तुम मरोगे। ⁹ अगर तुम तलवार, काल या वबा से मरना चाहो तो इस शहर में रहो। लेकिन अगर तुम अपनी जान को बचाना चाहो तो शहर से निकलकर अपने आपको बाबल की मुहासरा करनेवाली फ़ौज के हवाले करो। जो कोई यह करे उस की जान छूट जाएगी।’ *

¹⁰ रब फ़रमाता है, ‘मैंने अटल फैसला किया है कि इस शहर पर मेहरबानी नहीं करूँगा बल्कि इसे नुक़सान पहुँचाऊँगा। इसे शाहे-बाबल के हवाले कर दिया जाएगा जो इसे आग लगाकर तबाह करेगा।’

* **21:9** लफ़्ज़ी तरज़ुमा : वह ग़नीमत के तौर पर अपनी जान को बचाएगा।

11 यहदाह के शाही खानदान से कह, 'रब का कलाम सुनो! 12 ऐ दाऊद के घराने, रब फरमाता है कि हर सुबह लोगों का इनसाफ करो। जिसे लूट लिया गया हो उसे जालिम के हाथ से बचाओ! ऐसा न हो कि मेरा गज़ब तुम्हारी शरीर हरकतों की वजह से तुम पर नाज़िल होकर आग की तरह भड़क उठे और कोई न हो जो उसे बुझा सके।

13 रब फरमाता है कि ऐ यरूशलम, तू बादी के ऊपर ऊँची चटान पर रहकर फ़ख़र करती है कि कौन हम पर हमला करेगा, कौन हमारे घरों में घुस सकता है? लेकिन अब मैं खुद तुझसे निपट लूँगा। 14 रब फरमाता है कि मैं तुम्हारी हरकतों का पूरा अज़ दूँगा। मैं यरूशलम के जंगल में ऐसी आग लगा दूँगा जो इर्दगिर्द सब कुछ भस्म कर देगी।”

22

शाही महल नज़रे-आतिश हो जाएगा

1 रब ने फरमाया, “शाहे-यहदाह के महल के पास जाकर मेरा यह कलाम सुना, 2 ‘ऐ यहदाह के बादशाह, रब का फरमान सुन! ऐ तू जो दाऊद के तख़्त पर बैठा है, अपने मुलाज़िमों और महल के दरवाज़ों में आनेवाले लोगों समेत मेरी बात पर ग़ौर कर! 3 रब फरमाता है कि इनसाफ और रास्ती कायम रखो। जिसे लूट लिया गया है उसे जालिम के हाथ से छुड़ाओ। परदेसी, यतीम और बेवा को मत दबाना, न उनसे ज़्यादाती करना, और इस जगह बेकुसूर लोगों की ख़ूनरेज़ी मत करना। 4 अगर तुम एहतियात से इस पर अमल करो तो आइंदा भी दाऊद की नसल के बादशाह अपने अफ़सरों और रिआया के साथ रथों और घोड़ों पर सवार होकर इस महल में दाखिल होंगे। 5 लेकिन अगर तुम मेरी इन बातों की न सुनो तो मेरे नाम की क़सम! यह महल मलबे का ढेर बन जाएगा। यह रब का फरमान है।

6 क्योंकि रब शाहे-यहदाह के महल के बारे में फरमाता है कि तू जिलियाद जैसा ख़ुशगवार और लुबनान की चोटी जैसा ख़ूबसूरत था। लेकिन अब मैं तुझे बयाबान में बदल दूँगा, तू ग़ैरआबाद शहर की मानिंद हो जाएगा। 7 मैं आदमियों को तुझे तबाह करने के लिए मख़सूस करके हर एक को हथियार से लैस करूँगा, और वह देवदार के तेरे उम्दा शहतीरों को काटकर आग में झोंक देंगे। 8 तब सुतअद्दि क़ौमों के अफ़राद यहाँ से गुज़रकर पूछेंगे कि रब ने इस जैसे बड़े शहर के साथ ऐसा सुलूक क्यों किया? 9 उन्हें जवाब दिया जाएगा, वजह यह है कि इन्होंने रब अपने खुदा का अहद तर्क करके अजनबी माबूदों की पूजा और खिदमत की है।”

यहुआख़ज़ बादशाह वापस नहीं आएगा

10 इसलिए गिर्याओ-ज़ारी न करो कि यूसियाह बादशाह कूच कर गया है बल्कि उस पर मातम करो जिसे जिलावतन किया गया है, क्योंकि वह कभी वापस नहीं आएगा, कभी अपना वतन दुबारा नहीं देखेगा।

11 क्योंकि रब यूसियाह के बेटे और जा-नशीन सल्लूम यानी यहूआख़ज़ के बारे में फरमाता है, “यहुआख़ज़ यहाँ से चला गया है और कभी वापस नहीं आएगा। 12 जहाँ उसे गिरिफ़्तार करके पहुँचाया गया है वहीं वह वफ़ात पाएगा। वह यह मुल्क दुबारा कभी नहीं देखेगा।

यह्यक़ीम पर इलज़ाम

13 यह्यक़ीम बादशाह पर अफ़सोस जो नाजायज़ तरीक़े से अपना घर तामीर कर रहा है, जो नाइनसाफी से उस की दूसरी मनज़िल बना रहा है। क्योंकि वह अपने हमवतनों को मुफ़्त में काम करने पर मजबूर कर रहा है और उन्हें उनकी मेहनत का मुआवज़ा नहीं दे रहा। 14 वह कहता है, ‘मैं अपने लिए कुशादा महल बनवा लूँगा जिसकी दूसरी मनज़िल पर बड़े बड़े कमरे होंगे। मैं घर में बड़ी खिड़कियाँ बनवाकर दीवारों को देवदार की लकड़ी से ढाँप दूँगा। इसके बाद मैं उसे सुर्ख़ रंग से आरास्ता करूँगा।’ 15 क्या देवदार की शानदार इमारतें बनवाने से यह साबित होता है कि तू बादशाह है? हरगिज़ नहीं! तेरे बाप को भी खाने-पीने की हर चीज़ मुयस्सर थी, लेकिन उसने इसका ख़याल किया कि इनसाफ़ और रास्ती कायम रहे। नतीजे में उसे बरकत मिली। 16 उसने तवज़्जुह दी कि ग़रीबों और ज़रूरतमंदों का हक़ मारा न जाए, इसी लिए उसे कामयाबी हासिल हुई।” रब फरमाता है, “जो इसी तरह ज़िंदगी गुज़ारे वही मुझे सहीह तौर पर जानता है। 17 लेकिन तू फ़रक़ है। तेरी आँखें और दिल नाजायज़ नफ़ा कमाने पर तुले रहते हैं। न तू बेकुसूर को क़त्ल करने से, न ज़ुल्म करने या जबरन कुछ लेने से झिजकता है।”

18 चुनौचे रब यहदाह के बादशाह यह्यक़ीम बिन यूसियाह के बारे में फरमाता है, “लोग उस पर मातम नहीं करेंगे कि ‘हाय मेरे भाई, हाय मेरी बहन,’ न वह रोकर कहेंगे, ‘हाय, मेरे आका! हाय, उस की शान जाती रही है।’ 19 इसके बजाए उसे गधे की तरह दफ़नाया जाएगा। लोग उसे घसीटकर बाहर यरूशलम के दरवाज़ों से कहीं दूर फेंक देंगे।

यह्याक़ीन बादशाह को दुश्मन के हवाले किया जाएगा

20 ऐ यरूशलम, लुबनान पर चढ़कर ज़ारो-कतार रो! बसन की बुलंदियों पर जाकर चीखें मार! अबारीम के पहाड़ों की चोटियों पर आहो-ज़ारी कर! क्योंकि तेरे तमाम आशिक * पाश पाश हो गए हैं। 21 मैंने तुझे उस वक़्त आगाह किया था जब तू सुकून से ज़िंदगी गुज़ार रही थी, लेकिन तूने कहा, ‘मैं नहीं सुनूँगी।’ तेरी जवानी से ही तेरा यही रवैया रहा। उस वक़्त से लेकर आज तक तूने मेरी नहीं सुनी। 22 तेरे तमाम गल्लानों को आँधी उड़ा ले जाएगी, और तेरे आशिक जिलावतन हो जाएंगे। तब तू अपनी बुरी हरकतों के बाइस शरमिंदा हो जाएगी, क्योंकि

* 22:20 आशिक से मुराद यहदाह के इत्तहादी हैं।

तेरी खूब स्सवाई हो जाएगी। 23 बेशक इस वक्त तू लुबनान में रहती है और तेरा बसेरा देवदार के दरख्तों में है। लेकिन जल्द ही तू आहें भर भरकर दर्द-ज़ह में मुब्तला हो जाएगी, तू जन्म देनेवाली औरत की तरह पेचो-ताब खाएगी।”

24 रब फ़रमाता है, “ऐ यहूदाह के बादशाह यह्याकीन बिन यह्यकीम, मेरी हयात की कसम! खाह तू मेरे दहने हाथ की मुहरदार अंगूठी क्यों न होता तो भी मैं तुझे उतारकर फेंक देता। † 25 मैं तुझे उस जानी दुश्मन के हवाले करूँगा जिससे तू डरता है यानी बाबल के बादशाह नबूकदनज़र और उस की कौम के हवाले। 26 मैं तुझे तेरी माँ समेत एक अजनबी मुल्क में फेंक दूँगा। जहाँ तुम पैदा नहीं हुए वही वफ़ात पाओगे। 27 तुम वतन में वापस आने के शदीद आरज़ूमंद होगे लेकिन उसमें कभी नहीं लौटोगे।”

28 लोग एतराज़ करते हैं, “क्या यह आदमी यह्याकीन ‡ वाकई ऐसा हकीर और टूटा-फूटा बरतन है जो किसी को भी पसंद नहीं आता? उसे अपने बच्चों समेत क्यों जोर से निकालकर किसी नामालूम मुल्क में फेंक दिया जाएगा?”

29 ऐ मुल्क, ऐ मुल्क, ऐ मुल्क! रब का पैगाम सुन! 30 रब फ़रमाता है, “रजिस्टर में दर्ज करो कि यह आदमी बेऔलाद है, कि यह उम्र-भर नाकाम रहेगा। क्योंकि उसके बच्चों में से कोई दाऊद के तख़्त पर बैठकर यहूदाह की हुकूमत करने में कामयाब नहीं होगा।”

23

रब कौम के सहीह गल्लाबान मुक़र्रर करेगा

1 रब फ़रमाता है, “उन गल्लाबानों पर अफ़सोस जो मेरी चरागाह की भेड़ों को तबाह करके मुंतशिर कर रहे हैं।” 2 इसलिए रब जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है, “ऐ मेरी कौम को चरानेवाले गल्लाबानो, मैं तुम्हारी शरीर हरकतों की मुनासिब सज़ा दूँगा, क्योंकि तुमने मेरी भेड़ों की फ़िकर नहीं की बल्कि उन्हें मुंतशिर करके तित्तर-बित्तर कर दिया है।” रब फ़रमाता है, “सुनो, मैं तुम्हारी शरीर हरकतों से निपट लूँगा।

3 मैं खुद अपने रेवड की बची हुई भेड़ों को जमा करूँगा। जहाँ भी मैंने उन्हें मुंतशिर कर दिया था, उन तमाम ममालिक से मैं उन्हें उनकी अपनी चरागाह में वापस लाऊँगा। वहाँ वह फलें-फूलेंगे, और उनकी तादाद बढ़ती जाएगी। 4 मैं ऐसे गल्लाबानों को उन पर मुक़र्रर करूँगा जो उनकी सहीह गल्लाबानी करेंगे। आइंदा न वह ख़ौफ़ खाएँगे, न घबरा जाएँगे। एक भी गुम नहीं हो जाएगा।” यह रब का फ़रमान है।

रब सहीह बादशाह मुक़र्रर करेगा

5 रब फ़रमाता है, “वह वक्त आनेवाला है कि मैं दाऊद के लिए एक रास्तबाज़ कोपल फूटने दूँगा, एक ऐसा बादशाह जो हिकमत से हुकूमत करेगा, जो मुल्क में इनसाफ़ और रास्ती कायम रखेगा। 6 उसके दौरे-हुकूमत में यहूदाह को छुटकारा मिलेगा और इसराईल महफूज़ जिंदगी गुजारेगा। वह ‘रब हमारी रास्तबाज़ी’ कहलाएगा।

7 चुनौचे वह वक्त आनेवाला है जब लोग क़सम खाते वक्त नहीं कहेंगे, ‘रब की हयात की क़सम जो इसराईलियों को मिसर से निकाल लाया।’ 8 इसके बजाए वह कहेंगे, ‘रब की हयात की क़सम जो इसराईलियों को शिमाली मुल्क और दीगर उन तमाम ममालिक से निकाल लाया जिनमें उसने उन्हें मुंतशिर कर दिया था।’ उस वक्त वह दुबारा अपने ही मुल्क में बसेंगे।” यह रब का फ़रमान है।

झूटे नबियों पर यकीन मत करना

9 झूटे नबियों को देखकर मेरा दिल टूट गया है, मेरी तमाम हड्डियाँ लरज़ रही हैं। मैं नशे में धुत आदमी की मानिंद हूँ। मैं से मगलूब शख्स की तरह मैं रब और उसके मुक़द्दस अलफ़ाज़ के सबब से डगमगा रहा हूँ।

10 यह मुल्क जिनाकारों से भरा हुआ है, इसलिए उस पर अल्लाह की लानत है। ज़मीन झुलस गई है, बयाबान की चरागाहों की हरियाली मुरझा गई है। नबी गलत राह पर दौड़ रहे हैं, और जिसमें वह ताक़तवर हैं वह ठीक नहीं। 11 रब फ़रमाता है, “नबी और इमाम दोनों ही बेदीन हैं। मैंने अपने घर में भी उनका बुरा काम पाया है। 12 इसलिए जहाँ भी चलें वह फिसल जाएँगे, वह अंधेरे में ठोकर खाकर गिर जाएँगे। क्योंकि मैं मुक़र्रर वक्त पर उन पर आफ़त लाऊँगा।” यह रब का फ़रमान है।

13 “मैंने देखा कि सामरिया के नबी बाल के नाम में नबुव्वत करके मेरी कौम इसराईल को गलत राह पर लाए। यह काबिले-घिन है, 14 लेकिन जो कुछ मुझे यरूशलम के नबियों में नज़र आता है वह उतना ही घिनौना है। वह जिना करते और झूट के पैरोकार हैं। साथ साथ वह बदकारों की हौसलाअफ़ज़ाई भी करते हैं, और नतीजे में कोई भी अपनी बर्दी से बाज़ नहीं आता। मेरी नज़र में वह सब सदूम की मानिंद हैं। हाँ, यरूशलम के बाशिंदे अमूरा के बराबर हैं।” 15 इसलिए रब इन नबियों के बारे में फ़रमाता है, “मैं उन्हें कड़वा खाना खिलाऊँगा और ज़हरीला पानी पिलाऊँगा, क्योंकि यरूशलम के नबियों ने पूरे मुल्क में बेदीनी फैलाई है।”

16 रब्बुल-अफ़वाज़ फ़रमाता है, “नबियों की पेशगोइयों पर ध्यान मत देना। वह तुम्हें फ़रेब दे रहे हैं। क्योंकि वह रब का कलाम नहीं सुनाते बल्कि महज़ अपने दिल में से उभरनेवाली रोया पेश करते हैं। 17 जो मुझे हकीर जानते हैं उन्हें वह बताते रहते हैं, ‘रब फ़रमाता है कि हालात सहीह-सलामत रहेंगे।’ जो अपने दिलों की ज़िद के मुताबिक़ जिंदगी गुज़ारते हैं, उन सबको वह तसल्ली देकर कहते हैं, ‘तुम पर आफ़त नहीं आएगी।’ 18 लेकिन उनमें से किसने रब की मजलिस में शरीक होकर वह कुछ देखा और सुना है जो रब बयान कर रहा है? किसी ने नहीं! किसने तवज्जुह देकर उसका कलाम सुना है? किसी ने नहीं!

† 22:24 इब्रानी में यह्याकीन का मुतरादिफ़ कूनियाह मुस्तामल है। ‡ 22:28 इब्रानी में यह्याकीन का मुतरादिफ़ कूनियाह मुस्तामल है।

19 देखो, रब की गज़बनाक आँधी चलने लगी है, उसका तेज़ी से घूमता हुआ बगूला बेदीनों के सरो पर मँडला रहा है। 20 और रब का यह गज़ब उस वक़्त तक ठंडा नहीं होगा जब तक उसके दिल का इरादा तकमील तक न पहुँच जाए। आनेवाले दिनों में तुम्हें इसकी पूरी समझ आएगी।

21 यह नबी दौड़कर अपनी बातें सुनाते रहते हैं अगरचे मैंने उन्हें नहीं भेजा। गो मैं उनसे हमकलाम नहीं हुआ तो भी यह पेशगोइयाँ करते हैं। 22 अगर यह मेरी मजलिस में शरीक होते तो मेरी क्रौम को मेरे अलफ़ाज़ सुनाकर उसे उसके बुरे चाल-चलन और ग़लत हरकतों से हटाने की कोशिश करते।”

23 रब फ़रमाता है, “क्या मैं सिर्फ़ करीब का खुदा हूँ? हरगिज़ नहीं! मैं दूर का खुदा भी हूँ। 24 क्या कोई मेरी नज़र से गायब हो सकता है? नहीं, ऐसी जगह है नहीं जहाँ वह मुझसे छुप सके। आसमानो-ज़मीन मुझसे मामूर रहते हैं।” यह रब का फ़रमान है।

25 “इन नबियों की बातें मुझ तक पहुँच गई हैं। यह मेरा नाम लेकर झूट बोलते हैं कि मैंने खाब देखा है, खाब देखा है। 26 यह नबी झूटी पेशगोइयाँ और अपने दिलों के वसवसे सुनाने से कब बाज़ आएँगे? 27 जो खाब वह एक दूसरे को बताते हैं उनसे वह चाहते हैं कि मेरी क्रौम मेरा नाम यों भूल जाए जिस तरह उनके बापदादा बाल की पूजा करने से मेरा नाम भूल गए थे।” 28 रब फ़रमाता है, “जिस नबी ने खाब देखा हो वह बेशक अपना खाब बयान करे, लेकिन जिस पर मेरा कलाम नाज़िल हुआ हो वह वफ़ादारी से मेरा कलाम सुनाए। भूसे का गंदुम से क्या वास्ता है?”

29 रब फ़रमाता है, “क्या मेरा कलाम आग की मानिद नहीं? क्या वह हथौड़े की तरह चटान को टुकड़े टुकड़े नहीं करता?” 30 चुनौचे रब फ़रमाता है, “अब मैं उन नबियों से निपट लूँगा जो एक दूसरे के पैग़ामात चुराकर दावा करते हैं कि वह मेरी तरफ़ से हैं।” 31 रब फ़रमाता है, “मैं उनसे निपट लूँगा जो अपने शख़्सी ख़यालात सुनाकर दावा करते हैं, ‘यह रब का फ़रमान है’।” 32 रब फ़रमाता है, “मैं उनसे निपट लूँगा जो झूटे खाब सुनाकर मेरी क्रौम को अपनी धोकेबाज़ी और शेख़ी की बातों से ग़लत राह पर लाते हैं, हालाँकि मैंने उन्हें न भेजा, न कुछ कहने को कहा था। उन लोगों का इस क्रौम के लिए कोई भी फ़ायदा नहीं।” यह रब का फ़रमान है।

रब के लिए तुम बोझ का बाइस हो

33 “ऐ यरमियाह, अगर इस क्रौम के आम लोग या इमाम या नबी तुझसे पूछें, ‘आज रब ने तुझ पर कलाम का क्या बोझ नाज़िल किया है?’ तो जवाब दे, ‘रब फ़रमाता है कि तुम ही मुझ पर बोझ हो! लेकिन मैं तुम्हें उतार फेंकूँगा।’ 34 और अगर कोई नबी, इमाम या आम शख्स दावा करे, ‘रब ने मुझ पर कलाम का बोझ नाज़िल किया है’ तो मैं उसे उसके घराने समेत सज़ा दूँगा।

35 इसके बजाए एक दूसरे से सवाल करो कि ‘रब ने क्या जवाब दिया?’ या ‘रब ने क्या फ़रमाया?’ 36 आइंदा रब के पैग़ाम के लिए लफ़ज़ ‘बोझ’ इस्तेमाल न करो, क्योंकि जो भी बात तुम करो वह तुम्हारा अपना बोझ होगी। क्योंकि तुम जिंदा ख़ुदा के अलफ़ाज़ को तोड़-मरोड़कर बयान करते हो, उस कलाम को जो रब्बुल-अफ़वाज़ हमारे ख़ुदा ने नाज़िल किया है। 37 चुनौचे आइंदा नबी से सिर्फ़ इतना ही पूछो कि ‘रब ने तुझे क्या जवाब दिया?’ या ‘रब ने क्या फ़रमाया?’ 38 लेकिन अगर तुम ‘रब का बोझ’ कहने पर इसरार करो तो रब का जवाब सुनो! चूँकि तुम कहते हो कि ‘मुझ पर रब का बोझ नाज़िल हुआ है’ गो मैंने यह मना किया था, 39 इसलिए मैं तुम्हें अपनी याद से मिटाकर यस्शलम समेत अपने हज़ूर से दूर फेंक दूँगा, गो मैंने ख़ुद यह शहर तुम्हें और तुम्हारे बापदादा को फ़राहम किया था। 40 मैं तुम्हारी अबदी स्सवाई कराऊँगा, और तुम्हारी शरमिंदगी हमेशा तक याद रहेगी।”

24

अंजीर की दो टोक़रियाँ

1 एक दिन रब ने मुझे रोया दिखाई। उस वक़्त बाबल का बादशाह नबूकदनज़र यहदाह के बादशाह यह्याकीन * बिन यह्यकीम को यहदाह के बुजुर्गों, कारीगरों और लोहारों समेत बाबल में जिलावतन कर चुका था।

रोया में मैंने देखा कि अंजीरों से भरी दो टोक़रियाँ रब के घर के सामने पड़ी हैं। 2 एक टोक़री में मौसम के शुरू में पकनेवाले बेहतरीन अंजीर थे जबकि दूसरी में ख़राब अंजीर थे जो खाए भी नहीं जा सकते थे।

3 रब ने मुझसे सवाल किया, “ऐ यरमियाह, तुझे क्या नज़र आता है?” मैंने जवाब दिया, “मुझे अंजीर नज़र आते हैं। कुछ बेहतरीन हैं जबकि दूसरे इतने ख़राब हैं कि उन्हें खाया भी नहीं जा सकता।”

4 तब रब मुझसे हमकलाम हुआ, 5 “रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि अच्छे अंजीर यहदाह के वह लोग हैं जिन्हें मैंने जिलावतन करके मुल्के-बाबल में भेजा है। उन्हें मैं मेहरबानी की निगाह से देखता हूँ। 6 क्योंकि उन पर मैं अपने करम का इज़हार करके उन्हें इस मुल्क में वापस लाऊँगा। मैं उन्हें गिराऊँगा नहीं बल्कि तामीर करूँगा, उन्हें जड़ से उखाड़ूँगा नहीं बल्कि पनीरी की तरह लगाऊँगा। 7 मैं उन्हें समझदार दिल अता करूँगा ताकि वह मुझे जान लें, वह पहचान लें कि मैं रब हूँ। तब वह मेरी क्रौम होंगे और मैं उनका ख़ुदा हूँगा, क्योंकि वह पूरे दिल से मेरे पास वापस आएँगे।

* 24:1 इब्रानी में यह्याकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

8 लेकिन बाकी लोग उन खराब अंजीरों की मानिंद हैं जो खाए नहीं जाते। उनके साथ मैं वह सुलूक करूँगा जो खराब अंजीरों के साथ किया जाता है। उनमें यहदाह का बादशाह सिदक्रियाह, उसके अफसर, यरूशलम और यहदाह में बचे हुए लोग और मिसर में पनाह लेनेवाले सब शामिल हैं। 9 मैं होने दूँगा कि वह दुनिया के तमाम ममालिक के लिए दहशत और आफत की अलामत बन जाएंगे। जहाँ भी मैं उन्हें मुंतशिर करूँगा वहाँ वह इब्रतअंगेज़ मिसाल बन जाएंगे। हर जगह लोग उनकी बेइज्जती, उन्हें लान-तान और उन पर लानत करेंगे। 10 जब तक वह उस मुल्क में से मिट न जाएँ जो मैंने उनके बापदादा को दे दिया था उस वक्त तक मैं उनके दरमियान तलवार, काल और मोहलक बीमारियाँ भेजता रहूँगा।”

25

मुल्के-बाबल में 70 साल रहने की पेशगोई

1 यहयक्रीम बिन यूसियाह की हुकूमत के चौथे साल में अल्लाह का कलाम यर्मियाह पर नाज़िल हुआ। उसी साल बाबल का बादशाह नबूकदनज्ज़र तख़्तनशीन हुआ था। यह कलाम यहदाह के तमाम बाशिंदों के बारे में था। 2 चुनौचे यर्मियाह नबी ने यरूशलम के तमाम बाशिंदों और यहदाह की पूरी कौम से मुखातिब होकर कहा,

3 “23 साल से रब का कलाम मुझ पर नाज़िल होता रहा है यानी यूसियाह बिन अमून की हुकूमत के तेरहवें साल से लेकर आज तक। बार बार मैं तुम्हें पैगामात सुनाता रहा हूँ, लेकिन तुमने ध्यान नहीं दिया। 4 मेरे अलावा रब दीगर तमाम नबियों को भी बार बार तुम्हारे पास भेजता रहा, लेकिन तुमने न सुना, न तबज्जुह दी, 5 गो मेरे खादिम तुम्हें बार बार आगाह करते रहे, ‘तौबा करो! हर एक अपनी गलत राहों और बुरी हरकतों से बाज़ आकर वापस आए। फिर तुम हमेशा तक उस मुल्क में रहोगे जो रब ने तुम्हें और तुम्हारे बापदादा को अता किया था। 6 अजनबी माबूदों की पैरवी करके उनकी खिदमत और पूजा मत करना! अपने हाथों के बनाए हुए बुतों से मुझे तैश न दिलाना, वरना मैं तुम्हें नुकसान पहुँचाऊँगा।”

7 रब फ़रमाता है, “अफ़सोस! तुमने मेरी न सुनी बल्कि मुझे अपने हाथों के बनाए हुए बुतों से गुस्सा दिलाकर अपने आपको नुकसान पहुँचाया।” 8 रब्बुल-अफ़वाज़ फ़रमाता है, “चूँकि तुमने मेरे पैगामात पर ध्यान न दिया, 9 इसलिए मैं शिमाल की तमाम कौमों और अपने खादिम बाबल के बादशाह नबूकदनज्ज़र को बुला लूँगा ताकि वह इस मुल्क, इसके बाशिंदों और गिर्दो-नवाह के ममालिक पर हमला करें। तब यह सफ़हाए-हस्ती से यों मिट जाएंगे कि लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे और वह उनका मज़ाक उड़ाएँगे। यह इलाके दायमी खंडरात बन जाएंगे। 10 मैं उनके दरमियान खुशीओ-शदमानी और दूल्हे दुलहन की आवाज़ें बंद कर दूँगा। चक्कियाँ खामोश पड़ जाएँगी और चराग़ बुझ जाएंगे। 11 पूरा मुल्क वीरानो-सुनसान हो जाएगा, चारों तरफ़ मलबे के ढेर नज़र आएँगे। तब तुम और इर्दगिर्द की कौमों 70 साल तक शाहे-बाबल की खिदमत करोगे।

12 लेकिन 70 साल के बाद मैं शाहे-बाबल और उस की कौम को मुनासिब सज़ा दूँगा। मैं मुल्के-बाबल को यों बरबाद करूँगा कि वह हमेशा तक वीरानो-सुनसान रहेगा। 13 उस वक्त मैं उस मुल्क पर सब कुछ नाज़िल करूँगा जो मैंने उसके बारे में फ़रमाया है, सब कुछ पूरा हो जाएगा जो इस किताब में दर्ज है और जिसकी पेशगोई यर्मियाह ने तमाम अक्रवाम के बारे में की है। 14 उस वक्त उन्हें भी मुतअद्दिद कौमों और बड़े बड़े बादशाहों की खिदमत करनी पड़ेगी। यों मैं उन्हें उनकी हरकतों और आमाल का मुनासिब अज़्र दूँगा।”

रब के ग़ज़ब का प्याला

15 रब जो इसराइल का ख़ुदा है मुझसे हमकलाम हुआ, “देख, मेरे हाथ में मेरे ग़ज़ब से भरा हुआ प्याला है। इसे लेकर उन तमाम कौमों को पिला दे जिनके पास मैं तुझे भेजता हूँ। 16 जो भी कौम यह पिए वह मेरी तलवार के आगे डगमगाती हुई दीवाना हो जाएगी।”

17 चुनौचे मैंने रब के हाथ से प्याला लेकर उसे उन तमाम अक्रवाम को पिला दिया जिनके पास रब ने मुझे भेजा। 18 पहले यरूशलम और यहदाह के शहरों को उनके बादशाहों और बुजुर्गों समेत ग़ज़ब का प्याला पीना पड़ा। तब मुल्क मलबे का ढेर बन गया जिसे देखकर लोगों के रोंगटे खड़े हो गए। आज तक वह मज़ाक़ और लानत का निशाना है।

19 फिर यके बाद दीगरे मुतअद्दिद कौमों को ग़ज़ब का प्याला पीना पड़ा। ज़ैल में उनकी फ़हरिस्त है : मिसर का बादशाह फ़िरौन, उसके दरबारी, अफ़सर, पूरी मिसरी कौम 20 और मुल्क में बसनेवाले ग़ैरमुल्की, मुल्के-ऊज़ के तमाम बादशाह,

फ़िलिस्ती बादशाह और उनके शहर अस्कलून, ग़ज़ज़ा और अकरून, नीज़ फ़िलिस्ती शहर अशदूद का बचा-खुचा हिस्सा,

21 अदोम, मोआब और अम्मोन,

22 सूर और सैदा के तमाम बादशाह, बहीराए-रूम के साहिली इलाके,

23 ददान, तैमा और बूज़ के शहर, वह कौमों जो रेगिस्तान के किनारे किनारे रहती हैं,

24 मुल्के-अरब के तमाम बादशाह, रेगिस्तान में मिलकर बसनेवाले ग़ैरमुल्कियों के बादशाह,

25 ज़िमरी, ऐलाम और मादी के तमाम बादशाह,

26 शिमाल के दूरो-नज़दीक के तमाम बादशाह।

यके बाद दीगरे दुनिया के तमाम ममालिक को गज़ब का प्याला पीना पड़ा। आखिर में शेशक के बादशाह * को भी यह प्याला पीना पड़ा।

27 फिर रब ने कहा, “उन्हें बता, ‘रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है कि गज़ब का प्याला ख़ूब पियो! इतना पियो कि नशे में आकर कै आने लगे। उस वक़्त तक पीते जाओ जब तक तुम मेरी तलवार के आगे गिरकर पड़े न रहो।’ 28 अगर वह तेरे हाथ से प्याला न लें बल्कि उसे पीने से इनकार करें तो उन्हें बता, ‘रब्बुल-अफ़वाज खुद फ़रमाता है कि पियो! 29 देखो, जिस शहर पर मेरे नाम का ठप्पा लगा है उसी पर मैं आफ़त लाने लगा हूँ। अगर मैंने उसी से शुरू किया तो फिर तुम किस तरह बचे रहोगे? यकीनन तुम्हें सज़ा मिलेगी, क्योंकि मैंने तय कर लिया है कि दुनिया के तमाम बाशिंदे तलवार की ज़द में आ जाएँ।” यह रब्बुल-अफ़वाज का फ़रमान है।

तमाम अक़वाम की अदालत

30 “ऐ यरमियाह, उन्हें यह तमाम पेशगोइयों सुनाकर बता कि रब बुलदियों से दहाड़ेगा। उस की मुक़द्दस सुकूनतगाह से उस की कड़कती आवाज़ निकलेगी, वह ज़ोर से अपनी चरागाह के खिलाफ़ गरजेगा। जिस तरह अंगूर का रस निकालनेवाले अंगूर को रौंदते वक़्त ज़ोर से नारे लगाते हैं उसी तरह वह नारे लगाएगा, अलबत्ता जंग के नारे। क्योंकि वह दुनिया के तमाम बाशिंदों के खिलाफ़ जंग के नारे लगाएगा। 31 उसका शोर दुनिया की इंतहा तक गूँजेगा, क्योंकि रब अदालत में अक़वाम से मुक़दमा लड़ेगा, वह तमाम इनसानों का इनसाफ़ करके शरीरों को तलवार के हवाले कर देगा।” यह रब का फ़रमान है। 32 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “देखो, यके बाद दीगरे तमाम क़ौमों पर आफ़त नाज़िल हो रही है, ज़मीन की इंतहा से ज़बरदस्त तूफ़ान आ रहा है। 33 उस वक़्त रब के मारे हुए लोगों की लाशें दुनिया के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पड़ी रहेंगी। न कोई उन पर मातम करेगा, न उन्हें उठाकर दफ़न करेगा। वह खेत में बिखरे गोबर की तरह ज़मीन पर पड़ी रहेंगी।

34 ऐ गल्लाबानो, वावैला करो! ऐ रेवड़ के राहनुमाओ, राख में लोट-पोट हो जाओ! क्योंकि वक़्त आ गया है कि तुम्हें ज़बह किया जाए। तुम गिरकर नाज़ुक बरतन की तरह पाश पाश हो जाओगे। 35 गल्लाबान कहीं भी भागकर पनाह नहीं ले सकेंगे, रेवड़ के राहनुमा बच ही नहीं सकेंगे। 36 सुनो! गल्लाबानों की चीखें और रेवड़ के राहनुमाओं की आहें! क्योंकि रब उनकी चरागाह को तबाह कर रहा है। 37 पुरसुकून मर्गज़ारों का सत्यानास होगा जब रब का सख़्त गज़ब नाज़िल होगा, 38 जब रब जवान शेरबबर की तरह अपनी छुपने की जगह से निकलकर लोगों पर टूट पड़ेगा। तब ज़ालिम की तेज़ तलवार और रब का शदीद कहर उनका मुल्क तबाह करेगा।”

26

रब के घर में यरमियाह का पैग़ाम

1 जब यह्यक़ीम बिन यूसियाह यहदाह के तख़्त पर बैठ गया तो थोड़ी देर के बाद रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ। 2 रब ने फ़रमाया, “ऐ यरमियाह, रब के घर के सहन में खड़ा होकर उन तमाम लोगों से मुखातिब हो जो रब के घर में सिजदा करने के लिए यहदाह के दीगर शहरों से आए हैं। उन्हें मेरा पूरा पैग़ाम सुना दे, एक बात भी न छोड़! 3 शायद वह सुनें और हर एक अपनी बुरी राह से बाज़ आ जाए। इस सूरत में मैं पछताकर उन पर वह सज़ा नाज़िल नहीं करूँगा जिसका मनसूबा मैंने उनके बुरे आमाल देखकर बाँध लिया है।

4 उन्हें बता, ‘रब फ़रमाता है कि मेरी सुनो और मेरी उस शरीअत पर अमल करो जो मैंने तुम्हें दी है। 5 नीज़, नबियों के पैग़ामात पर ध्यान दो। अफ़सोस, गो मैं अपने खादिमों को बार बार तुम्हारे पास भेजता रहा तो भी तुमने उनकी न सुनी। 6 अगर तुम आइंदा भी न सुनो तो मैं इस घर को यों तबाह करूँगा जिस तरह मैंने सैला का मक़दिस तबाह किया था। मैं इस शहर को भी यों खाक में मिला दूँगा कि इबरतअंगेज़ मिसाल बन जाएगा। दुनिया की तमाम क़ौमों में जब कोई अपने दुश्मन पर लानत भेजना चाहे तो वह कहेगा कि उसका यरूशलम का-सा अंजाम हो।”

यरमियाह की अदालत

7 जब यरमियाह ने रब के घर में रब के यह अलफ़ाज़ सुनाए तो इमामों, नबियों और तमाम बाक़ी लोगों ने ग़ौर से सुना। 8 यरमियाह ने उन्हें सब कुछ पेश किया जो रब ने उसे सुनाने को कहा था। लेकिन ज्योंही वह इख़िताम पर पहुँच गया तो इमाम, नबी और बाक़ी तमाम लोग उसे पकड़कर चीखने लगे, “तुझे मरना ही है! 9 तू रब का नाम लेकर क्यों कह रहा है कि रब का घर सैला की तरह तबाह हो जाएगा, और यरूशलम मलबे का ढेर बनकर ग़ैरआबाद हो जाएगा?” ऐसी बातें कहकर तमाम लोगों ने रब के घर में यरमियाह को घेरे रखा।

10 जब यहदाह के बुज़ुर्गों को इसकी खबर मिली तो वह शाही महल से निकलकर रब के घर के पास पहुँचे। वहाँ वह रब के घर के सहन के नए दरवाज़े में बैठ गए ताकि यरमियाह की अदालत करें। 11 तब इमामों और नबियों ने बुज़ुर्गों और तमाम लोगों के सामने यरमियाह पर इलज़ाम लगाया, “लाज़िम है कि इस आदमी को सज़ाए-मौत दी जाए! क्योंकि इसने इस शहर यरूशलम के खिलाफ़ नबुव्वत की है। आपने अपने कानों से यह बात सुनी है।”

12 तब यरमियाह ने बुज़ुर्गों और बाक़ी तमाम लोगों से कहा, “रब ने खुद मुझे यहाँ भेजा ताकि मैं रब के घर और यरूशलम के खिलाफ़ उन तमाम बातों की पेशगोई करूँ जो आपने सुनी हैं। 13 चुनौचे अपनी राहों और आमाल को दुस्त करें! रब अपने खुदा की सुनें ताकि वह पछताकर आप पर वह सज़ा नाज़िल न करे जिसका एलान उसने किया है। 14 जहाँ तक मेरा ताल्लुक है, मैं तो आपके हाथ में हूँ। मेरे साथ वह सुल्क करें जो आपको अच्छा और मुनासिब लगे। 15 लेकिन एक बात जान लें। अगर आप मुझे सज़ाए-मौत दें तो आप बेक़सूर के कातिल ठहरेंगे। आप और यह शहर उसके तमाम बाशिंदों समेत कुसूरवार ठहरेंगे। क्योंकि रब ही ने मुझे आपके पास भेजा ताकि आपके सामने ही यह बातें करूँ।”

* 25:26 ग़ालिबन इससे मुराद बाबल का बादशाह है।

16 यह सुनकर बुजुर्गों और अवाम के तमाम लोगों ने इमामों और नबियों से कहा, “यह आदमी सज़ाए-मौत के लायक नहीं है! क्योंकि उसने रब हमारे खुदा का नाम लेकर हमसे बात की है।”

17 फिर मुल्क के कुछ बुजुर्ग खड़े होकर पूरी जमात से मुखातिब हुए, 18 “जब हिज़क्रियाह यहदाह का बादशाह था तो मोरशत के रहनेवाले नबी मीकाह ने नबुव्वत करके यहदाह के तमाम बाशंदों से कहा, ‘रब्बुल-अफ़वाज़ फ़रमाता है कि सिय्यून पर खेत की तरह हल चलाया जाएगा, और यरूशलम मलबे का ढेर बन जाएगा। रब के घर की पहाड़ी पर गुंजान जंगल उगेगा।’ 19 क्या यहदाह के बादशाह हिज़क्रियाह या यहदाह के किसी और शाख़्स ने मीकाह को सज़ाए-मौत दी? हरगिज़ नहीं, बल्कि हिज़क्रियाह ने रब का ख़ौफ़ मानकर उसका गुस्सा ठंडा करने की कोशिश की। नतीजे में रब ने पछताकर वह सज़ा उन पर नाज़िल न की जिसका एलान वह कर चुका था। सुनें, अगर हम यरमियाह को सज़ाए-मौत दें तो अपने आप पर सख़्त सज़ा लाएंगे।”

ऊरियाह नबी का क़त्ल

20 उन दिनों में एक और नबी भी यरमियाह की तरह रब का नाम लेकर नबुव्वत करता था। उसका नाम ऊरियाह बिन समायाह था, और वह किरियत-यारीम का रहनेवाला था। उसने भी यरूशलम और यहदाह के खिलाफ़ वही पेशगोइयाँ सुनाई जो यरमियाह सुनाता था।

21 जब यह्यक्रीम बादशाह और उसके तमाम फ़ौजी और सरकारी अफ़सरों ने उस की बातें सुनीं तो बादशाह ने उसे मार डालने की कोशिश की। लेकिन ऊरियाह को इसकी ख़बर मिली, और वह डरकर भाग गया। चलते चलते वह मिसर पहुँच गया। 22 तब यह्यक्रीम ने इलनातन बिन अकबोर और चंद एक आदमियों को वहाँ भेज दिया। 23 वहाँ पहुँचकर वह ऊरियाह को पकड़कर यह्यक्रीम के पास वापस लाए। बादशाह के हुक्म पर उसका सर कलम कर दिया गया और उस की नाश को निचले तबके के लोगों के कब्रिस्तान में दफ़नाया गया।

24 लेकिन यरमियाह की जान छूट गई। उसे अवाम के हवाले न किया गया, गो वह उसे मार डालना चाहते थे, क्योंकि अख़ीक़ाम बिन साफ़न उसके हक़ में था।

27

जुए की अलामत

1 जब सिदक्रियाह बिन यूसियाह यहदाह के तख़्त पर बैठ गया तो रब यरमियाह से हमकलाम हुआ। 2 रब ने मुझे फ़रमाया,

“अपने लिए जुआ और उसके रस्से बनाकर उसे अपनी गरदन पर रख ले! 3 फिर अदोम, मोआब, अम्मोन, सूर और सैदा के शाही सफ़रीरों के पास जा जो इस वक़्त यरूशलम में सिदक्रियाह बादशाह के पास जमा हैं। 4 उनके हाथ उनके बादशाहों को पैग़ाम भेज, ‘रब्बुल-अफ़वाज़ जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है कि 5 मैंने अपना हाथ बढ़ाकर बड़ी क़दरत से दुनिया को इनसानो-हैवान समेत ख़लक किया है, और मैं ही यह चीज़ें उसे अता करता हूँ जो मेरी नज़र में लायक़ है। 6 इस वक़्त मैं तुम्हारे तमाम ममालिक को अपने खादिम शाहे-बाबल नबूक़दनज़ज़र के हवाले करूँगा। जंगली जानवर तक सब उसके ताबे हो जाएंगे। 7 तमाम अक़वाम उस की और उसके बेटे और पोते की ख़िदमत करेंगी। फिर एक वक़्त आएगा कि बाबल की हुकूमत ख़त्म हो जाएगी। तब मुतअदिद क़ौमों और बड़े बड़े बादशाह उसे अपने ही ताबे कर लेंगे। 8 लेकिन इस वक़्त लाज़िम है कि हर क़ौम और सलतनत शाहे-बाबल नबूक़दनज़ज़र की ख़िदमत करके उसका जुआ क़बूल करे। जो इनकार करे उसे मैं तलवार, काल और मोहलक बीमारियों से उस वक़्त तक सज़ा दूँगा जब तक वह पूरे तौर पर नबूक़दनज़ज़र के हाथ से तबाह न हो जाए। यह रब का फ़रमान है।

9 चुनौचे अपने नबियों, फ़ालगीरों, ख़ाब देखनेवालों, किस्मत का हाल बतानेवालों और जादूगरों पर ध्यान न दो जब वह तुम्हें बताते हैं कि तुम शाहे-बाबल की ख़िदमत नहीं करोगे। 10 क्योंकि वह तुम्हें झूठी पेशगोइयाँ पेश कर रहे हैं जिनका सिर्फ़ यह नतीजा निकलेगा कि मैं तुम्हें वतन से निकालकर मुंतशिर करूँगा और तुम हलाक हो जाओगे। 11 लेकिन जो क़ौम शाहे-बाबल का जुआ क़बूल करके उस की ख़िदमत करे उसे मैं उसके अपने मुल्क में रहने दूँगा, और वह उस की खेतीबाड़ी करके उसमें बसेगी। यह रब का फ़रमान है।”

12 मैंने यही पैग़ाम यहदाह के बादशाह सिदक्रियाह को भी सुनाया। मैं बोला, “शाहे-बाबल के जुए को क़बूल करके उस की और उस की क़ौम की ख़िदमत करो तो तुम ज़िंदा रहोगे। 13 क्या ज़रूरत है कि तू अपनी क़ौम समेत तलवार, काल और मोहलक बीमारियों की ज़द में आकर हलाक हो जाए? क्योंकि रब ने फ़रमाया है कि हर क़ौम जो शाहे-बाबल की ख़िदमत करने से इनकार करे उसका यही अंजाम होगा। 14 उन नबियों पर तवज्ज़ुह मत देना जो तुमसे कहते हैं, ‘तुम शाहे-बाबल की ख़िदमत नहीं करोगे।’ उनकी यह पेशगोई झूट ही है। 15 रब फ़रमाता है, ‘मैंने उन्हें नहीं भेजा बल्कि वह मेरा नाम लेकर झूठी पेशगोइयाँ सुना रहे हैं। अगर तुम उनकी सुनो तो मैं तुम्हें मुंतशिर कर दूँगा, और तुम नबुव्वत करनेवाले उन नबियों समेत हलाक हो जाओगे।’”

16 फिर मैं इमामों और पूरी क़ौम से मुखातिब हुआ, “रब फ़रमाता है, ‘उन नबियों की न सुनो जो नबुव्वत करके कहते हैं कि अब रब के घर का सामान जल्द ही मुल्के-बाबल से वापस लाया जाएगा। वह तुम्हें झूठी पेशगोइयाँ बयान कर रहे हैं। 17 उन पर तवज्ज़ुह मत देना। बाबल के बादशाह की ख़िदमत करो तो तुम ज़िंदा रहोगे। यह शहर क्यों मलबे का ढेर बन जाए? 18 अगर यह लोग वाकई नबी हों और इन्हें रब का कलाम मिला हो तो इन्हें रब के घर, शाही महल और यरूशलम में अब तक बचे हुए सामान के लिए दुआ करनी चाहिए। वह रब्बुल-अफ़वाज़ से शफ़ाअत करें कि यह चीज़ें मुल्के-बाबल न ले जाई जाएँ बल्कि यहीं रहें।

19-22 अब तक पीतल के सतून, पीतल का हौज़ बनाम समुंद्र, पानी के बासन उठानेवाली हथगाड़ियाँ और इस शहर का बाकी बचा हुआ सामान यहीं मौजूद है। नबूकदनज़र ने इन्हें उस वक़्त अपने साथ नहीं लिया था जब वह यहूदाह के बादशाह यह्याकीन * बिन यह्यक्रीम को यरूशलम और यहूदाह के तमाम शूरफ़ा समेत जिलावतन करके मुल्के-बाबल ले गया था। लेकिन रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का खुदा है इन चीज़ों के बारे में फ़रमाता है कि जितनी भी क्रीमती चीज़ें अब तक रब के घर, शाही महल या यरूशलम में कहीं और बच गई हैं वह भी मुल्के-बाबल में पहुँचाई जाएंगी। वहीं वह उस वक़्त तक रहेंगी जब तक मैं उन पर नज़र डालकर उन्हें इस जगह वापस न लाऊँ।' यह रब का फ़रमान है।"

28

हननियाह नबी की मुख़ालफ़त

1 उसी साल के पाँचवें महीने * में जबऊन का रहनेवाला नबी हननियाह बिन अज़्ज़ूर रब के घर में आया। उस वक़्त यानी सिदक़ियाह की हुक़मत के चौथे साल में वह इमामों और क़ौम की मौजूदगी में मुझसे मुख़ातिब हुआ, 2 "रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है कि मैं शाहे-बाबल का जुआ तोड़ डालूँगा। 3 दो साल के अंदर अंदर मैं रब के घर का वह सारा सामान इस जगह वापस पहुँचाऊँगा जो शाहे-बाबल नबूकदनज़र यहाँ से निकालकर बाबल ले गया था। 4 उस वक़्त मैं यहूदाह के बादशाह यह्याकीन † बिन यह्यक्रीम और यहूदाह के दीगर तमाम जिलावतनों को भी बाबल से वापस लाऊँगा। क्योंकि मैं यकीनन शाहे-बाबल का जुआ तोड़ डालूँगा। यह रब का फ़रमान है।"

5 यह सुनकर यरमियाह ने इमामों और रब के घर में खड़े बाक़ी परस्तारों की मौजूदगी में हननियाह नबी से कहा, 6 "आमीन! रब ऐसा ही करे, वह तेरी पेशगोई पूरी करके रब के घर का सामान और तमाम जिलावतनों को बाबल से इस जगह वापस लाए। 7 लेकिन उस पर तबज्जुह दे जो मैं तेरी और पूरी क़ौम की मौजूदगी में बयान करता हूँ। 8 क़दीम ज़माने से लेकर आज तक जितने नबी मुझसे और तुझसे पहले ख़िदमत करते आए हैं उन्होंने मृतअद्विद मुल्कों और बड़ी बड़ी सलतनतों के बारे में नबुव्वत की थी कि उन पर जंग, आफ़त और मोहलक बीमारियाँ नाज़िल होंगी। 9 चुनौचे ख़बरदार! जो नबी सलामती की पेशगोई करे उस की तसदीक़ उस वक़्त होगी जब उस की पेशगोई पूरी हो जाएगी। उसी वक़्त लोग जान लेंगे कि उसे वाक़ई रब की तरफ़ से भेजा गया है।"

10 तब हननियाह ने लकड़ी के जुए को यरमियाह की गरदन पर से उतारकर उसे तोड़ दिया। 11 तमाम लोगों के सामने उसने कहा, "रब फ़रमाता है कि दो साल के अंदर अंदर मैं इसी तरह शाहे-बाबल नबूकदनज़र का जुआ तमाम क़ौमों की गरदन पर से उतारकर तोड़ डालूँगा।" तब यरमियाह वहाँ से चला गया।

12 इस वाक़िये के थोड़ी देर बाद रब यरमियाह से हमकलाम हुआ, 13 "जा, हननियाह को बता, 'रब फ़रमाता है कि तूने लकड़ी का जुआ तो तोड़ दिया है, लेकिन उस की जगह तूने अपनी गरदन पर लोहे का जुआ रख लिया है।' 14 क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है कि मैंने लोहे का जुआ इन तमाम क़ौमों पर रख दिया है ताकि वह नबूकदनज़र की ख़िदमत करें। और न सिर्फ़ यह उस की ख़िदमत करेंगे बल्कि मैं जंगली जानवरों को भी उसके हाथ में कर दूँगा।"

15 फिर यरमियाह ने हननियाह से कहा, "ऐ हननियाह, सुन! गो रब ने तुझे नहीं भेजा तो भी तूने इस क़ौम को झूट पर भरोसा रखने पर आमादा किया है। 16 इसलिए रब फ़रमाता है, 'मैं तुझे रूए-ज़मीन पर से मिटाने को हूँ। इसी साल तू मर जाएगा, इसलिए कि तूने रब से सरकश होने का मशवरा दिया है।' "

17 और ऐसा ही हुआ। उसी साल के सातवें महीने ‡ यानी दो महीने के बाद हननियाह नबी कूच कर गया।

29

यरमियाह जिलावतनों को ख़त भेजता है

1 एक दिन यरमियाह नबी ने यरूशलम से एक ख़त मुल्के-बाबल भेजा। यह ख़त उन बचे हुए बुजुर्गों, इमामों, नबियों और बाक़ी इसराईलियों के नाम लिखा था जिन्हें नबूकदनज़र बादशाह जिलावतन करके बाबल ले गया था। 2 उनमें यह्याकीन * बादशाह, उस की माँ और दरबारी, और यहूदाह और यरूशलम के बुजुर्ग, कारीगर और लोहार शामिल थे। 3 यह ख़त इलियासा बिन साफ़न और जमरियाह बिन खिलकियाह के हाथ बाबल पहुँचा जिन्हें यहूदाह के बादशाह सिदक़ियाह ने बाबल में शाहे-बाबल नबूकदनज़र के पास भेजा था। ख़त में लिखा था,

4 "रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है, 'ऐ तमाम जिलावतनो जिन्हें मैं यरूशलम से निकालकर बाबल ले गया हूँ, ध्यान से सुनो!

5 बाबल में घर बनाकर उनमें बसने लगे। बाग़ लगाकर उनका फल खाओ। 6 शादी करके बेटे-बेटियाँ पैदा करो। अपने बेटे-बेटियों की शादी कराओ ताकि उनके भी बच्चे पैदा हो जाएँ। ध्यान दो कि मुल्के-बाबल में तुम्हारी तादाद कम न हो जाए बल्कि बढ़ जाए। 7 उस शहर की सलामती के तालिब रहो जिसमें मैं तुम्हें जिलावतन करके ले गया हूँ। रब से उसके लिए दुआ करो! क्योंकि तुम्हारी सलामती उसी की सलामती पर मुनहसिर है।'

* 27:19-22 इब्रानी में यह्याकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है। * 28:1 जुलाई ता अगस्त। † 28:4 इब्रानी में यह्याकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है। ‡ 28:17 सितंबर ता अक्तूबर। * 29:2 इब्रानी में यह्याकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

8 रब्बुल-अफवाज जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है, 'ख़बरदार! तुम्हारे दरमियान रहनेवाले नबी और किस्मत का हाल बतानेवाले तुम्हें फ़रेब न दें। उन ख़ाबों पर तवज़्जुह मत देना जो यह देखते हैं।' 9 रब फ़रमाता है, 'यह मेरा नाम लेकर तुम्हें झूटी पेशगोइयाँ सुनाते हैं, गो मैंने उन्हें नहीं भेजा।' 10 क्योंकि रब फ़रमाता है, 'तुम्हें बाबल में रहते हुए कुल 70 साल गुज़र जाएंगे। लेकिन इसके बाद मैं तुम्हारी तरफ़ रूज़ करूँगा, मैं अपना पुरफ़ज़ल वादा पूरा करके तुम्हें वापस लाऊँगा।' 11 क्योंकि रब फ़रमाता है, 'मैं उन मनसूबों से ख़ूब वाकिफ़ हूँ जो मैंने तुम्हारे लिए बाँधे हैं। यह मनसूबे तुम्हें नुक़सान नहीं पहुँचाएँगे बल्कि तुम्हारी सलामती का बाइस होंगे, तुम्हें उम्मीद दिलाकर एक अच्छा मुस्तक़बिल फ़राहम करेंगे। 12 उस वक़्त तुम मुझे पुकारोगे, तुम आकर मुझसे दुआ करोगे तो मैं तुम्हारी सुनूँगा। 13 तुम मुझे तलाश करके पा लोगे। क्योंकि अगर तुम पूरे दिल से मुझे ढूँढो 14 तो मैं होने दूँगा कि तुम मुझे पाओ।' यह रब का फ़रमान है। 'फिर मैं तुम्हें बहाल करके उन तमाम क़ौमों और मक़ामों से जमा करूँगा जहाँ मैंने तुम्हें मुंताशिर कर दिया था। और मैं तुम्हें उस मुल्क में वापस लाऊँगा जिससे मैंने तुम्हें निकालकर ज़िलावतन कर दिया था।' यह रब का फ़रमान है।

15 तुम्हारा दावा है कि रब ने यहाँ बाबल में भी हमारे लिए नबी बरपा किए हैं। 16-17 लेकिन रब का जवाब सुनो! दाऊद के तख़्त पर बैठनेवाले बादशाह और यरूशलम में बचे हुए तमाम बाशिंदों के बारे में रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, 'तुम्हारे जितने भाई ज़िलावतनी से बच गए हैं उनके खिलाफ़ मैं तलवार, काल और मोहलक बीमारियाँ भेज दूँगा। मैं उन्हें गले हुए अंजीरों की मानिंद बना दूँगा, जो ख़राब होने की वजह से खाए नहीं जाएंगे। 18 मैं तलवार, काल और मोहलक बीमारियों से उनका यों ताक़ुक़ करूँगा कि दुनिया के तमाम ममालिक उनकी हालत देखकर घबरा जाएंगे। जिस क़ौम में भी मैं उन्हें मुंताशिर करूँगा वहाँ लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे। किसी पर लानत भेजते वक़्त लोग कहेंगे कि उसे यहदाह के बाशिंदों का-सा अंजाम नसीब हो। हर जगह वह मज़ाक़ और स्सवाई का निशाना बन जाएंगे। 19 क्यों? इसलिए कि उन्होंने मेरी न सुनी, गो मैं अपने ख़ादिमों यानी नबियों के ज़रीए बार बार उन्हें पैग़ामात भेजता रहा। लेकिन तुमने भी मेरी न सुनी।' यह रब का फ़रमान है।

20 अब रब का फ़रमान सुनो, तुम सब जो ज़िलावतन हो चुके हो, जिन्हें मैं यरूशलम से निकालकर बाबल भेज चुका हूँ। 21 रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है, 'अख़ियब बिन क़ौलायाह और सिदक़ियाह बिन मासियाह मेरा नाम लेकर तुम्हें झूटी पेशगोइयाँ सुनाते हैं। इसलिए मैं उन्हें शाहे-बाबल नबूक़दनज़ज़र के हाथ में दूँगा जो उन्हें तेरे देखते देखते सज़ाए-मौत देगा। 22 उनका अंजाम इब्रतअंगेज़ मिसाल बन जाएगा। किसी पर लानत भेजते वक़्त यहदाह के ज़िलावतन कहेंगे, "रब तेरे साथ सिदक़ियाह और अख़ियब का-सा सुलूक करे जिन्हें शाहे-बाबल ने आग में भून लिया!" 23 क्योंकि उन्होंने इसराईल में बेदीन हरकतें की हैं। अपने पड़ोसियों की बीवियों के साथ ज़िना करने के साथ साथ उन्होंने मेरा नाम लेकर ऐसे झूठे पैग़ाम सुनाए हैं जो मैंने उन्हें सुनाने को नहीं कहा था। मुझे इसका पूरा इल्म है, और मैं इसका गवाह हूँ।' यह रब का फ़रमान है।"

समायाह के लिए रब का पैग़ाम

24 रब ने फ़रमाया, "बाबल के रहनेवाले समायाह नख़लामी को इतला दे, 25 रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है कि तूने अपनी ही तरफ़ से इमाम सफ़नियाह बिन मासियाह को ख़त भेजा। दीगर इमामों और यरूशलम के बाक़ी तमाम बाशिंदों को भी इसकी कापियाँ मिल गईं। ख़त में लिखा था,

26 'रब ने आपको यहोयदा की जगह अपने घर की देख-भाल करने की ज़िम्मादारी दी है। आपकी ज़िम्मादारियों में यह भी शामिल है कि हर दीवाने और नबुव्वत करनेवाले को काठ में डालकर उस की गरदन में लोहे की जंजीरें डालें। 27 तो फिर आपने अनतोत के रहनेवाले यरमियाह के खिलाफ़ कदम क्यों नहीं उठाया जो आपके दरमियान नबुव्वत करता रहता है? 28 क्योंकि उसने हमें जो बाबल में हैं ख़त भेजकर मशवरा दिया है कि देर लगेगी, इसलिए घर बनाकर उनमें बसने लगे, बाग़ लगाकर उनका फल खाओ'।"

29 जब सफ़नियाह को समायाह का ख़त मिल गया तो उसने यरमियाह को सब कुछ सुनाया। 30 तब यरमियाह पर रब का कलाम नाज़िल हुआ, 31 "तमाम ज़िलावतनों को ख़त भेजकर लिख दे, 'रब समायाह नख़लामी के बारे में फ़रमाता है कि गो मैंने समायाह को नहीं भेजा तो भी उसने तुम्हें पेशगोइयाँ सुनाकर झूट पर भरोसा रखने पर आमादा किया है। 32 चुनाँचे रब फ़रमाता है कि मैं समायाह नख़लामी को उस की औलाद समेत सज़ा दूँगा। इस क़ौम में उस की नसल ख़त्म हो जाएगी, और वह खुद उन अच्छी चीज़ों से लुत्फ़अंदोज़ नहीं होगा जो मैं अपनी क़ौम को फ़राहम करूँगा। क्योंकि उसने रब से सरकश होने का मशवरा दिया है'।"

30

इसराईल और यहदाह बहाल हो जाएंगे

1 रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ, 2 "रब इसराईल का खुदा फ़रमाता है कि जो भी पैग़ाम मैंने तुझ पर नाज़िल किए उन्हें किताब की सूरत में कलमबंद कर! 3 क्योंकि रब फ़रमाता है कि वह वक़्त आनेवाला है जब मैं अपनी क़ौम इसराईल और यहदाह को बहाल करके उस मुल्क में वापस लाऊँगा जो मैंने उनके बापदादा को मीरास में दिया था।"

4 यह इसराईल और यहूदा के बारे में रब के फ़रमान हैं। 5 “रब फ़रमाता है, ‘ख़ौफ़ज़दा चीखें सुनाई दे रही हैं। अमन का नामो-निशान तक नहीं बल्कि चारों तरफ़ दहशत ही दहशत फैली हुई है। 6 क्या मर्द बच्चे जन्म दे सकता है? तो फिर तमाम मर्द क्यों अपने हाथ कमर पर रखकर दर्द-ज़ह में मुब्तला औरतों की तरह तड़प रहे हैं? हर एक का रंग फ़क पड़ गया है।

7 अफ़सोस! वह दिन कितना हौलनाक होगा! उस जैसा कोई नहीं होगा। याक़ूब की औलाद को बड़ी मुसीबत पेश आएगी, लेकिन आखिरकार उसे रिहाई मिलेगी।’ 8 रब फ़रमाता है, ‘उस दिन मैं उनकी गरदन पर रखे जुए और उनकी जंजीरों को तोड़ डालूँगा। तब वह ग़ैरमुल्कियों के गुलाम नहीं रहेंगे 9 बल्कि रब अपने खुदा और दाऊद की नसल के उस बादशाह की खिदमत करेंगे जिसे मैं बरपा करके उन पर मुक़र्रर करूँगा।’

10 चुनौचे रब फ़रमाता है, ‘ऐ याक़ूब मेरे खादिम, मत डर! ऐ इसराईल, दहशत मत खा! देख, मैं तुझे दूर-दराज़ इलाकों से और तेरी औलाद को जिलावतनी से छुड़ाकर वापस ले आऊँगा। याक़ूब वापस आकर सुकून से ज़िंदगी गुज़ारेगा, और उसे पेशान करनेवाला कोई नहीं होगा।’

11 क्योंकि रब फ़रमाता है, ‘मैं तेरे साथ हूँ, मैं ही तुझे बचाऊँगा। मैं उन तमाम कौमों को नेस्तो-नाबूद कर दूँगा जिनमें मैंने तुझे मुंतशिर कर दिया है, लेकिन तुझे मैं इस तरह सफ़हाए-हस्ती से नहीं मिटाऊँगा। अलबत्ता मैं मुनासिब हद तक तेरी तंबीह करूँगा, क्योंकि मैं तुझे सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ सकता।’

12 क्योंकि रब फ़रमाता है, ‘तेरा ज़ख़म लाइलाज है, तेरी चोट भर ही नहीं सकती। 13 कोई नहीं है जो तेरे हक़ में बात करे, तेरे फोड़ों का मुआलजा और तेरी शफ़ा मुमकिन ही नहीं! 14 तेरे तमाम आशिक़ * तुझे भूल गए हैं और तेरी परवा ही नहीं करते। तेरा कुसूर बहुत संगीन है, तुझसे बेशुमार गुनाह सरज़द हुए हैं। इसी लिए मैंने तुझे दुश्मन की तरह मारा, ज़ालिम की तरह तंबीह दी है।

15 अब जब चोट लग गई है और लाइलाज दर्द महसूस हो रहा है तो तू मदद के लिए क्यों चीखता है? यह मैं ही ने तेरे संगीन कुसूर और मुतअद्दिद गुनाहों की वजह से तेरे साथ किया है।

16 लेकिन जो तुझे हड़प करें उन्हें भी हड़प किया जाएगा। तेरे तमाम दुश्मन जिलावतन हो जाएंगे। जिन्होंने तुझे लूट लिया उन्हें भी लूटा जाएगा, जिन्होंने तुझे ग़ारत किया उन्हें भी ग़ारत किया जाएगा।’ 17 क्योंकि रब फ़रमाता है, ‘मैं तेरे ज़ख़मों को भरकर तुझे शफ़ा दूँगा, क्योंकि लोगों ने तुझे मरदूद करार देकर कहा है कि सिय्यून को देखो जिसकी फ़िकर कोई नहीं करता।’ 18 रब फ़रमाता है, ‘देखो, मैं याक़ूब के ख़ैमों की बदनसीबी ख़त्म करूँगा, मैं इसराईल के घरों पर तरस खाऊँगा। तब यरूशलम को खंडरात पर नए सिरे से तामीर किया जाएगा, और महल को दुबारा उस की पुरानी जगह पर खड़ा किया जाएगा।

19 उस वक़्त वहाँ शुक़गुज़ारी के गीत और खुशी मनानेवालों की आवाज़ें बुलंद हो जाएँगी। और मैं ध्यान दूँगा कि उनकी तादाद कम न हो जाए बल्कि मज़ीद बढ़ जाए। उन्हें हकीर नहीं समझा जाएगा बल्कि मैं उनकी इज़ज़त बहुत बढ़ा दूँगा। 20 उनके बच्चे क़दीम ज़माने की तरह महफूज़ ज़िंदगी गुज़ारेंगे, और उनकी जमात मज़बूती से मेरे हज़ूर कायम रहेगी। लेकिन जितनों ने उन पर ज़ुल्म किया है उन्हें मैं सज़ा दूँगा।

21 उनका हुक्मरान उनका अपना हमवतन होगा, वह दुबारा उनमें से उठकर तख़्तनशीन हो जाएगा। मैं खुद उसे अपने करीब लाऊँगा तो वह मेरे करीब आएगा।’ क्योंकि रब फ़रमाता है, ‘सिर्फ़ वही अपनी जान खतरे में डालकर मेरे करीब आने की ज़ुरत कर सकता है जिसे मैं खुद अपने करीब लाया हूँ। 22 उस वक़्त तुम मेरी कौम होगे और मैं तुम्हारा खुदा हूँगा।’

23 देखो, रब का ग़ज़ब ज़बरदस्त आँधी की तरह नाज़िल हो रहा है। तेज़ बग़ले के झोंके बेदीनों के सरो पर उतर रहे हैं। 24 और रब का शदीद कहर उस वक़्त तक ठंडा नहीं होगा जब तक उसने अपने दिल के मनसूबों को तकमील तक नहीं पहुँचाया। आनेवाले दिनों में तुम्हें इसकी साफ़ समझ आएगी।

31

जिलावतनों की वापसी

1 रब फ़रमाता है, “उस वक़्त मैं तमाम इसराईली घरानों का खुदा हूँगा, और वह मेरी कौम होंगे।” 2 रब फ़रमाता है, “तलवार से बचे हुए लोगों को रेगिस्तान में ही मेरा फ़ज़ल हासिल हुआ है, और इसराईल अपनी आरामगाह के पास पहुँच रहा है।”

3 रब ने दूर से इसराईल पर ज़ाहिर होकर फ़रमाया, “मैंने तुझे हमेशा ही प्यार किया है, इसलिए मैं तुझे बड़ी शफ़क़त से अपने पास खींच लाया हूँ। 4 ऐ कुँवारी इसराईल, तेरी नए सिरे से तामीर हो जाएगी, क्योंकि मैं खुद तुझे तामीर करूँगा। तू दुबारा अपने दफ़ों से आरास्ता होकर खुशी मनानेवालों के लोकनाच के लिए निकलेगी। 5 तू दुबारा सामरिया की पहाड़ियों पर अंगूर के बाग़ लगाएगी। और जो पौदों को लगाएंगे वह खुद उनके फल से लुफ़अंदोज़ होंगे। 6 क्योंकि वह दिन आनेवाला है जब इफ़राईम के पहाड़ी इलाके के पहरदार आवाज़ देकर कहेंगे, ‘आओ हम सिय्यून के पास जाएँ ताकि रब अपने खुदा को सिजदा करें।’”

7 क्योंकि रब फ़रमाता है, “याक़ूब को देखकर खुशी मनाओ! कौमों के सरबराह को देखकर शादमानी का नारा मारो! बुलंद आवाज़ से अल्लाह की हम्दो-सना करके कहो, ‘ऐ रब, अपनी कौम को बचा, इसराईल के बचे हुए हिस्से को छुटकारा दे।’ 8 क्योंकि मैं उन्हें शिमाली मुल्क से वापस लाऊँगा, उन्हें दुनिया की इतहा से जमा करूँगा। अंधे और लँगड़े उनमें शामिल होंगे, हामिला और जन्म देनेवाली औरतें भी साथ

* 30:14 आशिक से मुराद इसराईल के इत्हादी हैं।

चलेंगी। उनका बड़ा हुजूम वापस आएगा। 9 और जब मैं उन्हें वापस लाऊंगा तो वह रोते हुए और इल्लिजाएँ करते हुए मेरे पीछे चलेंगे। मैं उन्हें नदियों के किनारे किनारे और ऐसे हमवार रास्तों पर वापस ले चलाऊंगा, जहाँ ठोकर खाने का खतरा नहीं होगा। क्योंकि मैं इसराईल का बाप हूँ, और इफराईम * मेरा पहलौठा है।

10 ऐ क्रौमो, रब का कलाम सुनो! दूर-दराज़ जज़ीरों तक एलान करो, 'जिसने इसराईल को मुंतशिर कर दिया है वह उसे दुबारा जमा करेगा और चरवाहे की-सी फ़िकर रखकर उस की गल्लाबानी करेगा।' 11 क्योंकि रब ने फ़िघा देकर याकूब को बचाया है, उसने एवज़ाना देकर उसे ज़ोरावर के हाथ से छुड़ाया है। 12 तब वह आकर सिय्यून की बुलंदी पर खुशी के नारे लगाएँगे, उनके चेहरे रब की बरकतों को देखकर चमक उठेंगे। क्योंकि उस वक़्त वह उन्हें अनाज़, नई मै, ज़ैतून के तेल और जवान भेड़-बकरियों और गाय-बैलों की कसरत से नवाज़ेगा। उनकी जान सेराब बाग की तरह सरसब्ज़ होगी, और उनकी निडाल हालत सँभल जाएगी। 13 फिर कुँवारियाँ खुशी के मारे लोकनाच नाचेंगी, जवान और बुजुर्ग आदमी भी उसमें हिस्सा लेंगे। यों मैं उनका मातम खुशी में बदल दूँगा, मैं उनके दिलों से ग़म निकालकर उन्हें अपनी तसल्ली और शादमानी से भर दूँगा।" 14 रब फ़रमाता है, "मैं इमामों की जान को तरो-ताज़ा करूँगा, और मेरी क्रौम मेरी बरकतों से सेर हो जाएगी।"

15 रब फ़रमाता है, "रामा में शोर मच गया है, रोने पीटने और शदीद मातम की आवाज़ें। राखिल अपने बच्चों के लिए रो रही है और तसल्ली कबूल नहीं कर रही, क्योंकि वह हलाक हो गए हैं।"

16 लेकिन रब फ़रमाता है, "रोने और आँसू बहाने से बाज़ आ, क्योंकि तुझे अपनी मेहनत का अज़्र मिलेगा। यह रब का वादा है कि वह दुश्मन के मुल्क से लौट आएँगे। 17 तेरा मुस्तक़बिल पुरउम्मीद होगा, क्योंकि तेरे बच्चे अपने वतन में वापस आएँगे।" यह रब का फ़रमान है।

18 "इसराईल † की गिर्याओ-ज़ारी मुझ तक पहुँच गई है। क्योंकि वह कहता है, 'हाय, तूने मेरी सख़्त तादीब की है। मेरी यों तरबियत हुई है जिस तरह बछड़े की होती है जब उस की गरदन पर पहली बार जुआ रखा जाता है। ऐ रब, मुझे वापस ला ताकि मैं वापस आऊँ, क्योंकि तू ही रब मेरा खुदा है। 19 मेरे वापस आने पर मुझे नदामत महसूस हुई, और समझ आने पर मैं अपना सीना पीटने लगा। मुझे शरमिंदगी और स्सवाई का शदीद एहसास हो रहा है, क्योंकि अब मैं अपनी जवानी के शर्मनाक फल की फसल काट रहा हूँ।' 20 लेकिन रब फ़रमाता है कि इसराईल मेरा क़ीमती बेटा, मेरा लाडला है। गो मैं बार बार उसके खिलाफ़ बातें करता हूँ तो भी उसे याद करता रहता हूँ। इसलिए मेरा दिल उसके लिए तड़पता है, और लाज़िम है कि मैं उस पर तरस खाऊँ।

21 ऐ मेरी क्रौम, ऐसे निशान खड़े कर जिनसे लोगों को सहीह रास्ते का पता चले! उस पक्की सड़क पर ध्यान दे जिस पर तूने सफ़र किया है। ऐ कुँवारी इसराईल, वापस आ, अपने इन शहरों में लौट आ! 22 ऐ बेवफ़ा बेटी, तू कब तक भटकती फिरेगी? रब ने मुल्क में एक नई चीज़ पैदा की है, यह कि आइंदा औरत आदमी के गिर्द रहेगी।"

इसराईल और यहदाह दुबारा आबाद हो जाएंगे

23 रब्बुल-अफ़वाज़ जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है, "जब मैं इसराईलियों को बहाल करूँगा तो मुल्के-यहदाह और उसके शहरों के बाशिंदे दुबारा कहेंगे, 'ऐ रास्ती के घर, ऐ मुक़द्दस पहाड़, रब तुझे बरकत दे!' 24 तब यहदाह और उसके शहर दुबारा आबाद होंगे। किसान भी मुल्क में बसेंगे, और वह भी जो अपने रेवड़ों के साथ इधर उधर फिरते हैं। 25 क्योंकि मैं थकेमौंदों को नई ताक़त दूँगा और ग़श खानेवालों को तरो-ताज़ा करूँगा।"

26 तब मैं जाग उठा और चारों तरफ़ देखा। मेरी नींद कितनी मीठी रही थी!

27 रब फ़रमाता है, "वह वक़्त आनेवाला है जब मैं इसराईल के घराने और यहदाह के घराने का बीज बोकर इनसानो-हैवान की तादाद बढ़ा दूँगा। 28 पहले मैंने बड़े ध्यान से उन्हें जड़ से उखाड़ दिया, गिरा दिया, ढा दिया, हाँ तबाह करके खाक में मिला दिया। लेकिन आइंदा मैं उतने ही ध्यान से उन्हें तामीर करूँगा, उन्हें पनीरी की तरह लगा दूँगा।" यह रब का फ़रमान है। 29 "उस वक़्त लोग यह कहने से बाज़ आएँगे कि वालिदैन् ने खट्टे अंगूर खाए, लेकिन दाँत उनके बच्चों के खट्टे हो गए हैं। 30 क्योंकि अब से खट्टे अंगूर खानेवाले के अपने ही दाँत खट्टे होंगे। अब से उसी को सज़ाए-मौत दी जाएगी जो कुसूरवार है।"

नया अहद

31 रब फ़रमाता है, "ऐसे दिन आ रहे हैं जब मैं इसराईल के घराने और यहदाह के घराने के साथ एक नया अहद बाँधूँगा। 32 यह उस अहद की मानिंद नहीं होगा जो मैंने उनके बापदादा के साथ उस दिन बाँधा था जब मैं उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिसर से निकाल लाया। क्योंकि उन्होंने वह अहद तोड़ दिया, गो मैं उनका मालिक था।" यह रब का फ़रमान है।

33 "जो नया अहद मैं उन दिनों के बाद इसराईल के घराने के साथ बाँधूँगा उसके तहत मैं अपनी शरीअत उनके अंदर डालकर उनके दिलों पर कंदा करूँगा। तब मैं ही उनका खुदा हूँगा, और वह मेरी क्रौम होंगे। 34 उस वक़्त से इसकी ज़रूरत नहीं रहेगी कि कोई अपने पड़ोसी या भाई को तालीम देकर कहे, 'रब को जान लो।' क्योंकि छोटे से लेकर बड़े तक सब मुझे जानेंगे। क्योंकि मैं उनका कुसूर मुआफ़ करूँगा और आइंदा उनके गुनाहों को याद नहीं करूँगा।" यह रब का फ़रमान है।

* 31:9 यहाँ इफ़राईम इसराईल का दूसरा नाम है। † 31:18 लफ़्ज़ी तरजुमा : इफ़राईम।

35 रब फ़रमाता है, “मैं ही ने मुक़र्रर किया है कि दिन के वक़्त सूरज चमके और रात के वक़्त चाँद सितारों समेत रौशनी दे। मैं ही समुंदर को यों उछाल देता हूँ कि उस की मौजें गरजने लगती हैं। रब्बुल-अफ़वाज ही मेरा नाम है।” 36 रब फ़रमाता है, “जब तक यह कुदरती उसूल मेरे सामने कायम रहेंगे उस वक़्त तक इसराईल कौम मेरे सामने कायम रहेगी। 37 क्या इनसान आसमान की पैमाइश कर सकता है? या क्या वह ज़मीन की बुनियादों की तफ़्तीश कर सकता है? हरगिज़ नहीं! इसी तरह यह मुमकिन ही नहीं कि मैं इसराईल की पूरी कौम को उसके गुनाहों के सबब से रद्द करूँ।” यह रब का फ़रमान है।

यरुशलम को नए सिरे से तामीर किया जाएगा

38 रब फ़रमाता है, “वह वक़्त आनेवाला है जब यरुशलम को रब के लिए नए सिरे से तामीर किया जाएगा। तब उस की फ़सील हननेल के बुर्ज से लेकर कोने के दरवाज़े तक तैयार हो जाएगी। 39 वहाँ से शहर की सरहद सीधी ज़रीब पहाड़ी तक पहुँचेगी, फिर जोआ की तरफ़ मुड़ेगी। 40 उस वक़्त जो वादी लाशों और भस्म हुई चरबी की राख से नापाक हुई है वह पूरे तौर पर रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस होगी। उस की ढलानों पर के तमाम खेत भी वादीए-किदरोन तक शामिल होंगे, बल्कि मशरिक में घोड़े के दरवाज़े के कोने तक सब कुछ मुक़द्दस होगा। आइदा शहर को न कभी दुबारा जड़ से उखाड़ा जाएगा, न तबाह किया जाएगा।”

32

यरमियाह मुहासरे के दौरान खेत ख़रीदता है

1 यहदाह के बादशाह सिदकियाह की हुकूमत के दसवें साल में रब यरमियाह से हमकलाम हुआ। उस वक़्त नबूकदनज्ज़र जो 18 साल से बाबल का बादशाह था 2 अपनी फ़ौज के साथ यरुशलम का मुहासरा कर रहा था। यरमियाह उन दिनों में शाही महल के मुहाफ़िज़ों के सहन में कैद था। 3 सिदकियाह ने यह कहकर उसे गिरफ़्तार किया था, “तू क्यों इस किस्म की पेशगोई सुनाता है? तू कहता है, ‘रब फ़रमाता है कि मैं इस शहर को शाहे-बाबल के हाथ में देनेवाला हूँ। जब वह उस पर कब्ज़ा करेगा 4 तो सिदकियाह बाबल की फ़ौज से नहीं बचेगा। उसे शाहे-बाबल के हवाले कर दिया जाएगा, और वह उसके रूबरू उससे बात करेगा, अपनी आँखों से उसे देखेगा। 5 शाहे-बाबल सिदकियाह को बाबल ले जाएगा, और वहाँ वह उस वक़्त तक रहेगा जब तक मैं उसे दुबारा कबूल न करूँ। रब फ़रमाता है कि अगर तुम बाबल की फ़ौज से लड़ो तो नाकाम रहोगे।”

6 जब रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ तो यरमियाह ने कहा, “रब मुझसे हमकलाम हुआ, 7 ‘तेरा चचाज़ाद भाई हनमेल बिन सल्लूम तेरे पास आकर कहेगा कि अनतोत में मेरा खेत ख़रीद लें। आप सबसे करीबी रिश्तेदार हैं, इसलिए उसे ख़रीदना आपका हक़ बल्कि फ़र्ज़ भी है ताकि ज़मीन हमारे ख़ानदान की मिलकियत रहे।’ * 8 ऐसा ही हुआ जिस तरह रब ने फ़रमाया था। मेरा चचाज़ाद भाई हनमेल शाही मुहाफ़िज़ों के सहन में आया और मुझसे कहा, ‘बिनयमीन के कबीले के शहर अनतोत में मेरा खेत ख़रीद लें। यह खेत ख़रीदना आपका मौरूसी हक़ बल्कि फ़र्ज़ भी है ताकि ज़मीन हमारे ख़ानदान की मिलकियत रहे। आँ, उसे ख़रीद लें।’

तब मैंने जान लिया कि यह वही बात है जो रब ने फ़रमाई थी। 9 चुनाँचे मैंने अपने चचाज़ाद भाई हनमेल से अनतोत का खेत ख़रीदकर उसे चाँदी के 17 सिक्के दे दिए। 10 मैंने इंतकालनामा लिखकर उस पर मुहर लगाई, फिर चाँदी के सिक्के तोलकर अपने भाई को दे दिए। मैंने गवाह भी बुलाए थे ताकि वह पूरी काररवाई की तसदीक करें। 11-12 इसके बाद मैंने मुहरशुदा इंतकालनामा तमाम शरायत और क़वायद समेत बास्क बिन नैरियाह बिन महसियाह के सुपुर्द कर दिया। साथ साथ मैंने उसे एक नक़ल भी दी जिस पर मुहर नहीं लगी थी। हनमेल, इंतकालनामे पर दस्तख़त करनेवाले गवाह और सहन में हाज़िर बाक़ी हमवतन सब इसके गवाह थे। 13 उनके देखते देखते मैंने बास्क को हिदायत दी,

14 ‘रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है कि मुहरशुदा इंतकालनामा और उस की नक़ल लेकर मिट्टी के बरतन में डाल दे ताकि लंबे अरसे तक महफूज़ रहें। 15 क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है कि एक वक़्त आएगा जब इस मुल्क में दुबारा घर, खेत और अंगूर के बाग़ ख़रीदे जाएंगे।’

यरमियाह अल्लाह की तमज़ीद करता है

16 बास्क बिन नैरियाह को इंतकालनामा देने के बाद मैंने रब से दुआ की,

17 ‘ऐ रब कादिरे-मुतलक़, तूने अपना हाथ बढ़ाकर बड़ी कुदरत से आसमानो-ज़मीन को बनाया, तेरे लिए कोई भी काम नामुमकिन नहीं। 18 तू हजारों पर शफ़क़त करता और साथ साथ बच्चों को उनके वालिदैन के गुनाहों की सज़ा देता है। ऐ अज़ीम और कादिर खुदा जिसका नाम रब्बुल-अफ़वाज है, 19 तेरे मकासिद अज़ीम और तेरे काम ज़बरदस्त हैं, तेरी आँखें इनसान की तमाम राहों को देखती रहती हैं। तू हर एक को उसके चाल-चलन और आमाल का मुनासिब अज़्र देता है।

20 मिसर में तूने इलाही निशान और मोजिज़े दिखाए, और तेरा यह सिलसिला आज तक जारी रहा है, इसराईल में भी और बाक़ी कौमों में भी। यों तेरे नाम को वह इज्ज़तो-जलाल मिला जो तुझे आज तक हासिल है। 21 तू इलाही निशान और मोजिज़े दिखाकर अपनी कौम इसराईल को मिसर से निकाल लाया। तूने अपना हाथ बढ़ाकर अपनी अज़ीम कुदरत मिसरियों पर ज़ाहिर की तो उन पर शदीद दहशत तारी हुई। 22 तब

* 32:7 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : एवज़ाना देकर उसे छुड़ाना (ताकि ख़ानदान का हिस्सा रहे) आप ही का हक़ है।

तूने अपनी क़ौम को यह मुल्क बख़्श दिया जिसमें दूध और शहद की कसरत थी और जिसका वादा तूने कसम खाकर उनके बापदादा से किया था।

²³ लेकिन जब हमारे बापदादा ने मुल्क में दाखिल होकर उस पर क़ब्ज़ा किया तो उन्होंने न तेरी सुनी, न तेरी शरीअत के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी। जो कुछ भी तूने उन्हें करने को कहा था उस पर उन्होंने अमल न किया। नतीजे में तू उन पर यह आफ़त लाया। ²⁴ दुश्मन मिट्टी के पुशते बनाकर फ़सील के करीब पहुँच चुका है। हम तलवार, काल और मोहलक बीमारियों से इतने कमज़ोर हो गए हैं कि जब बाबल की फ़ौज शहर पर हमला करेगी तो वह उसके क़ब्ज़े में आएगा। जो कुछ भी तूने फ़रमाया था वह पेश आया है। तू खुद इसका गवाह है। ²⁵ लेकिन ऐ रब कादिरे-मुतलक़, कमाल है कि गो शहर को बाबल की फ़ौज के हवाले किया जाएगा तो भी तू मुझसे हमकलाम हुआ है कि चाँदी देकर खेत ख़रीद ले और गवाहों से काररवाई की तसदीक़ करवा।”

रब का जवाब

²⁶ तब रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ, ²⁷ “देख, मैं रब और तमाम इनसानों का खुदा हूँ। तो फिर क्या कोई काम है जो मुझसे नहीं हो सकता?” ²⁸ चुनौचे रब फ़रमाता है, “मैं इस शहर को बाबल और उसके बादशाह नबूकदनज़र के हवाले कर दूँगा। वह ज़रूर उस पर क़ब्ज़ा करेगा। ²⁹ बाबल के जो फ़ौजी इस शहर पर हमला कर रहे हैं इसमें घुसकर सब कुछ जला देंगे, सब कुछ नज़रे-आतिश करेंगे। तब वह तमाम घर राख हो जाएंगे जिनकी छतों पर लोगों ने बाल देवता के लिए बखूर जलाकर और अजनबी माबूदों को मैं की नज़रें पेश करके मुझे तैश दिलाया।”

³⁰ रब फ़रमाता है, “इसराइल और यहूदाह के कबीले जवानी से लेकर आज तक वही कुछ करते आए हैं जो मुझे नापसंद है। अपने हाथों के काम से वह मुझे बार बार गुस्सा दिलाते रहे हैं। ³¹ यरूशलम की बुनियादेँ डालने से लेकर आज तक इस शहर ने मुझे हद से ज्यादा मुश्तइल कर दिया है। अब लाज़िम है कि मैं उसे नज़रों से दूर कर दूँ। ³² क्योंकि इसराइल और यहूदाह के बाशिंदों ने अपनी बुरी हरकतों से मुझे तैश दिलाया है, खाह बादशाह हो या मुलाज़िम, खाह इमाम हो या नबी, खाह यहूदाह हो या यरूशलम। ³³ उन्होंने अपना मुँह मुझसे फेरकर मेरी तरफ़ रूज़ करने से इनकार किया है। गो मैं उन्हें बार बार तालीम देता रहा तो भी वह सुनने या मेरी तरबियत क़बूल करने के लिए तैयार नहीं थे। ³⁴ न सिर्फ़ यह बल्कि जिस घर पर मेरे नाम का ठप्पा लगा है उसमें उन्होंने अपने धिनौने बुतों को रखकर उस की बेहुरमती की है। ³⁵ वादीए-बिन-हिन्नूम की ऊँची जगहों पर उन्होंने बाल देवता की कुरबानगाहें तामीर कीं ताकि वहाँ अपने बेटे-बेटियों को मलिक देवता के लिए कुरबान करें। मैंने उन्हें ऐसी काबिले-धिन हरकतें करने का हुक्म नहीं दिया था, बल्कि मुझे इसका ख़याल तक नहीं आया। यों उन्होंने यहूदाह को गुनाह करने पर उकसाया है।

³⁶ इस वक़्त तुम कह रहे हो, ‘यह शहर ज़रूर शाहे-बाबल के क़ब्ज़े में आ जाएगा, क्योंकि तलवार, काल और मोहलक बीमारियों ने हमें कमज़ोर कर दिया है।’ लेकिन अब शहर के बारे में रब का फ़रमान सुनो, जो इसराइल का खुदा है!

³⁷ बेशक मैं बड़े तैश में आकर शहर के बाशिंदों को मुख़्तलिफ़ ममालिक में मुतशिर कर दूँगा, लेकिन मैं उन्हें उन जगहों से फिर जमा करके वापस भी लाऊँगा ताकि वह दुबारा यहाँ सुकून के साथ रह सकें। ³⁸ तब वह मेरी क़ौम होंगे, और मैं उनका खुदा हूँगा। ³⁹ मैं होने दूँगा कि वह सोच और चाल-चलन में एक होकर हर वक़्त मेरा ख़ौफ़ मानेंगे। क्योंकि उन्हें मालूम होगा कि ऐसा करने से हमें और हमारी औलाद को बरकत मिलेगी।

⁴⁰ मैं उनके साथ अबदी अहद बाँधकर वादा करूँगा कि उन पर शफ़क़त करने से बाज़ नहीं आऊँगा। साथ साथ मैं अपना ख़ौफ़ उनके दिलों में डाल दूँगा ताकि वह मुझसे दूर न हो जाएँ। ⁴¹ उन्हें बरकत देना मेरे लिए खुशी का बाइस होगा, और मैं वफ़ादारी और पूरे दिलो-जान से उन्हें पनीरी की तरह इस मुल्क में दुबारा लगा दूँगा।” ⁴² क्योंकि रब फ़रमाता है, “मैं ही ने यह बड़ी आफ़त इस क़ौम पर नाज़िल की, और मैं ही उन्हें उन तमाम बरकतों से नवाज़ूँगा जिनका वादा मैंने किया है। ⁴³ बेशक तुम इस वक़्त कहते हो, ‘हाय, हमारा मुल्क वीरानो-सुनसान है, उसमें न इनसान और न हैवान रह गया है, क्योंकि सब कुछ बाबल के हवाले कर दिया गया है।’ लेकिन मैं फ़रमाता हूँ कि पूरे मुल्क में दुबारा खेत ख़रीदे ⁴⁴ और फ़रोख़्त किए जाएंगे। लोग मामूल के मुताबिक़ इंतक़ालनामे लिखकर उन पर मुहर लगाएँगे और काररवाई की तसदीक़ के लिए गवाह बुलाएँगे। तमाम इलाके यानी बिनयमीन के क़बायली इलाके में, यरूशलम के देहात में, यहूदाह और पहाड़ी इलाके के शहरों में, मगरिब के नशेबी पहाड़ी इलाके के शहरों में और दशते-नजब के शहरों में ऐसा ही किया जाएगा। मैं खुद उनकी बदनसीबी ख़त्म करूँगा।” यह रब का फ़रमान है।

33

यरूशलम में दुबारा खुशी होगी

¹ यरमियाह अब तक शाही मुहाफ़िज़ों के सहन में गिरिफ़्तार था कि रब एक बार फिर उससे हमकलाम हुआ, ² “जो सब कुछ खलक़ करता, तश्कील देता और कायम रखता है उसका नाम रब है। यही रब फ़रमाता है, ³ मुझे पुकार तो मैं तुझे जवाब में ऐसी अज़ीम और नाकाबिले-फ़हम बातें बयान करूँगा जो तू नहीं जानता।

⁴ क्योंकि रब जो इसराइल का खुदा है फ़रमाता है कि तुमने इस शहर के मकानों बल्कि चंद एक शाही मकानों को भी ढा दिया है ताकि उनके पत्थरों और लकड़ी से फ़सील को मज़बूत करो और शहर को दुश्मन के पुशतों और तलवार से बचाए रखो। ⁵ गो तुम बाबल की फ़ौज से

लड़ना चाहते हो, लेकिन शहर के घर इसराइलियों की लाशों से भर जाएंगे। क्योंकि उन्हीं पर मैं अपना ग़ज़ब नाज़िल करूँगा। यरूशलम की तमाम बेदीनी के बाइस मैंने अपना मुँह उससे छुपा लिया है।

6 लेकिन बाद में मैं उसे शफा देकर तनदुस्ती बख्शूँगा, मैं उसके बाशिंदों को सेहत अता करूँगा और उन पर देरपा सलामती और वफ़ादारी का इज़हार करूँगा। 7 क्योंकि मैं यहदाह और इसराइल को बहाल करके उन्हें वैसे तामीर करूँगा जैसे पहले थे। 8 मैं उन्हें उनकी तमाम बेदीनी से पाक-साफ़ करके उनकी तमाम सरकशी और तमाम गुनाहों को मुआफ़ कर दूँगा। 9 तब यरूशलम पूरी दुनिया में मेरे लिए मुसर्त, शोहरत, तारीफ़ और जलाल का बाइस बनेगा। दुनिया के तमाम ममालिक मेरी उस पर मेहरबानी देखकर मुतअस्सिर हो जाएंगे। वह घबराकर काँप उठेंगे जब उन्हें पता चलेगा कि मैंने यरूशलम को कितनी बरकत और सुकून मुहैया किया है।

10 तुम कहते हो, ‘हमारा शहर वीरानो-सुनसान है। उसमें न इनसान, न हैवान रहते हैं।’ लेकिन रब फ़रमाता है कि यरूशलम और यहदाह के दीगर शहरों की जो गलियाँ इस वक़्त वीरान और इनसानो-हैवान से खाली हैं, 11 उनमें दुबारा खुशीओ-शादमानी, दूल्हे दुलहन की आवाज़ और रब के घर में शुक्रगुजारी की कुरबानियाँ पहुँचानेवालों के गीत सुनाई देंगे। उस वक़्त वह गाएँगे, ‘रब्बुल-अफवाज का शुक्र करो, क्योंकि रब भला है, और उस की शफ़क़त अबदी है।’ क्योंकि मैं इस मुल्क को पहले की तरह बहाल कर दूँगा। यह रब का फ़रमान है।

12 रब्बुल-अफवाज फ़रमाता है कि फ़िलहाल यह मक़ाम वीरान और इनसानो-हैवान से खाली है। लेकिन आइंदा यहाँ और बाक़ी तमाम शहरों में दुबारा ऐसी चरागाहें होंगी जहाँ गल्लाबान अपने रेवड़ों को चराएँगे। 13 तब पूरे मुल्क में चरवाहे अपने रेवड़ों को गिनते और सँभालते हुए नज़र आएँगे, खाह पहाड़ी इलाक़े के शहरों या मगरिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े में देखो, खाह दशते-नजब या बिनयमीन के क़बायली इलाक़े में मालूम करो, खाह यरूशलम के देहात या यहदाह के बाक़ी शहरों में दरियाफ़्त करो। यह रब का फ़रमान है।

अबदी अहद का वादा

14 रब फ़रमाता है कि ऐसा वक़्त आनेवाला है जब मैं वह अच्छा वादा पूरा करूँगा जो मैंने इसराइल के घराने और यहदाह के घराने से किया है। 15 उस वक़्त मैं दाऊद की नसल से एक रास्तबाज़ कौंपल फूटने दूँगा, और वही मुल्क में इनसाफ़ और रास्ती कायम करेगा। 16 उन दिनों में यहदाह को छुटकारा मिलेगा और यरूशलम पुरअमन ज़िंदगी गुज़ारेगा। तब यरूशलम ‘रब हमारी रास्ती’ कहलाएगा। 17 क्योंकि रब फ़रमाता है कि इसराइल के तख़्त पर बैठनेवाला हमेशा ही दाऊद की नसल का होगा। 18 इसी तरह रब के घर में ख़िदमतगुज़ार इमाम हमेशा ही लावी के क़बीले के होंगे। वही मुतवातिर मेरे हुज़ूर भस्म होनेवाली कुरबानियाँ और गल्ला और ज़बह की कुरबानियाँ पेश करेंगे।”

19 रब एक बार फिर यर्मियाह से हमकलाम हुआ, 20 “रब फ़रमाता है कि मैंने दिन और रात से अहद बाँधा है कि वह मुक़र्रर वक़्त पर और तरतीबवार गुज़रे। कोई इस अहद को तोड़ नहीं सकता। 21 इसी तरह मैंने अपने ख़ादिम दाऊद से भी अहद बाँधकर वादा किया कि इसराइल का बादशाह हमेशा उसी की नसल का होगा। नीज़, मैंने लावी के इमामों से भी अहद बाँधकर वादा किया कि रब के घर में ख़िदमतगुज़ार इमाम हमेशा लावी के क़बीले के ही होंगे। रात और दिन से बँधे हुए अहद की तरह इन अहदों को भी तोड़ा नहीं जा सकता। 22 मैं अपने ख़ादिम दाऊद की औलाद और अपने ख़िदमतगुज़ार लावियों को सितारों और समुंदर की रेत जैसा बेशुमार बना दूँगा।”

23 रब यर्मियाह से एक बार फिर हमकलाम हुआ, 24 “क्या तुझे लोगों की बातें मालूम नहीं हुई? यह कह रहे हैं, ‘गो रब ने इसराइल और यहदाह को चुनकर अपनी क़ौम बना लिया था, लेकिन अब उसने दोनों को रद्द कर दिया है।’ यों वह मेरी क़ौम को हकीर जानते हैं बल्कि इसे अब से क़ौम ही नहीं समझते।” 25 लेकिन रब फ़रमाता है, “जो अहद मैंने दिन और रात से बाँधा है वह मैं नहीं तोड़ूँगा, न कभी आसमानो-ज़मीन के मुक़र्रर उसूल मनसूख़ करूँगा। 26 इसी तरह यह मुमकिन ही नहीं कि मैं याक़ूब और अपने ख़ादिम दाऊद की औलाद को कभी रद्द करूँ। नहीं, मैं हमेशा ही दाऊद की नसल में से किसी को तख़्त पर बिठाऊँगा ताकि वह इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब की औलाद पर हुकूमत करे, क्योंकि मैं उन्हें बहाल करके उन पर तरस खाऊँगा।”

34

सिदकियाह बाबल की कैद में मर जाएगा

1 रब उस वक़्त यर्मियाह से हमकलाम हुआ जब शाहे-बाबल नबूकदनज़ज़र अपनी पूरी फ़ौज लेकर यरूशलम और यहदाह के तमाम शहरों पर हमला कर रहा था। उसके साथ दुनिया के उन तमाम ममालिक और क़ौमों की फ़ौजें थीं जिन्हें उसने अपने ताबे कर लिया था।

2 “रब जो इसराइल का खुदा है फ़रमाता है कि यहदाह के बादशाह सिदकियाह के पास जाकर उसे बता, रब फ़रमाता है कि मैं इस शहर यरूशलम को शाहे-बाबल के हवाले करने को हूँ, और वह इसे नज़रे-आतिश कर देगा। 3 तू भी उसके हाथ से नहीं बचेगा बल्कि ज़रूर पकड़ा जाएगा। तुझे उसके हवाले किया जाएगा, और तू शाहे-बाबल को अपनी आँखों से देखेगा, वह तेरे स्वरू तुझसे बात करेगा। फिर तुझे बाबल जाना पड़ेगा। 4 लेकिन ऐ सिदकियाह बादशाह, रब का यह फ़रमान भी सुन! रब तेरे बारे में फ़रमाता है कि तू तलवार से नहीं 5 बल्कि तबई मौत मरेगा, और लोग उसी तरह तेरी ताज़ीम में लकड़ी का बड़ा ढेर बनाकर आग लगाएँगे जिस तरह तेरे बापदादा के लिए करते आए हैं। वह तुझ पर भी मातम करेंगे और कहेंगे, ‘हाय, मेरे आक्रा!’ यह रब का फ़रमान है।”

6 यरमियाह नबी ने सिदकियाह बादशाह को यरूशलम में यह पैगाम सुनाया। 7 उस वक्त बाबल की फौज यरूशलम, लकीस और अज़ीका से लड़ रही थी। यहदाह के तमाम किलाबंद शहरों में से यही तीन अब तक कायम रहे थे।

गुलामों के साथ बेवफ़ाई

8 रब का कलाम एक बार फिर यरमियाह पर नाज़िल हुआ। उस वक्त सिदकियाह बादशाह ने यरूशलम के बाशिंदों के साथ अहद बाँधा था कि हम अपने हमवतन गुलामों को आज़ाद कर देंगे। 9 हर एक ने अपने हमवतन गुलामों और लौंडियों को आज़ाद करने का वादा किया था, क्योंकि सब मुत्तफ़िक़ हुए थे कि हम अपने हमवतनों को गुलामी में नहीं रखेंगे। 10 तमाम बुजुर्ग और बाक़ी तमाम लोग यह करने पर राज़ी हुए थे। यह अहद करने पर उन्होंने अपने गुलामों को वाकई आज़ाद कर दिया था। 11 लेकिन बाद में वह अपना इरादा बदलकर अपने आज़ाद किए हुए गुलामों को वापस लाए और उन्हें दुबारा अपने गुलाम बना लिया था। 12 तब रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ।

13 “रब जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है, ‘जब मैं तुम्हारे बापदादा को मिस्र की गुलामी से निकाल लाया तो मैंने उनसे अहद बाँधा। उस की एक शर्त यह थी 14 कि जब किसी हमवतन ने अपने आपको बेचकर छः साल तक तेरी ख़िदमत की है तो लाज़िम है कि सातवें साल तू उसे आज़ाद कर दे। यह शर्त तुम सब पर सादिक़ आती है। लेकिन अफ़सोस, तुम्हारे बापदादा ने न मेरी सुनी, न मेरी बात पर ध्यान दिया। 15 अब तुमने पछताकर वह कुछ किया जो मुझे पसंद था। हर एक ने एलान किया कि हम अपने हमवतन गुलामों को आज़ाद कर देंगे। तुम उस घर में आए जिस पर मेरे नाम का ठप्पा लगा है और अहद बाँधकर मेरे हुज़ूर उस वादे की तसदीक़ की। 16 लेकिन अब तुमने अपना इरादा बदलकर मेरे नाम की बेहुरमती की है। अपने गुलामों और लौंडियों को आज़ाद कर देने के बाद हर एक उन्हें अपने पास वापस लाया है। पहले तुमने उन्हें बताया कि जहाँ जी चाहो चले जाओ, और अब तुमने उन्हें दुबारा गुलाम बनने पर मजबूर किया है।’

17 चुनौचे सुनो जो कुछ रब फ़रमाता है! ‘तुमने मेरी नहीं सुनी, क्योंकि तुमने अपने हमवतन गुलामों को आज़ाद नहीं छोड़ा। इसलिए अब रब तुम्हें तलवार, मोहलक बीमारियों और काल के लिए आज़ाद छोड़ देगा। तुम्हें देखकर दुनिया के तमाम ममालिक के रोंगटे खड़े हो जाएंगे।’ यह रब का फ़रमान है। 18-19 ‘देखो, यहदाह और यरूशलम के बुजुर्ग, दरबारियों, इमामों और अवांम ने मेरे साथ अहद बाँधा। इसकी तसदीक़ करने के लिए वह एक बछड़े को दो हिस्सों में तक्रसीम करके उनके दरमियान से गुज़र गए। तो भी उन्होंने अहद तोड़कर उस की शरायत पूरी न की। चुनौचे मैं होने दूँगा कि वह उस बछड़े की मानिंद हो जाएँ जिसके दो हिस्सों में से वह गुज़र गए हैं। 20 मैं उन्हें उनके दुश्मनों के हवाले कर दूँगा, उन्हीं के हवाले जो उन्हें जान से मारने के दरपै हैं। उनकी लाशें परिदों और जंगली जानवरों की ख़ुराक बन जाएँगी।

21 मैं यहदाह के बादशाह सिदकियाह और उसके अफ़सरों को उनके दुश्मन के हवाले कर दूँगा, उन्हीं के हवाले जो उन्हें जान से मारने पर तुले हुए हैं। वह यक़ीनन शाहे-बाबल नबूक़दनज़ज़र की फौज के कब्ज़े में आ जाएंगे। क्योंकि गो फ़ौजी इस वक्त पीछे हट गए हैं, 22 लेकिन मेरे हुक्म पर वह वापस आकर यरूशलम पर हमला करेंगे। और इस मरतबा वह उस पर कब्ज़ा करके उसे नज़रे-आतिश कर देंगे। मैं यहदाह के शहरों को भी यों ख़ाक में मिला दूँगा कि कोई उनमें नहीं रह सकेगा।” यह रब का फ़रमान है।

35

यरमियाह रैकाबियों को आज़माता है

1 जब यहयक़ीम बिन यूसियाह अभी यहदाह का बादशाह था तो रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2 “रैकाबी खानदान के पास जाकर उन्हें रब के घर के सहन के किसी कमरे में आने की दावत दे। जब वह आएँ तो उन्हें मैं पिला दे।”

3 चुनौचे मैं याज़नियाह बिन यरमियाह बिन हबस्सिनियाह के पास गया और उसे उसके भाइयों और तमाम बेटों यानी रैकाबियों के पूरे घराने समेत 4 रब के घर में लाया। हम हनान के बेटों के कमरे में बैठ गए। हनान मर्दे-खुदा यिज्दलियाह का बेटा था। यह कमरा बुजुर्गों के कमरे से मुल्हिक और रब के घर के दरबान मासियाह बिन सल्लूम के कमरे के ऊपर था। 5 वहाँ मैंने मैं के जाम और प्याले रैकाबी आदमियों को पेश करके उनसे कहा, “आएँ, कुछ मैं पी लें।”

6 लेकिन उन्होंने इनकार करके कहा, “हम मैं नहीं पीते, क्योंकि हमारे बाप यूनदब बिन रैकाब ने हमें और हमारी औलाद को मैं पीने से मना किया है। 7 उसने हमें यह हिदायत भी दी, ‘न मकान तामीर करना, न बीज बोना और न अंगूर का बाग़ लगाना। यह चीज़ें कभी भी तुम्हारी मिलकियत में शामिल न हों, क्योंकि लाज़िम है कि तुम हमेशा ख़ैमों में ज़िंदगी गुज़ारो। फिर तुम लंबे अरसे तक उस मुल्क में रहोगे जिसमें तुम मेहमान हो।’ 8 चुनौचे हम अपने बाप यूनदब बिन रैकाब की इन तमाम हिदायत के ताबे रहते हैं। न हम और न हमारी बीवियाँ या बच्चे कभी मैं पीते हैं। 9 हम अपनी रिहाइश के लिए मकान नहीं बनाते, और न अंगूर के बाग़, न खेत या फ़सलें हमारी मिलकियत में होती हैं। 10 इसके बजाए हम आज तक ख़ैमों में रहते हैं। जो भी हिदायत हमारे बाप यूनदब ने हमें दी उस पर हम पूरे उतरे हैं। 11 हम सिर्फ़ आरिज़ी तौर पर शहर में ठहरे हुए हैं। क्योंकि जब शाहे-बाबल नबूक़दनज़ज़र इस मुल्क में घुस आया तो हम बोले, ‘आएँ, हम यरूशलम शहर में जाएँ ताकि बाबल और शाम की फ़ौजों से बच जाएँ।’ हम सिर्फ़ इसी लिए यरूशलम में ठहरे हुए हैं।”

12 तब रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, 13 “रब्बुल-अफ़वाज़ जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है कि यहदाह और यरूशलम के बाशिंदों के पास जाकर कह, ‘तुम मेरी तरबियत क्यों कबूल नहीं करते? तुम मेरी क्यों नहीं सुनते? 14 यूनदब बिन रैकाब पर गौर करो। उसने

अपनी औलाद को मैं पीने से मना किया, इसलिए उसका घराना आज तक मैं नहीं पीता। यह लोग अपने बाप की हिदायत के ताबे रहते हैं। इसके मुकाबले में तुम लोग क्या कर रहे हो? गो मैं बार बार तुमसे हमकलाम हुआ तो भी तुमने मेरी नहीं सुनी।

15 बार बार मैं अपने नबियों को तुम्हारे पास भेजता रहा ताकि मेरे खादिम तुम्हें आगाह करते रहें कि हर एक अपनी बुरी राह तर्क करके वापस आए! अपना चाल-चलन दुस्त करो और अजनबी माबूदों की पैरवी करके उनकी खिदमत मत करो! फिर तुम उस मुल्क में रहोगे जो मैंने तुम्हें और तुम्हारे बापदादा को बख्श दिया था। लेकिन तुमने न तवज्जुह दी, न मेरी सुनी। 16 यूनदब बिन रैकाब की औलाद अपने बाप की हिदायत पर पूरी उतरी है, लेकिन इस कौम ने मेरी नहीं सुनी।

17 इसलिए रब जो लशकरो का और इसराईल का खुदा है फरमाता है, 'सुनो! मैं यहदाह पर और यरूशलम के हर बाशिंदे पर वह तमाम आफत नाज़िल करूँगा जिसका एलान मैंने किया है। गो मैं उनसे हमकलाम हुआ तो भी उन्होंने न सुनी। मैंने उन्हें बुलाया, लेकिन उन्होंने जवाब न दिया।'

18 लेकिन रैकाबियों से यरमियाह ने कहा, "रब्बुल-अफवाज जो इसराईल का खुदा है फरमाता है, 'तुम अपने बाप यूनदब के हुक्म पर पूरे उतरकर उस की हर हिदायत और हर हुक्म पर अमल करते हो।' 19 इसलिए रब्बुल-अफवाज जो इसराईल का खुदा है फरमाता है, 'यूनदब बिन रैकाब की औलाद में से हमेशा कोई न कोई होगा जो मेरे हुज़ूर खिदमत करेगा।'

36

रब के घर में यरमियाह की किताब की तिलावत

1 यहदाह के बादशाह यहयकीम बिन यूसियाह की हुक्मत के चौथे साल में रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ, 2 "तूमार लेकर उसमें इसराईल, यहदाह और बाकी तमाम कौमों के बारे में वह तमाम पैगामात कलमबंद कर जो मैंने यूसियाह की हुक्मत से लेकर आज तक तुझ पर नाज़िल किए हैं। 3 शायद यहदाह के घराने में हर एक अपनी बुरी राह से बाज़ आकर वापस आए अगर उस आफत की पूरी खबर उन तक पहुँचे जो मैं इस कौम पर नाज़िल करने को हूँ। फिर मैं उनकी बेदीनी और गुनाह को मुआफ करूँगा।"

4 चुनौचे यरमियाह ने बास्क बिन नैरियाह को बुलाकर उससे वह तमाम पैगामात तूमार में लिखवाए जो रब ने उस पर नाज़िल किए थे। 5 फिर यरमियाह ने बास्क से कहा, "मुझे नज़रबंद किया गया है, इसलिए मैं रब के घर में नहीं जा सकता। 6 लेकिन आप तो जा सकते हैं। रोज़े के दिन यह तूमार अपने साथ लेकर रब के घर में जाएँ। हाज़िरिन के सामने रब की उन तमाम बातों को पढ़कर सुनाएँ जो मैंने आपसे लिखवाई हैं। सबको तूमार की बातें सुनाएँ, उन्हें भी जो यहदाह की दीगर आबादियों से यहाँ पहुँचे हैं। 7 शायद वह इल्तिजा करें कि रब उन पर रहम करे। शायद हर एक अपनी बुरी राह से बाज़ आकर वापस आए। क्योंकि जो गज़ब इस कौम पर नाज़िल होनेवाला है और जिसका एलान रब कर चुका है वह बहुत सरख्त है।"

8 बास्क बिन नैरियाह ने ऐसा ही किया। यरमियाह नबी की हिदायत के मुताबिक उसने रब के घर में तूमार में दर्ज रब के कलाम की तिलावत की। 9 उस वक्त लोग रोज़ा रखे हुए थे, क्योंकि बादशाह यहयकीम बिन यूसियाह की हुक्मत के पाँचवें साल और नवें महीने * में एलान किया गया था कि यरूशलम के बाशिंदे और यहदाह के दीगर शहरों से आए हुए तमाम लोग रब के हुज़ूर रोज़ा रखें। 10 जब बास्क ने तूमार की तिलावत की तो तमाम लोग हाज़िर थे। उस वक्त वह रब के घर में शाही मुहर्रिर जमरियाह बिन साफन के कमरे में बैठा था। यह कमरा रब के घर के ऊपरवाले सहन में था, और सहन का नया दरवाज़ा वहाँ से दूर नहीं था।

11 तूमार में दर्ज रब के तमाम पैगामात सुनकर जमरियाह बिन साफन का बेटा मीकायाह 12 शाही महल में मीरमुंशी के दफ़्तर में चला गया। वहाँ तमाम सरकारी अफ़सर बैठे थे यानी इलीसमा मीरमुंशी, दिलायाह बिन समायह, इलनातन बिन अकबोर, जमरियाह बिन साफन, सिदक्रियाह बिन हननियाह और बाकी तमाम मुलाज़िम। 13 मीकायाह ने उन्हें सब कुछ सुनाया जो बास्क ने तूमार की तिलावत करके पेश किया था। 14 तब तमाम बुजुर्गों ने यहदी बिन नतनियाह बिन सलमियाह बिन कूशी को बास्क के पास भेजकर उसे इतला दी, "जिस तूमार की तिलावत आपने लोगों के सामने की उसे लेकर हमारे पास आएँ।" चुनौचे बास्क बिन नैरियाह हाथ में तूमार को थामे हुए उनके पास आया।

15 अफ़सरों ने कहा, "ज़रा बैठकर हमारे लिए भी तूमार की तिलावत करें।" चुनौचे बास्क ने उन्हें सब कुछ पढ़कर सुना दिया। 16 यरमियाह की तमाम पेशगोइयों सुनते ही वह घबरा गए और डर के मारे एक दूसरे को देखने लगे। फिर उन्होंने बास्क से कहा, "लाज़िम है कि हम बादशाह को इन तमाम बातों से आगाह करें। 17 हमें ज़रा बताएँ, आपने यह तमाम बातें किस तरह कलमबंद कीं? क्या यरमियाह ने सब कुछ ज़बानी आपको पेश किया?" 18 बास्क ने जवाब दिया, "जी, वह मुझे यह तमाम बातें सुनाता गया, और मैं सब कुछ स्याही से इस तूमार में दर्ज करता गया।"

19 यह सुनकर अफ़सरों ने बास्क से कहा, "अब चले जाएँ, आप और यरमियाह दोनों छुप जाएँ! किसी को भी पता न चले कि आप कहाँ हैं।"

यहयकीम तूमार को जला देता है

* 36:9 नवंबर ता दिसंबर।

20 अफसरों ने तूमार को शाही मीरमुंशी इलीसमा के दफ्तर में महफूज रख दिया, फिर दरबार में दाखिल होकर बादशाह को सब कुछ बता दिया। 21 बादशाह ने यहूदी को तूमार ले आने का हुक्म दिया। यहूदी, इलीसमा मीरमुंशी के दफ्तर से तूमार को लेकर बादशाह और तमाम अफसरों की मौजूदगी में उस की तिलावत करने लगा।

22 चूँकि नवाँ महीना † था इसलिए बादशाह महल के उस हिस्से में बैठा था जो सर्दियों के मौसम के लिए बनाया गया था। उसके सामने पड़ी अंगीठी में आग जल रही थी। 23 जब भी यहूदी तीन या चार कालम पढ़ने से फ़ारिग हुआ तो बादशाह ने मुंशी की छुरी लेकर उन्हें तूमार से काट लिया और आग में फेंक दिया। यहूदी पढ़ता और बादशाह काटता गया। आखिरकार पूरा तूमार राख हो गया था।

24 गो बादशाह और उसके तमाम मुलाज़िमों ने यह तमाम बातें सुनीं तो भी न वह घबराए, न उन्होंने परेशान होकर अपने कपड़े फाड़े। 25 और गो इलनातन, दिलायाह और जमरियाह ने बादशाह से मिन्नत की कि वह तूमार को न जलाए तो भी उसने उनकी न मानी 26 बल्कि बाद में यरहमियेल शाहज़ादा, सिरायाह बिन अज़रियेल और सलमियाह बिन अबदियेल को भेजा ताकि वह बास्क मुंशी और यरमियाह नबी को गिरफ्तार करें। लेकिन रब ने उन्हें छुपाए रखा था।

अल्लाह का कलाम दुबारा कलमबंद किया जाता है

27 बादशाह के तूमार को जलाने के बाद रब यरमियाह से दुबारा हमकलाम हुआ,

28 “नया तूमार लेकर उसमें वही तमाम पैगामात कलमबंद कर जो उस तूमार में दर्ज थे जिसे शाहे-यहूदाह ने जला दिया था। 29 साथ साथ यह्यक्रीम के बारे में एलान कर कि रब फ़रमाता है, ‘तूने तूमार को जलाकर यरमियाह से शिकायत की कि तूने इस किताब में क्यों लिखा है कि शाहे-बाबल ज़रूर आकर इस मुल्क को तबाह करेगा, और इसमें न इनसान, न हैवान रहेगा?’ 30 चुनौचे यहूदाह के बादशाह के बारे में रब का फैसला सुन!

आइंदा उसके खानदान का कोई भी फ़रद दाऊद के तख़्त पर नहीं बैठेगा। यह्यक्रीम की लाश बाहर फेंकी जाएगी, और वहाँ वह खुले मैदान में पड़ी रहेगी। कोई भी उसे दिन की तपती गरमी या रात की शदीद सर्दी से बचाए नहीं रखेगा। 31 मैं उसे उसके बच्चों और मुलाज़िमों समेत उनकी बेदीनी का मुनासिब अज़्र दूँगा। क्योंकि मैं उन पर और यरूशलम और यहूदाह के बाशिंदों पर वह तमाम आफ़त नाज़िल करूँगा जिसका एलान मैं कर चुका हूँ। अफ़सोस, उन्होंने मेरी नहीं सुनी।”

32 चुनौचे यरमियाह ने नया तूमार लेकर उसे बास्क बिन नैरियाह को दे दिया। फिर उसने बास्क मुंशी से वह तमाम पैगामात दुबारा लिखवाए जो उस तूमार में दर्ज थे जिसे शाहे-यहूदाह यह्यक्रीम ने जला दिया था। उनके अलावा मज़ीद बहुत-से पैगामात का इज़ाफ़ा हुआ।

37

मिसर सिदक्रियाह की मदद नहीं कर सकता

1 यहूदाह के बादशाह यह्याकीन * बिन यह्यक्रीम को तख़्त से उतारने के बाद शाहे-बाबल नबूकदनज़ज़र ने सिदक्रियाह बिन यूसियाह को तख़्त पर बिठा दिया। 2 लेकिन न सिदक्रियाह, न उसके अफ़सरों या अवाम ने उन पैगामात पर ध्यान दिया जो रब ने यरमियाह नबी की मारिफ़त फ़रमाए थे।

3 एक दिन सिदक्रियाह बादशाह ने यहकल बिन सलमियाह और इमाम सफ़नियाह बिन मासियाह को यरमियाह के पास भेजा ताकि वह गुज़ारिश करें, “मेहरबानी करके रब हमारे ख़ुदा से हमारी शफ़ाअत करें।”

4 यरमियाह को अब तक कैद में डाला नहीं गया था, इसलिए वह आज़ादी से लोगों में चल-फिर सकता था। 5 उस वक़्त फ़िरौन की फ़ौज मिसर से निकलकर इसराइल की तरफ़ बढ़ रही थी। जब यरूशलम का मुहासरा करनेवाली बाबल की फ़ौज को यह ख़बर मिली तो वह वहाँ से पीछे हट गई। 6 तब रब यरमियाह नबी से हमकलाम हुआ,

7 “रब इसराइल का ख़ुदा फ़रमाता है कि शाहे-यहूदाह ने तुम्हें मेरी मरज़ी दरियाफ़्त करने भेजा है। उसे जवाब दो कि फ़िरौन की जो फ़ौज तुम्हारी मदद करने के लिए निकल आई है वह अपने मुल्क वापस लौटने को है। 8 फिर बाबल के फ़ौजी वापस आकर यरूशलम पर हमला करेंगे। वह इसे अपने क़ब्ज़े में लेकर नज़रे-आतिश कर देंगे। 9 क्योंकि रब फ़रमाता है कि यह सोचकर धोका मत खाओ कि बाबल की फ़ौज ज़रूर हमें छोड़कर चली जाएगी। ऐसा कभी नहीं होगा! 10 ख़ाह तुम हमलाआवर पूरी बाबली फ़ौज को शिकस्त क्यों न देते और सिर्फ़ ज़ख़मी आदमी बचे रहते तो भी तुम नाकाम रहते, तो भी यह बाज़ एक आदमी अपने ख़ैमों में से निकलकर यरूशलम को नज़रे-आतिश करते।”

यरमियाह को कैद में डाला जाता है

11 जब फ़िरौन की फ़ौज इसराइल की तरफ़ बढ़ने लगी तो बाबल के फ़ौजी यरूशलम को छोड़कर पीछे हट गए। 12 उन दिनों में यरमियाह बिनयमीन के क़बायली इलाक़े के लिए रवाना हुआ, क्योंकि वह अपने रिश्तेदारों के साथ कोई मौरूसी मिलकियत तकसीम करना चाहता था। लेकिन जब वह शहर से निकलते हुए 13 बिनयमीन के दरवाज़े तक पहुँच गया तो पहरेदारों का एक अफ़सर उसे पकड़कर कहने लगा, “तुम भगोड़े हो! तुम बाबल की फ़ौज के पास जाना चाहते हो!” अफ़सर का नाम इरियाह बिन सलमियाह बिन हननियाह था। 14 यरमियाह

† 36:22 तकरीबन दिसंबर। * 37:1 इब्रानी में यह्याकीन का मुतरादिफ़ कूनियाह मुस्तामल है।

ने एतराज किया, “यह झूट है, मैं भगोड़ा नहीं हूँ! मैं बाबल की फौज के पास नहीं जा रहा।” लेकिन इरियाह न माना बल्कि उसे गिरफ्तार करके सरकारी अफसरों के पास ले गया। ¹⁵ उसे देखकर उन्हें यरमियाह पर गुस्सा आया, और वह उस की पिटाई कराकर उसे शाही मुहर्रिर यूनतन के घर में लाए जिसे उन्होंने कैदखाना बनाया था। ¹⁶ वहाँ उसे एक ज़मीनदोज़ कमरे में डाल दिया गया जो पहले हौज़ था और जिसकी छत मेहराबदार थी। वह मुतअदिद दिन उसमें बंद रहा।

¹⁷ एक दिन सिदकियाह ने उसे महल में बुलाया। वहाँ अलहदगी में उससे पूछा, “क्या रब की तरफ़ से मेरे लिए कोई पैग़ाम है?” यरमियाह ने जवाब दिया, “जी हाँ। आपको शाहे-बाबल के हवाले किया जाएगा।” ¹⁸ तब यरमियाह ने सिदकियाह बादशाह से अपनी बात जारी रखकर कहा, “मुझसे क्या जुर्म हुआ है? मैंने आपके अफसरों और अवाम का क्या कुसूर किया है कि मुझे जेल में डलवा दिया? ¹⁹ आपके वह नबी कहाँ हैं जिन्होंने आपको पेशगोई सुनाई कि शाहे-बाबल न आप पर, न इस मुल्क पर हमला करेगा? ²⁰ ऐ मेरे मालिक और बादशाह, मेहरबानी करके मेरी बात सुनें, मेरी गुज़ारिश पूरी करें! मुझे यूनतन मुहर्रिर के घर में वापस न भेजें, वरना मैं मर जाऊँगा।”

²¹ तब सिदकियाह बादशाह ने हुक्म दिया कि यरमियाह को शाही मुहाफ़िज़ों के सहन में रखा जाए। उसने यह हिदायत भी दी कि जब तक शहर में रोटी दस्तयाब हो यरमियाह को नानबाई-गली से हर रोज़ एक रोटी मिलती रहे। चुनौचे यरमियाह मुहाफ़िज़ों के सहन में रहने लगा।

38

यरमियाह को सज़ाए-मौत देने का इरादा

¹ सफ़तियाह बिन मत्तान, जिदलियाह बिन फ़शहर, यूकल बिन सलमियाह और फ़शहर बिन मलकियाह को मालूम हुआ कि यरमियाह तमाम लोगों को बता रहा है ² कि रब फ़रमाता है,

“अगर तुम तलवार, काल या वबा से मरना चाहो तो इस शहर में रहो। लेकिन अगर तुम अपनी जान को बचाना चाहो तो शहर से निकलकर अपने आपको बाबल की फ़ौज के हवाले करो। जो कोई यह करे उस की जान छूट जाएगी।” * ³ क्योंकि रब फ़रमाता है कि यस्शलम को ज़रूर शाहे-बाबल की फ़ौज के हवाले किया जाएगा। वह यक़ीनन उस पर क़ब्ज़ा करेगा।”

⁴ तब मज़क़रा अफसरों ने बादशाह से कहा, “इस आदमी को सज़ाए-मौत दीनी चाहिए, क्योंकि यह शहर में बचे हुए फ़ौजियों और बाक़ी तमाम लोगों को ऐसी बातें बता रहा है जिनसे वह हिम्मत हार गए हैं। यह आदमी कौम की बहबूदी नहीं चाहता बल्कि उसे मुसीबत में डालने पर तुला रहता है।”

⁵ सिदकियाह बादशाह ने जवाब दिया, “ठीक है, वह आपके हाथ में है। मैं आपको रोक नहीं सकता।” ⁶ तब उन्होंने यरमियाह को पकड़कर मलकियाह शाहज़ादा के हौज़ में डाल दिया। यह हौज़ शाही मुहाफ़िज़ों के सहन में था। रस्सों के ज़रीए उन्होंने यरमियाह को उतार दिया। हौज़ में पानी नहीं था बल्कि सिर्फ़ कीचड़, और यरमियाह कीचड़ में धँस गया।

⁷ लेकिन एथोपिया के एक दरबारी बनाम अबद-मलिक को पता चला कि यरमियाह के साथ क्या कुछ किया जा रहा है। जब बादशाह शहर के दरवाज़े बनाम बिनयमीन में कचहरी लगाए बैठा था ⁸ तो अबद-मलिक शाही महल से निकलकर उसके पास गया और कहा, ⁹ “मेरे आका और बादशाह, जो सुलूक इन आदमियों ने यरमियाह के साथ किया है वह निहायत बुरा है। उन्होंने उसे एक हौज़ में फेंक दिया है जहाँ वह भूका मरेगा। क्योंकि शहर में रोटी ख़त्म हो गई है।”

¹⁰ यह सुनकर बादशाह ने अबद-मलिक को हुक्म दिया, “इससे पहले कि यरमियाह मर जाए यहाँ से ³⁰ आदमियों को लेकर नबी की हौज़ से निकाल दें।” ¹¹ अबद-मलिक आदमियों को अपने साथ लेकर शाही महल के गोदाम के नीचे के एक कमरे में गया। वहाँ से उसने कुछ पुराने चीथड़े और धिसे-फटे कपड़े चुनकर उन्हें रस्सों के ज़रीए हौज़ में यरमियाह तक उतार दिया। ¹² अबद-मलिक बोला, “रस्से बाँधने से पहले यह पुराने चीथड़े और धिसे-फटे कपड़े बगल में रखें।” यरमियाह ने ऐसा ही किया, ¹³ तो वह उसे रस्सों से खींचकर हौज़ से निकाल लाए। इसके बाद यरमियाह शाही मुहाफ़िज़ों के सहन में रहा।

सिदकियाह को आखिरी मरतबा आगाह किया जाता है

¹⁴ एक दिन सिदकियाह बादशाह ने यरमियाह को रब के घर के तीसरे दरवाज़े के पास बुलाकर उससे कहा, “मैं आपसे एक बात दरियाफ़्त करना चाहता हूँ। मुझे इसका साफ़ जवाब दें, कोई भी बात मुझसे मत छुपाएँ।” ¹⁵ यरमियाह ने एतराज किया, “अगर मैं आपको साफ़ जवाब दूँ तो आप मुझे मार डालेंगे। और अगर मैं आपको मशवरा दूँ भी तो आप उसे कबूल नहीं करेंगे।” ¹⁶ तब सिदकियाह बादशाह ने अलहदगी में क़सम खाकर यरमियाह से वादा किया, “रब की हयात की क़सम जिसने हमें जान दी है, न मैं आपको मार डालूँगा, न आपके जानी दुश्मनों के हवाले करूँगा।”

¹⁷ तब यरमियाह बोला, “रब जो लशक़रों का और इसराईल का खुदा है फ़रमाता है, ‘अपने आपको शाहे-बाबल के अफसरान के हवाले कर। फिर तेरी जान छूट जाएगी और यह शहर नज़रे-आतिश नहीं हो जाएगा। तू और तेरा ख़ानदान जीता रहेगा। ¹⁸ दूसरी सूत में इस शहर को बाबल के हवाले किया जाएगा और फ़ौजी इसे नज़रे-आतिश करेंगे। तू भी उनके हाथ से नहीं बचेगा।’”

* **38:2** लफ़्ज़ी तरज़ुमा : वह ग़नीमत के तौर पर अपनी जान को बचाएगा।

19 लेकिन सिदकियाह बादशाह ने एतराज किया, “मुझे उन हमवतनों से डर लगता है जो गद्दारी करके बाबल की फौज के पास भाग गए हैं। हो सकता है कि बाबल के फौजी मुझे उनके हवाले करें और वह मेरे साथ बंदसलूकी करें।” 20 यर्मियाह ने जवाब दिया, “वह आपको उनके हवाले नहीं करेंगे। रब की सुनकर वह कुछ करें जो मैंने आपको बताया है। फिर आपकी सलामती होगी और आपकी जान छूट जाएगी। 21 लेकिन अगर आप शहर से निकलकर हथियार डालने के लिए तैयार नहीं हैं तो फिर यह पैगाम सुनें जो रब ने मुझ पर जाहिर किया है! 22 शाही महल में जितनी खवातीन बच गई हैं उन सबको शाहे-बाबल के अफसरों के पास पहुँचाया जाएगा। तब यह खवातीन आपके बारे में कहेंगी, ‘हाय, जिन आदमियों पर तू पूरा एतमाद रखता था वह फरेब देकर तुझ पर गालिब आ गए हैं। तेरे पाँव दलदल में धँस गए हैं, लेकिन यह लोग गायब हो गए हैं।’ 23 हाँ, तेरे तमाम बाल-बच्चों को बाहर बाबल की फौज के पास लाया जाएगा। तू खुद भी उनके हाथ से नहीं बचेगा बल्कि शाहे-बाबल तुझे पकड़ लेगा। यह शहर नज़रे-आतिश हो जाएगा।”

24 फिर सिदकियाह ने यर्मियाह से कहा, “खबरदार! किसी को भी यह मालूम न हो कि हमने क्या क्या बातें की हैं, वरना आप मर जाएंगे। 25 जब मेरे अफसरों को पता चले कि मेरी आपसे गुफ्तगू हुई है तो वह आपके पास आकर पूछेंगे, ‘तुमने बादशाह से क्या बात की, और बादशाह ने तुमसे क्या कहा? हमें साफ जवाब दो और झूट न बोलो, वरना हम तुम्हें मार डालेंगे।’ 26 जब वह इस तरह की बातें करेंगे तो उन्हें सिर्फ इतना-सा बताऊँ, ‘मैं बादशाह से निम्नत कर रहा था कि वह मुझे यूनतन के घर में वापस न भेजें, वरना मैं मर जाऊँगा।’”

27 ऐसा ही हुआ। तमाम सरकारी अफसर यर्मियाह के पास आए और उससे सवाल करने लगे। लेकिन उसने उन्हें सिर्फ वह कुछ बताया जो बादशाह ने उसे कहने को कहा था। तब वह खामोश हो गए, क्योंकि किसी ने भी उस की बादशाह से गुफ्तगू नहीं सुनी थी।

28 इसके बाद यर्मियाह यरूशलम की शिकस्त तक शाही मुहाफिज़ों के सहन में कैदी रहा।

39

यरूशलम की शिकस्त

1 यरूशलम यों दुश्मन के हाथ में आया : यहदाह के बादशाह के नवें साल और 10वें महीने * में शाहे-बाबल नबूकदनज़र अपनी तमाम फौज लेकर यरूशलम पहुँचा और शहर का मुहासरा करने लगा। 2 सिदकियाह के 11वें साल के चौथे महीने और नवें दिन † दुश्मन ने फ़सील में रखना डाल दिया। 3 तब नबूकदनज़र के तमाम आला अफसर शहर में आकर उसके दरमियानी दरवाज़े में बैठ गए। उनमें नैरगल-सराज़र जो रब-माग था, समगर-नबू, सर-सकीम जो रब-सारीस था और शाहे-बाबल के बाकी बुजुर्ग शामिल थे।

4 उन्हें देखकर यहदाह का बादशाह सिदकियाह और उसके तमाम फौजी भाग गए। रात के वक़्त वह फ़सील के उस दरवाज़े से निकले जो शाही बाग के साथ मुलहिक दो दीवारों के बीच में था। वह वादीए-यरदन की तरफ दौड़ने लगे, 5 लेकिन बाबल के फौजियों ने उनका ताक्कुब करके सिदकियाह को यरीह के मैदानी इलाक़े में पकड़ लिया। फिर उसे मुल्के-हमात के शहर रिबला में शाहे-बाबल नबूकदनज़र के पास लाया गया, और वहीं उसने सिदकियाह पर फ़ैसला सादिर किया। 6 सिदकियाह के देखते देखते शाहे-बाबल ने रिबला में उसके बेटों को क़त्ल किया। साथ साथ उसने यहदाह के तमाम बुजुर्गों को भी मौत के घाट उतार दिया। 7 फिर उसने सिदकियाह की आँखें निकलवाकर उसे पीतल की जंजीरों में जकड़ लिया और बाबल को ले जाने के लिए महफूज़ रखा।

8 बाबल के फौजियों ने शाही महल और दीगर लोगों के घरों को जलाकर यरूशलम की फ़सील को गिरा दिया। 9 शाही मुहाफिज़ों के अफसर नबूज़रादान ने सबको जिलावतन कर दिया जो यरूशलम और यहदाह में पीछे रह गए थे। वह भी उनमें शामिल थे जो जंग के दौरान गद्दारी करके शाहे-बाबल के पीछे लग गए थे। 10 लेकिन नबूज़रादान ने सबसे निचले तबके के बाज़र लोगों को मुल्के-यहदाह में छोड़ दिया, ऐसे लोग जिनके पास कुछ नहीं था। उन्हें उसने उस वक़्त अंगूर के बाग और खेत दिए।

11-12 नबूकदनज़र बादशाह ने शाही मुहाफिज़ों के अफसर नबूज़रादान को हुक्म दिया, “यर्मियाह को अपने पास रखें। उसका खयाल रखें। उसे नुक़सान न पहुँचाएँ बल्कि जो भी दरखास्त वह करे उसे पूरा करें।”

13 चुनौचे शाही मुहाफिज़ों के अफसर नबूज़रादान ने किसी को यर्मियाह के पास भेजा। उस वक़्त नबूशज़बान जो रब-सारीस था, नैरगल-सराज़र जो रब-माग था और शाहे-बाबल के बाकी अफसर नबूज़रादान के पास थे। 14 यर्मियाह अब तक शाही मुहाफिज़ों के सहन में गिरफ़्तार था। उन्होंने हुक्म दिया कि उसे वहाँ से निकालकर जिदलियाह बिन अखीक़ाम बिन साफ़न के हवाले कर दिया जाए ताकि वह उसे उसके अपने घर पहुँचा दे। यों यर्मियाह अपने लोगों के दरमियान बसने लगा।

अबद-मलिक के लिए खुशख़बरी

15 जब यर्मियाह अभी शाही मुहाफिज़ों के सहन में गिरफ़्तार था तो रब उससे हमकलाम हुआ,

16 “जाकर एथोपिया के अबद-मलिक को बता, ‘रब्बूल-अफ़वाज़ जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है कि देख, मैं इस शहर के साथ वह सब कुछ करने को हूँ जिसका एलान मैंने किया था। मैं उस पर मेहरबानी नहीं करूँगा बल्कि उसे नुक़सान पहुँचाऊँगा। तू अपनी आँखों से यह देखेगा। 17 लेकिन रब फ़रमाता है कि तुझे मैं उस दिन छुटकारा दूँगा, तुझे उनके हवाले नहीं किया जाएगा जिनसे तू डरता है। 18 मैं खुद तुझे बचाऊँगा। चूँकि तूने मुझ पर भरोसा किया इसलिए तू तलवार की ज़द में नहीं आएगा बल्कि तेरी जान छूट जाएगी। ‡ यह रब का फ़रमान है।”

* 39:1 दिसंबर ता जनवरी। † 39:2 18 जुलाई। ‡ 39:18 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : तू गनीमत के तौर पर अपनी जान को बचाएगा।

40

यरमियाह को आजाद किया जाता है

1 आजाद होने के बाद भी रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ। शाही मुहाफ़िज़ों के अफ़सर नबूज़रादान ने उसे रामा में रिहा किया था। क्योंकि जब यरूशलम और बाक़ी यहूदाह के कैदियों को मुल्के-बाबल में ले जाने के लिए जमा किया गया तो मालूम हुआ कि यरमियाह भी जंजीरों में जकड़ा हुआ उनमें शामिल है। 2 तब नबूज़रादान ने यरमियाह को बुलाकर उससे कहा, “रब आपके खुदा ने एलान किया था कि इस जगह पर आफ़त आएगी। 3 और अब वह यह आफ़त उसी तरह ही लाया जिस तरह उसने फ़रमाया था। सब कुछ इसलिए हुआ कि आपकी कौम रब का गुनाह करती रही और उस की न सुनी। 4 लेकिन आज मैं वह जंजीरें खोल देता हूँ जिनसे आपके हाथ जकड़े हुए हैं। आप आजाद हैं। अगर चाहें तो मेरे साथ बाबल जाएँ। तब मैं ही आपकी निगरानी करूँगा। बाक़ी आपकी मरज़ी। अगर यहीं रहना पसंद करेंगे तो यहीं रहें। पूरे मुल्क में जहाँ भी जाना चाहें जाएँ। कोई आपको नहीं रोकेगा।”

5 यरमियाह अब तक झिजक रहा था, इसलिए नबूज़रादान ने कहा, “फिर ज़िदलियाह बिन अख़ीक़ाम बिन साफ़न के पास चले जाएँ! शाहे-बाबल ने उसे सूबा यहूदाह के शहरों पर मुक़र्रर किया है। उसके साथ रहें। या फिर जहाँ भी रहना पसंद करें वही रहें।”

नबूज़रादान ने यरमियाह को कुछ ख़ुराक और एक तोहफ़ा देकर उसे ख़ुश कर दिया। 6 ज़िदलियाह मिसफ़ाह में ठहरा हुआ था। यरमियाह उसके पास जाकर मुल्क के बचे हुए लोगों के बीच में बसने लगा।

ज़िदलियाह को क़त्ल करने की साज़िशें

7 देहात में अब तक यहूदाह के कुछ फ़ौजी अफ़सर अपने दस्तों समेत छुपे रहते थे। जब उन्हें ख़बर मिली कि शाहे-बाबल ने ज़िदलियाह बिन अख़ीक़ाम को यहूदाह का गवर्नर बनाकर उन ग़रीब आदमियों और बाल-बच्चों पर मुक़र्रर किया है जो ज़िलावतन नहीं हुए हैं 8 तो वह मिसफ़ाह में ज़िदलियाह के पास आए। अफ़सरों के नाम इसमाईल बिन नतनियाह, करीह के बेटे यूहानान और यूनतन, सिरायाह बिन तनहूमत, ईफी नतूफ़ाती के बेटे और याज़नियाह बिन माकाती थे। उनके फ़ौजी भी साथ आए। 9 ज़िदलियाह बिन अख़ीक़ाम बिन साफ़न ने क़सम खाकर उनसे वादा किया, “बाबल के ताबे हो जाने से मत डरना! मुल्क में आबाद होकर शाहे-बाबल की ख़िदमत करें तो आपकी सलामती होगी। 10 मैं खुद मिसफ़ाह में ठहरकर आपकी सिफ़ारिश करूँगा जब बाबल के नुमाइंदे आएँगे। इतने में अंगूर, मौसमे-गरमा का फल और जैतून की फ़सलें जमा करके अपने बरतनों में महफूज़ रखें। उन शहरों में आबाद रहें जिन पर आपने क़ब्ज़ा कर लिया है।”

11 यहूदाह के मुतअदिद बाशिंदे मोआब, अम्मोन, अदोम और दीगर पड़ोसी ममालिक में हिज़रत कर गए थे। अब जब उन्हें इतला मिली कि शाहे-बाबल ने कुछ बचे हुए लोगों को यहूदाह में छोड़कर ज़िदलियाह बिन अख़ीक़ाम बिन साफ़न को गवर्नर बना दिया है 12 तो वह सब यहूदाह में वापस आए। जिन ममालिक में भी वह मुंतशिर हुए थे वहाँ से वह मिसफ़ाह आए ताकि ज़िदलियाह से मिलें। उस मौसमे-गरमा में वह अंगूर और बाक़ी फल की बड़ी फ़सल जमा कर सके।

13 एक दिन यूहानान बिन करीह और वह तमाम फ़ौजी अफ़सर जो अब तक देहात में ठहरे हुए थे ज़िदलियाह से मिलने आए। 14 मिसफ़ाह में पहुँचकर वह ज़िदलियाह से कहने लगे, “क्या आपको नहीं मालूम कि अम्मोन के बादशाह बालीस ने इसमाईल बिन नतनियाह को आपको क़त्ल करने के लिए भेजा है?” लेकिन ज़िदलियाह बिन अख़ीक़ाम ने उनकी बात का यक़ीन न किया। 15 तब यूहानान बिन करीह मिसफ़ाह आया और अलहदगी में ज़िदलियाह से मिला। वह बोला, “मुझे इसमाईल बिन नतनियाह के पास जाकर उसे मार देने की इज़ाज़त दें। किसी को भी पता नहीं चलेगा। क्या ज़रूरत है कि वह आपको क़त्ल करे? अगर वह इसमें कामयाब हो जाए तो आपके पास जमाशुदा हमवतन सबके सब मुंतशिर हो जाएँगे और यहूदाह का बचा हुआ हिस्सा हलाक हो जाएगा।” 16 ज़िदलियाह ने यूहानान को डाँटकर कहा, “ऐसा मत करना! जो कुछ आप इसमाईल के बारे में बता रहे हैं वह झूट है।”

41

इसमाईल ज़िदलियाह गवर्नर को क़त्ल करता है

1 इसमाईल बिन नतनियाह बिन इलीसमा शाही नसल का था और पहले शाहे-यहूदाह का आला अफ़सर था। सातवें महीने * में वह दस आदमियों को अपने साथ लेकर मिसफ़ाह में ज़िदलियाह से मिलने आया। जब वह मिलकर खाना खा रहे थे 2 तो इसमाईल और उसके दस आदमी अचानक उठे और अपनी तलवारों को खींचकर ज़िदलियाह को मार डाला। यों इसमाईल ने उस आदमी को क़त्ल किया जिसे बाबल के बादशाह ने सूबा यहूदाह पर मुक़र्रर किया था। 3 उसने मिसफ़ाह में ज़िदलियाह के साथ रहनेवाले तमाम हमवतनों को भी क़त्ल किया और वहाँ ठहरनेवाले बाबल के फ़ौजियों को भी।

4 अगले दिन जब किसी को मालूम नहीं था कि ज़िदलियाह को क़त्ल किया गया है 5 तो 80 आदमी वहाँ पहुँचे जो सिकम, सैला और सामरिया से आकर रब के तबाहशुदा घर में उस की परस्तिश करने जा रहे थे। उनके पास गल्ला और बख़र की क़ुरबानियाँ थीं, और उन्होंने गम के मोरे अपनी दाढ़ियाँ मुँडवाकर अपने कपड़े फाड़ लिए और अपनी जिल्द को ज़ख़मी कर दिया था। 6 इसमाईल रोते रोते मिसफ़ाह से

* 41:1 सितंबर ता अक्तूबर।

निकलकर उनसे मिलने आया। जब वह उनके पास पहुँचा तो कहने लगा, “जिदलियाह बिन अखीकाम के पास आओ और देखो कि क्या हुआ है!”

7 ज्योंही वह शहर में दाखिल हुए तो इसमाईल और उसके साथियों ने उन्हें कत्ल करके एक हौज़ में फेंक दिया। 8 सिर्फ़ दस आदमी बच गए जब उन्होंने इसमाईल से कहा, “हमें मत कत्ल करना, क्योंकि हमारे पास गंदुम, जौ और शहद के जखीरे हैं जो हमने खुले मैदान में कहीं छुपा रखे हैं।” यह सुनकर उसने उन्हें दूसरों की तरह न मारा बल्कि ज़िंदा छोड़ा।

9 जिस हौज़ में इसमाईल ने मज़क़ूरा आदमियों की लाशें फेंक दीं वह बहुत बड़ा था। यहूदाह के बादशाह आसा ने उसे उस वक़्त बनवाया था जब इसराईली बादशाह बाशा से जंग थी और वह मिसफ़ाह को मज़बूत बना रहा था। इसमाईल ने इसी हौज़ को मक़तलों से भर दिया था। 10 मिसफ़ाह के बाकी लोगों को उसने कैदी बना लिया। उनमें यहूदाह के बादशाह की बेटियाँ और बाकी वह तमाम लोग शामिल थे जिन पर शाही मुहाफ़िज़ों के सरदार नबूज़रादान ने जिदलियाह बिन अखीकाम को मुक़र्रर किया था। फिर इसमाईल उन सबको अपने साथ लेकर मुल्के-अम्मोन के लिए रवाना हुआ।

11 लेकिन यहूनान बिन करीह और उसके साथी अफ़सरों को इतला दी गई कि इसमाईल से क्या जुर्म हुआ है। 12 तब वह अपने तमाम फ़ौजियों को जमा करके इसमाईल से लड़ने के लिए निकले और उसका ताक़तवर करते करते उसे ज़िबऊन के जोहड़ के पास जा लिया। 13 ज्योंही इसमाईल के कैदियों ने यहूनान और उसके अफ़सरों को देखा तो वह खुश हुए। 14 सबने इसमाईल को छोड़ दिया और मुड़कर यहूनान के पास भाग आए। 15 इसमाईल आठ साथियों समेत फ़रार हुआ और यहूनान के हाथ से बचकर मुल्के-अम्मोन में चला गया।

16 यों मिसफ़ाह के बचे हुए तमाम लोग ज़िबऊन में यहूनान और उसके साथी अफ़सरों के ज़ेरे-निगरानी आए। उनमें वह तमाम फ़ौजी, ख़वातीन, बच्चे और दरबारी शामिल थे जिन्हें इसमाईल ने जिदलियाह को कत्ल करने के बाद कैदी बनाया था। 17 लेकिन वह मिसफ़ाह वापस न गए बल्कि आगे चलते चलते बैत-लहम के करीब के गाँव बनाम सराय-किमहाम में रुक गए। वहाँ वह मिसर के लिए रवाना होने की तैयारियाँ करने लगे, 18 क्योंकि वह बाबल के इंतक़ाम से डरते थे, इसलिए कि जिदलियाह बिन अखीकाम को कत्ल करने से इसमाईल बिन नतनियाह ने उस आदमी को मौत के घाट उतारा था जिसे शाहे-बाबल ने यहूदाह का गवर्नर मुक़र्रर किया था।

42

यरमियाह मिसर न जाने का मशवरा देता है

1 यहूनान बिन करीह, यज़नियाह बिन हसायाह और दीगर फ़ौजी अफ़सर बाकी तमाम लोगों के साथ छोटे से लेकर बड़े तक 2 यरमियाह नबी के पास आए और कहने लगे, “हमारी मिन्नत क़बूल करें और रब अपने ख़ुदा से हमारे लिए दुआ करें। आप ख़ुद देख सकते हैं कि गो हम पहले मुतअदिद लोग थे, लेकिन अब थोड़े ही रह गए हैं। 3 दुआ करें कि रब आपका ख़ुदा हमें दिखाए कि हम कहाँ जाएँ और क्या कुछ करें।”

4 यरमियाह ने जवाब दिया, “ठीक है, मैं दुआ में ज़रूर रब आपके ख़ुदा को आपकी गुज़ारिश पेश करूँगा। और जो भी जवाब रब दे वह मैं लफ़ज़ बलफ़ज़ आपको बता दूँगा। मैं आपको किसी भी बात से महसूस नहीं रखूँगा।” 5 उन्होंने कहा, “रब हमारा वफ़ादार और काबिले-एतमाद गवाह है। अगर हम हर बात पर अमल न करें जो रब आपका ख़ुदा आपकी मारिफ़त हम पर नाज़िल करेगा तो वही हमारे खिलाफ़ गवाही दे। 6 खाह उस की हिदायत हमें अच्छी लगे या बुरी, हम रब अपने ख़ुदा की सुनेंगे। क्योंकि हम जानते हैं कि जब हम रब अपने ख़ुदा की सुनें तब ही हमारी सलामती होगी। इसी लिए हम आपको उसके पास भेज रहे हैं।”

7 दस दिन गुज़रने के बाद रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ। 8 उसने यहूनान, उसके साथी अफ़सरों और बाकी तमाम लोगों को छोटे से लेकर बड़े तक अपने पास बुलाकर 9 कहा, “आपने मुझे रब इसराईल के ख़ुदा के पास भेजा ताकि मैं आपकी गुज़ारिश उसके सामने लाऊँ। अब उसका फ़रमान सुनें! 10 ‘अगर तुम इस मुल्क में रहो तो मैं तुम्हें नहीं गिराऊँगा बल्कि तामीर करूँगा, तुम्हें जड़ से नहीं उखाड़ूँगा बल्कि पनीरी की तरह लगा दूँगा। क्योंकि मुझे उस मुसीबत पर अफ़सोस है जिसमें मैंने तुम्हें मुब्तला किया है। 11 इस वक़्त तुम शाहे-बाबल से डरते हो, लेकिन उससे ख़ौफ़ मत खाना!’ रब फ़रमाता है, ‘उससे दहशत न खाओ, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ और तुम्हारी मदद करके उसके हाथ से छुटकारा दूँगा। 12 मैं तुम पर रहम करूँगा, इसलिए वह भी तुम पर रहम करके तुम्हें तुम्हारे मुल्क में वापस आने देगा।

13 लेकिन अगर तुम रब अपने ख़ुदा की सुनने के लिए तैयार न हो बल्कि कहो कि हम इस मुल्क में नहीं रहेंगे 14 बल्कि मिसर जाएंगे जहाँ न जंग देखेंगे, न जंगी नरसिंगे की आवाज़ सुनेंगे और न भूके रहेंगे 15 तो रब का जवाब सुनो! ऐ यहूदाह के बचे हुए लोगो, रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि अगर तुम मिसर में जाकर वहाँ पनाह लेने पर तुले हुए हो 16 तो यक़ीन जानो कि जिस तलवार और काल से तुम डरते हो वह वही मिसर में तुम्हारा पीछा करता रहेगा। वहाँ जाकर तुम यक़ीनन मरोगे। 17 जितने भी मिसर जाकर वहाँ रहने पर तुले हुए हों वह सब तलवार, काल और मोहलक बीमारियों की ज़द में आकर मर जाएंगे। जिस मुसीबत में मैं उन्हें डाल दूँगा उससे कोई नहीं बचेगा।’

18 क्योंकि रब्बूल-अफ़वाज़ जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है, ‘पहले मेरा सख़्त ग़ज़ब यरूशलम के बाशिंदों पर नाज़िल हुआ। अगर तुम मिसर जाओ तो मेरा ग़ज़ब तुम पर भी नाज़िल होगा। तुम्हें देखकर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, और तुम उनकी लान-तान और हिक़ारत का निशाना बनोगे। लानत करनेवाला अपने दुश्मनों के लिए तुम्हारे जैसा अंजाम चाहेगा। जहाँ तक तुम्हारे वतन का ताल्लुक है, तुम उसे आइंदा कभी नहीं देखोगे।’

19 ऐ यहदाह के बचे हुए लोगो, अब रब आपसे हमकलाम हुआ है। उसका जवाब साफ है। मिसर को मत जाना! यह बात खूब जान लें कि आज मैंने आपको आगाह कर दिया है। 20 आपने खुद अपनी जान को खतरे में डाल दिया जब आपने मुझे रब अपने खुदा के पास भेजकर कहा, 'रब हमारे खुदा से हमारे लिए दुआ करें। उसका पूरा जवाब हमें सुनाएँ, क्योंकि हम उस की तमाम बातों पर अमल करेंगे।' 21 आज मैंने यह किया है, लेकिन आप रब अपने खुदा की सुनने के लिए तैयार नहीं हैं। जो कुछ भी उसने मुझे आपको सुनाने को कहा है उस पर आप अमल नहीं करना चाहते। 22 चुनाँचे अब जान लें कि जहाँ आप जाकर पनाह लेना चाहते हैं वहाँ आप तलवार, काल और मोहलक बीमारियों की ज़द में आकर हलाक हो जाएंगे।”

43

यर्मियाह की आगाही को नज़रंदाज़ किया जाता है

1 यर्मियाह खामोश हुआ। जो कुछ भी रब उनके खुदा ने यर्मियाह को उन्हें सुनाने को कहा था उसे उसने उन सब तक पहुँचाया था। 2 फिर अज़रियाह बिन हसायाह, यहनान बिन अखीकाम और तमाम बदतमीज़ आदमी बोल उठे, “तुम झूट बोल रहे हो! रब हमारे खुदा ने तुम्हें यह सुनाने को नहीं भेजा कि मिसर को न जाओ, न वहाँ आबाद हो जाओ। 3 इसके पीछे बास्क बिन नैरियाह का हाथ है। वही तुम्हें हमारे खिलाफ उकसा रहा है, क्योंकि वह चाहता है कि हम बाबलियों के हाथ में आ जाएँ ताकि वह हमें क़त्ल करें या जिलावतन करके मुल्के-बाबल ले जाएँ।”

4 ऐसी बातें करते करते यहनान बिन करीह, दीगर फौजी अफ़सरों और बाकी तमाम लोगों ने रब का हुक्म रद्द किया। वह मुल्के-यहदाह में न रहे 5 बल्कि सब यहनान और बाकी तमाम फौजी अफ़सरों की राहनुमाई में मिसर चले गए। उनमें यहदाह के वह बचे हुए सब लोग शामिल थे जो पहले मुख्तलिफ़ ममालिक में मुंतशिर हुए थे, लेकिन अब यहदाह में दुबारा आबाद होने के लिए वापस आए थे। 6 वह तमाम मर्द, औरतें और बच्चे बादशाह की बेटियों समेत भी उनमें शामिल थे जिन्हें शाही मुहाफ़िज़ों के सरदार नबूज़रादान ने ज़िदलियाह बिन अखीकाम के सुपुर्द किया था। यर्मियाह नबी और बास्क बिन नैरियाह को भी साथ जाना पड़ा। 7 यों वह रब की हिदायत रद्द करके खाना हुए और चलते चलते मिसरी सरहद के शहर तहफनहीस तक पहुँचे।

शाहे-बाबल के मिसर में घुस आने की पेशगोई

8 तहफनहीस में रब का कलाम यर्मियाह पर नाज़िल हुआ, 9 “अपने हमवतनों की मौजूदगी में चंद एक बड़े पत्थर फिरौन के महल के दरवाज़े के करीब ले जाकर फ़र्श की कच्ची ईंटों के नीचे दबा दे। 10 फिर उन्हें बता दे, ‘रब्बुल-अफ़वाज़ जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है कि मैं अपने खादिम शाहे-बाबल नबूकदनज़र को बुलाकर यहाँ लाऊँगा और उसका तख़्त उन पत्थरों के ऊपर खड़ा करूँगा जो मैंने यर्मियाह के ज़रीए दबाए हैं। नबूकदनज़र उन्हीं के ऊपर अपना शाही तंबू लगाएगा। 11 क्योंकि वह आएगा और मिसर पर हमला करके हर एक के साथ वह कुछ करेगा जो उसके नसीब में है। एक मर जाएगा, दूसरा कैद में जाएगा और तीसरा तलवार की ज़द में जाएगा। 12-13 नबूकदनज़र मिसरी देवताओं के मंदिरों को जलाकर राख कर देगा और उनके बुतों पर क़ब्ज़ा करके उन्हें अपने साथ ले जाएगा। जिस तरह चरवाहा अपने कपड़े से जुएँ निकाल निकालकर उसे साफ़ कर लेता है उसी तरह शाहे-बाबल मिसर को मालो-मता से साफ़ करेगा। मिसर आते वक़्त वह सूरज देवता के मंदिर में जाकर उसके सतूनों को ढा देगा और बाकी मिसरी देवताओं के मंदिर भी नज़रे-आतिश करेगा। फिर शाहे-बाबल सहीह-सलामत वहाँ से वापस चला जाएगा।”

44

तुम बुतपरस्ती से बाज़ क्यों नहीं आते?

1 रब का कलाम एक बार फिर यर्मियाह पर नाज़िल हुआ। उसमें वह उन तमाम हमवतनों से हमकलाम हुआ जो शिमाली मिसर के शहरों मिजदाल, तहफनहीस और मैफ़िस और जुनूबी मिसर बनाम पतरूस में रहते थे।

2 “रब्बुल-अफ़वाज़ जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है, ‘तुमने खुद वह बड़ी आफ़त देखी जो मैं यरूशलम और यहदाह के दीगर तमाम शहरों पर लाया। आज वह वीरानो-सुनसान हैं, और उनमें कोई नहीं बसता। 3 यों उन्हें उनकी बुरी हरकतों का अज़्र मिला। क्योंकि अजनबी माबूदों के लिए बख़ूर जलाकर उनकी खिदमत करने से उन्होंने मुझे तैश दिलाया। और यह ऐसे देवता थे जिनसे पहले न वह, न तुम और न तुम्हारे बापदादा वाकिफ़ थे। 4 बार बार मैं नबियों को उनके पास भेजता रहा, और बार बार मेरे खादिम कहते रहे कि ऐसी धिनौनी हरकतें मत करना, क्योंकि मुझे इनसे नफ़रत है! 5 लेकिन उन्होंने न सुनी, न ध्यान दिया। न वह अपनी बेदीनी से बाज़ आए, न अजनबी माबूदों को बख़ूर जलाने का सिलसिला बंद किया।

6 तब मेरा शदीद ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ। मेरे क्रहर की ज़बरदस्त आग ने यहदाह के शहरों और यरूशलम की गलियों में फैलते फैलते उन्हें वीरानो-सुनसान कर दिया। आज तक उनका यही हाल है।’

7 अब रब्बुल-अफ़वाज़ जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है, ‘तुम अपना सत्यानास क्यों कर रहे हो? ऐसे कदम उठाने से तुम यहदाह से आए हुए मर्दों और औरतों को बच्चों और शीरखारों समेत हलाकत की तरफ़ ला रहे हो। इस सूरत में एक भी नहीं बचेगा। 8 मुझे अपने हाथों

के काम से तैश क्यों दिलाते हो? यहाँ मिसर में पनाह लेकर तुम अजनबी माबूदों के लिए बखूर क्यों जलाते हो? इससे तुम अपने आपको नेस्तो-नाबूद कर रहे हो, तुम दुनिया की तमाम क्रौमों के लिए लानत और मज़ाक़ का निशाना बनोगे।⁹ क्या तुम अपनी क्रौम के संगीन गुनाहों को भूल गए हो? क्या तुम्हें वह कुछ याद नहीं जो तुम्हारे बापदादा, यहूदाह के राजे रानियों और तुमसे तुम्हारी बीवियों समेत मुल्के-यहूदाह और यरूशलम की गलियों में सरज़द हुआ है? ¹⁰ आज तक तुमने न इंकिसारी का इज़हार किया, न मेरा ख़ौफ़ माना, और न मेरी शरीअत के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी। तुम उन हिदायात के ताबे न रहे जो मैंने तुम्हें और तुम्हारे बापदादा को अता की थी।’

¹¹ चुनौचे रब्बुल-अफ़वाज़ जो इसराइल का खुदा है फ़रमाता है, ‘मैं तुम पर आफ़त लाने का अटल इरादा रखता हूँ। तमाम यहूदाह ख़त्म हो जाएगा। ¹² मैं यहूदाह के उस बचे हुए हिस्से को सफ़हाए-हस्ती से मिटा दूँगा जो मिसर में जाकर पनाह लेने पर तुला हुआ था। सब मिसर में हलाक हो जाएंगे, खाह तलवार से, खाह काल से। छोटे से लेकर बड़े तक सबके सब तलवार या काल की ज़द में आकर मर जाएंगे। उन्हें देखकर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, और वह दूसरों की लान-तान और हिक़ारत का निशाना बनेंगे। लानत करनेवाला अपने दुश्मनों के लिए उन्हीं का-सा अंजाम चाहेगा। ¹³ जिस तरह मैंने यरूशलम को सज़ा दी ऐन उसी तरह मैं मिसर में आनेवाले हमवतनों को तलवार, काल और मोहलक बीमारियों से सज़ा दूँगा। ¹⁴ यहूदाह के जितने बचे हुए लोग यहाँ मिसर में पनाह लेने के लिए आए हैं वह सब यहीं हलाक हो जाएंगे। कोई भी बचकर मुल्के-यहूदाह में नहीं लौटेगा, गो तुम सब वहाँ दुबारा आबाद होने की शदीद आज़ू रखते हो। सिर्फ़ चंद एक इसमें कामयाब हो जाएंगे।’

आसमानी मलिका की पूजा पर ज़िद

¹⁵ उस वक़्त शिमाली और जुनूबी मिसर में रहनेवाले यहूदाह के तमाम मर्द और औरतें एक बड़े इजतिमा के लिए जमा हुए थे। मर्दों को ख़ूब मालूम था कि हमारी बीवियाँ अजनबी माबूदों को बखूर की कुरबानियाँ पेश करती हैं। अब उन्होंने यरमियाह से कहा, ¹⁶ “जो बात आपने रब का नाम लेकर हमसे की है वह हम नहीं मानते। ¹⁷ हम उन तमाम बातों पर ज़रूर अमल करेंगे जो हमने कही हैं। हम आसमानी मलिका देवी के लिए बखूर जलाएँगे और उसे मैं की नज़रें पेश करेंगे। हम वही कुछ करेंगे जो हम, हमारे बापदादा, हमारे बादशाह और हमारे बुजुर्ग मुल्के-यहूदाह और यरूशलम की गलियों में किया करते थे। क्योंकि उस वक़्त रोट्टी की कसरत थी और हमारा अच्छा हाल था। उस वक़्त हम किसी भी मुसीबत से दोचार न हुए। ¹⁸ लेकिन जब से हम आसमानी मलिका को बखूर और मैं की नज़रें पेश करने से बाज़ आए हैं उस वक़्त से हर लिहाज़ से हाज़तमंद रहे हैं। उसी वक़्त से हम तलवार और काल की ज़द में आकर नेस्त हो रहे हैं।” ¹⁹ औरतों ने बात जारी रखकर कहा, “क्या आप समझते हैं कि हमारे शौहरों को इसका इल्म नहीं था कि हम आसमानी मलिका को बखूर और मैं की नज़रें पेश करती हैं, कि हम उस की शक़ल की टिक्कियाँ बनाकर उस की पूजा करती हैं?”

चंद एक के बचने की पेशगोई

²⁰ यरमियाह एतराज़ करनेवाले तमाम मर्दों और औरतों से दुबारा मुखातिब हुआ, ²¹ “देखो, रब ने उस बखूर पर ध्यान दिया जो तुम और तुम्हारे बापदादा ने बादशाहों, बुजुर्गों और अवाम समेत यहूदाह के शहरों और यरूशलम की गलियों में जलाया है। यह बात उसे ख़ूब याद है। ²² आखिरकार एक वक़्त आया जब तुम्हारी शरीर और धिनौनी हरकतें काबिले-बर्दाश्त न रही, और रब को तुम्हें सज़ा देनी पड़ी। यही वजह है कि आज तुम्हारा मुल्क वीरानो-सुनसान है, कि उसे देखकर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। लानत करनेवाला अपने दुश्मन के लिए ऐसा ही अंजाम चाहता है। ²³ आफ़त इसी लिए तुम पर आई कि तुमने बुतों के लिए बखूर जलाकर रब की न सुनी। न तुमने उस की शरीअत के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी, न उस की हिदायात और अहक़ाम पर अमल किया। आज तक मुल्क का यही हाल रहा है।”

²⁴ फिर यरमियाह ने तमाम लोगों से औरतों समेत कहा, “ऐ मिसर में रहनेवाले यहूदाह के तमाम हमवतनो, रब का कलाम सुनो! ²⁵ रब्बुल-अफ़वाज़ जो इसराइल का खुदा है फ़रमाता है कि तुम और तुम्हारी बीवियों ने इसरार किया है, ‘हम ज़रूर अपनी उन मन्तों को पूरा करेंगे जो हमने मानी हैं, हम ज़रूर आसमानी मलिका को बखूर और मैं की नज़रें पेश करेंगे।’ और तुमने अपने अलफ़ाज़ और अपनी हरकतों से साबित कर दिया है कि तुम संजीदगी से अपने इस एलान पर अमल करना चाहते हो। तो ठीक है, अपना वादा और अपनी मन्तें पूरी करो!

²⁶ लेकिन ऐ मिसर में रहनेवाले तमाम हमवतनो, रब के कलाम पर ध्यान दो! रब फ़रमाता है कि मेरे अज़ीम नाम की क़सम, आइंदा मिसर में तुममें से कोई मेरा नाम लेकर क़सम नहीं खाएगा, कोई नहीं कहेगा, ‘रब कादिरे-मुतलक की हयात की क़सम!’ ²⁷ क्योंकि मैं तुम्हारी निगरानी कर रहा हूँ, लेकिन तुम पर मेहरबानी करने के लिए नहीं बल्कि तुम्हें नुक़सान पहुँचाने के लिए। मिसर में रहनेवाले यहूदाह के तमाम लोग तलवार और काल की ज़द में आ जाएंगे और पिसते पिसते हलाक हो जाएंगे। ²⁸ सिर्फ़ चंद एक दुश्मन की तलवार से बचकर मुल्के-यहूदाह वापस आएँगे। तब यहूदाह के जितने बचे हुए लोग मिसर में पनाह लेने के लिए आए हैं वह सब जान लेंगे कि किसकी बात दुस्स्त निकली है, मेरी या उन की। ²⁹ रब फ़रमाता है कि मैं तुम्हें निशान भी देता हूँ ताकि तुम्हें यक़ीन हो जाए कि मैं तुम्हारे खिलाफ़ ख़ाली बातें नहीं कर रहा बल्कि तुम्हें यक़ीनन मिसर में सज़ा दूँगा। ³⁰ निशान यह होगा कि जिस तरह मैंने यहूदाह के बादशाह सिदक़ियाह को उसके जानी दुश्मन नबूक़दनज़ज़र के हवाले कर दिया उसी तरह मैं हुफ़रा फिरौन को भी उसके जानी दुश्मनों के हवाले कर दूँगा। यह रब का फ़रमान है।”

45

बास्क के लिए तसल्ली का पैगाम

1 यहदाह के बादशाह यह्यक्रीम बिन यूसियाह की हुकूमत के चौथे साल में यरमियाह नबी को बास्क बिन नैरियाह के लिए रब का पैगाम मिला। उस वक़्त यरमियाह बास्क से वह तमाम बातें लिखवा रहा था जो उस पर नाज़िल हुई थीं। यरमियाह ने कहा, ² “ऐ बास्क, रब इसराईल का खुदा तेरे बारे में फ़रमाता है ³ कि तू कहता है, ‘हाय, मुझ पर अफ़सोस! रब ने मेरे दर्द में इज़ाफ़ा कर दिया है, अब मुझे रंजो-अलम भी सहना पड़ता है। मैं कराहते कराहते थक गया हूँ। कहीं भी आरामो-सुकून नहीं मिलता।’

4 ऐ बास्क, रब जवाब में फ़रमाता है कि जो कुछ मैंने खुद तामीर किया उसे मैं गिरा दूँगा, जो पौदा मैंने खुद लगाया उसे जड़ से उखाड़ दूँगा। पूरे मुल्क के साथ ऐसा ही सुलूक करूँगा। ⁵ तो फिर तू अपने लिए क्यों बड़ी कामयाबी हासिल करने का आरज़ूमंद है? ऐसा खयाल छोड़ दे, क्योंकि मैं तमाम इनसानों पर आफ़त ला रहा हूँ। यह रब का फ़रमान है। लेकिन जहाँ भी तू जाए वहाँ मैं होने दूँगा कि तेरी जान छूट जाए।” *

46

मिसर की शिकस्त की पेशगोई

1 यरमियाह पर मुख्तलिफ़ क्रौमों के बारे में भी पैगामात नाज़िल हुए। यह ज़ैल में दर्ज हैं।

2 पहला पैगाम मिसर के बारे में है। यहदाह के बादशाह यह्यक्रीम बिन यूसियाह के चौथे साल में शाहे-बाबल नबूकदनज़र ने दरियाए-फ़ुरात पर वाक़े शहर करकिमीस के पास मिसरी फ़ौज को शिकस्त दी थी। उन दिनों में मिसरी बादशाह निकोह फ़िरौन की फ़ौज के बारे में रब का कलाम नाज़िल हुआ,

3 “अपनी बड़ी और छोटी ढालें तैयार करके जंग के लिए निकलो! ⁴ घोड़ों को रथों में जोतो! दीगर घोड़ों पर सवार हो जाओ! खोद पहनकर खड़े हो जाओ! अपने नेज़ों को रौंगन से चमकाकर ज़िरा-बक़तर पहन लो! ⁵ लेकिन मुझे क्या नज़र आ रहा है? मिसरी फ़ौजियों पर दहशत तारी हुई है। वह पीछे हट रहे हैं, उनके सूमाओं ने हथियार डाल दिए हैं। वह भाग भागकर फ़रार हो रहे हैं और पीछे भी नहीं देखते। रब फ़रमाता है कि चारों तरफ़ दहशत ही दहशत फैल गई है। ⁶ किसी को भी बचने न दो, खाह वह कितनी तेज़ी से क्यों न भाग रहा हो या कितना ज़बरदस्त फ़ौजी क्यों न हो। शिमाल में दरियाए-फ़ुरात के किनारे ही वह ठोकर खाकर गिर गए हैं।

7 यह क्या है जो दरियाए-नील की तरह चढ़ रहा है, जो सैलाब बनकर सब कुछ गरक़ कर रहा है? ⁸ मिसर दरियाए-नील की तरह चढ़ रहा है, वही सैलाब बनकर सब कुछ गरक़ कर रहा है। वह कहता है, ‘मैं चढ़कर पूरी ज़मीन को गरक़ कर दूँगा। मैं शहरों को उनके बाशिंदों समेत तबाह करूँगा।’ ⁹ ऐ घोड़े, दुश्मन पर टूट पड़ो! ऐ रथो, दीवानों की तरह दौड़ो! ऐ फ़ौजियो, लड़ने के लिए निकलो! ऐ एथोपिया और लिबिया के सिपाहियो, अपनी ढालें पकड़कर चलो, ऐ लुदिया के तीर चलानेवालो, अपने कमान तानकर आगे बढ़ो!

10 लेकिन आज कादिरे-मुतलक़, रब्बुल-अफ़वाज का ही दिन है। इंतक़ाम के इस दिन वह अपने दुश्मनों से बदला लेगा। उस की तलवार उन्हें खा खाकर सेर हो जाएगी, और उनका खून पी पीकर उस की प्यास बुझेगी। क्योंकि शिमाल में दरियाए-फ़ुरात के किनारे उन्हें कादिरे-मुतलक़, रब्बुल-अफ़वाज को कुरबान किया जाएगा।

11 ऐ कुंवारी मिसर बेटी, मुल्के-जिलियाद में जाकर अपने ज़ख़मों के लिए बलसान खरीद ले। लेकिन क्या फ़ायदा? खाह तू कितनी दवाई क्यों न इस्तेमाल करे तेरी चोटें भर ही नहीं सकती! ¹² तेरी शरमिंदगी की खबर दीगर अक्रवाम में फैल गई है, तेरी चीखें पूरी दुनिया में गूँज रही हैं। क्योंकि तेरे सूमे एक दूसरे से ठोकर खाकर गिर गए हैं।”

शाहे-बाबल के मिसर में घुस आने की पेशगोई

13 जब शाहे-बाबल नबूकदनज़र मिसर पर हमला करने आया तो रब इसके बारे में यरमियाह से हमकलाम हुआ,

14 “मिसरी शहरों मिजदाल, मेंफ़िस और तहफ़नहीस में एलान करो, ‘जंग की तैयारियाँ करके लड़ने के लिए खड़े हो जाओ! क्योंकि तलवार तुम्हारे आस-पास सब कुछ खा रही है।’

15 ऐ मिसर, तेरे सूमाओं को खाक में क्यों मिलाया गया है? वह खड़े नहीं रह सकते, क्योंकि रब ने उन्हें दबा दिया है। ¹⁶ उसने मुतअद्दिद अफ़राद को ठोकर खाने दिया, और वह एक दूसरे पर गिर गए। उन्होंने कहा, ‘आओ, हम अपनी ही क्रौम और अपने वतन में वापस चले जाएँ जहाँ ज़ालिम की तलवार हम तक नहीं पहुँच सकती।’ ¹⁷ वहाँ वह पुकार उठे, ‘मिसर का बादशाह शोर तो बहुत मचाता है लेकिन इसके पीछे कुछ भी नहीं। जो सुनहरा मौक़ा उसे मिला वह जाता रहा है।’”

18 दुनिया का बादशाह जिसका नाम रब्बुल-अफ़वाज है फ़रमाता है, “मेरी हयात की कसम, जो तुम पर हमला करने आ रहा है वह दूसरों से उतना बड़ा है जितना तबूर दीगर पहाड़ों से और करमिल समुंदर से ऊँचा है। ¹⁹ ऐ मिसर के बाशिंदो, अपना मालो-असबाब बाँधकर जिलावतन होने की तैयारियाँ करो। क्योंकि मेंफ़िस मिसमार होकर नज़रे-आतिश हो जाएगा। उसमें कोई नहीं रहेगा।

* 45:5 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : मैं तुझे तेरी जान गनीमत के तौर पर बख़्शा दूँगा।

20 मिसर खूबसूरत-सी जवान गाय है, लेकिन शिमाल से मोहलक मक्खी आकर उस पर धावा बोल रही है। हाँ, वह आ रही है। 21 मिसरी फ़ौज के भाड़े के फ़ौजी मोटे-ताज़े बछड़े हैं, लेकिन वह भी मुड़कर फ़रार हो जाएंगे। एक भी क़ायम नहीं रहेगा। क्योंकि आफ़त का दिन उन पर आनेवाला है, वह वक़्त जब उन्हें पूरी सज़ा मिलेगी। 22 मिसर सॉप की तरह फुँकारते हुए पीछे हट जाएगा जब दुश्मन के फ़ौजी पूरे ज़ोर से उस पर हमला करेंगे, जब वह लकड़हारों की तरह अपनी कुल्हाड़ियाँ पकड़े हुए उस पर टूट पड़ेंगे।” 23 रब फ़रमाता है, “तब वह मिसर का जंगल काट डालेंगे, गो वह कितना घना क्यों न हो। क्योंकि उनकी तादाद टिड्डियों से ज़्यादा होगी बल्कि वह अनगिनत होंगे। 24 मिसर बेटी की बेइज़्जती की जाएगी, उसे शिमाली क्रौम के हवाले किया जाएगा।”

25 रब्बूल-अफ़वाज जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है, “मैं थीबस शहर के देवता आमून, फ़िरौन और तमाम मिसर को उसके देवताओं और बादशाहों समेत सज़ा दूँगा। हाँ, मैं फ़िरौन और उस पर एतमाद रखनेवाले तमाम लोगों की अदालत करूँगा।” 26 रब फ़रमाता है, “मैं उन्हें उनके जानी दुश्मनों के हवाले कर दूँगा, और वह शाहे-बाबल नबूकदनज़र और उसके अफ़सरों के काबू में आ जाएंगे। लेकिन बाद में मिसर पहले की तरह दुबारा आबाद हो जाएगा।

27 जहाँ तक तेरा ताल्लुक है, ऐ याकूब मेरे खादिम, खौफ़ मत खा! ऐ इसराईल, हौसला मत हार! देख, मैं तुझे दूर-दराज़ मुल्क से छुटकारा दूँगा। तेरी औलाद को मैं उस मुल्क से नजात दूँगा जहाँ उसे जिलावतन किया गया है। फिर याकूब वापस आकर आरामो-सुकून की ज़िंदगी गुज़रेगा। कोई नहीं होगा जो उसे हैबतज़दा करे।” 28 रब फ़रमाता है, “ऐ याकूब मेरे खादिम, खौफ़ न खा, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ। मैं उन तमाम क्रौमों को नेस्तो-नाबूद कर दूँगा जिनमें मैंने तुझे मुंतशिर कर दिया है, लेकिन तुझे मैं इस तरह सफ़हाए-हस्ती से नहीं मिटाऊँगा। अलबत्ता मैं मुनासिब हद तक तेरी तंबीह करूँगा, क्योंकि मैं तुझे सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ सकता।”

47

फ़िलिस्तिनों को सफ़हाए-हस्ती से मिटाया जाएगा

1 फ़िरौन के ग़ज़ा शहर पर हमला करने से पहले यरमियाह नबी पर फ़िलिस्तिनों के बारे में रब का कलाम नाज़िल हुआ,

2 “रब फ़रमाता है कि शिमाल से पानी आ रहा है जो सैलाब बनकर पूरे मुल्क को गरक़ कर देगा। पूरा मुल्क शहरों और बाशिंदों समेत उसमें डूब जाएगा। लोग चीख उठेंगे, और मुल्क के तमाम बाशिंदे आहो-ज़ारी करेंगे। 3 क्योंकि सरपट दौड़ते हुए घोड़ों की टापें सुनाई देंगी, दुश्मन के रथों का शोर और पहियों की गड़गड़ाहट उनके कानों तक पहुँचेगी। बाप खौफ़ज़दा होकर यों साकित हो जाएंगे कि वह अपने बच्चों की मदद करने के लिए पीछे भी देख नहीं सकेंगे। 4 क्योंकि वह दिन आनेवाला है जब तमाम फ़िलिस्तिनों को नेस्तो-नाबूद किया जाएगा ताकि सू और सैदा के आखिरी मदद करनेवाले भी ख़त्म हो जाएँ। क्योंकि रब फ़िलिस्तिनों को सफ़हाए-हस्ती से मिटानेवाला है, जज़ीराए-क़ेते के उन बचे हुए लोगों को जो यहाँ आकर आबाद हुए हैं।

5 ग़ज़ा बेटी मातम के आलम में अपना सर मुँडवाएगी, अस्कलून शहर मिसमार हो जाएगा। ऐ मैदानी इलाके के बचे हुए लोगो, तुम कब तक अपनी जिल्द को ज़ख़मी करते रहोगे? 6 ‘हाय, ऐ रब की तलवार, क्या तू कभी नहीं आराम करेगी? दुबारा अपने मियान में छुप जा! ख़ामोश होकर आराम कर!’ 7 लेकिन वह किस तरह आराम कर सकती है जब रब ने खुद उसे चलाया है, जब उसी ने उसे अस्कलून और साहिली इलाके पर धावा बोलने का हुक्म दिया है?”

48

मोआब के अंजाम की पेशगोई

1 मोआब के बारे में रब्बूल-अफ़वाज जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है,

“नबू शहर पर अफ़सोस, क्योंकि वह तबाह हो गया है। दुश्मन ने किरियतायम की बेहुरमती करके उस पर कब्ज़ा कर लिया है। चटान के किले की स्सवाई हो गई, वह पाश पाश हो गया है। 2 अब से कोई मोआब की तारीफ़ नहीं करेगा। हसबोन में आदमी उस की शिकस्त की साज़िशें करके कह रहे हैं, आओ, हम मोआबी क्रौम को नेस्तो-नाबूद करें। ‘ऐ मदमीन, तू भी तबाह हो जाएगा, तलवार तेरे भी पीछे पड़ जाएगी।’

3 सुनो! होरोनायम से चीखें बुलंद हो रही हैं। तबाही और बड़ी शिकस्त का शोर मच रहा है। 4 मोआब चूर चूर हो गया है, उसके बच्चे ज़ोर से चिल्ला रहे हैं। 5 लोग रोते रोते लूँहीत की तरफ़ चढ़ रहे हैं। होरोनायम की तरफ़ उतरते रास्ते पर शिकस्त की आहो-ज़ारी सुनाई दे रही है। 6 भागकर अपनी जान बचाओ! रेगिस्तान में झाड़ी की मानिंद बन जाओ।

7 चूँकि तुम मोआबियों ने अपनी कामयाबियों और दौलत पर भरोसा रखा, इसलिए तुम भी कैद में जाओगे। तुम्हारा देवता क़मोस भी अपने पुजारियों और बुजुर्गों समेत जिलावतन हो जाएगा। 8 तबाह करनेवाला हर शहर पर हमला करेगा, एक भी नहीं बचेगा। जिस तरह रब ने फ़रमाया है, वादी भी तबाह हो जाएगी और मैदाने-मुरतफ़ा भी। 9 मोआब पर नमक डाल दो, क्योंकि वह मिसमार हो जाएगा। उसके शहर वीरानो-सुनसान हो जाएंगे, और उनमें कोई नहीं बसेगा।

10 उस पर लानत जो सुस्ती से रब का काम करे! उस पर लानत जो अपनी तलवार को खून बहाने से रोक ले! 11 अपनी जवानी से लेकर आज तक मोआब आरामो-सुकून की ज़िंदगी गुज़ारता आया है, उस मै की मानिंद जो कभी नहीं छोड़ी गई और कभी एक बरतन से दूसरे में उंडेली

नहीं गई। इसलिए उसका मज़ा कायम और ज़ायका बेहतरीन रहा है।” 12 लेकिन रब फ़रमाता है, “वह दिन आनेवाला है जब मैं ऐसे आदमियों को उसके पास भेजूँगा जो मैं को बरतनों से निकालकर ज़ाया कर दूँगे, और बरतनों को ख़ाली करने के बाद पाश पाश कर दूँगे। 13 तब मोआब को अपने देवता क़मोस पर यों शर्म आएगी जिस तरह इसराइल को बैतेल के उस बुत पर शर्म आई जिस पर वह भरोसा रखता था।

14 हाय, तुम अपने आप पर कितना फ़ख़र करते हो कि हम सूरे और ज़बरदस्त जंगजू हैं। 15 लेकिन दुनिया का बादशाह जिसका नाम रब्बुल-अफ़वाज है फ़रमाता है कि मोआब तबाह हो जाएगा, और दुश्मन उसके शहरों में घुस आएगा। उसके बेहतरीन जवान क़त्लो-गारत की ज़द में आकर हलाक हो जाएंगे।

मोआब की ताक़त टूट गई है

16 मोआब का अंजाम करीब ही है, आफ़त उस पर नाज़िल होनेवाली है। 17 ऐ पड़ोस में बसनेवालो, उस पर मातम करो! जितने उस की शोहरत जानते हो आहो-ज़ारी करो। बोलो, ‘हाय, मोआब का जोरदार असाए-शाही टूट गया है, उस की शानो-शौकत की अलामत खाक में मिलाई गई है।’

18 ऐ दीबोन बेटी, अपने शानदार तख़्त पर से उतरकर प्यासी ज़मीन पर बैठ जा। क्योंकि मोआब को तबाह करनेवाला तेरे खिलाफ़ भी चढ़ आया, वह तेरे क़िलाबंद शहरों को भी मिसमार करेगा। 19 ऐ अरोईर की रहनेवाली, सड़क के किनारे खड़ी होकर गुज़रनेवालों पर गौर कर! अपनी जान बचानेवालों से पूछ ले कि क्या हुआ है। 20 तब तुझे जवाब मिलेगा, ‘मोआब स्सवा हुआ है, वह पाश पाश हो गया है। बुलंद आवाज़ से वावैला करो! दरियाए-अरनोन के किनारे एलान करो कि मोआब ख़त्म है।’

21 मैदाने-मुरतफ़ा पर अल्लाह की अदालत नाज़िल हुई है। हौलून, यहज़, मिफ़ात, 22 दीबोन, नबू, बैत-दिबलातायम, 23 क़िरियतायम, बैत-जमूल, बैत-मऊन, 24 करियोत और बूसरा, गरज़ मोआब के तमाम शहरों की अदालत हुई है, खाह वह दूर हों या करीब।”

25 रब फ़रमाता है, “मोआब की ताक़त टूट गई है, उसका बाजू पाश पाश हो गया है। 26 उसे मैं पिला पिलाकर मतवाला करो, वह अपनी कै में लोट-पोट होकर सबके लिए मज़ाक़ का निशाना बन जाए। क्योंकि वह मग़र्र होकर रब के खिलाफ़ खड़ा हो गया है।

27 तुम मोआबियों ने इसराइल को अपने मज़ाक़ का निशाना बनाया था। तुम यों उसे गालियाँ देते रहे जैसे उसे चोरी करते वक़्त पकड़ा गया हो। 28 लेकिन अब तुम्हारी बारी आ गई है। अपने शहरों को छोड़कर चटानों में जा बसो! कबूतर बनकर चटानों की दराड़ों में अपने घोंसले बनाओ।

29 हमने मोआब के तकब्बुर के बारे में सुना है, क्योंकि वह हद से ज्यादा मुतकब्बिर, मग़र्र, घमंडी, खुदपसंद और अनापरस्त है।”

30 रब फ़रमाता है, “मैं उसके तकब्बुर से वाकिफ़ हूँ। लेकिन उस की डींगें अबस हैं, उनके पीछे कुछ नहीं है। 31 इसलिए मैं मोआब पर आहो-ज़ारी कर रहा, तमाम मोआब के सबब से चिल्ला रहा हूँ। कीर-हरासत के बाशिंदों का अंजाम देखकर मैं आहें भर रहा हूँ। 32 ऐ सिबमाह की अंगूर की बेल, याज़ेर की निसबत मैं कहीं ज्यादा तुझ पर मातम कर रहा हूँ। तेरी कोंपलें याज़ेर तक फैली हुई थीं बल्कि समुंदर को पार भी करती थीं। लेकिन अब तबाह करनेवाला दुश्मन तेरे पके हुए अंगूरों और मौसमे-गरमा के फल पर टूट पड़ा है। 33 अब खुशीओ-शादमानी मोआब के बागों और खेतों से जाती रही है। मैंने अंगूर का रस निकालने का काम रोक दिया है। कोई खुशी के नारे लगा लगाकर अंगूर को पाँवों तले नहीं रौंदता। शोर तो मच रहा है, लेकिन खुशी के नारे बुलंद नहीं हो रहे बल्कि जंग के।

34 हसबोन में लोग मदद के लिए पुकार रहे हैं, उनकी आवाज़ इलियाली और यहज़ तक सुनाई दे रही है। इसी तरह जुगार की चीखें होरोनायम और इजलत-शलीशियाह तक पहुँच गई हैं। क्योंकि निमरीम का पानी भी ख़श्क हो जाएगा।” 35 रब फ़रमाता है, “मोआब में जो ऊँची जगहों पर चढ़कर अपने देवताओं को बख़ूर और बाकी कुरबानियाँ पेश करते हैं उनका मैं खातमा कर दूँगा।

36 इसलिए मेरा दिल बाँसरी के मातमी सुर निकालकर मोआब और कीर-हरासत के लिए नोहा कर रहा है। क्योंकि उनकी हासिलशुदा दौलत जाती रही है। 37 हर सर गंजा, हर दाढ़ी मुँडवाई गई है। हर हाथ की जिल्द को ज़ख़मी कर दिया गया है, हर कमर टाट से मुलब्स है। 38 मोआब की तमाम छतों पर और उसके चौकों में आहो-ज़ारी बुलंद हो रही है।”

क्योंकि रब फ़रमाता है, “मैंने मोआब को बेकार मिट्टी के बरतन की तरह तोड़ डाला है। 39 हाय, मोआब पाश पाश हो गया है! लोग ज़ारो-क़तार रो रहे हैं, और मोआब ने शर्म के मोरे अपना मुँह ढाँप लिया है। वह मज़ाक़ का निशाना बन गया है, उसे देखकर तमाम पड़ोसियों के रोंगटे खड़े हो गए हैं।”

मोआब रब के खिलाफ़ उठ खड़ा हुआ है

40 रब फ़रमाता है, “वह देखो! दुश्मन उकाब की तरह मोआब पर झपट्टा मारता है। अपने परों को फैलाकर वह पूरे मुल्क पर साया डालता है। 41 करियोत क़िलों समेत उसके क़ब्ज़े में आ गया है। उस दिन मोआबी सूरमाओं का दिल दर्द-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह पेचो-ताब खाएगा। 42 क्योंकि मोआबी क़ौम सफ़हाए-हस्ती से मिट जाएगी, इसलिए कि वह मग़र्र होकर रब के खिलाफ़ खड़ी हो गई है।

43 ऐ मोआबी क़ौम, दहशत, गढ़ा और फंदा तेरे नसीब में हैं।” 44 क्योंकि रब फ़रमाता है, “जो दहशत से भागकर बच जाए वह गढ़े में गिर जाएगा, और जो गढ़े से निकल जाए वह फंदे में फँस जाएगा। क्योंकि मैं मोआब पर उस की अदालत का साल लाऊँगा।

45 पनाहगुजीन थकेहारे हसबोन के साथ में स्क जाते हैं। लेकिन अफसोस, हसबोन से आग निकल आई है और सीहोन बादशाह के शहर में से शोला भड़क उठा है जो मोआब की पेशानी को और शोर मचानेवालों के चाँदों को नज़रे-आतिश करेगा। 46 ऐ मोआब, तुझ पर अफसोस! क मोस देवता के परस्तार नेस्तो-नाबूद हैं, तेरे बेटे-बेटियाँ कैदी बनकर जिलावतन हो गए हैं।

47 लेकिन आनेवाले दिनों में मैं मोआब को बहाल करूँगा।” यह रब का फ़रमान है।

यहाँ मोआब पर अदालत का फैसला इख़िताम पर पहुँच गया है।

49

अम्मोनियों की अदालत

1 अम्मोनियों के बारे में रब फ़रमाता है,

“क्या इसराईल की कोई औलाद नहीं, कोई वारिस नहीं जो ज़द के कबायली इलाके में रह सके? मलिक देवता के परस्तारों ने उस पर क्यों कब्ज़ा किया है? क्या वजह है कि यह लोग ज़द के शहरों में आबाद हो गए हैं?” 2 चुनाँचे रब फ़रमाता है, “वह वक़््त आनेवाला है कि मेरे हुक्म पर अम्मोनी दास्त-हुक्मत रब्बा के खिलाफ़ जंग के नारे लगाए जाएंगे। तब वह मलबे का ढेर बन जाएगा, और गिर्दो-नवाह की आबादियाँ नज़रे-आतिश हो जाएँगी। तब इसराईल उन्हें मुल्क-बदर करेगा जिन्होंने उसे मुल्क-बदर किया था।” यह रब का फ़रमान है।

3 “ऐ हसबोन, वावैला कर, क्योंकि अई शहर बरबाद हुआ है। ऐ रब्बा की बेटियों, मदद के लिए चिल्लाओ! टाट ओढ़कर मातम करो! फ़सील के अंदर बेचैनी से इधर उधर फ़िरो! क्योंकि मलिक देवता अपने पुजारियों और बुजुर्गों समेत जिलावतन हो जाएगा। 4 ऐ बेवफ़ा बेटि, तू अपनी ज़रखेज़ वादियों पर इतना फ़ख़र क्यों करती है? तू अपने मालो-दौलत पर भरोसा करके शेखी मारती है कि अब मुझ पर कोई हमला नहीं करेगा।” 5 कादिरे-मुतलक रब्बूल-अफ़वाज फ़रमाता है, “मैं तमाम पड़ोसियों की तरफ़ से तुझ पर दहशत छा जाने दूँगा। तुम सबको चारों तरफ़ मुंताशिर कर दिया जाएगा, और तेरे पनाहगुजीनों को कोई जमा नहीं करेगा।

6 लेकिन बाद में मैं अम्मोनियों को बहाल करूँगा।” यह रब का फ़रमान है।

अदोम की अदालत

7 रब्बूल-अफ़वाज अदोम के बारे में फ़रमाता है, “क्या तेमान में हिकमत का नामो-निशान नहीं रहा? क्या दानिशमंद सहीह मशवरा नहीं दे सकते? क्या उनकी दानाई बेकार हो गई है?”

8 ऐ ददान के बाशिंदो, भागकर हिज़रत करो, ज़मीन के अंदर छुप जाओ। क्योंकि मैं एसौ की औलाद पर आफ़त नाज़िल करता हूँ, मेरी सज़ा का दिन करीब आ गया है। 9 ऐ अदोम, अगर तू अंगूर का बाग़ होता और मज़दूर फ़सल चुनने के लिए आते तो थोड़ा-बहुत उनके पीछे रह जाता। अगर डाकू रात के वक़््त तुझे लूट लेते तो वह सिर्फ़ उतना ही छीन लेते जितना उठाकर ले जा सकते हैं। लेकिन तेरा अंजाम इससे कहीं ज़्यादा बुरा होगा। 10 क्योंकि मैंने एसौ को गंगा करके उस की तमाम छुपने की जगहें ढूँड निकाली हैं। वह कहीं भी छुप नहीं सकेगा। उस की औलाद, भाई और हमसाय हलाक हो जाएंगे, एक भी बाक़ी नहीं रहेगा। 11 अपने यतीमों को पीछे छोड़ दे, क्योंकि मैं उनकी जान को बचाए रखूँगा। तुम्हारी बेवाएँ भी मुझ पर भरोसा रखें।”

12 रब फ़रमाता है, “जिन्हें मेरे ग़ज़ब का प्याला पीने का फैसला नहीं सुनाया गया था उन्हें भी पीना पड़ा। तो फिर तेरी जान किस तरह बचेगी? नहीं, तू यकीनन सज़ा का प्याला पी लेगा।” 13 रब फ़रमाता है, “मेरे नाम की कसम, बसरा शहर गिर्दो-नवाह के तमाम शहरों समेत अबदी खंडरात बन जाएगा। उसे देखकर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, और वह उसे लान-तान करेंगे। लानत करनेवाला अपने दुश्मन के लिए बसरा ही का-सा अंजाम चाहेगा।”

14 मैंने रब की तरफ़ से पैग़ाम सुना है, “एक कासिद को अक़वाम के पास भेजा गया है जो उन्हें हुक्म दे, ‘जमा होकर अदोम पर हमला करने के लिए निकलो! उससे लड़ने के लिए उठो!’”

15 अब मैं तुझे छोटा बना दूँगा, एक ऐसी कौम जिसे दीगर लोग हकीर जानेंगे। 16 माज़ी में दूसरे तुझसे दहशत खाते थे, लेकिन इस बात ने और तेरे गुस्से ने तुझे फ़रेब दिया है। बेशक तू चटानों की दराइयों में बसेरा करता है, और पहाड़ी बुलंदियाँ तेरे कब्ज़े में हैं। लेकिन खाह तू अपना घोंसला उकाब की-सी ऊँची जगहों पर क्यों न बनाए तो भी मैं तुझे वहाँ से उतारकर खाक में मिला दूँगा।” यह रब का फ़रमान है।

17 “मुल्के-अदोम यों बरबाद हो जाएगा कि वहाँ से गुज़रनेवालों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे। उसके ज़ख़मों को देखकर वह ‘तौबा तौबा’ कहेंगे।” 18 रब फ़रमाता है, “उसका अंजाम सद्म, अमूरा और उनके पड़ोसी शहरों की मानिंद होगा जिन्हें अल्लाह ने उलटाकर नेस्तो-नाबूद कर दिया। वहाँ कोई नहीं बसेगा। 19 जिस तरह शेरबबर यरदन के जंगल से निकलकर शादाब चरागाहों में चरनेवाली भेड़-बकरियों पर टूट पड़ता है उसी तरह मैं अचानक अदोम पर हमला करके उसे उसके अपने मुल्क से भगा दूँगा। तब वह जिसे मैंने मुकर्रर किया है अदोम पर हुक्मत करेगा। क्योंकि कौन मेरी मानिंद है? कौन मुझसे जवाब तलब कर सकता है? कौन-सा गल्लाबान मेरा मुकाबला कर सकता है?”

20 चुनाँचे अदोम पर रब का फैसला सुनो! तेमान के बाशिंदों के लिए उसके मनसूबे पर ध्यान दो! दुश्मन पूरे रेवड़ को सबसे नन्हे बच्चों से लेकर बड़ों तक घसीटकर ले जाएगा। उस की चरागाह वीरानो-सुनसान हो जाएगी। 21 अदोम इतने धड़ाम से गिर जाएगा कि ज़मीन थरथरा

उठेगी। लोगों की चीखें बहरे-कुलजुम तक सुनाई देंगी। ²² वह देखो! दुश्मन उकाब की तरह उड़कर अदोम पर झपट्टा मारता है। वह अपने परो को फैलाकर बसरा पर साया डालता है। उस दिन अदोमी सूरमाओं का दिल दर्द-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह पेचो-ताब खाएगा।

दमिश्क की अदालत

²³ रब दमिश्क के बारे में फरमाता है,

“हमात और अरफ़ाद शर्मिदा हो गए हैं। बुरी ख़बरें सुनकर वह हिम्मत हार गए हैं। परेशानी ने उन्हें उस मुतलातिम समुंदर जैसा बेचैन कर दिया है जो थम नहीं सकता। ²⁴ दमिश्क हिम्मत हारकर भागने के लिए मुड़ गया है। दहशत उस पर छा गई है, और वह दर्द-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह तड़प रहा है।

²⁵ हाय, दमिश्क को तर्क किया गया है! जिस मशहर शहर से मेरा दिल लुत्फ़अंदोज़ होता था वह वीरानो-सुनसान है।” ²⁶ रब्बुल-अफ़वाज फरमाता है, “उस दिन उसके जवान आदमी गलियों में गिरकर रह जाएंगे, उसके तमाम फ़ौजी हलाक हो जाएंगे। ²⁷ मैं दमिश्क की फ़सील को आग लगा दूँगा जो फैलते फैलते बिन-हदद बादशाह के महलों को भी अपनी लपेट में ले लेगी।”

बदू कबीलों की अदालत

²⁸ ज़ैल में क्रीदार और हसूर के बदू कबीलों के बारे में कलाम दर्ज है। बाद में शाहे-बाबल नबूकदनज़र ने उन्हें शिकस्त दी। रब फरमाता है,

“उठो! क्रीदार पर हमला करो! मशरिक में बसनेवाले बदू कबीलों को तबाह करो! ²⁹ तुम उनके ख़ैमों, भेड़-बकरियों और ऊँटों को छीन लोगे, उनके ख़ैमों के परदों और बाक़ी सामान को लूट लोगे। चीखें सुनाई देंगी, ‘हाय, चारों तरफ़ दहशत ही दहशत!’”

³⁰ रब फरमाता है, “ऐ हसूर में बसनेवाले कबीलो, जल्दी से भाग जाओ, ज़मीन की दराड़ों में छुप जाओ! क्योंकि शाहे-बाबल ने तुम पर हमला करने का फैसला करके तुम्हारे खिलाफ़ मनसूबा बाँध लिया है।” ³¹ रब फरमाता है, “ऐ बाबल के फ़ौजियो, उठकर उस क़ौम पर हमला करो जो अलहदगी में पुरसूकून और महफूज़ ज़िंदगी गुज़ारती है, जिसके न दरवाज़े, न कुंडे हैं। ³² उनके ऊँट और बड़े बड़े रेवड़ लूट का माल बन जाएंगे। क्योंकि मैं रेगिस्तान के किनारे पर रहनेवाले इन कबीलों को चारों तरफ़ मुंतशिर कर दूँगा। उन पर चारों तरफ़ से आफ़त आएगी।” यह रब का फ़रमान है। ³³ “हसूर हमेशा तक वीरानो-सुनसान रहेगा, उसमें कोई नहीं बसेगा। गीदड़ ही उसमें अपने घर बना लेंगे।”

मुल्के-ऐलाम की अदालत

³⁴ शाहे-यहूदाह सिदक्रियाह की हुक्मत के इब्तिदाई दिनों में रब यरमियाह नबी से हमकलाम हुआ। पैग़ाम ऐलाम के मुताल्लिक था।

³⁵ “रब्बुल-अफ़वाज फरमाता है, ‘मैं ऐलाम की कमान को तोड़ डालता हूँ, उस हथियार को जिस पर ऐलाम की ताक़त मबनी है। ³⁶ आसमान की चारों सिम्तों से मैं ऐलामियों के खिलाफ़ तेज़ हवाएँ चलाऊँगा जो उन्हें उड़ाकर चारों तरफ़ मुंतशिर कर देंगी। कोई ऐसा मुल्क नहीं होगा जिस तक ऐलामी जिलावतन नहीं पहुँचेंगे।’ ³⁷ रब फरमाता है, ‘मैं ऐलाम को उसके जानी दुश्मनों के सामने पाश पाश कर दूँगा। मैं उन पर आफ़त लाऊँगा, मेरा सख़्त क्रहर उन पर नाज़िल होगा। जब तक वह नेस्त न हों मैं तलवार को उनके पीछे चलाता रहूँगा। ³⁸ तब मैं ऐलाम में अपना तख़्त खड़ा करके उसके बादशाह और बुज़ुर्गों को तबाह कर दूँगा।’ यह रब का फ़रमान है।

³⁹ लेकिन रब यह भी फरमाता है, ‘आनेवाले दिनों में मैं ऐलाम को बहाल करूँगा।’”

50

बाबल की अदालत

¹ मुल्के-बाबल और उसके दास्ल-हुक्मत बाबल के बारे में रब का कलाम यरमियाह नबी पर नाज़िल हुआ,

² “अक़वाम के सामने एलान करो, हर जगह इतला दो! झंडा गाड़कर कुछ न छुपाओ बल्कि सबको साफ़ बताओ, ‘बाबल शहर दुश्मन के कब्ज़े में आ गया है! बेल देवता की बेहुरमती हुई है, मर्दुक देवता पाश पाश हो गया है। बाबल के तमाम देवताओं की बेहुरमती हुई है, तमाम बुत चकनाचूर हो गए हैं!’ ³ क्योंकि शिमाल से एक क़ौम बाबल पर चढ़ आई है जो पूरे मुल्क को बरबाद कर देगी। इनसान और हैवान सब हिजरत कर जाएंगे, मुल्क में कोई नहीं रहेगा।”

⁴ रब फरमाता है, “जब यह वक़्त आएगा तो इसराईल और यहूदाह के लोग मिलकर अपने वतन में वापस आएँगे। तब वह रोते हुए रब अपने खुदा को तलाश करने आएँगे। ⁵ वह सिय्यून का रास्ता पृष्ठ पृष्ठकर अपना सूख उस तरफ़ कर लेंगे और कहेंगे, ‘आओ, हम रब के साथ लिपट जाएँ, हम उसके साथ अबदी अहद बाँध लें जो कभी न भुलाया जाए।’ ⁶ मेरी क़ौम की हालत गुमशुदा भेड़-बकरियों की मानिंद थी। क्योंकि उनके गल्लाबानों ने उन्हें गलत राह पर लाकर फ़रेबदेह पहाड़ों पर आबारा फिरने दिया था। यों पहाड़ों पर इधर उधर घूमते घूमते वह अपनी आरामगाह भूल गए थे। ⁷ जो भी उनको पाते वह उन्हें पकड़कर खा जाते थे। उनके मुख़ालिफ़ कहते थे, ‘इसमें हमारा क्या कुसूर है? उन्होंने तो रब का गुनाह किया है, गो वह उनकी हक़ीक़ी चरागाह है और उनके बापदादा उस पर उम्मीद रखते थे।’

बाबल से हिजरत करो!

⁸ ऐ मेरी क़ौम, मुल्के-बाबल और उसके दास्ल-हुक्मत से भाग निकलो! उन बकरों की मानिंद बन जाओ जो रेवड़ की राहनुमाई करते हैं।

⁹ क्योंकि मैं शिमाली मुल्क में बड़ी क़ौमों के इतहाद को बाबल पर हमला करने पर उभारूँगा, जो उसके खिलाफ़ सफ़आरा होकर उस पर

कब्जा करेगा। दुश्मन के तीरअंदाज इतने माहिर होंगे कि हर तीर निशाने पर लग जाएगा।” 10 रब फरमाता है, “बाबल को यों लूट लिया जाएगा कि तमाम लूटनेवाले सेर हो जाएंगे।

11 ऐ मेरे मौस्सी हिस्से को लूटनेवालो, बेशक तुम इस वक्त शादियाना बजाकर खुशी मनाते हो। बेशक तुम गाहते हुए बछड़ों की तरह उछलते-कूदते और घोड़ों की तरह हिनहिनाते हो। 12 लेकिन आइंदा तुम्हारी माँ बेहद शर्मिंदा हो जाएगी, जिसने तुम्हें जन्म दिया वह स्सवा हो जाएगी। आइंदा बाबल सबसे ज़लील कौम होगी, वह खुशक और वीरान रेगिस्तान ही होगी। 13 जब रब का ग़ज़ब उन पर नाज़िल होगा तो वहाँ कोई आबाद नहीं रहेगा बल्कि मुल्क सरासर वीरानो-सुनसान रहेगा। बाबल से गुज़रनेवालों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, उसके ज़ख्मों को देखकर सब ‘तौबा तौबा’ कहेंगे।

14 ऐ तीरअंदाजो, बाबल शहर को घेरकर उस पर तीर बरसाओ! तमाम तीर इस्तेमाल करो, एक भी बाक़ी न रहे, क्योंकि उसने रब का गुनाह किया है। 15 चारों तरफ उसके खिलाफ जंग के नारे लगाओ! देखो, उसने हथियार डाल दिए हैं। उसके बुर्ज गिर गए, उस की दीवारें मिसमार हो गई हैं। रब इंतकाम ले रहा है, चुनौचे बाबल से ख़ूब बदला लो। जो सुलूक उसने दूसरों के साथ किया, वही उसके साथ करो। 16 बाबल में जो बीज बोते और फ़सल के वक्त दरौंती चलाते हैं उन्हें स्पू-ज़मीन पर से मिटा दो। उस वक्त शहर के परदेसी मोहलक तलवार से भागकर अपने अपने वतन में वापस चले जाएंगे।

17 इसराईली कौम शेरबबरों के हमले से बिखरे हुए रेवड़ की मानिंद है। क्योंकि पहले शाहे-असूर ने आकर उसे हड़प कर लिया, फिर शाहे-बाबल नबूकदनज़ज़र ने उस की हड्डियों को चबा लिया।” 18 इसलिए रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है, “पहले मैंने शाहे-असूर को सज़ा दी, और अब मैं शाहे-बाबल को उसके मुल्क समेत वही सज़ा दूँगा। 19 लेकिन इसराईल को मैं उस की अपनी चरागाह में वापस लाऊँगा, और वह दुबारा करमिल और बसन की ढलानों पर चरेगा, वह दुबारा इफ़राईम और जिलियाद के पहाड़ी इलाक़ों में सेर हो जाएगा।” 20 रब फ़रमाता है, “उन दिनों में जो इसराईल का कुसूर ढूँढ़ निकालने की कोशिश करे उसे कुछ नहीं मिलेगा। यही यहदाह की हालत भी होगी। उसके गुनाह पाए नहीं जाएंगे, क्योंकि जिन लोगों को मैं ज़िंदा छोड़ूँगा उन्हें मैं मुआफ़ कर दूँगा।”

अल्लाह अपने घर का बदला लेता है

21 रब फ़रमाता है, “मुल्के-मरातायम और फ़िक़ोद के बाशिंदों पर हमला करो! उन्हें मारते मारते सफ़हाए-हस्ती से मिटा दो! जो भी हुक्म मैंने दिया उस पर अमल करो।

22 मुल्के-बाबल में जंग का शोर-शराबा सुनो! बाबल की हौलनाक शिकस्त देखो! 23 जो पहले तमाम दुनिया का हथोड़ा था उसे तोड़कर टुकड़े टुकड़े कर दिया गया है। बाबल को देखकर लोगों को सख़्त धक्का लगता है।

24 ऐ बाबल, मैंने तेरे लिए फंदा लगा दिया, और तुझे पता न चला बल्कि तू उसमें फँस गया। चूँकि तूने रब का मुकाबला किया इसी लिए तेरा खोज लगाया गया और तुझे पकड़ा गया।” 25 कादिरे-मुतलक़ जो रब्बुल-अफ़वाज है फ़रमाता है, “मैं अपना असलिहाख़ाना खोलकर अपना ग़ज़ब नाज़िल करने के हथियार निकाल लाया हूँ, क्योंकि मुल्के-बाबल में उनकी अशइ ज़रूरत है।

26 चारों तरफ़ से बाबल पर चढ़ आओ! उसके अनाज के गोदामों को खोलकर सारे माल का ढेर लगाओ! फिर सब कुछ नेस्तो-नाबूद करो, कुछ बचा न रहे। 27 उसके तमाम बैलों को ज़बह करो! सब कसाई की ज़द में आएँ! उन पर अफ़सोस, क्योंकि उनका मुकर्रा दिन, उनकी सज़ा का वक़्त आ गया है।

28 सुनो! मुल्के-बाबल से बचे हुए पनाहगुज़ीन सिय्यून में बता रहे हैं कि रब हमारे खुदा ने किस तरह इंतकाम लिया। क्योंकि अब उसने अपने घर का बदला लिया है!

29 तमाम तीरअंदाजों को बुलाओ ताकि बाबल पर हमला करें! उसे घेर लो ताकि कोई न बचे। उसे उस की हरकतों का मुनासिब अज़्र दो! जो बुरा सुलूक उसने दूसरों के साथ किया वही उसके साथ करो। क्योंकि उसका रवैया रब, इसराईल के कुदूस के साथ गुस्ताख़ाना था।

30 इसलिए उसके नौजवान गलियों में गिरकर मर जाएंगे, उसके तमाम फ़ौजी उस दिन हलाक हो जाएंगे।” यह रब का फ़रमान है।

31 कादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “ऐ गुस्ताख़ शहर, मैं तुझसे निपटनेवाला हूँ। क्योंकि वह दिन आ गया है जब तुझे सज़ा मिलनी है। 32 तब गुस्ताख़ शहर ठोकर खाकर गिर जाएगा, और कोई उसे दुबारा खड़ा नहीं करेगा। मैं उसके तमाम शहरों में आग लगा दूँगा जो गिर्दो-नवाह में सब कुछ राख कर देगी।”

रब अपनी कौम को रिहा करवाता है

33 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “इसराईल और यहदाह के लोगों पर जुल्म हुआ है। जिन्होंने उन्हें असीर करके जिलावतन किया है वह उन्हें रिहा नहीं करना चाहते, उन्हें जाने नहीं देते। 34 लेकिन उनका छुड़ानेवाला क़वी है, उसका नाम रब्बुल-अफ़वाज है। वह ख़ूब लड़कर उनका मामला दुस्त करेगा ताकि मुल्क को आरामो-सुकून मिल जाए। लेकिन बाबल के बाशिंदों को वह थरथराने देगा।”

35 रब फ़रमाता है, “तलवार बाबल की कौम पर टूट पड़े! वह बाबल के बाशिंदों, उसके बुज़ुर्गों और दानिशमंदों पर टूट पड़े! 36 तलवार उसके झूठे नबियों पर टूट पड़े ताकि बेवुकूफ़ साबित हों। तलवार उसके सूरमाओं पर टूट पड़े ताकि उन पर दहशत छा जाए। 37 तलवार बाबल के घोड़ों, रथों और परदेसी फ़ौजियों पर टूट पड़े ताकि वह औरतों की मानिंद बन जाएँ। तलवार उसके खज़ानों पर टूट पड़े ताकि वह छीन लिए जाएँ। 38 तलवार उसके पानी के ज़ख़ीरों पर टूट पड़े ताकि वह खुशक हो जाएँ। क्योंकि मुल्के-बाबल बुतों से भरा हुआ है, ऐसे बुतों से

जिनके बाइस लोग दीवानों की तरह फिरते हैं। 39 आखिर में गलियों में सिर्फ रेगिस्तान के जानवर और जंगली कुत्ते फिरेंगे, वहाँ उकाबी उल्लू बसेंगे। वह हमेशा तक इनसान की बस्तियों से महरूम और नसल-दर-नसल गैरआबाद रहेगा।” 40 रब फ़रमाता है, “उस की हालत सद्म और अमूरा की-सी होगी जिन्हें मैंने पड़ोस के शहरों समेत उलटाकर सफ़हाए-हस्ती से मिटा दिया। आइंदा वहाँ कोई नहीं बसेगा, कोई नहीं आबाद होगा।” यह रब का फ़रमान है।

शिमाल से दुश्मन आ रहा है

41 “देखो, शिमाल से फ़ौज आ रही है, एक बड़ी क़ौम और मुतअद्दिद बादशाह दुनिया की इंतहा से ख़ाना हुए हैं। 42 उसके ज़ालिम और बेरहम फ़ौजी क़मान और शमशेर से लैस हैं। जब वह अपने घोड़ों पर सवार होकर चलते हैं तो गरजते समुंदर का-सा शोर बरपा होता है। ऐ बाबल बेटी, वह सब जंग के लिए तैयार होकर तुझसे लड़ने आ रहे हैं। 43 उनकी ख़बर सुनते ही शाहे-बाबल हिम्मत हार गया है। ख़ौफ़ज़दा होकर वह दर्दे-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह तड़पने लगा है।

44 जिस तरह शेरबबर यरदन के जंगलों से निकलकर शादाब चरागाहों में चरनेवाली भेड़ों पर टूट पड़ता है उसी तरह मैं बाबल को एकदम उसके मुल्क से भगा दूँगा। फिर मैं अपने चुने हुए आदमी को बाबल पर मुक़र्र करूँगा। क्योंकि कौन मेरे बराबर है? कौन मुझसे ज़वाब तलब कर सकता है? वह गल्लाबान कहाँ है जो मेरा मुक़ाबला कर सके?” 45 चुनौचे बाबल पर रब का फ़ैसला सुनो, मुल्के-बाबल के लिए उसके मनसूबे पर ध्यान दो! “दुश्मन पूरे रेवड़ को सबसे नन्हे बच्चों से लेकर बड़ों तक घसीटकर ले जाएगा। उस की चरागाह वीरानो-सुनसान हो जाएगी।

46 ज्योंही नारा बुलंद होगा कि बाबल दुश्मन के क़ब्जे में आ गया है तो ज़मीन लरज़ उठेगी। तब मदद के लिए बाबल की चीखें दीगर ममालिक तक गूँजेगी।”

51

बाबल का ज़माना ख़त्म है

1 रब फ़रमाता है, “मैं बाबल और उसके बाशिंदों के खिलाफ़ मोहलक आँधी चलाऊँगा। 2 मैं मुल्के-बाबल में गैरमुल्की भेजूँगा ताकि वह उसे अनाज की तरह फटककर तबाह करे। आफ़त के दिन वह पूरे मुल्क को घेरे रखेंगे। 3 तीरअंदाज़ को तीर चलाने से रोक! फ़ौजी को ज़िरा-बकतर पहनकर लड़ने के लिए खड़े होने न दो! उनके नौजवानों को ज़िंदा मत छोड़ना बल्कि फ़ौज को सरासर नेस्तो-नाबूद कर देना!

4 तब मुल्के-बाबल में हर तरफ़ लाशें नज़र आएँगी, तलवार के चिरे हुए उस की गलियों में पड़े रहेंगे। 5 क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज़ ने इसराईल और यहूदाह को अकेला * नहीं छोड़ा, उनके ख़ुदा ने उन्हें तर्क नहीं किया। मुल्के-बाबल का कुसूर निहायत संगीन है, उसने इसराईल के कुदूस का गुनाह किया है। 6 बाबल से भाग निकलो! दौड़कर अपनी जान बचाओ, वरना तुम्हें भी बाबल के कुसूर का अज़्र मिलेगा। क्योंकि रब के इंतक़ाम का वक़्त आ पहुँचा है, अब बाबल को मुनासिब सज़ा मिलेगी।

7 बाबल रब के हाथ में सोने का प्याला था जिसे उसने पूरी दुनिया को पिला दिया। अक़वाम उस की मै पी पीकर मत्वाली हो गईं, इसलिए वह दीवानी हो गई हैं। 8 लेकिन अब यह प्याला अचानक गिरकर टूट गया है। चुनौचे बाबल पर आहो-ज़ारी करो! उसके दर्द और तकलीफ़ को दूर करने के लिए बलसान ले आओ, शायद उसे शफ़ा मिले। 9 लेकिन लोग कहेंगे, ‘हम बाबल की मदद करना चाहते थे, लेकिन उसके ज़ख़म भर नहीं सकते। इसलिए आओ, हम उसे छोड़ दें और हर एक अपने अपने मुल्क में जा बसे। क्योंकि उस की सख़्त अदालत हो रही है, जितना आसमान और बादल बुलंद हैं उतनी ही सख़्त उस की सज़ा है।’

10 रब की क़ौम बोले, ‘रब हमारी रास्ती रौशनी में लाया है। आओ, हम सिय्यून में वह कुछ सुनाएँ जो रब हमारे ख़ुदा ने किया है।’

11 तीरों को तेज़ करो! अपना तरक़श उनसे भर लो! रब मादी बादशाहों को हरकत में लाया है, क्योंकि वह बाबल को तबाह करने का इरादा रखता है। रब इंतक़ाम लेगा, अपने घर की तबाही का बदला लेगा। 12 बाबल की फ़सील के खिलाफ़ जंग का झंडा गाड़ दो! शहर के इर्दगिर्द पहरादारी का बंदोबस्त मज़बूत करो, हाँ मज़ीद संतरी खड़े करो। क्योंकि रब ने बाबल के बाशिंदों के खिलाफ़ मनसूबा बाँधकर उसका एलान किया है, और अब वह उसे पूरा करेगा।

13 ऐ बाबल बेटी, तू गहरे पानी के पास बसती और निहायत दौलतमंद हो गई है। लेकिन ख़बरदार! तेरा अंजाम करीब ही है, तेरी ज़िंदगी का धागा कट गया है। 14 रब्बुल-अफ़वाज़ ने अपने नाम की क़सम खाकर फ़रमाया है कि मैं तुझे दुश्मनों से भर दूँगा, और वह टिड़ियों के गोल की तरह पूरे शहर को ढाँप लेंगे। हर जगह वह तुझ पर फ़तह के नारे लगाएँगे।

15 देखो, अल्लाह ही ने अपनी कुदरत से ज़मीन को खलक किया, उसी ने अपनी हिकमत से दुनिया की बुनियाद रखी, और उसी ने अपनी समझ के मुताबिक़ आसमान को ख़ैमे की तरह तान लिया। 16 उसके हुक्म पर आसमान पर पानी के ज़ख़ीर गरजने लगते हैं। वह दुनिया की इंतहा से बादल चढ़ने देता, बारिश के साथ बिजली कड़कने देता और अपने गोदामों से हवा निकलने देता है।

* 51:5 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : रंडवा।

17 तमाम इनसान अहमक और समझ से खाली हैं। हर सुनार अपने बुतों के बाइस शरमिदा हुआ है। उसके बुत धोका ही हैं, उनमें दम नहीं। 18 वह फ़ज़ूल और मज़हकाखेज़ हैं। अदालत के वक़्त वह नेस्त हो जाएंगे। 19 अल्लाह जो याक़ूब का मौरूसी हिस्सा है इनकी मानिंद नहीं है। वह सबका खालिक है, और इसराईली क्रौम उसका मौरूसी हिस्सा है। रब्बुल-अफ़वाज़ ही उसका नाम है।

अब रब बाबल पर हमला करेगा

20 ऐ बाबल, तू मेरा हथोड़ा, मेरा जंगी हथियार था। तेरे ही ज़रीए मैंने क्रौमों को पाश पाश कर दिया, सलतनतों को खाक में मिला दिया। 21 तेरे ही ज़रीए मैंने घोड़ों को सवारों समेत और रथों को रथबानों समेत पाश पाश कर दिया। 22 तेरे ही ज़रीए मैंने मर्दों और औरतों, बुज़ुर्गों और बच्चों, नौजवानों और कुँवारियों को पारा पारा कर दिया। 23 तेरे ही ज़रीए मैंने गल्लाबान और उसके रेवड़, किसान और उसके बैलों, गवर्नरों और सरकारी मुलाज़िमों को रेज़ा रेज़ा कर दिया।

24 लेकिन अब मैं बाबल और उसके तमाम बाशिंदों को उनकी सिय्यून के साथ बदसलूकी का पूरा अज़्र दूँगा। तुम अपनी आँखों से इसके गवाह होगे।” यह रब का फ़रमान है।

25 रब फ़रमाता है, “ऐ बाबल, पहले तू मोहलक पहाड़ था जिसने तमाम दुनिया का सत्यानास कर दिया। लेकिन अब मैं तुझसे निपट लेता हूँ। मैं अपना हाथ तेरे खिलाफ़ बढ़ाकर तुझे ऊँची ऊँची चटानों से पटख दूँगा। आखिरकार मलबे का झुलसा हुआ ढेर ही बाकी रहेगा। 26 तू इतना तबाह हो जाएगा कि तेरे पत्थर न किसी मकान के कोनों के लिए, न किसी बुनियाद के लिए इस्तेमाल हो सकेंगे।” यह रब का फ़रमान है।

27 “आओ, मुल्क में जंग का झंडा गाड़ दो! अक़वाम में नरसिंगा फूँक फूँककर उन्हें बाबल के खिलाफ़ लड़ने के लिए मख़सूस करो! उससे लड़ने के लिए अरारात, मिन्नी और अश्कनाज़ की सलतनतों को बुलाओ! बाबल से लड़ने के लिए कमाँडर मुकर्रर करो। घोड़े भेज दो जो टिढ़ियों के हौलनाक गोल की तरह उस पर टूट पड़ें। 28 अक़वाम को बाबल से लड़ने के लिए मख़सूस करो! मादी बादशाह अपने गवर्नरों, अफ़सरों और तमाम मुती ममालिक समेत तैयार हो जाएँ। 29 ज़मीन लरज़ती और थरथराती है, क्योंकि रब का मनसूबा अटल है, वह मुल्के-बाबल को यों तबाह करना चाहता है कि आइंदा उसमें कोई न रहे।

30 बाबल के जंगआज़मूदा फ़ौजी लड़ने से बाज़ आकर अपने किलों में छुप गए हैं। उनकी ताक़त जाती रही है, वह औरतों की मानिंद हो गए हैं। अब बाबल के घरों को आग लग गई है, फ़सील के दरवाज़ों के कुंडे टूट गए हैं। 31 यके बाद दीगरे कासिद दौड़कर शाहे-बाबल को इतला देते हैं, ‘शहर चारों तरफ़ से दुश्मन के क़ब्ज़े में है! 32 दरिया को पार करने के तमाम रास्ते उसके हाथ में हैं, सरकंडे का दलदली इलाका जल रहा है, और फ़ौजी खौफ़ के मारे बेहिसो-हरकत हो गए हैं।’

33 क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज़ जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है, “फ़सल की कटाई से पहले पहले गाहने की जगह के फ़र्श को दबा दबाकर मज़बूत किया जाता है। यही बाबल बेटी की हालत है। फ़सल की कटाई करीब आ गई है, और थोड़ी देर के बाद बाबल को पाँवों तले खूब दबाया जाएगा।

रब बाबल से यरूशलम का इंतक़ाम लेगा

34 सिय्यून बेटी रोती है, ‘शाहे-बाबल नबूकदनज़र ने मुझे हड़प कर लिया, चूस लिया, खाली बरतन की तरह एक तरफ़ रख दिया है। उसने अज़दहे की तरह मुझे निगल लिया, अपने पेट को मेरी लज़ीज़ चीज़ों से भर लिया है। फिर उसने मुझे वतन से निकाल दिया।’ 35 लेकिन अब सिय्यून की रहनेवाली कहे, ‘जो ज़्यादती मेरे साथ हुई वह बाबल के साथ की जाए। जो क़त्लो-ग़ारत मुझमें हुई वह बाबल के बाशिंदों में मच जाए!’

36 रब यरूशलम से फ़रमाता है, “देख, मैं खुद तेरे हक़ में लड़ूँगा, मैं खुद तेरा बदला लूँगा। तब उसका समुंदर ख़ुशक हो जाएगा, उसके चश्मे बंद हो जाएंगे। 37 बाबल मलबे का ढेर बन जाएगा। गीदड़ ही उसमें अपना घर बना लेंगे। उसे देखकर गुज़रनेवालों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, और वह ‘तौबा तौबा’ कहकर आगे निकलेंगे। कोई भी वहाँ नहीं बसेगा।

38 इस वक़्त बाबल के बाशिंदे शेरबबर की तरह दहाड़ रहे हैं, वह शेर के बच्चों की तरह गुर्रा रहे हैं। 39 लेकिन रब फ़रमाता है कि वह अभी मस्त होंगे कि मैं उनके लिए ज़ियाफ़त तैयार करूँगा, एक ऐसी ज़ियाफ़त जिसमें वह मत्वाले होकर ख़ुशी के नारे मारेंगे, फिर अबदी नींद सो जाएंगे। उस नींद से वह कभी नहीं उठेंगे। 40 मैं उन्हें भेड़ के बच्चों, मेंढों और बक़रों की तरह क़साई के पास ले जाऊँगा।

41 हाय, बाबल दुश्मन के क़ब्ज़े में आ गया है! जिसकी तारीफ़ पूरी दुनिया करती थी वह छीन लिया गया है! अब उसे देखकर क्रौमों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। 42 समुंदर बाबल पर चढ़ आया है, उस की गरज़ती लहरों ने उसे ढाँप लिया है। 43 उसके शहर रेगिस्तान बन गए हैं, अब चारों तरफ़ ख़ुशक और वीरान बयाबान ही नज़र आता है। न कोई उसमें रहता, न उसमें से गुज़रता है।

44 मैं बाबल के देवता बेल को सज़ा देकर उसके मुँह से वह कुछ निकाल दूँगा जो उसने हड़प कर लिया था। अब से दीगर अक़वाम जौक़-दर-जौक़ उसके पास नहीं आएँगी, क्योंकि बाबल की फ़सील भी गिर गई है।

45 ऐ मेरी क्रौम, बाबल से निकल आ! हर एक अपनी जान बचाने के लिए वहाँ से भाग जाए, क्योंकि रब का शदीद ग़ज़ब उस पर नाज़िल होने को है।

46 जब अफ़वाहें मुल्क में फैल जाएँ तो हिम्मत मत हारना, न खौफ़ खाना। क्योंकि हर साल कोई और अफ़वाह फैलेगी, ज़ुल्म पर ज़ुल्म और हुक्मरान पर हुक्मरान आता रहेगा। 47 क्योंकि वह वक़्त करीब ही है जब मैं बाबल के बुतों को सज़ा दूँगा। तब पूरे मुल्क की बेहुरमती

हो जाएगी, और उसके मक़तूल उसके बीच में गिरकर पड़े रहेंगे। 48 तब आसमानो-ज़मीन और जो कुछ उनमें है बाबल पर शादियाना बजाएंगे। क्योंकि तबाहकुन दुश्मन शिमांल से उस पर हमला करने आ रहा है।” यह रब का फ़रमान है।

49 “बाबल ने पूरी दुनिया में बेशुमार लोगों को क़त्ल किया है, लेकिन अब वह खुद हलाक हो जाएगा, इसलिए कि उसने इतने इसराईलियों को क़त्ल किया है।

50 ऐ तलवार से बचे हुए इसराईलियों, स्के न रहो बल्कि रवाना हो जाओ! दूर-दराज़ मुल्क में रब को याद करो, यरूशलम का भी खयाल करो! 51 बेशक़ तुम कहते हो, ‘हम शरमिंदा हैं, हमारी सरख़्त म्स्वाई हुई है, शर्म के मारे हमने अपने मुँह को ढाँप लिया है। क्योंकि परदेसी रब के घर की मुक़द्दसतरीन जगहों में घुस आए हैं।’

52 लेकिन रब फ़रमाता है कि वह वक़्त आनेवाला है जब मैं बाबल के बुतों को सज़ा दूँगा। तब उसके पूरे मुल्क में मौत के घाट उतरनेवालों की आहें सुनाई देंगी। 53 खाह बाबल की ताक़त आसमान तक ऊँची क्यों न हो, खाह वह अपने बुलंद क़िले को कितना मज़बूत क्यों न करे तो भी वह गिर जाएगा। मैं तबाह करनेवाले फ़ौज़ी उस पर चढ़ा लाऊँगा।” यह रब का फ़रमान है।

54 “सुनो! बाबल में चीखें बुलंद हो रही हैं, मुल्के-बाबल धड़ाम से गिर पड़ा है। 55 क्योंकि रब बाबल को बरबाद कर रहा, वह उसका शोर-शराबा बंद कर रहा है। दुश्मन की लहरें मुतलातिम समुंदर की तरह उस पर चढ़ रही हैं, उनकी गरजती आवाज़ फ़िज़ा में गूँज रही है। 56 क्योंकि तबाहकुन दुश्मन बाबल पर हमला करने आ रहा है। तब उसके सूरमाओं को पकड़ा जाएगा और उनकी कमानें टूट जाएँगी। क्योंकि रब इंतक़ाम का खुदा है, वह हर इनसान को उसका मुनासिब अज़्र देगा।”

57 दुनिया का बादशाह जिसका नाम रब्बुल-अफ़वाज़ है फ़रमाता है, “मैं बाबल के बड़ों को मतवाला करूँगा, खाह वह बुजुर्ग, दानिशमंद, गवर्नर, सरकारी अफ़सर या फ़ौज़ी क्यों न हों। तब वह अबदी नींद सो जाएंगे और दुबारा कभी नहीं उठेंगे।”

58 रब फ़रमाता है, “बाबल की मोटी मोटी फ़सील को खाक में मिलाया जाएगा, और उसके ऊँचे ऊँचे दरवाज़े राख हो जाएंगे। तब यह कहावत बाबल पर सादिक़ आएगी, ‘अक़वाम की मेहनत-मशक्क़त बेफ़ायदा रही, जो कुछ उन्होंने बड़ी मुश्किल से बनाया वह नज़रे-आतिश हो गया है।’”

यरमियाह अपना पैग़ाम बाबल भेजता है

59 यहदाह के बादशाह सिदक़ियाह के चौथे साल में यरमियाह नबी ने यह क़लाम सिरायाह बिन नैरियाह बिन महसियाह के सुपर्द कर दिया जो उस वक़्त बादशाह के साथ बाबल के लिए रवाना हुआ। सफ़र का पूरा बंदोबस्त सिरायाह के हाथ में था।

60 यरमियाह ने तूमार में बाबल पर नाज़िल होनेवाली आफ़त की पूरी तफ़सील लिख दी थी। उसके बाबल के बारे में तमाम पैग़ामात उसमें क़लमबंद थे। 61 उसने सिरायाह से कहा, “बाबल पहुँचकर ध्यान से तूमार की तमाम बातों की तिलावत करें। 62 तब दुआ करें, ‘ऐ रब, तूने एलान किया है कि मैं बाबल को यों तबाह करूँगा कि आइंदा न इनसान, न हैवान उसमें बसेगा। शहर अबद तक वीरानो-सुनसान रहेगा।’ 63 पूरी किताब की तिलावत के इख़िताम पर उसे पत्थर के साथ बाँध लें, फिर दरियाए-फ़ुरात में फेंककर 64 बोलें, ‘बाबल का बेड़ा इस पत्थर की तरह गरक़ हो जाएगा। जो आफ़त मैं उस पर नाज़िल करूँगा उससे उसे यों खाक में मिलाया जाएगा कि दुबारा कभी नहीं उठेगा। वह सरासर ख़त्म हो जाएगा।’”

यरमियाह के पैग़ामात यहाँ इख़िताम पर पहुँच गए हैं।

52

शाहे-यहदाह सिदक़ियाह की हुकूमत

1 सिदक़ियाह 21 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया 11 साल था। उस की माँ हमूतल बित यरमियाह लिबना शहर की रहनेवाली थी। 2 यह्यक़ीम की तरह सिदक़ियाह ऐसा काम करता रहा जो रब को नापसंद था। 3 रब यरूशलम और यहदाह के बाशिंदों से इतना नाराज़ हुआ कि आखिर में उसने उन्हें अपने हुज़ूर से ख़ारिज कर दिया।

सिदक़ियाह का फ़रार और गिरिफ़्तारी

एक दिन सिदक़ियाह बाबल के बादशाह से सरकश हुआ, 4 इसलिए शाहे-बाबल नबूकदनज़र तमाम फ़ौज़ अपने साथ लेकर दुबारा यरूशलम पहुँचा ताकि उस पर हमला करे।

सिदक़ियाह की हुकूमत के नवें साल में बाबल की फ़ौज़ यरूशलम का मुहासरा करने लगी। यह काम दसवें महीने के दसवें दिन * शुरू हुआ। पूरे शहर के इर्दगिर्द बादशाह ने पुरते बनवाए। 5 सिदक़ियाह की हुकूमत के 11वें साल तक यरूशलम कायम रहा। 6 लेकिन फिर काल ने शहर में ज़ोर पकड़ा, और अवाम के लिए खाने की चीज़ें न रही।

चौथे महीने के नवें दिन † 7 बाबल के फ़ौज़ियों ने फ़सील में रखना डाल दिया। उसी रात सिदक़ियाह अपने तमाम फ़ौज़ियों समेत फ़रार होने में कामयाब हुआ, अगरचे शहर दुश्मन से घिरा हुआ था। वह फ़सील के उस दरवाज़े से निकले जो शाही बाग़ के साथ मुलहिक़ दो दीवारों के बीच में था। वह वादीए-यरदन की तरफ़ भागने लगे, 8 लेकिन बाबल की फ़ौज़ ने बादशाह का ताक़क़ुब करके उसे यरीह के मैदान में पकड़

* 52:4 15 जनवरी। † 52:6 18 जुलाई।

लिया। उसके फ़ौजी उससे अलग होकर चारों तरफ़ मुंताशिर हो गए, ⁹ और वह खुद गिरिफ्तार हो गया। फिर उसे मुल्के-हमात के शहर रिबला में शाहे-बाबल के पास लाया गया, और वहीं उसने सिदकियाह पर फैसला सादिर किया। ¹⁰ सिदकियाह के देखते देखते शाहे-बाबल ने रिबला में उसके बेटों को क़त्ल किया। साथ साथ उसने यहूदाह के तमाम बुजुर्गों को भी मौत के घाट उतार दिया। ¹¹ फिर उसने सिदकियाह की आँखें निकलवाकर उसे पीतल की जंजीरों में जकड़ लिया और बाबल ले गया जहाँ वह जीते-जी रहा।

यरूशलम और रब के घर की तबाही

¹² शाहे-बाबल नबूकदनज़र की हुक्मत के 19वें साल में बादशाह का खास अफ़सर नबूज़रादान यरूशलम पहुँचा। वह शाही मुहाफ़िज़ों पर मुक़र्रर था। पाँचवें महीने के सातवें दिन ‡ उसने आकर ¹³ रब के घर, शाही महल और यरूशलम के तमाम मकानों को जला दिया। हर बड़ी इमारत भस्म हो गई। ¹⁴ उसने अपने तमाम फ़ौजियों से शहर की पूरी फ़सील को भी गिरा दिया। ¹⁵ फिर नबूज़रादान ने सबको जिलावतन कर दिया जो यरूशलम में पीछे रह गए थे। वह भी उनमें शामिल थे जो जंग के दौरान ग़दारी करके शाहे-बाबल के पीछे लग गए थे। नबूज़रादान बाक़ीमौदा कारीगर और गरीबों में से भी कुछ बाबल ले गया। ¹⁶ लेकिन उसने सबसे निचले तबके के बाज़ लोगों को मुल्के-यहूदाह में छोड़ दिया ताकि वह अंगूर के बाग़ों और खेतों को सँभालें।

¹⁷ बाबल के फ़ौजियों ने रब के घर में जाकर पीतल के दोनों सतूनों, पानी के बासनों को उठानेवाली हथगाड़ियों और समुंदर नामी पीतल के हौज़ को तोड़ दिया और सारा पीतल उठाकर बाबल ले गए। ¹⁸ वह रब के घर की खिदमत सरंजाम देने के लिए दरकार सामान भी ले गए यानी बालटियाँ, बेलचे, बत्ती कतरने के औज़ार, छिड़काव के कटोरे, प्याले और पीतल का बाक़ी सारा सामान। ¹⁹ खालिस सोने और चाँदी के बरतन भी इसमें शामिल थे यानी बासन, जलते हुए कोयले के बरतन, छिड़काव के कटोरे, बालटियाँ, शमादान, प्याले और मै की नज़रें पेश करने के बरतन। शाही मुहाफ़िज़ों का यह अफ़सर सारा सामान उठाकर बाबल ले गया। ²⁰ जब दोनों सतूनों, समुंदर नामी हौज़, हौज़ को उठानेवाले पीतल के बैलों और बासनों को उठानेवाली हथगाड़ियों का पीतल तुड़वाया गया तो वह इतना वज़नी था कि उसे तोला न जा सका। सुलेमान बादशाह ने यह चीज़ें रब के घर के लिए बनवाई थीं। ²¹ हर सतून की ऊँचाई 27 फ़ुट और घेरा 18 फ़ुट था। दोनों खोखले थे, और उनकी दीवारों की मोटाई 3 इंच थी। ²² उनके बालाई हिस्सों की ऊँचाई साढ़े सात फ़ुट थी, और वह पीतल की जाली और अनारों से सजे हुए थे। ²³ 96 अनार लगे हुए थे। जाली के इर्दगिर्द कुल 100 अनार लगे थे।

²⁴ शाही मुहाफ़िज़ों के अफ़सर नबूज़रादान ने ज़ैल के कैदियों को अलग कर दिया : इमामे-आज़म सिरायाह, उसके बाद आनेवाले इमाम सफ़नियाह, रब के घर के तीन दरबानों, ²⁵ शहर के बचे हुएों में से उस अफ़सर को जो शहर के फ़ौजियों पर मुक़र्रर था, सिदकियाह बादशाह के सात मुशीरों, उम्मत की भरती करनेवाले अफ़सर और शहर में मौजूद उसके 60 मर्दों को। ²⁶ नबूज़रादान इन सबको अलग करके सूबा हमात के शहर रिबला ले गया जहाँ शाहे-बाबल था। ²⁷ वहाँ नबूकदनज़र ने उन्हें सज़ाए-मौत दी।

यों यहूदाह के बाशिंदों को जिलावतन कर दिया गया। ²⁸ नबूकदनज़र ने अपनी हुक्मत के 7वें साल में यहूदाह के 3,023 अफ़राद, ²⁹ 18वें साल में यरूशलम के 832 अफ़राद, ³⁰ और 23वें साल में 745 अफ़राद को जिलावतन कर दिया। यह आखिरी लोग शाही मुहाफ़िज़ों के अफ़सर नबूज़रादान के ज़रीए बाबल आए गए। कुल 4,600 अफ़राद जिलावतन हुए।

यह्याकीन को आज़ाद किया जाता है

³¹ यहूदाह के बादशाह यह्याकीन की जिलावतनी के 37वें साल में अवील-मस्दक बाबल का बादशाह बना। उसी साल के 12वें महीने के 25वें दिन § उसने यह्याकीन को कैदखाने से आज़ाद कर दिया। ³² उसने उसके साथ नरम बातें करके उसे इज़ज़त की ऐसी कुरसी पर बिठाया जो बाबल में जिलावतन किए गए बाक़ी बादशाहों की निसबत ज़्यादा अहम थी। ³³ यह्याकीन को कैदी के कपड़े उतारने की इज़ाज़त मिली, और उसे ज़िंदगी-भर बादशाह की मेज़ पर बाक़ायदगी से खाना खाने का शरफ़ हासिल रहा। ³⁴ बादशाह ने मुक़र्रर किया कि यह्याकीन को उम्र-भर इतना वज़ीफ़ा मिलता रहे कि उस की रोज़मर्रा ज़रूरियात पूरी होती रहें।

नोहा

वीरानो-सुनसान

1 हाय, अफसोस! यरूशलम बेटी कितनी तनहा बैठी है, गो उसमें पहले इतनी रौनक थी। जो पहले अक्रवाम में अव्वल दर्जा रखती थी वह बेवा बन गई है, जो पहले ममालिक की रानी थी वह गुलामी में आ गई है।

2 रात को वह रो रोकर गुज़ारती है, उसके गाल आँसुओं से तर रहते हैं। आशिकों में से कोई नहीं रहा जो उसे तसल्ली दे। दोस्त सबके सब बेवफ़ा होकर उसके दुश्मन बन गए हैं।

3 पहले भी यहदाह बेटी बड़ी मुसीबत में फँसी हुई थी, पहले भी उसे सख्त मजदूरी करनी पड़ी। लेकिन अब वह जिलावतन होकर दीगर अक्रवाम के बीच में रहती है, अब उसे कहीं भी ऐसी जगह नहीं मिलती जहाँ सुकून से रह सके। क्योंकि जब वह बड़ी तकलीफ में मुब्तला थी तो दुश्मन ने उसका ताक़ब करके उसे घेर लिया।

4 सिय्यून की राहें मातमजदा हैं, क्योंकि कोई ईद मनाने के लिए नहीं आता। शहर के तमाम दरवाज़े वीरानो-सुनसान हैं। उसके इमाम आहें भर रहे, उस की कुँवारियाँ ग़म खा रही हैं और उसे ख़ुद शदीद तलाखी महसूस हो रही है।

5 उसके मुखालिफ़ मालिक बन गए, उसके दुश्मन सुकून से रह रहे हैं। क्योंकि रब ने शहर को उसके मुतअदिद गुनाहों का अज़्र देकर उसे दुख पहुँचाया है। उसके फ़रज़द दुश्मन के आगे आगे चलकर जिलावतन हो गए हैं।

6 सिय्यून बेटी की तमाम शानो-शौकत जाती रही है। उसके बुज़ुर्ग चरागाह न पानेवाले हिरन हैं जो थकते थकते शिकारियों के आगे आगे भागते हैं।

7 अब जब यरूशलम मुसीबतजदा और बेवतन है तो उसे वह क़ीमती चीज़ें याद आती हैं जो उसे क़दीम ज़माने से ही हासिल थीं। क्योंकि जब उस की क़ौम दुश्मन के हाथ में आई तो कोई नहीं था जो उस की मदद करता बल्कि उसके मुखालिफ़ तमाशा देखने दौड़े आए, वह उस की तबाही से खुश होकर हँस पड़े।

8 यरूशलम बेटी से संगीन गुनाह सरज़द हुआ है, इसी लिए वह लान-तान का निशाना बन गई है। जो पहले उस की इज़ज़त करते थे वह सब उसे हक़ीर जानते हैं, क्योंकि उन्होंने उस की बरहनगी देखी है। अब वह आहें भर भरकर अपना मुँह दूसरी तरफ़ फेर लेती है।

9 गो उसके दामन में बहुत गंदगी थी, तो भी उसने अपने अंजाम का खयाल तक न किया। अब वह धड़ाम से गिर गई है, और कोई नहीं है जो उसे तसल्ली दे। “ऐ रब, मेरी मुसीबत का लिहाज़ कर! क्योंकि दुश्मन शेखी मार रहा है।”

10 जो कुछ भी यरूशलम को प्यारा था उस पर दुश्मन ने हाथ डाला है। हत्ता कि उसे देखना पड़ा कि ग़ैरअक्रवाम उसके मक़दिस में दाख़िल हो रहे हैं, गो तूने ऐसे लोगों को अपनी जमात में शरीक होने से मना किया था।

11 तमाम बाशिंदे आहें भर भरकर रोटी की तलाश में रहते हैं। हर एक खाने का कोई न कोई टुकड़ा पाने के लिए अपनी बेशक़ीमत चीज़ें बेच रहा है। ज़हन में एक ही खयाल है कि अपनी जान को किसी न किसी तरह बचाए। “ऐ रब, मुझ पर नज़र डालकर ध्यान दे कि मेरी कितनी तज़लील हुई है।

12 ऐ यहाँ से गुज़रनेवालो, क्या यह सब कुछ तुम्हारे नज़दीक बेमानी है? ग़ौर से सोच लो, जो ईज़ा मुझे बरदाश्त करनी पड़ती है क्या वह कहीं और पाई जाती है? हरगिज़ नहीं! यह रब की तरफ़ से है, उसी का सख्त ग़ज़ब मुझ पर नाज़िल हुआ है।

13 बुलंदियों से उसने मेरी हड्डियों पर आग नाज़िल करके उन्हें कुचल दिया। उसने मेरे पाँवों के सामने जाल बिछाकर मुझे पीछे हटा दिया। उसी ने मुझे वीरानो-सुनसान करके हमेशा के लिए बीमार कर दिया।

14 मेरे जरायम का जुआ भारी है। रब के हाथ ने उन्हें एक दूसरे के साथ जोड़कर मेरी गरदन पर रख दिया। अब मेरी ताक़त ख़त्म है, रब ने मुझे उन्हीं के हवाले कर दिया जिनका मुकाबला मैं कर ही नहीं सकता।

15 रब ने मेरे दरमियान के तमाम सूरमाओं को रद्द कर दिया, उसने मेरे खिलाफ़ जुलूस निकलवाया जो मेरे जवानों को पाश पाश करे। हाँ, रब ने कुँवारी यहदाह बेटी को अंगूर का रस निकालने के हौज़ में फेंककर कुचल डाला।

16 इसलिए मैं रो रही हूँ, मेरी आँखों से आँसू टपकते रहते हैं। क्योंकि करीब कोई नहीं है जो मुझे तसल्ली देकर मेरी जान को तरो-ताज़ा करे। मेरे बच्चे तबाह हैं, क्योंकि दुश्मन ग़ालिब आ गया है।”

17 सिय्यून बेटी अपने हाथ फैलाती है, लेकिन कोई नहीं है जो उसे तसल्ली दे। रब के हुक्म पर याक़ूब के पड़ोसी उसके दुश्मन बन गए हैं। यरूशलम उनके दरमियान धिनौनी चीज़ बन गई है।

18 “रब हक़-बजानिब है, क्योंकि मैं उसके कलाम से सरकश हुई। ऐ तमाम अक़वाम, सुनो! मेरी ईज़ा पर गौर करो! मेरे नौजवान और कुँवारियाँ ज़िलावतन हो गए हैं।

19 मैंने अपने आशिकों को बुलाया, लेकिन उन्होंने बेवफ़ा होकर मुझे तर्क कर दिया। अब मेरे इमाम और बुजुर्ग अपनी जान बचाने के लिए ख़ुराक ढूँढते ढूँढते शहर में हलाक हो गए हैं।

20 ऐ रब, मेरी तंगदस्ती पर ध्यान दे! बातिन में मैं तड़प रही हूँ, मेरा दिल तेज़ी से धड़क रहा है, इसलिए कि मैं इतनी ज़्यादा सरकश रही हूँ। बाहर गली में तलवार ने मुझे बच्चों से महरूम कर दिया, घर के अंदर मौत मेरे पीछे पड़ी है।

21 मेरी आँखें तो लोगों तक पहुँचती हैं, लेकिन कोई मुझे तसल्ली देने के लिए नहीं आता। इसके बजाए मेरे तमाम दुश्मन मेरी मुसीबत के बारे में सुनकर बगलें बजा रहे हैं। वह खुश हैं कि तूने मेरे साथ ऐसा सुलूक किया है। ऐ रब, वह दिन आने दे जिसका एलान तूने किया है ताकि वह भी मेरी तरह की मुसीबत में फँस जाएँ।

22 उनकी तमाम बुरी हरकतें तेरे सामने आएँ। उनसे यों निपट ले जिस तरह तूने मेरे गुनाहों के जवाब में मुझसे निपट लिया है। क्योंकि आँखें भरते भरते मेरा दिल निढाल हो गया है।”

2

रब का ग़ज़ब यरूशलम पर नाज़िल हुआ है

1 हाय, रब का कहर काले बादलों की तरह सिय्यून बेटी पर छा गया है! इसराईल की जो शानो-शौकत पहले आसमान की तरह बुलंद थी उसे अल्लाह ने खाक में मिला दिया है। जब उसका ग़ज़ब नाज़िल हुआ तो उसने अपने घर का भी ख़याल न किया, गो वह उसके पाँवों की चौकी है।

2 रब ने बेरहमी से याक़ूब की आबादियों को मिटा डाला, कहर में यहूदाह बेटी के किलों को ढा दिया। उसने यहूदाह की सलतनत और बुजुर्गों को खाक में मिलाकर उनकी बेहुरमती की है।

3 ग़ज़बनाक होकर उसने इसराईल की पूरी ताक़त ख़त्म कर दी। फिर जब दुश्मन करीब आया तो उसने अपने दहने हाथ को इसराईल की मदद करने से रोक लिया। न सिर्फ़ यह बल्कि वह शोलाज़न आग बन गया जिसने याक़ूब में चारों तरफ़ फैलकर सब कुछ भस्म कर दिया।

4 अपनी कमान को तानकर वह अपने दहने हाथ से तीर चलाने के लिए उठा। दुश्मन की तरह उसने सब कुछ जो मनमोहन था मौत के घाट उतारा। सिय्यून बेटी का ख़ैमा उसके कहर के भड़कते कोयलों से भर गया।

5 रब ने इसराईल का दुश्मन-सा बनकर मुल्क को उसके महलों और किलों समेत तबाह कर दिया है। उसी के हाथों यहूदाह बेटी की आहो-ज़ारी में इज़ाफ़ा होता गया।

6 उसने अपनी सूकूनतगाह को बाग़ की झोंपड़ी की तरह गिरा दिया, उसी मक़ाम को बरबाद कर दिया जहाँ क्रौम उससे मिलने के लिए जमा होती थी। रब के हाथों यों हुआ कि अब सिय्यून की ईदों और सबतों की याद ही नहीं रही। उसके शदीद कहर ने बादशाह और इमाम दोनों को रद्द कर दिया है।

7 अपनी कुरबानगाह और मक़दिस को मुस्तरद करके रब ने यरूशलम के महलों की दीवारों दुश्मन के हवाले कर दीं। तब रब के घर में भी ईद के दिन का-सा शोर मच गया।

8 रब ने फ़ैसला किया कि सिय्यून बेटी की फ़सील को गिरा दिया जाए। उसने फ़ीते से दीवारों को नाप नापकर अपने हाथ को न रोका जब तक सब कुछ तबाह न हो गया। तब क़िलाबंदी के पुश्ते और फ़सील मातम करते करते ज़ाया हो गए।

9 शहर के दरवाज़े ज़मीन में धँस गए, उनके कुंडे टूटकर बेकार हो गए। यरूशलम के बादशाह और राहनुमा दीगर अक़वाम में ज़िलावतन हो गए हैं। अब न शरीअत रही, न सिय्यून के नबियों को रब की रोया मिलती है।

10 सिय्यून बेटी के बुजुर्ग ख़ामोशी से ज़मीन पर बैठ गए हैं। टाट के लिबास ओढ़कर उन्होंने अपने सरों पर ख़ाक डाल ली है। यरूशलम की कुँवारियाँ भी अपने सरों को झुकाए बैठी हैं।

11 मेरी आँखें रो रोक थक गई हैं, शदीद दर्द ने मेरे दिल को बेहाल कर दिया है। क्योंकि मेरी क्रौम नेस्त हो गई है। शहर के चौकों में बच्चे पज़मुरदा हालत में फिर रहे हैं, शीरख़ार बच्चे ग़श खा रहे हैं। यह देखकर मेरा कलेजा फट रहा है।

12 अपनी माँ से वह पूछते हैं, “रोटी और मैं कहाँ हैं?” लेकिन बेफ़ायदा। वह मौत के घाट उतरनेवाले ज़ख़मी आदमियों की तरह चौकों में भूके मर रहे हैं, उनकी जान माँ की गोद में ही निकल रही है।

13 ऐ यरूशलम बेटी, मैं किससे तेरा मुवाज़ना करके तेरी हौसलाअफ़ज़ाई करूँ? ऐ कुँवारी सिय्यून बेटी, मैं किससे तेरा मुकाबला करके तुझे तसल्ली दूँ? क्योंकि तुझे समुंदर जैसा वसी नुक़सान पहुँचा है। कौन तुझे शफ़ा दे सकता है?

14 तैरे नबियों ने तुझे झूटी और बेकार रोयाँ पेश कीं। उन्होंने तेरा कुसूर तुझ पर जाहिर न किया, हालाँकि उन्हें करना चाहिए था ताकि तू इस सज़ा से बच जाती। इसके बजाए उन्होंने तुझे झूट और फ़रेबदेह पैगामात सुनाए।

15 अब तैरे पास से गुज़रनेवाले ताली बजाकर आवाज़े कसते हैं। यरूशलम बेटी को देखकर वह सर हिलाते हुए तौबा तौबा कहते हैं, “क्या यह वह शहर है जो ‘तकमीले-हुस्र’ और ‘तमाम दुनिया की खुशी’ कहलाता था?”

16 तैरे तमाम दुश्मन मुँह पसारकर तैरे खिलाफ़ बातें करते हैं। वह आवाज़े कसते और दाँत पीसते हुए कहते हैं, “हमने उसे हड़प कर लिया है। लो, वह दिन आ गया है जिसके इंतज़ार में हम रहे। आखिरकार वह पहुँच गया, आखिरकार हमने अपनी आँखों से उसे देख लिया है।”

17 अब रब ने अपनी मरज़ी पूरी की है। अब उसने सब कुछ पूरा किया है जो बड़ी देर से फ़रमाता आया है। बेरहमी से उसने तुझे खाक में मिला दिया। उसी ने होने दिया कि दुश्मन तुझ पर शादियाना बजाता, कि तैरे मुखालिफ़ों की ताक़त तुझ पर ग़ालिब आ गई है।

18 लोगों के दिल रब को पुकारते हैं। ऐ सिय्यून बेटी की फ़सील, तैरे आँसू दिन-रात बहते बहते नदी बन जाएँ। न इससे बाज़ आ, न अपनी आँखों को रोने से स्कने दे!

19 उठ, रात के हर पहर की इत्तिदा में आहो-ज़ारी कर! अपने दिल की हर बात पानी की तरह रब के हज़ूर उंडेल दे। अपने हाथों को उस की तरफ़ उठाकर अपने बच्चों की जानों के लिए इल्तिजा कर जो इस वक़्त गली गली में भूके मर रहे हैं।

20 ऐ रब, ध्यान से देख कि तूने किससे ऐसा सुलूक किया है। क्या यह औरतें अपने पेट का फल, अपने लाडले बच्चों को खाएँ? क्या रब के मक़दिस में ही इमाम और नबी को मार डाला जाए?

21 लड़कों और बुजुर्गों की लाशें मिलकर गलियों में पड़ी हैं। मेरे जवान लड़के-लड़कियाँ तलवार की ज़द में आकर गिर गए हैं। जब तेरा ग़ज़ब नाज़िल हुआ तो तूने उन्हें मार डाला, बेरहमी से उन्हें मौत के घाट उतार दिया।

22 जिनसे मैं दहशत खाता था उन्हें तूने बुलाया। जिस तरह बड़ी ईदों के मौके पर हज़ूम शहर में जमा होते हैं उसी तरह दुश्मन चारों तरफ़ से मुझ पर टूट पड़े। जब रब का ग़ज़ब नाज़िल हुआ तो न कोई बचा, न कोई बाक़ी रह गया। जिन्हें मैंने पाला और जो मेरे ज़ेरे-निगरानी परवान चढ़े उन्हें दुश्मन ने हलाक कर दिया।

3

मुसीबत में रब की मेहरबानी पर उम्मीद

1 हाय, मुझे कितना दुख उठाना पड़ा! और यह सब कुछ इसलिए हो रहा है कि रब का ग़ज़ब मुझ पर नाज़िल हुआ है, उसी की लाठी मुझे तरबियत दे रही है।

2 उसने मुझे हाँक हाँककर तारीकी में चलने दिया, कहीं भी रौशनी नज़र नहीं आई।

3 रोज़ाना वह बार बार अपना हाथ मेरे खिलाफ़ उठाता रहता है।

4 उसने मेरे जिस्म और जिल्द को सड़ने दिया, मेरी हड्डियों को तोड़ डाला।

5 मुझे घेरकर उसने ज़हर और सख़्त मुसीबत की दीवार मेरे इर्दगिर्द खड़ी कर दी।

6 उसने मुझे तारीकी में बसाया। अब मैं उनकी मानिंद हूँ जो बड़ी देर से कब्र में पड़े हैं।

7 उसने मुझे पीतल की भारी जंजीरों में जकड़कर मेरे इर्दगिर्द ऐसी दीवारें खड़ी कीं जिनसे मैं निकल नहीं सकता।

8 खाह मैं मदद के लिए कितनी चीखें क्यों न मारूँ वह मेरी इल्तिजाएँ अपने हज़ूर पहुँचने नहीं देता।

9 जहाँ भी मैं चलना चाहूँ वहाँ उसने तराशे पत्थरों की मज़बूत दीवार से मुझे रोक लिया। मेरे तमाम रास्ते भूलभुलव्य बन गए हैं।

10 अल्लाह रीछ की तरह मेरी घात में बैठ गया, शेरबबर की तरह मेरी ताक लगाए छुप गया।

11 उसने मुझे सहीह रास्ते से भटका दिया, फिर मुझे फाड़कर बेसहारा छोड़ दिया।

12 अपनी कमान को तानकर उसने मुझे अपने तीरों का निशाना बनाया।

13 उसके तीरों ने मेरे गुरदों को चीर डाला।

14 मैं अपनी पूरी कौम के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गया हूँ। वह पूरे दिन अपने गीतों में मुझे लान-तान करते हैं।

15 अल्लाह ने मुझे कड़वे ज़हर से सेर किया, मुझे ना-गवार तलखी का प्याला पिलाया।

16 उसने मेरे दाँतों को बजरी चबाने दी, मुझे कुचलकर खाक में मिला दिया।

17 मेरी जान से सुकून छीन लिया गया, अब मैं खुशहाली का मज़ा भूल ही गया हूँ।

18 चुनौचे मैं बोला, “मेरी शान और रब पर से मेरी उम्मीद जाती रही है।”

19 मेरी तकलीफ़देह और बेवतन हालत का खयाल कड़वे ज़हर की मानिंद है।

20 तो भी मेरी जान को उस की याद आती रहती है, सोचते सोचते वह मेरे अंदर दब जाती है।

- 21 लेकिन मुझे एक बात की उम्मीद रही है, और यही मैं बार बार ज़हन में लाता हूँ,
- 22 रब की मेहरबानी है कि हम नेस्तो-नाबूद नहीं हुए। क्योंकि उस की शफ़क़त कभी ख़त्म नहीं होती
- 23 बल्कि हर सुबह अज़ सरे-नौ हम पर चमक उठती है। ऐ मेरे आक्रा, तेरी वफ़ादारी अज़ीम है।
- 24 मेरी जान कहती है, “रब मेरा मौरूसी हिस्सा है, इसलिए मैं उसके इंतज़ार में रहूँगी।”
- 25 क्योंकि रब उन पर मेहरबान है जो उस पर उम्मीद रखकर उसके तालिब रहते हैं।
- 26 चुनौचे अच्छा है कि हम ख़ामोशी से रब की नज़ात के इंतज़ार में रहें।
- 27 अच्छा है कि इनसान जवानी में अल्लाह का जुआ उठाए फ़िरे।
- 28 जब जुआ उस की गरदन पर रखा जाए तो वह चुपके से तनहाई में बैठ जाए।
- 29 वह ख़ाक में औधे मुँह हो जाए, शायद अभी तक उम्मीद हो।
- 30 वह मारनेवाले को अपना गाल पेश करे, चुपके से हर तरह की स्सवाई बरदाश्त करे।
- 31 क्योंकि रब इनसान को हमेशा तक रद्द नहीं करता।
- 32 उस की शफ़क़त इतनी अज़ीम है कि गो वह कभी इनसान को दुख पहुँचाए तो भी वह आखिरकार उस पर दुबारा रहम करता है।
- 33 क्योंकि वह इनसान को दबाने और ग़म पहुँचाने में खुशी महसूस नहीं करता।
- 34 मुल्क में तमाम कैदियों को पाँवों तले कुचला जा रहा है।
- 35 अल्लाह तआला के देखते देखते इनसान की हक़तलफ़ी की जा रही है,
- 36 अदालत में लोगों का हक़ मारा जा रहा है। लेकिन रब को यह सब कुछ नज़र आता है।
- 37 कौन कुछ करवा सकता है अगर रब ने इसका हुक्म न दिया हो?
- 38 आफ़तें और अच्छी चीज़ें दोनों अल्लाह तआला के फ़रमान पर वुजूद में आती हैं।
- 39 तो फिर इनसानों में से कौन अपने गुनाहों की सज़ा पाने पर शिकायत करे?
- 40 आओ, हम अपने चाल-चलन का जायज़ा लें, उसे अच्छी तरह जाँचकर रब के पास वापस आएँ।
- 41 हम अपने दिल को हाथों समेत आसमान की तरफ़ मायल करें जहाँ अल्लाह है।
- 42 हम इकरार करें, “हम बेवफ़ा होकर सरकश हो गए हैं, और तूने हमें मुआफ़ नहीं किया।
- 43 तू अपने क़हर के परदे के पीछे छुपकर हमारा ताक्कुब करने लगा, बेरहमी से हमें मारता गया।
- 44 तू बादल में यों छुप गया है कि कोई भी दुआ तुझ तक नहीं पहुँच सकती।
- 45 तूने हमें अक्रवाम के दरमियान कूड़ा-करकट बना दिया।
- 46 हमारे तमाम दुश्मन हमें ताने देते हैं।
- 47 दहशत और ग़ढे हमारे नसीब में हैं, हम धड़ाम से गिरकर तबाह हो गए हैं।”
- 48 आँसू मेरी आँखों से टपक टपककर नदियाँ बन गए हैं, मैं इसलिए रो रहा हूँ कि मेरी क़ौम तबाह हो गई है।
- 49 मेरे आँसू स्क नहीं सकते बल्कि उस वक़्त तक जारी रहेंगे
- 50 जब तक रब आसमान से झाँककर मुझ पर ध्यान न दे।
- 51 अपने शहर की औरतों से दुश्मन का सुलूक देखकर मेरा दिल छलनी हो रहा है।
- 52 जो बिलावजह मेरे दुश्मन हैं उन्होंने परिदे की तरह मेरा शिकार किया।
- 53 उन्होंने मुझे जान से मारने के लिए ग़ढे में डालकर मुझ पर पत्थर फेंक दिए।
- 54 सैलाब मुझ पर आया, और मेरा सर पानी में डूब गया। मैं बोला, “मेरी ज़िंदगी का धागा कट गया है।”
- 55 ऐ रब, जब मैं ग़ढे की गहराइयों में था तो मैंने तेरे नाम को पुकारा।
- 56 मैंने इल्लिजा की, “अपना कान बंद न रख बल्कि मेरी आहें और चीखें सुन!” और तूने मेरी सुनी।
- 57 जब मैंने तुझे पुकारा तो तूने क़रीब आकर फ़रमाया, “ख़ौफ़ न खा।”
- 58 ऐ रब, तू अदालत में मेरे हक़ में मुक़दमा लड़ा, बल्कि तूने मेरी जान का एवज़ाना भी दिया।
- 59 ऐ रब, जो जुल्म मुझ पर हुआ वह तुझे साफ़ नज़र आता है। अब मेरा इनसाफ़ कर!
- 60 तूने उनकी तमाम कीनापरवरी पर तवज्जुह दी है। जितनी भी साज़िशें उन्होंने मेरे खिलाफ़ की हैं उनसे तू वाकिफ़ है।
- 61 ऐ रब, उनकी लान-तान, उनके मेरे खिलाफ़ तमाम मनसूबे तेरे कान तक पहुँच गए हैं।

- 62 जो कुछ मेरे मुखालिफ़ पूरा दिन मेरे खिलाफ़ फुसफुसाते और बुड़बुड़ाते हैं उससे तू ख़ूब आश्रया है।
 63 देख कि यह क्या करते हैं! ख़ाह बैठे या खड़े हों, हर वक़्त वह अपने गीतों में मुझे अपने मज़ाक़ का निशाना बनाते हैं।
 64 ऐ रब, उन्हें उनकी हरकतों का मुनासिब अज़्र दे!
 65 उनके ज़हनों को कुंद कर, तेरी लानत उन पर आ पड़े!
 66 उन पर अपना पूरा ग़ज़ब नाज़िल कर! जब तक वह तेरे आसमान के नीचे से गायब न हो जाएँ उनका ताक्कुब करता रह!

4

यस्शलम की मुसीबत

- 1 हाय, सोने की आबो-ताब न रही, ख़ालिस सोना भी माँद पड़ गया है। मक़दिस के जवाहर तमाम गलियों में बिखरे पड़े हैं।
 2 पहले तो सिय्यून के गिराँक़दर फ़रज़ंद ख़ालिस सोने जैसे क़ीमती थे, लेकिन अब वह गोया मिट्टी के बरतन समझे जाते हैं जो आम कुम्हार ने बनाए हैं।
 3 गो गीदड़ भी अपने बच्चों को दूध पिलाते हैं, लेकिन मेरी क़ौम रेगिस्तान में रहनेवाले उकाबी उल्लू जैसी ज़ालिम हो गई है।
 4 शीरखार बच्चे की ज़बान प्यास के मारे तालू से चिपक गई है। छोटे बच्चे भूक के मारे रोटी माँगते हैं, लेकिन खिलानेवाला कोई नहीं है।
 5 जो पहले लज़ीज़ खाना खाते थे वह अब गलियों में तबाह हो रहे हैं। जो पहले अरगवानी रंग के शानदार कपड़े पहनते थे वह अब कूड़े-करकट में लोट-पोट हो रहे हैं।
 6 मेरी क़ौम से सदूम की निसबत कहीं ज़्यादा संगीन गुनाह सरज़द हुआ है। और सदूम का कुसूर इतना संगीन था कि वह एक ही लमहे में तबाह हुआ। किसी ने भी मुदाख़लत न की।
 7 सिय्यून के रईस कितने शानदार थे! ज़िल्द बर्फ़ जैसी निखरी, दूध जैसी सफ़ेद थी। स़ख़सार मूँगे की तरह गुलाबी, शक्त्तो-सूरत संगे-लाजवर्द * जैसी चमकदार थी।
 8 लेकिन अब वह कोयले जैसे काले नज़र आते हैं। जब गलियों में घूमते हैं तो उन्हें पहचाना नहीं जाता। उनकी हड्डियों पर की ज़िल्द सुकड़कर लकड़ी की तरह सूखी हुई है।
 9 जो तलवार से हलाक़ हुए उनका हाल उनसे बेहतर था जो भूके मर गए। क्योंकि खेतों से ख़ुराक न मिलने पर वह घुल घुलकर मर गए।
 10 जब मेरी क़ौम तबाह हुई तो इतना सख़्त काल पड़ गया कि नरमदिल माओं ने भी अपने बच्चों को पकाकर खा लिया।
 11 रब ने अपना पूरा ग़ज़ब सिय्यून पर नाज़िल किया, उसे अपने शदीद कहर का निशाना बनाया। उसने यस्शलम में इतनी ज़बरदस्त आग़ लगाई कि वह बुनियादों तक भस्म हो गया।
 12 अब दुश्मन यस्शलम के दरवाज़ों में दाख़िल हुए हैं, हालाँकि दुनिया के तमाम बादशाह बल्कि सब लोग समझते थे कि यह मुमकिन ही नहीं।
 13 लेकिन यह सब कुछ उसके नबियों और इमामों के सबब से हुआ जिन्होंने शहर ही में रास्तबाज़ों की ख़ूनरेज़ी की।
 14 अब यही लोग अंधों की तरह गलियों में टटोल टटोलकर फिरते हैं। वह खून से इतने आलूदा हैं कि सब लोग उनके कपड़ों से लगने से गुरेज़ करते हैं।
 15 उन्हें देखकर लोग गरजते हैं, “हटो, तुम नापाक हो! भाग जाओ, दफ़ा हो जाओ, हमें हाथ मत लगाना!” फिर जब वह दीगर अक्रवाम में जाकर इधर उधर फिरने लगते हैं तो वहाँ के लोग भी कहते हैं कि यह मज़ीद यहाँ न ठहरें।
 16 रब ने खुद उन्हें मुंतशिर कर दिया, अब से वह उनका खयाल नहीं करेगा। अब न इमामों की इज़ज़त होती है, न बुजुर्गों पर मेहरबानी की जाती है।

17 हम चारों तरफ़ आँख़ दौड़ाते रहे, लेकिन बेफ़ायदा, कोई मदद न मिली। देखते देखते हमारी नज़र धुँधला गई। क्योंकि हम अपने बुर्जों पर खड़े एक ऐसी क़ौम के इंतज़ार में रहे जो हमारी मदद कर ही नहीं सकती थी।

18 हम अपने चौकों में जा न सके, क्योंकि वहाँ दुश्मन हमारी ताक में बैठा था। हमारा ख़ातमा करीब आया, हमारा मुक़ररा वक़्त इख़ितामपज़ीर हुआ, हमारा अंजाम आ पहुँचा।

19 जिस तरह आसमान पर मँडलानेवाला उकाब एकदम शिकार पर झपट पड़ता है उसी तरह हमारा ताक्कुब करनेवाले हम पर टूट पड़े, और वह भी कहीं ज़्यादा तेज़ी से। वह पहाड़ों पर हमारे पीछे पीछे भागे और रेगिस्तान में हमारी घात में रहे।

20 हमारा बादशाह भी उनके गढ़ों में फँस गया। जो हमारी जान था और जिसे रब ने मसह करके चुन लिया था उसे भी पकड़ लिया गया, गो हमने सोचा था कि उसके साथ में बसकर अक्रवाम के दरमियान महफूज़ रहेंगे।

* 4:7 lapis lazuli

21 ऐ अदोम बेटी, बेशक शादियाना बजा! बेशक मुल्के-ऊज में रहकर खुशी मना! लेकिन खबरदार, अल्लाह के गज़ब का प्याला तुझे भी पिलाया जाएगा। तब तू उसे पी पीकर मस्त हो जाएगी और नशे में अपने कपड़े उतारकर बरहना फिरेगी।

22 ऐ सिय्यून बेटी, तेरी सज़ा का वक़्त पूरा हो गया है। अब से रब तुझे कैदी बनाकर जिलावतन नहीं करेगा। लेकिन ऐ अदोम बेटी, वह तुझे तेरे कुसूर का पूरा अज़्र देगा, वह तेरे गुनाहों पर से परदा उठा लेगा।

5

ऐ रब, हमें अपने हुज़ूर वापस ला!

- 1 ऐ रब, याद कर कि हमारे साथ क्या कुछ हुआ! गौर कर कि हमारी कैसी स्सवाई हुई है।
- 2 हमारी मौस्सी मिलकियत परदेसियों के हवाले की गई, हमारे घर अजनबियों के हाथ में आ गए हैं।
- 3 हम वालिदों से महसूम होकर यतीम हो गए हैं, हमारी माँ बेवाओं की तरह ग़ैरमहफूज़ हैं।
- 4 खाह पीने का पानी हो या लकड़ी, हर चीज़ की पूरी कीमत अदा करनी पड़ती है, हालाँकि यह हमारी अपनी ही चीज़ें थीं।
- 5 हमारा ताक्कुब करनेवाले हमारे सर पर चढ़ आए हैं, और हम थक गए हैं। कहीं भी सुकून नहीं मिलता।
- 6 हमने अपने आपको मिसर और अमूर के हवाले कर दिया ताकि रोटी मिल जाए और भूके न मरें।
- 7 हमारे बापदादा ने गुनाह किया, लेकिन वह कूच कर गए हैं। अब हम ही उनकी सज़ा भुगत रहे हैं।
- 8 गुलाम हम पर हुक्मत करते हैं, और कोई नहीं है जो हमें उनके हाथ से बचाए।
- 9 हम अपनी जान को खतरे में डालकर रोज़ी कमाते हैं, क्योंकि बयाबान में तलवार हमारी ताक में बैठी रहती है।
- 10 भूक के मारे हमारी जिल्द तनूर जैसी गरम होकर चुरमुर हो गई है।
- 11 सिय्यून में औरतों की इसमतदरी, यहूदाह के शहरों में कुँवारियों की बेहुरमती हुई है।
- 12 दुश्मन ने रईसों को फाँसी देकर बुज़ुर्गों की बेइज़्जती की है।
- 13 नौजवानों को चक्की का पाट उठाए फिरना है, लड़के लकड़ी के बोझ तले डगमगाकर गिर जाते हैं।
- 14 अब बुज़ुर्ग शहर के दरवाज़े से और जवान अपने साज़ों से बाज़ रहते हैं।
- 15 खुशी हमारे दिलों से जाती रही है, हमारा लोकनाच आहो-ज़ारी में बदल गया है।
- 16 ताज़ हमारे सर पर से गिर गया है। हम पर अफ़सोस, हमसे गुनाह सरज़द हुआ है।
- 17 इसी लिए हमारा दिल निढाल हो गया, हमारी नज़र धुँधला गई है।
- 18 क्योंकि कोहे-सिय्यून तबाह हुआ है, लोमड़ियाँ उस की गलियों में फिरती हैं।
- 19 ऐ रब, तेरा राज अबदी है, तेरा तख़्त पुश्त-दर-पुश्त कायम रहता है।
- 20 तू हमें हमेशा तक क्यों भूलना चाहता है? तूने हमें इतनी देर तक क्यों तर्क किए रखा है?
- 21 ऐ रब, हमें अपने पास वापस ला ताकि हम वापस आ सकें। हमें बहाल कर ताकि हमारा हाल पहले की तरह हो।
- 22 या क्या तूने हमें हतमी तौर पर मुस्तरद कर दिया है? क्या तेरा हम पर गुस्सा हद से ज़्यादा बढ़ गया है?

हिज़कियेल

अल्लाह के रथ की रोया

1-3 जब मैं यानी इमाम हिज़कियेल बिन बूज़ी तीस साल का था तो मैं यहूदाह के जिलावतनों के साथ मुल्के-बाबल के दरिया किबार के किनारे ठहरा हुआ था। यहूयाकीन बादशाह को जिलावतन हुए पाँच साल हो गए थे। चौथे महीने के पाँचवें दिन * आसमान खुल गया और अल्लाह ने मुझ पर मुख्तलिफ़ रोयाएँ ज़ाहिर कीं। उस वक़्त रब मुझसे हमकलाम हुआ, और उसका हाथ मुझ पर आ ठहरा।

4 रोया में मैंने ज़बरदस्त आँधी देखी जिसने शिमाल से आकर बड़ा बादल मेरे पास पहुँचाया। बादल में चमकती-दमकती आग नज़र आई, और वह तेज़ रौशनी से घिरा हुआ था। आग का मरकज़ चमकदार धात की तरह तमतमा रहा था।

5 आग में चार जानदारों जैसे चल रहे थे जिनकी शक्लो-सूरत इनसान की-सी थी। 6 लेकिन हर एक के चार चेहरे और चार पर थे। 7 उनकी टाँगें इनसानों जैसी सीधी थी, लेकिन पाँवों के तल्वे बछड़ों के-से खुर थे। वह पालिश किए हुए पीतल की तरह जगमगा रहे थे। 8 चारों के चेहरे और पर थे, और चारों परों के नीचे इनसानी हाथ दिखाई दिए। 9 जानदार अपने परों से एक दूसरे को छू रहे थे। चलते वक़्त मुड़ने की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि हर एक के चार चेहरे चारों तरफ़ देखते थे। जब कभी किसी सिम्त जाना होता तो उसी सिम्त का चेहरा चल पड़ता। 10 चारों के चेहरे एक जैसे थे। सामने का चेहरा इनसान का, दाईं तरफ़ का चेहरा शेरबबर का, बाईं तरफ़ का चेहरा बैल का और पीछे का चेहरा उकाब का था। 11 उनके पर ऊपर की तरफ़ फैले हुए थे। दो पर बाएँ और दाएँ हाथ के जानदारों से लगते थे, और दो पर उनके जिस्मों को ढँपे रखते थे। 12 जहाँ भी अल्लाह का रूह जाना चाहता था वहाँ यह जानदार चल पड़ते। उन्हें मुड़ने की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि वह हमेशा अपने चारों चेहरों में से एक का स़ख़ इख्तियार करते थे।

13 जानदारों के बीच में ऐसा लग रहा था जैसे कोयले दहक रहे हों, कि उनके दरमियान मशालें इधर उधर चल रही हों। झिलमिलाती आग में से बिजली भी चमककर निकलती थी। 14 जानदार खुद इतनी तेज़ी से इधर उधर घूम रहे थे कि बादल की बिजली जैसे नज़र आ रहे थे।

15 जब मैंने गौर से उन पर नज़र डाली तो देखा कि हर एक जानदार के पास पहिया है जो ज़मीन को छू रहा है। 16 लगता था कि चारों पहिये पुखराज † से बने हुए हैं। चारों एक जैसे थे। हर पहिये के अंदर एक और पहिया ज़ावियाए-कायमा में घूम रहा था, 17 इसलिए वह मुड़े बग़ैर हर स़ख़ इख्तियार कर सकते थे। 18 उनके लंबे चक्कर ख़ौफ़नाक थे, और चक्करों की हर जगह पर आँखें ही आँखें थीं। 19 जब चार जानदार चलते तो चारों पहिये भी साथ चलते, जब जानदार ज़मीन से उड़ते तो पहिये भी साथ उड़ते थे। 20 जहाँ भी अल्लाह का रूह जाता वहाँ जानदार भी जाते थे। पहिये भी उड़कर साथ साथ चलते थे, क्योंकि जानदारों की रूह पहियों में थी। 21 जब कभी जानदार चलते तो यह भी चलते, जब रूक जाते तो यह भी रूक जाते, जब उड़ते तो यह भी उड़ते। क्योंकि जानदारों की रूह पहियों में थी।

22 जानदारों के सरो के ऊपर गुंबद-सा फैला हुआ था जो साफ़-शफ़फ़ाफ़ बिल्लौर जैसा लग रहा था। उसे देखकर इनसान घबरा जाता था। 23 चारों जानदार इस गुंबद के नीचे थे, और हर एक अपने परों को फैलाकर एक से बाईं तरफ़ के साथी और दूसरे से दाईं तरफ़ के साथी को छू रहा था। बाकी दो परों से वह अपने जिस्म को ढँपे रखता था। 24 चलते वक़्त उनके परों का शोर मुझ तक पहुँचा। यों लग रहा था जैसे करीब ही ज़बरदस्त आबशार बह रही हो, कि कादिरे-मुतलक कोई बात फ़रमा रहा हो, या कि कोई लशकर हरकत में आ गया हो। स्क़ते वक़्त वह अपने परों को नीचे लटकने देते थे।

25 फिर गुंबद के ऊपर से आवाज़ सुनाई दी, और जानदारों ने स्क़कर अपने परों को लटकने दिया। 26 मैंने देखा कि उनके सरो के ऊपर के गुंबद पर संगे-लाजवर्द ‡ का तख़्त-सा नज़र आ रहा है जिस पर कोई बैठा था जिसकी शक्लो-सूरत इनसान की मर्निद है। 27 लेकिन कमर से लेकर सर तक वह चमकदार धात की तरह तमतमा रहा था, जबकि कमर से लेकर पाँव तक आग की मर्निद भड़क रहा था। तेज़ रौशनी उसके इर्दगिर्द झिलमिला रही थी। 28 उसे देखकर कौसे-कुज़ह की वह आबो-ताब याद आती थी जो बारिश होते वक़्त बादल में दिखाई देती है। यों रब का जलाल नज़र आया। यह देखते ही मैं औंधे मुँह गिर गया। इसी हालत में कोई मुझसे बात करने लगा।

2

हिज़कियेल की बुलाहट, तूमार की रोया

1 वह बोला, “ऐ आदमज़ाद, खड़ा हो जा! मैं तुझसे बात करना चाहता हूँ।” 2 ज्योंही वह मुझसे हमकलाम हुआ तो रूह ने मुझमें आकर मुझे खड़ा कर दिया। फिर मैंने आवाज़ को यह कहते हुए सुना,

3 “ऐ आदमज़ाद, मैं तुझे इसराइलियों के पास भेज रहा हूँ, एक ऐसी सरकश कौम के पास जिसने मुझसे बगावत की है। शुरू से लेकर आज तक वह अपने बापदादा समेत मुझसे बेवफ़ा रहे हैं। 4 जिन लोगों के पास मैं तुझे भेज रहा हूँ वह बेशर्म और जिद्दी हैं। उन्हें वह कुछ सुना दे जो रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है। 5 खाह यह बागी सुनें या न सुनें, वह ज़रूर जान लेंगे कि हमारे दरमियान नबी बरपा हुआ है। 6 ऐ आदमज़ाद, उनसे या उनकी बातों से मत डरना। गो तू काँटेदार झाड़ियों से घिरा रहेगा और तुझे बिच्छुओं के दरमियान बसना पड़ेगा तो भी ख़ौफ़ज़दा न हो।

* 1:1-3 31 जुलाई। † 1:16 topas ‡ 1:26 lapis lazuli

न उनकी बातों से खौफ़ खाना, न उनके रवय्ये से दहशत खाना। क्योंकि यह क्रौम सरकश है।⁷ खाह यह सुनें या न सुनें लाज़िम है कि तू मेरे पैगामात उन्हें सुनाए। क्योंकि वह बागी ही है।⁸ ऐ आदमज़ाद, जब मैं तुझसे हमकलाम हूँगा तो ध्यान दे और इस सरकश क्रौम की तरह बगावत मत करना। अपने मुँह को खोलकर वह कुछ खा जो मैं तुझे खिलाता हूँ।”

⁹ तब एक हाथ मेरी तरफ़ बढ़ा हुआ नज़र आया जिसमें तूमार था।¹⁰ तूमार को खोला गया तो मैंने देखा कि उसमें आगे भी और पीछे भी मातम और आहो-ज़ारी कलमबंद हुई है।

3

¹ उसने फ़रमाया, “ऐ आदमज़ाद, जो कुछ तुझे दिया जा रहा है उसे खा ले! तूमार को खा, फिर जाकर इसराईली क्रौम से मुखातिब हो जा।”² मैंने अपना मुँह खोला तो उसने मुझे तूमार खिलाया।³ साथ साथ उसने फ़रमाया, “आदमज़ाद, जो तूमार मैं तुझे खिलाता हूँ उसे खा, पेट भरकर खा!” जब मैंने उसे खाया तो शहद की तरह मीठा लगा।

⁴ तब अल्लाह मुझसे हमकलाम हुआ, “ऐ आदमज़ाद, अब जाकर इसराईली घराने को मेरे पैगामात सुना दे।⁵ मैं तुझे ऐसी क्रौम के पास नहीं भेज रहा जिसकी अजनबी ज़बान तुझे समझ न आए बल्कि तुझे इसराईली क्रौम के पास भेज रहा हूँ।⁶ बेशक ऐसी बहुत-सी क्रौमें हैं जिनकी अजनबी ज़बानें तुझे नहीं आती, लेकिन उनके पास मैं तुझे नहीं भेज रहा। अगर मैं तुझे उन्हीं के पास भेजता तो वह ज़रूर तेरी सुनती।⁷ लेकिन इसराईली घराना तेरी सुनने के लिए तैयार नहीं होगा, क्योंकि वह मेरी सुनने के लिए तैयार ही नहीं। क्योंकि पूरी क्रौम का माथा सख़्त और दिल अड़ा हुआ है।⁸ लेकिन मैंने तेरा चेहरा भी उनके चेहरे जैसा सख़्त कर दिया, तेरा माथा भी उनके माथे जैसा मज़बूत कर दिया है।⁹ तू उनका मुकाबला कर सकेगा, क्योंकि मैंने तेरे माथे को हीरे जैसा मज़बूत, चक्रमाक जैसा पायदार कर दिया है। गो यह क्रौम बागी है तो भी उनसे खौफ़ न खा, न उनके सुलूक से दहशतज़दा हो।”

¹⁰ अल्लाह ने मज़ीद फ़रमाया, “ऐ आदमज़ाद, मेरी हर बात पर ध्यान देकर उसे ज़हन में बिठा।¹¹ अब रवाना होकर अपनी क्रौम के उन अफ़राद के पास जा जो बाबल में जिलावतन हुए हैं। उन्हें वह कुछ सुना दे जो रब कादिरे-मुतलक उन्हें बताना चाहता है, खाह वह सुनें या न सुनें।”

¹² फिर अल्लाह के रूह ने मुझे वहाँ से उठाया। जब रब का जलाल अपनी जगह से उठा तो मैंने अपने पीछे एक गड़गड़ाती आवाज़ सुनी।¹³ फ़िज़ा चारों जानदारों के शोर से गूँज उठी जब उनके पर एक दूसरे से लगने और उनके पहिये घूमने लगे।¹⁴ अल्लाह का रूह मुझे उठाकर वहाँ से ले गया, और मैं तलख़मिज़ाजी और बड़ी सरगरमी से रवाना हुआ। क्योंकि रब का हाथ ज़ोर से मुझ पर ठहरा हुआ था।¹⁵ चलते चलते मैं दरियाए-किबार की आबादी तल-अबीब में रहनेवाले जिलावतनों के पास पहुँच गया। मैं उनके दरमियान बैठ गया। सात दिन तक मेरी हालत गुमसुम रही।

मेरी क्रौम को आगाह कर!

¹⁶ सात दिन के बाद रब मुझसे हमकलाम हुआ,¹⁷ “ऐ आदमज़ाद, मैंने तुझे इसराईली क्रौम पर पहरदार बनाया, इसलिए जब भी तुझे मुझसे कलाम मिले तो उन्हें मेरी तरफ़ से आगाह कर!

¹⁸ मैं तेरे ज़रीए बेदीन को इतला दूँगा कि उसे मरना ही है ताकि वह अपनी बुरी राह से हटकर बच जाए। अगर तू उसे यह पैगाम न पहुँचाए, न उसे तंबीह करे और वह अपने कुसूर के बाइस मर जाए तो मैं तुझे ही उस की मौत का ज़िम्मादार ठहराऊँगा।¹⁹ लेकिन अगर वह तेरी तंबीह पर अपनी बेदीनी और बुरी राह से न हटे तो यह अलग बात है। बेशक वह मरेगा, लेकिन तू ज़िम्मादार नहीं ठहरेगा बल्कि अपनी जान को छुड़ाएगा।

²⁰ जब रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़ी को छोड़कर बुरी राह पर आ जाएगा तो मैं तुझे उसे आगाह करने की ज़िम्मादारी दूँगा। अगर तू यह करने से बाज़ रहा तो तू ही ज़िम्मादार ठहरेगा जब मैं उसे ठोकर खिलाकर मार डालूँगा। उस वक़्त उसके रास्त काम याद नहीं रहेंगे बल्कि वह अपने गुनाह के सबब से मरेगा। लेकिन तू ही उस की मौत का ज़िम्मादार ठहरेगा।²¹ लेकिन अगर तू उसे तंबीह करे और वह अपने गुनाह से बाज़ आए तो वह मेरी तंबीह को क़बूल करने के बाइस बचेगा, और तू भी अपनी जान को छुड़ाएगा।”

²² वहीं रब का हाथ दुबारा मुझ पर आ ठहरा। उसने फ़रमाया, “उठ, यहाँ से निकलकर वादी के खुले मैदान में चला जा! वहाँ मैं तुझसे हमकलाम हूँगा।”

²³ मैं उठा और निकलकर वादी के खुले मैदान में चला गया। जब पहुँचा तो क्या देखता हूँ कि रब का जलाल वहाँ यों मौजूद है जिस तरह पहली रोया में दरियाए-किबार के किनारे पर था। मैं मुँह के बल गिर गया।²⁴ तब अल्लाह के रूह ने आकर मुझे दुबारा खड़ा किया और फ़रमाया, “अपने घर में जाकर अपने पीछे कुंडी लगा।²⁵ ऐ आदमज़ाद, लोग तुझे रस्सियों में जकड़कर बंद रखेंगे ताकि तू निकलकर दूसरों में न फिर सके।²⁶ मैं होने दूँगा कि तेरी ज़बान तालू से चिपक जाए और तू ख़ामोश रहकर उन्हें डाँट न सके। क्योंकि यह क्रौम सरकश है।²⁷ लेकिन जब भी मैं तुझसे हमकलाम हूँगा तो तेरे मुँह को खोलूँगा। तब तू मेरा कलाम सुनाकर कहेगा, ‘रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है!’ तब जो सुनने के लिए तैयार हो वह सुने, और जो तैयार न हो वह न सुने। क्योंकि यह क्रौम सरकश है।

4

यरूशलम का मुहासरा

1 ऐ आदमजाद, अब एक कच्ची ईंट ले और उसे अपने सामने रखकर उस पर यरूशलम शहर का नक्शा कंदा कर। 2 फिर यह नक्शा शहर का मुहासरा दिखाने के लिए इस्तेमाल कर। बुर्ज और पुश्ते बनाकर घेरा डाल। यरूशलम के बाहर लशकरगाह लगाकर शहर के इर्दगिर्द किलाशिकन मशीनें तैयार रख। 3 फिर लोहे की प्लेट लेकर अपने और शहर के दरमियान रख। इससे मुराद लोहे की दीवार है। शहर को घूर घूरकर जाहिर कर कि तू उसका मुहासरा कर रहा है। इस निशान से तू दिखाएगा कि इसराईलियों के साथ क्या कुछ होनेवाला है।

4-5 इसके बाद अपने बाएँ पहलू पर लेटकर अलामती तौर पर मुल्के-इसराईल की सजा पा। जितने भी साल वह गुनाह करते आए हैं उतने ही दिन तुझे इसी हालत में लेटे रहना है। वह 390 साल गुनाह करते रहे हैं, इसलिए तू 390 दिन उनके गुनाहों की सजा पाएगा। 6 इसके बाद अपने दाएँ पहलू पर लेट जा और मुल्के-यहूदाह की सजा पा। मैंने मुर्कर किया है कि तू 40 दिन यह करे, क्योंकि यहूदाह 40 साल गुनाह करता रहा है। 7 घेरे हुए शहर यरूशलम को घूर घूरकर अपने नंगे बाजू से उसे धमकी दे और उसके खिलाफ पेशगोई कर। 8 साथ साथ मैं तुझे रस्सियों में जकड़ लूँगा ताकि तू उतने दिन करवटें बदल न सके जितने दिन तेरा मुहासरा किया जाएगा।

9 अब कुछ गंदुम, जौ, लोबिया, मसूर, बाजरा और यहाँ मुस्तामल घटिया क्रिस्म का गंदुम जमा करके एक ही बरतन में डाल। बाएँ पहलू पर लेटते वक़्त यानी पूरे 390 दिन इन्हीं से रोटी बनाकर खा। 10-11 फ़ी दिन तुझे रोटी का एक पाव खाने और पानी का पौना लिटर पीने की इजाज़त है। यह चीज़ें एहतियात से तोलकर मुर्कररा औकात पर खा और पी। 12 रोटी को जौ की रोटी की तरह तैयार करके खा। ईंधन के लिए इनसान का फुज्ज़ला इस्तेमाल कर। ध्यान दे कि सब इसके गवाह हों। 13 रब ने फ़रमाया, “जब मैं इसराईलियों को दीगर अक़वाम में मुंतशिर करूँगा तो उन्हें नापाक रोटी खानी पड़ेगी।”

14 यह सुनकर मैं बोल उठा, “हाय, हाय! ऐ रब कादिरे-मुतलक़, मैं कभी भी नापाक नहीं हुआ। जवानी से लेकर आज तक मैंने कभी ऐसे जानवर का गोश्त नहीं खाया जिसे जबह नहीं किया गया था या जिसे जंगली जानवरों ने फाड़ा था। नापाक गोश्त कभी मेरे मुँह में नहीं आया।”

15 तब रब ने जवाब दिया, “ठीक है, रोटी को बनाने के लिए तू इनसान के फुज्ज़ले के बजाए गोबर इस्तेमाल कर सकता है। मैं तुझे इसकी इजाज़त देता हूँ।”

16 उसने मज़ीद फ़रमाया, “ऐ आदमजाद, मैं यरूशलम में रोटी का बंदोबस्त खत्म हो जाने दूँगा। तब लोग अपना खाना बड़ी एहतियात से और पेशानी में तोल तोलकर खाएँगे। वह पानी का क़तरा क़तरा गिनकर उसे लरज़ते हुए पीएँगे। 17 क्योंकि खाने और पानी की किल्लत होगी। सब मिलकर तबाह हो जाएँगे, सब अपने गुनाहों के सबब से सड़ जाएँगे।

5

यरूशलम के खिलाफ़ तलवार

1 ऐ आदमजाद, तेज़ तलवार लेकर अपने सर के बाल और दाढ़ी मुँडवा। फिर तराजू में बालों को तोलकर तीन हिस्सों में तकसीम कर। 2 कच्ची ईंट पर कंदा यरूशलम के नक्शे के ज़रीए जाहिर कर कि शहर का मुहासरा खत्म हो गया है। फिर बालों की एक तिहाई शहर के नक्शे के बीच में जला दे, एक तिहाई तलवार से मार मारकर शहर के इर्दगिर्द ज़मीन पर गिरने दे, और एक तिहाई हवा में उड़ाकर मुंतशिर कर। क्योंकि मैं इसी तरह अपनी तलवार को मियान से खींचकर लोगों के पीछे पड़ जाऊँगा। 3 लेकिन बालों में से थोड़े थोड़े बचा ले और अपनी झोली में लपेटकर महफूज़ रख। 4 फिर इनमें से कुछ ले और आग में फेंककर भस्म कर। यही आग इसराईल के पूरे घराने में फैल जाएगी।”

5 रब कादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, “यही यरूशलम की हालत है! गो मैंने उसे दीगर अक़वाम के दरमियान रखकर दीगर ममालिक का मरकज़ बना दिया 6 तो भी वह मेरे अहक़ाम और हिदायात से सरकश हो गया है। गिर्दो-नवाह की अक़वामो-ममालिक की निसबत उस की हरकतें कहीं ज़्यादा बुरी हैं। क्योंकि उसके बाशिंदों ने मेरे अहक़ाम को रद्द करके मेरी हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने से इनकार कर दिया है।” 7 रब कादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, “तुम्हारी हरकतें इर्दगिर्द की कौमों की निसबत कहीं ज़्यादा बुरी हैं। न तुमने मेरी हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी, न मेरे अहक़ाम पर अमल किया। बल्कि तुम इतने शरारती थे कि गिर्दो-नवाह की अक़वाम के रस्मो-रिवाज से भी बदतर ज़िंदगी गुज़ारने लगे।” 8 इसलिए रब कादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, “ऐ यरूशलम, अब मैं खुद तुझसे निपट लूँगा। दीगर अक़वाम के देखते देखते मैं तेरी अदालत करूँगा। 9 तेरी धिनौनी बुतपरस्ती के सबब से मैं तेरे साथ ऐसा सुल्क करूँगा जैसा मैंने पहले कभी नहीं किया है और आइंदा भी कभी नहीं करूँगा। 10 तब तेरे दरमियान बाप अपने बेटों को और बेटे अपने बाप को खाएँगे। मैं तेरी अदालत यों करूँगा कि जितने बचेंगे वह सब हवा में उड़कर चारों तरफ़ मुंतशिर हो जाएँगे।”

11 रब कादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, “मेरी हयात की क़सम, तुने अपने धिनौने बुतों और रस्मो-रिवाज से मेरे मक़दिस की बेहुरमती की है, इसलिए मैं तुझे मुँडवाकर तबाह कर दूँगा। न मैं तुझ पर तरस खाऊँगा, न रहम करूँगा। 12 तेरे बाशिंदों की एक तिहाई मोहलक़ बीमारियों और काल से शहर में हलाक़ हो जाएगी। दूसरी तिहाई तलवार की ज़द में आकर शहर के इर्दगिर्द मर जाएगी। तीसरी तिहाई को मैं हवा में उड़ाकर मुंतशिर कर दूँगा और फिर तलवार को मियान से खींचकर उनका पीछा करूँगा। 13 यों मेरा क़हर ठंडा हो जाएगा और मैं इंतक़ाम लेकर अपना गुस्सा उतारूँगा। तब वह जान लेंगे कि मैं, रब ग़ैरत में उनसे हमक़लाम हुआ हूँ।

14 मैं तुझे मलबे का ढेर और इर्दगिर्द की अक़वाम की लान-तान का निशाना बना दूँगा। हर गुज़रनेवाला तेरी हालत देखकर 'तौबा तौबा' कहेगा। 15 जब मेरा ग़ज़ब तुझ पर टूट पड़ेगा और मैं तेरी सख़्त अदालत और सरज़निश करूँगा तो उस वक़्त तू पड़ोस की अक़वाम के लिए मज़ाक़ और लानत-मलामत का निशाना बन जाएगा। तेरी हालत को देखकर उनके रोंगटे खड़े हो जाएंगे और वह मुहतात रहने का सबक सीखेंगे। यह मेरा, रब का फ़रमान है।

16 ऐ यरूशलम के बाशिंदो, मैं काल के मोहलक और तबाहक़ुन तीर तुम पर बरसाऊँगा ताकि तुम हलाक हो जाओ। काल यहाँ तक जोर पकड़ेगा कि खाने का बंदोबस्त ख़त्म हो जाएगा। 17 मैं तुम्हारे खिलाफ़ काल और वहशी जानवर भेजूँगा ताकि तू बेऔलाद हो जाए। मोहलक बीमारियाँ और कत्लो-ग़ारत तेरे बीच में से गुज़रेगी, और मैं तेरे खिलाफ़ तलवार चलाऊँगा। यह मेरा, रब का फ़रमान है।”

6

बुलंदियों पर मज़ारों की अदालत

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमज़ाद, इसराईल के पहाड़ों की तरफ़ स्रख़ करके उनके खिलाफ़ नबुव्वत कर। 3 उनसे कह, ‘ऐ इसराईल के पहाड़ो, रब कादिरे-मुतलक़ का कलाम सुनो! वह पहाड़ों, पहाड़ियों, घाटियों और वादियों के बारे में फ़रमाता है कि मैं तुम्हारे खिलाफ़ तलवार चलाकर तुम्हारी ऊँची जगहों के मंदिरों को तबाह कर दूँगा। 4 जिन कुरबानगाहों पर तुम अपने जानवर और बख़ूर जलाते हो वह ढा दूँगा। मैं तेरे मक़तूलों को तेरे बुतों के सामने ही फेंक छोड़ूँगा। 5 मैं इसराईलियों की लाशों को उनके बुतों के सामने डालकर तुम्हारी हड्डियों को तुम्हारी कुरबानगाहों के इर्दगिर्द बिखेर दूँगा। 6 जहाँ भी तुम आबाद हो वहाँ तुम्हारे शहर खंडरात बन जाएंगे और ऊँची जगहों के मंदिर मिसमार हो जाएंगे। क्योंकि लाज़िम है कि जिन कुरबानगाहों पर तुम अपने जानवर और बख़ूर जलाते हो वह खाक में मिलाई जाएँ, कि तुम्हारे बुतों को पाश पाश किया जाए, कि तुम्हारी बुतपरस्ती की चीज़ें नेस्तो-नाबूद हो जाएँ। 7 मक़तूल तुम्हारे दरमियान गिरकर पड़े रहेंगे। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ।

8 लेकिन मैं चंद एक को ज़िंदा छोड़ूँगा। क्योंकि जब तुम्हें दीगर ममालिक और अक़वाम में मुंतशिर किया जाएगा तो कुछ तलवार से बचे रहेंगे। 9 जब यह लोग कैदी बनकर मुख़्तलिफ़ ममालिक में जाएँ तो उन्हें मेरा ख़याल आएगा। उन्हें याद आएगा कि मुझे कितना ग़म खाना पड़ा जब उनके ज़िनाकार दिल मुझसे दूर हुए और उनकी आँखें अपने बुतों से ज़िना करती रहीं। तब वह यह सोचकर कि हमने कितना बुरा काम किया और कितनी मक़रूह हरकतों की हैं अपने आपसे धिन खाएँगे। 10 उस वक़्त वह जान लोगे कि मैं रब हूँ, कि उन पर यह आफ़त लाने का एलान करते वक़्त मैं ख़ाली बातें नहीं कर रहा था।”

11 फिर रब कादिरे-मुतलक़ ने मुझसे फ़रमाया, “तालियाँ बजाकर पाँव जोर से ज़मीन पर मार! साथ साथ यह कह, इसराईली कौम की धिनौनी हरकतों पर अफ़सोस! वह तलवार, काल और मोहलक बीमारियों की ज़द में आकर हलाक हो जाएंगे। 12 जो दूर है वह मोहलक वबा से मर जाएगा, जो करीब है वह तलवार से क़त्ल हो जाएगा, और जो बच जाए वह भूके मरेगा। यों मैं अपना ग़ज़ब उन पर नाज़िल करूँगा। 13 वह जान लेंगे कि मैं रब हूँ जब उनके मक़तूल उनके बुतों के दरमियान, उनकी कुरबानगाहों के इर्दगिर्द, हर पहाड़ और पहाड़ की चोटी पर और हर हरे दरख़्त और बलूत के घने दरख़्त के साथ में नज़र आएँगे। जहाँ भी वह अपने बुतों को खुश करने के लिए कोशिश रहे वहाँ उनकी लाशें पाई जाएँगी। 14 मैं अपना हाथ उनके खिलाफ़ उठाकर मुल्क को यहदाह के रेगिस्तान से लेकर दिबला तक तबाह कर दूँगा। उनकी तमाम आबादियाँ वीरानो-सुनसान हो जाएँगी। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

7

मुल्क का बुरा अंजाम

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमज़ाद, रब कादिरे-मुतलक़ मुल्के-इसराईल से फ़रमाता है कि तेरा अंजाम करीब ही है! जहाँ भी देखो, पूरा मुल्क तबाह हो जाएगा। 3 अब तेरा सत्यानास होनेवाला है, मैं खुद अपना ग़ज़ब तुझ पर नाज़िल करूँगा। मैं तेरे चाल-चलन को परख परखकर तेरी अदालत करूँगा, तेरी मक़रूह हरकतों का पूरा अज़्र दूँगा। 4 न मैं तुझ पर तरस खाऊँगा, न रहम करूँगा बल्कि तुझे तेरे चाल-चलन का मुनासिब अज़्र दूँगा। क्योंकि तेरी मक़रूह हरकतों का बीज तेरे दरमियान ही उगकर फल लाएगा। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ।”

5 रब कादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, “आफ़त पर आफ़त ही आ रही है। 6 तेरा अंजाम, हाँ, तेरा अंजाम आ रहा है। अब वह उठकर तुझ पर लपक रहा है। 7 ऐ मुल्क के बाशिंदे, तेरी फ़ना पहुँच रही है। अब वह वक़्त करीब ही है, वह दिन जब तेरे पहाड़ों पर खुशी के नारों के बजाए अफ़रा-तफ़री का शोर मचेगा। 8 अब मैं जल्द ही अपना ग़ज़ब तुझ पर नाज़िल करूँगा, जल्द ही अपना गुस्सा तुझ पर उतारूँगा। मैं तेरे चाल-चलन को परख परखकर तेरी अदालत करूँगा, तेरी धिनौनी हरकतों का पूरा अज़्र दूँगा। 9 न मैं तुझ पर तरस खाऊँगा, न रहम करूँगा बल्कि तुझे तेरे चाल-चलन का मुनासिब अज़्र दूँगा। क्योंकि तेरी मक़रूह हरकतों का बीज तेरे दरमियान ही उगकर फल लाएगा। तब तुम जान लोगे कि मैं यानी रब ही ज़रब लगा रहा हूँ।

10 देखो, मज़क़ूरा दिन करीब ही है! तेरी हलाक़त पहुँच रही है। नाइनसाफ़ी के फूल और शोखी की कोंपलें फूट निकली हैं। 11 लोगों का जुल्म बढ़ बढ़कर लाठी बन गया है जो उन्हें उनकी बेदीनी की सज़ा देगी। कुछ नहीं रहेगा, न वह खुद, न उनकी दौलत, न उनका शोर-शराबा,

और न उनकी शानो-शौकत। 12 अदालत का दिन करीब ही है। उस वक्त जो कुछ खरीदे वह खुश न हो, और जो कुछ फरोख्त करे वह गम न खाए। क्योंकि अब इन चीजों का कोई फायदा नहीं, इलाही गज़ब सब पर नाज़िल हो रहा है। 13 बेचनेवाले बच भी जाएँ तो वह अपना कारोबार नहीं कर सकेंगे। क्योंकि सब पर इलाही गज़ब का फ़ैसला अटल है और मनसूख नहीं हो सकता। लोगों के गुनाहों के बाइस एक जान भी नहीं छूटेगी। 14 बेशक लोग बिगुल बजाकर जंग की तैयारियाँ करें, लेकिन क्या फायदा? लड़ने के लिए कोई नहीं निकलेगा, क्योंकि सबके सब मेरे क्रहर का निशाना बन जाएंगे।

15 बाहर तलवार, अंदर मोहलक वबा और भूक। क्योंकि देहात में लोग तलवार की ज़द में आ जाएंगे, शहर में काल और मोहलक वबा से हलाक हो जाएंगे। 16 जितने भी बचेंगे वह पहाड़ों में पनाह लेंगे, घाटियों में फ़ाख़्ताओं की तरह गूँ गूँ करके अपने गुनाहों पर आहो-ज़ारी करेंगे। 17 हर हाथ से ताक़त जाती रहेगी, हर घुटना डॉवॉडोल हो जाएगा।

18 वह टाट के मातमी कपड़े ओढ़ लेंगे, उन पर कपकपी तारी हो जाएगी। हर चेहरे पर शर्मिंदगी नज़र आएगी, हर सर मुँडवाया गया होगा। 19 अपनी चाँदी को वह गलियों में फेंक देंगे, अपने सोने को गिलाज़त समझेंगे। क्योंकि जब रब का गज़ब उन पर नाज़िल होगा तो न उनकी चाँदी उन्हें बचा सकेगी, न सोना। उनसे न वह अपनी भूक मिटा सकेंगे, न अपने पेट को भर सकेंगे, क्योंकि यही चीज़ें उनके लिए गुनाह का बाइस बन गई थीं। 20 उन्होंने अपने खूबसूरत ज़ेवरात पर फ़रख़ करके उनसे अपने धिनौने बुत और मकरूह मुजस्समे बनाए, इसलिए मैं होने दूँगा कि वह अपनी दौलत से धिन खाएँगे।

21 मैं यह सब कुछ परदेसियों के हवाले कर दूँगा, और वह उसे लूट लेंगे। दुनिया के बेदीन उसे छीनकर उस की बेहुरमती करेंगे। 22 मैं अपना मुँह इसराइलियों से फेर लूँगा तो अज़नबी मेरे कीमती मक़ाम की बेहुरमती करेंगे। डाकू उसमें घुसकर उसे नापाक करेंगे। 23 जंजीरें तैयार कर! क्योंकि मुल्क में क़त्लो-ग़ारत आम हो गई है, शहर जुल्मो-तशद्दुद से भर गया है। 24 मैं दीगर अक़वाम के सबसे शरीर लोगों को बुलाऊँगा ताकि इसराइलियों के घरों पर कब्ज़ा करें, मैं ज़ोरावरों का तकब्बुर खाक में मिला दूँगा। जो भी मक़ाम उन्हें मुक़द्दस हो उस की बेहुरमती की जाएगी।

25 जब दहशत उन पर तारी होगी तो वह अमनो-अमान तलाश करेंगे, लेकिन बेफ़ायदा। अमनो-अमान कहीं भी पाया नहीं जाएगा। 26 आफ़त पर आफ़त ही उन पर आएगी, यके बाद दीगरे बुरी ख़बरें उन तक पहुँचेंगी। वह नबी से रोया मिलने की उम्मीद करेंगे, लेकिन बेफ़ायदा। न इमाम उन्हें शरीअत की तालीम, न बुजुर्ग उन्हें मशवरा दे सकेंगे। 27 बादशाह मातम करेगा, रईस हैबतज़दा होगा, और अवाम के हाथ थरथराएँगे। मैं उनके चाल-चलन के मुताबिक़ उनसे निपटूँगा, उनके अपने ही उसूलों के मुताबिक़ उनकी अदालत करूँगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

8

रब के घर में बुतपरस्ती की रोया

1 जिलावतनी के छठे साल के छठे महीने के पाँचवें दिन * मैं अपने घर में बैठा था। यहदाह के बुजुर्ग पास ही बैठे थे। तब रब कादिरे-मुतलक़ का हाथ मुझ पर आ ठहरा। 2 रोया में मैंने किसी को देखा जिसकी शक्तो-सूरत इनसान की मानिंद थी। लेकिन कमर से लेकर पाँव तक वह आग की मानिंद भड़क रहा था जबकि कमर से लेकर सर तक चमकदार धात की तरह तमतमा रहा था। 3 उसने कुछ आगे बढ़ा दिया जो हाथ-सा लग रहा था और मेरे बालों को पकड़ लिया। फिर रूह ने मुझे उठाया और ज़मीन और आसमान के दरमियान चलते चलते यस्शलम तक पहुँचाया। अभी तक मैं अल्लाह की रोया देख रहा था। मैं रब के घर के अंदरूनी सहन के उस दरवाज़े के पास पहुँच गया जिसका सूख शिमाल की तरफ़ है। दरवाज़े के करीब एक बुत पड़ा था जो रब को मुशतइल करके ग़ैरत दिलाता है।

4 वहाँ इसराइल के ख़ुदा का जलाल मुझ पर उसी तरह ज़ाहिर हुआ जिस तरह पहले मैदान की रोया में मुझ पर ज़ाहिर हुआ था। 5 वह मुझसे हमकलाम हुआ, “ऐ आदमज़ाद, शिमाल की तरफ़ नज़र उठा।” मैंने अपनी नज़र शिमाल की तरफ़ उठाई तो दरवाज़े के बाहर कुरबानगाह देखी। साथ साथ दरवाज़े के करीब ही वह बुत खड़ा था जो रब को ग़ैरत दिलाता है। 6 फिर रब बोला, “ऐ आदमज़ाद, क्या तुझे वह कुछ नज़र आता है जो इसराइली क़ौम यहाँ करती है? यह लोग यहाँ बड़ी मकरूह हरकतें कर रहे हैं ताकि मैं अपने मक़दिस से दूर हो जाऊँ। लेकिन तू इनसे भी ज़्यादा मकरूह चीज़ें देखेगा।”

7 वह मुझे रब के घर के बैरूनी सहन के दरवाज़े के पास ले गया तो मैंने दीवार में सूराख़ देखा। 8 अल्लाह ने फ़रमाया, “आदमज़ाद, इस सूराख़ को बड़ा बना।” मैंने ऐसा किया तो दीवार के पीछे दरवाज़ा नज़र आया। 9 तब उसने फ़रमाया, “अंदर जाकर वह शरीर और धिनौनी हरकतें देख जो लोग यहाँ कर रहे हैं।”

10 मैं दरवाज़े में दाख़िल हुआ तो क्या देखता हूँ कि दीवारों पर चारों तरफ़ बुतपरस्ती की तस्वीरें कंदा हुई हैं। हर किस्म के रेंगनेवाले और दीगर मकरूह जानवर बल्कि इसराइली क़ौम के तमाम बुत उन पर नज़र आए। 11 इसराइली क़ौम के 70 बुजुर्ग बख़ूरदान पकड़े उनके सामने खड़े थे। बख़ूरदानों में से बख़ूर का ख़ुशबूदार धुआँ उठ रहा था। याज़नियाह बिन साफ़न भी बुजुर्गों में शामिल था।

12 रब मुझसे हमकलाम हुआ, “ऐ आदमज़ाद, क्या तूने देखा कि इसराइली क़ौम के बुजुर्ग अंधेरे में क्या कुछ कर रहे हैं? हर एक ने अपने घर में अपने बुतों के लिए कमरा मख़सूस कर रखा है। क्योंकि वह समझते हैं, ‘हम रब को नज़र नहीं आते, उसने हमारे मुल्क को तर्क कर दिया है।’ 13 लेकिन आ, मैं तुझे इससे भी ज़्यादा काबिले-धिन हरकतें दिखाता हूँ।”

* 8:1 17 सितंबर।

14 वह मुझे रब के घर के अंदरूनी सहन के शिमाली दरवाजे के पास ले गया। वहाँ औरतें बैठी थीं जो रो रोकर तम्मूज़ देवता † का मातम कर रही थीं। 15 रब ने सवाल किया, “आदमज़ाद, क्या तुझे यह नज़र आता है? लेकिन आ, मैं तुझे इससे भी ज्यादा क़ाबिले-घिन हरकतें दिखाता हूँ।”

16 वह मुझे रब के घर के अंदरूनी सहन में ले गया। रब के घर के दरवाजे पर यानी सामनेवाले बरामदे और कुरबानगाह के दरमियान ही 25 आदमी खड़े थे। उनका सूख रब के घर की तरफ नहीं बल्कि मशरिक की तरफ था, और वह सूरज को सिजदा कर रहे थे।

17 रब ने फ़रमाया, “ऐ आदमज़ाद, क्या तुझे यह नज़र आता है? और यह मक़रूह हरकतें भी यहदाह के बाशिंदों के लिए काफ़ी नहीं हैं बल्कि वह पूरे मुल्क को जुल्मो-तशद्दुद से भरकर मुझे मुश्तइल करने के लिए कोशिशें करते हैं। देख, अब वह अपनी नाकों के सामने अंगूर की बेल लहराकर बुतपरस्ती की एक और रस्म अदा कर रहे हैं! 18 चुनौचे मैं अपना ग़ज़ब उन पर नाज़िल करूँगा। न मैं उन पर तरस खाऊँगा, न रहम करूँगा। खाह वह मदद के लिए कितने ज़ोर से क्यों न चीखें मैं उनकी नहीं सुनूँगा।”

9

यरूशलम तबाह हो जाएगा

1 फिर मैंने अल्लाह की बुलंद आवाज़ सुनी, “यरूशलम की अदालत करीब आ गई है! आओ, हर एक अपना तबाहकुन हथियार पकड़कर खड़ा हो जाए!” 2 तब छः आदमी रब के घर के शिमाली दरवाजे में दाखिल हुए। हर एक अपना तबाहकुन हथियार थामे चल रहा था। उनके साथ एक और आदमी था जिसका लिबास कतान का था। उसके पटके से कातिब का सामान लटका हुआ था। यह आदमी करीब आकर पीतल की कुरबानगाह के पास खड़े हो गए।

3 इसराईल के ख़ुदा का जलाल अब तक क़रूबी फ़रिश्तों के ऊपर ठहरा हुआ था। अब वह वहाँ से उड़कर रब के घर की दहलीज़ के पास स्क गया। फिर रब कतान से मुल्ब्स उस मर्द से हमकलाम हुआ जिसके पटके से कातिब का सामान लटका हुआ था। 4 उसने फ़रमाया, “जा, यरूशलम शहर में से गुज़रकर हर एक के माथे पर निशान लगा दे जो बाशिंदों की तमाम मक़रूह हरकतों को देखकर आहो-ज़ारी करता है।” 5 मेरे सुनते सुनते रब ने दीगर आदमियों से कहा, “पहले आदमी के पीछे पीछे चलकर लोगों को मार डालो! न किसी पर तरस खाओ, न रहम करो 6 बल्कि बुज़ुर्गों को कुँवारे-कुँवारियों और बाल-बच्चों समेत मौत के घाट उतारो। सिर्फ़ उन्हें छोड़ना जिनके माथे पर निशान है। मेरे मक़दिस से शुरू करो!”

चुनौचे आदमियों ने उन बुज़ुर्गों से शुरू किया जो रब के घर के सामने खड़े थे। 7 फिर रब उनसे दुबारा हमकलाम हुआ, “रब के घर के सहनों को मक़तूलों से भरकर उस की बेहुरमती करो, फिर वहाँ से निकल जाओ!” वह निकल गए और शहर में से गुज़रकर लोगों को मार डालने लगे। 8 रब के घर के सहन में सिर्फ़ मुझे ही ज़िंदा छोड़ा गया था।

मैं औंधे मुँह गिरकर चीख उठा, “ऐ रब कादिरे-मुतलक़, क्या तू यरूशलम पर अपना ग़ज़ब नाज़िल करके इसराईल के तमाम बचे हुएों को मौत के घाट उतारेगा?” 9 रब ने जवाब दिया, “इसराईल और यहदाह के लोगों का कुसूर निहायत ही संगीन है। मुल्क में क़त्लो-ग़ारत आम है, और शहर नाइनसाफ़ी से भर गया है। क्योंकि लोग कहते हैं, ‘रब ने मुल्क को तर्क किया है, हम उसे नज़र ही नहीं आते।’ 10 इसलिए न मैं उन पर तरस खाऊँगा, न रहम करूँगा बल्कि उनकी हरकतों की मुनासिब सज़ा उनके सरों पर लाऊँगा।”

11 फिर कतान से मुल्ब्स वह आदमी लौट आया जिसके पटके से कातिब का सामान लटका हुआ था। उसने इत्तला दी, “जो कुछ तूने फ़रमाया वह मैंने पूरा किया है।”

10

1 मैंने उस गुंबद पर नज़र डाली जो क़रूबी फ़रिश्तों के सरों के ऊपर फैली हुई थी। उस पर संगे-लाजवर्द * का तख़्त-सा नज़र आया। 2 रब ने कतान से मुल्ब्स मर्द से फ़रमाया, “क़रूबी फ़रिश्तों के नीचे लगे पहियों के बीच में जा। वहाँ से दो मुठ्ठी-भर कोयले लेकर शहर पर बिखेर दे।” आदमी मेरे देखते देखते फ़रिश्तों के बीच में चला गया। 3 उस वक़्त क़रूबी फ़रिश्ते रब के घर के जुनूब में खड़े थे, और अंदरूनी सहन बादल से भरा हुआ था।

4 फिर रब का जलाल जो क़रूबी फ़रिश्तों के ऊपर ठहरा हुआ था वहाँ से उठकर रब के घर की दहलीज़ पर स्क गया। पूरा मकान बादल से भर गया बल्कि सहन भी रब के जलाल की आबो-ताब से भर गया। 5 क़रूबी फ़रिश्ते अपने परों को इतने ज़ोर से फड़फड़ा रहे थे कि उसका शोर बैरूनी सहन तक सुनाई दे रहा था। यों लग रहा था कि कादिरे-मुतलक़ ख़ुदा बोल रहा है। 6 जब रब ने कतान से मुल्ब्स आदमी को हुक्म दिया कि क़रूबी फ़रिश्तों के पहियों के बीच में से जलते हुए कोयले ले तो वह उनके दरमियान चलकर एक पहिये के पास खड़ा हुआ। 7 फिर क़रूबी फ़रिश्तों में से एक ने अपना हाथ बढ़ाकर बीच में जलनेवाले कोयलों में से कुछ ले लिया और आदमी के हाथों में डाल दिया। कतान से मुल्ब्स यह आदमी कोयले लेकर चला गया।

रब अपने घर को छोड़ देता है

† 8:14 तम्मूज़ मसोपुतामिया का एक देवता था जिसके पैरोकार समझते थे कि वह मौसमे-गरमा के इख़िताम पर हरियाली के साथ साथ मर जाता और मौसमे-बहार में दुबारा जी उठता है।

* 10:1 lapis lazuli

8 मैंने देखा कि कस्बी फरिश्तों के परों के नीचे कुछ है जो इनसानी हाथ जैसा लग रहा है। 9 हर फरिश्ते के पास एक पहिया था। पुखराज † से बने यह चार पहिये 10 एक जैसे थे। हर पहिये के अंदर एक और पहिया जावियाए-कायमा में घूम रहा था, 11 इसलिए यह मुड़े बगैर हर सूख इख्तियार कर सकते थे। जिस तरफ एक चल पड़ता उस तरफ बाकी भी मुड़े बगैर चलने लगते। 12 फरिश्तों के जिस्मों की हर जगह पर आँखें ही आँखें थीं। आँखें न सिर्फ सामने नज़र आई बल्कि उनकी पीठ, हाथों और परों पर भी बल्कि चारों पहियों पर भी। 13 तो भी यह पहिये ही थे, क्योंकि मैंने खुद सुना कि उनके लिए यही नाम इस्तेमाल हुआ।

14 हर फरिश्ते के चार चेहरे थे। पहला चेहरा कस्बी का, दूसरा आदमी का, तीसरा शेरबबर का और चौथा उकाब का चेहरा था। 15 फिर कस्बी फरिश्ते उड़ गए। वही जानदार थे जिन्हें मैं दरियाए-किबार के किनारे देख चुका था। 16 जब फरिश्ते हरकत में आ जाते तो पहिये भी चलने लगते, और जब फरिश्ते फड़फड़ाकर उड़ने लगते तो पहिये भी उनके साथ उड़ने लगते। 17 फरिश्तों के स्कने पर पहिये स्क जाते, और उनके उड़ने पर यह भी उड़ जाते, क्योंकि जानदारों की रूह उनमें थी।

18 फिर रब का जलाल अपने घर की दहलीज़ से हट गया और दुबारा कस्बी फरिश्तों के ऊपर आकर ठहर गया। 19 मेरे देखते देखते फरिश्ते अपने परों को फैलाकर चल पड़े। चलते चलते वह रब के घर के मशरिकी दरवाज़े के पास स्क गए। खुदाए-इसराईल का जलाल उनके ऊपर ठहरा रहा।

20 वही जानदार थे जिन्हें मैंने दरियाए-किबार के किनारे खुदाए-इसराईल के नीचे देखा था। मैंने जान लिया कि यह कस्बी फरिश्ते हैं। 21 हर एक के चार चेहरे और चार पर थे, और परों के नीचे कुछ नज़र आया जो इनसानी हाथों की मानिंद था। 22 उनके चेहरों की शक्लो-सूरत उन चेहरों की मानिंद थी जो मैंने दरियाए-किबार के किनारे देखे थे। चलते वक्त हर जानदार सीधा अपने किसी एक चेहरे का सूख इख्तियार करता था।

11

अल्लाह की यरूशलम के बुजुर्गों के लिए सख्त सज़ा

1 तब रूह मुझे उठाकर रब के घर के मशरिकी दरवाज़े के पास ले गया। वहाँ दरवाज़े पर 25 मर्द खड़े थे। मैंने देखा कि कौम के दो बुजुर्ग याज़नियाह बिन अज़्ज़ूर और फलतियाह बिन बिनायाह भी उनमें शामिल हैं। 2 रब ने फरमाया, “ऐ आदमज़ाद, यह वही मर्द हैं जो शरीर मनसूबे बाँध रहे और यरूशलम में बुरे मशवरे दे रहे हैं। 3 यह कहते हैं, ‘आनेवाले दिनों में घर तामीर करने की ज़रूरत नहीं। हमारा शहर तो देग है जबकि हम उसमें पकनेवाला बेहतरीन गोश्त हैं।’ 4 आदमज़ाद, चूँकि वह ऐसी बातें करते हैं इसलिए नबुव्वत कर! उनके खिलाफ नबुव्वत कर!”

5 तब रब का रूह मुझ पर आ ठहरा, और उसने मुझे यह पेश करने को कहा, “रब फरमाता है, ‘ऐ इसराईली कौम, तुम इस किस्म की बातें करते हो। मैं तो उन खयालात से खूब वाकिफ हूँ जो तुम्हारे दिलों से उभरते रहते हैं। 6 तुमने इस शहर में मुतअद्दिद लोगों को क़त्ल करके उस की गलियों को लाशों से भर दिया है।’

7 चुनौचे रब कादिरे-मुतलक फरमाता है, ‘बेशक शहर देग है, लेकिन तुम उसमें पकनेवाला अच्छा गोश्त नहीं होगे बल्कि वही जिनको तुमने उसके दरमियान क़त्ल किया है। तुम्हें मैं इस शहर से निकाल दूँगा। 8 जिस तलवार से तुम डरते हो, उसी को मैं तुम पर नाज़िल करूँगा।’ यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है। 9 मैं तुम्हें शहर से निकालूँगा और परदेसियों के हवाले करके तुम्हारी अदालत करूँगा। 10 तुम तलवार की ज़द में आकर मर जाओगे। इसराईल की हुदूद पर ही मैं तुम्हारी अदालत करूँगा। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ। 11 चुनौचे न यरूशलम शहर तुम्हारे लिए देग होगा, न तुम उसमें बेहतरीन गोश्त होगे बल्कि मैं इसराईल की हुदूद ही पर तुम्हारी अदालत करूँगा। 12 तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ, जिसके अहकाम के मुताबिक तुमने ज़िंदगी नहीं गुज़ारी। क्योंकि तुमने मेरे उसूलों की पैरवी नहीं की बल्कि अपनी पड़ोसी कौमों के उसूलों की।”

13 मैं अभी इस पेशगोई का एलान कर रहा था कि फलतियाह बिन बिनायाह फौत हुआ। यह देखकर मैं मुँह के बल गिर गया और बुलंद आवाज़ से चीख उठा, “हाय, हाय! ऐ रब कादिरे-मुतलक, क्या तू इसराईल के बचे-खुचे हिस्से को सरासर मिटाना चाहता है?”

अल्लाह इसराईल को बहाल करेगा

14 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 15 “ऐ आदमज़ाद, यरूशलम के बाशिंदे तेरे भाइयों, तेरे रिश्तेदारों और बाबल में जिलावतन हुए तमाम इसराईलियों के बारे में कह रहे हैं, ‘यह लोग रब से कहीं दूर हो गए हैं, अब इसराईल हमारे ही कब्जे में है।’ 16 जो इस किस्म की बातें करते हैं उन्हें जवाब दे, रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि जी हाँ, मैंने उन्हें दूर दूर भगा दिया, और अब वह दीगर कौमों के दरमियान ही रहते हैं। मैंने खुद उन्हें मुख्तलिफ ममालिक में मुंतशिर कर दिया, ऐसे इलाकों में जहाँ उन्हें मक़दिस में मेरे हुज़ूर आने का मौका थोड़ा ही मिलता है। 17 लेकिन रब कादिरे-मुतलक यह भी फरमाता है, ‘मैं तुम्हें दीगर कौमों में से निकाल लूँगा, तुम्हें उन मुल्कों से जमा करूँगा जहाँ मैंने तुम्हें मुंतशिर कर दिया था। तब मैं तुम्हें मुल्के-इसराईल दुबारा अता करूँगा।’

18 फिर वह यहाँ आकर तमाम मकरूह बुरत और धिनौनी चीज़ें दूर करेंगे। 19 उस वक्त मैं उन्हें नया दिल बख़्शकर उनमें नई रूह डालूँगा। मैं उनका संगीन दिल निकालकर उन्हें गोश्त-पोस्त का नरम दिल अता करूँगा। 20 तब वह मेरे अहकाम के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारेंगे और ध्यान

† 10:9 topas

से मेरी हिदायात पर अमल करेंगे। वह मेरी कौम होंगे, और मैं उनका खुदा हूँगा। ²¹ लेकिन जिन लोगों के दिल उनके धिनौने बुतों से लिपटे रहते हैं उनके सर पर मैं उनके ग़लत काम का मुनासिब अज़्र लाऊँगा। यह रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है।”

रब यरूशलम को छोड़ देता है

²² फिर कस्बी फ़रिश्तों ने अपने परों को फैलाया, उनके पहिये हरकत में आ गए और खुदाए-इसराईल का जलाल जो उनके ऊपर था ²³ उठकर शहर से निकल गया। चलते चलते वह यरूशलम के मशरिक में वाके पहाड़ पर ठहर गया। ²⁴ अल्लाह के रूह की अताकरदा इस रोया में रूह मुझे उठाकर मुल्के-बाबल के जिलावतनों के पास वापस ले गया। फिर रोया ख़त्म हुई, ²⁵ और मैंने जिलावतनों को सब कुछ सुनाया जो रब ने मुझे दिखाया था।

12

नबी सामान लपेटकर जिलावतनी की पेशगोई करता है

¹ रब मुझसे हमकलाम हुआ, ² “ऐ आदमज़ाद, तू एक सरकश कौम के दरमियान रहता है। गो उनकी आँखें हैं तो भी कुछ नहीं देखते, गो उनके कान हैं तो भी कुछ नहीं सुनते। क्योंकि यह कौम हटधर्म है।

³ ऐ आदमज़ाद, अब अपना सामान यों लपेट ले जिस तरह तुझे जिलावतन किया जा रहा हो। फिर दिन के वक़्त और उनके देखते देखते घर से खाना होकर किसी और जगह चला जा। शायद उन्हें समझ आए कि उन्हें जिलावतन होना है, हालाँकि यह कौम सरकश है। ⁴ दिन के वक़्त उनके देखते देखते अपना सामान घर से निकाल ले, यों जैसे तू जिलावतनी के लिए तैयारियाँ कर रहा हो। फिर शाम के वक़्त उनकी मौजूदगी में जिलावतन का-सा किरदार अदा करके खाना हो जा। ⁵ घर से निकलने के लिए दीवार में सूराख़ बना, फिर अपना सारा सामान उसमें से बाहर ले जा। सब इसके गवाह हों। ⁶ उनके देखते देखते अंधेरे में अपना सामान कंधे पर रखकर वहाँ से निकल जा। लेकिन अपना मुँह ढाँप ले ताकि तू मुल्क को देख न सके। लाज़िम है कि तू यह सब कुछ करे, क्योंकि मैंने मुकर्रर किया है कि तू इसराईली कौम को आगाह करने का निशान बन जाए।”

⁷ मैंने वैसा ही किया जैसा रब ने मुझे हुक्म दिया था। मैंने अपना सामान यों लपेट लिया जैसे मुझे जिलावतन किया जा रहा हो। दिन के वक़्त मैं उसे घर से बाहर ले गया, शाम को मैंने अपने हाथों से दीवार में सूराख़ बना लिया। लोगों के देखते देखते मैं सामान को अपने कंधे पर उठाकर वहाँ से निकल आया। उतने में अंधेरा हो गया था।

⁸ सुबह के वक़्त रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, ⁹ “ऐ आदमज़ाद, इस हटधर्म कौम इसराईल ने तुझसे पूछा कि तू क्या कर रहा है? ¹⁰ उन्हें जवाब दे, ‘रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि इस पैग़ाम का ताल्लुक यरूशलम के रईस और शहर में बसनेवाले तमाम इसराईलियों से है।’ ¹¹ उन्हें बता, ‘मैं तुम्हें आगाह करने का निशान हूँ। जो कुछ मैंने किया वह तुम्हारे साथ हो जाएगा। तुम कैदी बनकर जिलावतन हो जाओगे। ¹² जो रईस तुम्हारे दरमियान है वह अंधेरे में अपना सामान कंधे पर उठाकर चला जाएगा। दीवार में सूराख़ बनाया जाएगा ताकि वह निकल सके। वह अपना मुँह ढाँप लेगा ताकि मुल्क को न देख सके। ¹³ लेकिन मैं अपना जाल उस पर डाल दूँगा, और वह मेरे फंदे में फँस जाएगा। मैं उसे बाबल लाऊँगा जो बाबलियों के मुल्क में है, अगरचे वह उसे अपनी आँखों से नहीं देखेगा। वहीं वह वफ़ात पाएगा। ¹⁴ जितने भी मुलाज़िम और दस्ते उसके इर्दगिर्द होंगे उन सबको मैं हवा में उड़ाकर चारों तरफ़ मुंतशिर कर दूँगा। अपनी तलवार को मियान से खींचकर मैं उनके पीछे पड़ा रहूँगा। ¹⁵ जब मैं उन्हें दीगर अक्रवाम और मुख्तलिफ़ ममालिक में मुंतशिर करूँगा तो वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ। ¹⁶ लेकिन मैं उनमें से चंद एक को बचाकर तलवार, काल और मोहलक वबा की ज़द में नहीं आने दूँगा। क्योंकि लाज़िम है कि जिन अक्रवाम में भी वह जा बसें वहाँ वह अपनी मक़रूह हरकतें बयान करें। तब यह अक्रवाम भी जान लेंगी कि मैं ही रब हूँ।”

एक और निशान : हिज़कियेल का काँपना

¹⁷ रब मुझसे हमकलाम हुआ, ¹⁸ “ऐ आदमज़ाद, खाना खाते वक़्त अपनी रोटी को लरज़ते हुए खा और अपने पानी को पेशानी के मारे थरथराते हुए पी। ¹⁹ साथ साथ उम्मत को बता, ‘रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि मुल्के-इसराईल के शहर यरूशलम के बाशिंदे पेशानी में अपना खाना खाएँगे और दहशतज़दा हालत में अपना पानी पिँएँगे, क्योंकि उनका मुल्क तबाह और हर बरकत से ख़ाली हो जाएगा। और सबब उसके बाशिंदों का जुल्मो-तशद्दुद होगा। ²⁰ जिन शहरों में लोग अब तक आबाद हैं वह बरबाद हो जाएँगे, मुल्क वीरानो-सुनसान हो जाएगा। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ।”

अल्लाह का कलाम जल्द ही पूरा हो जाएगा

²¹ रब मुझसे हमकलाम हुआ, ²² “ऐ आदमज़ाद, यह कैसी कहावत है जो मुल्के-इसराईल में आम हो गई है? लोग कहते हैं, ‘ज्यों-ज्यों दिन गुज़रते जाते हैं त्यों-त्यों हर रोया ग़लत साबित होती जाती है।’ ²³ जवाब में उन्हें बता, ‘रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि मैं इस कहावत को ख़त्म करूँगा, आइंदा यह इसराईल में इस्तेमाल नहीं होगी।’ उन्हें यह भी बता, ‘वह वक़्त करीब ही है जब हर रोया पूरी हो जाएगी। ²⁴ क्योंकि आइंदा इसराईली कौम में न फ़रेबदेह रोया, न चापलूसी की पेशगोइयाँ पाई जाएँगी। ²⁵ क्योंकि मैं रब हूँ। जो कुछ मैं फ़रमाता हूँ वह वुजूद में आता है। ऐ सरकश कौम, देर नहीं होगी बल्कि तुम्हारे ही ऐयाम में मैं बात भी करूँगा और उसे पूरा भी करूँगा।’ यह रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है।”

26 रब मजीद मुझसे हमकलाम हुआ, 27 “ऐ आदमजाद, इसराईली कौम तेरे बारे में कहती है, ‘जो रोया यह आदमी देखता है वह बड़ी देर के बाद ही पूरी होगी, उस की पेशगोइयाँ दूर के मुस्तकबिल के बारे में हैं।’ 28 लेकिन उन्हें जवाब दे, ‘रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि जो कुछ भी मैं फरमाता हूँ उसमें मजीद देर नहीं होगी बल्कि वह जल्द ही पूरा होगा।’ यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।”

13

झूटे नबी हलाक हो जाएंगे

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमजाद, इसराईल के नाम-निहाद नबियों के खिलाफ नबुव्वत कर! जो नबुव्वत करते वक़्त अपने दिलों से उभरनेवाली बातें ही पेश करते हैं, उनसे कह,

‘रब का फरमान सुनो! 3 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि उन अहमक नबियों पर अफ़सोस जिन्हें अपनी ही रूह से तहरीक मिलती है और जो हकीकत में रोया नहीं देखते। 4 ऐ इसराईल, तेरे नबी खंडरात में लोमड़ियों की तरह आवारा फिर रहे हैं। 5 न कोई दीवार के रखनों में खड़ा हुआ, न किसी ने उस की मरम्मत की ताकि इसराईली कौम रब के उस दिन कायम रह सके जब जंग छिड़ जाएगी। 6 उनकी रोयाएँ धोका ही धोका, उनकी पेशगोइयाँ झूट ही झूट हैं। वह कहते हैं, “रब फरमाता है” गो रब ने उन्हें नहीं भेजा। ताज्जुब की बात है कि तो भी वह तबक्को करते हैं कि मैं उनकी पेशगोइयाँ पूरी होने दूँ! 7 हकीकत में तुम्हारी रोयाएँ धोका ही धोका और तुम्हारी पेशगोइयाँ झूट ही झूट हैं। तो भी तुम कहते हो, “रब फरमाता है” हालाँकि मैंने कुछ नहीं फरमाया।

8 चुनाँचे रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मैं तुम्हारी फ़रेबदेह बातों और झूटी रोयाओं की वजह से तुमसे निपट लूँगा। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है। 9 मैं अपना हाथ उन नबियों के खिलाफ़ बढ़ा दूँगा जो धोके की रोयाएँ देखते और झूटी पेशगोइयाँ सुनाते हैं। न वह मेरी कौम की मजलिस में शरीक होंगे, न इसराईली कौम की फ़हरिस्तों में दर्ज होंगे। मुल्के-इसराईल में वह कभी दाखिल नहीं होंगे। तब तुम जान लोगे कि मैं रब कादिरे-मुतलक हूँ। 10 वह मेरी कौम को ग़लत राह पर लाकर अमनो-अमान का एलान करते हैं अगरचे अमनो-अमान है नहीं। जब कौम अपने लिए कच्ची-सी दीवार बना लेती है तो यह नबी उस पर सफेदी फेर देते हैं। 11 लेकिन ऐ सफेदी करनेवालो, ख़बरदार! यह दीवार गिर जाएगी। मूसलाधार बारिश बरसेगी, ओले पड़ेगे और सख़्त आँधी उस पर टूट पड़ेगी। 12 तब दीवार गिर जाएगी, और लोग तंज़न तुमसे पूछेंगे कि अब वह सफेदी कहाँ है जो तुमने दीवार पर फेरी थी?

13 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मैं तैश में आकर दीवार पर ज़बरदस्त आँधी आने दूँगा, गुस्से में उस पर मूसलाधार बारिश और मोहलक ओले बरसा दूँगा। 14 मैं उस दीवार को ढा दूँगा जिस पर तुमने सफेदी फेरी थी, उसे ख़ाक में यों मिला दूँगा कि उस की बुनियाद नज़र आएगी। और जब वह गिर जाएगी तो तुम भी उस की ज़द में आकर तबाह हो जाओगे। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ। 15 यों मैं दीवार और उस की सफेदी करनेवालों पर अपना गुस्सा उतारूँगा। तब मैं तुमसे कहूँगा कि दीवार भी ख़त्म है और उस की सफेदी करनेवाले भी, 16 यानी इसराईल के वह नबी जिन्होंने यरूशलम को ऐसी पेशगोइयाँ और रोयाएँ सुनाई जिनके मुताबिक़ अमनो-अमान का दौर करीब ही है, हालाँकि अमनो-अमान का इमकान ही नहीं। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।’

17 ऐ आदमजाद, अब अपनी कौम की उन बेटियों का सामना कर जो नबुव्वत करते वक़्त वही बातें पेश करती हैं जो उनके दिलों से उभर आती हैं। उनके खिलाफ़ नबुव्वत करके 18 कह,

‘रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि उन औरतों पर अफ़सोस जो तमाम लोगों के लिए कलाई से बाँधनेवाले तावीज़-सी लेती हैं, जो लोगों को फँसाने के लिए छोटों और बड़ों के सरों के लिए परदे बना लेती हैं। ऐ औरतो, क्या तुम वाकई समझती हो कि मेरी कौम में से बाज़ को फाँस सकती और बाज़ को अपने लिए ज़िंदा छोड़ सकती हो? 19 मेरी कौम के दरमियान ही तुमने मेरी बेहुरमती की, और यह सिर्फ़ चंद एक मुट्ठी-भर जौ और रोटी के दो-चार टुकड़ों के लिए। अफ़सोस, मेरी कौम झूट सुनना पसंद करती है। इससे फ़ायदा उठाकर तुमने उसे झूट पेश करके उन्हें मार डाला जिन्हें मरना नहीं था और उन्हें ज़िंदा छोड़ा जिन्हें ज़िंदा नहीं रहना था।

20 इसलिए रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मैं तुम्हारे तावीज़ों से निपट लूँगा जिनके ज़रीए तुम लोगों को परिदों की तरह पकड़ लेती हो। मैं जादूगरी की यह चीज़ें तुम्हारे बाज़ुओं से नोचकर फाड़ डालूँगा और उन्हें रिहा करूँगा जिन्हें तुमने परिदों की तरह पकड़ लिया है। 21 मैं तुम्हारे परदों को फाड़कर हटा लूँगा और अपनी कौम को तुम्हारे हाथों से बचा लूँगा। आइंदा वह तुम्हारा शिकार नहीं रहेगी। तब तुम जान लोगी कि मैं ही रब हूँ।

22 तुमने अपने झूट से रास्तबाज़ों को दुख पहुँचाया, हालाँकि यह दुख मेरी तरफ़ से नहीं था। साथ साथ तुमने बेदीनों की हौसलाअफ़जाई की कि वह अपनी बुरी राहों से बाज़ न आएँ, हालाँकि वह बाज़ आने से बच जाते। 23 इसलिए आइंदा न तुम फ़रेबदेह रोया देखोगी, न दूसरों की किस्मत का हाल बताओगी। मैं अपनी कौम को तुम्हारे हाथों से छुटकारा दूँगा। तब तुम जान लोगी कि मैं ही रब हूँ।”

14

अल्लाह बुतपरस्ती का मुनासिब जवाब देगा

1 इसराईल के कुछ बुजुर्ग मुझसे मिलने आए और मेरे सामने बैठ गए। 2 तब रब मुझसे हमकलाम हुआ, 3 “ऐ आदमजाद, इन आदमियों के दिल अपने बुतों से लिपटे रहते हैं। जो चीजें उनके लिए ठोकर और गुनाह का बाइस हैं उन्हें उन्होंने अपने मुँह के सामने ही रखा है। तो फिर क्या मुनासिब है कि मैं उन्हें जवाब दूँ जब वह मुझसे दरियाफ्त करने आते हैं? 4 उन्हें बता, ‘रब कादिरे-मुतलक फरमाता है, यह लोग अपने बुतों से लिपटे रहते और वह चीजें अपने मुँह के सामने रखते हैं जो ठोकर और गुनाह का बाइस हैं। साथ साथ यह नबी के पास भी जाते हैं ताकि मुझसे मालूमात हासिल करें। जो भी इसराईली ऐसा करे उसे मैं खुद जो रब हूँ जवाब दूँगा, ऐसा जवाब जो उसके मुतअदिद बुतों के ऐन मुताबिक होगा। 5 मैं उनसे ऐसा सुलूक करूँगा ताकि इसराईली क्रौम के दिल को मजबूती से पकड़ लूँ। क्योंकि अपने बुतों की खातिर सबके सब मुझसे दूर हो गए हैं।’

6 चुनाँचे इसराईली क्रौम को बता, ‘रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि तौबा करो! अपने बुतों और तमाम मकरूह रस्मो-रिवाज से मुँह मोड़कर मेरे पास वापस आ जाओ। 7 उसके अंजाम पर ध्यान दो जो ऐसा नहीं करेगा, खाह वह इसराईली या इसराईल में रहनेवाला परदेसी हो। अगर वह मुझसे दूर होकर अपने बुतों से लिपट जाए और वह चीजें अपने सामने रखे जो ठोकर और गुनाह का बाइस हैं तो जब वह नबी की मारिफत मुझसे मालूमात हासिल करने की कोशिश करेगा तो मैं, रब उसे मुनासिब जवाब दूँगा। 8 मैं ऐसे शाख्स का सामना करके उससे यों निपट लूँगा कि वह दूसरों के लिए इब्रतअंगेज मिसाल बन जाएगा। मैं उसे यों मिटा दूँगा कि मेरी क्रौम में उसका नामो-निशान तक नहीं रहेगा। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ।

9 अगर किसी नबी को कुछ सुनाने पर उकसाया गया जो मेरी तरफ से नहीं था तो यह इसलिए हुआ कि मैं, रब ने खुद उसे उकसाया। ऐसे नबी के खिलाफ मैं अपना हाथ उठाकर उसे यों तबाह करूँगा कि मेरी क्रौम में उसका नामो-निशान तक नहीं रहेगा। 10 दोनों को उनके कुसूर की मुनासिब सज़ा मिलेगी, नबी को भी और उसे भी जो हिदायत पाने के लिए उसके पास आता है। 11 तब इसराईली क्रौम न मुझसे दूर होकर आवारा फिरेगी, न अपने आपको इन तमाम गुनाहों से आलूदा करेगी। वह मेरी क्रौम होंगे, और मैं उनका खुदा हूँगा। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।”

सिर्फ रास्तबाज़ ही बचे रहेंगे

12 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 13 “ऐ आदमजाद, फर्ज कर कि कोई मुल्क बेवफ़ा होकर मेरा गुनाह करे, और मैं काल के ज़रीए उसे सज़ा देकर उसमें से इनसानो-हैवान मिटा डालूँ। 14 खाह मुल्क में नूह, दानियाल और अय्यूब क्यों न बसते तो भी मुल्क न बचता। यह आदमी अपनी रास्तबाज़ी से सिर्फ अपनी ही जानों को बचा सकते। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।

15 या फर्ज कर कि मैं मजकूरा मुल्क में वहशी दरिदों को भेज दूँ जो इधर उधर फिरकर सबको फाड़ खाएँ। मुल्क वीरानो-सुनसान हो जाए और जंगली दरिदों की वजह से कोई उसमें से गुज़रने की ज़रूरत न करे। 16 मेरी हयात की कसम, खाह मजकूरा तीन रास्तबाज़ आदमी मुल्क में क्यों न बसते तो भी अकेले ही बचते। वह अपने बेटे-बेटियों को भी बचा न सकते बल्कि पूरा मुल्क वीरानो-सुनसान होता। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।

17 या फर्ज कर कि मैं मजकूरा मुल्क को जंग से तबाह करूँ, मैं तलवार को हुक्म दूँ कि मुल्क में से गुज़रकर इनसानो-हैवान को नेस्तो-नाबूद कर दे। 18 मेरी हयात की कसम, खाह मजकूरा तीन रास्तबाज़ आदमी मुल्क में क्यों न बसते वह अकेले ही बचते। वह अपने बेटे-बेटियों को भी बचा न सकते। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।

19 या फर्ज कर कि मैं अपना गुस्सा मुल्क पर उतारकर उसमें मोहलक वबा यों फैला दूँ कि इनसानो-हैवान सबके सब मर जाएँ। 20 मेरी हयात की कसम, खाह नूह, दानियाल और अय्यूब मुल्क में क्यों न बसते तो भी वह अपने बेटे-बेटियों को बचा न सकते। वह अपनी रास्तबाज़ी से सिर्फ अपनी ही जानों को बचाते। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।

21 अब यरूशलम के बारे में रब कादिरे-मुतलक का फरमान सुनो! यरूशलम का कितना बुरा हाल होगा जब मैं अपनी चार सख्त सज़ाएँ उस पर नाज़िल करूँगा। क्योंकि इनसानो-हैवान जंग, काल, वहशी दरिदों और मोहलक वबा की ज़द में आकर हलाक हो जाएंगे। 22 तो भी चंद एक बचेगें, कुछ बेटे-बेटियाँ जिलावतन होकर बाबल में तुम्हारे पास आएँगे। जब तुम उनका बुरा चाल-चलन और हरकतें देखोगे तो तुम्हें तसल्ली मिलेगी कि हर आफत मुनासिब थी जो मैं यरूशलम पर लाया। 23 उनका चाल-चलन और हरकतें देखकर तुम्हें तसल्ली मिलेगी, क्योंकि तुम जान लोगे कि जो कुछ भी मैंने यरूशलम के साथ किया वह बिलावजह नहीं था। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।”

15

यरूशलम अंगूर की बेल की बेकार लकड़ी है

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमजाद, अंगूर की बेल की लकड़ी किस लिहाज़ से जंगल की दीगर लकड़ियों से बेहतर है? 3 क्या यह किसी काम आ जाती है? क्या यह कम अज़ कम खूँटियाँ बनाने के लिए इस्तेमाल हो सकती है जिनसे चीजें लटकाई जा सकें? हरगिज़ नहीं! 4 उसे ईंधन के तौर पर आग में फेंका जाता है। इसके बाद जब उसके दोनों सिरे भस्म हुए हैं और बीच में भी आग लग गई है तो क्या वह किसी काम आ जाती है? 5 आग लगने से पहले भी बेकार थी, तो अब वह किस काम आएगी जब उसके दोनों सिरे भस्म हुए हैं बल्कि बीच में भी आग लग गई है?

6 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि यरूशलम के बाशिंदे अंगूर की बेल की लकड़ी जैसे हैं जिन्हें मैं जंगल के दरख्तों के दरमियान से निकालकर आग में फेंक देता हूँ। 7 क्योंकि मैं उनके खिलाफ उठ खड़ा हूँगा। गो वह आग से बच निकले हैं तो भी आखिरकार आग ही उन्हें भस्म करेगी। जब मैं उनके खिलाफ उठ खड़ा हूँगा तो तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ। 8 पूरे मुल्क को मैं वीरानो-सुनसान कर दूँगा, इसलिए कि वह बेवफा साबित हुए हैं। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।”

16

यरूशलम बेवफा औरत है

1 रब मुझे हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमजाद, यरूशलम के ज़हन में उस की मकसूह हरकतों की संजीदगी बिठाकर 3 एलान कर कि रब कादिरे-मुतलक फरमाता है, ‘ऐ यरूशलम बेटी, तेरी नसल मुल्के-कनान की है, और वहीं तू पैदा हुई। तेरा बाप अमोरी, तेरी माँ हिती थी। 4 पैदा होते वक़्त नाफ के साथ लगी नाल को काटकर दूर नहीं किया गया। न तुझे पानी से नहलाया गया, न तेरे जिस्म पर नमक मला गया, और न तुझे कपड़ों में लपेटा गया। 5 न किसी को इतना तरस आया, न किसी ने तुझ पर इतना रहम किया कि इन कामों में से एक भी करता। इसके बजाए तुझे खुले मैदान में फेंककर छोड़ दिया गया। क्योंकि जब तू पैदा हुई तो सब तुझे हकीर जानते थे।

6 तब मैं वहाँ से गुज़रा। उस वक़्त तू अपने खून में तड़प रही थी। तुझे इस हालत में देखकर मैं बोला, “जीती रह!” हाँ, तू अपने खून में तड़प रही थी जब मैं बोला, “जीती रह! 7 खेत में हरियाली की तरह फलती-फूलती जा!” तब तू फलती-फूलती हुई परवान चढ़ी। तू निहायत खूबसूरत बन गई। छातियाँ और बाल देखने में प्यारे लगे। लेकिन अभी तक तू नंगी और बरहना थी।

8 मैंने तुझे तेरे पास से गुज़रा तो देखा कि तू शादी के काबिल हो गई है। मैंने अपने लिबास का दामन तुझ पर बिछाकर तेरी बरहनगी को ढाँप दिया। मैंने कसम खाकर तेरे साथ अहद बाँधा और यों तेरा मालिक बन गया। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।

9 मैंने तुझे नहलाकर खून से साफ किया, फिर तेरे जिस्म पर तेल मला। 10 मैंने तुझे शानदार लिबास और चमड़े के नफ़ीस जूते पहनाए, तुझे बारीक कतान और क्रीमती कपड़े से मुलब्स किया। 11 फिर मैंने तुझे खूबसूरत जेवरात, चूड़ियों, हार, 12 नथ, बालियों और शानदार ताज से सजाया। 13 यों तू सोने-चाँदी से आरास्ता और बारीक कतान, रेशम और शानदार कपड़े से मुलब्स हुई। तेरी खुराक बेहतरीन मैदे, शहद और जैतून के तेल पर मुश्तमिल थी। तू निहायत ही खूबसूरत हुई, और होते होते मलिका बन गई।’ 14 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है, ‘तेरे हुस्न की शोहरत दीगर अक़वाम में फैल गई, क्योंकि मैंने तुझे अपनी शानो-शौकत में यों शरीक किया था कि तेरा हुस्न कामिल था।

15 लेकिन तूने क्या किया? तूने अपने हुस्न पर भरोसा रखा। अपनी शोहरत से फ़ायदा उठाकर तू ज़िनाकार बन गई। हर गुज़रनेवाले को तूने अपने आपको पेश किया, हर एक को तेरा हुस्न हासिल हुआ। 16 तूने अपने कुछ शानदार कपड़े लेकर अपने लिए रंगदार बिस्तर बनाया और उसे ऊँची जगहों पर बिछाकर ज़िना करने लगी। ऐसा न माज़ी में कभी हुआ, न आइंदा कभी होगा। 17 तूने वही नफ़ीस जेवरात लिए जो मैंने तुझे दिए थे और मेरी ही सोने-चाँदी से अपने लिए मर्दों के बुत ढालकर उनसे ज़िना करने लगी। 18 उन्हें अपने शानदार कपड़े पहनाकर तूने मेरा ही तेल और बखूर उन्हें पेश किया।’ 19 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है, ‘जो खुराक यानी बेहतरीन मैदा, जैतून का तेल और शहद मैंने तुझे दिया था उसे तूने उन्हें पेश किया ताकि उस की खुशबू उन्हें पसंद आए।

20 जिन बेटे-बेटियों को तूने मेरे हाँ जन्म दिया था उन्हें तूने कुरबान करके बुतों को खिलाया। क्या तू अपनी ज़िनाकारी पर इकतिफ़ा न कर सकी? 21 क्या ज़रूरत थी कि मेरे बच्चों को भी कत्ल करके बुतों के लिए जला दे? 22 ताज्ज़ुब है कि जब भी तू ऐसी मकसूह हरकतें और ज़िना करती थी तो तुझे एक बार भी जवानी का खयाल न आया, यानी वह वक़्त जब तू नंगी और बरहना हालत में अपने खून में तड़पती रही।’

23 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है, ‘अफ़सोस, तुझ पर अफ़सोस! अपनी बाकी तमाम शरारतों के अलावा 24 तूने हर चौक में बुतों के लिए कुरबानगाह तामीर करके हर एक के साथ ज़िना करने की जगह भी बनाई। 25 हर गली के कोने में तूने ज़िना करने का कमरा बनाया। अपने हुस्न की बेहुरमती करके तू अपनी इसमतफ़रोशी ज़ोरों पर लाई। हर गुज़रनेवाले को तूने अपना बदन पेश किया। 26 पहले तू अपने शहवतपरस्त पड़ोसी मिसर के साथ ज़िना करने लगी। जब तूने अपनी इसमतफ़रोशी को ज़ोरों पर लाकर मुझे मुश्तमिल किया 27 तो मैंने अपना हाथ तेरे खिलाफ़ बढ़ाकर तेरे इलाके को छोटा कर दिया। मैंने तुझे फ़िलिस्ती बेटियों के लालच के हवाले कर दिया, उनके हवाले जो तुझसे नफ़रत करती हैं और जिनको तेरे ज़िनाकाराना चाल-चलन पर शर्म आती है।

28 अब तक तेरी शहवत को तसकीन नहीं मिली थी, इसलिए तू असूरियों से ज़िना करने लगी। लेकिन यह भी तेरे लिए काफ़ी न था। 29 अपनी ज़िनाकारी में इज़ाफ़ा करके तू सौदागरों के मुल्क बाबल के पीछे पड़ गई। लेकिन यह भी तेरी शहवत के लिए काफ़ी नहीं था।’ 30 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है, ‘ऐसी हरकतें करके तू कितनी सरगम हुई! साफ़ जाहिर हुआ कि तू ज़बरदस्त कसबी है। 31 जब तूने हर चौक में बुतों की कुरबानगाह बनाई और हर गली के कोने में ज़िना करने का कमरा तामीर किया तो तू आम कसबी से मुख़लिफ़ थी। क्योंकि तूने अपने गाहकों से पैसे लेने से इनकार किया। 32 हाय, तू कैसी बदकार बीवी है! अपने शौहर पर तू दीगर मर्दों को तरजीह देती है। 33 हर कसबी को फ़ीस मिलती है, लेकिन तू तो अपने तमाम आशिकों को तोहफ़े देती है ताकि वह हर जगह से आकर तेरे साथ ज़िना करें। 34 इसमें तू दीगर कसबियों से फ़रक़ है। क्योंकि न गाहक तेरे पीछे भागते, न वह तेरी मुहब्बत का मुआवज़ा देते हैं बल्कि तू खुद उनके पीछे भागती और उन्हें अपने साथ ज़िना करने का मुआवज़ा देती है।’

35 ऐ कसबी, अब रब का फरमान सुन ले! 36 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है, 'तूने अपने आशिकों को अपनी बरहनगी दिखाकर अपनी इसमतफरोशी की, तूने मकसूह बुत बनाकर उनकी पूजा की, तूने उन्हें अपने बच्चों का खून कुरबान किया है। 37 इसलिए मैं तेरे तमाम आशिकों को इकट्ठा करूँगा, उन सबको जिन्हें तू पसंद आई, उन्हें भी जो तुझे प्यारे थे और उन्हें भी जिनसे तूने नफरत की। मैं उन्हें चारों तरफ से जमा करके तेरे खिलाफ भेजूँगा। तब मैं उनके सामने ही तेरे तमाम कपड़े उतारूँगा ताकि वह तेरी पूरी बरहनगी देखें। 38 मैं तेरी अदालत करके तेरी जिनाकारी और कातिलाना हरकतों का फैसला करूँगा। मेरा गुस्सा और मेरी गैरत तुझे खूबरेजी की सजा देगी।

39 मैं तुझे तेरे आशिकों के हवाले करूँगा, और वह तेरे बुतों की कुरबानगाहें उन कमरों समेत ढा देंगे जहाँ तू जिनाकारी करती रही है। वह तेरे कपड़े और शानदार जेवरात उतारकर तुझे उरियाँ और बरहना छोड़ देंगे। 40 वह तेरे खिलाफ जुलूस निकालेंगे और तुझे संगसार करके तलवार से टुकड़े टुकड़े कर देंगे। 41 तेरे घरों को जलाकर वह मुतअदिद औरतों के देखते देखते तुझे सजा देंगे। यों मैं तेरी जिनाकारी को रोक दूँगा, और आइंदा तू अपने आशिकों को जिना करने के पैसे नहीं दे सकेगी।

42 तब मेरा गुस्सा ठंडा हो जाएगा, और तू मेरी गैरत का निशाना नहीं रहेगी। मेरी नाराजी खत्म हो जाएगी, और मुझे दुबारा तसकीन मिलेगी।' 43 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है, 'मैं तेरे सर पर तेरी हरकतों का पूरा नतीजा लाऊँगा, क्योंकि तुझे जवानी में मेरी मदद की याद न रही बल्कि तू मुझे इन तमाम बातों से तैश दिलाती रही। बाक़ी तमाम धिनौनी हरकतें तेरे लिए काफ़ी नहीं थीं बल्कि तू जिना भी करने लगी।

44 तब लोग यह कहावत कहकर तेरा मज़ाक उड़ाएँगे, "जैसी माँ, वैसी बेटी!" 45 तू वाकई अपनी माँ की मानिंद है, जो अपने शौहर और बच्चों से सख्त नफरत करती थी। तू अपनी बहनों की मानिंद भी है, क्योंकि वह भी अपने शौहरों और बच्चों से सख्त नफरत करती थी। तेरी माँ हिंती और तेरा बाप अमोरी था। 46 तेरी बड़ी बहन सामरिया थी जो अपनी बेटियों के साथ तेरे शिमाल में आबाद थी। और तेरी छोटी बहन सदूम थी जो अपनी बेटियों के साथ तेरे जुनूब में रहती थी। 47 तू न सिर्फ़ उनके ग़लत नमूने पर चल पड़ी और उनकी-सी मकसूह हरकतें करने लगी बल्कि उनसे कहीं ज़्यादा बुरा काम करने लगी।' 48 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है, 'मेरी हयात की क़सम, तेरी बहन सदूम और उस की बेटियों से कभी इतना ग़लत काम सरज़द न हुआ जितना कि तुझसे और तेरी बेटियों से हुआ है। 49 तेरी बहन सदूम का क्या कुसूर था? वह अपनी बेटियों समेत मुतकब्बिर थी। गो उन्हें ख़ुराक की कसरत और आरामो-सुकून हासिल था तो भी वह मुसीबतज़दों और ग़रीबों का सहारा नहीं बनती थी। 50 वह मग़रूर थीं और मेरी मौजूदगी में ही धिनौना काम करती थीं। इसी वजह से मैंने उन्हें हटा दिया। तू खुद इसकी गवाह है। 51 सामरिया पर भी ग़ौर कर। जितने गुनाह तुझसे सरज़द हुए उनका आधा हिस्सा भी उससे न हुआ। अपनी बहनों की निसबत तूने कहीं ज़्यादा धिनौनी हरकतें की हैं। तेरे मुकाबले में तेरी बहनें फ़रिश्ते हैं। 52 चुनौचे अब अपनी ख़जालत को बरदाश्त कर। क्योंकि अपने गुनाहों से तू अपनी बहनों की जगह खड़ी हो गई है। तूने उनसे कहीं ज़्यादा काबिले-धिन काम किए हैं, और अब वह तेरे मुकाबले में मासूम बच्चे लगती हैं। शर्म खा खाकर अपनी स्सवाई को बरदाश्त कर, क्योंकि तुझसे ऐसे संगीन गुनाह सरज़द हुए हैं कि तेरी बहनें रास्तबाज़ ही लगती हैं।

तो भी रब वफ़ादार रहेगा

53 लेकिन एक दिन आएगा जब मैं सदूम, सामरिया, तुझे और तुम सबकी बेटियों को बहाल करूँगा। 54 तब तू अपनी स्सवाई बरदाश्त कर सकेगी और अपने सारे ग़लत काम पर शर्म खाएंगी। सदूम और सामरिया यह देखकर तसल्ली पाएँगी। 55 हाँ, तेरी बहनें सदूम और सामरिया अपनी बेटियों समेत दुबारा कायम हो जाएँगी। तू भी अपनी बेटियों समेत दुबारा कायम हो जाएगी।

56 पहले तू इतनी मग़रूर थी कि अपनी बहन सदूम का ज़िक्र तक नहीं करती थी। 57 लेकिन फिर तेरी अपनी बुराई पर रौशनी डाली गई, और अब तेरी तमाम पड़ोसनें तेरा ही मज़ाक उड़ाती हैं, खाह अदोमी हों, खाह फ़िलिस्ती। सब तुझे हकीर जानती हैं। 58 चुनौचे अब तुझे अपनी जिनाकारी और मकसूह हरकतों का नतीजा भुगतना पड़ेगा। यह रब का फरमान है।

59 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है, 'मैं तुझे मुनासिब सजा दूँगा, क्योंकि तूने मेरा वह अहद तोड़कर उस क़सम को हकीर जाना है जो मैंने तेरे साथ अहद बाँधते वक़्त खाई थी। 60 तो भी मैं वह अहद याद करूँगा जो मैंने तेरी जवानी में तेरे साथ बाँधा था। न सिर्फ़ यह बल्कि मैं तेरे साथ अबदी अहद कायम करूँगा। 61 तब तुझे वह ग़लत काम याद आएगा जो पहले तुझसे सरज़द हुआ था, और तुझे शर्म आएगी जब मैं तेरी बड़ी और छोटी बहनों को लेकर तेरे हवाले करूँगा ताकि वह तेरी बेटियाँ बन जाएँ। लेकिन यह सब कुछ इस वजह से नहीं होगा कि तू अहद के मुताबिक़ चलती रही है। 62 मैं खुद तेरे साथ अपना अहद कायम करूँगा, और तू जान लेगी कि मैं ही रब हूँ।' 63 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है, 'जब मैं तेरे तमाम गुनाहों को मुआफ़ करूँगा तब तुझे उनका खयाल आकर शर्मिंदगी महसूस होगी, और तू शर्म के मारे गुमसुम रहेगी।'

17

अंगूर की बेल और उकाब की तमसील

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2 'ऐ आदमज़ाद, इसराईली कौम को पहेली पेश कर, तमसील सुना दे। 3 उन्हें बता, 'रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि एक बड़ा उकाब उड़कर मुल्के-लुबनान में आया। उसके बड़े बड़े पर और लंबे लंबे पंख थे, उसके घने और रंगीन बालों-पर चमक रहे थे। लुबनान में उसने एक देवदार के दरख़्त की चोटी पकड़ ली 4 और उस की सबसे ऊँची शाख़ को तोड़कर ताजिरो के मुल्क में ले गया। वहाँ उसने उसे सौदागरों के शहर में लगा दिया। 5 फिर उकाब इसराईल में आया और वहाँ से कुछ बीज लेकर एक बड़े दरिया के किनारे

पर जरखेज ज़मीन में बो दिया। ⁶ तब अंगूर की बेल फूट निकली जो ज़्यादा ऊँची न हुई बल्कि चारों तरफ फैलती गई। शाखों का सूख उकाब की तरफ रहा जबकि उस की जड़ें ज़मीन में धँसती गईं। चुनाँचे अच्छी बेल बन गई जो फूटती फूटती नई शाखें निकालती गईं।

⁷ लेकिन फिर एक और बड़ा उकाब आया। उसके भी बड़े बड़े पर और घने घने बालो-पर थे। अब मैं क्या देखता हूँ, बेल दूसरे उकाब की तरफ सूख करने लगती है। उस की जड़ें और शाखें उस खेत में न रही जिसमें उसे लगाया गया था बल्कि वह दूसरे उकाब से पानी मिलने की उम्मीद रखकर उसी की तरफ फैलने लगी। ⁸ ताज्जुब यह था कि उसे अच्छी ज़मीन में लगाया गया था, जहाँ उसे कसरत का पानी हासिल था। वहाँ वह खूब फैलकर फल ला सकती थी, वहाँ वह ज़बरदस्त बेल बन सकती थी।

⁹ अब रब कादिरे-मुतलक पूछता है, 'क्या बेल की नशो-नुमा जारी रहेगी? हरगिज़ नहीं! क्या उसे जड़ से उखाड़कर फेंका नहीं जाएगा? ज़रूर! क्या उसका फल छीन नहीं लिया जाएगा? बेशक बल्कि आखिरकार उस की ताज़ा ताज़ा कोंपलें भी सबकी सब मुरझाकर खत्म हो जाएँगी। तब उसे जड़ से उखाड़ने के लिए न ज़्यादा लोगों, न ताकत की ज़रूरत होगी। ¹⁰ गो उसे लगाया गया है तो भी बेल की नशो-नुमा जारी नहीं रहेगी। ज्योंही मशरिकी लू उस पर चलेगी वह मुकम्मल तौर पर मुरझा जाएगी। जिस खेत में उसे लगाया गया वही वह खत्म हो जाएगी।'

¹¹ रब मुझसे मज़ीद हमकलाम हुआ, ¹² "इस सरकश क्रौम से पूछ, 'क्या तुझे इस तमसील की समझ नहीं आई?' तब उन्हें इसका मतलब समझा दे। 'बाबल के बादशाह ने यरूशलम पर हमला किया। वह उसके बादशाह और अफ़सरों को गिरफ़्तार करके अपने मुल्क में ले गया। ¹³ उसने यहूदाह के शाही खानदान में से एक को चुन लिया और उसके साथ अहद बाँधकर उसे तरख़ पर बिठा दिया। नए बादशाह ने बाबल से वफ़ादार रहने की कसम खाई। बाबल के बादशाह ने यहूदाह के राहनुमाओं को भी जिलावतन कर दिया ¹⁴ ताकि मुल्के-यहूदाह और उसका नया बादशाह कमज़ोर रहकर सरकश होने के काबिल न बनें बल्कि उसके साथ अहद कायम रखकर खुद कायम रहें। ¹⁵ तो भी यहूदाह का बादशाह बागी हो गया और अपने कासिद मिसर भेजे ताकि वहाँ से घोड़े और फ़ौजी मँगवाएँ। क्या उसे कामयाबी हासिल होगी? क्या जिसने ऐसी हरकतें की हैं बच निकलेगा? हरगिज़ नहीं! क्या जिसने अहद तोड़ लिया है वह बचेगा? हरगिज़ नहीं!

¹⁶ रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि मेरी हयात की कसम, उस शख्स ने कसम के तहत शाहे-बाबल से अहद बाँधा है, लेकिन अब उसने यह कसम हकीर जानकर अहद को तोड़ डाला है। इसलिए वह बाबल में वफ़ात पाएगा, उस बादशाह के मुल्क में जिसने उसे तरख़ पर बिठाया था। ¹⁷ जब बाबल की फ़ौज यरूशलम के इर्दगिर्द पुश्ते और बुर्ज बनाकर उसका मुहासरा करेगी ताकि बहुतों को मार डाले तो फिरौन अपनी बड़ी फ़ौज और मुतअद्दिद फ़ौजियों को लेकर उस की मदद करने नहीं आएगा। ¹⁸ क्योंकि यहूदाह के बादशाह ने अहद को तोड़कर वह कसम हकीर जानी है जिसके तहत यह बाँधा गया। गो उसने शाहे-बाबल से हाथ मिलाकर अहद की तसदीक की थी तो भी बेवफ़ा हो गया, इसलिए वह नहीं बचेगा। ¹⁹ रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि मेरी हयात की कसम, उसने मेरे ही अहद को तोड़ डाला, मेरी ही कसम को हकीर जाना है। इसलिए मैं अहद तोड़ने के तमाम नतायज उसके सर पर लाऊँगा। ²⁰ मैं उस पर अपना जाल डाल दूँगा, उसे अपने फंदे में पकड़ लूँगा। चूँकि वह मुझसे बेवफ़ा हो गया है इसलिए मैं उसे बाबल ले जाकर उस की अदालत करूँगा। ²¹ उसके बेहतरीन फ़ौजी सब मर जाएंगे, और जितने बच जाएंगे वह चारों तरफ़ मुंतशिर हो जाएंगे। तब तुम जान लोगे कि मैं, रब ने यह सब कुछ फ़रमाया है।

²² रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि अब मैं खुद देवदार के दरख़्त की चोटी से नरमो-नाज़ुक कोंपल तोड़कर उसे एक बुलंदो-बाला पहाड़ पर लगा दूँगा। ²³ और जब मैं उसे इसराईल की बुलंदियों पर लगा दूँगा तो उस की शाखें फूट निकलेंगी, और वह फल लाकर शानदार दरख़्त बनेगा। हर किस्म के परिदे उसमें बसेरा करेंगे, सब उस की शाखों के साय में पनाह लेंगे। ²⁴ तब मुल्क के तमाम दरख़्त जान लेंगे कि मैं रब हूँ। मैं ही ऊँचे दरख़्त को खाक में मिला देता, और मैं ही छोटे दरख़्त को बड़ा बना देता हूँ। मैं ही सायादार दरख़्त को सूखने देता और मैं ही सूखे दरख़्त को फलने फूलने देता हूँ। यह मेरा, रब का फ़रमान है, और मैं यह करूँगा भी।'

18

हर एक को सिर्फ़ अपने ही आमाल की सज़ा मिलेगी

¹ रब मुझसे हमकलाम हुआ, ² "तुम लोग मुल्के-इसराईल के लिए यह कहावत क्यों इस्तेमाल करते हो, 'वालिदैन ने खट्टे अंगूर खाए, लेकिन उनके बच्चों ही के दाँत खट्टे हो गए हैं।' ³ रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि मेरी हयात की कसम, आइंदा तुम यह कहावत इसराईल में इस्तेमाल नहीं करोगे! ⁴ हर इन्सान की जान मेरी ही है, खाह बाप की हो या बेटे की। जिसने गुनाह किया है सिर्फ़ उसी को सज़ाए-मौत मिलेगी।

⁵ लेकिन उस रास्तबाज़ का मामला फ़रक़ है जो रास्ती और इन्साफ़ की राह पर चलते हुए ⁶ न ऊँची जगहों की नाजायज़ कुरबानियाँ खाता, न इसराईली क्रौम के बुतों की पूजा करता है। न वह अपने पड़ोसी की बीवी की बेहुरमती करता, न माहवारी के दौरान किसी औरत से हमबिसतर होता है। ⁷ वह किसी पर जुल्म नहीं करता। अगर कोई ज़मानत देकर उससे कर्ज़ा ले तो पैसे वापस मिलने पर वह ज़मानत वापस कर देता है। वह चोरी नहीं करता बल्कि भूकों को खाना खिलाता और ग़नों को कपड़े पहनाता है। ⁸ वह किसी से भी सूद नहीं लेता। वह ग़लत काम करने से ग़ुरेज़ करता और झगड़नेवालों का मुसिफ़ाना फ़ैसला करता है। ⁹ वह मेरे कवायद के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारता और वफ़ादारी से मेरे अहक़ाम पर अमल करता है। ऐसा शख्स रास्तबाज़ है, और वह यकीनन ज़िंदा रहेगा। यह रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है।

10 अब फर्ज करो कि उसका एक ज़ालिम बेटा है जो कातिल है और वह कुछ करता है 11 जिससे उसका बाप गुरेज़ करता था। वह ऊँची जगहों की नाजायज़ कुरबानियाँ खाता, अपने पड़ोसी की बीवी की बेहुरमती करता, 12 गरीबों और ज़स्तरतमंदों पर जुल्म करता और चोरी करता है। जब कर्ज़दार कर्ज़ अदा करे तो वह उसे ज़मानत वापस नहीं देता। वह बुतों की पूजा बल्कि कई किस्म की मक़रूह हरकतें करता है। 13 वह सूद भी लेता है। क्या ऐसा आदमी ज़िंदा रहेगा? हरगिज़ नहीं! इन तमाम मक़रूह हरकतों की बिना पर उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी। वह खुद अपने गुनाहों का ज़िम्मादार ठहरेगा।

14 लेकिन फर्ज करो कि इस बेटे के हों बेटा पैदा हो जाए। गो बेटा सब कुछ देखता है जो उसके बाप से सरज़द होता है तो भी वह बाप के ग़लत नमूने पर नहीं चलता। 15 न वह ऊँची जगहों की नाजायज़ कुरबानियाँ खाता, न इसराईली क़ौम के बुतों की पूजा करता है। वह अपने पड़ोसी की बीवी की बेहुरमती नहीं करता 16 और किसी पर भी जुल्म नहीं करता। अगर कोई ज़मानत देकर उससे कर्ज़ ले तो पैसे वापस मिलने पर वह ज़मानत लौटा देता है। वह चोरी नहीं करता बल्कि भूकों को खाना खिलाता और नंगों को कपड़े पहनाता है। 17 वह ग़लत काम करने से गुरेज़ करके सूद नहीं लेता। वह मेरे क़वायद के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारता और मेरे अहक़ाम पर अमल करता है। ऐसे शख्स को अपने बाप की सज़ा नहीं भुगतनी पड़ेगी। उसे सज़ाए-मौत नहीं मिलेगी, हालाँकि उसके बाप ने मज़क़ूरा गुनाह किए हैं। नहीं, वह यकीनन ज़िंदा रहेगा। 18 लेकिन उसके बाप को ज़स्तर उसके गुनाहों की सज़ा मिलेगी, वह यकीनन मरेगा। क्योंकि उसने लोगों पर जुल्म किया, अपने भाई से चोरी की और अपनी ही क़ौम के दरमियान बुरा काम किया।

19 लेकिन तुम लोग एतराज़ करते हो, 'बेटा बाप के कुसूर में क्यों न शरीक हो? उसे भी बाप की सज़ा भुगतनी चाहिए।' जवाब यह है कि बेटा तो रास्तबाज़ और इनसाफ़ की राह पर चलता रहा है, वह एहतियात से मेरे तमाम अहक़ाम पर अमल करता रहा है। इसलिए लाज़िम है कि वह ज़िंदा रहे। 20 जिससे गुनाह सरज़द हुआ है सिर्फ़ उसे ही मरना है। लिहाज़ा न बेटे को बाप की सज़ा भुगतनी पड़ेगी, न बाप को बेटे की। रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़ी का अज़्र पाएगा, और बेदीन अपनी बेदीनी का।

21 तो भी अगर बेदीन आदमी अपने गुनाहों को तर्क करे और मेरे तमाम क़वायद के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारकर रास्तबाज़ी और इनसाफ़ की राह पर चल पड़े तो वह यकीनन ज़िंदा रहेगा, वह मरेगा नहीं। 22 जितने भी ग़लत काम उससे सरज़द हुए हैं उनका हिसाब मैं नहीं लूँगा बल्कि उसके रास्तबाज़ चाल-चलन का लिहाज़ करके उसे ज़िंदा रहने दूँगा। 23 रब कादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि क्या मैं बेदीन की हलाकत देखकर खुश होता हूँ? हरगिज़ नहीं, बल्कि मैं चाहता हूँ कि वह अपनी बुरी राहों को छोड़कर ज़िंदा रहे।

24 इसके बरअक्स क्या रास्तबाज़ ज़िंदा रहेगा अगर वह अपनी रास्तबाज़ ज़िंदगी तर्क करे और गुनाह करके वही काबिले-घिन हरकतें करने लगे जो बेदीन करते हैं? हरगिज़ नहीं! जितना भी अच्छा काम उसने किया उसका मैं ख़याल नहीं करूँगा बल्कि उस की बेवफ़ाई और गुनाहों का। उन्हीं की वजह से उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी।

25 लेकिन तुम लोग दावा करते हो कि जो कुछ रब करता है वह ठीक नहीं। ऐ इसराईली क़ौम, सुनो! यह कैसी बात है कि मेरा अमल ठीक नहीं? अपने ही आमांल पर ग़ौर करो! वही दुस्त नहीं। 26 अगर रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़ ज़िंदगी तर्क करके गुनाह करे तो वह इस बिना पर मर जाएगा। अपनी नारास्ती की वजह से ही वह मर जाएगा। 27 इसके बरअक्स अगर बेदीन अपनी बेदीन ज़िंदगी तर्क करके रास्ती और इनसाफ़ की राह पर चलने लगे तो वह अपनी जान को छुड़ाएगा। 28 क्योंकि अगर वह अपना कुसूर तसलीम करके अपने गुनाहों से मुँह मोड़ ले तो वह मरेगा नहीं बल्कि ज़िंदा रहेगा। 29 लेकिन इसराईली क़ौम दावा करती है कि जो कुछ रब करता है वह ठीक नहीं। ऐ इसराईली क़ौम, यह कैसी बात है कि मेरा अमल ठीक नहीं? अपने ही आमांल पर ग़ौर करो! वही दुस्त नहीं।

30 इसलिए रब कादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ इसराईल की क़ौम, मैं तेरी अदालत करूँगा, हर एक का उसके कामों के मुवाफ़िक़ फैसला करूँगा। चुनौचे ख़बरदार! तौबा करके अपनी बेवफ़ा हरकतों से मुँह फेरो, वरना तुम गुनाह में फँसकर गिर जाओगे। 31 अपने तमाम ग़लत काम तर्क करके नया दिल और नई रूह अपना लो। ऐ इसराईलियो, तुम क्यों मर जाओ? 32 क्योंकि मैं किसी की मौत से खुश नहीं होता। चुनौचे तौबा करो, तब ही तुम ज़िंदा रहोगे। यह रब कादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।

19

इसराईली बुजुर्गों पर मातमी गीत

1 ऐ नबी, इसराईल के रईसों पर मातमी गीत गा,
2 'तेरी माँ कितनी ज़बरदस्त शेरनी थी। जवान शेरबबरो के दरमियान ही अपना घर बनाकर उसने अपने बच्चों को पाल लिया।
3 एक बच्चे को उसने खास तरबियत दी। जब बड़ा हुआ तो जानवरों को फाड़ना सीख लिया, बल्कि इनसान भी उस की ख़ुराक बन गए।
4 इसकी ख़बर दीगर अक़वाम तक पहुँची तो उन्होंने उसे अपने गढ़ में पकड़ लिया। वह उस की नाक में कौंटे डालकर उसे मिसर में घसीट ले गए।

5 जब शेरनी के इस बच्चे पर से उम्मीद जाती रही तो उसने दीगर बच्चों में से एक को चुनकर उसे खास तरबियत दी।

6 यह भी ताकतवर होकर दीगर शेरों में घूमने फिरने लगा। उसने जानवरों को फाड़ना सीख लिया, बल्कि इनसान भी उस की ख़ुराक बन गए।

7 उनके किलों को गिराकर उसने उनके शहरों को खाक में मिला दिया। उस की दहाड़ती आवाज़ से मुल्क बाशिनदों समेत खौफ़ज़दा हो गया।
 8 तब इर्दगिर्द के सबों में बसनेवाली अक़वाम उससे लड़ने आईं। उन्होंने अपना जाल उस पर डाल दिया, उसे अपने गढ़े में पकड़ लिया।
 9 वह उस की गरदन में पट्टा और नाक में काँटे डालकर उसे शाहे-बाबल के पास घसीट ले गए। वहाँ उसे कैद में डाला गया ताकि आइंदा इसराईल के पहाड़ों पर उस की गरजती आवाज़ सुनाई न दे।

10 तेरी माँ पानी के किनारे लगाई गई अंगूर की-सी बेल थी। बेल कसरत के पानी के बाइस फलदार और शाखदार थी।
 11 उस की शाखें इतनी मज़बूत थीं कि उनसे शाही असा बन सकते थे। वह बाक़ी पौदों से कहीं ज़्यादा ऊँची थी बल्कि उस की शाखें दूर तक नज़र आती थीं।
 12 लेकिन आखिरकार लोगों ने तैश में आकर उसे उखाड़कर फेंक दिया। मशरिकी लू ने उसका फल मुरझाने दिया। सब कुछ उतारा गया, लिहाज़ा वह सूख गया और उसका मज़बूत तना नज़रे-आतिश हुआ।
 13 अब बेल को रेगिस्तान में लगाया गया है, वहाँ जहाँ ख़ुशक और प्यासी ज़मीन होती है।
 14 उसके तने की एक टहनी से आग ने निकलकर उसका फल भस्म कर दिया। अब कोई मज़बूत शाख नहीं रही जिससे शाही असा बन सके।”

दर्जे-बाला गीत मातमी है और आहो-ज़ारी करने के लिए इस्तेमाल हुआ है।

20

इसराईल की मुसलसल बेवफ़ाई

1 यहूदाह के बादशाह यहूयाकीन की जिलावतनी के सातवें साल में इसराईली क्रौम के कुछ बुजुर्ग मेरे पास आए ताकि रब से कुछ दरियाफ़्त करें। पाँचवें महीने का दसवाँ दिन * था। वह मेरे सामने बैठ गए। 2 तब रब मुझसे हमकलाम हुआ, 3 “ऐ आदमज़ाद, इसराईल के बुजुर्गों को बता,

‘रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि क्या तुम मुझसे दरियाफ़्त करने आए हो? मेरी हयात की क़सम, मैं तुम्हें कोई जवाब नहीं दूँगा! यह रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है।’

4 ऐ आदमज़ाद, क्या तू उनकी अदालत करने के लिए तैयार है? फिर उनकी अदालत कर! उन्हें उनके बापदादा की काबिले-घिन हरकतों का एहसास दिला। 5 उन्हें बता, ‘रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि इसराईली क्रौम को चुनते वक़्त मैंने अपना हाथ उठाकर उससे क़सम खाई। मुल्के-मिसर में ही मैंने अपने आपको उन पर ज़ाहिर किया और क़सम खाकर कहा कि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। 6 यह मेरा अटल वादा है कि मैं तुम्हें मिसर से निकालकर एक मुल्क में पहुँचा दूँगा जिसका जायज़ा मैं तुम्हारी खातिर ले चुका हूँ। यह मुल्क दीगर तमाम ममालिक से कहीं ज़्यादा ख़ूबसूरत है, और इसमें दूध और शहद की कसरत है। 7 उस वक़्त मैंने इसराईलियों से कहा, “हर एक अपने धिनौने बुतों को फेंक दे! मिसर के देवताओं से लिपटे न रहो, क्योंकि उनसे तुम अपने आपको नापाक कर रहे हो। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।”

8 लेकिन वह मुझसे बागी हुए और मेरी सुनने के लिए तैयार न थे। किसी ने भी अपने बुतों को न फेंका बल्कि वह इन धिनौनी चीज़ों से लिपटे रहे और मिसरी देवताओं को तर्क न किया। यह देखकर मैं वहीं मिसर में अपना ग़ज़ब उन पर नाज़िल करना चाहता था। उसी वक़्त मैं अपना गुस्सा उन पर उतारना चाहता था। 9 लेकिन मैं बाज़ रहा, क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि जिन अक़वाम के दरमियान इसराईली रहते थे उनके सामने मेरे नाम की बेहुरमती हो जाए। क्योंकि उन क्रौमों की मौजूदगी में ही मैंने अपने आपको इसराईलियों पर ज़ाहिर करके वादा किया था कि मैं तुम्हें मिसर से निकाल लाऊँगा।

10 चुनौचे मैं उन्हें मिसर से निकालकर रेगिस्तान में लाया। 11 वहाँ मैंने उन्हें अपनी हिदायात दी, वह अहक़ाम जिनकी पैरवी करने से इनसान जीता रहता है। 12 मैंने उन्हें सबत का दिन भी अता किया। मैं चाहता था कि आराम का यह दिन मेरे उनके साथ अहद का निशान हो, कि इससे लोग जान लें कि मैं रब ही उन्हें मुक़द्दस बनाता हूँ।

13 लेकिन रेगिस्तान में भी इसराईली मुझसे बागी हुए। उन्होंने मेरी हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी न गुज़ारी बल्कि मेरे अहक़ाम को मुस्तरद कर दिया, हालाँकि इनसान उनकी पैरवी करने से ही जीता रहता है। उन्होंने सबत की भी बड़ी बेहुरमती की। यह देखकर मैं अपना ग़ज़ब उन पर नाज़िल करके उन्हें वहीं रेगिस्तान में हलाक़ करना चाहता था। 14 ताहम मैं बाज़ रहा, क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि उन अक़वाम के सामने मेरे नाम की बेहुरमती हो जाए जिनके देखते देखते मैं इसराईलियों को मिसर से निकाल लाया था। 15 चुनौचे मैंने यह करने के बजाए अपना हाथ उठाकर क़सम खाई, “मैं तुम्हें उस मुल्क में नहीं ले जाऊँगा जो मैंने तुम्हारे लिए मुक़र्रर किया था, हालाँकि उसमें दूध और शहद की कसरत है और वह दीगर तमाम ममालिक की निसबत कहीं ज़्यादा ख़ूबसूरत है। 16 क्योंकि तुमने मेरी हिदायात को रद्द करके मेरे अहक़ाम के मुताबिक़ ज़िंदगी न गुज़ारी बल्कि सबत के दिन की भी बेहुरमती की। अभी तक तुम्हारे दिल बुतों से लिपटे रहते हैं।”

* 20:1 14 अगस्त।

17 लेकिन एक बार फिर मैंने उन पर तरस खाया। न मैंने उन्हें तबाह किया, न पूरी कौम को रेगिस्तान में मिटा दिया। 18 रेगिस्तान में ही मैंने उनके बेटों को आगाह किया, “अपने बापदादा के क़वायद के मुताबिक़ ज़िंदगी मत गुज़ारना। न उनके अहक़ाम पर अमल करो, न उनके बुतों की पूजा से अपने आपको नापाक करो। 19 मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। मेरी हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारो और एहतियात से मेरे अहक़ाम पर अमल करो। 20 मेरे सबत के दिन आराम करके उन्हें मुक़द्दस मानो ताकि वह मेरे साथ बँधे हुए अहद का निशान रहें। तब तुम जान लोगे कि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।”

21 लेकिन यह बच्चे भी मुझसे बागी हुए। न उन्होंने मेरी हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी, न एहतियात से मेरे अहक़ाम पर अमल किया, हालाँकि इनसान उनकी पैरवी करने से ही जीता रहता है। उन्होंने मेरे सबत के दिनों की भी बेहुरमती की। यह देखकर मैं अपना गुस्सा उन पर नाज़िल करके उन्हें वहीं रेगिस्तान में तबाह करना चाहता था। 22 लेकिन एक बार फिर मैं अपने हाथ को रोककर बाज़ रहा, क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि उन अक़वाम के सामने मेरे नाम की बेहुरमती हो जाए जिनके देखते देखते मैं इसराईलियों को मिस्र से निकाल लाया था। 23 चुनौचे मैंने यह करने के बजाए अपना हाथ उठाकर क़सम खाई, “मैं तुम्हें दीगर अक़वामो-ममालिक में मुंतशिर करूँगा, 24 क्योंकि तुमने मेरे अहक़ाम की पैरवी नहीं की बल्कि मेरी हिदायात को रद्द कर दिया। गो मैंने सबत का दिन मानने का हुक्म दिया था तो भी तुमने आराम के इस दिन की बेहुरमती की। और यह भी काफ़ी नहीं था बल्कि तुम अपने बापदादा के बुतों के भी पीछे लगे रहे।”

25 तब मैंने उन्हें ऐसे अहक़ाम दिए जो अच्छे नहीं थे, ऐसी हिदायात जो इनसान को जीने नहीं देती। 26 नीज़, मैंने होने दिया कि वह अपने पहलौठों को क़ुरबान करके अपने आपको नापाक करें। मक़सद यह था कि उनके रोंगटे खड़े हो जाएँ और वह जान लें कि मैं ही रब हूँ।

27 चुनौचे ऐ आदमज़ाद, इसराईली कौम को बता, ‘रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि तुम्हारे बापदादा ने इसमें भी मेरी तक़फ़ीर की कि वह मुझसे बेवफ़ा हुए। 28 मैंने तो उनसे मुल्के-इसराईल देने की क़सम खाकर वादा किया था। लेकिन ज्योंही मैं उन्हें उसमें लाया तो जहाँ भी कोई ऊँची जगह या सायादार दरख़्त नज़र आया वहाँ वह अपने जानवरों को ज़बह करने, तैश दिलानेवाली क़ुरबानियाँ चढ़ाने, खुशबूदार बख़ूर जलाने और मैं की नज़रें पेश करने लगे। 29 मैंने उनका सामना करके कहा, “यह किस तरह की ऊँची जगहें हैं जहाँ तुम जाते हो?” आज तक यह क़ुरबानगाहें ऊँची जगहें कहलाती हैं।’

30 ऐ आदमज़ाद, इसराईली कौम को बता, ‘रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि क्या तुम अपने बापदादा की हरकतें अपनाकर अपने आपको नापाक करना चाहते हो? क्या तुम भी उनके धिनौने बुतों के पीछे लगकर ज़िना करना चाहते हो? 31 क्योंकि अपने नज़राने पेश करने और अपने बच्चों को क़ुरबान करने से तुम अपने आपको अपने बुतों से आलूदा करते हो। ऐ इसराईली कौम, आज तक यही तुम्हारा रवैया है! तो फिर मैं क्या करूँ? क्या मुझे तुम्हें जवाब देना चाहिए जब तुम मुझसे कुछ दरियाफ़्त करने के लिए आते हो? हरगिज़ नहीं! मेरी हयात की क़सम, मैं तुम्हें जवाब में कुछ नहीं बताऊँगा। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।

अल्लाह अपनी कौम को वापस लाएगा

32 तुम कहते हो, “हम दीगर कौमों की मानिंद होना चाहते, दुनिया के दूसरे ममालिक की तरह लकड़ी और पत्थर की चीज़ों की इबादत करना चाहते हैं।” गो यह ख़याल तुम्हारे ज़हनो में उभर आया है, लेकिन ऐसा कभी नहीं होगा। 33 रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मेरी हयात की क़सम, मैं बड़े गुस्से और जोरदार तरीक़े से अपनी कुदरत का इज़हार करके तुम पर हुक्म करूँगा। 34 मैं बड़े गुस्से और जोरदार तरीक़े से अपनी कुदरत का इज़हार करके तुम्हें उन कौमों और ममालिक से निकालकर जमा करूँगा जहाँ तुम मुंतशिर हो गए हो। 35 तब मैं तुम्हें अक़वाम के रेगिस्तान में लाकर तुम्हारे रूबरू तुम्हारी अदालत करूँगा। 36 जिस तरह मैंने तुम्हारे बापदादा की अदालत मिस्र के रेगिस्तान में की उसी तरह तुम्हारी भी अदालत करूँगा। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है। 37 जिस तरह ग़ल्लाबान भेड़-बकरियों को अपनी लाठी के नीचे से गुज़रने देता है ताकि उन्हें गिन ले उसी तरह मैं तुम्हें अपनी लाठी के नीचे से गुज़रने दूँगा और तुम्हें अहद के बंधन में शरीक़ करूँगा। 38 जो बेवफ़ा होकर मुझसे बागी हो गए हैं उन्हें मैं तुमसे दूर कर दूँगा ताकि तुम पाक हो जाओ। अगरचे मैं उन्हें भी उन दीगर ममालिक से निकाल लाऊँगा जिनमें वह रह रहे हैं तो भी वह मुल्के-इसराईल में दाखिल नहीं होंगे। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ।

39 ऐ इसराईली कौम, तुम्हारे बारे में रब क़ादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि जाओ, हर एक अपने बुतों की इबादत करता जाए! लेकिन एक वक़्त आएगा जब तुम ज़रूर मेरी सुनोगे, जब तुम अपनी क़ुरबानियों और बुतों की पूजा से मेरे मुक़द्दस नाम की बेहुरमती नहीं करोगे।

40 क्योंकि रब फ़रमाता है कि आइंदा पूरी इसराईली कौम मेरे मुक़द्दस पहाड़ यानी इसराईल के बुलंद पहाड़ सिय्यून पर मेरी ख़िदमत करेगी। वहाँ मैं ख़ुशी से उन्हें क़बूल करूँगा, और वहाँ मैं तुम्हारी क़ुरबानियाँ, तुम्हारे पहले फल और तुम्हारे तमाम मुक़द्दस हदिये तलब करूँगा। 41 मेरे तुम्हें उन अक़वाम और ममालिक से निकालकर जमा करने के बाद जिनमें तुम मुंतशिर हो गए हो तुम इसराईल में मुझे क़ुरबानियाँ पेश करोगे, और मैं उनकी ख़ुशबू सूँघकर ख़ुशी से तुम्हें क़बूल करूँगा। यों मैं तुम्हारे ज़रीए दीगर अक़वाम पर ज़ाहिर करूँगा कि मैं कुद्दूस ख़ुदा हूँ। 42 तब जब मैं तुम्हें मुल्के-इसराईल यानी उस मुल्क में लाऊँगा जिसका वादा मैंने क़सम खाकर तुम्हारे बापदादा से किया था तो तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ। 43 वहाँ तुम्हें अपना वह चाल-चलन और अपनी वह हरकतें याद आँगी जिनसे तुमने अपने आपको नापाक कर दिया था, और तुम अपने तमाम बुरे आमाल के बाइस अपने आपसे धिन खाओगे। 44 ऐ इसराईली कौम, तुम जान लोगे कि मैं रब हूँ जब मैं अपने नाम की खातिर नरमी से तुमसे पेश आऊँगा, हालाँकि तुम अपने बुरे सुलूक और तबाहकुन हरकतों की वजह से सख़्त सज़ा के लायक़ थे। यह रब क़ादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।”

जंगल में आग लगने की तमसील

45 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 46 “ऐ आदमजाद, जुनूब की तरफ सूख करके उसके खिलाफ नबुव्वत कर! दशते-नजब के जंगल के खिलाफ नबुव्वत करके 47 उसे बता, ‘रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मैं तुझमें ऐसी आग लगानेवाला हूँ जो तेरे तमाम दरख्तों को भस्म करेगी, खाह वह हरे-भरे या सूखे हुए हों। इस आग के भड़कते शोले नहीं बुझेंगे बल्कि जुनूब से लेकर शिमाल तक हर चेहरे को झुलसा देंगे। 48 हर एक को नज़र आएगा कि यह आग मेरे, रब के हाथ ने लगाई है। यह बुझेगी नहीं।”

49 यह सुनकर मैं बोला, “ऐ कादिरे-मुतलक, यह बताने का क्या फायदा है? लोग पहले से मेरे बारे में कहते हैं कि यह हमेशा नाकाबिले-समझ तमसीलें पेश करता है।”

21

रब इसराईल के खिलाफ तलवार चलाने को है

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमजाद, यरूशलम की तरफ सूख करके मुकद्दस जगहों और मुल्के-इसराईल के खिलाफ नबुव्वत कर! 3 मुल्क को बता, ‘रब फरमाता है कि अब मैं तुझसे निपट लूँगा! अपनी तलवार मियान से खींचकर मैं तेरे तमाम बाशंदों को मिटा दूँगा, खाह रास्तबाज़ हों या बेदीन। 4 क्योंकि मैं रास्तबाज़ों को बेदीनों समेत मार डालूँगा, इसलिए मेरी तलवार मियान से निकलकर जुनूब से लेकर शिमाल तक हर शख्स पर टूट पड़ेगी। 5 तब तमाम लोगों को पता चलेगा कि मैं, रब ने अपनी तलवार को मियान से खींच लिया है। तलवार मारती रहेगी और मियान में वापस नहीं आएगी।’

6 ऐ आदमजाद, आहें भर भरकर यह पैगाम सुना! लोगों के सामने इतनी तलखी से आहो-जारी कर कि कमर में दर्द होने लगे। 7 जब वह तुझसे पूछे, ‘आप क्यों कराह रहे हैं?’ तो उन्हें जवाब दे, ‘मुझे एक हौलनाक खबर का इल्म है जो अभी आनेवाली है। जब यहाँ पहुँचेगी तो हर एक की हिम्मत टूट जाएगी और हर हाथ बेहिसो-हरकत हो जाएगा। हर जान हौसला हारेगी और हर घुटना डॉर्वाँडोल हो जाएगा। रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि इस खबर का वक़्त करीब आ गया है, जो कुछ पेश आना है वह जल्द ही पेश आएगा।’”

8 रब एक बार फिर मुझसे हमकलाम हुआ, 9 “ऐ आदमजाद, नबुव्वत करके लोगों को बता, ‘तलवार को रगड़ रगड़कर तेज़ कर दिया गया है। 10 अब वह क़त्लो-गारत के लिए तैयार है, बिजली की तरह चमकने लगी है। हम यह देखकर किस तरह खुश हो सकते हैं? ऐ मेरे बेटे, तूने लाठी और हर तरबियत को हक़ीर जाना है। 11 चुनौचे तलवार को तेज़ करवाने के लिए भेजा गया ताकि उसे ख़ूब इस्तेमाल किया जा सके। अब वह रगड़ रगड़कर तेज़ की गई है, अब वह क़ातिल के हाथ के लिए तैयार है।’

12 ऐ आदमजाद, चीख उठ! वावैला कर! अफ़सोस से अपना सीना पीट! तलवार मेरी क़ौम और इसराईल के बुजुर्गों के खिलाफ चलने लगी है, और सब उस की ज़द में आ जाएंगे। 13 क्योंकि कादिरे-मुतलक फरमाता है कि जाँच-पड़ताल का वक़्त आ गया है, और लाज़िम है कि वह आए, क्योंकि तूने लाठी की तरबियत को हक़ीर जाना है।

14 चुनौचे ऐ आदमजाद, अब ताली बजाकर नबुव्वत कर! तलवार को दो बल्कि तीन बार उन पर टूटने दे! क्योंकि क़त्लो-गारत की यह मोहलक तलवार क़ब्ज़े तक मक़तूलों में घोंपी जाएगी। 15 मैंने तलवार को उनके शहरों के दरवाज़े पर खड़ा कर दिया है ताकि आने जानेवालों को मार डाले, हर दिल हिम्मत हारे और मुतअद्दिद अफ़राद हलाक हो जाएँ। अफ़सोस! उसे बिजली की तरह चमकाया गया है, वह क़त्लो-गारत के लिए तैयार है।

16 ऐ तलवार, दाईं और बाईं तरफ घूमती फिर, जिस तरफ भी तू मुझे उस तरफ मारती जा! 17 मैं भी तालियाँ बजाकर अपना गुस्सा इसराईल पर उतारूँगा। यह मेरा, रब का फ़रमान है।”

दो रास्तों का नक्शा, बाबल के ज़रीए यरूशलम की तबाही

18 रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, 19 “ऐ आदमजाद, नक्शा बनाकर उस पर वह दो रास्ते दिखा जो शाहे-बाबल की तलवार इख्तियार कर सकती है। दोनों रास्ते एक ही मुल्क से शुरू हो जाएँ। जहाँ यह एक दूसरे से अलग हो जाते हैं वहाँ दो सायन-बोर्ड खड़े कर जो दो मुख़्तलिफ़ शहरों के रास्ते दिखाएँ, 20 एक अम्मोनियों के शहर रब्बा का और दूसरा यहदाह के क़िलाबंद शहर यरूशलम का।

यह वह दो रास्ते हैं जो शाहे-बाबल की तलवार इख्तियार कर सकती है। 21 क्योंकि जहाँ यह दो रास्ते एक दूसरे से अलग हो जाते हैं वहाँ शाहे-बाबल स्ककर मालूम करेगा कि कौन-सा रास्ता इख्तियार करना है। वह तीरों के ज़रीए कुरा डालेगा, अपने बुतों से इशारा मिलने की कोशिश करेगा और किसी जानवर की कलेजी का मुआयना करेगा। 22 तब उसे यरूशलम का रास्ता इख्तियार करने की हिदायत मिलेगी, चुनौचे वह अपने फ़ौजियों के साथ यरूशलम के पास पहुँचकर क़त्लो-गारत का हुक्म देगा। तब वह जोर से जंग के नारे लगा लगाकर शहर को पुश्ते से घेर लेंगे, मुहासरे के बुर्ज तामीर करेंगे और दरवाज़ों को तोड़ने की क़िलाशिकन मशीनें खड़ी करेंगे। 23 जिन्होंने शाहे-बाबल से वफ़ादारी की क़सम खाई है उन्हें यह पेशगोई ग़लत लगेगी, लेकिन वह उन्हें उनके कुसूर की याद दिलाकर उन्हें गिरफ़्तार करेगा।

24 चुनौचे रब कादिरे-मुतलक फरमाता है, ‘तुम लोगों ने खुद अलानिया तौर पर बेवफ़ा होने से अपने कुसूर की याद दिलाई है। तुम्हारे तमाम आमाल में तुम्हारे गुनाह नज़र आते हैं। इसलिए तुमसे सख़्ती से निपटा जाएगा।’

25 ऐ इसराईल के बिगड़े हुए और बेदीन रईस, अब वह वक्त आ गया है जब तुझे हतमी सज़ा दी जाएगी। 26 रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि पगड़ी को उतार, ताज को दूर कर! अब सब कुछ उलट जाएगा। ज़लील को सरफ़राज़ और सरफ़राज़ को ज़लील किया जाएगा।

27 मैं यरूशलम को मलबे का ढेर, मलबे का ढेर, मलबे का ढेर बना दूँगा। और शहर उस वक्त तक नए सिरे से तामीर नहीं किया जाएगा जब तक वह न आए जो हक़दार है। उसी के हवाले मैं यरूशलम करूँगा।’

अम्मोनी भी तलवार की ज़द में आएँगे

28 ऐ आदमज़ाद, अम्मोनियों और उनकी लान-तान के जवाब में नबुव्वत कर! उन्हें बता, ‘रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि तलवार क़त्लो-ग़ारत के लिए मियान से खींच ली गई है, उसे रगड़ रगड़कर तेज़ किया गया है ताकि बिजली की तरह चमकते हुए मारती जाए।

29 तेरे नबियों ने तुझे फ़रेबदेह रोयाएँ और झूटे पैग़ामात सुनाए हैं। लेकिन तलवार बेदीनों की गरदन पर नाज़िल होनेवाली है, क्योंकि वह वक्त आ गया है जब उन्हें हतमी सज़ा दी जाए।

30 लेकिन इसके बाद अपनी तलवार को मियान में वापस डाल, क्योंकि मैं तुझे भी सज़ा दूँगा। जहाँ तू पैदा हुआ, तेरे अपने वतन में मैं तेरी अदालत करूँगा। 31 मैं अपना ग़ज़ब तुझ पर नाज़िल करूँगा, अपने क्रोध की आग तेरे खिलाफ़ भड़काऊँगा। मैं तुझे ऐसे वहशी आदमियों के हवाले करूँगा जो तबाह करने का फ़न खूब जानते हैं। 32 तू आग का ईंधन बन जाएगा, तेरा खून तेरे अपने मुल्क में बह जाएगा। आइंदा तुझे कोई याद नहीं करेगा। क्योंकि यह मेरा, रब का फ़रमान है।”

22

यरूशलम खूनेज़ी का शहर है

1 रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, 2 “ऐ आदमज़ाद, क्या तू यरूशलम की अदालत करने के लिए तैयार है? क्या तू इस क़ातिल शहर पर फ़ैसला करने के लिए मुस्तैद है? फिर उस पर उस की मक़रूह हरकतें ज़ाहिर कर। 3 उसे बता,

‘रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि ऐ यरूशलम बेटी, तेरा अंजाम करीब ही है, और यह तेरा अपना कुसूर है। क्योंकि तूने अपने दरमियान मासूमों का खून बहाया और अपने लिए बुत बनाकर अपने आपको नापाक कर दिया है। 4 अपनी खूनेज़ी से तू मुजरिम बन गई है, अपनी बुतपरस्ती से नापाक हो गई है। तू खुद अपनी अदालत का दिन करीब लाई है। इसी वजह से तेरा अंजाम करीब आ गया है, इसी लिए मैं तुझे दीगर अक्रवाम की लान-तान और तमाम ममालिक के मज़ाक़ का निशाना बना दूँगा। 5 सब तुझ पर ठग़ा मारेंगे, खाह वह करीब हों या दूर। तेरे नाम पर दाग़ लग गया है, तुझमें फ़साद हद से ज़्यादा बढ़ गया है।

6 इसराईल का जो भी बुजुर्ग़ तुझमें रहता है वह अपनी पूरी ताक़त से खून बहाने की कोशिश करता है। 7 तेरे बाशिंदे अपने माँ-बाप को हक़ीर जानते हैं। वह परदेसी पर सख़्ती करके यतीमों और बेवाओं पर जुल्म करते हैं। 8 जो मुझे मुक़द्दस है उसे तू पाँवों तले कुचल देती है। तू मेरे सबत के दिनों की बेहुरमती भी करती है।

9 तुझमें ऐसे तोहमत लगानेवाले हैं जो खूनेज़ी पर तुले हुए हैं। तेरे बाशिंदे पहाड़ों की नाजायज़ क़ुरबानगाहों के पास क़ुरबानियाँ खाते और तेरे दरमियान शर्मनाक हरकतें करते हैं। 10 बेटा माँ से हमबिसतर होकर बाप की बेहुरमती करता है, शौहर माहवारी के दौरान बीवी से सोहबत करके उससे ज़्यादाती करता है। 11 एक अपने पड़ोसी की बीवी से ज़िना करता है जबकि दूसरा अपनी बहू की बेहुरमती और तीसरा अपनी सगी बहन की इसमतदारी करता है। 12 तुझमें ऐसे लोग हैं जो रिश्त के एवज़ क़त्ल करते हैं। सूद काबिले-क़बूल है, और लोग एक दूसरे पर जुल्म करके नाजायज़ नफ़ा कमाते हैं। रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि ऐ यरूशलम, तू मुझे सरासर भूल गई है!

13 तेरा नाजायज़ नफ़ा और तेरे बीच में खूनेज़ी देखकर मैं गुस्से में ताली बजाता हूँ। 14 सोच ले! जिस दिन मैं तुझसे निपटूँगा तो क्या तेरा हौसला कायम और तेरे हाथ मज़बूत रहेंगे? यह मेरा, रब का फ़रमान है, और मैं यह करूँगा भी। 15 मैं तुझे दीगर अक्रवामो-ममालिक में मुंतशिर करके तेरी नापाकी दूर करूँगा। 16 फिर जब दीगर कौमों के देखते देखते तेरी बेहुरमती हो जाएगी तब तू जान लेगी कि मैं ही रब हूँ।”

इसराईली कौम भट्टी में धात का मैल है

17 रब मज़ीद मुझसे हमकलाम हुआ, 18 “ऐ आदमज़ाद, इसराईली कौम मेरे नज़दीक उस मैल की मानिंद बन गई है जो चाँदी को ख़ालिस करने के बाद भट्टी में बाकी रह जाता है। सबके सब उस ताँबे, टीन, लोहे और सीसे की मानिंद हैं जो भट्टी में रह जाता है। वह कचरा ही है। 19 चुनौचे रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि चूँकि तुम भट्टी में बचा हुआ मैल हो इसलिए मैं तुम्हें यरूशलम में इक़ठा करके 20 भट्टी में फेंक दूँगा। जिस तरह चाँदी, ताँबे, लोहे, सीसे और टीन की आमेज़िश को तपती भट्टी में फेंका जाता है ताकि पिघल जाए उसी तरह मैं तुम्हें गुस्से में इक़ठा करूँगा और भट्टी में फेंककर पिघला दूँगा। 21 मैं तुम्हें जमा करके आग में फेंक दूँगा और बड़े गुस्से से हवा देकर तुम्हें पिघला दूँगा। 22 जिस तरह चाँदी भट्टी में पिघल जाती है उसी तरह तुम यरूशलम में पिघल जाओगे। तब तुम जान लोगे कि मैं रब ने अपना ग़ज़ब तुम पर नाज़िल किया है।”

पूरी कौम कुसूरवार है

23 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 24 “ऐ आदमजाद, मुल्के-इसराईल को बता, ‘गजब के दिन तुझ पर मेह नहीं बरसेगा बल्कि तू बारिश से महसूस रहेगा।’

25 मुल्क के बीच में साजिश करनेवाले राहनुमा शेरबबर की मानिंद हैं जो दहाड़ते दहाड़ते अपना शिकार फाड़ लेते हैं। वह लोगों को हड़प करके उनके खजाने और कीमती चीजें छीन लेते और मुल्क के दरमियान ही मुतअद्दि औरतों को बेचाएँ बना देते हैं।

26 मुल्क के इमाम मेरी शरीअत से ज्यादाती करके उन चीजों की बेहुरमती करते हैं जो मुझे मुकद्दस हैं। न वह मुकद्दस और आम चीजों में इम्तियाज करते, न पाक और नापाक अशया का फरक सिखाते हैं। नीज़, वह मेरे सबत के दिन अपनी आँखों को बंद रखते हैं ताकि उस की बेहुरमती नज़र न आए। यों उनके दरमियान ही मेरी बेहुरमती की जाती है।

27 मुल्क के दरमियान के बुजुर्ग भेड़ियों की मानिंद हैं जो अपने शिकार को फाड़ फाड़कर खून बहाते और लोगों को मौत के घाट उतारते हैं ताकि नारवा नफ़ा कमाएँ।

28 मुल्क के नबी फ़रेबदेह रोयाएँ और झूटे पैगामात सुनाकर लोगों के बुरे कामों पर सफेदी फेर देते हैं ताकि उनकी गलतियाँ नज़र न आएँ। वह कहते हैं, ‘रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है’ हालाँकि रब ने उन पर कुछ नाज़िल नहीं किया होता।

29 मुल्क के आम लोग भी एक दूसरे का इस्तेहसाल करते हैं। वह डकैत बनकर गरीबों और ज़रूरतमंदों पर जुल्म करते और परदेसियों से बदसलूकी करके उनका हक मारते हैं।

30 इसराईल में मैं ऐसे आदमी की तलाश में रहा जो मुल्क के लिए हिफाज़ती चारदीवारी तामीर करे, जो मेरे हुज़ूर आकर दीवार के रखने में खड़ा हो जाए ताकि मैं मुल्क को तबाह न करूँ। लेकिन मुझे एक भी न मिला जो इस काबिल हो। 31 चुनौचे मैं अपना गजब उन पर नाज़िल करूँगा और उन्हें अपने सख्त कहर से भस्म करूँगा। तब उनके गलत कामों का नतीजा उनके अपने सरो पर आएगा। यह रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है।”

23

बेहया बहनें अहोला और अहोलीबा

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमजाद, दो औरतों की कहानी सुन ले। दोनों एक ही माँ की बेटियाँ थीं। 3 वह अभी जवान ही थीं जब मिसर में कसबी बन गईं। वहीं मर्द दोनों कुँवारियों की छातियाँ सहलाकर अपना दिल बहलाते थे। 4 बड़ी का नाम अहोला और छोटी का नाम अहोलीबा था। अहोला सामरिया और अहोलीबा यरूशलम है। मैं दोनों का मालिक बन गया, और दोनों के बेटे-बेटियाँ पैदा हुए।

5 गो मैं अहोला का मालिक था तो भी वह ज़िना करने लगी। शहवत से भरकर वह जंगजू असूरियों के पीछे पड़ गई, और यही उसके आशिक बन गए। 6 शानदार कपड़ों से मुलब्स यह गवर्नर और फ़ौजी अफसर उसे बड़े प्यारे लगे। सब खूबसूरत जवान और अच्छे घुडसवार थे। 7 असूर के चींदा चींदा बेटों से उसने ज़िना किया। जिसकी भी उसे शहवत थी उससे और उसके बुतों से वह नापाक हुई। 8 लेकिन उसने जवानी में मिसरियों के साथ जो ज़िनाकारी शुरू हुई वह भी न छोड़ी। वही लोग थे जो उसके साथ उस वक़्त हमबिसतर हुए थे जब वह अभी कुँवारी थी, जिन्होंने उस की छातियाँ सहलाकर अपनी गंदी ख़ाहिशात उससे पूरी की थीं।

9 यह देखकर मैंने उसे उसके असूरी आशिकों के हवाले कर दिया, उन्हीं के हवाले जिनकी शदीद शहवत उसे थी। 10 उन्हीं से अहोला की अदालत हुई। उन्होंने उसके कपड़े उतारकर उसे बरहना कर दिया और उसके बेटे-बेटियों को उससे छीन लिया। उसे ख़ुद उन्होंने तलवार से मार डाला। यों वह दीगर औरतों के लिए इबरतअगेज़ मिसाल बन गईं।

11 गो उस की बहन अहोलीबा ने यह सब कुछ देखा तो भी वह शहवत और ज़िनाकारी के लिहाज़ से अपनी बहन से कहीं ज्यादा आगे बढ़ी। 12 वह भी शहवत के मारे असूरियों के पीछे पड़ गई। यह खूबसूरत जवान सब उसे प्यारे थे, ख़ाह असूरी गवर्नर या अफसर, ख़ाह शानदार कपड़ों से मुलब्स फ़ौजी या अच्छे घुडसवार थे। 13 मैंने देखा कि उसने भी अपने आपको नापाक कर दिया। इसमें दोनों बेटियाँ एक जैसी थीं।

14 लेकिन अहोलीबा की ज़िनाकाराना हरकतें कहीं ज्यादा बुरी थीं। एक दिन उसने दीवार पर बाबल के मर्दों की तस्वीर देखी। तस्वीर लाल रंग से खींची हुई थी। 15 मर्दों की कमर में पटका और सर पर पगड़ी बँधी हुई थी। वह बाबल के उन अफसरों की मानिंद लगते थे जो रथों पर सवार लड़ते हैं। 16 मर्दों की तस्वीर देखते ही अहोलीबा के दिल में उनके लिए शदीद आरज़ू पैदा हुई। चुनौचे उसने अपने कासिदों को बाबल भेजकर उन्हें आने की दावत दी। 17 तब बाबल के मर्द उसके पास आए और उससे हमबिसतर हुए। अपनी ज़िनाकारी से उन्होंने उसे नापाक कर दिया। लेकिन उनसे नापाक होने के बाद उसने तंग आकर अपना मुँह उनसे फेर लिया।

18 जब उसने खुले तौर पर उनसे ज़िना करके अपनी बरहनगी सब पर ज़ाहिर की तो मैंने तंग आकर अपना मुँह उससे फेर लिया, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह मैंने अपना मुँह उस की बहन से भी फेर लिया था। 19 लेकिन यह भी उसके लिए काफ़ी न था बल्कि उसने अपनी ज़िनाकारी में मज़ीद इज़ाफ़ा किया। उसे जवानी के दिन याद आए जब वह मिसर में कसबी थी। 20 वह शहवत के मारे पहले आशिकों की आरज़ू करने लगी, उनसे जो गधों और घोड़ों की-सी जिंसी ताक़त रखते थे। 21 क्योंकि तू अपनी जवानी की ज़िनाकारी दोहराने की मुतमन्नी थी। तू एक बार फिर उनसे हमबिसतर होना चाहती थी जो मिसर में तेरी छातियाँ सहलाकर अपना दिल बहलाते थे।

22 चुनौचे रब कादिरे-मुतलक फरमाता है, 'ऐ अहोलीबा, मैं तेरे आशिकों को तेरे खिलाफ खड़ा करूँगा। जिनसे तूने तंग आकर अपना मुँह फेर लिया था उन्हें मैं चारों तरफ से तेरे खिलाफ लाऊँगा। 23 बाबल, कसदियों, फिक्रोद, शोअ और क्रोअ के फौजी मिलकर तुझ पर टूट पड़ेंगे। घुड़सवार अस्सी भी उनमें शामिल होंगे, ऐसे खूबसूरत जवान जो सब गवर्नर, अफसर, रथसवार फौजी और ऊँचे तबके के अफराद होंगे। 24 शिमाल से वह रथों और मुख्तलिफ क्रौमों के मुतअद्दिद फौजियों समेत तुझ पर हमला करेंगे। वह तुझे यों घेर लेंगे कि हर तरफ छोटी और बड़ी ढालें, हर तरफ खोद नज़र आएँगे। मैं तुझे उनके हवाले कर दूँगा ताकि वह तुझे सज़ा देकर अपने क़वानीन के मुताबिक तेरी अदालत करें। 25 तू मेरी ग़ैरत का तजरबा करेगी, क्योंकि यह लोग गुस्से में तुझसे निपट लेंगे। वह तेरी नाक और कानों को काट डालेंगे और बचे हुआ को तलवार से मौत के घाट उतारेंगे। तेरे बेटे-बेटियों को वह ले जाएँगे, और जो कुछ उनके पीछे रह जाए वह भस्म हो जाएगा। 26 वह तेरे लिबास और तेरे ज़ेवरात को तुझ पर से उतारेंगे।

27 यों मैं तेरी वह फ़हहाशी और ज़िनाकारी रोक दूँगा जिसका सिलसिला तूने मिसर में शुरू किया था। तब न तू आरज़ूमंद नज़रों से इन चीज़ों की तरफ देखेगी, न मिसर को याद करेगी। 28 क्योंकि रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मैं तुझे उनके हवाले करने को हूँ जो तुझसे नफरत करते हैं, उनके हवाले जिनसे तूने तंग आकर अपना मुँह फेर लिया था। 29 वह बड़ी नफरत से तेरे साथ पेश आएँगे। जो कुछ तूने मेहनत से कमाया उसे वह छीनकर तुझे नंगी और बरहना छोड़ेंगे। तब तेरी ज़िनाकारी का शर्मनाक अंजाम और तेरी फ़हहाशी सब पर ज़ाहिर हो जाएगी। 30 तब तुझे इसका अज़ मिलेगा कि तू क्रौमों के पीछे पड़कर ज़िना करती रही, कि तूने उनके बुतों की पूजा करके अपने आपको नापाक कर दिया है।

31 तू अपनी बहन के नमूने पर चल पड़ी, इसलिए मैं तुझे वही प्याला पिलाऊँगा जो उसे पीना पड़ा। 32 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि तुझे अपनी बहन का प्याला पीना पड़ेगा जो बड़ा और गहरा है। और तू उस वक़्त तक उसे पीती रहेगी जब तक मज़ाक और लान-तान का निशाना न बन गई हो। 33 दहशत और तबाही का प्याला पी पीकर तू मदहोशी और दुख से भर जाएगी। तू अपनी बहन सामरिया का यह प्याला 34 आखिरी क़तरे तक पी लेगी, फिर प्याले को पाश पाश करके उसके टुकड़े चबा लेगी और अपने सीने को फाड़ लेगी।' यह रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है। 35 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है, 'तूने मुझे भूलकर अपना मुँह मुझसे फेर लिया है। अब तुझे अपनी फ़हहाशी और ज़िनाकारी का नतीजा भुगतना पड़ेगा।'।"

36 रब मज़ीद मुझसे हमकलाम हुआ, "ऐ आदमज़ाद, क्या तू अहोला और अहोलीबा की अदालत करने के लिए तैयार है? फिर उन पर उनकी मक़रूह हरकतें ज़ाहिर कर। 37 उनसे दो जुर्म सरज़द हुए हैं, ज़िना और क़त्ल। उन्होंने बुतों से ज़िना किया और अपने बच्चों को जलाकर उन्हें खिलाया, उन बच्चों को जो उन्होंने मेरे हाँ जन्म दिए थे। 38 लेकिन यह उनके लिए काफ़ी नहीं था। साथ साथ उन्होंने मेरा मक़दिस नापाक और मेरे सबत के दिनों की बेहुरमती की। 39 क्योंकि जब कभी वह अपने बच्चों को अपने बुतों के हुज़ूर क़ुरबान करती थीं उसी दिन वह मेरे घर में आकर उस की बेहुरमती करती थीं। मेरे ही घर में वह ऐसी हरकतें करती थीं।

40 यह भी इन दो बहनों के लिए काफ़ी नहीं था बल्कि आदमियों की तलाश में उन्होंने अपने क़ासिदों को दूर दूर तक भेज दिया। जब मर्द पहुँचे तो तूने उनके लिए नहाकर अपनी आँखों में सुरमा लगाया और अपने ज़ेवरात पहन लिए। 41 फिर तू शानदार सोफ़े पर बैठ गई। तेरे सामने मेज़ थी जिस पर तूने मेरे लिए मख़सूस बख़ूर और तेल रखा था। 42 रेगिस्तान से सिबा के मुतअद्दिद आदमी लाए गए तो शहर में शोर मच गया, और लोगों ने सुकून का साँस लिया। आदमियों ने दोनों बहनों के बाजूओं में कड़े पहनाए और उनके सरों पर शानदार ताज़ रखे। 43 तब मैंने ज़िनाकारी से घिसी-फटी औरत के बारे में कहा, 'अब वह उसके साथ ज़िना करें, क्योंकि वह ज़िनाकार ही है।' 44 ऐसा ही हुआ। मर्द उन बेहया बहनों अहोला और अहोलीबा से यों हमबिसतर हुए जिस तरह कसबियों से।

45 लेकिन रास्तबाज़ आदमी उनकी अदालत करके उन्हें ज़िना और क़त्ल के मुजरिम ठहराएँगे। क्योंकि दोनों बहनें ज़िनाकार और कातिल ही हैं। 46 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि उनके खिलाफ ज़लूस निकालकर उन्हें दहशत और लूट-मार के हवाले करो। 47 लोग उन्हें संगसार करके तलवार से टुकड़े टुकड़े करें, वह उनके बेटे-बेटियों को मार डालें और उनके घरों को नज़रे-आतिश करें।

48 यों मैं मुल्क में ज़िनाकारी ख़त्म करूँगा। इससे तमाम औरतों को तबीह मिलेगी कि वह तुम्हारे शर्मनाक नमूने पर न चले। 49 तुम्हें ज़िनाकारी और बुतपरस्ती की मुनासिब सज़ा मिलेगी। तब तुम जान लोगी कि मैं रब कादिरे-मुतलक हूँ।"

24

यरूशलम आग पर ज़ंगआलूदा देग है

1 यह्याकीन बादशाह की जिलावतनी के नवें साल में रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ। दसवें महीने का दसवाँ दिन * था। पैगाम यह था, 2 "ऐ आदमज़ाद, इसी दिन की तारीख़ लिख ले, क्योंकि इसी दिन शाहे-बाबल यरूशलम का मुहासरा करने लगा है। 3 फिर इस सरकश क्रौम इसराईल को तमसील पेश करके बता,

* 24:1 15 जनवरी।

‘रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि आग पर देग रखकर उसमें पानी डाल दे। 4 फिर उसे बेहतरीन गोशत से भर दे। रान और शाने के टुकड़े, नीज़ बेहतरीन हड्डियाँ उसमें डाल दे। 5 सिर्फ बेहतरीन भेड़ों का गोशत इस्तेमाल कर। ध्यान दे कि देग के नीचे आग ज़ोर से भड़कती रहे। गोशत को हड्डियों समेत खूब पकने दे।

6 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि यरूशलम पर अफसोस जिसमें इतना खून बहाया गया है! यह शहर देग है जिसमें जंग लगा है, ऐसा जंग जो उतरता नहीं। अब गोशत के टुकड़ों को यके बाद दीगरे देग से निकाल दे। उन्हें किसी तरीक़ से मत निकालना बल्कि कुरा डाले बग़ैर निकाल दे।

7 जो खून यरूशलम ने बहाया वह अब तक उसमें मौजूद है। क्योंकि वह मिट्टी पर न गिरा जो उसे जज़ब कर सकती बल्कि गंगी चटान पर। 8 मैंने खुद यह खून गंगी चटान पर बहने दिया ताकि वह छुप न जाए बल्कि मेरा गज़ब यरूशलम पर नाज़िल हो जाए और मैं बदला लूँ।

9 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि यरूशलम पर अफसोस जिसने इतना खून बहाया है! मैं भी तेरे नीचे लकड़ी का बड़ा ढेर लगाऊँगा। 10 आ, लकड़ी का बड़ा ढेर करके आग लगा दे। गोशत को खूब पका, फिर शोरबा निकालकर हड्डियों को भस्म होने दे। 11 इसके बाद खाली देग को जलते कोयलों पर रख दे ताकि पीतल गरम होकर तमतमाने लगे और देग में मैल पिघल जाए, उसका जंग उतर जाए।

12 लेकिन बेफ़ायदा! इतना जंग लगा है कि वह आग में भी नहीं उतरता।

13 ऐ यरूशलम, अपनी बेहया हरकतों से तूने अपने आपको नापाक कर दिया है। अगरचे मैं खुद तुझे पाक-साफ़ करना चाहता था तो भी तू पाक-साफ़ न हुई। अब तू उस वक़्त तक पाक नहीं होगी जब तक मैं अपना पूरा गुस्सा तुझ पर उतार न लूँ। 14 मेरे रब का यह फ़रमान पूरा होनेवाला है, और मैं ध्यान से उसे अमल में लाऊँगा। न मैं तुझ पर तरस खाऊँगा, न रहम करूँगा। मैं तेरे चाल-चलन और आमाल के मुताबिक़ तेरी अदालत करूँगा।’ यह रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है।”

बीबी की वफ़ात पर हिजकियेल मातम न करे

15 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 16 “ऐ आदमज़ाद, मैं तुझसे अचानक तेरी आँख का तारा छीन लूँगा। लेकिन लाज़िम है कि तू न आहो-ज़ारी करे, न आँसू बहाए। 17 बेशक चुपके से कराहता रह, लेकिन अपनी अज़ीज़ा के लिए अलानिया मातम न कर। न सर से पगड़ी उतार और न पाँवों से जूते। न दाढ़ी को ढाँपना, न जनाज़े का खाना खा।”

18 सुबह को मैंने क़ौम को यह पैग़ाम सुनाया, और शाम को मेरी बीबी इंतक़ाल कर गई। अगली सुबह मैंने वह कुछ किया जो रब ने मुझे करने को कहा था। 19 यह देखकर लोगों ने मुझसे पूछा, “आपके रबय्ये का हमारे साथ क्या ताल्लुक़ है? ज़रा हमें बताएँ।”

20 मैंने जवाब दिया, “रब ने मुझे 21 आप इसराइलियों को यह पैग़ाम सुनाने को कहा, ‘रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि मेरा घर तुम्हारे नज़दीक़ पनाहगाह है जिस पर तुम फ़ख़र करते हो। लेकिन यह मक़दिस जो तुम्हारी आँख का तारा और जान का प्यारा है तबाह होनेवाला है। मैं उस की बेहुरमती करने को हूँ। और तुम्हारे जितने बेटे-बेटियाँ यरूशलम में पीछे रह गए थे वह सब तलवार की ज़द में आकर मर जाएंगे। 22 तब तुम वह कुछ करोगे जो हिजकियेल इस वक़्त कर रहा है। न तुम अपनी दाढ़ियों को ढाँपोगे, न जनाज़े का खाना खाओगे। 23 न तुम सर से पगड़ी, न पाँवों से जूते उतारोगे। तुम्हारे हाँ न मातम का शोर, न रोने की आवाज़ सुनाई देगी बल्कि तुम अपने गुनाहों के सबब से ज़ाया होते जाओगे। तुम चुपके से एक दूसरे के साथ बैठकर कराहते रहोगे। 24 हिजकियेल तुम्हारे लिए निशान है। जो कुछ वह इस वक़्त कर रहा है वह तुम भी करोगे। तब तुम जान लोगे कि मैं रब कादिरे-मुतलक हूँ।”

25 रब मज़ीद मुझसे हमकलाम हुआ, “ऐ आदमज़ाद, यह घर इसराइलियों के नज़दीक़ पनाहगाह है जिसके बारे में वह खास ख़ुशी महसूस करते हैं, जिस पर वह फ़ख़र करते हैं। लेकिन मैं यह मक़दिस जो उनकी आँख का तारा और जान का प्यारा है उनसे छीन लूँगा और साथ साथ उनके बेटे-बेटियों को भी। जिस दिन यह पेश आएगा 26 उस दिन एक आदमी बचकर तुझे इसकी ख़बर पहुँचाएगा। 27 उसी वक़्त तू दुबारा बोल सकेगा। तू गूँगा नहीं रहेगा बल्कि उससे बातें करने लगेगा। यों तू इसराइलियों के लिए निशान होगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

25

अम्मोनियों का मुल्क उनसे छीन लिया जाएगा

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमज़ाद, अम्मोनियों के मुल्क की तरफ़ स़ख़ करके उनके खिलाफ़ नबुव्वत कर। 3 उन्हें बता, ‘सुनो रब कादिरे-मुतलक का कलाम! वह फ़रमाता है कि ऐ अम्मोन बेटे, तूने ख़ुश होकर कहकहा लगाया जब मेरे मक़दिस की बेहुरमती हुई, मुल्के-इसराइल तबाह हुआ और यहदाह के बाशिंदे ज़िलावतन हुए। 4 इसलिए मैं तुझे मशरिकी कबीलों के हवाले करूँगा जो अपने डेरे तुझमें लगाकर पूरी बस्तियाँ कायम करेंगे। वह तेरा ही फल खाएँगे, तेरा ही दूध पीएँगे। 5 रब्बा शहर को मैं ऊँटों की चरागाह में बदल दूँगा और मुल्के-अम्मोन को भेड़-बकरियों की आरामगाह बना दूँगा। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ।

6 क्योंकि रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि तूने तालियाँ बजा बजाकर और पाँव ज़मीन पर मार मारकर इसराइल के अंजाम पर अपनी दिली ख़ुशी का इज़हार किया। तेरी इसराइल के लिए हिक़ारत साफ़ तौर पर नज़र आई। 7 इसलिए मैं अपना हाथ तेरे खिलाफ़ बढ़ाकर तुझे दीगर अक्रवाम के हवाले कर दूँगा ताकि वह तुझे लूट लें। मैं तुझे यों मिटा दूँगा कि अक्रवामो-ममालिक में तेरा नामो-निशान तक नहीं रहेगा। तब तू जान लेगी कि मैं ही रब हूँ।”

मोआब के शहर तबाह हो जाएंगे

8 “रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मोआब और सईर इसराईल का मज़ाक उड़ाकर कहते हैं, ‘लो, देखो यहूदाह के घराने का हाल! अब वह भी बाक़ी कौमों की तरह बन गया है।’ 9 इसलिए मैं मोआब की पहाड़ी ढलानों को उनके शहरों से महसूस करूँगा। मुत्क के एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक भी आबादी नहीं रहेगी। गो मोआबी अपने शहरों बैत-यसीमोत, बाल-मऊन और किरियतायम पर खास फ़ख़र करते हैं, लेकिन वह भी ज़मीनबोस हो जाएंगे। 10 अम्मोन की तरह मैं मोआब को भी मशरिकी कबीलों के हवाले करूँगा। आखिरकार अक्रवाम में अम्मोनियों की याद तक नहीं रहेगी, 11 और मोआब को भी मुझसे मुनासिब सज़ा मिलेगी। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

अल्लाह अदोमियों से इंतक़ाम लेगा

12 “रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि यहूदाह से इंतक़ाम लेने से अदोम ने संगीन गुनाह किया है। 13 इसलिए मैं अपना हाथ अदोम के खिलाफ़ बढ़ाकर उसके इनसानो-हैवान को मार डालूँगा, और वह तलवार से मारे जाएंगे। तेमान से लेकर ददान तक यह मुत्क वीरानो-सुनसान हो जाएगा। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है। 14 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि अपनी कौम के हाथों मैं अदोम से बदला लूँगा, और इसराईल मेरे ग़ज़ब और कहर के मुताबिक़ ही अदोम से निपट लेगा। तब वह मेरा इंतक़ाम जान लेंगे।”

फ़िलिस्तियों का खातमा

15 “रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि फ़िलिस्तियों ने बड़े ज़ुल्म के साथ यहूदाह से बदला लिया है। उन्होंने उस पर अपनी दिली हिकारत और दायमी दुश्मनी का इज़हार किया और इंतक़ाम लेकर उसे तबाह करने की कोशिश की। 16 इसलिए रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मैं अपना हाथ फ़िलिस्तियों के खिलाफ़ बढ़ाने को हूँ। मैं इन करेतियों और साहिली इलाक़े के बचे हुएों को मिटा दूँगा। 17 मैं अपना ग़ज़ब उन पर नाज़िल करके सख़्ती से उनसे बदला लूँगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

26

सूर का सत्यानास

1 यहूयाकीन बादशाह की जिलावतनी के 11वें साल में रब मुझसे हमकलाम हुआ। महीने का पहला दिन था। 2 “ऐ आदमज़ाद, सूर बेटी यरूशलम की तबाही देखकर खुश हुई है। वह कहती है, ‘लो, अक्रवाम का दरवाज़ा टूट गया है! अब मैं ही इसकी जिम्मादारियाँ निभाऊँगी। अब जब यरूशलम वीरान है तो मैं ही फ़रोग पाऊँगी।’

3 जवाब में रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि ऐ सूर, मैं तुझसे निपट लूँगा! मैं मुतअद्दिद कौमों को तेरे खिलाफ़ भेजूँगा। समुंदर की ज़बरदस्त मौजों की तरह वह तुझ पर टूट पड़ेगी। 4 वह सूर शहर की फ़सील को ढाकर उसके बुर्जों को खाक में मिला देंगी। तब मैं उसे इतने ज़ोर से झाड़ दूँगा कि मिट्टी तक नहीं रहेगी। खाली चटान ही नज़र आएगी। 5 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि वह समुंदर के दरमियान ऐसी जगह रहेगी जहाँ मछरे अपने जालों को सुखाने के लिए बिछा देंगे। दीगर अक्रवाम उसे लूट लेंगी, 6 और ख़ुशकी पर उस की आबादियाँ तलवार की ज़द में आ जाएँगी। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।

7 क्योंकि रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मैं बाबल के बादशाह नबूकदनज़र को तेरे खिलाफ़ भेजूँगा जो घोड़े, रथ, घुड़सवार और बड़ी फ़ौज लेकर शिमाल से तुझ पर हमला करेगा। 8 ख़ुशकी पर तेरी आबादियों को वह तलवार से तबाह करेगा, फिर पुश्ते और बुर्जों से तुझे घेर लेगा। उसके फ़ौजी अपनी ढालें उठाकर तुझ पर हमला करेंगे। 9 बादशाह अपनी किलाशिकन मशीनों से तेरी फ़सील को ढा देगा और अपने आलात से तेरे बुर्जों को गिरा देगा। 10 जब उसके बेशुमार घोड़े चल पड़ेंगे तो इतनी गर्द उड़ जाएगी कि तू उसमें डूब जाएगी। जब बादशाह तेरी फ़सील को तोड़ तोड़कर तेरे दरवाज़ों में दाख़िल होगा तो तेरी दीवारों घोड़ों और रथों के शोर से लरज़ उठेगी। 11 उसके घोड़ों के खुर तेरी तमाम गलियों को कुचल देंगे, और तेरे बाशिदे तलवार से मर जाएंगे, तेरे मज़बूत सतून ज़मीनबोस हो जाएंगे। 12 दुश्मन तेरी दौलत छीन लेंगे और तेरी तिजारत का माल लूट लेंगे। वह तेरी दीवारों को गिराकर तेरी शानदार इमारतों को मिसमार करेंगे, फिर तेरे पत्थर, लकड़ी और मलबा समुंदर में फेंक देंगे। 13 मैं तेरे गीतों का शोर बंद करूँगा। आइंदा तेरे सरोदों की आवाज़ सुनाई नहीं देगी। 14 मैं तुझे नंगी चटान में तबदील करूँगा, और मछरे तुझे अपने जाल बिछाकर सुखाने के लिए इस्तेमाल करेंगे। आइंदा तुझे कभी दुबारा तामीर नहीं किया जाएगा। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।

15 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि ऐ सूर बेटी, साहिली इलाक़े काँप उठेंगे जब तू धड़ाम से गिर जाएगी, जब हर तरफ़ ज़ख़मी लोगों की कराहती आवाज़ें सुनाई देंगी, हर गली में क़त्लो-ग़ारत का शोर मचेगा। 16 तब साहिली इलाकों के तमाम हुक्मरान अपने तख़्तों से उतरकर अपने चोगे और शानदार लिबास उतारेंगे। वह मातमी कपड़े पहनकर ज़मीन पर बैठ जाएंगे और बार बार लरज़ उठेंगे, यहाँ तक वह तेरे अंजाम पर परेशान होंगे। 17 तब वह तुझ पर मातम करके गीत गाएँगे,

‘हाय, तू कितने धड़ाम से गिरकर तबाह हुई है! ऐ साहिली शहर, ऐ सूर बेटी, पहले तू अपने बाशिंदों समेत समुंदर के दरमियान रहकर कितनी मशहूर और ताक़तवर थी। गिर्दो-नवाह के तमाम बाशिदे तुझसे दहशत खाते थे। 18 अब साहिली इलाक़े तेरे अंजाम को देखकर थरथरा रहे हैं। समुंदर के जज़ीरे तेरे खातमे की ख़बर सुनकर दहशतज़दा हो गए हैं।’

19 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि ऐ सूर बेटी, मैं तुझे वीरानो-सुनसान करूँगा। तू उन दीगर शहरों की मानिंद बन जाएगी जो नेस्तो-नाबूद हो गए हैं। मैं तुझ पर सैलाब लाऊँगा, और गहरा पानी तुझे ढोंप देगा। 20 मैं तुझे पाताल में उतरने दूँगा, और तू उस क्रौम के पास पहुँचेगी जो कदीम ज़माने से ही वहाँ बसती है। तब तुझे ज़मीन की गहराइयों में रहना पड़ेगा, वहाँ जहाँ कदीम ज़मानों के खंडरात हैं। तू मुरदों के मुल्क में रहेगी और कभी ज़िंदगी के मुल्क में वापस नहीं आएगी, न वहाँ अपना मक़ाम दुबारा हासिल करेगी। 21 मैं होने दूँगा कि तेरा अंजाम दहशतनाक होगा, और तू सरासर तबाह हो जाएगी। लोग तेरा खोज लगाएँगे लेकिन तुझे कभी नहीं पाएँगे। यह रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है।”

27

सूर के अंजाम पर मातमी गीत

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमज़ाद, सूर बेटी पर मातमी गीत गा, 3 उस शहर पर जो समुंदर की गुज़रगाह पर वाके है और मुतअद्दिद साहिली क्रौमों से तिजारत करता है। उससे कह,

‘रब फ़रमाता है कि ऐ सूर बेटी, तू अपने आप पर बहुत फ़ख़र करके कहती है कि वाह, मेरा हुस्न कमाल का है। 4 और वाकई, तेरा इलाक़ा समुंदर के बीच में ही है, और जिन्होंने तुझे तामीर किया उन्होंने तेरे हुस्न को तकमील तक पहुँचाया, 5 तुझे शानदार बहरी जहाज़ की मानिंद बनाया। तेरे तख्ते सनीर में उगनेवाले जूनीपर के दरख्तों से बनाए गए, तेरा मस्तूल लुबनान का देवदार का दरख़्त था। 6 तेरे चप्पू बसन के बलूत के दरख्तों से बनाए गए, जबकि तेरे फ़र्श के लिए कुबस्स से सरो की लकड़ी लाई गई, फिर उसे हाथीदाँत से आरास्ता किया गया। 7 नफ़ीस कतान का तेरा रंगदार बादबान मिसर का था। वह तेरा इम्तियाज़ी निशान बन गया। तेरे तिरपालों का किरमिज़ी और अरगवानी रंग इलीसा के साहिली इलाके से लाया गया।

8 सैदा और अरवद के मर्द तेरे चप्पू मारते थे, सूर के अपने ही दाना तेरे मल्लाह थे। 9 जबल * के बुजुर्ग और दानिशमंद आदमी ध्यान देते थे कि तेरी दर्ज़े बंद रहें। तमाम बहरी जहाज़ अपने मल्लाहों समेत तेरे पास आया करते थे ताकि तेरे साथ तिजारत करें। 10 फ़ारस, लुदिया और लिबिया के अफ़राद तेरी फ़ौज में ख़िदमत करते थे। तेरी दीवारों से लटकी उनकी ढालों और खोदों ने तेरी शान मज़ीद बढ़ा दी। 11 अरवद और खलक † के आदमी तेरी फ़सील का दिफ़ा करते थे, जम्माद के फ़ौजी तेरे बुर्जों में पहरादारी करते थे। तेरी दीवारों से लटकी हुई उनकी ढालों ने तेरे हुस्न को कमाल तक पहुँचा दिया।

12 तू अमीर थी, तुझमें मालो-असबाब की कसरत की तिजारत की जाती थी। इसलिए तरसीस तुझे चाँदी, लोहा, टीन और सीसा देकर तुझसे सौदा करता था। 13 यूनान, तूबल और मसक तुझसे तिजारत करते, तेरा माल खरीदकर मुआवज़े में गुलाम और पीतल का सामान देते थे। 14 बैत-तुजरमा के ताजिर तेरे माल के लिए तुझे आम घोड़े, फ़ौजी घोड़े और ख़च्चर पहुँचाते थे। 15 ददान के आदमी तेरे साथ तिजारत करते थे, हाँ मुतअद्दिद साहिली इलाके तेरे गाहक थे। उनके साथ सौदाबाज़ी करके तुझे हाथीदाँत और आबनूस की लकड़ी मिलती थी। 16 शाम तेरी पैदावार की कसरत की वजह से तेरे साथ तिजारत करता था। मुआवज़े में तुझे फ़ीरोज़ा, अरगवानी रंग, रंगदार कपड़े, बारीक कतान, मूँगा और याकूत मिलता था। 17 यहदाह और इसराईल तेरे गाहक थे। तेरा माल खरीदकर वह तुझे मिन्नीत का गंदुम, पन्नग की टिक्रियाँ, शहद, जैतून का तेल और बलसान देते थे। 18 दमिश्क तेरी वाफ़िर पैदावार और माल की कसरत की वजह से तेरे साथ कारोबार करता था। उससे तुझे हलबून की मै और साहर की ऊन मिलती थी। 19 विदान और यूनान तेरे गाहक थे। वह ऊज़ाल का ढाला हुआ लोहा, दारचीनी और कलमस का मसाला पहुँचाते थे। 20 ददान से तिजारत करने से तुझे जीनपोश मिलती थी। 21 अरब और क्रीदार के तमाम हुक्मरान तेरे गाहक थे। तेरे माल के एवज़ वह भेड़ के बच्चे, मेंढे और बकरे देते थे। 22 सबा और रामा के ताजिर तेरा माल हासिल करने के लिए तुझे बेहतरीन बलसान, हर किस्म के जवाहर और सोना देते थे। 23 हारान, कन्ना, अदन, सबा, असूर और कुल मादी सब तेरे साथ तिजारत करते थे। 24 वह तेरे पास आकर तुझे शानदार लिबास, किरमिज़ी रंग की चादरें, रंगदार कपड़े और कम्बल, नीज़ मज़बूत रस्से पेश करते थे। 25 तरसीस के उम्दा जहाज़ तेरा माल मुख़्तलिफ़ ममालिक में पहुँचाते थे। यों तू जहाज़ की मानिंद समुंदर के बीच में रहकर दौलत और शान से मालामाल हो गई। 26 तेरे चप्पू चलानेवाले तुझे दूर दूर तक पहुँचाते हैं।

लेकिन वह वक़्त करीब है जब मशरिक से तेज़ आँधी आकर तुझे समुंदर के दरमियान ही टुकड़े टुकड़े कर देगी। 27 जिस दिन तू गिर जाएगी उस दिन तेरी तमाम मिलकियत समुंदर के बीच में ही डूब जाएगी। तेरी दौलत, तेरा सौदा, तेरे मल्लाह, तेरे बहरी मुसाफ़िर, तेरी दर्ज़े बंद रखनेवाले, तेरे ताजिर, तेरे तमाम फ़ौजी और बाक़ी जितने भी तुझ पर सवार हैं सबके सब गरक हो जाएँगे। 28 तेरे मल्लाहों की चीखती-चिल्लाती आवाज़ें सुनकर साहिली इलाके काँप उठेंगे। 29 तमाम चप्पू चलानेवाले, मल्लाह और बहरी मुसाफ़िर अपने जहाज़ों से उतरकर साहिल पर खड़े हो जाएँगे। 30 वह जोर से रो पड़ेंगे, बड़ी तलख़ी से गिर्याओ-ज़ारी करेंगे। अपने सरो पर खाक डालकर वह राख में लोट-पोट हो जाएँगे। 31 तेरी ही वजह से वह अपने सरो को मुँडवाकर टाट का लिबास ओढ़ लेंगे, वह बड़ी बेचैनी और तलख़ी से तुझ पर मातम करेंगे। 32 तब वह ज़ारो-क़तार रोकर मातम का गीत गाएँगे,

“हाय, कौन समुंदर से घिरे हुए सूर की तरह ख़ामोश हो गया है?”

* 27:9 Biblos † 27:11 गालिबन Cilicia।

33 जब तिजारत का माल समुंदर की चारों तरफ से तुझ तक पहुँचता था तो तू मुतअदिद कौमों को सेर करती थी। दुनिया के बादशाह तेरी दौलत और तिजारती सामान की कसरत से अमीर हुए।

34 अफ़सोस! अब तू पाश पाश होकर समुंदर की गहराइयों में गायब हो गई है। तेरा माल और तेरे तमाम अफ़राद तेरे साथ डूब गए हैं।

35 साहिली इलाकों में बसनेवाले घबरा गए हैं। उनके बादशाहों के रोंगटे खड़े हो गए, उनके चेहरे परेशान नज़र आते हैं।

36 दीगर अक्वाम के ताजिर तुझे देखकर “तौबा तौबा” कहते हैं। तेरा हौलनाक अंजाम अचानक ही आ गया है। अब से तू कभी नहीं उठेगी।”

28

सूर के हुक्मरान के लिए पैगाम

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमज़ाद, सूर के हुक्मरान को बता,

‘रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि तू मग़र्र हो गया है। तू कहता है कि मैं खुदा हूँ, मैं समुंदर के दरमियान ही अपने तख्ते-इलाही पर बैठा हूँ। लेकिन तू खुदा नहीं बल्कि इनसान है, गो तू अपने आपको खुदा-सा समझता है। 3 बेशक तू अपने आपको दानियाल से कहीं ज़्यादा दानिशमंद समझकर कहता है कि कोई भी भेद मुझसे पोशीदा नहीं रहता। 4 और यह हक़ीक़त भी है कि तूने अपनी हिकमत और समझ से बहुत दौलत हासिल की है, सोने और चाँदी से अपने खज़ानों को भर दिया है। 5 बड़ी दानिशमंदी से तूने तिजारत के ज़रीए अपनी दौलत बढ़ाई। लेकिन जितनी तेरी दौलत बढ़ती गई उतना ही तेरा ग़ुर्र भी बढ़ता गया।

6 चुनौचे रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि चूँकि तू अपने आपको खुदा-सा समझता है 7 इसलिए मैं सबसे ज़ालिम कौमों को तेरे खिलाफ़ भेजूँगा जो अपनी तलवारों को तेरी ख़ूबसूरती और हिकमत के खिलाफ़ खींचकर तेरी शानो-शौकत की बेहुरमती करेंगी। 8 वह तुझे पाताल में उतारेंगी। समुंदर के बीच में ही तुझे मार डाला जाएगा। 9 क्या तू उस वक़्त अपने कातिलों से कहेगा कि मैं खुदा हूँ? हरगिज़ नहीं! अपने कातिलों के हाथ में होते वक़्त तू खुदा नहीं बल्कि इनसान साबित होगा। 10 तू अजनबियों के हाथों नामख़तून की-सी वफ़ात पाएगा। यह मेरा, रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है।”

11 रब मज़ीद मुझसे हमकलाम हुआ, 12 “ऐ आदमज़ाद, सूर के बादशाह पर मातमी गीत गाकर उससे कह,

‘रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि तुझ पर कामिलियत का ठप्पा था। तू हिकमत से भरपूर था, तेरा हुस्न कमाल का था। 13 अल्लाह के बागे-अदन में रहकर तू हर किस्म के जवाहर से सजा हुआ था। लाल, * ज़बरजद, † हजस्ल-कमर, ‡ पुखराज, § अक़ीके-अहमर * और यशब, † सगे-लाजवर्द, ‡ फ़ीरोज़ा और ज़मूरद सब तुझे आरास्ता करते थे। सब कुछ सोने के काम से मज़ीद ख़ूबसूरत बनाया गया था। जिस दिन तुझे ख़लक किया गया उसी दिन यह चीज़ें तेरे लिए तैयार हुई।

14 मैंने तुझे अल्लाह के मुक़द्दस पहाड़ पर खड़ा किया था। वहाँ तू क़रूबी फ़रिश्ते की हैसियत से अपने पर फैलाए पहरादारी करता था, वहाँ तू जलते हुए पत्थरों के दरमियान ही घुमता-फिरता रहा।

15 जिस दिन तुझे ख़लक किया गया तेरा चाल-चलन बेइलज़ाम था, लेकिन अब तुझमें नाइनसाफ़ी पाई गई है। 16 तिजारत में कामयाबी की वजह से तू ज़ुल्मो-तशद्दुद से भर गया और गुनाह करने लगा।

यह देखकर मैंने तुझे अल्लाह के पहाड़ पर से उतार दिया। मैंने तुझे जो पहरादारी करनेवाला फ़रिश्ता था तबाह करके जलते हुए पत्थरों के दरमियान से निकाल दिया। 17 तेरी ख़ूबसूरती तेरे लिए ग़ुर्र का बाइस बन गई, हाँ तेरी शानो-शौकत ने तुझे इतना फुला दिया कि तेरी हिकमत जाती रही। इसी लिए मैंने तुझे ज़मीन पर पटककर दीगर बादशाहों के सामने तमाशा बना दिया। 18 अपने बेशुमार गुनाहों और बेइन्साफ़ तिजारत से तूने अपने मुक़द्दस मक़ामों की बेहुरमती की है। जवाब में मैंने होने दिया कि आग तेरे दरमियान से निकलकर तुझे भस्म करे। मैंने तुझे तमाशा देखनेवाले तमाम लोगों के सामने ही राख कर दिया। 19 जितनी भी कौमों तुझे जानती थी उनके रोंगटे खड़े हो गए। तेरा हौलनाक अंजाम अचानक ही आ गया है। अब से तू कभी नहीं उठेगा।”

सैदा को सज़ा दी जाएगी

20 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 21 “ऐ आदमज़ाद, सैदा की तरफ़ सूख करके उसके खिलाफ़ नबुव्वत कर! 22 रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि ऐ सैदा, मैं तुझसे निपट लूँगा। तेरे दरमियान ही मैं अपना जलाल दिखाऊँगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ, क्योंकि मैं शहर की अदालत करके अपना मुक़द्दस किरदार उन पर ज़ाहिर करूँगा। 23 मैं उसमें मोहलक वबा फैलाकर उस की गलियों में खून बहा दूँगा। उसे चारों तरफ़ से तलवार घेर लेगी तो उसमें फँसे हुए लोग हलाक हो जाएंगे। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।

इसराईल की बहाली

* 28:13 या एक किस्म का सुर्ख अक़ीक़। याद रहे कि चूँकि कदीम ज़माने के अक़सर जवाहरात के नाम मत्स्क हैं या उनका मतलब बदल गया है, इसलिए उनका मुख़्तलिफ़ तरज़ुमा हो सकता है। † 28:13 peridot ‡ 28:13 moonstone § 28:13 topas * 28:13 carnelian † 28:13 jasper ‡ 28:13 lapis lazuli

24 इस वक्त इसराईल के पड़ोसी उसे हकीर जानते हैं। अब तक वह उसे चुभनेवाले खार और ज़खमी करनेवाले काँटे हैं। लेकिन आइंदा ऐसा नहीं होगा। तब वह जान लेंगे कि मैं रब कादिरे-मुतलक हूँ। 25 क्योंकि रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि दीगर अक्रवाम के देखते देखते मैं जाहिर करूँगा कि मैं मुक़द्दस हूँ। क्योंकि मैं इसराईलियों को उन अक्रवाम में से निकालकर जमा करूँगा जहाँ मैंने उन्हें मुंतशिर कर दिया था। तब वह अपने वतन में जा बसेंगे, उस मुल्क में जो मैंने अपने खादिम याकूब को दिया था। 26 वह हिफ़ाज़त से उसमें रहकर घर तामीर करेंगे और अंगूर के बाग़ लगाएँगे। लेकिन जो पड़ोसी उन्हें हकीर जानते थे उनकी मैं अदालत करूँगा। तब वह जान लेंगे कि मैं रब उनका खुदा हूँ।”

29

मिसर को सज़ा मिलेगी

1 यहयाकीन बादशाह की जिलावतनी के दसवें साल में रब मुझसे हमकलाम हुआ। दसवें महीने का 11वाँ दिन * था। रब ने फ़रमाया, 2 “ऐ आदमज़ाद, मिसर के बादशाह फ़िरौन की तरफ़ सूख करके उसके और तमाम मिसर के खिलाफ़ नबुव्वत कर!

3 उसे बता, ‘रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि ऐ शाहे-मिसर फ़िरौन, मैं तुझसे निपटने को हूँ। बेशक तू एक बड़ा अज़दहा है जो दरियाए-नील की मुख्तलिफ़ शाखों के बीच में लेटा हुआ कहता है कि यह दरिया मेरा ही है, मैंने खुद उसे बनाया।

4 लेकिन मैं तेरे मुँह में काँटे डालकर तुझे दरिया से निकाल लाऊँगा। मेरे कहने पर तेरी नदियों की तमाम मछलियाँ तेरे छिलकों के साथ लगकर तेरे साथ पकड़ी जाएँगी। 5 मैं तुझे इन तमाम मछलियों समेत रेगिस्तान में फेंक छोड़ूँगा। तू खुले मैदान में गिरकर पड़ा रहेगा। न कोई तुझे इक़्श करेगा, न जमा करेगा बल्कि मैं तुझे दरिदों और परिदों को खिला दूँगा। 6 तब मिसर के तमाम बाशिंदे जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।

तू इसराईल के लिए सरकंडे की कच्ची छड़ी साबित हुआ है। 7 जब उन्होंने तुझे पकड़ने की कोशिश की तो तूने टुकड़े टुकड़े होकर उनके कंधे को ज़खमी कर दिया। जब उन्होंने अपना पूरा वज़न तुझ पर डाला तो तू टूट गया, और उनकी कमर डॉवॉडोल हो गई। 8 इसलिए रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि मैं तेरे खिलाफ़ तलवार भेजूँगा जो मुल्क में से इनसानो-हैवान मिटा डालेगी। 9 मुल्के-मिसर वीरानो-सुनसान हो जाएँगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।

चूँकि तूने दावा किया, “दरियाए-नील मेरा ही है, मैंने खुद उसे बनाया” 10 इसलिए मैं तुझसे और तेरी नदियों से निपट लूँगा। मिसर में हर तरफ़ खंडरात नज़र आएँगे। शिमाल में मिजदाल से लेकर जुनूबी शहर असवान बल्कि एथोपिया की सरहद तक मैं मिसर को वीरानो-सुनसान कर दूँगा। 11 न इनसान और न हैवान का पाँव उसमें से गुज़रेगा। चालीस साल तक उसमें कोई नहीं बसेगा। 12 इर्दगिर्द के दीगर तमाम ममालिक की तरह मैं मिसर को भी उजाड़ूँगा, इर्दगिर्द के दीगर तमाम शहरों की तरह मैं मिसर के शहर भी मलबे के ढेर बना दूँगा। चालीस साल तक उनकी यही हालत रहेगी। साथ साथ मैं मिसरियों को मुख्तलिफ़ अक्रवामो-ममालिक में मुंतशिर कर दूँगा।

13 लेकिन रब कादिरे-मुतलक यह भी फ़रमाता है कि चालीस साल के बाद मैं मिसरियों को उन ममालिक से निकालकर जमा करूँगा जहाँ मैंने उन्हें मुंतशिर कर दिया था। 14 मैं मिसर को बहाल करके उन्हें उनके आबाई वतन यानी जुनूबी मिसर में वापस लाऊँगा। वहाँ वह एक ग़ैरअहम सलतनत कायम करेंगे 15 जो बाक़ी ममालिक की निसबत छोटी होगी। आइंदा वह दीगर कौमों पर अपना रोब नहीं डालेंगे। मैं खुद ध्यान दूँगा कि वह आइंदा इतने कमज़ोर रहें कि दीगर कौमों पर हुकूमत न कर सकें। 16 आइंदा इसराईल न मिसर पर भरोसा करने और न उससे लिपट जाने की आजमाइश में पड़ेगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब कादिरे-मुतलक हूँ।”

शाहे-बाबल को मिसर मिलेगा

17 यहयाकीन बादशाह की जिलावतनी के 27वें साल में रब मुझसे हमकलाम हुआ। पहले महीने का पहला दिन † था। उसने फ़रमाया, 18 “ऐ आदमज़ाद, जब शाहे-बाबल नबूकदनज़ज़र ने सूर का मुहासरा किया तो उस की फ़ौज को सख्त मेहनत करनी पड़ी। हर सर गंजा हुआ, हर कंधे की जिल्द छिल गई। लेकिन न उसे और न उस की फ़ौज को मेहनत का मुनासिब अज़्र मिला।

19 इसलिए रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि मैं शाहे-बाबल नबूकदनज़ज़र को मिसर दे दूँगा। उस की दौलत को वह उठाकर ले जाएगा। अपनी फ़ौज को पैसे देने के लिए वह मिसर को लूट लेगा। 20 चूँकि नबूकदनज़ज़र और उस की फ़ौज ने मेरे लिए खूब मेहनत-मशक्कत की इसलिए मैंने उसे मुआवज़े के तौर पर मिसर दे दिया है। यह रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है।

21 जब यह कुछ पेश आया तो मैं इसराईल को नई ताक़त दूँगा। ऐ हिजकियेल, उस वक्त मैं तेरा मुँह खोल दूँगा, और तू दुबारा उनके दरमियान बोलेगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

30

मिसर की ताक़त ख़त्म हो जाएगी

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमज़ाद, नबुव्वत करके यह पैग़ाम सुना दे, ‘रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि आहो-ज़ारी करो! उस दिन पर अफ़सोस 3 जो आनेवाला है। क्योंकि रब का दिन करीब ही है। उस दिन घने बादल छा जाएँगे, और मैं अक्रवाम की अदालत करूँगा। 4 मिसर पर तलवार नाज़िल होकर वहाँ के बाशिंदों को मार डालेगी। मुल्क की

* 29:1 7 जनवरी। † 29:17 26 अप्रैल।

दौलत छीन ली जाएगी, और उस की बुनियादों को ढा दिया जाएगा। यह देखकर एथोपिया लरज़ उठेगा, ⁵ क्योंकि उसके लोग भी तलवार की ज़द में आ जाएंगे। कई क्रौमों के अफ़राद मिसरियों के साथ हलाक हो जाएंगे। एथोपिया के, लिबिया के, लुदिया के, मिसर में बसनेवाले तमाम अजनबी क्रौमों के, कूब के और मेरे अहद की क्रौम इसराईल के लोग हलाक हो जाएंगे। ⁶ रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि मिसर को सहारा देनेवाले सब गिर जाएंगे, और जिस ताक़त पर वह फ़ख़र करता है वह जाती रहेगी। शिमाल में मिजदाल से लेकर जुनूबी शहर असवान तक उन्हें तलवार मार डालेगी। यह रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है। ⁷ इर्दगिर्द के दीगर ममालिक की तरह मिसर भी वीरानो-सुनसान होगा, इर्दगिर्द के दीगर शहरों की तरह उसके शहर भी मलबे के ढेर होंगे। ⁸ जब मैं मिसर में यों आग लगाकर उसके मददगारों को कुचल डालूँगा तो लोग जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।

⁹ अब तक एथोपिया अपने आपको महफ़ूज़ समझता है, लेकिन उस दिन मेरी तरफ़ से कासिद निकलकर उस मुल्क के बाशिंदों को ऐसी ख़बर पहुँचाएँगे जिससे वह थरथरा उठेगा। क्योंकि कासिद कश्तियों में बैठकर दरियाए-नील के ज़रीए उन तक पहुँचेंगे और उन्हें इतला देंगे कि मिसर तबाह हो गया है। यह सुनकर वहाँ के लोग काँप उठेंगे। यक़ीन करो, यह दिन जल्द ही आनेवाला है। ¹⁰ रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि शाहे-बाबल नबूकदनज़र के ज़रीए मैं मिसर की शानो-शौकत छीन लूँगा। ¹¹ उसे फ़ौज समेत मिसर में लाया जाएगा ताकि उसे तबाह करे। तब अक़वाम में से सबसे ज़ालिम यह लोग अपनी तलवारों को चलाकर मुल्क को मक़तूलों से भर देंगे। ¹² मैं दरियाए-नील की शाखों को ख़ूश करूँगा और मिसर को फ़रोख़्त करके शरीर आदमियों के हवाले कर दूँगा। परदेसियों के ज़रीए मैं मुल्क और जो कुछ भी उसमें है तबाह कर दूँगा। यह मेरा, रब का फ़रमान है।

¹³ रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि मैं मिसरी बुतों को बरबाद करूँगा और मेंफ़िस के मुज़स्समे हटा दूँगा। मिसर में हुक्मरान नहीं रहेगा, और मैं मुल्क पर ख़ौफ़ तारी करूँगा। ¹⁴ मेरे हुक्म पर जुनूबी मिसर बरबाद और जुअन नज़रे-आतिश होगा। मैं थीबस की अदालत ¹⁵ और मिसरी किले पलूसियम पर अपना ग़ज़ब नाज़िल करूँगा। हाँ, थीबस की शानो-शौकत नेस्तो-नाबूद हो जाएगी। ¹⁶ मैं मिसर को नज़रे-आतिश करूँगा। तब पलूसियम दर्दे-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह पेचो-ताब खाएगा, थीबस दुश्मन के क़ब्ज़े में आएगा और मेंफ़िस मुसलसल मुसीबत में फँसा रहेगा। ¹⁷ दुश्मन की तलवार हीलियोपुलिस और बूबस्तिस् के जवानों को मार डालेगी जबकि बची हुई औरतें गुलाम बनकर जिलावतन हो जाएँगी। ¹⁸ तहफ़नहीस में दिन तारीक हो जाएगा जब मैं वहाँ मिसर के जुए को तोड़ दूँगा। वहीं उस की ज़बरदस्त ताक़त जाती रहेगी। घना बादल शहर पर छा जाएगा, और गिर्दो-नवाह की आबादियाँ कैदी बनकर जिलावतन हो जाएँगी। ¹⁹ यों मैं मिसर की अदालत करूँगा और वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

²⁰ यह्याकीन बादशाह की जिलावतनी के ग्यारहवें साल में रब मुझसे हमकलाम हुआ। पहले महीने का सातवाँ दिन * था। उसने फ़रमाया था, ²¹ “ऐ आदमज़ाद, मैंने मिसरी बादशाह फ़िरौन का बाजू तोड़ डाला है। शफ़ा पाने के लिए लाज़िम था कि बाजू पर पट्टी बाँधी जाए, कि टूटी हुई हड्डी के साथ खपचची बाँधी जाए ताकि बाजू मज़बूत होकर तलवार चलाने के क़ाबिल हो जाए। लेकिन इस किस्म का इलाज हुआ नहीं।

²² चुनौचे रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि मैं मिसरी बादशाह फ़िरौन से निपटकर उसके दोनों बाजूओं को तोड़ डालूँगा, सेहतमंद बाजू को भी और टूटे हुए को भी। तब तलवार उसके हाथ से गिर जाएगी ²³ और मैं मिसरियों को मुख़्तलिफ़ अक़वामो-ममालिक में मुंतशिर कर दूँगा।

²⁴ मैं शाहे-बाबल के बाजूओं को तक़वियत देकर उसे अपनी ही तलवार पकड़ा दूँगा। लेकिन फ़िरौन के बाजूओं को मैं तोड़ डालूँगा, और वह शाहे-बाबल के सामने मरनेवाले ज़ख़मी आदमी की तरह कराह उठेगा। ²⁵ शाहे-बाबल के बाजूओं को मैं तक़वियत दूँगा जबकि फ़िरौन के बाजू बेहिसो-हरकत हो जाएंगे। जिस वक़्त मैं अपनी तलवार को शाहे-बाबल को पकड़ा दूँगा और वह उसे मिसर के ख़िलाफ़ चलाएगा उस वक़्त लोग जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ। ²⁶ हाँ, जिस वक़्त मैं मिसरियों को दीगर अक़वामो-ममालिक में मुंतशिर कर दूँगा उस वक़्त वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

31

मिसरी दरख़्त धड़ाम से गिर जाएगा

¹ यह्याकीन बादशाह की जिलावतनी के ग्यारहवें साल में रब मुझसे हमकलाम हुआ। तीसरे महीने का पहला दिन * था। उसने फ़रमाया,

² “ऐ आदमज़ाद, मिसरी बादशाह फ़िरौन और उस की शानो-शौकत से कह,

‘कौन तुझ जैसा अज़ीम था? ³ तू सरो का दरख़्त, लुबनान का देवदार का दरख़्त था, जिसकी ख़ूबसूरत और घनी शाखें जंगल को साया देती थीं। वह इतना बड़ा था कि उस की चोटी बादलों में ओझल थी। ⁴ पानी की कसरत ने उसे इतनी तरक्की दी, गहरे चशमों ने उसे बड़ा बना दिया। उस की नदियाँ तने के चारों तरफ़ बहती थीं और फिर आगे जाकर खेत के बाक़ी तमाम दरख़्तों को भी सेराब करती थीं। ⁵ चुनौचे वह दीगर दरख़्तों से कहीं ज़्यादा बड़ा था। उस की शाखें बढ़ती और उस की टहनियाँ लंबी होती गईं। वाफ़िर पानी के बाइस वह ख़ूब फैलता गया। ⁶ तमाम परिंदे अपने घोंसले उस की शाखों में बनाते थे। उस की शाखों की आड़ में जंगली जानवरों के बच्चे पैदा होते, उसके साथ में तमाम अज़ीम क्रौमों बसती थीं। ⁷ चूँकि दरख़्त की जड़ों को पानी की कसरत मिलती थी इसलिए उस की लंबाई और शाखें काबिले-तारीफ़ और ख़ूबसूरत बन गईं। ⁸ बागे-ख़ुदा के देवदार के दरख़्त उसके बराबर नहीं थे। न जूनीपर की टहनियाँ, न चनार की शाखें उस की शाखों के

* 30:20 29 अप्रैल * 31:1 21 जून।

बराबर थीं। बागे-खुदा में कोई भी दरख्त उस की खूबसूरती का मुकाबला नहीं कर सकता था। ⁹ मैंने खुद उसे मुतअदिद डालियाँ मुहैया करके खूबसूरत बनाया था। अल्लाह के बागे-अदन के तमाम दीगर दरख्त उससे रश्क खाते थे।

¹⁰ लेकिन अब रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि जब दरख्त इतना बड़ा हो गया कि उस की चोटी बादलों में ओझल हो गई तो वह अपने कद पर फ़ख़र करके मग़र्र हो गया।

¹¹ यह देखकर मैंने उसे अक़वाम के सबसे बड़े हुक्मरान के हवाले कर दिया ताकि वह उस की बेदीनी के मुताबिक़ उससे निपट ले। मैंने उसे निकाल दिया, ¹² तो अज़नबी अक़वाम के सबसे ज़ालिम लोगों ने उसे टुकड़े टुकड़े करके ज़मीन पर छोड़ दिया। तब उस की शाखें पहाड़ों पर और तमाम वादियों में गिर गई, उस की टहनियाँ टूटकर मुल्क की तमाम घाटियों में पड़ी रहीं। दुनिया की तमाम अक़वाम उसके साथ में से निकलकर वहाँ से चली गई। ¹³ तमाम परिदे उसके कटे हुए तने पर बैठ गए, तमाम जंगली जानवर उस की सूखी हुई शाखों पर लेट गए। ¹⁴ यह इसलिए हुआ कि आइंदा पानी के किनारे पर लगा कोई भी दरख्त इतना बड़ा न हो कि उस की चोटी बादलों में ओझल हो जाए और नतीजतन वह अपने आपको दूसरों से बरतर समझे। क्योंकि सबके लिए मौत और ज़मीन की गहराइयाँ मुक़रर हैं, सबको पाताल में उतरकर मुरदों के दरमियान बसना है।

¹⁵ रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि जिस वक़्त यह दरख्त पाताल में उतर गया उस दिन मैंने गहराइयों के चश्मों को उस पर मातम करने दिया और उनकी नदियों को रोक दिया ताकि पानी इतनी कसरत से न बहे। उस की खातिर मैंने लुबनान को मातमी लिबास पहनाए। तब खुले मैदान के तमाम दरख्त मुरझा गए। ¹⁶ वह इतने धड़ाम से गिर गया जब मैंने उसे पाताल में उनके पास उतार दिया जो गढ़े में उतर चुके थे कि दीगर अक़वाम को धक्का लगा। लेकिन बागे-अदन के बाकी तमाम दरख्तों को तसल्ली मिली। क्योंकि गो लुबनान के इन चीदा और बेहतरीन दरख्तों को पानी की कसरत मिलती रही थी ताहम यह भी पाताल में उतर गए थे। ¹⁷ गो यह बड़े दरख्त की ताकत रहे थे और अक़वाम के दरमियान रहकर उसके साथ में अपना घर बना लिया था तो भी यह बड़े दरख्त के साथ वहाँ उतर गए जहाँ मक़तूल उनके इंतज़ार में थे।

¹⁸ ऐ मिसर, अज़मत और शान के लिहाज़ से बागे-अदन का कौन-सा दरख्त तेरा मुकाबला कर सकता है? लेकिन तुझे बागे-अदन के दीगर दरख्तों के साथ ज़मीन की गहराइयों में उतारा जाएगा। वहाँ तू नामख़तूनों और मक़तूलों के दरमियान पड़ा रहेगा। रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि यही फिरौन और उस की शानो-शौकत का अंजाम होगा।”

32

अज़दहे फिरौन को मारा जाएगा

¹ यहयाकीन बादशाह के 12वें साल में रब मुझसे हमकलाम हुआ। 12वें महीने का पहला दिन * था। मुझे यह पैग़ाम मिला, ² “ऐ आदमज़ाद, मिसर के बादशाह फिरौन पर मातमी गीत गाकर उसे बता,

‘गो अक़वाम के दरमियान तुझे जवान शेरबबर समझा जाता है, लेकिन दर-हक़ीक़त तू दरियाए-नील की शाखों में रहनेवाला अज़दहा है जो अपनी नदियों को उबलने देता और पाँवों से पानी को जोर से हरकत में लाकर गदला कर देता है।

³ रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मैं मुतअदिद कौमों को जमा करके तेरे पास भेजूँगा ताकि तुझ पर जाल डालकर तुझे पानी से खींच निकालें। ⁴ तब मैं तुझे जोर से ख़शकी पर पटख दूँगा, खुले मैदान पर ही तुझे फेंक छोड़ूँगा। तमाम परिदे तुझ पर बैठ जाएंगे, तमाम जंगली जानवर तुझे खा खाकर सेर हो जाएंगे। ⁵ तेरा गोशत मैं पहाड़ों पर फेंक दूँगा, तेरी लाश से वादियों को भर दूँगा। ⁶ तेरे बहते खून से मैं ज़मीन को पहाड़ों तक सेराब करूँगा, घाटियाँ तुझसे भर जाएँगी।

⁷ जिस वक़्त मैं तेरी ज़िंदगी की बत्ती बुझा दूँगा उस वक़्त मैं आसमान को ढाँप दूँगा। सितारे तारीक़ हो जाएंगे, सूरज बादलों में छुप जाएगा और चाँद की रौशनी नज़र नहीं आएगी। ⁸ जो कुछ भी आसमान पर चमकता-दमकता है उसे मैं तेरे बाइस तारीक़ कर दूँगा। तेरे पूरे मुल्क पर तारीकी छा जाएगी। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।

⁹ बहुत कौमों के दिल घबरा जाएंगे जब मैं तेरे अंजाम की खबर दीगर अक़वाम तक पहुँचाऊँगा, ऐसे ममालिक तक जिनसे तू नावाक़िफ़ है। ¹⁰ मुतअदिद कौमों के सामने ही मैं तुझ पर तलवार चला दूँगा। यह देखकर उन पर दहशत तारी हो जाएगी, और उनके बादशाहों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे। जिस दिन तू धड़ाम से गिर जाएगा उस दिन उन पर मरने का इतना ख़ौफ़ छा जाएगा कि वह बार बार काँप उठेंगे।

¹¹ क्योंकि रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि शाहे-बाबल की तलवार तुझ पर हमला करेगी। ¹² तेरी शानदार फ़ौज उसके सूरमाओं की तलवार से गिरकर हलाक़ हो जाएगी। दुनिया के सबसे ज़ालिम आदमी मिसर का ग़ुर्र और उस की तमाम शानो-शौकत खाक़ में मिला देंगे। ¹³ मैं वाफ़िर पानी के पास खड़े उसके मवेशी को भी बरबाद करूँगा। आइंदा यह पानी न इन्सान, न हैवान के पाँवों से गदला होगा। ¹⁴ रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि उस वक़्त मैं होने दूँगा कि उनका पानी साफ़-शफ़फ़ाफ़ हो जाए और नदियाँ तेल की तरह बहने लगे। ¹⁵ मैं मिसर को वीरानो-सुनसान करके हर चीज़ से महरूम करूँगा, मैं उसके तमाम बाशिंदों को मार डालूँगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

¹⁶ रब कादिरे-मुतलक फरमाता है, “लाज़िम है कि दर्जे-बाला मातमी गीत को गाया जाए। दीगर अक़वाम उसे गाएँ, वह मिसर और उस की शानो-शौकत पर मातम का यह गीत ज़रूर गाएँ।”

* 32:1 3 मार्च।

पाताल में दीगर अकवाम मिसर के इंतजार में हैं

17 यह्याकीन बादशाह के 12वें साल में रब मुझसे हमकलाम हुआ। महीने का 15वाँ दिन था। उसने फरमाया, 18 “ऐ आदमजाद, मिसर की शानो-शौकत पर वावैला कर। उसे दीगर अज़ीम अकवाम के साथ पाताल में उतार दे। उसे उनके पास पहुँचा दे जो पहले गढे में पहुँच चुके हैं। 19 मिसर को बता,

‘अब तेरी खूबसूरती कहाँ गई? अब तू इसमें किसका मुकाबला कर सकता है? उतर जा! पाताल में नामखतूनों के पास ही पड़ा रह।’ 20 क्योंकि लाज़िम है कि मिसरी मकतूलों के बीच में ही गिरकर हलाक हो जाएँ। तलवार उन पर हमला करने के लिए खींची जा चुकी है। अब मिसर को उस की तमाम शानो-शौकत के साथ घसीटकर पाताल में ले जाओ! 21 तब पाताल में बड़े सूरमे मिसर और उसके मददगारों का इस्तकबाल करके कहेंगे, ‘लो, अब यह भी उतर आए हैं, यह भी यहाँ पड़े नामखतूनों और मकतूलों में शामिल हो गए हैं।’

22 वहाँ असूर पहले से अपनी पूरी फौज समेत पड़ा है, और उसके इर्दगिर्द तलवार के मकतूलों की कब्रें हैं। 23 असूर को पाताल के सबसे गहरे गढे में कब्रें मिल गईं, और इर्दगिर्द उस की फौज दफन हुई है। पहले यह ज़िंदों के मुल्क में चारों तरफ़ दहशत फैलाते थे, लेकिन अब खुद तलवार से हलाक हो गए हैं।

24 वहाँ ऐलाम भी अपनी तमाम शानो-शौकत समेत पड़ा है। उसके इर्दगिर्द दफन हुए फ़ौजी तलवार की ज़द में आ गए थे। अब सब उतरकर नामखतूनों में शामिल हो गए हैं, गो ज़िंदों के मुल्क में लोग उनसे शदीद दहशत खाते थे। अब वह भी पाताल में उतरे हुए दीगर लोगों की तरह अपनी स्सवाई भुगत रहे हैं। 25 ऐलाम का बिस्तर मकतूलों के दरमियान ही बिछाया गया है, और उसके इर्दगिर्द उस की तमाम शानदार फ़ौज को कब्रें मिल गई हैं। सब नामखतून, सब मकतूल हैं, गो ज़िंदों के मुल्क में लोग उनसे सख्त दहशत खाते थे। अब वह भी पाताल में उतरे हुए दीगर लोगों की तरह अपनी स्सवाई भुगत रहे हैं। उन्हें मकतूलों के दरमियान ही जगह मिल गई है।

26 वहाँ मसक-तूबल भी अपनी तमाम शानो-शौकत समेत पड़ा है। उसके इर्दगिर्द दफन हुए फ़ौजी तलवार की ज़द में आ गए थे। अब सब नामखतूनों में शामिल हो गए हैं, गो ज़िंदों के मुल्क में लोग उनसे शदीद दहशत खाते थे। 27 और उन्हें उन सूरमाओं के पास जगह नहीं मिली जो कदीम ज़माने में नामखतूनों के दरमियान फ़ौत होकर अपने हथियारों के साथ पाताल में उतर आए थे और जिनके सरों के नीचे तलवार रखी गई। उनका कुसूर उनकी हड्डियों पर पड़ा रहता है, गो ज़िंदों के मुल्क में लोग इन जंगजुओं से दहशत खाते थे।

28 ऐ फ़िरौन, तू भी पाश पाश होकर नामखतूनों और मकतूलों के दरमियान पड़ा रहेगा। 29 अदोम पहले से अपने बादशाहों और रईसों समेत वहाँ पहुँच चुका होगा। गो वह पहले इतने ताकतवर थे, लेकिन अब मकतूलों में शामिल हैं, उन नामखतूनों में जो पाताल में उतर गए हैं। 30 इस तरह शिवाल के तमाम हुक्मरान और सैदा के तमाम बाशिंदे भी वहाँ आ मौजूद होंगे। वह भी मकतूलों के साथ पाताल में उतर गए हैं। गो उनकी ज़बरदस्त ताकत लोगों में दहशत फैलाती थी, लेकिन अब वह शर्मिंदा हो गए हैं, अब वह नामखतून हालत में मकतूलों के साथ पड़े हैं। वह भी पाताल में उतरे हुए बाकी लोगों के साथ अपनी स्सवाई भुगत रहे हैं।

31 तब फ़िरौन इन सबको देखकर तसल्ली पाएगा, गो उस की तमाम शानो-शौकत पाताल में उतर गई होगी। रब कादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि फ़िरौन और उस की पूरी फ़ौज तलवार की ज़द में आ जाएंगे।

32 पहले मेरी मरज़ी थी कि फ़िरौन ज़िंदों के मुल्क में ख़ौफ़ो-हिरास फैलाए, लेकिन अब उसे उस की तमाम शानो-शौकत के साथ नामखतूनों और मकतूलों के दरमियान रखा जाएगा। यह मेरा रब कादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।”

33

हिजकियेल इसराईल का पहरदार है

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमजाद, अपने हमवतनों को यह पैग़ाम पहुँचा दे,

‘जब कभी मैं किसी मुल्क में जंग छेड़ता हूँ तो उस मुल्क के बाशिंदे अपने मर्दों में से एक को चुनकर अपना पहरदार बना लेते हैं। 3 पहरदार की ज़िम्मादारी यह है कि ज्योंही दुश्मन नज़र आए त्योंही नरसिंगा बजाकर लोगों को आगाह करे। 4 उस वक़्त जो नरसिंगे की आवाज़ सुनकर परवा न करे वह खुद ज़िम्मादार ठहरेगा अगर दुश्मन उस पर हमला करके उसे क़त्ल करे। 5 यह उसका अपना कुसूर होगा, क्योंकि उसने नरसिंगे की आवाज़ सुनने के बावजूद परवा न की। लेकिन अगर वह पहरदार की ख़बर मान ले तो अपनी जान को बचाएगा।

6 अब फ़र्ज़ करो कि पहरदार दुश्मन को देखे लेकिन न नरसिंगा बजाए, न लोगों को आगाह करे। अगर नतीजे में कोई क़त्ल हो जाए तो वह अपने गुनाहों के बाइस ही मर जाएगा। लेकिन मैं पहरदार को उस की मौत का ज़िम्मादार ठहराऊँगा।’

7 ऐ आदमजाद, मैंने तुझे इसराईली क़ौम की पहरदारी करने की ज़िम्मादारी दी है। इसलिए लाज़िम है कि जब भी मैं कुछ फ़रमाऊँ तो तू मेरी सुनकर इसराईलियों को मेरी तरफ़ से आगाह करे। 8 अगर मैं किसी बेदीन को बताना चाहूँ, ‘तू यक्रीनन मरेगा’ तो लाज़िम है कि तू उसे यह सुनाकर उस की ग़लत राह से आगाह करे। अगर तू ऐसा न करे तो गो बेदीन अपने गुनाहों के बाइस ही मरेगा ताहम मैं तुझे ही उस की मौत का ज़िम्मादार ठहराऊँगा। 9 लेकिन अगर तू उसे उस की ग़लत राह से आगाह करे और वह न माने तो वह अपने गुनाहों के बाइस मरेगा, लेकिन तूने अपनी जान को बचाया होगा।

तौबा करो!

10 ऐ आदमजाद, इसराईलियों को बता, तुम आहें भर भरकर कहते हो, 'हाय हम अपने जरायम और गुनाहों के बाइस गल-सड़कर तबाह हो रहे हैं। हम किस तरह जीते रहें?' 11 लेकिन रब कादिरे-मुतलक फरमाता है, 'मेरी हयात की कसम, मैं बेदीन की मौत से खुश नहीं होता बल्कि मैं चाहता हूँ कि वह अपनी गलत राह से हटकर जिंदा रहे। चुनौचे तौबा करो! अपनी गलत राहों को तर्क करके वापस आओ! ऐ इसराईली क्रौम, क्या ज़रूरत है कि तू मर जाए?'

12 ऐ आदमजाद, अपने हमवतनों को बता,

'अगर रास्तबाज़ गलत काम करे तो यह बात उसे नहीं बचाएगी कि पहले रास्तबाज़ था। अगर वह गुनाह करे तो उसे जिंदा नहीं छोड़ा जाएगा। इसके मुकाबले मैं अगर बेदीन अपनी बेदीनी से तौबा करके वापस आए तो यह बात उस की तबाही का बाइस नहीं बनेगी कि पहले बेदीन था।' 13 हो सकता है मैं रास्तबाज़ को बताऊँ, 'तू जिंदा रहेगा।' अगर वह यह सुनकर समझने लगे, 'मेरी रास्तबाज़ी मुझे हर सूरत में बचाएगी' और नतीजे में गलत काम करे तो मैं उसके तमाम रास्त कामों का लिहाज़ नहीं करूँगा बल्कि उसके गलत काम के बाइस उसे सज़ाए-मौत दूँगा।

14 लेकिन फ़र्ज़ करो मैं किसी बेदीन आदमी को बताऊँ, 'तू यकीनन मरेगा।' हो सकता है वह यह सुनकर अपने गुनाह से तौबा करके इनसाफ़ और रास्तबाज़ी करने लगे। 15 वह अपने कर्ज़दार को वह कुछ वापस करे जो ज़मानत के तौर पर मिला था, वह चोरी हुई चीज़ें वापस कर दे, वह जिंदगीबख़्श हिदायात के मुताबिक़ जिंदगी गुज़ारे, गरज़ वह हर बुरे काम से गुरेज़ करे। इस सूरत में वह मरेगा नहीं बल्कि जिंदा ही रहेगा।

16 जो भी गुनाह उससे सरज़द हुए थे वह मैं याद नहीं करूँगा। चूँकि उसने बाद में वह कुछ किया जो मुंसिफ़ाना और रास्त था इसलिए वह यकीनन जिंदा रहेगा।

17 तेरे हमवतन एतराज़ करते हैं कि रब का सुलूक सहीह नहीं है जबकि उनका अपना सुलूक सहीह नहीं है। 18 अगर रास्तबाज़ अपना रास्त चाल-चलन छोड़कर बदी करने लगे तो उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी। 19 इसके मुकाबले मैं अगर बेदीन अपना बेदीन चाल-चलन छोड़कर वह कुछ करने लगे जो मुंसिफ़ाना और रास्त है तो वह इस बिना पर जिंदा रहेगा।

20 ऐ इसराईलियों, तुम दावा करते हो कि रब का सुलूक सहीह नहीं है। लेकिन ऐसा हरगिज़ नहीं है! तुम्हारी अदालत करते वक़्त मैं हर एक के चाल-चलन का ख़याल करूँगा।"

यरूशलम पर दुश्मन के कब्ज़े की ख़बर

21 यह्याकीन बादशाह की जिलावतनी के 12वें साल में एक आदमी मेरे पास आया। 10वें महीने का पाँचवाँ दिन * था। यह आदमी यरूशलम से भाग निकला था। उसने कहा, "यरूशलम दुश्मन के कब्ज़े में आ गया है!"

22 एक दिन पहले रब का हाथ शाम के वक़्त मुझ पर आया था, और अगले दिन जब यह आदमी सुबह के वक़्त पहुँचा तो रब ने मेरे मुँह को खोल दिया, और मैं दुबारा बोल सका।

बचे हुए इसराईली अपने आप पर ग़लत एतमाद करते हैं

23 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 24 "ऐ आदमजाद, मुल्के-इसराईल के खंडरात में रहनेवाले लोग कह रहे हैं, 'गो इब्राहीम सिर्फ़ एक आदमी था तो भी उसने पूरे मुल्क पर कब्ज़ा किया। उस की निसबत हम बहुत हैं, इसलिए लाज़िम है कि हमें यह मुल्क हासिल हो।' 25 उन्हें बता,

'रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि तुम गोश्त खाते हो जिसमें खून है, तुम्हारे हाँ बूतपरस्ती और ख़ुनरेज़ी आम है। तो फिर मुल्क किस तरह तुम्हें हासिल हो सकता है? 26 तुम अपनी तलवार पर भरोसा रखकर काबिले-घिन हरकतें करते हो, हत्ता कि हर एक अपने पड़ोसी की बीबी से ज़िना करता है। तो फिर मुल्क किस तरह तुम्हें हासिल हो सकता है?'

27 उन्हें बता, 'रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मेरी हयात की कसम, जो इसराईल के खंडरात में रहते हैं वह तलवार की ज़द में आकर हलाक हो जाएंगे, जो बचकर खुले मैदान में जा बसे हैं उन्हें मैं दरिदों को खिला दूँगा, और जिन्होंने पहाड़ी किलों और ग़ारों में पनाह ली है वह मोहलक बीमारियों का शिकार हो जाएंगे। 28 मैं मुल्क को वीरानो-सुनसान कर दूँगा। जिस ताक़त पर वह फ़ख़र करते हैं वह जाती रहेगी। इसराईल का पहाड़ी इलाक़ा भी इतना तबाह हो जाएगा कि लोग उसमें से गुज़रने से गुरेज़ करेंगे। 29 फिर जब मैं मुल्क को उनकी मक़रूह हरकतों के बाइस वीरानो-सुनसान कर दूँगा तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।'

जिलावतन इसराईलियों की बेपरवाई

30 ऐ आदमजाद, तेरे हमवतन अपने घरों की दीवारों और दरवाज़ों के पास खड़े होकर तेरा ज़िक्र करते हैं। वह कहते हैं, 'आओ, हम नबी के पास जाकर वह पैग़ाम सुनें जो रब की तरफ़ से आया है।' 31 लेकिन गो इन लोगों के हज़ूम आकर तेरे पैग़ामात सुनने के लिए तेरे सामने बैठ जाते हैं तो भी वह उन पर अमल नहीं करते। क्योंकि उनकी ज़बान पर इश्क के ही गीत हैं। उन्हीं पर वह अमल करते हैं, जबकि उनका दिल नारवा नफ़ा के पीछे पड़ा रहता है। 32 असल में वह तेरी बातें यों सुनते हैं जिस तरह किसी गुलूकार के गीत जो महारत से साज़ बजाकर सुरीली आवाज़ से इश्क के गीत गाए। गो वह तेरी बातें सुनकर खुश हो जाते हैं तो भी उन पर अमल नहीं करते। 33 लेकिन यकीनन एक दिन आनेवाला है जब वह जान लेंगे कि हमारे दरमियान नबी रहा है।"

* 33:21 8 जनवरी।

34

इसराईल के बेपरवा गल्लाबान

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमजाद, इसराईल के गल्लाबानों के खिलाफ नबूवत कर! उन्हें बता,

‘रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि इसराईल के गल्लाबानों पर अफसोस जो सिर्फ अपनी ही फिकर करते हैं। क्या गल्लाबान को रेवड़ की फिकर नहीं करनी चाहिए? 3 तुम भेड़-बकरियों का दूध पीते, उनकी ऊन के कपड़े पहनते और बेहतरीन जानवरों का गोशत खाते हो। तो भी तुम रेवड़ की देख-भाल नहीं करते! 4 न तुमने कमजोरों को तकवियत, न बीमारों को शफा दी या ज़खमियों की मरहम-पट्टी की। न तुम आवारा फिरनेवालों को वापस लाए, न गुमशुदा जानवरों को तलाश किया बल्कि सख्ती और ज़ालिमाना तरीके से उन पर हुकूमत करते रहे। 5 गल्लाबान न होने की वजह से भेड़-बकरियाँ तितर-बितर होकर दरिदों का शिकार हो गईं। 6 मेरी भेड़-बकरियाँ तमाम पहाड़ों और बुलंद जगहों पर आवारा फिरती रहीं। सारी ज़मीन पर वह मुंतशिर हो गई, और कोई नहीं था जो उन्हें ढूँढकर वापस लाता।

7 चुनाँचे ऐ गल्लाबानो, रब का जवाब सुनो! 8 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मेरी हयात की कसम, मेरी भेड़-बकरियाँ लुटेरों का शिकार और तमाम दरिदों की गिज़ा बन गई हैं। उनकी देख-भाल करनेवाला कोई नहीं है। मेरे गल्लाबान मेरे रेवड़ को ढूँढकर वापस नहीं लाते बल्कि सिर्फ अपना ही खयाल करते हैं। 9 चुनाँचे ऐ गल्लाबानो, रब का जवाब सुनो! 10 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मैं गल्लाबानों से निपटकर उन्हें अपनी भेड़-बकरियों के लिए ज़िम्मादार ठहराऊँगा। तब मैं उन्हें गल्लाबानी की ज़िम्मादारी से फ़ारिग करूँगा ताकि सिर्फ अपना ही खयाल करने का सिलसिला ख़त्म हो जाए। मैं अपनी भेड़-बकरियों को उनके मुँह से निकालकर बचाऊँगा ताकि आइंदा वह उन्हें न खाएँ।

अल्लाह अच्छा चरवाहा है

11 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि आइंदा मैं खुद अपनी भेड़-बकरियों को ढूँढकर वापस लाऊँगा, खुद उनकी देख-भाल करूँगा। 12 जिस तरह चरवाहा चारों तरफ़ बिखरी हुई अपनी भेड़-बकरियों को इकट्ठा करके उनकी देख-भाल करता है उसी तरह मैं अपनी भेड़-बकरियों की देख-भाल करूँगा। मैं उन्हें उन तमाम मक़ामों से निकालकर बचाऊँगा जहाँ उन्हें घने बादलों और तारीकी के दिन मुंतशिर कर दिया गया था। 13 मैं उन्हें दीगर अक़वाम और ममालिक में से निकालकर जमा करूँगा और उन्हें उनके अपने मुल्क में वापस लाकर इसराईल के पहाड़ों, घाटियों और तमाम आबादियों में चराऊँगा। 14 तब मैं अच्छी चरागाहों में उनकी देख-भाल करूँगा, और वह इसराईल की बुलंदियों पर ही चरेंगी। वहाँ वह सरसब्ज़ मैदानों में आराम करके इसराईल के पहाड़ों पर बेहतरीन घास चरेंगी। 15 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मैं खुद अपनी भेड़-बकरियों की देख-भाल करूँगा, खुद उन्हें बिठाऊँगा।

16 मैं गुमशुदा भेड़-बकरियों का खोज लगाऊँगा और आवारा फिरनेवालों को वापस लाऊँगा। मैं ज़खमियों की मरहम-पट्टी करूँगा और कमजोरों को तकवियत दूँगा। लेकिन मोटे-ताज़े और ताक़तवर जानवरों को मैं ख़त्म करूँगा। मैं इसाफ़ से रेवड़ की गल्लाबानी करूँगा।

17 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि ऐ मेरे रेवड़, जहाँ भेड़ों, मेंढों और बक़रों के दरमियान नाइनसाफ़ी है वहाँ मैं उनकी अदालत करूँगा। 18 क्या यह तुम्हारे लिए काफी नहीं कि तुम्हें खाने के लिए चरागाह का बेहतरीन हिस्सा और पीने के लिए साफ़-शफ़फ़ा पानी मिल गया है? तुम बाक़ी चरागाह को क्यों रौंदते और बाक़ी पानी को पाँवों से गदला करते हो? 19 मेरा रेवड़ क्यों तुमसे कुचली हुई घास खाए और तुम्हारा गदला किया हुआ पानी पिए?

20 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि जहाँ मोटी और दुबली भेड़-बकरियों के दरमियान नाइनसाफ़ी है वहाँ मैं खुद फ़ैसला करूँगा। 21 क्योंकि तुम मोटी भेड़ों ने कमजोरों को कंधों से धक्का देकर और सींगों से मार मारकर अच्छी घास से भगा दिया है। 22 लेकिन मैं अपनी भेड़-बकरियों को तुमसे बचा लूँगा। आइंदा उन्हें लूटा नहीं जाएगा बल्कि मैं खुद उनमें इसाफ़ कायम रखूँगा।

अमनो-अमान की सलतनत

23 मैं उन पर एक ही गल्लाबान यानी अपने खादिम दाऊद को मुक़रर करूँगा जो उन्हें चराकर उनकी देख-भाल करेगा। वही उनका सहीह चरवाहा रहेगा। 24 मैं, रब उनका खुदा हूँगा और मेरा खादिम दाऊद उनके दरमियान उनका हुक्मरान होगा। यह मेरा, रब का फ़रमान है।

25 मैं इसराईलियों के साथ सलामती का अहद बाँधकर दरिदों को मुल्क से निकाल दूँगा। फिर वह हिफ़ाज़त से सो सकेंगे, खाह रेगिस्तान में हों या जंगल में। 26 मैं उन्हें और अपने पहाड़ के इर्दगिर्द के इलाक़े को बरकत दूँगा। मैं मुल्क में वक़्त पर बारिश बरसाता रहूँगा। ऐसी मुबारक बारिशें होंगी 27 कि मुल्क के बाग़ों और खेतों में ज़बरदस्त फ़सलें पकेंगी। लोग अपने मुल्क में महफूज़ होंगे। फिर जब मैं उनके जुए को तोड़कर उन्हें उनसे रिहाई दूँगा जिन्होंने उन्हें गुलाम बनाया था तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ। 28 आइंदा न दीगर अक़वाम उन्हें लूटेंगी, न वह दरिदों की खुराक बनेंगे बल्कि वह हिफ़ाज़त से अपने घरों में बसेंगे। डरानेवाला कोई नहीं होगा। 29 मेरे हुक्म पर ज़मीन ऐसी फ़सलें पैदा करेगी जिनकी शोहरत दूर दूर तक फैलेगी। आइंदा न वह भूके मरेंगे, न उन्हें दीगर अक़वाम की लान-तान सुननी पड़ेगी। 30 रब कादिरे-मुतलक खुदा फरमाता है कि उस वक़्त वह जान लेंगे कि मैं जो रब उनका खुदा हूँ उनके साथ हूँ, कि इसराईली मेरी क़ौम हैं। 31 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि तुम मेरा रेवड़, मेरी चरागाह की भेड़-बकरियाँ हो। तुम मेरे लोग, और मैं तुम्हारा खुदा हूँ।”

35

अदोम रेगिस्तान बनेगा

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमजाद, सईर के पहाड़ी इलाके की तरफ़ सूख करके उसके खिलाफ़ नबुव्वत कर! 3 उसे बता, ‘रब कादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ सईर के पहाड़ी इलाके, अब मैं तुझसे निपट लूँगा। मैं अपना हाथ तेरे खिलाफ़ उठाकर तुझे वीरानो-सुनसान कर दूँगा। 4 मैं तेरे शहरों को मलबे के ढेर बना दूँगा, और तू सरासर उजड़ जाएगा। तब तू जान लेगा कि मैं ही रब हूँ।

5 तू हमेशा इसराईलियों का सख्त दुश्मन रहा है, और जब उन पर आफ़त आई और उनकी सज़ा उरूज तक पहुँची तो तू भी तलवार लेकर उन पर टूट पड़ा। 6 इसलिए रब कादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मेरी हयात की कसम, मैं तुझे कत्लो-ग़ारत के हवाले करूँगा, और कत्लो-ग़ारत तेरा ताक़्क़ुब करती रहेगी। चूँकि तूने कत्लो-ग़ारत करने से नफ़रत न की, इसलिए कत्लो-ग़ारत तेरे पीछे पड़ी रहेगी। 7 मैं सईर के पहाड़ी इलाके को वीरानो-सुनसान करके वहाँ के तमाम आने जानेवालों को मिटा डालूँगा। 8 तेरे पहाड़ी इलाके को मैं मकतूलों से भर दूँगा। तलवार की ज़द में आनेवाले हर तरफ़ पड़े रहेंगे। तेरी पहाड़ियों, वादियों और तमाम घाटियों में लाशें नज़र आएँगी। 9 मेरे हुक्म पर तू अबद तक वीरान रहेगा, और तेरे शहर ग़ैरआबाद रहेंगे। तब तू जान लेगा कि मैं ही रब हूँ।

10 तू बोला, “इसराईल और यहूदाह की दोनों क़ौमों अपने इलाकों समेत मेरी ही हैं! आओ हम उन पर क़ब्ज़ा करें।” तुझे खयाल तक नहीं आया कि रब वहाँ मौजूद है। 11 इसलिए रब कादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मेरी हयात की कसम, मैं तुझसे वही सुलूक करूँगा जो तूने उनसे किया जब तूने गुस्से और हसद के आलम में उन पर अपनी पूरी नफ़रत का इज़हार किया। लेकिन उन्हीं पर मैं अपने आपको ज़ाहिर करूँगा जब मैं तेरी अदालत करूँगा। 12 उस वक़्त तू जान लेगा कि मैं, रब ने वह तमाम कुफ़र सुन लिया है जो तूने इसराईल के पहाड़ों के खिलाफ़ बका है। क्योंकि तूने कहा, “यह उजड़ गए हैं, अब यह हमारे क़ब्ज़े में आ गए हैं और हम उन्हें खा सकते हैं।” 13 तूने शेरूषी मार मारकर मेरे खिलाफ़ कुफ़र बका है, लेकिन ख़बरदार! मैंने इन तमाम बातों पर तवज्जुह दी है। 14 रब कादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि तूने ख़ुशी मनाई कि पूरा मुल्क वीरानो-सुनसान है, लेकिन मैं तुझे भी उतना ही वीरान कर दूँगा। 15 तू कितना खुश हुआ जब इसराईल की मौरूसी ज़मीन उजड़ गई! अब मैं तेरे साथ भी ऐसा ही करूँगा। ऐ सईर के पहाड़ी इलाके, तू पूरे अदोम समेत वीरानो-सुनसान हो जाएगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।’

36

इसराईल अपने वतन वापस आएगा

1 ऐ आदमजाद, इसराईल के पहाड़ों के बारे में नबुव्वत करके कह, ‘ऐ इसराईल के पहाड़ो, रब का कलाम सुनो! 2 रब कादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि दुश्मन बग़लें बजाकर कहता है कि क्या ख़ूब, इसराईल की क़दीम बुलंदियाँ हमारे क़ब्ज़े में आ गई हैं! 3 कादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि उन्होंने तुम्हें उजाड़ दिया, तुम्हें चारों तरफ़ से तंग किया है। नतीजे में तुम दीगर अक़वाम के क़ब्ज़े में आ गई हो और लोग तुम पर कुफ़र बकने लगे हैं। 4 चुनौचे ऐ इसराईल के पहाड़ो, रब कादिरे-मुतलक़ का कलाम सुनो!

रब कादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ पहाड़ो और पहाड़ियो, ऐ घाटियो और वादियो, ऐ खंडरात और इनसान से ख़ाली शहरो, तुम गिर्दो-नवाह की अक़वाम के लिए लूट-मार और मज़ाक़ का निशाना बन गए हो।

5 इसलिए रब कादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि मैंने बड़ी ग़ैरत से इन बाक़ी अक़वाम की सरज़निश की है, खासकर अदोम की। क्योंकि वह मेरी क़ौम का नुक़सान देखकर शायदियाना बजाने लगी और अपनी हिक़ारत का इज़हार करके मेरे मुल्क पर क़ब्ज़ा किया ताकि उस की चरागाह को लूट लें। 6 ऐ पहाड़ो और पहाड़ियो, ऐ घाटियो और वादियो, रब कादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि चूँकि दीगर अक़वाम ने तेरी इतनी स्सवाई की है इसलिए मैं अपनी ग़ैरत और अपना ग़ज़ब उन पर नाज़िल करूँगा। 7 मैं रब कादिरे-मुतलक़ अपना हाथ उठाकर कसम खाता हूँ कि गिर्दो-नवाह की इन अक़वाम की भी स्सवाई की जाएगी।

8 लेकिन ऐ इसराईल के पहाड़ो, तुम पर दुबारा हरियाली फले-फूलेगी। तुम नए सिरे से मेरी क़ौम इसराईल के लिए फल लाओगे, क्योंकि वह जल्द ही वापस आनेवाली है। 9 मैं दुबारा तुम्हारी तरफ़ रूजू करूँगा, दुबारा तुम पर मेहरबानी करूँगा। तब लोग नए सिरे से तुम पर हल चलाकर बीज बोएँगे।

10 मैं तुम पर की आबादी बढ़ा दूँगा। क्योंकि तमाम इसराईली आकर तुम्हारी ढलानों पर अपने घर बना लेंगे। तुम्हारे शहर दुबारा आबाद हो जाएँगे, और खंडरात की जगह नए घर बन जाएँगे। 11 मैं तुम पर बसनेवाले इनसानो-हैवान की तादाद बढ़ा दूँगा, और वह बढ़कर फले-फूलेंगे। मैं होने दूँगा कि तुम्हारे इलाके में माज़ी की तरह आबादी होगी, पहले की निसबत मैं तुम पर कहीं ज़्यादा मेहरबानी करूँगा। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ।

12 मैं अपनी क़ौम इसराईल को तुम्हारे पास पहुँचा दूँगा, और वह दुबारा तुम्हारी ढलानों पर घूमते फिरेंगे। वह तुम पर क़ब्ज़ा करेंगे, और तुम उनकी मौरूसी ज़मीन होगे। आइंदा कभी तुम उन्हें उनकी औलाद से महसूस नहीं करोगे। 13 रब कादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि बेशक लोग तुम्हारे बारे में कहते हैं कि तुम लोगों को हड़प करके अपनी क़ौम को उस की औलाद से महसूस कर देते हो। 14 लेकिन आइंदा ऐसा नहीं

होगा। आइंदा तुम न आदमियों को हड़प करोगे, न अपनी क्रौम को उस की औलाद से महसूस करोगे। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है। 15 मैं खुद होने दूँगा कि आइंदा तुम्हें दीगर अकवाम की लान-तान नहीं सुननी पड़ेगी। आइंदा तुम्हें उनका मज़ाक़ बरदाश्त नहीं करना पड़ेगा, क्योंकि ऐसा कभी होगा नहीं कि तुम अपनी क्रौम के लिए ठोकर का बाइस हो। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।”

अल्लाह अपनी क्रौम को नया दिल और नया रूह बख़्शेगा

16 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 17 “ऐ आदमज़ाद, जब इसराईली अपने मुल्क में आबाद थे तो मुल्क उनके चाल-चलन और हरकतों से नापाक हुआ। वह अपने बुरे रवय्ये के बाइस मेरी नज़र में माहवारी में मुब्तला औरत की तरह नापाक थे। 18 उनके हाथों लोग क़त्ल हुए, उनकी बुतपरस्ती से मुल्क नापाक हो गया।

जवाब में मैंने उन पर अपना ग़ज़ब नाज़िल किया। 19 मैंने उन्हें मुख़्तलिफ़ अक़वामो-ममालिक में मुंतशिर करके उनके चाल-चलन और ग़लत कामों की मुनासिब सज़ा दी। 20 लेकिन जहाँ भी वह पहुँचे वहाँ उन्हीं के सबब से मेरे मुक़द्दस नाम की बेहुरमती हुई। क्योंकि जिनसे भी उनकी मुलाकात हुई उन्होंने कहा, ‘गो यह रब की क्रौम हैं तो भी इन्हें उसके मुल्क को छोड़ना पड़ा!’ 21 यह देखकर कि जिस क्रौम में भी इसराईली जा बसे वहाँ उन्होंने मेरे मुक़द्दस नाम की बेहुरमती की मैं अपने नाम की फ़िकर करने लगा। 22 इसलिए इसराईली क्रौम को बता,

‘रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि जो कुछ मैं करनेवाला हूँ वह मैं तेरी खातिर नहीं करूँगा बल्कि अपने मुक़द्दस नाम की खातिर। क्योंकि तुमने दीगर अक़वाम में मुंतशिर होकर उस की बेहुरमती की है। 23 मैं ज़ाहिर करूँगा कि मेरा अज़ीम नाम कितना मुक़द्दस है। तुमने दीगर अक़वाम के दरमियान रहकर उस की बेहुरमती की है, लेकिन मैं उनकी मौजूदगी में तुम्हारी मदद करके अपना मुक़द्दस किरदार उन पर ज़ाहिर करूँगा। तब वह जान लेंगी कि मैं ही रब हूँ। यह रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है।

24 मैं तुम्हें दीगर अक़वामो-ममालिक से निकाल दूँगा और तुम्हें जमा करके तुम्हारे अपने मुल्क में वापस लाऊँगा। 25 मैं तुम पर साफ़ पानी छिड़कूँगा तो तुम पाक-साफ़ हो जाओगे। हाँ, मैं तुम्हें तमाम नापाकियों और बुतों से पाक-साफ़ कर दूँगा।

26 तब मैं तुम्हें नया दिल बख़्शकर तुममें नई रूह डाल दूँगा। मैं तुम्हारा संगीन दिल निकालकर तुम्हें गोश्त-पोस्त का नरम दिल अता करूँगा। 27 क्योंकि मैं अपना ही रूह तुममें डालकर तुम्हें इस काबिल बना दूँगा कि तुम मेरी हिदायात की पैरवी और मेरे अहकाम पर ध्यान से अमल कर सको। 28 तब तुम दुबारा उस मुल्क में सुकूनत करोगे जो मैंने तुम्हारे बापदादा को दिया था। तुम मेरी क्रौम होगे, और मैं तुम्हारा खुदा हूँगा। 29 मैं खुद तुम्हें तुम्हारी तमाम नापाकी से छुड़ाऊँगा। आइंदा मैं तुम्हारे मुल्क में काल पड़ने नहीं दूँगा बल्कि अनाज को उगने और बढ़ने का हुक्म दूँगा। 30 मैं बाग़ों और खेतों की पैदावार बढ़ा दूँगा ताकि आइंदा तुम्हें मुल्क में काल पड़ने के बाइस दीगर क्रौमों के ताने सुनने न पड़ें। 31 तब तुम्हारी बुरी राहें और ग़लत हरकतें तुम्हें याद आएँगी, और तुम अपने गुनाहों और बुतपरस्ती के बाइस अपने आपसे धिन खाओगे। 32 लेकिन याद रहे कि मैं यह सब कुछ तुम्हारी खातिर नहीं कर रहा। रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि ऐ इसराईली क्रौम, शर्म करो! अपने चाल-चलन पर शर्मसार हो!

33 रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि जिस दिन मैं तुम्हें तुम्हारे तमाम गुनाहों से पाक-साफ़ करूँगा उस दिन मैं तुम्हें दुबारा तुम्हारे शहरों में आबाद करूँगा। तब खंडरात पर नए घर बनेंगे। 34 गो इस वक़्त मुल्क में से गुज़रनेवाले हर मुसाफ़िर को उस की तबाहशुदा हालत नज़र आती है, लेकिन उस वक़्त ऐसा नहीं होगा बल्कि ज़मीन की खेतीबाड़ी की जाएगी। 35 लोग यह देखकर कहेंगे, “पहले सब कुछ वीरानो-सुनसान था, लेकिन अब मुल्क बाग़ो-अदन बन गया है! पहले उसके शहर ज़मीनबोस थे और उनकी जगह मलबे के ढेर नज़र आते थे। लेकिन अब उनकी नए सिरे से क़िलाबंदी हो गई है और लोग उनमें आबाद हैं।” 36 फिर इर्दगिर्द की जितनी क्रौमें बच गई होंगी वह जान लेंगी कि मैं, रब ने नए सिरे से वह कुछ तामीर किया है जो पहले ढा दिया गया था, मैंने वीरान ज़मीन में दुबारा पौदे लगाए हैं। यह मेरा, रब का फ़रमान है, और मैं यह करूँगा भी।

37 कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि एक बार फिर मैं इसराईली क्रौम की इल्तिजाएँ सुनकर बाशंदों की तादाद रेवड़ की तरह बढ़ा दूँगा। 38 जिस तरह माज़ी में ईद के दिन यस्शालम में हर तरफ़ कुरबानी की भेड़-बकरियाँ नज़र आती थीं उसी तरह मुल्क के शहरों में दुबारा हुज़ूम के हुज़ूम नज़र आएँगे। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

37

हड्डियों से भरी वादी की रोया

1 एक दिन रब का हाथ मुझ पर आ ठहरा। रब ने मुझे अपने रूह से बाहर ले जाकर एक खुली वादी के बीच में खड़ा किया। वादी हड्डियों से भरी थी। 2 उसने मुझे उनमें से गुज़रने दिया तो मैंने देखा कि वादी की ज़मीन पर बेशुमार हड्डियाँ बिखरी पड़ी हैं। यह हड्डियाँ सरासर सूखी हुई थीं।

3 रब ने मुझसे पृछा, “ऐ आदमज़ाद, क्या यह हड्डियाँ दुबारा ज़िंदा हो सकती हैं?” मैंने जवाब दिया, “ऐ रब कादिरे-मुतलक, तू ही जानता है।”

4 तब उसने फरमाया, “नबुव्वत करके हड्डियों को बता, ‘ऐ सूखी हुई हड्डियो, रब का कलाम सुनो! 5 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मैं तुममें दम डालूँगा तो तुम दुबारा ज़िंदा हो जाओगी। 6 मैं तुम पर नसें और गोश्त चढ़ाकर सब कुछ जिल्द से ढाँप दूँगा। मैं तुममें दम डाल दूँगा, और तुम ज़िंदा हो जाओगी। तब तुम जान लोगी कि मैं ही रब हूँ।”

7 मैंने ऐसा ही किया। और ज्योंही मैं नबुव्वत करने लगा तो शोर मच गया। हड्डियाँ खड़खड़ाते हुए एक दूसरी के साथ जुड़ गईं, और होते होते पूरे ढाँचे बन गए। 8 मेरे देखते देखते नसें और गोश्त ढाँचों पर चढ़ गया और सब कुछ जिल्द से ढाँपा गया। लेकिन अब तक जिस्मों में दम नहीं था।

9 फिर रब ने फरमाया, “ऐ आदमज़ाद, नबुव्वत करके दम से मुखातिब हो जा, ‘ऐ दम, रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि चारों तरफ़ से आकर मकतूलों पर फूँक मार ताकि दुबारा ज़िंदा हो जाएँ।”

10 मैंने ऐसा ही किया तो मकतूलों में दम आ गया, और वह ज़िंदा होकर अपने पाँवों पर खड़े हो गए। एक निहायत बड़ी फ़ौज वुजूद में आ गई थी!

11 तब रब ने फरमाया, “ऐ आदमज़ाद, यह हड्डियाँ इसराईली क़ौम के तमाम अफ़राद हैं। वह कहते हैं, ‘हमारी हड्डियाँ सूख गई हैं, हमारी उम्मीद जाती रही है। हम ख़त्म ही हो गए हैं!’ 12 चुनौचे नबुव्वत करके उन्हें बता,

‘रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि ऐ मेरी क़ौम, मैं तुम्हारी क़ब्रों को खोल दूँगा और तुम्हें उनमें से निकालकर मुल्के-इसराईल में वापस लाऊँगा। 13 ऐ मेरी क़ौम, जब मैं तुम्हारी क़ब्रों को खोल दूँगा और तुम्हें उनमें से निकाल लाऊँगा तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ। 14 मैं अपना रूह तुममें डाल दूँगा तो तुम ज़िंदा हो जाओगे। फिर मैं तुम्हें तुम्हारे अपने मुल्क में बसा दूँगा। तब तुम जान लोगे कि यह मेरा, रब का फ़रमान है और मैं यह करूँगा भी।”

यहदाह और इसराईल मुतहिद हो जाएंगे

15 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 16 “ऐ आदमज़ाद, लकड़ी का टुकड़ा लेकर उस पर लिख दे, ‘जुनूबी क़बीला यहदाह और जितने इसराईली क़बीले उसके साथ मुतहिद हैं।’ फिर लकड़ी का एक और टुकड़ा लेकर उस पर लिख दे, ‘शिमाली क़बीला यूसुफ़ यानी इफ़राईम और जितने इसराईली क़बीले उसके साथ मुतहिद हैं।’ 17 अब लकड़ी के दोनों टुकड़े एक दूसरे के साथ यों जोड़ दे कि तेरे हाथ में एक हो जाएँ।

18 तेरे हमवतन तुझसे पूछेंगे, ‘क्या आप हमें इसका मतलब नहीं बताएँगे?’ 19 तब उन्हें बता, ‘रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मैं यूसुफ़ यानी लकड़ी के मालिक इफ़राईम और उसके साथ मुतहिद इसराईली क़बीलों को लेकर यहदाह की लकड़ी के साथ जोड़ दूँगा। मेरे हाथ में वह लकड़ी का एक ही टुकड़ा बन जाएगा।’

20 अपने हमवतनों की मौजूदगी में लकड़ी के मज़क़रा टुकड़े हाथ में थामे रख 21 और साथ साथ उन्हें बता, ‘रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मैं इसराईलियों को उन क़ौमों में से निकाल लाऊँगा जहाँ वह जा बसे हैं। मैं उन्हें जमा करके उनके अपने मुल्क में वापस लाऊँगा। 22 वही इसराईल के पहाड़ों पर मैं उन्हें मुतहिद करके एक ही क़ौम बना दूँगा। उन पर एक ही बादशाह हुकूमत करेगा। आइंदा वह न कभी दो क़ौमों में तक़सीम हो जाएंगे, न दो सलतनतों में। 23 आइंदा वह अपने आपको न अपने बुतों या बाक़ी मक़रूह चीज़ों से नापाक करेंगे, न उन गुनाहों से जो अब तक करते आए हैं। मैं उन्हें उन तमाम मक़ामों से निकालकर छुड़ाऊँगा जिनमें उन्होंने गुनाह किया है। मैं उन्हें पाक-साफ़ करूँगा। यों वह मेरी क़ौम होंगे और मैं उनका ख़ुदा हूँगा। 24 मेरा ख़ादिम दाऊद उनका बादशाह होगा, उनका एक ही ग़ल्लाबान होगा। तब वह मेरी हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारेंगे और ध्यान से मेरे अहक़ाम पर अमल करेंगे।

25 जो मुल्क मैंने अपने ख़ादिम याक़ूब को दिया था और जिसमें तुम्हारे बापदादा रहते थे उसमें इसराईली दुबारा बसेंगे। हाँ, वह और उनकी औलाद हमेशा तक उसमें आबाद रहेंगे, और मेरा ख़ादिम दाऊद अबद तक उन पर हुकूमत करेगा। 26 तब मैं उनके साथ सलामती का अहद बाँधूँगा, एक ऐसा अहद जो हमेशा तक क़ायम रहेगा। मैं उन्हें क़ायम करके उनकी तादाद बढ़ाता जाऊँगा, और मेरा मक़दिस अबद तक उनके दरमियान रहेगा। 27 वह मेरी सुकूनतगाह के साथ में बसेंगे। मैं उनका ख़ुदा हूँगा, और वह मेरी क़ौम होंगे। 28 जब मेरा मक़दिस अबद तक उनके दरमियान होगा तो दीगर अक़वाम जान लेंगी कि मैं ही रब हूँ, कि इसराईल को मुक़द्दस करनेवाला मैं ही हूँ।”

38

इसराईल का दुश्मन जूज

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमज़ाद, मुल्के-माजूज के हुक़मरान जूज की तरफ़ स़ख़ कर जो मसक और तूबल का आला रईस है। उसके खिलाफ़ नबुव्वत करके 3 कह,

‘रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि ऐ मसक और तूबल के आला रईस जूज, अब मैं तुझसे निपट लूँगा। 4 मैं तेरे मुँह को फेर दूँगा, तेरे मुँह में काँटे डालकर तुझे पूरी फ़ौज समेत निकाल दूँगा। शानदार वरदियों से आरास्ता तेरे तमाम घुड़सवार और फ़ौजी अपने घोड़ों समेत निकल आएँगे, गो तेरी बड़ी फ़ौज के मर्द छोटी और बड़ी ढालें उठाए फ़िरेंगे, और हर एक तलवार से लैस होगा। 5 फ़ारस, एथोपिया और लिबिया के मर्द भी फ़ौज में शामिल होंगे। हर एक बड़ी ढाल और ख़ोद से मुसल्लह होगा। 6 जुमर और शिमाल के दूर-दराज़ इलाक़े बैत-तुजरमा के तमाम

दस्ते भी साथ होंगे। गरज उस वक्त बहुत-सी क्रौमें तेरे साथ निकलेंगी। ⁷ चुनौचे मुस्तैद हो जा! जितने लशकर तेरे इर्दगिर्द जमा हो गए हैं उनके साथ मिलकर खूब तैयारियाँ कर! उनके लिए पहरादारी कर।

⁸ मुतअद्दिद दिनों के बाद तुझे मुल्के-इसराईल पर हमला करने के लिए बुलाया जाएगा जिसे अभी जंग से छुटकारा मिला होगा और जिसके जिलावतन दीगर बहुत-सी क्रौमों में से वापस आ गए होंगे। गो इसराईल का पहाड़ी इलाका बड़ी देर से बरबाद हुआ होगा, लेकिन उस वक्त उसके बाशिंदे जिलावतनी से वापस आकर अमनो-अमान से उसमें बसेंगे।

⁹ तब तू तूफान की तरह आगे बढ़ेगा, तेरे दस्ते बादल की तरह पूरे मुल्क पर छा जाएंगे। तेरे साथ बहुत-सी क्रौमें होंगी। ¹⁰ रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि उस वक्त तेरे जहन में बुरे खयालात उभर आएँगे और तू शरीर मनसूबे बाँधेगा। ¹¹ तू कहेगा, “यह मुल्क खुला है, और उसके बाशिंदे आराम और सुकून के साथ रह रहे हैं। आओ, मैं उन पर हमला करूँ, क्योंकि वह अपनी हिफाजत नहीं कर सकते। न उनकी चारदीवारी है, न दरवाज़ा या कुंडा। ¹² मैं इसराईलियों को लूट लूँगा। जो शहर पहले खंडरात थे लेकिन अब नए सिरे से आबाद हुए हैं उन पर मैं टूट पड़ूँगा। जो जिलावतन दीगर अकवाम से वापस आ गए हैं उनकी दौलत मैं छीन लूँगा। क्योंकि उन्हें काफी माल-मवेशी हासिल हुए हैं, और अब वह दुनिया के मरकज़ में आ बसे हैं।” ¹³ सबा, ददान और तरसीस के ताजिर और बुजुर्ग पूछेंगे कि क्या तूने वाकई अपने फौजियों को लूट-मार के लिए इकट्ठा कर लिया है? क्या तू वाकई सोना-चाँदी, माल-मवेशी और बाकी बहुत-सी दौलत छीनना चाहता है?’

¹⁴ ऐ आदमज़ाद, नबुव्वत करके जूज को बता, ‘रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि उस वक्त तुझे पता चलेगा कि मेरी क्रौम इसराईल सुकून से ज़िंदगी गुज़ार रही है, ¹⁵ और तू दूर-दराज़ शिमाल के अपने मुल्क से निकलेगा। तेरी वसी और ताकतवर फौज में मुतअद्दिद क्रौमें शामिल होंगी, और सब घोड़ों पर सवार ¹⁶ मेरी क्रौम इसराईल पर धावा बोल देंगे। वह उस पर बादल की तरह छा जाएंगे। ऐ जूज, उन आखिरी दिनों में मैं खुद तुझे अपने मुल्क पर हमला करने दूँगा ताकि दीगर अकवाम मुझे जान लें। क्योंकि जो कुछ मैं उनके देखते देखते तेरे साथ करूँगा उससे मेरा मुकद्दस किरदार उन पर ज़ाहिर हो जाएगा। ¹⁷ रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि तू वही है जिसका जिक्र मैंने माज़ी में किया था। क्योंकि माज़ी में मेरे खादिम यानी इसराईल के नबी काफी सालों से पेशगोई करते रहे कि मैं तुझे इसराईल के खिलाफ भेजूँगा।

अल्लाह खुद जूज को तबाह करेगा

¹⁸ रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि जिस दिन जूज मुल्के-इसराईल पर हमला करेगा उस दिन मैं आग-बगूला हो जाऊँगा। ¹⁹ मैं फरमाता हूँ कि उस दिन मेरी गैरत और शदीद कहर यों भड़क उठेगा कि यकीनन मुल्के-इसराईल में ज़बरदस्त जलजला आएगा। ²⁰ सब मेरे सामने थरथरा उठेंगे, खाह मछलियाँ हों या परिदे, खाह ज़मीन पर चलने और रेंगेनेवाले जानवर हों या इनसान। पहाड़ उनकी गुज़रगाहों समेत खाक में मिलाए जाएंगे, और हर दीवार गिर जाएगी।

²¹ रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मैं अपने तमाम पहाड़ी इलाके में जूज के खिलाफ तलवार भेजूँगा। तब सब आपस में लड़ने लगेंगे। ²² मैं उनमें मोहलक बीमारियाँ और कल्लो-गारत फैलाकर उनकी अदालत करूँगा। साथ साथ मैं मूसलाधार बारिश, ओले, आग और गंधक जूज और उस की बैनुल-अकवामी फौज पर बरसा दूँगा। ²³ यों मैं अपना अज़ीम और मुकद्दस किरदार मुतअद्दिद क्रौमों पर ज़ाहिर करूँगा, उनके देखते देखते अपने आपका इज़हार करूँगा। तब वह जान लेंगी कि मैं ही रब हूँ।’

39

¹ ऐ आदमज़ाद, जूज के खिलाफ नबुव्वत करके कह,

‘रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि ऐ मसक और तबल के आला रईस जूज, अब मैं तुझसे निपट लूँगा। ² मैं तेरा मुँह फेर दूँगा और तुझे शिमाल के दूर-दराज़ इलाके से घसीटकर इसराईल के पहाड़ों पर लाऊँगा। ³ वहाँ मैं तेरे बाएँ हाथ से कमान हटाऊँगा और तेरे दाएँ हाथ से तीर गिरा दूँगा। ⁴ इसराईल के पहाड़ों पर ही तू अपने तमाम बैनुल-अकवामी फौजियों के साथ हलाक हो जाएगा। मैं तुझे हर किस्म के शिकारी परिदों और दरिदों को खिला दूँगा। ⁵ क्योंकि तेरी लाश खुले मैदान में गिरकर पड़ी रहेगी। यह मेरा, रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।

⁶ मैं माजुज पर और अपने आपको महफूज़ समझनेवाले साहिली इलाकों पर आग भेजूँगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ। ⁷ अपनी क्रौम इसराईल के दरमियान ही मैं अपना मुकद्दस नाम ज़ाहिर करूँगा। आइंदा मैं अपने मुकद्दस नाम की बेहुरमती बरदाश्त नहीं करूँगा। तब अकवाम जान लेंगी कि मैं रब और इसराईल का कुद्दूस हूँ। ⁸ रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि यह सब कुछ होनेवाला है, यह ज़रूर पेश आएगा! वही दिन है जिसका जिक्र मैं कर चुका हूँ।

जूज और उस की फौज की तदफ़ीन

⁹ फिर इसराईली शहरों के बाशिंदे मैदाने-जंग में जाकर दुश्मन के असला को ईंधन के लिए जमा करेंगे। इतनी छोटी और बड़ी ढालें, कमान, तीर, लाठियाँ और नेजे इकट्ठे हो जाएंगे कि सात साल तक किसी और ईंधन की ज़रूरत नहीं होगी। ¹⁰ इसराईलियों को खुले मैदान में लकड़ी चुनने या जंगल में दरख्त काटने की ज़रूरत नहीं होगी, क्योंकि वह यह हथियार ईंधन के तौर पर इस्तेमाल करेंगे। अब वह उन्हें लूटेंगे जिन्होंने उन्हें लूट लिया था, वह उनसे माल-मवेशी छीन लेंगे जिन्होंने उनसे सब कुछ छीन लिया था। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।

11 उस दिन मैं इसराईल में जूज के लिए कब्रिस्तान मुकर्रर करूँगा। यह कब्रिस्तान वादीए-अबारीम * में होगा जो बहीराए-मुरदार के मशरिक में है। जूज के साथ उस की तमाम फौज भी दफन होगी, इसलिए मुसाफिर आइंदा उसमें से नहीं गुजर सकेंगे। तब वह जगह वादीए-हमून जूज † भी कहलाएगी। 12 जब इसराईली तमाम लाशें दफनाकर मुल्क को पाक-साफ करेंगे तो सात महीने लगेंगे। 13 तमाम उम्मत इस काम में मसरूफ रहेगी। रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि जिस दिन मैं दुनिया पर अपना जलाल जाहिर करूँगा उस दिन यह उनके लिए शोहरत का बाइस होगा।

14 सात महीनों के बाद कुछ आदमियों को अलग करके कहा जाएगा कि पूरे मुल्क में से गुजरकर मालूम करें कि अभी कहाँ कहाँ लाशें पड़ी हैं। क्योंकि लाजिम है कि सब दफन हो जाएँ ताकि मुल्क दुबारा पाक-साफ हो जाए। 15 जहाँ कहीं कोई लाश नज़र आए उस जगह की वह निशानदेही करेंगे ताकि दफनानेवाले उसे वादीए-हमून जूज में ले जाकर दफन करें। 16 यों मुल्क को पाक-साफ किया जाएगा। उस वक़्त से इसराईल के एक शहर का नाम हमूना ‡ कहलाएगा।

17 ऐ आदमज़ाद, रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि हर किस्म के परिदे और दरिदे बुलाकर कह, ‘आओ, इधर जमा हो जाओ! चारों तरफ से आकर इसराईल के पहाड़ी इलाके में जमा हो जाओ! क्योंकि यहाँ मैं तुम्हारे लिए कुरबानी की ज़बरदस्त ज़ियाफत तैयार कर रहा हूँ। यहाँ तुम्हें गोश्त खाने और खून पीने का सुनहरा मौका मिलेगा। 18 तुम सूमाओं का गोश्त खाओगे और दुनिया के हुक्मरानों का खून पियोगे। सब बसन के मोटे-ताज़े मेंढों, भेड़ के बच्चों, बक़रों और बैलों जैसे मज़ेदार होंगे। 19 क्योंकि जो कुरबानी में तुम्हारे लिए तैयार कर रहा हूँ उस की चरबी तुम जी भरकर खाओगे, उसका खून पी पीकर मस्त हो जाओगे। 20 रब फरमाता है कि तुम मेरी मेज़ पर बैठकर घोड़ों और घुड़सवारों, सूमाओं और हर किस्म के फौजियों से सेर हो जाओगे।’

रब अपनी कौम वापस लाएगा

21 यों मैं दीगर अक़वाम पर अपना जलाल जाहिर करूँगा। क्योंकि जब मैं जूज और उस की फौज की अदालत करके उनसे निपट लूँगा तो तमाम अक़वाम इसकी गवाह होंगी। 22 तब इसराईली कौम हमेशा के लिए जान लेगी कि मैं रब उसका खुदा हूँ। 23 और दीगर अक़वाम जान लेंगी कि इसराईली अपने गुनाहों के सबब से जिलावतन हुए। वह जान लेंगी कि चूँकि इसराईली मुझसे बेवफ़ा हुए, इसी लिए मैंने अपना मुँह उनसे छुपाकर उन्हें उनके दुश्मनों के हवाले कर दिया, इसी लिए वह सब तलवार की ज़द में आकर हलाक हुए। 24 क्योंकि मैंने उन्हें उनकी नापाकी और जरायम का मुनासिब बदला देकर अपना चेहरा उनसे छुपा लिया था।

25 चुनौचे रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि अब मैं याकूब की औलाद को बहाल करके तमाम इसराईली कौम पर तरस खाऊँगा। अब मैं बड़ी ग़ैरत से अपने मुक़द्दस नाम का दिफ़ा करूँगा। 26 जब इसराईली सुकून से और ख़ौफ़ खाए बग़ैर अपने मुल्क में रहेंगे तो वह अपनी स्सवाई और मेरे साथ बेवफ़ाई का एतराफ़ करेंगे। 27 मैं उन्हें दीगर अक़वाम और उनके दुश्मनों के ममालिक में से जमा करके उन्हें वापस लाऊँगा और यों उनके ज़रीए अपना मुक़द्दस किरदार मुतअद्दिद अक़वाम पर जाहिर करूँगा। 28 तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ। क्योंकि उन्हें अक़वाम में जिलावतन करने के बाद मैं उन्हें उनके अपने ही मुल्क में दुबारा जमा करूँगा। एक भी पीछे नहीं छोड़ा जाएगा। 29 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि आइंदा मैं अपना चेहरा उनसे नहीं छुपाऊँगा। क्योंकि मैं अपना रूह इसराईली कौम पर उंडेल दूँगा।”

40

रब के नए घर की रोया

1 हमारी जिलावतनी के 25वें साल में रब का हाथ मुझे पर आ ठहरा और वह मुझे यरूशलम ले गया। महीने का दसवाँ दिन * था। उस वक़्त यरूशलम को दुश्मन के कब्ज़े में आए 14 साल हो गए थे। 2 इलाही रोयाओं में अल्लाह ने मुझे मुल्के-इसराईल के एक निहायत बुलंद पहाड़ पर पहुँचाया। पहाड़ के जुनूब में मुझे एक शहर-सा नज़र आया। 3 अल्लाह मुझे शहर के करीब ले गया तो मैंने शहर के दरवाज़े में खड़े एक आदमी को देखा जो पीतल का बना हुआ लग रहा था। उसके हाथ में कतान की रस्सी और फ़ीता था। 4 उसने मुझसे कहा, “ऐ आदमज़ाद, ध्यान से देख, गौर से सुन! जो कुछ भी मैं तुझे दिखाऊँगा, उस पर तवज्जुह दे। क्योंकि तुझे इसी लिए यहाँ लाया गया है कि मैं तुझे यह दिखाऊँ। जो कुछ भी तू देखे उसे इसराईली कौम को सुना दे!”

रब के घर के बैरूनी सहन का मशरिकी दरवाज़ा

5 मैंने देखा कि रब के घर का सहन चारदीवारी से घिरा हुआ है। जो फ़ीता मेरे राहनुमा के हाथ में था उस की लंबाई साढ़े 10 फुट थी। इसके ज़रीए उसने चारदीवारी को नाप लिया। दीवार की मोटाई और ऊँचाई दोनों साढ़े दस दस फुट थी।

6 फिर मेरा राहनुमा मशरिकी दरवाज़े के पास पहुँचानेवाली सीढ़ी पर चढ़कर दरवाज़े की दहलीज़ पर रुक गया। जब उसने उस की पैमाइश की तो उस की गहराई साढ़े 10 फुट निकली।

7 जब वह दरवाज़े में खड़ा हुआ तो दाईं और बाईं तरफ़ पहरेदारों के तीन तीन कमरे नज़र आए। हर कमरे की लंबाई और चौड़ाई साढ़े दस दस फुट थी। कमरों के दरमियान की दीवार पौने नौ फुट मोटी थी। इन कमरों के बाद एक और दहलीज़ थी जो साढ़े 10 फुट गहरी थी। उस पर से गुजरकर हम दरवाज़े से मुलहिक एक बरामदे में आए जिसका सूख रब के घर की तरफ़ था। 8 मेरे राहनुमा ने बरामदे की पैमाइश की 9 तो

* 39:11 या गुजरनेवालों की वादी। † 39:11 जूज के फौजी हुज़ूम की वादी। ‡ 39:16 हुज़ूम यानी जूज के। * 40:1 28 अप्रैल।

पता चला कि उस की लंबाई 14 फुट है। दरवाजे के सतून-नुमा बाजू साढे तीन तीन फुट मोटे थे। बरामदे का सूख रब के घर की तरफ था। 10 पहरेदारों के मज़क़रा कमरे सब एक जैसे बड़े थे, और उनके दरमियानवाली दीवारें सब एक जैसी मोटी थीं।

11 इसके बाद उसने दरवाजे की गुज़रगाह की चौड़ाई नापी। यह मिल मिलाकर पौने 23 फुट थी, अलबत्ता जब किवाड़ खुले थे तो उनके दरमियान का फासला साढे 17 फुट था। 12 पहरेदारों के हर कमरे के सामने एक छोटी-सी दीवार थी जिसकी ऊँचाई 21 इंच थी जबकि हर कमरे की लंबाई और ऊँचाई साढे दस दस फुट थी। 13 फिर मेरे राहनुमा ने वह फासला नापा जो इन कमरों में से एक की पिछली दीवार से लेकर उसके मुक़ाबिल के कमरे की पिछली दीवार तक था। मालूम हुआ कि पौने 44 फुट है।

14 सहन में दरवाजे से मुलहिक वह बरामदा था जिसका सूख रब के घर की तरफ था। उस की चौड़ाई 33 फुट थी। † 15 जो बाहर से दरवाजे में दाखिल होता था वह साढे 87 फुट के बाद ही सहन में पहुँचता था।

16 पहरेदारों के तमाम कमरों में छोटी खिड़कियाँ थीं। कुछ बैरूनी दीवार में थीं, कुछ कमरों के दरमियान की दीवारों में। दरवाजे के सतून-नुमा बाजूओं में खजूर के दरख्त मुनक्क़श थे।

रब के घर का बैरूनी सहन

17 फिर मेरा राहनुमा दरवाजे में से गुज़रकर मुझे रब के घर के बैरूनी सहन में लाया। चारदीवारी के साथ साथ 30 कमरे बनाए गए थे जिनके सामने पत्थर का फ़र्श था। 18 यह फ़र्श चारदीवारी के साथ साथ था। जहाँ दरवाज़ों की गुज़रगाहें थीं वहाँ फ़र्श उनकी दीवारों से लगता था। जितना लंबा इन गुज़रगाहों का वह हिस्सा था जो सहन में था उतना ही चौड़ा फ़र्श भी था। यह फ़र्श अंदरूनी सहन की निसबत नीचा था।

19 बैरूनी और अंदरूनी सहनों के दरमियान भी दरवाज़ा था। यह बैरूनी दरवाजे के मुक़ाबिल था। जब मेरे राहनुमा ने दोनों दरवाज़ों का दरमियानी फासला नापा तो मालूम हुआ कि 175 फुट है।

बैरूनी सहन का शिमाली दरवाज़ा

20 इसके बाद उसने चारदीवारी के शिमाली दरवाजे की पैमाइश की।

21 इस दरवाजे में भी दाईं और बाईं तरफ़ तीन तीन कमरे थे जो मशरिकी दरवाजे के कमरों जितने बड़े थे। उसमें से गुज़रकर हम वहाँ भी दरवाजे से मुलहिक बरामदे में आए जिसका सूख रब के घर की तरफ़ था। उस की और उसके सतून-नुमा बाजूओं की लंबाई और चौड़ाई उतनी ही थी जितनी मशरिकी दरवाजे के बरामदे और उसके सतून-नुमा बाजूओं की थी। गुज़रगाह की पूरी लंबाई साढे 87 फुट थी। जब मेरे राहनुमा ने वह फासला नापा जो पहरेदारों के कमरों में से एक की पिछली दीवार से लेकर उसके मुक़ाबिल के कमरे की पिछली दीवार तक था तो मालूम हुआ कि पौने 44 फुट है। 22 दरवाजे से मुलहिक बरामदा, खिड़कियाँ और कंदा किए गए खजूर के दरख्त उसी तरह बनाए गए थे जिस तरह मशरिकी दरवाजे में। बाहर एक सीढ़ी दरवाजे तक पहुँचाती थी जिसके सात कदमचे थे। मशरिकी दरवाजे की तरह शिमाली दरवाजे के अंदरूनी सिरे के साथ एक बरामदा मुलहिक था जिससे होकर इनसान सहन में पहुँचता था।

23 मशरिकी दरवाजे की तरह इस दरवाजे के मुक़ाबिल भी अंदरूनी सहन में पहुँचानेवाला दरवाज़ा था। दोनों दरवाज़ों का दरमियानी फासला 175 फुट था।

बैरूनी सहन का जुनूबी दरवाज़ा

24 इसके बाद मेरा राहनुमा मुझे बाहर ले गया। चलते चलते हम जुनूबी चारदीवारी के पास पहुँचे। वहाँ भी दरवाज़ा नज़र आया। उसमें से गुज़रकर हम वहाँ भी दरवाजे से मुलहिक बरामदे में आए जिसका सूख रब के घर की तरफ़ था। यह बरामदा दरवाजे के सतून-नुमा बाजूओं समेत दीगर दरवाज़ों के बरामदे जितना बड़ा था। 25 दरवाजे और बरामदे की खिड़कियाँ भी दीगर खिड़कियों की मानिंद थीं। गुज़रगाह की पूरी लंबाई साढे 87 फुट थी। जब उसने वह फासला नापा जो पहरेदारों के कमरों में से एक की पिछली दीवार से लेकर उसके मुक़ाबिल के कमरे की पिछली दीवार तक था तो मालूम हुआ कि पौने 44 फुट है। 26 बाहर एक सीढ़ी दरवाजे तक पहुँचाती थी जिसके सात कदमचे थे। दीगर दरवाज़ों की तरह जुनूबी दरवाजे के अंदरूनी सिरे के साथ बरामदा मुलहिक था जिससे होकर इनसान सहन में पहुँचता था। बरामदे के दोनों सतून-नुमा बाजूओं पर खजूर के दरख्त कंदा किए गए थे।

27 इस दरवाजे के मुक़ाबिल भी अंदरूनी सहन में पहुँचानेवाला दरवाज़ा था। दोनों दरवाज़ों का दरमियानी फासला 175 फुट था।

अंदरूनी सहन का जुनूबी दरवाज़ा

28 फिर मेरा राहनुमा जुनूबी दरवाजे में से गुज़रकर मुझे अंदरूनी सहन में लाया। जब उसने वहाँ का दरवाज़ा नापा तो मालूम हुआ कि वह बैरूनी दरवाज़ों की मानिंद है। 29-30 पहरेदारों के कमरे, बरामदा और उसके सतून-नुमा बाजू सब पैमाइश के हिसाब से दीगर दरवाज़ों की मानिंद थे। इस दरवाजे और इसके साथ मुलहिक बरामदे में भी खिड़कियाँ थीं। गुज़रगाह की पूरी लंबाई साढे 87 फुट थी। जब मेरे राहनुमा ने वह फासला नापा जो पहरेदारों के कमरे में से एक की पिछली दीवार से लेकर उसके मुक़ाबिल के कमरे की पिछली दीवार तक था तो मालूम हुआ कि पौने 44 फुट है। 31 लेकिन उसके बरामदे का सूख बैरूनी सहन की तरफ़ था। उसमें पहुँचने के लिए एक सीढ़ी बनाई गई थी जिसके आठ कदमचे थे। दरवाजे के सतून-नुमा बाजूओं पर खजूर के दरख्त कंदा किए गए थे।

अंदरूनी सहन का मशरिकी दरवाज़ा

† 40:14 इब्रानी मतन में इस आयत का मतलब ग़ैरवाज़िह है।

32 इसके बाद मेरा राहनुमा मुझे मशरिकी दरवाजे से होकर अंदरूनी सहन में लाया। जब उसने यह दरवाजा नापा तो मालूम हुआ कि यह भी दीगर दरवाजों जितना बड़ा है। 33 पहेदारों के कमरे, दरवाजे के सतून-नुमा बाजू और बरामदा पैमाइश के हिसाब से दीगर दरवाजों की मानिंद थे। यहाँ भी दरवाजे और बरामदे में खिड़कियाँ लगी थीं। गुजरगाह की लंबाई साढ़े 87 फुट और चौड़ाई पौने 44 फुट थी। 34 इस दरवाजे के बरामदे का सख भी बैरूनी सहन की तरफ था। दरवाजे के सतून-नुमा बाजूओं पर खजूर के दरख्त कंदा किए गए थे। बरामदे में पहुँचने के लिए एक सीढ़ी बनाई गई थी जिसके आठ कदमचे थे।

अंदरूनी सहन का शिमाली दरवाजा

35 फिर मेरा राहनुमा मुझे शिमाली दरवाजे के पास लाया। उस की पैमाइश करने पर मालूम हुआ कि यह भी दीगर दरवाजों जितना बड़ा है। 36 पहेदारों के कमरे, सतून-नुमा बाजू, बरामदा और दीवारों में खिड़कियाँ भी दूसरे दरवाजों की मानिंद थीं। गुजरगाह की लंबाई साढ़े 87 फुट और चौड़ाई पौने 44 फुट थी। 37 उसके बरामदे का सख भी बैरूनी सहन की तरफ था। दरवाजे के सतून-नुमा बाजूओं पर खजूर के दरख्त कंदा किए गए थे। उसमें पहुँचने के लिए एक सीढ़ी बनाई गई थी जिसके आठ कदमचे थे।

अंदरूनी शिमाली दरवाजे के पास ज़बह का बंदोबस्त

38 अंदरूनी शिमाली दरवाजे के बरामदे में दरवाजा था जिसमें से गुजरकर इनसान उस कमरे में दाखिल होता था जहाँ उन ज़बह किए हुए जानवरों को धोया जाता था जिन्हें भस्म करना होता था। 39 बरामदे में चार मेज़ें थीं, कमरे के दोनों तरफ दो दो मेज़ें। इन मेज़ों पर उन जानवरों को ज़बह किया जाता था जो भस्म होनेवाली कुरबानियों, गुनाह की कुरबानियों और कुसूर की कुरबानियों के लिए मखसूस थे। 40 इस बरामदे से बाहर मज़ीद चार ऐसी मेज़ें थीं, दो एक तरफ और दो दूसरी तरफ। 41 मिल मिलाकर आठ मेज़ें थीं जिन पर कुरबानियों के जानवर ज़बह किए जाते थे। चार बरामदे के अंदर और चार उससे बाहर के सहन में थीं।

42 बरामदे की चार मेज़ें तराशे हुए पत्थर से बनाई गई थीं। हर एक की लंबाई और चौड़ाई साढ़े 31 इंच और ऊँचाई 21 इंच थी। उन पर वह तमाम आलात पड़े थे जो जानवरों को भस्म होनेवाली कुरबानी और बाकी कुरबानियों के लिए तैयार करने के लिए दरकार थे। 43 जानवरों का गोश्त इन मेज़ों पर रखा जाता था। इर्दगिर्द की दीवारों में तीन तीन इंच लंबी हुकें लगी थीं।

44 फिर हम अंदरूनी सहन में दाखिल हुए। वहाँ शिमाली दरवाजे के साथ एक कमरा मुलहिक था जो अंदरूनी सहन की तरफ खुला था और जिसका सख जुनूब की तरफ था। जुनूबी दरवाजे के साथ भी ऐसा कमरा था। उसका सख शिमाल की तरफ था। 45 मेरे राहनुमा ने मुझसे कहा, “जिस कमरे का सख जुनूब की तरफ है वह उन इमामों के लिए है जो रब के घर की देख-भाल करते हैं, 46 जबकि जिस कमरे का सख शिमाल की तरफ है वह उन इमामों के लिए है जो कुरबानगाह की देख-भाल करते हैं। तमाम इमाम सदोक की औलाद हैं। लावी के कबीले में से सिर्फ उन्हीं को रब के हज़ूर आकर उस की खिदमत करने की इजाज़त है।”

अंदरूनी सहन और रब का घर

47 मेरे राहनुमा ने अंदरूनी सहन की पैमाइश की। उस की लंबाई और चौड़ाई पौने दो दो सौ फुट थी। कुरबानगाह इस सहन में रब के घर के सामने ही थी। 48 फिर उसने मुझे रब के घर के बरामदे में ले जाकर दरवाजे के सतून-नुमा बाजूओं की पैमाइश की। मालूम हुआ कि यह पौने 9 फुट मोटे हैं। दरवाजे की चौड़ाई साढ़े 24 फुट थी जबकि दाँए बाँए की दीवारों की लंबाई सवा पाँच पाँच फुट थी। 49 चुनौचे बरामदे की पूरी चौड़ाई 35 और लंबाई 21 फुट थी। उसमें दाखिल होने के लिए दस कदमचोंवाली सीढ़ी बनाई गई थी। दरवाजे के दोनों सतून-नुमा बाजूओं के साथ साथ एक एक सतून खड़ा किया गया था।

41

1 इसके बाद मेरा राहनुमा मुझे रब के घर के पहले कमरे यानी ‘मुक़द्दस कमरा’ में ले गया। उसने दरवाजे के सतून-नुमा बाजू नापे तो मालूम हुआ कि साढ़े दस दस फुट मोटे हैं। 2 दरवाजे की चौड़ाई साढ़े 17 फुट थी, और दाँए बाँए की दीवारें पौने नौ नौ फुट लंबी थीं। कमरे की पूरी लंबाई 70 फुट और चौड़ाई 35 फुट थी।

3 फिर वह आगे बढ़कर सबसे अंदरूनी कमरे में दाखिल हुआ। उसने दरवाजे के सतून-नुमा बाजूओं की पैमाइश की तो मालूम हुआ कि साढ़े तीन तीन फुट मोटे हैं। दरवाजे की चौड़ाई साढ़े 10 फुट थी, और दाँए बाँए की दीवारें सवा बारह बारह फुट लंबी थीं। 4 अंदरूनी कमरे की लंबाई और चौड़ाई पैतीस पैतीस फुट थी। वह बोला, “यह मुक़द्दसतरीन कमरा है।”

रब के घर से मुलहिक कमरे

5 फिर उसने रब के घर की बैरूनी दीवार नापी। उस की मोटाई साढ़े 10 फुट थी। दीवार के साथ साथ कमरे तामीर किए गए थे। हर कमरे की चौड़ाई 7 फुट थी। 6 कमरों की तीन मनज़िलें थीं, कुल 30 कमरे थे। रब के घर की बैरूनी दीवार दूसरी मनज़िल पर पहली मनज़िल की निसबत कम मोटी और तीसरी मनज़िल पर दूसरी मनज़िल की निसबत कम मोटी थी। नतीजतन हर मनज़िल का वज़न उस की बैरूनी दीवार पर था और ज़रूरत नहीं थी कि इस दीवार में शहतीर लगाएँ। 7 चुनौचे दूसरी मनज़िल पहली की निसबत चौड़ी और तीसरी दूसरी की निसबत चौड़ी थी। एक सीढ़ी निचली मनज़िल से दूसरी और तीसरी मनज़िल तक पहुँचाती थी।

8-11 इन कमरों की बैरूनी दीवार पौने 9 फुट मोटी थी। जो कमरे रब के घर की शिमाली दीवार में थे उनमें दाखिल होने का एक दरवाजा था, और इसी तरह जुनूबी कमरों में दाखिल होने का एक दरवाजा था। मैंने देखा कि रब का घर एक चबूतरे पर तामीर हुआ है। इसका जितना हिस्सा उसके इर्दगिर्द नज़र आता था वह पौने 9 फुट चौड़ा और साढ़े 10 फुट ऊँचा था। रब के घर की बैरूनी दीवार से मुलहिक कमरे इस पर बनाए गए थे। इस चबूतरे और इमामों से मुस्तामल मकानों के दरमियान खुली जगह थी जिसका फासला 35 फुट था। यह खुली जगह रब के घर के चारों तरफ नज़र आती थी।

मगरिब में इमारत

12 इस खुली जगह के मगरिब में एक इमारत थी जो साढ़े 157 फुट लंबी और साढ़े 122 फुट चौड़ी थी। उस की दीवारें चारों तरफ पौने नौ फुट मोटी थीं।

रब के घर की बैरूनी पैमाइश

13 फिर मेरे राहनुमा ने बाहर से रब के घर की पैमाइश की। उस की लंबाई 175 फुट थी। रब के घर की पिछली दीवार से मगरिबी इमारत तक का फासला भी 175 फुट था। 14 फिर उसने रब के घर के सामनेवाली यानी मशरिकी दीवार शिमाल और जुनूब में खुली जगह समेत की पैमाइश की। मालूम हुआ कि उसका फासला भी 175 फुट है। 15 उसने मगरिब में उस इमारत की लंबाई नापी जो रब के घर के पीछे थी। मालूम हुआ कि यह भी दोनों पहलुओं की गुजरगाहों समेत 175 फुट लंबी है।

रब के घर का अंदरूनी हिस्सा

रब के घर के बरामदे, मुकद्दस कमरे और मुकद्दसतरीन कमरे की दीवारों पर 16 फ़र्श से लेकर खिड़कियों तक लकड़ी के तख्ते लगाए गए थे। इन खिड़कियों को बंद किया जा सकता था।

17 रब के घर की अंदरूनी दीवारों पर दरवाजों के ऊपर तक तस्वीरें कंदा की गई थीं। 18 खजूर के दरख्तों और कस्बी फ़रिशतों की तस्वीरें बारी बारी नज़र आती थीं। हर फ़रिशते के दो चेहे थे। 19 इनसान का चेहरा एक तरफ़ के दरख्त की तरफ़ देखता था जबकि शेरबबर का चेहरा दूसरी तरफ़ के दरख्त की तरफ़ देखता था। यह दरख्त और कस्बी पूरी दीवार पर बारी बारी मुनक्कश किए गए थे, 20 फ़र्श से लेकर दरवाजों के ऊपर तक। 21 मुकद्दस कमरे में दाखिल होनेवाले दरवाजे के दोनों बाजू मुरब्बा थे।

लकड़ी की कुरबानगाह

मुकद्दसतरीन कमरे के दरवाजे के सामने 22 लकड़ी की कुरबानगाह नज़र आई। उस की ऊँचाई सवा 5 फुट और चौड़ाई साढ़े तीन फुट थी। उसके कोने, पाया और चारों पहलू लकड़ी से बने थे। उसने मुझसे कहा, “यह वही मेज़ है जो रब के हुज़ूर रहती है।”

दरवाजे

23 मुकद्दस कमरे में दाखिल होने का एक दरवाजा था और मुकद्दसतरीन कमरे का एक। 24 हर दरवाजे के दो किवाड़ थे, वह दरमियान में से खुलते थे। 25 दीवारों की तरह मुकद्दस कमरे के दरवाजे पर भी खजूर के दरख्त और कस्बी फ़रिशते कंदा किए गए थे। और बरामदे के बाहरवाले दरवाजे के ऊपर लकड़ी की छोटी-सी छत बनाई गई थी।

26 बरामदे के दोनों तरफ़ खिड़कियाँ थीं, और दीवारों पर खजूर के दरख्त कंदा किए गए थे।

42

इमामों के लिए मखसूस कमरे

1 इसके बाद हम दुबारा बैरूनी सहन में आए। मेरा राहनुमा मुझे रब के घर के शिमाल में वाके एक इमारत के पास ले गया जो रब के घर के पीछे यानी मगरिब में वाके इमारत के मुकाबिल थी। 2 यह इमारत 175 फुट लंबी और साढ़े 87 फुट चौड़ी थी।

3 उसका सख़ अंदरूनी सहन की उस खुली जगह की तरफ़ था जो 35 फुट चौड़ी थी। दूसरा सख़ बैरूनी सहन के पक्के फ़र्श की तरफ़ था। मकान की तीन मनज़िलें थीं। दूसरी मनज़िल पहली की निसबत कम चौड़ी और तीसरी दूसरी की निसबत कम चौड़ी थी। 4 मकान के शिमाली पहलू में एक गुजरगाह थी जो एक सिरे से दूसरे सिरे तक ले जाती थी। उस की लंबाई 175 फुट और चौड़ाई साढ़े 17 फुट थी। कमरों के दरवाजे सब शिमाल की तरफ़ खुलते थे। 5-6 दूसरी मनज़िल के कमरे पहली मनज़िल की निसबत कम चौड़े थे ताकि उनके सामने टैरस हो। इसी तरह तीसरी मनज़िल के कमरे दूसरी की निसबत कम चौड़े थे। इस इमारत में सहन की दूसरी इमारतों की तरह सतून नहीं थे।

7 कमरों के सामने एक बैरूनी दीवार थी जो उन्हें बैरूनी सहन से अलग करती थी। उस की लंबाई साढ़े 87 फुट थी, 8 क्योंकि बैरूनी सहन की तरफ़ कमरों की मिल मिलाकर लंबाई साढ़े 87 फुट थी अगरचे पूरी दीवार की लंबाई 175 फुट थी। 9 बैरूनी सहन से इस इमारत में दाखिल होने के लिए मशरिक की तरफ़ से आना पड़ता था। वहाँ एक दरवाजा था।

10 रब के घर के जुनूब में उस जैसी एक और इमारत थी जो रब के घर के पीछेवाली यानी मगरिबी इमारत के मुकाबिल थी। 11 उसके कमरों के सामने भी मजकूर शिमाली इमारत जैसी गुजरगाह थी। उस की लंबाई और चौड़ाई, डिजायन और दरवाजे, गरज़ सब कुछ शिमाली

मकान की मानिंद था। 12 कमरों के दरवाजे जुनूब की तरफ थे, और उनके सामने भी एक हिफाजती दीवार थी। बैरूनी सहन से इस इमारत में दाखिल होने के लिए मशरिक से आना पड़ता था। उसका दरवाजा भी गुजरगाह के शुरू में था।

13 उस आदमी ने मुझसे कहा, “यह दोनों इमारतें मुकद्दस हैं। जो इमाम रब के हुजूर आते हैं वह इन्हीं में मुकद्दसतरीन कुरबानियाँ खाते हैं। चूँकि यह कमरे मुकद्दस हैं इसलिए इमाम इनमें मुकद्दसतरीन कुरबानियाँ रखेंगे, खाह गल्ला, गुनाह या कुसूर की कुरबानियाँ क्यों न हों। 14 जो इमाम मकदिस से निकलकर बैरूनी सहन में जाना चाहें उन्हें इन कमरों में वह मुकद्दस लिबास उतारकर छोड़ना है जो उन्होंने रब की खिदमत करते वक्त पहने हुए थे। लाज़िम है कि वह पहले अपने कपड़े बदलें, फिर ही वहाँ जाएँ जहाँ बाकी लोग जमा होते हैं।”

बाहर से रब के घर की चारदीवारी की पैमाइश

15 रब के घर के इहाते में सब कुछ नापने के बाद मेरा राहनुमा मुझे मशरिकी दरवाजे से बाहर ले गया और बाहर से चारदीवारी की पैमाइश करने लगा। 16-20 फ़ीते से पहले मशरिकी दीवार नापी, फिर शिमाली, जुनूबी और मगरिबी दीवार। हर दीवार की लंबाई 875 फुट थी। इस चारदीवारी का मकसद यह था कि जो कुछ मुकद्दस है वह उससे अलग किया जाए जो मुकद्दस नहीं है।

43

रब अपने घर में वापस आ जाता है

1 मेरा राहनुमा मुझे दुबारा रब के घर के मशरिकी दरवाजे के पास ले गया। 2 अचानक इसराईल के ख़ुदा का जलाल मशरिक से आता हुआ दिखाई दिया। ज़बरदस्त आबशार का-सा शोर सुनाई दिया, और ज़मीन उसके जलाल से चमक रही थी। 3 रब मुझ पर यों जाहिर हुआ जिस तरह दीगर रोयाओं में, पहले दरिया-किबार के किनारे और फिर उस वक्त जब वह यस्शलम को तबाह करने आया था।

मैं मुँह के बल गिर गया। 4 रब का जलाल मशरिकी दरवाजे में से रब के घर में दाखिल हुआ। 5 फिर अल्लाह का रूह मुझे उठाकर अंदरूनी सहन में ले गया। वहाँ मैंने देखा कि पूरा घर रब के जलाल से मामूर है।

6 मेरे पास खड़े आदमी की मौजूदगी में कोई रब के घर में से मुझसे मुखातिब हुआ,

7 “ऐ आदमज़ाद, यह मेरे तख़्त और मेरे पाँवों के तल्वों का मक़ाम है। यहीं मैं हमेशा तक इसराईलियों के दरमियान सुकूनत करूँगा। आइंदा न कभी इसराईली और न उनके बादशाह मेरे मुकद्दस नाम की बेहुरमती करेंगे। न वह अपनी ज़िनाकाराना बुतपरस्ती से, न बादशाहों की लाशों से मेरे नाम की बेहुरमती करेंगे। 8 माज़ी में इसराईल के बादशाहों ने अपने महलों को मेरे घर के साथ ही तामीर किया। उनकी दहलीज़ मेरी दहलीज़ के साथ और उनके दरवाजे का बाजू मेरे दरवाजे के बाजू के साथ लगता था। एक ही दीवार उन्हें मुझसे अलग रखती थी। यों उन्होंने अपनी मकरूह हरकतों से मेरे मुकद्दस नाम की बेहुरमती की, और ज़वाब में मैंने अपने ग़ज़ब में उन्हें हलाक कर दिया। 9 लेकिन अब वह अपनी ज़िनाकाराना बुतपरस्ती और अपने बादशाहों की लाशें मुझसे दूर रखेंगे। तब मैं हमेशा तक उनके दरमियान सुकूनत करूँगा।

10 ऐ आदमज़ाद, इसराईलियों को इस घर के बारे में बता दे ताकि उन्हें अपने गुनाहों पर शर्म आए। वह ध्यान से नए घर के नक्शे का मुतालआ करें। 11 अगर उन्हें अपनी हरकतों पर शर्म आए तो उन्हें घर की तफ़सीलात भी दिखा दे, यानी उस की तरतीब, उसके आने जाने के रास्ते और उसका पूरा इंतज़ाम तमाम क़वायद और अहक़ाम समेत। सब कुछ उनके सामने ही लिख दे ताकि वह उसके पूरे इंतज़ाम के पाबंद रहें और उसके तमाम क़वायद की पैरवी करें। 12 रब के घर के लिए मेरी हिदायत सुन! इस पहाड़ की चोटी गिर्दो-नवाह के तमाम इलाक़े समेत मुकद्दसतरीन जगह है। यह घर के लिए मेरी हिदायत है।”

भस्म होनेवाली कुरबानियों की कुरबानगाह

13 कुरबानगाह यों बनाई गई थी कि उसका पाया नाली से घिरा हुआ था जो 21 इंच गहरी और उतनी ही चौड़ी थी। बाहर की तरफ़ नाली के किनारे पर छोटी-सी दीवार थी जिसकी ऊँचाई 9 इंच थी। 14 कुरबानगाह के तीन हिस्से थे। सबसे निचला हिस्सा साढ़े तीन फुट ऊँचा था। इस पर बना हुआ हिस्सा 7 फुट ऊँचा था, लेकिन उस की चौड़ाई कुछ कम थी, इसलिए चारों तरफ़ निचले हिस्से का ऊपरवाला किनारा नज़र आता था। इस किनारे की चौड़ाई 21 इंच थी। तीसरा और सबसे ऊपरवाला हिस्सा भी इसी तरह बनाया गया था। वह दूसरे हिस्से की निसबत कम चौड़ा था, इसलिए चारों तरफ़ दूसरे हिस्से का ऊपरवाला किनारा नज़र आता था। इस किनारे की चौड़ाई भी 21 इंच थी। 15 तीसरे हिस्से पर कुरबानियाँ जलाई जाती थी, और चारों कोनों पर सींग लगे थे। यह हिस्सा भी 7 फुट ऊँचा था। 16 कुरबानगाह की ऊपरवाली सतह मुरब्बा शक़ल की थी। उस की चौड़ाई और लंबाई इक्कीस इक्कीस फुट थी। 17 दूसरा हिस्सा भी मुरब्बा शक़ल का था। उस की चौड़ाई और लंबाई साढ़े चौबीस चौबीस फुट थी। उसका ऊपरवाला किनारा नज़र आता था, और उस पर 21 इंच चौड़ी नाली थी, यों कि किनारे पर छोटी-सी दीवार थी जिसकी ऊँचाई साढ़े 10 इंच थी। कुरबानगाह पर चढ़ने के लिए उसके मशरिक में सीढ़ी थी।

कुरबानगाह की मखसूसियत

18 फिर रब मुझसे हमकलाम हुआ, “ऐ आदमज़ाद, रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि इस कुरबानगाह को तामीर करने के बाद तुझे इस पर कुरबानियाँ जलाकर इसे मखसूस करना है। साथ साथ इस पर कुरबानियों का खून भी छिड़कना है। इस सिलसिले में मेरी हिदायत सुन!

19 सिर्फ़ लावी के कबीले के उन इमामों को रब के घर में मेरे हुज़ूर खिदमत करने की इजाज़त है जो सदोक की औलाद हैं।

रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि उन्हें एक जवान बैल दे ताकि वह उसे गुनाह की कुरबानी के तौर पर पेश करें। ²⁰ इस बैल का कुछ खून लेकर कुरबानगाह के चारों सींगों, निचले हिस्से के चारों कोनों और इर्दगिर्द उसके किनारे पर लगा दे। यों तू कुरबानगाह का कफ़ारा देकर उसे पाक-साफ़ करेगा। ²¹ इसके बाद जवान बैल को मक़दिस से बाहर किसी मुक़ररा जगह पर ले जा। वहाँ उसे जला देना है।

²² अगले दिन एक बेऐब बकरे को कुरबान कर। यह भी गुनाह की कुरबानी है, और इसके ज़रीए कुरबानगाह को पहली कुरबानी की तरह पाक-साफ़ करना है।

²³ पाक-साफ़ करने के इस सिलसिले की तकमील पर एक बेऐब बैल और एक बेऐब मेंढे को चुनकर ²⁴ रब को पेश कर। इमाम इन जानवरों पर नमक छिड़ककर इन्हें रब को भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करें।

²⁵ लाज़िम है कि तू सात दिन तक रोज़ाना एक बकरा, एक जवान बैल और एक मेंढा कुरबान करे। सब जानवर बेऐब हों। ²⁶ सात दिनों की इस कार्रवाई से तुम कुरबानगाह का कफ़ारा देकर उसे पाक-साफ़ और मख़सूस करोगे। ²⁷ आठवें दिन से इमाम बाकायदा कुरबानियाँ शुरू कर सकेंगे। उस वक़्त से वह तुम्हारे लिए भस्म होनेवाली और सलामती की कुरबानियाँ चढ़ाएँगे। तब तुम मुझे मंज़ूर होगे। यह रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है।”

44

रब के घर का बैरूनी मशरिकी दरवाज़ा बंद किया जाता है

¹ मेरा राहनुमा मुझे दुबारा मक़दिस के बैरूनी मशरिकी दरवाज़े के पास ले गया। अब वह बंद था। ² रब ने फ़रमाया, “अब से यह दरवाज़ा हमेशा तक बंद रहे। इसे कभी नहीं खोलना है। किसी को भी इसमें से दाख़िल होने की इजाज़त नहीं, क्योंकि रब जो इसराइल का खुदा है इस दरवाज़े में से होकर रब के घर में दाख़िल हुआ है। ³ सिर्फ़ इसराइल के हुक्मरान को इस दरवाज़े में बैठने और मेरे हुज़ूर कुरबानी का अपना हिस्सा खाने की इजाज़त है। लेकिन इसके लिए वह दरवाज़े में से गुज़र नहीं सकेगा बल्कि बैरूनी सहन की तरफ़ से उसमें दाख़िल होगा। वह दरवाज़े के साथ मुलहिक बरामदे से होकर वहाँ पहुँचेगा और इसी रास्ते से वहाँ से निकलेगा भी।”

अकसर लावियों की खिदमत को महदू किया जाता है

⁴ फिर मेरा राहनुमा मुझे शिमाली दरवाज़े में से होकर दुबारा अंदरूनी सहन में ले गया। हम रब के घर के सामने पहुँचे। मैंने देखा कि रब का घर रब के जलाल से मामूर हो रहा है। मैं मुँह के बल गिर गया।

⁵ रब ने फ़रमाया, “ऐ आदमज़ाद, ध्यान से देख, गौर से सुन! रब के घर के बारे में उन तमाम हिदायात पर तवज्जुह दे जो मैं तुझे बतानेवाला हूँ। ध्यान दे कि कौन कौन उसमें जा सकेगा। ⁶ इस सरकश कौम इसराइल को बता,

‘ऐ इसराइली कौम, रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि तुम्हारी मक़रूह हरकतें बहुत हैं, अब बस करो! ⁷ तुम परदेसियों को मेरे मक़दिस में लाए हो, ऐसे लोगों को जो बातिन और जाहिर में नामख़तून हैं। और यह तुमने उस वक़्त किया जब तुम मुझे मेरी ख़ुराक यानी चरबी और खून पेश कर रहे थे। यों तुमने मेरे घर की बेहुरमती करके अपनी धिनौनी हरकतों से वह अहद तोड़ डाला है जो मैंने तुम्हारे साथ बाँधा था। ⁸ तुम खुद मेरे मक़दिस में खिदमत नहीं करना चाहते थे बल्कि तुमने परदेसियों को यह ज़िम्मादारी दी थी कि वह तुम्हारी जगह यह खिदमत अंजाम दें।

⁹ इसलिए रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि आइंदा जो भी ग़ैरमुल्की अंदरूनी और बैरूनी तौर पर नामख़तून है उसे मेरे मक़दिस में दाख़िल होने की इजाज़त नहीं। इसमें वह अजनबी भी शामिल हैं जो इसराइलियों के दरमियान रहते हैं। ¹⁰ जब इसराइली भटक गए और मुझसे दूर होकर बुतों के पीछे लग गए तो अकसर लावी भी मुझसे दूर हुए। अब उन्हें अपने गुनाह की सज़ा भुगतनी पड़ेगी। ¹¹ आइंदा वह मेरे मक़दिस में हर किस्म की खिदमत नहीं करेंगे। उन्हें सिर्फ़ दरवाज़ों की पहरादारी करने और जानवरों को ज़बह करने की इजाज़त होगी। इन जानवरों में भस्म होनेवाली कुरबानियाँ भी शामिल होंगी और ज़बह की कुरबानियाँ भी। लावी कौम की खिदमत के लिए रब के घर में हाज़िर रहेंगे, ¹² लेकिन चूँकि वह अपने हमवतनों के बुतों के सामने लोगों की खिदमत करके उनके लिए गुनाह का बाइस बने रहे इसलिए मैंने अपना हाथ उठाकर कसम खाई है कि उन्हें इसकी सज़ा भुगतनी पड़ेगी। यह रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है।

¹³ अब से वह इमाम की हैसियत से मेरे करीब आकर मेरी खिदमत नहीं करेंगे, अब से वह उन चीज़ों के करीब नहीं आएँगे जिनको मैंने मुक़द्दसतरीन करार दिया है। ¹⁴ इसके बजाए मैं उन्हें रब के घर के निचले दर्जे की ज़िम्मादारियाँ दूँगा।

इमामों के लिए हिदायात

¹⁵ लेकिन रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि लावी का एक खानदान उनमें शामिल नहीं है। सदोक का खानदान आइंदा भी मेरी खिदमत करेगा। उसके इमाम उस वक़्त भी वफ़ादारी से मेरे मक़दिस में मेरी खिदमत करते रहे जब इसराइल के बाक़ी लोग मुझसे दूर हो गए थे। इसलिए यह आइंदा भी मेरे हुज़ूर आकर मुझे कुरबानियों की चरबी और खून पेश करेंगे। ¹⁶ सिर्फ़ यही इमाम मेरे मक़दिस में दाख़िल होंगे और मेरी मेज़ पर मेरी खिदमत करके मेरे तमाम फ़रायज़ अदा करेंगे।

¹⁷ जब भी इमाम अंदरूनी दरवाज़े में दाख़िल होते हैं तो लाज़िम है कि वह कतान के कपड़े पहन लें। अंदरूनी सहन और रब के घर में खिदमत करते वक़्त ऊन के कपड़े पहनना मना है। ¹⁸ वह कतान की पगड़ी और पाजामा पहनें, क्योंकि उन्हें पसीना दिलानेवाले कपड़ों से गुरेज़ करना है। ¹⁹ जब भी इमाम अंदरूनी सहन से दुबारा बैरूनी सहन में जाना चाहें तो लाज़िम है कि वह खिदमत के लिए मुस्तामल कपड़ों

को उतारें। वह इन कपड़ों को मुकद्दस कमरों में छोड़ आएँ और आम कपड़े पहन लें, ऐसा न हो कि मुकद्दस कपड़े छूने से आम लोगों की जान खतरे में पड़ जाए।

20 न इमाम अपना सर मुँडवाएँ, न उनके बाल लंबे हों बल्कि वह उन्हें कटवाते रहें। 21 इमाम को अंदरूनी सहन में दाखिल होने से पहले मैं पीना मना है।

22 इमाम को किसी तलाक़शुदा औरत या बेवा से शादी करने की इजाज़त नहीं है। वह सिर्फ़ इसराईली कुंवारी से शादी करे। सिर्फ़ उस वक़्त बेवा से शादी करने की इजाज़त है जब मरहूम शौहर इमाम था।

23 इमाम अवाम को मुकद्दस और ग़ैरमुकद्दस चीज़ों में फ़रक़ की तालीम दें। वह उन्हें नापाक और पाक चीज़ों में इम्तियाज़ करना सिखाएँ।

24 अगर तनाज़ा हो तो इमाम मेरे अहक़ाम के मुताबिक़ ही उस पर फ़ैसला करें। उनका फ़र्ज़ है कि वह मेरी मुकर्ररा ईदों को मेरी हिदायात और क़वायद के मुताबिक़ ही मनाएँ। वह मेरा सबत का दिन मख़सूसो-मुकद्दस रखें।

25 इमाम अपने आपको किसी लाश के पास जाने से नापाक न करे। इसकी इजाज़त सिर्फ़ इसी सूरत में है कि उसके माँ-बाप, बच्चों, भाइयों या ग़ैरशादीशुदा बहनों में से कोई इंतक़ाल कर जाए। 26 अगर कभी ऐसा हो तो वह अपने आपको पाक-साफ़ करने के बाद मज़ीद सात दिन इंतज़ार करे, 27 फिर मक़दिस के अंदरूनी सहन में जाकर अपने लिए गुनाह की क़ुरबानी पेश करे। तब ही वह दुबारा मक़दिस में ख़िदमत कर सकता है। यह रब कादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।

28 सिर्फ़ मैं ही इमामों का मौरूसी हिस्सा हूँ। उन्हें इसराईल में मौरूसी मिलकियत मत देना, क्योंकि मैं खुद उनकी मौरूसी मिलकियत हूँ।

29 खाने के लिए इमामों को ग़ल्ला, गुनाह और कुसूर की क़ुरबानियाँ मिलेंगी, नीज़ इसराईल में वह सब कुछ जो रब के लिए मख़सूस किया जाता है। 30 इमामों को फ़सल के पहले फल का बेहतरीन हिस्सा और तुम्हारे तमाम हदिये मिलेंगे। उन्हें अपने गुंथे हुए आटे से भी हिस्सा देना है। तब अल्लाह की बरक़त तैरे घराने पर ठहरेगी।

31 जो परिदा या दीगर जानवर फ़ितरी तौर पर या किसी दूसरे जानवर के हमले से मर जाए उसका गोशत खाना इमाम के लिए मना है।

45

इसराईल में रब का हिस्सा

1 जब तुम मुल्क को क़ुरा डालकर क़बीलों में तक्सीम करोगे तो एक हिस्से को रब के लिए मख़सूस करना है। उस ज़मीन की लंबाई साढ़े 12 किलोमीटर और चौड़ाई 10 किलोमीटर होगी। पूरी ज़मीन मुकद्दस होगी।

2 इस ख़िते में एक प्लाट रब के घर के लिए मख़सूस होगा। उस की लंबाई भी 875 फ़ुट होगी और उस की चौड़ाई भी। उसके इर्दगिर्द खुली जगह होगी जिसकी चौड़ाई साढ़े 87 फ़ुट होगी। 3 ख़िते का आधा हिस्सा अलग किया जाए। उस की लंबाई साढ़े 12 किलोमीटर और चौड़ाई 5 किलोमीटर होगी, और उसमें मक़दिस यानी मुकद्दसतरीन जगह होगी। 4 यह ख़िता मुल्क का मुकद्दस इलाक़ा होगा। वह उन इमामों के लिए मख़सूस होगा जो मक़दिस में उस की ख़िदमत करते हैं। उसमें उनके घर और मक़दिस का मख़सूस प्लाट होगा।

5 ख़िते का दूसरा हिस्सा उन बाकी लावियों को दिया जाएगा जो रब के घर में ख़िदमत करेंगे। यह उनकी मिलकियत होगी, और उसमें वह अपनी आबादियाँ बना सकेंगे। उस की लंबाई और चौड़ाई पहले हिस्से के बराबर होगी।

6 मुकद्दस ख़िते से मुल्हिक एक और ख़िता होगा जिसकी लंबाई साढ़े 12 किलोमीटर और चौड़ाई ढाई किलोमीटर होगी। यह एक ऐसे शहर के लिए मख़सूस होगा जिसमें कोई भी इसराईली रह सकेगा।

हुक्मरान के लिए ज़मीन

7 हुक्मरान के लिए भी ज़मीन अलग करनी है। यह ज़मीन मुकद्दस ख़िते की मशरिकी हद से लेकर मुल्क की मशरिकी सरहद तक और मुकद्दस ख़िते की मगरिबी हद से लेकर समुंदर तक होगी। चुनौचे मशरिक से मगरिब तक मुकद्दस ख़िते और हुक्मरान के इलाक़े का मिल मिलाकर फ़ासला उतना है जितना क़बायली इलाकों का है। 8 यह इलाक़ा मुल्के-इसराईल में हुक्मरान का हिस्सा होगा। फिर वह आइंदा मेरी क़ौम पर जुल्म नहीं करेगा बल्कि मुल्क के बाकी हिस्से को इसराईल के क़बीलों पर छोड़ेगा।

हुक्मरान के लिए हिदायात

9 रब कादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है कि ऐ इसराईली हुक्मरानो, अब बस करो! अपनी ग़लत हरकतों से बाज़ आओ। अपना जुल्मो-तशद्दुद छोड़कर इनसाफ़ और रास्तबाज़ी कायम करो। मेरी क़ौम को उस की मौरूसी ज़मीन से भगाने से बाज़ आओ। यह रब कादिरे-मुतलक़ का फ़रमान है।

10 सहीह तराज़ू इस्तेमाल करो, तुम्हारे बाट और पैमाइश के आलात ग़लत न हों। 11 ग़ल्ला नापने का बरतन बनाम ऐफ़ा माए नापने के बरतन बनाम बत जितना बड़ा हो। दोनों के लिए कसौटी खोमर है। एक खोमर 10 ऐफ़ा और 10 बत के बराबर है। 12 तुम्हारे बाट यों हों कि 20 जीरह 1 मिस्क़ाल के बराबर और 60 मिस्क़ाल 1 माना के बराबर हों।

13 दर्जे-ज़ैल तुम्हारे बाकायदा हदिये हैं :

अनाज : तुम्हारी फ़सल का 60वाँ हिस्सा,

जौ : तुम्हारी फसल का 60वाँ हिस्सा,

14 जैतून का तेल : तुम्हारी फसल का 100वाँ हिस्सा (तेल को बत के हिसाब से नापना है। 10 बत 1 खोमर और 1 कोर के बराबर है।),

15 200 भेड़-बकरियों में से एक।

यह चीजें गल्ला की नज़रों के लिए, भस्म होनेवाली कुरबानियों और सलामती की कुरबानियों के लिए मुकर्रर हैं। उनसे क्रौम का कफ़फ़ारा दिया जाएगा। यह रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है।

16 लाज़िम है कि तमाम इसराईली यह हदिये मुल्क के हुक्मरान के हवाले करें। 17 हुक्मरान का फ़र्ज़ होगा कि वह नए चाँद की ईदों, सबत के दिनों और दीगर ईदों पर तमाम इसराईली क्रौम के लिए कुरबानियाँ मुहैया करे। इनमें भस्म होनेवाली कुरबानियाँ, गुनाह और सलामती की कुरबानियाँ और गल्ला और मै की नज़रें शामिल होंगी। यों वह इसराईल का कफ़फ़ारा देगा।

बड़ी ईदों पर कुरबानियाँ

18 रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि पहले महीने * के पहले दिन को एक बेऐब बैल को कुरबान करके मक़दिस को पाक-साफ़ कर।

19 इमाम बैल का खून लेकर उसे रब के घर के दरवाज़ों के बाज़ुओं, कुरबानगाह के दरमियानी हिस्से के कोनों और अंदरूनी सहन में पहुँचानेवाले दरवाज़ों के बाज़ुओं पर लगा दे। 20 यही अमल पहले महीने के सातवें दिन भी कर ताकि उन सबका कफ़फ़ारा दिया जाए जिन्होंने ग़ैरइरादी तौर पर या बेख़बरी से गुनाह किया हो। यों तुम रब के घर का कफ़फ़ारा दोगे।

21 पहले महीने के चौधवें दिन फ़सह की ईद का आगाज़ हो। उसे सात दिन मनाओ, और उसके दौरान सिर्फ़ बेख़मीरी रोटी खाओ। 22 पहले दिन मुल्क का हुक्मरान अपने और तमाम क्रौम के लिए गुनाह की कुरबानी के तौर पर एक बैल पेश करे। 23 नीज़, वह ईद के सात दिन के दौरान रोज़ाना सात बेऐब बैल और सात मेंढे भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर कुरबान करे और गुनाह की कुरबानी के तौर पर एक एक बकरा पेश करे। 24 वह हर बैल और हर मेंढे के साथ साथ गल्ला की नज़र भी पेश करे। इसके लिए वह फ़ी जानवर 16 किलोग्राम मैदा और 4 लिटर तेल मुहैया करे।

25 सातवें महीने † के पंद्रहवें दिन झोंपड़ियों की ईद शुरू होती है। हुक्मरान इस ईद पर भी सात दिन के दौरान वही कुरबानियाँ पेश करे जो फ़सह की ईद के लिए दरकार हैं यानी गुनाह की कुरबानियाँ, भस्म होनेवाली कुरबानियाँ, गल्ला की नज़रें और तेल।

46

ईदों पर हुक्मरान की जानिब से कुरबानियाँ

1 रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि लाज़िम है कि अंदरूनी सहन में पहुँचानेवाला मशरिकी दरवाज़ा इतवार से लेकर जुमे तक बंद रहे। उसे सिर्फ़ सबत और नए चाँद के दिन खोलना है। 2 उस वक़्त हुक्मरान बैरूनी सहन से होकर मशरिकी दरवाज़े के बरामदे में दाख़िल हो जाए और उसमें से गुज़रकर दरवाज़े के बाज़ू के पास खड़ा हो जाए। वहाँ से वह इमामों को उस की भस्म होनेवाली और सलामती की कुरबानियाँ पेश करते हुए देख सकेगा। दरवाज़े की दहलीज़ पर वह सिजदा करेगा, फिर चला जाएगा। यह दरवाज़ा शाम तक खुला रहे। 3 लाज़िम है कि बाक़ी इसराईली सबत और नए चाँद के दिन बैरूनी सहन में इबादत करें। वह इसी मशरिकी दरवाज़े के पास आकर मेरे हुज़ूर औंधे मुँह हो जाएँ।

4 सबत के दिन हुक्मरान छः बेऐब भेड़ के बच्चे और एक बेऐब मेंढा चुनकर रब को भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करे। 5 वह हर मेंढे के साथ गल्ला की नज़र भी पेश करे यानी 16 किलोग्राम मैदा और 4 लिटर जैतून का तेल। हर भेड़ के बच्चे के साथ वह उतना ही गल्ला दे जितना जी चाहे। 6 नए चाँद के दिन वह एक जवान बैल, छः भेड़ के बच्चे और एक मेंढा पेश करे। सब बेऐब हों। 7 जवान बैल और मेंढे के साथ गल्ला की नज़र भी पेश की जाए। गल्ला की यह नज़र 16 किलोग्राम मैदे और 4 लिटर जैतून के तेल पर मुश्तमिल हो। वह हर भेड़ के बच्चे के साथ उतना ही गल्ला दे जितना जी चाहे।

8 हुक्मरान अंदरूनी मशरिकी दरवाज़े में बैरूनी सहन से होकर दाख़िल हो, और वह इसी रास्ते से निकले भी। 9 जब बाक़ी इसराईली किसी ईद पर रब को सिजदा करने आएँ तो जो शिमाली दरवाज़े से बैरूनी सहन में दाख़िल हों वह इबादत के बाद जुनूबी दरवाज़े से निकलें, और जो जुनूबी दरवाज़े से दाख़िल हों वह शिमाली दरवाज़े से निकलें। कोई उस दरवाज़े से न निकले जिसमें से वह दाख़िल हुआ बल्कि मुकाबिल के दरवाज़े से। 10 हुक्मरान उस वक़्त सहन में दाख़िल हो जब बाक़ी इसराईली दाख़िल हो रहे हों, और वह उस वक़्त रवाना हो जब बाक़ी इसराईली रवाना हो जाएँ।

11 ईदों और मुकर्रर तहवारों पर बैल और मेंढे के साथ गल्ला की नज़र पेश की जाए। गल्ला की यह नज़र 16 किलोग्राम मैदे और 4 लिटर जैतून के तेल पर मुश्तमिल हो। हुक्मरान भेड़ के बच्चों के साथ उतना ही गल्ला दे जितना जी चाहे।

12 जब हुक्मरान अपनी खुशी से मुझे कुरबानी पेश करना चाहे खाह भस्म होनेवाली या सलामती की कुरबानी हो, तो उसके लिए अंदरूनी दरवाज़े का मशरिकी दरवाज़ा खोला जाए। वहाँ वह अपनी कुरबानी यों पेश करे जिस तरह सबत के दिन करता है। उसके निकलने पर यह दरवाज़ा बंद कर दिया जाए।

रोज़ाना की कुरबानी

* 45:18 मार्च ता अप्रैल। † 45:25 सितंबर ता अक्तूबर।

13 इसराईल रब को हर सुबह एक बेऐब यकसाला भेड़ का बच्चा पेश करे। भस्म होनेवाली यह कुरबानी रोज़ाना चढ़ाई जाए। 14 साथ साथ गल्ला की नज़र पेश की जाए। इसके लिए सवा लिटर ज़ैतून का तेल ढाई किलोग्राम मैदे के साथ मिलाया जाए। गल्ला की यह नज़र हमेशा ही मुझे पेश करनी है। 15 लाज़िम है कि हर सुबह भेड़ का बच्चा, मैदा और तेल मेरे लिए जलाया जाए।

हुक्मरान की मौस्सी ज़मीन

16 कादिर-मुतलक फ़रमाता है कि अगर इसराईल का हुक्मरान अपने किसी बेटे को कुछ मौस्सी ज़मीन दे तो यह ज़मीन बेटे की मौस्सी ज़मीन बनकर उस की औलाद की मिलकियत रहेगी। 17 लेकिन अगर हुक्मरान कुछ मौस्सी ज़मीन अपने किसी मुलाज़िम को दे तो यह ज़मीन सिर्फ़ अगले बहाली के साल तक मुलाज़िम के हाथ में रहेगी। फिर यह दुबारा हुक्मरान के कब्ज़े में वापस आएगी। क्योंकि यह मौस्सी ज़मीन मुस्तक़िल तौर पर उस की और उसके बेटों की मिलकियत है। 18 हुक्मरान को जबरन दूसरे इसराईलियों की मौस्सी ज़मीन अपनाने की इजाज़त नहीं। लाज़िम है कि जो भी ज़मीन वह अपने बेटों में तकसीम करे वह उस की अपनी ही मौस्सी ज़मीन हो। मेरी क़ौम में से किसी को निकालकर उस की मौस्सी ज़मीन से महसूम करना मना है।”

रब के घर का किचन

19 इसके बाद मेरा राहनुमा मुझे उन कमरों के दरवाज़े के पास ले गया जिनका सूख शिमाल की तरफ़ था और जो अंदरूनी सहन के जुनूबी दरवाज़े के करीब थे। यह इमामों के मुक़द्दस कमरे हैं। उसने मुझे कमरों के मगरिबी सिरे में एक जगह दिखा कर 20 कहा, “यहाँ इमाम वह गोशत उबालेंगे जो गुनाह और कुसूर की कुरबानियों में से उनका हिस्सा बनता है। यहाँ वह गल्ला की नज़र लेकर रोटी भी बनाएँगे। कुरबानियों में से कोई भी चीज़ बैरूनी सहन में नहीं लाई जा सकती, ऐसा न हो कि मुक़द्दस चीज़ें छूने से आम लोगों की जान खतरे में पड़ जाए।”

21 फिर मेरा राहनुमा दुबारा मेरे साथ बैरूनी सहन में आ गया। वहाँ उसने मुझे उसके चार कोने दिखाए। हर कोने में एक सहन था 22 जिसकी लंबाई 70 फुट और चौड़ाई साढ़े 52 फुट थी। हर सहन इतना ही बड़ा था 23 और एक दीवार से घिरा हुआ था। दीवार के साथ साथ चूल्हे थे। 24 मेरे राहनुमा ने मुझे बताया, “यह वह किचन है जिनमें रब के घर के खादिम लोगों की पेशकरदा कुरबानियाँ उबालेंगे।”

47

रब के घर में से निकलनेवाला दरिया

1 इसके बाद मेरा राहनुमा मुझे एक बार फिर रब के घर के दरवाज़े के पास ले गया। यह दरवाज़ा मशरिक में था, क्योंकि रब के घर का सूख ही मशरिक की तरफ़ था। मैंने देखा कि दहलीज़ के नीचे से पानी निकल रहा है। दरवाज़े से निकलकर वह पहले रब के घर की जुनूबी दीवार के साथ साथ बहता था, फिर कुरबानगाह के जुनूब में से गुज़रकर मशरिक की तरफ़ बह निकला। 2 मेरा राहनुमा मेरे साथ बैरूनी सहन के शिमाली दरवाज़े में से निकला। बाहर चारदीवारी के साथ साथ चलते चलते हम बैरूनी सहन के मशरिकी दरवाज़े के पास पहुँच गए। मैंने देखा कि पानी इस दरवाज़े के जुनूबी हिस्से में से निकल रहा है।

3 हम पानी के किनारे किनारे चल पड़े। मेरे राहनुमा ने अपने फ़ीते के साथ आधा किलोमीटर का फ़ासला नापा। फिर उसने मुझे पानी में से गुज़रने को कहा। यहाँ पानी टखनों तक पहुँचता था। 4 उसने मज़ीद आधे किलोमीटर का फ़ासला नापा, फिर मुझे दुबारा पानी में से गुज़रने को कहा। अब पानी घुटनों तक पहुँचा। जब उसने तीसरी मरतबा आधा किलोमीटर का फ़ासला नापकर मुझे उसमें से गुज़रने दिया तो पानी कमर तक पहुँचा। 5 एक आखिरी दफ़ा उसने आधे किलोमीटर का फ़ासला नापा। अब मैं पानी में से गुज़र न सका। पानी इतना गहरा था कि उसमें से गुज़रने के लिए तैरने की ज़रूरत थी।

6 उसने मुझसे पूछा, “ऐ आदमज़ाद, क्या तूने गौर किया है?” फिर वह मुझे दरिया के किनारे तक वापस लाया।

7 जब वापस आया तो मैंने देखा कि दरिया के दोनों किनारों पर मुतअदिद दरख़्त लगे हैं। 8 वह बोला, “यह पानी मशरिक की तरफ़ बहकर वादीए-यरदन में पहुँचता है। उसे पार करके वह बहीराए-मुरदार में आ जाता है। उसके असर से बहीराए-मुरदार का नमकीन पानी पीने के काबिल हो जाएगा। 9 जहाँ भी दरिया बहेगा वहाँ के बेशुमार जानदार जीते रहेंगे। बहुत मछलियाँ होंगी, और दरिया बहीराए-मुरदार का नमकीन पानी पीने के काबिल बनाएगा। जहाँ से भी गुज़रेगा वहाँ सब कुछ फलता-फूलता रहेगा। 10 ऐन-जदी से लेकर ऐन-अजलैम तक उसके किनारों पर मछरे खड़े होंगे। हर तरफ़ उनके जाल सूखने के लिए फैलाए हुए नज़र आएँगे। दरिया में हर किस्म की मछलियाँ होंगी, उतनी जितनी बहीराए-रूम में पाई जाती हैं। 11 सिर्फ़ बहीराए-मुरदार के इर्दगिर्द की दलदली जगहों और जोहड़ों का पानी नमकीन रहेगा, क्योंकि वह नमक हासिल करने के लिए इस्तेमाल होगा। 12 दरिया के दोनों किनारों पर हर किस्म के फलदार दरख़्त उगेंगे। इन दरख़्तों के पत्ते न कभी मुरझाएँगे, न कभी उनका फल ख़त्म होगा। वह हर महीने फल लाएँगे, इसलिए कि मक़दिस का पानी उनकी आबपाशी करता रहेगा। उनका फल लोगों की ख़ुराक बनेगा, और उनके पत्ते शफ़ा देंगे।”

इसराईल की सरहदें

13 फिर रब कादिर-मुतलक ने फ़रमाया, “मैं तुझे उस मुल्क की सरहदें बताता हूँ जो बारह कबीलों में तकसीम करना है। यूसुफ़ को दो हिस्से देने हैं, बाकी कबीलों को एक एक हिस्सा। 14 मैंने अपना हाथ उठाकर क़सम खाई थी कि मैं यह मुल्क तुम्हारे बापदादा को अता करूँगा, इसलिए तुम यह मुल्क मीरास में पाओगे। अब उसे आपस में बराबर तकसीम कर लो।

15 शिमाली सरहद बहीराए-रूम से शुरू होकर मशरिक की तरफ हतलून, लबो-हमात और सिदाद के पास से गुजरती है। 16 वहाँ से वह बेरोता और सिबैरैम के पास पहुँचती है (सिबैरैम मुल्के-दमिशक और मुल्के-हमात के दरमियान वाक्रे है)। फिर सरहद हसर-एनान शहर तक आगे निकलती है जो हौरान की सरहद पर वाक्रे है। 17 गरज शिमाली सरहद बहीराए-रूम से लेकर हसर-एनान तक पहुँचती है। दमिशक और हमात की सरहदें उसके शिमाल में हैं।

18 मुल्क की मशरिकी सरहद वहाँ शुरू होती है जहाँ दमिशक का इलाका हौरान के पहाड़ी इलाके से मिलता है। वहाँ से सरहद दरियाए-यरदन के साथ साथ चलती हुई जुनूब में बहीराए-रूम के पास तमर शहर तक पहुँचती है। यों दरियाए-यरदन मुल्के-इसराईल की मशरिकी सरहद और मुल्के-जिलियाद की मगरिबी सरहद है।

19 जुनूबी सरहद तमर से शुरू होकर जुनूब-मगरिब की तरफ चलती चलती मरीबा-कादिस के चश्मों तक पहुँचती है। फिर वह शिमाल-मगरिब की तरफ स्रख करके मिसर की सरहद यानी वादीए-मिसर के साथ साथ बहीराए-रूम तक पहुँचती है।

20 मगरिबी सरहद बहीराए-रूम है जो शिमाल में लबो-हमात के मुकाबिल खत्म होती है।

21 मुल्क को अपने कबीलों में तकसीम करो! 22 यह तुम्हारी मौरूसी ज़मीन होगी। जब तुम कुरा डालकर उसे आपस में तकसीम करो तो उन गैरमुल्कियों को भी ज़मीन मिलनी है जो तुम्हारे दरमियान रहते और जिनके बच्चे यहाँ पैदा हुए हैं। तुम्हारा उनके साथ वैसा सुलूक हो जैसा इसराईलियों के साथ। कुरा डालते वक्त उन्हें इसराईली कबीलों के साथ ज़मीन मिलनी है। 23 रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि जिस कबीले में भी परदेसी आबाद हों वहाँ तुम्हें उन्हें मौरूसी ज़मीन देनी है।

48

कबीलों में मुल्क की तकसीम

1-7 इसराईल की शिमाली सरहद बहीराए-रूम से शुरू होकर मशरिक की तरफ हतलून, लबो-हमात और हसर-एनान के पास से गुजरती है। दमिशक और हमात सरहद के शिमाल में हैं। हर कबीले को मुल्क का एक हिस्सा मिलेगा। हर खिते का एक सिरा मुल्क की मशरिकी सरहद और दूसरा सिरा मगरिबी सरहद होगा। शिमाल से लेकर जुनूब तक क़बायली इलाकों की यह तरतीब होगी : दान, आशर, नफ़ताली, मनस्सी, इफ़राईम, रूबिन और यहूदाह।

मुल्क के बीच में मखसूस इलाका

8 यहूदाह के जुनूब में वह इलाका होगा जो तुम्हें मेरे लिए अलग करना है। क़बायली इलाकों की तरह उसका भी एक सिरा मुल्क की मशरिकी सरहद और दूसरा सिरा मगरिबी सरहद होगा। शिमाल से जुनूब तक का फ़ासला साढ़े 12 किलोमीटर है। उसके बीच में मक़दिस है।

9 इस इलाके के दरमियान एक खास खिता होगा। मशरिक से मगरिब तक उसका फ़ासला साढ़े 12 किलोमीटर होगा जबकि शिमाल से जुनूब तक फ़ासला 10 किलोमीटर होगा। रब के लिए मखसूस इस खिते 10 का एक हिस्सा इमामों के लिए मखसूस होगा। इस हिस्से का फ़ासला मशरिक से मगरिब तक साढ़े 12 किलोमीटर और शिमाल से जुनूब तक 5 किलोमीटर होगा। इसके बीच में ही रब का मक़दिस होगा। 11 यह मुक़द्दस इलाका लावी के खानदान सदोक के मखसूसो-मुक़द्दस किए गए इमामों को दिया जाएगा। क्योंकि जब इसराईली मुझसे बरग़श्ता हुए तो बाक़ी लावी उनके साथ भटक गए, लेकिन सदोक का खानदान वफ़ादारी से मेरी ख़िदमत करता रहा। 12 इसलिए उन्हें मेरे लिए मखसूस इलाके का मुक़द्दसतरीन हिस्सा मिलेगा। यह लावियों के खिते के शिमाल में होगा। 13 इमामों के जुनूब में बाक़ी लावियों का खिता होगा। मशरिक से मगरिब तक उसका फ़ासला साढ़े 12 किलोमीटर और शिमाल से जुनूब तक 5 किलोमीटर होगा।

14 रब के लिए मखसूस यह इलाका पूरे मुल्क का बेहतरीन हिस्सा है। उसका कोई भी प्लाट किसी दूसरे के हाथ में देने की इजाज़त नहीं। उसे न बेचा जाए, न किसी दूसरे को किसी प्लाट के एवज़ में दिया जाए। क्योंकि यह इलाका रब के लिए मखसूसो-मुक़द्दस है।

15 रब के मक़दिस के इस खास इलाके के जुनूब में एक और खिता होगा जिसकी लंबाई साढ़े 12 किलोमीटर और चौड़ाई अठ्ठाई किलोमीटर है। वह मुक़द्दस नहीं है बल्कि आम लोगों की रिहाइश के लिए होगा। इसके बीच में शहर होगा, जिसके इर्दगिर्द चरागाहें होंगी। 16 यह शहर मुरब्बा शक्ल का होगा। लंबाई और चौड़ाई दोनों सवा दो दो किलोमीटर होगी।

17 शहर के चारों तरफ़ जानवरों को चराने की खुली जगह होगी जिसकी चौड़ाई 133 मीटर होगी। 18 चूँकि शहर अपने खिते के बीच में होगा इसलिए मज़क़रा खुली जगह के मशरिक में एक खिता बाक़ी रह जाएगा जिसका मशरिक से शहर तक फ़ासला 5 किलोमीटर और शिमाल से जुनूब तक फ़ासला अठ्ठाई किलोमीटर होगा। शहर के मगरिब में भी इतना ही बड़ा खिता होगा। इन दो खितों में खेतीबाड़ी की जाएगी जिसकी पैदावार शहर में काम करनेवालों की ख़ुराक होगी। 19 शहर में काम करनेवाले तमाम कबीलों के होंगे। वही इन खेतों की खेतीबाड़ी करेंगे।

20 चुनौचे मेरे लिए अलग किया गया यह पूरा इलाका मुरब्बा शक्ल का है। उस की लंबाई और चौड़ाई साढ़े बारह बारह किलोमीटर है। इसमें शहर भी शामिल है।

21-22 मज़क़रा मुक़द्दस खिते में मक़दिस, इमामों और बाक़ी लावियों की ज़मीनें हैं। उसके मशरिक और मगरिब में बाक़ीमाँदा ज़मीन हुक्मरान की मिलकियत है। मुक़द्दस खिते के मशरिक में हुक्मरान की ज़मीन मुल्क की मशरिकी सरहद तक होगी और मुक़द्दस खिते के

मगरिब में वह समुंदर तक होगी। शिमाल से जुनूब तक वह मुकद्दस खिते जितनी चौड़ी यानी साढ़े 12 किलोमीटर होगी। शिमाल में यहदाह का कबायली इलाका होगा और जुनूब में बिनयमीन का।

दीगर कबीलों की ज़मीन

23-27 मुल्क के इस खास दरमियानी हिस्से के जुनूब में बाकी कबीलों को एक एक इलाका मिलेगा। हर इलाके का एक सिरा मुल्क की मशरिकी सरहद और दूसरा सिरा बहीराए-रूम होगा। शिमाल से लेकर जुनूब तक कबायली इलाकों की यह तरतीब होगी : बिनयमीन, शमौन, इशकार, ज़बूलून और जद।

28 जद के कबीले की जुनूबी सरहद मुल्क की सरहद भी है। वह तमर से जुनूब-मगरिब में मरीबा-क्रादिस के चश्मों तक चलती है, फिर मिसर की सरहद यानी वादीए-मिसर के साथ साथ शिमाल-मगरिब का सूख करके बहीराए-रूम तक पहुँचती है।

29 अब क्रादिर-मुतलक फरमाता है कि यही तुम्हारा मुल्क होगा! उसे इसराईली कबीलों में तकसीम करो। जो कुछ भी उन्हें कुरा डालकर मिले वह उनकी मौस्सी ज़मीन होगी।

यरूशलम के दरवाज़े

30-34 यरूशलम शहर के 12 दरवाज़े होंगे। फ़सील की चारों दीवारों सवा दो किलोमीटर लंबी होंगी। हर दीवार के तीन दरवाज़े होंगे, गरज़ कुल बारह दरवाज़े होंगे। हर एक का नाम किसी कबीले का नाम होगा। चुनौचे शिमाल में रूबिन का दरवाज़ा, यहदाह का दरवाज़ा और लावी का दरवाज़ा होगा, मशरिक में यूसुफ़ का दरवाज़ा, बिनयमीन का दरवाज़ा और दान का दरवाज़ा होगा, जुनूब में शमौन का दरवाज़ा, इशकार का दरवाज़ा और ज़बूलून का दरवाज़ा होगा, और मगरिब में जद का दरवाज़ा, आशर का दरवाज़ा और नफ़ताली का दरवाज़ा होगा। 35 फ़सील की पूरी लंबाई 9 किलोमीटर है।

तब शहर 'यहाँ अब है' कहलाएगा!!”

दानियाल

दानियाल और उसके दोस्त शाहे-बाबल के दरबार में

1 शाहे-यहूदाह यहूयकीम की सलतनत के तीसरे साल में शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र ने यरूशलम आकर उसका मुहासरा किया। 2 उस वक़्त ख़ ने यहूयकीम और अल्लाह के घर का काफी सामान नबूकदनज़्ज़र के हवाले कर दिया। नबूकदनज़्ज़र ने यह चीज़ें मुल्के-बाबल में ले जाकर अपने देवता के मंदिर के खज़ाने में महफूज़ कर दीं।

3 फिर उसने अपने दरबार के आला अफ़सर अशपनाज़ को हुक्म दिया, “यहूदाह के शाही खानदान और ऊँचे तबके के खानदानों की तफ़्तीश करो। उनमें से कुछ ऐसे नौजवानों को चुनकर ले आओ 4 जो बेऐब, खूबसूरत, हिकमत के हर लिहाज़ से समझदार, तालीमयाफ़ता और समझने में तेज़ हों। गरज़ यह आदमी शाही महल में ख़िदमत करने के काबिल हों। उन्हें बाबल की ज़बान लिखने और बोलने की तालीम दो।”

5 बादशाह ने मुर्करर किया कि रोज़ाना उन्हें शाही बावरचीख़ाने से कितना खाना और मै मिलनी है। तीन साल की तरबियत के बाद उन्हें बादशाह की ख़िदमत के लिए हाज़िर होना था।

6 जब इन नौजवानों को चुना गया तो चार आदमी उनमें शामिल थे जिनके नाम दानियाल, हननियाह, मीसाएल और अज़रियाह थे। 7 दरबार के आला अफ़सर ने उनके नए नाम रखे। दानियाल बेलतशज़्ज़र में बदल गया, हननियाह सदक़ में, मीसाएल मीसक़ में और अज़रियाह अबद-नज़ू में।

8 लेकिन दानियाल ने मुसम्मम इरादा कर लिया कि मैं अपने आपको शाही खाना खाने और शाही मै पीने से नापाक नहीं करूँगा। उसने दरबार के आला अफ़सर से इन चीज़ों से परहेज़ करने की इजाज़त माँगी। 9 अल्लाह ने पहले से इस अफ़सर का दिल नरम कर दिया था, इसलिए वह दानियाल का ख़ास लिहाज़ करता और उस पर मेहरबानी करता था। 10 लेकिन दानियाल की दरखास्त सुनकर उसने जवाब दिया, “मुझे अपने आका बादशाह से डर है। उन्हीं ने मुतैयिन किया कि तुम्हें क्या क्या खाना और पीना है। अगर उन्हें पता चले कि तुम दूसरे नौजवानों की निसबत दुबले-पतले और कमज़ोर लगे तो वह मेरा सर कलम करेंगे।” 11 तब दानियाल ने उस निगरान से बात की जिसे दरबार के आला अफ़सर ने दानियाल, हननियाह, मीसाएल और अज़रियाह पर मुर्करर किया था। वह बोला, 12 “ज़रा दस दिन तक अपने खादिमों को आजमाएँ। इतने में हमें खाने के लिए सिर्फ़ साग-पात और पीने के लिए पानी दीजिए। 13 इसके बाद हमारी सूरत का मुकाबला उन दीगर नौजवानों के साथ करें जो शाही खाना खाते हैं। फिर ही फैसला करें कि आइंदा अपने खादिमों के साथ कैसा सुलूक करेंगे।”

14 निगरान मान गया। दस दिन तक वह उन्हें साग-पात खिलाकर और पानी पिलाकर आजमाता रहा। 15 दस दिन के बाद क्या देखता है कि दानियाल और उसके तीन दोस्त शाही खाना खानेवाले दीगर नौजवानों की निसबत कहीं ज़्यादा सेहतमंद और मोटे-ताज़े लग रहे हैं। 16 तब निगरान उनके लिए मुर्कररा शाही खाने और मै का इंतज़ाम बंद करके उन्हें सिर्फ़ साग-पात खिलाने लगा। 17 अल्लाह ने इन चार आदमियों को अदब और हिकमत के हर शोबे में इल्म और समझ अता की। नीज़, दानियाल हर क्रिस्म की रोया और ख़ाब की ताबीर कर सकता था।

18 मुर्कररा तीन साल के बाद दरबार के आला अफ़सर ने तमाम नौजवानों को नबूकदनज़्ज़र के सामने पेश किया। 19 जब बादशाह ने उनसे गुफ़्तगू की तो मालूम हुआ कि दानियाल, हननियाह, मीसाएल और अज़रियाह दूसरों पर सबक़त रखते हैं। चुनौचे चारों बादशाह के मुलाज़िम बन गए। 20 जब भी किसी मामले में ख़ास हिकमत और समझ दरकार होती तो बादशाह ने देखा कि यह चार नौजवान मशवरा देने में पूरी सलतनत के तमाम क्रिस्मत का हाल बतानेवालों और जादूगरों से दस गुना ज़्यादा काबिल हैं।

21 दानियाल ख़ोरस की हुक्मत के पहले साल तक शाही दरबार में ख़िदमत करता रहा।

2

नबूकदनज़्ज़र का ख़ाब

1 अपनी हुक्मत के दूसरे साल में नबूकदनज़्ज़र ने ख़ाब देखा। ख़ाब इतना हौलनाक था कि वह घबराकर जाग उठा। 2 उसने हुक्म दिया कि तमाम क्रिस्मत का हाल बतानेवाले, जादूगर, अफ़सूंगर और नज़्मी मेरे पास आकर ख़ाब का मतलब बताएँ। जब वह हाज़िर हुए 3 तो बादशाह बोला, “मैंने एक ख़ाब देखा है जो मुझे बहुत परेशान कर रहा है। अब मैं उसका मतलब जानना चाहता हूँ।”

4 नुज़ूमियों ने अरामी ज़बान में जवाब दिया, “बादशाह सलामत अपने खादिमों के सामने यह ख़ाब बयान करें तो हम उस की ताबीर करेंगे।”

5 लेकिन बादशाह बोला, “नहीं, तुम ही मुझे वह कुछ बताओ और उस की ताबीर करो जो मैंने ख़ाब में देखा। अगर तुम यह न कर सको तो मैं हुक्म दूँगा कि तुम्हें टुकड़े टुकड़े कर दिया जाए और तुम्हारे घर कचरे के ढेर हो जाएँ। यह मेरा मुसम्मम इरादा है। 6 लेकिन अगर तुम मुझे वह कुछ बताकर उस की ताबीर करो जो मैंने ख़ाब में देखा तो मैं तुम्हें अच्छे तोहफ़े और इनाम दूँगा, नीज़ तुम्हारी ख़ास इज़्ज़त करूँगा। अब शुरू करो! मुझे वह कुछ बताओ और उस की ताबीर करो जो मैंने ख़ाब में देखा।”

7 एक बार फिर उन्होंने मिन्नत की, “बादशाह अपने खादिमों के सामने अपना ख़ाब बताएँ तो हम ज़रूर उस की ताबीर करेंगे।”

8 बादशाह ने जवाब दिया, “मुझे साफ पता है कि तुम क्या कर रहे हो! तुम सिर्फ टाल-मटोल कर रहे हो, क्योंकि तुम समझ गए हो कि मेरा इरादा पक्का है। 9 अगर तुम मुझे खाब न बताओ तो तुम सबको एक ही सजा दी जाएगी। क्योंकि तुम सब झूठ और गलत बातें पेश करने पर मुतफिक हो गए हो, यह उम्मीद रखते हुए कि हालात किसी वक्त बदल जाएंगे। मुझे खाब बताओ तो मुझे पता चल जाएगा कि तुम मुझे उस की सहीह ताबीर पेश कर सकते हो।”

10 नुजूमियों ने एतराज किया, “दुनिया में कोई भी इनसान वह कुछ नहीं कर पाता जो बादशाह माँगते हैं। यह कभी हुआ भी नहीं कि किसी बादशाह ने ऐसी बात किसी क्रिस्मत का हाल बतानेवाले, जादूगर या नजूमी से तलब की, खाह बादशाह कितना अज़ीम क्यों न था। 11 जिस चीज़ का तकाज़ा बादशाह करते हैं वह हद से ज़्यादा मुश्किल है। सिर्फ़ देवता ही यह बात बादशाह पर ज़ाहिर कर सकते हैं, लेकिन वह तो इनसान के दरमियान रहते नहीं।”

12 यह सुनकर बादशाह आग-बगूला हो गया। बड़े गुस्से में उसने हुक्म दिया कि बाबल के तमाम दानिशमंदों को सज़ाए-मौत दी जाए। 13 फ़रमान सादिर हुआ कि दानिशमंदों को मार डालना है। चुनाँचे दानियाल और उसके दोस्तों को भी तलाश किया गया ताकि उन्हें सज़ाए-मौत दें।

14 शाही मुहाफ़िज़ों का अफ़सर बनाम अरयूक अभी दानिशमंदों को मार डालने के लिए रवाना हुआ कि दानियाल बड़ी हिकमत और मौक़ाशनासी से उससे मुखातिब हुआ। 15 उसने अफ़सर से पूछा, “बादशाह ने इतना सख़्त फ़रमान क्यों जारी किया?” अरयूक ने दानियाल को सारा मामला बयान किया। 16 दानियाल फ़ौरन बादशाह के पास गया और उससे दरखास्त की, “ज़रा मुझे कुछ मोहलत दीजिए ताकि मैं बादशाह के खाब की ताबीर कर सकूँ।” 17 फिर वह अपने घर वापस गया और अपने दोस्तों हननियाह, मीसाएल और अज़रियाह को तमाम सूते-हाल सुनाई। 18 वह बोला, “आसमान के खुदा से इल्तिजा करें कि वह मुझ पर रहम करे। मिन्नत करें कि वह मेरे लिए भेद खोले ताकि हम दीगर दानिशमंदों के साथ हलाक न हो जाएँ।”

19 रात के वक्त दानियाल ने रोया देखी जिसमें उसके लिए भेद खोला गया। तब उसने आसमान के खुदा की हम्दो-सना की,

20 “अल्लाह के नाम की तमज़ीद अज़ल से अबद तक हो। वही हिकमत और कुव्वत का मालिक है। 21 वही औकात और ज़माने बदलने देता है। वही बादशाहों को तख़्त पर बिठा देता और उन्हें तख़्त पर से उतार देता है। वही दानिशमंदों को दानाई और समझदारों को समझ अता करता है। 22 वही गहरी और पोशीदा बातें ज़ाहिर करता है। जो कुछ अंधेरे में छुपा रहता है उसका इल्म वह रखता है, क्योंकि वह रौशनी से घिरा रहता है। 23 ऐ मेरे बापदादा के खुदा, मैं तेरी हम्दो-सना करता हूँ! तूने मुझे हिकमत और ताक़त अता की है। जो बात हमने तुझसे माँगी वह तूने हम पर ज़ाहिर की, क्योंकि तूने हम पर बादशाह का खाब ज़ाहिर किया है।”

24 फिर दानियाल अरयूक के पास गया जिसे बादशाह ने बाबल के दानिशमंदों को सज़ाए-मौत देने की ज़िम्मादारी दी थी। उसने उससे दरखास्त की, “बाबल के दानिशमंदों को मौत के घाट न उतारें, क्योंकि मैं बादशाह के खाब की ताबीर कर सकता हूँ। मुझे बादशाह के हुज़ूर पहुँचा दें तो मैं उन्हें सब कुछ बता दूँगा।”

25 यह सुनकर अरयूक भागकर दानियाल को बादशाह के हुज़ूर ले गया। वह बोला, “मुझे यहदाह के जिलावतनों में से एक आदमी मिल गया जो बादशाह को खाब का मतलब बता सकता है।” 26 तब नबूकदनज़ज़र ने दानियाल से जो बेलतशज़ज़र कहलाता था पूछा, “क्या तुम मुझे वह कुछ बता सकते हो जो मैंने खाब में देखा? क्या तुम उस की ताबीर कर सकते हो?”

27 दानियाल ने जवाब दिया, “जो भेद बादशाह जानना चाहते हैं उसे खोलने की कुंजी किसी भी दानिशमंद, जादूगर, क्रिस्मत का हाल बतानेवाले या ग़ैबदान के पास नहीं होती। 28 लेकिन आसमान पर एक खुदा है जो भेदों का मतलब इनसान पर ज़ाहिर कर देता है। उसी ने नबूकदनज़ज़र बादशाह को दिखाया कि आनेवाले दिनों में क्या कुछ पेश आएगा। सोते वक्त आपने खाब में रोया देखी। 29 ऐ बादशाह, जब आप पलंग पर लेटे हुए थे तो आपके ज़हन में आनेवाले दिनों के बारे में ख़यालात उभर आए। तब भेदों को खोलनेवाले खुदा ने आप पर ज़ाहिर किया कि आनेवाले दिनों में क्या कुछ पेश आएगा। 30 इस भेद का मतलब मुझ पर ज़ाहिर हुआ है, लेकिन इसलिए नहीं कि मुझे दीगर तमाम दानिशमंदों से ज़्यादा हिकमत हासिल है बल्कि इसलिए कि आपको भेद का मतलब मालूम हो जाए और आप समझ सकें कि आपके ज़हन में क्या कुछ उभर आया है।

31 ऐ बादशाह, रोया में आपने अपने सामने एक बड़ा और लंबा-तड़ंगा मुजस्समा देखा जो तेज़ी से चमक रहा था। शक्लो-सूरत ऐसी थी कि इनसान के रोंगटे खड़े हो जाते थे। 32 सर खालिस सोने का था जबकि सीना और बाजू चाँदी के, पेट और रान पीतल की 33 और पिंडलियाँ लोहे की थीं। उसके पाँवों का आधा हिस्सा लोहा और आधा हिस्सा पकी हुई मिट्टी था। 34 आप इस मंज़र पर गौर ही कर रहे थे कि अचानक किसी पहाड़ी ढलान से पत्थर का बड़ा टुकड़ा अलग हुआ। यह बग़ैर किसी इनसानी हाथ के हुआ। पत्थर ने धड़ाम से मुजस्समे के लोहे और मिट्टी के पाँवों पर गिरकर दोनों को चूर चूर कर दिया। 35 नतीजे में पूरा मुजस्समा पाश पाश हो गया। जितना भी लोहा, मिट्टी, पीतल, चाँदी और सोना था वह उस भूसे की मानिंद बन गया जो गाहते वक्त बाक़ी रह जाता है। हवा ने सब कुछ यों उड़ा दिया कि इन चीज़ों का नामो-निशान तक न रहा। लेकिन जिस पत्थर ने मुजस्समे को गिरा दिया वह ज़बरदस्त पहाड़ बनकर इतना बढ गया कि पूरी दुनिया उससे भर गई।

36 यही बादशाह का खाब था। अब हम बादशाह को खाब का मतलब बताते हैं। 37 ऐ बादशाह, आप शहनशाह हैं। आसमान के खुदा ने आपको सलतनत, कुव्वत, ताक़त और इज़ज़त से नवाज़ा है। 38 उसने इनसान को जंगली जानवरों और परितों समेत आप ही के हवाले कर दिया है। जहाँ भी वह बसते हैं उसने आपको ही उन पर मुक़र्र किया है। आप ही मज़क़ूरा सोने का सर हैं। 39 आपके बाद एक और सलतनत

कायम हो जाएगी, लेकिन उस की ताकत आपकी सलतनत से कम होगी। फिर पीतल की एक तीसरी सलतनत वुजूद में आएगी जो पूरी दुनिया पर हुकूमत करेगी। ⁴⁰ आखिर में एक चौथी सलतनत आएगी जो लोहे जैसी ताकतवर होगी। जिस तरह लोहा सब कुछ तोड़कर पाश पाश कर देता है उसी तरह वह दीगर सबको तोड़कर पाश पाश करेगी। ⁴¹ आपने देखा कि मुजस्समे के पाँवों और उँगलियों में कुछ लोहा और कुछ पकी हुई मिट्टी थी। इसका मतलब है, इस सलतनत के दो अलग हिस्से होंगे। लेकिन जिस तरह खाब में मिट्टी के साथ लोहा मिलाया गया था उसी तरह चौथी सलतनत में लोहे की कुछ न कुछ ताकत होगी। ⁴² खाब में पाँवों की उँगलियों में कुछ लोहा भी था और कुछ मिट्टी भी। इसका मतलब है, चौथी सलतनत का एक हिस्सा ताकतवर और दूसरा नाजुक होगा। ⁴³ लोहे और मिट्टी की मिलावट का मतलब है कि गो लोग आपस में शादी करने से एक दूसरे के साथ मुतहिद होने की कोशिश करेंगे तो भी वह एक दूसरे से पैवस्त नहीं रहेंगे, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह लोहा मिट्टी के साथ पैवस्त नहीं रह सकता।

⁴⁴ जब यह बादशाह हुकूमत करेंगे, उन्हीं दिनों में आसमान का खुदा एक बादशाही कायम करेगा जो न कभी तबाह होगी, न किसी दूसरी क्रौम के हाथ में आएगी। यह बादशाही इन दीगर तमाम सलतनतों को पाश पाश करके खत्म करेगी, लेकिन खुद अबद तक कायम रहेगी। ⁴⁵ यही खाब में उस पत्थर का मतलब है जिसने बगैर किसी इनसानी हाथ के पहाड़ी ढलान से अलग होकर मुजस्समे के लोहे, पीतल, मिट्टी, चाँदी और सोने को पाश पाश कर दिया। इस तरीके से अजीम खुदा ने बादशाह पर जाहिर किया है कि मुस्तकबिल में क्या कुछ पेश आएगा। यह खाब क्राबिले-एतमाद और उस की ताबीर सही है।”

⁴⁶ यह सुनकर नबूकदनज्ज़र बादशाह ने औधे मुँह होकर दानियाल को सिजदा किया और हुक्म दिया कि दानियाल को गल्ला और बखूर की कुरबानियाँ पेश की जाएँ। ⁴⁷ दानियाल से उसने कहा, “यक्रीनन, तुम्हारा खुदा खुदाओं का खुदा और बादशाहों का मालिक है। वह वाकई भेदों को खोलता है, वरना तुम यह भेद मेरे लिए खोल न पाते।” ⁴⁸ नबूकदनज्ज़र ने दानियाल को बड़ा ओहदा और मुतअद्दिद बेशक्रीमत तोहफे दिए। उसने उसे पूरे सूबा बाबल का गवर्नर बना दिया। साथ साथ दानियाल बाबल के तमाम दानिशमंदों पर मुकर्रर हुआ। ⁴⁹ उस की गुज़ारिश पर बादशाह ने सदक, मीसक और अबद-नजू को सूबा बाबल की इंतज़ामिया पर मुकर्रर किया। दानियाल खुद शाही दरबार में हाज़िर रहता था।

3

सोने के बुत की पूजा करने का हुक्म

¹ एक दिन नबूकदनज्ज़र ने सोने का मुजस्समा बनवाया। उस की ऊँचाई 90 फुट और चौड़ाई 9 फुट थी। उसने हुक्म दिया कि बुत को सूबा बाबल के मैदान बनाम दूर में खड़ा किया जाए। ² फिर उसने तमाम सूबेदारों, गवर्नरों, मुन्तज़िमों, मुशीरों, खज़ानचियों, जजों, मजिस्ट्रेटों, और सूबों के दीगर तमाम बड़े बड़े सरकारी मुलाज़िमों को पैगाम भेजा कि मुजस्समे की मखसूसियत के लिए आकर जमा हो जाओ। ³ चुनौचे सब बुत की मखसूसियत के लिए जमा हो गए। जब सब उसके सामने खड़े थे ⁴ तो शाही नक़ीब ने बुलंद आवाज़ से एलान किया,

“ऐ मुख्तलिफ़ क्रौमों, उम्मतों और ज़बानों के लोगो, सुनो! बादशाह फ़रमाता है, ⁵ ‘ज्योंही नरसिंगा, शहनाई, संतूर, सरोद, ऊद, बीन और दीगर तमाम साज़ बजेंगे तो लाज़िम है कि सब औधे मुँह होकर बादशाह के खड़े किए गए सोने के बुत को सिजदा करें। ⁶ जो भी सिजदा न करे उसे फ़ौरन भड़कती भट्टी में फेंका जाएगा।’”

⁷ चुनौचे ज्योंही साज़ बजने लगे तो मुख्तलिफ़ क्रौमों, उम्मतों और ज़बानों के तमाम लोग मुँह के बल होकर नबूकदनज्ज़र के खड़े किए गए बुत को सिजदा करने लगे।

⁸ उस वक़्त कुछ नज़मी बादशाह के पास आकर यहदियों पर इलज़ाम लगाने लगे। ⁹ वह बोले, “बादशाह सलामत अबद तक जीते रहें! ¹⁰ ऐ बादशाह, आपने फ़रमाया, ‘ज्योंही नरसिंगा, शहनाई, संतूर, सरोद, ऊद, बीन और दीगर तमाम साज़ बजेंगे तो लाज़िम है कि सब औधे मुँह होकर बादशाह के खड़े किए गए इस सोने के बुत को सिजदा करें। ¹¹ जो भी सिजदा न करे उसे भड़कती भट्टी में फेंका जाएगा।’ ¹² लेकिन कुछ यहूदी आदमी हैं जो आपकी परवा ही नहीं करते, हालाँकि आपने उन्हें सूबा बाबल की इंतज़ामिया पर मुकर्रर किया था। यह आदमी बनाम सदक, मीसक और अबद-नजू न आपके देवताओं की पूजा करते, न सोने के उस बुत की परस्तिश करते हैं जो आपने खड़ा किया है।”

¹³ यह सुनकर नबूकदनज्ज़र आपे से बाहर हो गया। उसने सीधा सदक, मीसक और अबद-नजू को बुलाया। जब पहुँचे ¹⁴ तो बोला, “ऐ सदक, मीसक और अबद-नजू, क्या यह सही है कि न तुम मेरे देवताओं की पूजा करते, न मेरे खड़े किए गए मुजस्समे की परस्तिश करते हो? ¹⁵ मैं तुम्हें एक आखिरी मौका देता हूँ। साज़ दुबारा बजेंगे तो तुम्हें मुँह के बल होकर मेरे बनवाए हुए मुजस्समे को सिजदा करना है। अगर तुम ऐसा न करो तो तुम्हें सीधा भड़कती भट्टी में फेंका जाएगा। तब कौन-सा खुदा तुम्हें मेरे हाथ से बचा सकेगा?”

¹⁶ सदक, मीसक और अबद-नजू ने जवाब दिया, “ऐ नबूकदनज्ज़र, इस मामले में हमें अपना दिफा करने की ज़रूरत नहीं है। ¹⁷ जिस खुदा की खिदमत हम करते हैं वह हमें बचा सकता है, खाह हमें भड़कती भट्टी में क्यों न फेंका जाए। ऐ बादशाह, वह हमें ज़रूर आपके हाथ से बचाएगा। ¹⁸ लेकिन अगर वह हमें न भी बचाए तो भी आपको मालूम हो कि न हम आपके देवताओं की पूजा करेंगे, न आपके खड़े किए गए सोने के मुजस्समे की परस्तिश करेंगे।”

¹⁹ यह सुनकर नबूकदनज्ज़र आग-बग़ूला हो गया। सदक, मीसक और अबद-नजू के सामने उसका चेहरा बिगड़ गया और उसने हुक्म दिया कि भट्टी को मामूल की निसबत सात गुना ज्यादा गरम किया जाए। ²⁰ फिर उसने कहा कि बेहतरीन फ़ौजियों में से चंद एक सदक, मीसक और

अबद-नजू को बाँधकर भड़कती भट्टी में फेंक दें। 21 तीनों को बाँधकर भड़कती भट्टी में फेंका गया। उनके चोगे, पाजामे और टोपियाँ उतारी न गईं। 22 चूँकि बादशाह ने भट्टी को गरम करने पर खास जोर दिया था इसलिए आग इतनी तेज़ हुई कि जो फौजी सद्रक, मीसक और अबद-नजू को लेकर भट्टी के मुँह तक चढ़ गए वह फौरन नजरे-आतिश हो गए। 23 उनके कैदी बँधी हुई हालत में शोलाज़न आग में गिर गए।

24 अचानक नबूकदनज़र बादशाह चौंक उठा। उसने उछलकर अपने मुशीरों से पूछा, “हमने तो तीन आदमियों को बाँधकर भट्टी में फेंकवाया कि नहीं?” उन्होंने जवाब दिया, “जी, ऐ बादशाह।” 25 वह बोला, “तो फिर यह क्या है? मुझे चार आदमी आग में इधर उधर फिरते हुए नज़र आ रहे हैं। न वह बँधे हुए हैं, न उन्हें नुकसान पहुँच रहा है। चौथा आदमी देवताओं का बेटा-सा लग रहा है।”

26 नबूकदनज़र जलती हुई भट्टी के मुँह के करीब गया और पुकारा, “ऐ सद्रक, मीसक और अबद-नजू, ऐ अल्लाह तआला के बंदो, निकल आओ! इधर आओ।” तब सद्रक, मीसक और अबद-नजू आग से निकल आए। 27 सूबेदार, गवर्नर, मुन्तज़िम और शाही मुशीर उनके गिर्द जमा हुए तो देखा कि आग ने उनके जिस्मों को नुकसान नहीं पहुँचाया। बालों में से एक भी झुलस नहीं गया था, न उनके लिबास आग से मुतअस्सिर हुए थे। आग और धुँएँ की बूँत नहीं थी।

28 तब नबूकदनज़र बोला, “सद्रक, मीसक और अबद-नजू के खुदा की तमजीद हो जिसने अपने फ़रिश्ते को भेजकर अपने बंदों को बचाया। उन्होंने उस पर भरोसा रखकर बादशाह के हुक्म की नाफरमानी की। अपने खुदा के सिवा किसी और की खिदमत या परस्तिश करने से पहले वह अपनी जान को देने के लिए तैयार थे। 29 चुनौचे मेरा हुक्म सुनो! सद्रक, मीसक और अबद-नजू के खुदा के खिलाफ़ कुफ़र बकना तमाम कौमों, उम्मतों और ज़बानों के अफ़राद के लिए सख्त मना है। जो भी ऐसा करे उसे टुकड़े टुकड़े कर दिया जाएगा और उसके घर को कचरे का ढेर बनाया जाएगा। क्योंकि कोई भी देवता इस तरह नहीं बचा सकता।” 30 फिर बादशाह ने तीनों आदमियों को सूबा बाबल में सरफ़राज़ किया।

4

नबूकदनज़र के दूसरे खाब की ताबीर

1 नबूकदनज़र दुनिया की तमाम कौमों, उम्मतों और ज़बानों के अफ़राद को ज़ैल का पैग़ाम भेजता है, सबकी सलामती हो! 2 मैंने सबको उन इलाही निशानात और मोजिज़ात से आगाह करने का फैसला किया है जो अल्लाह तआला ने मेरे लिए किए हैं। 3 उसके निशान कितने अज़ीम, उसके मोजिज़ात कितने ज़बरदस्त हैं! उस की बादशाही अबदी है, उस की सलतनत नसल-दर-नसल कायम रहती है।

4 मैं, नबूकदनज़र खुशी और सुकून से अपने महल में रहता था। 5 लेकिन एक दिन मैं एक खाब देखकर बहुत घबरा गया। मैं पलंग पर लेटा हुआ था कि इतनी हौलनाक बातें और रोयाँ मेरे सामने से गुज़रीं कि मैं डर गया। 6 तब मैंने हुक्म दिया कि बाबल के तमाम दानिशमंद मेरे पास आएँ ताकि मेरे लिए खाब की ताबीर करें। 7 किस्मत का हाल बतानेवाले, जादूगर, नज़ूमी और ग़ैबदान पहुँचे तो मैंने उन्हें अपना खाब बयान किया, लेकिन वह उस की ताबीर करने में नाकाम रहे।

8 आखिरकार दानियाल मेरे हज़ूर आया जिसका नाम बेलतशज़ज़र रखा गया है (मेरे देवता का नाम बेल है)। दानियाल में मुक़द्दस देवताओं की रूह है। उसे भी मैंने अपना खाब सुनाया। 9 मैं बोला, “ऐ बेलतशज़ज़र, तुम जादूगरों के सरदार हो, और मैं जानता हूँ कि मुक़द्दस देवताओं की रूह तुममें है। कोई भी भेद तुम्हारे लिए इतना मुश्किल नहीं है कि तुम उसे खोल न सको। अब मेरा खाब सुनकर उस की ताबीर करो!”

10 पलंग पर लेटे हुए मैंने रोया में देखा कि दुनिया के बीच में निहायत लंबा-सा दरख़्त लगा है। 11 यह दरख़्त इतना ऊँचा और तनावर होता गया कि आखिरकार उस की चोटी आसमान तक पहुँच गई और वह दुनिया की इतना तक नज़र आया। 12 उसके पत्ते ख़ूबसूरत थे, और वह बहुत फल लाता था। उसके साय में जंगली जानवर पनाह लेते, उस की शाखों में परिदे बसेरा करते थे। हर इंसानो-हैवान को उससे ख़ुराक मिलती थी।

13 मैं अभी दरख़्त को देख रहा था कि एक मुक़द्दस फ़रिश्ता आसमान से उतर आया। 14 उसने बड़े जोर से आवाज़ दी, ‘दरख़्त को काट डालो! उस की शाखें तोड़ दो, उसके पत्ते झाड़ दो, उसका फल बिखेर दो! जानवर उसके साय में से निकलकर भाग जाएँ, परिदे उस की शाखों से उड़ जाएँ। 15 लेकिन उसका मुठ जड़ों समेत ज़मीन में रहने दो। उसे लोहे और पीतल की जंजीरों में जकड़कर खुले मैदान की घास में छोड़ दो। वहाँ उसे आसमान की ओस तर करे, और जानवरों के साथ ज़मीन की घास ही उसको नसीब हो। 16 सात साल तक उसका इंसानी दिल जानवर के दिल में बदल जाए। 17 क्योंकि मुक़द्दस फ़रिश्तों ने फ़तवा दिया है कि ऐसा ही हो ताकि इंसान जान ले कि अल्लाह तआला का इस्ति़यार इंसानी सलतनतों पर है। वह अपनी ही मरज़ी से लोगों को उन पर मुक़र्रर करता है, खाह वह कितने ज़लील क्यों न हों।’

18 मैं, नबूकदनज़र ने खाब में यह कुछ देखा। ऐ बेलतशज़ज़र, अब मुझे इसकी ताबीर पेश करो। मेरी सलतनत के तमाम दानिशमंद इसमें नाकाम रहे हैं। लेकिन तुम यह कर पाओगे, क्योंकि तुममें मुक़द्दस देवताओं की रूह है।”

19 तब बेलतशज़ज़र यानी दानियाल के रोंगटे खड़े हो गए, और जो ख़यालात उभर आए उनसे उस पर काफ़ी देर तक सख़्त दहशत तारी रही। आखिरकार बादशाह बोला, “ऐ बेलतशज़ज़र, खाब और उसका मतलब तुझे इतना दहशतज़दा न करे।” बेलतशज़ज़र ने जवाब दिया, “मेरे आका, काश खाब की बातें आपके दुश्मनों और मुखालिफ़ों को पेश आएँ! 20 आपने एक दरख़्त देखा जो इतना ऊँचा और तनावर हो गया कि

उस की चोटी आसमान तक पहुँची और वह पूरी दुनिया को नज़र आया। ²¹ उसके पते खूबसूरत थे, और वह बहुत-सा फल लाता था। उसके साथ में जंगली जानवर पनाह लेते, उस की शाखों में परिदे बसेरा करते थे। हर इनसानो-हैवान को उससे खुराक मिलती थी।

²² ऐ बादशाह, आप ही यह दरख्त हैं! आप ही बड़े और ताकतवर हो गए हैं बल्कि आपकी अज़मत बढ़ते बढ़ते आसमान से बातें करने लगी, आपकी सलतनत दुनिया की इतहा तक फैल गई है। ²³ ऐ बादशाह, इसके बाद आपने एक मुक़द्दस फ़रिश्ते को देखा जो आसमान से उतरकर बोला, दरख्त को काट डालो! उसे तबाह करो, लेकिन उसका मुढ़ जड़ों समेत ज़मीन में रहने दो। उसे लोहे और पीतल की जंजीरों में जकड़कर खुले मैदान की घास में छोड़ दो। वहाँ उसे आसमान की ओस तर करे, और जानवरों के साथ ज़मीन की घास ही उसको नसीब हो। सात साल यों ही गुज़र जाएँ।

²⁴ ऐ बादशाह, इसका मतलब यह है, अल्लाह तआला ने मेरे आका बादशाह के बारे में फैसला किया है ²⁵ कि आपको इनसानी संगत से निकालकर भगाया जाएगा। तब आप जंगली जानवरों के साथ रहकर बैलों की तरह घास चरेंगे और आसमान की ओस से तर हो जाएंगे। सात साल यों ही गुज़रेंगे। फिर आखिरकार आप इक्रार करेंगे कि अल्लाह तआला का इनसानी सलतनतों पर इख्तियार है, वह अपनी ही मरज़ी से लोगों को उन पर मुक़र्रर करता है। ²⁶ लेकिन खाब में यह भी कहा गया कि दरख्त के मुढ़ को जड़ों समेत ज़मीन में छोड़ा जाए। इसका मतलब है कि आपकी सलतनत ताहम कायम रहेगी। जब आप एतराफ़ करेंगे कि तमाम इख्तियार आसमान के हाथ में है तो आपको सलतनत वापस मिलेगी। ²⁷ ऐ बादशाह, अब मेहरबानी से मेरा मशवरा क़बूल फ़रमाएँ। इनसाफ़ करके और मज़लूमों पर करम फ़रमाकर अपने गुनाहों को दूर करें। शायद ऐसा करने से आपकी खुशहाली कायम रहे।”

²⁸ दानियाल की हर बात नबूकदनज़ज़र को पेश आई। ²⁹ बारह महीने के बाद बादशाह बाबल में अपने शाही महल की छत पर टहल रहा था। ³⁰ तब वह कहने लगा, “लो, यह अज़ीम शहर देखो जो मैंने अपनी रिहाइश के लिए तामीर किया है! यह सब कुछ मैंने अपनी ही ज़बरदस्त कुव्वत से बना लिया है ताकि मेरी शानो-शौकत मज़ीद बढ़ती जाए।”

³¹ बादशाह यह बात बोल ही रहा था कि आसमान से आवाज़ सुनाई दी, “ऐ नबूकदनज़ज़र बादशाह, सुन! सलतनत तुझसे छीन ली गई है। ³² तुझे इनसानी संगत से निकालकर भगाया जाएगा, और तू जंगली जानवरों के साथ रहकर बैल की तरह घास चरेगा। सात साल यों ही गुज़र जाएंगे। फिर आखिरकार तू इक्रार करेगा कि अल्लाह तआला का इनसानी सलतनतों पर इख्तियार है, वह अपनी ही मरज़ी से लोगों को उन पर मुक़र्रर करता है।”

³³ ज्योंही आवाज़ बंद हुई तो ऐसा ही हुआ। नबूकदनज़ज़र को इनसानी संगत से निकालकर भगाया गया, और वह बैलों की तरह घास चरने लगा। उसका जिस्म आसमान की ओस से तर होता रहा। होते होते उसके बाल उकाब के परो जितने लंबे और उसके नाखून परिदे के चंगुल की मानिंद हुए। ³⁴ लेकिन सात साल गुज़रने के बाद मैं, नबूकदनज़ज़र अपनी आँखों को आसमान की तरफ़ उठाकर दुबारा होश में आया। तब मैंने अल्लाह तआला की तमजीद की, मैंने उस की हम्दो-सना की जो हमेशा तक ज़िंदा है। उस की हुकूमत अबदी है, उस की सलतनत नसल-दर-नसल कायम रहती है। ³⁵ उस की निसबत दुनिया के तमाम बाशिदे सिफ़र के बराबर हैं। वह आसमानी फ़ौज और दुनिया के बाशिंदों के साथ जो जी चाहे करता है। उसे कुछ करने से कोई नहीं रोक सकता, कोई उससे जवाब तलब करके पूछ नहीं सकता, “तूने क्या किया?”

³⁶ ज्योंही मैं दुबारा होश में आया तो मुझे पहली शाही इज़्ज़त और शानो-शौकत भी अज़ सरे-नौ हासिल हुई। मेरे मुशीर और शुरफ़ा दुबारा मेरे सामने हाज़िर हुए, और मुझे दुबारा तख़्त पर बिठाया गया। पहले की निसबत मेरी अज़मत में इज़ाफ़ा हुआ।

³⁷ अब मैं, नबूकदनज़ज़र आसमान के बादशाह की हम्दो-सना करता हूँ। मैं उसी को जलाल देता हूँ, क्योंकि जो कुछ भी वह करे वह सहीह है। उस की तमाम राहें मुसिफ़ाना हैं। जो मग़स्स होकर ज़िंदगी गुज़ारते हैं उन्हें वह पस्त करने के काबिल है।

5

बेलशज़ज़र की ज़ियाफ़त

¹ एक दिन बेलशज़ज़र बादशाह अपने बड़ों के हज़ार अफ़राद के लिए ज़बरदस्त ज़ियाफ़त करके उनके साथ मै पीने लगा। ² नशे में उसने हुक्म दिया, “सोने-चाँदी के जो प्याले मेरे बाप नबूकदनज़ज़र ने यरूशलम में वाके अल्लाह के घर से छीन लिए थे वह मेरे पास ले आओ ताकि मैं अपने बड़ों, बीवियों और दाशताओं के साथ उनसे मै पी लूँ।” ³ चुनौचे यरूशलम में वाके अल्लाह के घर से लूटे हुए प्याले उसके पास लाए गए, और सब उनसे मै पी कर ⁴ सोने, चाँदी, पीतल, लोहे, लकड़ी और पत्थर के अपने बुतों की तमजीद करने लगे।

⁵ उसी लमहे शाही महल के हाल में इनसानी हाथ की उँगलियाँ नज़र आई जो शमादान के मुक़ाबिल दीवार के पलस्तर पर कुछ लिखने लगीं। जब बादशाह ने हाथ को लिखते हुए देखा ⁶ तो उसका चेहरा डर के मारे फ़क़ हो गया। उस की कमर के जोड़ ढीले पड़ गए, और उसके घुटने एक दूसरे से टकराने लगे।

⁷ वह ज़ोर से चीखा, “जादूग़रों, नुज़ूमियों और गैबदानों को बुलाओ!” बाबल के दानिशमंद पहुँचे तो वह बोला, “जो भी लिखे हुए अलफ़ाज़ पढ़कर मुझे उनका मतलब बता सके उसे अरग़वानी रंग का लिबास पहनाया जाएगा। उसके गले में सोने की जंजीर पहनाई जाएगी, और हुकूमत में सिर्फ़ दो लोग उससे बड़े होंगे।”

8 बादशाह के दानिशमंद करीब आए, लेकिन न वह लिखे हुए अलफाज़ पढ़ सके, न उनका मतलब बादशाह को बता सके। 9 तब बेलशज्ज़र बादशाह निहायत परेशान हुआ, और उसका चेहरा मज़ीद माँद पड़ गया। उसके शरफ़ा भी सख़्त परेशान हो गए।

10 बादशाह और शरफ़ा की बातें मलिका तक पहुँच गईं तो वह ज़ियाफ़त के हाल में दाखिल हुई। कहने लगी, “बादशाह अबद तक जीते रहें! घबराने या माँद पड़ने की क्या ज़रूरत है? 11 आपकी बादशाही में एक आदमी है जिसमें मुक़द्दस देवताओं की रूह है। आपके बाप के दौरे-हुकूमत में साबित हुआ कि वह देवताओं की-सी बसीरत, फ़हम और हिकमत का मालिक है। आपके बाप नबूकदनज्ज़र बादशाह ने उसे किस्मत का हाल बतानेवालों, जादूगरों, नुजूमियों और ग़ैबदानों पर मुक़र्रर किया था, 12 क्योंकि उसमें ग़ैरमामूली ज़िहानत, इल्म और समझ पाई जाती है। वह ख़ाबों की ताबीर करने और पहेलियाँ और पेचीदा मसले हल करने में माहिर साबित हुआ है। आदमी का नाम दानियाल है, गो बादशाह ने उसका नाम बेलतशज्ज़र रखा था। मेरा मशवरा है कि आप उसे बुलाएँ, क्योंकि वह आपको ज़रूर लिखे हुए अलफाज़ का मतलब बताएगा।”

13 यह सुनकर बादशाह ने दानियाल को फ़ौरन बुला लिया। जब पहुँचा तो बादशाह उससे मुखातिब हुआ, “क्या तुम वह दानियाल हो जिसे मेरे बाप नबूकदनज्ज़र बादशाह यहदाह के जिलावतनों के साथ यहदाह से यहाँ लाए थे? 14 सुना है कि देवताओं की रूह तुममें है, कि तुम बसीरत, फ़हम और ग़ैरमामूली हिकमत के मालिक हो। 15 दानिशमंदों और नुजूमियों को मेरे सामने लाया गया है ताकि दीवार पर लिखे हुए अलफाज़ पढ़कर मुझे उनका मतलब बताएँ, लेकिन वह नाकाम रहे हैं। 16 अब मुझे बताया गया कि तुम ख़ाबों की ताबीर और पेचीदा मसलों को हल करने में माहिर हो। अगर तुम यह अलफाज़ पढ़कर मुझे इनका मतलब बता सको तो तुम्हें अरग़वानी रंग का लिबास पहनाया जाएगा। तुम्हारे गले में सोने की जंजीर पहनाई जाएगी, और हुकूमत में सिर्फ़ दो लोग तुमसे बड़े होंगे।”

17 दानियाल ने जवाब दिया, “मुझे अज़्र न दें, अपने तोहफ़े किसी और को दीजिए। मैं बादशाह को यह अलफाज़ और इनका मतलब वैसे ही बता दूँगा। 18 ऐ बादशाह, जो सलतनत, अज़मत और शानो-शौकत आपके बाप नबूकदनज्ज़र को हासिल थी वह अल्लाह तआला से मिली थी। 19 उसी ने उन्हें वह अज़मत अता की थी जिसके बाइस तमाम क़ौमों, उम्मतों और ज़बानों के अफ़राद उनसे डरते और उनके सामने काँपते थे। जिसे वह मार डालना चाहते थे उसे मारा गया, जिसे वह ज़िंदा छोड़ना चाहते थे वह ज़िंदा रहा। जिसे वह सरफ़राज़ करना चाहते थे वह सरफ़राज़ हुआ और जिसे पस्त करना चाहते थे वह पस्त हुआ। 20 लेकिन वह फूलकर हृद से ज़्यादा मग़रूर हो गए, इसलिए उन्हें तख़्त से उतारा गया, और वह अपनी क़दरो-मनज़िलत खो बैठे। 21 उन्हें इनसानी संगत से निकालकर भगाया गया, और उनका दिल जानवर के दिल की मानिंद बन गया। उनका रहन-सहन जंगली गधों के साथ था, और वह बैलों की तरह घास चरने लगे। उनका जिस्म आसमान की ओस से तर रहता था। यह हालत उस वक़्त तक रही जब तक कि उन्होंने इक्करार न किया कि अल्लाह तआला का इनसानी सलतनतों पर इख़्तियार है, वह अपनी ही मरज़ी से लोगों को उन पर मुक़र्रर करता है।

22 ऐ बेलशज्ज़र बादशाह, गो आप उनके बेटे हैं और इस बात का इल्म रखते हैं तो भी आप फ़रोतन न रहे 23 बल्कि आसमान के मालिक के खिलाफ़ उठ खड़े हो गए हैं। आपने हुक्म दिया कि उसके घर के प्याले आपके हुज़ूर लाए जाएँ, और आपने अपने बड़ों, बीवियों और दाशताओं के साथ उन्हें मै पीने के लिए इस्तेमाल किया। साथ साथ आपने अपने देवताओं की तमज़ीद की गो वह चाँदी, सोने, पीतल, लोहे, लकड़ी और पत्थर के बूत ही हैं। न वह देख सकते, न सुन या समझ सकते हैं। लेकिन जिस ख़ुदा के हाथ में आपकी जान और आपकी तमाम राहें हैं उसका एहतराम आपने नहीं किया।

24 इसी लिए उसने हाथ भेजकर दीवार पर यह अलफाज़ लिखवा दिए। 25 और लिखा यह है, ‘मिने मिने तकेलो-फ़रसीन।’

26 ‘मिने’ का मतलब ‘गिना हुआ’ है। यानी आपकी सलतनत के दिन गिने हुए हैं, अल्लाह ने उन्हें इख़िताम तक पहुँचाया है।

27 ‘तकेल’ का मतलब ‘तोला हुआ’ है। यानी अल्लाह ने आपको तोलकर मालूम किया है कि आपका वज़न कम है।

28 ‘फ़रसीन’ का मतलब ‘तक़सीम हुआ’ है। यानी आपकी बादशाही को मादियों और फ़ारसियों में तक़सीम किया जाएगा।”

29 दानियाल ख़ामोश हुआ तो बेलशज्ज़र ने हुक्म दिया कि उसे अरग़वानी रंग का लिबास पहनाया जाए और उसके गले में सोने की जंजीर पहनाई जाए। साथ साथ एलान किया गया कि अब से हुकूमत में सिर्फ़ दो आदमी दानियाल से बड़े हैं।

30 उसी रात शाहे-बाबल बेलशज्ज़र को क़त्ल किया गया, 31 और दारा मादी तख़्त पर बैठ गया। उस की उम्र 62 साल थी।

6

दानियाल शेरबबर की माँद में

1 दारा ने सलतनत के तमाम सबों पर 120 सूबेदार मुतैयिन करने का फ़ैसला किया। 2 उन पर तीन वज़ीर मुक़र्रर थे जिनमें से एक दानियाल था। गवर्नर उनके सामने जवाबदेह थे ताकि बादशाह को नुक़सान न पहुँचे। 3 जल्द ही पता चला कि दानियाल दूसरे वज़ीरों और सूबेदारों पर सबक़त रखता था, क्योंकि वह ग़ैरमामूली ज़िहानत का मालिक था। नतीज़तन बादशाह ने उसे पूरी सलतनत पर मुक़र्रर करने का इरादा किया। 4 जब दीगर वज़ीरों और सूबेदारों को यह बात मालूम हुई तो वह दानियाल पर इलज़ाम लगाने का बहाना ढूँढ़ने लगे। लेकिन वह अपनी ज़िम्मादारियों को निभाने में इतना क़ाबिले-एतमाद था कि वह नाकाम रहे। क्योंकि न वह रिश्वतखोर था, न किसी काम में सुस्त।

5 आखिरकार वह आदमी आपस में कहने लगे, “इस तरीक़े से हमें दानियाल पर इलज़ाम लगाने का मौक़ा नहीं मिलेगा। लेकिन एक बात है जो इलज़ाम का बाइस बन सकती है यानी उसके ख़ुदा की शरीअत।” 6 तब वह गुरोह की सूत में बादशाह के सामने हाज़िर हुए और कहने

लगे, “दारा बादशाह अबद तक जीते रहें! 7 सलतनत के तमाम वजीर, गवर्नर, सूबेदार, मुशीर और मुन्तज़िम आपस में मशवरा करके मुत्तफिक हुए हैं कि अगले 30 दिन के दौरान सबको सिर्फ बादशाह से दुआ करनी चाहिए। बादशाह एक फ़रमान सादिर करें कि जो भी किसी और माबूद या इनसान से इल्तिजा करे उसे शेरों की माँद में फेंका जाएगा। ध्यान देना चाहिए कि सब ही इस पर अमल करें। 8 ऐ बादशाह, गुज़ारिश है कि आप यह फ़रमान ज़रूर सादिर करें बल्कि लिखकर उस की तसदीक भी करें ताकि उसे तबदील न किया जा सके। तब वह मादियों और फ़ारसियों के कवानीन का हिस्सा बनकर मनसूख नहीं किया जा सकेगा।”

9 दारा बादशाह मान गया। उसने फ़रमान लिखवाकर उस की तसदीक की।

10 जब दानियाल को मालूम हुआ कि फ़रमान सादिर हुआ है तो वह सीधा अपने घर में चला गया। छत पर एक कमरा था जिसकी खुली खिड़कियों का सूख यरूशलम की तरफ था। इस कमरे में दानियाल रोज़ाना तीन बार अपने घुटने टेककर दुआ और अपने खुदा की सताइश करता था। अब भी उसने यह सिलसिला जारी रखा। 11 ज्योंही दानियाल अपने खुदा से दुआ और इल्तिजा कर रहा था तो उसके दुश्मनों ने गुरोह की सूत में घर में घुसकर उसे यह करते हुए पाया।

12 तब वह बादशाह के पास गए और उसे शाही फ़रमान की याद दिलाई, “क्या आपने फ़रमान सादिर नहीं किया था कि अगले 30 दिन के दौरान सबको सिर्फ बादशाह से दुआ करनी है, और जो किसी और माबूद या इनसान से इल्तिजा करे उसे शेरों की माँद में फेंका जाएगा?” बादशाह ने जवाब दिया, “जी, यह फ़रमान कायम है बल्कि मादियों और फ़ारसियों के कवानीन का हिस्सा है जो मनसूख नहीं किया जा सकता।” 13 उन्होंने कहा, “ऐ बादशाह, दानियाल जो यहदाह के जिलावतनों में से है न आपकी परवा करता, न उस फ़रमान की जिसकी आपने लिखकर तसदीक की। अभी तक वह रोज़ाना तीन बार अपने खुदा से दुआ करता है।”

14 यह सुनकर बादशाह को बड़ी दिक्कत महसूस हुई। पूरा दिन वह सोचता रहा कि मैं दानियाल को किस तरह बचाऊँ। सूरज के गुरूब होने तक वह उसे छुड़ाने के लिए कोशिशें रहा। 15 लेकिन आखिरकार वह आदमी गुरोह की सूत में दुबारा बादशाह के हुज़ूर आए और कहने लगे, “बादशाह को याद रहे कि मादियों और फ़ारसियों के कवानीन के मुताबिक जो भी फ़रमान बादशाह सादिर करे उसे तबदील नहीं किया जा सकता।” 16 चुनौचे बादशाह ने हुक्म दिया कि दानियाल को पकड़कर शेरों की माँद में फेंका जाए। ऐसा ही हुआ। बादशाह बोला, “ऐ दानियाल, जिस खुदा की इबादत तुम बिलानागा करते आए हो वह तुम्हें बचाए।” 17 फिर माँद के मुँह पर पत्थर रखा गया, और बादशाह ने अपनी मुहर और अपने बड़ों की मुहरें उस पर लगाई ताकि कोई भी उसे खोलकर दानियाल की मदद न करे।

18 इसके बाद बादशाह शाही महल में वापस चला गया और पूरी रात रोज़ा रखे हुए गुज़ारी। न कुछ उसका दिल बहलाने के लिए उसके पास लाया गया, न उसे नींद आई।

19 जब पौ फटने लगी तो वह उठकर शेरों की माँद के पास गया। 20 उसके करीब पहुँचकर बादशाह ने गमगीन आवाज़ से पुकारा, “ऐ जिंदा खुदा के बंदे दानियाल, क्या तुम्हारे खुदा जिसकी तुम बिलानागा इबादत करते रहे हो तुम्हें शेरों से बचा सका?” 21 दानियाल ने जवाब दिया, “बादशाह अबद तक जीते रहें! 22 मेरे खुदा ने अपने फ़रिश्ते को भेज दिया जिसने शेरों के मुँह को बंद किए रखा। उन्होंने मुझे कोई भी नुकसान न पहुँचाया, क्योंकि अल्लाह के सामने मैं बेक़सूर हूँ। बादशाह सलामत के खिलाफ़ भी मुझसे जुर्म नहीं हुआ।”

23 यह सुनकर बादशाह आपे में न समाया। उसने दानियाल को माँद से निकालने का हुक्म दिया। जब उसे खींचकर निकाला गया तो मालूम हुआ कि उसे कोई भी नुकसान नहीं पहुँचा। यों उसे अल्लाह पर भरोसा रखने का अज़्र मिला। 24 लेकिन जिन आदमियों ने दानियाल पर इलज़ाम लगाया था उनका बुरा अंजाम हुआ। बादशाह के हुक्म पर उन्हें उनके बाल-बच्चों समेत शेरों की माँद में फेंका गया। माँद के फ़र्श पर गिरने से पहले ही शेर उन पर झपट पड़े और उन्हें फाड़कर उनकी हड्डियों को चबा लिया।

25 फिर दारा बादशाह ने सलतनत की तमाम क्रौमों, उम्मतों और अहले-ज़बान को ज़ैल का पैगाम भेजा,

“सबकी सलामती हो! 26 मेरा फ़रमान सुनो! लाज़िम है कि मेरी सलतनत की हर जगह लोग दानियाल के खुदा के सामने थरथराएँ और उसका खौफ़ मानें। क्योंकि वह जिंदा खुदा और अबद तक कायम है। न कभी उस की बादशाही तबाह, न उस की हुक्मत ख़त्म होगी। 27 वही बचाता और नजात देता है, वही आसमानो-ज़मीन पर इलाही निशान और मोजिज़े दिखाता है। उसी ने दानियाल को शेरों के कब्जे से बचाया।”

28 चुनौचे दानियाल को दारा बादशाह और फ़ारस के बादशाह ख़ोरस के दौरे-हुक्मत में बहुत कामयाबी हासिल हुई।

7

दानियाल की पहली रोया : चार जानवर

1 शाहे-बाबल बेलशज़ज़र की हुक्मत के पहले साल में दानियाल ने खाब में रोया देखी। जाग उठने पर उसने वह कुछ कलमबंद कर लिया जो खाब में देखा था। ज़ैल में इसका बयान है,

2 रात के वक़्त मैं, दानियाल ने रोया में देखा कि आसमान की चारों हवाएँ जोर से बड़े समुंदर को मुतलातिम कर रही हैं। 3 फिर चार बड़े जानवर समुंदर से निकल आए जो एक दूसरे से मुख़तलिफ़ थे।

4 पहला जानवर शेरबबर जैसा था, लेकिन उसके उक्काब के पर थे। मेरे देखते ही उसके परों को नोच लिया गया और उसे उठाकर इनसान की तरह पिछले दो पैरों पर खड़ा किया गया। उसे इनसान का दिल भी मिल गया।

5 दूसरा जानवर रीछ जैसा था। उसका एक पहलू खड़ा किया गया था, और वह अपने दाँतों में तीन पसलियाँ पकड़े हुए था। उसे बताया गया, “उठ, जी भरकर गोशत खा ले!”

6 फिर मैंने तीसरे जानवर को देखा। वह चीते जैसा था, लेकिन उसके चार सर थे। उसे हुकूमत करने का इख्तियार दिया गया।

7 इसके बाद रात की रोया में एक चौथा जानवर नज़र आया जो डरावना, हौलनाक और निहायत ही ताकतवर था। अपने लोहे के बड़े बड़े दाँतों से वह सब कुछ खाता और चूर चूर करता था। जो कुछ बच जाता उसे वह पाँवों तले रौंद देता था। यह जानवर दीगर जानवरों से मुख्तलिफ़ था। उसके दस सींग थे। 8 मैं सींगों पर गौर ही कर रहा था कि एक और छोटा-सा सींग उनके दरमियान से निकल आया। पहले दस सींगों में से तीन को नोच लिया गया ताकि उसे जगह मिल जाए। छोटे सींग पर इन्सानी आँखें थीं, और उसका मुँह बड़ी बड़ी बातें करता था।

9 मैं देख ही रहा था कि तख़्त लगाए गए और कदीमुल-ऐयाम बैठ गया। उसका लिबास बर्फ़ जैसा सफ़ेद और उसके बाल खालिस ऊन की मानिंद थे। जिस तख़्त पर वह बैठा था वह आग की तरह भड़क रहा था, और उस पर शोलाज़न पहिये लगे थे। 10 उसके सामने से आग की नहर बहकर निकल रही थी। बेशुमार हस्तियाँ उस की खिदमत के लिए खड़ी थीं। लोग अदालत के लिए बैठ गए, और किताबें खोली गईं।

11 मैंने गौर किया कि छोटा सींग बड़ी बड़ी बातें कर रहा है। मैं देखता रहा तो चौथे जानवर को क़त्ल किया गया। उसका जिस्म तबाह हुआ और भड़कती आग में फेंका गया। 12 दीगर तीन जानवरों की हुकूमत उनसे छीन ली गई, लेकिन उन्हें कुछ देर के लिए ज़िंदा रहने की इजाज़त दी गई।

13 रात की रोया में मैंने यह भी देखा कि आसमान के बादलों के साथ साथ कोई आ रहा है जो इब्ने-आदम-सा लग रहा है। जब कदीमुल-ऐयाम के करीब पहुँचा तो उसके हुज़ूर लाया गया। 14 उसे सलतनत, इज़ज़त और बादशाही दी गई, और हर क्रौम, उम्मत और ज़बान के अफ़राद ने उस की परस्तिश की। उस की हुकूमत अबदी है और कभी ख़त्म नहीं होगी। उस की बादशाही कभी तबाह नहीं होगी।

15 मैं, दानियाल सख़्त परेशान हुआ, क्योंकि रोया से मुझ पर दहशत छा गई थी। 16 इसलिए मैंने वहाँ खड़े किसी के पास जाकर उससे गुज़ारिश की कि वह मुझे इन तमाम बातों का मतलब बताए। उसने मुझे इनका मतलब बताया, 17 “चार बड़े जानवर चार सलतनतें हैं जो ज़मीन से निकलकर कायम हो जाएंगी। 18 लेकिन अल्लाह तआला के मुक़द्दसीन को हकीक़ी बादशाही मिलेगी, वह बादशाही जो अबद तक हासिल रहेगी।”

19 मैं चौथे जानवर के बारे में मज़ीद जानना चाहता था, उस जानवर के बारे में जो दीगर जानवरों से इतना मुख्तलिफ़ और इतना हौलनाक था। क्योंकि उसके दाँत लोहे और पंजे पीतल के थे, और वह सब कुछ खाता और चूर चूर करता था। जो बच जाता उसे वह पाँवों तले रौंद देता था। 20 मैं उसके सर के दस सींगों और उनमें से निकले हुए छोटे सींग के बारे में भी मज़ीद जानना चाहता था। क्योंकि छोटे सींग के निकलने पर दस सींगों में से तीन निकलकर गिर गए, और यह सींग बढकर साथवाले सींगों से कहीं बड़ा नज़र आया। उस की आँखें थीं, और उसका मुँह बड़ी बड़ी बातें करता था। 21 रोया में मैंने देखा कि छोटे सींग ने मुक़द्दसीन से जंग करके उन्हें शिकस्त दी। 22 लेकिन फिर कदीमुल-ऐयाम आ पहुँचा और अल्लाह तआला के मुक़द्दसीन के लिए इन्साफ़ कायम किया। फिर वह वक़्त आया जब मुक़द्दसीन को बादशाही हासिल हुई।

23 जिससे मैंने रोया का मतलब पछा था उसने कहा, “चौथे जानवर से मुराद ज़मीन पर एक चौथी बादशाही है जो दीगर तमाम बादशाहियों से मुख्तलिफ़ होगी। वह तमाम दुनिया को खा जाएगी, उसे रौंदकर चूर चूर कर देगी। 24 दस सींगों से मुराद दस बादशाह हैं जो इस बादशाही से निकल आएंगे। उनके बाद एक और बादशाह आएगा जो गुज़रे बादशाहों से मुख्तलिफ़ होगा और तीन बादशाहों को खाक में मिला देगा। 25 वह अल्लाह तआला के खिलाफ़ कुफ़र बकेगा, और मुक़द्दसीन उसके तहत पिसते रहेंगे, यहाँ तक कि वह ईदों के मुक़र्रर औकात और शरीअत को तबदील करने की कोशिश करेगा। मुक़द्दसीन को एक अरसे, दो अरसों और आधे अरसे के लिए उसके हवाले किया जाएगा।

26 लेकिन फिर लोग उस की अदालत के लिए बैठ जाएंगे। उस की हुकूमत उससे छीन ली जाएगी, और वह मुकम्मल तौर पर तबाह हो जाएगी। 27 तब आसमान तले की तमाम सलतनतों की बादशाहत, सलतनत और अज़मत अल्लाह तआला की मुक़द्दसीन क्रौम के हवाले कर दी जाएगी। अल्लाह तआला की बादशाही अबदी होगी, और तमाम हुक्मरान उस की खिदमत करके उसके ताबे रहेंगे।”

28 मुझे मज़ीद कुछ नहीं बताया गया। मैं, दानियाल इन बातों से बहुत परेशान हुआ, और मेरा चेहरा माँद पड़ गया, लेकिन मैंने मामला अपने दिल में महफूज़ रखा।

8

दानियाल की दूसरी रोया : मेंढा और बकरा

1 बेलशज़ज़र बादशाह के दौरे-हुकूमत के तीसरे साल में मैं, दानियाल ने एक और रोया देखी। 2 रोया में मैं सूबा ऐलाम के क़िलाबंद शहर सोसन की नहर ऊलाई के किनारे पर खड़ा था। 3 जब मैंने अपनी निगाह उठाई तो किनारे पर मेरे सामने ही एक मेंढा खड़ा था। उसके दो बड़े सींग थे जिनमें से एक ज़्यादा बड़ा था। लेकिन वह दूसरे के बाद ही बड़ा हो गया था। 4 मेरी नज़रों के सामने मेंढा मगरिब, शिमाल और जुनूब की तरफ़ सींग मारने लगा। न कोई जानवर उसका मुकाबला कर सका, न कोई उसके काबू से बचा सका। जो जी चाहे करता था और होते होते बहुत बड़ा हो गया।

5 मैं उस पर गौर ही कर रहा था कि अचानक मगरिब से आते हुए एक बकरा दिखाई दिया। उस की आँखों के दरमियान ज़बरदस्त सींग था, और वह ज़मीन को छुए बग़ैर चल रहा था। पूरी दुनिया को उबूर करके 6 वह दो सींगोंवाले उस मेंढे के पास पहुँच गया जो मैंने नहर के

किनारे खड़ा देखा था। बड़े तैश में आकर वह उस पर टूट पड़ा। ⁷ मैंने देखा कि वह मेंढे के पहलू से टकरा गया। बड़े गुस्से में उसने उसे यों मारा कि मेंढे के दोनों सींग टुकड़े टुकड़े हो गए। इस बेबस हालत में मेंढा उसका मुकाबला न कर सका। बकरे ने उसे ज़मीन पर पटककर पाँवों तले कुचल दिया। कोई नहीं था जो मेंढे को बकरे के क़ाबू से बचाए।

⁸ बकरा निहायत ताक़तवर हो गया। लेकिन ताक़त के उरूज पर ही उसका बड़ा सींग टूट गया, और उस की जगह मज़ीद चार ज़बरदस्त सींग निकल आए जिनका रूख आसमान की चार सिम्तों की तरफ़ था। ⁹ उनके एक सींग में से एक और सींग निकल आया जो इब्लिदा में छोटा था। लेकिन वह जुनूब, मशरिक और ख़ूबसूरत मुल्क इसराईल की तरफ़ बढ़ते बढ़ते बहुत ताक़तवर हो गया। ¹⁰ फिर वह आसमानी फ़ौज तक बढ़ गया। वहाँ उसने कुछ फ़ौजियों और सितारों को ज़मीन पर फेंककर पाँवों तले कुचल दिया। ¹¹ वह बढ़ते बढ़ते आसमानी फ़ौज के कमाँडर तक भी पहुँच गया और उसे उन कुरबानियों से महरूम कर दिया जो उसे रोज़ाना पेश की जाती थीं। साथ साथ सींग ने उसके मक़दिस के मक़ाम को तबाह कर दिया। ¹² उस की फ़ौज से रोज़ाना की कुरबानियों की बेहुरमती हुई, और सींग ने सच्चाई को ज़मीन पर पटक दिया। जो कुछ भी उसने किया उसमें वह कामयाब रहा।

¹³ फिर मैंने दो मुक़द्दस हस्तियों को आपस में बात करते हुए सुना। एक ने पूछा, “इस रोया में पेश किए गए हालात कब तक कायम रहेंगे, यानी जो कुछ रोज़ाना की कुरबानियों के साथ हो रहा है, यह तबाहक़ुन बेहुरमती और यह बात कि मक़दिस को पामाल किया जा रहा है?” ¹⁴ दूसरे ने जवाब में मुझे बताया, “हालात 2,300 शायों और सुबहों तक यों ही रहेंगे। इसके बाद मक़दिस को नए सिरे से मख़सूसो-मुक़द्दस किया जाएगा।”

¹⁵ मैं देखे हुए वाक़ियात को समझने की कोशिश कर ही रहा था कि कोई मेरे सामने खड़ा हुआ जो मर्द जैसा लग रहा था। ¹⁶ साथ साथ मैंने नहर ऊलाई की तरफ़ से किसी शख्स की आवाज़ सुनी जिसने कहा, “ऐ जिबराईल, इस आदमी को रोया का मतलब बता दे।” ¹⁷ फ़रिश्ता मेरे करीब आया तो मैं सख़्त घबराकर मुँह के बल गिर गया। लेकिन वह बोला, “ऐ आदमज़ाद, जान ले कि इस रोया का ताल्लुक़ आखिरी ज़माने से है।”

¹⁸ जब वह मुझसे बात कर रहा था तो मैं मदहोश हालत में मुँह के बल पड़ा रहा। अब फ़रिश्ते ने मुझे छूकर पाँवों पर खड़ा किया। ¹⁹ वह बोला, “मैं तुझे समझा देता हूँ कि उस आखिरी ज़माने में क्या कुछ पेश आएगा जब अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल होगा। क्योंकि रोया का ताल्लुक़ आखिरी ज़माने से है। ²⁰ दो सींगों के जिस मेंढे को तूने देखा वह मादी और फ़ारस के बादशाहों की नुमाइंदगी करता है। ²¹ लंबे बालों का बकरा यूनान का बादशाह है। उस की आँखों के दरमियान लगा बड़ा सींग यूनानी शहनशाही का पहला बादशाह है। ²² तूने देखा कि यह सींग टूट गया और उस की जगह चार सींग निकल आए। इसका मतलब है कि पहली बादशाही से चार और निकल आएँगी। लेकिन चारों की ताक़त पहली की निसबत कम होगी। ²³ उनकी हुक्मत के आखिरी ऐयाम में बेवफ़ाओं की बदकिरदारी उरूज तक पहुँच गई होगी।

उस वक़्त एक गुस्ताख़ और साज़िश का माहिर बादशाह तख़्त पर बैठेगा। ²⁴ वह बहुत ताक़तवर हो जाएगा, लेकिन यह उस की अपनी ताक़त नहीं होगी। वह हैरतअंगेज़ बरबादी का बाइस बनेगा, और जो कुछ भी करेगा उसमें कामयाब होगा। वह ज़ोरावरों और मुक़द्दस क़ौम को तबाह करेगा। ²⁵ अपनी समझ और फ़रेब के ज़रीए वह कामयाब रहेगा। तब वह मुतकब्बिर हो जाएगा। जब लोग अपने आपको महफूज़ समझेंगे तो वह उन्हें मौत के घाट उतारेगा। आखिरकार वह हुक्मरानों के हुक्मरान के खिलाफ़ भी उठेगा। लेकिन वह पाश पाश हो जाएगा, अलबत्ता इनसानी हाथ से नहीं।

²⁶ ऐ दानियाल, शायों और सुबहों के बारे में जो रोया तुझ पर जाहिर हुई वह सच्ची है। लेकिन फ़िलहाल उसे पोशीदा रख, क्योंकि यह वाक़ियात अभी पेश नहीं आएँगे बल्कि बहुत दिनों के गुज़र जाने के बाद ही।”

²⁷ इसके बाद मैं, दानियाल निढाल होकर कई दिनों तक बीमार रहा। फिर मैं उठा और बादशाह की खिदमत में दुबारा अपने फ़रायज़ अदा करने लगा। मैं रोया से सख़्त परेशान था, और कोई नहीं था जो मुझे उसका मतलब बता सके।

9

दानियाल अपनी क़ौम की शफ़ाअत करता है

¹ दारा बिन अख़स्वेस्स बाबल के तख़्त पर बैठ गया था। इस मादी बादशाह ² की हुक्मत के पहले साल में मैं, दानियाल ने पाक नविशतों की तहक़ीक़ की। मैंने खासकर उस पर गौर किया जो रब ने यरमियाह नबी की मारिफ़त फ़रमाया था। उसके मुताबिक़ यरूशलम की तबाहशुदा हालत 70 साल तक कायम रहेगी। ³ चुनाँचे मैंने रब अपने ख़ुदा की तरफ़ रूज़ किया ताकि अपनी दुआ और इल्तिजाओं से उस की मरज़ी दरियाफ़्त करूँ। साथ साथ मैंने रोज़ा रखा, टाट का लिबास ओढ़ लिया और अपने सर पर राख डाल ली। ⁴ मैंने रब अपने ख़ुदा से दुआ करके इक्रार किया,

“ऐ रब, तू कितना अज़ीम और महीब ख़ुदा है! जो भी तुझे प्यार करता और तेरे अहक़ाम के ताबे रहता है उसके साथ तू अपना अहद कायम रखता और उस पर मेहरबानी करता है। ⁵ लेकिन हमने गुनाह और बदी की है। हम बेदीन और बागी होकर तेरे अहक़ाम और हिदायात से भटक गए हैं। ⁶ हमने नबियों की नहीं सुनी, हालाँकि तेरे खादिम तेरा नाम लेकर हमारे बादशाहों, बुजुर्गों, बापदादा बल्कि मुल्क के तमाम बाशिंदों से मुखातिब हुए। ⁷ ऐ रब, तू हक़-बजानिब है जबकि इस दिन हम सब शर्मसार हैं, खाह यहूदाह, यरूशलम या इसराईल के हों, खाह करीब या उन

तमाम दूर-दराज ममालिक में रहते हों जहाँ तूने हमें हमारी बेवफाई के सबब से मुंतशिर कर दिया है। क्योंकि हम तेरे ही साथ बेवफा रहे हैं। ⁸ ऐ रब, हम अपने बादशाहों, बुजुर्गों और बापदादा समेत बहुत शर्मसार हैं, क्योंकि हमने तेरा ही गुनाह किया है।

⁹ लेकिन रब हमारा खुदा रहीम है और खुशी से मुआफ करता है, गो हम उससे सरकश हुए हैं। ¹⁰ न हम रब अपने खुदा के ताबे रहे, न उसके उन अहकाम के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारी जो उसने हमें अपने खादिमों यानी नबियों की मारिफत दिए थे। ¹¹ तमाम इसराईल तेरी शरीअत की खिलाफ़रजी करके सहीह राह से भटक गया है, कोई तेरी सुनने के लिए तैयार नहीं था।

अल्लाह के खादिम मूसा ने शरीअत में कसम खाकर लानतें भेजी थीं, और अब यह लानतें हम पर नाज़िल हुई हैं, इसलिए कि हमने तेरा गुनाह किया। ¹² जो कुछ तूने हमारे और हमारे हुक्मरानों के खिलाफ़ फ़रमाया था वह पूरा हुआ, और हम पर बड़ी आफ़त आई। आसमान तले कहीं भी ऐसी मुसीबत नहीं आई जिस तरह यरूशलम को पेश आई है। ¹³ मूसा की शरीअत में मज़कूर हर वह लानत हम पर नाज़िल हुई जो नाफ़रमानों पर भेजी गई है। तो भी न हमने अपने गुनाहों को छोड़ा, न तेरी सच्चाई पर ध्यान दिया, हालाँकि इससे हम रब अपने खुदा का ग़ज़ब ठंडा कर सकते थे। ¹⁴ इसी लिए रब हम पर आफ़त लाने से न झिजका। क्योंकि जो कुछ भी रब हमारा खुदा करता है उसमें वह हक़-बजानिब होता है। लेकिन हमने उस की न सुनी।

¹⁵ ऐ रब हमारे खुदा, तू बड़ी कुदरत का इज़हार करके अपनी क़ौम को मिसर से निकाल लाया। यों तेरे नाम को वह इज़्ज़तो-जलाल मिला जो आज तक कायम रहा है। इसके बावजूद हमने गुनाह किया, हमसे बेदीन हरकतें सरज़द हुई हैं। ¹⁶ ऐ रब, तू अपने मुसिफ़ाना कामों में वफ़ादार रहा है! अब भी इसका लिहाज़ कर और अपने सख़्त ग़ज़ब को अपने शहर और मुक़द्दस पहाड़ यरूशलम से दूर कर! यरूशलम और तेरी क़ौम गिर्दो-नवाह की क़ौमों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गई है, गो हम मानते हैं कि यह हमारे गुनाहों और हमारे बापदादा की ख़ताओं की वजह से हो रहा है।

¹⁷ ऐ हमारे खुदा, अब अपने खादिम की दुआओं और इल्तिजाओं को सुन! ऐ रब, अपनी ही खातिर अपने तबाहशुदा मक़दिस पर अपने चेहरे का मेहरबान नूर चमका। ¹⁸ ऐ मेरे खुदा, कान लगाकर मेरी सुन! अपनी आँखें खोल! उस शहर के खंडरात पर नज़र कर जिस पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है। हम इसलिए तुझसे इल्तिजाएँ नहीं कर रहे कि हम रास्तबाज़ हैं बल्कि इसलिए कि तू निहायत मेहरबान है। ¹⁹ ऐ रब, हमारी सुन! ऐ रब, हमें मुआफ़ कर! ऐ मेरे खुदा, अपनी खातिर देर न कर, क्योंकि तेरे शहर और क़ौम पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है।”

70 हफ़्तों का भेद

²⁰ यों मैं दुआ करता और अपने और अपनी क़ौम इसराईल के गुनाहों का इक़रार करता गया। मैं खासकर अपने खुदा के मुक़द्दस पहाड़ यरूशलम के लिए रब अपने खुदा के हुज़ूर फ़रियाद कर रहा था।

²¹ मैं दुआ कर ही रहा था कि जबराईल जिसे मैंने दूसरी रोया में देखा था मेरे पास आ पहुँचा। रब के घर में शाम की कुरबानी पेश करने का वक़्त था। मैं बहुत ही थक गया था। ²² उसने मुझे समझाकर कहा, “ऐ दानियाल, अब मैं तुझे समझ और बसीरत देने के लिए आया हूँ। ²³ ज्योंही तू दुआ करने लगा तो अल्लाह ने जवाब दिया, क्योंकि तू उस की नज़र में गिराँक़दर है। मैं तुझे यह जवाब सुनाने आया हूँ। अब ध्यान से रोया को समझ ले! ²⁴ तेरी क़ौम और तेरे मुक़द्दस शहर के लिए 70 हफ़ते मुक़र्रर किए गए हैं ताकि उतने में ज़रायम और गुनाहों का सिलसिला ख़त्म किया जाए, कुसूर का कफ़फ़ारा दिया जाए, अबदी रास्ती कायम की जाए, रोया और पेशगोई की तसदीक़ की जाए और मुक़द्दसतरीन जगह को मसह करके मख़सूसो-मुक़द्दस किया जाए।

²⁵ अब जान ले और समझ ले कि यरूशलम को दुबारा तामीर करने का हुक्म दिया जाएगा, लेकिन मज़ीद सात हफ़ते गुज़रेंगे, फिर ही अल्लाह एक हुक्मरान को इस काम के लिए चुनकर मसह करेगा। तब शहर को 62 हफ़्तों के अंदर चौकों और खंडकों समेत नए सिरे से तामीर किया जाएगा, गो इस दौरान वह काफी मुसीबत से दोचार होगा। ²⁶ इन 62 हफ़्तों के बाद अल्लाह के मसह किए गए बंदे को क़त्ल किया जाएगा, और उसके पास कुछ भी नहीं होगा। उस वक़्त एक और हुक्मरान की क़ौम आकर शहर और मक़दिस को तबाह करेगी। इख़िताम सैलाब की सूरत में आएगा, और आखिर तक जंग जारी रहेगी, ऐसी तबाही होगी जिसका फ़ैसला हो चुका है। ²⁷ एक हफ़ते तक यह हुक्मरान मुतअदिद लोगों को एक अहद के तहत रहने पर मजबूर करेगा। इस हफ़ते के बीच में वह ज़बह और गल्ला की कुरबानियों का इंतज़ाम बंद करेगा और मक़दिस के एक तरफ़ वह कुछ खड़ा करेगा जो बेहुरमती और तबाही का बाइस है। लेकिन तबाह करनेवाले का खातमा भी मुक़र्रर किया गया है, और आखिरकार वह भी तबाह हो जाएगा।”

10

दानियाल की आखिरी रोया

¹ फ़ारस के बादशाह ख़ोरस की हुक्मत के तीसरे साल में बेलतशज़ज़र यानी दानियाल पर एक बात ज़ाहिर हुई जो यक़ीनी है और जिसका ताल्लुक़ एक बड़ी मुसीबत से है। उसे रोया में इस पैग़ाम की समझ हासिल हुई।

² उन दिनों में मैं, दानियाल तीन पूरे हफ़ते मातम कर रहा था। ³ न मैंने उम्दा खाना खाया, न गोश्त या मैं मेरे होंटों तक पहुँची। तीन पूरे हफ़ते मैंने हर खुशबूदार तेल से परहेज़ किया। ⁴ पहले महीने के 24वें दिन * मैं बड़े दरिया दिजला के किनारे पर खड़ा था। ⁵ मैंने निगाह उठाई

* 10:4 23 अप्रैल।

तो क्या देखता हूँ कि मेरे सामने कतान से मुलम्बस आदमी खड़ा है जिसकी कमर में खालिस सोने का पटका बँधा हुआ है। ⁶ उसका जिस्म पुरखाराज † जैसा था, उसका चेहरा आसमानी बिजली की तरह चमक रहा था, और उस की आँखें भड़कती मशालों की मानिंद थीं। उसके बाजू और पाँव पालिश किए हुए पीतल की तरह दमक रहे थे। बोलते वक़्त यों लग रहा था कि बड़ा हुज़ूम शोर मचा रहा है।

⁷ सिर्फ़ मैं, दानियाल ने यह रोया देखी। मेरे साथियों ने उसे न देखा। तो भी अचानक उन पर इतनी दहशत तारी हुई कि वह भागकर छुप गए। ⁸ चुनौचे मैं अकेला ही रह गया। लेकिन यह अज़ीम रोया देखकर मेरी सारी ताक़त जाती रही। मेरे चेहरे का रंग मॉंद पड़ गया और मैं बेबस हुआ। ⁹ फिर वह बोलने लगा। उसे सुनते ही मैं मुँह के बल गिरकर मदहोश हालत में ज़मीन पर पड़ा रहा। ¹⁰ तब एक हाथ ने मुझे छूकर हिलाया। उस की मदद से मैं अपने हाथों और घुटनों के बल हो सका।

¹¹ वह आदमी बोला, “ऐ दानियाल, तू अल्लाह के नज़दीक बहुत गिराँक़दर है! जो बातें मैं तुझसे करूँगा उन पर गौर कर। खड़ा हो जा, क्योंकि इस वक़्त मुझे तेरे ही पास भेजा गया है।” तब मैं थरथराते हुए खड़ा हो गया। ¹² उसने अपनी बात जारी रखी, “ऐ दानियाल, मत डरना! जब से तूने समझ हासिल करने और अपने ख़ुदा के सामने झुकने का पूरा इरादा कर रखा है, उसी दिन से तेरी सुनी गई है। मैं तेरी दुआओं के जवाब में आ गया हूँ। ¹³ लेकिन फ़ारसी बादशाही का सरदार 21 दिन तक मेरे रास्ते में खड़ा रहा। फिर मीकाएल जो अल्लाह के सरदार फ़रिश्तों में से एक है मेरी मदद करने आया, और मेरी जान फ़ारसी बादशाही के उस सरदार के साथ लड़ने से छूट गई। ¹⁴ मैं तुझे वह कुछ सुनाने को आया हूँ जो आखिरी दिनों में तेरी क्रौम को पेश आएगा। क्योंकि रोया का ताल्लुक़ आनेवाले वक़्त से है।”

¹⁵ जब वह मेरे साथ यह बातें कर रहा था तो मैं ख़ामोशी से नीचे ज़मीन की तरफ़ देखता रहा। ¹⁶ फिर जो आदमी-सा लग रहा था उसने मेरे होंटों को छू दिया, और मैं मुँह खोलकर बोलने लगा। मैंने अपने सामने खड़े फ़रिश्ते से कहा, “ऐ मेरे आका, यह रोया देखकर मैं दर्द-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह पेचो-ताब खाने लगा हूँ। मेरी ताक़त जाती रही है। ¹⁷ ऐ मेरे आका, आपका ख़ादिम किस तरह आपसे बात कर सकता है? मेरी ताक़त तो जवाब दे गई है, सॉस लेना भी मुश्किल हो गया है।”

¹⁸ जो आदमी-सा लग रहा था उसने मुझे एक बार फिर छूकर तकवियत दी ¹⁹ और बोला, “ऐ तू जो अल्लाह की नज़र में गिराँक़दर है, मत डरना! तेरी सलामती हो। हौसला रख, मज़बूत हो जा!” ज्योंही उसने मुझसे बात की मुझे तकवियत मिली, और मैं बोला, “अब मेरे आका बात करें, क्योंकि आपने मुझे तकवियत दी है।”

²⁰ उसने कहा, “क्या तू मेरे आने का मक़सद जानता है? जल्द ही मैं तुबारा फ़ारस के सरदार से लड़ने चला जाऊँगा। और उससे निपटने के बाद यूनान का सरदार आएगा। ²¹ लेकिन पहले मैं तेरे सामने वह कुछ बयान करता हूँ जो ‘सच्चाई की किताब’ में लिखा है। (इन सरदारों से लड़ने में मेरी मदद कोई नहीं करता सिवाए तुम्हारे सरदार फ़रिश्ते मीकाएल के।

11

¹ मादी बादशाह दारा की हुकूमत के पहले साल से ही मैं मीकाएल के साथ खड़ा रहा हूँ ताकि उसको सहारा दूँ और उस की हिफ़ाज़त करूँ।)

शिमाली और जुनूबी सलतनतों की जंगें

² अब मैं तुझे वह कुछ बताता हूँ जो यक़ीनन पेश आएगा। फ़ारस में मज़ीद तीन बादशाह तख़्त पर बैठेंगे। इसके बाद एक चौथा आदमी बादशाह बनेगा जो तमाम दूसरों से कहीं ज़्यादा दौलतमंद होगा। जब वह दौलत के बाइस ताक़तवर हो जाएगा तो वह यूनानी ममलकत से लड़ने के लिए सब कुछ जमा करेगा।

³ फिर एक जोरावर बादशाह बरपा हो जाएगा जो बड़ी कुव्वत से हुकूमत करेगा और जो जी चाहे करेगा। ⁴ लेकिन ज्योंही वह बरपा हो जाए उस की सलतनत टुकड़े टुकड़े होकर एक शिमाली, एक जुनूबी, एक मगरिबी और एक मशरिकी हिस्से में तक़सीम हो जाएगी। न यह चार हिस्से पहली सलतनत जितने ताक़तवर होंगे, न बादशाह की औलाद तख़्त पर बैठेगी, क्योंकि उस की सलतनत जड़ से उखाड़कर दूसरों को दी जाएगी। ⁵ जुनूबी मुल्क का बादशाह तकवियत पाएगा, लेकिन उसका एक अफ़सर कहीं ज़्यादा ताक़तवर हो जाएगा, उस की हुकूमत कहीं ज़्यादा मज़बूत होगी।

⁶ चंद साल के बाद दोनों सलतनतें मुतहिद हो जाएँगी। अहद को मज़बूत करने के लिए जुनूबी बादशाह की बेटी की शादी शिमाली बादशाह से कराई जाएगी। लेकिन न बेटी कामयाब होगी, न उसका शौहर और न उस की ताक़त कायम रहेगी। उन दिनों में उसे उसके साथियों, बाप और शौहर समेत दुश्मन के हवाले किया जाएगा। ⁷ बेटी की जगह उसका एक रिश्तेदार खड़ा हो जाएगा जो शिमाली बादशाह की फ़ौज पर हमला करके उसके क़िले में घुस आएगा। वह उनसे निपटकर फ़तह पाएगा ⁸ और उनके ढाले हुए बुतों को सोने-चाँदी की क़ीमती चीज़ों समेत छीनकर मिसर ले जाएगा। वह कुछ साल तक शिमाली बादशाह को नहीं छेड़ेगा। ⁹ फिर शिमाली बादशाह जुनूबी बादशाह के मुल्क में घुस आएगा, लेकिन उसे अपने मुल्क में वापस जाना पड़ेगा। ¹⁰ इसके बाद उसके बेटे जंग की तैयारियाँ करके बड़ी बड़ी फ़ौजें जमा करेंगे। उनमें से एक जुनूबी बादशाह की तरफ़ बढ़कर सैलाब की तरह जुनूबी मुल्क पर आएगी और लड़ते लड़ते उसके क़िले तक पहुँचेगी।

¹¹ फिर जुनूबी बादशाह तैश में आकर शिमाली बादशाह से लड़ने के लिए निकलेगा। शिमाली बादशाह जवाब में बड़ी फ़ौज खड़ी करेगा, लेकिन वह शिकस्त खा कर ¹² तबाह हो जाएगी। तब जुनूबी बादशाह का दिल गुस्से से भर जाएगा, और वह बेशुमार अफ़राद को मौत के घाट

† 10:6 topas

उतारेगा। तो भी वह ताकतवर नहीं रहेगा। ¹³ क्योंकि शिमाली बादशाह एक और फ़ौज जमा करेगा जो पहली की निसबत कहीं ज्यादा बड़ी होगी। चंद साल के बाद वह इस बड़ी और हथियारों से लैस फ़ौज के साथ जुनूबी बादशाह से लड़ने आएगा।

¹⁴ उस वक़्त बहुत-से लोग जुनूबी बादशाह के खिलाफ़ उठ खड़े होंगे। तेरी क्रौम के बेदीन लोग भी उसके खिलाफ़ खड़े हो जाएंगे और यों रोया को पूरा करेंगे। लेकिन वह ठोकर खाकर गिर जाएंगे। ¹⁵ फिर शिमाली बादशाह आकर एक किलाबंद शहर का मुहासरा करेगा। वह पुश्ता बनाकर शहर पर कब्ज़ा कर लेगा। जुनूब की फ़ौजें उसे रोक नहीं सकेंगी, उनके बेहतरीन दस्ते भी बेबस होकर उसका सामना नहीं कर सकेंगे। ¹⁶ हमलाआवर बादशाह जो जी चाहे करेगा, और कोई उसका सामना नहीं कर सकेगा।

उस वक़्त वह खूबसूरत मुल्क इसराईल में टिक जाएगा और उसे तबाह करने का इख्तियार रखेगा। ¹⁷ तब वह अपनी पूरी सलतनत पर काबू पाने का मनसूबा बाँधेगा। इस ज़िम्न में वह जुनूबी बादशाह के साथ अहद बाँधकर उससे अपनी बेटी की शादी कराएगा ताकि जुनूबी मुल्क को तबाह करे, लेकिन बेफ़ायदा। मनसूबा नाकाम हो जाएगा।

¹⁸ इसके बाद वह साहिली इलाकों की तरफ़ स्रख करेगा। उनमें से वह बहुतों पर कब्ज़ा भी करेगा, लेकिन आखिरकार एक हुक्मरान उसके गुस्ताखाना रवये का खातमा करेगा, और उसे शरमिंदा होकर पीछे हटना पड़ेगा। ¹⁹ फिर शिमाली बादशाह अपने मुल्क के किलों के पास वापस आएगा, लेकिन इतने में ठोकर खाकर गिर जाएगा। तब उसका नामो-निशान तक नहीं रहेगा।

²⁰ उस की जगह एक बादशाह बरपा हो जाएगा जो अपने अफ़सर को शानदार मुल्क इसराईल में भेजेगा ताकि वहाँ से गुज़रकर लोगों से टैक्स ले। लेकिन थोड़े दिनों के बाद वह तबाह हो जाएगा। न वह किसी झगड़े के सबब से हलाक होगा, न किसी जंग में।

इसराईली क्रौम का बड़ा दुश्मन

²¹ उस की जगह एक काबिले-मज़्मत आदमी खड़ा हो जाएगा। वह तख़्त के लिए मुक़र्रर नहीं हुआ होगा बल्कि ग़ैरमुतवक्क़े तौर पर आकर साज़िशों के वसीले से बादशाह बनेगा। ²² मुखालिफ़ फ़ौजें उस पर टूट पड़ेंगी, लेकिन वह सैलाब की तरह उन पर आकर उन्हें बहा ले जाएगा। वह और अहद का एक रईस तबाह हो जाएंगे। ²³ क्योंकि उसके साथ अहद बाँधने के बाद वह उसे फ़रेब देगा और सिर्फ़ थोड़े ही अफ़राद के ज़रीए इक़तिदार हासिल कर लेगा। ²⁴ वह ग़ैरमुतवक्क़े तौर पर दौलतमंद सूबों में घुसकर वह कुछ करेगा जो न उसके बाप और न उसके बापदादा से कभी सरज़द हुआ होगा। लूटा हुआ माल और मिलकियत वह अपने लोगों में तकसीम करेगा। वह किलाबंद शहरों पर कब्ज़ा करने के मनसूबे भी बाँधेगा, लेकिन सिर्फ़ महदूद अरसे के लिए।

²⁵ फिर वह हिम्मत बाँधकर और पूरा जोर लगाकर बड़ी फ़ौज के साथ जुनूबी बादशाह से लड़ने जाएगा। जवाब में जुनूबी बादशाह एक बड़ी और निहायत ही ताकतवर फ़ौज को लड़ने के लिए तैयार करेगा। तो भी वह शिमाली बादशाह का सामना नहीं कर पाएगा, इसलिए कि उसके खिलाफ़ साज़िशें कामयाब हो जाएँगी। ²⁶ उस की रोटी खानेवाले ही उसे तबाह करेंगे। तब उस की फ़ौज मुंतशिर हो जाएगी, और बहुत-से अफ़राद मैदाने-जंग में खेत आएँगे।

²⁷ दोनों बादशाह मुज़ाकरात के लिए एक ही मेज़ पर बैठ जाएंगे। वहाँ दोनों झूट बोलते हुए एक दूसरे को नुक़सान पहुँचाने के लिए कोशिशें करेंगे। लेकिन किसी को कामयाबी हासिल नहीं होगी, क्योंकि मुक़र्ररा आखिरी वक़्त अभी नहीं आना है। ²⁸ शिमाली बादशाह बड़ी दौलत के साथ अपने मुल्क में वापस चला जाएगा। रास्ते में वह मुक़द्दस अहद की क्रौम इसराईल पर ध्यान देकर उसे नुक़सान पहुँचाएगा, फिर अपने वतन वापस जाएगा।

²⁹ मुक़र्ररा वक़्त पर वह दुबारा जुनूबी मुल्क में घुस आएगा, लेकिन पहले की निसबत इस बार नतीजा फ़रक़ होगा। ³⁰ क्योंकि क़ितीम के बहरी जहाज़ उस की मुखालफ़त करेंगे, और वह हौसला हारेगा।

तब वह मुड़कर मुक़द्दस अहद की क्रौम पर अपना पूरा गुस्सा उतारेगा। जो मुक़द्दस अहद को तर्क करेंगे उन पर वह मेहरबानी करेगा। ³¹ उसके फ़ौजी आकर किलाबंद मक़दिस की बेहुरमती करेंगे। वह रोज़ाना की कुरबानियों का इंतज़ाम बंद करके तबाही का मक़रूह बुत खड़ा करेंगे। ³² जो यहूदी पहले से अहद की खिलाफ़वरज़ी कर रहे होंगे उन्हें वह चिकनी-चुपड़ी बातों से मुरतद हो जाने पर आमादा करेगा। लेकिन जो लोग अपने ख़ुदा को जानते हैं वह मज़बूत रहकर उस की मुखालफ़त करेंगे। ³³ क्रौम के समझदार बहुतों को सही राह की तालीम देंगे। लेकिन कुछ अरसे के लिए वह तलवार, आग, कैद और लूट-मार के बाइस डॉवॉडोल रहेंगे। ³⁴ उस वक़्त उन्हें थोड़ी-बहुत मदद हासिल तो होगी, लेकिन बहुत-से ऐसे लोग उनके साथ मिल जाएंगे जो मुखलिस नहीं होंगे। ³⁵ समझदारों में से कुछ डॉवॉडोल हो जाएंगे ताकि लोगों को आजमाकर आखिरी वक़्त तक ख़ालिस और पाक-साफ़ किया जाए। क्योंकि मुक़र्ररा वक़्त कुछ देर के बाद आएगा।

³⁶ बादशाह जो जी चाहे करेगा। वह सरफ़राज़ होकर अपने आपको तमाम माबूदों से अज़ीम करार देगा। ख़ुदाओं के ख़ुदा के खिलाफ़ वह नाकाबिले-बयान कुफ़र बकेगा। उसे कामयाबी भी हासिल होगी, लेकिन सिर्फ़ उस वक़्त तक जब तक इलाही ग़ज़ब ठंडा न हो जाए। क्योंकि जो कुछ मुक़र्रर हुआ है उसे पूरा होना है। ³⁷ बादशाह न अपने बापदादा के देवताओं की परवा करेगा, न औरतों के अज़ीज़ देवता की, न किसी और की। क्योंकि वह अपने आपको सब पर सरफ़राज़ करेगा। ³⁸ इन देवताओं के बजाए वह क़िलों के देवता की पूजा करेगा जिससे उसके बापदादा वाक़िफ़ ही नहीं थे। वह सोने-चाँदी, जवाहरात और क़ीमती तोहफ़ों से देवता का एहतराम करेगा। ³⁹ चुनाँचे वह अज़नबी माबूद की मदद से मज़बूत क़िलों पर हमला करेगा। जो उस की हुक्मत मानें उनकी वह बड़ी इज़ज़त करेगा, इन्हें बहुतों पर मुक़र्रर करेगा और उनमें अज़्र के तौर पर ज़मीन तकसीम करेगा।

40 लेकिन फिर आखिरी वक्त आया। जुनूबी बादशाह जंग में उससे टकराया, तो जवाब में शिमाली बादशाह रथ, घुड़सवार और मुतअद्दिद बहरी जहाज़ लेकर उस पर टूट पड़ेगा। तब वह बहुत-से मुल्कों में घुस आया और सैलाब की तरह सब कुछ गरक करके आगे बढ़ेगा। 41 इस दौरान वह खूबसूरत मुल्क इसराईल में भी घुस आया। बहुत-से ममालिक शिकस्त खाएँगे, लेकिन अदोम और मोआब अम्मोन के मरकजी हिस्से समेत बच जाएँगे। 42 उस वक्त उसका इकतिदार बहुत-से ममालिक पर छा जाएगा, मिसर भी नहीं बचेगा। 43 शिमाली बादशाह मिसर की सोने-चाँदी और बाक़ी दौलत पर कब्ज़ा करेगा, और लिबिया और एथोपिया भी उसके नक्शे-कदम पर चलेंगे। 44 लेकिन फिर मशरिक और शिमाल की तरफ़ से अफ़वाहें उसे सदमा पहुँचाएँगी, और वह बड़े तैश में आकर बहुतों को तबाह और हलाक करने के लिए निकलेगा। 45 रास्ते में वह समुंदर और खूबसूरत मुकद्दस पहाड़ के दरमियान अपने शाही ख़ैमे लगा लेगा। लेकिन फिर उसका अंजाम आया, और कोई उस की मदद नहीं करेगा।

12

मुरदे जी उठते हैं

1 उस वक्त फ़रिश्तों का अज़ीम सरदार मीकाएल उठ खड़ा होगा, वह जो तेरी क़ौम की शफ़ाअत करता है। मुसीबत का ऐसा वक्त होगा कि क़ौमों के पैदा होने से लेकर उस वक्त तक नहीं हुआ होगा। लेकिन साथ साथ तेरी क़ौम को नज़ात मिलेगी। जिसका भी नाम अल्लाह की किताब में दर्ज है वह नज़ात पाएगा। 2 तब खाक में सोए हुए मुतअद्दिद लोग जाग उठेंगे, कुछ अबदी ज़िंदगी पाने के लिए और कुछ अबदी स्सवाई और घिन का निशाना बनने के लिए। 3 जो समझदार हैं वह आसमान की आबो-ताब की मानिंद चमकेंगे, और जो बहुतों को रास्त राह पर लाए हैं वह हमेशा तक सितारों की तरह जगमगाएँगे।

4 लेकिन तू, ऐ दानियाल, इन बातों को छुपाए रख! इस किताब पर आखिरी वक्त तक मुहर लगा दे! बहुत लोग इधर उधर घूमते फिरेँगे, और इल्म में इज़ाफ़ा होता जाएगा।”

आखिरी वक्त

5 फिर मैं, दानियाल ने दरिया के पास दो आदमियों को देखा। एक इस किनारे पर खड़ा था जबकि दूसरा दूसरे किनारे पर। 6 कतान से मुलब्स आदमी बहते हुए पानी के ऊपर था। किनारों पर खड़े आदमियों में से एक ने उससे पूछा, “इन हैरतअंगेज़ बातों की तकमील तक मज़ीद कितनी देर लगेगी?”

7 कतान से मुलब्स आदमी ने दोनों हाथ आसमान की तरफ़ उठाए और अबद तक ज़िंदा खुदा की कसम खाकर बोला, “पहले एक अरसा, फिर दो अरसे, फिर आधा अरसा गुज़रेगा। पहले मुकद्दस क़ौम की ताक़त को पाश पाश करने का सिलसिला इख़िताम पर पहुँचना है। इसके बाद ही यह तमाम बातें तकमील तक पहुँचेंगी।”

8 गो मैंने उस की यह बात सुनी, लेकिन वह मेरी समझ में न आई। चुनौचे मैंने पूछा, “मेरे आका, इन तमाम बातों का क्या अंजाम होगा?”

9 वह बोला, “ऐ दानियाल, अब चला जा! क्योंकि इन बातों को आखिरी वक्त तक छुपाए रखना है। उस वक्त तक इन पर मुहर लगी रहेगी। 10 बहुतों को आजमाकर पाक-साफ़ और खालिस किया जाएगा। लेकिन बेदीन बेदीन ही रहेंगे। कोई भी बेदीन यह नहीं समझेगा, लेकिन समझदारों को समझ आएगी। 11 जिस वक्त से रोज़ाना की कुरबानी का इंतज़ाम बंद किया जाएगा और तबाही के मकरूह बुत को मक़दिस में खड़ा किया जाएगा उस वक्त से 1,290 दिन गुज़रेंगे। 12 जो सब्र करके 1,335 दिनों के इख़िताम तक कायम रहे वह मुबारक है!

13 जहाँ तक तेरा ताल्लुक है, आखिरी वक्त की तरफ़ बढ़ता चला जा! तू आराम करेगा और फिर दिनों के इख़िताम पर जी उठकर अपनी मीरास पाएगा।”

होसेअ

नबी का खानदान इसराईल की अलामत है

1 ज़ैल में रब का वह कलाम दर्ज है जो उन दिनों में होसेअ बिन बैरी पर नाज़िल हुआ जब उज्जियाह, यूताम, आखज़ और हिज़क्रियाह यहदाह के बादशाह और यरुबियाम बिन युआस इसराईल का बादशाह था।

2 जब रब पहली बार होसेअ से हमकलाम हुआ तो उसने हुक्म दिया, “जा, ज़िनाकार औरत से शादी कर और ज़िनाकार बच्चे पैदा कर, क्योंकि मुल्क रब की पैरवी छोड़कर मुसलसल ज़िना करता रहता है।” 3 चुनौचे होसेअ की जुमर बित दिबलायम से शादी हुई। उसका पाँव भारी हुआ, और बेटा पैदा हुआ। 4 तब रब ने होसेअ से कहा, “उसका नाम यज़्ज़एल रखना। क्योंकि जल्द ही मैं याह के खानदान को यज़्ज़एल में उस कत्लो-गारत की सज़ा दूँगा जो उससे सरज़द हुई। साथ साथ मैं इसराईली बादशाही को भी ख़त्म करूँगा। 5 उस दिन मैं मैदाने-यज़्ज़एल में इसराईल की कमान को तोड़ डालूँगा।”

6 इसके बाद जुमर दुबारा उम्मीद से हुई। इस बार बेटी पैदा हुई। रब ने होसेअ से कहा, “इसका नाम लोस्हामा यानी ‘जिस पर रहम न हुआ हो’ रखना, क्योंकि आइंदा मैं इसराईलियों पर रहम नहीं करूँगा बल्कि वह मेरे रहम से सरासर महरूम रहेंगे।

7 लेकिन यहदाह के बाशिनदों पर मैं रहम करके उन्हें छुटकारा दूँगा। मैं उन्हें कमान, तलवार, जंग के हथियारों, घोड़ों या घुडसवारों की मारिफ़त छुटकारा नहीं दूँगा बल्कि मैं जो रब उनका खुदा हूँ खुद ही उन्हें नज़ात दूँगा।”

8 लोस्हामा का दूध छुड़ाने पर जुमर फिर हामिला हुई। इस मरतबा बेटा पैदा हुआ। 9 तब रब ने फ़रमाया, “इसका नाम लोअम्मी यानी ‘मेरी कौम नहीं’ रखना। क्योंकि तुम मेरी कौम नहीं, और मैं तुम्हारा खुदा नहीं हूँगा।

10 लेकिन वह वक्रत आया जब इसराईली समुंदर की रेत जैसे बेशुमार होंगे। न उनकी पैमाइश की जा सकेगी, न उन्हें गिना जा सकेगा। तब जहाँ उनसे कहा गया कि ‘तुम मेरी कौम नहीं’ वहाँ वह ‘ज़िंदा खुदा के फ़रज़ंद’ कहलाएँगे। 11 तब यहदाह और इसराईल के लोग मुत्तहिद हो जाएंगे और मिलकर एक राहनुमा मुकर्रर करेंगे। फिर वह मुल्क में से निकल आएँगे, क्योंकि यज़्ज़एल * का दिन अज़ीम होगा!

2

1 उस वक्रत अपने भाइयों का नाम अम्मी यानी ‘मेरी कौम’ और अपनी बहनों का नाम स्हामा यानी ‘जिस पर रहम किया गया हो’ रखो।

इसराईल बेवफ़ा जुमर की मानिंद है

2 अपनी माँ इसराईल पर इलज़ाम लगाओ, हाँ उस पर इलज़ाम लगाओ! क्योंकि न वह मेरी बीवी है, न मैं उसका शौहर हूँ। वह अपने चेहरे से और अपनी छातियों के दरमियान से ज़िनाकारी के निशान दूर करे, 3 वरना मैं उसके कपड़े उतारकर उसे उस नंगी हालत में छोड़ूँगा जिसमें वह पैदा हुई। मैं होने दूँगा कि वह रेगिस्तान और झुलसती ज़मीन में तबदील हो जाए, कि वह प्यास के मारे मर जाए। 4 मैं उसके बच्चों पर भी रहम नहीं करूँगा, क्योंकि वह ज़िनाकार बच्चे हैं। 5 उनकी माँ ने ज़िना किया, उन्हें जन्म देनेवाली ने शर्मनाक हरकतें की हैं। वह बोली, ‘मैं अपने आशिकों के पीछे भाग जाऊँगी। आखिर मेरी रोटी, पानी, ऊन, कतान, तेल और पीने की चीज़ें वही मुहैया करते हैं।’

6 इसलिए जहाँ भी वह चलना चाहे वहाँ मैं उसे काँटदार झाड़ियों से रोक दूँगा, मैं ऐसी दीवार खड़ी करूँगा कि उसे रास्ते का पता न चले। 7 वह अपने आशिकों का पीछा करते करते थक जाएगी और कभी उन तक पहुँचेगी नहीं, वह उनका खोज लगाती रहेगी लेकिन उन्हें पाएगी नहीं। फिर वह बोलेगी, ‘मैं अपने पहले शौहर के पास वापस जाऊँ, क्योंकि उस वक्रत मेरा हाल आज की निसबत कहीं बेहतर था।’ 8 लेकिन वह यह बात जानने के लिए तैयार नहीं कि उसे अल्लाह ही की तरफ़ से सब कुछ मुहैया हुआ है। मैं ही ने उसे वह अनाज, मै, तेल और कसरत की सोना-चाँदी दे दी जो लोगों ने बाल देवता को पेश की। 9 इसलिए मैं अपने अनाज और अपने अंगूर को फ़सल की कटाई से पहले पहले वापस लूँगा। जो ऊन और कतान मैं उसे देता रहा ताकि उस की बरहनगी नज़र न आए उसे मैं उससे छीन लूँगा। 10 उसके आशिकों के देखते देखते मैं उसके सारे कपड़े उतारूँगा, और कोई उसे मेरे हाथ से नहीं बचाएगा। 11 मैं उस की तमाम खुशियाँ बंद कर दूँगा। न कोई ईद, न नए चाँद का तहवार, न सबत का दिन या बाकी कोई मुकर्ररा जशन मनाया जाएगा। 12 मैं उसके अंगूर और अंजीर के बाग़ों को तबाह करूँगा, उन चीज़ों को जिनके बारे में उसने कहा, ‘यह मुझे आशिकों की खिदमत करने के एवज़ मिल गई हैं।’ मैं यह बाग़ जंगल बनने दूँगा, और जंगली जानवर उनका फल खाएँगे।

13 रब फ़रमाता है कि मैं उसे उन दिनों की सज़ा दूँगा जब उसने बाल के बुतों को बख़ूर की कुरबानियाँ पेश कीं। उस वक्रत वह अपने आपको बालियों और ज़ेवरात से सजाकर अपने आशिकों के पीछे भाग गई। मुझे वह भूल गई।

अल्लाह वफ़ादार रहता है

* 1:11 यानी अल्लाह बीज बोता है।

14 चुनौचे अब मैं उसे मनाने की कोशिश करूँगा, उसे रेगिस्तान में ले जाकर उससे नरमी से बात करूँगा। 15 फिर मैं उसे वहाँ से होकर उसके अंगूर के बाग वापस करूँगा और वादीए-अकूर * को उम्मीद के दरवाजे में बदल दूँगा। उस वक्त वह खुशी से मेरे पीछे होकर वहाँ चलेगी, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह जवानी में करती थी जब मेरे पीछे होकर मिसर से निकल आई।”

16 रब फ़रमाता है, “उस दिन तू मुझे पुकारते वक्त ‘ऐ मेरे बाल’ † नहीं कहेगी बल्कि ‘ऐ मेरे खाविद।’ 17 मैं बाल देवताओं के नाम तेरे मुँह से निकाल दूँगा, और तू आइंदा उनके नामों का जिक्र तक नहीं करेगी। 18 उस दिन मैं जंगली जानवरों, परिदों और रेंगनेवाले जानदारों के साथ अहद बाँधूँगा ताकि वह इसराईल को नुकसान न पहुँचाएँ। कमान और तलवार को तोड़कर मैं जंग का खतरा मुल्क से दूर कर दूँगा। सब आरामो-सुकून से ज़िंदगी गुज़ारेंगे।

19 मैं तेरे साथ अबदी रिश्ता बाँधूँगा, ऐसा रिश्ता जो रास्ती, इनसाफ़, फ़ज़ल और रहम पर मबनी होगा। 20 हाँ, जो रिश्ता मैं तेरे साथ बाँधूँगा उस की बुनियाद वफ़ादारी होगी। तब तू रब को जान लेगी।”

21 रब फ़रमाता है, “उस दिन मैं सुनूँगा। मैं आसमान की सुनकर बादल पैदा करूँगा, आसमान ज़मीन की सुनकर बारिश बरसाएगा, 22 ज़मीन अनाज, अंगूर और जैतून की सुनकर उन्हें तक्रवियत देगी, और यह चीज़ें मैदाने-यज़्ज़एल ‡ की सुनकर कसरत से पैदा हो जाएँगी। 23 उस वक्त मैं अपनी खातिर इसराईल का बीज मुल्क में बो दूँगा। ‘लोस्हामा’ § पर मैं रहम करूँगा, और ‘लोअम्मी’ * से मैं कहूँगा, ‘तू मेरी क़ौम है।’ जवाब में वह बोलेंगी, ‘तू मेरा खुदा है।’”

3

जुमर की तरह इसराईल को वापस खरीदा जाएगा

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, “जा, अपनी बीवी को दुबारा प्यार कर, हालाँकि उसका आशिक है जिससे उसने ज़िना किया है। उसे यों प्यार कर जिस तरह रब इसराईलियों को प्यार करता है, हालाँकि उनका सख़ दीगर माबूदों की तरफ़ है और उन्हें उन्हीं की अंगूर की टिक्कियाँ पसंद हैं।”

2 तब मैंने चाँदी के 15 सिक्के और जौ के 195 किलोग्राम देकर उसे वापस खरीद लिया। 3 मैंने उससे कहा, “अब तुझे बड़े अरसे तक मेरे साथ रहना है। इतने में न ज़िना कर, न किसी आदमी से सोहबत रख। मैं भी बड़ी देर तक तुझसे हमबिसतर नहीं हूँगा।”

4 इसराईल का यही हाल होगा। बड़ी देर तक न उनका बादशाह होगा, न राहनुमा, न कुरबानी का इंतज़ाम, न यादगार पत्थर, न इमाम का बालापोश। उनके पास बुत तक भी नहीं होंगे। 5 इसके बाद इसराईली वापस आकर रब अपने खुदा और दाऊद अपने बादशाह को तलाश करेंगे। आखिरी दिनों में वह लरज़ते हुए रब और उस की भलाई की तरफ़ रुजू करेंगे।

4

इमामों पर रब का इलज़ाम

1 ऐ इसराईलियों, रब का कलाम सुनो! क्योंकि रब का मुल्क के बाशिंदों से मुकदमा है। “इलज़ाम यह है कि मुल्क में न वफ़ादारी, न मेहरबानी और न अल्लाह का इरफ़ान है। 2 कोसना, झूट बोलना, चोरी और ज़िना करना आम हो गया है। रोज़ बरोज़ कल्लो-ग़ारत की नई ख़बरेँ मिलती रहती हैं। 3 इसी लिए मुल्क में काल है और उसके तमाम बाशिंदे पज़मुरदा हो गए हैं। जंगली जानवर, परिदे और मछलियाँ भी फ़ना हो रही हैं।

4 लेकिन बिलावजह किसी पर इलज़ाम मत लगाना, न ख़ाहमख़ाह किसी की तंबीह करो! ऐ इमामो, मैं तुम्हीं पर इलज़ाम लगाता हूँ। 5 ऐ इमाम, दिन के वक्त तू ठोकर खाकर गिरेगा, और रात के वक्त नबी गिरकर तेरे साथ पड़ा रहेगा। मैं तेरी माँ को भी तबाह करूँगा। 6 अफ़सोस, मेरी क़ौम इसलिए तबाह हो रही है कि वह सहीह इल्म नहीं रखती। और क्या अजब जब तुम इमामों ने यह इल्म रद्द कर दिया है। अब मैं तुम्हें भी रद्द करता हूँ। आइंदा तुम इमाम की ख़िदमत अदा नहीं करोगे। चूँकि तुम अपने खुदा की शरीअत भूल गए हो इसलिए मैं तुम्हारी औलाद को भी भूल जाऊँगा।

7 इमामों की तादाद जितनी बढ़ती गई उतना ही वह मेरा गुनाह करते गए। उन्होंने अपनी इज़ज़त ऐसी चीज़ के एवज़ छोड़ दी जो स्सवाई का बाइस है। 8 मेरी क़ौम के गुनाह उनकी ख़ुराक हैं, और वह इस लालच में रहते हैं कि लोगों का कुसूर मज़ीद बढ़ जाए। 9 चुनौचे इमामों और क़ौम के साथ एक जैसा सुलूक किया जाएगा। दोनों को मैं उनके चाल-चलन की सज़ा दूँगा, दोनों को उनकी हरकतों का अज़ा दूँगा। 10 ख़ाना तो वह खाएँगे लेकिन सेर नहीं होंगे। ज़िना भी करते रहेंगे, लेकिन बेफ़ायदा। इससे उनकी तादाद नहीं बढ़ेगी। क्योंकि उन्होंने रब का ख़याल करना छोड़ दिया है।

11 ज़िना करने और नई और पुरानी मै पीने से लोगों की अक्ल जाती रहती है। 12 मेरी क़ौम लकड़ी से दरियाफ़्त करती है कि क्या करना है, और उस की लाठी उसे हिदायत देती है। क्योंकि ज़िनाकारी की रूह ने उन्हें भटका दिया है, ज़िना करते करते वह अपने खुदा से कहीं दूर हो गए हैं। 13 वह पहाड़ों की चोटियों पर अपने जानवरों को कुरबान करते हैं और पहाड़ियों पर चढ़कर बलूत, सफ़ेदा या किसी और दरख़्त

* 2:15 यानी मुसीबत की वादी। † 2:16 बाल का मतलब ‘मालिक’ है। ‡ 2:22 अल्लाह बीज बोता है। § 2:23 जिस पर रहम न हुआ हो। * 2:23 मेरी क़ौम नहीं।

के खुशगवार साय में बखूर की कुरबानियाँ पेश करते हैं। इसी लिए तुम्हारी बेठियाँ इसमतफरोश बन गई हैं, और तुम्हारी बहुएँ जिना करती हैं। 14 लेकिन मैं उन्हें उनकी इसमतफरोशी और जिनाकारी की सज़ा क्यों दूँ जबकि तुम मर्द कसबियों से सोहबत रखते और देवताओं की खिदमत में इसमतफरोशी करनेवाली औरतों के साथ कुरबानियाँ चढ़ाते हो? ऐसी हरकतों से नासमझ कौम तबाह हो रही है।

15 ऐ इसराईल, तू इसमतफरोश है, लेकिन यहदाह खबरदार रहे कि वह इस जुर्म में मुलव्वस न हो जाए। इसराईल के शहरों जिलजाल और बैत-आवन * की कुरबानगाहों के पास मत जाना। ऐसी जगहों पर रब का नाम लेकर उस की हयात की कसम खाना मना है। 16 इसराईल तो ज़िद्दी गाय की तरह अड़ गया है। तो फिर रब उन्हें किस तरह सबज़ाज़ार में भेड़ के बच्चों की तरह चरा सकता है?

17 इसराईल † तो बुतों का इत्हादी है, उसे छोड़ दे! 18 यह लोग शराब की महफ़िल से फ़ारिग होकर जिनाकारी में लग जाते हैं। वह नाजायज़ मुहब्बत करते करते कभी नहीं थकते। लेकिन इसका अज़्र उनकी अपनी बेइज़्ज़ती है। 19 आँधी उन्हें अपनी लपेट में लेकर उड़ा ले जाएगी, और वह अपनी कुरबानियों के बाइस शर्मिंदा हो जाएंगे।

5

इसराईल और यहदाह दोनों कुसूरवार हैं

1 ऐ इमामो, सुनो मेरी बात! ऐ इसराईल के घराने, तवज्जुह दे! ऐ शाही खानदान, मेरे पैगाम पर गौर कर!

तुम पर फ़ैसला है, क्योंकि अपनी बुतपरस्ती से तुमने मिसफ़ाह में फंदा लगा दिया, तबूर पहाड़ पर जाल बिछा दिया 2 और शितीम में गढ़ा खुदवा लिया है। खबरदार! मैं तुम सबको सज़ा दूँगा।

3 मैं तो इसराईल को खूब जानता हूँ, वह मुझसे छुपा नहीं रह सकता। इसराईल अब इसमतफरोश बन गया है, वह नापाक है। 4 उनकी बुरी हरकतें उन्हें उनके खुदा के पास वापस आने नहीं देती। क्योंकि उनके अंदर जिनाकारी की रूह है, और वह रब को नहीं जानते। 5 इसराईल का तकब्बुर उसके खिलाफ़ गवाही देता है, और वह अपने कुसूर के बाइस गिर जाएगा। यहदाह भी उसके साथ गिर जाएगा।

6 तब वह अपनी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को लेकर रब को तलाश करेंगे, लेकिन बेफ़ायदा। वह उसे पा नहीं सकेंगे, क्योंकि वह उन्हें छोड़कर चला गया है। 7 उन्होंने रब से बेवफ़ा होकर नाजायज़ औलाद पैदा की है। अब नया चाँद उन्हें उनकी मौरूसी ज़मीनों समेत हड़प कर लेगा।

अपनी कौम पर अल्लाह का इलज़ाम

8 ज़िबिया में नरसिंगा फूँको, रामा में तुरम बजाओ! बैत-आवन में जंग के नारे बुलंद करो। ऐ बिनयमीन, दुश्मन तेरे पीछे पड़ गया है! 9 जिस दिन मैं सज़ा दूँगा उस दिन इसराईल वीरानो-सुनसान हो जाएगा। ध्यान दो कि मैंने इसराईली कबीलों के बारे में काबिले-एतमाद बातें बताई हैं।

10 यहदाह के राहनुमा उन जैसे बन गए हैं जो नाजायज़ तौर पर अपनी ज़मीन की हुदूद बढ़ा देते हैं। जवाब में मैं अपना ग़ज़ब मूसलाधार बारिश की तरह उन पर नाज़िल करूँगा। 11 इसराईल पर इसलिए जुल्म हो रहा है और उसका हक़ मारा जा रहा है कि वह बेमानी बुतों के पीछे भागने पर तुला हुआ है। 12 मैं इसराईल के लिए पीप और यहदाह के लिए सडाहट का बाइस बनूँगा।

13 इसराईल ने अपनी बीमारी देखी और यहदाह ने अपने नासूर पर गौर किया। तब इसराईल ने असूर की तरफ़ रूजू किया और असूर के अज़ीम बादशाह को पैगाम भेजकर उससे मदद माँगी। लेकिन वह तुम्हें शफ़ा नहीं दे सकता, वह तुम्हारे नासूर का इलाज नहीं कर सकता।

14 क्योंकि मैं शेरबबर की तरह इसराईल पर टूट पड़ूँगा और जवान शेरबबर की तरह यहदाह पर झपट पड़ूँगा। मैं उन्हें फाड़कर अपने साथ घसीट ले जाऊँगा, और कोई उन्हें नहीं बचाएगा। 15 फिर मैं अपने घर वापस जाकर उस वक़्त तक उनसे दूर रहूँगा जब तक वह अपना कुसूर तसलीम करके मेरे चेहरे को तलाश न करें। क्योंकि जब वह मुसीबत में फँस जाएंगे तब ही मुझे तलाश करेंगे।”

6

1 उस वक़्त वह कहेंगे, “आओ, हम रब के पास वापस चलें। क्योंकि उसी ने हमें फाड़ा, और वही हमें शफ़ा भी देगा। उसी ने हमारी पिटाई की, और वही हमारी मरहम-पट्टी भी करेगा। 2 दो दिन के बाद वह हमें नए सिरे से ज़िंदा करेगा और तीसरे दिन हमें दुबारा उठा खड़ा करेगा ताकि हम उसके हुज़ूर ज़िंदगी गुज़ारें। 3 आओ, हम उसे जान लें, हम पूरी ज़िद्दो-जहद के साथ रब को जानने के लिए कोशिशें करें। वह ज़रूर हम पर जाहिर होगा। यह उतना यक़ीनी है जितना सूरज का रोज़ाना तुलू होना यक़ीनी है। जिस तरह मौसमे-बहार की तेज़ बारिश ज़मीन को सेराब करती है उसी तरह अल्लाह भी हमारे पास आएगा।”

4 “ऐ इसराईल, मैं तेरे साथ क्या करूँ? ऐ यहदाह, मैं तेरे साथ क्या करूँ? तुम्हारी मुहब्बत सुबह की धुंध जैसी आरिज़ी है। धूप में ओस की तरह वह जल्द ही काफ़ूर हो जाती है। 5 इसी लिए मैंने अपने नबियों की मारिफ़त तुम्हें पटख़ दिया, अपने मुँह के अलफ़ाज़ से तुम्हें मार डाला है। मेरे इनसाफ़ का नूर सूरज की तरह ही तुलू होता है। 6 क्योंकि मैं कुरबानी नहीं बल्कि रहम पसंद करता हूँ, भस्म होनेवाली कुरबानियों की निसबत मुझे यह पसंद है कि तुम अल्लाह को जान लो।

* 4:15 बैत-आवन यानी ‘गुनाह का घर’ से मुराद बैतेल है।

† 4:17 होसेअ के इब्रानी मतन में यहाँ और मुतअदिद दीगर आयात में ‘इफ़राईम’ मुस्तामल है जिससे मुराद शिमाली मुल्के-इसराईल है।

अदालत की फ़सल पक गई है

7 वह आदम शहर में अहद तोड़कर मुझसे बेवफ़ा हो गए। 8 जिलियाद शहर मुजरिमों से भर गया है, हर तरफ़ खून के दाग़ हैं। 9 इमामों के जत्थे डाकुओं की मानिंद बन गए हैं। क्योंकि वह सिकम को पहुँचानेवाले रास्ते पर मुसाफ़िरों की ताक लगाकर उन्हें क़त्ल करते हैं। हाँ, वह शर्मनाक हरकतों से गुरेज़ नहीं करते। 10 मैंने इसराईल में ऐसी बातें देखी हैं जिनसे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। क्योंकि इसराईल ज़िना करता है, वह अपने आपको नापाक करता है। 11 लेकिन यहदाह पर भी अदालत की फ़सल पकनेवाली है।

जब कभी मैं अपनी क़ौम को बहाल करके

7

1 इसराईल को शफ़ा देना चाहता हूँ तो इसराईल का कुसूर और सामरिया की बुराई साफ़ ज़ाहिर हो जाती है। क्योंकि फ़रेब देना उनका पेशा ही बन गया है। चोर घरों में नक़ब लगाते जबकि बाहर गली में डाकुओं के जत्थे लोगों को लूट लेते हैं। 2 लेकिन वह खयाल नहीं करते कि मुझे उनकी तमाम बुरी हरकतों की याद रहती है। वह नहीं समझते कि अब वह अपने ग़लत कामों से घिरे रहते हैं, कि यह गुनाह हर वक़्त मुझे नज़र आते हैं। 3 अपनी बुराई से वह बादशाह को ख़ुश रखते हैं, उनके झूट से बुजुर्ग लुप्तअंदोज़ होते हैं। 4 सबके सब ज़िनाकार हैं। वह उस तपते तनूर की मानिंद हैं जो इतना गरम है कि नानबाई को उसे मज़ीद छेड़ने की ज़रूरत नहीं। अगर वह आटा गूँधकर उसके खमीर होने तक इंतज़ार भी करे तो भी तनूर इतना गरम रहता है कि रोटी पक जाएगी। 5 हमारे बादशाह के जशन पर राहनुमा मैं पी पीकर मस्त हो जाते हैं, और वह कुफ़र बकनेवालों से हाथ मिलाता है। 6 यह लोग क़रीब आकर ताक में बैठ जाते हैं जबकि उनके दिल तनूर की तरह तपते हैं। पूरी रात को उनका गुस्सा सोया रहता है, लेकिन सुबह के वक़्त वह बेदार होकर शोलाज़न आग की तरह दहकने लगता है। 7 सब तनूर की तरह तपते तपते अपने राहनुमाओं को हड़प कर लेते हैं। उनके तमाम बादशाह गिर जाते हैं, और एक भी मुझे नहीं पुकारता।

8 इसराईल दीगर अक़वाम के साथ मिलकर एक हो गया है। अब वह उस रोटी की मानिंद है जो तवे पर सिर्फ़ एक तरफ़ से पक गई है, दूसरी तरफ़ से कच्ची ही है। 9 ग़ैरमुल्की उस की ताकत खा खाकर उसे कमज़ोर कर रहे हैं, लेकिन अभी तक उसे पता नहीं चला। उसके बाल सफ़ेद हो गए हैं, लेकिन अभी तक उसे मालूम नहीं हुआ। 10 इसराईल का तकब्बुर उसके खिलाफ़ गवाही देता है। तो भी न वह रब अपने ख़ुदा के पास वापस आ जाता, न उसे तलाश करता है।

11 इसराईल नासमझ कबूतर की मानिंद है जिसे आसानी से वरगलाया जा सकता है। पहले वह मिसर को मदद के लिए बुलाता, फिर असूर के पास भाग जाता है। 12 लेकिन ज्योंही वह कभी इधर कभी इधर दौड़ेंगे तो मैं उन पर अपना जाल डालूँगा, उन्हें उड़ते हुए परिदों की तरह नीचे उतारूँगा। मैं उनकी यों तादीब करूँगा जिस तरह उनकी जमात को आगाह किया गया है।

13 उन पर अफ़सोस, क्योंकि वह मुझसे भाग गए हैं। उन पर तबाही आए, क्योंकि वह मुझसे सरकश हो गए हैं। मैं फ़िघा देकर उन्हें छुड़ाना चाहता था, लेकिन जवाब में वह मेरे बारे में झूट बोलते हैं। 14 वह खुलूसदिली से मुझसे इल्लिजा नहीं करते। वह बिस्तर पर लेटे लेटे 'हाय हाय' करते और गल्ला और अंगूर को हासिल करने के लिए अपने आपको ज़ख़मी करते हैं। लेकिन मुझसे वह दूर रहते हैं।

15 मैं ही ने उन्हें तरबियत दी, मैं ही ने उन्हें तकवियत दी, लेकिन वह मेरे खिलाफ़ बुरे मनसूबे बाँधते हैं। 16 वह तौबा करके वापस आ जाते हैं, लेकिन मेरे पास नहीं, लिहाज़ा वह ढीली कमान जैसे बेकार हो गए हैं। चुनौचे उनके राहनुमा कुफ़र बकने के सबब से तलवार की ज़द में आकर हलाक हो जाएंगे। इस बात के बाइस वह मिसर में मज़ाक़ का निशाना बन जाएंगे।

8

अल्लाह की बेवफ़ा क़ौम पर अदालत

1 नरसिंगा बजाओ! दुश्मन उकाब की तरह रब के घर पर झपट्टा मारने को है। क्योंकि लोगों ने मेरे अहद को तोड़कर मेरी शरीअत की खिलाफ़वरज़ी की है। 2 बेशक वह मदद के लिए चीख़ते-चिल्लाते हैं, 'ऐ हमारे ख़ुदा, हम तो तुझे जानते हैं, हम तो इसराईल हैं।' 3 लेकिन हकीक़त में इसराईल ने वह कुछ मुस्तरद कर दिया है जो अच्छा है। चुनौचे दुश्मन उसका ताक्कुब करे! 4 उन्होंने मेरी मरज़ी पूछे बग़ैर अपने बादशाह मुक़रर किए, मेरी मंजूरी के बग़ैर अपने राहनुमाओं को चुन लिया है। अपने सोने-चाँदी से अपने लिए बुत बनाकर वह अपनी तबाही अपने सर पर लाए हैं।

5 ऐ सामरिया, मैंने तेरे बछड़े को रड़ कर दिया है! मेरा ग़ज़ब तेरे बाशिंदों पर नाज़िल होनेवाला है, क्योंकि वह पाक-साफ़ हो जाने के काबिल ही नहीं! यह हालत कब तक जारी रहेगी? 6 ऐ इसराईल, जिस बछड़े की पूजा तू करता है उसे दस्तकार ही ने बनाया है। सामरिया का बछड़ा ख़ुदा नहीं है बल्कि पाश पाश हो जाएगा।

7 वह हवा का बीज बो रहे हैं और आँधी की फ़सल काटेंगे। अनाज की फ़सल तैयार है, लेकिन बालियाँ कहीं नज़र नहीं आती। इससे आटा मिलने का इमकान ही नहीं। और अगर थोड़ा-बहुत गंदुम मिले भी तो ग़ैरमुल्की उसे हड़प कर लेंगे।

8 हाँ, तमाम इसराईल को हड़प कर लिया गया है। अब वह क़ौमों में ऐसा बरतन बन गया है जो कोई पसंद नहीं करता। 9 क्योंकि उसके लोग असूर के पास चले गए हैं। जंगली गंधा तो अकेला रहता है, लेकिन इसराईल अपने आशिक़ को तोहफ़े देकर ख़ुश रखने पर तुला रहता है। 10 लेकिन ख़ाह वह दीगर क़ौमों में कितने तोहफ़े क्यों न तकसीम करें अब मैं उन्हें सज़ा देने के लिए जमा करूँगा। जल्द ही वह शहनशाह

के बोझ तले पेचो-ताब खाने लगेंगे। ¹¹ गो इसराईल ने गुनाहों को दूर करने के लिए मुतअदिद कुरबानगाहें तामीर कीं, लेकिन वह उसके लिए गुनाह का बाइस बन गई हैं। ¹² खाह मैं अपने अहकाम को इसराईलियों के लिए हज़ारों दफ़ा क्यों न कलमबंद करता, तो भी फ़रक़ न पड़ता, वह समझते कि यह अहकाम अजनबी हैं, यह हम पर लागू नहीं होते। ¹³ गो वह मुझे कुरबानियाँ पेश करके उनका गोश्त खाते हैं, लेकिन मैं, रब इनसे खुश नहीं होता बल्कि उनके गुनाहों को याद करके उन्हें सज़ा दूँगा। तब उन्हें दुबारा मिसर जाना पड़ेगा। ¹⁴ इसराईल ने अपने खालिक को भूलकर बड़े महल बना लिए हैं, और यहदाह ने मुतअदिद शहरों को किलाबंद बना लिया है। लेकिन मैं उनके शहरों पर आग नाज़िल करके उनके महलों को भस्म कर दूँगा।”

9

इसराईल का अंजाम

¹ ऐ इसराईल, खुशी न मना, दीगर अक्रवाम की तरह शादियाना मत बजा। क्योंकि तू ज़िना करते करते अपने खुदा से दूर होता जा रहा है। जहाँ भी लोग गंदम गाहते हैं वहाँ तू जाकर अपनी इसमतफरोशी के पैसे जमा करता है, यही कुछ तुझे प्यारा है। ² इसलिए आइंदा गंदम गाहने और अंगूर का रस निकालने की जगहें उन्हें खुराक मुहैया नहीं करेगी, और अंगूर की फ़सल उन्हें रस मुहैया नहीं करेगी।

³ इसराईली रब के मुल्क में नहीं रहेंगे बल्कि उन्हें मिसर वापस जाना पड़ेगा, उन्हें असूर में नापाक चीज़ें खानी पड़ेंगी। ⁴ वहाँ वह रब को न मै की और न ज़बह की कुरबानियाँ पेश कर सकेंगे। उनकी रोटी मातम करनेवालों की रोटी जैसी होगी यानी जो भी उसे खाए वह नापाक हो जाएगा। हाँ, उनका खाना सिर्फ़ उनकी अपनी भूक मिटाने के लिए होगा, और वह रब के घर में नहीं आएगा। ⁵ उस वक़्त तुम ईदों पर क्या करोगे? रब के तहवारों को तुम कैसे मनाओगे? ⁶ जो तबाहशुदा मुल्क से निकलेंगे उन्हें मिसर इक़ठा करेगा, उन्हें मेफ़िस दफ़नाएगा। खुदरौ पौदे उनकी कीमती चाँदी पर कब्ज़ा करेंगे, काँटेदार झाड़ियाँ उनके घरों पर छा जाएँगी।

⁷ सज़ा के दिन आ गए हैं, हिसाब-किताब के दिन पहुँच गए हैं। इसराईल यह बात जान ले। तुम कहते हो, “यह नबी अहमक है, रूह का यह बंदा पागल है।” क्योंकि जितना संगीन तुम्हारा गुनाह है उतने ही ज़ोर से तुम मेरी मुखालफ़त करते हो।

⁸ नबी मेरे खुदा की तरफ़ से इसराईल का पहरदार बनाया गया है। लेकिन जहाँ भी वह जाए वहाँ उसे फँसाने के फंदे लगाए गए हैं, बल्कि उसे उसके खुदा के घर में भी सताया जाता है। ⁹ उनसे निहायत ही खराब काम सरज़द हुआ है, ऐसा शरीर काम जैसा ज़िबिया के बाशिंदों से हुआ था। अल्लाह उनका कुसूर याद करके उनके गुनाहों की मुनासिब सज़ा देगा।

इसराईल शुरू से ही शरीर है

¹⁰ रब फ़रमाता है, “जब मेरा इसराईल से पहला वास्ता पड़ा तो रेगिस्तान में अंगूर जैसा लग रहा था। तुम्हारे बापदादा अंजीर के दरख़्त पर लगे पहले पकनेवाले फल जैसे नज़र आए। लेकिन बाल-फ़गूर के पास पहुँचते ही उन्होंने अपने आपको उस शर्मनाक बुत के लिए मख़सूस कर लिया। तब वह अपने आशिक़ जैसे मक़रूह हो गए। ¹¹ अब इसराईल की शानो-शौक़त परिंदे की तरह उड़कर ग़ायब हो जाएगी। आइंदा न कोई उम्मीद से होगी, न बच्चा जनेगी। ¹² अगर वह अपने बच्चों को परवान चढ़ने तक पालें भी तो भी मैं उन्हें बेऔलाद कर दूँगा। एक भी नहीं रहेगा। उन पर अफ़सोस जब मैं उनसे दूर हो जाऊँगा। ¹³ पहले जब मैंने इसराईल पर नज़र डाली तो वह सूर की मानिंद शानदार था, उसे शादाब जगह पर पौदे की तरह लगाया गया था। लेकिन अब उसे अपनी औलाद को बाहर लाकर कातिल के हवाले करना पड़ेगा।”

¹⁴ ऐ रब, उन्हें दे! क्या दे? होने दे कि उनके बच्चे पेट में जाया हो जाएँ, कि औरतें दूध न पिला सकें।

¹⁵ रब फ़रमाता है, “जब उनकी तमाम बेदीनी जिलजाल में जाहिर हुई तो मैंने उनसे नफ़रत की। उनकी बुरी हरकतों की वजह से मैं उन्हें अपने घर से निकाल दूँगा। आइंदा मैं उन्हें प्यार नहीं करूँगा। उनके तमाम राहनुमा सरकश हैं। ¹⁶ इसराईल को मारा गया, लोगों की जड़ सूख गई है, और वह फल नहीं ला सकते। उनके बच्चे पैदा हो भी जाएँ तो मैं उनकी कीमती औलाद को मार डालूँगा।” ¹⁷ मेरा खुदा उन्हें रड़ करेगा, इसलिए कि उन्होंने उस की नहीं सुनी। चुनौचे उन्हें दीगर अक्रवाम में मारे मारे फिरना पड़ेगा।

10

बुतपरस्ती के नतायज

¹ इसराईल अंगूर की फलती-फूलती बेल था जो काफ़ी फल लाती रही। लेकिन जितना उसका फल बढ़ता गया उतना ही वह बुतों के लिए कुरबानगाहें बनाता गया। जितना उसका मुल्क तरक्क़ी करता गया उतना ही वह देवताओं के मख़सूस सत्तूनों को सजाता गया। ² लोग दोदिले हैं, और अब उन्हें उनके कुसूर का अज़्र भुगतना पड़ेगा। रब उनकी कुरबानगाहों को गिरा देगा, उनके सत्तूनों को मिसमार करेगा। ³ जल्द ही वह कहेंगे, “हम इसलिए बादशाह से महरूम हैं कि हमने रब का ख़ौफ़ न माना। लेकिन अगर बादशाह होता भी तो वह हमारे लिए क्या कर सकता?” ⁴ वह बड़ी बातें करते, झूठी क़समें खाते और खाली अहद बाँधते हैं। उनका इनसाफ़ उन ज़हरीले खुदरौ पौदों की मानिंद है जो बीज के लिए तैयारशुदा ज़मीन से फूट निकलते हैं।

5 सामरिया के बाशिंदे परेशान हैं कि बैत-आवन * में बछड़े के बुत के साथ क्या किया जाएगा। उसके परस्तार उस पर मातम करेंगे, उसके पुजारी उस की शानो-शौकत याद करके वावैला करेंगे, क्योंकि वह उनसे छिनकर परदेस में ले जाया जाएगा। 6 हाँ, बछड़े को मुल्के-असूर में ले जाकर शहनशाह को खराज के तौर पर पेश किया जाएगा। इसराईल की स्सवाई हो जाएगी, वह अपने मनस्बे के बाइस शर्मिदा हो जाएगा।

7 सामरिया नेस्तो-नाबूद, उसका बादशाह पानी पर तैरती हुई टहनी की तरह बेबस होगा। 8 बैत-आवन † की वह ऊँची जगहें तबाह हो जाएँगी जहाँ इसराईल गुनाह करता रहा है। उनकी कुरबानगाहों पर काँटेदार झाड़ियाँ और ऊँटकटारे छा जाएँगे। तब लोग पहाड़ों से कहेंगे, “हमें छुपा लो!” और पहाड़ियों को “हम पर गिर पड़ो!”

9 रब फरमाता है, “ऐ इसराईल, जिबिया के वाकिये से लेकर आज तक तू गुनाह करता आया है, लोग वहीं के वहीं रह गए हैं। क्या मुनासिब नहीं कि जिबिया में जंग उन पर टूट पड़े जो इतने शरीर हैं? 10 अब मैं अपनी मरजी से उनकी तादीब करूँगा। अक्रवाम उनके खिलाफ जमा हो जाएँगी जब उन्हें उनके दुग्ने कुसूर के लिए जंजीरों में जकड़ लिया जाएगा।

11 इसराईल जवान गाय था जिसे गंदुम गाहने की तरबियत दी गई थी और जो शौक से यह काम करती थी। तब मैंने उसके खूबसूरत गले पर जुआ रखकर उसे जोत लिया। यहदाह को हल खींचना और याकूब ‡ को जमीन पर सुहागा फेरना था। 12 मैंने फरमाया, ‘इनसाफ का बीज बोकर शफकत की फसल काटो। जिस जमीन पर हल कभी नहीं चलाया गया उस पर ठीक तरह हल चलाओ! जब तक रब को तलाश करने का मौका है उसे तलाश करो, और जब तक वह आकर तुम पर इनसाफ की बारिश न बरसाए उसे ढूँडो।’

13 लेकिन जवाब में तुमने हल चलाकर बेदीनी का बीज बोया, तुमने बुराई की फसल काटकर फरेब का फल खाया है। चूँकि तूने अपनी राह और अपने सूरमाओं की बड़ी तादाद पर भरोसा रखा है 14 इसलिए तेरी क्रौम में जंग का शोर मचेगा, तेरे तमाम किले खाक में मिलाए जाएँगे। शलमन के बैत-अरबेल पर हमले के-से हालात होंगे जिसने उस शहर को जमीनबोस करके माओं को बच्चों समेत जमीन पर पटख दिया। 15 ऐ बैतेल के बाशिंदो, तुम्हारे साथ भी ऐसा ही किया जाएगा, क्योंकि तुम्हारी बदकारी हद से ज्यादा है। पौ फटते ही इसराईल का बादशाह नेस्त हो जाएगा।”

11

बेवफाई के बावजूद अल्लाह की शफकत

1 रब फरमाता है, “इसराईल अभी लड़का था जब मैंने उसे प्यार किया, जब मैंने अपने बेटे को मिसर से बुलाया। 2 लेकिन बाद में जितना ही मैं उन्हें बुलाता रहा उतना ही वह मुझसे दूर होते गए। वह बाल देवताओं के लिए जानवर चढ़ाने, बुतों के लिए बखूर जलाने लगे। 3 मैंने खुद इसराईल को चलने की तरबियत दी, बार बार उन्हें गोद में उठाकर लिए फिरा। लेकिन वह न समझे कि मैं ही उन्हें शफा देनेवाला हूँ। 4 मैं उन्हें खींचता रहा, लेकिन ऐसे रस्सों से नहीं जो इनसान बरदाश्त न कर सके बल्कि शफकत भरे रस्सों से। मैंने उनके गले पर का जुआ हलका कर दिया और नरमी से उन्हें खुराक खिलाई।

5 क्या उन्हें मुल्के-मिसर वापस नहीं जाना पड़ेगा? बल्कि असूर ही उनका बादशाह बनेगा, इसलिए कि वह मेरे पास वापस आने के लिए तैयार नहीं। 6 तलवार उनके शहरों में घूम घूमकर गैबदानों को हलाक करेगी और लोगों को उनके गलत मशवरों के सबब से खाती जाएगी। 7 लेकिन मेरी क्रौम मुझे तर्क करने पर तुली हुई है। जब उसे ऊपर अल्लाह की तरफ देखने को कहा जाए तो उसमें से कोई भी उस तरफ रूजू नहीं करता।

8 ऐ इसराईल, मैं तुझे किस तरह छोड़ सकता हूँ? मैं तुझे किस तरह दुश्मन के हवाले कर सकता, किस तरह अदमा की तरह दूसरों के कब्जे में छोड़ सकता, किस तरह ज़बोईम की तरह तबाह कर सकता हूँ? मेरा इरादा सरासर बदल गया है, मैं तुझ पर शफकत करने के लिए बेचैन हूँ। 9 न मैं अपना सख्त गज़ब नाज़िल करूँगा, न दुबारा इसराईल को बरबाद करूँगा। क्योंकि मैं इनसान नहीं बल्कि खुदा हूँ, वह कुदूस जो तेरे दरमियान सुकूनत करता है। मैं गज़ब में नहीं आऊँगा। 10 उस वक़्त वह रब के पीछे ही चलेंगे। तब वह शेरबबर की तरह दहाड़ेगा। और जब दहाड़ेगा तो उसके फ़रज़ंद मगरिब से लरज़ते हुए वापस आएँगे। 11 वह परिदों की तरह फड़फड़ाते हुए मिसर से आएँगे, थरथराते कबूतरों की तरह असूर से लौटेंगे। फिर मैं उन्हें उनके घरों में बसा दूँगा। यह मेरा, रब का फ़रमान है।

12 इसराईल ने मुझे झूट से घेर लिया, फ़रेब से मेरा मुहासरा कर लिया है। लेकिन यहदाह भी मज़बूती से अल्लाह के साथ नहीं है बल्कि आवारा फिरता है, हालाँकि कुदूस खुदा वफ़ादार है।”

12

सरकशी की राम कहानी

1 इसराईल हवा चरने की कोशिश कर रहा है, पूरा दिन वह मशरिकी लू के पीछे भागता रहता है। उसके झूट और जुल्म में इज़ाफ़ा होता जा रहा है। असूर से अहद बाँधने के साथ साथ वह मिसर को भी जैतून का तेल भेज देता है।

* 10:5 बैत-आवन यानी ‘गुनाह का घर’ से मुराद बैतेल है। † 10:8 बैत-आवन यानी ‘गुनाह का घर’ से मुराद बैतेल है। ‡ 10:11 याकूब से मुराद इसराईल है।

2 रब अदालत में यहूदाह से भी लड़ेगा। वह याकूब * को उसके चाल-चलन की सज़ा, उसके आमाल का मुनासिब अज़्र देगा। 3 क्योंकि माँ के पेट में ही उसने अपने भाई की एड़ी पकड़कर उसे धोका दिया। जब बालिग हुआ तो अल्लाह से लड़ा 4 बल्कि फरिश्ते से लड़ते लड़ते उस पर गालिब आया। फिर उसने रोते रोते उससे इल्लिजा की कि मुझ पर रहम कर। बाद में याकूब ने अल्लाह को बैतेल में पाया, और वहाँ खुदा उससे हमकलाम हुआ। 5 रब जो लशकरोँ का खुदा है और जिसका नाम रब ही है, उसने फ़रमाया, 6 “अपने खुदा के पास वापस आकर रहम और इनसाफ़ कायम रख! कभी अपने खुदा पर उम्मीद रखने से बाज़ न आ।”

7 इसराईल ताजिर है जिसके हाथ में गलत तराजू है और जिसे लोगों से नाजायज़ फ़ायदा उठाने का बड़ा शौक है। 8 वह कहता है, “मैं अमीर हो गया हूँ, मैंने कसरत की दौलत पाई है। कोई साबित नहीं कर सकेगा कि मुझसे यह तमाम मिलकियत हासिल करने में कोई कुसूर या गुनाह सरज़द हुआ है।”

9 “लेकिन मैं, रब जो मिसर से तुझे निकालते वक़्त आज तक तेरा खुदा हूँ मैं यह नज़रंदाज़ नहीं करूँगा। मैं तुझे दुबारा ख़ैमों में बसने दूँगा। यों होगा जिस तरह उन पहले दिनों में हुआ जब इसराईली मेरी परस्तिश करने के लिए रेगिस्तान में जमा होते थे। 10 मैं बार बार नबियों की मारिफ़त तुमसे हमकलाम हुआ, मैंने उन्हें मुतअद्दिद रोयाएँ दिखाई और उनके ज़रीए तुम्हें तमसीलें सुनाई।”

बुतपरस्ती का अज़्र ज़वाल है

11 क्या जिलियाद बेदीन है? उसके लोग नाकारा ही हैं! जिलजाल में लोगों ने सॉड क़ुरबान किए हैं, इसलिए उनकी क़ुरबानगाहें मलबे के ढेर बन जाएँगी। वह बीज बोने के लिए तैयारशुदा खेत के किनारे पर लगे पत्थर के ढेर जैसी बनेंगी।

12 याकूब को भागकर मुल्के-अराम में पनाह लेनी पड़ी। वहाँ वह बीवी मिलने के लिए मुलाज़िम बन गया, औरत के बाइस उसने भेड़-बकरियों की गल्लाबानी की। 13 लेकिन बाद में रब नबी की मारिफ़त इसराईल को मिसर से निकाल लाया और नबी के ज़रीए उस की गल्लाबानी की। 14 तो भी इसराईल ने उसे बड़ा तैश दिलाया। अब उन्हें उनकी कल्लो-गारत का अज़्र भुगतना पड़ेगा। उन्होंने अपने आक्रा की तौहीन की है, और अब वह उन्हें मुनासिब सज़ा देगा।

13

अल्लाह की तरफ़ से इसराईल की अदालत

1 पहले जब इसराईल ने बात की तो लोग काँप उठे, क्योंकि मुल्के-इसराईल में वह सरफ़राज़ था। लेकिन फिर वह बाल की बुतपरस्ती में मुलव्वस होकर हलाक हुआ। 2 अब वह अपने गुनाहों में बहुत इज़ाफ़ा कर रहे हैं। वह अपनी चाँदी लेकर महारत से बुत ढाल लेते हैं। फिर दस्तकारों के हाथ से बने इन बुतों के बारे में कहा जाता है, “जो बछड़े के बुतों को चूमना चाहे वह किसी इन्सान को क़ुरबान करे!” 3 इसलिए वह सबह-सवरे की धुंध जैसे आरिज़ी और धूप में जल्द ही ख़त्म होनेवाली ओस की मानिंद होंगे। वह गाहते वक़्त गंदुम से अलग होनेवाले भूसे की मानिंद हवा में उड़ जाएंगे, घर में से निकलनेवाले धुएँ की तरह ज़ाया हो जाएंगे।

4 “लेकिन मैं, रब तुझे मिसर से निकालते वक़्त से लेकर आज तक तेरा खुदा हूँ। तुझे मेरे सिवा किसी और को खुदा नहीं जानना है। मेरे सिवा और कोई नजातदहिदा नहीं है। 5 रेगिस्तान में मैंने तेरी देख-भाल की, वहाँ जहाँ तपती गरमी थी। 6 वहाँ उन्हें अच्छी ख़ुराक मिली। लेकिन जब वह जी भरकर खा सके और सेर हुए तो मग़रूर होकर मुझे भूल गए। 7 यह देखकर मैं उनके लिए शेरबबर बन गया हूँ। अब मैं चीते की तरह रास्ते के किनारे उनकी ताक में बैठूँगा। 8 उस रीछनी की तरह जिसके बच्चों को छीन लिया गया हो मैं उन पर झपट्टा मारकर उनकी अंतड़ियों को फाड़ निकालूँगा। मैं उन्हें शेरबबर की तरह हड़प कर लूँगा, और जंगली जानवर उन्हें टुकड़े टुकड़े कर देंगे।

9 ऐ इसराईल, तू इसलिए तबाह हो गया है कि तू मेरे खिलाफ़ है, उसके खिलाफ़ जो तेरी मदद कर सकता है। 10 अब तेरा बादशाह कहाँ है कि वह तेरे तमाम शहरों में आकर तुझे छुटकारा दे? अब तेरे राहनुमा किधर हैं जिनसे तूने कहा था, ‘मुझे बादशाह और राहनुमा दे दे।’ 11 मैंने गुस्से में तुझे बादशाह दे दिया और गुस्से में उसे तुझसे छीन भी लिया।

12 इसराईल का कुसूर लपेटकर गोदाम में रखा गया है, उसके गुनाह हिसाब-किताब के लिए महफूज़ रखे गए हैं। 13 दर्द-ज़ह शुरू हो गया है, लेकिन वह नासमझ बच्चा है। वह माँ के पेट से निकलना नहीं चाहता।

14 मैं फ़िधा देकर उन्हें पाताल से क्यों रिहा करूँ? मैं उन्हें मौत की गिरिफ़्त से क्यों छुड़ाऊँ? ऐ मौत, तेरे काँटे कहाँ रहे? ऐ पाताल, तेरा डंक कहाँ रहा? उसे काम में ला, क्योंकि मैं तरस नहीं खाऊँगा। 15 खाह वह अपने भाइयों के दरमियान फलता-फूलता क्यों न हो तो भी रब की तरफ़ से मशरिफी लू उस पर चलेगी। और जब रेगिस्तान से आएगी तो इसराईल के कुएँ और चश्मे ख़ुशक हो जाएंगे। हर खज़ाना, हर क़ीमती चीज़ लूट का माल बन जाएगी। 16 सामरिया के बाशिंदों को उनके कुसूर की सज़ा भुगतनी पड़ेगी, क्योंकि वह अपने खुदा से सरकश हो गए हैं। दुश्मन उन्हें तलवार से मारकर उनके बच्चों को ज़मीन पर पटख देगा और उनकी हामिला औरतों के पेट चीर डालेगा।”

14

रब के पास वापस आओ!

* 12:2 याकूब से मुराद इसराईल है।

¹ ऐ इसराईल, तौबा करके रब अपने खुदा के पास वापस आ! क्योंकि तेरा कुसूर तेरे ज्वाल का सबब बन गया है। ² अपने गुनाहों का इकरार करते हुए रब के पास वापस आओ। उससे कहो, “हमारे तमाम गुनाहों को मुआफ़ करके हमें मेहरबानी से क़बूल फ़रमा ताकि हम अपने होंटों से तेरी तारीफ़ करके तुझे मुनासिब क़ुरबानी अदा कर सकें। ³ असूर हमें न बचाए। आइंदा न हम घोड़ों पर सवार हो जाएंगे, न कहेंगे कि हमारे हाथों की चीज़ें हमारा खुदा हैं। क्योंकि तू ही यतीम पर रहम करता है।”

⁴ तब रब फ़रमाएगा, “मैं उनकी बेवफ़ाई के असरात ख़त्म करके उन्हें शफ़ा दूँगा, हाँ मैं उन्हें खुले दिल से प्यार करूँगा, क्योंकि मेरा उन पर ग़ज़ब ठंडा हो गया है। ⁵ इसराईल के लिए मैं शबनम की मानिंद हूँगा। तब वह सोसन की मानिंद फूल निकालेगा, लुबनान के देवदार के दरख़्त की तरह जड़ पकड़ेगा, ⁶ उस की कोपलें फूट निकलेंगी, और शाखें बनकर फैलती जाएँगी। उस की शान ज़ैतून के दरख़्त की मानिंद होगी, उस की खुशबू लुबनान के देवदार के दरख़्त की खुशबू की तरह फैल जाएगी।

⁷ लोग दुबारा उसके साय में जा बसेंगे। वहाँ वह अनाज की तरह फलें-फूलेंगे, अंगूर के-से फूल निकालेंगे। दूसरे उनकी यों तारीफ़ करेंगे जिस तरह लुबनान की उमदा मैं की। ⁸ तब इसराईल कहेगा, ‘मेरा बुतों से क्या वास्ता?’ मैं ही तेरी सुनकर तेरी देख-भाल करूँगा। मैं जूनीपर का सायादार दरख़्त हूँ, और तू मुझसे ही फल पाएगा।”

⁹ कौन दानिशमंद है? वह समझ ले। कौन साहबे-फ़हम है? वह मतलब जान ले। क्योंकि रब की राहें दुस्त हैं। रास्तबाज़ उन पर चलते रहेंगे, लेकिन सरकश उन पर चलते वक़्त ठोकर खाकर गिर जाएंगे।

योएल

1 ज़ैल में रब का वह कलाम है जो योएल बिन फ़तुएल पर नाज़िल हुआ।

2 ऐ बुजुर्गों, सुनो! ऐ मुल्क के तमाम बाशिंदों, तवज्जुह दो! जो कुछ इन दिनों में तुम्हें पेश आया है क्या वह पहले कभी तुम्हें या तुम्हारे बापदादा को पेश आया? 3 अपने बच्चों को इसके बारे में बताओ, जो कुछ पेश आया है उस की याद नसल-दर-नसल ताज़ा रहे।

4 जो कुछ टिट्ठी के लार्वे ने छोड़ दिया उसे बालिग टिट्ठी खा गई, जो बालिग टिट्ठी छोड़ गई उसे टिट्ठी का बच्चा खा गया, और जो टिट्ठी का बच्चा छोड़ गया उसे जवान टिट्ठी खा गई। 5 ऐ नशे में धुत लोगो, जाग उठो और रो पड़ो! ऐ मै पीनेवालो, वावैला करो! क्योंकि नई मै तुम्हारे मुँह से छीन ली गई है। 6 टिट्ठियों की ज़बरदस्त और अनगिनत क्रौम मेरे मुल्क पर टूट पड़ी है। उनके शेर के-से दाँत और शेरनी का-सा जबड़ा है। 7 नतीजे में मेरे अंगूर की बेलें तबाह, मेरे अंजीर के दरख्त ज़ाय़ा हो गए हैं। टिट्ठियों ने छाल को भी उतार लिया, अब शाखें सफ़ेद सफ़ेद नज़र आती हैं।

8 आहो-ज़ारी करो, टाट से मुल्बस उस कुँवारी की तरह गिर्या करो जिसका मंगेतर इंतक़ाल कर गया हो। 9 रब के घर में गल्ला और मै की नज़रें बंद हो गई हैं। इमाम जो रब के खादिम हैं मातम कर रहे हैं। 10 खेत तबाह हुए, ज़मीन झुलस गई है। अनाज ख़त्म, अंगूर ख़त्म, ज़ैतून ख़त्म।

11 ऐ काश्तकारो, शर्मसार हो जाओ! ऐ अंगूर के बाग़बानो, आहो-बुका करो! क्योंकि खेत की फ़सल बरबाद हो गई है, गंदुम और जौ की फ़सल ख़त्म ही है। 12 अंगूर की बेल सूख गई, अंजीर का दरख्त मुरझा गया है। अनार, खजूर, सेब बल्कि फल लानेवाले तमाम दरख्त पज़मुरदा हो गए हैं। इनसान की तमाम खुशी खाक में मिलाई गई है।

13 ऐ इमामो, टाट का लिबास ओढ़कर मातम करो! ऐ कुरबानगाह के खादिमो, वावैला करो! ऐ मेरे खुदा के खादिमो, आओ, रात को भी टाट ओढ़कर गुज़ारो! क्योंकि तुम्हारे खुदा का घर गल्ला और मै की नज़रों से महसूस हो गया है। 14 मुक़द्दस रोज़े का एलान करो। लोगों को खास इजतिमा के लिए बुलाओ। बुजुर्गों और मुल्क के तमाम बाशिंदों को रब अपने खुदा के घर में जमा करके बुलंद आवाज़ से रब से इत्तिज़ा करो।

15 उस दिन पर अफ़सोस! क्योंकि रब का वह दिन करीब ही है जब कादिरे-मुतलक हम पर तबाही नाज़िल करेगा। 16 क्या ऐसा नहीं हुआ कि हमारे देखते देखते हमसे ख़ुराक छीन ली गई, कि अल्लाह के घर में खुशीओ-शादमानी बंद हो गई है? 17 ढेलों में छुपे बीज झुलस गए हैं, इसलिए खाली गोदाम खस्ताहाल और अनाज को महफूज़ रखने के मकान टूट फूट गए हैं। उनकी ज़रूरत नहीं रही, क्योंकि गल्ला सूख गया है। 18 हाय, मवेशी कैसी दर्दनाक आवाज़ निकाल रहे हैं! गाय-बैल परेशानी से इधर उधर फिर रहे हैं, क्योंकि कहीं भी चरागाह नहीं मिलती। भेड़-बकरियों को भी तकलीफ़ है।

19 ऐ रब, मै तुझे पुकारता हूँ, क्योंकि खुले मैदान की चरागाहें नज़रे-आतिश हो गई हैं, तमाम दरख्त भस्म हो गए हैं। 20 जंगली जानवर भी हाँपते हाँपते तेरे इंतज़ार में हैं, क्योंकि नदियाँ सूख गई हैं, और खुले मैदान की चरागाहें नज़रे-आतिश हो गई हैं।

2

रब का अदालती दिन

1 कोहे-सिय्यून पर नरसिंगा फूँको, मेरे मुक़द्दस पहाड़ पर जंग का नारा लगाओ। मुल्क के तमाम बाशिंदे लरज़ उठें, क्योंकि रब का दिन आनेवाला है बल्कि करीब ही है। 2 ज़ुल्मत और तारीकी का दिन, घने बादलों और घुप अंधेरे का दिन होगा। जिस तरह पौ फटते ही रौशनी पहाड़ों पर फैल जाती है उसी तरह एक बड़ी और ताकतवर क्रौम आ रही है, ऐसी क्रौम जैसी न माज़ी में कभी थी, न मुस्तक़बिल में कभी होगी। 3 उसके आगे आगे आतिश सब कुछ भस्म करती है, उसके पीछे पीछे झुलसानेवाला शोला चलता है। जहाँ भी वह पहुँचे वहाँ मुल्क वीरानो-सुनसान हो जाता है, खाह वह बागे-अदन क्यों न होता। उससे कुछ नहीं बचता। 4 देखने में वह घोड़े जैसे लगते हैं, फ़ौजी घोड़ों की तरह सरपट दौड़ते हैं। 5 रथों का-सा शोर मचाते हुए वह उछल उछलकर पहाड़ की चोटियों पर से गुज़रते हैं। भूसे को भस्म करनेवाली आग की चटरख़ती आवाज़ सुनाई देती है जब वह जंग के लिए तैयार बड़ी बड़ी फ़ौज की तरह आगे बढ़ते हैं। 6 उन्हें देखकर क्रौम डर के मारे पेचो-ताब खाने लगती हैं, हर चेहरा माँद पड़ जाता है।

7 वह सूरमाओं की तरह हमला करते, फ़ौजियों की तरह दीवारों पर छल्लाँग लगाते हैं। सब सफ़ बाँधकर आगे बढ़ते हैं, एक भी मुक़र्ररा रास्ते से नहीं हटता। 8 वह एक दूसरे को धक्का नहीं देते बल्कि हर एक सीधा अपनी राह पर आगे बढ़ता है। यों सफ़बस्ता होकर वह दुश्मन की दिफ़ाई सफ़ों में से गुज़र जाते हैं 9 और शहर पर झपट्टा मारकर फ़सील पर छल्लाँग लगाते हैं, घरों की दीवारों पर चढ़कर चोर की तरह खिड़कियों में से घुस आते हैं।

10 उनके आगे आगे ज़मीन काँप उठती, आसमान थरथराता, सूरज और चाँद तारीक हो जाते और सितारों की चमक-दमक जाती रहती है।
 11 रब खुद अपनी फ़ौज के आगे आगे गरजता रहता है। उसका लश्कर निहायत बड़ा है, और जो फ़ौजी उसके हुक्म पर चलते हैं वह ताकतवर हैं। क्योंकि रब का दिन अज़ीम और निहायत होलनाक है, कौन उसे बरदाश्त कर सकता है?

तौबा करके वापस आओ

12 रब फ़रमाता है, “अब भी तुम तौबा कर सकते हो। पूरे दिल से मेरे पास वापस आओ! रोज़ा रखो, आहो-ज़ारी करो, मातम करो! 13 रंजिश का इज़हार करने के लिए अपने कपड़ों को मत फाड़ो बल्कि अपने दिल को।”

रब अपने खुदा के पास वापस आओ, क्योंकि वह मेहरबान और रहीम है। वह तहम्मूल और शफ़क़त से भरपूर है और जल्द ही सज़ा देने से पछताता है। 14 कौन जाने, शायद वह इस बार भी पछताकर अपने पीछे बरक़त छोड़ जाए और तुम नए सिरे से रब अपने खुदा को गल्ला और मै की नज़रें पेश कर सको।

15 कोहे-सिय्यून पर नरसिंगा फूँको, मुक़द्दस रोज़े का एलान करो, लोगों को ख़ास इजतिमा के लिए बुलाओ! 16 लोगों को जमा करो, फिर जमात को मख़सूसो-मुक़द्दस करो। न सिर्फ़ बुजुर्गों को बल्कि बच्चों को भी शीरख़ारों समेत इक़ठा करो। दूल्हा और दुलहन भी अपने अपने उरूसी कमरों से निकलकर आएँ। 17 लाज़िम है कि इमाम जो अल्लाह के खादिम हैं रब के घर के बरामदे और कुरबानगाह के दरमियान खड़े होकर आहो-ज़ारी करें। वह इकरार करें, “ऐ रब, अपनी क़ौम पर तरस की निगाह डाल! अपनी मौस्सी मिलकियत को लान-तान का निशाना बनने न दे। ऐसा न हो कि दीगर अक्वाम उसका मज़ाक़ उड़ाकर कहें, ‘उनका खुदा कहाँ है?’”

रब अपनी क़ौम पर रहम करता है

18 तब रब अपने मुल्क के लिए ग़ैरत खाकर अपनी क़ौम पर तरस खाएगा। 19 वह अपनी क़ौम से वादा करेगा, “मैं तुम्हें इतना अनाज़, अंगूर और ज़ैतून भेज देता हूँ कि तुम सेर हो जाओगे। आइंदा मैं तुम्हें दीगर अक्वाम के मज़ाक़ का निशाना नहीं बनाऊँगा। 20 मैं शिमाल से आए हुए दुश्मन को तुमसे दूर करके वीरानो-सुनसान मुल्क में भगा दूँगा। वहाँ उसके अगले दस्ते मशरिकी समुंदर में और उसके पिछले दस्ते मगरिबी समुंदर में डूब जाएंगे। तब उनकी गली सड़ी नाशों की बदबू चारों तरफ़ फैल जाएगी।” क्योंकि उस * ने अज़ीम काम किए हैं।

21 ऐ मुल्क, मत डरना बल्कि शादियाना बजाकर खुशी मना! क्योंकि रब ने अज़ीम काम किए हैं।

22 ऐ जंगली जानवरो, मत डरना, क्योंकि खुले मैदान की हरियाली दुबारा उगने लगी है। दरख़्त नए सिरे से फल ला रहे हैं, अंजीर और अंगूर की बड़ी फ़सल पक रही है।

23 ऐ सिय्यून के बाशिंदो, तुम भी शादियाना बजाकर रब अपने खुदा की खुशी मनाओ। क्योंकि वह अपनी रास्ती के मुताबिक़ तुम पर मेंह बरसाता, पहले की तरह खिज़ाँ और बहार की बारिशें बरख़्श देता है। 24 अनाज़ की कसरत से गाहने की जगहें भर जाएँगी, अंगूर और ज़ैतून की कसरत से हौज़ छलक उठेंगे।

25 रब फ़रमाता है, “मैं तुम्हें सब कुछ वापस कर दूँगा जो टिट्टियों की बड़ी फ़ौज ने खा लिया है। तुम्हें सब कुछ वापस मिल जाएगा जो बालिग़ टिट्टी, टिट्टी के बच्चे, जवान टिट्टी और टिट्टियों के लार्वा ने खा लिया जब मैंने उन्हें तुम्हारे खिलाफ़ भेजा था। 26 तुम दुबारा जी भरकर खा सकोगे। तब तुम रब अपने खुदा के नाम की सताइश करोगे जिसने तुम्हारी खातिर इतने बड़े मोज़िज़े किए हैं। आइंदा मेरी क़ौम कभी शर्मिदा न होगी। 27 तब तुम जान लोगे कि मैं इसराईल के दरमियान मौजूद हूँ, कि मैं, रब तुम्हारा खुदा हूँ और मेरे सिवा और कोई नहीं है। आइंदा मेरी क़ौम कभी भी शर्मसार नहीं होगी।

अल्लाह अपने रूह का वादा करता है

28 इसके बाद मैं अपने रूह को तमाम इनसानों पर उंडेल दूँगा। तुम्हारे बेटे-बेटियाँ नबुव्वत करेंगे, तुम्हारे बुजुर्ग़ खाब और तुम्हारे नौजवान रोयाँ देखेंगे। 29 उन दिनों में मैं अपने रूह को खादिमों और खादिमाओं पर भी उंडेल दूँगा। 30 मैं आसमान पर मोज़िज़े दिखाऊँगा और ज़मीन पर इलाही निशान जाहिर करूँगा, खून, आग और धुँएँ के बादल। 31 सूरज तारीक हो जाएगा, चाँद का रंग खून-सा हो जाएगा, और फिर रब का अज़ीम और जलाली दिन आएगा। 32 उस वक़्त जो भी रब का नाम लेगा नजात पाएगा। क्योंकि कोहे-सिय्यून पर और यरूशलम में नजात मिलेगी, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह रब ने फ़रमाया है। जिन बच्चे हुआँ को रब ने बुलाया है उन्हीं में नजात पाई जाएगी।

3

दुश्मन की सज़ा

1 उन दिनों में, हाँ उस वक़्त जब मैं यहदाह और यरूशलम को बहाल करूँगा 2 मैं तमाम दीगर अक्वाम को जमा करके वादीए-यहसफ़त * में ले जाऊँगा। वहाँ मैं अपनी क़ौम और मौस्सी मिलकियत की खातिर उनसे मुक़दमा लड़ूँगा। क्योंकि उन्होंने मेरी क़ौम को दीगर अक्वाम में मुंतशिर करके मेरे मुल्क को आपस में तकसीम कर लिया, 3 क़ुरा डालकर मेरी क़ौम को आपस में बाँट लिया है। उन्होंने इसराईली लड़कों को कसबियों के बदले में दे दिया और इसराईली लड़कियों को फ़रोख़्त किया ताकि मैं ख़रीदकर पी सकूँ।

* 2:20 ग़ालिबन ‘उस’ से मुराद खुदा है, लेकिन दुश्मन भी हो सकता है।

* 3:2 यहसफ़त का मतलब : ‘रब अदालत करता है।’

4 ऐ सूर, सैदा और तमाम फिलिस्ती इलाको, मेरा तुमसे क्या वास्ता? क्या तुम मुझसे इंतकाम लेना या मुझे सजा देना चाहते हो? जल्द ही मैं तेज़ी से तुम्हारे साथ वह कुछ करूँगा जो तुमने दूसरों के साथ किया है। 5 क्योंकि तुमने मेरी सोना-चाँदी और मेरे बेशक्रीमत खज़ाने लूटकर अपने मंदिरों में रख लिए हैं। 6 यहदाह और यरूशलम के बाशिंदों को तुमने यूनानियों के हाथ बेच डाला ताकि वह अपने वतन से दूर रहें।

7 लेकिन मैं उन्हें जगाकर उन मक़ामों से वापस लाऊँगा जहाँ तुमने उन्हें फ़रोख़्त कर दिया था। साथ साथ मैं तुम्हारे साथ वह कुछ करूँगा जो तुमने उनके साथ किया था। 8 रब फ़रमाता है कि मैं तुम्हारे बेटे-बेटियों को यहदाह के बाशिंदों के हाथ बेच डालूँगा, और वह उन्हें दूर-दराज़ क़ौम सबा के हवाले करके फ़रोख़्त करेंगे।

9 बुलंद आवाज़ से दीगर अक़वाम में ए़लान करो कि जंग की तैयारियाँ करो। अपने बेहतरीन फ़ौजियों को खड़ा करो। लड़ने के काबिल तमाम मर्द आकर हमला करें। 10 अपने हल की फालियों को कूट कूटकर तलवारें बना लो, काँट-छाँट के औज़ारों को नेज़ों में तबदील करो। कमज़ोर आदमी भी कहे, 'मैं सूरमा हूँ!' 11 ऐ तमाम अक़वाम, चारों तरफ़ से आकर वादी में जमा हो जाओ! जल्दी करो।"

ऐ रब, अपने सूरमाओं को वहाँ उतरने दे!

12 "दीगर अक़वाम हरकत में आकर वादीए-यह्सफ़त में आ जाएँ। क्योंकि वहाँ मैं तख़्त पर बैठकर इर्दगिर्द की तमाम अक़वाम का फ़ैसला करूँगा। 13 आओ, दरौती चलाओ, क्योंकि फ़सल पक गई है। आओ, अंगूर को कुचल दो, क्योंकि उसका रस निकालने का हौज़ भरा हुआ है, और तमाम बरतन रस से छलकने लगे हैं। क्योंकि उनकी बुराई बहुत है।"

14 फ़ैसले की वादी में हंगामा ही हंगामा है, क्योंकि फ़ैसले की वादी में रब का दिन करीब आ गया है। 15 सूरज और चाँद तारीक हो जाएंगे, सितारों की चमक-दमक जाती रहेगी। 16 रब कोहे-सिय्यून पर से दहाड़ेगा, यरूशलम से उस की गरजती आवाज़ यों सुनाई देगी कि आसमानो-ज़मीन लरज़ उठेंगे।

इसराईल का जलाली मुस्तक़बिल

लेकिन रब अपनी क़ौम की पनाहगाह और इसराईलियों का क़िला होगा। 17 "तब तुम जान लोगे कि मैं, रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ और अपने मुक़द्दस पहाड़ सिय्यून पर सुकूनत करता हूँ। यरूशलम मुक़द्दस होगा, और आइंदा परदेसी उसमें से नहीं गुज़रेंगे।

18 उस दिन हर चीज़ कसरत से दस्तयाब होगी। पहाड़ों से अंगूर का रस टपकेगा, पहाड़ियों से दूध की नदियाँ बहेगी, और यहदाह के तमाम नदी-नाले पानी से भरे रहेंगे। नीज़, रब के घर में से एक चश्मा फूट निकलेगा और बहता हुआ वादीए-शितीम की आबपाशी करेगा। 19 लेकिन मिसर तबाह और अदोम वीरानो-सुनसान हो जाएगा, क्योंकि उन्होंने यहदाह के बाशिंदों पर ज़ल्मो-तशद्दु किया, उनके अपने ही मुल्क में बेकुसूर लोगों को क़त्ल किया है। 20 लेकिन यहदाह हमेशा तक आबाद रहेगा, यरूशलम नसल-दर-नसल कायम रहेगा। 21 जो क़त्लो-ग़ारत उनके दरमियान हुई है उस की सज़ा मैं ज़रूर दूँगा।"

रब कोहे-सिय्यून पर सुकूनत करता है।!

आमूस

इसराईल के पड़ोसियों की अदालत

1 जेल में आमूस के पैगामात कलमबंद हैं। आमूस तकुअ शहर का गल्लाबान था। जलजले से दो साल पहले उसने इसराईल के बारे में रोया में यह कुछ देखा। उस वक्त उज्जियाह यहदाह का और यरुबियाम बिन युआस इसराईल का बादशाह था।

2 आमूस बोला, “रब कोहे-सियून पर से दहाड़ता है, उस की गरजती आवाज़ यरूशलम से सुनाई देती है। तब गल्लाबानों की चरागाहें सूख जाती हैं और करमिल की चोटी पर जंगल मुरझा जाता है।”

3 रब फरमाता है, “दमिश्क के बाशिंदों ने बार बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सज़ा दिए बगैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि उन्होंने जिलियाद को गाहने के आहनी औज़ार से खूब कूटकर गाह लिया है। 4 चुनौचे मैं हज़ाएल के घराने पर आग नाज़िल करूँगा, और बिन-हदद के महल नज़रे-आतिश हो जाएंगे। 5 मैं दमिश्क के कुंडे को तोड़कर बिक्रअत-आवन और बैत-अदन के हुक्मरानों को मौत के घाट उतारूँगा। अराम की कौम जिलावतन होकर कीर में जा बसेगी।” यह रब का फरमान है।

6 रब फरमाता है, “गज्ज़ा के बाशिंदों ने बार बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सज़ा दिए बगैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि उन्होंने पूरी आबादियों को जिलावतन करके अदोम के हवाले कर दिया है। 7 चुनौचे मैं गज्ज़ा की फ़सील पर आग नाज़िल करूँगा, और उसके महल नज़रे-आतिश हो जाएंगे। 8 अशदूद और अस्कलून के हुक्मरानों को मैं मार डालूँगा, अकरून पर भी हमला करूँगा। तब बचे-खुचे फिलिस्ती भी हलाक हो जाएंगे।” यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।

9 रब फरमाता है, “सूर के बाशिंदों ने बार बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सज़ा दिए बगैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि उन्होंने बरादराना अहद का लिहाज़ न किया बल्कि पूरी आबादियों को जिलावतन करके अदोम के हवाले कर दिया। 10 चुनौचे मैं सूर की फ़सील पर आग नाज़िल करूँगा, और उसके महल नज़रे-आतिश हो जाएंगे।”

11 रब फरमाता है, “अदोम के बाशिंदों ने बार बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सज़ा दिए बगैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि उन्होंने अपने इसराईली भाइयों को तलवार से मार मारकर उनका ताक़ूब किया और सख्ती से उन पर रहम करने से इनकार किया। उनका कहर भड़कता रहा, उनका तैश कभी ठंडा न हुआ। 12 चुनौचे मैं तेमान पर आग नाज़िल करूँगा, और बसरा के महल नज़रे-आतिश हो जाएंगे।”

13 रब फरमाता है, “अम्मोन के बाशिंदों ने बार बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सज़ा दिए बगैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि अपनी सरहदों को बढ़ाने के लिए उन्होंने जिलियाद की हामिला औरतों के पेट चीर डाले। 14 चुनौचे मैं रब्बा की फ़सील को आग लगा दूँगा, और उसके महल नज़रे-आतिश हो जाएंगे। जंग के उस दिन हर तरफ़ फ़ौजियों के नारे बुलंद हो जाएंगे, तूफ़ान के उस दिन उन पर सख़्त आँधी टूट पड़ेगी। 15 उनका बादशाह अपने अफ़सरों समेत कैदी बनकर जिलावतन हो जाएगा।” यह रब का फरमान है।

2

1 रब फरमाता है, “मोआब के बाशिंदों ने बार बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सज़ा दिए बगैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि उन्होंने अदोम के बादशाह की हड्डियों को जलाकर राख कर दिया है। 2 चुनौचे मैं मुल्के-मोआब पर आग नाज़िल करूँगा, और करियोट के महल नज़रे-आतिश हो जाएंगे। जंग का शोर-शराबा मचेगा, फ़ौजियों के नारे बुलंद हो जाएंगे, नरसिंगा फूँका जाएगा। तब मोआब हलाक हो जाएगा। 3 मैं उसके हुक्मरान को उसके तमाम अफ़सरों समेत हलाक कर दूँगा।” यह रब का फरमान है।

यहदाह की अदालत

4 रब फरमाता है, “यहदाह के बाशिंदों ने बार बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सज़ा दिए बगैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि उन्होंने रब की शरीअत को रद्द करके उसके अहकाम पर अमल नहीं किया। उनके झूठे देवता उन्हें ग़लत राह पर ले गए हैं, वह देवता जिनकी पैरवी उनके बापदादा भी करते रहे। 5 चुनौचे मैं यहदाह पर आग नाज़िल करूँगा, और यरूशलम के महल नज़रे-आतिश हो जाएंगे।”

इसराईल की अदालत

6 रब फरमाता है, “इसराईल के बाशिंदों ने बार बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सज़ा दिए बगैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि वह शरीफ़ लोगों को पैसे के लिए बेचते और ज़रूरतमंदों को फ़रोख़्त करते हैं ताकि एक जोड़ी जूता मिल जाए। 7 वह गरीबों के सर को ज़मीन पर कुचल देते, मुसीबतज़दों को इनसाफ़ मिलने से रोकते हैं। बाप और बेटा दोनों एक ही कसबी के पास जाकर मेरे नाम की बेहुरमती करते हैं। 8 जब कभी किसी कुरबानगाह के पास पूजा करने जाते हैं तो ऐसे कपड़ों पर आराम करते हैं जो कर्जदारों ने ज़मानत के तौर पर दिए थे। जब कभी अपने देवता के मंदिर में जाते तो ऐसे पैसों से मैं ख़रीदकर पीते हैं जो ज़रमाना के तौर पर ज़रूरतमंदों से मिल गए थे।

9 यह कैसी बात है? मैं ही ने अमोरियों को उनके आगे आगे नेस्त कर दिया था, हालाँकि वह देवदार के दरख़्तों जैसे लंबे और बलूत के दरख़्तों जैसे ताकतवर थे। मैं ही ने अमोरियों को जड़ों और फल समेत मिटा दिया था। 10 इससे पहले मैं ही तुम्हें मिसर से निकाल लाया, मैं

ही ने चालीस साल तक रेगिस्तान में तुम्हारी राहनुमाई करते करते तुम्हें अमोरियों के मुल्क तक पहुँचाया ताकि उस पर कब्जा करो। 11 मैं ही ने तुम्हारे बेटों में से नबी बरपा किए, और मैं ही ने तुम्हारे नौजवानों में से कुछ चुन लिए ताकि अपनी खिदमत के लिए मखसूस करूँ।” रब फरमाता है, “ऐ इसराईलियो, क्या ऐसा नहीं था? 12 लेकिन तुमने मेरे लिए मखसूस आदमियों को मैं पिलाई और नबियों को हुक्म दिया कि नबुव्वत मत करो।

13 अब मैं होने दूँगा कि तुम अनाज से खूब लदी हुई बैलगाड़ी की तरह झूलने लगोगे। 14 न तेज़रौ शख्स भागकर बचेगा, न ताकतवर आदमी कुछ कर पाएगा। न सूरमा अपनी जान बचाएगा, 15 न तीर चलानेवाला कायम रहेगा। कोई नहीं बचेगा, खाह पैदल दौड़नेवाला हो या घोड़े पर सवार। 16 उस दिन सबसे बहादुर सूरमा भी हथियार डालकर नंगी हालत में भाग जाएगा।” यह रब का फरमान है।

3

1 ऐ इसराईलियो, वह कलाम सुनो जो रब तुम्हारे खिलाफ़ फरमाता है, उस पूरी कौम के खिलाफ़ जिसे मैं मिसर से निकाल लाया था। 2 “दुनिया की तमाम कौमों में से मैंने सिर्फ़ तुम्हीं को जान लिया, इसलिए मैं तुम्हीं को तुम्हारे तमाम गुनाहों की सज़ा दूँगा।”

नबी की ज़िम्मादारी

3 क्या दो अफ़राद मिलकर सफ़र कर सकते हैं अगर वह मुत्तफ़िक़ न हों? 4 क्या शेरबबर दहाड़ता है अगर उसे शिकार न मिला हो? क्या जवान शेर अपनी माँद में गरजता है अगर उसने कुछ पकड़ा न हो? 5 क्या परिदा फंदे में फँस जाता है अगर फंदे को लगाया न गया हो? या फंदा कुछ फँसा सकता है अगर शिकार न हो? 6 जब शहर में नरसिंगा फूँका जाता है ताकि लोगों को किसी ख़तरे से आगाह करे तो क्या वह नहीं घबराते? जब आफ़त शहर पर आती है तो क्या रब की तरफ़ से नहीं होती?

7 यक़ीनन जो भी मनसूबा रब कादिरे-मुतलक बाँधे उस पर अमल करने से पहले वह उसे अपने खादिमों यानी नबियों पर जाहिर करता है।

8 शेरबबर दहाड़ उठा है तो कौन है जो डर न जाए? रब कादिरे-मुतलक बोल उठा है तो कौन है जो नबुव्वत न करे?

सामरिया को रिहाई नहीं मिलेगी

9 अशदूद और मिसर के महलों को इतला दो, “सामरिया के पहाड़ों पर जमा होकर उस पर नज़र डालो जो कुछ शहर में हो रहा है। कितनी बड़ी हलचल मच गई है, कितना जुल्म हो रहा है।” 10 रब फरमाता है, “यह लोग सहीह काम करना जानते ही नहीं बल्कि ज़ालिम और तबाहक़ून तरीक़ों से अपने महलों में ख़जाने जमा करते हैं।”

11 चुनौचे रब कादिरे-मुतलक फरमाता है, “दुश्मन मुल्क को घेरकर तेरी क़िलाबंदियों को ढा देगा और तेरे महलों को लूट लेगा।” 12 रब फरमाता है, “अगर चरवाहा अपनी भेड़ को शेरबबर के मुँह से निकालने की कोशिश करे तो शायद दो पिंडलियाँ या कान का टुकड़ा बच जाए। सामरिया के इसराईली भी इसी तरह ही बच जाएंगे, खाह वह इस वक़्त अपने शानदार सोफ़ों और खूबसूरत गदियों पर आराम क्यों न करें।”

13 रब कादिरे-मुतलक जो आसमानी लश्क़रों का खुदा है फरमाता है, “सुनो, याक़ूब के घराने के खिलाफ़ गवाही दो! 14 जिस दिन मैं इसराईल को उसके गुनाहों की सज़ा दूँगा उस दिन मैं बैतेल की कुरबानगाहों को मिसमार करूँगा। तब कुरबानगाह के कोनों पर लगे सींग टूटकर ज़मीन पर गिर जाएंगे। 15 मैं सर्दियों और गरमियों के मौसम के लिए तामीर किए गए घरों को ढा दूँगा। हाथीदाँत से आरास्ता इमारतें खाक में मिलाई जाएँगी, और जहाँ इस वक़्त मुतअद्दिद मकान नज़र आते हैं वहाँ कुछ नहीं रहेगा।” यह रब का फरमान है।

4

सामरिया की ज़ालिम औरतें

1 ऐ कोहे-सामरिया की मोटी-ताज़ी गाथो, * सुनो मेरी बात! तुम गरीबों पर जुल्म करती और ज़स्सरतमंदों को कुचल देती, तुम अपने शौहरों को कहती हो, “जाकर मैं ले आओ, हम और पीना चाहती हैं।” 2 रब ने अपनी कुदूसियत की क़सम खाकर फरमाया है, “वह दिन आनेवाला है जब दुश्मन तुम्हें काँटों के ज़रीए घसीटकर अपने साथ ले जाएगा। जो बचेगा उसे मछली के काँटे से पकड़ा जाएगा। 3 हर एक को फ़सील के रखनों में से सीधा निकलना पड़ेगा, हर एक को हरमून पहाड़ की तरफ़ भगा दिया जाएगा।” यह रब का फरमान है।

इसराईल को समझाया नहीं जा सकता

4 “चलो, बैतेल जाकर गुनाह करो, जिलजाल जाकर अपने गुनाहों में इज़ाफ़ा करो! सुबह के वक़्त अपनी कुरबानियों को चढ़ाओ, तीसरे दिन आमदनी का दसवाँ हिस्सा पेश करो। 5 ख़मीरी रोटी जलाकर अपनी शूक्रगुजारी का इज़हार करो, बुलंद आवाज़ से उन कुरबानियों का एलान करो जो तुम अपनी खुशी से अदा कर रहे हो। क्योंकि ऐसी हरकतें तुम इसराईलियों को बहुत पसंद हैं।” यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।

6 रब फरमाता है, “मैंने काल पड़ने दिया। हर शहर और आबादी में रोटी ख़त्म हुई। तो भी तुम मेरे पास वापस नहीं आए! 7 अभी फ़सल के पकने तक तीन माह बाक़ी थे कि मैंने तुम्हारे मुल्क में बारिशों को रोक दिया। मैंने होने दिया कि एक शहर में बारिश हुई जबकि साथवाला शहर

* 4:1 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : ‘बसन की गाथो।’ बसन एक पहाड़ी इलाका था जिसके मवेशी मशहूर थे।

उससे महसूस रहा, एक खेत बारिश से सेराब हुआ जबकि दूसरा झुलस गया। ⁸ जिस शहर में थोड़ा-बहुत पानी बाकी था वहाँ दीगर कई शहरों के बाशिंदे लड़खड़ाते हुए पहुँचे, लेकिन उनके लिए काफी नहीं था। तो भी तुम मेरे पास वापस न आए!” यह रब का फ़रमान है।

⁹ रब फ़रमाता है, “मैंने तुम्हारी फ़सलों को पतरोग और फफूँदी से तबाह कर दिया। जो भी तुम्हारे मुतअद्दिद अंगूर, अंजीर, जैतून और बाक़ी फल के बागों में उगता था उसे टिड़ियाँ खा गईं। तो भी तुम मेरे पास वापस न आए!”

¹⁰ रब फ़रमाता है, “मैंने तुम्हारे दरमियान ऐसी मोहलक बीमारी फैला दी जैसी क़दीम ज़माने में मिसर में फैल गई थी। तुम्हारे नौजवानों को मैंने तलवार से मार डाला, तुम्हारे घोड़े तुमसे छीन लिए गए। तुम्हारी लशकरगाहों में लाशों का तापफुन इतना फैल गया कि तुम बहुत तंग हुए। तो भी तुम मेरे पास वापस न आए।”

¹¹ रब फ़रमाता है, “मैंने तुम्हारे दरमियान ऐसी तबाही मचाई जैसी उस दिन हुई जब मैंने सदूम और अमूरा को तबाह किया।

तुम्हारी हालत बिलकुल उस लकड़ी की मानिंद थी जो आग से निकालकर बचाई तो गई लेकिन फिर भी काफी झुलस गई थी। तो भी तुम वापस न आए। ¹² चुनौचे ऐ इसराईल, अब मैं आइंदा भी तेरे साथ ऐसा ही करूँगा। और चूँकि मैं तेरे साथ ऐसा करूँगा, इसलिए अपने खुदा से मिलने के लिए तैयार हो जा, ऐ इसराईल!”

¹³ क्योंकि अल्लाह ही पहाड़ों को तश्कील देता, हवा को खलक करता और अपने खयालात को इनसान पर जाहिर करता है। वही तड़का और अंधेरा पैदा करता और वही ज़मीन की बुलंदियों पर चलता है। उसका नाम ‘रब, लशकरों का खुदा’ है।

5

मेरे पास लौट आओ!

¹ ऐ इसराईली क़ौम, मेरी बात सुनो, तुम्हारे बारे में मेरे नोहा पर ध्यान दो!

² “कुँवारी इसराईल गिर गई है और आइंदा कभी नहीं उठेगी। उसे उस की अपनी ज़मीन पर पटख दिया गया है, और कोई उसे दुबारा खड़ा नहीं करेगा।”

³ रब कादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, “इसराईल के जिस शहर से 1,000 मर्द लड़ने के लिए निकलेंगे उसके सिर्फ़ 100 अफ़राद वापस आएँगे। और जिस शहर से 100 निकलेंगे, उसके सिर्फ़ 10 मर्द वापस आएँगे।” ⁴ क्योंकि रब इसराईली क़ौम से फ़रमाता है, “मुझे तलाश करो तो तुम जीते रहोगे। ⁵ न बैतेल के तालिब हो, न जिलजाल के पास जाओ, और न बैर-सबा के लिए रवाना हो जाओ! क्योंकि जिलजाल के बाशिंदे यकीनन जिलावतन हो जाएंगे, और बैतेल नेस्तो-नाबूद हो जाएगा।”

⁶ रब को तलाश करो तो तुम जीते रहोगे। वरना वह आग की तरह यूसुफ़ के घराने में से गुज़रकर बैतेल को भस्म करेगा, और उसे कोई नहीं बुझा सकेगा।

हर तरफ़ नाइन्साफ़ी

⁷ उन पर अफ़सोस जो इनसाफ़ को उलटकर ज़हर में बदल देते, जो रास्ती को ज़मीन पर पटख देते हैं!

⁸ अल्लाह सात सहेलियों के झुमके और जौजे का खालिक है। अंधेरे को वह सुबह की रौशनी में और दिन को रात में बदल देता है। जो समुंदर के पानी को बुलाकर रूए-ज़मीन पर उंडेल देता है उसका नाम रब है! ⁹ अचानक ही वह ज़ोरावरों पर आफ़त लाता है, और उसके कहने पर क़िलाबंद शहर तबाह हो जाता है।

¹⁰ तुम उससे नफ़रत करते हो जो अदालत में इनसाफ़ करे, तुम्हें उससे घिन आती है जो सच बोले। ¹¹ तुम ग़रीबों को कुचलकर उनके अनाज पर हद से ज़्यादा टैक्स लगाते हो। इसलिए गो तुमने तराशे हुए पत्थरों से शानदार घर बनाए हैं तो भी उनमें नहीं रहोगे, गो तुमने अंगूर के फलते-फूलते बाग़ लगाए हैं तो भी उनकी मै से महज़ूज़ नहीं होगे। ¹² मैं तो तुम्हारे मुतअद्दिद ज़रायम और संगीन गुनाहों से ख़ूब वाकिफ़ हूँ। तुम रास्तबाज़ों पर जुल्म करते और रिश्तवत लेकर ग़रीबों को अदालत में इनसाफ़ से महसूस रखते हो। ¹³ इसलिए समझदार शख्स इस वक़्त ख़ामोश रहता है, वक़्त इतना ही बुरा है।

¹⁴ बुराई को तलाश न करो बल्कि अच्छाई को, तब ही जीते रहोगे। तब ही तुम्हारा दावा दुस्त होगा कि रब जो लशकरों का खुदा है हमारे साथ है। ¹⁵ बुराई से नफ़रत करो और जो कुछ अच्छा है उसे प्यार करो। अदालतों में इनसाफ़ कायम रखो, शायद रब जो लशकरों का खुदा है यूसुफ़ के बचे-खुचे हिस्से पर रहम करे।

¹⁶ चुनौचे रब जो लशकरों का खुदा और हमारा आका है फ़रमाता है, “तमाम चौकों में आहो-बुका होगी, तमाम गलियों में लोग ‘हाय, हाय’ करेंगे। खेतीबाड़ी करनेवालों को भी बुलाया जाएगा ताकि पेशावराना तौर पर सोग मनानेवालों के साथ गिर्याओ-ज़ारी करें। ¹⁷ अंगूर के तमाम बागों में वावैला मचेगा, क्योंकि मैं खुद तुम्हारे दरमियान से गुज़रूँगा।” यह रब का फ़रमान है।

रब का दिन हौलनाक है

¹⁸ उन पर अफ़सोस जो कहते हैं, “काश रब का दिन आ जाए!” तुम्हारे लिए रब के दिन का क्या फ़ायदा होगा? वह तो तुम्हारे लिए रौशनी का नहीं बल्कि तारीकी का बाइस होगा। ¹⁹ तब तुम उस आदमी की मानिंद होगे जो शेरबबर से भागकर रीछ से टकरा जाता है। जब घर में पनाह लेकर हाथ से दीवार का सहारा लेता है तो साँप उसे डस लेता है।

20 हाँ, रब का दिन तुम्हारे लिए रौशनी का नहीं बल्कि तारीकी का बाइस होगा। ऐसा अंधेरा होगा कि उम्मीद की किरण तक नज़र नहीं आएगी।

21 रब फ़रमाता है, “मुझे तुम्हारे मज़हबी तहवारों से नफ़रत है, मैं उन्हें हक़ीर जानता हूँ। तुम्हारे इजतिमाओं से मुझे घिन आती है। 22 जो भस्म होनेवाली और गल्ला की कुरबानियाँ तुम मुझे पेश करते हो उन्हें मैं पसंद नहीं करता, जो मोटे-ताज़े बैल तुम मुझे सलामती की कुरबानी के तौर पर चढ़ाते हो उन पर मैं नज़र भी नहीं डालना चाहता। 23 दफ़ा करो अपने गीतों का शोर! मैं तुम्हारे सितारों की मौसीक्री सुनना नहीं चाहता। 24 इन चीज़ों की बजाए इनसाफ़ का चश्मा फूट निकले और रास्ती की कभी बंद न होनेवाली नहर बह निकले।

25 ऐ इसराईल के घराने, जब तुम रेगिस्तान में घुमते-फिरते थे तो क्या तुमने उन 40 सालों के दौरान कभी मुझे ज़बह और गल्ला की कुरबानियाँ पेश की? 26 नहीं, उस वक़्त भी तुम अपने बादशाह सक्कूत देवता और अपने सितारे कीवान देवता को उठाए फिरते थे, गो तुमने अपने हाथों से यह बुत अपने लिए बना लिए थे। 27 इसलिए रब जिसका नाम लशकरो का खुदा है फ़रमाता है कि मैं तुम्हें जिलावतन करके दमिश्क के पार बसा दूँगा।”

6

राहनुमाओं की खुदएतमादी और ऐयाशी

1 कोहे-सियून के बेपरवा बाशिंदों पर अफ़सोस! कोहे-सामरिया के बाशिंदों पर अफ़सोस जो अपने आपको महफूज़ समझते हैं। हाँ, सबसे आला कौम के उन शरफ़ा पर अफ़सोस जिनके पास इसराईली कौम मदद के लिए आती है। 2 कलना शहर के पास जाकर उस पर गौर करो, वहाँ से अज़ीम शहर हमात के पास पहुँचो, फिर फिलिस्ती मुल्क के शहर जात के पास उतरो। क्या तुम इन ममालिक से बेहतर हो? क्या तुम्हारा इलाक़ा इनकी निसबत बड़ा है?

3 तुम अपने आपको आफ़त के दिन से दूर समझकर अपनी ज़ालिम हुकूमत दूसरों पर जताते हो। 4 तुम हाथीदाँत से आरास्ता पलंगों पर सोते और अपने शानदार सोफ़ों पर पाँव फैलाते हो। खाने के लिए तुम अपने रेवड़ों से अच्छे अच्छे भेड़ के बच्चे और मोटे-ताज़े बछड़े चुन लेते हो। 5 तुम अपने सितारों को बजा बजाकर दाऊद की तरह मुख्तलिफ़ किस्म के गीत तैयार करते हो। 6 मैं को तुम बड़े बड़े प्यालों से पी लेते, बेहतरीन किस्म के तेल अपने जिस्म पर मिलते हो। अफ़सोस, तुम परवा ही नहीं करते कि यूसुफ़ का घराना तबाह होनेवाला है।

7 इसलिए तुम उन लोगों में से होगे जो पहले कैदी बनकर जिलावतन हो जाएंगे। तब तुम्हारी रंगरलियाँ बंद हो जाएँगी, तुम्हारी आवारागर्द और काहिल ज़िंदगी ख़त्म हो जाएगी।

8 रब जो लशकरो का खुदा है फ़रमाता है, “मुझे याकूब का गुस्सा देखकर घिन आती है, उसके महलों से मैं मुतनफ़िफ़ हूँ। मैं शहर और जो कुछ उसमें है दुश्मन के हवाले कर दूँगा। मेरे नाम की कसम, यह मेरा, रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है।” 9 उस वक़्त अगर एक घर में दस आदमी रह जाएँ तो वह भी मर जाएंगे। 10 फिर जब कोई रिश्तेदार आए ताकि लाशों को उठाकर दफ़नाने जाए और देखे कि घर के किसी कोने में अभी कोई छुपकर बच गया है तो वह उससे पछेगा, “क्या आपके अलावा कोई और भी बचा है?” तो वह जवाब देगा, “नहीं, एक भी नहीं।” तब रिश्तेदार कहेगा, “चुप! रब के नाम का ज़िक्र मत करना, ऐसा न हो कि वह तुझे भी मौत के घाट उतारे।” *

11 क्योंकि रब ने हुक्म दिया है कि शानदार घरों को टुकड़े टुकड़े और छोटे घरों को रेज़ा रेज़ा किया जाए।

12 क्या घोड़े चटानों पर सरपट दौड़ते हैं? क्या इनसान बैल लेकर उन पर हल चलाता है? लेकिन तुम इतनी ही ग़ैरफ़ितरी हरकतें करते हो। क्योंकि तुम इनसाफ़ को ज़हर में और रास्ती का मीठा फल कड़वाहट में बदल देते हो। 13 तुम लो-दिबार की फ़तह पर शादियाना बजा बजाकर फ़ख़र करते हो, “हमने अपनी ही ताक़त से क़रनैम पर क़ब्ज़ा कर लिया!” 14 चुनौचे रब जो लशकरो का खुदा है फ़रमाता है, “ऐ इसराईली कौम, मैं तेरे ख़िलाफ़ एक कौम को तहरीक दूँगा जो तुझे शिमाल के शहर लबो-हमात से लेकर जुनूब की वादी अराबा तक अज़ियत पहुँचाएगी।”

7

टिड्डियों की रोया

1 रब कादिरे-मुतलक ने मुझे रोया दिखाई। मैंने देखा कि अल्लाह टिड्डियों के गोल पैदा कर रहा है। उस वक़्त पहली घास की कटाई हो चुकी थी, वह घास जो बादशाह के लिए मुक़र्रर थी। अब घास दुबारा उगने लगी थी। 2 तब टिड्डियाँ मुल्क की पूरी हरियाली पर टूट पड़ीं और सब कुछ खा गईं। मैं चिल्ला उठा, “ऐ रब कादिरे-मुतलक, मेहरबानी करके मुआफ़ कर, वरना याकूब किस तरह कायम रहेगा? वह पहले से इतनी छोटी कौम है।” 3 तब रब पछताया और फ़रमाया, “जो कुछ तूने देखा वह पेश नहीं आएगा।”

आग की रोया

4 फिर रब कादिरे-मुतलक ने मुझे एक और रोया दिखाई। मैंने देखा कि रब कादिरे-मुतलक आग की बारिश बुला रहा है ताकि मुल्क पर बरसे। आग ने समुंदर की गहराइयों को खुश्क कर दिया, फिर मुल्क में फैलने लगी। 5 तब मैं चिल्ला उठा, “ऐ रब कादिरे-मुतलक, मेहरबानी

* 6:10 ‘ऐसा न हो कि वह . . . घाट उतारे’ इज़ाफ़ा है ताकि मतलब साफ़ हो।

करके इससे बाज़ आ, वरना याकूब किस तरह कायम रहेगा? वह पहले से इतनी छोटी कौम है।”⁶ तब रब दुबारा पछताया और फ़रमाया, “यह भी पेश नहीं आएगा।”

साहल की रोया

⁷ इसके बाद रब ने मुझे एक तीसरी रोया दिखाई। मैंने देखा कि कादिरे-मुतलक एक ऐसी दीवार पर खड़ा है जो साहल से नाप नापकर तामीर की गई है। उसके हाथ में साहल था।⁸ रब ने मुझसे पूछा, “ऐ आमूस, तुझे क्या नज़र आता है?” मैंने जवाब दिया, “साहल।” तब रब ने फ़रमाया, “मैं अपनी कौम इसराईल के दरमियान साहल लगानेवाला हूँ। आइंदा मैं उनके गुनाहों को नज़रंदाज़ नहीं करूँगा बल्कि नाप नापकर उनको सज़ा दूँगा।⁹ उन बुलंदियों की कुरबानगाहें तबाह हो जाएँगी जहाँ इसहाक की औलाद अपनी कुरबानियाँ पेश करती है। इसराईल के मक़दिस खाक में मिलाए जाएंगे, और मैं अपनी तलवार को पकड़कर यरूबियाम के खानदान पर टूट पड़ूँगा।”

आमूस को इसराईल से निकलने का हुक्म दिया जाता है

¹⁰ यह सुनकर बैतेल के इमाम अमसियाह ने इसराईल के बादशाह यरूबियाम को इत्तला दी, “आमूस इसराईल के दरमियान ही आपके खिलाफ़ साज़िशें कर रहा है! मुल्क उसके पैग़ाम बरदाश्त नहीं कर सकता,¹¹ क्योंकि वह कहता है, ‘यरूबियाम तलवार की ज़द में आकर मर जाएगा, और इसराईली कौम यकीनन कैदी बनकर ज़िलावतन हो जाएगी’।”

¹² अमसियाह ने आमूस से कहा, “ऐ रोया देखनेवाले, यहाँ से निकल जा! मुल्के-यहदाह में भागकर वहीं रोज़ी कमा, वहीं नबुव्वत कर।¹³ आइंदा बैतेल में नबुव्वत मत करना, क्योंकि यह बादशाह का मक़दिस और बादशाही की मरकज़ी इबादतगाह है।”

¹⁴ आमूस ने जवाब दिया, “पेशा के लिहाज़ से न मैं नबी हूँ, न किसी नबी का शागिर्द बल्कि गल्लाबान और अंजीर-तूत का बाग़बान।¹⁵ तो भी रब ने मुझे भेड़-बकरियों की गल्लाबानी करने से हटाकर हुक्म दिया कि मेरी कौम इसराईल के पास जा और नबुव्वत करके उसे मेरा कलाम पेश कर।¹⁶ अब रब का कलाम सुन! तू कहता है, ‘इसराईल के खिलाफ़ नबुव्वत मत करना, इसहाक की कौम के खिलाफ़ बात मत करना।’¹⁷ जवाब में रब फ़रमाता है, ‘तेरी बीवी शहर में कसबी बनेगी, तेरे बेटे-बेटियाँ सब तलवार से कत्ल हो जाएंगे, तेरी ज़मीन नापकर दूसरों में तकसीम की जाएगी, और तू खुद एक नापाक मुल्क में वफ़ात पाएगा। यकीनन इसराईली कौम कैदी बनकर ज़िलावतन हो जाएगी’।”

8

पके फल से भरी टोकरी

¹ एक बार फिर रब कादिरे-मुतलक ने मुझे रोया दिखाई। मैंने पके हुए फल से भरी हुई टोकरी देखी।² रब ने पूछा, “ऐ आमूस, तुझे क्या नज़र आता है?” मैंने जवाब दिया, “पके हुए फल से भरी हुई टोकरी।” तब रब ने मुझसे फ़रमाया, “मेरी कौम का अंजाम पक गया है। अब से मैं उन्हें सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ूँगा।³ रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि उस दिन महल में गीत सुनाई नहीं देंगे बल्कि आहो-ज़ारी। चारों तरफ़ नाशें नज़र आएँगी, क्योंकि दुश्मन उन्हें हर जगह फेंकेगा। खामोश!”

अवाम का इस्तेहसाल

⁴ ऐ ग़रीबों को कुचलनेवालो, ऐ ज़रूरतमंदों को तबाह करनेवालो, सुनो! ⁵⁻⁶ तुम कहते हो, “नए चाँद की ईद कब गुज़र जाएगी, सबत का दिन कब ख़त्म है ताकि हम अनाज के गोदाम खोलकर गल्ला बेच सकें? तब हम पैमाइश के बरतन छोटे और तराजू के बाट हलके बनाएँगे, साथ साथ सौदे का भाव बढ़ाएँगे। हम फ़रोख़्त करते वक़्त अनाज के साथ उसका भूसा भी मिलाएँगे।” अपने नाजायज़ तरीकों से तुम थोड़े पैसों में बल्कि एक जोड़ी जूतों के एवज़ ग़रीबों को ख़रीदते हो।

⁷ रब ने याकूब के फ़रखर की कसम खाकर वादा किया है, “जो कुछ उनसे सरज़द हुआ है उसे मैं कभी नहीं भूलूँगा।⁸ उन्हीं की वजह से ज़मीन लरज़ उठेगी और उसके तमाम बाशिंदे मातम करेंगे। जिस तरह मिसर में दरियाए-नील बरसात के मौसम में सैलाबी सूत इख़्तियार कर लेता है उसी तरह पूरी ज़मीन उठेगी। वह नील की तरह जोश में आएगी, फिर दुबारा उतर जाएगी।”

⁹ रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है, “उस दिन मैं होने दूँगा कि सूरज दोपहर के वक़्त गुरुब हो जाए। दिन उरूज पर ही होगा तो ज़मीन पर अधेरा छा जाएगा।¹⁰ मैं तुम्हारे तहवारों को मातम में और तुम्हारे गीतों को आहो-बुका में बदल दूँगा। मैं सबको टाट के मातमी लिबास पहनाकर हर एक का सर मुँडवाऊँगा। लोग यों मातम करेंगे जैसा उनका वाहिद बेटा कूच कर गया हो। अंजाम का वह दिन कितना तलख़ होगा।”

अल्लाह आइंदा जवाब नहीं देगा

¹¹ कादिरे-मुतलक फ़रमाता है, “ऐसे दिन आनेवाले हैं जब मैं मुल्क में काल भेजूँगा। लेकिन लोग न रोटी और न पानी से बल्कि अल्लाह का कलाम सुनने से महरूम रहेंगे।¹² लोग लड़खड़ाते हुए एक समुंदर से दूसरे तक और शिमाल से मशरिक तक फिरेंगे ताकि रब का कलाम मिल जाए, लेकिन बेसुद।

¹³ उस दिन ख़ूबसूरत कुँवारियाँ और जवान मर्द प्यास के मोरे बेहोश हो जाएंगे।¹⁴ जो इस वक़्त सामरिया के मकरूह बुत की कसम खाते और कहते हैं, ‘ऐ दान, तेरे देवता की हयात की कसम’ या ‘ऐ बैर-सबा, तेरे देवता की कसम!’ वह उस वक़्त गिर जाएंगे और दुबारा कभी नहीं उठेंगे।”

9

आखिरी रोया : इसराईल की तबाही

1 मैंने रब को कुरबानगाह के पास खड़ा देखा। उसने फ़रमाया, “मक़दिस के सतूनों के बालाई हिस्सों को इतने ज़ोर से मार कि दहलीज़ें लरज़ उठें और उनके टुकड़े हाज़िरिन के सरो पर गिर जाएँ। उनमें से जितने ज़िंदा रहें उन्हें मैं तलवार से मार डालूँगा। एक भी भाग जाने में कामयाब नहीं होगा, एक भी नहीं बचेगा। 2 खाह वह ज़मीन में खोद खोदकर पाताल तक क्यों न पहुँचें तो भी मेरा हाथ उन्हें पकड़कर वहाँ से वापस लाएगा। और खाह वह आसमान तक क्यों न चढ़ जाएँ तो भी मैं उन्हें वहाँ से उतारूँगा। 3 खाह वह करमिल की चोटी पर क्यों न छुप जाएँ तो भी मैं उनका खोज लगाकर उन्हें छीन लूँगा। गो वह समुंदर की तह तक उतरकर मुझसे पोशीदा होने की कोशिश क्यों न करें तो भी बेफ़ायदा होगा, क्योंकि मैं समुंदरी साँप को उन्हें डसने का हुक्म दूँगा। 4 अगर उनके दुश्मन उन्हें भगाकर जिलावतन करें तो मैं तलवार को उन्हें क़त्ल करने का हुक्म दूँगा। मैं ध्यान से उनको तकता रहूँगा, लेकिन बरक़त देने के लिए नहीं बल्कि नुक़सान पहुँचाने के लिए।”

5 कादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज है। जब वह ज़मीन को छू देता है तो वह लरज़ उठती और उसके तमाम बाशिंदे मातम करने लगते हैं। तब जिस तरह मिसर में दरियाए-नील बरसात के मौसम में सैलाब की सूरत इख़्तियार कर लेता है उसी तरह पूरी ज़मीन उठती, फिर दुबारा उतर जाती है।

6 वह आसमान पर अपना बालाखाना तामीर करता और ज़मीन पर अपने तहख़ाने की बुनियाद डालता है। वह समुंदर का पानी बुलाकर रूए-ज़मीन पर उड़ेल देता है। उसी का नाम रब है!

तुम दूसरों से बेहतर नहीं

7 रब फ़रमाता है, “ऐ इसराईलियो, यह मत समझना कि मेरे नज़दीक तुम एथोपिया के बाशिंदों से बेहतर हो। बेशक मैं इसराईल को मिसर से निकाल लाया, लेकिन बिलकुल इसी तरह मैं फिलिस्तियों को क़ेते * से और अरामियों को क़ीर से निकाल लाया। 8 मैं, रब कादिरे-मुतलक़ ध्यान से इसराईल की गुनाहआल्दा बादशाही पर गौर कर रहा हूँ। यकीनन मैं उसे रूए-ज़मीन पर से मिटा डालूँगा।”

ताहम रब फ़रमाता है, “मैं याक़ूब के घराने को सरासर तबाह नहीं करूँगा। 9 मेरे हुक्म पर इसराईली क़ौम को तमाम अक़वाम के दरमियान ही यों हिलाया जाएगा जिस तरह अनाज को छलनी में हिला हिलाकर पाक-साफ़ किया जाता है। आखिर में एक भी पत्थर अनाज में बाक़ी नहीं रहेगा। 10 मेरी क़ौम के तमाम गुनाहगार तलवार की ज़द में आकर मर जाएंगे, गो वह इस वक़्त कहते हैं कि न हम पर आफ़त आएगी, न हम उस की ज़द में आएँगे।

इसराईल के लिए नई उम्मीद

11 उस दिन मैं दाऊद के गिरे हुए घर को नए सिरे से खड़ा करूँगा। मैं उसके रखनों को बंद और उसके खंडरात को बहाल करूँगा। मैं सब कुछ यों तामीर करूँगा जिस तरह क़दीम ज़माने में था। 12 तब इसराईली अदोम के बचे-खुचे हिस्से और उन तमाम क़ौमों पर क़ब्ज़ा करेंगे जिन पर मेरे नाम का ठप्पा लगा है।” यह रब का फ़रमान है, और वह यह करेगा भी।

13 रब फ़रमाता है, “ऐसे दिन आनेवाले हैं जब फ़सलें बहुत ही ज़्यादा होंगी। फ़सल की कटाई के लिए इतना वक़्त दरकार होगा कि आखिरकार हल चलानेवाला कटाई करनेवालों के पीछे पीछे खेत को अगली फ़सल के लिए तैयार करता जाएगा। अंगूर की फ़सल भी ऐसी ही होगी। अंगूर की कसरत के बाइस उनसे रस निकालने के लिए इतना वक़्त लगेगा कि आखिरकार बीज बोनेवाला साथ साथ बीज बोने का काम शुरू करेगा। कसरत के बाइस नई मैं पहाड़ों से टपकेगी और तमाम पहाड़ियों से बहेगी।

14 उस वक़्त मैं अपनी क़ौम इसराईल को बहाल करूँगा। तब वह तबाहशुदा शहरों को नए सिरे से तामीर करके उनमें आबाद हो जाएंगे। वह अंगूर के बाग़ लगाकर उनकी मैं पिँगे, दीगर फलों के बाग़ लगाकर उनका फल खाँगे। 15 मैं उन्हें पनीरी की तरह उनके अपने मुल्क में लगा दूँगा। तब वह आइंदा उस मुल्क से कभी जड़ से नहीं उखाड़े जाएंगे जो मैंने उन्हें अता किया है।” यह रब तेरे ख़ुदा का फ़रमान है।

* 9:7 क़ेते : इब्रानी कफ़तूर।

अबदियाह

रब अदोम की अदालत करेगा

¹ ज़ैल में वह रोया कलमबंद है जो अबदियाह ने देखी। उसमें वह कुछ बयान किया गया है जो रब कादिरे-मुतलक ने अदोम के बारे में फरमाया।

हमने रब की तरफ़ से पैगाम सुना है, एक कासिद को अक़वाम के पास भेजा गया है जो उन्हें हुक्म दे, “उठो! आओ, हम अदोम से लड़ने के लिए तैयार हो जाएँ।”

² रब अदोम से फरमाता है, “मैं तुझे कौमों में छोटा बना दूँगा, और तुझे बहुत हकीर जाना जाएगा। ³ तेरे दिल के गुस्से ने तुझे फरेब दिया है। चूँकि तू चटानों की दराड़ों में और बुलंदियों पर रहता है इसलिए तू दिल में सोचता है, ‘कौन मुझे यहाँ से उतार देगा?’” ⁴ लेकिन रब फरमाता है, “खाह तू अपना घोंसला उकाब की तरह बुलंदी पर क्यों न बनाए बल्कि उसे सितारों के दरमियान लगा ले, तो भी मैं तुझे वहाँ से उतारकर खाक में मिला दूँगा।

⁵ अगर डाकू रात के वक़्त तुझे लूट लेते तो वह सिर्फ़ उतना ही छीन लेते जितना उठाकर ले जा सकते हैं। अगर तू अंगूर का बाग़ होता और मज़दूर फसल चुनने के लिए आते तो थोड़ा-बहुत उनके पीछे रह जाता। लेकिन तेरा अंजाम इससे कहीं ज़्यादा बुरा होगा। ⁶ दुश्मन एसौ * के कोने कोने का खोज लगा लगाकर उसके तमाम पोशीदा ख़जाने लूट लेगा। ⁷ तेरे तमाम इतहादी तुझे मुल्क की सरहद तक भगा देंगे, तेरे दोस्त तुझे फरेब देकर तुझ पर गालिब आएँगे। बल्कि तेरी रोटी खानेवाले ही तेरे लिए फंदा लगाएँगे, और तुझे पता नहीं चलेगा।” ⁸ रब फरमाता है, “उस दिन मैं अदोम के दानिशमंदों को तबाह कर दूँगा। तब एसौ के पहाड़ी इलाके में समझ और अक्ल का नामो-निशान नहीं रहेगा। ⁹ ऐ तेमान, तेरे सूरे भी सख़्त दहशत खाएँगे, क्योंकि उस वक़्त एसौ के पहाड़ी इलाके में कत्लो-ग़ारत आम होगी, कोई नहीं बचेगा।

¹⁰ तूने अपने भाई याक़ूब † पर जुल्मो-तशद्दुद किया, इसलिए तेरी ख़ूब स्सवाई हो जाएगी, तुझे यों मिटाया जाएगा कि आइंदा तेरा नामो-निशान तक नहीं रहेगा। ¹¹ जब अजनबी फ़ौजी यरूशलम के दरवाज़ों में घुस आए तो तू फ़ासले पर खड़ा होकर उन जैसा था। जब उन्होंने तमाम मालो-दौलत छीन लिया, जब उन्होंने कुरा डालकर आपस में यरूशलम को बाँट लिया तो तूने उनका ही रवैया अपना लिया। ¹² तुझे तेरे भाई की बदकिस्मती पर खुशी नहीं मनानी चाहिए थी। मुनासिब नहीं था कि तू यहदाह के बाशिंदों की तबाही पर शादियाना बजाता। उनकी मुसीबत देखकर तुझे शेखी नहीं मारनी चाहिए थी। ¹³ यह ठीक नहीं था कि तू उस दिन तबाहशुदा शहर में घुस आया ताकि यरूशलम की मुसीबत से लुफ़्त उठाए और उनका बचा-खुचा माल लूट ले। ¹⁴ कितनी बुरी बात थी कि तू शहर से निकलनेवाले रास्तों पर ताक में बैठ गया ताकि वहाँ से भागनेवालों को तबाह करे और बचे हुए को दुश्मन के हवाले करे। ¹⁵ क्योंकि रब का दिन तमाम अक़वाम के लिए करीब आ गया है। जो सुलूक तूने दूसरों के साथ किया वही सुलूक तेरे साथ किया जाएगा। तेरा ग़लत काम तेरे अपने ही सर पर आएगा।

अल्लाह की कौम नजात पाएगी

¹⁶ पहले तुम्हें मेरे मुक़द्दस पहाड़ पर मेरे ग़ज़ब का प्याला पीना पड़ा, लेकिन अब तमाम दीगर अक़वाम उसे पीती रहेंगी। बल्कि वह उसे पी पीकर खाली करेंगी, उन्हें उसके आखिरी क़तरे भी चाटने पड़ेंगे। फिर उनका नामो-निशान नहीं रहेगा, ऐसा लगेगा कि वह कभी थी नहीं।

¹⁷ लेकिन कोहे-सिय्यून पर नजात होगी, यरूशलम मुक़द्दस होगा।

तब याक़ूब का घराना ‡ दुबारा अपनी मौरूसी ज़मीन पर कब्ज़ा करेगा, ¹⁸ और इसराईली कौम § भड़कती आग बनकर अदोम को भूसे की तरह भस्म करेगी। अदोम का एक शख्स भी नहीं बचेगा। क्योंकि रब ने यह फरमाया है।

¹⁹ तब नजब यानी जुनूब के बाशिंदे अदोम के पहाड़ी इलाके पर कब्ज़ा करेंगे, और मगरिब के नशेबी पहाड़ी इलाके के बाशिंदे फिलिस्तियों का इलाका अपना लेंगे। वह इफ़राईम और सामरिया के इलाकों पर भी कब्ज़ा करेंगे। जिलियाद का इलाका बिनयमीन के कबीले की मिलकियत बनेगा। ²⁰ इसराईल के जिलावतनों को कनानियों का मुल्क शिमाली शहर सारपत तक हासिल होगा जबकि यरूशलम के जो बाशिंदे जिलावतन होकर सिफ़ाराद में जा बसे वह जुनूबी इलाके नजब पर कब्ज़ा करेंगे। ²¹ नजात देनेवाले कोहे-सिय्यून पर आकर अदोम के पहाड़ी इलाके पर हुक्मत करेंगे। तब रब ही बादशाह होगा!”

* 1:6 एसौ से मुराद अदोम है। † 1:10 याक़ूब से मुराद इसराईल है। ‡ 1:17 याक़ूब का घराना से मुराद इसराईल है।

§ 1:18 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : याक़ूब और यूसुफ़ के घराने।

यूस

यूस अल्लाह से फ़रार हो जाता है

1 रब यूस बिन अमिली से हमकलाम हुआ, 2 “बड़े शहर नीनवा जाकर उस पर मेरी अदालत का एलान कर, क्योंकि उनकी बुराई मेरे हुज़ूर तक पहुँच गई है।”

3 यूस रवाना हुआ, लेकिन मशरिकी शहर नीनवा के लिए नहीं बल्कि मगरिबी शहर तरसीस के लिए। रब के हुज़ूर से फ़रार होने के लिए वह याफ़ा शहर पहुँच गया जहाँ एक बहरी जहाज़ तरसीस को जानेवाला था। सफ़र का किराया अदा करके यूस जहाज़ में बैठ गया ताकि रब के हुज़ूर से भाग निकले।

4 लेकिन रब ने समुंदर पर ज़बरदस्त आँधी भेजी। तूफ़ान इतना शदीद था कि जहाज़ के टुकड़े टुकड़े होने का खतरा था। 5 मल्लाह सहम गए, और हर एक चीखता-चिल्लाता अपने देवता से इल्तिजा करने लगा। जहाज़ को हलका करने के लिए उन्होंने सामान को समुंदर में फेंक दिया।

लेकिन यूस जहाज़ के निचले हिस्से में लेट गया था। अब वह गहरी नींद सो रहा था। 6 फिर कप्तान उसके पास आया और कहने लगा, “आप किस तरह सो सकते हैं? उठें, अपने देवता से इल्तिजा करें! शायद वह हम पर ध्यान दे और हम हलाक न हों।”

7 मल्लाह आपस में कहने लगे, “आओ, हम कुरा डालकर मालूम करें कि कौन हमारी मुसीबत का बाइस है।” उन्होंने कुरा डाला तो यूस का नाम निकला। 8 तब उन्होंने उससे पूछा, “हमें बताएँ कि यह आफ़त किसके कुसूर के बाइस हम पर नाज़िल हुई है? आप क्या करते हैं, कहाँ से आए हैं, किस मुल्क और किस कौम से हैं?”

9 यूस ने जवाब दिया, “मैं इब्रानी हूँ, और रब का परस्तार हूँ जो आसमान का ख़ुदा है। समुंदर और ख़ुशकी दोनों उसी ने बनाए हैं।” 10 यूस ने उन्हें यह भी बताया कि मैं रब के हुज़ूर से फ़रार हो रहा हूँ। यह सब कुछ सुनकर दीगर मुसाफ़िरों पर शदीद दहशत तारी हुई। उन्होंने कहा, “यह आपने क्या किया है?” 11 इतने में समुंदर मज़ीद मुतलातिम होता जा रहा था। चुनौचे उन्होंने पूछा, “अब हम आपके साथ क्या करें ताकि समुंदर थम जाए और हमारा पीछा छोड़ दे?” 12 यूस ने जवाब दिया, “मुझे उठाकर समुंदर में फेंक दें तो वह थम जाएगा। क्योंकि मैं जानता हूँ कि यह बड़ा तूफ़ान मेरी ही वजह से आप पर टूट पड़ा है।”

13 पहले मल्लाहों ने उसका मशवरा न माना बल्कि चप्पू मार मारकर साहिल पर पहुँचने की सिर-तोड़ कोशिश करते रहे। लेकिन बेफ़ायदा, समुंदर पहले की निसबत कहीं ज़्यादा मुतलातिम हो गया। 14 तब वह बुलंद आवाज़ से रब से इल्तिजा करने लगे, “ऐ रब, ऐसा न हो कि हम इस आदमी की ज़िंदगी के सबब से हलाक हो जाएँ। और जब हम उसे समुंदर में फेंकेगे तो हमें बेगुनाह आदमी की जान लेने के ज़िम्मादार न ठहरा। क्योंकि जो कुछ हो रहा है वह तेरी ही मरज़ी से हो रहा है।” 15 यह कहकर उन्होंने यूस को उठाकर समुंदर में फेंक दिया। पानी में गिरते ही समुंदर ठाठें मारने से बाज़ आकर थम गया। 16 यह देखकर मुसाफ़िरों पर सख़्त दहशत छा गई, और उन्होंने रब को ज़बह की कुरबानी पेश की और मन्नतें मानीं।

17 लेकिन रब ने एक बड़ी मछली को यूस के पास भेजा जिसने उसे निगल लिया। यूस तीन दिन और तीन रात मछली के पेट में रहा।

2

यूस की दुआ

1 मछली के पेट में यूस ने रब अपने ख़ुदा से ज़ैल की दुआ की,

2 “मैंने बड़ी मुसीबत में आकर रब से इल्तिजा की, और उसने मुझे जवाब दिया। मैंने पाताल की गहराइयों से चीखकर फ़रियाद की तो तूने मेरी सुनी।

3 तूने मुझे गहरे पानी बल्कि समुंदर के बीच में ही फेंक दिया। पानी के जोरदार बहाव ने मुझे घेर लिया, तेरी तमाम लहरें और मौजें मुझ पर से गुज़र गईं।

4 तब मैं बोला, ‘मुझे तेरे हुज़ूर से खारिज कर दिया गया है, लेकिन मैं तेरे मुक़द्दस घर की तरफ़ तकता रहूँगा।’

5 पानी मेरे गले तक पहुँच गया, समुंदर की गहराइयों ने मुझे छुपा लिया। मेरे सर से समुंदरी पौदे लिपट गए।

6 पानी में उतरते उतरते मैं पहाड़ों की बुनियादों तक पहुँच गया। मैं ज़मीन में धँसकर एक ऐसे मुल्क में आ गया जिसके दरवाज़े हमेशा के लिए मेरे पीछे बंद हो गए। लेकिन ऐ रब, मेरे ख़ुदा, तू ही मेरी जान को ग़टे से निकाल लाया!

7 जब मेरी जान निकलने लगी तो तू, ऐ रब मुझे याद आया, और मेरी दुआ तेरे मुक़द्दस घर में तेरे हुज़ूर पहुँची।

8 जो बुतों की पूजा करते हैं उन्होंने अल्लाह से वफ़ादार रहने का वादा तोड़ दिया है।

9 लेकिन मैं शुक्रगुज़ारी के गीत गाते हुए तुझे कुरबानी पेश करूँगा। जो मन्नत मैंने मानी उसे पूरा करूँगा। रब ही नज़ात देता है।”

10 तब रब ने मछली को हुक्म दिया कि वह यूनुस को खुशकी पर उगल दे।

3

यूनुस नीनवा में

1 रब एक बार फिर यूनुस से हमकलाम हुआ, 2 “बड़े शहर नीनवा जाकर उसे वह पैगाम सुना दे जो मैं तुझे दूँगा।”

3 इस मरतबा यूनुस रब की सुनकर नीनवा के लिए रवाना हुआ। रब के नज़दीक नीनवा अहम शहर था। उसमें से गुज़रने के लिए तीन दिन दूरकार थे। 4 पहले दिन यूनुस शहर में दाखिल हुआ और चलते चलते लोगों को पैगाम सुनाने लगा, “ऐन 40 दिन के बाद नीनवा तबाह हो जाएगा।”

5 यह सुनकर नीनवा के बाशिंदे अल्लाह पर ईमान लाए। उन्होंने रोज़े का एलान किया, और छोटे से लेकर बड़े तक सब टाट ओढ़कर मातम करने लगे।

6 जब यूनुस का पैगाम नीनवा के बादशाह तक पहुँचा तो उसने तख्त पर से उतरकर अपने शाही कपड़ों को उतार दिया और टाट ओढ़कर खाक में बैठ गया। 7 उसने शहर में एलान किया, “बादशाह और उसके शुरफ़ा का फ़रमान सुनो! किसी को भी खाने या पीने की इजाज़त नहीं। गाय-बैल और भेड़-बकरियों समेत तमाम जानवर भी इसमें शामिल हैं। न उन्हें चरने दो, न पानी पीने दो। 8 लाज़िम है कि सब लोग जानवरों समेत टाट ओढ़ लें। हर एक पूरे जोर से अल्लाह से इल्तिजा करे, हर एक अपनी बुरी राहों और अपने जुल्मो-तशद्दुद से बाज़ आए। 9 क्या मालूम, शायद अल्लाह पछताए। शायद उसका शदीद ग़ज़ब टल जाए और हम हलाक न हों।”

10 जब अल्लाह ने उनका यह रवैया देखा, कि वह वाकई अपनी बुरी राहों से बाज़ आए तो वह पछताया और उन पर वह आफ़त न लाया जिसका एलान उसने किया था।

4

यूनुस अल्लाह की मेहरबानी देखकर नाराज़ हो जाता है

1 यह बात यूनुस को निहायत बुरी लगी, और वह गुस्से हुआ। 2 उसने रब से दुआ की, “ऐ रब, क्या यह वही बात नहीं जो मैंने उस वक़्त की जब अभी अपने वतन में था? इसी लिए मैं इतनी तेज़ी से भागकर तरसीस के लिए रवाना हुआ था। मैं जानता था कि तू मेहरबान और रहीम खुदा है। तू तहम्मुल और शफ़क़त से भरपूर है और जल्द ही सज़ा देने से पछताता है। 3 ऐ रब, अब मुझे जान से मार दे! जीने से बेहतर यही है कि मैं कूच कर जाऊँ।”

4 लेकिन रब ने जवाब दिया, “क्या तू गुस्से होने में हक़-बजानिब है?”

5 यूनुस शहर से निकलकर उसके मशरिक में स्क गया। वहाँ वह अपने लिए झोंपड़ी बनाकर उसके साय में बैठ गया। क्योंकि वह देखना चाहता था कि शहर के साथ क्या कुछ हो जाएगा।

6 तब रब खुदा ने एक बेल को फूटने दिया जो बढ़ते बढ़ते यूनुस के ऊपर फैल गई ताकि साया देकर उस की नाराज़ी दूर करे। यह देखकर यूनुस बहुत खुश हुआ। 7 लेकिन अगले दिन जब पौ फटने लगी तो अल्लाह ने एक कीड़ा भेजा जिसने बेल पर हमला किया। बेल जल्द ही मुरझा गई।

8 जब सूरज तलू हुआ तो अल्लाह ने मशरिक से झूलसती लू भेजी। धूप इतनी शदीद थी कि यूनुस ग़श खाने लगा। आखिरकार वह मरना ही चाहता था। वह बोला, “जीने से बेहतर यही है कि मैं कूच कर जाऊँ।”

9 तब अल्लाह ने उससे पूछा, “क्या तू बेल के सबब से गुस्से होने में हक़-बजानिब है?” यूनुस ने जवाब दिया, “जी हाँ, मैं मरने तक गुस्से हूँ, और इसमें मैं हक़-बजानिब भी हूँ।”

10 रब ने जवाब दिया, “तू इस बेल पर ग़म खाता है, हालाँकि तूने उसके फलने फूलने के लिए एक उँगली भी नहीं हिलाई। यह बेल एक रात में पैदा हुई और अगली रात खत्म हुई 11 जबकि नीनवा बहुत बड़ा शहर है, उसमें 1,20,000 अफ़राद और मुतअद्दिद जानवर बसते हैं। और यह लोग इतने जाहिल हैं कि अपने दाँएँ और बाएँ हाथ में इम्तियाज़ नहीं कर पाते। क्या मुझे इस बड़े शहर पर ग़म नहीं खाना चाहिए?”

मीकाह

सामरिया की तबाही

1 जैल में रब का वह कलाम दर्ज है जो मीकाह मोरशती पर यहदाह के बादशाहों यूताम, आखज़ और हिज़क्रियाह के दौरे-हुकूमत में नाज़िल हुआ। उसने सामरिया और यरूशलम के बारे में यह बातें रोया में देखीं।

2 ऐ तमाम अक्रवाम, सुनो! ऐ ज़मीन और जो कुछ उस पर है, ध्यान दो! रब कादिरे-मुतलक तुम्हारे खिलाफ़ गवाही दे, कादिरे-मुतलक अपने मुकद्दस घर की तरफ़ से गवाही दे। 3 क्योंकि देखो, रब अपनी सुकूनतगाह से निकल रहा है ताकि उतरकर ज़मीन की बुलंदियों पर चले। 4 उसके पाँवों तले पहाड़ पिघल जाएंगे और वादियाँ फट जाएँगी, वह आग के सामने पिघलनेवाले मोम या ढलान पर उंडेले गए पानी की मानिंद होंगे।

5 यह सब कुछ याकूब के जुर्म, इसराईली क्रौम के गुनाहों के सबब से हो रहा है। कौन याकूब के जुर्म का ज़िम्मादार है? सामरिया! किसने यहदाह को बुलंद जगहों पर बुतपरस्ती करने की तहरीक दी? यरूशलम ने!

6 इसलिए रब फ़रमाता है, “मैं सामरिया को खुले मैदान में मलबे का ढेर बना दूँगा, इतनी खाली जगह कि लोग वहाँ अंगूर के बाग़ लगाएँगे। मैं उसके पत्थर वादी में फेंक दूँगा, उसे इतने धड़ाम से गिरा दूँगा कि उस की बुनियादें ही नज़र आएँगी। 7 उसके तमाम बुत टुकड़े टुकड़े हो जाएंगे, उस की इसमतफ़रोशी का पूरा अज़ नज़रे-आतिश हो जाएगा। मैं उसके देवताओं के तमाम मुजस्समों को तबाह कर दूँगा। क्योंकि सामरिया ने यह तमाम चीज़ें अपनी इसमतफ़रोशी से हासिल की हैं, और अब यह सब उससे छीन ली जाएँगी और दीगर इसमतफ़रोशों को मुआवज़े के तौर पर दी जाएँगी।”

अपनी क्रौम पर मातम

8 इसलिए मैं आहो-जारी करूँगा, नंगे पाँव और बरहना फिरूँगा, गीदड़ों की तरह वावैला करूँगा, उकाबी उल्लू की तरह आहें भरूँगा। 9 क्योंकि सामरिया का ज़ख़म लाइलाज है, और वह मुल्के-यहदाह में भी फैल गया है, वह मेरी क्रौम के दरवाज़े यानी यरूशलम तक पहुँच गया है।

10 फ़िलिस्ती शहर जात में यह बात न बताओ, उन्हें अपने आँसू न दिखाओ। बैत-लाफ़रा * में खाक में लोट-पोट हो जाओ। 11 ऐ सफ़ीर † के रहनेवालो, बरहना और शर्मसार होकर यहाँ से गुज़र जाओ। ज़ानान ‡ के बाशिंदे निकलेंगे नहीं। बैत-एज़ल § मातम करेगा जब तुमसे हर सहारा छीन लिया जाएगा। 12 मारोत * के बसनेवाले अपने माल के लिए पेचो-ताब खा रहे हैं, क्योंकि रब की तरफ़ से आफ़त नाज़िल होकर यरूशलम के दरवाज़े तक पहुँच गई है।

13 ऐ लकीस † के बाशिंदो, घोड़ों को रथ में जोतकर भाग जाओ। क्योंकि इब्तिदा में तुम ही सिय्यून बेटी के लिए गुनाह का बाइस बन गए, तुम्हीं में वह ज़रायम मौजूद थे जो इसराईल से सरज़द हो रहे हैं। 14 इसलिए तुम्हें तोहफ़े देकर मोरशत-जात ‡ को ख़ुश करने पड़ेगी। अकज़ीब § के घर इसराईल के बादशाहों के लिए फ़रेबदेह साबित होंगे।

15 ऐ मेरेसा * के लोगो, मैं होने दूँगा कि एक क़ब्ज़ा करनेवाला तुम पर हमला करेगा। तब इसराईल का जलाल अदुल्लाम तक पहुँचेगा। 16 ऐ सिय्यून बेटी, अपने बाल कटवाकर गिद्ध जैसी गंजी हो जा। अपने लाडले बच्चों पर मातम कर, क्योंकि वह कैदी बनकर तुझसे दूर हो जाएंगे।

2

क्रौम पर जुल्म करनेवालों पर अफ़सोस

1 उन पर अफ़सोस जो दूसरों को नुक़सान पहुँचाने के मनसूबे बाँधते और अपने बिस्तर पर ही साज़िशें करते हैं। पौ फटते ही वह उठकर उन्हें पूरा करते हैं, क्योंकि वह यह करने का इख़्तियार रखते हैं। 2 जब वह किसी खेत या मकान के लालच में आ जाते हैं तो उसे छीन लेते हैं। वह लोगों पर जुल्म करके उनके घर और मौस्सी मिलकियत उनसे लूट लेते हैं।

3 चुनाँचे रब फ़रमाता है, “मैं इस क्रौम पर आफ़त का मनसूबा बाँध रहा हूँ, ऐसा फंदा जिसमें से तुम अपनी गरदनो को निकाल नहीं सकोगे। तब तुम सर उठाकर नहीं फिरोगे, क्योंकि वक़्त बुरा ही होगा। 4 उस दिन लोग अपने गीतों में तुम्हारा मज़ाक़ उड़ाएँगे, वह मातम का तलख़ गीत गाकर तुम्हें लान-तान करेंगे,

* 1:10 बैत-लाफ़रा = खाक का घर। † 1:11 सफ़ीर = ख़ुबसूरत। ‡ 1:11 ज़ानान = निकलनेवाला। § 1:11 बैत-एज़ल = साथवाला यानी सहारा देनेवाला घर।

* 1:12 मारोत = तलख़ी। † 1:13 लकीस के क़िलाबंद शहर में गंजी रथ रखे जाते थे। ‡ 1:14 ‘मोरशत’ तोहफ़े और जहेज़ के लिए मुस्तामल इब्रानी लफ़्ज़ से मिलता-जुलता है। § 1:14 अकज़ीब = फ़रेब है। * 1:15 ‘मेरेसा’ फातेह और काबिज़ के लिए मुस्तामल इब्रानी लफ़्ज़ से मिलता-जुलता है।

‘हाय, हम सरासर तबाह हो गए हैं! मेरी कौम की मौस्सी ज़मीन दूसरों के हाथ में आ गई है। वह किस तरह मुझसे छीन ली गई है! हमारे काम के जवाब में हमारे खेत दूसरों में तकसीम हो रहे हैं।’”

5 चुनौचे आइंदा तुममें से कोई नहीं होगा जो रब की जमात में कुरा डालकर मौस्सी ज़मीन तकसीम करे।

6 वह नबुव्वत करते हैं, “नबुव्वत मत करो! नबुव्वत करते वक़्त इनसान को इस किस्म की बातें नहीं सुनानी चाहिए। यह सहीह नहीं कि हमारी स्सवाई हो जाएगी।” 7 ऐ याकूब के घराने, क्या तुझे इस तरह की बातें करनी चाहिए, “क्या रब नाराज़ है? क्या वह ऐसा काम करेगा?”

रब फ़रमाता है, “यह बात दुस्त है कि मैं उससे मेहरबान बातें करता हूँ जो सहीह राह पर चले। 8 लेकिन काफ़ी देर से मेरी कौम दुश्मन बनकर उठ खड़ी हुई है। जिन लोगों का जंग करने से ताल्लुक ही नहीं उनसे तुम चादर तक सब कुछ छीन लेते हो जब वह अपने आपको महफूज़ समझकर तुम्हारे पास से गुज़रते हैं। 9 मेरी कौम की औरतों को तुम उनके खुशनुमा घरों से भगाकर उनके बच्चों को हमेशा के लिए मेरी शानदार बरकतों से महरूम कर देते हो। 10 अब उठकर चले जाओ! आइंदा तुम्हें यहाँ सुकून हासिल नहीं होगा। क्योंकि नापाकी के सबब से यह मक़ाम अज़ियतनाक तरीके से तबाह हो जाएगा। 11 हकीकत में यह कौम ऐसा फ़रेबदेह नबी चाहती है जो ख़ाली हाथ आकर * उससे कहे, ‘तुम्हें कसरत की मै और शराब हासिल होगी!’”

अल्लाह कौम को वापस लाएगा

12 ऐ याकूब की औलाद, एक दिन मैं तुम सबको यक़ीनन जमा करूँगा। तब मैं इसराईल का बचा हुआ हिस्सा यों इकट्ठा करूँगा जिस तरह भेड़-बकरियों को बाड़े में या रेवड़ को चरागाह में। मुल्क में चारों तरफ़ हुजूमों का शोर मचेगा। 13 एक राहनुमा उनके आगे आगे चलेगा जो उनके लिए रास्ता खोलेगा। तब वह शहर के दरवाज़े को तोड़कर उसमें से निकलेगा। उनका बादशाह उनके आगे आगे चलेगा, रब खुद उनकी राहनुमाई करेगा।”

3

राहनुमाओं और झूठे नबियों पर इलाही फ़ैसला

1 मैं बोला, “ऐ याकूब के राहनुमाओ, ऐ इसराईल के बुजुर्गों, सुनो! तुम्हें इनसाफ़ को जानना चाहिए। 2 लेकिन जो अच्छा है उससे तुम नफ़रत करते और जो ग़लत है उसे प्यार करते हो। तुम मेरी कौम की खाल उतारकर उसका गोशत हड्डियों से जुदा कर लेते हो। 3 क्योंकि तुम मेरी कौम का गोशत खा लेते हो। उनकी खाल उतारकर तुम उनकी हड्डियों और गोशत को टुकड़े टुकड़े करके देग में फेंक देते हो।” 4 तब वह चिल्लाकर रब से इल्तिजा करेंगे, लेकिन वह उनकी नहीं सुनेगा। उनके ग़लत कामों के सबब से वह अपना चेहरा उनसे छुपा लेगा।

5 रब फ़रमाता है, “ऐ नबियो, तुम मेरी कौम को भटका रहे हो। अगर तुम्हें कुछ खिलाया जाए तो तुम एलान करते हो कि अमनो-अमान होगा। लेकिन जो तुम्हें कुछ न खिलाए उस पर तुम जिहाद का फ़तवा देते हो। 6 चुनौचे तुम पर ऐसी रात छा जाएगी जिसमें तुम रोया नहीं देखोगे, ऐसी तारीकी जिसमें तुम्हें मुस्तक्रबिल के बारे में कोई भी बात नहीं मिलेगी। नबियों पर सूरज डूब जाएगा, उनके चारों तरफ़ अंधेरा ही अंधेरा छा जाएगा। 7 तब रोया देखनेवाले शर्मसार और किस्मत का हाल बतानेवाले शर्मिंदा हो जाएंगे। शर्म के मारे वह अपने मुँह को छुपा लेंगे, * क्योंकि अल्लाह से कोई भी जवाब नहीं मिलेगा।”

8 लेकिन मैं खुद कुव्वत से, रब के रूह से और इनसाफ़ और ताक़त से भरा हुआ हूँ ताकि याकूब की औलाद को उसके जरायम और इसराईल को उसके गुनाह सुना सकूँ।

9 ऐ याकूब के राहनुमाओ, ऐ इसराईल के बुजुर्गों, सुनो! तुम इनसाफ़ से धिन खाकर हर सीधी बात को टेढ़ी बना लेते हो। 10 तुम सिय्यून को खूनेज़ी से और यरूशलम को नाइनसाफी से तामीर कर रहे हो। 11 यरूशलम के बुजुर्ग अदालत करते वक़्त रिश्तत लेते हैं। उसके इमाम तालीम देते हैं लेकिन सिर्फ़ कुछ मिलने के लिए। उसके नबी पेशगोई सुना देते हैं लेकिन सिर्फ़ पैसों के मुआवज़े में। ताहम यह लोग रब पर इनहिसार करके कहते हैं, “हम पर आफ़त आ ही नहीं सकती, क्योंकि रब हमारे दरमियान है।”

12 तुम्हारी वजह से सिय्यून पर हल चलाया जाएगा और यरूशलम मलबे का ढेर बन जाएगा। जिस पहाड़ पर रब का घर है उस पर जंगल छा जाएगा।

4

यरूशलम एक नई बादशाही का मरकज़ बन जाएगा

1 आखिरी ऐयाम में रब के घर का पहाड़ मज़बूती से कायम होगा। सबसे बड़ा यह पहाड़ दीगर तमाम बुलंदियों से कहीं ज़्यादा सरफ़राज़ होगा। तब उम्मतें जौक-दर-जौक उसके पास पहुँचेंगी, 2 और बेशुमार कौमें आकर कहेंगी, “आओ, हम रब के पहाड़ पर चढ़कर याकूब के खुदा के घर के पास जाएँ ताकि वह हमें अपनी मरज़ी की तालीम दे और हम उस की राहों पर चलें।”

* 2:11 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : जो हवा यानी कुछ नहीं अपने साथ लेकर आए।

* 3:7 मुँह का लफ़्ज़ी तरज़ुमा ‘मुँछें’ है।

क्योंकि सिय्यून पहाड़ से रब की हिदायत निकलेगी, और यरूशलम से उसका कलाम सादिर होगा। ³ रब बैनुल-अक्रवामी झगड़ों को निपटाएगा और दूर तक की ज़ोरावर कौमों का इनसाफ करेगा। तब वह अपनी तलवारों को कूटकर फाले बनाएंगी और अपने नेज़ों को काँट-छाँट के औज़ार में तबदील करेंगी। अब से न एक कौम दूसरी पर हमला करेगी, न लोग जंग करने की तरबियत हासिल करेंगे। ⁴ हर एक अपनी अंगूर की बेल और अपने अंजीर के दरख्त के साय में बैठकर आराम करेगा। कोई नहीं रहेगा जो उन्हें अचानक दहशतज़दा करे। क्योंकि रब्बुल-अफवाज ने यह कुछ फरमाया है।

⁵ हर दूसरी कौम अपने देवता का नाम लेकर फिरती है, लेकिन हम हमेशा तक रब अपने खुदा का नाम लेकर फिरेंगे।

⁶ रब फरमाता है, “उस दिन मैं लँगडों को जमा करूँगा और उन्हें इकट्ठा करूँगा जिन्हें मैंने मुंतशिर करके दुख पहुँचाया था। ⁷ मैं लँगडों को कौम का बचा हुआ हिस्सा बना दूँगा और जो दूर तक भटक गए थे उन्हें ताकतवर उम्मत में तबदील करूँगा। तब रब उनका बादशाह बनकर अबद तक सिय्यून पहाड़ पर उन पर हुकूमत करेगा। ⁸ जहाँ तक तेरा ताल्लुक है, ऐ रेवड के बुर्ज, ऐ सिय्यून बेटी के पहाड़, तुझे पहले की-सी सलतनत हासिल होगी। यरूशलम बेटी को दुबारा बादशाहत मिलेगी।”

यरूशलम अभी तक खतरे में है

⁹ ऐ यरूशलम बेटी, इस वक़्त तू इतने जोर से क्यों चीख रही है? क्या तेरा कोई बादशाह नहीं? क्या तेरे मुशीर सब खत्म हो गए हैं कि तू दर्दे-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह पेचो-ताब खा रही है?

¹⁰ ऐ सिय्यून बेटी, जन्म देनेवाली औरत की तरह तड़पती और चीखती जा! क्योंकि अब तुझे शहर से निकलकर खुले मैदान में रहना पड़ेगा, आखिर में तू बाबल तक पहुँचेगी। लेकिन वहाँ रब तुझे बचाएगा, वहाँ वह एवज़ाना देकर तुझे दुश्मन के हाथ से छुड़ाएगा।

¹¹ इस वक़्त तो मुतअद्दिद कौमों में तेरे खिलाफ जमा हो गई हैं। आपस में वह कह रही हैं, “आओ, यरूशलम की बेहुरमती हो जाए, हम सिय्यून की हालत देखकर लुफ़अंदोज़ हो जाएँ।” ¹² लेकिन वह रब के खयालात को नहीं जानते, उसका मनसूबा नहीं समझते। उन्हें मालूम नहीं कि वह उन्हें गंदम के पूलों की तरह इकट्ठा कर रहा है ताकि उन्हें गाह ले।

¹³ “ऐ सिय्यून बेटी, उठकर गाह ले! क्योंकि मैं तुझे लोहे के सींगों और पीतल के खुरों से नवाज़ूँगा ताकि तू बहुत-सी कौमों को चूर चूर कर सके। तब मैं उनका लूटा हुआ माल रब के लिए मखसूस करूँगा, उनकी दौलत पूरी दुनिया के मालिक के हवाले करूँगा।”

5

नजातदहिदा की उम्मीद

¹ ऐ शहर जिस पर हमला हो रहा है, अब अपने आपको छुरी से ज़खमी कर, क्योंकि हमारा मुहासरा हो रहा है। दुश्मन लाठी से इसराईल के हुक्मरान के गाल पर मारेगा।

² लेकिन तू, ऐ बैत-लहम इफ़राता, जो यहदाह के दीगर खानदानों की निसबत छोटा है, तुझमें से वह निकलेगा जो इसराईल का हुक्मरान होगा और जो क़दीम ज़माने बल्कि अज़ल से सादिर हुआ है। ³ लेकिन जब तक हामिला औरत उसे जन्म न दे, उस वक़्त तक रब अपनी कौम को दुश्मन के हवाले छोड़ेगा। लेकिन फिर उसके भाइयों का बचा हुआ हिस्सा इसराईलियों के पास वापस आएगा।

⁴ यह हुक्मरान खड़े होकर रब की कुव्वत के साथ अपने रेवड की गल्लाबानी करेगा। उसे रब अपने खुदा के नाम का अज़ीम इख्तियार हासिल होगा। तब कौम सलामती से बसेगी, क्योंकि उस की अज़मत दुनिया की इंतहा तक फैलेगी। ⁵ वही सलामती का मंबा होगा। जब असूर की फ़ौज हमारे मुल्क में दाखिल होकर हमारे महलों में घुस आए तो हम उसके खिलाफ़ सात चरवाहे और आठ रईस खड़े करेंगे ⁶ जो तलवार से मुल्के-असूर की गल्लाबानी करेंगे, हाँ तलवार को मियान से खींचकर नमरूद के मुल्क पर हुकूमत करेंगे। यों हुक्मरान हमें असूर से बचाएगा जब यह हमारे मुल्क और हमारी सरहद में घुस आएगा।

⁷ तब याकूब के जितने लोग बचकर मुतअद्दिद अक्रवाम के बीच में रहेंगे वह रब की भेजी हुई ओस या हरियाली पर पड़नेवाली बारिश की मानिंद होंगे यानी ऐसी चीज़ों की मानिंद जो न किसी इनसान के इंतज़ार में रहती, न किसी इनसान के हुक्म पर पड़ती हैं। ⁸ याकूब के जितने लोग बचकर मुतअद्दिद अक्रवाम के बीच में रहेंगे वह जंगली जानवरों के दरमियान शेरबबर और भेड़-बकरियों के बीच में जवान शेर की मानिंद होंगे यानी ऐसे जानवर की मानिंद जो जहाँ से भी गुज़रे जानवरों को रौंदकर फाड़ लेता है। उसके हाथ से कोई बचा नहीं सकता। ⁹ तेरा हाथ तेरे तमाम मुखालिफ़ों पर फ़तह पाएगा, तेरे तमाम दुश्मन नेस्तो-नाबूद हो जाएंगे।

रब इसराईल के बुतों को खत्म करेगा

¹⁰ रब फरमाता है, “उस दिन मैं तेरे घोड़ों को नेस्त और तेरे रथों को नाबूद करूँगा। ¹¹ मैं तेरे मुल्क के शहरों को खाक में मिलाकर तेरे तमाम किलों को गिरा दूँगा। ¹² तेरी जादूगरी को मैं मिटा डालूँगा, किस्मत का हाल बतानेवाले तेरे बीच में नहीं रहेंगे। ¹³ तेरे बुत और तेरे मखसूस सतूनों को मैं यों तबाह करूँगा कि तू आइंदा अपने हाथ की बनाई हुई चीज़ों की पूजा नहीं करेगा। ¹⁴ तेरे असीरत देवी के खंबे मैं उखाड़कर तेरे शहरों को मिसमार करूँगा। ¹⁵ उस वक़्त मैं बड़े गुस्से से उन कौमों से इंतक़ाम लूँगा जिन्होंने मेरी नहीं सुनी।”

6

अल्लाह इसराईल पर इलजाम लगाता है

1 ऐ इसराईल, रब का फरमान सुन, “अदालत में खड़े होकर अपना मामला बयान कर! पहाड़ और पहाड़ियाँ तेरे गवाह हों, उन्हें अपनी बात सुना दे।”

2 ऐ पहाड़ो, अब रब का अपनी कौम पर इलजाम सुनो! ऐ दुनिया की कदीम बुनियादो, तवज्जुह दो! क्योंकि रब अदालत में अपनी कौम पर इलजाम लगा रहा है, वह इसराईल से मुकदमा उठा रहा है।

3 वह सवाल करता है, “ऐ मेरी कौम, मैंने तेरे साथ क्या गलत सुलूक किया? मैंने क्या किया कि तू इतनी थक गई है? बता तो सही!

4 हकीकत तो यह है कि मैं तुझे मुल्के-मिसर से निकाल लाया, मैंने फिधा देकर तुझे गुलामी से रिहा कर दिया। साथ साथ मैंने मूसा, हास्न और मरियम को भेजा ताकि तेरे आगे चलकर तेरी राहनुमाई करें। 5 ऐ मेरी कौम, वह वक्त याद कर जब मोआब के बादशाह बलक ने बिलाम बिन बओर को बुलाया ताकि तुझ पर लानत भेजे। लानत की बजाए उसने तुझे बरकत दी! वह सफर भी याद कर जब तू शितीम से रवाना होकर जिलजाल पहुँची। अगर तू इन तमाम बातों पर गौर करे तो जान लेगी कि रब ने कितनी वफादारी और इनसाफ से तेरे साथ सुलूक किया है।”

6 जब हम रब के हुजूर आते हैं ताकि अल्लाह तआला को सिजदा करें तो हमें अपने साथ क्या लाना चाहिए? क्या हमें यकसाला बछड़े उसके हुजूर लाकर भस्म करने चाहिए? 7 क्या रब हज़ारों मेंढों या तेल की बेशुमार नदियों से खुश हो जाएगा? क्या मुझे अपने पहलौठे को अपने जरायम के एवज़ चढ़ाना चाहिए, अपने जिस्म के फल को अपने गुनाहों को मिटाने के लिए पेश करना चाहिए? हरगिज़ नहीं!

8 ऐ इनसान, उसने तुझे साफ बताया है कि क्या कुछ अच्छा है। रब तुझसे चाहता है कि तू इनसाफ कायम रखे, मेहरबानी करने में लगा रहे और फरोतनी से अपने खुदा के हुजूर चलता रहे।

यस्शलम को भी सामरिया की-सी सज़ा मिलेगी

9 सुनो! रब यस्शलम को आवाज़ दे रहा है। तवज्जुह दो, क्योंकि दानिशमंद उसके नाम का खौफ मानता है। ऐ कबीले, ध्यान दो कि किसने यह मुक़र्रर किया है,

10 “अब तक नाजायज़ नफ़ा की दौलत बेदीन आदमी के घर में जमा हो रही है, अब तक लोग गंदम बेचते वक्त पूरा तोल नहीं तोलते, उनकी गलत पैमाइश पर लानत! 11 क्या मैं उस आदमी को बरी करार दूँ जो गलत तराजू इस्तेमाल करता है और जिसकी थैली में हलके बाट पड़े रहते हैं? हरगिज़ नहीं! 12 यस्शलम के अमीर बड़े जालिम हैं, लेकिन बाकी बाशिंदे भी झूट बोलते हैं, उनकी हर बात धोका ही धोका है!

13 इसलिए मैं तुझे मार मारकर ज़ख़मी करूँगा। मैं तुझे तेरे गुनाहों के बदले में तबाह करूँगा। 14 तू खाना खाएगा लेकिन सेर नहीं होगा बल्कि पेट खाली रहेगा। तू माल महफूज़ रखने की कोशिश करेगा, लेकिन कुछ नहीं बचेगा। क्योंकि जो कुछ तू बचाने की कोशिश करेगा उसे मैं तलवार के हवाले करूँगा। 15 तू बीज बोएगा लेकिन फसल नहीं काटेगा, जैतून का तेल निकालेगा लेकिन उसे इस्तेमाल नहीं करेगा, अंगूर का रस निकालेगा लेकिन उसे नहीं पीएगा। 16 तू इसराईल के बादशाहों उमरी और अखियब के नमूने पर चल पड़ा है, आज तक उन्हीं के मनसूबों की पैरवी करता आया है। इसलिए मैं तुझे तबाही के हवाले कर दूँगा, तेरे लोगों को मज़ाक का निशाना बनाऊँगा। तुझे दीगर अक्रवाम की लान-तान बरदाश्त करनी पड़ेगी।”

7

अपनी कौम पर अफ़सोस

1 हाय, मुझ पर अफ़सोस! मैं उस शख्स की मानिंद हूँ जो फसल के जमा होने पर अंगूर के बाग़ में से गुज़र जाता है ताकि बचा हुआ थोड़ा-बहुत फल मिल जाए, लेकिन एक गुच्छा तक बाकी नहीं। मैं उस आदमी की मानिंद हूँ जो अंजीर का पहला फल मिलने की उम्मीद रखता है लेकिन एक भी नहीं मिलता। 2 मुल्क में से दियानतदार मिट गए हैं, एक भी ईमानदार नहीं रहा। सब ताक में बैठे हैं ताकि एक दूसरे को क़त्ल करें, हर एक अपना जाल बिछाकर अपने भाई को पकड़ने की कोशिश करता है। 3 दोनों हाथ गलत काम करने में एक जैसे माहिर हैं। हुक्मरान और काज़ी रिश्वत खाते, बड़े लोग मुतलव्विनमिज़ाज़ी से कभी यह, कभी वह तलब करते हैं। सब मिलकर साज़िशें करने में मसरूफ़ रहते हैं। 4 उनमें से सबसे शरीफ़ शख्स खारदार झाड़ी की मानिंद है, सबसे ईमानदार आदमी काँटेदार बाड़ से अच्छा नहीं।

लेकिन वह दिन आनेवाला है जिसका एलान तुम्हारे पहरेदारों ने किया है। तब अल्लाह तुझसे निपट लेगा, सब कुछ उलट-पलट हो जाएगा।

5 किसी पर भी भरोसा मत रखना, न अपने पड़ोसी पर, न अपने दोस्त पर। अपनी बीवी से भी बात करने से मुहतात रहो। 6 क्योंकि बेटा अपने बाप की हैसियत नहीं मानता, बेटी अपनी माँ के खिलाफ खड़ी हो जाती और बहू अपनी सास की मुखालफ़त करती है। तुम्हारे अपने ही घरवाले तुम्हारे दुश्मन हैं।

7 लेकिन मैं खुद रब की राह देखूँगा, अपनी नजात के खुदा के इंतज़ार में रहूँगा। क्योंकि मेरा खुदा मेरी सुनेगा।

रब हमें रिहा करेगा

8 ऐ मेरे दुश्मन, मुझे देखकर शादियाना मत बजा! गो मैं गिर गया हूँ ताहम दुबारा खड़ा हो जाऊँगा, गो अंधेरे में बैठा हूँ ताहम रब मेरी रौशनी है। 9 मैंने रब का ही गुनाह किया है, इसलिए मुझे उसका गज़ब भुगतना पड़ेगा। क्योंकि जब तक वह मेरे हक़ में मुक़दमा लड़कर मेरा इनसाफ़

न करे उस वक्त तक मैं उसका क्रूर बरदाश्त करूँगा। तब वह मुझे तारीकी से निकालकर रौशनी में लाएगा, और मैं अपनी आँखों से उसके इनसाफ और वफादारी का मुशाहदा करूँगा।

10 मेरा दुश्मन यह देखकर सरासर शर्मिदा हो जाएगा, हालाँकि इस वक्त वह कह रहा है, “रब तेरा खुदा कहाँ है?” मेरी अपनी आँखें उस की शर्मिंदगी देखेंगी, क्योंकि उस वक्त उसे गली में कचरे की तरह पाँवों तले रौंदा जाएगा।

11 ऐ इसराईल, वह दिन आनेवाला है जब तेरी दीवारें नए सिरे से तामीर हो जाएँगी। उस दिन तेरी सरहदें बसी हो जाएँगी। 12 लोग चारों तरफ से तेरे पास आएँगे। वह असूर से, मिसर के शहरों से, दरियाए-फुरात के इलाके से बल्कि दूर-दराज साहिली और पहाड़ी इलाकों से भी आएँगे। 13 ज़मीन अपने बाशिंदों के बाइस वीरानो-सुनसान हो जाएगी, आखिरकार उनकी हरकतों का कड़वा फल निकल आएगा।

14 ऐ रब, अपनी लाठी से अपनी क्रौम की गल्लाबानी कर! क्योंकि तेरी मीरास का यह रेवड़ इस वक्त जंगल में तनहा रहता है, हालाँकि गिर्दो-नवाह की ज़मीन ज़रखेज़ है। क़दीम ज़माने की तरह उन्हें बसन और जिलियाद की शादाब चरागाहों में चरने दे! 15 रब फ़रमाता है, “मिसर से निकलते वक्त की तरह मैं तुझे मोज़िज़ात दिखा दूँगा।” 16 यह देखकर अक्रवाम शर्मिदा हो जाएँगी और अपनी तमाम ताकत के बावजूद कुछ नहीं कर पाएँगी। वह घबराकर मुँह पर हाथ रखेगी, उनके कान बहरे हो जाएँगे। 17 साँप और रेंगनेवाले जानवरों की तरह वह खाक चाटेंगी और थरथराते हुए अपने किलों से निकल आएँगी। वह डर के मारे रब हमारे खुदा की तरफ़ रूजू करेंगी, हाँ तुझसे दहशत खाएँगी।

18 ऐ रब, तुझ जैसा खुदा कहाँ है? तू ही गुनाहों को मुआफ़ कर देता, तू ही अपनी मीरास के बचे हुआओं के ज़रायम से दरगुज़र करता है। तू हमेशा तक गुस्से नहीं रहता बल्कि शफ़क़त पसंद करता है। 19 तू दुबारा हम पर रहम करेगा, दुबारा हमारे गुनाहों को पाँवों तले कुचलकर समुंदर की गहराइयों में फेंक देगा। 20 तू याक़ूब और इब्राहीम की औलाद पर अपनी वफ़ा और शफ़क़त दिखाकर वह वादा पूरा करेगा जो तूने क़सम खाकर क़दीम ज़माने में हमारे बापदादा से किया था।

नाहम

अल्लाह के गज़ब का इज़हार

- 1 ज़ैल में नीनवा के बारे में वह कलाम कलमबंद है जो अल्लाह ने रोया में नाहम इलकूशी को दिखाया।
- 2 रब ग़ैरतमंद और इंतक़ाम लेनेवाला ख़ुदा है। इंतक़ाम लेते वक़्त रब अपना पूरा गुस्सा उतारता है। रब अपने मुख़ालिफ़ों से बदला लेता और अपने दुश्मनों से नाराज़ रहता है।
- 3 रब तहम्मूल से भरपूर है, और उस की कुदरत अज़ीम है। वह कुसूरवार को कभी भी सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ता।

वह आँधी और तूफ़ान से घिरा हुआ चलता है, और बादल उसके पाँवों तले की गर्द होते हैं।

- 4 वह समुंदर को डौंटता तो वह सूख जाता, उसके हुक्म पर तमाम दरिया ख़ुशक हो जाते हैं। तब बसन्त और करमिल की शादाब हरियाली मुरझा जाती और लुबनान के फूल कुमला जाते हैं।

5 उसके सामने पहाड़ लरज़ उठते, पहाड़ियाँ पिघल जाती हैं। उसके हुज़ूर पूरी ज़मीन अपने बाशिंदों समेत लरज़ उठती है।

- 6 कौन उस की नाराज़ी और उसके शदीद कहर का सामना कर सकता है? उसका ग़ज़ब आग की तरह भड़ककर ज़मीन पर नाज़िल होता है, उसके आने पर पत्थर फटकर टुकड़े टुकड़े हो जाते हैं।

7 रब मेहरबान है। मुसीबत के दिन वह मज़बूत क़िला है, और जो उसमें पनाह लेते हैं उन्हें वह जानता है।

- 8 लेकिन अपने दुश्मनों पर वह सैलाब लाएगा जो उनके मक़ाम को गरक़ करेगा। जहाँ भी दुश्मन भाग जाए वहाँ उस पर तारीकी छा जाने देगा।

9 रब के खिलाफ़ मनसूबा बाँधने का क्या फ़ायदा? वह तो तुम्हें एकदम तबाह कर देगा, दूसरी बार तुम पर आफ़त लाने की ज़रूरत ही नहीं होगी।

- 10 क्योंकि गो दुश्मन घनी और ख़ारदार झाड़ियों और नशे में धुत शराबी की मानिंद हैं, लेकिन वह जल्द ही ख़ुशक भूसे की तरह भस्म हो जाएंगे।

11 ऐ नीनवा, तुझसे वह निकल आया जिसने रब के खिलाफ़ बुरे मनसूबे बाँधे, जिसने शैतानी मशवरे दिए।

- 12 लेकिन अपनी कौम से रब फ़रमाता है, “गो दुश्मन ताक़तवर और बेशुमार क्यों न हों तो भी उन्हें मिटाया जाएगा और वह ग़ायब हो जाएंगे। बेशक़ मैंने तुझे पस्त कर दिया, लेकिन आइंदा ऐसा नहीं करूँगा। 13 अब मैं वह जुआ तोड़ डालूँगा जो उन्होंने तेरी गरदन पर रख दिया था, मैं तेरी जंजीरों को फाड़ डालूँगा।”

14 लेकिन नीनवा से रब फ़रमाता है, “आइंदा तेरी कोई औलाद क़ायम नहीं रहेगी जो तेरा नाम रखे। जितने भी बुत और मुजस्समे तेरे मंदिर में पड़े हैं उन सबको मैं नेस्तो-नाबूद कर दूँगा। मैं तेरी क़ब्र तैयार कर रहा हूँ, क्योंकि तू कुछ भी नहीं है।”

नीनवा की शिकस्त

- 15 वह देखो, पहाड़ों पर उसके क़दम चल रहे हैं जो अमनो-अमान की ख़ुशख़बरी सुनाता है। ऐ यहदाह, अब अपनी ईदें मना, अपनी मन्नेतें पूरी कर! क्योंकि आइंदा शैतानी आदमी तुझमें नहीं घुसेगा, वह सरासर मिट गया है।

2

1 ऐ नीनवा, सब कुछ मुंशिर करनेवाला तुझ पर हमला करने आ रहा है, चुनौचे क़िले की पहरादारी कर! रास्ते पर ध्यान दे, कमरबस्ता हो जा, जहाँ तक मुमकिन है दिफ़ा की तैयारियाँ कर!

2 गो याक़ूब तबाह और उसके अंगूरों के बाग़ नाबूद हो गए हैं, लेकिन अब रब इसराईल की शानो-शौकत बहाल करेगा।

- 3 वह देखो, नीनवा पर हमला करनेवाले सूरमाओं की ढालें सुर्ख हैं, फ़ौजी क़िरमिज़ी रंग की वरदियाँ पहने हुए हैं। दुश्मन ने अपने रथों को तैयार कर रखा है, और वह भड़कती मशालों की तरह चमक रहे हैं। साथ साथ सिपाही अपने नेज़े लहरा रहे हैं। 4 अब रथ गलियों में से अंधा-धुंध गुज़र रहे हैं। चौकों में वह इधर उधर भाग रहे हैं। यों लग रहा है कि भड़कती मशालें या बादल की बिजलियाँ इधर उधर चमक रही हैं।

5 हुक्मरान अपने चींदा अफ़सरों को बुला लेता है, और वह ठोकर खा खाकर आगे बढ़ते हैं। वह दौड़कर फ़सील के पास पहुँच जाते, जल्दी से हिफ़ाज़ती ढाल खड़ी करते हैं। 6 फिर दरिया के दरवाज़े खुल जाते और शाही महल लड़खड़ाने लगता है। 7 तब दुश्मन मलिका के कपड़े

उतारकर उसे ले जाते हैं। उस की लौडियाँ छाती पीट पीटकर कबूतरों की तरह गूँ गूँ करती हैं। ⁸ नीनवा बड़ी देर से अच्छे-खासे तालाब की मानिंद था, लेकिन अब लोग उससे भाग रहे हैं। लोगों को कहा जाता है, “स्क जाओ, स्को तो सही!” लेकिन कोई नहीं सकता। सब सर पर पाँव रखकर शहर से भाग रहे हैं, और कोई नहीं मुड़ता।

⁹ आओ, नीनवा की चाँदी लूट लो, उसका सोना छीन लो! क्योंकि ज़ख़ीर की इंतहा नहीं, उसके खज़ानों की दौलत लामहदूद है। ¹⁰ लूटनेवाले कुछ नहीं छोड़ते। जल्द ही शहर ख़ाली और वीरानो-सुनसान हो जाता है। हर दिल हौसला हार जाता, हर घुटना काँप उठता, हर कमर थरथराने लगती और हर चेहरे का रंग मॉद पड़ जाता है।

¹¹ अब नीनवा बेटी की क्या हैसियत रही? पहले वह शेरबबर की माँद थी, ऐसी जगह जहाँ जवान शेरों को गोशत खिलाया जाता, जहाँ शेर और शेरनी अपने बच्चों समेत टहलते थे। कोई उन्हें डराकर भगा नहीं सकता था। ¹² उस वक़्त शेर अपने बच्चों के लिए बहुत कुछ फाड़ लेता और अपनी शेरनियों के लिए भी गला घँटकर मार डालता था। उस की माँदें और छुपने की जगहें फाड़े हुए शिकार से भरी रहती थीं।

¹³ रब्बूल-अफ़वाज फ़रमाता है, “ऐ नीनवा, अब मैं तुझसे निपट लेता हूँ। मैं तेरे रथों को नज़रे-आतिश कर दूँगा, और तेरे जवान शेर तलवार की ज़द में आकर मर जाएंगे। मैं होने दूँगा कि आइंदा तुझे ज़मीन पर कुछ न मिले जिसे फाड़कर खा सके। आइंदा तेरे कासिदों की आवाज़ कभी सुनाई नहीं देगी।”

3

नीनवा की स्सवाई

¹ उस कातिल शहर पर अफ़सोस जो झूट और लूटे हुए माल से भरा हुआ है। वह लूट-मार से कभी बाज़ नहीं आता।

² सुनो! चाबुक की आवाज़, चलते हुए रथों का शोर! घोड़े सरपट दौड़ रहे, रथ भाग भागकर उछल रहे हैं। ³ घुड़सवार आगे बढ़ रहे, शोलाज़न तलवारों और चमकते नेज़े नज़र आ रहे हैं। हर तरफ़ मकतूल ही मकतूल, बेशुमार लाशों के ढेर पड़े हैं। इतनी हैं कि लोग ठोकर खा खाकर उन पर से गुज़रते हैं। ⁴ यह होगा नीनवा का अंजाम, उस दिलफ़रेब कसबी और जादूगरनी का जिसने अपनी जादूगरी और इसमतफ़रोशी से अक़वाम और उम्मतों को गुलामी में बेच डाला।

⁵ रब्बूल-अफ़वाज फ़रमाता है, “ऐ नीनवा बेटी, अब मैं तुझसे निपट लेता हूँ। मैं तेरा लिबास तेरे सर के ऊपर उठाऊँगा कि तेरा नंगापन अक़वाम को नज़र आए और तेरा मुँह दीगर ममालिक के सामने काला हो जाए। ⁶ मैं तुझ पर कूड़ा-करकट फेंककर तेरी तहकीर करूँगा। तू दूसरों के लिए तमाशा बन जाएगी। ⁷ तब सब तुझे देखकर भाग जाएंगे। वह कहेंगे, ‘नीनवा तबाह हो गई है!’ अब उस पर अफ़सोस करनेवाला कौन रहा? अब मुझे कहाँ से लोग मिलेंगे जो तुझे तसल्ली दें?”

⁸ क्या तू थीबस * शहर से बेहतर है, जो दरियाए-नील पर वाके था? वह तो पानी से घिरा हुआ था, और पानी ही उसे हमलों से महफूज़ रखता था। ⁹ एथोपिया और मिसर के फ़ौजी उसके लिए लामहदूद ताक़त का बाइस थे, फ़ूत और लिबिया उसके इतहादी थे। ¹⁰ तो भी वह कैदी बनकर जिलावतन हुआ। हर गली के कोने में उसके शीरख़ार बच्चों को ज़मीन पर पटरख दिया गया। उसके शुरफ़ा कुरा-अंदाज़ी के ज़रीए तकसीम हुए, उसके तमाम बुज़ुर्ग ज़ंजीरों में जकड़े गए।

¹¹ ऐ नीनवा बेटी, तू भी नशे में धुत हो जाएगी। तू भी हवासबाख़्ता होकर दुश्मन से पनाह लेने की कोशिश करेगी। ¹² तेरे तमाम किले पके फल से लदे हुए अंजीर के दरख़्त हैं। जब उन्हें हिलाया जाए तो अंजीर फ़ौरन खानेवाले के मुँह में गिर जाते हैं। ¹³ लो, तेरे तमाम दस्ते औरतें बन गए हैं। तेरे मुल्क के दरवाज़े दुश्मन के लिए पूरे तौर पर खोले गए, तेरे कुंडे नज़रे-आतिश हो गए हैं।

¹⁴ ख़ूब पानी जमा कर ताकि मुहासरे के दौरान काफ़ी हो। अपनी क़िलाबंदी मज़ीद मज़बूत कर! गारे को पाँवों से लताड़ लताड़कर ईंट बना ले! ¹⁵ ताहम आग तुझे भस्म करेगी, तलवार तुझे मार डालेगी, हाँ वह तुझे टिड्डियों की तरह खा जाएगी। बचने का कोई इमकान नहीं होगा, खाह तू टिड्डियों की तरह बेशुमार क्यों न हो जाए। ¹⁶ बेशक तेरे ताजिर सितारों जितने लातादाद हो गए हैं, लेकिन अचानक वह टिड्डियों के बच्चों की तरह अपनी केंचली को उतार लेंगे और उड़कर गायब हो जाएंगे। ¹⁷ तेरे दरबारी टिड्डियों जैसे और तेरे अफ़सर टिड्डी दलों की मानिंद हैं जो सर्दियों के मौसम में दीवारों के साथ चिपक जाती लेकिन धूप निकलते ही उड़कर ओझल हो जाती हैं। किसी को भी पता नहीं कि वह कहाँ चली गई हैं।

¹⁸ ऐ अस्सर के बादशाह, तेरे चरवाहे गहरी नींद सो रहे, तेरे शुरफ़ा आराम कर रहे हैं। तेरी कौम पहाड़ों पर मुंतशिर हो गई है, और कोई नहीं जो उन्हें दुबारा जमा करे। ¹⁹ तेरी चोट भर ही नहीं सकती, तेरा ज़ख़म लाइलाज है। जिसे भी तेरे अंजाम की ख़बर मिले वह ताली बजाएगा। क्योंकि सबको तेरा मुसलसल जुल्मो-तशदुद बरदाश्त करना पड़ा।

* 3:8 Thebes। इब्रानी मतन में इसका मुतरादिफ़ नो-आमून मुस्तामल है।

हबक्कूक

नबी की शिकायत : हर तरफ़ नाइनसाफ़ी

1 ज़ैल में वह कलाम कलमबंद है जो हबक्कूक नबी को रोया देखकर मिला।

2 ऐ रब, मैं मज़ीद कब तक मदद के लिए पुकारूँ? अब तक तूने मेरी नहीं सुनी। मैं मज़ीद कब तक चीखें मार मारकर कहूँ कि फ़साद हो रहा है? अब तक तूने हमें छुटकारा नहीं दिया। 3 तू क्यों होने देता है कि मुझे इतनी नाइनसाफ़ी देखनी पड़े? लोगों को इतना नुक़सान पहुँचाया जा रहा है, लेकिन तू ख़ामोशी से सब कुछ देखता रहता है। जहाँ भी मैं नज़र डालूँ, वहाँ जुल्मो-तशद्दुद ही नज़र आता है, मुक़दमाबाज़ी और झगड़े सर उठाते हैं। 4 नतीजे में शरीअत बेअसर हो गई है, और बा-इनसाफ़ फ़ैसले कभी जारी नहीं होते। बेदीनों ने रास्तबाज़ों को घेर लिया है, इसलिए अदालत में बेहदा फ़ैसले किए जाते हैं।

अल्लाह का जवाब

5 “दीगर अक़वाम पर निगाह डालो, हाँ उन पर ध्यान दो तो हक्का-बक्का रह जाओगे। क्योंकि मैं तुम्हारे जीते-जी एक ऐसा काम करूँगा जिसकी जब ख़बर सुनोगे तो तुम्हें यक़ीन नहीं आएगा। 6 मैं बाबलियों को खड़ा करूँगा। यह ज़ालिम और तलख़रू क्रौम पूरी दुनिया को उबर करके दूसरे ममालिक पर कब्ज़ा करेगी। 7 लोग उससे सख़्त दहशत खाएँगे, हर तरफ़ उसी के क़वानीन और अज़मत माननी पड़ेगी। 8 उनके घोड़े चीतों से तेज़ हैं, और शाम के वक़्त शिकार करनेवाले भेड़ीए भी उन जैसे फुरतीले नहीं होते। वह सरपट दौड़कर दूर दूर से आते हैं। जिस तरह उकाब लाश पर झपट्टा मारता है उसी तरह वह अपने शिकार पर हमला करते हैं। 9 सब इसी मक़सद से आते हैं कि जुल्मो-तशद्दुद करें। जहाँ भी जाएँ वहाँ आगे बढ़ते जाते हैं। रेत जैसे बेशुमार क़ैदी उनके हाथ में जमा होते हैं। 10 वह दीगर बादशाहों का मज़ाक़ उड़ाते हैं, और दूसरों के बुजुर्ग़ उनके तमस्ख़ुर का निशाना बन जाते हैं। हर क़िले को देखकर वह हँस उठते हैं। जल्द ही वह उनकी दीवारों के साथ मिट्टी के ढेर लगाकर उन पर कब्ज़ा करते हैं। 11 फिर वह तेज़ हवा की तरह वहाँ से गुज़रकर आगे बढ़ जाते हैं। लेकिन वह कुसूरवार ठहरेंगे, क्योंकि उनकी अपनी ताकत उनका ख़ुदा है।”

ऐ रब, तू क्यों ख़ामोश रहता है?

12 ऐ रब, क्या तू क़दीम ज़माने से ही मेरा ख़ुदा, मेरा कुदूस नहीं है? हम नहीं मरेँगे। ऐ रब, तूने उन्हें सज़ा देने के लिए मुक़र्रर किया है। ऐ चटान, तेरी मरज़ी है कि वह हमारी तरबियत करें। 13 तेरी आँखें बिल्कुल पाक हैं, इसलिए तू बुरा काम बरदाश्त नहीं कर सकता, तू ख़ामोशी से जुल्मो-तशद्दुद पर नज़र नहीं डाल सकता। तो फिर तू इन बेवफ़ाओं की हरकतों को किस तरह बरदाश्त करता है? जब बेदीन उसे हड़प कर लेता जो उससे कहीं ज़्यादा रास्तबाज़ है तो तू ख़ामोश क्यों रहता है? 14 तूने होने दिया है कि इनसान से मछलियों का-सा सुलूक किया जाए, कि उसे उन समुंदरी जानवरों की तरह पकड़ा जाए, जिनका कोई मालिक नहीं। 15 दुश्मन उन सबको काँटे के ज़रीए पानी से निकाल लेता है, अपना जाल डालकर उन्हें पकड़ लेता है। जब उनका बड़ा ढेर जमा हो जाता है तो वह खुश होकर शादियाना बजाता है। 16 तब वह अपने जाल के सामने बखूर जलाकर उसे जानवर क़ुरबान करता है। क्योंकि उसी के वसीले से वह ऐशो-इशरत की ज़िंदगी गुज़ार सकता है। 17 क्या वह मुसलसल अपना जाल डालता और क्रौमों को बेरहमी से मौत के घाट उतारता रहे?

2

1 अब मैं पहरा देने के लिए अपनी बुर्जी पर चढ़ जाऊँगा, क़िले की ऊँची जगह पर खड़ा होकर चारों तरफ़ देखता रहूँगा। क्योंकि मैं जानना चाहता हूँ कि अल्लाह मुझे क्या कुछ बताएगा, कि वह मेरी शिकायत का क्या जवाब देगा।

रब का जवाब

2 रब ने मुझे जवाब दिया, “जो कुछ तूने रोया मैं देखा है उसे तख़्तों पर यों लिख दे कि हर गुज़रनेवाला उसे ख़ानी से पढ़ सके। 3 क्योंकि वह फ़ौरन पूरी नहीं हो जाएगी बल्कि मुक़र्ररा वक़्त पर आखिरकार ज़ाहिर होगी, वह झूटी साबित नहीं होगी। गो देर भी लगे तो भी सब्र कर। क्योंकि आनेवाला पहुँचेगा, वह देर नहीं करेगा।

4 मग़र्र आदमी फूला हुआ है और अंदर से सीधी राह पर नहीं चलता। लेकिन रास्तबाज़ ईमान ही से जीता रहेगा। 5 यक़ीनन मैं एक बेवफ़ा साथी हूँ। मग़र्र शख्स जीता नहीं रहेगा, गो वह अपने मुँह को पाताल की तरह खुला रखता और उस की भूक मौत की तरह कभी नहीं मिटती, वह तमाम अक़वाम और उम्मतें अपने पास जमा करता है।

बेदीनों का अंजाम

6 लेकिन यह सब उसका मज़ाक़ उड़ाकर उसे लान-तान करेंगी। वह कहेंगी, ‘उस पर अफ़सोस जो दूसरों की चीज़ें छीनकर अपनी मिलकियत में इज़ाफ़ा करता है, जो क़र्ज़दारों की ज़मानत पर कब्ज़ा करने से दौलतमंद हो गया है। यह काररवाई कब तक जारी रहेगी?’ 7 क्योंकि अचानक ही ऐसे लोग उठेंगे जो तुझे काटेंगे, ऐसे लोग जाग उठेंगे जिनके सामने तू थरथराने लगेगा। तब तू खुद उनका शिकार बन जाएगा। 8 चूँकि तूने

दीगर मुतअद्दिद अकवाम को लूट लिया है इसलिए अब बची हुई उम्मतें तुझे ही लूट लेंगी। क्योंकि तुझसे कत्लो-गारत सरज़द हुई है, तूने देहात और शहर पर उनके बाशिंदों समेत शदीद जुल्म किया है।

9 उस पर अफ़सोस जो नाजायज़ नफ़ा कमाकर अपने घर पर आफ़त लाता है, हालाँकि वह आफ़त से बचने के लिए अपना घोंसला बुलंदियों पर बना लेता है। 10 तेरे मनसूबों से मुतअद्दिद कौमों ने तबाह हुई हैं, लेकिन यह तेरे ही घराने के लिए शर्म का बाइस बन गया है। इस गुनाह से तू अपने आप पर मौत की सज़ा लाया है। 11 यक्रीनन दीवारों के पत्थर चीखकर इल्तिजा करेंगे और लकड़ी के शहतीर जवाब में आहो-ज़ारी करेंगे।

12 उस पर अफ़सोस जो शहर को कत्लो-गारत के ज़रीए तामीर करता, जो आबादी को नाइनसाफ़्री की बुनियाद पर कायम करता है। 13 रब्बुल-अफ़वाज़ ने मुकर्रर किया है कि जो कुछ कौमों ने बड़ी मेहनत-मशक्कत से हासिल किया उसे नज़रे-आतिश होना है, जो कुछ पाने के लिए उम्मतें थक जाती हैं वह बेकार ही है। 14 क्योंकि जिस तरह समुंदर पानी से भरा हुआ है, उसी तरह दुनिया एक दिन रब के जलाल के इरफ़ान से भर जाएगी।

15 उस पर अफ़सोस जो अपना प्याला ज़हरीली शराब से भरकर उसे अपने पड़ोसियों को पिला देता है ताकि उन्हें नशे में लाकर उनकी बरहन्गी से लुत्फ़अंदोज़ हो जाए। 16 लेकिन अब तेरी बारी भी आ गई है! तेरी शानो-शौकत ख़त्म हो जाएगी, और तेरा मुँह काला हो जाएगा। अब खुद पी ले! नशे में आकर अपने कपड़े उतार ले। ग़ज़ब का जो प्याला रब के दहने हाथ में है वह तेरे पास भी पहुँचेगा। तब तेरी इतनी स्सवाई हो जाएगी कि तेरी शान का नामो-निशान तक नहीं रहेगा।

17 जो जुल्म तूने लुबनान पर किया वह तुझ पर ही ग़ालिब आएगा, जिन जानवरों को तूने वहाँ तबाह किया उनकी दहशत तुझी पर तारी हो जाएगी। क्योंकि तुझसे कत्लो-गारत सरज़द हुई है, तूने देहात और शहरों पर उनके बाशिंदों समेत शदीद जुल्म किया है।

18 बुत का क्या फ़ायदा? आखिर किसी माहिर कारीगर ने उसे तराशा या ढाल लिया है, और वह झूट ही झूट की हिदायत देता है। कारीगर अपने हाथों के बुत पर भरोसा रखता है, हालाँकि वह बोल भी नहीं सकता!

19 उस पर अफ़सोस जो लकड़ी से कहता है, 'जाग उठ!' और ख़ामोश पत्थर से, 'खड़ा हो जा!' क्या यह चीज़ें हिदायत दे सकती हैं? हरगिज़ नहीं! उनमें जान ही नहीं, खाह उन पर सोना या चाँदी क्यों न चढ़ाई गई हो। 20 लेकिन रब अपने मुक़द्दस घर में मौजूद है। उसके हुज़ूर पूरी दुनिया ख़ामोश रहे।"

3

हबक्कूक की दुआ

1 ज़ैल में हबक्कूक नबी की दुआ है। इसे 'शिगियूनोत' के तर्ज़ पर गाना है।

2 ऐ रब, मैंने तेरा पैग़ाम सुना है। ऐ रब, तेरा काम देखकर मैं डर गया हूँ। हमारे जीते-जी उसे वुजूद में ला, जल्द ही उसे हम पर ज़ाहिर कर। जब तुझे हम पर गुस्सा आए तो अपना रहम याद कर।

3 अल्लाह तेमान से आ रहा है, कुदूस फ़ारान के पहाड़ी इलाके से पहुँच रहा है। (सिलाह) * उसका जलाल पूरे आसमान पर छा गया है, ज़मीन उस की हम्दो-सना से भरी हुई है।

4 तब उस की शान सूरज की तरह चमकती, उसके हाथ से तेज़ किरणें निकलती हैं जिनमें उस की कुदरत पिनहाँ होती है।

5 मोहलक बीमारी उसके आगे आगे फैलती, वबाई मरज़ उसके नक्शे-कदम पर चलता है।

6 जहाँ भी कदम उठाए, वहाँ ज़मीन हिल जाती, जहाँ भी नज़र डाले वहाँ अक़वाम लरज़ उठती हैं। तब क़दीम पहाड़ फट जाते, पुरानी पहाड़ियाँ दबक जाती हैं। उस की राहें अज़ल से ऐसी ही रही हैं।

7 मैंने कूशान के ख़ैमों को मुसीबत में देखा, मिदियान के तंबू काँप रहे थे।

8 ऐ रब, क्या तू दरियाओं और नदियों से गुस्से था? क्या तेरा ग़ज़ब समुंदर पर नाज़िल हुआ जब तू अपने घोड़ों और फ़तहमंद रथों पर सवार होकर निकला?

9 तूने अपनी कमान को निकाल लिया, तेरी लानतें तीरों की तरह बरसने लगी हैं। (सिलाह) तू ज़मीन को फाड़कर उन जगहों पर दरिया बहने देता है।

10 तुझे देखकर पहाड़ काँप उठते, मूसलाधार बारिश बरसने लगती और पानी की गहराइयाँ गरजती हुई अपने हाथ आसमान की तरफ उठाती हैं।

11 सूरज और चाँद अपनी बुलंद रिहाइशगह में स्क जाते हैं। तेरे चमकते तीरों के सामने वह माँद पड़ जाते, तेरे नेज़ों की झिलमिलाती रौशनी में ओझल हो जाते हैं।

* 3:3 सिलाह ग़ालिबन गाने बजाने के बारे में कोई हिदायत है। मुफ़स्सिरीन में इसके मतलब के बारे में इत्फ़ाके-राय नहीं होती।

12 तू गुस्से में दुनिया में से गुज़रता, तैश से दीगर अक़वाम को मारकर गाह लेता है।

13 तू अपनी क़ौम को रिहा करने के लिए निकला, अपने मसह किए हुए ख़ादिम की मदद करने आया है। तूने बेदीन का घर छत से लेकर बुनियाद तक गिरा दिया, अब कुछ नज़र नहीं आता। (सिलाह)

14 उसके अपने नेज़ों से तूने उसके सर को छेद डाला। पहले उसके दस्ते कितनी खुशी से हम पर टूट पड़े ताकि हमें मुंतशिर करके मुसीबतज़दा को पोशीदगी में खा सकें! लेकिन अब वह खुद भूसे की तरह हवा में उड़ गए हैं।

15 तूने अपने घोड़ों से समुंदर को यों कुचल दिया कि गहरा पानी झाग निकालने लगा।

अल्लाह मुझे तकवियत देता है

16 यह सब कुछ सुनकर मेरा जिस्म लरज़ उठा। इतना शोर था कि मेरे दाँत बजने लगे, † मेरी हड्डियाँ सड़ने लगीं, मेरे घुटने काँप उठे। अब मैं उस दिन के इंतज़ार में रहूँगा जब आफ़त उस क़ौम पर आएगी जो हम पर हमला कर रही है।

17 अभी तक कौंपलें अंजीर के दरख़्त पर नज़र नहीं आती, अंगूर की बेलें बेफल हैं। अभी तक ज़ैतून के दरख़्त फल से महरूम हैं और खेतों में फसलें नहीं उगतीं। बाड़ों में न भेड़-बकरियाँ, न मवेशी हैं।

18 ताहम मैं रब की खुशी मनाऊँगा, अपने नज़ातदहिदा अल्लाह के बाइस शादियाना बजाऊँगा।

19 रब कादिरे-मुतलक मेरी कुव्वत है। वही मुझे हिरनों के-से तेज़रौ पाँव मुहैया करता है, वही मुझे बुलंदियों पर से गुज़रने देता है।

दर्जे-बाला गीत मौसीकी के राहनुमा के लिए है। इसे मेरे तर्ज के तारदार साज़ों के साथ गाना है।

† 3:16 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : होंट हिलने लगे।

सफनियाह

1 ज़ैल में रब का वह कलाम कलमबंद है जो सफनियाह बिन कूशी बिन जिदलियाह बिन अमरियाह बिन हिज़क्रियाह पर नाज़िल हुआ। उस वक़्त यूसियाह बिन अमून यहदाह का बादशाह था।

2 रब फ़रमाता है, “मैं रूए-ज़मीन पर से सब कुछ मिटा डालूँगा, 3 इनसानो-हैवान, परिदों, मछलियों, ठोकर खिलानेवाली चीज़ों और बेदीनों को। तब ज़मीन पर इनसान का नामो-निशान तक नहीं रहेगा।” यह रब का फ़रमान है।

4 “यहदाह और यरूशलम के तमाम बाशिंदों पर मेरी सज़ा नाज़िल होगी। बाल देवता की जितनी भी बुतपरस्ती अब तक रह गई है उसे नेस्तो-नाबूद कर दूँगा। न बुतपरस्त पुजारियों का नामो-निशान रहेगा, 5 न उनका जो छतों पर सूरज, चाँद बल्कि आसमान के पूरे लश्कर को सिजदा करते हैं, जो रब की कसम खाने के साथ साथ मिलकूम देवता की भी कसम खाते हैं। 6 जो रब की पैरवी छोड़कर न उसे तलाश करते, न उस की मरज़ी दरियाफ़्त करते हैं वह सबके सब तबाह हो जाएंगे।

7 अब रब कादिरे-मुतलक के सामने खामोश हो जाओ, क्योंकि रब का दिन करीब ही है। रब ने इसके लिए ज़बह की कुरबानी तैयार करके अपने मेहमानों को मखसूसो-मुकद्दस कर दिया है।” 8 रब फ़रमाता है, “जिस दिन मैं यह कुरबानी चढ़ाऊँगा उस दिन बुज़ुर्गों, शहज़ादों और अजनबी लिबास पहननेवालों को सज़ा दूँगा। 9 उस दिन मैं उन पर सज़ा नाज़िल करूँगा जो तबहहमपरस्ती के बाइस दहलीज़ पर कदम रखने से गुरेज़ करते हैं, जो अपने मालिक के घर को जुल्म और फ़रेब से भर देते हैं।”

10 रब फ़रमाता है, “उस दिन मछली के दरवाज़े से जोर की चीखें, नए शहर से आहो-ज़ारी और पहाड़ियों से कड़कती आवाज़ें सुनाई देंगी। 11 ऐ मकतीस मुहल्ले के बाशिंदो, वावैला करो, क्योंकि तुम्हारे तमाम ताजिर हलाक हो जाएंगे। वहाँ के जितने भी सौदागर चाँदी तोलते हैं वह नेस्तो-नाबूद हो जाएंगे।

12 तब मैं चराग़ लेकर यरूशलम के कोने कोने में उनका खोज लगाऊँगा जो इस वक़्त बड़े आराम से बैठे हैं, खाह हालात कितने बुरे क्यों न हों। मैं उनसे निपट लूँगा जो सोचते हैं, ‘रब कुछ नहीं करेगा, न अच्छा काम और न बुरा।’ 13 ऐसे लोगों का माल लूट लिया जाएगा, उनके घर मिसमर हो जाएंगे। वह नए मकान तामीर तो करेंगे लेकिन उनमें रहेंगे नहीं, अंगूर के बाग़ लगाएँगे लेकिन उनकी मैं पिछेंगे नहीं।”

14 रब का अज़ीम दिन करीब ही है, वह बड़ी तेज़ी से हम पर नाज़िल हो रहा है। सुनो! वह दिन तलख़ होगा। हालात ऐसे होंगे कि बहादुर फ़ौजी भी चीखकर मदद के लिए पुकारेंगे। 15 रब का पूरा ग़ज़ब नाज़िल होगा, और लोग परेशानी और मुसीबत में मुब्तला रहेंगे। हर तरफ़ तबाहीओ-बरबादी, हर तरफ़ अंधेरा ही अंधेरा, हर तरफ़ घने बादल छाए रहेंगे। 16 उस दिन दुश्मन नरसिंगा फूँककर और जंग के नारे लगाकर क़िलाबंद शहरों और बुर्जों पर टूट पड़ेगा। 17 रब फ़रमाता है, “चूँकि लोगों ने मेरा गुनाह किया है इसलिए मैं उनको बड़ी मुसीबत में उलझा दूँगा। वह अंधों की तरह टटोल टटोलकर इधर उधर फिरेंगे, उनका खून खाक की तरह गिराया जाएगा और उनकी नाशें गोबर की तरह ज़मीन पर फेंकी जाएँगी।” 18 जब रब का ग़ज़ब नाज़िल होगा तो न उनका सोना, न चाँदी उन्हें बचा सकेगी। उस की ग़ैरत पूरे मुल्क को आग की तरह भस्म कर देगी। वह मुल्क के तमाम बाशिंदों को हलाक करेगा, हाँ उनका अंजाम हौलनाक होगा।

2

होश में आओ!

1 ऐ बेहया क़ौम, जमा होकर हाज़िरी के लिए खड़ी हो जा, 2 इससे पहले कि मुक़र्रर दिन आकर तुझे भूसे की तरह उड़ा ले जाए। ऐसा न हो कि तुम रब के सख़्त गुस्से का निशाना बन जाओ, कि रब का ग़ज़बनाक दिन तुम पर नाज़िल हो जाए।

3 ऐ मुल्क के तमाम फ़रोतनो, ऐ उसके अहकाम पर अमल करनेवालो, रब को तलाश करो! रास्तबाज़ी के तालिब हो, हलीमी ढूँडो। शायद तुम उस दिन रब के ग़ज़ब से बच जाओ। *

इसराईल के दुश्मनों का अंजाम

4 ग़ज़ा को छोड़ दिया जाएगा, अस्कलून वीरानो-सुनसान हो जाएगा। दोपहर के वक़्त ही अशदूद के बाशिंदों को निकाला जाएगा, अक्रून को जड़ से उखाड़ा जाएगा। 5 क़ेते से आई हुई क़ौम पर अफ़सोस जो साहिली इलाके में रहती है। क्योंकि रब तुम्हारे बारे में फ़रमाता है, “ऐ फ़िलिस्तिनियों की सरज़मीन, ऐ मुल्के-कनान, मैं तुझे तबाह करूँगा, एक भी बाक़ी नहीं रहेगा।” 6 तब यह साहिली इलाका चराने के लिए इस्तेमाल होगा, और चरवाहे उसमें अपनी भेड़-बकरियों के लिए बाड़े बना लेंगे। 7 मुल्क यहदाह के घराने के बचे हुआओं के क़ब्ज़े में आएगा, और वही वहाँ चरेंगे, वही शाम के वक़्त अस्कलून के घरों में आराम करेंगे। क्योंकि रब उनका खुदा उनकी देख-भाल करेगा, वही उन्हें बहाल करेगा।

* 2:3 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : छुपे रह सको।

8 “मैंने मोआबियों की लान-तान और अम्मोनियों की इहानत पर गौर किया है। उन्होंने मेरी क्रौम की स्सवाई और उसके मुल्क के खिलाफ बड़ी बड़ी बातें की हैं।” 9 इसलिए रब्बुल-अफवाज जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है, “मेरी हयात की कसम, मोआब और अम्मोन के इलाके सदम और अमूरा की मानिंद बन जाएंगे। उनमें खुदरौ पौदे और नमक के गढे ही पाए जाएंगे, और वह अबद तक वीरानो-सुनसान रहेंगे। तब मेरी क्रौम का बचा हुआ हिस्सा उन्हें लूटकर उनकी ज़मीन पर कब्ज़ा कर लेगा।”

10 यही उनके तकब्बुर का अज़्र होगा। क्योंकि उन्होंने रब्बुल-अफवाज की क्रौम को लान-तान करके क्रौम के खिलाफ बड़ी बड़ी बातें की हैं। 11 जब रब मुल्क के तमाम देवताओं को तबाह करेगा तो उनके रोंगटे खड़े हो जाएंगे। तमाम साहिली इलाकों की अक़वाम उसके सामने झुक जाएँगी, हर एक अपने अपने मक़ाम पर उसे सिजदा करेगा।

12 रब फ़रमाता है, “ऐ एथोपिया के बाशिंदो, मेरी तलवार तुम्हें भी मार डालेगी।”

13 वह अपना हाथ शिमाल की तरफ भी बढ़ाकर असूर को तबाह करेगा। नीनवा वीरानो-सुनसान होकर रेगिस्तान जैसा ख़ुश्क हो जाएगा। 14 शहर के बीच में रेवड़ और दीगर कई किस्म के जानवर आराम करेंगे। दशती उल्लू और खारपुश्त उसके टूटे-फूटे सतनों में बसेरा करेंगे, और जंगली जानवरों की चीखें खिड़कियों में से गूँजेंगी। घरों की दहलीज़ें मलबे के ढेरों में छुपी रहेंगी जबकि उनकी देवदार की लकड़ी हर गुज़रनेवाले को दिखाई देगी। 15 यही उस ख़ुशबाश शहर का अंजाम होगा जो पहले इतनी हिफ़ाज़त से बसता था और जो दिल में कहता था, “मैं ही हूँ, मेरे सिवा कोई और है ही नहीं।” आइंदा वह रेगिस्तान होगा, ऐसी जगह जहाँ जानवर ही आराम करेंगे। हर मुसाफ़िर “तौबा तौबा” कहकर वहाँ से गुज़रेगा।

3

यस्शलम का अंजाम

1 उस सरकश, नापाक और ज़ालिम शहर पर अफ़सोस जो यस्शलम कहलाता है। 2 न वह सुनता, न तरबियत क़बूल करता है। न वह रब पर भरोसा रखता, न अपने खुदा के करीब आता है। 3 जो बुजुर्ग उसके बीच में हैं वह दहाड़ते हुए शेरबबर हैं। उसके काज़ी शाम के वक़्त भूके फिरनेवाले भेड़ीए हैं जो तुलू-सुबह तक शिकार की एक हड्डी तक नहीं छोड़ते। 4 उसके नबी गुस्ताख़ और ग़दर हैं। उसके इमाम मक़दिस की बेहुरमती और शरीअत से ज़्यादाती करते हैं।

5 लेकिन रब भी शहर के बीच में है, और वह रास्त है, वह बेइनसाफ़ी नहीं करता। सुबह बसुबह वह अपना इनसाफ़ कायम रखता है, हम कभी उससे महसूम नहीं रहते। लेकिन बेदीन शर्म से वाकिफ़ ही नहीं होता।

6 रब फ़रमाता है, “मैंने क्रौमों को नेस्तो-नाबूद कर दिया है। उनके क़िले तबाह, उनकी गलियाँ सुनसान हैं। अब उनमें से कोई नहीं गुज़रता। उनके शहर इतने बरबाद हैं कि कोई भी उनमें नहीं रहता। 7 मैं बोला, ‘बेशक यस्शलम मेरा ख़ौफ़ मानकर मेरी तरबियत क़बूल करेगा। क्योंकि क्या ज़रूरत है कि उस की रिहाइशगाह मिट जाए और मेरी तमाम सज़ाएँ उस पर नाज़िल हो जाएँ।’ लेकिन उसके बाशिंदे मज़ीद जोश के साथ अपनी बुरी हरकतों में लग गए।” 8 चुनौचे रब फ़रमाता है, “अब मेरे इंतज़ार में रहो, उस दिन के इंतज़ार में जब मैं शिकार करने के लिए उठूँगा। * क्योंकि मैंने अक़वाम को जमा करने का फ़ैसला किया है। मैं ममालिक को इक़ठा करके उन पर अपना ग़ज़ब नाज़िल करूँगा। तब वह मेरे सख़्त क्रहर का निशाना बन जाएंगे, पूरी दुनिया मेरी ग़ैरत की आग से भस्म हो जाएगी।

इसराईल के लिए नई उम्मीद

9 लेकिन इसके बाद मैं अक़वाम के होंटों को पाक-साफ़ करूँगा ताकि वह आइंदा रब का नाम लेकर इबादत करें, कि वह शाना बशाना खड़ी होकर मेरी खिदमत करें। 10 उस वक़्त मेरे परस्तार, मेरी मुंत्शिर हुई क्रौम एथोपिया के दरियाओं के पार से भी आकर मुझे कुरबानियाँ पेश करेगी।

11 ऐ सिय्यून बेटी, उस दिन तुझे शर्मसार नहीं होना पड़ेगा हालाँकि तूने मुझसे बेवफ़ा होकर निहायत बुरे काम किए हैं। क्योंकि मैं तेरे दरमियान से तेरे मुतकब्बिर शेखीबाज़ों को निकालूँगा। आइंदा तू मेरे मुक़द्दस पहाड़ पर मग़सूर नहीं होगी। 12 मैं तुझमें सिर्फ़ क्रौम के ग़रीबों और ज़रूरतमंदों को छोड़ूँगा, उन सबको जो रब के नाम में पनाह लेंगे। 13 इसराईल का यह बचा हुआ हिस्सा न ग़लत काम करेगा, न झूट बोलेगा। उनकी ज़बान पर फ़रेब नहीं होगा। तब वह भेड़ों की तरह चरागाह में चरेंगे और आराम करेंगे। उन्हें डरानेवाला कोई नहीं होगा।”

14 ऐ सिय्यून बेटी, ख़ुशी के नारे लगा! ऐ इसराईल, ख़ुशी मना! ऐ यस्शलम बेटी, शादमान हो, पूरे दिल से शादियाना बजा। 15 क्योंकि रब ने तेरी सज़ा मिटाकर तेरे दुश्मन को भगा दिया है। रब जो इसराईल का बादशाह है तेरे दरमियान ही है। आइंदा तुझे किसी नुक़सान से डरने की ज़रूरत नहीं होगी।

16 उस दिन लोग यस्शलम से कहेंगे, “ऐ सिय्यून, मत डरना! हौसला न हार, तेरे हाथ ढीले न हों। 17 रब तेरा खुदा तेरे दरमियान है, तेरा पहलवान तुझे नजात देगा। वह शादमान होकर तेरी ख़ुशी मनाएगा। उस की मुहब्बत तेरे कुसूर का ज़िक्र ही नहीं करेगी बल्कि वह तुझसे इंतहाई ख़ुश होकर शादियाना बजाएगा।”

18 रब फ़रमाता है, “मैं ईद को तर्क करनेवालों को तुझसे दूर कर दूँगा, क्योंकि वह तेरी स्सवाई का बाइस थे। 19 मैं उनसे भी निपट लूँगा जो तुझे कुचल रहे हैं। जो लँगड़ाता है उसे मैं बचाऊँगा, जो मुंत्शिर है उन्हें जमा करूँगा। जिस मुल्क में भी उनकी स्सवाई हुई वहाँ मैं उनकी

* 3:8 एक और मुमकिन तरज़ुमा : गवाही देने के लिए।

तारीफ और एहताराम कराऊँगा। 20 उस वक्त मैं तुम्हें जमा करके वतन में वापस लाऊँगा। मैं तुम्हारे देखते देखते तुम्हें बहाल करूँगा और दुनिया की तमाम अक़वाम में तुम्हारी तारीफ़ और एहताराम कराऊँगा।” यह रब का फ़रमान है।

हज्जी

रब के घर को दुबारा बनाने का हुक्म

1 फ़ारस के बादशाह दारा की हुक्मत के दूसरे साल में हज्जी नबी पर रब का कलाम नाज़िल हुआ। छठे महीने का पहला दिन * था। कलाम में अल्लाह यहदाह के गवर्नर ज़रूबाबल बिन सियालतियेल और इमामे-आज़म यशुअ बिन यहसदक से मुखातिब हुआ।

2-3 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “यह कौम कहती है, ‘अभी रब के घर को दुबारा तामीर करने का वक़्त नहीं आया।’ 4 क्या यह ठीक है कि तुम खुद लकड़ी से सजे हुए घरों में रहते हो जबकि मेरा घर अब तक मलबे का ढेर है?” 5 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “अपने हाल पर ग़ौर करो। 6 तुमने बहुत बीज बोया लेकिन कम फ़सल काटी है। तुम खाना तो खाते हो लेकिन भूके रहते हो, पानी तो पीते हो लेकिन प्यासे रहते हो, कपड़े तो पहनते हो लेकिन सदीं लगती है। और जब कोई पैसे कमाकर उन्हें अपने बटवे में डालता है तो उसमें सूरख हैं।”

7 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “अपने हाल पर ध्यान देकर उसका सहीह नतीजा निकालो! 8 पहाड़ों पर चढ़कर लकड़ी ले आओ और रब के घर की तामीर शुरू करो। ऐसा ही रवैया मुझे पसंद होगा, और इस तरह ही तुम मुझे जलाल दोगे।” यह रब का फ़रमान है। 9 “देखो, तुमने बहुत बरकत पाने की तवक्क़ो की, लेकिन क्या हुआ? कम ही हासिल हुआ। और जो कुछ तुम अपने घर वापस लाए उसे मैंने हवा में उड़ा दिया। क्यों? मैं, रब्बुल-अफ़वाज तुम्हें इसकी असल वजह बताता हूँ। मेरा घर अब तक मलबे का ढेर है जबकि तुममें से हर एक अपना अपना घर मज़बूत करने के लिए भाग-दौड़ कर रहा है। 10 इसी लिए आसमान ने तुम्हें ओस से और ज़मीन ने तुम्हें फ़सलों से महसूस कर रखा है। 11 इसी लिए मैंने हुक्म दिया कि खेतों में और पहाड़ों पर काल पड़े, कि मुल्क का अनाज, अंगूर, जैतून बल्कि ज़मीन की हर पैदावार उस की लपेट में आ जाए। इनसानो-हैवान उस की ज़द में आ गए हैं, और तुम्हारी मेहनत-मशक्कत ज़ाया हो रही है।”

12 तब ज़रूबाबल बिन सियालतियेल, इमामे-आज़म यशुअ बिन यहसदक और कौम के पूरे बचे हुए हिस्से ने रब अपने खुदा की सुनी। जो भी बात रब उनके खुदा ने हज्जी नबी को सुनाने को कहा था उसे उन्होंने मान लिया। रब का ख़ौफ़ पूरी कौम पर तारी हुआ। 13 तब रब ने अपने पैगंबर हज्जी की मारिफ़त उन्हें यह पैगाम दिया, “रब फ़रमाता है, मैं तुम्हारे साथ हूँ।”

14-15 यों रब ने यहदाह के गवर्नर ज़रूबाबल बिन सियालतियेल, इमामे-आज़म यशुअ बिन यहसदक और कौम के बचे हुए हिस्से को रब के घर की तामीर करने की तहरीक दी। दारा बादशाह की हुक्मत के दूसरे साल में वह आकर रब्बुल-अफ़वाज अपने खुदा के घर पर काम करने लगे। छठे महीने का 24वाँ दिन † था।

2

रब का नया घर शानदार होगा

1 उसी साल के सातवें महीने के 21वें दिन * हज्जी नबी पर रब का कलाम नाज़िल हुआ, 2 “यहदाह के गवर्नर ज़रूबाबल बिन सियालतियेल, इमामे-आज़म यशुअ बिन यहसदक और कौम के बचे हुए हिस्से को बता देना,

3 ‘तुममें से किस को याद है कि रब का घर तबाह होने से पहले कितना शानदार था? जो इस वक़्त उस की जगह तामीर हो रहा है वह तुम्हें कैसा लगता है? रब के पहले घर की निसबत यह कुछ भी नहीं लगता। 4 लेकिन रब फ़रमाता है कि ऐ ज़रूबाबल, हौसला रख! ऐ इमामे-आज़म यशुअ बिन यहसदक हौसला रख! ऐ मुल्क के तमाम बाशिंदो, हौसला रखकर अपना काम जारी रखो। क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। 5 जो अहद मैंने मिसर से निकलते वक़्त तुमसे बाँधा था वह कायम रहेगा। मेरा रूह तुम्हारे दरमियान ही रहेगा। डरो मत!

6 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है कि थोड़ी देर के बाद मैं एक बार फिर आसमानो-ज़मीन और बहरो-बर्ब को हिला दूँगा। 7 तब तमाम अक़वाम लरज़ उठेंगी, उनके बेशक़ीमत खज़ाने इधर लाए जाएंगे, और मैं इस घर को अपने जलाल से भर दूँगा। 8 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है कि चाँदी मेरी है और सोना मेरा है। 9 नया घर पुराने घर से कहीं ज़्यादा शानदार होगा, और मैं इस जगह को सलामती अता करूँगा।’ यह रब्बुल-अफ़वाज का फ़रमान है।”

मैं तुम्हें दुबारा बरकत दूँगा

10 दारा बादशाह की हुक्मत के दूसरे साल में हज्जी पर रब का एक और कलाम नाज़िल हुआ। नवें महीने का 24वाँ दिन † था।

11 “रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, ‘इमामों से सवाल कर कि शरीअत ज़ैल के मामले के बारे में क्या फ़रमाती है, 12 अगर कोई शख्स मखसूसो-मुक़द्स गोशत अपनी झोली में डालकर कहीं ले जाए और रास्ते में झोली में, ज़ैतून के तेल, रोटी या मज़ीद किसी खानेवाली चीज़ से लग जाए तो क्या खानेवाली यह चीज़ गोशत से मखसूसो-मुक़द्स हो जाती है?’”

हज्जी ने इमामों को यह सवाल पेश किया तो उन्होंने जवाब दिया, “नहीं।”

* 1:1 29 अगस्त। † 1:14-15 21 सितंबर। * 2:1 17 अक्तूबर। † 2:10 18 दिसंबर।

13 तब उसने मज़ीद पूछा, “अगर कोई किसी लाश को छूने से नापाक होकर इन खानेवाली चीज़ों में से कुछ छुए तो क्या खानेवाली चीज़ उससे नापाक हो जाती है?”

इमामों ने जवाब दिया, “जी हाँ।”

14 फिर हज्जी ने कहा, “रब फ़रमाता है कि मेरी नज़र में इस कौम का यही हाल है। जो कुछ भी यह करते और क़ुरबान करते हैं वह नापाक है।

15 लेकिन अब इस बात पर ध्यान दो कि आज से हालात कैसे होंगे। रब के घर की नए सिरे से बुनियाद रखने से पहले हालात कैसे थे?

16 जहाँ तुम फ़सल की 20 बोरियों की उम्मीद रखते थे वहाँ सिर्फ़ 10 हासिल हुई। जहाँ तुम अंगूरों को कुचलकर रस के 100 लिटर की तबक़को रखते थे वहाँ सिर्फ़ 40 लिटर निकले।” 17 रब फ़रमाता है, “तेरी मेहनत-मशक्कत जाया हुई, क्योंकि मैंने पतरोग, फफूँदी और ओलों से तुम्हारी पैदावार को नुक़सान पहुँचाया। तो भी तुमने तौबा करके मेरी तरफ़ रूजू न किया। 18 लेकिन अब तवज्जुह दो कि तुम्हारा हाल आज यानी नवें महीने के 24वें दिन से कैसा होगा। इस दिन रब के घर की बुनियाद रखी गई, इसलिए गौर करो 19 कि क्या आइंदा भी गोदाम में जमाशुदा बीज ज़ाया हो जाएगा, कि क्या आइंदा भी अंगूर, अंजीर, अनार और ज़ैतून का फल न होने के बराबर होगा। क्योंकि आज से मैं तुम्हें बरकत दूँगा।”

ज़रूबाबल से अल्लाह का वादा

20 उसी दिन हज्जी पर रब का एक और कलाम नाज़िल हुआ, 21 “यहदाह के गवर्नर ज़रूबाबल को बता दे कि मैं आसमानो-ज़मीन को हिला दूँगा। 22 मैं शाही तख़्तों को उलटकर अजनबी सलतनतों की ताक़त तबाह कर दूँगा। मैं रथों को उनके रथबानों समेत उलट दूँगा, और घोड़े अपने सवारों समेत गिर जाएंगे। हर एक अपने भाई की तलवार से मरेगा।” 23 रब्बुल-अफ़वाज़ फ़रमाता है, “उस दिन मैं तुझे, अपने खादिम ज़रूबाबल बिन सियालतियेल को लेकर मुहर की अंगूठी की मानिंद बना दूँगा, क्योंकि मैंने तुझे चुन लिया है।” यह रब्बुल-अफ़वाज़ का फ़रमान है।

ज़करियाह

तौबा करो!

1 फ़ारस के बादशाह दारा की हुक्मत के दूसरे साल और आठवें महीने * में रब का कलाम नबी ज़करियाह बिन बरकियाह बिन इदू पर नाज़िल हुआ,

2-3 “लोगों से कह कि रब तुम्हारे बापदादा से निहायत ही नाराज़ था। अब रब्बुल-अफ़वाज़ फ़रमाता है कि मेरे पास वापस आओ तो मैं भी तुम्हारे पास वापस आऊँगा। 4 अपने बापदादा की मानिद न हो जिन्होंने न मेरी सुनी, न मेरी तरफ़ तवज्जुह दी, गो मैंने उस वक़्त के नबियों की मारिफ़त उन्हें आगाह किया था कि अपनी बुरी राहों और शरीर हरकतों से बाज़ आओ। 5 अब तुम्हारे बापदादा कहाँ हैं? और क्या नबी अबद तक ज़िंदा रहते हैं? दोनों बहुत देर हुई वफ़ात पा चुके हैं। † 6 लेकिन तुम्हारे बापदादा के बारे में जितनी भी बातें और फ़ैसले मैंने अपने खादिमों यानी नबियों की मारिफ़त फ़रमाए वह सब पूरे हुए। तब उन्होंने तौबा करके इकरार किया, ‘रब्बुल-अफ़वाज़ ने हमारी बुरी राहों और हरकतों के सबब से वह कुछ किया है जो उसने करने को कहा था।’”

ज़करियाह रोया देखता है

7 तीन माह के बाद रब ने नबी ज़करियाह बिन बरकियाह बिन इदू पर एक और कलाम नाज़िल किया। सबात यानी 11वें महीने का 24वाँ दिन ‡ था।

पहली रोया : घुड़सवार

8 उस रात मैंने रोया में एक आदमी को सुर्ख रंग के घोड़े पर सवार देखा। वह घाटी के दरमियान उगनेवाली मेहँदी की झाड़ियों के बीच में स्का हुआ था। उसके पीछे सुर्ख, भूरे और सफ़ेद रंग के घोड़े खड़े थे। उन पर भी आदमी बैठे थे। § 9 जो फ़रिश्ता मुझसे बात कर रहा था उससे मैंने पूछा, “मेरे आका, इन घुड़सवारों से क्या मुराद है?” उसने जवाब दिया, “मैं तुझे उनका मतलब दिखाता हूँ।” 10 तब मेहँदी की झाड़ियों में स्के हुए आदमी ने जवाब दिया, “यह वह हैं जिन्हें रब ने पूरी दुनिया की ग़त करने के लिए भेजा है।” 11 अब दीगर घुड़सवार रब के उस फ़रिश्ते के पास आए जो मेहँदी की झाड़ियों के दरमियान स्का हुआ था। उन्होंने इतला दी, “हमने दुनिया की ग़त लगाई तो मालूम हुआ कि पूरी दुनिया में अमनो-अमान है।” 12 तब रब का फ़रिश्ता बोला, “ऐ रब्बुल-अफ़वाज़, अब तू 70 सालों से यरूशलम और यहदाह की आबादियों से नाराज़ रहा है। तू कब तक उन पर रहम न करेगा?”

13 जवाब में रब ने मेरे साथ गुफ़्तगू करनेवाले फ़रिश्ते से नरम और तसल्ली देनेवाली बातें कीं। 14 फ़रिश्ता दुबारा मुझसे मुख़ातिब हुआ, “एलान कर कि रब्बुल-अफ़वाज़ फ़रमाता है, ‘मैं बड़ी ग़ैरत से यरूशलम और कोहे-सिय्यून के लिए लड़ूँगा। 15 मैं उन दीगर अक्रवाम से निहायत नाराज़ हूँ जो इस वक़्त अपने आपको महफूज़ समझती हैं। बेशक मैं अपनी क़ौम से कुछ नाराज़ था, लेकिन इन दीगर क़ौमों ने उसे हद से ज़्यादा तबाह कर दिया है। यह कभी भी मेरा मक़सद नहीं था।’ 16 रब फ़रमाता है, ‘अब मैं दुबारा यरूशलम की तरफ़ मायल होकर उस पर रहम करूँगा। मेरा घर नए सिरे से उसमें तामीर हो जाएगा बल्कि पूरे शहर की पैमाइश की जाएगी ताकि उसे दुबारा तामीर किया जाए।’ यह रब्बुल-अफ़वाज़ का फ़रमान है।

17 मज़ीद एलान कर कि रब्बुल-अफ़वाज़ फ़रमाता है, ‘मेरे शहरों में दुबारा कसरत का माल पाया जाएगा। रब दुबारा कोहे-सिय्यून को तसल्ली देगा, दुबारा यरूशलम को चुन लेगा।’”

दूसरी रोया : सींग और कारीगर

18 मैंने अपनी निगाह उठाई तो क्या देखता हूँ कि चार सींग मेरे सामने हैं। 19 जो फ़रिश्ता मुझसे बात कर रहा था उससे मैंने पूछा, “इनका क्या मतलब है?” उसने जवाब दिया, “यह वह सींग हैं जिन्होंने यहदाह और इसराईल को यरूशलम समेत मुंतशिर कर दिया था।”

20 फिर रब ने मुझे चार कारीगर दिखाए। 21 मैंने सवाल किया, “यह क्या करने आ रहे हैं?” उसने जवाब दिया, “मज़क़ूरा सींगों ने यहदाह को इतने जोर से मुंतशिर कर दिया कि आखिरकार एक भी अपना सर नहीं उठा सका। लेकिन अब यह कारीगर उनमें दहशत फैलाने आए हैं। यह उन क़ौमों के सींगों को खाक में मिला देंगे जिन्होंने उनसे यहदाह के बाशिंदों को मुंतशिर कर दिया था।”

2

तीसरी रोया : आदमी यरूशलम की पैमाइश करता है

* 1:1 अक्तूबर ता नवंबर। † 1:5 ‘दोनों . . . चुके हैं’ इज़ाफ़ा है ताकि मतलब साफ़ हो। ‡ 1:7 15 फरवरी। § 1:8 ‘उन . . . बैठे थे’ इज़ाफ़ा है ताकि मतलब साफ़ हो।

1 मैंने अपनी नज़र दुबारा उठाई तो एक आदमी को देखा जिसके हाथ में फीता था। 2 मैंने पूछा, “आप कहाँ जा रहे हैं?” उसने जवाब दिया, “यरूशलम की पैमाइश करने जा रहा हूँ। मैं मालूम करना चाहता हूँ कि शहर की लंबाई और चौड़ाई कितनी होनी चाहिए।” 3 तब वह फरिश्ता रवाना हुआ जो अब तक मुझसे बात कर रहा था। लेकिन रास्ते में एक और फरिश्ता उससे मिलने आया। 4 इस दूसरे फरिश्ते ने कहा, “भागकर पैमाइश करनेवाले नौजवान को बता दे, ‘इनसानो-हैवान की इतनी बड़ी तादाद होगी कि आइंदा यरूशलम की फसील नहीं होगी।’ 5 रब फरमाता है कि उस वक़्त मैं आग की चारदीवारी बनकर उस की हिफाज़त करूँगा, मैं उसके दरमियान रहकर उस की इज्जतो-जलाल का बाइस हूँगा।”

6 रब फरमाता है, “उठो, उठो! शिमाली मुल्क से भाग आओ। क्योंकि मैंने खुद तुम्हें चारों तरफ़ मुंतशिर कर दिया था। 7 लेकिन अब मैं फरमाता हूँ कि वहाँ से निकल आओ। सिय्यून के जितने लोग बाबल * में रहते हैं वहाँ से बच निकलें!” 8 क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज जिसने मुझे भेजा वह उन क्रौमों के बारे में जिन्होंने तुम्हें लूट लिया फरमाता है, “जो तुम्हें छेड़े वह मेरी आँख की पुतली को छेड़ेगा। 9 इसलिए यक़ीन करो कि मैं अपना हाथ उनके खिलाफ़ उठाऊँगा। उनके अपने गुलाम उन्हें लूट लेंगे।”

तब तुम जान लोगे कि रब्बुल-अफ़वाज ने मुझे भेजा है। 10 रब फरमाता है, “ऐ सिय्यून बेटी, खुशी के नारे लगा! क्योंकि मैं आ रहा हूँ, मैं तेरे दरमियान सुकूनत करूँगा। 11 उस दिन बहुत-सी अक़वाम मेरे साथ पैवस्त होकर मेरी क्रौम का हिस्सा बन जाएँगी। मैं खुद तेरे दरमियान सुकूनत करूँगा।”

तब तू जान लेगी कि रब्बुल-अफ़वाज ने मुझे तेरे पास भेजा है।

12 मुक़द्दस मुल्क में यहूदाह रब की मौरूसी ज़मीन बनेगा, और वह यरूशलम को दुबारा चुन लेगा। 13 तमाम इनसान रब के सामने ख़ामोश हो जाएँ, क्योंकि वह उठकर अपनी मुक़द्दस सुकूनतगाह से निकल आया है।

3

चौथी रोया : इमामे-आज़म यशुअ

1 इसके बाद रब ने मुझे रोया में इमामे-आज़म यशुअ को दिखाया। वह रब के फरिश्ते के सामने खड़ा था, और इबलीस उस पर इलज़ाम लगाने के लिए उसके दाएँ हाथ खड़ा हो गया था। 2 रब ने इबलीस से फरमाया, “ऐ इबलीस, रब तुझे मलामत करता है! रब जिसने यरूशलम को चुन लिया वह तुझे डौंटता है! यह आदमी तो बाल बाल बच गया है, उस लकड़ी की तरह जो भड़कती आग में से छीन ली गई है।”

3 यशुअ गंदे कपड़े पहने हुए फरिश्ते के सामने खड़ा था। 4 जो अफ़राद साथ खड़े थे उन्हें फरिश्ते ने हुक्म दिया, “उसके मैले कपड़े उतार दो।” फिर यशुअ से मुखातिब हुआ, “देख, मैंने तेरा कुसूर तुझसे दूर कर दिया है, और अब मैं तुझे शानदार सफ़ेद कपड़े पहना देता हूँ।” 5 मैंने कहा, “वह उसके सर पर पाक-साफ़ पगड़ी बाँधें!” चुनौचे उन्होंने यशुअ के सर पर पाक-साफ़ पगड़ी बाँधकर उसे नए कपड़े पहनाए। रब का फरिश्ता साथ खड़ा रहा। 6 यशुअ से उसने बड़ी संजीदगी से कहा,

7 “रब्बुल-अफ़वाज फरमाता है, ‘मेरी राहों पर चलकर मेरे अहक़ाम पर अमल कर तो तू मेरे घर की राहनुमाई और उस की बारगाहों की देख-भाल करेगा। फिर मैं तेरे लिए यहाँ आने और हाज़िरीन में खड़े होने का रास्ता कायम रखूँगा।’

8 ऐ इमामे-आज़म यशुअ, सुन! तू और तेरे सामने बैठे तेरे इमाम भाई मिलकर उस वक़्त की तरफ़ इशारा हैं जब मैं अपने ख़ादिम को जो कौंपल कहलाता है आने दूँगा। 9 देखो वह जौहर जो मैंने यशुअ के सामने रखा है। उस एक ही पत्थर पर सात आँखें हैं।’ रब्बुल-अफ़वाज फरमाता है, ‘मैं उस पर कतबा कंदा करके एक ही दिन में इस मुल्क का गुनाह मिटा दूँगा। 10 उस दिन तुम एक दूसरे को अपनी अंगूर की बेल और अपने अंजीर के दरख़्त के साय में बैठने की दावत दोगे।’ यह रब्बुल-अफ़वाज का फरमान है।”

4

पाँचवीं रोया : सोने का शमादान और जैतून के दरख़्त

1 जिस फरिश्ते ने मुझसे बात की थी वह अब मेरे पास वापस आया। उसने मुझे यों जगा दिया जिस तरह गहरी नींद सोनेवाले को जगाया जाता है। 2 उसने पूछा, “तुझे क्या नज़र आता है?” मैंने जवाब दिया, “ख़ालिस सोने का शमादान जिस पर तेल का प्याला और सात चराग हैं। हर चराग के सात मुँह हैं। 3 जैतून के दो दरख़्त भी दिखाई देते हैं। एक दरख़त तेल के प्याले के दाईं तरफ़ और दूसरा उसके बाईं तरफ़ है। 4 लेकिन मेरे आका, इन चीज़ों का मतलब क्या है?”

5 फरिश्ता बोला, “क्या यह तुझे मालूम नहीं?” मैंने जवाब दिया, “नहीं, मेरे आका।”

6 फरिश्ते ने मुझसे कहा, “ज़रूबाबल के लिए रब का यह पैग़ाम है,

‘रब्बुल-अफ़वाज फरमाता है कि तू न अपनी ताक़त, न अपनी कुव्वत से बल्कि मेरे रूह से ही कामयाब होगा।’ 7 क्या रास्ते में बड़ा पहाड़ हायल है? ज़रूबाबल के सामने वह हमवार मैदान बन जाएगा। और जब ज़रूबाबल रब के घर का आखिरी पत्थर लगाएगा तो हाज़िरीन पुकार उठेंगे, ‘मुबारक हो! मुबारक हो!’”

* 2:7 लफ़ज़ी तरज़ुमा : बाबल बेटी।

8 रब का कलाम एक बार फिर मुझ पर नाज़िल हुआ, 9 “जस्बुल-अफ़वाज के हाथों ने इस घर की बुनियाद डाली, और उसी के हाथ उसे तकमील तक पहुँचाएँगे। तब तू जान लेगा कि रब्बुल-अफ़वाज ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। 10 गो तामीर के आगाज़ में बहुत कम नज़र आता है तो भी उस पर हिकारत की निगाह न डालो। क्योंकि लोग खुशी मनाएँगे जब जस्बुल-अफ़वाज के हाथ में साहल देखेंगे। (मज़क़ूरा सात चरागा रब की आँखें हैं जो पूरी दुनिया की ग़श्त लगाती रहती हैं)।”

11 मैंने मज़ीद पूछा, “शमादान के दाएँ बाएँ के ज़ैतून के दो दरख़्तों से क्या मुराद है? 12 यहाँ सोने के दो पायप भी नज़र आते हैं जिनसे ज़ैतून का सुनहरा तेल बह निकलता है। ज़ैतून की जो दो टहनियाँ उनके साथ हैं उनका मतलब क्या है?”

13 फ़रिश्ते ने कहा, “क्या तू यह नहीं जानता?” मैं बोला, “नहीं, मेरे आका।” 14 तब उसने फ़रमाया, “यह वह दो मसह किए हुए आदमी हैं जो पूरी दुनिया के मालिक के हुज़ूर खड़े होते हैं।”

5

छठी रोया : उड़नेवाला तूमार

1 मैंने एक बार फिर अपनी नज़र उठाई तो एक उड़ता हुआ तूमार देखा। 2 फ़रिश्ते ने पूछा, “तुझे क्या नज़र आता है?” मैंने जवाब दिया, “एक उड़ता हुआ तूमार जो 30 फुट लंबा और 15 फुट चौड़ा है।” 3 वह बोला, “इससे मुराद एक लानत है जो पूरे मुल्क पर भेजी जाएगी। इस तूमार के एक तरफ़ लिखा है कि हर चोर को मिटा दिया जाएगा और दूसरी तरफ़ यह कि झूटी क़सम खानेवाले को नेस्त किया जाएगा। 4 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, ‘मैं यह भेजूँगा तो चोर और मेरे नाम की झूटी क़सम खानेवाले के घर में लानत दाख़िल होगी और उसके बीच में रहकर उसे लकड़ी और पत्थर समेत तबाह कर देगी।’”

सातवीं रोया : टोकरी में औरत

5 जो फ़रिश्ता मुझसे बात कर रहा था उसने आकर मुझसे कहा, “अपनी निगाह उठाकर वह देख जो निकलकर आ रहा है।” 6 मैंने पूछा, “यह क्या है?” उसने जवाब दिया, “यह अनाज की पैमाइश करने की टोकरी है। यह पूरे मुल्क में नज़र आती है।” 7 टोकरी पर सीसे का ढकना था। अब वह खुल गया, और टोकरी में बैठी हुई एक औरत दिखाई दी। 8 फ़रिश्ता बोला, “इस औरत से मुराद बेदीनी है।” उसने औरत को धक्का देकर टोकरी में वापस कर दिया और सीसे का ढकना जोर से बंद कर दिया।

9 मैंने दुबारा अपनी नज़र उठाई तो दो औरतों को देखा। उनके लक़लक़ के-से पर थे, और उड़ते वक़्त हवा उनके साथ थी। टोकरी के पास पहुँचकर वह उसे उठाकर आसमानो-ज़मीन के दरमियान ले गईं। 10 जो फ़रिश्ता मुझसे गुफ़्तगू कर रहा था उससे मैंने पूछा, “औरतें टोकरी को किधर ले जा रही हैं?” 11 उसने जवाब दिया, “मुल्के-बाबल में। वहाँ वह उसके लिए घर बना देंगी। जब घर तैयार होगा तो टोकरी वहाँ उस की अपनी जगह पर रखी जाएगी।”

6

चार रथ

1 मैंने फिर अपनी निगाह उठाई तो क्या देखता हूँ कि चार रथ पीतल के दो पहाड़ों के बीच में से निकल रहे हैं। 2 पहले रथ के घोड़े सुर्ख, दूसरे के स्याह, 3 तीसरे के सफ़ेद और चौथे के धब्बेदार थे। सब ताक़तवर थे।

4 जो फ़रिश्ता मुझसे बात कर रहा था उससे मैंने सवाल किया, “मेरे आका, इनका क्या मतलब है?” 5 उसने जवाब दिया, “यह आसमान की चार स्तंभ हैं। पहले यह पूरी दुनिया के मालिक के हुज़ूर खड़ी थीं, लेकिन अब वहाँ से निकल रही हैं। 6 स्याह घोड़ों का रथ शिमाली मुल्क की तरफ़ जा रहा है, सफ़ेद घोड़ों का मगरिब की तरफ़, और धब्बेदार घोड़ों का जुनूब की तरफ़।”

7 यह ताक़तवर घोड़े बड़ी बेताबी से इस इंतज़ार में थे कि दुनिया की ग़श्त करें। फिर उसने हुक्म दिया, “चलो, दुनिया की ग़श्त करो।” वह फ़ौरन निकलकर दुनिया की ग़श्त करने लगे। 8 फ़रिश्ते ने मुझे आवाज़ देकर कहा, “उन घोड़ों पर ख़ास ध्यान दो जो शिमाली मुल्क की तरफ़ बढ़ रहे हैं। यह उस मुल्क पर मेरा गुस्सा उतारेंगे।”

इसराईल का आनेवाला बादशाह

9 रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, 10 “आज ही यूसियाह बिन सफ़नियाह के घर में जा! वहाँ तेरी मुलाक़ात बाबल में जिलावतन किए हुए इसराईलियों खलदी, तूबियाह और यदायाह से होगी जो इस वक़्त वहाँ पहुँच चुके हैं। जो हदिये वह अपने साथ लाए हैं उन्हें क़बूल कर। 11 उनकी यह सोना-चाँदी लेकर ताज बना ले, फिर ताज को इमामे-आज़म यशुअ बिन यह्सदक के सर पर रखकर 12 उसे बता, ‘रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है कि एक आदमी आनेवाला है जिसका नाम कौपल है। उसके साथ मैं बहुत कौपलें फूट निकलेगी, और वह रब का घर तामीर करेगा। 13 हाँ, वही रब का घर बनाएगा और शानो-शौकत के साथ तख़्त पर बैठकर हुक्मत करेगा। वह इमाम की हैसियत से भी तख़्त पर बैठेगा, और दोनों ओहदों में इतफ़ाक़ और सलामती होगी।’ 14 ताज को हीलम, तूबियाह, यदायाह और हेन बिन सफ़नियाह की याद में रब के घर में महफूज़ रखा जाए। 15 लोग दूर-दराज़ इलाकों से आकर रब का घर तामीर करने में मदद करेंगे।”

* 6:5 या हवाएँ।

तब तुम जान लोगे कि रब्बुल-अफवाज ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। अगर तुम ध्यान से रब अपने खुदा की सुनो तो यह सब कुछ पूरा हो जाएगा।

7

तुम मेरी सुनने से इनकार करते हो

1 दारा बादशाह की हुकूमत के चौथे साल में रब जकरियाह से हमकलाम हुआ। किसलेव यानी नवें महीने का चौथा दिन * था। 2 उस वक्त बैतेल शहर ने सराज़र और रजम-मलिक को उसके आदमियों समेत यरूशलम भेजा था ताकि रब से इलतमास करें। 3 साथ साथ उन्हें रब्बुल-अफवाज के घर के इमामों को यह सवाल पेश करना था, “अब हम कई साल से पाँचवें महीने में रोज़ा रखकर रब के घर की तबाही पर मातम करते आए हैं। क्या लाज़िम है कि हम यह दस्तूर आइंदा भी जारी रखें?”

4 तब मुझे रब्बुल-अफवाज से जवाब मिला, 5 “मुल्क के तमाम बाशिंदों और इमामों से कह, ‘बेशक तुम 70 साल से पाँचवें और सातवें महीने में रोज़ा रखकर मातम करते आए हो। लेकिन क्या तुमने यह दस्तूर वाकई मेरी खातिर अदा किया? हरगिज़ नहीं! 6 ईदों पर भी तुम खाते-पीते वक्त सिर्फ अपनी ही खातिर खुशी मनाते हो। 7 यह वही बात है जो मैंने माज़ी में भी नबियों की मारिफ़त तुम्हें बताई, उस वक्त जब यरूशलम में आबादी और सुकून था, जब गिर्दों-नवाह के शहर दशते-नजब और मगरिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े तक आबाद थे।”

8 इस नाते से जकरियाह पर रब का एक और कलाम नाज़िल हुआ, 9 “रब्बुल-अफवाज फ़रमाता है, ‘अदालत में मुंसिफ़ाना फ़ैसले करो, एक दूसरे पर मेहरबानी और रहम करो! 10 बेवाओं, यतीमों, अजनबियों और गरीबों पर ज़ुल्म मत करना। अपने दिल में एक दूसरे के खिलाफ़ बुरे मनसूबे न बान्धो।’ 11 जब तुम्हारे बापदादा ने यह कुछ सुना तो वह इस पर ध्यान देने के लिए तैयार नहीं थे बल्कि अकड़ गए। उन्होंने अपना मुँह दूसरी तरफ़ फेरकर अपने कानों को बंद किए रखा। 12 उन्होंने अपने दिलों को हीरे की तरह सख़्त कर लिया ताकि शरीअत और वह बातें उन पर असरअंदाज़ न हो सकें जो रब्बुल-अफवाज ने अपने रूह के वसीले से गुज़शता नबियों को बताने को कहा था। तब रब्बुल-अफवाज का शदीद ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ। 13 वह फ़रमाता है, ‘चूँकि उन्होंने मेरी न सुनी इसलिए मैंने फ़ैसला किया कि जब वह मदद के लिए मुझसे इल्तिजा करें तो मैं भी उनकी नहीं सुनूँगा। 14 मैंने उन्हें आँधी से उड़ाकर तमाम दीगर अक़वाम में मुंतशिर कर दिया, ऐसी कौमों में जिनसे वह नावाक़िफ़ थे। उनके जाने पर वतन इतना वीरानो-सुनसान हुआ कि कोई न रहा जो उसमें आए या वहाँ से जाए। यों उन्होंने उस खुशगवार मुल्क को तबाह कर दिया।”

8

एक नया आगाज़

1 एक बार फिर रब्बुल-अफवाज का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, 2 “रब्बुल-अफवाज फ़रमाता है कि मैं बड़ी ग़ैरत से सिय्यून के लिए लड़ रहा हूँ, बड़े गुस्से में उसके लिए जिद्दो-जहद कर रहा हूँ। 3 रब फ़रमाता है कि मैं सिय्यून के पास वापस आऊँगा, दुबारा यरूशलम के बीच में सुकूनत करूँगा। तब यरूशलम ‘वफ़ादारी का शहर’ और रब्बुल-अफवाज का पहाड़ ‘कोहे-मुक़द्दस’ कहलाएगा। 4 क्योंकि रब्बुल-अफवाज फ़रमाता है, ‘बुजुर्ग मर्दों-ख़वातीन दुबारा यरूशलम के चौकों में बैठेंगे, और हर एक इतना उम्ररसीदा होगा कि उसे छड़ी का सहारा लेना पड़ेगा। 5 साथ साथ चौक खेल-कूद में मसरूफ़ लड़के-लड़कियों से भरे रहेंगे।’

6 रब्बुल-अफवाज फ़रमाता है, ‘शायद यह उस वक्त बचे हुए इसराईलियों को नामुमकिन लगे। लेकिन क्या ऐसा काम मेरे लिए जो रब्बुल-अफवाज हूँ नामुमकिन है? हरगिज़ नहीं!’ 7 रब्बुल-अफवाज फ़रमाता है, ‘मैं अपनी क़ौम को मशरिक और मगरिब के ममालिक से बचाकर 8 वापस लाऊँगा, और वह यरूशलम में बसेंगे। वहाँ वह मेरी क़ौम होंगे और मैं वफ़ादारी और इनसाफ़ के साथ उनका खुदा हूँगा।’

9 रब्बुल-अफवाज फ़रमाता है, ‘हौसला रखकर तामीरी काम तकमील तक पहुँचाओ! आज भी तुम उन बातों पर एतमाद कर सकते हो जो नबियों ने रब्बुल-अफवाज के घर की बुनियाद डालते वक्त सुनाई थी। 10 याद रहे कि उस वक्त से पहले न इनसान और न हैवान को मेहनत की मज़दूरी मिलती थी। आने जानेवाले कहीं भी दुश्मन के हमलों से महफूज़ नहीं थे, क्योंकि मैंने हर आदमी को उसके हमसाय का दुश्मन बना दिया था।’ 11 लेकिन रब्बुल-अफवाज फ़रमाता है, ‘अब से मैं तुमसे जो बचे हुए हो ऐसा सुल्क नहीं करूँगा। 12 लोग सलामती से बीज बोएँगे, अंगूर की बेल वक्त पर अपना फल लाएंगी, खेतों में फ़सलें पकेंगी और आसमान ओस पड़ने देगा। यह तमाम चीज़ें मैं यहदाह के बचे हुएों को मीरास में दूँगा। 13 ये यहदाह और इसराईल, पहले तुम दीगर अक़वाम में लानत का निशाना बन गए थे, लेकिन अब जब मैं तुम्हें रिहा करूँगा तो तुम बरकत का बाइस होगे। डरो मत! हौसला रखो!’

14 रब्बुल-अफवाज फ़रमाता है, ‘पहले जब तुम्हारे बापदादा ने मुझे तैश दिलाया तो मैंने तुम पर आफ़त लाने का मुसम्मम इरादा कर लिया था और कभी न पछताया। 15 लेकिन अब मैं यरूशलम और यहदाह को बरकत देना चाहता हूँ। इसमें मेरा इरादा उतना ही पक्का है जितना पहले तुम्हें नुक़सान पहुँचाने में पक्का था। चुनौचे डरो मत! 16 लेकिन इन बातों पर ध्यान दो, एक दूसरे से सच बात करो, अदालत में सच्चाई और सलामती पर मबनी फ़ैसले करो, 17 अपने पड़ोसी के खिलाफ़ बुरे मनसूबे मत बान्धो और झूटी क़सम खाने के शौक से बाज़ आओ। इन तमाम चीज़ों से मैं नफ़रत करता हूँ।’ यह रब का फ़रमान है।”

* 7:1 4 दिसंबर।

18 एक बार फिर रब्बुल-अफवाज का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, 19 “रब्बुल-अफवाज फ़रमाता है कि आज तक यहदाह के लोग चौथे, पाँचवें, सातवें और दसवें महीने में रोज़ा रखकर मातम करते आए हैं। लेकिन अब से यह औकात खुशीओ-शादमानी के मौके होंगे जिन पर जशन मनाओगे। लेकिन सच्चाई और सलामती को प्यार करो!

20 रब्बुल-अफवाज फ़रमाता है कि ऐसा वक़्त आएगा जब दीगर अक़वाम और मुतअद्दिद शहरों के लोग यहाँ आएँगे। 21 एक शहर के बाशिंदे दूसरे शहर में जाकर कहेंगे, ‘आओ, हम यरूशलम जाकर रब से इलतमास करें, रब्बुल-अफवाज की मरज़ी दरियाफ़्त करें। हम भी जाएँगे।’ 22 हाँ, मुतअद्दिद अक़वाम और ताक़तवर उम्मतें यरूशलम आएँगी ताकि रब्बुल-अफवाज की मरज़ी मालूम करें और उससे इलतमास करें।

23 रब्बुल-अफवाज फ़रमाता है कि उन दिनों में मुख़्तलिफ़ अक़वाम और अहले-ज़बान के दस आदमी एक यहदी के दामन को पकड़कर कहेंगे, ‘हमें अपने साथ चलने दें, क्योंकि हमने सुना है कि अल्लाह आपके साथ है।’”

9

इसराईल के दुश्मनों की अदालत

1 रब का कलाम मुल्के-हद्राक के खिलाफ़ है, और वह दमिशक़ पर नाज़िल होगा। क्योंकि इनसान और इसराईल के तमाम क़बीलों की आँखें रब की तरफ़ देखती हैं। 2 दमिशक़ की सरहद पर वाके हमात बल्कि सूर और सैदा भी इस कलाम से मुतअस्सिर हो जाएँगे, खाह वह कितने दानिशमंद क्यों न हों। 3 बेशक़ सूर ने अपने लिए मज़बूत क़िला बना लिया है, बेशक़ उसने सोने-चाँदी के ऐसे ढेर लगाए हैं जैसे आम तौर पर गलियों में रेत या कचरे के ढेर लगा लिए जाते हैं। 4 लेकिन रब उस पर कब्ज़ा करके उस की फ़ौज को समुंदर में फेंक देगा। तब शहर नज़रे-आतिश हो जाएगा। 5 यह देखकर अस्कलून घबरा जाएगा और ग़ज़ज़ा तड़प उठेगा। अक़रून भी लरज़ उठेगा, क्योंकि उस की उम्मीद जाती रहेगी। ग़ज़ज़ा का बादशाह हलाक़ और अस्कलून ग़ैरआबाद हो जाएगा। 6 अशदूद में दो नसलों के लोग बसेंगे। रब फ़रमाता है, “जो कुछ फ़िलिस्तिनियों के लिए फ़ख़र का बाइस है उसे मैं मिटा दूँगा। 7 मैं उनकी बुतपरस्ती ख़त्म करूँगा। आइंदा वह गोश्त को खून के साथ और अपनी धिनौनी कुरबानियाँ नहीं खाएँगे। तब जो बच जाएँगे मेरे परस्तार होंगे और यहदाह के खानदानों में शामिल हो जाएँगे। अक़रून के फ़िलिस्ती यों मेरी क़ौम में शामिल हो जाएँगे जिस तरह कदीम ज़माने में यबूसी मेरी क़ौम में शामिल हो गए। 8 मैं खुद अपने घर की पहरादारी करूँगा ताकि आइंदा जो भी आते या जाते वक़्त वहाँ से गुज़रे उस पर हमला न करे, कोई भी ज़ालिम मेरी क़ौम को तंग न करे। अब से मैं खुद उस की देख-भाल करूँगा।

नया बादशाह आनेवाला है

9 ऐ सिय्यून बेटी, शादियाना बजा! ऐ यरूशलम बेटी, शादमानी के नारे लगा! देख, तेरा बादशाह तेरे पास आ रहा है। वह रास्तबाज़ और फ़तहमंद है, वह हलीम है और ग़धे पर, हाँ ग़धी के बच्चे पर सवार है।

10 मैं इफ़राईम से रथ और यरूशलम से घोड़े दूर कर दूँगा। जंग की कमान टूट जाएगी। मौऊदा बादशाह * के कहने पर तमाम अक़वाम में सलामती कायम हो जाएगी। उस की हुकूमत एक समुंदर से दूसरे तक और दरियाए-फ़ुरात से दुनिया की इतहा तक मानी जाएगी।

रब अपनी क़ौम की हिफ़ाज़त करेगा

11 ऐ मेरी क़ौम, मैंने तेरे साथ एक अहद बाँधा जिसकी तसदीक़ कुरबानियों के खून से हुई, इसलिए मैं तेरे कैदियों को पानी से महरूम गढ़े से रिहा करूँगा। 12 ऐ पुरउम्मीद कैदियों, किले के पास वापस आओ! क्योंकि आज ही मैं एलान करता हूँ कि तुम्हारी हर तकलीफ़ के एवज़ मैं तुम्हें दो बरकतें बरख़्श दूँगा।

13 यहदाह मेरी कमान है और इसराईल मेरे तीर जो मैं दुश्मन के खिलाफ़ चलाऊँगा। ऐ सिय्यून बेटी, मैं तेरे बेटों को यूनान के फ़ौजियों से लड़ने के लिए भेजूँगा, मैं तुझे सूरे की तलवार की मानिंद बना दूँगा।”

14 तब रब उन पर ज़ाहिर होकर बिजली की तरह अपना तीर चलाएगा। रब कादिरे-मुतलक़ नरसिंगा फूँककर जुनूबी आँधियों में आएगा। 15 रब्बुल-अफवाज खुद इसराईलियों को पनाह देगा। तब वह दुश्मन को खा खाकर उसके फेंके हुए पत्थरों को खाक में मिला देगा और खून को मै की तरह पी पीकर शोर मचाएँगे। वह कुरबानी के खून से भरे कटोरे की तरह भर जाएँगे, कुरबानगाह के कोनों जैसे खूनआलूदा हो जाएँगे।

16 उस दिन रब उनका खुदा उन्हें जो उस की क़ौम का रेवड़ हैं छुटकारा देगा। तब वह उसके मुल्क में ताज के जवाहर की मानिंद चमक उठेंगे। 17 वह कितने दिलकश और खूबसूरत लगेंगे! अनाज और मै की कसरत से कुँवारे-कुँवारियाँ फलने फूलने लगेंगे।

10

रब ही मदद कर सकता है

* 9:10 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : उसके कहने पर।

1 बहार के मौसम में ख से बारिश मॉगो। क्योंकि वही घने बादल बनाता है, वही बारिश बरसाकर हर एक को खेत की हरियाली मुहैया करता है। 2 तुम्हारे घरों के बुत फ़रेब देते, तुम्हारे ग़ैबदान झूटी रोया देखते और फ़रेबदेह खाब सुनाते हैं। उनकी तसल्ली अबस है। इसी लिए कौम को भेड़-बकरियों की तरह यहाँ से चला जाना पड़ा। गल्लाबान नहीं है, इसलिए वह मुसीबत में उलझे रहते हैं।

ख अपनी कौम को वापस लाएगा

3 ख फ़रमाता है, “मेरी कौम के गल्लाबानों पर मेरा गज़ब भड़क उठा है, और जो बकरे उस की राहनुमाई कर रहे हैं उन्हें मैं सज़ा दूँगा। क्योंकि रब्बुल-अफवाज अपने रेवड़ यहदाह के घराने की देख-भाल करेगा, उसे जंगी घोड़े जैसा शानदार बना देगा। 4 यहदाह से कोने का बुनियादी पत्थर, मेख, जंग की कमान और तमाम हुक्मरान निकल आएँगे। 5 सब सूरमे की मानिद होंगे जो लड़ते वक्रत दुश्मन को गली के कचरे में कुचल देंगे। रब्बुल-अफवाज उनके साथ होगा, इसलिए वह लड़कर गालिब आएँगे। मुखालिफ़ घुड़सवारों की बड़ी स्सवाई होगी।

6 मैं यहदाह के घराने को तकवियत दूँगा, यूसुफ़ के घराने को छुटकारा दूँगा, हाँ उन पर रहम करके उन्हें दुबारा वतन में बसा दूँगा। तब उनकी हालत से पता नहीं चलेगा कि मैंने कभी उन्हें रद किया था। क्योंकि मैं ख उनका खुदा हूँ, मैं ही उनकी सुनूँगा। 7 इफ़राईम के अफ़राद सूरमे से बन जाएँगे, वह यों खुश हो जाएँगे जिस तरह दिल मैं पीने से खुश हो जाता है। उनके बच्चे यह देखकर बाग़ बाग़ हो जाएँगे, उनके दिल ख की खुशी मनाएँगे।

8 मैं सीटी बजाकर उन्हें जमा करूँगा, क्योंकि मैंने फ़िधा देकर उन्हें आज़ाद कर दिया है। तब वह पहले की तरह बेशुमार हो जाएँगे। 9 मैं उन्हें बीज की तरह मुख्तलिफ़ कौमों में बोकर मुंतशिर कर दूँगा, लेकिन दूर-दराज़ इलाकों में वह मुझे याद करेंगे। और एक दिन वह अपनी औलाद समेत बचकर वापस आएँगे। 10 मैं उन्हें मिसर से वापस लाऊँगा, असूर से इक़ठा करूँगा। मैं उन्हें जिलियाद और लुबनान में लाऊँगा, तो भी उनके लिए जगह काफ़ी नहीं होगी। 11 जब वह मुसीबत के समुंदर में से गुज़रेंगे तो ख मौजों को यों मारेगा कि सब कुछ पानी की गहराइयों तक खुशक हो जाएगा। असूर का फ़ख़र खाक में मिल जाएगा, और मिसर का शाही असा दूर हो जाएगा। 12 मैं अपनी कौम को ख में तकवियत दूँगा, और वह उसका ही नाम लेकर ज़िंदगी गुज़ारेंगे।” यह ख का फ़रमान है।

11

बड़ों को नीचा किया जाएगा

1 ऐ लुबनान, अपने दरवाज़ों को खोल दे ताकि तेरे देवदार के दरख्त नज़रे-आतिश हो जाएँ।
2 ऐ जूनीपर के दरखतो, वावैला करो! क्योंकि देवदार के दरख्त गिर गए हैं, यह ज़बरदस्त दरख्त तबाह हो गए हैं। ऐ बसन के बलूतो, आहो-ज़ारी करो! जो जंगल इतना घना था कि कोई उसमें से गुज़र न सकता था उसे काटा गया है।
3 सुनो, चरवाहे रो रहे हैं, क्योंकि उनकी शानदार चरागाहें बरबाद हो गई हैं। सुनो, जवान शेरबबर दहाड़ रहे हैं, क्योंकि वादीए-यरदन का गुंजान जंगल ख़तम हो गया है।

दो किस्म के गल्लाबान

4 ख मेरा खुदा मुझे हमकलाम हुआ, “ज़बह होनेवाली भेड़-बकरियों की गल्लाबानी कर! 5 जो उन्हें ख़रीद लेते वह उन्हें ज़बह करते हैं और कुसूरवार नहीं ठहरते। और जो उन्हें बेचते वह कहते हैं, ‘अल्लाह की हम्द हो, मैं अमीर हो गया हूँ!’ उनके अपने चरवाहे उन पर तरस नहीं खाते।

6 इसलिए ख फ़रमाता है कि मैं भी मुल्क के बाशिंदों पर तरस नहीं खाऊँगा। मैं हर एक को उसके पड़ोसी और उसके बादशाह के हवाले करूँगा। वह मुल्क को टुकड़े टुकड़े करेंगे, और मैं उन्हें उनके हाथ से नहीं छुड़ाऊँगा।”

7 चुनाँचे मैं, ज़करियाह ने सौदागरों के लिए ज़बह होनेवाली भेड़-बकरियों की गल्लाबानी की। मैंने उस काम के लिए दो लाठियाँ लीं। एक का नाम ‘मेहरबानी’ और दूसरी का नाम ‘यगांगत’ था। उनके साथ मैंने रेवड़ की गल्लाबानी की। 8 एक ही महीने में मैंने तीन गल्लाबानों को मिटा दिया। लेकिन जल्द ही मैं भेड़-बकरियों से तंग आ गया, और उन्होंने मुझे भी हकीर जाना।

9 तब मैं बोला, “आइंदा मैं तुम्हारी गल्लाबानी नहीं करूँगा। जिसे मरना है वह मरे, जिसे ज़ाया होना है वह ज़ाया हो जाए। और जो बच जाएँ वह एक दूसरे का गोश्त खाएँ। मैं ज़िम्मादार नहीं हूँगा!” * 10 मैंने लाठी बनाम ‘मेहरबानी’ को तोड़कर ज़ाहिर किया कि जो अहद मैंने तमाम अक्रवाम के साथ बाँधा था वह मनसूख है। 11 उसी दिन वह मनसूख हुआ।

तब भेड़-बकरियों के जो सौदागर मुझ पर ध्यान दे रहे थे उन्होंने जान लिया कि यह पैग़ाम ख की तरफ़ से है। 12 फिर मैंने उनसे कहा, “अगर यह आपको मुनासिब लगे तो मुझे मज़दूरी के पैसे दे दें, वरना रहने दें।” उन्होंने मज़दूरी के लिए मुझे चाँदी के 30 सिक्के दे दिए।

13 तब ख ने मुझे हुक्म दिया, “अब यह रकम कुम्हार † के सामने फेंक दे। कितनी शानदार रकम है! यह मेरी इतनी ही कदर करते हैं।” मैंने चाँदी के 30 सिक्के लेकर ख के घर में कुम्हार के सामने फेंक दिए। 14 इसके बाद मैंने दूसरी लाठी बनाम ‘यगांगत’ को तोड़कर ज़ाहिर किया कि यहदाह और इसराईल की अखुव्वत मनसूख हो गई है।

* 11:9 ‘मैं ज़िम्मादार नहीं हूँगा’ इज़ाफ़ा है ताकि मतलब साफ़ हो। † 11:13 या धात ढालनेवाले।

15 फिर रब ने मुझे बताया, “अब दुबारा गल्लाबान का सामान ले ले। लेकिन इस बार अहमक चरवाहे का-सा रवैया अपना ले। 16 क्योंकि मैं मुल्क पर ऐसा गल्लाबान मुकर्रर करूँगा जो न हलाक होनेवालों की देख-भाल करेगा, न छोटों को तलाश करेगा, न ज़ख्मियों को शफा देगा, न सेहतमंदों को खुराक मुहैया करेगा। इसके बजाए वह बेहतरीन जानवरों का गोश्त खा लेगा बल्कि इतना ज़ालिम होगा कि उनके खुरों को फाड़कर तोड़ेगा। 17 उस बेकार चरवाहे पर अफसोस जो अपने रेवड़ को छोड़ देता है। तलवार उसके बाजू और दहनी आँख को ज़ख्मी करे। उसका बाजू सूख जाए और उस की दहनी आँख अंधी हो जाए।”

12

अल्लाह यरूशलम की हिफाज़त करेगा

1 ज़ैल में रब का इसराईल के लिए कलाम है। रब जिसने आसमान को ख़ैमे की तरह तानकर ज़मीन की बुनियादे रखीं और इन्सान के अंदर उस की रूह को तश्कील दिया वह फ़रमाता है,

2 “मैं यरूशलम को गिर्दो-नवाह की क़ौमों के लिए शराब का प्याला बना दूँगा जिसे वह पीकर लड़खड़ाने लगेगी। यहदाह भी मुसीबत में आएगा जब यरूशलम का मुहासरा किया जाएगा। 3 उस दिन दुनिया की तमाम अक्रवाम यरूशलम के खिलाफ़ जमा हो जाएँगी। तब मैं यरूशलम को एक ऐसा पत्थर बनाऊँगा जो कोई नहीं उठा सकेगा। जो भी उसे उठाकर ले जाना चाहे वह ज़ख्मी हो जाएगा।” 4 रब फ़रमाता है, “उस दिन मैं तमाम घोड़ों में अबतरी और उनके सवारों में दीवानगी पैदा करूँगा। मैं दीगर अक्रवाम के तमाम घोड़ों को अंधा कर दूँगा।

साथ साथ मैं खुली आँखों से यहदाह के घराने की देख-भाल करूँगा। 5 तब यहदाह के खानदान दिल में कहेंगे, ‘यरूशलम के बाशिंदे इसलिए हमारे लिए कुव्वत का बाइस हैं कि रब्बुल-अफ़वाज उनका खुदा है।’ 6 उस दिन मैं यहदाह के खानदानों को जलते हुए कोयले बना दूँगा जो दुश्मन की सूखी लकड़ी को जला देंगे। वह भड़कती हुई मशाल होंगे जो दुश्मन की पूलों को भस्म करेगी। उनके दाईं और बाईं तरफ़ जितनी भी क़ौमें गिर्दो-नवाह में रहती हैं वह सब नज़रे-आतिश हो जाएँगी। लेकिन यरूशलम अपनी ही जगह महफूज़ रहेगा।

7 पहले रब यहदाह के घरों को बचाएगा ताकि दाऊद के घराने और यरूशलम के बाशिंदों की शानो-शौकत यहदाह से बड़ी न हो। 8 लेकिन रब यरूशलम के बाशिंदों को भी पनाह देगा। तब उनमें से कमज़ोर आदमी दाऊद जैसा सूमा होगा जबकि दाऊद का घराना खुदा की मानिंद, उनके आगे चलनेवाले रब के फ़रिश्ते की मानिंद होगा। 9 उस दिन मैं यरूशलम पर हमलाआवर तमाम अक्रवाम को तबाह करने के लिए निकलूँगा।

यरूशलम का मातम

10 मैं दाऊद के घराने और यरूशलम के बाशिंदों पर मेहरबानी और इलतमास का रूह डंडेलूँगा। तब वह मुझ पर नज़र डालेंगे जिसे उन्होंने छेदा है, और वह उसके लिए ऐसा मातम करेंगे जैसे अपने इकलौते बेटे के लिए, उसके लिए ऐसा शदीद गम खाएँगे जिस तरह अपने पहलौठे के लिए। 11 उस दिन लोग यरूशलम में शिद्दत से मातम करेंगे। ऐसा मातम होगा जैसा मैदाने-मजिदो में हदद-रिम्मोन पर किया जाता था। 12-14 पूरे का पूरा मुल्क वावैला करेगा। तमाम खानदान एक दूसरे से अलग और तमाम औरतें दूसरों से अलग आहो-बुका करेंगी। दाऊद का खानदान, नातन का खानदान, लावी का खानदान, सिमई का खानदान और मुल्क के बाक़ी तमाम खानदान अलग अलग मातम करेंगे।

13

बुतपरस्ती और झूठी नबुव्वत का खातमा

1 उस दिन दाऊद के घराने और यरूशलम के बाशिंदों के लिए चश्मा खोला जाएगा जिसके ज़रीए वह अपने गुनाहों और नापाकी को दूर कर सकेंगे।”

2 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “उस दिन मैं तमाम बुतों को मुल्क में से मिटा दूँगा। उनका नामो-निशान तक नहीं रहेगा, और वह किसी को याद नहीं रहेंगे।

नबियों और नापाकी की रूह को भी मैं मुल्क से दूर करूँगा। 3 इसके बाद अगर कोई नबुव्वत करे तो उसके अपने माँ-बाप उससे कहेंगे, ‘तू ज़िंदा नहीं रह सकता, क्योंकि तूने रब का नाम लेकर झूट बोला है।’ जब वह पेशगोइयाँ सुनाएगा तो उसके अपने वालिदैन उसे छेद डालेंगे। 4 उस वक़्त हर नबी को अपनी रोया पर शर्म आएगी जब नबुव्वत करेगा। वह नबी का बालों से बना लिबास नहीं पहनेगा ताकि फ़रेब दे 5 बल्कि कहेगा, ‘मैं नबी नहीं बल्कि काशतकार हूँ। जवानी से ही मेरा पेशा खेतीबाड़ी रहा है।’ 6 अगर कोई पूछे, ‘तो फिर तेरे सीने पर ज़ख्मों के निशान किस तरह लगे? तो जवाब देगा, मैं अपने दोस्तों के घर में ज़ख्मी हुआ।’”

लोगों की जॉच-पड़ताल

7 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “ऐ तलवार, जाग उठ! मेरे गल्लाबान पर हमला कर, उस पर जो मेरे करीब है। गल्लाबान को मार डाल ताकि भेड़-बकरियाँ तितर-बितर हो जाएँ। मैं खुद अपने हाथ को छोटों के खिलाफ़ उठाऊँगा।” 8 रब फ़रमाता है, “पूरे मुल्क में लोगों के तीन हिस्सों में से दो हिस्सों को मिटाया जाएगा। दो हिस्से हलाक हो जाएंगे और सिर्फ़ एक ही हिस्सा बचा रहेगा। 9 इस बचे हुए हिस्से को मैं आग में डालकर चाँदी या सोने की तरह पाक-साफ़ करूँगा। तब वह मेरा नाम पुकारेंगे, और मैं उनकी सुनूँगा। मैं कहूँगा, ‘यह मेरी क़ौम है,’ और वह कहेंगे, ‘रब हमारा खुदा है।’”

14

रब खुद यरूशलम में बादशाह होगा

1 ए यरूशलम, रब का वह दिन आनेवाला है जब दुश्मन तेरा माल लूटकर तेरे दरमियान ही उसे आपस में तकसीम करेगा। 2 क्योंकि मैं तमाम अक्रवाम को यरूशलम से लड़ने के लिए जमा करूँगा। शहर दुश्मन के कब्जे में आएगा, घरों को लूट लिया जाएगा और औरतों की इसमतदारी की जाएगी। शहर के आधे बाशिंदे जिलावतन हो जाएंगे, लेकिन बाकी हिस्सा उसमें ज़िंदा छोड़ा जाएगा।

3 लेकिन फिर रब खुद निकलकर इन अक्रवाम से यों लड़ेगा जिस तरह तब लड़ता है जब कभी मैदाने-जंग में आ जाता है। 4 उस दिन उसके पाँव यरूशलम के मशरिक में जैतून के पहाड़ पर खड़े होंगे। तब पहाड़ फट जाएगा। उसका एक हिस्सा शिमाल की तरफ और दूसरा जुनूब की तरफ खिसक जाएगा। बीच में मशरिक से मगरिब की तरफ एक बड़ी वादी पैदा हो जाएगी। 5 तुम मेरे पहाड़ों की इस वादी में भागकर पनाह लो, क्योंकि यह आजल तक पहुँचाएगी। जिस तरह तुम यहूदाह के बादशाह उज्जियाह के ऐयाम में अपने आपको जलजले से बचाने के लिए यरूशलम से भाग निकले थे उसी तरह तुम मज़क़रा वादी में दौड़ आओगे। तब रब मेरा खुदा आएगा, और तमाम मुक़द्दसीन उसके साथ होंगे।

6 उस दिन न तपती गरमी होगी, न सर्दी या पाला। 7 वह एक मुन्फ़रिद दिन होगा जो रब ही को मालूम होगा। न दिन होगा और न रात बल्कि शाम को भी रौशनी होगी। 8 उस दिन यरूशलम से ज़िंदगी का पानी बह निकलेगा। उस की एक शाख मशरिक के बहीराए-मुरदार की तरफ और दूसरी शाख मगरिब के समुंदर की तरफ बहेगी। इस पानी में न गरमियों में, न सर्दियों में कभी कमी होगी।

9 रब पूरी दुनिया का बादशाह होगा। उस दिन रब वाहिद खुदा होगा, लोग सिर्फ उसी के नाम की परस्तिश करेंगे। 10 पूरा मुल्क शिमाली शहर जिबा से लेकर यरूशलम के जुनूब में वाक़े शहर रिम्मोन तक खुला मैदान बन जाएगा। सिर्फ यरूशलम अपनी ही ऊँची जगह पर रहेगा। उस की पुरानी हुदूद भी कायम रहेंगी यानी बिनयमीन के दरवाज़े से लेकर पुराने दरवाज़े और कोने के दरवाज़े तक, फिर हननेल के बुर्ज से लेकर उस जगह तक जहाँ शाही मै बनाई जाती है। 11 लोग उसमें बसेंगे, और आइंदा उसे कभी पूरी तबाही के लिए मखसूस नहीं किया जाएगा। यरूशलम महफूज़ जगह रहेगी।

12 लेकिन जो क़ौमों यरूशलम से लड़ने निकलें उन पर रब एक हौलनाक बीमारी लाएगा। लोग अभी खड़े हो सकेंगे कि उनके जिस्म सड़ जाएंगे। आँखें अपने खानों में और ज़बान मुँह में गल जाएगी। 13 उस दिन रब उनमें बड़ी अबतरी पैदा करेगा। हर एक अपने साथी का हाथ पकड़कर उस पर हमला करेगा। 14 यहूदाह भी यरूशलम से * लड़ेगा। तमाम पड़ोसी अक्रवाम की दौलत वहाँ जमा हो जाएगी यानी कसरत का सोना, चाँदी और कपड़े। 15 न सिर्फ़ इनसान मोहलक बीमारी की ज़द में आएगा बल्कि जानवर भी। घोड़े, खच्चर, ऊँट, गधे और बाक़ी जितने जानवर उन लश्करगाहों में होंगे उन सब पर यही आफ़त आएगी।

तमाम अक्रवाम यरूशलम में ईद मनाएँगी

16 तो भी उन तमाम अक्रवाम के कुछ लोग बच जाएंगे जिन्होंने यरूशलम पर हमला किया था। अब वह साल बसाल यरूशलम आते रहेंगे ताकि हमारे बादशाह रब्बुल-अफ़वाज की परस्तिश करें और झोंपड़ियों की ईद मनाएँ। 17 जब कभी दुनिया की तमाम अक्रवाम में से कोई हमारे बादशाह रब्बुल-अफ़वाज को सिजदा करने के लिए यरूशलम न आए तो उसका मुल्क बारिश से महरूम रहेगा। 18 अगर मिसरी क़ौम यरूशलम न आए और हिस्सा न ले तो वह बारिश से महरूम रहेगी। यों रब उन क़ौमों को सज़ा देगा जो झोंपड़ियों की ईद मनाने के लिए यरूशलम नहीं आएँगी। 19 जितनी भी क़ौमों झोंपड़ियों की ईद मनाने के लिए यरूशलम न आएँ उन्हें यही सज़ा मिलेगी, खाह मिसर हो या कोई और क़ौम।

20 उस दिन घोड़ों की घंटियों पर लिखा होगा, “रब के लिए मखसूसो-मुक़द्दस।” और रब के घर की देंगे उन मुक़द्दस कटोरों के बराबर होंगी जो कुरबानगाह के सामने इस्तेमाल होते हैं। 21 हाँ, यरूशलम और यहूदाह में मौजूद हर देग रब्बुल-अफ़वाज के लिए मखसूसो-मुक़द्दस होगी। जो भी कुरबानियाँ पेश करने के लिए यरूशलम आए वह उन्हें अपनी कुरबानियाँ पकाने के लिए इस्तेमाल करेगा। उस दिन से रब्बुल-अफ़वाज के घर में कोई भी सौदागर पाया नहीं जाएगा।

* 14:14 या में।

मलाकी

¹ ज़ैल में इसराइल के लिए रब का वह कलाम है जो उसने मलाकी पर नाज़िल किया।

² रब फ़रमाता है, “तुम मुझे प्यारे हो।” लेकिन तुम कहते हो, “किस तरह? तेरी हमसे मुहब्बत कहाँ जाहिर हुई है?”

सुनो रब का जवाब! “क्या एसौ और याकूब सगे भाई नहीं थे? तो भी सिर्फ़ याकूब मुझे प्यारा था ³ जबकि एसौ से मैं मुतनाफ़िर रहा। उसके पहाड़ी इलाके अदोम को मैंने वीरानो-सुनसान कर दिया, उस की मौससी ज़मीन को रेगिस्तान के गीदड़ों के हवाले कर दिया है।” ⁴ अदोमी कहते हैं, “गो हम चकनाचूर हो गए हैं तो भी खंडरात की जगह नए घर बना लेंगे।” लेकिन रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “बेशक तामीर का काम करते जाओ, लेकिन मैं सब कुछ दुबारा ढा दूँगा। उनका मुल्क ‘बेदीनी का मुल्क’ और उनकी क़ौम ‘वह क़ौम जिस पर रब की अबदी लानत है’ कहलाएगी। ⁵ तुम इसराइली अपनी आँखों से यह देखोगे। तब तुम कहोगे, ‘रब अपनी अज़मत इसराइल की सरहदों से बाहर भी जाहिर करता है’।”

इमामों पर इलज़ाम

⁶ रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “ऐ इमामो, बेटा अपने बाप का और नौकर अपने मालिक का एहताराम करता है। लेकिन मेरा एहताराम कौन करता है, गो मैं तुम्हारा बाप हूँ? मेरा ख़ौफ़ कौन मानता है, गो मैं तुम्हारा मालिक हूँ? हकीकत यह है कि तुम मेरे नाम को हक़ीर जानते हो। लेकिन तुम एतराज़ करते हो, ‘हम किस तरह तेरे नाम को हक़ीर जानते हैं?’ ⁷ इसमें कि तुम मेरी कुरबानगाह पर नापाक ख़ुराक रख देते हो। तुम पूछते हो, ‘हमने तुझे किस बात में नापाक किया है?’ इसमें कि तुम रब की मेज़ को काबिले-तहक़ीर करार देते हो। ⁸ क्योंकि गो अंधे जानवरों को कुरबान करना सख़्त मना है, तो भी तुम यह बात नज़रंदाज़ करके ऐसे जानवरों को कुरबान करते हो। लँगड़े या बीमार जानवर चढ़ाना भी ममनू है, तो भी तुम कहते हो, ‘कोई बात नहीं’ और ऐसे ही जानवरों को पेश करते हो।” रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “अगर वाकई इसकी कोई बात नहीं तो अपने मुल्क के गवर्नर को ऐसे जानवरों को पेश करो। क्या वह तुमसे ख़ुश होगा? क्या वह तुम्हें क़बूल करेगा? हरगिज़ नहीं! ⁹ चुनौचे अब अल्लाह से इलतमास करो कि हम पर मेहरबानी कर।” रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “ख़ुद सोच लो, क्या हमारे हाथों से ऐसी कुरबानियाँ मिलने पर अल्लाह हमें क़बूल करेगा? ¹⁰ काश तुममें से कोई मेरे घर के दरवाज़ों को बंद करे ताकि मेरी कुरबानगाह पर बेफ़ायदा आग न लगा सको! मैं तुमसे ख़ुश नहीं, और तुम्हारे हाथों से कुरबानियाँ मुझे बिलकुल पसंद नहीं।” यह रब्बुल-अफ़वाज का फ़रमान है।

¹¹ रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “पूरी दुनिया में मशरिफ़ से मगरिब तक मेरा नाम अज़ीम है। हर जगह मेरे नाम को बख़ूर और पाक कुरबानियाँ पेश की जाती हैं। क्योंकि दीगर अक्रवाम में मेरा नाम अज़ीम है। ¹² लेकिन तुम अपनी हरकतों से मेरे नाम की बेहुरमती करते हो। तुम कहते हो, ‘रब की मेज़ को नापाक किया जा सकता है, उस की कुरबानियों को हक़ीर जाना जा सकता है।’ ¹³ तुम शिकायत करते हो, ‘हाय, यह ख़िदमत कितनी तकलीफ़देह है!’ और कुरबानी की आग को हिक़ारत की नज़रों से देखते हुए तेज़ करते हो। हर किस्म का जानवर पेश किया जाता है, ख़ाह वह ज़ख़मी, लँगड़ा या बीमार क्यों न हो।” रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “क्या मैं तुम्हारे हाथों से ऐसी कुरबानियाँ क़बूल कर सकता हूँ? हरगिज़ नहीं! ¹⁴ उस धोकेबाज़ पर लानत जो मन्नत मानकर कहे, ‘मैं रब को अपने रेवड़ का अच्छा मेंढा कुरबान करूँगा’ लेकिन इसके बजाए नाकिस जानवर पेश करे।” क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “मैं अज़ीम बादशाह हूँ, और अक्रवाम में मेरे नाम का ख़ौफ़ माना जाता है।

2

¹ ऐ इमामो, अब मेरे फ़ैसले पर ध्यान दो!” ² रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “मेरी सुनो, पूरे दिल से मेरे नाम का एहताराम करो, वरना मैं तुम पर लानत भेजूँगा, मैं तुम्हारी बरकतों को लानतों में तबदील कर दूँगा। बल्कि मैं यह कर भी चुका हूँ, क्योंकि तुमने पूरे दिल से मेरे नाम का एहताराम नहीं किया। ³ तुम्हारे चाल-चलन के सबब से मैं तुम्हारी औलाद को डाँटूँगा। मैं तुम्हारी ईद की कुरबानियों का गोबर तुम्हारे मुँह पर फेंक दूँगा, और तुम्हें उसके समेत बाहर फेंका जाएगा।”

⁴ रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “तब तुम जान लोगे कि मैंने तुम पर यह फ़ैसला किया है ताकि मेरा लावी के कबीले के साथ अहद कायम रहे। ⁵ क्योंकि मैंने अहद बाँधकर लावियों से ज़िंदगी और सलामती का वादा किया था, और मैंने वादे को पूरा भी किया। उस वक़्त लावी मेरा ख़ौफ़ मानते बल्कि मेरे नाम से दहशत खाते थे। ⁶ वह काबिले-एतमाद तालीम देते थे, और उनकी ज़बान पर झूट नहीं होता था। वह सलामती से और सीधी राह पर मेरे साथ चलते थे, और बहुत-से लोग उनके बाइस गुनाह से दूर हो गए।

⁷ इमामों का फ़र्ज़ है कि वह सहीह तालीम महफूज़ रखें, और लोगों को उनसे हिदायत हासिल करनी चाहिए। क्योंकि इमाम रब्बुल-अफ़वाज का पैगंबर है। ⁸ लेकिन तुम सहीह राह से हट गए हो। तुम्हारी तालीम बहुतों के लिए ठोकर का बाइस बन गई है।” रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “तुमने लावियों के साथ मेरे अहद को ख़ाक में मिला दिया है। ⁹ इसलिए मैंने तुम्हें तमाम क़ौम के सामने ज़लील कर दिया है, सब तुम्हें हक़ीर जानते हैं। क्योंकि तुम मेरी राहों पर नहीं रहते बल्कि तालीम देते वक़्त जानिबदारी दिखाते हो।”

नाजायज शादियाँ और तलाक पर मलामत

10 क्या हम सबका एक ही बाप नहीं? एक ही खुदा ने हमें खलक किया है। तो फिर हम एक दूसरे से बेवफ़ाई करके अपने बापदादा के अहद की बेहुरमती क्यों कर रहे हैं?

11 यहदाह बेवफ़ा हो गया है। इसराईल और यरूशलम में मकरूह हरकतें सरजद हुई हैं, क्योंकि यहदाह के आदमियों ने रब के घर की बेहुरमती की है, उस मक़दिस की जो रब को प्यारा है। किस तरह? उन्होंने दीगर अक़वाम की बुतपरस्त औरतों से शादी की है। * 12 लेकिन जिसने भी ऐसा किया है उसे रब जड़ से याक़ूब के ख़ैमों से निकाल फेंकेगा, खाह वह रब्बुल-अफ़वाज को कितनी कुरबानियाँ पेश क्यों न करे।

13 तुमसे एक और ख़ता भी सरजद होती है। बेशक रब की कुरबानगाह को अपने आँसुओं से तर करो, बेशक रोते और कराहते रहो कि रब न हमारी कुरबानियों पर तबज्जुह देता, न उन्हें ख़ुशी से हमारे हाथ से क़बूल करता है। लेकिन यह करने से कोई फ़रक़ नहीं पड़ेगा। 14 तुम पूछते हो, “क्यों?” इसलिए कि शादी करते वक़्त रब खुद गवाह होता है। और अब तू अपनी बीवी से बेवफ़ा हो गया है, गो वह तेरी जीवनसाथी है जिससे तूने शादी का अहद बाँधा था। 15 क्या रब ने शौहर और बीवी को एक नहीं बनाया, एक जिस्म जिसमें रूह है? और यह एक जिस्म क्या चाहता है? अल्लाह की तरफ़ से औलाद। चुनौचे अपनी रूह में ख़बरदार रहो! अपनी बीवी से बेवफ़ा न हो जा! 16 क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है, “मैं तलाक़ से नफ़रत करता हूँ और उससे मुतनफ़्फ़िर हूँ जो जुल्म से मुलब्बस होता है। चुनौचे अपनी रूह में ख़बरदार रहकर इस तरह का बेवफ़ा रवैया इख़्तियार न करो!”

रब लोगों की अदालत करेगा

17 तुम्हारी बातों को सुन सुनकर रब थक गया है। तुम पूछते हो, “हमने उसे किस तरह थका दिया है?” इसमें कि तुम दावा करते हो, “बदी करनेवाला रब की नज़र में ठीक है, वह ऐसे लोगों को पसंद करता है।” तुम यह भी कहते हो, “अल्लाह कहाँ है? वह इनसाफ़ क्यों नहीं करता?”

3

1 रब्बुल-अफ़वाज ज़वाब में फ़रमाता है, “देख, मैं अपने पैग़म्बर को भेज देता हूँ जो मेरे आगे आगे चलकर मेरा रास्ता तैयार करेगा। तब जिस रब को तुम तलाश कर रहे हो वह अचानक अपने घर में आ मौजूद होगा। हाँ, अहद का पैग़म्बर जिसकी तुम शिद्दत से आरज़ू करते हो वह आनेवाला है!”

2 लेकिन जब वह आए तो कौन यह बरदाश्त कर सकेगा? कौन कायम रह सकेगा जब वह हम पर ज़ाहिर हो जाएगा? वह तो धात ढालनेवाले की आग या धोबी के तेज़ साबुन की मानिंद होगा। 3 वह बैठकर चाँदी को पिघलाकर पाक-साफ़ करेगा। जिस तरह सोने-चाँदी को पिघलाकर पाक-साफ़ किया जाता है उसी तरह वह लावी के कबीले को पाक-साफ़ करेगा। तब वह रब को रास्त कुरबानियाँ पेश करेंगे। 4 फिर यहदाह और यरूशलम की कुरबानियाँ क़दीम ज़माने की तरह दुबारा रब को क़बूल होंगी।

5 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “मैं तुम्हारी अदालत करने के लिए तुम्हारे पास आऊँगा। जल्द ही मैं उनके खिलाफ़ गवाही दूँगा जो मेरा ख़ौफ़ नहीं मानते, जो जादूगर और ज़िनाकार हैं, जो झूटी क़सम खाते, मज़दूरों का हक़ मारते, बेवाओं और यतीमों पर जुल्म करते और अजनबियों का हक़ मारते हैं।

तुम अल्लाह को धोका देते हो

6 मैं, रब तबदील नहीं होता, लेकिन तुम अब तक याक़ूब की औलाद रहे हो। 7 अपने बापदादा के ज़माने से लेकर आज तक तुमने मेरे अहक़ाम से दूर रहकर उन पर ध्यान नहीं दिया। रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है कि मेरे पास वापस आओ! तब मैं भी तुम्हारे पास वापस आऊँगा।

लेकिन तुम एतराज़ करते हो, ‘हम क्यों वापस आएँ, हमसे क्या सरजद हुआ है?’ 8 क्या मुनासिब है कि इनसान अल्लाह को ठगे? हरगिज़ नहीं! लेकिन तुम लोग यही कुछ कर रहे हो। तुम पूछते हो, ‘हम किस तरह तुझे ठगते हैं?’ इसमें कि तुम मुझे अपनी पैदावार का दसवाँ हिस्सा नहीं देते। नीज़, तुम इमामों को कुरबानियों का वह हिस्सा नहीं देते जो उनका हक़ बनता है। 9 पूरी क़ौम मुझे ठगती रहती है, इसलिए मैंने तुम पर लानत भेजी है।”

10 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “मेरे घर के गोदाम में अपनी पैदावार का पूरा दसवाँ हिस्सा जमा करो ताकि इसमें ख़ुराक दस्तयाब हो। मुझे इसमें आजमाकर देखो कि मैं अपने वादे को पूरा करता हूँ कि नहीं। क्योंकि मैं तुमसे वादा करता हूँ कि ज़वाब में मैं आसमान के दरिचे खोलकर तुम पर हद से ज्यादा बरक़त बरसा दूँगा।” 11 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “मैं कीड़ों को तुम्हारी फ़सलों से दूर रखूँगा ताकि तुम्हारे खेतों की पैदावार और तुम्हारे अंगूर ख़राब न हो जाएँ बल्कि पक जाएँ। 12 तब तुम्हारा मुल्क इतना राहतबख़्श होगा कि तमाम अक़वाम तुम्हें मुबारक कहेंगी।” यह रब्बुल-अफ़वाज का फ़रमान है।

जिस दिन अल्लाह फैसला करेगा

* 2:11 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : यहदाह ने अजनबी माबूदों की बेटियों से शादी की है।

13 रब फरमाता है, “तुम मेरे बारे में कुफ़र बकते हो। तुम कहते हो, ‘हम क्योंकर कुफ़र बकते हैं?’ 14 इसमें कि तुम कहते हो, ‘अल्लाह की खिदमत करना अबस है। क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज की हिदायात पर ध्यान देने और मुँह लटकाकर उसके हुज़ूर फिरने से हमें क्या फ़ायदा हुआ है? 15 चुनौचे गुस्ताख़ लोगों को मुबारक हो, क्योंकि बेदीन फलते-फूलते और अल्लाह को आजमानेवाले ही बचे रहते हैं।”

16 लेकिन फिर रब का ख़ौफ़ माननेवाले आपस में बात करने लगे, और रब ने गौर से उनकी सुनी। उसके हुज़ूर यादगारी की किताब लिखी गई जिसमें उनके नाम दर्ज हैं जो रब का ख़ौफ़ मानते और उसके नाम का एहताराम करते हैं। 17 रब्बुल-अफ़वाज फरमाता है, “जिस दिन मैं हरकत में आऊँगा उस दिन वह मेरी ख़ास मिलकियत होंगे। मैं उन पर यों रहम करूँगा, जिस तरह बाप अपने उस बेटे पर तरस खाता है जो उस की खिदमत करता है। 18 उस वक़्त तुम्हें रास्तबाज़ और बेदीन का फ़रक़ दुबारा नज़र आएगा। साफ़ ज़ाहिर हो जाएगा कि अल्लाह की खिदमत करनेवालों और दूसरों में क्या फ़रक़ है।”

4

1 रब्बुल-अफ़वाज फरमाता है, “यक़ीनन वह दिन आनेवाला है जब मेरा ग़ज़ब भड़कती भट्टी की तरह नाज़िल होकर हर गुस्ताख़ और बेदीन शख्स को भूसे की तरह भस्म कर देगा। वह जड़ से लेकर शाख़ तक मिट जाएंगे।

2 लेकिन तुम पर जो मेरे नाम का ख़ौफ़ मानते हो रास्ती का सूरज तुलू होगा, और उसके परों तले शफ़ा होगी। तब तुम बाहर निकलकर खुले छोड़े हुए बछड़ों की तरह ख़ुशी से कूदते फाँदते फिरोगे। 3 जिस दिन मैं यह कुछ करूँगा उस दिन तुम बेदीनों को यों कुचल डालोगे कि वह पाँवों तले की खाक बन जाएंगे।” यह रब्बुल-अफ़वाज का फ़रमान है।

4 “मेरे ख़ादिम मूसा की शरीअत को याद रखो यानी वह तमाम अहक़ाम और हिदायात जो मैंने उसे होरिब यानी सीना पहाड़ पर इसराईली क़ौम के लिए दी थीं। 5 रब के उस अज़ीम और हौलनाक दिन से पहले मैं तुम्हारे पास इलियास नबी को भेजूँगा। 6 जब वह आएगा तो बाप का दिल बेटे और बेटे का दिल बाप की तरफ़ मायल करेगा ताकि मैं आकर मुल्क को अपने लिए मख़सूस करके नेस्तो-नाबूद न करूँ।”

मती

ईसा मसीह का नसबनामा

1 ईसा मसीह बिन दाऊद बिन इब्राहीम का नसबनामा :

2 इब्राहीम इसहाक का बाप था, इसहाक याकूब का बाप और याकूब यहूदा और उसके भाइयों का बाप। 3 यहूदा के दो बेटे फारस और ज़ारथ थे (उनकी माँ तमर थी)। फारस हसरोन का बाप और हसरोन राम का बाप था। 4 राम अम्मीनदाब का बाप, अम्मीनदाब नहसोन का बाप और नहसोन सलमोन का बाप था। 5 सलमोन बोअज़ का बाप था (बोअज़ की माँ राहब थी)। बोअज़ ओबेद का बाप था (ओबेद की माँ रूत थी)। ओबेद यस्सी का बाप और 6 यस्सी दाऊद बादशाह का बाप था।

दाऊद सुलेमान का बाप था (सुलेमान की माँ पहले ऊरिय्याह की बीवी थी)। 7 सुलेमान रहुबियाम का बाप, रहुबियाम अबियाह का बाप और अबियाह आसा का बाप था। 8 आसा यहसफ़त का बाप, यहसफ़त यूराम का बाप और यूराम उज्जियाह का बाप था। 9 उज्जियाह यूताम का बाप, यूताम आखज़ का बाप और आखज़ हिज़कियाह का बाप था। 10 हिज़कियाह मनस्सी का बाप, मनस्सी अमून का बाप और अमून यूसियाह का बाप था। 11 यूसियाह यह्याकीन * और उसके भाइयों का बाप था (यह बाबल की जिलावतनी के दौरान पैदा हुए)।

12 बाबल की जिलावतनी के बाद यह्याकीन † सियालतियेल का बाप और सियालतियेल ज़रूबाबल का बाप था। 13 ज़रूबाबल अबीहूद का बाप, अबीहूद इलियाक्रीम का बाप और इलियाक्रीम आजोर का बाप था। 14 आजोर सदोक का बाप, सदोक अरखीम का बाप और अरखीम इलीहूद का बाप था। 15 इलीहूद इलियज़र का बाप, अलियज़र मत्तान का बाप और मत्तान का बाप याकूब था। 16 याकूब मरियम के शौहर यूसुफ़ का बाप था। इस मरियम से ईसा पैदा हुआ, जो मसीह कहलाता है।

17 यों इब्राहीम से दाऊद तक 14 नसलें हैं, दाऊद से बाबल की जिलावतनी तक 14 नसलें हैं और जिलावतनी से मसीह तक 14 नसलें हैं।

ईसा मसीह की पैदाइश

18 ईसा मसीह की पैदाइश यों हुई : उस वक़्त उस की माँ मरियम की मँगनी यूसुफ़ के साथ हो चुकी थी कि वह रूहल-कुद्स से हामिला पाई गई। अभी उनकी शादी नहीं हुई थी। 19 उसका मंगेतर यूसुफ़ रास्तबाज़ था, वह अलानिया मरियम को बदनाम नहीं करना चाहता था। इसलिए उसने ख़ामोशी से यह रिश्ता तोड़ने का इरादा कर लिया। 20 वह इस बात पर अभी ग़ौरो-फ़िकर कर ही रहा था कि रब का फ़रिश्ता ख़ाब में उस पर ज़ाहिर हुआ और फ़रमाया, “यूसुफ़ बिन दाऊद, मरियम से शादी करके उसे अपने घर ले आने से मत डर, क्योंकि पैदा होनेवाला बच्चा रूहल-कुद्स से है। 21 उसके बेटा होगा और उसका नाम ईसा रखना, क्योंकि वह अपनी क़ौम को उसके गुनाहों से रिहाई देगा।”

22 यह सब कुछ इसलिए हुआ ताकि रब की वह बात पूरी हो जाए जो उसने अपने नबी की मारिफ़त फ़रमाई थी, 23 “देखो एक कुँवारी हामिला होगी। उससे बेटा पैदा होगा और वह उसका नाम इम्मानुएल रखेंगे।” (इम्मानुएल का मतलब ‘ख़ुदा हमारे साथ’ है।)

24 जब यूसुफ़ जाग उठा तो उसने रब के फ़रिश्ते के फ़रमान के मुताबिक़ मरियम से शादी कर ली और उसे अपने घर ले गया। 25 लेकिन जब तक उसके बेटा पैदा न हुआ वह मरियम से हमबिसतर न हुआ। और यूसुफ़ ने बच्चे का नाम ईसा रखा।

2

मशरिक से मजूसी आलिम

1 ईसा हेरोदेस बादशाह के ज़माने में सूबा यहूदिया के शहर बैत-लहम में पैदा हुआ। उन दिनों में कुछ मजूसी आलिम मशरिक से आकर यरूशलम पहुँच गए। 2 उन्होंने पूछा, “यहूदियों का वह बादशाह कहाँ है जो हाल ही में पैदा हुआ है? क्योंकि हमने मशरिक में उसका सितारा देखा है और हम उसे सिजदा करने आए हैं।”

3 यह सुनकर हेरोदेस बादशाह पूरे यरूशलम समेत घबरा गया। 4 तमाम राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा को जमा करके उसने उनसे दरियाफ़्त किया कि मसीह कहाँ पैदा होगा।

5 उन्होंने जवाब दिया, “यहूदिया के शहर बैत-लहम में, क्योंकि नबी की मारिफ़त यों लिखा है, 6 ‘ऐ मुल्के-यहूदिया में वाके बैत-लहम, तू यहूदिया के हुक्मरानों में हरगिज़ सबसे छोटा नहीं। क्योंकि तुझमें से एक हुक्मरान निकलेगा जो मेरी क़ौम इसराईल की गल्लाबानी करेगा।’”

7 इस पर हेरोदेस ने ख़ुफ़िया तौर पर मजूसी आलिमों को बुलाकर तफ़सील से पूछा कि वह सितारा किस वक़्त दिखाई दिया था। 8 फिर उसने उन्हें बताया, “बैत-लहम जाँएँ और तफ़सील से बच्चे का पता लगाएँ। जब आप उसे पा लें तो मुझे इत्तला दें ताकि मैं भी जाकर उसे सिजदा करूँ।”

* 1:11 यूनानी में यह्याकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है। † 1:12 यूनानी में यह्याकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

9 बादशाह के इन अलफाज़ के बाद वह चले गए। और देखो जो सितारा उन्होंने मशरिक में देखा था वह उनके आगे आगे चलता गया और चलते चलते उस मकाम के ऊपर ठहर गया जहाँ बच्चा था। 10 सितारे को देखकर वह बहुत खुश हुए। 11 वह घर में दाखिल हुए और बच्चे को माँ के साथ देखकर उन्होंने औंधे मुँह गिरकर उसे सिजदा किया। फिर अपने डिब्बे खोलकर उसे सोने, लुबान और मुर के तोहफे पेश किए।

12 जब रवानगी का वक्त आया तो वह यरूशलम से होकर न गए बल्कि एक और रास्ते से अपने मुल्क चले गए, क्योंकि उन्हें खाब में आगाह किया गया था कि हेरोदेस के पास वापस न जाओ।

मिसर की जानिब हिजरत

13 उनके चले जाने के बाद रब का फरिश्ता खाब में यूसुफ पर जाहिर हुआ और कहा, “उठ, बच्चे को उस की माँ समेत लेकर मिसर को हिजरत कर जा। जब तक मैं तुझे इतला न दूँ वहीं ठहरा रह, क्योंकि हेरोदेस बच्चे को तलाश करेगा ताकि उसे कत्ल करे।”

14 यूसुफ उठा और उसी रात बच्चे को उस की माँ समेत लेकर मिसर के लिए रवाना हुआ। 15 वहाँ वह हेरोदेस के इंतकाल तक रहा। यों वह बात पूरी हुई जो रब ने नबी की मारिफत फरमाई थी, “मैंने अपने फरजंद को मिसर से बुलाया।”

बच्चों का कत्ल

16 जब हेरोदेस को मालूम हुआ कि मजूसी आलिमों ने मुझे फ़रेब दिया है तो उसे बड़ा तैश आया। उसने अपने फ़ौजियों को बैत-लहम भेजकर उन्हें हुक्म दिया कि बैत-लहम और इर्दगिर्द के इलाके के उन तमाम लड़कों को कत्ल करें जिनकी उम्र दो साल तक हो। क्योंकि उसने मजूसियों से बच्चे की उम्र के बारे में यह मालूम कर लिया था।

17 यों यरमियाह नबी की पेशगोई पूरी हुई, 18 “रामा में शोर मच गया है, रोने पीटने और शदीद मातम की आवाज़ें। राखिल अपने बच्चों के लिए रो रही है और तसल्ली कबूल नहीं कर रही, क्योंकि वह हलाक हो गए हैं।”

मिसर से वापसी

19 जब हेरोदेस इंतकाल कर गया तो रब का फरिश्ता खाब में यूसुफ पर जाहिर हुआ जो अभी मिसर ही में था। 20 फरिश्ते ने उसे बताया, “उठ, बच्चे को उस की माँ समेत लेकर मुल्के-इसराईल वापस चला जा, क्योंकि जो बच्चे को जान से मारने के दरपै थे वह मर गए हैं।”

21 चुनौचे यूसुफ उठा और बच्चे और उस की माँ को लेकर मुल्के-इसराईल में लौट आया।

22 लेकिन जब उसने सुना कि अरखिलाउस अपने बाप हेरोदेस की जगह यहूदिया में तख्तनशीन हो गया है तो वह वहाँ जाने से डर गया। फिर खाब में हिदायत पाकर वह गलील के इलाके के लिए रवाना हुआ। 23 वहाँ वह एक शहर में जा बसा जिसका नाम नासरत था। यों नबियों की बात पूरी हुई कि ‘वह नासरी कहलाएगा।’

3

यहया बपतिस्मा देनेवाले की खिदमत

1 उन दिनों में यहया बपतिस्मा देनेवाला आया और यहूदिया के रेगिस्तान में एलान करने लगा, 2 “तौबा करो, क्योंकि आसमान की बादशाही करीब आ गई है।” 3 यहया वही है जिसके बारे में यसायाह नबी ने फरमाया, ‘रेगिस्तान में एक आवाज़ पुकार रही है, रब की राह तैयार करो! उसके रास्ते सीधे बनाओ।’

4 यहया ऊँटों के बालों का लिबास पहने और कमर पर चमड़े का पटका बाँधे रहता था। खुराक के तौर पर वह टिट्टियाँ और जंगली शहद खाता था। 5 लोग यरूशलम, पूरे यहूदिया और दरियाए-यरदन के पूरे इलाके से निकलकर उसके पास आए। 6 और अपने गुनाहों को तसलीम करके उन्होंने दरियाए-यरदन में यहया से बपतिस्मा लिया।

7 बहुत-से फ़रीसी और सदूकी भी वहाँ आए जहाँ वह बपतिस्मा दे रहा था। उन्हें देखकर उसने कहा, “ऐ ज़हरीले साँप के बच्चो! किसने तुम्हें आनेवाले ग़ज़ब से बचने की हिदायत की? 8 अपनी जिंदगी से जाहिर करो कि तुमने वाकई तौबा की है। 9 यह खयाल मत करो कि हम तो बच जाएंगे क्योंकि इब्राहीम हमारा बाप है। मैं तुमको बताता हूँ कि अल्लाह इन पत्थरों से भी इब्राहीम के लिए औलाद पैदा कर सकता है। 10 अब तो अदालत की कुल्हाड़ी दरख्तों की जड़ों पर रखी हुई है। हर दरख्त जो अच्छा फल न लाए काटा और आग में झोंका जाएगा। 11 मैं तो तुम तौबा करनेवालों को पानी से बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन एक आनेवाला है जो मुझसे बड़ा है। मैं उसके जूतों को उठाने के भी लायक नहीं। वह तुम्हें रूहल-कुद्स और आग से बपतिस्मा देगा। 12 वह हाथ में छाज पकड़े हुए अनाज को भूसे से अलग करने के लिए तैयार खड़ा है। वह गाहने की जगह बिलकुल साफ़ करके अनाज को अपने गोदाम में जमा करेगा। लेकिन भूसे को वह ऐसी आग में झोंकेगा जो बुझने की नहीं।”

ईसा का बपतिस्मा

13 फिर ईसा गलील से दरियाए-यरदन के किनारे आया ताकि यहया से बपतिस्मा ले। 14 लेकिन यहया ने उसे रोकने की कोशिश करके कहा, “मुझे तो आपसे बपतिस्मा लेने की ज़रूरत है, तो फिर आप मेरे पास क्यों आए हैं?”

15 ईसा ने जवाब दिया, “अब होने ही दे, क्योंकि मुनासिब है कि हम यह करते हुए अल्लाह की रास्त मरज़ी पूरी करें।” * इस पर यहया मान गया।

* 3:15 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : हम तमाम रास्तबाज़ी पूरी करें।

16 बपतिस्मा लेने पर ईसा फ़ौरन पानी से निकला। उसी लमहे आसमान खुल गया और उसने अल्लाह के रूह को देखा जो कबूतर की तरह उतरकर उस पर ठहर गया। 17 साथ साथ आसमान से एक आवाज़ सुनाई दी, “यह मेरा प्यारा फ़रज़ंद है, इससे मैं खुश हूँ।”

4

ईसा को आजमाया जाता है

1 फिर रूहल-कुदूस ईसा को रेगिस्तान में ले गया ताकि उसे इबलीस से आजमाया जाए। 2 चालीस दिन और चालीस रात रोज़ा रखने के बाद उसे आखिरकार भूक लगी। 3 फिर आजमानेवाला उसके पास आकर कहने लगा, “अगर तू अल्लाह का फ़रज़ंद है तो इन पत्थरों को हुक्म दे कि रोटी बन जाएँ।”

4 लेकिन ईसा ने इनकार करके कहा, “हरगिज़ नहीं, क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है कि इन्सान की ज़िंदगी सिर्फ़ रोटी पर मुनहसिर नहीं होती बल्कि हर उस बात पर जो रब के मुँह से निकलती है।”

5 इस पर इबलीस ने उसे मुक़द्दस शहर यरूशलम ले जाकर बैतुल-मुक़द्दस की सबसे ऊँची जगह पर खड़ा किया और कहा, 6 “अगर तू अल्लाह का फ़रज़ंद है तो यहाँ से छलौंग लगा दे। क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, ‘वह तेरी खातिर अपने फ़रिश्तों को हुक्म देगा, और वह तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे ताकि तेरे पाँवों को पत्थर से ठेस न लगे’।”

7 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “कलामे-मुक़द्दस यह भी फ़रमाता है, ‘रब अपने खुदा को न आजमाना’।”

8 फिर इबलीस ने उसे एक निहायत ऊँचे पहाड़ पर ले जाकर उसे दुनिया के तमाम ममालिक और उनकी शानो-शौकत दिखाई। 9 वह बोला, “यह सब कुछ मैं तुझे दे दूँगा, शर्त यह है कि तू गिरकर मुझे सिजदा करे।”

10 लेकिन ईसा ने तीसरी बार इनकार किया और कहा, “इबलीस, दफ़ा हो जा! क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में यों लिखा है, ‘रब अपने खुदा को सिजदा कर और सिर्फ़ उसी की इबादत कर’।”

11 इस पर इबलीस उसे छोड़कर चला गया और फ़रिश्ते आकर उस की ख़िदमत करने लगे।

गलील में ईसा की खिदमत का आगाज़

12 जब ईसा को ख़बर मिली कि यहया को जेल में डाल दिया गया है तो वह वहाँ से चला गया और गलील में आया। 13 नासरत को छोड़कर वह झील के किनारे पर वाके शहर कफ़र्नहम में रहने लगा, यानी ज़बूलून और नफ़ताली के इलाक़े में। 14 यों यसायाह नबी की पेशगोई पूरी हुई,

15 “ज़बूलून का इलाक़ा, नफ़ताली का इलाक़ा,
झील के साथ का रास्ता, दरियाए-यरदन के पार,
गैरयहूदियों का गलील :

16 अंधेरे में बैठी क़ौम ने एक तेज़ रौशनी देखी,
मौत के साय में डूबे हुए मुल्क के बाशिंदों पर रौशनी चमकी।”

17 उस वक़्त से ईसा इस पैग़ाम की मुनादी करने लगा, “तौबा करो, क्योंकि आसमान की बादशाही करीब आ गई है।”

ईसा चार मछेरों को बुलाता है

18 एक दिन जब ईसा गलील की झील के किनारे किनारे चल रहा था तो उसने दो भाइयों को देखा—शमौन जो पतरस भी कहलाता था और अंदरियास को। वह पानी में जाल डाल रहे थे, क्योंकि वह माहीगीर थे। 19 उसने कहा, “आओ, मेरे पीछे हो लो, मैं तुमको आदमगीर बनाऊँगा।” 20 यह सुनते ही वह अपने जालों को छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

21 आगे जाकर ईसा ने दो और भाइयों को देखा, याकूब बिन ज़बदी और उसके भाई यूहन्ना को। वह कश्ती में बैठे अपने बाप ज़बदी के साथ अपने जालों की मरम्मत कर रहे थे। ईसा ने उन्हें बुलाया 22 तो वह फ़ौरन कश्ती और अपने बाप को छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

ईसा तालीम देता, मुनादी करता और शफ़ा देता है

23 और ईसा गलील के पूरे इलाक़े में फिरता रहा। जहाँ भी वह जाता वह यहूदी इबादतख़ानों में तालीम देता, बादशाही की ख़ुशख़बरी सुनाता और हर किस्म की बीमारी और अलालत से शफ़ा देता था। 24 उस की ख़बर मुल्के-शाम के कोने कोने तक पहुँच गई, और लोग अपने तमाम मरीज़ों को उसके पास लाने लगे। किस्म किस्म की बीमारियों तले दबे लोग, ऐसे जो शदीद दर्द का शिकार थे, बदरूहों की गिरिफ़्त में मुब्तला, मिरगीवाले और फ़ालिजज़दा, गरज़ जो भी आया ईसा ने उसे शफ़ा बख़शी। 25 गलील, दिकपुलिस, यरूशलम, यहूदिया और दरियाए-यरदन के पार के इलाक़े से बड़े बड़े हुज़ूम उसके पीछे चलते रहे।

5

पहाड़ी वाज़

1 भीड़ को देखकर ईसा पहाड़ पर चढ़कर बैठ गया। उसके शार्गिर्द उसके पास आए 2 और वह उन्हें यह तालीम देने लगा :

हकीकी खुशी

- 3 “मुबारक हैं वह जिनकी रूह ज़रूरतमंद है, क्योंकि आसमान की बादशाही उन्हीं की है।
 4 मुबारक हैं वह जो मातम करते हैं, क्योंकि उन्हें तसल्ली दी जाएगी।
 5 मुबारक हैं वह जो हलीम हैं, क्योंकि वह ज़मीन विरसे में पाएँगे।
 6 मुबारक हैं वह जिन्हें रास्तबाज़ी की भूक और प्यास है, क्योंकि वह सेर हो जाएँगे।
 7 मुबारक हैं वह जो रहमदिल हैं, क्योंकि उन पर रहम किया जाएगा।
 8 मुबारक हैं वह जो ख़ालिस दिल हैं, क्योंकि वह अल्लाह को देखेंगे।
 9 मुबारक हैं वह जो सुलह कराते हैं, क्योंकि वह अल्लाह के फ़रज़ंद कहलाएँगे।
 10 मुबारक हैं वह जिनको रास्तबाज़ होने के सबब से सताया जाता है, क्योंकि उन्हें आसमान की बादशाही विरसे में मिलेगी।
 11 मुबारक हो तुम जब लोग मेरी वजह से तुम्हें लान-तान करते, तुम्हें सताते और तुम्हारे बारे में हर किस्म की बुरी और झूठी बात करते हैं।
 12 खुशी मनाओ और बाग बाग हो जाओ, तुमको आसमान पर बड़ा अज़्र मिलेगा। क्योंकि इसी तरह उन्होंने तुमसे पहले नबियों को भी ईज़ा पहुँचाई थी।

तुम नमक और रौशनी हो

- 13 तुम दुनिया का नमक हो। लेकिन अगर नमक का ज़ायका जाता रहे तो फिर उसे क्योंकर दुबारा नमकीन किया जा सकता है? वह किसी भी काम का नहीं रहा बल्कि बाहर फेंका जाएगा जहाँ वह लोगों के पाँवों तले रौंदा जाएगा।
 14 तुम दुनिया की रौशनी हो। पहाड़ पर वाके शहर की तरह तुमको छुपाया नहीं जा सकता। 15 जब कोई चराग जलाता है तो वह उसे बरतन के नीचे नहीं रखता बल्कि शमादान पर रख देता है जहाँ से वह घर के तमाम अफ़राद को रौशनी देता है। 16 इसी तरह तुम्हारी रौशनी भी लोगों के सामने चमके ताकि वह तुम्हारे नेक काम देखकर तुम्हारे आसमानी बाप को जलाल दें।

शरीअत

- 17 यह न समझो कि मैं मूसवी शरीअत और नबियों की बातों को मनसूख करने आया हूँ। मनसूख करने नहीं बल्कि उनकी तकमील करने आया हूँ। 18 मैं तुमको सच बताता हूँ, जब तक आसमानो-ज़मीन कायम रहेंगे तब तक शरीअत भी कायम रहेगी—न उसका कोई हरफ़, न उसका कोई ज़ेर या ज़बर मनसूख होगा जब तक सब कुछ पूरा न हो जाए। 19 जो इन सबसे छोटे अहकाम में से एक को भी मनसूख करे और लोगों को ऐसा करना सिखाए उसे आसमान की बादशाही में सबसे छोटा करार दिया जाएगा। इसके मुकाबले में जो इन अहकाम पर अमल करके इन्हें सिखाता है उसे आसमान की बादशाही में बड़ा करार दिया जाएगा। 20 क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ कि अगर तुम्हारी रास्तबाज़ी शरीअत के उलमा और फ़रीसियों की रास्तबाज़ी से ज्यादा नहीं तो तुम आसमान की बादशाही में दाखिल होने के लायक नहीं।

गुस्सा

- 21 तुमने सुना है कि बापदादा को फ़रमाया गया, ‘क़त्ल न करना। और जो क़त्ल करे उसे अदालत में जवाब देना होगा।’ 22 लेकिन मैं तुमको बताता हूँ कि जो भी अपने भाई पर गुस्सा करे उसे अदालत में जवाब देना होगा। इसी तरह जो अपने भाई को ‘अहमक’ कहे उसे यहूदी अदालते-आलिया में जवाब देना होगा। और जो उसको ‘बेवकूफ़!’ कहे वह जहन्नुम की आग में फेंके जाने के लायक ठहरेगा। 23 लिहाज़ा अगर तुझे बैतुल-मुक़द्दस में कुरबानी पेश करते वक़्त याद आए कि तेरे भाई को तुझसे कोई शिकायत है 24 तो अपनी कुरबानी को वहीं कुरबानगाह के सामने ही छोड़कर अपने भाई के पास चला जा। पहले उससे सुलह कर और फिर वापस आकर अल्लाह को अपनी कुरबानी पेश कर।

- 25 फ़र्ज़ करो कि किसी ने तुझ पर मुक़दमा चलाया है। अगर ऐसा हो तो कचहरी में दाखिल होने से पहले पहले जल्दी से झगड़ा ख़त्म कर। ऐसा न हो कि वह तुझे जज के हवाले करे, जज तुझे पुलिस अफ़सर के हवाले करे और नतीजे में तुझको जेल में डाला जाए। 26 मैं तुझे सच बताता हूँ, वहाँ से तू उस वक़्त तक नहीं निकल पाएगा जब तक जुर्माने की पूरी पूरी रकम अदा न कर दे।

ज़िनाकारी

- 27 तुमने यह हुक्म सुन लिया है कि ‘ज़िना न करना।’ 28 लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ, जो किसी औरत को बुरी खाहिश से देखता है वह अपने दिल में उसके साथ ज़िना कर चुका है। 29 अगर तेरी दाई आँख तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे निकालकर फेंक दे। इससे पहले कि तेरे पूरे जिस्म को जहन्नुम में डाला जाए बेहतर यह है कि तेरा एक ही अज़ु जाता रहे। 30 और अगर तेरा दहना हाथ तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे काटकर फेंक दे। इससे पहले कि तेरा पूरा जिस्म जहन्नुम में जाए बेहतर यह है कि तेरा एक ही अज़ु जाता रहे।

तलाक

- 31 यह भी फ़रमाया गया है, ‘जो भी अपनी बीवी को तलाक दे वह उसे तलाकनामा लिख दे।’ 32 लेकिन मैं तुमको बताता हूँ कि अगर किसी की बीवी ने ज़िना न किया हो तो भी शौहर उसे तलाक दे तो वह उससे ज़िना कराता है। और जो तलाकशुदा औरत से शादी करे वह ज़िना करता है।

कसम मत खाना

33 तुमने यह भी सुना है कि बापदादा को फरमाया गया, 'झूटी कसम मत खाना बल्कि जो वादे तूने ख से कसम खाकर किए हों उन्हें पूरा करना।' 34 लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ, कसम बिलकुल न खाना। न 'आसमान की कसम' क्योंकि आसमान अल्लाह का तख्त है, 35 न 'ज़मीन की' क्योंकि ज़मीन उसके पाँवों की चौकी है। 'यस्शलम की कसम' भी न खाना क्योंकि यस्शलम अज़ीम बादशाह का शहर है। 36 यहाँ तक कि अपने सर की कसम भी न खाना, क्योंकि तू अपना एक बाल भी काला या सफेद नहीं कर सकता। 37 सिर्फ़ इतना ही कहना, 'जी हाँ' या 'जी नहीं।' अगर इससे ज़्यादा कहो तो यह इबलीस की तरफ़ से है।

बदला लेना

38 तुमने सुना है कि यह फरमाया गया है, 'आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत।' 39 लेकिन मैं तुमको बताता हूँ कि बदकार का मुकाबला मत करना। अगर कोई तेरे दहने गाल पर थप्पड़ मारे तो उसे दूसरा गाल भी पेश कर दे। 40 अगर कोई तेरी कमीस लेने के लिए तुझ पर मुकदमा करना चाहे तो उसे अपनी चादर भी दे देना। 41 अगर कोई तुझको उसका सामान उठाकर एक किलोमीटर जाने पर मजबूर करे तो उसके साथ दो किलोमीटर चला जाना। 42 जो तुझसे कुछ माँगे उसे दे देना और जो तुझसे कर्ज़ लेना चाहे उससे इनकार न करना।

दुश्मन से मुहब्बत

43 तुमने सुना है कि फरमाया गया है, 'अपने पड़ोसी से मुहब्बत रखना और अपने दुश्मन से नफरत करना।' 44 लेकिन मैं तुमको बताता हूँ, अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखो और उनके लिए दुआ करो जो तुमको सताते हैं। 45 फिर तुम अपने आसमानी बाप के फरज़द ठहरोगे, क्योंकि वह अपना सूरज सब पर तुलू होने देता है, खाह वह अच्छे हों या बुरे। और वह सब पर बारिश बरसने देता है, खाह वह रास्तबाज़ हों या नारास्त। 46 अगर तुम सिर्फ़ उन्हीं से मुहब्बत करो जो तुमसे करते हैं तो तुमको क्या अज़ मिलेगा? टैक्स लेनेवाले भी तो ऐसा ही करते हैं। 47 और अगर तुम सिर्फ़ अपने भाइयों के लिए सलामती की दुआ करो तो कौन-सी खास बात करते हो? गैरयहूदी भी तो ऐसा ही करते हैं। 48 चुनौचे वैसे ही कामिल हो जैसा तुम्हारा आसमानी बाप कामिल है।

6

खैरात

1 खबरदार! अपने नेक काम लोगों के सामने दिखावे के लिए न करो, वरना तुमको अपने आसमानी बाप से कोई अज़ नहीं मिलेगा। 2 चुनौचे खैरात देते वक़्त रियाकारों की तरह न कर जो इबादतखानों और गलियों में बिगुल बजाकर इसका एलान करते हैं ताकि लोग उनकी इज्जत करें। मैं तुमको सच बताता हूँ, जितना अज़ उन्हें मिलना था उन्हें मिल चुका है। 3 इसके बजाए जब तू खैरात दे तो तेरे दाँए हाथ को पता न चले कि बायाँ हाथ क्या कर रहा है। 4 तेरी खैरात यों पोशीदगी में दी जाए तो तेरा बाप जो पोशीदा बातें देखता है तुझे इसका मुआवज़ा देगा।

दुआ

5 दुआ करते वक़्त रियाकारों की तरह न करना जो इबादतखानों और चौकों में जाकर दुआ करना पसंद करते हैं, जहाँ सब उन्हें देख सकें। मैं तुमको सच बताता हूँ, जितना अज़ उन्हें मिलना था उन्हें मिल चुका है। 6 इसके बजाए जब तू दुआ करता है तो अंदर के कमरे में जाकर दरवाज़ा बंद कर और फिर अपने बाप से दुआ कर जो पोशीदगी में है। फिर तेरा बाप जो पोशीदा बातें देखता है तुझे इसका मुआवज़ा देगा।

7 दुआ करते वक़्त गैरयहूदियों की तरह तवील और बेमानी बातें न दोहराते रहो। वह समझते हैं कि हमारी बहुत-सी बातों के सबब से हमारी सुनी जाएगी। 8 उनकी मानिद न बनो, क्योंकि तुम्हारा बाप पहले से तुम्हारी ज़रूरियात से वाकिफ़ है, 9 बल्कि यों दुआ किया करो,

ऐ हमारे आसमानी बाप,
तेरा नाम मुक़द्दस माना जाए।

10 तेरी बादशाही आए।

तेरी मरज़ी जिस तरह आसमान में पूरी होती है ज़मीन पर भी पूरी हो।

11 हमारी रोज़ की रोटी आज हमें दे।

12 हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर
जिस तरह हमने उन्हें मुआफ़ किया *

जिन्होंने हमारा गुनाह किया है।

13 और हमें आजमाइश में न पड़ने दे
बल्कि हमें इबलीस से बचाए रख।

[क्योंकि बादशाही, कुदरत और जलाल अबद तक तेरे ही हैं।]

14 क्योंकि जब तुम लोगों के गुनाह मुआफ़ करोगे तो तुम्हारा आसमानी बाप भी तुमको मुआफ़ करेगा। 15 लेकिन अगर तुम उन्हें मुआफ़ न करो तो तुम्हारा बाप भी तुम्हारे गुनाह मुआफ़ नहीं करेगा।

* 6:12 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : हमारे कर्ज़ हमें मुआफ़ कर जिस तरह हमने अपने कर्ज़दारों को मुआफ़ किया।

रोज़ा

16 रोज़ा रखते वक़्त रियाकारों की तरह मुँह लटकाए न फ़िरो, क्योंकि वह ऐसा रूप भरते हैं ताकि लोगों को मालूम हो जाए कि वह रोज़ा से हैं। मैं तुमको सच बताता हूँ, जितना अज़्र उन्हें मिलना था उन्हें मिल चुका है। 17 ऐसा मत करना बल्कि रोज़े के वक़्त अपने बालों में तेल डाल और अपना मुँह धो। 18 फिर लोगों को मालूम नहीं होगा कि तू रोज़ा से है बल्कि सिर्फ़ तेरे बाप को जो पोशीदगी में है। और तेरा बाप जो पोशीदा बातें देखता है तुझे इसका मुआवज़ा देगा।

आसमान पर ख़ज़ाना

19 इस दुनिया में अपने लिए ख़ज़ाने जमा न करो, जहाँ कीड़ा और जंग उन्हें खा जाते और चोर नक़ब लगाकर चुरा लेते हैं। 20 इसके बजाए अपने ख़ज़ाने आसमान पर जमा करो जहाँ कीड़ा और जंग उन्हें तबाह नहीं कर सकते, न चोर नक़ब लगाकर चुरा सकते हैं। 21 क्योंकि जहाँ तेरा ख़ज़ाना है वहीं तेरा दिल भी लगा रहेगा।

जिस्म की रौशनी

22 बदन का चराग आँख है। अगर तेरी आँख ठीक हो तो फिर तेरा पूरा बदन रौशन होगा। 23 लेकिन अगर तेरी आँख ख़राब हो तो तेरा पूरा बदन अंधेरा ही अंधेरा होगा। और अगर तेरे अंदर की रौशनी तारीकी हो तो यह तारीकी कितनी शदीद होगी!

बेफ़िक़र होना

24 कोई भी दो मालिकों की ख़िदमत नहीं कर सकता। या तो वह एक से नफ़रत करके दूसरे से मुहब्बत रखेगा या एक से लिपटकर दूसरे को हक़ीर जानेगा। तुम एक ही वक़्त में अल्लाह और दौलत की ख़िदमत नहीं कर सकते।

25 इसलिए मैं तुम्हें बताता हूँ, अपनी ज़िंदगी की ज़रूरियात पूरी करने के लिए परेशान न रहो कि हाय, मैं क्या खाऊँ और क्या पिऊँ। और जिस्म के लिए फ़िक़रमंद न रहो कि हाय, मैं क्या पहनूँ। क्या ज़िंदगी खाने-पीने से अहम नहीं है? और क्या जिस्म पोशाक से ज़्यादा अहमियत नहीं रखता? 26 परिदों पर ग़ौर करो। न वह बीज बोते, न फ़सलें काटकर उन्हें गोदाम में जमा करते हैं। तुम्हारा आसमानी बाप खुद उन्हें खाना खिलाता है। क्या तुम्हारी उनकी निसबत ज़्यादा कदरो-कीमत नहीं है? 27 क्या तुममें से कोई फ़िक़र करते करते अपनी ज़िंदगी में एक लमहे का भी इज़ाफ़ा कर सकता है?

28 और तुम अपने कपड़ों के लिए क्यों फ़िक़रमंद होते हो? ग़ौर करो कि सोसन के फूल किस तरह उगते हैं। न वह मेहनत करते, न कातते हैं। 29 लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ कि सुलेमान बादशाह अपनी पूरी शानो-शौकत के बावजूद ऐसे शानदार कपड़ों से मुलबबस नहीं था जैसे उनमें से एक। 30 अगर अल्लाह उस घास को जो आज मैदान में है और कल आग में झोंकी जाएगी ऐसा शानदार लिबास पहनाता है तो ऐ कमएतक्रादो, वह तुमको पहनाने के लिए क्या कुछ नहीं करेगा?

31 चुनौचे परेशानी के आलम में फ़िक़र करते करते यह न कहते रहो, 'हम क्या खाएँ? हम क्या पिएँ? हम क्या पहनें?' 32 क्योंकि जो ईमान नहीं रखते वही इन तमाम चीज़ों के पीछे भागते रहते हैं जबकि तुम्हारे आसमानी बाप को पहले से मालूम है कि तुमको इन तमाम चीज़ों की ज़रूरत है। 33 पहले अल्लाह की बादशाही और उस की रास्तबाज़ी की तलाश में रहो। फिर यह तमाम चीज़ें भी तुमको मिल जाएँगी। 34 इसलिए कल के बारे में फ़िक़र करते करते परेशान न हो क्योंकि कल का दिन अपने लिए आप फ़िक़र कर लेगा। हर दिन की अपनी मुसीबतें काफ़ी हैं।

7

औरों का मुंसिफ़ बनना

1 दूसरों की अदालत मत करना, वरना तुम्हारी अदालत भी की जाएगी। 2 क्योंकि जितनी सख्ती से तुम दूसरों का फैसला करते हो उतनी सख्ती से तुम्हारा भी फैसला किया जाएगा। और जिस पैमाने से तुम नापते हो उसी पैमाने से तुम भी नापे जाओगे। 3 तू क्यों ग़ौर से अपने भाई की आँख में पड़े तिनके पर नज़र करता है जबकि तुझे वह शहतीर नज़र नहीं आता जो तेरी अपनी आँख में है? 4 तू क्योंकर अपने भाई से कह सकता है, 'ठहरो, मुझे तुम्हारी आँख में पड़ा तिनका निकालने दो,' जबकि तेरी अपनी आँख में शहतीर है। 5 रियाकार! पहले अपनी आँख के शहतीर को निकाल। तब ही तुझे भाई का तिनका साफ़ नज़र आएगा और तू उसे अच्छी तरह से देखकर निकाल सकेगा।

6 कुत्तों को मुक़द्दस ख़ुराक मत खिलाना और सुअरों के आगे अपने मोती न फेंकना। ऐसा न हो कि वह उन्हें पाँवों तले रौंदें और मुड़कर तुमको फाड़ डालें।

माँगते रहना

7 माँगते रहो तो तुमको दिया जाएगा। ढूँढ़ते रहो तो तुमको मिल जाएगा। खटखटाते रहो तो तुम्हारे लिए दरवाज़ा खोल दिया जाएगा। 8 क्योंकि जो भी माँगता है वह पाता है, जो ढूँढ़ता है उसे मिलता है, और जो खटखटाता है उसके लिए दरवाज़ा खोल दिया जाता है। 9 तुममें से कौन अपने बेटे को पत्थर देगा अगर वह रोटी माँगे? 10 या कौन उसे साँप देगा अगर वह मछली माँगे? कोई नहीं! 11 जब तुम बुरे होने के बावजूद इतने समझदार हो कि अपने बच्चों को अच्छी चीज़ें दे सकते हो तो फिर कितनी ज़्यादा यक़ीनी बात है कि तुम्हारा आसमानी बाप माँगनेवालों को अच्छी चीज़ें देगा।

12 हर बात में दूसरों के साथ वही सुलूक करो जो तुम चाहते हो कि वह तुम्हारे साथ करें। क्योंकि यही शरीअत और नबियों की तालीमात का लुब्बे-लुबाब है।

तंग दरवाज़ा

13 तंग दरवाज़े से दाखिल हो, क्योंकि हलाकत की तरफ़ ले जानेवाला रास्ता कुशादा और उसका दरवाज़ा चौड़ा है। बहुत-से लोग उसमें दाखिल हो जाते हैं। 14 लेकिन जिंदगी की तरफ़ ले जानेवाला रास्ता तंग है और उसका दरवाज़ा छोटा। कम ही लोग उसे पाते हैं।

हर दरख्त का अपना फल होता है

15 झूटे नबियों से खबरदार रहो! गो वह भेड़ों का भेस बदलकर तुम्हारे पास आते हैं, लेकिन अंदर से वह गारतगर भेड़िये होते हैं। 16 उनका फल देखकर तुम उन्हें पहचान लोगे। क्या खारदार झाड़ियों से अंगूर तोड़े जाते हैं या ऊँटकटारों से अंजीर? हरगिज़ नहीं। 17 इसी तरह अच्छा दरख्त अच्छा फल लाता है और खराब दरख्त खराब फल। 18 न अच्छा दरख्त खराब फल ला सकता है, न खराब दरख्त अच्छा फल। 19 जो भी दरख्त अच्छा फल नहीं लाता उसे काटकर आग में झोंका जाता है। 20 यों तुम उनका फल देखकर उन्हें पहचान लोगे।

सिर्फ़ असल पैरोकार दाखिल होंगे

21 जो मुझे 'खुदावंद, खुदावंद' कहते हैं उनमें से सब आसमान की बादशाही में दाखिल न होंगे बल्कि सिर्फ़ वह जो मेरे आसमानी बाप की मरज़ी पर अमल करते हैं। 22 अदालत के दिन बहुत-से लोग मुझसे कहेंगे, 'ऐ खुदावंद, खुदावंद! क्या हमने तेरे ही नाम में नबुव्वत नहीं की, तेरे ही नाम से बदरूहें नहीं निकाली, तेरे ही नाम से मोजिज़े नहीं किए?' 23 उस वक़्त मैं उनसे साफ़ साफ़ कह दूँगा, 'मेरी कभी तुमसे जान पहचान न थी। ऐ बदकारो! मेरे सामने से चले जाओ।'

दो क्रिस्म के मकान

24 लिहाज़ा जो भी मेरी यह बातें सुनकर उन पर अमल करता है वह उस समझदार आदमी की मानिंद है जिसने अपने मकान की बुनियाद चटान पर रखी। 25 बारिश होने लगी, सैलाब आया और आँधी मकान को झँझोड़ने लगी। लेकिन वह न गिरा, क्योंकि उस की बुनियाद चटान पर रखी गई थी।

26 लेकिन जो भी मेरी यह बातें सुनकर उन पर अमल नहीं करता वह उस अहमक की मानिंद है जिसने अपना मकान सहीह बुनियाद डाले बग़ैर रेत पर तामीर किया। 27 जब बारिश होने लगी, सैलाब आया और आँधी मकान को झँझोड़ने लगी तो यह मकान धड़ाम से गिर गया।"

ईसा का इख्तियार

28 जब ईसा ने यह बातें ख़त्म कर लीं तो लोग उस की तालीम सुनकर हक्का-बक्का रह गए, 29 क्योंकि वह उनके उलमा की तरह नहीं बल्कि इख्तियार के साथ सिखाता था।

8

कोढ़ से शफ़ा

1 ईसा पहाड़ से उतरा तो बड़ी भीड़ उसके पीछे चलने लगी। 2 फिर एक आदमी उसके पास आया जो कोढ़ का मरीज़ था। मुँह के बल गिरकर उसने कहा, "खुदावंद, अगर आप चाहें तो मुझे पाक-साफ़ कर सकते हैं।"

3 ईसा ने अपना हाथ बढ़ाकर उसे छुआ और कहा, "मैं चाहता हूँ, पाक-साफ़ हो जा।" इस पर वह फ़ौरन उस बीमारी से पाक-साफ़ हो गया। 4 ईसा ने उससे कहा, "ख़बरदार! यह बात किसी को न बताना बल्कि बैतुल-मुक़द्दस में इमाम के पास जा ताकि वह तेरा मुआयना करे। अपने साथ वह कुरबानी ले जा जिसका तक्राज़ा मूसा की शरीअत उनसे करती है जिन्हें कोढ़ से शफ़ा मिली है। यों अलानिया तसदीक़ हो जाएगी कि तू वाकई पाक-साफ़ हो गया है।"

रोमी अफ़सर के गुलाम की शफ़ा

5 जब ईसा कफ़र्नहम में दाखिल हुआ तो सौ फ़ौजियों पर मुकर्रर एक अफ़सर उसके पास आकर उस की मिन्नत करने लगा, 6 "खुदावंद, मेरा गुलाम मफ़लूज़ हालत में घर में पड़ा है, और उसे शदीद दर्द हो रहा है।"

7 ईसा ने उससे कहा, "मैं आकर उसे शफ़ा दूँगा।"

8 अफ़सर ने जवाब दिया, "नहीं खुदावंद, मैं इस लायक़ नहीं कि आप मेरे घर जाएँ। बस यहीं से हुक्म करें तो मेरा गुलाम शफ़ा पा जाएगा। 9 क्योंकि मुझे खुद आला अफ़सरों के हुक्म पर चलना पड़ता है और मेरे मातहत भी फ़ौजी हैं। एक को कहता हूँ, 'जा!' तो वह जाता है और दूसरे को 'आ!' तो वह आता है। इसी तरह मैं अपने नौकर को हुक्म देता हूँ, 'यह कर' तो वह करता है।"

10 यह सुनकर ईसा निहायत हैरान हुआ। उसने मुड़कर अपने पीछे आनेवालों से कहा, "मैं तुमको सच बताता हूँ, मैंने इसराईल में भी इस क्रिस्म का ईमान नहीं पाया। 11 मैं तुम्हें बताता हूँ, बहुत-से लोग मशरिक़ और मगरिब से आकर इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब के साथ आसमान की बादशाही की ज़ियाफ़त में शरीक़ होंगे। 12 लेकिन बादशाही के असल वारिसों को निकालकर अंधेरे में डाल दिया जाएगा, उस जगह जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे।" 13 फिर ईसा अफ़सर से मुखातिब हुआ, "जा, तेरे साथ वैसा ही हो जैसा तेरा ईमान है।"

और अफसर के गुलाम को उसी घड़ी शफा मिल गई।

बहुत-से मरीजों की शफा

14 ईसा पतरस के घर में आया। वहाँ उसने पतरस की सास को बिस्तर पर पड़े देखा। उसे बुखार था। 15 उसने उसका हाथ छू लिया तो बुखार उतर गया और वह उठकर उस की खिदमत करने लगी।

16 शाम हुई तो बदरूहों की गिरिफ्त में पड़े बहुत-से लोगों को ईसा के पास लाया गया। उसने बदरूहों को हुक्म देकर निकाल दिया और तमाम मरीजों को शफा दी। 17 यों यसायाह नबी की यह पेशगोई पूरी हुई कि “उसने हमारी कमज़ोरियाँ ले लीं और हमारी बीमारियाँ उठा लीं।”

पैरवी की संजीदगी

18 जब ईसा ने अपने गिर्द बड़ा हुजूम देखा तो उसने शागिर्दों को झील पार करने का हुक्म दिया। 19 खाना होने से पहले शरीअत का एक आलिम उसके पास आकर कहने लगा, “उस्ताद, जहाँ भी आप जाएंगे मैं आपके पीछे चलता रहूँगा।”

20 ईसा ने जवाब दिया, “लोमड़ियाँ अपने भटों में और परिंदे अपने घोंसलों में आराम कर सकते हैं, लेकिन इब्ने-आदम के पास सर रखकर आराम करने की कोई जगह नहीं।”

21 किसी और शागिर्द ने उससे कहा, “खुदावंद, मुझे पहले जाकर अपने बाप को दफन करने की इजाज़त दें।”

22 लेकिन ईसा ने उसे बताया, “मेरे पीछे हो ले और मुरदों को अपने मुरदे दफन करने दे।”

ईसा आँधी को थमा देता है

23 फिर वह कश्ती पर सवार हुआ और उसके पीछे उसके शागिर्द भी। 24 अचानक झील पर सख्त आँधी चलने लगी और कश्ती लहरों में डूबने लगी। लेकिन ईसा सो रहा था। 25 शागिर्द उसके पास गए और उसे जगाकर कहने लगे, “खुदावंद, हमें बचा, हम तबाह हो रहे हैं!”

26 उसने जवाब दिया, “ऐ कमएतकादो! घबराते क्यों हो?” खड़े होकर उसने आँधी और मौजों को डाँटा तो लहरें बिलकुल साकित हो गईं। 27 शागिर्द हैरान होकर कहने लगे, “यह किस किस का शख्स है? हवा और झील भी उसका हुक्म मानती हैं।”

दो बदरूह-गिरिफ़ता आदमियों की शफा

28 वह झील के पार गदरीनियों के इलाके में पहुँचे तो बदरूह-गिरिफ़ता दो आदमी कब्रों में से निकलकर ईसा को मिले। वह इतने खतरनाक थे कि वहाँ से कोई गुज़र नहीं सकता था। 29 चीखें मार मारकर उन्होंने कहा, “अल्लाह के फ़रज़ंद, हमारा आपके साथ क्या वास्ता? क्या आप हमें मुकर्रा वक्त से पहले अज़ाब में डालने आए हैं?”

30 कुछ फ़ासले पर सुअरों का बड़ा गोल चर रहा था। 31 बदरूहों ने ईसा से इल्तिजा की, “अगर आप हमें निकालते हैं तो सुअरों के उस गोल में भेज दें।”

32 ईसा ने उन्हें हुक्म दिया, “जाओ।” बदरूहें निकलकर सुअरों में जा घुसीं। इस पर पूरे का पूरा गोल भाग भागकर पहाड़ी की ढलान पर से उतरा और झील में झपटकर डूब मरा। 33 यह देखकर सुअरों के गल्लाबान भाग गए। शहर में जाकर उन्होंने लोगों को सब कुछ सुनाया और वह भी जो बदरूह-गिरिफ़ता आदमियों के साथ हुआ था। 34 फिर पूरा शहर निकलकर ईसा को मिलने आया। उसे देखकर उन्होंने उस की मिन्नत की कि हमारे इलाके से चले जाएँ।

9

मफ़लूज आदमी की शफा

1 कश्ती में बैठकर ईसा ने झील को पार किया और अपने शहर पहुँच गया। 2 वहाँ एक मफ़लूज आदमी को चारपाई पर डालकर उसके पास लाया गया। उनका ईमान देखकर ईसा ने कहा, “बेटा, हौसला रख। तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं।”

3 यह सुनकर शरीअत के कुछ उलमा दिल में कहने लगे, “यह कुफ़र बक रहा है!”

4 ईसा ने जान लिया कि यह क्या सोच रहे हैं, इसलिए उसने उनसे पूछा, 5 “तुम दिल में बुरी बातें क्यों सोच रहे हो? क्या मफ़लूज से यह कहना ज्यादा आसान है कि ‘तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं’ या यह कि ‘उठ और चल-फिर?’” 6 लेकिन मैं तुमको दिखाता हूँ कि इब्ने-आदम को वाकई दुनिया में गुनाह मुआफ़ करने का इख्तियार है।” यह कहकर वह मफ़लूज से मुखातिब हुआ, “उठ, अपनी चारपाई उठाकर घर चला जा।”

7 वह आदमी खड़ा हुआ और अपने घर चला गया। 8 यह देखकर हुजूम पर अल्लाह का खौफ़ तारी हो गया और वह अल्लाह की तमजीद करने लगे कि उसने इनसान को इस किसम का इख्तियार दिया है।

मत्ती की बुलाहट

9 आगे जाकर ईसा ने एक आदमी को देखा जो टैक्स लेनेवालों की चौकी पर बैठा था। उसका नाम मत्ती था। ईसा ने उससे कहा, “मेरे पीछे हो ले।” और मत्ती उठकर उसके पीछे हो लिया।

10 बाद में ईसा मती के घर में खाना खा रहा था। बहुत-से टैक्स लेनेवाले और गुनाहगार भी आकर ईसा और उसके शागिर्दों के साथ खाने में शरीक हुए। 11 यह देखकर फ़रीसियों ने उसके शागिर्दों से पूछा, “आपका उस्ताद टैक्स लेनेवालों और गुनाहगारों के साथ क्यों खाता है?”

12 यह सुनकर ईसा ने कहा, “सेहतमंदों को डाक्टर की ज़रूरत नहीं होती बल्कि मरीजों को। 13 पहले जाओ और कलामे-मुकद्दस की इस बात का मतलब जान लो कि ‘मैं कुरबानी नहीं बल्कि रहम पसंद करता हूँ।’ क्योंकि मैं रास्तबाज़ों को नहीं बल्कि गुनाहगारों को बुलाने आया हूँ।”

शागिर्द रोज़ा क्यों नहीं रखते?

14 फिर यहया के शागिर्द उसके पास आए और पूछा, “आपके शागिर्द रोज़ा क्यों नहीं रखते जबकि हम और फ़रीसी रोज़ा रखते हैं?”

15 ईसा ने जवाब दिया, “शादी के मेहमान किस तरह मातम कर सकते हैं जब तक दूल्हा उनके दरमियान है? लेकिन एक दिन आएगा जब दूल्हा उनसे ले लिया जाएगा। उस वक़्त वह ज़रूर रोज़ा रखेंगे।

16 कोई भी नए कपड़े का टुकड़ा किसी पुराने लिबास में नहीं लगाता। अगर वह ऐसा करे तो नया टुकड़ा बाद में सुकड़कर पुराने लिबास से अलग हो जाएगा। यों पुराने लिबास की फटी हुई जगह पहले की निसबत ज्यादा खराब हो जाएगी। 17 इसी तरह अंगूर का ताज़ा रस पुरानी और बे-लचक मशकों में नहीं डाला जाता। अगर ऐसा किया जाए तो पुरानी मशकें पैदा होनेवाली गैस के बाइस फट जाएँगी। नतीजे में मैं और मशकें दोनों जाया हो जाएँगी। इसलिए अंगूर का ताज़ा रस नई मशकों में डाला जाता है जो लचकदार होती हैं। यों रस और मशकें दोनों ही महफूज़ रहते हैं।”

याईर की बेटी और बीमार औरत

18 ईसा अभी यह बयान कर रहा था कि एक यहूदी राहनुमा ने गिरकर उसे सिजदा किया और कहा, “मेरी बेटी अभी अभी मरी है। लेकिन आकर अपना हाथ उस पर रखें तो वह दुबारा ज़िंदा हो जाएगी।”

19 ईसा उठकर अपने शागिर्दों समेत उसके साथ हो लिया।

20 चलते चलते एक औरत ने पीछे से आकर ईसा के लिबास का किनारा छुआ। यह औरत बारह साल से खून बहने की मरीज़ा थी 21 और वह सोच रही थी, “अगर मैं सिर्फ़ उसके लिबास को ही छू लूँ तो शफ़ा पा लूँगी।”

22 ईसा ने मुड़कर उसे देखा और कहा, “बेटी, हौसला रख! तेरे इमान ने तुझे बचा लिया है।” और औरत को उसी वक़्त शफ़ा मिल गई।

23 फिर ईसा राहनुमा के घर में दाखिल हुआ। बाँसरी बजानेवाले और बहुत-से लोग पहुँच चुके थे और बहुत शोर-शराबा था। यह देखकर

24 ईसा ने कहा, “निकल जाओ! लड़की मर नहीं गई बल्कि सो रही है।” लोग हँसकर उसका मज़ाक उड़ाने लगे। 25 लेकिन जब सबको निकाल दिया गया तो वह अंदर गया। उसने लड़की का हाथ पकड़ा तो वह उठ खड़ी हुई। 26 इस मौजिज़े की ख़बर उस पूरे इलाके में फैल गई।

दो अंधों की शफ़ा

27 जब ईसा वहाँ से रवाना हुआ तो दो अंधे उसके पीछे चलकर चिल्लाने लगे, “इब्ने-दाऊद, हम पर रहम करें।”

28 जब ईसा किसी के घर में दाखिल हुआ तो वह उसके पास आए। ईसा ने उनसे पूछा, “क्या तुम्हारा इमान है कि मैं यह कर सकता हूँ?” उन्होंने जवाब दिया, “जी, ख़ुदावंद।”

29 फिर उसने उनकी आँखें छूकर कहा, “तुम्हारे साथ तुम्हारे इमान के मुताबिक़ हो जाए।” 30 उनकी आँखें बहाल हो गईं और ईसा ने सख्ती से उन्हें कहा, “ख़बरदार, किसी को भी इसका पता न चले!”

31 लेकिन वह निकलकर पूरे इलाके में उस की ख़बर फैलाने लगे।

गूँगा आदमी की शफ़ा

32 जब वह निकल रहे थे तो एक गूँगा आदमी ईसा के पास लाया गया जो किसी बदरूह के कब्जे में था। 33 जब बदरूह को निकाला गया तो गूँगा बोलने लगा। हुज़ूम हैरान रह गया। उन्होंने कहा, “ऐसा काम इसराईल में कभी नहीं देखा गया।”

34 लेकिन फ़रीसियों ने कहा, “वह बदरूहों के सरदार ही की मदद से बदरूहों को निकालता है।”

ईसा को लोगों पर तरस आता है

35 और ईसा सफ़र करते करते तमाम शहरों और गाँवों में से गुज़रा। जहाँ भी वह पहुँचा वहाँ उसने उनके इबादतखानों में तालीम दी, बादशाही की खुशख़बरी सुनाई और हर किस्म के मरज़ और अलालत से शफ़ा दी। 36 हुज़ूम को देखकर उसे उन पर बड़ा तरस आया, क्योंकि वह पिसे हुए और बेबस थे, ऐसी भेड़ों की तरह जिनका चरवाहा न हो। 37 उसने अपने शागिर्दों से कहा, “फ़सल बहुत है, लेकिन मज़दूर कम।

38 इसलिए फ़सल के मालिक से गुज़ारिश करो कि वह अपनी फ़सल काटने के लिए मज़ीद मज़दूर भेज दे।”

1 फिर ईसा ने अपने बारह रसूलों को बुलाकर उन्हें नापाक रूहें निकालने और हर किस्म के मरज और अलालत से शफा देने का इख्तियार दिया। 2 बारह रसूलों के नाम यह हैं : पहला शमौन जो पतरस भी कहलाता है, फिर उसका भाई अंदरियास, याकूब बिन ज़बदी और उसका भाई यहन्ना, 3 फ़िलिप्पुस, बरतुलमाई, तोमा, मती (जो टैक्स लेनेवाला था), याकूब बिन हलफई, तद्दी, 4 शमौन मुजाहिद और यहदाह इस्करियोती जिसने बाद में उसे दुश्मनों के हवाले कर दिया।

रसूलों को तबलीग के लिए भेजा जाता है

5 इन बारह मर्दों को ईसा ने भेज दिया। साथ साथ उसने उन्हें हिदायत दी, “गैरयहूदी आबादियों में न जाना, न किसी सामरी शहर में, 6 बल्कि सिर्फ़ इसराईल की खोई हुई भेड़ों के पास। 7 और चलते चलते मुनादी करते जाओ कि ‘आसमान की बादशाही करीब आ चुकी है।’ 8 बीमारों को शफा दो, मुरदों को ज़िंदा करो, कोढ़ियों को पाक-साफ़ करो, बदरूहों को निकालो। तुमको मुफ़्त में मिला है, मुफ़्त में ही बाँटना। 9 अपने कमरबंद में पैसे न रखना—न सोने, न चाँदी और न तँबे के सिक्के। 10 न सफ़र के लिए बैग हो, न एक से ज़्यादा सूट, न जूते, न लाठी। क्योंकि मज़दूर अपनी रोज़ी का हक़दार है।

11 जिस शहर या गाँव में दाखिल होते हो उसमें किसी लायक शख्स का पता करो और रवाना होते वक़्त तक उसी के घर में ठहरो। 12 घर में दाखिल होते वक़्त उसे दुआए-खैर दो। 13 अगर वह घर इस लायक होगा तो जो सलामती तुमने उसके लिए माँगी है वह उस पर आकर ठहरी रहेगी। अगर नहीं तो यह सलामती तुम्हारे पास लौट आएगी। 14 अगर कोई घराना या शहर तुमको कबूल न करे, न तुम्हारी सुने तो रवाना होते वक़्त उस जगह की गर्द अपने पाँवों से झाड़ देना। 15 मैं तुम्हें सच बताता हूँ, अदालत के दिन उस शहर की निसबत सदूम और अमूरा के इलाके का हाल ज़्यादा काबिले-बरदाश्त होगा।

आनेवाली ईज़ारसानियाँ

16 देखो, मैं तुम भेड़ों को भेड़ियों में भेज रहा हूँ। इसलिए साँपों की तरह होशियार और कबूतरों की तरह मासूम बनो। 17 लोगों से खबरदार रहो, क्योंकि वह तुमको मकामी अदालतों के हवाले करके अपने इबादतखानों में कोड़े लगावाँगे। 18 मेरी खातिर तुम्हें हुक्मरानों और बादशाहों के सामने पेश किया जाएगा और यों तुमको उन्हें और गैरयहूदियों को गवाही देने का मौक़ा मिलेगा। 19 जब वह तुम्हें गिरफ़्तार करेंगे तो यह सोचते सोचते परेशान न हो जाना कि मैं क्या कहूँ या किस तरह बात करूँ। उस वक़्त तुमको बताया जाएगा कि क्या कहना है, 20 क्योंकि तुम खुद बात नहीं करोगे बल्कि तुम्हारे बाप का रूह तुम्हारी मारिफ़त बोलेगा।

21 भाई अपने भाई को और बाप अपने बच्चे को मौत के हवाले करेगा। बच्चे अपने वालिंद के खिलाफ़ खड़े होकर उन्हें क़त्ल करवाँगे। 22 सब तुमसे नफ़रत करेंगे, इसलिए कि तुम मेरे पैरोकार हो। लेकिन जो आखिर तक कायम रहेगा उसे नज़ात मिलेगी। 23 जब वह एक शहर में तुम्हें सताएँगे तो किसी दूसरे शहर को हिज़रत कर जाना। मैं तुमको सच बताता हूँ कि इब्ने-आदम की आमद तक तुम इसराईल के तमाम शहरों तक नहीं पहुँच पाओगे।

24 शागिर्द अपने उस्ताद से बड़ा नहीं होता, न गुलाम अपने मालिक से। 25 शागिर्द को इस पर इकतिफ़ा करना है कि वह अपने उस्ताद की मानिंद हो, और इसी तरह गुलाम को कि वह अपने मालिक की मानिंद हो। घराने के सरपरस्त को अगर बदरूहों का सरदार बाल-ज़बूल करार दिया गया है तो उसके घरवालों को क्या कुछ न कहा जाएगा।

किससे डरना है?

26 उनसे मत डरना, क्योंकि जो कुछ अभी छुपा हुआ है उसे आखिर में जाहिर किया जाएगा, और जो कुछ भी इस वक़्त पोशीदा है उसका राज़ आखिर में खुल जाएगा। 27 जो कुछ मैं तुम्हें अंधेरे में सुना रहा हूँ उसे रोज़े-रौशन में सुना देना। और जो कुछ आहिस्ता आहिस्ता तुम्हारे कान में बताया गया है उसका छतों से एलान करो। 28 उनसे ख़ौफ़ मत खाना जो तुम्हारी रूह को नहीं बल्कि सिर्फ़ तुम्हारे जिस्म को क़त्ल कर सकते हैं। अल्लाह से डरो जो रूह और जिस्म दोनों को जहन्नुम में डालकर हलाक कर सकता है। 29 क्या चिड़ियों का जोड़ा कम पैसों में नहीं बिकता? ताहम उनमें से एक भी तुम्हारे बाप की इज़ाज़त के बग़ैर ज़मीन पर नहीं गिर सकती। 30 न सिर्फ़ यह बल्कि तुम्हारे सर के सब बाल भी गिने हुए हैं। 31 लिहाज़ा मत डरो। तुम्हारी क़दरो-क़ीमत बहुत-सी चिड़ियों से कहीं ज़्यादा है।

मसीह का इकरार या इनकार करने का नतीजा

32 जो भी लोगों के सामने मेरा इकरार करे उसका इकरार मैं खुद भी अपने आसमानी बाप के सामने करूँगा। 33 लेकिन जो भी लोगों के सामने मेरा इनकार करे उसका मैं भी अपने आसमानी बाप के सामने इनकार करूँगा।

ईसा सुलह-सलामती का बाइस नहीं

34 यह मत समझो कि मैं दुनिया में सुलह-सलामती कायम करने आया हूँ। मैं सुलह-सलामती नहीं बल्कि तलवार चलवाने आया हूँ। 35 मैं बेटे को उसके बाप के खिलाफ़ खड़ा करने आया हूँ, बेटी को उस की माँ के खिलाफ़ और बहू को उस की सास के खिलाफ़। 36 इनसान के दुश्मन उसके अपने घरवाले होंगे।

37 जो अपने बाप या माँ को मुझसे ज्यादा प्यार करे वह मेरे लायक नहीं। जो अपने बेटे या बेटी को मुझसे ज्यादा प्यार करे वह मेरे लायक नहीं। 38 जो अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे न हो ले वह मेरे लायक नहीं। 39 जो भी अपनी जान को बचाए वह उसे खो देगा, लेकिन जो अपनी जान को मेरी खातिर खो दे वह उसे पाएगा।

ईसा और उसके पैरोकारों को कबूल करने का अज़

40 जो तुम्हें कबूल करे वह मुझे कबूल करता है, और जो मुझे कबूल करता है वह उसको कबूल करता है जिसने मुझे भेजा है। 41 जो किसी नबी को कबूल करे उसे नबी का-सा अज़ मिलेगा। और जो किसी रास्तबाज़ शख्स को उस की रास्तबाज़ी के सबब से कबूल करे उसे रास्तबाज़ शख्स का-सा अज़ मिलेगा। 42 मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो इन छोटों में से किसी एक को मेरा शागिर्द होने के बाइस ठंडे पानी का गलास भी पिलाए उसका अज़ कायम रहेगा।”

11

यहया का ईसा से सवाल

1 अपने शागिर्दों को यह हिदायात देने के बाद ईसा उनके शहरों में तालीम देने और मुनादी करने के लिए रवाना हुआ।

2 यहया ने जो उस वक़्त जेल में था सुना कि ईसा क्या क्या कर रहा है। इस पर उसने अपने शागिर्दों को उसके पास भेज दिया 3 ताकि वह उससे पढ़ें, “क्या आप वही हैं जिसे आना है या हम किसी और के इंतज़ार में रहें?”

4 ईसा ने जवाब दिया, “यहया के पास वापस जाकर उसे सब कुछ बता देना जो तुमने देखा और सुना है। 5 ‘अंधे देखते, लँगड़े चलते-फिरते हैं, कोढ़ियों को पाक-साफ़ किया जाता है, बहरे सुनते हैं, मुरदों को ज़िंदा किया जाता है और गरीबों को अल्लाह की खुशख़बरी सुनाई जाती है।’ 6 मुबारक है वह जो मेरे सबब से ठोकर खाकर बरग़्शता नहीं होता।”

7 यहया के यह शागिर्द चले गए तो ईसा हुज़ूम से यहया के बारे में बात करने लगा, “तुम रेगिस्तान में क्या देखने गए थे? एक सरकंडा जो हवा के हर झोंके से हिलता है? बेशक नहीं। 8 या क्या वहाँ जाकर ऐसे आदमी की तवक्क़ो कर रहे थे जो नफ़ीस और मुलायम लिबास पहने हुए हैं? नहीं, जो शानदार कपड़े पहनते हैं वह शाही महलों में पाए जाते हैं। 9 तो फिर तुम क्या देखने गए थे? एक नबी को? बिल्कुल सहीह, बल्कि मैं तुमको बताता हूँ कि वह नबी से भी बड़ा है। 10 उसी के बारे में कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, ‘देख, मैं अपने पैगंबर को तेरे आगे आगे भेज देता हूँ जो तेरे सामने रास्ता तैयार करेगा।’ 11 मैं तुमको सच बताता हूँ कि इस दुनिया में पैदा होनेवाला कोई भी शख्स यहया से बड़ा नहीं है। तो भी आसमान की बादशाही में दाख़िल होनेवाला सबसे छोटा शख्स उससे बड़ा है। 12 यहया बपतिस्मा देनेवाले की ख़िदमत से लेकर आज तक आसमान की बादशाही पर ज़बरदस्ती की जा रही है, और ज़बरदस्त उसे छीन रहे हैं। 13 क्योंकि तमाम नबी और तौरित ने यहया के दौर तक इसके बारे में पेशगोई की है। 14 और अगर तुम यह मानने के लिए तैयार हो तो मानो कि वह इलियास नबी है जिसे आना था। 15 जो सुन सकता है वह सुन ले!”

16 मैं इस नसल को किससे तशबीह दूँ? वह उन बच्चों की मानिंद हैं जो बाज़ार में बैठे खेल रहे हैं। उनमें से कुछ ऊँची आवाज़ से दूसरे बच्चों से शिकायत कर रहे हैं, 17 ‘हमने बाँसरी बजाई तो तुम न नाचे। फिर हमने नोहा के गीत गाए, लेकिन तुमने छाती पीटकर मातम न किया।’ 18 देखो, यहया आया और न खाया, न पिया। यह देखकर लोग कहते हैं कि उसमें बदरूह है। 19 फिर इब्ने-आदम खाता और पीता हुआ आया। अब कहते हैं, ‘देखो यह कैसा पेटू और शराबी है। और वह टैक्स लेनेवालों और गुनाहगारों का दोस्त भी है।’ लेकिन हिकमत अपने आमाल से ही सहीह साबित हुई है।”

तौबा न करनेवाले शहरों पर अफ़सोस

20 फिर ईसा उन शहरों को डाँटने लगा जिनमें उसने ज्यादा मोजिज़े किए थे, क्योंकि उन्होंने तौबा नहीं की थी। 21 “ऐ खुराज़ीन, तुझ पर अफ़सोस! बैत-सैदा, तुझ पर अफ़सोस! अगर सूर और सैदा में वह मोजिज़े किए गए होते जो तुममें हुए तो वहाँ के लोग कब के टाट ओढ़कर और सर पर राख डालकर तौबा कर चुके होते। 22 जी हाँ, अदालत के दिन तुम्हारी निसबत सूर और सैदा का हाल ज्यादा काबिले-बरदाशत होगा। 23 और ऐ कफ़र्नहम, क्या तुझे आसमान तक सरफ़राज़ किया जाएगा? हरगिज़ नहीं, बल्कि तू उतरता उतरता पाताल तक पहुँचेगा। अगर सदूम में वह मोजिज़े किए गए होते जो तुझमें हुए हैं तो वह आज तक कायम रहता। 24 हाँ, अदालत के दिन तेरी निसबत सदूम का हाल ज्यादा काबिले-बरदाशत होगा।”

बाप की तमज़ीद

25 उस वक़्त ईसा ने कहा, “ऐ बाप, आसमानो-ज़मीन के मालिक! मैं तेरी तमज़ीद करता हूँ कि तूने यह बातें दानाओं और अक्लमंदों से छुपाकर छोटे बच्चों पर ज़ाहिर कर दी हैं। 26 हाँ मेरे बाप, यही तुझे पसंद आया।

27 मेरे बाप ने सब कुछ मेरे सुपर्द कर दिया है। कोई भी फ़रज़ंद को नहीं जानता सिवाए बाप के। और कोई बाप को नहीं जानता सिवाए फ़रज़ंद के और उन लोगों के जिन पर फ़रज़ंद बाप को ज़ाहिर करना चाहता है।

28 ऐ थकेमाँदि और बोझ तले दबे हुए लोगो, सब मेरे पास आओ! मैं तुमको आराम दूँगा। 29 मेरा जुआ अपने ऊपर उठाकर मुझसे सीखो, क्योंकि मैं हलीम और नरमदिल हूँ। यों करने से तुम्हारी जानें आराम पाएँगी, 30 क्योंकि मेरा जुआ मुलायम और मेरा बोझ हलका है।”

12

सबत के बारे में सवाल

1 उन दिनों में ईसा अनाज के खेतों में से गुज़र रहा था। सबत का दिन था। चलते चलते उसके शागिर्दों को भूक लगी और वह अनाज की बालें तोड़ तोड़कर खाने लगे। 2 यह देखकर फ़रीसियों ने ईसा से शिकायत की, “देखो, आपके शागिर्द ऐसा काम कर रहे हैं जो सबत के दिन मना है।”

3 ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुमने नहीं पढ़ा कि दाऊद ने क्या किया जब उसे और उसके साथियों को भूक लगी? 4 वह अल्लाह के घर में दाखिल हुआ और अपने साथियों समेत रब के लिए मखसूसशुदा रोटियाँ खाईं, अगरचे उन्हें इसकी इजाज़त नहीं थी बल्कि सिर्फ़ इमामों को? 5 या क्या तुमने तौरत में नहीं पढ़ा कि गो इमाम सबत के दिन बैतुल-मुक़द्दस में खिदमत करते हुए आराम करने का हुक्म तोड़ते हैं तो भी वह बेइलज़ाम ठहरते हैं? 6 मैं तुम्हें बताता हूँ कि यहाँ वह है जो बैतुल-मुक़द्दस से अफ़ज़ल है। 7 कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, ‘मैं कुरबानी नहीं बल्कि रहम पसंद करता हूँ।’ अगर तुम इसका मतलब समझते तो बेकुसूरों को मुजरिम न ठहराते। 8 क्योंकि इब्ने-आदम सबत का मालिक है।”

सूखे हाथवाले आदमी की शफ़ा

9 वहाँ से चलते चलते वह उनके इबादतख़ाने में दाखिल हुआ। 10 उसमें एक आदमी था जिसका हाथ सूखा हुआ था। लोग ईसा पर इलज़ाम लगाने का कोई बहाना तलाश कर रहे थे, इसलिए उन्होंने उससे पूछा, “क्या शरीअत सबत के दिन शफ़ा देने की इजाज़त देती है?”

11 ईसा ने जवाब दिया, “अगर तुममें से किसी की भेड़ सबत के दिन गढे में गिर जाए तो क्या उसे नहीं निकालोगे? 12 और भेड़ की निसबत इनसान की कितनी ज़्यादा क़दरो-कीमत है! गरज़ शरीअत नेक काम करने की इजाज़त देती है।” 13 फिर उसने उस आदमी से जिसका हाथ सूखा हुआ था कहा, “अपना हाथ आगे बढ़ा।”

उसने ऐसा किया तो उसका हाथ दूसरे हाथ की मानिंद तनदुस्त हो गया। 14 इस पर फ़रीसी निकलकर आपस में ईसा को क़त्ल करने की साज़िशें करने लगे।

अल्लाह का चुना हुआ खादिम

15 जब ईसा ने यह जान लिया तो वह वहाँ से चला गया। बहुत-से लोग उसके पीछे चल रहे थे। उसने उनके तमाम मरीज़ों को शफ़ा देकर 16 उन्हें ताकीद की, “किसी को मेरे बारे में न बताओ।” 17 यों यसायाह नबी की यह पेशगोई पूरी हुई,

18 ‘देखो, मेरा खादिम जिसे मैंने चुन लिया है,

मेरा प्यारा जो मुझे पसंद है।

मैं अपने रूह को उस पर डालूँगा,

और वह अक्वाम में इनसाफ़ का एलान करेगा।

19 वह न तो झगड़ेगा, न चिल्लाएगा।

गलियों में उस की आवाज़ सुनाई नहीं देगी।

20 न वह कुचले हुए सरकंडे को तोड़ेगा,

न बुझती हुई बत्ती को बुझाएगा

जब तक वह इनसाफ़ को ग़लबा न बख़्शे।

21 उसी के नाम से कौमें उम्मीद रखेंगी।’

ईसा और बदरूहों का सरदार

22 फिर एक आदमी को ईसा के पास लाया गया जो बदरूह की गिरिफ़्त में था। वह अंधा और गूँगा था। ईसा ने उसे शफ़ा दी तो गूँगा बोलने और देखने लगा। 23 हुज़ूम के तमाम लोग हक्का-बक्का रह गए और पूछने लगे, “क्या यह इब्ने-दाऊद नहीं?”

24 लेकिन जब फ़रीसियों ने यह सुना तो उन्होंने कहा, “यह सिर्फ़ बदरूहों के सरदार बाल-ज़बूल की मारिफ़त बदरूहों को निकालता है।”

25 उनके यह खयालात जानकर ईसा ने उनसे कहा, “जिस बादशाही में फूट पड़ जाए वह तबाह हो जाएगी। और जिस शहर या घराने की ऐसी हालत हो वह भी कायम नहीं रह सकती। 26 इसी तरह अगर इबलीस अपने आपको निकाले तो फिर उसमें फूट पड़ गई है। इस सूरत में उस की बादशाही किस तरह कायम रह सकती है? 27 और अगर मैं बदरूहों को बाल-ज़बूल की मदद से निकालता हूँ तो तुम्हारे बेटे उन्हें किसके ज़रीए निकालते हैं? चुनौचे वही इस बात में तुम्हारे मुंसिफ़ होंगे। 28 लेकिन अगर मैं अल्लाह के रूह की मारिफ़त बदरूहों को निकाल देता हूँ तो फिर अल्लाह की बादशाही तुम्हारे पास पहुँच चुकी है।

29 किसी ज़ोरावर आदमी के घर में घुसकर उसका मालो-असबाब लूटना किस तरह मुमकिन है जब तक कि उसे बाँधा न जाए? फिर ही उसे लूटा जा सकता है।

30 जो मेरे साथ नहीं वह मेरे खिलाफ़ है और जो मेरे साथ जमा नहीं करता वह बिखेरता है। 31 गरज़ मैं तुमको बताता हूँ कि इनसान का हर गुनाह और कुफ़र मुआफ़ किया जा सकेगा सिवाए रूहुल-कुद्स के खिलाफ़ कुफ़र बकने के। इसे मुआफ़ नहीं किया जाएगा। 32 जो इब्ने-आदम

के खिलाफ बात करे उसे मुआफ किया जा सकेगा, लेकिन जो रूहुल-कुद्स के खिलाफ बात करे उसे न इस जहान में और न आनेवाले जहान में मुआफ किया जाएगा।

दरख्त उसके फल से पहचाना जाता है

33 अच्छे फल के लिए अच्छे दरख्त की ज़रूरत होती है। खराब दरख्त से खराब फल मिलता है। दरख्त उसके फल से ही पहचाना जाता है। 34 ऐ साँप के बच्चे! तुम जो बुरे हो किस तरह अच्छी बातें कर सकते हो? क्योंकि जिस चीज़ से दिल लबरेज़ होता है वह छलककर ज़बान पर आ जाती है। 35 अच्छा शख्स अपने दिल के अच्छे खज़ाने से अच्छी चीज़ें निकालता है जबकि बुरा शख्स अपने बुरे खज़ाने से बुरी चीज़ें।

36 मैं तुमको बताता हूँ कि क्रियामत के दिन लोगों को बेपरवाई से की गई हर बात का हिसाब देना पड़ेगा। 37 तुम्हारी अपनी बातों की बिना पर तुमको रास्त या नारास्त ठहराया जाएगा।”

इलाही निशान का तकाज़ा

38 फिर शरीअत के कुछ उलमा और फ़रीसियों ने ईसा से बात की, “उस्ताद, हम आपकी तरफ़ से इलाही निशान देखना चाहते हैं।”

39 उसने जवाब दिया, “सिर्फ़ शरीर और ज़िनाकार नसल इलाही निशान का तकाज़ा करती है। लेकिन उसे कोई भी इलाही निशान पेश नहीं किया जाएगा सिवाए यूनस नबी के निशान के। 40 क्योंकि जिस तरह यूनस तीन दिन और तीन रात मछली के पेट में रहा उसी तरह इब्ने-आदम भी तीन दिन और तीन रात ज़मीन की गोद में पड़ा रहेगा। 41 क्रियामत के दिन नीनवा के बाशिंदे इस नसल के साथ खड़े होकर इसे मुजरिम ठहराएंगे। क्योंकि यूनस के एलान पर उन्होंने तौबा की थी जबकि यहाँ वह है जो यूनस से भी बड़ा है। 42 उस दिन जुनूबी मुल्क सबा की मलिका भी इस नसल के साथ खड़ी होकर इसे मुजरिम करार देगी। क्योंकि वह दूर-दराज़ मुल्क से सुलेमान की हिकमत सुनने के लिए आई थी जबकि यहाँ वह है जो सुलेमान से भी बड़ा है।

बदरूह की वापसी

43 जब कोई बदरूह किसी शख्स से निकलती है तो वह वीरान इलाकों में से गुज़रती हुई आराम की जगह तलाश करती है। लेकिन जब उसे कोई ऐसा मकाम नहीं मिलता 44 तो वह कहती है, ‘मैं अपने उस घर में वापस चली जाऊँगी जिसमें से निकली थी।’ वह वापस आकर देखती है कि घर ख़ाली है और किसी ने झाड़ू देकर सब कुछ सलीक़े से रख दिया है। 45 फिर वह जाकर सात और बदरूहें ढूँड लाती है जो उससे बदतर होती हैं, और वह सब उस शख्स में घुसकर रहने लगती हैं। चुनाँचे अब उस आदमी की हालत पहले की निसबत ज़्यादा बुरी हो जाती है। इस शरीर नसल का भी यही हाल होगा।”

ईसा की माँ और भाई

46 ईसा अभी हुज़ूम से बात कर ही रहा था कि उस की माँ और भाई बाहर खड़े उससे बात करने की कोशिश करने लगे। 47 किसी ने ईसा से कहा, “आपकी माँ और भाई बाहर खड़े हैं और आपसे बात करना चाहते हैं।”

48 ईसा ने पृछा, “कौन हैं मेरी माँ और कौन हैं मेरे भाई?” 49 फिर अपने हाथ से शागिर्दों की तरफ़ इशारा करके उसने कहा, “देखो, यह मेरी माँ और मेरे भाई हैं। 50 क्योंकि जो भी मेरे आसमानी बाप की मरज़ी पूरी करता है वह मेरा भाई, मेरी बहन और मेरी माँ है।”

13

बीज बोनेवाले की तमसील

1 उसी दिन ईसा घर से निकलकर झील के किनारे बैठ गया। 2 इतना बड़ा हुज़ूम उसके गिर्द जमा हो गया कि आखिरकार वह एक कशती में बैठ गया जबकि लोग किनारे पर खड़े रहे। 3 फिर उसने उन्हें बहुत-सी बातें तमसीलों में सुनाई।

“एक किसान बीज बोने के लिए निकला। 4 जब बीज इधर उधर बिखर गया तो कुछ दाने रास्ते पर गिरे और परिंदों ने आकर उन्हें चुग लिया। 5 कुछ पथरीली ज़मीन पर गिरे जहाँ मिट्टी की कमी थी। वह जल्द उग आए क्योंकि मिट्टी गहरी नहीं थी। 6 लेकिन जब सूरज निकला तो पौदे झुलस गए और चूँकि वह जड़ न पकड़ सके इसलिए सूख गए। 7 कुछ ख़ुदरौ काँटेदार पौदों के दरमियान भी गिरे। वहाँ वह उगने लगे, लेकिन ख़ुदरौ पौदों ने साथ साथ बढ़कर उन्हें फलने फूलने न दिया। चुनाँचे वह भी ख़त्म हो गए। 8 लेकिन ऐसे दाने भी थे जो ज़रखेज़ ज़मीन में गिरे और बढ़ते बढ़ते तीस गुना, साठ गुना बल्कि सौ गुना तक ज़्यादा फल लाए। 9 जो सुन सकता है वह सुन ले!”

तमसीलों का मकसद

10 शागिर्द उसके पास आकर पूछने लगे, “आप लोगों से तमसीलों में बात क्यों करते हैं?”

11 उसने जवाब दिया, “तुमको तो आसमान की बादशाही के भेद समझने की लियाक़त दी गई है, लेकिन उन्हें यह लियाक़त नहीं दी गई। 12 जिसके पास कुछ है उसे और दिया जाएगा और उसके पास कसरत की चीज़ें होंगी। लेकिन जिसके पास कुछ नहीं है उससे वह भी छीन लिया जाएगा जो उसके पास है। 13 इसलिए मैं तमसीलों में उनसे बात करता हूँ। क्योंकि वह देखते हुए कुछ नहीं देखते, वह सुनते हुए कुछ नहीं सुनते और कुछ नहीं समझते। 14 उनमें यसायाह नबी की यह पेशगोई पूरी हो रही है :

‘तुम अपने कानों से सुनोगे

मगर कुछ नहीं समझोगे,
तुम अपनी आँखों से देखोगे
मगर कुछ नहीं जानोगे।

15 क्योंकि इस कौम का दिल बेहिस हो गया है।

वह मुश्किल से अपने कानों से सुनते हैं,
उन्होंने अपनी आँखों को बंद कर रखा है,
ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें,
अपने कानों से सुनें,
अपने दिल से समझें,
मेरी तरफ रुजू करें
और मैं उन्हें शफा दूँ।’

16 लेकिन तुम्हारी आँखें मुबारक हैं क्योंकि वह देख सकती हैं और तुम्हारे कान मुबारक हैं क्योंकि वह सुन सकते हैं। 17 मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो कुछ तुम देख रहे हो बहुत-से नबी और रास्तबाज इसे देख न पाए अगरचे वह इसके आरजूमंद थे। और जो कुछ तुम सुन रहे हो इसे वह सुनने न पाए, अगरचे वह इसके खादिशमंद थे।

बीज बोनेवाले की तमसील का मतलब

18 अब सुनो कि बीज बोनेवाले की तमसील का मतलब क्या है। 19 रास्ते पर गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो बादशाही का कलाम सुनते तो हैं, लेकिन उसे समझते नहीं। फिर इबलीस आकर वह कलाम छीन लेता है जो उनके दिलों में बोया गया है। 20 पथरीली ज़मीन पर गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम सुनते ही उसे खुशी से कबूल तो कर लेते हैं, 21 लेकिन वह जड़ नहीं पकड़ते और इसलिए ज़्यादा देर तक कायम नहीं रहते। ज्योंही वह कलाम पर ईमान लाने के बाइस किसी मुसीबत या ईज़ारसानी से दोचार हो जाएँ तो वह बरगश्ता हो जाते हैं। 22 खुदरौ काँटेदार पौदों के दरमियान गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम सुनते तो हैं, लेकिन फिर रोज़मर्रा की परेशानियाँ और दौलत का फ़रेब कलाम को फलने फूलने नहीं देता। नतीजे में वह फल लाने तक नहीं पहुँचता। 23 इसके मुकाबले में ज़रखेज़ ज़मीन में गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम को सुनकर उसे समझ लेते और बढ़ते बढ़ते तीस गुना, साठ गुना बल्कि सौ गुना तक फल लाते हैं।”

खुदरौ पौदों की तमसील

24 ईसा ने उन्हें एक और तमसील सुनाई। “आसमान की बादशाही उस किसान से मुताबिकत रखती है जिसने अपने खेत में अच्छा बीज बो दिया। 25 लेकिन जब लोग सो रहे थे तो उसके दुश्मन ने आकर अनाज के पौदों के दरमियान खुदरौ पौदों का बीज बो दिया। फिर वह चला गया। 26 जब अनाज फूट निकला और फ़सल पकने लगी तो खुदरौ पौदे भी नज़र आए। 27 नौकर मालिक के पास आए और कहने लगे, ‘जनाब, क्या आपने अपने खेत में अच्छा बीज नहीं बोया था? तो फिर यह खुदरौ पौदे कहाँ से आ गए हैं?’

28 उसने जवाब दिया, ‘किसी दुश्मन ने यह कर दिया है।’

नौकरों ने पूछा, ‘क्या हम जाकर उन्हें उखाड़ें?’

29 ‘नहीं,’ उसने कहा। ‘ऐसा न हो कि खुदरौ पौदों के साथ साथ तुम अनाज के पौदे भी उखाड़ डालो। 30 उन्हें फ़सल की कटाई तक मिलकर बढ़ने दो। उस वक़्त मैं फ़सल की कटाई करनेवालों से कहूँगा कि पहले खुदरौ पौदों को चुन लो और उन्हें जलाने के लिए गठों में बाँध लो। फिर ही अनाज को जमा करके गोदाम में लाओ।’”

राई के दाने की तमसील

31 ईसा ने उन्हें एक और तमसील सुनाई। “आसमान की बादशाही राई के दाने की मानिंद है जो किसी ने लेकर अपने खेत में बो दिया। 32 गो यह बीजों में सबसे छोटा दाना है, लेकिन बढ़ते बढ़ते यह सब्जियों में सबसे बड़ा हो जाता है। बल्कि यह दरख़्त-सा बन जाता है और परिदे आकर उस की शाखों में घोंसले बना लेते हैं।”

खमीर की तमसील

33 उसने उन्हें एक और तमसील भी सुनाई। “आसमान की बादशाही खमीर की मानिंद है जो किसी औरत ने लेकर तकरीबन 27 किलोग्राम आटे में मिला दिया। गो वह उसमें छुप गया तो भी होते होते पूरे गुंथे हुए आटे को खमीर बना दिया।”

तमसीलों में बात करने का सबब

34 ईसा ने यह तमाम बातें हुज़ूम के सामने तमसीलों की सूरत में कीं। तमसील के बग़ैर उसने उनसे बात ही नहीं की। 35 यों नबी की यह पेशगोई पूरी हुई कि ‘मैं तमसीलों में बात करूँगा, मैं दुनिया की तखलीक से लेकर आज तक छुपी हुई बातें बयान करूँगा।’

खुदरौ पौदों की तमसील का मतलब

36 फिर ईसा हुजूम को खसत करके घर के अंदर चला गया। उसके शागिर्द उसके पास आकर कहने लगे, “खेत में खुदरौ पौदों की तमसील का मतलब हमें समझाएँ।”

37 उसने जवाब दिया, “अच्छा बीज बोनेवाला इब्ने-आदम है। 38 खेत दुनिया है जबकि अच्छे बीज से मुराद बादशाही के फ़रज़ंद हैं। खुदरौ पौदे इबलीस के फ़रज़ंद हैं 39 और उन्हें बोनेवाला दुश्मन इबलीस है। फ़सल की कटाई का मतलब दुनिया का इख़िताम है जबकि फ़सल की कटाई करनेवाले फ़रिश्ते हैं। 40 जिस तरह तमसील में खुदरौ पौदे उखाड़े जाते और आग में जलाए जाते हैं उसी तरह दुनिया के इख़िताम पर भी किया जाएगा। 41 इब्ने-आदम अपने फ़रिश्तों को भेज देगा, और वह उस की बादशाही से बरग़स्तगी का हर सबब और शरीअत की ख़िलाफ़वरज़ी करनेवाले हर शरूख़ को निकालते जाएंगे। 42 वह उन्हें भड़कती भट्टी में फेंक देंगे जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे। 43 फिर रास्तबाज़ अपने बाप की बादशाही में सूरज की तरह चमकेंगे। जो सुन सकता है वह सुन ले!”

छुपे हुए खज़ाने की तमसील

44 आसमान की बादशाही खेत में छुपे खज़ाने की मानिंद है। जब किसी आदमी को उसके बारे में मालूम हुआ तो उसने उसे दुबारा छुपा दिया। फिर वह खुशी के मारे चला गया, अपनी तमाम मिलकियत फ़रोख़्त कर दी और उस खेत को ख़रीद लिया।

मोती की तमसील

45 नीज़, आसमान की बादशाही ऐसे सौदागर की मानिंद है जो अच्छे मोतियों की तलाश में था। 46 जब उसे एक निहायत कीमती मोती के बारे में मालूम हुआ तो वह चला गया, अपनी तमाम मिलकियत फ़रोख़्त कर दी और उस मोती को ख़रीद लिया।

जाल की तमसील

47 आसमान की बादशाही जाल की मानिंद भी है। उसे झील में डाला गया तो हर किस्म की मछलियाँ पकड़ी गईं। 48 जब वह भर गया तो मछेरों ने उसे किनारे पर खींच लिया। फिर उन्होंने बैठकर क़ाबिले-इस्तेमाल मछलियाँ चुनकर टोक़रियों में डाल दीं और नाक़ाबिले-इस्तेमाल मछलियाँ फेंक दीं। 49 दुनिया के इख़िताम पर ऐसा ही होगा। फ़रिश्ते आएँगे और बुरे लोगों को रास्तबाज़ों से अलग करके 50 उन्हें भड़कती भट्टी में फेंक देंगे जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे।”

नई और पुरानी सच्चाइयाँ

51 ईसा ने पूछा, “क्या तुमको इन तमाम बातों की समझ आ गई है?”

“जी,” शागिर्दों ने जवाब दिया।

52 उसने उनसे कहा, “इसलिए शरीअत का हर आलिम जो आसमान की बादशाही में शागिर्द बन गया है ऐसे मालिके-मकान की मानिंद है जो अपने खज़ाने से नए और पुराने जवाहर निकालता है।”

ईसा को नासरत में रद्द किया जाता है

53 यह तमसीलें सुनाने के बाद ईसा वहाँ से चला गया। 54 अपने वतनी शहर नासरत पहुँचकर वह इबादतख़ाने में लोगों को तालीम देने लगा। उस की बातें सुनकर वह हैरतज़दा हुए। उन्होंने पूछा, “उसे यह हिकमत और मोजिज़े करने की यह क़ुदरत कहाँ से हासिल हुई है? 55 क्या यह बढई का बेटा नहीं है? क्या उस की माँ का नाम मरियम नहीं है, और क्या उसके भाई याक़ूब, यूसुफ़, शमौन और यहूदा नहीं हैं? 56 क्या उस की बहनें हमारे साथ नहीं रहती? तो फिर उसे यह सब कुछ कहाँ से मिल गया?” 57 यों वह उससे ठोकर खाकर उसे क़बूल करने से कासिर रहे।

ईसा ने उनसे कहा, “नबी की इज़ज़त हर जगह की जाती है सिवाए उसके वतनी शहर और उसके अपने ख़ानदान के।” 58 और उनके ईमान की कमी के बाइस उसने वहाँ ज़्यादा मोजिज़े न किए।

14

यहया का क़त्ल

1 उस वक़्त गलील के हुक्मरान हेरोदेस अंतिपास को ईसा के बारे में इत्तला मिली। 2 इस पर उसने अपने दरबारियों से कहा, “यह यहया बपतिस्मा देनेवाला है जो मुरदों में से जी उठा है, इसलिए उस की मोजिज़ाना ताक़तें इसमें नज़र आती हैं।”

3 वजह यह थी कि हेरोदेस ने यहया को गिरफ़्तार करके जेल में डाला था। यह हेरोदियास की ख़ातिर हुआ था जो पहले हेरोदेस के भाई फ़िलिपुस की बीवी थी। 4 यहया ने हेरोदेस को बताया था, “हेरोदियास से तेरी शादी नाजायज़ है।” 5 हेरोदेस यहया को क़त्ल करना चाहता था, लेकिन अवाम से डरता था क्योंकि वह उसे नबी समझते थे।

6 हेरोदेस की सालगिरह के मौके पर हेरोदियास की बेटी उनके सामने नाची। हेरोदेस को उसका नाचना इतना पसंद आया 7 कि उसने क़सम खाकर उससे वादा किया, “जो भी तू माँगेगी मैं तुझे दूँगा।”

8 अपनी माँ के सिखाने पर बेटी ने कहा, “मुझे यहया बपतिस्मा देनेवाले का सर ट्रे में मँगवा दे।”

9 यह सुनकर बादशाह को दुख हुआ। लेकिन अपनी कसमों और मेहमानों की मौजूदगी की वजह से उसने उसे देने का हुक्म दे दिया। 10 चुनौचे यहया का सर कलम कर दिया गया। 11 फिर ट्रे में रखकर अंदर लाया गया और लड़की को दे दिया गया। लड़की उसे अपनी माँ के पास ले गई। 12 बाद में यहया के शागिर्द आए और उस की लाश लेकर उसे दफनाया। फिर वह ईसा के पास गए और उसे इतला दी।

ईसा 5000 मर्दों को खाना खिलाता है

13 यह खबर सुनकर ईसा लोगों से अलग होकर कश्ती पर सवार हुआ और किसी वीरान जगह चला गया। लेकिन हुजूम को उस की खबर मिली। लोग पैदल चलकर शहरों से निकल आए और उसके पीछे लग गए। 14 जब ईसा ने कश्ती पर से उतरकर बड़े हुजूम को देखा तो उसे लोगों पर बड़ा तरस आया। वहीं उसने उनके मरीजों को शफा दी।

15 जब दिन ढलने लगा तो उसके शागिर्द उसके पास आए और कहा, “यह जगह वीरान है और दिन ढलने लगा है। इनको रखसत कर दें ताकि यह इर्दगिर्द के देहातों में जाकर खाने के लिए कुछ खरीद लें।”

16 ईसा ने जवाब दिया, “इन्हें जाने की ज़रूरत नहीं, तुम खुद इन्हें खाने को दो।”

17 उन्होंने जवाब दिया, “हमारे पास सिर्फ पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं।”

18 उसने कहा, “उन्हें यहाँ मेरे पास ले आओ,” 19 और लोगों को घास पर बैठने का हुक्म दिया। ईसा ने उन पाँच रोटियों और दो मछलियों को लेकर आसमान की तरफ देखा और शक्रगुजारी की दुआ की। फिर उसने रोटियों को तोड़ तोड़कर शागिर्दों को दिया, और शागिर्दों ने यह रोटियाँ लोगों में तकसीम कर दीं। 20 सबने जी भरकर खाया। जब शागिर्दों ने बचे हुए टुकड़े जमा किए तो बारह टोकरे भर गए। 21 खवातीन और बच्चों के अलावा खानेवाले तकरीबन 5,000 मर्द थे।

ईसा पानी पर चलता है

22 इसके ऐन बाद ईसा ने शागिर्दों को मजबूर किया कि वह कश्ती पर सवार होकर आगे निकलें और झील के पार चले जाएँ। इतने में वह हुजूम को रखसत करना चाहता था। 23 उन्हें खैरबाद कहने के बाद वह दुआ करने के लिए अकेला पहाड़ पर चढ़ गया। शाम के वक्त वह वहाँ अकेला था 24 जबकि कश्ती किनारे से काफी दूर हो गई थी। लहरें कश्ती को बहुत तंग कर रही थीं क्योंकि हवा उसके खिलाफ चल रही थी।

25 तकरीबन तीन बजे रात के वक्त ईसा पानी पर चलते हुए उनके पास आया। 26 जब शागिर्दों ने उसे झील की सतह पर चलते हुए देखा तो उन्होंने दहशत खाई। “यह कोई भूत है,” उन्होंने कहा और डर के मारे चीखें मारने लगे।

27 लेकिन ईसा फौरन उनसे मुखातिब होकर बोला, “हौसला रखो! मैं ही हूँ। मत घबराओ।”

28 इस पर पतरस बोल उठा, “खुदावंद, अगर आप ही हैं तो मुझे पानी पर अपने पास आने का हुक्म दें।”

29 ईसा ने जवाब दिया, “आ।” पतरस कश्ती पर से उतरकर पानी पर चलते चलते ईसा की तरफ बढ़ने लगा। 30 लेकिन जब उसने तेज़ हवा पर गौर किया तो वह घबरा गया और डूबने लगा। वह चिल्ला उठा, “खुदावंद, मुझे बचाएँ!”

31 ईसा ने फौरन अपना हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ लिया। उसने कहा, “ऐ कमएतकाद! तू शक में क्यों पड़ गया था?”

32 दोनों कश्ती पर सवार हुए तो हवा थम गई। 33 फिर कश्ती में मौजूद शागिर्दों ने उसे सिजदा करके कहा, “यक्रीनन आप अल्लाह के फरजंद हैं!”

गन्नेसरत में मरीजों की शफा

34 झील को पार करके वह गन्नेसरत शहर के पास पहुँच गए। 35 जब उस जगह के लोगों ने ईसा को पहचान लिया तो उन्होंने इर्दगिर्द के पूरे इलाके में इसकी खबर फैलाई। उन्होंने अपने तमाम मरीजों को उसके पास लाकर 36 उससे मिन्नत की कि वह उन्हें सिर्फ अपने लिबास के दामन को छूने दे। और जिसने भी उसे छुआ उसे शफा मिली।

15

बापदादा की तालीम

1 फिर कुछ फरीसी और शरीअत के आलिम यरूशलम से आकर ईसा से पूछने लगे, 2 “आपके शागिर्द बापदादा की रिवायत क्यों तोड़ते हैं? क्योंकि वह हाथ धोए बगैर रोटी खाते हैं।”

3 ईसा ने जवाब दिया, “और तुम अपनी रिवायत की खातिर अल्लाह का हुक्म क्यों तोड़ते हो? 4 क्योंकि अल्लाह ने फरमाया, ‘अपने बाप और अपनी माँ की इज्जत करना’ और ‘जो अपने बाप या माँ पर लानत करे उसे सज़ाए-मौत दी जाए।’ 5 लेकिन जब कोई अपने वालिदैन से कहे, ‘मैं आपकी मदद नहीं कर सकता, क्योंकि मैंने मन्नत मानी है कि जो कुछ मुझे आपको देना था वह अल्लाह के लिए वक्फ है’ तो तुम इसे जायज़ करार देते हो। 6 यों तुम कहते हो कि उसे अपने माँ-बाप की इज्जत करने की ज़रूरत नहीं है। और इसी तरह तुम अल्लाह के कलाम को अपनी रिवायत की खातिर मनसूख कर लेते हो। 7 रियाकारो! यसायाह नबी ने तुम्हारे बारे में क्या खूब नबुवत की है,

8 ‘यह कौम अपने होंटों से तो मेरा एहतराम करती है

लेकिन उसका दिल मुझसे दूर है।

9 वह मेरी परस्तिश करते तो हैं, लेकिन बेफायदा।

क्योंकि वह सिर्फ़ इनसान ही के अहकाम सिखाते हैं।”

इनसान को क्या कुछ नापाक कर देता है?

10 फिर ईसा ने हज़ूम को अपने पास बुलाकर कहा, “सब मेरी बात सुनो और इसे समझने की कोशिश करो। 11 कोई ऐसी चीज़ है नहीं जो इनसान के मुँह में दाख़िल होकर उसे नापाक कर सके, बल्कि जो कुछ इनसान के मुँह से निकलता है वही उसे नापाक कर देता है।”

12 इस पर शागिर्दों ने उसके पास आकर पूछा, “क्या आपको मालूम है कि फ़रीसी यह बात सुनकर नाराज़ हुए हैं?”

13 उसने जवाब दिया, “जो भी पौदा मेरे आसमानी बाप ने नहीं लगाया उसे जड़ से उखाड़ा जाएगा। 14 उन्हें छोड़ दो, वह अंधे राह दिखानेवाले हैं। अगर एक अंधा दूसरे अंधे की राहनुमाई करे तो दोनों गढ़े में गिर जाएंगे।”

15 पतरस बोल उठा, “इस तमसील का मतलब हमें बताएँ।”

16 ईसा ने कहा, “क्या तुम अभी तक इतने नासमझ हो? 17 क्या तुम नहीं समझ सकते कि जो कुछ इनसान के मुँह में दाख़िल हो जाता है वह उसके मेदे में जाता है और वहाँ से निकलकर जाए-ज़रूरत में? 18 लेकिन जो कुछ इनसान के मुँह से निकलता है वह दिल से आता है। वही इनसान को नापाक करता है। 19 दिल ही से बुरे खयालात, कत्लो-ग़ारत, ज़िनाकारी, हरामकारी, चोरी, झूटी गवाही और बूहतान निकलते हैं। 20 यही कुछ इनसान को नापाक कर देता है, लेकिन हाथ धोए बग़ैर खाना खाने से वह नापाक नहीं होता।”

ग़ैरयहूदी औरत का ईमान

21 फिर ईसा गलील से रवाना होकर शिमाल में सूर और सैदा के इलाक़े में आया। 22 इस इलाक़े की एक कनानी ख़ातून उसके पास आकर चिल्लाने लगी, “ख़ुदावंद, इब्ने-दाऊद, मुझ पर रहम करें। एक बदर्ह मेरी बेटी को बहुत सताती है।”

23 लेकिन ईसा ने जवाब में एक लफ़ज़ भी न कहा। इस पर उसके शागिर्द उसके पास आकर उससे गुज़ारिश करने लगे, “उसे फ़ारिग़ कर दें, क्योंकि वह हमारे पीछे पीछे चीख़ती-चिल्लाती है।”

24 ईसा ने जवाब दिया, “मुझे सिर्फ़ इसराईल की खोई हुई भेड़ों के पास भेजा गया है।”

25 औरत उसके पास आकर मुँह के बल झुक गई और कहा, “ख़ुदावंद, मेरी मदद करें!”

26 उसने उसे बताया, “यह मुनासिब नहीं कि बच्चों से खाना लेकर कुत्तों के सामने फेंक दिया जाए।”

27 उसने जवाब दिया, “जी ख़ुदावंद, लेकिन कुत्ते भी वह टुकड़े खाते हैं जो उनके मालिक की मेज़ पर से फ़र्श पर गिर जाते हैं।”

28 ईसा ने कहा, “ऐ औरत, तेरा ईमान बड़ा है। तेरी दरखास्त पूरी हो जाए।” उसी लमहे औरत की बेटी को शफ़ा मिल गई।

ईसा बहुत-से मरीज़ों को शफ़ा देता है

29 फिर ईसा वहाँ से रवाना होकर गलील की झील के किनारे पहुँच गया। वहाँ वह पहाड़ पर चढ़कर बैठ गया। 30 लोगों की बड़ी तादाद उसके पास आई। वह अपने लँगड़े, अंधे, मफ़लूज़, ग़ौं और कई और क्रिस्म के मरीज़ भी साथ ले आए। उन्होंने उन्हें ईसा के सामने रखा तो उसने उन्हें शफ़ा दी। 31 हुज़ूम हैरतज़दा हो गया। क्योंकि ग़ौं बोल रहे थे, अपाहजों के आज्ञा बहाल हो गए, लँगड़े चलने और अंधे देखने लगे थे। यह देखकर भीड़ ने इसराईल के ख़ुदा की तमज़ीद की।

ईसा 4000 मर्दों को खाना खिलाता है

32 फिर ईसा ने अपने शागिर्दों को बुलाकर उनसे कहा, “मुझे इन लोगों पर तरस आता है। इन्हें मेरे साथ ठहरे तीन दिन हो चुके हैं और इनके पास खाने की कोई चीज़ नहीं है। लेकिन मैं इन्हें इस भूकी हालत में सख़सत नहीं करना चाहता। ऐसा न हो कि वह रास्ते में थककर चूर हो जाएँ।”

33 उसके शागिर्दों ने जवाब दिया, “इस वीरान इलाक़े में कहाँ से इतना खाना मिल सकेगा कि यह लोग खाकर सेर हो जाएँ?”

34 ईसा ने पूछा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?” उन्होंने जवाब दिया, “सात, और चंद एक छोटी मछलियाँ।”

35 ईसा ने हज़ूम को ज़मीन पर बैठने को कहा। 36 फिर सात रोटियों और मछलियों को लेकर उसने शुक़गुज़ारी की दुआ की और उन्हें तोड़ तोड़कर अपने शागिर्दों को तकसीम करने के लिए दे दिया। 37 सबने जी भरकर खाया। बाद में जब खाने के बचे हुए टुकड़े जमा किए गए तो सात बड़े टोक़रे भर गए। 38 ख़वातीन और बच्चों के अलावा खानेवाले 4,000 मर्द थे।

39 फिर ईसा लोगों को सख़सत करके कश्ती पर सवार हुआ और मगदन के इलाक़े में चला गया।

16

फ़रीसी इलाही निशान का तकाज़ा करते हैं

1 एक दिन फ़रीसी और सदूकी ईसा के पास आए। उसे परखने के लिए उन्होंने मुतालबा किया कि वह उन्हें आसमान की तरफ़ से कोई इलाही निशान दिखाए ताकि उसका इख़्तियार साबित हो जाए। 2 लेकिन उसने जवाब दिया, “शाम को तुम कहते हो, ‘कल मौसम साफ़ होगा क्योंकि आसमान सुर्ख़ नज़र आता है।’ 3 और सुबह के वक़्त कहते हो, ‘आज तूफ़ान होगा क्योंकि आसमान सुर्ख़ है और बादल छाए हुए हैं।’ गरज़ तुम आसमान की हालत पर ग़ौर करके सहीह नतीजा निकाल लेते हो, लेकिन ज़मानों की अलामतों पर ग़ौर करके सहीह नतीजे तक पहुँचना

तुम्हारे बस की बात नहीं है। ⁴ सिर्फ शरीर और जिनाकार नसल इलाही निशान का तकाज़ा करती है। लेकिन उसे कोई भी इलाही निशान पेश नहीं किया जाएगा सिवाए यूनस नबी के निशान के।”

यह कहकर ईसा उन्हें छोड़कर चला गया।

फरीसियों और सदूकियों का खमीर

⁵ झील को पार करते वक्त शागिर्द अपने साथ खाना लाना भूल गए थे। ⁶ ईसा ने उनसे कहा, “खबरदार, फरीसियों और सदूकियों के खमीर से होशियार रहना।”

⁷ शागिर्द आपस में बहस करने लगे, “वह इसलिए कह रहे होंगे कि हम खाना साथ नहीं लाए।”

⁸ ईसा को मालूम हुआ कि वह क्या सोच रहे हैं। उसने कहा, “तुम आपस में क्यों बहस कर रहे हो कि हमारे पास रोटी नहीं है? ⁹ क्या तुम अभी तक नहीं समझते? क्या तुम्हें याद नहीं कि मैंने पाँच रोटियाँ लेकर 5,000 आदमियों को खाना खिला दिया और कि तुमने बचे हुए टुकड़ों के कितने टोकरे उठाए थे? ¹⁰ या क्या तुम भूल गए हो कि मैंने सात रोटियाँ लेकर 4,000 आदमियों को खाना खिलाया और कि तुमने बचे हुए टुकड़ों के कितने टोकरे उठाए थे? ¹¹ तुम क्यों नहीं समझते कि मैं तुमसे खाने की बात नहीं कर रहा? सुनो मेरी बात! फरीसियों और सदूकियों के खमीर से होशियार रहो!”

¹² फिर उन्होंने समझ आई कि ईसा उन्हें रोटी के खमीर से आगाह नहीं कर रहा था बल्कि फरीसियों और सदूकियों की तालीम से।

पतरस का इकरार

¹³ जब ईसा कैसरीया-फिलिप्पी के इलाके में पहुँचा तो उसने शागिर्दों से पूछा, “इब्ने-आदम लोगों के नज़दीक कौन है?”

¹⁴ उन्होंने जवाब दिया, “कुछ कहते हैं यहया बपतिस्मा देनेवाला, कुछ यह कि आप इलियास नबी हैं। कुछ यह भी कहते हैं कि यरमियाह या नबियों में से एक।”

¹⁵ उसने पूछा, “लेकिन तुम्हारे नज़दीक मैं कौन हूँ?”

¹⁶ पतरस ने जवाब दिया, “आप ज़िंदा खुदा के फ़रज़ंद मसीह हैं।”

¹⁷ ईसा ने कहा, “शमौन बिन यूनस, तू मुबारक है, क्योंकि किसी इनसान ने तुझ पर यह जाहिर नहीं किया बल्कि मेरे आसमानी बाप ने। ¹⁸ मैं तुझे यह भी बताता हूँ कि तू पतरस यानी पत्थर है, और इसी पत्थर पर मैं अपनी जमात को तामीर करूँगा, ऐसी जमात जिस पर पाताल के दरवाज़े भी ग़ालिब नहीं आएँगे। ¹⁹ मैं तुझे आसमान की बादशाही की कुंजियाँ दे दूँगा। जो कुछ तू ज़मीन पर बाँधेगा वह आसमान पर भी बाँधेगा। और जो कुछ तू ज़मीन पर खोलेगा वह आसमान पर भी खुलेगा।”

²⁰ फिर ईसा ने अपने शागिर्दों को हुक्म दिया, “किसी को भी न बताओ कि मैं मसीह हूँ।”

ईसा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

²¹ उस वक्त से ईसा अपने शागिर्दों पर वाज़िह करने लगा, “लाज़िम है कि मैं यरूशलम जाकर क्रौम के बुजुर्गों, राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा के हाथों बहुत दुख उठाऊँ। मुझे क़त्ल किया जाएगा, लेकिन तीसरे दिन मैं जी उठूँगा।”

²² इस पर पतरस उसे एक तरफ़ ले जाकर समझाने लगा। “ऐ खुदावंद, अल्लाह न करे कि यह कभी भी आपके साथ हो।”

²³ ईसा ने मुड़कर पतरस से कहा, “शैतान, मेरे सामने से हट जा! तू मेरे लिए ठोकर का बाइस है, क्योंकि तू अल्लाह की सोच नहीं रखता बल्कि इनसान की।”

²⁴ फिर ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, “जो मेरे पीछे आना चाहे वह अपने आपका इनकार करे और अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे हो ले। ²⁵ क्योंकि जो अपनी जान को बचाए रखना चाहे वह उसे खो देगा। लेकिन जो मेरी खातिर अपनी जान खो दे वही उसे पा लेगा। ²⁶ क्या फ़ायदा है अगर किसी को पूरी दुनिया हासिल हो जाए, लेकिन वह अपनी जान से महसूम हो जाए? इनसान अपनी जान के बदले क्या दे सकता है? ²⁷ क्योंकि इब्ने-आदम अपने बाप के जलाल में अपने फ़रिश्तों के साथ आएगा, और उस वक्त वह हर एक को उसके काम का बदला देगा। ²⁸ मैं तुम्हें सच बताता हूँ, यहाँ कुछ ऐसे लोग खड़े हैं जो मरने से पहले ही इब्ने-आदम को उस की बादशाही में आते हुए देखेंगे।”

17

पहाड़ पर ईसा की सूरत बदल जाती है

¹ छः दिन के बाद ईसा सिर्फ पतरस, याकूब और यहून्ना को अपने साथ लेकर ऊँचे पहाड़ पर चढ़ गया। ² वहाँ उस की शक्तो-सूरत उनके सामने बदल गई। उसका चेहरा सूरज की तरह चमकने लगा, और उसके कपड़े नूर की मानिंद सफ़ेद हो गए। ³ अचानक इलियास और मूसा जाहिर हुए और ईसा से बातें करने लगे। ⁴ पतरस बोल उठा, “खुदावंद, कितनी अच्छी बात है कि हम यहाँ हैं। अगर आप चाहें तो मैं तीन झोंपड़ियाँ बनाऊँगा, एक आपके लिए, एक मूसा के लिए और एक इलियास के लिए।”

⁵ वह अभी बात कर ही रहा था कि एक चमकदार बादल आकर उन पर छा गया और बादल में से एक आवाज़ सुनाई दी, “यह मेरा प्यारा फ़रज़ंद है, जिससे मैं खुश हूँ। इसकी सुनो।”

6 यह सुनकर शागिर्द दहशत खाकर औंधे मुँह गिर गए। 7 लेकिन ईसा ने आकर उन्हें छुआ। उसने कहा, “उठो, मत डरो।” 8 जब उन्होंने नज़र उठाई तो ईसा के सिवा किसी को न देखा।

9 वह पहाड़ से उतरने लगे तो ईसा ने उन्हें हुक्म दिया, “जो कुछ तुमने देखा है उसे उस वक़्त तक किसी को न बताना जब तक कि इब्ने-आदम मुरदों में से जी न उठे।”

10 शागिर्दों ने उससे पूछा, “शरीअत के उलमा क्यों कहते हैं कि मसीह की आमद से पहले इलियास का आना ज़रूरी है?”

11 ईसा ने जवाब दिया, “इलियास तो ज़रूर सब कुछ बहाल करने के लिए आएगा। 12 लेकिन मैं तुमको बताता हूँ कि इलियास तो आ चुका है और उन्होंने उसे नहीं पहचाना बल्कि उसके साथ जो चाहा किया। इसी तरह इब्ने-आदम भी उनके हाथों दुख उठाएगा।”

13 फिर शागिर्दों को समझ आई कि वह उनके साथ यहया बपतिस्मा देनेवाले की बात कर रहा था।

ईसा लड़के में से बदरूह निकालता है

14 जब वह नीचे हज़म के पास पहुँचे तो एक आदमी ने ईसा के सामने आकर घुटने टेके 15 और कहा, “खुदावंद, मेरे बेटे पर रहम करें, उसे मिरगी के दौर पड़ते हैं और उसे शदीद तकलीफ़ उठानी पड़ती है। कई बार वह आग या पानी में गिर जाता है। 16 मैं उसे आपके शागिर्दों के पास लाया था, लेकिन वह उसे शफ़ा न दे सके।”

17 ईसा ने जवाब दिया, “ईमान से खाली और टेढ़ी नसल! मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँ, कब तक तुम्हें बरदाश्त करूँ? लड़के को मेरे पास ले आओ।” 18 ईसा ने बदरूह को डाँटा, तो वह लड़के में से निकल गई। उसी लमहे उसे शफ़ा मिल गई।

19 बाद में शागिर्दों ने अलहदगी में ईसा के पास आकर पूछा, “हम बदरूह को क्यों न निकाल सके?”

20 उसने जवाब दिया, “अपने ईमान की कमी के सबब से। मैं तुम्हें सच बताता हूँ, अगर तुम्हारा ईमान राई के दाने के बराबर भी हो तो फिर तुम इस पहाड़ को कह सकोगे, ‘इधर से उधर खिसक जा,’ तो वह खिसक जाएगा। और तुम्हारे लिए कुछ भी नामुमकिन नहीं होगा। 21 [लेकिन इस किस्म की बदरूह दुआ और रोज़े के बग़ैर नहीं निकलती।]”

ईसा दूसरी बार अपनी मौत का ज़िक्र करता है

22 जब वह गलील में जमा हुए तो ईसा ने उन्हें बताया, “इब्ने-आदम को आदमियों के हवाले कर दिया जाएगा। 23 वह उसे कत्ल करेंगे, लेकिन तीन दिन के बाद वह जी उठेगा।”

यह सुनकर शागिर्द निहायत गमगीन हुए।

बैतुल-मुक़द्दस का टैक्स

24 वह कफ़र्नहम पहुँचे तो बैतुल-मुक़द्दस का टैक्स जमा करनेवाले पतरस के पास आकर पूछने लगे, “क्या आपका उस्ताद बैतुल-मुक़द्दस का टैक्स अदा नहीं करता?”

25 “जी, वह करता है,” पतरस ने जवाब दिया। वह घर में आया तो ईसा पहले ही बोलने लगा, “क्या खयाल है शमौन, दुनिया के बादशाह किनसे झूटी और टैक्स लेते हैं, अपने फ़रज़ंदों से या अजनबियों से?”

26 पतरस ने जवाब दिया, “अजनबियों से।”

ईसा बोला “तो फिर उनके फ़रज़ंद टैक्स देने से बरी हुए। 27 लेकिन हम उन्हें नाराज़ नहीं करना चाहते। इसलिए झील पर जाकर उसमें डोरी डाल देना। जो मछली तू पहले पकड़ेगा उसका मुँह खोलना तो उसमें से चाँदी का सिक्का निकलेगा। उसे लेकर उन्हें मेरे और अपने लिए अदा कर दे।”

18

कौन सबसे बड़ा है?

1 उस वक़्त शागिर्द ईसा के पास आकर पूछने लगे, “आसमान की बादशाही में कौन सबसे बड़ा है?”

2 जवाब में ईसा ने एक छोटे बच्चे को बुलाकर उनके दरमियान खड़ा किया 3 और कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ अगर तुम बदलकर छोटे बच्चों की मानिंद न बनो तो तुम कभी आसमान की बादशाही में दाखिल नहीं होगे। 4 इसलिए जो भी अपने आपको इस बच्चे की तरह छोटा बनाएगा वह आसमान में सबसे बड़ा होगा। 5 और जो भी मेरे नाम में इस जैसे छोटे बच्चे को कबूल करे वह मुझे कबूल करता है।

आज़माइशें

6 लेकिन जो कोई इन छोटों में से किसी को गुनाह करने पर उकसाए उसके लिए बेहतर है कि उसके गले में बड़ी चक्की का पाट बाँधकर उसे समुंदर की गहराइयों में डुबो दिया जाए। 7 दुनिया पर उन चीज़ों की वजह से अफ़सोस जो गुनाह करने पर उकसाती हैं। लाज़िम है कि ऐसी आज़माइशें आएँ, लेकिन उस शख्स पर अफ़सोस जिसकी मारिफ़त वह आएँ।

8 अगर तेरा हाथ या पाँव तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे काटकर फेंक देना। इससे पहले कि तुझे दो हाथों या दो पाँवों समेत जहन्नुम की अबदी आग में फेंका जाए, बेहतर यह है कि एक हाथ या पाँव से महरूम होकर अबदी ज़िंदगी में दाखिल हो। 9 और अगर तेरी आँख तुझे

गुनाह करने पर उकसाए तो उसे निकालकर फेंक देना। इससे पहले कि तुझे दो आँखों समेत जहन्नुम की आग में फेंका जाए बेहतर यह है कि एक आँख से महसूस होकर अबदी ज़िंदगी में दाखिल हो।

खोई हुई भेड़ की तमसील

¹⁰ खबरदार! तुम इन छोटों में से किसी को भी हकीर न जानना। क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ कि आसमान पर इनके फरिश्ते हर वक़्त मेरे बाप के चेहरे को देखते रहते हैं। ¹¹ [क्योंकि इब्ने-आदम खोए हुआ को ढूँढ़ने और नज़ात देने आया है।]

¹² तुम्हारा क्या खयाल है? अगर किसी आदमी की 100 भेड़ें हों और एक भटककर गुम हो जाए तो वह क्या करेगा? क्या वह बाक़ी 99 भेड़ें पहाड़ी इलाक़े में छोड़कर भटकी हुई भेड़ को ढूँढ़ने नहीं जाएगा? ¹³ और मैं तुमको सच बताता हूँ कि भटकी हुई भेड़ के मिलने पर वह उसके बारे में उन बाक़ी 99 भेड़ों की निसबत कहीं ज़्यादा खुशी मनाएगा जो भटकी नहीं। ¹⁴ बिल्कुल इसी तरह आसमान पर तुम्हारा बाप नहीं चाहता कि इन छोटों में से एक भी हलाक हो जाए।

गुनाह में पड़े भाई से सुलूक

¹⁵ अगर तेरे भाई ने तेरा गुनाह किया हो तो अकेले उसके पास जाकर उस पर उसका गुनाह ज़ाहिर कर। अगर वह तेरी बात माने तो तूने अपने भाई को जीत लिया। ¹⁶ लेकिन अगर वह न माने तो एक या दो और लोगों को अपने साथ ले जा ताकि तुम्हारी हर बात की दो या तीन गवाहों से तसदीक हो जाए। ¹⁷ अगर वह उनकी बात भी न माने तो जमात को बता देना। और अगर वह जमात की भी न माने तो उसके साथ गैरईमानदार या टैक्स लेनेवाले का-सा सुलूक कर।

बाँधने और खोलने का इस्तिथार

¹⁸ मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो कुछ भी तुम ज़मीन पर बान्धोगे आसमान पर भी बाँधेगा, और जो कुछ ज़मीन पर खोलोगे आसमान पर भी खुलेगा।

¹⁹ मैं तुमको यह भी बताता हूँ कि अगर तुममें से दो शख्स किसी बात को माँगने पर मुतफ़िक़ हो जाएँ तो मेरा आसमानी बाप तुमको बख़्शेगा। ²⁰ क्योंकि जहाँ भी दो या तीन अफ़राद मेरे नाम में जमा हो जाएँ वहाँ मैं उनके दरमियान हूँगा।”

मुआफ़ न करनेवाले नौकर की तमसील

²¹ फिर पतरस ने ईसा के पास आकर पूछा, “खुदावंद, जब मेरा भाई मेरा गुनाह करे तो मैं कितनी बार उसे मुआफ़ करूँ? सात बार तक?”

²² ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझे बताता हूँ, सात बार नहीं बल्कि 77 बार। ²³ इसलिए आसमान की बादशाही एक बादशाह की मानिंद है जो अपने नौकरों के कर्ज़ों का हिसाब-किताब करना चाहता था। ²⁴ हिसाब-किताब शुरू करते वक़्त एक आदमी उसके सामने पेश किया गया जो अरबों के हिसाब से उसका कर्ज़दार था। ²⁵ वह यह रक़म अदा न कर सका, इसलिए उसके मालिक ने यह कर्ज़ वसूल करने के लिए हुक्म दिया कि उसे बाल-बच्चों और तमाम मिलकियत समेत फ़रोख़्त कर दिया जाए। ²⁶ यह सुनकर नौकर मुँह के बल गिरा और मिन्नत करने लगा, ‘मुझे मोहलत दें, मैं पूरी रक़म अदा कर दूँगा।’ ²⁷ बादशाह को उस पर तरस आया। उसने उसका कर्ज़ मुआफ़ करके उसे जाने दिया।

²⁸ लेकिन जब यही नौकर बाहर निकला तो एक हमखिदमत मिला जो उसका चंद हज़ार रुपों का कर्ज़दार था। उसे पकड़कर वह उसका गला दबाकर कहने लगा, ‘अपना कर्ज़ अदा कर!’ ²⁹ दूसरा नौकर गिरकर मिन्नत करने लगा, ‘मुझे मोहलत दें, मैं आपको सारी रक़म अदा कर दूँगा।’ ³⁰ लेकिन वह इसके लिए तैयार न हुआ, बल्कि जाकर उसे उस वक़्त तक जेल में डलवाया जब तक वह पूरी रक़म अदा न कर दे। ³¹ जब बाक़ी नौकरों ने यह देखा तो उन्हें शदीद दुख हुआ और उन्होंने अपने मालिक के पास जाकर सब कुछ बता दिया जो हुआ था। ³² इस पर मालिक ने उस नौकर को अपने पास बुला लिया और कहा, ‘शरीर नौकर! जब तूने मेरी मिन्नत की तो मैंने तेरा पूरा कर्ज़ मुआफ़ कर दिया। ³³ क्या लाज़िम न था कि तू भी अपने साथी नौकर पर उतना रहम करता जितना मैंने तुझ पर किया था?’ ³⁴ गुस्से में मालिक ने उसे जेल के अफ़सरों के हवाले कर दिया ताकि उस पर उस वक़्त तक तशद्दुद किया जाए जब तक वह कर्ज़ की पूरी रक़म अदा न कर दे।

³⁵ मेरा आसमानी बाप तुममें से हर एक के साथ भी ऐसा ही करेगा अगर तुमने अपने भाई को पूरे दिल से मुआफ़ न किया।”

19

तलाक़ के बारे में तालीम

¹ यह कहने के बाद ईसा गलील को छोड़कर यहूदिया में दरियाए-यरदन के पार चला गया। ² बड़ा हुज़ूम उसके पीछे हो लिया और उसने उन्हें वहाँ शफ़ा दी।

³ कुछ फ़रीसी आए और उसे फँसाने की गरज़ से सवाल किया, “क्या जायज़ है कि मर्द अपनी बीवी को किसी भी वजह से तलाक़ दे?”

⁴ ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुमने कलामे-मुक़द्दस में नहीं पढ़ा कि इब्तिदा में ख़ालिक ने उन्हें मर्द और औरत बनाया? ⁵ और उसने फ़रमाया, ‘इसलिए मर्द अपने माँ-बाप को छोड़कर अपनी बीवी के साथ पैवस्त हो जाता है। वह दोनों एक हो जाते हैं।’ ⁶ यों वह कलामे-मुक़द्दस के मुताबिक़ दो नहीं रहते बल्कि एक हो जाते हैं। जिसे अल्लाह ने जोड़ा है उसे इनसान जुदा न करे।”

⁷ उन्होंने एतराज़ किया, “तो फिर मूसा ने यह क्यों फ़रमाया कि आदमी तलाक़नामा लिखकर बीवी को स़ख़सत कर दे?”

8 ईसा ने जवाब दिया, “मूसा ने तुम्हारी सख्तदिली की वजह से तुमको अपनी बीवी को तलाक देने की इजाजत दी। लेकिन इब्तिदा में ऐसा न था। 9 मैं तुम्हें बताता हूँ, जो अपनी बीवी को जिसने जिना न किया हो तलाक दे और किसी और से शादी करे, वह जिना करता है।”

10 शागिर्दों ने उससे कहा, “अगर शौहर और बीवी का आपस का ताल्लुक ऐसा है तो शादी न करना बेहतर है।”

11 ईसा ने जवाब दिया, “हर कोई यह बात समझ नहीं सकता बल्कि सिर्फ वह जिसे इस काबिल बना दिया गया हो। 12 क्योंकि कुछ पैदाइश ही से शादी करने के काबिल नहीं होते, बाज़ को दूसरों ने यों बनाया है और बाज़ ने आसमान की बादशाही की खातिर शादी करने से इनकार किया है। लिहाज़ा जो यह समझ सके वह समझ ले।”

ईसा छोटे बच्चों को बरकत देता है

13 एक दिन छोटे बच्चों को ईसा के पास लाया गया ताकि वह उन पर अपने हाथ रखकर दुआ करे। लेकिन शागिर्दों ने लानेवालों को मलामत की। 14 यह देखकर ईसा ने कहा, “बच्चों को मेरे पास आने दो और उन्हें न रोको, क्योंकि आसमान की बादशाही इन जैसे लोगों को हासिल है।”

15 उसने उन पर अपने हाथ रखे और फिर वहाँ से चला गया।

अमीर मुश्किल से अल्लाह की बादशाही में दाखिल हो सकते हैं

16 फिर एक आदमी ईसा के पास आया। उसने कहा, “उस्ताद, मैं कौन-सा नेक काम करूँ ताकि अबदी ज़िंदगी मिल जाए?”

17 ईसा ने जवाब दिया, “तू मुझे नेकी के बारे में क्यों पूछ रहा है? सिर्फ एक ही नेक है। लेकिन अगर तू अबदी ज़िंदगी में दाखिल होना चाहता है तो अहकाम के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ार।”

18 आदमी ने पूछा, “कौन-से अहकाम?”

ईसा ने जवाब दिया, “कत्ल न करना, जिना न करना, चोरी न करना, झूटी गवाही न देना, 19 अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना और अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।”

20 जवान आदमी ने जवाब दिया, “मैंने इन तमाम अहकाम की पैरवी की है, अब क्या रह गया है?”

21 ईसा ने उसे बताया, “अगर तू कामिल होना चाहता है तो जा और अपनी पूरी जायदाद फ़रोख्त करके पैसे गरीबों में तकसीम कर दे। फिर तेरे लिए आसमान पर खज़ाना जमा हो जाएगा। इसके बाद आकर मेरे पीछे हो ले।”

22 यह सुनकर नौजवान मायूस होकर चला गया, क्योंकि वह निहायत दौलतमंद था।

23 इस पर ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि दौलतमंद के लिए आसमान की बादशाही में दाखिल होना मुश्किल है। 24 मैं यह दुबारा कहता हूँ, अमीर के आसमान की बादशाही में दाखिल होने की निसबत ज़्यादा आसान यह है कि ऊँट सूई के नाके में से गुज़र जाए।”

25 यह सुनकर शागिर्द निहायत हैरतज़दा हुए और पूछने लगे, “फिर किस को नजात हासिल हो सकती है?”

26 ईसा ने गौर से उनकी तरफ़ देखकर जवाब दिया, “यह इंसान के लिए तो नामुमकिन है, लेकिन अल्लाह के लिए सब कुछ मुमकिन है।”

27 फिर पतरस बोल उठा, “हम तो अपना सब कुछ छोड़कर आपके पीछे हो लिए हैं। हमें क्या मिलेगा?”

28 ईसा ने उनसे कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ, दुनिया की नई तखलीक़ पर जब इब्ने-आदम अपने जलाली तख़्त पर बैठेगा तो तुम भी जिन्होंने मेरी पैरवी की है बारह तख़्तों पर बैठकर इसराईल के बारह क़बीलों की अदालत करोगे। 29 और जिसने भी मेरी खातिर अपने घरों, भाइयों, बहनो, बाप, माँ, बच्चों या खेतों को छोड़ दिया है उसे सौ गुना ज़्यादा मिल जाएगा और मीरास में अबदी ज़िंदगी पाएगा। 30 लेकिन बहुत-से लोग जो अब अव्वल हैं उस वक़्त आखिर होंगे और जो अब आखिर हैं वह अव्वल होंगे।

20

अंगूर के बाग़ में मज़दूर

1 क्योंकि आसमान की बादशाही उस ज़मीनदार से मुताबिकत रखती है जो एक दिन सुबह-सवेरे निकला ताकि अपने अंगूर के बाग़ के लिए मज़दूर ढूँढ़े। 2 वह उनसे दिहाड़ी के लिए चाँदी का एक सिक्का देने पर मुताफ़िक़ हुआ और उन्हें अपने अंगूर के बाग़ में भेज दिया। 3 नौ बजे वह दुबारा निकला तो देखा कि कुछ लोग अभी तक मंडी में फ़ारिग़ बैठे हैं। 4 उसने उनसे कहा, ‘तुम भी जाकर मेरे अंगूर के बाग़ में काम करो। मैं तुम्हें मुनासिब उजरत दूँगा।’ 5 चुनाँचे वह काम करने के लिए चले गए। बारह बजे और तीन बजे दोपहर के वक़्त भी वह निकला और इस तरह के फ़ारिग़ मज़दूरों को काम पर लगाया। 6 फिर शाम के पाँच बज गए। वह निकला तो देखा कि अभी तक कुछ लोग फ़ारिग़ बैठे हैं। उसने उनसे पूछा, ‘तुम क्यों पूरा दिन फ़ारिग़ बैठे रहे हो?’ 7 उन्होंने जवाब दिया, ‘इसलिए कि किसी ने हमें काम पर नहीं लगाया।’ उसने उनसे कहा, ‘तुम भी जाकर मेरे अंगूर के बाग़ में काम करो।’

8 दिन ढल गया तो ज़मीनदार ने अपने अफ़सर को बताया, ‘मज़दूरों को बुलाकर उन्हें मज़दूरी दे दे, आखिर में आनेवालों से शुरू करके पहले आनेवालों तक।’ 9 जो मज़दूर पाँच बजे आए थे उन्हें चाँदी का एक एक सिक्का मिल गया। 10 इसलिए जब वह आए जो पहले काम पर लगाए गए थे तो उन्होंने ज़्यादा मिलने की तक्क़ो की। लेकिन उन्हें भी चाँदी का एक एक सिक्का मिला। 11 इस पर वह ज़मीनदार के

खिलाफ बूढ़बुढ़ाने लगे, ¹² ‘यह आदमी जिन्हें आखिर में लगाया गया उन्होंने सिर्फ एक घंटा काम किया। तो भी आपने उन्हें हमारे बराबर की मज़दूरी दी हालाँकि हमें दिन का पूरा बोझ और धूप की शिष्ट बरदाश्त करनी पड़ी।’

¹³ लेकिन ज़मीनदार ने उनमें से एक से बात की, ‘यार, मैंने ग़लत काम नहीं किया। क्या तू चाँदी के एक सिक्के के लिए मज़दूरी करने पर मुत्तफ़िक़ न हुआ था? ¹⁴ अपने पैसे लेकर चला जा। मैं आखिर में काम पर लगनेवालों को उतना ही देना चाहता हूँ जितना तुझे। ¹⁵ क्या मेरा हक़ नहीं कि मैं जैसा चाहूँ अपने पैसे खर्च करूँ? या क्या तू इसलिए हसद करता है कि मैं फ़ैयाज़दिल हूँ?’

¹⁶ यों अक्वल आखिर में आँगे और जो आखिरी हैं वह अक्वल हो जाएंगे।”

ईसा तीसरी मरतबा अपनी मौत का जिक़र करता है

¹⁷ अब जब ईसा यरूशलम की तरफ़ बढ़ रहा था तो बारह शागिर्दों को एक तरफ़ ले जाकर उसने उनसे कहा, ¹⁸ “हम यरूशलम की तरफ़ बढ़ रहे हैं। वहाँ इब्ने-आदम को राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा के हवाले कर दिया जाएगा। वह उस पर सज़ाए-मौत का फ़तवा देकर ¹⁹ उसे ग़ैरयहूदियों के हवाले कर देंगे ताकि वह उसका मज़ाक़ उड़ाएँ, उसको कोड़े मारें और उसे मसलूब करें। लेकिन तीसरे दिन वह जी उठेगा।”

याक़ूब और यूहन्ना की माँ की गुज़ारिश

²⁰ फिर जबदी के बेटों याक़ूब और यूहन्ना की माँ अपने बेटों को साथ लेकर ईसा के पास आई और सिजदा करके कहा, “आपसे एक गुज़ारिश है।”

²¹ ईसा ने पूछा, “तू क्या चाहती है?”

उसने जवाब दिया, “अपनी बादशाही में मेरे इन बेटों में से एक को अपने दाएँ हाथ बैठने दें और दूसरे को बाएँ हाथ।”

²² ईसा ने कहा, “तुमको नहीं मालूम कि क्या माँग रहे हो। क्या तुम वह प्याला पी सकते हो जो मैं पीने को हूँ?”

“जी, हम पी सकते हैं,” उन्होंने जवाब दिया।

²³ फिर ईसा ने उनसे कहा, “तुम मेरा प्याला तो ज़रूर पियोगे, लेकिन यह फैसला करना मेरा काम नहीं कि कौन मेरे दाएँ हाथ बैठेगा और कौन बाएँ हाथ। मेरे बाप ने यह मक़ाम उन्हीं के लिए तैयार किया है जिनको उसने खुद मुकर्रर किया है।”

²⁴ जब बाकी दस शागिर्दों ने यह सुना तो उन्हें याक़ूब और यूहन्ना पर गुस्सा आया। ²⁵ इस पर ईसा ने उन सबको बुलाकर कहा, “तुम जानते हो कि कौमों के हुक्मरान अपनी रिआया पर रोब डालते हैं और उनके बड़े अफ़सर उन पर अपने इख़्तियार का ग़लत इस्तेमाल करते हैं। ²⁶ लेकिन तुम्हारे दरमियान ऐसा नहीं है। जो तुममें बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा खादिम बने ²⁷ और जो तुममें अक्वल होना चाहे वह तुम्हारा गुलाम बने। ²⁸ क्योंकि इब्ने-आदम भी इसलिए नहीं आया कि ख़िदमत ले बल्कि इसलिए कि ख़िदमत करे और अपनी जान फ़िधा के तौर पर देकर बहुतों को छुड़ाए।”

दो अंधों की शफ़ा

²⁹ जब वह यरीह शहर से निकलने लगे तो एक बड़ा हुज़ूम उनके पीछे चल रहा था। ³⁰ दो अंधे रास्ते के किनारे बैठे थे। जब उन्होंने सुना कि ईसा गुज़र रहा है तो वह चिल्लाने लगे, “ख़ुदावंद, इब्ने-दाऊद, हम पर रहम करें।”

³¹ हुज़ूम ने उन्हें डाँटकर कहा, “खामोश!” लेकिन वह और भी ऊँची आवाज़ से पुकारते रहे, “ख़ुदावंद, इब्ने-दाऊद, हम पर रहम करें।”

³² ईसा रुक गया। उसने उन्हें अपने पास बुलाया और पूछा, “तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए करूँ?”

³³ उन्होंने जवाब दिया, “ख़ुदावंद, यह कि हम देख सकें।”

³⁴ ईसा को उन पर तरस आया। उसने उनकी आँखों को छुआ तो वह फ़ौरन बहाल हो गईं। फिर वह उसके पीछे चलने लगे।

21

यरूशलम में पुरजोश इस्तक्रबाल

¹ वह यरूशलम के करीब बैत-फ़गे पहुँचे। यह गाँव ज़ैतून के पहाड़ पर वाके था। ईसा ने दो शागिर्दों को भेजा ² और कहा, “सामनेवाले गाँव में जाओ। वहाँ तुमको फ़ौरन एक गधी नज़र आएगी जो अपने बच्चे के साथ बँधी हुई होगी। उन्हें खोलकर यहाँ ले आओ। ³ अगर कोई यह देखकर तुमसे कुछ कहे तो उसे बता देना, ‘ख़ुदावंद को इनकी ज़रूरत है।’ यह सुनकर वह फ़ौरन इन्हें भेज देगा।”

⁴ यों नबी की यह पेशगोई पूरी हुई,

⁵ ‘सिय्यून बेटी को बता देना,

देख, तेरा बादशाह तेरे पास आ रहा है।

वह हलीम है और गधे पर,

हाँ गधी के बच्चे पर सवार है।’

⁶ दोनों शागिर्द चले गए। उन्होंने वैसा ही किया जैसा ईसा ने उन्हें बताया था। ⁷ वह गधी को बच्चे समेत ले आए और अपने कपड़े उन पर रख दिए। फिर ईसा उन पर बैठ गया। ⁸ जब वह चल पड़ा तो बहुत ज्यादा लोगों ने उसके आगे आगे रास्ते में अपने कपड़े बिछा दिए। बाज़ ने

शाखें भी उसके आगे आगे रास्ते में बिछा दीं जो उन्होंने दरख्तों से काट ली थीं। ⁹ लोग ईसा के आगे और पीछे चल रहे थे और चिल्लाकर यह नारे लगा रहे थे,

“इब्ने-दाऊद को होशाना! * ”

मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है।

आसमान की बुलंदियों पर होशाना।” †

¹⁰ जब ईसा यरूशलम में दाखिल हुआ तो पूरा शहर हिल गया। सबने पूछा, “यह कौन है?”

¹¹ हुजूम ने जवाब दिया, “यह ईसा है, वह नबी जो गलील के नासरत से है।”

ईसा बैतुल-मुकद्दस में जाता है

¹² और ईसा बैतुल-मुकद्दस में जाकर उन सबको निकालने लगा जो वहाँ कुरबानियों के लिए दरकार चीजों की खरीदो-फरोख्त कर रहे थे। उसने सिक्कों का तबादला करनेवालों की मेजें और कबूतर बेचनेवालों की कुर्सियाँ उलट दीं ¹³ और उनसे कहा, “कलामे-मुकद्दस में लिखा है, ‘मेरा घर दुआ का घर कहलाएगा।’ लेकिन तुमने उसे डाकुओं के अड्डे में बदल दिया है।”

¹⁴ अंधे और लँगड़े बैतुल-मुकद्दस में उसके पास आए और उसने उन्हें शफा दी। ¹⁵ लेकिन राहनुमा इमाम और शरीअत के उलमा नाराज हुए जब उन्होंने उसके हैरतअंगेज काम देखे और यह कि बच्चे बैतुल-मुकद्दस में “इब्ने-दाऊद को होशाना” चिल्ला रहे हैं। ¹⁶ उन्होंने उससे पूछा, “क्या आप सुन रहे हैं कि यह बच्चे क्या कह रहे हैं?”

“जी,” ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुमने कलामे-मुकद्दस में कभी नहीं पढ़ा कि ‘तूने छोटे बच्चों और शीरखारों की ज़बान को तैयार किया है ताकि वह तेरी तमजीद करें?’”

¹⁷ फिर वह उन्हें छोड़कर शहर से निकला और बैत-अनियाह पहुँचा जहाँ उसने रात गुज़ारी।

अंजीर के दरख्त पर लानत

¹⁸ अगले दिन सुबह-सवेरे जब वह यरूशलम लौट रहा था तो ईसा को भूक लगी। ¹⁹ रास्ते के करीब अंजीर का एक दरख्त देखकर वह उसके पास गया। लेकिन जब वह वहाँ पहुँचा तो देखा कि फल नहीं लगा बल्कि सिर्फ पत्ते ही पत्ते हैं। इस पर उसने दरख्त से कहा, “अब से कभी भी तुझमें फल न लगे!” दरख्त फौरन सूख गया।

²⁰ यह देखकर शागिर्द हैरान हुए और कहा, “अंजीर का दरख्त इतनी जल्दी से किस तरह सूख गया?”

²¹ ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको सच बताता हूँ, अगर तुम शक न करो बल्कि ईमान रखो तो फिर तुम न सिर्फ ऐसा काम कर सकोगे बल्कि इससे भी बड़ा। तुम इस पहाड़ से कहोगे, ‘उठ, अपने आपको समुंद्र में गिरा दे’ तो यह हो जाएगा। ²² अगर तुम ईमान रखो तो जो कुछ भी तुम दुआ में माँगोगे वह तुमको मिल जाएगा।”

किसने ईसा को इख्तियार दिया?

²³ ईसा बैतुल-मुकद्दस में दाखिल होकर तालीम देने लगा। इतने में राहनुमा इमाम और क्रौम के बुजुर्ग उसके पास आए और पूछा, “आप यह सब कुछ किस इख्तियार से कर रहे हैं? किसने आपको यह इख्तियार दिया है?”

²⁴ ईसा ने जवाब दिया, “मेरा भी तुमसे एक सवाल है। इसका जवाब दो तो फिर तुमको बता दूँगा कि मैं यह किस इख्तियार से कर रहा हूँ। ²⁵ मुझे बताओ कि यहया का बपतिस्मा कहाँ से था—क्या वह आसमानी था या इनसानी?”

वह आपस में बहस करने लगे, “अगर हम कहें ‘आसमानी’ तो वह पृष्ठेगा, ‘तो फिर तुम उस पर ईमान क्यों न लाए?’” ²⁶ लेकिन हम कैसे कह सकते हैं कि वह इनसानी था? हम तो आम लोगों से डरते हैं, क्योंकि वह सब मानते हैं कि यहया नबी था।” ²⁷ चुनौचे उन्होंने जवाब दिया, “हम नहीं जानते।”

ईसा ने कहा, “फिर मैं भी तुमको नहीं बताता कि मैं यह सब कुछ किस इख्तियार से कर रहा हूँ।

दो बेटों की तमसील

²⁸ तुम्हारा क्या खयाल है? एक आदमी के दो बेटे थे। बाप बड़े बेटे के पास गया और कहा, ‘बेटा, आज अंगूर के बाग में जाकर काम कर।’ ²⁹ बेटे ने जवाब दिया, ‘मैं जाना नहीं चाहता,’ लेकिन बाद में उसने अपना खयाल बदल लिया और बाग में चला गया। ³⁰ इतने में बाप छोटे बेटे के पास भी गया और उसे बाग में जाने को कहा। ‘जी जनाब, मैं जाऊँगा,’ छोटे बेटे ने कहा। लेकिन वह न गया। ³¹ अब मुझे बताओ कि किस बेटे ने अपने बाप की मरजी पूरी की?”

“पहले बेटे ने,” उन्होंने जवाब दिया।

ईसा ने कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि टैक्स लेनेवाले और कसबियाँ तुमसे पहले अल्लाह की बादशाही में दाखिल हो रहे हैं। ³² क्योंकि यहया तुमको रास्तबाज़ी की राह दिखाने आया और तुम उस पर ईमान न लाए। लेकिन टैक्स लेनेवाले और कसबियाँ उस पर ईमान लाए। और यह देखकर भी तुमने अपना खयाल न बदला और उस पर ईमान न लाए।

* **21:9** होशाना (इब्रानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इसमें हम्दो-सना का उनसूर भी पाया जाता है।

† **21:9** होशाना (इब्रानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इसमें

हम्दो-सना का उनसूर भी पाया जाता है।

अंगूर के बाग में मुजारेओं की बगावत

33 एक और तमसील सुनो। एक ज़मीनदार था जिसने अंगूर का बाग लगाया। उसने उस की चारदीवारी बनाई, अंगूरों का रस निकालने के लिए एक गढ़े की खुदाई की और पहरदारों के लिए बुर्ज तामीर किया। फिर वह उसे मुजारेओं के सुपुर्द करके बैरूने-मुल्क चला गया। 34 जब अंगूर को तोड़ने का वक़्त करीब आ गया तो उसने अपने नौकरों को मुजारेओं के पास भेज दिया ताकि वह उनसे मालिक का हिस्सा वसूल करें। 35 लेकिन मुजारेओं ने उसके नौकरों को पकड़ लिया। उन्होंने एक की पिटाई की, दूसरे को क़त्ल किया और तीसरे को संगसार किया। 36 फिर मालिक ने मज़ीद नौकरों को उनके पास भेज दिया जो पहले की निसबत ज्यादा थे। लेकिन मुजारेओं ने उनके साथ भी वही सुलूक किया। 37 आखिरकार ज़मीनदार ने अपने बेटे को उनके पास भेजा। उसने कहा, ‘आखिर मेरे बेटे का तो लिहाज़ करेंगे।’ 38 लेकिन बेटे को देखकर मुजारे एक दूसरे से कहने लगे, ‘यह ज़मीन का वारिस है। आओ, हम इसे क़त्ल करके उस की मीरास पर क़ब्ज़ा कर लें।’ 39 उन्होंने उसे पकड़कर बाग से बाहर फेंक दिया और क़त्ल किया।”

40 ईसा ने पूछा, “अब बताओ, बाग का मालिक जब आएगा तो उन मुजारेओं के साथ क्या करेगा?”

41 उन्होंने जवाब दिया, “वह उन्हें बुरी तरह तबाह करेगा और बाग को दूसरों के सुपुर्द कर देगा, ऐसे मुजारेओं के सुपुर्द जो वक़्त पर उसे फ़सल का उसका हिस्सा देंगे।”

42 ईसा ने उनसे कहा, “क्या तुमने कभी कलाम का यह हवाला नहीं पढ़ा,

‘जिस पत्थर को मकान बनानेवालों ने रद्द किया,

वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया।

यह रब ने किया

और देखने में कितना हैरतअंगेज़ है’?

43 इसलिए मैं तुम्हें बताता हूँ कि अल्लाह की बादशाही तुमसे ले ली जाएगी और एक ऐसी क्रौम को दी जाएगी जो इसके मुताबिक़ फल लाएगी। 44 जो इस पत्थर पर गिरेगा वह टुकड़े टुकड़े हो जाएगा, जबकि जिस पर वह खूद गिरेगा उसे वह पीस डालेगा।”

45 ईसा की तमसीलें सुनकर राहनुमा इमाम और फ़रीसी समझ गए कि वह हमारे बारे में बात कर रहा है। 46 उन्होंने ईसा को गिरफ़्तार करने की कोशिश की, लेकिन वह अवाग से डरते थे क्योंकि वह समझते थे कि ईसा नबी है।

22

बड़ी ज़ियाफ़त की तमसील

1 ईसा ने एक बार फिर तमसीलों में उनसे बात की। 2 “आसमान की बादशाही एक बादशाह से मुताबिक़त रखती है जिसने अपने बेटे की शादी की ज़ियाफ़त की तैयारियाँ करवाईं। 3 जब ज़ियाफ़त का वक़्त आ गया तो उसने अपने नौकरों को मेहमानों के पास यह इतला देने के लिए भेजा कि वह आएँ, लेकिन वह आना नहीं चाहते थे। 4 फिर उसने मज़ीद कुछ नौकरों को भेजकर कहा, ‘मेहमानों को बताना कि मैंने अपना खाना तैयार कर रखा है। बैलों और मोटे-ताज़े बछड़ों को ज़बह किया गया है, 5 सब कुछ तैयार है। आएँ, ज़ियाफ़त में शरीक हो जाएँ।’ लेकिन मेहमानों ने परवा न की बल्कि अपने मुख़्तलिफ़ कामों में लग गए। एक अपने खेत को चला गया, दूसरा अपने कारोबार में मसरूफ़ हो गया। 6 बाक़ियों ने बादशाह के नौकरों को पकड़ लिया और उनसे बुरा सुलूक करके उन्हें क़त्ल किया। 7 बादशाह बड़े तैश में आ गया। उसने अपनी फ़ौज को भेजकर क़ातिलों को तबाह कर दिया और उनका शहर जला दिया। 8 फिर उसने अपने नौकरों से कहा, ‘शादी की ज़ियाफ़त तो तैयार है, लेकिन जिन मेहमानों को मैंने दावत दी थी वह आने के लायक़ नहीं थे। 9 अब वहाँ जाओ जहाँ सड़कें शहर से निकलती हैं और जिससे भी मुलाक़ात हो जाए उसे ज़ियाफ़त के लिए दावत दे देना।’ 10 चुनौचे नौकर सड़कों पर निकले और जिससे भी मुलाक़ात हुई उसे लाए, खाह वह अच्छा था या बुरा। यों शादी हाल मेहमानों से भर गया।

11 लेकिन जब बादशाह मेहमानों से मिलने के लिए अंदर आया तो उसे एक आदमी नज़र आया जिसने शादी के लिए मुनासिब कपड़े नहीं पहने थे। 12 बादशाह ने पूछा, ‘दोस्त, तुम शादी का लिबास पहने बग़ैर अंदर किस तरह आए?’ वह आदमी कोई जवाब न दे सका। 13 फिर बादशाह ने अपने दरबारियों को हुक्म दिया, ‘इसके हाथ और पाँव बाँधकर इसे बाहर तारीकी में फेंक दो, वहाँ जहाँ लोग रोते और दौत पीसते रहेंगे।’

14 क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत हैं, लेकिन चुने हुए कम।”

क्या टैक्स देना जायज़ है?

15 फिर फ़रीसियों ने जाकर आपस में मशवरा किया कि हम ईसा को किस तरह ऐसी बात करने के लिए उभारें जिससे उसे पकड़ा जा सके। 16 इस मक़सद के तहत उन्होंने अपने शागिर्दों को हेरोदेस के पैरोकारों समेत ईसा के पास भेजा। उन्होंने कहा, “उस्ताद, हम जानते हैं कि आप सच्चे हैं और दियातदारी से अल्लाह की राह की तालीम देते हैं। आप किसी की परवा नहीं करते क्योंकि आप ग़ैरजानिबदार हैं। 17 अब हमें अपनी राय बताएँ। क्या रोमी शहनशाह को टैक्स देना जायज़ है या नाजायज़?”

18 लेकिन ईसा ने उनकी बुरी नीयत पहचान ली। उसने कहा, “रियाकारो, तुम मुझे क्यों फँसाना चाहते हो? 19 मुझे वह सिक्का दिखाओ जो टैक्स अदा करने के लिए इस्तेमाल होता है।”

वह उसके पास चाँदी का एक रोमी सिक्का ले आए 20 तो उसने पूछा, “किसकी सूरत और नाम इस पर कंदा है?”

21 उन्होंने जवाब दिया, “शहनशाह का।”

उसने कहा, “तो जो शहनशाह का है शहनशाह को दो और जो अल्लाह का है अल्लाह को।”

22 उसका यह जवाब सुनकर वह हक्का-बक्का रह गए और उसे छोड़कर चले गए।

क्या हम जी उठेंगे?

23 उस दिन सद्की ईसा के पास आए। सद्की नहीं मानते कि रोज़े-क्रियामत मुरदे जी उठेंगे। उन्होंने ईसा से एक सवाल किया। 24 “उस्ताद, मूसा ने हमें हुक्म दिया कि अगर कोई शादीशुदा आदमी बेऔलाद मर जाए और उसका भाई हो तो भाई का फ़र्ज है कि वह बेवा से शादी करके अपने भाई के लिए औलाद पैदा करे। 25 अब फ़र्ज करें कि हमारे दरमियान सात भाई थे। पहले ने शादी की, लेकिन बेऔलाद फ़ौत हुआ। इसलिए दूसरे भाई ने बेवा से शादी की। 26 लेकिन वह भी बेऔलाद मर गया। फिर तीसरे भाई ने उससे शादी की। यह सिलसिला सातवें भाई तक जारी रहा। यके बाद दीगरे हर भाई बेवा से शादी करने के बाद मर गया। 27 आख़िर में बेवा भी फ़ौत हो गई। 28 अब बताएँ कि क्रियामत के दिन वह किसकी बीवी होगी? क्योंकि सात के सात भाइयों ने उससे शादी की थी।”

29 ईसा ने जवाब दिया, “तुम इसलिए ग़लती पर हो कि न तुम कलामे-मुक़द्दस से वाकिफ़ हो, न अल्लाह की कुदरत से। 30 क्योंकि क्रियामत के दिन लोग न शादी करेंगे न उनकी शादी कराई जाएगी बल्कि वह आसमान पर फ़रिश्तों की मानिंद होंगे। 31 रही यह बात कि मुरदे जी उठेंगे, क्या तुमने वह बात नहीं पढ़ी जो अल्लाह ने तुमसे कही? 32 उसने फ़रमाया, ‘मैं इब्राहीम का खुदा, इसहाक का खुदा और याक़ूब का खुदा हूँ,’ हालाँकि उस वक़्त तीनों काफ़ी अरसे से मर चुके थे। इसका मतलब है कि यह हकीकत में ज़िंदा हैं। क्योंकि अल्लाह मुरदों का नहीं बल्कि ज़िंदों का खुदा है।”

33 यह सुनकर हुज़ूम उस की तालीम के बाइस हैरान रह गया।

अव्वल हुक्म

34 जब फ़रीसियों ने सुना कि ईसा ने सद्कियों को लाजवाब कर दिया है तो वह जमा हुए। 35 उनमें से एक ने जो शरीअत का आलिम था उसे फँसाने के लिए सवाल किया, 36 “उस्ताद, शरीअत में सबसे बड़ा हुक्म कौन-सा है?”

37 ईसा ने जवाब दिया, “‘रब अपने खुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान और अपने पूरे ज़हन से प्यार करना।’ 38 यह अव्वल और सबसे बड़ा हुक्म है। 39 और दूसरा हुक्म इसके बराबर यह है, ‘अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।’ 40 तमाम शरीअत और नबियों की तालीमात इन दो अहकाम पर मबनी हैं।”

मसीह के बारे में सवाल

41 जब फ़रीसी इकट्ठे थे तो ईसा ने उनसे पूछा, 42 “तुम्हारा मसीह के बारे में क्या खयाल है? वह किसका फ़रज़ंद है?”

उन्होंने जवाब दिया, “वह दाऊद का फ़रज़ंद है।”

43 ईसा ने कहा, “तो फिर दाऊद स्तुल-कुद्स की मारिफ़त उसे किस तरह ‘रब’ कहता है? क्योंकि वह फ़रमाता है,

44 ‘रब ने मेरे रब से कहा,

मेरे दहने हाथ बैठ,

जब तक मैं तेरे दुश्मनों को

तेरे पाँवों के नीचे न कर दूँ।’

45 दाऊद तो खुद मसीह को रब कहता है। तो फिर वह किस तरह उसका फ़रज़ंद हो सकता है?”

46 कोई भी जवाब न दे सका, और उस दिन से किसी ने भी उससे मज़ीद कुछ पूछने की ज़रत न की।

23

उलमा और फ़रीसियों से ख़बरदार

1 फिर ईसा हुज़ूम और अपने शागिर्दों से मुखातिब हुआ, 2 “शरीअत के उलमा और फ़रीसी मूसा की कुरसी पर बैठे हैं। 3 चुनौचे जो कुछ वह तुमको बताते हैं वह करो और उसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारो। लेकिन जो कुछ वह करते हैं वह न करो, क्योंकि वह खुद अपनी तालीम के मुताबिक़ ज़िंदगी नहीं गुज़ारते। 4 वह भारी गठड़ियाँ बाँध बाँधकर लोगों के कंधों पर रख देते हैं, लेकिन खुद उन्हें उठाने के लिए एक उँगली तक हिलाने को तैयार नहीं होते। 5 जो भी करते हैं दिखावे के लिए करते हैं। जो तावीज़ * वह अपने बाजूओं और पेशानियों पर बाँधते और जो फुँदने अपने लिबास से लगाते हैं वह ख़ास बड़े होते हैं। 6 उनकी बस एक ही खाहिश होती है कि ज़ियाफ़तों और इबादतख़ानों में इज़ज़त की कुरसियों पर बैठ जाएँ। 7 जब लोग बाज़ारों में सलाम करके उनकी इज़ज़त करते और ‘उस्ताद’ कहकर उनसे बात करते हैं तो फिर वह खुश हो जाते हैं। 8 लेकिन तुमको उस्ताद नहीं कहलाना चाहिए, क्योंकि तुम्हारा सिर्फ़ एक ही उस्ताद है जबकि तुम सब भाई हो। 9 और दुनिया में किसी को ‘बाप’ कहकर उससे बात न करो, क्योंकि तुम्हारा एक ही बाप है और वह आसमान पर है। 10 हादी न कहलाना क्योंकि तुम्हारा

* 23:5 तावीज़ों में तौरत के हवालाजात लिखकर रखे जाते थे।

सिर्फ एक ही हादी है यानी अल-मसीह। ¹¹ तुममें से सबसे बड़ा शख्स तुम्हारा खादिम होगा। ¹² क्योंकि जो भी अपने आपको सरफराज़ करेगा उसे पस्त किया जाएगा और जो अपने आपको पस्त करेगा उसे सरफराज़ किया जाएगा।

उनकी रियाकारी पर अफ़सोस

¹³ शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम लोगों के सामने आसमान की बादशाही पर ताला लगाते हो। न तुम खुद दाखिल होते हो, न उन्हें दाखिल होने देते हो जो अंदर जाना चाहते हैं।

¹⁴ [शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम बेवाओं के घरों पर कब्ज़ा कर लेते और दिखावे के लिए लंबी लंबी नमाज़ पढ़ते हो। इसलिए तुम्हें ज़्यादा सज़ा मिलेगी।]

¹⁵ शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम एक नौमुरीद बनाने की खातिर खुशकी और तरी के लंबे सफ़र करते हो। और जब इसमें कामयाब हो जाते हो तो तुम उस शख्स को अपनी निसबत जहन्नुम का दुगना शरीर फ़रज़द बना देते हो। ¹⁶ अंधे राहनुमाओ, तुम पर अफ़सोस! तुम कहते हो, ‘अगर कोई बैतुल-मुक़द्दस की कसम खाए तो ज़रूरी नहीं कि वह उसे पूरा करे। लेकिन अगर वह बैतुल-मुक़द्दस के सोने की कसम खाए तो लाज़िम है कि उसे पूरा करे।’ ¹⁷ अंधे अहमको! ज़्यादा अहम किया है, सोना या बैतुल-मुक़द्दस जो सोने को मखसूसो-मुक़द्दस बनाता है? ¹⁸ तुम यह भी कहते हो, ‘अगर कोई कुरबानगाह की कसम खाए तो ज़रूरी नहीं कि वह उसे पूरा करे। लेकिन अगर वह कुरबानगाह पर पड़े हदिये की कसम खाए तो लाज़िम है कि वह उसे पूरा करे।’ ¹⁹ अंधो! ज़्यादा अहम किया है, हदिया या कुरबानगाह जो हदिये को मखसूसो-मुक़द्दस बनाती है? ²⁰ गरज़, जो कुरबानगाह की कसम खाता है वह उन तमाम चीज़ों की कसम भी खाता है जो उस पर पड़ी हैं। ²¹ और जो बैतुल-मुक़द्दस की कसम खाता है वह उस की भी कसम खाता है जो उसमें सुकूनत करता है। ²² और जो आसमान की कसम खाता है वह अल्लाह के तख़्त की और उस पर बैठनेवाले की कसम भी खाता है।

²³ शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर अफ़सोस! रियाकारो! गो तुम बड़ी एहतियात से पौदीने, अजवायन और ज़ीर का दसवाँ हिस्सा हदिये के लिए मखसूस करते हो, लेकिन तुमने शरीअत की ज़्यादा अहम बातों को नज़रंदाज़ कर दिया है यानी इनसाफ़, रहम और वफ़ादारी को। लाज़िम है कि तुम यह काम भी करो और पहला भी न छोड़ो। ²⁴ अंधे राहनुमाओ! तुम अपने मशरूब छानते हो ताकि गलती से मच्छर न पी लिया जाए, लेकिन साथ साथ ऊँट को निगल लेते हो।

²⁵ शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम बाहर से हर प्याले और बरतन की सफ़ाई करते हो, लेकिन अंदर से वह लूट-मार और ऐशपरस्ती से भरे होते हैं। ²⁶ अंधे फ़रीसियो, पहले अंदर से प्याले और बरतन की सफ़ाई करो, और फिर वह बाहर से भी पाक-साफ़ हो जाएंगे।

²⁷ शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम ऐसी कब्रों से मुताबिकत रखते हो जिन पर सफेदी की गई हो। गो वह बाहर से दिलकश नज़र आती हैं, लेकिन अंदर से वह मुरदों की हड्डियों और हर किस्म की नापाकी से भरी होती हैं। ²⁸ तुम भी बाहर से रास्तबाज़ दिखाई देते हो जबकि अंदर से तुम रियाकारी और बेदीनी से मामूर होते हो।

²⁹ शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम नबियों के लिए कब्रें तामीर करते और रास्तबाज़ों के मज़ार सजाते हो। ³⁰ और तुम कहते हो, ‘अगर हम अपने बापदादा के ज़माने में ज़िंदा होते तो नबियों को क़त्ल करने में शरीक न होते।’ ³¹ लेकिन यह कहने से तुम अपने खिलाफ़ गवाही देते हो कि तुम नबियों के कातिलों की औलाद हो। ³² अब जाओ, वह काम मुकम्मल करो जो तुम्हारे बापदादा ने अधूरा छोड़ दिया था। ³³ साँपो, ज़हरीले साँपों के बच्चो! तुम किस तरह जहन्नुम की सज़ा से बच पाओगे? ³⁴ इसलिए मैं नबियों, दानिशमंदों और शरीअत के आलिमों को तुम्हारे पास भेज देता हूँ। उनमें से बाज़ को तुम क़त्ल और मसलूब करोगे और बाज़ को अपने इबादतखानों में ले जाकर कोड़े लगवाओगे और शहर बशहर उनका ताक़ुब करोगे। ³⁵ नतीजे में तुम तमाम रास्तबाज़ों के क़त्ल के ज़िम्मादार ठहरोगे—रास्तबाज़ हाबील के क़त्ल से लेकर ज़करियाह बिन बरकियाह के क़त्ल तक जिसे तुमने बैतुल-मुक़द्दस के दरवाज़े और उसके सहन में मौजूद कुरबानगाह के दरमियान मार डाला। ³⁶ मैं तुमको सच बताता हूँ कि यह सब कुछ इसी नसल पर आएगा।

यरूशलम पर अफ़सोस

³⁷ हाय यरूशलम, यरूशलम! तू जो नबियों को क़त्ल करती और अपने पास भेजे हुए पैग़म्बरों को संगसार करती है। मैंने कितनी ही बार तेरी औलाद को जमा करना चाहा, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह मुरगी अपने बच्चों को अपने परों तले जमा करके महफूज़ कर लेती है। लेकिन तुमने न चाहा। ³⁸ अब तुम्हारे घर को वीरानो-सुनसान छोड़ा जाएगा। ³⁹ क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ, तुम मुझे उस वक़्त तक दुबारा नहीं देखोगे जब तक तुम न कहो कि मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है।”

24

बैतुल-मुक़द्दस पर आनेवाली तबाही

¹ ईसा बैतुल-मुक़द्दस को छोड़कर निकल रहा था कि उसके शागिर्द उसके पास आए और बैतुल-मुक़द्दस की मुख़्तलिफ़ इमारतों की तरफ़ उस की तवज्जुह दिलाने लगे। ² लेकिन ईसा ने जवाब में कहा, “क्या तुमको यह सब कुछ नज़र आता है? मैं तुमको सच बताता हूँ कि यहाँ पत्थर पर पत्थर नहीं रहेगा बल्कि सब कुछ ढा दिया जाएगा।”

मुसीबतों और ईज़ारसानियों की पेशगोई

3 बाद में ईसा ज़ैतून के पहाड़ पर बैठ गया। शागिर्द अकेले उसके पास आए। उन्होंने कहा, “हमें ज़रा बताएँ, यह कब होगा? क्या क्या नज़र आएगा जिससे पता चलेगा कि आप आनेवाले हैं और यह दुनिया ख़त्म होनेवाली है?”

4 ईसा ने जवाब दिया, “ख़बरदार रहो कि कोई तुम्हें गुमराह न कर दे। 5 क्योंकि बहुत-से लोग मेरा नाम लेकर आएँगे और कहेंगे, ‘मैं ही मसीह हूँ।’ यों वह बहुतों को गुमराह कर देंगे। 6 जंगों की ख़बरें और अफ़वाहें तुम तक पहुँचेंगी, लेकिन मुहतात रहो ताकि तुम घबरा न जाओ। क्योंकि लाज़िम है कि यह सब कुछ पेश आए। तो भी अभी आख़िरत नहीं होगी। 7 एक क्रौम दूसरी के खिलाफ़ उठ खड़ी होगी, और एक बादशाही दूसरी के खिलाफ़। काल पड़ेंगे और जगह जगह ज़लजले आएँगे। 8 लेकिन यह सिर्फ़ दर्द-ज़ह की इबतिदा ही होगी।

9 फिर वह तुमको बड़ी मुसीबत में डाल देंगे और तुमको क़त्ल करेंगे। तमाम क्रौमों तुमसे इसलिए नफ़रत करेंगी कि तुम मेरे पैरोकार हो। 10 उस वक़्त बहुत-से लोग ईमान से बरग़शता होकर एक दूसरे को दुश्मन के हवाले करेंगे और एक दूसरे से नफ़रत करेंगे। 11 बहुत-से झूटे नबी खड़े होकर बहुत-से लोगों को गुमराह कर देंगे। 12 बेदीनी के बढ़ जाने की वजह से बेशतर लोगों की मुहब्बत ठंडी पड़ जाएगी। 13 लेकिन जो आखिर तक कायम रहेगा उसे नजात मिलेगी। 14 और बादशाही की इस ख़ुशख़बरी के पैग़ाम का एलान पूरी दुनिया में किया जाएगा ताकि तमाम क्रौमों के सामने उस की गवाही दी जाए। फिर ही आख़िरत आएगी।

बैतुल-मुक़द्दस की बेहुरमती

15 एक दिन आएगा जब तुम मुक़द्दस मक़ाम में वह कुछ खड़ा देखोगे जिसका ज़िक्र दानियाल नबी ने किया और जो बेहुरमती और तबाही का बाइस है।” (क़ारी इस पर ध्यान दे!) 16 “उस वक़्त यहूदिया के रहनेवाले भागकर पहाड़ी इलाक़े में पनाह लें। 17 जो अपने घर की छत पर हो वह घर में से कुछ साथ ले जाने के लिए न उतरे। 18 जो खेत में हो वह अपनी चादर साथ ले जाने के लिए वापस न जाए। 19 उन ख़वातीन पर अफ़सोस जो उन दिनों में हामिला हों या अपने बच्चों को दूध पिलाती हों। 20 दुआ करो कि तुमको सर्दियों के मौसम में या सबत के दिन हिज़रत न करनी पड़े। 21 क्योंकि उस वक़्त ऐसी शदीद मुसीबत होगी कि दुनिया की तखलीक से आज तक देखने में न आई होगी। इस किस्म की मुसीबत बाद में भी कभी नहीं आएगी। 22 और अगर इस मुसीबत का दौरानिया मुख़तसर न किया जाता तो कोई न बचता। लेकिन अल्लाह के चुने हुएों की खातिर इसका दौरानिया मुख़तसर कर दिया जाएगा।

23 उस वक़्त अगर कोई तुमको बताए, ‘देखो, मसीह यहाँ है’ या ‘वह वहाँ है’ तो उस की बात न मानना। 24 क्योंकि झूटे मसीह और झूटे नबी उठ खड़े होंगे जो बड़े अजीबो-ग़रीब निशान और मोजिज़े दिखाएँगे ताकि अल्लाह के चुने हुए लोगों को भी ग़लत रास्ते पर डाल दें—अगर यह मुमकिन होता। 25 देखो, मैंने तुम्हें पहले से इससे आगाह कर दिया है।

26 चुनौचे अगर कोई तुमको बताए, ‘देखो, वह रेगिस्तान में है’ तो वहाँ जाने के लिए न निकलना। और अगर कोई कहे, ‘देखो, वह अंदरूनी कमरों में है’ तो उसका यकीन न करना। 27 क्योंकि जिस तरह बादल की बिजली मशरिक में कड़ककर मगरिब तक चमकती है उसी तरह इब्ने-आदम की आमद भी होगी।

28 जहाँ भी लाश पड़ी हो वहाँ गिद्ध जमा हो जाएंगे।

इब्ने-आदम की आमद

29 मुसीबत के उन दिनों के ऐन बाद सूरज तारीक हो जाएगा और चाँद की रौशनी ख़त्म हो जाएगी। सितारे आसमान पर से गिर पड़ेंगे और आसमान की कुव्वतें हिलाई जाएँगी। 30 उस वक़्त इब्ने-आदम का निशान आसमान पर नज़र आएगा। तब दुनिया की तमाम क्रौमों मातम करेंगी। वह इब्ने-आदम को बड़ी कुदरत और जलाल के साथ आसमान के बादलों पर आते हुए देखेंगी। 31 और वह अपने फ़रिश्तों को बिगुल की ऊँची आवाज़ के साथ भेज देगा ताकि उसके चुने हुएों को चारों तरफ़ से जमा करें, आसमान के एक सिरे से दूसरे सिरे तक इक़ठा करें।

अंज़ीर के दरख़्त से सबक

32 अंज़ीर के दरख़्त से सबक सीखो। ज्योंही उस की शाखें नरम और लचकदार हो जाती हैं और उनसे कोंपलें फूट निकलती हैं तो तुमको मालूम हो जाता है कि गरमियों का मौसम करीब आ गया है। 33 इसी तरह जब तुम यह वाक़ियात देखोगे तो जान लोगे कि इब्ने-आदम की आमद करीब बल्कि दरवाज़े पर है। 34 मैं तुमको सच बताता हूँ कि इस नसल के ख़त्म होने से पहले पहले यह सब कुछ वाक़े होगा। 35 आसमानो-ज़मीन तो जाते रहेंगे, लेकिन मेरी बातें हमेशा तक कायम रहेंगी।

किसी को भी उस की आमद का वक़्त मालूम नहीं

36 लेकिन किसी को भी इल्म नहीं कि यह किस दिन या कौन-सी घड़ी रूनुमा होगा। आसमान के फ़रिश्तों और फ़रज़ंद को भी इल्म नहीं बल्कि सिर्फ़ बाप को। 37 जब इब्ने-आदम आएगा तो हालात नूह के दिनों जैसे होंगे। 38 क्योंकि सैलाब से पहले के दिनों में लोग उस वक़्त तक खाते-पीते और शादियाँ करते करते रहे जब तक नूह क़शती में दाख़िल न हो गया। 39 वह उस वक़्त तक आनेवाली मुसीबत के बारे में लाइल्म रहे जब तक सैलाब आकर उन सबको बहा न ले गया। जब इब्ने-आदम आएगा तो इसी किस्म के हालात होंगे। 40 उस वक़्त दो अफ़राद खेत में होंगे, एक को साथ ले लिया जाएगा जबकि दूसरे को पीछे छोड़ दिया जाएगा। 41 दो ख़वातीन चक्की पर गंदुम पीस रही होंगी, एक को साथ ले लिया जाएगा जबकि दूसरी को पीछे छोड़ दिया जाएगा।

42 इसलिए चौकस रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा खुदावन्द किस दिन आ जाएगा। 43 यक्रीन जानो, अगर किसी घर के मालिक को मालूम होता कि चोर कब आएगा तो वह ज़रूर चौकस रहता और उसे अपने घर में नक़ब लगाने न देता। 44 तुम भी तैयार रहो, क्योंकि इब्ने-आदम ऐसे वक़्त आएगा जब तुम उस की तवक्क़ो नहीं करोगे।

वफ़ादार नौकर

45 चुनौचे कौन-सा नौकर वफ़ादार और समझदार है? फ़र्ज़ करो कि घर के मालिक ने किसी नौकर को बाक़ी नौकरों पर मुक़र्रर किया हो। उस की एक ज़िम्मादारी यह भी है कि उन्हें वक़्त पर खाना खिलाए। 46 वह नौकर मुबारक होगा जो मालिक की वापसी पर यह सब कुछ कर रहा होगा। 47 मैं तुमको सच बताता हूँ कि यह देखकर मालिक उसे अपनी पूरी जायदाद पर मुक़र्रर करेगा। 48 लेकिन फ़र्ज़ करो कि नौकर अपने दिल में सोचे, 'मालिक की वापसी में अभी देर है।' 49 वह अपने साथी नौकरों को पीटने और शराबियों के साथ खाने-पीने लगे। 50 अगर वह ऐसा करे तो मालिक ऐसे दिन और वक़्त आएगा जिसकी तवक्क़ो नौकर को नहीं होगी। 51 इन हालात को देखकर वह नौकर को टुकड़े टुकड़े कर डालेगा और उसे रियाकारों में शामिल करेगा, वहाँ जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे।

25

दस कुँवारियों की तमसील

1 उस वक़्त आसमान की बादशाही दस कुँवारियों से मुताबिक़त रखेगी जो अपने चराग़ लेकर दूल्हे को मिलने के लिए निकलें। 2 उनमें से पाँच नासमझ थीं और पाँच समझदार। 3 नासमझ कुँवारियों ने अपने पास चराग़ों के लिए फ़ालतू तेल न रखा। 4 लेकिन समझदार कुँवारियों ने कुप्पी में तेल डालकर अपने साथ ले लिया। 5 दूल्हे को आने में बड़ी देर लगी, इसलिए वह सब ऊँघ ऊँघकर सो गई।

6 आधी रात को शोर मच गया, 'देखो, दूल्हा पहुँच रहा है, उसे मिलने के लिए निकलो!' 7 इस पर तमाम कुँवारियाँ जाग उठीं और अपने चराग़ों को दुस्त करने लगीं। 8 नासमझ कुँवारियों ने समझदार कुँवारियों से कहा, 'अपने तेल में से हमें भी कुछ दे दो। हमारे चराग़ बुझनेवाले हैं।' 9 दूसरी कुँवारियों ने जवाब दिया, 'नहीं, ऐसा न हो कि न सिर्फ़ तुम्हारे लिए बल्कि हमारे लिए भी तेल काफ़ी न हो। दुकान पर जाकर अपने लिए खरीद लो।' 10 चुनौचे नासमझ कुँवारियाँ चली गईं। लेकिन इस दौरान दूल्हा पहुँच गया। जो कुँवारियाँ तैयार थीं वह उसके साथ शादी हाल में दाखिल हुईं। फिर दरवाज़े को बंद कर दिया गया।

11 कुछ देर के बाद बाक़ी कुँवारियाँ आईं और चिल्लाने लगीं, 'जनाब! हमारे लिए दरवाज़ा खोल दें।' 12 लेकिन उसने जवाब दिया, 'यक्रीन जानो, मैं तुमको नहीं जानता।'

13 इसलिए चौकस रहो, क्योंकि तुम इब्ने-आदम के आने का दिन या वक़्त नहीं जानते।

तीन नौकरों की तमसील

14 उस वक़्त आसमान की बादशाही यों होगी : एक आदमी को बैरूने-मुल्क जाना था। उसने अपने नौकरों को बुलाकर अपनी मिलकियत उनके सुपुर्द कर दी। 15 पहले को उसने सोने के 5,000 सिक्के दिए, दूसरे को 2,000 और तीसरे को 1,000। हर एक को उसने उस की काबिलियत के मुताबिक़ पैसे दिए। फिर वह रवाना हुआ। 16 जिस नौकर को 5,000 सिक्के मिले थे उसने सीधा जाकर उन्हें किसी कारोबार में लगाया। इससे उसे मज़ीद 5,000 सिक्के हासिल हुए। 17 इसी तरह दूसरे को भी जिसे 2,000 सिक्के मिले थे मज़ीद 2,000 सिक्के हासिल हुए। 18 लेकिन जिस आदमी को 1,000 सिक्के मिले थे वह चला गया और कहीं ज़मीन में ग़ढा खोदकर अपने मालिक के पैसे उसमें छुपा दिए।

19 बड़ी देर के बाद उनका मालिक लौट आया। जब उसने उनके साथ हिसाब-किताब किया 20 तो पहला नौकर जिसे 5,000 सिक्के मिले थे मज़ीद 5,000 सिक्के लेकर आया। उसने कहा, 'जनाब, आपने 5,000 सिक्के मेरे सुपुर्द किए थे। यह देखें, मैंने मज़ीद 5,000 सिक्के हासिल किए हैं।' 21 उसके मालिक ने जवाब दिया, 'शाबाश, मेरे अच्छे और वफ़ादार नौकर। तुम थोड़े में वफ़ादार रहे, इसलिए मैं तुम्हें बहुत कुछ पर मुक़र्रर करूँगा। अंदर आओ और अपने मालिक की खुशी में शरीक हो जाओ।'

22 फिर दूसरा नौकर आया जिसे 2,000 सिक्के मिले थे। उसने कहा, 'जनाब, आपने 2,000 सिक्के मेरे सुपुर्द किए थे। यह देखें, मैंने मज़ीद 2,000 सिक्के हासिल किए हैं।' 23 उसके मालिक ने जवाब दिया, 'शाबाश, मेरे अच्छे और वफ़ादार नौकर। तुम थोड़े में वफ़ादार रहे, इसलिए मैं तुम्हें बहुत कुछ पर मुक़र्रर करूँगा। अंदर आओ और अपने मालिक की खुशी में शरीक हो जाओ।'

24 फिर तीसरा नौकर आया जिसे 1,000 सिक्के मिले थे। उसने कहा, 'जनाब, मैं जानता था कि आप सख़्त आदमी हैं। जो बीज आपने नहीं बोया उस की फ़सल आप काटते हैं और जो कुछ आपने नहीं लगाया उस की पैदावार जमा करते हैं।' 25 इसलिए मैं डर गया और जाकर आपके पैसे ज़मीन में छुपा दिए। अब आप अपने पैसे वापस ले सकते हैं।'

26 उसके मालिक ने जवाब दिया, 'शरीर और सुस्त नौकर! क्या तू जानता था कि जो बीज मैंने नहीं बोया उस की फ़सल काटता हूँ और जो कुछ मैंने नहीं लगाया उस की पैदावार जमा करता हूँ? 27 तो फिर तूने मेरे पैसे बैंक में क्यों न जमा करा दिए? अगर ऐसा करता तो वापसी पर मुझे कम अज़ कम वह पैसे सूद समेत मिल जाते।' 28 यह कहकर मालिक दूसरों से मुखातिब हुआ, 'यह पैसे इससे लेकर उस नौकर को दे

दो जिसके पास 10,000 सिक्के हैं। 29 क्योंकि जिसके पास कुछ है उसे और दिया जाएगा और उसके पास कसरत की चीजें होंगी। लेकिन जिसके पास कुछ नहीं है उससे वह भी छीन लिया जाएगा जो उसके पास है। 30 अब इस बेकार नौकर को निकालकर बाहर की तारीकी में फेंक दो, वहाँ जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे।’

आखिरी अदालत

31 जब इब्ने-आदम अपने जलाल के साथ आया और तमाम फ़रिश्ते उसके साथ होंगे तो वह अपने जलाली तख़्त पर बैठ जाएगा। 32 तब तमाम क्रौमैं उसके सामने जमा की जाएँगी। और जिस तरह चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग करता है उसी तरह वह लोगों को एक दूसरे से अलग करेगा। 33 वह भेड़ों को अपने दहने हाथ खड़ा करेगा और बकरियों को अपने बाएँ हाथ। 34 फिर बादशाह दहने हाथ वालों से कहेगा, ‘आओ, मेरे बाप के मुबारक लोगो! जो बादशाही दुनिया की तख़लीक से तुम्हारे लिए तैयार है उसे मीरास में ले लो। 35 क्योंकि मैं भूका था और तुमने मुझे खाना खिलाया, मैं प्यासा था और तुमने मुझे पानी पिलाया, मैं अजनबी था और तुमने मेरी मेहमान-नवाज़ी की, 36 मैं नंगा था और तुमने मुझे कपड़े पहनाए, मैं बीमार था और तुमने मेरी देख-भाल की, मैं जेल में था और तुम मुझसे मिलने आए।’

37 फिर यह रास्तबाज़ लोग जवाब में कहेंगे, ‘ख़ुदावंद, हमने आपको कब भूका देखकर खाना खिलाया, आपको कब प्यासा देखकर पानी पिलाया? 38 हमने आपको कब अजनबी की हैसियत से देखकर आपकी मेहमान-नवाज़ी की, आपको कब नंगा देखकर कपड़े पहनाए? 39 हम आपको कब बीमार हालत में या जेल में पड़ा देखकर आपसे मिलने गए?’ 40 बादशाह जवाब देगा, ‘मैं तुम्हें सच बताता हूँ कि जो कुछ तुमने मेरे इन सबसे छोटे भाइयों में से एक के लिए किया वह तुमने मेरे ही लिए किया।’

41 फिर वह बाएँ हाथ वालों से कहेगा, ‘लानती लोगो, मुझसे दूर हो जाओ और उस अबदी आग में चले जाओ जो इबलीस और उसके फ़रिश्तों के लिए तैयार है। 42 क्योंकि मैं भूका था और तुमने मुझे कुछ न खिलाया, मैं प्यासा था और तुमने मुझे पानी न पिलाया, 43 मैं अजनबी था और तुमने मेरी मेहमान-नवाज़ी न की, मैं नंगा था और तुमने मुझे कपड़े न पहनाए, मैं बीमार और जेल में था और तुम मुझसे मिलने न आए।’

44 फिर वह जवाब में पढ़ेंगे, ‘ख़ुदावंद, हमने आपको कब भूका, प्यासा, अजनबी, नंगा, बीमार या जेल में पड़ा देखा और आपकी खिदमत न की?’ 45 वह जवाब देगा, ‘मैं तुमको सच बताता हूँ कि जब कभी तुमने इन सबसे छोटों में से एक की मदद करने से इनकार किया तो तुमने मेरी खिदमत करने से इनकार किया।’ 46 फिर यह अबदी सज़ा भुगतने के लिए जाएंगे जबकि रास्तबाज़ अबदी ज़िंदगी में दाख़िल होंगे।”

26

ईसा के खिलाफ़ मनसूबाबंदियाँ

1 यह बातें ख़त्म करने पर ईसा शागिर्दों से मुखातिब हुआ, 2 “तुम जानते हो कि दो दिन के बाद फ़सह की ईद शुरू होगी। उस वक़्त इब्ने-आदम को दुश्मन के हवाले किया जाएगा ताकि उसे मसलूब किया जाए।”

3 फिर राहनुमा इमाम और क्रौम के बुजुर्ग कायफ़ा नामी इमामे-आज़म के महल में जमा हुए 4 और ईसा को किसी चालाकी से गिरफ़्तार करके क़त्ल करने की साज़िशें करने लगे। 5 उन्होंने कहा, “लेकिन यह ईद के दौरान नहीं होना चाहिए, ऐसा न हो कि अवाम में हलचल मच जाए।”

खातून ईसा पर खुशबू उंडेलती है

6 इतने में ईसा बैत-अनियाह आकर एक आदमी के घर में दाख़िल हुआ जो किसी वक़्त कोढ़ का मरीज़ था। उसका नाम शमौन था। 7 ईसा खाना खाने के लिए बैठ गया तो एक औरत आई जिसके पास निहायत कीमती इत्र का इत्रदान था। उसने उसे ईसा के सर पर उंडेल दिया। 8 शागिर्द यह देखकर नाराज़ हुए। उन्होंने कहा, “इतना कीमती इत्र ज़ाया करने की क्या ज़रूरत थी? 9 यह बहुत महँगी चीज़ है। अगर इसे बेचा जाता तो इसके पैसे ग़रीबों को दिए जा सकते थे।”

10 लेकिन उनके खयाल पहचानकर ईसा ने उनसे कहा, “तुम इसे क्यों तंग कर रहे हो? इसने तो मेरे लिए एक नेक काम किया है। 11 ग़रीब तो हमेशा तुम्हारे पास रहेंगे, लेकिन मैं हमेशा तक तुम्हारे पास नहीं रहूँगा। 12 मुझ पर इत्र उंडेलने से उसने मेरे बदन को दफ़न होने के लिए तैयार किया है। 13 मैं तुमको सच बताता हूँ कि तमाम दुनिया में जहाँ भी अल्लाह की खुशख़बरी का एलान किया जाएगा वहाँ लोग इस खातून को याद करके वह कुछ सुनाएँगे जो इसने किया है।”

ईसा को दुश्मन के हवाले करने का मनसूबा

14 फिर यहूदा इस्क़रियोती जो बारह शागिर्दों में से एक था राहनुमा इमामों के पास गया। 15 उसने पूछा, “आप मुझे ईसा को आपके हवाले करने के एवज़ कितने पैसे देने के लिए तैयार हैं?” उन्होंने उसके लिए चाँदी के 30 सिक्के मुतैयिन किए। 16 उस वक़्त से यहूदा ईसा को उनके हवाले करने का मौका ढूँढ़ने लगा।

फ़सह की ईद के लिए तैयारियाँ

17 बेख़मीरी रोटी की ईद आई। पहले दिन ईसा के शागिर्दों ने उसके पास आकर पूछा, “हम कहाँ आपके लिए फ़सह का खाना तैयार करें?”

18 उसने जवाब दिया, “यस्शलम शहर में फुल्लों आदमी के पास जाओ और उसे बताओ, ‘उस्ताद ने कहा है कि मेरा मुकर्ररा वक्त्र करीब आ गया है। मैं अपने शागिर्दों के साथ फ़सह की ईद का खाना आपके घर में खाऊँगा।’”

19 शागिर्दों ने वह कुछ किया जो ईसा ने उन्हें बताया था और फ़सह की ईद का खाना तैयार किया।

कौन ग़द्दर है?

20 शाम के वक्त्र ईसा बारह शागिर्दों के साथ खाना खाने के लिए बैठ गया। 21 जब वह खाना खा रहे थे तो उसने कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि तुममें से एक मुझे दुश्मन के हवाले कर देगा।”

22 शागिर्द यह सुनकर निहायत गमगीन हुए। बारी बारी वह उससे पूछने लगे, “खुदावंद, मैं तो नहीं हूँ?”

23 ईसा ने जवाब दिया, “जिसने मेरे साथ अपना हाथ सालन के बरतन में डाला है वही मुझे दुश्मन के हवाले करेगा। 24 इब्ने-आदम तो कूच कर जाएगा जिस तरह कलामे-मुकद्दस में लिखा है, लेकिन उस शख्स पर अफ़सोस जिसके वसीले से उसे दुश्मन के हवाले कर दिया जाएगा। उसके लिए बेहतर यह होता कि वह कभी पैदा ही न होता।”

25 फिर यहूदा ने जो उसे दुश्मन के हवाले करने को था पूछा, “उस्ताद, मैं तो नहीं हूँ?”

ईसा ने जवाब दिया, “जी, तुमने खुद कहा है।”

फ़सह का आखिरी खाना

26 खाने के दौरान ईसा ने रोटी लेकर शुक्रगुजारी की दुआ की और उसे टुकड़े करके शागिर्दों को दे दिया। उसने कहा, “यह लो और खाओ। यह मेरा बदन है।”

27 फिर उसने मै का प्याला लेकर शुक्रगुजारी की दुआ की और उसे उन्हें देकर कहा, “तुम सब इसमें से पियो। 28 यह मेरा खून है, नए अहद का वह खून जो बहुतों के लिए बहाया जाता है ताकि उनके गुनाहों को मुआफ़ कर दिया जाए। 29 मैं तुमको सच बताता हूँ कि अब से मैं अंगूर का यह रस नहीं पियूँगा, क्योंकि अगली दफ़ा इसे तुम्हारे साथ अपने बाप की बादशाही में ही पियूँगा।”

30 फिर एक ज़बूर गाकर वह निकले और ज़ैतून के पहाड़ के पास पहुँचे।

पतरस के इनकार की पेशगोई

31 ईसा ने उन्हें बताया, “आज रात तुम सब मेरी बाबत बरग़शता हो जाओगे, क्योंकि कलामे-मुकद्दस में अल्लाह फ़रमाता है, ‘मैं चरवाहे को मार डालूँगा और रेवड़ की भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगी।’ 32 लेकिन अपने जी उठने के बाद मैं तुम्हारे आगे आगे गलील पहुँचूँगा।”

33 पतरस ने एतराज़ किया, “दूसरे बेशक सब आपकी बाबत बरग़शता हो जाएँ, लेकिन मैं कभी नहीं हूँगा।”

34 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझे सच बताता हूँ, इसी रात मुरग़ के बाँग़ देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।”

35 पतरस ने कहा, “हरगिज़ नहीं! मैं आपको जानने से कभी इनकार नहीं करूँगा, चाहे मुझे आपके साथ मरना भी पड़े।”

दूसरों ने भी यही कुछ कहा।

गत्समनी बाग़ में ईसा की दुआ

36 ईसा अपने शागिर्दों के साथ एक बाग़ में पहुँचा जिसका नाम गत्समनी था। उसने उनसे कहा, “यहाँ बैठकर मेरा इंतज़ार करो। मैं दुआ करने के लिए आगे जाता हूँ।” 37 उसने पतरस और ज़बदी के दो बेटों याकूब और यूहन्ना को साथ लिया। वहाँ वह गमगीन और बेकरार होने लगा। 38 उसने उनसे कहा, “मैं दुख से इतना दबा हुआ हूँ कि मरने को हूँ। यहाँ ठहरकर मेरे साथ जागते रहो।”

39 कुछ आगे जाकर वह औंधे मुँह ज़मीन पर गिरकर यों दुआ करने लगा, “ऐ मेरे बाप, अगर मुमकिन हो तो दुख का यह प्याला मुझसे हट जाए। लेकिन मेरी नहीं बल्कि तेरी मरज़ी पूरी हो।”

40 वह अपने शागिर्दों के पास वापस आया तो देखा कि वह सो रहे हैं। उसने पतरस से पूछा, “क्या तुम लोग एक घंटा भी मेरे साथ नहीं जाग सके? 41 जागते और दुआ करते रहो ताकि आजमाइश में न पड़ो। क्योंकि रूह तो तैयार है लेकिन जिस्म कमज़ोर।”

42 एक बार फिर उसने जाकर दुआ की, “मेरे बाप, अगर यह प्याला मेरे लिए बग़ैर हट नहीं सकता तो फिर तेरी मरज़ी पूरी हो।” 43 जब वह वापस आया तो दुबारा देखा कि वह सो रहे हैं, क्योंकि नींद की बदौलत उनकी आँखें बोझिल थीं।

44 चुनौचे वह उन्हें दुबारा छोड़कर चला गया और तीसरी बार यही दुआ करने लगा। 45 फिर ईसा शागिर्दों के पास वापस आया और उनसे कहा, “अभी तक सो और आराम कर रहे हो? देखो, वक्त्र आ गया है कि इब्ने-आदम गुनाहगारों के हवाले किया जाए। 46 उठो! आओ, चलो। देखो, मुझे दुश्मन के हवाले करनेवाला करीब आ चुका है।”

ईसा की गिरफ़्तारी

47 वह अभी यह बात कर ही रहा था कि यहूदा पहुँच गया, जो बारह शागिर्दों में से एक था। उसके साथ तलवारों और लाठियों से लैस आदमियों का बड़ा हुज़ूम था। उन्हें राहनुमा इमामों और क्रौम के बुजुर्गों ने भेजा था। 48 इस ग़द्दर यहूदा ने उन्हें एक इम्तियाज़ी निशान दिया था कि जिसको मैं बोसा दूँ वही ईसा है। उसे गिरफ़्तार कर लेना।

49 ज्योंही वह पहुँचे यहूदा ईसा के पास गया और “उस्ताद, अस्सलामु अलैकुम!” कहकर उसे बोसा दिया।

50 ईसा ने कहा, “दोस्त, क्या तू इसी मकसद से आया है?”

फिर उन्होंने उसे पकड़कर गिरफ्तार कर लिया। 51 इस पर ईसा के एक साथी ने अपनी तलवार मियान से निकाली और इमामे-आज़म के गुलाम को मारकर उसका कान उड़ा दिया। 52 लेकिन ईसा ने कहा, “अपनी तलवार को मियान में रख, क्योंकि जो भी तलवार चलाता है उसे तलवार से मारा जाएगा। 53 या क्या तू नहीं समझता कि मेरा बाप मुझे हज़ारों फ़रिश्ते फ़ौरन भेज देगा अगर मैं उन्हें तलब करूँ? 54 लेकिन अगर मैं ऐसा करता तो फिर कलामे-मुक़द्दस की पेशगोइयाँ किस तरह पूरी होतीं जिनके मुताबिक़ यह ऐसा ही होना है?”

55 उस वक़्त ईसा ने हज़ूम से कहा, “क्या मैं डाकू हूँ कि तुम तलवारों और लाठियाँ लिए मुझे गिरफ्तार करने निकले हो? मैं तो रोज़ाना बैतुल-मुक़द्दस में बैठकर तालीम देता रहा, मगर तुमने मुझे गिरफ्तार नहीं किया। 56 लेकिन यह सब कुछ इसलिए हो रहा है ताकि नबियों के सहीफ़ों में दर्ज पेशगोइयाँ पूरी हो जाएँ।”

फिर तमाम शागिर्द उसे छोड़कर भाग गए।

ईसा यहूदी अदालते-आलिया के सामने

57 जिन्होंने ईसा को गिरफ्तार किया था वह उसे कायफ़ा इमामे-आज़म के घर ले गए जहाँ शरीअत के तमाम उलमा और क़ौम के बुजुर्ग जमा थे। 58 इतने में पतरस कुछ फ़ासले पर ईसा के पीछे पीछे इमामे-आज़म के सहन तक पहुँच गया। उसमें दाखिल होकर वह मुलाज़िमों के साथ आग के पास बैठ गया ताकि इस सिलसिले का अंजाम देख सके। 59 मकान के अंदर राहनुमा इमाम और यहूदी अदालते-आलिया के तमाम अफ़राद ईसा के खिलाफ़ झूटी गवाहियाँ ढूँढ़ रहे थे ताकि उसे सज़ाए-मौत दिलवा सकें। 60 बहुत-से झूटे गवाह सामने आए, लेकिन कोई ऐसी गवाही न मिली। आखिरकार दो आदमियों ने सामने आकर 61 यह बात पेश की, “इसने कहा है कि मैं अल्लाह के बैतुल-मुक़द्दस को ढाकर उसे तीन दिन के अंदर अंदर दुबारा तामीर कर सकता हूँ।”

62 फिर इमामे-आज़म ने खड़े होकर ईसा से कहा, “क्या तू कोई जवाब नहीं देगा? यह क्या गवाहियाँ हैं जो यह लोग तेरे खिलाफ़ दे रहे हैं?”

63 लेकिन ईसा ख़ामोश रहा। इमामे-आज़म ने उससे एक और सवाल किया, “मैं तुझे ज़िंदा ख़ुदा की कसम देकर पूछता हूँ कि क्या तू अल्लाह का फ़रज़ंद मसीह है?”

64 ईसा ने कहा, “जी, तूने ख़ुद कह दिया है। और मैं तुम सबको बताता हूँ कि आइंदा तुम इब्ने-आदम को कादिरे-मुतलक के दहने हाथ बैठे और आसमान के बादलों पर आते हुए देखोगे।”

65 इमामे-आज़म ने रंजिश का इज़हार करके अपने कपड़े फाड़ लिए और कहा, “इसने कुफ़र बका है! हमें मज़ीद गवाहों की क्या ज़रूरत रही! अपने ख़ुद सुन लिया है कि इसने कुफ़र बका है। 66 आपका क्या फ़ैसला है?”

उन्होंने जवाब दिया, “यह सज़ाए-मौत के लायक़ है।”

67 फिर वह उस पर थूकने और उसके मुक्के मारने लगे। बाज़ ने उसके थप्पड़ मार मारकर 68 कहा, “ऐ मसीह, नबुव्वत करके हमें बता कि तुझे किसने मारा।”

पतरस ईसा को जानने से इनकार करता है

69 इस दौरान पतरस बाहर सहन में बैठा था। एक नौकरानी उसके पास आई। उसने कहा, “तुम भी गलील के उस आदमी ईसा के साथ थे।”

70 लेकिन पतरस ने उन सबके सामने इनकार किया, “मैं नहीं जानता कि तू क्या बात कर रही है।” यह कहकर 71 वह बाहर गेट तक गया। वहाँ एक और नौकरानी ने उसे देखा और पास खड़े लोगों से कहा, “यह आदमी ईसा नासरी के साथ था।”

72 दुबारा पतरस ने इनकार किया। इस दफ़ा उसने कसम खाकर कहा, “मैं इस आदमी को नहीं जानता।”

73 थोड़ी देर के बाद वहाँ खड़े कुछ लोगों ने पतरस के पास आकर कहा, “तुम ज़रूर उनमें से हो क्योंकि तुम्हारी बोली से साफ़ पता चलता है।”

74 इस पर पतरस ने कसम खाकर कहा, “मुझ पर लानत अगर मैं झूट बोल रहा हूँ। मैं इस आदमी को नहीं जानता!” फ़ौरन मुरग़ की बाँग़ सुनाई दी। 75 फिर पतरस को वह बात याद आई जो ईसा ने कही थी, “मुरग़ के बाँग़ देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।” इस पर वह बाहर निकला और टूटे दिल से ख़ूब रोया।

27

ईसा को पीलातुस के सामने पेश किया जाता है

1 सबह-सवेरे तमाम राहनुमा इमाम और क़ौम के तमाम बुजुर्ग इस फ़ैसले तक पहुँच गए कि ईसा को सज़ाए-मौत दी जाए। 2 वह उसे बाँधकर वहाँ से ले गए और रोमी गवर्नर पीलातुस के हवाले कर दिया।

यहूदा की ख़ुदकुशी

3 जब यहूदा ने जिसने उसे दुश्मन के हवाले कर दिया था देखा कि उस पर सज़ाए-मौत का फ़तवा दे दिया गया है तो उसने पछताकर चाँदी के 30 सिक्के राहनुमा इमामों और क्रौम के बुज़ुर्गों को वापस कर दिए। 4 उसने कहा, “मैंने गुनाह किया है, क्योंकि एक बेकुसूर आदमी को सज़ाए-मौत दी गई है और मैं ही ने उसे आपके हवाले किया है।”

उन्होंने जवाब दिया, “हमें क्या! यह तेरा मसला है।” 5 यहूदा चाँदी के सिक्के बैतुल-मुक़द्दस में फेंककर चला गया। फिर उसने जाकर फाँसी ले ली।

6 राहनुमा इमामों ने सिक्कों को जमा करके कहा, “शरीअत यह पैसे बैतुल-मुक़द्दस के खज़ाने में डालने की इजाज़त नहीं देती, क्योंकि यह ख़ूनरेज़ी का मुआवज़ा है।” 7 आपस में मशवरा करने के बाद उन्होंने कुम्हार का खेत ख़रीदने का फ़ैसला किया ताकि परदेसियों को दफनाने के लिए जगह हो। 8 इसलिए यह खेत आज तक खून का खेत कहलाता है।

9 यों यरमियाह नबी की यह पेशगोई पूरी हुई कि “उन्होंने चाँदी के 30 सिक्के लिए यानी वह रक़म जो इसराईलियों ने उसके लिए लगाई थी। 10 इनसे उन्होंने कुम्हार का खेत ख़रीद लिया, बिल्कुल ऐसा जिस तरह रब ने मुझे हुक्म दिया था।”

पीलातुस ईसा की पूछ-गछ करता है

11 इतने में ईसा को रोमी गवर्नर पीलातुस के सामने पेश किया गया। उसने उससे पूछा, “क्या तुम यहूदियों के बादशाह हो?”

ईसा ने जवाब दिया, “जी, आप खुद कहते हैं।” 12 लेकिन जब राहनुमा इमामों और क्रौम के बुज़ुर्गों ने उस पर इलज़ाम लगाए तो ईसा खामोश रहा।

13 चुनौचे पीलातुस ने दुबारा उससे सवाल किया, “क्या तुम यह तमाम इलज़ामात नहीं सुन रहे जो तुम पर लगाए जा रहे हैं?”

14 लेकिन ईसा ने एक इलज़ाम का भी जवाब न दिया, इसलिए गवर्नर निहायत हैरान हुआ।

सज़ाए-मौत का फ़ैसला

15 उन दिनों यह रिवाज़ था कि गवर्नर हर साल फ़सह की ईद पर एक कैदी को आज़ाद कर देता था। यह कैदी हुज़ूम से मुंताख़ब किया जाता था। 16 उस वक़्त जेल में एक बदनाम कैदी था। उसका नाम बर-अब्बा था। 17 चुनौचे जब हुज़ूम जमा हुआ तो पीलातुस ने उससे पूछा, “तुम क्या चाहते हो? मैं बर-अब्बा को आज़ाद करूँ या ईसा को जो मसीह कहलाता है?” 18 वह तो जानता था कि उन्होंने ईसा को सिर्फ़ हसद की बिना पर उसके हवाले किया है।

19 जब पीलातुस यों अदालत के तख़्त पर बैठा था तो उस की बीवी ने उसे पैग़ाम भेजा, “इस बेकुसूर आदमी को हाथ न लगाएँ, क्योंकि मुझे पिछली रात इसके बाइस ख़ाब में शदीद तकलीफ़ हुई।”

20 लेकिन राहनुमा इमामों और क्रौम के बुज़ुर्गों ने हुज़ूम को उकसाया कि वह बर-अब्बा को माँगें और ईसा की मौत तलब करें। गवर्नर ने दुबारा पूछा, 21 “मैं इन दोनों में से किस को तुम्हारे लिए आज़ाद करूँ?”

वह चिल्लाए, “बर-अब्बा को।”

22 पीलातुस ने पूछा, “फिर मैं ईसा के साथ क्या करूँ जो मसीह कहलाता है?”

वह चीखे, “उसे मसलूब करें।”

23 पीलातुस ने पूछा, “क्यों? उसने क्या जुर्म किया है?”

लेकिन लोग मज़ीद शोर मचाकर चीखते रहे, “उसे मसलूब करें!”

24 पीलातुस ने देखा कि वह किसी नतीजे तक नहीं पहुँच रहा बल्कि हंगामा बरपा हो रहा है। इसलिए उसने पानी लेकर हुज़ूम के सामने अपने हाथ धोए। उसने कहा, “अगर इस आदमी को क़त्ल किया जाए तो मैं बेकुसूर हूँ, तुम ही उसके लिए जवाबदेह ठहरो।”

25 तमाम लोगों ने जवाब दिया, “हम और हमारी औलाद उसके खून के जवाबदेह हैं।”

26 फिर उसने बर-अब्बा को आज़ाद करके उन्हें दे दिया। लेकिन ईसा को उसने कोड़े लगाने का हुक्म दिया, फिर उसे मसलूब करने के लिए फ़ौज़ियों के हवाले कर दिया।

फ़ौज़ी ईसा का मज़ाक़ उड़ाते हैं

27 गवर्नर के फ़ौज़ी ईसा को महल बनाम प्रैटोरियम के सहन में ले गए और पूरी पलटन को उसके इर्दगिर्द इक़ठा किया। 28 उसके कपड़े उतारकर उन्होंने उसे अरगवानी रंग का लिबास पहनाया, 29 फिर काँटेदार टहनियों का एक ताज़ बनाकर उसके सर पर रख दिया। उसके दहने हाथ में छड़ी पकड़ाकर उन्होंने उसके सामने घुटने टेककर उसका मज़ाक़ उड़ाया, “ऐ यहूदियों के बादशाह, आदाब!” 30 वह उस पर थूकते रहे, छड़ी लेकर बार बार उसके सर को मारा। 31 फिर उसका मज़ाक़ उड़ाने से थककर उन्होंने अरगवानी लिबास उतारकर उसे दुबारा उसके अपने कपड़े पहनाए और उसे मसलूब करने के लिए ले गए।

ईसा को मसलूब किया जाता है

32 शहर से निकलते वक़्त उन्होंने एक आदमी को देखा जो लिबिया के शहर कुरेन का रहनेवाला था। उसका नाम शमौन था। उसे उन्होंने सलीब उठाकर ले जाने पर मजबूर किया। 33 यों चलते चलते वह एक मक़ाम तक पहुँच गए जिसका नाम गुलगुता (यानी खोपड़ी का मक़ाम) था। 34 वहाँ उन्होंने उसे मै पेश की जिसमें कोई कड़वी चीज़ मिलाई गई थी। लेकिन चखकर ईसा ने उसे पीने से इनकार कर दिया।

35 फिर फ़ौजियों ने उसे मसलूब किया और उसके कपड़े आपस में बाँट लिए। यह फैसला करने के लिए कि किस को क्या क्या मिले उन्होंने कुरा डाला। 36 यों वह वहाँ बैठकर उस की पहरादारी करते रहे। 37 सलीब पर ईसा के सर के ऊपर एक तख्ती लगा दी गई जिस पर यह इलज़ाम लिखा था, “यह यहूदियों का बादशाह ईसा है।” 38 दो डाकुओं को भी ईसा के साथ मसलूब किया गया, एक को उसके दहने हाथ और दूसरे को उसके बाएँ हाथ।

39 जो वहाँ से गुज़रे उन्होंने कुफ़र बककर उस की तज़लील की और सर हिला हिलाकर अपनी हिकारत का इज़हार किया। 40 उन्होंने कहा, “तूने तो कहा था कि मैं बैतुल-मुक़द्दस को ढाकर उसे तीन दिन के अंदर अंदर दुबारा तामीर कर दूँगा। अब अपने आपको बचा! अगर तू वाकई अल्लाह का फ़रज़ंद है तो सलीब पर से उतर आ।”

41 राहनुमा इमामों, शरीअत के उलमा और क्रौम के बुजुर्गों ने भी ईसा का मज़ाक उड़ाया, 42 “इसने औरों को बचाया, लेकिन अपने आपको नहीं बचा सकता। यह इसराईल का बादशाह है! अभी यह सलीब पर से उतर आए तो हम इस पर ईमान ले आएँगे। 43 इसने अल्लाह पर भरोसा रखा है। अब अल्लाह इसे बचाए अगर वह इसे चाहता है, क्योंकि इसने कहा, ‘मैं अल्लाह का फ़रज़ंद हूँ।’”

44 और जिन डाकुओं को उसके साथ मसलूब किया गया था उन्होंने भी उसे लान-तान की।

ईसा की मौत

45 दोपहर बारह बजे पूरा मुल्क अंधे में डूब गया। यह तारीकी तीन घंटों तक रही। 46 फिर तीन बजे ईसा ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, “एली, एली, लमा शबक़्तनी” जिसका मतलब है, “ऐ मेरे ख़ुदा, ऐ मेरे ख़ुदा, तूने मुझे क्यों तर्क कर दिया है?”

47 यह सुनकर पास खड़े कुछ लोग कहने लगे, “वह इलियास नबी को बुला रहा है।” 48 उनमें से एक ने फ़ौरन दौड़कर एक इस्फ़ंज को मै के सिरके में डुबोया और उसे डंडे पर लगाकर ईसा को चुसाने की कोशिश की।

49 दूसरों ने कहा, “आओ, हम देखें, शायद इलियास आकर उसे बचाए।”

50 लेकिन ईसा ने दुबारा बड़े जोर से चिल्लाकर दम छोड़ दिया।

51 उसी वक़्त बैतुल-मुक़द्दस के मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने लटका हुआ परदा ऊपर से लेकर नीचे तक दो हिस्सों में फट गया। ज़लज़ला आया, चटानें फट गई 52 और क़ब्रें खुल गईं। कई मरहूम मुक़द्दसीन के जिस्मों को ज़िंदा कर दिया गया। 53 वह ईसा के जी उठने के बाद क़ब्रों में से निकलकर मुक़द्दस शहर में दाखिल हुए और बहुतों को नज़र आए।

54 जब पास खड़े रोमी अफ़सर * और ईसा की पहरादारी करनेवाले फ़ौजियों ने ज़लज़ला और यह तमाम वाक़ियात देखे तो वह निहायत दहशतज़दा हो गए। उन्होंने कहा, “यह वाक़ई अल्लाह का फ़रज़ंद था।”

55 बहुत-सी ख़वातीन भी वहाँ थीं जो कुछ फ़ासले पर इसका मुशाहदा कर रही थीं। वह गलील में ईसा के पीछे चलकर यहाँ तक उस की खिदमत करती आई थीं। 56 उनमें मरियम मग़दलीनी, याक़ूब और यूसुफ़ की माँ मरियम और ज़बदी के बेटों याक़ूब और यूहन्ना की माँ भी थीं।

ईसा को दफ़न किया जाता है

57 जब शाम होने को थी तो अरिमतियाह का एक दौलतमंद आदमी बनाम यूसुफ़ आया। वह भी ईसा का शागिर्द था। 58 उसने पीलातुस के पास जाकर ईसा की लाश माँगी, और पीलातुस ने हुक्म दिया कि वह उसे दे दी जाए। 59 यूसुफ़ ने लाश को लेकर उसे कतान के एक साफ़ कफ़न में लपेटा 60 और अपनी ज़ाती ग़ैरइस्तेमालशुदा क़ब्र में रख दिया जो चटान में तराशी गई थी। आखिर में उसने एक बड़ा पत्थर लुढ़काकर क़ब्र का मुँह बंद कर दिया और चला गया। 61 उस वक़्त मरियम मग़दलीनी और दूसरी मरियम क़ब्र के मुक़ाबिल बैठी थीं।

क़ब्र की पहरादारी

62 अगले दिन, जो सबत का दिन था, राहनुमा इमाम और फ़रीसी पीलातुस के पास आए। 63 “जनाब,” उन्होंने कहा, “हमें याद आया कि जब वह धोकेबाज़ अभी ज़िंदा था तो उसने कहा था, ‘तीन दिन के बाद मैं जी उठूँगा।’ 64 इसलिए हुक्म दें कि क़ब्र को तीसरे दिन तक महफूज़ रखा जाए। ऐसा न हो कि उसके शागिर्द आकर उस की लाश को चुरा ले जाएँ और लोगों को बताएँ कि वह मुरदों में से जी उठा है। अगर ऐसा हुआ तो यह आखिरी धोका पहले धोके से भी ज़्यादा बड़ा होगा।”

65 पीलातुस ने जवाब दिया, “पहरेदारों को लेकर क़ब्र को इतना महफूज़ कर दो जितना तुम कर सकते हो।”

66 चुनौचे उन्होंने जाकर क़ब्र को महफूज़ कर लिया। क़ब्र के मुँह पर पड़े पत्थर पर मुहर लगाकर उन्होंने उस पर पहरेदार मुक़र्रर कर दिए।

28

ईसा जी उठता है

1 इतवार को सुबह-सवेरे ही मरियम मग़दलीनी और दूसरी मरियम क़ब्र को देखने के लिए निकलीं। सूरज तुलू हो रहा था। 2 अचानक एक शदीद ज़लज़ला आया, क्योंकि रब का एक फ़रिश्ता आसमान से उतर आया और क़ब्र के पास जाकर उस पर पड़े पत्थर को एक तरफ़

* 27:54 सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

लुढ़का दिया। फिर वह उस पर बैठ गया। ³ उस की शक्लो-सूरत बिजली की तरह चमक रही थी और उसका लिबास बर्फ की मानिंद सफ़ेद था। ⁴ पहरेदार इतने डर गए कि वह लरज़ते लरज़ते मुरदा से हो गए।

⁵ फ़रिश्ते ने ख़वातीन से कहा, “मत डरो। मुझे मालूम है कि तुम ईसा को ढूँढ़ रही हो जो मसलूब हुआ था। ⁶ वह यहाँ नहीं है। वह जी उठा है, जिस तरह उसने फ़रमाया था। आओ, उस जगह को खुद देख लो जहाँ वह पड़ा था। ⁷ और अब जल्दी से जाकर उसके शागिर्दों को बता दो कि वह जी उठा है और तुम्हारे आगे आगे गलील पहुँच जाएगा। वहीं तुम उसे देखोगे। अब मैंने तुमको इससे आगाह किया है।”

⁸ ख़वातीन जल्दी से कब्र से चली गईं। वह सहमी हुई लेकिन बड़ी खुश थीं और दौड़ी दौड़ी उसके शागिर्दों को यह ख़बर सुनाने गईं।

⁹ अचानक ईसा उनसे मिला। उसने कहा, “सलाम।” वह उसके पास आई, उसके पाँव पकड़े और उसे सिजदा किया। ¹⁰ ईसा ने उनसे कहा, “मत डरो। जाओ, मेरे भाइयों को बता दो कि वह गलील को चले जाएँ। वहाँ वह मुझे देखेंगे।”

पहरेदारों की रिपोर्ट

¹¹ ख़वातीन अभी रास्ते में थीं कि पहरेदारों में से कुछ शहर में गए और राहनुमा इमामों को सब कुछ बता दिया। ¹² राहनुमा इमामों ने कौम के बुजुर्गों के साथ एक मीटिंग मुनअकिद की और पहरेदारों को रिश्वत की बड़ी रक़म देने का फ़ैसला किया। ¹³ उन्होंने उन्हें बताया, “तुमको कहना है, ‘जब हम रात के वक़्त सो रहे थे तो उसके शागिर्द आए और उसे चुरा ले गए।’ ¹⁴ अगर यह ख़बर गवर्नर तक पहुँचे तो हम उसे समझा लेंगे। तुमको फ़िकर करने की ज़रूरत नहीं।”

¹⁵ चुनौचे पहरेदारों ने रिश्वत लेकर वह कुछ किया जो उन्हें सिखाया गया था। उनकी यह कहानी यहूदियों के दरमियान बहुत फैलाई गई और आज तक उनमें रायज है।

ईसा अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर होता है

¹⁶ फिर ग्यारह शागिर्द गलील के उस पहाड़ के पास पहुँचे जहाँ ईसा ने उन्हें जाने को कहा था। ¹⁷ वहाँ उसे देखकर उन्होंने उसे सिजदा किया। लेकिन कुछ शक़ में पड़ गए। ¹⁸ फिर ईसा ने उनके पास आकर कहा, “आसमान और ज़मीन का कुल इख्तियार मुझे दे दिया गया है। ¹⁹ इसलिए जाओ, तमाम कौमों को शागिर्द बनाकर उन्हें बाप, फ़रज़ंद और रूहूल-कुद्स के नाम से बपतिस्मा दो। ²⁰ और उन्हें यह सिखाओ कि वह उन तमाम अहक़ाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारें जो मैंने तुम्हें दिए हैं। और देखो, मैं दुनिया के इख़िताम तक हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।”

मरकुस

यहया बपतिस्मा देनेवाले की खिदमत

1 यह अल्लाह के फ़रज़ंद ईसा मसीह के बारे में खुशख़बरी है, 2 जो यसायाह नबी की पेशगोई के मुताबिक़ यों शुरू हुई :

‘देख, मैं अपने पैग़ंबर को तेरे आगे आगे भेज देता हूँ

जो तेरे लिए रास्ता तैयार करेगा।

3 रेगिस्तान में एक आवाज़ पुकार रही है,

रब की राह तैयार करो!

उसके रास्ते सीधे बनाओ।’

4 यह पैग़ंबर यहया बपतिस्मा देनेवाला था। रेगिस्तान में रहकर उसने एलान किया कि लोग तौबा करके बपतिस्मा लें ताकि उन्हें अपने गुनाहों की मुआफ़ी मिल जाए। 5 यहूदिया के पूरे इलाके के लोग यरूशलम के तमाम बाशिनदों समेत निकलकर उसके पास आए। और अपने गुनाहों को तसलीम करके उन्होंने दरियाए-यरदन में यहया से बपतिस्मा लिया।

6 यहया ऊँटों के बालों का लिबास पहने और कमर पर चमड़े का पटका बाँधे रहता था। खुराक के तौर पर वह टिट्ठियाँ और जंगली शहद खाता था। 7 उसने एलान किया, “मेरे बाद एक आनेवाला है जो मुझसे बड़ा है। मैं झुककर उसके जूतों के तसमे खोलने के भी लायक नहीं। 8 मैं तुमको पानी से बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन वह तुम्हें रूहल-कुद्स से बपतिस्मा देगा।”

ईसा का बपतिस्मा और आजमाइश

9 उन दिनों में ईसा नासरत से आया और यहया ने उसे दरियाए-यरदन में बपतिस्मा दिया। 10 पानी से निकलते ही ईसा ने देखा कि आसमान फट रहा है और रूहल-कुद्स कबूतर की तरह मुझ पर उतर रहा है। 11 साथ साथ आसमान से एक आवाज़ सुनाई दी, “तू मेरा प्यारा फ़रज़ंद है, तुझसे मैं खुश हूँ।”

12 इसके फ़ौरन बाद रूहल-कुद्स ने उसे रेगिस्तान में भेज दिया। 13 वहाँ वह चालीस दिन रहा जिसके दौरान इबलीस उस की आजमाइश करता रहा। वह जंगली जानवरों के दरमियान रहता और फ़रिश्ते उस की खिदमत करते थे।

ईसा चार मछेरों को बुलाता है

14 जब यहया को जेल में डाल दिया गया तो ईसा गलील के इलाके में आया और अल्लाह की खुशख़बरी का एलान करने लगा। 15 वह बोला, “मुकर्रर वक्त आ गया है, अल्लाह की बादशाही करीब आ गई है। तौबा करो और अल्लाह की खुशख़बरी पर ईमान लाओ।”

16 एक दिन जब ईसा गलील की झील के किनारे किनारे चल रहा था तो उसने शमौन और उसके भाई अंदरियास को देखा। वह झील में जाल डाल रहे थे क्योंकि वह माहीगीर थे। 17 उसने कहा, “आओ, मेरे पीछे हो लो, मैं तुमको आदमगीर बनाऊँगा।” 18 यह सुनते ही वह अपने जालों को छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

19 थोड़ा-सा आगे जाकर ईसा ने ज़बदी के बेटों याकूब और यूहन्ना को देखा। वह कश्ती में बैठे अपने जालों की मरम्मत कर रहे थे। 20 उसने उन्हें फ़ौरन बुलाया तो वह अपने बाप को मजदूरों समेत कश्ती में छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

आदमी की बदरूह के कब्जे से रिहाई

21 वह कफ़र्नहम शहर में दाखिल हुए। और सबत के दिन ईसा इबादतखाने में जाकर लोगों को सिखाने लगा। 22 वह उस की तालीम सुनकर हक्का-बक्का रह गए क्योंकि वह उन्हें शरीअत के आलिमों की तरह नहीं बल्कि इख्तियार के साथ सिखाता था।

23 उनके इबादतखाने में एक आदमी था जो किसी नापाक रूह के कब्जे में था। ईसा को देखते ही वह चीख चीखकर बोलने लगा, 24 “ऐ नासरत के ईसा, हमारा आपके साथ क्या वास्ता है? क्या आप हमें हलाक करने आए हैं? मैं तो जानता हूँ कि आप कौन हैं, आप अल्लाह के कुद्स हैं।”

25 ईसा ने उसे डाँटकर कहा, “खामोश! आदमी से निकल जा!” 26 इस पर बदरूह आदमी को झँझोड़कर और चीखें मार मारकर उसमें से निकल गई।

27 तमाम लोग घबरा गए और एक दूसरे से कहने लगे, “यह क्या है? एक नई तालीम जो इख्तियार के साथ दी जा रही है। और वह बदरूहों को हुक्म देता है तो वह उस की मानती हैं।”

28 और ईसा के बारे में चर्चा जल्दी से गलील के पूरे इलाके में फैल गया।

बहुत-से मरीज़ों की शफा

29 इबादतखाने से निकलने के ऐन बाद वह याकूब और यहून्ना के साथ शमौन और अंदरियास के घर गए। 30 वहाँ शमौन की सास बिस्तर पर पड़ी थी, क्योंकि उसे बुखार था। उन्होंने ईसा को बता दिया 31 तो वह उसके नज़दीक गया। उसका हाथ पकड़कर उसने उठने में उस की मदद की। इस पर बुखार उतर गया और वह उनकी खिदमत करने लगी।

32 जब शाम हुई और सूरज गुस्ब हुआ तो लोग तमाम मरीजों और बदरूह-गिरिफ़ता अशखास को ईसा के पास लाए। 33 पूरा शहर दरवाज़े पर जमा हो गया 34 और ईसा ने बहुत-से मरीजों को मुख़लिफ़ किस्म की बीमारियों से शफ़ा दी। उसने बहुत-सी बदरूहें भी निकाल दीं, लेकिन उसने उन्हें बोलने न दिया, क्योंकि वह जानती थी कि वह कौन है।

गलील में मुनादी

35 अगले दिन सुबह-सवेरे जब अभी अंधेरा ही था तो ईसा उठकर दुआ करने के लिए किसी वीरान जगह चला गया। 36 बाद में शमौन और उसके साथी उसे ढूँढ़ने निकले। 37 जब मालूम हुआ कि वह कहाँ है तो उन्होंने उससे कहा, “तमाम लोग आपको तलाश कर रहे हैं!”

38 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “आओ, हम साथवाली आबादियों में जाएँ ताकि मैं वहाँ भी मुनादी करूँ। क्योंकि मैं इसी मक़सद से निकल आया हूँ।”

39 चुनौचे वह पूरे गलील में से गुज़रता हुआ इबादतखानों में मुनादी करता और बदरूहों को निकालता रहा।

कोढ़ से शफ़ा

40 एक आदमी ईसा के पास आया जो कोढ़ का मरीज़ था। घुटनों के बल झुककर उसने मिन्नत की, “अगर आप चाहें तो मुझे पाक-साफ़ कर सकते हैं।”

41 ईसा को तरस आया। उसने अपना हाथ बढ़ाकर उसे छुआ और कहा, “मैं चाहता हूँ, पाक-साफ़ हो जा।” 42 इस पर बीमारी फ़ौरन दूर हो गई और वह पाक-साफ़ हो गया। 43 ईसा ने उसे फ़ौरन सख़्त करके सख़्ती से समझाया, 44 “ख़बरदार! यह बात किसी को न बताना बल्कि बैतुल-मुक़द्दस में इमाम के पास जा ताकि वह तेरा मुआयना करे। अपने साथ वह कुरबानी ले जा जिसका तक्राज़ा मूसा की शरीअत उनसे करती है जिन्हें कोढ़ से शफ़ा मिली हो। यों अलानिया तसदीक हो जाएगी कि तू वाकई पाक-साफ़ हो गया है।”

45 आदमी चला गया, लेकिन वह हर जगह अपनी कहानी सुनाने लगा। उसने यह ख़बर इतनी फैलाई कि ईसा खुले तौर पर किसी भी शहर में दाखिल न हो सका बल्कि उसे वीरान जगहों में रहना पड़ा। लेकिन वहाँ भी लोग हर जगह से उसके पास पहुँच गए।

2

मफ़लूज के लिए छत खोली जाती है

1 कुछ दिनों के बाद ईसा कफ़र्नहूम में वापस आया। जल्द ही ख़बर फैल गई कि वह घर में है। 2 इस पर इतने लोग जमा हो गए कि पूरा घर भर गया बल्कि दरवाज़े के सामने भी जगह न रही। वह उन्हें कलामे-मुक़द्दस सुनाने लगा। 3 इतने में कुछ लोग पहुँचे। उनमें से चार आदमी एक मफ़लूज को उठाए ईसा के पास लाना चाहते थे। 4 मगर वह उसे हुज़ूम की वजह से ईसा तक न पहुँचा सके, इसलिए उन्होंने छत खोल दी। ईसा के ऊपर का हिस्सा उधेड़कर उन्होंने चारपाई को जिस पर मफ़लूज लेटा था उतार दिया। 5 जब ईसा ने उनका इमान देखा तो उसने मफ़लूज से कहा, “बेटा, तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं।”

6 शरीअत के कुछ आलिम वहाँ बैठे थे। वह यह सुनकर सोच-बिचार में पड़ गए। 7 “यह किस तरह ऐसी बातें कर सकता है? कुफ़र बक रहा है। सिर्फ़ अल्लाह ही गुनाह मुआफ़ कर सकता है।”

8 ईसा ने अपनी रूह में फ़ौरन जान लिया कि वह क्या सोच रहे हैं, इसलिए उसने उनसे पूछा, “तुम दिल में इस तरह की बातें क्यों सोच रहे हो? 9 क्या मफ़लूज से यह कहना आसान है कि ‘तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं’ या यह कि ‘उठ, अपनी चारपाई उठाकर चल-फिर’?”

10 लेकिन मैं तुमको दिखाता हूँ कि इब्ने-आदम को वाकई दुनिया में गुनाह मुआफ़ करने का इख़्तियार है।” यह कहकर वह मफ़लूज से मुखातिब हुआ, 11 “मैं तुझसे कहता हूँ कि उठ, अपनी चारपाई उठाकर घर चला जा।”

12 वह आदमी खड़ा हुआ और फ़ौरन अपनी चारपाई उठाकर उनके देखते देखते चला गया। सब सख़्त हैरतज़दा हुए और अल्लाह की तमज़ीद करके कहने लगे, “ऐसा काम हमने कभी नहीं देखा!”

ईसा मन्ती को बुलाता है

13 फिर ईसा निकलकर दुबारा झील के किनारे गया। एक बड़ी भीड़ उसके पास आई तो वह उन्हें सिखाने लगा। 14 चलते चलते उसने हलफ़ाई के बेटे लावी को देखा जो टैक्स लेने के लिए अपनी चौकी पर बैठा था। ईसा ने उससे कहा, “मेरे पीछे हो ले।” और लावी उठकर उसके पीछे हो लिया।

15 बाद में ईसा लावी के घर में खाना खा रहा था। उसके साथ न सिर्फ़ उसके शागिर्द बल्कि बहुत-से टैक्स लेनेवाले और गुनाहगार भी थे, क्योंकि उनमें से बहुतेरे उसके पैरोकार बन चुके थे। 16 शरीअत के कुछ फ़रीसी आलिमों ने उसे यों टैक्स लेनेवालों और गुनाहगारों के साथ खाते देखा तो उसके शागिर्दों से पूछा, “यह टैक्स लेनेवालों और गुनाहगारों के साथ क्यों खाता है?”

17 यह सुनकर ईसा ने जवाब दिया, “सेहतमंदों को डाक्टर की ज़रूरत नहीं होती बल्कि मरीजों को। मैं रास्तबाजों को नहीं बल्कि गुनाहगारों को बुलाने आया हूँ।”

शागिर्द रोज़ा क्यों नहीं रखते?

18 यहया के शागिर्द और फ़रीसी रोज़ा रखा करते थे। एक मौके पर कुछ लोग ईसा के पास आए और पूछा, “आपके शागिर्द रोज़ा क्यों नहीं रखते जबकि यहया और फ़रीसियों के शागिर्द रोज़ा रखते हैं?”

19 ईसा ने जवाब दिया, “शादी के मेहमान किस तरह रोज़ा रख सकते हैं जब दूल्हा उनके दरमियान है? जब तक दूल्हा उनके साथ है वह रोज़ा नहीं रख सकते। 20 लेकिन एक दिन आएगा जब दूल्हा उनसे ले लिया जाएगा। उस वक़्त वह ज़रूर रोज़ा रखेंगे।

21 कोई भी नए कपड़े का टुकड़ा किसी पुराने लिबास में नहीं लगाता। अगर वह ऐसा करे तो नया टुकड़ा बाद में सुकड़कर पुराने लिबास से अलग हो जाएगा। यों पुराने लिबास की फटी हुई जगह पहले की निसबत ज़्यादा ख़राब हो जाएगी। 22 इसी तरह कोई भी अंगूर का ताज़ा रस पुरानी और बे-लचक मशकों में नहीं डालता। अगर वह ऐसा करे तो पुरानी मशकें पैदा होनेवाली गैस के बाइस फट जाएँगी। नतीजे में मैं और मशकें दोनों जाया हो जाएँगी। इसलिए अंगूर का ताज़ा रस नई मशकों में डाला जाता है जो लचकदार होती हैं।”

सबत के बारे में सवाल

23 एक दिन ईसा अनाज के खेतों में से गुज़र रहा था। चलते चलते उसके शागिर्द खाने के लिए अनाज की बालें तोड़ने लगे। सबत का दिन था। 24 यह देखकर फ़रीसियों ने ईसा से पूछा, “देखो, यह क्यों ऐसा कर रहे हैं? सबत के दिन ऐसा करना मना है।”

25 ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुमने कभी नहीं पढ़ा कि दाऊद ने क्या किया जब उसे और उसके साथियों को भूक लगी और उनके पास खुराक नहीं थी? 26 उस वक़्त अबियातर इमामे-आज़म था। दाऊद अल्लाह के घर में दाखिल हुआ और रब के लिए मख़सूसशुदा रोटियाँ लेकर खाई, अगरचे सिर्फ़ इमामों को इन्हें खाने की इजाज़त है। और उसने अपने साथियों को भी यह रोटियाँ खिलाई।”

27 फिर उसने कहा, “इनसान को सबत के दिन के लिए नहीं बनाया गया बल्कि सबत का दिन इनसान के लिए। 28 चुनाँचे इब्ने-आदम सबत का भी मालिक है।”

3

सूखे हुए हाथ की शफ़ा

1 किसी और वक़्त जब ईसा इबादतख़ाने में गया तो वहाँ एक आदमी था जिसका हाथ सूखा हुआ था। 2 सबत का दिन था और लोग बड़े गौर से देख रहे थे कि क्या ईसा उस आदमी को आज भी शफ़ा देगा। क्योंकि वह इस पर इलज़ाम लगाने का कोई बहाना तलाश कर रहे थे। 3 ईसा ने सूखे हाथवाले आदमी से कहा, “उठ, दरमियान में खड़ा हो।” 4 फिर ईसा ने उनसे पूछा, “मुझे बताओ, शरीरत हमें सबत के दिन क्या करने की इजाज़त देती है, नेक काम करने की या ग़लत काम करने की, किसी की जान बचाने की या उसे तबाह करने की?”

सब ख़ामोश रहे। 5 वह गुस्से से अपने इर्दगिर्द के लोगों की तरफ़ देखने लगा। उनकी सख़्तदिली उसके लिए बड़े दुख का बाइस बन रही थी। फिर उसने आदमी से कहा, “अपना हाथ आगे बढ़ा।” उसने ऐसा किया तो उसका हाथ बहाल हो गया। 6 इस पर फ़रीसी बाहर निकलकर सीधे हेरोदेस की पार्टी के अफ़राद के साथ मिलकर ईसा को क़त्ल करने की साज़िशें करने लगे।

झील के किनारे पर हुज़ूम

7 लेकिन ईसा वहाँ से हटकर अपने शागिर्दों के साथ झील के पास गया। एक बड़ा हुज़ूम उसके पीछे हो लिया। लोग न सिर्फ़ गलील के इलाक़े से आए बल्कि बहुत-सी और जगहों यानी यहूदिया, 8 यरूशलम, इदूमया, दरियाए-यरदन के पार और सू और सैदा के इलाक़े से भी। वजह यह थी कि ईसा के काम की ख़बर उन इलाक़ों तक भी पहुँच चुकी थी और नतीजे में बहुत-से लोग वहाँ से भी आए। 9 ईसा ने शागिर्दों से कहा, “एहतियातन एक कश्ती उस वक़्त के लिए तैयार कर रखो जब हुज़ूम मुझे हद से ज़्यादा दबाने लगेगा।” 10 क्योंकि उस दिन उसने बहुतों को शफ़ा दी थी, इसलिए जिसे भी कोई तकलीफ़ थी वह धक्के दे देकर उसके पास आया ताकि उसे छू सके। 11 और जब भी नापाक रूहों ने ईसा को देखा तो वह उसके सामने गिरकर चीखें मारने लगीं, “आप अल्लाह के फ़रज़ंद हैं।”

12 लेकिन ईसा ने उन्हें सख़्ती से डाँटकर कहा कि वह उसे ज़ाहिर न करें।

ईसा बारह रसूलों को मुक़र्रर करता है

13 इसके बाद ईसा ने पहाड़ पर चढ़कर जिन्हें वह चाहता था उन्हें अपने पास बुला लिया। और वह उसके पास आए। 14 उसने उनमें से बारह को चुन लिया। उन्हें उसने अपने रसूल मुक़र्रर कर लिया ताकि वह उसके साथ चलें और वह उन्हें मुनादी करने के लिए भेज सके। 15 उसने उन्हें बदरूहें निकालने का इख़्तियार भी दिया।

16 जिन बारह को उसने मुक़र्रर किया उनके नाम यह हैं : शमौन जिसका लक़ब उसने पतरस रखा, 17 ज़बदी के बेटे याक़ूब और यूहन्ना जिनका लक़ब ईसा ने ‘बादल की गरज के बेटे’ रखा, 18 अंदरियास, फ़िलिप्पुस, बरतुलमाई, मत्ती, तोमा, याक़ूब बिन हलफ़ई, तदी, शमौन मुजाहिद 19 और यहूदाह इस्करियोती जिसने बाद में उसे दुश्मन के हवाले कर दिया।

ईसा और बदरूहों का सरदार

20 फिर ईसा किसी घर में दाखिल हुआ। इस बार भी इतना हुजूम जमा हो गया कि ईसा को अपने शागिर्दों समेत खाना खाने का मौका भी न मिला। 21 जब उसके खानदान के अफ़राद ने यह सुना तो वह उसे पकड़कर ले जाने के लिए आए, क्योंकि उन्होंने कहा, “वह होश में नहीं है।”

22 लेकिन शरीअत के जो आलिम यरूशलम से आए थे उन्होंने कहा, “यह बदरूहों के सरदार बाल-ज़बूल के कब्जे में है। उसी की मदद से बदरूहों को निकाल रहा है।”

23 फिर ईसा ने उन्हें अपने पास बुलाकर तमसीलों में जवाब दिया। “इबलीस किस तरह इबलीस को निकाल सकता है? 24 जिस बादशाही में फूट पड़ जाए वह कायम नहीं रह सकती। 25 और जिस घराने की ऐसी हालत हो वह भी कायम नहीं रह सकता। 26 इसी तरह अगर इबलीस अपने आपकी मुखालफ़त करे और यों उसमें फूट पड़ जाए तो वह कायम नहीं रह सकता बल्कि खत्म हो चुका है।

27 किसी जोरावर आदमी के घर में घुसकर उसका मालो-असबाब लूटना उस वक़्त तक मुमकिन नहीं है जब तक उस आदमी को बाँधा न जाए। फिर ही उसे लूटा जा सकता है।

28 मैं तुमसे सच कहता हूँ कि लोगों के तमाम गुनाह और कुफ़र की बातें मुआफ़ की जा सकेंगी, खाह वह कितना ही कुफ़र क्यों न बकें। 29 लेकिन जो रूहल-कुदूस के खिलाफ़ कुफ़र बके उसे अबद तक मुआफ़ी नहीं मिलेगी। वह एक अबदी गुनाह का कुसूरवार ठहरेगा।” 30 ईसा ने यह इसलिए कहा क्योंकि आलिम कह रहे थे कि वह किसी बदरूह की गिरिफ्त में है।

ईसा की माँ और भाई

31 फिर ईसा की माँ और भाई पहुँच गए। बाहर खड़े होकर उन्होंने किसी को उसे बुलाने को भेज दिया। 32 उसके इर्दगिर्द हुजूम बैठा था। उन्होंने कहा, “आपकी माँ और भाई बाहर आपको बुला रहे हैं।”

33 ईसा ने पूछा, “कौन मेरी माँ और कौन मेरे भाई हैं?” 34 और अपने गिर्द बैठे लोगों पर नज़र डालकर उसने कहा, “देखो, यह मेरी माँ और मेरे भाई हैं। 35 जो भी अल्लाह की मरज़ी पूरी करता है वह मेरा भाई, मेरी बहन और मेरी माँ है।”

4

बीज बोनेवाले की तमसील

1 फिर ईसा दुबारा झील के किनारे तालीम देने लगा। और इतनी बड़ी भीड़ उसके पास जमा हुई कि वह झील में खड़ी एक कशती में बैठ गया। बाकी लोग झील के किनारे पर खड़े रहे। 2 उसने उन्हें बहुत-सी बातें तमसीलों में सिखाईं। उनमें से एक यह थी :

3 “सुनो! एक किसान बीज बोने के लिए निकला। 4 जब बीज इधर उधर बिखर गया तो कुछ दाने रास्ते पर गिरे और परिंदों ने आकर उन्हें चुग लिया। 5 कुछ पथरीली ज़मीन पर गिरे जहाँ मिट्टी की कमी थी। वह जल्द उग आए क्योंकि मिट्टी गहरी नहीं थी। 6 लेकिन जब सूरज निकला तो पौदे झुलस गए और चूँकि वह जड़ न पकड़ सके इसलिए सूख गए। 7 कुछ दाने खुदरौ काँटेदार पौदों के दरमियान भी गिरे। वहाँ वह उगने तो लगे, लेकिन खुदरौ पौदों ने साथ साथ बढ़कर उन्हें फलने फूलने की जगह न दी। चूनाँचे वह भी खत्म हो गए और फल न ला सके। 8 लेकिन ऐसे दाने भी थे जो ज़रखेज़ ज़मीन में गिरे। वहाँ वह फूट निकले और बढ़ते बढ़ते तीस गुना, साठ गुना बल्कि सौ गुना तक फल लाए।”

9 फिर उसने कहा, “जो सुन सकता है वह सुन ले!”

तमसीलों का मकसद

10 जब वह अकेला था तो जो लोग उसके इर्दगिर्द जमा थे उन्होंने बारह शागिर्दों समेत उससे पूछा कि इस तमसील का क्या मतलब है? 11 उसने जवाब दिया, “तुमको तो अल्लाह की बादशाही का भेद समझने की लियाक़त दी गई है। लेकिन मैं इस दायरे से बाहर के लोगों को हर बात समझाने के लिए तमसीलें इस्तेमाल करता हूँ 12 ताकि पाक कलाम पूरा हो जाए कि

‘वह अपनी आँखों से देखेंगे मगर कुछ नहीं जानेंगे,
वह अपने कानों से सुनेंगे मगर कुछ नहीं समझेंगे,
ऐसा न हो कि वह मेरी तरफ़ रूजू करें
और उन्हें मुआफ़ कर दिया जाए’।”

बीज बोनेवाले की तमसील का मतलब

13 फिर ईसा ने उनसे कहा, “क्या तुम यह तमसील नहीं समझते? तो फिर बाकी तमाम तमसीलें किस तरह समझ पाओगे? 14 बीज बोनेवाला अल्लाह का कलाम बो देता है। 15 रास्ते पर गिरनेवाले दाने वह लोग हैं जो कलाम को सुनते तो हैं, लेकिन फिर इबलीस फ़ौरन आकर वह कलाम छीन लेता है जो उनमें बोया गया है। 16 पथरीली ज़मीन पर गिरनेवाले दाने वह लोग हैं जो कलाम सुनते ही उसे खुशी से कबूल तो कर लेते हैं, 17 लेकिन वह जड़ नहीं पकड़ते और इसलिए ज़्यादा देर तक कायम नहीं रहते। ज्योंही वह कलाम पर ईमान लाने के बाइस किसी मुसीबत या ईज़ारसानी से दोचार हो जाएँ, तो वह बरग़स्ता हो जाते हैं। 18 खुदरौ काँटेदार पौदों के दरमियान गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम सुनते तो हैं, 19 लेकिन फिर रोज़मर्रा की परेशानियों, दौलत का फ़रेब और दीगर चीज़ों का लालच कलाम को फलने फूलने नहीं देते। नतीजे

में वह फल लाने तक नहीं पहुँचता। ²⁰ इसके मुकाबले में जरखेज ज़मीन में गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम सुनकर उसे कबूल करते और बढ़ते बढ़ते तीस गुना, साठ गुना बल्कि सौ गुना तक फल लाते हैं।”

कोई चराग को बरतन के नीचे नहीं छुपाता

²¹ ईसा ने बात जारी रखी और कहा, “क्या चराग को इसलिए जलाकर लाया जाता है कि वह किसी बरतन या चारपाई के नीचे रखा जाए? हरगिज़ नहीं! उसे शमादान पर रखा जाता है। ²² क्योंकि जो कुछ भी इस वक्त पोशीदा है उसे आखिरकार जाहिर हो जाना है और तमाम भेदों को एक दिन खुल जाना है। ²³ अगर कोई सुन सके तो सुन ले।”

²⁴ उसने उनसे यह भी कहा, “इस पर ध्यान दो कि तुम क्या सुनते हो। जिस हिसाब से तुम दूसरों को देते हो उसी हिसाब से तुमको भी दिया जाएगा बल्कि तुमको उससे बढ़कर मिलेगा। ²⁵ क्योंकि जिसे कुछ हासिल हुआ है उसे और भी दिया जाएगा, जबकि जिसे कुछ हासिल नहीं हुआ उससे वह थोड़ा-बहुत भी छीन लिया जाएगा जो उसे हासिल है।”

खुद बखुद उगनेवाले बीज की तमसील

²⁶ फिर ईसा ने कहा, “अल्लाह की बादशाही यों समझ लो : एक किसान ज़मीन में बीज बिखेर देता है। ²⁷ यह बीज फूटकर दिन-रात उगता रहता है, खाह किसान सो रहा या जाग रहा हो। उसे मालूम नहीं कि यह क्योंकि होता है। ²⁸ ज़मीन खुद बखुद अनाज की फसल पैदा करती है। पहले पत्ते निकलते हैं, फिर बालें नज़र आने लगती हैं और आखिर में दाने पैदा हो जाते हैं। ²⁹ और ज्योंही अनाज की फसल पक जाती है किसान आकर दराँती से उसे काट लेता है, क्योंकि फसल की कटाई का वक्त आ चुका होता है।”

राई के दाने की तमसील

³⁰ फिर ईसा ने कहा, “हम अल्लाह की बादशाही का मुवाज़ना किस चीज़ से करें? या हम कौन-सी तमसील से इसे बयान करें? ³¹ वह राई के दाने की मानिंद है जो ज़मीन में डाला गया हो। राई बीजों में सबसे छोटा दाना है ³² लेकिन बढ़ते बढ़ते सब्जियों में सबसे बड़ा हो जाता है। उस की शाखें इतनी लंबी हो जाती हैं कि परिदे उसके साय में अपने घोंसले बना सकते हैं।”

³³ ईसा इसी किस्म की बहुत-सी तमसीलों की मदद से उन्हें कलाम यों सुनाता था कि वह इसे समझ सकते थे। ³⁴ हाँ, अवाम को वह सिर्फ तमसीलों के ज़रीए सिखाता था। लेकिन जब वह अपने शागिर्दों के साथ अकेला होता तो वह हर बात की तशरीह करता था।

ईसा आँधी को थमा देता है

³⁵ उस दिन जब शाम हुई तो ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, “आओ, हम झील के पार चलें।” ³⁶ चुनौचे वह भीड़ को सूखसत करके उसे लेकर चल पड़े। बाज़ और कशतियाँ भी साथ गईं। ³⁷ अचानक सख्त आँधी आई। लहरें कशती से टकराकर उसे पानी से भरने लगीं, ³⁸ लेकिन ईसा अभी तक कशती के पिछले हिस्से में अपना सर गद्दी पर रखे सो रहा था। शागिर्दों ने उसे जगाकर कहा, “उस्ताद, क्या आपको परवा नहीं कि हम तबाह हो रहे हैं?”

³⁹ वह जाग उठा, आँधी को डाँटा और झील से कहा, “खामोश! चुप कर!” इस पर आँधी थम गई और लहरें बिलकुल साकित हो गईं। ⁴⁰ फिर ईसा ने शागिर्दों से पूछा, “तुम क्यों घबराते हो? क्या तुम अभी तक ईमान नहीं रखते?”

⁴¹ उन पर सख्त ख़ौफ़ तारी हो गया और वह एक दूसरे से कहने लगे, “आखिर यह कौन है? हवा और झील भी उसका हुक्म मानती हैं।”

5

ईसा एक गरासीनी आदमी से बदरूहें निकाल देता है

¹ फिर वह झील के पार गरासा के इलाके में पहुँचे। ² जब ईसा कशती से उतरा तो एक आदमी जो नापाक रूह की गिरिफ्त में था कब्रों में से निकलकर ईसा को मिला। ³ यह आदमी कब्रों में रहता और इस नौबत तक पहुँच गया था कि कोई भी उसे बाँध न सकता था, चाहे उसे जंजीरों से भी बाँधा जाता। ⁴ उसे बहुत दफ़ा बेडियों और जंजीरों से बाँधा गया था, लेकिन जब भी ऐसा हुआ तो उसने जंजीरों को तोड़कर बेडियों को टुकड़े टुकड़े कर दिया था। कोई भी उसे कंट्रोल नहीं कर सकता था। ⁵ दिन-रात वह चीखें मार मारकर कब्रों और पहाड़ी इलाके में घूमता-फिरता और अपने आपको पत्थरों से ज़खमी कर लेता था।

⁶ ईसा को दूर से देखकर वह दौड़ा और उसके सामने मुँह के बल गिरा। ⁷ वह जोर से चीखा, “ऐ ईसा अल्लाह तआला के फ़रज़ंद, मेरा आपके साथ क्या वास्ता है? अल्लाह के नाम में आपको कसम देता हूँ कि मुझे अज़ाब में न डालें।” ⁸ क्योंकि ईसा ने उसे कहा था, “ऐ नापाक रूह, आदमी में से निकल जा!”

⁹ फिर ईसा ने पूछा, “तेरा नाम क्या है?”

उसने जवाब दिया, “लशकर, क्योंकि हम बहुत-से हैं।” ¹⁰ और वह बार बार मिन्नत करता रहा कि ईसा उन्हें इस इलाके से न निकाले।

¹¹ उस वक्त करीब की पहाड़ी पर सुअरों का बड़ा गोल चर रहा था। ¹² बदरूहों ने ईसा से इलतमास की, “हमें सुअरों में भेज दें, हमें उनमें दाखिल होने दें।” ¹³ उसने उन्हें इजाज़त दी तो बदरूहें उस आदमी में से निकलकर सुअरों में जा घुसीं। इस पर पूरे गोल के तकरीबन 2,000 सुअर भाग भागकर पहाड़ी की ढलान पर से उतरे और झील में झपटकर डूब मरे।

14 यह देखकर सुअरों के गल्लाबान भाग गए। उन्होंने शहर और देहात में इस बात का चर्चा किया तो लोग यह मालूम करने के लिए कि क्या हुआ है अपनी जगहों से निकलकर ईसा के पास आए। 15 उसके पास पहुँचे तो वह आदमी मिला जिसमें पहले बदरूहों का लशकर था। अब वह कपड़े पहने वहाँ बैठा था और उस की जहनी हालत ठीक थी। यह देखकर वह डर गए। 16 जिन्होंने सब कुछ देखा था उन्होंने लोगों को बताया कि बदरूह-गिरिफ्ता आदमी और सुअरों के साथ क्या हुआ है।

17 फिर लोग ईसा की मिन्नत करने लगे कि वह उनके इलाके से चला जाए।

18 ईसा कश्ती पर सवार होने लगा तो बदरूहों से आज्ञाद किए गए आदमी ने उससे इलतमास की, “मुझे भी अपने साथ जाने दें।”

19 लेकिन ईसा ने उसे साथ जाने न दिया बल्कि कहा, “अपने घर वापस चला जा और अपने अजीजों को सब कुछ बता जो रब ने तेरे लिए किया है, कि उसने तुझ पर कितना रहम किया है।”

20 चुनौचे आदमी चला गया और दिकपुलिस के इलाके में लोगों को बताने लगा कि ईसा ने मेरे लिए क्या कुछ किया है। और सब हैरतजदा हुए।

याईर की बेटी और बीमार औरत

21 ईसा ने कश्ती में बैठे झील को दुबारा पार किया। जब दूसरे किनारे पहुँचा तो एक हुजूम उसके गिर्द जमा हो गया। वह अभी झील के पास ही था 22 कि मकामी इबादतखाने का एक राहनुमा उसके पास आया। उसका नाम याईर था। ईसा को देखकर वह उसके पाँवों में गिर गया 23 और बहुत मिन्नत करने लगा, “मेरी छोटी बेटी मरनेवाली है, बराहे-करम आकर उस पर अपने हाथ रखें ताकि वह शफा पाकर जिंदा रहे।”

24 चुनौचे ईसा उसके साथ चल पड़ा। एक बड़ी भीड़ उसके पीछे लग गई और लोग उसे घेरकर हर तरफ से दबाने लगे।

25 हुजूम में एक औरत थी जो बारह साल से खून बहने के मरज़ से रिहाई न पा सकी थी। 26 बहुत डाक्टरों से अपना इलाज करवा करवा कर उसे कई तरह की मुसीबत झेलनी पड़ी थी और इतने में उसके तमाम पैसे भी खर्च हो गए थे। तो भी कोई फायदा न हुआ था बल्कि उस की हालत मज़ीद खराब होती गई। 27 ईसा के बारे में सुनकर वह भीड़ में शामिल हो गई थी। अब पीछे से आकर उसने उसके लिबास को छुआ, 28 क्योंकि उसने सोचा, “अगर मैं सिर्फ उसके लिबास को ही छू लूँ तो मैं शफा पा लूँगी।”

29 खून बहना फौरन बंद हो गया और उसने अपने जिस्म में महसूस किया कि मुझे इस अज़ियतनाक हालत से रिहाई मिल गई है। 30 लेकिन उसी लमहे ईसा को खुद महसूस हुआ कि मुझमें से तवानाई निकली है। उसने मुड़कर पूछा, “किसने मेरे कपड़ों को छुआ है?”

31 उसके शागिर्दों ने जवाब दिया, “आप खुद देख रहे हैं कि हुजूम आपको घेरकर दबा रहा है। तो फिर आप किस तरह पूछ सकते हैं कि किसने मुझे छुआ?”

32 लेकिन ईसा अपने चारों तरफ देखता रहा कि किसने यह किया है। 33 इस पर वह औरत यह जानकर कि मेरे साथ क्या हुआ है खौफ के मारे लरज़ती हुई उसके पास आई। वह उसके सामने गिर पड़ी और उसे पूरी हकीकत खोलकर बयान की। 34 ईसा ने उससे कहा, “बेटी, तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया है। सलामती से जा और अपनी अज़ियतनाक हालत से बची रह।”

35 ईसा ने यह बात अभी खत्म नहीं की थी कि इबादतखाने के राहनुमा याईर के घर की तरफ से कुछ लोग पहुँचे और कहा, “आपकी बेटी फौत हो चुकी है, अब उस्ताद को मज़ीद तकलीफ देने की क्या ज़रूरत?”

36 उनकी यह बात नज़रंदाज़ करके ईसा ने याईर से कहा, “मत घबराओ, फ़क़त ईमान रखो।” 37 फिर ईसा ने हुजूम को रोक लिया और सिर्फ पतरस, याकूब और उसके भाई यूहन्ना को अपने साथ जाने की इजाज़त दी। 38 जब इबादतखाने के राहनुमा के घर पहुँचे तो वहाँ बड़ी अफ़रा-तफ़री नज़र आई। लोग खूब गिर्याओ-ज़ारी कर रहे थे। 39 अंदर जाकर ईसा ने उनसे कहा, “यह कैसा शोर-शराबा है? क्यों रो रहे हो? लड़की मर नहीं गई बल्कि सो रही है।”

40 लोग हँसकर उसका मज़ाक उड़ाने लगे। लेकिन उसने सबको बाहर निकाल दिया। फिर सिर्फ लड़की के वालिदैन और अपने तीन शागिर्दों को साथ लेकर वह उस कमरे में दाखिल हुआ जिसमें लड़की पड़ी थी। 41 उसने उसका हाथ पकड़कर कहा, “तलिथा कूम!” इसका मतलब है, “छोटी लड़की, मैं तुझे हुक्म देता हूँ कि जाग उठ!”

42 लड़की फौरन उठकर चलने-फिरने लगी। उस की उम्र बारह साल थी। यह देखकर लोग घबराकर हैरान रह गए। 43 ईसा ने उन्हें संजीदगी से समझाया कि वह किसी को भी इसके बारे में न बताएँ। फिर उसने उन्हें कहा कि उसे खाने को कुछ दो।

6

ईसा को नासरत में रद्द किया जाता है

1 फिर ईसा वहाँ से चला गया और अपने वतनी शहर नासरत में आया। उसके शागिर्द उसके साथ थे। 2 सबत के दिन वह इबादतखाने में तालीम देने लगा। बेशतर लोग उस की बातें सुनकर हैरतजदा हुए। उन्होंने पूछा, “इसे यह कहाँ से हासिल हुआ है? यह हिकमत जो इसे मिली है, और यह मोजिजे जो इसके हाथों से होते हैं, यह क्या है? 3 क्या यह वह बढई नहीं है जो मरियम का बेटा है और जिसके भाई याकूब, यूसुफ़, यहदाह और शमौन हैं? और क्या इसकी बहनें यहीं नहीं रहती?” यों उन्होंने उससे ठोकर खाकर उसे कबूल न किया।

4 ईसा ने उनसे कहा, “नबी की हर जगह इज़्जत होती है सिवाए उसके वतनी शहर, उसके रिश्तेदारों और उसके अपने खानदान के।”

5 वहाँ वह कोई मोजिज़ा न कर सका। उसने सिर्फ़ चंद एक मरीज़ों पर हाथ रखकर उनको शफ़ा दी। 6 और वह उनकी बेएतकादी के सबब से बहुत हैरान था।

ईसा बारह शागिर्दों को तबलीग करने भेजता है

इसके बाद ईसा ने इर्दगिर्द के इलाके में गाँव गाँव जाकर लोगों को तालीम दी। 7 बारह शागिर्दों को बुलाकर वह उन्हें दो दो करके मुख्तलिफ़ जगहों पर भेजने लगा। इसके लिए उसने उन्हें नापाक रूहों को निकालने का इख्तियार देकर 8 यह हिदायत की, “सफ़र पर अपने साथ कुछ न लेना सिवाए एक लाठी के। न रोटी, न सामान के लिए कोई बैग, न कमरबंद में कोई पैसा, 9 न एक से ज्यादा सूट। तुम जूते पहन सकते हो। 10 जिस घर में भी दाखिल हो उसमें उस मक़ाम से चले जाने तक ठहरो। 11 और अगर कोई मक़ाम तुमको क़बूल न करे या तुम्हारी न सुने तो फिर रवाना होते वक़्त अपने पाँवों से गर्द झाड़ दो। यों तुम उनके खिलाफ़ गवाही दोगे।”

12 चुनौचे शागिर्द वहाँ से निकलकर मुनादी करने लगे कि लोग तौबा करें। 13 उन्होंने बहुत-सी बदरूहें निकाल दीं और बहुत-से मरीज़ों पर ज़ैतून का तेल मलकर उन्हें शफ़ा दी।

यहया बपतिस्मा देनेवाले का क़त्ल

14 बादशाह हेरोदेस अंतिपास ने ईसा के बारे में सुना, क्योंकि उसका नाम मशहूर हो गया था। कुछ कह रहे थे, “यहया बपतिस्मा देनेवाला मुरदों में से जी उठा है, इसलिए इस किस्म की मोजिज़ाना ताक़तें उसमें नज़र आती हैं।”

औरों ने सोचा, “यह इलियास नबी है।”

15 यह ख़याल भी पेश किया जा रहा था कि वह क़दीम ज़माने के नबियों जैसा कोई नबी है।

16 लेकिन जब हेरोदेस ने उसके बारे में सुना तो उसने कहा, “यहया जिसका मैंने सर क़लम करवाया है मुरदों में से जी उठा है।” 17 वजह यह थी कि हेरोदेस के हुक्म पर ही यहया को गिरफ़्तार करके जेल में डाला गया था। यह हेरोदियास की खातिर हुआ था जो पहले हेरोदेस के भाई फ़िलिप्पुस की बीवी थी, लेकिन जिससे उसने अब ख़ुद शादी कर ली थी। 18 यहया ने हेरोदेस को बताया था, “अपने भाई की बीवी से तेरी शादी नाजायज़ है।”

19 इस वजह से हेरोदियास उससे कीना रखती और उसे क़त्ल कराना चाहती थी। लेकिन इसमें वह नाकाम रही 20 क्योंकि हेरोदेस यहया से डरता था। वह जानता था कि यह आदमी रास्तबाज़ और मुक़द्दस है, इसलिए वह उस की हिफ़ाज़त करता था। जब भी उससे बात होती तो हेरोदेस सुन सुनकर बड़ी उलझन में पड़ जाता। तो भी वह उस की बातें सुनना पसंद करता था।

21 आखिरकार हेरोदियास को हेरोदेस की सालगिरह पर अच्छा मौक़ा मिल गया। सालगिरह को मनाने के लिए हेरोदेस ने अपने बड़े सरकारी अफ़सरों, मिलट्री कमांडरों और गलील के अब्बल दर्जे के शहरियों की ज़ियाफ़त की। 22 ज़ियाफ़त के दौरान हेरोदियास की बेटी अंदर आकर नाचने लगी। हेरोदेस और उसके मेहमानों को यह बहुत पसंद आया और उसने लड़की से कहा, “जो जी चाहे मुझे माँग तो मैं वह तुझे दूँगा।”

23 बल्कि उसने क़सम खाकर कहा, “जो भी तू माँगगी मैं तुझे दूँगा, खाह बादशाही का आधा हिस्सा ही क्यों न हो।”

24 लड़की ने निकलकर अपनी माँ से पूछा, “मैं क्या माँगूँ?”

माँ ने जवाब दिया, “यहया बपतिस्मा देनेवाले का सर।”

25 लड़की फुरती से अंदर जाकर बादशाह के पास वापस आई और कहा, “मैं चाहती हूँ कि आप मुझे अभी अभी यहया बपतिस्मा देनेवाले का सर ट्रे में मँगवा दें।”

26 यह सुनकर बादशाह को बहुत दुख हुआ। लेकिन अपनी क़समों और मेहमानों की मौजूदगी की वजह से वह इनकार करने के लिए भी तैयार नहीं था। 27 चुनौचे उसने फ़ौरन जल्लाद को भेजकर हुक्म दिया कि वह यहया का सर ले आए। जल्लाद ने जेल में जाकर यहया का सर क़लम कर दिया। 28 फिर वह उसे ट्रे में रखकर ले आया और लड़की को दे दिया। लड़की ने उसे अपनी माँ के सुपुर्द किया। 29 जब यहया के शागिर्दों को यह ख़बर पहुँची तो वह आए और उस की लाश लेकर उसे क़ब्र में रख दिया।

ईसा 5000 अफ़राद को खाना खिलाता है

30 रसूल वापस आकर ईसा के पास जमा हुए और उसे सब कुछ सुनाने लगे जो उन्होंने किया और सिखाया था। 31 इस दौरान इतने लोग आ और जा रहे थे कि उन्हें खाना खाने का मौक़ा भी न मिला। इसलिए ईसा ने बारह शागिर्दों से कहा, “आओ, हम लोगों से अलग होकर किसी ग़ैरआबाद जगह जाएँ और आराम करें।” 32 चुनौचे वह क़श्ती पर सवार होकर किसी वीरान जगह चले गए।

33 लेकिन बहुत-से लोगों ने उन्हें जाते वक़्त पहचान लिया। वह पैदल चलकर तमाम शहरों से निकल आए और दौड़ दौड़कर उनसे पहले मनज़िले-मक़सूद तक पहुँच गए। 34 जब ईसा ने क़श्ती पर से उतरकर बड़े हुज़ूम को देखा तो उसे लोगों पर तरस आया, क्योंकि वह उन भेड़ों की मानिंद थे जिनका कोई चरवाहा न हो। वहीं वह उन्हें बहुत-सी बातें सिखाने लगा।

35 जब दिन ढलने लगा तो उसके शागिर्द उसके पास आए और कहा, “यह जगह वीरान है और दिन ढलने लगा है। 36 इनको ख़बसत कर दें ताकि यह इर्दगिर्द की बस्तियों और देहातों में जाकर खाने के लिए कुछ ख़रीद लें।”

37 लेकिन ईसा ने उन्हें कहा, “तुम ख़ुद इन्हें कुछ खाने को दो।”

उन्होंने पूछा, “हम इसके लिए दरकार चाँदी के 200 सिक्के कहाँ से लेकर रोटी ख़रीदने जाएँ और इन्हें खिलाएँ?”

38 उसने कहा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं? जाकर पता करो!”

उन्होंने मालूम किया। फिर दुबारा उसके पास आकर कहने लगे, “हमारे पास पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं।”

39 इस पर ईसा ने उन्हें हिदायत दी, “तमाम लोगों को गुरोहों में हरी घास पर बिठा दो।” 40 चुनाँचे लोग सौ सौ और पचास पचास की सूरत में बैठ गए। 41 फिर ईसा ने उन पाँच रोटियों और दो मछलियों को लेकर आसमान की तरफ देखा और शुक्रगुजारी की दुआ की। फिर उसने रोटियों को तोड़ तोड़कर शागिर्दों को दिया ताकि वह लोगों में तकसीम करें। उसने दो मछलियों को भी टुकड़े टुकड़े करके शागिर्दों के ज़रीए उनमें तकसीम करवाया। 42 और सबने जी भरकर खाया। 43 जब शागिर्दों ने रोटियों और मछलियों के बचे हुए टुकड़े जमा किए तो बारह टोकरे भर गए। 44 खानेवाले मर्दों की कुल तादाद 5,000 थी।

ईसा पानी पर चलता है

45 इसके ऐन बाद ईसा ने अपने शागिर्दों को मजबूर किया कि वह कश्ती पर सवार होकर आगे निकलें और झील के पार के शहर बैत-सैदा जाएँ। इतने में वह हुजूम को सखसत करना चाहता था। 46 उन्हें खैरबाद कहने के बाद वह दुआ करने के लिए पहाड़ पर चढ़ गया। 47 शाम के वक़्त शागिर्दों की कश्ती झील के बीच तक पहुँच गई थी जबकि ईसा खुद खुशकी पर अकेला रह गया था। 48 वहाँ से उसने देखा कि शागिर्द कश्ती को खेने में बड़ी जिद्द-जहद कर रहे हैं, क्योंकि हवा उनके खिलाफ चल रही थी। तकरीबन तीन बजे रात के वक़्त ईसा पानी पर चलते हुए उनके पास आया। वह उनसे आगे निकलना चाहता था, 49 लेकिन जब उन्होंने उसे झील की सतह पर चलते हुए देखा तो सोचने लगे, “यह कोई भूत है” और चीखें मारने लगे। 50 क्योंकि सबने उसे देखकर दहशत खाई।

लेकिन ईसा फ़ौरन उनसे मुखातिब होकर बोला, “हौसला रखो! मैं ही हूँ। मत घबराओ।” 51 फिर वह उनके पास आया और कश्ती में बैठ गया। उसी वक़्त हवा थम गई। शागिर्द निहायत ही हैरतज़दा हुए। 52 क्योंकि जब रोटियों का मोजिज़ा किया गया था तो वह इसका मतलब नहीं समझे थे बल्कि उनके दिल बेहिस हो गए थे।

गन्नेसरत में मरीज़ों की शफ़ा

53 झील को पार करके वह गन्नेसरत शहर के पास पहुँच गए और लंगर डाल दिया। 54 ज्योंही वह कश्ती से उतरे लोगों ने ईसा को पहचान लिया। 55 वह भाग भागकर उस पूरे इलाके में से गुज़रे और मरीज़ों को चारपाइयों पर उठा उठाकर वहाँ ले आए जहाँ कहीं उन्हें ख़बर मिली कि वह ठहरा हुआ है। 56 जहाँ भी वह गया चाहे गाँव, शहर या बस्ती में, वहाँ लोगों ने बीमारों को चौकों में रखकर उससे मिन्नत की कि वह कम अज़ कम उन्हें अपने लिबास के दामन को छूने दे। और जिसने भी उसे छुआ उसे शफ़ा मिली।

7

बापदादा की तालीम

1 एक दिन फ़रीसी और शरीअत के कुछ आलिम यरूशलम से ईसा से मिलने आए। 2 जब वह वहाँ थे तो उन्होंने देखा कि उसके कुछ शागिर्द अपने हाथ पाक-साफ़ किए बग़ैर यानी धोए बग़ैर खाना खा रहे हैं।

3 (क्योंकि यहूदी और खासकर फ़रीसी फ़िरके के लोग इस मामले में अपने बापदादा की रिवायत को मानते हैं। वह अपने हाथ अच्छी तरह धोए बग़ैर खाना नहीं खाते। 4 इसी तरह जब वह कभी बाज़ार से आते हैं तो वह गुस्ल करके ही खाना खाते हैं। वह बहुत-सी और रिवायतों पर भी अमल करते हैं, मसलन कप, जग और केतली को धोकर पाक-साफ़ करने की रस्म पर।)

5 चुनाँचे फ़रीसियों और शरीअत के आलिमों ने ईसा से पूछा, “आपके शागिर्द बापदादा की रिवायतों के मुताबिक ज़िंदगी क्यों नहीं गुज़ारते बल्कि रोटी भी हाथ पाक-साफ़ किए बग़ैर खाते हैं?”

6 ईसा ने जवाब दिया, “यसायाह नबी ने तुम रियाकारों के बारे में ठीक कहा जब उसने यह नबुव्वत की, ‘यह क्रौम अपने होंटों से तो मेरा एहताराम करती है लेकिन उसका दिल मुझसे दूर है।’

7 वह मेरी परस्तिश करते तो हैं, लेकिन बेफ़ायदा।

क्योंकि वह सिर्फ़ इनसान ही के अहकाम सिखाते हैं।’

8 तुम अल्लाह के अहकाम को छोड़कर इनसानी रिवायात की पैरवी करते हो।”

9 ईसा ने अपनी बात जारी रखी, “तुम कितने सलीके से अल्लाह का हुक्म मनसूख करते हो ताकि अपनी रिवायात को कायम रख सको।

10 मसलन मूसा ने फरमाया, ‘अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना’ और ‘जो अपने बाप या माँ पर लानत करे उसे सज़ाए-मौत दी जाए।’

11 लेकिन जब कोई अपने वालिदैन से कहे, ‘मैं आपकी मदद नहीं कर सकता, क्योंकि मैंने मन्नत मानी है कि जो मुझे आपको देना था वह अल्लाह के लिए कुरबानी है’ तो तुम इसे जायज़ करार देते हो। 12 यों तुम उसे अपने माँ-बाप की मदद करने से रोक लेते हो। 13 और इसी तरह तुम अल्लाह के कलाम को अपनी उस रिवायत से मनसूख कर लेते हो जो तुमने नसल-दर-नसल मुंतक़िल की है। तुम इस क्रिस्म की बहुत-सी हरकतें करते हो।”

क्या कुछ इनसान को नापाक कर देता है?

14 फिर ईसा ने दुबारा हुजूम को अपने पास बुलाया और कहा, “सब मेरी बात सुनो और इसे समझने की कोशिश करो। 15 कोई ऐसी चीज़ है नहीं जो इनसान में दाखिल होकर उसे नापाक कर सके, बल्कि जो कुछ इनसान के अंदर से निकलता है वही उसे नापाक कर देता है।” 16 [अगर कोई सुन सकता है तो वह सुन ले।]

17 फिर वह हुजूम को छोड़कर किसी घर में दाखिल हुआ। वहाँ उसके शागिर्दों ने पूछा, “इस तमसील का क्या मतलब है?”

18 उसने कहा, “क्या तुम भी इतने नासमझ हो? क्या तुम नहीं समझते कि जो कुछ बाहर से इनसान में दाखिल होता है वह उसे नापाक नहीं कर सकता? 19 वह तो उसके दिल में नहीं जाता बल्कि उसके मेदे में और वहाँ से निकलकर जाए-ज़रूरत में।” (यह कहकर ईसा ने हर क्रिस्म का खाना पाक-साफ़ करार दिया।)

20 उसने यह भी कहा, “जो कुछ इनसान के अंदर से निकलता है वही उसे नापाक करता है। 21 क्योंकि लोगों के अंदर से, उनके दिलों ही से बुरे खयालात, हरामकारी, चोरी, कत्लो-गारत, 22 ज़िनाकारी, लालच, बदकारी, धोका, शहवतपरस्ती, हसद, बुहतान, गुस्स और हमाक़त निकलते हैं। 23 यह तमाम बुराइयाँ अंदर ही से निकलकर इनसान को नापाक कर देती हैं।”

गैरयहूदी औरत का ईमान

24 फिर ईसा गलील से रवाना होकर शिमाल में सूर के इलाक़े में आया। वहाँ वह किसी घर में दाखिल हुआ। वह नहीं चाहता था कि किसी को पता चले, लेकिन वह पोशीदा न रह सका। 25 फ़ौरन एक औरत उसके पास आई जिसने उसके बारे में सुन रखा था। वह उसके पाँवों में गिर गई। उस की छोटी बेटी किसी नापाक रूह के कब्ज़े में थी, 26 और उसने ईसा से गुज़ारिश की, “बदरूह को मेरी बेटी में से निकाल दें।” लेकिन वह औरत यूनानी थी और सूस्फ़ेनीके के इलाक़े में पैदा हुई थी, 27 इसलिए ईसा ने उसे बताया, “पहले बच्चों को जी भरकर खाने दे, क्योंकि यह मुनासिब नहीं कि बच्चों से खाना लेकर कुत्तों के सामने फेंक दिया जाए।”

28 उसने जवाब दिया, “जी खुदावंद, लेकिन मेज़ के नीचे के कुत्ते भी बच्चों के गिरे हुए टुकड़े खाते हैं।”

29 ईसा ने कहा, “तूने अच्छा जवाब दिया, इसलिए जा, बदरूह तेरी बेटी में से निकल गई है।”

30 औरत अपने घर वापस चली गई तो देखा कि लड़की बिस्तर पर पड़ी है और बदरूह उसमें से निकल चुकी है।

गूँगे-बहरे की शफ़ा

31 जब ईसा सूर से रवाना हुआ तो वह पहले शिमाल में वाके शहर सैदा को चला गया। फिर वहाँ से भी फ़ारिग होकर वह दुबारा गलील की झील के किनारे वाके दिकपुलिस के इलाक़े में पहुँच गया। 32 वहाँ उसके पास एक बहरा आदमी लाया गया जो मुश्किल ही से बोल सकता था। उन्होंने मिन्नत की कि वह अपना हाथ उस पर रखे। 33 ईसा उसे हुजूम से दूर ले गया। उसने अपनी उँगलियाँ उसके कानों में डाली और थूककर आदमी की ज़बान को छुआ। 34 फिर आसमान की तरफ़ नज़र उठाकर उसने आह भरी और उससे कहा, “इफ़फ़तह!” (इसका मतलब है “खुल जा!”)

35 फ़ौरन आदमी के कान खुल गए, ज़बान का बंधन टूट गया और वह ठीक ठीक बोलने लगा। 36 ईसा ने हाज़िरीन को हुक्म दिया कि वह किसी को यह बात न बताएँ। लेकिन जितना वह मना करता था उतना ही लोग इसकी ख़बर फैलाते थे। 37 वह निहायत ही हैरान हुए और कहने लगे, “इसने सब कुछ अच्छा किया है, यह बहरों को सुनने की ताक़त देता है और गूँगों को बोलने की।”

8

ईसा 4000 अफ़राद को खाना खिलाता है

1 उन दिनों में एक और मरतबा ऐसा हुआ कि बहुत-से लोग जमा हुए जिनके पास खाने का बंदोबस्त नहीं था। चुनाँचे ईसा ने अपने शागिर्दों को बुलाकर उनसे कहा, 2 “मुझे इन लोगों पर तरस आता है। इन्हें मेरे साथ ठहरे तीन दिन हो चुके हैं और इनके पास खाने की कोई चीज़ नहीं है। 3 लेकिन अगर मैं इन्हें ख़सत कर दूँ और वह इस भूकी हालत में अपने अपने घर चले जाएँ तो वह रास्ते में थककर चूर हो जाएंगे। और इनमें से कई दूर-दराज़ से आए हैं।”

4 उसके शागिर्दों ने जवाब दिया, “इस वीरान इलाक़े में कहाँ से इतना खाना मिल सकेगा कि यह खाकर सेर हो जाएँ?”

5 ईसा ने पूछा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?”

उन्होंने जवाब दिया, “सात।”

6 ईसा ने हुजूम को ज़मीन पर बैठने को कहा। फिर सात रोटियों को लेकर उसने शक्रगुज़ारी की दुआ की और उन्हें तोड़ तोड़कर अपने शागिर्दों को तकसीम करने के लिए दे दिया। 7 उनके पास दो-चार छोटी मछलियाँ भी थीं। ईसा ने उन पर भी शक्रगुज़ारी की दुआ की और शागिर्दों को उन्हें बाँटने को कहा। 8 लोगों ने जी भरकर खाया। बाद में जब खाने के बचे हुए टुकड़े जमा किए गए तो सात बड़े टोकरे भर गए। 9 तकरीबन 4,000 आदमी हाज़िर थे। खाने के बाद ईसा ने उन्हें ख़सत कर दिया 10 और फ़ौरन कश्ती पर सवार होकर अपने शागिर्दों के साथ दल्मनूता के इलाक़े में पहुँच गया।

फ़रीसी इलाही निशान तलब करते हैं

11 इस पर फ़रीसी निकलकर ईसा के पास आए और उससे बहस करने लगे। उसे आजमाने के लिए उन्होंने मुतालबा किया कि वह उन्हें आसमान की तरफ से कोई इलाही निशान दिखाए ताकि उसका इख्तियार साबित हो जाए। 12 लेकिन उसने ठंडी आह भरकर कहा, “यह नसल क्यों इलाही निशान का मुतालबा करती है? मैं तुमको सच बताता हूँ कि इसे कोई निशान नहीं दिया जाएगा।”

13 और उन्हें छोड़कर वह दुबारा कश्ती में बैठ गया और झील को पार करने लगा।

फ़रीसियों और हेरोदेस का खमीर

14 लेकिन शागिर्द अपने साथ खाना लाना भूल गए थे। कश्ती में उनके पास सिर्फ एक रोटी थी। 15 ईसा ने उन्हें हिदायत की, “खबरदार, फ़रीसियों और हेरोदेस के खमीर से होशियार रहना।”

16 शागिर्द आपस में बहस करने लगे, “वह इसलिए कह रहे होंगे कि हमारे पास रोटी नहीं है।”

17 ईसा को मालूम हुआ कि वह क्या सोच रहे हैं। उसने कहा, “तुम आपस में क्यों बहस कर रहे हो कि हमारे पास रोटी नहीं है? क्या तुम अब तक न जानते, न समझते हो? क्या तुम्हारे दिल इतने बेहिस हो गए हैं? 18 तुम्हारी आँखें तो हैं, क्या तुम देख नहीं सकते? तुम्हारे कान तो हैं, क्या तुम सुन नहीं सकते? और क्या तुम्हें याद नहीं 19 जब मैंने 5,000 आदमियों को पाँच रोटियों से सेर कर दिया तो तुमने बचे हुए टुकड़ों के कितने टोकरे उठाए थे?”

उन्होंने जवाब दिया, “बारह”।

20 “और जब मैंने 4,000 आदमियों को सात रोटियों से सेर कर दिया तो तुमने बचे हुए टुकड़ों के कितने टोकरे उठाए थे?”

उन्होंने जवाब दिया, “सात।”

21 उसने पूछा, “क्या तुम अभी तक नहीं समझते?”

बैत-सैदा में अंधे की शफ़ा

22 वह बैत-सैदा पहुँचे तो लोग ईसा के पास एक अंधे आदमी को लाए। उन्होंने इलतमास की कि वह उसे छुए। 23 ईसा अंधे का हाथ पकड़कर उसे गाँव से बाहर ले गया। वहाँ उसने उस की आँखों पर थूककर अपने हाथ उस पर रख दिए और पूछा, “क्या तू कुछ देख सकता है?”

24 आदमी ने नज़र उठाकर कहा, “हाँ, मैं लोगों को देख सकता हूँ। वह फिरते हुए दरख्तों की मानिद दिखाई दे रहे हैं।”

25 ईसा ने दुबारा अपने हाथ उस की आँखों पर रखे। इस पर आदमी की आँखें पूरे तौर पर खुल गईं, उस की नज़र बहाल हो गई और वह सब कुछ साफ़ साफ़ देख सकता था। 26 ईसा ने उसे स्खसत करके कहा, “इस गाँव में वापस न जाना बल्कि सीधा अपने घर चला जा।”

पतरस का इकरार

27 फिर ईसा वहाँ से निकलकर अपने शागिर्दों के साथ कैसरिया-फिलिप्पी के करीब के देहातों में गया। चलते चलते उसने उनसे पूछा, “मैं लोगों के नज़दीक कौन हूँ?”

28 उन्होंने जवाब दिया, “कुछ कहते हैं यहया बपतिस्मा देनेवाला, कुछ यह कि आप इलियास नबी हैं। कुछ यह भी कहते हैं कि नबियों में से एक।”

29 उसने पूछा, “लेकिन तुम क्या कहते हो? तुम्हारे नज़दीक मैं कौन हूँ?”

पतरस ने जवाब दिया, “आप मसीह हैं।”

30 यह सुनकर ईसा ने उन्हें किसी को भी यह बात बताने से मना किया।

ईसा अपनी मौत का जिक्र करता है

31 फिर ईसा उन्हें तालीम देने लगा, “लाज़िम है कि इब्ने-आदम बहुत दुख उठाकर बुज़ुर्गों, राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा से रद्द किया जाए। उसे कत्ल भी किया जाएगा, लेकिन वह तीसरे दिन जी उठेगा।” 32 उसने उन्हें यह बात साफ़ साफ़ बताई। इस पर पतरस उसे एक तरफ़ ले जाकर समझाने लगा। 33 ईसा मुड़कर शागिर्दों की तरफ़ देखने लगा। उसने पतरस को डाँटा, “शैतान, मेरे सामने से हट जा! तू अल्लाह की सोच नहीं रखता बल्कि इन्सान की।”

34 फिर उसने शागिर्दों के अलावा हज़ूम को भी अपने पास बुलाया। उसने कहा, “जो मेरे पीछे आना चाहे वह अपने आपका इनकार करे और अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे हो ले। 35 क्योंकि जो अपनी जान को बचाए रखना चाहे वह उसे खो देगा। लेकिन जो मेरी और अल्लाह की खुशखबरी की खातिर अपनी जान खो दे वही उसे बचाएगा। 36 क्या फ़ायदा है अगर किसी को पूरी दुनिया हासिल हो जाए, लेकिन वह अपनी जान से महरूम हो जाए? 37 इन्सान अपनी जान के बदले क्या दे सकता है? 38 जो भी इस ज़िनाकार और गुनाहआलूदा नसल के सामने मेरे और मेरी बातों के सबब से शरमाए उससे इब्ने-आदम भी उस वक़्त शरमाएगा जब वह अपने बाप के जलाल में मुकद्दस फ़रिश्तों के साथ आएगा।”

9

1 ईसा ने उन्हें यह भी बताया, “मैं तुमको सच बताता हूँ, यहाँ कुछ ऐसे लोग खड़े हैं जो मरने से पहले ही अल्लाह की बादशाही को कुदरत के साथ आते हुए देखेंगे।”

पहाड़ पर ईसा की सूरत बदल जाती है

2 छः दिन के बाद ईसा सिर्फ पतरस, याकूब और यूहन्ना को अपने साथ लेकर ऊँचे पहाड़ पर चढ़ गया। वहाँ उस की शक्तो-सूरत उनके सामने बदल गई। 3 उसके कपड़े चमकने लगे और निहायत सफेद हो गए। दुनिया में कोई भी धोबी कपड़े इतने सफेद नहीं कर सकता। 4 फिर इलियास और मूसा जाहिर हुए और ईसा से बात करने लगे। 5 पतरस बोल उठा, “उस्ताद, कितनी अच्छी बात है कि हम यहाँ हैं। आँ, हम तीन झोंपड़ियाँ बनाएँ, एक आपके लिए, एक मूसा के लिए और एक इलियास के लिए।” 6 उसने यह इसलिए कहा कि तीनों शागिर्द सहमे हुए थे और वह नहीं जानता था कि क्या कहे।

7 इस पर एक बादल आकर उन पर छा गया और बादल में से एक आवाज़ सुनाई दी, “यह मेरा प्यारा फ़रज़ंद है। इसकी सुनो।” 8 अचानक मूसा और इलियास गायब हो गए। शागिर्दों ने चारों तरफ़ देखा, लेकिन सिर्फ़ ईसा नज़र आया।

9 वह पहाड़ से उतरने लगे तो ईसा ने उन्हें हुक्म दिया, “जो कुछ तुमने देखा है उसे उस वक़्त तक किसी को न बताना जब तक कि इब्ने-आदम मुरदों में से जी न उठे।”

10 चुनौचे उन्होंने यह बात अपने तक महदू रखी। लेकिन वह कई बार आपस में बहस करने लगे कि मुरदों में से जी उठने से क्या मुराद हो सकती है। 11 फिर उन्होंने उससे पूछा, “शरीअत के उलमा क्यों कहते हैं कि मसीह की आमद से पहले इलियास का आना ज़रूरी है?”

12 ईसा ने जवाब दिया, “इलियास तो ज़रूर पहले सब कुछ बहाल करने के लिए आएगा। लेकिन कलामे-मुक़द्स में इब्ने-आदम के बारे में यह क्यों लिखा है कि उसे बहुत दुख उठाना और हकीर समझा जाना है? 13 लेकिन मैं तुमको बताता हूँ, इलियास तो आ चुका है और उन्होंने उसके साथ जो चाहा किया। यह भी कलामे-मुक़द्स के मुताबिक़ ही हुआ है।”

ईसा लड़के में से बदरूह निकालता है

14 जब वह बाक़ी शागिर्दों के पास वापस पहुँचे तो उन्होंने देखा कि उनके गिर्द एक बड़ा हुज़ूम जमा है और शरीअत के कुछ उलमा उनके साथ बहस कर रहे हैं। 15 ईसा को देखते ही लोगों ने बड़ी बेचैनी से उस की तरफ़ दौड़कर उसे सलाम किया। 16 उसने शागिर्दों से सवाल किया, “तुम उनके साथ किसके बारे में बहस कर रहे हो?”

17 हुज़ूम में से एक आदमी ने जवाब दिया, “उस्ताद, मैं अपने बेटे को आपके पास लाया था। वह ऐसी बदरूह के क़ब्ज़े में है जो उसे बोलने नहीं देती। 18 और जब भी वह उस पर ग़ालिब आती है वह उसे ज़मीन पर पटक देती है। बेटे के मुँह से झाग निकलने लगता और वह दाँत पीसने लगता है। फिर उसका जिस्म अकड़ जाता है। मैंने आपके शागिर्दों से कहा तो था कि वह बदरूह को निकाल दें, लेकिन वह न निकाल सके।”

19 ईसा ने उनसे कहा, “ईमान से ख़ाली नसल! मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँ, कब तक तुम्हें बरदाश्त करूँ? लड़के को मेरे पास ले आओ।” 20 वह उसे ईसा के पास ले आए।

ईसा को देखते ही बदरूह लड़के को झँझोड़ने लगी। वह ज़मीन पर गिर गया और इधर उधर लुढ़कते हुए मुँह से झाग निकालने लगा। 21 ईसा ने बाप से पूछा, “इसके साथ कब से ऐसा हो रहा है?”

उसने जवाब दिया, “बचपन से। 22 बहुत दफ़ा उसने इसे हलाक करने की खातिर आग या पानी में गिराया है। अगर आप कुछ कर सकते हैं तो तरस खाकर हमारी मदद करें।”

23 ईसा ने पूछा, “क्या मतलब, ‘अगर आप कुछ कर सकते हैं’? जो ईमान रखता है उसके लिए सब कुछ मुमकिन है।”

24 लड़के का बाप फ़ौरन चिल्ला उठा, “मैं ईमान रखता हूँ। मेरी बेएतकादी का इलाज़ करें।”

25 ईसा ने देखा कि बहुत-से लोग दौड़ दौड़कर देखने आ रहे हैं, इसलिए उसने नापाक रूह को डाँटा, “ऐ गूँगी और बहरी बदरूह, मैं तुझे हुक्म देता हूँ कि इसमें से निकल जा। कभी भी इसमें दुबारा दाखिल न होना!”

26 इस पर बदरूह चीख़ उठी और लड़के को शिद्द से झँझोड़कर निकल गई। लड़का लाश की तरह ज़मीन पर पड़ा रहा, इसलिए सबने कहा, “वह मर गया है।” 27 लेकिन ईसा ने उसका हाथ पकड़कर उठने में उस की मदद की और वह खड़ा हो गया।

28 बाद में जब ईसा किसी घर में जाकर अपने शागिर्दों के साथ अकेला था तो उन्होंने उससे पूछा, “हम बदरूह को क्यों न निकाल सके?”

29 उसने जवाब दिया, “इस क्रिस्म की बदरूह सिर्फ़ दुआ से निकाली जा सकती है।”

ईसा दूसरी दफ़ा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

30 वहाँ से निकलकर वह गलील में से गुज़रे। ईसा नहीं चाहता था कि किसी को पता चले कि वह कहाँ है, 31 क्योंकि वह अपने शागिर्दों को तालीम दे रहा था। उसने उनसे कहा, “इब्ने-आदम को आदमियों के हवाले कर दिया जाएगा। वह उसे क़त्ल करेंगे, लेकिन तीन दिन के बाद वह जी उठेगा।”

32 लेकिन शागिर्द इसका मतलब न समझे और वह ईसा से इसके बारे में पूछने से डरते भी थे।

कौन सबसे बड़ा है?

33 चलते चलते वह कफ़र्नहम पहुँचे। जब वह किसी घर में थे तो ईसा ने शागिर्दों से सवाल किया, “रास्ते में तुम किस बात पर बहस कर रहे थे?”

34 लेकिन वह खामोश रहे, क्योंकि वह रास्ते में इस पर बहस कर रहे थे कि हममें से बड़ा कौन है? 35 ईसा बैठ गया और बारह शागिर्दों को बुलाकर कहा, “जो अक्ल होना चाहता है वह सबसे आखिर में आए और सबका खादिम हो।” 36 फिर उसने एक छोटे बच्चे को लेकर उनके दरमियान खड़ा किया। उसे गले लगाकर उसने उनसे कहा, 37 “जो मेरे नाम में इन बच्चों में से किसी को कबूल करता है वह मुझे ही कबूल करता है। और जो मुझे कबूल करता है वह मुझे नहीं बल्कि उसे कबूल करता है जिसने मुझे भेजा है।”

जो हमारे खिलाफ नहीं वह हमारे हक में है

38 यहून्ना बोल उठा, “उस्ताद, हमने एक शख्स को देखा जो आपका नाम लेकर बदरूहें निकाल रहा था। हमने उसे मना किया, क्योंकि वह हमारी पैरवी नहीं करता।”

39 लेकिन ईसा ने कहा, “उसे मना न करना। जो भी मेरे नाम में मोजिज़ा करे वह अगले लमहे मेरे बारे में बुरी बातें नहीं कह सकेगा। 40 क्योंकि जो हमारे खिलाफ नहीं वह हमारे हक में है। 41 मैं तुमको सच बताता हूँ, जो भी तुम्हें इस वजह से पानी का गलास पिलाए कि तुम मसीह के पैरोकार हो उसे ज़रूर अन्न मिलेगा।

आज़माइशें

42 और जो कोई मुझ पर ईमान रखनेवाले इन छोटों में से किसी को गुनाह करने पर उकसाए उसके लिए बेहतर है कि उसके गले में बड़ी चक्की का पाट बाँधकर उसे समुंद्र में फेंक दिया जाए। 43-44 अगर तेरा हाथ तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे काट डालना। इससे पहले कि तू दो हाथों समेत जहन्नुम की कभी न बुझनेवाली आग में चला जाए [यानी वहाँ जहाँ लोगों को खानेवाले कीड़े कभी नहीं मरते और आग कभी नहीं बुझती] बेहतर यह है कि तू एक हाथ से महरूम होकर अबदी ज़िंदगी में दाखिल हो। 45-46 अगर तेरा पाँव तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे काट डालना। इससे पहले कि तुझे दो पाँवों समेत जहन्नुम में फेंका जाए [जहाँ लोगों को खानेवाले कीड़े कभी नहीं मरते और आग कभी नहीं बुझती] बेहतर यह है कि तू एक पाँव से महरूम होकर अबदी ज़िंदगी में दाखिल हो। 47-48 और अगर तेरी आँख तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे निकाल देना। इससे पहले कि तुझे दो आँखों समेत जहन्नुम में फेंका जाए जहाँ लोगों को खानेवाले कीड़े कभी नहीं मरते और आग कभी नहीं बुझती बेहतर यह है कि तू एक आँख से महरूम होकर अल्लाह की बादशाही में दाखिल हो।

49 क्योंकि हर एक को आग से नमकीन किया जाएगा [और हर एक कुरबानी नमक से नमकीन की जाएगी]।

50 नमक अच्छी चीज़ है। लेकिन अगर उसका जायका जाता रहे तो उसे क्योंकिर दुबारा नमकीन किया जा सकता है? अपने दरमियान नमक की खूबियाँ बरकरार रखो और सुलह-सलामती से एक दूसरे के साथ ज़िंदगी गुज़ारो।”

10

तलाक़ के बारे में तालीम

1 फिर ईसा उस जगह को छोड़कर यहूदिया के इलाके में और दरियाए-यरदन के पार चला गया। वहाँ भी हुज़ूम जमा हो गया। उसने उन्हें मामूल के मुताबिक तालीम दी।

2 कुछ फ़रीसी आए और उसे फँसाने की गरज़ से सवाल किया, “क्या जायज़ है कि मर्द अपनी बीवी को तलाक़ दे?”

3 ईसा ने उनसे पूछा, “मूसा ने शरीअत में तुमको क्या हिदायत की है?”

4 उन्होंने कहा, “उसने इजाज़त दी है कि आदमी तलाक़नामा लिखकर बीवी को सख़सत कर दे।”

5 ईसा ने जवाब दिया, “मूसा ने तुम्हारी सख़्तदिली की वजह से तुम्हारे लिए यह हुक्म लिखा था। 6 लेकिन इब्तिदा में ऐसा नहीं था। दुनिया की तख़लीक़ के वक़्त अल्लाह ने उन्हें मर्द और औरत बनाया। 7 इसलिए मर्द अपने माँ-बाप को छोड़कर अपनी बीवी के साथ पैवस्त हो जाता है। 8 वह दोनों एक हो जाते हैं। यों वह कलामे-मुक़द्दस के मुताबिक़ दो नहीं रहते बल्कि एक हो जाते हैं। 9 तो जिसे अल्लाह ने ख़ुद जोड़ा है उसे इनसान जुदा न करे।”

10 किसी घर में आकर शागिर्दों ने यह बात दुबारा छेड़कर ईसा से मज़ीद दरियाफ़्त किया। 11 उसने उन्हें बताया, “जो अपनी बीवी को तलाक़ देकर किसी और से शादी करे वह उसके साथ ज़िना करता है। 12 और जो औरत अपने ख़ाविंद को तलाक़ देकर किसी और से शादी करे वह भी ज़िना करती है।”

ईसा छोटे बच्चों को बरकत देता है

13 एक दिन लोग अपने छोटे बच्चों को ईसा के पास लाए ताकि वह उन्हें छुए। लेकिन शागिर्दों ने उनको मलामत की। 14 यह देखकर ईसा नाराज़ हुआ। उसने उनसे कहा, “बच्चों को मेरे पास आने दो और उन्हें न रोको, क्योंकि अल्लाह की बादशाही इन जैसे लोगों को हासिल है। 15 मैं तुमको सच बताता हूँ, जो अल्लाह की बादशाही को बच्चे की तरह कबूल न करे वह उसमें दाखिल नहीं होगा।” 16 यह कहकर उसने उन्हें गले लगाया और अपने हाथ उन पर रखकर उन्हें बरकत दी।

अमीर मुश्किल से बादशाही में दाखिल हो सकते हैं

17 जब ईसा रवाना होने लगा तो एक आदमी दौड़कर उसके पास आया और उसके सामने घुटने टेककर पूछा, “नेक उस्ताद, मैं क्या करूँ ताकि अबदी जिंदगी मीरास में पाऊँ?”

18 ईसा ने पूछा, “तू मुझे नेक क्यों कहता है? कोई नेक नहीं सिवाए एक के और वह है अल्लाह। 19 तू शरीअत के अहकाम से तो वाकिफ है। कत्ल न करना, जिना न करना, चोरी न करना, झूटी गवाही न देना, धोका न देना, अपने बाप और अपनी माँ की इज्जत करना।”

20 आदमी ने जवाब दिया, “उस्ताद, मैंने जवानी से आज तक इन तमाम अहकाम की पैरवी की है।”

21 ईसा ने गौर से उस की तरफ देखा। उसके दिल में उसके लिए प्यार उभर आया। वह बोला, “एक काम रह गया है। जा, अपनी पूरी जायदाद फरोख्त करके पैसे गरीबों में तकसीम कर दे। फिर तेरे लिए आसमान पर खज़ाना जमा हो जाएगा। इसके बाद आकर मेरे पीछे हो ले।”

22 यह सुनकर आदमी का मुँह लटक गया और वह मायूस होकर चला गया, क्योंकि वह निहायत दौलतमंद था।

23 ईसा ने अपने इर्दगिर्द देखकर शागिर्दों से कहा, “दौलतमंदों के लिए अल्लाह की बादशाही में दाखिल होना कितना मुश्किल है!”

24 शागिर्द उसके यह अलफाज़ सुनकर हैरान हुए। लेकिन ईसा ने दुबारा कहा, “बच्चो! अल्लाह की बादशाही में दाखिल होना कितना मुश्किल है। 25 अमीर के अल्लाह की बादशाही में दाखिल होने की निसबत ज़्यादा आसान यह है कि ऊँट सूई के नाके में से गुज़र जाए।”

26 इस पर शागिर्द मज़ीद हैरतज़दा हुए और एक दूसरे से कहने लगे, “फिर किस को नज़ात मिल सकती है?”

27 ईसा ने गौर से उनकी तरफ देखकर जवाब दिया, “यह इनसान के लिए तो नामुमकिन है, लेकिन अल्लाह के लिए नहीं। उसके लिए सब कुछ मुमकिन है।”

28 फिर पतरस बोल उठा, “हम तो अपना सब कुछ छोड़कर आपके पीछे हो लिए हैं।”

29 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको सच बताता हूँ, जिसने भी मेरी और अल्लाह की खुशखबरी की खातिर अपने घर, भाइयों, बहनों, माँ, बाप, बच्चों या खेतों को छोड़ दिया है 30 उसे इस ज़माने में ईज़ारसानी के साथ साथ सौ गुना ज़्यादा घर, भाई, बहनें, माँ, बच्चे और खेत मिल जाएंगे। और आनेवाले ज़माने में उसे अबदी जिंदगी मिलेगी। 31 लेकिन बहुत-से लोग जो अब अव्वल हैं उस वक़्त आखिर होंगे और जो अब आखिर हैं वह अव्वल होंगे।”

ईसा तीसरी दफ़ा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

32 अब वह यरूशलम की तरफ बढ़ रहे थे और ईसा उनके आगे आगे चल रहा था। शागिर्द हैरतज़दा थे जबकि उनके पीछे चलनेवाले लोग सहमे हुए थे। एक और दफ़ा बारह शागिर्दों को एक तरफ ले जाकर ईसा उन्हें वह कुछ बताने लगा जो उसके साथ होने को था। 33 उसने कहा, “हम यरूशलम की तरफ बढ़ रहे हैं। वहाँ इब्ने-आदम को राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा के हवाले कर दिया जाएगा। वह उस पर सज़ाए-मौत का फतवा देकर उसे गैरयहूदियों के हवाले कर देंगे, 34 जो उसका मज़ाक़ उड़ाएँगे, उस पर थूकेंगे, उसको कोड़े मारेंगे और उसे कत्ल करेंगे। लेकिन तीन दिन के बाद वह जी उठेगा।”

याकूब और यूहन्ना की गुज़ारिश

35 फिर जबदी के बेटे याकूब और यूहन्ना उसके पास आए। वह कहने लगे, “उस्ताद, आपसे एक गुज़ारिश है।”

36 उसने पूछा, “तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए करूँ?”

37 उन्होंने जवाब दिया, “जब आप अपने जलाली तरख़ पर बैठेंगे तो हममें से एक को अपने दाएँ हाथ बैठने दें और दूसरे को बाएँ हाथ।”

38 ईसा ने कहा, “तुमको नहीं मालूम कि क्या माँग रहे हो। क्या तुम वह प्याला पी सकते हो जो मैं पीने को हूँ या वह बपतिस्मा ले सकते हो जो मैं लेने को हूँ?”

39 उन्होंने जवाब दिया, “जी, हम कर सकते हैं।” फिर ईसा ने उनसे कहा, “तुम ज़रूर वह प्याला पियोगे जो मैं पीने को हूँ और वह बपतिस्मा लोगे जो मैं लेने को हूँ। 40 लेकिन यह फ़ैसला करना मेरा काम नहीं कि कौन मेरे दाएँ हाथ बैठेगा और कौन बाएँ हाथ। अल्लाह ने यह मक़ाम सिर्फ़ उन्हीं के लिए तैयार किया है जिनको उसने खुद मुक़र्रर किया है।”

41 जब बाक़ी दस शागिर्दों ने यह सुना तो उन्हें याकूब और यूहन्ना पर गुस्सा आया। 42 इस पर ईसा ने उन सबको बुलाकर कहा, “तुम जानते हो कि कौमों के हुक्मरान अपनी रिआया पर रोब डालते हैं, और उनके बड़े अफ़सर उन पर अपने इख़्तियार का ग़लत इस्तेमाल करते हैं। 43 लेकिन तुम्हारे दरमियान ऐसा नहीं है। जो तुममें बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा खादिम बने 44 और जो तुममें अव्वल होना चाहे वह सबका गुलाम बने। 45 क्योंकि इब्ने-आदम भी इसलिए नहीं आया कि खिदमत ले बल्कि इसलिए कि खिदमत करे और अपनी जान फ़िधा के तौर पर देकर बहुतों को छुड़ाए।”

अंधे बरतिमाई की शफ़ा

46 वह यरीह पहुँच गए। उसमें से गुज़रकर ईसा शागिर्दों और एक बड़े हुज़ूम के साथ बाहर निकलने लगा। वहाँ एक अंधा भीक माँगनेवाला रास्ते के किनारे बैठा था। उसका नाम बरतिमाई (तिमाई का बेटा) था। 47 जब उसने सुना कि ईसा नासरी करीब ही है तो वह चिल्लाने लगा, “ईसा इब्ने-दाऊद, मुझ पर रहम करें!”

48 बहुत-से लोगों ने उसे डाँटकर कहा, “खामोश!” लेकिन वह मज़ीद ऊँची आवाज़ से पुकारता रहा, “इब्ने-दाऊद, मुझ पर रहम करें!”

49 ईसा स्क्कर बोला, “उसे बुलाओ।”

चुनोंचे उन्होंने उसे बुलाकर कहा, “हौसला रख। उठ, वह तुझे बुला रहा है।”

50 बरतिमाई ने अपनी चादर ज़मीन पर फेंक दी और उछलकर ईसा के पास आया।

51 ईसा ने पूछा, “तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिए करूँ?”

उसने जवाब दिया, “उस्ताद, यह कि मैं देख सकूँ।”

52 ईसा ने कहा, “जा, तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया है।”

ज्योंही ईसा ने यह कहा अंधे की आँखें बहाल हो गई और वह ईसा के पीछे चलने लगा।

11

यरूशलम में ईसा का पुरजोश इस्तक़बाल

1 वह यरूशलम के करीब बैत-फ़गे और बैत-अनियाह पहुँचने लगे। यह गाँव ज़ैतून के पहाड़ पर वाके थे। ईसा ने अपने शागिर्दों में से दो को भेजा 2 और कहा, “सामनेवाले गाँव में जाओ। वहाँ तुम एक जवान गधा देखोगे। वह बँधा हुआ होगा और अब तक कोई भी उस पर सवार नहीं हुआ है। उसे खोलकर यहाँ ले आओ। 3 अगर कोई पूछे कि यह क्या कर रहे हो तो उसे बता देना, ‘खुदावाद को इसकी ज़रूरत है। वह जल्द ही इसे वापस भेज देंगे’।”

4 दोनों शागिर्द वहाँ गए तो एक जवान गधा देखा जो बाहर गली में किसी दरवाज़े के साथ बँधा हुआ था। जब वह उस की रस्सी खोलने लगे 5 तो वहाँ खड़े कुछ लोगों ने पूछा, “तुम यह क्या कर रहे हो? जवान गधे को क्यों खोल रहे हो?”

6 उन्होंने जवाब में वह कुछ बता दिया जो ईसा ने उन्हें कहा था। इस पर लोगों ने उन्हें खोलने दिया। 7 वह जवान गधे को ईसा के पास ले आए और अपने कपड़े उस पर रख दिए। फिर ईसा उस पर सवार हुआ। 8 जब वह चल पड़ा तो बहुत-से लोगों ने उसके आगे आगे रास्ते में अपने कपड़े बिछा दिए। बाज़ ने हरी शाखें भी उसके आगे बिछा दीं जो उन्होंने खेतों के दरख्तों से काट ली थीं। 9 लोग ईसा के आगे और पीछे चल रहे थे और चिल्ला चिल्लाकर नारे लगा रहे थे,

“होशाना! * ”

मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है। 10 मुबारक है हमारे बाप दाऊद की बादशाही जो आ रही है।

आसमान की बुलंदियों पर होशाना।” †

11 यों ईसा यरूशलम में दाखिल हुआ। वह बैतुल-मुक़द्दस में गया और अपने इर्दगिर्द नज़र दौड़ाकर सब कुछ देखने के बाद चला गया। चूँकि शाम का पिछला वक़्त था इसलिए वह बारह शागिर्दों समेत शहर से निकलकर बैत-अनियाह वापस गया।

अंजीर के दरख़्त पर लानत

12 अगले दिन जब वह बैत-अनियाह से निकल रहे थे तो ईसा को भूक लगी। 13 उसने कुछ फ़ासले पर अंजीर का एक दरख़्त देखा जिस पर पत्ते थे। इसलिए वह यह देखने के लिए उसके पास गया कि आया कोई फल लगा है या नहीं। लेकिन जब वह वहाँ पहुँचा तो देखा कि पत्ते ही पत्ते हैं। वजह यह थी कि अंजीर का मौसम नहीं था। 14 इस पर ईसा ने दरख़्त से कहा, “अब से हमेशा तक तुझसे फल खाया न जा सके!” उसके शागिर्दों ने उस की यह बात सुन ली।

ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाता है

15 वह यरूशलम पहुँच गए। और ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाकर उन्हें निकालने लगा जो वहाँ कुरबानियों के लिए दरकार चीज़ों की ख़रीदो-फ़रोख़्त कर रहे थे। उसने सिक्कों का तबादला करनेवालों की मेज़ें और कबूतर बेचनेवालों की कुरसियाँ उलट दी 16 और जो तिज़ारती माल लेकर बैतुल-मुक़द्दस के सहनों में से गुज़र रहे थे उन्हें रोक लिया। 17 तालीम देकर उसने कहा, “क्या कलामे-मुक़द्दस में नहीं लिखा है, ‘मेरा घर तमाम कौमों के लिए दुआ का घर कहलाएगा’? लेकिन तुमने उसे डाकुओं के अड्डे में बदल दिया है।”

18 राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा ने जब यह सुना तो उसे क़त्ल करने का मौका ढूँढ़ने लगे। क्योंकि वह उससे डरते थे इसलिए कि पूरा हुज़ूम उस की तालीम से निहायत हैरान था।

19 जब शाम हुई तो ईसा और उसके शागिर्द शहर से निकल गए।

अंजीर के दरख़्त से सबक

20 अगले दिन वह सुबह-सबरे अंजीर के उस दरख़्त के पास से गुज़रे जिस पर ईसा ने लानत भेजी थी। जब उन्होंने उस पर गौर किया तो मालूम हुआ कि वह जड़ों तक सूख गया है। 21 तब पतरस को वह बात याद आई जो ईसा ने कल अंजीर के दरख़्त से की थी। उसने कहा, “उस्ताद, यह देखें! अंजीर के जिस दरख़्त पर आपने लानत भेजी थी वह सूख गया है।”

* 11:9 होशाना (इब्रानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इसमें हम्दो-सना का उनसुर भी पाया जाता है। † 11:10 होशाना (इब्रानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इसमें हम्दो-सना का उनसुर भी पाया जाता है।

22 ईसा ने जवाब दिया, “अल्लाह पर ईमान रखो। 23 मैं तुमको सच बताता हूँ कि अगर कोई इस पहाड़ से कहे, ‘उठ, अपने आपको समुंद्र में गिरा दे’ तो यह हो जाएगा। शर्त सिर्फ यह है कि वह शक न करे बल्कि ईमान रखे कि जो कुछ उसने कहा है वह उसके लिए हो जाएगा। 24 इसलिए मैं तुमको बताता हूँ, जब भी तुम दुआ करके कुछ माँगते हो तो ईमान रखो कि तुमको मिल गया है। फिर वह तुम्हें ज़रूर मिल जाएगा। 25 और जब तुम खड़े होकर दुआ करते हो तो अगर तुम्हें किसी से शिकायत हो तो पहले उसे मुआफ़ करो ताकि आसमान पर तुम्हारा बाप भी तुम्हारे गुनाहों को मुआफ़ करे। 26 [और अगर तुम मुआफ़ न करो तो तुम्हारा आसमानी बाप तुम्हारे गुनाह भी मुआफ़ नहीं करेगा।]”

किसने ईसा को इख्तियार दिया?

27 वह एक और दफ़ा यरूशलम पहुँच गए। और जब ईसा बैतुल-मुक़द्दस में फिर रहा था तो राहनुमा इमाम, शरीअत के उलमा और बुजुर्ग उसके पास आए। 28 उन्होंने पूछा, “आप यह सब कुछ किस इख्तियार से कर रहे हैं? किसने आपको यह करने का इख्तियार दिया है?”

29 ईसा ने जवाब दिया, “मेरा भी तुमसे एक सवाल है। इसका जवाब दो तो फिर तुमको बता दूँगा कि मैं यह किस इख्तियार से कर रहा हूँ। 30 मुझे बताओ, क्या यहया का बपतिस्मा आसमानी था या इनसानी?”

31 वह आपस में बहस करने लगे, “अगर हम कहें ‘आसमानी’ तो वह पूछेगा, ‘तो फिर तुम उस पर ईमान क्यों न लाए?’ 32 लेकिन हम कैसे कह सकते हैं कि वह इनसानी था?” वजह यह थी कि वह आम लोगों से डरते थे, क्योंकि सब मानते थे कि यहया वाकई नबी था।

33 चुनौचे उन्होंने जवाब दिया, “हम नहीं जानते।”

ईसा ने कहा, “तो फिर मैं भी तुमको नहीं बताता कि मैं यह सब कुछ किस इख्तियार से कर रहा हूँ।”

12

अंगूर के बाग के मुज़ारेओ की बगावत

1 फिर वह तमसीलों में उनसे बात करने लगा। “किसी आदमी ने अंगूर का एक बाग लगाया। उसने उस की चारदीवारी बनाई, अंगूरों का रस निकालने के लिए एक गढ़े की खुदाई की और पहरेदारों के लिए बुर्ज तामीर किया। फिर वह उसे मुज़ारेओ के सुपुर्द करके बैरूने-मुल्क चला गया। 2 जब अंगूर पक गए तो उसने अपने नौकर को मुज़ारेओ के पास भेज दिया ताकि वह उनसे मालिक का हिस्सा वसूल करे। 3 लेकिन मुज़ारेओ ने उसे पकड़कर उस की पिटाई की और उसे खाली हाथ लौटा दिया। 4 फिर मालिक ने एक और नौकर को भेज दिया। लेकिन उन्होंने उस की भी बेइज्जती करके उसका सर फोड़ दिया। 5 जब मालिक ने तीसरे नौकर को भेजा तो उन्होंने उसे मार डाला। यों उसने कई एक को भेजा। बाज़ को उन्होंने मारा पीटा, बाज़ को कत्ल किया। 6 आखिरकार सिर्फ एक बाक़ी रह गया था। वह था उसका प्यारा बेटा। अब उसने उसे भेजकर कहा, ‘आखिर मेरे बेटे का तो लिहाज़ करेंगे।’ 7 लेकिन मुज़ारे एक दूसरे से कहने लगे, ‘यह ज़मीन का वारिस है। आओ हम इसे मार डालें तो फिर इसकी मीरास हमारी ही होगी।’ 8 उन्होंने उसे पकड़कर कत्ल किया और बाग से बाहर फेंक दिया।

9 अब बताओ, बाग का मालिक क्या करेगा? वह जाकर मुज़ारेओ को हलाक करेगा और बाग को दूसरों के सुपुर्द कर देगा। 10 क्या तुमने कलामे-मुक़द्दस का यह हवाला नहीं पढ़ा, ‘जिस पत्थर को मकान बनानेवालों ने रद्द किया वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया।’

11 यह रब ने किया

और देखने में कितना हैरतअंगेज़ है।”

12 इस पर दीनी राहनुमाओं ने ईसा को गिरिफ़्तार करने की कोशिश की, क्योंकि वह समझ गए थे कि तमसील में बयानशुदा मुज़ारे हम ही हैं। लेकिन वह हुज़ूम से डरते थे, इसलिए वह उसे छोड़कर चले गए।

क्या टैक्स देना जायज़ है?

13 बाद में उन्होंने कुछ फ़रीसियों और हेरोदेस के पैरोकारों को उसके पास भेज दिया ताकि वह उसे कोई ऐसी बात करने पर उभारें जिससे उसे पकड़ा जा सके। 14 वह उसके पास आकर कहने लगे, “उस्ताद, हम जानते हैं कि आप सच्चे हैं और किसी की परवा नहीं करते। आप जानिबदार नहीं होते बल्कि दियानतदारी से अल्लाह की राह की तालीम देते हैं। अब हमें बताएँ कि क्या रोमी शहनशाह को टैक्स देना जायज़ है या नाजायज़? क्या हम अदा करें या न करें?”

15 लेकिन ईसा ने उनकी रियाकारी जानकर उनसे कहा, “मुझे क्यों फँसाना चाहते हो? चाँदी का एक रोमी सिक्का मेरे पास ले आओ।”

16 वह एक सिक्का उसके पास ले आए तो उसने पूछा, “किसकी सूरत और नाम इस पर कंदा है?” उन्होंने जवाब दिया, “शहनशाह का।”

17 उसने कहा, “तो जो शहनशाह का है शहनशाह को दो और जो अल्लाह का है अल्लाह को।”

उसका यह जवाब सुनकर उन्होंने बड़ा ताज्जुब किया।

क्या हम जी उठेंगे?

18 फिर कुछ सदूकी ईसा के पास आए। सदूकी नहीं मानते कि रोज़े-क्रियामत मुरदे जी उठेंगे। उन्होंने ईसा से एक सवाल किया, 19 “उस्ताद, मूसा ने हमें हुक्म दिया कि अगर कोई शादीशुदा आदमी बेऔलाद मर जाए और उसका भाई हो तो भाई का फ़र्ज़ है कि वह बेवा से शादी करके

अपने भाई के लिए औलाद पैदा करे। 20 अब फ़र्ज करें कि सात भाई थे। पहले ने शादी की, लेकिन बेऔलाद फ़ौत हुआ। 21 इस पर दूसरे ने उससे शादी की, लेकिन वह भी बेऔलाद मर गया। फिर तीसरे भाई ने उससे शादी की। 22 यह सिलसिला सातवें भाई तक जारी रहा। यके बाद दीगरे हर भाई बेवा से शादी करने के बाद मर गया। आखिर में बेवा भी फ़ौत हो गई। 23 अब बताएँ कि क्रियामत के दिन वह किसकी बीवी होगी? क्योंकि सात के सात भाइयों ने उससे शादी की थी।”

24 ईसा ने जवाब दिया, “तुम इसलिए ग़लती पर हो कि न तुम कलामे-मुक़द्दस से वाकिफ़ हो, न अल्लाह की कुदरत से। 25 क्योंकि जब मुरदे जी उठेंगे तो न वह शादी करेंगे न उनकी शादी कराई जाएगी बल्कि वह आसमान पर फ़रिशतों की मानिंद होंगे। 26 रही यह बात कि मुरदे जी उठेंगे। क्या तुमने मूसा की किताब में नहीं पढ़ा कि अल्लाह जलती हुई झाड़ी में से किस तरह मूसा से हमकलाम हुआ? उसने फ़रमाया, ‘मैं इब्राहीम का ख़ुदा, इसहाक का ख़ुदा और याक़ूब का ख़ुदा हूँ,’ हालाँकि उस वक़्त तीनों काफ़ी अरसे से मर चुके थे। 27 इसका मतलब है कि यह हकीक़त में ज़िंदा हैं, क्योंकि अल्लाह मुरदों का नहीं, बल्कि ज़िंदों का ख़ुदा है। तुमसे बड़ी ग़लती हुई है।”

अव्वल हुक्म

28 इतने में शरीअत का एक आलिम उनके पास आया। उसने उन्हें बहस करते हुए सुना था और जान लिया कि ईसा ने अच्छा जवाब दिया, इसलिए उसने पूछा, “तमाम अहकाम में से कौन-सा हुक्म सबसे अहम है?”

29 ईसा ने जवाब दिया, “अव्वल हुक्म यह है : ‘सुन ऐ इसराईल! रब हमारा ख़ुदा एक ही रब है। 30 रब अपने ख़ुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान, अपने पूरे ज़हन और अपनी पूरी ताक़त से प्यार करना।’ 31 दूसरा हुक्म यह है : ‘अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।’ दीगर कोई भी हुक्म इन दो अहकाम से अहम नहीं है।”

32 उस आलिम ने कहा, “शाबाश, उस्ताद! आपने सच कहा है कि अल्लाह सिर्फ़ एक ही है और उसके सिवा कोई और नहीं है। 33 हमें उसे अपने पूरे दिल, अपने पूरे ज़हन और अपनी पूरी ताक़त से प्यार करना चाहिए और साथ साथ अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखनी चाहिए जैसी अपने आपसे रखते हैं। यह दो अहकाम भस्म होनेवाली तमाम कुरबानियों और दीगर नज़रों से ज़्यादा अहमियत रखते हैं।”

34 जब ईसा ने उसका यह जवाब सुना तो उससे कहा, “तू अल्लाह की बादशाही से दूर नहीं है।”

इसके बाद किसी ने भी उससे सवाल पूछने की ज़रूरत न की।

मसीह के बारे में सवाल

35 जब ईसा बैतुल-मुक़द्दस में तालीम दे रहा था तो उसने पूछा, “शरीअत के उलमा क्यों दावा करते हैं कि मसीह दाऊद का फ़रज़ंद है? 36 क्योंकि दाऊद ने तो ख़ुद रूहुल-कुद्स की मारिफ़त यह फ़रमाया,

‘रब ने मेरे रब से कहा,

मेरे दहने हाथ बैठ,

जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँवों के नीचे न कर दूँ।’

37 दाऊद तो ख़ुद मसीह को रब कहता है। तो फिर वह किस तरह दाऊद का फ़रज़ंद हो सकता है?”

शरीअत के उलमा से ख़बरदार रहना

एक बड़ा हुज़ूम मजे से ईसा की बातें सुन रहा था। 38 उन्हें तालीम देते वक़्त उसने कहा, “उलमा से ख़बरदार रहो! क्योंकि वह शानदार चोगे पहनकर इधर उधर फिरना पसंद करते हैं। जब लोग बाज़ारों में सलाम करके उनकी इज़्ज़त करते हैं तो फिर वह खुश हो जाते हैं। 39 उनकी बस एक ही खाहिश होती है कि इबादतख़ानों और ज़ियाफ़तों में इज़्ज़त की कुरसियों पर बैठ जाएँ। 40 यह लोग बेवाओं के घर हड़प कर जाते और साथ साथ दिखावे के लिए लंबी लंबी दुआएँ माँगते हैं। ऐसे लोगों को निहायत सख़्त सज़ा मिलेगी।”

बेवा का चंदा

41 ईसा बैतुल-मुक़द्दस के चंदे के बक्स के मुकाबिल बैठ गया और हुज़ूम को हृदिये डालते हुए देखने लगा। कई अमीर बड़ी बड़ी रकमों डाल रहे थे। 42 फिर एक गरीब बेवा भी वहाँ से गुज़री जिसने उसमें ताँबे के दो मामूली-से सिक्के डाल दिए। 43 ईसा ने शागिर्दों को अपने पास बुलाकर कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि इस गरीब बेवा ने तमाम लोगों की निसबत ज़्यादा डाला है। 44 क्योंकि इन सबने अपनी दौलत की कसरत से दे दिया जबकि उसने ज़रूरतमंद होने के बावजूद भी अपने गुज़ारे के सारे पैसे दे दिए हैं।”

13

बैतुल-मुक़द्दस पर आनेवाली तबाही

1 उस दिन जब ईसा बैतुल-मुक़द्दस से निकल रहा था तो उसके शागिर्दों ने कहा, “उस्ताद, देखें कितने शानदार पत्थर और इमारतें हैं!”

2 ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुमको यह बड़ी बड़ी इमारतें नज़र आती हैं? पत्थर पर पत्थर नहीं रहेगा। सब कुछ ढा दिया जाएगा।”

मुसीबतों और ईज़ारसानी की पेशगोई

3 बाद में ईसा जैतून के पहाड़ पर बैतुल-मुकद्दस के मुकाबिल बैठ गया। पतरस, याकूब, यूहन्ना और अंदरियास अकेले उसके पास आए। उन्होंने कहा, 4 “हमें जरा बताएँ, यह कब होगा? क्या क्या नज़र आएगा जिससे मालूम होगा कि यह अब पूरा होने को है?”

5 ईसा ने जवाब दिया, “खबरदार रहो कि कोई तुम्हें गुमराह न कर दे। 6 बहुत-से लोग मेरा नाम लेकर आएँगे और कहेंगे, ‘मैं ही मसीह हूँ।’ यों वह बहुतों को गुमराह कर देंगे। 7 जब जंगों की ख़बरें और अफ़वाहें तुम तक पहुँचेंगी तो मत घबराना। क्योंकि लाज़िम है कि यह सब कुछ पेश आए। तो भी अभी आखिरत नहीं होगी। 8 एक क़ौम दूसरी के खिलाफ़ उठ खड़ी होगी और एक बादशाही दूसरी के खिलाफ़। जगह जगह ज़लज़ले आएँगे, काल पड़ेंगे। लेकिन यह सिर्फ़ दर्द-ज़ह की इत्तिदा ही होगी।

9 तुम खुद खबरदार रहो। तुमको मक़ामी अदालतों के हवाले कर दिया जाएगा और लोग यहूदी इबादतख़ानों में तुम्हें कोड़े लगवाएँगे। मेरी खातिर तुम्हें हुक्मरानों और बादशाहों के सामने पेश किया जाएगा। यों तुम उन्हें मेरी गवाही दोगे। 10 लाज़िम है कि आखिरत से पहले अल्लाह की खुशख़बरी तमाम अक़वाम को सुनाई जाए। 11 लेकिन जब लोग तुमको गिरफ़्तार करके अदालत में पेश करेंगे तो यह सोचते सोचते परेशान न हो जाना कि मैं क्या कहूँ। बस वही कुछ कहना जो अल्लाह तुम्हें उस वक़्त बताएगा। क्योंकि उस वक़्त तुम नहीं बल्कि स्कुल-कुद्स बोलनेवाला होगा। 12 भाई अपने भाई को और बाप अपने बच्चे को मौत के हवाले कर देगा। बच्चे अपने वालिदैन के खिलाफ़ खड़े होकर उन्हें क़त्ल करवाएँगे। 13 सब तुमसे नफ़रत करेंगे, इसलिए कि तुम मेरे पैरोकार हो। लेकिन जो आखिर तक कायम रहेगा उसे नज़ात मिलेगी।

बैतुल-मुकद्दस की बेहुरमती

14 एक दिन आया जब तुम वहाँ जहाँ उसे नहीं होना चाहिए वह कुछ खड़ा देखोगे जो बेहुरमती और तबाही का बाइस है।” (कारी इस पर ध्यान दे!) “उस वक़्त यहूदिया के रहनेवाले भागकर पहाड़ी इलाक़े में पनाह लें। 15 जो अपने घर की छत पर हो वह न उतरे, न कुछ साथ ले जाने के लिए घर में दाखिल हो जाए। 16 जो खेत में हो वह अपनी चादर साथ ले जाने के लिए वापस न जाए। 17 उन ख़वातीन पर अफ़सोस जो उन दिनों में हामिला हों या अपने बच्चों को दूध पिलाती हों। 18 दुआ करो कि यह वाक़िया सर्दियों के मौसम में पेश न आए। 19 क्योंकि उन दिनों में ऐसी मुसीबत होगी कि दुनिया की तखलीक़ से आज तक देखने में न आई होगी। इस क्रिस्म की मुसीबत बाद में भी कभी नहीं आएगी। 20 और अगर खुदावंद इस मुसीबत का दौरानिया मुख़तसर न करता तो कोई न बचता। लेकिन उसने अपने चुने हुएों की खातिर उसका दौरानिया मुख़तसर कर दिया है।

21 उस वक़्त अगर कोई तुमको बताए, ‘देखो, मसीह यहाँ है,’ या ‘वह वहाँ है’ तो उस की बात न मानना। 22 क्योंकि झूटे मसीह और झूटे नबी उठ खड़े होंगे जो अजीबो-ग़रीब निशान और मोजिज़े दिखाएँगे ताकि अल्लाह के चुने हुए लोगों को ग़लत रास्ते पर डाल दें—अगर यह मुमकिन होता। 23 इसलिए खबरदार! मैंने तुमको पहले ही इन सब बातों से आगाह कर दिया है।

इब्ने-आदम की आमद

24 मुसीबत के उन दिनों के बाद सूरज तारीक़ हो जाएगा और चाँद की रौशनी ख़त्म हो जाएगी। 25 सितारे आसमान पर से गिर पड़ेंगे और आसमान की कुव्वतें हिलाई जाएँगी। 26 उस वक़्त लोग इब्ने-आदम को बड़ी क़ुदरत और जलाल के साथ बादलों में आते हुए देखेंगे। 27 और वह अपने फ़रिश्तों को भेज देगा ताकि उसके चुने हुएों को चारों तरफ़ से जमा करें, दुनिया के कोने कोने से आसमान की इंतहा तक इक़ठा करें।

अंजीर के दरख़्त से सबक़

28 अंजीर के दरख़्त से सबक़ सीखो। ज्योंही उस की शाखें नरम और लचकदार हो जाती हैं और उनसे कोंपलें फूट निकलती हैं तो तुमको मालूम हो जाता है कि गरमियों का मौसम करीब आ गया है। 29 इसी तरह जब तुम यह वाक़िया देखोगे तो जान लोगे कि इब्ने-आदम की आमद करीब बल्कि दरवाज़े पर है। 30 मैं तुमको सच बताता हूँ, इस नसल के ख़त्म होने से पहले पहले यह सब कुछ वाक़े होगा। 31 आसमानो-ज़मीन तो जाते रहेंगे, लेकिन मेरी बातें हमेशा तक कायम रहेंगी।

किसी को भी उस की आमद का वक़्त मालूम नहीं

32 लेकिन किसी को भी इल्म नहीं कि यह किस दिन या कौन-सी घड़ी रूनुमा होगा। आसमान के फ़रिश्तों और फ़रज़ंद को भी इल्म नहीं बल्कि सिर्फ़ बाप को। 33 चुनाँचे खबरदार और चौकन्ने रहो! क्योंकि तुमको नहीं मालूम कि यह वक़्त कब आएगा। 34 इब्ने-आदम की आमद उस आदमी से मुताबिक़त रखती है जिसे किसी सफ़र पर जाना था। घर छोड़ते वक़्त उसने अपने नौकरों को इंतज़ाम चलाने का इख़्तियार देकर हर एक को उस की अपनी ज़िम्मादारी सौंप दी। दरबान को उसने हुक्म दिया कि वह चौकस रहे। 35 तुम भी इसी तरह चौकस रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि घर का मालिक कब वापस आएगा, शाम को, आधी रात को, मुरग़ के बाँग़ देते या पौ फटते वक़्त। 36 ऐसा न हो कि वह अचानक आकर तुमको सोते पाए। 37 यह बात मैं न सिर्फ़ तुमको बल्कि सबको बताता हूँ, चौकस रहो!”

1 फ़सह और बेख़मीरी रोटी की ईद करीब आ गई थी। सिर्फ़ दो दिन रह गए थे। राहनुमा इमाम और शरीअत के उलमा ईसा को किसी चालाकी से गिरफ़्तार करके क़त्ल करने की तलाश में थे। 2 उन्होंने कहा, “लेकिन यह ईद के दौरान नहीं होना चाहिए, ऐसा न हो कि अवाम में हलचल मच जाए।”

खातून ईसा पर खुशबू उंडेलती है

3 इतने में ईसा बैत-अनियाह आकर एक आदमी के घर में दाखिल हुआ जो किसी वक़््त कोढ़ का मरीज़ था। उसका नाम शमौन था। ईसा खाना खाने के लिए बैठ गया तो एक औरत आई। उसके पास खालिस जटामासी के निहायत कीमती इत्र का इत्रदान था। उसका सर तोड़कर उसने इत्र ईसा के सर पर उंडेल दिया। 4 हाज़िरिन में से कुछ नाराज़ हुए। “इतना कीमती इत्र जाया करने की क्या ज़रूरत थी? 5 इसकी कीमत कम अज़ कम चाँदी के 300 सिक्के थी। अगर इसे बेचा जाता तो इसके पैसे गरीबों को दिए जा सकते थे।” ऐसी बातें करते हुए उन्होंने उसे झिड़का।

6 लेकिन ईसा ने कहा, “इसे छोड़ दो, तुम इसे क्यों तंग कर रहे हो? इसने तो मेरे लिए एक नेक काम किया है। 7 गरीब तो हमेशा तुम्हारे पास रहेंगे, और तुम जब भी चाहो उनकी मदद कर सकोगे। लेकिन मैं हमेशा तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा। 8 जो कुछ वह कर सकती थी उसने किया है। मुझ पर इत्र उंडेलने से वह मुकर्ररा वक़््त से पहले मेरे बदन को दफ़नाने के लिए तैयार कर चुकी है। 9 मैं तुमको सच बताता हूँ कि तमाम दुनिया में जहाँ भी अल्लाह की खुशख़बरी का एलान किया जाएगा वहाँ लोग इस खातून को याद करके वह कुछ सुनाएँगे जो इसने किया है।”

ईसा को दुश्मन के हवाले करने का मनसूबा

10 फिर यहूदाह इस्क़रियोती जो बारह शागिर्दों में से एक था राहनुमा इमामों के पास गया ताकि ईसा को उनके हवाले करने की बात करे। 11 उसके आने का मक़सद सुनकर वह खुश हुए और उसे पैसे देने का वादा किया। चुनौचे वह ईसा को उनके हवाले करने का मौका ढूँढ़ने लगा।

फ़सह की ईद के लिए तैयारियाँ

12 बेख़मीरी रोटी की ईद आई जब लोग फ़सह के लेले को क़ुरबान करते थे। ईसा के शागिर्दों ने उससे पूछा, “हम कहाँ आपके लिए फ़सह का खाना तैयार करें?”

13 चुनौचे ईसा ने उनमें से दो को यह हिदायत देकर यरूशलम भेज दिया कि “जब तुम शहर में दाखिल होगे तो तुम्हारी मुलाक़ात एक आदमी से होगी जो पानी का घड़ा उठाए चल रहा होगा। उसके पीछे हो लेना। 14 जिस घर में वह दाखिल हो उसके मालिक से कहना, ‘उस्ताद आपसे पूछते हैं कि वह कमरा कहाँ है जहाँ मैं अपने शागिर्दों के साथ फ़सह का खाना खाऊँ?’ 15 वह तुम्हें दूसरी मनज़िल पर एक बड़ा और सजा हुआ कमरा दिखाएगा। वह तैयार होगा। हमारे लिए फ़सह का खाना वहीं तैयार करना।”

16 दोनों चले गए तो शहर में दाखिल होकर सब कुछ वैसा ही पाया जैसा ईसा ने उन्हें बताया था। फिर उन्होंने फ़सह का खाना तैयार किया।

ग़द्दार कौन है?

17 शाम के वक़््त ईसा बारह शागिर्दों समेत वहाँ पहुँच गया। 18 जब वह मेज़ पर बैठे खाना खा रहे थे तो उसने कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ, तुममें से एक जो मेरे साथ खाना खा रहा है मुझे दुश्मन के हवाले कर देगा।”

19 शागिर्द यह सुनकर ग़मगीन हुए। बारी बारी उन्होंने उससे पूछा, “मैं तो नहीं हूँ?”

20 ईसा ने जवाब दिया, “तुम बारह में से एक है। वह मेरे साथ अपनी रोटी सालन के बरतन में डाल रहा है। 21 इब्ने-आदम तो कूच कर जाएगा जिस तरह कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, लेकिन उस शख्स पर अफ़सोस जिसके वसीले से उसे दुश्मन के हवाले कर दिया जाएगा। उसके लिए बेहतर यह होता कि वह कभी पैदा ही न होता।”

फ़सह का आखिरी खाना

22 खाने के दौरान ईसा ने रोटी लेकर शुक़गुज़ारी की दुआ की और उसे टुकड़े करके शागिर्दों को दे दिया। उसने कहा, “यह लो, यह मेरा बदन है।”

23 फिर उसने मै का प्याला लेकर शुक़गुज़ारी की दुआ की और उसे उन्हें दे दिया। सबने उसमें से पी लिया। 24 उसने उनसे कहा, “यह मेरा खून है, नए अहद का वह खून जो बहुतों के लिए बहाया जाता है। 25 मैं तुमको सच बताता हूँ कि अब से मैं अंगूर का रस नहीं पियूँगा, क्योंकि अगली दफ़ा इसे नए सिरे से अल्लाह की बादशाही में ही पियूँगा।”

26 फिर वह एक ज़बूर गाकर निकले और ज़ैतून के पहाड़ के पास पहुँचे।

पतरस के इनकार की पेशगोई

27 ईसा ने उन्हें बताया, “तुम सब बरग़शा हो जाओगे, क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में अल्लाह फ़रमाता है, ‘मैं चरवाहे को मार डालूँगा और भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगी।’ 28 लेकिन अपने जी उठने के बाद मैं तुम्हारे आगे आगे गलील पहुँचूँगा।”

29 पतरस ने एतराज़ किया, “दूसरे बेशक सब बरग़शा हो जाएँ, लेकिन मैं कभी नहीं हूँगा।”

30 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझे सच बताता हूँ, इसी रात मुरग के दूसरी दफ़ा बाँग देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।”

31 पतरस ने इसरार किया, “हरगिज़ नहीं! मैं आपको जानने से कभी इनकार नहीं करूँगा, चाहे मुझे आपके साथ मरना भी पड़े।” दूसरों ने भी यही कुछ कहा।

गत्समनी बाग में ईसा की दुआ

32 वह एक बाग में पहुँचे जिसका नाम गत्समनी था। ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, “यहाँ बैठकर मेरा इंतज़ार करो। मैं दुआ करने के लिए आगे जाता हूँ।” 33 उसने पतरस, याकूब और यूहन्ना को साथ लिया। वहाँ वह घबराकर बेकरार होने लगा। 34 उसने उनसे कहा, “मैं दुख से इतना दबा हुआ हूँ कि मरने को हूँ। यहाँ ठहरकर जागते रहो।”

35 कुछ आगे जाकर वह ज़मीन पर गिर गया और दुआ करने लगा कि अगर मुमकिन हो तो मुझे आनेवाली घड़ियों की तकलीफ से गुज़रना न पड़े। 36 उसने कहा, “ऐ अब्बा, ऐ बाप! तेरे लिए सब कुछ मुमकिन है। दुख का यह प्याला मुझसे हटा ले। लेकिन मेरी नहीं बल्कि तेरी मरज़ी पूरी हो।”

37 वह अपने शागिर्दों के पास वापस आया तो देखा कि वह सो रहे हैं। उसने पतरस से कहा, “शमौन, क्या तू सो रहा है? क्या तू एक घंटा भी नहीं जाग सका? 38 जागते और दुआ करते रहो ताकि तुम आजमाइश में न पड़ो। क्योंकि रूह तो तैयार है, लेकिन जिस्म कमज़ोर।”

39 एक बार फिर उसने जाकर वही दुआ की जो पहले की थी। 40 जब वापस आया तो दुबारा देखा कि वह सो रहे हैं, क्योंकि नींद की बदौलत उनकी आँखें बोझिल थीं। वह नहीं जानते थे कि क्या जवाब दें।

41 जब ईसा तीसरी बार वापस आया तो उसने उनसे कहा, “तुम अभी तक सो और आराम कर रहे हो? बस काफ़ी है। वक़्त आ गया है। देखो, इब्ने-आदम को गुनाहगारों के हवाले किया जा रहा है। 42 उठो। आओ, चलें। देखो, मुझे दुश्मन के हवाले करनेवाला करीब आ चुका है।”

ईसा की गिरफ़्तारी

43 वह अभी यह बात कर ही रहा था कि यहूदाह पहुँच गया, जो बारह शागिर्दों में से एक था। उसके साथ तलवारों और लाठियों से लैस आदमियों का हुज़ूम था। उन्हें राहनुमा इमामों, शरीअत के उलमा और बुजुर्गों ने भेजा था। 44 इस ग़द्दर यहूदाह ने उन्हें एक इम्तियाज़ी निशान दिया था कि जिसको मैं बोसा दूँ वही ईसा है। उसे गिरफ़्तार करके ले जाएँ।

45 ज्योंही वह पहुँचे यहूदाह ईसा के पास गया और “उस्ताद!” कहकर उसे बोसा दिया। 46 इस पर उन्होंने उसे पकड़कर गिरफ़्तार कर लिया। 47 लेकिन ईसा के पास खड़े एक शख्स ने अपनी तलवार मियान से निकाली और इमामे-आज़म के गुलाम को मारकर उसका कान उड़ा दिया। 48 ईसा ने उनसे पूछा, “क्या मैं डाकू हूँ कि तुम तलवारों और लाठियाँ लिए मुझे गिरफ़्तार करने निकले हो? 49 मैं तो रोज़ाना बैतुल-मुक़द्दस में तुम्हारे पास था और तालीम देता रहा, मगर तुमने मुझे गिरफ़्तार नहीं किया। लेकिन यह इसलिए हो रहा है ताकि कलामे-मुक़द्दस की बातें पूरी हो जाएँ।”

50 फिर सबके सब उसे छोड़कर भाग गए।

51 लेकिन एक नौजवान ईसा के पीछे पीछे चलता रहा जो सिर्फ़ चादर ओढ़े हुए था। लोगों ने उसे पकड़ने की कोशिश की, 52 लेकिन वह चादर छोड़कर नंगी हालत में भाग गया।

यहूदी अदालते-आलिया के सामने

53 वह ईसा को इमामे-आज़म के पास ले गए जहाँ तमाम राहनुमा इमाम, बुजुर्ग और शरीअत के उलमा भी जमा थे। 54 इतने में पतरस कुछ फ़ासले पर ईसा के पीछे पीछे इमामे-आज़म के सहन तक पहुँच गया। वहाँ वह मुलाज़िमों के साथ बैठकर आग तापने लगा। 55 मकान के अंदर राहनुमा इमाम और यहूदी अदालते-आलिया के तमाम अफ़राद ईसा के खिलाफ़ गवाहियाँ ढूँढ़ रहे थे ताकि उसे सज़ाए-मौत दिलवा सकें। लेकिन कोई गवाही न मिली। 56 काफ़ी लोगों ने उसके खिलाफ़ झूठी गवाही दी, लेकिन उनके बयान एक दूसरे के मुतज़ाद थे।

57 आखिरकार बाज़ ने खड़े होकर यह झूठी गवाही दी, 58 “हमने इसे यह कहते सुना है कि मैं इनसान के हाथों के बने इस बैतुल-मुक़द्दस को ढाकर तीन दिन के अंदर अंदर नया मक़दिस तामीर कर दूँगा, एक ऐसा मक़दिस जो इनसान के हाथ नहीं बनाएँगे।” 59 लेकिन उनकी गवाहियाँ भी एक दूसरी से मुतज़ाद थीं।

60 फिर इमामे-आज़म ने हाज़िरीन के सामने खड़े होकर ईसा से पूछा, “क्या तू कोई जवाब नहीं देगा? यह क्या गवाहियाँ हैं जो यह लोग तेरे खिलाफ़ दे रहे हैं?”

61 लेकिन ईसा ख़ामोश रहा। उसने कोई जवाब न दिया। इमामे-आज़म ने उससे एक और सवाल किया, “क्या तू अल-हमीद का फ़रज़ंद मसीह है?”

62 ईसा ने कहा, “जी, मैं हूँ। और आइंदा तुम इब्ने-आदम को कादिरे-मुतलक के दहने हाथ बैठे और आसमान के बादलों पर आते हुए देखोगे।”

63 इमामे-आज़म ने रंजिश का इज़हार करके अपने कपड़े फाड़ लिए और कहा, “हमें मज़ीद गवाहों की क्या ज़रूरत रही! 64 आपने खुद सुन लिया है कि इसने कुफ़र बका है। आपका क्या फैसला है?”

सबने उसे सज़ाए-मौत के लायक करार दिया।

65 फिर कुछ उस पर थूकने लगे। उन्होंने उस की आँखों पर पट्टी बाँधी और उसे मुक्के मार मारकर कहने लगे, “नबुव्वत कर!” मुलाज़िमों ने भी उसे थप्पड़ मारे।

पतरस ईसा को जानने से इनकार करता है

66 इस दौरान पतरस नीचे सहन में था। इमामे-आज़म की एक नौकरानी वहाँ से गुज़री 67 और देखा कि पतरस वहाँ आग ताप रहा है। उसने गौर से उस पर नज़र की और कहा, “तुम भी नासरत के उस आदमी ईसा के साथ थे।”

68 लेकिन उसने इनकार किया, “मैं नहीं जानता या समझता कि तू क्या बात कर रही है।” यह कहकर वह गेट के करीब चला गया। [उसी लमहे मुरा ने बाँग दी।]

69 जब नौकरानी ने उसे वहाँ देखा तो उसने दुबारा पास खड़े लोगों से कहा, “यह बंदा उनमें से है।” 70 दुबारा पतरस ने इनकार किया।

थोड़ी देर के बाद पतरस के साथ खड़े लोगों ने भी उससे कहा, “तुम ज़रूर उनमें से हो क्योंकि तुम गलील के रहनेवाले हो।”

71 इस पर पतरस ने कसम खाकर कहा, “मुझ पर लानत अगर मैं झूट बोल रहा हूँ। मैं उस आदमी को नहीं जानता जिसका ज़िक्र तुम कर रहे हो।”

72 फ़ौरन मुरा की बाँग दूसरी मरतबा सुनाई दी। फिर पतरस को वह बात याद आई जो ईसा ने उससे कही थी, “मुरा के दूसरी दफ़ा बाँग देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।” इस पर वह रो पड़ा।

15

पीलातुस के सामने

1 सुबह-सवेरे ही राहनुमा इमाम बुज़ुर्गी, शरीअत के उलमा और पूरी यहूदी अदालते-आलिया के साथ मिलकर फैसले तक पहुँच गए। वह ईसा को बाँधकर वहाँ से ले गए और रोमी गवर्नर पीलातुस के हवाले कर दिया। 2 पीलातुस ने उससे पूछा, “क्या तुम यहूदियों के बादशाह हो?”

ईसा ने जवाब दिया, “जी, आप खुद कहते हैं।”

3 राहनुमा इमामों ने उस पर बहुत इलज़ाम लगाए। 4 चुनौचे पीलातुस ने दुबारा उससे सवाल किया, “क्या तुम कोई जवाब नहीं दोगे? यह तो तुम पर बहुत-से इलज़ामात लगा रहे हैं।”

5 लेकिन ईसा ने इस पर भी कोई जवाब न दिया, और पीलातुस बड़ा हैरान हुआ।

सज़ाए-मौत का फैसला

6 उन दिनों यह रिवाज था कि हर साल फसह की ईद पर एक कैदी को रिहा कर दिया जाता था। यह कैदी अवाम से मुंताख़ब किया जाता था। 7 उस वक़्त कुछ आदमी जेल में थे जो हुक्मत के खिलाफ़ किसी इंकलाबी तहरीक में शरीक हुए थे और जिन्होंने बगावत के मौक़े पर क़त्लो-ग़ारत की थी। उनमें से एक का नाम बर-अब्बा था। 8 अब हुज़ूम ने पीलातुस के पास आकर उससे गुज़ारिश की कि वह मामूल के मुताबिक़ एक कैदी को आज़ाद कर दे। 9 पीलातुस ने पूछा, “क्या तुम चाहते हो कि मैं यहूदियों के बादशाह को आज़ाद कर दूँ?” 10 वह जानता था कि राहनुमा इमामों ने ईसा को सिर्फ़ हसद की बिना पर उसके हवाले किया है।

11 लेकिन राहनुमा इमामों ने हुज़ूम को उकसाया कि वह ईसा के बजाए बर-अब्बा को माँगें। 12 पीलातुस ने सवाल किया, “फिर मैं इसके साथ क्या करूँ जिसका नाम तुमने यहूदियों का बादशाह रखा है?”

13 वह चीखे, “उसे मसलूब करें।”

14 पीलातुस ने पूछा, “क्यों? उसने क्या जुर्म किया है?”

लेकिन लोग मज़ीद शोर मचाकर चीखते रहे, “उसे मसलूब करें!”

15 चुनौचे पीलातुस ने हुज़ूम को मुतमइन करने की खातिर बर-अब्बा को आज़ाद कर दिया। उसने ईसा को कोड़े लगाने को कहा, फिर उसे मसलूब करने के लिए फ़ौजियों के हवाले कर दिया।

फ़ौजी ईसा का मज़ाक़ उड़ाते हैं

16 फ़ौजी ईसा को गवर्नर के महल बनाम प्रैटोरियम के सहन में ले गए और पूरी पलटन को इक़ठा किया। 17 उन्होंने उसे अरग़वानी रंग का लिबास पहनाया और काँटेदार टहनियों का एक ताज बनाकर उसके सर पर रख दिया। 18 फिर वह उसे सलाम करने लगे, “ऐ यहूदियों के बादशाह, आदाब!” 19 लाठी से उसके सर पर मार मारकर वह उस पर थूकते रहे। घुटने टेककर उन्होंने उसे सिजदा किया। 20 फिर उसका मज़ाक़ उड़ाने से थककर उन्होंने अरग़वानी लिबास उतारकर उसे दुबारा उसके अपने कपड़े पहनाए। फिर वह उसे मसलूब करने के लिए बाहर ले गए।

ईसा को मसलूब किया जाता है

21 उस वक़्त लिबिया के शहर कुरेन का रहनेवाला एक आदमी बनाम शमौन देहात से शहर को आ रहा था। वह सिकंदर और रूफ़ुस का बाप था। जब वह ईसा और फ़ौजियों के पास से गुज़रने लगा तो फ़ौजियों ने उसे सलीब उठाने पर मजबूर किया। 22 यों चलते चलते वह ईसा को एक मक़ाम पर ले गए जिसका नाम गुलगुता (यानी खोपड़ी का मक़ाम) था। 23 वहाँ उन्होंने उसे मै पेश की जिसमें मुर मिलाया गया था, लेकिन उसने पीने से इनकार किया। 24 फिर फ़ौजियों ने उसे मसलूब किया और उसके कपड़े आपस में बाँट लिए। यह फ़ैसला करने के लिए कि किस को क्या क्या मिलेगा उन्होंने कुरा डाला। 25 नौ बजे सुबह का वक़्त था जब उन्होंने उसे मसलूब किया। 26 एक तख्ती सलीब पर लगा दी गई जिस पर यह इलज़ाम लिखा था, “यहूदियों का बादशाह।” 27 दो डाकुओं को भी ईसा के साथ मसलूब किया गया, एक को उसके दहने हाथ और दूसरे को उसके बाएँ हाथ। 28 [यों मुक़द्दस कलाम का वह हवाला पूरा हुआ जिसमें लिखा है, ‘उसे मुजरिमों में शुमार किया गया।’]

29 जो वहाँ से गुज़रे उन्होंने कुफ़र बककर उस की तज़लील की और सर हिला हिलाकर अपनी हिक़ारत का इज़हार किया। उन्होंने कहा, “तूने तो कहा था कि मैं बैतुल-मुक़द्दस को ढाकर उसे तीन दिन के अंदर अंदर दुबारा तामीर कर दूँगा।” 30 अब सलीब पर से उतरकर अपने आपको बचा!”

31 राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा ने भी ईसा का मज़ाक़ उड़ाकर कहा, “इसने औरों को बचाया, लेकिन अपने आपको नहीं बचा सकता।” 32 इसराईल का यह बादशाह मसीह अब सलीब पर से उतर आए ताकि हम यह देखकर ईमान लाएँ।” और जिन आदमियों को उसके साथ मसलूब किया गया था उन्होंने भी उसे लान-तान की।

ईसा की मौत

33 दोपहर बारह बजे पूरा मुल्क अंधेरे में डूब गया। यह तारीकी तीन घंटों तक रही। 34 फिर तीन बजे ईसा ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, “एली, एली, लमा शबक़्तनी?” जिसका मतलब है, “ऐ मेरे ख़ुदा, ऐ मेरे ख़ुदा, तूने मुझे क्यों तर्क कर दिया है?”

35 यह सुनकर पास खड़े कुछ लोग कहने लगे, “वह इलियास नबी को बुला रहा है।” 36 किसी ने दौड़कर मै के सिरके में एक इस्फ़ंज डुबोया और उसे डंडे पर लगाकर ईसा को चुसाने की कोशिश की। वह बोला, “आओ हम देखें, शायद इलियास आकर उसे सलीब पर से उतार ले।”

37 लेकिन ईसा ने बड़े ज़ोर से चिल्लाकर दम छोड़ दिया।

38 उसी वक़्त बैतुल-मुक़द्दस के मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने लटका हुआ परदा ऊपर से लेकर नीचे तक दो हिस्सों में फट गया। 39 जब ईसा के मुकाबिल खड़े रोमी अफ़सर * ने देखा कि वह किस तरह मरा तो उसने कहा, “यह आदमी वाकई अल्लाह का फ़रज़ंद था!”

40 कुछ ख़वातीन भी वहाँ थीं जो कुछ फ़ासले पर उसका मुशाहदा कर रही थीं। उनमें मरियम मग़दलीनी, छोटे याक़ूब और योसेस की माँ मरियम और सलोमी भी थीं। 41 ग़लील में यह औरतें ईसा के पीछे चलकर इसकी ख़िदमत करती रही थीं। कई और ख़वातीन भी वहाँ थीं जो उसके साथ यस्शलम आ गई थीं।

ईसा को दफ़न किया जाता है

42 यह सब कुछ जुमे को हुआ जो अगले दिन के सबत के लिए तैयारी का दिन था। जब शाम होने को थी 43 तो अरिमतियाह का एक आदमी बनाम यूसुफ़ हिम्मत करके पीलातुस के पास गया और उससे ईसा की लाश माँगी। (यूसुफ़ यहूदी अदालत-आलिया का नामवर मेंबर था और अल्लाह की बादशाही के आने के इंतज़ार में था।) 44 पीलातुस यह सुनकर हैरान हुआ कि ईसा मर चुका है। उसने रोमी अफ़सर को बुलाकर उससे पूछा कि क्या ईसा वाकई मर चुका है? 45 जब अफ़सर ने इसकी तसदीक़ की तो पीलातुस ने यूसुफ़ को लाश दे दी। 46 यूसुफ़ ने कफ़न ख़रीद लिया, फिर ईसा की लाश उतारकर उसे कतान के कफ़न में लपेटा और एक क़ब्र में रख दिया जो चटान में तराशी गई थी। आख़िर में उसने एक बड़ा पत्थर लुढ़काकर क़ब्र का मुँह बंद कर दिया। 47 मरियम मग़दलीनी और योसेस की माँ मरियम ने देख लिया कि ईसा की लाश कहाँ रखी गई है।

16

ईसा जी उठता है

1 हफ़ते की शाम को जब सबत का दिन गुज़र गया तो मरियम मग़दलीनी, याक़ूब की माँ मरियम और सलोमी ने खुशबूदार मसाले ख़रीद लिए, क्योंकि वह क़ब्र के पास जाकर उन्हें ईसा की लाश पर लगाना चाहती थीं। 2 चुनौचे वह इतवार को सुबह-सवेरे ही क़ब्र पर गईं। सूरज तुलू हो रहा था। 3 रास्ते में वह एक दूसरे से पूछने लगीं, “कौन हमारे लिए क़ब्र के मुँह से पत्थर को लुढ़काएगा?” 4 लेकिन जब वहाँ पहुँचीं और नज़र उठाकर क़ब्र पर ग़ौर किया तो देखा कि पत्थर को एक तरफ़ लुढ़काया जा चुका है। यह पत्थर बहुत बड़ा था। 5 वह क़ब्र में दाख़िल हुईं। वहाँ एक जवान आदमी नज़र आया जो सफ़ेद लिबास पहने हुए दाईं तरफ़ बैठा था। वह घबरा गईं।

* 15:39 सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

6 उसने कहा, “मत घबराओ। तुम ईसा नासरी को ढूँड रही हो जो मसलूब हुआ था। वह जी उठा है, वह यहाँ नहीं है। उस जगह को खुद देख लो जहाँ उसे रखा गया था। 7 अब जाओ, उसके शागिर्दों और पतरस को बता दो कि वह तुम्हारे आगे आगे गलील पहुँच जाएगा। वहीं तुम उसे देखोगे, जिस तरह उसने तुमको बताया था।”

8 खवातीन लरजती और उलझी हुई हालत में कब्र से निकलकर भाग गईं। उन्होंने किसी को भी कुछ न बताया, क्योंकि वह निहायत सहमी हुई थीं।

ईसा मरियम मगदलीनी पर जाहिर होता है

9 जब ईसा इतवार को सुबह-सवेरे जी उठा तो पहला शख्स जिस पर वह जाहिर हुआ मरियम मगदलीनी थी जिससे उसने सात बदरूहें निकाली थीं। 10 मरियम ईसा के साथियों के पास गई जो मातम कर रहे और रो रहे थे। उसने उन्हें जो कुछ हुआ था बताया। 11 लेकिन गो उन्होंने सुना कि ईसा ज़िंदा है और कि मरियम ने उसे देखा है तो भी उन्हें यकीन न आया।

ईसा मज़ीद दो शागिर्दों पर जाहिर होता है

12 इसके बाद ईसा दूसरी सूरत में उनमें से दो पर जाहिर हुआ जब वह यरूशलम से देहात की तरफ पैदल चल रहे थे। 13 दोनों ने वापस जाकर यह बात बाकी लोगों को बताई। लेकिन उन्हें इनका भी यकीन न आया।

ईसा ग्यारह रसूलों पर जाहिर होता है

14 आखिर में ईसा ग्यारह शागिर्दों पर भी जाहिर हुआ। उस वक़्त वह मेज़ पर बैठे खाना खा रहे थे। उसने उन्हें उनकी बेएतकादी और सख़्तदिली के सबब से डाँटा, कि उन्होंने उनका यकीन न किया जिन्होंने उसे ज़िंदा देखा था। 15 फिर उसने उनसे कहा, “पूरी दुनिया में जाकर तमाम मख़लूक़ात को अल्लाह की खुशख़बरी सुनाओ। 16 जो भी ईमान लाकर बपतिस्मा ले उसे नजात मिलेगी। लेकिन जो ईमान न लाए उसे मुजरिम करार दिया जाएगा। 17 और जहाँ जहाँ लोग ईमान रखेंगे वहाँ यह इलाही निशान जाहिर होंगे : वह मेरे नाम से बदरूहें निकाल देंगे, नई नई ज़बानें बोलेंगे 18 और साँपों को उठाकर महफूज़ रहेंगे। मोहलक ज़हर पीने से उन्हें नुक़सान नहीं पहुँचेगा और जब वह अपने हाथ मरीज़ों पर रखेंगे तो शफ़ा पाएँगे।”

ईसा को आसमान पर उठाया जाता है

19 उनसे बात करने के बाद खुदावंद ईसा को आसमान पर उठा लिया गया और वह अल्लाह के दहने हाथ बैठ गया। 20 इस पर शागिर्दों ने निकलकर हर जगह मुनादी की। और खुदावंद ने उनकी हिमायत करके इलाही निशानों से कलाम की तसदीक की।

लूका

पेशलफ़ज़

1 मुहतरम थियुफ़िलस, बहुत-से लोग वह सब कुछ लिख चुके हैं जो हमारे दरमियान वाक़े हुआ है। 2 उनकी कोशिश यह थी कि वही कुछ बयान किया जाए जिसकी गवाही वह देते हैं जो शुरू ही से साथ थे और आज तक अल्लाह का कलाम सुनाने की ख़िदमत सरंजाम दे रहे हैं। 3 मैंने भी हर मुमकिन कोशिश की है कि सब कुछ शुरू से और ऐन हक़ीक़त के मुताबिक़ मालूम करूँ। अब मैं यह बातें तरतीब से आपके लिए लिखना चाहता हूँ। 4 आप यह पढ़कर जान लेंगे कि जो बातें आपको सिखाई गई हैं वह सच और दुस्त हैं।

यहया के बारे में पेशगोई

5 यहूदिया के बादशाह हेरोदेस के ज़माने में एक इमाम था जिसका नाम ज़करियाह था। बैतुल-मुक़द्दस में इमामों के मुख़्तलिफ़ ग़ुरोह ख़िदमत सरंजाम देते थे, और ज़करियाह का ताल्लुक अबियाह के ग़ुरोह से था। उस की बीवी इमामे-आज़म हारून की नसल से थी और उसका नाम इलीशिबा था। 6 मियों-बीवी अल्लाह के नज़दीक़ रास्तबाज़ थे और रब के तमाम अहक़ाम और हिदायात के मुताबिक़ बेइलज़ाम ज़िंदगी गुज़ारते थे। 7 लेकिन वह बेऔलाद थे। इलीशिबा के बच्चे पैदा नहीं हो सकते थे। अब वह दोनों बूढ़े हो चुके थे।

8 एक दिन बैतुल-मुक़द्दस में अबियाह के ग़ुरोह की बारी थी और ज़करियाह अल्लाह के हुज़ूर अपनी ख़िदमत सरंजाम दे रहा था। 9 दस्तूर के मुताबिक़ उन्होंने कुरा डाला ताकि मालूम करें कि रब के मक़दिस में जाकर बख़ूर की कुरबानी कौन जलाए। ज़करियाह को चुना गया। 10 जब वह मुक़र्ररा वक़्त पर बख़ूर जलाने के लिए बैतुल-मुक़द्दस में दाख़िल हुआ तो जमा होनेवाले तमाम परस्तार सहन में दुआ कर रहे थे।

11 अचानक रब का एक फ़रिश्ता ज़ाहिर हुआ जो बख़ूर जलाने की कुरबानगाह के दहनी तरफ़ खड़ा था। 12 उसे देखकर ज़करियाह घबराया और बहुत डर गया। 13 लेकिन फ़रिश्ते ने उससे कहा, “ज़करियाह, मत डर! अल्लाह ने तेरी दुआ सुन ली है। तेरी बीवी इलीशिबा के बेटा होगा। उसका नाम यहया रखना। 14 वह न सिर्फ़ तेरे लिए ख़ुशी और मुसरत का बाइस होगा, बल्कि बहुत-से लोग उस की पैदाइश पर ख़ुशी मनाएँगे। 15 क्योंकि वह रब के नज़दीक़ अज़ीम होगा। लाज़िम है कि वह मैं और शराब से परहेज़ करे। वह पैदा होने से पहले ही रूहुल-कुद्स से मामूर होगा 16 और इसराईली क़ौम में से बहुतों को रब उनके ख़ुदा के पास वापस लाएगा। 17 वह इलियास की रूह और कुव्वत से ख़ुदावंद के आगे आगे चलेगा। उस की ख़िदमत से वालिदों के दिल अपने बच्चों की तरफ़ मायल हो जाएंगे और नाफ़रमान लोग रास्तबाज़ों की दानाई की तरफ़ रूजू करेंगे। यों वह इस क़ौम को रब के लिए तैयार करेगा।”

18 ज़करियाह ने फ़रिश्ते से पूछा, “मैं किस तरह जानूँ कि यह बात सच है? मैं ख़ुद बूढ़ा हूँ और मेरी बीवी भी उम्ररसीदा है।”

19 फ़रिश्ते ने जवाब दिया, “मैं जिबराईल हूँ जो अल्लाह के हुज़ूर खड़ा रहता हूँ। मुझे इसी मक़सद के लिए भेजा गया है कि तुझे यह ख़ुशख़बरी सुनाऊँ। 20 लेकिन चूँकि तूने मेरी बात का यक़ीन नहीं किया इसलिए तू ख़ामोश रहेगा और उस वक़्त तक बोल नहीं सकेगा जब तक तेरे बेटा पैदा न हो। मेरी यह बातें मुक़र्ररा वक़्त पर ही पूरी होंगी।”

21 इस दौरान बाहर के लोग ज़करियाह के इंतज़ार में थे। वह हैरान होते जा रहे थे कि उसे वापस आने में क्यों इतनी देर हो रही है। 22 आख़िरकार वह बाहर आया, लेकिन वह उनसे बात न कर सका। तब उन्होंने जान लिया कि उसने बैतुल-मुक़द्दस में रोया देखी है। उसने हाथों से इशारे तो किए, लेकिन ख़ामोश रहा।

23 ज़करियाह मुक़र्ररा वक़्त तक बैतुल-मुक़द्दस में अपनी ख़िदमत अंजाम देता रहा, फिर अपने घर वापस चला गया। 24 थोड़े दिनों के बाद उस की बीवी इलीशिबा हामिला हो गई और वह पाँच माह तक घर में छुपी रही। 25 उसने कहा, “ख़ुदावंद ने मेरे लिए कितना बड़ा काम किया है, क्योंकि अब उसने मेरी फ़िक़र की और लोगों के सामने से मेरी रूस्वाई दूर कर दी।”

ईसा की पैदाइश की पेशगोई

26-27 इलीशिबा छः माह से उम्मीद से थी जब अल्लाह ने जिबराईल फ़रिश्ते को एक कुँवारी के पास भेजा जो नासरत में रहती थी। नासरत ग़लील का एक शहर है और कुँवारी का नाम मरियम था। उस की मँगनी एक मर्द के साथ हो चुकी थी जो दाऊद बादशाह की नसल से था और जिसका नाम यूसुफ़ था। 28 फ़रिश्ते ने उसके पास आकर कहा, “ऐ ख़ातून जिस पर रब का ख़ास फ़ज़ल हुआ है, सलाम! रब तेरे साथ है।”

29 मरियम यह सुनकर घबरा गई और सोचा, “यह किस तरह का सलाम है?” 30 लेकिन फ़रिश्ते ने अपनी बात जारी रखी और कहा, “ऐ मरियम, मत डर, क्योंकि तुझ पर अल्लाह का फ़ज़ल हुआ है। 31 तू उम्मीद से होकर एक बेटे को जन्म देगी। तुझे उसका नाम ईसा (नजात देनेवाला) रखना है। 32 वह अज़ीम होगा और अल्लाह तआला का फ़रज़द कहलाएगा। रब हमारा ख़ुदा उसे उसके बाप दाऊद के तख़्त पर बिठाएगा 33 और वह हमेशा तक इसराईल पर हुकूमत करेगा। उस की सलतनत कभी ख़तम न होगी।”

34 मरियम ने फ़रिश्ते से कहा, “यह क्योंकि हो सकता है? अभी तो मैं कुँवारी हूँ।”

35 फ़रिश्ते ने जवाब दिया, “रूहुल-कुद्स तुझ पर नाज़िल होगा, अल्लाह तआला की कुदरत का साया तुझ पर छा जाएगा। इसलिए यह बच्चा कुद्स होगा और अल्लाह का फ़रज़द कहलाएगा। 36 और देख, तेरी रिश्तेदार इलीशिबा के भी बेटा होगा हालाँकि वह उम्रसीदा है। गो उसे बाँझ करार दिया गया था, लेकिन वह छः माह से उम्मीद से है। 37 क्योंकि अल्लाह के नज़दीक कोई काम नामुमकिन नहीं है।”

38 मरियम ने जवाब दिया, “मैं रब की खिदमत के लिए हाज़िर हूँ। मेरे साथ वैसा ही हो जैसा आपने कहा है।” इस पर फ़रिश्ता चला गया।

मरियम इलीशिबा से मिलती है

39 उन दिनों में मरियम यहूदिया के पहाड़ी इलाके के एक शहर के लिए रवाना हुई। उसने जल्दी जल्दी सफ़र किया। 40 वहाँ पहुँचकर वह ज़करियाह के घर में दाखिल हुई और इलीशिबा को सलाम किया। 41 मरियम का यह सलाम सुनकर इलीशिबा का बच्चा उसके पेट में उछल पड़ा और इलीशिबा खुद रूहुल-कुद्स से भर गई। 42 उसने बुलंद आवाज़ से कहा, “तू तमाम औरतों में मुबारक है और मुबारक है तेरा बच्चा! 43 मैं कौन हूँ कि मेरे खुदावंद की माँ मेरे पास आई! 44 ज्योंही मैंने तेरा सलाम सुना बच्चा मेरे पेट में खुशी से उछल पड़ा। 45 तू कितनी मुबारक है, क्योंकि तू ईमान लाई कि जो कुछ रब ने फ़रमाया है वह तकमील तक पहुँचेगा।”

मरियम का गीत

46 इस पर मरियम ने कहा,

“मेरी जान रब की ताज़ीम करती है

47 और मेरी रूह अपने नजातदहिदा अल्लाह से निहायत खुश है।

48 क्योंकि उसने अपनी खादिमा की पस्ती पर नज़र की है।

हाँ, अब से तमाम नसलें मुझे मुबारक कहेंगी,

49 क्योंकि कादिर-मुतलक ने मेरे लिए बड़े बड़े काम किए हैं।

उसका नाम कुद्स है।

50 जो उसका ख़ौफ़ मानते हैं

उन पर वह पुश-दर-पुश अपनी रहमत जाहिर करेगा।

51 उस की कुदरत ने अज़ीम काम कर दिखाए हैं,

और दिल से मग़रूर लोग तित्तर-बित्तर हो गए हैं।

52 उसने हुक्मरानों को उनके तख़्त से हटाकर

पस्तहाल लोगों को सरफ़राज़ कर दिया है।

53 भूकों को उसने अच्छी चीज़ों से मालामाल करके

अमीरों को खाली हाथ लौटा दिया है।

54 वह अपने खादिम इसराईल की मदद के लिए आ गया है।

हाँ, उसने अपनी रहमत को याद किया है,

55 यानी वह दायमी वादा जो उसने हमारे बुजुर्गों के साथ किया था,

इब्राहीम और उस की औलाद के साथ।”

56 मरियम तकरीबन तीन माह इलीशिबा के हाँ ठहरी रही, फिर अपने घर लौट गई।

यहया बपतिस्मा देनेवाले की पैदाइश

57 फिर इलीशिबा का बच्चे को जन्म देने का दिन आ पहुँचा और उसके बेटा हुआ। 58 जब उसके हमसायों और रिश्तेदारों को इत्तला मिली कि रब की उस पर कितनी बड़ी रहमत हुई है तो उन्होंने उसके साथ खुशी मनाई।

59 जब बच्चा आठ दिन का था तो वह उसका खतना करवाने की रस्म के लिए आए। वह बच्चे का नाम उसके बाप के नाम पर ज़करियाह रखना चाहते थे, 60 लेकिन उस की माँ ने एतराज़ किया। उसने कहा, “नहीं, उसका नाम यहया हो।”

61 उन्होंने कहा, “आपके रिश्तेदारों में तो ऐसा नाम कहीं भी नहीं पाया जाता।” 62 तब उन्होंने इशारों से बच्चे के बाप से पूछा कि वह क्या नाम रखना चाहता है।

63 जवाब में ज़करियाह ने तख़्ती माँगाकर उस पर लिखा, “इसका नाम यहया है।” यह देखकर सब हैरान हुए। 64 उसी लमहे ज़करियाह दुबारा बोलने के काबिल हो गया, और वह अल्लाह की तमजीद करने लगा। 65 तमाम हमसायों पर ख़ौफ़ छा गया और इस बात का चर्चा यहूदिया के पूरे इलाके में फैल गया। 66 जिसने भी सुना उसने संजीदगी से इस पर गौर किया और सोचा, “इस बच्चे का क्या बनेगा?” क्योंकि रब की कुदरत उसके साथ थी।

ज़करियाह की नबुव्वत

67 उसका बाप ज़करियाह रूहुल-कुद्स से मामूर हो गया और नबुव्वत करके कहा,

68 “रब इसराईल के अल्लाह की तमजीद हो!

क्योंकि वह अपनी कौम की मदद के लिए आया है,
उसने फ़िघा देकर उसे छुड़ाया है।

69 उसने अपने खादिम दाऊद के घराने में
हमारे लिए एक अजीम नजातदहिदा खड़ा किया है।

70 ऐसा ही हुआ जिस तरह उसने कदीम ज़मानों में
अपने मुक़द्दस नबियों की मारिफ़त फ़रमाया था,

71 कि वह हमें हमारे दुश्मनों से नजात दिलाएगा,

उन सबके हाथ से
जो हमसे नफ़रत रखते हैं।

72 क्योंकि उसने फ़रमाया था कि वह हमारे बापदादा पर रहम करेगा

73 और अपने मुक़द्दस अहद को याद रखेगा,

उस वादे को जो उसने कसम खा कर
इब्राहीम के साथ किया था।

74 अब उसका यह वादा पूरा हो जाएगा :

हम अपने दुश्मनों से मख़लसी पाकर
ख़ौफ़ के बग़ैर अल्लाह की खिदमत कर सकेंगे,

75 जीते-जी उसके हुज़ूर मुक़द्दस और रास्त ज़िंदगी गुज़ार सकेंगे।

76 और तू, मेरे बच्चे, अल्लाह तआला का नबी कहलाएगा।

क्योंकि तू खुदावंद के आगे आगे
उसके रास्ते तैयार करेगा।

77 तू उस की कौम को नजात का रास्ता दिखाएगा,
कि वह किस तरह अपने गुनाहों की मुआफी पाएगी।

78 हमारे अल्लाह की बड़ी रहमत की वजह से
हम पर इलाही नूर चमकेगा।

79 उस की रौशनी उन पर फैल जाएगी

जो अंधेरे और मौत के साय में बैठे हैं,
हाँ वह हमारे कदमों को सलामती की राह पर पहुँचाएगी।”

80 यहया परवान चढ़ा और उस की रूह ने तक्रवियत पाई। उसने उस वक़्त तक रेगिस्तान में ज़िंदगी गुज़ारी जब तक उसे इसराईल की खिदमत करने के लिए बुलाया न गया।

2

ईसा की पैदाइश

1 उन ऐयाम में रोम के शहनशाह औगुस्तस ने फ़रमान जारी किया कि पूरी सलतनत की मर्दुमशुमारी की जाए। 2 यह पहली मर्दुमशुमारी उस वक़्त हुई जब कूरिनियुस शाम का गवर्नर था। 3 हर किसी को अपने वतनी शहर में जाना पड़ा ताकि वहाँ रजिस्टर में अपना नाम दर्ज करवाए।

4 चुनाँचे यूसुफ़ गलील के शहर नासरत से रवाना होकर यहूदिया के शहर बैत-लहम पहुँचा। वजह यह थी कि वह दाऊद बादशाह के घराने और नसल से था, और बैत-लहम दाऊद का शहर था। 5 चुनाँचे वह अपने नाम को रजिस्टर में दर्ज करवाने के लिए वहाँ गया। उस की मंगेतर मरियम भी साथ थी। उस वक़्त वह उम्मीद से थी। 6 जब वह वहाँ ठहरे हुए थे तो बच्चे को जन्म देने का वक़्त आ पहुँचा। 7 बेटा पैदा हुआ। यह मरियम का पहला बच्चा था। उसने उसे कपड़ों * में लपेटकर एक चरनी में लिटा दिया, क्योंकि उन्हें सराय में रहने की जगह नहीं मिली थी।

चरवाहों को खुशखबरी

8 उस रात कुछ चरवाहे करीब के खुले मैदान में अपने रेवड़ों की पहरादारी कर रहे थे। 9 अचानक रब का एक फ़रिश्ता उन पर जाहिर हुआ, और उनके इर्दगिर्द रब का जलाल चमका। यह देखकर वह सख़्त डर गए। 10 लेकिन फ़रिश्ते ने उनसे कहा, “डरो मत! देखो मैं तुमको बड़ी ख़ुशी की खबर देता हूँ जो तमाम लोगों के लिए होगी। 11 आज ही दाऊद के शहर में तुम्हारे लिए नजातदहिदा पैदा हुआ है यानी मसीह खुदावंद। 12 और तुम उसे इस निशान से पहचान लोगे, तुम एक शीरखार बच्चे को कपड़ों में लिपटा हुआ पाओगे। वह चरनी में पड़ा हुआ होगा।”

13 अचानक आसमानी लश्करों के बेशुमार फ़रिश्ते उस फ़रिश्ते के साथ जाहिर हुए जो अल्लाह की हम्दो-सना करके कह रहे थे,

* 2:7 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : पोतड़ों

14 “आसमान की बुलंदियों पर अल्लाह की इज्जतो-जलाल, जमीन पर उन लोगों की सलामती जो उसे मंजूर हैं।”

15 फ़रिश्ते उन्हें छोड़कर आसमान पर वापस चले गए तो चरवाहे आपस में कहने लगे, “आओ, हम बैत-लहम जाकर यह बात देखें जो हुई है और जो रब ने हम पर जाहिर की है।”

16 वह भागकर बैत-लहम पहुँचे। वहाँ उन्हें मरियम और यूसुफ़ मिले और साथ ही छोटा बच्चा जो चरनी में पड़ा हुआ था। 17 यह देखकर उन्होंने सब कुछ बयान किया जो उन्हें इस बच्चे के बारे में बताया गया था। 18 जिसने भी उनकी बात सुनी वह हैरतज़दा हुआ। 19 लेकिन मरियम को यह तमाम बातें याद रही और वह अपने दिल में उन पर गौर करती रही।

20 फिर चरवाहे लौट गए और चलते चलते उन तमाम बातों के लिए अल्लाह की ताज़ीमो-तारीफ़ करते रहे जो उन्होंने सुनी और देखी थीं, क्योंकि सब कुछ वैसा ही पाया था जैसा फ़रिश्ते ने उन्हें बताया था।

बच्चे का नाम ईसा रखा जाता है

21 आठ दिन के बाद बच्चे का ख़तना करवाने का वक़्त आ गया। उसका नाम ईसा रखा गया, यानी वही नाम जो फ़रिश्ते ने मरियम को उसके हामिला होने से पहले बताया था।

ईसा को बैतुल-मुक़द्दस में पेश किया जाता है

22 जब मूसा की शरीअत के मुताबिक़ तहारत के दिन पूरे हुए तब वह बच्चे को यरूशलम ले गए ताकि उसे रब के हुज़ूर पेश किया जाए, 23 जैसे रब की शरीअत में लिखा है, “हर पहलौठे को रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करना है।” 24 साथ ही उन्होंने मरियम की तहारत की रस्म के लिए वह क़ुरबानी पेश की जो रब की शरीअत बयान करती है, यानी “दो कुम्रियाँ या दो जवान कबूतर।”

25 उस वक़्त यरूशलम में एक आदमी बनाम शमौन रहता था। वह रास्तबाज़ और ख़ुदातरस था और इस इंतज़ार में था कि मसीह आकर इसराईल को सुकून बख़्शे। रूहुल-कुद्स उस पर था, 26 और उसने उस पर यह बात जाहिर की थी कि वह जीते-जी रब के मसीह को देखेगा। 27 उस दिन रूहुल-कुद्स ने उसे तहरीक़ दी कि वह बैतुल-मुक़द्दस में जाए। चुनौचे जब मरियम और यूसुफ़ बच्चे को रब की शरीअत के मुताबिक़ पेश करने के लिए बैतुल-मुक़द्दस में आए 28 तो शमौन मौजूद था। उसने बच्चे को अपने बाज़ुओं में लेकर अल्लाह की हम्दो-सना करते हुए कहा,

29 “ऐ आका, अब तू अपने बंदे को इजाज़त देता है

कि वह सलामती से रेहलत कर जाए, जिस तरह तूने फ़रमाया है।

30 क्योंकि मैंने अपनी आँखों से तेरी उस नजात का मुशाहदा कर लिया है

31 जो तूने तमाम क़ौमों की मौजूदगी में तैयार की है।

32 यह एक ऐसी रौशनी है जिससे ग़ैरयहूदियों की आँखें खुल जाएँगी

और तेरी क़ौम इसराईल को जलाल हासिल होगा।”

33 बच्चे के माँ-बाप अपने बेटे के बारे में इन अलफ़ाज़ पर हैरान हुए। 34 शमौन ने उन्हें बरकत दी और मरियम से कहा, “यह बच्चा मुक़र्रर हुआ है कि इसराईल के बहुत-से लोग इससे ठोकर खाकर गिर जाएँ, लेकिन बहुत-से इससे अपने पाँवों पर खड़े भी हो जाएंगे। गो यह अल्लाह की तरफ़ से एक इशारा है तो भी इसकी मुख़ालफ़त की जाएगी। 35 यों बहुतों के दिली ख़यालात जाहिर हो जाएंगे। इस सिलसिले में तलवार तेरी जान में से भी गुज़र जाएगी।”

36 वहाँ बैतुल-मुक़द्दस में एक उम्ररसीदा नबिया भी थी जिसका नाम हन्नाह था। वह फ़नुएल की बेटी और आशर के क़बीले से थी। शादी के सात साल बाद उसका शौहर मर गया था। 37 अब वह बेवा की हैसियत से 84 साल की हो चुकी थी। वह कभी बैतुल-मुक़द्दस को नहीं छोड़ती थी, बल्कि दिन-रात अल्लाह को सिजदा करती, रोज़ा रखती और दुआ करती थी। 38 उस वक़्त वह मरियम और यूसुफ़ के पास आकर अल्लाह की तमजीद करने लगी। साथ साथ वह हर एक को जो इस इंतज़ार में था कि अल्लाह फ़िघा देकर यरूशलम को छुड़ाए, बच्चे के बारे में बताती रही।

वह नासरत वापस चले जाते हैं

39 जब ईसा के वालिदैन् ने रब की शरीअत में दर्ज तमाम फ़रायज़ अदा कर लिए तो वह गलील में अपने शहर नासरत को लौट गए। 40 वहाँ बच्चा परवान चढ़ा और तक्रवियत पाता गया। वह हिकमतो-दानाई से मामूर था, और अल्लाह का फ़ज़ल उस पर था।

बारह साल की उम्र में बैतुल-मुक़द्दस में

41 ईसा के वालिदैन् हर साल फ़सह की ईद के लिए यरूशलम जाया करते थे। 42 उस साल भी वह मामूल के मुताबिक़ ईद के लिए गए जब ईसा बारह साल का था। 43 ईद के इख़िताम पर वह नासरत वापस जाने लगे, लेकिन ईसा यरूशलम में रह गया। पहले उसके वालिदैन् को मालूम न था, 44 क्योंकि वह समझते थे कि वह काफ़िले में कहीं मौजूद है। लेकिन चलते चलते पहला दिन गुज़र गया और वह अब तक नज़र न आया था। इस पर वालिदैन् उसे अपने रिश्तेदारों और अज़ीज़ों में ढूँढ़ने लगे। 45 जब वह वहाँ न मिला तो मरियम और यूसुफ़ यरूशलम वापस गए और वहाँ ढूँढ़ने लगे। 46 तीन दिन के बाद वह आखिरकार बैतुल-मुक़द्दस में पहुँचे। वहाँ ईसा दीनी उस्तादों के दरमियान बैठा उनकी बातें सुन रहा और उनसे सवालात पूछ रहा था। 47 जिसने भी उस की बातें सुनीं वह उस की समझ और जवाबों से दंग रह गया। 48 उसे देखकर

उसके वालिदै न घबरा गए। उस की माँ ने कहा, “बेटा, तूने हमारे साथ यह क्यों किया? तेरा बाप और मैं तुझे ढूँढते ढूँढते शदीद कोफ़त का शिकार हुए।”

49 ईसा ने जवाब दिया, “आपको मुझे तलाश करने की क्या ज़रूरत थी? क्या आपको मालूम न था कि मुझे अपने बाप के घर में होना ज़रूर है?” 50 लेकिन वह उस की बात न समझे।

51 फिर वह उनके साथ रवाना होकर नासरत वापस आया और उनके ताबे रहा। लेकिन उस की माँ ने यह तमाम बातें अपने दिल में महफूज़ रखें। 52 यों ईसा जवान हुआ। उस की समझ और हिकमत बढ़ती गई, और उसे अल्लाह और इनसान की मकबूलियत हासिल थी।

3

यहया बपतिस्मा देनेवाले की खिदमत

1 फिर रोम के शहनशाह तिबरियुस की हुकूमत का पंद्रहवाँ साल आ गया। उस वक़्त पुतियुस पीलातुस सूबा यहूदिया का गवर्नर था, हेरोदेस अंतिपास गलील का हाकिम था, उसका भाई फिलिप्पुस इतूरिया और त्रखोनीतिस के इलाके का, जबकि लिसानियास अबिलेने का। 2 हन्ना और कायफ़ा दोनों इमामे-आज़म थे। उन दिनों में अल्लाह यहया बिन ज़करियाह से हमकलाम हुआ जब वह रेगिस्तान में था। 3 फिर वह दरियाए-यरदन के पूरे इलाके में से गुज़रा। हर जगह उसने एलान किया कि तौबा करके बपतिस्मा लो ताकि तुम्हें अपने गुनाहों की मुआफ़ी मिल जाए। 4 यों यसायाह नबी के अलफाज़ पूरे हुए जो उस की किताब में दर्ज हैं :

‘रेगिस्तान में एक आवाज़ पुकार रही है,

रब की राह तैयार करो!

उसके रास्ते सीधे बनाओ।

5 लाज़िम है कि हर वादी भर दी जाए,

ज़रूरी है कि हर पहाड़ और बुलंद जगह मैदान बन जाए।

जो टेढ़ा है उसे सीधा किया जाए,

जो नाहमवार है उसे हमवार किया जाए।

6 और तमाम इनसान अल्लाह की नजात देखेंगे।’

7 जब बहुत-से लोग यहया के पास आए ताकि उससे बपतिस्मा लें तो उसने उनसे कहा, “ऐ ज़हरीले साँप के बच्चे! किसने तुमको आनेवाले गज़ब से बचने की हिदायत की? 8 अपनी जिंदगी से ज़ाहिर करो कि तुमने वाकई तौबा की है। यह ख़याल मत करो कि हम तो बच जाएंगे क्योंकि इब्राहीम हमारा बाप है। मैं तुमको बताता हूँ कि अल्लाह इन पत्थरों से भी इब्राहीम के लिए औलाद पैदा कर सकता है। 9 अब तो अदालत की कुल्हाड़ी दरख्तों की जड़ों पर रखी हुई है। हर दरख़्त जो अच्छा फल न लाए काटा और आग में झोंका जाएगा।”

10 लोगों ने उससे पूछा, “फिर हम क्या करें?”

11 उसने जवाब दिया, “जिसके पास दो कुरते हैं वह एक उसको दे दे जिसके पास कुछ न हो। और जिसके पास खाना है वह उसे खिला दे जिसके पास कुछ न हो।”

12 टैक्स लेनेवाले भी बपतिस्मा लेने के लिए आए तो उन्होंने पूछा, “उस्ताद, हम क्या करें?”

13 उसने जवाब दिया, “सिर्फ उतने टैक्स लेना जितने हुकूमत ने मुर्करर किए हैं।”

14 कुछ फौजियों ने पूछा, “हमें क्या करना चाहिए?”

उसने जवाब दिया, “किसी से जबरन या ग़लत इलज़ाम लगाकर पैसे न लेना बल्कि अपनी जायज़ आमदनी पर इकतिफ़ा करना।”

15 लोगों की तवक्कोआत बहुत बढ़ गई। वह अपने दिलों में सोचने लगे कि क्या यह मसीह तो नहीं है? 16 इस पर यहया उन सबसे मुखातिब होकर कहने लगा, “मैं तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन एक आनेवाला है जो मुझसे बड़ा है। मैं उसके जूतों के तसमे खोलने के भी लायक नहीं। वह तुम्हें रूहल-कुद्स और आग से बपतिस्मा देगा। 17 वह हाथ में छाज पकड़े हुए अनाज को भूसे से अलग करने के लिए तैयार खड़ा है। वह गाहने की जगह को बिलकुल साफ़ करके अनाज को अपने गोदाम में जमा करेगा। लेकिन भूसे को वह ऐसी आग में झोंकेगा जो बुझने की नहीं।”

18 इस किस्म की बहुत-सी और बातों से उसने कौम को नसीहत की और उसे अल्लाह की खुशख़बरी सुनाई। 19 लेकिन एक दिन यों हुआ कि यहया ने गलील के हाकिम हेरोदेस अंतिपास को डाँटा। वजह यह थी कि हेरोदेस ने अपने भाई की बीवी हेरोदियास से शादी कर ली थी और इसके अलावा और बहुत-से ग़लत काम किए थे। 20 यह मलामत सुनकर हेरोदेस ने अपने ग़लत कामों में और इज़ाफ़ा यह किया कि यहया को जेल में डाल दिया।

ईसा का बपतिस्मा

21 एक दिन जब बहुत-से लोगों को बपतिस्मा दिया जा रहा था तो ईसा ने भी बपतिस्मा लिया। जब वह दुआ कर रहा था तो आसमान खुल गया 22 और रूहल-कुद्स जिस्मानी सूरत में कबूतर की तरह उस पर उतर आया। साथ साथ आसमान से एक आवाज़ सुनाई दी, “तू मेरा प्यारा फ़रज़ंद है, तुझसे मैं खुश हूँ।”

ईसा का नसबनामा

23 ईसा तकरीबन तीस साल का था जब उसने ख्रिदमत शुरू की। उसे यूसुफ का बेटा समझा जाता था। उसका नसबनामा यह है : यूसुफ बिन एली 24 बिन मत्तात बिन लावी बिन मलकी बिन यन्ना बिन यूसुफ 25 बिन मत्तितियाह बिन आमूस बिन नाहम बिन असलियाह बिन नोगा 26 बिन माअत बिन मत्तितियाह बिन शमई बिन योसेख बिन यूदाह 27 बिन यूहन्नाह बिन रेसा बिन ज़रूबाबल बिन सियालतियेल बिन नेरी 28 बिन मलिकी बिन अद्दी बिन कोसाम बिन इलमोदाम बिन एर 29 बिन यशुअ बिन इलियज़र बिन योरीम बिन मत्तात बिन लावी 30 बिन शमौन बिन यहूदाह बिन यूसुफ बिन योनाम बिन इलियाक्रीम 31 बिन मलेआह बिन मिन्नाह बिन मत्तितियाह बिन नातन बिन दाऊद 32 बिन यस्सी बिन ओबेद बिन बोअज़ बिन सलमोन बिन नहसोन 33 बिन अम्मीनदाब बिन अदमीन बिन अरनी बिन हसरोन बिन फ़ारस बिन यहूदाह 34 बिन याकूब बिन इसहाक बिन इब्राहीम बिन तारह बिन नहर 35 बिन सरूज बिन रऊ बिन फ़लज बिन इबर बिन सिलह 36 बिन कीनान बिन अरफ़क्सद बिन सिम बिन नूह बिन लमक 37 बिन मत्सिलह बिन हनूक बिन यारिद बिन महललेल बिन कीनान 38 बिन अनूस बिन सेत बिन आदम। आदम को अल्लाह ने पैदा किया था।

4

ईसा को आजमाया जाता है

1 ईसा दरियाए-यरदन से वापस आया। वह रूहुल-कुद्स से मामूर था जिसने उसे रेगिस्तान में लाकर उस की राहनुमाई की। 2 वहाँ उसे चालीस दिन तक इबलीस से आजमाया गया। इस पूरे अरसे में उसने कुछ न खाया। आखिरकार उसे भूक लगी।

3 फिर इबलीस ने उससे कहा, “अगर तू अल्लाह का फ़रज़ंद है तो इस पत्थर को हुक्म दे कि रोटी बन जाए।”

4 लेकिन ईसा ने इनकार करके कहा, “हरगिज़ नहीं, क्योंकि कलामे-मुक़द्स में लिखा है कि इन्सान की ज़िंदगी सिर्फ़ रोटी पर मुनहसिर नहीं होती।”

5 इस पर इबलीस ने उसे किसी बुलंद जगह पर ले जाकर एक लमहे में दुनिया के तमाम ममालिक दिखाए। 6 वह बोला, “मैं तुझे इन ममालिक की शानो-शौकत और इन पर तमाम इख्तियार दूँगा। क्योंकि यह मेरे सुपुर्द किए गए हैं और जिसे चाहूँ दे सकता हूँ। 7 लिहाज़ा यह सब कुछ तेरा ही होगा। शर्त यह है कि तू मुझे सिजदा करे।”

8 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “हरगिज़ नहीं, क्योंकि कलामे-मुक़द्स में यों लिखा है, ‘रब अपने अल्लाह को सिजदा कर और सिर्फ़ उसी की इबादत कर’।”

9 फिर इबलीस ने उसे यरूशलम ले जाकर बैतुल-मुक़द्स की सबसे ऊँची जगह पर खड़ा किया और कहा, “अगर तू अल्लाह का फ़रज़ंद है तो यहाँ से छलौंग लगा दे। 10 क्योंकि कलामे-मुक़द्स में लिखा है, ‘वह अपने फ़रिश्तों को तेरी हिफ़ाज़त करने का हुक्म देगा, 11 और वह तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे ताकि तेरे पाँवों को पत्थर से ठेस न लगे’।”

12 लेकिन ईसा ने तीसरी बार इनकार किया और कहा, “कलामे-मुक़द्स यह भी फ़रमाता है, ‘रब अपने अल्लाह को न आजमाना’।”

13 इन आजमाइशों के बाद इबलीस ने ईसा को कुछ देर के लिए छोड़ दिया।

ख्रिदमत का आगाज़

14 फिर ईसा वापस गलील में आया। उसमें रूहुल-कुद्स की कुव्वत थी, और उस की शोहरत उस पूरे इलाके में फैल गई। 15 वहाँ वह उनके इबादतखानों में तालीम देने लगा, और सबने उस की तारीफ़ की।

ईसा को नासरत में रद्द किया जाता है

16 एक दिन वह नासरत पहुँचा जहाँ वह परवान चढ़ा था। वहाँ भी वह मामूल के मुताबिक़ सबत के दिन मक़ामी इबादतखाने में जाकर कलामे-मुक़द्स में से पढ़ने के लिए खड़ा हो गया। 17 उसे यसायाह नबी की किताब दी गई तो उसने तूमार को खोलकर यह हवाला ढूँड निकाला,

18 “रब का रूह मुझ पर है,

क्योंकि उसने मुझे तेल से मसह करके

गरीबों को खुशख़बरी सुनाने का इख्तियार दिया है।

उसने मुझे यह एलान करने के लिए भेजा है

कि कैदियों को रिहाई मिलेगी और अंधे देखेंगे।

उसने मुझे भेजा है

कि मैं कुचले हुआओं को आज़ाद कराऊँ

19 और रब की तरफ़ से बहाली के साल का एलान करूँ।”

20 यह कहकर ईसा ने तूमार को लपेटकर इबादतखाने के मुलाज़िम को वापस कर दिया और बैठ गया। सारी जमात की आँखें उस पर लगी थीं। 21 फिर वह बोल उठा, “आज अल्लाह का यह फ़रमान तुम्हारे सुनते ही पूरा हो गया है।”

22 सब ईसा के हक़ में बातें करने लगे। वह उन पुरफ़ज़ल बातों पर हैरतज़दा थे जो उसके मुँह से निकलीं, और वह कहने लगे, “क्या यह यूसुफ़ का बेटा नहीं है?”

23 उसने उनसे कहा, “बेशक तुम मुझे यह कहावत बताओगे, ‘ऐ डाक्टर, पहले अपने आपका इलाज कर।’ यानी सुनने में आया है कि आपने कफ़र्नहम में मोजिज़े किए हैं। अब ऐसे मोजिज़े यहाँ अपने वतनी शहर में भी दिखाएँ।” 24 लेकिन मैं तुमको सच बताता हूँ कि कोई भी नबी अपने वतनी शहर में मकबूल नहीं होता।

25 यह हकीकत है कि इलियास नबी के ज़माने में इसराईल में बहुत-सी ज़रूरतमंद बेवाएँ थीं, उस वक़्त जब साढ़े तीन साल तक बारिश न हुई और पूरे मुल्क में सख़्त काल पड़ा। 26 इसके बावजूद इलियास को उनमें से किसी के पास नहीं भेजा गया बल्कि एक ग़ैरयहूदी बेवा के पास जो सैदा के शहर सारपत में रहती थी। 27 इसी तरह इलीशा नबी के ज़माने में इसराईल में कोढ़ के बहुत-से मरीज़ थे। लेकिन उनमें से किसी को शफ़ा न मिली बल्कि सिर्फ़ नामान को जो मुल्के-शाम का शहरी था।”

28 जब इबादतख़ाने में जमा लोगों ने यह बातें सुनीं तो वह बड़े तैश में आ गए। 29 वह उठे और उसे शहर से निकालकर उस पहाड़ी के किनारे ले गए जिस पर शहर को तामीर किया गया था। वहाँ से वह उसे नीचे गिराना चाहते थे, 30 लेकिन ईसा उनमें से गुज़रकर वहाँ से चला गया।

आदमी का बदरूह की गिरिफ़्त से रिहाई

31 इसके बाद वह गलील के शहर कफ़र्नहम को गया और सबत के दिन इबादतख़ाने में लोगों को सिखाने लगा। 32 वह उस की तालीम सुनकर हक्का-बक्का रह गए, क्योंकि वह इख्तियार के साथ तालीम देता था। 33 इबादतख़ाने में एक आदमी था जो किसी नापाक रूह के कब्ज़े में था। अब वह चीख़ चीख़कर बोलने लगा, 34 “अरे नासरत के ईसा, हमारा आपके साथ क्या वास्ता है? क्या आप हमें हलाक करने आए हैं? मैं तो जानता हूँ कि आप कौन हैं, आप अल्लाह के कुद्स हैं।”

35 ईसा ने उसे डाँटकर कहा, “ख़ामोश! आदमी में से निकल जा!” इस पर बदरूह आदमी को जमात के बीच में फ़र्श पर पटककर उसमें से निकल गई। लेकिन वह आदमी ज़ख़मी न हुआ।

36 तमाम लोग घबरा गए और एक दूसरे से कहने लगे, “उस आदमी के अलफ़ाज़ में क्या इख्तियार और कुव्वत है कि बदरूहें उसका हुक्म मानती और उसके कहने पर निकल जाती हैं?” 37 और ईसा के बारे में चर्चा उस पूरे इलाके में फैल गया।

बहुत-से मरीज़ों की शफ़ायाबी

38 फिर ईसा इबादतख़ाने को छोड़कर शमौन के घर गया। वहाँ शमौन की सास शदीद बुखार में मुब्तला थी। उन्होंने ईसा से गुज़ारिश की कि वह उस की मदद करे। 39 उसने उसके सिरहाने खड़े होकर बुखार को डाँटा तो वह उतर गया और शमौन की सास उसी वक़्त उठकर उनकी ख़िदमत करने लगी।

40 जब दिन ढल गया तो सब मक़ामी लोग अपने मरीज़ों को ईसा के पास लाए। ख़ाह उनकी बीमारियाँ कुछ भी क्यों न थीं, उसने हर एक पर अपने हाथ रखकर उसे शफ़ा दी। 41 बहुतों में बदरूहें भी थीं जिन्होंने निकलते वक़्त चिल्लाकर कहा, “तू अल्लाह का फ़रज़द है।” लेकिन चूँकि वह जानती थी कि वह मसीह है इसलिए उसने उन्हें डाँटकर बोलने न दिया।

ख़ुशख़बरी हर एक के लिए है

42 जब अगला दिन चढ़ा तो ईसा शहर से निकलकर किसी वीरान जगह चला गया। लेकिन हुज़ूम उसे ढूँढ़ते ढूँढ़ते आख़िरकार उसके पास पहुँचा। लोग उसे अपने पास से जाने नहीं देना चाहते थे। 43 लेकिन उसने उनसे कहा, “लाज़िम है कि मैं दूसरे शहरों में भी जाकर अल्लाह की बादशाही की ख़ुशख़बरी सुनाऊँ, क्योंकि मुझे इसी मक़सद के लिए भेजा गया है।”

44 चुनौचे वह यहूदिया के इबादतख़ानों में मुनादी करता रहा।

5

पहले शागिर्दों की बुलाहट

1 एक दिन ईसा गलील की झील गन्नेसरत के किनारे पर खड़ा हुज़ूम को अल्लाह का कलाम सुना रहा था। लोग सुनते सुनते इतने क़रीब आ गए कि उसके लिए जगह कम हो गई। 2 फिर उसे दो कश्तियाँ नज़र आईं जो झील के किनारे लगी थीं। मछिरे उनमें से उतर चुके थे और अब अपने जालों को धो रहे थे। 3 ईसा एक कश्ती पर सवार हुआ। उसने कश्ती के मालिक शमौन से दरखास्त की कि वह कश्ती को किनारे से थोड़ा-सा दूर ले चले। फिर वह कश्ती में बैठा और हुज़ूम को तालीम देने लगा।

4 तालीम देने के इख़िताम पर उसने शमौन से कहा, “अब कश्ती को वहाँ ले जा जहाँ पानी गहरा है और अपने जालों को मछलियाँ पकड़ने के लिए डाल दो।”

5 लेकिन शमौन ने एतराज़ किया, “उस्ताद, हमने तो पूरी रात बड़ी कोशिश की, लेकिन एक भी न पकड़ी। ताहम आपके कहने पर मैं जालों को दुबारा डालूँगा।” 6 यह कहकर उन्होंने गहरे पानी में जाकर अपने जाल डाल दिए। और वाकई, मछलियों का इतना बड़ा गोल जालों में फँस गया कि वह फटने लगे। 7 यह देखकर उन्होंने अपने साथियों को इशारा करके बुलाया ताकि वह दूसरी कश्ती में आकर उनकी मदद करें। वह आए और सबने मिलकर दोनों कश्तियों को इतनी मछलियों से भर दिया कि आख़िरकार दोनों डूबने के खतरे में थीं। 8 जब शमौन पतरस ने यह सब कुछ देखा तो उसने ईसा के सामने मुँह के बल गिरकर कहा, “ख़ुदावंद, मुझसे दूर चले जाएँ। मैं तो गुनाहगार हूँ।” 9 क्योंकि वह

और उसके साथी इतनी मछलियाँ पकड़ने की वजह से सख्त हैरान थे। 10 और जबदी के बेटे याकूब और यूहन्ना की हालत भी यही थी जो शमौन के साथ मिलकर काम करते थे।

लेकिन ईसा ने शमौन से कहा, “मत डर। अब से तू आदमियों को पकड़ा करेगा।”

11 वह अपनी कशितियों को किनारे पर ले आए और सब कुछ छोड़कर ईसा के पीछे हो लिए।

कोढ़ से शफा

12 एक दिन ईसा किसी शहर में से गुज़र रहा था कि वहाँ एक मरीज़ मिला जिसका पूरा जिस्म कोढ़ से मुतअस्सिर था। जब उसने ईसा को देखा तो वह मुँह के बल गिर पड़ा और इत्तिजा की, “ऐ खुदावन्द, अगर आप चाहें तो मुझे पाक-साफ कर सकते हैं।”

13 ईसा ने अपना हाथ बढ़ाकर उसे छुआ और कहा, “मैं चाहता हूँ, पाक-साफ हो जा।” इस पर बीमारी फौरन दूर हो गई। 14 ईसा ने उसे हिदायत की कि वह किसी को न बताए कि क्या हुआ है। उसने कहा, “सीधा बैतुल-मुकद्दस में इमाम के पास जा ताकि वह तेरा मुआयना करे। अपने साथ वह कुरबानी ले जा जिसका तकाज़ा मूसा की शरीअत उनसे करती है जिन्हें कोढ़ से शफा मिलती है। यों अलानिया तसदीक हो जाएगी कि तू वाकई पाक-साफ हो गया है।”

15 ताहम ईसा के बारे में खबर और ज़्यादा तेज़ी से फैलती गई। लोगों के बड़े गुरोह उसके पास आते रहे ताकि उस की बातें सुनें और उसके हाथ से शफा पाएँ। 16 फिर भी वह कई बार उन्हें छोड़कर दुआ करने के लिए वीरान जगहों पर जाया करता था।

मफ़लूज के लिए छत खोली जाती है

17 एक दिन वह लोगों को तालीम दे रहा था। फ़रीसी और शरीअत के आलिम भी गलील और यहूदिया के हर गाँव और यरूशलम से आकर उसके पास बैठे थे। और रब की कुदरत उसे शफा देने के लिए तहरीक दे रही थी। 18 इतने में कुछ आदमी एक मफ़लूज को चारपाई पर डालकर वहाँ पहुँचे। उन्होंने उसे घर के अंदर ईसा के सामने रखने की कोशिश की, 19 लेकिन बेफ़ायदा। घर में इतने लोग थे कि अंदर जाना नामुमकिन था। इसलिए वह आखिरकार छत पर चढ़ गए और कुछ टायलें उधेड़कर छत का एक हिस्सा खोल दिया। फिर उन्होंने चारपाई को मफ़लूज समेत हुज़ूम के दरमियान ईसा के सामने उतारा। 20 जब ईसा ने उनका इमान देखा तो उसने मफ़लूज से कहा, “ऐ आदमी, तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं।”

21 यह सुनकर शरीअत के आलिम और फ़रीसी सोच-बिचार में पड़ गए, “यह किस तरह का बंदा है जो इस क्रिस्म का कुफ़र बकता है? सिर्फ़ अल्लाह ही गुनाह मुआफ़ कर सकता है।”

22 लेकिन ईसा ने जान लिया कि यह क्या सोच रहे हैं, इसलिए उसने पूछा, “तुम दिल में इस तरह की बातें क्यों सोच रहे हो? 23 क्या मफ़लूज से यह कहना ज़्यादा आसान है कि ‘तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं’ या यह कि ‘उठकर चल-फिर’? 24 लेकिन मैं तुमको दिखाता हूँ कि इब्ने-आदम को वाकई दुनिया में गुनाह मुआफ़ करने का इख्तियार है।” यह कहकर वह मफ़लूज से मुखातिब हुआ, “उठ, अपनी चारपाई उठाकर अपने घर चला जा।”

25 लोगों के देखते देखते वह आदमी खड़ा हुआ और अपनी चारपाई उठाकर अल्लाह की हम्दो-सना करते हुए अपने घर चला गया। 26 यह देखकर सब सख्त हैरतज़दा हुए और अल्लाह की तमज़ीद करने लगे। उन पर ख़ौफ़ छा गया और वह कह उठे, “आज हमने नाकाबिले-यक़ीन बातें देखी हैं।”

ईसा मन्ती को बुलाता है

27 इसके बाद ईसा निकलकर एक टैक्स लेनेवाले के पास से गुज़रा जो अपनी चौकी पर बैठा था। उसका नाम लावी था। उसे देखकर ईसा ने कहा, “मेरे पीछे हो ले।” 28 वह उठा और सब कुछ छोड़कर उसके पीछे हो लिया।

29 बाद में उसने अपने घर में ईसा की बड़ी ज़ियाफ़त की। बहुत-से टैक्स लेनेवाले और दीगर मेहमान इसमें शरीक हुए। 30 यह देखकर कुछ फ़रीसियों और उनसे ताल्लुक रखनेवाले शरीअत के आलिमों ने ईसा के शागिर्दों से शिकायत की। उन्होंने कहा, “तुम टैक्स लेनेवालों और गुनाहगारों के साथ क्यों खाते-पीते हो?”

31 ईसा ने जवाब दिया, “सेहतमंदों को डाक्टर की ज़रूरत नहीं होती बल्कि मरीज़ों को। 32 मैं रास्तबाज़ों को नहीं बल्कि गुनाहगारों को बुलाने आया हूँ ताकि वह तौबा करें।”

शागिर्द रोज़ा क्यों नहीं रखते?

33 कुछ लोगों ने ईसा से एक और सवाल पूछा, “यहया के शागिर्द अकसर रोज़ा रखते हैं। और साथ साथ वह दुआ भी करते रहते हैं। फ़रीसियों के शागिर्द भी इसी तरह करते हैं। लेकिन आपके शागिर्द खाने-पीने का सिलसिला जारी रखते हैं।”

34 ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुम शादी के मेहमानों को रोज़ा रखने को कह सकते हो जब दूल्हा उनके दरमियान है? हरगिज़ नहीं!”

35 लेकिन एक दिन आएका जब दूल्हा उनसे ले लिया जाएगा। उस वक़्त वह ज़रूर रोज़ा रखेंगे।”

36 उसने उन्हें यह मिसाल भी दी, “कौन किसी नए लिबास को फाड़कर उसका एक टुकड़ा किसी पुराने लिबास में लगाएगा? कोई भी नहीं! अगर वह ऐसा करे तो न सिर्फ़ नया लिबास ख़राब होगा बल्कि उससे लिया गया टुकड़ा पुराने लिबास को भी ख़राब कर देगा। 37 इसी

तरह कोई भी अंगूर का ताज़ा रस पुरानी और बे-लचक मशकों में नहीं डालेगा। अगर वह ऐसा करे तो पुरानी मशकें पैदा होनेवाली गैस के बाइस फट जाएंगी। नतीजे में मैं और मशकें दोनों ज़ाया हो जाएंगी।³⁸ इसलिए अंगूर का ताज़ा रस नई मशकों में डाला जाता है जो लचकदार होती हैं।³⁹ लेकिन जो भी पुरानी मै पीना पसंद करे वह अंगूर का नया और ताज़ा रस पसंद नहीं करेगा। वह कहेगा कि पुरानी ही बेहतर है।”

6

सबत के बारे में सवाल

¹ एक दिन ईसा अनाज के खेतों में से गुज़र रहा था। चलते चलते उसके शागिर्द अनाज की बालें तोड़ने और अपने हाथों से मलकर खाने लगे। सबत का दिन था।² यह देखकर कुछ फ़रीसियों ने कहा, “तुम यह क्यों कर रहे हो? सबत के दिन ऐसा करना मना है।”

³ ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुमने कभी नहीं पढ़ा कि दाऊद ने क्या किया जब उसे और उसके साथियों को भूक लगी थी? ⁴ वह अल्लाह के घर में दाखिल हुआ और रब के लिए मखसूसशुदा रोटियाँ लेकर खाई, अगरचे सिर्फ़ इमामों को इन्हें खाने की इजाज़त है। और उसने अपने साथियों को भी यह रोटियाँ खिलाई।” ⁵ फिर ईसा ने उनसे कहा, “इब्ने-आदम सबत का मालिक है।”

सूखे हाथ की शफ़ा

⁶ सबत के एक और दिन ईसा इबादतख़ाने में जाकर सिखाने लगा। वहाँ एक आदमी था जिसका दहना हाथ सूखा हुआ था।⁷ शरीअत के आलिम और फ़रीसी बड़े गौर से देख रहे थे कि क्या ईसा इस आदमी को आज भी शफ़ा देगा? क्योंकि वह उस पर इलज़ाम लगाने का कोई बहाना ढूँढ रहे थे।⁸ लेकिन ईसा ने उनकी सोच को जान लिया और उस सूखे हाथवाले आदमी से कहा, “उठ, दरमियान में खड़ा हो।” चुनौचे वह आदमी खड़ा हुआ।⁹ फिर ईसा ने उनसे पूछा, “मुझे बताओ, शरीअत हमें सबत के दिन क्या करने की इजाज़त देती है, नेक काम करने की या ग़लत काम करने की, किसी की जान बचाने की या उसे तबाह करने की?”¹⁰ वह खामोश होकर अपने इर्दगिर्द के तमाम लोगों की तरफ़ देखने लगा। फिर उसने कहा, “अपना हाथ आगे बढ़ा।” उसने ऐसा किया तो उसका हाथ बहाल हो गया।

¹¹ लेकिन वह आपे में न रहे और एक दूसरे से बात करने लगे कि हम ईसा से किस तरह निपट सकते हैं?

ईसा बारह रसूलों को मुक़र्रर करता है

¹² उन्हीं दिनों में ईसा निकलकर दुआ करने के लिए पहाड़ पर चढ़ गया। दुआ करते करते पूरी रात गुज़र गई।¹³ फिर उसने अपने शागिर्दों को अपने पास बुलाकर उनमें से बारह को चुन लिया, जिन्हें उसने अपने रसूल मुक़र्रर किया। उनके नाम यह हैं : ¹⁴ शमौन जिसका लक़ब उसने पतरस रखा, उसका भाई अंदरियास, याक़ूब, यूहन्ना, फ़िलिप्पुस, बरतुलमाई, ¹⁵ मन्ती, तोमा, याक़ूब बिन हलफ़ई, शमौन मुजाहिद, ¹⁶ यहूदाह बिन याक़ूब और यहूदाह इस्करियोती जिसने बाद में उसे दुश्मन के हवाले कर दिया।

ईसा तालीम और शफ़ा देता है

¹⁷ फिर वह उनके साथ पहाड़ से उतरकर एक खुले और हमवार मैदान में खड़ा हुआ। वहाँ शागिर्दों की बड़ी तादाद ने उसे घेर लिया। साथ ही बहुत-से लोग यहूदिया, यरूशलम और सूर और सैदा के साहिली इलाक़े से ¹⁸ उस की तालीम सुनने और बीमारियों से शफ़ा पाने के लिए आए थे। और जिन्हें बदर्हूतें तंग कर रही थीं उन्हें भी शफ़ा मिली। ¹⁹ तमाम लोग उसे छूने की कोशिश कर रहे थे, क्योंकि उसमें से कुव्वत निकलकर सबको शफ़ा दे रही थी।

कौन मुबारक है?

²⁰ फिर ईसा ने अपने शागिर्दों की तरफ़ देखकर कहा,

“मुबारक हो तुम जो ज़रूरतमंद हो,
क्योंकि अल्लाह की बादशाही तुमको ही हासिल है।

²¹ मुबारक हो तुम जो इस वक़्त भूके हो,

क्योंकि सेर हो जाओगे।

मुबारक हो तुम जो इस वक़्त रोते हो,

क्योंकि खुशी से हँसोगे।

²² मुबारक हो तुम जब लोग इसलिए तुमसे नफ़रत करते और तुम्हारा हुक्का-पानी बंद करते हैं कि तुम इब्ने-आदम के पैरोकार बन गए हो। हाँ, मुबारक हो तुम जब वह इसी वज़ह से तुम्हें लान-तान करते और तुम्हारी बदनामी करते हैं।²³ जब वह ऐसा करते हैं तो शादमान होकर खुशी से नाचो, क्योंकि आसमान पर तुमको बड़ा अज़्र मिलेगा। उनके बापदादा ने यही सुलूक नबियों के साथ किया था।

²⁴ मगर तुम पर अफ़सोस जो अब दौलतमंद हो,

क्योंकि तुम्हारा सुकून यहीं ख़त्म हो जाएगा।

²⁵ तुम पर अफ़सोस जो इस वक़्त ख़ूब सेर हो,

क्योंकि बाद में तुम भूके होगे।

तुम पर अफ़सोस जो अब हँस रहे हो,

क्योंकि एक वक्त आया कि रो रोकर मातम करोगे।

26 तुम पर अफसोस जिनकी तमाम लोग तारीफ़ करते हैं, क्योंकि उनके बापदादा ने यही सुलूक झूठे नबियों के साथ किया था।

अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखना

27 लेकिन तुमको जो सुन रहे हो मैं यह बताता हूँ, अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखो, और उनसे भलाई करो जो तुमसे नफरत करते हैं। 28 जो तुम पर लानत करते हैं उन्हें बरकत दो, और जो तुमसे बुरा सुलूक करते हैं उनके लिए दुआ करो। 29 अगर कोई तुम्हारे एक गाल पर थप्पड़ मारे तो उसे दूसरा गाल भी पेश कर दो। इसी तरह अगर कोई तुम्हारी चादर छीन ले तो उसे कमीस लेने से भी न रोको। 30 जो भी तुमसे कुछ माँगता है उसे दो। और जिसने तुमसे कुछ लिया है उससे उसे वापस देने का तकाज़ा न करो। 31 लोगों के साथ वैसा सुलूक करो जैसा तुम चाहते हो कि वह तुम्हारे साथ करें।

32 अगर तुम सिर्फ़ उन्हीं से मुहब्बत करो जो तुमसे करते हैं तो इसमें तुम्हारी क्या खास मेहरबानी होगी? गुनाहगार भी ऐसा ही करते हैं। 33 और अगर तुम सिर्फ़ उन्हीं से भलाई करो जो तुमसे भलाई करते हैं तो इसमें तुम्हारी क्या खास मेहरबानी होगी? गुनाहगार भी ऐसा ही करते हैं। 34 इसी तरह अगर तुम सिर्फ़ उन्हीं को उधार दो जिनके बारे में तुम्हें अंदाज़ा है कि वह वापस कर देंगे तो इसमें तुम्हारी क्या खास मेहरबानी होगी? गुनाहगार भी गुनाहगारों को उधार देते हैं जब उन्हें सब कुछ वापस मिलने का यकीन होता है। 35 नहीं, अपने दुश्मनों से मुहब्बत करो और उन्हीं से भलाई करो। उन्हें उधार दो जिनके बारे में तुम्हें वापस मिलने की उम्मीद नहीं है। फिर तुमको बड़ा अज़ मिलेगा और तुम अल्लाह तआला के फ़रज़ंद साबित होगे, क्योंकि वह भी नाशुक्रों और बुरे लोगों पर नेकी का इज़हार करता है। 36 लाज़िम है कि तुम रहमदिल हो क्योंकि तुम्हारा बाप भी रहमदिल है।

मुंसिफ़ न बनना

37 दूसरों की अदालत न करना तो तुम्हारी भी अदालत नहीं की जाएगी। दूसरों को मुजरिम करार न देना तो तुमको भी मुजरिम करार नहीं दिया जाएगा। मुआफ़ करो तो तुमको भी मुआफ़ कर दिया जाएगा। 38 दो तो तुमको भी दिया जाएगा। हाँ, जिस हिसाब से तुमने दिया उसी हिसाब से तुमको दिया जाएगा, बल्कि पैमाना दबा दबा और हिला हिलाकर और लबरेज़ करके तुम्हारी झोली में डाल दिया जाएगा। क्योंकि जिस पैमाने से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिए नापा जाएगा।”

39 फिर ईसा ने यह मिसाल पेश की। “क्या एक अंधा दूसरे अंधे की राहनुमाई कर सकता है? हरगिज़ नहीं! अगर वह ऐसा करे तो दोनों गढ़े में गिर जाएंगे। 40 शागिर्द अपने उस्ताद से बड़ा नहीं होता बल्कि जब उसे पूरी ट्रेनिंग मिली हो तो वह अपने उस्ताद ही की मानिंद होगा।

41 तू क्यों गौर से अपने भाई की आँख में पड़े तिनके पर नज़र करता है जबकि तुझे वह शहतीर नज़र नहीं आता जो तेरी अपनी आँख में है? 42 तू क्योंकर अपने भाई से कह सकता है, ‘भाई, ठहरो, मुझे तुम्हारी आँख में पड़ा तिनका निकालने दो’ जबकि तुझे अपनी आँख का शहतीर नज़र नहीं आता? रियाकार! पहले अपनी आँख के शहतीर को निकाल। तब ही तुझे भाई का तिनका साफ़ नज़र आएगा और तू उसे अच्छी तरह से देखकर निकाल सकेगा।

दरख़्त उसके फल से पहचाना जाता है

43 न अच्छा दरख़्त ख़राब फल लाता है, न ख़राब दरख़्त अच्छा फल। 44 हर किस्म का दरख़्त उसके फल से पहचाना जाता है। ख़ारदार झाड़ियों से अंजीर या अंगूर नहीं तोड़े जाते। 45 नेक शख्स का अच्छा फल उसके दिल के अच्छे ख़ज़ाने से निकलता है जबकि बुरे शख्स का ख़राब फल उसके दिल की बुराई से निकलता है। क्योंकि जिस चीज़ से दिल भरा होता है वही छलककर मुँह से निकलती है।

दो किस्म के मकान

46 तुम क्यों मुझे ‘ख़ुदावंद, ख़ुदावंद’ कहकर पुकारते हो? मेरी बात पर तो तुम अमल नहीं करते। 47 लेकिन मैं तुमको बताता हूँ कि वह शख्स किसकी मानिंद है जो मेरे पास आकर मेरी बात सुन लेता और उस पर अमल करता है। 48 वह उस आदमी की मानिंद है जिसने अपना मकान बनाने के लिए गहरी बुनियाद की ख़ुदाई करवाई। खोद खोदकर वह चटान तक पहुँच गया। उसी पर उसने मकान की बुनियाद रखी। मकान मुकम्मल हुआ तो एक दिन सैलाब आया। जोर से बहता हुआ पानी मकान से टकराया, लेकिन वह उसे हिला न सका क्योंकि वह मज़बूती से बनाया गया था। 49 लेकिन जो मेरी बात सुनता और उस पर अमल नहीं करता वह उस शख्स की मानिंद है जिसने अपना मकान बुनियाद के बग़ैर ज़मीन पर ही तामीर किया। ज्योंही जोर से बहता हुआ पानी उससे टकराया तो वह गिर गया और सरासर तबाह हो गया।”

7

रोमी अफ़सर के गुलाम की शफ़ा

1 यह सब कुछ लोगों को सुनाने के बाद ईसा कफ़र्नहम चला गया। 2 वहाँ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर एक अफ़सर रहता था। उन दिनों में उसका एक गुलाम जो उसे बहुत अज़ीज़ था बीमार पड़ गया। अब वह मरने को था। 3 चूँकि अफ़सर ने ईसा के बारे में सुना था इसलिए उसने यहूदियों के कुछ बुजुर्ग यह दरखास्त करने के लिए उसके पास भेज दिए कि वह आकर गुलाम को शफ़ा दे। 4 वह ईसा के पास पहुँचकर बड़े जोर से

इल्तिजा करने लगे, “यह आदमी इस लायक है कि आप उस की दरखास्त पूरी करें, ⁵ क्योंकि वह हमारी क़ौम से प्यार करता है, यहाँ तक कि उसने हमारे लिए इबादतख़ाना भी तामीर करवाया है।”

⁶ चुनौचे ईसा उनके साथ चल पड़ा। लेकिन जब वह घर के करीब पहुँच गया तो अफ़सर ने अपने कुछ दोस्त यह कहकर उसके पास भेज दिए कि “ख़ुदावंद, मेरे घर में आने की तकलीफ़ न करें, क्योंकि मैं इस लायक नहीं हूँ। ⁷ इसलिए मैंने ख़ुद को आपके पास आने के लायक भी न समझा। बस वहीं से कह दें तो मेरा गुलाम शफ़ा पा जाएगा। ⁸ क्योंकि मुझे ख़ुद आला अफ़सरों के हुक्म पर चलना पड़ता है और मेरे मातहत भी फ़ौजी हैं। एक को कहता हूँ, ‘जा!’ तो वह जाता है और दूसरे को ‘आ!’ तो वह आता है। इसी तरह मैं अपने नौकर को हुक्म देता हूँ, ‘यह कर!’ तो वह करता है।”

⁹ यह सुनकर ईसा निहायत हैरान हुआ। उसने मुड़कर अपने पीछे आनेवाले हुज़ूम से कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ, मैंने इसराइल में भी इस क्रिस्म का ईमान नहीं पाया।”

¹⁰ जब अफ़सर का पैग़ाम पहुँचानेवाले घर वापस आए तो उन्होंने देखा कि गुलाम की सेहत बहाल हो चुकी है।

बेवा का बेटा ज़िंदा किया जाता है

¹¹ कुछ देर के बाद ईसा अपने शागिर्दों के साथ नायन शहर के लिए रवाना हुआ। एक बड़ा हुज़ूम भी साथ चल रहा था। ¹² जब वह शहर के दरवाज़े के करीब पहुँचा तो एक जनाज़ा निकला। जो नौजवान फ़ौत हुआ था उस की माँ बेवा थी और वह उसका इकलौता बेटा था। माँ के साथ शहर के बहुत-से लोग चल रहे थे। ¹³ उसे देखकर ख़ुदावंद को उस पर बड़ा तरस आया। उसने उससे कहा, “मत रो।” ¹⁴ फिर वह जनाज़े के पास गया और उसे छुआ। उसे उठानेवाले स्क गए तो ईसा ने कहा, “ऐ नौजवान, मैं तुझे कहता हूँ कि उठ!” ¹⁵ मुरदा उठ बैठा और बोलने लगा। ईसा ने उसे उस की माँ के सुपुर्द कर दिया।

¹⁶ यह देखकर तमाम लोगों पर ख़ौफ़ तारी हो गया और वह अल्लाह की तमज़ीद करके कहने लगे, “हमारे दरमियान एक बड़ा नबी बरपा हुआ है। अल्लाह ने अपनी क़ौम पर नज़र की है।”

¹⁷ और ईसा के बारे में यह ख़बर पूरे यहूदिया और इर्दगिर्द के इलाक़े में फैल गई।

यहया का ईसा से सवाल

¹⁸ यहया को भी अपने शागिर्दों की मारिफ़त इन तमाम वाक़ियात के बारे में पता चला। इस पर उसने दो शागिर्दों को बुलाकर ¹⁹ उन्हें यह पूछने के लिए ख़ुदावंद के पास भेजा, “क्या आप वही हैं जिसे आना है या हम किसी और के इंतज़ार में रहें?”

²⁰ चुनौचे यह शागिर्द ईसा के पास पहुँचकर कहने लगे, “यहया बपतिस्मा देनेवाले ने हमें यह पूछने के लिए भेजा है कि क्या आप वही हैं जिसे आना है या हम किसी और का इंतज़ार करें?”

²¹ ईसा ने उसी वक़्त बहुत-से लोगों को शफ़ा दी थी जो मुख़्तलिफ़ क्रिस्म की बीमारियों, मुसीबतों और बदर्स्हों की गिरिफ़्त में थे। अंधों की आँखें भी बहाल हो गई थीं। ²² इसलिए उसने जवाब में यहया के कासिदों से कहा, “यहया के पास वापस जाकर उसे सब कुछ बता देना जो तुमने देखा और सुना है। ‘अंधे देखते, लँगड़े चलते-फिरते हैं, कोढ़ियों को पाक-साफ़ किया जाता है, बहरे सुनते हैं, मुरदों को ज़िंदा किया जाता है और ग़रीबों को अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाई जाती है।’ ²³ यहया को बताओ, ‘मुबारक है वह जो मेरे सबब से ठोकर खाकर बरग़श्ता नहीं होता।’”

²⁴ यहया के यह कासिद चले गए तो ईसा हुज़ूम से यहया के बारे में बात करने लगा, “तुम रेगिस्तान में क्या देखने गए थे? एक सरकंडा जो हवा के हर झोंके से हिलता है? बेशक नहीं। ²⁵ या क्या वहाँ जाकर ऐसे आदमी की तवक्क़ो कर रहे थे जो नफ़ीस और मुलायम लिबास पहने हुए हैं? नहीं, जो शानदार कपड़े पहनते और ऐशो-इशरत में ज़िंदगी गुज़ारते हैं वह शाही महलों में पाए जाते हैं। ²⁶ तो फिर तुम क्या देखने गए थे? एक नबी को? बिल्कुल सहीह, बल्कि मैं तुमको बताता हूँ कि वह नबी से भी बड़ा है। ²⁷ उसी के बारे में कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, ‘देख मैं अपने पैग़ंबर को तेरे आगे आगे भेज देता हूँ जो तेरे सामने रास्ता तैयार करेगा।’ ²⁸ मैं तुमको बताता हूँ कि इस दुनिया में पैदा होनेवाला कोई भी शख्स यहया से बड़ा नहीं है। तो भी अल्लाह की बादशाही में दाख़िल होनेवाला सबसे छोटा शख्स उससे बड़ा है।”

²⁹ बात यह थी कि तमाम क़ौम बशमूल टैक्स लेनेवालों ने यहया का पैग़ाम सुनकर अल्लाह का इनसाफ़ मान लिया और यहया से बपतिस्मा लिया था। ³⁰ सिर्फ़ फ़रीसी और शरीअत के उलमा ने अपने बारे में अल्लाह की मरज़ी को रद्द करके यहया का बपतिस्मा लेने से इनकार किया था।

³¹ ईसा ने बात जारी रखी, “चुनौचे मैं इस नसल के लोगों को किससे तशबीह दूँ? वह किससे मुताबिक़त रखते हैं? ³² वह उन बच्चों की मानिंद हैं जो बाज़ार में बैठे खेल रहे हैं। उनमें से कुछ ऊँची आवाज़ से दूसरे बच्चों से शिकायत कर रहे हैं, ‘हमने बाँसरी बजाई तो तुम न नाचे। फिर हमने नोहा के गीत गाए, लेकिन तुम न रोए।’ ³³ देखो, यहया बपतिस्मा देनेवाला आया और न रोटी खाई, न मै पी। यह देखकर तुम कहते हो कि उसमें बदर्स्ह है। ³⁴ फिर इब्ने-आदम खाता और पीता हुआ आया। अब तुम कहते हो, ‘देखो यह कैसा पेटू और शराबी है। और वह टैक्स लेनेवालों और गुनाहगारों का दोस्त भी है।’ ³⁵ लेकिन हिकमत अपने तमाम बच्चों से ही सहीह साबित हुई है।”

ईसा शमौन फ़रीसी के घर में

36 एक फरीसी ने ईसा को खाना खाने की दावत दी। ईसा उसके घर जाकर खाना खाने के लिए बैठ गया। 37 उस शहर में एक बदचलन औरत रहती थी। जब उसे पता चला कि ईसा उस फरीसी के घर में खाना खा रहा है तो वह इत्रदान में बेशक्रीमत इत्र लाकर 38 पीछे से उसके पाँवों के पास खड़ी हो गई। वह रो पड़ी और उसके आँसू टपक टपककर ईसा के पाँवों को तर करने लगे। फिर उसने उसके पाँवों को अपने बालों से पोंछकर उन्हें चूमा और उन पर इत्र डाला। 39 जब ईसा के फरीसी मेज़बान ने यह देखा तो उसने दिल में कहा, “अगर यह आदमी नबी होता तो उसे मालूम होता कि यह किस किस्म की औरत है जो उसे छू रही है, कि यह गुनाहगार है।”

40 ईसा ने इन खयालात के जवाब में उससे कहा, “शमौन, मैं तुझे कुछ बताना चाहता हूँ।”

उसने कहा, “जी उस्ताद, बताएँ।”

41 ईसा ने कहा, “एक साहूकार के दो कर्जदार थे। एक को उसने चाँदी के 500 सिक्के दिए थे और दूसरे को 50 सिक्के। 42 लेकिन दोनों अपना कर्ज अदा न कर सके। यह देखकर उसने दोनों का कर्ज मुआफ़ कर दिया। अब मुझे बता, दोनों कर्जदारों में से कौन उसे ज्यादा अज़ीज़ रखेगा?”

43 शमौन ने जवाब दिया, “मेरे खयाल में वह जिसे ज्यादा मुआफ़ किया गया।”

ईसा ने कहा, “तूने ठीक अंदाज़ा लगाया है।” 44 और औरत की तरफ मुड़कर उसने शमौन से बात जारी रखी, “क्या तू इस औरत को देखता है? 45 जब मैं इस घर में आया तो तूने मुझे पाँव धोने के लिए पानी न दिया। लेकिन इसने मेरे पाँवों को अपने आँसुओं से तर करके अपने बालों से पोंछकर खुशक कर दिया है। तूने मुझे बोसा न दिया, लेकिन यह मेरे अंदर आने से लेकर अब तक मेरे पाँवों को चूमने से बाज़ नहीं रही। 46 तूने मेरे सर पर जैतून का तेल न डाला, लेकिन इसने मेरे पाँवों पर इत्र डाला। 47 इसलिए मैं तुझे बताता हूँ कि इसके गुनाहों को गो वह बहुत हैं मुआफ़ कर दिया गया है, क्योंकि इसने बहुत मुहब्बत का इज़हार किया है। लेकिन जिसे कम मुआफ़ किया गया हो वह कम मुहब्बत रखता है।”

48 फिर ईसा ने औरत से कहा, “तेरे गुनाहों को मुआफ़ कर दिया गया है।”

49 यह सुनकर जो साथ बैठे थे आपस में कहने लगे, “यह किस किस्म का शख्स है जो गुनाहों को भी मुआफ़ करता है?”

50 लेकिन ईसा ने ख़ातून से कहा, “तेरे इमान ने तुझे बचा लिया है। सलामती से चली जा।”

8

खिदमतगुज़ार ख़वातीन ईसा के साथ सफ़र करती हैं

1 इसके कुछ देर बाद ईसा मुख्तलिफ़ शहरों और देहातों में से गुज़रकर सफ़र करने लगा। हर जगह उसने अल्लाह की बादशाही के बारे में खुशख़बरी सुनाई। उसके बारह शागिर्द उसके साथ थे, 2 नीज़ कुछ ख़वातीन भी जिन्हें उसने बदरूहों से रिहाई और बीमारियों से शफ़ा दी थी। इनमें से एक मरियम थी जो मग़दलीनी कहलाती थी जिसमें से सात बदरूहें निकाली गई थीं। 3 फिर युअन्ना जो ख़ूज़ा की बीवी थी (ख़ूज़ा हेरोदेस बादशाह का एक अफ़सर था)। सूसन्ना और दीगर कई ख़वातीन भी थीं जो अपने माली वसायल से उनकी खिदमत करती थीं।

बीज बोनेवाले की तमसील

4 एक दिन ईसा ने एक बड़े हुज़म को एक तमसील सुनाई। लोग मुख्तलिफ़ शहरों से उसे सुनने के लिए जमा हो गए थे।

5 “एक किसान बीज बोने के लिए निकला। जब बीज इधर उधर बिखर गया तो कुछ दाने रास्ते पर गिरे। वहाँ उन्हें पाँवों तले कुचला गया और परिदों ने उन्हें चुग लिया। 6 कुछ पथरीली ज़मीन पर गिरे। वहाँ वह उगने तो लगे, लेकिन नमी की कमी थी, इसलिए पौदे कुछ देर के बाद सूख गए। 7 कुछ दाने खुदरौ काँटेदार पौदों के दरमियान भी गिरे। वहाँ वह उगने तो लगे, लेकिन खुदरौ पौदों ने साथ साथ बढ़कर उन्हें फलने फूलने की जगह न दी। चुनाँचे वह भी ख़त्म हो गए। 8 लेकिन ऐसे दाने भी थे जो ज़रखेज़ ज़मीन पर गिरे। वहाँ वह उग सके और जब फ़सल पक गई तो सौ गुना ज्यादा फल पैदा हुआ।”

यह कहकर ईसा पुकार उठा, “जो सुन सकता है वह सुन ले!”

तमसीलों का मक़सद

9 उसके शागिर्दों ने उससे पूछा कि इस तमसील का क्या मतलब है? 10 जवाब में उसने कहा, “तुमको तो अल्लाह की बादशाही के भेद समझने की लियाक़त दी गई है। लेकिन मैं दूसरों को समझाने के लिए तमसीलें इस्तेमाल करता हूँ ताकि पाक कलाम पूरा हो जाए कि ‘वह अपनी आँखों से देखेंगे मगर कुछ नहीं जानेंगे, वह अपने कानों से सुनेंगे मगर कुछ नहीं समझेंगे।’

बीज बोनेवाले की तमसील का मतलब

11 तमसील का मतलब यह है : बीज से मुराद अल्लाह का कलाम है। 12 राह पर गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम सुनते तो हैं, लेकिन फिर इबलीस आकर उसे उनके दिलों से छीन लेता है, ऐसा न हो कि वह इमान लाकर नज़ात पाएँ। 13 पथरीली ज़मीन पर गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम सुनकर उसे खुशी से कबूल तो कर लेते हैं, लेकिन जड़ नहीं पकड़ते। नतीजे में अगरचे वह कुछ देर के लिए इमान रखते हैं तो भी जब किसी आजमाइश का सामना करना पड़ता है तो वह बरग़स्ता हो जाते हैं। 14 खुदरौ काँटेदार पौदों के दरमियान गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो सुनते तो हैं, लेकिन जब वह चले जाते हैं तो रोज़मर्रा की परेशानियों, दौलत और ज़िंदगी की ऐशो-इशरत उन्हें फलने फूलने नहीं देती। नतीजे

में वह फल लाने तक नहीं पहुँचते। 15 इसके मुकाबले में जरखेज जमीन में गिरे हुए दाने वह लोग हैं जिनका दिल दिया नतदार और अच्छा है। जब वह कलाम सुनते हैं तो वह उसे अपनाते और साबितकदमी से तरक्की करते करते फल लाते हैं।

कोई चराग को बरतन के नीचे नहीं छुपाता

16 जब कोई चराग जलाता है तो वह उसे किसी बरतन या चारपाई के नीचे नहीं रखता, बल्कि उसे शमादान पर रख देता है ताकि उस की रौशनी अंदर आनेवालों को नज़र आए।

17 जो कुछ भी इस वक्रत पोशीदा है वह आखिर में जाहिर हो जाएगा, और जो कुछ भी छुपा हुआ है वह मालूम हो जाएगा और रौशनी में लाया जाएगा।

18 चुनौचे इस पर ध्यान दो कि तुम किस तरह सुनते हो। क्योंकि जिसके पास कुछ है उसे और दिया जाएगा, जबकि जिसके पास कुछ नहीं है उससे वह भी छीन लिया जाएगा जिसके बारे में वह खयाल करता है कि उसका है।”

ईसा की माँ और भाई

19 एक दिन ईसा की माँ और भाई उसके पास आए, लेकिन वह हुजूम की वजह से उस तक न पहुँच सके। 20 चुनौचे ईसा को इतला दी गई, “आपकी माँ और भाई बाहर खड़े हैं और आपसे मिलना चाहते हैं।”

21 उसने जवाब दिया, “मेरी माँ और भाई वह सब हैं जो अल्लाह का कलाम सुनकर उस पर अमल करते हैं।”

ईसा आँधी को थमा देता है

22 एक दिन ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, “आओ, हम झील को पार करें।” चुनौचे वह कश्ती पर सवार होकर रवाना हुए। 23 जब कश्ती चली जा रही थी तो ईसा सो गया। अचानक झील पर आँधी आई। कश्ती पानी से भरने लगी और डूबने का खतरा था। 24 फिर उन्होंने ईसा के पास जाकर उसे जगा दिया और कहा, “उस्ताद, उस्ताद, हम तबाह हो रहे हैं।”

वह जाग उठा और आँधी और मौजों को डाँटा। आँधी थम गई और लहरें बिल्कुल साकित हो गईं। 25 फिर उसने शागिर्दों से पूछा, “तुम्हारा ईमान कहाँ है?”

उन पर खौफ तारी हो गया और वह सख्त हैरान होकर आपस में कहने लगे, “आखिर यह कौन है? वह हवा और पानी को भी हुक्म देता है, और वह उस की मानते हैं।”

ईसा एक गरासीनी आदमी से बदरूहें निकाल देता है

26 फिर वह सफ़र जारी रखते हुए गरासा के इलाके के किनारे पर पहुँचे जो झील के पार गलील के मुकाबिल है। 27 जब ईसा कश्ती से उतरा तो शहर का एक आदमी ईसा को मिला जो बदरूहों की गिरिफ्त में था। वह काफी देर से कपड़े पहने बग़ैर चलता-फिरता था और अपने घर के बजाए कब्रों में रहता था। 28 ईसा को देखकर वह चिल्लाया और उसके सामने गिर गया। ऊँची आवाज़ से उसने कहा, “ईसा अल्लाह तआला के फरज़द, मेरा आपके साथ क्या वास्ता है? मैं मिनत करता हूँ, मुझे अजाब में न डालें।” 29 क्योंकि ईसा ने नापाक रूह को हुक्म दिया था, “आदमी में से निकल जा!” इस बदरूह ने बड़ी देर से उस पर कब्ज़ा किया हुआ था, इसलिए लोगों ने उसके हाथ-पोंव जंजीरों से बाँधकर उस की पहरादारी करने की कोशिश की थी, लेकिन बेफ़ायदा। वह जंजीरों को तोड़ डालता और बदरूह उसे वीरान इलाकों में भगाए फिरती थी।

30 ईसा ने उससे पूछा, “तेरा नाम क्या है?” उसने जवाब दिया, “लशकर।” इस नाम की वजह यह थी कि उसमें बहुत-सी बदरूहें घुसी हुई थीं। 31 अब यह मिनत करने लगी, “हमें अथाह गढ़े में जाने को न कहें।”

32 उस वक्रत करीब की पहाड़ी पर सुअरों का बड़ा गोल चर रहा था। बदरूहों ने ईसा से इलतमास की, “हमें उन सुअरों में दाखिल होने दें।” उसने इजाज़त दे दी। 33 चुनौचे वह उस आदमी में से निकलकर सुअरों में जा घुसी। इस पर पूरे गोल के सुअर भाग भागकर पहाड़ी की ढलान पर से उतरे और झील में झपटकर डूब मरे।

34 यह देखकर सुअरों के गल्लाबान भाग गए। उन्होंने शहर और देहात में इस बात का चर्चा किया 35 तो लोग यह मालूम करने के लिए कि क्या हुआ है अपनी जगहों से निकलकर ईसा के पास आए। उसके पास पहुँचे तो वह आदमी मिला जिससे बदरूहें निकल गई थीं। अब वह कपड़े पहने ईसा के पोंवों में बैठा था और उस की जहनी हालत ठीक थी। यह देखकर वह डर गए। 36 जिन्होंने सब कुछ देखा था उन्होंने लोगों को बताया कि इस बदरूह-गिरिफ्त आदमी को किस तरह रिहाई मिली है। 37 फिर उस इलाके के तमाम लोगों ने ईसा से दरखास्त की कि वह उन्हें छोड़कर चला जाए, क्योंकि उन पर बड़ा खौफ छा गया था। चुनौचे ईसा कश्ती पर सवार होकर वापस चला गया। 38 जिस आदमी से बदरूहें निकल गई थी उसने उससे इलतमास की, “मुझे भी अपने साथ जाने दें।”

लेकिन ईसा ने उसे इजाज़त न दी बल्कि कहा, 39 “अपने घर वापस चला जा और दूसरों को वह सब कुछ बता जो अल्लाह ने तेरे लिए किया है।”

चुनौचे वह वापस चला गया और पूरे शहर में लोगों को बताने लगा कि ईसा ने मेरे लिए क्या कुछ किया है।

याईर की बेटी और बीमार खातून

40 जब ईसा झील के दूसरे किनारे पर वापस पहुँचा तो लोगों ने उसका इस्तकबाल किया, क्योंकि वह उसके इंतजार में थे। 41 इतने में एक आदमी ईसा के पास आया जिसका नाम याईर था। वह मकामी इबादतखाने का राहनुमा था। वह ईसा के पाँवों में गिरकर मिन्नत करने लगा, “मेरे घर चलो।” 42 क्योंकि उस की इकलौती बेटी जो तकरीबन बारह साल की थी मरने को थी।

ईसा चल पड़ा। हुजूम ने उसे यों घेरा हुआ था कि साँस लेना भी मुश्किल था। 43 हुजूम में एक खातून थी जो बारह साल से खून बहने के मरज़ से रिहाई न पा सकी थी। कोई उसे शफा न दे सका था। 44 अब उसने पीछे से आकर ईसा के लिबास के किनारे को छुआ। खून बहना फौरन बंद हो गया। 45 लेकिन ईसा ने पूछा, “किसने मुझे छुआ है?”

सबने इनकार किया और पतरस ने कहा, “उस्ताद, यह तमाम लोग तो आपको घेरकर दबा रहे हैं।”

46 लेकिन ईसा ने इसरार किया, “किसी ने ज़रूर मुझे छुआ है, क्योंकि मुझे महसूस हुआ है कि मुझमें से तवानाई निकली है।” 47 जब उस खातून ने देखा कि भेद खुल गया तो वह लरज़ती हुई आई और उसके सामने गिर गई। पूरे हुजूम की मौजूदगी में उसने बयान किया कि उसने ईसा को क्यों छुआ था और कि छूते ही उसे शफा मिल गई थी। 48 ईसा ने कहा, “बेटी, तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया है। सलामती से चली जा।”

49 ईसा ने यह बात अभी खत्म नहीं की थी कि इबादतखाने के राहनुमा याईर के घर से कोई शख्स आ पहुँचा। उसने कहा, “आपकी बेटी फौत हो चुकी है, अब उस्ताद को मज़ीद तकलीफ न दें।”

50 लेकिन ईसा ने यह सुनकर कहा, “मत घबरा। फ़कत ईमान रख तो वह बच जाएगी।”

51 वह घर पहुँच गए तो ईसा ने किसी को भी सिवाए पतरस, यूहन्ना, याकूब और बेटी के वालिदेन के अंदर आने की इजाज़त न दी। 52 तमाम लोग रो रहे और छाती पीट पीटकर मातम कर रहे थे। ईसा ने कहा, “खामोश! वह मर नहीं गई बल्कि सो रही है।”

53 लोग हँसकर उसका मज़ाक उड़ाने लगे, क्योंकि वह जानते थे कि लड़की मर गई है। 54 लेकिन ईसा ने लड़की का हाथ पकड़कर ऊँची आवाज़ से कहा, “बेटी, जाग उठ!” 55 लड़की की जान वापस आ गई और वह फौरन उठ खड़ी हुई। फिर ईसा ने हुक्म दिया कि उसे कुछ खाने को दिया जाए। 56 यह सब कुछ देखकर उसके वालिदेन हैरतज़दा हुए। लेकिन उसने उन्हें कहा कि इसके बारे में किसी को भी न बताता।

9

ईसा बारह रसूलों को तबलीग करने भेज देता है

1 इसके बाद ईसा ने अपने बारह शागिर्दों को इकट्ठा करके उन्हें बदरूहों को निकालने और मरीज़ों को शफा देने की कुव्वत और इख्तियार दिया। 2 फिर उसने उन्हें अल्लाह की बादशाही की मुनादी करने और शफा देने के लिए भेज दिया। 3 उसने कहा, “सफ़र पर कुछ साथ न लेना। न लाठी, न सामान के लिए बैग, न रोटी, न पैसे और न एक से ज़्यादा सूट। 4 जिस घर में भी तुम जाते हो उसमें उस मकाम से चले जाने तक ठहरो। 5 और अगर मकामी लोग तुमको क़बूल न करें तो फिर उस शहर से निकलते वक़्त उस की गर्द अपने पाँवों से झाड़ दो। यों तुम उनके खिलाफ़ गवाही दोगे।”

6 चुनाँचे वह निकलकर गाँव गाँव जाकर अल्लाह की खुशख़बरी सुनाने और मरीज़ों को शफा देने लगे।

हेरोदेस अंतिपास परेशान हो जाता है

7 जब गलील के हुक्मरान हेरोदेस अंतिपास ने सब कुछ सुना जो ईसा कर रहा था तो वह उलझन में पड़ गया। बाज़ तो कह रहे थे कि यहया बपतिस्मा देनेवाला जी उठा है। 8 औरों का खयाल था कि इलियास नबी ईसा में ज़ाहिर हुआ है या कि कदीम ज़माने का कोई और नबी जी उठा है। 9 लेकिन हेरोदेस ने कहा, “मैंने खुद यहया का सर कलम करवाया था। तो फिर यह कौन है जिसके बारे में मैं इस किस्म की बातें सुनता हूँ?” और वह उससे मिलने की कोशिश करने लगा।

ईसा 5000 अफ़राद को खाना खिलाता है

10 रसूल वापस आए तो उन्होंने ईसा को सब कुछ सुनाया जो उन्होंने किया था। फिर वह उन्हें अलग ले जाकर बैत-सैदा नामी शहर में आया। 11 लेकिन जब लोगों को पता चला तो वह उनके पीछे वहाँ पहुँच गए। ईसा ने उन्हें आने दिया और अल्लाह की बादशाही के बारे में तालीम दी। साथ साथ उसने मरीज़ों को शफा भी दी। 12 जब दिन ढलने लगा तो बारह शागिर्दों ने पास आकर उससे कहा, “लोगों को ख़सत कर दें ताकि वह इर्दगिर्द के देहातों और बस्तियों में जाकर रात ठहरने और खाने का बंदोबस्त कर सकें, क्योंकि इस वीरान जगह में कुछ नहीं मिलेगा।”

13 लेकिन ईसा ने उन्हें कहा, “तुम खुद इन्हें कुछ खाने को दो।”

उन्होंने जवाब दिया, “हमारे पास सिर्फ पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं। या क्या हम जाकर इन तमाम लोगों के लिए खाना खरीद लाएँ?”

14 (वहाँ तकरीबन 5,000 मर्द थे।)

ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, “तमाम लोगों को गुरोहों में तकसीम करके बिठा दो। हर गुरोह पचास अफ़राद पर मुश्तमिल हो।”

15 शागिर्दों ने ऐसा ही किया और सबको बिठा दिया। 16 इस पर ईसा ने उन पाँच रोटियों और दो मछलियों को लेकर आसमान की तरफ नज़र उठाई और उनके लिए शक्रगुजारी की दुआ की। फिर उसने उन्हें तोड़ तोड़कर शागिर्दों को दिया ताकि वह लोगों में तकसीम करें। 17 और सबने जी भरकर खाया। इसके बाद जब बचे हुए टुकड़े जमा किए गए तो बारह टोकरे भर गए।

पतरस का इकरार

18 एक दिन ईसा अकेला दुआ कर रहा था। सिर्फ शागिर्द उसके साथ थे। उसने उनसे पूछा, “मैं आम लोगों के नज़दीक कौन हूँ?”

19 उन्होंने जवाब दिया, “कुछ कहते हैं यहया बपतिस्मा देनेवाला, कुछ यह कि आप इलियास नबी हैं। कुछ यह भी कहते हैं कि कदीम ज़माने का कोई नबी जी उठा है।”

20 उसने पूछा, “लेकिन तुम क्या कहते हो? तुम्हारे नज़दीक मैं कौन हूँ?”

पतरस ने जवाब दिया, “आप अल्लाह के मसीह हैं।”

ईसा अपनी मौत का जिक्र करता है

21 यह सुनकर ईसा ने उन्हें यह बात किसी को भी बताने से मना किया। 22 उसने कहा, “लाज़िम है कि इब्ने-आदम बहुत दुख उठाकर बुजुर्गों, राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा से रद्द किया जाए। उसे क़त्ल भी किया जाएगा, लेकिन तीसरे दिन वह जी उठेगा।”

23 फिर उसने सबसे कहा, “जो मेरे पीछे आना चाहे वह अपने आपका इनकार करे और हर रोज़ अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे हो ले। 24 क्योंकि जो अपनी जान को बचाए रखना चाहे वह उसे खो देगा। लेकिन जो मेरी खातिर अपनी जान खो दे वही उसे बचाएगा। 25 क्या फ़ायदा है अगर किसी को पूरी दुनिया हासिल हो जाए मगर वह अपनी जान से महसूस हो जाए या उसे इसका नुक़सान उठाना पड़े? 26 जो भी मेरे और मेरी बातों के सबब से शरमाए उससे इब्ने-आदम भी उस वक़्त शरमाएगा जब वह अपने और अपने बाप के और मुक़द्दस फ़रिश्तों के जलाल में आएगा। 27 मैं तुमको सच बताता हूँ, यहाँ कुछ ऐसे लोग खड़े हैं जो मरने से पहले ही अल्लाह की बादशाही को देखेंगे।”

ईसा की सूरत बदल जाती है

28 तक़रीबन आठ दिन गुज़र गए। फिर ईसा पतरस, याक़ूब और यूहन्ना को साथ लेकर दुआ करने के लिए पहाड़ पर चढ़ गया। 29 वहाँ दुआ करते करते उसके चेहरे की सूरत बदल गई और उसके कपड़े सफ़ेद होकर बिजली की तरह चमकने लगे। 30 अचानक दो मर्द ज़ाहिर होकर उससे मुखातिब हुए। एक मूसा और दूसरा इलियास था। 31 उनकी शक्ल-सूरत पुरजलाल थी। वह ईसा से इसके बारे में बात करने लगे कि वह किस तरह अल्लाह का मक़सद पूरा करके यस्शलम में इस दुनिया से कूच कर जाएगा। 32 पतरस और उसके साथियों को गहरी नींद आ गई थी, लेकिन जब वह जाग उठे तो ईसा का जलाल देखा और यह कि दो आदमी उसके साथ खड़े हैं। 33 जब वह मर्द ईसा को छोड़कर खाना होने लगे तो पतरस ने कहा, “उस्ताद, कितनी अच्छी बात है कि हम यहाँ हैं। आँ, हम तीन झोंपड़ियाँ बनाएँ, एक आपके लिए, एक मूसा के लिए और एक इलियास के लिए।” लेकिन वह नहीं जानता था कि क्या कह रहा है।

34 यह कहते ही एक बादल आकर उन पर छा गया। जब वह उसमें दाख़िल हुए तो दहशतज़दा हो गए। 35 फिर बादल से एक आवाज़ सुनाई दी, “यह मेरा चुना हुआ फ़रिश्त है, इसकी सुनो।”

36 आवाज़ ख़त्म हुई तो ईसा अकेला ही था। और उन दिनों में शागिर्दों ने किसी को भी इस वाक़िये के बारे में न बताया बल्कि ख़ामोश रहे।

ईसा लड़के में से बदरूह निकालता है

37 अगले दिन वह पहाड़ से उतर आए तो एक बड़ा हुज़ूम ईसा से मिलने आया। 38 हुज़ूम में से एक आदमी ने ऊँची आवाज़ से कहा, “उस्ताद, मेहरबानी करके मेरे बेटे पर नज़र करें। वह मेरा इकलौता बेटा है। 39 एक बदरूह उसे बार बार अपनी गिरिफ़्त में ले लेती है। फिर वह अचानक चीखें मारने लगता है। बदरूह उसे झँझोड़कर इतना तंग करती है कि उसके मुँह से झाग निकलने लगता है। वह उसे कुचल कुचलकर मुश्किल से छोड़ती है। 40 मैंने आपके शागिर्दों से दरखास्त की थी कि वह उसे निकालें, लेकिन वह नाकाम रहे।”

41 ईसा ने कहा, “ईमान से ख़ाली और टेढ़ी नसल! मैं कब तक तुम्हारे पास रहूँ, कब तक तुम्हें बरदाश्त करूँ?” फिर उसने आदमी से कहा, “अपने बेटे को ले आ।”

42 बेटा ईसा के पास आ रहा था तो बदरूह उसे ज़मीन पर पटककर झँझोड़ने लगी। लेकिन ईसा ने नापाक रूह को डॉटकर बच्चे को शफ़ा दी। फिर उसने उसे वापस बाप के सुपुर्द कर दिया। 43 तमाम लोग अल्लाह की अज़ीम कुदरत को देखकर हक्का-बक्का रह गए।

ईसा की मौत का दूसरा एलान

अभी सब उन तमाम कामों पर ताज्जुब कर रहे थे जो ईसा ने हाल ही में किए थे कि उसने अपने शागिर्दों से कहा, 44 “मेरी इस बात पर ख़ूब ध्यान दो, इब्ने-आदम को आदमियों के हवाले कर दिया जाएगा।” 45 लेकिन शागिर्द इसका मतलब न समझे। यह बात उनसे पोशीदा रही और वह इसे समझ न सके। नीज़, वह ईसा से इसके बारे में पूछने से डरते भी थे।

कौन सबसे बड़ा है?

46 फिर शागिर्द बहस करने लगे कि हममें से कौन सबसे बड़ा है। 47 लेकिन ईसा जानता था कि वह क्या सोच रहे हैं। उसने एक छोटे बच्चे को लेकर अपने पास खड़ा किया 48 और उनसे कहा, “जो मेरे नाम में इस बच्चे को क़बूल करता है वह मुझे ही क़बूल करता है। और जो मुझे क़बूल करता है वह उसे क़बूल करता है जिसने मुझे भेजा है। चुनौचे तुममें से जो सबसे छोटा है वही बड़ा है।”

जो तुम्हारे खिलाफ़ नहीं वह तुम्हारे हक़ में है

49 यूहन्ना बोल उठा, “उस्ताद, हमने किसी को देखा जो आपका नाम लेकर बदरूहें निकाल रहा था। हमने उसे मना किया, क्योंकि वह हमारे साथ मिलकर आपकी पैरवी नहीं करता।”

50 लेकिन ईसा ने कहा, “उसे मना न करना, क्योंकि जो तुम्हारे खिलाफ नहीं वह तुम्हारे हक में है।”

एक सामरी गाँव ईसा को ठहरने नहीं देता

51 जब वह वक्रत करीब आया कि ईसा को आसमान पर उठा लिया जाए तो वह बड़े अज़म के साथ यरूशलम की तरफ सफ़र करने लगा। 52 इस मक़सद के तहत उसने अपने आगे कासिद भेज दिए। चलते चलते वह सामरियों के एक गाँव में पहुँचे जहाँ वह उसके लिए ठहरने की जगह तैयार करना चाहते थे। 53 लेकिन गाँव के लोगों ने ईसा को ठिकने न दिया, क्योंकि उस की मनज़िले-मक़सूद यरूशलम थी। 54 यह देखकर उसके शागिर्द याकूब और यूहन्ना ने कहा, “ख़ुदावंद, क्या [इलियास की तरह] हम कहें कि आसमान पर से आग नाज़िल होकर इनको भस्म कर दे?”

55 लेकिन ईसा ने मुड़कर उन्हें डाँटा [और कहा, “तुम नहीं जानते कि तुम किस किस की रूह के हो। इब्ने-आदम इसलिए नहीं आया कि लोगों को हलाक करे बल्कि इसलिए कि उन्हें बचाए।”] 56 चुनौचे वह किसी और गाँव में चले गए।

पैरवी की संजीदगी

57 सफ़र करते करते किसी ने रास्ते में ईसा से कहा, “जहाँ भी आप जाएँ मैं आपके पीछे चलता रहूँगा।”

58 ईसा ने जवाब दिया, “लोमडियाँ अपने भटों में और परिंदे अपने घोंसलों में आराम कर सकते हैं, लेकिन इब्ने-आदम के पास सर रखकर आराम करने की कोई जगह नहीं।”

59 किसी और से उसने कहा, “मेरे पीछे हो ले।”

लेकिन उस आदमी ने कहा, “ख़ुदावंद, मुझे पहले जाकर अपने बाप को दफ़न करने की इजाज़त दें।”

60 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “मुरदों को अपने मुरदे दफ़नाने दे। तू जाकर अल्लाह की बादशाही की मुनादी कर।”

61 एक और आदमी ने यह माज़रत चाही, “ख़ुदावंद, मैं ज़रूर आपके पीछे हो लूँगा। लेकिन पहले मुझे अपने घरवालों को ख़ैरबाद कहने दें।”

62 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “जो भी हल चलाते हुए पीछे की तरफ़ देखे वह अल्लाह की बादशाही के लायक नहीं है।”

10

ईसा 72 शागिर्दों को मुनादी के लिए भेजता है

1 इसके बाद ख़ुदावंद ने मज़ीद 72 शागिर्दों को मुक़र्रर किया और उन्हें दो दो करके अपने आगे हर उस शहर और जगह भेज दिया जहाँ वह अभी जाने को था। 2 उसने उनसे कहा, “फ़सल बहुत है, लेकिन मज़दूर थोड़े। इसलिए फ़सल के मालिक से दरखास्त करो कि वह फ़सल काटने के लिए मज़ीद मज़दूर भेज दे। 3 अब रवाना हो जाओ, लेकिन ज़हन में यह बात रखो कि तुम भेड़ के बच्चों की मानिंद हो जिन्हें मैं भेड़ियों के दरमियान भेज रहा हूँ। 4 अपने साथ न बटवा ले जाना, न सामान के लिए बैग, न जूते। और रास्ते में किसी को भी सलाम न करना। 5 जब भी तुम किसी के घर में दाख़िल हो तो पहले यह कहना, ‘इस घर की सलामती हो।’ 6 अगर उसमें सलामती का कोई बंदा होगा तो तुम्हारी बरकत उस पर ठहरेगी, वरना वह तुम पर लौट आएगी। 7 सलामती के ऐसे घर में ठहरो और वह कुछ खाओ पियो जो तुमको दिया जाए, क्योंकि मज़दूर अपनी मज़दूरी का हक़दार है। मुख़्तलिफ़ घरों में घूमते न फ़िरो बल्कि एक ही घर में रहो। 8 जब भी तुम किसी शहर में दाख़िल हो और लोग तुमको क़बूल करें तो जो कुछ वह तुमको खाने को दें उसे खाओ। 9 वहाँ के मरीज़ों को शफ़ा देकर बताओ कि अल्लाह की बादशाही करीब आ गई है। 10 लेकिन अगर तुम किसी शहर में जाओ और लोग तुमको क़बूल न करें तो फिर शहर की सड़कों पर खड़े होकर कहो, 11 ‘हम अपने जूतों से तुम्हारे शहर की गर्द भी झाड़ देते हैं। यों हम तुम्हारे खिलाफ़ गवाही देते हैं। लेकिन यह जान लो कि अल्लाह की बादशाही करीब आ गई है।’ 12 मैं तुमको बताता हूँ कि उस दिन उस शहर की निसबत सद्म का हाल ज़्यादा काबिले-बरदाश्त होगा।

तौबा न करनेवाले शहरों पर अफ़सोस

13 ऐ ख़ुराज़ीन, तुझ पर अफ़सोस! बैत-सैदा, तुझ पर अफ़सोस! अगर सूर और सैदा में वह मोज़िज़े किए गए होते जो तुममें हुए तो वहाँ के लोग कब के टाट ओढ़कर और सर पर राख डालकर तौबा कर चुके होते। 14 जी हाँ, अदालत के दिन तुम्हारी निसबत सूर और सैदा का हाल ज़्यादा काबिले-बरदाश्त होगा। 15 और तू ऐ कफ़र्नहम, क्या तुझे आसमान तक सरफ़राज़ किया जाएगा? हरगिज़ नहीं, बल्कि तू उतरता उतरता पाताल तक पहुँचेगा।

16 जिसने तुम्हारी सुनी उसने मेरी भी सुनी। और जिसने तुमको रद्द किया उसने मुझे भी रद्द किया। और मुझे रद्द करनेवाले ने उसे भी रद्द किया जिसने मुझे भेजा है।”

72 शागिर्दों की वापसी

17 72 शागिर्द लौट आए। वह बहुत खुश थे और कहने लगे, “ख़ुदावंद, जब हम आपका नाम लेते हैं तो बदरूहें भी हमारे ताबे हो जाती हैं।”

18 ईसा ने जवाब दिया, “इबलीस मुझे नज़र आया और वह बिजली की तरह आसमान से गिर रहा था। 19 देखो, मैंने तुमको सोंपों और बिछुओं पर चलने का इख्तियार दिया है। तुमको दुश्मन की पूरी ताकत पर इख्तियार हासिल है। कुछ भी तुमको नुकसान नहीं पहुँचा सकेगा। 20 लेकिन इस वजह से खुशी न मनाओ कि बदरूहें तुम्हारे ताबे हैं, बल्कि इस वजह से कि तुम्हारे नाम आसमान पर दर्ज किए गए हैं।”

बाप की तमजीद

21 उसी वक़्त ईसा रूहल-कुदूस में खुशी मनाने लगा। उसने कहा, “ऐ बाप, आसमानो-ज़मीन के मालिक! मैं तेरी तमजीद करता हूँ कि तूने यह बात दानाओं और अक्लमंदों से छुपाकर छोटे बच्चों पर ज़ाहिर कर दी है। हाँ मेरे बाप, क्योंकि यही तुझे पसंद आया।

22 मेरे बाप ने सब कुछ मेरे सुपुर्द कर दिया है। कोई नहीं जानता कि फ़रज़ंद कौन है सिवाए बाप के। और कोई नहीं जानता कि बाप कौन है सिवाए फ़रज़ंद के और उन लोगों के जिन पर फ़रज़ंद यह ज़ाहिर करना चाहता है।”

23 फिर ईसा शागिर्दों की तरफ़ मुड़ा और अलहदगी में उनसे कहने लगा, “मुबारक हैं वह आँखें जो वह कुछ देखती हैं जो तुमने देखा है। 24 मैं तुमको बताता हूँ कि बहुत-से नबी और बादशाह यह देखना चाहते थे जो तुम देखते हो, लेकिन उन्होंने न देखा। और वह यह सुनने के आरज़ुमंद थे जो तुम सुनते हो, लेकिन उन्होंने न सुना।”

नेक सामरी की तमसील

25 एक मौक़े पर शरीअत का एक आलिम ईसा को फँसाने की खातिर खड़ा हुआ। उसने पूछा, “उस्ताद, मैं क्या क्या करने से मीरास में अबदी ज़िंदगी पा सकता हूँ?”

26 ईसा ने उससे कहा, “शरीअत में क्या लिखा है? तू उसमें क्या पढ़ता है?”

27 आदमी ने जवाब दिया, “‘रब अपने खुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान, अपनी पूरी ताकत और अपने पूरे ज़हन से प्यार करना।’ और ‘अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है’।”

28 ईसा ने कहा, “तूने ठीक जवाब दिया। ऐसा ही कर तो ज़िंदा रहेगा।”

29 लेकिन आलिम ने अपने आपको दुस्त साबित करने की गरज़ से पूछा, “तो मेरा पड़ोसी कौन है?”

30 ईसा ने जवाब में कहा, “एक आदमी यरूशलम से यरीह की तरफ़ जा रहा था कि वह डाकुओं के हाथों में पड़ गया। उन्होंने उसके कपड़े उतारकर उसे खूब मारा और अधमुआ छोड़कर चले गए। 31 इतफ़ाक़ से एक इमाम भी उसी रास्ते पर यरीह की तरफ़ चल रहा था। लेकिन जब उसने ज़ख़मी आदमी को देखा तो रास्ते की परली तरफ़ होकर आगे निकल गया। 32 लावी कबीले का एक खादिम भी वहाँ से गुज़रा। लेकिन वह भी रास्ते की परली तरफ़ से आगे निकल गया। 33 फिर सामरिया का एक मुसाफ़िर वहाँ से गुज़रा। जब उसने ज़ख़मी आदमी को देखा तो उसे उस पर तरस आया। 34 वह उसके पास गया और उसके ज़ख़मों पर तेल और मै लगाकर उन पर पट्टियाँ बाँध दीं। फिर उसको अपने गधे पर बिठाकर सराय तक ले गया। वहाँ उसने उस की मज़ीद देख-भाल की। 35 अगले दिन उसने चाँदी के दो सिक्के निकालकर सराय के मालिक को दिए और कहा, ‘इसकी देख-भाल करना। अगर खर्चा इससे बढ़कर हुआ तो मैं वापसी पर अदा कर दूँगा।’”

36 फिर ईसा ने पूछा, “अब तेरा क्या खयाल है, डाकुओं की ज़द में आनेवाले आदमी का पड़ोसी कौन था? इमाम, लावी या सामरी?”

37 आलिम ने जवाब दिया, “वह जिसने उस पर रहम किया।”

ईसा ने कहा, “बिलकुल ठीक। अब तू भी जाकर ऐसा ही कर।”

ईसा मरियम और मर्या के घर जाता है

38 फिर ईसा शागिर्दों के साथ आगे निकला। चलते चलते वह एक गाँव में पहुँचा। वहाँ की एक औरत बनाम मर्या ने उसे अपने घर में ख़ुशआमदीद कहा। 39 मर्या की एक बहन थी जिसका नाम मरियम था। वह ख़ुदावंद के पाँवों में बैठकर उस की बातें सुनने लगी 40 जबकि मर्या मेहमानों की खिदमत करते करते थक गई। आखिरकार वह ईसा के पास आकर कहने लगी, “ख़ुदावंद, क्या आपको परवा नहीं कि मेरी बहन ने मेहमानों की खिदमत का पूरा इंतज़ाम मुझ पर छोड़ दिया है? उससे कहें कि वह मेरी मदद करे।”

41 लेकिन ख़ुदावंद ईसा ने जवाब में कहा, “मर्या, मर्या, तू बहुत-सी फ़िक़रों और परेशानियों में पड़ गई है। 42 लेकिन एक बात ज़रूरी है। मरियम ने बेहतर हिस्सा चुन लिया है और यह उससे छीना नहीं जाएगा।”

11

दुआ किस तरह करनी है

1 एक दिन ईसा कहीं दुआ कर रहा था। जब वह फ़ारिग हुआ तो उसके किसी शागिर्द ने कहा, “ख़ुदावंद, हमें दुआ करना सिखाएँ, जिस तरह यहया ने भी अपने शागिर्दों को दुआ करने की तालीम दी।”

2 ईसा ने कहा, “दुआ करते वक़्त यों कहना,

ऐ बाप,

तेरा नाम मुक़द्दस माना जाए।

तेरी बादशाही आए।

3 हर रोज हमें हमारी रोज की रोटी दे।
 4 हमारे गुनाहों को मुआफ कर।
 क्योंकि हम भी हर एक को मुआफ करते हैं
 जो हमारा गुनाह करता है। *
 और हमें आजमाइश में न पड़ने दे।”

माँगते रहो

5 फिर उसने उनसे कहा, “अगर तुममें से कोई आधी रात के वक़्त अपने दोस्त के घर जाकर कहे, ‘भाई, मुझे तीन रोटियाँ दे, बाद में मैं यह वापस कर दूँगा।’ 6 क्योंकि मेरा दोस्त सफ़र करके मेरे पास आया है और मैं उसे खाने के लिए कुछ नहीं दे सकता।’ 7 अब फ़र्ज़ करो कि यह दोस्त अंदर से जवाब दे, ‘मेहरबानी करके मुझे तंग न कर। दरवाज़े पर ताला लगा है और मेरे बच्चे मेरे साथ बिस्तर पर हैं, इसलिए मैं तुझे देने के लिए उठ नहीं सकता।’ 8 लेकिन मैं तुमको यह बताता हूँ कि अगर वह दोस्ती की खातिर न भी उठे, तो भी वह अपने दोस्त के बेजा इस्मरार की वजह से उस की तमाम ज़रूरत पूरी करेगा।

9 चुनाँचे माँगते रहो तो तुमको दिया जाएगा, ढूँढते रहो तो तुमको मिल जाएगा। खटखटाते रहो तो तुम्हारे लिए दरवाज़ा खोल दिया जाएगा। 10 क्योंकि जो भी माँगता है वह पाता है, जो ढूँढता है उसे मिलता है और जो खटखटाता है उसके लिए दरवाज़ा खोल दिया जाता है। 11 तुम बापों में से कौन अपने बेटे को सॉप देगा अगर वह मछली माँगे? 12 या कौन उसे बिच्छू देगा अगर वह अंडा माँगे? कोई नहीं! 13 जब तुम बुरे होने के बावजूद इतने समझदार हो कि अपने बच्चों को अच्छी चीज़ें दे सकते हो तो फिर कितनी ज़्यादा यकीनी बात है कि आसमानी बाप अपने माँगनेवालों को स्तुल-कुद्स देगा।”

ईसा और बदरूहों का सरदार

14 एक दिन ईसा ने एक ऐसी बदरूह निकाल दी जो गूँगी थी। जब वह गूँगे आदमी में से निकली तो वह बोलने लगा। वहाँ पर जमा लोग हक्का-बक्का रह गए। 15 लेकिन बाज़ ने कहा, “यह तो बदरूहों के सरदार बाल-ज़बूल की मदद से बदरूहों को निकालता है।”

16 औरों ने उसे आजमाने के लिए किसी इलाही निशान का मुतालबा किया। 17 लेकिन ईसा ने उनके खयालात जानकर कहा, “जिस बादशाही में भी फूट पड़ जाए वह तबाह हो जाएगी, और जिस घराने की ऐसी हालत हो वह भी खाक में मिल जाएगा। 18 तुम कहते हो कि मैं बाल-ज़बूल की मदद से बदरूहों को निकालता हूँ। लेकिन अगर इबलीस में फूट पड़ गई है तो फिर उस की बादशाही किस तरह कायम रह सकती है? 19 दूसरा सवाल यह है, अगर मैं बाल-ज़बूल की मदद से बदरूहों को निकालता हूँ तो तुम्हारे बेटे उन्हें किसके ज़रीए निकालते हैं? चुनाँचे वही इस बात में तुम्हारे मुसिफ़ होंगे। 20 लेकिन अगर मैं अल्लाह की कुदरत से बदरूहों को निकालता हूँ तो फिर अल्लाह की बादशाही तुम्हारे पास पहुँच चुकी है।

21 जब तक कोई जोरावर आदमी हथियारों से लैस अपने डेरे की पहरादारी करे उस वक़्त तक उस की मिलकियत महफूज़ रहती है। 22 लेकिन अगर कोई ज़्यादा ताकतवर शख्स हमला करके उस पर गालिब आए तो वह उसके असला पर कब्ज़ा करेगा जिस पर उसका भरोसा था, और लूटा हुआ माल अपने लोगों में तकसीम कर देगा।

23 जो मेरे साथ नहीं वह मेरे खिलाफ़ है और जो मेरे साथ जमा नहीं करता वह बिखेरता है।

बदरूह की वापसी

24 जब कोई बदरूह किसी शख्स में से निकलती है तो वह वीरान इलाकों में से गुज़रती हुई आराम की जगह तलाश करती है। लेकिन जब उसे कोई ऐसा मक़ाम नहीं मिलता तो वह कहती है, ‘मैं अपने उस घर में वापस चली जाऊँगी जिसमें से निकली थी।’ 25 वह वापस आकर देखती है कि किसी ने झाड़ू देकर सब कुछ सलीके से रख दिया है। 26 फिर वह जाकर सात और बदरूहें ढूँढ लाती है जो उससे बदतर होती हैं, और वह सब उस शख्स में घुसकर रहने लगती हैं। चुनाँचे अब उस आदमी की हालत पहले की निसबत ज़्यादा बुरी हो जाती है।”

कौन मुबारक है?

27 ईसा अभी यह बात कर ही रहा था कि एक औरत ने ऊँची आवाज़ से कहा, “आपकी माँ मुबारक है जिसने आपको जन्म दिया और आपको दूध पिलाया।”

28 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “बात यह नहीं है। हक़ीक़त में वह मुबारक हैं जो अल्लाह का कलाम सुनकर उस पर अमल करते हैं।”

इलाही निशान का तकाज़ा

29 सुननेवालों की तादाद बहुत बढ़ गई तो वह कहने लगा, “यह नसल शरीर है, क्योंकि यह मुझसे इलाही निशान का तकाज़ा करती है। लेकिन इसे कोई भी इलाही निशान पेश नहीं किया जाएगा सिवाए यूनूस के निशान के। 30 क्योंकि जिस तरह यूनूस नीनवा शहर के बाशिंदों के लिए निशान था बिल्कुल उसी तरह इब्ने-आदम इस नसल के लिए निशान होगा। 31 क़ियामत के दिन जुनबी मुल्क सब की मलिका इस नसल के लोगों के साथ खड़ी होकर उन्हें मुजरिम करार देगी। क्योंकि वह दूर-दराज़ मुल्क से सुलेमान की हिकमत सुनने के लिए आई थी

* 11:4 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : जो हमारा कर्ज़दार है।

जबकि यहाँ वह है जो सुलेमान से भी बड़ा है। ³² उस दिन नीनवा के बाशिंदे भी इस नसल के लोगों के साथ खड़े होकर उन्हें मुजरिम ठहराएँगे। क्योंकि यूसुस के एलान पर उन्होंने तौबा की थी जबकि यहाँ वह है जो यूसुस से भी बड़ा है।

बदन की रौशनी

³³ जब कोई शरख चराग जलाता है तो न वह उसे छुपाता, न बरतन के नीचे रखता बल्कि उसे शमादान पर रख देता है ताकि उस की रौशनी अंदर आनेवालों को नज़र आए। ³⁴ तेरी आँख तेरे बदन का चराग है। अगर तेरी आँख ठीक हो तो तेरा पूरा जिस्म रौशन होगा। लेकिन अगर आँख खराब हो तो पूरा जिस्म अंधेरा ही अंधेरा होगा। ³⁵ खबरदार! ऐसा न हो कि जो रौशनी तेरे अंदर है वह हकीकत में तारीकी हो। ³⁶ चुनौचे अगर तेरा पूरा जिस्म रौशन हो और कोई भी हिस्सा तारीक न हो तो फिर वह बिल्कुल रौशन होगा, ऐसा जैसा उस वक़्त होता है जब चराग तुझे अपने चमकने-दमकने से रौशन कर देता है।”

फ़रीसियों पर अफ़सोस

³⁷ ईसा अभी बात कर रहा था कि किसी फ़रीसी ने उसे खाने की दावत दी। चुनौचे वह उसके घर में जाकर खाने के लिए बैठ गया। ³⁸ मेज़बान बड़ा हैरान हुआ, क्योंकि उसने देखा कि ईसा हाथ धोए बग़ैर खाने के लिए बैठ गया है। ³⁹ लेकिन खुदावंद ने उससे कहा, “देखो, तुम फ़रीसी बाहर से हर प्याले और बरतन की सफ़ाई करते हो, लेकिन अंदर से तुम लूट-मार और शरारत से भरे होते हो। ⁴⁰ नादानो! अल्लाह ने बाहरवाले हिस्से को खलक किया, तो क्या उसने अंदरवाले हिस्से को नहीं बनाया? ⁴¹ चुनौचे जो कुछ बरतन के अंदर है उसे ग़रीबों को दे दो। फिर तुम्हारे लिए सब कुछ पाक-साफ़ होगा।

⁴² फ़रीसियो, तुम पर अफ़सोस! क्योंकि एक तरफ़ तुम पौदीना, सदाब और बाग़ की हर किस्म की तरकारी का दसवाँ हिस्सा अल्लाह के लिए मखसूस करते हो, लेकिन दूसरी तरफ़ तुम इनसाफ़ और अल्लाह की मुहब्बत को नज़रंदाज़ करते हो। लाज़िम है कि तुम यह काम भी करो और पहला भी न छोड़ो।

⁴³ फ़रीसियो, तुम पर अफ़सोस! क्योंकि तुम इबादतख़ानों की इज्जत की कुरसियों पर बैठने के लिए बेचैन रहते और बाज़ार में लोगों का सलाम सुनने के लिए तड़पते हो। ⁴⁴ हाँ, तुम पर अफ़सोस! क्योंकि तुम पोशीदा कब्रों की मानिंद हो जिन पर से लोग नादानिस्ता तौर पर गुज़रते हैं।”

⁴⁵ शरीअत के एक आलिम ने एतराज़ किया, “उस्ताद, आप यह कहकर हमारी भी बेइज्जती करते हैं।”

⁴⁶ ईसा ने जवाब दिया, “तुम शरीअत के आलिमों पर भी अफ़सोस! क्योंकि तुम लोगों पर भारी बोझ डाल देते हो जो मुश्किल से उठाया जा सकता है। न सिर्फ़ यह बल्कि तुम खुद इस बोझ को अपनी एक उँगली भी नहीं लगाते। ⁴⁷ तुम पर अफ़सोस! क्योंकि तुम नबियों के मज़ार बना देते हो, उनके जिन्हें तुम्हारे बापदादा ने मार डाला। ⁴⁸ इससे तुम गवाही देते हो कि तुम वह कुछ पसंद करते हो जो तुम्हारे बापदादा ने किया। उन्होंने नबियों को क़त्ल किया जबकि तुम उनके मज़ार तामीर करते हो। ⁴⁹ इसलिए अल्लाह की हिकमत ने कहा, ‘मैं उनमें नबी और रसूल भेज दूँगी। उनमें से बाज़ को वह क़त्ल करेंगे और बाज़ को सताएँगे।’ ⁵⁰ नतीजे में यह नसल तमाम नबियों के क़त्ल की ज़िम्मादार ठहरेगी—दुनिया की तखलीक से लेकर आज तक, ⁵¹ यानी हाबील के क़त्ल से लेकर ज़करियाह के क़त्ल तक, जिसे बैतुल-मुक़द्दस के सहन में मौजूद कुरबानगाह और बैतुल-मुक़द्दस के दरवाज़े के दरमियान क़त्ल किया गया। हाँ, मैं तुमको बताता हूँ कि यह नसल ज़रूर उनकी ज़िम्मादार ठहरेगी।

⁵² शरीअत के आलिमो, तुम पर अफ़सोस! क्योंकि तुमने इल्म की कुंजी को छीन लिया है। न सिर्फ़ यह कि तुम खुद दाखिल नहीं हुए, बल्कि तुमने दाखिल होनेवालों को भी रोक लिया।”

⁵³ जब ईसा वहाँ से निकला तो आलिम और फ़रीसी उसके सख़्त मुखालिफ़ हो गए और बड़े ग़ौर से उस की पूछ-गछ करने लगे। ⁵⁴ वह इस ताक में रहे कि उसे मुँह से निकली किसी बात की वजह से पकड़ें।

12

रियाकारी से खबरदार रहो!

¹ इतने में कई हज़ार लोग जमा हो गए थे। बड़ी तादाद की वजह से वह एक दूसरे पर गिरे पड़ते थे। फिर ईसा अपने शगिर्दों से यह बात करने लगा, “फ़रीसियों के खमीर यानी रियाकारी से खबरदार! ² जो कुछ भी अभी छुपा हुआ है उसे आखिर में ज़ाहिर किया जाएगा और जो कुछ भी इस वक़्त पोशीदा है उसका राज़ आखिर में खुल जाएगा। ³ इसलिए जो कुछ तुमने अंधेरे में कहा है वह रोज़े-रौशन में सुनाया जाएगा और जो कुछ तुमने अंदरूनी कमरों का दरवाज़ा बंद करके आहिस्ता आहिस्ता कान में बयान किया है उसका छतों से एलान किया जाएगा।

किससे डरना चाहिए?

⁴ मेरे अज़ीज़ो, उनसे मत डरना जो सिर्फ़ जिस्म को क़त्ल करते हैं और मज़ीद नुक़सान नहीं पहुँचा सकते। ⁵ मैं तुमको बताता हूँ कि किससे डरना है। अल्लाह से डरो, जो तुम्हें हलाक करने के बाद जहन्नुम में फेंकने का इख्तियार भी रखता है। जी हाँ, उसी से ख़ौफ़ खाओ।

⁶ क्या पाँच चिड़ियाँ दो पैसों में नहीं बिकती? तो भी अल्लाह हर एक की फ़िकर करके एक को भी नहीं भूलता। ⁷ हाँ, बल्कि तुम्हारे सर के सब बाल भी गिने हुए हैं। लिहाज़ा मत डरो। तुम्हारी कदरो-क़ीमत बहुत-सी चिड़ियों से कहीं ज़्यादा है।

मसीह का इकरार या इनकार करने के नतीजे

8 मैं तुमको बताता हूँ, जो भी लोगों के सामने मेरा इकरार करे उसका इकरार इब्ने-आदम भी फ़रिश्तों के सामने करेगा। 9 लेकिन जो लोगों के सामने मेरा इनकार करे उसका भी अल्लाह के फ़रिश्तों के सामने इनकार किया जाएगा।

10 और जो भी इब्ने-आदम के खिलाफ़ बात करे उसे मुआफ़ किया जा सकता है। लेकिन जो रूहुल-कुद्स के खिलाफ़ कुफ़र बके उसे मुआफ़ नहीं किया जाएगा।

11 जब लोग तुमको इबादतखानों में और हाकिमों और इख्तियारवालों के सामने घसीटकर ले जाएंगे तो यह सोचते सोचते परेशान न हो जाना कि मैं किस तरह अपना दिफ़ा करूँ या क्या कहूँ, 12 क्योंकि रूहुल-कुद्स तुमको उसी वक़्त सिखा देगा कि तुमको क्या कहना है।”

नादान अमीर की तमसील

13 किसी ने भीड़ में से कहा, “उस्ताद, मेरे भाई से कहें कि मीरास का मेरा हिस्सा मुझे दे।”

14 ईसा ने जवाब दिया, “भाई, किसने मुझे तुम पर जज या तक्रसीम करनेवाला मुकर्रर किया है?” 15 फिर उसने उनसे मज़ीद कहा, “ख़बरदार! हर किस्म के लालच से बचे रहना, क्योंकि इनसान की ज़िंदगी उसके मालो-दौलत की कसरत पर मुनहसिर नहीं।”

16 उसने उन्हें एक तमसील सुनाई। “किसी अमीर आदमी की ज़मीन में अच्छी फ़सल पैदा हुई। 17 चुनाँचे वह सोचने लगा, ‘अब मैं क्या करूँ? मेरे पास तो इतनी जगह नहीं जहाँ मैं सब कुछ जमा करके रखूँ।’ 18 फिर उसने कहा, ‘मैं यह करूँगा कि अपने गोदामों को ढाकर इनसे बड़े तामीर करूँगा। उनमें अपना तमाम अनाज और बाक़ी पैदावार जमा कर लूँगा। 19 फिर मैं अपने आपसे कहूँगा कि लो, इन अच्छी चीज़ों से तेरी ज़रूरियात बहुत सालों तक पूरी होती रहेंगी। अब आराम कर। खा, पी और खुशी मना।’ 20 लेकिन अल्लाह ने उससे कहा, ‘अहमक! इसी रात तू मर जाएगा। तो फिर जो चीज़ें तूने जमा की हैं वह किसकी होंगी?’

21 यही उस शख्स का अंजाम है जो सिर्फ़ अपने लिए चीज़ें जमा करता है जबकि वह अल्लाह के सामने ग़रीब है।”

अल्लाह पर भरोसा

22 फिर ईसा ने अपने शगिर्दों से कहा, “इसलिए अपनी ज़िंदगी की ज़रूरियात पूरी करने के लिए परेशान न रहो कि हाय, मैं क्या खाऊँ। और जिस्म के लिए फ़िकरमंद न रहो कि हाय, मैं क्या पहनूँ। 23 ज़िंदगी तो खाने से ज़्यादा अहम है और जिस्म पोशाक से ज़्यादा। 24 कौवों पर ग़ौर करो। न वह बीज बोते, न फ़सलें काटते हैं। उनके पास न स्टोर होता है, न गोदाम। तो भी अल्लाह खुद उन्हें खाना खिलाता है। और तुम्हारी कदरो-कीमत तो परिंदों से कहीं ज़्यादा है। 25 क्या तुममें से कोई फ़िकर करते करते अपनी ज़िंदगी में एक लमहे का भी इज़ाफ़ा कर सकता है? 26 अगर तुम फ़िकर करने से इतनी छोटी-सी तबदीली भी नहीं ला सकते तो फिर तुम बाक़ी बातों के बारे में क्यों फ़िकरमंद हो? 27 ग़ौर करो कि सोसन के फूल किस तरह उगते हैं। न वह मेहनत करते, न कातते हैं। लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ कि सुलेमान बादशाह अपनी पूरी शानो-शौकत के बावजूद ऐसे शानदार कपड़ों से मुलबबस नहीं था जैसे उनमें से एक। 28 अगर अल्लाह उस घास को जो आज मैदान में है और कल आग में झोंकी जाएगी ऐसा शानदार लिबास पहनाता है तो ऐ कमएतकादो, वह तुमको पहनाने के लिए क्या कुछ नहीं करेगा?

29 इसकी तलाश में न रहना कि क्या खाओगे या क्या पियोगे। ऐसी बातों की वजह से बेचैन न रहो। 30 क्योंकि दुनिया में जो ईमान नहीं रखते वही इन तमाम चीज़ों के पीछे भागते रहते हैं, जबकि तुम्हारे बाप को पहले से मालूम है कि तुमको इनकी ज़रूरत है। 31 चुनाँचे उसी की बादशाही की तलाश में रहो। फिर यह तमाम चीज़ें भी तुमको मिल जाएँगी।

आसमान पर दौलत जमा करना

32 ऐ छोटे गल्ले, मत डरना, क्योंकि तुम्हारे बाप ने तुमको बादशाही देना पसंद किया। 33 अपनी मिलकियत बेचकर ग़रीबों को दे देना। अपने लिए ऐसे बटवे बनवाओ जो नहीं घिसते। अपने लिए आसमान पर ऐसा खज़ाना जमा करो जो कभी ख़त्म नहीं होगा और जहाँ न कोई चोर आएगा, न कोई कीड़ा उसे ख़राब करेगा। 34 क्योंकि जहाँ तुम्हारा खज़ाना है वही तुम्हारा दिल भी लगा रहेगा।

हर वक़्त तैयार नौकर

35 ख़िदमत के लिए तैयार खड़े रहो और इस पर ध्यान दो कि तुम्हारे चराग जलते रहें। 36 यानी ऐसे नौकरों की मानिंद जिनका मालिक किसी शादी से वापस आनेवाला है और वह उसके लिए तैयार खड़े हैं। ज्योंही वह आकर दस्तक दे वह दरवाज़े को खोल देंगे। 37 वह नौकर मुबारक हैं जिन्हें मालिक आकर जागते हुए और चौकस पाएगा। मैं तुमको सच बताता हूँ कि यह देखकर मालिक अपने कपड़े बदलकर उन्हें बिठाएगा और मेज़ पर उनकी ख़िदमत करेगा। 38 हो सकता है मालिक आधी रात या इसके बाद आए। अगर वह इस सूरत में भी उन्हें मुस्तैद पाए तो वह मुबारक हैं। 39 यकीन जानो, अगर किसी घर के मालिक को पता होता कि चोर कब आएगा तो वह ज़रूर उसे घर में नक़ब लगाने न देता। 40 तुम भी तैयार रहो, क्योंकि इब्ने-आदम ऐसे वक़्त आएगा जब तुम इसकी तवक्क़ो नहीं करोगे।”

वफ़ादार नौकर

41 पतरस ने पूछा, “ख़ुदावंद, क्या यह तमसील सिर्फ़ हमारे लिए है या सबके लिए?”

42 ख़ुदावंद ने जवाब दिया, “कौन-सा नौकर वफ़ादार और समझदार है? फ़र्ज़ करो कि घर के मालिक ने किसी नौकर को बाक़ी नौकरों पर मुकर्रर किया हो। उस की एक ज़िम्मादारी यह भी है कि उन्हें वक़्त पर मुनासिब खाना खिलाए। 43 वह नौकर मुबारक होगा जो मालिक

की वापसी पर यह सब कुछ कर रहा होगा। 44 मैं तुमको सच बताता हूँ कि यह देखकर मालिक उसे अपनी पूरी जायदाद पर मुर्कर करेगा। 45 लेकिन फ़र्ज़ करो कि नौकर अपने दिल में सोचे, 'मालिक की वापसी में अभी देर है।' वह नौकरों और नौकरानियों को पीटने लगे और खाते-पीते वह नशे में रहे। 46 अगर वह ऐसा करे तो मालिक ऐसे दिन और वक्त आएगा जिसकी तवक्को नौकर को नहीं होगी। इन हालात को देखकर वह नौकर को टुकड़े टुकड़े कर डालेगा और उसे ग़ैरइमानदारों में शामिल करेगा।

47 जो नौकर अपने मालिक की मरज़ी को जानता है, लेकिन उसके लिए तैयारियाँ नहीं करता, न उसे पूरी करने की कोशिश करता है, उस की ख़ूब पिटाई की जाएगी। 48 इसके मुकाबले में वह जो मालिक की मरज़ी को नहीं जानता और इस बिना पर कोई काबिले-सज़ा काम करे उस की कम पिटाई की जाएगी। क्योंकि जिसे बहुत दिया गया हो उससे बहुत तलब किया जाएगा। और जिसके सुपुर्द बहुत कुछ किया गया हो उससे कहीं ज्यादा माँगा जाएगा।

ईसा की वजह से इख़िलाफ़ पैदा होगा

49 मैं ज़मीन पर आग लगाने आया हूँ, और काश वह पहले ही भड़क रही होती! 50 लेकिन अब तक मेरे सामने एक बपतिस्मा है जिसे लेना ज़रूरी है। और मुझ पर कितना दबाव है जब तक उस की तकमील न हो जाए। 51 क्या तुम समझते हो कि मैं दुनिया में सुलह-सलामती कायम करने आया हूँ? नहीं, मैं तुमको बताता हूँ कि इसकी बजाए मैं इख़िलाफ़ पैदा करूँगा। 52 क्योंकि अब से एक घराने के पाँच अफ़राद में इख़िलाफ़ होगा। तीन दो के खिलाफ़ और दो तीन के खिलाफ़ होंगे। 53 बाप बेटे के खिलाफ़ होगा और बेटा बाप के खिलाफ़, माँ बेटी के खिलाफ़ और बेटी माँ के खिलाफ़, सास बहू के खिलाफ़ और बहू सास के खिलाफ़।”

मौजूदा हालात का सहीह नतीजा निकालना चाहिए

54 ईसा ने हज़ूम से यह भी कहा, “ज्योंही कोई बादल मगरिबी उफ़क़ से चढ़ता हुआ नज़र आए तो तुम कहते हो कि बारिश होगी। और ऐसा ही होता है। 55 और जब जुनबी लू चलती है तो तुम कहते हो कि सख़्त गरमी होगी। और ऐसा ही होता है। 56 ऐ रियाकारो! तुम आसमानो-ज़मीन के हालात पर गौर करके सहीह नतीजा निकाल लेते हो। तो फिर तुम मौजूदा ज़माने के हालात पर गौर करके सहीह नतीजा क्यों नहीं निकाल सकते?”

अपने मुखालिफ़ से समझौता करना

57 तुम खुद सहीह फैसला क्यों नहीं कर सकते? 58 फ़र्ज़ करो कि किसी ने तुझ पर मुक़दमा चलाया है। अगर ऐसा हो तो पूरी कोशिश कर कि कचहरी में पहुँचने से पहले पहले मामला हल करके मुखालिफ़ से फ़ारिग हो जाए। ऐसा न हो कि वह तुझको ज़ज के सामने घसीटकर ले जाए, ज़ज तुझे पुलिस अफ़सर के हवाले करे और पुलिस अफ़सर तुझे जेल में डाल दे। 59 मैं तुझे बताता हूँ, वहाँ से तू उस वक्त तक नहीं निकल पाएगा जब तक जुमाने की पूरी पूरी रकम अदा न कर दे।”

13

तौबा करो वरना हलाक हो जाओगे

1 उस वक्त कुछ लोग ईसा के पास पहुँचे। उन्होंने उसे गलील के कुछ लोगों के बारे में बताया जिन्हें पीलातुस ने उस वक्त क़त्ल करवाया था जब वह बैतुल-मुक़द्दस में कुरबानियाँ पेश कर रहे थे। यों उनका खून कुरबानियों के खून के साथ मिलाया गया था। 2 ईसा ने यह सुनकर पूछा, “क्या तुम्हारे खयाल में यह लोग गलील के बाक़ी लोगों से ज़्यादा गुनाहगार थे कि इन्हें इतना दुख उठाना पड़ा? 3 हरगिज़ नहीं! बल्कि मैं तुमको बताता हूँ कि अगर तुम तौबा न करो तो तुम भी इसी तरह तबाह हो जाओगे। 4 या उन 18 अफ़राद के बारे में तुम्हारा क्या खयाल है जो मर गए जब शिलोख का बुर्ज़ उन पर गिरा? क्या वह यरूशलम के बाक़ी बाशिंदों की निसबत ज़्यादा गुनाहगार थे? 5 हरगिज़ नहीं! मैं तुमको बताता हूँ कि अगर तुम तौबा न करो तो तुम भी तबाह हो जाओगे।”

बेफल अंजीर का दरख़्त

6 फिर ईसा ने उन्हें यह तमसील सुनाई, “किसी ने अपने बाग़ में अंजीर का दरख़्त लगाया। जब वह उसका फल तोड़ने के लिए आया तो कोई फल नहीं था। 7 यह देखकर उसने माली से कहा, ‘मैं तीन साल से इसका फल तोड़ने आता हूँ, लेकिन आज तक कुछ भी नहीं मिला। इसे काट डाल। यह ज़मीन की ताक़त क्यों ख़त्म करे?’ 8 लेकिन माली ने कहा, ‘जनाब, इसे एक साल और रहने दें। मैं इसके इर्दगिर्द गोडी करके खाद डालूँगा। 9 फिर अगर यह अगले साल फल लाया तो ठीक, वरना इसे कटवा डालना।’”

सबत के दिन कुबड़ी औरत की शफ़ा

10 सबत के दिन ईसा किसी इबादतख़ाने में तालीम दे रहा था। 11 वहाँ एक औरत थी जो 18 साल से बदर्ह के बाइस बीमार थी। वह कुबड़ी हो गई थी और सीधी खड़ी होने के बिलकुल काबिल न थी। 12 जब ईसा ने उसे देखा तो पुकारकर कहा, “ऐ औरत, तू अपनी बीमारी से छूट गई है!” 13 उसने अपने हाथ उस पर रखे तो वह फ़ौरन सीधी खड़ी होकर अल्लाह की तमज़ीद करने लगी।

14 लेकिन इबादतख़ाने का राहनुमा नाराज़ हुआ क्योंकि ईसा ने सबत के दिन शफ़ा दी थी। उसने लोगों से कहा, “हफ़ते के छः दिन काम करने के लिए होते हैं। इसलिए इतवार से लेकर जुमे तक शफ़ा पाने के लिए आओ, न कि सबत के दिन।”

15 खुदावंद ने जवाब में उससे कहा, “तुम कितने रियाकार हो! क्या तुममें से हर कोई सबत के दिन अपने बैल या गधे को खोलकर उसे थान से बाहर नहीं ले जाता ताकि उसे पानी पिलाए? 16 अब इस औरत को देखो जो इब्राहीम की बेटी है और जो 18 साल से इबलीस के बंधन में थी। जब तुम सबत के दिन अपने जानवरों की मदद करते हो तो क्या यह ठीक नहीं कि औरत को इस बंधन से रिहाई दिलाई जाती, चाहे यह काम सबत के दिन ही क्यों न किया जाए?” 17 ईसा के इस जवाब से उसके मुखालिफ शर्मिंदा हो गए। लेकिन आम लोग उसके इन तमाम शानदार कामों से खुश हुए।

राई के दाने की तमसील

18 ईसा ने कहा, “अल्लाह की बादशाही किस चीज़ की मानिंद है? मैं इसका मुवाज़ना किससे करूँ? 19 वह राई के एक दाने की मानिंद है जो किसी ने अपने बाग में बो दिया। बढ़ते बढ़ते वह दरख्त-सा बन गया और परिंदों ने उस की शाखों में अपने घोंसले बना लिए।”

खमीर की मिसाल

20 उसने दुबारा पूछा, “अल्लाह की बादशाही का किस चीज़ से मुवाज़ना करूँ? 21 वह उस खमीर की मानिंद है जो किसी औरत ने लेकर तकरीबन 27 किलोग्राम आटे में मिला दिया। गो वह उसमें छुप गया तो भी होते होते पूरे गुंधे हुए आटे को खमीर कर गया।”

तंग दरवाज़ा

22 ईसा तालीम देते देते मुख्तलिफ़ शहरों और देहातों में से गुज़रा। अब उसका सख़ यरूशलम ही की तरफ़ था। 23 इतने में किसी ने उससे पूछा, “खुदावंद, क्या कम लोगों को नजात मिलेगी?”

उसने जवाब दिया, 24 “तंग दरवाज़े में से दाखिल होने की सिर-तोड़ कोशिश करो। क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ कि बहुत-से लोग अंदर जाने की कोशिश करेंगे, लेकिन बेफ़ायदा। 25 एक वक्त्र आया कि घर का मालिक उठकर दरवाज़ा बंद कर देगा। फिर तुम बाहर खड़े रहोगे और खटखटाते खटखटाते इलतमास करोगे, ‘खुदावंद, हमारे लिए दरवाज़ा खोल दें।’ लेकिन वह जवाब देगा, ‘न मैं तुमको जानता हूँ, न यह कि तुम कहाँ के हो।’ 26 फिर तुम कहोगे, ‘हमने तो आपके सामने ही खाया और पिया और आप ही हमारी सड़कों पर तालीम देते रहे।’ 27 लेकिन वह जवाब देगा, ‘न मैं तुमको जानता हूँ, न यह कि तुम कहाँ के हो। ऐ तमाम बदकारो, मुझसे दूर हो जाओ!’ 28 वहाँ तुम रोते और दाँत पीसते रहोगे। क्योंकि तुम देखोगे कि इब्राहीम, इसहाक़, याकूब और तमाम नबी अल्लाह की बादशाही में हैं जबकि तुमको निकाल दिया गया है। 29 और लोग मशरिक़, मगरिब, शिमाल और जुनूब से आकर अल्लाह की बादशाही की ज़ियाफ़त में शरीक होंगे। 30 उस वक्त्र कुछ ऐसे होंगे जो पहले आखिर थे, लेकिन अब अव्वल होंगे। और कुछ ऐसे भी होंगे जो पहले अव्वल थे, लेकिन अब आखिर होंगे।”

यरूशलम पर अफ़सोस

31 उस वक्त्र कुछ फ़रीसी ईसा के पास आकर उससे कहने लगे, “इस मक़ाम को छोड़कर कहीं और चले जाएँ, क्योंकि हेरोदेस आपको क़त्ल करने का इरादा रखता है।”

32 ईसा ने जवाब दिया, “जाओ, उस लोमड़ी को बता दो, ‘आज और कल मैं बदस्ते निकालता और मरीज़ों को शफ़ा देता रहूँगा। फिर तीसरे दिन मैं पायाए-तकमील को पहुँचूँगा।’ 33 इसलिए लाज़िम है कि मैं आज, कल और परसों आगे चलता रहूँ। क्योंकि मुमकिन नहीं कि कोई नबी यरूशलम से बाहर हलाक हो।

34 हाय यरूशलम, यरूशलम! तू जो नबियों को क़त्ल करती और अपने पास भेजे हुए पैग़म्बरों को संगसार करती है। मैंने कितनी ही बार तेरी औलाद को जमा करना चाहा, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह मुरगी अपने बच्चों को अपने परों तले जमा करके महफूज़ कर लेती है। लेकिन तूने न चाहा। 35 अब तेरे घर को वीरानो-सुनसान छोड़ा जाएगा। और मैं तुमको बताता हूँ, तुम मुझे उस वक्त्र तक दुबारा नहीं देखोगे जब तक तुम न कहो कि मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है।”

14

सबत के दिन मरीज़ की शफ़ा

1 सबत के एक दिन ईसा खाने के लिए फ़रीसियों के किसी राहनुमा के घर आया। लोग उसे पकड़ने के लिए उस की हर हरकत पर नज़र रखे हुए थे। 2 वहाँ एक आदमी ईसा के सामने था जिसके बाजू और टँगें फूले हुए थे। 3 यह देखकर वह फ़रीसियों और शरीअत के आलिमों से पूछने लगा, “क्या शरीअत सबत के दिन शफ़ा देने की इजाज़त देती है?”

4 लेकिन वह खामोश रहे। फिर उसने उस आदमी पर हाथ रखा और उसे शफ़ा देकर सख़सत कर दिया। 5 हाज़िरीन से वह कहने लगा, “अगर तुममें से किसी का बेटा या बैल सबत के दिन कुएँ में गिर जाए तो क्या तुम उसे फ़ौरन नहीं निकालोगे?”

6 इस पर वह कोई जवाब न दे सके।

इज़ज़त और अज़ हासिल करने का तरीका

7 जब ईसा ने देखा कि मेहमान मेज़ पर इज़ज़त की कुरसियाँ चुन रहे हैं तो उसने उन्हें यह तमसील सुनाई, 8 “जब तुझे किसी शादी की ज़ियाफ़त में शरीक होने की दावत दी जाए तो वहाँ जाकर इज़ज़त की कुरसी पर न बैठना। ऐसा न हो कि किसी और को भी दावत दी गई हो

जो तुझसे ज्यादा इज्जतदार है। 9 क्योंकि जब वह पहुँचेगा तो मेज़बान तेरे पास आकर कहेगा, 'जरा इस आदमी को यहाँ बैठने दे।' यों तेरी बेइज्जती हो जाएगी और तुझे वहाँ से उठकर आखिरी कुर्सी पर बैठना पड़ेगा। 10 इसलिए ऐसा मत करना बल्कि जब तुझे दावत दी जाए तो जाकर आखिरी कुर्सी पर बैठ जा। फिर जब मेज़बान तुझे वहाँ बैठा हुआ देखेगा तो वह कहेगा, 'दोस्त, सामनेवाली कुर्सी पर बैठ।' इस तरह तमाम मेहमानों के सामने तेरी इज्जत हो जाएगी। 11 क्योंकि जो भी अपने आपको सरफराज़ करे उसे पस्त किया जाएगा और जो अपने आपको पस्त करे उसे सरफराज़ किया जाएगा।"

12 फिर ईसा ने मेज़बान से बात की, "जब तू लोगों को दोपहर या शाम का खाना खाने की दावत देना चाहता है तो अपने दोस्तों, भाइयों, रिश्तेदारों या अमीर हमसायों को न बुला। ऐसा न हो कि वह इसके एवज़ तुझे भी दावत दें। क्योंकि अगर वह ऐसा करें तो यही तेरा मुआवज़ा होगा। 13 इसके बजाए ज़ियाफ़त करते वक़्त ग़रीबों, लँगडों, मफ़्लूजों और अंधों को दावत दे। 14 ऐसा करने से तुझे बरकत मिलेगी। क्योंकि वह तुझे इसके एवज़ कुछ नहीं दे सकेंगे, बल्कि तुझे इसका मुआवज़ा उस वक़्त मिलेगा जब रास्तबाज़ जी उठेंगे।"

बड़ी ज़ियाफ़त की तमसील

15 यह सुनकर मेहमानों में से एक ने उससे कहा, "मुबारक है वह जो अल्लाह की बादशाही में खाना खाए।"

16 ईसा ने जवाब में कहा, "किसी आदमी ने एक बड़ी ज़ियाफ़त का इंतज़ाम किया। इसके लिए उसने बहुत-से लोगों को दावत दी। 17 जब ज़ियाफ़त का वक़्त आया तो उसने अपने नौकर को मेहमानों को इतला देने के लिए भेजा कि 'आएँ, सब कुछ तैयार है।' 18 लेकिन वह सबके सब माज़रत चाहने लगे। पहले ने कहा, 'मैंने खेत ख़रीदा है और अब ज़रूरी है कि निकलकर उसका मुआयना करूँ। मैं माज़रत चाहता हूँ।' 19 दूसरे ने कहा, 'मैंने बैलों के पाँच जोड़े ख़रीदे हैं। अब मैं उन्हें आजमाने जा रहा हूँ। मैं माज़रत चाहता हूँ।' 20 तीसरे ने कहा, 'मैंने शादी की है, इसलिए नहीं आ सकता।'

21 नौकर ने वापस आकर मालिक को सब कुछ बताया। वह गुस्से होकर नौकर से कहने लगा, 'जा, सीधे शहर की सड़कों और गलियों में जाकर वहाँ के ग़रीबों, लँगडों, अंधों और मफ़्लूजों को ले आ।' नौकर ने ऐसा ही किया। 22 फिर वापस आकर उसने मालिक को इतला दी, 'जनाब, जो कुछ आपने कहा था पूरा हो चुका है। लेकिन अब भी मज़ीद लोगों के लिए गुंजाइश है।' 23 मालिक ने उससे कहा, फिर शहर से निकलकर देहात की सड़कों पर और बाड़ों के पास जा। जो भी मिल जाए उसे हमारी खुशी में शरीक होने पर मजबूर कर ताकि मेरा घर भर जाए। 24 क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ कि जिनको पहले दावत दी गई थी उनमें से कोई भी मेरी ज़ियाफ़त में शरीक न होगा।"

शागिर्द होने की क्रीम

25 एक बड़ा हज़ूम ईसा के साथ चल रहा था। उनकी तरफ़ मुड़कर उसने कहा, 26 "अगर कोई मेरे पास आकर अपने बाप, माँ, बीवी, बच्चों, भाइयों, बहनों बल्कि अपने आपसे भी दुश्मनी न रखे तो वह मेरा शागिर्द नहीं हो सकता। 27 और जो अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे न हो ले वह मेरा शागिर्द नहीं हो सकता।

28 अगर तुममें से कोई बुर्ज तामीर करना चाहे तो क्या वह पहले बैठकर पूरे अखराजात का अंदाज़ा नहीं लगाएगा ताकि मालूम हो जाए कि वह उसे तकमील तक पहुँचा सकेगा या नहीं? 29 वरना ख़तरा है कि उस की बुनियाद डालने के बाद पैसे ख़त्म हो जाएँ और वह आगे कुछ न बना सके। फिर जो कोई भी देखेगा वह उसका मज़ाक़ उड़ाकर 30 कहेगा, 'उसने इमारत को शुरू तो किया, लेकिन अब उसे मुकम्मल नहीं कर पाया।'

31 या अगर कोई बादशाह किसी दूसरे बादशाह के साथ जंग के लिए निकले तो क्या वह पहले बैठकर अंदाज़ा नहीं लगाएगा कि वह अपने दस हज़ार फ़ौजियों से उन बीस हज़ार फ़ौजियों पर ग़ालिब आ सकता है जो उससे लड़ने आ रहे हैं? 32 अगर वह इस नतीजे पर पहुँचे कि ग़ालिब नहीं आ सकता तो वह सुलह करने के लिए अपने नुमाइंदे दुश्मन के पास भेजेगा जब वह अभी दूर ही हो। 33 इसी तरह तुममें से जो भी अपना सब कुछ न छोड़े वह मेरा शागिर्द नहीं हो सकता।

बेकार नमक

34 नमक अच्छी चीज़ है। लेकिन अगर उसका ज़ायका जाता रहे तो फिर उसे क्योंकर दुबारा नमकीन किया जा सकता है? 35 न वह ज़मीन के लिए मुफ़ीद है, न खाद के लिए बल्कि उसे निकालकर बाहर फेंका जाएगा। जो सुन सकता है वह सुन ले।"

15

खोई हुई भेड़

1 अब ऐसा था कि तमाम टैक्स लेनेवाले और गुनाहगार ईसा की बातें सुनने के लिए उसके पास आते थे। 2 यह देखकर फ़रीसी और शरीअत के आलिम बुड़बुड़ाने लगे, "यह आदमी गुनाहगारों को खुशआमदीद कहकर उनके साथ खाना खाता है।" 3 इस पर ईसा ने उन्हें यह तमसील सुनाई,

4 "फ़र्ज़ करो कि तुममें से किसी की सौ भेड़ें हैं। लेकिन एक गुम हो जाती है। अब मालिक क्या करेगा? क्या वह बाक़ी 99 भेड़ें खुले मैदान में छोड़कर गुमशुदा भेड़ को ढूँढ़ने नहीं जाएगा? ज़रूर जाएगा, बल्कि जब तक उसे वह भेड़ मिल न जाए वह उस की तलाश में रहेगा।

5 फिर वह खुश होकर उसे अपने कंधों पर उठा लेगा। 6 यों चलते चलते वह अपने घर पहुँच जाएगा और वहाँ अपने दोस्तों और हमसायों को

बुलाकर उनसे कहेगा, 'मेरे साथ खुशी मनाओ! क्योंकि मुझे अपनी खोई हुई भेड़ मिल गई है।' 7 मैं तुमको बताता हूँ कि आसमान पर बिलकुल इसी तरह खुशी मनाई जाएगी जब एक ही गुनाहगार तौबा करेगा। और यह खुशी उस खुशी की निसबत ज्यादा होगी जो उन 99 अफ़राद के बाइस मनाई जाएगी जिन्हें तौबा करने की ज़रूरत ही नहीं थी।

गुमशुदा सिक्का

8 या फ़र्ज़ करो कि किसी औरत के पास दस सिक्के हों लेकिन एक सिक्का गुम हो जाए। अब औरत क्या करेगी? क्या वह चराग जलाकर और घर में झाड़ू दे देकर बड़ी एहतियात से सिक्के को तलाश नहीं करेगी? ज़रूर करेगी, बल्कि वह उस वक़्त तक ढूँढ़ती रहेगी जब तक उसे सिक्का मिल न जाए। 9 जब उसे सिक्का मिल जाएगा तो वह अपनी सहेलियों और हमसाथों को बुलाकर उनसे कहेगी, 'मेरे साथ खुशी मनाओ! क्योंकि मुझे अपना गुमशुदा सिक्का मिल गया है।' 10 मैं तुमको बताता हूँ कि बिलकुल इसी तरह अल्लाह के फ़रिश्तों के सामने खुशी मनाई जाती है जब एक भी गुनाहगार तौबा करता है।"

गुमशुदा बेटा

11 ईसा ने अपनी बात जारी रखी। "किसी आदमी के दो बेटे थे। 12 इनमें से छोटे ने बाप से कहा, 'ऐ बाप, मीरास का मेरा हिस्सा दे दें।' इस पर बाप ने दोनों में अपनी मिलकियत तकसीम कर दी। 13 थोड़े दिनों के बाद छोटा बेटा अपना सारा सामान समेटकर अपने साथ किसी दूर-दराज़ मुल्क में ले गया। वहाँ उसने ऐयाशी में अपना पूरा मालो-मता उड़ा दिया। 14 सब कुछ जाया हो गया तो उस मुल्क में सख़्त काल पड़ा। अब वह ज़रूरतमंद होने लगा। 15 नतीजे में वह उस मुल्क के किसी बाशिंदे के हाँ जा पड़ा जिसने उसे सुअरों को चराने के लिए अपने खेतों में भेज दिया। 16 वहाँ वह अपना पेट उन फलियों से भरने की शदीद ख़ाहिश रखता था जो सुअर खाते थे, लेकिन उसे इसकी भी इजाज़त न मिली। 17 फिर वह होश में आया। वह कहने लगा, 'मेरे बाप के कितने मज़दूरों को कसरत से खाना मिलता है जबकि मैं यहाँ भूका मर रहा हूँ। 18 मैं उठकर अपने बाप के पास वापस चला जाऊँगा और उससे कहूँगा, 'ऐ बाप, मैंने आसमान का और आपका गुनाह किया है। 19 अब मैं इस लायक नहीं रहा कि आपका बेटा कहलाऊँ। मेहरबानी करके मुझे अपने मज़दूरों में रख लें।' 20 फिर वह उठकर अपने बाप के पास वापस चला गया।

लेकिन वह घर से अभी दूर ही था कि उसके बाप ने उसे देख लिया। उसे तरस आया और वह भागकर बेटे के पास आया और गले लगाकर उसे बोसा दिया। 21 बेटे ने कहा, 'ऐ बाप, मैंने आसमान का और आपका गुनाह किया है। अब मैं इस लायक नहीं रहा कि आपका बेटा कहलाऊँ।' 22 लेकिन बाप ने अपने नौकरों को बुलाया और कहा, 'जल्दी करो, बेहतरीन सूट लाकर इसे पहनाओ। इसके हाथ में अंगूठी और पाँवों में जूते पहना दो। 23 फिर मोटा-ताज़ा बछड़ा लाकर उसे ज़बह करो ताकि हम खाएँ और खुशी मनाएँ, 24 क्योंकि यह मेरा बेटा मुरदा था अब ज़िंदा हो गया है, गुम हो गया था अब मिल गया है।' इस पर वह खुशी मनाने लगे।

25 इस दौरान बाप का बड़ा बेटा खेत में था। अब वह घर लौटा। जब वह घर के करीब पहुँचा तो अंदर से मौसीकी और नाचने की आवाज़ें सुनाई दीं। 26 उसने किसी नौकर को बुलाकर पूछा, 'यह क्या हो रहा है?' 27 नौकर ने जवाब दिया, 'आपका भाई आ गया है और आपके बाप ने मोटा-ताज़ा बछड़ा ज़बह करवाया है, क्योंकि उसे अपना बेटा सहीह-सलामत वापस मिल गया है।'

28 यह सुनकर बड़ा बेटा गुस्से हुआ और अंदर जाने से इनकार कर दिया। फिर बाप घर से निकलकर उसे समझाने लगा। 29 लेकिन उसने जवाब में अपने बाप से कहा, 'देखें, मैंने इतने साल आपकी खिदमत में सख़्त मेहनत-मशक्कत की है और एक दफ़ा भी आपकी मरज़ी की खिलाफ़वर्ज़ी नहीं की। तो भी आपने मुझे इस पूरे अरसे में एक छोटा बकरा भी नहीं दिया कि उसे ज़बह करके अपने दोस्तों के साथ ज़ियाफ़त करता। 30 लेकिन ज्योंही आपका यह बेटा आया जिसने आपकी दौलत कसबियों में उड़ा दी, आपने उसके लिए मोटा-ताज़ा बछड़ा ज़बह करवाया।' 31 बाप ने जवाब दिया, 'बेटा, आप तो हर वक़्त मेरे पास रहे हैं, और जो कुछ मेरा है वह आप ही का है। 32 लेकिन अब ज़रूरी था कि हम ज़न मनाएँ और खुश हों। क्योंकि आपका यह भाई जो मुरदा था अब ज़िंदा हो गया है, जो गुम हो गया था अब मिल गया है।' "

16

चालाक मुलाज़िम

1 ईसा ने शागिर्दों से कहा, "किसी अमीर आदमी ने एक मुलाज़िम रखा था जो उस की जायदाद की देख-भाल करता था। ऐसा हुआ कि एक दिन उस पर इलज़ाम लगाया गया कि वह अपने मालिक की दौलत जाया कर रहा है। 2 मालिक ने उसे बुलाकर कहा, 'यह क्या है जो मैं तेरे बारे में सुनता हूँ? अपनी तमाम ज़िम्मादारियों का हिसाब दे, क्योंकि मैं तुझे बरखास्त कर दूँगा।' 3 मुलाज़िम ने दिल में कहा, 'अब मैं क्या करूँ जबकि मेरा मालिक यह ज़िम्मादारी मुझसे छीन लेगा? खुदाई जैसा सख़्त काम मुझसे नहीं होता और भीक माँगने से शर्म आती है। 4 हाँ, मैं जानता हूँ कि क्या करूँ ताकि लोग मुझे बरखास्त किए जाने के बाद अपने घरों में खुशआमदीद कहें।'

5 यह कहकर उसने अपने मालिक के तमाम कर्ज़दारों को बुलाया। पहले से उसने पूछा, 'तुम्हारा कर्ज़ा कितना है?' 6 उसने जवाब दिया, 'मुझे मालिक को जैतून के तेल के सौ कनस्तर वापस करने हैं।' मुलाज़िम ने कहा, 'अपना बिल ले लो और बैठकर जल्दी से सौ कनस्तर पचास में बदल लो।' 7 दूसरे से उसने पूछा, 'तुम्हारा कितना कर्ज़ा है?' उसने जवाब दिया, 'मुझे गंदुम की हज़ार बोरियाँ वापस करनी हैं।' मुलाज़िम ने कहा, 'अपना बिल ले लो और हज़ार के बदले आठ सौ लिख लो।'

8 यह देखकर मालिक ने बेईमान मुलाजिम की तारीफ की कि उसने अक्ल से काम लिया है। क्योंकि इस दुनिया के फ़रज़ंद अपनी नसल के लोगों से निपटने में नूर के फ़रज़ंदों से ज़्यादा होशियार होते हैं।

9 मैं तुमको बताता हूँ कि दुनिया की नारास्त दौलत से अपने लिए दोस्त बना लो ताकि जब यह ख़त्म हो जाए तो लोग तुमको अबदी रिहाइशगाहों में ख़ुशआमदीद कहें। 10 जो थोड़े में वफ़ादार है वह ज़्यादा में भी वफ़ादार होगा। और जो थोड़े में बेईमान है वह ज़्यादा में भी बेईमानी करेगा। 11 अगर तुम दुनिया की नारास्त दौलत को सँभालने में वफ़ादार न रहे तो फिर कौन हकीकी दौलत तुम्हारे सुपुर्द करेगा? 12 और अगर तुमने दूसरों की दौलत सँभालने में बेईमानी दिखाई है तो फिर कौन तुमको तुम्हारे जाती इस्तेमाल के लिए कुछ देगा?

13 कोई भी गुलाम दो मालिकों की ख़िदमत नहीं कर सकता। या तो वह एक से नफ़रत करके दूसरे से मुहब्बत रखेगा, या एक से लिपटकर दूसरे को हकीर जानेगा। तुम एक ही वक़्त में अल्लाह और दौलत की ख़िदमत नहीं कर सकते।”

ईसा की चंद कहावतें

14 फ़रीसियों ने यह सब कुछ सुना तो वह उसका मज़ाक़ उड़ाने लगे, क्योंकि वह लालची थे। 15 उसने उनसे कहा, “तुम ही वह हो जो अपने आपको लोगों के सामने रास्तबाज़ करार देते हो, लेकिन अल्लाह तुम्हारे दिलों से वाकिफ़ है। क्योंकि लोग जिस चीज़ की बहुत कदर करते हैं वह अल्लाह के नज़दीक मक़रूह है।

16 यहया के आने तक तुम्हारे राहनुमा मूसा की शरीअत और नबियों के पैगामात थे। लेकिन अब अल्लाह की बादशाही की ख़ुशख़बरी का एलान किया जा रहा है और तमाम लोग ज़बरदस्ती इसमें दाख़िल हो रहे हैं। 17 लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि शरीअत मनसूख़ हो गई है बल्कि आसमानो-ज़मीन जाते रहेंगे, लेकिन शरीअत की ज़ेर ज़बर तक कोई भी बात नहीं बदलेगी।

18 चुनौचे जो आदमी अपनी बीवी को तलाक़ देकर किसी और से शादी करे वह ज़िना करता है। इसी तरह जो किसी तलाक़शुदा औरत से शादी करे वह भी ज़िना करता है।

अमीर आदमी और लाज़र

19 एक अमीर आदमी का ज़िक्र है जो अरगवानी रंग के कपड़े और नफ़ीस कतान पहनता और हर रोज़ ऐशो-इशरत में गुज़ारता था। 20 अमीर के गेट पर एक गरीब आदमी पड़ा था जिसके पूरे जिस्म पर नासूर थे। उसका नाम लाज़र था 21 और उस की बस एक ही ख़ाहिश थी कि वह अमीर की मेज़ से गिरे हुए टुकड़े खाकर सेर हो जाए। कुत्ते उसके पास आकर उसके नासूर चाटते थे।

22 फिर ऐसा हुआ कि गरीब आदमी मर गया। फ़रिश्तों ने उसे उठाकर इब्राहीम की गोद में बिठा दिया। अमीर आदमी भी फ़ौत हुआ और दफ़नाया गया। 23 वह जहन्नुम में पहुँचा। अज़ाब की हालत में उसने अपनी नज़र उठाई तो दूर से इब्राहीम और उस की गोद में लाज़र को देखा। 24 वह पुकार उठा, ‘ऐ मेरे बाप इब्राहीम, मुझ पर रहम करें। मेहरबानी करके लाज़र को मेरे पास भेज दें ताकि वह अपनी उँगली को पानी में डुबोकर मेरी ज़बान को ठंडा करे, क्योंकि मैं इस आग में तड़पता हूँ।’

25 लेकिन इब्राहीम ने जवाब दिया, ‘बेटा, याद रख कि तुझे अपनी ज़िंदगी में बेहतरीन चीज़ें मिल चुकी हैं जबकि लाज़र को बदतरनी चीज़ें। लेकिन अब उसे आराम और तसल्ली मिल गई है जबकि तुझे अज़ियत। 26 नीज़, हमारे और तुम्हारे दरमियान एक वसी ख़लीज कायम है। अगर कोई चाहे भी तो उसे पार करके यहाँ से तुम्हारे पास नहीं जा सकता, न वहाँ से कोई यहाँ आ सकता है।’ 27 अमीर आदमी ने कहा, ‘मेरे बाप, फिर मेरी एक और गुज़ारिश है, मेहरबानी करके लाज़र को मेरे वालिद के घर भेज दें। 28 मेरे पाँच भाई हैं। वह वहाँ जाकर उन्हें आगाह करे, ऐसा न हो कि उनका अंजाम भी यह अज़ियतनाक मक़ाम हो।’

29 लेकिन इब्राहीम ने जवाब दिया, ‘उनके पास मूसा की तौरत और नबियों के सहीफ़े तो हैं। वह उनकी सुनें।’ 30 अमीर ने अर्ज़ की, ‘नहीं, मेरे बाप इब्राहीम, अगर कोई मुरदों में से उनके पास जाए तो फिर वह ज़रूर तौबा करेंगे।’ 31 इब्राहीम ने कहा, ‘अगर वह मूसा और नबियों की नहीं सुनते तो वह उस वक़्त भी कायल नहीं होंगे जब कोई मुरदों में से जी उठकर उनके पास जाएगा।’”

17

गुनाह

1 ईसा ने अपने शगिर्दों से कहा, “आज़माइशों को तो आना ही आना है, लेकिन उस पर अफ़सोस जिसकी मारिफ़त वह आएँ। 2 अगर वह इन छोटों में से किसी को गुनाह करने पर उकसाए तो उसके लिए बेहतर है कि उसके गले में बड़ी चक्की का पाट बाँधा जाए और उसे समुंदर में फेंक दिया जाए। 3 ख़बरदार रहो!

अगर तुम्हारा भाई गुनाह करे तो उसे समझाओ। अगर वह इस पर तौबा करे तो उसे मुआफ़ कर दो। 4 अब फ़र्ज़ करो कि वह एक दिन के अंदर सात बार तुम्हारा गुनाह करे, लेकिन हर दफ़ा वापस आकर तौबा का इज़हार करे, तो भी उसे हर दफ़ा मुआफ़ कर दो।”

ईमान

5 रसूलों ने ख़ुदावंद से कहा, “हमारे ईमान को बढ़ा दें।”

6 ख़ुदावंद ने जवाब दिया, “अगर तुम्हारा ईमान राई के दाने जैसा छोटा भी हो तो तुम शहतूत के इस दरख़्त को कह सकते हो, ‘उखड़कर समुंदर में जा लग’ तो वह तुम्हारी बात पर अमल करेगा।

गुलाम का फर्ज

7 फर्ज करो कि तुममें से किसी ने हल चलाने या जानवर चराने के लिए एक गुलाम रखा है। जब यह गुलाम खेत से घर आएगा तो क्या उसका मालिक कहेगा, 'इधर आओ, खाने के लिए बैठ जाओ?' 8 हरगिज़ नहीं, बल्कि वह यह कहेगा, 'मेरा खाना तैयार करो, झूटी के कपड़े पहनकर मेरी खिदमत करो जब तक मैं खा-पी न लूँ। इसके बाद तुम भी खा और पी सकोगे।' 9 और क्या वह अपने गुलाम की उस खिदमत का शुक्रिया अदा करेगा जो उसने उसे करने को कहा था? हरगिज़ नहीं! 10 इसी तरह जब तुम सब कुछ जो तुम्हें करने को कहा गया है कर चुको तब तुमको यह कहना चाहिए, 'हम नालायक नौकर हैं। हमने सिर्फ अपना फर्ज अदा किया है।' 11

कोढ़ के दस मरीजों की शफ़ा

11 ऐसा हुआ कि यरूशलेम की तरफ़ सफ़र करते करते ईसा सामरिया और गलील में से गुज़रा। 12 एक दिन वह किसी गाँव में दाख़िल हो रहा था कि कोढ़ के दस मरीज़ उसको मिलने आए। वह कुछ फ़ासले पर खड़े होकर 13 ऊँची आवाज़ से कहने लगे, "ऐ ईसा, उस्ताद, हम पर रहम करें।"

14 उसने उन्हें देखा तो कहा, "जाओ, अपने आपको इमामों को दिखाओ ताकि वह तुम्हारा मुआयना करें।"

और ऐसा हुआ कि वह चलते चलते अपनी बीमारी से पाक-साफ़ हो गए। 15 उनमें से एक ने जब देखा कि शफ़ा मिल गई है तो वह मुड़कर ऊँची आवाज़ से अल्लाह की तमजीद करने लगा, 16 और ईसा के सामने मुँह के बल गिरकर शुक्रिया अदा किया। यह आदमी सामरिया का बाशिंदा था। 17 ईसा ने पूछा, "क्या दस के दस आदमी अपनी बीमारी से पाक-साफ़ नहीं हुए? बाकी नौ कहाँ हैं? 18 क्या इस ग़ैरमुल्की के अलावा कोई और वापस आकर अल्लाह की तमजीद करने के लिए तैयार नहीं था?" 19 फिर उसने उससे कहा, "उठकर चला जा। तेरे इमान ने तुझे बचा लिया है।"

अल्लाह की बादशाही कब आएगी

20 कुछ फ़रीसियों ने ईसा से पूछा, "अल्लाह की बादशाही कब आएगी?" उसने जवाब दिया, "अल्लाह की बादशाही यों नहीं आ रही कि उसे ज़ाहिरी निशानों से पहचाना जाए। 21 लोग यह भी नहीं कह सकेंगे, 'वह यहाँ है' या 'वह वहाँ है' क्योंकि अल्लाह की बादशाही तुम्हारे दरमियान है।"

22 फिर उसने अपने शागिर्दों से कहा, "ऐसे दिन आएँगे कि तुम इब्ने-आदम का कम अज़ कम एक दिन देखने की तमन्ना करोगे, लेकिन नहीं देखोगे। 23 लोग तुमको बताएँगे, 'वह वहाँ है' या 'वह यहाँ है।' लेकिन मत जाना और उनके पीछे न लगना। 24 क्योंकि जब इब्ने-आदम का दिन आएगा तो वह बिजली की मानिंद होगा जिसकी चमक आसमान को एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक रौशन कर देती है। 25 लेकिन पहले लाज़िम है कि वह बहुत दुख उठाए और इस नसल के हाथों रद्द किया जाए। 26 जब इब्ने-आदम का वक़्त आएगा तो हालात नूह के दिनों जैसे होंगे। 27 लोग उस दिन तक खाने-पीने और शादी करने करवाने में लगे रहे जब तक नूह क़स्ती में दाख़िल न हो गया। फिर सैलाब ने आकर उन सबको तबाह कर दिया। 28 बिलकुल यही कुछ लूत के ऐयाम में हुआ। लोग खाने-पीने, ख़रीदो-फ़रोख़्त, काशतकारी और तामीर के काम में लगे रहे। 29 लेकिन जब लूत सद्म को छोड़कर निकला तो आग और गंधक ने आसमान से बरसकर उन सबको तबाह कर दिया। 30 इब्ने-आदम के ज़ुहर के वक़्त ऐसे ही हालात होंगे।

31 जो शरख़ उस दिन छत पर हो वह घर का सामान साथ ले जाने के लिए नीचे न उतरे। इसी तरह जो खेत में हो वह अपने पीछे पड़ी चीज़ों को साथ ले जाने के लिए घर न लौटे। 32 लूत की बीवी को याद रखो। 33 जो अपनी जान बचाने की कोशिश करेगा वह उसे खो देगा, और जो अपनी जान खो देगा वही उसे बचाए रखेगा। 34 मैं तुमको बताता हूँ कि उस रात दो अफ़राद एक बिस्तर में सोए होंगे, एक को साथ ले लिया जाएगा जबकि दूसरे को पीछे छोड़ दिया जाएगा। 35 दो ख़वातीन चक्की पर गंदुम पीस रही होंगी, एक को साथ ले लिया जाएगा जबकि दूसरी को पीछे छोड़ दिया जाएगा। 36 [दो अफ़राद खेत में होंगे, एक को साथ ले लिया जाएगा जबकि दूसरे को पीछे छोड़ दिया जाएगा।]"

37 उन्होंने पूछा, "ख़ुदावंद, यह कहाँ होगा?"

उसने जवाब दिया, "जहाँ लाश पड़ी हो वहाँ गिद्ध जमा हो जाएंगे।"

18

बेवा और जज की तमसील

1 फिर ईसा ने उन्हें एक तमसील सुनाई जो मुसलसल दुआ करने और हिम्मत न हारने की ज़रूरत को ज़ाहिर करती है। 2 उसने कहा, "किसी शहर में एक जज रहता था जो न ख़ुदा का ख़ौफ़ मानता, न किसी इन्सान का लिहाज़ करता था। 3 अब उस शहर में एक बेवा भी थी जो यह कहकर उसके पास आती रही कि 'मेरे मुख़ालिफ़ को जीतने न दें बल्कि मेरा इन्साफ़ करें।' 4 कुछ देर के लिए जज ने इन्कार किया। लेकिन फिर वह दिल में कहने लगा, 'बेशक मैं ख़ुदा का ख़ौफ़ नहीं मानता, न लोगों की परवा करता हूँ, 5 लेकिन यह बेवा मुझे बार बार तंग कर रही है। इसलिए मैं उसका इन्साफ़ करूँगा। ऐसा न हो कि आख़िरकार वह आकर मेरे मुँह पर थप्पड़ मारे।' 6"

6 खुदावंद ने बात जारी रखी। “इस पर ध्यान दो जो बेइन्साफ जज ने कहा। 7 अगर उसने आखिरकार इन्साफ किया तो क्या अल्लाह अपने चुने हुए लोगों का इन्साफ नहीं करेगा जो दिन-रात उसे मदद के लिए पुकारते हैं? क्या वह उनकी बात मुलतवी करता रहेगा? 8 हरगिज़ नहीं! मैं तुमको बताता हूँ कि वह जल्दी से उनका इन्साफ करेगा। लेकिन क्या इब्ने-आदम जब दुनिया में आया तो ईमान देख पाया?”

फरीसी और टैक्स लेनेवाले की तमसील

9 बाज़ लोग मौजूद थे जो अपनी रास्तबाज़ी पर भरोसा रखते और दूसरों को हक़ीर जानते थे। उन्हें ईसा ने यह तमसील सुनाई, 10 “दो आदमी बैतुल-मुकद्दस में दुआ करने आए। एक फरीसी था और दूसरा टैक्स लेनेवाला।

11 फरीसी खड़ा होकर यह दुआ करने लगा, ‘ऐ खुदा, मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि मैं बाकी लोगों की तरह नहीं हूँ। न मैं डाकू हूँ, न बेइन्साफ, न ज़िनाकार। मैं इस टैक्स लेनेवाले की मारिंद भी नहीं हूँ। 12 मैं हफ़्ते में दो मरतबा रोज़ा रखता हूँ और तमाम आमदनी का दसवाँ हिस्सा तेरे लिए मखसूस करता हूँ।’

13 लेकिन टैक्स लेनेवाला दूर ही खड़ा रहा। उसने अपनी आँखें आसमान की तरफ़ उठाने तक की ज़ुरत न की बल्कि अपनी छाती पीट पीटकर कहने लगा, ‘ऐ खुदा, मुझ गुनाहगार पर रहम कर!’ 14 मैं तुमको बताता हूँ कि जब दोनों अपने अपने घर लौटे तो फरीसी नहीं बल्कि यह आदमी अल्लाह के नज़दीक रास्तबाज़ ठहरा। क्योंकि जो भी अपने आपको सरफ़राज़ करे उसे पस्त किया जाएगा और जो अपने आपको पस्त करे उसे सरफ़राज़ किया जाएगा।”

ईसा छोटे बच्चों को प्यार करता है

15 एक दिन लोग अपने छोटे बच्चों को भी ईसा के पास लाए ताकि वह उन्हें छुए। यह देखकर शागिर्दों ने उनको मलामत की। 16 लेकिन ईसा ने उन्हें अपने पास बुलाकर कहा, “बच्चों को मेरे पास आने दो और उन्हें न रोको, क्योंकि अल्लाह की बादशाही इन जैसे लोगों को हासिल है। 17 मैं तुमको सच बताता हूँ, जो अल्लाह की बादशाही को बच्चे की तरह कबूल न करे वह उसमें दाखिल नहीं होगा।”

अमीर मुश्किल से अल्लाह की बादशाही में दाखिल हो सकते हैं

18 किसी राहनुमा ने उससे पूछा, “नेक उस्ताद, मैं क्या करूँ ताकि मीरास में अबदी ज़िंदगी पाऊँ?”

19 ईसा ने जवाब दिया, “तू मुझे नेक क्यों कहता है? कोई नेक नहीं सिवाए एक के और वह है अल्लाह। 20 तू शरीअत के अहकाम से तो वाकिफ़ है कि ज़िना न करना, क़त्ल न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना।”

21 आदमी ने जवाब दिया, “मैंने जवानी से आज तक इन तमाम अहकाम की पैरवी की है।”

22 यह सुनकर ईसा ने कहा, “एक काम अब तक रह गया है। अपनी पूरी जायदाद फ़रोख्त करके पैसे ग़रीबों में तक्रसीम कर दे। फिर तेरे लिए आसमान पर खज़ाना जमा हो जाएगा। इसके बाद आकर मेरे पीछे हो ले।” 23 यह सुनकर आदमी को बहुत दुख हुआ, क्योंकि वह निहायत दौलतमंद था।

24 यह देखकर ईसा ने कहा, “दौलतमंदों के लिए अल्लाह की बादशाही में दाखिल होना कितना मुश्किल है! 25 अमीर के अल्लाह की बादशाही में दाखिल होने की निसबत यह ज़्यादा आसान है कि ऊँट सूई के नाके में से गुज़र जाए।”

26 यह बात सुनकर सुननेवालों ने पूछा, “फिर किस को नज़ात मिल सकती है?”

27 ईसा ने जवाब दिया, “जो इन्सान के लिए नामुमकिन है वह अल्लाह के लिए मुमकिन है।”

28 पतरस ने उससे कहा, “हम तो अपना सब कुछ छोड़कर आपके पीछे हो लिए हैं।”

29 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि जिसने भी अल्लाह की बादशाही की खातिर अपने घर, बीवी, भाइयों, वालिंदैन या बच्चों को छोड़ दिया है 30 उसे इस ज़माने में कई गुना ज़्यादा और आनेवाले ज़माने में अबदी ज़िंदगी मिलेगी।”

ईसा की मौत की तीसरी पेशगोई

31 ईसा शागिर्दों को एक तरफ़ ले जाकर उनसे कहने लगा, “सुनो, हम यरूशलम की तरफ़ बढ़ रहे हैं। वहाँ सब कुछ पूरा हो जाएगा जो नबियों की मारिफ़त इब्ने-आदम के बारे में लिखा गया है। 32 उसे ग़ैरयहूदियों के हवाले कर दिया जाएगा जो उसका मज़ाक़ उड़ाएँगे, उस की बेइज़्ज़ती करेंगे, उस पर थूकेंगे, 33 उसको कोड़े मारेंगे और उसे कत्ल करेंगे। लेकिन तीसरे दिन वह जी उठेगा।”

34 लेकिन शागिर्दों की समझ में कुछ न आया। इस बात का मतलब उनसे छुपा रहा और वह न समझे कि वह क्या कह रहा है।

अंधे की शफ़ा

35 ईसा यरीह के करीब पहुँचा। वहाँ रास्ते के किनारे एक अंधा बैठा भीक माँग रहा था। 36 बहुत-से लोग उसके सामने से गुज़रने लगे तो उसने यह सुनकर पूछा कि क्या हो रहा है।

37 उन्होंने कहा, “ईसा नासरी यहाँ से गुज़र रहा है।”

38 अंधा चिल्लाने लगा, “ऐ ईसा इब्ने-दाऊद, मुझ पर रहम करें।”

39 आगे चलनेवालों ने उसे डाँटकर कहा, “खामोश!” लेकिन वह मज़ीद ऊँची आवाज़ से पुकारता रहा, “ऐ इब्ने-दाऊद, मुझ पर रहम करें।”

40 ईसा स्क गया और हुक्म दिया, “उसे मेरे पास लाओ।” जब वह करीब आया तो ईसा ने उससे पूछा, 41 “तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिए करूँ?”

उसने जवाब दिया, “खुदावंद, यह कि मैं देख सकूँ।”

42 ईसा ने उससे कहा, “तो फिर देख! तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया है।”

43 ज्योंही उसने यह कहा अंधे की आँखें बहाल हो गईं और वह अल्लाह की तमजीद करते हुए उसके पीछे हो लिया। यह देखकर पूरे हुजूम ने अल्लाह को जलाल दिया।

19

ईसा और जक्काई

1 फिर ईसा यरीह में दाखिल हुआ और उसमें से गुजरने लगा। 2 उस शहर में एक अमीर आदमी बनाम जक्काई रहता था जो टैक्स लेनेवालों का अफसर था। 3 वह जानना चाहता था कि यह ईसा कौन है, लेकिन पूरी कोशिश करने के बावजूद उसे देख न सका, क्योंकि ईसा के इर्दगिर्द बड़ा हुजूम था और जक्काई का कद छोटा था। 4 इसलिए वह दौड़कर आगे निकला और उसे देखने के लिए अंजीर-तृत* के दरख्त पर चढ़ गया जो रास्ते में था। 5 जब ईसा वहाँ पहुँचा तो उसने नज़र उठाकर कहा, “जक्काई, जल्दी से उतर आ, क्योंकि आज मुझे तेरे घर में ठहरना है।”

6 जक्काई फौरन उतर आया और खुशी से उस की मेहमान-नवाज़ी की। 7 यह देखकर बाक़ी तमाम लोग बुड़बुड़ाने लगे, “इसके घर में जाकर वह एक गुनाहगार के मेहमान बन गए हैं।”

8 लेकिन जक्काई ने खुदावंद के सामने खड़े होकर कहा, “खुदावंद, मैं अपने माल का आधा हिस्सा ग़रीबों को दे देता हूँ। और जिससे मैंने नाजायज़ तौर से कुछ लिया है उसे चार गुना वापस करता हूँ।”

9 ईसा ने उससे कहा, “आज इस घराने को नजात मिल गई है, इसलिए कि यह भी इब्राहीम का बेटा है। 10 क्योंकि इब्ने-आदम गुमशुदा को ढूँढ़ने और नजात देने के लिए आया है।”

पैसों में इज़ाफ़ा

11 अब ईसा यरूशलम के करीब आ चुका था, इसलिए लोग अंदाज़ा लगाने लगे कि अल्लाह की बादशाही जाहिर होनेवाली है। इसके पेशे-नज़र ईसा ने अपनी यह बातें सुननेवालों को एक तमसील सुनाई। 12 उसने कहा, “एक नवाब किसी दूर-दराज़ मुल्क को चला गया ताकि उसे बादशाह मुक़र्रर किया जाए। फिर उसे वापस आना था। 13 रवाना होने से पहले उसने अपने नौकरों में से दस को बुलाकर उन्हें सोने का एक एक सिक्का दिया। साथ साथ उसने कहा, ‘यह पैसे लेकर उस वक़्त तक कारोबार में लगाओ जब तक मैं वापस न आऊँ।’ 14 लेकिन उस की रियाया उससे नफ़रत रखती थी, इसलिए उसने उसके पीछे वफ़द भेजकर इत्तला दी, ‘हम नहीं चाहते कि यह आदमी हमारा बादशाह बने।’

15 तो भी उसे बादशाह मुक़र्रर किया गया। इसके बाद जब वापस आया तो उसने उन नौकरों को बुलाया जिन्हें उसने पैसे दिए थे ताकि मालूम करे कि उन्होंने यह पैसे कारोबार में लगाकर कितना इज़ाफ़ा किया है। 16 पहला नौकर आया। उसने कहा, ‘जनाब, आपके एक सिक्के से दस हो गए हैं।’ 17 मालिक ने कहा, ‘शाबाश, अच्छे नौकर। तू थोड़े में वफ़ादार रहा, इसलिए अब तुझे दस शहरों पर इख्तियार मिलेगा।’ 18 फिर दूसरा नौकर आया। उसने कहा, ‘जनाब, आपके एक सिक्के से पाँच हो गए हैं।’ 19 मालिक ने उससे कहा, ‘तुझे पाँच शहरों पर इख्तियार मिलेगा।’

20 फिर एक और नौकर आकर कहने लगा, ‘जनाब, यह आपका सिक्का है। मैंने इसे कपड़े में लपेटकर महफूज़ रखा, 21 क्योंकि मैं आपसे डरता था, इसलिए कि आप सख़्त आदमी हैं। जो पैसे आपने नहीं लगाए उन्हें ले लेते हैं और जो बीज आपने नहीं बोया उस की फ़सल काटते हैं।’ 22 मालिक ने कहा, ‘शरीर नौकर! मैं तेरे अपने अलफ़ाज़ के मुताबिक़ तेरी अदालत करूँगा। जब तू जानता था कि मैं सख़्त आदमी हूँ, कि वह पैसे ले लेता हूँ जो खुद नहीं लगाए और वह फ़सल काटता हूँ जिसका बीज नहीं बोया, 23 तो फिर तूने मेरे पैसे बैंक में क्यों न जमा कराए? अगर तू ऐसा करता तो वापसी पर मुझे कम अज़ कम वह पैसे सूद समेत मिल जाते।’

24 यह कहकर वह हाज़िरन से मुखातिब हुआ, ‘यह सिक्का इससे लेकर उस नौकर को दे दो जिसके पास दस सिक्के हैं।’ 25 उन्होंने एतराज़ किया, ‘जनाब, उसके पास तो पहले ही दस सिक्के हैं।’ 26 उसने जवाब दिया, ‘मैं तुम्हें बताता हूँ कि हर शख्स जिसके पास कुछ है उसे और दिया जाएगा, लेकिन जिसके पास कुछ नहीं है उससे वह भी छीन लिया जाएगा जो उसके पास है। 27 अब उन दुश्मनों को ले आओ जो नहीं चाहते थे कि मैं उनका बादशाह बनूँ। उन्हें मेरे सामने फाँसी दे दो।’

यरूशलम में ईसा का पुरजोश इस्तक़बाल

28 इन बातों के बाद ईसा दूसरों के आगे आगे यरूशलम की तरफ़ बढ़ने लगा। 29 जब वह बैत-फ़गे और बैत-अनियाह के करीब पहुँचा जो ज़ैतून के पहाड़ पर थे तो उसने दो शागिर्दों को अपने आगे भेजकर 30 कहा, “सामनेवाले गाँव में जाओ। वहाँ तुम एक जवान गधा देखोगे। वह

* 19:4 एक सायादार दरख्त जिसमें अंजीर की तरह का खुरदनी फल लगता है। इसके फूल ज़रद और आराइशी होते हैं। मिसरी तृत। जमीज़। ficus sycomorus।

बँधा हुआ होगा और अब तक कोई भी उस पर सवार नहीं हुआ है। उसे खोलकर ले आओ। 31 अगर कोई पूछे कि गधे को क्यों खोल रहे हो तो उसे बता देना कि ख़ुदावन्द को इसकी ज़रूरत है।”

32 दोनों शागिर्द गए तो देखा कि सब कुछ वैसा ही है जैसा ईसा ने उन्हें बताया था। 33 जब वह जवान गधे को खोलने लगे तो उसके मालिकों ने पूछा, “तुम गधे को क्यों खोल रहे हो?”

34 उन्होंने जवाब दिया, “ख़ुदावन्द को इसकी ज़रूरत है।” 35 वह उसे ईसा के पास ले आए, और अपने कपड़े गधे पर रखकर उसको उस पर सवार किया। 36 जब वह चल पड़ा तो लोगों ने उसके आगे आगे रास्ते में अपने कपड़े बिछा दिए।

37 चलते चलते वह उस जगह के करीब पहुँचा जहाँ रास्ता ज़ैतून के पहाड़ पर से उतरने लगता है। इस पर शागिर्दों का पूरा हुजूम ख़ुशी के मारे ऊँची आवाज़ से उन मोजिजों के लिए अल्लाह की तमजीद करने लगा जो उन्होंने देखे थे,

38 “मुबारक है वह बादशाह

जो रब के नाम से आता है।

आसमान पर सलामती हो और बुलंदियों पर इज्जतो-जलाल।”

39 कुछ फ़रीसी भीड़ में थे। उन्होंने ईसा से कहा, “उस्ताद, अपने शागिर्दों को समझाएँ।”

40 उसने जवाब दिया, “मैं तुम्हें बताता हूँ, अगर यह चुप हो जाएँ तो पत्थर पुकार उठेंगे।”

ईसा शहर को देखकर रो पड़ता है

41 जब वह यरूशलम के करीब पहुँचा तो शहर को देखकर रो पड़ा 42 और कहा, “काश तू भी इस दिन जान लेती कि तेरी सलामती किसमें है। लेकिन अब यह बात तेरी आँखों से छुपी हुई है। 43 क्योंकि तुझ पर ऐसा वक्त आएगा कि तेरे दुश्मन तेरे इर्दगिर्द बंद बाँधकर तेरा मुहासरा करेंगे और यों तुझे चारों तरफ़ से घेरकर तंग करेंगे। 44 वह तुझे तेरे बच्चों समेत ज़मीन पर पटकेंगे और तेरे अंदर एक भी पत्थर दूसरे पर नहीं छोड़ेंगे। और वजह यही होगी कि तूने वह वक्त नहीं पहचाना जब अल्लाह ने तेरी नज़ात के लिए तुझ पर नज़र की।”

ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाता है

45 फिर ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाकर उन्हें निकालने लगा जो वहाँ कुरबानियों के लिए दरकार चीज़ें बेच रहे थे। उसने कहा, 46 “कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, ‘मेरा घर दुआ का घर होगा’ जबकि तुमने उसे डाकुओं के अड्डे में बदल दिया है।”

47 और वह रोज़ाना बैतुल-मुक़द्दस में तालीम देता रहा। लेकिन बैतुल-मुक़द्दस के राहनुमा इमाम, शरीअत के आलिम और अवामी राहनुमा उसे क़त्ल करने के लिए कोशिशें रहे, 48 अलबत्ता उन्हें कोई मौक़ा न मिला, क्योंकि तमाम लोग ईसा की हर बात सुन सुनकर उससे लिपटे रहते थे।

20

ईसा का इख़्तियार

1 एक दिन जब वह बैतुल-मुक़द्दस में लोगों को तालीम दे रहा और अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुना रहा था तो राहनुमा इमाम, शरीअत के उलमा और बुजुर्ग उसके पास आए। 2 उन्होंने कहा, “हमें बताएँ, आप यह किस इख़्तियार से कर रहे हैं? किसने आपको यह इख़्तियार दिया है?”

3 ईसा ने जवाब दिया, “मेरा भी तुमसे एक सवाल है। तुम मुझे बताओ कि 4 क्या यहया का बपतिस्मा आसमानी था या इनसानी?”

5 वह आपस में बहस करने लगे, “अगर हम कहें ‘आसमानी’ तो वह पूछेगा, ‘तो फिर तुम उस पर ईमान क्यों न लाए?’ 6 लेकिन अगर हम कहें ‘इनसानी’ तो तमाम लोग हमें संगसार करेंगे, क्योंकि वह तो यक़ीन रखते हैं कि यहया नबी था।” 7 इसलिए उन्होंने जवाब दिया, “हम नहीं जानते कि वह कहाँ से था।”

8 ईसा ने कहा, “तो फिर मैं भी तुमको नहीं बताता कि मैं यह सब कुछ किस इख़्तियार से कर रहा हूँ।”

अंगूर के बाग़ के मुज़ारेओं की बगावत

9 फिर ईसा लोगों को यह तमसील सुनाने लगा, “किसी आदमी ने अंगूर का एक बाग़ लगाया। फिर वह उसे मुज़ारेओं के सुपुर्द करके बहुत देर के लिए बैस्ने-मुल्क चला गया। 10 जब अंगूर पक गए तो उसने अपने नौकर को उनके पास भेज दिया ताकि वह मालिक का हिस्सा वसूल करे। लेकिन मुज़ारेओं ने उस की पिटाई करके उसे ख़ाली हाथ लौटा दिया। 11 इस पर मालिक ने एक और नौकर को उनके पास भेजा। लेकिन मुज़ारेओं ने उसे भी मार मारकर उस की बेइज्जती की और ख़ाली हाथ निकाल दिया। 12 फिर मालिक ने तीसरे नौकर को भेज दिया। उसे भी उन्होंने मारकर ज़ख़मी कर दिया और निकाल दिया। 13 बाग़ के मालिक ने कहा, ‘अब मैं क्या करूँ? मैं अपने प्यारे बेटे को भेजूँगा, शायद वह उसका लिहाज़ करें।’ 14 लेकिन मालिक के बेटे को देखकर मुज़ारे आपस में कहने लगे, ‘यह ज़मीन का वारिस है। आओ, हम इसे मार डालें। फिर इसकी मीरास हमारी ही होगी।’ 15 उन्होंने उसे बाग़ से बाहर फेंककर क़त्ल किया।”

ईसा ने पूछा, “अब बताओ, बाग़ का मालिक क्या करेगा? 16 वह वहाँ जाकर मुज़ारेओं को हलाक करेगा और बाग़ को दूसरों के सुपुर्द कर देगा।”

यह सुनकर लोगों ने कहा, “ख़ुदा ऐसा कभी न करे।”

17 ईसा ने उन पर नज़र डालकर पूछा, “तो फिर कलामे-मुकद्दस के इस हवाले का क्या मतलब है कि ‘जिस पत्थर को मकान बनानेवालों ने रद्द किया, वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया’?”

18 जो इस पत्थर पर गिरेगा वह टुकड़े टुकड़े हो जाएगा, जबकि जिस पर वह खूद गिरेगा उसे पीस डालेगा।”

क्या टैक्स देना जायज़ है?

19 शरीअत के उलमा और राहनुमा इमामों ने उसी वक़्त उसे पकड़ने की कोशिश की, क्योंकि वह समझ गए थे कि तमसील में बयानशुदा मुज़ारे हम ही हैं। लेकिन वह अवाम से डरते थे। 20 चुनौचे वह उसे पकड़ने का मौका ढूँढते रहे। इस मक़सद के तहत उन्होंने उसके पास जासूस भेज दिए। यह लोग अपने आपको दियानतदार ज़ाहिर करके ईसा के पास आए ताकि उस की कोई बात पकड़कर उसे रोमी गवर्नर के हवाले कर सकें। 21 इन जासूसों ने उससे पूछा, “उस्ताद, हम जानते हैं कि आप वही कुछ बयान करते और सिखाते हैं जो सही है। आप जानिबदार नहीं होते बल्कि दियानतदारी से अल्लाह की राह की तालीम देते हैं। 22 अब हमें बताएँ कि क्या रोमी शहनशाह को टैक्स देना जायज़ है या नाजायज़?”

23 लेकिन ईसा ने उनकी चालाकी भाँप ली और कहा, 24 “मुझे चाँदी का एक रोमी सिक्का दिखाओ। किसकी सूरत और नाम इस पर कंदा है?”

उन्होंने जवाब दिया, “शहनशाह का।”

25 उसने कहा, “तो जो शहनशाह का है शहनशाह को दो और जो अल्लाह का है अल्लाह को।”

26 यों वह अवाम के सामने उस की कोई बात पकड़ने में नाकाम रहे। उसका जवाब सुनकर वह हक्का-बक्का रह गए और मज़ीद कोई बात न कर सके।

क्या हम जी उठेंगे?

27 फिर कुछ सदूकी उसके पास आए। सदूकी नहीं मानते कि रोज़े-क्रियामत मुरदे जी उठेंगे। उन्होंने ईसा से एक सवाल किया, 28 “उस्ताद, मूसा ने हमें हुक्म दिया कि अगर कोई शादीशुदा आदमी बेऔलाद मर जाए और उसका भाई हो तो भाई का फ़र्ज़ है कि वह बेवा से शादी करके अपने भाई के लिए औलाद पैदा करे। 29 अब फ़र्ज़ करें कि सात भाई थे। पहले ने शादी की, लेकिन बेऔलाद फ़ौत हुआ। 30 इस पर दूसरे ने उससे शादी की, लेकिन वह भी बेऔलाद मर गया। 31 फिर तीसरे ने उससे शादी की। यह सिलसिला सातवें भाई तक जारी रहा। यके बाद दीगरे हर भाई बेवा से शादी करने के बाद मर गया। 32 आखिर में बेवा भी फ़ौत हो गई। 33 अब बताएँ कि क्रियामत के दिन वह किसकी बीवी होगी? क्योंकि सात के सात भाइयों ने उससे शादी की थी।”

34 ईसा ने जवाब दिया, “इस ज़माने में लोग ब्याह-शादी करते और कराते हैं। 35 लेकिन जिन्हें अल्लाह आनेवाले ज़माने में शरीक होने और मुरदों में से जी उठने के लायक समझता है वह उस वक़्त शादी नहीं करेंगे, न उनकी शादी किसी से कराई जाएगी। 36 वह मर भी नहीं सकेंगे, क्योंकि वह फ़रिश्तों की मानिद होंगे और क्रियामत के फ़रज़ंद होने के बाइस अल्लाह के फ़रज़ंद होंगे। 37 और यह बात कि मुरदे जी उठेंगे मूसा से भी ज़ाहिर की गई है। क्योंकि जब वह काँटेदार झाड़ी के पास आया तो उसने रब को यह नाम दिया, ‘इब्राहीम का खुदा, इसहाक़ का खुदा और याक़ूब का खुदा,’ हालाँकि उस वक़्त तीनों बहुत पहले मर चुके थे। इसका मतलब है कि यह हकीकत में ज़िंदा हैं। 38 क्योंकि अल्लाह मुरदों का नहीं बल्कि ज़िंदों का खुदा है। उसके नज़दीक यह सब ज़िंदा हैं।”

39 यह सुनकर शरीअत के कुछ उलमा ने कहा, “शाबाश उस्ताद, आपने अच्छा कहा है।” 40 इसके बाद उन्होंने उससे कोई भी सवाल करने की ज़रत न की।

मसीह के बारे में सवाल

41 फिर ईसा ने उनसे पूछा, “मसीह के बारे में क्यों कहा जाता है कि वह दाऊद का फ़रज़ंद है? 42 क्योंकि दाऊद खुद ज़बूर की किताब में फ़रमाता है,

‘रब ने मेरे रब से कहा,

मेरे दहने हाथ बैठ,

43 जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँवों की चौकी न बना दूँ।’

44 दाऊद तो खुद मसीह को रब कहता है। तो फिर वह किस तरह दाऊद का फ़रज़ंद हो सकता है?”

शरीअत के उलमा से ख़बरदार

45 जब लोग सुन रहे थे तो उसने अपने शागिर्दों से कहा, 46 “शरीअत के उलमा से ख़बरदार रहो! क्योंकि वह शानदार चोगे पहनकर इधर उधर फिरना पसंद करते हैं। जब लोग बाज़ारों में सलाम करके उनकी इज़्ज़त करते हैं तो फिर वह खुश हो जाते हैं। उनकी बस एक ही खाहिश होती है कि इबादतखानों और ज़ियाफ़तों में इज़्ज़त की कुरसियों पर बैठ जाएँ। 47 यह लोग बेवाओं के घर हड़प कर जाते और साथ साथ दिखावे के लिए लंबी लंबी दुआएँ माँगते हैं। ऐसे लोगों को निहायत सख़्त सज़ा मिलेगी।”

21

बेवा का चंदा

¹ ईसा ने नज़र उठाकर देखा कि अमीर लोग अपने हृदिये बैतुल-मुकद्दस के चंदे के बक्स में डाल रहे हैं। ² एक गरीब बेवा भी वहाँ से गुज़री जिसने उसमें तंबे के दो मामूली-से सिक्के डाल दिए। ³ ईसा ने कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि इस गरीब बेवा ने तमाम लोगों की निसबत ज्यादा डाला है। ⁴ क्योंकि इन सबने तो अपनी दौलत की कसरत से कुछ डाला जबकि इसने ज़रूरतमंद होने के बावजूद भी अपने गुज़ारे के सारे पैसे दे दिए हैं।”

बैतुल-मुकद्दस पर आनेवाली तबाही

⁵ उस वक़्त कुछ लोग बैतुल-मुकद्दस की तारीफ़ में कहने लगे कि वह कितने खूबसूरत पत्थरों और मन्मत के तोहफ़ों से सजी हुई है। यह सुनकर ईसा ने कहा, ⁶ “जो कुछ तुमको यहाँ नज़र आता है उसका पत्थर पर पत्थर नहीं रहेगा। आनेवाले दिनों में सब कुछ ढा दिया जाएगा।”

मुसीबतों और ईज़ारसानी की पेशगोई

⁷ उन्होंने पूछा, “उस्ताद, यह कब होगा? क्या क्या नज़र आएगा जिससे मालूम हो कि यह अब होने को है?”

⁸ ईसा ने जवाब दिया, “ख़बरदार रहो कि कोई तुम्हें गुमराह न कर दे। क्योंकि बहुत-से लोग मेरा नाम लेकर आएँगे और कहेंगे, ‘मैं ही मसीह हूँ’ और कि ‘वक़्त करीब आ चुका है।’ लेकिन उनके पीछे न लगना। ⁹ और जब जंगों और फ़ितनों की ख़बरें तुम तक पहुँचेंगी तो मत घबराना। क्योंकि लाज़िम है कि यह सब कुछ पहले पेश आए। तो भी अभी आख़िरत न होगी।”

¹⁰ उसने अपनी बात जारी रखी, “एक क़ौम दूसरी के खिलाफ़ उठ खड़ी होगी, और एक बादशाही दूसरी के खिलाफ़। ¹¹ शदीद ज़लज़ले आएँगे, जगह जगह काल पड़ेंगे और वबाई बीमारियाँ फैल जाएँगी। हैबतनाक वाक़ियात और आसमान पर बड़े निशान देखने में आएँगे। ¹² लेकिन इन तमाम वाक़ियात से पहले लोग तुमको पकड़कर सताएँगे। वह तुमको यहूदी इबादतखानों के हवाले करेंगे, कैदखानों में डलवाएँगे और बादशाहों और हुक्मरानों के सामने पेश करेंगे। और यह इसलिए होगा कि तुम मेरे पैरोकार हो। ¹³ नतीजे में तुम्हें मेरी गवाही देने का मौक़ा मिलेगा। ¹⁴ लेकिन ठान लो कि तुम पहले से अपना दिफ़ा करने की तैयारी न करो, ¹⁵ क्योंकि मैं तुमको ऐसे अलफ़ाज़ और हिकमत अता करूँगा कि तुम्हारे तमाम मुखालिफ़ न उसका मुकाबला और न उस की तरदीद कर सकेंगे। ¹⁶ तुम्हारे वालिदैन, भाई, रिश्तेदार और दोस्त भी तुमको दुश्मन के हवाले कर देंगे, बल्कि तुममें से बाज़ को क़त्ल किया जाएगा। ¹⁷ सब तुमसे नफ़रत करेंगे, इसलिए कि तुम मेरे पैरोकार हो। ¹⁸ तो भी तुम्हारा एक बाल भी बीका नहीं होगा। ¹⁹ साबितक़दम रहने से ही तुम अपनी जान बचा लोगे।

यरूशलम की तबाही

²⁰ जब तुम यरूशलम को फ़ौजों से घिरा हुआ देखो तो जान लो कि उस की तबाही करीब आ चुकी है। ²¹ उस वक़्त यहूदिया के बाशिंदे भागकर पहाड़ी इलाके में पनाह लें। शहर के रहनेवाले उससे निकल जाएँ और देहात में आबाद लोग शहर में दाखिल न हों। ²² क्योंकि यह इलाही ग़ज़ब के दिन होंगे जिनमें वह सब कुछ पूरा हो जाएगा जो कलामे-मुकद्दस में लिखा है। ²³ उन ख़वातीन पर अफ़सोस जो उन दिनों में हामिला हों या अपने बच्चों को दूध पिलाती हों, क्योंकि मुल्क में बहुत मुसीबत होगी और इस क़ौम पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल होगा। ²⁴ लोग उन्हें तलवार से क़त्ल करेंगे और कैद करके तमाम ग़ैरयहूदी ममालिक में ले जाएँगे। ग़ैरयहूदी यरूशलम को पाँवों तले कुचल डालेंगे। यह सिलसिला उस वक़्त तक जारी रहेगा जब तक ग़ैरयहूदियों का दौर पूरा न हो जाए।

इब्ने-आदम की आमद

²⁵ सूरज, चाँद और सितारों में अजीबो-गरीब निशान ज़ाहिर होंगे। क़ौमों समुंदर के शोर और ठाँठ मारने से हैरानो-पेशान होंगी। ²⁶ लोग इस अंदेशे से कि क्या क्या मुसीबत दुनिया पर आएगी इस क़दर खौफ़ खाएँगे कि उनकी जान में जान न रहेगी, क्योंकि आसमान की कुव्वतें हिलाई जाएँगी। ²⁷ और फिर वह इब्ने-आदम को बड़ी कुदरत और जलाल के साथ बादल में आते हुए देखेंगे। ²⁸ चुनाँचे जब यह कुछ पेश आने लगे तो सीधे खड़े होकर अपनी नज़र उठाओ, क्योंकि तुम्हारी नज़ात नज़दीक होगी।”

अंजीर के दरख़्त की तमसील

²⁹ इस सिलसिले में ईसा ने उन्हें एक तमसील सुनाई। “अंजीर के दरख़्त और बाक़ी दरख़्तों पर गौर करो। ³⁰ ज्योंही कोंपलें निकलने लगती हैं तुम जान लेते हो कि गरमियों का मौसम नज़दीक है। ³¹ इसी तरह जब तुम यह वाक़ियात देखोगे तो जान लोगे कि अल्लाह की बादशाही करीब ही है।

³² मैं तुमको सच बताता हूँ कि इस नसल के ख़त्म होने से पहले पहले यह सब कुछ वाक़े होगा। ³³ आसमानो-ज़मीन तो जाते रहेंगे, लेकिन मेरी बातें हमेशा तक कायम रहेंगी।

ख़बरदार रहना

34 खबरदार रहो ताकि तुम्हारे दिल ऐयाशी, नशाबाजी और रोजाना की फिकरों तले दब न जाएँ। वरना यह दिन अचानक तुम पर आन पड़ेगा, 35 और फंदे की तरह तुम्हें जकड़ लेगा। क्योंकि वह दुनिया के तमाम बाशिंदों पर आएगा। 36 हर वक़्त चौकस रहो और दुआ करते रहो कि तुमको आनेवाली इन सब बातों से बच निकलने की तौफ़ीक़ मिल जाए और तुम इब्ने-आदम के सामने खड़े हो सको।”

37 हर रोज़ ईसा बैतुल-मुक़द्दस में तालीम देता रहा और हर शाम वह निकलकर उस पहाड़ पर रात गुज़ारता था जिसका नाम ज़ैतून का पहाड़ है। 38 और तमाम लोग उस की बातें सुनने के लिए सुबह-सवेरे बैतुल-मुक़द्दस में उसके पास आते थे।

22

ईसा के खिलाफ़ मनसूबाबंदियाँ

1 बेखमीरी रोटी की ईद यानी फ़सह की ईद करीब आ गई थी। 2 राहनुमा इमाम और शरीअत के उलमा ईसा को क़त्ल करने का कोई मौजू मौक़ा ढूँढ़ रहे थे, क्योंकि वह अवाम के रड़े-अमल से डरते थे।

ईसा को दुश्मन के हवाले करने का मनसूबा

3 उस वक़्त इबलीस यहूदाह इस्करियोती में समा गया जो बारह रसूलों में से था। 4 अब वह राहनुमा इमामों और बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदारों के अफ़सरों से मिला और उनसे बात करने लगा कि वह ईसा को किस तरह उनके हवाले कर सकेगा। 5 वह खुश हुए और उसे पैसे देने पर मुत्तफ़िक़ हुए। 6 यहूदाह रज़ामंद हुआ। अब से वह इस तलाश में रहा कि ईसा को ऐसे मौक़े पर उनके हवाले करे जब हुज़ूम उसके पास न हो।

फ़सह की ईद के लिए तैयारियाँ

7 बेखमीरी रोटी की ईद आई जब फ़सह के लेले को क़ुरबान करना था। 8 ईसा ने पतरस और यूहन्ना को आगे भेजकर हिदायत की, “जाओ, हमारे लिए फ़सह का खाना तैयार करो ताकि हम जाकर उसे खा सकें।”

9 उन्होंने पूछा, “हम उसे कहाँ तैयार करें?”

10 उसने जवाब दिया, “जब तुम शहर में दाखिल होगे तो तुम्हारी मुलाक़ात एक आदमी से होगी जो पानी का घड़ा उठाए चल रहा होगा। उसके पीछे चलकर उस घर में दाखिल हो जाओ जिसमें वह जाएगा। 11 वहाँ के मालिक से कहना, ‘उस्ताद आपसे पूछते हैं कि वह कमरा कहाँ है जहाँ मैं अपने शागिर्दों के साथ फ़सह का खाना खाऊँ?’ 12 वह तुमको दूसरी मनज़िल पर एक बड़ा और सजा हुआ कमरा दिखाएगा। फ़सह का खाना वहीं तैयार करना।”

13 दोनों चले गए तो सब कुछ वैसा ही पाया जैसा ईसा ने उन्हें बताया था। फिर उन्होंने फ़सह का खाना तैयार किया।

फ़सह का अखिरी खाना

14 मुक़र्ररा वक़्त पर ईसा अपने शागिर्दों के साथ खाने के लिए बैठ गया। 15 उसने उनसे कहा, “मेरी शदीद आरज़ू थी कि दुख उठाने से पहले तुम्हारे साथ मिलकर फ़सह का यह खाना खाऊँ। 16 क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ कि उस वक़्त तक इस खाने में शरीक नहीं हूँगा जब तक इसका मक़सद अल्लाह की बादशाही में पूरा न हो गया हो।”

17 फिर उसने मै का प्याला लेकर शुक्रगुज़ारी की दुआ की और कहा, “इसको लेकर आपस में बाँट लो। 18 मैं तुमको बताता हूँ कि अब से मैं अंगूर का रस नहीं पिऊँगा, क्योंकि अगली दफ़ा इसे अल्लाह की बादशाही के आने पर पिऊँगा।”

19 फिर उसने रोटी लेकर शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उसे टुकड़े करके उन्हें दे दिया। उसने कहा, “यह मेरा बदन है, जो तुम्हारे लिए दिया जाता है। मुझे याद करने के लिए यही किया करो।” 20 इसी तरह उसने खाने के बाद प्याला लेकर कहा, “मै का यह प्याला वह नया अहद है जो मेरे खून के ज़रीए कायम किया जाता है, वह खून जो तुम्हारे लिए बहाया जाता है।

21 लेकिन जिस शख्स का हाथ मेरे साथ खाना खाने में शरीक है वह मुझे दुश्मन के हवाले कर देगा। 22 इब्ने-आदम तो अल्लाह की मरज़ी के मुताबिक़ कूच कर जाएगा, लेकिन उस शख्स पर अफ़सोस जिसके वसीले से उसे दुश्मन के हवाले कर दिया जाएगा।”

23 यह सुनकर शागिर्द एक दूसरे से बहस करने लगे कि हममें से यह कौन हो सकता है जो इस किस्म की हरकत करेगा।

कौन बड़ा है?

24 फिर एक और बात भी छिड़ गई। वह एक दूसरे से बहस करने लगे कि हममें से कौन सबसे बड़ा समझा जाए। 25 लेकिन ईसा ने उनसे कहा, “ग़ौरयहदी कौमों में बादशाह वही है जो दूसरों पर हुकूमत करते हैं, और इख्तियारवाले वही हैं जिन्हें ‘मोहसिन’ का लक़ब दिया जाता है। 26 लेकिन तुमको ऐसा नहीं होना चाहिए। इसके बजाए जो सबसे बड़ा है वह सबसे छोटे लड़के की मानिंद हो और जो राहनुमाई करता है वह नौकर जैसा हो। 27 क्योंकि आम तौर पर कौन ज्यादा बड़ा होता है, वह जो खाने के लिए बैठा है या वह जो लोगों की खिदमत के लिए हाज़िर होता है? क्या वह नहीं जो खाने के लिए बैठा है? बेशक। लेकिन मैं खिदमत करनेवाले की हैसियत से ही तुम्हारे दरमियान हूँ।

28 देखो, तुम वही हो जो मेरी तमाम आजमाइशों के दौरान मेरे साथ रहे हो। 29 चुनाँचे मैं तुमको बादशाही अता करता हूँ जिस तरह बाप ने मुझे भी बादशाही अता की है। 30 तुम मेरी बादशाही में मेरी मेज़ पर बैठकर मेरे साथ खाओ और पियोगे, और तख्तों पर बैठकर इसराईल के बारह कबीलों का इन्साफ़ करोगे।

पतरस के इनकार की पेशगोई

31 शमौन, शमौन! इबलीस ने तुम लोगों को गंदुम की तरह फटकने का मुतालबा किया है। 32 लेकिन मैंने तेरे लिए दुआ की है ताकि तेरा ईमान जाता न रहे। और जब तू मुड़कर वापस आए तो उस वक़्त अपने भाइयों को मज़बूत करना।”

33 पतरस ने जवाब दिया, “खुदावंद, मैं तो आपके साथ जेल में भी जाने बल्कि मरने को तैयार हूँ।”

34 ईसा ने कहा, “पतरस, मैं तुझे बताता हूँ कि कल सुबह मुरग के बाँग देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।”

अब बटवे, बैग और तलवार की ज़रूरत है

35 फिर उसने उनसे पूछा, “जब मैंने तुमको बटवे, सामान के लिए बैग और जूतों के बगैर भेज दिया तो क्या तुम किसी भी चीज़ से महसूस रहे?”

उन्होंने जवाब दिया, “किसी से नहीं।”

36 उसने कहा, “लेकिन अब जिसके पास बटवा या बैग हो वह उसे साथ ले जाए, बल्कि जिसके पास तलवार न हो वह अपनी चादर बेचकर तलवार खरीद ले। 37 कलामे-मुक़द्स में लिखा है, ‘उसे मुजरिमों में शुमार किया गया’ और मैं तुमको बताता हूँ, लाज़िम है कि यह बात मुझमें पूरी हो जाए। क्योंकि जो कुछ मेरे बारे में लिखा है उसे पूरा ही होना है।”

38 उन्होंने कहा, “खुदावंद, यहाँ दो तलवारें हैं।” उसने कहा, “बस! काफ़ी है!”

जैतून के पहाड़ पर ईसा की दुआ

39 फिर वह शहर से निकलकर मामूल के मुताबिक जैतून के पहाड़ की तरफ़ चल दिया। उसके शागिर्द उसके पीछे हो लिए। 40 वहाँ पहुँचकर उसने उनसे कहा, “दुआ करो ताकि आजमाइश में न पड़ो।”

41 फिर वह उन्हें छोड़कर कुछ आगे निकला, तकरीबन इतने फ़ासले पर जितनी दूर तक पत्थर फेंका जा सकता है। वहाँ वह झुककर दुआ करने लगा, 42 “ऐ बाप, अगर तू चाहे तो यह प्याला मुझसे हटा ले। लेकिन मेरी नहीं बल्कि तेरी मरज़ी पूरी हो।” 43 उस वक़्त एक फ़रिश्ते ने आसमान पर से उस पर ज़ाहिर होकर उसको तक्रवियत दी। 44 वह सख़्त परेशान होकर ज़्यादा दिलसोज़ी से दुआ करने लगा। साथ साथ उसका पसीना खून की बूँदों की तरह ज़मीन पर टपकने लगा।

45 जब वह दुआ से फ़ारिग होकर खड़ा हुआ और शागिर्दों के पास वापस आया तो देखा कि वह ग़म के मारे सो गए हैं। 46 उसने उनसे कहा, “तुम क्यों सो रहे हो? उठकर दुआ करते रहो ताकि आजमाइश में न पड़ो।”

ईसा की गिरिफ्तारी

47 वह अभी यह बात कर ही रहा था कि एक हज़ूम आ पहुँचा जिसके आगे आगे यहूदाह चल रहा था। वह ईसा को बोसा देने के लिए उसके पास आया। 48 लेकिन उसने कहा, “यहूदाह, क्या तू इब्ने-आदम को बोसा देकर दुश्मन के हवाले कर रहा है?”

49 जब उसके साथियों ने भौंप लिया कि अब क्या होनेवाला है तो उन्होंने कहा, “खुदावंद, क्या हम तलवार चलाएँ?” 50 और उनमें से एक ने अपनी तलवार से इमामे-आज़म के गुलाम का दहना कान उड़ा दिया।

51 लेकिन ईसा ने कहा, “बस कर!” उसने गुलाम का कान छूकर उसे शफ़ा दी। 52 फिर वह उन राहनुमा इमामों, बैतुल-मुक़द्स के पहरेदारों के अफ़सरों और बुज़ुर्गों से मुखातिब हुआ जो उसके पास आए थे, “क्या मैं डाकू हूँ कि तुम तलवारें और लाठियाँ लिए मेरे खिलाफ़ निकले हो? 53 मैं तो रोज़ाना बैतुल-मुक़द्स में तुम्हारे पास था, मगर तुमने वहाँ मुझे हाथ नहीं लगाया। लेकिन अब यह तुम्हारा वक़्त है, वह वक़्त जब तारीकी हुक्मत करती है।”

पतरस ईसा को जानने से इनकार करता है

54 फिर वह उसे गिरिफ़्तार करके इमामे-आज़म के घर ले गए। पतरस कुछ फ़ासले पर उनके पीछे पीछे वहाँ पहुँच गया। 55 लोग सहन में आग जलाकर उसके इर्दगिर्द बैठ गए। पतरस भी उनके दरमियान बैठ गया। 56 किसी नौकरानी ने उसे वहाँ आग के पास बैठे हुए देखा। उसने उसे घूरकर कहा, “यह भी उसके साथ था।”

57 लेकिन उसने इनकार किया, “खातून, मैं उसे नहीं जानता।”

58 थोड़ी देर के बाद किसी आदमी ने उसे देखा और कहा, “तुम भी उनमें से हो।”

लेकिन पतरस ने जवाब दिया, “नहीं भई! मैं नहीं हूँ।”

59 तकरीबन एक घंटा गुज़र गया तो किसी और ने इसरार करके कहा, “यह आदमी यक़ीनन उसके साथ था, क्योंकि यह भी गलील का रहनेवाला है।”

60 लेकिन पतरस ने जवाब दिया, “यार, मैं नहीं जानता कि तुम क्या कह रहे हो!”

वह अभी बात कर ही रहा था कि अचानक मुरग की बाँग सुनाई दी। ⁶¹ खुदावंद ने मुड़कर पतरस पर नज़र डाली। फिर पतरस को खुदावंद की वह बात याद आई जो उसने उससे कही थी कि “कल सुबह मुरग के बाँग देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।” ⁶² पतरस वहाँ से निकलकर टूटे दिल से खूब रोया।

लान-तान और पिटाई

⁶³ पहरेदार ईसा का मज़ाक उड़ाने और उस की पिटाई करने लगे। ⁶⁴ उन्होंने उस की आँखों पर पट्टी बाँधकर पूछा, “नबुवत कर कि किसने तुझे मारा?” ⁶⁵ इस तरह की और बहुत-सी बातों से वह उस की बेइज़्जती करते रहे।

यहूदी अदालत-आलिया के सामने पेशी

⁶⁶ जब दिन चढ़ा तो राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा पर मुश्तमिल कौम की मजलिस ने जमा होकर उसे यहूदी अदालत-आलिया में पेश किया। ⁶⁷ उन्होंने कहा, “अगर तू मसीह है तो हमें बता!”

ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैं तुमको बताऊँ तो तुम मेरी बात नहीं मानोगे, ⁶⁸ और अगर तुमसे पूछूँ तो तुम जवाब नहीं दोगे। ⁶⁹ लेकिन अब से इब्ने-आदम अल्लाह तआला के दहने हाथ बैठा होगा।”

⁷⁰ सबने पूछा, “तो फिर क्या तू अल्लाह का फ़रज़ंद है?”

उसने जवाब दिया, “जी, तुम खुद कहते हो।”

⁷¹ इस पर उन्होंने कहा, “अब हमें किसी और गवाही की क्या ज़रूरत रही? क्योंकि हमने यह बात उसके अपने मुँह से सुन ली है।”

23

पीलातुस के सामने

¹ फिर पूरी मजलिस उठी और उसे पीलातुस के पास ले आई। ² वहाँ वह उस पर इलज़ाम लगाकर कहने लगे, “हमने मालूम किया है कि यह आदमी हमारी कौम को गुमराह कर रहा है। यह शहनशाह को टैक्स देने से मना करता और दावा करता है कि मैं मसीह और बादशाह हूँ।”

³ पीलातुस ने उससे पूछा, “अच्छा, तुम यहूदियों के बादशाह हो?”

ईसा ने जवाब दिया, “जी, आप खुद कहते हैं।”

⁴ फिर पीलातुस ने राहनुमा इमामों और हुजूम से कहा, “मुझे इस आदमी पर इलज़ाम लगाने की कोई वजह नज़र नहीं आती।”

⁵ लेकिन वह अड़े रहे। उन्होंने कहा, “वह पूरे यहूदिया में तालीम देते हुए कौम को उकसाता है। वह गलील से शुरू करके यहाँ तक आ पहुँचा है।”

हेरोदेस के सामने

⁶ यह सुनकर पीलातुस ने पूछा, “क्या यह शख्स गलील का है?” ⁷ जब उसे मालूम हुआ कि ईसा गलील यानी उस इलाके से है जिस पर हेरोदेस अंतिपास की हुकूमत है तो उसने उसे हेरोदेस के पास भेज दिया, क्योंकि वह भी उस वक्त यरूशलम में था। ⁸ हेरोदेस ईसा को देखकर बहुत खुश हुआ, क्योंकि उसने उसके बारे में बहुत कुछ सुना था और इसलिए काफी देर से उससे मिलना चाहता था। अब उस की बड़ी खाहिश थी कि ईसा को कोई मौजिज़ा करते हुए देख सके। ⁹ उसने उससे बहुत सारे सवाल किए, लेकिन ईसा ने एक का भी जवाब न दिया। ¹⁰ राहनुमा इमाम और शरीअत के उलमा साथ खड़े बड़े जोश से उस पर इलज़ाम लगाते रहे। ¹¹ फिर हेरोदेस और उसके फ़ौजियों ने उस की तहकीर करते हुए उसका मज़ाक उड़ाया और उसे चमकदार लिबास पहनाकर पीलातुस के पास वापस भेज दिया। ¹² उसी दिन हेरोदेस और पीलातुस दोस्त बन गए, क्योंकि इससे पहले उनकी दुश्मनी चल रही थी।

सज़ाए-मौत का फैसला

¹³ फिर पीलातुस ने राहनुमा इमामों, सरदारों और अवाम को जमा करके ¹⁴ उनसे कहा, “तुमने इस शख्स को मेरे पास लाकर इस पर इलज़ाम लगाया है कि यह कौम को उकसा रहा है। मैंने तुम्हारी मौजूदगी में इसका जायज़ा लेकर ऐसा कुछ नहीं पाया जो तुम्हारे इलज़ामात की तसदीक करे। ¹⁵ हेरोदेस भी कुछ नहीं मालूम कर सका, इसलिए उसने इसे हमारे पास वापस भेज दिया है। इस आदमी से कोई भी ऐसा कुसूर नहीं हुआ कि यह सज़ाए-मौत के लायक है। ¹⁶ इसलिए मैं इसे कोड़ों की सज़ा देकर रिहा कर देता हूँ।”

¹⁷ [असल में यह उसका फ़र्ज़ था कि वह ईद के मौके पर उनकी खातिर एक कैदी को रिहा कर दे।]

¹⁸ लेकिन सब मिलकर शोर मचाकर कहने लगे, “इसे ले जाएँ! इसे नहीं बल्कि बर-अब्बा को रिहा करके हमें दें।” ¹⁹ (बर-अब्बा को इसलिए जेल में डाला गया था कि वह कातिल था और उसने शहर में हुकूमत के खिलाफ़ बगावत की थी।)

²⁰ पीलातुस ईसा को रिहा करना चाहता था, इसलिए वह दुबारा उनसे मुखातिब हुआ। ²¹ लेकिन वह चिल्लाते रहे, “इसे मसलूब करें, इसे मसलूब करें।”

²² फिर पीलातुस ने तीसरी दफ़ा उनसे कहा, “क्यों? उसने क्या जुर्म किया है? मुझे इसे सज़ाए-मौत देने की कोई वजह नज़र नहीं आती। इसलिए मैं इसे कोड़े लगवाकर रिहा कर देता हूँ।”

23 लेकिन वह बड़ा शोर मचाकर उसे मसलूब करने का तकाजा करते रहे, और आखिरकार उनकी आवाज़ें गालिब आ गईं। 24 फिर पीलातुस ने फैसला किया कि उनका मुतालबा पूरा किया जाए। 25 उसने उस आदमी को रिहा कर दिया जो अपनी बागियाना हरकतों और क्रल्ल की वजह से जेल में डाल दिया गया था जबकि ईसा को उसने उनकी मरजी के मुताबिक उनके हवाले कर दिया।

ईसा को मसलूब किया जाता है

26 जब फ़ौजी ईसा को ले जा रहे थे तो उन्होंने एक आदमी को पकड़ लिया जो लिबिया के शहर कुरेन का रहनेवाला था। उसका नाम शमौन था। उस वक़्त वह देहात से शहर में दाखिल हो रहा था। उन्होंने सलीब को उसके कंधों पर रखकर उसे ईसा के पीछे चलने का हुक्म दिया।

27 एक बड़ा हुजूम उसके पीछे हो लिया जिसमें कुछ ऐसी औरतें भी शामिल थीं जो सीना पीट पीटकर उसका मातम कर रही थीं। 28 ईसा ने मुड़कर उनसे कहा, “यस्शलम की बेटीयो! मेरे वास्ते न रोओ बल्कि अपने और अपने बच्चों के वास्ते रोओ। 29 क्योंकि ऐसे दिन आएंगे जब लोग कहेंगे, ‘मुबारक हैं वह जो बाँझ हैं, जिन्होंने न तो बच्चों को जन्म दिया, न दूध पिलाया।’ 30 फिर लोग पहाड़ों से कहने लगेंगे, ‘हम पर गिर पड़ो,’ और पहाड़ियों से कि ‘हमें छुपा लो।’ 31 क्योंकि अगर हरी लकड़ी से ऐसा सुलूक किया जाता है तो फिर सूखी लकड़ी का क्या बनेगा?”

32 दो और मर्दों को भी फाँसी देने के लिए बाहर ले जाया जा रहा था। दोनों मुजरिम थे। 33 चलते चलते वह उस जगह पहुँचे जिसका नाम खोपड़ी था। वहाँ उन्होंने ईसा को दोनों मुजरिमों समेत मसलूब किया। एक मुजरिम को उसके दाएँ हाथ और दूसरे को उसके बाएँ हाथ लटका दिया गया। 34 ईसा ने कहा, “ऐ बाप, इन्हें मुआफ़ कर, क्योंकि यह जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं।”

उन्होंने कुरा डालकर उसके कपड़े आपस में बाँट लिए। 35 हुजूम वहाँ खड़ा तमाशा देखता रहा जबकि क्रौम के सरदारों ने उसका मज़ाक भी उड़ाया। उन्होंने कहा, “उसने औरों को बचाया है। अगर यह अल्लाह का चुना हुआ और मसीह है तो अपने आपको बचाए।”

36 फ़ौजियों ने भी उसे लान-तान की। उसके पास आकर उन्होंने उसे मै का सिरका पेश किया 37 और कहा, “अगर तू यहूदियों का बादशाह है तो अपने आपको बचा ले।”

38 उसके सर के ऊपर एक तख्ती लगाई गई थी जिस पर लिखा था, “यह यहूदियों का बादशाह है।”

39 जो मुजरिम उसके साथ मसलूब हुए थे उनमें से एक ने कुफर बकते हुए कहा, “क्या तू मसीह नहीं है? तो फिर अपने आपको और हमें भी बचा ले।”

40 लेकिन दूसरे ने यह सुनकर उसे डाँटा, “क्या तू अल्लाह से भी नहीं डरता? जो सज़ा उसे दी गई है वह तुझे भी मिली है। 41 हमारी सज़ा तो वाजिबी है, क्योंकि हमें अपने कामों का बदला मिल रहा है, लेकिन इसने कोई बुरा काम नहीं किया।” 42 फिर उसने ईसा से कहा, “जब आप अपनी बादशाही में आएँ तो मुझे याद करें।”

43 ईसा ने उससे कहा, “मैं तुझे सच बताता हूँ कि तू आज ही मेरे साथ फ़िर्दौस में होगा।”

ईसा की मौत

44 बारह बजे से दोपहर तीन बजे तक पूरा मुल्क अंधेरे में डूब गया। 45 सूरज तारीक हो गया और बैतुल-मुकद्दस के मुकद्दसतरीन कमरे के सामने लटका हुआ परदा दो हिस्सों में फट गया। 46 ईसा ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, “ऐ बाप, मैं अपनी रूह तेरे हाथों में सौंपता हूँ।” यह कहकर उसने दम छोड़ दिया।

47 यह देखकर वहाँ खड़े फ़ौजी अफ़सर * ने अल्लाह की तमजीद करके कहा, “यह आदमी वाकई रास्तबाज़ था।”

48 और हुजूम के तमाम लोग जो यह तमाशा देखने के लिए जमा हुए थे यह सब कुछ देखकर छाती पीटने लगे और शहर में वापस चले गए। 49 लेकिन ईसा के जाननेवाले कुछ फ़ासले पर खड़े देखते रहे। उनमें वह खवातीन भी शामिल थीं जो गलील में उसके पीछे चलकर यहाँ तक उसके साथ आई थीं।

ईसा को दफन किया जाता है

50 वहाँ एक नेक और रास्तबाज़ आदमी बनाम यूसुफ़ था। वह यहूदी अदालते-आलिया का स्कन था 51 लेकिन दूसरों के फैसले और हरकतों पर रज़ामंद नहीं हुआ था। यह आदमी यहूदिया के शहर अरिमतियाह का रहनेवाला था और इस इंतज़ार में था कि अल्लाह की बादशाही आए। 52 अब उसने पीलातुस के पास जाकर उससे ईसा की लाश ले जाने की इजाज़त माँगी। 53 फिर लाश को उतारकर उसने उसे कतान के कफ़न में लपेटकर चटान में तराशी हुई एक कब्र में रख दिया जिसमें अब तक किसी को दफनाया नहीं गया था। 54 यह तैयारी का दिन यानी जुमा था, लेकिन सबत का दिन शुरू होने को था। † 55 जो औरतें ईसा के साथ गलील से आई थीं वह यूसुफ़ के पीछे हो लीं। उन्होंने कब्र को देखा और यह भी कि ईसा की लाश किस तरह उसमें रखी गई है। 56 फिर वह शहर में वापस चली गई और उस की लाश के लिए खुशबूदार मसाले तैयार करने लगीं। लेकिन बीच में सबत का दिन शुरू हुआ, इसलिए उन्होंने शरीअत के मुताबिक आराम किया।

* 23:47 सौ सिपाहियों पर मुकर्रर अफ़सर। † 23:54 यहूदी दिन सूरज के ग़रूब होने से शुरू होता है।

24

ईसा जी उठता है

1 इतवार के दिन यह औरतें अपने तैयारशदा मसाले लेकर सुबह-सवेरे कब्र पर गईं। 2 वहाँ पहुँचकर उन्होंने देखा कि कब्र पर का पत्थर एक तरफ लुढ़का हुआ है। 3 लेकिन जब वह कब्र में गई तो वहाँ खुदावंद ईसा की लाश न पाई। 4 वह अभी उलझन में वहाँ खड़ी थी कि अचानक दो मर्द उनके पास आ खड़े हुए जिनके लिबास बिजली की तरह चमक रहे थे। 5 औरतें दहशत खाकर मुँह के बल झुक गईं, लेकिन उन मर्दों ने कहा, “तुम क्यों जिंदा को मर्दों में ढूँढ़ रही हो? 6 वह यहाँ नहीं है, वह तो जी उठा है। वह बात याद करो जो उसने तुमसे उस वक्त कही जब वह गलील में था। 7 ‘लाज़िम है कि इब्ने-आदम को गुनाहगारों के हवाले कर दिया जाए, मसलूब किया जाए और कि वह तीसरे दिन जी उठे’।”

8 फिर उन्हें यह बात याद आई। 9 और कब्र से वापस आकर उन्होंने यह सब कुछ ग्यारह रसूलों और बाकी शागिर्दों को सुना दिया। 10 मरियम मगदलीनी, युअन्ना, याकूब की माँ मरियम और चंद एक और औरतें उनमें शामिल थीं जिन्होंने यह बातें रसूलों को बताईं। 11 लेकिन उनको यह बातें बेतुकी-सी लग रही थीं, इसलिए उन्हें यकीन न आया। 12 तो भी पतरस उठा और भागकर कब्र के पास आया। जब पहुँचा तो झुककर अंदर झाँका, लेकिन सिर्फ कफन * ही नज़र आया। यह हालात देखकर वह हैरान हुआ और चला गया।

इम्माउस के रास्ते में ईसा से मुलाकात

13 उसी दिन ईसा के दो पैरोकार एक गाँव बनाम इम्माउस की तरफ चल रहे थे। यह गाँव यरूशलम से तकरीबन दस किलोमीटर दूर था। 14 चलते चलते वह आपस में उन वाकियात का जिक्र कर रहे थे जो हुए थे। 15 और ऐसा हुआ कि जब वह बातें और एक दूसरे के साथ बहस-मुबाहसा कर रहे थे तो ईसा खुद करीब आकर उनके साथ चलने लगा। 16 लेकिन उनकी आँखों पर परदा डाला गया था, इसलिए वह उसे पहचान न सके। 17 ईसा ने कहा, “यह कैसी बातें हैं जिनके बारे में तुम चलते चलते तबादलाए-खयाल कर रहे हो?”

यह सुनकर वह गमगीन से खड़े हो गए। 18 उनमें से एक बनाम क्लियुपास ने उससे पूछा, “क्या आप यरूशलम में वाहिद शख्स हैं जिसे मालूम नहीं कि इन दिनों में क्या कुछ हुआ है?”

19 उसने कहा, “क्या हुआ है?”

उन्होंने जवाब दिया, “वह जो ईसा नासरी के साथ हुआ है। वह नबी था जिसे कलाम और काम में अल्लाह और तमाम क्रौम के सामने ज़बरदस्त कुव्वत हासिल थी। 20 लेकिन हमारे राहनुमा इमामों और सरदारों ने उसे हुक्मरानों के हवाले कर दिया ताकि उसे सज़ाए-मौत दी जाए, और उन्होंने उसे मसलूब किया। 21 लेकिन हमें तो उम्मीद थी कि वही इसराईल को नजात देगा। इन वाकियात को तीन दिन हो गए हैं। 22 लेकिन हममें से कुछ ख़्वातीन ने भी हमें हैरान कर दिया है। वह आज सुबह-सवेरे कब्र पर गईं 23 तो देखा कि लाश वहाँ नहीं है। उन्होंने लौटकर हमें बताया कि हम पर फ़रिश्ते ज़ाहिर हुए जिन्होंने कहा कि ईसा जिंदा है। 24 हममें से कुछ कब्र पर गए और उसे वैसा ही पाया जिस तरह उन औरतों ने कहा था। लेकिन उसे खुद उन्होंने नहीं देखा।”

25 फिर ईसा ने उनसे कहा, “अरे नादानो! तुम कितने कुंदज़हन हो कि तुम्हें उन तमाम बातों पर यकीन नहीं आया जो नबियों ने फ़रमाई हैं। 26 क्या लाज़िम नहीं था कि मसीह यह सब कुछ झेलकर अपने जलाल में दाखिल हो जाए?” 27 फिर मूसा और तमाम नबियों से शुरू करके ईसा ने कलामे-मुक़द्दस की हर बात की तशरीह की जहाँ जहाँ उसका जिक्र है।

28 चलते चलते वह उस गाँव के करीब पहुँचे जहाँ उन्हें जाना था। ईसा ने ऐसा किया गोया कि वह आगे बढ़ना चाहता है, 29 लेकिन उन्होंने उसे मजबूर करके कहा, “हमारे पास ठहरें, क्योंकि शाम होने को है और दिन ढल गया है।” चुनौचे वह उनके साथ ठहरने के लिए अंदर गया। 30 और ऐसा हुआ कि जब वह खाने के लिए बैठ गए तो उसने रोटी लेकर उसके लिए शुक़रगुज़ारी की दुआ की। फिर उसने उसे टुकड़े करके उन्हें दिया। 31 अचानक उनकी आँखें खुल गईं और उन्होंने उसे पहचान लिया। लेकिन उसी लमहे वह ओझल हो गया। 32 फिर वह एक दूसरे से कहने लगे, “क्या हमारे दिल जोश से न भर गए थे जब वह रास्ते में हमसे बातें करते करते हमें सहीफ़ों का मतलब समझा रहा था?”

33 और वह उसी वक्त उठकर यरूशलम वापस चले गए। जब वह वहाँ पहुँचे तो ग्यारह रसूल अपने साथियों समेत पहले से जमा थे 34 और यह कह रहे थे, “खुदावंद वाकई जी उठा है! वह शमौन पर ज़ाहिर हुआ है।”

35 फिर इम्माउस के दो शागिर्दों ने उन्हें बताया कि गाँव की तरफ जाते हुए क्या हुआ था और कि ईसा के रोटी तोड़ते वक्त उन्होंने उसे कैसे पहचाना।

ईसा अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर होता है

36 वह अभी यह बातें सुना रहे थे कि ईसा खुद उनके दरमियान आ खड़ा हुआ और कहा, “तुम्हारी सलामती हो।”

37 वह घबराकर बहुत डर गए, क्योंकि उनका खयाल था कि कोई भूत-प्रेत देख रहे हैं। 38 उसने उनसे कहा, “तुम क्यों परेशान हो गए हो? क्या वजह है कि तुम्हारे दिलों में शक उभर आया है? 39 मेरे हाथों और पाँवों को देखो कि मैं ही हूँ। मुझे टटोलकर देखो, क्योंकि भूत के गोश्त और हड्डियाँ नहीं होतीं जबकि तुम देख रहे हो कि मेरा जिस्म है।”

* 24:12 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : कतान की पट्टियाँ जो कफ़न के लिए इस्तेमाल होती थीं।

40 यह कहकर उसने उन्हें अपने हाथ और पाँव दिखाए। 41 जब उन्हें खुशी के मारे यकीन नहीं आ रहा था और ताज्जुब कर रहे थे तो ईसा ने पूछा, “क्या यहाँ तुम्हारे पास कोई खाने की चीज़ है?” 42 उन्होंने उसे भुनी हुई मछली का एक टुकड़ा दिया। 43 उसने उसे लेकर उनके सामने ही खा लिया।

44 फिर उसने उनसे कहा, “यही है जो मैंने तुमको उस वक्त बताया था जब तुम्हारे साथ था कि जो कुछ भी मूसा की शरीअत, नबियों के सहीफों और ज़बूर की किताब में मेरे बारे में लिखा है उसे पूरा होना है।”

45 फिर उसने उनके ज़हन को खोल दिया ताकि वह अल्लाह का कलाम समझ सकें। 46 उसने उनसे कहा, “कलामे-मुक़द्दस में यों लिखा है, मसीह दुख उठाकर तीसरे दिन मुरदों में से जी उठेगा। 47 फिर यरूशलम से शुरू करके उसके नाम में यह पैगाम तमाम कौमों को सुनाया जाएगा कि वह तौबा करके गुनाहों की मुआफ़ी पाएँ। 48 तुम इन बातों के गवाह हो। 49 और मैं तुम्हारे पास उसे भेज दूँगा जिसका वादा मेरे बाप ने किया है। फिर तुमको आसमान की कुव्वत से मुलब्स किया जाएगा। उस वक्त तक शहर से बाहर न निकलना।”

ईसा को आसमान पर उठाया जाता है

50 फिर वह शहर से निकलकर उन्हें बैत-अनियाह तक ले गया। वहाँ उसने अपने हाथ उठाकर उन्हें बरकत दी। 51 और ऐसा हुआ कि बरकत देते हुए वह उनसे जुदा होकर आसमान पर उठा लिया गया। 52 उन्होंने उसे सिजदा किया और फिर बड़ी खुशी से यरूशलम वापस चले गए। 53 वहाँ वह अपना पूरा वक्त बैतुल-मुक़द्दस में गुज़ारकर अल्लाह की तमजीद करते रहे।

यूहन्ना

जिंदगी का कलाम

¹ इब्तिदा में कलाम था। कलाम अल्लाह के साथ था और कलाम अल्लाह था। ² यही इब्तिदा में अल्लाह के साथ था। ³ सब कुछ कलाम के वसीले से पैदा हुआ। मखलूक़ात की एक भी चीज़ उसके बग़ैर पैदा नहीं हुई। ⁴ उसमें जिंदगी थी, और यह जिंदगी इनसानों का नूर थी। ⁵ यह नूर तारीकी में चमकता है, और तारीकी ने उस पर क़ाबू न पाया।

⁶ एक दिन अल्लाह ने अपना पैग़ंबर भेज दिया, एक आदमी जिसका नाम यहया था। ⁷ वह नूर की गवाही देने के लिए आया। मक़सद यह था कि लोग उस की गवाही की बिना पर ईमान लाएँ। ⁸ वह खुद तो नूर न था बल्कि उसे सिर्फ़ नूर की गवाही देनी थी। ⁹ हकीक़ी नूर जो हर शख्स को रौशन करता है दुनिया में आने को था।

¹⁰ गो कलाम दुनिया में था और दुनिया उसके वसीले से पैदा हुई तो भी दुनिया ने उसे न पहचाना। ¹¹ वह उसमें आया जो उसका अपना था, लेकिन उसके अपनों ने उसे क़बूल न किया। ¹² तो भी कुछ उसे क़बूल करके उसके नाम पर ईमान लाए। उन्हें उसने अल्लाह के फ़रज़ंद बनने का हक़ बख़्श दिया, ¹³ ऐसे फ़रज़ंद जो न फ़ितरी तौर पर, न किसी इनसान के मनसूबे के तहत पैदा हुए बल्कि अल्लाह से।

¹⁴ कलाम इनसान बनकर हमारे दरमियान रिहाइशपज़ीर हुआ और हमने उसके जलाल का मुशाहदा किया। वह फ़ज़ल और सच्चाई से मामूर था और उसका जलाल बाप के इक़लौते फ़रज़ंद का-सा था।

¹⁵ यहया उसके बारे में गवाही देकर पुकार उठा, “यह वही है जिसके बारे में मैंने कहा, एक मेरे बाद आनेवाला है जो मुझसे बड़ा है, क्योंकि वह मुझसे पहले था।”

¹⁶ उस की कसरत से हम सबने फ़ज़ल पर फ़ज़ल पाया। ¹⁷ क्योंकि शरीअत मूसा की मारिफ़त दी गई, लेकिन अल्लाह का फ़ज़ल और सच्चाई ईसा मसीह के वसीले से कायम हुई। ¹⁸ किसी ने कभी भी अल्लाह को नहीं देखा। लेकिन इक़लौता फ़रज़ंद जो अल्लाह की गोद में है उसी ने अल्लाह को हम पर ज़ाहिर किया है।

यहया बपतिस्मा देनेवाले का पैग़ाम

¹⁹ यह यहया की गवाही है जब यरूशलम के यहूदियों ने इमामों और लावियों को उसके पास भेजकर पूछा, “आप कौन हैं?”

²⁰ उसने इनकार न किया बल्कि साफ़ तसलीम किया, “मैं मसीह नहीं हूँ।”

²¹ उन्होंने पूछा, “तो फिर आप कौन हैं? क्या आप इलियास हैं?”

उसने जवाब दिया, “नहीं, मैं वह नहीं हूँ।”

उन्होंने सवाल किया, “क्या आप आनेवाला नबी हैं?”

उसने कहा, “नहीं।”

²² “तो फिर हमें बताएँ कि आप कौन हैं? जिन्होंने हमें भेजा है उन्हें हमें कोई न कोई जवाब देना है। आप खुद अपने बारे में क्या कहते हैं?”

²³ यहया ने यसायाह नबी का हवाला देकर जवाब दिया, “मैं रेगिस्तान में वह आवाज़ हूँ जो पुकार रही है, रब का रास्ता सीधा बनाओ।”

²⁴ भेजे गए लोग फ़रीसी फ़िरके से ताल्लुक़ रखते थे। ²⁵ उन्होंने पूछा, “अगर आप न मसीह हैं, न इलियास या आनेवाला नबी तो फिर आप बपतिस्मा क्यों दे रहे हैं?”

²⁶ यहया ने जवाब दिया, “मैं तो पानी से बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन तुम्हारे दरमियान ही एक खड़ा है जिसको तुम नहीं जानते। ²⁷ वही मेरे बाद आनेवाला है और मैं उसके जूतों के तसमे भी खोलने के लायक़ नहीं।”

²⁸ यह यरदन के पार बैत-अनियाह में हुआ जहाँ यहया बपतिस्मा दे रहा था।

अल्लाह का लेला

²⁹ अगले दिन यहया ने ईसा को अपने पास आते देखा। उसने कहा, “देखो, यह अल्लाह का लेला है जो दुनिया का गुनाह उठा ले जाता है।

³⁰ यह वही है जिसके बारे में मैंने कहा, ‘एक मेरे बाद आनेवाला है जो मुझसे बड़ा है, क्योंकि वह मुझसे पहले था।’ ³¹ मैं तो उसे नहीं जानता था, लेकिन मैं इसलिए आकर पानी से बपतिस्मा देने लगा ताकि वह इसराइल पर ज़ाहिर हो जाए।”

³² और यहया ने यह गवाही दी, “मैंने देखा कि रूहुल-कुद्स कबूतर की तरह आसमान पर से उतरकर उस पर ठहर गया। ³³ मैं तो उसे नहीं जानता था, लेकिन जब अल्लाह ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए भेजा तो उसने मुझे बताया, ‘तू देखेगा कि रूहुल-कुद्स उतरकर किसी पर ठहर जाएगा। यह वही होगा जो रूहुल-कुद्स से बपतिस्मा देगा।’ ³⁴ अब मैंने देखा है और गवाही देता हूँ कि यह अल्लाह का फ़रज़ंद है।”

ईसा के पहले शागिर्द

³⁵ अगले दिन यहया दुबारा वहीं खड़ा था। उसके दो शागिर्द साथ थे। ³⁶ उसने ईसा को वहाँ से गुज़रते हुए देखा तो कहा, “देखो, यह अल्लाह का लेला है!”

37 उस की यह बात सुनकर उसके दो शागिर्द ईसा के पीछे हो लिए। 38 ईसा ने मुड़कर देखा कि यह मेरे पीछे चल रहे हैं तो उसने पूछा, “तुम क्या चाहते हो?”

उन्होंने कहा, “उस्ताद, आप कहाँ ठहरे हुए हैं?”

39 उसने जवाब दिया, “आओ, खुद देख लो।” चुनौचे वह उसके साथ गए। उन्होंने वह जगह देखी जहाँ वह ठहरा हुआ था और दिन के बाक़ी वक़्त उसके पास रहे। शाम के तक़रीबन चार बज गए थे।

40 शमौन पतरस का भाई अंदरियास उन दो शागिर्दों में से एक था जो यहया की बात सुनकर ईसा के पीछे हो लिए थे। 41 अब उस की पहली मुलाक़ात उसके अपने भाई शमौन से हुई। उसने उसे बताया, “हमें मसीह मिल गया है।” (मसीह का मतलब ‘मसह किया हुआ शख्स’ है।) 42 फिर वह उसे ईसा के पास ले गया।

उसे देखकर ईसा ने कहा, “तू यूहन्ना का बेटा शमौन है। तू कैफ़ा कहलाएगा।” (इसका यूनानी तरज़ुमा पतरस यानी पत्थर है।)

ईसा फ़िलिप्पुस और नतनेल को बुलाता है

43 अगले दिन ईसा ने गलील जाने का इरादा किया। फ़िलिप्पुस से मिला तो उससे कहा, “मेरे पीछे हो ले।” 44 अंदरियास और पतरस की तरह फ़िलिप्पुस का वतनी शहर बैत-सैदा था। 45 फ़िलिप्पुस नतनेल से मिला, और उसने उससे कहा, “हमें वही शख्स मिल गया जिसका ज़िक्र मूसा ने तौरत और नबियों ने अपने सहीफ़ों में किया है। उसका नाम ईसा बिन यूसुफ़ है और वह नासरत का रहनेवाला है।”

46 नतनेल ने कहा, “नासरत? क्या नासरत से कोई अच्छी चीज़ निकल सकती है?”

फ़िलिप्पुस ने जवाब दिया, “आ और खुद देख ले।”

47 जब ईसा ने नतनेल को आते देखा तो उसने कहा, “लो, यह सच्चा इसराईली है जिसमें मकर नहीं।”

48 नतनेल ने पूछा, “आप मुझे कहाँ से जानते हैं?”

ईसा ने जवाब दिया, “इससे पहले कि फ़िलिप्पुस ने तुझे बुलाया मैंने तुझे देखा। तू अंजीर के दरख़्त के साय में था।”

49 नतनेल ने कहा, “उस्ताद, आप अल्लाह के फ़रज़ंद हैं, आप इसराईल के बादशाह हैं।”

50 ईसा ने उससे पूछा, “अच्छा, मेरी यह बात सुनकर कि मैंने तुझे अंजीर के दरख़्त के साय में देखा तू ईमान लाया है? तू इससे कहीं बड़ी बातें देखेगा।” 51 उसने बात जारी रखी, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि तुम आसमान को खुला और अल्लाह के फ़रिश्तों को ऊपर चढ़ते और इब्ने-आदम पर उतरते देखोगे।”

2

क्राना में शादी

1 तीसरे दिन गलील के गाँव क्राना में एक शादी हुई। ईसा की माँ वहाँ थी 2 और ईसा और उसके शागिर्दों को भी दावत दी गई थी। 3 मै ख़त्म हो गई तो ईसा की माँ ने उससे कहा, “उनके पास मै नहीं रही।”

4 ईसा ने जवाब दिया, “ऐ खातून, मेरा आपसे क्या वास्ता? मेरा वक़्त अभी नहीं आया।”

5 लेकिन उस की माँ ने नौकरों को बताया, “जो कुछ वह तुमको बताए वह करो।” 6 वहाँ पत्थर के छः मटके पड़े थे जिन्हें यहूदी दीनी गुस्ल के लिए इस्तेमाल करते थे। हर एक में तक़रीबन 100 लिटर की गुंजाइश थी। 7 ईसा ने नौकरों से कहा, “मटकों को पानी से भर दो।” चुनौचे उन्होंने उन्हें लबालब भर दिया। 8 फिर उसने कहा, “अब कुछ निकालकर ज़ियाफ़त का इंतज़ाम चलानेवाले के पास ले जाओ।” उन्होंने ऐसा ही किया। 9 ज्योंही ज़ियाफ़त का इंतज़ाम चलानेवाले ने वह पानी चखा जो मै में बदल गया था तो उसने दूल्हे को बुलाया। (उसे मालूम न था कि यह कहाँ से आई है, अगरचे उन नौकरों को पता था जो उसे निकालकर लाए थे।) 10 उसने कहा, “हर मेज़बान पहले अच्छी क्रिस्म की मै पीने के लिए पेश करता है। फिर जब लोगों को नशा चढ़ने लगे तो वह निसबतन घटिया क्रिस्म की मै पिलाने लगता है। लेकिन आपने अच्छी मै अब तक रख छोड़ी है।”

11 यों ईसा ने गलील के क्राना में यह पहला इलाही निशान दिखाकर अपने जलाल का इज़हार किया। यह देखकर उसके शागिर्द उस पर ईमान लाए।

12 इसके बाद वह अपनी माँ, अपने भाइयों और अपने शागिर्दों के साथ कफ़र्नहम को चला गया। वहाँ वह थोड़े दिन रहे।

ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाता है

13 जब यहूदी ईदे-फ़सह करीब आ गई तो ईसा यरूशलम चला गया। 14 बैतुल-मुक़द्दस में जाकर उसने देखा कि कई लोग उसमें गाय-बैल, भेड़ें और कबूतर बेच रहे हैं। दूसरे मेज़ पर बैठे ग़ैरमुल्की सिक्के बैतुल-मुक़द्दस के सिक्कों में बदल रहे हैं। 15 फिर ईसा ने रस्सियों का कोड़ा बनाकर सबको बैतुल-मुक़द्दस से निकाल दिया। उसने भेड़ों और गाय-बैलों को बाहर हाँक दिया, पैसे बदलनेवालों के सिक्के बिखेर दिए और उनकी मेज़ें उलट दीं। 16 कबूतर बेचनेवालों को उसने कहा, “इसे ले जाओ। मेरे बाप के घर को मंडी में मत बदलो।” 17 यह देखकर ईसा के शागिर्दों को कलामे-मुक़द्दस का यह हवाला याद आया कि “तैरे घर की ग़ैरत मुझे खा जाएगी।”

18 यहूदियों ने जवाब में पूछा, “आप हमें क्या इलाही निशान दिखा सकते हैं ताकि हमें यकीन आए कि आपको यह करने का इख्तियार है?”

19 ईसा ने जवाब दिया, “इस मक़दिस को ढा दो तो मैं इसे तीन दिन के अंदर दुबारा तामीर कर दूँगा।”

20 यहूदियों ने कहा, “बैतुल-मुक़द्दस को तामीर करने में 46 साल लग गए थे और आप उसे तीन दिन में तामीर करना चाहते हैं?”

21 लेकिन जब ईसा ने “इस मक़दिस” के अलफ़ाज़ इस्तेमाल किए तो इसका मतलब उसका अपना बदन था। 22 उसके मुरदों में से जी उठने के बाद उसके शागिर्दों को उस की यह बात याद आई। फिर वह कलामे-मुक़द्दस और उन बातों पर ईमान लाए जो ईसा ने की थीं।

ईसा इनसानी फ़ितरत से वाकिफ़ है

23 जब ईसा फ़सह की ईद के लिए यरूशलेम में था तो बहुत-से लोग उसके पेशकरदा इलाही निशानों को देखकर उसके नाम पर ईमान लाने लगे। 24 लेकिन उसको उन पर एतमाद नहीं था, क्योंकि वह सबको जानता था। 25 और उसे इनसान के बारे में किसी की गवाही की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि वह जानता था कि इनसान के अंदर क्या कुछ है।

3

नीकुदेमुस के साथ मुलाकात

1 फ़रीसी फ़िरके का एक आदमी बनाम नीकुदेमुस था जो यहूदी अदालते-आलिया का स्कन था। 2 वह रात के वक़्त ईसा के पास आया और कहा, “उस्ताद, हम जानते हैं कि आप ऐसे उस्ताद हैं जो अल्लाह की तरफ़ से आए हैं, क्योंकि जो इलाही निशान आप दिखाते हैं वह सिर्फ़ ऐसा शख्स ही दिखा सकता है जिसके साथ अल्लाह हो।”

3 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझे सच बताता हूँ, सिर्फ़ वह शख्स अल्लाह की बादशाही को देख सकता है जो नए सिरे से पैदा हुआ हो।”

4 नीकुदेमुस ने एतराज़ किया, “क्या मतलब? बूढ़ा आदमी किस तरह नए सिरे से पैदा हो सकता है? क्या वह दुबारा अपनी माँ के पेट में जाकर पैदा हो सकता है?”

5 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझे सच बताता हूँ, सिर्फ़ वह शख्स अल्लाह की बादशाही में दाखिल हो सकता है जो पानी और रूह से पैदा हुआ हो। 6 जो कुछ जिस्म से पैदा होता है वह जिस्मानी है, लेकिन जो रूह से पैदा होता है वह रूहानी है। 7 इसलिए तू ताज़्ज़ुब न कर कि मैं कहता हूँ, ‘तुम्हें नए सिरे से पैदा होना ज़रूर है।’ 8 हवा जहाँ चाहे चलती है। तू उस की आवाज़ तो सुनता है, लेकिन यह नहीं जानता कि कहाँ से आती और कहाँ को जाती है। यही हालत हर उस शख्स की है जो रूह से पैदा हुआ है।”

9 नीकुदेमुस ने पूछा, “यह किस तरह हो सकता है?”

10 ईसा ने जवाब दिया, “तू तो इसराईल का उस्ताद है। क्या इसके बावजूद भी यह बातें नहीं समझता? 11 मैं तुझको सच बताता हूँ, हम वह कुछ बयान करते हैं जो हम जानते हैं और उस की गवाही देते हैं जो हमने खुद देखा है। तो भी तुम लोग हमारी गवाही क़बूल नहीं करते। 12 मैंने तुमको दुनियावी बातें सुनाई हैं और तुम उन पर ईमान नहीं रखते। तो फिर तुम क्योंकि ईमान लाओगे अगर तुम्हें आसमानी बातों के बारे में बताऊँ? 13 आसमान पर कोई नहीं चढ़ा सिवाए इब्ने-आदम के, जो आसमान से उतरा है।

14 और जिस तरह मूसा ने रेगिस्तान में साँप को लकड़ी पर लटकाकर ऊँचा कर दिया उसी तरह ज़रूर है कि इब्ने-आदम को भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए, 15 ताकि हर एक को जो उस पर ईमान लाएगा अबदी ज़िंदगी मिल जाए। 16 क्योंकि अल्लाह ने दुनिया से इतनी मुहब्बत रखी कि उसने अपने इकलौते फ़रज़ंद को बख़्श दिया, ताकि जो भी उस पर ईमान लाए हलाक न हो बल्कि अबदी ज़िंदगी पाए। 17 क्योंकि अल्लाह ने अपने फ़रज़ंद को इसलिए दुनिया में नहीं भेजा कि वह दुनिया को मुजरिम ठहराए बल्कि इसलिए कि वह उसे नजात दे।

18 जो भी उस पर ईमान लाया है उसे मुजरिम नहीं करार दिया जाएगा, लेकिन जो ईमान नहीं रखता उसे मुजरिम ठहराया जा चुका है। वजह यह है कि वह अल्लाह के इकलौते फ़रज़ंद के नाम पर ईमान नहीं लाया। 19 और लोगों को मुजरिम ठहराने का सबब यह है कि गो अल्लाह का नूर इस दुनिया में आया, लेकिन लोगों ने नूर की निसबत अंधेरे को ज़्यादा प्यार किया, क्योंकि उनके काम बुरे थे। 20 जो भी ग़लत काम करता है वह नूर से दुश्मनी रखता है और उसके करीब नहीं आता ताकि उसके बुरे कामों का पोल न खुल जाए। 21 लेकिन जो सच्चा काम करता है वह नूर के पास आता है ताकि ज़ाहिर हो जाए कि उसके काम अल्लाह के वसीले से हुए हैं।”

ईसा और यहया

22 इसके बाद ईसा अपने शागिर्दों के साथ यहूदिया के इलाके में गया। वहाँ वह कुछ देर के लिए उनके साथ ठहरा और लोगों को बपतिस्मा देने लगा। 23 उस वक़्त यहया भी शालेम के करीब वाके मक़ाम एनोन में बपतिस्मा दे रहा था, क्योंकि वहाँ पानी बहुत था। उस जगह पर लोग बपतिस्मा लेने के लिए आते रहे। 24 (यहया को अब तक जेल में नहीं डाला गया था।)

25 एक दिन यहया के शागिर्दों का किसी यहूदी के साथ मुबाहसा छिड़ गया। ज़ेरे-गौर मज़मून दीनी गुस्त था। 26 वह यहया के पास आए और कहने लगे, “उस्ताद, जिस आदमी से आपकी दरियाए-यरदन के पार मुलाकात हुई और जिसके बारे में आपने गवाही दी कि वह मसीह है, वह भी लोगों को बपतिस्मा दे रहा है। अब सब लोग उसी के पास जा रहे हैं।”

27 यहया ने जवाब दिया, “हर एक को सिर्फ वह कुछ मिलता है जो उसे आसमान से दिया जाता है। 28 तुम खुद इसके गवाह हो कि मैंने कहा, ‘मैं मसीह नहीं हूँ बल्कि मुझे उसके आगे आगे भेजा गया है।’ 29 दूल्हा ही दुलहन से शादी करता है, और दुलहन उसी की है। उसका दोस्त सिर्फ साथ खड़ा होता है। और दूल्हे की आवाज सुन सुनकर दोस्त की खुशी की इंतहा नहीं होती। मैं भी ऐसा ही दोस्त हूँ जिसकी खुशी पूरी हो गई है। 30 लाज़िम है कि वह बढ़ता जाए जबकि मैं घटता जाऊँ।

आसमान से आनेवाला

31 जो आसमान पर से आया है उसका इख्तियार सब पर है। जो दुनिया से है उसका ताल्लुक दुनिया से ही है और वह दुनियावी बातें करता है। लेकिन जो आसमान पर से आया है उसका इख्तियार सब पर है। 32 जो कुछ उसने खुद देखा और सुना है उसी की गवाही देता है। तो भी कोई उस की गवाही को कबूल नहीं करता। 33 लेकिन जिसने उसे कबूल किया उसने इसकी तसदीक की है कि अल्लाह सच्चा है। 34 जिसे अल्लाह ने भेजा है वह अल्लाह की बातें सुनाता है, क्योंकि अल्लाह अपना रूह नाप-तोलकर नहीं देता। 35 बाप अपने फ़रज़द को प्यार करता है, और उसने सब कुछ उसके सुपुर्द कर दिया है। 36 चुनौचे जो अल्लाह के फ़रज़द पर ईमान लाता है अबदी ज़िंदगी उस की है। लेकिन जो फ़रज़द को रद्द करे वह इस ज़िंदगी को नहीं देखेगा बल्कि अल्लाह का ग़ज़ब उस पर ठहरा रहेगा।”

4

ईसा और सामरी औरत

1 फ़रीसियों को इतला मिली कि ईसा यहया की निसबत ज़्यादा शागिर्द बना रहा और लोगों को बपतिस्मा दे रहा है, 2 हालाँकि वह खुद बपतिस्मा नहीं देता था बल्कि उसके शागिर्द। 3 जब खुदावंद ईसा को यह बात मालूम हुई तो वह यहूदिया को छोड़कर गलील को वापस चला गया। 4 वहाँ पहुँचने के लिए उसे सामरिया में से गुज़रना था।

5 चलते चलते वह एक शहर के पास पहुँच गया जिसका नाम सूखार था। यह उस ज़मीन के करीब था जो याकूब ने अपने बेटे यूसुफ़ को दी थी। 6 वहाँ याकूब का कुआँ था। ईसा सफ़र से थक गया था, इसलिए वह कुएँ पर बैठ गया। दोपहर के तकरीबन बारह बज गए थे।

7 एक सामरी औरत पानी भरने आई। ईसा ने उससे कहा, “मुझे ज़रा पानी पिला।” 8 (उसके शागिर्द खाना खरीदने के लिए शहर गए हुए थे।)

9 सामरी औरत ने ताज़्ज़ुब किया, क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ ताल्लुक रखने से इनकार करते हैं। उसने कहा, “आप तो यहूदी हैं, और मैं सामरी औरत हूँ। आप किस तरह मुझसे पानी पिलाने की दरखास्त कर सकते हैं?”

10 ईसा ने जवाब दिया, “अगर तू उस बख़्शिश से वाकिफ़ होती जो अल्लाह तुझको देना चाहता है और तू उसे जानती जो तुझसे पानी माँग रहा है तो तू उससे माँगती और वह तुझे ज़िंदगी का पानी देता।”

11 खातून ने कहा, “खुदावंद, आपके पास तो बालटी नहीं है और यह कुआँ गहरा है। आपको ज़िंदगी का यह पानी कहाँ से मिला? 12 क्या आप हमारे बाप याकूब से बड़े हैं जिसने हमें यह कुआँ दिया और जो खुद भी अपने बेटों और रेवड़ों समेत उसके पानी से लुफ़्फ़ांदोज़ हुआ?”

13 ईसा ने जवाब दिया, “जो भी इस पानी में से पिए उसे दुबारा प्यास लगेगी। 14 लेकिन जिसे मैं पानी पिला दूँ उसे बाद में कभी भी प्यास नहीं लगेगी। बल्कि जो पानी मैं उसे दूँगा वह उसमें एक चश्मा बन जाएगा जिससे पानी फूटकर अबदी ज़िंदगी मुहैया करेगा।”

15 औरत ने उससे कहा, “खुदावंद, मुझे यह पानी पिला दें। फिर मुझे कभी भी प्यास नहीं लगेगी और मुझे बार बार यहाँ आकर पानी भरना नहीं पड़ेगा।”

16 ईसा ने कहा, “जा, अपने खाविंद को बुला ला।”

17 औरत ने जवाब दिया, “मेरा कोई खाविंद नहीं है।”

ईसा ने कहा, “तूने सही कहा कि मेरा खाविंद नहीं है, 18 क्योंकि तेरी शादी पाँच मर्दों से हो चुकी है और जिस आदमी के साथ तू अब रह रही है वह तेरा शौहर नहीं है। तेरी बात बिल्कुल दुस्त है।”

19 औरत ने कहा, “खुदावंद, मैं देखती हूँ कि आप नबी हैं। 20 हमारे बापदादा तो इसी पहाड़ पर इबादत करते थे जबकि आप यहूदी लोग इसरार करते हैं कि यरूशलम वह मरकज़ है जहाँ हमें इबादत करनी है।”

21 ईसा ने जवाब दिया, “ऐ खातून, यकीन जान कि वह वक़्त आएगा जब तुम न तो इस पहाड़ पर बाप की इबादत करोगे, न यरूशलम में। 22 तुम सामरी उस की परस्तिश करते हो जिसे नहीं जानते। इसके मुकाबले में हम उस की परस्तिश करते हैं जिसे जानते हैं, क्योंकि नजात यहूदियों में से है। 23 लेकिन वह वक़्त आ रहा है बल्कि पहुँच चुका है जब हकीक़ी परस्तार रूह और सच्चाई से बाप की परस्तिश करेंगे, क्योंकि बाप ऐसे ही परस्तार चाहता है। 24 अल्लाह रूह है, इसलिए लाज़िम है कि उसके परस्तार रूह और सच्चाई से उस की परस्तिश करें।”

25 औरत ने उससे कहा, “मुझे मालूम है कि मसीह यानी मसह किया हुआ शख्स आ रहा है। जब वह आएगा तो हमें सब कुछ बता देगा।”

26 इस पर ईसा ने उसे बताया, “मैं ही मसीह हूँ जो तेरे साथ बात कर रहा हूँ।”

27 उसी लमहे शागिर्द पहुँच गए। उन्होंने जब देखा कि ईसा एक औरत से बात कर रहा है तो ताज़्ज़ुब किया। लेकिन किसी ने पूछने की ज़रूरत न की कि “आप क्या चाहते हैं?” या “आप इस औरत से क्यों बातें कर रहे हैं?”

28 औरत अपना घड़ा छोड़कर शहर में चली गई और वहाँ लोगों से कहने लगी, 29 “आओ, एक आदमी को देखो जिसने मुझे सब कुछ बता दिया है जो मैंने किया है। वह मसीह तो नहीं है?” 30 चुनौचे वह शहर से निकलकर ईसा के पास आए।

31 इतने में शागिर्द जोर देकर ईसा से कहने लगे, “उस्ताद, कुछ खाना खा लें।”

32 लेकिन उसने जवाब दिया, “मेरे पास खाने की ऐसी चीज़ है जिससे तुम वाकिफ़ नहीं हो।”

33 शागिर्द आपस में कहने लगे, “क्या कोई उसके पास खाना लेकर आया?”

34 लेकिन ईसा ने उनसे कहा, “मेरा खाना यह है कि उस की मरज़ी पूरी करूँ जिसने मुझे भेजा है और उसका काम तकमील तक पहुँचाऊँ।

35 तुम तो खुद कहते हो, ‘मज़ीद चार महीने तक फ़सल पक जाएगी।’ लेकिन मैं तुमको बताता हूँ, अपनी नज़र उठाकर खेतों पर गौर करो। फ़सल पक गई है और कटाई के लिए तैयार है। 36 फ़सल की कटाई शुरू हो चुकी है। कटाई करनेवाले को मज़दूरी मिल रही है और वह फ़सल को अबदी ज़िंदगी के लिए जमा कर रहा है ताकि बीज बोनेवाला और कटाई करनेवाला दोनों मिलकर खुशी मना सकें। 37 यों यह कहावत दुस्त साबित हो जाती है कि ‘एक बीज बोता और दूसरा फ़सल काटता है।’ 38 मैंने तुमको उस फ़सल की कटाई करने के लिए भेज दिया है जिसे तैयार करने के लिए तुमने मेहनत नहीं की। औरों ने ख़ूब मेहनत की है और तुम इससे फ़ायदा उठाकर फ़सल जमा कर सकते हो।”

39 उस शहर के बहुत-से सामरी ईसा पर ईमान लाए। वजह यह थी कि उस औरत ने उसके बारे में यह गवाही दी थी, “उसने मुझे सब कुछ बता दिया जो मैंने किया है।” 40 जब वह उसके पास आए तो उन्होंने मिन्नत की, “हमारे पास ठहरें।” चुनौचे वह दो दिन वहाँ रहा।

41 और उस की बातें सुनकर मज़ीद बहुत-से लोग ईमान लाए। 42 उन्होंने औरत से कहा, “अब हम तेरी बातों की बिना पर ईमान नहीं रखते बल्कि इसलिए कि हमने खुद सुन और जान लिया है कि वाकई दुनिया का नजातदहिदा यही है।”

अफ़सर के बेटे की शफ़ा

43 वहाँ दो दिन गुज़रने के बाद ईसा गलील को चला गया। 44 उसने खुद गवाही देकर कहा था कि नबी की उसके अपने वतन में इज़ज़त नहीं होती। 45 अब जब वह गलील पहुँचा तो मक्कामी लोगों ने उसे खुशआमदीद कहा, क्योंकि वह फ़सल की ईद मनाने के लिए यरूशलम आए थे और उन्होंने सब कुछ देखा जो ईसा ने वहाँ किया था।

46 फिर वह दुबारा काना में आया जहाँ उसने पानी को मै में बदल दिया था। उस इलाक़े में एक शाही अफ़सर था जिसका बेटा कफ़र्नहम में बीमार पड़ा था। 47 जब उसे इतला मिली कि ईसा यहूदिया से गलील पहुँच गया है तो वह उसके पास गया और गुज़ारिश की, “काना से मेरे पास आकर मेरे बेटे को शफ़ा दें, क्योंकि वह मरने को है।” 48 ईसा ने उससे कहा, “जब तक तुम लोग इलाही निशान और मोजिज़े नहीं देखते ईमान नहीं लाते।”

49 शाही अफ़सर ने कहा, “ख़ुदावंद आँ, इससे पहले कि मेरा लड़का मर जाए।”

50 ईसा ने जवाब दिया, “जा, तेरा बेटा ज़िंदा रहेगा।”

आदमी ईसा की बात पर ईमान लाया और अपने घर चला गया। 51 वह अभी रास्ते में था कि उसके नौकर उससे मिले। उन्होंने उसे इतला दी कि बेटा ज़िंदा है।

52 उसने उनसे पूछ-गछ की कि उस की तबियत किस वक़्त से बेहतर होने लगी थी। उन्होंने जवाब दिया, “बुख़ार कल दोपहर एक बजे उतर गया।” 53 फिर बाप ने जान लिया कि उसी वक़्त ईसा ने उसे बताया था, “तुम्हारा बेटा ज़िंदा रहेगा।” और वह अपने पूरे घराने समेत उस पर ईमान लाया।

54 यों ईसा ने अपना दूसरा इलाही निशान उस वक़्त दिखाया जब वह यहूदिया से गलील में आया था।

5

बैतुल-मुक़द्दस के हौज़ पर शफ़ा

1 कुछ देर के बाद ईसा किसी यहूदी ईद के मौक़े पर यरूशलम गया। 2 शहर में एक हौज़ था जिसका नाम अरामी ज़बान में बैत-हसदा था। उसके पाँच बड़े बरामदे थे और वह शहर के उस दरवाज़े के करीब था जिसका नाम ‘भेड़ों का दरवाज़ा’ है। 3 इन बरामदों में बेशुमार माज़ूर लोग पड़े रहते थे। यह अंधे, लँगड़े और मफ़लूज़ पानी के हिलने के इंतज़ार में रहते थे। 4 [क्योंकि गाहे बगाहे रब का फ़रिश्ता उतरकर पानी को हिला देता था। जो भी उस वक़्त उसमें पहले दाख़िल हो जाता उसे शफ़ा मिल जाती थी ख़ाह उस की बीमारी कोई भी क्यों न होती।] 5 मरीज़ों में से एक आदमी 38 साल से माज़ूर था। 6 जब ईसा ने उसे वहाँ पड़ा देखा और उसे मालूम हुआ कि यह इतनी देर से इस हालत में है तो उसने पूछा, “क्या तू तनदुस्त होना चाहता है?”

7 उसने जवाब दिया, “ख़ुदावंद, यह मुश्किल है। मेरा कोई साथी नहीं जो मुझे उठाकर पानी में जब उसे हिलाया जाता है ले जाए। इसलिए मेरे वहाँ पहुँचने में इतनी देर लग जाती है कि कोई और मुझसे पहले पानी में उतर जाता है।”

8 ईसा ने कहा, “उठ, अपना बिस्तर उठाकर चल-फिर!” 9 वह आदमी फ़ौरन बहाल हो गया। उसने अपना बिस्तर उठाया और चलने-फिरने लगा।

यह वाक़िया सबत के दिन हुआ। 10 इसलिए यहूदियों ने शफ़ायाब आदमी को बताया, “आज सबत का दिन है। आज बिस्तर उठाना मना है।”

11 लेकिन उसने जवाब दिया, “जिस आदमी ने मुझे शफा दी उसने मुझे बताया, ‘अपना बिस्तर उठाकर चल-फिर’।”

12 उन्होंने सवाल किया, “वह कौन है जिसने तुझे यह कुछ बताया?” 13 लेकिन शफायाब आदमी को मालूम न था, क्योंकि ईसा हूजूम के सबब से चुपके से वहाँ से चला गया था।

14 बाद में ईसा उसे बैतुल-मुकद्दस में मिला। उसने कहा, “अब तू बहाल हो गया है। फिर गुनाह न करना, ऐसा न हो कि तेरा हाल पहले से भी बदतर हो जाए।”

15 उस आदमी ने उसे छोड़कर यहूदियों को इत्तला दी, “ईसा ने मुझे शफा दी।” 16 इस पर यहूदी उसको सताने लगे, क्योंकि उसने उस आदमी को सबत के दिन बहाल किया था। 17 लेकिन ईसा ने उन्हें जवाब दिया, “मेरा बाप आज तक काम करता आया है, और मैं भी ऐसा करता हूँ।”

18 यह सुनकर यहूदी उसे कत्ल करने की मज्जीद कोशिश करने लगे, क्योंकि उसने न सिर्फ सबत के दिन को मनसूख करार दिया था बल्कि अल्लाह को अपना बाप कहकर अपने आपको अल्लाह के बराबर ठहराया था।

फ़रज़ंद का इख्तियार

19 ईसा ने उन्हें जवाब दिया, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि फ़रज़ंद अपनी मरज़ी से कुछ नहीं कर सकता। वह सिर्फ़ वह कुछ करता है जो वह बाप को करते देखता है। जो कुछ बाप करता है वही फ़रज़ंद भी करता है, 20 क्योंकि बाप फ़रज़ंद को प्यार करता और उसे सब कुछ दिखाता है जो वह खुद करता है। हाँ, वह फ़रज़ंद को इनसे भी अजीम काम दिखाएगा। फिर तुम और भी ज़्यादा हैरतज़दा होगे। 21 क्योंकि जिस तरह बाप मुरदों को ज़िंदा करता है उसी तरह फ़रज़ंद भी जिन्हें चाहता है ज़िंदा कर देता है। 22 और बाप किसी की भी अदालत नहीं करता बल्कि उसने अदालत का पूरा इंतज़ाम फ़रज़ंद के सुपुर्द कर दिया है 23 ताकि सब उसी तरह फ़रज़ंद की इज़्ज़त करें जिस तरह वह बाप की इज़्ज़त करते हैं। जो फ़रज़ंद की इज़्ज़त नहीं करता वह बाप की भी इज़्ज़त नहीं करता जिसने उसे भेजा है।

24 मैं तुमको सच बताता हूँ, जो भी मेरी बात सुनकर उस पर ईमान लाता है जिसने मुझे भेजा है अबदी ज़िंदगी उस की है। उसे मुजरिम नहीं ठहराया जाएगा बल्कि वह मौत की गिरिफ्त से निकलकर ज़िंदगी में दाखिल हो गया है। 25 मैं तुमको सच बताता हूँ कि एक वक़््त आनेवाला है बल्कि आ चुका है जब मुरदे अल्लाह के फ़रज़ंद की आवाज़ सुनेंगे। और जितने सुनेंगे वह ज़िंदा हो जाएंगे। 26 क्योंकि जिस तरह बाप ज़िंदगी का मंबा है उसी तरह उसने अपने फ़रज़ंद को ज़िंदगी का मंबा बना दिया है। 27 साथ साथ उसने उसे अदालत करने का इख्तियार भी दे दिया है, क्योंकि वह इब्ने-आदम है। 28 यह सुनकर ताज्जुब न करो क्योंकि एक वक़््त आ रहा है जब तमाम मुरदे उस की आवाज़ सुनकर 29 कब्रों में से निकल आएंगे। जिन्होंने नेक काम किया वह जी उठकर ज़िंदगी पाएंगे जबकि जिन्होंने बुरा काम किया वह जी तो उठेंगे लेकिन उनकी अदालत की जाएगी।

ईसा के गवाह

30 मैं अपनी मरज़ी से कुछ नहीं कर सकता बल्कि जो कुछ बाप से सुनता हूँ उसके मुताबिक़ अदालत करता हूँ। और मेरी अदालत रास्त है क्योंकि मैं अपनी मरज़ी करने की कोशिश नहीं करता बल्कि उसी की जिसने मुझे भेजा है।

31 अगर मैं खुद अपने बारे में गवाही देता तो मेरी गवाही मोतबर न होती। 32 लेकिन एक और है जो मेरे बारे में गवाही दे रहा है और मैं जानता हूँ कि मेरे बारे में उस की गवाही सच्ची और मोतबर है। 33 तुमने पता करने के लिए अपने लोगों को यहया के पास भेजा है और उसने हकीकत की तसदीक की है। 34 बेशक मुझे किसी इनसानी गवाह की ज़रूरत नहीं है, लेकिन मैं यह इसलिए बता रहा हूँ ताकि तुमको नजात मिल जाए। 35 यहया एक जलता हुआ चराग़ था जो रौशनी देता था, और कुछ देर के लिए तुमने उस की रौशनी में खुशी मनाना पसंद किया। 36 लेकिन मेरे पास एक और गवाह है जो यहया की निसबत ज़्यादा अहम है यानी वह काम जो बाप ने मुझे मुकम्मल करने के लिए दे दिया। यही काम जो मैं कर रहा हूँ मेरे बारे में गवाही देता है कि बाप ने मुझे भेजा है। 37 इसके अलावा बाप ने खुद जिसने मुझे भेजा है मेरे बारे में गवाही दी है। अफ़सोस, तुमने कभी उस की आवाज़ नहीं सुनी, न उस की शक्लो-सूरत देखी, 38 और उसका कलाम तुम्हारे अंदर नहीं रहता, क्योंकि तुम उस पर ईमान नहीं रखते जिसे उसने भेजा है। 39 तुम अपने सहीफ़ों में ढूँढते रहते हो क्योंकि समझते हो कि उनसे तुम्हें अबदी ज़िंदगी हासिल है। लेकिन यही मेरे बारे में गवाही देते हैं! 40 तो भी तुम ज़िंदगी पाने के लिए मेरे पास आना नहीं चाहते।

41 मैं इनसानों से इज़्ज़त नहीं चाहता, 42 लेकिन मैं तुमको जानता हूँ कि तुममें अल्लाह की मुहब्बत नहीं। 43 अगर चे मैं अपने बाप के नाम में आया हूँ तो भी तुम मुझे कबूल नहीं करते। इसके मुकाबले मैं अगर कोई अपने नाम में आएगा तो तुम उसे कबूल करोगे। 44 कोई अजब नहीं कि तुम ईमान नहीं ला सकते। क्योंकि तुम एक दूसरे से इज़्ज़त चाहते हो जबकि तुम वह इज़्ज़त पाने की कोशिश ही नहीं करते जो वाहिद खुदा से मिलती है। 45 लेकिन यह न समझो कि मैं बाप के सामने तुम पर इलज़ाम लगाऊँगा। एक और है जो तुम पर इलज़ाम लगा रहा है यानी मूसा, जिससे तुम उम्मीद रखते हो। 46 अगर तुम वाकई मूसा पर ईमान रखते तो ज़रूर मुझ पर भी ईमान रखते, क्योंकि उसने मेरे ही बारे में लिखा। 47 लेकिन चूँकि तुम वह कुछ नहीं मानते जो उसने लिखा है तो मेरी बातें क्योंकर मान सकते हो!”

6

ईसा बड़े हूजूम को खाना खिलाता है

1 इसके बाद ईसा ने गलील की झील को पार किया। (झील का दूसरा नाम तिबरियास था।) 2 एक बड़ा हुजूम उसके पीछे लग गया था, क्योंकि उसने इलाही निशान दिखाकर मरीजों को शफा दी थी और लोगों ने इसका मुशाहदा किया था। 3 फिर ईसा पहाड़ पर चढ़कर अपने शागिर्दों के साथ बैठ गया। 4 (यहूदी ईदे-फसह करीब आ गई थी।) 5 वहाँ बैठे ईसा ने अपनी नज़र उठाई तो देखा कि एक बड़ा हुजूम पहुँच रहा है। उसने फिलिप्पुस से पूछा, “हम कहाँ से खाना खरीदें ताकि उन्हें खिलाएँ?” 6 (यह उसने फिलिप्पुस को आजमाने के लिए कहा। खुद तो वह जानता था कि क्या करेगा।)

7 फिलिप्पुस ने जवाब दिया, “अगर हर एक को सिर्फ थोड़ा-सा मिले तो भी चाँदी के 200 सिक्के काफ़ी नहीं होंगे।”

8 फिर शमौन पतरस का भाई अंदरियास बोल उठा, 9 “यहाँ एक लड़का है जिसके पास जौ की पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं। मगर इतने लोगों में यह क्या है!”

10 ईसा ने कहा, “लोगों को बिठा दो।” उस जगह बहुत घास थी। चुनौचे सब बैठ गए। (सिर्फ मर्दों की तादाद 5,000 थी।) 11 ईसा ने रोटियाँ लेकर शक्रगुजारी की दुआ की और उन्हें बैठे हुए लोगों में तकसीम करवाया। यही कुछ उसने मछलियों के साथ भी किया। और सबने जी भरकर रोटी खाई। 12 जब सब सेर हो गए तो ईसा ने शागिर्दों को बताया, “अब बचे हुए टुकड़े जमा करो ताकि कुछ ज़ाया न हो जाए।”

13 जब उन्होंने बचा हुआ खाना इकट्ठा किया तो जौ की पाँच रोटियों के टुकड़ों से बारह टोकरे भर गए।

14 जब लोगों ने ईसा को यह इलाही निशान दिखाते देखा तो उन्होंने कहा, “यक़ीनन यह वही नबी है जिसे दुनिया में आना था।” 15 ईसा को मालूम हुआ कि वह आकर उसे ज़बरदस्ती बादशाह बनाना चाहते हैं, इसलिए वह दुबारा उनसे अलग होकर अकेला ही किसी पहाड़ पर चढ़ गया।

ईसा पानी पर चलता है

16 शाम को शागिर्द झील के पास गए 17 और कश्ती पर सवार होकर झील के पार शहर कफ़र्नहम के लिए रवाना हुए। अंधेरा हो चुका था और ईसा अब तक उनके पास वापस नहीं आया था। 18 तेज़ हवा के बाइस झील में लहरें उठने लगीं। 19 कश्ती को खेते खेते शागिर्द चार या पाँच किलोमीटर का सफ़र तय कर चुके थे कि अचानक ईसा नज़र आया। वह पानी पर चलता हुआ कश्ती की तरफ बढ़ रहा था। शागिर्द दहशतज़दा हो गए। 20 लेकिन उसने उनसे कहा, “मैं ही हूँ। खौफ़ न करो।” 21 वह उसे कश्ती में बिठाने पर आमदा हुए। और कश्ती उसी लमहे उस जगह पहुँच गई जहाँ वह जाना चाहते थे।

लोग ईसा को ढूँढते हैं

22 हुजूम तो झील के पार रह गया था। अगले दिन लोगों को पता चला कि शागिर्द एक ही कश्ती लेकर चले गए हैं और कि उस वक़्त ईसा कश्ती में नहीं था। 23 फिर कुछ कश्तियाँ तिबरियास से उस मक़ाम के करीब पहुँचीं जहाँ ख़ुदावंद ईसा ने रोटी के लिए शक्रगुजारी की दुआ करके उसे लोगों को खिलाया था। 24 जब लोगों ने देखा कि न ईसा और न उसके शागिर्द वहाँ हैं तो वह कश्तियों पर सवार होकर ईसा को ढूँढते ढूँढते कफ़र्नहम पहुँचे।

ईसा ज़िंदगी की रोटी है

25 जब उन्होंने उसे झील के पार पाया तो पूछा, “उस्ताद, आप किस तरह यहाँ पहुँच गए?”

26 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको सच बताता हूँ, तुम मुझे इसलिए नहीं ढूँढ रहे कि इलाही निशान देखे हैं बल्कि इसलिए कि तुमने जी भरकर रोटी खाई है। 27 ऐसी ख़ुराक के लिए जिद्दो-जहद न करो जो गल-सड़ जाती है, बल्कि ऐसी के लिए जो अबदी ज़िंदगी तक कायम रहती है और जो इब्ने-आदम तुमको देगा, क्योंकि ख़ुदा बाप ने उस पर अपनी तसदीक की मुहर लगाई है।”

28 इस पर उन्होंने पूछा, “हमें क्या करना चाहिए ताकि अल्लाह का मतलूबा काम करें?”

29 ईसा ने जवाब दिया, “अल्लाह का काम यह है कि तुम उस पर इमान लाओ जिसे उसने भेजा है।”

30 उन्होंने कहा, “तो फिर आप क्या इलाही निशान दिखाएँगे जिसे देखकर हम आप पर इमान लाएँ? आप क्या काम सरंजाम देंगे? 31 हमारे बापदादा ने तो रेगिस्तान में मन खाया। चुनौचे कलामे-मुक़द्स में लिखा है कि मूसा ने उन्हें आसमान से रोटी खिलाई।”

32 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि ख़ुद मूसा ने तुमको आसमान से रोटी नहीं खिलाई बल्कि मेरे बाप ने। वही तुमको आसमान से हकीकी रोटी देता है। 33 क्योंकि अल्लाह की रोटी वह शख्स है जो आसमान पर से उतरकर दुनिया को ज़िंदगी बख़्शता है।”

34 उन्होंने कहा, “ख़ुदावंद, हमें यह रोटी हर वक़्त दिया करें।”

35 जवाब में ईसा ने कहा, “मैं ही ज़िंदगी की रोटी हूँ। जो मेरे पास आए उसे फिर कभी भूक नहीं लगेगी। और जो मुझ पर इमान लाए उसे फिर कभी प्यास नहीं लगेगी। 36 लेकिन जिस तरह मैं तुमको बता चुका हूँ, तुमने मुझे देखा और फिर भी इमान नहीं लाए। 37 जितने भी बाप ने मुझे दिए हैं वह मेरे पास आएँगे और जो भी मेरे पास आएगा उसे मैं हरगिज़ निकाल न दूँगा। 38 क्योंकि मैं अपनी मरज़ी पूरी करने के लिए आसमान से नहीं उतरा बल्कि उस की जिसने मुझे भेजा है। 39 और जिसने मुझे भेजा उस की मरज़ी यह है कि जितने भी उसने मुझे दिए हैं उनमें से मैं एक को भी खो न दूँ बल्कि सबको क्रियामत के दिन मुरदों में से फिर ज़िंदा करूँ। 40 क्योंकि मेरे बाप की मरज़ी यही है कि जो भी फ़रज़ंद को देखकर उस पर इमान लाए उसे अबदी ज़िंदगी हासिल हो। ऐसे शख्स को मैं क्रियामत के दिन मुरदों में से फिर ज़िंदा करूँगा।”

41 यह सुनकर यहूदी इसलिए बुड़बुड़ाने लगे कि उसने कहा था, “मैं ही वह रोटी हूँ जो आसमान पर से उतर आई है।” 42 उन्होंने एतराज किया, “क्या यह ईसा बिन यूसुफ नहीं, जिसके बाप और माँ से हम वाकिफ़ हैं? वह क्योंकर कह सकता है कि ‘मैं आसमान से उतरा हूँ?’”

43 ईसा ने जवाब में कहा, “आपस में मत बुड़बुड़ाओ। 44 सिर्फ़ वह शख्स मेरे पास आ सकता है जिसे बाप जिसने मुझे भेजा है मेरे पास खींच लाया है। ऐसे शख्स को मैं क्रियामत के दिन मरदों में से फिर ज़िंदा करूँगा। 45 नबियों के सहीफ़ों में लिखा है, ‘सब अल्लाह से तालीम पाएँगे।’ जो भी अल्लाह की सुनकर उससे सीखता है वह मेरे पास आ जाता है। 46 इसका मतलब यह नहीं कि किसी ने कभी बाप को देखा। सिर्फ़ एक ही ने बाप को देखा है, वही जो अल्लाह की तरफ़ से है। 47 मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो ईमान रखता है उसे अबदी ज़िंदगी हासिल है। 48 ज़िंदगी की रोटी मैं हूँ। 49 तुम्हारे बापदादा रेगिस्तान में मन खाते रहे, तो भी वह मर गए। 50 लेकिन यहाँ आसमान से उतरनेवाली ऐसी रोटी है जिसे खाकर इनसान नहीं मरता। 51 मैं ही ज़िंदगी की वह रोटी हूँ जो आसमान से उतर आई है। जो इस रोटी से खाए वह अबद तक ज़िंदा रहेगा। और यह रोटी मेरा गोश्त है जो मैं दुनिया को ज़िंदगी मुहैया करने की खातिर पेश करूँगा।”

52 यहूदी बड़ी सरगर्मी से एक दूसरे से बहस करने लगे, “यह आदमी हमें किस तरह अपना गोश्त खिला सकता है?”

53 ईसा ने उनसे कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि सिर्फ़ इब्ने-आदम का गोश्त खाने और उसका खून पीने ही से तुममें ज़िंदगी होगी। 54 जो मेरा गोश्त खाए और मेरा खून पिए अबदी ज़िंदगी उस की है और मैं उसे क्रियामत के दिन मरदों में से फिर ज़िंदा करूँगा। 55 क्योंकि मेरा गोश्त हकीकी खुराक और मेरा खून हकीकी पीने की चीज़ है। 56 जो मेरा गोश्त खाता और मेरा खून पीता है वह मुझमें कायम रहता है और मैं उसमें। 57 मैं उस ज़िंदा बाप की वजह से ज़िंदा हूँ जिसने मुझे भेजा। इसी तरह जो मुझे खाता है वह मेरी ही वजह से ज़िंदा रहेगा। 58 यही वह रोटी है जो आसमान से उतरी है। तुम्हारे बापदादा मन खाने के बावजूद मर गए, लेकिन जो यह रोटी खाएगा वह अबद तक ज़िंदा रहेगा।”

59 ईसा ने यह बातें उस वक़्त की जब वह कफ़र्नहम में यहूदी इबादतख़ाने में तालीम दे रहा था।

अबदी ज़िंदगी की बातें

60 यह सुनकर उसके बहुत-से शागिर्दों ने कहा, “यह बातें ना-गवार हैं। कौन इन्हें सुन सकता है!”

61 ईसा को मालूम था कि मेरे शागिर्द मेरे बारे में बुड़बुड़ा रहे हैं, इसलिए उसने कहा, “क्या तुमको इन बातों से ठेस लगी है? 62 तो फिर तुम क्या सोचोगे जब इब्ने-आदम को ऊपर जाते देखोगे जहाँ वह पहले था? 63 अल्लाह का रूह ही ज़िंदा करता है जबकि जिस्मानी ताक़त का कोई फ़ायदा नहीं होता। जो बातें मैंने तुमको बताई हैं वह रूह और ज़िंदगी हैं। 64 लेकिन तुममें से कुछ हैं जो ईमान नहीं रखते।” (ईसा तो शुरू से ही जानता था कि कौन कौन ईमान नहीं रखते और कौन मुझे दुश्मन के हवाले करेगा।) 65 फिर उसने कहा, “इसलिए मैंने तुमको बताया कि सिर्फ़ वह शख्स मेरे पास आ सकता है जिसे बाप की तरफ़ से यह तौफ़ीक़ मिले।”

66 उस वक़्त से उसके बहुत-से शागिर्द उल्टे पाँव फिर गए और आइंदा को उसके साथ न चले। 67 तब ईसा ने बारह शागिर्दों से पूछा, “क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?”

68 शमौन पतरस ने जवाब दिया, “खुदावंद, हम किसके पास जाएँ? अबदी ज़िंदगी की बातें तो आप ही के पास हैं। 69 और हमने ईमान लाकर जान लिया है कि आप अल्लाह के कुदूस हैं।”

70 जवाब में ईसा ने कहा, “क्या मैंने तुम बारह को नहीं चुना? तो भी तुममें से एक शख्स शैतान है।” 71 (वह शमौन इस्करियोती के बेटे यहूदाह की तरफ़ इशारा कर रहा था जो बारह शागिर्दों में से एक था और जिसने बाद में उसे दुश्मन के हवाले कर दिया।)

7

ईसा और उसके भाई

1 इसके बाद ईसा ने गलील के इलाक़े में इधर उधर सफ़र किया। वह यहूदिया में फिरना नहीं चाहता था क्योंकि वहाँ के यहूदी उसे क़त्ल करने का मौक़ा ढूँढ रहे थे। 2 लेकिन जब यहूदी ईद बनाम झोंपड़ियों की ईद करीब आई 3 तो उसके भाइयों ने उससे कहा, “यह जगह छोड़कर यहूदिया चला जा ताकि तेरे पैरोकार भी वह मोज़िज़े देख लें जो तू करता है। 4 जो शख्स चाहता है कि अवाम उसे जाने वह पोशीदगी में काम नहीं करता। अगर तू इस किस्म का मोज़िज़ाना काम करता है तो अपने आपको दुनिया पर जाहिर कर।” 5 (असल में ईसा के भाई भी उस पर ईमान नहीं रखते थे।)

6 ईसा ने उन्हें बताया, “अभी वह वक़्त नहीं आया जो मेरे लिए मौजूज़ है। लेकिन तुम जा सकते हो, तुम्हारे लिए हर वक़्त मौजूज़ है। 7 दुनिया तुमसे दुश्मनी नहीं रख सकती। लेकिन मुझसे वह दुश्मनी रखती है, क्योंकि मैं उसके बारे में यह गवाही देता हूँ कि उसके काम बुरे हैं। 8 तुम खुद ईद पर जाओ। मैं नहीं जाऊँगा, क्योंकि अभी वह वक़्त नहीं आया जो मेरे लिए मौजूज़ है।” 9 यह कहकर वह गलील में ठहरा रहा।

ईसा झोंपड़ियों की ईद पर

10 लेकिन बाद में, जब उसके भाई ईद पर जा चुके थे तो वह भी गया, अगरचे अलानिया नहीं बल्कि खुफ़िया तौर पर। 11 यहूदी ईद के मौक़े पर उसे तलाश कर रहे थे। वह पूछते रहे, “वह आदमी कहाँ है?”

12 हुजूम में से कई लोग ईसा के बारे में बुड़बुड़ा रहे थे। बाज़ ने कहा, “वह अच्छा बंदा है।” लेकिन दूसरों ने एतराज़ किया, “नहीं, वह अवाम को बहकाता है।” 13 लेकिन किसी ने भी उसके बारे में खुलकर बात न की, क्योंकि वह यहदियों से डरते थे।

14 ईद का आधा हिस्सा गुज़र चुका था जब ईसा बैतुल-मुकद्दस में जाकर तालीम देने लगा। 15 उसे सुनकर यहदी हैरतज़दा हुए और कहा, “यह आदमी किस तरह इतना इल्म रखता है हालाँकि इसने कहीं से भी तालीम हासिल नहीं की!”

16 ईसा ने जवाब दिया, “जो तालीम मैं देता हूँ वह मेरी अपनी नहीं बल्कि उस की है जिसने मुझे भेजा। 17 जो उस की मरज़ी पूरी करने के लिए तैयार है वह जान लेगा कि मेरी तालीम अल्लाह की तरफ़ से है या कि मेरी अपनी तरफ़ से। 18 जो अपनी तरफ़ से बोलता है वह अपनी ही इज़्ज़त चाहता है। लेकिन जो अपने भेजनेवाले की इज़्ज़तो-जलाल बढ़ाने की कोशिश करता है वह सच्चा है और उसमें नारास्ती नहीं है। 19 क्या मूसा ने तुमको शरीअत नहीं दी? तो फिर तुम मुझे कत्ल करने की कोशिश क्यों कर रहे हो?”

20 हुजूम ने जवाब दिया, “तुम किसी बद्रूह की गिरिफ्त में हो। कौन तुम्हें कत्ल करने की कोशिश कर रहा है?”

21 ईसा ने उनसे कहा, “मैंने सबत के दिन एक ही मोज़िज़ा किया और तुम सब हैरतज़दा हुए। 22 लेकिन तुम भी सबत के दिन काम करते हो। तुम उस दिन अपने बच्चों का खतना करवाते हो। और यह रस्म मूसा की शरीअत के मुताबिक़ ही है, अगरचे यह मूसा से नहीं बल्कि हमारे बापदादा इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से शुरू हुई। 23 क्योंकि शरीअत के मुताबिक़ लाज़िम है कि बच्चे का खतना आठवें दिन करवाया जाए, और अगर यह दिन सबत हो तो तुम फिर भी अपने बच्चे का खतना करवाते हो ताकि शरीअत की खिलाफ़वरज़ी न हो जाए। तो फिर तुम मुझसे क्यों नाराज़ हो कि मैंने सबत के दिन एक आदमी के पूरे जिस्म को शफ़ा दी? 24 जाहिरी सूत की बिना पर फ़ैसला न करो बल्कि बातिनी हालत पहचानकर मुंसिफ़ाना फ़ैसला करो।”

क्या ईसा ही मसीह है?

25 उस वक़्त यरूशलम के कुछ रहनेवाले कहने लगे, “क्या यह वह आदमी नहीं है जिसे लोग कत्ल करने की कोशिश कर रहे हैं? 26 ताहम वह यहाँ खुलकर बात कर रहा है और कोई भी उसे रोकने की कोशिश नहीं कर रहा। क्या हमारे राहनुमाओं ने हक़ीक़त में जान लिया है कि यह मसीह है? 27 लेकिन जब मसीह आएगा तो किसी को भी मालूम नहीं होगा कि वह कहाँ से है। यह आदमी फ़रक़ है। हम तो जानते हैं कि यह कहाँ से है।”

28 ईसा बैतुल-मुकद्दस में तालीम दे रहा था। अब वह पुकार उठा, “तुम मुझे जानते हो और यह भी जानते हो कि मैं कहाँ से हूँ। लेकिन मैं अपनी तरफ़ से नहीं आया। जिसने मुझे भेजा है वह सच्चा है और उसे तुम नहीं जानते। 29 लेकिन मैं उसे जानता हूँ, क्योंकि मैं उस की तरफ़ से हूँ और उसने मुझे भेजा है।”

30 तब उन्होंने उसे गिरिफ़्तार करने की कोशिश की। लेकिन कोई भी उसको हाथ न लगा सका, क्योंकि अभी उसका वक़्त नहीं आया था। 31 तो भी हुजूम के कई लोग उस पर इमान लाए, क्योंकि उन्होंने कहा, “जब मसीह आएगा तो क्या वह इस आदमी से ज़्यादा इलाही निशान दिखाएगा?”

पहरेदार उसे गिरिफ़्तार करने आते हैं

32 फ़रीसियों ने देखा कि हुजूम में इस किस्म की बातें धीमी धीमी आवाज़ के साथ फैल रही हैं। चुनाँचे उन्होंने राहनुमा इमामों के साथ मिलकर बैतुल-मुकद्दस के पहरेदार ईसा को गिरिफ़्तार करने के लिए भेजे। 33 लेकिन ईसा ने कहा, “मैं सिर्फ़ थोड़ी देर और तुम्हारे साथ रहूँगा, फिर मैं उसके पास वापस चला जाऊँगा जिसने मुझे भेजा है। 34 उस वक़्त तुम मुझे ढूँढोगे, मगर नहीं पाओगे, क्योंकि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते।”

35 यहदी आपस में कहने लगे, “यह कहाँ जाना चाहता है जहाँ हम उसे नहीं पा सकेंगे? क्या वह बैरूने-मुल्क जाना चाहता है, वहाँ जहाँ हमारे लोग यूनानियों में बिखरी हालत में रहते हैं? क्या वह यूनानियों को तालीम देना चाहता है? 36 मतलब क्या है जब वह कहता है, ‘तुम मुझे ढूँढोगे मगर नहीं पाओगे’ और ‘जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते’।”

ज़िंदगी के पानी की नहरें

37 ईद के आखिरी दिन जो सबसे अहम है ईसा खड़ा हुआ और ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, “जो प्यासा हो वह मेरे पास आए, 38 और जो मुझ पर इमान लाए वह पिए। कलामे-मुकद्दस के मुताबिक़ ‘उसके अंदर से ज़िंदगी के पानी की नहरें बह निकलेंगी’।” 39 (‘ज़िंदगी के पानी’ से वह स्हुल-कुद्स की तरफ़ इशारा कर रहा था जो उनको हासिल होता है जो ईसा पर इमान लाते हैं। लेकिन वह उस वक़्त तक नाज़िल नहीं हुआ था, क्योंकि ईसा अब तक अपने जलाल को न पहुँचा था।)

सुननेवालों में नाइतफ़ाकी

40 ईसा की यह बातें सुनकर हुजूम के कुछ लोगों ने कहा, “यह आदमी वाकई वह नबी है जिसके इंतज़ार में हम हैं।”

41 दूसरों ने कहा, “यह मसीह है।”

लेकिन बाज़ ने एतराज़ किया, “मसीह गलील से किस तरह आ सकता है! 42 पाक कलाम तो बयान करता है कि मसीह दाऊद के खानदान और बैत-लहम से आएगा, उस गाँव से जहाँ दाऊद बादशाह पैदा हुआ।” 43 यों ईसा की वजह से लोगों में फूट पड़ गई। 44 कुछ तो उसे गिरिफ्तार करना चाहते थे, लेकिन कोई भी उसको हाथ न लगा सका।

यह्दी राहनुमा ईसा पर ईमान नहीं रखते

45 इतने में बैतुल-मुकद्दस के पहरेदार राहनुमा इमामों और फ़रीसियों के पास वापस आए। वह ईसा को लेकर नहीं आए थे, इसलिए राहनुमाओं ने पूछा, “तुम उसे क्यों नहीं लाए?”

46 पहरेदारों ने जवाब दिया, “किसी ने कभी इस आदमी की तरह बात नहीं की।”

47 फ़रीसियों ने तंज़न कहा, “क्या तुमको भी बहका दिया गया है? 48 क्या राहनुमाओं या फ़रीसियों में कोई है जो उस पर ईमान लाया हो? कोई भी नहीं! 49 लेकिन शरीअत से नावाक़िफ़ यह हुज़ूम लानती है!”

50 इन राहनुमाओं में नीकुदेमस भी शामिल था जो कुछ देर पहले ईसा के पास गया था। अब वह बोल उठा, 51 “क्या हमारी शरीअत किसी पर यों फ़ैसला देने की इजाज़त देती है? नहीं, लाज़िम है कि उसे पहले अदालत में पेश किया जाए ताकि मालूम हो जाए कि उससे क्या कुछ सरज़द हुआ है।”

52 दूसरों ने एतराज़ किया, “क्या तुम भी गलील के रहनेवाले हो? कलामे-मुकद्दस में तफ़तीश करके खुद देख लो कि गलील से कोई नबी नहीं आया।” 53 यह कहकर हर एक अपने अपने घर चला गया।

8

ज़िनाकार औरत पर पहला पत्थर

1 ईसा खुद ज़ैतून के पहाड़ पर चला गया। 2 अगले दिन पौ फटते वक़्त वह दुबारा बैतुल-मुकद्दस में आया। वहाँ सब लोग उसके गिर्द जमा हुए और वह बैठकर उन्हें तालीम देने लगा। 3 इस दौरान शरीअत के उलमा और फ़रीसी एक औरत को लेकर आए जिसे ज़िना करते वक़्त पकड़ा गया था। उसे बीच में खड़ा करके 4 उन्होंने ईसा से कहा, “उस्ताद, इस औरत को ज़िना करते वक़्त पकड़ा गया है। 5 मूसा ने शरीअत में हमें हुक्म दिया है कि ऐसे लोगों को संगसार करना है। आप क्या कहते हैं?” 6 इस सवाल से वह उसे फँसाना चाहते थे ताकि उस पर इलज़ाम लगाने का कोई बहाना उनके हाथ आ जाए। लेकिन ईसा झुक गया और अपनी उँगली से ज़मीन पर लिखने लगा।

7 जब वह उससे जवाब का तकाज़ा करते रहे तो वह खड़ा होकर उनसे मुख़ातिब हुआ, “तुममें से जिसने कभी गुनाह नहीं किया, वह पहला पत्थर मारे।” 8 फिर वह दुबारा झुककर ज़मीन पर लिखने लगा। 9 यह जवाब सुनकर इलज़ाम लगानेवाले यके बाद दीगरे वहाँ से खिसक गए, पहले बुज़ुर्ग, फिर बाकी सब। आख़िरकार ईसा और दरमियान में खड़ी वह औरत अकेले रह गए। 10 फिर उसने खड़े होकर कहा, “ऐ औरत, वह सब कहाँ गए? क्या किसी ने तुझ पर फ़तवा नहीं लगाया?”

11 औरत ने जवाब दिया, “नहीं खुदावंद।”

ईसा ने कहा, “मैं भी तुझ पर फ़तवा नहीं लगाता। जा, आइंदा गुनाह न करना।”

ईसा दुनिया का नूर है

12 फिर ईसा दुबारा लोगों से मुख़ातिब हुआ, “दुनिया का नूर मैं हूँ। जो मेरी पैरवी करे वह तारीकी में नहीं चलेगा, क्योंकि उसे ज़िंदगी का नूर हासिल होगा।”

13 फ़रीसियों ने एतराज़ किया, “आप तो अपने बारे में गवाही दे रहे हैं। ऐसी गवाही मोतबर नहीं होती।”

14 ईसा ने जवाब दिया, “अगरचे मैं अपने बारे में ही गवाही दे रहा हूँ तो भी वह मोतबर है। क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ को जा रहा हूँ। लेकिन तुमको तो मालूम नहीं कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ जा रहा हूँ। 15 तुम इनसानी सोच के मुताबिक लोगों का फ़ैसला करते हो, लेकिन मैं किसी का भी फ़ैसला नहीं करता। 16 और अगर फ़ैसला करूँ भी तो मेरा फ़ैसला दुस्त है, क्योंकि मैं अकेला नहीं हूँ। बाप जिसने मुझे भेजा है मेरे साथ है। 17 तुम्हारी शरीअत में लिखा है कि दो आदमियों की गवाही मोतबर है। 18 मैं खुद अपने बारे में गवाही देता हूँ जबकि दूसरा गवाह बाप है जिसने मुझे भेजा।”

19 उन्होंने पूछा, “आपका बाप कहाँ है?” ईसा ने जवाब दिया, “तुम न मुझे जानते हो, न मेरे बाप को। अगर तुम मुझे जानते तो फिर मेरे बाप को भी जानते।”

20 ईसा ने यह बातें उस वक़्त की जब वह उस जगह के करीब तालीम दे रहा था जहाँ लोग अपना हृदया डालते थे। लेकिन किसी ने उसे गिरिफ्तार न किया क्योंकि अभी उसका वक़्त नहीं आया था।

जहाँ मैं जा रहा हूँ तुम वहाँ नहीं जा सकते

21 एक और बार ईसा उनसे मुख़ातिब हुआ, “मैं जा रहा हूँ और तुम मुझे ढूँढ़ ढूँढ़कर अपने गुनाहों में मर जाओगे। जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं पहुँच सकते।”

22 यहूदियों ने पूछा, “क्या वह खुदकुशी करना चाहता है? क्या वह इसी वजह से कहता है, ‘जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं पहुँच सकते?’”

23 ईसा ने अपनी बात जारी रखी, “तुम नीचे से हो जबकि मैं ऊपर से हूँ। तुम इस दुनिया के हो जबकि मैं इस दुनिया का नहीं हूँ। 24 मैं तुमको बता चुका हूँ कि तुम अपने गुनाहों में मर जाओगे। क्योंकि अगर तुम ईमान नहीं लाते कि मैं वही हूँ तो तुम यकीनन अपने गुनाहों में मर जाओगे।”

25 उन्होंने सवाल किया, “आप कौन हैं?”

ईसा ने जवाब दिया, “मैं वही हूँ जो मैं शुरू से ही बताता आया हूँ। 26 मैं तुम्हारे बारे में बहुत कुछ कह सकता हूँ। बहुत-सी ऐसी बातें हैं जिनकी बिना पर मैं तुमको मुजरिम ठहरा सकता हूँ। लेकिन जिसने मुझे भेजा है वही सच्चा और मोतबर है और मैं दुनिया को सिर्फ वह कुछ सुनाता हूँ जो मैंने उससे सुना है।”

27 सुननेवाले न समझे कि ईसा बाप का जिक्र कर रहा है। 28 चुनौती उसने कहा, “जब तुम इब्ने-आदम को ऊँचे पर चढ़ाओगे तब ही तुम जान लोगे कि मैं वही हूँ, कि मैं अपनी तरफ से कुछ नहीं करता बल्कि सिर्फ वही सुनाता हूँ जो बाप ने मुझे सिखाया है। 29 और जिसने मुझे भेजा है वह मेरे साथ है। उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा, क्योंकि मैं हर वक्त वही कुछ करता हूँ जो उसे पसंद आता है।”

30 यह बातें सुनकर बहुत-से लोग उस पर ईमान लाए।

सच्चाई तुमको आज़ाद करेगी

31 जो यहूदी उसका यकीन करते थे ईसा अब उनसे हमकलाम हुआ, “अगर तुम मेरी तालीम के ताबे रहोगे तब ही तुम मेरे सच्चे शार्गिर्द होगे। 32 फिर तुम सच्चाई को जान लोगे और सच्चाई तुमको आज़ाद कर देगी।”

33 उन्होंने एतराज़ किया, “हम तो इब्राहीम की औलाद हैं, हम कभी भी किसी के गुलाम नहीं रहे। फिर आप किस तरह कह सकते हैं कि हम आज़ाद हो जाएंगे?”

34 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो भी गुनाह करता है वह गुनाह का गुलाम है। 35 गुलाम तो आरिज़ी तौर पर घर में रहता है, लेकिन मालिक का बेटा हमेशा तक। 36 इसलिए अगर फ़रज़द तुमको आज़ाद करे तो तुम हक़ीक़तन आज़ाद होगे। 37 मुझे मालूम है कि तुम इब्राहीम की औलाद हो। लेकिन तुम मुझे क़त्ल करने के दरपै हो, क्योंकि तुम्हारे अंदर मेरे पैग़ाम के लिए गुंजाइश नहीं है। 38 मैं तुमको वही कुछ बताता हूँ जो मैंने बाप के हाँ देखा है, जबकि तुम वही कुछ सुनाते हो जो तुमने अपने बाप से सुना है।”

39 उन्होंने कहा, “हमारा बाप इब्राहीम है।” ईसा ने जवाब दिया, “अगर तुम इब्राहीम की औलाद होते तो तुम उसके नमूने पर चलते।

40 इसके बजाए तुम मुझे क़त्ल करने की तलाश में हो, इसलिए कि मैंने तुमको वही सच्चाई सुनाई है जो मैंने अल्लाह के हुज़ूर सुनी है। इब्राहीम ने कभी भी इस क्रिस्म का काम न किया। 41 नहीं, तुम अपने बाप का काम कर रहे हो।”

उन्होंने एतराज़ किया, “हम हरामज़ादे नहीं हैं। अल्लाह ही हमारा वाहिद बाप है।”

42 ईसा ने उनसे कहा, “अगर अल्लाह तुम्हारा बाप होता तो तुम मुझसे मुहब्बत रखते, क्योंकि मैं अल्लाह में से निकल आया हूँ। मैं अपनी तरफ से नहीं आया बल्कि उसी ने मुझे भेजा है। 43 तुम मेरी ज़बान क्यों नहीं समझते? इसलिए कि तुम मेरी बात सुन नहीं सकते। 44 तुम अपने बाप इबलीस से हो और अपने बाप की ख़ाहिशों पर अमल करने के खाहों रहते हो। वह शुरू ही से कातिल है और सच्चाई पर कायम न रहा, क्योंकि उसमें सच्चाई है नहीं। जब वह झूट बोलता है तो यह फ़ितरी बात है, क्योंकि वह झूट बोलनेवाला और झूट का बाप है। 45 लेकिन मैं सच्ची बातें सुनाता हूँ और यही वजह है कि तुमको मुझ पर यकीन नहीं आता। 46 क्या तुममें से कोई साबित कर सकता है कि मुझसे कोई गुनाह सरज़द हुआ है? मैं तो तुमको हक़ीक़त बता रहा हूँ। फिर तुमको मुझ पर यकीन क्यों नहीं आता? 47 जो अल्लाह से है वह अल्लाह की बातें सुनता है। तुम यह इसलिए नहीं सुनते कि तुम अल्लाह से नहीं हो।”

ईसा और इब्राहीम

48 यहूदियों ने जवाब दिया, “क्या हमने ठीक नहीं कहा कि तुम सामरी हो और किसी बदरूह के क़ब्ज़े में हो?”

49 ईसा ने कहा, “मैं बदरूह के क़ब्ज़े में नहीं हूँ बल्कि अपने बाप की इज़्ज़त करता हूँ जबकि तुम मेरी बेइज़्ज़ती करते हो। 50 मैं खुद अपनी इज़्ज़त का ख़ाहों नहीं हूँ। लेकिन एक है जो मेरी इज़्ज़त और जलाल का ख़याल रखता और इनसाफ़ करता है। 51 मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो भी मेरे कलाम पर अमल करता रहे वह मौत को कभी नहीं देखेगा।”

52 यह सुनकर लोगों ने कहा, “अब हमें पता चल गया है कि तुम किसी बदरूह के क़ब्ज़े में हो। इब्राहीम और नबी सब इंतक़ाल कर गए जबकि तुम दावा करते हो, ‘जो भी मेरे कलाम पर अमल करता रहे वह मौत का मज़ा कभी नहीं चखेगा।’ 53 क्या तुम हमारे बाप इब्राहीम से बड़े हो? वह मर गया, और नबी भी मर गए। तुम अपने आपको क्या समझते हो?”

54 ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैं अपनी इज़्ज़त और जलाल बढ़ाता तो मेरा जलाल बातिल होता। लेकिन मेरा बाप ही मेरी इज़्ज़तो-जलाल बढ़ाता है, वही जिसके बारे में तुम दावा करते हो कि ‘वह हमारा खुदा है।’ 55 लेकिन हक़ीक़त में तुमने उसे नहीं जाना जबकि मैं उसे जानता हूँ। अगर मैं कहता कि मैं उसे नहीं जानता तो मैं तुम्हारी तरह झूटा होता। लेकिन मैं उसे जानता और उसके कलाम पर अमल करता हूँ। 56 तुम्हारे बाप इब्राहीम ने खुशी मनाई जब उसे मालूम हुआ कि वह मेरी आमद का दिन देखेगा, और वह उसे देखकर मस्रूर हुआ।”

57 यहूदियों ने एतराज किया, “तुम्हारी उम्र तो अभी पचास साल भी नहीं, तो फिर तुम किस तरह कह सकते हो कि तुमने इब्राहीम को देखा है?”

58 ईसा ने उनसे कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ, इब्राहीम की पैदाइश से पेशतर ‘मैं हूँ’।”

59 इस पर लोग उसे संगसार करने के लिए पत्थर उठाने लगे। लेकिन ईसा गायब होकर बैतुल-मुकद्दस से निकल गया।

9

अंधे की शफ़ा

1 चलते चलते ईसा ने एक आदमी को देखा जो पैदाइश का अंधा था। 2 उसके शागिर्दों ने उससे पूछा, “उस्ताद, यह आदमी अंधा क्यों पैदा हुआ? क्या इसका कोई गुनाह है या इसके वालिदैन् का?”

3 ईसा ने जवाब दिया, “न इसका कोई गुनाह है और न इसके वालिदैन् का। यह इसलिए हुआ कि इसकी जिंदगी में अल्लाह का काम ज़ाहिर हो जाए। 4 अभी दिन है। लाज़िम है कि हम जितनी देर तक दिन है उसका काम करते रहें जिसने मुझे भेजा है। क्योंकि रात आनेवाली है, उस वक़्त कोई काम नहीं कर सकेगा। 5 लेकिन जितनी देर तक मैं दुनिया में हूँ उतनी देर तक मैं दुनिया का नूर हूँ।”

6 यह कहकर उसने ज़मीन पर थूककर मिट्टी सानी और उस की आँखों पर लगा दी। 7 उसने उससे कहा, “जा, शिलोख के हौज़ में नहा ले।” (शिलोख का मतलब ‘भेजा हुआ’ है।) अंधे ने जाकर नहा लिया। जब वापस आया तो वह देख सकता था।

8 उसके हमसाय और वह जिन्होंने पहले उसे भीक माँगते देखा था पूछने लगे, “क्या यह वही नहीं जो बैठा भीक माँगा करता था?”

9 बाज़ ने कहा, “हाँ, वही है।”

औरों ने इनकार किया, “नहीं, यह सिर्फ़ उसका हमशक्ल है।”

लेकिन आदमी ने खुद इसरार किया, “मैं वही हूँ।”

10 उन्होंने उससे सवाल किया, “तेरी आँखें किस तरह बहाल हुई?”

11 उसने जवाब दिया, “वह आदमी जो ईसा कहलाता है उसने मिट्टी सानकर मेरी आँखों पर लगा दी। फिर उसने मुझे कहा, ‘शिलोख के हौज़ पर जा और नहा ले।’ मैं वहाँ गया और नहाते ही मेरी आँखें बहाल हो गईं।”

12 उन्होंने पूछा, “वह कहाँ है?”

उसने जवाब दिया, “मुझे नहीं मालूम।”

फ़रीसी शफ़ा की तफ़्तीश करते हैं

13 तब वह शफ़ायाब अंधे को फ़रीसियों के पास ले गए। 14 जिस दिन ईसा ने मिट्टी सानकर उस की आँखों को बहाल किया था वह सबत का दिन था। 15 इसलिए फ़रीसियों ने भी उससे पूछ-गछ की कि उसे किस तरह बसरात मिल गई। आदमी ने जवाब दिया, “उसने मेरी आँखों पर मिट्टी लगा दी, फिर मैंने नहा लिया और अब देख सकता हूँ।”

16 फ़रीसियों में से बाज़ ने कहा, “यह शख्स अल्लाह की तरफ़ से नहीं है, क्योंकि सबत के दिन काम करता है।”

दूसरों ने एतराज किया, “गुनाहगार इस किस्म के इलाही निशान किस तरह दिखा सकता है?” यों उनमें फूट पड़ गई।

17 फिर वह दुबारा उस आदमी से मुखातिब हुए जो पहले अंधा था, “तू खुद इसके बारे में क्या कहता है? उसने तो तेरी ही आँखों को बहाल किया है।”

उसने जवाब दिया, “वह नबी है।”

18 यहूदियों को यकीन नहीं आ रहा था कि वह वाकई अंधा था और फिर बहाल हो गया है। इसलिए उन्होंने उसके वालिदैन् को बुलाया।

19 उन्होंने उनसे पूछा, “क्या यह तुम्हारा बेटा है, वही जिसके बारे में तुम कहते हो कि वह अंधा पैदा हुआ था? अब यह किस तरह देख सकता है?”

20 उसके वालिदैन् ने जवाब दिया, “हम जानते हैं कि यह हमारा बेटा है और कि यह पैदा होते वक़्त अंधा था। 21 लेकिन हमें मालूम नहीं कि अब यह किस तरह देख सकता है या कि किसने इसकी आँखों को बहाल किया है। इससे खुद पता करें, यह बालिग है। यह खुद अपने बारे में बता सकता है।” 22 उसके वालिदैन् ने यह इसलिए कहा कि वह यहूदियों से डरते थे। क्योंकि वह फ़ैसला कर चुके थे कि जो भी ईसा को मसीह करार दे उसे यहूदी जमात से निकाल दिया जाए। 23 यही वजह थी कि उसके वालिदैन् ने कहा था, “यह बालिग है, इससे खुद पूछ लें।”

24 एक बार फिर उन्होंने शफ़ायाब अंधे को बुलाया, “अल्लाह को जलाल दे, हम तो जानते हैं कि यह आदमी गुनाहगार है।”

25 आदमी ने जवाब दिया, “मुझे क्या पता है कि वह गुनाहगार है या नहीं, लेकिन एक बात मैं जानता हूँ, पहले मैं अंधा था, और अब मैं देख सकता हूँ।”

26 फिर उन्होंने उससे सवाल किया, “उसने तेरे साथ क्या किया? उसने किस तरह तेरी आँखों को बहाल कर दिया?”

27 उसने जवाब दिया, “मैं पहले भी आपको बता चुका हूँ और आपने सुना नहीं। क्या आप भी उसके शागिर्द बनना चाहते हैं?”

28 इस पर उन्होंने उसे बुरा-भला कहा, “तू ही उसका शागिर्द है, हम तो मूसा के शागिर्द हैं। 29 हम तो जानते हैं कि अल्लाह ने मूसा से बात की है, लेकिन इसके बारे में हम यह भी नहीं जानते कि वह कहाँ से आया है।”

30 आदमी ने जवाब दिया, “अजीब बात है, उसने मेरी आँखों को शफा दी है और फिर भी आप नहीं जानते कि वह कहाँ से है। 31 हम जानते हैं कि अल्लाह गुनाहगारों की नहीं सुनता। वह तो उस की सुनता है जो उसका खौफ मानता और उस की मरज़ी के मुताबिक चलता है। 32 इब्तिदा ही से यह बात सुनने में नहीं आई कि किसी ने पैदाइशी अंधे की आँखों को बहाल कर दिया हो। 33 अगर यह आदमी अल्लाह की तरफ से न होता तो कुछ न कर सकता।”

34 जवाब में उन्होंने उसे बताया, “तू जो गुनाहआलूदा हालत में पैदा हुआ है क्या तू हमारा उस्ताद बनना चाहता है?” यह कहकर उन्होंने उसे जमात में से निकाल दिया।

रुहानी अंधापन

35 जब ईसा को पता चला कि उसे निकाल दिया गया है तो वह उसको मिला और पूछा, “क्या तू इब्ने-आदम पर ईमान रखता है?”

36 उसने कहा, “खुदावंद, वह कौन है? मुझे बताएँ ताकि मैं उस पर ईमान लाऊँ।”

37 ईसा ने जवाब दिया, “तूने उसे देख लिया है बल्कि वह तुझसे बात कर रहा है।”

38 उसने कहा, “खुदावंद, मैं ईमान रखता हूँ” और उसे सिजदा किया।

39 ईसा ने कहा, “मैं अदालत करने के लिए इस दुनिया में आया हूँ, इसलिए कि अंधे देखें और देखनेवाले अंधे हो जाएँ।”

40 कुछ फरीसी जो साथ खड़े थे यह कुछ सुनकर पूछने लगे, “अच्छा, हम भी अंधे हैं?”

41 ईसा ने उनसे कहा, “अगर तुम अंधे होते तो तुम कुसूरवार न ठहरते। लेकिन अब चूँकि तुम दावा करते हो कि हम देख सकते हैं इसलिए तुम्हारा गुनाह कायम रहता है।

10

चरवाहे की तमसील

1 मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो दरवाज़े से भेड़ों के बाड़े में दाखिल नहीं होता बल्कि फलौंगकर अंदर घुस आता है वह चोर और डाकू है। 2 लेकिन जो दरवाज़े से दाखिल होता है वह भेड़ों का चरवाहा है। 3 चौकीदार उसके लिए दरवाज़ा खोल देता है और भेड़ें उस की आवाज़ सुनती हैं। वह अपनी हर एक भेड़ का नाम लेकर उन्हें बुलाता और बाहर ले जाता है। 4 अपने पूरे गल्ले को बाहर निकालने के बाद वह उनके आगे आगे चलने लगता है और भेड़ें उसके पीछे पीछे चल पड़ती हैं, क्योंकि वह उस की आवाज़ पहचानती हैं। 5 लेकिन वह किसी अजनबी के पीछे नहीं चलेंगी बल्कि उससे भाग जाएँगी, क्योंकि वह उस की आवाज़ नहीं पहचानती।”

6 ईसा ने उन्हें यह तमसील पेश की, लेकिन वह न समझे कि वह उन्हें क्या बताना चाहता है।

अच्छा चरवाहा

7 इसलिए ईसा दुबारा इस पर बात करने लगा, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि भेड़ों के लिए दरवाज़ा मैं हूँ। 8 जितने भी मुझसे पहले आए वह चोर और डाकू हैं। लेकिन भेड़ों ने उनकी न सुनी। 9 मैं ही दरवाज़ा हूँ। जो भी मेरे ज़रीए अंदर आए उसे नजात मिलेगी। वह आता जाता और हरी चरागाहें पाता रहेगा। 10 चोर तो सिर्फ चोरी करने, जबह करने और तबाह करने आता है। लेकिन मैं इसलिए आया हूँ कि वह ज़िंदगी पाएँ, बल्कि कसरत की ज़िंदगी पाएँ।

11 अच्छा चरवाहा मैं हूँ। अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों के लिए अपनी जान देता है। 12 मज़दूर चरवाहे का किरदार अदा नहीं करता, क्योंकि भेड़ें उस की अपनी नहीं होतीं। इसलिए ज्योंही कोई भेड़िया आता है तो मज़दूर उसे देखते ही भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है। नतीजे में भेड़िया कुछ भेड़ें पकड़ लेता और बाकियों को सुंतशिर कर देता है। 13 वजह यह है कि वह मज़दूर ही है और भेड़ों की फिकर नहीं करता। 14 अच्छा चरवाहा मैं हूँ। मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ और वह मुझे जानती हैं, 15 बिल्कुल उसी तरह जिस तरह बाप मुझे जानता है और मैं बाप को जानता हूँ। और मैं भेड़ों के लिए अपनी जान देता हूँ। 16 मेरी और भी भेड़ें हैं जो इस बाड़े में नहीं हैं। लाज़िम है कि उन्हें भी ले आऊँ। वह भी मेरी आवाज़ सुनेंगी। फिर एक ही गल्ला और एक ही गल्लाबान होगा।

17 मेरा बाप मुझे इसलिए प्यार करता है कि मैं अपनी जान देता हूँ ताकि उसे फिर ले लूँ। 18 कोई मेरी जान मुझसे छीन नहीं सकता बल्कि मैं उसे अपनी मरज़ी से दे देता हूँ। मुझे उसे देने का इख्तियार है और उसे वापस लेने का भी। यह हुक्म मुझे अपने बाप की तरफ से मिला है।”

19 इन बातों पर यहूदियों में दुबारा फूट पड़ गई। 20 बहुतों ने कहा, “यह बदरूह की गिरिफ्त में है, यह दीवाना है। इसकी क्यों सुनें!”

21 लेकिन औरों ने कहा, “यह ऐसी बातें नहीं हैं जो बदरूह-गिरिफ्त शख्स कर सके। क्या बदरूहें अंधों की आँखें बहाल कर सकती हैं?”

ईसा को रड़ किया जाता है

22 सर्दियों का मौसम था और ईसा बैतुल-मुक़द्दस की मखसूसियत की ईद बनाम हनूका के दौरान यरूशलम में था। 23 वह बैतुल-मुक़द्दस के उस बरामदे में फिर रहा था जिसका नाम सुलेमान का बरामदा था। 24 यहूदी उसे घेरकर कहने लगे, “आप हमें कब तक उलझन में रखेंगे? अगर आप मसीह हैं तो हमें साफ़ साफ़ बता दें।”

25 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको बता चुका हूँ, लेकिन तुमको यक़ीन नहीं आया। जो काम मैं अपने बाप के नाम से करता हूँ वह मेरे गवाह हैं। 26 लेकिन तुम ईमान नहीं रखते क्योंकि तुम मेरी भेड़ें नहीं हो। 27 मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं। मैं उन्हें जानता हूँ और वह मेरे पीछे

चलती हैं। 28 मैं उन्हें अबदी ज़िंदगी देता हूँ, इसलिए वह कभी हलाक नहीं होंगी। कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा, 29 क्योंकि मेरे बाप ने उन्हें मेरे सुपुर्द किया है और वही सबसे बड़ा है। कोई उन्हें बाप के हाथ से छीन नहीं सकता। 30 मैं और बाप एक हैं।”

31 यह सुनकर यहूदी दुबारा पत्थर उठाने लगे ताकि ईसा को संगसार करें। 32 उसने उनसे कहा, “मैंने तुम्हें बाप की तरफ से कई इलाही निशान दिखाए हैं। तुम मुझे इनमें से किस निशान की वजह से संगसार कर रहे हो?”

33 यहूदियों ने जवाब दिया, “हम तुमको किसी अच्छे काम की वजह से संगसार नहीं कर रहे बल्कि कुफ़र बकने की वजह से। तुम जो सिर्फ़ इनसान हो अल्लाह होने का दावा करते हो।”

34 ईसा ने कहा, “क्या यह तुम्हारी शरीअत में नहीं लिखा है कि अल्लाह ने फ़रमाया, ‘तुम खुदा हो’? 35 उन्हें ‘खुदा’ कहा गया जिन तक अल्लाह का यह पैग़ाम पहुँचाया गया। और हम जानते हैं कि कलामे-मुक़द्दस को मनसूख नहीं किया जा सकता। 36 तो फिर तुम कुफ़र बकने की बात क्यों करते हो जब मैं कहता हूँ कि मैं अल्लाह का फ़रज़ंद हूँ? आखिर बाप ने खुद मुझे मखसूस करके दुनिया में भेजा है। 37 अगर मैं अपने बाप के काम न करूँ तो मेरी बात न मानो। 38 लेकिन अगर उसके काम करूँ तो बेशक मेरी बात न मानो, लेकिन कम अज़ कम उन कामों की गवाही तो मानो। फिर तुम जान लोगे और समझ जाओगे कि बाप मुझमें है और मैं बाप में हूँ।”

39 एक बार फिर उन्होंने उसे गिरफ़्तार करने की कोशिश की, लेकिन वह उनके हाथ से निकल गया।

40 फिर ईसा दुबारा दरियाए-यरदन के पार उस जगह चला गया जहाँ यहया शुरू में बपतिस्मा दिया करता था। वहाँ वह कुछ देर ठहरा। 41 बहुत-से लोग उसके पास आते रहे। उन्होंने कहा, “यहया ने कभी कोई इलाही निशान न दिखाया, लेकिन जो कुछ उसने इसके बारे में बयान किया, वह बिल्कुल सहीह निकला।” 42 और वहाँ बहुत-से लोग ईसा पर ईमान लाए।

11

लाज़र की मौत

1 उन दिनों में एक आदमी बीमार पड़ गया जिसका नाम लाज़र था। वह अपनी बहनों मरियम और मर्था के साथ बैत-अनियाह में रहता था।

2 यह वही मरियम थी जिसने बाद में खुदावंद पर खुशबू उड़ेलकर उसके पाँव अपने बालों से खुशक किए थे। उसी का भाई लाज़र बीमार था।

3 चुनौचे बहनों ने ईसा को इत्तला दी, “खुदावंद, जिसे आप प्यार करते हैं वह बीमार है।”

4 जब ईसा को यह खबर मिली तो उसने कहा, “इस बीमारी का अंजाम मौत नहीं है, बल्कि यह अल्लाह के जलाल के वास्ते हुआ है, ताकि इससे अल्लाह के फ़रज़ंद को जलाल मिले।”

5 ईसा मर्था, मरियम और लाज़र से मुहब्बत रखता था। 6 तो भी वह लाज़र के बारे में इत्तला मिलने के बाद दो दिन और वही ठहरा। 7 फिर उसने अपने शागिर्दों से बात की, “आओ, हम दुबारा यहूदिया चले जाएँ।”

8 शागिर्दों ने एतराज़ किया, “उस्ताद, अभी अभी वहाँ के यहूदी आपको संगसार करने की कोशिश कर रहे थे, फिर भी आप वापस जाना चाहते हैं?”

9 ईसा ने जवाब दिया, “क्या दिन में रौशनी के बारह घंटे नहीं होते? जो शरख्स दिन के वक़्त चलता-फिरता है वह किसी भी चीज़ से नहीं टकराएगा, क्योंकि वह इस दुनिया की रौशनी के ज़रीए देख सकता है। 10 लेकिन जो रात के वक़्त चलता है वह चीज़ों से टकरा जाता है, क्योंकि उसके पास रौशनी नहीं है।” 11 फिर उसने कहा, “हमारा दोस्त लाज़र सो गया है। लेकिन मैं जाकर उसे जगा दूँगा।”

12 शागिर्दों ने कहा, “खुदावंद, अगर वह सो रहा है तो वह बच जाएगा।”

13 उनका खयाल था कि ईसा लाज़र की फ़ितरी नींद का ज़िक्र कर रहा है जबकि हकीकत में वह उस की मौत की तरफ़ इशारा कर रहा था। 14 इसलिए उसने उन्हें साफ़ बता दिया, “लाज़र वफ़ात पा गया है। 15 और तुम्हारी खातिर मैं खुश हूँ कि मैं उसके मरते वक़्त वहाँ नहीं था, क्योंकि अब तुम ईमान लाओगे। आओ, हम उसके पास जाएँ।”

16 तोमा ने जिसका लक़ब जुडवाँ था अपने साथी शागिर्दों से कहा, “चलो, हम भी वहाँ जाकर उसके साथ मर जाएँ।”

ईसा क्रियामत और ज़िंदगी है

17 वहाँ पहुँचकर ईसा को मालूम हुआ कि लाज़र को कब्र में रखे चार दिन हो गए हैं। 18 बैत-अनियाह का फ़ासला तीन किलोमीटर से कम था, 19 और बहुत-से यहूदी मर्था और मरियम को उनके भाई के बारे में तसल्ली देने के लिए आए हुए थे।

20 यह सुनकर कि ईसा आ रहा है मर्था उसे मिलने गई। लेकिन मरियम घर में बैठी रही। 21 मर्था ने कहा, “खुदावंद, अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता। 22 लेकिन मैं जानती हूँ कि अब भी अल्लाह आपको जो भी माँगेंगे देगा।”

23 ईसा ने उसे बताया, “तेरा भाई जी उठेगा।”

24 मर्था ने जवाब दिया, “जी, मुझे मालूम है कि वह क्रियामत के दिन जी उठेगा, जब सब जी उठेंगे।”

25 ईसा ने उसे बताया, “क्रियामत और ज़िंदगी तो मैं हूँ। जो मुझ पर ईमान रखे वह ज़िंदा रहेगा, चाहे वह मर भी जाए। 26 और जो ज़िंदा है और मुझ पर ईमान रखता है वह कभी नहीं मरेगा। मर्था, क्या तुझे इस बात का यक़ीन है?”

27 मर्था ने जवाब दिया, “जी खुदावंद, मैं ईमान रखती हूँ कि आप खुदा के फ़रज़ंद मसीह हैं, जिसे दुनिया में आना था।”

ईसा रोता है

28 यह कहकर मर्था वापस चली गई और चुपके से मरियम को बुलाया, “उस्ताद आ गए हैं, वह तुझे बुला रहे हैं।” 29 यह सुनते ही मरियम उठकर ईसा के पास गई। 30 वह अभी गाँव के बाहर उसी जगह ठहरा था जहाँ उस की मुलाकात मर्था से हुई थी। 31 जो यहूदी घर में मरियम के साथ बैठे उसे तसल्ली दे रहे थे, जब उन्होंने देखा कि वह जल्दी से उठकर निकल गई है तो वह उसके पीछे हो लिए। क्योंकि वह समझ रहे थे कि वह मातम करने के लिए अपने भाई की कब्र पर जा रही है।

32 मरियम ईसा के पास पहुँच गई। उसे देखते ही वह उसके पाँवों में गिर गई और कहने लगी, “खुदावंद, अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता।”

33 जब ईसा ने मरियम और उसके साथियों को रोते देखा तो उसे बड़ी रंजिश हुई। मुजतरिब हालत में 34 उसने पूछा, “तुमने उसे कहाँ रखा है?”

उन्होंने जवाब दिया, “आएँ खुदावंद, और देख लें।”

35 ईसा रो पड़ा। 36 यहूदियों ने कहा, “देखो, वह उसे कितना अजीज़ था।”

37 लेकिन उनमें से बाज़ ने कहा, “इस आदमी ने अंधे को शफा दी। क्या यह लाज़र को मरने से नहीं बचा सकता था?”

लाज़र को ज़िंदा कर दिया जाता है

38 फिर ईसा दुबारा निहायत रंजीदा होकर कब्र पर आया। कब्र एक गार थी जिसके मुँह पर पत्थर रखा गया था। 39 ईसा ने कहा, “पत्थर को हटा दो।”

लेकिन मरहम की बहन मर्था ने एतराज़ किया, “खुदावंद, बदबू आएगी, क्योंकि उसे यहाँ पड़े चार दिन हो गए हैं।”

40 ईसा ने उससे कहा, “क्या मैंने तुझे नहीं बताया कि अगर तू ईमान रखे तो अल्लाह का जलाल देखेगी?” 41 चुनौचे उन्होंने पत्थर को हटा दिया। फिर ईसा ने अपनी नज़र उठाकर कहा, “ऐ बाप, मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि तूने मेरी सुन ली है। 42 मैं तो जानता हूँ कि तू हमेशा मेरी सुनता है। लेकिन मैंने यह बात पास खड़े लोगों की खातिर की, ताकि वह ईमान लाएँ कि तूने मुझे भेजा है।” 43 फिर ईसा जोर से पुकार उठा, “लाज़र, निकल आ!” 44 और मरदा निकल आया। अभी तक उसके हाथ और पाँव पट्टियों से बँधे हुए थे जबकि उसका चेहरा कपड़े में लिपटा हुआ था। ईसा ने उनसे कहा, “इसके कफ़न को खोलकर इसे जाने दो।”

ईसा के खिलाफ़ मनसूबाबंदी

45 उन यहूदियों में से जो मरियम के पास आए थे बहुत-से ईसा पर ईमान लाए जब उन्होंने वह देखा जो उसने किया। 46 लेकिन बाज़ फ़रीसियों के पास गए और उन्हें बताया कि ईसा ने क्या किया है। 47 तब राहनुमा इमामों और फ़रीसियों ने यहूदी अदालते-आलिया का इजलास मुनअकिद किया। उन्होंने एक दूसरे से पूछा, “हम क्या कर रहे हैं? यह आदमी बहुत-से इलाही निशान दिखा रहा है। 48 अगर हम उसे खुला छोड़ें तो आखिरकार सब उस पर ईमान ले आएँगे। फिर रोमी आकर हमारे बैतुल-मुक़द्दस और हमारे मुल्क को तबाह कर देंगे।”

49 उनमें से एक कायफ़ा था जो उस साल इमामे-आज़म था। उसने कहा, “आप कुछ नहीं समझते 50 और इसका खयाल भी नहीं करते कि इससे पहले कि पूरी क़ौम हलाक हो जाए बेहतर यह है कि एक आदमी उम्मत के लिए मर जाए।” 51 उसने यह बात अपनी तरफ़ से नहीं की थी। उस साल के इमामे-आज़म की हैसियत से ही उसने यह पेशगोई की कि ईसा यहूदी क़ौम के लिए मरेगा। 52 और न सिर्फ़ इसके लिए बल्कि अल्लाह के बिखरे हुए फ़रजंदों को जमा करके एक करने के लिए भी।

53 उस दिन से उन्होंने ईसा को क़त्ल करने का इरादा कर लिया। 54 इसलिए उसने अब से अलानिया यहूदियों के दरमियान वक़्त न गुज़ारा, बल्कि उस जगह को छोड़कर रेगिस्तान के करीब एक इलाके में गया। वहाँ वह अपने शागिर्दों समेत एक गाँव बनाम इफ़राईम में रहने लगा।

55 फिर यहूदियों की ईदे-फ़सह करीब आ गई। देहात से बहुत-से लोग अपने आपको पाक करवाने के लिए ईद से पहले पहले यरूशलम पहुँचे। 56 वहाँ वह ईसा का पता करते और बैतुल-मुक़द्दस में खड़े आपस में बात करते रहे, “क्या खयाल है? क्या वह तहवार पर नहीं आएगा?”

57 लेकिन राहनुमा इमामों और फ़रीसियों ने हुक्म दिया था, “अगर किसी को मालूम हो जाए कि ईसा कहाँ है तो वह इत्ला दे ताकि हम उसे गिरफ़्तार कर लें।”

12

ईसा को बैत-अनियाह में मसह किया जाता है

1 फ़सह की ईद में अभी छः दिन बाक़ी थे कि ईसा बैत-अनियाह पहुँचा। यह वह जगह थी जहाँ उस लाज़र का घर था जिसे ईसा ने मुरदों में से ज़िंदा किया था। 2 वहाँ उसके लिए एक खास खाना बनाया गया। मर्था खानेवालों की खिदमत कर रही थी जबकि लाज़र ईसा और बाक़ी मेहमानों के साथ खाने में शरीक था। 3 फिर मरियम ने आधा लिटर खालिस जटामासी का निहायत क़ीमती इत्र लेकर ईसा के पाँवों पर उंडेल दिया और उन्हें अपने बालों से पोंछकर खुशक किया। खुशबू पूरे घर में फैल गई। 4 लेकिन ईसा के शागिर्द यहूदाह इस्करियोती ने एतराज़ किया (बाद में उसी ने ईसा को दुश्मन के हवाले कर दिया)। उसने कहा, 5 “इस इत्र की क़ीमत चाँदी के 300 सिक्के थी। इसे क्यों नहीं बेचा गया ताकि इसके पैसे ग़रीबों को दिए जाते?” 6 उसने यह बात इसलिए नहीं की कि उसे ग़रीबों की फ़िकर थी। असल में वह चोर था। वह शागिर्दों का खज़ानची था और जमाशुदा पैसों में से बददियानती करता रहता था।

7 लेकिन ईसा ने कहा, “उसे छोड़ दे! उसने मेरी तदफ़ीन की तैयारी के लिए यह किया है। 8 गरीब तो हमेशा तुम्हारे पास रहेंगे, लेकिन मैं हमेशा तुम्हारे पास नहीं रहूँगा।”

लाज़र के खिलाफ़ मनसूबाबंदी

9 इतने में यहूदियों की बड़ी तादाद को मालूम हुआ कि ईसा वहाँ है। वह न सिर्फ़ ईसा से मिलने के लिए आए बल्कि लाज़र से भी जिसे उसने मुरदों में से ज़िंदा किया था। 10 इसलिए राहनुमा इमामों ने लाज़र को भी क़त्ल करने का मनसूबा बनाया। 11 क्योंकि उस की वजह से बहुत-से यहूदी उनमें से चले गए और ईसा पर ईमान ले आए थे।

यरूशलम में ईसा का पुरजोश इस्तक्रबाल

12 अगले दिन ईद के लिए आए हुए लोगों को पता चला कि ईसा यरूशलम आ रहा है। एक बड़ा हुजूम 13 खज़ूर की डालियाँ पकड़े शहर से निकलकर उससे मिलने आया। चलते चलते वह चिल्लाकर नारे लगा रहे थे,

“होशाना! *

मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है!

इसराईल का बादशाह मुबारक है!”

14 ईसा को कहीं से एक जवान गधा मिल गया और वह उस पर बैठ गया, जिस तरह कलामे-मुक़द्दस में लिखा है,

15 “ऐ सिय्यून बेटी, मत डर!

देख, तेरा बादशाह गधे के बच्चे पर सवार आ रहा है।”

16 उस वक़्त उसके शागिर्दों को इस बात की समझ न आई। लेकिन बाद में जब ईसा अपने जलाल को पहुँचा तो उन्हें याद आया कि लोगों ने उसके साथ यह कुछ किया था और वह समझ गए कि कलामे-मुक़द्दस में इसका ज़िक्र भी है।

17 जो हुजूम उस वक़्त ईसा के साथ था जब उसने लाज़र को मुरदों में से ज़िंदा किया था, वह दूसरों को इसके बारे में बताता रहा था। 18 इसी वजह से इतने लोग ईसा से मिलने के लिए आए थे, उन्होंने उसके इस इलाही निशान के बारे में सुना था। 19 यह देखकर फ़रीसी आपस में कहने लगे, “आप देख रहे हैं कि बात नहीं बन रही। देखो, तमाम दुनिया उसके पीछे हो ली है।”

कुछ यूनानी ईसा को तलाश करते हैं

20 कुछ यूनानी भी उनमें थे जो फ़सह की ईद के मौके पर परस्तिश करने के लिए आए हुए थे। 21 अब वह फ़िलिप्पुस से मिलने आए जो गलील के बैत-सैदा से था। उन्होंने कहा, “जनाब, हम ईसा से मिलना चाहते हैं।”

22 फ़िलिप्पुस ने अंदरियास को यह बात बताई और फिर वह मिलकर ईसा के पास गए और उसे यह ख़बर पहुँचाई। 23 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “अब वक़्त आ गया है कि इब्ने-आदम को जलाल मिले। 24 मैं तुमको सच बताता हूँ कि जब तक गंदुम का दाना ज़मीन में गिरकर मर न जाए वह अकेला ही रहता है। लेकिन जब वह मर जाता है तो बहुत-सा फल लाता है। 25 जो अपनी जान को प्यार करता है वह उसे खो देगा, और जो इस दुनिया में अपनी जान से दुश्मनी रखता है वह उसे अबद तक महफूज़ रखेगा। 26 अगर कोई मेरी ख़िदमत करना चाहे तो वह मेरे पीछे हो ले, क्योंकि जहाँ मैं हूँ वहाँ मेरा ख़ादिम भी होगा। और जो मेरी ख़िदमत करे मेरा बाप उस की इज़्ज़त करेगा।

ईसा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

27 अब मेरा दिल मुज़तरिब है। मैं क्या कहूँ? क्या मैं कहूँ, ‘ऐ बाप, मुझे इस वक़्त से बचाए रख’? नहीं, मैं तो इसी लिए आया हूँ। 28 ऐ बाप, अपने नाम को जलाल दे।”

तब आसमान से एक आवाज़ सुनाई दी, “मैं उसे जलाल दे चुका हूँ और दुबारा भी जलाल दूँगा।”

29 हुजूम के जो लोग वहाँ खड़े थे उन्होंने यह सुनकर कहा, “बादल गरज रहे हैं।” औरों ने ख़याल पेश किया, “कोई फ़रिश्ता उससे हमकलाम हुआ है।”

30 ईसा ने उन्हें बताया, “यह आवाज़ मेरे वास्ते नहीं बल्कि तुम्हारे वास्ते थी। 31 अब दुनिया की अदालत करने का वक़्त आ गया है, अब दुनिया के हुक्मरान को निकाल दिया जाएगा। 32 और मैं ख़ुद ज़मीन से ऊँचे पर चढ़ाए जाने के बाद सबको अपने पास खींच लूँगा।” 33 इन अलफ़ाज़ से उसने इस तरफ़ इशारा किया कि वह किस तरह की मौत मरेगा।

34 हुजूम बोल उठा, “कलामे-मुक़द्दस से हमने सुना है कि मसीह अबद तक कायम रहेगा। तो फिर आपकी यह कैसी बात है कि इब्ने-आदम को ऊँचे पर चढ़ाया जाना है? आखिर इब्ने-आदम है कौन?”

35 ईसा ने जवाब दिया, “नूर थोड़ी देर और तुम्हारे पास रहेगा। जितनी देर वह मौजूद है इस नूर में चलते रहो ताकि तारीकी तुम पर छा न जाए। जो अंधेरे में चलता है उसे नहीं मालूम कि वह कहाँ जा रहा है। 36 नूर के तुम्हारे पास से चले जाने से पहले पहले उस पर ईमान लाओ ताकि तुम नूर के फ़रज़द बन जाओ।”

* 12:13 होशाना (इब्रानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इसमें हम्दो-सना का उनसुर भी पाया जाता है।

लोग ईमान नहीं रखते

यह कहने के बाद ईसा चला गया और गायब हो गया। ³⁷ अगरचे ईसा ने यह तमाम इलाही निशान उनके सामने ही दिखाए तो भी वह उस पर ईमान न लाए। ³⁸ यों यसायाह नबी की पेशगोई पूरी हुई,

“ऐ रब, कौन हमारे पैगाम पर ईमान लाया?

और रब की कुदरत किस पर जाहिर हुई?”

³⁹ चुनाँचे वह ईमान न ला सके, जिस तरह यसायाह नबी ने कहीं और फरमाया है,

⁴⁰ “अल्लाह ने उनकी आँखों को अंधा

और उनके दिल को बेहिस कर दिया है,

ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें,

अपने दिल से समझें,

मेरी तरफ रुजू करें

और मैं उन्हें शफा दूँ।”

⁴¹ यसायाह ने यह इसलिए फरमाया क्योंकि उसने ईसा का जलाल देखकर उसके बारे में बात की।

⁴² तो भी बहुत-से लोग ईसा पर ईमान रखते थे। उनमें कुछ राहनुमा भी शामिल थे। लेकिन वह इसका अलानिया इकरार नहीं करते थे, क्योंकि वह डरते थे कि फरीसी हमें यहूदी जमात से खारिज कर देंगे। ⁴³ असल में वह अल्लाह की इज्जत की निसबत इनसान की इज्जत को ज्यादा अज़ीज़ रखते थे।

ईसा का कलाम लोगों की अदालत करेगा

⁴⁴ फिर ईसा पुकार उठा, “जो मुझ पर ईमान रखता है वह न सिर्फ़ मुझ पर बल्कि उस पर ईमान रखता है जिसने मुझे भेजा है। ⁴⁵ और जो मुझे देखता है वह उसे देखता है जिसने मुझे भेजा है। ⁴⁶ मैं नूर की हैसियत से इस दुनिया में आया हूँ ताकि जो भी मुझ पर ईमान लाए वह तारीकी में न रहे। ⁴⁷ जो मेरी बातें सुनकर उन पर अमल नहीं करता मैं उस की अदालत नहीं करूँगा, क्योंकि मैं दुनिया की अदालत करने के लिए नहीं आया बल्कि उसे नजात देने के लिए। ⁴⁸ तो भी एक है जो उस की अदालत करता है। जो मुझे रद्द करके मेरी बातें कबूल नहीं करता मेरा पेश किया गया कलाम ही क्रियामत के दिन उस की अदालत करेगा। ⁴⁹ क्योंकि जो कुछ मैंने बयान किया है वह मेरी तरफ से नहीं है। मेरे भेजनेवाले बाप ही ने मुझे हुक्म दिया कि क्या कहना और क्या सुनाना है। ⁵⁰ और मैं जानता हूँ कि उसका हुक्म अबदी जिंदगी तक पहुँचाता है। चुनाँचे जो कुछ मैं सुनाता हूँ वही कुछ है जो बाप ने मुझे बताया है।”

13

ईसा अपने शागिर्दों के पाँव धोता है

¹ फसह की ईद अब शुरू होनेवाली थी। ईसा जानता था कि वह वक्त आ गया है कि मुझे इस दुनिया को छोड़कर बाप के पास जाना है। गो उसने हमेशा दुनिया में अपने लोगों से मुहब्बत रखी थी, लेकिन अब उसने आखिरी हद तक उन पर अपनी मुहब्बत का इज़हार किया।

² फिर शाम का खाना तैयार हुआ। उस वक्त इबलीस शमौन इस्करियोती के बेटे यहूदाह के दिल में ईसा को दुश्मन के हवाले करने का इरादा डाल चुका था। ³ ईसा जानता था कि बाप ने सब कुछ मेरे सुपुर्द कर दिया है और कि मैं अल्लाह में से निकल आया और अब उसके पास वापस जा रहा हूँ। ⁴ चुनाँचे उसने दस्तरखान से उठकर अपना लिबास उतार दिया और कमर पर तौलिया बाँध लिया। ⁵ फिर वह बासन में पानी डालकर शागिर्दों के पाँव धोने और बँधे हुए तौलिये से पोंछकर ख़ुश करने लगा। ⁶ जब पतरस की बारी आई तो उसने कहा, “खुदावंद, आप मेरे पाँव धोना चाहते हैं?”

⁷ ईसा ने जवाब दिया, “इस वक्त तू नहीं समझता कि मैं क्या कर रहा हूँ, लेकिन बाद में यह तेरी समझ में आ जाएगा।”

⁸ पतरस ने एतराज़ किया, “मैं कभी भी आपको मेरे पाँव धोने नहीं दूँगा!”

ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैं तुझे न धोऊँ तो मेरे साथ तेरा कोई हिस्सा नहीं होगा।”

⁹ यह सुनकर पतरस ने कहा, “तो फिर खुदावंद, न सिर्फ़ मेरे पाँवों बल्कि मेरे हाथों और सर को भी धोएँ!”

¹⁰ ईसा ने जवाब दिया, “जिस शाख्स ने नहा लिया है उसे सिर्फ़ अपने पाँवों को धोने की ज़रूरत होती है, क्योंकि वह पूरे तौर पर पाक-साफ़ है। तुम पाक-साफ़ हो, लेकिन सबके सब नहीं।” ¹¹ (ईसा को मालूम था कि कौन उसे दुश्मन के हवाले करेगा। इसलिए उसने कहा कि सबके सब पाक-साफ़ नहीं हैं।)

¹² उन सबके पाँव धोने के बाद ईसा दुबारा अपना लिबास पहनकर बैठ गया। उसने सवाल किया, “क्या तुम समझते हो कि मैंने तुम्हारे लिए क्या किया है? ¹³ तुम मुझे ‘उस्ताद’ और ‘खुदावंद’ कहकर मुखातिब करते हो और यह सहीह है, क्योंकि मैं यही कुछ हूँ। ¹⁴ मैं, तुम्हारे खुदावंद और उस्ताद ने तुम्हारे पाँव धोए। इसलिए अब तुम्हारा फ़र्ज़ भी है कि एक दूसरे के पाँव धोया करो। ¹⁵ मैंने तुमको एक नमूना दिया है

ताकि तुम भी वही करो जो मैंने तुम्हारे साथ किया है। 16 मैं तुमको सच बताता हूँ कि गुलाम अपने मालिक से बड़ा नहीं होता, न पैगंबर अपने भेजेनेवाले से। 17 अगर तुम यह जानते हो तो इस पर अमल भी करो, फिर ही तुम मुबारक होगे।

18 मैं तुम सबकी बात नहीं कर रहा। जिन्हें मैंने चुन लिया है उन्हें मैं जानता हूँ। लेकिन कलामे-मुकद्दस की उस बात का पूरा होना ज़रूर है, 'जो मेरी रोटी खाता है उसने मुझ पर लात उठाई है।' 19 मैं तुमको इससे पहले कि वह पेश आए यह अभी बता रहा हूँ, ताकि जब वह पेश आए तो तुम ईमान लाओ कि मैं वही हूँ। 20 मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो शख्स उसे कबूल करता है जिसे मैंने भेजा है वह मुझे कबूल करता है। और जो मुझे कबूल करता है वह उसे कबूल करता है जिसने मुझे भेजा है।"

ईसा को दुश्मन के हवाले किया जाता है

21 इन अलफ़ाज़ के बाद ईसा निहायत मुज़तरिब हुआ और कहा, "मैं तुमको सच बताता हूँ कि तुममें से एक मुझे दुश्मन के हवाले कर देगा।"

22 शागिर्द उलझन में एक दूसरे को देखकर सोचने लगे कि ईसा किसकी बात कर रहा है। 23 एक शागिर्द जिसे ईसा प्यार करता था उसके करीबतरीन बैठा था। 24 पतरस ने उसे इशारा किया कि वह उससे दरियाफ़्त करे कि वह किसकी बात कर रहा है।

25 उस शागिर्द ने ईसा की तरफ़ सर झुकाकर पूछा, "ख़ुदावंद, यह कौन है?"

26 ईसा ने जवाब दिया, "जिसे मैं रोटी का लुकमा शोर्ब में डुबोकर दूँ, वही है।" फिर लुकमे को डुबोकर उसने शमौन इस्करियोती के बेटे यहूदाह को दे दिया। 27 ज्योंही यहूदाह ने यह लुकमा ले लिया इबलीस उसमें समा गया। ईसा ने उसे बताया, "जो कुछ करना है वह जल्दी से कर ले।" 28 लेकिन मेज़ पर बैठे लोगों में से किसी को मालूम न हुआ कि ईसा ने यह क्यों कहा। 29 बाज़ का खयाल था कि चूँकि यहूदाह खज़ानची था इसलिए वह उसे बता रहा है कि ईद के लिए दरकार चीज़ें ख़रीद ले या ग़रीबों में कुछ तकसीम कर दे।

30 चुनौचे ईसा से यह लुकमा लेते ही यहूदाह बाहर निकल गया। रात का वक़्त था।

ईसा का नया हुक्म

31 यहूदाह के चले जाने के बाद ईसा ने कहा, "अब इब्ने-आदम ने जलाल पाया और अल्लाह ने उसमें जलाल पाया है। 32 हाँ, चूँकि अल्लाह को उसमें जलाल मिल गया है इसलिए अल्लाह अपने में फ़रज़ंद को जलाल देगा। और वह यह जलाल फ़ौरन देगा। 33 मेरे बच्चो, मैं थोड़ी देर और तुम्हारे पास ठहरूँगा। तुम मुझे तलाश करोगे, और जो कुछ मैं यहूदियों को बता चुका हूँ वह अब तुमको भी बताता हूँ, जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते। 34 मैं तुमको एक नया हुक्म देता हूँ, यह कि एक दूसरे से मुहब्बत रखो। जिस तरह मैंने तुमसे मुहब्बत रखी उसी तरह तुम भी एक दूसरे से मुहब्बत करो। 35 अगर तुम एक दूसरे से मुहब्बत रखोगे तो सब जान लेंगे कि तुम मेरे शागिर्द हो।"

पतरस के इनकार की पेशगोई

36 पतरस ने पूछा, "ख़ुदावंद, आप कहाँ जा रहे हैं?"

ईसा ने जवाब दिया, "जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तू मेरे पीछे नहीं आ सकता। लेकिन बाद में तू मेरे पीछे आ जाएगा।"

37 पतरस ने सवाल किया, "ख़ुदावंद, मैं आपके पीछे अभी क्यों नहीं जा सकता? मैं आपके लिए अपनी जान तक देने को तैयार हूँ।"

38 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, "तू मेरे लिए अपनी जान देना चाहता है? मैं तुझे सच बताता हूँ कि मुरग़ के बाँग़ देने से पहले पहले तू तीन मरतबा मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।

14

ईसा बाप के पास जाने की राह है

1 तुम्हारा दिल न घबराए। तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो, मुझ पर भी ईमान रखो। 2 मेरे बाप के घर में बेशुमार मकान हैं। अगर ऐसा न होता तो क्या मैं तुमको बताता कि मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने के लिए वहाँ जा रहा हूँ? 3 और अगर मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूँ तो वापस आकर तुमको अपने साथ ले जाऊँगा ताकि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम भी हो। 4 और जहाँ मैं जा रहा हूँ उस की राह तुम जानते हो।"

5 तोमा बोल उठा, "ख़ुदावंद, हमें मालूम नहीं कि आप कहाँ जा रहे हैं। तो फिर हम उस की राह किस तरह जानें?"

6 ईसा ने जवाब दिया, "राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ। कोई मेरे वसीले के बग़ैर बाप के पास नहीं आ सकता। 7 अगर तुमने मुझे जान लिया है तो इसका मतलब है कि तुम मेरे बाप को भी जान लोगे। और अब से ऐसा है भी। तुम उसे जानते हो और तुमने उसको देख लिया है।"

8 फिलिप्पुस ने कहा, "ऐ ख़ुदावंद, बाप को हमें दिखाएँ। बस यही हमारे लिए काफ़ी है।"

9 ईसा ने जवाब दिया, "फिलिप्पुस, मैं इतनी देर से तुम्हारे साथ हूँ, क्या इसके बावजूद तू मुझे नहीं जानता? जिसने मुझे देखा उसने बाप को देखा है। तो फिर तू क्योंकर कहता है, 'बाप को हमें दिखाएँ'? 10 क्या तू ईमान नहीं रखता कि मैं बाप में हूँ और बाप मुझमें है? जो बातें मैं तुमको बताता हूँ वह मेरी नहीं बल्कि मुझमें रहनेवाले बाप की तरफ़ से हैं। वही अपना काम कर रहा है। 11 मेरी बात का यकीन करो कि मैं बाप में हूँ और बाप मुझमें है। या कम अज़ कम उन कामों की बिना पर यकीन करो जो मैंने किए हैं। 12 मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो मुझ पर ईमान रखे वह वही कुछ करेगा जो मैं करता हूँ। न सिर्फ़ यह बल्कि वह इनसे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं बाप के पास जा रहा हूँ। 13 और जो कुछ तुम मेरे नाम में माँगो मैं दूँगा ताकि बाप को फ़रज़ंद में जलाल मिल जाए। 14 जो कुछ तुम मेरे नाम में मुझसे चाहो वह मैं करूँगा।

रुहुल-कुद्स देने का वादा

15 अगर तुम मुझे प्यार करते हो तो मेरे अहकाम के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारोगे। 16 और मैं बाप से गुज़ारिश करूँगा तो वह तुमको एक और मददगार देगा जो अबद तक तुम्हारे साथ रहेगा 17 यानी सच्चाई का रूह, जिसे दुनिया पा नहीं सकती, क्योंकि वह न तो उसे देखती न जानती है। लेकिन तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है और आइंदा तुम्हारे अंदर रहेगा।

18 मैं तुमको यतीम छोड़कर नहीं जाऊँगा बल्कि तुम्हारे पास वापस आऊँगा। 19 थोड़ी देर के बाद दुनिया मुझे नहीं देखेगी, लेकिन तुम मुझे देखते रहोगे। चूँकि मैं ज़िंदा हूँ इसलिए तुम भी ज़िंदा रहोगे। 20 जब वह दिन आएगा तो तुम जान लोगे कि मैं अपने बाप में हूँ, तुम मुझमें हो और मैं तुममें।

21 जिसके पास मेरे अहकाम हैं और जो उनके मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारता है, वही मुझे प्यार करता है। और जो मुझे प्यार करता है उसे मेरा बाप प्यार करेगा। मैं भी उसे प्यार करूँगा और अपने आपको उस पर ज़ाहिर करूँगा।”

22 यहदाह (यहदाह इस्करियोती नहीं) ने पूछा, “खुदावंद, क्या वजह है कि आप अपने आपको सिर्फ़ हम पर ज़ाहिर करेंगे और दुनिया पर नहीं?”

23 ईसा ने जवाब दिया, “अगर कोई मुझे प्यार करे तो वह मेरे कलाम के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारेगा। मेरा बाप ऐसे शख्स को प्यार करेगा और हम उसके पास आकर उसके साथ सुकूनत करेंगे। 24 जो मुझसे मुहब्बत नहीं करता वह मेरी बातों के मुताबिक ज़िंदगी नहीं गुज़ारता। और जो कलाम तुम मुझसे सुनते हो वह मेरा अपना कलाम नहीं है बल्कि बाप का है जिसने मुझे भेजा है।

25 यह सब कुछ मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए तुमको बताया है। 26 लेकिन बाद में रुहुल-कुद्स, जिसे बाप मेरे नाम से भेजेगा तुमको सब कुछ सिखाएगा। यह मददगार तुमको हर बात की याद दिलाएगा जो मैंने तुमको बताई है।

27 मैं तुम्हारे पास सलामती छोड़े जाता हूँ, अपनी ही सलामती तुमको दे देता हूँ। और मैं इसे यों नहीं देता जिस तरह दुनिया देती है। तुम्हारा दिल न घबराए और न डरे। 28 तुमने मुझसे सुन लिया है कि ‘मैं जा रहा हूँ और तुम्हारे पास वापस आऊँगा।’ अगर तुम मुझसे मुहब्बत रखते तो तुम इस बात पर खुश होते कि मैं बाप के पास जा रहा हूँ, क्योंकि बाप मुझसे बड़ा है। 29 मैंने तुमको पहले से बता दिया है, इससे पेशतर कि यह हो, ताकि जब पेश आए तो तुम ईमान लाओ। 30 अब से मैं तुमसे ज्यादा बातें नहीं करूँगा, क्योंकि इस दुनिया का हुक्मरान आ रहा है। उसे मुझ पर कोई काबू नहीं है, 31 लेकिन दुनिया यह जान ले कि मैं बाप को प्यार करता हूँ और वही कुछ करता हूँ जिसका हुक्म वह मुझे देता है।

अब उठो, हम यहाँ से चलें।

15

ईसा अंगूर की हक़ीकी बेल है

1 मैं अंगूर की हक़ीकी बेल हूँ और मेरा बाप माली है। 2 वह मेरी हर शाख को जो फल नहीं लाती काटकर फेंक देता है। लेकिन जो शाख फल लाती है उस की वह काँट-छाँट करता है ताकि ज़्यादा फल लाए। 3 उस कलाम के ज़रीए जो मैंने तुमको सुनाया है तुम तो पाक-साफ़ हो चुके हो। 4 मुझमें कायम रहो तो मैं भी तुममें कायम रहूँगा। जो शाख बेल से कट गई है वह फल नहीं ला सकती। बिल्कुल इसी तरह तुम भी अगर तुम मुझमें कायम नहीं रहते फल नहीं ला सकते।

5 मैं ही अंगूर की बेल हूँ, और तुम उस की शाखें हो। जो मुझमें कायम रहता है और मैं उसमें वह बहुत-सा फल लाता है, क्योंकि मुझसे अलग होकर तुम कुछ नहीं कर सकते। 6 जो मुझमें कायम नहीं रहता और न मैं उसमें उसे बेफ़ायदा शाख की तरह बाहर फेंक दिया जाता है। ऐसी शाखें सूख जाती हैं और लोग उनका ढेर लगाकर उन्हें आग में झोंक देते हैं जहाँ वह जल जाती हैं। 7 अगर तुम मुझमें कायम रहो और मैं तुममें तो जो जी चाहे माँगो, वह तुमको दिया जाएगा। 8 जब तुम बहुत-सा फल लाते और यों मेरे शागिर्द साबित होते हो तो इससे मेरे बाप को जलाल मिलता है। 9 जिस तरह बाप ने मुझसे मुहब्बत रखी है उसी तरह मैंने तुमसे भी मुहब्बत रखी है। अब मेरी मुहब्बत में कायम रहो। 10 जब तुम मेरे अहकाम के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारते हो तो तुम मेरी मुहब्बत में कायम रहते हो। मैं भी इसी तरह अपने बाप के अहकाम के मुताबिक चलता हूँ और यों उस की मुहब्बत में कायम रहता हूँ।

11 मैंने तुमको यह इसलिए बताया है ताकि मेरी खुशी तुममें हो बल्कि तुम्हारा दिल खुशी से भरकर छलक उठे। 12 मेरा हुक्म यह है कि एक दूसरे को वैसे प्यार करो जैसे मैंने तुमको प्यार किया है। 13 इससे बड़ी मुहब्बत है नहीं कि कोई अपने दोस्तों के लिए अपनी जान दे दे। 14 तुम मेरे दोस्त हो अगर तुम वह कुछ करो जो मैं तुमको बताता हूँ। 15 अब से मैं नहीं कहता कि तुम गुलाम हो, क्योंकि गुलाम नहीं जानता कि उसका मालिक क्या करता है। इसके बजाए मैंने कहा है कि तुम दोस्त हो, क्योंकि मैंने तुमको सब कुछ बताया है जो मैंने अपने बाप से सुना है। 16 तुमने मुझे नहीं चुना बल्कि मैंने तुमको चुन लिया है। मैंने तुमको मुर्करर किया कि जाकर फल लाओ, ऐसा फल जो कायम रहे। फिर बाप तुमको वह कुछ देगा जो तुम मेरे नाम में माँगोगे। 17 मेरा हुक्म यही है कि एक दूसरे से मुहब्बत रखो।

दुनिया की दुश्मनी

18 अगर दुनिया तुमसे दुश्मनी रखे तो यह बात जहन में रखो कि उसने तुमसे पहले मुझसे दुश्मनी रखी है। 19 अगर तुम दुनिया के होते तो दुनिया तुमको अपना समझकर प्यार करती। लेकिन तुम दुनिया के नहीं हो। मैंने तुमको दुनिया से अलग करके चुन लिया है। इसलिए दुनिया तुमसे दुश्मनी रखती है। 20 वह बात याद करो जो मैंने तुमको बताई कि गुलाम अपने मालिक से बड़ा नहीं होता। अगर उन्होंने मुझे सताया है तो तुम्हें भी सताएंगे। और अगर उन्होंने मेरे कलाम के मुताबिक जिंदगी गुजारी तो वह तुम्हारी बातों पर भी अमल करेंगे। 21 लेकिन तुम्हारे साथ जो कुछ भी करेंगे, मेरे नाम की वजह से करेंगे, क्योंकि वह उसे नहीं जानते जिसने मुझे भेजा है। 22 अगर मैं आया न होता और उनसे बात न की होती तो वह कुसूरवार न ठहरते। लेकिन अब उनके गुनाह का कोई भी उज्र बाकी नहीं रहा। 23 जो मुझसे दुश्मनी रखता है वह मेरे बाप से भी दुश्मनी रखता है। 24 अगर मैंने उनके दरमियान ऐसा काम न किया होता जो किसी और ने नहीं किया तो वह कुसूरवार न ठहरते। लेकिन अब उन्होंने सब कुछ देखा है और फिर भी मुझसे और मेरे बाप से दुश्मनी रखी है। 25 और ऐसा होना भी था ताकि कलामे-मुकद्दस की यह पेशगोई पूरी हो जाए कि 'उन्होंने बिलावजह मुझसे कीना रखा है।'

26 जब वह मददगार आया जिसे मैं बाप की तरफ से तुम्हारे पास भेजूंगा तो वह मेरे बारे में गवाही देगा। वह सच्चाई का रूह है जो बाप में से निकलता है। 27 तुमको भी मेरे बारे में गवाही देना है, क्योंकि तुम इब्तिदा से मेरे साथ रहे हो।

16

1 मैंने तुमको यह इसलिए बताया है ताकि तुम गुमराह न हो जाओ। 2 वह तुमको यहूदी जमातों से निकाल देंगे, बल्कि वह वक़्त भी आनेवाला है कि जो भी तुमको मार डालेगा वह समझेगा, 'मैंने अल्लाह की खिदमत की है।' 3 वह इस किस्म की हरकतें इसलिए करेंगे कि उन्होंने न बाप को जाना है, न मुझे। 4 मैंने तुमको यह बातें इसलिए बताई हैं कि जब उनका वक़्त आ जाए तो तुमको याद आए कि मैंने तुम्हें आगाह कर दिया था।

रूहल-कुद्स की खिदमत

मैंने अब तक तुमको यह नहीं बताया क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था। 5 लेकिन अब मैं उसके पास जा रहा हूँ जिसने मुझे भेजा है। तो भी तुममें से कोई मुझसे नहीं पूछता, 'आप कहाँ जा रहे हैं?' 6 इसके बजाए तुम्हारे दिल गमज़दा हैं कि मैंने तुमको ऐसी बातें बताई हैं। 7 लेकिन मैं तुमको सच बताता हूँ कि तुम्हारे लिए फ़ायदामंद है कि मैं जा रहा हूँ। अगर मैं न जाऊँ तो मददगार तुम्हारे पास नहीं आएगा। लेकिन अगर मैं जाऊँ तो मैं उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा। 8 और जब वह आया तो गुनाह, रास्तबाज़ी और अदालत के बारे में दुनिया की ग़लती को बेनिकाब करके यह ज़ाहिर करेगा : 9 गुनाह के बारे में यह कि लोग मुझ पर ईमान नहीं रखते, 10 रास्तबाज़ी के बारे में यह कि मैं बाप के पास जा रहा हूँ और तुम मुझे अब से नहीं देखोगे, 11 और अदालत के बारे में यह कि इस दुनिया के हुक्मरान की अदालत हो चुकी है।

12 मुझे तुमको मज़ीद बहुत कुछ बताना है, लेकिन इस वक़्त तुम उसे बरदाश्त नहीं कर सकते। 13 जब सच्चाई का रूह आया तो वह पूरी सच्चाई की तरफ़ तुम्हारी राहनुमाई करेगा। वह अपनी मरज़ी से बात नहीं करेगा बल्कि सिर्फ़ वही कुछ कहेगा जो वह खुद सुनेगा। वही तुमको मुस्तक़बिल के बारे में भी बताएगा। 14 और वह इसमें मुझे जलाल देगा कि वह तुमको वही कुछ सुनाएगा जो उसे मुझसे मिला होगा। 15 जो कुछ भी बाप का है वह मेरा है। इसलिए मैंने कहा, 'रूह तुमको वही कुछ सुनाएगा जो उसे मुझसे मिला होगा।'

अब दुख फिर सुख

16 थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे। फिर थोड़ी देर के बाद तुम मुझे दुबारा देख लोगे।"

17 उसके कुछ शार्गिद आपस में बात करने लगे, "ईसा के यह कहने से क्या मुराद है कि 'थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे, फिर थोड़ी देर के बाद मुझे दुबारा देख लोगे'? और इसका क्या मतलब है, 'मैं बाप के पास जा रहा हूँ'?" 18 और वह सोचते रहे, "यह किस किस्म की 'थोड़ी देर' है जिसका ज़िक्र वह कर रहे हैं? हम उनकी बात नहीं समझते।"

19 ईसा ने जान लिया कि वह मुझसे इसके बारे में सवाल करना चाहते हैं। इसलिए उसने कहा, "क्या तुम एक दूसरे से पूछ रहे हो कि मेरी इस बात का क्या मतलब है कि 'थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे, फिर थोड़ी देर के बाद मुझे दुबारा देख लोगे'? 20 मैं तुमको सच बताता हूँ कि तुम रो रोकर मातम करोगे जबकि दुनिया खुश होगी। तुम गम करोगे, लेकिन तुम्हारा गम खुशी में बदल जाएगा। 21 जब किसी औरत के बच्चा पैदा होनेवाला होता है तो उसे गम और तकलीफ़ होती है क्योंकि उसका वक़्त आ गया है। लेकिन ज्योंही बच्चा पैदा हो जाता है तो माँ खुशी के मारे कि एक इन्सान दुनिया में आ गया है अपनी तमाम मुसीबत भूल जाती है। 22 यही तुम्हारी हालत है। क्योंकि अब तुम गमज़दा हो, लेकिन मैं तुमसे दुबारा मिलूँगा। उस वक़्त तुमको खुशी होगी, ऐसी खुशी जो तुमसे कोई छीन न लेगा।

23 उस दिन तुम मुझसे कुछ नहीं पूछोगे। मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो कुछ तुम मेरे नाम में बाप से माँगोगे वह तुमको देगा। 24 अब तक तुमने मेरे नाम में कुछ नहीं माँगा। माँगो तो तुमको मिलेगा। फिर तुम्हारी खुशी पूरी हो जाएगी।

दुनिया पर फ़तह

25 मैंने तुमको यह तमसीलों में बताया है। लेकिन एक दिन आया जब मैं ऐसा नहीं करूँगा। उस वक़्त मैं तमसीलों में बात नहीं करूँगा बल्कि तुमको बाप के बारे में साफ़ साफ़ बता दूँगा। 26 उस दिन तुम मेरा नाम लेकर माँगोगे। मेरे कहने का मतलब यह नहीं कि मैं ही तुम्हारी

खातिर बाप से दरखास्त करूँगा। 27 क्योंकि बाप खुद तुमको प्यार करता है, इसलिए कि तुमने मुझे प्यार किया है और ईमान लाए हो कि मैं अल्लाह में से निकल आया हूँ। 28 मैं बाप में से निकलकर दुनिया में आया हूँ। और अब मैं दुनिया को छोड़कर बाप के पास वापस जाता हूँ।”

29 इस पर उसके शागिर्दों ने कहा, “अब आप तमसीलों में नहीं बल्कि साफ साफ बात कर रहे हैं। 30 अब हमें समझ आई है कि आप सब कुछ जानते हैं और कि इसकी ज़रूरत नहीं कि कोई आपकी पूछ-गछ करे। इसलिए हम ईमान रखते हैं कि आप अल्लाह में से निकलकर आए हैं।”

31 ईसा ने जवाब दिया, “अब तुम ईमान रखते हो? 32 देखो, वह वक़्त आ रहा है बल्कि आ चुका है जब तुम तितर-बितर हो जाओगे। मुझे अकेला छोड़कर हर एक अपने घर चला जाएगा। तो भी मैं अकेला नहीं हूँगा क्योंकि बाप मेरे साथ है। 33 मैंने तुमको इसलिए यह बात बताई ताकि तुम मुझमें सलामती पाओ। दुनिया में तुम मुसीबत में फँसे रहते हो। लेकिन हौसला रखो, मैं दुनिया पर गालिब आया हूँ।”

17

ईसा अपने शागिर्दों के लिए दुआ करता है

1 यह कहकर ईसा ने अपनी नज़र आसमान की तरफ उठाई और दुआ की, “ऐ बाप, वक़्त आ गया है। अपने फ़रज़ंद को जलाल दे ताकि फ़रज़ंद तुझे जलाल दे। 2 क्योंकि तूने उसे तमाम इनसानों पर इख़्तियार दिया है ताकि वह उन सबको अबदी ज़िंदगी दे जो तूने उसे दिए हैं। 3 और अबदी ज़िंदगी यह है कि वह तुझे जान लें जो वाहिद और सच्चा खुदा है और ईसा मसीह को भी जान लें जिसे तूने भेजा है। 4 मैंने तुझे ज़मीन पर जलाल दिया और उस काम की तकमील की जिसकी ज़िम्मादारी तूने मुझे दी थी। 5 और अब मुझे अपने हुज़ूर जलाल दे, ऐ बाप, वही जलाल जो मैं दुनिया की तखलीक से पेशतर तेरे हुज़ूर रखता था।

6 मैंने तेरा नाम उन लोगों पर ज़ाहिर किया जिन्हें तूने दुनिया से अलग करके मुझे दिया है। वह तेरे ही थे। तूने उन्हें मुझे दिया और उन्होंने तेरे कलाम के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारी है। 7 अब उन्होंने जान लिया है कि जो कुछ भी तूने मुझे दिया है वह तेरी तरफ से है। 8 क्योंकि जो बातें तूने मुझे दीं मैंने उन्हें दी हैं। नतीजे में उन्होंने यह बातें कबूल करके हक़ीक़ी तौर पर जान लिया कि मैं तुझमें से निकलकर आया हूँ। साथ साथ वह ईमान भी लाए कि तूने मुझे भेजा है।

9 मैं उनके लिए दुआ करता हूँ, दुनिया के लिए नहीं बल्कि उनके लिए जिन्हें तूने मुझे दिया है, क्योंकि वह तेरे ही हैं। 10 जो भी मेरा है वह तेरा है और जो तेरा है वह मेरा है। चुनाँचे मुझे उनमें जलाल मिला है। 11 अब से मैं दुनिया में नहीं हूँगा। लेकिन यह दुनिया में रह गए हैं जबकि मैं तेरे पास आ रहा हूँ। कुद्स बाप, अपने नाम में उन्हें महफूज़ रख, उस नाम में जो तूने मुझे दिया है, ताकि वह एक हों जैसे हम एक हैं। 12 जितनी देर मैं उनके साथ रहा मैंने उन्हें तेरे नाम में महफूज़ रखा, उसी नाम में जो तूने मुझे दिया था। मैंने यों उनकी निगहबानी की कि उनमें से एक भी हलाक नहीं हुआ सिवाए हलाकत के फ़रज़ंद के। यों कलाम की पेशगोई पूरी हुई। 13 अब तो मैं तेरे पास आ रहा हूँ। लेकिन मैं दुनिया में होते हुए यह बयान कर रहा हूँ ताकि उनके दिल मेरी खुशी से भरकर छलक उठें। 14 मैंने उन्हें तेरा कलाम दिया है और दुनिया ने उनसे दुश्मनी रखी, क्योंकि यह दुनिया के नहीं हैं, जिस तरह मैं भी दुनिया का नहीं हूँ। 15 मेरी दुआ यह नहीं है कि तू उन्हें दुनिया से उठा ले बल्कि यह कि उन्हें इबलीस से महफूज़ रखे। 16 वह दुनिया के नहीं हैं जिस तरह मैं भी दुनिया का नहीं हूँ। 17 उन्हें सच्चाई के वसीले से मखसूसो-मुकद्दस कर। तेरा कलाम ही सच्चाई है। 18 जिस तरह तूने मुझे दुनिया में भेजा है उसी तरह मैंने भी उन्हें दुनिया में भेजा है। 19 उनकी खातिर मैं अपने आपको मखसूस करता हूँ, ताकि उन्हें भी सच्चाई के वसीले से मखसूसो-मुकद्दस किया जाए।

20 मेरी दुआ न सिर्फ़ इन्हीं के लिए है, बल्कि उन सबके लिए भी जो इनका पैगाम सुनकर मुझ पर ईमान लाएँगे 21 ताकि सब एक हों। जिस तरह तू ऐ बाप, मुझमें है और मैं तुझमें हूँ उसी तरह वह भी हममें हों ताकि दुनिया यक़ीन करे कि तूने मुझे भेजा है। 22 मैंने उन्हें वह जलाल दिया है जो तूने मुझे दिया है ताकि वह एक हों जिस तरह हम एक हैं, 23 मैं उनमें और तू मुझमें। वह कामिल तौर पर एक हों ताकि दुनिया जान ले कि तूने मुझे भेजा और कि तूने उनसे मुहब्बत रखी है जिस तरह मुझसे रखी है।

24 ऐ बाप, मैं चाहता हूँ कि जो तूने मुझे दिए हैं वह भी मेरे साथ हों, वहाँ जहाँ मैं हूँ, कि वह मेरे जलाल को देखें, वह जलाल जो तूने इसलिए मुझे दिया है कि तूने मुझे दुनिया की तखलीक से पेशतर प्यार किया है। 25 ऐ रास्त बाप, दुनिया तुझे नहीं जानती, लेकिन मैं तुझे जानता हूँ। और यह शागिर्द जानते हैं कि तूने मुझे भेजा है। 26 मैंने तेरा नाम उन पर ज़ाहिर किया और इसे ज़ाहिर करता रहूँगा ताकि तेरी मुझसे मुहब्बत उनमें हो और मैं उनमें हूँ।”

18

ईसा की गिरफ्तारी

1 यह कहकर ईसा अपने शागिर्दों के साथ निकला और वादीए-क्रिदरोन को पार करके एक बाग में दाखिल हुआ। 2 यहदाह जो उसे दुश्मन के हवाले करनेवाला था वह भी इस जगह से वाकिफ़ था, क्योंकि ईसा वहाँ अपने शागिर्दों के साथ जाया करता था। 3 राहनुमा इमामों और

फरीसियों ने यहूदाह को रोमी फौजियों का दस्ता और बैतुल-मुकद्दस के कुछ पहरेदार दिए थे। अब यह मशालें, लालटेन और हथियार लिए बाग में पहुँचे। 4 ईसा को मालूम था कि उसे क्या पेश आएगा। चुनौचे उसने निकलकर उनसे पूछा, “तुम किस को ढूँड रहे हो?”

5 उन्होंने जवाब दिया, “ईसा नासरी को।”

ईसा ने उन्हें बताया, “मैं ही हूँ।”

यहूदाह जो उसे दुश्मन के हवाले करना चाहता था, वह भी उनके साथ खड़ा था। 6 जब ईसा ने एलान किया, “मैं ही हूँ,” तो सब पीछे हटकर ज़मीन पर गिर पड़े। 7 एक और बार ईसा ने उनसे सवाल किया, “तुम किस को ढूँड रहे हो?”

उन्होंने जवाब दिया, “ईसा नासरी को।”

8 उसने कहा, “मैं तुमको बता चुका हूँ कि मैं ही हूँ। अगर तुम मुझे ढूँड रहे हो तो इनको जाने दो।” 9 यों उस की यह बात पूरी हुई, “मैंने उनमें से जो तूने मुझे दिए हैं एक को भी नहीं खोया।”

10 शमौन पतरस के पास तलवार थी। अब उसने उसे मियान से निकालकर इमामे-आज़म के गुलाम का दहना कान उड़ा दिया (गुलाम का नाम मलखुस था)। 11 लेकिन ईसा ने पतरस से कहा, “तलवार को मियान में रख। क्या मैं वह प्याला न पियूँ जो बाप ने मुझे दिया है?”

ईसा हन्ना के सामने

12 फिर फौजी दस्ते, उनके अफसर और बैतुल-मुकद्दस के यहूदी पहरेदारों ने ईसा को गिरफ्तार करके बाँध लिया। 13 पहले वह उसे हन्ना के पास ले गए। हन्ना उस साल के इमामे-आज़म कायफ़ा का सुसर था। 14 कायफ़ा ही ने यहूदियों को यह मशवरा दिया था कि बेहतर यह है कि एक ही आदमी उम्मत के लिए मर जाए।

पतरस ईसा को जानने से इनकार करता है

15 शमौन पतरस किसी और शागिर्द के साथ ईसा के पीछे हो लिया था। यह दूसरा शागिर्द इमामे-आज़म का जाननेवाला था, इसलिए वह ईसा के साथ इमामे-आज़म के सहन में दाखिल हुआ। 16 पतरस बाहर दरवाज़े पर खड़ा रहा। फिर इमामे-आज़म का जाननेवाला शागिर्द दुबारा निकल आया। उसने गेट की निगरानी करनेवाली औरत से बात की तो उसे पतरस को अपने साथ अंदर ले जाने की इजाज़त मिली। 17 उस औरत ने पतरस से पूछा, “तुम भी इस आदमी के शागिर्द हो कि नहीं?”

उसने जवाब दिया, “नहीं, मैं नहीं हूँ।”

18 ठंड थी, इसलिए गुलामों और पहरेदारों ने लकड़ी के कोयलों से आग जलाई। अब वह उसके पास खड़े ताप रहे थे। पतरस भी उनके साथ खड़ा ताप रहा था।

इमामे-आज़म ईसा की पूछ-गछ करता है

19 इतने में इमामे-आज़म ईसा की पूछ-गछ करके उसके शागिर्दों और तालीम के बारे में तफ़्तीश करने लगा। 20 ईसा ने जवाब में कहा, “मैंने दुनिया में खुलकर बात की है। मैं हमेशा यहूदी इबादतखानों और बैतुल-मुकद्दस में तालीम देता रहा, वहाँ जहाँ तमाम यहूदी जमा हुआ करते हैं। पोशीदगी में तो मैंने कुछ नहीं कहा। 21 आप मुझसे क्यों पूछ रहे हैं? उनसे दरियाफ़्त करें जिन्होंने मेरी बातें सुनी हैं। उनको मालूम है कि मैंने क्या कुछ कहा है।”

22 इस पर साथ खड़े बैतुल-मुकद्दस के पहरेदारों में से एक ने ईसा के मुँह पर थप्पड़ मारकर कहा, “क्या यह इमामे-आज़म से बात करने का तरीका है जब वह तुमसे कुछ पूछे?”

23 ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैंने बुरी बात की है तो साबित कर। लेकिन अगर सच कहा, तो तूने मुझे क्यों मारा?”

24 फिर हन्ना ने ईसा को बँधी हुई हालत में इमामे-आज़म कायफ़ा के पास भेज दिया।

पतरस दुबारा ईसा को जानने से इनकार करता है

25 शमौन पतरस अब तक आग के पास खड़ा ताप रहा था। इतने में दूसरे उससे पूछने लगे, “तुम भी उसके शागिर्द हो कि नहीं?”

लेकिन पतरस ने इनकार किया, “नहीं, मैं नहीं हूँ।”

26 फिर इमामे-आज़म का एक गुलाम बोल उठा जो उस आदमी का रिश्तेदार था जिसका कान पतरस ने उड़ा दिया था, “क्या मैंने तुमको बाग में उसके साथ नहीं देखा था?”

27 पतरस ने एक बार फिर इनकार किया, और इनकार करते ही मुरा की बाँग सुनाई दी।

ईसा को पीलातुस के सामने पेश किया जाता है

28 फिर यहूदी ईसा को कायफ़ा से लेकर रोमी गवर्नर के महल बनाम प्रैटोरियम के पास पहुँच गए। अब सुबह हो चुकी थी और चूँकि यहूदी फ़सह की ईद के खाने में शरीक होना चाहते थे, इसलिए वह महल में दाखिल न हुए, वरना वह नापाक हो जाते। 29 चुनौचे पीलातुस निकलकर उनके पास आया और पूछा, “तुम इस आदमी पर क्या इलज़ाम लगा रहे हो?”

30 उन्होंने जवाब दिया, “अगर यह मुजरिम न होता तो हम इसे आपके हवाले न करते।”

31 पीलातुस ने कहा, “फिर इसे ले जाओ और अपनी शरई अदालतों में पेश करो।”

लेकिन यहूदियों ने एतराज किया, “हमें किसी को सज़ाए-मौत देने की इजाज़त नहीं।” ³² ईसा ने इस तरफ़ इशारा किया था कि वह किस तरह मरेगा और अब उस की यह बात पूरी हुई।

³³ तब पीलातुस फिर अपने महल में गया। वहाँ से उसने ईसा को बुलाया और उससे पूछा, “क्या तुम यहूदियों के बादशाह हो?”

³⁴ ईसा ने पूछा, “क्या आप अपनी तरफ़ से यह सवाल कर रहे हैं, या औरों ने आपको मेरे बारे में बताया है?”

³⁵ पीलातुस ने जवाब दिया, “क्या मैं यहूदी हूँ? तुम्हारी अपनी क्रौम और राहनुमा इमामों ही ने तुम्हें मेरे हवाले किया है। तुमसे क्या कुछ सरज़द हुआ है?”

³⁶ ईसा ने कहा, “मेरी बादशाही इस दुनिया की नहीं है। अगर वह इस दुनिया की होती तो मेरे खादिम सख़्त जिद्दो-जहद करते ताकि मुझे यहूदियों के हवाले न किया जाता। लेकिन ऐसा नहीं है। अब मेरी बादशाही यहाँ की नहीं है।”

³⁷ पीलातुस ने कहा, “तो फिर तुम वाकई बादशाह हो?”

ईसा ने जवाब दिया, “आप सहीह कहते हैं, मैं बादशाह हूँ। मैं इसी मक़सद के लिए पैदा होकर दुनिया में आया कि सच्चाई की गवाही दूँ। जो भी सच्चाई की तरफ़ से है वह मेरी सुनता है।”

³⁸ पीलातुस ने पूछा, “सच्चाई क्या है?”

ईसा को सज़ाए-मौत सुनाई जाती है

फिर वह दुबारा निकलकर यहूदियों के पास गया। उसने एलान किया, “मुझे उसे मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली। ³⁹ लेकिन तुम्हारी एक रस्म है जिसके मुताबिक़ मुझे ईद-फ़सह के मौक़े पर तुम्हारे लिए एक कैदी को रिहा करना है। क्या तुम चाहते हो कि मैं ‘यहूदियों के बादशाह’ को रिहा कर दूँ?”

⁴⁰ लेकिन जवाब में लोग चिल्लाने लगे, “नहीं, इसको नहीं बल्कि बर-अब्बा को।” (बर-अब्बा डाकू था।)

19

¹ फिर पीलातुस ने ईसा को कोड़े लगवाए। ² फ़ौजियों ने काँटेदार टहनियों का एक ताज बनाकर उसके सर पर रख दिया। उन्होंने उसे अरगवानी रंग का लिबास भी पहनाया। ³ फिर उसके सामने आकर वह कहते, “ऐ यहूदियों के बादशाह, आदाब!” और उसे थप्पड़ मारते थे।

⁴ एक बार फिर पीलातुस निकल आया और यहूदियों से बात करने लगा, “देखो, मैं इसे तुम्हारे पास बाहर ला रहा हूँ ताकि तुम जान लो कि मुझे इसे मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली।” ⁵ फिर ईसा काँटेदार ताज और अरगवानी रंग का लिबास पहने बाहर आया। पीलातुस ने उनसे कहा, “लो यह है वह आदमी।”

⁶ उसे देखते ही राहनुमा इमाम और उनके मुलाज़िम चीखने लगे, “इसे मसलूब करें, इसे मसलूब करें!”

पीलातुस ने उनसे कहा, “तुम ही इसे ले जाकर मसलूब करो। क्योंकि मुझे इसे मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली।”

⁷ यहूदियों ने इसरार किया, “हमारे पास शरीअत है और इस शरीअत के मुताबिक़ लाज़िम है कि वह मारा जाए। क्योंकि इसने अपने आपको अल्लाह का फ़रज़द करार दिया है।”

⁸ यह सुनकर पीलातुस मज़ीद डर गया। ⁹ दुबारा महल में जाकर ईसा से पूछा, “तुम कहाँ से आए हो?”

लेकिन ईसा खामोश रहा। ¹⁰ पीलातुस ने उससे कहा, “अच्छा, तुम मेरे साथ बात नहीं करते? क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मुझे तुम्हें रिहा करने और मसलूब करने का इख्तियार है?”

¹¹ ईसा ने जवाब दिया, “आपको मुझ पर इख्तियार न होता अगर वह आपको ऊपर से न दिया गया होता। इस वजह से उस शख्स से ज़्यादा संगीन गुनाह हुआ है जिसने मुझे दुश्मन के हवाले कर दिया है।”

¹² इसके बाद पीलातुस ने उसे आज़ाद करने की कोशिश की। लेकिन यहूदी चीख़ चीख़कर कहने लगे, “अगर आप इसे रिहा करें तो आप रोमी शहनशाह कैसर के दोस्त साबित नहीं होंगे। जो भी बादशाह होने का दावा करे वह शहनशाह की मुख़ालफ़त करता है।”

¹³ इस तरह की बातें सुनकर पीलातुस ईसा को बाहर ले आया। फिर वह जज की कुरसी पर बैठ गया। उस जगह का नाम “पच्चीकारी” था। (अरामी ज़बान में वह ग़बता कहलाती थी।) ¹⁴ अब दोपहर के तकरीबन बारह बज गए थे। उस दिन ईद के लिए तैयारियों की जाती थी, क्योंकि अगले दिन ईद का आगाज़ था। पीलातुस बोल उठा, “लो, तुम्हारा बादशाह!”

¹⁵ लेकिन वह चिल्लाते रहे, “ले जाएँ इसे, ले जाएँ! इसे मसलूब करें!”

पीलातुस ने सवाल किया, “क्या मैं तुम्हारे बादशाह को सलीब पर चढ़ाऊँ?”

राहनुमा इमामों ने जवाब दिया, “सिवाए शहनशाह के हमारा कोई बादशाह नहीं है।”

¹⁶ फिर पीलातुस ने ईसा को उनके हवाले कर दिया ताकि उसे मसलूब किया जाए।

ईसा को मसलूब किया जाता है

चुनौचे वह ईसा को लेकर चले गए। ¹⁷ वह अपनी सलीब उठाए शहर से निकला और उस जगह पहुँचा जिसका नाम खोपड़ी (अरामी ज़बान में गुलगुता) था। ¹⁸ वहाँ उन्होंने उसे सलीब पर चढ़ा दिया। साथ साथ उन्होंने उसके बाएँ और दाएँ हाथ दो और आदमियों को मसलूब

किया। 19 पीलातुस ने एक तख्ती बनवाकर उसे ईसा की सलीब पर लगवा दिया। तख्ती पर लिखा था, 'ईसा नासरी, यहूदियों का बादशाह।' 20 बहुत-से यहूदियों ने यह पढ़ लिया, क्योंकि मसलूबियत का मक़ाम शहर के करीब था और यह जुमला अरामी, लातीनी और यूनानी ज़बानों में लिखा था। 21 यह देखकर यहूदियों के राहनुमा इमामों ने एतराज़ किया, " 'यहूदियों का बादशाह' न लिखें बल्कि यह कि 'इस आदमी ने यहूदियों का बादशाह होने का दावा किया' ।"

22 पीलातुस ने जवाब दिया, "जो कुछ मैंने लिख दिया सो लिख दिया।"

23 ईसा को सलीब पर चढ़ाने के बाद फ़ौजियों ने उसके कपड़े लेकर चार हिस्सों में बाँट लिए, हर फ़ौजी के लिए एक हिस्सा। लेकिन चोगा बेजोड़ था। वह ऊपर से लेकर नीचे तक बुना हुआ एक ही टुकड़े का था। 24 इसलिए फ़ौजियों ने कहा, "आओ, इसे फाड़कर तकसीम न करें बल्कि इस पर कुरा डालें।" यों कलामे-मुक़द्दस की यह पेशगोई पूरी हुई, "उन्होंने आपस में मेरे कपड़े बाँट लिए और मेरे लिबास पर कुरा डाला।" फ़ौजियों ने यही कुछ किया।

25 कुछ ख्वातीन भी ईसा की सलीब के करीब खड़ी थीं : उस की माँ, उस की खाला, क्लोपास की बीवी मरियम और मरियम मगदलीनी।

26 जब ईसा ने अपनी माँ को उस शागिर्द के साथ खड़े देखा जो उसे प्यारा था तो उसने कहा, "ऐ ख़ातून, देखें आपका बेटा यह है।"

27 और उस शागिर्द से उसने कहा, "देख, तेरी माँ यह है।" उस वक़्त से उस शागिर्द ने ईसा की माँ को अपने घर रखा।

ईसा की मौत

28 इसके बाद जब ईसा ने जान लिया कि मेरा मिशन तकमील तक पहुँच चुका है तो उसने कहा, "मुझे प्यास लगी है।" (इससे भी कलामे-मुक़द्दस की एक पेशगोई पूरी हुई।)

29 करीब मै के सिरके से भरा बरतन पड़ा था। उन्होंने एक इस्पंज सिरके में डुबोकर उसे जूफ़े की शाख़ पर लगा दिया और उठाकर ईसा के मुँह तक पहुँचाया। 30 यह सिरका पीने के बाद ईसा बोल उठा, "काम मुक़म्मल हो गया है।" और सर झुकाकर उसने अपनी जान अल्लाह के सुपुर्द कर दी।

ईसा का पहलू छेदा जाता है

31 फ़सह की तैयारी का दिन था और अगले दिन ईद का आगाज़ और एक ख़ास सबत था। इसलिए यहूदी नहीं चाहते थे कि मसलूब हुई लाशें अगले दिन तक सलीबों पर लटकी रहें। चुनौचे उन्होंने पीलातुस से गुज़ारिश की कि वह उनकी टॉगें तुड़वाकर उन्हें सलीबों से उतारने दे। 32 तब फ़ौजियों ने आकर ईसा के साथ मसलूब किए जानेवाले आदमियों की टॉगें तोड़ दीं, पहले एक की फिर दूसरे की। 33 जब वह ईसा के पास आए तो उन्होंने देखा कि वह फ़ौत हो चुका है, इसलिए उन्होंने उस की टॉगें न तोड़ीं। 34 इसके बजाए एक ने नेज़े से ईसा का पहलू छेद दिया। ज़ख़म से फ़ौरन खून और पानी बह निकला। 35 (जिसने यह देखा है उसने गवाही दी है और उस की गवाही सच्ची है। वह जानता है कि वह हकीकत बयान कर रहा है और उस की गवाही का मक़सद यह है कि आप भी ईमान लाएँ।) 36 यह यों हुआ ताकि कलामे-मुक़द्दस की यह पेशगोई पूरी हो जाए, "उस की एक हड्डी भी तोड़ी नहीं जाएगी।" 37 कलामे-मुक़द्दस में यह भी लिखा है, "वह उस पर नज़र डालेंगे जिसे उन्होंने छेदा है।"

ईसा को दफ़नाया जाता है

38 बाद में अरिमतिyah के रहनेवाले यूसुफ़ ने पीलातुस से ईसा की लाश उतारने की इजाज़त माँगी। (यूसुफ़ ईसा का ख़ुफ़िया शागिर्द था, क्योंकि वह यहूदियों से डरता था।) इसकी इजाज़त मिलने पर वह आया और लाश को उतार लिया। 39 नीकुदेमुस भी साथ था, वह आदमी जो गुज़रे दिनों में रात के वक़्त ईसा से मिलने आया था। नीकुदेमुस अपने साथ मुर और ऊद की तकरीबन 34 किलोग्राम ख़ुशबू लेकर आया था। 40 यहूदी जनाज़े की स्मृता के मुताबिक़ उन्होंने लाश पर ख़ुशबू लगाकर उसे पट्टियों से लपेट दिया। 41 सलीबों के करीब एक बाग़ था और बाग़ में एक नई कब्र थी जो अब तक इस्तेमाल नहीं की गई थी। 42 उसके करीब होने के सबब से उन्होंने ईसा को उसमें रख दिया, क्योंकि फ़सह की तैयारी का दिन था और अगले दिन ईद का आगाज़ था।

20

ख़ाली कब्र

1 हफ़ते का दिन गुज़र गया तो इतवार को मरियम मगदलीनी सुबह-सवेरे कब्र के पास आई। अभी अंधेरा था। वहाँ पहुँचकर उसने देखा कि कब्र के मुँह पर का पत्थर एक तरफ़ हटाया गया है। 2 मरियम दौड़कर शमौन पतरस और ईसा को प्यारे शागिर्द के पास आई। उसने इतला दी, "वह ख़ुदावंद को कब्र से ले गए हैं, और हमें मालूम नहीं कि उन्होंने उसे कहाँ रख दिया है।"

3 तब पतरस दूसरे शागिर्द समेत कब्र की तरफ़ चल पड़ा। 4 दोनों दौड़ रहे थे, लेकिन दूसरा शागिर्द ज़्यादा तेज़रफ़तार था। वह पहले कब्र पर पहुँच गया। 5 उसने झुककर अंदर झाँका तो कफ़न की पट्टियाँ वहाँ पड़ी नज़र आईं। लेकिन वह अंदर न गया। 6 फिर शमौन पतरस उसके पीछे पहुँचकर कब्र में दाख़िल हुआ। उसने भी देखा कि कफ़न की पट्टियाँ वहाँ पड़ी हैं 7 और साथ वह कपड़ा भी जिसमें ईसा का सर लिपटा हुआ था। यह कपड़ा तह किया गया था और पट्टियों से अलग पड़ा था। 8 फिर दूसरा शागिर्द जो पहले पहुँच गया था, वह भी दाख़िल हुआ। जब

उसने यह देखा तो वह ईमान लाया। ⁹ (लेकिन अब भी वह कलामे-मुकद्दस की यह पेशगोई नहीं समझते थे कि उसे मुरदों में से जी उठना है।) ¹⁰ फिर दोनों शागिर्द घर वापस चले गए।

ईसा मरियम मगदलीनी पर जाहिर होता है

¹¹ लेकिन मरियम रो रोकर कब्र के सामने खड़ी रही। और रोते हुए उसने झुककर कब्र में झाँका ¹² तो क्या देखती है कि दो फरिश्ते सफ़ेद लिबास पहने हुए वहाँ बैठे हैं जहाँ पहले ईसा की लाश पड़ी थी, एक उसके सिरहाने और दूसरा वहाँ जहाँ पहले उसके पाँव थे। ¹³ उन्होंने मरियम से पूछा, “ऐ खातून, तू क्यों रो रही है?”

उसने कहा, “वह मेरे खुदावन्द को ले गए हैं, और मालूम नहीं कि उन्होंने उसे कहाँ रख दिया है।”

¹⁴ फिर उसने पीछे मुड़कर ईसा को वहाँ खड़े देखा, लेकिन उसने उसे न पहचाना। ¹⁵ ईसा ने पूछा, “ऐ खातून, तू क्यों रो रही है, किस को ढूँड रही है?”

यह सोचकर कि वह माली है उसने कहा, “जनाब, अगर आप उसे ले गए हैं तो मुझे बता दें कि उसे कहाँ रख दिया है ताकि उसे ले जाऊँ।”

¹⁶ ईसा ने उससे कहा, “मरियम!”

वह उस की तरफ मुड़ी और बोल उठी, “रब्बूनी!” (इसका मतलब अरामी ज़बान में उस्ताद है।)

¹⁷ ईसा ने कहा, “मेरे साथ चिमटी न रह, क्योंकि अभी मैं ऊपर, बाप के पास नहीं गया। लेकिन भाइयों के पास जा और उन्हें बता, ‘मैं अपने बाप और तुम्हारे बाप के पास वापस जा रहा हूँ, अपने खुदा और तुम्हारे खुदा के पास’।”

¹⁸ चुनौचे मरियम मगदलीनी शागिर्दों के पास गई और उन्हें इत्तला दी, “मैंने खुदावन्द को देखा है और उसने मुझसे यह बातें कही।”

ईसा अपने शागिर्दों पर जाहिर होता है

¹⁹ उस इतवार की शाम को शागिर्द जमा थे। उन्होंने दरवाज़ों पर ताले लगा दिए थे क्योंकि वह यहदियों से डरते थे। अचानक ईसा उनके दरमियान आ खड़ा हुआ और कहा, “तुम्हारी सलामती हो,” ²⁰ और उन्हें अपने हाथों और पहलू को दिखाया। खुदावन्द को देखकर वह निहायत खुश हुए। ²¹ ईसा ने दुबारा कहा, “तुम्हारी सलामती हो! जिस तरह बाप ने मुझे भेजा उसी तरह मैं तुमको भेज रहा हूँ।” ²² फिर उन पर फूँककर उसने फ़रमाया, “रूहुल-कुद्स को पा लो। ²³ अगर तुम किसी के गुनाहों को मुआफ़ करो तो वह मुआफ़ किए जाएंगे। और अगर तुम उन्हें मुआफ़ न करो तो वह मुआफ़ नहीं किए जाएंगे।”

तोमा शक करता है

²⁴ बारह शागिर्दों में से तोमा जिसका लक़ब जुड़वाँ था ईसा के आने पर मौजूद न था। ²⁵ चुनौचे दूसरे शागिर्दों ने उसे बताया, “हमने खुदावन्द को देखा है!” लेकिन तोमा ने कहा, “मुझे यकीन नहीं आता। पहले मुझे उसके हाथों में कीलों के निशान नज़र आएँ और मैं उनमें अपनी उँगली डालूँ, पहले मैं अपने हाथ को उसके पहलू के ज़ख़म में डालूँ। फिर ही मुझे यकीन आएगा।”

²⁶ एक हफ़ता गुज़र गया। शागिर्द दुबारा मकान में जमा थे। इस मरतबा तोमा भी साथ था। अगरचे दरवाज़ों पर ताले लगे थे फिर भी ईसा उनके दरमियान आकर खड़ा हुआ। उसने कहा, “तुम्हारी सलामती हो!” ²⁷ फिर वह तोमा से मुखातिब हुआ, “अपनी उँगली को मेरे हाथों और अपने हाथ को मेरे पहलू के ज़ख़म में डाल और बेएतकाद न हो बल्कि ईमान रख।”

²⁸ तोमा ने जवाब में उससे कहा, “ऐ मेरे खुदावन्द! ऐ मेरे खुदा!”

²⁹ फिर ईसा ने उसे बताया, “क्या तू इसलिए ईमान लाया है कि तूने मुझे देखा है? मुबारक है वह जो मुझे देखे बग़ैर मुझ पर ईमान लाते हैं।”

इस किताब का मक़सद

³⁰ ईसा ने अपने शागिर्दों की मौजूदगी में मज़ीद बहुत-से ऐसे इलाही निशान दिखाए जो इस किताब में दर्ज नहीं हैं। ³¹ लेकिन जितने दर्ज हैं उनका मक़सद यह है कि आप ईमान लाएँ कि ईसा ही मसीह यानी अल्लाह का फ़रज़न्द है और आपको इस ईमान के वसीले से उसके नाम से ज़िंदगी हासिल हो।

21

ईसा झील पर शागिर्दों पर जाहिर होता है

¹ इसके बाद ईसा एक बार फिर अपने शागिर्दों पर जाहिर हुआ जब वह तिबरियास यानी गलील की झील पर थे। यह यों हुआ। ² कुछ शागिर्द शमौन पतरस के साथ जमा थे, तोमा जो जुड़वाँ कहलाता था, नतनेल जो गलील के काना से था, जबदी के दो बेटे और मज़ीद दो शागिर्द।

³ शमौन पतरस ने कहा, “मैं मछली पकड़ने जा रहा हूँ।”

दूसरों ने कहा, “हम भी साथ जाएंगे।” चुनौचे वह निकलकर कश्ती पर सवार हुए। लेकिन उस पूरी रात एक भी मछली हाथ न आई।

⁴ सुबह-सवेरे ईसा झील के किनारे पर आ खड़ा हुआ। लेकिन शागिर्दों को मालूम नहीं था कि वह ईसा ही है। ⁵ उसने उनसे पूछा, “बच्चो, क्या तुम्हें खाने के लिए कुछ मिल गया?”

उन्होंने जवाब दिया, “नहीं।”

6 उसने कहा, “अपना जाल कश्ती के दाँए हाथ डालो, फिर तुमको कुछ मिलेगा।” उन्होंने ऐसा किया तो मछलियों की इतनी बड़ी तादाद थी कि वह जाल कश्ती तक न ला सके।

7 इस पर खुदावंद के प्यारे शागिर्द ने पतरस से कहा, “यह तो खुदावंद है।” यह सुनते ही कि खुदावंद है शमौन पतरस अपनी चादर ओढ़कर पानी में कूद पड़ा (उसने चादर को काम करने के लिए उतार लिया था।) 8 दूसरे शागिर्द कश्ती पर सवार उसके पीछे आए। वह किनारे से ज्यादा दूर नहीं थे, तकरीबन सौ मीटर के फासले पर थे। इसलिए वह मछलियों से भरे जाल को पानी में खींच खींचकर खुश्की तक लाए। 9 जब वह कश्ती से उतरे तो देखा कि लकड़ी के कोयलों की आग पर मछलियाँ भुनी जा रही हैं और साथ रोटी भी है। 10 ईसा ने उनसे कहा, “उन मछलियों में से कुछ ले आओ जो तुमने अभी पकड़ी हैं।”

11 शमौन पतरस कश्ती पर गया और जाल को खुश्की पर घसीट लाया। यह जाल 153 बड़ी मछलियों से भरा हुआ था, तो भी वह न फटा। 12 ईसा ने उनसे कहा, “आओ, नाश्ता कर लो।” किसी भी शागिर्द ने सवाल करने की ज़रूरत न की कि “आप कौन हैं?” क्योंकि वह तो जानते थे कि यह खुदावंद ही है। 13 फिर ईसा आया और रोटी लेकर उन्हें दी और इसी तरह मछली भी उन्हें खिलाई।

14 ईसा के जी उठने के बाद यह तीसरी बार थी कि वह अपने शागिर्दों पर जाहिर हुआ।

ईसा का पतरस से सवाल

15 नाश्ते के बाद ईसा शमौन पतरस से मुखातिब हुआ, “यूहन्ना के बेटे शमौन, क्या तू इनकी निसबत मुझसे ज्यादा मुहब्बत करता है?” उसने जवाब दिया, “जी खुदावंद, आप तो जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूँ।” ईसा बोला, “फिर मेरे लेलों को चरा।” 16 तब ईसा ने एक और मरतबा पूछा, “शमौन यूहन्ना के बेटे, क्या तू मुझसे मुहब्बत करता है?” उसने जवाब दिया, “जी खुदावंद, आप तो जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूँ।” ईसा बोला, “फिर मेरी भेड़ों की गल्लाबानी कर।” 17 तीसरी बार ईसा ने उससे पूछा, “शमौन यूहन्ना के बेटे, क्या तू मुझे प्यार करता है?” तीसरी दफा यह सवाल सुनने से पतरस को बड़ा दुख हुआ। उसने कहा, “खुदावंद, आपको सब कुछ मालूम है। आप तो जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूँ।”

ईसा ने उससे कहा, “मेरी भेड़ों को चरा।

18 मैं तुझे सच बताता हूँ कि जब तू जवान था तो तू खुद अपनी कमर बाँधकर जहाँ जी चाहता घुमता-फिरता था। लेकिन जब तू बूढ़ा होगा तो तू अपने हाथों को आगे बढ़ाएगा और कोई और तेरी कमर बाँधकर तुझे ले जाएगा जहाँ तेरा दिल नहीं करेगा।” 19 (ईसा की यह बात इस तरफ इशारा था कि पतरस किस किस्म की मौत से अल्लाह को जलाल देगा।) फिर उसने उसे बताया, “मेरे पीछे चल।”

ईसा और दूसरा शागिर्द

20 पतरस ने मुड़कर देखा कि जो शागिर्द ईसा को प्यारा था वह उनके पीछे चल रहा है। यह वही शागिर्द था जिसने शाम के खाने के दौरान ईसा की तरफ सर झुकाकर पूछा था, “खुदावंद, कौन आपको दुश्मन के हवाले करेगा?” 21 अब उसे देखकर पतरस ने सवाल किया, “खुदावंद, इसके साथ क्या होगा?”

22 ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैं चाहूँ कि यह मेरे वापस आने तक ज़िंदा रहे तो तुझे क्या? बस तू मेरे पीछे चलता रह।”

23 नतीजे में भाइयों में यह खयाल फैल गया कि यह शागिर्द नहीं मरेगा। लेकिन ईसा ने यह बात नहीं की थी। उसने सिर्फ यह कहा था, “अगर मैं चाहूँ कि यह मेरे वापस आने तक ज़िंदा रहे तो तुझे क्या?”

24 यह वह शागिर्द है जिसने इन बातों की गवाही देकर इन्हें कलमबंद कर दिया है। और हम जानते हैं कि उस की गवाही सच्ची है।

खुलासा

25 ईसा ने इसके अलावा भी बहुत कुछ किया। अगर उसका हर काम कलमबंद किया जाता तो मेरे खयाल में पूरी दुनिया में यह किताबें रखने की गुंजाइश न होती।

आमाल

¹ मुअज़्ज़ज़ थियुफिलस, पहली किताब में मैंने सब कुछ बयान किया जो ईसा ने शुरू से लेकर ² उस दिन तक किया और सिखाया, जब उसे आसमान पर उठाया गया। जाने से पहले उसने अपने चुने हुए रसूलों को रूहुल-कुद्स की मारिफत मज़ीद हिदायात दी। ³ अपने दुख उठाने और मौत सहने के बाद उसने अपने आपको ज़ाहिर करके उन्हें बहुत-सी दलीलों से कायल किया कि वह वाकई ज़िंदा है। वह चालीस दिन के दौरान उन पर ज़ाहिर होता और उन्हें अल्लाह की बादशाही के बारे में बताता रहा। ⁴ जब वह अभी उनके साथ था उसने उन्हें हुक्म दिया, “यस्शलम को न छोड़ना बल्कि इस इंतज़ार में यहीं ठहरो कि बाप का वादा पूरा हो जाए, वह वादा जिसके बारे में मैंने तुमको आगाह किया है। ⁵ क्योंकि यहया ने तो पानी से बपतिस्मा दिया, लेकिन तुमको थोड़े दिनों के बाद रूहुल-कुद्स से बपतिस्मा दिया जाएगा।”

ईसा को उठाया जाता है

⁶ जो वहाँ जमा थे उन्होंने उससे पूछा, “खुदावंद, क्या आप इसी वक़्त इसराईल के लिए उस की बादशाही दुबारा कायम करेंगे?”

⁷ ईसा ने जवाब दिया, “यह जानना तुम्हारा काम नहीं है बल्कि सिर्फ बाप का जो ऐसे औकात और तारीखें मुक़र्रर करने का इख्तियार रखता है। ⁸ लेकिन तुम्हें रूहुल-कुद्स की कुव्वत मिलेगी जो तुम पर नाज़िल होगा। फिर तुम यस्शलम, पूरे यहूदिया और सामरिया बल्कि दुनिया की इंतहा तक मेरे गवाह होगे।” ⁹ यह कहकर वह उनके देखते देखते उठा लिया गया। और एक बादल ने उसे उनकी नज़रों से ओझल कर दिया।

¹⁰ वह अभी आसमान की तरफ देख ही रहे थे कि अचानक दो आदमी उनके पास आ खड़े हुए। दोनों सफ़ेद लिबास पहने हुए थे। ¹¹ उन्होंने कहा, “गलील के मर्दों, आप क्यों खड़े आसमान की तरफ देख रहे हैं? यही ईसा जिसे आपके पास से आसमान पर उठाया गया है उसी तरह वापस आएगा जिस तरह आपने उसे ऊपर जाते हुए देखा है।”

यहूदाह का जा-नशीन

¹² फिर वह ज़ैतून के पहाड़ से यस्शलम शहर वापस चले गए। (यह पहाड़ शहर से तकरीबन एक किलोमीटर दूर है।) ¹³ वहाँ पहुँचकर वह उस बालाखाने में दाखिल हुए जिसमें वह ठहरे हुए थे, यानी पतरस, यूहन्ना, याकूब और अंदरियास, फिलिप्पुस और तोमा, बरतुलमाई और मत्ती, याकूब बिन हलफई, शमौन मुजाहिद और यहूदाह बिन याकूब। ¹⁴ यह सब एकदिल होकर दुआ में लगे रहे। कुछ औरतें, ईसा की माँ मरियम और उसके भाई भी साथ थे।

¹⁵ उन दिनों में पतरस भाइयों में खड़ा हुआ। उस वक़्त तकरीबन 120 लोग जमा थे। उसने कहा, ¹⁶ “भाइयो, लाज़िम था कि कलामे-मुकद्दस की वह पेशगोई पूरी हो जो रूहुल-कुद्स ने दाऊद की मारिफत यहूदाह के बारे में की। यहूदाह उनका राहनुमा बन गया जिन्होंने ईसा को गिरफ़्तार किया, ¹⁷ गो उसे हममें शुमार किया जाता था और वह इसी खिदमत में हमारे साथ शरीक था।”

¹⁸ (जो पैसे यहूदाह को उसके ग़लत काम के लिए मिल गए थे उसने उसने एक खेत खरीद लिया था। वहाँ वह सर के बल गिर गया, उसका पेट फट गया और उस की तमाम अंतड़ियाँ बाहर निकल पड़ी। ¹⁹ इसका चर्चा यस्शलम के तमाम बाशिंदों में फैल गया, इसलिए यह खेत उनकी मादरी ज़बान में हक़ल-दमा के नाम से मशहूर हुआ जिसका मतलब है खून का खेत।)

²⁰ पतरस ने अपनी बात जारी रखी, “यही बात ज़बूर की किताब में लिखी है, ‘उस की रिहाइशगाह सुनसान हो जाए, कोई उसमें आबाद न हो।’ यह भी लिखा है, ‘कोई और उस की ज़िम्मादारी उठाए।’ ²¹ चुनाँचे अब ज़रूरी है कि हम यहूदाह की जगह किसी और को चुन लें। यह शख्स उन मर्दों में से एक हो जो उस पूरे वक़्त के दौरान हमारे साथ सफ़र करते रहे जब खुदावंद ईसा हमारे साथ था, ²² यानी उसके यहया के हाथ से बपतिस्मा लेने से लेकर उस वक़्त तक जब उसे हमारे पास से उठाया गया। लाज़िम है कि उनमें से एक हमारे साथ ईसा के जी उठने का गवाह हो।”

²³ चुनाँचे उन्होंने दो आदमी पेश किए, यूसुफ जो बरसब्बा कहलाता था (उसका दूसरा नाम यूसतुस था) और मत्तियाह। ²⁴ फिर उन्होंने दुआ की, “ऐ खुदावंद, तू हर एक के दिल से वाकिफ़ है। हम पर ज़ाहिर कर कि तूने इन दोनों में से किस को चुना है ²⁵ ताकि वह उस खिदमत की ज़िम्मादारी उठाए जो यहूदाह छोड़कर वहाँ चला गया जहाँ उसे जाना ही था।” ²⁶ यह कहकर उन्होंने दोनों का नाम लेकर कुरा डाला तो मत्तियाह का नाम निकला। लिहाज़ा उसे भी ग्यारह रसूलों में शामिल कर लिया गया।

2

रूहुल-कुद्स की आमद

¹ फिर ईदे-पतिकुस्त का दिन आया। सब एक जगह जमा थे ² कि अचानक आसमान से ऐसी आवाज़ आई जैसे शदीद आँधी चल रही हो। पूरा मकान जिसमें वह बैठे थे इस आवाज़ से गूँज उठा। ³ और उन्हें शोले की लौएँ जैसी नज़र आई जो अलग अलग होकर उनमें से हर एक पर उतरकर ठहर गई। ⁴ सब रूहुल-कुद्स से भर गए और मुख्तलिफ़ ग़ैरमुल्की ज़बानों में बोलने लगे, हर एक उस ज़बान में जो बोलने की रूहुल-कुद्स ने उसे तौफ़ीक दी।

5 उस वक्त यरूशलम में ऐसे खुदातरस यहूदी ठहरे हुए थे जो आसमान तले की हर कौम में से थे। 6 जब यह आवाज़ सुनाई दी तो एक बड़ा हजूम जमा हुआ। सब घबरा गए क्योंकि हर एक ने ईमानदारों को अपनी मादरी ज़बान में बोलते सुना। 7 सख्त हैरतज़दा होकर वह कहने लगे, “क्या यह सब गलील के रहनेवाले नहीं हैं? 8 तो फिर यह किस तरह हो सकता है कि हममें से हर एक उन्हें अपनी मादरी ज़बान में बातें करते सुन रहा है 9 जबकि हमारे ममालिक यह हैं : पारथिया, मादिया, ऐलाम, मसोपुतामिया, यहूदिया, कप्पदुकिया, पुंतुस, आसिया, 10 फ़र्सिया, पंफ़ीलिया, मिसर और लिबिया का वह इलाका जो क़ुरेन के इर्दगिर्द है। रोम से भी लोग मौजूद हैं। 11 यहाँ यहूदी भी हैं और ग़ैरयहूदी नौमुरीद भी, क़ेते के लोग और अरब के बाशिंदे भी। और अब हम सबके सब इनको अपनी अपनी ज़बान में अल्लाह के अज़ीम कामों का ज़िक्र करते सुन रहे हैं।” 12 सब दंग रह गए। उलझन में पड़कर वह एक दूसरे से पूछने लगे, “इसका क्या मतलब है?”

13 लेकिन कुछ लोग उनका मज़ाक़ उड़ाकर कहने लगे, “यह बस नई मै पीकर नशे में धुत हो गए हैं।”

पतरस का पैगाम

14 फिर पतरस बाक़ी ग़्यारह रसूलों समेत खड़ा होकर ऊँची आवाज़ से उनसे मुख़ातिब हुआ, “सुनें, यहूदी भाइयो और यरूशलम के तमाम रहनेवालो! जान लें और ग़ौर से मेरी बात सुन लें! 15 आपका खयाल है कि यह लोग नशे में हैं। लेकिन ऐसा नहीं है। देखें, अभी तो सुबह के नौ बजे का वक्त है। 16 अब वह कुछ हो रहा है जिसकी पेशगोई योएल नबी ने की थी,

17 ‘अल्लाह फ़रमाता है कि आख़िरी दिनों में मैं अपने रूह को तमाम इनसानों पर उंडेल दूँगा।

तुम्हारे बेटे-बेटियाँ नबुव्वत करेंगे,
तुम्हारे नौजवान रोयाँ और तुम्हारे बुजुर्ग़ खाब देखेंगे।

18 उन दिनों में मैं अपने रूह को अपने ख़ादिमों और ख़ादिमाओं पर भी उंडेल दूँगा,
और वह नबुव्वत करेंगे।

19 मैं ऊपर आसमान पर मोज़िज़े दिखाऊँगा
और नीचे ज़मीन पर इलाही निशान ज़ाहिर करूँगा,
खून, आग और धुँ के बादल।

20 सूरज तारीक़ हो जाएगा,
चाँद का रंग खून-सा हो जाएगा,
और फिर रब का अज़ीम और जलाली दिन आएगा।

21 उस वक्त जो भी रब का नाम लेगा
नजात पाएगा।’

22 इसराईल के मर्दों, मेरी बात सुनें! अल्लाह ने आपके सामने ही ईसा नासरी की तसदीक़ की, क्योंकि उसने उसके वसीले से आपके दरमियान अज़बे, मोज़िज़े और इलाही निशान दिखाए। आप खुद इस बात से वाकिफ़ हैं। 23 लेकिन अल्लाह को पहले ही इल्म था कि क्या होना है, क्योंकि उसने खुद अपनी मरज़ी से मुक़र्रर किया था कि ईसा को दुश्मन के हवाले कर दिया जाए। चुनाँचे आपने बेदीन लोगों के ज़रीए उसे सलीब पर चढवाकर क़त्ल किया। 24 लेकिन अल्लाह ने उसे मौत की अज़ियतनाक गिरिफ़्त से आज़ाद करके ज़िंदा कर दिया, क्योंकि मुमकिन ही नहीं था कि मौत उसे अपने कब्ज़े में रखे। 25 चुनाँचे दाऊद ने उसके बारे में कहा,

‘रब हर वक्त मेरी आँखों के सामने रहा।
वह मेरे दहने हाथ रहता है
ताकि मैं न डगमगाऊँ।

26 इसलिए मेरा दिल शादमान है,
और मेरी ज़बान खुशी के नारे लगाती है।
हाँ, मेरा बदन पुरउम्मीद ज़िंदगी गुज़रेगा।

27 क्योंकि तू मेरी जान को पाताल में नहीं छोड़ेगा,
और न अपने मुक़द्दस को गलने-सड़ने की नौबत तक पहुँचने देगा।

28 तूने मुझे ज़िंदगी की राहों से आगाह कर दिया है,
और तू अपने हज़ूर मुझे खुशी से सरशार करेगा।’

29 मेरे भाइयो, अगर इज़ाज़त हो तो मैं आपको दिलेरी से अपने बुजुर्ग़ दाऊद के बारे में कुछ बताऊँ। वह तो फ़ौत होकर दफ़नाया गया और उस की कब्र आज तक हमारे दरमियान मौजूद है। 30 लेकिन वह नबी था और जानता था कि अल्लाह ने क़सम खाकर मुझसे वादा किया है कि वह मेरी औलाद में से एक को मेरे तख़्त पर बिठाएगा। 31 मज़क़ूरा आयात में दाऊद मुस्तक़बिल में देखकर मसीह के जी उठने का ज़िक्र कर रहा है, यानी कि न उसे पाताल में छोड़ा गया, न उसका बदन गलने-सड़ने की नौबत तक पहुँचा। 32 अल्लाह ने इसी ईसा को ज़िंदा कर दिया

है और हम सब इसके गवाह हैं। 33 अब उसे सरफराज करके खुदा के दहने हाथ बिठाया गया और बाप की तरफ से उसे मौऊदा रूहुल-कुदूस मिल गया है। इसी को उसने हम पर उंडेल दिया, जिस तरह आप देख और सुन रहे हैं। 34 दाऊद खुद तो आसमान पर नहीं चढ़ा, तो भी उसने फरमाया,

‘रब ने मेरे रब से कहा,

मेरे दहने हाथ बैठ

35 जब तक मैं तेरे दुश्मनों को

तेरे पाँवों की चौकी न बना दूँ।’

36 चुनौचे पूरा इसराईल यकीन जाने कि जिस ईसा को आपने मसलूब किया है उसे ही अल्लाह ने खुदावंद और मसीह बना दिया है।”

37 पतरस की यह बातें सुनकर लोगों के दिल छिद गए। उन्होंने पतरस और बाकी रसूलों से पूछा, “भाइयो, फिर हम क्या करें?”

38 पतरस ने जवाब दिया, “आपमें से हर एक तौबा करके ईसा के नाम पर बपतिस्मा ले ताकि आपके गुनाह मुआफ कर दिए जाएँ। फिर आपको रूहुल-कुदूस की नेमत मिल जाएगी। 39 क्योंकि यह देने का वादा आपसे और आपके बच्चों से किया गया है, बल्कि उनसे भी जो दूर के हैं, उन सबसे जिन्हें रब हमारा खुदा अपने पास बुलाएगा।”

40 पतरस ने मजीद बहुत-सी बातों से उन्हें नसीहत की और समझाया कि “इस टेढ़ी नसल से निकलकर नजात पाएँ।” 41 जिन्होंने पतरस की बात कबूल की उनका बपतिस्मा हुआ। यों उस दिन जमात में तकरीबन 3,000 अफराद का इजाफा हुआ। 42 यह ईमानदार रसूलों से तालीम पाने, रिफाकत रखने और रिफाकती खानों और दुआओं में शरीक होते रहे।

ईमानदारों की हैरतअंगेज ज़िंदगी

43 सब पर खौफ छा गया और रसूलों की तरफ से बहुत-से मोजिजे और इलाही निशान दिखाए गए। 44 जो भी ईमान लाते थे वह एक जगह जमा होते थे। उनकी हर चीज मुश्तरका होती थी। 45 अपनी मिलकियत और माल फरोख्त करके उन्होंने हर एक को उस की ज़रूरत के मुताबिक दिया। 46 रोज़ाना वह एकदिली से बैतुल-मुकद्दस में जमा होते रहे। साथ साथ वह मसीह की याद में अपने घरों में रोटी तोड़ते, बड़ी खुशी और सादगी से रिफाकती खाना खाते 47 और अल्लाह की तमजीद करते रहे। उस वक़्त वह तमाम लोगों के मंज़ूरे-नज़र थे। और खुदावंद रोज़ बरोज़ जमात में नजातयाफ़ता लोगों का इजाफा करता रहा।

3

लँगड़े आदमी की शफा

1 एक दोपहर पतरस और यूहन्ना दुआ करने के लिए बैतुल-मुकद्दस की तरफ चल पड़े। तीन बज गए थे। 2 उस वक़्त लोग एक पैदाइशी लँगड़े को उठाकर वहाँ ला रहे थे। रोज़ाना उसे सहन के उस दरवाज़े के पास लाया जाता था जो ‘खूबसूरत दरवाज़ा’ कहलाता था ताकि वह बैतुल-मुकद्दस के सहनों में दाखिल होनेवालों से भीक माँग सके। 3 पतरस और यूहन्ना बैतुल-मुकद्दस में दाखिल होनेवाले थे तो लँगड़ा उनसे भीक माँगने लगा। 4 पतरस और यूहन्ना गौर से उस की तरफ देखने लगे। फिर पतरस ने कहा, “हमारी तरफ देखें।” 5 इस तवक्को से कि उसे कुछ मिलेगा लँगड़ा उनकी तरफ मुतवज्जिह हुआ। 6 लेकिन पतरस ने कहा, “मेरे पास न तो चाँदी है, न सोना, लेकिन जो कुछ है वह आपको दे देता हूँ। नासरत के ईसा मसीह के नाम से उठें और चलें-फिरें!” 7 उसने उसका दहना हाथ पकड़कर उसे खड़ा किया। उसी वक़्त लँगड़े के पाँव और टखने मजबूत हो गए। 8 वह उछलकर खड़ा हुआ और चलने-फिरने लगा। फिर वह चलते, कूदते और अल्लाह की तमजीद करते हुए उनके साथ बैतुल-मुकद्दस में दाखिल हुआ। 9 और तमाम लोगों ने उसे चलते-फिरते और अल्लाह की तमजीद करते हुए देखा। 10 जब उन्होंने जान लिया कि यह वही आदमी है जो खूबसूरत नामी दरवाज़े पर बैठा भीक माँगता करता था तो वह उस की तबदीली देखकर दंग रह गए।

बैतुल-मुकद्दस में पतरस का पैगाम

11 वह सब दौड़कर सुलेमान के बरामदे में आए जहाँ भीक माँगनेवाला अब तक पतरस और यूहन्ना से लिपटा हुआ था। 12 यह देखकर पतरस उनसे मुखातिब हुआ, “इसराईल के हज़रात, आप यह देखकर क्यों हैरान हैं? आप क्यों घूर घूरकर हमारी तरफ देख रहे हैं गोया हमने अपनी ज़ाती ताकत या दीनदारी के बाइस यह किया है कि यह आदमी चल-फिर सके? 13 यह हमारे बापदादा के खुदा, इब्राहीम, इसहाक और याकूब के खुदा की तरफ से है जिसने अपने बंदे ईसा को जलाल दिया है। यह वही ईसा है जिसे आपने दुश्मन के हवाले करके पीलातुस के सामने रद्द किया, अगरचे वह उसे रिहा करने का फैसला कर चुका था। 14 आपने उस कुदूस और रास्तबाज़ को रद्द करके तक्राज़ा किया कि पीलातुस उसके एवज़ एक कातिल को रिहा करके आपको दे दे। 15 आपने ज़िंदगी के सरदार को क़त्ल किया, लेकिन अल्लाह ने उसे मुरदों में से ज़िंदा कर दिया। हम इस बात के गवाह हैं। 16 आप तो इस आदमी से वाकिफ़ हैं जिसे देख रहे हैं। अब वह ईसा के नाम पर ईमान लाने से बहाल हो गया है, क्योंकि जो ईमान ईसा के ज़रीए मिलता है उसी ने इस आदमी को आपके सामने पूरी सेहतमंदी अता की।

17 मेरे भाइयो, मैं जानता हूँ कि आप और आपके राहनुमाओं को सहीह इल्म नहीं था, इसलिए आपने ऐसा किया। 18 लेकिन अल्लाह ने वह कुछ पूरा किया जिसकी पेशगोई उसने तमाम नबियों की मारिफ़त की थी, यानी यह कि उसका मसीह दुख उठाएगा। 19 अब तौबा करें और अल्लाह की तरफ रूजू लाएँ ताकि आपके गुनाहों को मिटाया जाए। 20 फिर आपको रब के हुज़ूर से ताज़गी के दिन मुयस्सर आएँगे और वह

दुबारा ईसा यानी मसीह को भेज देगा जिसे आपके लिए मुकर्रर किया गया है। 21 लाज़िम है कि वह उस वक्त तक आसमान पर रहे जब तक अल्लाह सब कुछ बहाल न कर दे, जिस तरह वह इब्तिदा से अपने मुकद्दस नबियों की ज़बानी फ़रमाता आया है। 22 क्योंकि मूसा ने कहा, 'रब तुम्हारा खुदा तुम्हारे वास्ते तुम्हारे भाइयों में से मुझ जैसे नबी को बरपा करेगा। जो भी बात वह कहे उस की सुनना। 23 जो नहीं सुनेगा उसे मिटाकर कौम से निकाल दिया जाएगा।' 24 और समुएल से लेकर हर नबी ने इन दिनों की पेशगोई की है। 25 आप तो इन नबियों की औलाद और उस अहद के वारिस हैं जो अल्लाह ने आपके बापदादा से कायम किया था, क्योंकि उसने इब्राहीम से कहा था, 'तेरी औलाद से दुनिया की तमाम कौमों बरकत पाएँगी।' 26 जब अल्लाह ने अपने बंदे ईसा को बरपा किया तो पहले उसे आपके पास भेज दिया ताकि वह आपमें से हर एक को उस की बुरी राहों से फेरकर बरकत दे।"

4

पतरस और यूहन्ना यहूदी अदालत-आलिया के सामने

1 पतरस और यूहन्ना लोगों से बात कर ही रहे थे कि इमाम, बैतुल-मुकद्दस के पहरेदारों का कप्तान और सदूकी उनके पास पहुँचे। 2 वह नाराज़ थे कि रसूल ईसा के जी उठने की मुनादी करके लोगों को मुरदों में से जी उठने की तालीम दे रहे हैं। 3 उन्होंने उन्हें गिरफ़्तार करके अगले दिन तक जेल में डाल दिया, क्योंकि शाम हो चुकी थी। 4 लेकिन जिन्होंने उनका पैगाम सुन लिया था उनमें से बहुत-से लोग ईमान लाए। यों ईमानदारों में मर्दों की तादाद बढ़कर तकरीबन 5,000 तक पहुँच गई।

5 अगले दिन यरूशलम में यहूदी अदालत-आलिया के सरदारों, बुजुर्गों और शरीअत के उलमा का इजलास मुनअकिद हुआ। 6 इमामे-आज़म हन्ना और इसी तरह कायफ़ा, यूहन्ना, सिकंदर और इमामे-आज़म के ख़ानदान के दीगर मर्द भी शामिल थे। 7 उन्होंने दोनों को अपने दरमियान खड़ा करके पूछा, "तुमने यह काम किस कुव्वत और नाम से किया?"

8 पतरस ने रूहुल-कुद्स से मामूर होकर उनसे कहा, "कौम के राहनुमाओ और बुजुर्गों, 9 आज हमारी पूछ-गछ की जा रही है कि हमने माज़ूर आदमी पर रहम का इज़हार किसके वसीले से किया कि उसे शफ़ा मिल गई है। 10 तो फिर आप सब और पूरी कौम इसराईल जान ले कि यह नासरत के ईसा मसीह के नाम से हुआ है, जिसे आपने मसलूब किया और जिसे अल्लाह ने मुरदों में से ज़िंदा कर दिया। यह आदमी उसी के वसीले से सेहत पाकर यहाँ आपके सामने खड़ा है। 11 ईसा वह पत्थर है जिसके बारे में कलामे-मुकद्दस में लिखा है, 'जिस पत्थर को मकान बनानेवालों ने रद्द किया वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया।' और आप ही ने उसे रद्द कर दिया है। 12 किसी दूसरे के वसीले से नजात हासिल नहीं होती, क्योंकि आसमान के तले हम इनसानों को कोई और नाम नहीं बख़्शा गया जिसके वसीले से हम नजात पा सकें।"

13 पतरस और यूहन्ना की बातें सुनकर लोग हैरान हुए क्योंकि वह दिलेरी से बात कर रहे थे अगरचे वह न तो आलिम थे, न उन्होंने शरीअत की ख़ास तालीम पाई थी। साथ साथ सुननेवालों ने यह भी जान लिया कि दोनों ईसा के साथी हैं। 14 लेकिन चूँकि वह अपनी आँखों से उस आदमी को देख रहे थे जो शफ़ा पाकर उनके साथ खड़ा था इसलिए वह इसके खिलाफ़ कोई बात न कर सके। 15 चुनौचे उन्होंने उन दोनों को इजलास में से बाहर जाने को कहा और आपस में सलाह-मशवरा करने लगे, 16 "हम इन लोगों के साथ क्या सुलूक करें? बात वाज़िह है कि उनके ज़रीए एक इलाही निशान दिखाया गया है। इसका यरूशलम के तमाम बाशिंदों को इल्म हुआ है। हम इसका इनकार नहीं कर सकते। 17 लेकिन लाज़िम है कि उन्हें धमकी देकर हुक्म दें कि वह किसी भी शख्स से यह नाम लेकर बात न करें, वरना यह मामला कौम में मज़ीद फैल जाएगा।"

18 चुनौचे उन्होंने दोनों को बुलाकर हुक्म दिया कि वह आइंदा ईसा के नाम से न कभी बोलें और न तालीम दें।

19 लेकिन पतरस और यूहन्ना ने जवाब में कहा, "आप खुद फ़ैसला कर लें, क्या यह अल्लाह के नज़दीक ठीक है कि हम उस की निसबत आपकी बात मानें? 20 मुमकिन ही नहीं कि जो कुछ हमने देख और सुन लिया है उसे दूसरों को सुनाने से बाज़ रहें।"

21 तब इजलास के मेंबरान ने दोनों को मज़ीद धमकियाँ देकर छोड़ दिया। वह फ़ैसला न कर सके कि क्या सज़ा दें, क्योंकि तमाम लोग पतरस और यूहन्ना के इस काम की वजह से अल्लाह की तमज़ीद कर रहे थे। 22 क्योंकि जिस आदमी को मोज़िज़ाना तौर पर शफ़ा मिली थी वह चालीस साल से ज़्यादा लँगड़ा रहा था।

दिलेरी के लिए दुआ

23 उनकी रिहाई के बाद पतरस और यूहन्ना अपने साथियों के पास वापस गए और सब कुछ सुनाया जो राहनुमा इमामों और बुजुर्गों ने उन्हें बताया था। 24 यह सुनकर तमाम ईमानदारों ने मिलकर ऊँची आवाज़ से दुआ की, "ऐ आक्रा, तूने आसमानो-ज़मीन और समुंदर को और जो कुछ उनमें है खलक किया है। 25 और तूने अपने ख़ादिम हमारे बाप दाऊद के मुँह से रूहुल-कुद्स की मारिफ़त कहा,

'अक्रवाम क्यों तैश में आ गई है?

उम्मतें क्यों बेकार साज़िशें कर रही हैं?

26 दुनिया के बादशाह उठ खड़े हुए,

हुक्मरान रब और उसके मसीह के खिलाफ़ जमा हो गए हैं।'

27 और वाकई यही कुछ इस शहर में हुआ। हेरोदेस अंतिपास, पुंतियुस पीलातुस, गैरयहूदी और यहूदी सब तैरे मुकद्दस खादिम ईसा के खिलाफ जमा हुए जिसे तूने मसह किया था। 28 लेकिन जो कुछ उन्होंने किया वह तूने अपनी कुदरत और मरज़ी से पहले ही से मुकर्रर किया था। 29 ऐ रब, अब उनकी धमकियों पर गौर कर। अपने खादिमों को अपना कलाम सुनाने की बड़ी दिलेरी अता फरमा। 30 अपनी कुदरत का इजहार कर ताकि हम तैरे मुकद्दस खादिम ईसा के नाम से शफ़ा, इलाही निशान और मोजिज़े दिखा सकें।”

31 दुआ के इख्तिताम पर वह जगह हिल गई जहाँ वह जमा थे। सब रूहुल-कुद्स से मामूर हो गए और दिलेरी से अल्लाह का कलाम सुनाने लगे।

ईमानदारों की मुश्तरका मिलकियत

32 ईमानदारों की पूरी जमात एकदिल थी। किसी ने भी अपनी मिलकियत की किसी चीज़ के बारे में नहीं कहा कि यह मेरी है बल्कि उनकी हर चीज़ मुश्तरका थी। 33 और रसूल बड़े इख्तियार के साथ खुदावंद ईसा के जी उठने की गवाही देते रहे। अल्लाह की बड़ी मेहरबानी उन सब पर थी। 34 उनमें से कोई भी ज़रूरतमंद नहीं था, क्योंकि जिसके पास भी ज़मीन या मकान थे उसने उन्हें फ़रोख्त करके रकम 35 रसूलों के पाँवों में रख दी। यों जमाशुदा पैसों में से हर एक को उतने दिए जाते जितनों की उसे ज़रूरत होती थी।

36 मसलन यूसुफ़ नामी एक आदमी था जिसका नाम रसूलों ने बरनबास (हौसलाअफ़ज़ाई का बेटा) रखा था। वह लावी कबीले से और जज़ीराए-कुबस्स का रहनेवाला था। 37 उसने अपना एक खेत फ़रोख्त करके पैसे रसूलों के पाँवों में रख दिए।

5

हननियाह और सफ़ीरा

1 एक और आदमी था जिसने अपनी बीवी के साथ मिलकर अपनी कोई ज़मीन बेच दी। उनके नाम हननियाह और सफ़ीरा थे। 2 लेकिन हननियाह पूरी रकम रसूलों के पास न लाया बल्कि उसमें से कुछ अपने लिए रख छोड़ा और बाक़ी रसूलों के पाँवों में रख दिया। उस की बीवी भी इस बात से वाकिफ़ थी। 3 लेकिन पतरस ने कहा, “हननियाह, इबलीस ने आपके दिल को यों क्यों भर दिया है कि आपने रूहुल-कुद्स से झूट बोला है? क्योंकि आपने ज़मीन की रकम के कुछ पैसे अपने पास रख लिए हैं। 4 क्या यह ज़मीन फ़रोख्त करने से पहले आपकी नहीं थी? और उसे बेचकर क्या आप पैसे जैसे चाहते इस्तेमाल नहीं कर सकते थे? आपने क्यों अपने दिल में यह ठान लिया? आपने हमें नहीं बल्कि अल्लाह को धोका दिया है।”

5 यह सुनते ही हननियाह फ़र्श पर गिरकर मर गया। और तमाम सुननेवालों पर बड़ी दहशत तारी हो गई। 6 जमात के नौजवानों ने उठकर लाश को कफ़न में लपेट दिया और उसे बाहर ले जाकर दफ़न कर दिया।

7 तकरीबन तीन घंटे गुज़र गए तो उस की बीवी अंदर आई। उसे मालूम न था कि शौहर को क्या हुआ है।

8 पतरस ने उससे पूछा, “मुझे बताएँ, क्या आपको अपनी ज़मीन के लिए इतनी ही रकम मिली थी?”

सफ़ीरा ने जवाब दिया, “जी, इतनी ही रकम थी।”

9 पतरस ने कहा, “क्यों आप दोनों रब के रूह को आजमाने पर मुतफ़िक़ हुए? देखो, जिन्होंने आपके खाविंद को दफ़नाया है वह दरवाज़े पर खड़े हैं और आपको भी उठाकर बाहर ले जाएंगे।” 10 उसी लमहे सफ़ीरा पतरस के पाँवों में गिरकर मर गई। नौजवान अंदर आए तो उस की लाश देखकर उसे भी बाहर ले गए और उसके शौहर के पास दफ़न कर दिया। 11 पूरी जमात बल्कि हर सुननेवाले पर बड़ा ख़ौफ़ तारी हो गया।

मोजिज़े

12 रसूलों की मारिफ़त अवाम में बहुत-से इलाही निशान और मोजिज़े ज़ाहिर हुए। उस वक़्त तमाम ईमानदार एकदिली से बैतुल-मुकद्दस में सुलेमान के बरामदे में जमा हुआ करते थे। 13 बाक़ी लोग उनसे करीबी ताल्लुक़ रखने की ज़ुरत नहीं करते थे, अगरचे अवाम उनकी बहुत इज़्ज़त करते थे। 14 तो भी खुदावंद पर ईमान रखनेवाले मर्दों-खवातीन की तादाद बढ़ती गई। 15 लोग अपने मरीज़ों को चारपाइयों और चटाइयों पर रखकर सड़कों पर लाते थे ताकि जब पतरस वहाँ से गुज़रे तो कम अज़ कम उसका साया किसी न किसी पर पड़ जाए। 16 बहुत-से लोग यरूशलम के इर्दगिर्द की आबादियों से भी अपने मरीज़ों और बदरूह-गिरिफ़ता अजीज़ों को लाते, और सब शफ़ा पाते थे।

रसूलों की ईज़ारसानी

17 फिर इमामे-आज़म सद्क़ी फिरके के तमाम साथियों के साथ हरकत में आया। हसद से जलकर 18 उन्होंने रसूलों को गिरिफ़्तार करके अवामी जेल में डाल दिया। 19 लेकिन रात को रब का एक फ़रिशता कैदख़ाने के दरवाज़ों को खोलकर उन्हें बाहर लाया। उसने कहा, 20 “जाओ, बैतुल-मुकद्दस में खड़े होकर लोगों को इस नई ज़िंदगी से मुताल्लिक़ सब बातें सुनाओ।” 21 फ़रिशते की सुनकर रसूल सुबह-सवेरे बैतुल-मुकद्दस में जाकर तालीम देने लगे।

अब ऐसा हुआ कि इमामे-आज़म अपने साथियों समेत पहुँचा और यहूदी अदालते-आलिया का इजलास मुनअकिद किया। इसमें इसराईल के तमाम बुजुर्ग़ शरीक हुए। फिर उन्होंने अपने मुलाज़िम्ओं को कैदख़ाने में भेज दिया ताकि रसूलों को लाकर उनके सामने पेश किया जाए। 22 लेकिन जब वह वहाँ पहुँचे तो पता चला कि रसूल जेल में नहीं हैं। वह वापस आए और कहने लगे, 23 “जब हम पहुँचे तो जेल बड़ी

एहतियात से बंद थी और दरवाजों पर पहरेदार खड़े थे। लेकिन जब हम दरवाजों को खोलकर अंदर गए तो वहाँ कोई नहीं था!” 24 यह सुनकर बैतुल-मुकद्दस के पहरेदारों का कप्तान और राहनुमा इमाम बड़ी उलझन में पड़ गए और सोचने लगे कि अब क्या होगा? 25 इतने में कोई आकर कहने लगा, “बात सुनें, जिन आदमियों को आपने जेल में डाला था वह बैतुल-मुकद्दस में खड़े लोगों को तालीम दे रहे हैं।” 26 तब बैतुल-मुकद्दस के पहरेदारों का कप्तान अपने मुलाजिमों के साथ रसूलों के पास गया और उन्हें लाया, लेकिन ज़बरदस्ती नहीं, क्योंकि वह डरते थे कि जमाशुदा लोग उन्हें संगसार न कर दें।

27 चुनौचे उन्होंने रसूलों को लाकर इजलास के सामने खड़ा किया। इमामे-आज़म उनसे मुखातिब हुआ, 28 “हमने तो तुमको सरख्ती से मना किया था कि इस आदमी का नाम लेकर तालीम न दो। इसके बरअक्स तुमने न सिर्फ अपनी तालीम यरूशलम की हर जगह तक पहुँचा दी है बल्कि हमें इस आदमी की मौत के ज़िम्मादार भी ठहराना चाहते हो।”

29 पतरस और बाक़ी रसूलों ने जवाब दिया, “लाज़िम है कि हम पहले अल्लाह की सुनें, फिर इनसान की। 30 हमारे बापदादा के खुदा ने ईसा को ज़िंदा कर दिया, उसी शख्स को जिसे आपने सलीब पर चढ़वाकर मार डाला था। 31 अल्लाह ने उसी को हुक्मरान और नजातदहिंदा की हैसियत से सरफ़राज़ करके अपने दहने हाथ बिठा लिया ताकि वह इसराईल को तौबा और गुनाहों की मुआफ़ी का मौक़ा फ़राहम करे। 32 हम खुद इन बातों के गवाह हैं और रूहुल-कुद्स भी, जिसे अल्लाह ने अपने फ़रमाँबरदारों को दे दिया है।”

33 यह सुनकर अदालत के लोग तैश में आकर उन्हें क़त्ल करना चाहते थे। 34 लेकिन एक फ़रीसी आलिम इजलास में खड़ा हुआ जिसका नाम जमलियेल था। पूरी क़ौम में वह इज़्ज़तदार था। उसने हुक्म दिया कि रसूलों को थोड़ी देर के लिए इजलास से निकाल दिया जाए। 35 फिर उसने कहा, “मेरे इसराईली भाइयो, ग़ौर से सोचें कि आप इन आदमियों के साथ क्या करेंगे। 36 क्योंकि कुछ देर हुई थियूदास उठकर कहने लगा कि मैं कोई ख़ास शख्स हूँ। तक़रीबन 400 आदमी उसके पीछे लग गए। लेकिन उसे क़त्ल किया गया और उसके पैरोकार बिखर गए। उनकी सरग़रमियों से कुछ न हुआ। 37 इसके बाद मर्दुमशुमारी के दिनों में यहूदाह गलीली उठा। उसने भी काफ़ी लोगों को अपने पैरोकार बनाकर बगावत करने पर उकसाया। लेकिन उसे भी मार दिया गया और उसके पैरोकार मुंतशिर हुए। 38 यह पेशे-नज़र रखकर मेरा मशवरा यह है कि इन लोगों को छोड़ दें, इन्हें जाने दें। अगर इनका इरादा या सरग़रमियाँ इनसानी हैं तो सब कुछ खुद बख़ुद ख़त्म हो जाएगा। 39 लेकिन अगर यह अल्लाह की तरफ़ से है तो आप इन्हें ख़त्म नहीं कर सकेंगे। ऐसा न हो कि आखिरकार आप अल्लाह ही के खिलाफ़ लड़ रहे हों।”

हाज़िरिनी ने उस की बात मान ली। 40 उन्होंने रसूलों को बुलाकर उनको कोड़े लगवाए। फिर उन्होंने उन्हें ईसा का नाम लेकर बोलने से मना किया और फिर जाने दिया। 41 रसूल यहूदी अदालते-आलिया से निकलकर चले गए। यह बात उनके लिए बड़ी खुशी का बाइस थी कि अल्लाह ने हमें इस लायक समझा है कि ईसा के नाम की खातिर बेइज़्ज़त हो जाएँ। 42 इसके बाद भी वह रोज़ाना बैतुल-मुकद्दस और मुख़्तलिफ़ घरों में जा जाकर सिखाते और इस खुशख़बरी की मुनादी करते रहे कि ईसा ही मसीह है।

6

रसूलों के सात मददगार

1 उन दिनों में जब ईसा के शागिर्दों की तादाद बढ़ती गई तो यूनानी ज़बान बोलनेवाले ईमानदार इब्रानी बोलनेवाले ईमानदारों के बारे में बुड़बुड़ाने लगे। उन्होंने कहा, “जब रोज़मर्रा का खाना तक़सीम होता है तो हमारी बेवाओं को नज़रंदाज़ किया जाता है।” 2 तब बारह रसूलों ने शागिर्दों की पूरी जमात को इक़ठा करके कहा, “यह ठीक नहीं कि हम अल्लाह का कलाम सिखाने की खिदमत को छोड़कर खाना तक़सीम करने में मसरूफ़ रहें। 3 भाइयो, यह बात पेशे-नज़र रखकर अपने में से सात आदमी चुन लें, जिनके नेक किरदार की आप तसदीक़ कर सकते हैं और जो रूहुल-कुद्स और हिकमत से मामूर हैं। फिर हम उन्हें खाना तक़सीम करने की यह ज़िम्मादारी देकर 4 अपना पूरा वक़्त दुआ और कलाम की खिदमत में सर्फ़ कर सकेंगे।”

5 यह बात पूरी जमात को पसंद आई और उन्होंने सात आदमी चुन लिए : स्तिफ़नुस (जो ईमान और रूहुल-कुद्स से मामूर था), फिलिप्पुस, प्रुख़ुस्स, नीकानोर, तीमोन, परमिनास और अंताकिया का नीकुलाउस। (नीकुलाउस ग़ैरयहूदी था जिसने ईसा पर ईमान लाने से पहले यहूदी मज़हब को अपना लिया था।) 6 इन सात आदमियों को रसूलों के सामने पेश किया गया तो उन्होंने इन पर हाथ रखकर दुआ की।

7 यों अल्लाह का पैग़ाम फैलता गया। यरूशलम में ईमानदारों की तादाद निहायत बढ़ती गई और बैतुल-मुकद्दस के बहुत-से इमाम भी ईमान ले आए।

स्तिफ़नुस की गिरिफ़्तारी

8 स्तिफ़नुस अल्लाह के फ़ज़ल और कुव्वत से मामूर था और लोगों के दरमियान बड़े बड़े मोजिजे और इलाही निशान दिखाता था। 9 एक दिन कुछ यहूदी स्तिफ़नुस से बहस करने लगे। (वह कुरेन, इस्कंदरिया, किलिकिया और सूबा आसिया के रहनेवाले थे और उनके इबादतखाने का नाम लिबरतीनियौ यानी आज़ाद किए गए गुलामों का इबादतखाना था।) 10 लेकिन वह न उस की हिकमत का सामना कर सके, न उस रूह का जो कलाम करते वक़्त उस की मदद करता था। 11 इसलिए उन्होंने बाज़ आदमियों को यह कहने को उकसाया कि “इसने मूसा और अल्लाह के बारे में कुफ़र बका है। हम खुद इसके गवाह हैं।” 12 यों आम लोगों, बुज़ुर्गों और शरीअत के उलमा में हलचल मच गई। वह स्तिफ़नुस पर चढ़ आए और उसे घसीटकर यहूदी अदालते-आलिया के पास लाए। 13 वहाँ उन्होंने झूठे गवाह खड़े किए जिन्होंने कहा, “यह

आदमी बैतुल-मुकद्दस और शरीअत के खिलाफ बातें करने से बाज नहीं आता। ¹⁴ हमने इसके मुँह से सुना है कि ईसा नासरी यह मकाम तबाह करेगा और वह रस्मो-रिवाज बदल देगा जो मूसा ने हमारे सुपुर्द किए हैं।” ¹⁵ जब इजलास में बैठे तमाम लोग घूर घूरकर स्तिफनुस की तरफ देखने लगे तो उसका चेहरा फरिश्ते का-सा नज़र आया।

7

स्तिफनुस की तकरीर

¹ इमामे-आज़म ने पूछा, “क्या यह सच है?”

² स्तिफनुस ने जवाब दिया, “भाइयो और बुजुर्गो, मेरी बात सुनें। जलाल का खुदा हमारे बाप इब्राहीम पर ज़ाहिर हुआ जब वह अभी मसोपुतामिया में आबाद था। उस वक़्त वह हारान में मुंतकिल नहीं हुआ था। ³ अल्लाह ने उससे कहा, ‘अपने वतन और अपनी क़ौम को छोड़कर इस मुल्क में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा।’ ⁴ चुनौचे वह कसदियों के मुल्क को छोड़कर हारान में रहने लगा। वहाँ उसका बाप फ़ौत हुआ तो अल्लाह ने उसे इस मुल्क में मुंतकिल किया जिसमें आप आज तक आबाद हैं। ⁵ उस वक़्त अल्लाह ने उसे इस मुल्क में कोई भी मौस्सी ज़मीन न दी थी, एक मुरब्बा फुट तक भी नहीं। लेकिन उसने उससे वादा किया, ‘मैं इस मुल्क को तेरे और तेरी औलाद के क़ब्जे में कर दूँगा,’ अगरचे उस वक़्त इब्राहीम के हाँ कोई बच्चा पैदा नहीं हुआ था। ⁶ अल्लाह ने उसे यह भी बताया, ‘तेरी औलाद ऐसे मुल्क में रहेगी जो उसका नहीं होगा। वहाँ वह अजनबी और गुलाम होगी, और उस पर 400 साल तक बहुत ज़ुल्म किया जाएगा। ⁷ लेकिन मैं उस क़ौम की अदालत करूँगा जिसने उसे गुलाम बनाया होगा। इसके बाद वह उस मुल्क में से निकलकर इस मकाम पर मेरी इबादत करेंगे।’ ⁸ फिर अल्लाह ने इब्राहीम को ख़तना का अहद दिया। चुनौचे जब इब्राहीम का बेटा इसहाक पैदा हुआ तो बाप ने आठवें दिन उसका ख़तना किया। यह सिलसिला जारी रहा जब इसहाक का बेटा याक़ूब पैदा हुआ और याक़ूब के बारह बेटे, हमारे बारह क़बीलों के सरदार।

⁹ यह सरदार अपने भाई यूसुफ़ से हसद करने लगे और इसलिए उसे बेच दिया। यों वह गुलाम बनकर मिसर पहुँचा। लेकिन अल्लाह उसके साथ रहा ¹⁰ और उसे उस की तमाम मुसीबतों से रिहाई दी। उसने उसे दानाई अता करके इस काबिल बना दिया कि वह मिसर के बादशाह फ़िरौन का मंज़ूरे-नज़र हो जाए। यों फ़िरौन ने उसे मिसर और अपने पूरे घराने पर हुक्मरान मुक़र्रर किया। ¹¹ फिर तमाम मिसर और कनान में काल पड़ा। लोग बड़ी मुसीबत में पड़ गए और हमारे बापदादा के पास भी ख़ुराक ख़त्म हो गई। ¹² याक़ूब को पता चला कि मिसर में अब तक अनाज है, इसलिए उसने अपने बेटों को अनाज ख़रीदने को वहाँ भेज दिया। ¹³ जब उन्हें दूसरी बार वहाँ जाना पड़ा तो यूसुफ़ ने अपने आपको अपने भाइयों पर ज़ाहिर किया, और फ़िरौन को यूसुफ़ के ख़ानदान के बारे में आगाह किया गया। ¹⁴ इसके बाद यूसुफ़ ने अपने बाप याक़ूब और तमाम रिश्तेदारों को बुला लिया। कुल 75 अफ़राद आए। ¹⁵ यों याक़ूब मिसर पहुँचा। वहाँ वह और हमारे बापदादा मर गए। ¹⁶ उन्हें सिकम में लाकर उस क़ब्र में दफ़नाया गया जो इब्राहीम ने हमारे की औलाद से पैसे देकर ख़रीदी थी।

¹⁷ फिर वह वक़्त करीब आ गया जिसका वादा अल्लाह ने इब्राहीम से किया था। मिसर में हमारी क़ौम की तादाद बहुत बढ़ चुकी थी। ¹⁸ लेकिन होते होते एक नया बादशाह तख़्तनशीन हुआ जो यूसुफ़ से नावाकिफ़ था। ¹⁹ उसने हमारी क़ौम का इस्तेहसाल करके उनसे बदसलूकी की और उन्हें अपने शीरख़ार बच्चों को ज़ाया करने पर मजबूर किया। ²⁰ उस वक़्त मूसा पैदा हुआ। वह अल्लाह के नज़दीक ख़ुबसूरत बच्चा था और तीन माह तक अपने बाप के घर में पाला गया। ²¹ इसके बाद वालिदैन् को उसे छोड़ना पड़ा, लेकिन फ़िरौन की बेटी ने उसे लेपालक बनाकर अपने बेटे के तौर पर पाला। ²² और मूसा को मिसरियों की हिकमत के हर शोबे में तरबियत मिली। उसे बोलने और अमल करने की ज़बरदस्त काबिलियत हासिल थी।

²³ जब वह चालीस साल का था तो उसे अपनी क़ौम इसराईल के लोगों से मिलने का ख़याल आया। ²⁴ जब उसने उनके पास जाकर देखा कि एक मिसरी किसी इसराईली पर तशद्दुद कर रहा है तो उसने इसराईली की हिमायत करके मज़लूम का बदला लिया और मिसरी को मार डाला। ²⁵ उसका ख़याल तो यह था कि मेरे भाइयों को समझ आएगी कि अल्लाह मेरे वसीले से उन्हें रिहाई देगा, लेकिन ऐसा नहीं था। ²⁶ अगले दिन वह दो इसराईलियों के पास से गुज़रा जो आपस में लड़ रहे थे। उसने सुलह कराने की कोशिश में कहा, ‘मर्दो, आप तो भाई हैं। आप क्यों एक दूसरे से ग़लत सलूक कर रहे हैं?’ ²⁷ लेकिन जो आदमी दूसरे से बदसलूकी कर रहा था उसने मूसा को एक तरफ़ धकेलकर कहा, ‘किसने आपको हम पर हुक्मरान और काज़ी मुक़र्रर किया है?’ ²⁸ क्या आप मुझे भी क़त्ल करना चाहते हैं जिस तरह कल मिसरी को मार डाला था?’ ²⁹ यह सुनकर मूसा फ़रार होकर मुल्के-मिदियान में अजनबी के तौर पर रहने लगा। वहाँ उसके दो बेटे पैदा हुए।

³⁰ चालीस साल के बाद एक फ़रिश्ता जलती हुई काँटेदार झाड़ी के शोले में उस पर ज़ाहिर हुआ। उस वक़्त मूसा सीना पहाड़ के करीब रेगिस्तान में था। ³¹ यह मंज़र देखकर मूसा हैरान हुआ। जब वह उसका मुआयना करने के लिए करीब पहुँचा तो रब की आवाज़ सुनाई दी, ³² ‘मैं तेरे बापदादा का खुदा, इब्राहीम, इसहाक और याक़ूब का खुदा हूँ।’ मूसा थरथराने लगा और उस तरफ़ देखने की ज़ुरत न की। ³³ फिर रब ने उससे कहा, ‘अपनी जूतियाँ उतार, क्योंकि तू मुक़द्दस ज़मीन पर खड़ा है।’ ³⁴ मैंने मिसर में अपनी क़ौम की बुरी हालत देखी और उनकी आँहें सुनी हैं, इसलिए उन्हें बचाने के लिए उतर आया हूँ। अब जा, मैं तुझे मिसर भेजता हूँ।’

³⁵ यों अल्लाह ने उस शख्स को उनके पास भेज दिया जिसे वह यह कहकर रद्द कर चुके थे कि ‘किसने आपको हम पर हुक्मरान और काज़ी मुक़र्रर किया है?’ जलती हुई काँटेदार झाड़ी में मौजूद फ़रिश्ते की मारिफ़त अल्लाह ने मूसा को उनके पास भेज दिया ताकि वह उनका

हुक्मरान और नजातदहिदा बन जाए। ³⁶ और वह मोजिजे और इलाही निशान दिखाकर उन्हें मिसर से निकाल लाया, फिर बहरे-कुलजुम से गुजरकर 40 साल के दौरान रेगिस्तान में उनकी राहनुमाई की। ³⁷ मूसा ने खुद इसराईलियों को बताया, ‘अल्लाह तुम्हारे वास्ते तुम्हारे भाइयों में से मुझ जैसे नबी को बरपा करेगा।’ ³⁸ मूसा रेगिस्तान में कौम की जमात में शरीक था। एक तरफ वह उस फरिश्ते के साथ था जो सीना पहाड़ पर उससे बातें करता था, दूसरी तरफ हमारे बापदादा के साथ। फरिश्ते से उसे जिंदगीबख्श बातें मिल गईं जो उसे हमारे सुपुर्द करनी थीं।

³⁹ लेकिन हमारे बापदादा ने उस की सुनने से इनकार करके उसे रद्द कर दिया। दिल ही दिल में वह मिसर की तरफ रुजू कर चुके थे। ⁴⁰ वह हासून से कहने लगे, ‘आएँ, हमारे लिए देवता बना दें जो हमारे आगे आगे चलते हुए हमारी राहनुमाई करें। क्योंकि क्या मालूम कि उस बंदे मूसा को क्या हुआ है जो हमें मिसर से निकाल लाया।’ ⁴¹ उसी वक़्त उन्होंने बछड़े का बुत बनाकर उसे कुरबानियाँ पेश कीं और अपने हाथों के काम की खुशी मनाई। ⁴² इस पर अल्लाह ने अपना मुँह फेर लिया और उन्हें सितारों की पूजा की गिरिफ्त में छोड़ दिया, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह नबियों के सहीफ़े में लिखा है,

‘ऐ इसराईल के घराने,
जब तुम रेगिस्तान में घुमते-फिरते थे
तो क्या तुमने उन 40 सालों के दौरान
कभी मुझे जबह और गल्ला की कुरबानियाँ पेश कीं?
⁴³ नहीं, उस वक़्त भी तुम मलिक देवता का ताबूत
और रिफ़ान देवता का सितारा उठाए फिरते थे,
गो तुमने अपने हाथों से यह बुत
पूजा करने के लिए बना लिए थे।
इसलिए मैं तुम्हें जिलावतन करके
बाबल के पार बसा दूँगा।’

⁴⁴ रेगिस्तान में हमारे बापदादा के पास मुलाकात का खैमा था। उसे उस नमूने के मुताबिक बनाया गया था जो अल्लाह ने मूसा को दिखाया था। ⁴⁵ मूसा की मौत के बाद हमारे बापदादा ने उसे विरसे में पाकर अपने साथ ले लिया जब उन्होंने यशुअ की राहनुमाई में इस मुल्क में दाखिल होकर उस पर कब्ज़ा कर लिया। उस वक़्त अल्लाह उसमें आबाद कौमों को उनके आगे आगे निकालता गया। यों मुलाकात का खैमा दाऊद बादशाह के ज़माने तक मुल्क में रहा। ⁴⁶ दाऊद अल्लाह का मंज़ुरे-नज़र था। उसने याकूब के खुदा को एक सुकूनतगाह मुहैया करने की इजाज़त माँगी। ⁴⁷ लेकिन सुलेमान को उसके लिए मकान बनाने का एज़ाज़ हासिल हुआ।

⁴⁸ हकीकत में अल्लाह तआला इनसान के हाथ के बनाए हुए मकानों में नहीं रहता। नबी रब का फ़रमान यों बयान करता है,

⁴⁹ ‘आसमान मेरा तख़्त है
और ज़मीन मेरे पाँवों की चौकी,
तो फिर तुम मेरे लिए किस किसम का घर बनाओगे?
वह जगह कहाँ है जहाँ मैं आराम करूँगा?
⁵⁰ क्या मेरे हाथ ने यह सब कुछ नहीं बनाया?’

⁵¹ ऐ गरदनकश लोगो! बेशक आपका खतना हुआ है जो अल्लाह की कौम का जाहिरी निशान है। लेकिन उसका आपके दिलों और कानों पर कुछ भी असर नहीं हुआ। आप अपने बापदादा की तरह हमेशा स्हुल-कुदूस की मुख़ालफ़त करते रहते हैं। ⁵² क्या कभी कोई नबी था जिसे आपके बापदादा ने न सताया? उन्होंने उन्हें भी क़त्ल किया जिन्होंने रास्तबाज़ मसीह की पेशगोई की, उस शाख्स की जिसे आपने दुश्मनों के हवाले करके मार डाला। ⁵³ आप ही को फ़रिश्तों के हाथ से अल्लाह की शरीअत हासिल हुई मगर उस पर अमल नहीं किया।”

स्तिफ़नुस को संगसार किया जाता है

⁵⁴ स्तिफ़नुस की यह बातें सुनकर इजलास के लोग तैश में आकर दाँत पीसने लगे। ⁵⁵ लेकिन स्तिफ़नुस स्हुल-कुदूस से मामूर अपनी नज़र उठाकर आसमान की तरफ़ तकने लगा। वहाँ उसे अल्लाह का जलाल नज़र आया, और ईसा अल्लाह के दहने हाथ खड़ा था। ⁵⁶ उसने कहा, “देखो, मुझे आसमान खुला हुआ दिखाई दे रहा है और इब्ने-आदम अल्लाह के दहने हाथ खड़ा है!”

⁵⁷ यह सुनते ही उन्होंने चीख़ चीख़कर हाथों से अपने कानों को बंद कर लिया और मिलकर उस पर झपट पड़े। ⁵⁸ फिर वह उसे शहर से निकालकर संगसार करने लगे। और जिन लोगों ने उसके खिलाफ़ गवाही दी थी उन्होंने अपनी चादरें उतारकर एक जवान आदमी के पाँवों में रख दीं। उस आदमी का नाम साऊल था। ⁵⁹ जब वह स्तिफ़नुस को संगसार कर रहे थे तो उसने दुआ करके कहा, “ऐ खुदावंद ईसा, मेरी स्ह को क़बूल कर।” ⁶⁰ फिर घुटने टेककर उसने ऊँची आवाज़ से कहा, “ऐ खुदावंद, उन्हें इस गुनाह के ज़िम्मादार न ठहरा।” यह कहकर वह इंतक़ाल कर गया।

8

1 और साऊल को भी स्तिफ़नुस का क़त्ल मंज़ूर था।

साऊल जमात को सताता है

उस दिन यरूशलम में मौजूद जमात सख्त ईज़ारसानी की ज़द में आ गई। इसलिए सिवाए रसूलों के तमाम ईमानदार यहूदिया और सामरिया के इलाकों में तित्तर-बित्तर हो गए। ² कुछ खुदातरस आदमियों ने स्तिफ़नुस को दफन करके रो रोकर उसका मातम किया।

³ लेकिन साऊल ईसा की जमात को तबाह करने पर तुला हुआ था। उसने घर घर जाकर ईमानदार मर्दों-ख्वातीन को निकाल दिया और उन्हें घसीटकर कैदखाने में डलवा दिया।

खुशख़बरी सामरिया में फैल जाती है

⁴ जो ईमानदार बिखर गए थे वह जगह जगह जाकर अल्लाह की खुशख़बरी सुनाते फिरे। ⁵ इस तरह फिलिप्पुस सामरिया के किसी शहर को गया और वहाँ के लोगों को मसीह के बारे में बताया। ⁶ जो कुछ भी फिलिप्पुस ने कहा और जो भी इलाही निशान उसने दिखाए, उस पर सुननेवाले हुजूम ने यकदिल होकर तवज्जुह दी। ⁷ बहुत-से लोगों में से बदरूहें ज़ोरदार चीखें मार मारकर निकल गईं, और बहुत-से मफ़लूजों और लँगडों को शफा मिल गई। ⁸ यों उस शहर में बड़ी शादमानी फैल गई।

⁹ वहाँ काफ़ी अरसे से एक आदमी रहता था जिसका नाम शमौन था। वह जादूगर था और उसके हैरतअंगेज़ काम से सामरिया के लोग बहुत मुतअस्सिर थे। उसका अपना दावा था कि मैं कोई खास शख्स हूँ। ¹⁰ इसलिए सब लोग छोटे से लेकर बड़े तक उस पर खास तवज्जुह देते थे। उनका कहना था, ‘यह आदमी वह इलाही कुव्वत है जो अज़ीम कहलाती है।’ ¹¹ वह इसलिए उसके पीछे लग गए थे कि उसने उन्हें बड़ी देर से अपने हैरतअंगेज़ कामों से मुतअस्सिर कर रखा था। ¹² लेकिन अब लोग फिलिप्पुस की अल्लाह की बादशाही और ईसा के नाम के बारे में खुशख़बरी पर ईमान ले आए, और मर्दों-ख्वातीन ने बपतिस्मा लिया। ¹³ खुद शमौन ने भी ईमान लाकर बपतिस्मा लिया और फिलिप्पुस के साथ रहा। जब उसने वह बड़े इलाही निशान और मोजिज़े देखे जो फिलिप्पुस के हाथ से जाहिर हुए तो वह हक्का-बक्का रह गया।

¹⁴ जब यरूशलम में रसूलों ने सुना कि सामरिया ने अल्लाह का कलाम कबूल कर लिया है तो उन्होंने पतरस और यूहन्ना को उनके पास भेज दिया। ¹⁵ वहाँ पहुँचकर उन्होंने उनके लिए दुआ की कि उन्हें रूहल-कुद्स मिल जाए, ¹⁶ क्योंकि अभी रूहल-कुद्स उन पर नाज़िल नहीं हुआ था बल्कि उन्हें सिर्फ़ खुदावंद ईसा के नाम में बपतिस्मा दिया गया था। ¹⁷ अब जब पतरस और यूहन्ना ने अपने हाथ उन पर रखे तो उन्हें रूहल-कुद्स मिल गया।

¹⁸ शमौन ने देखा कि जब रसूल लोगों पर हाथ रखते हैं तो उनको रूहल-कुद्स मिलता है। इसलिए उसने उन्हें पैसे पेश करके ¹⁹ कहा, ‘मुझे भी यह इस्तिथार दे दें कि जिस पर मैं हाथ रखूँ उसे रूहल-कुद्स मिल जाए।’

²⁰ लेकिन पतरस ने जवाब दिया, ‘आपके पैसे आपके साथ ग़ारत हो जाएँ, क्योंकि आपने सोचा कि अल्लाह की नेमत पैसों से खरीदी जा सकती है।’ ²¹ इस खिदमत में आपका कोई हिस्सा नहीं है, क्योंकि आपका दिल अल्लाह के सामने खालिस नहीं है। ²² अपनी इस शरारत से तौबा करके खुदावंद से दुआ करें। शायद वह आपको इस इरादे की मुआफी दे जो आपने दिल में रखा है। ²³ क्योंकि मैं देखता हूँ कि आप कड़वे पित से भरे और नारास्ती के बंधन में जकड़े हुए हैं।’

²⁴ शमौन ने कहा, ‘फिर खुदावंद से मेरे लिए दुआ करें कि आपकी मज़कूरा मुसीबतों में से मुझ पर कोई न आए।’

²⁵ खुदावंद के कलाम की गवाही देने और उस की मुनादी करने के बाद पतरस और यूहन्ना वापस यरूशलम के लिए रवाना हुए। रास्ते में उन्होंने सामरिया के बहुत-से देहातों में अल्लाह की खुशख़बरी सुनाई।

फिलिप्पुस और एथोपिया का अफ़सर

²⁶ एक दिन रब के फ़रिश्ते ने फिलिप्पुस से कहा, ‘उठकर ज़नूब की तरफ़ उस राह पर जा जो रेगिस्तान में से गुज़रकर यरूशलम से गज़्ज़ा को जाती है।’ ²⁷ फिलिप्पुस उठकर रवाना हुआ। चलते चलते उस की मुलाकात एथोपिया की मलिका कंदाके के एक ख्वाजासरा से हुई। मलिका के पूरे खज़ाने पर मुक़र्रर यह दरबारी इबादत करने के लिए यरूशलम गया था ²⁸ और अब अपने मुल्क में वापस जा रहा था। उस वक़्त वह रथ में सवार यसायाह नबी की किताब की तिलावत कर रहा था। ²⁹ रूहल-कुद्स ने फिलिप्पुस से कहा, ‘उसके पास जाकर रथ के साथ हो ले।’ ³⁰ फिलिप्पुस दौड़कर रथ के पास पहुँचा तो सुना कि वह यसायाह नबी की किताब की तिलावत कर रहा है। उसने पूछा, ‘क्या आपको उस सबकी समझ आती है जो आप पढ़ रहे हैं?’

³¹ दरबारी ने जवाब दिया, ‘मैं क्योंकि समझूँ जब तक कोई मेरी राहनुमाई न करे?’ और उसने फिलिप्पुस को रथ में सवार होने की दावत दी। ³² कलामे-मुक़द्दस का जो हवाला वह पढ़ रहा था यह था,

‘उसे भेड़ की तरह जबह करने के लिए ले गए।

जिस तरह लेला बाल कतरनेवाले के सामने खामोश रहता है,

उसी तरह उसने अपना मुँह न खोला।

³³ उस की तज़लील की गई और उसे इनसाफ़ न मिला।

कौन उस की नसल बयान कर सकता है?

क्योंकि उस की जान दुनिया से छीन ली गई।’

34 दरबारी ने फिलिप्पुस से पूछा, “मेहरबानी करके मुझे बता दीजिए कि नबी यहाँ किसका जिक्र कर रहा है, अपना या किसी और का?”
 35 जवाब में फिलिप्पुस ने कलामे-मुकद्दस के इसी हवाले से शुरू करके उसे ईसा के बारे में खुशखबरी सुनाई। 36 सड़क पर सफ़र करते करते वह एक जगह से गुज़रे जहाँ पानी था। ख्वाजासरा ने कहा, “देखें, यहाँ पानी है। अब मुझे बपतिस्मा लेने से कौन-सी चीज़ रोक सकती है?”
 37 [फिलिप्पुस ने कहा, “अगर आप पूरे दिल से ईमान लाएँ तो ले सकते हैं।” उसने जवाब दिया, “मैं ईमान रखता हूँ कि ईसा मसीह अल्लाह का फ़रज़ंद है।”]

38 उसने रथ को रोकने का हुक्म दिया। दोनों पानी में उतर गए और फिलिप्पुस ने उसे बपतिस्मा दिया। 39 जब वह पानी से निकल आए तो खुदावंद का रूह फिलिप्पुस को उठा ले गया। इसके बाद ख्वाजासरा ने उसे फिर कभी न देखा, लेकिन उसने खुशी मनाते हुए अपना सफ़र जारी रखा। 40 इतने में फिलिप्पुस को अशदूद शहर में पाया गया। वह वहाँ और कैसरिया तक के तमाम शहरों में से गुज़रकर अल्लाह की खुशखबरी सुनाता गया।

9

पौलुस की तबदीली

1 अब तक साऊल खुदावंद के शागिर्दों को धमकाने और कत्ल करने के दरपै था। उसने इमामे-आज़म के पास जाकर 2 उससे गुज़ारिश की कि “मुझे दमिश्क में यहूदी इबादतख़ानों के लिए सिफ़ारिशि ख़त लिखकर दें ताकि वह मेरे साथ तावुन करें। क्योंकि मैं वहाँ मसीह की राह पर चलनेवालों को खाह वह मर्द हों या ख़वातीन ढूँडकर और बाँधकर यरूशलम लाना चाहता हूँ।”

3 वह इस मक़सद से सफ़र करके दमिश्क के करीब पहुँचा ही था कि अचानक आसमान की तरफ़ से एक तेज़ रौशनी उसके गिर्द चमकी।
 4 वह ज़मीन पर गिर पड़ा तो एक आवाज़ सुनाई दी, “साऊल, साऊल, तू मुझे क्यों सताता है?”

5 उसने पूछा, “खुदावंद, आप कौन हैं?”

आवाज़ ने जवाब दिया, “मैं ईसा हूँ जिसे तू सताता है। 6 अब उठकर शहर में जा। वहाँ तुझे बताया जाएगा कि तुझे क्या करना है।”

7 साऊल के पास खड़े हमसफ़र दम बख़ुद रह गए। आवाज़ तो वह सुन रहे थे, लेकिन उन्हें कोई नज़र न आया। 8 साऊल ज़मीन पर से उठा, लेकिन जब उसने अपनी आँखें खोली तो मालूम हुआ कि वह अंधा है। चुनौचे उसके साथी उसका हाथ पकड़कर उसे दमिश्क ले गए। 9 वहाँ तीन दिन के दौरान वह अंधा रहा। इतने में उसने न कुछ खाया, न पिया।

10 उस वक़्त दमिश्क में ईसा का एक शागिर्द रहता था जिसका नाम हननियाह था। अब खुदावंद रोया में उससे हमकलाम हुआ, “हननियाह!”
 उसने जवाब दिया, “जी खुदावंद, मैं हाज़िर हूँ।”

11 खुदावंद ने फ़रमाया, “उठ, उस गली में जा जो ‘सीधी’ कहलाती है। वहाँ यहूदाह के घर में तरसुस के एक आदमी का पता करना जिसका नाम साऊल है। क्योंकि देख, वह दुआ कर रहा है। 12 और रोया में उसने देख लिया है कि एक आदमी बनाम हननियाह मेरे पास आकर अपने हाथ मुझ पर रखेगा। इससे मेरी आँखें बहाल हो जाएँगी।”

13 हननियाह ने एतराज़ किया, “ऐ खुदावंद, मैंने बहुत-से लोगों से उस शख्स की शरीर हरकतों के बारे में सुना है। यरूशलम में उसने तेरे मुक़द्दसों के साथ बहुत ज़्यादती की है। 14 अब उसे राहनुमा इमामों से इख़्तियार मिल गया है कि यहाँ भी हर एक को गिरिफ़्तार करे जो तेरी इबादत करता है।”

15 लेकिन खुदावंद ने कहा, “जा, यह आदमी मेरा चुना हुआ वसीला है जो मेरा नाम ग़ैरयहूदियों, बादशाहों और इसराईलियों तक पहुँचाएगा।
 16 और मैं उसे दिखा दूँगा कि उसे मेरे नाम की खातिर कितना दुख उठाना पड़ेगा।”

17 चुनौचे हननियाह मज़कूरा घर के पास गया, उसमें दाखिल हुआ और अपने हाथ साऊल पर रख दिए। उसने कहा, “साऊल भाई, खुदावंद ईसा जो आप पर ज़ाहिर हुआ जब आप यहाँ आ रहे थे उसी ने मुझे भेजा है ताकि आप दुबारा देख पाएँ और रूहल-कुद्स से मामूर हो जाएँ।”
 18 यह कहते ही छिलकों जैसी कोई चीज़ साऊल की आँखों पर से गिरी और वह दुबारा देखने लगा। उसने उठकर बपतिस्मा लिया, 19 फिर कुछ खाना खाकर नए सिरे से तक्रवियत पाई।

साऊल दमिश्क में अल्लाह की खुशखबरी सुनाता है

साऊल कई दिन शागिर्दों के साथ दमिश्क में रहा। 20 उसी वक़्त वह सीधा यहूदी इबादतख़ानों में जाकर एलान करने लगा कि ईसा अल्लाह का फ़रज़ंद है।

21 और जिसने भी उसे सुना वह हैरान रह गया और पूछा, “क्या यह वह आदमी नहीं जो यरूशलम में ईसा की इबादत करनेवालों को हलाक कर रहा था? और क्या वह इस मक़सद से यहाँ नहीं आया कि ऐसे लोगों को बाँधकर राहनुमा इमामों के पास ले जाए?”

22 लेकिन साऊल रोज़ बरोज़ जोर पकड़ता गया, और चूँकि उसने साबित किया कि ईसा वादा किया हुआ मसीह है इसलिए दमिश्क में आबाद यहूदी उलझन में पड़ गए।

23 चुनौचे काफ़ी दिनों के बाद उन्होंने मिलकर उसे क़त्ल करने का मनसूबा बनाया। 24 लेकिन साऊल को पता चल गया। यहूदी दिन-रात शहर के दरवाज़ों की पहरादारी करते रहे ताकि उसे क़त्ल करें, 25 इसलिए उसके शागिर्दों ने उसे रात के वक़्त टोकरे में बिठाकर शहर की चारदीवारी के एक सूराख में से उतार दिया।

साऊल यरूशलम में

26 साऊल यरूशलम वापस चला गया। वहाँ उसने शागिर्दों से राबिता करने की कोशिश की, लेकिन सब उससे डरते थे, क्योंकि उन्हें यक़ीन नहीं आया था कि वह वाकई ईसा का शागिर्द बन गया है। 27 फिर बरनबास उसे रसूलों के पास ले आया। उसने उन्हें साऊल के बारे में सब कुछ बताया, कि उसने दमिश्क की तरफ़ सफ़र करते वक़्त रास्ते में ख़ुदावंद को देखा, कि ख़ुदावंद उससे हमकलाम हुआ था और उसने दमिश्क में दिलेरी से ईसा के नाम से बात की थी। 28 चुनौचे साऊल उनके साथ रहकर आज्ञादी से यरूशलम में फिरने और दिलेरी से ख़ुदावंद ईसा के नाम से कलाम करने लगा। 29 उसने यूनानी ज़बान बोलनेवाले यहूदियों से भी मुखातिब होकर बहस की, लेकिन जवाब में वह उसे क़त्ल करने की कोशिश करने लगे। 30 जब भाइयों को मालूम हुआ तो उन्होंने उसे कैसरिया पहुँचा दिया और जहाज़ में बिठाकर तरसुस के लिए रवाना कर दिया।

31 इस पर यहूदिया, गलील और सामरिया के पूरे इलाके में फैली हुई जमात को अमनो-अमान हासिल हुआ। रूहुल-कुद्स की हिमायत से उस की तामीरो-तक़वियत हुई, वह ख़ुदा का ख़ौफ़ मानकर चलती रही और तादाद में भी बढ़ती गई।

पतरस लुद्दा और याफ़ा में

32 एक दिन जब पतरस जगह जगह सफ़र कर रहा था तो वह लुद्दा में आबाद मुक़द्दसों के पास भी आया। 33 वहाँ उस की मुलाकात एक आदमी बनाम ऐनियास से हुई। ऐनियास मफ़लूज था। वह आठ साल से बिस्तर से उठ न सका था। 34 पतरस ने उससे कहा, “ऐनियास, ईसा मसीह आपको शफ़ा देता है। उठकर अपना बिस्तर समेट लें।” ऐनियास फ़ौरन उठ खड़ा हुआ। 35 जब लुद्दा और मैदानी इलाके शास्त्र के तमाम रहनेवालों ने उसे देखा तो उन्होंने ख़ुदावंद की तरफ़ रूजू किया।

36 याफ़ा में एक औरत थी जो शागिर्द थी और नेक काम करने और ख़ैरात देने में बहुत आगे थी। उसका नाम तबीता (गज़ाला) था। 37 उन्हीं दिनों में वह बीमार होकर फ़ौत हो गई। लोगों ने उसे गुस्ल देकर बालाख़ाने में रख दिया। 38 लुद्दा याफ़ा के करीब है, इसलिए जब शागिर्दों ने सुना कि पतरस लुद्दा में है तो उन्होंने उसके पास दो आदमियों को भेजकर इलतमास की, “सीधे हमारे पास आएँ और देर न करें।” 39 पतरस उठकर उनके साथ चला गया। वहाँ पहुँचकर लोग उसे बालाख़ाने में ले गए। तमाम बेवाओं ने उसे घेर लिया और रोते चिल्लाते वह सारी क़मीसों और बाक़ी लिबास दिखाने लगीं जो तबीता ने उनके लिए बनाए थे जब वह अभी ज़िंदा थी। 40 लेकिन पतरस ने उन सबको कमरे से निकाल दिया और घुटने टेककर दुआ की। फिर लाश की तरफ़ मुड़कर उसने कहा, “तबीता, उठें!” औरत ने अपनी आँखें खोल दीं। पतरस को देखकर वह बैठ गई। 41 पतरस ने उसका हाथ पकड़ लिया और उठने में उस की मदद की। फिर उसने मुक़द्दसों और बेवाओं को बुलाकर तबीता को ज़िंदा उनके सुपुर्द किया। 42 यह वाक़िया पूरे याफ़ा में मशहूर हुआ, और बहुत-से लोग ख़ुदावंद ईसा पर ईमान लाए। 43 पतरस काफ़ी दिनों तक याफ़ा में रहा। वहाँ वह चमड़ा रंगनेवाले एक आदमी के घर ठहरा जिसका नाम शमौन था।

10

पतरस और कुरनेलियुस

1 कैसरिया में एक रोमी अफ़सर * रहता था जिसका नाम कुरनेलियुस था। वह उस पलटन के सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर था जो इतालवी कहलाती थी। 2 कुरनेलियुस अपने पूरे घराने समेत दीनदार और ख़ुदातरस था। वह फ़ैयाज़ी से ख़ैरात देता और मुतवातिर दुआ में लगा रहता था। 3 एक दिन उसने तीन बजे दोपहर के वक़्त रोया देखी। उसमें उसने साफ़ तौर पर अल्लाह का एक फ़रिश्ता देखा जो उसके पास आया और कहा, “कुरनेलियुस!”

4 वह घबरा गया और उसे ग़ौर से देखते हुए कहा, “मेरे आका, फ़रमाएँ।”

फ़रिश्ते ने कहा, “तुम्हारी दुआओं और ख़ैरात की कुरबानी अल्लाह के हुज़ूर पहुँच गई है और मंज़ूर है। 5 अब कुछ आदमी याफ़ा भेज दो। वहाँ एक आदमी बनाम शमौन है जो पतरस कहलाता है। उसे बुलाकर ले आओ। 6 पतरस एक चमड़ा रंगनेवाले का मेहमान है जिसका नाम शमौन है। उसका घर समुंदर के करीब वाके है।”

7 ज्योंही फ़रिश्ता चला गया कुरनेलियुस ने दो नौकरों और अपने खिदमतगार फ़ौजियों में से एक ख़ुदातरस आदमी को बुलाया। 8 सब कुछ सुनाकर उसने उन्हें याफ़ा भेज दिया।

9 अगले दिन पतरस दोपहर तकरीबन बारह बजे दुआ करने के लिए छत पर चढ़ गया। उस वक़्त कुरनेलियुस के भेजे हुए आदमी याफ़ा शहर के करीब पहुँच गए थे। 10 पतरस को भूक लगी और वह कुछ खाना चाहता था। जब उसके लिए खाना तैयार किया जा रहा था तो वह वज्द की हालत में आ गया। 11 उसने देखा कि आसमान खुल गया है और एक चीज़ ज़मीन पर उतर रही है, कतान की बड़ी चादर जैसी जो

* 10:1 सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

अपने चार कोनों से नीचे उतारी जा रही है। 12 चादर में तमाम किस्म के जानवर हैं : चार पाँव रखनेवाले, रेंगनेवाले और परिदे। 13 फिर एक आवाज़ उससे मुखातिब हुई, “उठ, पतरस। कुछ ज़बह करके खा!”

14 पतरस ने एतराज़ किया, “हरगिज़ नहीं खुदावंद, मैंने कभी भी हराम या नापाक खाना नहीं खाया।”

15 लेकिन यह आवाज़ दुबारा उससे हमकलाम हुई, “जो कुछ अल्लाह ने पाक कर दिया है उसे नापाक करार न दे।” 16 यही कुछ तीन मरतबा हुआ, फिर चादर को अचानक आसमान पर वापस उठा लिया गया।

17 पतरस बड़ी उलझन में पड़ गया। वह अभी सोच रहा था कि इस रोया का क्या मतलब है तो कुरनेलियुस के भेजे हुए आदमी शमौन के घर का पता करके उसके गेट पर पहुँच गए। 18 आवाज़ देकर उन्होंने पूछा, “क्या शमौन जो पतरस कहलाता है आपके मेहमान हैं?”

19 पतरस अभी रोया पर गौर कर ही रहा था कि स्हुल-कुद्स उससे हमकलाम हुआ, “शमौन, तीन मर्द तेरी तलाश में हैं। 20 उठ और छत से उतरकर उनके साथ चला जा। मत झिजकना, क्योंकि मैं ही ने उन्हें तेरे पास भेजा है।” 21 चुनौचे पतरस उन आदमियों के पास गया और उनसे कहा, “मैं वही हूँ जिसे आप ढूँड रहे हैं। आप क्यों मेरे पास आए हैं?”

22 उन्होंने जवाब दिया, “हम सौ फ़ौजियों पर मुकर्रर अफ़सर कुरनेलियुस के घर से आए हैं। वह इनसाफ़परवर और खुदातरस आदमी हैं। पूरी यहूदी क्रौम इसकी तसदीक़ कर सकती है। एक मुक़द्दस फ़रिश्ते ने उन्हें हिदायत दी कि वह आपको अपने घर बुलाकर आपका पैग़ाम सुनें।”

23 यह सुनकर पतरस उन्हें अंदर ले गया और उनकी मेहमान-नवाज़ी की। अगले दिन वह उठकर उनके साथ रवाना हुआ। याफ़ा के कुछ भाई भी साथ गए। 24 एक दिन के बाद वह कैसरिया पहुँच गया। कुरनेलियुस उनके इंतज़ार में था। उसने अपने रिश्तेदारों और करीबी दोस्तों को भी अपने घर जमा कर रखा था। 25 जब पतरस घर में दाख़िल हुआ तो कुरनेलियुस ने उसके सामने गिरकर उसे सिजदा किया। 26 लेकिन पतरस ने उसे उठाकर कहा, “उठें। मैं भी इनसान ही हूँ।” 27 और उससे बातें करते करते वह अंदर गया और देखा कि बहुत-से लोग जमा हो गए हैं। 28 उसने उनसे कहा, “आप जानते हैं कि किसी यहूदी के लिए किसी ग़ैरयहूदी से रिफ़ाक़त रखना या उसके घर में जाना मना है। लेकिन अल्लाह ने मुझे दिखाया है कि मैं किसी को भी हराम या नापाक करार न दूँ। 29 इस वजह से जब मुझे बुलाया गया तो मैं एतराज़ किए बग़ैर चला आया। अब मुझे बता दीजिए कि आपने मुझे क्यों बुलाया है?”

30 कुरनेलियुस ने जवाब दिया, “चार दिन की बात है कि मैं इसी वक़्त दोपहर तीन बजे दुआ कर रहा था। अचानक एक आदमी मेरे सामने आ खड़ा हुआ। उसके कपड़े चमक रहे थे। 31 उसने कहा, ‘कुरनेलियुस, अल्लाह ने तुम्हारी दुआ सुन ली और तुम्हारी ख़ैरात का खयाल किया है। 32 अब किसी को याफ़ा भेजकर शमौन को बुला लो जो पतरस कहलाता है। वह चमड़ा रंगनेवाले शमौन का मेहमान है। शमौन का घर समुंदर के करीब वाके है।’ 33 यह सुनते ही मैंने अपने लोगों को आपको बुलाने के लिए भेज दिया। अच्छा हुआ कि आप आ गए हैं। अब हम सब अल्लाह के हज़ूर हाज़िर हैं ताकि वह कुछ सुनें जो ख़ब ने आपको हमें बताने को कहा है।”

पतरस की तक़रीर

34 फिर पतरस बोल उठा, “अब मैं समझ गया हूँ कि अल्लाह वाकई जानिबदार नहीं, 35 बल्कि हर किसी को कबूल करता है जो उसका ख़ौफ़ मानता और रास्त काम करता है। 36 आप अल्लाह की उस खुशख़बरी से वाकिफ़ हैं जो उसने इसराइलियों को भेजी, यह खुशख़बरी कि ईसा मसीह के वसीले से सलामती आई है। ईसा मसीह सबका खुदावंद है। 37 आपको वह कुछ मालूम है जो गलील से शुरू होकर यहूदिया के पूरे इलाक़े में हुआ यानी उस बपतिस्मे के बाद जिसकी मुनादी यहया ने की। 38 और आप जानते हैं कि अल्लाह ने ईसा नासरी को स्हुल-कुद्स और कुव्वत से मसह किया और कि इस पर उसने जगह जगह जाकर नेक काम किया और इबलीस के दबे हुए तमाम लोगों को शफ़ा दी, क्योंकि अल्लाह उसके साथ था। 39 जो कुछ भी उसने मुल्के-यहूद और यस्शलम में किया, उसके गवाह हम खुद हैं। गो लोगों ने उसे लकड़ी पर लटकाकर क़त्ल कर दिया 40 लेकिन अल्लाह ने तीसरे दिन उसे मुरदों में से ज़िंदा किया और उसे लोगों पर ज़ाहिर किया। 41 वह पूरी क्रौम पर तो ज़ाहिर नहीं हुआ बल्कि हम पर जिनको अल्लाह ने पहले से चुन लिया था ताकि हम उसके गवाह हों। हमने उसके जी उठने के बाद उसके साथ खाने-पीने की रिफ़ाक़त भी रखी। 42 उस वक़्त उसने हमें हुक्म दिया कि मुनादी करके क्रौम को गवाही दो कि ईसा वही है जिसे अल्लाह ने ज़िंदों और मुरदों पर मुसिफ़ मुकर्रर किया है। 43 तमाम नबी उस की गवाही देते हैं कि जो भी उस पर ईमान लाए उसे उसके नाम के वसीले से गुनाहों की मुआफ़ी मिल जाएगी।”

स्हुल-कुद्स ग़ैरयहूदियों पर नाज़िल होता है

44 पतरस अभी यह बात कर ही रहा था कि तमाम सुननेवालों पर स्हुल-कुद्स नाज़िल हुआ। 45 जो यहूदी ईमानदार पतरस के साथ आए थे वह हक्का-बक्का रह गए कि स्हुल-कुद्स की नेमत ग़ैरयहूदियों पर भी उंडेली गई है, 46 क्योंकि उन्होंने देखा कि वह ग़ैरज़बानें बोल रहे और अल्लाह की तमज़ीद कर रहे हैं। तब पतरस ने कहा, 47 “अब कौन इनको बपतिस्मा लेने से रोक सकता है? इन्हें तो हमारी तरह स्हुल-कुद्स हासिल हुआ है।” 48 और उसने हुक्म दिया कि उन्हें ईसा मसीह के नाम से बपतिस्मा दिया जाए। इसके बाद उन्होंने पतरस से गुज़ारिश की कि कुछ दिन हमारे पास ठहरें।

11

यरूशलम की जमात में पतरस की रिपोर्ट

1 यह खबर रसूलों और यहूदियों के बाकी भाइयों तक पहुँची कि गैरयहूदियों ने भी अल्लाह का कलाम कबूल किया है। 2 चुनौचे जब पतरस यरूशलम वापस आया तो यहूदी ईमानदार उस पर एतराज करने लगे, 3 “आप गैरयहूदियों के घर में गए और उनके साथ खाना भी खाया।” 4 फिर पतरस ने उनके सामने तरतीब से सब कुछ बयान किया जो हुआ था।

5 “मैं याफ्रा शहर में दुआ कर रहा था कि वज्द की हालत में आकर रोया देखी। आसमान से एक चीज ज़मीन पर उतर रही है, कतान की बड़ी चादर जैसी जो अपने चारों कोनों से उतारी जा रही है। उतरती उतरती वह मुझ तक पहुँच गई। 6 जब मैंने गौर से देखा तो पता चला कि उसमें तमाम किस्म के जानवर हैं : चार पाँववाले, रेंगनेवाले और परिदे। 7 फिर एक आवाज़ मुझसे मुखातिब हुई, ‘पतरस, उठ! कुछ ज़बह करके खा!’ 8 मैंने एतराज किया, ‘हरगिज़ नहीं, खुदावंद, मैंने कभी भी हराम या नापाक खाना नहीं खाया।’ 9 लेकिन यह आवाज़ दुबारा मुझसे हमकलाम हुई, ‘जो कुछ अल्लाह ने पाक कर दिया है उसे नापाक करार न दे।’ 10 तीन मरतबा ऐसा हुआ, फिर चादर को जानवरों समेत वापस आसमान पर उठा लिया गया। 11 उसी वक़्त तीन आदमी उस घर के सामने स्क गए जहाँ मैं ठहरा हुआ था। उन्हें कैसरिया से मेरे पास भेजा गया था। 12 रूहुल-कुद्स ने मुझे बताया कि मैं बग़ैर झिजके उनके साथ चला जाऊँ। यह मेरे छः भाई भी मेरे साथ गए। हम रवाना होकर उस आदमी के घर में दाखिल हुए जिसने मुझे बुलाया था। 13 उसने हमें बताया कि एक फ़रिश्ता घर में उस पर जाहिर हुआ था जिसने उसे कहा था, ‘किसी को याफ्रा भेजकर शमौन को बुला लो जो पतरस कहलाता है।’ 14 उसके पास वह पैग़ाम है जिसके ज़रीए तुम अपने पूरे घराने समेत नजात पाओगे।’ 15 जब मैं वहाँ बोलने लगा तो रूहुल-कुद्स उन पर नाज़िल हुआ, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह वह शुरू में हम पर हुआ था। 16 फिर मुझे वह बात याद आई जो खुदावंद ने कही थी, ‘यहया ने तुमको पानी से बपतिस्मा दिया, लेकिन तुम्हें रूहुल-कुद्स से बपतिस्मा दिया जाएगा।’ 17 अल्लाह ने उन्हें वही नेमत दी जो उसने हमें भी दी थी जो खुदावंद ईसा मसीह पर ईमान लाए थे। तो फिर मैं कौन था कि अल्लाह को रोकता?”

18 पतरस की यह बातें सुनकर यरूशलम के ईमानदार एतराज करने से बाज़ आए और अल्लाह की तमज़ीद करने लगे। उन्होंने कहा, “तो इसका मतलब है कि अल्लाह ने गैरयहूदियों को भी तौबा करने और अबदी ज़िंदगी पाने का मौक़ा दिया है।”

अंताकिया में जमात

19 जो ईमानदार स्तिफ़नुस की मौत के बाद की ईज़ारसानी से बिखर गए थे वह फ़ेनीके, कुबस्स और अंताकिया तक पहुँच गए। जहाँ भी वह जाते वहाँ अल्लाह का पैग़ाम सुनाते अलबत्ता सिर्फ़ यहूदियों को। 20 लेकिन उनमें से कुरेन और कुबस्स के कुछ आदमी अंताकिया शहर जाकर यूनानियों को भी खुदावंद ईसा के बारे में खुशख़बरी सुनाने लगे। 21 खुदावंद की क़ुदरत उनके साथ थी, और बहुत-से लोगों ने ईमान लाकर खुदावंद की तरफ़ रज़ू किया। 22 इसकी ख़बर यरूशलम की जमात तक पहुँच गई तो उन्होंने बरनबास को अंताकिया भेज दिया। 23 जब वह वहाँ पहुँचा और देखा कि अल्लाह के फ़ज़ल से क्या कुछ हुआ है तो वह खुश हुआ। उसने उन सबकी हौसलाअफ़ज़ाई की कि वह पूरी लग्न से खुदावंद के साथ लिपटे रहें। 24 बरनबास नेक आदमी था जो रूहुल-कुद्स और ईमान से मामूर था। चुनौचे उस वक़्त बहुत-से लोग खुदावंद की जमात में शामिल हुए।

25 इसके बाद वह साऊल की तलाश में तरसूस चला गया। 26 जब उसे मिला तो वह उसे अंताकिया ले आया। वहाँ वह दोनों एक पूरे साल तक जमात में शामिल होते और बहुत-से लोगों को सिखाते रहे। अंताकिया पहला मक़ाम था जहाँ ईमानदार मसीही कहलाने लगे।

27 उन दिनों कुछ नबी यरूशलम से आकर अंताकिया पहुँच गए। 28 एक का नाम अगबुस था। वह खड़ा हुआ और रूहुल-कुद्स की मारिफ़त पेशगोई की कि रोम की पूरी ममलकत में सख़्त काल पड़ेगा। (यह बात उस वक़्त पूरी हुई जब शहनशाह क्लौडियुस की हुकूमत थी।) 29 अगबुस की बात सुनकर अंताकिया के शागिर्दों ने फ़ैसला किया कि हममें से हर एक अपनी माली गुंजाइश के मुताबिक़ कुछ दे ताकि उसे यहूदिया में रहनेवाले भाइयों की इमदाद के लिए भेजा जा सके। 30 उन्होंने अपने इस हदिये को बरनबास और साऊल के सुपुर्द करके वहाँ के बुजुर्गों को भेज दिया।

12

मज़ीद ईज़ारसानी

1 उन दिनों में बादशाह हेरोदेस अग्रिप्पा जमात के कुछ ईमानदारों को गिरिफ़्तार करके उनसे बदसलूकी करने लगा। 2 इस सिलसिले में उसने याकूब रसूल (यूहन्ना के भाई) को तलवार से क़त्ल करवाया। 3 जब उसने देखा कि यह हरकत यहूदियों को पसंद आई है तो उसने पतरस को भी गिरिफ़्तार कर लिया। उस वक़्त बेख़मीरी रोट्टी की ईद मनाई जा रही थी। 4 उसने उसे जेल में डालकर चार दस्तों के हवाले कर दिया कि उस की पहरादारी करें (हर दस्ते में चार फ़ौजी थे)। ख़याल था कि ईद के बाद ही पतरस को अवाम के सामने खड़ा करके उस की अदालत की जाए। 5 यों पतरस कैदख़ाने में रहा। लेकिन ईमानदारों की जमात लगातार उसके लिए दुआ करती रही।

पतरस की रिहाई

6 फिर अदालत का दिन करीब आ गया। पतरस रात के वक्त सो रहा था। अगले दिन हेरोदेस उसे पेश करना चाहता था। पतरस दो फ्रौजियों के दरमियान लेटा हुआ था जो दो जंजीरों से उसके साथ बंधे हुए थे। दीगर फ्रौजी दरवाजे के सामने पहरा दे रहे थे। 7 अचानक एक तेज रौशनी कोठड़ी में चमक उठी और रब का एक फ्रिशता पतरस के सामने आ खड़ा हुआ। उसने उसके पहलू को झटका देकर उसे जगा दिया और कहा, “जल्दी करो! उठो!” तब पतरस की कलाईयों पर की जंजीरें गिर गईं। 8 फिर फ्रिशते ने उसे बताया, “अपने कपड़े और जूते पहन लो।” पतरस ने ऐसा ही किया। फ्रिशते ने कहा, “अब अपनी चादर ओढ़कर मेरे पीछे हो लो।” 9 चुनौचे पतरस कोठड़ी से निकलकर फ्रिशते के पीछे हो लिया अगरचे उसे अब तक समझ नहीं आई थी कि जो कुछ हो रहा है हकीकी है। उसका खयाल था कि मैं रोया देख रहा हूँ। 10 दोनों पहले पहरे से गुज़र गए, फिर दूसरे से और यों शहर में पहुँचानेवाले लोहे के गेट के पास आए। यह खुद बखुद खुल गया और वह दोनों निकलकर एक गली में चलने लगे। चलते चलते फ्रिशते ने अचानक पतरस को छोड़ दिया।

11 फिर पतरस होश में आ गया। उसने कहा, “वाकई, खुदावंद ने अपने फ्रिशते को मेरे पास भेजकर मुझे हेरोदेस के हाथ से बचाया है। अब यहूदी क्रौम की तवक्को पूरी नहीं होगी।”

12 जब यह बात उसे समझ आई तो वह यूहन्ना मरकुस की माँ मरियम के घर चला गया। वहाँ बहुत-से अफराद जमा होकर दुआ कर रहे थे। 13 पतरस ने गेट खटखटाया तो एक नौकरानी देखने के लिए आई। उसका नाम स्दी था। 14 जब उसने पतरस की आवाज़ पहचान ली तो वह खुशी के मारे गेट को खोलने के बजाए दौड़कर अंदर चली गई और बताया, “पतरस गेट पर खड़े हैं!” 15 हाज़िरीन ने कहा, “होश में आओ!” लेकिन वह अपनी बात पर अड़ी रही। फिर उन्होंने कहा, “यह उसका फ्रिशता होगा।”

16 अब तक पतरस बाहर खड़ा खटखटा रहा था। चुनौचे उन्होंने गेट को खोल दिया। पतरस को देखकर वह हैरान रह गए। 17 लेकिन उसने अपने हाथ से खामोश रहने का इशारा किया और उन्हें सारा वाकिया सुनाया कि खुदावंद मुझे किस तरह जेल से निकाल लाया है। “याकूब और बाक्री भाइयों को भी यह बताना,” यह कहकर वह कहीं और चला गया।

18 अगली सुबह जेल के फ्रौजियों में बड़ी हलचल मच गई कि पतरस का क्या हुआ है। 19 जब हेरोदेस ने उसे ढूँडा और न पाया तो उसने पहरेदारों का बयान लेकर उन्हें सज़ाए-मौत दे दी।

इसके बाद वह यहूदिया से चला गया और कैसरिया में रहने लगा।

हेरोदेस अग्रिप्पा की मौत

20 उस वक्त वह सूर और सैदा के बाशिंदों से निहायत नाराज़ था। इसलिए दोनों शहरों के नुमाइंदे मिलकर सुलह की दरखास्त करने के लिए उसके पास आए। वजह यह थी कि उनकी खुराक हेरोदेस के मुल्क से हासिल होती थी। उन्होंने बादशाह के महल के इंचार्ज ब्लस्तुस को इस पर आमादा किया कि वह उनकी मदद करे 21 और बादशाह से मिलने का दिन मुक़र्रर किया। जब वह दिन आया तो हेरोदेस अपना शाही लिबास पहनकर तख़्त पर बैठ गया और एक अलानिया तकरीर की। 22 अवाम ने नारे लगा लगाकर पुकारा, “यह अल्लाह की आवाज़ है, इनसान की नहीं।” 23 वह अभी यह कह रहे थे कि रब के फ्रिशते ने हेरोदेस को मारा, क्योंकि उसने लोगों की परस्तिश क़बूल करके अल्लाह को जलाल नहीं दिया था। वह बीमार हुआ और कीड़ों ने उसके जिस्म को खा खाकर ख़त्म कर दिया। इसी हालत में वह मर गया।

24 लेकिन अल्लाह का कलाम बढ़ता और फैलता गया।

25 इतने में बरनबास और साऊल अंताकिया का हदिया लेकर यरूशलम पहुँच चुके थे। उन्होंने पैसे वहाँ के बुजुर्गों के सुपुर्द कर दिए और फिर यूहन्ना मरकुस को साथ लेकर वापस चले गए।

13

बरनबास और साऊल को तबलीगी खिदमत के लिए चुना जाता है

1 अंताकिया की जमात में कई नबी और उस्ताद थे : बरनबास, शमौन जो काला कहलाता था, लूकियुस कुरेनी, मनाहेम जिसने बादशाह हेरोदेस अंतिपास के साथ परवरिश पाई थी और साऊल। 2 एक दिन जब वह रोज़ा रखकर खुदावंद की परस्तिश कर रहे थे तो रूहल-कुद्स उनसे हमकलाम हुआ, “बरनबास और साऊल को उस खास काम के लिए अलग करो जिसके लिए मैंने उन्हें बुलाया है।”

3 इस पर उन्होंने मज़ीद रोज़े रखे और दुआ की, फिर उन पर अपने हाथ रखकर उन्हें सख़सत कर दिया।

कुबस्स में

4 यों बरनबास और साऊल को रूहल-कुद्स की तरफ़ से भेजा गया। पहले वह साहिली शहर सलूकिया गए और वहाँ जहाज़ में बैठकर जज़ीराए-कुबस्स के लिए रवाना हुए। 5 जब वह सलमीस शहर पहुँचे तो उन्होंने यहूदियों के इबादतख़ानों में जाकर अल्लाह का कलाम सुनाया। यूहन्ना मरकुस मददगार के तौर पर उनके साथ था।

6 पूरे जज़ीर में से सफ़र करते करते वह पाफ़ुस शहर तक पहुँच गए। वहाँ उनकी मुलाकात एक यहूदी जादूगर से हुई जिसका नाम बर-ईसा था। वह झूठा नबी था 7 और जज़ीर के गवर्नर सिरगियुस पौलुस की खिदमत के लिए हाज़िर रहता था। सिरगियुस एक समझदार आदमी था। उसने बरनबास और साऊल को अपने पास बुला लिया क्योंकि वह अल्लाह का कलाम सुनने का ख़ाहिशमंद था। 8 लेकिन जादूगर इलीमास

(बर-ईसा का दूसरा नाम) ने उनकी मुखालफत करके गवर्नर को ईमान से बाज़ रखने की कोशिश की। ⁹ फिर साऊल जो पौलुस भी कहलाता है रूहल-कुदूस से मामूर हुआ और गौर से उस की तरफ देखने लगा। ¹⁰ उसने कहा, “इबलीस के फ़रज़ंद! तू हर किस्म के धोके और बर्दी से भरा हुआ है और हर इनसाफ़ का दुश्मन है। क्या तू खुदावंद की सीधी राहों को बिगाड़ने की कोशिश से बाज़ न आएगा? ¹¹ अब खुदावंद तुझे सज़ा देगा। तू अंधा होकर कुछ देर के लिए सूरज की रौशनी नहीं देखेगा।”

उसी लमहे धुंध और तारीकी जादूगर पर छा गई और वह टटोल टटोलकर किसी को तलाश करने लगा जो उस की राहनुमाई करे। ¹² यह माजरा देखकर गवर्नर ईमान लाया, क्योंकि खुदावंद की तालीम ने उसे हैरतज़दा कर दिया था।

पिसिदिया के शहर अंताकिया में मुनादी

¹³ फिर पौलुस और उसके साथी जहाज़ पर सवार हुए और पाफ़ुस से खाना होकर पिरगा शहर पहुँच गए जो पंफ़ीलिया में है। वहाँ यूहन्ना मरकुस उन्हें छोड़कर यरूशलम वापस चला गया। ¹⁴ लेकिन पौलुस और बरनबास आगे निकलकर पिसिदिया में वाक़े शहर अंताकिया पहुँचे जहाँ वह सबत के दिन यहूदी इबादतखाने में जाकर बैठ गए। ¹⁵ तौरत और नबियों के सहीफ़ों की तिलावत के बाद इबादतखाने के राहनुमाओं ने उन्हें कहला भेजा, “भाइयो, अगर आपके पास लोगों के लिए कोई नसीहत की बात है तो उसे पेश करें।” ¹⁶ पौलुस खड़ा हुआ और हाथ का इशारा करके बोलने लगा,

“इसराईल के मर्दों और खुदातरस गैरयहूदियों, मेरी बात सुनें! ¹⁷ इस कौम इसराईल के खुदा ने हमारे बापदादा को चुनकर उन्हें मिसर में ही ताक़तवर बना दिया जहाँ वह अजनबी थे। फिर वह उन्हें बड़ी कुदरत के साथ वहाँ से निकाल लाया। ¹⁸ जब वह रेगिस्तान में फिर रहे थे तो वह चालीस साल तक उन्हें बरदाशत करता रहा। ¹⁹ इसके बाद उसने मुल्के-कनान में सात कौमों को तबाह करके उनकी ज़मीन इसराईल को विरसे में दी। ²⁰ इतने में तक़रीबन 450 साल गुज़र गए।

यशुअ की मौत पर अल्लाह ने उन्हें समुएल नबी के दौर तक काज़ी दिए ताकि उनकी राहनुमाई करें। ²¹ फिर इनसे तंग आकर उन्होंने बादशाह माँगा, इसलिए उसने उन्हें साऊल बिन कीस दे दिया जो बिनयमीन के कबीले का था। साऊल चालीस साल तक उनका बादशाह रहा, ²² फिर अल्लाह ने उसे हटाकर दाऊद को तख़्त पर बिठा दिया। दाऊद वही आदमी है जिसके बारे में अल्लाह ने गवाही दी, ‘मैंने दाऊद बिन यस्सी में एक ऐसा आदमी पाया है जो मेरी सोच रखता है। जो कुछ भी मैं चाहता हूँ उसे वह करेगा।’ ²³ इसी बादशाह की औलाद में से ईसा निकला जिसका वादा अल्लाह कर चुका था और जिसे उसने इसराईल को नज़ात देने के लिए भेज दिया। ²⁴ उसके आने से पेशतर यहया बपतिस्मा देनेवाले ने एलान किया कि इसराईल की पूरी कौम को तौबा करके बपतिस्मा लेने की ज़रूरत है। ²⁵ अपनी खिदमत के इख़िताम पर उसने कहा, ‘तुम्हारे नज़दीक मैं कौन हूँ? मैं वह नहीं हूँ जो तुम समझते हो। लेकिन मेरे बाद वह आ रहा है जिसके जूतों के तसमे मैं खोलने के लायक भी नहीं हूँ।’

²⁶ भाइयो, इब्राहीम के फ़रज़ंदों और खुदा का खौफ़ माननेवाले गैरयहूदियों! नज़ात का पैग़ाम हमें ही भेज दिया गया है। ²⁷ यरूशलम के रहनेवालों और उनके राहनुमाओं ने ईसा को न पहचाना बल्कि उसे मुजरिम ठहराया। यों उनकी मारिफ़त नबियों की वह पेशगोइयाँ पूरी हुईं जिनकी तिलावत हर सबत को की जाती है। ²⁸ और अगरचे उन्हें सज़ाए-मौत देने की वजह न मिली तो भी उन्होंने पीलातुस से गुज़ारिश की कि वह उसे सज़ाए-मौत दे। ²⁹ जब उनकी मारिफ़त ईसा के बारे में तमाम पेशगोइयाँ पूरी हुईं तो उन्होंने उसे सलीब से उतारकर कब्र में रख दिया। ³⁰ लेकिन अल्लाह ने उसे मुरदों में से ज़िंदा कर दिया ³¹ और वह बहुत दिनों तक अपने उन पैरोकारों पर ज़ाहिर होता रहा जो उसके साथ गलील से यरूशलम आए थे। यह अब हमारी कौम के सामने उसके गवाह हैं। ³² और अब हम आपको यह खुशख़बरी सुनाने आए हैं कि जो वादा अल्लाह ने हमारे बापदादा के साथ किया, ³³ उसे उसने ईसा को ज़िंदा करके हमारे लिए जो उनकी औलाद हैं पूरा कर दिया है। यों दूसरे ज़बूर में लिखा है, ‘तू मेरा फ़रज़ंद है, आज मैं तेरा बाप बन गया हूँ।’ ³⁴ इस हकीकत का ज़िक्र भी कलामे-मुक़द्दस में किया गया है कि अल्लाह उसे मुरदों में से ज़िंदा करके कभी गलने-सड़ने नहीं देगा : ‘मैं तुम्हें उन मुक़द्दस और अनमिट मेहरबानियों से नवाज़ूँगा जिनका वादा दाऊद से किया था।’ ³⁵ यह बात एक और हवाले में पेश की गई है, ‘तू अपने मुक़द्दस को गलने-सड़ने की नौबत तक पहुँचने नहीं देगा।’ ³⁶ इस हवाले का ताल्लुक दाऊद के साथ नहीं है, क्योंकि दाऊद अपने ज़माने में अल्लाह की मरज़ी की खिदमत करने के बाद फ़ौत होकर अपने बापदादा से जा मिला। उस की लाश गलकर ख़त्म हो गई। ³⁷ बल्कि यह हवाला किसी और का ज़िक्र करता है, उसका जिसे अल्लाह ने ज़िंदा कर दिया और जिसका जिस्म गलने-सड़ने से दोचार न हुआ। ³⁸ भाइयो, अब मेरी यह बात जान लें, हम इसकी मुनादी करने आए हैं कि आपको इस शख्स ईसा के वसीले से अपने गुनाहों की मुआफ़ी मिलती है। मूसा की शरीअत आपको किसी तरह भी रास्तबाज़ करार नहीं दे सकती थी, ³⁹ लेकिन अब जो भी ईसा पर ईमान लाए उसे हर लिहाज़ से रास्तबाज़ करार दिया जाता है। ⁴⁰ इसलिए ख़बरदार! ऐसा न हो कि वह बात आप पर पूरी उतरे जो नबियों के सहीफ़ों में लिखी है,

⁴¹ ‘गौर करो, मज़ाक़ उड़ानेवालो!

हैरतज़दा होकर हलाक हो जाओ।

क्योंकि मैं तुम्हारे जीते-जी एक ऐसा काम करूँगा

जिसकी जब ख़बर सुनोगे

तो तुम्हें यकीन नहीं आएगा।”

42 जब पौलुस और बरनबास इबादतखाने से निकलने लगे तो लोगों ने उनसे गुज़ारिश की, “अगले सबत हमें इन बातों के बारे में मज़ीद कुछ बताएँ।” 43 इबादत के बाद बहुत-से यहूदी और यहूदी ईमान के नौमुरीद पौलुस और बरनबास के पीछे हो लिए, और दोनों ने उनसे बात करके उनकी हौसलाअफ़ज़ाई की कि अल्लाह के फ़ज़ल पर कायम रहें।

44 अगले सबत के दिन तकरीबन तमाम शहर खुदावंद का कलाम सुनने को जमा हुआ। 45 लेकिन जब यहूदियों ने हुज़ूम को देखा तो वह हसद से जल गए और पौलुस की बातों की तरदीद करके कुफ़र बकने लगे। 46 इस पर पौलुस और बरनबास ने उनसे साफ़ साफ़ कह दिया, “लाज़िम था कि अल्लाह का कलाम पहले आपको सुनाया जाए। लेकिन चूँकि आप उसे मुस्तरद करके अपने आपको अबदी ज़िंदगी के लायक नहीं समझते इसलिए हम अब ग़ैरयहूदियों की तरफ़ सूत्र करते हैं। 47 क्योंकि खुदावंद ने हमें यही हुक्म दिया जब उसने फ़रमाया, ‘मैंने तुझे दीगर अक़वाम की रौशनी बना दी है ताकि तू मेरी नजात को दुनिया की इंतहा तक पहुँचाए’।”

48 यह सुनकर ग़ैरयहूदी खुश हुए और खुदावंद के कलाम की तमज़ीद करने लगे। और जितने अबदी ज़िंदगी के लिए मुक़रर किए गए थे वह ईमान लाए।

49 यों खुदावंद का कलाम पूरे इलाके में फैल गया। 50 फिर यहूदियों ने शहर के लीडरों और यहूदी ईमान रखनेवाली कुछ बारसूख़ ग़ैरयहूदी ख़वातीन को उकसाकर लोगों को पौलुस और बरनबास को सताने पर उभारा। आखिरकार उन्हें शहर की सरहदों से निकाल दिया गया। 51 इस पर वह उनके खिलाफ़ गवाही के तौर पर अपने जूतों से गर्द झाड़कर आगे बढ़े और इकुनियुम शहर पहुँच गए। 52 और अंताकिया के शागिर्द खुशी और स्तुल-कुद्स से भरे रहे।

14

इकुनियुम में

1 इकुनियुम में पौलुस और बरनबास यहूदी इबादतखाने में जाकर इतने इख्तियार से बोले कि यहूदियों और ग़ैरयहूदियों की बड़ी तादाद ईमान ले आई। 2 लेकिन जिन यहूदियों ने ईमान लाने से इनकार किया उन्होंने ग़ैरयहूदियों को उकसाकर भाइयों के बारे में उनके खयालात ख़राब कर दिए। 3 तो भी रसूल काफ़ी देर तक वहाँ ठहरे। उन्होंने दिलेरी से खुदावंद के बारे में तालीम दी और खुदावंद ने अपने फ़ज़ल के पैग़ाम की तसदीक़ की। उसने उनके हाथों इलाही निशान और मोजिज़े रूनुमा होने दिए। 4 लेकिन शहर में आबाद लोग दो गुरोहों में बंट गए। कुछ यहूदियों के हक़ में थे और कुछ रसूलों के हक़ में।

5 फिर कुछ ग़ैरयहूदियों और यहूदियों में जोश आ गया। उन्होंने अपने लीडरों समेत फ़ैसला किया कि हम पौलुस और बरनबास की तज़लील करके उन्हें संगसार करेंगे। 6 लेकिन जब रसूलों को पता चला तो वह हिजरत करके लुकाउनिया के शहरों लुस्तरा, दिरबे और इर्दगिर्द के इलाके में 7 अल्लाह की खुशख़बरी सुनाते रहे।

लुस्तरा और दिरबे

8 लुस्तरा में पौलुस और बरनबास की मुलाकात एक आदमी से हुई जिसके पाँवों में ताक़त नहीं थी। वह पैदाइश ही से लँगड़ा था और कभी भी चल-फिर न सका था। वह वहाँ बैठा 9 उनकी बातें सुन रहा था कि पौलुस ने गौर से उस की तरफ़ देखा। उसने जान लिया कि उस आदमी में रिहाई पाने के लायक ईमान है। 10 इसलिए वह ऊँची आवाज़ से बोला, “अपने पाँवों पर खड़े हो जाएँ!” वह उछलकर खड़ा हुआ और चलने-फिरने लगा। 11 पौलुस का यह काम देखकर हुज़ूम अपनी मक़ामी ज़बान में चिल्ला उठा, “इन आदमियों की शक्ल में देवता हमारे पास उतर आए हैं।” 12 उन्होंने बरनबास को यूनानी देवता ज़ियूस करार दिया और पौलुस को देवता हिरमैस, क्योंकि कलाम सुनाने की खिदमत ज़्यादातर वह अंजाम देता था। 13 इस पर शहर से बाहर वाके ज़ियूस के मंदिर का पुजारी शहर के दरवाज़े पर बैल और फूलों के हार ले आया और हुज़ूम के साथ कुरबानियाँ चढ़ाने की तैयारियाँ करने लगा।

14 यह सुनकर बरनबास और साऊल रसूल अपने कपड़ों को फाड़कर हुज़ूम में जा घुसे और चिल्लाने लगे, 15 “मर्दों, यह आप क्या कर रहे हैं? हम भी आप जैसे इंसान हैं। हम तो आपको अल्लाह की यह खुशख़बरी सुनाने आए हैं कि आप इन बेकार चीज़ों को छोड़कर ज़िंदा खुदा की तरफ़ रूजू फ़रमाएँ जिसने आसमानो-ज़मीन, समुंदर और जो कुछ उनमें है पैदा किया है। 16 माज़ी में उसने तमाम ग़ैरयहूदी कौमों को खुला छोड़ दिया था कि वह अपनी अपनी राह पर चलें। 17 तो भी उसने ऐसी चीज़ें आपके पास रहने दी हैं जो उस की गवाही देती हैं। उस की मेहरबानी इससे ज़ाहिर होती है कि वह आपको बारिश भेजकर हर मौसम की फ़सलें मुहैया करता है और आप सेर होकर खुशी से भर जाते हैं।” 18 इन अलफ़ाज़ के बावजूद पौलुस और बरनबास ने बड़ी मुश्किल से हुज़ूम को उन्हें कुरबानियाँ चढ़ाने से रोका।

19 फिर कुछ यहूदी पिसिदिया के अंताकिया और इकुनियुम से वहाँ आए और हुज़ूम को अपनी तरफ़ मायल किया। उन्होंने पौलुस को संगसार किया और शहर से बाहर घसीटकर ले गए। उनका खयाल था कि वह मर गया है, 20 लेकिन जब शागिर्द उसके गिर्द जमा हुए तो वह उठकर शहर की तरफ़ वापस चल पड़ा। अगले दिन वह बरनबास समेत दिरबे चला गया।

शाम के अंताकिया में वापसी

21 दिरबे में उन्होंने अल्लाह की खुशख़बरी सुनाकर बहुत-से शागिर्द बनाए। फिर वह मुड़कर लुस्तरा, इकुनियुम और पिसिदिया के अंताकिया वापस आए। 22 हर जगह उन्होंने शागिर्दों के दिल मज़बूत करके उनकी हौसलाअफ़ज़ाई की कि वह ईमान में साबितक़दम रहें। उन्होंने कहा,

“लाज़िम है कि हम बहुत-सी मुसीबतों में से गुज़रकर अल्लाह की बादशाही में दाखिल हों।” 23 पौलुस और बरनबास ने हर जमात में बुजुर्ग भी मुक़र्रर किए। उन्होंने रोज़े रखकर दुआ की और उन्हें उस खुदावंद के सुपुर्द किया जिस पर वह ईमान लाए थे।

24 यों पिसिदिया के इलाके में से सफ़र करते करते वह पंफ़ीलिया पहुँचे। 25 उन्होंने पिरगा में कलामे-मुक़द्दस सुनाया और फिर उतरकर अन्तलिया पहुँचे। 26 वहाँ से वह जहाज़ में बैठकर शाम के शहर अन्ताकिया के लिए रवाना हुए, उस शहर के लिए जहाँ ईमानदारों ने उन्हें इस तबलीगी सफ़र के लिए अल्लाह के फ़ज़ल के सुपुर्द किया था। यों उन्होंने अपनी इस खिदमत को पूरा किया।

27 अन्ताकिया पहुँचकर उन्होंने ईमानदारों को जमा करके उन तमाम कामों का बयान किया जो अल्लाह ने उनके वसीले से किए थे। साथ साथ उन्होंने यह भी बताया कि अल्लाह ने किस तरह ग़ैरयहूदियों के लिए भी ईमान का दरवाज़ा खोल दिया है। 28 और वह काफ़ी देर तक वहाँ के शागिर्दों के पास ठहरे रहे।

15

यरूशलम में मुशावरती इजतिमा

1 उस वक़्त कुछ आदमी यहूदिया से आकर शाम के अन्ताकिया में भाइयों को यह तालीम देने लगे, “लाज़िम है कि आपका मूसा की शरीअत के मुताबिक़ खतना किया जाए, वरना आप नजात नहीं पा सकेंगे।” 2 इससे उनके और बरनबास और पौलुस के दरमियान नाइतफ़ाकी पैदा हो गई और दोनों उनके साथ खूब बहस-मुबाहसा करने लगे। आखिरकार जमात ने पौलुस और बरनबास को मुक़र्रर किया कि वह चंद एक और मक़ामी ईमानदारों के साथ यरूशलम जाएँ और वहाँ के रसूलों और बुजुर्गों को यह मामला पेश करें।

3 चुनौचे जमात ने उन्हें रवाना किया और वह फ़ेनीके और सामरिया में से गुज़रे। रास्ते में उन्होंने मक़ामी ईमानदारों को तफ़सील से बताया कि ग़ैरयहूदी किस तरह खुदावंद की तरफ़ रूजू ला रहे हैं। यह सुनकर तमाम भाई निहायत खुश हुए। 4 जब वह यरूशलम पहुँच गए तो जमात ने अपने रसूलों और बुजुर्गों समेत उनका इस्तक़बाल किया। फिर पौलुस और बरनबास ने सब कुछ बयान किया जो उनकी मारिफ़त हुआ था। 5 यह सुनकर कुछ ईमानदार खड़े हुए जो फ़रीसी फ़िरके में से थे। उन्होंने कहा, “लाज़िम है कि ग़ैरयहूदियों का खतना किया जाए और उन्हें हुक्म दिया जाए कि वह मूसा की शरीअत के मुताबिक़ जिंदगी गुज़ारें।”

6 रसूल और बुजुर्ग इस मामले पर ग़ौर करने के लिए जमा हुए। 7 बहुत बहस-मुबाहसा के बाद पतरस खड़ा हुआ और कहा, “भाइयो, आप जानते हैं कि अल्लाह ने बहुत देर हुई आपमें से मुझे चुन लिया कि ग़ैरयहूदियों को अल्लाह की खुशख़बरी सुनाऊँ ताकि वह ईमान लाएँ। 8 और अल्लाह ने जो दिलों को जानता है इस बात की तसदीक़ की है, क्योंकि उसने उन्हें वही रूहल-कुद्स बरखा है जो उसने हमें भी दिया था। 9 उसने हममें और उनमें कोई भी फ़रक़ न रखा बल्कि ईमान से उनके दिलों को भी पाक कर दिया। 10 चुनौचे आप अल्लाह को इसमें क्यों आजमा रहे हैं कि आप ग़ैरयहूदी शागिर्दों की गरदन पर एक ऐसा जुआ रखना चाहते हैं जो न हम और न हमारे बापदादा उठा सकते थे? 11 देखें, हम तो ईमान रखते हैं कि हम सब एक ही तरीक़े यानी खुदावंद ईसा के फ़ज़ल ही से नजात पाते हैं।”

12 तमाम लोग चुप रहे तो पौलुस और बरनबास उन्हें उन इलाही निशानों और मोज़िज़ों के बारे में बताने लगे जो अल्लाह ने उनकी मारिफ़त ग़ैरयहूदियों के दरमियान किए थे। 13 जब उनकी बात ख़त्म हुई तो याक़ूब ने कहा, “भाइयो, मेरी बात सुनें! 14 शमौन ने बयान किया है कि अल्लाह ने किस तरह पहला क़दम उठाकर ग़ैरयहूदियों पर अपनी फ़िक़रमंदी का इज़हार किया और उनमें से अपने लिए एक क़ौम चुन ली। 15 और यह बात नबियों की पेशगोइयों के भी मुताबिक़ है। चुनौचे लिखा है,

16 ‘इसके बाद मैं वापस आकर
दाऊद के तबाहशुदा घर को नए सिरे से तामीर करूँगा,
मैं उसके खंडरात दुबारा तामीर करके बहाल करूँगा

17 ताकि लोगों का बचा-खुचा हिस्सा और वह तमाम क़ौमें
मुझे ढूँढ़ें जिन पर मेरे नाम का ठप्पा लगा है।

यह रब का फ़रमान है, और वह यह करेगा भी’

18 बल्कि यह उसे अज़ल से मालूम है।

19 यही पेशे-नज़र रखकर मेरी राय यह है कि हम उन ग़ैरयहूदियों को जो अल्लाह की तरफ़ रूजू कर रहे हैं ग़ैरज़रूरी तकलीफ़ न दें। 20 इसके बजाए बेहतर यह है कि हम उन्हें लिखकर हिदायत दें कि वह इन चीज़ों से परहेज़ करें : ऐसे खानों से जो बुतों को पेश किए जाने से नापाक हैं, जिनाकारी से, ऐसे जानवरों का गोश्त खाने से जिन्हें ग़ला घँटकर मार दिया गया हो और खून खाने से। 21 क्योंकि मूसा की शरीअत की मुनादी करनेवाले कई नसलों से हर शहर में रह रहे हैं। जिस शहर में भी जाएँ हर सबत के दिन शरीअत की तिलावत की जाती है।”

ग़ैरयहूदी ईमानदारों के नाम खत

22 फिर रसूलों और बुजुर्गों ने पूरी जमात समेत फ़ैसला किया कि हम अपने में से कुछ आदमी चुनकर पौलुस और बरनबास के हमराह शाम के शहर अन्ताकिया भेज दें। दो को चुना गया जो भाइयों में राहनुमा थे, यहूदाह बरसब्बा और सीलास। 23 उनके हाथ उन्होंने यह खत भेजा,
“यरूशलम के रसूलों और बुजुर्गों की तरफ़ से जो आपके भाई हैं।

अजीज गैरयहूदी भाइयों जो अंताकिया, शाम और किलिकिया में रहते हैं, अस्सलामु अलैकुम!

24 सुना है कि हममें से कुछ लोगों ने आपके पास आकर आपको परेशान करके बेचैन कर दिया है, हालाँकि हमने उन्हें नहीं भेजा था।
25 इसलिए हम सब इस पर मुतफिक हुए कि कुछ आदमियों को चुनकर अपने प्यारे भाइयों बरनबास और पौलुस के हमराह आपके पास भेजें।
26 बरनबास और पौलुस ऐसे लोग हैं जिन्होंने हमारे खुदावंद ईसा मसीह की खातिर अपनी जान खतरे में डाल दी है। 27 उनके साथी यहूदाह और सीलास हैं जिनको हमने इसलिए भेजा कि वह जबानी भी उन बातों की तसदीक करें जो हमने लिखी हैं।

28 हम और स्तुल-कुदूस इस पर मुतफिक हुए हैं कि आप पर सिवाए इन ज़रूरी बातों के कोई बोझ न डालें : 29 बुतों को पेश किया गया खाना मत खाना, खून मत खाना, ऐसे जानवरों का गोश्त मत खाना जो गला घूटकर मार दिए गए हों। इसके अलावा ज़िनाकारी न करें। इन चीजों से बाज़ रहेंगे तो अच्छा करेंगे। खुदा हाफिज़।”

30 पौलुस, बरनबास और उनके साथी स्रवसत होकर अंताकिया चले गए। वहाँ पहुँचकर उन्होंने जमात इकट्ठी करके उसे खत दे दिया।
31 उसे पढ़कर ईमानदार उसके हौसलाअफ़ज़ा पैग़ाम पर खुश हुए। 32 यहूदाह और सीलास ने भी जो खुद नबी थे भाइयों की हौसलाअफ़ज़ाई और मज़बूती के लिए काफ़ी बातें कीं। 33 वह कुछ देर के लिए वहाँ ठहरे, फिर मक़ामी भाइयों ने उन्हें सलामती से अलविदा कहा ताकि वह भेजनेवालों के पास वापस जा सकें। 34 [लेकिन सीलास को वहाँ ठहरना अच्छा लगा।]

35 पौलुस और बरनबास खुद कुछ और देर अंताकिया में रहे। वहाँ वह बहुत-से और लोगों के साथ खुदावंद के कलाम की तालीम देते और उस की मुनादी करते रहे।

पौलुस और बरनबास जुदा हो जाते हैं

36 कुछ दिनों के बाद पौलुस ने बरनबास से कहा, “आओ, हम मुड़कर उन तमाम शहरों में जाएँ जहाँ हमने खुदावंद के कलाम की मुनादी की है और वहाँ के भाइयों से मुलाक़ात करके उनका हाल मालूम करें।” 37 बरनबास मुतफिक होकर यूहन्ना मरकुस को साथ ले जाना चाहता था, 38 लेकिन पौलुस ने इसार किया कि वह साथ न जाए, क्योंकि यूहन्ना मरकुस पहले दौर के दौरान ही पंफ़ीलिया में उन्हें छोड़कर उनके साथ ख़िदमत करने से बाज़ आया था। 39 इससे उनमें इतना सख़्त इख़िलाफ़ पैदा हुआ कि वह एक दूसरे से जुदा हो गए। बरनबास यूहन्ना मरकुस को साथ लेकर जहाज़ में बैठ गया और कुबस्स चला गया, 40 जबकि पौलुस ने सीलास को ख़िदमत के लिए चुन लिया। मक़ामी भाइयों ने उन्हें खुदावंद के फ़ज़ल के सुपुर्द किया और वह रवाना हुए। 41 यों पौलुस जमातों को मज़बूत करते करते शाम और किलिकिया में से गुज़रा।

16

तीमुथियुस का चुनाव

1 चलते चलते वह दिरबे पहुँचा, फिर लुस्तरा। वहाँ एक शागिर्द बनाम तीमुथियुस रहता था। उस की यहूदी माँ ईमान लाई थी जबकि बाप यूनानी था। 2 लुस्तरा और इकुनियुम के भाइयों ने उस की अच्छी रिपोर्ट दी, 3 इसलिए पौलुस उसे सफ़र पर अपने साथ ले जाना चाहता था। उस इलाके के यहूदियों का लिहाज़ करके उसने तीमुथियुस का खतना करवाया, क्योंकि सब लोग इससे वाकिफ़ थे कि उसका बाप यूनानी है। 4 फिर शहर बशहर जाकर उन्होंने मक़ामी जमातों को यस्शलम के रसूलों और बुज़ुर्गों के वह फैसले पहुँचाए जिनके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारनी थी। 5 यों जमातें ईमान में मज़बूत हुईं और तादाद में रोज़ बरोज़ बढ़ती गईं।

त्रोआस में पौलुस की रोया

6 स्तुल-कुदूस ने उन्हें सूबा आसिया में कलामे-मुक़द्दस की मुनादी करने से रोक लिया, इसलिए वह फ़रुगिया और गलतिया के इलाके में से गुज़रे। 7 मूसिया के करीब आकर उन्होंने शिमाल की तरफ़ सूबा बिथुनिया में दाख़िल होने की कोशिश की। लेकिन ईसा के रूह ने उन्हें वहाँ भी जाने न दिया, 8 इसलिए वह मूसिया में से गुज़रकर बंदरगाह त्रोआस पहुँचे। 9 वहाँ पौलुस ने रात के वक़्त रोया देखी जिसमें शिमाली यूनान में वाके सूबा मकिदुनिया का एक आदमी खड़ा उससे इलतमास कर रहा था, “समुंदर को पार करके मकिदुनिया आएँ और हमारी मदद करें!” 10 ज्योंही उसने यह रोया देखी हम मकिदुनिया जाने की तैयारियाँ करने लगे। क्योंकि हमने रोया से यह नतीजा निकाला कि अल्लाह ने हमें उस इलाके के लोगों को खुशख़बरी सुनाने के लिए बुलाया है।

फिलिप्पी में लुदिया की तबदीली

11 हम त्रोआस में जहाज़ पर सवार होकर सीधे जज़ीराए-समुतराके के लिए रवाना हुए। फिर अगले दिन आगे निकलकर नयापुलिस पहुँचे। 12 वहाँ जहाज़ से उतरकर हम फिलिप्पी चले गए, जो सूबा मकिदुनिया के उस ज़िले का सदर शहर था और रोमी नौआबादी था। इस शहर में हम कुछ दिन ठहरे। 13 सबत के दिन हम शहर से निकलकर दरिया के किनारे गए, जहाँ हमारी तवक्को थी कि यहूदी दुआ के लिए जमा होंगे। वहाँ हम बैठकर कुछ ख़वातीन से बात करने लगे जो इकट्ठी हुई थीं। 14 उनमें से थुआतीरा शहर की एक औरत थी जिसका नाम लुदिया था। उसका पेशा क्रीमती अरगवानी रंग के कपड़े की तिजारत था और वह अल्लाह की परस्तिश करनेवाली गैरयहूदी थी। खुदावंद ने उसके दिल को खोल दिया, और उसने पौलुस की बातों पर तवज्जुह दी। 15 उसके और उसके घरवालों के बपतिस्मा लेने के बाद उसने हमें अपने घर में

ठहरने की दावत दी। उसने कहा, “अगर आप समझते हैं कि मैं वाकई खुदावंद पर ईमान लाई हूँ तो मेरे घर आकर ठहरें।” यों उसने हमें मजबूर किया।

फ़िलिप्पी की जेल में

16 एक दिन हम दुआ की जगह की तरफ जा रहे थे कि हमारी मुलाकात एक लौड़ी से हुई जो एक बदरूह के ज़रीए लोगों की किस्मत का हाल बताती थी। इससे वह अपने मालिकों के लिए बहुत-से पैसे कमाती थी। 17 वह पौलुस और हमारे पीछे पड़कर चीख चीखकर कहने लगी, “यह आदमी अल्लाह तआला के खादिम हैं जो आपको नजात की राह बताने आए हैं।” 18 यह सिलसिला रोज़ बरोज़ जारी रहा। आखिरकार पौलुस तंग आकर मुड़ा और बदरूह से कहा, “मैं तुझे ईसा मसीह के नाम से हुक्म देता हूँ कि लड़की में से निकल जा!” उसी लमहे वह निकल गई।

19 उसके मालिकों को मालूम हुआ कि पैसे कमाने की उम्मीद जाती रही तो वह पौलुस और सीलास को पकड़कर चौक में बैठे इक़तिदार रखनेवालों के सामने घसीट ले गए। 20 उन्हें मजिस्ट्रेटों के सामने पेश करके वह चिल्लाने लगे, “यह आदमी हमारे शहर में हलचल पैदा कर रहे हैं। यह यहूदी हैं 21 और ऐसे रस्मो-रिवाज का प्रचार कर रहे हैं जिन्हें कबूल करना और अदा करना हम रोमियों के लिए जायज़ नहीं।”

22 हुजूम भी आ मिला और पौलुस और सीलास के खिलाफ़ बातें करने लगा।

इस पर मजिस्ट्रेटों ने हुक्म दिया कि उनके कपड़े उतारे और उन्हें लाठी से मारा जाए। 23 उन्होंने उनकी खूब पिटाई करवाकर उन्हें कैदखाने में डाल दिया और दारोगे से कहा कि एहतियात से उनकी पहरादारी करो। 24 चुनौचे उसने उन्हें जेल के सबसे अंदरूनी हिस्से में ले जाकर उनके पाँव काठ में डाल दिए।

25 अब ऐसा हुआ कि पौलुस और सीलास आधी रात के करीब दुआ कर रहे और अल्लाह की तमजीद के गीत गा रहे थे और बाक़ी कैदी सुन रहे थे। 26 अचानक बड़ा ज़लज़ला आया और कैदखाने की पूरी इमारत बुनियादों तक हिल गई। फ़ौरन तमाम दरवाज़े खुल गए और तमाम कैदियों की ज़ंजीरें खुल गईं। 27 दारोगा जाग उठा। जब उसने देखा कि जेल के दरवाज़े खुले हैं तो वह अपनी तलवार निकालकर खुदकुशी करने लगा, क्योंकि ऐसा लग रहा था कि कैदी फ़रार हो गए हैं। 28 लेकिन पौलुस चिल्ला उठा, “मत करें! अपने आपको नुकसान न पहुँचाएँ। हम सब यहीं हैं।”

29 दारोगे ने चरागा मँगवा लिया और भागकर अंदर आया। लरज़ते लरज़ते वह पौलुस और सीलास के सामने गिर गया। 30 फिर उन्हें बाहर ले जाकर उसने पूछा, “साहबो, मुझे नजात पाने के लिए क्या करना है?”

31 उन्होंने जवाब दिया, “खुदावंद ईसा पर ईमान लाएँ तो आप और आपके घराने को नजात मिलेगी।” 32 फिर उन्होंने उसे और उसके तमाम घरवालों को खुदावंद का कलाम सुनाया। 33 और रात की उसी घड़ी दारोगे ने उन्हें ले जाकर उनके ज़ख़मों को धोया। इसके बाद उसका और उसके सारे घरवालों का बपतिस्मा हुआ। 34 फिर उसने उन्हें अपने घर में लाकर खाना खिलाया। अल्लाह पर ईमान लाने के बाइस उसने और उसके तमाम घरवालों ने बड़ी खुशी मनाई।

35 जब दिन चढ़ा तो मजिस्ट्रेटों ने अपने अफ़सरों को दारोगे के पास भिजवा दिया कि वह पौलुस और सीलास को रिहा करे।

36 चुनौचे दारोगे ने पौलुस को उनका पैगाम पहुँचा दिया, “मजिस्ट्रेटों ने हुक्म दिया है कि आप और सीलास को रिहा कर दिया जाए। अब निकलकर सलामती से चले जाएँ।”

37 लेकिन पौलुस ने एतराज़ किया। उसने उनसे कहा, “उन्होंने हमें अवाम के सामने ही और अदालत में पेश किए बग़ैर मारकर जेल में डाल दिया है हालाँकि हम रोमी शहरी हैं। और अब वह हमें चुपके से निकालना चाहते हैं? हरगिज़ नहीं! अब वह खुद आएँ और हमें बाहर ले जाएँ।”

38 अफ़सरों ने मजिस्ट्रेटों को यह ख़बर पहुँचाई। जब उन्हें मालूम हुआ कि पौलुस और सीलास रोमी शहरी हैं तो वह घबरा गए। 39 वह खुद उन्हें समझाने के लिए आए और जेल से बाहर लाकर गुज़ारिश की कि शहर को छोड़ दें। 40 चुनौचे पौलुस और सीलास जेल से निकल आए। लेकिन पहले वह लुदिया के घर गए जहाँ वह भाइयों से मिले और उनकी हौसलाअफ़ज़ाई की। फिर वह चले गए।

17

थिस्सलुनीके में

1 अंफ़िपुलिस और अपुल्लोनिया से होकर पौलुस और सीलास थिस्सलुनीके शहर पहुँच गए जहाँ यहूदी इबादतखाना था। 2 अपनी आदत के मुताबिक़ पौलुस उसमें गया और लगातार तीन सबतों के दौरान कलामे-मुक़द्दस से दलायल दे देकर यहूदियों को कायल करने की कोशिश करता रहा। 3 उसने कलामे-मुक़द्दस की तशरीह करके साबित किया कि मसीह का दुख उठाना और मुरदों में से जी उठना लाज़िम था। उसने कहा, “जिस ईसा की मैं ख़बर दे रहा हूँ, वही मसीह है।” 4 यहूदियों में से कुछ कायल होकर पौलुस और सीलास से वाबस्ता हो गए, जिनमें खुदातरस यूनानियों की बड़ी तादाद और बारसूख़ ख़वातीन भी शरीक थीं।

5 यह देखकर बाक़ी यहूदी हसद करने लगे। उन्होंने गलियों में आवारा फिरनेवाले कुछ शरीर आदमी इक़ट्टे करके जुलूस निकाला और शहर में हलचल मचा दी। फिर यासोन के घर पर हमला करके उन्होंने पौलुस और सीलास को ढूँडा ताकि उन्हें अवामी इज़लास के सामने पेश करें।

6 लेकिन वह वहाँ नहीं थे, इसलिए वह यासोन और चंद एक और ईमानदार भाइयों को शहर के मजिस्ट्रेटों के सामने लाए। उन्होंने चीखकर कहा, “यह लोग पूरी दुनिया में गड़बड़ पैदा कर रहे हैं और अब यहाँ भी आ गए हैं। 7 यासोन ने उन्हें अपने घर में ठहराया है। यह सब शहनशाह के अहकाम की खिलाफ़वरज़ी कर रहे हैं, क्योंकि यह किसी और को बादशाह मानते हैं जिसका नाम ईसा है।” 8 इस तरह की बातों से उन्होंने हज़ूम और मजिस्ट्रेटों में बड़ा हंगामा पैदा किया। 9 चुनौचे मजिस्ट्रेटों ने यासोन और दूसरों से ज़मानत ली और फिर उन्हें छोड़ दिया।

बेरिया में

10 उसी रात भाइयों ने पौलुस और सीलास को बेरिया भेज दिया। वहाँ पहुँचकर वह यहूदी इबादतख़ाने में गए। 11 यह लोग थिस्सलुनीके के यहूदियों की निसबत ज़्यादा खुले ज़हन के थे। यह बड़े शौक से पौलुस और सीलास की बातें सुनते और रोज़ बरोज़ कलामे-मुक़द्दस की तफ़्तीश करते रहे कि क्या वाकई ऐसा है जैसा हमें बताया जा रहा है? 12 नतीजे में इनमें से बहुत-से यहूदी ईमान लाए और साथ साथ बहुत-सी बारसूख यूनानी ख़वातीन और मर्द भी। 13 लेकिन फिर थिस्सलुनीके के यहूदियों को यह ख़बर मिली कि पौलुस बेरिया में अल्लाह का कलाम सुना रहा है। वह वहाँ भी पहुँचे और लोगों को उकसाकर हलचल मचा दी। 14 इस पर भाइयों ने पौलुस को फ़ौरन साहिल पर भेज दिया, लेकिन सीलास और तीमुथियुस बेरिया में पीछे रह गए। 15 जो आदमी पौलुस को साहिल तक पहुँचाने आए थे वह उसके साथ अथेने तक गए। वहाँ वह उसे छोड़कर वापस चले गए। उनके हाथ पौलुस ने सीलास और तीमुथियुस को ख़बर भेजी कि जितनी जल्दी हो सके बेरिया को छोड़कर मेरे पास आ जाएँ।

अथेने में

16 अथेने शहर में सीलास और तीमुथियुस का इंतज़ार करते करते पौलुस बड़े जोश में आ गया, क्योंकि उसने देखा कि पूरा शहर बुतों से भरा हुआ है। 17 वह यहूदी इबादतख़ाने में जाकर यहूदियों और ख़ुदातरस ग़ैरयहूदियों से बहस करने लगा। साथ साथ वह रोज़ाना चौक में भी जाकर वहाँ पर मौजूद लोगों से गुफ़्तगू करता रहा। 18 इपिकूरी और स्तोयकी फ़लसफ़ी * भी उससे बहस करने लगे। जब पौलुस ने उन्हें ईसा और उसके जी उठने की खुशख़बरी सुनाई तो बाज़ ने पूछा, “यह बकवासी इन बातों से क्या कहना चाहता है जो इसने इधर उधर से चुनकर जोड़ दी हैं?”

दूसरों ने कहा, “लगता है कि वह अजनबी देवताओं की ख़बर दे रहा है।” 19 वह उसे साथ लेकर शहर की मजलिसे-शूरा में गए जो अरियोपगुस नामी पहाड़ी पर मुनअक़िद होती थी। उन्होंने दरखास्त की, “क्या हमें मालूम हो सकता है कि आप कौन-सी नई तालीम पेश कर रहे हैं? 20 आप तो हमें अजीबो-ग़रीब बातें सुना रहे हैं। अब हम उनका सही मतलब जानना चाहते हैं।” 21 (बात यह थी कि अथेने के तमाम बाशिंदे शहर में रहनेवाले परदेसियों समेत अपना पूरा वक़्त इसमें सर्फ़ करते थे कि ताज़ा ताज़ा ख़यालात सुनें या सुनाएँ।)

22 पौलुस मजलिस में खड़ा हुआ और कहा, “अथेने के हज़ारात, मैं देखता हूँ कि आप हर लिहाज़ से बहुत मज़हबी लोग हैं। 23 क्योंकि जब मैं शहर में से गुज़र रहा था तो उन चीज़ों पर गौर किया जिनकी पूजा आप करते हैं। चलते चलते मैंने एक ऐसी कुरबानगाह भी देखी जिस पर लिखा था, ‘नामालूम ख़ुदा की कुरबानगाह।’ अब मैं आपको उस ख़ुदा की ख़बर देता हूँ जिसकी पूजा आप करते तो हैं मगर आप उसे जानते नहीं। 24 यह वह ख़ुदा है जिसने दुनिया और उसमें मौजूद हर चीज़ की तख़लीक की। वह आसमानो-ज़मीन का मालिक है, इसलिए वह इनसानी हाथों के बनाए हुए मंदिरों में सुकूनत नहीं करता। 25 और इनसानी हाथ उस की ख़िदमत नहीं कर सकते, क्योंकि उसे कोई भी चीज़ दरकार नहीं होती। इसके बजाए वही सबको ज़िंदगी और सौंस मुहैया करके उनकी तमाम ज़रूरियात पूरी करता है। 26 उसी ने एक शख्स को खलक किया ताकि दुनिया की तमाम क़ौमों उससे निकलकर पूरी दुनिया में फैल जाएँ। उसने हर क़ौम के औकात और सरहदें भी मुक़र्रर कीं। 27 मक़सद यह था कि वह ख़ुदा को तलाश करें। उम्मीद यह थी कि वह टटोल टटोलकर उसे पाएँ, अगरचे वह हममें से किसी से दूर नहीं होता। 28 क्योंकि उसमें हम जीते, हरकत करते और वुजूद रखते हैं। आपके अपने कुछ शायरों ने भी फ़रमाया है, ‘हम भी उसके फ़रज़ंद हैं।’ 29 अब चूँकि हम अल्लाह के फ़रज़ंद हैं इसलिए हमारा उसके बारे में तसव्वुर यह नहीं होना चाहिए कि वह सोने, चाँदी या पत्थर का कोई मुजस्समा हो जो इनसान की महारत और डिज़ायन से बनाया गया हो। 30 माज़ी में ख़ुदा ने इस किस्म की जहालत को नज़रंदाज़ किया, लेकिन अब वह हर जगह के लोगों को तौबा का हुक्म देता है। 31 क्योंकि उसने एक दिन मुक़र्रर किया है जब वह इनसाफ़ से दुनिया की अदालत करेगा। और वह यह अदालत एक शख्स की मारिफ़त करेगा जिसको वह मुतैयिन कर चुका है और जिसकी तसदीक उसने इससे की है कि उसने उसे मुरदों में से ज़िंदा कर दिया है।”

32 मुरदों की क़ियामत का ज़िक्र सुनकर बाज़ ने पौलुस का मज़ाक़ उड़ाया। लेकिन बाज़ ने कहा, “हम किसी और वक़्त इसके बारे में आपसे मज़ीद सुनना चाहते हैं।” 33 फिर पौलुस मजलिस से निकलकर चला गया। 34 कुछ लोग उससे वाबस्ता होकर ईमान ले आए। उनमें से मजलिसे-शूरा का मेंबर दियोनीसियुस था और एक औरत बनाम दमरिस। कुछ और भी थे।

18

कुरिथुस में

* 17:18 यानी स्वाक़ियत के फ़लसफ़ी।

1 इसके बाद पौलुस अथेने को छोड़कर कुरिथुस शहर आया। 2 वहाँ उस की मुलाकात एक यहूदी से हुई जिसका नाम अकविला था। वह पुंतुस का रहनेवाला था और थोड़ी देर पहले अपनी बीवी प्रिसकिल्ला समेत इटली से आया था। वजह यह थी कि शहनशाह क्लौडियुस ने हुक्म सादिर किया था कि तमाम यहूदी रोम को छोड़कर चले जाएँ। उन लोगों के पास पौलुस गया 3 और चूँकि उनका पेशा भी खैमे सिलाई करना था इसलिए वह उनके घर ठहरकर रोज़ी कमाने लगा। 4 साथ साथ उसने हर सबत को यहूदी इबादतखाने में तालीम देकर यहूदियों और यूनानियों को कायल करने की कोशिश की।

5 जब सीलास और तीमुथियुस मकिदुनिया से आए तो पौलुस अपना पूरा वक्त कलाम सुनाने में सर्फ करने लगा। उसने यहूदियों को गवाही दी कि ईसा कलामे-मुकद्दस में बयान किया गया मसीह है। 6 लेकिन जब वह उस की मुखालफ़त करके उस की तज़लील करने लगे तो उसने एहतजाज में अपने कपड़ों से गर्द झाड़कर कहा, “आप खुद अपनी हलाकत के ज़िम्मादार हैं, मैं बेक़सूर हूँ। अब से मैं ग़ैरयहूदियों के पास जाया करूँगा।” 7 फिर वह वहाँ से निकलकर इबादतखाने के साथवाले घर में गया। वहाँ तितुस यूसतुस रहता था जो यहूदी नहीं था, लेकिन खुदा का ख़ौफ़ मानता था। 8 और क्रिसपुस जो इबादतखाने का राहनुमा था अपने घराने समेत खुदावंद पर ईमान लाया। कुरिथुस के बहुत सारे और लोगों ने भी जब पौलुस की बातें सुनीं तो ईमान लाए और बपतिस्मा लिया।

9 एक रात खुदावंद रोया में पौलुस से हमकलाम हुआ, “मत डर! कलाम करता जा और ख़ामोश न हो, 10 क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ। कोई हमला करके तुझे नुक़सान नहीं पहुँचाएगा, क्योंकि इस शहर में मेरे बहुत-से लोग हैं।” 11 फिर पौलुस मज़ीद डेढ साल वहाँ ठहरकर लोगों को अल्लाह का कलाम सिखाता रहा।

12 उन दिनों में जब गल्लियो सूबा अख़या का गवर्नर था तो यहूदी मुतहिद होकर पौलुस के खिलाफ़ जमा हुए और उसे अदालत में गल्लियो के सामने लाए। 13 उन्होंने कहा, “यह आदमी लोगों को ऐसे तरीक़े से अल्लाह की इबादत करने पर उकसा रहा है जो हमारी शरीअत के खिलाफ़ है।”

14 पौलुस जवाब में कुछ कहने को था कि गल्लियो खुद यहूदियों से मुखातिब हुआ, “सुनें, यहूदी मर्दों! अगर आपका इलज़ाम कोई नाइनसाफी या संगीन ज़ुर्म होता तो आपकी बात काबिले-बरदाश्त होती। 15 लेकिन आपका झगड़ा मज़हबी तालीम, नामों और आपकी यहूदी शरीअत से ताल्लुक रखता है, इसलिए उसे खुद हल करें। मैं इस मामले में फ़ैसला करने के लिए तैयार नहीं हूँ।” 16 यह कहकर उसने उन्हें अदालत से भगा दिया। 17 इस पर हुज़ूम ने यहूदी इबादतखाने के राहनुमा सोसथिनेस को पकड़कर अदालत के सामने उस की पिटाई की। लेकिन गल्लियो ने परवा न की।

अंताकिया तक वापसी का सफ़र

18 इसके बाद भी पौलुस बहुत दिन कुरिथुस में रहा। फिर भाइयों को ख़ैरबाद कहकर वह करीब के शहर किंखरिया गया जहाँ उसने किसी मन्नत के पूरे होने पर अपने सर के बाल मुँडवा दिए। इसके बाद वह प्रिसकिल्ला और अकविला के साथ जहाज़ पर सवार होकर मुल्के-शाम के लिए रवाना हुआ। 19 पहले वह इफ़िसुस पहुँचे जहाँ पौलुस ने प्रिसकिल्ला और अकविला को छोड़ दिया। वहाँ भी उसने यहूदी इबादतखाने में जाकर यहूदियों से बहस की। 20 उन्होंने उससे दरखास्त की कि मज़ीद वक्त उनके साथ गुज़ारे, लेकिन उसने इनकार किया 21 और उन्हें ख़ैरबाद कहकर कहा, “अगर अल्लाह की मरज़ी हो तो मैं आपके पास वापस आऊँगा।” फिर वह जहाज़ पर सवार होकर इफ़िसुस से रवाना हुआ।

22 सफ़र करते करते वह कैसरीया पहुँच गया, जहाँ से वह यरूशलम जाकर मकामी जमात से मिला। इसके बाद वह अंताकिया वापस चला गया 23 जहाँ वह कुछ देर ठहरा। फिर आगे निकलकर वह गलतिया और फ़रुगिया के इलाक़े में से गुज़रते हुए वहाँ के तमाम ईमानदारों को मज़बूत करता गया।

अपुल्लोस इफ़िसुस और कुरिथुस में

24 इतने में एक फ़सीह यहूदी जिसे कलामे-मुकद्दस का ज़बरदस्त इल्म था इफ़िसुस पहुँच गया था। उसका नाम अपुल्लोस था। वह मिसर के शहर इस्कंदरिया का रहनेवाला था। 25 उसे खुदावंद की राह के बारे में तालीम दी गई थी और वह बड़ी सरगरमी से लोगों को ईसा के बारे में सिखाता रहा। उस की यह तालीम सही थी अगरचे वह अभी तक सिर्फ़ यहया का बपतिस्मा जानता था। 26 इफ़िसुस के यहूदी इबादतखाने में वह बड़ी दिलेरी से कलाम करने लगा। यह सुनकर प्रिसकिल्ला और अकविला ने उसे एक तरफ़ ले जाकर उसके सामने अल्लाह की राह को मज़ीद तफ़सील से बयान किया। 27 अपुल्लोस सूबा अख़या जाने का खयाल रखता था तो इफ़िसुस के भाइयों ने उस की हौसलाअफ़ज़ाई की। उन्होंने वहाँ के शागिर्दों को ख़त लिखा कि वह उसका इस्तक़बाल करें। जब वह वहाँ पहुँचा तो उनके लिए बड़ी मदद का बाइस बना जो अल्लाह के फ़ज़ल से ईमान लाए थे, 28 क्योंकि वह अलानिया मुबाहसों में ज़बरदस्त दलायल से यहूदियों पर ग़ालिब आया और कलामे-मुकद्दस से साबित किया कि ईसा मसीह है।

19

पौलुस इफ़िसुस में

1 जब अपुल्लोस कुरिथुस में ठहरा हुआ था तो पौलुस एशियाए-कूचक के अंदरूनी इलाक़े में से सफ़र करते करते साहिली शहर इफ़िसुस में आया। वहाँ उसे कुछ शागिर्द मिले 2 जिनसे उसने पूछा, “क्या आपको ईमान लाते वक्त रूहल-कुद्स मिला?”

उन्होंने जवाब दिया, “नहीं, हमने तो रूहुल-कुदस का जिक्र तक नहीं सुना।”

3 उसने पूछा, “तो आपको कौन-सा बपतिस्मा दिया गया?”

उन्होंने जवाब दिया, “यहया का।”

4 पौलुस ने कहा, “यहया ने बपतिस्मा दिया जब लोगों ने तौबा की। लेकिन उसने खुद उन्हें बताया, ‘मेरे बाद आनेवाले पर ईमान लाओ, यानी ईसा पर’।”

5 यह सुनकर उन्होंने खुदावंद ईसा के नाम पर बपतिस्मा लिया। 6 और जब पौलुस ने अपने हाथ उन पर रखे तो उन पर रूहुल-कुदस नाज़िल हुआ, और वह ग़ैरज़बाने बोलने और नबुव्वत करने लगे। 7 इन आदमियों की कुल तादाद तकरीबन बारह थी।

8 पौलुस यहूदी इबादतख़ाने में गया और तीन महीने के दौरान यहूदियों से दिलेरी से बात करता रहा। उनके साथ बहस करके उसने उन्हें अल्लाह की बादशाही के बारे में कायल करने की कोशिश की। 9 लेकिन कुछ अड़ गए। वह अल्लाह के ताबे न हुए बल्कि अवाम के सामने ही अल्लाह की राह को बुरा-भला कहने लगे। इस पर पौलुस ने उन्हें छोड़ दिया। शागिर्दों को भी अलग करके वह उनके साथ तुरन्नुस के लैक्चर हाल में जमा हुआ करता था जहाँ वह रोज़ाना उन्हें तालीम देता रहा। 10 यह सिलसिला दो साल तक जारी रहा। यों सूबा आसिया के तमाम लोगों को खुदावंद का कलाम सुनने का मौक़ा मिला, खाह वह यहूदी थे या यूनानी।

राहुमा इमाम स्किवा के सात बेटे

11 अल्लाह ने पौलुस की मारिफ़त ग़ैरमामूली मोज़िज़े किए, 12 यहाँ तक कि जब रूमाल या एप्रन उसके बदन से लगाने के बाद मरीज़ों पर रखे जाते तो उनकी बीमारियाँ जाती रहती और बदर्हें निकल जातीं। 13 वहाँ कुछ ऐसे यहूदी भी थे जो जगह जगह जाकर बदर्हें निकालते थे। अब वह बदर्हों के बंधन में फँसे लोगों पर खुदावंद ईसा का नाम इस्तेमाल करने की कोशिश करके कहने लगे, “मैं तुझे उस ईसा के नाम से निकलने का हुक्म देता हूँ जिसकी मुनादी पौलुस करता है।” 14 एक यहूदी राहुमा इमाम बनाम स्किवा के सात बेटे ऐसा करते थे।

15 लेकिन एक दफ़ा जब यही कोशिश कर रहे थे तो बदर्ह ने जवाब दिया, “ईसा को तो मैं जानती हूँ और पौलुस को भी, लेकिन तुम कौन हो?”

16 फिर वह आदमी जिसमें बदर्ह थी उन पर झपटकर सब पर गालिब आ गया। उसका उन पर इतना सख़्त हमला हुआ कि वह नंगे और ज़ख़मी हालत में भागकर उस घर से निकल गए। 17 इस वाकिए की ख़बर इफ़िसुस के तमाम रहनेवाले यहूदियों और यूनानियों में फैल गई। उन पर ख़ौफ़ तारी हुआ और खुदावंद ईसा के नाम की ताज़ीम हुई। 18 जो ईमान लाए थे उनमें से बहुतेरों ने आकर अलानिया अपने गुनाहों का इकरार किया। 19 जादूगरी करनेवालों की बड़ी तादाद ने अपनी जादूमंत्र की किताबें इकट्ठी करके अवाम के सामने जला दीं। पूरी किताबों का हिसाब किया गया तो उनकी कुल रकम चाँदी के पचास हजार सिक्के थी। 20 यों खुदावंद का कलाम ज़बरदस्त तरीक़े से बढ़ता और ज़ोर पकड़ता गया।

इफ़िसुस में हंगामा

21 इन वाकियात के बाद पौलुस ने मकिदुनिया और अरखया में से गुज़रकर यरूशलम जाने का फैसला किया। उसने कहा, “इसके बाद लाज़िम है कि मैं रोम भी जाऊँ।” 22 उसने अपने दो मददगारों तीमुथियुस और इरास्तुस को आगे मकिदुनिया भेज दिया जबकि वह खुद मज़ीद कुछ देर के लिए सूबा आसिया में ठहरा रहा।

23 तकरीबन उस वक़्त अल्लाह की राह एक शदीद हंगामे का बाइस हो गई। 24 यह यों हुआ, इफ़िसुस में एक चाँदी की अशया बनानेवाला रहता था जिसका नाम देमेत्रियुस था। वह चाँदी से अरतमिस देवी के मंदिर बनवाता था, और उसके काम से दस्तकारों का कारोबार खूब चलता था। 25 अब उसने इस काम से ताल्लुक रखनेवाले दीगर दस्तकारों को जमा करके उनसे कहा, “हज़रात, आपको मालूम है कि हमारी दौलत इस कारोबार पर मुनहसिर है। 26 आपने यह भी देख और सुन लिया है कि इस आदमी पौलुस ने न सिर्फ़ इफ़िसुस बल्कि तकरीबन पूरे सूबा आसिया में बहुत-से लोगों को भटकाकर कायल कर लिया है कि हाथों के बने देवता हक़ीक़त में देवता नहीं होते। 27 न सिर्फ़ यह ख़तरा है कि हमारे कारोबार की बदनामी हो बल्कि यह भी कि अज़ीम देवी अरतमिस के मंदिर का असरो-रसूख़ जाता रहेगा, कि अरतमिस खुद जिसकी पूजा सूबा आसिया और पूरी दुनिया में की जाती है अपनी अज़मत खो बैठे।”

28 यह सुनकर वह तैश में आकर चीखने-चिल्लाने लगे, “इफ़िसियों की अरतमिस देवी अज़ीम है!” 29 पूरे शहर में हलचल मच गई। लोगों ने पौलुस के मकिदुनी हमसफ़र गयुस और अरिस्तरख़ुस को पकड़ लिया और मिलकर तमाशागाह में दौड़े आए। 30 यह देखकर पौलुस भी अवाम के इस इजलास में जाना चाहता था, लेकिन शागिर्दों ने उसे रोक लिया। 31 इसी तरह उसके कुछ दोस्तों ने भी जो सूबा आसिया के अफ़सर थे उसे ख़बर भेजकर मिन्नत की कि वह न जाए। 32 इजलास में बड़ी अफ़रा-तफ़री थी। कुछ यह चीख़ रहे थे, कुछ वह। ज़्यादातर लोग जमा होने की वज़ह जानते भी न थे। 33 यहूदियों ने सिकंदर को आगे कर दिया। साथ साथ हुज़ूम के कुछ लोग उसे हिदायात देते रहे। उसने हाथ से ख़ामोश हो जाने का इशारा किया ताकि वह इजलास के सामने अपना दिफ़ा करे। 34 लेकिन जब उन्होंने जान लिया कि वह यहूदी है तो वह तकरीबन दो घंटों तक चिल्लाकर नारा लगाते रहे, “इफ़िसुस की अरतमिस देवी अज़ीम है!”

35 आखिरकार बलदिया का चीफ़ सैक़टरी उन्हें ख़ामोश कराने में कामयाब हुआ। फिर उसने कहा, “इफ़िसुस के हज़रात, किस को मालूम नहीं कि इफ़िसुस अज़ीम अरतमिस देवी के मंदिर का मुहाफ़िज़ है! पूरी दुनिया जानती है कि हम उसके उस मुजस्समे के निगरान हैं जो आसमान

से गिरकर हमारे पास पहुँच गया। ³⁶ यह हकीकत तो नाकाबिले-इनकार है। चुनौचे लाजिम है कि आप चुप-चाप रहें और जल्दबाजी न करें। ³⁷ आप यह आदमी यहाँ लाए हैं हालाँकि न तो वह मंदिरों को लूटनेवाले हैं, न उन्होंने देवी की बेहुरमती की है। ³⁸ अगर देमेतरियुस और उसके साथवाले दस्तकारों का किसी पर इलजाम है तो इसके लिए कचहरियाँ और गवर्नर होते हैं। वहाँ जाकर वह एक दूसरे से मुकदमा लड़ें। ³⁹ अगर आप मज्जीद कोई मामला पेश करना चाहते हैं तो उसे हल करने के लिए कानूनी मजलिस होती है। ⁴⁰ अब हम इस खतरे में हैं कि आज के वाकियात के बाइस हम पर फसाद का इलजाम लगाया जाएगा। क्योंकि जब हमसे पूछा जाएगा तो हम इस किस्म के बेतरतीब और नाजायज़ इजतिमा का कोई जवाज़ पेश नहीं कर सकेंगे।” ⁴¹ यह कहकर उसने इजलास को बरखास्त कर दिया।

20

मकिदुनिया और अखया में

¹ जब शहर में अफरा-तफरी खत्म हुई तो पौलुस ने शागिर्दों को बुलाकर उनकी हौसलाअफ़जाई की। फिर वह उन्हें ख़ैरबाद कहकर मकिदुनिया के लिए रवाना हुआ। ² वहाँ पहुँचकर उसने जगह बजगह जाकर बहुत-सी बातों से इमानदारों की हौसलाअफ़जाई की। यों चलते चलते वह यूनान पहुँच गया ³ जहाँ वह तीन माह तक ठहरा। वह मुल्के-शाम के लिए जहाज़ पर सवार होनेवाला था कि पता चला कि यहूदियों ने उसके खिलाफ़ साज़िश की है। इस पर उसने मकिदुनिया से होकर वापस जाने का फैसला किया। ⁴ उसके कई हमसफ़र थे : बेरिया से पुस्स का बेटा सोपतस्स, थिस्सलुनीके से अरिस्तरख़ुस और सिकुंदुस, दिरबे से गयुस, तीमुथियुस और सूबा आसिया से तुखिकुस और त्रुफ़िमुस। ⁵ यह आदमी आगे निकलकर त्रोआस चले गए जहाँ उन्होंने हमारा इंतज़ार किया। ⁶ बेख़मीरी रोटी की ईद के बाद हम फ़िलिप्पी के करीब जहाज़ पर सवार हुए और पाँच दिन के बाद उनके पास त्रोआस पहुँच गए। वहाँ हम सात दिन रहे।

त्रोआस में पौलुस की अलविदाई मीटिंग

⁷ इतवार को हम अशाए-रब्बानी मनाने के लिए जमा हुए। पौलुस लोगों से बात करने लगा और चूँकि वह अगले दिन रवाना होनेवाला था इसलिए वह आधी रात तक बोलता रहा। ⁸ ऊपर की मनज़िल में जिस कमरे में हम जमा थे वहाँ बहुत-से चराग जल रहे थे। ⁹ एक जवान खिडकी की दहलीज़ पर बैठा था। उसका नाम यूतिख़ुस था। ज्यों-ज्यों पौलुस की बातें लंबी होती जा रही थीं उस पर नींद ग़ालिब आती जा रही थी। आखिरकार वह गहरी नींद में तीसरी मनज़िल से ज़मीन पर गिर गया। जब लोगों ने नीचे पहुँचकर उसे ज़मीन पर से उठाया तो वह जान-बहक हो चुका था। ¹⁰ लेकिन पौलुस उतरकर उस पर झुक गया और उसे अपने बाजूओं में ले लिया। उसने कहा, “मत घबराएँ, वह ज़िंदा है।” ¹¹ फिर वह वापस ऊपर आ गया, अशाए-रब्बानी मनाई और खाना खाया। उसने अपनी बातें पौ फटने तक जारी रखीं, फिर रवाना हुआ। ¹² और उन्होंने जवान को ज़िंदा हालत में वहाँ से लेकर बहुत तसल्ली पाई।

त्रोआस से मीलेतुस तक

¹³ हम आगे निकलकर अस्सुस के लिए जहाज़ पर सवार हुए। खुद पौलुस ने इंतज़ाम करवाया था कि वह पैदल जाकर अस्सुस में हमारे जहाज़ पर आएगा। ¹⁴ वहाँ वह हमसे मिला और हम उसे जहाज़ पर लाकर मतुलेने पहुँचे। ¹⁵ अगले दिन हम ख्रियुस के जज़ीरे से गुज़रे। उससे अगले दिन हम सामुस के जज़ीरे के करीब आए। इसके बाद के दिन हम मीलेतुस पहुँच गए। ¹⁶ पौलुस पहले से फैसला कर चुका था कि मैं इफ़िसुस में नहीं ठहरूँगा बल्कि आगे निकलूँगा, क्योंकि वह जल्दी में था। वह जहाँ तक मुमकिन था पंतिकुस्त की ईद से पहले पहले यरूशलम पहुँचना चाहता था।

इफ़िसुस के बुजुर्गों के लिए पौलुस की अलविदाई तकरीर

¹⁷ मीलेतुस से पौलुस ने इफ़िसुस की जमात के बुजुर्गों को बुला लिया। ¹⁸ जब वह पहुँचे तो उसने उनसे कहा, “आप जानते हैं कि मैं सूबा आसिया में पहला क़दम उठाने से लेकर पूरा वक़्त आपके साथ किस तरह रहा। ¹⁹ मैंने बड़ी इंकिसारी से खुदावंद की खिदमत की है। मुझे बहुत आँसू बहाने पड़े और यहूदियों की साज़िशों से मुझ पर बहुत आजमाइशें आईं। ²⁰ मैंने आपके फ़ायदे की कोई भी बात आपसे छुपाए न रखी बल्कि आपको अलानिया और घर घर जाकर तालीम देता रहा। ²¹ मैंने यहूदियों को यूनानियों समेत गवाही दी कि उन्हें तौबा करके अल्लाह की तरफ़ रूजू करने और हमारे खुदावंद ईसा पर इमान लाने की ज़रूरत है। ²² और अब मैं रूहुल-कुदूस से बँधा हुआ यरूशलम जा रहा हूँ। मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या कुछ होगा, ²³ लेकिन इतना मुझे मालूम है कि रूहुल-कुदूस मुझे शहर बशहर इस बात से आगाह कर रहा है कि मुझे कैद और मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा। ²⁴ ख़ैर, मैं अपनी ज़िंदगी को किसी तरह भी अहम नहीं समझता। अहम बात सिर्फ़ यह है कि मैं अपना वह मिशन और ज़िम्मादारी पूरी करूँ जो खुदावंद ईसा ने मेरे सुपुर्द की है। और वह ज़िम्मादारी यह है कि मैं लोगों को गवाही देकर यह खुशख़बरी सुनाऊँ कि अल्लाह ने अपने फ़ज़ल से उनके लिए क्या कुछ किया है।

²⁵ और अब मैं जानता हूँ कि आप सब जिन्हें मैंने अल्लाह की बादशाही का पैग़ाम सुना दिया है मुझे इसके बाद कभी नहीं देखेंगे। ²⁶ इसलिए मैं आज ही आपको बताता हूँ कि अगर आपमें से कोई भी हलाक हो जाए तो मैं बेक़सूर हूँ, ²⁷ क्योंकि मैं आपको अल्लाह की पूरी मरज़ी बताने से न झिजका। ²⁸ चुनौचे ख़बरदार रहकर अपना और उस पूरे गल्ले का खयाल रखना जिस पर रूहुल-कुदूस ने आपको मुक़रर किया है। निगरानों और चरवाहों की हैसियत से अल्लाह की जमात की खिदमत करें, उस जमात की जिसे उसने अपने ही फ़रज़ंद के खून से हासिल

किया है। 29 मुझे मालूम है कि मेरे जाने के बाद वहशी भेड़िये आपमें घुस आएंगे जो गल्ले को नहीं छोड़ेंगे। 30 आपके दरमियान से भी आदमी उठकर सच्चाई को तोड़-मरोड़कर बयान करेंगे ताकि शागिर्दों को अपने पीछे लगा लें। 31 इसलिए जागते रहें! यह बात ज़हन में रखें कि मैं तीन साल के दौरान दिन-रात हर एक को समझाने से बाज़ न आया। मेरे आँसुओं को याद रखें जो मैंने आपके लिए बहाए हैं।

32 और अब मैं आपको अल्लाह और उसके फ़ज़ल के कलाम के सुपुर्द करता हूँ। यही कलाम आपकी तामीर करके आपको वह मीरास मुहैया करने के काबिल है जो अल्लाह तमाम मुक़द्दस किए गए लोगों को देता है। 33 मैंने किसी के भी सोने, चाँदी या कपड़ों का लालच न किया। 34 आप खुद जानते हैं कि मैंने अपने इन हाथों से काम करके न सिर्फ़ अपनी बल्कि अपने साथियों की ज़रूरियात भी पूरी की। 35 अपने हर काम में मैं आपको दिखाता रहा कि लाज़िम है कि हम इस किस्म की मेहनत करके कमज़ोरों की मदद करें। क्योंकि हमारे सामने ख़ुदावंद ईसा के यह अलफ़ाज़ होने चाहिए कि देना लेने से मुबारक है।”

36 यह सब कुछ कहकर पौलुस ने घुटने टेककर उन सबके साथ दुआ की। 37 सब खूब रोए और उसको गले लगा लगाकर बोसे दिए। 38 उन्हें ख़ासकर पौलुस की इस बात से तकलीफ़ हुई कि ‘आप इसके बाद मुझे कभी नहीं देखेंगे।’ फिर वह उसके साथ जहाज़ तक गए।

21

पौलुस यरूशलम जाता है

1 मुश्किल से इफ़िसुस के बुज़ुर्गों से अलग होकर हम रवाना हुए और सीधे जज़ीराए-कोस पहुँच गए। अगले दिन हम स्टुस आए और वहाँ से पतरा पहुँचे। 2 पतरा में फ़ेनीके के लिए जहाज़ मिल गया तो हम उस पर सवार होकर रवाना हुए। 3 जब कुबस्स दूर से नज़र आया तो हम उसके जुनूब में से गुज़रकर शाम के शहर सूर पहुँच गए जहाँ जहाज़ को अपना सामान उतारना था। 4 जहाज़ से उतरकर हमने मक़ामी शागिर्दों को तलाश किया और सात दिन उनके साथ ठहरे। उन ईमानदारों ने रूहुल-कुद्स की हिदायत से पौलुस को समझाने की कोशिश की कि वह यरूशलम न जाए। 5 जब हम एक हफ़्ते के बाद जहाज़ पर वापस चले गए तो पूरी जमात बाल-बच्चों समेत हमारे साथ शहर से निकलकर साहिल तक आई। वहीं हमने घुटने टेककर दुआ की 6 और एक दूसरे को अलविदा कहा। फिर हम दुबारा जहाज़ पर सवार हुए जबकि वह अपने घरों को लौट गए।

7 सूर से अपना सफ़र जारी रखकर हम पतुलिमयिस पहुँचे जहाँ हमने मक़ामी ईमानदारों को सलाम किया और एक दिन उनके साथ गुज़ारा। 8 अगले दिन हम रवाना होकर कैसरीया पहुँच गए। वहाँ हम फ़िलिप्पुस के घर ठहरे। यह वही फ़िलिप्पुस था जो अल्लाह की ख़ुशख़बरी का मुनाद था और जिसे इब्तिदाई दिनों में यरूशलम में खाना तकसीम करने के लिए छः और आदमियों के साथ मुक़र्रर किया गया था। 9 उस की चार ग़ैरशादीशुदा बेटियाँ थीं जो नबुव्वत की नेमत रखती थीं। 10 कई दिन गुज़र गए तो यहूदिया से एक नबी आया जिसका नाम अगबुस था। 11 जब वह हमसे मिलने आया तो उसने पौलुस की पेटी लेकर अपने पाँवों और हाथों को बाँध लिया और कहा, “रूहुल-कुद्स फ़रमाता है कि यरूशलम में यहूदी इस पेटी के मालिक को यों बाँधकर ग़ैरयहूदियों के हवाले करेंगे।”

12 यह सुनकर हमने मक़ामी ईमानदारों समेत पौलुस को समझाने की खूब कोशिश की कि वह यरूशलम न जाए। 13 लेकिन उसने जवाब दिया, “आप क्यों रोते और मेरा दिल तोड़ते हैं? देखें, मैं ख़ुदावंद ईसा के नाम की खातिर यरूशलम में न सिर्फ़ बाँधे जाने बल्कि उसके लिए अपनी जान तक देने को तैयार हूँ।”

14 हम उसे कायल न कर सके, इसलिए हम यह कहते हुए ख़ामोश हो गए कि “ख़ुदावंद की मरज़ी पूरी हो।”

15 इसके बाद हम तैयारियाँ करके यरूशलम चले गए। 16 कैसरीया के कुछ शागिर्द भी हमारे साथ चले और हमें मनासोन के घर पहुँचा दिया जहाँ हमें ठहरना था। मनासोन कुबस्स का था और जमात के इब्तिदाई दिनों में ईमान लाया था।

पौलुस याक़ूब से मिलता है

17 जब हम यरूशलम पहुँचे तो मक़ामी भाइयों ने गरमजोशी से हमारा इस्तक़बाल किया। 18 अगले दिन पौलुस हमारे साथ याक़ूब से मिलने गया। तमाम मक़ामी बुज़ुर्ग भी हाज़िर हुए। 19 उन्हें सलाम करके पौलुस ने तफ़सील से बयान किया कि अल्लाह ने उस की ख़िदमत की मारिफ़त ग़ैरयहूदियों में क्या किया था। 20 यह सुनकर उन्होंने अल्लाह की तमज़ीद की। फिर उन्होंने कहा, “भाई, आपको मालूम है कि हज़ारों यहूदी ईमान लाए हैं। और सब बड़ी सरगरमी से शरीअत पर अमल करते हैं। 21 उन्हें आपके बारे में ख़बर दी गई है कि आप ग़ैरयहूदियों के दरमियान रहनेवाले यहूदियों को तालीम देते हैं कि वह मूसा की शरीअत को छोड़कर न अपने बच्चों का ख़तना करवाएँ और न हमारे रस्मो-रिवाज के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारें। 22 अब हम क्या करें? वह तो ज़रूर सुनेंगे कि आप यहाँ आ गए हैं। 23 इसलिए हम चाहते हैं कि आप यह करें : हमारे पास चार मर्द हैं जिन्होंने मन्नत मानकर उसे पूरा कर लिया है। 24 अब उन्हें साथ लेकर उनकी तहारत की रस्ममात में शरीक हो जाएँ। उनके अख़राजात भी आप बरदाश्त करें ताकि वह अपने सरों को मुँडवा सकें। फिर सब जान लेंगे कि जो कुछ आपके बारे में कहा जाता है वह झूट है और कि आप भी शरीअत के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। 25 जहाँ तक ग़ैरयहूदी ईमानदारों की बात है हम उन्हें अपना फ़ैसला ख़त के ज़रीए भेज चुके हैं कि वह इन चीज़ों से परहेज़ करें : बुतों को पेश किया गया खाना, खून, ऐसे जानवरों का गोश्त जिन्हें गला घूँटकर मार दिया गया हो और ज़िनाकारी।”

26 चुनौचे अगले दिन पौलुस उन आदमियों को साथ लेकर उनकी तहारत की स्मृत में शरीक हुआ। फिर वह बैतुल-मुकद्दस में उस दिन का एलान करने गया जब तहारत के दिन पूरे हो जाएंगे और उन सबके लिए कुरबानी पेश की जाएगी।

बैतुल-मुकद्दस में पौलुस की गिरफ्तारी

27 इस रस्म के लिए मुकररा सात दिन खत्म होने को थे कि सूबा आसिया के कुछ यहूदियों ने पौलुस को बैतुल-मुकद्दस में देखा। उन्होंने पूरे हुजूम में हलचल मचाकर उसे पकड़ लिया 28 और चीखने लगे, “इसराईल के हज़रात, हमारी मदद करें! यह वही आदमी है जो हर जगह तमाम लोगों को हमारी क्रौम, हमारी शरीअत और इस मक़ाम के खिलाफ तालीम देता है। न सिर्फ़ यह बल्कि इसने बैतुल-मुकद्दस में ग़ैरयहूदियों को लाकर इस मुकद्दस जगह की बेहुरमती भी की है।” 29 (यह आखिरी बात उन्होंने इसलिए की क्योंकि उन्होंने शहर में इफ़िसुस के ग़ैरयहूदी त्रुफ़िमुस को पौलुस के साथ देखा और खयाल किया था कि वह उसे बैतुल-मुकद्दस में लाया है।)

30 पूरे शहर में हंगामा बरपा हुआ और लोग चारों तरफ़ से दौड़कर आए। पौलुस को पकड़कर उन्होंने उसे बैतुल-मुकद्दस से बाहर घसीट लिया। ज्योंही वह निकल गए बैतुल-मुकद्दस के सहन के दरवाज़ों को बंद कर दिया गया। 31 वह उसे मार डालने की कोशिश कर रहे थे कि रोमी पलटन के कमाँडर को खबर मिल गई, “पूरे यरूशलम में हलचल मच गई है।” 32 यह सुनते ही उसने अपने फ़ौजियों और अफ़सरों को इकट्ठा किया और दौड़कर उनके साथ हुजूम के पास उतर गया। जब हुजूम ने कमाँडर और उसके फ़ौजियों को देखा तो वह पौलुस की पिटाई करने से स्कु गया। 33 कमाँडर ने नज़दीक आकर उसे गिरफ़्तार किया और दो ज़ंजीरों से बाँधने का हुक्म दिया। फिर उसने पूछा, “यह कौन है? इसने क्या किया है?” 34 हुजूम में से बाज़ कुछ चिल्लाए और बाज़ कुछ। कमाँडर कोई यक़ीनी बात मालूम न कर सका, क्योंकि अफ़रा-तफ़री और शोर-शराबा बहुत था। इसलिए उसने हुक्म दिया कि पौलुस को क़िले में ले जाया जाए। 35 वह क़िले की सीढ़ी तक पहुँच तो गए, लेकिन फिर हुजूम इतना बेकाबू हो गया कि फ़ौजियों को उसे अपने कंधों पर उठाकर चलना पड़ा। 36 लोग उनके पीछे पीछे चलते और चीखते-चिल्लाते रहे, “उसे मार डालो! उसे मार डालो!”

पौलुस अपना दिफ़ा करता है

37 वह पौलुस को क़िले में ले जा रहे थे कि उसने कमाँडर से पूछा, “क्या आपसे एक बात करने की इज़ाज़त है?”

कमाँडर ने कहा, “अच्छा, आप यूनानी बोल लेते हैं? 38 तो क्या आप वही मिसरी नहीं हैं जो कुछ देर पहले हुक्मत के खिलाफ़ उठकर चार हज़ार दहशतगरदों को रेगिस्तान में लाया था?”

39 पौलुस ने जवाब दिया, “मैं यहूदी और किलिकिया के मरकज़ी शहर तरसुस का शहरी हूँ। मेहरबानी करके मुझे लोगों से बात करने दें।”

40 कमाँडर मान गया और पौलुस ने सीढ़ी पर खड़े होकर हाथ से इशारा किया। जब सब ख़ामोश हो गए तो पौलुस अरामी ज़बान में उनसे मुखातिब हुआ,

22

1 “भाइयो और बुज़ुर्गो, मेरी बात सुनें कि मैं अपने दिफ़ा में कुछ बताऊँ।” 2 जब उन्होंने सुना कि वह अरामी ज़बान में बोल रहा है तो वह मज़ीद ख़ामोश हो गए। पौलुस ने अपनी बात जारी रखी।

3 “मैं यहूदी हूँ और किलिकिया के शहर तरसुस में पैदा हुआ। लेकिन मैंने इसी शहर यरूशलम में परवरिश पाई और जमलियेल के ज़ेरे-निगरानी तालीम हासिल की। उन्होंने मुझे तफ़सील और एहतियात से हमारे बापदादा की शरीअत सिखाई। उस वक़्त मैं भी आपकी तरह अल्लाह के लिए सरगम था। 4 इसलिए मैंने इस नई राह के पैरोकारों का पीछा किया और मर्दों और ख़वातीन को गिरफ़्तार करके जेल में डलवा दिया यहाँ तक कि मरवा भी दिया। 5 इमामे-आज़म और यहूदी अदालते-आलिया के मेंबरान इस बात की तसदीक कर सकते हैं। उन्हीं से मुझे दमिशक़ में रहनेवाले यहूदी भाइयों के लिए सिफ़ारिशी ख़त मिल गए ताकि मैं वहाँ भी जाकर इस नए फ़िरके के लोगों को गिरफ़्तार करके सज़ा देने के लिए यरूशलम लाऊँ।

पौलुस की तबदीली का बयान

6 मैं इस मक़सद के लिए दमिशक़ के करीब पहुँच गया था कि अचानक आसमान की तरफ़ से एक तेज़ रौशनी मेरे गिर्द चमकी। 7 मैं ज़मीन पर गिर पड़ा तो एक आवाज़ सुनाई दी, ‘साऊल, साऊल, तू मुझे क्यों सताता है?’ 8 मैंने पूछा, ‘ख़ुदावंद, आप कौन हैं?’ आवाज़ ने जवाब दिया, ‘मैं ईसा नासरी हूँ जिसे तू सताता है।’ 9 मेरे हमसफ़रों ने रौशनी को तो देखा, लेकिन मुझसे मुखातिब होनेवाले की आवाज़ न सुनी। 10 मैंने पूछा, ‘ख़ुदावंद, मैं क्या करूँ?’ ख़ुदावंद ने जवाब दिया, ‘उठकर दमिशक़ में जा। वहाँ तुझे वह सारा काम बताया जाएगा जो अल्लाह तेरे ज़िम्मे लगाने का इरादा रखता है।’ 11 रौशनी की तेज़ी ने मुझे अंधा कर दिया था, इसलिए मेरे साथी मेरा हाथ पकड़कर मुझे दमिशक़ ले गए।

12 वहाँ एक आदमी रहता था जिसका नाम हननियाह था। वह शरीअत का कट्टर पैरोकार था और वहाँ के रहनेवाले यहूदियों में नेकनाम। 13 वह आया और मेरे पास खड़े होकर कहा, ‘साऊल भाई, दुबारा बीना हो जाएँ।’ उसी लमहे मैं उसे देख सका। 14 फिर उसने कहा, ‘हमारे बापदादा के ख़ुदा ने आपको इस मक़सद के लिए चुन लिया है कि आप उस की मरज़ी जानकर उसके रास्त ख़ादिम को देखें और उसके अपने

मुँह से उस की आवाज़ सुनें। 15 जो कुछ आपने देख और सुन लिया है उस की गवाही आप तमाम लोगों को देंगे। 16 चुनाँचे आप क्यों देर कर रहे हैं? उठें और उसके नाम में बपतिस्मा लें ताकि आपके गुनाह धुल जाएँ।’

पौलुस की गैरयहूदियों में खिदमत का बुलावा

17 जब मैं यरूशलम वापस आया तो मैं एक दिन बैतुल-मुकद्दस में गया। वहाँ दुआ करते करते मैं वज्द की हालत में आ गया 18 और खुदावंद को देखा। उसने फ़रमाया, ‘जल्दी कर! यरूशलम को फ़ौरन छोड़ दे क्योंकि लोग मेरे बारे में तेरी गवाही को कबूल नहीं करेंगे।’ 19 मैंने एतराज़ किया, ‘ऐ खुदावंद, वह तो जानते हैं कि मैंने जगह बजगह इबादतख़ाने में जाकर तुझ पर ईमान रखनेवालों को गिरफ़्तार किया और उनकी पिटाई करवाई।’ 20 और उस वक़्त भी जब तेरे शहीद स्तिफ़नुस को क़त्ल किया जा रहा था मैं साथ खड़ा था। मैं राज़ी था और उन लोगों के कपड़ों की निगरानी कर रहा था जो उसे संगसार कर रहे थे।’ 21 लेकिन खुदावंद ने कहा, ‘जा, क्योंकि मैं तुझे दूर-दराज़ इलाकों में गैरयहूदियों के पास भेज दूँगा।’”

22 यहाँ तक हुज़ूम पौलुस की बातें सुनता रहा। लेकिन अब वह चिल्ला उठे, “इसे हटा दो! इसे जान से मार दो! यह ज़िंदा रहने के लायक नहीं!” 23 वह चीखें मार मारकर अपनी चादरें उतारने और हवा में गर्द उड़ाने लगे। 24 इस पर कमाँडर ने हुक्म दिया कि पौलुस को क़िले में ले जाया जाए और कोड़े लगाकर उस की पूछ-गछ की जाए। क्योंकि वह मालूम करना चाहता था कि लोग किस वजह से पौलुस के खिलाफ़ यों चीखें मार रहे हैं। 25 जब वह उसे कोड़े लगाने के लिए लेकर जा रहे थे तो पौलुस ने साथ खड़े अफ़सर * से कहा, “क्या आपके लिए जायज़ है कि एक रोमी शहरी के कोड़े लगावाँ और वह भी अदालत में पेश किए बग़ैर?”

26 अफ़सर ने जब यह सुना तो कमाँडर के पास जाकर उसे इतला दी, “आप क्या करने को हैं? यह आदमी तो रोमी शहरी है!”

27 कमाँडर पौलुस के पास आया और पूछा, “मुझे सहीह बताएँ, क्या आप रोमी शहरी हैं?”

पौलुस ने जवाब दिया, “जी हाँ।”

28 कमाँडर ने कहा, “मैं तो बड़ी रकम देकर शहरी बना हूँ।”

पौलुस ने जवाब दिया, “लेकिन मैं तो पैदाइशी शहरी हूँ।”

29 यह सुनते ही वह फ़ौजी जो उस की पूछ-गछ करने को थे पीछे हट गए। कमाँडर खुद घबरा गया कि मैंने एक रोमी शहरी को जंजीरों में जकड़ रखा है।

पौलुस यहूदी अदालते-आलिया के सामने

30 अगले दिन कमाँडर साफ़ मालूम करना चाहता था कि यहूदी पौलुस पर क्यों इलज़ाम लगा रहे हैं। इसलिए उसने राहनुमा इमामों और यहूदी अदालते-आलिया के तमाम मेंबरान का इजलास मुनअकिद करने का हुक्म दिया। फिर पौलुस को आज्ञाद करके क़िले से नीचे लाया और उनके सामने खड़ा किया।

23

1 पौलुस ने गौर से अदालते-आलिया के मेंबरान की तरफ़ देखकर कहा, “भाइयो, आज तक मैंने साफ़ ज़मीर के साथ अल्लाह के सामने ज़िंदगी गुज़ारी है।” 2 इस पर इमामे-आज़म हननियाह ने पौलुस के करीब खड़े लोगों से कहा कि वह उसके मुँह पर थप्पड़ मारें। 3 पौलुस ने उससे कहा, “मक्कार! * अल्लाह तुमको ही मारेगा, क्योंकि तुम यहाँ बैठे शरीअत के मुताबिक़ मेरा फ़ैसला करना चाहते हो जबकि मुझे मारने का हुक्म देकर खुद शरीअत की खिलाफ़वरज़ी कर रहे हो!”

4 पौलुस के करीब खड़े आदमियों ने कहा, “तुम अल्लाह के इमामे-आज़म को बुरा कहने की ज़ुरत क्योंकर करते हो?”

5 पौलुस ने जवाब दिया, “भाइयो, मुझे मालूम न था कि वह इमामे-आज़म हैं, वरना ऐसे अलफ़ाज़ इस्तेमाल न करता। क्योंकि कलामे-मुकद्दस में लिखा है कि अपनी क़ौम के हाकिमों को बुरा-भला मत कहना।”

6 पौलुस को इल्म था कि अदालते-आलिया के कुछ लोग सदूकी हैं जबकि दीगर फ़रीसी हैं। इसलिए वह इजलास में पुकार उठा, “भाइयो, मैं फ़रीसी बल्कि फ़रीसी का बेटा भी हूँ। मुझे इसलिए अदालत में पेश किया गया है कि मैं मुरदों में से जी उठने की उम्मीद रखता हूँ।”

7 इस बात से फ़रीसी और सदूकी एक दूसरे से झगड़ने लगे और इजलास के अफ़राद दो ग़ुरोहों में बंट गए। 8 वजह यह थी कि सदूकी नहीं मानते कि हम जी उठेंगे। वह फ़रिश्तों और रूहों का भी इनकार करते हैं। इसके मुकाबले में फ़रीसी यह सब कुछ मानते हैं। 9 होते होते बड़ा शोर मच गया। फ़रीसी फिरके के कुछ आलिम खड़े होकर जोश से बहस करने लगे, “हमें इस आदमी में कोई ग़लती नज़र नहीं आती, शायद कोई रूह या फ़रिश्ता इससे हमकलाम हुआ हो।”

10 झगड़े ने इतना जोर पकड़ा कि कमाँडर डर गया, क्योंकि ख़तरा था कि वह पौलुस के टुकड़े कर डालें। इसलिए उसने अपने फ़ौजियों को हुक्म दिया कि वह उतरें और पौलुस को यहूदियों के बीच में से छीनकर क़िले में वापस लाएँ।

11 उसी रात खुदावंद पौलुस के पास आ खड़ा हुआ और कहा, “हौसला रख, क्योंकि जिस तरह तूने यरूशलम में मेरे बारे में गवाही दी है लाज़िम है कि इसी तरह रोम शहर में भी गवाही दे।”

* 22:25 सौ सिपाहियों पर मुक़रर अफ़सर।

* 23:3 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : सफेदी की हुई दीवार।

पौलुस के खिलाफ साजिश

12 अगले दिन कुछ यहूदियों ने साजिश करके कसम खाई, “हम न तो कुछ खाएँगे, न पिँएँगे जब तक पौलुस को क़त्ल न कर लें।” 13 चालीस से ज्यादा मर्दों ने इस साजिश में हिस्सा लिया। 14 वह राहनुमा इमामों और बुजुर्गों के पास गए और कहा, “हमने पक्की कसम खाई है कि कुछ नहीं खाएँगे जब तक पौलुस को क़त्ल न कर लें। 15 अब ज़रा यहूदी अदालते-आलिया के साथ मिलकर कमाँडर से गुज़ारिश करें कि वह उसे दुबारा आपके पास लाएँ। बहाना यह पेश करें कि आप मज़ीद तफ़सील से उसके मामले का जायज़ा लेना चाहते हैं। जब उसे लाया जाएगा तो हम उसके यहाँ पहुँचने से पहले पहले उसे मार डालने के लिए तैयार होंगे।”

16 लेकिन पौलुस के भानजे को इस बात का पता चल गया। उसने क़िले में जाकर पौलुस को इतला दी। 17 इस पर पौलुस ने रोमी अफ़सरों † में से एक को बुलाकर कहा, “इस जवान को कमाँडर के पास ले जाएँ। इसके पास उनके लिए ख़बर है।” 18 अफ़सर भानजे को कमाँडर के पास ले गया और कहा, “कैदी पौलुस ने मुझे बुलाकर मुझसे गुज़ारिश की कि इस नौजवान को आपके पास ले आऊँ। उसके पास आपके लिए ख़बर है।”

19 कमाँडर नौजवान का हाथ पकड़कर दूसरों से अलग हो गया। फिर उसने पूछा, “क्या ख़बर है जो आप मुझे बताना चाहते हैं?”

20 उसने जवाब दिया, “यहूदी आपसे दरखास्त करने पर मुत्तफ़िक़ हो गए हैं कि आप कल पौलुस को दुबारा यहूदी अदालते-आलिया के सामने लाएँ। बहाना यह होगा कि वह और ज्यादा तफ़सील से उसके बारे में मालूमात हासिल करना चाहते हैं। 21 लेकिन उनकी बात न मानें, क्योंकि उनमें से चालीस से ज्यादा आदमी उस की ताक में बैठे हैं। उन्होंने कसम खाई है कि हम न कुछ खाएँगे न पिँएँगे जब तक उसे क़त्ल न कर लें। वह अभी तैयार बैठे हैं और सिर्फ़ इस इंतज़ार में हैं कि आप उनकी बात मानें।”

22 कमाँडर ने नौजवान को ख़सत करके कहा, “जो कुछ आपने मुझे बता दिया है उसका किसी से ज़िक्र न करना।”

पौलुस को गवर्नर फेलिक्स के पास भेजा जाता है

23 फिर कमाँडर ने अपने अफ़सरों में से दो को बुलाया जो सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर थे। उसने हुक्म दिया, “दो सौ फ़ौजी, सत्तर घुड़सवार और दो सौ नैज़ाबाज़ तैयार करें। उन्हें आज रात को नौ बजे कैसरिया जाना है। 24 पौलुस के लिए भी घोड़े तैयार रखना ताकि वह सहीह-सलामत गवर्नर के पास पहुँचे।” 25 फिर उसने यह ख़त लिखा,

26 “अज़ : क्लौदियुस लूसियास

मुअज़्ज़ज गवर्नर फेलिक्स को सलाम। 27 यहूदी इस आदमी को पकड़कर क़त्ल करने को थे। मुझे पता चला कि यह रोमी शहरी है, इसलिए मैंने अपने दस्तों के साथ आकर इसे निकालकर बचा लिया। 28 मैं मालूम करना चाहता था कि वह क्यों इस पर इलज़ाम लगा रहे हैं, इसलिए मैं उतरकर इसे उनकी अदालते-आलिया के सामने लाया। 29 मुझे मालूम हुआ कि उनका इलज़ाम उनकी शरीअत से ताल्लुक रखता है। लेकिन इसने ऐसा कुछ नहीं किया जिसकी बिना पर यह जेल में डालने या सज़ाए-मौत के लायक हो। 30 फिर मुझे इतला दी गई कि इस आदमी को क़त्ल करने की साजिश की गई है, इसलिए मैंने इसे फ़ौरन आपके पास भेज दिया। मैंने इलज़ाम लगानेवालों को भी हुक्म दिया कि वह इस पर अपना इलज़ाम आपको ही पेश करें।”

31 फ़ौजियों ने उसी रात कमाँडर का हुक्म पूरा किया। पौलुस को साथ लेकर वह अंतीपतरिस तक पहुँच गए। 32 अगले दिन प्यादे क़िले को वापस चले जबकि घुड़सवारों ने पौलुस को लेकर सफ़र जारी रखा। 33 कैसरिया पहुँचकर उन्होंने पौलुस को ख़त समेत गवर्नर फेलिक्स के सामने पेश किया। 34 उसने ख़त पढ़ लिया और फिर पौलुस से पूछा, “आप किस सूबे के हैं?” पौलुस ने कहा, “किलिकिया का।” 35 इस पर गवर्नर ने कहा, “मैं आपकी समाअत उस वक़्त करूँगा जब आप पर इलज़ाम लगानेवाले पहुँचेंगे।” और उसने हुक्म दिया कि हेरोदेस के महल में पौलुस की पहरादारी की जाए।

24

पौलुस पर मुक़दमा

1 पाँच दिन के बाद इमामे-आज़म हननियाह, कुछ यहूदी बुजुर्ग और एक वकील बनाम तिरतुल्लुस कैसरिया आए ताकि गवर्नर के सामने पौलुस पर अपना इलज़ाम पेश करें। 2 पौलुस को बुलाया गया तो तिरतुल्लुस ने फेलिक्स को यहूदियों का इलज़ाम पेश किया,

“आपके ज़ेरे-हुकूमत हमें बड़ा अमनो-अमान हासिल है, और आपकी दूरअदेशी से इस मुल्क में बहुत तरक्की हुई है। 3 मुअज़्ज़ज फेलिक्स, इन तमाम बातों के लिए हम आपके खास ममनून हैं। 4 लेकिन मैं नहीं चाहता कि आप मेरी बातों से हद से ज्यादा थक जाएँ। अर्ज़ सिर्फ़ यह है कि आप हम पर मेहरबानी का इज़हार करके एक लमहे के लिए हमारे मामले पर तवज्जुह दें। 5 हमने इस आदमी को अवाम दुश्मन पाया है जो पूरी दुनिया के यहूदियों में फ़साद पैदा करता रहता है। यह नासरी फ़िरके का एक सरगना है 6 और हमारे बैतुल-मुक़द्स की बेहुरमती करने की कोशिश कर रहा था जब हमने इसे पकड़ा [ताकि अपनी शरीअत के मुताबिक़ इस पर मुक़दमा चलाएँ। 7 मगर लूसियास कमाँडर आकर इसे ज़बरदस्ती हमसे छीनकर ले गया और हुक्म दिया कि इसके मुद्दई आपके पास हाज़िर हों।] 8 इसकी पूछ-गछ करके आप खुद हमारे इलज़ामात की तसदीक़ करा सकते हैं।” 9 फिर बाक़ी यहूदियों ने उस की हाँ में हाँ मिलाकर कहा कि यह वाकई ऐसा ही है।

† 23:17 सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

पौलुस का दिफा

10 गवर्नर ने इशारा किया कि पौलुस अपनी बात पेश करे। उसने जवाब में कहा,

“मैं जानता हूँ कि आप कई सालों से इस क्रौम के जज मुकर्रर हैं, इसलिए खुशी से आपको अपना दिफा पेश करता हूँ। 11 आप खुद मालूम कर सकते हैं कि मुझे यरूशलम गए सिर्फ बारह दिन हुए हैं। जाने का मकसद इबादत में शरीक होना था। 12 वहाँ न मैंने बैतुल-मुकद्दस में किसी से बहस-मुबाहसा किया, न शहर के किसी इबादतखाने में या किसी और जगह हलचल मचाई। इन लोगों ने भी मेरी कोई ऐसी हरकत नहीं देखी। 13 जो इलज़ाम यह मुझ पर लगा रहे हैं उसका कोई भी सबूत पेश नहीं कर सकते। 14 बेशक मैं तसलीम करता हूँ कि मैं उसी राह पर चलता हूँ जिसे यह बिदअत करार देते हैं। लेकिन मैं अपने बापदादा के खुदा की परस्तिश करता हूँ। जो कुछ भी शरीअत और नबियों के सहीफों में लिखा है उसे मैं मानता हूँ। 15 और मैं अल्लाह पर वही उम्मीद रखता हूँ जो यह भी रखते हैं, कि कियामत का एक दिन होगा जब वह रास्तबाज़ों और नारास्तों को मुरदों में से ज़िंदा कर देगा। 16 इसलिए मेरी पूरी कोशिश यही होती है कि हर वक़्त मेरा ज़मीर अल्लाह और इनसान के सामने साफ़ हो।

17 कई सालों के बाद मैं यरूशलम वापस आया। मेरे पास क्रौम के गरीबों के लिए ख़ैरात थी और मैं बैतुल-मुकद्दस में कुरबानियाँ भी पेश करना चाहता था। 18 मुझ पर इलज़ाम लगानेवालों ने मुझे बैतुल-मुकद्दस में देखा जब मैं तहारत की स्नूमात अदा कर रहा था। उस वक़्त न कोई हुजूम था, न फ़साद। 19 लेकिन सूबा आसिया के कुछ यहूदी वहाँ थे। अगर उन्हें मेरे खिलाफ़ कोई शिकायत है तो उन्हें ही यहाँ हाज़िर होकर मुझ पर इलज़ाम लगाना चाहिए। 20 या यह लोग खुद बताएँ कि जब मैं यहूदी अदालते-आलिया के सामने खड़ा था तो उन्होंने मेरा क्या जुर्म मालूम किया। 21 सिर्फ़ यह एक जुर्म हो सकता है कि मैंने उस वक़्त उनके हुज़ूर पुकारकर यह बात बयान की, ‘आज मुझ पर इसलिए इलज़ाम लगाया जा रहा है कि मैं ईमान रखता हूँ कि मुरदे जी उठेंगे’।”

22 फ़ेलिक्स ने जो ईसा की राह से ख़ूब वाकिफ़ था मुक़दमा मुलतवी कर दिया। उसने कहा, “जब कमाँडर लूसियास आएँगे फिर मैं फ़ैसला दूँगा।” 23 उसने पौलुस पर मुकर्रर अफसर * को हुक्म दिया कि वह उस की पहरादारी तो करे लेकिन उसे कुछ सहूलियात भी दे और उसके अजीज़ों को उससे मिलने और उस की खिदमत करने से न रोके।

पौलुस फ़ेलिक्स और दूसिल्ला के सामने

24 कुछ दिनों के बाद फ़ेलिक्स अपनी अहलिया दूसिल्ला के हमराह वापस आया। दूसिल्ला यहूदी थी। पौलुस को बुलाकर उन्होंने ईसा पर ईमान के बारे में उस की बातें सुनीं। 25 लेकिन जब रास्तबाज़ी, ज़ब्ले-नफ़स और आनेवाली अदालत के मज़ामीन छिड़ गए तो फ़ेलिक्स ने घबराकर उस की बात काटी, “फ़िलहाल काफ़ी है। अब इजाज़त है, जब मेरे पास वक़्त होगा मैं आपको बुला लूँगा।” 26 साथ साथ वह यह उम्मीद भी रखता था कि पौलुस रिश्वत देगा, इसलिए वह कई बार उसे बुलाकर उससे बात करता रहा।

27 दो साल गुज़र गए तो फ़ेलिक्स की जगह पुरकियुस फ़ेस्तुस आ गया। ताहम उसने पौलुस को कैदख़ाने में छोड़ दिया, क्योंकि वह यहूदियों के साथ रिआयत बरतना चाहता था।

25

पौलुस शहनशाह से अपील करता है

1 कैसरिया पहुँचने के तीन दिन बाद फ़ेस्तुस यरूशलम चला गया। 2 वहाँ राहनुमा इमामों और बाक़ी यहूदी राहनुमाओं ने उसके सामने पौलुस पर अपने इलज़ामात पेश किए। उन्होंने बड़े ज़ोर से 3 मिन्नत की कि वह उनकी रिआयत करके पौलुस को यरूशलम मुतक़िल करे। वजह यह थी कि वह घात में बैठकर रास्ते में पौलुस को क़त्ल करना चाहते थे। 4 लेकिन फ़ेस्तुस ने जवाब दिया, “पौलुस को कैसरिया में रखा गया है और मैं खुद वहाँ जाने को हूँ। 5 अगर उससे कोई जुर्म सरज़द हुआ है तो आपके कुछ राहनुमा मेरे साथ वहाँ जाकर उस पर इलज़ाम लगाएँ।”

6 फ़ेस्तुस ने मज़ीद आठ दस दिन उनके साथ गुज़ारे, फिर कैसरिया चला गया। अगले दिन वह अदालत करने के लिए बैठा और पौलुस को लाने का हुक्म दिया। 7 जब पौलुस पहुँचा तो यरूशलम से आए हुए यहूदी उसके इर्दगिर्द खड़े हुए और उस पर कई संजीदा इलज़ामात लगाए, लेकिन वह कोई भी बात साबित न कर सके। 8 पौलुस ने अपना दिफा करके कहा, “मुझसे न यहूदी शरीअत, न बैतुल-मुकद्दस और न शहनशाह के खिलाफ़ जुर्म सरज़द हुआ है।”

9 लेकिन फ़ेस्तुस यहूदियों के साथ रिआयत बरतना चाहता था, इसलिए उसने पूछा, “क्या आप यरूशलम जाकर वहाँ की अदालत में मेरे सामने पेश किए जाने के लिए तैयार हैं?”

10 पौलुस ने जवाब दिया, “मैं शहनशाह की रोमी अदालत में खड़ा हूँ और लाज़िम है कि यही मेरा फ़ैसला किया जाए। आप भी इससे ख़ूब वाकिफ़ हैं कि मैंने यहूदियों से कोई नाइनसाफ़ी नहीं की। 11 अगर मुझसे कोई ऐसा काम सरज़द हुआ हो जो सज़ाए-मौत के लायक हो तो मैं मरने से इनकार नहीं करूँगा। लेकिन अगर बेक़सूर हूँ तो किसी को भी मुझे इन आदमियों के हवाले करने का हक़ नहीं है। मैं शहनशाह से अपील करता हूँ।”

* 24:23 सौ सिपाहियों पर मुकर्रर अफसर।

12 यह सुनकर फेस्तुस ने अपनी कौंसल से मशवरा करके कहा, “आपने शहनशाह से अपील की है, इसलिए आप शहनशाह ही के पास जाएंगे।”

पौलुस अग्रिप्पा और बिरनीके के सामने

13 कुछ दिन गुजर गए तो अग्रिप्पा बादशाह अपनी बहन बिरनीके के साथ फेस्तुस से मिलने आया। 14 वह कई दिन वहाँ ठहरे रहे। इतने में फेस्तुस ने पौलुस के मामले पर बादशाह के साथ बात की। उसने कहा, “यहाँ एक कैदी है जिसे फेलिक्स छोड़कर चला गया है। 15 जब मैं यरूशलम गया तो राहनुमा इमामों और यहूदी बुजुर्गों ने उस पर इलजामात लगाकर उसे मुजरिम करार देने का तकाज़ा किया। 16 मैंने उन्हें जवाब दिया, ‘रोमी कानून किसी को अदालत में पेश किए बगैर मुजरिम करार नहीं देता। लाज़िम है कि उसे पहले इलजाम लगानेवालों का सामना करने का मौका दिया जाए ताकि अपना दिफ़ा कर सके।’ 17 जब उस पर इलजाम लगानेवाले यहाँ पहुँचे तो मैंने तारीख़ीर न की। मैंने अगले ही दिन अदालत मुनअकिद करके पौलुस को पेश करने का हुक्म दिया। 18 लेकिन जब उसके मुखालिफ़ इलजाम लगाने के लिए खड़े हुए तो वह ऐसे जुर्म नहीं थे जिनकी तबक्को मैं कर रहा था। 19 उनका उसके साथ कोई और झगड़ा था जो उनके अपने मज़हब और एक मुरदा आदमी बनाम ईसा से ताल्लुक रखता है। इस ईसा के बारे में पौलुस दावा करता है कि वह ज़िंदा है। 20 मैं उलझन में पड़ गया क्योंकि मुझे मालूम नहीं था कि किस तरह इस मामले का सहीह जायज़ा लूँ। चुनौचे मैंने पूछा, ‘क्या आप यरूशलम जाकर वहाँ अदालत में पेश किए जाने के लिए तैयार हैं?’ 21 लेकिन पौलुस ने अपील की, ‘शहनशाह ही मेरा फ़ैसला करे।’ फिर मैंने हुक्म दिया कि उसे उस वक़्त तक कैद में रखा जाए जब तक उसे शहनशाह के पास भेजने का इंतज़ाम न करवा सकूँ।”

22 अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा, “मैं भी उस शख्स को सुनना चाहता हूँ।”

उसने जवाब दिया, “कल ही आप उसको सुन लेंगे।”

23 अगले दिन अग्रिप्पा और बिरनीके बड़ी धूमधाम के साथ आए और बड़े फ़ौजी अफसरों और शहर के नामवर आदमियों के साथ दीवाने-आम में दाखिल हुए। फेस्तुस के हुक्म पर पौलुस को अंदर लाया गया। 24 फेस्तुस ने कहा, “अग्रिप्पा बादशाह और तमाम खवातीनो-हज़रात! आप यहाँ एक आदमी को देखते हैं जिसके बारे में तमाम यहूदी खाह वह यरूशलम के रहनेवाले हों, खाह यहाँ के, शोर मचाकर सज़ाए-मौत का तकाज़ा कर रहे हैं। 25 मेरी दानिस्त में तो इसने कोई ऐसा काम नहीं किया जो सज़ाए-मौत के लायक हो। लेकिन इसने शहनशाह से अपील की है, इसलिए मैंने इसे रोम भेजने का फ़ैसला किया है। 26 लेकिन मैं शहनशाह को क्या लिख दूँ? क्योंकि इस पर कोई साफ़ इलजाम नहीं लगाया गया। इसलिए मैं इसे आप सबके सामने लाया हूँ, खासकर अग्रिप्पा बादशाह आपके सामने, ताकि आप इसकी तफ़्तीश करें और मैं कुछ लिख सकूँ। 27 क्योंकि मुझे बेतुकी-सी बात लग रही है कि हम एक कैदी को रोम भेजें जिस पर अब तक साफ़ इलजामात नहीं लगाए गए हैं।”

26

पौलुस का अग्रिप्पा के सामने दिफ़ा

1 अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, “आपको अपने दिफ़ा में बोलने की इजाज़त है।” पौलुस ने हाथ से इशारा करके अपने दिफ़ा में बोलने का आगाज़ किया,

2 “अग्रिप्पा बादशाह, मैं अपने आपको खुशनसीब समझता हूँ कि आज आप ही मेरा यह दिफ़ाई बयान सुन रहे हैं जो मुझे यहूदियों के तमाम इलजामात के जवाब में देना पड़ रहा है। 3 खासकर इसलिए कि आप यहूदियों के रस्मो-रिवाज और तनाज़ों से वाकिफ़ हैं। मेरी अर्ज़ है कि आप सब्र से मेरी बात सुनें।

4 तमाम यहूदी जानते हैं कि मैंने जवानी से लेकर अब तक अपनी क़ौम बल्कि यरूशलम में किस तरह ज़िंदगी गुज़ारी। 5 वह मुझे बड़ी देर से जानते हैं और अगर चाहें तो इसकी गवाही भी दे सकते हैं कि मैं फ़रीसी की ज़िंदगी गुज़ारता था, हमारे मज़हब के उसी फ़िरके की जो सबसे कटर है। 6 और आज मेरी अदालत इस वजह से की जा रही है कि मैं उस वादे पर उम्मीद रखता हूँ जो अल्लाह ने हमारे बापदादा से किया। 7 हकीकत में यह वही उम्मीद है जिसकी वजह से हमारे बारह कबीले दिन-रात और बड़ी लग्न से अल्लाह की इबादत करते रहते हैं और जिसकी तकमील के लिए वह तड़पते हैं। तो भी ऐ बादशाह, यह लोग मुझ पर यह उम्मीद रखने का इलजाम लगा रहे हैं। 8 लेकिन आप सबको यह ख़याल क्यों नाक़ाबिले-यक़ीन लगता है कि अल्लाह मुरदों को ज़िंदा कर देता है?

9 पहले मैं भी समझता था कि हर मुमकिन तरीके से ईसा नासरी की मुखालफ़त करना मेरा फ़र्ज़ है। 10 और यह मैंने यरूशलम में किया भी। राहनुमा इमामों से इख़्तियार लेकर मैंने वहाँ के बहुत-से मुक़द्दसों को जेल में डलवा दिया। और जब कभी उन्हें सज़ाए-मौत देने का फ़ैसला करना था तो मैंने भी इस हक़ में वोट दिया। 11 मैं तमाम इबादतख़ानों में गया और बहुत दफ़ा उन्हें सज़ा दिलाकर ईसा के बारे में कुफ़र बकने पर मजबूर करने की कोशिश करता रहा। मैं इतने तैश में आ गया था कि उनकी ईज़ारसानी की गरज़ से बैस्ने-मुल्क भी गया।

पौलुस अपनी तबदीली का ज़िक्र करता है

12 एक दिन मैं राहनुमा इमामों से इख़्तियार और इजाज़तनामा लेकर दमिश्क जा रहा था। 13 दोपहर तकरीबन बारह बजे मैं सड़क पर चल रहा था कि एक रौशनी देखी जो सूरज से ज्यादा तेज़ थी। वह आसमान से आकर मेरे और मेरे हमसफ़रों के गिर्दीगिर्द चमकी। 14 हम सब ज़मीन पर गिर गए और मैंने अरामी ज़बान में एक आवाज़ सुनी, ‘साऊल, साऊल, तू मुझे क्यों सताता है? यों मेरे आँक़ुस के खिलाफ़ पाँव मारना तैरे

लिए ही दुश्वारी का बाइस है।' 15 मैंने पूछा, 'खुदावंद, आप कौन हैं?' खुदावंद ने जवाब दिया, 'मैं ईसा हूँ, वही जिसे तू सताता है। 16 लेकिन अब उठकर खड़ा हो जा, क्योंकि मैं तुझे अपना खादिम और गवाह मुक़र्रर करने के लिए तुझ पर जाहिर हुआ हूँ। जो कुछ तूने देखा है उस की तुझे गवाही देनी है और उस की भी जो मैं आइंदा तुझ पर जाहिर करूँगा। 17 मैं तुझे तेरी अपनी कौम से बचाए रखूँगा और उन गैरयहूदी कौमों से भी जिनके पास तुझे भेजूँगा। 18 तू उनकी आँखों को खोल देगा ताकि वह तारीकी और इबलीस के इख्तियार से नूर और अल्लाह की तरफ़ रूजू करें। फिर उनके गुनाहों को मुआफ़ कर दिया जाएगा और वह उनके साथ आसमानी मीरास में शरीक होंगे जो मुझ पर ईमान लाने से मुक़द्दस किए गए हैं।'

पौलुस अपनी खिदमत का बयान करता है

19 ऐ अग्रिप्पा बादशाह, जब मैंने यह सुना तो मैंने इस आसमानी रोया की नाफ़रमानी न की 20 बल्कि इस बात की मुनादी की कि लोग तौबा करके अल्लाह की तरफ़ रूजू करें और अपने अमल से अपनी तबदीली का इज़हार भी करें। मैंने इसकी तबलीग़ पहले दमिश्क़ में की, फिर यरूशलम और पूरे यहूदिया में और इसके बाद गैरयहूदी कौमों में भी। 21 इसी वजह से यहूदियों ने मुझे बैतुल-मुक़द्दस में पकड़कर क़त्ल करने की कोशिश की। 22 लेकिन अल्लाह ने आज तक मेरी मदद की है, इसलिए मैं यहाँ खड़ा होकर छोटों और बड़ों को अपनी गवाही दे सकता हूँ। जो कुछ मैं सुनाता हूँ वह वही कुछ है जो मूसा और नबियों ने कहा है, 23 कि मसीह दुख उठाकर पहला शख्स होगा जो मुरदों में से जी उठेगा और कि वह यों अपनी कौम और गैरयहूदियों के सामने अल्लाह के नूर का प्रचार करेगा।"

24 अचानक फेस्तुस पौलुस की बात काटकर चिल्ला उठा, "पौलुस, होश में आओ! इल्म की ज़्यादती ने तुम्हें दीवाना कर दिया है।"

25 पौलुस ने जवाब दिया, "मुअज़्ज़ज़ फेस्तुस, मैं दीवाना नहीं हूँ। मेरी यह बातें हकीकी और माकूल हैं। 26 बादशाह सलामत इनसे वाकिफ़ हैं, इसलिए मैं उनसे खुलकर बात कर सकता हूँ। मुझे यकीन है कि यह सब कुछ उनसे छुपा नहीं रहा, क्योंकि यह पोशीदगी में या किसी कोने में नहीं हुआ। 27 ऐ अग्रिप्पा बादशाह, क्या आप नबियों पर ईमान रखते हैं? बल्कि मैं जानता हूँ कि आप उन पर ईमान रखते हैं।"

28 अग्रिप्पा ने कहा, "आप तो बड़ी जल्दी से मुझे कायल करके मसीही बनाना चाहते हैं।"

29 पौलुस ने जवाब दिया, "जल्द या बदेर मैं अल्लाह से दुआ करता हूँ कि न सिर्फ़ आप बल्कि तमाम हाज़िरीन मेरी मानिंद बन जाएँ, सिवाए मेरी जंजीरों के।"

30 फिर बादशाह, गवर्नर, बिरनीके और बाकी सब उठकर चले गए। 31 वहाँ से निकलकर वह एक दूसरे से बात करने लगे। सब इस पर मुतफ़िक़ थे कि "इस आदमी ने कुछ नहीं किया जो सज़ाए-मौत या कैद के लायक़ हो।" 32 और अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा, "अगर इसने शहनशाह से अपील न की होती तो इसे रिहा किया जा सकता था।"

27

पौलुस का रोम की तरफ़ सफ़र

1 जब हमारा इटली के लिए सफ़र मुतैयिन किया गया तो पौलुस को चंद एक और कैदियों समेत एक रोमी अफ़सर * के हवाले किया गया जिसका नाम यूलियुस था जो शाही पलटन पर मुक़र्रर था। 2 अरिस्तरख़ुस भी हमारे साथ था। वह थिस्सलूनीके शहर का मकिदुनी आदमी था। हम अद्रमिन्तियुम शहर के एक जहाज़ पर सवार हुए जिसे सूबा आसिया की चंद बंदरगाहों को जाना था। 3 अगले दिन हम सैदा पहुँचे तो यूलियुस ने मेहरबानी करके पौलुस को शहर में उसके दोस्तों के पास जाने की इजाज़त दी ताकि वह उस की ज़रूरियात पूरी कर सकें। 4 जब हम वहाँ से रवाना हुए तो मुखालिफ़ हवाओं की वजह से जज़ीराए-कुबस्स और सूबा आसिया के दरमियान से गुज़रे। 5 फिर खुले समुंदर पर चलते चलते हम किलिकिया और पंफ़ीलिया के समुंदर से गुज़रकर सूबा लूकिया के शहर मूरा पहुँचे। 6 वहाँ कैदियों पर मुक़र्रर अफ़सर को पता चला कि इस्कंदरिया का एक मिसरी जहाज़ इटली जा रहा है। उस पर उसने हमें सवार किया।

7 कई दिन हम आहिस्ता आहिस्ता चले और बड़ी मुश्किल से कनिदुस के करीब पहुँचे। लेकिन मुखालिफ़ हवा की वजह से हमने जज़ीराए-क्रेते की तरफ़ स़ख़ किया और सलमोने शहर के करीब से गुज़रकर क्रेते की आड़ में सफ़र किया। 8 लेकिन वहाँ हम साहिल के साथ साथ चलते हुए बड़ी मुश्किल से एक जगह पहुँचे जिसका नाम 'हसीन- बंदर' था। शहर लसया उसके करीब वाके था।

9 बहुत वक़्त जाया हो गया था और अब बहरी सफ़र खतरनाक भी हो चुका था, क्योंकि कफ़फ़ारा का दिन (तक़रीबन नवंबर के शुरू में) गुज़र चुका था। इसलिए पौलुस ने उन्हें आगाह किया, 10 "हज़रात, मुझे पता है कि आगे जाकर हम पर बड़ी मुसीबत आएगी। हमें जहाज़, मालो-असबाब और जानों का नुक़सान उठाना पड़ेगा।" 11 लेकिन कैदियों पर मुक़र्रर रोमी अफ़सर ने उस की बात नज़रंदाज़ करके जहाज़ के नाख़ुदा और मालिक की बात मानी। 12 चूँकि 'हसीन- बंदर' में जहाज़ को सर्दियों के मौसम के लिए रखना मुश्किल था इसलिए अकसर लोग आगे फ़ेनिक्स तक पहुँचकर सर्दियों का मौसम गुज़ारना चाहते थे। क्योंकि फ़ेनिक्स जज़ीराए-क्रेते की अच्छी बंदरगाह थी जो सिर्फ़ जुनूब-मगरिब और शिमाल-मगरिब की तरफ़ खुली थी।

समुंदर पर तूफ़ान

* 27:1 सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

13 चुनौचे एक दिन जब जुनूब की सिम्ट से हलकी-सी हवा चलने लगी तो मल्लाहों ने सोचा कि हमारा इरादा पूरा हो गया है। वह लंगर उठाकर क्रेते के साहिल के साथ साथ चलने लगे। 14 लेकिन थोड़ी ही देर के बाद मौसम बदल गया और उन पर जज़ीरे की तरफ से एक तूफानी हवा टूट पड़ी जो बादे-शिमाल-मशरिकी कहलाती है। 15 जहाज़ हवा के काबू में आ गया और हवा की तरफ़ सख़्त न कर सका, इसलिए हमने हार मानकर जहाज़ को हवा के साथ साथ चलने दिया। 16 जब हम एक छोटे जज़ीरा बनाम कौदा की आड़ में से गुज़रने लगे तो हमने बड़ी मुश्किल से बचाव-कशती को जहाज़ पर उठाकर महफूज़ रखा। (अब तक वह रस्से से जहाज़ के साथ खींची जा रही थी।) 17 फिर मल्लाहों ने जहाज़ के ढाँचे को ज़्यादा मज़बूत बनाने की खातिर उसके इर्दगिर्द रस्से बाँधे। ख़ौफ़ यह था कि जहाज़ शिमाली अफ़्रीका के करीब पड़े चोरबालू में धँस जाए। (इन रेतों का नाम सूरतिस था।) इससे बचने के लिए उन्होंने लंगर डाल दिया † ताकि जहाज़ कुछ आहिस्ता चले। यों जहाज़ हवा के साथ चलते चलते आगे बढ़ा। 18 अगले दिन भी तूफ़ान जहाज़ को इतनी शिद्दत से झँझोड़ रहा था कि मल्लाह मालो-असबाब को समुंदर में फेंकने लगे। 19 तीसरे दिन उन्होंने अपने ही हाथों से जहाज़ चलाने का कुछ सामान समुंदर में फेंक दिया। 20 तूफ़ान की शिद्दत बहुत दिनों के बाद भी ख़त्म न हुई। न सूरज और न सितारे नज़र आए यहाँ तक कि आखिरकार हमारे बचने की हर उम्मीद जाती रही।

21 काफ़ी देर से दिल नहीं चाहता था कि खाना खाया जाए। आखिरकार पौलुस ने लोगों के बीच में खड़े होकर कहा, “हज़रात, बेहतर होता कि आप मेरी बात मानकर क्रेते से खाना न होते। फिर आप इस मुसीबत और ख़सारे से बच जाते। 22 लेकिन अब मैं आपको नसीहत करता हूँ कि हौसला रखें। आपमें से एक भी नहीं मरेगा। सिर्फ़ जहाज़ तबाह हो जाएगा। 23 क्योंकि पिछली रात एक फ़रिशता मेरे पास आ खड़ा हुआ, उसी खुदा का फ़रिशता जिसका मैं बंदा हूँ और जिसकी इबादत मैं करता हूँ। 24 उसने कहा, ‘पौलुस, मत डर। लाज़िम है कि तुझे शहनशाह के सामने पेश किया जाए। और अल्लाह अपनी मेहरबानी से तेरे वास्ते तमाम हमसफ़रों की जानें भी बचाए रखेगा।’ 25 इसलिए हौसला रखें, क्योंकि मेरा अल्लाह पर ईमान है कि ऐसा ही होगा जिस तरह उसने फ़रमाया है। 26 लेकिन जहाज़ को किसी जज़ीरे के साहिल पर चढ़ जाना है।”

27 तूफ़ान की चौधवीं रात जहाज़ बहीराए-अदरिया पर बहे चला जा रहा था कि तक्ररीबन आधी रात को मल्लाहों ने महसूस किया कि साहिल नज़दीक आ रहा है। 28 पानी की गहराई की पैमाइश करके उन्हें मालूम हुआ कि वह 120 फुट थी। थोड़ी देर के बाद उस की गहराई 90 फुट हो चुकी थी। 29 वह डर गए, क्योंकि उन्होंने अंदाज़ा लगाया कि ख़तरा है कि हम साहिल पर पड़ी चटानों से टकरा जाएँ। इसलिए उन्होंने जहाज़ के पिछले हिस्से से चार लंगर डालकर दुआ की कि दिन जल्दी से चढ़ जाए। 30 उस वक़्त मल्लाहों ने जहाज़ से फ़रार होने की कोशिश की। उन्होंने यह बहाना बनाकर कि हम जहाज़ के सामने से भी लंगर डालना चाहते हैं बचाव-कशती पानी में उतरने दी। 31 इस पर पौलुस ने कैदियों पर मुकर्रर अफ़सर और फ़ौजियों से कहा, “अगर यह आदमी जहाज़ पर न रहें तो आप सब मर जाएंगे।” 32 चुनौचे उन्होंने बचाव-कशती के रस्से को काटकर उसे खुला छोड़ दिया।

33 पौ फटनेवाली थी कि पौलुस ने सबको समझाया कि वह कुछ खा लें। उसने कहा, “आपने चौदह दिन से इज़तिराब की हालत में रहकर कुछ नहीं खाया। 34 अब मेहरबानी करके कुछ खा लें। यह आपके बचाव के लिए ज़रूरी है, क्योंकि आप न सिर्फ़ बच जाएंगे बल्कि आपका एक बाल भी बीका नहीं होगा।” 35 यह कहकर उसने कुछ रोटी ली और उन सबके सामने अल्लाह से शुक्रगुजारी की दुआ की। फिर उसे तोड़कर खाने लगा। 36 इससे दूसरों की हौसलाअफ़ज़ाई हुई और उन्होंने भी कुछ खाना खाया। 37 जहाज़ पर हम 276 अफ़राद थे। 38 जब सब सेर हो गए तो गंदुम को भी समुंदर में फेंका गया ताकि जहाज़ और हलका हो जाए।

जहाज़ टुकड़े टुकड़े हो जाता है

39 जब दिन चढ़ गया तो मल्लाहों ने साहिली इलाक़े को न पहचाना। लेकिन एक ख़लीज नज़र आई जिसका साहिल अच्छा था। उन्हें ख़याल आया कि शायद हम जहाज़ को वहाँ ख़ुशकी पर चढ़ा सकें। 40 चुनौचे उन्होंने लंगरों के रस्से काटकर उन्हें समुंदर में छोड़ दिया। फिर उन्होंने वह रस्से खोल दिए जिनसे पतवार बँधे होते थे और सामनेवाले बादबान को चढ़ाकर हवा के जोर से साहिल की तरफ़ सख़्त किया। 41 लेकिन चलते चलते जहाज़ एक चोरबालू से टकराकर उस पर चढ़ गया। जहाज़ का माथा धँस गया यहाँ तक कि वह हिल भी न सका जबकि उसका पिछला हिस्सा मौजों की टक्करों से टुकड़े टुकड़े होने लगा।

42 फ़ौजी कैदियों को क़त्ल करना चाहते थे ताकि वह जहाज़ से तैरकर फ़रार न हो सकें। 43 लेकिन उन पर मुकर्रर अफ़सर पौलुस को बचाना चाहता था, इसलिए उसने उन्हें ऐसा करने न दिया। उसने हुक्म दिया कि पहले वह सब जो तैर सकते हैं पानी में छल्लाँ लगाकर किनारे तक पहुँचें। 44 बाकियों को तख़्तों या जहाज़ के किसी टुकड़े को पकड़कर पहुँचना था। यों सब सहीह-सलामत साहिल तक पहुँचे।

28

जज़ीराए-मिलिते में

1 तूफ़ान से बचने पर हमें मालूम हुआ कि जज़ीरे का नाम मिलिते है। 2 मक़ामी लोगों ने हमें ग़ैरमामूली मेहरबानी दिखाई। उन्होंने आग जलाकर हमारा इस्तक़बाल किया, क्योंकि बारिश शुरू हो चुकी थी और ठंड थी। 3 पौलुस ने भी लकड़ी का ढेर जमा किया। लेकिन ज्योंही उसने उसे आग में फेंका एक ज़हरीला साँप आग की तपिश से भागकर निकल आया और पौलुस के हाथ से चिमटकर उसे डस लिया। 4 मक़ामी

† 27:17 लंगर यानी छोटा लंगर जिसकी मदद से जहाज़ का सख़्त एक ही सिम्ट में रखा जाता है।

लोगों ने साँप को पौलुस के हाथ से लगे देखा तो एक दूसरे से कहने लगे, “यह आदमी जरूर कातिल होगा। गो यह समुंदर से बच गया, लेकिन इनसाफ़ की देवी इसे जीने नहीं देती।” ⁵ लेकिन पौलुस ने साँप को झटककर आग में फेंक दिया, और साँप का कोई बुरा असर उस पर न हुआ। ⁶ लोग इस इंतज़ार में रहे कि वह सूज जाए या अचानक गिर पड़े, लेकिन काफी देर के बाद भी कुछ न हुआ। इस पर उन्होंने अपना खयाल बदलकर उसे देवता करार दिया।

⁷ करीब ही जज़ीरे के सबसे बड़े आदमी की ज़मीनें थीं। उसका नाम पुबलियुस था। उसने अपने घर में हमारा इस्तक़बाल किया और तीन दिन तक हमारी ख़ूब मेहमान-नवाज़ी की। ⁸ उसका बाप बीमार पड़ा था, वह बुखार और पेचिश के मरज़ में मुब्तला था। पौलुस उसके कमरे में गया, उसके लिए दुआ की और अपने हाथ उस पर रख दिए। इस पर मरीज़ को शफ़ा मिली। ⁹ जब यह हुआ तो जज़ीरे के बाकी तमाम मरीज़ों ने पौलुस के पास आकर शफ़ा पाई। ¹⁰ नतीजे में उन्होंने कई तरह से हमारी इज़्ज़त की। और जब रवाना होने का वक़्त आ गया तो उन्होंने हमें वह सब कुछ मुहैया किया जो सफ़र के लिए दरकार था।

जज़ीराए-मिलिते से रोम तक

¹¹ जज़ीरे पर तीन माह गुज़र गए। फिर हम एक जहाज़ पर सवार हुए जो सर्दियों के मौसम के लिए वहाँ ठहर गया था। यह जहाज़ इस्कंदरिया का था और उसके माथे पर जुड़वाँ देवताओं ‘कास्टर’ और ‘पोल्लुक्स’ की मूर्त नसब थी। हम वहाँ से सूखसत होकर ¹² सुरकूसा शहर पहुँचे। तीन दिन के बाद ¹³ हम वहाँ से रेगियुम शहर गए जहाँ हम सिर्फ़ एक दिन ठहरे। फिर जुनूब से हवा उठी, इसलिए हम अगले दिन पुतियोली पहुँचे। ¹⁴ इस शहर में हमारी मुलाकात कुछ भाइयों से हुई। उन्होंने हमें अपने पास एक हफ़ता रहने की दावत दी। यों हम रोम पहुँच गए। ¹⁵ रोम के भाइयों ने हमारे बारे में सुन रखा था, और कुछ हमारा इस्तक़बाल करने के लिए क़सबा बनाम अप्पियुस के चौक तक आए जबकि कुछ सिर्फ़ ‘तीन-सराय’ तक आ सके। उन्हें देखकर पौलुस ने अल्लाह का शुक्र किया और नया हौसला पाया।

रोम में

¹⁶ हमारे रोम में पहुँचने पर पौलुस को अपने किराए के मकान में रहने की इजाज़त मिली, गो एक फ़ौजी उस की पहरादारी करने के लिए उसके साथ रहा।

¹⁷ तीन दिन गुज़र गए तो पौलुस ने यहूदी राहनुमाओं को बुलाया। जब वह जमा हुए तो उसने उनसे कहा, “भाइयो, मुझे यरूशलम में गिरफ़्तार करके रोमियों के हवाले कर दिया गया हालाँकि मैंने अपनी क़ौम या अपने बापदादा के रस्मो-रिवाज के खिलाफ़ कुछ नहीं किया था। ¹⁸ रोमी मेरा जायज़ा लेकर मुझे रिहा करना चाहते थे, क्योंकि उन्हें मुझे सज़ाए-मौत देने का कोई सबब न मिला था। ¹⁹ लेकिन यहूदियों ने एतराज़ किया और यों मुझे शहनशाह से अपील करने पर मजबूर कर दिया गया, गो मेरा यह इरादा नहीं है कि मैं अपनी क़ौम पर कोई इलज़ाम लगाऊँ। ²⁰ मैंने इसलिए आपको बुलाया ताकि आपसे मिलूँ और गुफ़्तगू करूँ। मैं उस शख्स की खातिर इन ज़ंजीरों से जकड़ा हुआ हूँ जिसके आने की उम्मीद इसराइल रखता है।”

²¹ यहूदियों ने उसे जवाब दिया, “हमें यहूदिया से आपके बारे में कोई भी ख़त नहीं मिला। और जितने भाई वहाँ से आए हैं उनमें से एक ने भी आपके बारे में न तो कोई मनफ़ी रिपोर्ट दी न कोई बुरी बात बताई। ²² लेकिन हम आपसे सुनना चाहते हैं कि आपके खयालात क्या हैं, क्योंकि हम इतना जानते हैं कि हर जगह लोग इस फिरके के खिलाफ़ बातें कर रहे हैं।”

²³ चुनौचे उन्होंने मिलने का एक दिन मुक़र्रर किया। जब यहूदी दुबारा उस जगह आए जहाँ पौलुस रहता था तो उनकी तादाद बहुत ज़्यादा थी। सुबह से लेकर शाम तक उसने अल्लाह की बादशाही बयान की और उस की गवाही दी। उसने उन्हें मूसा की शरीअत और नबियों के हवालाजात पेश कर करके ईसा के बारे में कायल करने की कोशिश की। ²⁴ कुछ तो कायल हो गए, लेकिन बाकी ईमान न लाए। ²⁵ उनमें नाइतफ़ाकी पैदा हुई तो वह चले गए। जब वह जाने लगे तो पौलुस ने उनसे कहा, “रूहुल-कुदूस ने यसायाह नबी की मारिफ़त आपके बापदादा से ठीक कहा कि

²⁶ जा, इस क़ौम को बता,
‘तुम अपने कानों से सुनोगे
मगर कुछ नहीं समझोगे,
तुम अपनी आँखों से देखोगे
मगर कुछ नहीं जानोगे।

²⁷ क्योंकि इस क़ौम का दिल बेहिस हो गया है।
वह मुश्किल से अपने कानों से सुनते हैं,
उन्होंने अपनी आँखों को बंद कर रखा है,
ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें,
अपने कानों से सुनें,
अपने दिल से समझें,
मेरी तरफ़ रूजू करें
और मैं उन्हें शफ़ा दूँ।”

28 पौलुस ने अपनी बात इन अलफ़ाज़ से ख़त्म की, “अब जान लें कि अल्लाह की तरफ़ से यह नजात ग़ैरयहूदियों को भी पेश की गई है और वह सुनेंगे भी!”

29 [जब उसने यह कहा तो यहूदी आपस में बहस-मुबाहसा करते हुए चले गए।]

30 पौलुस पूरे दो साल अपने किराए के घर में रहा। जो भी उसके पास आया उसका उसने इस्तक्रबाल करके 31 दिलेरी से अल्लाह की बादशाही की मुनादी की और ख़ुदावंद ईसा मसीह की तालीम दी। और किसी ने मुदाख़लत न की।

रोमियों

सलाम

¹ यह ख़त मसीह ईसा के गुलाम पौलस की तरफ़ से है जिसे रसूल होने के लिए बुलाया और अल्लाह की खुशख़बरी की मुनादी करने के लिए अलग किया गया है।

² पाक नबिश्तों में दर्ज इस खुशख़बरी का वादा अल्लाह ने पहले ही अपने नबियों से कर रखा था। ³ और यह पैग़ाम उसके फ़रज़ंद ईसा के बारे में है। इनसानी लिहाज़ से वह दाऊद की नसल से पैदा हुआ, ⁴ जबकि रूहुल-कुद्स के लिहाज़ से वह कुदरत के साथ अल्लाह का फ़रज़ंद ठहरा जब वह मुरदों में से जी उठा। यह है हमारे खुदावंद ईसा मसीह के बारे में अल्लाह की खुशख़बरी। ⁵ मसीह से हमें रसूली इख़्तियार का यह फ़ज़ल हासिल हुआ है कि हम तमाम ग़ैरयहूदियों में मुनादी करें ताकि वह ईमान लाकर उसके ताबे हो जाएँ और यों मसीह के नाम को जलाल मिले। ⁶ आप भी उन ग़ैरयहूदियों में से हैं, जो ईसा मसीह के बुलाए हुए हैं।

⁷ मैं आप सबको लिख रहा हूँ जो रोम में अल्लाह के प्यारे हैं और मख़सूसो-मुक़द्दस होने के लिए बुलाए गए हैं।

ख़ुदा हमारा बाप और ख़ुदावंद ईसा मसीह आपको फ़ज़ल और सलामती अता करें।

रोम जाने की आरज़ू

⁸ अब्बल, मैं आप सबके लिए ईसा मसीह के वसीले से अपने ख़ुदा का शुक्र करता हूँ, क्योंकि पूरी दुनिया में आपके ईमान का चर्चा हो रहा है। ⁹ ख़ुदा ही मेरा गवाह है जिसकी ख़िदमत मैं अपनी रूह में करता हूँ जब मैं उसके फ़रज़ंद के बारे में खुशख़बरी फैलाता हूँ, मैं लगातार आपको याद करता रहता हूँ ¹⁰ और हर वक़्त अपनी दुआओं में मिननत करता हूँ कि अल्लाह मुझे आख़िरकार आपके पास आने की कामयाबी अता करे। ¹¹ क्योंकि मैं आपसे मिलने का आरज़ूमंद हूँ। मैं चाहता हूँ कि मेरे ज़रीए आपको कुछ रूहानी बरकत मिल जाए और यों आप मज़बूत हो जाएँ। ¹² यानी आने का मक़सद यह है कि मेरे ईमान से आपकी हौसलाअफ़ज़ाई की जाए और इसी तरह आपके ईमान से मेरा हौसला भी बढ़ जाए।

¹³ भाइयो, आपके इल्म में हो कि मैंने बहुत दफ़ा आपके पास आने का इरादा किया। क्योंकि जिस तरह दीगर ग़ैरयहूदी अक़वाम में मेरी ख़िदमत से फल पैदा हुआ है उसी तरह आपमें भी फल देखना चाहता हूँ। लेकिन आज तक मुझे रोका गया है। ¹⁴ बात यह है कि यह ख़िदमत संरज़ाम देना मेरा फ़र्ज़ है, खाह यूनानियों में हो या ग़ैरयूनानियों में, खाह दानाओं में हो या नादानों में। ¹⁵ यही वजह है कि मैं आपको भी जो रोम में रहते हैं अल्लाह की खुशख़बरी सुनाने का मुश्ताक हूँ।

अल्लाह की खुशख़बरी की कुदरत

¹⁶ मैं तो खुशख़बरी के सबब से शर्माता नहीं, क्योंकि यह अल्लाह की कुदरत है जो हर एक को जो ईमान लाता है नजात देती है, पहले यहूदियों को, फिर ग़ैरयहूदियों को। ¹⁷ क्योंकि इस खुशख़बरी में अल्लाह की ही रास्तबाज़ी ज़ाहिर होती है, वह रास्तबाज़ी जो शुरू से आख़िर तक ईमान पर मबनी है। यही बात कलामे-मुक़द्दस में दर्ज है जब लिखा है, “रास्तबाज़ ईमान ही से जीता रहेगा।”

इनसान पर अल्लाह का ग़ज़ब

¹⁸ लेकिन अल्लाह का ग़ज़ब आसमान पर से उन तमाम बेदीन और नारास्त लोगों पर नाज़िल होता है जो सच्चाई को अपनी नारास्ती से दबाए रखते हैं। ¹⁹ जो कुछ अल्लाह के बारे में मालूम हो सकता है वह तो उन पर ज़ाहिर है, हाँ अल्लाह ने ख़ुद यह उन पर ज़ाहिर किया है। ²⁰ क्योंकि दुनिया की तख़लीक़ से लेकर आज तक इनसान अल्लाह की अनदेखी फ़ितरत यानी उस की अज़ली कुदरत और उलूहियत मख़लूकात का मुशाहदा करने से पहचान सकता है। इसलिए उनके पास कोई उज़्र नहीं। ²¹ अल्लाह को जानने के बावज़ूद उन्होंने उसे वह जलाल न दिया जो उसका हक़ है, न उसका शुक्र अदा किया बल्कि वह बातिल ख़यालात में पड़ गए और उनके बेसमझ दिलों पर तारीकी छा गई। ²² वह दावा तो करते थे कि हम दाना हैं, लेकिन अहमक साबित हुए। ²³ यों उन्होंने ग़ैरफ़ानी ख़ुदा को जलाल देने के बजाए ऐसे बुतों की पूजा की जो फ़ानी इनसान, परिदों, चौपाइयों और रेंगनेवाले जानवरों की सूरत में बनाए गए थे।

²⁴ इसलिए अल्लाह ने उन्हें उन नजिस कामों में छोड़ दिया जो उनके दिल करना चाहते थे। नतीजे में उनके जिस्म एक दूसरे से बेहुर्मत होते रहे। ²⁵ हाँ, उन्होंने अल्लाह के बारे में सच्चाई को रद्द करके झूठ को अपना लिया और मख़लूकात की परस्तिश और ख़िदमत की, न कि ख़ालिक़ की, जिसकी तारीफ़ अबद तक होती रहे, आमीन।

²⁶ यही वजह है कि अल्लाह ने उन्हें उनकी शर्मनाक शहवतों में छोड़ दिया। उनकी ख़वातीन ने फ़ितरती जिंसी ताल्लुकात के बजाए ग़ैरफ़ितरती ताल्लुकात रखे। ²⁷ इसी तरह मर्द ख़वातीन के साथ फ़ितरती ताल्लुकात छोड़कर एक दूसरे की शहवत में मस्त हो गए। मर्दों ने मर्दों के साथ बेहया हरकतें करके अपने बदनों में अपनी इस गुमराही का मुनासिब बदला पाया।

28 और चूँकि उन्होंने अल्लाह को जानने से इनकार कर दिया इसलिए उसने उन्हें उनकी मकसूह सोच में छोड़ दिया। और इसलिए वह ऐसी हरकतें करते रहते हैं जो कभी नहीं करनी चाहिएँ। 29 वह हर तरह की नारास्ती, शर, लालच और बुराई से भरे हुए हैं। वह हसद, खूनेज़ी, झगड़े, फ़रेब और कीनावरी से लबरेज़ हैं। वह चुगली खानेवाले, 30 तोहमत लगानेवाले, अल्लाह से नफ़रत करनेवाले, सरकश, मग़स्स, शेखीबाज़, बदी को ईजाद करनेवाले, माँ-बाप के नाफ़रमान, 31 बेसमझ, बेवफ़ा, संगदिल और बेरहम हैं। 32 अगरचे वह अल्लाह का फ़रमान जानते हैं कि ऐसा करनेवाले सज़ाए-मौत के मुस्तहिक़ हैं तो भी वह ऐसा करते हैं। न सिर्फ़ यह बल्कि वह ऐसा करनेवाले दीगर लोगों को शाबाश भी देते हैं।

2

अल्लाह की रास्त अदालत

1 ऐ इन्सान, क्या तू दूसरों को मुजरिम ठहराता है? तू जो कोई भी हो तेरा कोई उज़्र नहीं। क्योंकि तू खुद भी वही कुछ करता है जिसमें तू दूसरों को मुजरिम ठहराता है और यों अपने आपको भी मुजरिम करार देता है। 2 अब हम जानते हैं कि ऐसे काम करनेवालों पर अल्लाह का फ़ैसला मुसिफ़ाना है। 3 ताहम तू वही कुछ करता है जिसमें तू दूसरों को मुजरिम ठहराता है। क्या तू समझता है कि खुद अल्लाह की अदालत से बच जाएगा? 4 या क्या तू उस की वसी मेहरबानी, तहम्मूल और सब्र को हक़ीर जानता है? क्या तुझे मालूम नहीं कि अल्लाह की मेहरबानी तुझे तौबा तक ले जाना चाहती है? 5 लेकिन तू हटधर्म है, तू तौबा करने के लिए तैयार नहीं और यों अपनी सज़ा में इज़ाफ़ा करता जा रहा है, वह सज़ा जो उस दिन दी जाएगी जब अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल होगा, जब उस की रास्त अदालत ज़ाहिर होगी। 6 अल्लाह हर एक को उसके कामों का बदला देगा। 7 कुछ लोग साबितक़दमी से नेक काम करते और जलाल, इज़्ज़त और बक्रा के तालिब रहते हैं। उन्हें अल्लाह अबदी ज़िंदगी अता करेगा। 8 लेकिन कुछ लोग खुदग़रज़ हैं और सच्चाई की नहीं बल्कि नारास्ती की पैरवी करते हैं। उन पर अल्लाह का ग़ज़ब और क़हर नाज़िल होगा। 9 मुसीबत और परेशानी हर उस इन्सान पर आएगी जो बुराई करता है, पहले यहूदी पर, फिर यूनानी पर। 10 लेकिन जलाल, इज़्ज़त और सलामती हर उस इन्सान को हासिल होगी जो नेकी करता है, पहले यहूदी को, फिर यूनानी को। 11 क्योंकि अल्लाह किसी का भी तरफ़दार नहीं।

12 ग़ैरयहूदियों के पास मूसवी शरीअत नहीं है, इसलिए वह शरीअत के बग़ैर ही गुनाह करके हलाक हो जाते हैं। यहूदियों के पास शरीअत है, लेकिन वह भी नहीं बचेंगे। क्योंकि जब वह गुनाह करते हैं तो शरीअत ही उन्हें मुजरिम ठहराती है। 13 क्योंकि अल्लाह के नज़दीक यह काफ़ी नहीं कि हम शरीअत की बातें सुनें बल्कि वह हमें उस वक़्त ही रास्तबाज़ करार देता है जब शरीअत पर अमल भी करते हैं। 14 और गो ग़ैरयहूदियों के पास शरीअत नहीं होती लेकिन जब भी वह फ़ितरती तौर पर वह कुछ करते हैं जो शरीअत फ़रमाती है तो ज़ाहिर करते हैं कि गो हमारे पास शरीअत नहीं तो भी हम अपने आपके लिए खुद शरीअत हैं। 15 इसमें वह साबित करते हैं कि शरीअत के तकाज़े उनके दिल पर लिखे हुए हैं। उनका ज़मीर भी इसकी गवाही देता है, क्योंकि उनके खयालात कभी एक दूसरे की मज़म्मत और कभी एक दूसरे का दिफ़ा भी करते हैं। 16 गरज़, मेरी खुशख़बरी के मुताबिक़ हर एक को उस दिन अपना अज़्र मिलेगा जब अल्लाह ईसा मसीह की मारिफ़त इन्सानों की पोशीदा बातों की अदालत करेगा।

यहूदी और शरीअत

17 अच्छा, तू अपने आपको यहूदी कहता है। तू शरीअत पर इन्हिसार करता और अल्लाह के साथ अपने ताल्लुक पर फ़ख़र करता है। 18 तू उस की मरज़ी को जानता है और शरीअत की तालीम पाने के बाइस सहीह राह की पहचान रखता है। 19 तुझे पूरा यकीन है, “मैं अंधों का कायद, तारीकी में बसनेवालों की रौशनी, 20 बेसमझों का मुअल्लिम और बच्चों का उस्ताद हूँ।” एक लिहाज़ से यह दुस्त भी है, क्योंकि शरीअत की सूरत में तेरे पास इल्मो-इरफ़ान और सच्चाई मौजूद है। 21 अब बता, तू जो औरों को सिखाता है अपने आपको क्यों नहीं सिखाता? तू जो चोरी न करने की मुनादी करता है, खुद चोरी क्यों करता है? 22 तू जो औरों को ज़िना करने से मना करता है, खुद ज़िना क्यों करता है? तू जो बूतों से धिन खाता है, खुद मंदिरो को क्यों लूटता है? 23 तू जो शरीअत पर फ़ख़र करता है, क्यों इसकी खिलाफ़वरज़ी करके अल्लाह की बेइज्ज़ती करता है? 24 यह वही बात है जो कलामे-मुक़द्दस में लिखी है, “तुम्हारे सबब से ग़ैरयहूदियों में अल्लाह के नाम पर कुफ़र बका जाता है।”

25 ख़तने का फ़ायदा तो उस वक़्त होता है जब तू शरीअत पर अमल करता है। लेकिन अगर तू उस की हुक्मअदूली करता है तो तू नामख़तून जैसा है। 26 इसके बरअक्स अगर नामख़तून ग़ैरयहूदी शरीअत के तकाज़ों को पूरा करता है तो क्या अल्लाह उसे मख़तून यहूदी के बराबर नहीं ठहराएगा? 27 चुनौचे जो नामख़तून ग़ैरयहूदी शरीअत पर अमल करते हैं वह आप यहूदियों को मुजरिम ठहराएँ जिनका ख़तना हुआ है और जिनके पास शरीअत है, क्योंकि आप शरीअत पर अमल नहीं करते। 28 आप इस बिना पर हक़ीकी यहूदी नहीं हैं कि आपके वालिदैन यहूदी थे या आपके बदन का ख़तना ज़ाहिरी तौर पर हुआ है। 29 बल्कि हक़ीकी यहूदी वह है जो बातिन में यहूदी है। और हक़ीकी ख़तना उस वक़्त होता है जब दिल का ख़तना हुआ है। ऐसा ख़तना शरीअत से नहीं बल्कि रूहुल-कुद्स के वसीले से किया जाता है। और ऐसे यहूदी को इन्सान की तरफ़ से नहीं बल्कि अल्लाह की तरफ़ से तारीफ़ मिलती है।

3

1 तो क्या यहूदी होने का या खतना का कोई फायदा है? 2 जी हाँ, हर तरह का! अब्बल तो यह कि अल्लाह का कलाम उनके सुपुर्द किया गया है। 3 अगर उनमें से बाज़ बेवफ़ा निकले तो क्या हुआ? क्या इससे अल्लाह की वफ़ादारी भी ख़त्म हो जाएगी? 4 कभी नहीं! लाज़िम है कि अल्लाह सच्चा ठहरे गो हर इनसान झूटा है। यों कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, “लाज़िम है कि तू बोलते वक़््त रास्त ठहरे और अदालत करते वक़््त ग़ालिब आए।”

5 कोई कह सकता है, “हमारी नारास्ती का एक अच्छा मक़सद होता है, क्योंकि इससे लोगों पर अल्लाह की रास्ती ज़ाहिर होती है। तो क्या अल्लाह बेइन्साफ़ नहीं होगा अगर वह अपना ग़ज़ब हम पर नाज़िल करे?” (मैं इनसानी ख़याल पेश कर रहा हूँ)। 6 हरगिज़ नहीं! अगर अल्लाह रास्त न होता तो फिर वह दुनिया की अदालत किस तरह कर सकता?

7 शायद कोई और एतराज़ करे, “अगर मेरा झूट अल्लाह की सच्चाई को कसरत से नुमायाँ करता है और यों उसका जलाल बढ़ता है तो वह मुझे क्योंकि गुनाहगार करार दे सकता है?” 8 कुछ लोग हम पर यह कुफ़र भी बकते हैं कि हम कहते हैं, “आओ, हम बुराई करें ताकि भलाई निकले।” इन्साफ़ का तकाज़ा है कि ऐसे लोगों को मुजरिम ठहराया जाए।

कोई रास्तबाज़ नहीं

9 अब हम क्या कहें? क्या हम यहूदी दूसरों से बरतर हैं? बिल्कुल नहीं। हम तो पहले ही यह इलज़ाम लगा चुके हैं कि यहूदी और यूनानी सब ही गुनाह के कब्जे में हैं। 10 कलामे-मुक़द्दस में यों लिखा है,

“कोई नहीं जो रास्तबाज़ है, एक भी नहीं।

11 कोई नहीं जो समझदार है,

कोई नहीं जो अल्लाह का तालिब है।

12 अफ़सोस, सब सहीह राह से भटक गए,

सबके सब बिगड़ गए हैं।

कोई नहीं जो भलाई करता हो, एक भी नहीं।

13 उनका गला खुली क़ब्र है,

उनकी ज़बान फ़रेब देती है।

उनके होंठों में साँप का ज़हर है।

14 उनका मुँह लानत और कड़वाहट से भरा है।

15 उनके पाँव खून बहाने के लिए जल्दी करते हैं।

16 अपने पीछे वह तबाहीओ-बरबादी छोड़ जाते हैं,

17 और वह सलामती की राह नहीं जानते।

18 उनकी आँखों के सामने ख़ुदा का ख़ौफ़ नहीं होता।”

19 अब हम जानते हैं कि शरीअत जो कुछ फ़रमाती है उन्हें फ़रमाती है जिनके सुपुर्द वह की गई है। मक़सद यह है कि हर इनसान के बहाने ख़त्म किए जाएँ और तमाम दुनिया अल्लाह के सामने मुजरिम ठहरे। 20 क्योंकि शरीअत के तकाज़े पूरे करने से कोई भी उसके सामने रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता, बल्कि शरीअत का काम यह है कि हमारे अंदर गुनाहगार होने का एहसास पैदा करे।

रास्तबाज़ होने के लिए ईमान ज़रूरी है

21 लेकिन अब अल्लाह ने हम पर एक राह का इनकिशाफ़ किया है जिससे हम शरीअत के बग़ैर ही उसके सामने रास्तबाज़ ठहर सकते हैं। तौरैत और नबियों के सहीफ़े भी इसकी तसदीक़ करते हैं। 22 राह यह है कि जब हम ईसा मसीह पर ईमान लाते हैं तो अल्लाह हमें रास्तबाज़ करार देता है। और यह राह सबके लिए है। क्योंकि कोई भी फ़रक़ नहीं, 23 सबने गुनाह किया, सब अल्लाह के उस जलाल से महरूम हैं जिसका वह तकाज़ा करता है, 24 और सब मुफ़्त में अल्लाह के फ़ज़ल ही से रास्तबाज़ ठहराए जाते हैं, उस फ़िदिये के वसीले से जो मसीह ईसा ने दिया। 25 क्योंकि अल्लाह ने ईसा को उसके खून के बाइस कफ़फ़ारा का वसीला बनाकर पेश किया, ऐसा कफ़फ़ारा जिससे ईमान लानेवालों को गुनाहों की मुआफ़ी मिलती है। यों अल्लाह ने अपनी रास्ती ज़ाहिर की, पहले माज़ी में जब वह अपने सब्रो-तहम्मूल में गुनाहों की सज़ा देने से बाज़ रहा 26 और अब मौजूदा ज़माने में भी। इससे वह ज़ाहिर करता है कि वह रास्त है और हर एक को रास्तबाज़ ठहराता है जो ईसा पर ईमान लाया है।

27 अब हमारा फ़ख़र कहाँ रहा? उसे तो ख़त्म कर दिया गया है। किस शरीअत से? क्या आमाल की शरीअत से? नहीं, बल्कि ईमान की शरीअत से। 28 क्योंकि हम कहते हैं कि इनसान को ईमान से रास्तबाज़ ठहराया जाता है, न कि आमाल से। 29 क्या अल्लाह सिर्फ़ यहूदियों का ख़ुदा है? ग़ैरयहूदियों का नहीं? हाँ, ग़ैरयहूदियों का भी है। 30 क्योंकि अल्लाह एक ही है जो मख़तून और नामख़तून दोनों को ईमान ही से रास्तबाज़ ठहराएगा। 31 फिर क्या हम शरीअत को ईमान से मनसूख़ करते हैं? हरगिज़ नहीं, बल्कि हम शरीअत को कायम रखते हैं।

4

इब्राहीम ईमान से रास्तबाज़ ठहरा

¹ इब्राहीम जिस्मानी लिहाज़ से हमारा बाप था। तो रास्तबाज़ ठहरने के सिलसिले में उसका क्या तजरबा था? ² हम कह सकते हैं कि अगर वह शरीअत पर अमल करने से रास्तबाज़ ठहरता तो वह अपने आप पर फ़ख़र कर सकता था। लेकिन अल्लाह के नज़दीक उसके पास अपने आप पर फ़ख़र करने का कोई सबब न था। ³ क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, “इब्राहीम ने अल्लाह पर भरोसा रखा। इस बिना पर अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ करार दिया।” ⁴ जब लोग काम करते हैं तो उनकी मज़दूरी कोई खास मेहरबानी करार नहीं दी जाती, बल्कि यह तो उनका हक़ बनता है। ⁵ लेकिन जब लोग काम नहीं करते बल्कि अल्लाह पर ईमान रखते हैं जो बेदीनों को रास्तबाज़ करार देता है तो उनका कोई हक़ नहीं बनता। वह उनके ईमान ही की बिना पर रास्तबाज़ करार दिए जाते हैं। ⁶ दाऊद यही बात बयान करता है जब वह उस शख्स को मुबारक कहता है जिसे अल्लाह बग़ैर आमाल के रास्तबाज़ ठहराता है,

⁷ “मुबारक हैं वह जिनके जरायम मुआफ़ किए गए,

जिनके गुनाह ढाँपे गए हैं।

⁸ मुबारक है वह जिसका गुनाह रब हिसाब में नहीं लाएगा।”

⁹ क्या यह मुबारकबादी सिर्फ़ मख़तूनों के लिए है या नामख़तूनों के लिए भी? हम तो बयान कर चुके हैं कि इब्राहीम ईमान की बिना पर रास्तबाज़ ठहरा। ¹⁰ उसे किस हालत में रास्तबाज़ ठहराया गया? ख़तना कराने के बाद या पहले? ख़तने के बाद नहीं बल्कि पहले। ¹¹ और ख़तना का जो निशान उसे मिला वह उस की रास्तबाज़ी की मुहर थी, वह रास्तबाज़ी जो उसे ख़तना कराने से पेशतर मिली, उस वक़्त जब वह ईमान लाया। यों वह उन सबका बाप है जो बग़ैर ख़तना कराए ईमान लाए हैं और इस बिना पर रास्तबाज़ ठहरते हैं। ¹² साथ ही वह ख़तना करानेवालों का बाप भी है, लेकिन उनका जिनका न सिर्फ़ ख़तना हुआ है बल्कि जो हमारे बाप इब्राहीम के उस ईमान के नक्शे-क़दम पर चलते हैं जो वह ख़तना कराने से पेशतर रखता था।

अल्लाह का वादा ईमान से हासिल होता है

¹³ जब अल्लाह ने इब्राहीम और उस की औलाद से वादा किया कि वह दुनिया का वारिस होगा तो उसने यह इसलिए नहीं किया कि इब्राहीम ने शरीअत की पैरवी की बल्कि इसलिए कि वह ईमान लाया और यों रास्तबाज़ ठहराया गया। ¹⁴ क्योंकि अगर वह वारिस हैं जो शरीअत के पैरोकार हैं तो फिर ईमान बेअसर ठहरा और अल्लाह का वादा मिट गया। ¹⁵ शरीअत अल्लाह का ग़ज़ब ही पैदा करती है। लेकिन जहाँ कोई शरीअत नहीं वहाँ उस की खिलाफ़वरज़ी भी नहीं।

¹⁶ चुनौचे यह मीरास ईमान से मिलती है ताकि इसकी बुनियाद अल्लाह का फ़ज़ल हो और इसका वादा इब्राहीम की तमाम नसल के लिए हो, न सिर्फ़ शरीअत के पैरोकारों के लिए बल्कि उनके लिए भी जो इब्राहीम का-सा ईमान रखते हैं। यही हम सबका बाप है। ¹⁷ यों अल्लाह कलामे-मुक़द्दस में उससे वादा करता है, “मैंने तुझे बहुत क़ौमों का बाप बना दिया है।” अल्लाह ही के नज़दीक इब्राहीम हम सबका बाप है। क्योंकि उसका ईमान उस ख़ुदा पर था जो मुरदों को ज़िंदा करता और जिसके हुक्म पर वह कुछ पैदा होता है जो पहले नहीं था। ¹⁸ उम्मीद की कोई किरण दिखाई नहीं देती थी, फिर भी इब्राहीम उम्मीद के साथ ईमान रखता रहा कि मैं ज़रूर बहुत क़ौमों का बाप बनूँगा। और आख़िरकार ऐसा ही हुआ, जैसा कलामे-मुक़द्दस में वादा किया गया था कि “तेरी औलाद इतनी ही बेशुमार होगी।” ¹⁹ और इब्राहीम का ईमान कमज़ोर न पड़ा, हालाँकि उसे मालूम था कि मैं तक़रीबन सौ साल का हूँ और मेरा और सारा के बदन गोया मुरदा हैं, अब बच्चे पैदा करने की उम्र सारा के लिए गुज़र चुकी है। ²⁰ तो भी इब्राहीम का ईमान ख़त्म न हुआ, न उसने अल्लाह के वादे पर शक़ किया बल्कि ईमान में वह मज़ीद मज़बूत हुआ और अल्लाह को जलाल देता रहा। ²¹ उसे पुख़्ता यक़ीन था कि अल्लाह अपने वादे को पूरा करने की कुदरत रखता है। ²² उसके इस ईमान की वजह से अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ करार दिया। ²³ कलामे-मुक़द्दस में यह बात कि अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ करार दिया न सिर्फ़ उस की खातिर लिखी गई ²⁴ बल्कि हमारी खातिर भी। क्योंकि अल्लाह हमें भी रास्तबाज़ करार देगा अगर हम उस पर ईमान रखें जिसने हमारे ख़ुदावंद ईसा को मुरदों में से ज़िंदा किया। ²⁵ हमारी ही ख़ताओं की वजह से उसे मौत के हवाले किया गया, और हमें ही रास्तबाज़ करार देने के लिए उसे ज़िंदा किया गया।

5

रास्तबाज़ी का अंजाम

¹ अब चूँकि हमें ईमान से रास्तबाज़ करार दिया गया है इसलिए अल्लाह के साथ हमारी सुलह है। इस सुलह का वसीला हमारा ख़ुदावंद ईसा मसीह है। ² हमारे ईमान लाने पर उसने हमें फ़ज़ल के उस मक़ाम तक पहुँचाया जहाँ हम आज कायम हैं। और यों हम इस उम्मीद पर फ़ख़र करते हैं कि हम अल्लाह के जलाल में शरीक होंगे। ³ न सिर्फ़ यह बल्कि हम उस वक़्त भी फ़ख़र करते हैं जब हम मुसीबतों में फँसे होते हैं। क्योंकि हम जानते हैं कि मुसीबत से साबितक़दमी पैदा होती है, ⁴ साबितक़दमी से पुख़्तगी और पुख़्तगी से उम्मीद। ⁵ और उम्मीद हमें शर्मिंदा होने नहीं देती, क्योंकि अल्लाह ने हमें स्तुल-कुद्स देकर उसके वसीले से हमारे दिलों में अपनी मुहब्बत उंडेली है।

⁶ क्योंकि हम अभी कमज़ोर ही थे तो मसीह ने हम बेदीनों की खातिर अपनी जान दे दी। ⁷ मुश्किल से ही कोई किसी रास्तबाज़ की खातिर अपनी जान देगा। हाँ, मुमकिन है कि कोई किसी नेकोकार के लिए अपनी जान देने की ज़रूरत करे। ⁸ लेकिन अल्लाह ने हमसे अपनी मुहब्बत

का इज़हार यों किया कि मसीह ने उस वक़्त हमारी खातिर अपनी जान दी जब हम गुनाहगार ही थे। ⁹ हमें मसीह के खून से रास्तबाज़ ठहराया गया है। तो यह बात कितनी यक़ीनी है कि हम उसके वसीले से अल्लाह के ग़ज़ब से बचेंगे। ¹⁰ हम अभी अल्लाह के दुश्मन ही थे जब उसके फ़रज़द की मौत के वसीले से हमारी उसके साथ सुलह हो गई। तो फिर यह बात कितनी यक़ीनी है कि हम उस की ज़िंदगी के वसीले से नज़ात भी पाएँगे। ¹¹ न सिर्फ़ यह बल्कि अब हम अल्लाह पर फ़ख़र करते हैं और यह हमारे खुदावंद ईसा मसीह के वसीले से है, जिसने हमारी सुलह कराई है।

आदम और मसीह

¹² जब आदम ने गुनाह किया तो उस एक ही शख्स से गुनाह दुनिया में आया। इस गुनाह के साथ साथ मौत भी आकर सब आदमियों में फैल गई, क्योंकि सबने गुनाह किया। ¹³ शरीअत के इनकिशाफ़ से पहले गुनाह तो दुनिया में था, लेकिन जहाँ शरीअत नहीं होती वहाँ गुनाह का हिसाब नहीं किया जाता। ¹⁴ ताहम आदम से लेकर मूसा तक मौत की हुकूमत जारी रही, उन पर भी जिन्होंने आदम की-सी हुक्मअदली न की।

अब आदम आनेवाले ईसा मसीह की तरफ़ इशारा था। ¹⁵ लेकिन इन दोनों में बड़ा फ़रक़ है। जो नेमत अल्लाह मुफ़्त में देता है वह आदम के गुनाह से मुताबिक़त नहीं रखती। क्योंकि इस एक शख्स आदम की खिलाफ़वरज़ी से बहुत-से लोग मौत की ज़द में आ गए, लेकिन अल्लाह का फ़ज़ल कहीं ज़्यादा मुअस्सिर है, वह मुफ़्त नेमत जो बहुतों को उस एक शख्स ईसा मसीह में मिली है। ¹⁶ हाँ, अल्लाह की इस नेमत और आदम के गुनाह में बहुत फ़रक़ है। उस एक शख्स आदम के गुनाह के नतीजे में हमें तो मुजरिम करार दिया गया, लेकिन अल्लाह की मुफ़्त नेमत का असर यह है कि हमें रास्तबाज़ करार दिया जाता है, गो हमसे बेशुमार गुनाह सरज़द हुए हैं। ¹⁷ इस एक शख्स आदम के गुनाह के नतीजे में मौत सब पर हुकूमत करने लगी। लेकिन इस एक शख्स ईसा मसीह का काम कितना ज़्यादा मुअस्सिर था। जितने भी अल्लाह का वाफ़िर फ़ज़ल और रास्तबाज़ी की नेमत पाते हैं वह मसीह के वसीले से अबदी ज़िंदगी में हुकूमत करेंगे।

¹⁸ चुनौचे जिस तरह एक ही शख्स के गुनाह के बाइस सब लोग मुजरिम ठहरे उसी तरह एक ही शख्स के रास्त अमल से वह दरवाज़ा खुल गया जिसमें दाख़िल होकर सब लोग रास्तबाज़ ठहर सकते और ज़िंदगी पा सकते हैं। ¹⁹ जिस तरह एक ही शख्स की नाफ़रमानी से बहुत-से लोग गुनाहगार बन गए, उसी तरह एक ही शख्स की फ़रमाँबरदारी से बहुत-से लोग रास्तबाज़ बन जाएंगे।

²⁰ शरीअत इसलिए दरमियान में आ गई कि खिलाफ़वरज़ी बढ़ जाए। लेकिन जहाँ गुनाह ज़्यादा हुआ वहाँ अल्लाह का फ़ज़ल इससे भी ज़्यादा हो गया। ²¹ चुनौचे जिस तरह गुनाह मौत की सूत में हुकूमत करता था उसी तरह अब अल्लाह का फ़ज़ल हमें रास्तबाज़ ठहराकर हुकूमत करता है। यों हमें अपने खुदावंद ईसा मसीह की बदौलत अबदी ज़िंदगी हासिल होती है।

6

मसीह में नई ज़िंदगी

¹ क्या इसका मतलब यह है कि हम गुनाह करते रहें ताकि अल्लाह के फ़ज़ल में इज़ाफ़ा हो? ² हरगिज़ नहीं! हम तो मरकर गुनाह से लाताल्लुक हो गए हैं। तो फिर हम किस तरह गुनाह को अपने आप पर हुकूमत करने दे सकते हैं? ³ या क्या आपको मालूम नहीं कि हम सब जिन्हें बपतिस्मा दिया गया है इससे मसीह ईसा की मौत में शामिल हो गए हैं? ⁴ क्योंकि बपतिस्मे से हमें दफ़नाया गया और उस की मौत में शामिल किया गया ताकि हम मसीह की तरह नई ज़िंदगी गुज़ारें, जिसे बाप की जलाली कुदरत ने मुरदों में से ज़िंदा किया।

⁵ चूँकि इस तरह हम उस की मौत में उसके साथ पैवस्त हो गए हैं इसलिए हम उसके जी उठने में भी उसके साथ पैवस्त होंगे। ⁶ क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना इनसान मसीह के साथ मसलूब हो गया ताकि गुनाह के कब्ज़े में यह जिस्म नेस्त हो जाए और यों हम गुनाह के गुलाम न रहें। ⁷ क्योंकि जो मर गया वह गुनाह से आज़ाद हो गया है। ⁸ और हमारा इमान है कि चूँकि हम मसीह के साथ मर गए हैं इसलिए हम उसके साथ ज़िंदा भी होंगे, ⁹ क्योंकि हम जानते हैं कि मसीह मुरदों में से जी उठा है और अब कभी नहीं मरेगा। अब मौत का उस पर कोई इख़्तियार नहीं। ¹⁰ मरते वक़्त वह हमेशा के लिए गुनाह की हुकूमत से निकल गया, और अब जब वह दुबारा ज़िंदा है तो उस की ज़िंदगी अल्लाह के लिए मख़सूस है। ¹¹ आप भी अपने आपको ऐसा समझें। आप भी मरकर गुनाह की हुकूमत से निकल गए हैं और अब आपकी मसीह में ज़िंदगी अल्लाह के लिए मख़सूस है।

¹² चुनौचे गुनाह आपके फ़ानी बदन में हुकूमत न करे। ध्यान दें कि आप उस की बुरी खाहिशात के ताबे न हो जाएँ। ¹³ अपने बदन के किसी भी अज़ु को गुनाह की ख़िदमत के लिए पेश न करें, न उसे नारास्ती का हथियार बनने दें। इसके बजाए अपने आपको अल्लाह की ख़िदमत के लिए पेश करें। क्योंकि पहले आप मुरदा थे, लेकिन अब आप ज़िंदा हो गए हैं। चुनौचे अपने तमाम आज़ा को अल्लाह की ख़िदमत के लिए पेश करें और उन्हें रास्ती के हथियार बनने दें। ¹⁴ आइंदा गुनाह आप पर हुकूमत नहीं करेगा, क्योंकि आप अपनी ज़िंदगी शरीअत के तहत नहीं गुज़ारते बल्कि अल्लाह के फ़ज़ल के तहत।

रास्तबाज़ी के गुलाम

¹⁵ अब सवाल यह है, चूँकि हम शरीअत के तहत नहीं बल्कि फ़ज़ल के तहत हैं तो क्या इसका मतलब यह है कि हमें गुनाह करने के लिए खुला छोड़ दिया गया है? हरगिज़ नहीं! ¹⁶ क्या आपको मालूम नहीं कि जब आप अपने आपको किसी के ताबे करके उसके गुलाम बन जाते हैं तो आप उस मालिक के गुलाम हैं जिसके ताबे आप हैं? या तो गुनाह आपका मालिक बनकर आपको मौत तक ले जाएगा, या फ़रमाँबरदारी

आपकी मालिकन बनकर आपको रास्तबाज़ी तक ले जाएगी। ¹⁷ दर-हक़ीक़त आप पहले गुनाह के गुलाम थे, लेकिन खुदा का शुक्र है कि अब आप पूरे दिल से उसी तालीम के ताबे हो गए हैं जो आपके सुपुर्द की गई है। ¹⁸ अब आपको गुनाह से आज़ाद कर दिया गया है, रास्तबाज़ी ही आपकी मालिकन बन गई है। ¹⁹ (आपकी फ़ितरती कमज़ोरी की वजह से मैं गुलामी की यह मिसाल दे रहा हूँ ताकि आप मेरी बात समझ पाएँ।) पहले आपने अपने आज्ञा को नज़ासत और बेदीनी की गुलामी में दे रखा था जिसके नतीजे में आपकी बेदीनी बढ़ती गई। लेकिन अब आप अपने आज्ञा को रास्तबाज़ी की गुलामी में दे दें ताकि आप मुक़द्दस बन जाएँ।

²⁰ जब गुनाह आपका मालिक था तो आप रास्तबाज़ी से आज़ाद थे। ²¹ और इसका नतीजा क्या था? जो कुछ आपने उस वक़्त किया उससे आपको आज शर्म आती है और उसका अंजाम मौत है। ²² लेकिन अब आप गुनाह की गुलामी से आज़ाद होकर अल्लाह के गुलाम बन गए हैं, जिसके नतीजे में आप मख़सूस-मुक़द्दस बन जाते हैं और जिसका अंजाम अबदी ज़िंदगी है। ²³ क्योंकि गुनाह का अज़्र मौत है जबकि अल्लाह हमारे खुदावंद मसीह ईसा के वसीले से हमें अबदी ज़िंदगी की मुफ़्त नेमत अता करता है।

7

शादी की मिसाल

¹ भाइयो, आप तो शरीअत से वाकिफ़ हैं। तो क्या आप नहीं जानते कि शरीअत उस वक़्त तक इनसान पर इख़्तियार रखती है जब तक वह ज़िंदा है? ² शादी की मिसाल लें। जब किसी औरत की शादी होती है तो शरीअत उसका शौहर के साथ बंधन उस वक़्त तक कायम रखती है जब तक शौहर ज़िंदा है। अगर शौहर मर जाए तो फिर वह इस बंधन से आज़ाद हो गई। ³ चुनौचे अगर वह अपने खाविंद के जीते-जी किसी और मर्द की बीवी बन जाए तो उसे ज़िनाकार करार दिया जाता है। लेकिन अगर उसका शौहर मर जाए तो वह शरीअत से आज़ाद हुई। अब वह किसी दूसरे मर्द की बीवी बने तो ज़िनाकार नहीं ठहरती। ⁴ मेरे भाइयो, यह बात आप पर भी सादिक़ आती है। जब आप मसीह के बदन का हिस्सा बन गए तो आप मरकर शरीअत के इख़्तियार से आज़ाद हो गए। अब आप उसके साथ पैवस्त हो गए हैं जिसे मुरदों में से ज़िंदा किया गया ताकि हम अल्लाह की ख़िदमत में फल लाएँ। ⁵ क्योंकि जब हम अपनी पुरानी फ़ितरत के तहत ज़िंदगी गुज़ारते थे तो शरीअत हमारी गुनाहआलूदा रगबतों को उकसाती थी। फिर यही रगबतें हमारे आज्ञा पर असरअंदाज़ होती थीं और नतीजे में हम ऐसा फल लाते थे जिसका अंजाम मौत है। ⁶ लेकिन अब हम मरकर शरीअत के बंधन से आज़ाद हो गए हैं। अब हम शरीअत की पुरानी ज़िंदगी के तहत ख़िदमत नहीं करते बल्कि रूहुल-कुद्स की नई ज़िंदगी के तहत।

शरीअत और गुनाह

⁷ क्या इसका मतलब यह है कि शरीअत खुद गुनाह है? हरगिज़ नहीं! बात तो यह है कि अगर शरीअत मुझे पर मेरे गुनाह ज़ाहिर न करती तो मुझे इनका कुछ पता न चलता। मसलन अगर शरीअत न बताती, “लालच न करना” तो मुझे दर-हक़ीक़त मालूम न होता कि लालच क्या है। ⁸ लेकिन गुनाह ने इस हुक्म से फ़ायदा उठाकर मुझमें हर तरह का लालच पैदा कर दिया। इसके बरअक्स जहाँ शरीअत नहीं होती वहाँ गुनाह मुरदा है और ऐसा काम नहीं कर पाता। ⁹ एक वक़्त था जब मैं शरीअत के बग़ैर ज़िंदगी गुज़ारता था। लेकिन ज्योंही हुक्म मेरे सामने आया तो गुनाह में जान आ गई ¹⁰ और मैं मर गया। इस तरह मालूम हुआ कि जिस हुक्म का मक़सद मेरी ज़िंदगी को कायम रखना था वही मेरी मौत का बाइस बन गया। ¹¹ क्योंकि गुनाह ने हुक्म से फ़ायदा उठाकर मुझे बहकाया और हुक्म से ही मुझे मार डाला।

¹² लेकिन शरीअत खुद मुक़द्दस है और इसके अहक़ाम मुक़द्दस, रास्त और अच्छे हैं। ¹³ क्या इसका मतलब यह है कि जो अच्छा है वही मेरे लिए मौत का बाइस बन गया? हरगिज़ नहीं! गुनाह ही ने यह किया। इस अच्छी चीज़ को इस्तेमाल करके उसने मेरे लिए मौत पैदा कर दी ताकि गुनाह ज़ाहिर हो जाए। यों हुक्म के ज़रीए गुनाह की संजीदगी हद से ज़्यादा बढ़ जाती है।

हमारे अंदर की कश-म-कश

¹⁴ हम जानते हैं कि शरीअत स्थानी है। लेकिन मेरी फ़ितरत इनसानी है, मुझे गुनाह की गुलामी में बेचा गया है। ¹⁵ दर-हक़ीक़त मैं नहीं समझता कि क्या करता हूँ। क्योंकि मैं वह काम नहीं करता जो करना चाहता हूँ बल्कि वह जिससे मुझे नफ़रत है। ¹⁶ लेकिन अगर मैं वह करता हूँ जो नहीं करना चाहता तो ज़ाहिर है कि मैं मुत्तफ़िक्क हूँ कि शरीअत अच्छी है। ¹⁷ और अगर ऐसा है तो फिर मैं यह काम खुद नहीं कर रहा बल्कि गुनाह जो मेरे अंदर सुकूनत करता है। ¹⁸ मुझे मालूम है कि मेरे अंदर यानी मेरी पुरानी फ़ितरत में कोई अच्छी चीज़ नहीं बसती। अगरचे मुझमें नेक काम करने का इरादा तो मौजूद है लेकिन मैं उसे अमली जामा नहीं पहना सकता। ¹⁹ जो नेक काम मैं करना चाहता हूँ वह नहीं करता बल्कि वह बुरा काम करता हूँ जो करना नहीं चाहता। ²⁰ अब अगर मैं वह काम करता हूँ जो मैं नहीं करना चाहता तो इसका मतलब है कि मैं खुद नहीं कर रहा बल्कि वह गुनाह जो मेरे अंदर बसता है।

²¹ चुनौचे मुझे एक और तरह की शरीअत काम करती हुई नज़र आती है, और वह यह है कि जब मैं नेक काम करने का इरादा रखता हूँ तो बुराई आ मौजूद होती है। ²² हाँ, अपने बातिन में तो मैं खुशी से अल्लाह की शरीअत को मानता हूँ। ²³ लेकिन मुझे अपने आज्ञा में एक और तरह की शरीअत दिखाई देती है, ऐसी शरीअत जो मेरी समझ की शरीअत के खिलाफ़ लड़कर मुझे गुनाह की शरीअत का कैदी बना देती है, उस शरीअत का जो मेरे आज्ञा में मौजूद है। ²⁴ हाय, मेरी हालत कितनी बुरी है! मुझे इस बदन से जिसका अंजाम मौत है कौन छुड़ाएगा? ²⁵ खुदा का शुक्र है जो हमारे खुदावंद ईसा मसीह के वसीले से यह काम करता है।

गरज यही मेरी हालत है, मसीह के बगैर मैं अल्लाह की शरीअत की खिदमत सिर्फ अपनी समझ से कर सकता हूँ जबकि मेरी पुरानी फितरत गुनाह की शरीअत की गुलाम रहकर उसी की खिदमत करती है।

8

रूह में ज़िंदगी

1 अब जो मसीह ईसा में हैं उन्हें मुजरिम नहीं ठहराया जाता। 2 क्योंकि रूह की शरीअत ने जो हमें मसीह में ज़िंदगी अता करती है तुझे गुनाह और मौत की शरीअत से आज़ाद कर दिया है। 3 मूसवी शरीअत हमारी पुरानी फितरत की कमज़ोर हालत की वजह से हमें न बचा सकी। इसलिए अल्लाह ने वह कुछ किया जो शरीअत के बस में न था। उसने अपना फ़रज़ंद भेज दिया ताकि वह गुनाहगार का-सा जिस्म इख्तियार करके हमारे गुनाहों का कफ़फ़ारा दे। इस तरह अल्लाह ने पुरानी फितरत में मौजूद गुनाह को मुजरिम ठहराया 4 ताकि हममें शरीअत का तकाज़ा पूरा हो जाए, हम जो पुरानी फितरत के मुताबिक नहीं बल्कि रूह के मुताबिक चलते हैं। 5 जो पुरानी फितरत के इख्तियार में हैं वह पुरानी सोच रखते हैं जबकि जो रूह के इख्तियार में हैं वह रूहानी सोच रखते हैं। 6 पुरानी फितरत की सोच का अंजाम मौत है जबकि रूह की सोच ज़िंदगी और सलामती पैदा करती है। 7 पुरानी फितरत की सोच अल्लाह से दुश्मनी रखती है। यह अपने आपको अल्लाह की शरीअत के ताबे नहीं रखती, न ही ऐसा कर सकती है। 8 इसलिए वह लोग अल्लाह को पसंद नहीं आ सकते जो पुरानी फितरत के इख्तियार में हैं।

9 लेकिन आप पुरानी फितरत के इख्तियार में नहीं बल्कि रूह के इख्तियार में हैं। शर्त यह है कि रूहल-कुद्स आपमें बसा हुआ हो। अगर किसी में मसीह का रूह नहीं तो वह मसीह का नहीं। 10 लेकिन अगर मसीह आपमें है तो फिर आपका बदन गुनाह की वजह से मुरदा है जबकि रूहल-कुद्स आपको रास्तबाज़ ठहराने की वजह से आपके लिए ज़िंदगी का बाइस है। 11 उसका रूह आपमें बसता है जिसने ईसा को मुरदों में से ज़िंदा किया। और चूँकि रूहल-कुद्स आपमें बसता है इसलिए अल्लाह इसके ज़रीए आपके फ़ानी बदनो को भी मसीह की तरह ज़िंदा करेगा।

12 चुनौचे मेरे भाइयो, हमारी पुरानी फितरत का कोई हक न रहा कि हमें अपने मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारने पर मजबूर करे। 13 क्योंकि अगर आप अपनी पुरानी फितरत के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारें तो आप हलाक हो जाएंगे। लेकिन अगर आप रूहल-कुद्स की कुव्वत से अपनी पुरानी फितरत के ग़लत कामों को नेस्तो-नाबूद करें तो फिर आप ज़िंदा रहेंगे। 14 जिसकी भी राहनुमाई रूहल-कुद्स करता है वह अल्लाह का फ़रज़ंद है। 15 क्योंकि अल्लाह ने जो रूह आपको दिया है उसने आपको गुलाम बनाकर ख़ौफ़ज़दा हालत में नहीं रखा बल्कि आपको अल्लाह के फ़रज़ंद बना दिया है, और उसी के ज़रीए हम पुकारकर अल्लाह को “अब्बा” यानी “ऐ बाप” कह सकते हैं। 16 रूहल-कुद्स खुद हमारी रूह के साथ मिलकर गवाही देता है कि हम अल्लाह के फ़रज़ंद हैं। 17 और चूँकि हम उसके फ़रज़ंद हैं इसलिए हम वारिस हैं, अल्लाह के वारिस और मसीह के हममीरास। क्योंकि अगर हम मसीह के दुख में शरीक हों तो उसके जलाल में भी शरीक होंगे।

आइंदा का जलाल

18 मेरे खयाल में हमारा मौजूदा दुख उस आनेवाले जलाल की निसबत कुछ भी नहीं जो हम पर ज़ाहिर होगा। 19 हाँ, तमाम कायनात यह देखने के लिए तड़पती हैं कि अल्लाह के फ़रज़ंद ज़ाहिर हो जाएँ, 20 क्योंकि कायनात अल्लाह की लानत के तहत आकर फ़ानी हो गई हैं। यह उस की अपनी नहीं बल्कि अल्लाह की मरज़ी थी जिसने उस पर यह लानत भेजी। तो भी यह उम्मीद दिलाई गई 21 कि एक दिन कायनात को खुद उस की फ़ानी हालत की गुलामी से छुड़ाया जाएगा। उस वक़्त वह अल्लाह के फ़रज़ंदों की जलाली आज़ादी में शरीक हो जाएगी। 22 क्योंकि हम जानते हैं कि आज तक तमाम कायनात कराहती और दर्द-ज़ह में तड़पती रहती है। 23 न सिर्फ़ कायनात बल्कि हम खुद भी अंदर ही अंदर कराहते हैं, गो हमें आनेवाले जलाल का पहला फल रूहल-कुद्स की सूत में मिल चुका है। हम कराहते कराहते शिद्दत से इस इंतज़ार में हैं कि यह बात ज़ाहिर हो जाए कि हम अल्लाह के फ़रज़ंद हैं और हमारे बदनो को नज़ात मिले। 24 क्योंकि नज़ात पाते वक़्त हमें यह उम्मीद दिलाई गई। लेकिन अगर वह कुछ नज़र आ चुका होता जिसकी उम्मीद हम रखते तो यह दर-हक़ीक़त उम्मीद न होती। कौन उस की उम्मीद रखे जो उसे नज़र आ चुका है? 25 लेकिन चूँकि हम उस की उम्मीद रखते हैं जो अभी नज़र नहीं आया तो लाज़िम है कि हम सब्र से उसका इंतज़ार करें।

26 इसी तरह रूहल-कुद्स भी हमारी कमज़ोर हालत में हमारी मदद करता है, क्योंकि हम नहीं जानते कि किस तरह मुनासिब दुआ माँगें। लेकिन रूहल-कुद्स खुद नाकाबिले-बयान आहें भरते हुए हमारी शफ़ाअत करता है। 27 और खुदा बाप जो तमाम दिलों की तहक़ीक़ करता है रूहल-कुद्स की सोच को जानता है, क्योंकि पाक रूह अल्लाह की मरज़ी के मुताबिक मुक़द्सीन की शफ़ाअत करता है।

28 और हम जानते हैं कि जो अल्लाह से मुहब्बत रखते हैं उनके लिए सब कुछ मिलकर भलाई का बाइस बनता है, उनके लिए जो उसके इरादे के मुताबिक बुलाए गए हैं। 29 क्योंकि अल्लाह ने पहले से अपने लोगों को चुन लिया, उसने पहले से उन्हें इसके लिए मुक़र्रर किया कि वह उसके फ़रज़ंद के हमशक्ल बन जाएँ और यों मसीह बहुत-से भाइयों में पहलौठा हो। 30 लेकिन जिन्हें उसने पहले से मुक़र्रर किया उन्हें उसने बुलाया भी, जिन्हें उसने बुलाया उन्हें उसने रास्तबाज़ भी ठहराया और जिन्हें उसने रास्तबाज़ ठहराया उन्हें उसने जलाल भी बख़्शा।

अल्लाह की मसीह में मुहब्बत

31 इन तमाम बातों के जवाब में हम क्या कहें? अगर अल्लाह हमारे हक में है तो कौन हमारे खिलाफ हो सकता है? 32 उसने अपने फ़रज़ंद को भी दरेग न किया बल्कि उसे हम सबके लिए दुश्मन के हवाले कर दिया। जिसने हमें अपने फ़रज़ंद को दे दिया क्या वह हमें उसके साथ सब कुछ मुफ्त नहीं देगा? 33 अब कौन अल्लाह के चुने हुए लोगों पर इलज़ाम लगाएगा जब अल्लाह खुद उन्हें रास्तबाज़ करार देता है? 34 कौन हमें मुजरिम ठहराएगा जब मसीह ईसा ने हमारे लिए अपनी जान दी? बल्कि हमारी खातिर इससे भी ज्यादा हुआ। उसे ज़िंदा किया गया और वह अल्लाह के दहने हाथ बैठ गया, जहाँ वह हमारी शफ़ाअत करता है। 35 गरज़ कौन हमें मसीह की मुहब्बत से जुदा करेगा? क्या कोई मुसीबत, तंगी, ईज़ारसानी, काल, नंगापन, खतरा या तलवार? 36 जैसे कलामे-मुक़द्स में लिखा है, “तेरी खातिर हमें दिन-भर मौत का सामना करना पड़ता है, लोग हमें ज़बह होनेवाली भेड़ों के बराबर समझते हैं।” 37 कोई बात नहीं, क्योंकि मसीह हमारे साथ है और हमसे मुहब्बत रखता है। उसके वसीले से हम इन सब खतरों के स्वरू ज़बरदस्त फ़तह पाते हैं। 38 क्योंकि मुझे यक़ीन है कि हमें उस की मुहब्बत से कोई चीज़ जुदा नहीं कर सकती : न मौत और न ज़िंदगी, न फ़रिश्ते और न हुक्मरान, न हाल और न मुस्तक़बिल, न ताकतें, 39 न नशेब और न फ़राज़, न कोई और मख़लूक हमें अल्लाह की उस मुहब्बत से जुदा कर सकेगी जो हमें हमारे खुदावंद मसीह ईसा में हासिल है।

9

अल्लाह और उस की क़ौम

1 मैं मसीह में सच कहता हूँ, झूट नहीं बोलता, और मेरा ज़मीर भी रूहल-कुद्स में इसकी गवाही देता है 2 कि मैं दिल में अपने यहूदी हमवतनों के लिए शदीद ग़म और मुसलसल दर्द महसूस करता हूँ। 3 काश मेरे भाई और खूनी रिश्तेदार नज़ात पाएँ! इसके लिए मैं खुद मलऊन और मसीह से जुदा होने के लिए भी तैयार हूँ। 4 अल्लाह ने उन्हीं को जो इसराईली हैं अपने फ़रज़ंद बनने के लिए मुक़र्र किया था। उन्हीं पर उसने अपना जलाल ज़ाहिर किया, उन्हीं के साथ अपने अहद बाँधे और उन्हीं को शरीअत अता की। वही हकीकी इबादत और अल्लाह के वादों के हक़दार हैं, 5 वही इब्राहीम और याक़ूब की औलाद हैं और उन्हीं में से जिस्मानी लिहाज़ से मसीह आया। अल्लाह की तमज़ीदो-तारीफ़ अबद तक हो जो सब पर हुकूमत करता है! आमीन।

6 कहने का मतलब यह नहीं कि अल्लाह अपना वादा पूरा न कर सका। बात यह नहीं है बल्कि यह कि वह सब हकीकी इसराईली नहीं हैं जो इसराईली क़ौम से हैं। 7 और सब इब्राहीम की हकीकी औलाद नहीं हैं जो उस की नसल से हैं। क्योंकि अल्लाह ने कलामे-मुक़द्स में इब्राहीम से फ़रमाया, “तेरी नसल इसहाक ही से कायम रहेगी।” 8 चुनौचे लाज़िम नहीं कि इब्राहीम की तमाम फ़ितरती औलाद अल्लाह के फ़रज़ंद हों बल्कि सिर्फ़ वही इब्राहीम की हकीकी औलाद समझे जाते हैं जो अल्लाह के वादे के मुताबिक़ उसके फ़रज़ंद बन गए हैं। 9 और वादा यह था, “मुक़र्र वक़्त पर मैं वापस आऊँगा तो सारा के बेटा होगा।”

10 लेकिन न सिर्फ़ सारा के साथ ऐसा हुआ बल्कि इसहाक की बीवी रिबका के साथ भी। एक ही मर्द यानी हमारे बाप इसहाक से उसके जुड़वाँ बच्चे पैदा हुए। 11 लेकिन बच्चे अभी पैदा नहीं हुए थे न उन्होंने कोई नेक या बुरा काम किया था कि माँ को अल्लाह से एक पैग़ाम मिला। इस पैग़ाम से ज़ाहिर होता है कि अल्लाह लोगों को अपने इरादे के मुताबिक़ चुन लेता है। 12 और उसका यह चुनाव उनके नेक आमाल पर मबनी नहीं होता बल्कि उसके बुलावे पर। पैग़ाम यह था, “बड़ा छोटे की ख़िदमत करेगा।” 13 यह भी कलामे-मुक़द्स में लिखा है, “याक़ूब मुझे प्यारा था, जबकि ए़सौ से मैं मुतनफ़्फ़िर रहा।”

14 क्या इसका मतलब यह है कि अल्लाह बेइन्साफ़ है? हरगिज़ नहीं! 15 क्योंकि उसने मूसा से कहा, “मैं जिस पर मेहरबान होना चाहूँ उस पर मेहरबान होता हूँ और जिस पर रहम करना चाहूँ उस पर रहम करता हूँ।” 16 चुनौचे सब कुछ अल्लाह के रहम पर ही मबनी है। इसमें इनसान की मरज़ी या कोशिश का कोई दख़ल नहीं। 17 यों अल्लाह अपने कलाम में मिसर के बादशाह फ़िरौन से मुखातिब होकर फ़रमाता है, “मैंने तुझे इसलिए बरपा किया है कि तुझमें अपनी कुदरत का इज़हार करूँ और यों तमाम दुनिया में मेरे नाम का प्रचार किया जाए।” 18 गरज़, यह अल्लाह ही की मरज़ी है कि वह किस पर रहम करे और किस को सख़्त कर दे।

अल्लाह का ग़ज़ब और रहम

19 शायद कोई कहे, “अगर यह बात है तो फिर अल्लाह किस तरह हम पर इलज़ाम लगा सकता है जब हमसे ग़लतियाँ होती हैं? हम तो उस की मरज़ी का मुकाबला नहीं कर सकते।” 20 यह न कहें। आप इनसान होते हुए कौन हैं कि अल्लाह के साथ बहस-मुबाहसा करें? क्या जिसको तश्कील दिया गया है वह तश्कील देनेवाले से कहता है, “तूने मुझे इस तरह क्यों बना दिया?” 21 क्या कुम्हार का हक़ नहीं है कि गारे के एक ही लौंदे से मुख़्तलिफ़ किस्म के बरतन बनाए, कुछ बाइज़्ज़त इस्तेमाल के लिए और कुछ ज़िल्लतआमेज़ इस्तेमाल के लिए? 22 यह बात अल्लाह पर भी सादिक़ आती है। गो वह अपना ग़ज़ब नाज़िल करना और अपनी कुदरत ज़ाहिर करना चाहता था, लेकिन उसने बड़े सब्रो-तहम्मूल से वह बरतन बरदाश्त किए जिन पर उसका ग़ज़ब आना है और जो हलाक़त के लिए तैयार किए गए हैं। 23 उसने यह इसलिए किया ताकि अपना जलाल कसरत से उन बरतनों पर ज़ाहिर करे जिन पर उसका फ़ज़ल है और जो पहले से जलाल पाने के लिए तैयार किए गए हैं। 24 और हम उनमें से हैं जिनको उसने चुन लिया है, न सिर्फ़ यहूदियों में से बल्कि ग़ैरयहूदियों में से भी। 25 यों वह ग़ैरयहूदियों के नाते से होसेअ की किताब में फ़रमाता है,

“मैं उसे ‘मेरी क़ौम’ कहूँगा

जो मेरी क्रौम न थी,
और उसे 'मेरी प्यारी' कहूँगा
जो मुझे प्यारी न थी।”

26 और “जहाँ उन्हें बताया गया कि ‘तुम मेरी क्रौम नहीं’
वहाँ वह ‘ज़िंदा खुदा के फ़रज़ंद’ कहलाएँगे।”

27 और यसायाह नबी इसराइल के बारे में पुकारता है, “गो इसराइली साहिल पर की रेत जैसे बेशुमार क्यों न हों तो भी सिर्फ़ एक बचे हुए हिस्से को नजात मिलेगी। 28 क्योंकि रब अपना फ़रमान मुकम्मल तौर पर और तेज़ी से दुनिया में पूरा करेगा।” 29 यसायाह ने यह बात एक और पेशगोई में भी की, “अगर रब्बुल-अफ़वाज हमारी कुछ औलाद ज़िंदा न छोड़ता तो हम सद्म की तरह मिट जाते, हमारा अमूरा जैसा सत्यानास हो जाता।”

इसराइल के लिए पौलस की दुआ

30 इससे हम क्या कहना चाहते हैं? यह कि गो गैरयहूदी रास्तबाज़ी की तलाश में न थे तो भी उन्हें रास्तबाज़ी हासिल हुई, ऐसी रास्तबाज़ी जो ईमान से पैदा हुई। 31 इसके बरअक्स इसराइलियों को यह हासिल न हुई, हालाँकि वह ऐसी शरीअत की तलाश में रहे जो उन्हें रास्तबाज़ ठहराए। 32 इसकी क्या वजह थी? यह कि वह अपनी तमाम कोशिशों में ईमान पर इनहिसार नहीं करते थे बल्कि अपने नेक आमाल पर। उन्होंने राह में पड़े पत्थर से ठोकर खाई। 33 यह बात कलामे-मुकद्दस में लिखी भी है,

“देखो मैं सियून में एक पत्थर रख देता हूँ
जो ठोकर का बाइस बनेगा,
एक चटान जो ठेस लगने का सबब होगी।
लेकिन जो उस पर ईमान लाएगा
उसे शर्मिंदा नहीं किया जाएगा।”

10

1 भाइयो, मेरी दिली आरजू और मेरी अल्लाह से दुआ यह है कि इसराइलियों को नजात मिले। 2 मैं इसकी तसदीक कर सकता हूँ कि वह अल्लाह की गैरत रखते हैं। लेकिन इस गैरत के पीछे स्थानी समझ नहीं होती। 3 वह उस रास्तबाज़ी से नावाकिफ़ रहे हैं जो अल्लाह की तरफ़ से है। इसकी बजाए वह अपनी जाती रास्तबाज़ी कायम करने की कोशिश करते रहे हैं। यों उन्होंने अपने आपको अल्लाह की रास्तबाज़ी के ताबे नहीं किया। 4 क्योंकि मसीह में शरीअत का मक़सद पूरा हो गया, हाँ वह अंजाम तक पहुँच गई है। चुनौचे जो भी मसीह पर ईमान रखता है वही रास्तबाज़ ठहरता है।

सबके लिए रास्तबाज़ी

5 मूसा ने उस रास्तबाज़ी के बारे में लिखा जो शरीअत से हासिल होती है, “जो शख्स यों करेगा वह जीता रहेगा।” 6 लेकिन जो रास्तबाज़ी ईमान से हासिल होती है वह कहती है, “अपने दिल में न कहना कि ‘कौन आसमान पर चढ़ेगा?’ (ताकि मसीह को नीचे ले आए)। 7 यह भी न कहना कि ‘कौन पाताल में उतरेगा?’ (ताकि मसीह को मुरदों में से वापस ले आए)।” 8 तो फिर क्या करना चाहिए? ईमान की रास्तबाज़ी फ़रमाती है, “यह कलाम तेरे करीब बल्कि तेरे मुँह और दिल में मौजूद है।” कलाम से मुराद ईमान का वह पैगाम है जो हम सुनाते हैं। 9 यानी यह कि अगर तू अपने मुँह से इक्कार करे कि ईसा खुदावंद है और दिल से ईमान लाए कि अल्लाह ने उसे मुरदों में से ज़िंदा कर दिया तो तुझे नजात मिलेगी। 10 क्योंकि जब हम दिल से ईमान लाते हैं तो अल्लाह हमें रास्तबाज़ करार देता है, और जब हम अपने मुँह से इक्कार करते हैं तो हमें नजात मिलती है। 11 यों कलामे-मुकद्दस फ़रमाता है, “जो भी उस पर ईमान लाए उसे शर्मिंदा नहीं किया जाएगा।” 12 इसमें कोई फ़रक नहीं कि वह यहूदी हो या गैरयहूदी। क्योंकि सबका एक ही खुदावंद है, जो फ़ैयाज़ी से हर एक को देता है जो उसे पुकारता है। 13 क्योंकि “जो भी खुदावंद का नाम लेगा नजात पाएगा।”

14 लेकिन वह किस तरह उसे पुकार सकेंगे अगर वह उस पर कभी ईमान नहीं लाए? और वह किस तरह उस पर ईमान ला सकते हैं अगर उन्होंने कभी उसके बारे में सुना नहीं? और वह किस तरह उसके बारे में सुन सकते हैं अगर किसी ने उन्हें यह पैगाम सुनाया नहीं? 15 और सुनानेवाले किस तरह दूसरों के पास जाएंगे अगर उन्हें भेजा न गया? इसलिए कलामे-मुकद्दस फ़रमाता है, “उनके कदम कितने प्यारे हैं जो खुशख़बरी सुनाते हैं।” 16 लेकिन सबने अल्लाह की यह खुशख़बरी कबूल नहीं की। यों यसायाह नबी फ़रमाता है, “ऐ रब, कौन हमारे पैगाम पर ईमान लाया?” 17 गरज़, ईमान पैगाम सुनने से पैदा होता है, यानी मसीह का कलाम सुनने से।

18 तो फिर सवाल यह है कि क्या इसराइलियों ने यह पैगाम नहीं सुना? उन्होंने इसे ज़रूर सुना। कलामे-मुकद्दस में लिखा है, “उनकी आवाज़ निकलकर पूरी दुनिया में सुनाई दी,
उनके अलफ़ाज़ दुनिया की इंतहा तक पहुँच गए।”

19 तो क्या इसराइल को इस बात की समझ न आई? नहीं, उसे ज़रूर समझ आई। पहले मूसा इसका जवाब देता है,

“मैं खुद ही तुम्हें गैरत दिलाऊंगा,
एक ऐसी क्रौम के जरीए जो हकीकत में क्रौम नहीं है।
एक नादान क्रौम के जरीए मैं तुम्हें गुस्सा दिलाऊंगा।”

20 और यसायाह नबी यह कहने की जुरत करता है,

“जो मुझे तलाश नहीं करते थे
उन्हें मैंने मुझे पाने का मौका दिया,
जो मेरे बारे में दरियापत नहीं करते थे
उन पर मैं ज़ाहिर हुआ।”

21 लेकिन इसराईल के बारे में वह फ़रमाता है,

“दिन-भर मैंने अपने हाथ फैलाए रखे
ताकि एक नाफ़रमान और सरकश क्रौम का इस्तक़बाल करूँ।”

11

इसराईल पर अल्लाह का रहम

1 तो क्या इसका यह मतलब है कि अल्लाह ने अपनी क्रौम को रद्द किया है? हरगिज़ नहीं! मैं तो खुद इसराईली हूँ। इब्राहीम मेरा भी बाप है, और मैं बिनयमीन के कबीले का हूँ। 2 अल्लाह ने अपनी क्रौम को पहले से चुन लिया था। वह किस तरह उसे रद्द करेगा! क्या आपको मालूम नहीं कि कलामे-मुक़द्दस में इलियास नबी के बारे में क्या लिखा है? इलियास ने अल्लाह के सामने इसराईली क्रौम की शिकायत करके कहा, 3 “ऐ रब, उन्होंने तेरे नबियों को क़त्ल किया और तेरी क़ुरबानगाहों को गिरा दिया है। मैं अकेला ही बचा हूँ, और वह मुझे भी मार डालने के दरपै हैं।” 4 इस पर अल्लाह ने उसे क्या जवाब दिया? “मैंने अपने लिए 7,000 मर्दों को बचा लिया है जिन्होंने अपने घुटने बाल देवता के सामने नहीं टेके।” 5 आज भी यही हालत है। इसराईल का एक छोटा हिस्सा बच गया है जिसे अल्लाह ने अपने फ़ज़ल से चुन लिया है। 6 और चूँकि यह अल्लाह के फ़ज़ल से हुआ है इसलिए यह उनकी अपनी कोशिशों से नहीं हुआ। वरना फ़ज़ल फ़ज़ल ही न रहता।

7 गरज़, जिस चीज़ की तलाश में इसराईल रहा वह पूरी क्रौम को हासिल नहीं हुई बल्कि सिर्फ़ उसके एक चुने हुए हिस्से को। बाकी सबको फ़ज़ल के बारे में बेहिस कर दिया गया, 8 जिस तरह कलामे-मुक़द्दस में लिखा है,

“आज तक अल्लाह ने उन्हें ऐसी हालत में रखा है

कि उनकी रूह मदहोश है,
उनकी आँखें देख नहीं सकतीं
और उनके कान सुन नहीं सकते।”

9 और दाऊद फ़रमाता है,

“उनकी मेज़ उनके लिए फंदा और जाल बन जाए,
इससे वह ठोकर खाकर अपने ग़लत कामों का मुआवज़ा पाएँ।

10 उनकी आँखें तारीक हो जाएँ ताकि वह देख न सकें,
उनकी कमर हमेशा झुकी रहे।”

11 तो क्या अल्लाह की क्रौम ठोकर खाकर यों गिर गई कि कभी बहाल नहीं होगी? हरगिज़ नहीं! उस की ख़ताओं की वजह से अल्लाह ने ग़ैरयहूदियों को नज़ात पाने का मौका दिया ताकि इसराईली ग़ैरत खाएँ। 12 यों यहूदियों की ख़ताएँ दुनिया के लिए भरपूर बरकत का बाइस बन गईं, और उनका नुक़सान ग़ैरयहूदियों के लिए भरपूर बरकत का बाइस बन गया। तो फिर यह बरकत कितनी और ज़्यादा होगी जब यहूदियों की पूरी तादाद इसमें शामिल हो जाएगी!

ग़ैरयहूदियों की नज़ात

13 आपको जो ग़ैरयहूदी हैं मैं यह बताता हूँ, अल्लाह ने मुझे ग़ैरयहूदियों के लिए रसूल बनाया है, इसलिए मैं अपनी इस ख़िदमत पर ज़ोर देता हूँ। 14 क्योंकि मैं चाहता हूँ कि मेरी क्रौम के लोग यह देखकर ग़ैरत खाएँ और उनमें से कुछ बच जाएँ। 15 जब उन्हें रद्द किया गया तो बाकी दुनिया की अल्लाह के साथ सुलह हो गई। तो फिर क्या होगा जब उन्हें दुबारा क़बूल किया जाएगा? यह मुरदों में से जी उठने के बराबर होगा!

16 जब आप फ़सल के पहले ओटे से रोटी बनाकर अल्लाह के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करते हैं तो बाकी सारा आटा भी मख़सूसो-मुक़द्दस है। और जब दरख़्त की जड़ें मुक़द्दस हैं तो उस की शाखें भी मुक़द्दस हैं। 17 ज़ैतून के दरख़्त की कुछ शाखें तोड़ दी गई हैं और उनकी जगह जंगली ज़ैतून के दरख़्त की एक शाख पैवंद की गई है। आप ग़ैरयहूदी इस जंगली शाख से मुताबिक़त रखते हैं। जिस तरह यह दूसरे दरख़्त की जड़ से रस और तक़वियत पाती है उसी तरह आप भी यहूदी क्रौम की रूहानी जड़ से तक़वियत पाते हैं। 18 चुनौचे आपका दूसरी शाखों के सामने शेखी मारने का हक़ नहीं। और अगर आप शेखी मारें तो यह ख़याल करें कि आप जड़ को कायम नहीं रखते बल्कि जड़ आपको।

19 शायद आप इस पर एतराज करें, “हाँ, लेकिन दूसरी शाखें तोड़ी गईं ताकि मैं पैवंद किया जाऊँ।” 20 बेशक, लेकिन याद रखें, दूसरी शाखें इसलिए तोड़ी गईं कि वह ईमान नहीं रखती थीं और आप इसलिए उनकी जगह लगे हैं कि आप ईमान रखते हैं। चुनौती अपने आप पर फ़रख़र न करें बल्कि ख़ौफ़ रखें। 21 अल्लाह ने असली शाखें बचने न दीं। अगर आप इस तरह की हरकतें करें तो क्या वह आपको छोड़ देगा? 22 यहाँ हमें अल्लाह की मेहरबानी और सख्ती नज़र आती है—जो गिर गए हैं उनके सिलसिले में उस की सख्ती, लेकिन आपके सिलसिले में उस की मेहरबानी। और यह मेहरबानी रहेगी जब तक आप उस की मेहरबानी से लिपटे रहेंगे। वरना आपको भी दरख़्त से काट डाला जाएगा। 23 और अगर यहूदी अपने कुफ़र से बाज़ आएँ तो उनकी पैवंदकारी दुबारा दरख़्त के साथ की जाएगी, क्योंकि अल्लाह ऐसा करने पर कादिर है। 24 आखिर आप खुद कुदरती तौर पर ज़ैतून के जंगली दरख़्त की शाख थे जिसे अल्लाह ने तोड़कर कुदरती कवानीन के खिलाफ़ ज़ैतून के असल दरख़्त पर लगाया। तो फिर वह कितनी ज़्यादा आसानी से यहूदियों की तोड़ी गई शाखें दुबारा उनके अपने दरख़्त में लगा देगा!

अल्लाह का रहम सब पर

25 भाइयो, मैं चाहता हूँ कि आप एक भेद से वाकिफ़ हो जाएँ, क्योंकि यह आपको अपने आपको दाना समझने से बाज़ रखेगा। भेद यह है कि इसराइल का एक हिस्सा अल्लाह के फ़ज़ल के बारे में बेहिस हो गया है, और उस की यह हालत उस वक़्त तक रहेगी जब तक ग़ैरयहूदियों की पूरी तादाद अल्लाह की बादशाही में दाखिल न हो जाए। 26 फिर पूरा इसराइल नजात पाएगा। यह कलामे-मुक़द्दस में भी लिखा है,

“छुड़ानेवाला सियून् से आएगा।

वह बेदीनी को याक़ूब से हटा देगा।

27 और यह मेरा उनके साथ अहद होगा

जब मैं उनके गुनाहों को उनसे दूर करूँगा।”

28 चूँकि यहूदी अल्लाह की खुशख़बरी क़बूल नहीं करते इसलिए वह अल्लाह के दुश्मन हैं, और यह बात आपके लिए फ़ायदे का बाइस बन गई है। तो भी वह अल्लाह को प्यारे हैं, इसलिए कि उसने उनके बापदादा इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब को चुन लिया था। 29 क्योंकि जब भी अल्लाह किसी को अपनी नेमतों से नवाज़कर बुलाता है तो उस की यह नेमतें और बुलावे कभी नहीं मिटने की। 30 माज़ी में ग़ैरयहूदी अल्लाह के ताबे नहीं थे, लेकिन अब अल्लाह ने आप पर यहूदियों की नाफ़रमानी की वजह से रहम किया है। 31 अब इसके उलट है कि यहूदी खुद आप पर किए गए रहम की वजह से अल्लाह के ताबे नहीं हैं, और लाज़िम है कि अल्लाह उन पर भी रहम करे। 32 क्योंकि उसने सबको नाफ़रमानी के कैदी बना दिया है ताकि सब पर रहम करे।

अल्लाह की तमज़ीद

33 वाह! अल्लाह की दौलत, हिकमत और इल्म क्या ही गहरा है। कौन उसके फ़ैसलों की तह तक पहुँच सकता है! कौन उस की राहों का खोज लगा सकता है! 34 कलामे-मुक़द्दस यों फ़रमाता है,

“किसने रब की सोच को जाना?

या कौन इतना इल्म रखता है

कि वह उसे मशवरा दे?

35 क्या किसी ने कभी उसे कुछ दिया

कि उसे इसका मुआवज़ा देना पड़े?”

36 क्योंकि सब कुछ उसी ने पैदा किया है, सब कुछ उसी के ज़रीए और उसी के जलाल के लिए कायम है। उसी की तमज़ीद अबद तक होती रहे! आमीन।

12

पूरी ज़िंदगी अल्लाह की खिदमत में

1 भाइयो, अल्लाह ने आप पर कितना रहम किया है! अब ज़रूरी है कि आप अपने बदनों को अल्लाह के लिए मख़सूस करें, कि वह एक ऐसी ज़िंदा और मुक़द्दस कुरबानी बन जाएँ जो उसे पसंद आए। ऐसा करने से आप उस की माकूल इबादत करेंगे। 2 इस दुनिया के सौँचे में न ढल जाएँ बल्कि अल्लाह को आपकी सोच की तजदीद करने दें ताकि आप वह शक्लो-सूरत अपना सकें जो उसे पसंद है। फिर आप अल्लाह की मरज़ी को पहचान सकेंगे, वह कुछ जो अच्छा, पसंदीदा और कामिल है।

3 उस रहम की बिना पर जो अल्लाह ने मुझ पर किया मैं आपमें से हर एक को हिदायत देता हूँ कि अपनी हक़ीक़ी हैसियत को जानकर अपने आपको इससे ज़्यादा न समझें। क्योंकि जिस पैमाने से अल्लाह ने हर एक को ईमान बख़्शा है उसी के मुताबिक़ वह समझदारी से अपनी हक़ीक़ी हैसियत को जान ले। 4 हमारे एक ही जिस्म में बहुत-से आज़ा हैं, और हर एक अज़ु का फ़रक़ फ़रक़ काम होता है। 5 इसी तरह गो हम बहुत हैं, लेकिन मसीह में एक ही बदन हैं, जिसमें हर अज़ु दूसरों के साथ जुड़ा हुआ है। 6 अल्लाह ने अपने फ़ज़ल से हर एक को मुख़्तलिफ़ नेमतों से नवाज़ा है। अगर आपकी नेमत नबुव्वत करना है तो अपने ईमान के मुताबिक़ नबुव्वत करें। 7 अगर आपकी नेमत खिदमत करना है तो खिदमत करें। अगर आपकी नेमत तालीम देना है तो तालीम दें। 8 अगर आपकी नेमत हौसलाअफ़ज़ाई करना है तो हौसलाअफ़ज़ाई करें। अगर

आपकी नेमत दूसरों की जरूरियात पूरी करना है तो खुलूसदिली से यही करें। अगर आपकी नेमत राहनुमाई करना है तो सरगरमी से राहनुमाई करें। अगर आपकी नेमत रहम करना है तो खुशी से रहम करें।

9 आपकी मुहब्बत महज़ दिखावे की न हो। जो कुछ बुरा है उससे नफ़रत करें और जो कुछ अच्छा है उसके साथ लिपटे रहें। 10 आपकी एक दूसरे के लिए बरादराना मुहब्बत सरगरम हो। एक दूसरे की इज्ज़त करने में आप खुद पहला कदम उठाएँ। 11 आपका जोश ढीला न पड़ जाए बल्कि स्थानी सरगरमी से खुदावंद की खिदमत करें। 12 उम्मीद में खुश, मुसीबत में साबितकदम और दुआ में लगे रहें। 13 जब मुकद्दसीन ज़रूरतमंद हैं तो उनकी मदद करने में शरीक हों। मेहमान-नवाज़ी में लगे रहें।

14 जो आपको ईज़ा पहुँचाएँ उनको बरकत दें। उन पर लानत मत करें बल्कि बरकत चाहें। 15 खुशी मनानेवालों के साथ खुशी मनाएँ और रोनेवालों के साथ रोएँ। 16 एक दूसरे के साथ अच्छे ताल्लुकात रखें। ऊँची सोच न रखें बल्कि दबे हुआँ से रिफ़ाक़त रखें। अपने आपको दाना मत समझें।

17 अगर कोई आपसे बुरा सुलूक करे तो बदले में उससे बुरा सुलूक न करना। ध्यान रखें कि जो कुछ सबकी नज़र में अच्छा है वही अमल में लाएँ। 18 अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश करें कि जहाँ तक मुमकिन हो सबके साथ मेल-मिलाप रखें। 19 अज़ीज़ो, इतक़ाम मत लें बल्कि अल्लाह के ग़ज़ब को बदला लेने का मौक़ा दें। क्योंकि कलामे-मुकद्दस में लिखा है, “रब फ़रमाता है, इतक़ाम लेना मेरा ही काम है, मैं ही बदला लूँगा।” 20 इसके बजाएँ “अगर तेरा दुश्मन भूका हो तो उसे खाना खिला, अगर प्यासा हो तो पानी पिला। क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सर पर जलते हुए कोयलों का ढेर लगाएगा।” 21 अपने पर बुराई को ग़ालिब न आने दें बल्कि भलाई से आप बुराई पर ग़ालिब आएँ।

13

रिआया के फ़रायज़

1 हर शख्स इख्तियार रखनेवाले हुक्मरानों के ताबे रहे, क्योंकि तमाम इख्तियार अल्लाह की तरफ़ से है। जो इख्तियार रखते हैं उन्हें अल्लाह की तरफ़ से मुक़र्रर किया गया है। 2 चुनौचे जो हुक्मरान की मुख़ालफ़त करता है वह अल्लाह के फ़रमान की मुख़ालफ़त करता और यों अपने आप पर अल्लाह की अदालत लाता है। 3 क्योंकि हुक्मरान उनके लिए ख़ौफ़ का बाइस नहीं होते जो सहीह काम करते हैं बल्कि उनके लिए जो ग़लत काम करते हैं। क्या आप हुक्मरान से ख़ौफ़ खाएँ बग़ैर ज़िंदगी गुज़ारना चाहते हैं? तो फिर वह कुछ करें जो अच्छा है तो वह आपको शाबाश देगा। 4 क्योंकि वह अल्लाह का खादिम है जो आपकी बेहतरी के लिए खिदमत करता है। लेकिन अगर आप ग़लत काम करें तो डरें, क्योंकि वह अपनी तलवार को ख़ाहमखाह थामे नहीं रखता। वह अल्लाह का खादिम है और उसका ग़ज़ब ग़लत काम करनेवाले पर नाज़िल होता है। 5 इसलिए लाज़िम है कि आप हुक्मत के ताबे रहें, न सिर्फ़ सज़ा से बचने के लिए बल्कि इसलिए भी कि आपके ज़मीर पर दाग़ न लगे।

6 यही वजह है कि आप टैक्स अदा करते हैं, क्योंकि सरकारी मुलाज़िम अल्लाह के खादिम हैं जो इस खिदमत को सरंजाम देने में लगे रहते हैं। 7 चुनौचे हर एक को वह कुछ दें जो उसका हक़ है, टैक्स लेनेवाले को टैक्स और कस्टम ड्यूटी लेनेवाले को कस्टम ड्यूटी। जिसका ख़ौफ़ रखना आप पर फ़र्ज़ है उसका ख़ौफ़ मानें और जिसका एहताराम करना आप पर फ़र्ज़ है उसका एहताराम करें।

एक दूसरे के लिए फ़रायज़

8 किसी के भी कर्ज़दार न रहें। सिर्फ़ एक कर्ज़ है जो आप कभी नहीं उतार सकते, एक दूसरे से मुहब्बत रखने का कर्ज़। यह करते रहें क्योंकि जो दूसरों से मुहब्बत रखता है उसने शरीअत के तमाम तकाज़े पूरे किए हैं। 9 मसलन शरीअत में लिखा है, “क़त्ल न करना, ज़िना न करना, चोरी न करना, लालच न करना।” और दीगर जितने अहक़ाम हैं इस एक ही हुक्म में समाए हुए हैं कि “अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।” 10 जो किसी से मुहब्बत रखता है वह उससे ग़लत सुलूक नहीं करता। यों मुहब्बत शरीअत के तमाम तकाज़े पूरे करती है।

11 ऐसा करना लाज़िम है, क्योंकि आप खुद इस वक़्त की अहमियत को जानते हैं कि नींद से जाग उठने की घड़ी आ चुकी है। क्योंकि जब हम ईमान लाए थे तो हमारी नजात इतनी करीब नहीं थी जितनी कि अब है। 12 रात ढलनेवाली है और दिन निकलनेवाला है। इसलिए आएँ, हम तारीकी के काम गंदे कपड़ों की तरह उतारकर नूर के हथियार बाँध लें। 13 हम शरीफ़ ज़िंदगी गुज़ारें, ऐसे लोगों की तरह जो दिन की रौशनी में चलते हैं। इसलिए लाज़िम है कि हम इन चीज़ों से बाज़ रहें : बदमस्तों की रंगरलियों और शराबनोशी से, ज़िनाकारी और ऐयाशी से, और झगड़े और हसद से। 14 इसके बजाएँ खुदावंद ईसा मसीह को पहन लें और अपनी पुरानी फ़ितरत की परवरिश यों न करें कि गुनाहआलूदा ख़ाहिशात बेदार हो जाएँ।

14

एक दूसरे को मुजरिम मत ठहराना

1 जिसका ईमान कमज़ोर है उसे क़बूल करें, और उसके साथ बहस-मुबाहसा न करें। 2 एक का ईमान तो उसे हर चीज़ खाने की इजाज़त देता है जबकि कमज़ोर ईमान रखनेवाला सिर्फ़ सब्ज़ियाँ खाता है। 3 जो सब कुछ खाता है वह उसे हक़ीर न जाने जो यह नहीं कर सकता। और जो

यह नहीं कर सकता वह उसे मुजरिम न ठहराए जो सब कुछ खाता है, क्योंकि अल्लाह ने उसे कबूल किया है। ⁴ आप कौन हैं कि किसी और के गुलाम का फैसला करें? उसका अपना मालिक फैसला करेगा कि वह खड़ा रहे या गिर जाए। और वह ज़रूर खड़ा रहेगा, क्योंकि खुदावंद उसे कायम रखने पर कादिर है।

⁵ कुछ लोग एक दिन को दूसरे दिनों की निसबत ज्यादा अहम करार देते हैं जबकि दूसरे तमाम दिनों की अहमियत बराबर समझते हैं। आप जो भी खयाल रखें, हर एक उसे पूरे यक़ीन के साथ रखे। ⁶ जो एक दिन को खास करार देता है वह इससे खुदावंद की ताज़ीम करना चाहता है। इसी तरह जो सब कुछ खाता है वह इससे खुदावंद को जलाल देना चाहता है। यह इससे ज़ाहिर होता है कि वह इसके लिए खुदा का शुक्र करता है। लेकिन जो कुछ खानों से परहेज़ करता है वह भी खुदा का शुक्र करके इससे उस की ताज़ीम करना चाहता है। ⁷ बात यह है कि हममें से कोई नहीं जो सिर्फ़ अपने वास्ते ज़िंदगी गुज़ारता है और कोई नहीं जो सिर्फ़ अपने वास्ते मरता है। ⁸ अगर हम ज़िंदा हैं तो इसलिए कि खुदावंद को जलाल दें, और अगर हम मरें तो इसलिए कि हम खुदावंद को जलाल दें। गरज़ हम खुदावंद ही के हैं, खाह ज़िंदा हों या मुरदा। ⁹ क्योंकि मसीह इसी मक़सद के लिए मुआ और जी उठा कि वह मुरदों और ज़िंदों दोनों का मालिक हो। ¹⁰ तो फिर आप जो सिर्फ़ सबज़ी खाते हैं अपने भाई को मुजरिम क्यों ठहराते हैं? और आप जो सब कुछ खाते हैं अपने भाई को हकीर क्यों जानते हैं? याद रखें कि एक दिन हम सब अल्लाह के तख़्ते-अदालत के सामने खड़े होंगे। ¹¹ कलामे-मुक़द्दस में यही लिखा है,

रब फ़रमाता है, “मेरी हयात की कसम,

हर घुटना मेरे सामने झुकेगा

और हर ज़बान अल्लाह की तमज़ीद करेगी।”

¹² हाँ, हममें से हर एक को अल्लाह के सामने अपनी ज़िंदगी का जवाब देना पड़ेगा।

दूसरों के लिए गिरने का बाइस न बनना

¹³ चुनौचे आँ, हम एक दूसरे को मुजरिम न ठहराएँ। पूरे अज़म के साथ इसका खयाल रखें कि आप अपने भाई के लिए ठोकर खाने या गुनाह में गिरने का बाइस न बनें। ¹⁴ मुझे खुदावंद मसीह में इल्म और यक़ीन है कि कोई भी खाना बज़ाते-खुद नापाक नहीं है। लेकिन जो किसी खाने को नापाक समझता है उसके लिए वह खाना नापाक ही है। ¹⁵ अगर आप अपने भाई को अपने किसी खाने के बाइस परेशान कर रहे हैं तो आप मुहब्बत की रूह में ज़िंदगी नहीं गुज़ार रहे। अपने भाई को अपने खाने से हलाक न करें। याद रखें कि मसीह ने उसके लिए अपनी जान दी है। ¹⁶ ऐसा न हो कि लोग उस अच्छी चीज़ पर कुफ़र बकें जो आपको मिल गई है। ¹⁷ क्योंकि अल्लाह की बादशाही खाने-पीने की चीज़ों पर कायम नहीं है बल्कि रास्तबाज़ी, सुलह-सलामती और रूहल-कुद्स में खुशी पर। ¹⁸ जो यों मसीह की ख़िदमत करता है वह अल्लाह को पसंद और इनसानों को मंज़ूर है।

¹⁹ चुनौचे आँ, हम पूरी जिद्द-जहद के साथ वह कुछ करने की कोशिश करें जो सुलह-सलामती और एक दूसरे की रूहानी तामीरो-तरक्की का बाइस है। ²⁰ अल्लाह का काम किसी खाने की खातिर बरबाद न करें। हर खाना पाक है, लेकिन अगर आप कुछ खाते हैं जिससे दूसरे को ठेस लगे तो यह ग़लत है। ²¹ बेहतर यह है कि न आप गोश्त खाएँ, न मै पिँ और न कोई और क़दम उठाएँ जिससे आपका भाई ठोकर खाए। ²² जो भी ईमान आप इस नाते से रखते हैं वह आप और अल्लाह तक महदूद रहे। मुबारक है वह जो किसी चीज़ को जायज़ करार देकर अपने आपको मुजरिम नहीं ठहराता। ²³ लेकिन जो शक करते हुए कोई खाना खाता है उसे मुजरिम ठहराया जाता है, क्योंकि उसका यह अमल ईमान पर मबनी नहीं है। और जो भी अमल ईमान पर मबनी नहीं होता वह गुनाह है।

15

बुर्दबारी

¹ हम ताक़तवरों का फ़र्ज़ है कि कमज़ोरों की कमज़ोरियाँ बरदाश्त करें। हम सिर्फ़ अपने आपको खुश करने की खातिर ज़िंदगी न गुज़ारें ² बल्कि हर एक अपने पड़ोसी को उस की बेहतरी और रूहानी तामीरो-तरक्की के लिए खुश करे। ³ क्योंकि मसीह ने भी खुद को खुश रखने के लिए ज़िंदगी नहीं गुज़ारी। कलामे-मुक़द्दस में उसके बारे में यही लिखा है, “जो तुझे गालियाँ देते हैं उनकी गालियाँ मुझ पर आ गई हैं।” ⁴ यह सब कुछ हमें हमारी नसीहत के लिए लिखा गया ताकि हम साबितक़दमी और कलामे-मुक़द्दस की हौसलाअफ़ज़ा बातों से उम्मीद पाएँ। ⁵ अब साबितक़दमी और हौसला देनेवाला खुदा आपको तौफ़ीक़ दे कि आप मसीह ईसा का नमूना अपनाकर यगांगत की रूह में एक दूसरे के साथ ज़िंदगी गुज़ारें। ⁶ तब ही आप मिलकर एक ही आवाज़ के साथ खुदा, हमारे खुदावंद ईसा मसीह के बाप को जलाल दे सकेंगे।

ग़ैरयहूदियों के लिए खुशख़बरी

⁷ चुनौचे जिस तरह मसीह ने आपको कबूल किया है उसी तरह एक दूसरे को भी कबूल करें ताकि अल्लाह को जलाल मिले। ⁸ याद रखें कि मसीह अल्लाह की सदाक़त का इज़हार करके यहूदियों का ख़ादिम बना ताकि उन वादों की तसदीक़ करे जो इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से किए गए थे। ⁹ वह इसलिए भी ख़ादिम बना कि ग़ैरयहूदी अल्लाह को उस रहम के लिए जलाल दें जो उसने उन पर किया है। कलामे-मुक़द्दस में यही लिखा है,

“इसलिए मैं अक़वाम में तेरी हम्दो-सना करूँगा,
तेरे नाम की तारीफ़ में गीत गाऊँगा।”

10 यह भी लिखा है,

“ऐ दीगर कौमो, उस की उम्मत के साथ खुशी मनाओ!”

11 फिर लिखा है,

“ऐ तमाम अक़वाम, रब की तमजीद करो!

ऐ तमाम उम्मतो, उस की सताइश करो!”

12 और यसायाह नबी यह फ़रमाता है,

“यस्सी की जड़ से एक कौपल फूट निकलेगी,

एक ऐसा आदमी उठेगा

जो कौमों पर हुकूमत करेगा।

गैरयहूदी उस पर आस रखेंगे।”

13 उम्मीद का खुदा आपको इमान रखने के बाइस हर खुशी और सलामती से मामूर करे ताकि रूहुल-कुद्स की कुदरत से आपकी उम्मीद बढ़कर दिल से छलक जाए।

दिलेरी से लिखने की वजह

14 मेरे भाइयो, मुझे पूरा यकीन है कि आप खुद भलाई से मामूर हैं, कि आप हर तरह का इल्मो-इरफ़ान रखते हैं और एक दूसरे को नसीहत करने के काबिल भी हैं। 15 तो भी मैंने याद दिलाने की खातिर आपको कई बातें लिखने की दिलेरी की है। क्योंकि मैं अल्लाह के फ़ज़ल से 16 आप गैरयहूदियों के लिए मसीह ईसा का खादिम हूँ। और मैं अल्लाह की खुशख़बरी फैलाने में बैतुल-मुक़द्दस के इमाम की-सी ख़िदमत संरंजाम देता हूँ ताकि आप एक ऐसी क़ुरबानी बन जाएँ जो अल्लाह को पसंद आए और जिसे रूहुल-कुद्स ने उसके लिए मख़सूसो-मुक़द्दस किया हो। 17 चुनाँचे मैं मसीह ईसा में अल्लाह के सामने अपनी ख़िदमत पर फ़ख़र कर सकता हूँ। 18 क्योंकि मैं सिर्फ़ उस काम के बारे में बात करने की ज़रूरत करूँगा जो मसीह ने मेरी मारिफ़त किया है और जिससे गैरयहूदी अल्लाह के ताबे हो गए हैं। हाँ, मसीह ही ने यह काम कलाम और अमल से, 19 इलाही निशानों और मोज़िज़ों की कुव्वत से और अल्लाह के रूह की कुदरत से संरंजाम दिया है। यों मैंने यरूशलम से लेकर सूबा इल्लुरिकुम तक सफ़र करते करते अल्लाह की खुशख़बरी फैलाने की ख़िदमत पूरी की है। 20 और मैं इसे अपनी इज्ज़त का बाइस समझा कि खुशख़बरी वहाँ सुनाऊँ जहाँ मसीह के बारे में ख़बर नहीं पहुँची। क्योंकि मैं ऐसी बुनियाद पर तामीर नहीं करना चाहता था जो किसी और ने डाली थी। 21 कलामे-मुक़द्दस यही फ़रमाता है,

“जिन्हें उसके बारे में नहीं बताया गया

वह देखेंगे,

और जिन्होंने नहीं सुना

उन्हें समझ आएगी।”

पौलुस का रोम जाने का इरादा

22 यही वजह है कि मुझे इतनी दफ़ा आपके पास आने से रोका गया है। 23 लेकिन अब मेरी इन इलाकों में ख़िदमत पूरी हो चुकी है। और चूँकि मैं इतने सालों से आपके पास आने का आरज़ूमंद रहा हूँ 24 इसलिए अब यह खाहिश पूरी करने की उम्मीद रखता हूँ। क्योंकि मैंने स्पेन जाने का मनसूबा बनाया है। उम्मीद है कि रास्ते में आपसे मिलूँगा और आप आगे के सफ़र के लिए मेरी मदद कर सकेंगे। लेकिन पहले मैं कुछ देर के लिए आपकी रिफ़ाक़त से लुत्फ़अंदोज़ होना चाहता हूँ। 25 इस वक़्त मैं यरूशलम जा रहा हूँ ताकि वहाँ के मुक़द्दसीन की ख़िदमत करूँ। 26 क्योंकि मकिदुनिया और अख़या की जमातों ने यरूशलम के उन मुक़द्दसीन के लिए हदिया जमा करने का फ़ैसला किया है जो ग़रीब हैं। 27 उन्होंने यह खुशी से किया और दरअसल यह उनका फ़र्ज़ भी है। गैरयहूदी तो यहूदियों की रूहानी बरकतों में शरीक हुए हैं, इसलिए गैरयहूदियों का फ़र्ज़ है कि वह यहूदियों को भी अपनी माली बरकतों में शरीक करके उनकी ख़िदमत करें। 28 चुनाँचे अपना यह फ़र्ज़ अदा करने और मक़ामी भाइयों का यह सारा फ़ल यरूशलम के इमानदारों तक पहुँचाने के बाद मैं आपके पास से होता हुआ स्पेन जाऊँगा। 29 और मैं जानता हूँ कि जब मैं आपके पास आऊँगा तो मसीह की पूरी बरकत लेकर आऊँगा।

30 भाइयो, मैं हमारे खुदावंद ईसा मसीह और रूहुल-कुद्स की मुहब्बत को याद दिलाकर आपसे मिन्नत करता हूँ कि आप मेरे लिए अल्लाह से दुआ करें और यों मेरी रूहानी जंग में शरीक हो जाएँ। 31 इसके लिए दुआ करें कि मैं सूबा यहूदिया के गैरइमानदारों से बचा रहूँ और कि मेरी यरूशलम में ख़िदमत वहाँ के मुक़द्दसीन को पसंद आए। 32 क्योंकि मैं चाहता हूँ कि जब मैं अल्लाह की मरज़ी से आपके पास आऊँगा तो मेरे दिल में खुशी हो और हम एक दूसरे की रिफ़ाक़त से तरो-ताज़ा हो जाएँ। 33 सलामती का खुदा आप सबके साथ हो। आमीन।

16

सलामो-दुआ

1 हमारी बहन फ़ीबे आपके पास आ रही है। वह किंखरिया शहर की जमात में खादिमा है। मैं उस की सिफ़ारिश करता हूँ² बल्कि खुदावंद में अर्ज है कि आप उसका वैसे ही इस्तक्रबाल करें जैसे कि मुक़द्दीसीन को करना चाहिए। जिस मामले में भी उसे आपकी मदद की ज़रूरत हो उसमें उसका साथ दें, क्योंकि उसने बहुत लोगों की बल्कि मेरी भी मदद की है।

3 प्रिसकिल्ला और अकविला को मेरा सलाम देना जो मसीह ईसा में मेरे हमखिदमत रहे हैं।⁴ उन्होंने मेरे लिए अपनी जान पर खेला। न सिर्फ़ मैं बल्कि गैरयहूदियों की जमातें उनकी एहसानमंद हैं।⁵ उनके घर में जमा होनेवाली जमात को भी मेरा सलाम देना।

मेरे अजीज़ दोस्त इपिनेतुस को मेरा सलाम देना। वह सूबा आसिया में मसीह का पहला पैरोकार यानी उस इलाक़े की फ़सल का पहला फल था।⁶ मरियम को मेरा सलाम जिसने आपके लिए बड़ी मेहनत-मशक्कत की है।⁷ अंदरूनीकुस और यूनिया को मेरा सलाम। वह मेरे हमवतन हैं और जेल में मेरे साथ वक़्त गुज़ारा है। रसूलों में वह नुमायों हैसियत रखते हैं, और वह मुझसे पहले मसीह के पीछे हो लिए थे।

8 अंपलियातुस को सलाम। वह खुदावंद में मुझे अजीज़ है।⁹ मसीह में हमारे हमखिदमत उर्बानुस को सलाम और इसी तरह मेरे अजीज़ दोस्त इस्तख़ुस को भी।¹⁰ अपेल्लिस को सलाम जिसकी मसीह के साथ वफ़ादारी को आजमाया गया है। अरिस्तुबूलुस के घरवालों को सलाम।¹¹ मेरे हमवतन हेरोदियों को सलाम और इसी तरह नरकिस्सुस के उन घरवालों को भी जो मसीह के पीछे हो लिए हैं।

12 त्रूफ़ेना और त्रूफ़ोसा को सलाम जो खुदावंद की खिदमत में मेहनत-मशक्कत करती हैं। मेरी अजीज़ बहन परसिस को सलाम जिसने खुदावंद की खिदमत में बड़ी मेहनत-मशक्कत की है।¹³ हमारे खुदावंद के चुने हुए भाई रूफ़ुस को सलाम और इसी तरह उस की माँ को भी जो मेरी माँ भी है।¹⁴ असिंकरितुस, फ़लिगोन, हिरमेस, पतरोबास, हिरमास और उनके साथी भाइयों को मेरा सलाम देना।¹⁵ फ़िल्लुगुस और यूलिया, नेरियुस और उस की बहन, उलिपास और उनके साथ तमाम मुक़द्दीसीन को सलाम।

16 एक दूसरे को मुक़द्दस बोसा देकर सलाम करें। मसीह की तमाम जमातों की तरफ़ से आपको सलाम।

आखिरी हिदायत

17 भाइयो, मैं आपको ताकीद करता हूँ कि आप उनसे ख़बरदार रहें जो पार्टीबाज़ी और ठोकर का बाइस बनते हैं। यह उस तालीम के खिलाफ़ है जो आपको दी गई है। उनसे किनारा करें¹⁸ क्योंकि ऐसे लोग हमारे खुदावंद मसीह की खिदमत नहीं कर रहे बल्कि अपने पेट की। वह अपनी मीठी और चिकनी-चुपड़ी बातों से सादालौह लोगों के दिलों को धोका देते हैं।¹⁹ आपकी फ़रमाँबरदारी की ख़बर सब तक पहुँच गई है। यह देखकर मैं आपके बारे में ख़ुश हूँ। लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप अच्छा काम करने के लिहाज़ से दानिशमंद और बुरा काम करने के लिहाज़ से बेक़ुसूर हों।²⁰ सलामती का खुदा जल्द ही इबलीस को आपके पाँवों तले कुचलवा डालेगा।

हमारे खुदावंद ईसा का फ़ज़ल आपके साथ हो।

21 मेरा हमखिदमत तीमुथियुस आपको सलाम देता है, और इसी तरह मेरे हमवतन लूकियुस, यासोन और सोसिपातस्स।

22 मैं, तिरतियुस इस ख़त का कातिब हूँ। मेरी तरफ़ से भी खुदावंद में आपको सलाम।

23 गयुस की तरफ़ से आपको सलाम। मैं और पूरी जमात उसके मेहमान रहे हैं। शहर के ख़ज़ानची इरास्तुस और हमारे भाई क्वारतुस भी आपको सलाम कहते हैं।²⁴ [हमारे खुदावंद ईसा का फ़ज़ल आप सबके साथ होता रहे।]

आखिरी दुआ

25 अल्लाह की तमजीद हो, जो आपको मज़बूत करने पर कादिर है, क्योंकि ईसा मसीह के बारे में उस खुशख़बरी से जो मैं सुनाता हूँ और उस भेद के इनकिशाफ़ से जो अज़ल से पोशीदा रहा वह आपको कायम रख सकता है।²⁶ अब इस भेद की हक़ीक़त नबियों के सहीफ़ों से ज़ाहिर की गई है और अबदी खुदा के हुक्म पर तमाम कौमों को मालूम हो गई है ताकि सब ईमान लाकर अल्लाह के ताबे हो जाएँ।

27 अल्लाह की तमजीद हो जो वाहिद दानिशमंद है। उसी का ईसा मसीह के वसीले से अबद तक जलाल होता रहे! आमीन।

1 कुरिथियों

सलाम

¹ यह खत पौलुस की तरफ से है, जो अल्लाह के इरादे से मसीह ईसा का बुलाया हुआ रसूल है, और हमारे भाई सोसथिनेस की तरफ से।

² मैं कुरिथुस में मौजूद अल्लाह की जमात को लिख रहा हूँ, आपको जिन्हें मसीह ईसा में मुकद्दस किया गया है, जिन्हें मुकद्दस होने के लिए बुलाया गया है। साथ ही यह खत उन तमाम लोगों के नाम भी है जो हर जगह हमारे खुदावंद ईसा मसीह का नाम लेते हैं जो उनका और हमारा खुदावंद है।

³ हमारा खुदा बाप और खुदावंद ईसा मसीह आपको फ़ज़ल और सलामती अता करें।

शुक्र

⁴ मैं हमेशा आपके लिए खुदा का शुक्र करता हूँ कि उसने आपको मसीह ईसा में इतना फ़ज़ल बख़्शा है। ⁵ आपको उसमें हर लिहाज़ से दौलतमंद किया गया है, हर किस्म की तक़रीर और इल्मो-इरफ़ान में। ⁶ क्योंकि मसीह की गवाही ने आपके दरमियान जोर पकड़ लिया है, ⁷ इसलिए आपको हमारे खुदावंद ईसा मसीह के जुहर का इंतज़ार करते करते किसी भी बरकत में कमी नहीं। ⁸ वही आपको आखिर तक मज़बूत बनाए रखेगा, इसलिए आप हमारे खुदावंद ईसा मसीह की दूसरी आमद के दिन बेइलज़ाम ठहरेंगे। ⁹ अल्लाह पर पूरा एतमाद किया जा सकता है जिसने आपको बुलाकर अपने फ़रज़ंद हमारे खुदावंद ईसा मसीह की रिफ़ाक़त में शरीक किया है।

कुरिथियों की पार्टीबाज़ी

¹⁰ भाइयो, मैं अपने खुदावंद ईसा मसीह के नाम में आपको ताकीद करता हूँ कि आप सब एक ही बात कहें। आपके दरमियान पार्टीबाज़ी नहीं बल्कि एक ही सोच और एक ही राय होनी चाहिए। ¹¹ क्योंकि मेरे भाइयो, आपके बारे में मुझे ख़लोए के घरवालों से मालूम हुआ है कि आप झगड़ों में उलझ गए हैं। ¹² मतलब यह है कि आपमें से कोई कहता है, “मैं पौलुस की पार्टी का हूँ,” कोई “मैं अपुल्लोस की पार्टी का हूँ,” कोई “मैं कैफ़ा की पार्टी का हूँ” और कोई कि “मैं मसीह की पार्टी का हूँ।” ¹³ क्या मसीह बट गया? क्या आपकी खातिर पौलुस को सलीब पर चढ़ाया गया? या क्या आपको पौलुस के नाम से बपतिस्मा दिया गया?

¹⁴ खुदा का शुक्र है कि मैंने आपमें से किसी को बपतिस्मा नहीं दिया सिवाए क्रिसपुस और गयुस के। ¹⁵ इसलिए कोई नहीं कह सकता कि मैंने पौलुस के नाम से बपतिस्मा पाया है। ¹⁶ हाँ मैंने स्तिफ़नास के घराने को भी बपतिस्मा दिया। लेकिन जहाँ तक मेरा खयाल है इसके अलावा किसी और को बपतिस्मा नहीं दिया। ¹⁷ मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए रसूल बनाकर नहीं भेजा बल्कि इसलिए कि अल्लाह की खुशख़बरी सुनाऊँ। और यह काम मुझे दुनियावी हिकमत से आरास्ता तक़रीर से नहीं करना है ताकि मसीह की सलीब की ताक़त बेअसर न हो जाए।

सलीब का पैग़ाम

¹⁸ क्योंकि सलीब का पैग़ाम उनके लिए जिनका अंजाम हलाक़त है बेवुकूफ़ी है जबकि हमारे लिए जिनका अंजाम नजात है यह अल्लाह की कुदरत है। ¹⁹ चुनाँचे पाक नविशतों में लिखा है,

“मैं दानिशमंदों की दानिश को तबाह करूँगा

और समझदारों की समझ को रद्द करूँगा।”

²⁰ अब दानिशमंद शख्स कहाँ है? आलिम कहाँ है? इस जहान का मुनाज़रे का माहिर कहाँ है? क्या अल्लाह ने दुनिया की हिकमतो-दानाई को बेवुकूफ़ी साबित नहीं किया?

²¹ क्योंकि अगरचे दुनिया अल्लाह की दानाई से घिरी हुई है तो भी दुनिया ने अपनी दानाई की बदौलत अल्लाह को न पहचाना। इसलिए अल्लाह को पसंद आया कि वह सलीब के पैग़ाम की बेवुकूफ़ी के ज़रीए ही ईमान रखनेवालों को नजात दे। ²² यहूदी तकाज़ा करते हैं कि इलाही बातों की तसदीक़ इलाही निशानों से की जाए जबकि यूनानी दानाई के वसीले से इनकी तसदीक़ के खाहों हैं। ²³ इसके मुकाबले में हम मसीहे-मसलूब की मुनादी करते हैं। यहूदी इससे ठोकर खाकर नाराज़ हो जाते हैं जबकि ग़ैरयहूदी इसे बेवुकूफ़ी करार देते हैं। ²⁴ लेकिन जो अल्लाह के बुलाए हुए हैं, खाह वह यहूदी हों खाह यूनानी, उनके लिए मसीह अल्लाह की कुदरत और अल्लाह की दानाई होता है। ²⁵ क्योंकि अल्लाह की जो बात बेवुकूफ़ी लगती है वह इनसान की दानाई से ज़्यादा दानिशमंद है। और अल्लाह की जो बात कमज़ोर लगती है वह इनसान की ताक़त से ज़्यादा ताक़तवर है।

²⁶ भाइयो, इस पर गौर करें कि आपका क्या हाल था जब खुदा ने आपको बुलाया। आपमें से कम हैं जो दुनिया के मेयार के मुताबिक़ दाना हैं, कम हैं जो ताक़तवर हैं, कम हैं जो आली ख़ानदान से हैं। ²⁷ बल्कि जो दुनिया की निगाह में बेवुकूफ़ है उसे अल्लाह ने चुन लिया ताकि दानाओं को शरमिंदा करे। और जो दुनिया में कमज़ोर है उसे अल्लाह ने चुन लिया ताकि ताक़तवरों को शरमिंदा करे। ²⁸ इसी तरह जो दुनिया के नज़दीक़ ज़लील और हकीर है उसे अल्लाह ने चुन लिया। हाँ, जो कुछ भी नहीं है उसे उसने चुन लिया ताकि उसे नेस्त करे जो बज़ाहिर

कुछ है। ²⁹ चुनाँचे कोई भी अल्लाह के सामने अपने पर फ़ख़र नहीं कर सकता। ³⁰ यह अल्लाह की तरफ़ से है कि आप मसीह ईसा में हैं। अल्लाह की बख़्शिश से ईसा खुद हमारी दानाई, हमारी रास्तबाज़ी, हमारी तकदीस और हमारी मख़लसी बन गया है। ³¹ इसलिए जिस तरह कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है, “फ़ख़र करनेवाला खुदावंद ही पर फ़ख़र करे।”

2

पौलुस की सादा मुनादी

¹ भाइयो, मुझ पर भी गौर करें। जब मैं आपके पास आया तो मैंने आपको अल्लाह का भेद मोटे मोटे अलफ़ाज़ में या फ़लसफ़ियाना हिकमत का इज़हार करते हुए न सुनाया। ² वजह क्या थी? यह कि मैंने इरादा कर रखा था कि आपके दरमियान होते हुए मैं ईसा मसीह के सिवा और कुछ न जानूँ, खासकर यह कि उसे मसलूब किया गया। ³ हाँ मैं कमज़ोरहाल, ख़ौफ़ खाते और बहुत थरथराते हुए आपके पास आया। ⁴ और गुप्तगू और मुनादी करते हुए मैंने दुनियावी हिकमत के बड़े जोरदार अलफ़ाज़ की मारिफ़त आपको कायल करने की कोशिश न की, बल्कि रूहुल-कुद्स और अल्लाह की कुदरत ने मेरी बातों की तसदीक़ की, ⁵ ताकि आपका इमान इनसानी हिकमत पर मबनी न हो बल्कि अल्लाह की कुदरत पर।

ग़लत और सहीह दानाई

⁶ दानाई की बातें हम उस वक़्त करते हैं जब कामिल इमान रखनेवालों के दरमियान होते हैं। लेकिन यह दानाई मौजूदा ज़हान की नहीं और न इस ज़हान के हाकिमों ही की है जो मिटनेवाले हैं। ⁷ बल्कि हम खुदा ही की दानाई की बातें करते हैं जो भेद की सूरत में छुपी रही है। अल्लाह ने तमाम ज़मानों से पेशतर मुक़र्रर किया है कि यह दानाई हमारे जलाल का बाइस बने। ⁸ इस ज़हान के किसी भी हाकिम ने इस दानाई को न पहचाना, क्योंकि अगर वह पहचान लेते तो फिर वह हमारे जलाली खुदावंद को मसलूब न करते। ⁹ दानाई के बारे में पाक नविशते भी यही कहते हैं,

“जो न किसी आँख ने देखा,
न किसी कान ने सुना,
और न इनसान के ज़हन में आया,
उसे अल्लाह ने उनके लिए तैयार कर दिया
जो उससे मुहब्बत रखते हैं।”

¹⁰ लेकिन अल्लाह ने यही कुछ अपने रूह की मारिफ़त हम पर ज़ाहिर किया क्योंकि उसका रूह हर चीज़ का खोज लगाता है, यहाँ तक कि अल्लाह की गहराइयों का भी। ¹¹ इनसान के बातिन से कौन वाकिफ़ है सिवाए इनसान की रूह के जो उसके अंदर है? इसी तरह अल्लाह से ताल्लुक़ रखनेवाली बातों को कोई नहीं जानता सिवाए अल्लाह के रूह के। ¹² और हमें दुनिया की रूह नहीं मिली बल्कि वह रूह जो अल्लाह की तरफ़ से है ताकि हम उस की अताकरदा बातों को जान सकें।

¹³ यही कुछ हम बयान करते हैं, लेकिन ऐसे अलफ़ाज़ में नहीं जो इनसानी हिकमत से हमें सिखाया गया बल्कि रूहुल-कुद्स से। यों हम रूहानी हकीकतों की तशरीह रूहानी लोगों के लिए करते हैं। ¹⁴ जो शख्स रूहानी नहीं है वह अल्लाह के रूह की बातों को कबूल नहीं करता क्योंकि वह उसके नज़दीक़ बेवकूफी है। वह उन्हें पहचान नहीं सकता क्योंकि उनकी परख सिर्फ़ रूहानी शख्स ही कर सकता है। ¹⁵ वही हर चीज़ परख लेता है जबकि उस की अपनी परख कोई नहीं कर सकता। ¹⁶ चुनाँचे पाक कलाम में लिखा है,

“किसने रब की सोच को जाना?
कौन उसको तालीम देगा?”
लेकिन हम मसीह की सोच रखते हैं।

3

कुरिथुस की बचगाना हालत

¹ भाइयो, मैं आपसे रूहानी लोगों की बातें न कर सका बल्कि सिर्फ़ जिस्मानी लोगों की। क्योंकि आप अब तक मसीह में छोटे बच्चे हैं। ² मैंने आपको दूध पिलाया, ठोस गिज़ा न खिलाई, क्योंकि आप उस वक़्त इस काबिल नहीं थे बल्कि अब तक नहीं हैं। ³ अभी तक आप जिस्मानी हैं, क्योंकि आपमें हसद और झगड़ा पाया जाता है। क्या इससे यह साबित नहीं होता कि आप जिस्मानी हैं और रूह के बग़ैर चलते हैं? ⁴ जब कोई कहता है, “मैं पौलुस की पार्टी का हूँ” और दूसरा, “मैं अपुल्लोस की पार्टी का हूँ” तो क्या इससे यह ज़ाहिर नहीं होता कि आप रूहानी नहीं बल्कि इनसानी सोच रखते हैं?

पौलुस और अपुल्लोस की हैसियत

⁵ अपुल्लोस की क्या हैसियत है और पौलुस की क्या? दोनों नौकर हैं जिनके वसीले से आप इमान लाए। और हममें से हर एक ने वही ख़िदमत अंजाम दी जो खुदावंद ने उसके सुपर्द की। ⁶ मैंने पौदे लगाए, अपुल्लोस पानी देता रहा, लेकिन अल्लाह ने उन्हें उगने दिया। ⁷ लिहाज़ा

पौदा लगानेवाला और आबपाशी करनेवाला दोनों कुछ भी नहीं, बल्कि खुदा ही सब कुछ है जो पौदे को फलने फूलने देता है। ⁸ पौदा लगाने और पानी देनेवाला एक जैसे हैं, अलबत्ता हर एक को उस की मेहनत के मुताबिक मज़दूरी मिलेगी। ⁹ क्योंकि हम अल्लाह के मुआविन हैं जबकि आप अल्लाह का खेत और उस की इमारत हैं।

¹⁰ अल्लाह के उस फ़ज़ल के मुताबिक जो मुझे बख़्शा गया मैंने एक दानिशमंद ठेकेदार की तरह बुनियाद रखी। इसके बाद कोई और उस पर इमारत तामीर कर रहा है। लेकिन हर एक ध्यान रखे कि वह बुनियाद पर इमारत किस तरह बना रहा है। ¹¹ क्योंकि बुनियाद रखी जा चुकी है और वह है ईसा मसीह। इसके अलावा कोई भी मज़ीद कोई बुनियाद नहीं रख सकता। ¹² जो भी इस बुनियाद पर कुछ तामीर करे वह मुख़्तलिफ़ मवाद तो इस्तेमाल कर सकता है, मसलन सोना, चाँदी, कीमती पत्थर, लकड़ी, सूखी घास या भूसा, ¹³ लेकिन आखिर में हर एक का काम जाहिर हो जाएगा। क्रियामत के दिन कुछ पोशीदा नहीं रहेगा बल्कि आग सब कुछ जाहिर कर देगी। वह साबित कर देगी कि हर किसी ने कैसा काम किया है। ¹⁴ अगर उसका तामीरी काम न जला जो उसने इस बुनियाद पर किया तो उसे अज़्र मिलेगा। ¹⁵ अगर उसका काम जल गया तो उसे नुक़सान पहुँचेगा। खुद तो वह बच जाएगा मगर जलते जलते।

¹⁶ क्या आपको मालूम नहीं कि आप अल्लाह का घर हैं, और आपमें अल्लाह का रह सुकूनत करता है? ¹⁷ अगर कोई अल्लाह के घर को तबाह करे तो अल्लाह उसे तबाह करेगा, क्योंकि अल्लाह का घर मख़सूस-मुक़द्दस है और यह घर आप ही हैं।

अपने बारे में शेखी न मारना

¹⁸ कोई अपने आपको फ़रेब न दे। अगर आपमें से कोई समझे कि वह इस दुनिया की नज़र में दानिशमंद है तो फिर ज़रूरी है कि वह बेवकूफ़ बने ताकि वाकई दानिशमंद हो जाए। ¹⁹ क्योंकि इस दुनिया की हिकमत अल्लाह की नज़र में बेवकूफी है। चुनाँचे मुक़द्दस नविशतों में लिखा है, “वह दानिशमंदों को उनकी अपनी चालाकी के फंदे में फँसा देता है।” ²⁰ यह भी लिखा है, “रब दानिशमंदों के खयालात को जानता है कि वह बातिल हैं।” ²¹ गरज़ कोई किसी इन्सान के बारे में शेखी न मारे। सब कुछ तो आपका है। ²² पौलुस, अपुल्लोस, कैफ़ा, दुनिया, ज़िंदगी, मौत, मौजूदा ज़हान के और मुस्तक़बिल के उम्र सब कुछ आपका है। ²³ लेकिन आप मसीह के हैं और मसीह अल्लाह का है।

4

ख़ुदावंद के खादिम और उनका काम

¹ गरज़ लोग हमें मसीह के खादिम समझें, ऐसे निगरान जिन्हें अल्लाह के भेदों को खोलने की ज़िम्मादारी दी गई है। ² अब निगरानों का फ़र्ज़ यह है कि उन पर पूरा एतमाद किया जा सके। ³ मुझे इस बात की ज़्यादा फ़िकर नहीं कि आप या कोई दुनियावी अदालत मेरा एहतसाब करे, बल्कि मैं खुद भी अपना एहतसाब नहीं करता। ⁴ मुझे किसी ग़लती का इल्म नहीं है अगरचे यह बात मुझे रास्तबाज़ करार देने के लिए काफी नहीं है। ख़ुदावंद खुद मेरा एहतसाब करता है। ⁵ इसलिए वक़्त से पहले किसी बात का फैसला न करें। उस वक़्त तक इंतज़ार करें जब तक ख़ुदावंद न आए। क्योंकि वही तारीकी में छुपी हुई चीज़ों को रौशनी में लाएगा और दिलों की मनसूबाबंदियों को जाहिर कर देगा। उस वक़्त अल्लाह खुद हर फ़रद की मुनासिब तारीफ़ करेगा।

कुरिथियों की शेखीबाज़ी

⁶ भाइयो, मैंने इन बातों का इतलाक़ अपने और अपुल्लोस पर किया ताकि आप हम पर गौर करते हुए अल्लाह के कलाम की हदूद जान लें जिनसे तज़ावुज़ करना मुनासिब नहीं। फिर आप फूलकर एक शाख्स की हिमायत करके दूसरे की मुख़ालफ़त नहीं करेंगे। ⁷ क्योंकि कौन आपको किसी दूसरे से अफ़ज़ल करार देता है? जो कुछ आपके पास है क्या वह आपको मुफ़्त नहीं मिला? और अगर मुफ़्त मिला तो इस पर शेखी क्यों मारते हैं गोया कि आपने उसे अपनी मेहनत से हासिल किया हो?

⁸ वाह जी वाह! आप सेर हो चुके हैं। आप अमीर बन चुके हैं। आप हमारे बग़ैर बादशाह बन चुके हैं। काश आप बादशाह बन चुके होते ताकि हम भी आपके साथ हुकूमत करते! ⁹ इसके बजाए मुझे लगता है कि अल्लाह ने हमारे लिए जो उसके रसूल हैं रोमी तमाशागाह में सबसे निचला दर्जा मुकर्रर किया है, जो उन लोगों के लिए मख़सूस होता है जिन्हें सज़ाए-मौत का फैसला सुनाया गया हो। हाँ, हम दुनिया, फ़रिशतों और इन्सानों के सामने तमाशा बन गए हैं। ¹⁰ हम तो मसीह की खातिर बेवकूफ़ बन गए हैं जबकि आप मसीह में समझदार खयाल किए जाते हैं। हम कमज़ोर हैं जबकि आप ताक़तवर। आपकी इज़्ज़त की जाती है जबकि हमारी बेइज़्ज़ती। ¹¹ अब तक हमें भूक और प्यास सताती है। हम चीथड़ों में मलबूस गोया नंगे फिरते हैं। हमें मुक्के मारे जाते हैं। हमारी कोई मुस्तक़िल रिहाइशगाह नहीं। ¹² और बड़ी मशक्कत से हम अपने हाथों से रोज़ी कमाते हैं। लान-तान करनेवालों को हम बरकत देते हैं, ईज़ा देनेवालों को बरदाश्त करते हैं। ¹³ जो हमें बुरा-भला कहते हैं उन्हें हम दुआ देते हैं। अब तक हम दुनिया का कूड़ा-करकट और ग़िलाज़त बने फिरते हैं।

पौलुस कुरिथियों का रूहानी बाप है

¹⁴ मैं आपको शरमिंदा करने के लिए यह नहीं लिख रहा, बल्कि अपने प्यारे बच्चे जानकर समझाने की गरज़ से। ¹⁵ बेशक मसीह ईसा में आपके उस्ताद तो बेशुमार हैं, लेकिन बाप कम हैं। क्योंकि मसीह ईसा में मैं ही आपको अल्लाह की खुशख़बरी सुनाकर आपका बाप बना।

16 अब मैं ताकीद करता हूँ कि आप मेरे नमूने पर चलें। 17 इसलिए मैंने तीमुथियुस को आपके पास भेज दिया जो खुदावंद में मेरा प्यारा और वफादार बेटा है। वह आपको मसीह ईसा में मेरी उन हिदायात की याद दिलाएगा जो मैं हर जगह और ईमानदारों की हर जमात में देता हूँ।

18 आपमें से बाज़ यों फूल गए हैं जैसे मैं अब आपके पास कभी नहीं आऊँगा। 19 लेकिन अगर खुदावंद की मरज़ी हुई तो जल्द आकर मालूम करूँगा कि क्या यह फूले हुए लोग सिर्फ़ बातें कर रहे हैं या कि अल्लाह की कुदरत उनमें काम कर रही है। 20 क्योंकि अल्लाह की बादशाही ख़ाली बातों से ज़ाहिर नहीं होती बल्कि अल्लाह की कुदरत से। 21 क्या आप चाहते हैं कि मैं छड़ी लेकर आपके पास आऊँ या प्यार और हलीमी की रूह में?

5

ज़िनाकारी

1 यह बात हमारे कानों तक पहुँची है कि आपके दरमियान ज़िनाकारी हो रही है, बल्कि ऐसी ज़िनाकारी जिसे ग़ैरयहूदी भी रवा नहीं समझते। कहते हैं कि आपमें से किसी ने अपनी सौतेली माँ * से शादी कर रखी है। 2 कमाल है कि आप इस फ़ेल पर नादिम नहीं बल्कि फूले फिर रहे हैं! क्या मुनासिब न होता कि आप दुख महसूस करके इस बदी के मुरतकिब को अपने दरमियान से ख़ारिज कर देते? 3 गो मैं जिसम के लिहाज़ से आपके पास नहीं, लेकिन रूह के लिहाज़ से ज़रूर हूँ। और मैं उस शख्स पर फ़तवा इस तरह दे चुका हूँ जैसे कि मैं आपके दरमियान मौजूद हूँ। 4 जब आप हमारे खुदावंद ईसा के नाम में जमा होंगे तो मैं रूह में आपके साथ हूँगा और हमारे खुदावंद ईसा की कुदरत भी। 5 उस वक़्त ऐसे शख्स को इबलीस के हवाले करें ताकि सिर्फ़ उसका जिस्म हलाक हो जाए, लेकिन उस की रूह खुदावंद के दिन रिहाई पाए।

6 आपका फ़ख़र करना अच्छा नहीं। क्या आपको मालूम नहीं कि जब हम थोड़ा-सा खमीर ताज़ा गुंधे हुए आटे में मिलते हैं तो वह सारे आटे को खमीर कर देता है? 7 अपने आपको खमीर से पाक-साफ़ करके ताज़ा गुंधा हुआ आटा बन जाएँ। दर-हकीकत आप हैं भी पाक, क्योंकि हमारा ईदे-फ़सह का लेला मसीह हमारे लिए ज़बह हो चुका है। 8 इसलिए आइए हम पुराने खमीरी आटे यानी बुराई और बदी को दूर करके ताज़ा गुंधे हुए आटे यानी ख़लूस और सच्चाई की रोटियाँ बनाकर फ़सह की ईद मनाएँ।

9 मैंने ख़त में लिखा था कि आप ज़िनाकारों से ताल्लुक न रखें। 10 मेरा मतलब यह नहीं था कि आप इस दुनिया के ज़िनाकारों से ताल्लुक मुंक्ते कर लें या इस दुनिया के लालचियों, लुटेरों और बुतपरस्तों से। अगर आप ऐसा करते तो लाज़िम होता कि आप दुनिया ही से कूच कर जाते। 11 नहीं, मेरा मतलब यह था कि आप ऐसे शख्स से ताल्लुक न रखें जो मसीह में तो भाई कहलाता है मगर है वह ज़िनाकार या लालची या बुतपरस्त या गाली-गलोच करनेवाला या शराबी या लुटेरा। ऐसे शख्स के साथ खाना तक भी न खाएँ।

12 मैं उन लोगों की अदालत क्यों करता फ़िरूँ जो ईमानदारों की जमात से बाहर हैं? क्या आप खुद भी सिर्फ़ उनकी अदालत नहीं करते जो जमात के अंदर हैं? 13 बाहरवालों की अदालत तो खुदा ही करेगा। कलामे-मुक़द्दस में यों लिखा है, 'शरीर को अपने दरमियान से निकाल दो।'

6

मुक़दमाबाज़ी

1 आपमें यह ज़ुरत कैसे पैदा हुई कि जब किसी का किसी दूसरे ईमानदार के साथ तनाज़ा हो तो वह अपना झगड़ा बेदीनों के सामने ले जाता है न कि मुक़द्दसों के सामने? 2 क्या आप नहीं जानते कि मुक़द्दसीन दुनिया की अदालत करेंगे? और अगर आप दुनिया की अदालत करेंगे तो क्या आप इस काबिल नहीं कि छोटे मोटे झगड़ों का फ़ैसला कर सकें? 3 क्या आपको मालूम नहीं कि हम फ़रिशतों की अदालत करेंगे? तो फिर क्या हम रोज़मर्रा के मामलात को नहीं निपटा सकते? 4 और इस किस्म के मामलात को फ़ैसल करने के लिए आप ऐसे लोगों को क्यों मुक़र्रर करते हैं जो जमात की निगाह में कोई हैसियत नहीं रखते? 5 यह बात मैं आपको शर्म दिलाने के लिए कहता हूँ। क्या आपमें एक भी सयाना शख्स नहीं जो अपने भाइयों के माबैन फ़ैसला करने के काबिल हो? 6 लेकिन नहीं। भाई अपने ही भाई पर मुक़दमा चलाता है और वह भी ग़ैरईमानदारों के सामने।

7 अव्वल तो आपसे यह ग़लती हुई कि आप एक दूसरे से मुक़दमाबाज़ी करते हैं। अगर कोई आपसे नाइन्साफ़ी कर रहा हो तो क्या बेहतर नहीं कि आप उसे ऐसा करने दें? और अगर कोई आपको ठग रहा हो तो क्या यह बेहतर नहीं कि आप उसे ठगने दें? 8 इसके बरअक्स आपका यह हाल है कि आप खुद ही नाइन्साफ़ी करते और ठगते हैं और वह भी अपने भाइयों को। 9 क्या आप नहीं जानते कि नाइन्साफ़ अल्लाह की बादशाही मीरास में नहीं पाएँगे? फ़रेब न खाएँ! हरामकार, बुतपरस्त, ज़िनाकार, हमजिसपरस्त, लौंडेबाज़, 10 चोर, लालची, शराबी, बदज़बान, लुटेरे, यह सब अल्लाह की बादशाही मीरास में नहीं पाएँगे। 11 आपमें से कुछ ऐसे थे भी। लेकिन आपको धोया गया, आपको मुक़द्दस किया गया, आपको खुदावंद ईसा मसीह के नाम और हमारे खुदा के रूह से रास्तबाज़ बनाया गया है।

जिस्म अल्लाह का घर है

* 5:1 लफ़ज़ी तरज़ुमा : बाप की बीवी, लेकिन गालिबन इससे मुराद सौतेली माँ है।

12 मेरे लिए सब कुछ जायज़ है, लेकिन सब कुछ मुफ़ीद नहीं। मेरे लिए सब कुछ जायज़ तो है, लेकिन मैं किसी भी चीज़ को इजाज़त नहीं दूँगा कि मुझ पर हुक्मत करे। 13 बेशक ख़ुराक पेट के लिए और पेट ख़ुराक के लिए है, मगर अल्लाह दोनों को नेस्त कर देगा। लेकिन हम इससे यह नतीजा नहीं निकाल सकते कि जिस्म ज़िनाकारी के लिए है। हरगिज़ नहीं! जिस्म ख़ुदावंद के लिए है और ख़ुदावंद जिस्म के लिए। 14 अल्लाह ने अपनी कुदरत से ख़ुदावंद ईसा को ज़िंदा किया और इसी तरह वह हमें भी ज़िंदा करेगा।

15 क्या आप नहीं जानते कि आपके जिस्म मसीह के आज्ञा हैं? तो क्या मैं मसीह के आज्ञा को लेकर फ़ाहिशा के आज्ञा बनाऊँ? हरगिज़ नहीं। 16 क्या आपको मालूम नहीं कि जो फ़ाहिशा से लिपट जाता है वह उसके साथ एक तन हो जाता है? जैसे पाक नविशतों में लिखा है, “वह दोनों एक हो जाते हैं।” 17 इसके बरअक्स जो ख़ुदावंद से लिपट जाता है वह उसके साथ एक रूह हो जाता है।

18 ज़िनाकारी से भागें! इनसान से सरज़द होनेवाला हर गुनाह उसके जिस्म से बाहर होता है सिवाए ज़िना के। ज़िनाकार तो अपने ही जिस्म का गुनाह करता है। 19 क्या आप नहीं जानते कि आपका बदन रूहुल-कुद्स का घर है जो आपके अंदर सुकूनत करता है और जो आपको अल्लाह की तरफ़ से मिला है? आप अपने मालिक नहीं हैं 20 क्योंकि आपको क़ीमत अदा करके ख़रीदा गया है। अब अपने बदन से अल्लाह को जलाल दें।

7

इज़्दिवान्जी ज़िंदगी

1 अब मैं आपके सवालात का जवाब देता हूँ। बेशक अच्छा है कि मर्द शादी न करे। 2 लेकिन ज़िनाकारी से बचने की खातिर हर मर्द की अपनी बीवी और हर औरत का अपना शौहर हो। 3 शौहर अपनी बीवी का हक़ अदा करे और इसी तरह बीवी अपने शौहर का। 4 बीवी अपने जिस्म पर इख्तियार नहीं रखती बल्कि उसका शौहर। इसी तरह शौहर भी अपने जिस्म पर इख्तियार नहीं रखता बल्कि उस की बीवी। 5 चुनौचे एक दूसरे से जुदा न हों सिवाए इसके कि आप दोनों बाहमी रज़ामंदी से एक वक़्त मुक़र्रर कर लें ताकि दुआ के लिए ज़्यादा फ़ुरसत मिल सके। लेकिन इसके बाद आप दुबारा इकट्ठे हो जाएँ ताकि इबलीस आपके बेज़ब्त नफ़स से फ़ायदा उठाकर आपको आजमाइश में न डाले।

6 यह मैं हुक्म के तौर पर नहीं बल्कि आपके हालात के पेशे-नज़र रिआयतन कह रहा हूँ। 7 मैं चाहता हूँ कि तमाम लोग मुझ जैसे ही हों। लेकिन हर एक को अल्लाह की तरफ़ से अलग नेमत मिली है, एक को यह नेमत, दूसरे को वह।

तलाक़ और ग़ैरईमानदार से शादी

8 मैं ग़ैरशादीशुदा अफ़राद और बेवाओं से यह कहता हूँ कि अच्छा हो अगर आप मेरी तरह ग़ैरशादीशुदा रहें। 9 लेकिन अगर आप अपने आप पर काबू न रख सकें तो शादी कर लें। क्योंकि इससे पेशतर कि आपके शहवानी जज़बात बेलगाम होने लगें बेहतर यह है कि आप शादी कर लें।

10 शादीशुदा जोड़ों को मैं नहीं बल्कि ख़ुदावंद हुक्म देता है कि बीवी अपने शौहर से ताल्लुक मुंक्ते न करे। 11 अगर वह ऐसा कर चुकी हो तो दूसरी शादी न करे या अपने शौहर से सुलह कर ले। इसी तरह शौहर भी अपनी बीवी को तलाक़ न दे।

12 दीगर लोगों को ख़ुदावंद नहीं बल्कि मैं नसीहत करता हूँ कि अगर किसी ईमानदार भाई की बीवी ईमान नहीं लाई, लेकिन वह शौहर के साथ रहने पर राज़ी हो तो फिर वह अपनी बीवी को तलाक़ न दे। 13 इसी तरह अगर किसी ईमानदार ख़ातून का शौहर ईमान नहीं लाया, लेकिन वह बीवी के साथ रहने पर रज़ामंद हो तो वह अपने शौहर को तलाक़ न दे। 14 क्योंकि जो शौहर ईमान नहीं लाया उसे उस की ईमानदार बीवी की मारिफ़त मुक़द्दस ठहराया गया है और जो बीवी ईमान नहीं लाई उसे उसके ईमानदार शौहर की मारिफ़त मुक़द्दस करार दिया गया है। अगर ऐसा न होता तो आपके बच्चे नापाक होते, मगर अब वह मुक़द्दस हैं। 15 लेकिन अगर ग़ैरईमानदार शौहर या बीवी अपना ताल्लुक मुंक्ते कर ले तो उसे जाने दें। ऐसी सूत में ईमानदार भाई या बहन इस बंधन से आज़ाद हो गए। मगर अल्लाह ने आपको सुलह-सलामती की ज़िंदगी गुज़ारने के लिए बुलाया है। 16 बहन, मुमकिन है आप अपने ख़ाविंद की नजात का बाइस बन जाएँ। या भाई, मुमकिन है आप अपनी बीवी की नजात का बाइस बन जाएँ।

अल्लाह की तरफ़ से मुक़र्ररा राह पर रहें

17 हर शख्स उसी राह पर चले जो ख़ुदावंद ने उसके लिए मुक़र्रर की और उस हालत में जिसमें अल्लाह ने उसे बुलाया है। ईमानदारों की तमाम जमातों के लिए मेरी यही हिदायत है। 18 अगर किसी को मख़तून हालत में बुलाया गया तो वह नामख़तून होने की कोशिश न करे। अगर किसी को नामख़तूनी की हालत में बुलाया गया तो वह अपना ख़तना न करवाए। 19 न ख़तना कुछ चीज़ है और न ख़तने का न होना, बल्कि अल्लाह के अहक़ाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारना ही सब कुछ है। 20 हर शख्स उसी हैसियत में रहे जिसमें उसे बुलाया गया था। 21 क्या आप गुलाम थे जब ख़ुदावंद ने आपको बुलाया? यह बात आपको परेशान न करे। अलबत्ता अगर आपको आज़ाद होने का मौक़ा मिले तो इससे ज़रूर फ़ायदा उठाएँ। 22 क्योंकि जो उस वक़्त गुलाम था जब ख़ुदावंद ने उसे बुलाया वह अब ख़ुदावंद का आज़ाद किया हुआ है। इसी तरह जो आज़ाद था जब उसे बुलाया गया वह अब मसीह का गुलाम है। 23 आपको क़ीमत देकर ख़रीदा गया है, इसलिए इनसान के गुलाम न बनें। 24 भाइयो, हर शख्स जिस हालत में बुलाया गया उसी में वह अल्लाह के सामने कायम रहे।

ग़ैरशादीशुदा लोग

25 कुँवारियों के बारे में मुझे खुदावंद की तरफ से कोई खास हुक्म नहीं मिला। तो भी मैं जिसे अल्लाह ने अपनी रहमत से काबिले-एतमाद बनाया है आप पर अपनी राय का इज़हार करता हूँ।

26 मेरी दानिस्त में मौजूदा मुसीबत के पेशे-नज़र इनसान के लिए अच्छा है कि ग़ैरशादीशुदा रहे। 27 अगर आप किसी खातून के साथ शादी के बंधन में बँध चुके हैं तो फिर इस बंधन को तोड़ने की कोशिश न करें। लेकिन अगर आप शादी के बंधन में नहीं बँधे तो फिर इसके लिए कोशिश न करें। 28 ताहम अगर आपने शादी कर ही ली है तो आपने गुनाह नहीं किया। इसी तरह अगर कुँवारी शादी कर चुकी है तो यह गुनाह नहीं। मगर ऐसे लोग जिस्मानी तौर पर मुसीबत में पड़ जाएंगे जबकि मैं आपको इससे बचाना चाहता हूँ।

29 भाइयो, मैं तो यह कहता हूँ कि वक़्त थोड़ा है। आइंदा शादीशुदा ऐसे ज़िंदगी बसर करें जैसे कि ग़ैरशादीशुदा हैं। 30 रोनेवाले ऐसे हों जैसे नहीं रो रहे। खुशी मनानेवाले ऐसे हों जैसे खुशी नहीं मना रहे। ख़रीदनेवाले ऐसे हों जैसे उनके पास कुछ भी नहीं। 31 दुनिया से फ़ायदा उठानेवाले ऐसे हों जैसे इसका कोई फ़ायदा नहीं। क्योंकि इस दुनिया की मौजूदा शक्लो-सूरत खत्म होती जा रही है।

32 मैं तो चाहता हूँ कि आप फ़िकरों से आज़ाद रहें। ग़ैरशादीशुदा शख्स खुदावंद के मामलों की फ़िकर में रहता है कि किस तरह उसे खुश करे। 33 इसके बरअक्स शादीशुदा शख्स दुनियावी फ़िकर में रहता है कि किस तरह अपनी बीवी को खुश करे। 34 यों वह बड़ी कश-म-कश में मुब्तला रहता है। इसी तरह ग़ैरशादीशुदा खातून और कुँवारी खुदावंद की फ़िकर में रहती है कि वह जिस्मानी और स्हानी तौर पर उसके लिए मखसूसो-मुकद्दस हो। इसके मुकाबले में शादीशुदा खातून दुनियावी फ़िकर में रहती है कि अपने ख़ाविंद को किस तरह खुश करे।

35 मैं यह आप ही के फ़ायदे के लिए कहता हूँ। मक़सद यह नहीं कि आप पर पाबंदियाँ लगाई जाएँ बल्कि यह कि आप शराफ़त, साबितक़दमी और यकसूई के साथ खुदावंद की हुज़ूरी में चलें।

36 अगर कोई समझता है, 'मैं अपनी कुँवारी मंगेतर से शादी न करने से उसका हक मार रहा हूँ' या यह कि 'मेरी उसके लिए ख़ाहिश हद से ज़्यादा है, इसलिए शादी होनी चाहिए' तो फिर वह अपने इरादे को पूरा करे, यह गुनाह नहीं। वह शादी कर ले। 37 लेकिन इसके बरअक्स अगर उसने शादी न करने का पुरख़्ता अज़म कर लिया है और वह मजबूर नहीं बल्कि अपने इरादे पर इख़्तियार रखता है और उसने अपने दिल में फैसला कर लिया है कि अपनी कुँवारी लड़की को ऐसे ही रहने दे तो उसने अच्छा किया। 38 गरज़ जिसने अपनी कुँवारी मंगेतर से शादी कर ली है उसने अच्छा किया है, लेकिन जिसने नहीं की उसने और भी अच्छा किया है।

39 जब तक ख़ाविंद ज़िंदा है बीवी को उससे रिश्ता तोड़ने की इजाज़त नहीं। ख़ाविंद की वफ़ात के बाद वह आज़ाद है कि जिससे चाहे शादी कर ले, मगर सिर्फ़ खुदावंद में। 40 लेकिन मेरी दानिस्त में अगर वह ऐसे ही रहे तो ज़्यादा मुबारक होगी। और मैं समझता हूँ कि मुझमें भी अल्लाह का रह है।

8

बुतों की कुरबानियाँ

1 अब मैं बुतों की कुरबानी के बारे में बात करता हूँ। हम जानते हैं कि हम सब साहबे-इल्म हैं। इल्म इनसान के फूलने का बाइस बनता है जबकि मुहब्बत उस की तामीर करती है। 2 जो समझता है कि उसने कुछ जान लिया है उसने अब तक उस तरह नहीं जाना जिस तरह उसको जानना चाहिए। 3 लेकिन जो अल्लाह से मुहब्बत रखता है उसे अल्लाह ने जान लिया है।

4 बुतों की कुरबानी खाने के ज़िम्न में हम जानते हैं कि दुनिया में बुत कोई चीज़ नहीं और कि रब के सिवा कोई और खुदा नहीं है। 5 बेशक आसमानो-ज़मीन पर कई नाम-निहाद देवता होते हैं, हाँ दरअसल बहुतेरे देवताओं और खुदावंदों की पूजा की जाती है। 6 तो भी हम जानते हैं कि फ़क़त एक ही खुदा है, हमारा बाप जिसने सब कुछ पैदा किया है और जिसके लिए हम ज़िंदगी गुज़ारते हैं। और एक ही खुदावंद है यानी ईसा मसीह जिसके वसीले से सब कुछ वुजूद में आया है और जिससे हमें ज़िंदगी हासिल है।

7 लेकिन हर किसी को इसका इल्म नहीं। बाज़ ईमानदार तो अब तक यह सोचने के आदी हैं कि बुत का वुजूद है। इसलिए जब वह किसी बुत की कुरबानी का गोश्त खाते हैं तो वह समझते हैं कि हम ऐसा करने से उस बुत की पूजा कर रहे हैं। यों उनका ज़मीर कमज़ोर होने की वजह से आलूदा हो जाता है। 8 हकीक़त तो यह है कि हमारा अल्लाह को पसंद आना इस बात पर मबनी नहीं कि हम क्या खाते हैं और क्या नहीं खाते। न परहेज़ करने से हमें कोई नुक़सान पहुँचता है और न खा लेने से कोई फ़ायदा।

9 लेकिन ख़बरदार रहें कि आपकी यह आज़ादी कमज़ोरों के लिए ठोकर का बाइस न बने। 10 क्योंकि अगर कोई कमज़ोरज़मीर शख्स आपको बुतख़ाने में खाना खाते हुए देखे तो क्या उसे उसके ज़मीर के खिलाफ़ बुतों की कुरबानियाँ खाने पर उभारा नहीं जाएगा? 11 इस तरह आपका कमज़ोर भाई जिसकी ख़ातिर मसीह कुरबान हुआ आपके इल्मो-इरफ़ान की वजह से हलाक हो जाएगा। 12 जब आप इस तरह अपने भाइयों का गुनाह करते और उनके कमज़ोर ज़मीर को मजसूह करते हैं तो आप मसीह का ही गुनाह करते हैं। 13 इसलिए अगर ऐसा खाना मेरे भाई को सहीह राह से भटकाने का बाइस बने तो मैं कभी गोश्त नहीं खाऊँगा ताकि अपने भाई की गुमराही का बाइस न बनूँ।

9

रसूल का हक

1 क्या मैं आज़ाद नहीं? क्या मैं मसीह का रसूल नहीं? क्या मैंने ईसा को नहीं देखा जो हमारा खुदावंद है? क्या आप खुदावंद में मेरी मेहनत का फल नहीं हैं? 2 अगरचे मैं दूसरों के नज़दीक मसीह का रसूल नहीं, लेकिन आपके नज़दीक तो ज़रूर हूँ। खुदावंद में आप ही मेरी रिसालत पर मुहर हैं।

3 जो मेरी बाज़पुर्स करना चाहते हैं उन्हें मैं अपने दिफा में कहता हूँ, 4 क्या हमें खाने-पीने का हक़ नहीं? 5 क्या हमें हक़ नहीं कि शादी करके अपनी बीवी को साथ लिए फ़िरें? दूसरे रसूल और खुदावंद के भाई और कैफ़ा तो ऐसा ही करते हैं। 6 क्या मुझे और बरनबास ही को अपनी ख़िदमत के अज़्र में कुछ पाने का हक़ नहीं? 7 कौन-सा फ़ौजी अपने खर्च पर जंग लड़ता है? कौन अंगूर का बाग़ लगाकर उसके फल से अपना हिस्सा नहीं पाता? या कौन रेवड़ की गल्लाबानी करके उसके दूध से अपना हिस्सा नहीं पाता?

8 क्या मैं यह फ़क़त इनसानी सोच के तहत कह रहा हूँ? क्या शरीअत भी यही नहीं कहती? 9 तौरैत में लिखा है, “जब तू फ़सल गाहने के लिए उस पर बैल चलने देता है तो उसका मुँह बाँधकर न रखना।” क्या अल्लाह सिर्फ़ बैलों की फ़िकर करता है 10 या वह हमारी खातिर यह फ़रमाता है? हाँ, ज़रूर हमारी खातिर क्योंकि हल चलानेवाला इस उम्मीद पर चलाता है कि उसे कुछ मिलेगा। इसी तरह गाहनेवाला इस उम्मीद पर गाहता है कि वह पैदावार में से अपना हिस्सा पाएगा। 11 हमने आपके लिए स्हानी बीज बोया है। तो क्या यह नामुनासिब है अगर हम आपसे जिस्मानी फ़सल काटें? 12 अगर दूसरों को आपसे अपना हिस्सा लेने का हक़ है तो क्या हमारा उनसे ज़्यादा हक़ नहीं बनता?

लेकिन हमने इस हक़ से फ़ायदा नहीं उठाया। हम सब कुछ बरदाश्त करते हैं ताकि मसीह की खुशख़बरी के लिए किसी भी तरह से स्कावट का बाइस न बनें। 13 क्या आप नहीं जानते कि बैतुल-मुक़द्दस में ख़िदमत करनेवालों की ज़रूरियात बैतुल-मुक़द्दस ही से पूरी की जाती हैं? जो कुरबानियाँ चढ़ाने के काम में मसरूफ़ रहते हैं उन्हें कुरबानियों से ही हिस्सा मिलता है। 14 इसी तरह खुदावंद ने मुकर्रर किया है कि इंजील की खुशख़बरी की मुनादी करनेवालों की ज़रूरियात उनसे पूरी की जाएँ जो इस ख़िदमत से फ़ायदा उठाते हैं।

15 लेकिन मैंने किसी तरह भी इससे फ़ायदा नहीं उठाया, और न इसलिए लिखा है कि मेरे साथ ऐसा सुलूक किया जाए। नहीं, इससे पहले कि फ़ख़र करने का मेरा यह हक़ मुझसे छीन लिया जाए बेहतर यह है कि मैं मर जाऊँ। 16 लेकिन अल्लाह की खुशख़बरी की मुनादी करना मेरे लिए फ़ख़र का बाइस नहीं। मैं तो यह करने पर मजबूर हूँ। मुझ पर अफ़सोस अगर इस खुशख़बरी की मुनादी न करूँ। 17 अगर मैं यह अपनी मरज़ी से करता तो फिर अज़्र का मेरा हक़ बनता। लेकिन ऐसा नहीं है बल्कि खुदा ही ने मुझे यह ज़िम्मादारी दी है। 18 तो फिर मेरा अज़्र क्या है? यह कि मैं इंजील की खुशख़बरी मुफ़्त सुनाऊँ और अपने उस हक़ से फ़ायदा न उठाऊँ जो मुझे उस की मुनादी करने से हासिल है।

19 अगरचे मैं सब लोगों से आज़ाद हूँ फिर भी मैंने अपने आपको सबका गुलाम बना लिया ताकि ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को जीत लूँ। 20 मैं यहूदियों के दरमियान यहूदी की मानिंद बना ताकि यहूदियों को जीत लूँ। मूसवी शरीअत के तहत ज़िंदगी गुज़ारनेवालों के दरमियान मैं उनकी मानिंद बना ताकि उन्हें जीत लूँ, गो मैं शरीअत के मातहत नहीं। 21 मूसवी शरीअत के बग़ैर ज़िंदगी गुज़ारनेवालों के दरमियान मैं उन्हीं की मानिंद बना ताकि उन्हें जीत लूँ। इसका मतलब यह नहीं कि मैं अल्लाह की शरीअत के ताबे नहीं हूँ। हकीक़त में मैं मसीह की शरीअत के तहत ज़िंदगी गुज़ारता हूँ। 22 मैं कमज़ोरों के लिए कमज़ोर बना ताकि उन्हें जीत लूँ। सबके लिए मैं सब कुछ बना ताकि हर मुमकिन तरीक़े से बाज़ को बचा सकूँ। 23 जो कुछ भी करता हूँ अल्लाह की खुशख़बरी के वास्ते करता हूँ ताकि इसकी बरकात में शरीक हो जाऊँ।

24 क्या आप नहीं जानते कि स्टेडियम में दौड़ते तो सब ही हैं, लेकिन इनाम एक ही शख्स हासिल करता है? चुनौचे ऐसे दौड़ें कि आप ही जीतें। 25 खेलों में शरीक होनेवाला हर शख्स अपने आपको सख़्त नज़मो-ज़ब्त का पाबंद रखता है। वह फ़ानी ताज़ पाने के लिए ऐसा करते हैं, लेकिन हम ग़ैरफ़ानी ताज़ पाने के लिए। 26 चुनौचे मैं हर वक़्त मनज़िले-मक़सूद को पेशे-नज़र रखते हुए दौड़ता हूँ। और मैं इसी तरह बाक्सिंग भी करता हूँ, मैं हवा में मुक्के नहीं मारता बल्कि निशाने को। 27 मैं अपने बदन को मारता कूटता और इसे अपना गुलाम बनाता हूँ, ऐसा न हो कि दूसरों में मुनादी करके खुद नामक़बूल ठहरूँ।

10

इसराईल का इब्रतनाक तज़रबा

1 भाइयो, मैं नहीं चाहता कि आप इस बात से नावाक़िफ़ रहें कि हमारे बापदादा सब बादल के नीचे थे। वह सब समुंदर में से गुज़रे। 2 उन सबने बादल और समुंदर में मूसा का बपतिस्मा लिया। 3 सबने एक ही स्हानी ख़ुराक खाई 4 और सबने एक ही स्हानी पानी पिया। क्योंकि मसीह स्हानी चटान की सूरत में उनके साथ साथ चलता रहा और वही उन सबको पानी पिलाता रहा। 5 इसके बावजूद उनमें से बेशतर लोग अल्लाह को पसंद न आए, इसलिए वह रेगिस्तान में हलाक हो गए।

6 यह सब कुछ हमारी इब्रत के लिए वाक़े हुआ ताकि हम उन लोगों की तरह बुरी चीज़ों की हवस न करें। 7 उनमें से बाज़ की तरह बुतपरस्त न बनें, जैसे मुक़द्दस नविशतों में लिखा है, “लोग खाने-पीने के लिए बैठ गए और फिर उठकर रंगरलियों में अपने दिल बहलाने लगे।” 8 हम ज़िना भी न करें जैसे उनमें से बाज़ ने किया और नतीजे में एक ही दिन में 23,000 अफ़राद ढेर हो गए। 9 हम खुदावंद की आजमाइश भी न करें जिस तरह उनमें से बाज़ ने की और नतीजे में सौंपों से हलाक हुए। 10 और न बुड़बुड़ाएँ जिस तरह उनमें से बाज़ बुड़बुड़ाने लगे और नतीजे में हलाक करनेवाले फ़रिश्ते के हाथों मारे गए।

11 यह माज़रे इब्रत की खातिर उन पर वाक़े हुए और हम अख़ीर ज़माने में रहनेवालों की नसीहत के लिए लिखे गए।

12 गरज जो समझता है कि वह मजबूती से खड़ा है, खबरदार रहे कि गिर न पड़े। 13 आप सिर्फ ऐसी आजमाइशों में पड़े हैं जो इनसान के लिए आम होती हैं। और अल्लाह वफादार है। वह आपको आपकी ताकत से ज्यादा आजमाइश में नहीं पड़ने देगा। जब आप आजमाइश में पड़ जाएंगे तो वह उसमें से निकलने की राह भी पैदा कर देगा ताकि आप उसे बरदाश्त कर सकें।

अशाए-रब्बानी और बुतपरस्ती में तज़ाद

14 गरज मेरे प्यारो, बुतपरस्ती से भागें। 15 मैं आपको समझदार जानकर बात कर रहा हूँ। आप खुद मेरी इस बात का फैसला करें। 16 जब हम अशाए-रब्बानी के मौके पर बरकत के प्याले को बरकत देकर उसमें से पीते हैं तो क्या हम यों मसीह के खून में शरीक नहीं होते? और जब हम रोटी तोड़कर खाते हैं तो क्या मसीह के बदन में शरीक नहीं होते? 17 रोटी तो एक ही है, इसलिए हम जो बहुत-से हैं एक ही बदन हैं, क्योंकि हम सब एक ही रोटी में शरीक होते हैं।

18 बनी इसराइल पर गौर करें। क्या बैतुल-मुकद्दस में कुरबानियाँ खानेवाले कुरबानगाह की रिफाक़त में शरीक नहीं होते? 19 क्या मैं यह कहना चाहता हूँ कि बुतों के चढ़ावे की कोई हैसियत है? या कि बुत की कोई हैसियत है? हरगिज़ नहीं। 20 मैं यह कहता हूँ कि जो कुरबानियाँ वह गुज़रते हैं अल्लाह को नहीं बल्कि शयातीन को गुज़रते हैं। और मैं नहीं चाहता कि आप शयातीन की रिफाक़त में शरीक हों। 21 आप खुदावंद के प्याले और साथ ही शयातीन के प्याले से नहीं पी सकते। आप खुदावंद के रिफाक़ती खाने और साथ ही शयातीन के रिफाक़ती खाने में शरीक नहीं हो सकते। 22 या क्या हम अल्लाह की ग़ैरत को उकसाना चाहते हैं? क्या हम उससे ताक़तवर हैं?

दूसरों के ज़मीर का लिहाज़ करना

23 सब कुछ रवा तो है, लेकिन सब कुछ मुफ़ीद नहीं। सब कुछ जायज़ तो है, लेकिन सब कुछ हमारी तामीरो-तरक्की का बाइस नहीं होता। 24 हर कोई अपने ही फ़ायदे की तलाश में न रहे बल्कि दूसरे के।

25 बाज़ार में जो कुछ बिकता है उसे खाएँ और अपने ज़मीर को मुतमइन करने की खातिर पूछ-गछ न करें, 26 क्योंकि “ज़मीन और जो कुछ उस पर है रब का है।”

27 अगर कोई ग़ैरइमानदार आपकी दावत करे और आप उस दावत को क़बूल कर लें तो आपके सामने जो कुछ भी रखा जाए उसे खाएँ। अपने ज़मीर के इतमीनान के लिए तफ़तीश न करें। 28 लेकिन अगर कोई आपको बता दे, “यह बुतों का चढ़ावा है” तो फिर उस शख्स की खातिर जिसने आपको आगाह किया है और ज़मीर की खातिर उसे न खाएँ। 29 मतलब है अपने ज़मीर की खातिर नहीं बल्कि दूसरे के ज़मीर की खातिर। क्योंकि यह किस तरह हो सकता है कि किसी दूसरे का ज़मीर मेरी आज्ञादी के बारे में फैसला करे? 30 अगर मैं खुदा का शुक़ करके किसी खाने में शरीक होता हूँ तो फिर मुझे क्यों बुरा कहा जाए? मैं तो उसे खुदा का शुक़ करके खाता हूँ।

31 चुनौचे सब कुछ अल्लाह के जलाल की खातिर करें, खाह आप खाएँ, पीएँ या और कुछ करें। 32 किसी के लिए ठोकर का बाइस न बनें, न यहूदियों के लिए, न यूनानियों के लिए और न अल्लाह की जमात के लिए। 33 इसी तरह मैं भी सबको पसंद आने की हर मुमकिन कोशिश करता हूँ। मैं अपने ही फ़ायदे के खयाल में नहीं रहता बल्कि दूसरों के ताकि बहुतेरे नजात पाएँ।

11

1 मेरे नमूने पर चलें जिस तरह मैं मसीह के नमूने पर चलता हूँ।

इबादत में खवातीन का किरदार

2 शाबाश कि आप हर तरह से मुझे याद रखते हैं। आपने रिवायात को यों महफूज़ रखा है जिस तरह मैंने उन्हें आपके सुपुर्द किया था। 3 लेकिन मैं आपको एक और बात से आगाह करना चाहता हूँ। हर मर्द का सर मसीह है जबकि औरत का सर मर्द और मसीह का सर अल्लाह है। 4 अगर कोई मर्द सर ढाँककर दुआ या नबुव्वत करे तो वह अपने सर की बेइज्जती करता है। 5 और अगर कोई खातून नंगे सर दुआ या नबुव्वत करे तो वह अपने सर की बेइज्जती करती है, गोया वह सर मुंडी है। 6 जो औरत अपने सर पर दोपट्टा नहीं लेती वह टिंड करवाए। लेकिन अगर टिंड करवाना या सर मुँडवाना उसके लिए बेइज्जती का बाइस है तो फिर वह अपने सर को ज़रूर ढाँके। 7 लेकिन मर्द के लिए लाज़िम है कि वह अपने सर को न ढाँके क्योंकि वह अल्लाह की सूरत और जलाल को मुनअक़िस करता है। लेकिन औरत मर्द का जलाल मुनअक़िस करती है, 8 क्योंकि पहला मर्द औरत से नहीं निकला बल्कि औरत मर्द से निकली है। 9 मर्द को औरत के लिए खलक नहीं किया गया बल्कि औरत को मर्द के लिए। 10 इस वजह से औरत फ़रिश्तों को पेशे-नज़र रखकर अपने सर पर दोपट्टा ले जो उस पर इख्तियार का निशान है। 11 लेकिन याद रहे कि खुदावंद में न औरत मर्द के बग़ैर कुछ है और न मर्द औरत के बग़ैर। 12 क्योंकि अगरचे इब्तिदा में औरत मर्द से निकली, लेकिन अब मर्द औरत ही से पैदा होता है। और हर शै अल्लाह से निकलती है।

13 आप खुद फैसला करें। क्या मुनासिब है कि कोई औरत अल्लाह के सामने नंगे सर दुआ करे? 14 क्या फ़ितरत भी यह नहीं सिखाती कि लंबे बाल मर्द की बेइज्जती का बाइस हैं 15 जबकि औरत के लंबे बाल उस की इज्जत का मूजिब हैं? क्योंकि बाल उसे ढाँपने के लिए दिए गए हैं। 16 लेकिन इस सिलसिले में अगर कोई झगड़ने का शौक़ रखे तो जान ले कि न हमारा यह दस्तूर है, न अल्लाह की जमातों का।

अशाए-रब्बानी

17 मैं आपको एक और हिदायत देता हूँ। लेकिन इस सिलसिले में मेरे पास आपके लिए तारीफ़ी अलफ़ाज़ नहीं, क्योंकि आपका जमा होना आपकी बेहतरी का बाइस नहीं होता बल्कि नुक़सान का बाइस। 18 अब्बल तो मैं सुनता हूँ कि जब आप जमात की सूरत में इकट्ठे होते हैं तो आपके दरमियान पार्टीबाज़ी नज़र आती है। और किसी हद तक मुझे इसका यक़ीन भी है। 19 लाज़िम है कि आपके दरमियान मुख़्तलिफ़ पार्टियाँ नज़र आएँ ताकि आपमें से वह ज़ाहिर हो जाएँ जो आज़माने के बाद भी सच्चे निकलें। 20 जब आप जमा होते हैं तो जो खाना आप खाते हैं उसका अशाए-रब्बानी से कोई ताल्लुक़ नहीं रहा। 21 क्योंकि हर शख्स दूसरों का इंतज़ार किए बग़ैर अपना खाना खाने लगता है। नतीजे में एक भूका रहता है जबकि दूसरे को नशा हो जाता है। 22 ताज्जुब है! क्या खाने-पीने के लिए आपके घर नहीं? या क्या आप अल्लाह की जमात को हक़ीर जानकर उनको जो ख़ाली हाथ आए हैं शर्मिदा करना चाहते हैं? मैं क्या कहूँ? क्या आपको शाबाश दूँ? इसमें मैं आपको शाबाश नहीं दे सकता।

23 क्योंकि जो कुछ मैंने आपके सुपुर्द किया है वह मुझे ख़ुदावंद ही से मिला है। जिस रात ख़ुदावंद ईसा को दुश्मन के हवाले कर दिया गया उसने रोटी लेकर 24 शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उसे टुकड़े करके कहा, “यह मेरा बदन है जो तुम्हारे लिए दिया जाता है। मुझे याद करने के लिए यही किया करो।” 25 इसी तरह उसने खाने के बाद प्याला लेकर कहा, “मैं का यह प्याला वह नया अहद है जो मेरे खून के ज़रीए कायम किया जाता है। जब कभी इसे पियो तो मुझे याद करने के लिए पियो।” 26 क्योंकि जब भी आप यह रोटी खाते और यह प्याला पीते हैं तो ख़ुदावंद की मौत का एलान करते हैं, जब तक वह वापस न आए।

27 चुनौचे जो नालायक तौर पर ख़ुदावंद की रोटी खाए और उसका प्याला पिए वह ख़ुदावंद के बदन और खून का गुनाह करता है और कुसूरवार ठहरेगा। 28 हर शख्स अपने आपको परखकर ही इस रोटी में से खाए और प्याले में से पिए। 29 जो रोटी खाते और प्याला पीते वक़्त ख़ुदावंद के बदन का एहताराम नहीं करता वह अपने आप पर अल्लाह की अदालत लाता है। 30 इसी लिए आपके दरमियान बहुतेरे कमज़ोर और बीमार हैं बल्कि बहुत-से मौत की नींद सो चुके हैं। 31 अगर हम अपने आपको जाँचते तो अल्लाह की अदालत से बचे रहते। 32 लेकिन ख़ुदावंद हमारी अदालत करने से हमारी तरबियत करता है ताकि हम दुनिया के साथ मुजरिम न ठहरें।

33 गरज़ मेरे भाइयो, जब आप खाने के लिए जमा होते हैं तो एक दूसरे का इंतज़ार करें। 34 अगर किसी को भूक लगी हो तो वह अपने घर में ही खाना खा ले ताकि आपका जमा होना आपकी अदालत का बाइस न ठहरे। दीगर हिदायत मैं आपको उस वक़्त दूँगा जब आपके पास आऊँगा।

12

एक रूह और मुख़्तलिफ़ नेमतें

1 भाइयो, मैं नहीं चाहता कि आप रूहानी नेमतों के बारे में नावाकिफ़ रहें। 2 आप जानते हैं कि ईमान लाने से पेशतर आपको बार बार बहकाया और ग़ुँगे बुतों की तरफ़ खींचा जाता था। 3 इसी के पेशे-नज़र मैं आपको आगाह करता हूँ कि अल्लाह के रूह की हिदायत से बोलनेवाला कभी नहीं कहेगा, “ईसा पर लानत।” और रूहल-कुदूस की हिदायत से बोलनेवाले के सिवा कोई नहीं कहेगा, “ईसा ख़ुदावंद है।”

4 गो तरह तरह की नेमतें होती हैं, लेकिन रूह एक ही है। 5 तरह तरह की खिदमतें होती हैं, लेकिन ख़ुदावंद एक ही है। 6 अल्लाह अपनी कुदरत का इज़हार मुख़्तलिफ़ अंदाज़ से करता है, लेकिन ख़ुदा एक ही है जो सबमें हर तरह का काम करता है। 7 हममें से हर एक में रूहल-कुदूस का इज़हार किसी नेमत से होता है। यह नेमतें इसलिए दी जाती हैं ताकि हम एक दूसरे की मदद करें। 8 एक को रूहल-कुदूस हिकमत का कलाम अता करता है, दूसरे को वही रूह इल्मो-इरफ़ान का कलाम। 9 तीसरे को वही रूह पुख़्ता ईमान देता है और चौथे को वही एक रूह शफ़ा देने की नेमतें। 10 वह एक को मोजिज़े करने की ताक़त देता है, दूसरे को नबुव्वत करने की सलाहियत और तीसरे को मुख़्तलिफ़ रूहों में इन्तियाज़ करने की नेमत। एक को उससे ग़ैरज़बाने बोलने की नेमत मिलती है और दूसरे को इनका तरजुमा करने की। 11 वही एक रूह यह तमाम नेमतें तकसीम करता है। और वही फैसला करता है कि किस को क्या नेमत मिलनी है।

एक जिस्म और मुख़्तलिफ़ आज़ा

12 इनसानी जिस्म के बहुत-से आज़ा होते हैं, लेकिन यह तमाम आज़ा एक ही बदन को तश्कील देते हैं। मसीह का बदन भी ऐसा है। 13 खाह हम यहूदी थे या यूनानी, गुलाम थे या आज़ाद, बपतिस्मे से हम सबको एक ही रूह की मारिफ़त एक ही बदन में शामिल किया गया है, हम सबको एक ही रूह पिलाया गया है।

14 बदन के बहुत-से हिस्से होते हैं, न सिर्फ़ एक। 15 फ़र्ज़ करें कि पाँव कहे, “मैं हाथ नहीं हूँ इसलिए बदन का हिस्सा नहीं।” क्या यह कहने पर उसका बदन से ताल्लुक़ ख़त्म हो जाएगा? 16 या फ़र्ज़ करें कि कान कहे, “मैं आँख नहीं हूँ इसलिए बदन का हिस्सा नहीं।” क्या यह कहने पर उसका बदन से नाता टूट जाएगा? 17 अगर पूरा जिस्म आँख ही होता तो फिर सुनने की सलाहियत कहाँ होती? अगर सारा बदन कान ही होता तो फिर सूँघने का क्या बनता? 18 लेकिन अल्लाह ने जिस्म के मुख़्तलिफ़ आज़ा बनाकर हर एक को वहाँ लगाया जहाँ वह चाहता था। 19 अगर एक ही अज़ु पूरा जिस्म होता तो फिर यह किस किस का जिस्म होता? 20 नहीं, बहुत-से आज़ा होते हैं, लेकिन जिस्म एक ही है।

21 आँख हाथ से नहीं कह सकती, “मुझे तेरी ज़रूरत नहीं,” न सर पाँवों से कह सकता है, “मुझे तुम्हारी ज़रूरत नहीं।” 22 बल्कि अगर देखा जाए तो अक्सर ऐसा होता है कि जिस्म के जो आज़ा ज़्यादा कमज़ोर लगते हैं उनकी ज़्यादा ज़रूरत होती है। 23 वह आज़ा जिन्हें हम कम इज्जत के लायक समझते हैं उन्हें हम ज़्यादा इज्जत के साथ ढॉप लेते हैं, और वह आज़ा जिन्हें हम शर्म से छुपाकर रखते हैं उन्हीं का हम ज़्यादा एहतराम करते हैं। 24 इसके बरअक्स हमारे इज्जतदार आज़ा को इसकी ज़रूरत ही नहीं होती कि हम उनका खास एहतराम करें। लेकिन अल्लाह ने जिस्म को इस तरह तरतीब दिया कि उसने कमकदर आज़ा को ज़्यादा इज्जतदार ठहराया, 25 ताकि जिस्म के आज़ा में तफ़रका न हो बल्कि वह एक दूसरे की फ़िकर करें। 26 अगर एक अज़ु दुख में हो तो उसके साथ दीगर तमाम आज़ा भी दुख महसूस करते हैं। अगर एक अज़ु सरफ़राज़ हो जाए तो उसके साथ बाकी तमाम आज़ा भी मस्रर होते हैं।

27 आप सब मिलकर मसीह का बदन हैं और इनफ़िदादी तौर पर उसके मुख्तलिफ़ आज़ा। 28 और अल्लाह ने अपनी जमात में पहले रसूल, दूसरे नबी और तीसरे उस्ताद मुकर्रर किए हैं। फिर उसने ऐसे लोग भी मुकर्रर किए हैं जो मोजिज़े करते, शफ़ा देते, दूसरों की मदद करते, इंतज़ाम चलाते और मुख्तलिफ़ क्रिस्म की ग़ैरज़बानें बोलते हैं। 29 क्या सब रसूल हैं? क्या सब नबी हैं? क्या सब उस्ताद हैं? क्या सब मोजिज़े करते हैं? 30 क्या सबको शफ़ा देने की नेमतें हासिल हैं? क्या सब ग़ैरज़बानें बोलते हैं? क्या सब इनका तरज़ुमा करते हैं? 31 लेकिन आप उन नेमतों की तलाश में रहें जो अफ़ज़ल हैं।

अब मैं आपको इससे कहीं उम्दा राह बताता हूँ।

13

मुहब्बत

1 अगर मैं इनसानों और फ़रिशतों की ज़बानें बोलूँ, लेकिन मुहब्बत न रखूँ तो फिर मैं बस गूँजता हुआ घड़ियाल या ठनठनाती हुई झाँझ ही हूँ। 2 अगर मेरी नबुव्वत की नेमत हो और मुझे तमाम भेदों और हर इल्म से वाकिफ़ियत हो, साथ ही मेरा ऐसा ईमान हो कि पहाड़ों को खिसका सकूँ, लेकिन मेरा दिल मुहब्बत से खाली हो तो मैं कुछ भी नहीं। 3 अगर मैं अपना सारा माल गरीबों में तकसीम कर दूँ बल्कि अपना बदन जलाए जाने के लिए दे दूँ, लेकिन मेरा दिल मुहब्बत से खाली हो तो मुझे कुछ फ़ायदा नहीं।

4 मुहब्बत सब्र से काम लेती है, मुहब्बत मेहरबान है। न यह हसद करती है न डींगें मारती है। यह फूलती भी नहीं। 5 मुहब्बत बदतमीज़ी नहीं करती न अपने ही फ़ायदे की तलाश में रहती है। यह जल्दी से गुस्से में नहीं आ जाती और दूसरों की ग़लतियों का रिकार्ड नहीं रखती। 6 यह नाइनसाफ़ी देखकर खुश नहीं होती बल्कि सच्चाई के ग़ालिब आने पर ही खुशी मनाती है। 7 यह हमेशा दूसरों की कमज़ोरियाँ बरदाश्त करती है, हमेशा एतमाद करती है, हमेशा उम्मीद रखती है, हमेशा साबितक़दम रहती है।

8 मुहब्बत कभी ख़त्म नहीं होती। इसके मुकाबले में नबुव्वतें ख़त्म हो जाएँगी, ग़ैरज़बानें जाती रहेंगी, इल्म मिट जाएगा। 9 क्योंकि इस वक़्त हमारा इल्म नामुक्म्मल है और हमारी नबुव्वत सब कुछ ज़ाहिर नहीं करती। 10 लेकिन जब वह कुछ आएगा जो कामिल है तो यह अधूरी चीज़ें जाती रहेंगी।

11 जब मैं बच्चा था तो बच्चे की तरह बोलता, बच्चे की-सी सोच रखता और बच्चे की-सी समझ से काम लेता था। लेकिन अब मैं बालिग़ हूँ, इसलिए मैंने बच्चे का-सा अंदाज़ छोड़ दिया है। 12 इस वक़्त हमें आईने में धुँधला-सा दिखाई देता है, लेकिन उस वक़्त हम स्वरू देखेंगे। अब मैं जुज़वी तौर पर जानता हूँ, लेकिन उस वक़्त कामिल तौर से जान लूँगा, ऐसे ही जैसे अल्लाह ने मुझे पहले से जान लिया है।

13 गरज़ ईमान, उम्मीद और मुहब्बत तीनों कायम रहते हैं, लेकिन इनमें अफ़ज़ल मुहब्बत है।

14

नबुव्वत और ग़ैरज़बानें

1 मुहब्बत का दामन थामे रखें। लेकिन साथ ही स्थानी नेमतों को सरगरमी से इस्तेमाल में लाएँ, खुसूसन नबुव्वत की नेमत को। 2 ग़ैरज़बान बोलनेवाला लोगों से नहीं बल्कि अल्लाह से बात करता है। कोई उस की बात नहीं समझता क्योंकि वह रूह में भेद की बातें करता है। 3 इसके बरअक्स नबुव्वत करनेवाला लोगों से ऐसी बातें करता है जो उनकी तामीरो-तरक्की, हौसलाअफ़ज़ाई और तसल्ली का बाइस बनती हैं। 4 ग़ैरज़बान बोलनेवाला अपनी तामीरो-तरक्की करता है जबकि नबुव्वत करनेवाला जमात की।

5 मैं चाहता हूँ कि आप सब ग़ैरज़बानें बोलें, लेकिन इससे ज़्यादा यह ख़ाहिश रखता हूँ कि आप नबुव्वत करें। नबुव्वत करनेवाला ग़ैरज़बानें बोलनेवाले से अहम है। हाँ, ग़ैरज़बानें बोलनेवाला भी अहम है बशर्तेकि अपनी ज़बान का तरज़ुमा करे, क्योंकि इससे खुदा की जमात की तामीरो-तरक्की होती है।

6 भाइयो, अगर मैं आपके पास आकर ग़ैरज़बानें बोलूँ, लेकिन मुकाशफ़े, इल्म, नबुव्वत और तालीम की कोई बात न करूँ तो आपको क्या फ़ायदा होगा? 7 बेजान साज़ों पर गौर करने से भी यही बात सामने आती है। अगर बाँसरी या सरोद को किसी खास सुर के मुताबिक़ न बजाया जाए तो फिर सुननेवाले किस तरह पहचान सकेंगे कि इन पर क्या क्या पेश किया जा रहा है? 8 इसी तरह अगर बिगुल की आवाज़ जंग के लिए तैयार हो जाने के लिए साफ़ तौर से न बजे तो क्या फ़ौजी कमरबस्ता हो जाएंगे? 9 अगर आप साफ़ साफ़ बात न करें तो आपकी हालत भी ऐसी ही होगी। फिर आपकी बात कौन समझेगा? क्योंकि आप लोगों से नहीं बल्कि हवा से बातें करेंगे। 10 इस दुनिया में बहुत ज़्यादा ज़बानें

बोली जाती हैं और इनमें से कोई भी नहीं जो बेमानी हो। 11 अगर मैं किसी ज़बान से वाकिफ़ नहीं तो मैं उस ज़बान में बोलनेवाले के नज़दीक अजनबी ठहरूँगा और वह मेरे नज़दीक। 12 यह उसूल आप पर भी लागू होता है। चूँकि आप रूहानी नेमतों के लिए तड़पते हैं तो फिर खासकर उन नेमतों में माहिर बनने की कोशिश करें जो खुदा की जमात को तामीर करती हैं।

13 चुनौचे ग़ैरज़बान बोलनेवाला दुआ करे कि इसका तरजुमा भी कर सके। 14 क्योंकि अगर मैं ग़ैरज़बान में दुआ करूँ तो मेरी रूह तो दुआ करती है मगर मेरी अक्ल बेअमल रहती है। 15 तो फिर क्या करूँ? मैं रूह में दुआ करूँगा, लेकिन अक्ल को भी इस्तेमाल करूँगा। मैं रूह में हम्दो-सना करूँगा, लेकिन अक्ल को भी इस्तेमाल में लाऊँगा। 16 अगर आप सिर्फ़ रूह में हम्दो-सना करें तो हाज़िरीन में से जो आपकी बात नहीं समझता वह किस तरह आपकी शुक्रगुज़ारी पर “आमीन” कह सकेगा? उसे तो आपकी बातों की समझ ही नहीं आई। 17 बेशक आप अच्छी तरह खुदा का शुक्र कर रहे होंगे, लेकिन इससे दूसरे शख्स की तामीरो-तरक्की नहीं होगी।

18 मैं खुदा का शुक्र करता हूँ कि आप सबकी निसबत ज़्यादा ग़ैरज़बानों में बात करता हूँ। 19 फिर भी मैं खुदा की जमात में ऐसी बातें पेश करना चाहता हूँ जो दूसरे समझ सकें और जिनसे वह तरबियत हासिल कर सकें। क्योंकि ग़ैरज़बानों में बोली गई बेशुमार बातों की निसबत पाँच तरबियत देनेवाले अलफ़ाज़ कहीं बेहतर हैं।

20 भाइयो, बच्चों जैसी सोच से बाज़ आँ। बुराई के लिहाज़ से तो ज़रूर बच्चे बने रहें, लेकिन समझ में बालिग़ बन जाँ। 21 शरीअत में लिखा है, “रब फ़रमाता है कि मैं ग़ैरज़बानों और अजनबियों के होंटों की मारिफ़त इस क़ौम से बात करूँगा। लेकिन वह फिर भी मेरी नहीं सुनेगे।” 22 इससे ज़ाहिर होता है कि ग़ैरज़बानों ईमानदारों के लिए इम्तियाज़ी निशान नहीं होती बल्कि ग़ैरईमानदारों के लिए। इसके बरअक्स नबुव्वत ग़ैरईमानदारों के लिए इम्तियाज़ी निशान नहीं होती बल्कि ईमानदारों के लिए।

23 अब फ़र्ज़ करें कि ईमानदार एक जगह जमा हैं और तमाम हाज़िरीन ग़ैरज़बानों बोल रहे हैं। इसी असना में ग़ैरज़बान को न समझनेवाले या ग़ैरईमानदार आ शामिल होते हैं। आपको इस हालत में देखकर क्या वह आपको दीवाना करार नहीं देंगे? 24 इसके मुक़ाबले में अगर तमाम लोग नबुव्वत कर रहे हों और कोई ग़ैरईमानदार अंदर आए तो क्या होगा? वह सब उसे कायल कर लेंगे कि गुनाहगार है और सब उसे परख लेंगे। 25 यों उसके दिल की पोशीदा बातें ज़ाहिर हो जाएँगी, वह गिरकर अल्लाह को सिजदा करेगा और तसलीम करेगा कि फ़िलहकीकत अल्लाह आपके दरमियान मौजूद है।

जमात में तरतीब की ज़रूरत

26 भाइयो, फिर क्या होना चाहिए? जब आप जमा होते हैं तो हर एक के पास कोई गीत या तालीम या मुकाशफ़ा या ग़ैरज़बान या इसका तरजुमा हो। इन सबका मक़सद खुदा की जमात की तामीरो-तरक्की हो। 27 ग़ैरज़बान में बोलते वक़्त सिर्फ़ दो या ज़्यादा से ज़्यादा तीन अशखास बोलें और वह भी बारी बारी। साथ ही कोई उनका तरजुमा भी करे। 28 अगर कोई तरजुमा करनेवाला न हो तो ग़ैरज़बान बोलनेवाला जमात में ख़ामोश रहे, अलबत्ता उसे अपने आपसे और अल्लाह से बात करने की आज़ादी है। 29 नबियों में से दो या तीन नबुव्वत करें और दूसरे उनकी बातों की सेहत को परखें। 30 अगर इस दौरान किसी बैठे हुए शख्स को कोई मुकाशफ़ा मिले तो पहला शख्स ख़ामोश हो जाए। 31 क्योंकि आप सब बारी बारी नबुव्वत कर सकते हैं ताकि तमाम लोग सीखें और उनकी हौसलाअफ़ज़ाई हो। 32 नबियों की रूहें नबियों के ताबे रहती हैं, 33 क्योंकि अल्लाह बेतरतीबी का नहीं बल्कि सलामती का खुदा है।

जैसा मुक़द्दसीन की तमाम जमातों का दस्तूर है 34 ख़वातीन जमात में ख़ामोश रहें। उन्हें बोलने की इज़ाज़त नहीं, बल्कि वह फ़रमाँबरदार रहें। शरीअत भी यही फ़रमाती है। 35 अगर वह कुछ सीखना चाहें तो अपने घर पर अपने शौहर से पूछ लें, क्योंकि औरत का खुदा की जमात में बोलना शर्म की बात है।

36 क्या अल्लाह का कलाम आपमें से निकला है, या क्या वह सिर्फ़ आप ही तक पहुँचा है? 37 अगर कोई खयाल करे कि मैं नबी हूँ या खास रूहानी हैसियत रखता हूँ तो वह जान ले कि जो कुछ मैं आपको लिख रहा हूँ वह खुदावंद का हुक्म है। 38 जो यह नज़रंदाज़ करता है उसे खुद भी नज़रंदाज़ किया जाएगा।

39 गरज़ भाइयो, नबुव्वत करने के लिए तड़पते रहें, अलबत्ता किसी को ग़ैरज़बानों बोलने से न रोकें। 40 लेकिन सब कुछ शायस्तगी और तरतीब से अमल में आए।

15

मसीह का जी उठना

1 भाइयो, मैं आपकी तवज्जुह उस ख़ुशख़बरी की तरफ़ दिलाता हूँ जो मैंने आपको सुनाई, वही ख़ुशख़बरी जिसे आपने कबूल किया और जिस पर आप कायम भी हैं। 2 इसी पैग़ाम के वसीले से आपको नजात मिलती है। शर्त यह है कि आप वह बातें ज्यों की त्यों थामे रखें जिस तरह मैंने आप तक पहुँचाई हैं। बेशक यह बात इस पर मुनहसिर है कि आपका ईमान लाना बेमक़सद नहीं था।

3 क्योंकि मैंने इस पर खास ज़ोर दिया कि वही कुछ आपके सुपुर्द करूँ जो मुझे भी मिला है। यह कि मसीह ने पाक नविशतों के मुताबिक़ हमारे गुनाहों की खातिर अपनी जान दी, 4 फिर वह दफ़न हुआ और तीसरे दिन पाक नविशतों के मुताबिक़ जी उठा। 5 वह पतरस को दिखाई दिया, फिर बारह शागिर्दों को। 6 इसके बाद वह एक ही वक़्त पाँच सौ से ज़्यादा भाइयों पर ज़ाहिर हुआ। उनमें से बेशतर अब तक ज़िंदा हैं अगरचे चंद एक इंतक़ाल कर चुके हैं। 7 फिर याक़ूब ने उसे देखा, फिर तमाम रसूलों ने।

8 और सबके बाद वह मुझ पर भी जाहिर हुआ, मुझ पर जो गोया कबल अज्ञ वक्त पैदा हुआ। 9 क्योंकि रसूलों में मेरा दर्जा सबसे छोटा है, बल्कि मैं तो रसूल कहलाने के भी लायक नहीं, इसलिए कि मैंने अल्लाह की जमात को ईजा पहुँचाई। 10 लेकिन मैं जो कुछ हूँ अल्लाह के फ़ज़ल ही से हूँ। और जो फ़ज़ल उसने मुझ पर किया वह बेअसर न रहा, क्योंकि मैंने उन सबसे ज्यादा जॉफ़िशानी से काम किया है। अलबत्ता यह काम मैंने खुद नहीं बल्कि अल्लाह के फ़ज़ल ने किया है जो मेरे साथ था। 11 ख़ैर, यह काम मैंने किया या उन्होंने, हम सब उसी पैग़ाम की मुनादी करते हैं जिस पर आप ईमान लाए हैं।

जी उठने पर एतराज़

12 अब मुझे यह बताएँ, हम तो मुनादी करते हैं कि मसीह मुरदों में से जी उठा है। तो फिर आपमें से कुछ लोग कैसे कह सकते हैं कि मुरदे जी नहीं उठते? 13 अगर मुरदे जी नहीं उठते तो मतलब यह हुआ कि मसीह भी नहीं जी उठा। 14 और अगर मसीह जी नहीं उठा तो फिर हमारी मुनादी अबस होती और आपका ईमान लाना भी बेफ़ायदा होता। 15 निज़ हम अल्लाह के बारे में झूठे गवाह साबित होते। क्योंकि हम गवाही देते हैं कि अल्लाह ने मसीह को ज़िंदा किया जबकि अगर वाकई मुरदे नहीं जी उठते तो वह भी ज़िंदा नहीं हुआ। 16 गरज़ अगर मुरदे जी नहीं उठते तो फिर मसीह भी नहीं जी उठा। 17 और अगर मसीह नहीं जी उठा तो आपका ईमान बेफ़ायदा है और आप अब तक अपने गुनाहों में गिरिफ़्तार हैं। 18 हाँ, इसके मुताबिक़ जिन्होंने मसीह में होते हुए इंतक़ाल किया है वह सब हलाक हो गए हैं। 19 चुनौचे अगर मसीह पर हमारी उम्मीद सिर्फ़ इसी ज़िंदगी तक महदूद है तो हम इनसानों में सबसे ज्यादा काबिले-रहम हैं।

मसीह वाकई जी उठा है

20 लेकिन मसीह वाकई मुरदों में से जी उठा है। वह इंतक़ाल किए हुआ की फ़सल का पहला फल है। 21 चूँकि इनसान के वसीले से मौत आई, इसलिए इनसान ही के वसीले से मुरदों के जी उठने की भी राह खुली। 22 जिस तरह सब इसलिए मरते हैं कि वह आदम के फ़रज़ंद हैं उसी तरह सब ज़िंदा किए जाएंगे जो मसीह के हैं। 23 लेकिन जी उठने की एक तरतीब है। मसीह तो फ़सल के पहले फल की हैसियत से जी उठ चुका है जबकि उसके लोग उस वक्त जी उठेंगे जब वह वापस आएगा। 24 इसके बाद खातमा होगा। तब हर हुकूमत, इख़्तियार और कुव्वत को नेस्त करके वह बादशाही को खुदा बाप के हवाले कर देगा। 25 क्योंकि लाज़िम है कि मसीह उस वक्त तक हुकूमत करे जब तक अल्लाह तमाम दुश्मनों को उसके पाँवों के नीचे न कर दे। 26 आखिरी दुश्मन जिसे नेस्त किया जाएगा मौत होगी। 27 क्योंकि अल्लाह के बारे में कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, “उसने सब कुछ उस (यानी मसीह) के पाँवों के नीचे कर दिया।” जब कहा गया है कि सब कुछ मसीह के मातहत कर दिया गया है, तो जाहिर है कि इसमें अल्लाह शामिल नहीं जिसने सब कुछ मसीह के मातहत किया है। 28 जब सब कुछ मसीह के मातहत कर दिया गया तब फ़रज़ंद खुद भी उसी के मातहत हो जाएगा जिसने सब कुछ उसके मातहत किया। यों अल्लाह सबमें सब कुछ होगा।

जी उठने के पेशे-नज़र ज़िंदगी गुज़ारना

29 अगर मुरदे वाकई जी नहीं उठते तो फिर वह लोग क्या करेंगे जो मुरदों की खातिर बपतिस्मा लेते हैं? अगर मुरदे जी नहीं उठेंगे तो फिर वह उनकी खातिर क्यों बपतिस्मा लेते हैं? 30 और हम भी हर वक्त अपनी जान खतरे में क्यों डाले हुए हैं? 31 भाइयो, मैं रोज़ाना मरता हूँ। यह बात उतनी ही यकीनी है जितनी यह कि आप हमारे खुदावंद मसीह ईसा में मेरा फ़ख़र हैं। 32 अगर मैं सिर्फ़ इसी ज़िंदगी की उम्मीद रखते हुए इफ़िसुस में वहशी दरिंदों से लड़ा तो मुझे क्या फ़ायदा हुआ? अगर मुरदे जी नहीं उठते तो इस कौल के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारना बेहतर होगा कि “आओ, हम खाएँ पिँ, क्योंकि कल तो मर ही जाना है।”

33 फ़रेब न खाएँ, बुरी सोहबत अच्छी आदतों को बिगाड़ देती है। 34 पूरे तौर पर होश में आएँ और गुनाह न करें। आपमें से बाज़ ऐसे हैं जो अल्लाह के बारे में कुछ नहीं जानते। यह बात मैं आपको शर्म दिलाने के लिए कहता हूँ।

मुरदे किस तरह जी उठेंगे

35 शायद कोई सवाल उठाए, “मुरदे किस तरह जी उठते हैं? और जी उठने के बाद उनका जिस्म कैसा होगा?” 36 भई, अक्ल से काम लें। जो बीज आप बोते हैं वह उस वक्त तक नहीं उगता जब तक कि मर न जाए। 37 जो आप बोते हैं वह वही पौदा नहीं है जो बाद में उगेगा बल्कि महज़ एक नंगा-सा दाना है, खाह गंदुम का हो या किसी और चीज़ का। 38 लेकिन अल्लाह उसे ऐसा जिस्म देता है जैसा वह मुनासिब समझता है। हर किस्म के बीज को वह उसका खास जिस्म अता करता है।

39 तमाम जानदारों को एक जैसा जिस्म नहीं मिला बल्कि इनसानों को और किस्म का, मवेशियों को और किस्म का, परिंदों को और किस्म का, और मछलियों को और किस्म का।

40 इसके अलावा आसमानी जिस्म भी हैं और ज़मीनी जिस्म भी। आसमानी जिस्मों की शान और है और ज़मीनी जिस्मों की शान और। 41 सूरज की शान और है, चँद की शान और, और सितारों की शान और, बल्कि एक सितारा शान में दूसरे सितारे से फ़रक है।

42 मुरदों का जी उठना भी ऐसा ही है। जिस्म फ़ानी हालत में बोया जाता है और लाफ़ानी हालत में जी उठता है। 43 वह ज़लील हालत में बोया जाता है और जलाली हालत में जी उठता है। वह कमज़ोर हालत में बोया जाता है और क़वी हालत में जी उठता है। 44 फ़ितरती जिस्म बोया जाता है और रूहानी जिस्म जी उठता है। जहाँ फ़ितरती जिस्म है वहाँ रूहानी जिस्म भी होता है। 45 पाक नविशतों में भी लिखा है कि पहले इनसान आदम में जान आ गई। लेकिन आखिरी आदम ज़िंदा करनेवाली रूह बना। 46 रूहानी जिस्म पहले नहीं था बल्कि फ़ितरती जिस्म, फिर

रुहानी जिस्म हुआ। 47 पहला इनसान ज़मीन की मिट्टी से बना था, लेकिन दूसरा आसमान से आया। 48 जैसा पहला खाकी इनसान था वैसे ही दीगर खाकी इनसान भी हैं, और जैसा आसमान से आया हुआ इनसान है वैसे ही दीगर आसमानी इनसान भी हैं। 49 यों हम इस वक़्त खाकी इनसान की शक्लो-सूरत रखते हैं जबकि हम उस वक़्त आसमानी इनसान की शक्लो-सूरत रखेंगे।

मौत पर फ़तह

50 भाइयो, मैं यह कहना चाहता हूँ कि खाकी इनसान का मौजूदा जिस्म अल्लाह की बादशाही को मीरास में नहीं पा सकता। जो कुछ फ़ानी है वह लाफ़ानी चीज़ों को मीरास में नहीं पा सकता।

51 देखो मैं आपको एक भेद बताता हूँ। हम सब वफ़ात नहीं पाएँगे, लेकिन सब ही बदल जाएंगे। 52 और यह अचानक, आँख झपकते में, आखिरी बिगुल बजते ही स्नुमा होगा। क्योंकि बिगुल बजने पर मुरदे लाफ़ानी हालत में जी उठेंगे और हम बदल जाएंगे। 53 क्योंकि लाज़िम है कि यह फ़ानी जिस्म बक्रा का लिबास पहन ले और मरनेवाला जिस्म अबदी ज़िंदगी का। 54 जब इस फ़ानी और मरनेवाले जिस्म ने बक्रा और अबदी ज़िंदगी का लिबास पहन लिया होगा तो फिर वह कलाम पूरा होगा जो पाक नविशतों में लिखा है कि

“मौत इलाही फ़तह का लुक़मा हो गई है।

55 ऐ मौत, तेरी फ़तह कहाँ रही?

ऐ मौत, तेरा डंक कहाँ रहा?”

56 मौत का डंक गुनाह है और गुनाह शरीअत से तक्रवियत पाता है। 57 लेकिन ख़ुदा का शुक्र है जो हमें हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के वसीले से फ़तह बख़्शता है।

58 गरज़, मेरे प्यारे भाइयो, मज़बूत बने रहें। कोई चीज़ आपको डॉक्कंडोल न कर दे। हमेशा ख़ुदावंद की ख़िदमत ज़ॉफ़िशानी से करें, यह जानते हुए कि ख़ुदावंद के लिए आपकी मेहनत-मशक्क़त रायग़ाँ नहीं जाएगी।

16

यस्शलम की जमात के लिए चंदा

1 रही चंदे की बात जो यस्शलम के मुक़द्दसीन के लिए जमा किया जा रहा है तो उसी हिदायत पर अमल करें जो मैं ग़लतिया की जमातों को दे चुका हूँ। 2 हर इतवार को आपमें से हर कोई अपने कमाए हुए पैसों में से कुछ इस चंदे के लिए मख़सूस करके अपने पास रख छोड़े। फिर मेरे आने पर हदियाजात जमा करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। 3 जब मैं आऊँगा तो ऐसे अफ़राद को जो आपके नज़दीक काबिले-एतमाद हैं ख़ुतूत देकर यस्शलम भेजूँगा ताकि वह आपका हदिया वहाँ तक पहुँचा दें। 4 अगर मुनासिब हो कि मैं भी जाऊँ तो वह मेरे साथ जाएंगे।

5 मैं मकिदुनिया से होकर आपके पास आऊँगा क्योंकि मकिदुनिया में से सफ़र करने का इरादा रखता हूँ। 6 शायद आपके पास थोड़े अरसे के लिए ठहरूँ, लेकिन यह भी मुमकिन है कि सर्दियों का मौसम आप ही के साथ काटूँ ताकि मेरे बाद के सफ़र के लिए आप मेरी मदद कर सकें। 7 मैं नहीं चाहता कि इस दफ़ा मुख़तसर मुलाक़ात के बाद चलता बँवूँ, बल्कि मेरी ख़ाहिश है कि कुछ वक़्त आपके साथ गुज़ारूँ। शर्त यह है कि ख़ुदावंद मुझे इजाज़त दे।

8 लेकिन ईदे-पतिकुस्त तक मैं इफ़िसस में ही ठहरूँगा, 9 क्योंकि यहाँ मेरे सामने मुअस्सिर काम के लिए एक बड़ा दरवाज़ा खुल गया है और साथ ही बहुत-से मुख़ालिफ़ भी पैदा हो गए हैं।

10 अगर तीमुथियुस आए तो इसका ख़याल रखें कि वह बिलाख़ौफ़ आपके पास रह सके। मेरी तरह वह भी ख़ुदावंद के खेत में फ़सल काट रहा है। 11 इसलिए कोई उसे हक़ीर न जाने। उसे सलामती से सफ़र पर रवाना करें ताकि वह मुझ तक पहुँचे, क्योंकि मैं और दीगर भाई उसके मुंतज़िर हैं।

12 भाई अपुल्लोस की मैंने बड़ी हौसलाअफ़ज़ाई की है कि वह दीगर भाइयों के साथ आपके पास आए, लेकिन अल्लाह को क़तअन मंज़ूर न था। ताहम मौक़ा मिलने पर वह ज़रूर आएगा।

नसीहतें और सलाम

13 जागते रहें, इमान में साबितक़दम रहें, मरदानगी दिखाएँ, मज़बूत बने रहें। 14 सब कुछ मुहब्बत से करें।

15 भाइयो, मैं एक बात में आपको नसीहत करना चाहता हूँ। आप जानते हैं कि स्तिफ़नास का घराना अख़या का पहला फल है और कि उन्होंने अपने आपको मुक़द्दसीन की ख़िदमत के लिए वक्रफ़ कर रखा है। 16 आप ऐसे लोगों के ताबे रहें और साथ ही हर उस शख्स के जो उनके साथ ख़िदमत के काम में ज़ॉफ़िशानी करता है।

17 स्तिफ़नास, फुरतूनातुस और अखीकुस के पहुँचने पर मैं बहुत खुश हुआ, क्योंकि उन्होंने वह कमी पूरी कर दी जो आपकी ग़ैरहाज़िरी से पैदा हुई थी। 18 उन्होंने मेरी रूह को और साथ ही आपकी रूह को भी ताज़ा किया है। ऐसे लोगों की क़दर करें।

19 आसिया की जमातें आपको सलाम कहती हैं। अकविला और प्रिसकिल्ला आपको ख़ुदावंद में पुरजोश सलाम कहते हैं और उनके साथ वह जमात भी जो उनके घर में जमा होती है। 20 तमाम भाई आपको सलाम कहते हैं। एक दूसरे को मुक़द्दस बोसा देते हुए सलाम कहें।

21 यह सलाम मैं यानी पौलुस अपने हाथ से लिखता हूँ।

22 लानत उस शख्स पर जो खुदावंद से मुहब्बत नहीं रखता।
ऐ हमारे खुदावंद, आ! 23 खुदावंद ईसा का फ़ज़ल आपके साथ रहे।
24 मसीह ईसा में आप सबको मेरा प्यार।

2 कुरिथियों

1 यह खत पौलुस की तरफ से है, जो अल्लाह की मरजी से मसीह ईसा का रसूल है। साथ ही यह भाई तीमुथियुस की तरफ से भी है।

मैं कुरिथुस में अल्लाह की जमात और सूबा अखया में मौजूद तमाम मुकद्दसीन को यह लिख रहा हूँ।

2 खुदा हमारा बाप और खुदावंद ईसा मसीह आपको फ़ज़ल और सलामती अता करें।

अल्लाह की हम्दो-सना

3 हमारे खुदावंद ईसा मसीह के खुदा और बाप की तमजीद हो, जो रहम का बाप और तमाम तरह की तसल्ली का खुदा है। 4 जब भी हम मुसीबत में फँस जाते हैं तो वह हमें तसल्ली देता है ताकि हम औरों को भी तसल्ली दे सकें। फिर जब वह किसी मुसीबत से दोचार होते हैं तो हम भी उनको उसी तरह तसल्ली दे सकते हैं जिस तरह अल्लाह ने हमें तसल्ली दी है। 5 क्योंकि जितनी कसरत से मसीह की-सी मुसीबतें हम पर आ जाती हैं उतनी कसरत से अल्लाह मसीह के ज़रीए हमें तसल्ली देता है। 6 जब हम मुसीबतों से दोचार होते हैं तो यह बात आपकी तसल्ली और नजात का बाइस बनती है। जब हमारी तसल्ली होती है तो यह आपकी भी तसल्ली का बाइस बनती है। यों आप भी सब्र से वह कुछ बरदाश्त करने के काबिल बन जाते हैं जो हम बरदाश्त कर रहे हैं। 7 चुनाँचे हमारी आपके बारे में उम्मीद पुख्ता रहती है। क्योंकि हम जानते हैं कि जिस तरह आप हमारी मुसीबतों में शरीक हैं उसी तरह आप उस तसल्ली में भी शरीक हैं जो हमें हासिल होती है।

8 भाइयो, हम आपको उस मुसीबत से आगाह करना चाहते हैं जिसमें हम सूबा आसिया में फँस गए। हम पर दबाव इतना शदीद था कि उसे बरदाश्त करना नामुमकिन-सा हो गया और हम जान से हाथ धो बैठे। 9 हमने महसूस किया कि हमें सज़ाए-मौत दी गई है। लेकिन यह इसलिए हुआ ताकि हम अपने आप पर भरोसा न करें बल्कि अल्लाह पर जो मुरदों को ज़िंदा कर देता है। 10 उसी ने हमें ऐसी हैबतनाक मौत से बचाया और वह आइंदा भी हमें बचाएगा। और हमने उस पर उम्मीद रखी है कि वह हमें एक बार फिर बचाएगा। 11 आप भी अपनी दुआओं से हमारी मदद कर रहे हैं। यह कितनी ख़ूबसूरत बात है कि अल्लाह बहुतों की दुआओं को सुनकर हम पर मेहरबानी करेगा और नतीजे में बहुतेरे हमारे लिए शुक्र करेंगे।

पौलुस के मनसूबों में तबदीली

12 यह बात हमारे लिए फ़ख़र का बाइस है कि हमारा ज़मीर साफ़ है। क्योंकि हमने अल्लाह के सामने सादादिली और ख़लूस से ज़िंदगी गुज़ारी है, और हमने अपनी इनसानी हिकमत पर इनहिसार नहीं किया बल्कि अल्लाह के फ़ज़ल पर। दुनिया में और ख़ासकर आपके साथ हमारा रवैया ऐसा ही रहा है। 13 हम तो आपको ऐसी कोई बात नहीं लिखते जो आप पढ़ या समझ नहीं सकते। और मुझे उम्मीद है कि आपको पूरे तौर पर समझ आएगी, 14 अगरचे आप फ़िलहाल सब कुछ नहीं समझते। क्योंकि जब आपको सब कुछ समझ आएगा तब आप खुदावंद ईसा के दिन हम पर उतना फ़ख़र कर सकेंगे जितना हम आप पर।

15 चूँकि मुझे इसका पूरा यक़ीन था इसलिए मैं पहले आपके पास आना चाहता था ताकि आपको दुगनी बरकत मिल जाए। 16 ख़याल यह था कि मैं आपके हाँ से होकर मकिदुनिया जाऊँ और वहाँ से आपके पास वापस आऊँ। फिर आप सूबा यहूदिया के सफ़र के लिए तैयारियाँ करने में मेरी मदद करके मुझे आगे भेज सकते थे। 17 आप मुझे बताएँ कि क्या मैंने यह मनसूबा यों ही बनाया था? क्या मैं दुनियावी लोगों की तरह मनसूबे बना लेता हूँ जो एक ही लमहे में “जी हाँ” और “जी नहीं” कहते हैं? 18 लेकिन अल्लाह वफ़ादार है और वह मेरा गवाह है कि हम आपके साथ बात करते वक़्त “नहीं” को “हाँ” के साथ नहीं मिलाते। 19 क्योंकि अल्लाह का फ़रज़ंद ईसा मसीह जिसकी मुनादी मैं, सीलास और तीमुथियुस ने की वह भी ऐसा नहीं है। उसने कभी भी “हाँ” को “नहीं” के साथ नहीं मिलाया बल्कि उसमें अल्लाह की हतमी “जी हाँ” वुजूद में आई। 20 क्योंकि वही अल्लाह के तमाम वादों की “हाँ” है। इसलिए हम उसी के वसीले से “आमीन” (जी हाँ) कहकर अल्लाह को जलाल देते हैं। 21 और अल्लाह खुद हमें और आपको मसीह में मज़बूत कर देता है। उसी ने हमें मसह करके मख़सूस किया है। 22 उसी ने हम पर अपनी मुहर लगाकर ज़ाहिर किया है कि हम उस की मिलकियत हैं और उसी ने हमें रूहुल-कुद्स देकर अपने वादों का बयाना अदा किया है।

23 अगर मैं झूट बोलूँ तो अल्लाह मेरे खिलाफ़ गवाही दे। बात यह है कि मैं आपको बचाने के लिए कुरिथुस वापस न आया। 24 मतलब यह नहीं कि हम ईमान के मामले में आप पर हुकूमत करना चाहते हैं। नहीं, हम आपके साथ मिलकर ख़िदमत करते हैं ताकि आप ख़ुशी से भर जाएँ, क्योंकि आप तो ईमान की मारिफ़त कायम हैं।

2

1 चुनाँचे मैंने फैसला किया कि मैं दुबारा आपके पास नहीं आऊँगा, वरना आपको बहुत ग़म खाना पड़ेगा। 2 क्योंकि अगर मैं आपको दुख पहुँचाऊँ तो कौन मुझे ख़ुश करेगा? यह वह शख्स नहीं करेगा जिसे मैंने दुख पहुँचाया है। 3 यही वजह है कि मैंने आपको यह लिख दिया। मैं नहीं चाहता था कि आपके पास आकर उन्हीं लोगों से ग़म खाऊँ जिन्हें मुझे ख़ुश करना चाहिए। क्योंकि मुझे आप सबके बारे में यक़ीन है कि

मेरी खुशी आप सबकी खुशी है। 4 मैंने आपको निहायत रंजीदा और परेशान हालत में आँसू बहा बहाकर लिख दिया। मकसद यह नहीं था कि आप गमगीन हो जाएँ बल्कि मैं चाहता था कि आप जान लें कि मैं आपसे कितनी गहरी मुहब्बत रखता हूँ।

मुजरिम को मुआफ़ कर दिया जाए

5 अगर किसी ने दुख पहुँचाया है तो मुझे नहीं बल्कि किसी हद तक आप सबको (मैं ज्यादा सख्ती से बात नहीं करना चाहता)। 6 लेकिन मज़कूरा शख्स के लिए यह काफी है कि उसे जमात के अकसर लोगों ने सज़ा दी है। 7 अब ज़रूरी है कि आप उसे मुआफ़ करके तसल्ली दें, वरना वह गम खा खाकर तबाह हो जाएगा। 8 चुनौचे मैं इस पर ज़ोर देना चाहता हूँ कि आप उसे अपनी मुहब्बत का एहसास दिलाएँ। 9 मैंने यह मालूम करने के लिए आपको लिखा कि क्या आप इमतहान में पूरे उतरेगे और हर बात में ताबे रहेंगे। 10 जिसे आप कुछ मुआफ़ करते हैं उसे मैं भी मुआफ़ करता हूँ। और जो कुछ मैंने मुआफ़ किया, अगर मुझे कुछ मुआफ़ करने की ज़रूरत थी, वह मैंने आपकी खातिर मसीह के हुज़ूर मुआफ़ किया है 11 ताकि इबलीस हमसे फ़ायदा न उठाए। क्योंकि हम उस की चालों से ख़ूब वाकिफ़ हैं।

त्रोआस में पौलस की परेशानी

12 जब मैं मसीह की खुशख़बरी सुनाने के लिए त्रोआस गया तो खुदावंद ने मेरे लिए आगे ख़िदमत करने का एक दरवाज़ा खोल दिया। 13 लेकिन जब मुझे अपना भाई तितुस वहाँ न मिला तो मैं बेचैन हो गया और उन्हें ख़ैरबाद कहकर सूबा मकिदूनिया चला गया।

मसीह में फ़तह

14 लेकिन खुदा का शुक है! वही हमारे आगे आगे चलता है और हम मसीह के कैदी बनकर उस की फ़तह मनाते हुए उसके पीछे पीछे चलते हैं। यों अल्लाह हमारे वसीले से हर जगह मसीह के बारे में इल्म खुशबू की तरह फैलाता है। 15 क्योंकि हम मसीह की खुशबू हैं जो अल्लाह तक पहुँचती है और साथ साथ लोगों में भी फैलती है, नज़ात पानेवालों में भी और हलाक होनेवालों में भी। 16 बाज़ लोगों के लिए हम मौत की मोहलक बू हैं जबकि बाज़ के लिए हम ज़िंदगीबख़्श खुशबू हैं। तो कौन यह ज़िम्मादारी निभाने के लायक है? 17 क्योंकि हम अकसर लोगों की तरह अल्लाह के कलाम की तिजारत नहीं करते, बल्कि यह जानकर कि हम अल्लाह के हुज़ूर में हैं और उसके भेजे हुए हैं हम खुलूसदिली से लोगों से बात करते हैं।

3

नए अहद के खादिम

1 क्या हम दुबारा अपनी खूबियों का ढंडोरा पीट रहे हैं? या क्या हम बाज़ लोगों की मानिंद हैं जिन्हें आपको सिफ़ारिशी ख़त देने या आपसे ऐसे ख़त लिखवाने की ज़रूरत होती है? 2 नहीं, आप तो खुद हमारा ख़त हैं जो हमारे दिलों पर लिखा हुआ है। सब इसे पहचान और पढ़ सकते हैं। 3 यह साफ़ ज़ाहिर है कि आप मसीह का ख़त हैं जो उसने हमारी ख़िदमत के ज़रीए लिख दिया है। और यह ख़त स्याही से नहीं बल्कि ज़िंदा खुदा के रूह से लिखा गया, पत्थर की तख़्तियों पर नहीं बल्कि इनसानी दिलों पर।

4 हम यह इसलिए यक़ीन से कह सकते हैं क्योंकि हम मसीह के वसीले से अल्लाह पर एतमाद रखते हैं। 5 हमारे अंदर तो कुछ नहीं है जिसकी बिना पर हम दावा कर सकते कि हम यह काम करने के लायक हैं। नहीं, हमारी लियाक़त अल्लाह की तरफ़ से है। 6 उसी ने हमें नए अहद के खादिम होने के लायक बना दिया है। और यह अहद लिखी हुई शरीअत पर मबनी नहीं है बल्कि रूह पर, क्योंकि लिखी हुई शरीअत के असर से हम मर जाते हैं जबकि रूह हमें ज़िंदा कर देता है।

7 शरीअत के हुरूप पत्थर की तख़्तियों पर कंदा किए गए और जब उसे दिया गया तो अल्लाह का जलाल ज़ाहिर हुआ। यह जलाल इतना तेज़ था कि इसराईली मूसा के चेहरे को लगातार देख न सके। अगर उस चीज़ का जलाल इतना तेज़ था जो अब मनसूख़ है 8 तो क्या रूह के निज़ाम का जलाल इससे कहीं ज्यादा नहीं होगा? 9 अगर पुराना निज़ाम जो हमें मुजरिम ठहराता था जलाली था तो फिर नया निज़ाम जो हमें रास्तबाज़ करार देता है कहीं ज्यादा जलाली होगा। 10 हाँ, पहले निज़ाम का जलाल नए निज़ाम के ज़बरदस्त जलाल की निसबत कुछ भी नहीं है। 11 और अगर उस पुराने निज़ाम का जलाल बहुत था जो अब मनसूख़ है तो फिर उस नए निज़ाम का जलाल कहीं ज्यादा होगा जो कायम रहेगा।

12 पस चूँकि हम ऐसी उम्मीद रखते हैं इसलिए बड़ी दिलेरी से ख़िदमत करते हैं। 13 हम मूसा की मानिंद नहीं हैं जिसने शरीअत सुनाने के इख़्तिताम पर अपने चेहरे पर निकाब डाल लिया ताकि इसराईली उसे तकते न रहें जो अब मनसूख़ है। 14 तो भी वह ज़हनी तौर पर अड़ गए, क्योंकि आज तक जब पुराने अहदनामे की तिलावत की जाती है तो यही निकाब कायम है। आज तक निकाब को हटाया नहीं गया क्योंकि यह अहद सिर्फ़ मसीह में मनसूख़ होता है। 15 हाँ, आज तक जब मूसा की शरीअत पढ़ी जाती है तो यह निकाब उनके दिलों पर पड़ा रहता है। 16 लेकिन जब भी कोई खुदावंद की तरफ़ रूजू करता है तो यह निकाब हटाया जाता है, 17 क्योंकि खुदावंद रूह है और जहाँ खुदावंद का रूह है वहाँ आज़ादी है। 18 चुनौचे हम सब जिनके चेहरों से निकाब हटाया गया है खुदावंद का जलाल मुनअक़िस करते और कदम बक़दम जलाल पाते हुए मसीह की सूरत में बदलते जाते हैं। यह खुदावंद ही का काम है जो रूह है।

4

मिट्टी के बरतनों में रूहानी खजाना

1 पस चूँकि हमें अल्लाह के रहम से यह खिदमत सौंपी गई है इसलिए हम बेदिल नहीं हो जाते। 2 हमने छुपी हुई शर्मनाक बातें मुस्तरद कर दी हैं। न हम चालाकी से काम करते, न अल्लाह के कलाम में तहरीफ करते हैं। बल्कि हमें अपनी सिफारिश की ज़रूरत भी नहीं, क्योंकि जब हम अल्लाह के हुज़ूर लोगों पर हकीकत को ज़ाहिर करते हैं तो हमारी नेकनामी खुद बख़ुद हर एक के ज़मीन पर ज़ाहिर हो जाती है। 3 और अगर हमारी खुशख़बरी निक्काब तले छुपी हुई भी हो तो वह सिर्फ़ उनके लिए छुपी हुई है जो हलाक हो रहे हैं। 4 इस ज़हान के शरीर खुदा ने उनके ज़हनों को अंधा कर दिया है जो ईमान नहीं रखते। इसलिए वह अल्लाह की खुशख़बरी की जलाली रौशनी नहीं देख सकते। वह यह पैग़ाम नहीं समझ सकते जो मसीह के जलाल के बारे में है, उसके बारे में जो अल्लाह की सूरत है। 5 क्योंकि हम अपना प्रचार नहीं करते बल्कि ईसा मसीह का पैग़ाम सुनाते हैं कि वह खुदावंद है। अपने आपको हम ईसा की खातिर आपके खादिम करार देते हैं। 6 क्योंकि जिस खुदा ने फ़रमाया, “अंधेरे में से रौशनी चमके,” उसने हमारे दिलों में अपनी रौशनी चमकने दी ताकि हम अल्लाह का वह जलाल जान लें जो ईसा मसीह के चेहरे से चमकता है।

7 लेकिन हम जिनके अंदर यह खजाना है आम मिट्टी के बरतनों की मानिंद हैं ताकि ज़ाहिर हो कि यह ज़बरदस्त कुव्वत हमारी तरफ़ से नहीं बल्कि अल्लाह की तरफ़ से है। 8 लोग हमें चारों तरफ़ से दबाते हैं, लेकिन कोई हमें कुचलकर ख़त्म नहीं कर सकता। हम उलझन में पड़ जाते हैं, लेकिन उम्मीद का दामन हाथ से जाने नहीं देते। 9 लोग हमें ईज़ा देते हैं, लेकिन हमें अकेला नहीं छोड़ा जाता। लोगों के धक्कों से हम ज़मीन पर गिर जाते हैं, लेकिन हम तबाह नहीं होते। 10 हर वक़्त हम अपने बदन में ईसा की मौत लिए फिरते हैं ताकि ईसा की ज़िंदगी भी हमारे बदन में ज़ाहिर हो जाए। 11 क्योंकि हर वक़्त हमें ज़िंदा हालत में ईसा की खातिर मौत के हवाले कर दिया जाता है ताकि उस की ज़िंदगी हमारे फ़ानी बदन में ज़ाहिर हो जाए। 12 यों हममें मौत का असर काम करता है जबकि आपमें ज़िंदगी का असर।

13 कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, “मैं ईमान लाया और इसलिए बोला।” हमें ईमान का यही रूह हासिल है इसलिए हम भी ईमान लाने की वजह से बोलते हैं। 14 क्योंकि हम जानते हैं कि जिसने खुदावंद ईसा को मुरदों में से ज़िंदा कर दिया है वह ईसा के साथ हमें भी ज़िंदा करके आप लोगों समेत अपने हुज़ूर खड़ा करेगा। 15 यह सब कुछ आपके फ़ायदे के लिए है। यों अल्लाह का फ़ज़ल आगे बढ़ते बढ़ते मज़ीद बहुत-से लोगों तक पहुँच रहा है और नतीजे में वह अल्लाह को जलाल देकर शुक्रगुज़ारी की दुआओं में बहुत इज़ाफ़ा कर रहे हैं।

ईमान की ज़िंदगी

16 इसी वजह से हम बेदिल नहीं हो जाते। बेशक ज़ाहिरी तौर पर हम ख़त्म हो रहे हैं, लेकिन अंदर ही अंदर रोज़ बरोज़ हमारी तजदीद होती जा रही है। 17 क्योंकि हमारी मौजूदा मुसीबत हलकी और पल-भर की है, और वह हमारे लिए एक ऐसा अबदी जलाल पैदा कर रही है जिसकी निसबत मौजूदा मुसीबत कुछ भी नहीं। 18 इसलिए हम देखी हुई चीज़ों पर गौर नहीं करते बल्कि अनदेखी चीज़ों पर। क्योंकि देखी हुई चीज़ें आरिज़ी हैं, जबकि अनदेखी चीज़ें अबदी हैं।

5

1 हम तो जानते हैं कि जब हमारी दुनियावी झोंपड़ी जिसमें हम रहते हैं गिराई जाएगी तो अल्लाह हमें आसमान पर एक मकान देगा, एक ऐसा अबदी घर जिसे इनसानी हाथों ने नहीं बनाया होगा। 2 इसलिए हम इस झोंपड़ी में कराहते हैं और आसमानी घर पहन लेने की शदीद आरज़ू रखते हैं, 3 क्योंकि जब हम उसे पहन लेंगे तो हम नंगे नहीं पाए जाएंगे। 4 इस झोंपड़ी में रहते हुए हम बोझ तले कराहते हैं। क्योंकि हम अपना फ़ानी लिबास उतारना नहीं चाहते बल्कि उस पर आसमानी घर का लिबास पहन लेना चाहते हैं ताकि ज़िंदगी वह कुछ निगल जाए जो फ़ानी है। 5 अल्लाह ने खुद हमें इस मक़सद के लिए तैयार किया है और उसी ने हमें रूहल-कुदूस को आनेवाले जलाल के बैआने के तौर पर दे दिया है।

6 चुनौतियाँ हम हमेशा हौसला रखते हैं। हम जानते हैं कि जब तक अपने बदन में रिहाइशपज़ीर हैं उस वक़्त तक खुदावंद के घर से दूर हैं। 7 हम ज़ाहिरी चीज़ों पर भरोसा नहीं करते बल्कि ईमान पर चलते हैं। 8 हाँ, हमारा हौसला बुलंद है बल्कि हम ज़्यादा यह चाहते हैं कि अपने जिस्मानी घर से रवाना होकर खुदावंद के घर में रहें। 9 लेकिन खाह हम अपने बदन में हों या न, हम इसी कोशिश में रहते हैं कि खुदावंद को पसंद आएँ। 10 क्योंकि लाज़िम है कि हम सब मसीह के तरख़्ते-अदालत के सामने हाज़िर हो जाएँ। वहाँ हर एक को उस काम का अज़्र मिलेगा जो उसने अपने बदन में रहते हुए किया है, खाह वह अच्छा था या बुरा।

मसीह के वसीले से हमारी अल्लाह के साथ दोस्ती

11 अब हम खुदावंद के ख़ौफ़ को जानकर लोगों को समझाने की कोशिश करते हैं। हम तो अल्लाह के सामने पूरे तौर पर ज़ाहिर हैं। और मैं उम्मीद रखता हूँ कि हम आपके ज़मीन के सामने भी ज़ाहिर हैं। 12 क्या हम यह बात करके दुबारा अपनी सिफारिश कर रहे हैं? नहीं, आपको हम पर फ़ख़र करने का मौक़ा दे रहे हैं ताकि आप उनके जवाब में कुछ कह सकें जो ज़ाहिरी बातों पर शेखी मारते और दिली बातें नज़रंदाज़ करते हैं। 13 क्योंकि अगर हम बेख़ुद हुए तो अल्लाह की खातिर, और अगर होश में हैं तो आपकी खातिर। 14 बात यह है कि मसीह की मुहब्बत हमें मजबूर कर देती है, क्योंकि हम इस नतीजे पर पहुँच गए हैं कि एक सबके लिए मुआ। इसका मतलब है कि सब ही मर गए हैं। 15 और वह सबके लिए इसलिए मुआ ताकि जो ज़िंदा हैं वह अपने लिए न जिँएँ बल्कि उसके लिए जो उनकी खातिर मुआ और फिर जी उठा।

16 इस वजह से हम अब से किसी को भी दुनियावी निगाह से नहीं देखते। पहले तो हम मसीह को भी इस जाबीए से देखते थे, लेकिन यह वक्त गुजर गया है। 17 चुनौचे जो मसीह में है वह नया मखलूक है। पुरानी ज़िंदगी जाती रही और नई ज़िंदगी शुरू हो गई है। 18 यह सब कुछ अल्लाह की तरफ से है जिसने मसीह के वसीले से अपने साथ हमारा मेल-मिलाप कर लिया है। और उसी ने हमें मेल-मिलाप कराने की खिदमत की जिम्मादारी दी है। 19 इस खिदमत के तहत हम यह पैगाम सुनाते हैं कि अल्लाह ने मसीह के वसीले से अपने साथ दुनिया की सुलह कराई और लोगों के गुनाहों को उनके जिम्मे न लगाया। सुलह कराने का यह पैगाम उसने हमारे सुपुर्द कर दिया।

20 पस हम मसीह के एलची हैं और अल्लाह हमारे वसीले से लोगों को समझाता है। हम मसीह के वास्ते आपसे मिन्नत करते हैं कि अल्लाह की सुलह की पेशकश को कबूल करें ताकि उस की आपके साथ सुलह हो जाए। 21 मसीह बेगुनाह था, लेकिन अल्लाह ने उसे हमारी खातिर गुनाह ठहराया ताकि हमें उसमें रास्तबाज़ करार दिया जाए।

6

1 अल्लाह के हमखिदमत होते हुए हम आपसे मिन्नत करते हैं कि जो फज़ल आपको मिला है वह जाया न जाए। 2 क्योंकि अल्लाह फ़रमाता है, “कबूलियत के वक्त मैंने तेरी सुनी, नजात के दिन तेरी मदद की।” सुनें! अब कबूलियत का वक्त आ गया है, अब नजात का दिन है।

3 हम किसी के लिए भी ठोकर का बाइस नहीं बनते ताकि लोग हमारी खिदमत में नुक़्स न निकाल सकें। 4 हाँ, हमें सिफ़ारिश की ज़रूरत ही नहीं, क्योंकि अल्लाह के खादिम होते हुए हम हर हालत में अपनी नेकनामी जाहिर करते हैं : जब हम सब से मुसीबतें, मुश्किलात और आफ़तें बरदाश्त करते हैं, 5 जब लोग हमें मारते और कैद में डालते हैं, जब हम बेकाबू हज़ूमों का सामना करते हैं, जब हम मेहनत-मशक्कत करते, रात के वक्त जागते और भूके रहते हैं, 6 जब हम अपनी पाकीज़गी, इल्म, सब और मेहरबान सुलूक का इज़हार करते हैं, जब हम रूहुल-कुदूस के वसीले से हकीक़ी मुहब्बत रखते, 7 सच्ची बातें करते और अल्लाह की कुदरत से लोगों की खिदमत करते हैं। हम अपनी नेकनामी इसमें भी जाहिर करते हैं कि हम दोनों हाथों से रास्तबाज़ी के हथियार थामे रखते हैं। 8 हम अपनी खिदमत जारी रखते हैं, चाहे लोग हमारी इज़ज़त करें चाहे बेइज़ज़ती, चाहे वह हमारी बुरी रिपोर्ट दें चाहे अच्छी। अगरचे हमारी खिदमत सच्ची है, लेकिन लोग हमें दगाबाज़ करार देते हैं। 9 अगरचे लोग हमें जानते हैं तो भी हमें नज़रंदाज़ किया जाता है। हम मरते मरते ज़िंदा रहते हैं और लोग हमें मार मारकर क़त्ल नहीं कर सकते। 10 हम गम खा खाकर हर वक्त ख़ुश रहते हैं, हम गरीब हालत में बहुतों को दौलतमंद बना देते हैं। हमारे पास कुछ नहीं है, तो भी हमें सब कुछ हासिल है।

11 कुरिथुस के अज़ीज़ो, हमने खुलकर आपसे बात की है, हमारा दिल आपके लिए कुशादा हो गया है। 12 जो जगह हमने दिल में आपको दी है वह अब तक कम नहीं हुई। लेकिन आपके दिलों में हमारे लिए कोई जगह नहीं रही। 13 अब मैं आपसे जो मेरे बच्चे हैं दरखास्त करता हूँ कि जवाब में हमें भी अपने दिलों में जगह दें।

गैरमसीही असरात से ख़बरदार

14 गैरईमानदारों के साथ मिलकर एक जुए तले ज़िंदगी न गुज़ारें, क्योंकि रास्ती का नारास्ती से क्या वास्ता है? या रौशनी तारीकी के साथ क्या ताल्लूक रख सकती है? 15 मसीह और इबलीस के दरमियान क्या मुताबिक़त हो सकती है? ईमानदार का गैरईमानदार के साथ क्या वास्ता है? 16 अल्लाह के मक़दिस और बुतों में क्या इत्फ़ाक़ हो सकता है? हम तो ज़िंदा ख़ुदा का घर हैं। अल्लाह ने यों फ़रमाया है,

“मैं उनके दरमियान सुकूनत करूँगा

और उनमें फिरूँगा।

मैं उनका ख़ुदा हूँगा,

और वह मेरी क़ौम होंगे।”

17 चुनौचे अब फ़रमाता है,

“इसलिए उनमें से निकल आओ

और उनसे अलग हो जाओ।

किसी नापाक चीज़ को न छूना,

तो फिर मैं तुम्हें कबूल करूँगा।

18 मैं तुम्हारा बाप हूँगा

और तुम मेरे बेटे-बेटियाँ होगे,

रब कादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है।”

7

1 मेरे अज़ीज़ो, यह तमाम वादे हमसे किए गए हैं। इसलिए आँ, हम अपने आपको हर उस चीज़ से पाक-साफ़ करें जो जिस्म और रूह को आलूदा कर देती है। और हम ख़ुदा के ख़ौफ़ में मुकम्मल तौर पर मुक़द्दस बनने के लिए कोशिशें करें।

पौलुस की ख़ुशी

2 हमें अपने दिल में जगह दें। न हमने किसी से नाइनसाफी की, न किसी को बिगाड़ा या उससे गलत फायदा उठाया। 3 मैं यह बात आपको मुजरिम ठहराने के लिए नहीं कह रहा। मैं आपको पहले बता चुका हूँ कि आप हमें इतने अजीज़ हैं कि हम आपके साथ मरने और जीने के लिए तैयार हैं। 4 इसलिए मैं आपसे खुलकर बात करता हूँ और मैं आप पर बड़ा फ़ख़र भी करता हूँ। इस नाते से मुझे पूरी तसल्ली है, और हमारी तमाम मुसीबतों के बावजूद मेरी खुशी की इतना नहीं।

5 क्योंकि जब हम मकिदुनिया पहुँचे तो हम जिस्म के लिहाज़ से आराम न कर सके। मुसीबतों ने हमें हर तरफ़ से घेर लिया। दूसरों की तरफ़ से झगड़ों से और दिल में तरह तरह के डर से निपटना पड़ा। 6 लेकिन अल्लाह ने जो दबे हुआ को तसल्ली बख़्शता है तितुस के आने से हमारी हौसलाअफ़ज़ाई की। 7 हमारा हौसला न सिर्फ़ उसके आने से बढ़ गया बल्कि उन हौसलाअफ़ज़ा बातों से भी जिनसे आपने उसे तसल्ली दी। उसने हमें आपकी आरज़ू, आपकी आहो-ज़ारी और मेरे लिए आपकी सरगरमी के बारे में रिपोर्ट दी। यह सुनकर मेरी खुशी मज़ीद बढ़ गई।

8 क्योंकि अगरचे मैंने आपको अपने ख़त से दुख पहुँचाया तो भी मैं पछताता नहीं। पहले तो मैं ख़त लिखने से पछताया, लेकिन अब मैं देखता हूँ कि जो दुख उसने आपको पहुँचाया वह सिर्फ़ आरिज़ी था 9 और उसने आपको तौबा तक पहुँचाया। यह सुनकर मैं अब खुशी मनाता हूँ, इसलिए नहीं कि आपको दुख उठाना पड़ा है बल्कि इसलिए कि इस दुख ने आपको तौबा तक पहुँचाया। अल्लाह ने यह दुख अपनी मरज़ी पूरी कराने के लिए इस्तेमाल किया, इसलिए आपको हमारी तरफ़ से कोई नुक़सान न पहुँचा। 10 क्योंकि जो दुख अल्लाह अपनी मरज़ी पूरी कराने के लिए इस्तेमाल करता है उससे तौबा पैदा होती है और उसका अंजाम नज़ात है। इसमें पछताने की गुंजाइश ही नहीं। इसके बरअक्स दुनियावी दुख का अंजाम मौत है। 11 आप खुद देखें कि अल्लाह के इस दुख ने आपमें क्या पैदा किया है : कितनी संजीदगी, अपना दिफ़ा करने का कितना जोश, ग़लत हरकतों पर कितना गुस्सा, कितना ख़ौफ़, कितनी चाहत, कितनी सरगरमी। आप सज़ा देने के लिए कितने तैयार थे! आपने हर लिहाज़ से साबित किया है कि आप इस मामले में बेक़ुसूर हैं।

12 गरज़, अगरचे मैंने आपको लिखा, लेकिन मक़सद यह नहीं था कि ग़लत हरकतें करनेवाले के बारे में लिखूँ या उसके बारे में जिसके साथ ग़लत काम किया गया। नहीं, मक़सद यह था कि अल्लाह के हुज़ूर आप पर जाहिर हो जाए कि आप हमारे लिए कितने सरगरम हैं। 13 यही वज़ह है कि हमारा हौसला बढ़ गया है।

लेकिन न सिर्फ़ हमारी हौसलाअफ़ज़ाई हुई है बल्कि हम यह देखकर बेइंतहा खुश हुए कि तितुस कितना खुश था। वह क्यों खुश था? इसलिए कि उस की रूह आप सबसे तरो-ताज़ा हुई। 14 उसके सामने मैंने आप पर फ़ख़र किया था, और मैं शर्मिंदा नहीं हुआ क्योंकि यह बात दुस्स्त साबित हुई है। जिस तरह हमने आपको हमेशा सच्ची बातें बताई हैं उसी तरह तितुस के सामने आप पर हमारा फ़ख़र भी दुस्स्त निकला। 15 आप उसे निहायत अजीज़ हैं क्योंकि वह आप सबकी फ़रमाँबरदारी याद करता है, कि आपने डरते और काँपते हुए उसे खुशआमदीद कहा। 16 मैं खुश हूँ कि मैं हर लिहाज़ से आप पर एतमाद कर सकता हूँ।

8

यहूदिया के गरीबों के लिए हदिया

1 भाइयो, हम आपकी तबज़्ज़ुह उस फ़ज़ल की तरफ़ दिलाना चाहते हैं जो अल्लाह ने सूबा मकिदुनिया की जमातों पर किया। 2 जिस मुसीबत में वह फँसे हुए हैं उससे उनकी सख़्त आजमाइश हुई। तो भी उनकी बेइंतहा खुशी और शदीद ग़ुरबत का नतीजा यह निकला कि उन्होंने बड़ी फ़ैयाज़दिली से हदिया दिया। 3 मैं गवाह हूँ कि जितना वह दे सके उतना उन्होंने दे दिया बल्कि इससे भी ज़्यादा। अपनी ही तरफ़ से 4 उन्होंने बड़े जोर से हमसे मिन्नत की कि हमें भी यहूदिया के मुक़द्दसीन की खिदमत करने का मौका दें, हम भी देने के फ़ज़ल में शरीक होना चाहते हैं। 5 और उन्होंने हमारी उम्मीद से कहीं ज़्यादा किया! अल्लाह की मरज़ी से उनका पहला क़दम यह था कि उन्होंने अपने आपको खुदावंद के लिए मख़सूस किया। उनका दूसरा क़दम यह था कि उन्होंने अपने आपको हमारे लिए मख़सूस किया। 6 इस पर हमने तितुस की हौसलाअफ़ज़ाई की कि वह आपके पास भी हदिया जमा करने का वह सिलसिला अंजाम तक पहुँचाए जो उसने शुरू किया था। 7 आपके पास सब कुछ कसरत से पाया जाता है, खाह ईमान हो, खाह कलाम, इल्म, मुक़म्मल सरगरमी या हमसे मुहब्बत हो। अब इस बात का खयाल रखें कि आप यह हदिया देने में भी अपनी कसीर दौलत का इज़हार करें।

8 मेरी तरफ़ से यह कोई हुक्म नहीं है। लेकिन दूसरों की सरगरमी के पेशे-नज़र मैं आपकी भी मुहब्बत पर ख़र रहा हूँ कि वह कितनी हक़ीक़ी है। 9 आप तो जानते हैं कि हमारे खुदावंद ईसा मसीह ने आप पर कैसा फ़ज़ल किया है, कि अगरचे वह दौलतमंद था तो भी वह आपकी खातिर गरीब बन गया ताकि आप उस की ग़ुरबत से दौलतमंद बन जाएँ।

10 इस मामले में मेरा मशवरा सुनें, क्योंकि वह आपके लिए मुफ़ीद साबित होगा। पिछले साल आप पहली जमात थे जो न सिर्फ़ हदिया देने लगी बल्कि इसे देना भी चाहती थी। 11 अब उसे तकमील तक पहुँचाएँ जो आपने शुरू कर रखा है। देने का जो शौक आप रखते हैं वह अमल में लाया जाए। उतना दें जितना आप दे सकें। 12 क्योंकि अगर आप देने का शौक रखते हैं तो फिर अल्लाह आपका हदिया उस बिना पर क़बूल करेगा जो आप दे सकते हैं, उस बिना पर नहीं जो आप नहीं दे सकते।

13 कहने का मतलब यह नहीं कि दूसरों को आराम दिलाने के बाइस आप खुद मुसीबत में पड़ जाएँ। बात सिर्फ़ यह है कि लोगों के हालात कुछ बराबर होने चाहिए। 14 इस वक़्त तो आपके पास बहुत है और आप उनकी ज़रूरत पूरी कर सकते हैं। बाद में किसी वक़्त जब उनके पास

बहुत होगा तो वह आपकी ज़रूरत भी पूरी कर सकेंगे। यों आपके हालात कुछ बराबर रहेंगे, ¹⁵ जिस तरह कलामे-मुकद्दस में भी लिखा है, “जिसने ज़्यादा जमा किया था उसके पास कुछ न बचा। लेकिन जिसने कम जमा किया था उसके पास भी काफी था।”

तितुस और उसके साथी

¹⁶ खुदा का शुक्र है जिसने तितुस के दिल में वही जोश पैदा किया है जो मैं आपके लिए रखता हूँ। ¹⁷ जब हमने उस की हौसलाअफ़ज़ाई की कि वह आपके पास जाए तो वह न सिर्फ़ इसके लिए तैयार हुआ बल्कि बड़ा सरगर्म होकर खुद बख़ुद आपके पास जाने के लिए रवाना हुआ। ¹⁸ हमने उसके साथ उस भाई को भेज दिया जिसकी खिदमत की तारीफ़ तमाम जमातों करती हैं, क्योंकि उसे अल्लाह की खुशख़बरी सुनाने की नेमत मिली है। ¹⁹ उसे न सिर्फ़ आपके पास जाना है बल्कि जमातों ने उसे मुक़र्रर किया है कि जब हम हृदिये को यस्शलम ले जाएंगे तो वह हमारे साथ जाए। यों हम यह खिदमत अदा करते वक़्त खुदावंद को जलाल देंगे और अपनी सरगर्मी का इज़हार करेंगे।

²⁰ क्योंकि उस बड़े हृदिये के पेशे-नज़र जो हम ले जाएंगे हम इससे बचना चाहते हैं कि किसी को हम पर शक करने का मौक़ा मिले। ²¹ हमारी पूरी कोशिश यह है कि वही कुछ करें जो न सिर्फ़ खुदावंद की नज़र में दुस्त है बल्कि इनसान की नज़र में भी।

²² उनके साथ हमने एक और भाई को भी भेज दिया जिसकी सरगर्मी हमने कई मौक़ों पर परखी है। अब वह मज़ीद सरगर्म हो गया है, क्योंकि वह आप पर बड़ा एतमाद करता है। ²³ जहाँ तक तितुस का ताल्लुक है, वह मेरा साथी और हमखिदमत है। और जो भाई उसके साथ हैं उन्हें जमातों ने भेजा है। वह मसीह के लिए इज़्जत का बाइस हैं। ²⁴ उन पर अपनी मुहब्बत का इज़हार करके यह जाहिर करें कि हम आप पर क्यों फ़ख़र करते हैं। फिर यह बात खुदा की दीर्ग जमातों को भी नज़र आएगी।

9

मुक़द्दसीन की मदद

¹ असल में इसकी ज़रूरत नहीं कि मैं आपको उस काम के बारे में लिखूँ जो हमें यहूदिया के मुक़द्दसीन की खिदमत में करना है। ² क्योंकि मैं आपकी गरमजोशी जानता हूँ, और मैं मकिदुनिया के ईमानदारों के सामने आप पर फ़ख़र करता रहा हूँ कि “अख़या के लोग पिछले साल से देने के लिए तैयार थे।” यों आपकी सरगर्मी ने ज़्यादातर लोगों को खुद देने के लिए उभारा। ³ अब मैंने इन भाइयों को भेज दिया है ताकि हमारा आप पर फ़ख़र बेबुनियाद न निकले बल्कि जिस तरह मैंने कहा था आप तैयार रहें। ⁴ ऐसा न हो कि जब मैं मकिदुनिया के कुछ भाइयों को साथ लेकर आपके पास पहुँचूँगा तो आप तैयार न हूँ। उस वक़्त मैं, बल्कि आप भी शर्मिंदा होंगे कि मैंने आप पर इतना एतमाद किया है। ⁵ इसलिए मैंने इस बात पर ज़ोर देना ज़रूरी समझा कि भाई पहले ही आपके पास आकर उस हृदिये का इंतज़ाम करें जिसका वादा आपने किया है। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि मेरे आने तक यह हृदिया जमा किया गया हो और ऐसा न लगे जैसा इसे मुश्किल से आपसे निकालना पड़ा। इसके बजाए आपकी सखावत जाहिर हो जाए।

⁶ याद रहे कि जो शख्स बीज को बचा बचाकर बोता है उस की फ़सल भी उतनी कम होगी। लेकिन जो बहुत बीज बोता है उस की फ़सल भी बहुत ज़्यादा होगी। ⁷ हर एक उतना दे जितना देने के लिए उसने पहले अपने दिल में ठहरा लिया है। वह इसमें तकलीफ़ या मजबूरी महसूस न करे, क्योंकि अल्लाह उससे मुहब्बत रखता है जो खुशी से देता है। ⁸ और अल्लाह इस काबिल है कि आपको आपकी ज़रूरियात से कहीं ज़्यादा दे। फिर आपके पास हर वक़्त और हर लिहाज़ से काफी होगा बल्कि इतना ज़्यादा कि आप हर क्रिस्म का नेक काम कर सकेंगे। ⁹ चुनौचे कलामे-मुक़द्दस में यह भी लिखा है, “उसने फ़ैयाज़ी से ज़रूरतमंदों में ख़ैरात बिखेर दी, उस की रास्तबाज़ी हमेशा तक कायम रहेगी।” ¹⁰ खुदा ही बीज बोनेवाले को बीज मुहैया करता और उसे खाने के लिए रोटी देता है। और वह आपको भी बीज देकर उसमें इज़ाफ़ा करेगा और आपकी रास्तबाज़ी की फ़सल उगने देगा। ¹¹ हाँ, वह आपको हर लिहाज़ से दौलतमंद बना देगा और आप हर मौक़े पर फ़ैयाज़ी से दे सकेंगे। चुनौचे जब हम आपका हृदिया उनके पास ले जाएंगे जो ज़रूरतमंद हैं तो वह खुदा का शुक्र करेंगे। ¹² यों आप न सिर्फ़ मुक़द्दसीन की ज़रूरियात पूरी करेंगे बल्कि वह आपकी इस खिदमत से इतने मुतअस्सिर हो जाएंगे कि वह बड़े जोश से खुदा का भी शुक्रिया अदा करेंगे। ¹³ आपकी खिदमत के नतीजे में वह अल्लाह को जलाल देंगे। क्योंकि आपकी उन पर और तमाम ईमानदारों पर सखावत का इज़हार साबित करेगा कि आप मसीह की खुशख़बरी न सिर्फ़ तसलीम करते हैं बल्कि उसके ताबे भी रहते हैं। ¹⁴ और जब वह आपके लिए दुआ करेंगे तो आपके आरज़ूमंद रहेंगे, इसलिए कि अल्लाह ने आपको कितना बड़ा फ़ज़ल दे दिया है। ¹⁵ अल्लाह का उस की नाकाबिले-बयान बख़्शिश के लिए शुक्र हो!

10

पौलुस अपनी खिदमत का दिफ़ा करता है

¹ मैं आपसे अपील करता हूँ, मैं पौलुस जिसके बारे में कहा जाता है कि मैं आपके रूबरू आज़िज़ होता हूँ और सिर्फ़ आपसे दूर होकर दिलेर होता हूँ। मसीह की हलीमी और नरमी के नाम में ² मैं आपसे मिन्नत करता हूँ कि मुझे आपके पास आकर इतनी दिलेरी से उन लोगों से निपटना न पड़े जो समझते हैं कि हमारा चाल-चलन दुनियावी है। क्योंकि फ़िलहाल ऐसा लगता है कि इसकी ज़रूरत होगी। ³ बेशक हम इनसान ही हैं, लेकिन हम दुनिया की तरह जंग नहीं लड़ते। ⁴ और जो हथियार हम इस जंग में इस्तेमाल करते हैं वह इस दुनिया के नहीं हैं, बल्कि उन्हें अल्लाह की तरफ़ से किले ढा देने की कुव्वत हासिल है। इनसे हम ग़लत खयालात के ढाँचे ⁵ और हर ऊँची चीज़ ढा देते हैं जो अल्लाह के

इल्मो-इरफान के खिलाफ खड़ी हो जाती है। और हम हर खयाल को कैद करके मसीह के ताबे कर देते हैं। ⁶ हाँ, आपके पूरे तौर पर ताबे हो जाने पर हम हर नाफरमानी की सज़ा देने के लिए तैयार होंगे।

⁷ आप सिर्फ़ जाहिरी बातों पर गौर कर रहे हैं। अगर किसी को इस बात का एतमाद हो कि वह मसीह का है तो वह इसका भी खयाल करे कि हम भी उसी की तरह मसीह के हैं। ⁸ क्योंकि अगर मैं उस इख्तियार पर मज़ीद फ़ख़र भी करूँ जो खुदावंद ने हमें दिया है तो भी मैं शर्मिंदा नहीं हूँगा। गौर करें कि उसने हमें आपको ढा देने का नहीं बल्कि आपकी रूहानी तामीर करने का इख्तियार दिया है। ⁹ मैं नहीं चाहता कि ऐसा लगे जैसे मैं आपको अपने खतों से डराने की कोशिश कर रहा हूँ। ¹⁰ क्योंकि बाज़ कहते हैं, “पौलुस के खत जोरदार और ज़बरदस्त हैं, लेकिन जब वह खुद हाज़िर होता है तो वह कमज़ोर और उसके बोलने का तर्ज़ हिकारतआमेज़ है।” ¹¹ ऐसे लोग इस बात का खयाल करें कि जो बातें हम आपसे दूर होते हुए अपने खतों में पेश करते हैं उन्हीं बातों पर हम अमल करेंगे जब आपके पास आएँगे।

¹² हम तो अपने आपको उनमें शुमार नहीं करते जो अपनी तारीफ़ करके अपनी सिफ़ारिश करते रहते हैं, न अपना उनके साथ मुवाज़ना करते हैं। वह कितने बेसमझ हैं जब वह अपने आपको मेयार बनाकर उसी पर अपने आपको जाँचते हैं और अपना मुवाज़ना अपने आपसे करते हैं। ¹³ लेकिन हम मुनासिब हद से ज़्यादा फ़ख़र नहीं करेंगे बल्कि सिर्फ़ उस हद तक जो अल्लाह ने हमारे लिए मुकर्रर किया है। और आप भी इस हद के अंदर आ जाते हैं। ¹⁴ इसमें हम मुनासिब हद से ज़्यादा फ़ख़र नहीं कर रहे, क्योंकि हम तो मसीह की खुशख़बरी लेकर आप तक पहुँच गए हैं। अगर ऐसा न होता तो फिर और बात होती। ¹⁵ हम ऐसे काम पर फ़ख़र नहीं करते जो दूसरों की मेहनत से संजाम दिया गया है। इसमें भी हम मुनासिब हदों के अंदर रहते हैं, बल्कि हम यह उम्मीद रखते हैं कि आपका ईमान बढ़ जाए और यों हमारी क़दरो-क़ीमत भी अल्लाह की मुकर्रर हद तक बढ़ जाए। खुदा करे कि आपमें हमारा यह काम इतना बढ़ जाए ¹⁶ कि हम अल्लाह की खुशख़बरी आपसे आगे जाकर भी सुना सकें। क्योंकि हम उस काम पर फ़ख़र नहीं करना चाहते जिसे दूसरे कर चुके हैं।

¹⁷ कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, “फ़ख़र करनेवाला खुदावंद ही पर फ़ख़र करे।” ¹⁸ जब लोग अपनी तारीफ़ करके अपनी सिफ़ारिश करते हैं तो इसमें क्या है! इससे वह सहीह साबित नहीं होते, बल्कि अहम बात यह है कि खुदावंद ही इसकी तसदीक़ करे।

11

पौलुस और झूटे रसूल

¹ खुदा करे कि जब मैं अपनी हमाक़त का कुछ इज़हार करता हूँ तो आप मुझे बरदाश्त करें। हाँ, ज़रूर मुझे बरदाश्त करें, ² क्योंकि मैं आपके लिए अल्लाह की-सी ग़ैरत रखता हूँ। मैंने आपका रिश्ता एक ही मर्द के साथ बाँधा, और मैं आपको पाकदामन कुंवारी की हैसियत से उस मर्द मसीह के हज़ूर पेश करना चाहता था। ³ लेकिन अफ़सोस, मुझे डर है कि आप हव्वा की तरह गुनाह में गिर जाएंगे, कि जिस तरह सॉप ने अपनी चालाकी से हव्वा को धोका दिया उसी तरह आपकी सोच भी बिगड़ जाएगी और वह खुलूसदिली और पाक लग्न ख़त्म हो जाएगी जो आप मसीह के लिए महसूस करते हैं। ⁴ क्योंकि आप खुशी से हर एक को बरदाश्त करते हैं जो आपके पास आकर एक फ़रक़ क्रिस्म का ईसा पेश करता है, एक ऐसा ईसा जो हमने आपको पेश नहीं किया था। और आप एक ऐसी रूह और ऐसी “खुशख़बरी” क़बूल करते हैं जो उस रूह और खुशख़बरी से बिल्कुल फ़रक़ है जो आपको हमसे मिली थी।

⁵ मेरा नहीं खयाल कि मैं इन नाम-निहाद ‘खास’ रसूलों की निसबत कम हूँ। ⁶ हो सकता है कि मैं बोलने में माहिर नहीं हूँ, लेकिन यह मेरे इल्म के बारे में नहीं कहा जा सकता। यह हमने आपको साफ़ साफ़ और हर लिहाज़ से दिखाया है।

⁷ मैंने अल्लाह की खुशख़बरी सुनाने के लिए आपसे कोई भी मुआवज़ा न लिया। यों मैंने अपने आपको नीचा कर दिया ताकि आपको सरफ़राज़ कर दिया जाए। क्या इसमें मुझसे ग़लती हुई? ⁸ जब मैं आपकी खिदमत कर रहा था तो मुझे खुदा की दीगर जमातों से पैसे मिल रहे थे, यानी आपकी मदद करने के लिए मैं उन्हें लूट रहा था। ⁹ और जब मैं आपके पास था और ज़रूरतमंद था तो मैं किसी पर बोझ न बना, क्योंकि जो भाई मकिदूनिया से आए उन्होंने मेरी ज़रूरियात पूरी की। माज़ी में मैं आप पर बोझ न बना और आइंदा भी नहीं बनूँगा। ¹⁰ मसीह की उस सच्चाई की कसम जो मेरे अंदर है, अख़या के पूरे सूबे में कोई मुझे इस पर फ़ख़र करने से नहीं रोकेगा। ¹¹ मैं यह क्यों कह रहा हूँ? इसलिए कि मैं आपसे मुहब्बत नहीं रखता? खुदा ही जानता है कि मैं आपसे मुहब्बत रखता हूँ।

¹² और जो कुछ मैं अब कर रहा हूँ वही करता रहूँगा, ताकि मैं नाम-निहाद रसूलों को वह मौका न दूँ जो वह ढूँड रहे हैं। क्योंकि यही उनका मक़सद है कि वह फ़ख़र करके यह कह सकें कि वह हम जैसे हैं। ¹³ ऐसे लोग तो झूटे रसूल हैं, धोकेबाज़ मज़दूर जिन्होंने मसीह के रसूलों का रूप धार लिया है। ¹⁴ और क्या अजब, क्योंकि इबलीस भी नूर के फ़रिश्ते का रूप धारकर घुमता-फिरता है। ¹⁵ तो फिर यह बड़ी बात नहीं कि उसके चेले रास्तबाज़ी के खादिम का रूप धारकर घुमते-फिरते हैं। उनका अंजाम उनके आमाल के मुताबिक़ ही होगा।

रसूल होने की वजह से पौलुस की ईज़ारसानी

¹⁶ मैं दुबारा कहता हूँ कि कोई मुझे अहमक़ न समझे। लेकिन अगर आप यह सोचें भी तो कम अज़ कम मुझे अहमक़ की हैसियत से क़बूल करें ताकि मैं भी थोड़ा-बहुत अपने आप पर फ़ख़र करूँ। ¹⁷ असल में जो कुछ मैं अब बयान कर रहा हूँ वह खुदावंद को पसंद नहीं है, बल्कि मैं अहमक़ की तरह बात कर रहा हूँ। ¹⁸ लेकिन चूँकि इतने लोग जिस्मानी तौर पर फ़ख़र कर रहे हैं इसलिए मैं भी फ़ख़र करूँगा। ¹⁹ बेशक़ आप खुद इतने दानिशमंद हैं कि आप अहमकों को खुशी से बरदाश्त करते हैं। ²⁰ हाँ, बल्कि आप यह भी बरदाश्त करते हैं जब लोग आपको

गुलाम बनाते, आपको लूटते, आपसे गलत फायदा उठाते, नखरे करते और आपको थप्पड़ मारते हैं। 21 यह कहकर मुझे शर्म आती है कि हम इतने कमजोर थे कि हम ऐसा न कर सके।

लेकिन अगर कोई किसी बात पर फ़ख़र करने की ज़रूरत करे (मैं अहमक की-सी बात कर रहा हूँ) तो मैं भी उतनी ही ज़रूरत करूँगा। 22 क्या वह इब्रानी हैं? मैं भी हूँ। क्या वह इसराईली हैं? मैं भी हूँ। क्या वह इब्राहीम की औलाद हैं? मैं भी हूँ। 23 क्या वह मसीह के खादिम हैं? (अब तो मैं गोया बेखुद हो गया हूँ कि इस तरह की बातें कर रहा हूँ!) मैं उनसे ज़्यादा मसीह की खिदमत करता हूँ। मैंने उनसे कहीं ज़्यादा मेहनत-मशक्कत की, ज़्यादा दफ़ा जेल में रहा, मेरे ज़्यादा सख्ती से कोड़े लगाए गए और मैं बार बार मरने के खतरों में रहा हूँ। 24 मुझे यहदियों से पाँच दफ़ा 39 कोड़ों की सज़ा मिली है। 25 तीन दफ़ा रोमियों ने मुझे लाठी से मारा। एक बार मुझे संगसार किया गया। जब मैं समुंदर में सफ़र कर रहा था तो तीन मरतबा मेरा जहाज़ तबाह हुआ। हाँ, एक दफ़ा मुझे जहाज़ के तबाह होने पर एक पूरी रात और दिन समुंदर में गुज़ारना पड़ा। 26 मेरे बेशुमार सफ़रों के दौरान मुझे कई तरह के खतरों का सामना करना पड़ा, दरियाओं और डाकुओं का खतरा, अपने हमवतनों और ग़ैरयहूदियों के हमलों का खतरा। जहाँ भी मैं गया हूँ वहाँ यह खतरे मौजूद रहे, खाह मैं शहर में था, खाह ग़ैरआबाद इलाके में या समुंदर में। झूटे भाइयों की तरफ़ से भी खतरे रहे हैं। 27 मैंने जॉफ़िशानी से सख्त मेहनत-मशक्कत की है और कई रात जागता रहा हूँ, मैं भूका और प्यासा रहा हूँ, मैंने बहुत रोज़े रखे हैं। मुझे सर्दी और नंगेपन का तजरबा हुआ है। 28 और यह उन फ़िकरों के अलावा है जो मैं खुदा की तमाम जमातों के लिए महसूस करता हूँ और जो मुझे दबाती रहती हैं। 29 जब कोई कमजोर है तो मैं अपने आपको भी कमजोर महसूस करता हूँ। जब किसी को गलत राह पर लाया जाता है तो मैं उसके लिए शदीद रंजिश महसूस करता हूँ।

30 अगर मुझे फ़ख़र करना पड़े तो मैं उन चीज़ों पर फ़ख़र करूँगा जो मेरी कमजोर हालत ज़ाहिर करती हैं। 31 हमारा खुदा और खुदावंद ईसा का बाप (उस की हम्दो-सना अबद तक हो) जानता है कि मैं झूट नहीं बोल रहा। 32 जब मैं दमिश्क शहर में था तो बादशाह अरितास के गवर्नर ने शहर के तमाम दरवाज़ों पर अपने पहरदार मुक़र्रर किए ताकि वह मुझे गिरिफ़्तार करें। 33 लेकिन शहर की फ़सील में एक दरिचा था, और मुझे एक टोकरे में रखकर वहाँ से उतारा गया। यों मैं उसके हाथों से बच निकला।

12

पौलस पर कई बातों का इनकिशाफ़

1 लाज़िम है कि मैं कुछ और फ़ख़र करूँ। अगरचे इसका कोई फ़ायदा नहीं, लेकिन अब मैं उन रोयाओं और इनकिशाफ़ात का ज़िक्र करूँगा जो खुदावंद ने मुझ पर ज़ाहिर किए। 2 मैं मसीह में एक आदमी को जानता हूँ जिसे चौदह साल हुए छीनकर तीसरे आसमान तक पहुँचाया गया। मुझे नहीं पता कि उसे यह तजरबा ज़िस्म में या इसके बाहर हुआ। खुदा जानता है। 3 हाँ, खुदा ही जानता है कि वह ज़िस्म में था या नहीं। लेकिन यह मैं जानता हूँ 4 कि उसे छीनकर फ़िर्दौस में लाया गया जहाँ उसने नाकाबिले-बयान बातें सुनीं, ऐसी बातें जिनका ज़िक्र करना इनसान के लिए रवा नहीं। 5 इस किस्म के आदमी पर मैं फ़ख़र करूँगा, लेकिन अपने आप पर नहीं। मैं सिर्फ़ उन बातों पर फ़ख़र करूँगा जो मेरी कमजोर हालत को ज़ाहिर करती हैं। 6 अगर मैं फ़ख़र करना चाहता तो इसमें अहमक न होता, क्योंकि मैं हकीकत बयान करता। लेकिन मैं यह नहीं करूँगा, क्योंकि मैं चाहता हूँ कि सबकी मेरे बारे में राय सिर्फ़ उस पर मुनहसिर हो जो मैं करता या बयान करता हूँ। कोई मुझे इससे ज़्यादा न समझे।

7 लेकिन मुझे इन आला इनकिशाफ़ात की वजह से एक काँटा चुभो दिया गया, एक तकलीफ़देह चीज़ जो मेरे ज़िस्म में धँसी रहती है ताकि मैं फूल न जाऊँ। इबलीस का यह पैगंबर मेरे मुक्के मारता रहता है ताकि मैं मग़रूर न हो जाऊँ। 8 तीन बार मैंने खुदावंद से इल्तिजा की कि वह इसे मुझसे दूर करे। 9 लेकिन उसने मुझे यही जवाब दिया, “मेरा फ़ज़ल तेरे लिए काफी है, क्योंकि मेरी कुदरत का पूरा इज़हार तेरी कमजोर हालत ही में होता है।” इसलिए मैं मज़ीद खुशी से अपनी कमजोरियों पर फ़ख़र करूँगा ताकि मसीह की कुदरत मुझ पर ठहरी रहे। 10 यही वजह है कि मैं मसीह की खातिर कमजोरियों, गालियों, मजबूरियों, ईज़ारसानियों और परेशानियों में खुश हूँ, क्योंकि जब मैं कमजोर होता हूँ तब ही मैं ताकतवर होता हूँ।

पौलस की कुरिथियों के लिए फ़िकर

11 मैं बेवुकूफ़ बन गया हूँ, लेकिन आपने मुझे मजबूर कर दिया है। चाहिए था कि आप ही दूसरों के सामने मेरे हक़ में बात करते। क्योंकि बेशक मैं कुछ भी नहीं हूँ, लेकिन इन नाम-निहाद खास रसूलों के मुकाबले में मैं किसी भी लिहाज़ से कम नहीं हूँ। 12 जो मुतअदिद इलाही निशान, मोजिजे और ज़बरदस्त काम मेरे वसीले से हुए वह साबित करते हैं कि मैं रसूल हूँ। हाँ, वह बड़ी साबितकदमी से आपके दरमियान किए गए। 13 जो खिदमत मैंने आपके दरमियान की, क्या वह खुदा की दीगर जमातों में मेरी खिदमत की निसबत कम थी? हरगिज़ नहीं! इसमें फ़रक़ सिर्फ़ यह था कि मैं आपके लिए माली बोझ न बना। मुझे मुआफ़ करें अगर मुझसे इसमें गलती हुई है।

14 अब मैं तीसरी बार आपके पास आने के लिए तैयार हूँ। इस मरतबा भी मैं आपके लिए बोझ का बाइस नहीं बनूँगा, क्योंकि मैं आपका माल नहीं बल्कि आप ही को चाहता हूँ। आखिर बच्चों को माँ-बाप की मदद के लिए माल जमा नहीं करना चाहिए बल्कि माँ-बाप को बच्चों के लिए। 15 मैं तो बड़ी खुशी से आपके लिए हर खर्चा उठा लूँगा बल्कि अपने आपको भी खर्च कर दूँगा। क्या आप मुझे कम प्यार करेंगे अगर मैं आपसे ज़्यादा मुहब्बत रखूँ?

16 ठीक है, मैं आपके लिए बोझ न बना। लेकिन बाज़ सोचते हैं कि मैं चालाक हूँ और आपको धोके से अपने जाल में फँसा लिया। 17 किस तरह? जिन लोगों को मैंने आपके पास भेजा क्या मैंने उनमें से किसी के ज़रीए आपसे ग़लत फ़ायदा उठाया? 18 मैंने तितुस की हौसलाअफ़ज़ाई की कि वह आपके पास जाए और दूसरे भाई को भी साथ भेज दिया। क्या तितुस ने आपसे ग़लत फ़ायदा उठाया? हरगिज़ नहीं! क्योंकि हम दोनों एक ही रूह में एक ही राह पर चलते हैं।

19 आप काफ़ी देर से सोच रहे होंगे कि हम आपके सामने अपना दिफ़ा कर रहे हैं। लेकिन ऐसा नहीं है बल्कि हम मसीह में होते हुए अल्लाह के हुज़ूर ही यह कुछ बयान कर रहे हैं। और मेरे अज़ीज़ो, जो कुछ भी हम करते हैं हम आपकी तामीर करने के लिए करते हैं। 20 मुझे डर है कि जब मैं आऊँगा तो न आपकी हालत मुझे पसंद आएगी, न मेरी हालत आपको। मुझे डर है कि आपमें झगड़ा, हसद, गुस्सा, खुदग़रज़ी, बूहतान, ग़पबाज़ी, गुस्तर और बेतरतीबी पाई जाएगी। 21 हाँ, मुझे डर है कि अगली दफ़ा जब आऊँगा तो अल्लाह मुझे आपके सामने नीचा दिखाएगा, और मैं उन बहुतों के लिए ग़म खाऊँगा जिन्होंने माज़ी में गुनाह करके अब तक अपनी नापाकी, ज़िनाकारी और ऐयाशी से तौबा नहीं की।

13

आखिरी तंबीह और सलाम

1 अब मैं तीसरी दफ़ा आपके पास आ रहा हूँ। कलामे-मुक़द्दस के मुताबिक़ लाज़िम है कि हर इलज़ाम की तसदीक़ दो या तीन गवाहों से की जाए। 2 जब मैं दूसरी दफ़ा आपके पास आया था तो मैंने पहले से आपको आगाह किया था। अब मैं आपसे दूर यह बात दुबारा कहता हूँ कि जब मैं वापस आऊँगा तो न वह बचेंगे जिन्होंने पहले गुनाह किया था न दीगर लोग। 3 जो भी सबूत आप माँग रहे हैं कि मसीह मेरे ज़रीए बोलता है वह मैं आपको दूँगा। आपके साथ सुलूक में मसीह कमज़ोर नहीं है। नहीं, वह आपके दरमियान ही अपनी कुव्वत का इज़हार करता है। 4 क्योंकि अगरचे उसे कमज़ोर हालत में मसलूब किया गया, लेकिन अब वह अल्लाह की कुदरत से ज़िंदा है। इसी तरह हम भी उसमें कमज़ोर हैं, लेकिन अल्लाह की कुदरत से हम आपकी ख़िदमत करते वक़्त उसके साथ ज़िंदा हैं।

5 अपने आपको जाँचकर मालूम करें कि क्या आपका ईमान कायम है? खुद अपने आपको परखें। क्या आप नहीं जानते कि ईसा मसीह आपमें है? अगर नहीं तो इसका मतलब होता कि आपका ईमान नामक़बूल साबित होता। 6 लेकिन मुझे उम्मीद है कि आप इतना पहचान लेंगे कि जहाँ तक हमारा ताल्लुक़ है हम नामक़बूल साबित नहीं हुए हैं। 7 हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि आपसे कोई ग़लती न हो जाए। बात यह नहीं कि लोगों के सामने हम सहीह निकलें बल्कि यह कि आप सहीह काम करें, चाहे लोग हमें खुद नाकाम क्यों न करार दें। 8 क्योंकि हम हक़ीक़त के खिलाफ़ खड़े नहीं हो सकते बल्कि सिर्फ़ उसके हक़ में। 9 हम खुश हैं जब आप ताक़तवर हैं गो हम खुद कमज़ोर हैं। और हमारी दुआ यह है कि आप कामिल हो जाएँ। 10 यही वज़ह है कि मैं आपसे दूर रहकर लिखता हूँ। फिर जब मैं आऊँगा तो मुझे अपना इख़्तियार इस्तेमाल करके आप पर सरख़्ती नहीं करनी पड़ेगी। क्योंकि खुदावंद ने मुझे यह इख़्तियार आपको ढा देने के लिए नहीं बल्कि आपको तामीर करने के लिए दिया है।

11 भाइयो, आखिर में मैं आपको सलाम कहता हूँ। सुधर जाँ, एक दूसरे की हौसलाअफ़ज़ाई करें, एक ही सोच रखें और सुलह-सलामती के साथ ज़िंदगी गुज़ारें। फिर मुहब्बत और सलामती का खुदा आपके साथ होगा।

12 एक दूसरे को मुक़द्दस बोसा देना। तमाम मुक़द्दसीन आपको सलाम कहते हैं।

13 खुदावंद ईसा मसीह का फ़ज़ल, अल्लाह की मुहब्बत और रूहुल-कुद्स की रिफ़ाक़त आप सबके साथ होती रहे।

गलतियों

1 यह खत पौलुस रसूल की तरफ से है। मुझे न किसी गुरोह ने मुकर्रर किया न किसी शख्स ने बल्कि ईसा मसीह और खुदा बाप ने जिसने उसे मुरदों में से ज़िंदा कर दिया। 2 तमाम भाई भी जो मेरे साथ हैं गलतिया की जमातों को सलाम कहते हैं।

3 खुदा हमारा बाप और खुदावंद ईसा मसीह आपको फ़ज़ल और सलामती अता करें।

4 मसीह वही है जिसने अपने आपको हमारे गुनाहों की खातिर कुरबान कर दिया और यों हमें इस मौजूदा शरीर जहान से बचा लिया है, क्योंकि यह अल्लाह हमारे बाप की मरज़ी थी। 5 उसी का जलाल अबद तक होता रहे! आमीन।

एक ही खुशखबरी

6 मैं हैरान हूँ! आप इतनी जल्दी से उसे तर्क कर रहे हैं जिसने मसीह के फ़ज़ल से आपको बुलाया। और अब आप एक फ़रक़ किस्म की “खुशखबरी” के पीछे लग गए हैं। 7 असल में यह अल्लाह की खुशखबरी है नहीं। बस कुछ लोग आपको उलझन में डालकर मसीह की खुशखबरी में तबदीली लाना चाहते हैं। 8 हमने तो असली खुशखबरी सुनाई और जो इससे फ़रक़ पैगाम सुनाता है उस पर लानत, खाह हम खुद ऐसा करें खाह आसमान से कोई फ़रिश्ता उतरकर यह गलत पैगाम सुनाए। 9 हम यह पहले बयान कर चुके हैं और अब मैं दुबारा कहता हूँ कि अगर कोई आपको ऐसी “खुशखबरी” सुनाए जो उससे फ़रक़ है जिसे आपने कबूल किया है तो उस पर लानत!

10 क्या मैं इसमें यह कोशिश कर रहा हूँ कि लोग मुझे कबूल करें? हरगिज़ नहीं! मैं चाहता हूँ कि अल्लाह मुझे कबूल करे। क्या मेरी कोशिश यह है कि मैं लोगों को पसंद आऊँ? अगर मैं अब तक ऐसा करता तो मसीह का खादिम न होता।

पौलुस किस तरह रसूल बन गया

11 भाइयो, मैं चाहता हूँ कि आप जान लें कि जो खुशखबरी मैंने सुनाई वह इनसान की तरफ़ से नहीं है। 12 न मुझे यह पैगाम किसी इनसान से मिला, न यह मुझे किसी ने सिखाया है बल्कि ईसा मसीह ने खुद मुझ पर यह पैगाम ज़ाहिर किया।

13 आपने तो खुद सुन लिया है कि मैं उस वक़्त किस तरह ज़िंदगी गुज़ारता था जब यहूदी मज़हब का पैरोकार था। उस वक़्त मैंने कितने जोश और शिद्दत से अल्लाह की जमात को ईज़ा पहुँचाई। मेरी पूरी कोशिश यह थी कि यह जमात ख़त्म हो जाए। 14 यहूदी मज़हब के लिहाज़ से मैं अकसर दीगर हमउम्र यहूदियों पर सबक़त ले गया था। हाँ, मैं अपने बापदादा की रिवायतों की पैरवी में हद से ज़्यादा सरग़म था।

15 लेकिन अल्लाह ने अपने फ़ज़ल से मुझे पैदा होने से पेशतर ही चुनकर अपनी ख़िदमत करने के लिए बुलाया। और जब उसने अपनी मरज़ी से 16 अपने फ़रज़ंद को मुझ पर ज़ाहिर किया ताकि मैं उसके बारे में ग़ैरयहूदियों को खुशखबरी सुनाऊँ तो मैंने किसी भी शख्स से मशवरा न लिया। 17 उस वक़्त मैं यरूशलम भी न गया ताकि उनसे मिलूँ जो मुझसे पहले रसूल थे बल्कि मैं सीधा अरब चला गया और बाद में दमिश्क वापस आया। 18 इसके तीन साल बाद ही मैं पतरस से शनासा होने के लिए यरूशलम गया। वहाँ मैं पंद्रह दिन उसके साथ रहा। 19 इसके अलावा मैंने सिर्फ़ खुदावंद के भाई याक़ूब को देखा, किसी और रसूल को नहीं।

20 जो कुछ मैं लिख रहा हूँ अल्लाह गवाह है कि वह सही है। मैं झूट नहीं बोल रहा।

21 बाद में मैं मुल्के-शाम और किलिकिया चला गया। 22 उस वक़्त सूबा यहूदिया में मसीह की जमातें मुझे नहीं जानती थीं। 23 उन तक सिर्फ़ यह ख़बर पहुँची थी कि जो आदमी पहले हमें ईज़ा पहुँचा रहा था वह अब खुद उस ईमान की खुशखबरी सुनाता है जिसे वह पहले ख़त्म करना चाहता था। 24 यह सुनकर उन्होंने मेरी वजह से अल्लाह की तमजीद की।

2

पौलुस और दीगर रसूल

1 चौदह साल के बाद मैं दुबारा यरूशलम गया। इस दफ़ा बरनबास साथ था। मैं तितुस को भी साथ लेकर गया। 2 मैं एक मुकाशफ़े की वजह से गया जो अल्लाह ने मुझ पर ज़ाहिर किया था। मेरी अलहदगी में उनके साथ मीटिंग हुई जो असरो-रसूख़ रखते हैं। इसमें मैंने उन्हें वह खुशखबरी पेश की जो मैं ग़ैरयहूदियों को सुनाता हूँ। मैं नहीं चाहता था कि जो दौड़ मैं दौड़ रहा हूँ या माज़ी में दौड़ा था वह आखिरकार बेफ़ायदा निकले। 3 उस वक़्त वह यहाँ तक मेरे हक़ में थे कि उन्होंने तितुस को भी अपना खतना करवाने पर मजबूर नहीं किया, अगरचे वह ग़ैरयहूदी है। 4 और चंद यही चाहते थे। लेकिन यह झूटे भाई थे जो चुपके से अंदर घुस आए थे ताकि जासूस बनकर हमारी उस आज़ादी के बारे में मालूमात हासिल कर लें जो हमें मसीह में मिली है। यह हमें गुलाम बनाना चाहते थे, 5 लेकिन हमने लमहा-भर उनकी बात न मानी और न उनके ताबे हुए ताकि अल्लाह की खुशखबरी की सच्चाई आपके दरमियान कायम रहे।

6 और जो राहनुमा समझे जाते थे उन्होंने मेरी बात में कोई इज़ाफ़ा न किया। (असल में मुझे कोई परवा नहीं कि उनका असरो-रसूख़ था कि नहीं। अल्लाह तो इनसान की ज़ाहिरी हालत का लिहाज़ नहीं करता।) 7 बहरहाल उन्होंने देखा कि अल्लाह ने मुझे ग़ैरयहूदियों को मसीह की खुशखबरी सुनाने की ज़िम्मादारी दी थी, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह उसने पतरस को यहूदियों को यह पैगाम सुनाने की ज़िम्मादारी दी थी।

8 क्योंकि जो काम अल्लाह यहूदियों के रसूल पतरस की खिदमत के वसीले से कर रहा था वही काम वह मेरे वसीले से भी कर रहा था, जो गैरयहूदियों का रसूल हूँ। 9 याकूब, पतरस और यूहन्ना को जमात के सतून माना जाता था। जब उन्होंने जान लिया कि अल्लाह ने इस नाते से मुझे खास फ़ज़ल दिया है तो उन्होंने मुझसे और बरनबास से दहना हाथ मिलाकर इसका इज़हार किया कि वह हमारे साथ हैं। यों हम मुत्तफ़िक़ हुए कि बरनबास और मैं गैरयहूदियों में खिदमत करेंगे और वह यहूदियों में। 10 उन्होंने सिर्फ़ एक बात पर जोर दिया कि हम ज़रूरतमंदों को याद रखें, वही बात जिसे मैं हमेशा करने के लिए कोशिश रहा हूँ।

अंताकिया में पौलस पतरस को मलामत करता है

11 लेकिन जब पतरस अंताकिया शहर आया तो मैंने स्वरू उस की मुख़ालफ़त की, क्योंकि वह अपने रवय्ये के सबब से मुजरिम ठहरा। 12 जब वह आया तो पहले वह गैरयहूदी ईमानदारों के साथ खाना खाता रहा। लेकिन फिर याकूब के कुछ अज़ीज़ आए। उसी वक़्त पतरस पीछे हटकर गैरयहूदियों से अलग हुआ, क्योंकि वह उनसे डरता था जो गैरयहूदियों का ख़तना करवाने के हक़ में थे। 13 बाकी यहूदी भी इस रियाकारी में शामिल हुए, यहाँ तक कि बरनबास को भी उनकी रियाकारी से बहकाया गया। 14 जब मैंने देखा कि वह उस सीधी राह पर नहीं चल रहे हैं जो अल्लाह की खुशख़बरी की सच्चाई पर मबनी है तो मैंने सबके सामने पतरस से कहा, “आप यहूदी हैं। लेकिन आप गैरयहूदी की तरह ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं, यहूदी की तरह नहीं। तो फिर यह कैसी बात है कि आप गैरयहूदियों को यहूदी रिवायात की पैरवी करने पर मजबूर कर रहे हैं?”

सब ईमान से नजात पाते हैं

15 बेशक हम पैदाइशी यहूदी हैं और ‘गैरयहूदी गुनाहगार’ नहीं हैं। 16 लेकिन हम जानते हैं कि इनसान को शरीअत की पैरवी करने से रास्तबाज़ नहीं ठहराया जाता बल्कि ईसा मसीह पर ईमान लाने से। हम भी मसीह ईसा पर ईमान लाए हैं ताकि हमें रास्तबाज़ करार दिया जाए, शरीअत की पैरवी करने से नहीं बल्कि मसीह पर ईमान लाने से। क्योंकि शरीअत की पैरवी करने से किसी को भी रास्तबाज़ करार नहीं दिया जाएगा। 17 लेकिन अगर मसीह में रास्तबाज़ ठहरने की कोशिश करते करते हम खुद गुनाहगार साबित हो जाएँ तो क्या इसका मतलब यह है कि मसीह गुनाह का खादिम है? हरगिज़ नहीं! 18 अगर मैं शरीअत के उस निज़ाम को दुबारा तामीर करूँ जो मैंने ढा दिया तो फिर मैं ज़ाहिर करता हूँ कि मैं मुजरिम हूँ। 19 क्योंकि जहाँ तक शरीअत का ताल्लुक़ है मैं मुरदा हूँ। मुझे शरीअत ही से मारा गया है ताकि अल्लाह के लिए जी सकूँ। मुझे मसीह के साथ मसलूब किया गया 20 और यों मैं खुद ज़िंदा न रहा बल्कि मसीह मुझमें ज़िंदा है। अब जो ज़िंदगी मैं इस जिस्म में गुज़ारता हूँ वह अल्लाह के फ़रज़द पर ईमान लाने से गुज़ारता हूँ। उसी ने मुझसे मुहब्बत रखकर मेरे लिए अपनी जान दी। 21 मैं अल्लाह का फ़ज़ल रद्द करने से इनकार करता हूँ। क्योंकि अगर किसी को शरीअत की पैरवी करने से रास्तबाज़ ठहराया जा सकता तो इसका मतलब यह होता कि मसीह का मरना अबस था।

3

शरीअत या ईमान

1 नासमझ गलतियो! किसने आप पर जादू कर दिया? आपकी आँखों के सामने ही ईसा मसीह और उस की सलीबी मौत को साफ़ साफ़ पेश किया गया। 2 मुझे एक बात बताएँ, क्या आपको शरीअत की पैरवी करने से रूहल-कुदूस मिला? हरगिज़ नहीं! वह आपको उस वक़्त मिला जब आप मसीह के बारे में पैग़ाम सुनकर उस पर ईमान लाए। 3 क्या आप इतने बेसमझ हैं? आपकी रूहानी ज़िंदगी रूहल-कुदूस के वसीले से शुरू हुई। तो अब आप यह काम अपनी इनसानी कोशिशों से किस तरह तकमील तक पहुँचाना चाहते हैं? 4 आपको कई तरह के तज़रबे हासिल हुए हैं। क्या यह सब बेफ़ायदा थे? यकीनन यह बेफ़ायदा नहीं थे। 5 क्या अल्लाह इसलिए आपको अपना रूह देता और आपके दरमियान मोज़िज़े करता है कि आप शरीअत की पैरवी करते हैं? हरगिज़ नहीं, बल्कि इसलिए कि आप मसीह के बारे में पैग़ाम सुनकर ईमान लाए हैं।

6 इब्राहीम की मिसाल लें। उसने अल्लाह पर भरोसा किया और इस बिना पर अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ करार दिया। 7 तो फिर आपको जान लेना चाहिए कि इब्राहीम की हकीक़ी औलाद वह लोग हैं जो ईमान रखते हैं। 8 कलामे-मुक़द्स ने इस बात की पेशगोई की कि अल्लाह गैरयहूदियों को ईमान के ज़रीए रास्तबाज़ करार देगा। यों उसने इब्राहीम को यह खुशख़बरी सुनाई, “तमाम कौमें तुझसे बरकत पाएँगी।” 9 इब्राहीम ईमान लाया, इसलिए उसे बरकत मिली। इसी तरह सबको ईमान लाने पर इब्राहीम की-सी बरकत मिलती है।

10 लेकिन जो भी इस पर तकिया करते हैं कि हमें शरीअत की पैरवी करने से रास्तबाज़ करार दिया जाएगा उन पर अल्लाह की लानत है। क्योंकि कलामे-मुक़द्स फ़रमाता है, “हर एक पर लानत जो शरीअत की किताब की तमाम बातें कायम न रखे, न इन पर अमल करे।” 11 यह बात तो साफ़ है कि अल्लाह किसी को भी शरीअत की पैरवी करने की बिना पर रास्तबाज़ नहीं ठहराता, क्योंकि कलामे-मुक़द्स के मुताबिक़ रास्तबाज़ ईमान ही से जीता रहेगा। 12 ईमान की यह राह शरीअत की राह से बिलकुल फ़रक़ है जो कहती है, “जो यों करेगा वह जीता रहेगा।”

13 लेकिन मसीह ने हमारा फ़िधा देकर हमें शरीअत की लानत से आज़ाद कर दिया है। यह उसने इस तरह किया कि वह हमारी खातिर खुद लानत बना। क्योंकि कलामे-मुक़द्स में लिखा है, “जिसे भी दरख़्त से लटकाया गया है उस पर अल्लाह की लानत है।” 14 इसका मक़सद यह था कि जो बरकत इब्राहीम को हासिल हुई वह मसीह के वसीले से गैरयहूदियों को भी मिले और यों हम ईमान लाकर वादा किया हुआ रूह पाएँ।

शरीअत और वादा

15 भाइयो, इनसानी जिंदगी की एक मिसाल लें। जब दो पार्टियाँ किसी मामले में मुतफिक होकर मुआहदा करती हैं तो कोई इस मुआहदे को मनसूख या इसमें इजाफा नहीं कर सकता। 16 अब गौर करें कि अल्लाह ने अपने वादे इब्राहीम और उस की औलाद से ही किए। लेकिन जो लफ्ज इब्रानी में औलाद के लिए इस्तेमाल हुआ है इससे मुराद बहुत-से अफराद नहीं बल्कि एक फ़रद है और वह है मसीह। 17 कहने से मुराद यह है कि अल्लाह ने इब्राहीम से अहद बाँधकर उसे कायम रखने का वादा किया। शरीअत जो 430 साल के बाद दी गई इस अहद को रद्द करके अल्लाह का वादा मनसूख नहीं कर सकती। 18 क्योंकि अगर इब्राहीम की मीरास शरीअत की पैरवी करने से मिलती तो फिर वह अल्लाह के वादे पर मुनहसिर न होती। लेकिन ऐसा नहीं था। अल्लाह ने इसे अपने वादे की बिना पर इब्राहीम को दे दिया।

19 तो फिर शरीअत का क्या मकसद था? उसे इसलिए वादे के अलावा दिया गया ताकि लोगों के गुनाहों को ज़ाहिर करे। और उसे उस वक़्त तक कायम रहना था जब तक इब्राहीम की वह औलाद न आ जाती जिससे वादा किया गया था। अल्लाह ने अपनी शरीअत फ़रिश्तों के वसीले से मूसा को दे दी जो अल्लाह और लोगों के बीच में दरमियानी रहा। 20 अब दरमियानी उस वक़्त ज़रूरी होता है जब एक से ज़्यादा पार्टियों में इत्तफ़ाक़ कराने की ज़रूरत है। लेकिन अल्लाह जो एक ही है उसने दरमियानी इस्तेमाल न किया जब उसने इब्राहीम से वादा किया।

शरीअत का मकसद

21 तो क्या इसका मतलब यह है कि शरीअत अल्लाह के वादों के खिलाफ़ है? हरगिज़ नहीं! अगर इनसान को ऐसी शरीअत मिली होती जो जिंदगी दिला सकती तो फिर सब उस की पैरवी करने से रास्तबाज़ ठहरते। 22 लेकिन कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है कि पूरी दुनिया गुनाह के कब्ज़े में है। चुनाँचे हमें अल्लाह का वादा सिर्फ़ ईसा मसीह पर ईमान लाने से हासिल होता है।

23 इससे पहले कि ईमान की यह राह दस्तयाब हुई शरीअत ने हमें कैद करके महफूज़ रखा था। इस कैद में हम उस वक़्त तक रहे जब तक ईमान की राह ज़ाहिर नहीं हुई थी। 24 यों शरीअत को हमारी तरबियत करने की जिम्मादारी दी गई। उसे हमें मसीह तक पहुँचाना था ताकि हमें ईमान से रास्तबाज़ करार दिया जाए। 25 अब चूँकि ईमान की राह आ गई है इसलिए हम शरीअत की तरबियत के तहत नहीं रहे।

26 क्योंकि मसीह ईसा पर ईमान लाने से आप सब अल्लाह के फ़रज़ंद बन गए हैं। 27 आपमें से जितनों को मसीह में बपतिस्मा दिया गया उन्होंने मसीह को पहन लिया। 28 अब न यहूदी रहा न ग़ैरयहूदी, न गुलाम रहा न आज़ाद, न मर्द रहा न औरत। मसीह ईसा में आप सबके सब एक हैं। 29 शर्त यह है कि आप मसीह के हों। तब आप इब्राहीम की औलाद और उन चीज़ों के वारिस हैं जिनका वादा अल्लाह ने किया है।

4

1 देखें, जो बेटा अपने बाप की मिलकियत का वारिस है वह उस वक़्त तक गुलामों से फ़रक़ नहीं जब तक वह बालिग़ न हो, हालाँकि वह पूरी मिलकियत का मालिक है। 2 बाप की तरफ़ से मुक़र्रर की हुई उम्र तक दूसरे उस की देख-भाल करते और उस की मिलकियत सँभालते हैं। 3 इसी तरह हम भी जब बच्चे थे दुनिया की कुव्वतों के गुलाम थे। 4 लेकिन जब मुक़र्ररा वक़्त आ गया तो अल्लाह ने अपने फ़रज़ंद को भेज दिया। एक औरत से पैदा होकर वह शरीअत के ताबे हुआ 5 ताकि फ़िघा देकर हमें जो शरीअत के ताबे थे आज़ाद कर दे। यों हमें अल्लाह के फ़रज़ंद होने का मरतबा मिला है।

6 अब चूँकि आप उसके फ़रज़ंद हैं इसलिए अल्लाह ने अपने फ़रज़ंद के रूह को हमारे दिलों में भेज दिया, वह रूह जो “अब्बा” यानी “ऐ बाप” कहकर पुकारता रहता है। 7 गरज़ अब आप गुलाम न रहे बल्कि बेटे की हैसियत रखते हैं। और बेटा होने का यह मतलब है कि अल्लाह ने आपको वारिस भी बना दिया है।

पौलुस की गलतियों के लिए फ़िक़र

8 माज़ी में जब आप अल्लाह को नहीं जानते थे तो आप उनके गुलाम थे जो हकीक़त में ख़ुदा नहीं हैं। 9 लेकिन अब आप अल्लाह को जानते हैं, बल्कि अब अल्लाह ने आपको जान लिया है। तो फिर आप मुड़कर इन कमज़ोर और घटिया उसूलों की तरफ़ क्यों वापस जाने लगे हैं? क्या आप दुबारा इनकी गुलामी में आना चाहते हैं? 10 आप बड़ी फ़िक़रमंदी से ख़ास दिन, माह, मौसम और साल मनाते हैं। 11 मुझे आपके बारे में डर है, कहीं मेरी आप पर मेहनत-मशक्क़त ज़ाया न जाए।

12 भाइयो, मैं आपसे इल्तिज़ा करता हूँ कि मेरी मानिंद बन जाएँ, क्योंकि मैं तो आपकी मानिंद बन गया हूँ। आपने मेरे साथ कोई ग़लत सुलूक नहीं किया। 13 आपको मालूम है कि जब मैंने पहली दफ़ा आपको अल्लाह की खुशख़बरी सुनाई तो इसकी वजह मेरे जिस्म की कमज़ोर हालत थी। 14 लेकिन अगरचे मेरी यह हालत आपके लिए आजमाइश का बाइस थी तो भी आपने मुझे हकीर न जाना, न मुझे नीच समझा, बल्कि आपने मुझे यों खुशआमदीद कहा जैसा कि मैं अल्लाह का कोई फ़रिश्ता या मसीह ईसा ख़ुद हूँ। 15 उस वक़्त आप इतने ख़ुश थे! अब क्या हुआ है? मैं गवाह हूँ, उस वक़्त अगर आपको मौक़ा मिलता तो आप अपनी आँखें निकालकर मुझे दे देते। 16 तो क्या अब मैं आपको हकीक़त बताने की वजह से आपका दुश्मन बन गया हूँ?

17 वह दूसरे लोग आपकी दोस्ती पाने की पूरी जिद्दो-जहद कर रहे हैं, लेकिन उनकी नीयत साफ़ नहीं है। बस वह आपको मुझसे जुदा करना चाहते हैं ताकि आप उन्हीं के हक़ में जिद्दो-जहद करते रहें। 18 जब लोग आपकी दोस्ती पाने की जिद्दो-जहद करते हैं तो यह है तो ठीक, लेकिन इसका मक़सद अच्छा होना चाहिए। हाँ, सहीह जिद्दो-जहद हर वक़्त अच्छी होती है, न सिर्फ़ इस वक़्त जब मैं आपके दरमियान हूँ। 19 मेरे प्यारे

बच्चो! अब मैं दुबारा आपको जन्म देने का-सा दर्द महसूस कर रहा हूँ और उस वक्त तक करता रहूँगा जब तक मसीह आपमें सूरत न पकड़े। 20 काश मैं उस वक्त आपके पास होता ताकि फ़रक़ अंदाज़ में आपसे बात कर सकता, क्योंकि मैं आपके सबब से बड़ी उलझन में हूँ!

हाजिरा और सारा की मिसाल

21 आप जो शरीअत के ताबे रहना चाहते हैं मुझे एक बात बताएँ, क्या आप वह बात नहीं सुनते जो शरीअत कहती है? 22 वह कहती है कि इब्राहीम के दो बेटे थे। एक लौंडी का बेटा था, एक आज़ाद औरत का। 23 लौंडी के बेटे की पैदाइश हसबे-मामूल थी, लेकिन आज़ाद औरत के बेटे की पैदाइश ग़ैरमामूली थी, क्योंकि उसमें अल्लाह का वादा पूरा हुआ। 24 जब यह किनायतन समझा जाए तो यह दो ख़वातीन अल्लाह के दो अहदों की नुमाइंदगी करती हैं। पहली ख़ातून हाजिरा सीना पहाड़ पर बँधे हुए अहद की नुमाइंदगी करती है, और जो बच्चे उससे पैदा होते हैं वह गुलामी के लिए मुकर्रर हैं। 25 हाजिरा जो अरब में वाके पहाड़ सीना की अलामत है मौजूदा शहर यरूशलम से मुताबिक़त रखती है। वह और उसके तमाम बच्चे गुलामी में ज़िंदगी गुज़ारते हैं। 26 लेकिन आसमानी यरूशलम आज़ाद है और वही हमारी माँ है। 27 क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है,

“ख़ुश हो जा, तू जो बेऔलाद है,
जो बच्चे को जन्म ही नहीं दे सकती।
बुलंद आवाज़ से शादियाना बजा,
तू जिसे पैदाइश का दर्द न हुआ।
क्योंकि अब तर्क की हुई औरत के बच्चे
शादीशुदा औरत के बच्चों से ज़्यादा हैं।”

28 भाइयो, आप इसहाक़ की तरह अल्लाह के वादे के फ़रज़ंद हैं। 29 उस वक्त इसमाइल ने जो हसबे-मामूल पैदा हुआ था इसहाक़ को सताया जो रूहुल-कुद्स की कुदरत से पैदा हुआ था। आज भी ऐसा ही है। 30 लेकिन कलामे-मुक़द्दस में क्या फ़रमाया गया है? “इस लौंडी और इसके बेटे को घर से निकाल दें, क्योंकि वह आज़ाद औरत के बेटे के साथ विरसा नहीं पाएगा।” 31 गरज़ भाइयो, हम लौंडी के फ़रज़ंद नहीं हैं बल्कि आज़ाद औरत के।

5

अपनी आज़ादी महफूज़ रखें

1 मसीह ने हमें आज़ाद रहने के लिए ही आज़ाद किया है। तो अब कायम रहें और दुबारा अपने गले में गुलामी का ज़ुआ डालने न दें।

2 सुनें! मैं पौलुस आपको बताता हूँ कि अगर आप अपना ख़तना करवाएँ तो आपको मसीह का कोई फ़ायदा नहीं होगा। 3 मैं एक बार फिर इस बात की तसदीक़ करता हूँ कि जिसने भी अपना ख़तना करवाया उसका फ़र्ज़ है कि वह पूरी शरीअत की पैरवी करे। 4 आप जो शरीअत की पैरवी करने से रास्तबाज़ बनना चाहते हैं आपका मसीह के साथ कोई वास्ता न रहा। हाँ, आप अल्लाह के फ़ज़ल से दूर हो गए हैं। 5 लेकिन हमें एक फ़रक़ उम्मीद दिलाई गई है। उम्मीद यह है कि ख़ुदा ही हमें रास्तबाज़ करार देता है। चुनौचे हम रूहुल-कुद्स के बाइस इमान रखकर इसी रास्तबाज़ी के लिए तडपते रहते हैं। 6 क्योंकि जब हम मसीह ईसा में होते हैं तो ख़तना करवाने या न करवाने से कोई फ़रक़ नहीं पड़ता। फ़रक़ सिर्फ़ उस इमान से पड़ता है जो मुहब्बत करने से ज़ाहिर होता है।

7 आप इमान की दौड़ में अच्छी तरक्की कर रहे थे! तो फिर किसने आपको सच्चाई की पैरवी करने से रोक लिया? 8 किसने आपको उभारा? अल्लाह तो नहीं था जो आपको बुलाता है। 9 देखें, थोड़ा-सा खमीर तमाम गुंधे हुए आटे को खमीर कर देता है। 10 मुझे ख़ुदावंद में आप पर इतना एतमाद है कि आप यही सोच रखते हैं। जो भी आपमें अफ़रा-तफ़री पैदा कर रहा है उसे सज़ा मिलेगी।

11 भाइयो, जहाँ तक मेरा ताल्लुक है, अगर मैं यह पैग़ाम देता कि अब तक ख़तना करवाने की ज़रूरत है तो मेरी इज़ारसानी क्यों हो रही होती? अगर ऐसा होता तो लोग मसीह के मसलूब होने के बारे में सुनकर ठोकर न खाते। 12 बेहतर है कि आपको परेशान करनेवाले न सिर्फ़ अपना ख़तना करवाएँ बल्कि खोजे बन जाएँ।

13 भाइयो, आपको आज़ाद होने के लिए बुलाया गया है। लेकिन ख़बरदार रहें कि इस आज़ादी से आपकी गुनाहआलूदा फ़ितरत को अमल में आने का मौक़ा न मिले। इसके बजाएँ मुहब्बत की रूह में एक दूसरे की ख़िदमत करें। 14 क्योंकि पूरी शरीअत एक ही हुक्म में समाई हुई है, “अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।” 15 अगर आप एक दूसरे को काटते और फाड़ते हैं तो ख़बरदार! ऐसा न हो कि आप एक दूसरे को ख़त्म करके सबके सब तबाह हो जाएँ।

रूहुल-कुद्स और इनसानी फ़ितरत

16 मैं तो यह कहता हूँ कि रूहुल-कुद्स में ज़िंदगी गुज़ारें। फिर आप अपनी पुरानी फ़ितरत की ख़ाहिशात पूरी नहीं करेंगे। 17 क्योंकि जो कुछ हमारी पुरानी फ़ितरत चाहती है वह उसके ख़िलाफ़ है जो रूह चाहता है, और जो कुछ रूह चाहता है वह उसके ख़िलाफ़ है जो हमारी

पुरानी फितरत चाहती है। यह दोनों एक दूसरे के दुश्मन हैं, इसलिए आप वह कुछ नहीं कर पाते जो आप करना चाहते हैं। ¹⁸ लेकिन जब रूहुल-कुद्स आपकी राहनुमाई करता है तो आप शरीअत के ताबे नहीं होते।

¹⁹ जो काम पुरानी फितरत करती है वह साफ़ ज़ाहिर होता है। मसलन जिनाकारी, नापाकी, ऐयाशी, ²⁰ बुतपरस्ती, जादूगरी, दुश्मनी, झगडा, हसद, गुस्सा, खुदगारजी, अनबन, पार्टीबाजी, ²¹ जलन, नशाबाजी, रंगरलियाँ वगैरा। मैं पहले भी आपको आगाह कर चुका हूँ, लेकिन अब एक बार फिर कहता हूँ कि जो इस तरह की ज़िंदगी गुज़ारते हैं वह अल्लाह की बादशाही मीरास में नहीं पाएँगे।

²² रूहुल-कुद्स का फल फ़रक़ है। वह मुहब्बत, खुशी, सुलह-सलामती, सब्र, मेहरबानी, नेकी, वफ़ादारी, ²³ नरमी और ज़ब्ते-नफ़स पैदा करता है। शरीअत ऐसी चीज़ों के खिलाफ़ नहीं होती। ²⁴ और जो मसीह ईसा के हैं उन्होंने अपनी पुरानी फितरत को उस की रगबतों और बुरी खाहिशों समेत मसलूब कर दिया है। ²⁵ चूँकि हम रूह में ज़िंदगी गुज़ारते हैं इसलिए आएँ, हम क़दम बक़दम उसके मुताबिक़ चलते भी रहें। ²⁶ न हम मग़रूर हों, न एक दूसरे को मुश्तइल करें या एक दूसरे से हसद करें।

6

एक दूसरे के बोझ उठाना

¹ भाइयो, अगर कोई किसी गुनाह में फँस जाए तो आप जो रूहानी हैं उसे नरमदिली से बहाल करें। लेकिन अपना भी खयाल रखें, ऐसा न हो कि आप भी आजमाइश में फँस जाएँ। ² बोझ उठाने में एक दूसरे की मदद करें, क्योंकि इस तरह आप मसीह की शरीअत पूरी करेंगे। ³ जो समझता है कि मैं कुछ हूँ अगरचे वह हकीक़त में कुछ भी नहीं है तो वह अपने आपको फ़रेब दे रहा है। ⁴ हर एक अपना ज़ाती अमल परखे। फिर ही उसे अपने आप पर फ़ख़र का मौक़ा होगा और उसे किसी दूसरे से अपना मुवाज़ना करने की ज़रूरत न होगी। ⁵ क्योंकि हर एक को अपना ज़ाती बोझ उठाना होता है।

⁶ जिसे कलामे-मुक़द्स की तालीम दी जाती है उसका फ़र्ज़ है कि वह अपने उस्ताद को अपनी तमाम अच्छी चीज़ों में शरीक़ करे।

⁷ फ़रेब मत खाना, अल्लाह इनसान को अपना मज़ाक़ उड़ाने नहीं देता। जो कुछ भी इनसान बोता है उसी की फ़सल वह काटेगा। ⁸ जो अपनी पुरानी फितरत के खेत में बीज बोए वह हलाक़त की फ़सल काटेगा। और जो रूहुल-कुद्स के खेत में बीज बोए वह अबदी ज़िंदगी की फ़सल काटेगा। ⁹ चुनौचे हम नेक काम करने में बेदिल न हो जाएँ, क्योंकि हम मुक़र्रर वक़्त पर ज़रूर फ़सल की कटाई करेंगे। शर्त सिर्फ़ यह है कि हम हथियार न डालें। ¹⁰ इसलिए आएँ, जितना वक़्त रह गया है सबके साथ नेकी करें, ख़ासकर उनके साथ जो ईमान में हमारे भाई और बहनें हैं।

आखिरी आगाही और सलाम

¹¹ देखें, मैं बड़े बड़े हुरूफ़ के साथ अपने हाथ से आपको लिख रहा हूँ। ¹² यह लोग जो दुनिया के सामने इज़्ज़त हासिल करना चाहते हैं आपको ख़तना करवाने पर मजबूर करना चाहते हैं। मक़सद उनका सिर्फ़ एक ही है, कि वह उस ईज़ारसानी से बचे रहें जो तब पैदा होती है जब हम मसीह की सलीबी मौत की तालीम देते हैं। ¹³ बात यह है कि जो अपना ख़तना कराते हैं वह खुद शरीअत की पैरवी नहीं करते। तो भी यह चाहते हैं कि आप अपना ख़तना करवाएँ ताकि आपके जिस्म की हालत पर वह फ़ख़र कर सकें। ¹⁴ लेकिन खुदा करे कि मैं सिर्फ़ हमारे खुदावंद ईसा मसीह की सलीब ही पर फ़ख़र करूँ। क्योंकि उस की सलीब से दुनिया मेरे लिए मसलूब हुई है और मैं दुनिया के लिए। ¹⁵ ख़तना करवाने या न करवाने से कोई फ़रक़ नहीं पड़ता बल्कि फ़रक़ उस वक़्त पड़ता है जब अल्लाह किसी को नए सिरे से ख़लक़ करता है। ¹⁶ जो भी इस उसूल पर अमल करते हैं उन्हें सलामती और रहम हासिल होता रहे, उन्हें भी और अल्लाह की क्रौम इसराइल को भी।

¹⁷ आइंदा कोई मुझे तकलीफ़ न दे, क्योंकि मेरे जिस्म पर ज़ख़मों के निशान ज़ाहिर करते हैं कि मैं ईसा का गुलाम हूँ।

¹⁸ भाइयो, हमारे खुदावंद ईसा मसीह का फ़ज़ल आपकी रूह के साथ होता रहे। आमीन।

इफिसियों

1 यह खत पौलस की तरफ से है, जो अल्लाह की मरजी से मसीह ईसा का रसूल है।

मैं इफिसस शहर के मुकद्दीसीन को लिख रहा हूँ, उन्हें जो मसीह ईसा में ईमानदार हैं।

2 खुदा हमारा बाप और खुदावंद ईसा मसीह आपको फ़ज़ल और सलामती बरख़्शें।

मसीह में रूहानी बरकतें

3 खुदा हमारे खुदावंद ईसा मसीह के बाप की हमदो-सना हो! क्योंकि मसीह में उसने हमें आसमान पर हर रूहानी बरकत से नवाज़ा है।

4 दुनिया की तख़लीक़ से पेशतर ही उसने मसीह में हमें चुन लिया ताकि हम मुकद्दीस और बेऐब हालत में उसके सामने ज़िंदगी गुज़ारें।

यह कितनी अज़ीम मुहब्बत थी! 5 पहले ही से उसने फैसला कर लिया कि वह हमें मसीह में अपने बेटे-बेटियाँ बना लेगा। यही उस की मरजी और खुशी थी 6 ताकि हम उसके जलाली फ़ज़ल की तमज़ीद करें, उस मुफ़्त नेमत के लिए जो उसने हमें अपने प्यारे फ़रज़ंद में दे दी।

7 क्योंकि उसने मसीह के खून से हमारा फ़िघा देकर हमें आज़ाद और हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर दिया है। अल्लाह का यह फ़ज़ल कितना वसी है 8 जो उसने कसरत से हमें अता किया है।

अपनी पूरी हिकमत और दानाई का इज़हार करके 9 अल्लाह ने हम पर अपनी पोशीदा मरजी ज़ाहिर कर दी, यानी वह मनसूबा जो उसे पसंद था और जो उसने मसीह में पहले से बना रखा था। 10 मनसूबा यह है कि जब मुक़र्रर वक़्त आएगा तो अल्लाह मसीह में तमाम कायनात को जमा कर देगा। उस वक़्त सब कुछ मिलकर मसीह के तहत हो जाएगा, खाह वह आसमान पर हो या ज़मीन पर।

11 मसीह में हम आसमानी बादशाही के वारिस भी बन गए हैं। अल्लाह ने पहले से हमें इसके लिए मुक़र्रर किया, क्योंकि वह सब कुछ यों संरजाम देता है कि उस की मरजी का इरादा पूरा हो जाए। 12 और वह चाहता है कि हम उसके जलाल की सताइश का बाइस बनें, हम जिन्होंने पहले से मसीह पर उम्मीद रखी।

13 आप भी मसीह में हैं, क्योंकि आप सच्चाई का कलाम और अपनी नजात की खुशख़बरी सुनकर ईमान लाए। और अल्लाह ने आप पर भी रूहल-कुद्स की मुहर लगा दी जिसका वादा उसने किया था। 14 रूहल-कुद्स हमारी मीरास का बयाना है। वह हमें यह ज़मानत देता है कि अल्लाह हमारा जो उस की मिलकियत हैं फ़िघा देकर हमें पूरी मख़लसी तक पहुँचाएगा। क्योंकि हमारी ज़िंदगी का मक़सद यह है कि उसके जलाल की सताइश की जाए।

पौलस की दुआ

15 भाइयो, मैं खुदावंद ईसा पर आपके ईमान और आपकी तमाम मुकद्दीसीन से मुहब्बत के बारे में सुनकर 16 आपके लिए खुदा का शक्र करने से बाज़ नहीं आता बल्कि आपको अपनी दुआओं में याद करता रहता हूँ। 17 मेरी ख़ास दुआ यह है कि हमारे खुदावंद ईसा मसीह का खुदा और जलाली बाप आपको दानाई और मुकाशफ़ा की रूह दे ताकि आप उसे बेहतर तौर पर जान सकें। 18 वह करे कि आपके दिलों की आँखें रौशन हो जाएँ। क्योंकि फिर ही आप जान लेंगे कि यह कैसी उम्मीद है जिसके लिए उसने आपको बुलाया है, कि यह जलाली मीरास कैसी दौलत है जो मुकद्दीसीन को हासिल है, 19 और कि हम ईमान रखनेवालों पर उस की कुदरत का इज़हार कितना ज़बरदस्त है। यह वही बेहद कुदरत है 20 जिससे उसने मसीह को मुरदों में से ज़िंदा करके आसमान पर अपने दहने हाथ बिठाया। 21 वहाँ मसीह हर हुक्मरान, इख़्तियार, कुव्वत, हुक्मत, हाँ हर नाम से कहीं सरफ़राज़ है, खाह इस दुनिया में हो या आनेवाली दुनिया में। 22 अल्लाह ने सब कुछ उसके पाँवों के नीचे करके उसे सबका सर बना दिया। यह उसने अपनी जमात की खातिर किया 23 जो मसीह का बदन है और जिसे मसीह से पूरी मामूरी हासिल होती है यानी उससे जो हर तरह से सब कुछ मामूर कर देता है।

2

मौत से ज़िंदगी तक

1 आप भी अपनी ख़ताओं और गुनाहों की वजह से रूहानी तौर पर मुरदा थे। 2 क्योंकि पहले आप इनमें फँसे हुए इस दुनिया के तौर-तरीकों के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते थे। आप हवा की कुव्वतों के सरदार के ताबे थे, उस रूह के जो इस वक़्त उनमें सरगारमे-अमल है जो अल्लाह के नाफ़रमान हैं। 3 पहले तो हम भी सब उनमें ज़िंदगी गुज़ारते थे। हम भी अपनी पुरानी फ़ितरत की शहवतें, मरजी और सोच पूरी करने की कोशिश करते रहे। दूसरों की तरह हम पर भी फ़ितरी तौर पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल होना था।

4 लेकिन अल्लाह का रहम इतना वसी है और वह इतनी शिद्दत से हमसे मुहब्बत रखता है 5 कि अगरचे हम अपने गुनाहों में मुरदा थे तो भी उसने हमें मसीह के साथ ज़िंदा कर दिया। हाँ, आपको अल्लाह के फ़ज़ल ही से नजात मिली है। 6 जब हम मसीह ईसा पर ईमान लाए तो उसने हमें मसीह के साथ ज़िंदा करके आसमान पर बिठा दिया। 7 ईसा मसीह में हम पर मेहरबानी करने से अल्लाह आनेवाले ज़मानों में अपने फ़ज़ल की लामहदूद दौलत दिखाना चाहता था। 8 क्योंकि यह उसका फ़ज़ल ही है कि आपको ईमान लाने पर नजात मिली है। यह आपकी तरफ़ से

नहीं है बल्कि अल्लाह की बख्शिश है। ⁹ और यह नजात हमें अपने किसी काम के नतीजे में नहीं मिली, इसलिए कोई अपने आप पर फरखर नहीं कर सकता। ¹⁰ हाँ, हम उसी की मखलूक हैं जिन्हें उसने मसीह में नेक काम करने के लिए खलक किया है। और यह काम उसने पहले से हमारे लिए तैयार कर रखे हैं, क्योंकि वह चाहता है कि हम उन्हें सरंजाम देते हुए ज़िंदगी गुज़ारें।

मसीह में एक

¹¹ यह बात ज़हन में रखें कि माज़ी में आप क्या थे। यहूदी सिर्फ अपने लिए लफ़्ज़ मखतून इस्तेमाल करते थे अगरचे वह अपना खतना सिर्फ़ इनसानी हाथों से करवाते हैं। आपको जो ग़ैरयहूदी हैं वह नामखतून करार देते थे। ¹² उस वक़्त आप मसीह के बग़ैर ही चलते थे। आप इसराइल क़ौम के शहरी न बन सके और जो वादे अल्लाह ने अहदों के ज़रीए अपनी क़ौम से किए थे वह आपके लिए नहीं थे। इस दुनिया में आपकी कोई उम्मीद नहीं थी, आप अल्लाह के बग़ैर ही ज़िंदगी गुज़ारते थे। ¹³ लेकिन अब आप मसीह में हैं। पहले आप दूर थे, लेकिन अब आपको मसीह के खून के वसीले से करीब लाया गया है। ¹⁴ क्योंकि मसीह हमारी सुलह है और उसी ने यहूदियों और ग़ैरयहूदियों को मिलाकर एक क़ौम बना दिया है। अपने जिस्म को कुरबान करके उसने वह दीवार गिरा दी जिसने उन्हें अलग करके एक दूसरे के दुश्मन बना रखा था। ¹⁵ उसने शरीअत को उसके अहक़ाम और ज़वाबित समेत मनसूख कर दिया ताकि दोनों ग़ुरोहों को मिलाकर एक नया इनसान खलक करे, ऐसा इनसान जो उसमें एक हो और सुलह-सलामती के साथ ज़िंदगी गुज़ारे। ¹⁶ अपनी सलीबी मौत से उसने दोनों ग़ुरोहों को एक बदन में मिलाकर उनकी अल्लाह के साथ सुलह कराई। हाँ, उसने अपने आपमें यह दुश्मनी ख़त्म कर दी। ¹⁷ उसने आकर दोनों ग़ुरोहों को सुलह-सलामती की खुशख़बरी सुनाई, आप ग़ैरयहूदियों को जो अल्लाह से दूर थे और आप यहूदियों को भी जो उसके करीब थे। ¹⁸ अब हम दोनों मसीह के ज़रीए एक ही रूह में बाप के हुज़ूर आ सकते हैं।

¹⁹ नतीजे में अब आप परदेसी और अजनबी नहीं रहे बल्कि मुक़द्दसीन के हमवतन और अल्लाह के घराने के हैं। ²⁰ आपको रसूलों और नबियों की बुनियाद पर तामीर किया गया है जिसके कोने का बुनियादी पत्थर मसीह ईसा खुद है। ²¹ उसमें पूरी इमारत जुड़ जाती और बढ़ती बढ़ती खुदावंद में अल्लाह का मुक़द्दस घर बन जाती है। ²² दूसरों के साथ साथ उसमें आपकी भी तामीर हो रही है ताकि आप रूह में अल्लाह की सुकूनतगाह बन जाएँ।

3

पौलस की ग़ैरयहूदियों में खिदमत

¹ इस वजह से मैं पौलस जो आप ग़ैरयहूदियों की खातिर मसीह ईसा का कैदी हूँ अल्लाह से दुआ करता हूँ। ² आपने तो सुन लिया है कि मुझे आपमें अल्लाह के फ़ज़ल का इंतज़ाम चलाने * की खास ज़िम्मादारी दी गई है। ³ जिस तरह मैंने पहले ही मुख़तसर तौर पर लिखा है, अल्लाह ने खुद मुझ पर यह राज़ ज़ाहिर कर दिया। ⁴ जब आप वह पढ़ेंगे जो मैंने लिखा तो आप जान लेंगे कि मुझे मसीह के राज़ के बारे में क्या क्या समझ आई है। ⁵ गुज़रे ज़मानों में अल्लाह ने यह बात ज़ाहिर नहीं की, लेकिन अब उसने इसे रूहुल-कुद्स के ज़रीए अपने मुक़द्दस रसूलों और नबियों पर ज़ाहिर कर दिया। ⁶ और अल्लाह का राज़ यह है कि उस की खुशख़बरी के ज़रीए ग़ैरयहूदी इसराइल के साथ आसमानी बादशाही के वारिस, एक ही बदन के आज्ञा और उसी वादे में शरीक हैं जो अल्लाह ने मसीह ईसा में किया है।

⁷ मैं अल्लाह के मुफ़्त फ़ज़ल और उस की कुदरत के इज़हार से खुशख़बरी का खादिम बन गया। ⁸ अगरचे मैं अल्लाह के तमाम मुक़द्दसीन से कमतर हूँ तो भी उसने मुझे यह फ़ज़ल बख़्शा कि मैं ग़ैरयहूदियों को उस लामहदूद दौलत की खुशख़बरी सुनाऊँ जो मसीह में दस्तयाब है। ⁹ यही मेरी ज़िम्मादारी बन गई कि मैं सब पर उस राज़ का इंतज़ाम ज़ाहिर करूँ जो गुज़रे ज़मानों में सब चीज़ों के खालिक खुदा में पोशीदा रहा। ¹⁰ क्योंकि अल्लाह चाहता था कि अब मसीह की जमात ही आसमानी हुक्मरानों और कुव्वतों को अल्लाह की वसी हिकमत के बारे में इल्म पहुँचाए। ¹¹ यही उसका अज़ली मनसूबा था जो उसने हमारे खुदावंद मसीह ईसा के वसीले से तकमील तक पहुँचाया। ¹² उसमें और उस पर ईमान रखकर हम पूरी आज्ञादी और एतमाद के साथ अल्लाह के हुज़ूर आ सकते हैं। ¹³ इसलिए मेरी आपसे गुज़ारिश है कि आप मेरी मुसीबतें देखकर बेदिल न हो जाएँ। यह मैं आपकी खातिर बरदाश्त कर रहा हूँ, और यह आपकी इज़्ज़त का बाइस है।

मसीह की मुहब्बत

¹⁴ इस वजह से मैं बाप के हुज़ूर अपने घुटने टेकता हूँ, ¹⁵ उस बाप के सामने जिससे आसमानो-ज़मीन का हर खानदान नामज़द है। ¹⁶ मेरी दुआ है कि वह अपने जलाल की दौलत के मुवाफ़िक़ यह बख़्शे कि आप उसके रूह के वसीले से बातिनी तौर पर ज़बरदस्त तक्रवियत पाएँ, ¹⁷ कि मसीह ईमान के ज़रीए आपके दिलों में सुकूनत करे। हाँ, मेरी दुआ है कि आप मुहब्बत में जड़ पकड़ें और इस बुनियाद पर ज़िंदगी यों गुज़ारें ¹⁸ कि आप बाकी तमाम मुक़द्दसीन के साथ यह समझने के काबिल बन जाएँ कि मसीह की मुहब्बत कितनी चौड़ी, कितनी लंबी, कितनी ऊँची और कितनी गहरी है। ¹⁹ खुदा करे कि आप मसीह की यह मुहब्बत जान लें जो हर इल्म से कहीं अफ़ज़ल है और यों अल्लाह की पूरी मामूरी से भर जाएँ।

* **3:2** यानी खुशख़बरी सुनाने।

20 अल्लाह की तमजीद हो जो अपनी उस कुदरत के मुवाफिक जो हममें काम कर रही है ऐसा जबरदस्त काम कर सकता है जो हमारी हर सोच और दुआ से कहीं बाहर है। 21 हाँ, मसीह ईसा और उस की जमात में अल्लाह की तमजीद पुशत-दर-पुशत और अज़ल से अबद तक होती रहे। आमीन।

4

बदन की यगांगत

1 चुनौचे में जो खुदावंद में कैदी हूँ आपको ताकीद करता हूँ कि उस ज़िंदगी के मुताबिक चलें जिसके लिए खुदा ने आपको बुलाया है। 2 हर वक्त हलीम और नरमदिल रहें, सब से काम लें और एक दूसरे से मुहब्बत रखकर उसे बरदाश्त करें। 3 सुलह-सलामती के बंधन में रहकर रूह की यगांगत कायम रखने की पूरी कोशिश करें। 4 एक ही बदन और एक ही रूह है। यों आपको भी एक ही उम्मीद के लिए बुलाया गया। 5 एक खुदावंद, एक ईमान, एक बपतिस्मा है। 6 एक खुदा है, जो सबका वाहिद बाप है। वह सबका मालिक है, सबके ज़रीए काम करता है और सबमें मौजूद है।

7 अब हम सबको अल्लाह का फ़ज़ल बख़्शा गया। लेकिन मसीह हर एक को मुख्तलिफ़ पैमाने से यह फ़ज़ल अता करता है। 8 इसलिए कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है, “उसने बुलंदी पर चढ़कर कैदियों का हुज़ूम गिरफ़्तार कर लिया और आदमियों को तोहफ़े दिए।” 9 अब गौर करें कि चढ़ने का ज़िक्र किया गया है। इसका मतलब है कि पहले वह ज़मीन की गहराइयों में उतरा। 10 जो उतरा वह वही है जो तमाम आसमानों से ऊँचा चढ़ गया ताकि तमाम कायनात को अपने आपसे मामूर करे। 11 उसी ने अपनी जमात को तरह तरह के खादिमों से नवाज़ा। बाज़ रसूल, बाज़ नबी, बाज़ मुबशिश, बाज़ चरवाहे और बाज़ उस्ताद हैं। 12 इनका मक़सद यह है कि मुक़द्दसीन को ख़िदमत करने के लिए तैयार किया जाए और यों मसीह के बदन की तामीरो-तरक्की हो जाए। 13 इस तरीक़े से हम सब ईमान और अल्लाह के फ़रज़ंद की पहचान में एक होकर बालिग हो जाएंगे, और हम मिलकर मसीह की मामूरी और बलूग़त को मुनअक़िस करेंगे। 14 फिर हम बच्चे नहीं रहेंगे, और तालीम के हर एक झोंके से उछलते फिरते नहीं रहेंगे जब लोग अपनी चालाकी और धोकेबाज़ी से हमें अपने जालों में फँसाने की कोशिश करेंगे। 15 इसके बजाए हम मुहब्बत की रूह में सच्ची बात करके हर लिहाज़ से मसीह की तरफ़ बढ़ते जाएंगे जो हमारा सर है। 16 वही नसों के ज़रीए पूरे बदन के मुख्तलिफ़ हिस्सों को एक दूसरे के साथ जोड़कर मुतहिद कर देता है। हर हिस्सा अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ काम करता है, और यों पूरा बदन मुहब्बत की रूह में बढ़ता और अपनी तामीर करता रहता है।

मसीह में नई ज़िंदगी

17 पस मैं खुदावंद के नाम में आपको आगाह करता हूँ कि अब से ग़ैरईमानदारों की तरह ज़िंदगी न गुज़ारें जिनकी सोच बेकार है 18 और जिनकी समझ अंधेरे की गिरिफ़्त में है। उनका उस ज़िंदगी में कोई हिस्सा नहीं जो अल्लाह देता है, क्योंकि वह जाहिल हैं और उनके दिल सख़्त हो गए हैं। 19 बेहिस होकर उन्होंने अपने आपको ऐयाशी के हवाले कर दिया। यों वह न बुझनेवाली प्यास के साथ हर क्रिस्म की नापाक हरकतें करते हैं।

20 लेकिन आपने मसीह को यों नहीं जाना। 21 आपने तो उसके बारे में सुन लिया है, और उसमें होकर आपको वह सच्चाई सिखाई गई जो ईसा में है। 22 चुनौचे अपने पुराने इन्सान को उसके पुराने चाल-चलन समेत उतार देना, क्योंकि वह अपनी धोकेबाज़ शहवतों से बिगड़ता जा रहा है। 23 अल्लाह को आपकी सोच की तजदीद करने दें 24 और नए इन्सान को पहन लें जो यों बनाया गया है कि वह हकीक़ी रास्तबाज़ी और कुदूसियत में अल्लाह के मुशाबेह है।

25 इसलिए हर शख्स झूट से बाज़ रहकर दूसरों से सच बात करे, क्योंकि हम सब एक ही बदन के आज़ा हैं। 26 गुस्से में आते वक्त गुनाह मत करना। आपका गुस्सा सूरज के गुरूब होने तक ठंडा हो जाए, 27 वरना आप इबलीस को अपनी ज़िंदगी में काम करने का मौक़ा देंगे। 28 चोर अब से चोरी न करे बल्कि ख़ूब मेहनत-मशक्क़त करके अपने हाथों से अच्छा काम करे। हाँ, वह इतना कमाए कि ज़रूरतमंदों को भी कुछ दे सके। 29 कोई भी बुरी बात आपके मुँह से न निकले बल्कि सिर्फ़ ऐसी बातें जो दूसरों की ज़रूरियात के मुताबिक़ उनकी तामीर करें। यों सुननेवालों को बरक़त मिलेगी। 30 अल्लाह के मुक़द्दस रूह को दुख न पहुँचाना, क्योंकि उसी से अल्लाह ने आप पर मुहर लगाकर यह ज़मानत दे दी है कि आप उसी के हैं और नज़ात के दिन बच जाएंगे। 31 तमाम तरह की तलख़ी, तैश, गुस्से, शोर-शराबा, ग़ाली-ग़लोच बल्कि हर क्रिस्म के बुरे रवय्ये से बाज़ आएं। 32 एक दूसरे पर मेहरबान और रहमदिल हों और एक दूसरे को यों मुआफ़ करें जिस तरह अल्लाह ने आपको भी मसीह में मुआफ़ कर दिया है।

5

रौशनी में ज़िंदगी गुज़ारना

1 चूँकि आप अल्लाह के प्यारे बच्चे हैं इसलिए उसके नमूने पर चलें। 2 मुहब्बत की रूह में ज़िंदगी यों गुज़ारें जैसे मसीह ने गुज़ारी। क्योंकि उसने हमसे मुहब्बत रखकर अपने आपको हमारे लिए अल्लाह के हुज़ूर कुरबान कर दिया और यों ऐसी कुरबानी बन गया जिसकी खुशबू अल्लाह को पसंद आई।

3 आपके दरमियान जिनाकारी, हर तरह की नापाकी या लालच का जिक्र तक न हो, क्योंकि यह अल्लाह के मुकद्दसीन के लिए मुनासिब नहीं है। 4 इसी तरह शर्मनाक, अहमकाना या गंदी बातें भी ठीक नहीं। इनकी जगह शुक्रगुजारी होनी चाहिए। 5 क्योंकि यकीन जानें कि जिनाकार, नापाक या लालची मसीह और अल्लाह की बादशाही में मीरास नहीं पाएंगे (लालच तो एक किस्म की बुतपरस्ती है)।

6 कोई आपको बेमानी अलफ़ाज़ से धोका न दे। ऐसी ही बातों की वजह से अल्लाह का ग़ज़ब उन पर जो नाफ़रमान हैं नाज़िल होता है। 7 चुनौचे उनमें शरीक न हो जाएँ जो यह करते हैं। 8 क्योंकि पहले आप तारीकी थे, लेकिन अब आप खुदावंद में रौशनी हैं। रौशनी के फ़रज़ंद की तरह ज़िंदगी गुज़ारें, 9 क्योंकि रौशनी का फल हर तरह की भलाई, रास्तबाज़ी और सच्चाई है। 10 और मालूम करते रहें कि खुदावंद को क्या कुछ पसंद है। 11 तारीकी के बेफल कामों में हिस्सा न लें बल्कि उन्हें रौशनी में लाएँ। 12 क्योंकि जो कुछ यह लोग पोशीदगी में करते हैं उसका जिक्र करना भी शर्म की बात है। 13 लेकिन सब कुछ बेनिकाब हो जाता है जब उसे रौशनी में लाया जाता है। 14 क्योंकि जो रौशनी में लाया जाता है वह रौशन हो जाता है। इसलिए कहा जाता है,

“ऐ सोनेवाले, जाग उठ!

मुरदों में से जी उठ,

तो मसीह तूझ पर चमकेगा।”

15 चुनौचे बड़ी एहतियात से इस पर ध्यान दें कि आप ज़िंदगी किस तरह गुज़ारते हैं—बेसमझ या समझदार लोगों की तरह। 16 हर मौके से पूरा फ़ायदा उठाएँ, क्योंकि दिन बुरे हैं। 17 इसलिए अहमक न बनें बल्कि खुदावंद की मरज़ी को समझें।

18 शराब में मत्वाले न हो जाएँ, क्योंकि इसका अंजाम ऐयाशी है। इसके बजाएँ रूहुल-कुद्स से मामूर होते जाएँ। 19 ज़बूरों, हम्दो-सना और रूहानी गीतों से एक दूसरे की हौसलाअफ़ज़ाई करें। अपने दिलों में खुदावंद के लिए गीत गाएँ और नगमासराई करें। 20 हाँ, हर वक़्त हमारे खुदावंद ईसा मसीह के नाम में हर चीज़ के लिए खुदा बाप का शुक्र करें।

मियाँ-बीवी का ताल्लुक

21 मसीह के ख़ौफ़ में एक दूसरे के ताबे रहें। 22 बीवियों, जिस तरह आप खुदावंद के ताबे हैं उसी तरह अपने शौहर के ताबे भी रहें। 23 क्योंकि शौहर वैसे ही अपनी बीवी का सर है जैसे मसीह अपनी जमात का। हाँ, जमात मसीह का बदन है जिसे उसने नजात दी है। 24 अब जिस तरह जमात मसीह के ताबे है उसी तरह बीवियाँ भी अपने शौहरों के ताबे रहें।

25 शौहरो, अपनी बीवियों से मुहब्बत रखें, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह मसीह ने अपनी जमात से मुहब्बत रखकर अपने आपको उसके लिए क़ुरबान किया 26 ताकि उसे अल्लाह के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करे। उसने उसे कलामे-पाक से धोकर पाक-साफ़ कर दिया 27 ताकि अपने आपको एक ऐसी जमात पेश करे जो जलाली, मुक़द्दस और बेइलज़ाम हो, जिसमें न कोई दाग़ हो, न कोई झुर्री, न किसी और किस्म का नुक़स। 28 शौहरों का फ़र्ज़ है कि वह अपनी बीवियों से ऐसी ही मुहब्बत रखें। हाँ, वह उनसे वैसी मुहब्बत रखें जैसी अपने जिस्म से रखते हैं। क्योंकि जो अपनी बीवी से मुहब्बत रखता है वह अपने आपसे ही मुहब्बत रखता है। 29 आखिर कोई भी अपने जिस्म से नफ़रत नहीं करता बल्कि उसे ख़ुराक मुहैया करता और पालता है। मसीह भी अपनी जमात के लिए यही कुछ करता है। 30 क्योंकि हम उसके बदन के आज्ञा हैं। 31 कलामे-मुक़द्दस में भी लिखा है, “इसलिए मर्द अपने माँ-बाप को छोड़कर अपनी बीवी के साथ पैवस्त हो जाता है। वह दोनों एक हो जाते हैं।” 32 यह राज़ बहुत गहरा है। मैं तो उसका इतलाक़ मसीह और उस की जमात पर करता हूँ। 33 लेकिन इसका इतलाक़ आप पर भी है। हर शौहर अपनी बीवी से इस तरह मुहब्बत रखे जिस तरह वह अपने आपसे रखता है। और हर बीवी अपने शौहर की इज़्ज़त करे।

6

बच्चों और वालिदैन का ताल्लुक

1 बच्चो, खुदावंद में अपने माँ-बाप के ताबे रहें, क्योंकि यही रास्तबाज़ी का तकाज़ा है। 2 कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, “अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना।” यह पहला हुक्म है जिसके साथ एक वादा भी किया गया है, 3 “फिर तू ख़ुशहाल और ज़मीन पर देर तक जीता रहेगा।”

4 ऐ वालिदो, अपने बच्चों से ऐसा सुलूक मत करें कि वह गुस्से हो जाएँ बल्कि उन्हें खुदावंद की तरफ़ से तरबियत और हिदायत देकर पालें।

गुलाम और मालिक

5 गुलामो, डरते और काँपते हुए अपने इनसानी मालिकों के ताबे रहें। ख़लूसदिली से उनकी खिदमत यों करें जैसे मसीह की। 6 न सिर्फ़ उनके सामने ही और उन्हें ख़ुश रखने के लिए खिदमत करें बल्कि मसीह के गुलामों की हैसियत से जो पूरी लग्न से अल्लाह की मरज़ी पूरी करना चाहते हैं। 7 ख़ुशी से खिदमत करें, इस तरह जैसा कि आप न सिर्फ़ इनसानों की बल्कि खुदावंद की खिदमत कर रहे हों। 8 आप तो जानते हैं कि जो भी अच्छा काम हमने किया उसका अज़्र खुदावंद देगा, खाह हम गुलाम हों या आज़ाद।

9 और मालिको, आप भी अपने गुलामों से ऐसा ही सुलूक करें। उन्हें धमकियाँ न दें। आपको तो मालूम है कि आसमान पर आपका भी मालिक है और कि वह जानिबदार नहीं होता।

रूहानी ज़िरा-बक़तर

10 एक आखिरी बात, खुदावंद और उस की ज़बरदस्त कुव्वत में ताकतवर बन जाएँ। 11 अल्लाह का पूरा ज़िरा-बकतर पहन लें ताकि इबलीस की चालों का सामना कर सकें। 12 क्योंकि हमारी जंग इनसान के साथ नहीं है बल्कि हुक्मरानों और इख्तियारवालों के साथ, इस तारीक दुनिया के हाकिमों के साथ और आसमानी दुनिया की शैतानी कुव्वतों के साथ है। 13 चुनाँचे अल्लाह का पूरा ज़िरा-बकतर पहन लें ताकि आप मुसीबत के दिन इबलीस के हमलों का सामना कर सकें बल्कि सब कुछ सरंजाम देने के बाद कायम रह सकें।

14 अब यों खड़े हो जाएँ कि आपकी कमर में सच्चाई का पटका बँधा हुआ हो, आपके सीने पर रास्तबाज़ी का सीनाबंद लगा हो 15 और आपके पाँवों में ऐसे जूते हों जो सुलह-सलामती की खुशखबरी सुनाने के लिए तैयार रहें। 16 इसके अलावा ईमान की ढाल भी उठाए रखें, क्योंकि इससे आप इबलीस के जलते हुए तीर बुझा सकते हैं। 17 अपने सर पर नजात का खोद पहनकर हाथ में रूह की तलवार जो अल्लाह का कलाम है थामे रखें। 18 और हर मौके पर रूह में हर तरह की दुआ और मिन्नत करते रहें। जागते और साबितकदमी से तमाम मुकद्दसीन के लिए दुआ करते रहें। 19 मेरे लिए भी दुआ करें कि जब भी मैं अपना मुँह खोलूँ अल्लाह मुझे ऐसे अलफ़ाज़ अता करे कि पूरी दिलेरी से उस की खुशखबरी का राज सुना सकूँ। 20 क्योंकि मैं इसी पैगाम की खातिर कैदी, हाँ जंजीरों में जकड़ा हुआ मसीह का एलची हूँ। दुआ करें कि मैं मसीह में उतनी दिलेरी से यह पैगाम सुनाऊँ जितना मुझे करना चाहिए।

आखिरी सलाम

21 आप मेरे हाल और काम के बारे में भी जानना चाहेंगे। खुदावंद में हमारा अजीज़ भाई और वफ़ादार खादिम तुखिकुस आपको यह सब कुछ बता देगा। 22 मैंने उसे इसी लिए आपके पास भेज दिया कि आपको हमारे हाल का पता चले और आपको तसल्ली मिले।

23 खुदा बाप और खुदावंद ईसा मसीह आप भाइयों को सलामती और ईमान के साथ मुहब्बत अता करें। 24 अल्लाह का फ़ज़ल उन सबके साथ हो जो अनमिट मुहब्बत के साथ हमारे खुदावंद ईसा मसीह को प्यार करते हैं।

फिलिपियों

सलाम

1 यह खत मसीह ईसा के गुलामों पौलुस और तीमुथियुस की तरफ से है।

मैं फिलिप्पी में मौजूद उन तमाम लोगों को लिख रहा हूँ जिन्हें अल्लाह ने मसीह ईसा के ज़रिए मखसूसो-मुकद्दस किया है। मैं उनके बुजुर्गों और खादिमों को भी लिख रहा हूँ।

2 खुदा हमारा बाप और खुदावंद ईसा मसीह आपको फ़ज़ल और सलामती अता करें।

जमात के लिए शुक्रो-दुआ

3 जब भी मैं आपको याद करता हूँ तो अपने खुदा का शुक्र करता हूँ। 4 आपके लिए तमाम दुआओं में मैं हमेशा खुशी से दुआ करता हूँ, 5 इसलिए कि आप पहले दिन से लेकर आज तक अल्लाह की खुशखबरी फैलाने में मेरे शरीक रहे हैं। 6 और मुझे यकीन है कि अल्लाह जिसने आपमें यह अच्छा काम शुरू किया है इसे उस दिन तकमील तक पहुँचाएगा जब मसीह ईसा वापस आएगा। 7 और मुनासिब है कि आप सबके बारे में मेरा यही खयाल हो, क्योंकि आप मुझे अज़ीज़ रखते हैं। हाँ, जब मुझे जेल में डाला गया या मैं अल्लाह की खुशखबरी का दिफ़ा या उस की तसदीक कर रहा था तो आप भी मेरे इस ख़ास फ़ज़ल में शरीक हुए। 8 अल्लाह मेरा गवाह है कि मैं कितनी शिद्दत से आप सबका आरज़ूमंद हूँ। हाँ, मैं मसीह की-सी दिली शफ़क़त के साथ आपका खाहिशमंद हूँ।

9 और मेरी दुआ है कि आपकी मुहब्बत में इल्मो-इरफ़ान और हर तरह की रूहानी बसीरत का यहाँ तक इज़ाफ़ा हो जाए कि वह बढ़ती बढ़ती दिल से छलक उठे। 10 क्योंकि यह ज़रूरी है ताकि आप वह बातें कबूल करें जो बुनियादी अहमियत की हामिल हैं और आप मसीह की आमद तक बेलौस और बेइलज़ाम ज़िंदगी गुज़ारें। 11 और यों आप उस रास्तबाज़ी के फल से भरे रहेंगे जो आपको ईसा मसीह के वसीले से हासिल होती है। फिर आप अपनी ज़िंदगी से अल्लाह को जलाल देंगे और उस की तमजीद करेंगे।

हर एक को मालूम हो जाए कि मसीह कौन है

12 भाइयो, मैं चाहता हूँ कि यह बात आपके इल्म में हो कि जो कुछ भी मुझ पर गुज़रा है वह हकीक़त में अल्लाह की खुशखबरी के फैलाव का बाइस बन गया है। 13 क्योंकि प्रैटोरियुम * के तमाम अफ़राद और बाक़ी सबको मालूम हो गया है कि मैं मसीह की खातिर कैदी हूँ। 14 और मेरे कैद में होने की वजह से खुदावंद में ज़्यादातर भाइयों का एतमाद इतना बढ़ गया है कि वह मज़ीद दिलेरी के साथ बिलाख़ौफ़ अल्लाह का कलाम सुनाते हैं।

15 बेशक बाज़ तो हसद और मुख़ालफ़त के बाइस मसीह की मुनादी कर रहे हैं, लेकिन बाक़ियों की नीयत अच्छी है, 16 क्योंकि वह जानते हैं कि मैं अल्लाह की खुशखबरी के दिफ़ा की वजह से यहाँ पड़ा हूँ। इसलिए वह मुहब्बत की रूह में तबलीग़ करते हैं। 17 इसके मुकाबले में दूसरे ख़ुलूसदिली से मसीह के बारे में पैग़ाम नहीं सुनाते बल्कि खुदग़रज़ी से। यह समझते हैं कि हम इस तरह पौलुस की गिरिफ़्तारी को मज़ीद तकलीफ़देह बना सकते हैं।

18 लेकिन इससे क्या फ़रक़ पड़ता है! अहम बात तो यह है कि मसीह की मुनादी हर तरह से की जा रही है, खाह मुनाद की नीयत पुरख़ूलूस हो या न। और इस वजह से मैं खुश हूँ। और खुश रहूँगा भी, 19 क्योंकि मैं जानता हूँ कि यह मेरे लिए रिहाई का बाइस बनेगा, इसलिए कि आप मेरे लिए दुआ कर रहे हैं और ईसा मसीह का रूह मेरी हिमायत कर रहा है। 20 हाँ, यह मेरी पूरी तवक्क़ो और उम्मीद है। मैं यह भी जानता हूँ कि मुझे किसी भी बात में शर्मिदा नहीं किया जाएगा बल्कि जैसा माज़ी में हमेशा हुआ अब भी मुझे बड़ी दिलेरी से मसीह को जलाल देने का फ़ज़ल मिलेगा, खाह मैं ज़िंदा रहूँ या मर जाऊँ। 21 क्योंकि मेरे लिए मसीह ज़िंदगी है और मौत नफ़ा का बाइस। 22 अगर मैं ज़िंदा रहूँ तो इसका फ़ायदा यह होगा कि मैं मेहनत करके मज़ीद फल ला सकूँगा। चुनौचे मैं नहीं कह सकता कि क्या बेहतर है। 23 मैं बड़ी कश-म-कश में रहता हूँ। एक तरफ़ मैं कूच करके मसीह के पास होने की आरज़ू रखता हूँ, क्योंकि यह मेरे लिए सबसे बेहतर होता। 24 लेकिन दूसरी तरफ़ ज़्यादा ज़रूरी यह है कि मैं आपकी खातिर ज़िंदा रहूँ। 25 और चूँकि मुझे इस ज़रूरत का यकीन है, इसलिए मैं जानता हूँ कि मैं ज़िंदा रहकर दुबारा आप सबके साथ रहूँगा ताकि आप तरक्की करें और ईमान में खुश रहें। 26 हाँ, मेरे आपके पास वापस आने से आप मेरे सबब से मसीह ईसा पर हद से ज़्यादा फ़ख़र करेंगे।

27 लेकिन आप हर सूरत में मसीह की खुशखबरी और आसमान के शहरियों के लायक़ ज़िंदगी गुज़ारें। फिर खाह मैं आकर आपको देखूँ, खाह ग़ैरमौजूदगी में आपके बारे में सुनूँ, मुझे मालूम होगा कि आप एक रूह में कायम हैं, आप मिलकर एकदिली से उस ईमान के लिए ज़ौफ़िशानी कर रहे हैं जो अल्लाह की खुशखबरी से पैदा हुआ है, 28 और आप किसी सूरत में अपने मुख़ालिफ़ों से दहशत नहीं खाते। यह उनके लिए एक निशान होगा कि वह हलाक़ हो जाएंगे जबकि आपको नजात हासिल होगी, और वह भी अल्लाह से। 29 क्योंकि आपको न सिर्फ़ मसीह

* 1:13 गवर्नर का सरकारी महल प्रैटोरियुम कहलाता था। यहाँ इसका मतलब शाहनशाह के पहरेदारों के क्वार्टर भी हो सकता है।

पर ईमान लाने का फ़ज़ल हासिल हुआ है बल्कि उस की खातिर दुख उठाने का भी। ³⁰ आप भी उस मुकाबले में जाँफ़िशानी कर रहे हैं जिसमें आपने मुझे देखा है और जिसके बारे में आपने अब सुन लिया है कि मैं अब तक उसमें मसरूफ़ हूँ।

2

यगांगत की ज़रूरत

¹ क्या आपके दरमियान मसीह में हौसलाअफ़ज़ाई, मुहब्बत की तसल्ली, रूहुल-कुद्स की रिफ़ाक़त, नरमदिली और रहमत पाई जाती है? ² अगर ऐसा है तो मेरी खुशी इसमें पूरी करें कि आप एक जैसी सोच रखें और एक जैसी मुहब्बत रखें, एक जान और एक ज़हन हो जाएँ। ³ खुदग़रज़ न हों, न बातिल इज़ज़त के पीछे पड़ें बल्कि फ़रोतनी से दूसरों को अपने से बेहतर समझें। ⁴ हर एक न सिर्फ़ अपना फ़ायदा सोचे बल्कि दूसरों का भी।

मसीह की राहे-सलीब

⁵ वही सोच रखें जो मसीह ईसा की भी थी।

⁶ वह जो अल्लाह की सूरत पर था

नहीं समझता था कि मेरा अल्लाह के बराबर होना कोई ऐसी चीज़ है

जिसके साथ ज़बरदस्ती चिमटे रहने की ज़रूरत है।

⁷ नहीं, उसने अपने आपको इससे महसूस करके

गुलाम की सूरत अपनाई

और इनसानों की मानिंद बन गया।

शक्लो-सूरत में वह इनसान पाया गया।

⁸ उसने अपने आपको पस्त कर दिया

और मौत तक ताबे रहा,

बल्कि सलीबी मौत तक।

⁹ इसलिए अल्लाह ने उसे सबसे आला मक़ाम पर सरफ़राज़ कर दिया

और उसे वह नाम बरख़्शा जो हर नाम से आला है,

¹⁰ ताकि ईसा के इस नाम के सामने हर घुटना झुके,

खाह वह घुटना आसमान पर, ज़मीन पर या इसके नीचे हो,

¹¹ और हर ज़बान तसलीम करे कि ईसा मसीह खुदावंद है।

यों खुदा बाप को जलाल दिया जाएगा।

रूहानी तरक्की का राज़

¹² मेरे अजीज़ो, जब मैं आपके पास था तो आप हमेशा फ़रमाँबरदार रहे। अब जब मैं ग़ैरहाज़िर हूँ तो इसकी कहीं ज़्यादा ज़रूरत है। चुनौचे डरते और काँपते हुए जाँफ़िशानी करते रहें ताकि आपकी नज़ात तकमील तक पहुँचे। ¹³ क्योंकि खुदा ही आपमें वह कुछ करने की ख़ाहिश पैदा करता है जो उसे पसंद है, और वही आपको यह पूरा करने की ताक़त देता है।

¹⁴ सब कुछ बुझाए और बहस-मुबाहसा किए बग़ैर करें ¹⁵ ताकि आप बेइलज़ाम और पाक होकर अल्लाह के बेदाग़ फ़रज़ंद साबित हो जाएँ, ऐसे लोग जो एक टेढ़ी और उलटी नसल के दरमियान ही आसमान के सितारों की तरह चमकते-दमकते ¹⁶ और ज़िंदगी का कलाम थामे रखते हैं। फिर मैं मसीह की आमद के दिन फ़ख़र कर सकूँगा कि न मैं रायग़ाँ दौड़ा, न बेफ़ायदा जिद्दो-जहद की।

¹⁷ देखें, जो ख़िदमत आप ईमान से सरंजाम दे रहे हैं वह एक ऐसी कुरबानी है जो अल्लाह को पसंद है। खुदा करे कि जो दुख मैं उठा रहा हूँ वह मैं की उस नज़र की मानिंद हो जो बैतुल-मुक़द्दस में कुरबानी पर उंडेली जाती है। अगर मेरी नज़र वाकई आपकी कुरबानी यों मुकम्मल करे तो मैं खुश हूँ और आपके साथ खुशी मनाता हूँ। ¹⁸ आप भी इसी वजह से खुश हों और मेरे साथ खुशी मनाएँ।

तीमुथियुस और इपफ़्रुदितुस को फिलिप्पियों के पास भेजा जाएगा

¹⁹ मुझे उम्मीद है कि अगर खुदावंद ईसा ने चाहा तो मैं जल्द ही तीमुथियुस को आपके पास भेज दूँगा ताकि आपके बारे में ख़बर पाकर मेरा हौसला भी बढ़ जाए। ²⁰ क्योंकि मेरे पास कोई और नहीं जिसकी सोच बिल्कुल मेरी जैसी है और जो इतनी खुलूसदिली से आपकी फ़िकर करे। ²¹ दूसरे सब अपने मफ़ाद की तलाश में रहते हैं और वह कुछ नज़रंदाज़ करते हैं जो ईसा मसीह का काम बढ़ाता है। ²² लेकिन आपको तो मालूम है कि तीमुथियुस काबिले-एतमाद साबित हुआ, कि उसने मेरा बेटा बनकर मेरे साथ अल्लाह की खुशख़बरी फैलाने की ख़िदमत सरंजाम दी। ²³ चुनौचे उम्मीद है कि ज्योंही मुझे पता चले कि मेरा क्या बनेगा मैं उसे आपके पास भेज दूँगा। ²⁴ और मेरा खुदावंद में ईमान है कि मैं भी जल्द ही आपके पास आऊँगा।

25 लेकिन मैंने ज़रूरी समझा कि इतने में इपफ्रुदितुस को आपके पास वापस भेज दूँ जिसे आपने कासिद के तौर पर मेरी ज़रूरियात पूरी करने के लिए मेरे पास भेज दिया था। वह मेरा सच्चा भाई, हमखिदमत और साथी सिपाही साबित हुआ। 26 मैं उसे इसलिए भेज रहा हूँ क्योंकि वह आप सबका निहायत आरज़ूमंद है और इसलिए बेचैन है कि आपको उसके बीमार होने की ख़बर मिल गई थी। 27 और वह था भी बीमार बल्कि मरने को था। लेकिन अल्लाह ने उस पर रहम किया, और न सिर्फ़ उस पर बल्कि मुझ पर भी ताकि मेरे दुख में इज़ाफ़ा न हो जाए। 28 इसलिए मैं उसे और जल्दी से आपके पास भेजूँगा ताकि आप उसे देखकर खुश हो जाएँ और मेरी परेशानी भी दूर हो जाए। 29 चुनौचे खुदावंद में बड़ी खुशी से उसका इस्तक्रबाल करें। उस जैसे लोगों की इज़्ज़त करें, 30 क्योंकि वह मसीह के काम के बाइस मरने की नौबत तक पहुँच गया था। उसने अपनी जान ख़तरे में डाल दी ताकि आपकी जगह मेरी वह खिदमत करे जो आप न कर सके।

3

अल्लाह में खुशी

1 मेरे भाइयो, जो कुछ भी हो, खुदावंद में खुश रहें। मैं आपको यह बात बताते रहने से कभी थकता नहीं, क्योंकि ऐसा करने से आप महफूज़ रहते हैं।

यहूदियों से खबरदार

2 कुतों से खबरदार! उन शरीर मजदूरों से होशियार रहना जो जिस्म की काँट-छाँट यानी खतना करवाते हैं। 3 क्योंकि हम ही हकीकी खतना के पैरोकार हैं, हम ही हैं जो अल्लाह के रूह में परस्तिश करते, मसीह ईसा पर फ़ख़र करते और इन्सानी खूबियों पर भरोसा नहीं करते।

पौलुस की शख़्सी गवाही

4 बात यह नहीं कि मेरा अपनी इन्सानी खूबियों पर भरोसा करने का कोई जवाज़ न होता। जब दूसरे अपनी इन्सानी खूबियों पर फ़ख़र करते हैं तो मैं उनकी निसबत ज़्यादा कर सकता हूँ। 5 मेरा खतना हुआ जब मैं अभी आठ दिन का बच्चा था। मैं इसराईल क़ौम के कबीले बिनयमीन का हूँ, ऐसा इबरानी जिसके वालिदैन् भी इबरानी थे। मैं फ़रीसियों का मेंबर था जो यहूदी शरीअत के कटर पैरोकार हैं। 6 मैं इतना सरगरम था कि मसीह की जमातों को ईज़ा पहुँचाई। हाँ, मैं शरीअत पर अमल करने में रास्तबाज़ और बेइलज़ाम था।

हकीकी फ़ायदा

7 उस वक़्त यह सब कुछ मेरे नज़दीक नफ़ा का बाइस था, लेकिन अब मैं इसे मसीह में होने के बाइस नुकसान ही समझता हूँ। 8 हाँ, बल्कि मैं सब कुछ इस अज़ीमतरीन बात के सबब से नुकसान समझता हूँ कि मैं अपने खुदावंद मसीह ईसा को जानता हूँ। उसी की खातिर मुझे तमाम चीज़ों का नुकसान पहुँचा है। मैं उन्हें कूड़ा ही समझता हूँ ताकि मसीह को हासिल करूँ 9 और उसमें पाया जाऊँ। लेकिन मैं इस नौबत तक अपनी उस रास्तबाज़ी के ज़रीए नहीं पहुँच सकता जो शरीअत के ताबे रहने से हासिल होती है। इसके लिए वह रास्तबाज़ी ज़रूरी है जो मसीह पर इमान लाने से मिलती है, जो अल्लाह की तरफ़ से है और जो इमान पर मबनी होती है। 10 हाँ, मैं सब कुछ कूड़ा ही समझता हूँ ताकि मसीह को, उसके जी उठने की कुदरत और उसके दुखों में शरीक होने का फ़ज़ल जान लूँ। यों मैं उस की मौत का हमशक्ल बनता जा रहा हूँ, 11 इस उम्मीद में कि मैं किसी न किसी तरह मुरदों में से जी उठने की नौबत तक पहुँचूँगा।

इनाम हासिल करने के लिए दौड़ें

12 मतलब यह नहीं कि मैं यह सब कुछ हासिल कर चुका या कामिल हो चुका हूँ। लेकिन मैं मनज़िले-मक़सूद की तरफ़ दौड़ा हुआ जाता हूँ ताकि वह कुछ पकड़ लूँ जिसके लिए मसीह ईसा ने मुझे पकड़ लिया है। 13 भाइयो, मैं अपने बारे में यह खयाल नहीं करता कि मैं इसे हासिल कर चुका हूँ। लेकिन मैं इस एक ही बात पर ध्यान देता हूँ, जो कुछ मेरे पीछे है वह मैं भूलकर सख़्त तगो-दौ के साथ उस तरफ़ बढ़ता हूँ जो आगे पड़ा है। 14 मैं सीधा मनज़िले-मक़सूद की तरफ़ दौड़ा हुआ जाता हूँ ताकि वह इनाम हासिल करूँ जिसके लिए अल्लाह ने मुझे मसीह ईसा में आसमान पर बुलाया है।

मसीह में पुख़्ता होना

15 चुनौचे हममें से जितने कामिल हैं आएँ, हम ऐसी सोच रखें। और अगर आप किसी बात में फ़रक़ सोचते हैं तो अल्लाह आप पर यह भी ज़ाहिर करेगा। 16 जो भी हो, जिस मरहले तक हम पहुँच गए हैं आएँ, हम उसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारें।

17 भाइयो, मिलकर मेरे नक्शे-क़दम पर चलें। और उन पर खूब ध्यान दें जो हमारे नमूने पर चलते हैं। 18 क्योंकि जिस तरह मैंने आपको कई बार बताया है और अब रो रोकर बता रहा हूँ, बहुत-से लोग अपने चाल-चलन से ज़ाहिर करते हैं कि वह मसीह की सलीब के दुश्मन हैं। 19 ऐसे लोगों का अंजाम हलाकत है। खाने-पीने की पाबंदियाँ और खतने पर फ़ख़र उनका खुदा बन गया है। * हाँ, वह सिर्फ़ दुनियावी सोच रखते हैं। 20 लेकिन हम आसमान के शहरी हैं, और हम शिदत से इस इंतज़ार में हैं कि हमारा नजातदहिदा और खुदावंद ईसा मसीह वही से आए। 21 उस

* 3:19 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : उनका पेट और उनका अपनी शर्म पर फ़ख़र उनका खुदा बन गया है।

वक्त वह हमारे पस्तहाल बदनों को बदलकर अपने जलाली बदन के हमशक्ल बना देगा। और यह वह उस कुव्वत के ज़रीए करेगा जिससे वह तमाम चीज़ें अपने ताबे कर सकता है।

4

हिदायात

¹ चुनौचे मेरे प्यारे भाइयो, जिनका आरज़ूमंद मैं हूँ और जो मेरी मुसरत का बाइस और मेरा ताज हैं, खुदावंद में साबितकदम रहें। अज़ीज़ो, ² मैं युवदिया और सुंतुखे से अपील करता हूँ कि वह खुदावंद में एक जैसी सोच रखें। ³ हाँ मेरे हमखिदमत भाई, मेरी आपसे गुज़ारिश है कि आप उनकी मदद करें। क्योंकि वह अल्लाह की खुशाखबरी फैलाने की जिद्दो-जहद में मेरे साथ खिदमत करती रही हैं, उस मुकाबले में जिसमें क्लेमेंस और मेरे वह बाकी मददगार भी शरीक थे जिनके नाम किताबे-हयात में दर्ज हैं।

⁴ हर वक्त खुदावंद में खुशी मनाएँ। एक बार फिर कहता हूँ, खुशी मनाएँ।

⁵ आपकी नरमदिली तमाम लोगों पर ज़ाहिर हो। याद रखें कि खुदावंद आने को है। ⁶ अपनी किसी भी फ़िकर में उलझकर परेशान न हो जाएँ बल्कि हर हालत में दुआ और इल्तिजा करके अपनी दरखास्तें अल्लाह के सामने पेश करें। ध्यान रखें कि आप यह शुक़गुज़ारी की रूह में करें। ⁷ फिर अल्लाह की सलामती जो समझ से बाहर है आपके दिलों और खयालात को मसीह ईसा में महफूज़ रखेगी।

⁸ भाइयो, एक आखिरी बात, जो कुछ सच्चा है, जो कुछ शरीफ़ है, जो कुछ रास्त है, जो कुछ मुक़द्दस है, जो कुछ पसंदीदा है, जो कुछ उम्दा है, गरज़, अगर कोई अखलाकी या काबिले-तारीफ़ बात हो तो उसका खयाल रखें। ⁹ जो कुछ आपने मेरे वसीले से सीख लिया, हासिल कर लिया, सुन लिया या देख लिया है उस पर अमल करें। फिर सलामती का खुदा आपके साथ होगा।

जमात की माली इमदाद के लिए शुक़िया

¹⁰ मैं खुदावंद में निहायत ही खुश हुआ कि अब आखिरकार आपकी मेरे लिए फ़िकरमंदी दुबारा जाग उठी है। हाँ, मुझे पता है कि आप पहले भी फ़िकरमंद थे, लेकिन आपको इसका इज़हार करने का मौका नहीं मिला था। ¹¹ मैं यह अपनी किसी ज़रूरत की वजह से नहीं कह रहा, क्योंकि मैंने हर हालत में खुश रहने का राज़ सीख लिया है। ¹² मुझे दबाए जाने का तजरबा हुआ है और हर चीज़ कसरत से मुयस्सर होने का भी। मुझे हर हालत से खूब वाकिफ़ किया गया है, सेर होने से और भूका रहने से भी, हर चीज़ कसरत से मुयस्सर होने से और ज़रूरतमंद होने से भी। ¹³ मसीह में मैं सब कुछ करने के काबिल हूँ, क्योंकि वही मुझे तकवियत देता रहता है।

¹⁴ तो भी अच्छा था कि आप मेरी मुसीबत में शरीक हुए। ¹⁵ आप जो फ़िलिप्पी के रहनेवाले हैं खुद जानते हैं कि उस वक्त जब मसीह की मुनादी का काम आपके इलाके में शुरू हुआ था और मैं सूबा मकिदुनिया से निकल आया था तो सिर्फ़ आपकी जमात पूरे हिसाब-किताब के साथ पैसे देकर मेरी खिदमत में शरीक हुई। ¹⁶ उस वक्त भी जब मैं थिस्सलुनीके शहर में था आपने कई बार मेरी ज़रूरियात पूरी करने के लिए कुछ भेज दिया। ¹⁷ कहने का मतलब यह नहीं कि मैं आपसे कुछ पाना चाहता हूँ, बल्कि मेरी शदीद खाहिश यह है कि आपके देने से आप ही को अल्लाह से कसरत का सूद मिल जाए। ¹⁸ यही मेरी रसीद है। मैंने पूरी रकम वसूल पाई है बल्कि अब मेरे पास ज़रूरत से ज़्यादा है। जब से मुझे इपफ़्रुदितुस के हाथ आपका हदिया मिल गया है मेरे पास बहुत कुछ है। यह खुशबूदार और काबिले-क़बूल क़ुरबानी अल्लाह को पसंदीदा है। ¹⁹ जवाब में मेरा खुदा अपनी उस जलाली दौलत के मुवाफ़िक़ जो मसीह ईसा में है आपकी तमाम ज़रूरियात पूरी करे। ²⁰ अल्लाह हमारे बाप का जलाल अज़ल से अबद तक हो। आमीन।

सलाम और बरकत

²¹ तमाम मकामी मुक़द्दसीन को मसीह ईसा में मेरा सलाम देना। जो भाई मेरे साथ हैं वह आपको सलाम कहते हैं। ²² यहाँ के तमाम मुक़द्दसीन आपको सलाम कहते हैं, खासकर शहनशाह के घराने के भाई और बहनें। ²³ खुदावंद ईसा मसीह का फ़ज़ल आपकी रूह के साथ रहे। आमीन।

कुलुस्सियों

1 यह खत पौलुस की तरफ से है जो अल्लाह की मरजी से मसीह ईसा का रसूल है। साथ ही यह भाई तीमुथियुस की तरफ से भी है।

2 मैं कुलुस्से शहर के मुकद्दस भाइयों को लिख रहा हूँ जो मसीह पर ईमान लाए हैं :

खुदा हमारा बाप आपको फ़ज़ल और सलामती बख़्शे।

शुक्रगुजारी की दुआ

3 जब हम आपके लिए दुआ करते हैं तो हर वक़्त खुदा अपने खुदावंद ईसा मसीह के बाप का शुक्र करते हैं, 4 क्योंकि हमने आपके मसीह ईसा पर ईमान और आपकी तमाम मुकद्दसीन से मुहब्बत के बारे में सुन लिया है। 5 आपका यह ईमान और मुहब्बत वह कुछ ज़ाहिर करते हैं जिसकी आप उम्मीद रखते हैं और जो आसमान पर आपके लिए महफूज़ रखा गया है। और आपने यह उम्मीद उस वक़्त से रखी है जब से आपने पहली मरतबा सच्चाई का कलाम यानी अल्लाह की खुशख़बरी सुनी। 6 यह पैग़ाम जो आपके पास पहुँच गया पूरी दुनिया में फल ला रहा और बढ़ रहा है, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह यह आपमें भी उस दिन से काम कर रहा है जब आपने पहली बार इसे सुनकर अल्लाह के फ़ज़ल की पूरी हकीकत समझ ली। 7 आपने हमारे अज़ीज़ हमख़िदमत इफ़्रास से इस खुशख़बरी की तालीम पा ली थी। मसीह का यह वफ़ादार खादिम हमारी जगह आपकी ख़िदमत कर रहा है। 8 उसी ने हमें आपकी उस मुहब्बत के बारे में बताया जो रूहल-कुद्स ने आपके दिलों में डाल दी है।

9 इस वजह से हम आपके लिए दुआ करने से बाज़ नहीं आए बल्कि यह माँगते रहते हैं कि अल्लाह आपको हर स्थानी हिकमत और समझ से नवाज़कर अपनी मरजी के इल्म से भर दे। 10 क्योंकि फिर ही आप अपनी ज़िंदगी खुदावंद के लायक गुज़ार सकेंगे और हर तरह से उसे पसंद आएँगे। हाँ, आप हर किस्म का अच्छा काम करके फल लाएँगे और अल्लाह के इल्मो-इरफ़ान में तरक्की करेंगे। 11 और आप उस की जलाली कुदरत से मिलनेवाली हर किस्म की कुव्वत से तकवियत पाकर हर वक़्त साबितक़दमी और सब्र से चल सकेंगे। आप खुशी से 12 बाप का शुक्र करेंगे जिसने आपको उस मीरास में हिस्सा लेने के लायक बना दिया जो उसके रौशनी में रहनेवाले मुकद्दसीन को हासिल है। 13 क्योंकि वही हमें तारीकी के इख्तियार से रिहाई देकर अपने प्यारे फ़रज़ंद की बादशाही में लाया, 14 उस वाहिद शख्स के इख्तियार में जिसने हमारा फ़िदा देकर हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर दिया।

मसीह की शख्सियत और काम

15 अल्लाह को देखा नहीं जा सकता, लेकिन हम मसीह को देख सकते हैं जो अल्लाह की सूरत और कायनात का पहलौठा है। 16 क्योंकि अल्लाह ने उसी में सब कुछ खलक किया, खाह आसमान पर हो या ज़मीन पर, आँखों को नज़र आए या न, खाह शाही तरज़, कुव्वतें, हुक्मरान या इख्तियारवाले हूँ। सब कुछ मसीह के ज़रीए और उसी के लिए खलक हुआ। 17 वही सब चीज़ों से पहले है और उसी में सब कुछ कायम रहता है। 18 और वह बदन यानी अपनी जमात का सर भी है। वही इब्तिदा है, और चूँकि पहले वही मुरदों में से जी उठा इसलिए वही उनमें से पहलौठा भी है ताकि वह सब बातों में अव्वल हो। 19 क्योंकि अल्लाह को पसंद आया कि मसीह में उस की पूरी मामूरी सुकूनत करे 20 और वह मसीह के ज़रीए सब बातों की अपने साथ सुलह करा ले, खाह वह ज़मीन की हूँ खाह आसमान की। क्योंकि उसने मसीह के सलीब पर बहाए गए खून के वसीले से सुलह-सलामती कायम की।

21 आप भी पहले अल्लाह के सामने अज़नबी थे और दुश्मन की-सी सोच रखकर बुरे काम करते थे। 22 लेकिन अब उसने मसीह के इनसानी बदन की मौत से आपके साथ सुलह कर ली है ताकि वह आपको मुकद्दस, बेदाग और बेइलज़ाम हालत में अपने हुज़ूर खड़ा करे। 23 बेशक अब ज़रूरी है कि आप ईमान में कायम रहें, कि आप ठोस बुनियाद पर मज़बूती से खड़े रहें और उस खुशख़बरी की उम्मीद से हट न जाएँ जो आपने सुन ली है। यह वही पैग़ाम है जिसकी मुनादी दुनिया में हर मखलूक के सामने कर दी गई है और जिसका खादिम मैं पौलुस बन गया हूँ।

जमात के खादिम की हैसियत से पौलुस की ख़िदमत

24 अब मैं उन दुखों के बाइस खुशी मनाता हूँ जो मैं आपकी खातिर उठा रहा हूँ। क्योंकि मैं अपने जिस्म में मसीह के बदन यानी उस की जमात की खातिर मसीह की मुसीबतों की वह कमियाँ पूरी कर रहा हूँ जो अब तक रह गई हैं। 25 हाँ, अल्लाह ने मुझे अपनी जमात का खादिम बनाकर यह ज़िम्मादारी दी कि मैं आपको अल्लाह का पूरा कलाम सुना दूँ, 26 वह राज़ जो अज़ल से तमाम गुज़री नसलों से पोशीदा रहा था लेकिन अब मुकद्दसीन पर ज़ाहिर किया गया है। 27 क्योंकि अल्लाह चाहता था कि वह जान लें कि ग़ैरयहूदियों में यह राज़ कितना बेशक़ीमत और जलाली है। और यह राज़ है क्या? यह कि मसीह आपमें है। वही आपमें है जिसके बाइस हम अल्लाह के जलाल में शरीक होने की उम्मीद रखते हैं। 28 यों हम सबको मसीह का पैग़ाम सुनाते हैं। हर मुमकिन हिकमत से हम उन्हें समझाते और तालीम देते हैं ताकि हर एक को मसीह में कामिल हालत में अल्लाह के हुज़ूर पेश करें। 29 यही मक़सद पूरा करने के लिए मैं सरख़ मेहनत करता हूँ। हाँ, मैं पूरी जिद्दो-जहद करके मसीह की उस कुव्वत का सहारा लेता हूँ जो बड़े ज़ोर से मेरे अंदर काम कर रही है।

2

1 मैं चाहता हूँ कि आप जान लें कि मैं आपके लिए किस क्रूर जाँफिशानी कर रहा हूँ—आपके लिए, लौदीकियावालों के लिए और उन तमाम ईमानदारों के लिए भी जिनकी मेरे साथ मुलाकात नहीं हुई। 2 मेरी कोशिश यह है कि उनकी दिली हौसलाअफ़जाई की जाए और वह मुहब्बत में एक हो जाएँ, कि उन्हें वह ठोस एतमाद हासिल हो जाए जो पूरी समझ से पैदा होता है। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि वह अल्लाह का राज़ जान लें। राज़ क्या है? मसीह खुद। 3 उसी में हिकमत और इल्मो-इरफ़ान के तमाम खज़ाने पोशीदा हैं।

4 गरज़ ख़बरदार रहें कि कोई आपको बज़ाहिर सहीह और मीठे मीठे अलफ़ाज़ से धोका न दे। 5 क्योंकि गो मैं जिस्म के लिहाज़ से हाज़िर नहीं हूँ, लेकिन रूह में मैं आपके साथ हूँ। और मैं यह देखकर खुश हूँ कि आप कितनी मुनज़ज़म ज़िंदगी गुज़ारते हैं, कि आपका मसीह पर ईमान कितना पुरख़ा है।

मसीह में ज़िंदगी

6 आपने ईसा मसीह को ख़ुदावन्द के तौर पर क़बूल कर लिया है। अब उसमें ज़िंदगी गुज़ारें। 7 उसमें जड़ पकड़ें, उस पर अपनी ज़िंदगी तामीर करें, उस ईमान में मज़बूत रहें जिसकी आपको तालीम दी गई है और शक्रगुज़ारी से लबरेज़ हो जाएँ।

8 मुहतात रहें कि कोई आपको फलसफ़ियाना और महज़ फ़रेब देनेवाली बातों से अपने जाल में न फँसा ले। ऐसी बातों का सरचश्मा मसीह नहीं बल्कि इनसानी रिवायतें और इस दुनिया की कुव्वतें हैं। 9 क्योंकि मसीह में उलूहियत की सारी मामूरी मुजस्सम होकर सुकूनत करती है। 10 और आपको जो मसीह में हैं उस की मामूरी में शरीक कर दिया गया है। वही हर हुक्मरान और इख्तियारवाले का सर है।

11 उसमें आते वक़्त आपका खतना भी करवाया गया। लेकिन यह खतना इनसानी हाथों से नहीं किया गया बल्कि मसीह के वसीले से। उस वक़्त आपकी पुरानी फ़ितरत उतार दी गई, 12 आपको बपतिस्मा देकर मसीह के साथ दफनाया गया और आपको ईमान से ज़िंदा कर दिया गया। क्योंकि आप अल्लाह की कुदरत पर ईमान लाए थे, उसी कुदरत पर जिसने मसीह को मुरदों में से ज़िंदा कर दिया था। 13 पहले आप अपने गुनाहों और नामख़तून जिस्मानी हालत के सबब से मुरदा थे, लेकिन अब अल्लाह ने आपको मसीह के साथ ज़िंदा कर दिया है। उसने हमारे तमाम गुनाहों को मुआफ़ कर दिया है। 14 हमारे क़र्ज़ की जो रसीद अपनी शरायत की बिना पर हमारे खिलाफ़ थी उसे उसने मनसूख़ कर दिया। हाँ, उसने हमसे दूर करके उसे कीलों से सलीब पर जड़ दिया। 15 उसने हुक्मरानों और इख्तियारवालों से उनका असला छीनकर सबके सामने उनकी स्सवाई की। हाँ, मसीह की सलीबी मौत से वह अल्लाह के कैदी बन गए और उन्हें फ़तह के जुलूस में उसके पीछे पीछे चलना पड़ा।

16 चुनौचे कोई आपको इस वजह से मुजरिम न ठहराए कि आप क्या क्या खाते-पीते या कौन कौन-सी ईदें मनाते हैं। इसी तरह कोई आपकी अदालत न करे अगर आप हिलाल की ईद या सबत का दिन नहीं मनाते। 17 यह चीज़ें तो सिर्फ़ आनेवाली हकीकत का साया ही हैं जबकि यह हकीकत खुद मसीह में पाई जाती है। 18 ऐसे लोग आपको मुजरिम न ठहराएँ जो ज़ाहिरी फ़रोतनी और फ़रिशतों की पूजा पर इसरा़र करते हैं। बड़ी तफ़सील से अपनी रोयाओं में देखी हुई बातें बयान करते करते उनके ग़ैररूहानी ज़हन खाहमखाह फूल जाते हैं। 19 यों उन्होंने मसीह के साथ लगे रहना छोड़ दिया अगरचे वह बदन का सर है। वही जोड़ों और पट्टों के ज़रीए पूरे बदन को सहारा देकर उसके मुख़लिफ़ हिस्सों को जोड़ देता है। यों पूरा बदन अल्लाह की मदद से तरक्की करता जाता है।

मसीह के साथ मरना और ज़िंदगी गुज़ारना

20 आप तो मसीह के साथ मरकर दुनिया की कुव्वतों से आज़ाद हो गए हैं। अगर ऐसा है तो आप ज़िंदगी ऐसे क्यों गुज़ारते हैं जैसे कि आप अभी तक इस दुनिया की मिलकियत हैं? आप क्यों इसके अहक़ाम के ताबे रहते हैं? 21 मसलन “इसे हाथ न लगाना, वह न चखना, यह न छूना।” 22 इन तमाम चीज़ों का मक़सद तो यह है कि इस्तेमाल होकर ख़त्म हो जाएँ। यह सिर्फ़ इनसानी अहक़ाम और तालीमात हैं। 23 बेशक़ यह अहक़ाम जो घड़े हुए मज़हबी फ़रायज़, नाम-निहाद फ़रोतनी और जिस्म के सख़्त दबाव का तकाज़ा करते हैं हिकमत पर मबनी तो लगते हैं, लेकिन यह बेकार हैं और सिर्फ़ जिस्म ही की ख़ाहिशात पूरी करते हैं।

3

1 आपको मसीह के साथ ज़िंदा कर दिया गया है, इसलिए वह कुछ तलाश करें जो आसमान पर है जहाँ मसीह अल्लाह के दहने हाथ बैठा है। 2 दुनियावी चीज़ों को अपने खयालों का मरकज़ न बनाएँ बल्कि आसमानी चीज़ों को। 3 क्योंकि आप मर गए हैं और अब आपकी ज़िंदगी मसीह के साथ अल्लाह में पोशीदा है। 4 मसीह ही आपकी ज़िंदगी है। जब वह ज़ाहिर हो जाएगा तो आप भी उसके साथ ज़ाहिर होकर उसके जलाल में शरीक हो जाएंगे।

पुरानी और नई ज़िंदगी

5 चुनौचे उन दुनियावी चीज़ों को मार डालें जो आपके अंदर काम कर रही हैं : ज़िनाकारी, नापाकी, शहवतपरस्ती, बुरी ख़ाहिशात और लालच (लालच तो एक किस्म की बुतपरस्ती है)। 6 अल्लाह का ग़ज़ब ऐसी ही बातों की वजह से नाज़िल होगा। 7 एक वक़्त था जब आप भी इनके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते थे, जब आपकी ज़िंदगी इनके काबू में थी।

8 लेकिन अब वक्त आ गया है कि आप यह सब कुछ यानी गुस्सा, तैश, बदसलूकी, बुहतान और गंदी ज़बान खस्ताहाल कपड़े की तरह उतारकर फेंक दें। 9 एक दूसरे से बात करते वक्त झूट मत बोलना, क्योंकि आपने अपनी पुरानी फितरत उस की हरकतों समेत उतार दी है। 10 साथ साथ आपने नई फितरत पहन ली है, वह फितरत जिसकी तजदीद हमारा खालिक अपनी सूरत पर करता जा रहा है ताकि आप उसे और बेहतर तौर पर जान लें। 11 जहाँ यह काम हो रहा है वहाँ लोगों में कोई फरक नहीं है, खाह कोई गैरयहूदी हो या यहूदी, मखतून हो या नामखतून, गैरयूनानी हो या स्कूती, * गुलाम हो या आज़ाद। कोई फरक नहीं पड़ता, सिर्फ़ मसीह ही सब कुछ और सबमें है।

12 अल्लाह ने आपको चुनकर अपने लिए मखसूसो-मुकद्दस कर लिया है। वह आपसे मुहब्बत रखता है। इसलिए अब तरस, नेकी, फ़रोतनी, नरमदिली और सब्र को पहन लें। 13 एक दूसरे को बरदाश्त करें, और अगर आपकी किसी से शिकायत हो तो उसे मुआफ़ कर दें। हाँ, यों मुआफ़ करें जिस तरह खुदावंद ने आपको मुआफ़ कर दिया है। 14 इनके अलावा मुहब्बत भी पहन लें जो सब कुछ बाँधकर कामिलियत की तरफ़ ले जाती है। 15 मसीह की सलामती आपके दिलों में हुकूमत करे। क्योंकि अल्लाह ने आपको इसी सलामती की ज़िंदगी गुज़ारने के लिए बुलाकर एक बदन में शामिल कर दिया है। शुक्रगुज़ार भी रहें। 16 आपकी ज़िंदगी में मसीह के कलाम की पूरी दौलत घर कर जाए। एक दूसरे को हर तरह की हिकमत से तालीम देते और समझाते रहें। साथ साथ अपने दिलों में अल्लाह के लिए शुक्रगुज़ारी के साथ ज़बूर, हम्दो-सना और स्तहानी गीत गाते रहें। 17 और जो कुछ भी आप करें खाह ज़बानी हो या अमली वह खुदावंद ईसा का नाम लेकर करें। हर काम में उसी के वसीले से खुदा बाप का शुक्र करें।

नई ज़िंदगी में ताल्लुकात कैसे हूँ

18 बीवियो, अपने शौहर के ताबे रहें, क्योंकि जो खुदावंद में है उसके लिए यही मुनासिब है। 19 शौहरो, अपनी बीवियों से मुहब्बत रखें। उनसे तलखमिज़ाजी से पेश न आएँ। 20 बच्चो, हर बात में अपने माँ-बाप के ताबे रहें, क्योंकि यही खुदावंद को पसंद है। 21 वालिदो, अपने बच्चों को मुशतइल न करें, वरना वह बेदिल हो जाएंगे। 22 गुलामो, हर बात में अपने दुनियावी मालिकों के ताबे रहें। न सिर्फ़ उनके सामने ही और उन्हें खुश रखने के लिए खिदमत करें बल्कि खुलूसदिली और खुदावंद का खौफ़ मानकर काम करें। 23 जो कुछ भी आप करते हैं उसे पूरी लग्न के साथ करें, इस तरह जैसा कि आप न सिर्फ़ इनसानों की बल्कि खुदावंद की खिदमत कर रहे हैं। 24 आप तो जानते हैं कि खुदावंद आपको इसके मुआवज़े में वह मीरास देगा जिसका वादा उसने किया है। हकीकत में आप खुदावंद मसीह की ही खिदमत कर रहे हैं। 25 लेकिन जो ग़लत काम करे उसे अपनी ग़लतियों का मुआवज़ा भी मिलेगा। अल्लाह तो किसी की भी जानिबदारी नहीं करता।

4

1 मालिको, अपने गुलामों के साथ मुसिफ़ाना और जायज़ सुलूक करें। आप तो जानते हैं कि आसमान पर आपका भी मालिक है।

हिदायात

2 दुआ में लगे रहें। और दुआ करते वक्त शुक्रगुज़ारी के साथ जागते रहें। 3 साथ साथ हमारे लिए भी दुआ करें ताकि अल्लाह हमारे लिए कलाम सुनाने का दरवाज़ा खोले और हम मसीह का राज़ पेश कर सकें। आख़िर मैं इसी राज़ की वजह से कैद में हूँ। 4 दुआ करें कि मैं इसे यों पेश करूँ जिस तरह करना चाहिए, कि इसे साफ़ समझा जा सके।

5 जो अब तक ईमान न लाए हों उनके साथ दानिशमंदाना सुलूक करें। इस सिलसिले में हर मौक़े से फ़ायदा उठाएँ। 6 आपकी गुफ़्तगू हर वक्त मेहरबान हो, ऐसी कि मज़ा आए और आप हर एक को मुनासिब ज़वाब दे सकें।

आखिरी सलामो-दुआ

7 जहाँ तक मेरा ताल्लुक है हमारा अज़ीज़ भाई तुख़िकुस आपको सब कुछ बता देगा। वह एक वफ़ादार खादिम और खुदावंद में हमखिदमत रहा है। 8 मैंने उसे खासकर इसलिए आपके पास भेज दिया ताकि आपको हमारा हाल मालूम हो जाए और वह आपकी होसलाअफ़ज़ाई करे। 9 वह हमारे वफ़ादार और अज़ीज़ भाई उनेसिमस के साथ आपके पास आ रहा है, वही जो आपकी जमात से है। दोनों आपको वह सब कुछ सुना देंगे जो यहाँ हो रहा है।

10 अरिस्तरख़ुस जो मेरे साथ कैद में है आपको सलाम कहता है और इसी तरह बरनबास का कज़न * मरकुस भी। (आपको उसके बारे में हिदायात दी गई है। जब वह आपके पास आए तो उसे खुशआमदीद कहना।) 11 ईसा जो यूसतुस कहलाता है भी आपको सलाम कहता है। उनमें से जो मेरे साथ अल्लाह की बादशाही में खिदमत कर रहे हैं सिर्फ़ यह तीन मर्द यहूदी हैं। और यह मेरे लिए तसल्ली का बाइस रहे हैं।

12 मसीह ईसा का खादिम इपफ़्रास भी जो आपकी जमात से है सलाम कहता है। वह हर वक्त बड़ी जिद्दो-जहद के साथ आपके लिए दुआ करता है। उस की खास दुआ यह है कि आप मज़बूती के साथ खड़े रहें, कि आप बालिग़ मसीही बनकर हर बात में अल्लाह की मरज़ी के

* 3:11 एक कबीला जो ज़लील समझा जाता था।

* 4:10 यूनानी लफ़्ज़ से ज़ाहिर नहीं होता कि मरकुस चचा, मामूँ, फूफी या खाला का लड़का है।

मुताबिक चले। ¹³ मैं खुद इसकी तसदीक कर सकता हूँ कि उसने आपके लिए सख्त मेहनत की है बल्कि लौदीकिया और हियरापुलिस की जमातों के लिए भी। ¹⁴ हमारे अज़ीज़ डाक्टर लूका और देमास आपको सलाम कहते हैं।

¹⁵ मेरा सलाम लौदीकिया की जमात को देना और इसी तरह नुंफ़ास को उस जमात समेत जो उसके घर में जमा होती है। ¹⁶ यह पढ़ने के बाद ध्यान दें कि लौदीकिया की जमात में भी यह ख़त पढ़ा जाए और आप लौदीकिया का ख़त भी पढ़ें। ¹⁷ अरखिप्पुस को बता देना, ख़बरदार कि आप वह खिदमत तकमील तक पहुँचाएँ जो आपको खुदावंद में सौंपी गई है।

¹⁸ मैं अपने हाथ से यह अलफ़ाज़ लिख रहा हूँ। मेरी यानी पौलुस की तरफ़ से सलाम। मेरी ज़ंजीरें मत भूलना! अल्लाह का फ़ज़ल आपके साथ होता रहे।

1 थिस्सलुनीकियों

¹ यह खत पौलुस, सिलवानुस और तीमुथियुस की तरफ से है।

हम थिस्सलुनीकियों की जमात को लिख रहे हैं, उन्हें जो खुदा बाप और खुदावंद ईसा मसीह पर ईमान लाए हैं।

अल्लाह आपको फ़ज़ल और सलामती बरख़्शे।

थिस्सलुनीकियों की ज़िंदगी और ईमान

² हम हर वक़्त आप सबके लिए खुदा का शुक्र करते और अपनी दुआओं में आपको याद करते रहते हैं। ³ हमें अपने खुदा बाप के हुज़ूर खासकर आपका अमल, मेहनत-मशक्कत और साबितकदमी याद आती रहती है। आप अपना ईमान कितनी अच्छी तरह अमल में लाए, आपने मुहब्बत की रूह में कितनी मेहनत-मशक्कत की और आपने कितनी साबितकदमी दिखाई, ऐसी साबितकदमी जो सिर्फ़ हमारे खुदावंद ईसा मसीह पर उम्मीद ही दिला सकती है। ⁴ भाइयो, अल्लाह आपसे मुहब्बत रखता है, और हमें पूरा इल्म है कि उसने आपको वाकई चुन लिया है। ⁵ क्योंकि जब हमने अल्लाह की खुशख़बरी आप तक पहुँचाई तो न सिर्फ़ बातें करके बल्कि कुव्वत के साथ, रूहल-कुदस में और पूरे एतमाद के साथ। आप जानते हैं कि जब हम आपके पास थे तो हमने किस तरह की ज़िंदगी गुज़ारी। जो कुछ हमने किया वह आपकी खातिर किया। ⁶ उस वक़्त आप हमारे और खुदावंद के नमूने पर चलने लगे। अगरचे आप बड़ी मुसीबत में पड़ गए तो भी आपने हमारे पैग़ाम को उस खुशी के साथ कबूल किया जो सिर्फ़ रूहल-कुदस दे सकता है। ⁷ यों आप सूबा मकिदुनिया और सूबा अख़या के तमाम ईमानदारों के लिए नमूना बन गए। ⁸ खुदावंद के पैग़ाम की आवाज़ आपमें से निकलकर न सिर्फ़ मकिदुनिया और अख़या में सुनाई दी, बल्कि यह ख़बर कि आप अल्लाह पर ईमान रखते हैं हर जगह तक पहुँच गई है। नतीजे में हमें कुछ कहने की ज़रूरत नहीं रही, ⁹ क्योंकि लोग हर जगह बात कर रहे हैं कि आपने हमें किस तरह खुशआमदीद कहा है, कि आपने किस तरह बुतों से मुँह फेरकर अल्लाह की तरफ़ रूजू किया ताकि ज़िंदा और हकीक़ी खुदा की खिदमत करें। ¹⁰ लोग यह भी कह रहे हैं कि अब आप इस इंतज़ार में हैं कि अल्लाह का फ़रज़ंद आसमान पर से आए यानी ईसा जिसे अल्लाह ने मुरदों में से ज़िंदा कर दिया और जो हमें आनेवाले ग़ज़ब से बचाएगा।

2

थिस्सलुनीके में पौलुस का काम

¹ भाइयो, आप जानते हैं कि हमारा आपके पास आना बेफ़ायदा न हुआ। ² आप उस दुख से भी वाकिफ़ हैं जो हमें आपके पास आने से पहले सहना पड़ा, कि फ़िलिप्पी शहर में हमारे साथ कितनी बदसलूकी हुई थी। तो भी हमने अपने खुदा की मदद से आपको उस की खुशख़बरी सुनाने की ज़रूरत की हालाँकि बहुत मुख़ालफ़त का सामना करना पड़ा। ³ क्योंकि जब हम आपको उभारते हैं तो इसके पीछे न तो कोई ग़लत नीयत होती है, न कोई नापाक मक़सद या चालाकी। ⁴ नहीं, अल्लाह ने खुद हमें जाँचकर इस लायक़ समझा कि हम उस की खुशख़बरी सुनाने की ज़िम्मादारी सँभालें। इसी बिना पर हम बोलते हैं, इनसानों को खुश रखने के लिए नहीं बल्कि अल्लाह को जो हमारे दिलों को परखता है। ⁵ आपको भी मालूम है कि हमने न खुशामद से काम लिया, न हम पसे-परदा लालची थे—अल्लाह हमारा गवाह है! ⁶ हम इस मक़सद से काम नहीं कर रहे थे कि लोग हमारी इज़्ज़त करें, खाह आप हों या दीगर लोग। ⁷ मसीह के रसूलों की हैसियत से हम आपके लिए माली बोझ बन सकते थे, लेकिन हम आपके दरमियान होते हुए नरमदिल रहे, ऐसी माँ की तरह जो अपने छोटे बच्चों की परवरिश करती है। ⁸ हमारी आपके लिए चाहत इतनी शदीद थी कि हम आपको न सिर्फ़ अल्लाह की खुशख़बरी की बरकत में शरीक़ करने को तैयार थे बल्कि अपनी ज़िंदगियों में भी। हाँ, आप हमें इतने अजीज़ थे! ⁹ भाइयो, बेशक़ आपको याद है कि हमने कितनी सख़्त मेहनत-मशक्कत की। दिन-रात हम काम करते रहे ताकि अल्लाह की खुशख़बरी सुनाते वक़्त किसी पर बोझ न बनें।

¹⁰ आप और अल्लाह हमारे गवाह हैं कि आप ईमान लानेवालों के साथ हमारा सुलूक कितना मुक़द्दस, रास्त और बेइलज़ाम था। ¹¹ क्योंकि आप जानते हैं कि हमने आपमें से हर एक से ऐसा सुलूक किया जैसा बाप अपने बच्चों के साथ करता है। ¹² हम आपकी हौसलाअफ़ज़ाई करते, आपको तसल्ली देते और आपको समझाते रहे कि आप अल्लाह के लायक़ ज़िंदगी गुज़ारें, क्योंकि वह आपको अपनी बादशाही और जलाल में हिस्सा लेने के लिए बुलाता है।

¹³ एक और वजह है कि हम हर वक़्त खुदा का शुक्र करते हैं। जब हमने आप तक अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाया तो आपने उसे सुनकर यों कबूल किया जैसा यह हकीक़त में है यानी अल्लाह का कलाम जो इनसानों की तरफ़ से नहीं है और जो आप ईमानदारों में काम कर रहा है। ¹⁴ भाइयो, न सिर्फ़ यह बल्कि आप यहदिया में अल्लाह की उन जमातों के नमूने पर चल पड़े जो मसीह ईसा में हैं। क्योंकि आपको अपने हमवतनों के हाथों वह कुछ सहना पड़ा जो उन्हें पहले ही अपने हमवतन यहदियों से सहना पड़ा था। ¹⁵ हाँ, यहदियों ने न सिर्फ़ खुदावंद ईसा और नबियों को कल्ल किया बल्कि हमें भी अपने बीच में से निकाल दिया। यह लोग अल्लाह को पसंद नहीं आते और तमाम लोगों के खिलाफ़

होकर 16 हमें इससे रोकने की कोशिश करते हैं कि गैरयहूदियों को अल्लाह की खुशखबरी सुनाएँ, ऐसा न हो कि वह नजात पाएँ। यों वह हर वक्त अपने गुनाहों का प्याला किनारे तक भरते जा रहे हैं। लेकिन अल्लाह का पूरा ग़ज़ब उन पर नाज़िल हो चुका है।

पौलस की उनसे दुबारा मिलने की खाहिश

17 भाइयो, जब हमें कुछ देर के लिए आपसे अलग कर दिया गया (गो हम दिल से आपके साथ रहे) तो हमने बड़ी आरज़ू से आपसे मिलने की पूरी कोशिश की। 18 क्योंकि हम आपके पास आना चाहते थे। हाँ, मैं पौलस ने बार बार आने की कोशिश की, लेकिन इबलीस ने हमें रोक लिया। 19 आखिर आप ही हमारी उम्मीद और खुशी का बाइस हैं। आप ही हमारा इनाम और हमारा ताज हैं जिस पर हम अपने खुदावंद ईसा के हुज़ूर फ़ख़र करेंगे जब वह आएगा। 20 हाँ, आप हमारा जलाल और खुशी हैं।

3

1 आखिरकार हम यह हालत मज़ीद बरदाश्त न कर सके। हमने फैसला किया कि अकेले ही अथेने में रहकर 2 तीमुथियुस को भेज देंगे जो हमारा भाई और मसीह की खुशखबरी फैलाने में हमारे साथ अल्लाह की खिदमत करता है। हमने उसे भेज दिया ताकि वह आपको मज़बूत करे और ईमान में आपकी हौसलाअफ़ज़ाई करे 3 ताकि कोई इन मुसीबतों से बेचैन न हो जाए। क्योंकि आप खुद जानते हैं कि इनका सामना करना हमारे लिए अल्लाह की मरज़ी है। 4 बल्कि जब हम आपके पास थे तो हमने इसकी पेशगोई की कि हमें मुसीबत बरदाश्त करनी पड़ेगी। और ऐसा ही हुआ जैसा कि आप खूब जानते हैं। 5 यही वजह थी कि मैंने तीमुथियुस को भेज दिया। मैं यह हालात बरदाश्त न कर सका, इसलिए मैंने उसे आपके ईमान को मालूम करने के लिए भेज दिया। ऐसा न हो कि आजमानेवाले ने आपको यों आजमाइश में डाल दिया हो कि हमारी आप पर मेहनत ज़ाया जाए।

6 लेकिन अब तीमुथियुस लौट आया है, और वह आपके ईमान और मुहब्बत के बारे में अच्छी खबर लेकर आया है। उसने हमें बताया कि आप हमें बहुत याद करते हैं और हमसे उतना ही मिलने के आरज़ूमंद हैं जितना कि हम आप से। 7 भाइयो, आप और आपके ईमान के बारे में यह सुनकर हमारी हौसलाअफ़ज़ाई हुई, हालाँकि हम खुद तरह तरह के दबाव और मुसीबतों में फँसे हुए हैं। 8 अब हमारी जान में जान आ गई है, क्योंकि आप मज़बूती से खुदावंद में कायम हैं। 9 हम आपकी वजह से अल्लाह के कितने शुक्रगुज़ार हैं! यह खुशी नाकाबिले-बयान है जो हम आपकी वजह से अल्लाह के हुज़ूर महसूस करते हैं। 10 दिन-रात हम बड़ी संजीदगी से दुआ करते रहते हैं कि आपसे दुबारा मिलकर वह कमियाँ पूरी करें जो आपके ईमान में अब तक रह गई हैं।

11 अब हमारा खुदा और बाप खुद और हमारा खुदावंद ईसा रास्ता खोले ताकि हम आप तक पहुँच सकें। 12 खुदावंद करे कि आपकी एक दूसरे और दीगर तमाम लोगों से मुहब्बत इतनी बढ़ जाए कि वह यों दिल से छलक उठे जिस तरह आपके लिए हमारी मुहब्बत भी छलक रही है। 13 क्योंकि इस तरह अल्लाह आपके दिलों को मज़बूत करेगा और आप उस वक्त हमारे खुदा और बाप के हुज़ूर बेइलज़ाम और मुक़द्दस साबित होंगे जब हमारा खुदावंद ईसा अपने तमाम मुक़द्दसीन के साथ आएगा। आमीन।

4

अल्लाह को पसंदीदा ज़िंदगी

1 भाइयो, एक आखिरी बात, आपने हमसे सीख लिया था कि हमारी ज़िंदगी किस तरह होनी चाहिए ताकि वह अल्लाह को पसंद आए। और आप इसके मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारते भी हैं। अब हम खुदावंद ईसा में आपसे दरखास्त और आपकी हौसलाअफ़ज़ाई करते हैं कि आप इसमें मज़ीद तरक्की करते जाएँ। 2 आप तो उन हिदायात से वाकिफ़ हैं जो हमने आपको खुदावंद ईसा के वसीले से दी थीं। 3 क्योंकि अल्लाह की मरज़ी है कि आप उसके लिए मख़सूसो-मुक़द्दस हों, कि आप ज़िनाकारी से बाज़ रहें। 4 हर एक अपने बदन पर यों क़ाबू पाना सीख ले कि वह मुक़द्दस और शरीफ़ ज़िंदगी गुज़ार सके। 5 वह ग़ैरईमानदारों की तरह जो अल्लाह से नावाकिफ़ हैं शहवतपरस्ती का शिकार न हो। 6 इस मामले में कोई अपने भाई का गुनाह न करे, न उससे ग़लत फ़ायदा उठाए। खुदावंद ऐसे गुनाहों की सज़ा देता है। हम यह सब कुछ बता चुके और आपको आगाह कर चुके हैं। 7 क्योंकि अल्लाह ने हमें नापाक ज़िंदगी गुज़ारने के लिए नहीं बुलाया बल्कि मख़सूसो-मुक़द्दस ज़िंदगी गुज़ारने के लिए। 8 इसलिए जो यह हिदायात रद्द करता है वह इनसान को नहीं बल्कि अल्लाह को रद्द करता है जो आपको अपना मुक़द्दस स्ह दे देता है।

9 यह लिखने की ज़रूरत नहीं कि आप दूसरे ईमानदारों से मुहब्बत रखें। अल्लाह ने खुद आपको एक दूसरे से मुहब्बत रखना सिखाया है। 10 और हकीकतन आप मकिदुनिया के तमाम भाइयों से ऐसी ही मुहब्बत रखते हैं। तो भी भाइयो, हम आपकी हौसलाअफ़ज़ाई करना चाहते हैं कि आप इसमें मज़ीद तरक्की करते जाएँ। 11 अपनी इज़्जत इसमें बरकरार रखें कि आप सुकून से ज़िंदगी गुज़ारें, अपने फ़रायज़ अदा करें और अपने हाथों से काम करें, जिस तरह हमने आपको कह दिया था। 12 जब आप ऐसा करेंगे तो ग़ैरईमानदार आपकी क़दर करेंगे और आप किसी भी चीज़ के मुहताज नहीं रहेंगे।

खुदावंद की आमद

13 भाइयो, हम चाहते हैं कि आप उनके बारे में हकीकत जान लें जो सो गए हैं ताकि आप दूसरों की तरह जिनकी कोई उम्मीद नहीं मातम न करें। 14 हमारा ईमान है कि ईसा मर गया और दुबारा जी उठा, इसलिए हमारा यह भी ईमान है कि जब ईसा वापस आएगा तो अल्लाह उसके साथ उन ईमानदारों को भी वापस लाएगा जो मौत की नींद सो गए हैं।

15 जो कुछ हम अब आपको बता रहे हैं वह खुदावंद की तालीम है। खुदावंद की आमद पर हम जो ज़िंदा होंगे सोए हुए लोगों से पहले खुदावंद से नहीं मिलेंगे। 16 उस वक़्त ऊँची आवाज़ से हुक्म दिया जाएगा, फ़रिश्ताएँ-आज़म की आवाज़ सुनाई देगी, अल्लाह का तुरम बजेगा और खुदावंद खुद आसमान पर से उतर आएगा। तब पहले वह जी उठेंगे जो मसीह में मर गए थे। 17 इनके बाद ही हमें जो ज़िंदा होंगे बादलों पर उठा लिया जाएगा ताकि हवा में खुदावंद से मिलें। फिर हम हमेशा खुदावंद के साथ रहेंगे। 18 चुनौति इन अलफ़ाज़ से एक दूसरे को तसल्ली दिया करें।

5

खुदावंद की आमद के लिए तैयार रहना

1 भाइयो, इसकी ज़रूरत नहीं कि हम आपको लिखें कि यह सब कुछ कब और किस मौक़े पर होगा। 2 क्योंकि आप खुद ख़ूब जानते हैं कि खुदावंद का दिन यों आएगा जिस तरह चोर रात के वक़्त घर में घुस आता है। 3 जब लोग कहेंगे, “अब अमनो-अमान है,” तो हलाकत अचानक ही उन पर आन पड़ेगी। वह इस तरह मुसीबत में पड़ जाएंगे जिस तरह वह औरत जिसका बच्चा पैदा हो रहा है। वह हरगिज़ नहीं बच सकेंगे। 4 लेकिन आप भाइयो तारीकी की गिरिफ़्त में नहीं हैं, इसलिए यह दिन चोर की तरह आप पर ग़ालिब नहीं आना चाहिए। 5 क्योंकि आप सब रौशनी और दिन के फ़रज़ंद हैं। हमारा रात या तारीकी से कोई वास्ता नहीं। 6 गरज़ आएँ, हम दूसरों की मानिंद न हों जो सोए हुए हैं बल्कि जागते रहें, होशमंद रहें। 7 क्योंकि रात के वक़्त ही लोग सो जाते हैं, रात के वक़्त ही लोग नशे में धुत हो जाते हैं। 8 लेकिन चूँकि हम दिन के हैं इसलिए आएँ हम होश में रहें। लाज़िम है कि हम ईमान और मुहब्बत को ज़िरा-बक़तर के तौर पर और नजात की उम्मीद को ख़ोद के तौर पर पहन लें। 9 क्योंकि अल्लाह ने हमें इसलिए नहीं चुना कि हम पर अपना ग़ज़ब नाज़िल करे बल्कि इसलिए कि हम अपने खुदावंद ईसा मसीह के वसीले से नजात पाएँ। 10 उसने हमारी खातिर अपनी जान दे दी ताकि हम उसके साथ जिएँ, खाह हम उस की आमद के दिन मुरदा हों या ज़िंदा। 11 इसलिए एक दूसरे की हौसलाअफ़ज़ाई और तामीर करते रहें, जैसा कि आप कर भी रहे हैं।

आखिरी हिदायात और सलाम

12 भाइयो, हमारी दरखास्त है कि आप उनकी क़दर करें जो आपके दरमियान सख़्त मेहनत करके खुदावंद में आपकी राहनुमाई और हिदायत करते हैं। 13 उनकी खिदमत को सामने रखकर प्यार से उनकी बड़ी इज्जत करें। और एक दूसरे के साथ मेल-मिलाप से ज़िंदगी गुज़ारें।

14 भाइयो, हम इस पर ज़ोर देना चाहते हैं कि उन्हें समझाएँ जो बेकायदा ज़िंदगी गुज़ारते हैं, उन्हें तसल्ली दें जो जल्दी से मायूस हो जाते हैं, कमज़ोरों का खयाल रखें और सबको सब्र से बरदाश्त करें। 15 इस पर ध्यान दें कि कोई किसी से बुराई के बदले बुराई न करे बल्कि आप हर वक़्त एक दूसरे और तमाम लोगों के साथ नेक काम करने में लगे रहें।

16 हर वक़्त खुश रहें, 17 बिलानागा दुआ करें, 18 और हर हालत में खुदा का शुक़ करें। क्योंकि जब आप मसीह में हैं तो अल्लाह यही कुछ आपसे चाहता है।

19 रूहल-कुद्स को मत बुझाएँ। 20 नबुव्वतों की तहक़ीर न करें। 21 सब कुछ परखकर वह थामे रखें जो अच्छा है, 22 और हर किस्म की बुराई से बाज़ रहें।

23 अल्लाह खुद जो सलामती का खुदा है आपको पूरे तौर पर मख़सूसो-मुक़द्दस करे। वह करे कि आप पूरे तौर पर रूह, जान और बदन समेत उस वक़्त तक महफूज़ और बेइलज़ाम रहें जब तक हमारा खुदावंद ईसा मसीह वापस नहीं आ जाता। 24 जो आपको बुलाता है वह वफ़ादार है और वह ऐसा करेगा भी।

25 भाइयो, हमारे लिए दुआ करें।

26 तमाम भाइयों को हमारी तरफ़ से बोसा देना।

27 खुदावंद के हुज़ूर मैं आपको ताकीद करता हूँ कि यह ख़त तमाम भाइयों के सामने पढ़ा जाए।

28 हमारे खुदावंद ईसा मसीह का फ़ज़ल आपके साथ होता रहे।

2 थिस्सलुनीकियों

1 यह खत पौलुस, सिलवानुस और तीमुथियुस की तरफ से है।

हम थिस्सलुनीकियों की जमात को लिख रहे हैं, उन्हें जो अल्लाह हमारे बाप और खुदावंद ईसा मसीह पर ईमान लाए हैं।

2 खुदा हमारा बाप और खुदावंद ईसा मसीह आपको फ़ज़ल और सलामती बरख़ों।

मसीह की आमद पर अदालत

3 भाइयो, वाजिब है कि हम हर वक़्त आपके लिए खुदा का शुक्र करें। हाँ, यह मौज़ू है, क्योंकि आपका ईमान हैरतअंगेज़ तरक्की कर रहा है और आप सबकी एक दूसरे से मुहब्बत बढ़ रही है। 4 यही वजह है कि हम अल्लाह की दीगर जमातों में आप पर फ़ख़र करते हैं। हाँ, हम फ़ख़र करते हैं कि आप इन दिनों में कितनी साबितकदमी और ईमान दिखा रहे हैं हालाँकि आप बहुत ईज़ारसानियाँ और मुसीबतें बरदाश्त कर रहे हैं।

5 यह सब कुछ साबित करता है कि अल्लाह की अदालत रास्त है, और नतीजे में आप उस की बादशाही के लायक ठहरेंगे, जिसके लिए आप अब दुख उठा रहे हैं। 6 अल्लाह वही कुछ करेगा जो रास्त है। वह उन्हें मुसीबतों में डाल देगा जो आपको मुसीबत में डाल रहे हैं, 7 और आपको जो मुसीबत में हैं हमारे समेत आराम देगा। वह यह उस वक़्त करेगा जब खुदावंद ईसा अपने क़वी फ़रिशतों के साथ आसमान पर से आकर ज़ाहिर होगा 8 और भड़कती हुई आग में उन्हें सज़ा देगा जो न अल्लाह को जानते हैं, न हमारे खुदावंद ईसा की खुशख़बरी के ताबे हैं। 9 ऐसे लोग अबदी हलाकत की सज़ा पाएँगे, वह हमेशा तक खुदावंद की हुज़ूरी और उस की जलाली कुदरत से दूर हो जाएँगे। 10 लेकिन उस दिन खुदावंद इसलिए भी आएगा कि अपने मुक़द्सीन में जलाल पाए और तमाम ईमानदारों में हैरत का बाइस हो। आप भी उनमें शामिल होंगे, क्योंकि आप उस पर ईमान लाए जिसकी गवाही हमने आपको दी।

11 यह पेशे-नज़र रखकर हम लगातार आपके लिए दुआ करते हैं। हमारा खुदा आपको उस बुलावे के लायक ठहराए जिसके लिए आपको बुलाया गया है। और वह अपनी कुदरत से आपकी नेकी करने की हर खाहिश और आपके ईमान का हर काम तकमील तक पहुँचाए। 12 क्योंकि इस तरह ही हमारे खुदावंद ईसा का नाम आपमें जलाल पाएगा और आप भी उसमें जलाल पाएँगे, उस फ़ज़ल के मुताबिक जो हमारे खुदा और खुदावंद ईसा मसीह ने आपको दिया है।

2

बेदीनी का आदमी

1 भाइयो, यह सवाल उठा है कि हमारे खुदावंद ईसा मसीह की आमद कैसी होगी? हम किस तरह उसके साथ जमा हो जाएँगे? इस नाते से हमारी आपसे दरखास्त है 2 कि जब लोग कहते हैं कि खुदावंद का दिन आ चुका है तो आप जल्दी से बेचैन या परेशान न हो जाएँ। उनकी बात न मानें, चाहे वह यह दावा भी करें कि उनके पास हमारी तरफ़ से कोई नबुव्वत, पैग़ाम या ख़त है। 3 कोई भी आपको किसी भी चाल से फ़रेब न दे, क्योंकि यह दिन उस वक़्त तक नहीं आएगा जब तक आखिरी बगावत पेश न आए और “बेदीनी का आदमी” ज़ाहिर न हो जाए, वह जिसका अंजाम हलाकत होगा। 4 वह हर एक की मुखालफ़त करेगा जो खुदा और माबूद कहलाता है और अपने आपको उन सबसे बड़ा ठहराएगा। हाँ, वह अल्लाह के घर में बैठकर एलान करेगा, “मैं अल्लाह हूँ।”

5 क्या आपको याद नहीं कि मैं आपको यह बताता रहा जब अभी आपके पास था? 6 और अब आप जानते हैं कि क्या कुछ उसे रोक रहा है ताकि वह अपने मुक़र्रर वक़्त पर ज़ाहिर हो जाए। 7 क्योंकि यह पुरअसरार बेदीनी अब भी असर कर रही है। लेकिन यह उस वक़्त तक ज़ाहिर नहीं होगी जब तक वह शख्स हट न जाए जो अब तक उसे रोक रहा है। 8 फिर ही “बेदीनी का आदमी” ज़ाहिर होगा। लेकिन जब खुदावंद ईसा आएगा तो वह उसे अपने मुँह की फूँक से मार डालेगा, ज़ाहिर होने पर ही वह उसे हलाक कर देगा। 9 “बेदीनी के आदमी” में इबलीस काम करेगा। जब वह आएगा तो हर किस्म की ताक़त का इज़हार करेगा। वह झूटे निशान और मोजिज़े पेश करेगा। 10 यों वह उन्हें हर तरह के शरीर फ़रेब में फँसाएगा जो हलाक होनेवाले हैं। लोग इसलिए हलाक हो जाएँगे कि उन्होंने सच्चाई से मुहब्बत करने से इनकार किया, वरना वह बच जाते। 11 इस वजह से अल्लाह उन्हें बुरी तरह से फ़रेब में फँसने देता है ताकि वह इस झूट पर ईमान लाएँ। 12 नतीजे में सब जो सच्चाई पर ईमान न लाए बल्कि नारास्ती से लुत्फ़अंदोज़ हुए मुजरिम ठहरेंगे।

आपको नजात के लिए चुन लिया गया है

13 मेरे भाइयो, वाजिब है कि हम हर वक़्त आपके लिए खुदा का शुक्र करें जिन्हें खुदावंद प्यार करता है। क्योंकि अल्लाह ने आपको शुरू ही से नजात पाने के लिए चुन लिया, ऐसी नजात के लिए जो रूहूल-कुद्स से पाकीज़गी पाकर सच्चाई पर ईमान लाने से हासिल होती है।

14 अल्लाह ने आपको उस वक़्त यह नजात पाने के लिए बुला लिया जब हमने आपको उस की खुशख़बरी सुनाई। और अब आप हमारे खुदावंद

ईसा मसीह के जलाल में शरीक हो सकते हैं। ¹⁵ भाइयो, इसलिए साबितकदम रहें और उन रिवायात को थामे रखें जो हमने आपको सिखाई हैं, खाह ज़बानी या खत के ज़रीए।

¹⁶ हमारा खुदावंद ईसा मसीह खुद और खुदा हमारा बाप जिसने हमसे मुहब्बत रखी और अपने फ़ज़ल से हमें अबदी तसल्ली और ठोस उम्मीद बरख़्शी ¹⁷ आपकी हौसलाअफ़ज़ाई करे और यों मज़बूत करे कि आप हमेशा वह कुछ बोलें और करें जो अच्छा है।

3

हमारे लिए दुआ करना

¹ भाइयो, एक आखिरी बात, हमारे लिए दुआ करें कि खुदावंद का पैग़ाम जल्दी से फैल जाए और इज्जत पाए, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह आपके दरमियान हुआ। ² इसके लिए भी दुआ करें कि अल्लाह हमें ग़लत और शरीर लोगों से बचाए रखे, क्योंकि सब तो ईमान नहीं रखते।

³ लेकिन खुदावंद वफ़ादार है, और वही आपको मज़बूत करके इबलीस से महफूज़ रखेगा। ⁴ हम खुदावंद में आप पर एतमाद रखते हैं कि आप वह कुछ कर रहे हैं बल्कि करते रहेंगे जो हमने आपको करने को कहा था।

⁵ खुदावंद आपके दिलों को अल्लाह की मुहब्बत और मसीह की साबितकदमी की तरफ़ मायल करता रहे।

काम करने का फ़र्ज़

⁶ भाइयो, अपने खुदावंद ईसा मसीह के नाम में हम आपको हुक्म देते हैं कि हर उस भाई से किनारा करें जो बेकायदा चलता और जो हमसे पाई हुई रिवायत के मुताबिक़ ज़िंदगी नहीं गुज़ारता। ⁷ आप खुद जानते हैं कि आपको किस तरह हमारे नमूने पर चलना चाहिए। जब हम आपके पास थे तो हमारी ज़िंदगी में बेतरतीबी नहीं पाई जाती थी। ⁸ हमने किसी का खाना भी पैसे दिए बग़ैर न खाया, बल्कि दिन-रात सख़्त मेहनत-मशक्कत करते रहे ताकि आपमें से किसी के लिए बोझ न बनें। ⁹ बात यह नहीं कि हमें आपसे मुआवज़ा मिलने का हक़ नहीं था। नहीं, हमने ऐसा किया ताकि हम आपके लिए अच्छा नमूना बनें और आप इस नमूने पर चलें। ¹⁰ जब हम अभी आपके पास थे तो हमने आपको हुक्म दिया, “जो काम नहीं करना चाहता वह खाना भी न खाए।”

¹¹ अब हमें यह ख़बर मिली है कि आपमें से बाज़ बेकायदा ज़िंदगी गुज़ारते हैं। वह काम नहीं करते बल्कि दूसरों के कामों में ख़ाहमखाह दखल देते हैं। ¹² खुदावंद ईसा मसीह के नाम में हम ऐसे लोगों को हुक्म देते और समझाते हैं कि आराम से काम करके अपनी रोज़ी कमाएँ।

¹³ भाइयो, आप भलाई करने से कभी हिम्मत न हारें। ¹⁴ अगर कोई इस खत में दर्ज हमारी हिदायत पर अमल न करे तो उससे ताल्लुक न रखना ताकि उसे शर्म आए। ¹⁵ लेकिन उसे दुश्मन मत समझना बल्कि उसे भाई जानकर समझाना।

आखिरी अलफ़ाज़

¹⁶ खुदावंद खुद जो सलामती का सरचश्मा है आपको हर वक़्त और हर तरह से सलामती बरख़्शे। खुदावंद आप सबके साथ हो।

¹⁷ मैं, पौलुस अपने हाथ से यह लिख रहा हूँ। मेरी तरफ़ से सलाम। मैं इसी तरीक़े से अपने हर खत पर दस्तख़त करता और इसी तरह लिखता हूँ।

¹⁸ हमारे खुदावंद ईसा मसीह का फ़ज़ल आप सबके साथ रहे।

1 तीमुथियुस

1 यह खत पौलुस की तरफ से है जो हमारे नजातदहिंदा अल्लाह और हमारी उम्मीद मसीह ईसा के हुक्म पर मसीह ईसा का रसूल है।

2 मैं तीमुथियुस को लिख रहा हूँ जो ईमान में मेरा सच्चा बेटा है।

खुदा बाप और हमारा खुदावंद मसीह ईसा आपको फ़ज़ल, रहम और सलामती अता करें।

गलत तालीम से खबरदार

3 मैंने आपको मकिदुनिया जाते वक़्त नसीहत की थी कि इफ़िसुस में रहें ताकि आप वहाँ के कुछ लोगों को गलत तालीम देने से रोकें। 4 उन्हें फ़रज़ी कहानियों और ख़त्म न होनेवाले नसबनामे के पीछे न लगने दें। इनसे महज़ बहस-मुबाहसा पैदा होता है और अल्लाह का नजातबख़्श मनसूबा पूरा नहीं होता। क्योंकि यह मनसूबा सिर्फ़ ईमान से तकमील तक पहुँचता है। 5 मेरी इस हिदायत का मक़सद यह है कि मुहब्बत उभर आए, ऐसी मुहब्बत जो ख़ालिस दिल, साफ़ ज़मीर और बेरिया ईमान से पैदा होती है। 6 कुछ लोग इन चीज़ों से भटककर बेमानी बातों में गुम हो गए हैं। 7 यह शरीअत के उस्ताद बनना चाहते हैं, लेकिन उन्हें उन बातों की समझ नहीं आती जो वह कर रहे हैं और जिन पर वह इतने एतमाद से इस़ार कर रहे हैं।

8 लेकिन हम तो जानते हैं कि शरीअत अच्छी है बशर्तेकि इसे सहीह तौर पर इस्तेमाल किया जाए। 9 और याद रहे कि यह रास्तबाज़ों के लिए नहीं दी गई। क्योंकि यह उनके लिए है जो बग़ैर शरीअत के और सरकश ज़िंदगी गुज़ारते हैं, जो बेदीन और गुनाहगार हैं, जो मुक़द्दस और स्थानी बातों से ख़ाली हैं, जो अपने माँ-बाप के कातिल हैं, जो ख़ूनी, 10 ज़िनाकार, हमज़िसपरस्त और गुलामों के ताजिर हैं, जो झूट बोलते, झूटी क़सम खाते और मज़ीद बहुत कुछ करते हैं जो सेहतबख़्श तालीम के खिलाफ़ है। 11 और सेहतबख़्श तालीम क्या है? वह जो मुबारक खुदा की उस जलाली खुशख़बरी में पाई जाती है जो मेरे सुपुर्द की गई है।

अल्लाह के रहम के लिए शक्रगुज़ारी

12 मैं अपने खुदावंद मसीह ईसा का शक्र करता हूँ जिसने मेरी तकवियत की है। मैं उसका शक्र करता हूँ कि उसने मुझे वफ़ादार समझकर ख़िदमत के लिए मुक़र्रर किया। 13 गो मैं पहले कुफ़र बकनेवाला और गुस्ताख़ आदमी था, जो लोगों को ईज़ा देता था, लेकिन अल्लाह ने मुझ पर रहम किया। क्योंकि उस वक़्त मैं ईमान नहीं लाया था और इसलिए नहीं जानता था कि क्या कर रहा हूँ। 14 हाँ, हमारे खुदावंद ने मुझ पर अपना फ़ज़ल कसरत से उंडेल दिया और मुझे वह ईमान और मुहब्बत अता की जो हमें मसीह ईसा में होते हुए मिलती है। 15 हम इस काबिले-क़बूल बात पर पूरा भरोसा रख सकते हैं कि मसीह ईसा गुनाहगारों को नजात देने के लिए इस दुनिया में आया। उनमें से मैं सबसे बड़ा गुनाहगार हूँ, 16 लेकिन यही वज़ह है कि अल्लाह ने मुझ पर रहम किया। क्योंकि वह चाहता था कि मसीह ईसा मुझमें जो अब्बल गुनाहगार हूँ अपना वसी सब्र ज़ाहिर करे और मैं यों उनके लिए नमूना बन जाऊँ जो उस पर ईमान लाकर अबदी ज़िंदगी पानेवाले हैं। 17 हाँ, हमारे अज़लीओ-अबदी शहनशाह की हमेशा तक इज़्ज़तो-जलाल हो! वही लाफ़ानी, अनदेखा और वाहिद खुदा है। आमीन।

18 तीमुथियुस मेरे बेटे, मैं आपको यह हिदायत उन पेशगोइयों के मुताबिक़ देता हूँ जो पहले आपके बारे में की गई थीं। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि आप इनकी पैरवी करके अच्छी तरह लड़ सकें 19 और ईमान और साफ़ ज़मीर के साथ ज़िंदगी गुज़ार सकें। क्योंकि बाज़ ने यह बातें रद्द कर दी हैं और नतीजे में उनके ईमान का बेड़ा गरक़ हो गया। 20 हुमिनयुस और सिकंदर भी इनमें शामिल हैं। अब मैंने इन्हें इबलीस के हवाले कर दिया है ताकि वह कुफ़र बकने से बाज़ आना सीखे।

2

जमात की परस्तिश

1 पहले मैं इस पर जोर देना चाहता हूँ कि आप सबके लिए दरखास्ते, दुआएँ, सिफारिशें और शक्रगुज़ारियाँ पेश करें, 2 बादशाहों और इख़्तियारवालों के लिए भी ताकि हम आराम और सुकून से खुदातरस और शरीफ़ ज़िंदगी गुज़ार सकें। 3 यह अच्छा और हमारे नजातदहिंदा अल्लाह को पसंदीदा है। 4 हाँ, वह चाहता है कि तमाम इनसान नजात पाकर सच्चाई को जान लें। 5 क्योंकि एक ही खुदा है और अल्लाह और इनसान के बीच में एक ही दरमियानी है यानी मसीह ईसा, वह इनसान 6 जिसने अपने आपको फ़िघा के तौर पर सबके लिए दे दिया ताकि वह मख़लसी पाएँ। यों उसने मुक़र्रर वक़्त पर गवाही दी 7 और यह गवाही सुनाने के लिए मुझे मुनाद, रसूल और ग़ैरयहूदियों का उस्ताद मुक़र्रर किया ताकि उन्हें ईमान और सच्चाई का पैग़ाम सुनाऊँ। मैं झूट नहीं बोल रहा बल्कि सच कह रहा हूँ।

8 अब मैं चाहता हूँ कि हर मक़ामी जमात के मर्द मुक़द्दस हाथ उठाकर दुआ करें। वह गुस्से या बहस-मुबाहसा की हालत में ऐसा न करें। 9 इसी तरह मैं चाहता हूँ कि ख़वातीन मुनासिब कपड़े पहनकर शराफ़त और शायस्तगी से अपने आपको आरास्ता करें। वह गुंधे हुए बाल, सोना, मोती या हद से ज़्यादा महँगे कपड़ों से अपने आपको आरास्ता न करें 10 बल्कि नेक कामों से। क्योंकि यही ऐसी ख़वातीन के लिए मुनासिब है जो खुदातरस होने का दावा करती हैं। 11 ख़ातून ख़ामोशी से और पूरी फ़रमाँबरदारी के साथ सीखे। 12 मैं ख़वातीन को तालीम देने या आदमियों

पर हुकूमत करने की इजाज़त नहीं देता। वह खामोश रहें। ¹³ क्योंकि पहले आदम को तश्कील दिया गया, फिर हव्वा को। ¹⁴ और आदम ने इबलीस से धोका न खाया बल्कि हव्वा ने, जिसका नतीजा गुनाह था। ¹⁵ लेकिन खवातीन बच्चे जन्म देने से नजात पाएँगी। शर्त यह है कि वह समझ के साथ ईमान, मुहब्बत और मुक़द्दस हालत में जिंदगी गुज़ारती रहें।

3

खुदा की जमात के निगरान

¹ यह बात यक़ीनी है कि जो जमात का निगरान बनना चाहता है वह एक अच्छी ज़िम्मादारी की आरज़ू रखता है। ² लाज़िम है कि निगरान बेइलज़ाम हो। उस की एक ही बीवी हो। वह होशमंद, समझदार, * शरीफ़, मेहमान-नवाज़ और तालीम देने के काबिल हो। ³ वह शराबी न हो, न लडाका बल्कि नरमदिल और अमनपसंद। वह पैसों का लालच करनेवाला न हो। ⁴ लाज़िम है कि वह अपने खानदान को अच्छी तरह सँभाल सके और कि उसके बच्चे शराफ़त के साथ उस की बात मानें। ⁵ क्योंकि अगर वह अपना खानदान न सँभाल सके तो वह किस तरह अल्लाह की जमात की देख-भाल कर सकेगा? ⁶ वह नौमुरीद न हो वरना खतरा है कि वह फूलकर इबलीस के जाल में उलझ जाए और यों उस की अदालत की जाए। ⁷ लाज़िम है कि जमात से बाहर के लोग उस की अच्छी गवाही दे सकें, ऐसा न हो कि वह बदनाम होकर इबलीस के फंदे में फँस जाए।

जमात के मददगार

⁸ इसी तरह जमात के मददगार भी शरीफ़ हों। वह रियाकार न हों, न हद से ज़्यादा मै पिँ। वह लालची भी न हों। ⁹ लाज़िम है कि वह साफ़ ज़मीर रखकर ईमान की पुरअसरार सच्चाइयों महफूज़ रखें। ¹⁰ यह भी ज़रूरी है कि उन्हें पहले परखा जाए। अगर वह इसके बाद बेइलज़ाम निकलें तो फिर वह खिदमत करें। ¹¹ उनकी बीवियाँ भी शरीफ़ हों। वह बुहतान लगानेवाली न हों बल्कि होशमंद और हर बात में वफ़ादार। ¹² मददगार की एक ही बीवी हो। लाज़िम है कि वह अपने बच्चों और खानदान को अच्छी तरह सँभाल सके। ¹³ जो मददगार अच्छी तरह अपनी खिदमत सँभालते हैं उनकी हैसियत बढ़ जाएगी और मसीह ईसा पर उनका ईमान इतना पुख़्ता हो जाएगा कि वह बड़े एतमाद के साथ जिंदगी गुज़ार सकेंगे।

एक अज़ीम भेद

¹⁴ अगरचे मैं जल्द आपके पास आने की उम्मीद रखता हूँ तो भी आपको यह खत लिख रहा हूँ। ¹⁵ लेकिन अगर देर भी लगे तो यह पढ़कर आपको मालूम होगा कि अल्लाह के घराने में हमारा बरताव कैसा होना चाहिए। अल्लाह का घराना क्या है? ज़िंदा खुदा की जमात, जो सच्चाई का सतून और बुनियाद है। ¹⁶ यक़ीनन हमारे ईमान का भेद अज़ीम है।

वह जिस्म में जाहिर हुआ,
रूह में रास्तबाज़ ठहरा
और फ़रिश्तों को दिखाई दिया।
उस की ग़ैरयहदियों में मुनादी की गई,
उस पर दुनिया में ईमान लाया गया
और उसे आसमान के जलाल में उठा लिया गया।

4

झूटे उस्ताद

¹ रूहुल-कुद्स साफ़ फ़रमाता है कि आखिरी दिनों में कुछ ईमान से हटकर फ़रेबदेह रूहों और शैतानी तालीमात की पैरवी करेंगे। ² ऐसी तालीमात झूट बोलनेवालों की रियाकार बातों से आती हैं, जिनके ज़मीर पर इबलीस ने अपना निशान लगाकर जाहिर कर दिया है कि यह उसके अपने हैं। ³ यह शादी करने की इजाज़त नहीं देते और लोगों को कहते हैं कि वह मुख़्तलिफ़ खाने की चीज़ों से परहेज़ करें। लेकिन अल्लाह ने यह चीज़ें इसलिए बनाई हैं कि जो ईमान रखते हैं और सच्चाई से वाकिफ़ हैं इन्हें शुक्रगुज़ारी के साथ खाएँ। ⁴ जो कुछ भी अल्लाह ने ख़लक़ किया है वह अच्छा है, और हमें उसे रद्द नहीं करना चाहिए बल्कि खुदा का शुक्र करके उसे खा लेना चाहिए। ⁵ क्योंकि उसे अल्लाह के कलाम और दुआ से मख़सूसो-मुक़द्दस किया गया है।

मसीह ईसा का अच्छा खादिम

⁶ अगर आप भाइयों को यह तालीम दें तो आप मसीह ईसा के अच्छे खादिम होंगे। फिर यह साबित हो जाएगा कि आपको ईमान और उस अच्छी तालीम की सच्चाइयों में तरबियत दी गई है जिसकी पैरवी आप करते रहे हैं। ⁷ लेकिन दादी-अम्माँ की इन बेमानी फ़रज़ी कहानियों से बाज़ रहें। इनकी बजाएँ ऐसी तरबियत हासिल करें जिससे आपकी रूहानी जिंदगी मज़बूत हो जाए। ⁸ क्योंकि जिस्म की तरबियत का थोड़ा ही फ़ायदा है, लेकिन रूहानी तरबियत हर लिहाज़ से मुफ़ीद है, इसलिए कि अगर हम इस किस्म की तरबियत हासिल करें तो हमसे हाल और

* 3:2 यूनानी लफ़्ज़ में ज़ब्ते-नफ़स का उनसूर भी पाया जाता है।

मुस्तकबिल में जिंदगी पाने का वादा किया गया है। ⁹ यह बात काबिले-एतमाद है और इसे पूरे तौर पर कबूल करना चाहिए। ¹⁰ यही वजह है कि हम मेहनत-मशक्कत और जाँफिशानी करते रहते हैं, क्योंकि हमने अपनी उम्मीद जिंदा खुदा पर रखी है जो तमाम इनसानों का नजातदहिदा है, खासकर ईमान रखनेवालों का।

¹¹ लोगों को यह हिदायात दें और सिखाएँ। ¹² कोई भी आपको इसलिए हकीर न जाने कि आप जवान हैं। लेकिन ज़रूरी है कि आप कलाम में, चाल-चलन में, मुहब्बत में, ईमान में और पाकीज़गी में ईमानदारों के लिए नमूना बन जाएँ। ¹³ जब तक मैं नहीं आता इस पर खास ध्यान दें कि जमात में बाकायदागी से कलाम की तिलावत की जाए, लोगों को नसीहत की जाए और उन्हें तालीम दी जाए। ¹⁴ अपनी उस नेमत को नज़रंदाज़ न करें जो आपको उस वक़्त पेशगोई के ज़रीए मिली जब बुजुर्गों ने आप पर अपने हाथ रखे। ¹⁵ इन बातों को फ़रोग दें और इनके पीछे लगे रहें ताकि आपकी तरक्की सबको नज़र आए। ¹⁶ अपना और तालीम का खास खयाल रखें। इनमें साबितकदम रहें, क्योंकि ऐसा करने से आप अपने आपको और अपने सुननेवालों को बचा लेंगे।

5

ईमानदारों से सुलूक

¹ बुजुर्ग भाइयों को सख्ती से न डाँटना बल्कि उन्हें यों समझाना जिस तरह कि वह आपके बाप हों। इसी तरह जवान आदमियों को यों समझाना जैसे वह आपके भाई हों, ² बुजुर्ग बहनों को यों जैसे वह आपकी माँ हों और जवान ख़वातीन को तमाम पाकीज़गी के साथ यों जैसे वह आपकी बहनें हों।

³ उन बेवाओं की मदद करके उनकी इज़्ज़त करें जो वाकई ज़रूरतमंद हैं। ⁴ अगर किसी बेवा के बच्चे या पोते-नवासे हों तो उस की मदद करना उन्हीं का फ़र्ज़ है। हाँ, वह सीखें कि खुदातरस होने का पहला फ़र्ज़ यह है कि हम अपने घरवालों की फ़िकर करें और यों अपने माँ-बाप, दादा-दादी और नाना-नानी को वह कुछ वापस करें जो हमें उनसे मिला है, क्योंकि ऐसा अमल अल्लाह को पसंद है। ⁵ जो औरत वाकई ज़रूरतमंद बेवा और तनहा रह गई है वह अपनी उम्मीद अल्लाह पर रखकर दिन-रात अपनी इल्तिजाओं और दुआओं में लगी रहती है। ⁶ लेकिन जो बेवा ऐशो-इशरत में जिंदगी गुज़ारती है वह जिंदा हालत में ही मुरदा है। ⁷ यह हिदायात लोगों तक पहुँचाएँ ताकि उन पर इलज़ाम न लगाया जा सके। ⁸ क्योंकि अगर कोई अपनों और खासकर अपने घरवालों की फ़िकर न करे तो उसने अपने ईमान का इनकार कर दिया। ऐसा शख्स ग़ैरईमानदारों से बदतर है।

⁹ जिस बेवा की उम्र 60 साल से कम है उसे बेवाओं की फ़हरिस्त में दर्ज न किया जाए। शर्त यह भी है कि जब उसका शौहर जिंदा था तो वह उस की वफ़ादार रही हो ¹⁰ और कि लोग उसके नेक कामों की अच्छी गवाही दे सकें, मसलन क्या उसने अपने बच्चों को अच्छी तरह पाला है? क्या उसने मेहमान-नवाज़ी की और मुकद्दसीन के पाँव धोकर उनकी ख़िदमत की है? क्या वह मुसीबत में फँसे हुआओं की मदद करती रही है? क्या वह हर नेक काम के लिए कोशिशें रही है?

¹¹ लेकिन जवान बेवाएँ इस फ़हरिस्त में शामिल मत करना, क्योंकि जब उनकी जिस्मानी ख़ाहिशात उन पर ग़ालिब आती हैं तो वह मसीह से दूर होकर शादी करना चाहती हैं। ¹² यों वह अपना पहला ईमान छोड़कर मुजरिम ठहरती हैं। ¹³ इसके अलावा वह सुस्त होने और इधर उधर घरों में फिरने की आदी बन जाती हैं। न सिर्फ़ यह बल्कि वह बातूनी भी बन जाती हैं और दूसरों के मामलात में दखल देकर नामुनासिब बातें करती हैं। ¹⁴ इसलिए मैं चाहता हूँ कि जवान बेवाएँ दुबारा शादी करके बच्चों को जन्म दें और अपने घरों को सँभालें। फिर वह दुश्मन को बदगोई करने का मौक़ा नहीं देंगी। ¹⁵ क्योंकि बाज़ तो सहीह राह से हटकर इबलीस के पीछे लग चुकी हैं। ¹⁶ लेकिन जिस ईमानदार औरत के खानदान में बेवाएँ हैं उसका फ़र्ज़ है कि वह उनकी मदद करे ताकि वह खुदा की जमात के लिए बोझ न बनें। वरना जमात उन बेवाओं की सहीह मदद नहीं कर सकेगी जो वाकई ज़रूरतमंद हैं।

¹⁷ जो बुजुर्ग जमात को अच्छी तरह सँभालते हैं उन्हें दुगनी इज़्ज़त के लायक समझा जाए।* मैं खासकर उनकी बात कर रहा हूँ जो पाक कलाम सुनाने और तालीम देने में मेहनत-मशक्कत करते हैं। ¹⁸ क्योंकि कलामे-मुकद्दस फ़रमाता है, “जब तू फ़सल गाहने के लिए उस पर बैल चलने देता है तो उसका मुँह बाँधकर न रखना।” यह भी लिखा है, “मज़दूर अपनी मज़दूरी का हक़दार है।” ¹⁹ जब किसी बुजुर्ग पर इलज़ाम लगाया जाए तो यह बात सिर्फ़ इस सूरत में मानें कि दो या इससे ज़्यादा गवाह इसकी तसदीक करें। ²⁰ लेकिन जिन्होंने वाकई गुनाह किया हो उन्हें पूरी जमात के सामने समझाएँ ताकि दूसरे ऐसी हरकतें करने से डर जाएँ।

²¹ अल्लाह और मसीह ईसा और उसके चुनीदा फ़रिश्तों के सामने मैं सज़ीदगी से ताकीद करता हूँ कि इन हिदायात की यों पैरवी करें कि आप किसी मामले से सहीह तौर पर वाकिफ़ होने से पेशतर फैसला न करें, न जानिबदारी का शिकार हो जाएँ। ²² जल्दी से किसी पर हाथ रखकर उसे किसी ख़िदमत के लिए मख़सूस मत करना, न दूसरों के गुनाहों में शरीक होना। अपने आपको पाक रखें।

²³ चूँकि आप अकसर बीमार रहते हैं इसलिए अपने मेदे का लिहाज़ करके न सिर्फ़ पानी ही पिया करें बल्कि साथ साथ कुछ मै भी इस्तेमाल करें।

* 5:17 यहाँ मतलब है कि उनकी इज़्ज़त खासकर माली लिहाज़ से की जाए।

24 कुछ लोगों के गुनाह साफ साफ नज़र आते हैं, और वह उनसे पहले ही अदालत के तख्त के सामने आ पहुँचते हैं। लेकिन कुछ ऐसे भी हैं जिनके गुनाह गोया उनके पीछे चलकर बाद में जाहिर होते हैं। 25 इसी तरह कुछ लोगों के अच्छे काम साफ नज़र आते हैं जबकि बाज़ के अच्छे काम अभी नज़र नहीं आते। लेकिन यह भी पोशीदा नहीं रहेंगे बल्कि किसी वक़्त जाहिर हो जाएंगे।

6

1 जो भी गुलामी के जुए में हैं वह अपने मालिकों को पूरी इज़्ज़त के लायक समझें ताकि लोग अल्लाह के नाम और हमारी तालीम पर कुफ़र न बकें। 2 जब मालिक ईमान लाते हैं तो गुलामों को उनकी इसलिए कम इज़्ज़त नहीं करना चाहिए कि वह अब मसीह में भाई हैं। बल्कि वह उनकी और ज़्यादा ख़िदमत करें, क्योंकि अब जो उनकी अच्छी ख़िदमत से फ़ायदा उठा रहे हैं वह ईमानदार और अज़ीज़ हैं।

ग़लत तालीम और हकीकी दौलत

लाज़िम है कि आप लोगों को इन बातों की तालीम दें और इसमें उनकी हौसलाअफ़जाई करें। 3 जो भी इससे फ़रक़ तालीम देकर हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के सेहतबख़्श अलफ़ाज़ और इस ख़ुदातरस ज़िंदगी की तालीम से वाबस्ता नहीं रहता 4 वह ख़ुदपसंदी से फूला हुआ है और कुछ नहीं समझता। ऐसा शख्स बहस-मुबाहसा करने और खाली बातों पर झगड़ने में ग़ैरसेहतमंद दिलचस्पी लेता है। नतीजे में हसद, झगड़े, कुफ़र और बदगुमानी पैदा होती है। 5 यह लोग आपस में झगड़ने की वजह से हमेशा कुढ़ते रहते हैं। उनके ज़हन बिगड़ गए हैं और सच्चाई उनसे छीन ली गई है। हाँ, यह समझते हैं कि ख़ुदातरस ज़िंदगी गुज़ारने से माली नफ़ा हासिल किया जा सकता है।

6 ख़ुदातरस ज़िंदगी वाकई बहुत नफ़ा का बाइस है, लेकिन शर्त यह है कि इनसान को जो कुछ भी मिल जाए वह उस पर इकतफ़ा करे। 7 हम दुनिया में अपने साथ क्या लाए? कुछ नहीं! तो हम दुनिया से निकलते वक़्त क्या कुछ साथ ले जा सकेंगे? कुछ भी नहीं! 8 चुनौचे अगर हमारे पास खुराक और लिबास हो तो यह हमारे लिए काफ़ी होना चाहिए। 9 जो अमीर बनने के खाहों रहते हैं वह कई तरह की आजमाइशों और फंदों में फँस जाते हैं। बहुत-सी नासमझ और नुक़सानदेह खाहिशात उन्हें हलाकत और तबाही में गरक़ हो जाने देती हैं। 10 क्योंकि पैसों का लालच हर ग़लत काम का सरचश्मा है। कई लोगों ने इसी लालच के बाइस ईमान से भटककर अपने आपको बहुत अज़ियत पहुँचाई है।

शख़्सी हिदायात

11 लेकिन आप जो अल्लाह के बंदे हैं इन चीज़ों से भागते रहें। इनकी बजाए रास्तबाज़ी, ख़ुदातरसी, ईमान, मुहब्बत, साबितक़दमी और नरमदिली के पीछे लगे रहें। 12 ईमान की अच्छी कुशती लड़ें। अबदी ज़िंदगी से ख़ूब लिपट जाएँ, क्योंकि अल्लाह ने आपको यही ज़िंदगी पाने के लिए बुलाया, और आपने अपनी तरफ़ से बहुत-से गवाहों के सामने इस बात का इकरार भी किया। 13 मेरे दो गवाह हैं, अल्लाह जो सब कुछ ज़िंदा रखता है और मसीह ईसा जिसने पुंतियुस पीलातुस के सामने अपने ईमान की अच्छी गवाही दी। इन्हीं के सामने मैं आपको कहता हूँ कि 14 यह हुक्म यों पूरा करें कि आप पर न दाग़ लगे, न इलज़ाम। और इस हुक्म पर उस दिन तक अमल करते रहें जब तक हमारा ख़ुदावंद ईसा मसीह जाहिर नहीं हो जाता। 15 क्योंकि अल्लाह मसीह को मुक़र्रर वक़्त पर जाहिर करेगा। हाँ, जो मुबारक और वाहिद हुक्मरान, बादशाहों का बादशाह और मालिकों का मालिक है वह उसे मुक़र्रर वक़्त पर जाहिर करेगा। 16 सिर्फ़ वही लाफ़ानी है, वही ऐसी रौशनी में रहता है जिसके करीब कोई नहीं आ सकता। न किसी इनसान ने उसे कभी देखा, न वह उसे देख सकता है। उस की इज़्ज़त और कुदरत अबद तक रहे। आमीन।

17 जो मौजूदा दुनिया में अमीर हैं उन्हें समझाएँ कि वह मग़रूर न हों, न दौलत जैसी ग़ैरयक़ीनी चीज़ पर उम्मीद रखें। इसकी बजाए वह अल्लाह पर उम्मीद रखें जो हमें फ़ैयाज़ी से सब कुछ मुहैया करता है ताकि हम उससे लुत्फ़अंदोज़ हो जाएँ। 18 यह पेशे-नज़र रखकर अमीर नेक काम करें और भलाई करने में ही अमीर हों। वह खुशी से दूसरों को देने और अपनी दौलत में शरीक करने के लिए तैयार हों। 19 यों वह अपने लिए एक अच्छा खज़ाना जमा करेंगे यानी आनेवाले ज़हान के लिए एक ठोस बुनियाद जिस पर खड़े होकर वह हकीकी ज़िंदगी पा सकेंगे।

20 तीमुथियुस बेटे, जो कुछ आपके हवाले किया गया है उसे महफूज़ रखें। दुनियावी बकवास और उन मुतज़ाद खयालात से कतराते रहें जिन्हें ग़लती से इल्म का नाम दिया गया है। 21 कुछ तो इस इल्म के माहिर होने का दावा करके ईमान की सही राह से हट गए हैं।

अल्लाह का फ़ज़ल आप सबके साथ रहे।

2 तीमुथियुस

1 यह खत पौलुस की तरफ से है जो अल्लाह की मरज़ी से मसीह ईसा का रसूल है ताकि उस वादा की हुई ज़िंदगी का पैगाम सुनाए जो हमें मसीह ईसा में हासिल होती है।

2 मैं अपने प्यारे बेटे तीमुथियुस को लिख रहा हूँ।

खुदा बाप और हमारा खुदावंद मसीह ईसा आपको फ़ज़ल, रहम और सलामती अता करें।

शुक्रगुज़ारी और हौसलाअफ़ज़ाई

3 मैं आपके लिए खुदा का शुक्र करता हूँ जिसकी खिदमत मैं अपने बापदादा की तरह साफ़ ज़मीर से करता हूँ। दिन-रात मैं लगातार आपको अपनी दुआओं में याद रखता हूँ। 4 मुझे आपके आँसू याद आते हैं, और मैं आपसे मिलने का आरज़ूमंद हूँ ताकि खुशी से भर जाऊँ। 5 मुझे खासकर आपका मुखलिस ईमान याद है जो पहले आपकी नानी लूइस और माँ यूनीके रखती थीं। और मुझे यकीन है कि आप भी यही ईमान रखते हैं। 6 यही वजह है कि मैं आपको एक बात याद दिलाता हूँ। अल्लाह ने आपको उस वक़्त एक नेमत से नवाज़ा जब मैंने आप पर हाथ रखे। आपको उस नेमत की आग को नए सिरे से भड़काने की ज़रूरत है। 7 क्योंकि जिस रूह से अल्लाह ने हमें नवाज़ा है वह हमें बुजदिल नहीं बनाता बल्कि हमें कुव्वत, मुहब्बत और नज़मो-ज़ब्त दिलाता है।

8 इसलिए हमारे खुदावंद के बारे में गवाही देने से न शर्माएँ, न मुझसे जो मसीह की खातिर कैदी हूँ। इसके बजाए मेरे साथ अल्लाह की कुव्वत से मदद लेकर उस की खुशख़बरी की खातिर दुख उठाएँ। 9 क्योंकि उसने हमें नजात देकर मुक़द्दस ज़िंदगी गुज़ारने के लिए बुलाया। और यह चीज़ें हमें अपनी मेहनत से नहीं मिलीं बल्कि अल्लाह के इरादे और फ़ज़ल से। यह फ़ज़ल ज़मानों की इब्तिदा से पहले हमें मसीह में दिया गया। 10 लेकिन अब हमारे नजातदहिदा मसीह ईसा की आमद से जाहिर हुआ। मसीह ही ने मौत को नेस्त कर दिया। उसी ने अपनी खुशख़बरी के ज़रीए लाफ़ानी ज़िंदगी रौशनी में लाकर हम पर ज़ाहिर कर दी है।

11 अल्लाह ने मुझे यही खुशख़बरी सुनाने के लिए मुनाद, रसूल और उस्ताद मुक़र्रर किया है। 12 इसी वजह से मैं दुख उठा रहा हूँ। तो भी मैं शर्माता नहीं, क्योंकि मैं उसे जानता हूँ जिस पर मैं ईमान लाया हूँ, और मुझे पूरा यकीन है कि जो कुछ मैंने उसके हवाले कर दिया है उसे वह अपनी आमद के दिन तक महफूज़ रखने के क़ाबिल है। 13 उन सेहतबख़्श बातों के मुताबिक़ चलते रहें जो आपने मुझसे सुन ली हैं, और यों ईमान और मुहब्बत के साथ मसीह ईसा में ज़िंदगी गुज़ारें। 14 जो बेशक़ीमत चीज़ आपके हवाले कर दी गई है उसे स्कुल-कुद्स की मदद से जो हममें सुकूनत करता है महफूज़ रखें।

15 आपको मालूम है कि सूबा आसिया में तमाम लोगों ने मुझे तर्क कर दिया है। इनमें फ़ूगिलुस और हिरमुगिनेस भी शामिल हैं। 16 खुदावंद उनेसिफ़ुस्स के घराने पर रहम करे, क्योंकि उसने कई दफ़ा मुझे तरो-ताज़ा किया। हाँ, वह इससे कभी न शर्माया कि मैं कैदी हूँ। 17 बल्कि जब वह रोम शहर पहुँचा तो बड़ी कोशिशों से मेरा खोज लगाकर मुझे मिला। 18 खुदावंद करे कि वह क़ियामत के दिन खुदावंद से रहम पाए। आप खुद बेहतर जानते हैं कि उसने इफ़िसुस में कितनी खिदमत की।

2

मसीह ईसा का वफ़ादार सिपाही

1 लेकिन आप, मेरे बेटे, उस फ़ज़ल से तक्वियत पाएँ जो आपको मसीह ईसा में मिल गया है। 2 जो कुछ आपने बहुत गवाहों की मौजूदगी में मुझसे सुना है उसे मोतबर लोगों के सुपुर्द करें। यह ऐसे लोग हों जो औरों को सिखाने के क़ाबिल हों।

3 मसीह ईसा के अच्छे सिपाही की तरह हमारे साथ दुख उठाते रहें। 4 जिस सिपाही की ड्यूटी है वह आम रिआया के मामलात में फँसने से बाज़ रहता है, क्योंकि वह अपने अफ़सर को पसंद आना चाहता है। 5 इसी तरह खेल के मुकाबले में हिस्सा लेनेवाले को सिर्फ़ इस सूरत में इनाम मिल सकता है कि वह क़वायद के मुताबिक़ ही मुकाबला करे। 6 और लाज़िम है कि फ़सल की कटाई के वक़्त पहले उसको फ़सल का हिस्सा मिले जिसने खेत में मेहनत की है। 7 उस पर ध्यान देना जो मैं आपको बता रहा हूँ, क्योंकि खुदावंद आपको इन तमाम बातों की समझ अता करेगा।

8 मसीह ईसा को याद रखें, जो दाऊद की औलाद में से है और जिसे मुरदों में से ज़िंदा कर दिया गया। यही मेरी खुशख़बरी है 9 जिसकी खातिर मैं दुख उठा रहा हूँ, यहाँ तक कि मुझे आम मुजरिम की तरह जंजीरों से बाँधा गया है। लेकिन अल्लाह का कलाम जंजीरों से बाँधा नहीं जा सकता। 10 इसलिए मैं सब कुछ अल्लाह के चुने हुए लोगों की खातिर बरदाश्त करता हूँ ताकि वह भी नजात पाएँ—वह नजात जो मसीह ईसा से मिलती है और जो अबदी जलाल का बाइस बनती है। 11 यह क़ौल क़ाबिले-एतमाद है,

अगर हम उसके साथ मर गए

तो हम उसके साथ जिंएंगे भी।

12 अगर हम बरदाश्त करते रहें
तो हम उसके साथ हुकूमत भी करेंगे।
अगर हम उसे जानने से इनकार करें
तो वह भी हमें जानने से इनकार करेगा।

13 अगर हम बेवफ़ा निकलें
तो भी वह वफ़ादार रहेगा।
क्योंकि वह अपना इनकार नहीं कर सकता।

काबिले-कबूल खिदमतगुज़ार

14 लोगों को इन बातों की याद दिलाते रहें और उन्हें संजीदगी से अल्लाह के हुज़ूर समझाएँ कि वह बाल की खाल उतारकर एक दूसरे से न झगड़ें। यह बेफ़ायदा है बल्कि सुननेवालों को बिगाड़ देता है। 15 अपने आपको अल्लाह के सामने यों पेश करने की पूरी कोशिश करें कि आप मकबूल साबित हों, कि आप ऐसा मज़दूर निकलें जिसे अपने काम से शर्माने की ज़रूरत न हो बल्कि जो सहीह तौर पर अल्लाह का सच्चा कलाम पेश करे। 16 दुनियावी बकवास से बाज़ रहें। क्योंकि जितना यह लोग इसमें फँस जाएंगे उतना ही बेदीनी का असर बढ़ेगा 17 और उनकी तालीम कैसर की तरह फैल जाएगी। इन लोगों में हुमिनयुस और फ़िलेतुस भी शामिल हैं 18 जो सच्चाई से हट गए हैं। यह दावा करते हैं कि मुरदों के जी उठने का अमल हो चुका है और यों बाज़ एक का ईमान तबाह हो गया है। 19 लेकिन अल्लाह की ठोस बुनियाद कायम रहती है और उस पर इन दो बातों की मुहर लगी है, “ख़ुदावंद ने अपने लोगों को जान लिया है” और “जो भी समझे कि मैं ख़ुदावंद का पैरोकार हूँ वह नारास्ती से बाज़ रहे।”

20 बड़े घरों में न सिर्फ़ सोने और चाँदी के बरतन होते हैं बल्कि लकड़ी और मिट्टी के भी। यानी कुछ शरीफ़ कामों के लिए इस्तेमाल होते हैं और कुछ कमकरदर कामों के लिए। 21 अगर कोई अपने आपको इन बुरी चीज़ों से पाक-साफ़ करे तो वह शरीफ़ कामों के लिए इस्तेमाल होनेवाला बरतन होगा। वह मखसूसो-मुकद्दस, मालिक के लिए मुफ़ीद और हर नेक काम के लिए तैयार होगा। 22 ज़वानी की बुरी खाहिशात से भागकर रास्तबाज़ी, ईमान, मुहब्बत और सुलह-सलामती के पीछे लगे रहें। और यह उनके साथ मिलकर करें जो ख़ुलूसदिली से ख़ुदावंद की परस्तिश करते हैं। 23 हमाक़त और जहालत की बहसों से किनारा करें। आप तो जानते हैं कि इनसे सिर्फ़ झगड़े पैदा होते हैं। 24 लाज़िम है कि ख़ुदावंद का ख़ादिम न झगड़े बल्कि हर एक से मेहरबानी का सुलूक करे। वह तालीम देने के काबिल हो और सब्र से ग़लत सुलूक बरदाश्त करे। 25 जो मुख़ालफ़त करते हैं उन्हें वह नरमदिली से तरबियत दे, क्योंकि हो सकता है कि अल्लाह उन्हें तौबा करने की तौफ़ीक़ दे और वह सच्चाई को जान लें, 26 होश में आएँ और इबलीस के फंदे से बच निकलें। क्योंकि इबलीस ने उन्हें कैद कर लिया है ताकि वह उस की मरज़ी पूरी करें।

3

आखिरी दिन

1 लेकिन यह बात जान लें कि आखिरी दिनों में हौलनाक लमहे आएँगे। 2 लोग ख़ुदपसंद और पैसों के लालची होंगे। वह शेख़ीबाज़, मग़रूर, कुफ़र बकनेवाले, माँ-बाप के नाफ़रमान, नाशुकरे, बेदीन 3 और मुहब्बत से ख़ाली होंगे। वह सुलह करने के लिए तैयार नहीं होंगे, दूसरों पर तोहमत लगाएँगे, ऐयाश और वहशी होंगे और भलाई से नफ़रत रखेंगे। 4 वह नमकहराम, ग़ैरमुहतात और ग़ुरूर से फूले हुए होंगे। अल्लाह से मुहब्बत रखने के बजाए उन्हें ऐशो-इशरत प्यारी होगी। 5 वह बज़ाहिर ख़ुदातरस ज़िंदगी गुज़ारेंगे, लेकिन हक़ीकी ख़ुदातरस ज़िंदगी की कुव्वत का इनकार करेंगे। ऐसों से किनारा करें। 6 उनमें से कुछ लोग घरों में घुसकर कमज़ोर ख़वातीन को अपने जाल में फँसा लेते हैं, ऐसी ख़वातीन को जो अपने गुनाहों तले दबी हुई हैं और जिन्हें कई तरह की शहवतें चलाती हैं। 7 गो यह हर वक़्त तालीम हासिल करती रहती हैं तो भी सच्चाई को जानने तक कभी नहीं पहुँच सकतीं। 8 जिस तरह यन्नेस और यंबरेस मूसा की मुख़ालफ़त करते थे उसी तरह यह लोग भी सच्चाई की मुख़ालफ़त करते हैं। इनका ज़हन बिगड़ा हुआ है और इनका ईमान नामकबूल निकला। 9 लेकिन यह ज़्यादा तरक्की नहीं करेंगे क्योंकि इनकी हमाक़त सब पर जाहिर हो जाएगी, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह यन्नेस और यंबरेस के साथ भी हुआ।

आखिरी हिदायात

10 लेकिन आप हर लिहाज़ से मेरे शागिर्द रहे हैं, चाल-चलन में, इरादे में, ईमान में, सब्र में, मुहब्बत में, साबितकदमी में, 11 ईज़ारसानियों में और दुखों में। अंताकिया, इकुनियुम और लुस्तरा में मेरे साथ क्या कुछ न हुआ! वहाँ मुझे कितनी सख़्त ईज़ारसानियों का सामना करना पड़ा। लेकिन ख़ुदावंद ने मुझे इन सबसे रिहाई दी। 12 बात यह है कि सब जो मसीह ईसा में ख़ुदातरस ज़िंदगी गुज़ारना चाहते हैं उन्हें सताया जाएगा। 13 साथ साथ शरीर और धोकेबाज़ लोग अपने ग़लत कामों में तरक्की करते जाएंगे। वह दूसरों को ग़लत राह पर ले जाएंगे और उन्हें ख़ुद भी ग़लत राह पर लाया जाएगा। 14 लेकिन आप ख़ुद उस पर कायम रहें जो आपने सीख लिया और जिस पर आपको यक़ीन आया है। क्योंकि आप अपने उस्तादों को जानते हैं 15 और आप बचपन से मुक़द्दस सहीफ़ों से वाकिफ़ हैं। अल्लाह का यह कलाम आपको वह हिक़मत अता कर सकता है जो मसीह ईसा पर ईमान लाने से नज़ात तक पहुँचाती है। 16 क्योंकि हर पाक नविशता अल्लाह के रूह से वुजूद में आया है और

तालीम देने, मलामत करने, इसलाह करने और रास्तबाज़ जिंदगी गुज़ारने की तरबियत देने के लिए मुफ़ीद है। ¹⁷ कलामे-मुक़द्दस का मक़सद यही है कि अल्लाह का बंदा हर लिहाज़ से काबिल और हर नेक काम के लिए तैयार हो।

4

¹ मैं अल्लाह और मसीह ईसा के सामने जो ज़िंदों और मुरदों की अदालत करेगा और उस की आमद और बादशाही की याद दिलाकर संजीदगी से इसकी ताकीद करता हूँ, ² कि वक़्त बेवक़्त कलामे-मुक़द्दस की मुनादी करने के लिए तैयार रहें। बड़े सब्र से ईमानदारों को तालीम देकर उन्हें समझाएँ, मलामत करें और उनकी हौसलाअफ़ज़ाई भी करें। ³ क्योंकि एक वक़्त आएगा जब लोग सेहतबख़्श तालीम बरदाश्त नहीं करेंगे बल्कि अपने पास अपनी बुरी खाहिशात से मुताबिक़त रखनेवाले उस्तादों का ढेर लगा लेंगे। यह उस्ताद उन्हें सिर्फ़ दिल बहलानेवाली बातें सुनाएँगे, सिर्फ़ वह कुछ जो वह सुनना चाहते हैं। ⁴ वह सच्चाई को सुनने से बाज़ आकर फ़रज़ी कहानियों के पीछे पड़ जाएंगे। ⁵ लेकिन आप खुद हर हालत में होश में रहें। दुख को बरदाश्त करें, अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाते रहें और अपनी ख़िदमत के तमाम फ़रायज़ अदा करें।

⁶ जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है, वह वक़्त आ चुका है कि मुझे मै की नज़र की तरह कुरबानगाह पर उंडेला जाए। मेरे कूच का वक़्त आ गया है। ⁷ मैंने अच्छी कुश्ती लड़ी है, मैं दौड़ के इख़िताम तक पहुँच गया हूँ, मैंने ईमान को महफूज़ रखा है। ⁸ और अब एक इनाम तैयार पड़ा है, रास्तबाज़ी का वह ताज जो ख़ुदावंद हमारा रास्त मुसिफ़ मुझे अपनी आमद के दिन देगा। और न सिर्फ़ मुझे बल्कि उन सबको जो उस की आमद के आरज़ूमंद रहे हैं।

कुछ शख़्सी बातें

⁹ मेरे पास आने में जल्दी करें। ¹⁰ क्योंकि देमास ने इस दुनिया को प्यार करके मुझे छोड़ दिया है। वह थिस्सलुनीके चला गया। क्रेसकेंस गलतिया और तितुस दल्मतिया चले गए हैं। ¹¹ सिर्फ़ लूका मेरे पास है। मरकुस को अपने साथ ले आना, क्योंकि वह ख़िदमत के लिए मुफ़ीद साबित होगा। ¹² तुखिकुस को मैंने इफ़िसुस भेज दिया है। ¹³ आते वक़्त मेरा वह कोट अपने साथ ले आएँ जो मैं त्रोआस में करपुस के पास छोड़ आया था। मेरी किताबें भी ले आएँ, खासकर चरमी कागज़वाली।

¹⁴ सिकंदर लोहार ने मुझे बहुत नुक़सान पहुँचाया है। ख़ुदावंद उसे उसके काम का बदला देगा। ¹⁵ उससे मुहतात रहें क्योंकि उसने बड़ी शिद्दत से हमारी बातों की मुख़ालफ़त की।

¹⁶ जब मुझे पहली दफ़ा अपने दिफ़ा के लिए अदालत में पेश किया गया तो सबने मुझे तर्क कर दिया। अल्लाह उनसे इस बात का हिसाब न ले बल्कि इसे नज़रंदाज़ कर दे। ¹⁷ लेकिन ख़ुदावंद मेरे साथ था। उसी ने मुझे तकवियत दी, क्योंकि उस की मरज़ी थी कि मेरे वसीले से उसका पूरा पैग़ाम सुनाया जाए और तमाम ग़ैरयहूदी उसे सुनें। यों अल्लाह ने मुझे शेरबबर के मुँह से निकालकर बचा लिया। ¹⁸ और आगे भी ख़ुदावंद मुझे हर शरीर हमले से बचाएगा और अपनी आसमानी बादशाही में लाकर नज़ात देगा। उसका जलाल अज़ल से अबद तक होता रहे। आमीन।

आखिरी सलाम

¹⁹ प्रिसकिल्ला, अकविला और उनेसिफ़ुस्स के घराने को हमारा सलाम कहना। ²⁰ इरास्तुस कुरिथुस में रहा, और मुझे नुफ़िमस को मीलेतुस में छोड़ना पड़ा, क्योंकि वह बीमार था। ²¹ जल्दी करें ताकि सर्दियों के मौसम से पहले यहाँ पहुँचें।

यूबलुस, पर्देस, लीनुस, क्लौदिया और तमाम भाई आपको सलाम कहते हैं।

²² ख़ुदावंद आपकी रूह के साथ हो। अल्लाह का फ़ज़ल आपके साथ होता रहे।

तितुस

1 यह खत पौलुस की तरफ से है जो अल्लाह का खादिम और ईसा मसीह का रसूल है।

मुझे चुनकर भेजा गया ताकि मैं ईमान लाने और खुदातरस ज़िंदगी की सच्चाई जान लेने में अल्लाह के चुने हुए लोगों की मदद करूँ।
2 क्योंकि उससे उन्हें अबदी ज़िंदगी की उम्मीद दिलाई जाती है, ऐसी ज़िंदगी की जिसका वादा अल्लाह ने दुनिया के ज़मानों से पेशतर ही किया था। और वह झूट नहीं बोलता।³ अपने मुकर्रर वक़्त पर अल्लाह ने अपने कलाम का एलान करके उसे ज़ाहिर कर दिया। यही एलान मेरे सुपुर्द किया गया है और मैं इसे हमारे नजातदहिदा अल्लाह के हुक्म के मुताबिक सुनाता हूँ।

4 मैं तितुस को लिख रहा हूँ जो हमारे मुश्तरका ईमान के मुताबिक मेरा हक़ीकी बेटा है।

खुदा बाप और हमारा नजातदहिदा मसीह ईसा आपको फ़ज़ल और सलामती अता करें।

क्रेते में तितुस की खिदमत

5 मैंने आपको क्रेते में इसलिए छोड़ा था कि आप वह कमियाँ दुस्त करें जो अब तक रह गई थीं। यह भी एक मक़सद था कि आप हर शहर की जमात में बुज़ुर्ग मुकर्रर करें, जिस तरह मैंने आपको कहा था।⁶ बुज़ुर्ग बेइलज़ाम हो। उस की सिर्फ़ एक बीवी हो। उसके बच्चे ईमानदार हों और लोग उन पर ऐयाश या सरकश होने का इलज़ाम न लगा सकें।⁷ निगरान को तो अल्लाह का घराना सँभालने की ज़िम्मादारी दी गई है, इसलिए लाज़िम है कि वह बेइलज़ाम हो। वह खुदसर, गुसीला, शराबी, लड़ाका या लालची न हो।⁸ इसके बजाए वह मेहमान-नवाज़ हो और सब अच्छी चीज़ों से प्यार करनेवाला हो। वह समझदार, रास्तबाज़ और मुक़द्दस हो। वह अपने आप पर काबू रख सके।⁹ वह उस कलाम के साथ लिपटा रहे जो काबिले-एतमाद और हमारी तालीम के मुताबिक है। क्योंकि इस तरह ही वह सेहतबख़्श तालीम देकर दूसरों की हौसलाअफ़ज़ाई कर सकेगा और मुख़ालफ़त करनेवालों को समझा भी सकेगा।

10 बात यह है कि बहुत-से ऐसे लोग हैं जो सरकश हैं, जो फ़ज़ल बातें करके दूसरों को धोका देते हैं। यह बात खासकर उन पर सादिक आती है जो यहूदियों में से हैं।¹¹ लाज़िम है कि उन्हें चुप करा दिया जाए, क्योंकि यह लालच में आकर कई लोगों के पूरे घर अपनी ग़लत तालीम से ख़राब कर रहे हैं।¹² उनके अपने एक नबी ने कहा है, “क्रेते के बाशिंदे हमेशा झूट बोलनेवाले, वहशी जानवर और सुस्त पेटू होते हैं।”¹³ उस की यह गवाही दुस्त है। इस वजह से लाज़िम है कि आप उन्हें सख़्ती से समझाएँ ताकि उनका ईमान सेहतमंद रहे¹⁴ और वह यहूदी फ़रज़ी कहानियों या उन इनसानों के अहक़ाम पर ध्यान न दें जो सच्चाई से हट गए हैं।¹⁵ जो लोग पाक-साफ़ हैं उनके लिए सब कुछ पाक है। लेकिन जो नापाक और ईमान से ख़ाली हैं उनके लिए कुछ भी पाक नहीं होता बल्कि उनका ज़हन और उनका ज़मीर दोनों नापाक हो गए हैं।¹⁶ यह अल्लाह को जानने का दावा तो करते हैं, लेकिन उनकी हरकतें इस बात का इनकार करती हैं। यह धिनौने, नाफ़रमान और कोई भी अच्छा काम करने के काबिल नहीं हैं।

2

सेहतबख़्श तालीम

1 लेकिन आप वह कुछ सुनाएँ जो सेहतबख़्श तालीम से मुताबिक़त रखता है।² बुज़ुर्ग मर्दों को बता देना कि वह होशमंद, शरीफ़ और समझदार हों। उनका ईमान, मुहब्बत और साबितक़दमी सेहतमंद हों।

3 इसी तरह बुज़ुर्ग ख़वातीन को हिदायत देना कि वह मुक़द्दसीन की-सी ज़िंदगी गुज़ारें। न वह तोहमत लगाएँ न शराब की गुलाम हों। इसके बजाए वह अच्छी तालीम देने के लायक हों⁴ ताकि वह जवान औरतों को समझदार ज़िंदगी गुज़ारने की तरबियत दे सकें, कि वह अपने शौहरों और बच्चों से मुहब्बत रखें,⁵ कि वह समझदार * और मुक़द्दस हों, कि वह घर के फ़रायज़ अदा करने में लगी रहें, कि वह नेक हों, कि वह अपने शौहरों के ताबे रहें। अगर वह ऐसी ज़िंदगी गुज़ारें तो वह दूसरों को अल्लाह के कलाम पर कुफ़र बकने का मौक़ा फ़राहम नहीं करेंगी।

6 इसी तरह जवान आदमियों की हौसलाअफ़ज़ाई करें कि वह हर लिहाज़ से समझदार ज़िंदगी गुज़ारें।⁷ आप खुद नेक काम करने में उनके लिए नमूना बनें। तालीम देते वक़्त आपकी खुलूसदिली, शराफ़त⁸ और अलफ़ाज़ की बेइलज़ाम सेहत साफ़ नज़र आए। फिर आपके मुख़ालिफ़ शर्मिदा हो जाएंगे, क्योंकि वह हमारे बारे में कोई बुरी बात नहीं कह सकेंगे।

9 गुलामों को कह देना कि वह हर लिहाज़ से अपने मालिकों के ताबे रहें। वह उन्हें पसंद आएँ, बहस-मुबाहसा किए बग़ैर उनकी बात मानें¹⁰ और उनकी चीज़ें चोरी न करें बल्कि साबित करें कि उन पर हर तरह का एतमाद किया जा सकता है। क्योंकि इस तरीक़े से वह हमारे नजातदहिदा अल्लाह के बारे में तालीम को हर तरह से दिलकश बना देंगे।

11 क्योंकि अल्लाह का नजातबख़्श फ़ज़ल तमाम इनसानों पर ज़ाहिर हुआ है।¹² और यह फ़ज़ल हमें तरबियत देकर इस काबिल बना देता है कि हम बेदीनी और दुनियावी ख़ाहिशात का इनकार करके इस दुनिया में समझदार, रास्तबाज़ और खुदातरस ज़िंदगी गुज़ार सकें।¹³ साथ

* 2:5 यूनानी लफ़ज़ में ज़ब्ते-नफ़स का उनसूर भी पाया जाता है।

साथ यह तरबियत उस मुबारक दिन का इंतजार करने में हमारी मदद करती है जिसकी उम्मीद हम रखते हैं और जब हमारे अजीम खुदा और नजातदहिदा ईसा मसीह का जलाल जाहिर हो जाएगा। ¹⁴ क्योंकि मसीह ने हमारे लिए अपनी जान दे दी ताकि फिदा देकर हमें हर तरह की बेदीनी से छुड़ाकर अपने लिए एक पाक और मखसूस कौम बनाए जो नेक काम करने में सरगारम हो।

¹⁵ इन्हीं बातों की तालीम देकर पूरे इख्तियार के साथ लोगों को समझाएँ और उनकी इसलाह करें। कोई भी आपको हकीर न जाने।

3

मसीही किरदार

¹ उन्हें याद दिलाना कि वह हुक्मरानों और इख्तियारवालों के ताबे और फरमाँबरदार रहें। वह हर नेक काम करने के लिए तैयार रहें, ² किसी पर तोहमत न लगाएँ, अमनपसंद और नरमदिल हों और तमाम लोगों के साथ नरममिजाजी से पेश आएँ। ³ क्योंकि एक वक़्त था जब हम भी नासमझ, नाफरमान और सहीह राह से भटके हुए थे। उस वक़्त हम कई तरह की शहवतों और गलत खाहिशों की गुलामी में थे। हम बुरे कामों और हसद करने में ज़िंदगी गुज़ारते थे। दूसरे हमसे नफ़रत करते थे और हम भी उनसे नफ़रत करते थे। ⁴ लेकिन जब हमारे नजातदहिदा अल्लाह की मेहरबानी और मुहब्बत जाहिर हुई ⁵ तो उसने हमें बचाया। यह नहीं कि हमने रास्त काम करने के बाइस नजात हासिल की बल्कि उसके रहम ही ने हमें रूहल-कुदूस के वसीले से बचाया जिसने हमें धोकर नए सिरे से जन्म दिया और नई ज़िंदगी अता की। ⁶ अल्लाह ने अपने इस रूह को बड़ी फ़ैयाज़ी से हमारे नजातदहिदा ईसा मसीह के वसीले से हम पर उंडेल दिया ⁷ ताकि हमें उसके फ़ज़ल से रास्तबाज़ करार दिया जाए और हम उस अबदी ज़िंदगी के वारिस बन जाएँ जिसकी उम्मीद हम रखते हैं। ⁸ इस बात पर पूरा एतमाद किया जा सकता है।

मैं चाहता हूँ कि आप इन बातों पर खास जोर दें ताकि जो अल्लाह पर ईमान लाए हैं वह ध्यान से नेक काम करने में लगे रहें। यह बातें सबके लिए अच्छी और मुफ़ीद हैं। ⁹ लेकिन बेहूदा बहसों, नसबनामों, झगड़ों और शरीअत के बारे में तनाज़ों से बाज़ रहें, क्योंकि ऐसा करना बेफ़ायदा और फ़ज़ूल है। ¹⁰ जो शख्स पाटीबाज़ है उसे दो बार समझाएँ। अगर वह इसके बाद भी न माने तो उसे रिफ़ाक़त से ख़ारिज करें। ¹¹ क्योंकि आपको पता होगा कि ऐसा शख्स गलत राह पर है और गुनाह में फँसा हुआ होता है। उसने अपनी हरकतों से अपने आपको मुजरिम ठहराया है।

आखिरी हिदायात

¹² जब मैं अरतिमास या तुखिकुस को आपके पास भेज दूँगा तो मेरे पास आने में जल्दी करें। मैं नीकुपुलिस शहर में हूँ, क्योंकि मैंने फ़ैसला कर लिया है कि सर्दियों का मौसम यहाँ गुज़ास्। ¹³ जब जेनास वकील और अपुल्लोस सफ़र की तैयारियाँ कर रहे हैं तो उनकी मदद करें। खयाल रखें कि उनकी हर ज़रूरत पूरी की जाए। ¹⁴ लाज़िम है कि हमारे लोग नेक काम करने में लगे रहना सीखें, खासकर जहाँ बहुत ज़रूरत है, ऐसा न हो कि आखिरकार वह बेफल निकलें। ¹⁵ सब जो मेरे साथ हैं आपको सलाम कहते हैं। उन्हें मेरा सलाम देना जो ईमान में हमसे मुहब्बत रखते हैं।

अल्लाह का फ़ज़ल आप सबके साथ होता रहे।

फिलेमोन

1 यह खत मसीह ईसा के कैदी पौलुस और तीमुथियुस की तरफ से है।

मैं अपने अजीज दोस्त और हमखिदमत फिलेमोन को लिख रहा हूँ² और साथ साथ अपनी बहन अफिया, अपने हमसिपाह अरखिप्पुस और उस जमात को जो आपके घर में जमा होती है।

3 खुदा हमारा बाप और खुदावंद ईसा मसीह आपको फ़ज़ल और सलामती अता करें।

फिलेमोन की मुहब्बत और ईमान

4 जब भी मैं दुआ करता हूँ तो आपको याद करके अपने खुदा का शुक करता हूँ।⁵ क्योंकि मुझे खुदावंद ईसा के बारे में आपके ईमान और आपकी तमाम मुक़द्दसीन से मुहब्बत की ख़बर मिलती रहती है।⁶ मेरी दुआ है कि आपकी जो रिफ़ाक़त ईमान से पैदा हुई है वह आपमें यों जोर पकड़े कि आपको बेहतर तौर पर हर उस अच्छी चीज़ की समझ आए जो हमें मसीह में हासिल है।⁷ भाई, आपकी मुहब्बत देखकर मुझे बड़ी खुशी और तसल्ली हुई है, क्योंकि आपने मुक़द्दसीन के दिलों को तरो-ताज़ा कर दिया है।

उनेसिमस की सिफ़ारिश

8 इस वजह से मैं मसीह में इतनी दिलेरी महसूस करता हूँ कि आपको वह कुछ करने का हुक्म दूँ जो अब मुनासिब है।⁹ तो भी मैं ऐसा नहीं करना चाहता बल्कि मुहब्बत की बिना पर आपसे अपील ही करता हूँ। गो मैं पौलुस मसीह ईसा का एलची बल्कि अब उसका कैदी भी हूँ¹⁰ तो भी मिन्नत करके अपने बेटे उनेसिमस की सिफ़ारिश करता हूँ। क्योंकि मेरे कैद में होते हुए वह मेरा बेटा बन गया।¹¹ पहले तो वह आपके काम नहीं आ सकता था, लेकिन अब वह आपके लिए और मेरे लिए काफ़ी मुफ़ीद साबित हुआ है।*

12 अब मैं इसको गोया अपनी जान को आपके पास वापस भेज रहा हूँ।¹³ असल में मैं उसे अपने पास रखना चाहता था ताकि जब तक मैं खुशख़बरी की खातिर कैद में हूँ वह आपकी जगह मेरी खिदमत करे।¹⁴ लेकिन मैं आपकी इजाज़त के बग़ैर कुछ नहीं करना चाहता था। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि जो भी मेहरबानी आप करेंगे वह आप मजबूर होकर न करें बल्कि खुशी से।

15 हो सकता है कि उनेसिमस इसलिए कुछ देर के लिए आपसे जुदा हो गया कि वह आपको हमेशा के लिए दुबारा मिल जाए।¹⁶ क्योंकि अब वह न सिर्फ़ गुलाम है बल्कि गुलाम से कहीं ज्यादा। अब वह एक अजीज भाई है जो मुझे ख़ास अजीज है। लेकिन वह आपको कहीं ज्यादा अजीज होगा, गुलाम की हैसियत से भी और खुदावंद में भाई की हैसियत से भी।

17 गरज़, अगर आप मुझे अपना साथी समझें तो उसे यों खुशआमदीद कहें जैसे मैं खुद आकर हाज़िर होता।¹⁸ अगर उसने आपको कोई नुक़सान पहुँचाया या आपका कर्ज़दार हुआ तो मैं इसका मुआवज़ा देने के लिए तैयार हूँ।¹⁹ यहाँ मैं पौलुस अपने ही हाथ से इस बात की तसदीक करता हूँ: मैं इसका मुआवज़ा दूँगा अगरचे मुझे आपको याद दिलाने की ज़रूरत नहीं कि आप खुद मेरे कर्ज़दार हैं। क्योंकि मेरा कर्ज़ जो आप पर है वह आप खुद हैं।²⁰ चुनौचे मेरे भाई, मुझ पर यह मेहरबानी करें कि मुझे खुदावंद में आपसे कुछ फ़ायदा मिले। मसीह में मेरी जान को ताज़ा करें।

21 मैं आपकी फ़रमाँबरदारी पर एतबार करके आपको यह लिख रहा हूँ। क्योंकि मैं जानता हूँ कि आप न सिर्फ़ मेरी सुनेंगे बल्कि इससे कहीं ज्यादा मेरे लिए करेंगे।²² एक और गुज़ारिश भी है, मेरे लिए एक कमरा तैयार करें, क्योंकि मुझे उम्मीद है कि आपकी दुआओं के जवाब में मुझे आपको वापस दिया जाएगा।

आखिरी सलाम

23 इफ़्रास जो मसीह ईसा में मेरे साथ कैदी है आपको सलाम कहता है।²⁴ इसी तरह मरकुस, अरिस्तरख़ुस, देमास और लूका भी आपको सलाम कहते हैं।

25 खुदावंद ईसा का फ़ज़ल आप सबके साथ होता रहे।

* 1:11 उनेसिमस का मतलब कारामद, फ़ायदामंद है।

इब्रानियों

अल्लाह का अपने फ़रज़ंद के ज़रीए कलाम

1 माज़ी में अल्लाह मुख्तलिफ़ मौक़ों पर और कई तरीक़ों से हमारे बापदादा से हमकलाम हुआ। उस वक़्त उसने यह नबियों के वसीले से किया 2 लेकिन इन आखिरी दिनों में वह अपने फ़रज़ंद के वसीले से हमसे हमकलाम हुआ, उसी के वसीले से जिसे उसने सब चीज़ों का वारिस बना दिया और जिसके वसीले से उसने कायनात को भी खलक़ किया। 3 फ़रज़ंद अल्लाह का शानदार जलाल मुनअक़िस करता और उस की ज़ात की ऐन शबीह * है। वह अपने कवी कलाम से सब कुछ सँभाले रखता है। जब वह दुनिया में था तो उसने हमारे लिए गुनाहों से पाक-साफ़ हो जाने का इंतज़ाम कायम किया। इसके बाद वह आसमान पर कादिरे-मुतलक़ के दहने हाथ जा बैठा।

अल्लाह के फ़रज़ंद की अज़मत

4 फ़रज़ंद फ़रिश्तों से कहीं अज़ीम है, इतना जितना उसका मीरास में पाया हुआ नाम उनके नामों से अज़ीम है। 5 क्योंकि अल्लाह ने किस फ़रिश्ते से कभी कहा,

“तू मेरा फ़रज़ंद है,

आज मैं तेरा बाप बन गया हूँ।”

यह भी उसने किसी फ़रिश्ते के बारे में कभी नहीं कहा,

“मैं उसका बाप हूँगा

और वह मेरा फ़रज़ंद होगा।”

6 और जब अल्लाह अपने पहलौठे फ़रज़ंद को आसमानी दुनिया में लाता है तो वह फ़रमाता है,

“अल्लाह के तमाम फ़रिश्ते उस की परस्तिश करें।”

7 फ़रिश्तों के बारे में वह फ़रमाता है,

“वह अपने फ़रिश्तों को हवाएँ

और अपने खादिमों को आग के शोले बना देता है।”

8 लेकिन फ़रज़ंद के बारे में वह कहता है,

“ऐ खुदा, तेरा तरख़्त अज़ल से अबद तक कायमो-दायम रहेगा,

और इनसाफ़ का शाही असा तेरी बादशाही पर हुकूमत करेगा।

9 तूने रास्तबाज़ी से मुहब्बत

और बेदीनी से नफ़रत की,

इसलिए अल्लाह तेरे खुदा ने तुझे खुशी के तेल से मसह करके

तुझे तेरे साथियों से कहीं ज़्यादा सरफ़राज़ कर दिया।”

10 वह यह भी फ़रमाता है,

“ऐ रब, तूने इब्तिदा में दुनिया की बुनियाद रखी,

और तेरे ही हाथों ने आसमानों को बनाया।

11 यह तो तबाह हो जाएंगे,

लेकिन तू कायम रहेगा।

यह सब लिबास की तरह घिस फट जाएंगे

12 और तू इन्हें चादर की तरह लपेटेगा,

पुराने कपड़े की तरह यह बदले जाएंगे।

लेकिन तू वही का वही रहता है,

और तेरी ज़िंदगी कभी खत्म नहीं होती।”

13 अल्लाह ने कभी भी अपने किसी फ़रिश्ते से यह बात न कही,

“मेरे दहने हाथ बैठ,

जब तक मैं तेरे दुश्मनों को

तेरे पाँवों की चौकी न बना दूँ।”

* 1:3 या नक़श।

14 फिर फरिश्ते क्या हैं? वह तो सब खिदमतगुजार रहें हैं जिन्हें अल्लाह उनकी खिदमत करने के लिए भेज देता है जिन्हें मीरास में नजात पानी है।

2

नजात की अज़मत

1 इसलिए लाज़िम है कि हम और ज़्यादा ध्यान से कलामे-मुकद्दस की उन बातों पर गौर करें जो हमने सुन ली हैं। ऐसा न हो कि हम समुंदर पर बेकाबू कश्ती की तरह बेमकसद इधर उधर फिरे। 2 जो कलाम फरिश्तों ने इनसान तक पहुँचाया वह तो अनमिट रहा, और जिससे भी कोई खता या नाफरमानी हुई उसे उस की मुनासिब सज़ा मिली। 3 तो फिर हम किस तरह अल्लाह के ग़ज़ब से बच सकेंगे अगर हम मसीह की इतनी अज़ीम नजात को नज़रंदाज़ करें? पहले खुदावंद ने खुद इस नजात का एलान किया, और फिर ऐसे लोगों ने हमारे पास आकर इसकी तसदीक की जिन्होंने उसे सुन लिया था। 4 साथ साथ अल्लाह ने इस बात की इस तरह तसदीक भी की कि उसने अपनी मरज़ी के मुताबिक़ इलाही निशान, मोजिज़े और मुख्तलिफ़ किस्म के ज़ोरदार काम दिखाए और रूहल-कुद्स की नेमतें लोगों में तकसीम कीं।

मसीह का नजातबख़्श काम

5 अब ऐसा है कि अल्लाह ने मज़क़ूरा आनेवाली दुनिया को फरिश्तों के ताबे नहीं किया। 6 क्योंकि कलामे-मुकद्दस में किसी ने कही यह गवाही दी है,

“इनसान कौन है कि तू उसे याद करे

या आदमज़ाद कि तू उसका खयाल रखे?

7 तूने उसे थोड़ी देर के लिए फरिश्तों से कम कर दिया,

तूने उसे जलाल और इज़्ज़त का ताज पहनाकर

8 सब कुछ उसके पाँवों के नीचे कर दिया।”

जब लिखा है कि सब कुछ उसके पाँवों तले कर दिया गया तो इसका मतलब है कि कोई चीज़ न रही जो उसके ताबे नहीं है। बेशक हमें हाल में यह बात नज़र नहीं आती कि सब कुछ उसके ताबे है, 9 लेकिन हम उसे ज़रूर देखते हैं जो “थोड़ी देर के लिए फरिश्तों से कम” था यानी ईसा को जिसे उस की मौत तक के दुख की वजह से “जलाल और इज़्ज़त का ताज” पहनाया गया है। हाँ, अल्लाह के फ़ज़ल से उसने सबकी खातिर मौत बरदाश्त की। 10 क्योंकि यही मुनासिब था कि अल्लाह जिसके लिए और जिसके वसीले से सब कुछ है यों बहुत-से बेटों को अपने जलाल में शरीक करे कि वह उनकी नजात के बानी ईसा को दुख उठाने से कामिलियत तक पहुँचाए।

11 ईसा और वह जिन्हें वह मखसूसो-मुकद्दस कर देता है दोनों का एक ही बाप है। यही वजह है कि ईसा यह कहने से नहीं शर्माता कि मुकद्दसीन मेरे भाई हैं। 12 मसलन वह अल्लाह से कहता है,

“मैं अपने भाइयों के सामने तेरे नाम का एलान करूँगा,

जमात के दरमियान ही तेरी मद्दहसराई करूँगा।”

13 वह यह भी कहता है, “मैं उस पर भरोसा रखूँगा।” और फिर “मैं हाज़िर हूँ, मैं और वह बच्चे जो अल्लाह ने मुझे दिए हैं।”

14 अब चूँकि यह बच्चे गोशत-पोस्त और खून के इनसान हैं इसलिए ईसा खुद उनकी मानिंद बन गया और उनकी इनसानी फ़ितरत में शरीक हुआ। क्योंकि इस तरह ही वह अपनी मौत से मौत के मालिक इबलीस को तबाह कर सका, 15 और इस तरह ही वह उन्हें छुड़ा सका जो मौत से डरने की वजह से ज़िंदगी-भर गुलामी में थे। 16 ज़ाहिर है कि जिनकी मदद वह करता है वह फरिश्ते नहीं हैं बल्कि इब्राहीम की औलाद। 17 इसलिए लाज़िम था कि वह हर लिहाज़ से अपने भाइयों की मानिंद बन जाए। सिर्फ़ इससे उसका यह मकसद पूरा हो सका कि वह अल्लाह के हुज़ूर एक रहीम और वफ़ादार इमामे-आज़म बनकर लोगों के गुनाहों का कफ़फ़ारा दे सके। 18 और अब वह उनकी मदद कर सकता है जो आजमाइश में उलझे हुए हैं, क्योंकि उस की भी आजमाइश हुई और उसने खुद दुख उठाया है।

3

ईसा मूसा से बड़ा है

1 मुकद्दस भाइयो, जो मेरे साथ अल्लाह के बुलाए हुए हैं! ईसा पर गौरो-ख़ौज़ करते रहें जो अल्लाह का पैग़ंबर और इमामे-आज़म है और जिसका हम इकरार करते हैं। 2 ईसा अल्लाह का वफ़ादार रहा जब उसने उसे यह काम करने के लिए मुकर्रर किया, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह मूसा भी वफ़ादार रहा जब अल्लाह का पूरा घर उसके सुपुर्द किया गया। 3 अब जो किसी घर को तामीर करता है उसे घर की निसबत ज़्यादा इज़्ज़त हासिल होती है। इसी तरह ईसा मूसा की निसबत ज़्यादा इज़्ज़त के लायक़ है। 4 क्योंकि हर घर को किसी न किसी ने बनाया होता है, जबकि अल्लाह ने सब कुछ बनाया है। 5 मूसा तो अल्लाह के पूरे घर में खिदमत करते वक़्त वफ़ादार रहा, लेकिन मुलाज़िम की हैसियत से ताकि कलामे-मुकद्दस की आनेवाली बातों की गवाही देता रहे। 6 मसीह फ़रक़ है। उसे फ़रज़ंद की हैसियत से अल्लाह के घर पर इख़्तियार है और इसी में वह वफ़ादार है। हम उसका घर हैं बशर्ते कि हम अपनी दिलेली और वह उम्मीद कायम रखें जिस पर हम फ़ख़र करते हैं।

अल्लाह की कौम के लिए सुकून

7 चुनौचे जिस तरह स्तूल-कुद्स फरमाता है,

“अगर तुम आज अल्लाह की आवाज़ सुनो

8 तो अपने दिलों को सख्त न करो जिस तरह बगावत के दिन हुआ,

जब तुम्हारे बापदादा ने रेगिस्तान में मुझे आजमाया।

9 वहाँ उन्होंने मुझे आजमाया और जाँचा,

हालाँकि उन्होंने चालीस साल के दौरान मेरे काम देख लिए थे।

10 इसलिए मुझे उस नसल पर गुस्सा आया और मैं बोला,

‘उनके दिल हमेशा सही राह से हट जाते हैं

और वह मेरी राहें नहीं जानते।’

11 अपने ग़ज़ब में मैंने क्रसम खाई,

‘यह कभी उस मुल्क में दाखिल नहीं होंगे

जहाँ मैं उन्हें सुकून देता।’”

12 भाइयो, खबरदार रहें ताकि आपमें से किसी का दिल बुराई और कुफ़र से भरकर ज़िंदा ख़ुदा से बरग़श्ता न हो जाए। 13 इसके बजाए जब तक अल्लाह का यह फ़रमान कायम है रोज़ाना एक दूसरे की हौसलाअफ़जाई करें ताकि आपमें से कोई भी गुनाह के फ़रेब में आकर सख्तदिल न हो। 14 बात यह है कि हम मसीह के शरीक-कार बन गए हैं। लेकिन इस शर्त पर कि हम आखिर तक वह एतमाद मज़बूती से कायम रखें जो हम आगाज़ में रखते थे।

15 मज़क़ूरा कलाम में लिखा है,

“अगर तुम आज अल्लाह की आवाज़ सुनो,

तो अपने दिलों को सख्त न करो जिस तरह बगावत के दिन हुआ।”

16 यह कौन थे जो अल्लाह की आवाज़ सुनकर बागी हो गए? वह सब जिन्हें मूसा मिसर से निकालकर बाहर लाया। 17 और यह कौन थे जिनसे अल्लाह चालीस साल के दौरान नाराज़ रहा? यह वही थे जिन्होंने गुनाह किया और जो रेगिस्तान में मरकर वहीं पड़े रहे। 18 अल्लाह ने किनकी बाबत क्रसम खाई कि “यह कभी भी उस मुल्क में दाखिल नहीं होंगे जहाँ मैं उन्हें सुकून देता”? ज़ाहिर है उनकी बाबत जिन्होंने नाफ़रमानी की थी। 19 चुनौचे हम देखते हैं कि वह ईमान न रखने की वजह से मुल्क में दाखिल न हो सके।

4

1 देखें, अब तक अल्लाह का यह वादा कायम है, और अब तक हम सुकून के मुल्क में दाखिल हो सकते हैं। इसलिए आइए, हम खबरदार रहें। ऐसा न हो कि आपमें से कोई पीछे रहकर उसमें दाखिल न होने पाए। 2 क्योंकि हमें भी उनकी तरह एक खुशख़बरी सुनाई गई। लेकिन यह पैग़ाम उनके लिए बेफ़ायदा था, क्योंकि वह उसे सुनकर ईमान न लाए। 3 उनकी निसबत हम जो ईमान लाए हैं सुकून के इस मुल्क में दाखिल हो सकते हैं।

गरज़, यह ऐसा ही है जिस तरह अल्लाह ने फ़रमाया,

“अपने ग़ज़ब में मैंने क्रसम खाई,

‘यह कभी उस मुल्क में दाखिल नहीं होंगे

जहाँ मैं उन्हें सुकून देता।’”

अब ग़ौर करें कि उसने यह कहा अगरचे उसका काम दुनिया की तख़लीक़ पर इख़िताम तक पहुँच गया था। 4 क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में सातवें दिन के बारे में लिखा है, “सातवें दिन अल्लाह का सारा काम तक़मील तक पहुँच गया। इससे फ़ारिग होकर उसने आराम किया।” 5 अब इसका मुक़ाबला मज़क़ूरा आयत से करें,

“यह कभी उस मुल्क में दाखिल नहीं होंगे

जहाँ मैं उन्हें सुकून देता।”

6 जिन्होंने पहले अल्लाह की खुशख़बरी सुनी उन्हें नाफ़रमान होने की वजह से यह सुकून न मिला। तो भी यह बात कायम रही कि कुछ तो सुकून के इस मुल्क में दाखिल हो जाएंगे। 7 यह मदे-नज़र रखकर अल्लाह ने एक और दिन मुक़र्रर किया, मज़क़ूरा “आज” का दिन। कई सालों के बाद ही उसने दाऊद की मारिफ़त वह बात की जिस पर हम ग़ौर कर रहे हैं,

“अगर तुम आज अल्लाह की आवाज़ सुनो

तो अपने दिलों को सख्त न करो।”

8 जब यशुअ उन्हें मुल्के-कनान में लाया तब उसने इसराईलियों को यह सुकून न दिया, वरना अल्लाह इसके बाद के किसी और दिन का ज़िक्र न करता। 9 चुनौचे अल्लाह की कौम के लिए एक खास सुकून बाक़ी रह गया है, ऐसा सुकून जो अल्लाह के सातवें दिन आराम करने से मुताबिक़त रखता है। 10 क्योंकि जो भी वह सुकून पाता है जिसका वादा अल्लाह ने किया वह अल्लाह की तरह अपने कामों से फ़ारिग होकर

आराम करेगा। ¹¹ इसलिए आँ, हम इस सुकून में दाखिल होने की पूरी कोशिश करें ताकि हममें से कोई भी बापदादा के नाफरमान नमूने पर चलकर गुनाह में न गिर जाए।

¹² क्योंकि अल्लाह का कलाम ज़िंदा, मुअस्सिर और हर दोधारी तलवार से ज्यादा तेज़ है। वह इनसान में से गुज़रकर उस की जान रूह से और उसके जोड़ों को गूदे से अलग कर लेता है। वही दिल के खयालात और सोच को जाँचकर उन पर फैसला करने के काबिल है। ¹³ कोई मखलूक भी अल्लाह की नज़र से नहीं छुप सकती। उस की आँखों के सामने जिसके जवाबदेह हम होते हैं सब कुछ अयाँ और बेनिक्राब है।

ईसा हमारा इमामे-आज़म है

¹⁴ गरज़ आँ, हम उस ईमान से लिपटे रहें जिसका इकरार हम करते हैं। क्योंकि हमारा ऐसा अज़ीम इमामे-आज़म है जो आसमानों में से गुज़र गया यानी ईसा अल्लाह का फ़रज़ंद। ¹⁵ और वह ऐसा इमामे-आज़म नहीं है जो हमारी कमज़ोरियों को देखकर हमदर्दी न दिखाए बल्कि अगरचे वह बेगुनाह रहा तो भी हमारी तरह उसे हर किस्म की आज़माइश का सामना करना पड़ा। ¹⁶ अब आँ, हम पूरे एतमाद के साथ अल्लाह के तख़्त के सामने हाज़िर हो जाएँ जहाँ फ़ज़ल पाया जाता है। क्योंकि वही हम वह रहम और फ़ज़ल पाएँगे जो ज़रूरत के वक़्त हमारी मदद कर सकता है।

5

¹ अब इनसानों में से चुने गए इमामे-आज़म को इसलिए मुक़र्र किया जाता है कि वह उनकी खातिर अल्लाह की खिदमत करे, ताकि वह गुनाहों के लिए नज़राने और कुरबानियाँ पेश करे। ² वह जाहिल और आवारा लोगों के साथ नरम सुलूक रख सकता है, क्योंकि वह खुद कई तरह की कमज़ोरियों की गिरिफ़्त में होता है। ³ यही वजह है कि उसे न सिर्फ़ कौम के गुनाहों के लिए बल्कि अपने गुनाहों के लिए भी कुरबानियाँ चढ़ानी पड़ती हैं। ⁴ और कोई अपनी मरज़ी से इमामे-आज़म का पुरवकार ओहदा नहीं अपना सकता बल्कि लाज़िम है कि अल्लाह उसे हासून की तरह बुलाकर मुक़र्र करे।

⁵ इसी तरह मसीह ने भी अपनी मरज़ी से इमामे-आज़म का पुरवकार ओहदा नहीं अपनाया। इसके बजाए अल्लाह ने उससे कहा,

“तू मेरा फ़रज़ंद है,
आज मैं तेरा बाप बन गया हूँ।”

⁶ कहीं और वह फ़रमाता है,
“तू अबद तक इमाम है,
ऐसा इमाम जैसा मलिके-सिद्क था।”

⁷ जब ईसा इस दुनिया में था तो उसने जोर जोर से पुकारकर और आँसू बहा बहाकर उसे दुआँ और इल्तिजाँ पेश की * जो उसे मौत से बचा सकता था। और अल्लाह ने उस की सुनी, क्योंकि वह खुदा का खौफ़ रखता था। ⁸ वह अल्लाह का फ़रज़ंद तो था, तो भी उसने दुख उठाने से फ़रमाँबरदारी सीखी। ⁹ जब वह कामिलियत तक पहुँच गया तो वह उन सबकी अबदी नजात का सरचश्मा बन गया जो उस की सुनते हैं। ¹⁰ उस वक़्त अल्लाह ने उसे इमामे-आज़म भी मुतैयिन किया, ऐसा इमाम जैसा मलिके-सिद्क था।

ईमान तर्क करने की बाबत आगाही

¹¹ इसके बारे में हम मज़ीद बहुत कुछ कह सकते हैं, लेकिन हम मुश्किल से इसकी तशरीह कर सकते हैं, क्योंकि आप सुनने में सुस्त हैं। ¹² असल में इतना वक़्त गुज़र गया है कि अब आपको खुद उस्ताद होना चाहिए। अफ़सोस कि ऐसा नहीं है बल्कि आपको इसकी ज़रूरत है कि कोई आपके पास आकर आपको अल्लाह के कलाम की बुनियादी सच्चाइयाँ दुबारा सिखाए। आप अब तक ठोस खाना नहीं खा सकते बल्कि आपको दूध की ज़रूरत है। ¹³ जो दूध ही पी सकता है वह अभी छोटा बच्चा ही है और वह रास्तबाज़ी की तालीम से नावाक़िफ़ है। ¹⁴ इसके मुकाबले में ठोस खाना बालिगों के लिए है जिन्होंने अपनी बलूग़त के बाइस अपनी रूहानी बसारात को इतनी तरबियत दी है कि वह भलाई और बुराई में इम्तियाज़ कर सकते हैं।

6

¹ इसलिए आँ, हम मसीह के बारे में बुनियादी तालीम को छोड़कर बलूग़त की तरफ़ आगे बढ़ें। क्योंकि ऐसी बातें दोहराने की ज़रूरत नहीं होनी चाहिए जिनसे ईमान की बुनियाद रखी जाती है, मसलन मौत तक पहुँचानेवाले काम से तौबा, ² बपतिस्मा क्या है, किसी पर हाथ रखने की तालीम, मुरदों के जी उठने और अबदी सज़ा पाने की तालीम। ³ चुनौचे अल्लाह की मरज़ी हुई तो हम यह छोड़कर आगे बढ़ेंगे।

⁴ नामुमकिन है कि उन्हें बहाल करके दुबारा तौबा तक पहुँचाया जाए जिन्होंने अपना ईमान तर्क कर दिया हो। उन्हें तो एक बार अल्लाह के नूर में लाया गया था, उन्होंने आसमान की नेमत चख ली थी, वह रूहल-कुदूस में शरीक हुए, ⁵ उन्होंने अल्लाह के कलाम की भलाई और आनेवाले ज़माने की कुव्वतों का तज़रबा किया था। ⁶ और फिर उन्होंने अपना ईमान तर्क कर दिया! ऐसे लोगों को बहाल करके दुबारा तौबा तक पहुँचाना नामुमकिन है। क्योंकि ऐसा करने से वह अल्लाह के फ़रज़ंद को दुबारा मसलूब करके उसे लान-तान का निशाना बना देते हैं।

* **5:7** यानी इमाम की हैसियत से उसने यह दुआँ और इल्तिजाँ कुरबानी के तौर पर पेश की।

7 अल्लाह उस ज़मीन को बरकत देता है जो अपने पर बार बार पड़नेवाली बारिश को जज़ब करके ऐसी फ़सल पैदा करती है जो खेतीबाड़ी करनेवाले के लिए मुफ़ीद हो। 8 लेकिन अगर वह सिर्फ़ ख़ारदार पौदे और ऊँटकटारे पैदा करे तो वह बेकार है और इस ख़तरे में है कि उस पर लानत भेजी जाए। अंजामे-कार उस पर का सब कुछ जलाया जाएगा।

9 अज़ीज़ो, गो हम इस तरह की बातें कर रहे हैं तो भी हमारा एतमाद यह है कि आपको वह बेहतरीन बरकतें हासिल हैं जो नज़ात से मिलती हैं। 10 क्योंकि अल्लाह बेइन्साफ़ नहीं है। वह आपका काम और वह मुहब्बत नहीं भूलेगा जो आपने उसका नाम लेकर ज़ाहिर की जब आपने मुक़द्दीसीन की ख़िदमत की बल्कि आज तक कर रहे हैं। 11 लेकिन हमारी बड़ी ख़ाहिश यह है कि आपमें से हर एक इसी सरगरमी का इज़हार आख़िर तक करता रहे ताकि जिन बातों की उम्मीद आप रखते हैं वह वाकई पूरी हो जाएँ। 12 हम नहीं चाहते कि आप सुस्त हो जाएँ बल्कि यह कि आप उनके नमूने पर चलें जो इमान और सब्र से वह कुछ मीरास में पा रहे हैं जिसका वादा अल्लाह ने किया है।

अल्लाह का यक़ीनी वादा

13 जब अल्लाह ने क़सम खाकर इब्राहीम से वादा किया तो उसने अपनी ही क़सम खाकर यह वादा किया। क्योंकि कोई और नहीं था जो उससे बड़ा था जिसकी क़सम वह खा सकता। 14 उस वक़्त उसने कहा, “मैं ज़रूर तुझे बहुत बरकत दूँगा, और मैं यक़ीनन तुझे कसरत की औलाद दूँगा।” 15 इस पर इब्राहीम ने सब्र से इंतज़ार करके वह कुछ पाया जिसका वादा किया गया था। 16 क़सम खाते वक़्त लोग उस की क़सम खाते हैं जो उनसे बड़ा होता है। इस तरह से क़सम में बयानकरदा बात की तसदीक़ बहस-मुबाहसा की हर गुंजाइश को ख़त्म कर देती है। 17 अल्लाह ने भी क़सम खाकर अपने वादे की तसदीक़ की। क्योंकि वह अपने वादे के वारिसों पर साफ़ ज़ाहिर करना चाहता था कि उसका इरादा कभी नहीं बदलेगा। 18 गरज़, यह दो बातें कायम रही हैं, अल्लाह का वादा और उस की क़सम। वह इन्हें न तो बदल सकता न इनके बारे में झूट बोल सकता है। यों हम जिन्होंने उसके पास पनाह ली है बड़ी तसल्ली पाकर उस उम्मीद को मज़बूती से थामे रख सकते हैं जो हमें पेश की गई है। 19 क्योंकि यह उम्मीद हमारी जान के लिए मज़बूत लंगर है। और यह आसमानी बैतुल-मुक़द्दस के मुक़द्दसतरीन कमरे के परदे में से गुज़रकर उसमें दाख़िल होती है। 20 वहीं ईसा हमारे आगे आगे जाकर हमारी ख़ातिर दाख़िल हुआ है। यों वह मलिके-सिद्क़ की मानिद हमेशा के लिए इमामे-आज़म बन गया है।

7

मलिके-सिद्क़

1 यह मलिके-सिद्क़, सालिम का बादशाह और अल्लाह तआला का इमाम था। जब इब्राहीम चार बादशाहों को शिकस्त देने के बाद वापस आ रहा था तो मलिके-सिद्क़ उससे मिला और उसे बरकत दी। 2 इस पर इब्राहीम ने उसे तमाम लूट के माल का दसवाँ हिस्सा दे दिया। अब मलिके-सिद्क़ का मतलब “रास्तबाज़ी का बादशाह” है। दूसरे, “सालिम का बादशाह” का मतलब “सलामती का बादशाह” है। 3 न उसका बाप या माँ है, न कोई नसबनामा। उस की ज़िंदगी का न तो आगाज़ है, न इख़िताम। अल्लाह के फ़रज़ंद की तरह वह अबद तक इमाम रहता है।

4 ग़ौर करें कि वह कितना अज़ीम था। हमारे बापदादा इब्राहीम ने उसे लूटे हुए माल का दसवाँ हिस्सा दे दिया। 5 अब शरीअत तलब करती है कि लावी की वह औलाद जो इमाम बन जाती है क़ौम यानी अपने भाइयों से पैदावार का दसवाँ हिस्सा ले, हालाँकि उनके भाई इब्राहीम की औलाद हैं। 6 लेकिन मलिके-सिद्क़ लावी की औलाद में से नहीं था। तो भी उसने इब्राहीम से दसवाँ हिस्सा लेकर उसे बरकत दी जिससे अल्लाह ने वादा किया था। 7 इसमें कोई शक़ नहीं कि कमहैसियत शख्स को उससे बरकत मिलती है जो ज़्यादा हैसियत का हो। 8 जहाँ लावी इमामों का ताल्लुक़ है फ़ानी इनसान दसवाँ हिस्सा लेते हैं। लेकिन मलिके-सिद्क़ के मामले में यह हिस्सा उसको मिला जिसके बारे में गवाही दी गई है कि वह ज़िंदा रहता है। 9 यह भी कहा जा सकता है कि जब इब्राहीम ने माल का दसवाँ हिस्सा दे दिया तो लावी ने उसके ज़रीए भी यह हिस्सा दिया, हालाँकि वह खुद दसवाँ हिस्सा लेता है। 10 क्योंकि गो लावी उस वक़्त पैदा नहीं हुआ था तो भी वह एक तरह से इब्राहीम के जिस्म में मौजूद था जब मलिके-सिद्क़ उससे मिला।

11 अगर लावी की कहानत (जिस पर शरीअत मबनी थी) कामिलियत पैदा कर सकती तो फिर एक और किस्म के इमाम की क्या ज़रूरत होती, उस की जो हारून जैसा न हो बल्कि मलिके-सिद्क़ जैसा? 12 क्योंकि जब भी कहानत बदल जाती है तो लाज़िम है कि शरीअत में भी तबदीली आए। 13 और हमारा खुदावंद जिसके बारे में यह बयान किया गया है वह एक फ़रक़ क़बीले का फ़रद था। उसके क़बीले के किसी भी फ़रद ने इमाम की ख़िदमत अदा नहीं की। 14 क्योंकि साफ़ मालूम है कि खुदावंद मसीह यहूदाह क़बीले का फ़रद था, और मूसा ने इस क़बीले को इमामों की ख़िदमत में शामिल न किया।

मलिके-सिद्क़ जैसा एक और इमाम

15 मामला मज़ीद साफ़ हो जाता है। एक फ़रक़ इमाम ज़ाहिर हुआ है जो मलिके-सिद्क़ जैसा है। 16 वह लावी के क़बीले का फ़रद होने से इमाम न बना जिस तरह शरीअत तकाज़ा करती थी, बल्कि वह लाफ़ानी ज़िंदगी की कुव्वत ही से इमाम बन गया। 17 क्योंकि कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है,

“तू अबद तक इमाम है,
ऐसा इमाम जैसा मलिके-सिद्क था।”

18 यों पुराने हुक्म को मनसूख कर दिया जाता है, क्योंकि वह कमजोर और बेकार था 19 (मूसा की शरीअत तो किसी चीज़ को कामिल नहीं बना सकती थी) और अब एक बेहतर उम्मीद मुहैया की गई है जिससे हम अल्लाह के करीब आ जाते हैं।

20 और यह नया निज़ाम अल्लाह की कसम से कायम हुआ। ऐसी कोई कसम न खाई गई जब दूसरे इमाम बने। 21 लेकिन ईसा एक कसम के ज़रीए इमाम बन गया जब अल्लाह ने फ़रमाया,

“रब ने कसम खाई है
और इससे पछताएगा नहीं,
‘तू अबद तक इमाम है’।”

22 इस कसम की वजह से ईसा एक बेहतर अहद की ज़मानत देता है।

23 एक और फ़रक़, पुराने निज़ाम में बहुत-से इमाम थे, क्योंकि मौत ने हर एक की ख़िदमत महदूद किए रखी। 24 लेकिन चूँकि ईसा अबद तक ज़िंदा है इसलिए उस की कहानत कभी भी ख़त्म नहीं होगी। 25 यों वह उन्हें अबदी नज़ात दे सकता है जो उसके वसीले से अल्लाह के पास आते हैं, क्योंकि वह अबद तक ज़िंदा है और उनकी शफ़ाअत करता रहता है।

26 हमें ऐसे ही इमामे-आज़म की ज़रूरत थी। हाँ, ऐसा इमाम जो मुक़द्दस, बेक़सूर, बेदाग़, गुनाहगारों से अलग और आसमानों से बुलंद हुआ है। 27 उसे दूसरे इमामों की तरह इसकी ज़रूरत नहीं कि हर रोज़ क़ुरबानियाँ पेश करे, पहले अपने लिए फिर क़ौम के लिए। बल्कि उसने अपने आपको पेश करके अपनी इस क़ुरबानी से उनके गुनाहों को एक बार सदा के लिए मिटा दिया। 28 मूसा की शरीअत ऐसे लोगों को इमामे-आज़म मुक़र्रर करती है जो कमज़ोर हैं। लेकिन शरीअत के बाद अल्लाह की कसम फ़रज़ंद को इमामे-आज़म मुक़र्रर करती है, और यह फ़रज़ंद अबद तक कामिल है।

8

ईसा हमारा इमामे-आज़म

1 जो कुछ हम कह रहे हैं उस की मरकज़ी बात यह है, हमारा एक ऐसा इमामे-आज़म है जो आसमान पर जलाली ख़ुदा के तख़्त के दहने हाथ बैठा है। 2 वहाँ वह मक़दिस में ख़िदमत करता है, उस हकीक़ी मुलाकात के ख़ैमे में जिसे इनसानी हाथों ने खड़ा नहीं किया बल्कि रब ने।

3 हर इमामे-आज़म को नज़राने और क़ुरबानियाँ पेश करने के लिए मुक़र्रर किया जाता है। इसलिए लाज़िम है कि हमारे इमामे-आज़म के पास भी कुछ हो जो वह पेश कर सके। 4 अगर यह दुनिया में होता तो इमामे-आज़म न होता, क्योंकि यहाँ इमाम तो हैं जो शरीअत के मतलूबा नज़राने पेश करते हैं। 5 जिस मक़दिस में वह ख़िदमत करते हैं वह उस मक़दिस की सिर्फ़ नक़ली सूरत और साया है जो आसमान पर है। यही वजह है कि अल्लाह ने मूसा को मुलाकात का ख़ैमा बनाने से पहले आगाह करके यह कहा, “ग़ौर कर कि सब कुछ ऐन उस नमूने के मुताबिक़ बनाया जाए जो मैं तुझे यहाँ पहाड़ पर दिखाता हूँ।” 6 लेकिन जो ख़िदमत ईसा को मिल गई है वह दुनिया के इमामों की ख़िदमत से कहीं बेहतर है, उतनी बेहतर जितना वह अहद जिसका दरमियानी ईसा है पुराने अहद से बेहतर है। क्योंकि यह अहद बेहतर वादों की बुनियाद पर बाँधा गया।

7 अगर पहला अहद बेइलज़ाम होता तो फिर नए अहद की ज़रूरत न होती। 8 लेकिन अल्लाह को अपनी क़ौम पर इलज़ाम लगाना पड़ा। उसने कहा,

“रब का फ़रमान है, ऐसे दिन आ रहे हैं
जब मैं इसराईल के घराने और यहूदाह के घराने से एक नया अहद बाँधूँगा।

9 यह उस अहद की मानिंद नहीं होगा

जो मैंने उनके बापदादा के साथ

उस दिन बाँधा था जब मैं उनका हाथ पकड़कर

उन्हें मिसर से निकाल लाया।

क्योंकि वह उस अहद के वफ़ादार न रहे

जो मैंने उनसे बाँधा था।

नतीजे में मेरी उनके लिए फ़िकर न रही।

10 ख़ुदावंद फ़रमाता है कि

जो नया अहद मैं उन दिनों के बाद उनसे बाँधूँगा

उसके तहत मैं अपनी शरीअत

उनके ज़हनों में डालकर

उनके दिलों पर कंदा करूँगा।

तब मैं ही उनका ख़ुदा हूँगा, और वह मेरी क़ौम होंगे।

11 उस वक़्त से इसकी ज़रूरत नहीं रहेगी

कि कोई अपने पड़ोसी या भाई को तालीम देकर कहे,

‘रब को जान लो।’

क्योंकि छोटे से लेकर बड़े तक

सब मुझे जानेगे,

12 क्योंकि मैं उनका कुसूर मुआफ करूँगा

और आइंदा उनके गुनाहों को याद नहीं करूँगा।”

13 इन अलफाज में अल्लाह एक नए अहद का जिक्र करता है और यों पुराने अहद को मतस्क करार देता है। और जो मतस्क और पुराना है उसका अंजाम करीब ही है।

9

दुनियावी और आसमानी इबादत

1 जब पहला अहद बाँधा गया तो इबादत करने के लिए हिदायात दी गई। ज़मीन पर एक मक़दिस भी बनाया गया, 2 एक ख़ैमा जिसके पहले कमरे में शमादान, मेज़ और उस पर पड़ी मखसूस की गई रोटियाँ थीं। उसका नाम “मुक़द्दस कमरा” था। 3 उसके पीछे एक और कमरा था जिसका नाम “मुक़द्दसतरीन कमरा” था। पहले और दूसरे कमरे के दरमियान वाक़े दरवाज़े पर परदा लगा था। 4 इस पिछले कमरे में बख़ूर जलाने के लिए सोने की कुरबानगाह और अहद का संदूक था। अहद के संदूक पर सोना मँढा हुआ था और उसमें तीन चीज़ें थीं : सोने का मरतबान जिसमें मन भरा था, हासून का वह असा जिससे कोंपलें फूट निकली थीं और पत्थर की वह दो तख्तियाँ जिन पर अहद के अहकाम लिखे थे। 5 संदूक पर इलाही जलाल के दो कस्बी फ़रिश्ते लगे थे जो संदूक के ढकने को साया देते थे जिसका नाम “कफ़फ़ारा का ढकना” था। लेकिन इस जगह पर हम सब कुछ मज़ीद तफ़सील से बयान नहीं करना चाहते।

6 यह चीज़ें इसी तरतीब से रखी जाती हैं। जब इमाम अपनी ख़िदमत के फ़रायज़ अदा करते हैं तो बाक्रायदगी से पहले कमरे में जाते हैं। 7 लेकिन सिर्फ़ इमामे-आज़म ही दूसरे कमरे में दाख़िल होता है, और वह भी साल में सिर्फ़ एक दफ़ा। जब भी वह जाता है वह अपने साथ खून लेकर जाता है जिसे वह अपने और क़ौम के लिए पेश करता है ताकि वह गुनाह मिट जाएँ जो लोगों ने ग़ैरइरादी तौर पर किए होते हैं। 8 इससे स्हुल-कुद्स दिखाता है कि मुक़द्दसतरीन कमरे तक रसाई उस वक़्त तक ज़ाहिर नहीं की गई थी जब तक पहला कमरा इस्तेमाल में था। 9 यह मजाज़न मौजूदा ज़माने की तरफ़ इशारा है। इसका मतलब यह है कि जो नज़राने और कुरबानियाँ पेश की जा रही हैं वह परस्तार के ज़मीर को पाक-साफ़ करके कामिल नहीं बना सकतीं। 10 क्योंकि इनका ताल्लुक सिर्फ़ खाने-पीनेवाली चीज़ों और गुस्ल की मुख़्तलिफ़ रस्मों से होता है, ऐसी ज़ाहिरी हिदायात जो सिर्फ़ नए निज़ाम के आने तक लागू हैं।

11 लेकिन अब मसीह आ चुका है, उन अच्छी चीज़ों का इमामे-आज़म जो अब हासिल हुई हैं। जिस ख़ैमे में वह ख़िदमत करता है वह कहीं ज़्यादा अज़ीम और कामिल है। यह ख़ैमा इनसानी हाथों से नहीं बनाया गया यानी यह इस कायनात का हिस्सा नहीं है। 12 जब मसीह एक बार सदा के लिए ख़ैमे के मुक़द्दसतरीन कमरे में दाख़िल हुआ तो उसने कुरबानियाँ पेश करने के लिए बक़रों और बछड़ों का खून इस्तेमाल न किया। इसके बजाए उसने अपना ही खून पेश किया और यों हमारे लिए अबदी नजात हासिल की। 13 पुराने निज़ाम में बैल-बक़रों का खून और जवान गाय की राख नापाक लोगों पर छिड़के जाते थे ताकि उनके जिस्म पाक-साफ़ हो जाएँ। 14 अगर इन चीज़ों का यह असर था तो फिर मसीह के खून का क्या ज़बरदस्त असर होगा! अज़ली स्ह के ज़रीए उसने अपने आपको बेदाग़ कुरबानी के तौर पर पेश किया। यों उसका खून हमारे ज़मीर को मौत तक पहुँचानेवाले कामों से पाक-साफ़ करता है ताकि हम ज़िंदा खुदा की ख़िदमत कर सकें।

15 यही वजह है कि मसीह एक नए अहद का दरमियानी है। मक़सद यह था कि जितने लोगों को अल्लाह ने बुलाया है उन्हें अल्लाह की मौऊदा और अबदी मीरास मिले। और यह सिर्फ़ इसलिए मुमकिन हुआ है कि मसीह ने मरकर फ़िघा दिया ताकि लोग उन गुनाहों से छुटकारा पाएँ जो उनसे उस वक़्त सरज़द हुए जब वह पहले अहद के तहत थे।

16 जहाँ वसियत है वहाँ ज़रूरी है कि वसियत करनेवाले की मौत की तसदीक़ की जाए। 17 क्योंकि जब तक वसियत करनेवाला ज़िंदा हो वसियत बेअसर होती है। इसका असर वसियत करनेवाले की मौत ही से शुरू होता है। 18 यही वजह है कि पहला अहद बाँधते वक़्त भी खून इस्तेमाल हुआ। 19 क्योंकि पूरी क़ौम को शरीअत का हर हुक्म सुनाने के बाद मूसा ने बछड़ों का खून पानी से मिलाकर उसे ज़ूफ़े के गुच्छे और किरमिज़ी रंग के धागे के ज़रीए शरीअत की किताब और पूरी क़ौम पर छिड़का। 20 उसने कहा, “यह खून उस अहद की तसदीक़ करता है जिसकी पैरवी करने का हुक्म अल्लाह ने तुम्हें दिया है।” 21 इसी तरह मूसा ने यह खून मुलाक़ात के ख़ैमे और इबादत के तमाम सामान पर छिड़का। 22 न सिर्फ़ यह बल्कि शरीअत तकाज़ा करती है कि तकरीबन हर चीज़ को खून ही से पाक-साफ़ किया जाए बल्कि अल्लाह के हुज़ूर खून पेश किए बग़ैर मुआफ़ी मिल ही नहीं सकती।

मसीह की कुरबानी गुनाहों को मिटा देती है

23 गरज़, लाज़िम था कि यह चीज़ें जो आसमान की असली चीज़ों की नक़ली सूरतें हैं पाक-साफ़ की जाएँ। लेकिन आसमानी चीज़ें खुद ऐसी कुरबानियों का मुतालबा करती हैं जो इनसे कहीं बेहतर हों। 24 क्योंकि मसीह सिर्फ़ इनसानी हाथों से बने मक़दिस में दाख़िल नहीं

हुआ जो असली मकदिस की सिर्फ नकली सूरत थी बल्कि वह आसमान में ही दाखिल हुआ ताकि अब से हमारी खातिर अल्लाह के सामने हाज़िर हो। ²⁵ दुनिया का इमामे-आज़म तो सालाना किसी और (यानी जानवर) का खून लेकर मुकद्दसतरीन कमरे में दाखिल होता है। लेकिन मसीह इसलिए आसमान में दाखिल न हुआ कि वह अपने आपको बार बार कुरबानी के तौर पर पेश करे। ²⁶ अगर ऐसा होता तो उसे दुनिया की तखलीक से लेकर आज तक बहुत दफा दुख सहना पड़ता। लेकिन ऐसा नहीं है बल्कि अब वह ज़मानों के इखिताम पर एक ही बार सदा के लिए ज़ाहिर हुआ ताकि अपने आपको कुरबान करने से गुनाह को दूर करे। ²⁷ एक बार मरना और अल्लाह की अदालत में हाज़िर होना हर इनसान के लिए मुकर्रर है। ²⁸ इसी तरह मसीह को भी एक ही बार बहुतेरे गुनाहों को उठाकर ले जाने के लिए कुरबान किया गया। दूसरी बार जब वह ज़ाहिर होगा तो गुनाहों को दूर करने के लिए ज़ाहिर नहीं होगा बल्कि उन्हें नजात देने के लिए जो शिद्दत से उसका इंतज़ार कर रहे हैं।

10

¹ मूसवी शरीअत आनेवाली अच्छी और असली चीज़ों की सिर्फ नकली सूरत और साया है। यह उन चीज़ों की असली शकल नहीं है। इसलिए यह उन्हें कभी भी कामिल नहीं कर सकती जो साल बसाल और बार बार अल्लाह के हुज़ूर आकर वही कुरबानियाँ पेश करते रहते हैं। ² अगर वह कामिल कर सकती तो कुरबानियाँ पेश करने की ज़रूरत न रहती। क्योंकि इस सूरत में परस्तार एक बार सदा के लिए पाक-साफ़ हो जाते और उन्हें गुनाहगार होने का शऊर न रहता। ³ लेकिन इसके बजाए यह कुरबानियाँ साल बसाल लोगों को उनके गुनाहों की याद दिलाती हैं। ⁴ क्योंकि मुमकिन ही नहीं कि बैल-बकरों का खून गुनाहों को दूर करे।

⁵ इसलिए मसीह दुनिया में आते वक़्त अल्लाह से कहता है,

“तू कुरबानियाँ और नज़रें नहीं चाहता था
लेकिन तूने मेरे लिए एक जिस्म तैयार किया।

⁶ भस्म होनेवाली कुरबानियाँ और गुनाह की कुरबानियाँ
तुझे पसंद नहीं थीं।

⁷ फिर मैं बोल उठा, ‘ऐ खुदा, मैं हाज़िर हूँ
ताकि तेरी मरज़ी पूरी करूँ,
जिस तरह मेरे बारे में कलामे-मुकद्दस में * लिखा है।’”

⁸ पहले मसीह कहता है, “न तू कुरबानियाँ, नज़रें, भस्म होनेवाली कुरबानियाँ या गुनाह की कुरबानियाँ चाहता था, न उन्हें पसंद करता था” गो शरीअत इन्हें पेश करने का मुतालबा करती है। ⁹ फिर वह फ़रमाता है, “मैं हाज़िर हूँ ताकि तेरी मरज़ी पूरी करूँ।” यों वह पहला निज़ाम खत्म करके उस की जगह दूसरा निज़ाम कायम करता है। ¹⁰ और उस की मरज़ी पूरी हो जाने से हमें ईसा मसीह के बदन के वसीले से मखसूसो-मुकद्दस किया गया है। क्योंकि उसे एक ही बार सदा के लिए हमारे लिए कुरबान किया गया।

¹¹ हर इमाम रोज़ बरोज़ मकदिस में खड़ा अपनी खिदमत के फ़रायज़ अदा करता है। रोज़ाना और बार बार वह वही कुरबानियाँ पेश करता रहता है जो कभी भी गुनाहों को दूर नहीं कर सकती। ¹² लेकिन मसीह ने गुनाहों को दूर करने के लिए एक ही कुरबानी पेश की, एक ऐसी कुरबानी जिसका असर सदा के लिए रहेगा। फिर वह अल्लाह के दहने हाथ बैठ गया। ¹³ वहीं वह अब इंतज़ार करता है जब तक अल्लाह उसके दुश्मनों को उसके पाँवों की चौकी न बना दे। ¹⁴ यों उसने एक ही कुरबानी से उन्हें सदा के लिए कामिल बना दिया है जिन्हें मुकद्दस किया जा रहा है।

¹⁵ रूहल-कुद्दस भी हमें इसके बारे में गवाही देता है। पहले वह कहता है,

¹⁶ “रब फ़रमाता है कि
जो नया अहद मैं उन दिनों के बाद उनसे बाँधूँगा
उसके तहत मैं अपनी शरीअत
उनके दिलों में डालकर
उनके ज़हनों पर कंदा करूँगा।”

¹⁷ फिर वह कहता है, “उस वक़्त से मैं उनके गुनाहों और बुराइयों को याद नहीं करूँगा।” ¹⁸ और जहाँ इन गुनाहों की मुआफ़ी हुई है वहाँ गुनाहों को दूर करने की कुरबानियों की ज़रूरत ही नहीं रही।

आएँ, हम अल्लाह के हुज़ूर आएँ

¹⁹ चुनौचे भाइयो, अब हम ईसा के खून के वसीले से पूरे एतमाद के साथ मुकद्दसतरीन कमरे में दाखिल हो सकते हैं। ²⁰ अपने बदन की कुरबानी से ईसा ने उस कमरे के परदे में से गुज़रने का एक नया और ज़िंदगीबख़्श रास्ता खोल दिया। ²¹ हमारा एक अज़ीम इमामे-आज़म है जो अल्लाह के घर पर मुकर्रर है। ²² इसलिए आएँ, हम खुलूसदिली और ईमान के पूरे एतमाद के साथ अल्लाह के हुज़ूर आएँ। क्योंकि हमारे दिलों पर मसीह का खून छिड़का गया है ताकि हमारे मुजरिम ज़मीर साफ़ हो जाएँ। नीज़, हमारे बदनो को पाक-साफ़ पानी से धोया गया है।

* **10:7** लफ़ज़ी तरज़ुमा : किताब के तूमार में।

23 आँ, हम मजबूती से उस उम्मीद को थामे रखें जिसका इकरार हम करते हैं। हम डॉक्टर न हो जाएँ, क्योंकि जिसने इस उम्मीद का वादा किया है वह वफ़ादार है। 24 और आँ, हम इस पर ध्यान दें कि हम एक दूसरे को किस तरह मुहब्बत दिखाने और नेक काम करने पर उभार सकें। 25 हम बाहम जमा होने से बाज़ न आँ, जिस तरह बाज़ की आदत बन गई है। इसके बजाए हम एक दूसरे की हौसलाअफ़जाई करें, खासकर यह बात मदे-नज़र रखकर कि खुदावंद का दिन करीब आ रहा है।

26 ख़बरदार! अगर हम सच्चाई जान लेने के बाद भी जान-बूझकर गुनाह करते रहें तो मसीह की कुरबानी इन गुनाहों को दूर नहीं कर सकेगी। 27 फिर सिर्फ़ अल्लाह की अदालत की हौलनाक तवक्को बाकी रहेगी, उस भड़कती हुई आग की जो अल्लाह के मुखालिफ़ों को भस्म कर डालेगी। 28 जो मूसा की शरीअत रद्द करता है उस पर रहम नहीं किया जा सकता बल्कि अगर दो या इससे ज़ायद लोग इस जुर्म की गवाही दें तो उसे सज़ाए-मौत दी जाए। 29 तो फिर क्या ख़याल है, वह कितनी सख़्त सज़ा के लायक होगा जिसने अल्लाह के फ़रज़ंद को पाँवों तले रौंदा? जिसने अहद का वह खून हकीर जाना जिससे उसे मखसूसो-मुकद्दस किया गया था? और जिसने फ़ज़ल के रूह की बेइज़्जती की? 30 क्योंकि हम उसे जानते हैं जिसने फ़रमाया, “इंतक़ाम लेना मेरा ही काम है, मैं ही बदला लूँगा।” उसने यह भी कहा, “रब अपनी क्रौम का इनसाफ़ करेगा।” 31 यह एक हौलनाक बात है अगर ज़िंदा खुदा हमें सज़ा देने के लिए पकड़े।

32 ईमान के पहले दिन याद करें जब अल्लाह ने आपको रौशन कर दिया था। उस वक़्त के सख़्त मुकाबले में आपको कई तरह का दुख सहना पड़ा, लेकिन आप साबितक़दम रहे। 33 कभी कभी आपकी बेइज़्जती और अवाम के सामने ही ईज़ारसानी होती थी, कभी कभी आप उनके साथी थे जिनसे ऐसा सुलूक हो रहा था। 34 जिन्हें जेल में डाला गया आप उनके दुख में शरीक हुए और जब आपका मालो-मता लूटा गया तो आपने यह बात ख़ुशी से बरदाश्त की। क्योंकि आप जानते थे कि वह माल हमसे नहीं छीन लिया गया जो पहले की निसबत कहीं बेहतर है और हर सूरत में कायम रहेगा। 35 चुनाँचे अपने इस एतमाद को हाथ से जाने न दें क्योंकि इसका बड़ा अज़्र मिलेगा। 36 लेकिन इसके लिए आपको साबितक़दमी की ज़रूरत है ताकि आप अल्लाह की मरज़ी पूरी कर सकें और यों आपको वह कुछ मिल जाए जिसका वादा उसने किया है। 37 क्योंकि कलामे-मुकद्दस यह फ़रमाता है,

“थोड़ी ही देर बाकी है

तो आनेवाला पहुँचेगा, वह देर नहीं करेगा।

38 लेकिन मेरा रास्तबाज़ ईमान ही से जीता रहेगा,

और अगर वह पीछे हट जाए

तो मैं उससे ख़ुश नहीं हूँगा।”

39 लेकिन हम उनमें से नहीं हैं जो पीछे हटकर तबाह हो जाएंगे बल्कि हम उनमें से हैं जो ईमान रखकर नज़ात पाते हैं।

11

ईमान

1 ईमान क्या है? यह कि हम उसमें कायम रहें जिस पर हम उम्मीद रखते हैं और कि हम उसका यकीन रखें जो हम नहीं देख सकते। 2 ईमान ही से पुराने ज़मानों के लोगों को अल्लाह की क़बूलियत हासिल हुई।

3 ईमान के ज़रीए हम जान लेते हैं कि कायनात को अल्लाह के कलाम से खलक किया गया, कि जो कुछ हम देख सकते हैं नज़र आनेवाली चीज़ों से नहीं बना।

4 यह ईमान का काम था कि हाबील ने अल्लाह को एक ऐसी कुरबानी पेश की जो काबील की कुरबानी से बेहतर थी। इस ईमान की बिना पर अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ ठहराकर उस की अच्छी गवाही दी, जब उसने उस की कुरबानियों को क़बूल किया। और ईमान के ज़रीए वह अब तक बोलता रहता है हालाँकि वह मुरदा है। 5 यह ईमान का काम था कि हनूक न मरा बल्कि ज़िंदा हालत में आसमान पर उठाया गया। कोई भी उसे ढूँडकर पा न सका क्योंकि अल्लाह उसे आसमान पर उठा ले गया था। वजह यह थी कि उठाए जाने से पहले उसे यह गवाही मिली कि वह अल्लाह को पसंद आया। 6 और ईमान रखे बग़ैर हम अल्लाह को पसंद नहीं आ सकते। क्योंकि लाज़िम है कि अल्लाह के हुज़ूर आनेवाला ईमान रखे कि वह है और कि वह उन्हें अज़्र देता है जो उसके तालिब हैं।

7 यह ईमान का काम था कि नूह ने अल्लाह की सुनी जब उसने उसे आनेवाली बातों के बारे में आगाह किया, ऐसी बातों के बारे में जो अभी देखने में नहीं आई थीं। नूह ने खुदा का ख़ौफ़ मानकर एक कश्ती बनाई ताकि उसका ख़ानदान बच जाए। यों उसने अपने ईमान के ज़रीए दुनिया को मुजरिम करार दिया और उस रास्तबाज़ी का वारिस बन गया जो ईमान से हासिल होती है।

8 यह ईमान का काम था कि इब्राहीम ने अल्लाह की सुनी जब उसने उसे बुलाकर कहा कि वह एक ऐसे मुल्क में जाए जो उसे बाद में मीरास में मिलेगा। हाँ, वह अपने मुल्क को छोड़कर रवाना हुआ, हालाँकि उसे मालूम न था कि वह कहाँ जा रहा है। 9 ईमान के ज़रीए वह वादा किए हुए मुल्क में अजनबी की हैसियत से रहने लगा। वह ख़ैमों में रहता था और इसी तरह इसहाक और याकूब भी जो उसके साथ उसी वादे के वारिस थे। 10 क्योंकि इब्राहीम उस शहर के इंतज़ार में था जिसकी मजबूत बुनियाद है और जिसका नक्श बनाने और तामीर करनेवाला खुद अल्लाह है।

11 यह ईमान का काम था कि इब्राहीम बाप बनने के काबिल हो गया, हालाँकि वह बुढ़ापे की वजह से बाप नहीं बन सकता था। इसी तरह सारा भी बच्चे जन्म नहीं दे सकती थी। लेकिन इब्राहीम समझता था कि अल्लाह जिसने वादा किया है वफ़ादार है। 12 गो इब्राहीम तकरीबन मर चुका था तो भी उसी एक शख्स से बेशुमार औलाद निकली, तादाद में आसमान पर के सितारों और साहिल पर की रेत के ज़रों के बराबर।

13 यह तमाम लोग ईमान रखते रखते मर गए। उन्हें वह कुछ न मिला जिसका वादा किया गया था। उन्होंने उसे सिर्फ़ दूर ही से देखकर खुशआमदीद * कहा। और उन्होंने तसलीम किया कि हम ज़मीन पर † सिर्फ़ मेहमान और आरिज़ी तौर पर रहनेवाले अजनबी हैं। 14 जो इस क्रिस्म की बातें करते हैं वह ज़ाहिर करते हैं कि हम अब तक अपने वतन की तलाश में हैं। 15 अगर उनके ज़हन में वह मुल्क होता जिससे वह निकल आए थे तो वह अब भी वापस जा सकते थे। 16 इसके बजाए वह एक बेहतर मुल्क यानी एक आसमानी मुल्क की आरजू कर रहे थे। इसलिए अल्लाह उनका खुदा कहलाने से नहीं शर्माता, क्योंकि उसने उनके लिए एक शहर तैयार किया है।

17 यह ईमान का काम था कि इब्राहीम ने उस वक़्त इसहाक को कुरबानी के तौर पर पेश किया जब अल्लाह ने उसे आजमाया। हाँ, वह अपने इकलौते बेटे को कुरबान करने के लिए तैयार था अगरचे उसे अल्लाह के वादे मिल गए थे 18 कि “तेरी नसल इसहाक ही से कायम रहेगी।” 19 इब्राहीम ने सोचा, “अल्लाह मुरदों को भी ज़िंदा कर सकता है,” और मजाज़न उसे वाकई इसहाक मुरदों में से वापस मिल गया।

20 यह ईमान का काम था कि इसहाक ने आनेवाली चीज़ों के लिहाज़ से याक़ूब और एसौ को बरकत दी।

21 यह ईमान का काम था कि याक़ूब ने मरते वक़्त यूसुफ़ के दोनों बेटों को बरकत दी और अपनी लाठी के सिरे पर टेक लगाकर अल्लाह को सिजदा किया।

22 यह ईमान का काम था कि यूसुफ़ ने मरते वक़्त यह पेशगोई की कि इसराईली मिसर से निकलेंगे बल्कि यह भी कहा कि निकलते वक़्त मेरी हड्डियाँ भी अपने साथ ले जाओ।

23 यह ईमान का काम था कि मूसा के माँ-बाप ने उसे पैदाइश के बाद तीन माह तक छुपाए रखा, क्योंकि उन्होंने देखा कि वह ख़ूबसूरत है। वह बादशाह के हुक्म की खिलाफ़रज़ी करने से न डरे।

24 यह ईमान का काम था कि मूसा ने परवान चढ़कर इनकार किया कि उसे फिरौन की बेटी का बेटा ठहराया जाए। 25 आरिज़ी तौर पर गुनाह से लुफ़अंदोज़ होने के बजाए उसने अल्लाह की कौम के साथ बदसलूकी का निशाना बनने को तरज़ीह दी। 26 वह समझा कि जब मेरी मसीह की खातिर स्सवाई की जाती है तो यह मिसर के तमाम ख़ज़ानों से ज़्यादा कीमती है, क्योंकि उस की आँखें आनेवाले अज़्र पर लगी रहीं।

27 यह ईमान का काम था कि मूसा ने बादशाह के गुस्से से डरे बग़ैर मिसर को छोड़ दिया, क्योंकि वह गोया अनदेखे खुदा को मुसलसल अपनी आँखों के सामने रखता रहा। 28 यह ईमान का काम था कि उसने फ़सह की ईद मनाकर हुक्म दिया कि ख़ून को चौखटों पर लगाया जाए ताकि हलाक करनेवाला फ़रिश्ता उनके पहलौठे बेटों को न छुए।

29 यह ईमान का काम था कि इसराईली बहरे-कुलजुम में से यों गुज़र सके जैसे कि यह ख़ुशक ज़मीन थी। जब मिसरियों ने यह करने की कोशिश की तो वह डूब गए।

30 यह ईमान का काम था कि सात दिन तक यरीह शहर की फ़सील के गिर्द चक्कर लगाने के बाद पूरी दीवार गिर गई। 31 यह भी ईमान का काम था कि राहब फ़ाहिशा अपने शहर के बाकी नाफ़रमान बाशिंदों के साथ हलाक न हुई, क्योंकि उसने इसराईली जासूसों को सलामती के साथ खुशआमदीद कहा था।

32 मैं मज़ीद क्या कुछ कहूँ? मेरे पास इतना वक़्त नहीं कि मैं ज़िदौन, बरक़, समसून, इफ़ताह, दाऊद, समुएल और नबियों के बारे में सुनाता रहूँ। 33 यह सब ईमान के सबब से ही कामयाब रहे। वह बादशाहियों पर ग़ालिब आए और इनसाफ़ करते रहे। उन्हें अल्लाह के वादे हासिल हुए। उन्होंने शेरबबरों के मुँह बंद कर दिए 34 और आग के भड़कते शोलों को बुझा दिया। वह तलवार की ज़द से बच निकले। वह कमज़ोर थे लेकिन उन्हें कुव्वत हासिल हुई। जब जंग छिड़ गई तो वह इतने ताक़तवर साबित हुए कि उन्होंने ग़ैरमुल्की लश्करों को शिकस्त दी। 35 ईमान रखने के बाइस ख़वातीन को उनके मुरदा अज़ीज़ ज़िंदा हालत में वापस मिले।

लेकिन ऐसे भी थे जिन्हें तशद्दुद बरदाश्त करना पड़ा और जिन्होंने आज़ाद हो जाने से इनकार किया ताकि उन्हें एक बेहतर चीज़ यानी जी उठने का तज़रबा हासिल हो जाए। 36 बाज़ को लान-तान और कोड़ों बल्कि ज़ंजीरों और कैद का भी सामना करना पड़ा। 37 उन्हें संगसार किया गया, उन्हें ओरे से चीरा गया, उन्हें तलवार से मार डाला गया। बाज़ को भेड़-बकरियों की खालों में घुसना फिरना पड़ा। ज़स्सुरतमंद हालत में उन्हें दबाया और उन पर ज़ुल्म किया जाता रहा। 38 दुनिया उनके लायक नहीं थी! वह वीरान जगहों में, पहाड़ों पर, ग़ारों और गढों में आवारा फिरते रहे।

39 इन सबको ईमान की वजह से अच्छी गवाही मिली। तो भी इन्हें वह कुछ हासिल न हुआ जिसका वादा अल्लाह ने किया था। 40 क्योंकि उसने हमारे लिए एक ऐसा मनसूबा बनाया था जो कहीं बेहतर है। वह चाहता था कि यह लोग हमारे बग़ैर कामिलियत तक न पहुँचें।

12

अल्लाह हमारा बाप

* 11:13 लफ़ज़ी तरज़ुमा : सलामी दी। सलाम देकर इज़ज़त का इज़हार किया। सल्यूट किया। † 11:13 ज़मीन पर या मुल्क (यानी कनान) में।

1 गरज, हम गवाहों के इतने बड़े लश्कर से घेरे रहते हैं! इसलिए आँ, हम सब कुछ उतारें जो हमारे लिए स्कावट का बाइस बन गया है, हर गुनाह को जो हमें आसानी से उलझा लेता है। आँ, हम साबितकदमी से उस दौड़ में दौड़ते रहें जो हमारे लिए मुकर्रर की गई है। 2 और दौड़ते हुए हम ईसा को तकते रहें, उसे जो ईमान का बानी भी है और उसे तकमील तक पहुँचानेवाला भी। याद रहे कि गो वह खुशी हासिल कर सकता था तो भी उसने सलीबी मौत की शर्मनाक बेइज्जती की परवा न की बल्कि उसे बरदाश्त किया। और अब वह अल्लाह के तख्त के दहने हाथ जा बैठा है!

3 उस पर ध्यान दें जिसने गुनाहगारों की इतनी मुखालफत बरदाश्त की। फिर आप थकते थकते बेदिल नहीं हो जाएंगे। 4 देखें, आप गुनाह से लड़े तो हैं, लेकिन अभी तक आपको जान देने तक इसकी मुखालफत नहीं करनी पड़ी। 5 क्या आप कलामे-मुकद्दस की यह हौसलाअफ़जा बात भूल गए हैं जो आपको अल्लाह के फ़रज़ंद ठहराकर बयान करती है,

“मेरे बेटे, रब की तरबियत को हकीर मत जान,
जब वह तुझे डाँटे तो न बेदिल हो।

6 क्योंकि जो रब को प्यारा है उस की वह तादीब करता है,
वह हर एक को सज़ा देता है
जिसे उसने बेटे के तौर पर कबूल किया है।”

7 अपनी मुसीबतों को इलाही तरबियत समझकर बरदाश्त करें। इसमें अल्लाह आपसे बेटों का-सा सुलूक कर रहा है। क्या कभी कोई बेटा था जिसकी उसके बाप ने तरबियत न की? 8 अगर आपकी तरबियत सबकी तरह न की जाती तो इसका मतलब यह होता कि आप अल्लाह के हकीकी फ़रज़ंद न होते बल्कि नाजायज़ औलाद। 9 देखें, जब हमारे इनसानी बाप ने हमारी तरबियत की तो हमने उस की इज्जत की। अगर ऐसा है तो कितना ज़्यादा ज़रूरी है कि हम अपने रूहानी बाप के ताबे होकर ज़िंदगी पाएँ। 10 हमारे इनसानी बापों ने हमें अपनी समझ के मुताबिक थोड़ी देर के लिए तरबियत दी। लेकिन अल्लाह हमारी ऐसी तरबियत करता है जो फ़ायदे का बाइस है और जिससे हम उस की कुदूसियत में शरीक होने के काबिल हो जाते हैं। 11 जब हमारी तरबियत की जाती है तो उस वक़्त हम खुशी महसूस नहीं करते बल्कि ग़म। लेकिन जिनकी तरबियत इस तरह होती है वह बाद में रास्तबाज़ी और सलामती की फ़सल काटते हैं।

हिदायात

12 चुनौचे अपने थकेहारे बाजूओ और कमज़ोर घुटनों को मज़बूत करें। 13 अपने रास्ते चलने के काबिल बना दें ताकि जो अज़ु लँगडा है उसका जोड़ उतर न जाए * बल्कि शफ़ा पाए।

14 सबके साथ मिलकर सुलह-सलामती और कुदूसियत के लिए जिद्द-जहद करते रहें, क्योंकि जो मुकद्दस नहीं है वह खुदावंद को कभी नहीं देखेगा। 15 इस पर ध्यान देना कि कोई अल्लाह के फ़ज़ल से महसूस न रहे। ऐसा न हो कि कोई कड़वी जड़ फूट निकले और बढ़कर तकलीफ़ का बाइस बन जाए और बहुतों को नापाक कर दे। 16 ध्यान दें कि कोई भी ज़िनाकार या एसौ जैसा दुनियावी शाख्स न हो जिसने एक ही खाने के एवज़ अपने वह मौरूसी हुकूक बेच डाले जो उसे बड़े बेटे की हैसियत से हासिल थे। 17 आपको भी मालूम है कि बाद में जब वह यह बरकत विरासत में पाना चाहता था तो उसे रद्द किया गया। उस वक़्त उसे तौबा का मौक़ा न मिला हालाँकि उसने औसू बहा बहाकर यह बरकत हासिल करने की कोशिश की।

18 आप उस तरह अल्लाह के हुज़ूर नहीं आए जिस तरह इसराईली जब वह सीना पहाड़ पर पहुँचे, उस पहाड़ के पास जिसे छुआ जा सकता था। वहाँ आग भड़क रही थी, अंधेरा ही अंधेरा था और आँधी चल रही थी। 19 जब नरसिंगे की आवाज़ सुनाई दी और अल्लाह उनसे हमकलाम हुआ तो सुननेवालों ने उससे इल्तिजा की कि हमें मज़ीद कोई बात न बता। 20 क्योंकि वह यह हुक्म बरदाश्त नहीं कर सकते थे कि “अगर कोई जानवर भी पहाड़ को छू ले तो उसे संगसार करना है।” 21 यह मंज़र इतना हैबतनाक था कि मूसा ने कहा, “मैं ख़ौफ़ के मारे काँप रहा हूँ।”

22 नहीं, आप सिय्यून पहाड़ के पास आ गए हैं, यानी ज़िंदा खुदा के शहर आसमानी यरूशलम के पास। आप बेशुमार फ़रिशतों और जशन मनेवाली जमात के पास आ गए हैं, 23 उन पहलौठों की जमात के पास जिनके नाम आसमान पर दर्ज किए गए हैं। आप तमाम इनसानों के मुंसिफ़ अल्लाह के पास आ गए हैं और कामिल किए गए रास्तबाज़ों की रूहों के पास। 24 नीज़ आप नए अहद के दरमियानी ईसा के पास आ गए हैं और उस छिड़काए गए खून के पास जो हाबील के खून की तरह बदला लेने की बात नहीं करता बल्कि एक ऐसी मुआफ़ी देता है जो कहीं ज़्यादा मुअस्सिर है।

25 चुनौचे खबरदार रहें कि आप उस की सुनने से इनकार न करें जो इस वक़्त आपसे हमकलाम हो रहा है। क्योंकि अगर इसराईली न बचे जब उन्होंने दुनियावी पैगंबर मूसा की सुनने से इनकार किया तो फिर हम किस तरह बचेंगे अगर हम उस की सुनने से इनकार करें जो आसमान से हमसे हमकलाम होता है। 26 जब अल्लाह सीना पहाड़ पर से बोल उठा तो ज़मीन काँप गई, लेकिन अब उसने वादा किया है, “एक बार फिर मैं न सिर्फ़ ज़मीन को हिला दूँगा बल्कि आसमान को भी।” 27 “एक बार फिर” के अलफ़ाज़ इस तरफ़ इशारा करते हैं कि ख़लक की गई चीज़ों को हिलाकर दूर किया जाएगा और नतीजे में सिर्फ़ वह चीज़ें कायम रहेंगी जिन्हें हिलाया नहीं जा सकता।

* 12:13 एक और मुमकिन तरज़ुमा : जो लँगडा है वह भटक न जाए।

28 चुनौचे आएँ, हम शुक्रगुजार हों। क्योंकि हमें एक ऐसी बादशाही हासिल हो रही है जिसे हिलाया नहीं जा सकता। हाँ, हम शुक्रगुजारी की इस रूह में एहतराम और खौफ के साथ अल्लाह की पसंदीदा परस्तिश करें, 29 क्योंकि हमारा खुदा हकीकतन भस्म कर देनेवाली आग है।

13

हम अल्लाह को किस तरह पसंद आएँ

1 एक दूसरे से भाइयों की-सी मुहब्बत रखते रहें। 2 मेहमान-नवाजी मत भूलना, क्योंकि ऐसा करने से बाज़ ने नादानिस्ता तौर पर फरिश्तों की मेहमान-नवाजी की है। 3 जो कैद में हैं, उन्हें यों याद रखना जैसे आप खुद उनके साथ कैद में हों। और जिनके साथ बदसलूकी हो रही है उन्हें यों याद रखना जैसे आपसे यह बदसलूकी हो रही हो।

4 लाज़िम है कि सबके सब इज़्जदवाजी ज़िंदगी का एहतराम करें। शौहर और बीवी एक दूसरे के वफ़ादार रहें, क्योंकि अल्लाह ज़िनाकारों और शादी का बंधन तोड़नेवालों की अदालत करेगा।

5 आपकी ज़िंदगी पैसों के लालच से आज़ाद हो। उसी पर इकतिफ़ा करें जो आपके पास है, क्योंकि अल्लाह ने फ़रमाया है, “मैं तुझे कभी नहीं छोड़ूँगा, मैं तुझे कभी तर्क नहीं करूँगा।” 6 इसलिए हम एतमाद से कह सकते हैं,

“रब मेरी मदद करनेवाला है,

इसलिए मैं नहीं डरूँगा।

इनसान मेरा क्या बिगाड़ सकता है?”

7 अपने राहनुमाओं को याद रखें जिन्होंने आपको अल्लाह का कलाम सुनाया। इस पर गौर करें कि उनके चाल-चलन से कितनी भलाई पैदा हुई है, और उनके ईमान के नमूने पर चलें। 8 ईसा मसीह माज़ी में, आज और अबद तक यकसौं है। 9 तरह तरह की और बेगाना तालीमात आपको इधर उधर न भटकाएँ। आप तो अल्लाह के फ़ज़ल से तकवियत पाते हैं और इससे नहीं कि आप मुख्तलिफ़ खानों से परहेज़ करते हैं। इसमें कोई खास फ़ायदा नहीं है।

10 हमारे पास एक ऐसी कुरबानगाह है जिसकी कुरबानी खाना मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत करनेवालों के लिए मना है। 11 क्योंकि गो इमामे-आज़म जानवरों का खून गुनाह की कुरबानी के तौर पर मुक़द्दसतरीन कमरे में ले जाता है, लेकिन उनकी लाशों को ख़ैमागाह के बाहर जलाया जाता है। 12 इस वजह से ईसा को भी शहर के बाहर सलीबी मौत सहनी पड़ी ताकि क्रौम को अपने खून से मखसूसो-मुक़द्दस करे। 13 इसलिए आएँ, हम ख़ैमागाह से निकलकर उसके पास जाएँ और उस की बेइज्जती में शरीक हो जाएँ। 14 क्योंकि यहाँ हमारा कोई कायम रहनेवाला शहर नहीं है बल्कि हम आनेवाले शहर की शदीद आरज़ू रखते हैं। 15 चुनौचे आएँ, हम ईसा के वसीले से अल्लाह को हम्दो-सना की कुरबानी पेश करें, यानी हमारे होंटों से उसके नाम की तारीफ़ करनेवाला फल निकले। 16 नीज़, भलाई करना और दूसरों को अपनी बरकात में शरीक करना मत भूलना, क्योंकि ऐसी कुरबानियाँ अल्लाह को पसंद हैं।

17 अपने राहनुमाओं की सुनें और उनकी बात मानें। क्योंकि वह आपकी देख-भाल करते करते जागते रहते हैं, और इसमें वह अल्लाह के सामने जवाबदेह हैं। उनकी बात मानें ताकि वह खुशी से अपनी ख़िदमत सरंजाम दें। वरना वह कराहते कराहते अपनी ज़िम्मादारी निभाएँगे, और यह आपके लिए मुफ़ीद नहीं होगा।

18 हमारे लिए दुआ करें, गो हमें यकीन है कि हमारा ज़मीर साफ़ है और हम हर लिहाज़ से अच्छी ज़िंदगी गुज़ारने के ख़ाहिशमंद हैं।

19 मैं खासकर इस पर ज़ोर देना चाहता हूँ कि आप दुआ करें कि अल्लाह मुझे आपके पास जल्द वापस आने की तौफ़ीक़ बरख़्शे।

आखिरी दुआ

20 अब सलामती का खुदा जो अबदी अहद के खून से हमारे खुदावंद और भेड़ों के अज़ीम चरवाहे ईसा को मुरदों में से वापस लाया 21 वह आपको हर अच्छी चीज़ से नवाजे ताकि आप उस की मरज़ी पूरी कर सकें। और वह ईसा मसीह के ज़रीए हममें वह कुछ पैदा करे जो उसे पसंद आए। उसका जलाल अज़ल से अबद तक होता रहे! आमीन।

आखिरी अलफ़ाज़

22 भाइयो, मेहरबानी करके नसीहत की इन बातों पर संजीदगी से गौर करें, क्योंकि मैंने आपको सिर्फ़ चंद अलफ़ाज़ लिखे हैं। 23 यह बात आपके इल्म में होनी चाहिए कि हमारे भाई तीमुथियुस को रिहा कर दिया गया है। अगर वह जल्दी पहुँचे तो उसे साथ लेकर आपसे मिलने आऊँगा।

24 अपने तमाम राहनुमाओं और तमाम मुक़द्दसीन को मेरा सलाम कहना। इटली के ईमानदार आपको सलाम कहते हैं।

25 अल्लाह का फ़ज़ल आप सबके साथ रहे।

याकूब

1 यह खत अल्लाह और खुदावंद ईसा मसीह के खादिम याकूब की तरफ से है।

गैरयहूदी कौमों में बिखरे हुए बारह इसराईली कबीलों को सलाम।

ईमान और हिकमत

2 मेरे भाइयो, जब आपको तरह तरह की आजमाइशों का सामना करना पड़े तो अपने आपको खुशकिसमत समझें, ³ क्योंकि आप जानते हैं कि आपके ईमान के आजमाए जाने से साबितकदमी पैदा होती है। ⁴ चुनौचे साबितकदमी को बढने दें, क्योंकि जब वह तकमील तक पहुँचेगी तो आप बालिग और कामिल बन जाएंगे, और आपमें कोई भी कमी नहीं पाई जाएगी। ⁵ लेकिन अगर आपमें से किसी में हिकमत की कमी हो तो अल्लाह से माँगे जो सबको फ़ैयाज़ी से और बग़ैर झिझकी दिए देता है। वह ज़रूर आपको हिकमत देगा। ⁶ लेकिन अपनी गुज़ारिश ईमान के साथ पेश करें और शक न करें, क्योंकि शक करनेवाला समुंदर की मौज की मानिंद होता है जो हवा से इधर उधर उछलती बहती जाती है। ⁷ ऐसा शख्स न समझे कि मुझे खुदावंद से कुछ मिलेगा, ⁸ क्योंकि वह दोदिला और अपने हर काम में ग़ैरमुस्तक़िलमिज़ाज है।

गुरबत और दौलत

⁹ पस्तहाल भाई मसीह में अपने ऊँचे मरतबे पर फ़ख़र करे ¹⁰ जबकि दौलतमंद शख्स अपने अदना मरतबे पर फ़ख़र करे, क्योंकि वह जंगली फूल की तरह जल्द ही जाता रहेगा। ¹¹ जब सूरज तुलू होता है तो उस की झुलसा देनेवाली धूप में पौदा मुरझा जाता, उसका फूल गिर जाता और उस की तमाम खूबसूरती ख़त्म हो जाती है। उस तरह दौलतमंद शख्स भी काम करते करते मुरझा जाएगा।

आज़माइश

¹² मुबारक है वह जो आज़माइश के वक़्त साबितकदम रहता है, क्योंकि कायम रहने पर उसे ज़िंदगी का वह ताज मिलेगा जिसका वादा अल्लाह ने उनसे किया है जो उससे मुहब्बत रखते हैं। ¹³ आज़माइश के वक़्त कोई न कहे कि अल्लाह मुझे आज़माइश में फँसा रहा है। न तो अल्लाह को बुराई से आज़माइश में फँसाया जा सकता है, न वह किसी को फँसाता है। ¹⁴ बल्कि हर एक की अपनी बुरी खाहिशात उसे खींचकर और उकसाकर आज़माइश में फँसा देती है। ¹⁵ फिर यह खाहिशात हामिला होकर गुनाह को जन्म देती है और गुनाह बालिग होकर मौत को जन्म देता है।

¹⁶ मेरे अज़ीज़ भाइयो, फ़रेब मत खाना! ¹⁷ हर अच्छी नेमत और हर अच्छा तोहफ़ा आसमान से नाज़िल होता है, नूरों के बाप से, जिसमें न कभी तबदीली आती है, न बदलते हुए सायों की-सी हालत पाई जाती है। ¹⁸ उसी ने अपनी मरज़ी से हमें सच्चाई के कलाम के वसीले से पैदा किया। यों हम एक तरह से उस की तमाम मख़लूक़ात का पहला फल हैं।

सुनना काफ़ी नहीं है

¹⁹ मेरे अज़ीज़ भाइयो, इसका खयाल रखना, हर शख्स सुनने में तेज़ हो, लेकिन बोलने और गुस्सा करने में धीमा। ²⁰ क्योंकि इनसान का गुस्सा वह रास्तबाज़ी पैदा नहीं करता जो अल्लाह चाहता है। ²¹ चुनौचे अपनी ज़िंदगी की गंदी आदतें और शरीर चाल-चलन दूर करके हलीमी से कलामे-मुक़द्दस का वह बीज क़बूल करें जो आपके अंदर बोया गया है, क्योंकि यही आपको नजात दे सकता है।

²² कलामे-मुक़द्दस को न सिर्फ़ सुनें बल्कि उस पर अमल भी करें, वरना आप अपने आपको फ़रेब देंगे। ²³ जो कलाम को सुनकर उस पर अमल नहीं करता वह उस आदमी की मानिंद है जो आईने में अपने चेहरे पर नज़र डालता है। ²⁴ अपने आपको देखकर वह चला जाता है और फ़ौरन भूल जाता है कि मैंने क्या कुछ देखा। ²⁵ इसकी निसबत वह मुबारक है जो आज़ाद करनेवाली कामिल शरीअत में ग़ौर से नज़र डालकर उसमें कायम रहता है और उसे सुनने के बाद नहीं भूलता बल्कि उस पर अमल करता है।

²⁶ क्या आप अपने आपको दीनदार समझते हैं? अगर आप अपनी ज़बान पर काबू नहीं रख सकते तो आप अपने आपको फ़रेब देते हैं। फिर आपकी दीनदारी का इज़हार बेकार है। ²⁷ खुदा बाप की नज़र में दीनदारी का पाक और बेदाग इज़हार यह है, यतीमों और बेवाओं की देख-भाल करना जब वह मुसीबत में हों और अपने आपको दुनिया की आलतूदगी से बचाए रखना।

2

तास्सुब से ख़बरदार

1 मेरे भाइयो, लाज़िम है कि आप जो हमारे जलाली खुदावंद ईसा मसीह पर ईमान रखते हैं जानिबदारी न दिखाएँ। ² फ़र्ज़ करें कि एक आदमी सोने की अंगूठी और शानदार कपड़े पहने हुए आपकी जमात में आ जाए और साथ साथ एक गरीब आदमी भी मैले-कुचैले कपड़े पहने हुए अंदर आए। ³ और आप शानदार कपड़े पहने हुए आदमी पर खास ध्यान देकर उससे कहें, “यहाँ इस अच्छी कुरसी पर तशरीफ़ रखें,” लेकिन गरीब आदमी को कहें, “वहाँ खड़ा हो जा” या “आ, मेरे पाँवों के पास फर्श पर बैठ जा।” ⁴ क्या आप ऐसा करने से मुजरिमाना खयालातवाले मुंसिफ़ नहीं साबित हुए? क्योंकि आपने लोगों में नारवा फ़रक किया है।

5 मेरे अजीज भाइयो, सुनें! क्या अल्लाह ने उन्हें नहीं चुना जो दुनिया की नज़र में गरीब हैं ताकि वह ईमान में दौलतमंद हो जाएँ? यही लोग वह बादशाही मीरास में पाएँगे जिसका वादा अल्लाह ने उनसे किया है जो उसे प्यार करते हैं। 6 लेकिन आपने ज़रूरतमंदों की बेइज़्जती की है। ज़रा सोच लें, वह कौन हैं जो आपको दबाते और अदालत में घसीटकर ले जाते हैं? क्या यह दौलतमंद ही नहीं हैं? 7 वही तो ईसा पर कुफ़र बकते हैं, उस अज़ीम नाम पर जिसके पैरोकार आप बन गए हैं।

8 अल्लाह चाहता है कि आप कलामे-मुकद्दस में मज़कूर शाही शरीअत पूरी करें, “अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।” 9 चुनौचे जब आप जानिबदारी दिखाते हैं तो गुनाह करते हैं और शरीअत आपको मुजरिम ठहराती है। 10 मत भूलना कि जिसने शरीअत का सिर्फ़ एक हुक्म तोड़ा है वह पूरी शरीअत का कुसूरवार ठहरता है। 11 क्योंकि जिसने फ़रमाया, “ज़िना न करना” उसने यह भी कहा, “कत्ल न करना।” हो सकता है कि आपने ज़िना तो न किया हो, लेकिन किसी को कत्ल किया हो। तो भी आप उस एक ज़ुर्म की वजह से पूरी शरीअत तोड़ने के मुजरिम बन गए हैं। 12 चुनौचे जो कुछ भी आप कहते और करते हैं याद रखें कि आज़ाद करनेवाली शरीअत आपकी अदालत करेगी। 13 क्योंकि अल्लाह अदालत करते वक़्त उस पर रहम नहीं करेगा जिसने खुद रहम नहीं दिखाया। लेकिन रहम अदालत पर ग़ालिब आ जाता है। जब आप रहम करेंगे तो अल्लाह आप पर रहम करेगा।

ईमान नेक कामों के बग़ैर मुरदा है

14 मेरे भाइयो, अगर कोई ईमान रखने का दावा करे, लेकिन उसके मुताबिक ज़िंदगी न गुज़ारे तो उसका क्या फ़ायदा है? क्या ऐसा ईमान उसे नज़ात दिला सकता है? 15 फ़र्ज़ करें कि कोई भाई या बहन कपड़ों और रोज़मर्रा रोटी की ज़रूरतमंद हो। 16 यह देखकर आपमें से कोई उससे कहे, “अच्छा जी, खुदा हाफ़िज़। गरम कपड़े पहनो और जी भरकर खाना खाओ।” लेकिन वह खुद यह ज़रूरियात पूरी करने में मदद न करे। क्या इसका कोई फ़ायदा है? 17 गरज़, महज़ ईमान काफ़ी नहीं। अगर वह नेक कामों से अमल में न लाया जाए तो वह मुरदा है।

18 हो सकता है कोई एतराज़ करे, “एक शख्स के पास तो ईमान होता है, दूसरे के पास नेक काम।” आँ, मुझे दिखाएँ कि आप नेक कामों के बग़ैर किस तरह ईमान रख सकते हैं। यह तो नामुमकिन है। लेकिन मैं ज़रूर आपको अपने नेक कामों से दिखा सकता हूँ कि मैं ईमान रखता हूँ। 19 अच्छा, आप कहते हैं, “हम ईमान रखते हैं कि एक ही खुदा है।” शाबाश, यह बिलकुल सही है। शयातीन भी यह ईमान रखते हैं, गो वह यह जानकर ख़ौफ़ के मारे थरथराते हैं। 20 होश में आँ! क्या आप नहीं समझते कि नेक आमाल के बग़ैर ईमान बेकार है? 21 हमारे बाप इब्राहीम पर ग़ौर करें। वह तो इसी वजह से रास्तबाज़ ठहराया गया कि उसने अपने बेटे इसहाक़ को क़ुरबानगाह पर पेश किया। 22 आप खुद देख सकते हैं कि उसका ईमान और नेक काम मिलकर अमल कर रहे थे। उसका ईमान तो उससे मुकम्मल हुआ जो कुछ उसने किया 23 और इस तरह ही कलामे-मुकद्दस की यह बात पूरी हुई, “इब्राहीम ने अल्लाह पर भरोसा रखा। इस बिना पर अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ करार दिया।” इसी वजह से वह “अल्लाह का दोस्त” कहलाया। 24 यों आप खुद देख सकते हैं कि इनसान अपने नेक आमाल की बिना पर रास्तबाज़ करार दिया जाता है, न कि सिर्फ़ ईमान रखने की वजह से।

25 राहब फ़ाहिशा की मिसाल भी लें। उसे भी अपने कामों की बिना पर रास्तबाज़ करार दिया गया जब उसने इसराईली जासूसों की मेहमान-नवाज़ी की और उन्हें शहर से निकलने का दूसरा रास्ता दिखाकर बचाया।

26 गरज़, जिस तरह बदन रूह के बग़ैर मुरदा है उसी तरह ईमान भी नेक आमाल के बग़ैर मुरदा है।

3

ज़बान

1 मेरे भाइयो, आपमें से ज़्यादा उस्ताद न बनें। आपको मालूम है कि हम उस्तादों की ज़्यादा सख़्ती से अदालत की जाएगी। 2 हम सबसे तो कई तरह की ग़लतियाँ सरज़द होती हैं। लेकिन जिस शख्स से बोलने में कभी ग़लती नहीं होती वह कामिल है और अपने पूरे बदन को काबू में रखने के काबिल है। 3 हम घोड़े के मुँह में लगाम का दहाना रख देते हैं ताकि वह हमारे हुक्म पर चले, और इस तरह हम अपनी मरज़ी से उसका पूरा जिस्म चला लेते हैं। 4 या बादबानी जहाज़ की मिसाल लें। जितना भी बड़ा वह हो और जितनी भी तेज़ हवा चलती हो नाखुदा एक छोटी-सी पतवार के ज़रीए उसका स़ख़ ठीक रखता है। यों ही वह उसे अपनी मरज़ी से चला लेता है। 5 इसी तरह ज़बान एक छोटा-सा अज़ु है, लेकिन वह बड़ी बड़ी बातें करती है।

देखें, एक बड़े जंगल को भस्म करने के लिए एक ही चिंगारी काफ़ी होती है। 6 ज़बान भी आग की मानिंद है। बदन के दीगर आज़ा के दरमियान रहकर उसमें नारास्ती की पूरी दुनिया पाई जाती है। वह पूरे बदन को आलूदा कर देती है, हाँ इनसान की पूरी ज़िंदगी को आग लगा देती है, क्योंकि वह खुद जहन्नुम की आग से सुलगाई गई है। 7 देखें, इनसान हर किस्म के जानवरों पर काबू पा लेता है और उसने ऐसा किया भी है, खाह जंगली जानवर हों या परिदे, रेंगनेवाले हों या समुंदरी जानवर। 8 लेकिन ज़बान पर कोई काबू नहीं पा सकता, इस बेताब और शरीर चीज़ पर जो मोहलक ज़हर से लबालब भरी है। 9 ज़बान से हम अपने खुदावंद और बाप की सताइश भी करते हैं और दूसरों पर लानत भी भेजते हैं, जिन्हें अल्लाह की सूरत पर बनाया गया है। 10 एक ही मुँह से सताइश और लानत निकलती है। मेरे भाइयो, ऐसा नहीं होना चाहिए। 11 यह कैसे हो सकता है कि एक ही चश्मे से मीठा और कड़वा पानी फूट निकले। 12 मेरे भाइयो, क्या अंजीर के दरख़्त पर ज़ैतून लग सकते हैं या अंगूर की बेल पर अंजीर? हरगिज़ नहीं! इसी तरह नमकीन चश्मे से मीठा पानी नहीं निकल सकता।

आसमान से हिकमत

13 क्या आपमें से कोई दाना और समझदार है? वह यह बात अपने अच्छे चाल-चलन से ज़ाहिर करे, हिकमत से पैदा होनेवाली हलीमी के नेक कामों से। 14 लेकिन खबरदार! अगर आप दिल में हसद की कड़वाहट और खुदगर्ज़ी पाल रहे हैं तो इस पर शेखी मत मारना, न सच्चाई के खिलाफ झूट बोलें। 15 ऐसा फ़ख़र आसमान की तरफ़ से नहीं है, बल्कि दुनियावी, ग़ैरस्हानी और इबलीस से है। 16 क्योंकि जहाँ हसद और खुदगर्ज़ी है वहाँ फ़साद और हर शरीर काम पाया जाता है। 17 आसमान की हिकमत फ़रक़ है। अव्वल तो वह पाक और मुक़द्दस है। नीज़ वह अमनपसंद, नरमदिल, फ़रमाँबरदार, रहम और अच्छे फल से भरी हुई, ग़ैरजानिबदार और खुलूसदिल है। 18 और जो सुलह कराते हैं उनके लिए रास्तबाज़ी का फल सलामती से बोया जाता है।

4

दुनिया से दोस्ती

1 यह लड़ाइयाँ और झगड़े जो आपके दरमियान हैं कहाँ से आते हैं? क्या इनका सरचश्मा वह बुरी खाहिशात नहीं जो आपके आज्ञा में लड़ती रहती है? 2 आप किसी चीज़ की खाहिश रखते हैं, लेकिन उसे हासिल नहीं कर सकते। आप कल्ल और हसद करते हैं, लेकिन जो कुछ आप चाहते हैं वह पा नहीं सकते। आप झगड़ते और लड़ते हैं। तो भी आपके पास कुछ नहीं है, क्योंकि आप अल्लाह से माँगते नहीं। 3 और जब आप माँगते हैं तो आपको कुछ नहीं मिलता। वजह यह है कि आप ग़लत नीयत से माँगते हैं। आप इससे अपनी खुदगर्ज़ी खाहिशात पूरी करना चाहते हैं। 4 बेवफ़ा लोगो! क्या आपको नहीं मालूम कि दुनिया का दोस्त अल्लाह का दुश्मन होता है? जो दुनिया का दोस्त बनना चाहता है वह अल्लाह का दुश्मन बन जाता है। 5 या क्या आप समझते हैं कि कलामे-मुक़द्दस की यह बात बेतुकी-सी है कि अल्लाह ग़ैरत से उस रूह का आरज़ूमंद है जिसको उसने हमारे अंदर सूकूनत करने दिया? 6 लेकिन वह हमें इससे कहीं ज़्यादा फ़ज़ल बख़्शता है। कलामे-मुक़द्दस यों फ़रमाता है, “अल्लाह मग़सूरों का मुकाबला करता लेकिन फ़रोतनों पर मेहरबानी करता है।”

7 गरज़, अल्लाह के ताबे हो जाएँ। इबलीस का मुकाबला करें तो वह भाग जाएगा। 8 अल्लाह के करीब आ जाएँ तो वह आपके करीब आएगा। गुनाहगारो, अपने हाथों को पाक-साफ़ करें। दोदिलो, अपने दिलों को मख़सूसो-मुक़द्दस करें। 9 अफ़सोस करें, मातम करें, ख़ूब रोएँ। आपकी हँसी मातम में बदल जाए और आपकी ख़ुशी मायूसी में। 10 अपने आपको खुदावंद के सामने नीचा करें तो वह आपको सरफ़राज़ करेगा।

एक दूसरे का मुंसिफ़ मत बनना

11 भाइयो, एक दूसरे पर तोहमत मत लगाना। जो अपने भाई पर तोहमत लगाता या उसे मुजरिम ठहराता है वह शरीअत पर तोहमत लगाता है और शरीअत को मुजरिम ठहराता है। और जब आप शरीअत पर तोहमत लगाते हैं तो आप उसके पैरोकार नहीं रहते बल्कि उसके मुंसिफ़ बन गए हैं। 12 शरीअत देनेवाला और मुंसिफ़ सिर्फ़ एक ही है और वह है अल्लाह जो नजात देने और हलाक करने के काबिल है। तो फिर आप कौन हैं जो अपने आपको मुंसिफ़ समझकर अपने पड़ोसी को मुजरिम ठहरा रहे हैं!

शेखी मत मारना

13 और अब मेरी बात सुनें, आप जो कहते हैं, “आज या कल हम फुल्लों फुल्लों शहर में जाएंगे। वहाँ हम एक साल ठहरकर कारोबार करके पैसे कमाएँगे।” 14 देखें, आप यह भी नहीं जानते कि कल क्या होगा। आपकी ज़िंदगी चीज़ ही किया है! आप भाप ही हैं जो थोड़ी देर के लिए नज़र आती, फिर गायब हो जाती है। 15 बल्कि आपको यह कहना चाहिए, “अगर खुदावंद की मरज़ी हुई तो हम जिएँगे और यह या वह करेंगे।” 16 लेकिन फ़िलहाल आप शेखी मारकर अपने ग़ुरूर का इज़हार करते हैं। इस किस्म की तमाम शेखीबाज़ी बुरी है।

17 चुनौचे जो जानता है कि उसे क्या क्या नेक काम करना है, लेकिन फिर भी कुछ नहीं करता वह गुनाह करता है।

5

दौलतमंदो, खबरदार!

1 दौलतमंदो, अब मेरी बात सुनें! ख़ूब रोएँ और गिर्याओ-ज़ारी करें, क्योंकि आप पर मुसीबत आनेवाली है। 2 आपकी दौलत सड़ गई है और कीड़े आपके शानदार कपड़े खा गए हैं। 3 आपके सोने और चाँदी को जंग लग गया है। और उनकी जंगआलूदा हालत आपके खिलाफ़ गवाही देगी और आपके जिस्मों को आग की तरह खा जाएगी। क्योंकि आपने इन आखिरी दिनों में अपने लिए खज़ाने जमा कर लिए हैं। 4 देखें, जो मज़दूरी आपने फ़सल की कटाई करनेवालों से बाज़ रखी है वह आपके खिलाफ़ चिल्ला रही है। और आपकी फ़सल जमा करनेवालों की चीखें आसमानी लश्करों के रब के कानों तक पहुँच गई हैं। 5 आपने दुनिया में ऐयाशी और ऐशो-इशरत की ज़िंदगी गुज़ारी है। ज़बह के दिन आपने अपने आपको मोटा-ताज़ा कर दिया है। 6 आपने रास्तबाज़ को मुजरिम ठहराकर कल्ल किया है, और उसने आपका मुकाबला नहीं किया।

सब्र और दुआ

⁷ भाइयो, अब सब्र से खुदावंद की आमद के इंतज़ार में रहें। किसान पर गौर करें जो इस इंतज़ार में रहता है कि ज़मीन अपनी कीमती फ़सल पैदा करे। वह कितने सब्र से ख़रीफ़ और बहार की बारिशों का इंतज़ार करता है! ⁸ आप भी सब्र करें और अपने दिलों को मज़बूत रखें, क्योंकि खुदावंद की आमद करीब आ गई है।

⁹ भाइयो, एक दूसरे पर मत बुड़बुड़ाना, वरना आपकी अदालत की जाएगी। मुंसिफ़ तो दरवाज़े पर खड़ा है। ¹⁰ भाइयो, उन नबियों के नमूने पर चलें जिन्होंने रब के नाम में कलाम पेश करके सब्र से दुख उठाया। ¹¹ देखें, हम उन्हें मुबारक कहते हैं जो सब्र से दुख बरदाश्त करते थे। आपने अय्यूब की साबितकदमी के बारे में सुना है और यह भी देख लिया कि रब ने आखिर में क्या कुछ किया, क्योंकि रब बहुत मेहरबान और रहीम है।

¹² मेरे भाइयो, सबसे बढ़कर यह कि आप कसम न खाएँ, न आसमान की कसम, न ज़मीन की, न किसी और चीज़ की। जब आप “हाँ” कहना चाहते हैं तो बस “हाँ” ही काफी है। और अगर इनकार करना चाहें तो बस “नहीं” कहना काफी है, वरना आप मुजरिम ठहरेंगे।

¹³ क्या आपमें से कोई मुसीबत में फँसा हुआ है? वह दुआ करे। क्या कोई ख़ुश है? वह सताइश के गीत गाए। ¹⁴ क्या आपमें से कोई बीमार है? वह जमात के बुज़ुर्गों को बुलाए ताकि वह आकर उसके लिए दुआ करें और खुदावंद के नाम में उस पर तेल मलें। ¹⁵ फिर ईमान से की गई दुआ मरीज़ को बचाएगी और खुदावंद उसे उठा खड़ा करेगा। और अगर उसने गुनाह किया हो तो उसे मुआफ़ किया जाएगा। ¹⁶ चुनौचे एक दूसरे के सामने अपने गुनाहों का इक़रार करें और एक दूसरे के लिए दुआ करें ताकि आप शफ़ा पाएँ। रास्त शख्स की मुअस्सिर दुआ से बहुत कुछ हो सकता है। ¹⁷ इलियास हम जैसा इनसान था। लेकिन जब उसने ज़ोर से दुआ की कि बारिश न हो तो साढ़े तीन साल तक बारिश न हुई। ¹⁸ फिर उसने दुबारा दुआ की तो आसमान ने बारिश अता की और ज़मीन ने अपनी फ़सलें पैदा कीं।

¹⁹ मेरे भाइयो, अगर आपमें से कोई सच्चाई से भटक जाए और कोई उसे सही राह पर वापस लाए ²⁰ तो यक़ीन जानें, जो किसी गुनाहगार को उस की ग़लत राह से वापस लाता है वह उस की जान को मौत से बचाएगा और गुनाहों की बड़ी तादाद को छुपा देगा।

1 पतरस

1 यह खत ईसा मसीह के रसूल पतरस की तरफ से है।

मैं अल्लाह के चुने हुएों को लिख रहा हूँ, दुनिया के उन मेहमानों को जो पुंतुस, गलतिया, कप्पदुकिया, आसिया और बिथुनिया के सबों में बिखरे हुए हैं। 2 खुदा बाप ने आपको बहुत देर पहले जानकर चुन लिया और उसके रूह ने आपको मखसूसो-मुकद्दस कर दिया। नतीजे में आप ईसा मसीह के ताबे और उसके छिड़काए गए खून से पाक-साफ हो गए हैं।

अल्लाह आपको भरपूर फज़ल और सलामती बरख़्शे।

ज़िंदा उम्मीद

3 खुदा हमारे खुदावंद ईसा मसीह के बाप की तरीफ हो! अपने अज़ीम रहम से उसने ईसा मसीह को ज़िंदा करने के वसीले से हमें नए सिरे से पैदा किया है। इससे हमें एक ज़िंदा उम्मीद मिली है, 4 एक ऐसी मीरास जो कभी नहीं सड़ेगी, कभी नहीं नापाक हो जाएगी और कभी नहीं मुरझाएगी। क्योंकि यह आसमान पर आपके लिए महफूज़ रखी गई है। 5 और अल्लाह आपके ईमान के ज़रीए अपनी कुदरत से आपकी उस वक़्त तक हिफ़ाज़त करता रहेगा जब तक आपको नजात न मिल जाए, वह नजात जो आखिरत के दिन सब पर ज़ाहिर होने के लिए तैयार है।

6 उस वक़्त आप खुशी मनाएँगे, गो फ़िलहाल आपको थोड़ी देर के लिए तरह तरह की आजमाइशों का सामना करके ग़म खाना पड़ता है 7 ताकि आपका ईमान असली साबित हो जाए। क्योंकि जिस तरह आग सोने को आजमाकर ख़ालिस बना देती है उसी तरह आपका ईमान भी आजमाया जा रहा है, हालाँकि यह फ़ानी सोने से कहीं ज़्यादा कीमती है। क्योंकि अल्लाह चाहता है कि आपको उस दिन तरीफ़, जलाल और इज्ज़त मिल जाए जब ईसा मसीह ज़ाहिर होगा। 8 उसी को आप प्यार करते हैं अगरचे आपने उसे देखा नहीं, और उसी पर आप ईमान रखते हैं गो वह आपको इस वक़्त नज़र नहीं आता। हाँ, आप दिल में नाकाबिले-बयान और जलाली खुशी मनाएँगे, 9 जब आप वह कुछ पाएँगे जो ईमान की मनज़िले-मक़सूद है यानी अपनी जानों की नजात।

10 नबी इसी नजात की तलाश और तफ़तीश में लगे रहे, और उन्होंने उस फ़ज़ल की पेशगोई की जो अल्लाह आपको देनेवाला था। 11 उन्होंने मालूम करने की कोशिश की कि मसीह का रूह जो उनमें था किस वक़्त या किन हालात के बारे में बात कर रहा था जब उसने मसीह के दुख और बाद के जलाल की पेशगोई की। 12 उन पर इतना ज़ाहिर किया गया कि उनकी यह पेशगोइयाँ उनके अपने लिए नहीं थीं, बल्कि आपके लिए। और अब यह सब कुछ आपको उन्हीं के वसीले से पेश किया गया है जिन्होंने आसमान से भेजे गए रूहुल-कुद्स के ज़रीए आपको अल्लाह की खुशख़बरी सुनाई है। यह ऐसी बातें हैं जिन पर फ़रिश्ते भी नज़र डालने के आरज़ूमंद हैं।

मुक़द्दस ज़िंदगी गुज़ारना

13 चुनौचे ज़हनी तौर पर कमरबस्ता हो जाएँ। होशमंदी से अपनी पूरी उम्मीद उस फ़ज़ल पर रखें जो आपको ईसा मसीह के ज़ुहर पर बरख़्शा जाएगा। 14 आप अल्लाह के ताबेफ़रमान फ़रज़ंद हैं, इसलिए उन बुरी ख़ाहिशात को अपनी ज़िंदगी में जगह न दें जो आप जाहिल होते वक़्त रखते थे। वरना वह आपकी ज़िंदगी को अपने सौंचे में ढाल लेगी। 15 इसके बजाए अल्लाह की मानिंद बनें जिसने आपको बुलाया है। जिस तरह वह कुद्स है उसी तरह आप भी हर वक़्त मुक़द्दस ज़िंदगी गुज़ारें। 16 क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, “अपने आपको मखसूसो-मुक़द्दस रखो क्योंकि मैं मुक़द्दस हूँ।”

17 और याद रखें कि आसमानी बाप जिससे आप दुआ करते हैं जानिबदारी नहीं करता बल्कि आपके अमल के मुताबिक़ आपका फ़ैसला करेगा। चुनौचे जब तक आप इस दुनिया के मेहमान रहेंगे खुदा के ख़ौफ़ में ज़िंदगी गुज़ारें। 18 क्योंकि आप खुद जानते हैं कि आपको बापदादा की बेमानी ज़िंदगी से छुड़ाने के लिए क्या फ़िघा दिया गया। यह सोने या चाँदी जैसी फ़ानी चीज़ नहीं थी 19 बल्कि मसीह का कीमती खून था। उसी को बेनुक्स और बेदाग़ लेले की हैसियत से हमारे लिए क़ुरबान किया गया। 20 उसे दुनिया की तख़लीक़ से पेशतर चुना गया, लेकिन इन आखिरी दिनों में आपकी खातिर ज़ाहिर किया गया। 21 और उसके वसीले से आप अल्लाह पर ईमान रखते हैं जिसने उसे मुरदों में से ज़िंदा करके इज्ज़तो-जलाल दिया ताकि आपका ईमान और उम्मीद अल्लाह पर हो।

22 सच्चाई के ताबे हो जाने से आपको मखसूसो-मुक़द्दस कर दिया गया और आपके दिलों में भाइयों के लिए बेरिया मुहब्बत डाली गई है। चुनौचे अब एक दूसरे को खुलूसदिली और लग्न से प्यार करते रहें। 23 क्योंकि आपकी नए सिरे से पैदाइश हुई है। और यह किसी फ़ानी बीज का फल नहीं है बल्कि अल्लाह के लाफ़ानी, ज़िंदा और कायम रहनेवाले कलाम का फल है। 24 यों कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है,

“तमाम इनसान घास ही हैं,

उनकी तमाम शानो-शौकत जंगली फूल की मानिंद है।

घास तो मुरझा जाती और फूल गिर जाता है,

25 लेकिन रब का कलाम अबद तक कायम रहता है।”

मज़क़ूरा कलाम अल्लाह की खुशख़बरी है जो आपको सुनाई गई है।

2

ज़िंदा पत्थर और मुकद्दस क़ौम

1 चुनाँचे अपनी ज़िंदगी से तमाम तरह की बुराई, धोकेबाज़ी, रियाकारी, हसद और बुहतान निकालें। 2 चूँकि आप नौमौलूद बच्चे हैं इसलिए ख़ालिस रूहानी दूध पीने के आरज़ूमंद रहें, क्योंकि इसे पीने से ही आप बढ़ते बढ़ते नजात की नौबत तक पहुँचेंगे। 3 जिन्होंने ख़ुदावंद की भलाई का तजरबा किया है उनके लिए ऐसा करना ज़रूरी है।

4 ख़ुदावंद के पास आएँ, उस ज़िंदा पत्थर के पास जिसे इनसानों ने रद्द किया है, लेकिन जो अल्लाह के नज़दीक चुनीदा और कीमती है। 5 और आप भी ज़िंदा पत्थर हैं जिनको अल्लाह अपने रूहानी मक़दिस को तामीर करने के लिए इस्तेमाल कर रहा है। न सिर्फ़ यह बल्कि आप उसके मख़सूसो-मुक़द्दस इमाम हैं। ईसा मसीह के वसीले से आप ऐसी रूहानी कुरबानियाँ पेश कर रहे हैं जो अल्लाह को पसंद हैं। 6 क्योंकि कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है,

“देखो, मैं सिय्यून में एक पत्थर रख देता हूँ,
कोने का एक चुनीदा और कीमती पत्थर।

जो उस पर ईमान लाएगा

उसे शरमिंदा नहीं किया जाएगा।”

7 यह पत्थर आपके नज़दीक जो ईमान रखते हैं बेशक़ीमत है। लेकिन जो ईमान नहीं लाए उन्होंने उसे रद्द किया।

“जिस पत्थर को मकान बनानेवालों ने रद्द किया
वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया।”

8 नीज़ वह एक ऐसा पत्थर है

“जो ठोकर का बाइस बनेगा,

एक चटान जो ठेस लगने का सबब होगी।”

वह इसलिए ठोकर खाते हैं क्योंकि वह कलामे-मुक़द्दस के ताबे नहीं होते। यही कुछ अल्लाह की उनके लिए मरज़ी थी।

9 लेकिन आप अल्लाह की चुनी हुई नसल हैं, आप आसमानी बादशाह के इमाम और उस की मख़सूसो-मुक़द्दस क़ौम हैं। आप उस की मिलकियत बन गए हैं ताकि अल्लाह के क़वी कामों का एलान करें, क्योंकि वह आपको तारीकी से अपनी हैरतअंगेज़ रौशनी में लाया है।

10 एक वक़्त था जब आप उस की क़ौम नहीं थे, लेकिन अब आप अल्लाह की क़ौम हैं। पहले आप पर रहम नहीं हुआ था, लेकिन अब अल्लाह ने आप पर अपने रहम का इज़हार किया है।

अल्लाह के खादिम

11 अज़ीज़ो, आप इस दुनिया में अजनबी और मेहमान हैं। इसलिए मैं आपको ताकीद करता हूँ कि आप जिस्मानी खाहिशात का इनकार करें। क्योंकि यह आपकी जान से लड़ती है। 12 ग़ैरईमानदारों के दरमियान रहते हुए इतनी अच्छी ज़िंदगी गुज़ारें कि गो वह आप पर ग़लत काम करने की तोहमत भी लगाएँ तो भी उन्हें आपके नेक काम नज़र आएँ और उन्हें अल्लाह की आमद के दिन उस की तमजीद करनी पड़े।

13 ख़ुदावंद की खातिर हर इनसानी इख़्तियार के ताबे रहें, खाह बादशाह हो जो सबसे आला इख़्तियार रखनेवाला है, 14 खाह उसके वज़ीर जिन्हें उसने इसलिए मुक़र्रर किया है कि वह ग़लत काम करनेवालों को सज़ा और अच्छा काम करनेवालों को शाबाश दें। 15 क्योंकि अल्लाह की मरज़ी है कि आप अच्छा काम करने से नासमझ लोगों की जाहिल बातों को बंद करें। 16 आप आज़ाद हैं, इसलिए आज़ादाना ज़िंदगी गुज़ारें। लेकिन अपनी आज़ादी को ग़लत काम छुपाने के लिए इस्तेमाल न करें, क्योंकि आप अल्लाह के खादिम हैं। 17 हर एक का मुनासिब एहताराम करें, अपने बहन-भाइयों से मुहब्बत रखें, ख़ुदा का ख़ौफ़ मानें, बादशाह का एहताराम करें।

मसीह के दुख का नमूना

18 ऐ गुलामो, हर लिहाज़ से अपने मालिकों का एहताराम करके उनके ताबे रहें। और यह सुलूक न सिर्फ़ उनके साथ हो जो नेक और नरमदिल हैं बल्कि उनके साथ भी जो ज़ालिम हैं। 19 क्योंकि अगर कोई अल्लाह की मरज़ी का ख़याल करके बेइनसाफ़ तकलीफ़ का ग़म सब्र से बरदाश्त करे तो यह अल्लाह का फ़ज़ल है। 20 बेशक़ इसमें फ़ख़र की कोई बात नहीं अगर आप सब्र से पिटाई की वह सज़ा बरदाश्त करें जो आपको ग़लत काम करने की वजह से मिली हो। लेकिन अगर आपको अच्छा काम करने की वजह से दुख सहना पड़े और आप यह सज़ा सब्र से बरदाश्त करें तो यह अल्लाह का फ़ज़ल है। 21 आपको इसी के लिए बुलाया गया है। क्योंकि मसीह ने आपकी खातिर दुख सहने में आपके लिए एक नमूना छोड़ा है। और वह चाहता है कि आप उसके नक्शे-क़दम पर चलें। 22 उसने तो कोई गुनाह न किया, और न कोई फ़रेब की बात उसके मुँह से निकली। 23 जब लोगों ने उसे गालियाँ दीं तो उसने जवाब में गालियाँ न दीं। जब उसे दुख सहना पड़ा तो उसने किसी को धमकी न दी बल्कि उसने अपने आपको अल्लाह के हवाले कर दिया जो इनसाफ़ से अदालत करता है। 24 मसीह ख़ुद अपने बदन पर हमारे गुनाहों को सलीब पर ले गया ताकि हम गुनाहों के एतबार से मर जाएँ और यों हमारा गुनाह से ताल्लुक ख़त्म हो जाए। अब वह चाहता है कि हम रास्तबाज़ी की ज़िंदगी गुज़ारें। क्योंकि आपको उसी के ज़ख़मों के वसीले से शफ़ा मिली है। 25 पहले आप आवारा भेड़ों की तरह आवारा फिर रहे थे, लेकिन अब आप अपनी जानों के चरवाहे और निगरान के पास लौट आए हैं।

3

बीवी और शौहर

1 इसी तरह आप बीवियों को भी अपने अपने शौहर के ताबे रहना है। क्योंकि इस तरह वह जो ईमान नहीं रखते अपनी बीवी के चाल-चलन से जीते जा सकते हैं। कुछ कहने की ज़रूरत नहीं रहेगी 2 क्योंकि वह देखेंगे कि आप कितनी पाकीज़गी से खुदा के ख़ौफ़ में ज़िंदगी गुज़ारती हैं। 3 इसकी फ़िक्र मत करना कि आप ज़ाहिरी तौर पर आरास्ता हों, मसलन खास तौर-तरीकों से गुंथे हुए बालों से या सोने के ज़ेवर और शानदार लिबास पहनने से। 4 इसके बजाए इसकी फ़िक्र करें कि आपकी बातिनी शख्सियत आरास्ता हो। क्योंकि जो रूह नरमदिली और सुकून के लाफ़ानी ज़ेवरों से सजी हुई है वही अल्लाह के नज़दीक बेशकीमत है। 5 माज़ी में अल्लाह पर उम्मीद रखनेवाली मुक़द्दस ख़वातीन भी इसी तरह अपना सिंगार किया करती थीं। यों वह अपने शौहरों के ताबे रहीं, 6 सारा की तरह जो अपने शौहर इब्राहीम को आका कहकर उस की मानती थी। आप तो सारा की बेटियाँ बन गई हैं। चुनौचे नेक काम करें और किसी भी चीज़ से न डरें, खाह वह कितनी ही डरावनी क्यों न हो।

7 इस तरह लाज़िम है कि आप जो शौहर हैं समझ के साथ अपनी बीवियों के साथ ज़िंदगी गुज़ारें, यह जानकर कि यह आपकी निसबत कमज़ोर हैं। उनकी इज़्ज़त करें, क्योंकि यह भी आपके साथ ज़िंदगी के फज़ल की वारिस हैं। ऐसा न हो कि इसमें बेपरवाई करने से आपकी दुआइया ज़िंदगी में स्कावट पैदा हो जाए।

नेक ज़िंदगी गुज़ारने की वजह से दुख

8 आख़िर में एक और बात, आप सब एक ही सोच रखें और एक दूसरे से ताल्लुकात में हमदर्दी, प्यार, रहम और हलीमी का इज़हार करें। 9 किसी के ग़लत काम के जवाब में ग़लत काम मत करना, न किसी की ग़ालियों के जवाब में ग़ाली देना। इसके बजाए जवाब में ऐसे शरूब को बरकत दें, क्योंकि अल्लाह ने आपको भी इसलिए बुलाया है कि आप उस की बरकत विरासत में पाएँ। 10 कलामे-मुक़द्दस यों फ़रमाता है,

“कौन मज़े से ज़िंदगी गुज़ारना

और अच्छे दिन देखना चाहता है?

वह अपनी ज़बान को शरीर बातें करने से रोके

और अपने होंटों को झूट बोलने से।

11 वह बुराई से मुँह फेरकर नेक काम करे,

सुलह-सलामती का तालिब होकर

उसके पीछे लगा रहे।

12 क्योंकि रब की आँखें रास्तबाज़ों पर लगी रहती हैं,

और उसके कान उनकी दुआओं की तरफ़ मायल हैं।

लेकिन रब का चेहरा उनके खिलाफ़ है जो ग़लत काम करते हैं।”

13 अगर आप नेक काम करने में सरग़रम हों तो कौन आपको नुक़सान पहुँचाएगा? 14 लेकिन अगर आपको रास्त काम करने की वजह से दुख भी उठाना पड़े तो आप मुबारक हैं। उनकी धमकियों से मत डरना और मत घबराना 15 बल्कि अपने दिलों में ख़ुदावंद मसीह को मख़सूसो-मुक़द्दस जानें। और जो भी आपसे आपकी मसीह पर उम्मीद के बारे में पूछे हर वक़्त उसे जवाब देने के लिए तैयार रहें। लेकिन नरमदिली से और ख़ुदा के ख़ौफ़ के साथ जवाब दें। 16 साथ साथ आपका ज़मीर साफ़ हो। फिर जो लोग आपके मसीह में अच्छे चाल-चलन के बारे में ग़लत बातें कर रहे हैं उन्हें अपनी तोहमत पर शर्म आएगी। 17 याद रहे कि ग़लत काम करने की वजह से दुख सहने की निसबत बेहतर यह है कि हम नेक काम करने की वजह से तकलीफ़ उठाएँ, बशर्ते कि यह अल्लाह की मरज़ी हो। 18 क्योंकि मसीह ने हमारे गुनाहों को मिटाने की खातिर एक बार सदा के लिए मौत सही। हाँ, जो रास्तबाज़ है उसने यह नारास्तों के लिए किया ताकि आपको अल्लाह के पास पहुँचाए। उसे बदन के एतबार से सज़ाए-मौत दी गई, लेकिन रूह के एतबार से उसे ज़िंदा कर दिया गया। 19 इस रूह के ज़रीए उसने जाकर कैदी रूहों को पैग़ाम दिया। 20 यह उनकी रूहें थीं जो उन दिनों में नाफ़रमान थे जब नूह अपनी कशती बना रहा था। उस वक़्त अल्लाह सब्र से इंतज़ार करता रहा, लेकिन आख़िरकार सिर्फ़ चंद एक लोग यानी आठ अफ़राद पानी में से गुज़रकर बच निकले। 21 यह पानी उस बपतिस्मा की तरफ़ इशारा है जो इस वक़्त आपको नजात दिलाता है। इससे जिस्म की गंदगी दूर नहीं की जाती बल्कि बपतिस्मा लेते वक़्त हम अल्लाह से अर्ज़ करते हैं कि वह हमारा ज़मीर पाक-साफ़ कर दे। फिर यह आपको ईसा मसीह के जी उठने से नजात दिलाता है। 22 अब मसीह आसमान पर जाकर अल्लाह के दहने हाथ बैठ गया है जहाँ फ़रिश्ते, इख़्तियारवाले और कुव्वतें उसके ताबे हैं।

4

तबदीलशुदा ज़िंदगियाँ

1 अब चूँकि मसीह ने जिस्मानी तौर पर दुख उठाया इसलिए आप भी अपने आपको उस की-सी सोच से लैस करें। क्योंकि जिसने मसीह की खातिर जिस्मानी तौर पर दुख सह लिया है उसने गुनाह से निपट लिया है। 2 नतीजे में वह ज़मीन पर अपनी बाक़ी ज़िंदगी इनसान की बुरी ख़ाहिशात पूरी करने में नहीं गुज़रेगा बल्कि अल्लाह की मरज़ी पूरी करने में। 3 माज़ी में आपने काफ़ी वक़्त वह कुछ करने में गुज़ारा जो

गैरईमानदार पसंद करते हैं यानी ऐयाशी, शहवतपरस्ती, नशाबाज़ी, शराबनोशी, रंगरलियों, नाच-रंग और धिनौनी बुतपरस्ती में। ⁴ अब आपके गैरईमानदार दोस्त ताज्जुब करते हैं कि आप उनके साथ मिलकर ऐयाशी के इस तेज़ धारे में छल्लांग नहीं लगाते। इसलिए वह आप पर कुफ़र बकते हैं। ⁵ लेकिन उन्हें अल्लाह को जवाब देना पड़ेगा जो ज़िंदों और मुरदों की अदालत करने के लिए तैयार खड़ा है। ⁶ यही वजह है कि अल्लाह की खुशख़बरी उन्हें भी सुनाई गई जो अब मुरदा हैं। मक़सद यह था कि वह अल्लाह के सामने रूह में ज़िंदगी गुज़ार सकें अगरचे इनसानी लिहाज़ से उनके जिस्म की अदालत की गई है।

अपनी नेमतों से एक दूसरे की खिदमत करें

⁷ तमाम चीज़ों का खातमा करीब आ गया है। चुनौचे दुआ करने के लिए चुस्त और होशमंद रहें। ⁸ सबसे ज़रूरी बात यह है कि आप एक दूसरे से लगातार मुहब्बत रखें, क्योंकि मुहब्बत गुनाहों की बड़ी तादाद पर परदा डाल देती है। ⁹ बुडबुडाए बग़ैर एक दूसरे की मेहमान-नवाज़ी करें। ¹⁰ अल्लाह अपना फ़ज़ल मुख़्तलिफ़ नेमतों से ज़ाहिर करता है। फ़ज़ल का यह इंतज़ाम वफ़ादारी से चलाते हुए एक दूसरे की खिदमत करें, हर एक उस नेमत से जो उसे मिली है। ¹¹ अगर कोई बोले तो अल्लाह के-से अलफ़ाज़ के साथ बोले। अगर कोई खिदमत करे तो उस ताक़त के ज़रीए जो अल्लाह उसे मुहैया करता है, क्योंकि इस तरह ही अल्लाह को ईसा मसीह के वसीले से जलाल दिया जाएगा। अज़ल से अबद तक जलाल और कुदरत उसी की हो! आमीन।

आपकी मुसीबत ग़ैरमामूली नहीं है

¹² अजीज़ो, ईज़ारसानी की उस आग पर ताज्जुब न करें जो आपको आजमाने के लिए आप पर आन पड़ी है। यह मत सोचना कि मेरे साथ कैसी ग़ैरमामूली बात हो रही है। ¹³ बल्कि खुशी मनाएँ कि आप मसीह के दुखों में शरीक हो रहे हैं। क्योंकि फिर आप उस वक़्त भी खुशी मनाएँगे जब मसीह का जलाल ज़ाहिर होगा। ¹⁴ अगर लोग इसलिए आपकी बेइज़्जती करते हैं कि आप मसीह के पैरोकार हैं तो आप मुबारक हैं। क्योंकि इसका मतलब है कि अल्लाह का जलाली रूह आप पर ठहरा हुआ है। ¹⁵ अगर आपमें से किसी को दुख उठाना पड़े तो यह इसलिए नहीं होना चाहिए कि आप कातिल, चोर, मुजरिम या फ़सादी हैं। ¹⁶ लेकिन अगर आपको मसीह के पैरोकार होने की वजह से दुख उठाना पड़े तो न शर्माएँ बल्कि मसीह के नाम में अल्लाह की हम्दो-सना करें।

¹⁷ क्योंकि अब वक़्त आ गया है कि अल्लाह की अदालत शुरू हो जाए, और पहले उसके घरवालों की अदालत की जाएगी। अगर ऐसा है तो फिर इसका अंजाम उनके लिए क्या होगा जो अल्लाह की खुशख़बरी के ताबे नहीं हैं? ¹⁸ और अगर रास्तबाज़ मुश्किल से बचेंगे तो फिर बेदीन और गुनाहगार का क्या होगा? ¹⁹ चुनौचे जो अल्लाह की मरज़ी से दुख उठा रहे हैं वह नेक काम करने से बाज़ न आएँ बल्कि अपनी जानों को उसी के हवाले करें जो उनका वफ़ादार ख़ालिक है।

5

अल्लाह का गल्ला

¹ अब मैं आपको जो जमातों के बुज़ुर्ग हैं नसीहत करना चाहता हूँ। मैं खुद भी बुज़ुर्ग हूँ बल्कि मसीह के दुखों का गवाह भी हूँ, और मैं आपके साथ उस आनेवाले जलाल में शरीक हो जाऊँगा जो ज़ाहिर हो जाएगा। इस हैसियत से मैं आपसे अपील करता हूँ, ² गल्लाबान होते हुए अल्लाह के उस गल्ले की देख-भाल करें जो आपके सुपर्द किया गया है। यह खिदमत मजबूरन न करें बल्कि खुशी से, क्योंकि यह अल्लाह की मरज़ी है। लालच के बग़ैर पूरी लग्न से यह खिदमत संरंजाम दें। ³ जिन्हें आपके सुपर्द किया गया है उन पर हुकूमत मत करना बल्कि गल्ले के लिए अच्छा नमूना बनें। ⁴ फिर जब हमारा सरदार गल्लाबान ज़ाहिर होगा तो आपको जलाल का ग़ैरफ़ानी ताज मिलेगा।

⁵ इसी तरह लाज़िम है कि आप जो जवान हैं बुज़ुर्गों के ताबे रहें। सब इंकिसारी का लिबास पहनकर एक दूसरे की खिदमत करें, क्योंकि अल्लाह मग़सूरों का मुकाबला करता लेकिन फ़रोतनों पर मेहरबानी करता है। ⁶ चुनौचे अल्लाह के कादिर हाथ के नीचे झुक जाएँ ताकि वह मौजूब वक़्त पर आपको सरफ़राज़ करे। ⁷ अपनी तमाम परेशानियाँ उस पर डाल दें, क्योंकि वह आपकी फ़िकर करता है।

⁸ होशमंद रहें, जागते रहें। आपका दुश्मन इबलीस गरजते हुए शेरबबर की तरह घुमता-फिरता और किसी को हड़प कर लेने की तलाश में रहता है। ⁹ ईमान में मजबूत रहकर उसका मुकाबला करें। आपको तो मालूम है कि पूरी दुनिया में आपके भाई इसी किस्म का दुख उठा रहे हैं। ¹⁰ लेकिन आपको ज़्यादा देर के लिए दुख उठाना नहीं पड़ेगा। क्योंकि हर तरह के फ़ज़ल का खुदा जिसने आपको मसीह में अपने अबदी जलाल में शरीक होने के लिए बुलाया है वह खुद आपको कामिलियत तक पहुँचाएगा, मजबूत बनाएगा, तक्रवियत देगा और एक ठोस बुनियाद पर खड़ा करेगा। ¹¹ अबद तक कुदरत उसी को हासिल रहे। आमीन।

आखिरी सलाम

¹² मैं आपको यह मुख़तसर ख़त सिलवानुस की मदद से लिख रहा हूँ जिसे मैं वफ़ादार भाई समझता हूँ। मैं इससे आपकी हौसलाअफ़ज़ाई और इसकी तसदीक़ करना चाहता हूँ कि यही अल्लाह का हकीकी फ़ज़ल है। इस पर कायम रहें।

¹³ बाबल में जो जमात अल्लाह ने आपकी तरह चुनी है वह आपको सलाम कहती है, और इसी तरह मेरा बेटा मरकुस भी। ¹⁴ एक दूसरे को मुहब्बत का बोसा देना।

आप सबकी जो मसीह में हैं सलामती हो।

2 पतरस

¹ यह खत ईसा मसीह के खादिम और रसूल शमौन पतरस की तरफ से है।

मैं उन सबको लिख रहा हूँ जिन्हें हमारे खुदा और नजातदहिदा ईसा मसीह की रास्तबाज़ी के वसीले से वही बेशक्रीमत ईमान बख्शा गया है जो हमें भी मिला।

² खुदा करे कि आप उसे और हमारे खुदावंद ईसा को जानने में तरक्की करते करते कसरत से फ़ज़ल और सलामती पाते जाएँ।

अल्लाह का बुलावा

³ अल्लाह ने अपनी इलाही कुदरत से हमें वह सब कुछ अता किया है जो खुदातरस ज़िंदगी गुज़ारने के लिए ज़रूरी है। और हमें यह उसे जान लेने से हासिल हुआ है। क्योंकि उसने हमें अपने ज़ाती जलाल और कुदरत के ज़रीए बुलाया है। ⁴ इस जलाल और कुदरत से उसने हमें वह अज़ीम और बेशक्रीमत चीज़ें दी हैं जिनका वादा उसने किया था। क्योंकि वह चाहता था कि आप इनसे दुनिया की बुरी खाहिशात से पैदा होनेवाले फ़साद से बचकर उस की इलाही ज़ात में शरीक हो जाएँ। ⁵ यह सब कुछ पेशे-नज़र रखकर पूरी लग्न से कोशिश करें कि आपके ईमान से अख़लाक पैदा हो जाए, अख़लाक से इल्म, ⁶ इल्म से ज़बते-नफ़स, ज़बते-नफ़स से साबितक़दमी, साबितक़दमी से खुदातरस ज़िंदगी, ⁷ खुदातरस ज़िंदगी से बरादराना शफ़क़त और बरादराना शफ़क़त से सबके लिए मुहब्बत। ⁸ क्योंकि जितना ही आप इन खूबियों में बढ़ते जाएंगे उतना ही यह आपको इससे महफूज़ रखेगी कि आप हमारे खुदावंद ईसा मसीह को जानने में सुस्त और बेफ़ल रहें। ⁹ लेकिन जिसमें यह खूबियाँ नहीं हैं उस की नज़र इतनी कमज़ोर है कि वह अंधा है। वह भूल गया है कि उसे उसके गुज़रे गुनाहों से पाक-साफ़ किया गया है।

¹⁰ चुनौचे भाइयो, मज़ीद लग्न से अपने बुलावे और चुनाव की तसदीक़ करने में कोशिश करें। क्योंकि यह करने से आप गिर जाने से बचेंगे ¹¹ और अल्लाह बड़ी ख़ुशी से आपको हमारे खुदावंद और नजातदहिदा ईसा मसीह की बादशाही में दाख़िल होने की इजाज़त देगा।

¹² इसलिए मैं हमेशा आपको इन बातों की याद दिलाता रहूँगा, हालाँकि आप इनसे वाकिफ़ हैं और मज़बूती से उस सच्चाई पर कायम हैं जो आपको मिली है। ¹³ बल्कि मैं अपना फ़र्ज़ समझता हूँ कि जितनी और देर मैं जिस्म की इस झोंपड़ी में रहता हूँ आपको इन बातों की याद दिलाने से उभारता रहूँ। ¹⁴ क्योंकि मुझे मालूम है कि अब मेरी यह झोंपड़ी जल्द ही ढा दी जाएगी। हमारे खुदावंद ईसा मसीह ने भी मुझ पर यह ज़ाहिर किया था। ¹⁵ लेकिन मैं पूरी कोशिश करूँगा कि मेरे कूच कर जाने के बाद भी आप हर वक़्त इन बातों को याद रख सकें।

मसीह के जलाल के गवाह

¹⁶ क्योंकि जब हमने आपको अपने और आपके खुदावंद मसीह की कुदरत और आमद के बारे में बताया तो हम चालाकी से घड़े किस्से-कहानियों पर इनहिसार नहीं कर रहे थे बल्कि हमने यह गवाहों की हैसियत से बताया। क्योंकि हमने अपनी ही आँखों से उस की अज़मत देखी थी। ¹⁷ हम मौजूद थे जब उसे खुदा बाप से इज्जतो-जलाल मिला, जब एक आवाज़ ने अल्लाह की पुरजलाल शान से आकर कहा, “यह मेरा प्यारा फ़रज़ंद है जिससे मैं खुश हूँ।” ¹⁸ जब हम उसके साथ मुक़द्दस पहाड़ पर थे तो हमने खुद यह आवाज़ आसमान से आती सुनी।

¹⁹ इस तज़रबे की बिना पर हमारा नबियों के पैग़ाम पर एतमाद ज़्यादा मज़बूत है। आप अच्छा करेंगे अगर इस पर खूब ध्यान दें। क्योंकि यह किसी तारीक़ जगह में रौशनी की मानिंद है जो उस वक़्त तक चमकती रहेगी जब तक पौ फटकर सुबह का सितारा आपके दिलों में तूलू न हो जाए। ²⁰ सबसे बढ़कर आपको यह समझने की ज़रूरत है कि कलामे-मुक़द्दस की कोई भी पेशगोई नबी की अपनी ही तफ़सीर से पैदा नहीं होती। ²¹ क्योंकि कोई भी पेशगोई कभी भी इनसान की तहरीक़ से वुजूद में नहीं आई बल्कि पेशगोई करते वक़्त इनसानों ने रूहुल-कुद्दस से तहरीक़ पाकर अल्लाह की तरफ से बात की।

2

झूटे उस्ताद

¹ लेकिन जिस तरह माज़ी में इसराईल क्रौम में झूटे नबी भी थे, उसी तरह आपमें से भी झूटे उस्ताद खड़े हो जाएंगे। यह खुदा की जमातों में मोहलक तालीमात फैलाएंगे बल्कि अपने मालिक को जानने से इनकार भी करेंगे जिसने उन्हें ख़रीद लिया था। ऐसी हरकतों से यह जल्द ही अपने आप पर हलाक़त लाएंगे। ² बहुत-से लोग उनकी ऐयाश हरकतों की पैरवी करेंगे, और इस वजह से दूसरे सच्चाई की राह पर कुफ़र बेंकेगे। ³ लालच के सबब से यह उस्ताद आपको फ़रज़ी कहानियाँ सुनाकर आपकी लूट-खसोट करेंगे। लेकिन अल्लाह ने बड़ी देर से उन्हें मुजरिम ठहराया, और उसका फ़ैसला सुस्तरफ़तार नहीं है। हाँ, उनका मुंसिफ़ ऊँघ नहीं रहा बल्कि उन्हें हलाक़ करने के लिए तैयार खड़ा है।

⁴ देखें, अल्लाह ने उन फ़रिश्तों को बचने न दिया जिन्होंने गुनाह किया बल्कि उन्हें तारीकी की जंजीरों में बाँधकर जहन्नुम में डाल दिया जहाँ वह अदालत के दिन तक महफूज़ रहेंगे। ⁵ इसी तरह उसने क़दीम दुनिया को बचने न दिया बल्कि उसके बेदीन बाशिंदों पर सैलाब को आने दिया। उसने सिर्फ़ रास्तबाज़ी के पैग़ंबर नूह को सात और जानों समेत बचाया। ⁶ और उसने सदूम और अमूरा के शहरों को मुजरिम करार देकर राख़ कर दिया। यों अल्लाह ने उन्हें इब्रत बनाकर दिखाया कि बेदीनों के साथ क्या कुछ किया जाएगा। ⁷ साथ साथ उसने लूत को बचाया जो रास्तबाज़ था और बेउसूल लोगों के गंदे चाल-चलन देख देखकर पिसता रहा। ⁸ क्योंकि यह रास्तबाज़ आदमी उनके दरमियान बसता था,

और उस की रास्तबाज़ जान रोज़ बरोज़ उनकी शरीर हरकतें देख और सुनकर सख़्त अज़ाब में फँसी रही। 9 यों जाहिर है कि ख़ब दीनदार लोगों को आजमाइश से बचाना और बेदीनों को अदालत के दिन तक सज़ा के तहत रखना जानता है, 10 ख़ासकर उन्हें जो अपने जिस्म की गंदी ख़ाहिशात के पीछे लगे रहते और ख़ुदावंद के इस्तिथार को हक़ीर जानते हैं।

यह लोग गुस्ताख़ और मग़रूर हैं और जलाली हस्तियों पर कुफ़र बकने से नहीं डरते। 11 इसके मुकाबले में फ़रिश्ते भी जो कहीं ज़्यादा ताक़तवर और क़वी हैं ख़ब के हज़ूर ऐसी हस्तियों पर बुहतान और इलज़ामात लगाने की ज़रूरत नहीं करते। 12 लेकिन यह झूटे उस्ताद बेअक्ल जानवरों की मानिंद हैं, जो फ़ितरी तौर पर इसलिए पैदा हुए हैं कि उन्हें पकड़ा और ख़त्म किया जाए। जो कुछ वह नहीं समझते उस पर वह कुफ़र बकते हैं। और जंगली जानवरों की तरह वह भी हलाक हो जाएंगे। 13 यों जो नुक़सान उन्होंने दूसरों को पहुँचाया वही उन्हें ख़ुद भुगतना पड़ेगा। उनके नज़दीक लुफ़ उठाने से मुराद यह है कि दिन के वक़्त खुलकर ऐश करें। वह दाग़ और धब्बे हैं जो आपकी ज़ियाफ़तों में शरीक होकर अपनी दगाबाज़ियों की रंगरलियाँ मनाते हैं। 14 उनकी आँखें हर वक़्त किसी बदकार औरत से ज़िना करने की तलाश में रहती हैं और गुनाह करने से कभी नहीं स्कर्ती। वह कमज़ोर लोगों को ग़लत काम करने के लिए उक़साते और लालच करने में माहिर हैं। उन पर अल्लाह की लानत! 15 वह सहीह राह से हटकर आवारा फिर रहे और बिलाम बिन बओर के नक़शे-क़दम पर चल रहे हैं, क्योंकि बिलाम ने पैसों के लालच में ग़लत काम किया। 16 लेकिन ग़धी ने उसे इस गुनाह के सबब से डाँटा। इस जानवर ने जो बोलने के काबिल नहीं था इनसान की-सी आवाज़ में बात की और नबी को उस की दीवानगी से रोक दिया।

17 यह लोग सूखे हुए चश्मे और आँधी से धकेले हुए बादल हैं। इनकी तकदीर अंधेरे का तारीक़तरीन हिस्सा है। 18 यह मग़रूर बातें करते हैं जिनके पीछे कुछ नहीं है और ग़ैरअख़लाकी जिस्मानी शहवतों से ऐसे लोगों को उक़साते हैं जो हाल ही में धोके की ज़िंदगी गुज़ारनेवालों में से बच निकले हैं। 19 यह उन्हें आज़ाद करने का वादा करते हैं जबकि ख़ुद बदकारी के गुलाम हैं। क्योंकि इनसान उसी का गुलाम है जो उस पर ग़ालिब आ गया है। 20 और जो हमारे ख़ुदावंद और नज़ातदहिदा ईसा मसीह को जान लेने से इस दुनिया की आलदगी से बच निकलते हैं, लेकिन बाद में एक बार फिर इसमें फँसकर मग़लूब हो जाते हैं उनका अंज़ाम पहले की निसबत ज़्यादा बुरा हो जाता है। 21 हाँ, जिन लोगों ने रास्तबाज़ी की राह को जान लिया, लेकिन बाद में उस मुक़द्दस हुक्म से मुँह फेर लिया जो उनके हवाले किया गया था, उनके लिए बेहतर होता कि वह इस राह से कभी वाकिफ़ न होते। 22 उन पर यह मुहावरा सादिक़ आता है कि “कुत्ता अपनी क़ै के पास वापस आ जाता है।” और यह भी कि “सुअरनी नहाने के बाद दुबारा कीचड़ में लोटने लगती है।”

3

ख़ुदावंद की आमद का वादा

1 अज़ीज़ो, यह अब दूसरा ख़त है जो मैंने आपको लिख दिया है। दोनों ख़तों में मैंने कई बातों की याद दिलाकर आपके ज़हननों में पाक सोच उभारने की कोशिश की। 2 मैं चाहता हूँ कि आप वह कुछ याद रखें जिसकी पेशगोई मुक़द्दस नबियों ने की थी और साथ साथ हमारे ख़ुदावंद और नज़ातदहिदा का वह हुक्म भी जो आपको अपने रसूलों की मारिफ़त मिला। 3 अब्बल आपको यह बात समझने की ज़रूरत है कि इन आखिरी दिनों में ऐसे लोग आएँगे जो मज़ाक़ उड़ाकर अपनी शहवतों के क़ब्ज़े में रहेंगे। 4 वह पछेंगे, “ईसा ने आने का वादा तो किया, लेकिन वह कहाँ है? हमारे बापदादा तो मर चुके हैं, और दुनिया की तख़लीक़ से लेकर आज तक सब कुछ वैसे का वैया ही है।” 5 लेकिन यह लोग नज़रंदाज़ करते हैं कि क़दीम ज़माने में अल्लाह के हुक्म पर आसमानों की तख़लीक़ हुई और ज़मीन पानी में से और पानी के ज़रीए वुजूद में आई। 6 इसी पानी के ज़रीए क़दीम ज़माने की दुनिया पर सैलाब आया और सब कुछ तबाह हुआ। 7 और अल्लाह के इसी हुक्म ने मौजूदा आसमान और ज़मीन को आग के लिए महफूज़ कर रखा है, उस दिन के लिए जब बेदीन लोगों की अदालत की जाएगी और वह हलाक हो जाएंगे।

8 लेकिन मेरे अज़ीज़ो, एक बात आपसे पोशीदा न रहे। ख़ुदावंद के नज़दीक़ एक दिन हज़ार साल के बराबर है और हज़ार साल एक दिन के बराबर। 9 ख़ुदावंद अपना वादा पूरा करने में देर नहीं करता जिस तरह कुछ लोग समझते हैं बल्कि वह तो आपकी खातिर सब्र कर रहा है। क्योंकि वह नहीं चाहता कि कोई हलाक हो जाए बल्कि यह कि सब तौबा की नौबत तक पहुँचें।

10 लेकिन ख़ुदावंद का दिन चोर की तरह आएगा। आसमान बड़े शोर के साथ ख़त्म हो जाएंगे, अज़रामे-फलकी आग में पिघल जाएंगे और ज़मीन उसके कामों समेत जाहिर होकर अदालत में पेश की जाएगी। 11 अब सोचें, अगर सब कुछ इस तरह ख़त्म हो जाएगा तो फिर आप किस किस्म के लोग होने चाहिएँ? आपको मुक़द्दस और ख़ुदातरस ज़िंदगी गुज़ारते हुए 12 अल्लाह के दिन की राह देखनी चाहिए। हाँ, आपको यह कोशिश करनी चाहिए कि वह दिन जल्दी आए जब आसमान जल जाएंगे और अज़रामे-फलकी आग में पिघल जाएंगे। 13 लेकिन हम उन नए आसमानों और नई ज़मीन के इंतज़ार में हैं जिनका वादा अल्लाह ने किया है। और वहाँ रास्ती सुकूनत करेगी।

14 चुनौचे अज़ीज़ो, चूँकि आप इस इंतज़ार में हैं इसलिए पूरी लग्न के साथ कोशिशें रहें कि आप अल्लाह के नज़दीक़ बेदाग़ और बेइलज़ाम ठहरें और आपकी उसके साथ सुलह हो। 15 याद रखें कि हमारे ख़ुदावंद का सब्र लोगों को नज़ात पाने का मौका देता है। हमारे अज़ीज़ भाई पौलुस ने भी उस हिकमत के मुताबिक़ जो अल्लाह ने उसे अता की है आपको यही कुछ लिखा है। 16 वह यही कुछ अपने तमाम ख़तों में लिखता है जब वह इस मज़मून का ज़िक़्र करता है। उसके ख़तों में कुछ ऐसी बातें हैं जो समझने में मुश्किल हैं और जिन्हें जाहिल और कमज़ोर

लोग तोड़-मरोड़कर बयान करते हैं, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह वह बाक़ी सहीफों के साथ भी करते हैं। लेकिन इससे वह अपने आपको ही हलाक कर रहे हैं।

¹⁷ मेरे अज़ीज़ो, मैं आपको वक़्त से पहले इन बातों से आगाह कर रहा हूँ। इसलिए ख़बरदार रहें ताकि बेउसूल लोगों की ग़लत सोच आपको बहकाकर आपको महफूज़ मक़ाम से हटा न दे। ¹⁸ इसके बजाए हमारे खुदावंद और नजातदहिदा ईसा मसीह के फज़ल और इल्म में तरक्की करते रहें। उसे अब और अबद तक जलाल हासिल होता रहे! आमीन।

1 यूहन्ना

जिंदगी का कलाम

1 हम आपको उस की मुनादी करते हैं जो इब्तिदा से था, जिसे हमने अपने कानों से सुना, अपनी आँखों से देखा, जिसका मुशाहदा हमने किया और जिसे हमने अपने हाथों से छुआ। वही जिंदगी का कलाम है। 2 वह जो खुद जिंदगी था जाहिर हुआ, हमने उसे देखा। और अब हम गवाही देकर आपको उस अबदी जिंदगी की मुनादी करते हैं जो खुदा बाप के पास थी और हम पर जाहिर हुई है। 3 हम आपको वह कुछ सुनाते हैं जो हमने खुद देख और सुन लिया है ताकि आप भी हमारी रिफाकत में शरीक हो जाएँ। और हमारी रिफाकत खुदा बाप और उसके फ़रज़ंद ईसा मसीह के साथ है। 4 हम यह इसलिए लिख रहे हैं ताकि हमारी खुशी पूरी हो जाए।

अल्लाह नूर है

5 जो पैगाम हमने उससे सुना और आपको सुना रहे हैं वह यह है, अल्लाह नूर है और उसमें तारीकी है ही नहीं। 6 जब हम तारीकी में चलते हुए अल्लाह के साथ रिफाकत रखने का दावा करते हैं तो हम झूट बोल रहे और सच्चाई के मुताबिक़ जिंदगी नहीं गुज़ार रहे। 7 लेकिन जब हम नूर में चलते हैं, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह अल्लाह नूर में है, तो फिर हम एक दूसरे के साथ रिफाकत रखते हैं और उसके फ़रज़ंद ईसा का खून हमें तमाम गुनाहों से पाक-साफ़ कर देता है।

8 अगर हम गुनाह से पाक होने का दावा करें तो हम अपने आपको फ़रेब देते हैं और हममें सच्चाई नहीं है। 9 लेकिन अगर हम अपने गुनाहों का इकरार करें तो वह वफ़ादार और रास्त साबित होगा। वह हमारे गुनाहों को मुआफ़ करके हमें तमाम नारास्ती से पाक-साफ़ करेगा। 10 अगर हम दावा करें कि हमने गुनाह नहीं किया तो हम उसे झूटा करार देते हैं और उसका कलाम हमारे अंदर नहीं है।

2

मसीह हमारी शफ़ाअत करता है

1 मेरे बच्चो, मैं आपको यह इसलिए लिख रहा हूँ कि आप गुनाह न करें। लेकिन अगर कोई गुनाह करे तो एक है जो खुदा बाप के सामने हमारी शफ़ाअत करता है, ईसा मसीह जो रास्त है। 2 वही हमारे गुनाहों का कफ़फ़ारा देनेवाली कुरबानी है, और न सिर्फ़ हमारे गुनाहों का बल्कि पूरी दुनिया के गुनाहों का भी।

3 इससे हमें पता चलता है कि हमने उसे जान लिया है, जब हम उसके अहकाम पर अमल करते हैं। 4 जो कहता है, “मैं उसे जानता हूँ” लेकिन उसके अहकाम पर अमल नहीं करता वह झूटा है और सच्चाई उसमें नहीं है। 5 लेकिन जो उसके कलाम की पैरवी करता है उसमें अल्लाह की मुहब्बत हक़ीक़तन तकमील तक पहुँच गई है। इससे हमें पता चलता है कि हम उसमें हैं। 6 जो कहता है कि वह उसमें कायम है उसके लिए लाज़िम है कि वह यों चले जिस तरह ईसा चलता था।

एक नया हुक्म

7 अज़ीज़ो, मैं आपको कोई नया हुक्म नहीं लिख रहा, बल्कि वही पुराना हुक्म जो आपको शुरू से मिला है। यह पुराना हुक्म वही पैगाम है जो आपने सुन लिया है। 8 लेकिन दूसरी तरफ़ से यह हुक्म नया भी है, और इसकी सच्चाई मसीह और आपमें जाहिर हुई है। क्योंकि तारीकी ख़त्म होनेवाली है और हक़ीक़ी रौशनी चमकने लग गई है।

9 जो नूर में होने का दावा करके अपने भाई से नफ़रत करता है वह अब तक तारीकी में है। 10 जो अपने भाई से मुहब्बत रखता है वह नूर में रहता है और उसमें कोई भी चीज़ नहीं पाई जाती जो ठोकर का बाइस बन सके। 11 लेकिन जो अपने भाई से नफ़रत करता है वह तारीकी ही में है और अंधेरे में चलता-फिरता है। उसको यह नहीं मालूम कि वह कहाँ जा रहा है, क्योंकि तारीकी ने उसे अंधा कर रखा है।

12 प्यारे बच्चो, मैं आपको इसलिए लिख रहा हूँ कि आपके गुनाहों को उसके नाम की खातिर मुआफ़ कर दिया गया है। 13 वालिदो, मैं आपको इसलिए लिख रहा हूँ कि आपने उसे जान लिया है जो इब्तिदा ही से है। जवान मर्दो, मैं आपको इसलिए लिख रहा हूँ कि आप इबलीस पर ग़ालिब आ गए हैं। बच्चो, मैं आपको इसलिए लिख रहा हूँ कि आपने बाप को जान लिया है। 14 वालिदो, मैं आपको इसलिए लिख रहा हूँ कि आपने उसे जान लिया है जो इब्तिदा ही से है। जवान मर्दो, मैं आपको इसलिए लिख रहा हूँ कि आप मज़बूत हैं। अल्लाह का कलाम आपमें बसता है और आप इबलीस पर ग़ालिब आ गए हैं।

15 दुनिया को प्यार मत करना, न किसी चीज़ को जो दुनिया में है। अगर कोई दुनिया को प्यार करे तो खुदा बाप की मुहब्बत उसमें नहीं है। 16 क्योंकि जो भी चीज़ दुनिया में है वह बाप की तरफ़ से नहीं बल्कि दुनिया की तरफ़ से है, खाह वह जिस्म की बुरी खाहिशात, आँखों का लालच या अपनी मिलकियत पर फ़ख़र हो। 17 दुनिया और उस की वह चीज़ें जो इन्सान चाहता है ख़त्म हो रही हैं, लेकिन जो अल्लाह की मरज़ी पूरी करता है वह अबद तक जीता रहेगा।

मसीह का दुश्मन

18 बच्चो, अब आखिरी घड़ी आ पहुँची है। आपने खुद सुन लिया है कि मुखालिफे-मसीह आ रहा है, और हकीकतन बहुत-से ऐसे मुखालिफे-मसीह आ चुके हैं। इससे हमें पता चलता है कि आखिरी घड़ी आ गई है। 19 यह लोग हममें से निकले तो हैं, लेकिन हकीकत में हममें से नहीं थे। क्योंकि अगर वह हममें से होते तो वह हमारे साथ ही रहते। लेकिन हमें छोड़ने से ज़ाहिर हुआ कि सब हममें से नहीं हैं।

20 लेकिन आप फ़रक़ हैं। आपको उससे जो कुछ है रूह का मसह मिल गया है, और आप पूरी सच्चाई को जानते हैं। 21 मैं आपको इसलिए नहीं लिख रहा कि आप सच्चाई को नहीं जानते बल्कि इसलिए कि आप सच्चाई जानते हैं और कि कोई भी झूट सच्चाई की तरफ़ से नहीं आ सकता।

22 कौन झूटा है? वह जो ईसा के मसीह होने का इनकार करता है। मुखालिफे-मसीह ऐसा शख्स है। वह बाप और फ़रज़ंद का इनकार करता है। 23 जो फ़रज़ंद का इनकार करता है उसके पास बाप भी नहीं है, और जो फ़रज़ंद का इकरार करता है उसके पास बाप भी है।

24 चुनौचे लाज़िम है कि जो कुछ आपने इब्तिदा से सुना वह आपमें रहे। अगर वह आपमें रहे तो आप भी फ़रज़ंद और बाप में रहेंगे। 25 और जो वादा उसने हमसे किया है वह है अबदी ज़िंदगी।

26 मैं आपको यह उनके बारे में लिख रहा हूँ जो आपको सही राह से हटाने की कोशिश कर रहे हैं। 27 लेकिन आपको उससे रूह का मसह मिल गया है। वह आपके अंदर बसता है, इसलिए आपको इसकी ज़रूरत ही नहीं कि कोई आपको तालीम दे। क्योंकि मसीह का रूह आपको सब बातों के बारे में तालीम देता है और जो कुछ भी वह सिखाता है वह सच है, झूट नहीं। चुनौचे जिस तरह उसने आपको तालीम दी है, उसी तरह मसीह में रहें।

28 और अब प्यारे बच्चो, उसमें कायम रहें ताकि उसके ज़ाहिर होने पर हम पूरे एतमाद के साथ उसके सामने खड़े हो सकें और उस की आमद पर शर्मिंदा न होना पड़े। 29 अगर आप जानते हैं कि मसीह रास्तबाज़ है तो आप यह भी जानते हैं कि जो भी रास्त काम करता है वह अल्लाह से पैदा होकर उसका फ़रज़ंद बन गया है।

3

अल्लाह के फ़रज़ंद

1 ध्यान दें कि बाप ने हमसे कितनी मुहब्बत की है, यहाँ तक कि हम अल्लाह के फ़रज़ंद कहलाते हैं। और हम वाकई हैं भी। इसलिए दुनिया हमें नहीं जानती। वह तो उसे भी नहीं जानती। 2 अज़ीज़ो, अब हम अल्लाह के फ़रज़ंद हैं, और जो कुछ हम होंगे वह अभी तक ज़ाहिर नहीं हुआ है। लेकिन इतना हम जानते हैं कि जब वह ज़ाहिर हो जाएगा तो हम उस की मानिंद होंगे। क्योंकि हम उसका मुशाहदा वैसे ही करेंगे जैसा वह है। 3 जो भी मसीह में यह उम्मीद रखता है वह अपने आपको पाक-साफ़ रखता है, वैसे ही जैसा मसीह खुद है।

4 जो गुनाह करता है वह शरीअत की खिलाफ़वरज़ी करता है। हाँ, गुनाह शरीअत की खिलाफ़वरज़ी ही है। 5 लेकिन आप जानते हैं कि ईसा हमारे गुनाहों को उठा ले जाने के लिए ज़ाहिर हुआ। और उसमें गुनाह नहीं है। 6 जो उसमें कायम रहता है वह गुनाह नहीं करता। और जो गुनाह करता रहता है न तो उसने उसे देखा है, न उसे जाना है।

7 प्यारे बच्चो, किसी को इजाज़त न दें कि वह आपको सही राह से हटा दे। जो रास्त काम करता है वह रास्तबाज़, हाँ मसीह जैसा रास्तबाज़ है। 8 जो गुनाह करता है वह इबलीस से है, क्योंकि इबलीस शुरू ही से गुनाह करता आया है। अल्लाह का फ़रज़ंद इसी लिए ज़ाहिर हुआ कि इबलीस का काम तबाह करे।

9 जो भी अल्लाह से पैदा होकर उसका फ़रज़ंद बन गया है वह गुनाह नहीं करेगा, क्योंकि अल्लाह की फ़ितरत उसमें रहती है। वह गुनाह कर ही नहीं सकता क्योंकि वह अल्लाह से पैदा होकर उसका फ़रज़ंद बन गया है। 10 इससे पता चलता है कि अल्लाह के फ़रज़ंद कौन हैं और इबलीस के फ़रज़ंद कौन : जो रास्त काम नहीं करता, न अपने भाई से मुहब्बत रखता है, वह अल्लाह का फ़रज़ंद नहीं है।

एक दूसरे से मुहब्बत रखना

11 क्योंकि यही वह पैग़ाम है जो आपने शुरू से सुन रखा है, कि हमें एक दूसरे से मुहब्बत रखना है। 12 काबील की तरह न हों, जो इबलीस का था और जिसने अपने भाई को क़त्ल किया। और उसने उसको क़त्ल क्यों किया? इसलिए कि उसका काम बुरा था जबकि भाई का काम रास्त था।

13 चुनौचे भाइयो, जब दुनिया आपसे नफ़रत करती है तो हैरान न हो जाँ। 14 हम तो जानते हैं कि हम मौत से निकलकर ज़िंदगी में दाख़िल हो गए हैं। हम यह इसलिए जानते हैं कि हम अपने भाइयों से मुहब्बत रखते हैं। जो मुहब्बत नहीं रखता वह अब तक मौत की हालत में है। 15 जो भी अपने भाई से नफ़रत रखता है वह कातिल है। और आप जानते हैं कि जो कातिल है उसमें अबदी ज़िंदगी नहीं रहती। 16 इससे ही हमने मुहब्बत को जाना है कि मसीह ने हमारी खातिर अपनी जान दे दी। और हमारा भी फ़र्ज़ यही है कि अपने भाइयों की खातिर अपनी जान दें। 17 अगर किसी के माली हालात ठीक हों और वह अपने भाई की ज़रूरतमंद हालत को देखकर रहम न करे तो उसमें अल्लाह की मुहब्बत किस तरह कायम रह सकती है? 18 प्यारे बच्चो, आँ हम अलफ़ाज़ और बातों से मुहब्बत का इज़हार न करें बल्कि हमारी मुहब्बत अमली और हकीकी हो।

अल्लाह के हुज़ूर पूरा एतमाद

19 गरज इससे हम जान लेते हैं कि हम सच्चाई की तरफ से हैं, और यों ही हम अपने दिल को तसल्ली दे सकते हैं 20 जब वह हमें मुजरिम ठहराता है। क्योंकि अल्लाह हमारे दिल से बड़ा है और सब कुछ जानता है। 21 और अज़ीज़ो, जब हमारा दिल हमें मुजरिम नहीं ठहराता तो हम पूरे एतमाद के साथ अल्लाह के हुज़ूर आ सकते हैं 22 और वह कुछ पाते हैं जो उससे माँगते हैं। क्योंकि हम उसके अहकाम पर चलते हैं और वही कुछ करते हैं जो उसे पसंद है। 23 और उसका यह हुक्म है कि हम उसके फ़रज़ंद ईसा मसीह के नाम पर ईमान लाकर एक दूसरे से मुहब्बत रखें, जिस तरह मसीह ने हमें हुक्म दिया था। 24 जो अल्लाह के अहकाम के ताबे रहता है वह अल्लाह में बसता है और अल्लाह उसमें। हम किस तरह जान लेते हैं कि वह हममें बसता है? उस रूह के वसीले से जो उसने हमें दिया है।

4

हकीकी और झूटी रूह

1 अज़ीज़ो, हर एक रूह का यक़ीन मत करना बल्कि रूहों को परखकर मालूम करें कि वह अल्लाह से हैं या नहीं, क्योंकि मुतअद्दिद झूटे नबी दुनिया में निकले हैं। 2 इससे आप अल्लाह के रूह को पहचान लेते हैं : जो भी रूह इसका एतराफ़ करती है कि ईसा मसीह मुजस्सम होकर आया है वह अल्लाह से है। 3 लेकिन जो भी रूह ईसा के बारे में यह तसलीम न करे वह अल्लाह से नहीं है। यह मुखालिफ़े-मसीह की रूह है जिसके बारे में आपको ख़बर मिली कि वह आनेवाला है बल्कि इस वक़्त दुनिया में आ चुका है।

4 लेकिन आप प्यारे बच्चो, अल्लाह से हैं और उन पर ग़ालिब आ गए हैं। क्योंकि जो आपमें है वह उससे बड़ा है जो दुनिया में है। 5 यह लोग दुनिया से हैं और इसलिए दुनिया की बातें करते हैं और दुनिया उनकी सुनती है। 6 हम तो अल्लाह से हैं और जो अल्लाह को जानता है वह हमारी सुनता है। लेकिन जो अल्लाह से नहीं है वह हमारी नहीं सुनता। यों हम सच्चाई की रूह और फ़रेब देनेवाली रूह में इम्तियाज़ कर सकते हैं।

अल्लाह मुहब्बत है

7 अज़ीज़ो, आँ हम एक दूसरे से मुहब्बत रखें। क्योंकि मुहब्बत अल्लाह की तरफ़ से है, और जो मुहब्बत रखता है वह अल्लाह से पैदा होकर उसका फ़रज़ंद बन गया है और अल्लाह को जानता है। 8 जो मुहब्बत नहीं रखता वह अल्लाह को नहीं जानता, क्योंकि अल्लाह मुहब्बत है। 9 इसमें अल्लाह की मुहब्बत हमारे दरमियान ज़ाहिर हुई कि उसने अपने इकलौते फ़रज़ंद को दुनिया में भेज दिया ताकि हम उसके ज़रीए जिँएँ। 10 यही मुहब्बत है, यह नहीं कि हमने अल्लाह से मुहब्बत की बल्कि यह कि उसने हमसे मुहब्बत करके अपने फ़रज़ंद को भेज दिया ताकि वह हमारे गुनाहों को मिटाने के लिए कफ़फ़ारा दे।

11 अज़ीज़ो, चूँकि अल्लाह ने हमें इतना प्यार किया इसलिए लाज़िम है कि हम भी एक दूसरे को प्यार करें। 12 किसी ने भी अल्लाह को नहीं देखा। लेकिन जब हम एक दूसरे को प्यार करते हैं तो अल्लाह हमारे अंदर बसता है और उस की मुहब्बत हमारे अंदर तकमील पाती है।

13 हम किस तरह जान लेते हैं कि हम उसमें रहते हैं और वह हममें? इस तरह कि उसने हमें अपना रूह बरख़्श दिया है। 14 और हमने यह बात देख ली और इसकी गवाही देते हैं कि ख़ुदा बाप ने अपने फ़रज़ंद को दुनिया का नजातदहिंदा बनने के लिए भेज दिया है। 15 अगर कोई इकरार करे कि ईसा अल्लाह का फ़रज़ंद है तो अल्लाह उसमें रहता है और वह अल्लाह में। 16 और ख़ुद हमने वह मुहब्बत जान ली है और उस पर ईमान लाए हैं जो अल्लाह हमसे रखता है।

अल्लाह मुहब्बत ही है। जो भी मुहब्बत में कायम रहता है वह अल्लाह में रहता है और अल्लाह उसमें। 17 इसी तरह मुहब्बत हमारे दरमियान तकमील तक पहुँचती है, और यों हम अदालत के दिन पूरे एतमाद के साथ खड़े हो सकेंगे, क्योंकि जैसे वह है वैसे ही हम भी इस दुनिया में हैं। 18 मुहब्बत में ख़ौफ़ नहीं होता बल्कि कामिल मुहब्बत ख़ौफ़ को भगा देती है, क्योंकि ख़ौफ़ के पीछे सज़ा का डर है। जो डरता है उस की मुहब्बत तकमील तक नहीं पहुँची।

19 हम इसलिए मुहब्बत रखते हैं कि अल्लाह ने पहले हमसे मुहब्बत रखी। 20 अगर कोई कहे, “मैं अल्लाह से मुहब्बत रखता हूँ” लेकिन अपने भाई से नफ़रत करे तो वह झूटा है। क्योंकि जो अपने भाई से जिसे उसने देखा है मुहब्बत नहीं रखता वह किस तरह अल्लाह से मुहब्बत रख सकता है जिसे उसने नहीं देखा? 21 जो हुक्म मसीह ने हमें दिया है वह यह है, जो अल्लाह से मुहब्बत रखता है वह अपने भाई से भी मुहब्बत रखे।

5

दुनिया पर हमारी फ़तह

1 जो भी ईमान रखता है कि ईसा ही मसीह है वह अल्लाह से पैदा होकर उसका फ़रज़ंद बन गया है। और जो बाप से मुहब्बत रखता है वह उसके फ़रज़ंद से भी मुहब्बत रखता है। 2 हम किस तरह जान लेते हैं कि हम अल्लाह के फ़रज़ंद से मुहब्बत रखते हैं? इससे कि हम अल्लाह से मुहब्बत रखते और उसके अहकाम पर अमल करते हैं। 3 क्योंकि अल्लाह से मुहब्बत से मुराद यह है कि हम उसके अहकाम पर अमल करें। और उसके अहकाम हमारे लिए बोझ का बाइस नहीं हैं, 4 क्योंकि जो भी अल्लाह से पैदा होकर उसका फ़रज़ंद बन गया है वह दुनिया

पर गालिब आ जाता है। और हम यह फतह अपने ईमान के ज़रीए पाते हैं। ⁵ कौन दुनिया पर गालिब आ सकता है? सिर्फ वह जो ईमान रखता है कि ईसा अल्लाह का फ़रज़ंद है।

ईसा मसीह के बारे में गवाही

⁶ ईसा मसीह वह है जो अपने बपतिस्मे के पानी और अपनी मौत के खून के ज़रीए ज़ाहिर हुआ, न सिर्फ पानी के ज़रीए बल्कि पानी और खून दोनों ही के ज़रीए। और रूहुल-कुद्स जो सच्चाई है इसकी गवाही देता है। ⁷ क्योंकि इसके तीन गवाह हैं, ⁸ रूहुल-कुद्स, पानी और खून। और तीनों एक ही बात की तसदीक करते हैं। ⁹ हम तो इनसान की गवाही कबूल करते हैं, लेकिन अल्लाह की गवाही इससे कहीं अफ़ज़ल है। और अल्लाह की गवाही यह है कि उसने अपने फ़रज़ंद की तसदीक की है। ¹⁰ जो अल्लाह के फ़रज़ंद पर ईमान रखता है उसके दिल में यह गवाही है। और जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखता उसने उसे झूटा करार दिया है। क्योंकि उसने वह गवाही न मानी जो अल्लाह ने अपने फ़रज़ंद के बारे में दी। ¹¹ और गवाही यह है, अल्लाह ने हमें अबदी ज़िंदगी अता की है, और यह ज़िंदगी उसके फ़रज़ंद में है। ¹² जिसके पास फ़रज़ंद है उसके पास ज़िंदगी है, और जिसके पास अल्लाह का फ़रज़ंद नहीं है उसके पास ज़िंदगी भी नहीं है।

अबदी ज़िंदगी

¹³ मैं आपको जो अल्लाह के फ़रज़ंद के नाम पर ईमान रखते हैं इसलिए लिख रहा हूँ कि आप जान लें कि आपको अबदी ज़िंदगी हासिल है। ¹⁴ हमारा अल्लाह पर यह एतमाद है कि जब भी हम उस की मरज़ी के मुताबिक कुछ माँगते हैं तो वह हमारी सुनता है। ¹⁵ और चूँकि हम जानते हैं कि जब माँगते हैं तो वह हमारी सुनता है इसलिए हम यह इल्म भी रखते हैं कि हमें वह कुछ हासिल भी है जो हमने उससे माँगा था।

¹⁶ अगर कोई अपने भाई को ऐसा गुनाह करते देखे जिसका अंजाम मौत न हो तो वह दुआ करे, और अल्लाह उसे ज़िंदगी अता करेगा। मैं उन गुनाहों की बात कर रहा हूँ जिनका अंजाम मौत नहीं। लेकिन एक ऐसा गुनाह भी है जिसका अंजाम मौत है। मैं नहीं कह रहा कि ऐसे शख्स के लिए दुआ की जाए जिससे ऐसा गुनाह सरज़द हुआ हो। ¹⁷ हर नारास्त हरकत गुनाह है, लेकिन हर गुनाह का अंजाम मौत नहीं होता।

¹⁸ हम जानते हैं कि जो अल्लाह से पैदा होकर उसका फ़रज़ंद बन गया है वह गुनाह करता नहीं रहता, क्योंकि अल्लाह का फ़रज़ंद ऐसे शख्स को महफूज़ रखता है और इबलीस उसे नुकसान नहीं पहुँचा सकता।

¹⁹ हम जानते हैं कि हम अल्लाह के फ़रज़ंद हैं और कि तमाम दुनिया इबलीस के कब्ज़े में है।

²⁰ हम जानते हैं कि अल्लाह का फ़रज़ंद आ गया है और हमें समझ अता की है ताकि हम उसे जान लें जो हक़ीक़ी है। और हम उसमें हैं जो हक़ीक़ी है यानी उसके फ़रज़ंद ईसा मसीह में। वही हक़ीक़ी खुदा और अबदी ज़िंदगी है।

²¹ प्यारे बच्चो, अपने आपको बुतों से महफूज़ रखें!

2 यूहन्ना

1 यह खत बुजुर्ग यूहन्ना की तरफ से है।

मैं चुनीदा खातून और उसके बच्चों को लिख रहा हूँ जिन्हें मैं सच्चाई से प्यार करता हूँ, और न सिर्फ मैं बल्कि सब जो सच्चाई को जानते हैं। 2 क्योंकि सच्चाई हममें रहती है और अबद तक हमारे साथ रहेगी।

3 खुदा बाप और बाप का फ़रज़ंद ईसा मसीह हमें फ़ज़ल, रहम और सलामती अता करे। और यह चीज़ें सच्चाई और मुहब्बत की रूह में हमें हासिल हों।

सच्चाई और मुहब्बत

4 मैं निहायत ही खुश हुआ कि मैंने आपके बच्चों में से बाज़ ऐसे पाए जो उसी तरह सच्चाई में चलते हैं जिस तरह खुदा बाप ने हमें हुक्म दिया था। 5 और अब अज़ीज़ खातून, मैं आपसे दरखास्त करता हूँ कि आँ, हम सब एक दूसरे से मुहब्बत रखें। यह कोई नया हुक्म नहीं है जो मैं आपको लिख रहा हूँ बल्कि वही जो हमें शुरू ही से मिला है। 6 मुहब्बत का मतलब यह है कि हम उसके अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारें। जिस तरह आपने शुरू ही से सुना है, उसका हुक्म यह है कि आप मुहब्बत की रूह में चलें।

7 क्योंकि बहुत-से ऐसे लोग दुनिया में निकल खड़े हुए हैं जो आपको सहीह राह से हटाने की कोशिश में लगे रहते हैं। यह लोग नहीं मानते कि ईसा मसीह मुजस्सम होकर आया है। हर ऐसा शख्स फ़रेब देनेवाला और मुखालिफ़े-मसीह है। 8 चुनौचे ख़बरदार रहें। ऐसा न हो कि आपने जो कुछ मेहनत करके हासिल किया है वह जाता रहे बल्कि खुदा करे कि आपको इसका पूरा अज़्र मिल जाए।

9 जो भी मसीह की तालीम पर कायम नहीं रहता बल्कि इससे आगे निकल जाता है उसके पास अल्लाह नहीं। जो मसीह की तालीम पर कायम रहता है उसके पास बाप भी है और फ़रज़ंद भी। 10 चुनौचे अगर कोई आपके पास आकर यह तालीम पेश नहीं करता तो न उसे अपने घरों में आने दें, न उसको सलाम करें। 11 क्योंकि जो उसके लिए सलामती की दुआ करता है वह उसके शरीर कामों में शरीक हो जाता है।

आखिरी बातें

12 मैं आपको बहुत कुछ बताना चाहता हूँ, लेकिन कागज़ और स्याही के ज़रीए नहीं। इसके बजाए मैं आपसे मिलने और आपके स्वरू बात करने की उम्मीद रखता हूँ। फिर हमारी खुशी मुकम्मल हो जाएगी।

13 आपकी चुनीदा बहन के बच्चे आपको सलाम कहते हैं।

3 यूहन्ना

1 यह खत बुजुर्ग यूहन्ना की तरफ से है।

मैं अपने अजीज ग्युस को लिख रहा हूँ जिसे मैं सच्चाई से प्यार करता हूँ।

2 मेरे अजीज, मेरी दुआ है कि आपका हाल हर तरह से ठीक हो और आप जिस्मानी तौर पर उतने ही तनदुस्त हों जितने आप रूहानी लिहाज से हैं। 3 क्योंकि मैं निहायत खुश हुआ जब भाइयों ने आकर गवाही दी कि आप किस तरह सच्चाई के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारते हैं। और यक़ीनन आप हमेशा सच्चाई के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारते हैं। 4 जब मैं सुनता हूँ कि मेरे बच्चे सच्चाई के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं तो यह मेरे लिए सबसे ज्यादा खुशी का बाइस होता है।

ग्युस की तारीफ़

5 मेरे अजीज, जो कुछ आप भाइयों के लिए कर रहे हैं उसमें आप वफ़ादारी दिखा रहे हैं, हालाँकि वह आपके जाननेवाले नहीं हैं। 6 उन्होंने खुदा की जमात के सामने ही आपकी मुहब्बत की गवाही दी है। मेहरबानी करके उनकी सफ़र के लिए यों मदद करें कि अल्लाह खुश हो। 7 क्योंकि वह मसीह के नाम की खातिर सफ़र के लिए निकले हैं और ग़ैरईमानदारों से मदद नहीं लेते। 8 चुनौचे यह हमारा फ़र्ज है कि हम ऐसे लोगों की मेहमान-नवाज़ी करें, क्योंकि यों हम भी सच्चाई के हमखिदमत बन जाते हैं।

दियुतरिफ़ेस और देमेतरियुस

9 मैंने तो जमात को कुछ लिख दिया था, लेकिन दियुतरिफ़ेस जो उनमें अव्वल होने की खाहिश रखता है हमें कबूल नहीं करता। 10 चुनौचे मैं जब आऊँगा तो उसे उन बुरी हरकतों की याद दिलाऊँगा जो वह कर रहा है, क्योंकि वह हमारे खिलाफ़ बुरी बातें बक रहा है। और न सिर्फ़ यह बल्कि वह भाइयों को खुशआमदीद कहने से भी इनकार करता है। जब दूसरे यह करना चाहते हैं तो वह उन्हें रोककर जमात से निकाल देता है।

11 मेरे अजीज, जो बुरा है उस की नक़ल मत करना बल्कि उस की करना जो अच्छा है। जो अच्छा काम करता है वह अल्लाह से है। लेकिन जो बुरा काम करता है उसने अल्लाह को नहीं देखा।

12 सब लोग देमेतरियुस की अच्छी गवाही देते हैं बल्कि सच्चाई खुद भी उस की अच्छी गवाही देती है। हम भी इसके गवाह हैं, और आप जानते हैं कि हमारी गवाही सच्ची है।

आखिरी सलाम

13 मुझे आपको बहुत कुछ लिखना था, लेकिन यह ऐसी बातें हैं जो मैं क़लम और स्याही के ज़रीए आपको नहीं बता सकता। 14 मैं जल्द ही आपसे मिलने की उम्मीद रखता हूँ। फिर हम रूबरू बात करेंगे।

15 सलामती आपके साथ होती रहे।

यहाँ के दोस्त आपको सलाम कहते हैं। वहाँ के हर दोस्त को शख़्सी तौर पर हमारा सलाम दें।

यह्दाह

1 यह खत ईसा मसीह के खादिम और याकूब के भाई यह्दाह की तरफ से है।

मैं उन्हें लिख रहा हूँ जिन्हें बुलाया गया है, जो खुदा बाप में प्यारे हैं और ईसा मसीह के लिए महफूज रखे गए हैं।

2 अल्लाह आपको रहम, सलामती और मुहब्बत कसरत से अता करे।

झूटे उस्ताद

3 अजीजो, गो मैं आपको उस नजात के बारे में लिखने का बड़ा शौक रखता हूँ जिसमें हम सब शरीक हैं, लेकिन अब मैं आपको एक और बात के बारे में लिखना चाहता हूँ। मैं इसमें आपको नसीहत करने की ज़रूरत महसूस करता हूँ कि आप उस ईमान की खातिर जिद्द-जहद करें जो एक ही बार सदा के लिए मुकद्दसीन के सुपर्द कर दिया गया है। 4 क्योंकि कुछ लोग आपके दरमियान घुस आए हैं जिन्हें बहुत अरसा पहले मुजरिम ठहराया जा चुका है। उनके बारे में यह लिखा गया है कि वह बेदीन हैं जो हमारे खुदा के फ़जल को तोड़-मरोड़कर ऐयाशी का बाइस बना देते हैं और हमारे वाहिद आका और खुदावंद ईसा मसीह का इनकार करते हैं।

5 गो आप यह सब कुछ जानते हैं, फिर भी मैं आपको इसकी याद दिलाना चाहता हूँ कि अगरचे खुदावंद ने अपनी कौम को मिसर से निकालकर बचा लिया था तो भी उसने बाद में उन्हें हलाक कर दिया जो ईमान नहीं रखते थे। 6 उन फ़रिश्तों को याद करें जो उस दायराए-इख्तियार के अंदर न रहे जो अल्लाह ने उनके लिए मुकर्रर किया था बल्कि जिन्होंने अपनी रिहाइशगाह को तर्क कर दिया। उन्हें उसने तारीकी में महफूज रखा है जहाँ वह अबदी जंजीरों में जकड़े हुए रोज़े-अजीम की अदालत का इंतज़ार कर रहे हैं। 7 सद्म, अमूरा और उनके इर्दगिर्द के शहरों को भी मत भूलना, जिनके बाशिंदे इन फ़रिश्तों की तरह ज़िनाकारी और गैरफ़ितरी सोहबत के पीछे पड़े रहे। यह लोग अबदी आग की सज़ा भुगतते हुए सबके लिए एक इबरतनाक मिसाल हैं।

8 तो भी इन लोगों ने उनका-सा रवैया अपना लिया है। अपने ख़ाबों की बिना पर वह अपने बदनों को आलूदा कर लेते, खुदावंद का इख्तियार रद्द करते और जलाली हस्तियों पर कुफ़र बकते हैं। 9 इनके मुकाबले में सरदार फ़रिश्ते मीकाएल के रवय्ये पर गौर करें। जब वह इबलीस से झगड़ते वक़्त मूसा की लाश के बारे में बहस-मुबाहसा कर रहा था तो उसने इबलीस पर कुफ़र बकने का फैसला करने की ज़रूरत न की बल्कि सिर्फ़ इतना ही कहा, “रब आपको डाँटे!” 10 लेकिन यह लोग हर ऐसी बात के बारे में कुफ़र बकते हैं जो उनकी समझ में नहीं आती। और जो कुछ वह फ़ितरी तौर पर बेसमझ जानवरों की तरह समझते हैं वही उन्हें तबाह कर देता है। 11 उन पर अफ़सोस! उन्होंने काबील की राह इख्तियार की है। पैसों के लालच में उन्होंने अपने आपको पूरे तौर पर उस ग़लती के हवाले कर दिया है जो बिलाम ने की। वह कोरह की तरह बागी होकर हलाक हुए हैं। 12 जब यह लोग खुदावंद की मुहब्बत को याद करनेवाले रिफ़ाक़ती खानों में शरीक होते हैं तो रिफ़ाक़त के लिए धब्बे बन जाते हैं। यह डरे बग़ैर खाना खा खाकर उससे महज़ूज़ होते हैं। यह ऐसे चरवाहे हैं जो सिर्फ़ अपनी गल्लाबानी करते हैं। यह ऐसे बादल हैं जो हवाओं के जोर से चलते तो हैं लेकिन बरसते नहीं। यह सर्दियों के मौसम में ऐसे दरख्तों की मानिंद हैं जो दो लिहाज़ से मुरदा हैं। वह फल नहीं लाते और जड़ से उखड़े हुए हैं। 13 यह समुंदर की बेकाबू लहरों की मानिंद हैं जो अपनी शर्मनाक हरकतों की झाग उछालती हैं। यह आवारा सितारे हैं जिनके लिए अल्लाह ने सबसे गहरी तारीकी में एक दायमी जगह मखसूस की है।

14 आदम के बाद सातवें आदमी हनूक ने इन लोगों के बारे में यह पेशगोई की, “देखो, खुदावंद अपने बेशुमार मुकद्दस फ़रिश्तों के साथ 15 सबकी अदालत करने आएगा। वह उन्हें उन तमाम बेदीन हरकतों के सबब से मुजरिम ठहराएगा जो उनसे सरज़द हुई हैं और उन तमाम सख़्त बातों की वजह से जो बेदीन गुनाहगारों ने उसके खिलाफ़ की हैं।”

16 यह लोग बुड़बुड़ाते और शिकायत करते रहते हैं। यह सिर्फ़ अपनी ज़ाती खाहिशात पूरी करने के लिए ज़िंदगी गुज़ारते हैं। यह अपने बारे में शेखी मारते और अपने फ़ायदे के लिए दूसरों की खुशामद करते हैं।

आगाही और हिदायात

17 लेकिन आप मेरे अजीजो, वह कुछ याद रखें जिसकी पेशगोई हमारे खुदावंद ईसा मसीह के रसूलों ने की थी। 18 उन्होंने आपसे कहा था, “आखिरी दिनों में मज़ाक उड़ानेवाले होंगे जो अपनी बेदीन खाहिशात पूरी करने के लिए ही ज़िंदगी गुज़ारेंगे।” 19 यह वह हैं जो पार्टीबाज़ी करते, जो दुनियावी सोच रखते हैं और जिनके पास स्हुल-कुद्स नहीं है। 20 लेकिन आप मेरे अजीजो, अपने आपको अपने मुकद्दसतरीन ईमान की बुनियाद पर तामीर करें और स्हुल-कुद्स में दुआ करें। 21 अपने आपको अल्लाह की मुहब्बत में कायम रखें और इस इंतज़ार में रहें कि हमारे खुदावंद ईसा मसीह का रहम आपको अबदी ज़िंदगी तक पहुँचाए।

22 उन पर रहम करें जो शक में पड़े हैं। 23 बाज़ को आग में से छीनकर बचाएँ और बाज़ पर रहम करें, लेकिन खौफ़ के साथ। बल्कि उस शख्स के लिबास से भी नफ़रत करें जो अपनी हरकतों से गुनाह से आलूदा हो गया है।

सताइश की दुआ

24 उस की तमजीद हो जो आपको ठोकर खाने से महफूज़ रख सकता है और आपको अपने जलाल के सामने बेदाग और बड़ी खुशी से मामूर करके खड़ा कर सकता है। 25 उस वाहिद खुदा यानी हमारे नजातदहिदा का जलाल हो। हाँ, हमारे खुदावंद ईसा मसीह के वसीले से उसे जलाल, अज़मत, कुदरत और इख्तियार अज़ल से अब भी हो और अबद तक रहे। आमीन।

मुकाशफा

1 यह ईसा मसीह की तरफ से मुकाशफा है जो अल्लाह ने उसे अता किया ताकि वह अपने खादिमों को वह कुछ दिखाए जिसे जल्द ही पेश आना है। उसने अपने फ़रिश्ते को भेजकर यह मुकाशफा अपने खादिम यूहन्ना तक पहुँचा दिया। 2 और जो कुछ भी यूहन्ना ने देखा है उस की गवाही उसने दी है, खाह अल्लाह का कलाम हो या ईसा मसीह की गवाही। 3 मुबारक है वह जो इस नबुव्वत की तिलावत करता है। हाँ, मुबारक है वह जो सुनकर अपने दिलों में इस किताब में दर्ज बातें महफूज़ रखते हैं, क्योंकि यह जल्द ही पूरी हो जाएगी।

सात जमातों को सलाम

4 यह ख़त यूहन्ना की तरफ से सूबा आसिया की सात जमातों के लिए है।

आपको अल्लाह की तरफ से फ़ज़ल और सलामती हासिल रहे, उस की तरफ से जो है, जो था और जो आनेवाला है, उन सात रूहों की तरफ से जो उसके तख़्त के सामने होती हैं, 5 और ईसा मसीह की तरफ से यानी उससे जो इन बातों का वफ़ादार गवाह, मुरदों में से पहला जी उठनेवाला और दुनिया के बादशाहों का सरदार है।

उस की तमज़ीद हो जो हमें प्यार करता है, जिसने अपने खून से हमें हमारे गुनाहों से ख़लासी बख़्शी है 6 और जिसने हमें शाही इख़्तियार अपने ख़ुदा और बाप के इमाम बना दिया है। उसे अज़ल से अबद तक जलाल और कुदरत हासिल रहे! आमीन।

7 देखें, वह बादलों के साथ आ रहा है। हर एक उसे देखेगा, वह भी जिन्होंने उसे छेदा था। और दुनिया की तमाम कौमें उसे देखकर आहो-जारी करेंगी। हाँ, ऐसा ही हो! आमीन।

8 रब ख़ुदा फ़रमाता है, “मैं अब्बल और आख़िर हूँ, वह जो है, जो था और जो आनेवाला है, यानी कादिर-मुतलक ख़ुदा।”

मसीह की रोया

9 मैं यूहन्ना आपका भाई और शरीके-हाल हूँ। मुझ पर भी आपकी तरह ज़ुल्म किया जा रहा है। मैं आपके साथ अल्लाह की बादशाही में शरीक हूँ और ईसा में आपके साथ साबितकदम रहता हूँ। मुझे अल्लाह का कलाम सुनाने और ईसा के बारे में गवाही देने की वजह से इस जज़ीर में जो पतमूस कहलाता है छोड़ दिया गया। 10 रब के दिन यानी इतवार को मैं रूहल-कुद्स की गिरिफ़्त में आ गया और मैंने अपने पीछे तुरम की-सी एक ऊँची आवाज़ सुनी। 11 उसने कहा, “जो कुछ तू देख रहा है उसे एक किताब में लिखकर उन सात जमातों को भेज देना जो इफ़िसस, स्मरना, पिर्गमून, थुआतीरा, सरदीस, फ़िलदिलफ़िया और लौदीकिया में हैं।”

12 मैंने बोलनेवाले को देखने के लिए अपने पीछे नज़र डाली तो सोने के सात शमादान देखे। 13 इन शमादानों के दरमियान कोई खड़ा था जो इब्ने-आदम की मानिद था। उसने पाँवों तक का लंबा चोगा पहन रखा था और सीने पर सोने का सीनाबंद बाँधा हुआ था। 14 उसका सर और बाल ऊन या बर्फ़ जैसे सफ़ेद थे और उस की आँखें आग के शोले की मानिद थीं। 15 उसके पाँव भट्टे में दमकते पीतल की मानिद थे और उस की आवाज़ आबशार के शोर जैसी थी। 16 अपने दहने हाथ में उसने सात सितारे थाम रखे थे और उसके मुँह से एक तेज़ और दोधारी तलवार निकल रही थी। उसका चेहरा पूरे ज़ोर से चमकनेवाले सूरज की तरह चमक रहा था। 17 उसे देखते ही मैं उसके पाँवों में गिर गया। मैं मुरदा-सा था। फिर उसने अपना दहना हाथ मुझ पर रखकर कहा, “मत डर। मैं अब्बल और आख़िर हूँ। 18 मैं वह हूँ जो ज़िंदा है। मैं तो मर गया था लेकिन अब देख, मैं अबद तक ज़िंदा हूँ। और मौत और पाताल की कुंजियाँ मेरे हाथ में हैं। 19 चुनौचे जो कुछ तूने देखा है, जो अभी है और जो आइंदा होगा उसे लिख दे। 20 मेरे दहने हाथ में सात सितारों और सात शमादानों का पोशीदा मतलब यह है : यह सात सितारे आसिया की सात जमातों के फ़रिश्ते हैं, और यह सात शमादान यह सात जमातें हैं।

2

इफ़िसस के लिए पैग़ाम

1 इफ़िसस में मौजूद जमात के फ़रिश्ते को यह लिख देना :

यह उसका फ़रमान है जो अपने दहने हाथ में सात सितारे थामे रखता और सोने के सात शमादानों के दरमियान चलता-फिरता है। 2 मैं तेरे कामों को जानता हूँ, तेरी सख़्त मेहनत और तेरी साबितकदमी को। मैं जानता हूँ कि तू बुरे लोगों को बरदाश्त नहीं कर सकता, कि तूने उनकी पड़ताल की है जो रसूल होने का दावा करते हैं, हालाँकि वह रसूल नहीं हैं। तूझे तो पता चल गया है कि वह झूठे थे। 3 तू मेरे नाम की खातिर साबितकदम रहा और बरदाश्त करते करते थका नहीं। 4 लेकिन मुझे तूझसे यह शिकायत है, तू मुझे उस तरह प्यार नहीं करता जिस तरह पहले करता था। 5 अब ख़याल कर कि तू कहाँ से गिर गया है। तौबा करके वह कुछ कर जो तू पहले करता था, वरना मैं आकर तेरे शमादान को उस की जगह से हटा दूँगा। 6 लेकिन यह बात तेरे हक़ में है, तू मेरी तरह नीक़लियों के कामों से नफ़रत करता है।

7 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहल-कुद्स जमातों को क्या कुछ बता रहा है।

जो ग़ालिब आया उसे मैं ज़िंदगी के दरख़्त का फल खाने को दूँगा, उस दरख़्त का फल जो अल्लाह के फ़िर्दौस में है।

स्मुरना के लिए पैगाम

8 स्मुरना में मौजूद जमात के फरिश्ते को यह लिख देना : यह उसका फरमान है जो अब्बल और आखिर है, जो मर गया था और दुबारा ज़िंदा हुआ। 9 मैं तेरी मुसीबत और गुरबत को जानता हूँ। लेकिन हकीकत में तू दौलतमंद है। मैं उन लोगों के बुहतान से वाकिफ हूँ जो कहते हैं कि वह यहदी हैं हालाँकि हैं नहीं। असल में वह इबलीस की जमात हैं। 10 जो कुछ तुझे झेलना पड़ेगा उससे मत डरना। देख, इबलीस तुझे आजमाने के लिए तुममें से बाज़ को जेल में डाल देगा, और दस दिन तक तुझे ईजा पहुँचाई जाएगी। मौत तक वफादार रह तो मैं तुझे ज़िंदगी का ताज दूँगा।

11 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहुल-कुद्स जमातों को क्या कुछ बता रहा है।

जो गालिब आएगा उसे दूसरी मौत से नुकसान नहीं पहुँचेगा।

पिर्गमुन के लिए पैगाम

12 पिर्गमुन में मौजूद जमात के फरिश्ते को यह लिख देना :

यह उसका फरमान है जिसके पास दोधारी तेज़ तलवार है। 13 मैं जानता हूँ कि तू कहाँ रहता है, वहाँ जहाँ इबलीस का तख्त है। ताहम तू मेरे नाम का वफादार रहा है। तूने उन दिनों में भी मुझ पर ईमान रखने का इनकार न किया जब मेरा वफादार गवाह अंतिपास तुम्हारे पास शहीद हुआ, वहाँ जहाँ इबलीस बसता है। 14 लेकिन मुझे तुझसे कई बातों की शिकायत है। तेरे पास ऐसे लोग हैं जो बिलाम की तालीम की पैरवी करते हैं। क्योंकि बिलाम ने बलक को सिखाया कि वह किस तरह इसराईलियों को गुनाह करने पर उकसा सकता है यानी बुतों को पेश की गई कुरबानियाँ खाने और ज़िना करने से। 15 इसी तरह तेरे पास भी ऐसे लोग हैं, जो नीकुलियों की तालीम की पैरवी करते हैं। 16 अब तौबा कर! वरना मैं जल्द ही तेरे पास आकर अपने मुँह की तलवार से उनके साथ लड़ूँगा।

17 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहुल-कुद्स जमातों को क्या कुछ बता रहा है।

जो गालिब आएगा उसे मैं पोशीदा मन में से दूँगा। मैं उसे एक सफ़ेद पत्थर भी दूँगा जिस पर एक नया नाम लिखा होगा, ऐसा नाम जो सिर्फ़ मिलनेवाले को मालूम होगा।

थुआतीरा के लिए पैगाम

18 थुआतीरा में मौजूद जमात के फरिश्ते को यह लिख देना :

यह अल्लाह के फ़रज़ंद का फरमान है जिसकी आँखें आग के शोलों और पाँव दमकते पीतल की मानिंद हैं। 19 मैं तेरे कामों को जानता हूँ यानी तेरी मुहब्बत और ईमान, तेरी खिदमत और साबितकदमी, और यह कि इस वक़्त तू पहले की निसबत कहीं ज़्यादा कर रहा है। 20 लेकिन मुझे तुझसे यह शिकायत है, तू उस औरत ईज़बिल को जो अपने आपको नबिया कहती है काम करने देता है, हालाँकि यह अपनी तालीम से मेरे खादिमों को सही राह से दूर करके उन्हें ज़िना करने और बुतों को पेश की गई कुरबानियाँ खाने पर उकसाती है। 21 मैंने उसे काफ़ी देर से तौबा करने का मौका दिया है, लेकिन वह इसके लिए तैयार नहीं है। 22 चुनाँचे मैं उसे यों मारूँगा कि वह बिस्तर पर पड़ी रहेगी। और अगर वह जो उसके साथ ज़िना कर रहे हैं अपनी ग़लत हरकतों से तौबा न करें तो मैं उन्हें शदीद मुसीबत में फँसाऊँगा। 23 हाँ, मैं उसके फ़रज़ंदों को मार डालूँगा। फिर तमाम जमातें जान लेंगी कि मैं ही ज़हनों और दिलों को परखता हूँ, और मैं ही तुममें से हर एक को उसके कामों का बदला दूँगा।

24 लेकिन थुआतीरा की जमात के ऐसे लोग भी हैं जो इस तालीम की पैरवी नहीं करते, और जिन्होंने वह कुछ नहीं जाना जिसे इन लोगों ने 'इबलीस के गहरे भेद' का नाम दिया है। तुम्हें मैं बताता हूँ कि मैं तुम पर कोई और बोझ नहीं डालूँगा। 25 लेकिन इतना ज़रूर करो कि जो कुछ तुम्हारे पास है उसे मेरे आने तक मज़बूती से थामे रखना। 26 जो गालिब आएगा और आखिर तक मेरे कामों पर कायम रहेगा उसे मैं क्रौमों पर इख्तियार दूँगा। 27 हाँ, वह लोहे के शाही असा से उन पर हुकूमत करेगा, उन्हें मिट्टी के बरतनों की तरह फोड़ डालेगा। 28 यानी उसे वही इख्तियार मिलेगा जो मुझे भी अपने बाप से मिला है। ऐसे शख्स को मैं सुबह का सितारा भी दूँगा।

29 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहुल-कुद्स जमातों को क्या कुछ बता रहा है।

3

सरदीस के लिए पैगाम

1 सरदीस में मौजूद जमात के फरिश्ते को यह लिख देना :

यह उसका फरमान है जो अल्लाह की सात रूहों और सात सितारों को अपने हाथ में थामे रखता है। मैं तेरे कामों को जानता हूँ। तू ज़िंदा तो कहलाता है लेकिन है मुरदा। 2 जाग उठ! जो बाकी रह गया है और मरनेवाला है उसे मज़बूत कर। क्योंकि मैंने तेरे काम अपने खुदा की नज़र में मुकम्मल नहीं पाए। 3 चुनाँचे जो कुछ तुझे मिला है और जो तूने सुना है उसे याद रखना। उसे महफूज़ रख और तौबा कर। अगर तू बेदार न हो तो मैं चोर की तरह आऊँगा और तुझे मालूम नहीं होगा कि मैं कब तुझ पर आन पड़ूँगा। 4 लेकिन सरदीस में तेरे कुछ ऐसे लोग हैं जिन्होंने अपने लिबास आलूदा नहीं किए। वह सफ़ेद कपड़े पहने हुए मेरे साथ चलें-फिरेंगे, क्योंकि वह इसके लायक हैं। 5 जो गालिब आएगा वह भी उनकी तरह सफ़ेद कपड़े पहने हुए फिरेगा। मैं उसका नाम किताबे-हयात से नहीं मिटाऊँगा बल्कि अपने बाप और उसके फरिश्तों के सामने इकरार करूँगा कि यह मेरा है।

6 जो सुन सकता है वह सुन ले कि स्हुल-कुद्स जमातों को क्या कुछ बता रहा है।

फिलदिलफिया के लिए पैगाम

7 फिलदिलफिया में मौजूद जमात के फरिश्ते को यह लिख देना :

यह उसका फरमान है जो कुद्स और सच्चा है, जिसके हाथ में दाऊद की चाबी है। जो कुछ वह खोलता है उसे कोई बंद नहीं कर सकता, और जो कुछ वह बंद कर देता है उसे कोई खोल नहीं सकता। 8 मैं तेरे कामों को जानता हूँ। देख, मैंने तेरे सामने एक ऐसा दरवाज़ा खोल रखा है जिसे कोई बंद नहीं कर सकता। मुझे मालूम है कि तेरी ताकत कम है। लेकिन तूने मेरे कलाम को महफूज़ रखा है और मेरे नाम का इनकार नहीं किया। 9 देख, जहाँ तक उनका ताल्लुक है जो इबलीस की जमात से हैं, वह जो यहूदी होने का दावा करते हैं हालाँकि वह झूट बोलते हैं, मैं उन्हें तेरे पास आने दूँगा, उन्हें तेरे पाँवों में झुककर यह तसलीम करने पर मजबूर करूँगा कि मैंने तुझे प्यार किया है। 10 तूने मेरा साबितकदम रहने का हुक्म पूरा किया, इसलिए मैं तुझे आजमाइश की उस घड़ी से बचाए रखूँगा जो पूरी दुनिया पर आकर उसमें बसनेवालों को आजमाएगी।

11 मैं जल्द आ रहा हूँ। जो कुछ तेरे पास है उसे मज़बूती से थामे रखना ताकि कोई तुझसे तेरा ताज छीन न ले। 12 जो गालिब आएगा उसे मैं अपने खुदा के घर में सतून बनाऊँगा, ऐसा सतून जो उसे कभी नहीं छोड़ेगा। मैं उस पर अपने खुदा का नाम और अपने खुदा के शहर का नाम लिख दूँगा, उस नए यरूशलम का नाम जो मेरे खुदा के हाँ से उतरनेवाला है। हाँ, मैं उस पर अपना नया नाम भी लिख दूँगा।

13 जो सुन सकता है वह सुन ले कि स्हुल-कुद्स जमातों को क्या कुछ बता रहा है।

लौदीकिया के लिए पैगाम

14 लौदीकिया में मौजूद जमात के फरिश्ते को यह लिख देना :

यह उसका फरमान है जो आमीन है, वह जो वफ़ादार और सच्चा गवाह और अल्लाह की कायनात का मंबा है। 15 मैं तेरे कामों को जानता हूँ। तू न तो सर्द है, न गरम। काश तू इनमें से एक होता! 16 लेकिन चूँकि तू नीमगरम है, न गरम, न सर्द, इसलिए मैं तुझे कै करके अपने मुँह से निकाल फेंकूँगा। 17 तू कहता है, 'मैं अमीर हूँ, मैंने बहुत दौलत हासिल कर ली है और मुझे किसी भी चीज़ की ज़रूरत नहीं।' और तू नहीं जानता कि तू असल में बदबख्त, काबिले-रहम, गरीब, अंधा और गंगा है। 18 मैं तुझे मशवरा देता हूँ कि मुझसे आग में खालिस किया गया सोना खरीद ले। तब ही तू दौलतमंद बनेगा। और मुझसे सफ़ेद लिबास खरीद ले जिसको पहनने से तेरे नंगेपन की शर्म जाहिर नहीं होगी। इसके अलावा मुझसे आँखों में लगाने के लिए मरहम खरीद ले ताकि तू देख सके। 19 जिनको मैं प्यार करता हूँ उनकी मैं सज़ा देकर तरबियत करता हूँ। अब संजीदा हो जा और तौबा कर। 20 देख, मैं दरवाज़े पर खड़ा खटखटा रहा हूँ। अगर कोई मेरी आवाज़ सुनकर दरवाज़ा खोले तो मैं अंदर आकर उसके साथ खाना खाऊँगा और वह मेरे साथ। 21 जो गालिब आए उसे मैं अपने साथ अपने तख़्त पर बैठने का हक़ दूँगा, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह मैं खुद भी गालिब आकर अपने बाप के साथ उसके तख़्त पर बैठ गया।

22 जो सुन सकता है वह सुन ले कि स्हुल-कुद्स जमातों को क्या कुछ बता रहा है।”

4

आसमान पर अल्लाह की परस्तिश

1 इसके बाद मैंने देखा कि आसमान में एक दरवाज़ा खुला हुआ है और तुरम की-सी आवाज़ ने जो मैंने पहले सुनी थी कहा, “इधर ऊपर आ। फिर मैं तुझे वह कुछ दिखाऊँगा जिसे इसके बाद पेश आना है।” 2 तब स्हुल-कुद्स ने मुझे फ़ौरन अपनी गिरिफ्त में ले लिया। वहाँ आसमान पर एक तख़्त था जिस पर कोई बैठा था। 3 और बैठनेवाला देखने में यशब और अक्रीक से मुताबिक़त रखता था। तख़्त के इर्दगिर्द क्रौसे-कुज़ह थी जो देखने में जुमुरद की मानिंद थी। 4 यह तख़्त 24 तख़्तों से घिरा हुआ था जिन पर 24 बुजुर्ग बैठे थे। बुजुर्गों के लिबास सफ़ेद थे और हर एक के सर पर सोने का ताज था। 5 दरमियानी तख़्त से बिजली की चमकें, आवाज़ें और बादल की गरजें निकल रही थीं। और तख़्त के सामने सात मशालें जल रही थीं। यह अल्लाह की सात स्तें हैं। 6 तख़्त के सामने शीशे का-सा समुंदर भी था जो बिल्लौर से मुताबिक़त रखता था।

बीच में तख़्त के इर्दगिर्द चार जानदार थे जिनके जिस्मों पर हर जगह आँखें ही आँखें थीं, सामनेवाले हिस्से पर भी और पीछेवाले हिस्से पर भी। 7 पहला जानदार शेरबबर जैसा था, दूसरा बैल जैसा, तीसरे का इनसान जैसा चेहरा था और चौथा उड़ते हुए उकाब की मानिंद था। 8 इन चार जानदारों में से हर एक के छः पर थे और जिस्म पर हर जगह आँखें ही आँखें थीं, बाहर भी और अंदर भी। दिन-रात वह बिलानागा कहते रहते हैं,

“कुद्स, कुद्स, कुद्स है रब कादिरे-मुतलक खुदा,

जो था, जो है और जो आनेवाला है।”

9 यों यह जानदार उस की तमजीद, इज़्जत और शुक्र करते हैं जो तख़्त पर बैठा है और अबद तक ज़िंदा है। जब भी वह यह करते हैं 10 तो 24 बुजुर्ग तख़्त पर बैठनेवाले के सामने मुँह के बल होकर उसे सिजदा करते हैं जो अज़ल से अबद तक ज़िंदा है। साथ साथ वह अपने सोने के ताज तख़्त के सामने रखकर कहते हैं,

11 “ऐ रब हमारे खुदा,

तू जलाल, इज्जत और कुदरत के लायक है।
 क्योंकि तूने सब कुछ खलक किया।
 तमाम चीजें तेरी ही मरज़ी से थीं और पैदा हुई।”

5

सात मुहरोंवाला तूमार

1 फिर मैंने तख्त पर बैठनेवाले के दहने हाथ में एक तूमार देखा जिस पर दोनों तरफ लिखा हुआ था और जिस पर सात मुहरें लगी थीं। 2 और मैंने एक ताक़तवर फ़रिश्ता देखा जिसने ऊँची आवाज़ से एलान किया, “कौन मुहरों को तोड़कर तूमार को खोलने के लायक है?” 3 लेकिन न आसमान पर, न ज़मीन पर और न ज़मीन के नीचे कोई था जो तूमार को खोलकर उसमें नज़र डाल सकता। 4 मैं खूब रो पड़ा, क्योंकि कोई इस लायक न पाया गया कि वह तूमार को खोलकर उसमें नज़र डाल सकता। 5 लेकिन बुजुर्गों में से एक ने मुझसे कहा, “मत रो। देख, यह दाह कबीले के शेरबबर और दाऊद की जड़ ने फ़तह पाई है, और वही तूमार की सात मुहरों को खोल सकता है।”

6 फिर मैंने एक लेला देखा जो तख्त के दरमियान खड़ा था। वह चार जानदारों और बुजुर्गों से घिरा हुआ था और यों लगता था कि उसे ज़बह किया गया हो। उसके सात सींग और सात आँखें थीं। इनसे मुराद अल्लाह की वह सात रूहें हैं जिन्हें दुनिया की हर जगह भेजा गया है। 7 लेले ने आकर तख्त पर बैठनेवाले के दहने हाथ से तूमार को ले लिया। 8 और लेते वक़्त चार जानदार और 24 बुजुर्ग लेले के सामने मुँह के बल गिर गए। हर एक के पास एक सरोद और बख़ूर से भरे सोने के प्याले थे। इनसे मुराद मुक़द्दीनी की दुआएँ हैं। 9 साथ साथ वह एक नया गीत गाने लगे,

“तू तूमार को लेकर
 उस की मुहरों को खोलने के लायक है।
 क्योंकि तुझे ज़बह किया गया, और अपने खून से
 तूने लोगों को हर कबीले, हर अहले-ज़बान, हर मिल्लत और हर क्रौम से
 अल्लाह के लिए ख़रीद लिया है।
 10 तूने उन्हें शाही इख्तियार देकर
 हमारे ख़ुदा के इमाम बना दिया है।
 और वह दुनिया में हुकूमत करेंगे।”

11 मैंने दुबारा देखा तो बेशुमार फ़रिश्तों की आवाज़ सुनी। वह तख्त, चार जानदारों और बुजुर्गों के इर्दगिर्द खड़े 12 ऊँची आवाज़ से कह रहे थे,

“लायक है वह लेला जो ज़बह किया गया है।
 वह कुदरत, दौलत, हिकमत और ताक़त,
 इज्जत, जलाल और सताइश पाने के लायक है।”

13 फिर मैंने आसमान पर, ज़मीन पर, ज़मीन के नीचे और समुंदर की हर मखलूक की आवाज़ें सुनीं। हाँ, कायनात की सब मखलूक़ात यह गा रहे थे,

“तख्त पर बैठनेवाले और लेले की सताइश और इज्जत,
 जलाल और कुदरत अज़ल से अबद तक रहे।”

14 चार जानदारों ने जवाब में “आमीन” कहा, और बुजुर्गों ने गिरकर सिजदा किया।

6

मुहरें तोड़ी जाती हैं

1 फिर मैंने देखा, लेले ने सात मुहरों में से पहली मुहर को खोला। इस पर मैंने चार जानदारों में से एक को जिसकी आवाज़ कड़कते बादलों की मानिंद थी यह कहते हुए सुना, “आ!” 2 मेरे देखते देखते एक सफ़ेद घोड़ा नज़र आया। उसके सवार के हाथ में कमान थी, और उसे एक ताज दिया गया। यों वह फ़ातेह की हैसियत से और फ़तह पाने के लिए वहाँ से निकला।

3 लेले ने दूसरी मुहर खोली तो मैंने दूसरे जानदार को कहते हुए सुना कि “आ!” 4 इस पर एक और घोड़ा निकला जो आग जैसा सुर्ख था। उसके सवार को दुनिया से सुलह-सलामती छीनने का इख्तियार दिया गया ताकि लोग एक दूसरे को क़त्ल करें। उसे एक बड़ी तलवार पकड़ाई गई।

5 लेले ने तीसरी मुहर खोली तो मैंने तीसरे जानदार को कहते हुए सुना कि “आ!” मेरे देखते देखते एक काला घोड़ा नज़र आया। उसके सवार के हाथ में तराजू था। 6 और मैंने चारों जानदारों में से गोया एक आवाज़ सुनी जिसने कहा, “एक दिन की मज़दूरी के लिए एक किलोग्राम गंदम, और एक दिन की मज़दूरी के लिए तीन किलोग्राम जौ। लेकिन तेल और मै को नुकसान मत पहुँचाना।”

7 लेले ने चौथी मुहर खोली तो मैंने चौथे जानदार को कहते सुना कि “आ!” 8 मेरे देखते देखते एक घोड़ा नज़र आया जिसका रंग हलका पीला-सा था। उसके सवार का नाम मौत था, और पाताल उसके पीछे पीछे चल रही थी। उन्हें ज़मीन का चौथा हिस्सा कत्ल करने का इख्तियार दिया गया, खाह तलवार, काल, मोहलक वबा या वहशी जानवरों के ज़रीए से हो।

9 लेले ने पाँचवीं मुहर खोली तो मैंने कुरबानगाह के नीचे उनकी स्तें देखीं जो अल्लाह के कलाम और अपनी गवाही कायम रखने की वजह से शहीद हो गए थे। 10 उन्होंने ऊँची आवाज़ से चिल्लाकर कहा, “ऐ कादिरे-मुतलक, कुदूस और सच्चे रब, कितनी देर और लगेगी? तू कब तक ज़मीन के बाशिंदों की अदालत करके हमारे शहीद होने का इंतक़ाम न लेगा?” 11 तब उनमें से हर एक को एक सफ़ेद लिबास दिया गया, और उन्हें समझाया गया कि “मज़ीद थोड़ी देर आराम करो, क्योंकि पहले तुम्हारे हमख़िदमत भाइयों में से उतनों को शहीद हो जाना है जितनों के लिए यह मुकर्रर है।”

12 लेले ने छठी मुहर खोली तो मैंने एक शहीद ज़लज़ला देखा। सूरज बकरी के बालों से बने टाट की मानिद काला हो गया, पूरा चाँद खून जैसा नज़र आने लगा 13 और आसमान के सितारे ज़मीन पर यों गिर गए जिस तरह अंजीर के दरख़्त पर लगे आखिरी अंजीर तेज़ हवा के झोंकों से गिर जाते हैं। 14 आसमान तूमार की तरह जब उसे लपेटकर बंद किया जाता है पीछे हट गया। और हर पहाड़ और जज़ीरा अपनी अपनी जगह से खिसक गया। 15 फिर ज़मीन के बादशाह, शहज़ादे, ज़रनैल, अमीर, असरो-रसूखवाले, गुलाम और आज़ाद सबके सब गारों में और पहाड़ी चटानों के दरमियान छुप गए। 16 उन्होंने चिल्लाकर पहाड़ों और चटानों से मिन्नत की, “हम पर गिरकर हमें तख़्त पर बैठे हुए के चेहरे और लेले के ग़ज़ब से छुपा लो। 17 क्योंकि उनके ग़ज़ब का अज़ीम दिन आ गया है, और कौन कायम रह सकता है?”

7

इसराईल के 1,44,000 चुने हुए अफ़राद

1 इसके बाद मैंने चार फ़रिश्तों को ज़मीन के चार कोनों पर खड़े देखा। वह ज़मीन की चार हवाओं को चलने से रोक रहे थे ताकि न ज़मीन पर, न समुंदर या किसी दरख़्त पर कोई हवा चले। 2 फिर मैंने एक और फ़रिश्ता मशरिक से चढ़ते हुए देखा जिसके पास ज़िंदा खुदा की मुहर थी। उसने ऊँची आवाज़ से उन चार फ़रिश्तों से बात की जिन्हें ज़मीन और समुंदर को नुक़सान पहुँचाने का इख्तियार दिया गया था। उसने कहा, 3 “ज़मीन, समुंदर या दरख़्तों को उस वक़्त तक नुक़सान मत पहुँचाना जब तक हम अपने खुदा के खादिमों के मार्थों पर मुहर न लगा लें।” 4 और मैंने सुना कि जिन पर मुहर लगाई गई थी वह 1,44,000 अफ़राद थे और वह इसराईल के हर एक कबीले से थे : 5 12,000 यहूदाह से, 12,000 रुबिन से, 12,000 ज़द से, 6 12,000 आशर से, 12,000 नफ़ताली से, 12,000 मनस्सी से, 7 12,000 शमौन से, 12,000 लावी से, 12,000 इशकार से, 8 12,000 ज़बूलून से, 12,000 यूसुफ से और 12,000 बिनयमीन से।

अल्लाह के हुज़ूर एक बड़ा हुज़ूम

9 इसके बाद मैंने एक हुज़ूम देखा जो इतना बड़ा था कि उसे गिना नहीं जा सकता था। उसमें हर मिल्लत, हर कबीले, हर कौम और हर ज़बान के अफ़राद सफ़ेद लिबास पहने हुए तख़्त और लेले के सामने खड़े थे। उनके हाथों में खज़ूर की डालियाँ थीं। 10 और वह ऊँची आवाज़ से चिल्ला चिल्लाकर कह रहे थे, “नजात तख़्त पर बैठे हुए हमारे खुदा और लेले की तरफ से है।” 11 तमाम फ़रिश्ते तख़्त, बुज़ुर्गों और चार जानदारों के इर्दगिर्द खड़े थे। उन्होंने तख़्त के सामने गिरकर अल्लाह को सिजदा किया 12 और कहा, “आमीन! हमारे खुदा की अज़ल से अबद तक सताइश, जलाल, हिकमत, शक्रगुज़ारी, इज़्ज़त, कुदरत और ताक़त हासिल रहे। आमीन!”

13 बुज़ुर्गों में से एक ने मुझसे पूछा, “सफ़ेद लिबास पहने हुए यह लोग कौन हैं और कहाँ से आए हैं?”

14 मैंने जवाब दिया, “मेरे आका, आप ही जानते हैं।”

उसने कहा, “यह वही हैं जो बड़ी ईज़ारसानी से निकलकर आए हैं। उन्होंने अपने लिबास लेले के खून में धोकर सफ़ेद कर लिए हैं। 15 इसलिए वह अल्लाह के तख़्त के सामने खड़े हैं और दिन-रात उसके घर में उस की खिदमत करते हैं। और तख़्त पर बैठा हुआ उनको पनाह देगा। 16 इसके बाद न कभी भूक उन्हें सताएगी न प्यास। न धूप, न किसी और किस्म की तपती गरमी उन्हें झुलसाएगी। 17 क्योंकि जो लेला तख़्त के दरमियान बैठा है वह उनकी गल्लाबानी करेगा और उन्हें ज़िंदगी के चश्मों के पास ले जाएगा। और अल्लाह उनकी आँखों से तमाम आँसू पोंछ डालेगा।”

8

सातवीं मुहर

1 जब लेले ने सातवीं मुहर खोली तो आसमान पर खामोशी छा गई। यह खामोशी तक़रीबन आधे घंटे तक रही। 2 फिर मैंने अल्लाह के सामने खड़े सात फ़रिश्तों को देखा। उन्हें सात तुरम दिए गए।

3 एक और फरिश्ता जिसके पास सोने का बखूरदान था आकर कुरबानगाह के पास खड़ा हो गया। उसे बहुत-सा बखूर दिया गया ताकि वह उसे मुकद्दसीन की दुआओं के साथ तख्त के सामने की सोने की कुरबानगाह पर पेश करे। 4 बखूर का धुआँ मुकद्दसीन की दुआओं के साथ फरिश्ते के हाथ से उठते उठते अल्लाह के सामने पहुँचा। 5 फिर फरिश्ते ने बखूरदान को लिया और उसे कुरबानगाह की आग से भरकर ज़मीन पर फेंक दिया। तब कड़कती और गरजती आवाज़ें सुनाई दीं, बिजली चमकने लगी और ज़लज़ला आ गया।

तुरमों का असर

6 फिर जिन सात फरिश्तों के पास सात तुरम थे वह उन्हें बजाने के लिए तैयार हुए।

7 पहले फरिश्ते ने अपने तुरम को बजा दिया। इस पर ओले और खून के साथ मिलाई गई आग पैदा होकर ज़मीन पर बरसाई गई। इससे ज़मीन का तीसरा हिस्सा, दरख्तों का तीसरा हिस्सा और तमाम हरी घास भस्म हो गई।

8 फिर दूसरे फरिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी। इस पर जलती हुई एक बड़ी पहाड़नुमा चीज़ को समुंद्र में फेंका गया। समुंद्र का तीसरा हिस्सा खून में बदल गया, 9 समुंद्र में मौजूद जिंदा मखलूक़ात का तीसरा हिस्सा हलाक और बहरी जहाज़ों का तीसरा हिस्सा तबाह हो गया।

10 फिर तीसरे फरिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी। इस पर मशाल की तरह भड़कता हुआ एक बड़ा सितारा आसमान से दरियाओं के तीसरे हिस्से और पानी के चश्मों पर गिर गया। 11 इस सितारे का नाम अफ़संतीन था और इससे पानी का तीसरा हिस्सा अफ़संतीन जैसा कड़वा हो गया। बहुत-से लोग यह कड़वा पानी पीने से मर गए।

12 फिर चौथे फरिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी। इस पर सूरज का तीसरा हिस्सा, चाँद का तीसरा हिस्सा और सितारों का तीसरा हिस्सा रौशनी से महरूम हो गया। दिन का तीसरा हिस्सा रौशनी से महरूम हुआ और इसी तरह रात का तीसरा हिस्सा भी।

13 फिर देखते देखते मैंने एक उकाब को सुना जिसने मेरे सर के ऊपर ही बुलंदियों पर उड़ते हुए ऊँची आवाज़ से पुकारा, “अफ़सोस! अफ़सोस! ज़मीन के बाशिंदों पर अफ़सोस! क्योंकि तीन फरिश्तों के तुरमों की आवाज़ें अभी बाक़ी हैं।”

9

1 फिर पाँचवें फरिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी। इस पर मैंने एक सितारा देखा जो आसमान से ज़मीन पर गिर गया था। इस सितारे को अथाह गढ़े के रास्ते की चाबी दी गई। 2 उसने अथाह गढ़े का रास्ता खोल दिया तो उससे धुआँ निकलकर ऊपर आया, यों जैसे धुआँ किसी बड़े भट्टे से निकलता है। सूरज और चाँद अथाह गढ़े के इस धुएँ से तारीक हो गए। 3 और धुएँ में से टिट्टियाँ निकलकर ज़मीन पर उतर आईं। उन्हें ज़मीन के बिछुओं जैसा इख्तियार दिया गया। 4 उन्हें बताया गया, “न ज़मीन की घास, न किसी पौदे या दरख्त को नुकसान पहुँचाओ बल्कि सिर्फ़ उन लोगों को जिनके माथों पर अल्लाह की मुहर नहीं लगी है।” 5 टिट्टियों को इन लोगों को मार डालने का इख्तियार न दिया गया बल्कि उन्हें बताया गया कि वह पाँच महीनों तक इनको अज़ियत दें। और यह अज़ियत उस तकलीफ़ की मानिंद है जो तब पैदा होती है जब बिच्छू किसी को डंक मारता है। 6 उन पाँच महीनों के दौरान लोग मौत की तलाश में रहेंगे, लेकिन उसे पाएँगे नहीं। वह मर जाने की शदीद आरज़ू करेंगे, लेकिन मौत उनसे भागकर दूर रहेगी।

7 टिट्टियों की शक्लो-सूरत जंग के लिए तैयार घोड़ों की मानिंद थी। उनके सरों पर सोने के ताजों जैसी चीज़ें थीं और उनके चेहरे इनसानों के चेहरों की मानिंद थे। 8 उनके बाल खवातीन के बालों की मानिंद और उनके दाँत शेरबबर के दाँतों जैसे थे। 9 यों लगा जैसे उनके सीनों पर लोहे के-से ज़िरा-बकतर लगे हुए थे, और उनके परो की आवाज़ बेशुमार रथों और घोड़ों के शोर जैसी थी जब वह मुखालिफ़ पर झपट रहे होते हों। 10 उनकी दुम पर बिच्छू का-सा डंक लगा था और उन्हें इन्हीं दुमों से लोगों को पाँच महीनों तक नुकसान पहुँचाने का इख्तियार था। 11 उनका बादशाह अथाह गढ़े का फरिश्ता है जिसका इबरानी नाम अबद्दोन और यूनानी नाम अपुल्लियोन (हलाकू) है।

12 यों पहला अफ़सोस गुज़र गया, लेकिन इसके बाद दो मज़ीद अफ़सोस होनेवाले हैं।

13 छठे फरिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी। इस पर मैंने एक आवाज़ सुनी जो अल्लाह के सामने वाक़े सोने की कुरबानगाह के चार कोनों पर लगे सींगों से आई। 14 इस आवाज़ ने छठा तुरम पकड़े हुए फरिश्ते से कहा, “उन चार फरिश्तों को खुला छोड़ देना जो बड़े दरिया बनाम फुरात के पास बँधे हुए हैं।” 15 इन चार फरिश्तों को इसी महीने के इसी दिन के इसी घंटे के लिए तैयार किया गया था। अब इन्हें खुला छोड़ दिया गया ताकि वह इनसानों का तीसरा हिस्सा मार डालें। 16 मुझे बताया गया कि घोड़ों पर सवार फ़ौजी बीस करोड़ थे। 17 रोया में घोड़े और सवार यों नज़र आए : सीनों पर लगे ज़िरा-बकतर आग जैसे सुर्ख, नीले और गंधक जैसे पीले थे। घोड़ों के सर शेरबबर के सरों से मुताबिकत रखते थे और उनके मुँह से आग, धुआँ और गंधक निकलती थी। 18 आग, धुआँ और गंधक की इन तीन बलाओं से इनसानों का तीसरा हिस्सा हलाक हुआ। 19 हर घोड़े की ताकत उसके मुँह और दुम में थी, क्योंकि उनकी दुमों साँप की मानिंद थीं जिनके सर नुकसान पहुँचाते थे।

20 जो इन बलाओं से हलाक नहीं हुए थे बल्कि अभी बाक़ी थे उन्होंने फिर भी अपने हाथों के कामों से तौबा न की। वह बदरूहों और सोने, चाँदी, पीतल, पत्थर और लकड़ी के बुतों की पूजा से बाज़ न आए हालाँकि ऐसी चीज़ें न तो देख सकती हैं, न सुनने या चलने के क़ाबिल होती हैं। 21 वह कत्लो-गारत, जादूगरी, जिनाकारी और चोरियों से भी तौबा करके बाज़ न आए।

10

फरिश्ता और छोटा तूमार

1 फिर मैंने एक और ताकतवर फरिश्ता देखा। वह बादल ओढ़े हुए आसमान से उतर रहा था और उसके सर के ऊपर क्रौंसे-कुंजह थी। उसका चेहरा सूरज जैसा था और उसके पाँव आग के सतून जैसे। 2 उसके हाथ में एक छोटा तूमार था जो खुला था। अपने एक पाँव को उसने समुंदर पर रख दिया और दूसरे को ज़मीन पर। 3 फिर वह ऊँची आवाज़ से पुकार उठा। ऐसे लगा जैसे शेरबबर गरज रहा है। इस पर कड़क की सात आवाज़ें बोलने लगीं। 4 उनके बोलने पर मैं उनकी बातें लिखने को था कि एक आवाज़ ने कहा, “कड़क की सात आवाज़ों की बातों पर मुहर लगा और उन्हें मत लिखना।”

5 फिर उस फरिश्ते ने जिसे मैंने समुंदर और ज़मीन पर खड़ा देखा अपने दहने हाथ को आसमान की तरफ उठाकर 6 अल्लाह के नाम की कसम खाई, उसके नाम की जो अज़ल से अबद तक ज़िंदा है और जिसने आसमानों, ज़मीन और समुंदर को उन तमाम चीज़ों समेत खलक किया जो उनमें हैं। फरिश्ते ने कहा, “अब देर नहीं होगी। 7 जब सातवाँ फरिश्ता अपने तुरम में फूँक मारने को होगा तब अल्लाह का भेद जो उसने अपने नबुव्वत करनेवाले खादिमों को बताया था तकमील तक पहुँचेगा।”

8 फिर जो आवाज़ आसमान से सुनाई दी थी उसने एक बार फिर मुझसे बात की, “जा, वह तूमार ले लेना जो समुंदर और ज़मीन पर खड़े फरिश्ते के हाथ में खुला पड़ा है।”

9 चुनौचे मैंने फरिश्ते के पास जाकर उससे गुज़ारिश की कि वह मुझे छोटा तूमार दे। उसने मुझसे कहा, “इसे ले और खा ले। यह तेरे मुँह में शहद की तरह मीठा लगेगा, लेकिन तेरे मेदे में कड़वाहट पैदा करेगा।”

10 मैंने छोटे तूमार को फरिश्ते के हाथ से लेकर उसे खा लिया। मेरे मुँह में तो वह शहद की तरह मीठा लग रहा था, लेकिन मेदे में जाकर उसने कड़वाहट पैदा कर दी। 11 फिर मुझे बताया गया, “लाज़िम है कि तू बहुत उम्मतों, क्रौमों, ज़बानों और बादशाहों के बारे में मज़ीद नबुव्वत करे।”

11

दो गवाह

1 मुझे गज़ की तरह का सरकंडा दिया गया और बताया गया, “जा, अल्लाह के घर और कुरबानगाह की पैमाइश कर। उसमें परस्तारों की तादाद भी गिन। 2 लेकिन बैरूनी सहन को छोड़ दे। उसे मत नाप, क्योंकि उसे गैरईमानदारों को दिया गया है जो मुकद्दस शहर को 42 महीनों तक कुचलते रहेंगे। 3 और मैं अपने दो गवाहों को इख्तियार दूँगा, और वह टाट ओढ़कर 1,260 दिनों के दौरान नबुव्वत करेंगे।”

4 यह दो गवाह ज़ैतून के वह दो दरख्त और वह दो शमादान हैं जो दुनिया के आका के सामने खड़े हैं। 5 अगर कोई उन्हें नुक़सान पहुँचाना चाहे तो उनके मुँह में से आग निकलकर उनके दुश्मनों को भस्म कर देती है। जो भी उन्हें नुक़सान पहुँचाना चाहे उसे इस तरह मरना पड़ता है। 6 इन गवाहों को आसमान को बंद रखने का इख्तियार है ताकि जितना वक़्त वह नबुव्वत करें बारिश न हो। उन्हें पानी को खून में बदलने और ज़मीन को हर किस्म की अज़ियत पहुँचाने का इख्तियार भी है। और वह जितनी दफ़ा जी चाहे यह कर सकते हैं।

7 उनकी गवाही का मुक़ररा वक़्त पूरा होने पर अथाह गर्द में से निकलनेवाला हैवान उनसे जंग करना शुरू करेगा और उन पर गालिब आकर उन्हें मार डालेगा। 8 उनकी लाशें उस बड़े शहर की सड़क पर पड़ी रहेंगी जिसका अलामती नाम सदूम और मिसर है। वहाँ उनका आका भी मसलूब हुआ था। 9 और साढ़े तीन दिनों के दौरान हर उम्मत, कबीले, ज़बान और क्रौम के लोग इन लाशों को घूरकर देखेंगे और इन्हें दफ़न करने नहीं देंगे। 10 ज़मीन के बाशिंदे उनकी वजह से मसूर होंगे और खुशी मनाकर एक दूसरे को तोहफ़े भेजेंगे, क्योंकि इन दो नबियों ने ज़मीन पर रहनेवालों को काफ़ी ईज़ा पहुँचाई थी। 11 लेकिन इन साढ़े तीन दिनों के बाद अल्लाह ने उनमें ज़िंदगी का दम फूँक दिया, और वह अपने पाँवों पर खड़े हुए। जो उन्हें देख रहे थे वह सख़्त दहशतज़दा हुए। 12 फिर उन्होंने आसमान से एक ऊँची आवाज़ सुनी जिसने उनसे कहा, “यहाँ ऊपर आओ!” और उनके दुश्मनों के देखते देखते दोनों एक बादल में आसमान पर चले गए। 13 उसी वक़्त एक शदीद ज़लज़ला आया और शहर का दसवाँ हिस्सा गिरकर तबाह हो गया। 7,000 अफ़राद उस की ज़द में आकर मर गए। बचे हुए लोगों में दहशत फैल गई और वह आसमान के ख़ुदा को जलाल देने लगे।

14 दूसरा अफ़सोस गुज़र गया, लेकिन अब तीसरा अफ़सोस जल्द होनेवाला है।

सातवाँ तुरम

15 सातवें फरिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी। इस पर आसमान पर से ऊँची आवाज़ें सुनाई दें जो कह रही थी, “ज़मीन की बादशाही हमारे आका और उसके मसीह की हो गई है। वही अज़ल से अबद तक हुकूमत करेगा।” 16 और अल्लाह के तख़्त के सामने बैठे 24 बुजुर्गों ने गिरकर अल्लाह को सिजदा किया 17 और कहा, “ऐ रब कादिरे-मुतलक ख़ुदा, हम तेरा शुक्र करते हैं, तू जो है और जो था। क्योंकि तू अपनी अज़ीम कुदरत को काम में लाकर हुकूमत करने लगा है। 18 क्रौमों गुस्से में आई तो तेरा गज़ब नाज़िल हुआ। अब मुरदों की अदालत करने और

अपने खादिमों को अज़्र देने का वक़्त आ गया है। हाँ, तेरे नबियों, मुक़द्दसीन और तेरा ख़ौफ़ माननेवालों को अज़्र मिलेगा, खाह वह छोटे हों या बड़े। अब वह वक़्त भी आ गया है कि ज़मीन को तबाह करनेवालों को तबाह किया जाए।”

19 आसमान पर अल्लाह के घर को खोला गया और उसमें उसके अहद का संदूक नज़र आया। बिजली चमकने लगी, शोर मच गया, बादल गरजने और बड़े बड़े ओले पड़ने लगे।

12

खातून और अज़दहा

1 फिर आसमान पर एक अजीम निशान जाहिर हुआ, एक खातून जिसका लिबास सूरज था। उसके पाँवों तले चाँद और सर पर बारह सितारों का ताज था। 2 उसका पाँव भारी था, और जन्म देने के शदीद दर्द में मुब्तला होने की वजह से वह चिल्ला रही थी।

3 फिर आसमान पर एक और निशान नज़र आया, एक बड़ा और आग जैसा सुर्ख अज़दहा। उसके सात सर और दस सींग थे, और हर सर पर एक ताज था। 4 उस की दुम ने सितारों के तीसरे हिस्से को आसमान पर से उतारकर ज़मीन पर फेंक दिया। फिर अज़दहा जन्म देनेवाली खातून के सामने खड़ा हुआ ताकि उस बच्चे को जन्म लेते ही हड़प कर ले। 5 खातून के बेटा पैदा हुआ, वह बच्चा जो लोहे के शाही असा से क़ौमों पर हुकूमत करेगा। और खातून के इस बच्चे को छीनकर अल्लाह और उसके तख़्त के सामने लाया गया। 6 खातून खुद रेगिस्तान में हिजरत करके एक ऐसी जगह पहुँच गई जो अल्लाह ने उसके लिए तैयार कर रखी थी, ताकि वहाँ 1,260 दिन तक उस की परवरिश की जाए।

7 फिर आसमान पर जंग छिड़ गई। मीकाएल और उसके फ़रिश्ते अज़दहे से लड़े। अज़दहा और उसके फ़रिश्ते उनसे लड़ते रहे, 8 लेकिन वह ग़ालिब न आ सके बल्कि आसमान पर अपने मक़ाम से महसूस हो गए। 9 बड़े अज़दहे को निकाल दिया गया, उस क़दीम अज़दहे को जो इबलीस या शैतान कहलाता है और जो पूरी दुनिया को गुमराह कर देता है। उसे उसके फ़रिश्तों समेत ज़मीन पर फेंका गया।

10 फिर आसमान पर एक ऊँची आवाज़ सुनाई दी, “अब हमारे खुदा की नजात, कुदरत और बादशाही आ गई है, अब उसके मसीह का इख़्तियार आ गया है। क्योंकि हमारे भाइयों और बहनों पर इलज़ाम लगानेवाला जो दिन-रात अल्लाह के हुज़ूर उन पर इलज़ाम लगाता रहता था उसे ज़मीन पर फेंका गया है। 11 ईमानदार लेले के खून और अपनी गवाही सुनाने के ज़रीए ही उस पर ग़ालिब आए हैं। उन्होंने अपनी जान अजीज़ न रखी बल्कि उसे देने तक तैयार थे। 12 चुनौचे खुशी मनाओ, ऐ आसमानो! खुशी मनाओ, उनमें बसनेवालो! लेकिन ज़मीन और समुंदर पर अफ़सोस! क्योंकि इबलीस तुम पर उतर आया है। वह बड़े गुस्से में है, क्योंकि वह जानता है कि अब उसके पास वक़्त कम है।”

13 जब अज़दहे ने देखा कि उसे ज़मीन पर गिरा दिया गया है तो वह उस खातून के पीछे पड़ गया जिसने बच्चे को जन्म दिया था। 14 लेकिन खातून को बड़े उकाब के-से दो पर दिए गए ताकि वह उड़कर रेगिस्तान में उस जगह पहुँचे जो उसके लिए तैयार की गई थी और जहाँ वह साढ़े तीन साल तक अज़दहे की पहुँच से महफूज़ रहकर परवरिश पाएगी। 15 इस पर अज़दहे ने अपने मुँह से पानी निकालकर दरिया की सूरत में खातून के पीछे पीछे बहा दिया ताकि उसे बहा ले जाए। 16 लेकिन ज़मीन ने खातून की मदद करके अपना मुँह खोल दिया और उस दरिया को निगल लिया जो अज़दहे ने अपने मुँह से निकाल दिया था। 17 फिर अज़दहे को खातून पर गुस्सा आया, और वह उस की बाक़ी औलाद से जंग करने के लिए चला गया। (खातून की औलाद वह है जो अल्लाह के अहक़ाम पूरे करके ईसा की गवाही को कायम रखते हैं)। 18 और अज़दहा समुंदर के साहिल पर खड़ा हो गया।

13

दो हैवान

1 फिर मैंने देखा कि समुंदर में से एक हैवान निकल रहा है। उसके दस सींग और सात सर थे। हर सींग पर एक ताज और हर सर पर कुफ़र का एक नाम था। 2 यह हैवान चीते की मानिंद था। लेकिन उसके रीछ के-से पाँव और शेरबबर का-सा मुँह था। अज़दहे ने इस हैवान को अपनी कुव्वत, अपना तख़्त और बड़ा इख़्तियार दे दिया। 3 लगता था कि हैवान के सरों में से एक पर लाइलाज़ ज़ख़म लगा है। लेकिन इस ज़ख़म को शफ़ा दी गई। पूरी दुनिया यह देखकर हैरतज़दा हुई और हैवान के पीछे लग गई। 4 लोगों ने अज़दहे को सिजदा किया, क्योंकि उसी ने हैवान को इख़्तियार दिया था। और उन्होंने यह कहकर हैवान को भी सिजदा किया, “कौन इस हैवान की मानिंद है? कौन इससे लड़ सकता है?”

5 इस हैवान को बड़ी बड़ी बातें और कुफ़र बकने का इख़्तियार दिया गया। और उसे यह करने का इख़्तियार 42 महीने के लिए मिल गया। 6 यों वह अपना मुँह खोलकर अल्लाह, उसके नाम, उस की सूकूनतगाह और आसमान के बाशिंदों पर कुफ़र बकने लगा। 7 उसे मुक़द्दसीन से जंग करके उन पर फ़तह पाने का इख़्तियार भी दिया गया। और उसे हर क़बीले, हर उम्मत, हर ज़बान और हर क़ौम पर इख़्तियार दिया गया। 8 ज़मीन के तमाम बाशिंदे इस हैवान को सिजदा करेंगे यानी वह सब जिनके नाम दुनिया की इब्तिदा से लेले की किताबे-हयात में दर्ज नहीं हैं, उस लेले की किताब में जो ज़ब्र किया गया है।

9 जो सुन सकता है वह सुन ले! 10 अगर किसी को कैदी बनना है तो वह कैदी ही बनेगा। अगर किसी को तलवार की ज़द में आकर मरना है तो वह ऐसे ही मरेगा। अब मुक़द्दसीन को साबितक़दमी और वफ़ादार ईमान की ख़ास ज़रूरत है।

11 फिर मैंने एक और हैवान को देखा। वह ज़मीन में से निकल रहा था। उसके लेले के-से दो सींग थे, लेकिन उसके बोलने का अंदाज़ अज़दहे का-सा था। 12 उसने पहले हैवान का पूरा इख्तियार उस की खातिर इस्तेमाल करके ज़मीन और उसके बाशिंदों को पहले हैवान को सिजदा करने पर उकसाया, यानी उस हैवान को जिसका लाइलाज़ ज़ख़म भर गया था। 13 और उसने बड़े मोज़िज़ाना निशान दिखाए, यहाँ तक कि उसने लोगों के देखते देखते आसमान से ज़मीन पर आग नाज़िल होने दी। 14 यों उसे पहले हैवान की खातिर मोज़िज़ाना निशान दिखाने का इख्तियार दिया गया, और इनके ज़रीए उसने ज़मीन के बाशिंदों को सहीह राह से बहकाया। उसने उन्हें कहा कि वह उस हैवान की ताज़ीम में एक मुजस्समा बना दें जो तलवार से ज़ख़मी होने के बावुज़्द दुबारा ज़िंदा हुआ था। 15 फिर उसे पहले हैवान के मुजस्समे में जान डालने का इख्तियार दिया गया ताकि मुजस्समा बोल सके और उन्हें क़त्ल करवा सके जो उसे सिजदा करने से इनकार करते थे। 16 उसने यह भी करवाया कि हर एक के दहने हाथ या माथे पर एक ख़ास निशान लगाया जाए, खाह वह छोटा हो या बड़ा, अमीर हो या ग़रीब, आज़ाद हो या गुलाम। 17 सिर्फ़ वह शख्स कुछ ख़रीद या बेच सकता था जिस पर यह निशान लगा था। यह निशान हैवान का नाम या उसके नाम का नंबर था।

18 यहाँ हिकमत की ज़रूरत है। जो समझदार है वह हैवान के नंबर का हिसाब करे, क्योंकि यह एक मर्द का नंबर है। उसका नंबर 666 है।

14

लेला और उस की क़ौम

1 फिर मैंने देखा कि लेला मेरे सामने ही सिय्यून के पहाड़ पर खड़ा है। उसके साथ 1,44,000 अफ़राद खड़े थे जिनके माथों पर उसका और उसके बाप का नाम लिखा था। 2 और मैंने आसमान से एक ऐसी आवाज़ सुनी जो किसी बड़े आबशार और गरजते बादलों की ऊँची कड़क की मानिंद थी। यह उस आवाज़ की मानिंद थी जो सरोद बजानेवाले अपने साज़ों से निकालते हैं। 3 यह 1,44,000 अफ़राद तख़्त, चार जानदारों और बुज़ुर्गों के सामने खड़े एक नया गीत गा रहे थे, एक ऐसा गीत जो सिर्फ़ वही सीख सके जिन्हें लेले ने ज़मीन से ख़रीद लिया था। 4 यह वह मर्द हैं जिन्होंने अपने आपको ख़वातीन के साथ आलूदा नहीं किया, क्योंकि वह कुँवारे हैं। जहाँ भी लेला जाता है वहाँ वह भी जाते हैं। उन्हें बाक़ी इनसानों में से फ़सल के पहले फल की हैसियत से अल्लाह और लेले के लिए ख़रीदा गया है। 5 उनके मुँह से कभी झूट नहीं निकला बल्कि वह बेइलज़ाम हैं।

तीन फ़रिश्ते

6 फिर मैंने एक और फ़रिश्ता देखा। वह मेरे सर के ऊपर ही हवा में उड़ रहा था। उसके पास अल्लाह की अबदी खुशख़बरी थी ताकि वह उसे ज़मीन के बाशिंदों यानी हर क़ौम, कबीले, अहले-ज़बान और उम्मत को सुनाए। 7 उसने ऊँची आवाज़ से कहा, “ख़ुदा का ख़ौफ़ मानकर उसे जलाल दो, क्योंकि उस की अदालत का वक़्त आ गया है। उसे सिजदा करो जिसने आसमानों, ज़मीन, समुंदर और पानी के चश्मों को खलक किया है।”

8 एक दूसरे फ़रिश्ते ने पहले के पीछे पीछे चलते हुए कहा, “वह गिर गया है! हाँ, अज़ीम बाबल गिर गया है, जिसने तमाम क़ौमों को अपनी हारामकारी और मस्ती की मै पिलाई है।”

9 इन दो फ़रिश्तों के पीछे एक तीसरा फ़रिश्ता चल रहा था। उसने ऊँची आवाज़ से कहा, “जो भी हैवान और उसके मुजस्समे को सिजदा करे और जिसे भी उसका निशान अपने माथे या हाथ पर मिल जाए 10 वह अल्लाह के ग़ज़ब की मै से पिछेगा, ऐसी मै जो मिलावट के बग़ैर ही अल्लाह के ग़ज़ब के प्याले में डाली गई है। मुक़द्दस फ़रिश्तों और लेले के हुज़ूर उसे आग और गंधक का अज़ाब सहना पड़ेगा। 11 और इन लोगों को सतानेवाली यह आग जलती रहेगी, इसका धुआँ अबद तक चढ़ता रहेगा। जो हैवान और उसके मुजस्समे को सिजदा करते हैं या जिन्होंने उसके नाम का निशान लिया है वह न दिन, न रात को आराम पाएँगे।”

12 यहाँ मुक़द्दसीन को साबितक़दम रहने की ज़रूरत है, उन्हें जो अल्लाह के अहक़ाम पूरे करते और ईसा के वफ़ादार रहते हैं।

13 फिर मैंने आसमान से एक आवाज़ यह कहती हुई सुनी, “लिख, मुबारक हैं वह मुरदे जो अब से ख़ुदावंद में वफ़ात पाते हैं।”

“जी हाँ,” रुह फ़रमाता है, “वह अपनी मेहनत-मशक्क़त से आराम पाएँगे, क्योंकि उनके नेक काम उनके पीछे होकर उनके साथ चलेंगे।”

ज़मीन पर फ़सल की कटाई

14 फिर मैंने एक सफ़ेद बादल देखा, और उस पर कोई बैठा था जो इब्ने-आदम की मानिंद था। उसके सर पर सोने का ताज और हाथ में तेज़ दरौती थी। 15 एक और फ़रिश्ता अल्लाह के घर से निकलकर ऊँची आवाज़ से पुकारकर उससे मुखातिब हुआ जो बादल पर बैठा था, “अपनी दरौती लेकर फ़सल की कटाई कर! क्योंकि फ़सल काटने का वक़्त आ गया है और ज़मीन पर की फ़सल पक गई है।” 16 चुनौचे बादल पर बैठनेवाले ने अपनी दरौती ज़मीन पर चलाई और ज़मीन की फ़सल की कटाई हुई।

17 इसके बाद एक और फ़रिश्ता अल्लाह के उस घर से निकल आया जो आसमान पर है, और उसके पास भी तेज़ दरौती थी।

18 फिर एक तीसरा फ़रिश्ता आया। उसे आग पर इख्तियार था। वह कुरबानगाह से आया और ऊँची आवाज़ से पुकारकर तेज़ दरौती पकड़े हुए फ़रिश्ते से मुखातिब हुआ, “अपनी तेज़ दरौती लेकर ज़मीन की अंगूर की बेल से अंगूर के गुच्छे जमा कर, क्योंकि उसके अंगूर पक गए हैं।” 19 फ़रिश्ते ने ज़मीन पर अपनी दरौती चलाई, उसके अंगूर जमा किए और उन्हें अल्लाह के ग़ज़ब के उस बड़े हौज़ में फेंक दिया जिसमें

अंगूर का रस निकाला जाता है। 20 यह हौज़ शहर से बाहर वाके था। उसमें पड़े अंगूरों को इतना रौंदा गया कि हौज़ में से खून बह निकला। खून का यह सैलाब 300 किलोमीटर दूर तक पहुँच गया और वह इतना ज़्यादा था कि घोड़ों की लगामों तक पहुँच गया।

15

आखिरी बलाओं के फ़रिश्ते

1 फिर मैंने आसमान पर एक और इलाही निशान देखा, जो अज़ीम और हैरतअंगेज़ था। सात फ़रिश्ते सात आखिरी बलाएँ अपने पास रखकर खड़े थे। इनसे अल्लाह का ग़ज़ब तकमील तक पहुँच गया।

2 मैंने शीशे का-सा एक समुंदर भी देखा जिसमें आग मिलाई गई थी। इस समुंदर के पास वह खड़े थे जो हैवान, उसके मुजस्समे और उसके नाम के नंबर पर ग़ालिब आ गए थे। वह अल्लाह के दिए हुए सरोद पकड़े 3 अल्लाह के खादिम मूसा और लेले का गीत गा रहे थे,

“ऐ रब कादिरे-मुतलक खुदा,
तेरे काम कितने अज़ीम और हैरतअंगेज़ हैं।
ऐ ज़मानों के बादशाह,
तेरी राहें कितनी रास्त और सच्ची हैं।
4 ऐ रब, कौन तेरा खोफ़ नहीं मानेगा?
कौन तेरे नाम को जलाल नहीं देगा?
क्योंकि तू ही कुदूस है।

तमाम कौमों आकर तेरे हुज़ूर सिजदा करेंगी,
क्योंकि तेरे रास्त काम ज़ाहिर हो गए हैं।”

5 इसके बाद मैंने देखा कि अल्लाह के घर यानी आसमान पर के शरीअत के ख़ैमे को * खोल दिया गया। 6 अल्लाह के घर से वह सात फ़रिश्ते निकल आए जिनके पास सात बलाएँ थीं। उनके कतान के कपड़े साफ़-सुथरे और चमक रहे थे। यह कपड़े सीनों पर सोने के कमरबंद से बंधे हुए थे। 7 फिर चार जानदारों में से एक ने इन सात फ़रिश्तों को सोने के सात प्याले दिए। यह प्याले उस खुदा के ग़ज़ब से भरे हुए थे जो अज़ल से अबद तक ज़िंदा है। 8 उस वक़्त अल्लाह का घर उसके जलाल और कुदरत से पैदा होनेवाले धुँएँ से भर गया। और जब तक सात फ़रिश्तों की सात बलाएँ तकमील तक न पहुँचीं उस वक़्त तक कोई भी अल्लाह के घर में दाखिल न हो सका।

16

अल्लाह के ग़ज़ब के प्याले

1 फिर मैंने एक ऊँची आवाज़ सुनी जिसने अल्लाह के घर में से सात फ़रिश्तों से कहा, “जाओ, अल्लाह के ग़ज़ब से भरे सात प्यालों को ज़मीन पर उंडेल दो।”

2 पहले फ़रिश्ते ने जाकर अपना प्याला ज़मीन पर उंडेल दिया। इस पर उन लोगों के जिस्मों पर भेड़े और तकलीफ़देह फोड़े निकल आए जिन पर हैवान का निशान था और जो उसके मुजस्समे को सिजदा करते थे।

3 दूसरे फ़रिश्ते ने अपना प्याला समुंदर पर उंडेल दिया। इस पर समुंदर का पानी लाश के-से खून में बदल गया, और उसमें हर ज़िंदा मखलूक मर गई।

4 तीसरे फ़रिश्ते ने अपना प्याला दरियाओं और पानी के चश्मों पर उंडेल दिया तो उनका पानी खून बन गया। 5 फिर मैंने पानियों पर मुकर्रर फ़रिश्ते को यह कहते सुना, “तू यह फ़ैसला करने में रास्त है, तू जो है और जो था, तू जो कुदूस है। 6 चूँकि उन्होंने तेरे मुक़द्दसीन और नबियों की खूनेज़ी की है, इसलिए तूने उन्हें वह कुछ दे दिया जिसके लायक वह हैं। तूने उन्हें खून पिला दिया।” 7 फिर मैंने कुरबानगाह को यह जवाब देते सुना, “हाँ, ऐ रब कादिरे-मुतलक खुदा, हकीकतन तेरे फ़ैसले सच्चे और रास्त हैं।”

8 चौथे फ़रिश्ते ने अपना प्याला सूरज पर उंडेल दिया। इस पर सूरज को लोगों को आग से झुलसाने का इख्तियार दिया गया। 9 लोग शदीद तपिश से झुलस गए, और उन्होंने अल्लाह के नाम पर कुफ़र बका जिसे इन बलाओं पर इख्तियार था। उन्होंने तौबा करने और उसे जलाल देने से इनकार किया।

10 पाँचवें फ़रिश्ते ने अपना प्याला हैवान के तख़्त पर उंडेल दिया। इस पर उस की बादशाही में अंधेरा छा गया। लोग अज़ियत के मारे अपनी ज़बानें काटते रहे। 11 उन्होंने अपनी तकलीफ़ों और फोड़ों की वजह से आसमान पर कुफ़र बका और अपने कामों से इनकार न किया।

12 छठे फ़रिश्ते ने अपना प्याला बड़े दरिया फुरात पर उंडेल दिया। इस पर उसका पानी सूख गया ताकि मशरिक के बादशाहों के लिए रास्ता तैयार हो जाए। 13 फिर मैंने तीन बदरूहें देखीं जो मेंढकों की मानिंद थीं। वह अज़दहे के मुँह, हैवान के मुँह और झूटे नबी के मुँह में से निकल आईं। 14 यह मेंढक शयातीन की रूहें हैं जो मोजिज़े दिखाती हैं और निकलकर पूरी दुनिया के बादशाहों के पास जाती हैं ताकि उन्हें अल्लाह कादिरे-मुतलक के अज़ीम दिन पर जंग के लिए इक़ठा करें।

* 15:5 यानी मुलाकात के ख़ैमे को।

15 “देखो, मैं चोर की तरह आऊंगा। मुबारक है वह जो जागता रहता और अपने कपड़े पहने हुए रहता है ताकि उसे नंगी हालत में चलना न पड़े और लोग उस की शर्मगाह न देखें।”

16 फिर उन्होंने बादशाहों को उस जगह पर इकट्ठा किया जिसका नाम इब्रानी ज़बान में हर्मजिदोन है।

17 सातवें फ़रिश्ते ने अपना प्याला हवा में उड़ेल दिया। इस पर अल्लाह के घर में तख़्त की तरफ़ से एक ऊँची आवाज़ सुनाई दी जिसने कहा, “अब काम तकमील तक पहुँच गया है!” 18 बिजलियाँ चमकने लगीं, शोर मच गया, बादल गरजने लगे और एक शदीद ज़लज़ला आया। इस क्रिस्म का ज़लज़ला ज़मीन पर इनसान की तख़लीक़ से लेकर आज तक नहीं आया, इतना सख़्त ज़लज़ला कि 19 अज़ीम शहर तीन हिस्सों में बट गया और क़ौमों के शहर तबाह हो गए। अल्लाह ने अज़ीम बाबल को याद करके उसे अपने सख़्त ग़ज़ब की मै से भरा प्याला पिला दिया। 20 तमाम ज़ज़ीर ग़ायब हो गए और पहाड़ कहीं नज़र न आए। 21 लोगों पर आसमान से मन मन-भर के बड़े बड़े ओले गिर गए। और लोगों ने ओलों की बला की वजह से अल्लाह पर कुफ़र बका, क्योंकि यह बला निहायत सख़्त थी।

17

मशहूर कसबी

1 फिर सात प्याले अपने पास रखनेवाले इन सात फ़रिश्तों में से एक मेरे पास आया। उसने कहा, “आ, मैं तुझे उस बड़ी कसबी की सज़ा दिखा दूँ जो गहरे पानी के पास बैठी है। 2 ज़मीन के बादशाहों ने उसके साथ ज़िना किया। हाँ, उस की ज़िनाकारी की मै से ज़मीन के बाशिंदे मस्त हो गए।”

3 फिर फ़रिश्ता मुझे रूह में एक रेगिस्तान में ले गया। वहाँ मैंने एक औरत को देखा। वह एक क़िरमिज़ी रंग के हैवान पर सवार थी जिसके पूरे जिस्म पर कुफ़र के नाम लिखे थे और जिसके सात सर और दस सींग थे। 4 यह औरत अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग के कपड़े पहने और सोने, बेशक़ीमत ज़वाहर और मोतियों से सजी हुई थी। उसके हाथ में सोने का एक प्याला था जो धिनौनी चीज़ों और उस की ज़िनाकारी की गंदगी से भरा हुआ था। 5 उसके माथे पर यह नाम लिखा था, जो एक भेद है, “अज़ीम बाबल, कसबियों और ज़मीन की धिनौनी चीज़ों की माँ।” 6 और मैंने देखा कि यह औरत उन मुक़द्सीन के खून से मस्त हो गई थी जिन्होंने ईसा की गवाही दी थी।

उसे देखकर मैं निहायत हैरान हुआ। 7 फ़रिश्ते ने मुझसे पूछा, “तू क्यों हैरान है? मैं तुझ पर औरत और उस हैवान का भेद खोल दूँगा जिस पर औरत सवार है और जिसके सात सर और दस सींग हैं। 8 जिस हैवान को तूने देखा वह पहले था, इस वक़्त नहीं है और दुबारा अथाह गढ़े में से निकलकर हलाकत की तरफ़ बढ़ेगा। ज़मीन के जिन बाशिंदों के नाम दुनिया की तख़लीक़ से ही किताबे-हयात में दर्ज नहीं हैं वह हैवान को देखकर हैरतज़दा हो जाएंगे। क्योंकि वह पहले था, इस वक़्त नहीं है लेकिन दुबारा आएगा।

9 यहाँ समझदार ज़हन की ज़रूरत है। सात सरों से मुराद सात पहाड़ हैं जिन पर यह औरत बैठी है। यह सात बादशाहों की नुमाइंदगी भी करते हैं। 10 इनमें से पाँच गिर गए हैं, छटा मौजूद है और सातवाँ अभी आनेवाला है। लेकिन जब वह आएगा तो उसे थोड़ी देर के लिए रहना है।

11 जो हैवान पहले था और इस वक़्त नहीं है वह आठवाँ बादशाह है, गो वह सात बादशाहों में से भी एक है। वह हलाकत की तरफ़ बढ़ रहा है।

12 जो दस सींग तूने देखे वह दस बादशाह हैं जिन्हें अभी कोई बादशाही नहीं मिली। लेकिन उन्हें घंटे-भर के लिए हैवान के साथ बादशाह का इख़्तियार मिलेगा। 13 यह एक ही सोच रखकर अपनी ताक़त और इख़्तियार हैवान को दे देंगे और लेले से जंग करेंगे, 14 लेकिन लेला अपने बुलाए गए, चुने हुए और वफ़ादार पैरोकारों के साथ उन पर गालिब आएगा, क्योंकि वह रब्बों का रब और बादशाहों का बादशाह है।”

15 फिर फ़रिश्ते ने मुझसे कहा, “जिस पानी के पास तूने कसबी को बैठी देखा वह उम्मतें, हुज़ूम, क़ौमों और ज़बानें हैं। 16 जो हैवान और दस सींग तूने देखे वह कसबी से नफ़रत करेंगे। वह उसे वीरान करके नंगा छोड़ देंगे और उसका गोशत खाकर उसे भस्म करेंगे। 17 क्योंकि अल्लाह ने उनके दिलों में यह डाल दिया है कि वह उसका मक़सद पूरा करें और उस वक़्त तक हुकूमत करने का अपना इख़्तियार हैवान के सुपुर्द कर दें जब तक अल्लाह के फ़रमान तकमील तक न पहुँच जाएँ।

18 जिस औरत को तूने देखा वह वही बड़ा शहर है जो ज़मीन के बादशाहों पर हुकूमत करता है।”

18

बाबल शहर की शिकस्त

1 इसके बाद मैंने एक और फ़रिश्ता देखा जो आसमान पर से उतर रहा था। उसे बहुत इख़्तियार हासिल था और ज़मीन उसके जलाल से रौशन हो गई। 2 उसने ऊँची आवाज़ से पुकारकर कहा, “वह गिर गई है! हाँ, अज़ीम कसबी बाबल गिर गई है! अब वह शयातीन का घर और हर बदरूह का बसेरा बन गई है, हर नापाक और धिनौने परिदे का बसेरा। 3 क्योंकि तमाम क़ौमों ने उस की हरामकारी और मस्ती की मै पी ली है। ज़मीन के बादशाहों ने उसके साथ ज़िना किया और ज़मीन के सौदागर उस की बेलगाम ऐयाशी से अमीर हो गए हैं।” 4 फिर मैंने एक और आवाज़ सुनी। उसने आसमान की तरफ़ से कहा,

“ऐ मेरी क़ौम, उसमें से निकल आ,
ताकि तुम उसके गुनाहों में शरीक न हो जाओ
और उस की बलाएँ तुम पर न आएँ।

5 क्योंकि उसके गुनाह आसमान तक पहुँच गए हैं,
और अल्लाह उनकी बदियों को याद करता है।

6 उसके साथ वही सुलूक करो
जो उसने तुम्हारे साथ किया है।
जो कुछ उसने किया है
उसका दुगना बदला उसे देना।
जो शराब उसने दूसरों को पिलाने के लिए तैयार की है
उसका दुगना बदला उसे दे देना।

7 उसे उतनी ही अज़ियत और गम पहुँचा दो
जितना उसने अपने आपको शानदार बनाया और ऐयाशी की।
क्योंकि अपने दिल में वह कहती है,
‘मैं यहाँ अपने तख्त पर रानी हूँ।
न मैं बेवा हूँ, न मैं कभी मातम करूँगी।’

8 इस वजह से एक दिन यह बलाएँ
यानी मौत, मातम और काल उस पर आन पड़ेंगी।
वह भस्म हो जाएगी,
क्योंकि उस की अदालत करनेवाला रब खुदा क़वी है।”

9 और ज़मीन के जिन बादशाहों ने उसके साथ ज़िना और ऐयाशी की वह उसके जलने का धुआँ देखकर रो पड़ेंगे और आहो-ज़ारी करेंगे।
10 वह उस की अज़ियत को देखकर ख़ौफ़ खाएँगे और दूर दूर खड़े होकर कहेंगे, “अफ़सोस! तुझ पर अफ़सोस, ऐ अज़ीम और ताक़तवर शहर बाबल! एक ही घंटे के अंदर अंदर अल्लाह की अदालत तुझ पर आ गई है।”

11 ज़मीन के सौदागर भी उसे देखकर रो पड़ेंगे और आहो-ज़ारी करेंगे, क्योंकि कोई नहीं रहा होगा जो उनका माल ख़रीदे : 12 उनका सोना, चाँदी, बेशक़ीमत ज़वाहर, मोती, बारीक कतान, अरगवानी और क़िरमिज़ी रंग का कपड़ा, रेशम, हर किस्म की खुशबूदार लकड़ी, हाथीदाँत की हर चीज़ और क़ीमती लकड़ी, पीतल, लोहे और संगे-मरमर की हर चीज़, 13 दारचीनी, मसाला, अगरबत्ती, मुर, बखूर, मै, जैतून का तेल, बेहतरीन मैदा, गंदुम, गाय-बैल, भेड़ें, घोड़े, रथ और गुलाम यानी इन्सान। 14 सौदागर उससे कहेंगे, “जो फल तू चाहती थी वह तुझसे दूर हो गया है। तेरी तमाम दौलत और शानो-शौकत गायब हो गई है और आइंदा कभी भी तेरे पास पाई नहीं जाएगी।” 15 जो सौदागर उसे यह चीज़ें फ़रोख़्त करने से दौलतमंद हुए वह उस की अज़ियत देखकर ख़ौफ़ के मारे दूर दूर खड़े हो जाएंगे। वह रो रोकर मातम करेंगे 16 और कहेंगे, “हाय! तुझ पर अफ़सोस, ऐ अज़ीम शहर, ऐ खातून जो पहले बारीक कतान, अरगवानी और क़िरमिज़ी रंग के कपड़े पहने फिरती थी और जो सोने, क़ीमती ज़वाहर और मोतियों से सजी हुई थी। 17 एक ही घंटे के अंदर अंदर सारी दौलत तबाह हो गई है!”

हर बहरी जहाज़ का कप्तान, हर समुंदरी मुसाफ़िर, हर मल्लाह और वह तमाम लोग जो समुंदर पर सफ़र करने से अपनी रोज़ी कमाते हैं वह सब दूर दूर खड़े हो जाएंगे। 18 उसके जलने का धुआँ देखकर वह कहेंगे, “क्या कभी कोई इतना अज़ीम शहर था?” 19 वह अपने सरों पर खाक डाल लेंगे और चिल्ला चिल्लाकर रोएँगे और आहो-ज़ारी करेंगे। वह कहेंगे, “हाय! तुझ पर अफ़सोस, ऐ अज़ीम शहर, जिसकी दौलत से तमाम बहरी जहाज़ों के मालिक अमीर हुए। एक ही घंटे के अंदर अंदर वह वीरान हो गया है।”

20 ऐ आसमान, उसे देखकर खुशी मना!

ऐ मुक़द्दसो, रसूलो और नबियो, खुशी मनाओ!

क्योंकि अल्लाह ने तुम्हारी खातिर उस की अदालत की है।

21 फिर एक ताक़तवर फ़रिश्ते ने बड़ी चक्की के पाट की मानिंद एक बड़े पत्थर को उठाकर समुंदर में फेंक दिया। उसने कहा, “अज़ीम शहर बाबल को इतनी ही ज़बरदस्ती से पटक दिया जाएगा। बाद में उसे कहीं नहीं पाया जाएगा। 22 अब से न मौसीकारों की आवाज़ें तुझमें कभी सुनाई देंगी, न सरोद, बाँसरी या तुरम बजानेवालों की। अब से किसी भी काम का कारीगर तुझमें पाया नहीं जाएगा। हाँ, चक्की की आवाज़ हमेशा के लिए बंद हो जाएगी। 23 अब से चराग़ तुझे रौशन नहीं करेगा, दुलहन-दूल्हे की आवाज़ तुझमें सुनाई नहीं देगी। हाय, तेरे सौदागर दुनिया के बड़े बड़े अफ़सर थे, और तेरी जादूगरी से तमाम क्रौमों को बहकाया गया।”

24 हाँ, बाबल में नबियों, मुक़द्दसीन और उन तमाम लोगों का खून पाया गया है जो ज़मीन पर शहीद हो गए हैं।

19

1 इसके बाद मैंने आसमान पर एक बड़े हुजूम की-सी आवाज़ सुनी जिसने कहा, “अल्लाह की तमज़ीद हो! नजात, जलाल और कुदरत हमारे खुदा को हासिल है। 2 क्योंकि उस की अदालतें सच्ची और रास्त हैं। उसने उस बड़ी कसबी को मुजरिम ठहराया है जिसने ज़मीन को अपनी ज़िनाकारी से बिगाड़ दिया। उसने उससे अपने खादिमों की कत्लो-गारत का बदला ले लिया है।” 3 और वह दुबारा बोल उठे, “अल्लाह

की तमजीद हो! इस शहर का धुआँ अबद तक चढ़ता रहता है।” 4 चौबीस बुजुर्गों और चार जानदारों ने गिरकर तख्त पर बैठे अल्लाह को सिजदा किया। उन्होंने कहा, “आमीन, अल्लाह की तमजीद हो।”

लेले की ज़ियाफत

5 फिर तख्त की तरफ से एक आवाज़ सुनाई दी। उसने कहा, “ऐ उसके तमाम खादिमो, हमारे खुदा की तमजीद करो। ऐ उसका खौफ माननेवालो, खाह बड़े हो या छोटे उस की सताइश करो।” 6 फिर मैंने एक बड़े हुजूम की-सी आवाज़ सुनी, जो बड़ी आबशार के शोर और गरजते बादलों की कड़क की मानिंद थी। इन लोगों ने कहा, “अल्लाह की तमजीद हो! क्योंकि हमारा रब कादिरे-मुतलक खुदा तख्तनशीन हो गया है। 7 आओ, हम मस्रूर हों, खुशी मनाएँ और उसे जलाल दें, क्योंकि लेले की शादी का वक़्त आ गया है। उस की दुलहन ने अपने आपको तैयार कर लिया है, 8 और उसे पहनने के लिए बारीक कतान का चमकता और पाक-साफ़ लिबास दे दिया गया।” (बारीक कतान से मुराद मुक़द्दसीन के रास्त काम हैं।)

9 फिर फ़रिश्ते ने मुझसे कहा, “लिख, मुबारक हैं वह जिन्हें लेले की शादी की ज़ियाफत के लिए दावत मिल गई है।” उसने मज़ीद कहा, “यह अल्लाह के सच्चे अलफ़ाज़ हैं।”

10 इस पर मैं उसे सिजदा करने के लिए उसके पाँवों में गिर गया। लेकिन उसने मुझसे कहा, “ऐसा मत कर! मैं भी तेरा और तेरे उन भाइयों का हमखिदमत हूँ जो ईसा की गवाही देने पर कायम हैं। सिर्फ़ अल्लाह को सिजदा कर। क्योंकि जो ईसा के बारे में गवाही देता है वह यह नबुव्वत की रूह में करता है।”

सफ़ेद घोड़े का सवार

11 फिर मैंने आसमान को खुला देखा। एक सफ़ेद घोड़ा नज़र आया जिसके सवार का नाम “वफ़ादार और सच्चा” है, क्योंकि वह इनसाफ़ से अदालत और जंग करता है। 12 उस की आँखें भड़कते शोले की मानिंद हैं और उसके सर पर बहुत-से ताज हैं। उस पर एक नाम लिखा है जिसे सिर्फ़ वही जानता है, कोई और उसे नहीं जानता। 13 वह एक लिबास से मुलब्स था जिसे खून में डुबोया गया था। उसका नाम “अल्लाह का कलाम” है। 14 आसमान की फ़ौजें उसके पीछे पीछे चल रही थीं। सब सफ़ेद घोड़ों पर सवार थे और बारीक कतान के चमकते और पाक-साफ़ कपड़े पहने हुए थे। 15 उसके मुँह से एक तेज़ तलवार निकलती है जिससे वह कौमों को मार देगा। वह लोहे के शाही असा से उन पर हुकूमत करेगा। हाँ, वह अंगूर का रस निकालने के हौज़ में उन्हें कुचल डालेगा। यह हौज़ क्या है? अल्लाह कादिरे-मुतलक का सख्त ग़ज़ब। 16 उसके लिबास और रान पर यह नाम लिखा है, “बादशाहों का बादशाह और रबबों का रब।”

17 फिर मैंने एक फ़रिश्ता सूरज पर खड़ा देखा। उसने ऊँची आवाज़ से पुकारकर उन तमाम परिदों से जो मेरे सर पर मँडला रहे थे कहा, “आओ, अल्लाह की बड़ी ज़ियाफत के लिए जमा हो जाओ। 18 फिर तुम बादशाहों, जरनैलों, बड़े बड़े अफसरों, घोड़ों और उनके सवारों का गोश्त खाओगे, हाँ तमाम लोगों का गोश्त, खाह आज़ाद हों या गुलाम, छोटे हों या बड़े।”

19 फिर मैंने हैवान और बादशाहों को उनकी फ़ौजों समेत देखा। वह घोड़े पर “अल्लाह का कलाम” नामी सवार और उस की फ़ौज से जंग करने के लिए जमा हुए थे। 20 लेकिन हैवान को गिरफ़्तार किया गया। उसके साथ उस झूठे नबी को भी गिरफ़्तार किया गया जिसने हैवान की खातिर मोजिज़ाना निशान दिखाए थे। इन मोजिज़ों के वसीले से उसने उनको फ़रेब दिया था जिन्हें हैवान का निशान मिल गया था और जो उसके मुजस्समे को सिजदा करते थे। दोनों को जलती हुई गंधक की शोलाखेज़ झील में फेंका गया। 21 बाक़ी लोगों को उस तलवार से मार डाला गया जो घोड़े पर सवार के मुँह से निकलती थी। और तमाम परिदे लाशों का गोश्त खाकर सेर हो गए।

20

हज़ार साल का दौर

1 फिर मैंने एक फ़रिश्ता देखा जो आसमान से उतर रहा था। उसके हाथ में अथाह गढ़े की चाबी और एक भारी जंजीर थी। 2 उसने अज़दहे यानी क़दीम साँप को जो शैतान या इबलीस कहलाता है पकड़कर हज़ार साल के लिए बाँध लिया। 3 उसने उसे अथाह गढ़े में फेंककर ताला लगा दिया और उस पर मुहर लगा दी ताकि वह हज़ार साल तक कौमों को गुमराह न कर सके। उसके बाद ज़रूरी है कि उसे थोड़ी देर के लिए आज़ाद कर दिया जाए।

4 फिर मैंने तख्त देखे जिन पर वह बैठे थे जिन्हें अदालत करने का इख्तियार दिया गया था। और मैंने उनकी रूहें देखीं जिन्हें ईसा के बारे में गवाही देने और जिनका अल्लाह का कलाम पेश करने की वजह से सर कलम किया गया था। उन्होंने हैवान या उसके मुजस्समे को सिजदा नहीं किया था, न उसका निशान अपने मार्थों या हाथों पर लगवाया था। अब यह लोग ज़िंदा हुए और हज़ार साल तक मसीह के साथ हुकूमत करते रहे। 5 (बाक़ी मुरदे हज़ार साल के इख्तियाम पर ही ज़िंदा हुए।) यह पहली क्रियामत है। 6 मुबारक और मुक़द्दस हैं वह जो इस पहली क्रियामत में शरीक हैं। इन पर दूसरी मौत का कोई इख्तियार नहीं है बल्कि यह अल्लाह और मसीह के इमाम होकर हज़ार साल तक उसके साथ हुकूमत करेंगे।

इबलीस की शिकस्त

7 हजार साल गुजर जाने के बाद इबलीस को उस की कैद से आजाद कर दिया जाएगा। 8 तब वह निकलकर ज़मीन के चारों कोनों में मौजूद कौमों बनाम जूज और माजूज को बहकाएगा और उन्हें जंग करने के लिए जमा करेगा। लड़नेवालों की तादाद साहिल पर की रेत के ज़रों जैसी बेशुमार होगी। 9 उन्होंने ज़मीन पर फैलकर मुक़द्सीन की लशकरगाह को घेर लिया, यानी उस शहर को जिसे अल्लाह प्यार करता है। लेकिन आग ने आसमान से नाज़िल होकर उन्हें हड़प कर लिया। 10 और इबलीस को जिसने उनको फ़रेब दिया था जलती हुई गंधक की झील में फेंका गया, वहाँ जहाँ हैवान और झूटे नबी को पहले फेंका गया था। उस जगह पर उन्हें दिन-रात बल्कि अबद तक अज़ाब सहना पड़ेगा।

आखिरी अदालत

11 फिर मैंने एक बड़ा सफ़ेद तख़्त देखा और उसे जो उस पर बैठा है। आसमानो-ज़मीन उसके हुज़ूर से भागकर गायब हो गए। 12 और मैंने तमाम मुरदों को तख़्त के सामने खड़े देखा, खाह वह छोटे थे या बड़े। किताबें खोली गईं। फिर एक और किताब को खोल दिया गया जो किताबे-हयात थी। मुरदों का उसके मुताबिक़ फैसला किया गया जो कुछ उन्होंने किया था और जो किताबों में दर्ज था। 13 समुंदर ने उन तमाम मुरदों को पेश कर दिया जो उसमें थे, और मौत और पाताल ने भी उन मुरदों को पेश कर दिया जो उनमें थे। चुनाँचे हर शख्स का उसके मुताबिक़ फैसला किया गया जो उसने किया था। 14 फिर मौत और पाताल को जलती हुई झील में फेंका गया। यह झील दूसरी मौत है। 15 जिस किसी का नाम किताबे-हयात में दर्ज नहीं था उसे जलती हुई झील में फेंका गया।

21

नया आसमान और नई ज़मीन

1 फिर मैंने एक नया आसमान और एक नई ज़मीन देखी। क्योंकि पहला आसमान और पहली ज़मीन ख़त्म हो गए थे और समुंदर भी नेस्त था। 2 मैंने नए यरूशलम को भी देखा। यह मुक़द्स शहर दुलहन की सूरत में अल्लाह के पास से आसमान पर से उतर रहा था। और यह दुलहन अपने दूल्हे के लिए तैयार और सजी हुई थी। 3 मैंने एक आवाज़ सुनी जिसने तख़्त पर से कहा, “अब अल्लाह की सुकूनतगाह इनसानों के दरमियान है। वह उनके साथ सुकूनत करेगा और वह उस की कौम होंगे। अल्लाह खुद उनका खुदा होगा। 4 वह उनकी आँखों से तमाम आँसू पोंछ डालेगा। अब से न मौत होगी न मातम, न रोना होगा न दर्द, क्योंकि जो भी पहले था वह जाता रहा है।”

5 जो तख़्त पर बैठा था उसने कहा, “मैं सब कुछ नए सिरे से बना रहा हूँ।” उसने यह भी कहा, “यह लिख दे, क्योंकि यह अलफ़ाज़ क़ाबिले-एतमाद और सच्चे हैं।” 6 फिर उसने कहा, “काम मुकम्मल हो गया है! मैं अलिफ़ और ये, अव्वल और आखिर हूँ। जो प्यासा है उसे मैं ज़िंदगी के चश्मे से मुफ़्त पानी पिलाऊँगा। 7 जो ग़ालिब आया वह सब कुछ विरासत में पाएगा। मैं उसका खुदा हूँगा और वह मेरा फ़रज़द होगा। 8 लेकिन बुज़दिलों, ग़ैरईमानदारों, धिनौनों, क़ातिलों, ज़िनाकारों, जादूगरों, बुतपरस्तों और तमाम झूटे लोगों का अंजाम जलती हुई गंधक की शोलाखेज़ झील है। यह दूसरी मौत है।”

नया यरूशलम

9 जिन सात फ़रिशतों के पास सात आखिरी बलाओं से भरे प्याले थे उनमें से एक ने मेरे पास आकर कहा, “आ, मैं तुझे दुलहन यानी लेले की बीवी दिखाऊँ।” 10 वह मुझे रूह में उठाकर एक बड़े और ऊँचे पहाड़ पर ले गया। वहाँ से उसने मुझे मुक़द्स शहर यरूशलम दिखाया जो अल्लाह की तरफ़ से आसमान पर से उतर रहा था। 11 उसे अल्लाह का जलाल हासिल था और वह अनमोल जौहर बल्कि बिल्लौर जैसे साफ़-शफ़फ़ाफ़ यशब की तरह चमक रहा था। 12 उस की बड़ी और ऊँची फ़सील में बारह दरवाज़े थे, और हर दरवाज़े पर एक फ़रिशता खड़ा था। दरवाज़ों पर इसराईल के बारह कबीलों के नाम लिखे थे। 13 तीन दरवाज़े मशरिक की तरफ़ थे, तीन शिमाल की तरफ़, तीन जुनूब की तरफ़ और तीन मगरिब की तरफ़। 14 शहर की फ़सील की बारह बुनियादें थीं जिन पर लेले के बारह रसूलों के नाम लिखे थे। 15 जिस फ़रिशते ने मुझसे बात की थी उसके पास सोने का गज़ था ताकि शहर, उसके दरवाज़ों और उस की फ़सील की पैमाइश करे। 16 शहर चौकोर था। उस की लंबाई उतनी ही थी जितनी उस की चौड़ाई। फ़रिशते ने गज़ से शहर की पैमाइश की तो पता चला कि उस की लंबाई, चौड़ाई और ऊँचाई 2,400 किलोमीटर है। 17 जब उसने फ़सील की पैमाइश की तो चौड़ाई 60 मीटर थी यानी उस पैमाने के हिसाब से जो वह इस्तेमाल कर रहा था। 18 फ़सील यशब की थी जबकि शहर ख़ालिस सोने का था, यानी साफ़-शफ़फ़ाफ़ शीशे जैसे सोने का। 19 शहर की बुनियादें हर किस्म के कीमती जवाहर से सजी हुई थीं : पहली यशब * से, दूसरी संगे-लाजवर्द † से, तीसरी संगे-यमानी ‡ से, चौथी जुमुरद से, 20 पाँचवीं संगे-सुलेमानी § से, छठी अक्रीके-अहमर * से, सातवीं ज़बरजद † से, आठवीं आबे-बहर ‡ से, नव्वीं पुखराज § से, दसवीं अक्रीके-सब्ज़ * से, ग्यारहवीं नीले रंग के ज़रक्रोन † से और बारहवीं याकूते-अरगवानी ‡ से। 21 बारह दरवाज़े बारह मोती थे और हर दरवाज़ा एक मोती का था। शहर की बड़ी सड़क ख़ालिस सोने की थी, यानी साफ़-शफ़फ़ाफ़ शीशे जैसे सोने की।

22 मैंने शहर में अल्लाह का घर न देखा, क्योंकि रब क़ादिर-मुतलक खुदा और लेला ही उसका मक़दिस हैं। 23 शहर को सूरज या चाँद की ज़रूरत नहीं जो उसे रौशन करे, क्योंकि अल्लाह का जलाल उसे रौशन कर देता है और लेला उसका चराग़ है। 24 कौमों उस की रौशनी

* 21:19 jasper † 21:19 lapis lazuli ‡ 21:19 chalcedony § 21:20 sardonyx। यानी संगे-सुलेमानी की एक किस्म जिसमें नारंजी और सफ़ेद अक्रीके के परत यके बाद दीगरे होते हैं। * 21:20 carnelian † 21:20 peridot ‡ 21:20 beryl § 21:20 topaz * 21:20 chrysoprase † 21:20 यूनानी लफ़्ज़ कुछ मुबहम-सा है। ‡ 21:20 amethyst

में चलेंगी, और ज़मीन के बादशाह अपनी शानो-शौकत उसमें लाएँगे। ²⁵ उसके दरवाज़े किसी भी दिन बंद नहीं होंगे क्योंकि वहाँ कभी भी रात का वक़्त नहीं आएगा। ²⁶ कौमों की शानो-शौकत उसमें लाई जाएगी। ²⁷ कोई नापाक चीज़ उसमें दाखिल नहीं होगी, न वह जो धिनौनी हरकतें करता और झूट बोलता है। सिर्फ़ वह दाखिल होंगे जिनके नाम लेले की किताबे-हयात में दर्ज हैं।

22

मुकाशफा

¹ फिर फ़रिश्ते ने मुझे ज़िंदगी के पानी का दरिया दिखाया। वह बिल्लौर जैसा साफ़-शफ़फ़ाफ़ था और अल्लाह और लेले के तख़्त से निकल कर ² शहर की बड़ी सड़क के बीच में से बह रहा था। दरिया के दोनों किनारों पर ज़िंदगी का दरख़्त था। यह दरख़्त साल में बारह दफ़ा फल लाता था, हर महीने में एक बार। और दरख़्त के पत्ते कौमों की शफ़ा के लिए इस्तेमाल होते थे। ³ वहाँ कोई भी मलऊन चीज़ नहीं होगी।

अल्लाह और लेले का तख़्त शहर में होंगे और उसके खादिम उस की खिदमत करेंगे। ⁴ वह उसका चेहरा देखेंगे, और उसका नाम उनके माथों पर होगा। ⁵ वहाँ रात नहीं होगी और उन्हें किसी चराग़ या सूरज की रौशनी की ज़रूरत नहीं होगी, क्योंकि रब खुदा उन्हें रौशनी देगा। वहाँ वह अबद तक हुक्मत करेंगे।

ईसा की आमद

⁶ फ़रिश्ते ने मुझसे कहा, “यह बातें काबिले-एतमाद और सच्ची हैं। रब ने जो नबियों की रूहों का खुदा है अपने फ़रिश्ते को भेज दिया ताकि अपने खादिमों को वह कुछ दिखाए जो जल्द होनेवाला है।”

⁷ ईसा फ़रमाता है, “देखो, मैं जल्द आऊँगा। मुबारक है वह जो इस किताब की पेशगोइयों के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारता है।”

⁸ मैं यूहन्ना ने खुद यह कुछ सुना और देखा है। और उसे सुनने और देखने के बाद मैं उस फ़रिश्ते के पाँवों में गिर गया जिसने मुझे यह दिखाया था और उसे सिजदा करना चाहता था। ⁹ लेकिन उसने मुझसे कहा, “ऐसा मत कर! मैं भी उसी का खादिम हूँ जिसका तू, तेरे भाई नबी और किताब की पैरवी करनेवाले हैं। खुदा ही को सिजदा कर!” ¹⁰ फिर उसने मझे बताया, “इस किताब की पेशगोइयों पर मुहर मत लगाना, क्योंकि वक़्त करीब आ गया है। ¹¹ जो ग़लत काम कर रहा है वह ग़लत काम करता रहे। जो धिनौना है वह धिनौना होता जाए। जो रास्तबाज़ है वह रास्तबाज़ी करता रहे। जो मुक़द्दस है वह मुक़द्दस होता जाए।”

¹² ईसा फ़रमाता है, “देखो, मैं जल्द आने को हूँ। मैं अज़ लेकर आऊँगा और मैं हर एक को उसके कामों के मुवाफ़िक़ अज़ दूँगा। ¹³ मैं अलिफ़ और ये, अव्वल और आखिर, इब्तिदा और इंतहा हूँ।”

¹⁴ मुबारक है वह जो अपने लिबास को धोते हैं। क्योंकि वह ज़िंदगी के दरख़्त के फल से खाने और दरवाज़ों के ज़रीए शहर में दाखिल होने का हक़ रखते हैं। ¹⁵ लेकिन बाकी सब शहर के बाहर रहेंगे। कुत्ते, ज़िनाकार, कातिल, बुतपरस्त और तमाम वह लोग जो झूट को प्यार करते और उस पर अमल करते हैं सबके सब बाहर रहेंगे।

¹⁶ “मैं ईसा ने अपने फ़रिश्ते को तुम्हारे पास भेजा है ताकि वह जमातों के लिए तुम्हें इन बातों की गवाही दे। मैं दाऊद की जड़ और औलाद हूँ, मैं ही चमकता हुआ सुबह का सितारा हूँ।”

¹⁷ रूह और दुलहन कहती हैं, “आ!”

हर सुननेवाला भी यही कहे, “आ!”

जो प्यासा हो वह आए और जो चाहे वह ज़िंदगी का पानी मुफ़्त ले ले।

खुलासा

¹⁸ मैं, यूहन्ना हर एक को जो इस किताब की पेशगोइयाँ सुनता है आगाह करता हूँ, अगर कोई इस किताब में किसी भी बात का इज़ाफ़ा करे तो अल्लाह उस की ज़िंदगी में उन बलाओं का इज़ाफ़ा करेगा जो इस किताब में बयान की गई हैं। ¹⁹ और अगर कोई नबुव्वत की इस किताब से बातें निकाले तो अल्लाह उससे किताब में मज़कूर ज़िंदगी के दरख़्त के फल से खाने और मुक़द्दस शहर में रहने का हक़ छीन लेगा।

²⁰ जो इन बातों की गवाही देता है वह फ़रमाता है, “जी हाँ! मैं जल्द ही आने को हूँ।” “आमीन! ऐ खुदावंद ईसा आ!”

²¹ खुदावंद ईसा का फ़ज़ल सबके साथ रहे।